

कर्मात्मिक दृष्टि

एक गैर मामूली दास्तान



वीरेन्द्र ओझा

इलाहाबाद डायरी

एक गैर मामूली दास्तान



वीरेन्द्र ओझा

इलाहाबाद डायरी : वीरेन्द्र ओझा

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 1

आप जैसे ही विश्वविद्यालय में शहीद लाल पदम धर सिंह की मूर्ति पार करके साइकिल स्टैंड से थोड़ा ही आगे पढ़ते हो वैसे ही एक हवा का झाँका सिविल सर्विसेज़ परीक्षा का, आइ ए एस बनने का बगैर बताए आपकी ओर आता है और एक ऐसा नशा आपके रग-रग में भर जाता है आप के अंदर नीलकंठ भगवान शिव की तरह और वह आपके कंठ ही नहीं आपकी चाल को भी वह परभावित कर देता है।

फिर आरंभ होती है एक मदमस्त यात्रा देश, समाज, व्यवस्था, शहर को सुधारने के संकल्प से हलाँकि विरले ही बाद में करते हैं यह। ज्यादातर तो अपने कैरियर और जीवन की एक दूसरी आपाधापी से जूझने लगते हैं।

यह नशा आपको उनकी तरफ ले जाता है जो कि सफल हो चुके हैं और एक आशा आपके भीतर शायद कोई गुरु मंत्र दे मिल जाए और आपकी नौका को सही दिशा प्राप्त हो जाए।

। पर सफल हुये अधिकांश लोग प्रेमचंद की कहानी बड़े भाई साहेब के बड़े भाई की तरह कहते हैं,

“ देखो यह आसान नहीं है। यह रास्ता बहुत दुर्लभ है। यहाँ मील के पत्थर भी आपके खिलाफ षड्यंतर करते हैं। यहाँ जुगनू पदचाप सुनकर छिप जाते हैं और चिराग हवाओं से कहता है बुझा मुझे वह कहीं रास्ता न देख ले। यहाँ पहाड़ों पर चढ़ना होगा। समुद्र की गहराइयों में उतरना होगा। गोताखोर बनकर किताबों में छिपे सदफ के मोतियों को तलाशना होगा। कैप्टन तस्मान की तरह किताबों में आप उन्हीं पन्नों से गुजर जाओगे पर काम का तत्व आपकी आँखों को न दिखेगा। यह कोई विश्वविद्यालय की परीक्षा नहीं है कि बस कुछ सवाल रटकर आप टाप कर जाओ। पता करो कितने टापर ने आज तक प्रारम्भिक परीक्षा पास की है। सबका हशर देखो। क्या हुआ। इतिहास विभाग के सारे तथाकथित ज्ञानी साल दर साल फेल हो रहे। मंजिल जो दिख रही है पास पर वह वैसी ही मृग मरीचिका की तरह है जैसे दिखते हैं दूर से कहीं जमी और आसमां आपस में मिलते हुये। आप सोच लो ठीक से, कूदने के पहले। कोई आसान परीक्षा पहले पास कर लो फिर सोचना और बाद में आना तब बताऊँगा।”।

आप अनुनय- विनय करके कुछ किताब का नाम उनसे पूछा कर लिख लेते हो। फिर आप पूँछते हो पूरे संकोच में यह जानते हुये कि इसका उत्तर तो नकारात्मक ही आएगा। पर आप भी इलाहाबादी हो। आप कोई मौक़ा क्यों छोड़ेंगे।

“ सर नोट्स..... “

आप की बात पूरी हो इसके पहले वही उत्तर जो आप जानते हो कि आएगा एक सफेद झूठ की शक्ल में । हलाँकि अगर बोलने वाला और सुनने वाला दोनों यह जानते हों कि यह झूठ है तो वह झूठ की परिभाषा में नहीं आता है ।

उत्तर बहुत दंभ पूर्ण-

“

मैंने कभी नोट्स बनाया ही नहीं है और न बनाने को कहता हूँ “

। आप मूल पुस्तकों से पढ़ो । और जिन किताबों का वह नाम लिखा देते हैं, उनकी मोटाई आपकी आँखों के सामने घूमने लगती है आप परीक्षा देने का विचार त्यागने तक पर विचार करने लगते हो ।

फिर अंदर ही अंदर दो - पाँच हज़ार गालियाँ देते ऊपर से पूर्ण संस्कारी बनते हुये आप विनम्रता से प्रणाम करते हुये कहते हो , “ सर फिर आऊँगा आपका मार्गदर्शन लेने ” ।

वह भी कहेगा - “ज़रूर आना ” ।

पर दोनों जानते हैं कि अब अगली मुलाक़ात नहीं होगी ।

आप साइकिल पर चढ़ते हो । साइकिल का पैडल बहुत कड़ा लगता है । लगता है पीछे से कोई खींच रहा है । वही रास्ता जो आपने उनसे मिलने का प्रसन्नता में पार किया था , वह पूरे निराशा और अवसाद में बीतता है । लगता है सामने से आ रही दरक धक्का मार दे , जिंदगी से मुक्ति प्राप्त हो जाए । इस जीवन का अब कोई अर्थ नहीं । पर चेतना के खिलाफ उपचेतना है जो कहती है , क्यों नहीं होगा ?

यह कोई विधाता है क्या ?

पता करता हूँ इसका इतिहास यह कितना काबिल था । एक सच्चा विद्रोही इलाहाबादी उपचेतना से निकलकर चेतना को नियंत्रित करता है और दरक को रास्ता दे देता है और जन्म होता है आपके भीतर भीष्म का परशुराम से भी लड़ने का संकल्प लिये ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग -2

वह वार्तालाप आप के जीवन में निराशा एवम् अवसाद को भर देता है । आप गए थे गुरुमन्त्र के लिये । अर्जुन को कृष्ण मिले यह अरमान सँजोये हुये पर वहाँ तो शल्य मिले कर्ण को हतोत्साहित करते हुये , कि तुम्हारे बस का यह नहीं है । इस वाक्य का प्रयोग न करते हुये भी प्रकारांतर में ऐसा ही कह दिया ।

एक- दो दिन की निराशा के बाद आप जाते हो ज्ञान भारती वही लिस्ट हाथ में लिये किताबों की । वहाँ मुलाक़ात होती है गंगा रूपी ज्ञान को शिव की जटाओं से उतार कर अपने बुक् स्टोर के माध्यम से बाँटने का दावा करने वाले भगीरथ रूपी अखिल की । वह एक साथ चार - पाँच ग्राहकों को निपटाने की असीम क्षमता रखता है ।

आप ख़रीदना कुछ और चाहो वह बेच कुछ और जाता था । ज्यादा बहस करो तो किताब अंदर रख लेगा और कहेगा , माल नहीं है । यह भी बता देगा कि किस विभाग के अध्यापक कौन सी किताब को अनुमोदित करते हैं । वह किताबों के मामले में अपने आप को सर्वज्ञ ज्ञानी मानता है । वह किसी की नहीं सुनता । वह सलमान खान की तरह है ,
किताबों के मामले में मैं किसी की नहीं सुनता ।

वहाँ किताबों की वह लिस्ट आपने पकड़ाई । उसने एक सिरे से आधे से ज्यादा किताबों को रिज़ेक्ट कर देगा ।

पूँछ भी लेगा , “किसने बताया यह “?

आप कहोगे किसी सफल व्यक्ति ने बताया और जैसे ही आप यह कहोगे , वह कहेगा यही तो प्राबल्म है इलाहाबाद में लोग सही बताते नहीं और मैं बताता हूँ तो लोग सुनते नहीं । अब इन भाई साहब को देखो , इतनी देर से समझा रहा कि जो किताब आप माँग रहे हो वह IAS में आउटडेट हो गई पर सुन ही नहीं रहे । यह पढ़ोगे तो आप का बंटाधार हो जाएगा ।

फिर वह और विश्वास अर्जित करेगा , यह कहकर कि उनसे पूछा कर आओ , इसमें से कितनी उन्होंने पढ़ी थी । मैं दो साल से उनको किताब दे रहा मैं जानता हूँ वह क्या पढ़ते हैं ।

बस वह बेच देगा जो चाहेगा । पर ज्यादातर किताबें काम की ही देगा , बस एकाध अपनी मर्जी की और चिपका देगा । पर किताबों के बारे में उसके पास समझ है । आपको कुछ मैगज़ीन भी दे देगा । कहेगा कि इसको पढ़ो , यह काम की है । समाचार पत्र पढ़ो वह बहुत ज़रूरी है यह वह ज़रूर कहेगा ।

पुराने पेपरों में बँधी हुई किताबों को पुरानी साइकिल के कैरियर में दबा कर आप चल देते हो एक ऐसे युद्ध की तरफ जिसमें सफलता की कोई गायरंटी नहीं । यह एक ऐसा युद्ध है जिसमें बहुत सारा परिश्रम और एक ठीक-ठाक मात्रा में भाग्य का होना चाहिये ।

इलाहाबाद सिविल सर्विसेज़ भाग -3

अब सबसे बड़ी समस्या सिविल सर्विसेज़ की प्रारम्भिक परीक्षा कैसे पास करें ? आप अपना विषय लेने में अगर हिचकिचाहट महसूस कर रहे हो तब एक सदाबहार विषय है इतिहास । वह ले लो । हलाँकि नई परीक्षा प्रणाली ने वह समस्या हमेशा - हमेशा के लिये समाप्त कर दिया । अब प्रारम्भिक परीक्षा में सिफ़्र सामान्य अध्ययन ही आता है , पर उस दौर में वैकल्पिक विषय का महत्व हुआ करता था ।

परीक्षा समाप्त होते ही एक दौर सवालों को चेक करने का । उस समय प्रश्न पत्र प्रारम्भिक परीक्षा का नहीं मिलता था । हर हास्टाल और हर डेलीगेसी में कितने सवाल सही हुये इस पर चर्चा । वह जमाना इंटरनेट का था नहीं । इसलिये जवाब को तलाशना आसान न था । एक मुहावरा बहुत चलता था - “ एक छात्र के रूप में उससे अधिक इतिहास /दर्शन / संस्कृत.... किसी को नहीं आती । ऐसे नामधारी कुछ मदद कर देते थे जवाबों को ढूँढ़ने में ।

यह पता नहीं मुहावरा कब इजाद हुआ था पर यह बहुत सालों तक चलता रहा । वह व्यक्ति जिसको यह सम्मान प्रदान होता था वह दैवीय गुणों से युक्त ऐसा माना जाता था । इसमें थोड़ी हक्कीकत होती थी और थोड़ा बहुत घालमेल या मिलावट तो इलाहाबाद की तासीर में है ।

प्रारम्भिक परीक्षा का परिणाम अमूमन परीक्षा होने के 50 दिन बाद आता था । परीक्षा का परिणाम पता करना भी आसान न था । जिसका कोई परिचय दिल्ली में होता था वह वहाँ पर रोल नंबर देकर अपना और अपने परिचितों का पता कर लेता था । अगर कोई ऐसा जुगाड़ नहीं है तो कोचिंग संस्थाओं के सहारे रहिये । वह पीआईबी के सौजन्य से लखनऊ से रिज़ल्ट लेकर आते थे और देर रात लगाते थे और सुबह पूरा हंगामा ।

पूरा शहर कोचिंग इंस्टीट्यूट की तरफ । जिसका हो गया वह तो वहाँ से जाएगा ही नहीं । वह हर आने वाले अपने परिचित को गेट से ही लेकर रिज़ल्ट तक लाएगा और उसके न होने का समाचार अपने अंदर की खुशी को छुपाते हुये ऊपर से अफ़सोस जताते हुये बताएगा । जिसका नहीं हुआ वह तो चाहता था कि धरती फट जाए और वह इसमें समा जाए । अब धरती तो फटने से रही तब फिर उपाय क्या है ?

जितनी गति से साइकिल चलाते हुये आया था उससे दुगनी गति से वह वहाँ से ओझल होने का प्रयास करता था । कई बार उसकी साइकिल कहीं टकराकर गिर जाती थी । पर वह उसी तीव्रता से उठकर ओझल हो जाता था ।

उसके जाते ही वह सफल व्यक्ति अगले शिकार की तलाश में लग जाता था और फिर तीन - चार सफल व्यक्ति एक साथ मिलकर शिकार की तलाश में लग जाते थे । यह प्रक्रिया सारा दिन तकरीबन चलती थी ।

दूसरी प्रक्रिया दिल्ली फ़ोन करके पता करने की है । इस प्रक्रिया से परिणाम पता करने वाला अपने पहले से ही पता परिणाम को देखने का नाटक करेगा । रोल नंबर तो होगा ही क्योंकि वह तो आपने पता किया ही है पर एक नाटक संयम का, निरपेक्ष भाव का होता था ।

न होता कोई फ़र्क न पड़ता, पर्वा बहुत आसान था, स्तर यूपीएससी का गिर गया है, कई लोग ऐसे भी पास हो गए जो योग्य नहीं थे, यह परीक्षा तो कोई मायने नहीं रखती असली लड़ाई तो अब है, प्रारम्भिक परीक्षा के लिये तो मैं पढ़ा ही नहीं बस ऐसे ही चला गया परीक्षा देने, इम्तिहान के पहले बीमार था मन न था देने का पर बाबू जी ने कहा दे दो तब दे दिया । इसमें से दो तीन वाक्य पक्का कहेगा और हो सकता है इसमें कुछ वाक्य और ज़ोड़ दे आसमान की तरफ गर्व से देखते हुये ।

फिर पूँछेगा कि आप का क्या हुआ? आपका मन करेगा कि इसको यहीं ज़मीन में दफन कर दूँ । मेरी सारी खुशी इसने काफ़ूर कर दी । मैं पढ़- पढ़ कर मर गया और यह भगवान का विराट स्वरूप लेकर आ गया और बगैर पूछे गीता का फ़र्जी ज्ञान दे गया और आप अब चल देगे घर की तरफ सोचते हुये अब दूसरा वैकल्पिक विषय के मटीरियल का जुगाड़ कैसे करें ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 4

आप प्रारम्भिक परीक्षा पास कर गए रिजल्ट पता करके चले और आपकी साइकिल गर्जन के पंखों की तरह चल रही । आप मैं जो नशा कभी भरा था शहीद लाल पदम धर सिंह की मूर्ति से आगे बढ़ते हुये IAS बनने का वह गहराने लगा । आप के अंदर थोड़ा-थोड़ा अधिकारी जन्म लेने लगा ।

घर पहुँचे पूरे गौरव के साथ परिणाम सुनाया । परम्परागत रूप से सबका आशीर्वाद लिया । घर मैं आपकी प्रतिष्ठा बढ़ गई । घर वाले लग गये इस समाचार को नात रिश्तेदारों को सुनाकर उनका दिल जलाने । आते जाते सङ्क पर जो मिला उसको भी सुना डाला । गाय भैंस को भी बता दिया ।

पड़ोस में जिसका बच्चा परीक्षा दिया था उसके यहाँ घुस गए पूँछने हाल कि भाई क्या हुआ बच्चे का ? वहाँ तो मातम फैला हुआ । उसको उपदेश दे मारा । मेहनत करो । यह काम कठिन है पर असंभव नहीं । लगन से लगे रहोगे तो होगा ही । कुछ और उदाहरण दे दिया कि वह भगवती बाबू का बेटा जो आज उप ज़िलाधिकारी है मोहनलालगंज तहसील में वह दो बार फेल हुआ था पर हिम्मत न हारी । आप भी लगे रहो ।

आपके बच्चे का परिणाम कोई पूँछ ही नहीं रहा । पूँछें भी क्यों , आप तो सुबह से अजान दे रहे हो । पर आपको बताना है कि मेरा मुन्ना/ पप्पू/गुड़ड़ी/बेबी ने वह कर दिखाया जो मुहल्ले में किसी न किया । आप इतिहास निकाल लोगे कि इस मुहल्ले का यह पहला सफल व्यक्ति है । आप बता देंगे कि रिझल्ट यह है । बधाई शुभकामना जो वह देने से कतरा रहा वह आप ज़बरदस्ती लेकर आ जाओगे ।

पर यह एक दिन की कहानी है । अगला दिन महाभारत के युद्ध की तरह भारी है । भीष आ गये यह कहते हुये , “ आज तो हरि को अस्त्र उठवा ही दूँगा ” ।

इलाहाबाद का सामान्य अध्ययन हमेशा से ही कमजोर रहा है । वैकल्पिक विषय के सवाल परम्परागत आते नहीं । प्रश्न पत्र देखा पिछले सालों का , हाँथ से तोते उड़ गए । इतना पढ़ना होगा ! अभी तक तो प्रारम्भिक परीक्षा में ही लगा रहा । एक विषय और तैयार करना होगा । वह कौन सा लूँ । इस पर तो सोचा ही न था पहले से । यह सामान्य अध्ययन से तो जान ही ले लेगा । इसका मटीरियल कहाँ मिलेगा । आपकी सारी खुशी गई तेल लेने ।

अब आप रुँआधे हो गये कि यह चाँदनी चार दिन की ही है । आगे तो पूरा अँधेरा ही अँधेरा । मंजिल के रास्ते में कोई मील का पत्थर लगा ही नहीं जो बता सके कितना चल चुके और कितना और चलना है । आपकी पूरी ज्योति की आँखों में धुँधलापन आ जाएगा । इतना ज्यादा काम और समय सिर्फ तक़रीबन 100 दिन ।

कोई तो दिखे आपदा प्रबंधन को । पालनहार की खोज में आप बेखबर अपने घर में चल रहे खुशी के लम्हों से ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 5

प्रारम्भिक परीक्षा तो सिविल सर्विसेज़ की पास कर ली । कुछ समय का आनंद भी आया और गर्व का बोध भी । तैयारी कर रहे नौसिखुआ छातरों में प्रतिष्ठा भी बढ़ गई । अगले साल की प्रारम्भिक परीक्षा के समय आप ज्ञान भी बाँचोगे नए अभ्यर्थियों को ।

पर दो समस्या सम्पूर्ण विकरालता लिये आपके समुख खड़ी हैं। एक, सामान्य अध्ययन का मटीरियल कहाँ मिलेगा और दूसरा, कौन सा दूसरा वैकल्पिक विषय लूँ।

अब इस समस्या का समाधान कैसे हो ?

समाधान की तलाश में आप देखते हो अपने सीनियर्स की ओर जो पिछले वर्ष मुख्य परीक्षा दे चुके हैं। पर वह फिर इस बार परीक्षा दे रहे हैं। उनके पास न तो आपका सारथी बनने का समय है न तो अपने रथ पर चढ़ाने का।

वह अपनी लड़ाई खुद लड़ रहे हैं। और अब आप उनके प्रतिद्वंद्वी भी हो। प्रतिद्वंद्वी से सावधान रहना चाहिये पता नहीं कब गुरु गुड़ ही रह जाए चेला चीनी बन जाए।

इलाहाबाद में वैसे भी प्रतिस्पर्धा का माहौल रहता था और शायद अभी भी है। लोग थोड़ा भरमाते भी हैं। जो पढ़ रहे होते हैं वह छुपाते हैं और सच बोलने में इस मामले में थोड़ा परहेज़ करते थे। लोग अपनी चीज़ साझा करने से तब तक यक्कीन नहीं रखते थे जब तक उनका अपना काम न बन जाए। जब वह चयनित हो जाते थे तब खुल जा सिमसिम कह कर अपना ख़ज़ाना निकालते थे और अपने विश्वास पात्र को देते थे। पर अगर छोटा भाई या बहन परीक्षा दे रहा तब तो परिवारवाद अपनी पराकाष्ठा पर। पर यह द्वार तो बहुत ज्यादा नहीं खुलता था चाहे कोई घर का परीक्षा दे रहा हो या न दे रहा हो।

अब यह भी एक महाभारत के युद्ध सरीखा ही रणक्षेत्र है। कुचल कर ही आगे जाना है। मेरा घनिष्ठतम मित्र भी अगर मेरी रफ्तार से नहीं दौड़ सकता तो उसी पीछे छोड़ कर आगे जाना होगा नहीं तो खुद भी पीछे हो जाओगे। यहाँ कोई किसी का इंतज़ार नहीं करता।

दूसरा द्वार था कोचिंग संस्थानों का। उस द्वार में बहुत दम हमारे दौर में न था और जहाँ तक मेरी समझ है आजकल भी नहीं है। फ़ीस बहुत ही ज्यादा, शिक्षा का स्तर बहुत ही सामान्य, पढ़ाई से ज्यादा जोर समय पास करने पर, योग्य मार्गदर्शन का अभाव यह हमारे दौर में भी था और शायद आज भी है।

एक और समस्या थी कि अगर कोचिंग ज्वाइन किया तब हर दिन तीन घंटे से ज्यादा चले गये। यह समय जब आप 100 से गुणा करते हो तो 300 घंटे से ज्यादा का समय जाना आपकी आत्मा को गँवारा नहीं होता।

दूसरा वैकल्पिक विषय आप जल्दी चुनना चाहते हो। समय भाग रहा है। उस पर आपका कोई ज़ोर नहीं है। तभी पता लगता है कि शहर का एक बड़ा वर्ग हिन्दी

साहित्य दूसरे वैकल्पिक विषय के रूप में ले रहा है। आप पता करते हो कि कौन इसको लेकर परीक्षा दिया है। आपको आसानी से वह लोग मिल जाएँगे जिन्होंने यह विषय लिया होगा। इलाहाबाद के लोगों की हिंदी बेहतर होती है। वह बेहतर लिख लेते हैं। मातृभाषा होने के कारण आपको विश्वास भी होने लगता है। फिर जब पाठ्यक्रम में सूर , कबीर , तुलसी , हिंदी साहित्य का इतिहास , गोदान , परेमचंद , निराला , मुक्तिबोध का नाम सुनते हो तो एक सुकून भी आने लगता है।

हर साल कुछ लोग हिंदी में अच्छा नंबर पाते ही थे और उसमें से अधिकांश या तक़रीबन सभी वह होते थे जिन्होंने हिंदी में ऐसे ए तो नहीं ही किया है बी ए में भी हिंदी कम ही लोगों ने लिया होगा।

मेरे एक सर्विस के सीनियर हैं जिन्होंने गणित के साथ हिंदी ली। बहुत अच्छा तर्क दिया हिंदी साहित्य लेने का। कहा कि , इस विषय में जो हिंदी परम्परागत रूप से पढ़ता है बी. ए. , ऐ. ए. में वह तो मेंस कम ही देता है। वह तो प्रारम्भिक परीक्षा ही पास नहीं करता इसलिये कापी जब जाँची जाएगी तब एक लेवल प्लेइंग फ़ील्ड होगा।

हर आदमी वही होगा परीक्षा देने वाला जिसने हिंदी साहित्य को एक विषय के रूप में नहीं पढ़ा होगा बाकि विषय में ऐसा नहीं है।

यह थोड़ा ज्यादा ज़रूर लग सकता है पर यह हकीक़त है कि हिंदी विभाग का प्रारम्भिक परीक्षा का रिजल्ट वर्ष दर वर्ष शून्य ही रहता था। यदा कदा ही कोई पास करता था।

आपकी दूसरे विकल्प की समस्या हल हो गई। किसी से किताब की लिस्ट ले ली। पहुँच गए ज्ञान भारती के अखिल के पास। उसने लिस्ट का परीक्षण किया। कुछ उसमें से दिया कुछ और जोड़ दिया और आप रथ पर सवार युद्ध के लिये दो वैकल्पिक विषय और जी ऐस को मार्ग की बाधा में खड़े द्वारों का मर्दन करके आगे बढ़ने को।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 6

सबसे बड़ा संघर्ष वह तक़रीबन 100 दिन का। जुलाई के अंतिम सप्ताह में प्रारम्भिक परीक्षा का परिणाम आता था और नवम्बर के दूसरे सप्ताह से मुख्य परीक्षा का शुभारम्भ। अब यह समय थोड़ा बदल गया है। आजकल जुलाई के दूसरे / तीसरे सप्ताह में प्रारम्भिक परीक्षा का परिणाम आता है और सितम्बर के तीसरे सप्ताह से मुख्य परीक्षा प्रारंभ होती है।

जीवन का कठिनतम समय / सारी ऊर्जा, सारी मेधा लगी है साख को बचाने में / हर कोई आपकी ओर देख रहा / घर का हर व्यक्ति सहयोग कर रहा / सब चाह रहे चमत्कार / सब चाह रहे आपके द्वारा गौरव ।

इलाहाबाद में सिविल सर्विसेज़ सिफ़्र एक व्यवसाय या नौकरी की प्राप्ति से नहीं जुड़ा है वरन् इसका सम्बन्ध एक गौरवगाथा से है, एक नागरिक अभिनंदन से है / शायद यही साल दर साल सारे प्रतिभावान को सारा काम छोड़कर इसमें सम्मिलित होने के लिये प्रेरित करता है ।

यह पता नहीं कब से चली आ रही परम्परा है कि हर व्यक्ति को शहर में यह परीक्षा मन्त्र सुगंध किये हैं ।

उन 100 दिनों के लिये सारा काम रुक जाता है सोती सुंदरी (sleeping beauty) की कहानी की तरह / सिफ़्र आप, किताबें, चिड़िया की आँख, अर्जुन की तरह का संकल्प लिये हुये गिराना है इस चिड़िया को आँख बेधकर ।

बस फ़र्क़ इतना है अर्जुन के पास खड़े थे गुरु दरोणाचार्य, यहाँ युद्ध क्षेत्र में तुम एकाकी अभिमन्यु की तरह कर रहे अनवरत संघर्ष चक्रव्यूह के प्रत्येक द्वार पर ।

पर जीवन के वह सौ दिन बहुत ही प्रेरक हैं / यह वह समय है जब हर दिन लक्ष्य बनता है और सायंकाल विध कर गिरा हुआ वह दिखता था / जिस दिन संधान असफल हुआ वह घोर निराशा का दिन, आज का लक्ष्य रह गया अधूरा और अगला दिन पूरी ताक़त से लक्ष्य की तरफ़ प्रयास / उस दौर का एक-एक दिन तैयारी का बहुत शिद्दत से जिया जाता है ।

जैसे निराला की रचना “सरोज स्मृति” के बारे में कहा जाता है कि उसको पढ़कर यह नहीं लगता कि यह जीवन पढ़ा गया वरन् कहा जाता है वह जीवन भोगा गया, वैसे ही यह जीवन है इन 100 दिनों का / बस फ़र्क़ यह है महाप्राण निराला ने वह लिख दिया इन पर कौन लिखेगा / इनमें से कई की मेहनत का कोई धनात्मक परिणाम कहाँ आने वाला ।

इलाहाबाद से ज्यादातर अभ्यार्थी हिन्दी माध्यम से परीक्षा दे रहे होते हैं / सामान्य अध्ययन के लिये यूनिक गाइड आती थी पर हिंदी माध्यम के छात्रों की अंग्रेज़ी कमज़ोर हुआ करती है, इसलिये वह पढ़ नहीं पाते थे / अंग्रेज़ी के समाचार पत्र नहीं पढ़ पाते थे / हिंदी के समाचार पत्र में लेख अच्छे नहीं आते थे / विश्व इतिहास में अच्छी किताबें हिंदी में कम थीं / यही समस्या दर्शन शास्त्र, राजनीति शास्त्र, नृ विज्ञान, मनोविज्ञान के विषय में भी थी ।

पर क्या करें , अब इसका कोई निदान तो उम्र के उस पड़ाव पर था नहीं । जो भी हिंदी में मिला उसी से काम चलाओ । योजना , कुरुक्षेत्र मैगज़ीन से । कुछ अनुवाद किया हुआ बाज़ार में मिल जाता था , पर उत्तम कोटि की सामग्री हिंदी माध्यम के सामान्य अध्ययन में अंग्रेज़ी की तुलना में कम मिलती थी । अंग्रेज़ी में लिखा हिंदी में अनुवाद कर लो पर उसमें समय बहुत जाता था ।

पर वह 100 दिनों का संघर्ष बहुत ही नायाब था । जज्बा बेशुमार होता है हर इलाहाबादी का । विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष रक्त मे समाहित हैं इलाहाबाद की एक विरासत की तरह ।

पता नहीं कितने महान नायकों का 100 दिनों के संघर्ष के क्रिस्से मैंने सुने हैं और मेरी तमाम पढ़े हुये क्रिस्सों, कहानियों से दिलचस्प है वह 100 दिन का सफरनामा जो इलाहाबाद में बहुतों ने जिया है भले ही वह सफल हुये हों या नहीं ।

तैयारी हो गई अब इंतज़ार उस भीष्म का जो कह रहे , आज मैं हरि को अस्तर उठवाऊँगा ही ।

यूपीएससी का परीक्षा कक्ष और आप सामने प्रश्न पत्र खुलता हुआ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 7

100 दिन तकरीबन हो गए । तैयारी भी हो गई । आप परीक्षा दे चुके । पेपर ख़राब तो न हुआ । बहुत अच्छा हुआ या अच्छा हुआ , इस पर मंथन चलता रहा ।

कई बार लगा यह तो रह गया लिखने को । यह लिख दिया होता तो बेहतर होता । यह सवाल ठीक से समझ न सका । कुछ अंश रह गया ।

सिविल सेवा में सवाल विश्लेषण की माँग करते हैं । वह परम्परागत तरीके के तो आते नहीं । वह आपमें एक विश्लेषक की दृष्टि की उम्मीद रखते हैं । आ गया मुगलों की दक्षिण नीति । आपने ठीक से तैयार किया था औरंगज़ेब की दक्षिण नीति पर कुछ अंदाज़ा था अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ का तो आप काम चला ले गए ।

तैयार किया था प्रारम्भिक राष्ट्रवादियों की उपलब्धियाँ पर आ गया 1858 से 1885 तक का राष्ट्रवाद । पढ़ा था राष्ट्रपति की शक्तियाँ और विवेकाधिकार पर आ गया राष्ट्रपति - प्रधानमंत्री का सम्बन्ध ।

पर आपने एक नियम सीखा था । जो पढ़ा है उसको कहीं न कहीं चिपका कर आना ही है । सवाल के जवाब में कहीं न कहीं पढ़ा हुआ मसाला घुसेड़ देना ही है । कुछ किन्तु परन्तु लगाकर अपनी बात कह देनी ही है ।

हकीकत यह है कि यह तरीका अनादि काल से सिविल सर्विसेज में चला रहा है और आज भी कारगर है । अगर आपने बेहतर ढंग से पढ़ा है तो आप परीक्षा में थोड़ा धूम कर आया सवाल भी सँभाल ले जाओगे ।

मुख्य परीक्षा का परिणाम फरवरी/ मार्च में आता था । अब तो इन्टरनेट पर सब त्वरित उपलब्ध है पर उस समय दिल्ली से पता करना होता था । नहीं तो फिर कोचिंग संस्थान के भरोसे । पर इस परीक्षा परिणाम पर कोचिंग संस्थानों की रुचि कम होती थी क्योंकि यह उनके बाज़ारवादी सिद्धांत से मेल नहीं खाता । 10,000 लोग परीक्षा दे रहे । 2500 के आसपास पास होते हैं । यह रिजल्ट लेकर आने में कौन सा प्रचार और नाम होगा । इसलिये कोचिंग संस्थान रुचि कम रखते थे पर देर सवेर आ जाता था ।

आपको परिणाम पता चला । सफलता एक नया जोश देती है । पर इस बार आपके घर वाले संयत हैं । वह हल्ला कम कर रहे । जैसा प्रारम्भिक परीक्षा में किया था हंगामा और परिणाम को अजान की तरह प्रसारित करने का राष्ट्रीय कार्यक्रम वह इस बार थोड़ा संयमित है ।

सब कह रहे थोड़ा शान्त रहो । लोग जान ही जाएँगे वक्त के साथ , नज़र लग जाएगी । अब जब पेपर में नाम आएगा तब सब जानेंगे ही । लोगों की आँख लग जाती है । हम तो बचपन से ही कहते थे , यह कुछ करेगा । यह एक साल का था तब सीढ़ियों से गिर गया था । यह मर कर जिया है । जिसने मौत को जीता है वह कोई आम तो है नहीं । यह दुख दरिद्र हमारा हर लेगा । अब इसके सेलेक्शन के बाद गुड़िया का बहुत अच्छा विवाह होगा ।

मामाजी भी मोटरसाइकिल पर चढ़ कर अगले दिन फटफटिया बजाते आ गए । दरवाजे से ही शोर करते हुये कहा, अरे भाई कलेक्टर साहब कहाँ है । इतना प्रेम कभी न चोकरा था । मामाजी जी आ गए और आते ही सारा इतिहास बखान दिया जब यह छोटा था मैं लेकर जाता था इसको घुमाने । श्यामा देवी भगवती प्रसाद में ऊँगली पकड़कर मैं ही ले गया था पहली कक्षा में नाम लिखाने । क्रसीदे गढ़ने वालों में कई चुनाव पूर्व के चुनाव विश्लेषक की तरह के थे जो कह चुके थे कि यह पार्टी तो उड़ गई पर हवा का रुख बदल गया है ।

मामाजी अपने साले की लड़की आपके पल्ले बाँधने का पूरा शकुनि प्लान तैयार रखे हैं मस्तिष्क में । लगे हाँथ इन्जीनियर साहब के रौब , रुतबा , सम्पदा का भी ज़िक्र कर दिया ।

पूजा -पाठ , प्रार्थना, गंगा स्नान का दौर शुरू हो गया । बँधवा वाले हनुमान जी के यहाँ मन्त्र मन गई । हे हनुमान जी सदा सहाय सवा मन लड्डू का प्रसाद चढ़ेगा बस कृपा हो जाए । हनुमान जी के महंत ने कह दिया कल्याण होगा । आप हनुमान जी को तो साष्टांग प्रणाम किये ही लगे हाँथ महंत को भी ।

जैसे - जैसे यह बात फैल रही एक नायक का जन्म होने लगा विभाग में , घर में , यूनिवर्सिटी रोड पर , छात्रावास में , डेलीगेसी में ।

अजय देवगन की दो मोटरसाइकिल पर चढ़ कर या दो घोड़े पर चढ़कर फ़िल्मों के पर्दे पर entry की क्या बिसात जो आपके चाल में आ चुकी है ।

एक नायक इंतज़ार में अपने साक्षात्कार की तिथि को और दिल्ली बेसब्री से कर रही प्रतीक्षा उसकी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग - 8

यह एक ऐसी परीक्षा है कि एक मामला निपटाओ दूसरी समस्या मुँह बाए खड़ी है । यह उस चक्रव्यूह की तरह है कि जयदरथ को निपटाओ तो दरोणाचार्य / दरोणाचार्य से हाँथ जोड़कर आगे निकलो तो कर्ण वह तो अर्जुन को मारने पर आमदा है तो तुम क्या हो । उनसे अनुनय विनय करके आगे बढ़ो दुर्योधन- शकुनि तो एक साथ हैं ही कहते हुये , आ भाँजे आ गया वह ।

अब नई समस्या इस साक्षात्कार की तैयारी की । आपको पता लगा कि सर सुन्दरलाल छात्रावास में अमित चौधरी सर हैं जो हर साल रिटर्न टिकट लेकर दिल्ली जाते हैं । उनका चयन नहीं होता पर साक्षात्कार कई बार दे चुके हैं । ऐसे ही मिश्रा सर हैं जो अल्लापुर में रहते हैं ।

आप पहले पहुँचे अमित चौधरी सर के पास । बताया कि सर मेंस पास कर गया हूँ । पहली बार इंटरव्यू फ़ेस करूँगा । आपका सहयोग और आशीर्वाद चाहिये । बधाई दिया । इधर - उधर की बात की । क्या किया है यह पूँछा । वैकल्पिक विषय पूछा । जैसा एक फ़िज़िशियन पूँछता है दवा देने के पहले कुछ वैसा ही जायज़ा लिया ।

वह ही आपका इंटरव्यू ले बैठे । यूपीएससी तो बाद में लेगी । पहला सवाल आपकी हाबी क्या है ?

बड़े अबोधपन से आपने कहा ,

यह क्या होता है सर ?

सर ने आँखों से आपके चेहरे का जायज़ा लिया और पूँछा
आपने मेंस का फार्म भरते समय देखा नहीं था वह कालम ?
आपने कहा , सर याद नहीं ।
वह अनुभवी हैं । अपना फार्म का फ़ोटोकापी रखे हुये हैं ।
निकाला कापियों के बीच से वह फार्म और दिखा दिया ।

आपने तो यह कालम भरा ही नहीं शायद
और अगर भरा तो याद नहीं ।

उन्होंने पूँछा कि इसकी फ़ोटो कापी है ?
आपने कहा , नहीं सर ।
अगला सवाल थोड़ा, कड़ाई से
क्यों ?

आप कोई जवाब देते , पूरा व्याख्यान -

यही तो समस्या है यहाँ पर । लोग सिर्फ़ अध्ययन पर ध्यान देते हैं । यहाँ अब इंटरव्यू
में अध्ययन का तो कोई खास काम है नहीं । वह तो परीक्षित हो चुका है । अब तो
व्यक्तित्व की परीक्षा है । यह पर्सनालिटी टेस्ट है ।

आप का व्यक्तित्व कैसा है ? ज्ञान से प्रशासन नहीं चलता । प्रशासन चलता है
व्यक्तित्व से , निर्णय क्षमता से , कामन सेंस से । अब आप सँभाले हो ज़िला । हो
गया दंगा । आप क्या करोगे ? यह इतिहास, यह मूल अधिकार, यह नई आर्थिक
नीति यह सब बाँचोगे वहाँ पर ?

इसके बाँचने में तो ज़िला उड़ गया । यह अंग्रेज बहुत समझदार थे । यह स्टील
फ़्रेम की ब्यूरोकरेसी उनकी बनाई हुयी है । 300 साल से ज्यादा शासन किये मुट्ठी
भर अंग्रेजों के सहारे ?

नहीं , यह स्टील फ़्रेम थी जिसके सहारे शासन चला । हमने क्या किया ?

यह देख रहे हो विश्वविद्यालय । इसको कौन बनाया ? अंग्रेज ?

नहीं , यही स्टील फ़्रेम के लोग । विजयनगरम हाल देखो टोपी गिर जाएगी । गणित
विभाग जाओ कितनी भी गर्मी हो लू नहीं घुसेगी ।

नाम अंग्रेजों का है पर काम किया है स्टील फ़्रेम ने ।

पर आप भी इलाहाबादी हो । आपकी रुचि तो उनके भाषण में है नहीं । आप समझा गए कि यह टाइम पास कर रहे आपको बैरन वापस भेजने का लक्ष्य लिये ।

आप तो आए हो पूँछने कि कुछ पता चले काम का । पर वह तो खाली बेफजूल का ज्ञान दे रहे ।

पूरी कोशिश के बाद दो चीज़ आपको मिली ।

समाचार पत्र पढ़ो, हाबी नहीं भी लिखी है तो भी हाबी कोई तैयार करो ।

आपने कहा कि सर कुछ डिस्कशन करने आ जाएँ कभी ?

वह एक सिरे से खारिज कर दिया । मैं तो दिल्ली चला जाऊँगा । जो एन यू में अनुपम के साथ कावेरी में रुकूँगा, इसलिये समय न दे पाऊँगा ।

आप फिर चिंतित हो गए । वह हाबी क्या भरी थी । बेवकूफ हूँ फार्म की फोटोकापी न कराई । मेरा क्या होगा जब इतना भी ध्यान न दिया । लगता है हाबी कुछ भरी थी पर याद नहीं आ रहा । पर हाबी भरी होगी ही क्यों जब कुछ है ही नहीं । पढ़ने और साइकिल चलाने के सिवाय और तो कुछ कभी किया नहीं । बचपन में मैं किरकेट अच्छा खेलता था । मुहल्ले की टीम का उप कप्तान था । स्पिन गेंदबाज़ था । उड़ा-उड़ा कर गेंद बाउंडरी के बाहर भेजता था । पर तब तो सारा घर सब सर पर उठा लेते थे लोग, जब मैं खेलने जाता था ।

हर बार एक ही बात पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब । काश वह खेला होता । अमित चौधरी सर की तरह वह भी मेरी हाबी होती । वह सर सुन्दरलाल छात्रावास टीम के कप्तान हैं । भले ही जुगाड़ से हैं पर हैं तो कह तो सकते हैं । मैं लिख भी दूँ तो क्या कहूँगा ? कक्षा ७ के बाद नहीं खेला पर मेरी यह हाबी है ।

सारा गुस्सा बेचारी माँ पर । वही हंगामा करती थी कि खेलो मत पढ़ो ।

इसी मनोदशा में आप घर पहुँचे तो पड़ोस की शर्मा आंटी आपके ही क्लास में पढ़ने वाली अपनी बेटी गीतिका को लिये आपके घर में आपका इंतज़ार कर रही ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग -9

आप घर पहुँचे । आप थोड़ा कम प्रसन्न हैं । बात कुछ बनी नहीं । कुछ खास बताया नहीं अमित चौधरी सर ने । शर्मा आंटी आपको देखते ही चालू हो गई । चापलूसी ऐसा करने लगी । वह चाह रहीं उनकी बेटी को भी कुछ बता दिया जाए । उसका भी

काम हो जाए । यूनिवर्सिटी में आप लोग साथ थे । उसने आपसे बेहतर अंक प्राप्त किया था यूनिवर्सिटी में । प्रारम्भिक परीक्षा में वह भी बैठी थी आपके साथ पर सफलता न मिली थी ।

आंटी ने देखते ही कहा बेटा कुछ इसको भी बता दो । आपकी बहन है । इसका भी भला हो जाएगा । मेहनती तो है यह और अच्छा किया भी है इसने यूनिवर्सिटी और कालेज में पर यह परीक्षा नहीं आ रही इसके नियंत्रण में ।

आप थोड़ा चापलूसी से खुश हो गये । आपने कहा कि आंटी हो जाएगा । यह अच्छी है पढ़ने में बस थोड़ा टिक्क होनी चाहिये । अब यह दीवार है धक्का मारो तो हटेगी नहीं पर अगर आपको पता है कि इसके नीचे पहिया लगी है और सही दिशा में धक्का मारो तब यह हिलना शुरू हो जाएगी ।

आंटी जी भी गज्जाट की हैं । वह भी डालडा के डिब्बों से तैराकी सीखी हैं । अंकल तो घर दफ्तर के सिवाय कुछ और जानते नहीं, सारा नियंत्रण आंटी का ही है । वह तेज हैं, मस्तिष्क भी कुशाग्र हैं । झट से बोली बेटा बस वही बता दो हम भी हाँथ लगा देंगे दीवार को हटाने में । इस साल आप चले ही जाओगे अगले साल यह भी पहुँच जाएगी अगर थोड़ा सहायता मिल जाएगी ।

आपने कुछ किताबों का नाम बताया । कुछ अपना ज्ञान बघारा । और कह दिया यह पढ़ो फिर बात करते हैं । आंटी ने आपकी माँ को कहा कि बहन जी आना घर कभी । आप से भी कहा कि बेटा आना घर पर हमारा भी घर तर जाएगा । यह कहकर वह बाहर निकली ही होंगी कि माँ का आदेश, खबरदार जो उसके घर गए । आज तक तो न बुलाया इतने परेम से । तिथि त्योहार पर भी जब कभी बुलाया तो बस खाना पूर्ति । अब बड़ा परेम उमड़ा है । आप अपनी माँ को जानते ही हो । एक कान से सुना दूसरे से निकाल दिया । आप एक दूसरी समस्या में परेशान हो कि कैसे इंटरव्यू साधें ।

अगले दिन आप पहुँचे मिश्रा सर के पास । वह आपको देखते ही बोले कि मैं आपका कल इंतज़ार कर रहा था । मुझसे कहा गया था कि आप आओगे मिलने । बधाई दिया । आपका कुशल क्षेम पूँछा । मेंस में कितने नंबर की उम्मीद है यह पूँछा पर आप तो परेशान हो “हाबी” वाली समस्या को लेकर । बड़ी भारी गलती हो चुकी है लिखा है कि नहीं लिखा है और लिखा है तो क्या लिखा है ।

आपने जैसे “हाबी” की समस्या शुरू की वैसे ही कहा मिश्रा जी ने, आप अमित चौधरी से मिल कर आ रहे क्या? आपने पूँछा आपको कैसे पता?

मिश्रा जी बोले , वह मेघनाद है । हर आदमी को एक ही सर्पबंध में बाँध देता है । अरे महाराज कहाँ आप उसके पास चले गये । यह हाबी-वाबी बड़े लोगों का खेल है । अंगरेज़ी स्कूल का ड्रामा है । हम लोग म्युनिसिपैलिटी स्कूल, सरकारी स्कूल वाले हैं । हम पढ़ लिये यही बहुत है ।

वह काल्विन ताल्लुक़ेदार से पढ़ कर आया है । एक तो उसको लगता है कि वह सबसे बड़ा काबिल है और सबसे बड़ा अभिजात्य है । मेरे साथ पिछले साल इंटरव्यू दिया था । मैंने कह दिया था आपको कुछ ख़ास नहीं आता । तबसे अपनी बातचीत बंद है । उसके पास नाहक गए आप महाराज ।

यह हाबी लिखी न लिखी क्या फ़र्क़ पड़ता है । न लिखा तो अब बता देते हैं । कौन सा राजदरोह कर दिया हाबी न लिखकर । आप बात सँभाल लेना कुछ कहकर । वह पूँछेंगे आपकी हाबी क्या है आप बता देना । यह थोड़े ही कहेंगे कि क्यों न लिखा । बेफजूल के सवाल में लगे हो ।

बहुत सुकून मिला यह सुनकर । लगा ज़िंदगी लौट आई ।

फिर पूँछा कि हाबी क्या बताऊगा?

मिश्रा सर पूरे प्रवाह में थे । बोले फ़र्ज़ी हाबी में फ़ैस जाओगे

एक ने कहा था किंचेन गार्डनिंग । पता चला जिस मकान में रहता है उसमें कोई जगह ही नहीं गार्डनिंग की । घुमा फिरा कर सँवालों में यह कहला लिया ।

एक ने कहा *bird watching..*

बोर्ड ने कहा चिड़िया देखते हो कि पढ़ते भी हो ।

एक ने कहा ज्योतिष में रुचि है । बोर्ड ने कहा अपना भविष्य बताओ , कुंडली देखकर , मैं वह अभी ग़लत कर देता हूँ ।

फिर पूँछा पृथ्वी और चाँद के बीच कितनी दूरी है ।

वह बोला लाखों लाख किलोमीटर ।

यह सब अमित चौधरी का बकलोलपन है । आप चक्कर में न पड़ें ।

चिंता न करो हम तुम चलेंगे मसूरी और अमित चौधरी के पास होगा रिटर्न टिकट यूपीएससी का । वह जून में फिर देंगे प्रारम्भिक परीक्षा ।

समझ में आ गया कि मामला सही रास्ते पर है । चिड़िया पिंजड़े में आ सकती है । बस थोड़ा ज़ौक़ की तरह बहादुर शाह ज़फ़र के क़स्तीदे गढ़ देते हैं । यह अमित चौधरी के प्रतिद्वंद्वी हैं । इनसे मसाला निकाला जा सकता है । आपने उनकी तारीफ़ के पुल बाँधने शुरू किये ।

सर आपकी हिंदी में पकड़ अनूठी है । सत्य प्रकाश मिश्र सर कहते हैं, एक छात्र के रूप में सबसे अधिक हिंदी आपको ही आती है । हर मेंस के आप महारथी हो । वह तो आप से रुकता नहीं । इस बार तो छप्पर फाड़ नंबर मेंस में होंगे । इंटरव्यू तो बस एक कवायद है । सेलेक्शन सुनिश्चित है ।

मिश्रा सर चने के झाड़ पर । खुशी का अतिरेक और फूल कर कुप्पा, बोले चाय पियोगे,

मैंने कहा, हाँ ।

मिश्रा सर चाय बनाने लगे और मेरा मस्तिष्क रणनीति में, कैसे इंटरव्यू का मटीरियल इनसे निकालू ।

पहली बार आशा जगी मटीरियल पाने की ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग -10

मिश्रा सर प्रसन्न थे । आपने पूरा समर्पण कर दिया था, मिश्रा सर के सामने । सर का शिष्यत्व ले लिया । खुश करने के लिये कह दिया कि सर आप आज दीक्षा दे ही दो । गुरु मंत्र कान में फूँक दो । पहले आया होता तो मेंस में कुछ और अच्छा किया होता ।

आप अभी भी “ हाबी ” की समस्या में परेशान हो । चाह रहे हो, इसका निदान हो जाए । यह समस्या खाए जा रही आपको । लग रहा कि यही हमको पूरी रेस से बाहर कर देगी । आपने फिर वही बात छेड़ी । सर हाबी का क्या करे ?

चाय की चुस्की के बीच मिश्रा सर ने पूँछा, “कुछ किया है कभी ? ”

आप बोले, सर कक्षा 7 तक क्रिकेट खेला है पर उसके बाद घर में इतनी तोड़ाई हुई मेरी उसी बल्ले से और उस शाम घर का चूल्हा भी उसी बल्ले से जला । उसके बाद से दो ही काम किया । साइकिल चलाया और पढ़ाई की । बाकी तो कुछ किया नहीं ।

मिश्रा जी बोले ऐसा नहीं है, कुछ तो किया होगा ? इलाहाबादी हो खून में ही खुराफ़ात है ।

जामवंत चाहिये हर हनुमान को, “ का चुप साध रहा बलवाना ” ।

आपके बारे में सुना है, आप अच्छा बोल लेते हो और यह मैं देख भी रहा हूँ आप मुझे चने के झाड़ पर चढ़ाए जा रहे हो ।

मैंने कहा , नहीं सर
जो भी कहा आपके बारे में दिल से कहा ।
मिश्रा जी बोले एक प्रतिभा हर इलाहाबादी के पास है - गप मारना । कह देना ,
“ I enjoy gossips ”

मैंने कहा , सर यह कैसे होगा ? यह तो थोड़ा ठीक न होगा कहना । मिश्रा मँझे हुये
खिलाड़ी थे । कई इंटरव्यू का अनुभव था । कौन सा बोर्ड अच्छा है ?
कौन क्या पूछेगा ?
कौन बोर्ड मेंबर जातिवादी , क्षेत्रवादी है ?
सब आँकड़ा है उनके पास ।

कहा , यह मत कहना । कह देना मेरी discussions में रुचि है । सामाजिक
मामलों , सामयिक विषयों में बातचीत करना अच्छा लगता है । हकीकत में यह हम
सबकी हाबी है भी ।
पर मैं संतुष्ट न हुआ । मैंने कहा सर कोई और हाबी ?

वह बोले बताऊँगा पर एक वचन दो दशरथ की तरह , किसी और को न बताओगे ।
मेरी प्रसन्नता की कोई सीमा न थी । मेरा रक्तचाप शायद 180 हो गया होगा
प्रसन्नता से । चेहरे पर लालिमा , कोई परम सुंदरी लड़की क्या धड़काएगी दिल जो
मिश्रा सर की वह लाइन धड़का गई ।

मैंने उनके पाँव पकड़ लिये कहा ,
गुरु जी बता दो । यह ऐहसान मैं ज़िंदा रहा तो पूरी शिद्दत से उतारूँगा हलाँकि गुरु
का ऐहसान आज तक कोई उतार नहीं सका है ।

मिश्रा सर धीरे से बोले , “हिंदी उपन्यास पढ़ना ” । यह सबके सटीक हाबी है ।
किसी को पता नहीं है । साफ़-साफ़ कहना इंटरव्यू बोर्ड में , “ हिंदी उपन्यास पढ़ना ”
। जब बोलना तब “हिंदी ”पर जोर देना ।

इससे यह हो जाएगा कि मैं अंगरेजी उपन्यास नहीं पढ़ता । मैं सिफ्ऱ हिंदी उपन्यास
पढ़ता हूँ । वहाँ सब अंगरेजी के करिंदे बैठते हैं , उनको हिंदी आती ही नहीं । आएगी
भी तो आपकी हिंदी अच्छी है सँभाल ले जाओगे ।

मेरा दिमाक शकुनि और कृष्ण से भी तेज चल रहा था । आज युद्ध जीतने का संकल्प कर चुका था ।

मैंने जितना भी विनय भाषा , मुद्रा , भंगिमा में संभव था , वह सब मिला डाला अपने में । मेरा विनय , भाव , संस्कार उस समय लक्ष्मण के राम के प्रति के संस्कार के तुल्य हो रहा था ।

मैंने कहा , सर यह कैसे तैयार होगा ?

उन्होंने राम दरश मिश्र की किताब “ उपन्यास एक अन्तर्रायात्रा ” निकाली , पूछा यह पढ़ा है ? मैंने कहा कि यह पढ़ा नहीं पर देखा है । उन्होंने कहा बस यह पढ़ लो काम हो जाएगा । मैंने उनकी किताब से underline भाग पढ़ा । बहुत ही अच्छा लिखा था । काम हो गया ।

प्रसन्नता अतिरेकिता की ओर । रास्ते में वापस आते समय मौर्य बुक स्टोर से वह किताब खरीद ली ।

बहुत बड़ा कॉटा निकल गया । दो रात से ठीक से सोया न था , इस चिंता से । बहुत प्रसन्न होकर घर वापस आया । हाबी की समस्या से निजात मिल गई । मेरी हाबी “ हिंदी उपन्यास पढ़ना ” । बोलते समय हिंदी पर ज़ोर देना । रात के स्वप्न में इंटरव्यू मेरा चालू हो गया , मुझसे पूछा आपकी हाबी क्या है , मैंने हिंदी पर ज़ोर देकर कहा कि “ हिंदी उपन्यास पढ़ना ” ।

सुबह की किरणें चीरती हुई मेरे कमरे में मामा जी का शोर पूरे घर में हीरा हलवाई की जलेबी लेकर आए थे , कह रहे माँ से कलेक्टर साहब को जगाओ , क्या पहनेंगे इंटरव्यू में यह फैसला हुआ कि नहीं । मैं ही ले गया था श्यामा देवी भगवती प्रसाद का यूनिफ्रॉर्म सिलवाने । मेरा हाथ शुभ है । इंटरव्यू का कपड़ा भी सिलवाऊँगा ।

ऐसी कहानी उस क्रपड़े की एक और समस्या ।

समस्या खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही ।

मामा जी के शोर से आँख खुल ही गई थी । तभी माँ ने आकर बताया वह आए हुये हैं और तुमको बुला रहे । मैं उठा और जाकर पारम्परिक अभिवादन किया और बैठते ही वह अपने अंदाज में आ गए । पता है यह परीक्षा कौन सी है ? 1853 तक इसको ईस्ट इंडिया कंपनी अपनी मर्जी से अपने लोगों को भर्ती करती थी । फिर परिवर्तन आया और एक प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन शुरू हुआ । परीक्षा लंदन में होती थी वह भी अंग्रेजी में । सत्येन्द्र नाथ टैगोर पहले भारतीय थे जो इसको पास किये । अंग्रेजों ने उम्र कम कर दी थी कि कोई भारतीय न जा पाए । कन्हैया लाल मिश्र और फिराक़ भी इसको पास किये थे ।

मेरे पिताजी की निगाहों की भाषा यह सुनकर मौन रहकर भी कह रही थी , इतना ज्ञान ? गौरैया गंगा स्नान कब से करने लगी ?

पर माँ का चेहरा लालिमा युक्त,
“अच्छा भैया , यह इतनी कठिन है ? ”

हाँ बहन , कोई छोटा काम नहीं है , बहुत बड़ा काम हुआ है । यह भगवती बाबू का बेटा जो मोहनलाल गंज का उप ज़िलाधिकारी है वह पीसीएस से है । अगर मेरा भांजा हो गया तो वह इसके अंडर में काम करेगा । भगवती बाबू की ऐंठ से ज्यादा भगवती बाबू की पत्नी की थी मुहल्ले में । जब भी उनका लड़का घर आता था तब वह उप ज़िलाधीश लिखी टुटही जीप में बैठ कर पूरे मुहल्ले में पो-पो करती थीं ।

माँ ने फिर पूँछ कुछ अविश्वसनीयता आवाज में रखे हुये कि वह मुन्ना के अंडर काम करेगा ?

अरे हाँ , बहन वह जहाँ से रिटायर करेगा वहाँ से यह ज़िंदगी शुरू करेगा ।

अच्छा भैया , यह तो हमको पता ही न था । हनुमान जी सदा सहाय । मेरा प्रदोष, एकादशी का व्रत संकल्प सब फलित हुआ ।

मामा जी ने एक लाइन और जोड़ दी । अगर वह ठीक से काम न करेगा तो मुन्ना सस्पेंड भी कर सकता है ।

माँ बोली मतलब उसकी जीप चली जाएगी ?

माँ को भगवती बाबू की पत्नी की जीप से बहुत शिकायत थी ।

मामा जी बोले , बहन अब लाल बत्ती की गाड़ी अर्दली के लिये तैयार रहो ।

माँ बोली , अरे भैया अभी कहाँ । अभी तो इंटरव्यू है । बहुत से लोग बैरंग चले आते हैं ।

पर बँधवा वाले हनुमान जी सदा सहाय ।

मामा जी आ गए मुद्दे पर ।

कब है इंटरव्यू?

मैंने कहा, नहीं पता पर सुना है 22 मार्च से शुरू होगा। पहले अंग्रेजी वालों का होगा फिर हिंदी का। पर लगता है अभी एकाध महीना लगेगा हमारा नंबर आने में।

मामा जी ने पूँछा, क्या पहनोगे सोचा है?

मैंने कहा - नहीं।

मामा जी ने कहा टाई पहनना सूट के साथ।

मैंने कहा सूट इस गर्मी में?

वह बोले यूपीएससी में हाल एयरकंडीशन्ड होता है जहाँ इंटरव्यू होता है। वहाँ गर्मी नहीं लगेगी।

मैंने कहा, न तो आज तक सूट पहना न टाई, फिर एकाएक कुछ अजीब न लगेगा?

मामा जी बोले हर काम पहली बार ही होता है। आपको थोड़ा बेहतर दिखना चाहिये। हर माँ को अपना बेटा सुंदर ही लगता है। बोली बहुत अच्छा लगेगा और काला टीका भी लगा लेना।

मैंने कहा, ऐसा करो मुझे रामलीला का जोकर ही बना दो।

मामा जी बोले, अगर सूट न भी पहनो तो टाई ज़रूर पहनो।

पर मैंने टाई कभी पहनी ही नहीं। मैं सहज नहीं रह पाऊँगा टाई में।

मामा जी ने कहा अभ्यास करना पहन कर हो जाएगा और कपड़ा यह समराट, नील, रमेश टेलर से न सिलाना। रोब, रैमसन, फ़ैशन से सिलाना।

बताना मैं लेकर चलूँगा। यह कहकर मामा जी चले गये।

मैं अपना पढ़ने के काम में लग गया।

शाम को मिश्रा सर के पास गया। जैसे ही कहा कि सर टाई पहननी चाहिये क्या इंटरव्यू में?

मेरा इतना कहते ही बोले, महाराज लगता है फिर आप अमित चौधरी के पास चले गये। वह मेघनाद है पहले सर्पपाश चलाता है फिर शक्ति बाण। वह आपको ले डूबेगा। आप जब तक अपना बिगाड़ न लोगे न सुधरोगे।

मैं यह समझ गया था कि दो धरूव हैं यहाँ पर। वैसे तो कई स्वतंत्र सत्ताएँ हर छात्रावास में हैं पर यह दो तगड़े धरूव हैं। गुट निरपेक्षता से कोई फ़ायदा नहीं होगा।

। नेहरू की गुटनिरपेक्ष की नीति का मैं आलोचक था । अतः फैसला किया अपनी प्रतिबद्धता मिश्रा सर के साथ पूर्णतः व्यक्त करने की । मैंने मामा जी का पूरा वार्तालाप बता दिया । और कहा आप जो कहेंगे मैं वही करूँगा ।

मिश्रा सर मेरी साफ़गोई और स्पष्टवादिता से खुश हुये और कहा कि आप लगाओगे टाई गला फँसा -फँसा लगेगा । आपका सारा ध्यान टाई पर रहेगा । असहज होकर आप इंटरव्यू दोगे । सारा मामला ख़राब हो सकता है । मैंने कहा, आपका आदेश सिर माँथे, टाई नहीं लगाऊँगा ।

मेरा दिमाक रणनीति बना रहा था । मिश्रा सर के धरूव मैं एक रणनीति के तहत शामिल हुआ था । अब वक्त आ गया था रणनीति के अगले चरण का । मटीरियल इंटरव्यू का कैसे निकाला जाए । मैं अपनी मुहरें सँभाल - सँभाल कर चल रहा था । एक मुहर चलता था दो और सोचता था । मिश्राजी को आभास न हो पाए मेरी चाल का इसका पूरा ध्यान रखता था ।

मैंने भी कोई कच्ची गोलियाँ न खेली हैं । डालडा के डिब्बों से न केवल तैराकी सीखी है साथ ही सरस्वती घाट से जमुना पुल और संगम भी गया हूँ ।

संभव हो सकता है मुझको हराना पर आसान न होगा मुझको हराकर चैन से जीना, मैं लौटकर फिर आऊँगा । उन्हीं के हथियारों से उनको ही मारूँगा, बस इनका थोड़ा मटीरियल मिल जाए । आत्मविश्वास आ रहा था धीरे - धीरे ।

मिश्रा सर और अमित चौधरी को ही पछाड़ने का संकल्प मिश्रा सर के सामने ही मन ही मन कर लिया । इससे बेखबर पूरा ज़माना ।

कल चक्रव्यूह मैं बनाऊँगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग -12

मेरा चक्रव्यूह बन रहा था । मैं कई दिन से इस पर काम कर रहा था । मैं मिश्रा सर के सबसे मज़बूत योद्धा पर नियंत्रण करने जा रहा था । उसी योद्धा पर धावा चक्रव्यूह के निर्माण का लक्ष्य था । चक्रव्यूह का पहला द्वार, वहाँ पर जयदरथ का नहीं दरोणाचार्य का मैंने इस्तेमाल किया ।

पहले ही द्वार को सबसे मज़बूत बनाया मैंने ।

मैं अगले दिन मिश्रा सर के पास गया । और उनको एक कापी अपनी दिखाई । पूँछा सर यह कैसा है ?

उन्होंने पढ़ा और पूँछा आप हिंदी विभाग के प्रोफेसर सत्य प्रकाश मिश्रा सर के पास गए थे क्या ?

मैं समझ गया कि चक्रव्यूह काम कर गया । मैंने फ़ैसला किया था कि हर वाक्य सम्भाल-सम्भाल कर बोलूँगा ।

मैंने कुछ देर का मौन रखा , उनके चेहरे को पढ़ने का प्रयास करता रहा । जैसे-जैसे वह पढ़ते जा रहे थे , मुझे आभास हो रहा था कि वह विस्मित हो रहे थे जो भी उसमें लिखा है ।

मैंने कहा कि सर आपने सत्य प्रकाश सर का नाम क्यों लिया ?

आप तो जानते हो , मैं आपके अलावा किसी और के पास नहीं जाता । उनके पास जाता तो आपको साथ लेकर जाता । कम से कम आपको तो बताता ही ।

इस शहर में जितने लोग मेंस पास किये हैं सब फ्राड ही बात करते हैं । कोई सही नहीं बताता । जाते हैं उत्तर तो बताते हैं दक्षिण । आपके अलावा सब भ्रमित करते हैं । और शहरों में ऐसा नहीं है । दिल्ली वाले मिलकर शिकार करते हैं । इसलिये वह आगे जा रहे । हम लोग आपस में ही लड़ रहे और आपस में ही कट मर जाएँगे । अरे आप एक ही सीट तो लोगे । दूसरी हमको लेने में मदद करो । शहर का नाम रोशन होगा । ए एन झा वाले तो पूर्ण अभिजात्य का नाटक करते हैं । उनको लगता है यह परिक्षा सिर्फ़ उनके लिये है । सिर्फ़ उनको गौरव पाने का हक्क है । आपने सर सहारा दिया बड़ी कृपा की ।

मिश्रा सर ने पूछा इसका जवाब बनाया है क्या?

मैंने कहा - हाँ सर ।

वह कहाँ है ।

मैंने कहा , वह घर पर है सर ।

मिश्रा सर अपनी चाल चलने लगे । कैसे वह जवाब हासिल करें ।

मैंने सारी किताबें उपन्यास पर पढ़कर हाबी पर सवालों की शृंखला बनायी थी । हमारी और मिश्रा सर की हाबी एक ही थी “ हिंदी उपन्यास पढ़ना ” । गोपाल राय , राम दरश मिश्रा , राम स्वरूप चतुर्वेदी का लिखा मटीरियल पढ़ा । उपन्यास का

करमिक विकास पढ़ा और जितने संभावित प्रश्न बन सकते थे सब लिख डाले थे । वहीं उनको दिखा दिया । कई दिनों की मेहनत और लगन उसमें साफ़ दिखाई दे रही थी । मिश्रा सर बोले कि इतनी ईमानदारी से अपना मटीरियल कोई नहीं देता । तुमने दे दिया, यह बड़ी बात है । हाबी की समस्या तकरीबन तुमने हल कर दी ।

मैं समझ गया कि पहला द्वार दरोणाचार्य का था वह स्टीक गया । अब दूसरे द्वार पर कर्ण का प्रयोग करके यहीं युद्ध समाप्त करते हैं, क्यों अंतिम द्वार तक युद्ध लेकर जाएँ ।

मैंने कहा, सर आप गुरु हो मेरे । जब कोई मेरा हाँथ न पकड़ रहा था आपने लहरों में मुझे सहारा दिया । आपसे झूठ बोलना पाप है । मैं दूसरों की निगाह में गिर कर तो उठ

सकता हूँ पर अपनी निगाह में गिर कर नहीं उठ सकता ।

मिश्रा सर गदगद हो गए । बोले तुम बहुत भोले हो, यहाँ शहर में इस समय बाघ घूम रहे जो तुम्हारा शिकार कर लेंगे हल्का सा भी कमजोर पड़े अगर तुम । किसी को मत बताना जो पढ़ रहे । हम और तुम मिल कर तैयारी करेंगे और इस बार साथ - साथ मसूरी चलेंगे ।

मेरी खुशी की सीमा ही न रही । चक्रव्यूह सफल रहा । मैंने उनके पैर पकड़ लिये । कहा सर तैयारी करा दो । बहुत ऐहसान होगा । हर सुबह माँ नई उम्मीदों से जगती है । बहुत तकलीफ़ सहकर उसने पढ़ाया है । उसको नाउम्मीद नहीं करना चाहता ।

सर भी भावुक हो गए । वह बोले, तुममें कई ख़ास बातें हैं । तुम्हारा होने का प्रबल संयोग है । मैंने कहा सर क्या ख़ास है मुझमें ?

मिश्रा सर बोले, जब तुम अपनी बात कहते हो तो तुम्हारे माँथे पर लकीरे बनती हैं । यह तुम्हारे आत्म विश्वास को व्यक्त करती हैं । मैंने उनके कमरे में ही माँथे पर बनती रेखाओं को देखा । माँथे की लकीरें भाग्य ही नहीं विश्वास भी लक्षित करती हैं यह पहली बार पता लगा ।

उस पूरी शाम मैं माथे की लकीरों को ही आइने में देखता रहा ।

रात सो गया, सुबह उठा तो मिश्रा सर मेरे घर पर ।

सुदामा के द्वार पर कृष्ण । प्रसन्न, मुदित मन । चक्रव्यूह पूरी तरह सफल ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 13

मिश्रा सर को सुबह-सुबह देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ । मैंने माँ को आवाज़ दी । अब माँ भी मेरे एक आवाज़ पर हाजिर हो जाती थी । अब वह कोई उलाहना न देती थी । मेरा रौब-रूतबा घर में बढ़ गया था । शाम को पिताजी भी आते थे तो मुझे दृढ़ते थे । ज्यादातर मैं पढ़ता हुआ ही पाया जाता था । छोटे भाई-बहन भी अपने परिचितों में कहानी गढ़ते रहते थे ।

माँ आयी मैंने मिश्रा सर का परिचय कराया । सर ने पाँव छुयो माँ के । मिश्रा सर के बारे में मैंने पहले से सबको बताया हुआ था । माँ भी बोली हम मेरे एक नहीं दो-दो बेटे IAS होंगे । कहीं क्या खाओगे ? मिश्रा सर ने कहा, यादव टी स्टाल से चाय पीकर आया हूँ । माँ ने कहा, ऐसे थोड़ी चलेगा । पहली बार आये हो । माँ चली गई चाय पकौड़ी बनाने और यहाँ मेरी और मिश्रा जी की मानसिक शतरंज की बिसात बिछ गई ।

मुझे लगता था मेरी चाल की उनको समझ नहीं है पर ऐसा न था । उनका नाम बद्री विशाल मिश्रा उनके बाबा ने कुछ सोचकर ही रखा होगा । पूत के पाँव पालने में ही पहचाने जाते हैं । उनके बाबा ने यह नाम “बद्री विशाल” वह पाँव देखकर ही रखा होगा ।

उन्होंने आते ही दाग दिया,
“जवाब कहाँ है हाबी के सवाल का ?”

मैंने एक कापी निकाली और पूरे सवाल का जवाब उनको दे दिया । वह बोले, आप मुझे इसको पढ़ लेने दो इत्मिनान से । मैंने कहा, सर आप पढ़ लो । मैं चाय ले आने चला गया । चाय पकौड़ी लाया । मैं चाय-पकौड़ी में लगा था वह पढ़ने में । उनकी तल्लीनता तारीफ के लायक थी । वह बोले, “अच्छा लिखा है । कहो तो मैं ले जाऊँ ? ”

मैंने कहा कि, सर मैं शाम को फोटो कापी कराके दे जाऊँगा । पर वह बद्री विशाल थे । कहाँ इंतज़ार शाम तक का करेंगे । वह तो दिन में ही घोट मारेंगे ।

वह बोले शाम को थोड़ी देर से आना । बहुत अराजक तत्व शाम को आते हैं पूँछने के लिये । मैं “ना” तो किसी को कहता नहीं । उन सबके सामने गंभीर बात तो हो नहीं सकती । अकेले मैं विस्तार से गंभीर बात होगी । मैं बहुत प्रसन्न हुआ । मन माँगी मुराद पूरी हुई । वह मेरा नोट्स लेकर चले गये । कहा दस बजे रात को आना । तब अराजक तत्व नहीं रहेंगे ।

मिश्रा सर को हर इलाहाबादी की तरह अपनी तारीफ़ सुनना अच्छा लगता था । वह जिसे अराजक तत्व कह रहे थे अगर वह चार दिन न आएँ तो इनका खाना न पचे । अब सरकार तो सम्मान देने से रही । तीन बार इंटरव्यू से बैरंग वापस आ चुके हैं । मेंस के तो भीष्म पितामह हैं । इच्छा मृत्यु का वरदान है पर इंटरव्यू इनसे सधता नहीं । अब यही इलाहाबाद के नये - नये अभ्यार्थी हैं जो अपने स्वार्थ में इनके क़सीदे गढ़ते रहते हैं । किसी को तम्बाकू का नशा है तो किसी को बीड़ी का इनको नशा है क़सीदे सुनने का । अपने को क्या, कुछ दिन चापलूसी हम भी कर लेते हैं । मुझको समझ ही नहीं आ रहा था इंटरव्यू कैसे सँभाले । यही पालनहार दिख रहे थे ।

शाम दस बजने का नाम ही नहीं ले रही थी । मैं बेचैन घड़ी देख रहा था ।

आखिर वह घड़ी आ ही गई । मैं पहुँचा मिश्रा सर के पास । उन्होंने मेरी कापी वापस की । मैं सोचा कुछ गंभीर बात करेंगे पर इधर-उधर की बात करके दो - चार फालतू सा मटीरियल देकर टरका दिया । कहा न्यूज़ पेपर पढ़ो । मैंने बेशर्म होकर कहा, सर पिछले साल का कुछ मटीरियल है इंटरव्यू का ? सुना है आप दिल्ली गये थे पिछले साल वहाँ का कुछ मसाला होगा, वहीं दे दें ।

मिश्रा सर बिफर गए । यह कौन अफ़वाह फैला रहा । मैं एक सप्ताह के लिये गाँव गया था मेरी पत्नी की तबियत ख़राब थी और लोग हल्ला कर दिये कि मैं दिल्ली कोचिंग करने गया था । लोग कह रहे कि कोचिंग किये दिल्ली जाकर तब भी न हुआ ।

मामला बिगड़ गया था । उनका ख़राब मूड़ देखकर मैंने कहा, सर जो सुना वही कह दिया मैं तो इस खेल में नया हूँ । तकदीर से प्रारम्भिक परीक्षा पास की है वहीं तकदीर में से काम की । पिता का कर्म था, माँ का पुण्य था नहीं तो मेरे ऐसा छात्र मेंस पास कर जाए यह कहाँ संभव है ।

मैंने आज्ञा ली साइकिल पर बैठा बहुत भारी मन से जिस चक्रव्यूह को मैं सफल मान रहा था वह एक झटके में उड़ गया ।

पूरे रास्ते मन में ही कहता रहा कि सब लोग स्वार्थी हैं परमार्थ ख़त्म हो चुका है ।

इतने में मेरी उपचेतन से आवाज़ आयी,

“ अपने को तू देख पहले ? शर्मा आंटी की बेटी गीतिका को प्रारम्भिक परीक्षा में फेल किसने करवाया ?

तूने ।

वह बोली, इतिहास ले लेती हूँ मैं भी तुम मदद करना । तुमनें वह किताबें न बतायी जो तूने पढ़ी । उसको भारतीय विद्या भवन की सीरीज़ पढ़वाई तूने पढ़ी NCERT

और वी के अग्निहोत्री । उसको अयोध्या नाथ सिंह पढ़वाया और खुद क्या पढ़ा बिपिन चन्द्र । पहले अपने गिरहबान में झाँक तब दूसरे को दोष दे “ ।

मैंने अपने मन में ही खुद से कहा कि मैंने किसी का ठीका लिया है क्या? उपचेतना ने कहा चेतना से, “बद्री विशाल ने कोई पिछले जन्म में ऋण लिया था क्या तुमसे ? जैसी करनी वैसी भरनी । अब भोगो ” ।

वाक्रई काम गलत किया था मैंने । उसको सही न बताया था । पश्चाताप हो रहा था । अब उस दर्द का एहसास हो रहा था जो मैंने भी दिया था किसी को ।

पर बगैर कोई ओर - छोर जाने कैसे तैयारी करें ? दिल्ली जाकर तैयारी करने की हालात न थी मेरी । किसी तरह इंतज़ाम करके जाओ भी तो वहाँ अंग्रेज़ी में पढ़ाते हैं । सामान्य अंग्रेज़ी पास करने को लाले पड़े थे अब वह अंग्रेज़ी में पढ़ाया क्या समझ आएगा ।

एक सप्ताह से ज्यादा ख़राब हो गया , कुछ काम बन नहीं रहा । अमित चौधरी के पास जाओ तो वह कुछ बताने से रहा । ए एन झा छात्रावास से इंटरव्यू तो कई दे रहे पर वह तो बाहरी को घुसने नहीं देते । उनका बस चले तो नियम पास कर दें, ए एन झा छात्रावास के बाहर के लोगों का सिविल सेवा में प्रवेश वर्जित है ।

क्या करूँ?

सहसा अंदर से आवाज़ आई,

बद्री विशाल ने तालाबों में तैराकी सीखी है , तूने यमुना की गहराइयों में डालडा के डिब्बे से । हर सिंकंदर का पोरस होता है और नेपोलियन ऐसे अहंकारी का वाटरलू । चल कुछ ऐसी चाल और मार उसको उसी के हथियार से ।

चक्रव्यूह विफल रहा तो क्या हुआ कमल व्यूह बना ।

अब कमल व्यूह मुझसे बनने से तो रहा । सारा मसाला तो दे दिया जो भी इस अकिञ्चन के पास था ।

एकाएक दिमाक कौँधा दरोणाचार्य मिल गये कमल व्यूह बनाने के लिये ।

पर रात बहुत निराशा में बीती ।

अगले दिन चल दिया दरोणाचार्य के पास कमल व्यूह बनाने के लिये ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 14

बद्री विशाल मिश्र ने मेरे सारे अरमानों को नेस्तनाबूत कर दिया । अब किया क्या जाए ?

जब घर आओ तो मौसा जी की फटफटिया खड़ी मिलती थी । वह जाते समय धक्का मारने पर स्टार्ट होती थी । बस वही कलेक्टर साहब - कलेक्टर साहब । मामा जी का एक सूतरी कार्यक्रम सिविल लाइन चलो A to Z से कपड़ा लेकर सामने फैशन टेलर से सिला लो । टाई ज़रूर पहनो ।

बहन भी समझदार हो गई थी । वह भी यौवन की तरफ बढ़ चली थी । भावनाएँ उसके अंदर भी समय के साथ जन्म ले चुकी थीं । सब घर में कहते थे , मुन्ना का चयन हो जाएगा तब इसका अच्छा विवाह होगा । वह मुझसे छोटी ज़रूर थी पर विश्वविद्यालय पहुँच चुकी थी । वह भी एक बेहतर पति या कहें एक सर्वगुण संपन्न पति के सपने देखने लगी थी । यह हर लड़की देखती ही है अब तो उसके सपनों को पर मिल गए थे । जब रात में गंगा शांत होकर सोती थी तब उसकी सोता - जागती आँखों में ख्वाब लहरों का शक्ल लिये हिलोरे लेते थे । ख्वाब तो सब देखते हैं ताबीर मिले न मिले । पर वह ख्वाब देख रही थी जिसके ताबीर की उम्मीद मुझसे निकल कर जाती है ।

माँ को क्या पता कि मैं किस समस्या से जूझ रहा , वह तो बस एक ही रट लगाए हुये अब दुःख- दरिद्र सब दूर होगा , बँधवा वाले हनुमान जी सदा सहाय । यह बँधवा वाले हनुमान जी तो बस लेटे हैं । उनको मेरी क्या सुधि । हज़ारों रोज़ माथा टेक रहे पर माँ को लगता है , नहीं हनुमान जी के पास कोई काम नहीं सिवाय मुझे IAS बनाने के ।

मैं सोचने लगा कि क्या करूँ ? किसके पास जाऊँ ? यह बद्री विशाल तो फ़राड़ निकला । इसके पास बहुत मटीरियल है पर दे नहीं रहा । चलो , मत दो मटीरियल यह ही बता दो क्या पढँ , कैसे पढँ ?

पर यह तो बस हर बात पर एक बात कि समाचार पत्र पढ़ो । वह पढ़ता तो हूँ पर उसमें से कितना सवाल बनेगा ? अगर समाचारपत्र से ही IAS बनना है तो टी की और रेडियो के समाचार पत्र वाचक को IAS बना दो , नहीं तो संपादकीय लिखने वाले को ।

मैं इतना भी बेवकूफ़ नहीं जितना बद्री विशाल मिश्र समझते हैं । मैंने भी दुनिया देखी है , भले ही उनसे कम ।

पर करूँ क्या ? कल कह तो दिया , खुद से , कमल व्यूह बनाऊँगा पर कैसे बनेगा वह ? इसको प्रभावित करना ज़रूरी है । इसके अलावा किसी के पास इतना अनुभव नहीं है । यह पिछले साल दिल्ली जाकर दो-दो कोचिंग किये थे । यह घर से मज़बूत है

/ खेती अच्छी खासी है / खानदान में पुरानी ज़मींदारी रही है / धन की कोई समस्या नहीं है / क्यों नहीं करेगा कोचिंग जब तीन साल से इंटरव्यू दे रहा , पर सबसे झूठ बोलता है कि मैंने कोई कोचिंग नहीं की ।

इनका और अमित चौधरी का झगड़ा वहीं कोचिंग में हुआ था । पर यह कहते हैं , मैं नहीं गया था कोचिंग । अमित चौधरी कहते हैं , मैं नहीं गया था । पर गए दोनों थे ।

पता नहीं क्या मिलता है लोगों को झूठ बोलने से ? क्या कोचिंग में जाकर आप पास किये परीक्षा तो कोई पाप किया ? इतना अहंकार है कि यह भी स्वीकार नहीं करते कि मुझे किसी ने सिखाया है ।

मैं तो सरे आम कहूँगा कि मैंने किससे - किससे पूँछता था । मैं क्यों झूठ बोलूँ ? अगर मैं चयनित हो गया तो एक नए सच की परम्परा की शुरूआत करूँगा । सब सच बताऊँगा । इलाहाबाद के प्रतियोगी परीक्षाओं के क्षेत्र से झूठ , अहंकार , और ईर्ष्या के वातावरण का अंत कर दूँगा ।

माँ तो माँ ही होती है । वह भाँप गई कि कुछ समस्या है । बोली क्या बात है ? कल से परेशान हो , कुछ हुआ क्या ? अब क्या बताऊँ उसको ?

पर उसका चेहरा देखते ही एक नया संकल्प जन्म लेने लगता है । पता नहीं ऐसा क्या होता है हर माँ के चेहरे में जो कहता है ,

“मेरे खून से मेरे हौसलों को पीकर जन्मा है तू । सिकंदर नहीं उससे भी आगे है तू ” ।

मैंने उससे कहा , कुछ नहीं देर रात तक जगा था मैं । उसने कहा देर तक मत जगा करो ।

उसके जाते ही उसके चेहरे ने नई संकल्प शक्ति दी । कमल व्यूह बनाकर बद्री विशाल से मटीरियल निकालने की ।

अगला दिन निर्णायक होने वाला था । पूरा गेम अब मेरे हिसाब से चलने वाला था , हलाँकि इसकी खबर मुझको न थी लेकिन इतिहास में यह दर्ज था , बस मुझे उससे साक्षात्कार करना था ।

मैंने अपना ब्रह्मास्तर चला दिया था पर वह तो कोई काम न आया । एक सप्ताह की मेहनत “ हाबी ” पर लंबा सवाल बनाया , उसका जवाब बनाया । कोशिश की मिश्रा सर को प्रभावित करके कुछ अपना भला कर लूँ । मैं भी कोई दूध का धुला नहीं हूँ । मैं भी कोई अपना मटीरियल निःस्वार्थ भाव से न दिया था । मैं भी कुछ आकांक्षा लिये हुये था । पर वह बदरी विशाल तो बहुत घाघ निकला । तारीफ की मेरी झूठी-सच्ची और मेरा मसाला लेकर निकल लिया । मुझे कुछ भी न दिया ।

दया- धर्म तो जैसे इस धरती से उठ ही गया है । यह सब देश सेवा क्या करेंगे ? जब यह हम गरीब , निःसहाय , बेसहारा को ही चूना लगा गया तब सरकार को चूना लगाने मैं तो कोई देरी न करेगा । ठीक ही है , ऐसे लोगों को इंटरव्यू से बैरंग वापस कर दिया जाता है । यह इसी लायक है ।

अमित चौधरी को गाली दे रहा । पर खुद क्या कर रहा , यह भी तो देखे ? ए एन ज्ञा वाले बेहतर हैं । वह कम से कम ईमानदार तो हैं । न लेते हैं , न देते हैं । अपने काम से काम । आप कहते रहों कि वह मदद बाहरी की नहीं करते । पर आप किसकी करते हो , यह तो बताओ ।

यही सोचते हुये मैं पहुँच गया कमल व्यूह का निर्माण करने आधुनिक दरोणाचार्य श्री सत्य प्रकाश मिश्र सर के पास । वह हिंदी के महान स्तम्भ थे । बहुत ज्ञानी , बहुत अच्छे विचारक । मैं मेंस के समय उनसे मिल चुका था ।

उनको परिचय दिया , बताया मेंस पास किया है , अभिवादन किया ।

वह बोले इंटरव्यू में मैं क्या मदद करूँगा । वहाँ तो कोई हिंदी पूँछता ही नहीं । इंटरव्यू बोर्ड में जो बैठते हैं वह सब बाबू होते हैं और उनको सिवाय अंग्रेजी के और कुछ आता ही नहीं ।

मैंने कहा कि सर मेरी हाबी है , “ हिंदी उपन्यास पढ़ना ” । उस पर थोड़ा मदद हो जाए ।

वह बोले

“पहले यह बताओ , यह आपकी हाबी है या आपने यह हाबी लिखी है सिफ़ “ ?

इसी प्रवाह में कहा ,

“यह कैसी हाबी है ? अरे भाई हाबी होती है पढ़ना , चलो माना कि पढ़ने में आप की रुचि है गद्य पढ़ना या पद्य पढ़ना पर ऐसा भी होता नहीं जो पढ़ता है वह सब पढ़ता है । आपने कोई संकल्प लिया है क्या कि मैं सिफ़ उपन्यास पढ़ता हूँ । क्या नाराज़गी आपकी पद्य से , काव्य से ? यह हिंदी क्यों जोड़ा आगे , उपन्यास के ? कहना यह चाह रहे हो कि अंग्रेजी में मैं निरा निरक्षर हूँ ? क्यों खुद ही लिख रहे हो अपनी

निरक्षरता ? चुप रहते इस मुद्दे पर । वह इंटरव्यू में जो बाबू बैठते हैं वह सब बर्दाश्त कर लेंगे पर अंग्रेज़ी का अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे । आप अंग्रेज़ी को अपमानित कर रहे हो यह लिखकर । इसका दो मतलब हुआ , एक मुझे अंग्रेज़ी नहीं आती या मैं अंग्रेज़ी पढ़ना नहीं चाहता । अब भारत देश में यह कोई कहने से रहा कि मुझे अंग्रेज़ी नहीं आती । पुरे गर्व से कहेगा मुझे हिंदी लिखने में थोड़ी दिक्कत है पर बोल लेता हूँ । *But I am more comfortable in English* . अब दूसरा अर्थ तो अंग्रेज़ी का अपमान कर रहे हो कि मुझे अंग्रेज़ी आती है पर पढ़ता हूँ सिर्फ़ हिंदी उपन्यास । ख़ैर अब जो लिख दिया तो लिख दिया , मुझसे क्या चाहते हो ? “

इतनी ईमानदारी और बेबाक़ी से सर ने अपनी बात कही और फिर मदद का आश्वासन, ऐसा इलाहाबाद का ही अध्यापक कर सकता है ।

पूँछा उन्होंने क्या- क्या पढ़ा और तैयार किया है ?

मेरे पास अभी तक इंटरव्यू की तैयारी के नाम पर वही हाबी पर बनाए सवाल और उसके जवाब थे और कुछ पेपर की कटिंग थी ।

वह सवाल जवाब दिखाया । वह पढ़ते समय पूँछा , क्या-क्या पढ़ा इसके जवाब लिखते समय ?

मैंने बता दिया जो पढ़ा था । उन्होंने जवाब पढ़ा पर कोई प्रतिक्रिया न दी । एक किताब निकाली । वह किताब आउट आफ प्रिंट थी । दे दी और कहा इसको भी पढ़ लो और पढ़ कर वापस कर देना । जैसे ही चलने को हुआ उन्होंने कहा , रुको -रुको !!!!

एक तक़रीबन 100 पेज की व्याख्यानमाला (lecture series) दी जिसमें स्वतन्त्रता के बाद के हिंदी लेखन पर कई नामी लोगों के विचार थे । उसी में सत्य प्रकाश मिश्र सर का उपन्यास पर था ।

कहा पढ़ लो यह सब । प्रश्न तो ठीक हैं , उत्तर एक बार फिर से लिखो । आपके हाबी वाले अंश पर काम कर देगा । तैयार करके आना तब बात करते हैं , अभी क्या बात करें । याद करके मेरा यह सब लौटा देना यह सब जो ले जा रहे हो । मैंने चरण स्पर्श किया और चल दिया । बाहर निकलते ही एक जगह बैठ कर पढ़ने लगा सर का लेख । वह अद्भुत था ।

अब एक सवाल मन में कि कहीं बदरी विशाल मिश्र मुझे गलत हाबी में फँसा तो नहीं रहे ? सर ने तो यह हाबी एक सिरे से ख़ारिज कर दी ।

एक बार मन आया कि मिश्रा सर को छोड़ देता हूँ , खुद ही तैयार करता हूँ । पर खुद तैयार क्या करूँ , यह पता ही नहीं ।

फ्रैंसला किया कमल व्यूह बनाकर मिश्रा सर को प्रभावित करके उनके साथ ही तैयारी करने का ।

मस्तिष्क कमल व्यूह बनाने लगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 16

सत्य प्रकाश मिश्र सर के यहाँ से आकर मैंने यह निश्चय किया कि अब इन इलाहाबाद के घाघ , फ्राड लोगों के चक्कर में नहीं पड़ना है । दस दिन हो गए मेंस का रिजल्ट आए । अभी तक कुछ खास तैयारी नहीं हुई । सिविल सेवा का दो किला तो मैंने अपने दम पर ही ढहाया था । माना मेरी तैयारी कम थी , भाग्य ने साथ दिया , पुरुखों के सत्कर्म थे पर मेहनत तो की ही थी । उस समय भी यह दुर्योधन सरीखे सत्ता के लोलुप थे ही जो हम जैसे गरीबों को एक भी गाँव न देंगे खुद ही सारा राज्य हड्डपेंगे का निश्चय किये ही थे ।

अब खुद से ही पढ़ता हूँ । मैंने देश की समस्या पर पढ़ना शुरू किया । देश की समस्याओं की सूची बनाई । कश्मीर और उत्तर पूर्व की समस्या पर थोड़ा विस्तार से पढ़ने का विचार किया । सरकार की सारी नीति जो मेंस में तैयार की थी वह नए सिरे से देखने का प्रयास किया । वर्ड फ्रोक्स मैगज़ीन ले आया जो राजनीति शास्त्र वाले अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध की तैयारी के लिये पढ़ते थे । ज्ञान भारती ने मुझे पिछले चार- पाँच संस्करण दे दिये । उसमें भारत - चीन , भारत - अमेरिका , भारत - पाक सम्बन्धों पर मटीरियल अच्छे थे । एक मिसटीफाइंग हिस्ट्री पर मैगज़ीन मिल गई । समाचार पत्र चार पढ़ने लगा । दिन- रात मेहनत करने लगा । अब आत्मनिर्भर होने का प्रयास करने लगा ।

पर मेरी आत्मनिर्भरता भारत की ही तरह की थी । हर विकासशील देश को विकसित देश की ज़रूरत होती है तकनीक और आर्थिक सहायता के लिये । आपको अमेरिका या रूस की तरफ़ देखना ही होगा । असम्मानजनक समझौता करना ही होगा ।

तीन-चार दिन बाद मैं फिर चला इलाहाबाद के प्रतियोगी क्षेत्र के रूस बद्री विशाल के पास ।

मैं पहुँचा , कुछ देर तक शांति रही हम दोनों के बीच । फिर मैंने ही बात शुरू की । कहा सर , कहा - सुना माफ़ करना । थोड़ा बातचीत में मुझे सलीका कम आता है । कई बार अनावश्यक बोल जाता हूँ । शायद उस दिन उचित व्यवहार न था मेरा आप ऐसे दयावान सीनियर के प्रति ।

वह बोले कोई बात नहीं । मैं तीन साल से इंटरव्यू से वापस आ रहा हूँ । मेरे पास भी तनाव है । लोग शहर में मेरे बारे में ही बात करते हैं । लोगों के पास कोई काम नहीं सिवाय मुझे डिस्क्स करने के । मैं तो किसी के पास नहीं जाता । जो मेरे पास आता है उसकी मदद ही करता हूँ पर लोग मेरे बारे में अफवाह फैलाते हैं । थोड़ा गुस्सा आ गया था उस दिन । मुझे भी संयत होना चाहिये था, पर चलो जो हुआ सो हुआ । अब सब भूल जाओ ।

मैंने कहा सर मैं बहुत परेशान हूँ । अब मैं कोई आप की तरह काबिल तो हूँ नहीं । ज्ञान की मेरा सीमा है । विश्वविद्यालय में कोई पोजीशन होल्डर तो मैं था नहीं । आपकी तरह की विश्लेषक की दृष्टि मेरे पास है नहीं । पर IAS मैं भी बनना चाहता हूँ, जैसे इस शहर के तमाम छात्र/छात्राओं का ख्वाब है वैसा ही मेरा भी है । अब ख्वाबों पर किसका बस वह तो अनायास चले आते हैं ताबीर मिले न मिले । अब मैं शीन काफ निज़ाम की तरह यह तो कह नहीं सकता

“ताबीरों की ख़ातिर हम ने

कब देखे हैं

ख़ाब

ताबीरें दुनिया देखेगी

हम देखेंगे ख़ाब “ ।

हमें अपने ख्वाबों की ताबीर देखनी है । यह ख़ानाबदोश ख़ाब बस ढूँढ़ते हैं आँख । यह मेरी ही नहीं मेरी माँ के आँखों में भी प्रवेश कर चुके हैं । ख्वाबों की ख़ानाबदोश प्रवृत्ति ने मेरे हरेक लोगों को अपना शिकार बनाया हुआ है ।

मेरी माँ की आँखों की शबनम में वह चाँद उत्तर आया है जिसकी रौशनी की उम्मीद वह लगाए बैठी है और वह रौशनी उसके बुढ़ापे का सहारा बनेगी । ज़िंदगी में तो उसने कुछ देखा नहीं सिर्फ संघर्ष के । दो धोती में उसने सारी ज़िंदगी काट दी । अब मैं तो यह जानता ही हूँ कि मेरी क्या हैसियत है । जो मेरी तैयारी के हालात हैं, इंटरव्यू बोर्ड मेरी चीड़-फाड़ कर देगा ।

मिश्रा सर मन्त्र सुध से सुन रहे थे मुझे । उनका भी दर्द छलक आया । वह बोले तुमको मेरी हालात का अंदाज़ा नहीं है । मेरा विवाह अठारह साल की उम्र में हो गया था । मेरे दो बच्चे हो गये हैं । सास -बहू का मामला तो जानते ही हो, कहाँ पटने वाली । समझाता हूँ थोड़ा बर्दाशत कर दो बात सास की । पर बेकूफ हर बात पर, मेरे भाई अफसर हैं, मैं ज़मींदार के घर से हूँ, हमारे यहाँ पाँच बीघा में पुदीना झुराता है, मैं किसी की बर्दाशत नहीं करूँगी । बच्चों को लेकर चलो साथ रहूँगी, इनका

भविष्य बनाना है । अब उस आग औंधियारी आत्मा को क्या बताऊँ कि अभी मेरा ही भविष्य कुछ नहीं है इन बच्चों का क्या सोचूँ ।

मिश्रा सर बोले आप तो महाराज रोने लगते हो । सब कल्याण होगा । उन्होंने एक पूरी लिस्ट दे दी क्या-क्या तैयार करना है इस साल के लिये । क्या-क्या सोर्स मटीरियल है यह बताया । कहा समाचार पत्र में ज्यादा समय न लगाओ । बस दो-तीन घंटा बहुत है । अपना विषय भी पढ़ो । भारतीय संविधान और आधुनिक भारत इंटरव्यू बोर्ड में सबको आता है । वह फिर से पढ़ो । सुमित सरकार, बिपिन चन्द्रा, डी डी बसु फिर से पढ़ो ।

मन मेरा परफुलित । समुद्र से मिलने को छटपटाती नदी को ढलान मिल गई ।
मिश्रा सर ने ताकीद किया किसी को मत बताना लकड़बग्धे शहर में धूम रहे शिकार करने को ।

मैंने कहा, सर बहती हवा को भी भाँपने न दूँगा माजरे के मज़मून को ।

यह क्या हुआ ? कमल व्यूह बनाने के पहले ही काम बन गया । पर यह बद्री विशाल है पूरा धाघ । कुछ तो बताया पर असली माल दबाया है इसने ।

मैं गंगा का पुत्र भीष्म न सही पर मेरी माँ ने मुझे गंगा से माँगा था । मैं उसके घुमावदार तीर्थ यात्रा के संघर्ष से उत्पन्न हुआ हूँ । न सही गंगा पुत्र भीष्म, गंगा के आशीर्वाद से उत्पन्न उर्मिला पुत्र अनुराग शर्मा हूँ ।

मैं लौट कर फिर आऊँगा कमल व्यूह के साथ ।

मैंने और स्रोत तलाशने शुरू किये तैयारी के लिये । चार- पाँच पहली बार के इंटरव्यू देने वाले देवेश शुक्ला के कमरे में माक इंटरव्यू आयोजित कर रहे थे, मुझसे कहा तुम भी आना ।

अगला दिन, सजा हुआ माक इंटरव्यू का कमरा । देवेश शुक्ल, चेयरमैन इंटरव्यू बोर्ड और मैं ।

इलाहाबाद में स्थापित सिविल सेवा के अभ्यार्थी नए अभ्यर्थियों को कोई ख़ास मदद नहीं करते । परम्परा अपने मटीरियल को छुपाने की तो है ही गुमराह करने की भी है ।

यह नए लड़के जो पहली बार सफलता पाए थे वह जानते थे कि सीनियर्स मदद नहीं करेंगे, इसलिये हम लोग खुद प्रयास करते हैं ।

मैं सुबह नौ बजे ही पहुँच गया, जहाँ माक इंटरव्यू होना था । वक्त का पाबंद था मैं । जो बेहतर कपड़ा था वह पहन लिया । जूता पहनता मैं था नहीं । पिछली बार जूता कब पहना यह याद करना पड़ता था ।

मामा जी के बेटे का विवाह पिछले साल हुआ था । उसमें जूता ख़रीदा था । वहीं जूता पालिश कराकर मैं प्रेस किया हुआ कपड़ा पहन तक पहुँच गया । दो लड़कों ने टाई लगाई थी । देवेश शुक्ल इंटरव्यू के चेयरमैन बने थे और राकेश सक्सेना मनोवैज्ञानिक । एक मनोवैज्ञानिक भी बैठता है बोर्ड में इसका भी पता चला । वह बोलता कुछ नहीं बस सब अवलोकित करता है । एक विधि के छात्र संविधान विशेषज्ञ के रूप में बैठे वह बहुत खुरपेची थे । राजनीति शास्त्र के नवोदित अध्यापक, जो हाल ही में सीएमपी डिग्री कालेज में नियुक्त हुये थे उनको हाँथ पैर जोड़कर अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ के रूप में बुलाया था ।

कमरा ठीक-ठाक था । पानी भरकर गिलास रखी हुई थी । यह नये छात्रों का स्थापित महारथियों के प्रति विद्रोह भी कहा जा सकता है ।

इंटरव्यू एक-एक करके चलने लगा । जब एक का इंटरव्यू होता तब बाकी पीछे बैठकर इंटरव्यू सुनते । वह खुरपेची बहुत अजीब-अजीब सवाल करता था । बाकी लोगों ने भी सवाल किये । सवाल रुचिकर थे ।

भारत के संविधान को वकीलों का स्वर्ग क्यों कहते हैं ?

गाँधी जी की लंबाई कितनी थी ?

रात में बारह बजे ही देश क्यों आज़ाद हुआ ?

वह कौन सा विद्वान था जिससे नेहरू जी ने अनुरोध किया कि आप रात बारह बजे तक लगातार भाषण दो तब वह अपनी “ My tryst with destiny ” का भाषण आरंभ करेंगे ?

कश्मीर समस्या क्या है, इसका जनक कौन है ? इसका समाधान क्या है ?

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में लोकतन्त्र के अवशेषों को व्याख्यायित करो ?

भारत का राष्ट्ररपति एक मुखौटा है असली शक्ति प्रधानमंत्री के पास है ?

ऐसे तमाम सवाल किये गये । इस इंटरव्यू ने मुझको बहुत आत्मविश्वास दिया । मैं भले ही अमित चौधरी, बद्री विशाल मिश्र से कमजोर हूँ पर इन सब पर बीस पड़ रहा था । मेरे पास व्याख्या करने की शक्ति इनसे बेहतर थी । इन सबने कहा, हम लोग एक साथ तैयारी करते हैं । आपस में डिस्कस करेंगे । एक दूसरे से सच बोलेंगे । हम आपस में कुछ न छुपाएँगे । हम एक साथ मसूरी चलेंगे ।

एक झूठी ईमानदारी की क्रसम खाई गई सारा मटीरियल शेयर करने की । मैंने भी खाई पर पहला झूठ मैंने ही बोला । अभी तक कुछ नहीं पढ़ा है । बस काम चालू किया है । सबने मेरी ही तरह झूँठ बोला । वह झूँठ बोलने वाले स्वार्थी लोगों का सम्मेलन था जो हर साल कई छात्रावासों और डेलीगेसी में लगा करता था ।

पर अगर झूँठ बोलने वाला यह जान रहा हो कि सुनने वाले को पता है कि यह झूठ है तो वह झूठ नहीं निरा मूर्खतापूर्ण कृत्य है वह सब कर रहे थे ।

पर इस सम्मेलन ने मुझको स्थापित किया गल्ली किरकेट के सचिन तेंदुलकर के रूप में । अब हम लोग हर दिन शाम को मिलने का निश्चय करके अपने-अपने घर को चले ।

मुझे रास्ता मिल गया था ।

बद्रीविशाल मिश्र का कमल व्यूह बन गया था । कल था कमल व्यूह का दिन और मेरी आज तक की सबसे बड़ी विजय मेरा इंतज़ार कर रही थी ।

इलाहाबाद और सिविल सेवा भाग 18

मेरा आत्मविश्वास बढ़ रहा था । मैं पूरी मेहनत कर रहा था । मैं इस मौके को गँवाना नहीं चाहता था । मैं साँप सीढ़ी के खेल में 99 पर साँप के द्वारा डसे जाने के बाद सीधे 26 पर नहीं आना चाहता था । अब इस बार सारा मामला खत्म कर देना चाहता था ।

मैं अगले दिन गया मिश्रा सर के पास । मैं जानता था कि इनके पास बहुत लोग आते हैं और इनको सबकी खबर रहती है । यह शान फ़िल्म के अब्दुल्ला की तरह थे

कि , आते - जाते हुये मैं सब की खबर रखता हूँ ।

तीन बार इंटरव्यू देने के कारण इनके अंदर अहंकार बहुत आ गया था । इसकी जिम्मेदारी यहाँ के चापलूस लोगों की भी है जो इनकी सहायता से परीक्षा की वैतरणी पार करने की आशा से इनके प्रश्नस्ति गीत गाया करते हैं । हर बात पर यह कहते थे कि मैं किसी के पास नहीं जाता । यह ए एन झा छात्रावास वालों के भी आलोचक थे । यह अपने कमरे से अपनी सत्ता चलाया करते थे । ज्ञान था इनको । इसमें कोई दो राय न थी पर इनके अहंकार ने इनके ज्ञान को आवरणित किया हुआ था ।

मैंने खुद ही बताया कि मैं देवेश शुक्ल के कमरे पर माक इंटरव्यू के लिये गया था । यह भी कहा कि वह पुनः होगा । आप भी चलें , आपके जाने से और लोगों को फ़ायदा होगा ।

मैं उनका जवाब जानता था । उन्होंने कहा ,

“ मैं तो कहीं जाता नहीं । यह सब कल के लड़के हैं , इनको क्या होगा अनुभव इंटरव्यू का । देवेश मेरे पास आया था , मैंने सहायता कर दी जो मुझसे हो सकती थी । यह भी कहा आप चलाओ । मेरे पास समय नहीं है ” ।

अहंकार की पराकाष्ठा थी उनकी शारीरिक भाषा (*Body language*) में ।

पर मुझसे क्या? यह इनकी समस्या और सोच है , यह जाने ।

मैं आ गया अपने कमल व्यूह पर । मैं जानता था कि इसके पास मटीरियल है । यह बहुत शातिर हैं । आसानी से न देंगे । रुला मारा छोटी-छोटी सूचना के लिये । यह तो इमोशनल ब्लैकमेल उस दिन काम कर गया नहीं तो यह कहाँ कुछ बताने वाले ।

मैं आ गया अपनी रणनीति पर । कहा कि मैं सत्य प्रकाश मिश्र सर के पास गया था । यह लाइन उनको विश्राम से सावधान मुद्रा में ले आई ।

वह बोले कैसे गये ? जानते थे क्या आप उनको ?

मैं भी कोई कम प्राउड तो था नहीं । इलाहाबाद का खुराफ़ात मेरे अंदर भी था । मैं मौक़ा पड़ने पर गिरगिट से भी तेज रंग बदलता था । बस परिस्थिति का मारा हूँ । यह दीनता , यह विवेकशीलता , यह नम्रता उसी मारीच के तरह की है जो सीता का हरण करा गयी । सारा कुछ मेरी रणनीति का भाग था , मैं भी मौक़े की तलाश में था बदरी विशाल को धोबी पछाड़ दाँव मारकर छाती उसकी आसमान की तरफ़ कर देने की ।

बद्री विशाल असहज हो रहे थे । वह जानना चाह रहे थे कि क्या बात हुई सत्य प्रकाश मिश्र सर से । हिंदी के दो मज़बूत स्तम्भ थे इलाहाबाद में - सत्य प्रकाश मिश्र और दूध नाथ सिंह । पर सिविल सेवा के मामले में सत्य प्रकाश मिश्र सर की रुचि ज्यादा थी वह थोड़े अपेक्षाकृत सुलभ भी थे । पर यह लोग आलतू - फालतू अभ्यार्थियों को घर की चौखट से ही भगा देते थे । सिर्फ़ गंभीर क्रिस्म के अभ्यार्थियों को ही यह लोग समय दिया करते थे । आप अगर उनसे मिलकर आए और राय ठीक-ठाक लेकर आए तो आप एक बेहतर उम्मीदवार हो ।

अब मैं झूठ का पुलिंदा बद्री विशाल के सामने एक रणनीति के तहत फैलाने जा रहा था । चित्ररग्रीव कबूतर बहेलिये के जाल की ओर बढ़ रहा था ।

मैंने कहा कि सर मैंने पहले ही बताया था कि मैं मेंस के समय भी मिला था । वह मेरी रिश्तेदारी में आते हैं । मिश्रा सर का दिमाक बहुत तेज था । वह बोले तुमने यह तो न बताया था कि वह रिश्तेदारी में हैं । पर मैं आजकल अंग्रेजी ठीक करने के लिये चाचा चौधरी की कहानी पढ़ रहा था अंग्रेजी में । मेरा भी दिमाग़ चाचा चौधरी की तरह से तेज चलता था ।

मैंने कहा कि सर हो सकता है यह बताने का अवसर न आया हो ।

वह जानने को व्यग्र थे, क्या बात हुई ? मैंने झूठ-सच में मिलाकर बात कहनी शुरू की, उन्होंने कहा है कि हाबी की आपकी समस्या हल कर दूँगा । अगर हाबी पर इंटरव्यू हुआ तो आप मसूरी जाने की तैयारी करो ।

मिश्रा सर ने कहा, ऐसा कहा उन्होंने? मैंने कहा कि सर अगर मैं यह कहूँ कि मैं झूठ नहीं बोलता तो यह एक खुद में ही झूठ होगा क्योंकि लोगों से अनायास ही झूठ मुँह से निकल जाता है । पर माँ से और गुरु से कोशिश करता हूँ कि झूठ बोलना न पड़े तो बेहतर होगा । आप मेरे गुरु तुल्य हो ।

मिश्रा सर संजीदा हो गए । कहा एक बात बताऊँ, अगर तुम किसी से न बताओ तब ।

मैंने कहा, सर अब तो आपको अपने इस चेले पर यक़ीन होना चाहिये । आपकी कहीं बात मेरे साथ शमशान में जलेगी । अगर आपको मुझ पर यक़ीन न हो तो मत बताइये ।

सर ने कहा, ऐसा नहीं है । हम हिंदी माध्यम वालों के पास सही अर्थों में कोई हाबी होती नहीं । फ़र्ज़ी हाबी लिखते हैं और उसमें पकड़े जाते हैं । मेरी असफलता के पीछे यही एक कारक है । हाबी जो भी लिखूँ, पकड़ा जाता हूँ ।

अगर हिंदी उपन्यास पर सत्य प्रकाश सर मदद कर दें तब इस बार मेरा हो जाएगा
। मैंस बहुत अच्छा हुआ है ।

कमल व्यूह कारगर तो हो गया पर ऐसी ही गलतफहमी मुझे अपने चक्रव्यूह के समय भी हुई थी । इस बार मैं सशर्त बात करना चाहता था । मैंने कहा कि सर उन्होंने उपन्यास विवेचना किताब भी मुझको देने को कहा है । बद्री विशाल बहुत ही तेज थे । बोले वह तो आउट आफ प्रिंट है । मैंने कहा यह नहीं पता मुझे । बद्री विशाल मिश्रा सर ने कहा कई लोग खोजे उसको पर वह न मिली, मैं भी पा न सका था ।

मैंने गर्म लोहे पर एक हथौड़ा और मारा । एक उपन्यास की व्याख्यानमाला भी देने को कहा । जब मैं बात कर रहा था उस समय कोई आ गया इसीलिये वह दे न पाए अब जाऊँगा तब ले आऊँगा ।

अब अंतिम हथौड़ा मारकर लोहे को हल की फाल बना दी ।

सर, जो मैंने जवाब बनाया था उपन्यास पर जिसको आप अच्छा कह रहे थे, सर ने कहा इसमें सुधार की ज़रूरत है । आप कुछ पढ़ लो तब मैं जवाब ठीक से लिखा दूँगा ।

मैंने एक झूठ और बोला । सत्य प्रकाश सर बोले एक सप्ताह प्रति दिन सायंकाल आ जाना पूरा लिखा भी दूँगा और कुछ हिंदी उपन्यास की अन्य भाषाओं से प्रवृत्तिगत तुलना भी कर दूँगा ।

कबूतर बहेलिये के जाल में । बहेलिया देख रहा तड़पता कबूतर जाल के रेशों में ।

वह बोले आप मेरी हाबी तैयार करा दो सर की मदद से बाकी इंटरव्यू का सारा ज़िम्मा मेरा ।

कभी-कभी संधि, समझौते, करार एक दूसरे की शक्ति को देखकर बगैर शब्दों के, बगैर स्याहियों का इस्तेमाल किये मौन की भाषा और आँखों की पुतलियों के भाव से होते हैं और उनका सम्मान रजिस्टरी किये गये दस्तावेज़ों से ज्यादा होता है । मौन की भाषा में करार हो गया तुम मेरी मदद करो मैं तुम्हारी ।

खुल गया अलीबाबा का गुफा मेरे खुल जा सिमसिम से । दस कापी उनके कमरे से लेकर चला घर की ओर । सुदर्शन की कहानी के बाबा भारती को अपने घोड़े पर क्या गर्व होगा जो मुझे अपने द्वारा बनाए तिलस्म पर था ।

मेरे पाँव ज़मीं पर न थे , ब़ौर पंछों के मैं उड़ रहा था ।
मैं गुनगुनाने लगा अपनी साइकिल पर एक हाँथ आसमां की तरह उठाए

“पुरानी किताबों के बोसीदा पन्नों पर
तहरीरें ताबीरें सच्ची हैं लेकिन
नये ख्वाब की भी पुरानी ताबीर हो
मुमकिन नहीं
कब तक हम पढ़ेंगे पुरानी ख्वाबों की ताबीर
कब तक हम देखेंगे वही ख्वाब
जो सब देखते हैं

अगर हो सके तो नया नायाब ख्वाब देखें” ।

देख डाला नया ख्वाब

“ मेरा नाम समाचार पत्र में नहीं 8:40 की राष्ट्रीय न्यूज में आना चाहिये । एक हिंदी माध्यम के छात्र ने विदेशी भाषा से संव॰र रहे इतिहास में अपना सशक्त हस्ताक्षर मातृ भाषा में कर दिया ” ।

अगले दिन मेरे इंटरव्यू की तारीख आ गई 27 अप्रैल । मेरे पास तकरीबन एक महीने का समय था ।

सलाबत के दिन जा रहे थे । मैं मुन्तशिर तो था पर मुनज्जम भी हो रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 19

इलाहाबाद विश्वविद्यालय का माहौल पूरी तरह से एक नए रंग में था । हर ओर एक ही चर्चा क्या होगा इस बार ?

सन 1980 के दशक के आरम्भ में प्रथम दो स्थान इलाहाबाद को ही प्राप्त हुये थे । वह दोनों अभ्यार्थी ए एन झा के ही थे । फिर दशक के मध्य में भी प्रथम दस में

जगह शहर ने बनाई थी , पर पिछले चार /पाँच सालों से वह जलवा नहीं पा सका शहर ।

इस बार सौ से ज्यादा लोग इंटरव्यू दे रहे थे । अकेले ए एन झा से 28 लोग इंटरव्यू दे रहे थे । दूसरे नंबर पर ताराचंद छात्रावास था । वह नया उभरता हुआ छात्रावास था जो ए एन झा छात्रावास को चुनौती देने का प्रयास कर रहा था । सर सुंदर लाल से 12 लोग इंटरव्यू दे रहे थे । अराजकता और गुंडागर्दी के बदनामी के बोझ के साथ जीते हुये

हिंदू छात्रावास से भी 4 लोग इंटरव्यू दे रहे थे ।

महिला छात्रावास से भी तीन लड़कियाँ इंटरव्यू दे रही थीं । सुना है कोई लड़की बैरहना से भी इंटरव्यू दे रही और एक लड़की स्टेनली रोड से । पर डेलीगेसी में अल्ला पुर का रुतबा सबसे ज्यादा था । लेबर चौराहे के पास से ही से कई लोग इंटरव्यू दे रहे थे । वहीं पर अपनी स्वतंत्र सत्ता बद्री विशाल मिश्र चलाया करते थे ।

महिला अभ्यर्थियों की दशा थोड़ा इंटरव्यू की तैयारी में कम विविध होती थी । वह लड़कों की तरह घूम-घूम कर मटीरियल इकट्ठा करने में कम स्वतन्त्र थी । इलाहाबाद का माहौल उन पर एक सामाजिक बंदिश लगाता था ।

उनके पास मेरी तरह चन्द्रकांता संतति की तरह ऐयारी करने का अवसर न मिलता था । ऐसा नहीं था कि वह कर न सकती थी पर अवसर का अभाव था । मौका मिले तो वह हमारे ऐसे फरेबी को भी चिल्लर के भाव कटरा की सब्ज़ी मंडी में पहुँचने के पहले ही बैंच दें । पर वह लड़कियों के बीच ही आपस में तैयारी करती थीं । उनका अपना फ़रेब भी आपस कम न था । लोग बताते हैं कि शशि तिरपाठी पिछले साल इंटरव्यू दी थी पर वह किसी लड़की को कोई हवा नहीं देती । अगर उससे पूँछो , आज मौसम कैसा है? वह कहेगी , देख लो बाहर खुद ही । अगर कहो हवा ठंडी चल रही तब वह कहेगी तेरे को हर समय मसूरी ही दिखती है । कुल मिला कर बात एक ही है , पूरे कुएँ में भांग पड़ी है । लड़कों के साथ मिलकर यह परीक्षा की तैयारी करती तो सबका कान काट जाती । हवा इसके नाम की भी थी । एम ए फ़िलासफ़ी की वह टापर थी । उसके क्लास के लोग उसके क़सीदे गढ़ते थे ।

इलाहाबाद में छात्र- छात्राएँ नदी के दो पाट की तरह होते थे । उनका आपस में मिलना कम होता था । अगर कोई लड़का लड़की के घर चला गया तब उसके घर वाले ऐसी शोलों भरी निगाह से देखते थे जैसे पाकिस्तान से घुसा हुआ आतंकवादी भारतीय सेना ने देख लिया हो ।

उनको घर से बाहर बहुत ज्यादा निकलने में पाबंदी थी । शाम ढले घर आ जाओ । इसलिये बेहतर क्षमता होने के बावजूद रेस में थोड़ा मुश्किल होती है । शायद

इसीलिये विश्वविद्यालय परीक्षा में लड़कों से बेहतर करने वाली छात्राएँ सिविल सेवा में थोड़ा पीछे रह जाती हैं ।

और यहाँ शहर की सारी साज़िश , सारा षड्यन्त्र, सारा झूठ ,फ़रेब, तैयारी के लिये , सूरज की बुझती लालिमा के साथ आरंभ होता था । इस समय इनको घर से बाहर निकलना असंभव तो नहीं पर थोड़ा मुश्किल ज़रूर होता है । यह पूरी प्रक्रिया काफ़ी कुछ सिखाती भी है । मैंने तो बहुत सीखा ।

दिन पर किताबों से जूझने के बाद शाम को झूठ बोलने वालों के मिलने का समय होता है । सबका एक ही झूठ, “ यार मैं तो पढ़ ही नहीं पा रहा । दिन में सो गया । मन ही नहीं लग रहा । समझ ही नहीं आ रहा क्या पढ़ूँ ” , और विश्वास दिलाने के लिये गंगा माँ की क़स्म भी खा लेंगे ।

अरे अपनी आँख देखो , वह पढ़-पढ़ कर लाल कर दी तुमने । कुछ ऊपर वाले से डरो । पर यह झूठ कहाँ है ? सुनने वाला जान रहा है कि यह झूठ है तब यह झूठ की परिभाषा में नहीं आता । सुनने वाला मुँह पर ही कह देगा - चलो फ़र्ज़ी बात का कोटा हो गया , अब यह बताओ तैयारी में क्या चल रहा ।

वह बेशर्म होकर कहेगा और फिर कहेगा कि , क़स्म से कुछ नहीं पढ़ा । मेरा कोई भविष्य नहीं । और आपका झूठ सुनने के लिये वह आप से ही पूँछेगा , क्या हाल हैं तुम्हारे ?

तुम तो झूठ का फेहुँआ पिए हो । तुम को तो झूठ बोलने का नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिये ।

50, 60, 70 के दशक में सिर्फ़ इलाहाबाद ही हुआ करता था पर 80 के दशक में दिल्ली ने इलाहाबाद से लोहा लेना आरंभ किया । जेएनयू के कावेरी , ब्रह्मपुत्रा आदि छात्रावासों और दिल्ली विश्वविद्यालय के गवायर हाल और जुबली छात्रावास अपनी शरेष्ठता की ओर थे ।

ए एन झा के राजेश्वर सिन्हा के नाम का बहुत ज़ोर चल रहा था । कहते थे कि वह Oxford की तरह अंग्रेज़ी बोलते हैं । लोग उसको oxy English कहते थे । उनके बारे में हल्ला था कि वह इतिहास रचेंगे । सर सुंदर लाल के अमित चौधरी भी अपना नाम अपने ही चमचों से राजेश्वर सिन्हा के समकक्ष लाकर रेस में बने रहना चाहते थे । पर वह उस लीग में न थे । पर उनके चयन की प्रबल संभावना है , यह बाजार में फैला हुआ था ।

ए एन झा वालों का अलग ही जलवा था । वह लोग सिर्फ IAS की परीक्षा देते थे बाक़ी परीक्षा नहीं देते थे । किसी ने दे दिया तो उसका हुक्का-पानी बंद । कहते हैं किसी ने चुपके से पीसीएस परीक्षा देकर उसमें टाप कर लिया था । उनकी फ़ोटो किसी मैगज़ीन ने छाप दी । उसको बुद्धिजीवी वर्ग से बाहिष्कृत कर दिया । या यों कहें उसे बुद्धिजीवी मानने से इंकार कर दिया ।

ए एन झा वाले संविधान में पूर्ण आस्था रखते हुये भी एक अभिजात्य संस्कृति के पोषक थे, बौद्धिकता के मामले में ।

अमित चौधरी को ए एन झा छात्रावास न मिल पाया था, यह ही बहुत था अमित चौधरी को कम प्रतिभावान घोषित करने के लिये । आप कुछ भी ज्ञान अर्जित कर लो पर उस छात्रावास के तो नहीं ही हो । कभी-कभी लगता था कि सारनाथ के बाद बुद्ध यहीं आए थे और चार शिष्यों के बाद यहाँ की ज़मीन को ज्ञान दिया और कहा जो भी इस ज़मीन का भोग करेगा किसी भी रूप में वह बुद्धत्व को प्राप्त करेगा ।

इस छात्रावास की मेरिट सबसे ऊपर जाती थी । इस छात्रावास से कुछ ही दूरी पर कई और छात्रावास थे । पर मात्र कुछ सौ मीटर की परिधि में बने हुये दूसरे छात्रावासों और ए एन झा के रूतबे में एक साफ़ फ़र्क दिखता था ।

ऐसे संघर्ष के माहौल में मैं भी था, अपना छोटा सा परचम लिये हुये । वह परचम नया था । मजाज़ को पढ़कर अपने ही लाल गमछे को खोलकर मैंने अपना परचम बना लिया था । अक्सर न सही कभी - कभार ही सही मेरे अंदर के हौसलों से वह लहराने लगता था । पर जब मैं इन महारथियों को देखता था तब अपना परचम खुद ही समेट कर साइकिल के कैरियर में बाँध देता था । ऐसा अक्सर यूनिवर्सिटी रोड पर करना पड़ता था । वहाँ पर बड़े-बड़े परचम लहराते रहते थे ।

मेरे और मिश्रा सर के समझौते ने मेरी बहुत मदद की । उन्होंने अपना सहयोग दिया । मैंने सत्य प्रकाश मिश्र का मटीरियल उनको दे दिया, उन्होंने अपना । पर ऐसा घोषित रूप में था, अंदर ही अंदर हम दोनों कुछ न कुछ छिपा ही रहे थे । बंदर कितना भी सुधर जाए पर गुलाटी तो मारेगा ही । पर मैं गुलाटी बहुत सँभाल के मार रहा था । मिश्रा जी का एक संशय मुझे ख़त्म कर सकता था । उनके सहयोग से बहुत लाभ हुआ ।

एक दिन मैंने पूँछा कि सर आपका तीन बार से सेलेक्शन इंटरव्यू में क्यों नहीं हो रहा । उनका जवाब सुनकर मेरे तो तोते ही उड़ गए । देखा आसमा की तरफ़ दोनों हाथों को जोड़कर धन्यवाद दिया परभु को सद्बुद्धि के लिये नहीं तो जो यह ठंडे अलाव की चिंगारी से मैं आग जलाने की कोशिश कर रहा यह चिंगारी भी मेरे पास न होती ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ - भाग 20

मेरी और बद्री विशाल मिश्र की घनिष्ठता बढ़ने लगी थी । हम आपस में अपने रहस्य भी बाँटने लगे थे । मेरे घर की समस्या थी ज़रूर पर जितनी थी उससे भी बड़ी मैं बना कर पेश करता था । मैं उनकी सहानुभूति प्राप्त करने में सफल रहा ।

इमोशनल ब्लैकमेल में मेरी महारत थी । यह लगता है मुझे अपनी माँ से आनुवंशिकता में प्राप्त हुआ था । वह भी इमोशनल कम न थी । बस फ़र्क़ यह था कि उसके इमोशन परिस्थितिजन्य विवशता, ज़िंदगी की आपाधापी से उपजी छटपटहाट के कारण थी और मैं उसको एक रणनीति की तरह उत्पन्न करके इसका इस्तेमाल कर लेता था ।

जहाँ स्वार्थ सिद्ध हो वहीं पर इमोशनल ब्लैकमेल कर लो । जब मौक़ा मिले येन केन प्रकारेण हित साधन कर लो । मेरे लिये साध्य से मतलब था न कि साधन से । मैं अनैतिकता के द्वारा प्राप्त विजय में किसी भी तरह की कोई समस्या न देखता था क्योंकि मेरी नैतिकता के मानदंड अंतिम लक्ष्य से निर्धारित होते थे ।

ऐसा मेरी माँ के साथ न था । वह धर्मभीरु थी । वह ईश्वर में अगाध आस्था रखती थी । वह पाप से डरती थी । उसे अगले जन्म और परलोक का डर था । मेरा परलोक, पुनर्जन्म में विश्वास न था । मैं अपना यह जीवन बेहतर बनाकर जीना चाहता था ।

वह धर्म- कर्म-पूजा - पाठ -उपासना में आस्थावान थी । वह हर नवरात्रि को दुर्गा सप्तशती का पाठ अपने बच्चों से कराती थी । मुझे भी करना पड़ता था । पर मेरा मन उसमें न लगता था । मुझे यह सारी प्रक्रियाएं व्यर्थ लगती थी । मैं नास्तिक न था पर मेरी आस्तिकता में इस कर्म-कांड परक आस्तिकता का कोई स्थान न था । पर मेरे इंकार करने से वह दुखी हो जाती थी अतः जिसमें मेरा विश्वास न था वह भी मैं उसके सुकून के लिये कर देता था ।

जिस काम में आपका यक़ीन न हो उसको करना आप के लिये कष्टकारक होता है । पर उसके संतोष के लिये मैं यह कष्ट स्वीकार कर लेता था । मैं पाठ पढ़ते समय बीच का एक दो अध्याय गोल कर देता था । पर दुर्गा सप्तशती का अपराध क्षमा का दोनों अध्याय ठीक से पढ़ता था । मेरे अंदर यह भय था कि देवी का कोप आ सकता है उनके रुष्ट होने पर और मेरा यह कार्य ठीक नहीं । पर चेतन मन उपचेतना को समझा देता था यह कहकर कि कर्म ही पूजा है और मैं यह समय बचाकर पढ़ाई ही करूँगा और यह मेरा चयन मेरे ही लिये नहीं वरन् लोक कल्याण के लिये है । मैं लोगों के लिए काम करूँगा ।

वह कभी-कभी पकड़ ऐसा लेती थी , यह कहते हुये कि इतनी जल्दी पाठ कैसे ख़त्म हो गया , तो मैं कहता थी कि मैंने संस्कृत पढ़ी है कालेज में इसलिये तेज पढ़ लेता हूँ ।

मिश्र सर की कुछ कमजोरियाँ थीं जो अमूमन सबकी होती है पर उनकी अधिक थीं । आँसुओं पर पसीज जाना , माँ के नाम पर दरवित होना तथा अपनी तारीफ सुनना ।

मैंने कहानी पढ़ी थी बहादुर शाह ज़फ़र और ज़ौक़ की । ज़ौक़ किस तरह बहादुर शाह ज़फ़र के झूठे क़सीदे पढ़कर अपने समकालीन गालिब और मोमिन की तुलना में ज्यादा फ़ायदा शासन से ले गये जबकि गालिब बेहतर लेखक थे ।

मैंने वक्त की नज़ाकत देखकर गालिब की तरह अख़ड़ बनने का बजाय ज़ौक़ की तरह चापलूस बनना बेहतर समझा हलाँकि गालिब बेहतर थे काव्यात्मकता एवम् व्यक्तित्व दोनों ही दृष्टियों से यह मैं जानता था ।

मैं पहुँचते ही उनके पास उनके क़सीदे गढ़ता , अमित चौधरी की बुराई करता और कहता कि राजेश्वर सिन्हा और बद्री विशाल मिश्रा दो लोग नाम रोशन करेंगे और अगर समय

ठीक रहा तो यह चेला भी गुरु का झोला उठाये मसूरी साथ चलेगा ।

मैं एक और रणनीति पर काम कर रहा था कि अगर इनका सलेक्शन हो जाए तो यह अपना सारा मटीरियल मुझको दे दें तब अगले साल मैं मज़बूत रहूँगा मैंस में । अगला साल भी मैं देख रहा था और वह मेरी रणनीति का एक भाग था ।

इसका आश्वासन उन्होंने मुझको दिया भी था । पर यह बद्री विशाल हैं । यमुना की गहराई सात खटिया के बाँधों के बराबर की तो मापी जा सकती है पर इनके हृदय की अतल गहराइयों में छिपा रहस्य जो एक घड़े में संरक्षित है पता करना आसान नहीं । पता नहीं कल इनका कोई भाई खड़ा हो जाए कि “ हमहूँ बनबै कलेक्टर ” । भाई इसके हैं ही । इस संभावना से इंकार तो किया नहीं जा सकता कि वह परीक्षा देने को तत्पर हो जाएँ , इनके चयन के बाद हो ही जाएगा । भाई-भतीजावाद तो शहर ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है ।

तब क्या होगा वचन का ?

यह कोई भीष्म तो हैं नहीं कि वचन दे दिया तो दे दिया , संकल्प कर लिया तो कर लिया । यह तो एक लाइन कहेंगे कि क्या करूँ अब यह परीक्षा दे रहा , तुम फ़ोटो

कापी करा लो । और दे देंगे कूड़ा मुझको नोट्स के नाम पर । सारा खांटी माल देंगे अपने भाई को ।

इसलिये मैं धीरे - धीरे मेंस का कुछ-कुछ माल पार करने की कोशिश करता रहता था पर सावधानी से क्योंकि मैं जानता था यह बद्री विशाल उड़ती चिड़िया के पंख ही नहीं पहचानता वह पंखों को गिनकर चिड़िया के टूटे पंख भी बता देता था ।

मैं जानने को आतुर था कि इनका चयन तीन साल से क्यों नहीं हो रहा ? यह ज्ञानी तो बहुत है । देखने - सुनने में भी गौर वर्ण्णय , ऊँची काठी का है । हाँ तोड़ा पेट निकाल लिया है पर ढीली क़मीज़ में वह छुप जाता है ।

मैंने पूँछा सर क्या कारण है आप जैसे ज्ञानी को जिसको इस समय देश चलाना चाहिये था वह हमारे ऐसे फटीचर के साथ लगा हुआ है ।

वह बोले कि तुम बहुत समझदार हो । ठीक फैसला लिया कि हिंदी माध्यम में परीक्षा दे रहे हो । यह कपटी ए एन झा वालों ने कहा कि हिंदी में लिखोगे तब कभी IAS नहीं बन सकते । मैं नया था । छोटे शहर से यहाँ आया था । छल-कपट से दूर था । अंगरेज़ी लिख लेता था थोड़ी बहुत । मैं वह सारा काम करने को तैयार था जो भी IAS बना दे मुझे ।

मेरे दो साले PCS हैं । मेरी पत्नी दिन- रात माँ को सुनाती है तुम्हारे यहाँ कौन है अफसर मेरे दो- दो भाई PCS हैं । वह PCS से sales tax officer हैं पर यह नालायक घरवाली दिन रात माँ को घोंसे जा रही । हमारे बाबा ने पाला मुझको वह बोले बेटा बद्री IAS बनो चाहे 4-6 बीघा खेत बिक जाए कोई चिंता नहीं ।

राजेश्वर सिन्हा का बड़ा भाई राकेश सिन्हा बहुत कपटी था । उसने मुझे यह नहीं बताया कि अगर मेंस अंगरेज़ी में लिखोगे तब इंटरव्यू भी अंगरेज़ी में देना पड़ेगा । अगर यह पता होता तब मैं अंगरेज़ी में मेंस कभी न लिखता , मैं हिंदी में ही लिखता । पर ईश्वर न्यायी है वह सबके कर्मों का हिसाब रखता है । अपने किये का दंड राकेश सिन्हा को भी मिल गया । उसको मणिपुर कैडर मिला चयन होने के बाद । एक बार आतंकवादियों ने जीप पर हमला किया था पर बच गया । अगली बार मारा जाएगा , एक ब्राह्मण के साथ छल किया है , उसका कोई कल्याण न होगा । तभी से मैंने संकल्प लिया अब मैं कहीं न जाऊँगा ।

मैंने कहा सर इसका क्या संबंध आपके सेलेक्शन से ?

वह बोले कितनी लाइन अंगरेज़ी की तुम बोल सकते हो ? मैंने कहा सर मुझे अंगरेज़ी बोलनी नहीं आती ।

वह बोले यही समस्या मेरे साथ है । जब मैं इंटरव्यू देता हूँ तब उस कमरे में कई स्तर पर कम्यूनिकेशन गैप होता है । मैंने कहा, सर यह कैसे ?

क्या इंटरव्यू बोर्ड के सारे लोग एक साथ ही सवाल करने लगते हैं, क्या?

अरे भाई - एक-एक करके पूँछों ।

सर बोले, तुम मसखरी हमीं से कर रहे हो ।

मैंने कहा कि नहीं सर, मैं समझा नहीं पूरी बात ।

वह बोले कि इंटरव्यू आरंभ हुआ ।

जो उसने पूँछा और जो हमने समझा इसमें एक कम्यूनिकेशन गैप ।

जो मैंने सोचा और जो मैंने बोला इसमें दूसरा कम्यूनिकेशन गैप ।

जो मैंने बोला जो उसने सुना तीसरा कम्यूनिकेशन गैप ।

और यह गैप इंटरव्यू के बढ़ते प्रवाह के साथ बढ़ता जाता है और लगता है धरती फटे मैं उसमें समा जाऊँ ।

उस बोर्ड में एकाध खुरपेची तो ऐसी अंगरेजी बोलेंगे कि एडवांस डिक्षनरी के बगैर काम न चलेगा ।

अरे भाई, देखो मेरा बायो डेटा, कहाँ से मैं आया हूँ । गाँव के पेड़ के पास के दो कमरे का स्कूल जहाँ का अंगरेजी से कोई सरोकार नहीं । तहसील से इंटर किया । कहाँ से वह अंगरेजी आएगी ।

इस देश में काबिलियत का एक ही मापदंड है मुँह घुमाकर जीभ को टेढ़ा करके अंगरेजी बोलना । क्या नहीं आता मुझको, यह तुमने देख ही लिया पर क्या करूँ इस विपदा का ? इतनी मेहनत से अर्जित किया गया ज्ञान शून्यता को प्राप्त हो गया क्योंकि धारीदार टाई पहनकर मैं उन स्कूलों में न गया जहाँ शिक्षा के नाम पर अधकचरा ज्ञान और संस्कृति के नाम पर विदेशी संस्कार और वह भाषा सिखाई जाती है, जिसका देश की बहुसंख्यक जनता से कोई सरोकार नहीं । कोई उन टाई धारी बाबुओं से नहीं पूँछता कि तुमने हिंदी क्यों नहीं सीखी ? मैं अंगरेजी सीखने के लिये क्यों बाध्य किया जा रहा ।

हे बेवकूफ शिरोमणि बाबू यह बताओ जब तुम जन्म के बाद पहली बार रोये तब अंगरेजी में रोये थे । जब छोटे थे घुटनों के बल चलकर उठने की कोशिश करके हताश होकर माँ से सहयोग माँगते थे तब अंगरेजी में माँगते थे ? आओ दो-दो हाँथ कर लो ज्ञान में विश्लेषण में बस इस भाषा का ढाल तुम हटा दो, मैं अपराजेय हूँ तुम्हारे ऐसे फ़र्जी बुद्धिजीवियों के समुख ।

यह बोलते - बोलते पूरा चेहरा लाल हो गया सर का । इस चेहरे की लालिमा में क्रोध कम था विवशता अधिक थी ।

मैंने कहा कि सर आप कह दो, मुझसे हिंदी में पूँछे ।
सर ने कहा - यह भी किया पर कारगर न हुआ ।
वह बोला, “you can't change your medium now” .

यह कम्यूनिकेशन गैप ही नहीं भरता तब फिर इंटरव्यू क्या दूँगा ।

मुझे इंटरव्यू में हमेशा 70/80 के बीच अंक मिले हैं 250 में । अगर 85/90 पाता तो सफल होता और 140 पाता तो IAS होता ।

मैंने कहा सर आप मीडियम चेंज कर लिये होते दूसरे प्रयास में । वह बोले यह अब बहुत मुश्किल है । मैंने सोचा था. पर सारी किताब, सारा नोट्स अंग्रेजी में । यह सब कैसे सब बदल दूँ ।

मुझे लिखने में समस्या कोई खास नहीं है । हिंदी साहित्य तो हिंदी में ही लिखना है । विधि का पेपर अंग्रेजी में समस्या नहीं करता । जीएस मैनेज हो जाता है ।

यह सरकार की गलती है कि वह यह विकल्प नहीं देती कि इंटरव्यू मनचाही भाषा में दो । यह कौन सा नियम है कि जो भाषा मेंस में ली है मीडियम के रूप में वही इंटरव्यू में लो ।

यह कपटियों का शहर है । उचित मार्गदर्शन नहीं मिलता ।

मैंने अपना भी दुख़ड़ा रोया । मैंने कहा कि सर मैं अमित चौधरी के पास गया था किताब पूँछने, उसने मुझसे भी कहा था कि, “If you want to become IAS then write in English” .

पर सर मेरे बस की अंग्रेजी थी नहीं । मैंने कहा कि सर अंग्रेजी में मैं लिख नहीं पाऊँगा । आप मदद कर दो मैं हिंदी में ही लिखूँगा । IAS न सही PCS हो जाऊँगा । वह बोला, ”I don't entertain PCS aspirants and moreover I have no idea about hindi medium books” .

सर बहुत दुख हुआ उस दिन । हम आजाद होकर भी भाषा की गुलामी से बाहर नहीं हो पा रहे । सर मेरी हिंदी बहुत अच्छी है । सत्य प्रकाश मिश्रा सर जल्दी तारीफ़

नहीं करते किसी की , पर मेरी तारीफ़ मुझसे ही की और कहा तुमने हिंदी क्यों नहीं पढ़ा एक विषय के रूप में । । पर क्या फ़ायदा इस भाषा का जिसकी कोई क़ीमत नहीं ।

सर बोले हम लोग इतिहास बदलेंगे ।

अगर हम लोग सेलेक्शन पा गए तो जो आएगा सच बताएँगे । मैंने कहा , ज़रूर सर । हम लोग एक नये समाज की स्थापना करेंगे । हम लोग गुमराह न करके सही रास्ता दिखाएँगे । उनको भावुक देखकर अगले साल के मेंस के लिये पालिटी का एक मटीरियल इंटक लिया । राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री का संविधान में परस्पर संबंध । बड़ी मेहनत से बनाया था उन्होंने । वह विधि के विद्यार्थी थे , बहुत अच्छा बनाया था ।

फिर इमोशनल ब्लैकमेल कर ले गया मैं ।

पर क्या करता मेरी नैतिकता ही यही थी सब जायज़ है जीत के लिये । यह मेरी ही नहीं सभी की नैतिकता थी शहर में । मैं अपने लक्ष्य के प्रति बहुत समर्पित था , न इस वर्ष तो अगले वर्ष सारी योजना तैयार ।

हर रोज चोंच तेज करता हूँ मैं
कफ़स से निकलने के लिये
जिसने मुझको क़ैद किया है पिंजरे में
फ़ड़फ़ड़ाते हुये जीवन को जीने के लिये
उसको क्या पता हर ख़बाब देखे हैं मैंने
इस कफ़स से निकलने के लिये
बगैर ताबीरों के ख़बाब दुनिया देखे
मुझे ताबीर चाहिये अपने ख़बाबों की
भले ही कुचलना पड़े मुझको
शबनम पर उतरे चाँद को भी ।

यह एक नज़्म नहीं है , यह मेरे जीवन का दर्शन है जो मुझे इसी शहर ने सिखाया है तुझे कुचल कर न सही रफ़तार बढ़ा कर आगे बढ़ना होगा । यहाँ कोई किसी को रास्ता नहीं देता । तुझे तेज भागना ही होगा ।

मिश्रा सर के कमरे में मैंने देखा कि उन्होंने फ़ैशन टेलर से कपड़ा सिला लिया है । बाटा से एम्बेसेडर जूता ख़रीद लिया है चमचमाता हुआ । मैं तो उस पर कुछ किया ही नहीं । मैं इस मामले में किसी की राय को न मानकर अपनी सहूलियत से काम करना चाहता था ।

पर यह भी इतना आसान न था फ़ैसला जितना मैं सोचता था । आखिर अभी तक के जीवन का सबसे बड़ा दिन होने वाला था जब मैं इंटरव्यू बोर्ड के सामने उपस्थित होऊँगा अपने सारे अरमानों को संजोये हुये । मेरे ही क्यों अपने पूरे परिवेश के अरमानों को संजोये हुये अपनी बैसाखियों के सहारे कोशिश करता हुआ दुर्गम पहाड़ों के पार जाने के ।

ख़बाब बड़ा ज़रूर था । शायद मेरे हैसियत से बड़ा । पर अगर ख़बाब क़द और हैसियत को देख कर आ रहे होते तो शाहजहाँ का ताजमहल तो ज़रूर होता पर दशरथ माँझी की पहाड़ों को चीरती सड़क का कोई वजूद न होता ।

इलाहाबाद और सिविल सेवा भाग 21

इंटरव्यू की तारीख थोड़ा संजीदगी दे देती है । वह लक्ष्य के परति थोड़ा और केन्द्रीकृत प्रवृत्ति का विकास कर देती है । अगले दिन मैंने अपने इंटरव्यू का समाचार अपने साथ के और इंटरव्यू देने वालों के साथ साझा किया । रिजर्वेशन करा लिया दिल्ली जाने का प्रयाग राज एक्सप्रेस में । अभी तक तो कभी रिजर्वेशन न कराया था । जहाँ भी गया ऐसे ही धक्कामार सामान्य डिब्बे में ।

कपड़े पर बहुत माथा पच्ची हुईं । क्या पहना जाए ?
नीली पैंट आसमानी क़मीज़ ? नहीं, यह तो स्कूल इरेस ऐसा है ।

सफेद क़मीज़, काली पैंट ? नहीं, यह तो टी.टी. पहनते हैं ।

क़मीज़ धारी दार ? नहीं, यह तो उचित न होगा, सौम्यता कम दिखेगी एक अभ्यार्थी के रूप में ।

तब क्या ?

अंत में फ़ैसला हुआ भूरा पैंट आफ़ व्हाइट शर्ट । टाई पहनने से इंकार मैं पहले ही कर चुका था ।

“A to Z” से कपड़ा खरीदने गया । वहाँ से कपड़ा खरीदा । “The robes में सिलने को दे दिया । इतना मँगा कपड़ा पहले कभी न सिलाया था ।

मेरी सफलता की ओर बढ़ते कदम ने रिश्तेदारियों और मुहल्ले में मेरा सम्मान बढ़ा दिया था । मेरे cousins ने भी यह परीक्षा दी थी पर उन सबके प्रयास कोई परिणाम न दे सके । सिविल सेवा परीक्षा की धारा इतनी तेज होती है कि बड़े-बड़े महारथी को वह बहा ले जाती है, वह सब तो एक मामूली सिपाही था । जबसे IIT, IIM, MBBS, engineers ने परीक्षा में बैठना शुरू किया तब से प्रतिस्पर्धा के नियम उनकी असीम क्षमता के मानदंड निर्धारित करने लग गए ।

इलाहाबाद और सेंट स्टीफन्स के अति गौरवशाली इतिहास के दौर में वह सब परीक्षा कम देते थे । अब आरंभ के 100 स्थानों में तकरीबन 30 स्थान उनके ही होते थे । इसका एक बड़ा कारण फ़िज़िक्स और गणित में अधिक नंबर को प्राप्त करना था । स्केलिंग पद्धति के बावजूद वह प्रतियोगिता में आगे हो जाते थे । दूसरा एक कारण प्रम्परागत रूप से इलाहाबाद के अभ्यार्थियों का सामान्य अध्ययन का कमज़ोर होता था । अब दिल्ली विश्वविद्यालय और जे एन यू भी रेस में शामिल हो गये थे और मुकाबला बहुकोणीय हो गया था । अभी भी इलाहाबाद से सेलेक्शन होता था पर प्रथम सौ में लोग काफ़ी कम हो गये थे । एक बात इलाहाबाद के अभ्यार्थियों में थी वह थी भारतीय इतिहास और संविधान पर अच्छा ज्ञान होना । बद्री विशाल को यह कंठस्थ ऐसा था । वह विश्व इतिहास में थोड़ा अपेक्षाकृत रूप से कमज़ोर थे और मेरा विश्व इतिहास में मज़बूत होना उनके नज़दीक लाने में सहायक हुआ । मैंने उनकी विश्व इतिहास काफ़ी मदद की, खासकर यूरोप के इतिहास में । उन्होंने अगर सबकुछ न भी बताया तब भी जितना भी बताया उससे मुझे बहुत लाभ हुआ ।

मैं उन महान शिक्षा संस्थानों के इंजीनियरिंग, मेडिकल, प्रबंध स्नातकों से प्रतिस्पर्धा करके अंतिम 2500 में पहुँचा हूँ यह तथ्य एक महानायक का जन्म मेरे ही अंदर दे रहा था । मैं यदा-कदा यह तथ्य लोगों से रेखांकित करके अपना भाव समाज में बढ़ाने में कोई कसर तो छोड़ता नहीं था पर साथ ही साथ खुद से ही कहकर अपना आत्मविश्वास भी बढ़ाता था और खुद को ही गौरवान्वित करता रहता था । मेंहदौरी कालोनी के राजेश प्रकाश जो IIT कानपुर के इंजीनियरिंग स्नातक हैं, इंटर के बाद IIT, Roorkee engineering और मोती लाल इंजीनियरिंग कालेज तीनों में उच्च रैंक पाने के बाद IIT गये वह तीन बार असफल होकर इस बार में स पास किये । पूरे इलाहाबाद के इंजीनियरिंग कालेज से सिर्फ़ 6 लोग में स पास किये । मेरे जीआईसी के सहपाठी जो मुझसे बहुत बेहतर थे उसमें से कोई में स पास न किया । मैंने कभी बहुत अधिक अंक प्राप्त न किया था । इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश पाने में मैं असफल रहा था । मेरे जीवन की कहानी मेरे असफलताओं की कहानी आज तक रही है । यह पहली बड़ी सफलता मेरे हाँथ लगी थी । मेरे घर परिवार में कुछ लोग पढ़ने में अच्छे थे पर कोई में स न पास कर सका । मेरे रिश्तेदारी में एक लड़की समय पूर्व ही घोषित IAS हो गई थी पर उसने प्रतियोगिता परीक्षा के

क्षेत्र में असफलता के कीर्तिमान स्थापित किये । वह निश्चित रूप से मुझसे बेहतर थी पढ़ने में, अगर परम्परागत शिक्षा के परिणाम को देखा जाए ।

ऐसे माहौल में मैंने पहली ही बार में वह दुर्गम द्वारा ध्वस्त कर दिया था वह भी असफलताओं की कहानी को दरकिनार करके । मेरे अंदर कई क्षमताएँ लोग देखने लग गए । लोग कहने लग गए कि जज्बा हो तो उसके जैसा जो पहाड़ों को चीर कर नदी बना दे । एक सफलता ने समाज का मेरे प्रति दृष्टिकोण ही बदल दिया । पर मैं जानता था कि यही समाज जो मुझे सर पर उठाए हुए हैं वक्त न लेगा मुझे पाताल में गाड़ने में अगर जून के पहले सप्ताह में मैं असफल हो गया । मेरी माँ हर बात पर एक ही बात कहती थी, तुझे अपने लिये ही नहीं औरों के लिये भी जीना होगा, यह उसका कहना मुझे और संजीदा कर देता था लक्ष्य के प्रति । पर मैं अपनी हैसियत जानता था कि इतने महारथियों के बीच मेरा कोई अस्तित्व नहीं है । मिश्रा सर ने पता नहीं क्या देखा था मुझमें कि हर बात पर कहते थे जून के पहले हफ्ते में जंजीर फ़िल्म रिलीज़ होगी और एक महानायक का जन्म होगा ।

यह सब सुनकर समझकर मेरे अंदर भी तरंगे उठती थी कुछ अलग गौरव पाने की । अब सिर्फ़ कुछ ही जीवन में पाने की तमन्ना न रही । अब गहराइयों में उत्तर कर सदफ के मोती पाने की आशा लिये साहिलों से लहरों की तरफ जा रहा मैं कई बार सोचता था क्या अब मुमकिन होगा इसको पाए बग़ैर जीना । न पूरा सही इसका निस्फ ही मिले । दुश्वार हो जाएगा अब जीना, पाश-पाश हो जाऊँगा मैं अगर यह अपनी सफलता का मुख्तलिफ़ नग़मा मैं गुनगुना न सका ।

गीतिका भी आई एक दिन । वह अपने चक्कर में थी । वह अलग प्लानिंग कर रही थी । अगर यह चयनित हो गया तो इसका सारा मटीरियल मुझे मिल जाए तो मेरी नाँव पार । मैं भी कम घाघ न था । बद्री विशाल के साथ रहते- रहते सीख गया था ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ज्यादातर टाप पोजिशंस लड़कियों की ही आती थी । पर उसमें से कुछ ही जीवन में बेहतर कैरियर बना पाती हैं, बाकी तो चक्की- चूँहा ही करती हैं । इसका कारण कुछ भी हो, पर यह एक तथ्य मैंने बहुत सालों से देख रहा ।

गीतिका को भी दूसरा स्थान प्राप्त हुआ था एम ए में पर वह प्रारम्भिक परीक्षा में फेल होने का पूरा ठीका लिये हुये थी । उसका दावा था कि प्रारम्भिक परीक्षा अगर पास कर लूँगी को मेंस मेरे लिये सहज है ।

मेरी एम ए में कोई पोज़ीशन न थी । इस बात का मलाल था मुझको कि टाप टेन 10 में 7 लड़कियाँ थीं, मुझे जगह न मिली थी । गीतिका समय - समय पर यह ठोंक भी दिया करती थी कि उसका क्या होगा वह तो यूनिवर्सिटी में मेरे सामने किसी लायक

न था । पूरी कोशिश के बावजूद कोई पोज़ीशन न मिली उसकी । “पूरी कोशिश “ शब्द पर ज़ोर दे देती थी वह । पर अब हवा का रुख अब बदल चुका था । जैसे हर एक के सपनों को उड़ने के लिये पर तो होते ही हैं सो उसके भी थे पर उन डैनों को ताक़त अब मुझसे चाहिये थी ।

उसने मेरे पक्ष में कहना शुरू कर दिया था । वह चाहती थी कि कसीदे वह जो भी गढ़े मेरे बारे में वह मुझ तक पहुँच जाए । पर उसको क्या पता कि मैं अब एक दूसरी लीग का खिलाड़ी हो चुका हूँ । मँझे हुये अमित चौधरी, बद्री विशाल मिश्र ही नहीं एक संस्था ए एन झा पर भारी पड़ने का ख्वाब पालने लगा हूँ ।

मैं भी सीख गया था, इलाहाबाद की भाषा, “ नोट्स न तो मैं बनाता हूँ और न बनाने की सलाह देता हूँ । आप मूल पुस्तकों को अंडरलाइन करके पढ़ो और कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों को लिख लो ” । पर हकीकत यह है कि हर अभ्यार्थी का कमरा नोट्स से भरा होता था । महाभारत के छल से बड़ा छल यहाँ फैला हुआ है । धर्म के साथ कोई नहीं, हर रणनीतिकार कह रहा विजय ही मेरा धर्म है ।

मैंने भी यही कहा कि मैं सब दे दूँगा, अगर हो जाएगा मेरा पर नोट्स तो ज्यादा बनाता नहीं यह तो तुम मेरी आदत मेरे एमए के दिनों से जानती हो । उसके चेहरे से जो भाव दिख रहे थे उससे मैं एक ही चीज़ पढ़ रहा था मैं कि मौन में वह चीख कर कर कह रही, “झूठा कहीं का ” ।

पर वह शर्मा आंटी की बेटी थी । कहाँ मानने वाली । बोली कुछ भी दे देना जो भी लिखा हो ।

मैंने कहा, मैं सब दे दूँगा पहले होने तो दो मेरा ।

उसने पूँछा कि कब है इंटरव्यू ?

मैंने बता दिया । वह शुभकामना देकर चली गई ।

मिश्रा सर के रुख में परिवर्तन आ चुका था । वह ज्यादातर चीजें मुझे बताते थे । रुख परिवर्तन का एक कारण यह भी था कि उनका इंटरव्यू मुझसे एक दिन पहले था । उनको यह लग रहा था कि अगर मेरा इंटरव्यू पहले हुआ और खुदा न खास्ता मेरा और उनका इंटरव्यू बोर्ड एक ही हो गया और सवाल भी एक ही तरह के पूँछ लिये गये तब जो जवाब मैं दे चुका हूँ उसी की पुनरावृत्ति होने की संभावना हो भी सकती है । इस परिस्थिति में उनका इंटरव्यू प्रभावित हो सकता है । अब उनकी तिथि मुझसे एक दिन पहले थी तो वह इस चिंता से मुक्त हो गए थे ।

मुझे इन सब बातों को ज्ञान नहीं था इसलिये मेरे ऊपर इसका कोई असर न था । इलाहाबाद में हर अभ्यार्थी का बस एक सूतरी कार्यक्रम उसकी कापी सबसे अलग होनी चाहिये । पढ़ते सब कमेबेश एक ही तरह की किताबों से थे पर पता नहीं कौन सी भाषा का इस्तेमाल करेंगे कि जवाब अलग हो जाए । दूसरी बात उत्तर में मौलिकता होनी चाहिये । अब कौन इन रटने वाले तोतों से कौन कहे, घोंट मारकर लिखते हो और निराला की मौलिकता का डरामा करते हो ।

माक इंटरव्यू के तीन आयोजन हुये मैं गया । वहाँ भी माहौल कमोबेश प्रतिस्पर्धा का ही था । पर फायदा हुआ । थोड़ी झिझक खुली । नियत दिन पर सायंकाल प्रयाग राज दरेन पर बैठने के लिये घर से बाहर निकला । पूरा मुहल्ला एकत्रित था । सब शुभकामनाएँ दे रहे थे ।

माँ तो माँ ही होती है । दही-चीनी खिलाया । पानी भरी बाल्टी सामने रखी हुई थी शुभ संकेत के रूप में । वह बोली बेटा, तुमने जो गौरव दिया वह आज तक नसीब न हुआ था । जब तू छोटा था स्कूल जाता था नन्हे पैरों पर तब से यह सपना मैं संजोये हुये थी, एक दिन तुझको IAS के लिये विदा करूँगी वह घड़ी नज़दीक आ रही ।

तू जब छोटा था तब एक बार तेरे बचने की उम्मीद न थी तब से मैंने गंगा स्नान के लिये चप्पल पहनना छोड़ दिया था । आज तक न पहना चप्पल गंगा की ओर जाते हुये । जिसने मौत को जीता है वह हार नहीं सकता । मेरे सारे दरत, उपवास, पुण्य तुझको लगें । मुझे मोक्ष नहीं चाहिये मुझे तेरा चयन चाहिये । मैंने लाख कोशिश की आँसुओं को रोकने की पर आँसुओं ने बगावत कर दी ।

मैंने उस आँसुओं से ही अपने गालों पर लिख दिया

किये हैं मुंजमिद हैं तेरे सारे आँसू
मेरे अपने हौसलों के लिये
जो कर न पाए घोड़ों पर सवार
वह कर जाएँगी मेरी बैसाखियाँ
क्योंकि रुबाब में तू आती है माँ
मुझसे यह कहते हुये
तुझे सर बुलंदी पर चढ़ना है
अपने हौसलों को जहाँ को दिखाना है ॥

उसका यह कहना मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये मेरे कानों में गूंजता रहा । उसका पैर छूते वक्त मैं फफक फफक कर रोने लगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 22

मैं दिल्ली पहुँच गया । अपने एक रिश्तेदार के यहाँ रुका । वहाँ स्वागत किया गया मेरा । वह पूजा इंस्टीट्यूट में काम करते थे । बड़ा सा कैंपस था वह । मिश्रा सर मुझसे पहले ही चले गये थे । हम लोग इंटरव्यू से एक सप्ताह पहले पहुँच गए थे । पहले जाने का एक कारण यह था कि हम लोग यूपीएससी जाकर पता करते थे कि इंटरव्यू कैसा हो रहा है । क्या-क्या सवाल पूछे जा रहे ।

परम्परागत रूप से अंग्रेज़ी माध्यम का इंटरव्यू पहले होता था फिर हिंदी माध्यम का । अमित चौधरी, राजेश्वर सिन्हा, मिश्रा सर आदि ज्यादातर लोग आ गए थे दिल्ली । यह लोग अंग्रेज़ी माध्यम से इंटरव्यू दे रहे थे । इसलिये उनका पहले था । हिंदी माध्यम का इंटरव्यू शुरू होते ही मेरा पहले ही दिन था ।

हम लोग सुबह नौ बजे पहुँच जाते थे यह पता करने कि सवाल किस तरह के पूछे जा रहे । लोग कहते थे जब मैंने यूनिवर्सिटी में प्रवेश लिया था कि कोई कहेगा इंटरव्यू के समय कि एक ग्लास पानी लाओ तुम पानी मत लाना । तुम घंटी बजाना और चपरासी से कहना पानी लाओ । तुम IAS हो पानी क्यों लाओगे । पानी लाया तो रिजेक्ट । ऐसे ही तमाम सवाल सुने थे पर पाया कि ऐसे सवाल अनुशरूतियों में मन बहलाने के लिये किये जाते हैं, इनका कोई वजूद नहीं होता ।

कई लोग टाई पहनते थे इंटरव्यू में । एकाध को सूट में भी देखा मैंने । लड़कियाँ ज्यादातर साड़ी पहनती थीं, कुछ सलवार सूट भी पहनती थीं । धड़ल्ले से अंग्रेज़ी लोग बोलते थे । लड़कियाँ भी बहुत अच्छा अंग्रेज़ी बोलती थीं ।

मेरे अंदर हीन भावना का जन्म होने लगा । मैं तो इतना अच्छा नहीं बोल पाऊँगा । इंटरव्यू बोर्ड के जो चेयरमैन होते थे वह पूर्व के IAS, IFS, IPS अधिकारी होते थे । ज्यादातर IAS होते थे । 35 साल से ज्यादा की सेवा करने के बाद वह यूपीएससी के सदस्य बनते थे । एक सदस्य के बारे में कहा जाता था उनको हिंदी नहीं आती । वह समझ

तो लेते हैं पर बोल नहीं पाते । यह सुनकर मेरा दिल बैठने लगा ।

मैं हिंदी में संस्कृत और उर्दू के शब्दों का इस्तेमाल करता था बोलने में । ऐसा इलाहाबाद में परम्परा थी भाषा में शब्दों के प्रयोग की ताकि भाषा में प्रवाह, देशज संस्कार और लालित्य आ जाए । भाषा को विविध आयामी बनाने पर बल दिया जाता था । एक गंगा जमनी तहज़ीब की खड़ी बोली थीं इलाहाबाद में । मुझे लगा कि जिसको हिंदी बोलनी ही नहीं आती वह मेरे भाषा के प्रवाह को कैसे अंक देगा । फिर

सोच में डूब गया । अब एक नई चिंता कि अगर उनके बोर्ड में पड़ गया मेरा इंटरव्यू तब मेरा क्या होगा ?

महाप्राण निराला की पंक्तियाँ गूँजने लगीं मानस पटल पर

“धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध
धिक साधन जिसके लिये सदा ही किया शोध ।

इलाहाबाद में एक बहुत अच्छी लाइन थी जो बहुत लोग कहा करते थे , कहते हैं हरिवंश राय बच्चन जी भी कहा करते थे , जो आपकी इच्छा से हुआ वह बहुत अच्छा और जो आपकी इच्छा से न हुआ वह और भी अच्छा । वह परभु की इच्छा का है । उससे बेहतर और कुछ नहीं हो सकता ।

इस उक्ति ने धैर्य दिया । सारा कुछ परभु पर छोड़कर मैं अपना ध्यान इंटरव्यू के सवालों पर लगाने लगा ।

जो भी बाहर निकलता था लोग पूछने लगते क्या हुआ ? क्या पूछा गया ?

हाबी बहुत रुचिकर- रुचिकर सुनने को मिली । फोटोग्राफी, ट्रैवलिंग, Excursion, reading , writing , Bird watching , cricket ,Football , Badminton , Tennis , movie watching , going to forest , ज्योतिष, योगा ।

यह सब तो पता ही न था मुझे । हमारी हाबी एक दम अलग थी । हिंदी उपन्यास पढ़ना । ऐसी हाबी न भूतों न भविष्यतो ।

हाबी पर सवाल बहुत पूछे जाते थे । शायद इंटरव्यू में हाबी पर सवाल बात को आरंभ करने का एक ज़रिया हुआ करता था ।

एक की हाबी थी watching movies । बोर्ड ने कहा कि आपकी हाबी का शब्द ही गलत है । movie एक slang word है । शब्द film है अंग्रेज़ी का न कि movie । आपको अपनी हाबी का शब्द ठीक लिखना चाहिये था ।

किसी ने फोटोग्राफी लिखी थी । बोर्ड ने कैमरे का लेंस , फोटोग्राफी का सिद्धान्त, ब्लैक एंड व्हाइट समय की कैमरे की समस्या आधुनिक कैमरे का विकास , कितनी फोटोग्राफी आपने आज तक की है ? किस तरह की फोटोग्राफी आप करते हैं । यह सब पूछ कर रुला मारा ।

एक अभ्यार्थी जो रेलवे में इंजीनियर के रूप में कार्यरत थे उनसे पूछा गया कि पहली रेल लाइन कब चली उन्होंने बता दिया । फिर पूछा बोर्ड ने कि दूसरी कब चली ?

वह बोले जो पहली चली थी बम्बई से थाने वहीं उलटी चली थी थाने से मुंबई । मिश्रा सर तो पूरा रटे थे कहाँ क्या हुआ ? वहीं वह दे मारे उसको कि कलकत्ता को रानीगंज के खादानों से जोड़ने के लिये दूसरी रेलवे लाइन चालू की गई थी । वह थोड़ा निराश हुये गलत उत्तर देने के कारण ।

तमाम प्रश्न भारत की आर्थिक नीति , देश की समस्याओं और आपके विषय पर पूछे गये । पर ज्यादातर सवाल समसामयिक जीवन से पूछे जाते थे । प्रश्न आधुनिक भारत की राजनीतिक घटनाओं और संविधान से भी पूछे जाते थे । इंटरव्यू सुनकर यह मैंने निष्कर्षित किया कि आपके जो भी विषय स्नातक एवम् परास्नातक में होते थे उस पर सवाल होने की संभावना काफ़ी रहती है । एक अनुमान लग गया किस तरह इंटरव्यू संचालित होता है । इंटरव्यू में विज़ की तरह के प्रश्न बहुधा नहीं होते थे संकल्पना से जुड़े प्रश्न अधिक होते थे ।

बद्री विशाल मिश्र को काफ़ी आता था । वह सवालों का जवाब दे लेते थे । पर इंटरव्यू बोर्ड का कमरा अलग ही होता है । बाहर दिये गये जवाब और वहाँ दिये गये जवाब में अंतर होता है । एक अभिव्यक्ति की समस्या उनके साथ ही जो उनको दिन-रात खाये जा रही थी । उनकी तैयारी में तो कमी न थी । कई साल का अनुभव था । काफ़ी पढ़ा भी था । वह जहीन भी थे और मेहनती भी । इस तरह का संयोग कम मिलता है कि ईश्वर जहीनियत भी दे और परिश्रम करने की अपार क्षमता । इनमें दोनों थी । यह इनका अंतिम अवसर था , अगर सफलता न मिली तो पूरे जीवन का दंश ।

मैं अपनी रणनीति बनाने में व्यस्त था । पहली चिंता कि अगर हिंदी न जानने वाले के बोर्ड में पड़ गया तब क्या करूँगा ? इसका कोई निदान न था । मैं क्या कर सकता हूँ अगर वह मेरी बात को पूरी तरह समझ न सका । पर हर बार मेरा अन्तर्मन कोई न कोई रास्ता निकाल लेता था संतोष देने के लिये । पुनः निकाल लिया कि इतने बोर्ड हैं उसी में क्यों पड़ेगा ? अब पड़ ही जाएगा तो क्या किया जा सकता है । अभी से रक्त क्यों जलाना , देखा जाएगा जब समस्या आएगी । मेरा तो पहला ही प्रयास है , कई लोग अंतिम प्रयास में हैं । दूसरे का दुःख -दर्द देखकर कई बार अपना दर्द कम लगने लगता है , वहीं मेरे साथ हुआ । मैं अपना ध्यान इस समस्या से हटाने की कोशिश करने लगा ।

अमित चौधरी और राजेश्वर सिन्हा भी आए थे पता करने कि कैसा इंटरव्यू चल रहा । पर वह मुझे कोई खास तरजीह न दे रहे थे । मैंने अभिवादन किया भी अनसुना ऐसा कर दिया उन दोनों ने । अभिजात्य मानते थे वह लोग अपने को । मैंने उनकी

लीग का न था , उनके अनुसार । कई बार उनके हाव-भाव से ऐसा लगता था कि वह कह रहे हों यह कहाँ से आ गया यहाँ पर ।

अहंकार उनमें निश्चित रूप से दिख रहा था । शायद वह अहंकार इसलिये भी था कि ज्ञान के साथ-साथ भाषा भी बेहतर थी । वह एक दूसरी भाषा के ज्ञाता थे । हिंदी मेरी बहुत अच्छी थी पर इस भाषा से आप जीवन जी सकते हो गर्व या अभिमान नहीं कर सकते । जिस परीक्षा में हम बैठ रहे थे यही क्या कम एहसान है कि आपको अपनी भाषा में लिखने दिया जा रहा है , इससे अधिक की उम्मीद आप मत करो ।

आज़ादी के बाद के तीस वर्ष तक तो नहीं ही लिखने दिया गया किसी को अपनी मातृभाषा में । उस समय मेरे तरह के तमाम अभ्यार्थियों और उनके परिवेश की बलि चढ़ा दी गई सिर्फ़ इसलिये कि आप अंग्रेज़ी नहीं जानते । मैं दो दशक पहले पैदा हुआ होता तो मैं यह परीक्षा देने की सोच भी कि नहीं सकता था ।

भला हो कोठारी कमीशन का 1979 से भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने की छूट मिल गई । मन किया भारतीय संविधान के उन पन्नों को फाड़ दूँ जिसमें यह लिखा है कि मातृभाषा में शिक्षा और हिंदी के विकास को बढ़ावा दो । कौन हक देगा उनका जिन्होंने उन 32 सालों में खोया है अपना अधिकार अपनी भाषा का इस्तेमाल करके देश की प्रतिष्ठित सेवा को प्राप्त करने का ।

इतनी सलाबत मेरे साथ किसलिये ? यह सुल्बी - सजूबत मेरे साथ क्यों है ? मेरी क्या अज़ली- खता है कि अज़ीयत पेंच दर पेंच झेलने को मैं बाध्य हो रहा ।

इतना अहंकार सिर्फ़ इसलिये कि तुम बेहतर अंग्रेज़ी जानते हो ? मुझे वह पंक्ति याद आई अमित चौधरी की जब उसने मुझे अपने कमरे में अपमानित करते हुये कहा था , “I don’t entertain PCS aspirants and I have no idea about hindi medium books ” . यह बात मेरा अपमान किये बाहर भी कही जा सकती थी । मेरे अहम को चोट किये बाहर भी कह सकते थे ।

आत्मसम्मान , गर्व करना एक बात है पर अहंकार दूसरी बात है । इसकी परवरिश ही ऐसी है । दूसरों के साथ बदतमीज़ी करने का अधिकार आपको किसने दिया ? किसी ने इनको यह न बताया कि गर्व और अहंकार में फ़र्क होता है । गर्व में स्वयम पर अभिमान होता है पर सामने वाले का सम्मान भी होता है । अहंकार में सामने वाले को नीची निगाह से देखा जाता है । किसी व्यक्ति का उचित सम्मान न करना आपके परवरिश की कमी दर्शाता है ।

पर मैंने अपने मन में ही कहा , मेरा भी वक्त आएगा । समय सबका आता है । इतिहास सबका इंतज़ार करता है जो भी लिखने की कोशिश करता है ।

मिश्रा सर की सारी बातों को कोई और भी ध्यान से सुन रहा था जब वह इंटरव्यू में पूछें प्रश्न पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे थे ।

वह आई और अपना परिचय देकर बोली मैं आपसे कुछ समय चाहती हूँ । नाम से हम लोग एक दूसरे को जान जाते थे मैंस के रिज़ल्ट के बाद । शाम को मिलने का समय नियत हुआ । कुछ दूर जाकर उसने मुझे आवाज़ दी, अनुराग सुनना ?

मैं उसके पास गया । उसने कहा शाम को सर को लेकर आना । एक ऐसान होगा आप लोगों का । मेरी तैयारी थोड़ा कम ठीक है । मैंने यन्त्रवत कहा, ज़रूर ।

वह महिला छात्रावास की शशि तिरपाठी थी ।

पहली बार किसी लड़की ने इतने प्रेम से कहा, था -

“ सुनो “ ।

वह “सुनो“ ही कान में गूँजता रहा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 23

मैं शाम को नियत समय से थोड़ा पहले पहुँच गया । मेरे बाद मिश्रा सर आए । अब हम लोगों के सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आने लगी थी । सर विनोदी प्रवृत्ति के थे और उनका सेंस आफ ह्यूमर बहुत अच्छा था । आते ही वह बोले कि घर से आ रहे या सुबह से ही यहाँ इंतज़ार कर रहे । सर बोले भावना में बहकर सब मत बता देना । आराम - आराम से बताना । आप लोगों का इंटरव्यू एक ही दिन है । अगर एक ही बोर्ड पड़ा और वह आपके पहले गई और किसी संयोगवश प्रश्नों की पुनरावृत्ति हो गई तब आपके हित में वह न होगा । ऐसा न हो जाए कि होम करते हाथ जल जाए ।

मैंने यह न सोचा था । सर बोले मैं तुम्हारा भी चयन चाहता हूँ, अपने साथ । तुम अभी नये हो । यहाँ कदम-कदम पर छल- प्रपञ्च है । मैं आने का इच्छुक न था लोकिन देखा कि तुम आतुर हो और वह कन्या प्रेशान है और एक ब्राह्मण कन्या है इसलिये शास्त्र का ध्यान रखकर आ गया ।

मैं उनकी बात सुन ही रहा था कि शशि तिरपाठी आ गई और बातचीत की ओर मिश्रा सर ने ले ली क्योंकि उनको लगा कि मैं ज्यादा बता दूँगा और वह नियंत्रित रूप से बता कर काम चला लौंगे । हर कोई प्रतिस्पर्धा देख रहा था । अगर मदद करनी भी है तो ऐसी करो कि अपना नुकसान न हो ।

जिस तरह से वह अपनी तैयारी बता रही थी वह थोड़ा कम अच्छी तैयारी लग रही थी , पर क्या पता वह भी इमोशनल ब्लैकमेल कर रही हो । इस काम में महिलाएँ थोड़ा बेहतर होती हैं । मैंने कहा कि इतनी लड़कियाँ इंटरव्यू दे रहीं , आप लोगों ने आपस में प्रयास क्यों नहीं किया , साथ तैयारी का ।

उसने कहा कि यह कोशिश पिछले साल भी किया और इस साल भी पर कोई सहयोग नहीं करता । आप का मटीरियल चाहते हैं पर अपना मटीरियल नहीं देते । एक छिपाने की प्रक्रिया हर ब्रॉडकास्ट व्याप्त रहती है । कोई किसी से मिलकर आता है तब वह भी नहीं बताता । माक इंटरव्यू के आयोजन का भी प्रयास किया पर सफल न हो सका । यह स्पष्ट लगा बातचीत से लड़कियों की आपस की डाह और ईर्ष्या लड़कों की तुलना में ज्यादा है ।

इलाहाबाद की मानसिकता भी ज़िम्मेदार है काफी हद तक इसके लिये । अगर लड़कों के साथ मिलकर तैयारी करती तो लाभ अवश्य होता । लोगों से मिलने से फ़ायदा होता है । आपको नई-नई चीज़ें पता चलती हैं । मिलने-जुलने से व्यक्तित्व का विकास भी होता है । यह इंटरव्यू में तो व्यक्तित्व ही परीक्षित होता है । ज्ञान की परीक्षा तो कमोबेश हो ही गई ।

एक ही परिवार में बेटे पर कोई ख़ास पाबंदी नहीं लगाई जाती पर बेटी साँझ ढले चहारदीवारियों में क़ैद हो जाए । इलाहाबाद अगर मुंबई , दिल्ली ऐसा आधुनिकता में डूबा हुआ शहर न हो तब भी यह कोई गाँव नहीं है । यहाँ क़ानून व्यवस्था के हालात ऐसे नहीं हैं कि साँझ ढले चहारदीवारियों में क़ैद होने की आवश्यकता है । भरोसा लड़कियों पर करना चाहिये कि वह सक्षम हैं अपनी हिफ़ाज़त के लिये । पर इलाहाबाद तो इलाहाबाद ही है जो दिमाग में घुस गया वह कहाँ आसानी से निकलने वाला ।

मैंने भी तो दिन-रात धूम -धूमकर ही अपने लिये साधन जुटाये । साम , दाम , दंड , भेद सबका इस्तेमाल किया । विश्वविद्यालय की परीक्षा और सिविल सेवा परीक्षा में बहुत फ़र्क़ है । विश्वविद्यालय परीक्षा में सवाल सीधे आते हैं । लगभग पता होता है कि इतने सवालों के समूह में से ही सवाल आएँगे । पिछले तीन-चार वर्षों के पचों में से ही सवाल आएँगे पर ऐसा सिविल सेवा में कदापि नहीं होता । पढ़ने को आप तैयार हो तब भी सारा मटीरियल एकत्र करना दुर्लह कार्य है और समय लेता है । काफी समय लगता है सारे मटीरियल को एकत्र करने में । यही कारण है कि विश्वविद्यालय स्तर पर बेहतर करने के बावजूद यह लड़कियाँ सिविल सेवा में मात खा जाती हैं ।

दिल्ली की लड़कियाँ अपेक्षाकृत बेहतर करती हैं क्योंकि ऐसी समस्या वहाँ नहीं है । जेएनयू , डीयू का माहौल काफ़ी खुलापन लिये हुये हैं ।

सर ने राय दे दी जो वह दे सकते थे । मैंने भी कहा कि जो भी मटीरियल मेरे पास है कुछ मैं दे देता हूँ । अब समय तो कम है फिर भी अंतिम कोशिश की जा सकती है । सर ने पूरी एक लिस्ट बनवा दी और कहा कि कल मेरा इंटरव्यू है । मुझे अब तो कुछ पढ़ना है नहीं । आप मटीरियल अनुराग से लेकर फ़ोटो कापी करा लो । विषय तुम्हारा तैयार ही है । कल इंटरव्यू के बाद कुछ और राय दे दूँगा । ईश्वर ने चाहा तो कल्याण होगा । उसने कृतज्ञता व्यक्त की और वह चली गई ।

उसके जाने के बाद मिश्रा सर से मैंने कहा मेरे पास एक रणनीति है आपके इंटरव्यू के लिये । अभी तक आपने युद्ध स्वयम् की रणनीति से लड़ा है इस बार मेरी रणनीति से लड़ो विजय होगी ।

न दैन्यम न पलायनम ।

उन्होंने पूछा , क्या है रणनीति ?

मैंने थोड़ी देर उनकी तरफ देखकर कहा । भाषा बदल दो कल इंटरव्यू में । चक्रव्यूह बनाओ सवालों का अपने उत्तरों के द्वारा । बोर्ड को अपने प्रश्नों के घेरे में ले आओ । विश्वास रखो रणनीति पर । आकरामक बनिये बोर्ड में पूरी नम्रता और विनय के साथ ।

वह बोले कि बात तुम्हारी सुनने में अच्छी लग रही पर मेरे समझ में न आ रही । अब इस समय अभिव्यक्ति का माध्यम कैसे बदलेगा ? वह तो फार्म भरते ही अंतिम हो जाता है । मैं बता भी चुका हूँ तुमको कि मैंने अनुमति माँगी थी हिंदी में बोलने की पर स्पष्ट रूप से इंकार कर दिया गया । मैं हिंदी में इंटरव्यू दे गया वह अंक शून्य दे गये इस आधार पर कि आपने उस भाषा में इंटरव्यू न दिया जो भाषा आपने चुनी थी इंटरव्यू के लिये तब क्या होगा ?

मैंने कहा सर , अनुमति क्यों माँगी और क्यों माँगना ? यह आपका अधिकार है अपनी भाषा में बोलना , भले ही अंग्रेज़ी अभिव्यक्ति का माध्यम भरा गया हो डिफ़ॉल्ट मोड़ में । कोई बाध्य कैसे कर सकता है आपको कि आप अंग्रेज़ी ही बोलो । संविधान में आपका अधिकार है यह । वह शून्य अंक क्यों देंगे ? अगर आपसे अंग्रेज़ी में चाहेंगे इंटरव्यू तब वह कहेंगे । अगर आप उनकी बात नहीं मानेंगे तब यह हो सकता है कि वह यह कदम उठाए । अगर वह आग्रह करते हैं कि आप अंग्रेज़ी में ही इंटरव्यू दो तब की बात तब देखना । तब आप उनके कहे अनुसार समय को देखकर फ़ैसला कर लीजिएगा । आप बहुत सुलझे हुये आदमी हो । आप फ़ैसला उचित ही ही लेंगे । आप में नीर-क्षीर विवेक पर्याप्त है ।

वह कुछ देर सोचने लगे । उनकी मुख-मुद्रा से लगा कि वह मेरी बातों पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं ।

मैंने दूसरा तर्क प्रस्तुत किया । मैंने कहा कि आपका अंग्रेज़ी से कोई भविष्य नहीं है । आप तीन बार से असफल हो रहे हैं । आप अपनी बात कह नहीं पाते । सारा ज्ञान व्यर्थ है अगर वह सम्प्रोषित न हो पाया ।

वह सम्मोहित हो रहे थे मेरी बातों पर । मैंने एक शस्तर और चलाया कि अगर बोर्ड कहेगा कि आप अंग्रेज़ी में ही बोलो तब आप अंग्रेज़ी बोलने लगना वैसे जो आप बोलोगे वह बोर्ड को आसानी से समझ न आएगा । हिंदी में आप अजेय होंगे । इसकी संभावना मुझे लगभग शून्य है कि वह बाध्य करें आपको अंग्रेज़ी बोलने में ।

वहाँ उस समय कौन देखेगा खोल कर आपका फार्म कि आपने क्या लिखा है अभिव्यक्ति का माध्यम । आपके ही दिन हिंदी का इंटरव्यू आरंभ हो गया है । कुछ लोग हिंदी में इंटरव्यू उस दिन भी दे रहे । उसी झटके में आप का निकल जाएगा । सर बोले, यह कैसे पता लगा ?

झूठ बोलना कोई मुझसे सीखे । मेरी महारत है उसमें । मैंने कहा कि जहाँ में रुका हूँ वह यूपीएससी में काम करती हैं, उन्होंने बताया है । पर वह बहुत तेज थे । कहा तुम पूसा कैंपस में रुके हो वह वहीं काम करते होंगे । मुझे पता था यह सवाल आएगा ।

मैंने कहा कि सर मैंने कहा वह यूपीएससी में काम करती हैं न कि करता है । उनकी पत्नी काम करती हैं । वह संतुष्ट हो गये । मैंने कहा कि सर यह मामला निकल जाएगा यह सोचकर कि हिंदी माध्यम का छात्र है । बात आई, बात गई । लिख दिया 160 नंबर । आप पहुँच गए मसूरी । बस एक फ़ैसला करना है । माना थोड़ा कड़ा फ़ैसला है । थोड़ा अनैतिक ऐसा लग रहा । डर भी लग रहा कि पकड़ा गया तो क्या होगा ? पर अब इस जीवन में खतरा उठाए बगैर तो आज तक कोई आगे गया नहीं है । इतना भी अनैतिक कार्य नहीं कि आपने देश दरोह कर दिया । आपका चयन इस समाज के लिये ज़रूरी है । यह अधिकचरा ज्ञान रखने वाले संस्कार विहीन अंग्रेज़ी बोलने वाले टाई धारी वाले आपकी मेधा से क्या मुकाबला करेंगे । देश को आपकी ज़रूरत है । समाज के लिये यह अनैतिक सा दिख रहा कार्य आवश्यक है । आप कौन से धर्मराज या मर्यादा पुरुषोत्तम राम हो कि कभी ग़लत काम किया ही नहीं । आपके अपने यादे-शदीद में पता नहीं कितने गुनाहे- अस्ल का जखीरा मौजूद होगा । जयदरथ वध आवश्यक है आज न कि नैतिकता की सुरक्षा ।

अंतिम अस्तर चलाया जो बरह्मास्तर था । सर यह भी याद करो,

“ बेटा बद्री IAS बनना चाहे 4-6 बिगहा खेत बिक जाए ” ।

जैसे ही यह वाक्य बोला । वह दिल को उनके छू गया ।

मैंने कहा सर ख़तरा उठा लो नहीं तो जीवन भर का दंश होगा । समय है निर्णय का ।
आज न लिया तो ताउमर पछतावा होगा । नहीं तो यह ख़बाब कल चला जाएगा हमेशा
के लिये । मैंने एक कविता पढ़ी-

ऐ मेरे ख़बाब

तू इस तरह छोड़कर मत जा मुझको
आँखों से मेरे ज़ेहन में उतरते हुये
एक अलग कैफियत लिये तुम आए थे
तेरी कुछ जवाबदेही है
मेरी इन खानाबदोश आँखों के लिये
कब तक यह पीछा करेंगी तेरा

चाँद की नरम रौशनी में
दूर झाड़ियों में चमकते जुगनुओं के उजाले में
यह रात तो कट जाएगी
पर इहसास तेरे होने का
पर न मिल पाने का
कितना अकेला होऊँगा मैं तेरे बगैर सबके साथ होकर भी
इन तड़पती आँखों की बेबसी के लिये
ऐ ख़बाब तू मुझे छोड़कर मत जा

बहुत इंतज़ार किया है ताबीरों का
गुजर रही रात सारी मेरी बेबसी में
ऐ ख़बाब तू मुझे छोड़कर मत जा ।

सर बोले यह किसने लिखी ? मैंने कहा सर आपके चेले ने ।
वह बोले , पहले नहीं बताया ?
मैंने कहा , सर मौक़ा कहाँ मिला ?
यह नौकरी की आपाधापी ने मुझे ख़त्म कर दिया है ।

सर बोले दूसरी कौन सी रणनीति है जो चक्रव्यूह बनाने की ?

मैंने कहा कि उत्तर ऐसा ख़त्म करो कि प्रश्न उसमें से उत्पन्न हों । और हो सकता है वह आपके द्वारा उत्पन्न प्रश्न ही पूँछ बैठे । पर बहुत ध्यान से इसको करना । वह भी कम धाघ नहीं है । 35 साल से सरकार चला कर आए हैं । यह उनको अपील कर गया और बोले चक्रव्यूह बनाओ चलो माक इंटरव्यू आरंभ करते हैं । माक इंटरव्यू आरंभ हुआ । तकरीबन तीन घंटे चला । बहुत से प्रश्न- उत्तर हुये जिसमें से सवाल पहले के जवाब से निकल रहे थे ।

चक्रव्यूह बन गया , जैसी हम लोगों की क्षमता थी उसके अनुसार ।

हम लोग अपने- अपने गंतव्य की ओर चल दिये ।

मेरी वृहद् योजना सफल हो गई । मैं कमल व्यूह बनाकर अपना इंटरव्यू कराना चाहता था । मेरी योजना के मुहरे थे बद्री विशाल मिश्र । मैं अपने पर यह करने के पहले आज्ञाना चाहता था किसी पर । इसका किसी पर प्रयोग करना चाहता था ।

बद्री विशाल मिश्र का हिंदी में इंटरव्यू देना ज़रूरी है । अंग्रेज़ी में अगर वह देंगे तब वह चक्रव्यूह नहीं बन पाएगा । उनका हिंदी में साक्षात्कार होगा तभी वह कर पाएँगे जो मैं चाह रहा ।

मेरा *clinical trial* उन पर होने जा रहा था । वह बेखबर थे मेरी योजना से ।

मेरे पाँव ज़मीं पर न थे । अगर कल यह प्रयोग सफल रहा तो परसों में चक्रव्यूह से भी तगड़ा कमल व्यूह बनाऊँगा । चढ़ने दो बलि बद्री विशाल मिश्र की । अगर उनके ध्वंसावशेषों पर मेरा निर्माण होता है तो मैं ध्वंस कर दूँगा उनका । मुझे अपना निर्माण करना है ।

मेरी नैतिकता सिर्फ़ एक है - मुझे जीत चाहिये ।

मुझे जीतना है किसी भी क्रीमत पर । मुझे मृत्यु के बाद का नर्क स्वीकार्य है अपने पापों के लिये पर आज मुझे विजय चाहिये ।

जिन गहराइयों से गोताखोर डरते थे उन गहराइयों में मैं सदफ के मोती ढूँढता था । जो लहरें भय उत्पन्न करती थीं उसमें मैं रोमांच तलाश करता था ।

मैं मिश्रा सर के साथ वार्तालाप-संवाद करके वापस पूसा इंस्टीट्यूट के आवास में आ गया, जहाँ मैं रुका था इंटरव्यू की तैयारी के लिये। यह आज की रातिर बहुत भारी थी। मेरा इंटरव्यू दो रातिर पश्चात् था और मेरा क्लीनिकल दरायल मिश्रा सर पर कल होने वाला था।

एक क्लीनिकल दरायल, एक प्रयोग मिश्रा सर पर मैं कर रहा था और उसके परिणाम पर मेरी रणनीति बनने वाली थी। वह असफल होंगे तब मैं रणनीति पर पुनर्विचार करूँगा अगर वह सफल होंगे तब मैं इसी रणनीति पर काम करूँगा। एक सवालों की शृंखला जिसके जवाब से सवालों की कड़ी निकलती है एक चक्रव्यूह की तरह मिश्रा सर के लिये और एक बेहतर प्रश्नों की शृंखला जिससे कमल की तरह कई पंखुड़ियों की तरह कई सवाल उत्पन्न हो रहे वह मेरे अपने लिये।

यह मेरा कमल व्यूह उनके चक्रव्यूह से अधिक सशक्त है। मैंने लाइब्रेरियों में बैठकर तमाम पत्रिकाओं, विष्यात भाषणों, दुर्लह माने जाने वाली किताबों के सहारे यह व्यूह बनाया है। मेरे हर उत्तर में से प्रश्न उत्पन्न होगा। अगर उन मेरे उत्तरों के गर्भ से उत्पन्न प्रश्नों में से कुछ सवाल भी पूछ लिये गये तब तो मैं विजय पथ पर सवार राज्य प्राप्ति की ओर अग्रसरित होऊँगा। पर इसके लिये आवश्यक है कि कल मिश्रा सर हिंदी में इंटरव्यू दें।

अगर वह अंग्रेजी में बोलेंगे तब मेरा यह क्लीनिकल दरायल न हो पाएगा। इंटरव्यू बोर्ड को अपने अनुसार चलाने के लिये भाषा पर नियंत्रण आवश्यक है। अगर कल सुबह वह कह दिया उन्होंने, मैं अंग्रेजी में इंटरव्यू दूँगा तब तो मेरी सारी योजना असफल हो जाएगी। मुझे अपने भविष्य का भय था, इसलिये मैं बगैर प्रयोग के इसे आजमाना नहीं चाहता था। पर मेरी स्वार्थपरता की इंतिहा थी। जिसका चौथा और अंतिम अवसर है सिविल सेवा का उसको खतरे में डालकर अपना हित साधन करना चाह रहा था।

पर मैं जितना आसान समझता था यह सब वह इतना आसान न था। मेरे अंदर द्वंद्व आरंभ हो गया। एक ऐसा द्वन्द्व जो कह रहा था, याद रखना कुछ गुनाहों की कोई माफ़ी नहीं होती सिफ़र सज़ा होती है।

क्या मैं उचित कर रहा?

क्या यह नैतिकता के मानदंड पर ठीक है?

वह बिल्कुल तैयार न थे वह करने को जो मैं छल पूर्वक कराना चाह रहा । अपनी बात में ज़ोर लाने के लिये एक सफेद झूठ बोला कि हिंदी माध्यम का इंटरव्यू 27 अप्रैल से नहीं 26 अप्रैल से शुरू हो रहा । अपनी बात के समर्थन में कोरा झूठा प्रमाण दे दिया क्योंकि जानता था कि इसको सत्यापित करने का कोई साधन इनके पास नहीं है ।

यह सारा मैं क्यों कर रहा ?

सिर्फ़ इसलिये कि अगर यह प्रयोग सफल रहा तब मैं अपने पर आज़माऊँगा , अगर असफल रहा तब मैं इसकी आज़माइश करूँगा ही नहीं ।

व्यक्तिगत हित मेरे लिये सर्वोच्च हो चुका था । मेरे अरमान पूरे होने चाहिये भले ही उसमें किसी की हत्या हो जाए । यह हत्या नहीं तो और क्या है ? उसके बचपन से संचित अरमानों की हत्या । इसकी पत्ती जरूर बच्चों से कहती होगी , दुःख ख़त्म होने वाला है । हम लोग गाँव से निकल कर शहर में जाएँगे । बँगला होगा , नौकर होंगे , गाड़ी होगी , सम्मान होगा और तुम सब अंग्रेज़ी स्कूल में टाई पहन कर जाओगे ।

इसके बाबा इंतज़ार कर रहे हैं उस दिन का जब पेपर में नाम छपेगा , पूरे इलाक़े में हल्ला होगा कि मिशिर महाराज का नाती IAS हो गया । लोकल समाचार पत्र में छपेगा फ़ोटो के साथ और दरोगा, एसडीएम आएँगे सेल्यूट मारते हुये ।

वहीं दरोगा जिसकी बुलेट मोटरसाइकिल की आवाज़ पूरे गाँव में खौफ़ पैदा कर देती है , वही दरोगा हाँथ बाँधें दरवाजे पर खड़ा होगा । मेरा पहला ही प्रयास है , पर इनका अंतिम है । मैं इनको ख़तरे में डाल रहा अपने लाभ के लिये ।

मेरे मैं और दुर्योधन में क्या फ़र्क़ है ? वह भी सत्तालोलुप था और मैं भी हूँ । लाक्षागृह और मेरे द्वारा इनको ख़तरे में झाँकने में कौन सा बड़ा अंतर है । वह पांडवों को ख़त्म करके राज्य चाहता था । मैं भी इनको दाँव पर लगाकर इन पर प्रयोग करके अपना हित साधन करना चाह रहा । इंटरव्यू में एक गलत कदम पूरा विश्वास तोड़ देती है । सिर्फ़ बोर्ड यह कह दे ,

“ Mr Mishra , you can’t speak in Hindi . You chosen English as a medium to express so you have to speak in English “.

यह वाक्य इनके पूरे इंटरव्यू को ख़त्म कर देगा । जितना मैं बद्री विशाल सर को जानता हूँ , वह इस वाक्य के बाद अपना पूरा आत्म विश्वास खो देंगे और यह पूरी तरह से हताश होकर इंटरव्यू में सिर्फ़ समय पास करेंगे और चाहेंगे कि बस किसी

तरह से यह समय बीत जाए । इनको फिर 60/70 अंक मिलेंगे और जिस रात की सुबह इनकी कल्पना में है उस रात की कभी सहर होगी ही नहीं ।

इस असफलता का जिम्मेदार कौन होगा ?

सिर्फ़ और सिर्फ़ मैं ।

क़ानून दंड दे न दे । क़ानून की पुस्तकों और धाराओं में इस अपराध का ज़िक्र हो न हो , पर अपराध तो यह है ही । क़ानून से साक्ष्य के अभाव में बरी किया हुआ व्यक्ति अपराधी तो होता ही है उस परमिता की अदालत में जहाँ कोई मुकदमा नहीं चलता , परमिता का आदेश मान्य होता है ।

मुझमें दुर्योधन और कर्ण दोनों हैं । मेरा व्यक्तित्व खंडित व्यक्तित्व है । मेरे पास दुर्योधन की कुत्सित लालसा है तो कर्ण की ईर्ष्यालु कुंठा ।

मैं क्या अपनी माँ के सारे सत्कर्मों का अधिकारी हूँ जो उसने मुझे इलाहाबाद से चलते समय दिये थे यह कहते हुये , “ मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये ” । क्या वह इस जीत को स्वीकार कर सकेगी जिसमें छल भी है और किसी के स्वप्नों का रक्तपात भी ।

उसकी निगाह में मैं सिकंदर और सुकरात सरीखा हूँ । मैंने अपने पुरुषार्थ से अपनी जगह बनाई है । पर जब उसको पता चलेगा कि मैंने एक निरपराध के अरमानों को म़क्तल में सरे आम क़ल्ल कर दिया जबकि वह इससे बेख़बर था और उसकी पत्नी और बच्चों की रहम की गुहार मुझे सुनाई दे रही थी पर मैंने अनसुनी कर दी ।

जिस माँ ने मुझसे कहा है अज़मतें तुझ पर नाज़ करेगी , तू मेरा ऐतबार है , मुझे तुझसे उम्मीदें हैं , ऐसा कुछ नहीं है जो तू कर नहीं सकता , तुम मेरी चाह की सदाक़त हो , मेरा ख़बाब हो , मेरी ह़कीकत हो , तुझसे हर बाज़ी हार जाएगी , हौसलों को कुछ और तराश और खुद से कह मेरी माँ की उम्मीदें मुझसे बेवजह नहीं हैं । तेरे सपने तेरे कद से बड़े ज़रूर हैं पर वह भी वजह से है बस एक बात का ख्याल रखना मेरे दामन पर कोई दाग न आने देना ।

यह जानने के बाद क्या वह मेरी विजय का उत्सव मना पाएगी ? क्या वह मुझे माफ़ कर पाएगी ? जो आज कह रही तूने मौत को जीता है वही कहेगी तू मर गया होता तो अच्छा होता ।

मिश्रा सर मुझसे कह रहे कल की चिंता मुझे है और बहुत ज़्यादा है । तेरी एक-एक बात हथौड़े की तरह अन्तर्रमन में वार कर रही । फ़ैसला बहुत बड़ा है जो तुम लेने

को कह रहे हो । जो लिखा है फार्म में उसके विपरीत जाने का । बोर्ड के एक भी सदस्य ने भी सवाल उठा दिया तो इस जन्म में मैं IAS बनने से रह जाऊँगा । 84 लाख योनियों के बाद ही पुनः मानव योनि में जन्म लेकर इस सपने के बारे में सोच सकूँगा । बाकी बची ज़िंदगी बस इस तमगे के सहारे बीतेगी कि चार बार इंटरव्यू दिये थे पर भाग्य ने साथ न दिया ।

कभी PCS न दिया न देने के बारे में सोचा । अमित चौधरी, राजेश्वर सिन्हा ऐसे तमाम लोग और जो हमसे कई साल बाद तक IAS होंगे उनके अन्तर्गत कार्य करना होगा । उनकी सलामी बजानी होगी । यह मेरे से न होगा । मैं जाकर गाँव खेती करू लूँगा और शेष जीवन शापित होकर काट लूँगा, एक बोझ की तरह का जीवन जी लूँगा पर यह अपमान मुझे स्वीकार्य न होगा । एक उद्देश्य विहीन जीवन होगा मेरा जिसमें साँसों के लेने का कोई अर्थ नहीं सिवाय मौत के इंतज़ार के ।

मैं क्या कहूँगा अपने अबोध बच्चों से जिनसे वादा किया है अच्छी शिक्षा, अच्छे भविष्य का । मेरी पत्नी लाख मेरी माँ से कहे कि उसके दो भाई अधिकारी हैं पर मायके में उसकी भाभियाँ तो उसके पीठ पीछे कहती ही हैं कि इतना आसान होता अधिकारी बनना तो सारे घुरहू-पुतहू बन जाते अधिकारी । कई बार उसने अपना यह दर्द बयाँ भी किया है मुझसे ।

यह बात तो तुम्हारी अनुराग सही है कि अंग्रेजी में अभिव्यक्त करते समय मुझे मुश्किलातों का सामना करना होगा, मेंस कितना भी बेहतर किया गया हो बग़ैर इंटरव्यू के सहयोग IAS बनना बहुत ही मुश्किल है । मेरा विषय भी गणित या भौतिक विज्ञान तो है नहीं कि मेंस में शत प्रतिशत सही हुआ हो । तेरी यह बात भी सही है कि यह चक्रव्यूह हिंदी से ही बन सकता है, अगर अंग्रेजी बोला तब तो नहीं हो सकता ।

पर एक बार और सोच और ईमानदारी से बता इसमें कोई तेरी चाल तो नहीं । यहाँ कदम-कदम पर धोखा है । हर कोई दूसरे का गला काटकर आगे बढ़ता है, कहीं तू भी तो नहीं..... ।

मैंने तेरे को अपने छोटे भाई की तरह समझा है । मैंने तेरे से वह सारे राज साझा किये हैं जो किसी से न किये । मैंने तुझे अगले साल की परीक्षा के काफ़ी नोट्स दिये हैं और बाकी देने का वायदा भी किया है । याद करो मैंने अपने कमरे में ही कहा था, मेरा भविष्य क्या होगा यह मैं कह नहीं सकता पर तुझे IAS बनाने का जिम्मा मेरा है । तुम्हारे पास प्रतिभा है । यह तुम्हारा पहला प्रयास है और मेरे पास अनुभव है । मेरा अनुभव और तेरा जज्बा मिलकर इस संघ लोक सेवा आयोग की दीवारों पर इतनी गोलियाँ चलाएंगे की यह दीवार भरभराकर गिर जाएँगी और तू उन गिरी हुई दीवारों पर समुद्रगुप्त की तरह चलकर भावी जीवन में IAS के रूप में प्रवेश करगा । कई हरिषेण तेरे प्रश्नस्ति के गीत गाएँगे और तुम गुणवान, शीलवान, परम सुंदरी

कन्याओं के सपनों के राजकुमार बनोगे और वह तेरे लिये रवीन्द्र नाथ टैगोर की “
शुभ घड़ी “ का गान करेंगी ...

“ आज हमारे दरवाजे से राजकुमार गुजरेगा - माँ

आज किसी भी काम में मेरा मन नहीं लगता

आज सजूँ मैं कैसे , माँ

क्या पहनूँ मैं , बाल सवारूँ कैसे मैं

Xxxxxxxxxx xxxxxxxxxxxx

दूर से बस शहनाई की आवाज़ ही हिचकियाँ लेती

मुझ तक आयेगी

लेकिन राजकुमार हमारे दरवाजे से गुजरेगा , जिस पल ,

मैं पूरी तरह सज जाऊँगी ! “

यह सुनते ही मेरी आँखों में लाल डोरे तैरने लगे । मेरे हृदय की धड़कन बढ़ने लगी ।
मुझे लगने लगा कि जीवन में संगीत आ गया , मेरी अपनी ही साँस एक नज्म की
तरह मुझको सम्मोहित करने लगी ।

मैं तर्क देने लगा । मैं आपका छोटा भाई हूँ , आपका हित सर्वोपरि है । मैं आपका
हितचिन्तक हूँ । आप अंग्रेजी में इंटरव्यू देकर फेल ही हो रहे तीन बार से । आपने
खुद ही कहा है कि इंटरव्यू के समय कई स्तर पर कम्यूनिकेशन गैप हो जाता है
जिसके लिये ज़िम्मेदार भाषा है । अगर आप हिंदी में अपनी बात कहेंगे तो एक अलग
प्रभाव उत्पन्न होगा साक्षात्कार के समय ।

आप साहस से काम लो और खतरा उठाने से मत डरो । सिर्फ पढ़ने से क्या होगा ?
कुछ और भी होना चाहिये व्यक्तित्व में । पूरा चक्रव्यूह बना दिया है । बड़ी-बड़ी
इलाहाबाद की लाइब्रेरियों में जाकर जितने अच्छे-अच्छे मटीरियल पढ़े सब मैंने
चक्रव्यूह के सवालों में डाल दिये हैं ।

वह मेरी ओर देखकर बोले , एक बार और सोच लो । तुम जो कहोगे मैं करूँगा । मैं
अब यह घर में नहीं कह सकता कि IAS का ख़बाब नेस्तनाबूद हो गया । अंतिम बार
कह दो , जो कहोगे तुम वही करूँगा मैं बस यह ख़याल रखना इस बार की
असफलता बर्दाश्त न होगी मुझसे । मेरा पूरा जीवन तुम्हारे हाँथों में है ।

जमीर की लड़ाई बहुत संघर्षों की होती है । आपके अंदर से एक चीख उठती है । वह
चीख आपके सिवा किसी और को सुनाई नहीं देती । यह आत्मा की आवाज़ होती है

जो उपचेतना से निकल कर चेतना से संवाद करती है । आप लाख कोशिश करो इसे शांत करने की पर यह शांत नहीं होती ।

इसे श्मशान ऐसी ज्वाला में जलाने की कोशिश करो , क्षबिरस्तान की तरह की ज़मीन में दफ़नाने की या ले जाओ दूर समुद्र कीं अतल गहराइयों में इसे ख़त्म करने को पर यह सारे प्रयास व्यर्थ होंगे । वह उठ रही चीख तुम्हें धिक्कारेगी । तुम्हारी कायरता को तुम्हारे ही सामने बेलौस कह देगी । तुम्हारे स्वार्थपन को तुम्हारे ही सामने उजागर करेगी । वह चीख कर कहेगी , मैं तेरी आत्मा की आवाज़ हूँ , मैं तेरा जमीर हूँ , मेरी चीख तुझे ज़िंदा रखे हुये है । तू मुझे दफ़ना कर , जलाकर , समुद्र में नेस्तनाबूद कर मौत से पहले क्यों मरना चाहता है ?

यद रख यह तेरा सारा प्रयास न तो कृष्ण की तरह किसी नवीन व्यवस्था की स्थापना ऐसा है और न ही चाणक्य की तरह एक सशक्त आर्थर्वर्त की स्थापना का । इसमें उसके हित का कोई भी अंश शामिल नहीं है । यह तेरी लिप्सा, तेरी तृष्णा और तेरे अपने व्यक्तिगत हित साधन की आकांक्षा से उत्प्रेरित है । किसी और को पता हो या न पता हो पर तुझे तो इस बात का भान है ही कि तुम क्या कर रहे हो । अगर वह चक्रव्यूह में सफल भी हो जाए , भाषा को बदल कर अपनी तब भी तेरा पाप तो पाप ही रहेगा , ईश्वर ने उसको बचा लिया तेरे लाख कृत्यों के बाद भी ।

अब भी वक्त है अपनी स्वार्थपरता को छोड़ और कह दे उससे कि यह तेरा शकुनि के पाँसों का खेल है , घूँट से हट जा बदरी विशाल मिश्र और अपनी क्षमता और ईमानदारी से इंटरव्यू दे ।

पूरी ताक़त से मैं चीख पड़ा, यह कहते हुये

नहीं

यह छल है । यह मत करो ।

नहीं

सब लोग दौड़कर मेरे कमरे में आ गए । मैं पसीने से लथपथ था । मेरी धड़कनें तेज चल रही थीं । सबने पूछा क्या हुआ ? मैंने कहा एक दुःस्वप्न था । आंटी ने कहा तनाव है परीक्षा का , धैर्य रखो , सब ठीक होगा । ईश्वर कृपालु है ।

इतने में देखा कि सुबह के चार बज गए थे । सोने की कोशिश की पर मैं सो न सका । समय पर मैं चल पड़ा यूपीएससी की तरफ एक बड़ा दिन था मेरे लिये ।

मेरा स्वार्थ जो उदारता का वेश धारण करके जा रहा था इंटरव्यू बोर्ड में वैसे ही जैसे मिथक कथाओं में देवराज इन्द्र ने वेश बदलकर दधीचि और कर्ण को छला था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 25

मैं यूपीएससी के द्वार पर पहुँच गया । मैं समय से बहुत पहले पहुँच गया था । मेरा समय कट ही नहीं रहा था । मेरे मन में बार-बार आ रहा था, मैं सब सच कह दूँ । मैं बता दूँ सारी हक्कीकत । मेरे दिल पर एक हिमालय ऐसे पर्वत का बोझ मुझे प्रतीत हो रहा था । मेरी पूरी रात करवटों में बीती ।

यह प्रश्न बार-बार मानस पटल पर कौंध रहा था कि मैं सच कहूँ कैसे ? मैं किस तरह कहूँ, यह जो कह रहा आपको करने को उसमें अहित होने की संभावना बहुत है । यह आज तक तो किसी ने न किया होगा, भाषा कोई और लिखो विकल्प के रूप में और अभिव्यक्ति दो किसी अन्य भाषा में इंटरव्यू के दौरान, वह भी बगैर आवेदन एवम् अनुमति के ।

यह भी हो सकता है कोई अभ्यार्थी तमिल, बंगला बोलने लग जाए तब क्या होगा ? अगर वह तमिल, बंगला, मराठी में अभिव्यक्ति एक विकल्प के रूप में चयन करता है और इसके लिये आवेदन करके उस भाषा में बोलने की अनुमति की माँग करता है तब ऐसी परिस्थिति में इसकी समुचित व्यवस्था यूपीएससी करता है । पर यहाँ तो ऐसा है नहीं ।

मेरे सारे तर्कों का एक ही धरातल है कि हिंदी प्रायः लोगों को आती है और अगर हिंदी समझ में आ रही तब क्या आवश्यकता अंग्रेज़ी में अभिव्यक्ति के लिये बाध्य करने की । इस बात की प्रबल संभावना तो है ही कि बोर्ड के सदस्यों को हिंदी समझ आ रही है और तब अभ्यार्थी को अपनी मातृभाषा में बात कहने दिया जाए ।

इस इंटरव्यू का लक्ष्य एक ही है कि अभ्यार्थी का व्यक्तित्व परीक्षण । यह भी माना कि भाषा व्यक्तित्व का एक भाग है पर क्या भाषा ही अंतिम रूप से व्यक्तित्व का निर्धारण कर देती है ?

क्या कई भाषाओं में पारंगत व्यक्ति एक सशक्त व्यक्तित्व का स्वामी होता है ?

चीनी, जापानी तो अंग्रेज़ी नहीं जानते वह तो दुभाषिये का इस्तेमाल करते हैं वार्तालाप को समझने के लिये । इसका यह तात्पर्य तो नहीं हुआ कि वह अमेरिकी और ब्रिटिश की तुलना में कमज़ोर व्यक्तित्व के स्वामी हैं ।

यह भाषा का ज्ञान एक छोटा भाग है सम्पूर्ण व्यक्तित्व के कलेवर में । यह बहुत ही अफ़सोसजनक बात है कि अपनी ही भाषा में बात करने के लिये छल का सहारा लेना पड़ रहा है । वह एक व्यक्ति जो अपने ज्ञान और विवेक को प्रदर्शित करके राष्ट्र की सेवा करना चाहता है और राष्ट्र को उसकी ज़रूरत भी है और वह सर्वथा योग्य भी है , पिछले तीन वर्षों से अयोग्य करार दिया जा रहा सिफ़्र इसलिये कि वह दूर गाँव के क्षेत्र परदेश में जन्म लेता है , जहाँ पर अंग्रेज़ी के अध्ययन- अध्यापन की कोई सुविधा नहीं है ।

उसने कब उसने इंकार किया था कि मुझे अंग्रेज़ी नहीं पढ़नी , वह तो पढ़ना चाहता था पर किसी ने उसे सुविधा प्रदान न की । यह एक राष्ट्र की विफलता है जिसका खामियाज़ा वह भोग रहा । देश को आजाद कराते वक्त राष्ट्रीय आन्दोलन ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई । मैं अगर आन्दोलन का नेतृत्व कर रहा होता तब मैं विदेशी संस्कार पहले जलाता कपड़े बाद में । यह विफलता आज के कर्णधारों की ही नहीं है उनकी भी है जिन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन चलाया । कांग्रेस आजादी दिलाने में सफल रही पर एक राष्ट्र की आकांक्षाओं को एक सूत्र में बांधकर सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण करने में असफल रही ।

यह भी एक हक्कीकत है कि यह सब लोग जो इंटरव्यू बोर्ड में बैठते हैं वे लोग तुलनात्मक रूप से अंग्रेज़ी में अधिक सहज होते हैं , पर ऐसे लोगों को इंटरव्यू बोर्ड में क्यों बैठाया जाता है जिनकों राजभाषा का सम्मान करना नहीं आता , जो दम्भ पूर्ण होकर कहते हैं ,

“ I am not comfortable in Hindi “.

पर यह भी एक जीवन का सच है अब इसके साथ तो जीना ही होगा । हम उस आजाद देश के नागरिक हैं जहाँ गौरव पूर्ण ढंग से साँस लेने के लिये अंग्रेज़ी को जानना आवश्यक है । किसी ने ठीक ही कहा था ,

आजादी तीन थके हुये रंगों का नाम है जिसे एक पहिये ढोता है ।

मेरे लिये इस आजादी का कोई मतलब नहीं जहाँ भाषा की गुलामी सर्व व्याप्त है । मैंने जबसे सिविल सेवा के बारे में सोचा तब से एक ही समस्या, अंग्रेज़ी बनाम हिंदी जिसमें अंग्रेज़ी की पैरोकारी सारा ज़माना कर रहा और हिंदी कह रही , मुझे मेरा गुनाह मंजूर है दे दो सजा मुझको । यह हिंदी हर दिन की कचहरी से तंग आकर कह रही , गवाह भी तुम्हीं , क़ानून भी तुम्हारा , मुंसिफ़ ही मेरा कातिल है तब यह फ़ैसला मेरे हक़ में क्या करेगा ?

मेरी सारी पीड़ा का अंत हो जाएगा , यदि मिश्रा सर कह दें यह तुम्हारा भाषा बदलने का निर्णय उचित निर्णय नहीं लग रहा , तब इस मुद्दे को विराम मिल जाएगा । यह सारा मामला ही ख़त्म हो जायेगा । मुझे चैन मिलता और जो होना होगा वह होगा । मैं

किसी भी तरह इस पीड़ा से निजात चाहता हूँ । मुझे अपना चैन चाहिये , मुझे अपनी ज़िंदगी वापस चाहिये । मैं खुली हवा में साँस लेना चाहता हूँ । मैं इस घुटन से मुक्ति की फ़रियाद करता हूँ ।

पहली बार यह लगा कि मेरी माँ का संस्कार कितना हाबी है मुझ पर । मैं कितना भी स्वार्थी क्यों न हूँ पर ग़लत काम करने से डर लगता हो , माँ स्वप्न में आकर ताक़ीद कर जाती है । पूरी रात स्वप्न में बीती जिसमें एक अपराध बोध था , एक विचार प्रवाह था जो मुझे धिक्कार रहा था । मेरी लाल आँखें कह रही थीं बीती रात का उथल-पुथल ।

शशि तिरपाठी भी आ गई । वह आते ही बोली कि क्या हुआ ? आज रात किसके ख्वाबों में बीती ? देखा सपने में कोई ख्वाब झरने से उत्तरता संगीत ऐसा या पराकरम करता हुआ, राज्य की आकांक्षा लिये हुये ।

वह मुझसे मित्रता चाह रही थी । एक कन्या के प्रति आकर्षण स्वाभाविक ही होता है उम्र के उस पड़ाव में, वह भी इलाहाबाद के उस परिवेश में जहाँ छात्र-छात्राओं का विभाजन एक शाश्वत सत्य की तरह स्थापित है ।

मेरी ही तरह अगला साल भी उसकी योजना में था । यह उसका यह दूसरा प्रयास था । वह पिछले बार भी इंटरव्यू दी थी । उसने समझ लिया था मेरे और मिश्रा सर के नज़दीकी रिश्तों को ।

मिश्रा सर का बड़ा नाम था इलाहाबाद के प्रतियोगिता परीक्षा के क्षेत्र में और वह यह जान गई थी कि अगर मैं न होता तब उस दिन मिश्रा सर कभी न आते शाम को उससे मिलने और न ही इस तरह मदद करते ।

यह अनुमान लगाना बहुत आसान था कि अगर इस वर्ष में सफल न हुआ तब अगले साल मैं परीक्षा बदरी विशाल मिश्र के नेतृत्व में दूँगा और वह कहेंगे तुम लक्ष्य का संधान तो करो ही करो लक्ष्य जिस आवरण पर स्थापित है उस आवरण को ही ज़मींदोज़ कर दो । यह मिश्रा सर का अंतिम अवसर था और आज के बाद वह इस महासंग्राम से संन्यास लेने को बाध्य होंगे और जब वह प्रतिस्पर्धा में नहीं होंगे तब सहायता करने में आपत्ति कम होगी ।

उसने मुझको बोलते हुये सुना ही था , उस दिन संवाद के दौरान । वह आश्वस्त थी कि अगले वर्ष इसके दिविजय की प्रबल संभावना है चाहे कितनी भी चतुरंगिणी सेना इसको रोकने का प्रयास करे । वह चाह रही थी कि अगले वर्ष परीक्षा में वह मेरे साथ तैयारी करे । इसका कारण मेरे से ज्यादा मिश्रा सर का मेरा साथ था । वह जानती थी कि न केवल सर का मटीरियल में प्राप्त कर लूँगा वरन् उनका दिशा

निर्देशन भी होगा । मेरी मेहनत , सर का मटीरियल और उनका सक्षम नेतृत्व एक ऐसी तिरवेणी का निर्माण करेंगे जहाँ पर अमृत वर्षा के सिवाय और कुछ न होगा ।

इसलिसे वह सारे साम-दाम-दंड-भेद का इस्तेमाल करके मेरे साथ अगले साल परीक्षा की तैयारी करना चाहती थी । उसने वह सारा दुखड़ा रोया जो लड़कियों ने उसके साथ किया और उसने स्वयं ही स्वीकार किया मंथरा हर ओर हैं , जहाँ भी लड़कियाँ सिविल सर्विसेज दे रहीं । उसके पास रूप भी था और वह जानती थी कैसे मोम को धीमी आँच में पिघलाया जाता है ।

यहाँ हर कोई रणनीति बना रहा था , आज ही की नहीं वरन् एक दूरदर्शी सामरिक रणनीति । कोई और दिन होता तो शायद उसके इस लय बद्ध कथन पर मैं नज्म बिखेर देता । मैं बाज़ीगर हूँ और मेरे शब्दों की जादूगरी आँखों के सामने ही तिलस्म बिखेर देती है और फिर वह तिलस्म से समोहित व्यक्ति कहता है , ऐ बाज़ीगर कुछ और लिख मेरे लिये । पर आज कुछ और ही चल रहा था आँखों की पुतलियों से उर्ध्व मस्तिष्क तक ।

मिश्रा सर आ गए । वह मेरी तुलना में ज्यादा सामान्य थे । वह मुझे देखते ही बोले , महाराज क्या हाल बना रखे हो ? यह क्या है ? मेरा इंटरव्यू है आज आपका नहीं । आपका तो कल है । मेरे लिये आप इतने चिंतित हो ? जो दैव ने लिखा है वही होगा । आज तक उसके न्याय पर किसको आपत्ति हो सकती है ? आपत्ति भी क्यों?

उसने जन्म मुझे दिया है । उसने मुझे कुछ इनायतें दी है । मेरे पास जो कुछ भी गुण है वह उसने ही दिये । मेरे सारे भाईयों में मुझे सबसे अधिक काबिल बनाया । अनुराग तुम भी मेरे छोटे भाई सरीखे हो । तुम भी मेरी एक ताकत हो । अब ईश्वर जो करेगा उसको विनय पूर्वक स्वीकार करूँगा । मैं अपने परिणाम पर आज ही कह देता हूँ , ईश्वर जो भी करता है अच्छा ही करता है और अगर मेरा चयन न हुआ तब उसकी और कोई योजना है मेरे लिये है , क्या पता वह बेहतर ही हो ।

अनुराग , तुम्हारी और मेरी मुलाकात एक मात्र संयोग ही नहीं है । यह ईश्वर की एक नियामक सत्ता का पूर्व निर्धारित कार्यक्रम है । मैंने इतने सालों में कई महान प्रतिभा से युक्त लोगों को देखा है और उसमें से कई सफल हो कर मसूरी पहुँच गए पर तुम्हारे ऐसा रणनीतिकार न देखा । जिस तरह से तुमने सत्य प्रकाश मिश्र सर से सहयोग लिया , फिर मेरा लिया इसके पश्चात् यह नया प्रयोग चक्रव्यूह के निर्माण का इंटरव्यू में , यह अकल्पनीय है ।

इंटरव्यू बोर्ड को ही नियंत्रित कर लो , यह कभी मस्तिष्क में आया ही नहीं । यह न मेरे मस्तिष्क में आया न मेरी जानकारी में किसी और के । यह क्या नायाब सोच है , अपना बनाया सवाल ही उसको पूछने के लिये उत्प्रेरित करो । वहाँ एक ऐसी समा बाँध दो कि बोर्ड आपके इशारों पर नाचे और वह भी वह लोग जो लोग 35 साल से

अधिक समय तक सरकार चलाकर आए हों , यह सोचना ही बहुत बड़ी बात है । उसके बाद जो तुमने इतना समय लाइब्रेरी में बिताया चक्रव्यूह निर्माण के लिये और कितने बेहतरीन भाषणों को शामिल किया वहाँ बोलने के लिये यह एक नवीन प्रयोग है ।

मैं पूरी रात्रि विचार करता रहा । तुम्हारी रणनीति चक्रव्यूह की तो ठीक है और अगर तुम सफल हुए तो यह रणनीति तहलका मचा देगी और पूरा शहर तुम्हारे कदमों में होगा ।

तुम्हारी दूसरी सलाह कि मैं भाषा बदल दूँ यह थोड़ा मुझे सोचने को मज़बूर कर रही है लेकिन तुम्हारी यह बात भी सच है कि हिंदी में अगर मैं नहीं बोला तब यह चक्रव्यूह नहीं बन सकता ।

यह चक्रव्यूह है क्या? दिये गये उत्तर को इस तरह बनाओ कि उत्तर में प्रश्न समाहित हो पर बड़ी सावधानी और संजीदगी से । यह एक चीते की चतुर चाल है जो हिरण की ओर बढ़ रहा और अपनी धड़कनों को भी क़ाबू में रखो ताकि उसकी आवाज़ भी तुम्हारे शिकार को तुम्हारे आशय का अंदेशा न दे । यह भी सत्य है कि जो तुम जवाब में से सवाल निकालने को कह रहे हो उसके लिये वहाँ आवश्यकता होगी भाषा पर सम्पूर्ण नियन्त्रण की । यह भाषा का नियन्त्रण ही उत्तर से संभावित प्रश्न बनाने की प्रक्रिया में सहायक होगा ।

यह चक्रव्यूह एक उच्च स्तरीय अभिव्यक्ति क्षमता का आगरही है । यह दोनों मुद्दे आपस में गुँथे हैं । यहाँ एक नदी से काम नहीं होगा यहाँ संगम बनाना होगा । इंटरव्यू बोर्ड में जब एक आज़माइश चल रही हो तब भाषा के ढलान की आवश्यकता है तीव्र गति से मस्तिष्क के संचालन के लिये । यह देशज भाषा ही कर सकती है आंगंल भाषा कि अपनी पारिभाषित सीमाएँ हैं ।

अनुराग , यह मेरी आजमाइश का दौर है जिसके बाद अगर परिणाम नकारात्मक रहा तब मुझे खुद ही अपने ही ख्वाबों का क़त्ल करना होगा और मेरे ख्वाबों की लहू की बहती नदी से मुझे ही नहीं मेरी पत्नी और मेरे दो अबोध बच्चों को भी गुजरना होगा । हमारे पैरों से बने रक्त के निशान कहेंगे कि इन गुजरने वाले पैरों ने कभी अपनी हैसियत से बड़े ख्वाब देखे थे ।

मेरा लोहितलोचित मुख देखकर मेरे बाबा जिनके नाम का प्रकाश कई कोसों तक फैला हुआ है वह फूट-फूट कर रोने लगेंगे यह कहते हुये मैंने बेवजह एक अरमान पाला था जब यह नन्हें पैरों से गाँव के पराइमरी स्कूल में जाया करता था और मेरी माँ कहेगी बदरी बेटा तुम बहुत लड़े पर भाग्य से कौन लड़ पाया है आज तक ।

अनुराग , एक बार फिर से सोचकर यह बताओ कि मैं क्या करूँ ? मैं अपना जीवन तुम्हारे हाँथ सौंपता हूँ । मैं पूरी रात सोचता रहा । मैंने अंत में यह निर्णय लिया कि यह फ़ैसला मैं तुम पर छोड़ देता हूँ । एक बार पूर्व की ओर मुँह करके मेरे बाबा , अपनी माँ , मेरी माँ , माँ गंगा , बँधवा वाले हनुमान जी को याद करके सच्चे मन से फ़ैसला कर दो और तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा ।

मैं पूरी तरह से किंकर्तव्यविमूढ़ हो चुका था । मैं मौन , टकटकी लगाए उनकी बातें सुन रहा था । मेरी समझ में न आ रहा था मैं क्या करूँ ?

एक बार पुनः ईश्वर अवसर दिया था अपने निर्णय पर पुनर्विचार करके अपने पापों के शमन का । मुझमें चेतना आ गई थी । मेरे अंदर पुनः चेतना और उपचेतना का संघर्ष आरम्भ हो गया था । वह जो बोझ हृदय पर था वह हल्का हो गया । मैं एक ही झटके में अपराध बोध से मुक्त हो सकता था । मेरे चेहरे पर खोयी हुई लालिमा वापस आ गई । मैंने आसमाँ की तरफ़ देखकर ईश्वर को धन्यवाद दिया , एक अवसर देने के लिये कि मैं पुनः अपने विवेक का इस्तेमाल करूँ अपने स्वार्थ को किनारे रखकर ।

सर ने सारा फैसला मुझ पर छोड़कर मुझे तनाव मुक्त कर दिया पर साथ ही एक उत्तरदायित्व भी बढ़ा दिया । मैं अपने फैसले पर पुनर्विचार कर सकता था । मेरी आँखों में आँसू थे । इतना बड़ा विश्वास मुझ अकिञ्चन पर वह भी उसका जिससे मिलकर लोग धन्यता को प्राप्त करते हैं । जिसके दिखाए रास्ते पर लोग चलते हैं , जिससे लोग मील के पत्थरों का पता पूछते हैं वह कह रहा बाँध मेरी आँख पर पट्टी और ले चल जिधर तुझे ले चलना है मुझे ।

इतने बड़े विश्वास को धोखा देना , इतने बड़े यक़ीन को तोड़ देना क्या उचित है ? एक स्थापित नियम परीक्षा का है और उस नियम से छल करने का प्रयत्न किस आधार पर सच ठहराया जा सकता है ?

जो ईश्वर ने लिखा है वही होता है और ईश्वर सिफ़्र सच्चे दिल वालों की मदद करता है । वह छली , पापी , कपटी का साथ नहीं देता ।

मैंने यन्त्रवत वैसा ही किया जैसा सर ने कहा । मैं पूर्व की दिशा से मुड़कर उनकी ओर मुड़ा,

सर बोले कर दो फैसला

अंदर से बुलावा आ गया है ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 26

सर ने अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय करने का का उत्तरदायित्व मुझे दे दिया , इतना अगाध विश्वास मुझ पर !!!!

मैं सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के परिणाम के बाद ही मिला था । अभी कितने दिन हुये हैं , और इस तरह का यक्कीन मुझ पर , आखिर क्यों?

मेरा मन ग्लानि से भर गया । वह व्यक्ति जो मुझ पर इतना विश्वास कर रहा , मैं उसको मुहरा बना रहा अपनी योजनाओं का जिसमें कदम-कदम पर ख़तरा है । उसके ख़तरे के खेल से , उसके कदमों के निशाँ से मैं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ूँगा । मुझे जहाँ-जहाँ उसके कदमों की फिसलन दिखेगी वहाँ-वहाँ मैं सधे हुये कदम रखूँगा और जहाँ पर वह फिसल कर गिर जाएगा मैं वहाँ अपने कदम रखूँगा ही नहीं ।

वह क्यों यह फ़ैसला नहीं कर पा रहे ?

क्या वह यह चाह रहे कि कि यदि यह फ़ैसला उनका न होकर मेरा होगा तब यह खुद पर दोषारोपण करने से बच जाएँगे , अगर कुछ ऊँचा-नीचा हो गया इंटरव्यू में ?

हो सकता है वह सम्बल चाह रहे हों अपने फ़ैसले के समर्थन में !

यह भी हो सकती है वह मेरे से एक निरपेक्ष फैसले की उम्मीद कर रहे हों । यह बात आरंभ मैंने ही की , यह उनके मस्तिष्क में तो आज तक तो आई नहीं थी , शायद इसलिये मुझसे कह रहे हों अंतिम फ़ैसला करने को ।

मैंने कहा कि सर अगर आप अंग्रेजी में बोलेंगे तब शायद बेहतर न बोल पाएँ पर अगर हिंदी में

वह बोले वक्त नहीं है , जल्दी फ़ैसला करो ।

हिंदी या अंग्रेजी इसमें से एक चुन दो , वह आवाज़ दे रहे मेरे नाम का ।

मेरे मुँह से एकाएक निकला - “ हिंदी ”

वह बोले - Done ...

संग्राम मेरा, अस्त्र-शस्त्र मेरा, रणनीति तुम्हारी ।

अब चक्रव्यूह बनाऊँगा और अपनी मातृभाषा में बनाऊँगा ।

यह कहकर वह मुड़े और अंदर हाल के प्रवेश करने ही वाले थे कि मैं और शशि दौड़कर गये और उनका शुभकामना दी । उन्होंने मुझे गले से लगा लिया और कान में कहा प्रार्थना करना विजय की, मुझे उसकी रहमत चाहिये ।

मैंने कहा, सर उमिला और सुलोचना ऐसा संचित तप भाभी जी के पास है । वहाँ से निकली हर आवाज़ उस तक जाएगी और आज विजय होगी । मैंने राम की शवितपूजा की वह लाइन कही, जो हम लोग बहुत कहा करते थे अपनी तैयारी के समय ...

होगी - होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन ।

यह कहकर मैं और शशि बाहर आ गए ।

बहुत से लोग इकट्ठा थे बाहर । बहुत से लोग अपने परिचितों, मित्रों, रिश्तेदारों के साथ आए थे । वह सब भी बाहर खड़े थे । कई बड़े आदमी, सरकारी अधिकारी अपने बच्चों के साथ आए थे इंटरव्यू के लिये । उनकी बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ खड़ी थीं । उन सबके चेहरे पर गर्व देखा जा सकता था अपने बच्चों की उपलब्धि का ।

वह बड़े लोग इंटरव्यू बोर्ड के कंपोज़िशन, कौन-कौन एक्सपर्ट आए हैं, कैसा चल रहा इंटरव्यू, कौन सा बोर्ड बेहतर है इसकी बात कर रहे थे । कोई और दिन होता तो शायद मैं सुनता पर आज तो कुछ और ही चल रहा था मस्तिष्क में ।

एक अलग संग्राम नैतिकता के मानदंडों का । मैंने यह कहकर अपने को समझा लिया, एक बार पुनः फ़ैसला करने का अवसर आया, यह अधिकार मुझको स्वयम् उनसे ही मिला और मैंने जो उचित समझा वह किया । मैंने खुद से ही कहा कि वह हिंदी में इंटरव्यू देना चाहते थे, वह सिर्फ़ अपनी दुविधा को ख़त्म कर रहे थे मुझसे कहलाकर, जिस समय मैंने “हिंदी” कहा वह प्रसन्न दिख रहे थे ।

वह जानते थे कि अंग्रेज़ी से कुछ न होगा । एक ख़तरा उठाना श्रेयस्कर है बनिस्बत एक घिसी-पिटी रणनीति से आसन्न संकट से निपटने की कोशिश करना और हार को एक नियति की तरह स्वीकार करने से ।

मेरी चेतना और उपचेतना का संवाद बंद ही नहीं होता । मैं कुछ भी करूँ मेरी उपचेतना हमेशा कहती है तुम छली हो, तुम स्वार्थी हो, तुम अपना ही हित देखते हो

मैंने फ़ैसला उनकी इच्छा को देखकर इस बार लिया था । मैंने सिर्फ़ एक सवाल खड़ा किया था उस दिन रणनीति को बनाते समय । इस सवाल में क्या सिर्फ़ मेरा ही हित था ? इस सवाल के जवाब में एक सुकून था उनका जो चाह रहा लड़ना संग्राम अपना एक नयी रीति से ।

यह सुकून मैंने उसके चेहरे पर देखा आज । अगर सवाल खड़ा करना जुर्म है तो जुर्म ही सही । मुझे किसी से कोई जवाब नहीं चाहिये । मैं ख़ामोश रहकर अपने अंदर के उमड़ते हुये तूफानों की प्रलय लीला नहीं देख सकता , मैं तूफानों को अपने दोनों हाथों से से पकड़ कर उनको नेस्तनाबूद कर दूँगा । एक भाषा का प्रश्न अनवरत तूफान लिये हुये उसके अंदर उमड़ रहा था और इस मुद्दे से वह लड़ रहे थे इतने सालों से । वह तूफान हर साल उनको परास्त कर रहा था । मैंने देखा वह सीधे लड़ने की कोशिश कर रहे , मैंने कहा कि धास की तरह लेट कर परास्त करो पेड़ की तरह लड़ने से पराजय ही होगी ।

मैंने अपनी ही उपचेतना से कहा यह उसने ही कहा था , कर फ़ैसला मेरी तक़दीर का । वह न कर पा रहा था वह फ़ैसला जो उसे जीत के मुहाने पर ले जाए । तू देख उसकी शांति , उसका सुकून मेरे फ़ैसले के बाद । वह एक पीड़ा में था और एक झटके में मैंने वह काँटा निकाल दिया । वह आज जीतकर आएगा , वक्त का इंतज़ार कर ।

एक अवसर मिल जाने से मुझे बहुत शांति मिली थी । पहले मैंने छल किया था पर इस बार छल नहीं किया , यह कहकर मैं अपने को और संतुष्ट कर रहा था । मैं पूरा पर्यास कर रहा था इस मुद्दे से अपना ध्यान हटाने का ।

कल से हिंदी माध्यम का इंटरव्यू आरंभ हो रहा था । आज हिंदी माध्यम के कई छात्र- छात्राएँ वहाँ थे । वह सब जानने को उत्सुक थे कि क्या हो रहा यहाँ पर । कैसे - कैसे सवाल पूछे जा रहे । मैं तो पहले से ही आया था । उन सब चेहरों में कई चेहरे ऐसे थे जो हर रोज़ आते थे मेरी तरह पिछले कई दिनों से ।

आज इलाहाबाद बहुत ज्यादा था संघ लोक सेवा आयोग के प्रांगण में । लड़कियाँ भी इलाहाबाद की कई दिखीं और शशि को मेरे साथ खड़ा देखकर आश्चर्य व्यक्त किया , भाव भंगिमाओं से ।

मैं अब तक इलाहाबाद में एक पहचान बना चुका था । यह एक ख़ास बात है इस शहर की , जैसे ही मेंस का रिज़ल्ट आता है आप कमोबेश सारे पास करने वालों को

जान जाते हों। यह जानकारी नाम तक ही सीमित नहीं होती वरन् आप का विषय, मुहल्ला, कौन सा प्रयास है यह सब भी जान जाते हैं लोग।

यह बात यहीं तक नहीं रुकती, आप किसके साथ तैयारी कर रहे हो यह भी सब जान जाते हैं। मैं बद्री विशाल मिश्र के खेमे में हूँ, यह पूरा शहर जानता था। बरन्दण वाद का आरोप भी लग चुका था।

बद्री विशाल पर यह आरोप राकेश सिन्हा ही लगा गए थे जिसका झंडा राजेश्वर सिन्हा उठाए हुये थे। अमित चौधरी अन्य पिछड़ा वर्ग से आते थे पर वह एक PCS अधिकारी के बेटे थे और लखनऊ के प्रख्यात कालेज काल्विन ताल्लुकेदार से पढ़ कर आए थे। उनकी स्कूलिंग भी नैनीताल के प्रख्यात बोर्डिंग स्कूल से हुई थी। वह ज्यादातर अंग्रेज़ी ही बोलते थे तथा अभिजात्य संस्कारों के पोषक एवम् पैरोकार थे।

वह किसी की मदद नहीं करते थे। उनके अनुसार एक अभिजात्य संस्कार आवश्यक है सिविल सेवा में प्रवेश करने के लिये और इसी कारण वह हिंदी माध्यम के छात्रों को हेय की दृष्टि से देखते थे। वह हर चार लाइन के बाद बोलते थे,

“I am staying with Anupam in JNU”

अनुपम इलाहाबाद के ही थे। वह अच्छे छात्र थे। वह M. Phil. करने jNU चले गये थे। B.A. में अनुपम ने विश्वविद्यालय में टाप किया था। वह पिछले साल IRS हुये थे और इस वर्ष पुनः परीक्षा में भाग ले रहे थे IAS बनने के लिये।

यह कहकर अमित चौधरी यह रेखांकित करना चाहते थे कि मैं आम छात्रों से सम्बन्ध नहीं रखता।

अनुश्रूतियों के माध्यम से इलाहाबाद में यह फैला है कि दिल्ली में इंटरव्यू की एक कोचिंग के दौरान मिश्रा सर और अमित चौधरी में आपस में हाथापाई हो गई थी, किसी मामले पर। पर इस बात से दोनों इंकार करते हैं। पर यह सत्य की तरह था कि इलाहाबाद में कई खेमे थे। इन खेमों पर जातिवादी होने का आरोप भी लगता था। ए. एन. झा वाले ज्यादा आधुनिकता की बात करते थे वह भारतीय संविधान की दुहाई देते थे और कहते थे हमारा इसमें कोई विश्वास नहीं।। हर छात्रावास का खेमा था। ताराचन्द छात्रावास भी सशक्त उम्मीदवारों से लैस था। एक छात्रों का दूसरा वर्ग भी था जो PCS देता था पर वह बड़ी रुचि से इस प्रतिस्पर्धा को देखता था, कुछ वैसा ही जैसे रंजी के खिलाड़ी टेस्ट मैच देखते हैं।

राजेश्वर सिन्हा और अमित चौधरी मिश्रा, सर को देहाती और जातिवादी कहते थे। इसके जवाब में सर कहते थे कि राकेश सिन्हा से बड़ा जातिवादी कोई हो ही नहीं

सकता और यह राजेश्वर सिन्हा उसी साँप प्रजाति का है । अमित चौधरी को वह दोगला कहते थे कि यह किसी के काम न आएगा । यह अपने पिता को भी धोखा देगा , देश को तो देगा ही । यह शकुनि है और अपने भ्रष्टाचार से कई दुर्योधनों को जन्म देगा ।

मेरी कोई खास हैसियत प्रारम्भ में न थी या यूँ कहूँ कि आरम्भिक समय में कोई पहचान न थी पर धीरे- धीरे मेरी पहचान बन रही थी, उसका कारण मेरी भाषा और बोलने की क्षमता थी, पर ज्ञान इतना न था । मिश्रा सर भी लोगों से मेरे बारे में अच्छा बोलते थे । उन तीन-चार माक इंटरव्यू ने भी मेरी प्रसिद्ध में विस्तार किया था । मेरा लोगों ने नाम भी रखा था, “बद्री विशाल का लटकन” ।

यह एक ऐसा शहर है जहाँ सबके पास समय ही समय है । प्रारम्भिक परीक्षा दो और फेल हो जाओ अब अगले साल का इंतजार करो परीक्षा देने के लिये ।

“बनवै तो कलेक्टर नहीं तो करवै खेती” ।

यह आपको आते- जाते किताब की दुकानों में, यूनिवर्सिटी रोड पर अक्सर सुनने को मिल ही जाएगा ।

यह सब लोग खाली समय में बहुत सा काम करते थे । छात्र संघ का चुनाव, कुलपति का धेराव, लोकसभा चुनाव में काम, संगम में नहाना और हर मंगलवार, शनिवार हनुमान जी का दर्शन तो करना ही है - “हनुमान जी सदा सहाय “हर बात पर कहना ।

यह बँधवा पर लेटे हनुमान जी का दर्शन करने के बाद मुफ्त का प्रसाद तो लेंगे ही । मंदिर के महंत से भी पहचान हो जाती है इनकी । एक लड्डू देंगे महंत जी तो कहेंगे, अरे एक और दो महाराज । यह लोग दो बार दंडवत प्रणाम करेंगे । एक बार मंदिर प्रांगण में और एक बार मंदिर के बाहर फिर पूरे मंदिर की परिकरमा करेंगे और बड़ा सा लाल चंदन का टीका लगाकर छात्रावास, डेसीगेसी में आ जाएँगे ।

इसमें से कई प्रारम्भिक परीक्षा फेल होने पर झूठ बोलेंगे कि मैं मेंस दे रहा । एकाध अति उत्साही दिल्ली भी चले आएँगे इंटरव्यू के समय माहौल देखने कि क्या चल रहा है यहाँ और वापस जाकर आँखों देखा हाल नमक मिर्च लगाकर सुनाएँगे ।

उसमें से एक जो थोड़ा सीरियस थे पढ़ने में वह भी आए थे । नाम था उनका राजेश जायसवाल । वह रमेश सिंह के साथ आए थे उनका इंटरव्यू दिलवाने । वह यूपी भवन में रमेश सिंह के साथ लके थे । वह हर दिन शाम को रमेश सिंह का माक इंटरव्यू लेते थे और मुफ्त का खाना, नाश्ता करते थे । वह पराठे पर बहुत सारा मक्खन लगा कर खाते थे । वह इतना मक्खन लगाते थे पराठे पर कि एक दिन बैरा

ही बोल दिया कि इनको मैं मक्खन नहीं दूँगा , यह मक्खन पर परहार एक शत्रु की तरह करते हैं ।

इलाहाबाद में कुछ छिपता नहीं है । हर आदमी कहेगा इसको किसी से बताना मत और वहीं दूसरे से कहेगा और उससे भी यही कहेगा , इसको किसी से बताना मत । इसके पश्चात् पूरा शहर कहेगा , इसको किसी से बताना मत । अब कौन इन सरस्वती पुत्रों से कहे कि पूरा शहर तो जान गया अब किससे मैं यह छुपाऊँ यह तो बताओ ।

बाद मे रमेश सिंह ने मुझसे कहा यह राजेश जायसवाल बड़ा दरिद्र आदमी है । यह पूरे दिन सोता था , दिन भर चाय पीता था , जब देखो फोन करके खाना मँगाता था । यह बहुत बेकार आदमी है , अच्छा है यह मेंस पास नहीं कर पाता , यह इसी लायक है ।

राजेश जायसवाल और रमेश सिंह दो बैलों की जोड़ी थे । मेरी और रमेश सिंह की प्रतिस्पर्धा थी । हम दोनों इंटरव्यू के दौर में थे । मैं यह अवसर कहाँ छोड़ने वाला । छल , फरेब, षड्यन्तर इन सब में मेरी महारत थी । मैंने यह बात राजेश जायसवाल को बताकर उसकी रमेश सिंह से लड़ाई करा दी और बाद में मेरी दोनों से लड़ाई हो गई ।

वहीं राजेश जायसवाल चश्में से मेरी ओर देखकर जोर से बोले , भाई आपका खेमा तो इस बार कमाल करेगा । फैलाओ पंडितवाद, बर्बाद कर दो देश को ।

मैंने कहा कौन सा खेमा ? वह बोले मिश्रा सर का लेबर चौराहा का खेमा । शशि से उनका कोई परिचय न था पर शशि से बोले कि आप भी इसी खेमे में हो ?

शशि के पास खड़ी लड़कियों ने यह सुन लिया । अब शशि असमंजसता के घेरे में हाँ बोले तो लड़कियों का रोष की मुझसे चोरी-चोरी काम किया ना बोले तो मेरी और मिश्रा सर की नाराज़गी का भय , आखिर अगला साल भी तो है जिसकी रणनीति बन रही मानस पटल पर ।

मैं अंदर ही अंदर परेशान क्या हो रहा है अंदर । मिश्रा सर जैसे ही हिंदी बोले होंगे वैसे ही बोर्ड कहेगा , “ speak in English ” .

सर का सारा आत्म विश्वास ही ख़त्म हो जाएगा ।

अंदर से दूसरी आवाज़ निकलती है , नहीं ऐसा नहीं होगा । वह बोल रहे होंगे बेहतर । ज्ञान में वह अकाटय हैं । कोई नहीं कहेगा कि आप हिंदी न बोलो । यह कौन देखेगा

कि क्या आपने लिखा है फार्म में भाषा के रूप में । कौन-कौन से सवाल पूँछें जा रहे होंगे ?

यह सारे प्रश्न अंदर ही अंदर मथ रहे थे मुझे ।

मैं यही सोचते- सोचते यूपीएससी के गेट पर आ गया । मन अशांत था । एक कप चाय पी समय को नष्ट करने के लिये । तीन घंटे हो गये अभी तक बाहर नहीं आए वह । धीरे-धीरे लोग बाहर आने लग गए ।

एकाएक वह दूर से दिखे हाल से गेट की तरफ आते हुये , असंख्य सवालों को मस्तिष्क में लिये मैं लपका गेट की तरफ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 27

मिश्रा सर दूर से दिखे । उनका रुतबा इलाहाबाद में था ही । मैं , शशि , राजेश जायसवाल , रमेश सिंह , सारी अन्य लड़कियाँ और इलाहाबाद के अन्य लोग उनकी तरफ बढ़े । उन्होंने मुझको दूर से देखा । वह थोड़ा भारी शरीर के थे । मैं दुबला - पतला था । वह तेज कदमों से मेरी ओर आ रहे थे । मैं दौड़ने की मुद्रा में उनकी ओर बढ़ रहा था ।

वह जैसे ही मेरे नज़दीक आए अपने हाथ से वह सारी डिग्री मार्कशीट जो इतने सालों तक संजोये थे उसको वहीं जमीन पर गिरने के लिये छोड़ दिया । वह डिग्रियाँ जमीन पर गिर गईं और उन्होंने मुझे गले लगा दिया और एक ही बात कही ...

“ मैं ज़िंदगी में पहली बार अपनी बात कह पाया “ ।

मैं समझ गया कि वह हिंदी में इंटरव्यू देकर आ गए । बाकी लोगों को उन्होंने कोई तरजीह न दी , पर लोग सुनना चाह रहे थे उनका इंटरव्यू । सर ने कहा अनुराग दस - पन्द्रह मिनट में मैं इनको निपटा देता हूँ तब बात करते हैं इतिहास से । मैंने कहा सर वह राजेश प्रकाश निकले हैं , मैं उनसे मिलकर आता हूँ तब तक आप इन सबको निपटा दीजिये ।

मैं राजेश प्रकाश के पास गया । वह इलाहाबाद के मेहदौरी कालोनी में रहते थे । वह एक चक्रवर्ती छात्र थे । इंटर के बाद वह मोतीलाल इंजीनियरिंग कालेज की प्रवेश परीक्षा में 44 वाँ स्थान , रुड़की में 87 और IIT में 340 रैंक थी और IIT कानपुर से वह इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की डिग्री लेकर तीन बार से मेंस फेल कर रहे थे । वह हर बार विषय में से बदल देते थे । इस बार गणित और इंजीनियरिंग से मेंस पास किये थे । वह जिस इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा में वह अपना परचम लहरा

चुके थे उन तीनों परीक्षाओं में पूरी ताकत लगाने के बाद भी मेरा कोई नामों निशाँ कहीं न बन पाया , पर सिविल सेवा परीक्षा ने तीन बार से उनको रक्त के आँसुओं से रुला मारा और मुझे पहली बार में ही उनके साथ खड़ा कर दिया । यह अजीब न्याय है नियति का सब हिसाब बराबर कर देती है , सबको मौक़ा देती है । हम लोग एक दूसरे को जानते थे । मैंने पूँछा आपका इंटरव्यू कैसा रहा ? वह बोले ठीक ही रहा । मैंने पूँछा आपकी हाबी क्या थी ?

वह बोले - “ reading ” .

यह मेरी हाबी से मिलती जुलती थी । मैंने कहा मैं आपका इंटरव्यू सुनना चाहता हूँ । वह बोले मैं यूपी भवन में हूँ । वहीं जा रहा । वहाँ आ जाना सुना देता हूँ । उनके कमरे का नंबर पूछ कर मैं वापस सर के पास आ गया । तब तक सर ने सबको निपटा लिया था । शशि से भी कहा आप जाओ , कल आपका इंटरव्यू है । अब पढ़ने की कोई खास ज़रूरत नहीं है । मस्तिष्क और चित्त को शान्त रखो ईश्वर कल्याण करेगा ।

मैं पूरी तरह से आतुर था उनका इंटरव्यू जानने को । मुझे चैन नहीं मिल रहा था ।

क्या हुआ होगा वहाँ पर ?

कैसे प्रवाह बना होगा ?

सवाल किस तरह से जवाब में से निकले होंगे ?

उनका इंटरव्यू मेरी रणनीति में मदद दे सकता है , इसलिये मेरी उत्कंठा और तीव्र हो रही थी ।

उन सब लोगों से विदा लेने के बाद सर ने अपना बीता समय बताना आरंभ किया ।

“ मैं बहुत डरा हुआ था । मेरे समझ में न आ रहा था । मैं क्या करूँ ? जब इंटरव्यू बोर्ड बना तब आकर मुझे बताया गया कि आपका बोर्ड रहमानी साहब का है । वह जम्मू कश्मीर के चीफ सेक्रेटरी रह चुके हैं । जैसे - जैसे लोगों का नाम पुकारा जा रहा था मेरी धड़कने बढ़ती जा रही थीं । मेरा नंबर बोर्ड में तीसरा था । कुल 7 लोग बोर्ड में थे । पहले और दूसरे व्यक्ति ने निकलकर निराशाजनक मुद्रा का प्रदर्शन किया । मेरा दिल बैठने लगा । मैं क्या करूँ ? इतने में मेरे नाम का बुलावा आ गया ।

मैंने बोर्ड रूम में प्रवेश किया । रहमानी साहब बीच में बैठे थे । वह चश्में में आँख ऊपर करके बोले ,

Yes .. Mr Badri vishal Mishra have a seat ..

hope you are comfortable ?

मैं कैसे कहूँ अपनी दुविधा । मैंने उत्तर सर हिला कर दिया । उन्होंने फिर कहा Mr Badri Vishal Mishra .. are you OK ?

मैंने हिंदी में कहा - जी सर ।

मैंने फ़ैसला कर लिया , उसकी अंग्रेज़ी के डिक्षन को सुनकर कि यह तो लपेट मारेगा मुझे अगर मैं अंग्रेज़ी बोला ।

Mr Mishra what is Badri meaning ..

मैंने चक्रव्यूह बनाना शुरू कर दिया । बद्री शब्द को शंकर से जोड़कर मैंने चारों धाम भी डाल दिया उत्तर में । वह फिर पूँछे

What is chaar dhaam ? Why it is relevant for the religion ?

मैंने दार्शनिक आधार पर उसकी व्याख्या और उसका दर्शन बताना आरंभ किया । मुझे हर पंक्ति के बाद भय रहता था कि यह कहेगा कि अंग्रेज़ी बोलो । जब वह कुछ बोलने के लिये मुँह खोलते थे तब मुझे लगता था कि यह कहेंगे कि अंग्रेज़ी बोलो । मैं भाषा को आसान बनाकर बोल रहा था ताकि उसको असुविधा न हो समझने में । मैं पूरी कोशिश कर रहा था , आसान से आसान हिंदी के परयोग करने का । हर वह सवाल जिसमें यह नहीं होता था कि आप अंग्रेज़ी बोलो , मुझे चैन दे रहा थी । मैं सवाल से नहीं भय खा रहा था । मुझे भय सिफ्ऱ एक पंक्ति का था ,

“ Mr Badri vishal Mishra your option to speak is English language and you have to follow it “ .

पर मेरे बढ़ते इंटरव्यू में जैसे - जैसे यह सवाल नहीं आ रहा था मेरा चैन बढ़ता जा रहा था । रहमानी साहब ने कहा , tell me your strength “ .

मैंने कहा सर मैं समझा नहीं ।

वह हिंदी में बोलने लग गए ..

आपके व्यक्तित्व का सबसे मज़बूत पक्ष क्या है ?

यह सवाल तो हम लोग तैयार ही किये थे । जवाब दे दिया और चक्रव्यूह बनाने लगा पर वह बहुत बन न सका । पर दो सवाल निकाल ले गया ।

रहमानी साहब ने कश्मीर पर सवाल किया , मैं फिर सवालों की शृंखला जवाबों में डालने लगा । यहाँ तुम्हारी चक्रव्यूह की शैली काम कर गई । कश्मीर समस्या पर चार-पाँच प्रश्न हुये और मैं उन प्रश्नों को संभाल ले गया । इसके बाद रहमानी साहब ने दूसरे से कहा , now he is your case .

दूसरे सदस्य थोड़ा धीरे बोल रहे थे । वह अंग्रेजी में हिंदी को थोड़ा मिला देते थे और मैं भी हिंदी में थोड़ी अंग्रेजी । बस फ़र्क यह था कि वह 80 % अंग्रेजी और 20 % हिंदी बोलते थे और मैं 95% हिंदी 5% अंग्रेजी । वह मनोवैज्ञानिक मुझको घूर रहा था और कुछ लिख रहा था ।

इंटरव्यू के दो तीन सवाल मुझे न आ रहे थे , उसको मैंने नम्रता पूर्वक इंकार कर दिया । हिंदी उपन्यास के बारे में उनको कुछ पता ही न था , इसलिये कुछ ख़ास न पूछा बस सामान्य सा सवाल किया । मेरा बीएससी में जूलोजी, बाटनी, कैमिस्ट्री थी , इसलिये कुछ मेडिसिन पर पूछा और मैं गाँव से आता हूँ शायद इसलिये गाँव की विकास योजनाओं के बारे में पूछा , वह बता दिया मैंने जैसा उस समय मस्तिष्क चला । पुनः मुझसे यह पूछा कि इतनी विकास योजनाओं के बावजूद गाँव में कोई ख़ास प्रगति क्यों नहीं हुई । मैंने उनके इस कथन पर मैंने अपनी आपत्ति दर्ज करते हुये अपना तर्क दिया , इस पर बात कुछ देर तक चली । मैंने तर्क दिया जो हम लोग में स में लिखते हैं । एक दो बोर्ड मेंबर ने और सवाल किये । एक सवाल देश में चल रहे विदेशी मुद्रा संकट से था । मैंने जवाब दिया पर वह एक बात पर अड़ गए कि मुझे कारण नहीं वरन् यह बताओ *how you will sort out this issue ?*

मैंने कहा कि निर्यात को बढ़ावा देकर और *export substitution policy* को अपना कर ।

वह बोले - *But how ?*

Have you enough capacity to substitute the import and your technological advancement and manufacturing process are up to mark to go for import substitution ?

वह शायद आर्थिक मामलों के ज्ञाता थे और एक *expert* के तौर पर आए थे । मुझे उनके चेहरे से लगा कि वह मेरे उत्तर से संतुष्ट नहीं थे और कुछ सुनना चाहते थे उत्तर में । वह क्या उत्तर चाह रहे थे यह तो न पता मुझे पर मैं अपनी बात विस्तारित रूप से कह गया यह बताते हुये कि विदेशी मुद्रा भंडार हर बीतते सप्ताह में वृद्धि की ओर बढ़ रहा और डालर के मुकाबले रूपये के मूल्य में स्थिरता आ रही । रूपये के मूल्य का न गिरना अर्थ व्यवस्था के लिये शुभ संकेत है । यहाँ फिर चक्रव्यूह तकनीक काम कर गई । वह पूछे कैसे रूपये के मूल्य में स्थिरता लाई जा सकती है ? मैंने जवाब दे दिया ।

मैंने यह भी कहा कि हमें *manufacturing sector* तथा *technological advancement* पर काम करना होगा *import substitution policy* पर अमल करने के लिये ।

यह नहीं पता क्या असर मेरी बात का पड़ा, पर मैं बात अपनी कह गया । वह शांत होकर रहमानी साहब की तरफ सिर हिलाकर इशारा किये । इसका मतलब यह था कि , मेरा काम हो गया है । अब मुझे कुछ और नहीं पूछना है ।

रहमानी सर ने और लोगों की तरफ़ देखा बोर्ड में , “ anything else gentleman..... ?

सबने कहा ,it is fine . It is ok “.

रहमानी साहब ने कहा Thank you Mr Mishra , now you may leave . Best of luck “.

मैं अभिवादन करके वापस आ गया ।

अनुराग, अब चाहे जो हो । मेरा हो न हो पर एक संतोष है कि मैं अपनी बात कह गया । अगर शून्य अंक दे दें कि मैंने हिंदी बोला तब भी परिणाम होगा वही जो 60 नंबर देने पर आता । मैं 5, 15 , 50 किसी भी नंबर के अंतर से लिस्ट से बाहर हो जाऊँ हर परिस्थिति में एक ही निर्णय होगा ,

तुम पराजित हो

मैं अब भाषा के माथे पर अपनी पराजय का ठीकरा नहीं फोड़ सकता । यह मेरे पुरुषत्वकी पराजय होगी । यह मेरे पराक्रम की हार होगी । इसके पहले के तीन अवसरों पर मैं शस्तर विहीन था सब मुझ पर वार कर रहे थे , मैं सारे आयुधों से युक्त होकर भी बगौर आयुधों के लड़ रहा था । इस बार मैंने संधान किया , दिव्यास्तर चलाए , गुरु के ज्ञान का उपयोग किया , रात की तीरगी में माझ्म सी रौशनी में जो कुछ मैंने किताबों की अतल गहराइयों से निकाला वह कह तो सका ।

मुझे हर बार लगता था , मेरे पिछले तीनों अवसरों में , छिपी हुई सेना मुझ पर आकरमण कर रही वह भी तब जब मैं कह रहा मुझे मेरे अस्तरों से लड़ने दो । मैं मौन रहकर चीख-चीख कर कह रहा मैं भी पर्वत पार कर सकता हूँ , ऐ घोड़ों पर सवार योद्धाओं मुझे दौड़ने दो मेरी अपनी बैसाखियों के सहारे । तुम मत बाध्य करो मुझे उस घोड़े की रास को पकड़ने को जिसकी जीन चढ़ाने की कला मुझे नहीं सिखायी गयी ।

मैं दौड़ा हूँ इस बार अपनी बैसाखियों के सहारे जिसमें बहुत जान है घोड़े के टापों से जुगलबंदी करने की । मैं अब सब भूल जाना चाहता हूँ , यहाँ तक यह भी कि मैंने नियम तोड़ा है और उस भाषा में अभिव्यक्ति दी है जिस भाषा का विकल्प मैंने नहीं लिया था । मैं अब बाकी बचे हुये तक़रीबन 35 -40 दिन , जब तक अंतिम परिणाम नहीं आता , एक विजय के अहसास में बिताना चाहता हूँ कि मैंने अपनी बात कह दी ।

मैं एक मूक सा होकर हर बार इंटरव्यू में रहता था । इस बार मैं अभिव्यक्ति करता गय जैसा मैं चाहता था । वह दे दें मुझे शून्य अंक , मुझ पर आरोप मढ़कर , यह कहकर कि इसने परीक्षा की परिपाटी को तोड़ा है , मुझ पर फ़र्क ज़रूर पड़ेगा

असफलता का पर असफलता तो नियति में ही थी पर इस बार नियति को बदलने की कोशिश की है । मैंने हाथ की रेखाओं से ज्यादा अपने पर विश्वास किया है , इस बार ।

ईश्वर कृपालु है वह उचित न्याय करेगा । तुम एक निमित्त मात्र हो पूरे घटनाक्रम में । यह परमपिता परमेश्वर की पूरी योजना थी मेरे समस्या के समाधान की और वह जानता था कि नैतिकता के बोझ को लिये जीता हुआ भीरु व्यक्ति कभी नहीं कर सकता वह कृत्य जो इसके उद्धार में सहायक हो सकता है । तुम सिफ़्र उसके संदेशवाहक हो । “

मैंने कहा , सर वह शून्य क्यों देंगे ?
क्या पता वह ही हिंदी सुनना चाह रहे हो ?
हर को अच्छी हिंदी सुनना अच्छा लगता है ।

आपने जब बद्रीनाथ, चार धाम , संस्कृत के श्लोक सुनाये तब उनका मन किया होगा और सुने । अब यह संस्कृत के श्लोक तो अंग्रेजी में सुनाये नहीं जा सकते । क्या पता बोर्ड को हिंदी अधिक सुविधाजनक लगी हो । रहमानी साहब हिंदी क्यों बोले ? उनको हिंदी नहीं बोलनी चाहिये थी । आप ने नियम का चीरहरण किया तो वह क्यों चुप थे , कह देते कि नहीं यह नियम विरुद्ध है ।

यह भी हो सकता है कि आप भूल गये हो कि मैं किस भाषा में मेंस लिखा , उनको याद दिलाना चाहिये । जब और मेंबर हिंदी बोल रहे थे तब चुप क्यों नहीं कराया कि आप अंग्रेजी बोलो , यहाँ हिंदी वर्जित है ।

सर अगर अधर्म हुआ है तो दोनों ने किया है । दोषी हैं तो दोनों हैं । आप को शून्य अंक देने के पहले इन रहमानी साहब को सस्पेंड कर देना चाहिये । वह यह भी नहीं पढ़ते कि फार्म में कौन सी भाषा लिखी है । ऐसे लोग देश का कर्णधार चुन रहे जिनको यह भी नहीं पता कि अभ्यार्थी की भाषा कौन सी है । आप धर्म के साथ हो । आप अपनी मातृभाषा , अपनी माँ और अपनी ज़मीन के साथ हो । यदि कोई कोताही हुई है तब यह रहमानी साहब से हुई है , इसकी कोई सजा बनती है तो उन पर बनती है । आप तो तैयार ही थे , दोनों भाषा में साक्षात्कार के लिये । वह कह दिये होते कि “ Mr Mishra please speak in English ” .

आप चालू हो गये होते उस भाषा में बोलना जो न बोलने वाले को समझ आती न सुनने वाले को । आपने उनको एक यातना से बचाया । आप की अभिव्यक्ति हिंदी में जितना हृदय को छूती है उतना ही अंग्रेजी में अजीयत देती है ।

मिश्रा सर ने कहा , अनुराग यह छद्म, यह फरेब , यह प्राड , यह छल कहाँ से सीखा तुमने ? डायन भी दो-चार घर छोड़ देती है । मेरे पर रहम करना । मुझे मुक्त रखना अपने फरेब से ।

मैं उनसे विदा लेकर दो- चार कदम ही आगे चला होऊँगा कि उपचेतना बोलती है , अनुराग तुझे वह पहचान गये है । मेरी चेतना ने कहा देखो आगे आगे होता है क्या?

अभी तो शतरंज की बिसात बिछी ही है । शह और मात के खेल में शह पर शह मैं दिये जा रहा पर क्या पता कहीं से घोड़ा ढाई घर चलकर सारा मेरा खेल खत्म न कर दे ।

ऊपर से देख रहा ईश्वर कह रहा डोर मेरे हाथ हैं तू चल चाल अपनी एक झटके में मैं सब खत्म कर दूँगा ।

मैं यूपी भवन पहुँचा । गेट पर ही चिंतन उपाध्याय सर अपने लाव लश्कर के साथ मिल गये । वह गाज़ियाबाद में सी ओ सिटी थे । वह राज्य सिविल सेवा परीक्षा पास करके प्रान्तीय पुलिस सेवा में थे । वह पहली ही पोस्टिंग में सी ओ सिटी गाज़ियाबाद पद पर नियुक्त हो गये थे । उन्होंने पिछले साल इंटरव्यू दिया था और उनको 61 अंक 250 में मिले थे । उनका पिछले साल का इंटरव्यू पूरे इलाहाबाद में क्रिस्सा तोता-मैना की तरह प्रसिद्ध था । वह मिश्रा सर के बैच के थे और कहा जाता था एक छात्र के रूप में उनसे अधिक संस्कृत कोई नहीं जानता ।

प्रारम्भिक परीक्षा का का मेरा और उनका सेंटर सीएवी कालेज में एक ही कमरे में था । वह प्रारम्भिक परीक्षा में इतिहास और मुख्य परीक्षा में दर्शन शास्त्र और संस्कृत लेते थे । परीक्षा खत्म होते ही मुझसे कहा था कि मेरा सिर्फ़ 120 में 68 सवाल पूरी तरह सही है बाकी का मैं नहीं कह सकता । पूरा हाल 100 से ज्यादा सवाल सही किया था । पर उस कमरे से दो ही लोग प्रारम्भिक परीक्षा पास किये थे एक वह और एक मैं । यह परीक्षा इतने दुर्लभ प्रश्नों से बनती है कि बहुत ज्यादा सही होना आसान नहीं । अगर आप बहुत ज्यादा सवाल सही कर रहे हो तब इसकी दो संभावनाएँ हैं या तो आप बहुत ही मेधावी और बहुत ही तैयारी किये हुये अभ्यार्थी हो या आपको पता ही नहीं कि पानी कितना गहरा है । पहली बात की तुलना में दूसरी बात के होने की संभावना अधिक होती है । जैसे ही पेपर खत्म होते वक्त इन्होंने कहा कि मेरा 68 सवाल ही सही हुआ है मेरे जान में जान आई क्योंकि मेरा भी बहुत ज्यादा सही नहीं हुआ था और यह बहुत ही बेहतर छात्र थे इसलिये निश्चित रूप से पेपर कठिन रहा होगा ।

वह मेंस पास करके उसी परीक्षा का इंटरव्यू मेरे साथ दे रहे थे । यह उनका अंतिम अवसर था सिविल सेवा का । वह पहले भी इंटरव्यू दे चुके थे दो बार ।

मैंने सर का पैर छुआ । वह कुर्ता- पाजामा पहने लंबे क़द का लाल टीका लगाए चार सिपाही आगे पीछे लिये मेरी तरफ देखे और बोले अनुराग पहले ही प्रयास में गढ़ का महत्वपूर्ण दुर्ग क़ब्ज़ा कर लिया । विजयी भव ।

मैंने कहा कि सर आशीर्वाद चाहिये । वह बोले , सुना है तुम और बद्री पूरा नाक नाथ दिये हो तैयारी करके । राजेश्वर सिन्हा भी बोल रहा था । अमित चौधरी ने मुझसे गाड़ी माँगी थी इंटरव्यू के लिये वह भी कह रहा था कि यह लोग लेबर चौराहे पर गोष्ठी लगाते हैं ।

मैं तो यार पुलिस का डंडा बजा रहा । मैं पढ़ पाया हूँ नहीं , ज़रा करेंट अफ्रेयर्स पर थोड़ा ज्ञान दो । मैंने कहा सर अब आप शर्मिंदा कर रहे मुझको । मैं क्या ज्ञान दूँगा ।

मैंने कहा सर मैं आपका पिछले साल का इंटरव्यू सुनना चाहता हूँ , आपके मुख से । पूरा शहर तो सुनाता ही है । वह बोले तुम लोगों ने इतना मशहूर कर दिया है कि मेरे आई जी साहब भी बोले कि चिंतन तुम्हारा इंटरव्यू बहुत मशहूर है ज़रा हमकों भी सुनाओ । जो 200 अंक पाया उसको कम लोग जानते हैं और जो 61 अंक पाया वह नायक बन गया । मैंने कहा कि सर कई बार हार में भी जीत होती है और मेरी हार बहुत सी जीतों पर भारी है । मैंने कहा कि सर आप सुना दो उस हार की कहानी जिसने तमाम लिखी हुई नज़्मों , क्रिस्सों , कहानियों और प्रशस्तियों पर से बड़ा सम्मान पाया है हार के बाद भी ।

सर आपका विश्वास जिसे बोर्ड ने नकार दिया पर पूरा शहर आपके नाम की दुहाई देता है । आप सुना दो मुझे वैसे ही जैसे कृष्ण ने गीता सुनाई थी । वह बोले हँसते हुये , तब तो मुझे विराट रूप धारण करना होगा । तुम चलो पहले दो घंटे बाँचों में कुछ लीन होकर सुनू । इस पुलिस की डंडा-नौकरी में पेपर भी ठीक से न पढ़ सका ।

इतने में राजेश प्रकाश दिखे धीरे-धीरे आते हुये अपने छोटे क़द पतली सी काया लेकर । मैंने कहा सर यह राजेश प्रकाश हैं , यह आज इंटरव्यू दिये हैं । सर बोले आप इंजीनियर हो क्या? वह बोले कैसे पता आपको ?

सर बोले तुम्हें देख कर ही लग रहा गणित , फ़िज़िक्स ने घुन की तरह खा लिया तुमको । हम लोगों को देखो संस्कृत , हिंदी वालों को , इन लफ़ंटूस ह्यूमिडीस वालों को , यह घुन को ही खा जाएंगे , घुन इनको क्या खाएगा ।

वह अपने सिपाही ये बोले ले आओ कुछ खाने को और हम सबको लेकर चल दिए अपने कमरे में सुनाने वह ऐतिहासिक इंटरव्यू जो दशकों तक शहर की तासीर बना रहा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 28

मैं और राजेश प्रकाश चिंतन उपाध्याय सर के यूपी भवन के कमरे में गए । वह डायमंड जुबली छात्रावास में रहा करते थे, पुलिस सेवा ज्वाइन करने से पहले । वह इस विभेद को न मानते थे कि IAS बनना है तो PCS नहीं देना चाहिये । सर यह कहते थे कि अगर IAS न बने तो क्या जमुना के पुल से कूदकर आत्महत्या करोगे? यह भी कहते थे, क्या कोई करार पत्र हस्ताक्षरित हो गया आपका और यूपीएससी का आपको IAS बनाने का । आप कितनी भी मेहनत कर लो पर प्रारब्ध भी होता है, अगर प्रारब्ध में नहीं लिखा है तब आप लाख कोशिश कर लो हुमायूँ नाम रखकर अपना पर आप दर-दर की ठोकरें ही खाओगे । पिछले तीस साल का इतिहास देख लो कितने लोग गए सफल हुये हैं IAS में, यहाँ से या किसी भी जगह से ।

सर एक दार्शनिक व्यक्ति थे, उनका अपना एक नायाब दर्शन था । ज़िंदगी तो चलानी ही है, चाहे मज़दूरी करनी पड़े । हमारे पास गाँव में न इतना खेत है कि खेती करके गुज़ारा कर लिया जाए और न ही खेती से ज़िंदगी चल सकती है । उनका भी विवाह बाल्य काल में हुआ था और जब वह ऐसे में थे तब ही दो बच्चों के पिता हो चुके थे ।

मैंने उनके ऐसी मेहनत की क्षमता बहुत कम लोगों के पास देखी थी । ऐसे संस्कृत में उनकी विश्वविद्यालय में दूसरी पोज़ीशन थी पर लोग उनको असली टापर कहते थे । लोग कहते थे जिसने टाप किया उसने मौखिक परीक्षा के जुगाड़ से टाप किया है । यह उक्ति बाद में और समर्थन प्राप्त कर गई जब यह IAS, PCS परीक्षा के गढ़ गिराने लग गए और वह प्रारम्भिक परीक्षा में ही असफल होने का कीर्तिमान बनाने लग गई ।

इलाहाबाद के सिविल सेवा के अभ्यार्थियों का चरित्रांकन कुछ - कुछ महाभारत के पातरों की तरह का है । हर एक के पास एक ऐसी विशिष्टता है जो दूसरे से उसको अलग कर देती है । चिंतन सर मेधावी तो थे पर बहुत ही नम्र थे और राजेश्वर सिन्हा, अमित चौधरी की तरह का अहंकार नहीं रखते थे ।

मैं जब तैयारी के लिये मिलने गया था कि प्रारम्भिक परीक्षा में इतिहास से कैसे पास किया जाए तब उन्होंने कहा था, देखो, मुझे मिलती है JRF scholarship, मेरे पास पैसे कि कोई कमी है नहीं इस समय ।

यूजीसी ने मेरे दुख-दरिद्र के दिन का का तात्कालिक रूप से अंत कर दिया है । मैंने इतिहास में डी. एन. झा, श्री माली, वी सी पांडेय, मजूमदार राय चौधरी,

चोपड़ा पुरी दास , ए एल बाशम , रोमिला थापर सारी किताबें ख़रीदी हैं । आप देखो सब लगी हैं सामने आलमारी में , लेकिन मैं इसमें से एक भी नहीं पढ़ता । मैं सिर्फ़ पढ़ता हूँ NCERT की यह तीन किताब जो कक्षा 11 और 12 की हैं और वी के अग्निहोत्री की किताब से प्रश्न हल करता हूँ । आप भी यही करो । मैं एक सलाह और देता हूँ , क्या पढ़ो से ज्यादा महत्वपूर्ण है क्या न पढ़ो ।

आप के पास समय कितना है यह देखो और उस समय का कैसे बेहतर इस्तेमाल हो सकता है इस पर निगाह रखो । यह परीक्षा रणनीति की परीक्षा है एक दिशाहीन गोली चाहे वह थरी नाट थरी की ही क्यों न हो अगर बालू की तरफ़ गई तो बालू तो उसको हत ही देगा । यह जो बाज़ार्स कोचिंग का मार्गदर्शन नाटक है वह असफलता को सुनिश्चित करता है । उन्होंने कहा मैं एक मूल मन्त्र देता हूँ , ध्यान से सुनो । यह मेरी परीक्षा मेरे गुरु ने ली थी मेरी और गुरु मन्त्र दिया था । मैं भी तुमको वहीं देता हूँ ।

मैं दर्शन शास्त्र प्रारम्भिक परीक्षा में नहीं लेना चाहता था । मैं गया सत्यवरत मिश्र के पास । वह बोले इतिहास ले लो और सिर्फ़ यह पढ़ो चार किताब । तीन किताब NCERT की और चौथी वी के अग्निहोत्री की ।

उन्होंने कहा कल शाम तक यह चार पाठ NCERT से पढ़ कर आओ मैं तुम्हारी परीक्षा लेकर बता दूँगा तुम इतिहास से प्रारम्भिक परीक्षा पास कर पाओगे या नहीं । मैं वापस आया वह चार पाठ घोटा और वापस गया । उन्होंने दस सवाल किये । मैंने 9 का सही जवाब दिया । वह बोले इतिहास ले लो , फेल नहीं करोगे ।

मैं भी वही चार पाठ देता हूँ तुमको , तुम कल शाम को आना पढ़कर मैं वही सवाल करूँगा जो उन्होंने किया था और परिणाम बता दूँगा । मैंने वैसे ही किया । मैं दस में से आठ सवाल पूरी तरह एक झटके में बता गया बाकी दो में कहा मुझे लग रहा यह दो विकल्प सही नहीं ही हैं । मुझे उन दो विकल्पों में उत्तर लग रहे । वह बोले जाओ ले लो इतिहास । यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से ज्यादातर लोग फेल होंगे पर तुम पास होंगे ।

सर ने यह भी कहा था यह प्रारम्भिक परीक्षा के दुर्ग पर महादेव का वरदान प्राप्त जयदरथ बैठता है । यह हर साल कई भीमों को प्राप्त करता है । इसको कभी हल्के में मत लेना । यह आपकी सारी उम्मीदों पर तुषारापात कर देगा । तुम एक बात का और ध्यान रखना समय से पहले IAS मत बन जाना । इस शहर में कई लोग IAS समय से पहले बन जाते हैं । यहाँ लोग चने के झाड़ पर चढ़ा कर फिर नीचे से उसी झाड़ को काटने लगते हैं ।

यह इलाहाबाद है भैया , यह किसी का भौकाल और अहंकार एक सीमा तक ही बर्दाश्त करता है । पंडित नेहरू ऐसे महामानव को पानी पिलाने के लिये इसी ज़मीन

ने राम मनोहर लोहिया को पैदा कर दिया । इस शहर की ज़मीन को अहंकार का नाश करना बखूबी आता है । यहाँ आकर हनुमान जी भी लेट गए इलाहाबाद के सम्मान में ।

तुम मेरे मित्र के छोटे भाई हो पराक्रम करो , पर अहंकार विहीन पराक्रम । वह पराक्रम किसी के दिविजय की यशगाथा नहीं लिखता जिसमें पुरुषार्थ के साथ अहंकार होता है । वह दिविजय की गौरव गाथा का लोप कर देता है अहंकार के कुहरे ऐसे आवरण में ।

रावण की महान गौरवगाथा है पर कितनी तुमको पता है ? तुमको सिफ़्र उसके अहंकार का ज्ञान है । राम के पौरूष पर राम की मर्यादा अधिमानता पाती है । वहीं दूसरी तरफ रावण के शौर्य पर रावण का अहंकार अधिमानता पाता है । एक अहंकार विहीन जीवन जियो । विजयी भव ।

यह भी कहा था , यहाँ पर जो लोग कहें पढ़ो उसको पढ़ने के पहले एक बार विचार करके पढ़ना पर जिसको कहें उसको मत पढ़ो वह ज़रूर पढ़ कर देखना एक बार । यहाँ सही बताना तो दूर की बात भ्रम फैलाने का प्रयत्न हर ओर है ।

सर ने यह भी कहा था , कई किताब को पढ़ने से बेहतर है एक ही किताब को बार - बार पढ़ना । सबसे बड़ी राय यह दी कि इतिहास , भूगोल की NCERT रट डालो । मैं अपने प्रारम्भिक परीक्षा पास करने का सारा श्रेय इनको ही देता हूँ । मैंने NCERT ऐसी रटी कि मैं अपनी जन्मतिथि भूल सकता हूँ पर NCERT की लाइनें नहीं । मैं बता सकता हूँ कहाँ किस पेज पर क्या लिखा है ।

संस्कृत तो सर ऐसा बोलते थे कि अमृत वर्षा हो रही हो ।

मेरा और उनका सेंटर सीएवी इंटर कालेज में एक ही कमरे में था और जब कापी जमा हो रही थी तब एक प्रश्न पूछा उन्होंने चेक करने के लिये ,

“कल्याण मंडपम चोल राजवंश की कला है “?

मैंने कहा , नहीं यह विजयनगर की है । उन्होंने इसी पर गोला बना दिया उत्तर पुस्तिका में । यह सवाल बहुतों का गलत हुआ था , उनका भी होता अगर न पूछते । जब वह प्रारम्भिक परीक्षा पास किये थे तब मिटाई खिलाई थी मुझको यह कहते हुये क्या पता इसी सवाल ने फ़ैसला मेरे पक्ष में किया हो ।

इन्होंने अपने पहले ही सिविल सर्विसेज़ परीक्षा के मेंस के बाद सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के आधार पर पीसीएस की परीक्षा दी थी और 11 वीं रैंक प्राप्त कर के उत्तर प्रदेश में Dy.S.P. के पद पर चयनित हुये थे ।

वह राजेश प्रकाश से पूछे आपका विषय क्या था सिविल सेवा परीक्षा में ? राजेश प्रकाश ने कहा किस साल का बताएँ हर साल ही तो बदल लेता हूँ । सर बोले , यार गज़बै क्राबिल हो । यहाँ एक ही विषय नहीं सम्भल रहा आप पूरा मजमा ही सम्भाले हो । तुम IIT वाले काहे को हम लोगों का हक्क मार रहे हो ? हमारे पास ले देकर यही हँसिया- हथौड़ा है , बस यही दो परीक्षा , IAS , PCS । यह भी आप ले लो । अरे आप लोग देश का तकनीकी विकास करो , हमको प्रशासन चलाने दो ।

यह प्रशासन गंभीर विषय है इसको इंजीनियरों से दूर रखना चाहिये । हम लोग छात्र संघ चुनाव में भाग लेते हैं, कुलपति का धेराव करते हैं, प्रतिदिन दो तीन घंटा बौर उद्देश्य के विश्वविद्यालय परिसर में घूम कर माहौल लेते हैं । यह हम लोगों की ट्रेनिंग है प्रशासन चलाने की , इसीलिये सारे देश के कर्णधार इलाहाबाद से ही निकलते हैं । यह समय पूर्व ट्रेनिंग बहुत काम आती है । आप लोग दिन रात पढ़ते हो उसका क्या काम शासन में । शहर में दंगा हुआ आप का गणित का सिद्धांत काम आएगा?

अरे हम खुद ही दंगाइयों के साथ रहे हैं, हमें दंगे का नस- नस पता है । हमारे गाँव का विकास नहीं हुआ , मेरे पास विकास योजना तैयार है , कुर्सी मिली योजना पर अमल शुरू । आप लोग जब तक योजना समझोगे हम तो लागू कर देंगे ।

मैं गाज़ियाबाद आया , कार्य भार लिया । हमारे विश्वविद्यालय के कई लोग यहाँ विश्वविद्यालय के बाद राजनीति कर रहे छुट भैया क्रिस्म की । वह सब मेरे ज्वाइन करते ही आए हमसे मिलने , सबको इनफारमर बना दिया है । मेरे पास सारी सूचना है शहर की ।

एक तुम्हारी ही IIT का दिनेश चन्द्रा वह भी SP है गाज़ियाबाद में , उसको पता ही नहीं रहता , कहाँ बिल्ली घाम ले रही । वह पूँछते हैं एक दिन तुम कहाँ से सब खबर निकाल लेते हो ।

मैंने कहा विजेता या तो पथरीली पहाड़ियों पर जन्म लेता है या इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रांगण में जहाँ बरगद का पेड़ अपने आप में एक दरोणाचार्य है ।

अब आपका गणित दे देगा 450 नंबर आपको और आप पहुँच जाओगे मसूरी , पर इस नंबर का काम बताओ प्रशासन में । हम लोग जन्मजात सीखे हैं इसको । मैंने आते ही गाज़ियाबाद सुधार दिया । IG साहब बोले चिंतन यह ज़िला गाज़ियाबाद है

सम्बल कर काम करना । मैंने कहा सर आधे गुंडों को तो संस्कृत की लघु सिद्धांत कौमुदी से ही सुधार दूँगा ।

मैंने कहा सर ज़रा वह इंटरव्यू सुनाइये जो ऐतिहासिक है । इतने में उनका सिपाही नाश्ता लेकर आ गया । मैं सिपाही को देख रहा था । सर बोले चिंता न करो कुछ दिन बाद यह तुम्हारे बँगले पर तैनात होगा । सिपाही से बोले मातादीन सेल्यूट करो साहब को, इनके बँगले पर तैनाती का आदेश मैं पास कर रहा हूँ । अब साहब के पास जीवन पर्यन्त रहना । वह बोला, “ जी साहब ” ।

सर ने कहा नाश्ता कर लो, आप दोनों मेरा करेंट अफ्रेयर तैयार कराओ तब मैं इंटरव्यू सुनाऊँगा ।

सर ने यह भी कहा मेरी ग़ड़ी कल तुमको लेकर आ जाएगी और हम लोग साथ चलेंगे इंटरव्यू के लिये । मातादीन को बुलाया कहा साहब को कल लेकर आना फिर हम लोगों चलेंगे चक्रवर्ती बनने । अनुराग अब इस डंडे से पिंड छुड़ाओ । चलो तुम दोनों बताओ क्या- क्या पढ़ा है और मुझे आँख मूँद कर सुनने दो ।

कल सुबह चिंतन उपाध्याय का नभ गर्जित स्वर होगा । मैं कल प्रति पल परिवर्तित व्यूह का निर्माण करूँगा । यह स्तब्ध पवन दिशा ज्ञान को भूलकर समर की प्रत्यक्ष दर्शी होगी । कल मैं पूरा पराकरम बिखेर दूँगा बस आप लोग शिव की जटा से ज्ञान की गंगा निकालो और बहा दो वैसे ही जैसे शंकराचार्य ने बहाया था बौद्धों को पराजित करते समय और मुझे लीन होकर इस ज्ञान को आत्मसात् करने दो ।

मैं और राजेश प्रकाश उनकी भाषा में खो गए और जो कुछ बता सकते थे बताया और फिर वह पिछले साल का उनका ऐतिहासिक इंटरव्यू आरंभ हुआ जिसकी चर्चा पूरे शहर में थी ।

एक सजा हुआ कमरा इंटरव्यू बोर्ड का, मैडम रस्तोगी चेयरपर्सन, सफेद क़मीज़ नीली पैंट पहने छह फ़िट के अति आत्मविश्वास से भरे चिंतन उपाध्याय कमरे में प्रवेश करते हुये ।

इलाहाबाद और सिविल सेवा भाग 29

चिंतन उपाध्याय बोर्ड रूम में प्रवेश करते हैं । मैडम रस्तोगी उनको बैठने को कहती हैं । चिंतन उपाध्याय सीट पर बैठते हैं ।

मैडम कुछ कागज पलट रहीं हैं । शायद वह चिंतन का बायोडेटा होगा या वह फार्म होगा जो भरा होगा इन्होंने ।

मैडम रस्तोगी - what you have done ?

चिंतन- मैडम मैंने देव भाषा में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है ।

मैडम रस्तोगी- यह क्या है ?

चिंतन - मैडम यह मेरी शैक्षणिक योग्यता है जो मैंने अभी तक प्राप्त की है और मैं यूं जी सी स्कालर भी हूँ ।

मैडम रस्तोगी-can you elaborate your this educational qualification ... मतलब आप थोड़ा बता सकते हैं अपनी इस शैक्षणिक योग्यता के बारे में ।

चिंतन - मैडम मैं पोस्ट ग्रेजुएट हूँ संस्कृत में

मैडम - OK . I see . संस्कृत को देव भाषा भी कहते हैं

चिंतन - जी मैडम

मैडम - ऐसा क्यों कहते हैं

चिंतन - मैडम इस भाषा के साथ देवत्व के संस्कार जुड़े हैं । यह वेदों की भाषा रही है । यह दर्शन और विचारधाराओं की संवाहक रही है ।

मैडम - can you explain it a bit how it has given the momentum of religion and thoughts ? यह जो भाषा है वह कैसे thoughts को carry करती है ?

चिंतन - यह वैदिक परम्परा और वैदिक दर्शन को अपने में समाये हुये अनवरत गति से एक प्रवाहमान धारा के रूप में युगों तक चलती रही । पर तत्पश्चात् इसमें अवरोध आ गया । इसके अवरोध आने में कई तरह के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक कारण उत्तरदायी हैं । यह वह भाषा है जिसको पाणिनि ने उत्तर में तो शंकराचार्य ने दक्षिण में संस्कारों में पिरोकर एक सूत्र में बाँध कर राष्ट्र को एक किया ।

मैडम - इस तरह का काम तो world में कई जगह हुआ है , फिर ऐसा क्या है इस भाषा के साथ ?

चिंतन - मैडम , यूरोप की बात करते हैं लोग पर यूरोप कभी राष्ट्र नहीं बना । संसार का कोई भी देश , बहुजातीय राष्ट्र की हैसियत से , इतिहास को ध्यान में रखें तो , भारत से मुकाबला नहीं कर सकता । यहाँ राष्ट्रीयता एक जाति द्वारा दूसरी जातियों पर राजनीतिक प्रभुत्व क़ायम करके स्थापित नहीं हुई है । यह मुख्यतः संस्कृति और इतिहास की देन है ।

मैडम - क्या आप यह बता सकते हैं भाषा कैसे सहायक हो रही देश के निर्माण में ?

चिंतन- मैडम इस देश की संस्कृति से रामायण और महाभारत को अलग कर दें, तो भारतीय साहित्य की आन्तरिक एकता टूट जाएगी। किसी भी बहुजातीय राष्ट्र के समाजिक विकास में कवियों की ऐसी निर्णायक भूमिका नहीं रही है, जैसी इस देश में व्यास और बाल्मीकि की रही है।

व्यास ने नई व्यवस्था के सृजन में धर्म की भूमिका का उल्लेख किया हो तो राम एक शूदर शबरी को अपने को जूठे बेर खिलाने का अधिकार देते हैं, निषाद को कहते हैं तुम मेरे लिये भरत की तरह पिरय हो। जब इतिहास में सत्ता के लिये रक्तपात हुआ करता हुआ था लोग आपस में लड़ रहे थे, उस दौर में चित्रकूट के जंगल में चार भाई त्याग की आकांक्षा से आपस में संघर्ष रत थे। चारों भाई पिता की मर्यादा और कीर्ति की रक्षा के लिये वन जाने को उत्सुक थे। राज्य प्राप्ति एक गौण प्रश्न था। हम किसी भी जाति, धर्म और परम्परा के हों पर हमारी चाहत है हमारी परम्पराएँ राम की परम्परा की हो। राम असंभवों के समन्वय हैं, किस भाषा ने ऐसे नायक की महिमा से कर्ण आल्हादित किये हैं, जैसा संस्कृत ने किया है।

यह भी हर एक की आकांक्षा है मेरे घर में कोई धूतराष्ट्र और दुर्योधन का जन्म न हो। हम किसी दरौपदी के चीर हरण की घटना के न तो भागी बने न ही साक्षी। यह परम्परा विकसित किसने की?

यह संदेश जन- जन तक कौन लेकर गया, यही देव भाषा। क्या किसी और भाषा के पास ऐसा संस्कार है? क्या किसी और भाषा ने अपने ही गर्भ से संस्कारों की नदी को बहाया है?

अंग्रेजों ने भारत में प्लासी की विजय के बाद जिस भाषा और संस्कार का आरोपण किया है वह हमारी सांस्कृतिक नैतिक पतन का उत्तरदायी है। इस भाषा में महारत पाने वाले लोगों ने अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और अहम के कारण जातियों में बँटे समाज में भाषायी आधार पर लोगों के मध्य एक विभेद उत्पन्न किया है। संविधान बन जाने के बाद भी इनका प्रभुत्व क़ायम रहा है। अंग्रेजों ने सम्पदा का दोहन किया उसको मैं एक लघु छति मानता हूँ पर जो संस्कार आरोपित किये वह एक बड़ी छति है। इस देश को अगर सांस्कृतिक विकास की ओर ले कर जाना है तो उन देशज तत्वों की ओर मुड़ना होगा जो हमारी अमूल्य निधि हैं और हमारी थाती हैं।

मैडम - आपने क्या और भाषायें पढ़ी हैं? क्या आपके पास comparative study है? क्या Shakespeare, Milton आदि ने कोई संस्कार नहीं दिये हैं? यह जो नाटकों का नया रूप है जो संस्कृत में लिखा गया है उस पर उनका प्रभाव नहीं है?

चिंतन - मैडम, मैंने अंग्रेजी में तो नहीं पढ़ा नहीं है पर मैंने इनका हिंदी रूपान्तर पढ़ा है।

भवभूति शेक्सपीयर से अनेक शताब्दी पहले मानव मन के विघटन का चित्रण करते हैं। यूनानी लोग जिस तरह के नाटकों को दरैजेडी नाटक कहते हैं, उनकी रचना में वह शेक्सपीयर सोफ़ेक्लेस, दोनों के समकक्ष खड़े हैं। लोग 19 वीं और 20 वीं सदी के यूरोप के कवियों को हर जगह उद्धृत कर रहे। कालिदास ने जिस प्रेम का मुखर स्वर मेघदूत में दिया उन्हीं के स्वर आपको यूरोप के रोमांटिक कवियों की लिरिक रचनाओं में मिलता है। यह उनकी लयबद्धता का भारतीय पूर्व-संस्करण है। हमारे यहाँ का प्रेम अतीन्द्रिय नहीं है। इसमें मानव सुलभ सुख की कामना है। यह राजदरबारों की विलासिता से दूर है। यह संस्कृत भाषा से उपजा प्रेम आख्यान पश्चिमी प्रेम आख्यान से पहले का है और साम्यता है तो मौलिकता संस्कृत की है।

मैडम- क्या आप अंग्रेजी हिंदी में पढ़ते हैं?

चिंतन - मैडम, इलाहाबाद में अंग्रेजी को हिंदी में समझाना पड़ता है, बहुत लोग नहीं समझ पाते क्योंकि हिंदी माध्यम से ही वह पढ़ते हैं। फिराक़ सर तो हिंदी में अंग्रेजी पढ़ाते ही थे।

मैडम - आप यह कहना चाह रहे कि संस्कृत भाषा ने एक historical role play किया है इस nation को बनाने में पर यह भारत क्या एक nation था कभी? यह भी कहा जाता है कि भारत कभी एक देश था ही नहीं।

चिंतन - मैडम यह सामराज्यवादी इतिहास है जो कहता है कि देश कभी भारत रहा ही नहीं है। यह एक परम्परा का देश है। काव्य, पुराण, कथावाचन के द्वारा इस देश को एक सूत्र में बाँधती है और यह बंधन वह अटूट भाग है जो देश बनाता है। देश भूगोल से नहीं देश संस्कारों से बनता है। इस संस्कार को संस्कृत भाषा ने पोसा है। यह जो बुद्ध के शांति के उपदेश हैं वह क्या हैं? यह जो राम अहिंसा में विश्वास रख कर आकरामकों का दमन करते हैं वह क्या है? जो गाँधी की अकायरता पूर्ण अहिंसा है वह किसी और की नहीं वह राम की ही अहिंसा है। सिकंदर पंजाब से आगे गंगा की धाटियों की ओर बढ़ा होता, आज इतिहास में वह विजेता न होकर एक पराजित नायक होता। सामराज्य विस्तार जो अफ़ग़ानिस्तान तक गया हो, जो जावा, सुमात्रा, इंडोनेशिया तक गया हो न केवल राजनैतिक रूप से वरन् सांस्कृतिक रूप से उसे एक राष्ट्र करार न करना इतिहास की समझ की कमी के साथ साथ इतिहास लेखन के साथ अन्याय भी है।

मैडम - यह संस्कृत किस तरह से प्रशासन में मदद करेगी, किस तरह से सहायक होगी आपके काम में।

चिंतन - मैडम यह भाषा संस्कारों की भाषा है। राजनीति और व्यवहार का जन्म इस भाषा के गर्भ से हुआ है।

मैडम - आप यह बताएँ कि संस्कृत किस तरह आपके काम में सहायक होगी जबकि यह भाषा अब कम लोग जानते और बोलते हैं।

चिंतन - यह भाषा एक इतिहास रखती है । इसमें दर्शन और विचारधारा है । यह बहुत कुछ सिखाती है ।

मैडम - पर जब इसको लोग नहीं जानते तब कैसे फ़ायदा होगा । आप जानते हो यह भाषा , यह आपको जानकारी देगी । पर अगर आप ऐसे इलाक़े में पोस्ट हो गये , जहाँ लोग इस भाषा को नहीं जानते तब इस भाषा का क्या उपयोग होगा ? आप इतने सालों से यह भाषा पढ़ रहे यह समय आपका ख़राब नहीं हुआ ?

चिंतन - ज्ञान कभी भी काम आता है । वह कभी व्यर्थ नहीं जाता ।

मैडम अपने बग़ल वाले से । *yes you may ask*
मेंबर 2-यह तीन भाषा फ़ार्मूला क्या है ?

चिंतन - यह देश को एक सूत्र में जोड़ने के लिये तीन भाषाओं को पढ़ने के सिद्धांत को प्रस्तुत करता है ।

कुछ और सवाल हुये जो करेंट अफ़ेयर्स पर हुये । सवाल का जवाब दिया । दो और मेंबरों ने सवाल किये , जवाब दे दिया जैसा उस समय दिमाग़ सूझा ।

फिर वह सवाल आया जिसने इंटरव्यू को मशहूर करा दिया ।

मैडम रस्तोगी- आपने हाबी लिखी है पढ़ना, चिंतन करना और पर्यटन ।
यह पर्यटन कहाँ - कहाँ किया है आपने ?

चिंतन - मैं अपने आस पास के इलाक़े में गया हूँ । मध्य प्रदेश गया हूँ । बनारस के सारनाथ गया हूँ । बरगढ़ के जंगलों में गया हूँ । जंगलों का एकान्त मुझे आकर्षित करता है ।

मैडम - विदेश तो शायद अभी नहीं गये होंगे पर जाना ज़रूर चाहेंगे , अगर अवसर मिलेगा ।

चिंतन - जी मैडम , ज़रूर जाना चाहूँगा

मैडम - कहाँ जाना चाहेंगे ।

चिंतन - मुझे समुद्र का किनारा , बहती हवा , उमड़ती धारा , साहिल से लहरों को देखना , चारों ओर पानी हो बीच में एक द्वीप हो यह आकर्षित करता है ।

मैडम - आप की रुचि बहुत अच्छी और कुछ अलग सी भी है ।

क्या आपको पता है where is cambey basin and why it is relevant or special in that ?

चिंतन - थोड़ी देर सोचते हुये

मैडम यह cambey basin तो कहीं है ही नहीं ।

मैडम - in surprised expression..

cambey basin is no where ? You not heard this ?

आपने सुना नहीं यह कहीं ?

चिंतन - मुझे मैडम आज तक यह कभी सुनाई ही नहीं दिया । यह मेरे ख्याल से कहीं है ही नहीं । मैडम मेरे मस्तिष्क में पूरे विश्व का नक्शा धूम रहा है । मैंने अपनी तैयारी के समय बहुत मैपिंग की है भूगोल समझने के लिये, यह मुझे कहीं दिखा नहीं । विश्व और भारत का नक्शा कंठस्थ है मुझे ।

मैडम ने इशारा किया कमरे में टैंगे नक्शे की तरफ जहाँ पर cambey basin था ।

What is this ?

चिंतन - मैडम यह तो खंभात की खाड़ी है, यह नहीं है cambey basin ।

मैडम हो सकता है यह अंग्रेजी में उस नाम से पुकारा जाता हो । हम नक्शा हिंदी में ही पढ़ते थे । अंग्रेजी में तो कभी देखा नहीं ।

मैडम - Okk . Okkk . I got it .

दो तीन और सवाल हुये और बताया खंभात की खाड़ी के बारे में और फिर विदा लिये कमरे से ।

बाकी की कहानी तुम सबने सुनी ही है ।

मैंने पूछा सर उसके बाद क्या किया ?

सर बोले करना क्या था , धन्यवाद दिया और बाहर आ गए ।

मैंने पूछा सर इस इंटरव्यू में क्या गड़बड़ी लग रही जो आप सुधारना चाहेंगे ?

वह बोले अप क्या सुधारें ?

अंग्रेजी देखकर बुखार आता है । मैं बगैर डिक्शनरी का इस्तेमाल किये अंग्रेजी पढ़ नहीं सकता । अब विषय पढँूँ कि डिक्शनरी पढँूँ ?

यह उनको कोई नहीं कहता आप भी देखो नक्शा हिंदी में । वह हमको सिखा रहीं कि अगर आप कहीं गए वहाँ कोई संस्कृत नहीं जानता तो क्या करोगे ?

अरे आप को हिंदी नहीं आती आप उस पर सोचो । कह रहीं कि आपकी पूरी पढ़ाई संस्कृत की बेकार हो गई । उनको क्या पता कि फाल बैक प्लानिंग के तहत पढ़ा था संस्कृत । हमको कहाँ पता था बचपन में कि IAS देना है । हम तो तब संस्कृत पढ़ रहे थे कि कुछ न होगा तों पंडिताई कर लेंगे, मन्त्र बाँच लेंगे, शादी - विवाह करा देंगे, कुंडली देख लेंगे और ज़िंदगी कट जाएगी ।

हम इंटर में ज़िला में कला वर्ग (humanities) में टाप कर गए । हमारा नया-नया विवाह हुआ था । हमारे ससुर का परेम चोकराया, बोले कि पढ़ाओ खर्चा हम देंगे । हम आ गए इलाहाबाद विश्वविद्यालय ।

हम लोग गाँव में तो अंग्रेज़ी कुछ ख़ास पढ़ते न थे । हमारे यहाँ इंटर तक अंग्रेज़ी भी हिंदी में ही पढ़ाते थे । गाँव के सारे लोग कहते थे अगर अंग्रेज़ी न पढ़ी तब क्या पढ़ाई की । यह जो गाँव का देशी गौरव है उससे उत्प्रेरित होकर हमने ले लिया विषय अंग्रेज़ी, दर्शन शास्त्र और संस्कृत बीए में । मैंने दो साल अंग्रेज़ी पढ़ा । हमारे दिमाग़ में कुछ उपटता ही न था । अंग्रेज़ी हिंदी में पढ़ते थे । सारा अंग्रेज़ी का पद्ध, गद्य हिंदी में अनुवाद करके समझते थे और फिर उसको रटते थे अंग्रेज़ी में । मैंने दो साल यंत्रणा झेली । इस नामुराद अंग्रेज़ी में पास होने के लाले थे । किसी तरह पासिंग मार्क्स मिले इसमें ।

इसके बाद भी फ़र्स्ट डिविज़न थी बीए में । मेरा संस्कृत और दर्शन शास्त्र में भरपूर नंबर था । एम ए की कहानी सुनी है कि किस तरह सुरेश चन्द्र शरीवास्तव कहते थे कि एक छात्र के रूप में यह संस्कृत का महान ज्ञाता है । वह कुंडली बहुत बढ़िया देखते थे । उन्होंने कुंडली देखकर कहा था कि तुम्हारे में राजयोग है । मैं इस बार गया था फिर मैंस पास करने के बाद, वह बोले प्रबल संयोग है तुम्हारे दिविजय का ।

मैंने कहा, सर नाहक इतना समय ख़राब किया, कह दिया होता मैडम आप बेवकूफ हो । आप की हर लाइन कह तो यही रही मैडम आपको आता कुछ नहीं, यही साफ-साफ कह देते । सर आपने नाहक वक्त ग़ंवाया । सर हँसने लगे, बोले ठिठोली कर रहे ।

जो बीत गया वह बीत गया, अब कल पराक्रम का दिन है । महाशक्ति कल मुझे अंक में लेकर प्रवेश करेगी इंटरव्यू बोर्ड में । मैं पुरुष सिंह की तरह कल धारण करके महाशक्ति को आत्म सिद्धि के द्वारा ध्वस्त कर दूँगा सारे गढ़ । कल पराक्रम विशेष होगा । मेरी मौलिक संकल्पना मेरे अंदर से एक यूथपति को जन्म देगी ।

उन्होंने देखा राजेश प्रकाश की ओर और कहा, मैं दो घंटे में आता हूँ इंजीनियर साहेब । मुझे थोड़ा ज्ञान और देना कल के संग्राम के लिये ।

सर से विदा लेकर मैं आया राजेश प्रकाश के कमरे में ।

राजेश प्रकाश ने बताया कि वह एक यूनिवर्सिटी के सीनियर से मिले थे जो कई साल पहले IAS हुये थे । उन्होंने सलाह दी थी कि ईमानदारी से इंटरव्यू देना । उनकी हाबी किरकेट थी । उनसे पूछा गया कि आप किरकेट में क्या करते हो । उन्होंने कहा मुझे फ़ील्डिंग करना अच्छा लगता है । मैं स्लिप का अच्छा फ़ील्डर हूँ । उनका यह जवाब भी सराहा गया क्योंकि वाक़ई वह स्लिप के अच्छे फ़ील्डर थे ।

राजेश प्रकाश ने हाबी रीडिंग लिखी थी । उनसे पूछा गया कि आप क्या पढ़ते हो ? उन्होंने war and peace , मैक्रिस्म गोरकी , प्रेमचंद का ज़िकर किया ।

इंटरव्यू बोर्ड ने यह कहा कि आपकी रुचि रुस से प्रभावित साहित्य में काफ़ी दिख रही । राजेश ने कहा कि यह किताबें सस्ती मिलती हैं इसलिये यह ज्यादा पढ़ता हूँ । बोर्ड ने भी कहा , yes yes they are available at cheap prices.

राजेश प्रकाश ने कहा कि ईमानदारी से इंटरव्यू देना । मेरे IIT में सीनियर्स भी यही कहते थे । अगर bluff करने की कोशिश करोगे तब नुकसान हो सकता है , अगर सच बोलोगे तब फ़ायदा ही होगा ।

एक बार और बताई कि IIT के सीनियर्स कहते हैं कि अगर आपके पहले कोई बेहतर उम्मीदवार गया और वह अच्छा इंटरव्यू दिया तो आपका इंटरव्यू प्रभावित होता है । अगर खुदा न खास्ता कोई सुंदर लड़की गई तब तो पक्का होगा । राजेश प्रकाश के पहले सुरभि रैना गई थी । वह कश्मीरी लड़की थी बहुत सुंदर थी । राजेश प्रकाश थोड़ा चिन्तित थे कि उनका इंटरव्यू गया काम से वह लूट ले गई होगी नंबर ।

मैं विदा होकर यू पी भवन से पुसा इंस्टीट्यूट की तरफ़ चला ।

यह पहले से तय था कि इंटरव्यू के पहले माँ से और घर पर बात करूँगा , समय पहले से नियत था । हमारे यहाँ तो फ़ोन था नहीं , पड़ोस के एक घर में फ़ोन था वहाँ सब घर के लोग इंतज़ार कर रहे थे । मैंने फ़ोन मिलाया PCO से उधर से माँ की आवाज़ आई ,

“मुन्ना”

भावनाओं की नदी बहने लगी । पता नहीं कौन सी नदी की धारा ज्यादा तीव्र थी - इस ओर या उस ओर ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 30

मैंने पी सी ओ से फ़ोन मिलाया , उसने एक ही धड़के में फ़ोन उठा लिया , पहला ही शब्द माँ का सुना , “ मुन्ना तू कैसा है ” ?

मेरे अंदर से एक मुन्तशिर समुद्र उफान लेने लग गया । मेरा दूसरा हाँथ दुआ के लिये ऊपर उठ गया , अपने लिये नहीं बल्कि उसके लिये जिसने कहा था मुझे मोक्ष नहीं तेरी खुशी चाहिये । मेरे कंधों ने किसी के ख्वाब की ख्वाहिश का बोझ महसूस किया और वह ख्वाहिश पहली बार तब उत्पन्न हो गई थी उसके अंदर जब उसको एहसास हुआ कोई मेरे अंदर पल रहा है ।

मेरे अल्फ़ाज़ आँसुओं से निकल रहे थे जो फ़ोन के उस ओर न जाकर मेरे सामने ही ही चीख़ कर कह रहे थे ,

बहुत मज़ीद भरोसा है उसको तुझ पर , पुराने मंदिर की हर शाम उसकी आरती से आगाज़ करती है । उसके नकूशे -पा मंदिरों के पायदानों पर अपना निशाँ हर रोज़ बनाते हैं । उसके आँख , आँसू और ख्वाब एक साथ मिलकर यह कह रहे मत पोछो इन आँसुओं को इनमें ख्वाबों का अब एक ही रंग है , एक ही चाहत है ।

माँ की आवाज़ आई , मुन्ना तू कहाँ खो गया ?

मेरी आवाज़ भरा रही थी । वह समझ गई मेरी भावुकता को । वह बोली ,

“तू बचपन से ही ऐसा था । तू होश से कम जोश से ज्यादा काम लेता था पर कल होश से जोश को नियंत्रित करना । एक सधा हुआ कदम हर क्षण रखना । मैं तुझे और तेरी जिद दोनों को जानती हूँ ।

तू गाँव के पास की छोटी पहाड़ियों पर बनी पगड़ंडियों से कभी न जाता था । जब तेरे सारे भाई पगड़ंडियों से चलकर ऊँचाई छूने की कोशिश करते थे तब तू पाँव में छाले बनाया करता था और हर शाम तू झूठ बोलता था कि नहीं मैं भी पगड़ंडी से ही गया था , पर तेरे पैर बताते थे तू खौफ़ज़दा नहीं है कठिनाइयों से , तुझे चैन मिलता है खौफ़ से लड़ने में । तेरा यह बेखौफ़ रहना कल तेरे बहुत काम आएगा , बस सँभल कर आँखों में आँखें डालकर बात करना जब भी सवाल तेरे सामने हो । तेरे जवाब में लक्षण का आवेश नहीं राम का संयम होना चाहिये ।

तू निश्चन्त रह । अमानिशा का गगन घन अंधकार कल पनाह माँगेगा ज्योति के पतर पर कल तेरे अपराजेय समर का इतिहास लिखा जाएगा ॥

मैं कुछ खास न बोल सका । मैंने घर के और लोगों से बात की । फ़ोन रखकर वहीं पीसीओ के बाहर बैठ गया ।

सामने के पेड़ की नंगी शाखों को देखकर मेरा दम घुट रहा था । मुझे अपने ऊपर एक बहुत बड़े दायित्व का बोझ महसूस हो रहा था । मेरे ही सामने एक फुदकती चिड़िया जैसे मुझे देखकर ही कह रही हो, खाब बड़े देखे हैं, संकल्प बड़े किये हैं तो उसकी क्रीमत भी चुकानी होगी ।

मैं वहाँ से चलकर पूसा इंस्टीट्यूट आ गया । रात बहुत भारी थी । नींद नहीं आ रही थी । कल क्या होगा ?

कमल व्यूह पूरा बनाया था । बहुत से सवाल-जवाब की शृंखला बनाई थी । जवाबों से सवाल निकल रहे थे पर इस बात की क्या गायरंटी कि वही सवाल या उसी तरह के सवाल आएँगे । मैंने अपने इस कमल व्यूह के सवाल किसी को न बताए थे, मिश्रा सर को भी हवा न थी मेरे प्लान की । मैंने उनका इस्तेमाल किया था अपने हित साधन के लिये । चक्रव्यूह कुछ सफल रहा अगर पूरा न रहा पर मैं अपना कमल व्यूह सफल करना चाहता था, मैं मिश्रा सर, चिंतन उपाध्याय से ज्यादा नंबर इंटरव्यू में चाहता था । इनके पास ज्ञान मुझसे ज्यादा था अतः मेंस में नंबर ज्यादा ही होगा इनका मुझसे ।

मैं इंटरव्यू के सहारे पीछे करना चाहता था सब लोगों को । मेरे साथ एक बात थी मैं बहुत महत्वाकांक्षी था, मैं किसी को आगे जाते देख कर बर्दाश्त नहीं कर पाता था । मैं हर आगे बढ़ने वाले का विरोधी हो जाता था ।

मेरे मुहल्ले की गीतिका, शर्मा आंटी की बेटी वह ऐसे मैं दूसरी पोज़ीशन पाई । वह रात दिन मेहनत की । मैं विश्वविद्यालय के छात्र संघ चुनाव में घूमता था । मुझे चुनाव में आनंद आता था रैली देखने में, भीड़ देखने में । किसी ने तो न कहा कि आप चुनाव में भाग लो, चुनाव प्रचार करो । उसने दिन रात पढ़ाई की । पर जिस दिन वह दूसरी पोज़ीशन पाई मैं उसका दुश्मन हो गया । वह प्रारम्भिक परीक्षा शायद पास हो जाती अगर चिंतन सर का मन्त्र उसको दे देता पर मैं उससे झूठ बोला । उसका एक ही दोष था वह अपनी मेहनत से पोज़ीशन ले आई और मैं अपने अवारापन के कारण कोई पोज़ीशन न पा सका ।

अब मिश्रा सर और चिंतन सर भी मेरे विरोधी होंगे । अब मैं उनके खिलाफ़ हो जाऊँगा । यह मेरा व्यक्तित्व है । कोई जाने या न जाने ईश्वर तो जानता ही है ।

यह सोचता रहा । पूरी रात करवट बदलता रहा न जाने कब आँख लग गई और सपने में देखा कि सिविल सर्विसेज का मेरा रिजल्ट आ गया और मेरा सेलेक्शन नहीं हुआ । मेरी आँख खुल गई, अहसास हुआ कि अभी तो इंटरव्यू की ही रात है । यह स्वप्न था । मैं उठा एक ग्लास पानी पिया । कमरे में ही टहलने लगा ।

मेरा समय कट न रहा था अभी रात के तीन बज रहे थे । मैं उठा और पूसा कैम्पस में बाहर आकर टहलने लगा । मुझे दूर आसमान में चाँद दिखाई दिया ।

एक नज्म मेरे सामने घूम कर कहने लगी

तेरे बोझ को कह तो मैं अपने कंधों पर उठा लूँ बगैर बोझ के तेरी यह रात गुज़र जाएगी । पर जिन आँखों ने यह ख्वाब देखे हैं उनसे पूछ ले । देख चाँद की रौशनी में तेरे साये के साथ तेरे ख्वाब का साया भी चल रहा ।

मैंने अपने सामने बोल रही अपनी नज्म से ही कहा,
मैंने शबनमी स्याही से तुझको लिखा है, पर अपने हौसलो की ताकत से देखा है यह मुश्किल ख्वाब । मैं तुझसे बेहतर नज्म बना सकता हूँ आज पर बना नहीं सकता इससे बेहतर ख्वाब उसके लिये जिसने कहा है,
“ मैं अपने सारे सत्कर्म तेरे नाम करती हूँ, मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये ” ।
मुझे जीने दे ख्वाहिशों के बोझ में जिसका भार मुझसे ज्यादा किसी और ने उठा रखा है ।

उसकी यह लाइन बार- बार कचोटती है मुझको, उसने जिस्म के ख्रत्म हो जाने के बाद रुह के लिये जो कमा कर रखा था अपने मोक्ष के लिये वह एक वादा लेकर उसने मुझको दे दिया ।

मैंने रुह न देखी है कभी न कभी उसको महसूस किया है पर एक एहसास ज़रूर है कि जिस्म मिट जाता है पर रुह मिटती नहीं । उस अमरता के प्रतिमान के लिये जो कुछ भी था संचित वह सब उसने मुझे दे दिया । ज़िंदगी के संघर्ष में एक सुकून बेहतर परलोक और सद्गति का उसके पास था अपने कर्मों के सहारे वह उसने दे दिया उसको जो छल, फ़रेब कर रहा एक ऐसी सफलता के लिये जिसका इतिहास में कोई बुद्ध ऐसा नहीं बत्कि एक सामान्य सा ज़िकर होगा ।

कल सुबह के कलेंडर के इंतज़ार में मैं घूमता - घूमता वापस आ गया अपने कमरे में, सुबह की लालिमा हो रही थी । मैं देखने लगा चमचमाते नये जूते को जिसको पहन कर जाना था इंटरव्यू में । आंटी चाय लेकर आई और कहा कि इतना तनाव नहीं लेते जो परारब्ध में है वह मिलेगा ।

सुबह तैयार हुआ । नाश्ता आंटी ने बेहतर बनाया था । मेरी माँ ने एक पत्र लिखा था उनको । वह पत्र मैं ही लेकर आया था । काफ़ी कुछ आंटी उस पत्र में माँ के लिखे अनुरोध पर ही काम किया था । वैसे ही सुबह दही चीनी फिर पानी भरी बाल्टी निकलते वक्त । चिंतन सर का लाव लश्कर आ चुका था । जीप तीन सिपाही और उनकी जीप में लगा वायरलेस । आंटी ने पूछा , क्या सरकार भेजती है इस तरह इंतज़ाम करके सबको जो जाता है इंटरव्यू देने ? कोई और दिन होता तो शायद मैं कुछ बढ़ा- चढ़ा कर कहता पर आज तो कुछ और ही बोझ था मेरी शानों पर । मैं सिर्फ़ इतना ही कहा , मेरे सीनियर हैं जो सी ओ हैं गाज़ियाबाद में वह भी इंटरव्यू दे रहे उन्होंने भेजा है ।

मेरे ऊपर लोगों की आशाओं , आकांक्षाओं , उम्मीदों का दबाव बढ़ता जा रहा था कुछ वैसा ही जैसा रात का मुसाफ़िर जुगनुओं से उम्मीद रखता है । बस फ़र्क इतना है कि जुगनू बेपरवाह होता है उम्मीद के बोझ से और मैं दबा जा रहा लोगों की उम्मीदों से ।

मैंने अपनी आफ व्हाइट शर्ट, भूरा पैंट पहना । जूते के फ़ीते कसे । अपने ज़रूरी काग़ज़ात रखे और चल पड़ा उस यात्रा की ओर जिसको सैकड़ों मील दूर लोग टकटकी लगाए नयन सुरों से देख रहे अपनी - अपनी कल्पनाओं में ।

वहाँ इलाहाबाद में सुबह से ही पूजा - अर्चना का कार्यक्रम आरंभ हो गया । मेरे पिता भी माँ के साथ गए गंगा नहाने । मेरी माँ गंगा से निकलने को तैयार ही नहीं हो रही थी । पता नहीं कितने भावनाओं के आँसू उसने गंगा में डुबकी लगाते हुये बहा दिये होंगे उसी पवित्र जल में । उस अमृत छलके तट पर जहाँ कभी हर्ष ने सर्वस्व दान किया था , जहाँ शंकर ने कुमारिल भट्ट को परास्त कर अग्निमेषित कराया था , वहीं उसी तट पर मौन रहकर दोनों हाथ उठाये हवा में सीने तक गंगा की लहरों को समाये एक वरदान माँग रही भिक्षा की शक्ल में अपने सारे पुण्यों का तर्पण करते हुये मेरे लिये ।

वहाँ से वह बँधवा वाले हनुमान जी के मंदिर आयी । उनसे अनुरोध किया जिस तरह राम के लिये वह सहायक हुये , दीन दुखियों के लिये सहायक हुये वैसे ही उसके रक्त से उत्पन्न एक नालायक की मदद कर दें । मेरे , अपने दोनों के किये गये अपराधों का शमन करने का अनुरोध करते हुये उसने मन में कहा जैसे आपने महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ पर अदृश्य रूप से सवार होकर मदद की थी वैसी ही सहायता मेरी करें । घर आकर उसने माँ दुर्गा का आवाहन किया एक महाशक्ति के रूप में मुझमें प्रवेश करके सारी प्रक्रिया का संचालन मेरे पक्ष में करने का ।

मेरे घर पर मेरे मामा जी , मौसा जी , शर्मा आंटी , पिता के दो तीन घनिष्ठ मित्र आ गए शुभकामना देने । क्रयासों का बाज़ार गर्म हो गया उस शहर के छोटे से मुहल्ले में

जहाँ से मैं पहला व्यक्ति था सिविल सेवा के अंतिम द्वार पर कर रहा आज़माइश आने वाले कल के लिये ।

मैं यूपी भवन पहुँचा । वहाँ चिंतन सर बहुत सहज थे । वह इंटरव्यू पहले भी दे चुके थे । यह उनका चौथा इंटरव्यू था । दो IAS का और एक PCS का पहले दे चुके थे । सर के साथ खास बात यह थी कि वह आत्मविश्वास से सराबोर रहते थे । दो चार किलो आत्मविश्वास तो ऐसे ही गिर जाता था उनसे जिसे वह सँभाल नहीं पाते थे । मेरे आते ही बोले चिन्ता न करो आज विजय शरी वरण करेगी । आज हर आराधन का आराधन से उत्तर दूँगा । मैंने कहा कि सर यह तो निराला की पंक्ति है । वह बोले लिखा किसी ने भी हो पर यह लिखा हमारे लिये ही गया है और निराला तो दुखी-दीन के लेखक थे, अब हमसे बड़ा ज़रूरतमंद कौन है आज ।

एक बात याद रखना अनुराग भिक्षा मे दिया राज्य में स्वीकार नहीं कर्लँगा । मैं रण में समर करके अपना हक्क लूँगा । मैं कर्ण की तरह अंग राज्य नहीं लूँगा, दुर्योधन की तरह द्यूत के पाँसों से उपजा साम्राज्य मेरे भाग्य में न हो, मुझे शौर्य की कीर्ति चाहिये राज्य नहीं । मैं उस राम की परम्परा का आगरही हूँ जिसने कहा था मुझे अपकीर्ति से भय लगता है । एक बार और ध्यान रखना जो उस असंभव्य में संभव्य के राजकुमार के आचरण से उपजा है, जीत क्षणिक होती है पर जीत से उपजी मर्यादा इतिहास बनाती है । राणा प्रताप की जीत नहीं उसकी युद्ध की मर्यादा हमको याद आती है । औरंगज़ेब की राज्य प्राप्ति नहीं उसके द्वारा राज्य की प्राप्ति की नृशंसता इतिहास में स्थान बनाती है ।

यह यूपीएससी का इंटरव्यू बोर्ड देखना एक सौभाग्य है, यह सौभाग्य भी विरलों को ही मिलता है । इस सौभाग्य का आनंद लो ।

अब कुछ भी मत रखो मस्तिष्क में सिवाय इसके कि कुछ संवाद होंगे बोर्ड रूम में, वह आप ईमानदारी से कर देना इसके अतिरिक्त का सारा कार्य आपदाप्रबंधक प्रभु का है ।

राजेश प्रकाश भी आ गए । आज उनका मेडिकल था । हम लोगों को शुभकामनाए देकर वह हमारी जाती हुई जीप को पीछे से देखते रहे ।

हम लोग यूपीएससी पहुँचे । यह उस दौर की कहानी है ज़ब इलाहाबाद हिंदी माध्यम से अपनी जगह इतिहास में बनाने की कोशिश कर रहा था । आज से हिंदी माध्यम का इंटरव्यू आरम्भ हो रहा था । बहुत से लोग आए हुये थे जिनका इंटरव्यू आने वाले दिनों में होना था । चिंतन सर एक विष्यात व्यक्ति थे इलाहाबाद में । मेरा उनके साथ जीप से उतरना मेरी भी हैसियत में वृद्धि कर गया । मिश्रा सर भी आए थे । उनको देख चिंतन सर बोले बदरी तुम्हारा चेला आज दिग्विजय करेगा । इसने करेंट खबर तैयार किया है । सर ने शुभकामना दी, हम लोग हाल के अंदर प्रवेश कर गए ।

हाल के अंदर शशि मिली , एक करीने से सहेजी हुई करीम कलर की साड़ी में होंठों पर हल्की सी लालिमा और माथे पर नीले रंग की बिंदी लगाए । वह रूपवान तो थी ही और इस तरह के परिधान में अपनी एक उपस्थिति दर्ज कर रही थी । उसको देखते ही राजेश प्रकाश की वह लाइन कौंध गई , अगर कोई सुंदर लड़की तुमसे पहले गई तो वह आपका नंबर भी लूट लेगी । एक ही क्षण में मुझे वह बाली की तरह लगने लगी जो अपने से लड़ने वाले का आधा बल छीन लेता था ।

हम लोग इंटरव्यू के लिये हाल में एकत्र हुये । सब लोगों को सात- सात के समूह में बैठाया गया । हिंदी ही नहीं आज मराठी , बंगला , तमिल भाषा के लोगों का भी इंटरव्यू था । भाषा के आधार पर सबको साथ बैठाया जा रहा था । मैं , शशि , चिंतन सर , इंदौर का एक लड़का, जेन्यू के संजय पराकर्मी, दो और एक साथ ही बैठाये गये । चिंतन सर बोले हम लोगों का एक ही बोर्ड है ।

मेरे अंदर दो सवाल मुझे खाए जा रहे थे । हिंदी कम जानने वाले दास जी का बोर्ड न बने और शशि मुझसे पहले इंटरव्यू न दे । उसका क्रम मेरे बाद आए । सहसा एक व्यक्ति आया वह बोला आप लोग मेहरा सर के बोर्ड में हो । वह भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी रहे थे । दिल्ली के रहने वाले थे । वह हिंदी जानते थे । लोग कहते थे अच्छा बोर्ड है । चिंतन सर ने भी कहा यह बोर्ड अच्छा है । एक राहत की साँस ली , चलो हिंदी तो समझ आएगी उनको ठीक से ।

थोड़ी देर बार इंटरव्यू का क्रम आया । यह मुझे चिंतित कर गया । संजय पराकर्मी, शशि तिरपाठी, मैं , चिंतन उपाध्याय यह चार थे पहले क्रम में ।

मेरी धड़कनें तेज हो गईं । जो मैं न चाह रहा था वह हो गया । रूपवान शशि मुझे कुलटा ताड़का लगने लगी ।

संजय पराकर्मी गये , फिर शशि ।

मैंने कुछ न पूछा उनसे कि क्या हुआ अंदर ।

मुझे लेने एक व्यक्ति आया । उसने मुझे दरवाजे पर छोड़कर कहा अंदर जाओ ।

एक सपना सच हो रहा था जिसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बरगद के पेड़ के पास हर किसी ने कभी न कभी देखा ही होगा ।

मैंने बोर्ड रूम में प्रवेश किया । सामने मेहरा सर की आँखें मुझसे मिली , मैंने माँ को याद किया उसकी दूरस्थ प्रतिष्ठाया ही मुझे हौसला देती है । याद आया उसका वह वाक्य,

“ मैं अपने सारे सत्कर्म तेरे नाम करती हूँ , मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये । ”

मैंने भी मन में कहा माँ आज पराक्रम विशेष होगा , तेरे खून से तेरे हौसलों को पीकर जन्मा हूँ मैं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग- 31

यह शायद मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन है ।

शायद क्यों?

निसंदेह है ।

मैंने कितने लोगों को निहारा था ध्यान से जिन्होंने इंटरव्यू दिया था । मैं सोचता था क्या खास होगा इनमें ?

कैसा अनुभव होता होगा इंटरव्यू बोर्ड में ?

किस तरह का माहौल होता होगा हाल में बोर्ड रूम में जाने के पहले ?

यह सब अब आँखों देखा हाल ही न था वरन् एक अनुभवित सत्य था ।

मेरी आँखें मेहरा सर की तरफ से होती हुई सारे बोर्ड मेंबर की तरफ गई । सर ने कहा ,

Have your seat । मैंने दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन किया । यह यूपीएससी की परम्परा में शायद न था पर हमने इसे अपनी रणनीति का भाग बनाया था । सर ने भी जवाब नमस्कार में दिया ।

मेरे बैठते ही पहला सवाल किया कि आप ने समाचार पत्र पढ़ते हैं ?

मैं - हाँ सर

मेहरा सर - क्या है समाचार में जो आपको सबसे ज़रूरी या महत्वपूर्ण ऐसा लग रहा आजकल ।

मुझे परभाष जोशी की एक लाइन याद आ गई , “ जो तटस्थ है उनसे भी इतिहास सवाल करेगा ” । यह उन्होंने जस्टिस

रामास्वामी के महाभियोग प्रस्ताव पर कांग्रेस के संसद में मतदान में भाग न लेने पर एक सम्पादकीय लेख लिखा था ।

मेरा मस्तिष्क कमल व्यूह बनाने लगा । मैं आराम-आराम से बोलना चाहता था । इनको हिंदी आती थी, इसलिये बेहतर हिंदी भी बोलने का प्रयास करने लगा ।

मैंने यही पंक्ति बोल दी,

“ जो तटस्थ हैं उनसे भी इतिहास प्रश्न करेगा ” ।

यह पंक्ति बोलकर मैं शांत हो गया । मैं एक सधे हुये योद्धा की तरह अगले सवाल का इंतज़ार करने लगा । मैं प्रश्न जानता था क्या आएगा, क्योंकि यह वाक्य कुछ भी नहीं कह रहा ख़ास संदर्भ के बारे में ।

मेरा सर - इसमें ऐसा क्या विशेष है ?

मैं सर, संसद एक उत्तरदायित्व अधिरोपित करती है जनप्रतिनिधियों पर । यह जनता का विश्वास है जो वह लेकर संसद में आते हैं । जस्टिस रामास्वामी के अभियोग के मुद्दे पर एक दल ने वोट न देकर तटस्थ रहने का फैसला किया । यह लोकतान्त्रिक फैसला होकर भी एक उचित फैसला नहीं है । वह उत्तरदायी होंगे अपने कृत्यों के लिये इतिहास की प्रवाहमान धारा में ।

सर - निष्पक्ष रहना भी एक फैसला है । यह वह नहीं चाहते पक्ष में या विपक्ष में अपनी बात कहना । मौन रहना भी एक अभिव्यक्ति है ।

मैं - सर, संविधान के प्रावधान राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, न्यायाधीश, चुनाव आयोग, महालेखाकार आदि महत्वपूर्ण पदधारियों को पदमुक्त करने की एक प्रक्रिया का उल्लेख करते हैं । यहीं नहीं एक प्रावधान की प्रक्रिया दूसरे प्रावधान की प्रक्रिया से सचेत रूप से भिन्न बनाया गया है । यह एक सांविधानिक दायित्व है उन लोगों पर है जो संसद में चुन कर आते हैं, संविधान की सुरक्षा करें ।

सर - क्या यह तटस्थ रहना संविधान की असुरक्षा है ?

मैं - सर मैं इसे दो तरह से देखता हूँ, एक मत देने के अधिकार से दूसरे देश की एक बड़ी जनसंख्या के विश्वास से । मत देने के अधिकार से तो यह सही हो सकता है पर देश की एक बड़ी जनसंख्या ने जो विश्वास दिया है वह इसके पक्ष में नहीं जाता । आप प्रस्ताव के पक्ष में वोट दे देते अगर लगता था कि आरोप सही है, नहीं तो विपक्ष में दे देते प्रस्ताव के । यह तटस्थता किसलिये ? यह आपकी निर्णय लेने की क्षमता की कमी को दर्शाता है और यह उस शपथ के प्रति असम्मान है जो आपने शपथ ग्रहण करते समय ली थी ।

सर - क्या ऐसी शपथ ली जाती है कि आप निर्णय ही करोगे ?

मैं - नहीं सर निर्णय लेने की शपथ नहीं ली जाती पर संविधान की तीसरी अनुसूची में कई तरह के शपथ के प्रावधान हैं जो महत्वपूर्ण पदों पर जाने के पहले ली जाती है। संसद सदस्य के रूप में ली जाने वाली शपथ में यह प्रावधान है कि मैं कर्तव्यों का शरद्धा पूर्वक निर्वहन करूँगा। क्या तटस्थ रहना एक शरद्धा पूर्वक निर्वहन है?

सर - संविधान में क्या हर पद के लिये शपथ है?

मैं - सर, सबके लिये नहीं पर सांविधानिक पदों जैसे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल, मंत्री, संसद, न्यायाधीश आदि के लिये है और हर एक के लिये अलग-अलग शपथ का प्रावधान है।

सर - यह अलग-अलग शपथ प्रावधान क्यों है?

मैं - सर सभी के कर्तव्य अलग-अलग हैं।

सर - क्या मत न देना शपथ का उल्लंघन है? यदि है तब तो उन पर मुकदमा चलना चाहिये।

मैं - नहीं सर, एक तो संसदीय विशेषाधिकार का कवच है उनके पास पर इससे बड़ी बात यह है कि इसमें कानूनी नहीं वरन् नैतिक प्रश्न है। यह नैतिकता का तकाज़ा है। यह नैतिकता की माँग है। जिस तरह से राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों के पीछे नैतिकता का बल है कानून का नहीं। अगर सरकार उपेक्षा करेगी उन सिद्धांतों की तब उसे जनमत के द्वारा हटाया जा सकता है उसी तरह इस मामले का निस्तारण नैतिकता के मापदंडों पर होगा न कि कानून से। इसीलिये राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों के ऊपर मूल अधिकारों को मान्यता दी गई है।

सर - क्या राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों के पीछे कानून की ताक़त बिल्कुल नहीं है? किसी भी हालत में वह मूल अधिकार पर preference नहीं प्राप्त कर सकते हैं?

मैं - ऐसा नहीं है सर। सिफ़र अनुच्छेद 39 b, 39 c जिसमें भौतिक संसाधनों का दोहन, स्वामित्व, नियंत्रण और जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार है, इसमें अधिमानता है। इसको अपवाद के रूप में हम देख सकते हैं। अन्यथा अन्य मामलों में मूल अधिकार की राज्य के नीति निदेशक सिद्धान्तों पर अधिमानता है।

सर ने दूसरे मेंबर से बगैर कहे इशारा किया कि आप

मेंबर 1 - यह भारत में इस वर्ष सूखा पड़ गया है इस बार ऐसा क्यों हुआ?

मैं - ऐसा एल नीनो प्रभाव के कारण हुआ है ।

मेंबर 1- यह अल नीनो प्रभाव क्या है ?

मैं - यह प्रश्नांत महासागर में जब गर्म धाराएँ पूर्व की ओर बढ़ती हैं और तब सूर्य जल को equator के पास गर्म कर देता है । इसके प्रभाव से मौसम चक्र प्रभावित होता है । यह ला निना से थोड़ा भिन्न है ।

मेंबर 1-Pacific ocean का प्रभाव भारत में वह कैसे ?

मैं - मानसून एक विश्व व्यापी घटना है । इसका प्रभाव देश काल की सीमा से परे होता है । यह मानव के द्वारा बनाई गई सीमाओं से बँधा नहीं होता ।

मेंबर 1- यह ला नीना क्या है ?

मैं - यह तब होता है प्रभाव जब trade wind तीव्र होती है और समुद्र का जल सामान्य से ठंडा हो जाता है । यह प्रक्रिया लाभदायक होती है ।

मेहरा सर की ओर मेंबर ने इशारा किया कि मेरा काम हो गया । मेहरा सर ने फिर कमान संभाली ।

सर- आपने कोई हाबी लिखी नहीं है , क्या कोई ऐसा काम आप नहीं करते ख़ाली समय में । हर कोई कुछ न कुछ करता ही है ।

मैं - सर ऐसी कोई खास हाबी मेरे पास तो है नहीं , मुझे हिंदी उपन्यास पढ़ना अच्छा लगता है और लोगों से , मित्रों से विचार - विमर्श कर लेता हूँ ।

सर - यह हिंदी उपन्यास ही क्यों?

मैं - सर मैं हिंदी के अलावा किसी और भाषा को पढ़ने में सहज नहीं हूँ और ख़ाली समय में आप वही काम करना चाहते हो , जो आपको सहजता प्रदान करे ।

सर - अंग्रेजी में यह असहजता क्यों है ?

मैं - सर मैं हिंदी माध्यम का विद्यार्थी रहा हूँ और अंग्रेजी कक्षा पाँच के बाद पढ़नी शुरू की इसलिये मुझे अंग्रेजी में सहजता नहीं है ।

सर - यह जो आप उपन्यास पढ़ते हैं यह तो अंग्रेजी साहित्य से शायद विकसित हुआ है , हिंदी में उपन्यास का विकास तो बहुत देर से हुआ , यह दूसरे भाषाओं के साहित्य की तुलना में कोई खास प्रगति तो की नहीं

मैं - सर मैं इसकी तुलना नहीं कर पाऊँगा किसी और साहित्य से क्योंकि मुझे कोई खास ज्ञान नहीं है अन्य भाषाओं के साहित्य के विकास का ।

सर - आपकी हाबी पढ़ना है न कि हिंदी उपन्यास पढ़ना । आप उपन्यास ही क्यों पढ़ते हैं ।

मैं - सर, उपन्यास को पढ़ने में मनोरंजन भी होता है और जीवन की बहुमुखी छवि का आभास भी ।

सर - यह तो नाटक के भी साथ है, कहानी के भी साथ है ।

मैं - सर, साहित्य की अन्य विधाएँ उपन्यास की तुलना में मनोरंजन और जीवन के बहुमुखी प्रक्ष का प्रस्फुटन करती हैं ।

सर - यह प्रस्फुटन क्या होता है ?

मैं - व्यक्त होना, उदित होना

सर - यह कैसे ज्यादा व्यक्त या प्रस्फुटित करता है अन्य विधाओं से ?

मैं - नाटक, कहानी में जीवन की संशिलष्टता और वैविध्य के उभरने का अवकाश नहीं मिलता, जीवन के विविध स्वरूपों को समेटने में नाटक के रंगमंच की सीमाएँ होती हैं, नाटककार को बोलने और विवेचन करने की छूट नहीं होती, कहानी में आकार की लघुता होती है । कहानी लगती है उपन्यास की तरह पर वह एक अलग विधा है ।

सर - यह जो आप कह रहे यह आपकी व्याख्या है यह या *classical way* में described है ?

मैं - सर यह शिल्प शास्त्रीयता परम्पराओं और प्रथोगों से स्थापित होती है । इसके लिये एक कोई नियम नहीं बन सकते । समय के साथ यह बदल सकती है ।

सर - इसका अर्थ तो यह हुआ कि इससे असहमत हुआ जा सकता है । यह कोई structured concept तो हुआ नहीं, फिर यह क्यों माना जाए कि जो आप कह रहे वह ही सही है ।

मैं - सर, साहित्य कोई विज्ञान तो है नहीं । हर साहित्यकार अपने आप को ही सबसे श्रेष्ठ मानता है । साहित्य में खेमेबाज़ी भी है । साहित्य का विकास भी वैचारिक संघर्ष से ही होता है । अगर हिंदी का छायावादी आन्दोलन न आया होता तो आलोचना आज वहाँ न होती जहाँ पहुँची है । द्विवेदी युग की इतिवृत्ति प्रवृत्ति के पास कुछ ख़ास न था जिस पर सशक्त आलोचना का विकास हो ।

सर - यह आपकी व्याख्या एकांगी नहीं है ?

मैं - सर यह सार्वभौमिकता को समाहित की हुई व्याख्या है , हलाँकि इस व्याख्या को बहस के दायरे में ज़रूर रखा जा सकता है और साहित्य में कुछ भी बहस के दायरे में रखा जा सकता है ।

मैं काफ़ी प्रसन्न था । यह इंटरव्यू वैसा ही चल रहा था , जैसी मेरी योजना थी । कमल व्यूह सफल हो रहा था । पर अगर सब कुछ मानव ही नियत कर दे , अगर सभी हमारी मर्ज़ी से ही चले तब जगत नियंता के हाथ की डोर का क्या काम ?

ख़बाब एक खिलौना है जो हमें हर रोज़ मिलता है । यह उम्मीदों की आग सुलगा देता है । अपने ख़बाबों के ख़ाक हम हर रोज़ देखते हैं , उसी ख़ाक में से फिर उसी तरह अगले ख़बाब का सृजन कर देते हैं , जैसे अलाव की बुझी हुई आग की चिंगारी जंगल में आग को जन्म दे देती है ।

कोई जुलाहा होता मेरे पास जो हर रोज़ बुन देता ख़बाब मेरे लिये ख़बाब का पैरहन पहन कर मैं खुश हो जाता बग़ैर ताबीरों के भी । पर ख़बाबों के चीथड़ों का उड़ जाना वह भी तब जब ख़बाबों को बुना है आपने , आपकी जुलाहागीरी की कमी दर्शाता है या ख़बाब में सूत सही न लगे थे । चिथड़े उड़े हुये ख़बाब को रफू कैसे करें ?

समुद्र का क्या क़सूर वह तो सबको पानी देता ही है , क़सूर मेरी प्यास का भी नहीं है , यह हमारा नसीब है , दरिया तक चलकर आने के बाद भी लहरें पानी को हमसे दूर ले गईं । एक हसरत है जो पल रही मेरे अंदर किसी माँ के अपने बच्चे की तरह पर बहुत कोशिश करो गर वह दरिया सेराब है तब कहाँ पूरी होने वाली ।

मनोवैज्ञानिक मुझे देख रहा था , मुझे सुन रहा था । उसने कुछ काग़ज़ पर लिख कर मेहरा सर की तरफ भेजा । मेहरा सर ने उसको पढ़ा । उसकी ओर आश्चर्य जनक ढंग से देखा ।

उनके चेहरे के expression से लगा , जैसे वह कह रहे ,
is it ?

मनोवैज्ञानिक ने हाँ में सिर हिलाया ।
कुछ ऐसा हो गया जो अकल्पनीय था मेरे लिये ।

ख़ंजरों की फ़सल तैयार हो रही थी , मैं उससे बेखबर था ।

मेहरा सर ने उस पर्ची को पढ़कर मेरी ओर देखा । मंद-मंद मुस्कान मुझे उनकी दिखी । उन्होंने बगल के मेंबर की तरफ देखा । मेंबर ने मेरी तरफ देखा । मैं दबाव में आ चुका था ।

पता नहीं क्या चिट भेजी थी मनोवैज्ञानिक ने, क्या पढ़ा मेहरा सर ने उसमें,

क्या आँखों से बात हुई उनकी आपस में ?

इसका मुझे कोई एहसास नहीं पर मुझे यह लगा कि कुछ मेरे बारे में ही कहा गया होगा । एक बात में मस्तिष्क में आई, वह और क्या बात करेंगे ? यहाँ तो केन्द्र में मैं ही हूँ ।

मेरे चेहरे पर एक दबाव के लक्षण आने लगे जबकि किसी ने कुछ न कहा था मुझसे । कुछ भी ऐसा न हुआ था, पर एक छोटी सी घटना ने पूरे इंटरव्यू का माहौल मेरी दृष्टि से बदल दिया था । मेंबर ने मेरी तरफ देखा और वह कुछ काग़ज़ पलटने लगा और सवाल जवाब का करम आरंभ हो गया ।

मेंबर - आप को उत्तर पूर्व की समस्या के बारे में कुछ पता है ?

मैं - जी सर ।

मेंबर - क्या है यह समस्या जिसने दिल्ली सरकार को समय- समय पर हस्तक्षेप करना पड़ता है ।

मैं - सात राज्यों से बना

मेंबर - बीच में रोकते हुये ... यह सात राज्य कौन - कौन से हैं ?

मैं - मिज़ोरम, आसाम, मणिपुर, मेघालय नागालैंड, तिरपुरा

मेंबर - और ???

मैं - सर याद नहीं आ रहा ।

मेंबर - संस्कृत में बफ़ को क्या कहते हैं ?

मैं - सर नहीं याद आ रहा ।

मेंबर - शायद यह आपकी मदद कर दे ।

मैं - सर नहीं याद आ रहा ।

मेंबर - समस्या क्या है उत्तर पूर्व की ?

मैं - समस्या को बता रहा था पर वह रवानी न थी मेरी अभिव्यक्ति में ।

मेंबर - यह आसाम समझौता क्यों कहते हैं कि वह सफलता प्राप्त न कर सका जिस सफलता की आशा थी ।

मैंने इसका उत्तर ज़रूर दिया जैसी मेरी समझ थी पर बोलने में वह धार न थी और मेरे जवाब सुनने के बाद मेंबर के चेहरे पर कोई संतोष के चिह्न न थे

मेंबर - यूरोप में कितने देश हैं जो पुर्तगाली भाषा बोलते हैं ?

मैं - सर नहीं पता ।

मेरे उत्तरों की धार कमजोर हो रही थी , यहाँ तक कि मुझे उचित शब्द तलाशने के लिये संघर्ष करना पड़ रहा था ।

मैं दबाव में आ चुका था । मेरे चेहरे से यह साफ़- साफ देखा जा सकता था । मुझे समझ न आ रहा था , मैं क्या करूँ ।

मेंबर ने मेहरा सर की तरफ़ इशारा किया । इसका मतलब था कि मेरा काम हो गया है ।

मेहरा सर - हिंदी उपन्यास में परेमचंद का बहुत नाम लिया जाता है । या यूँ कहें उनसे ही हिंदी उपन्यास के एक युग की बात कही जाती है । ऐसा क्यों है ।

मैं - परेमचंद के लिये साहित्य रचना न तो विलास था न ही विवशता थी । परेमचंद पूर्व युग में यद्यपि हिंदी का पहला उपन्यास परीक्षा गुरु को कहा जाता है पर देवकीनन्दन खतरी की चन्द्रकान्ता और चन्द्रकान्ता संतति ने हिंदी उपन्यास को लोकप्रिय बनाया पर वह सामाजिक सरोकार से कोसों दूर था । उसमें एक परेम आख्यान होकर भी परेम की मार्मिक अनुभूतियों का चित्रण नहीं है । तिलस्म का धुँआ और ऐयारी के करतबबाजी से युक्त यह उपन्यासों की शृंखला सामाजिक यथार्थ से कोई ख़ास सामंजस्य नहीं रखती । साहित्य केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं है , यह परेमचंद के उपन्यासों में देखा जा सकता है । मनोविज्ञान शिल्प विधान का एक भाग हो गया और आदर्शवाद यथार्थवाद के साथ गुँथ कर साहित्य में प्रस्फुटित होने लगा । यह परेमचंद की एक हस्ताक्षरित देन है भारतीय उपन्यास को ।

सर - अभी आपने कहा था थोड़ी देर पहले उपन्यास से मनोरंजन होता है । हाबी भी एक मनोरंजन से प्रेरित वस्तु है । आप कह रहे कि साहित्य मनोरंजन की वस्तु नहीं है । यह विरोधाभास कैसा ?

पूरे कमरे में शांति । दोनों ही बातें मैंने कहीं थीं । यह एक दूसरे के विपरीत हैं । कमरे की शांति देखकर मेरा सर ने कहा कि , कुछ कहना है आपको ?

मैं - सर उपन्यास एक मनोरंजन देता है पर साहित्य केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है । यह एक यथार्थ , सामाजिक सरोकार , सौन्दर्य की व्याख्या करता है । मैंने यह कहा , यह केवल मनोरंजन ही नहीं देता सामाजिक सरोकार भी निहित होता है ।

सर - कैसे ?

मैं - सामाजिक सरोकार

सर- आप सौन्दर्य पर बताए । सामाजिक सरोकार तो ठीक है यह लेखन में प्रायः होता है ।

कुछ देर की शांति कमरे में । मैं हारी हुई बाज़ी जीतने की कोशिश में । मुझे याद आया अपनी माँ का चेहरा और उसकी वह लाइन

“ मुझे सदगति नहीं तेरा चयन चाहिये “ ।

चिंतन सर की पंक्ति ,

“ आराधन का दृढ़ आराधन से दूँगा उत्तर “

और अपनी लाइन

“ कल पराकरम विशेष होगा “

मैं अपने आप को मुनज्जम करने की कोशिश करने लगा । सर ने कहा ... yes Mr Sharma .

मैंने कहा - सर थोड़ा मुझे वक्त दीजिये ।

सर - yes , yes take your time

करीब 30/40 सेकेंड समय लिया मैंने और निर्णय लिया फिर से युद्ध को बचे हुये समय में एकाग्र होकर लड़ने की । मेरा सर के चेहरे पर मुझे आकरामकता दिख रही थी , हो सकता है यह मेरा वहम ही हो पर एक बार जो वस्तु दिमाग में बैठ जाती है वह आसानी से जाती नहीं । मेरी हालत कर्ण की तरह की हो रही थी । सारे दिव्यास्तर का आह्वान करो कोई शर हाथ न आ रहा था । धनुष इंतज़ार में तुणीर के पर मंत्र आवाहन पर तुणीर न आ रहे थे । जिस भाषा पर अधिकार का दंभ ऐसा गर्व

था मुझे उसी भाषा से भिक्षा माँग रहा शब्दों और उच्चारण की । एकाएक याद आ गया । लगा एक दिव्यास्तर हाँथ आ गया । शायद महाशक्ति अवतरित हो गई ।

मैं - हमने सूरज का उगना और डूबना देखा है, ऊषा और संध्या की लालिमा देखी है, सुंदर सुगंधित फूल देखे हैं, मीठी बोलने वाली चिड़िया देखी है, कल-कल करती नदियाँ देखी हैं, नाचते हुये झरने देखे हैं - यही सौन्दर्य है। इसका अंतःकरण में सामंजस्य सौन्दर्य की अनुभूति है। प्रेम सौन्दर्य है, आध्यात्मिकता सौन्दर्य है, मानव मात्र से प्रेम सौन्दर्य है। सबसे बड़ी बात जो आपको आळादित कर दे किसी तरह वह सौन्दर्य है।

मेहरा सर कुछ देर सोचते हुये, यह तो एक साहित्यिक अभिव्यक्ति है।

मैं - जी सर। यह साहित्य में सौन्दर्य के सृजन और अनुभूतियों में निहित सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की बात कर रहा मैं।

सर - क्या सौन्दर्य एक सा हमेशा होता है? लग तो ऐसा रहा कि सौन्दर्य हमेशा एक सा ही है सुबह की लालिमा, शाम की लालिमा.....

मैं - नहीं सर। इसमें सापेक्षता का तत्व है। आषाढ़ मतलब वर्षा ऋतु में आकाश में लालिमा आ जाए तो वह प्रसन्नता नहीं देगी चाहे जितना सौन्दर्य समाहित हो उसमें। उस समय तो हमें आसमान पर काली - काली घटाएँ देखकर ही आनंद आएगा।

सर - आप अपने पिछले दो answers को देखें आप खुद ही दो विरोधाभासी बात कर रहे। आप एक तरफ़ लालिमा में सौन्दर्य देख रहे और दूसरी ओर कालिमा में। क्या यह सौन्दर्य सापेक्ष है? क्या सौन्दर्य का निर्धारण स्वार्थ युक्त होता है? क्या किसी सौन्दर्य को सराहने के लिये किसी लाभ की आकांक्षा आवश्यक है?

कमल व्यूह मेरे ही खिलाफ़ बन रहा था। मैं उस मकड़ी की तरह था जो अपने ही बनाये जाले में तड़प रही थी। वह मकड़ी चीख रही सहायता के लिये। मकड़ी को उन जंतुओं पर दया आने लगी जो उसके जाल में फँस कर दम तोड़ देते थे।

कमल व्यूह बनाने वाला, अपने जवाब में सवाल डालकर बोर्ड से सवाल आमंत्रित कराने वाला कमल व्यूह का रचयिता अब खुद कमल व्यूह में चारों ओर से धिर चुका था। दरोणाचार्य की प्रतिभा से प्रेरित होकर युद्ध नीति बनाने वाला अब युद्ध की चालों से हताश सहायता के लिये हर ओर देख रहा था। मैं अब अपने हर जवाब में सवाल हटाकर जवाब बनाने की कोशिश कर रहा था पर बोर्ड उसी में से सवाल निकाल कर मुझे हत कर रहे थे। एक घायल सैनिक के युद्ध करने की सीमाएँ होती हैं। मैं उस सीमा का अनुभव कर रहा था।

मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं घायल हूँ और छिपी हुई सेनाएँ हर ओर से मेरे ऊपर आकरमण कर रहीं । मैं कितना भी कोशिश करूँ पर मैं सहज नहीं हो पा रहा था । मेरे जवाब से अधिक मेरी असहजता इंटरव्यू बोर्ड में दिख रही थी ।

मैंने फिर प्रयास आरंभ किया , मैंने पुनः ईश्वर को याद किया । मैं सहायता चाह रहा था दरापदी की तरह कृष्ण से । शायद कुछ सहायता मिल गई ।

मैं - साहित्य का सौन्दर्य और व्यक्ति की अपेक्षाओं का सौन्दर्य दो अलग वस्तु है । वर्षा ऋतु की लालिमा एक प्राकृतिक सौन्दर्य होकर भी आङ्गादित नहीं करता क्योंकि मन इंतज़ार में है एक काली घटा के जो वर्षा लेकर आएगी ।

सर - आपने वही बात कह दी जो आपने अभी कही थी बस थोड़ा और व्याख्यायित कर दिया ।

मैं - सर थोड़ा भिन्न है यह ।

सर - कैसे ?

मैं - यहाँ सौन्दर्य से अधिक व्यक्ति की इच्छा की प्रधानता है ।

सर - आपने एक शब्द का इस्तेमाल किया है , सामाजिक यथार्थवाद का ।

मैं - सर , शायद मैंने आदर्शवादी यथार्थवाद कहा है ।

सर -yes , yes

आप बताएँगे यह क्या है ?

मैं - सर , आदर्श और यथार्थ का संतुलन प्रेमचंद की रचनाओं में मिलता है , ख़ासकर परवर्ती काल में ।

यह हिंदी साहित्य के अंतर्राम तक व्याप्त है । प्रेमचंद के गोदान का अँधेरा सेवासदन को प्रकाशित करता है और कफन कहानी का पंच प्रमेश्वर तक । परिवार की जिस इकाई को तुलसीदास ने विविध पक्षों में अंकित किया , उसी तरह काव्य में मैथली शरण गुप्त करते हैं तो गद्य में प्रेमचंद । मर्यादा राम के लिये थी तो मरजाद होरी के लिये । मरजाद को पालना होरी के लिये महत्वपूर्ण था तो राम के लिये मर्यादा । दोनों अलग बिंदुओं पर होकर भी संवेदना में एक दूसरे के निकट हैं । राम की

चारित्रिक कल्पना मैथली शरण गुप्त करते हैं तो होरी की प्रेमचंद । यह आदर्शवादी यथार्थवाद है जो साहित्य में दिखता है ।

सर - आप यह कहना चाह रहे कि यथार्थ और आदर्श का समावेश आवश्यक है उपन्यास में ?

मेरा दिल धक से मुँह पर आ गया । कमल व्यूह बनाने वाला पुनः कमल व्यूह में । मैं अपने पिछले जवाब पर गौर करने लगा । पुनः जवाब में विरोधाभास न हो जाए । पुनः मैं आदर्शवाद और यथार्थवाद के व्यूह में बंदी न बना लिया जाऊँ । मैं सँभल - सँभल कर धीरे - धीरे एक - एक शब्द पर ध्यान देकर बोलने लगा ।

मैं - मानव- चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना उपन्यास का मूल तत्व है । प्रेमचंद के अनुसार उपन्यास उच्च कोटि के वहीं हैं, जिसमें यथार्थ और आदर्श का समावेश होता है ।

सर - क्या यह उपन्यास की सफलता के लिये आवश्यक है ?

मैं - नहीं सर, यह प्रेमचंद के लिये है वह स्वयम ही कहते हैं कि जिस उपन्यास को समाप्त करके पाठक उत्कर्ष का अनुभव करे वही सफल उपन्यास है । पर यह बात उपन्यास विधा को बहुत आगे नहीं ले जाती और उत्कर्ष का अनुभव करना उपन्यास के बेहतर या सफल होने का कोई मापदंड नहीं है ।

गोदान किसी महानायक की कथा तो है नहीं । इसका कोई उदात्त नायक भी नहीं है । वह कोई अच्छाइयों से भरा फ्रिश्टा तो है नहीं । इसके नायक में करोध भी है, अहंकार है, लोभ है ही । पर एक आत्मा के लेखक की कृति है ।

सर - यह सामाजिक सरोकार की लेखन प्रवृत्ति वह आगे भी गई या आपको प्रेमचंद में ही दिखता है ।

मैं - जी सर आगे भी है । निराला, यशपाल, अमृत लाल नागर, उपेन्द्र नाथ अश्कर, भगवती चरण वर्मा, भैरव प्रसाद गुप्त, नरेश मेहता आदि कई लेखकों ने सामाजिक उपन्यास लिखे ।

सर - Mr sharma I found a bit issue of novel as you explaining. You said the drama has limitations of stage . यानि आप यह कह रहे कि नाटक में मंचन की सीमाएँ हैं और नाटक में उस तरह की स्वतन्त्रता नहीं होती बात कहने की जिस तरह की उपन्यास में होती है । क्या उपन्यास का मंचन नहीं हो सकता ? क्या उपन्यास का मंचन हुआ ही नहीं है ?

मेरी धड़कानें फिर बढ़ने लग गईं । मैं फिर कमल व्यूह में फँस गया । मैं अपने ही जाल में बार-बार फँसता जा रहा था । अब बाज़ी मेहरा सर के हाथ थी । उनका अनुभव मुझ पर भारी पड़ रहा था । यह वह संग्राम था जिसमें मेहरा सर के पास अर्जुन का पौरुष था तो कृष्ण के रूप में एक लंबा अनुभव । वह चीजों को अगर कम जानते भी रहें हों तब भी मेरे जवाब से ही मुझ को पस्त कर रहे थे । मैंनें सोचा झूठ बोल दूँ कि नहीं उपन्यास का मंचन नहीं हुआ है पर फिर लगा 35 साल का अनुभव है इनके पास । उनको पता हो सकता है । इधर कुँआ उधर खाई ।

मैंने सच बोलने का फ़ैसला किया ।

मैं - सर मंचन का प्रयास हुआ है और मंचन भी ।

सर - किस उपन्यास का ।

मैं - गोदान एवम् राग दरबारी दो का मैं जानता हूँ ।

सर - यह कुछ विरोधाभास नहीं है आप की बात का ।

पुनः शांति पूरे माहौल में ।

सर ने आगे कहना शुरू किया

अगर उपन्यास का मंचन हो सकता है तब उपन्यास और नाटक में फ़र्क क्या है ? अगर उपन्यास का मंचन हो सकता है तब कहानी का भी हो सकता है , फिर उपन्यास , नाटक , कहानी में क्या फ़र्क है ।

पुनःएक कठिनता का प्रश्न । मुझे लगने लगा कि वह मेरे सवाल से ही प्रश्न बना रहे । वह अपने अनुभव का सहारा लेकर मेरे ही सवालों से शृंखला बना रहे । कमल व्यूह बनाने वाला कमल व्यूह से निजात चाह रहा ।

मैं - नाटक विधा का आरंभ

सर - Mr sharma don't elaborate history , just try to enlighten us on this single focal issue .

सारा बोर्ड रूम टकटकी लगाए सुन रहा था । शायद इतना रुचिकर इंटरव्यू आज न देखा हो । जैसे एक चीता दौड़ा रहा हो हिरण को और जंगल के सफारी देखने वाले प्रत्यक्षदर्शी हो रहे हों इस जीवन - मौत के खेल से जिसमें चीता अपनी भूख से पीड़ित हो और हिरण अपनी सुरक्षा के यत्न में लगा ह पर पर्यटक तो आमोद में व्यस्त

देख रहे वह प्रक्रिया और चाह रहे उस क्षण को नज़दीक से देखना जब हिरण चीते के जबड़ों में हो और अगर वह बच गया तब सफारी का मज़ा अधूरा रह गया ।

मैं - सर उपन्यास , कथानक , कहानी और नाटक एक जैसे दिखकर भी एक नहीं हैं । रंगमंच की अवधारणा नाटक को एकदम भिन्न कर देती है । रंगमंच दृश्य भी है शरव्य भी है । यह जो विरोधाभास दिख रहा है उसका एक कारण यह भ्रान्ति है नाटक को एक स्वतंत्र विधा न मानकर उपन्यास एवम् कहानी की तरह कथात्मक वार्तालाप मान लेते हैं । नाटक उपन्यास की तरह कोई पाठ्य पुस्तक नहीं है । नाटक में भी कहानी , उपन्यास की तरह विचार अनुभूति , कथा- पात्र रहते हैं परन्तु यह सब मिलकर भी नाटक को सार्थक नहीं बना पाते क्योंकि नाटक रंगमंच का आग्रही होता है और बगैर दर्शक की संकल्पना के यह पूर्ण नहीं होता । नाटक एक संवाद है , थियेटर एक संवाद है । संवाद करता है अभिनेता दर्शक से और रंगमंच , लेखन और दर्शक के मध्य एक त्रिकोणीय सम्बन्ध की स्थापना ही नाटक को सार्थकता प्रदान करती है । ऐसे सम्बन्धों के स्थापना की अनिवार्यता उपन्यास एवम् कहानी में नहीं है ।

सर - पर मंचन हो गया तब उपन्यास भी नाटक हो गया ।

मैं - उपन्यास का मंचन नहीं हो सकता ।

सर - आपने अभी कहा था कि उपन्यास का मंचन हुआ है ।

मैंने वाक्य पूरा होने के पहले ही बोलना आरम्भ कर दिया

मैं - सर वह उपन्यास नहीं नाटक का मंचन था ।

सर - वह किस तरह?

मैं - उपन्यास को नाटक के रूप में रूपान्तरित किया गया । मंच को ध्यान में रखकर फिर से लिखा गया ।

सर - क्या इससे वह उपन्यास से नाटक हो गया ?

मैं - सर मूल उपन्यास को तो मंचित किया नहीं गया । यह नाट्य रूपान्तर है । यह उपन्यास कहाँ रहा ? यह तो नाट्य रूपान्तर हो गया ।

सर - इसका अर्थ तो यह हुआ कि किसी भी उपन्यास , कहानी को नाटक बनाया जा सकता है ।

मैं - जी सर । यह निर्देशक की रचना धर्मिता पर है । वह अगर प्रयोग धर्मी है तो अवश्य कर सकता है । पर जैसे ही रूपान्तरण होगा वह रंगमंच के लिये नाटक होगा न कि उपन्यास ।

सर - आप इलाहाबाद से हैं । आपको इलाहाबाद में क्या विशेष लगता है ।

यह सवाल बहुत देर बाद मेरे मन के अनुसार मिला । इतनी देर की तड़पन के बाद ।

मैं - सर यह सांस्कृतिक शहर है । अदृश्यमान नदी दृश्यमान नदी के साथ तिरवेणी बनाती है , नेहरू का दर्शन है , लोकतन्त्र का आगाज़ है , महामना मालवीय का त्याग है , अमृत के छलकने की लोक शूलति है , हर्ष का अपरिग्रह है , विश्वविद्यालय ही नहीं शहर की भी बौद्धिकता है , फ़िराक़ का वह आत्म विश्वास है जो कहा करता था कि तुम जमाने से कहोगे कि , तुमनें फ़िराक़ को देखा है ।

सर - और कुछ ?

मैं - सर छायावादी आन्दोलन । निराला पंत महादेवी का अभिनव प्रयोग

मेरा सर मुस्कुरा रहे थे , मुझे लगा मौन में वह कह रहे तुम सुधरे नहीं इतनी आज़माइश के बाद भी ।

सर बोले तुमने हाबी ठीक नहीं लिखी । आपको आपकी हाबी हिंदी उपन्यास पढ़ना की जगह *reading* कहनी चाहिये ।

मेरा सर - बोर्ड की तरफ़ देखकर

Anyone else ??????

मेंबर - आप यह बताएँ जो आजकल महिलाओं को भागीदारी की बात कही जा रही । उनकी शिक्षा , साक्षरता , समझ तो कम है । क्या यह देश के विकास में अवरोध नहीं करेगी ? हम काबिल लोगों को हटाकर महिलाओं को उनका स्थान देंगे ।

मैं - सर यह हो सकता है पर अगर महिलाओं की प्रगति के लिये राष्ट्र के विकास को कुछ वक्त के लिये रोकना हो तो मैं महिलाओं की प्रगति को राष्ट्र के विकास पर अधिमानता दूँगा । ऐसा ही अंग्रेज कहते थे भारतीयों को सत्ता देने के मुद्दे पर । मेरी प्राथमिकता महिलाओं का विकास है अगर वह राष्ट्र के विकास को कुछ देर के लिये रोक कर ही क्यों न देनी पड़े ।

मेंबर ने मेरा सर की तरफ़ इशारों से कहा , मेरा हो गया । मेरा सर ने और बोर्ड मेंबर की तरफ़ देखा और पूछा

Anyone else want to ask anything or you want anything else to ask from us ... अंतिम नौ शब्द मेरी तरफ़ देख कर कहा था ।

मैंने अभिवादन किया । मुझे लगा उनका चेहरा कह रहा कुछ और आजमाइश करोगे या पनाह माँग गये ?

वाकई यह मेरी आजमाइश का दौर था ।

You want anything to be asked from us ... मेरे मनः मस्तिष्क पर हथौड़े की तरह चोट कर रहा था ।

बाहर निकला चिंतन सर बोले बहुत वक्त लगा दिया , भिड़ंत हो गई क्या?

सर बोले कोई बात नहीं थका दिया है तुमने अब मैं चित कर दूँगा सबको ।

सफेद कमीज़ काली पैंट चेहरे पर भरपूर आत्मविश्वास के साथ पिछले वर्ष के हारे हुये पर लोक नायक की तरह का रूतबा पाए खंबात की खाड़ी को इलाहाबाद में प्रसिद्धि दिलाने वाले मिथकों के महानायक की तरह इंटरव्यू बोर्ड रूम में प्रवेश करते चिंतन उपाध्याय ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 33

चिंतन उपाध्याय , एक अलग नाम था इलाहाबाद सिविल सेवा के क्षेत्र में । इनकी ख्याति कई तरह से हुई है इलाहाबाद विश्वविद्यालय में । पहली बार तब हुई जब वह अंग्रेज़ी की बी ए प्रथम वर्ष की क्लास में संस्कृतनिष्ठ हिंदी अनुवाद किया हुआ पूरा एक अंग्रेज़ी का नाटक हिंदी में ले कर गए थे और जब अध्यापक ने पूछा तब हिंदी को वहीं अंग्रेज़ी में अनुवाद करने लग गए । अध्यापक ने पूछा कि यह कहाँ से पढ़ा है , जब वह कापी अध्यापक ने देखी वह अनुवाद हिंदी में नहीं संस्कृत ऐसी हिंदी में किया था । अध्यापक ने पूछा ऐसा क्यों किया तब वह बोलें इससे संस्कृत भी मज़बूत हो जाएगी ।

यह बात सुरेश चन्द्र शरीवास्तव , संस्कृत के एक प्रख्यात अध्यापक के पास तक पहुँच गई और उन्होंने इनकी प्रतिभा को पहचान लिया और तब से वह सुरेश चन्द्र शरीवास्तव की चेला गीरी करने लगे ।

इनको दूसरी प्रसिद्धि तब मिली जब वह अंग्रेज़ी में किसी तरह पास करके भी बी ए में फ्रस्ट डिविज़न ले आए वह भी मार्जिनल फ्रस्ट डिविज़न नहीं वरन् एक सम्माननीय फ्रस्ट डिविज़न । पता चला कि यह दर्शन शास्त्र और संस्कृत दोनों विषय में विश्वविद्यालय में उस वर्ष बी. ए. के दोनों वर्ष में टाप किये थे । अगर वह कुछ ठीक-ठाक नंबर अंग्रेज़ी में पाते तो मेरिट लिस्ट के टाप टेन में होते । यह विख्यात थे जिस तरह अंग्रेज़ी को संस्कृत निष्ठ हिंदी के सहारे पढ़ते थे ।

यह बहुत ही सामान्य घर से थे । यह इलाहाबाद के उस दंभ से दूर थे जो IAS देने वाले कहते थे कि मैं PCS नहीं दूँगा । यह कहते थे कि मैं मज़दूरी भी करूँगा अगर ज़रूरत पड़ गई । शाही शान के सवाल के साथ पापी पेट का भी सवाल है, यह इनकी पंक्ति भी मशहूर थी ।

इनमें इतना आत्म विश्वास था कि यह कहते थे जो भी मैं करूँगा वह बेस्ट करूँगा । अगर मैं जूता पालिश करने का काम करूँगा तो जूता इतना चमकाऊँगा कि मुगल सराय से आदमी जूता चमकवाने मेरे ही पास आएगा । खंभात की खाड़ी वाले सवाल ने इनको रातों- रात नायक बना दिया था । लोग कहते थे गर आदमी हो तो चिंतन सर ऐसा, सरे आम इंटरव्यू बोर्ड में कह दिया मैं सही हूँ तुम नहीं । रस्तोगी मैडम एक खलनायिका के रूप में और चिंतन सर एक सारी बाधाओं से लड़ते राणा प्रताप के रूप में हर परीक्षार्थी के मन मानस में बस गए थे । उनका देव भाषा पर दिया गया इंटरव्यू एक लोक श्रुति ऐसा बनता जा रहा था और इसमें कई क्षेपक और प्रक्षेप्य जुड़ चुके थे ।

यह अपने पहले प्रयास ही में मेंस पास करके IAS का इंटरव्यू दे दिये थे । आई ए एस के मेंस के बाद पीसीएस था । वह परीक्षा देकर यह प्रदेश में 11 वाँ स्थान प्राप्त कर पुलिस सेवा में आ गए । दूसरे मेंस में यह सामान्य अंगरेजी में ही फेल हो गए । यह नियम है संघ लोक सेवा आयोग का कि अगर आप सामान्य अंगरेजी या देशी भाषाओं के क्वालिफ़ाइंग पेपर में फेल हो जाओ तब आपकी कापी जाँची नहीं जाती । दूसरा मेंस देने के बाद यह कहा करते थे,

“अब अंतिम भिड़ंत का इंतज़ार है, बेसबर भी हूँ बेचैन भी हूँ इतिहास लिखने के लिये ।

इनके अनुसार मेंस बहुत ही अच्छा हुआ था और संस्कृत का पर्चा तो कलम तोड़ लिखा है । इनके गुरु सुरेश चन्द्र शरीवास्तव भी कहा करते थे इसको संस्कृत में कुछ भी अंक मिल सकता है, यह गणित की उपलब्धियों को पछाड़ सकता है । दर्शन शास्त्र का पर्चा भी ठीक लिखा था । कहते हैं जब मेंस का परिणाम आया था तब कहा था इन्होंने, जाओ देख आओ उस सीढ़ी को जो इतिहास निर्माण के लिये प्रस्तुत है ।

जब इनको पता लगा कि वह मेंस फेल कर गए तब उनकी पहली प्रतिक्रिया थी, “कहीं अंगरेजी तो नहीं ले डूबी ।

अमित चौधरी, राजेश्वर सिन्हा, ए एन झा के अभिजात्य संस्कारियों ने यह कहना शुरू कर दिया कि चिंतन सही थे । वह कह रहे थे, इतिहास का निर्माण होगा । वह हो गया । बी ए में अंगरेजी साहित्य लेने वाला सामान्य अंगरेजी में ही लुढ़क गया, आज आक्सफ़ोर्ड भी गमगीन है ।

बदरी सर बताते हैं कि यह कोपभवन में चले गए थे और मैंने जाकर बाहर निकाला । गाँव से इनकी पत्नी और इनके पिता आए वह लेकर इनको गाँव चले गये थे । यह निराशा के अवसाद में ढूब गये थे । इनको वक्त लगा था उस सदमे से उबरने में ।

यह उस दौर की कहानी है जब कोठारी कमीशन के बाद भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने की छूट मिली तब गाँव - देहात में भी खुशी की लहर फैल गई । गाँव के प्राइमरी स्कूल के अध्यापक भी कहने लगे हमारे समय यह हुआ होता तो हम भी परीक्षा देते । परीक्षा पास करने का गौरव तो अलग है पर परीक्षा देना भी एक संतुष्टि प्रदान करता है । इस संतुष्टि से एक लम्बी पीढ़ी वंचित की गई ।

यह उस शहर की कथा है जहाँ हर पिता इस बात पर गर्व करता था कि मेरा बेटा , बेटी आई ए एस की तैयारी कर रहा । गाँव में विवाह के लिये लड़के के देखवारू अगर आ जाएँ तो कुल गोत्र के साथ- साथ यह बताना ज़रूरी है कि वह इलाहाबाद में आई ए एस की तैयारी कर रहा , भले ही वह इसी जुलाई में ही इलाहाबाद विश्वविद्यालय पढ़ने गाँव से क्यों न आया हो ।

चिंतन सर के ससुर एक इंटर कालेज में अध्यापक थे । वह सर का परिचय सबसे यह कहकर देते थे , हमारा दमाद आई ए एस की तैयारी कर रहा । चिंतन सर उनको पानी पी पी कर कोसते थे । बोले मुझे फँसा दिया था अंग्रेज़ी पढ़ने में । कहते थे , अगर अंग्रेज़ी न पढ़ा तब क्या पढ़ा?

मेरी माँ को भी यह बात भा गई थी । पिताजी पढ़े - लिखे कोई खास न थे वह पंडिताई करके जीविका चलाते थे । वह मुझे भी बहुत छोटी उम्र से ही अपने साथ पंडिताई में ले जाया करते थे । मुझे भी जाना अच्छा लगता था । वहाँ बढ़िया खाना मिलता था और मैं छोटा था और लोग इतनी कम उम्र के बच्चे की इतनी अच्छी संस्कृत सुनकर मुझे अलग से दक्षिणा देते थे । मैं वह दक्षिणा माँ के पास आकर जमा करता था । मेरे पिताजी कंजूस थे , वह माँ को पैसा नहीं देते थे तब मैं माँ से कहता था , माँ मेरी दक्षिणा से धोती ले लो ।

एक बार एक विवाह कार्यक्रम कराने जाना था , पिता की तबीयत ठीक न थी । माँ ने कहा चिंतन, इनका माथा तप रहा है तुम चाचा के लड़के को लेकर चले जाओ नहीं तो बदनामी होगी और जजमानी चली जाएगी । तुम पहुँच कर मन बहलाओ जजमान का तब तक इनका माथा जुड़ाएगा तब इनको भेजती हूँ । मैं गया और विवाह कार्यक्रम आरंभ कर दिया । पिता ने आकर मेरा कार्य संपादन देखा और वह संतुष्ट हो गये कि यह जजमानी अच्छे से चला लेगा । वह कार्यक्रम एक गाँव के रईस के यहाँ था । उनका कलकत्ता में कोयले का व्यापार था । वह मेरे काम से अति प्रसन्न हुये और दक्षिणा के अतिरिक्त पचास रुपया और दिया । उन्होंने मुझसे यह भी कहा तुम पढ़ाई करो , इस काम के लिये तुम नहीं बने हो । रास्ते में वापस आते समय पिता ने कहा कि कुंडली देखना थोड़ा और साधो उस काम में बहुत लाभ है ।

घर आकर वह पैसा माँ को दिया वह बाज़ार से धोती लाई और सबसे गर्व से कहती थी यह चिंतन की कमाई से है ।

मेरी माँ रात में सोते समय कहती थी , बेटा पढ़ो । यह पंडिताई का काम पीढ़ियों से चला आ रहा । मैं 15 साल की थी जब व्याह कर आई थी । बच्चे पल जाए इससे यह भी आसान नहीं । तुम कोशिश करो इस जंजाल से निकलने की । तुम सबसे बड़े हो । तुम आगे जाओगे तब छोटे भाइयों को सहारा होगा । वह यह जानती थी कि मेरे छोटे भाई काबिल नहीं हैं । अब माँ से बेहतर अपने बच्चे को कौन जानता है । वह मेरी सफलता को एक परिवेश की सफलता के रूप में देख रही थी । वह मुझसे अपनी परिस्थितियों और बच्चों की सहायता की उम्मीद कर रही थी ।

सूरज के छूबने के बाद रात जब काजल लगाए मेरे सामने आती थी तब उन वीरान अँधेरों के साथे में कुछ खाहिशें मेरी माँ की अँधेरे नशेबों में सैलाब की तरह बढ़ती हुई एक मज़बूत मलबूस में पिरोयी हुई मेरी ओर आती थीं और मेरा लड़ने का हौसला और बढ़ जाता था ।

उसका मुझ पर भरोसा और उसका यह कहना कोशिशें तेरी नाकाम हो सकती हैं कुछ वक्त के लिये पर बेकार नहीं जाएगी , मुझे हर सुबह एक नयी प्रेरणा देता था ।

अब घर में किसी को कुछ पता था नहीं । यह मेरे ससुर इंटर कालेज में हिंदी के अध्यापक थे । वह खेती से भी मजबूत थे । वह हर दिन कहते थे पिता जी से , महाराज जी अंग्रेजी बहुत ज़रूरी है आगे जाने के लिये । यह तो लेना ही है । हम आ गए इलाहाबाद । संस्कृत पढ़ना ही था , दूसरा विषय निश्चित कर दिया उस दासता के संस्कार के प्रतीक हिंदी के अध्यापक ने । उनकी अंग्रेजी का जूता साफ़ करने वाली आग अंधियारी प्रवृत्ति ने हमें बर्बाद कर दिया था । वह हमारे ससुर हैं पर काम किया दुश्मनों वाला । हमारे यहाँ पंडिताई का काम था अब इस काम का अंग्रेजी से क्या साझा ।

उनके खानदान में किसी ने अंग्रेजी न पढ़ी, वह खुद हिंदी के अध्यापक हैं और झोंक दिये हमको अंग्रेजी के भरसाय में । मैं दो साल जलता रहा उसमें , मैं ही जानता हूँ अंग्रेजी पढ़ने की पीड़ा । मैं क्लास करके निकलता था हताश-निराश । फिर तलाशता था अंग्रेजी की पुस्तकों का अनुवाद समझने के लिये फिर अंग्रेजी घोंटता था लिखने के लिये । यह दैव संयोग था कि पास हो गए अंग्रेजी में नहीं तो आज कहीं के न होते ।

अब रह गया तीसरा विषय । यहाँ दर्शन शास्त्र की हवा बह रही थी शहर में । हर कोई कहता था दर्शन शास्त्र लिया तो पीसीएस बनना सुनिश्चित । वह मिलता भी

था ऊँची मेरिट वालों को । हम तो ज़िला टाप थे । हमकों क्या , जो माँगो वह मिलेगा
।

मैं बी ए ही फेल कर गया होता , अंग्रेजी के कारण । हम इंटर पास ही रह जाते ।
यह सारा इंतज़ाम कर दिये थे हमको पंडिताई कराने का ।

ऐसे महान नायक का इंटरव्यू चल रहा और मैं चिंतामग्न यह सोचते हुये कि मेरा
कमल व्यूह पूरी तरह से बोर्ड ने पकड़ लिया । मैंने छल किया और वह छल पकड़ा
गया । इस छल की सज्जा क्या होगी ?

क्या मेरा सर लिख देंगे मेरी फ़ाइल पर .

He has tried to cheat so rejected.

मनोवैज्ञानिक भी हस्ताक्षर कर देगा तब मेरा क्या होगा ?

मैं बारिश चाह रहा था फ़सलों के लिये पर यहाँ तो सैलाब आ गया । रात भर इंतज़ार
किया ख्वाब का , नींद भी आयी पर ख्वाब आया एक दुःस्वप्न की शक्ल में । मैंने
अँधेरों की सल्तनत से लड़ने के लिये चिराग़ों की फ़ौज का निर्माण किया । यह
उजालों की हारी हुई फ़ौज ने मेरा आशियाना ही जला दिया ।

मैं इसी मनःस्थिति में बहुत देर से हैरान- परेशान बैठा था कि चिंतन सर दिखे बोर्ड
रूम से बाहर प्रसन्न मुद्रा में आते हुये ,
बोले बाबा तुमने थका मारा था मैंने चित्त कर दिया ।

मेरा नया नामकरण हुआ “ बाबा ” और आँखों देखा ही नहीं वरन् एक अनुभवित सत्य
चिंतन सर का मैं और शशि सुनने लग गए ।

सर की आवाज़ के जादू के साथ जैसे- जैसे बात का सिलसिला आगे बढ़ रहा था
वैसे- वैसे आभास हो रहा था काफिला मंजिल की ओर बहुत दूर जाता हुआ एक
बेनाम मील के पत्थर पर मुझे छोड़कर वैसे ही जैसे एक हताहत सैनिक को छोड़कर
सेना की टुकड़ी आगे बढ़ती हुई और मैं चीख रहा यह कहते हुये ,

“ मुझे भी मंजिल पर जाना है , मुझे घसीटकर ही सही पर मुझे भी साथ ले चलो “ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 34

चिंतन सर ने अपना इंटरव्यू बताना आरंभ किया । वह एक महान कथावाचक थे । शायद यह परम्परागत रूप से इनके रक्त में था । सत्यनारायण की कथा गाँव में बाँचते-बाँचते यह इसमें महारथ प्राप्त कर गये थे । एक जो विशेष गुण होता है कथा कहने वाले का, भाषा पर अधिकार वह तो भरपूर था उनमें ।

क्रिस्सागोर्ड की परम्परा जो आजकल लुप्त प्राय सी हो गई है वह भी इनमें भरपूर थी । गाँव की रामलीला में बचपन में यह राम का किरदार निभाया करते थे । इस कारण से नाटकीयता का तत्व भी उनमें था । वह नौटंकी देखने के बहुत शौकीन थे ।

तमाशा और नौटंकी जो दो विधाएँ लोक नाटक की हैं उसके वह बड़े पैरोकार थे । वह कहते थे गाजियाबाद नौटंकी कराऊँगा, लंबरदार नौटंकी कंपनी की, तुम आना बहुत मज़ा है नौटंकी देखने में । वह आनंद फ़िल्मों में कहाँ । यहाँ गाता कोई और है, अभिनय कोई और करता है वहाँ गायकी ज़रूरी है अभिनेता के लिये ।

ऐसे नौटंकीबाज़ के शौकीन जो खुद ही कथावाचक हो उसका इंटरव्यू उसके ही मुँह से सुनना एक नाटक, प्रहसन और चलते फ़िरते चल चित्र सबका आनंद दे देता है । या यूँ कहें एक नौटंकीबाज़ अपनी नौटंकी दिखा रहा ।

चिंतन उपाध्याय इंटरव्यू बोर्ड रूम में । अब न ज़रूरत किसी क्रिस्सागोर्ड वाले की । देखें वह साक्षात घटना जिसे कह रहे चिंतन उपाध्याय तुमने थकाया था हमने चित कर दिया ।

मेहरा सर की निगाहें चिंतन सर की ओर चिंतन सर ने अभिवादन किया

प्रणाम

मेहरा सर - धन्यवाद, आप आसन लें

चिंतन - आभार सर

सर - आपका नाम है चिंतन । इसका क्या अर्थ है ?

चिंतन - ध्यान, स्मरण, मन के अंदर मनन करना ।

सर - थोड़ा और बताएँ । यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो रहा ।

चिंतन - जो मन में अनायास आये या सायास, जो प्रकृति से समायोजित हो जो नील नभ के क्षितिज से अपना तादात्म्य रखता हो या पाताल के अतल तल में अपनी जड़ें तलाशता हो, समुद्र की अतल गहराइयों की तल में छिपा हो या पर्वत की

गगनचुंबी शृंखला पर अवस्थित हो सबका मनन करना अपने मस्तिष्क की शिराओं में । उनका अपने विचार प्रवाह में रखकर कबीर की तरह , सार-सार को गहि रहे थोथा देय उड़ाई । यह है वह प्रक्रिया जो चिंतन कहलाती है । अहम चिंतन नामधारी ।

सर - आप चिंतनशीलता व्याख्यायित कर रहे शायद न कि चिंतन ।

चिंतन - नहीं सर । चिंतनशीलता एक दूसरी वस्तु है । मैं चिंतन को ही व्याख्यायित कर रहा । चिंतनशीलता में नकारात्मकता भी है सकारात्मकता भी पर चिंतन एक सकारात्मक वस्तु है । चिंतनशीलता हर व्यक्ति में होती ही है । यह मनुष्य के विकास प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है । यह विज्ञान का अविष्कार, यह आध्यात्मिक उन्नति, यह नव विचारधारा का प्रसार यह सब चिंतनशीलता की ही उपज है ।

सर - यह तो सकारात्मक पक्ष है आप तो कह रहे इसमें नकारात्मकता भी है । वह कैसे ?

चिंतन - अपने भविष्य के प्रति अति आग्रही सोच , अपनी संतति के बारे हरदम विचारवान रहना, अपने परिवार के बारे में हरदम सोचना , अपने ही बारे में सोचना , अपना स्वार्थ आपके मस्तिष्क में हरदम विचारणीय बिंदु हो जाना । सामाजिक सरोकार से दूर व्यक्तिगत हित साधन को हर समय विचार बिंदु में रखकर मनन शील हो जाना यह एक नकारात्मक पक्ष है चिंतनशीलता का ।

सर - क्या भारत की चिंतनशीलता या चिंतन का कुछ खास महत्व है ? यह तो गुफाओं में जाकर समय नष्ट करने ऐसी है । आपने जो चिंतन की एक परिभाषा ऐसी दी है अभी उसमें कुछ खास तो दिख नहीं रहा सामाजिक सरोकार ऐसा । यह आप गये ध्यान मन हो गये , आप अपनी मुकित के लिये अपने अच्छे भविष्य के लिये चिंतन , मनन , ध्यान करने लग गए । आप संस्कृत के छात्र हैं, आपने संस्कृत पढ़ी ही होगी , जो ज़िक्र है वहाँ ऐसा ही ।

चिंतन - सर यह ध्यान, मनन मनीषियों का अपने लिये न होकर जगत के लिये था ।

सर - यह कैसे ? जैसे पश्चिमी देशों ने प्रयोग किये , अविष्कार किये वह सबके लिये था । यह जो आध्यात्मिकता के नाम पर यह तप है इसमें कोई ऐसा बिंदु तो है नहीं जो समाज के लिये हो । यह कहा ज़रूर जाता है पर मुझे तो दिखता नहीं ।

चिंतन - इस पश्चिम को भारत का ऋणी होना चाहिये । हम न होते तो विज्ञान विकास और धीरे होता । हमने विज्ञान के विकास की रफ़तार तेज की है । हम विज्ञान के असली जनक हैं । यह हमारे चिंतन का परिणाम है ।

पूरे बोर्ड रूप में एक सन्नाटा आ गया । मेहरा सर ने एक मेंबर की तरफ़ देखा ।

मुझे इंटरव्यू सुनते समय लगा कि यह फिर गये काम से । यह फिर पिछले साल के रास्ते पर हैं । सच बताऊँ मैं चाहता था सबका इंटरव्यू ख्राब हो, क्योंकि मैं संतुष्ट न था अपने इंटरव्यू से ।

मेंबर - वह कैसे ?

चिंतन - हमारी परम्परा वेदों, पुराणों, काव्यों से होती हुई समृद्धता की ओर अग्रसर होती गई ।

मेंबर - यह तो आप आध्यात्मिक तरह की बात कर रहे, इसमें विज्ञान कहाँ है ?

चिंतन - विज्ञान हमारी रक्त में है ।

मेंबर - किस तरह से ?

चिंतन - ऋषि भरद्वाज ने 600 ईसा पूर्व में ही विमान की संकल्पना कर दी थी । भारतीय गणित ज्योतिष की महत्वपूर्ण व्याख्यायें ईसा पूर्व की अंतिम कुछ शताब्दियों में हो गई थीं । ज्योतिष वेदांग, सूर्य प्रजापति को देखें एक वैज्ञानिक व्याख्या है उसमें ।

मेंबर - यह ज्योतिष है या गणित ? क्या ज्योतिष गणित है ?

चिंतन - सर ज्योतिष विज्ञान है । यह गणित ही है ।

मेंबर - कैसे ?

चिंतन - सर आर्य भट्ट पहले वह ज्योतिषी थे जिन्होंने 499 ईसा पूर्व में गणित ज्योतिषी की अपेक्षा अधिक बुनियादी समस्याओं को उठाया । यह उनके ही प्रयास का फल है कि ज्योतिष और गणित को अलग शास्त्र माना गया । गणित और ज्योतिष आपस में गुँथे हुये हैं । पाई का मूल्य और सौर वर्ष की लंबाई उन्होंने जो बताई वह आधुनिक अनुमानों के निकट है । पृथ्वी गोल है अपनी धुरी पर घूमती है और इसकी छाया चन्द्रमा पर पड़ने से ग्रहण पड़ता है । यह एक वैज्ञानिक अवधारणा हमारी ही हुई है ।

मेंबर - यह एक छोटी सी बात है इससे कैसी वैज्ञानिकता सिद्ध हो रही जो पश्चिमी ज्ञान के सामने देशी विज्ञान बहुत नायाब आप कह रहे ।

चिंतन - सर बात एक ही है पर है बहुत मार्के की । यह एक ऐसी विचारधारा का प्रतिपादन है जो उस समय के स्थापित सत्य को वैज्ञानिकता से तोड़ रहा था । यही नहीं भास्कराचार्य ने पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण की शक्ति के बारे में बताया ।

मेंबर - कहाँ यह उल्लेख है गुरुत्वाकर्षण की शक्ति का ?

चिंतन - सर सूर्य सिद्धांत में इसका विस्तृत उल्लेख है ।

मेंबर - आपने पढ़ा है इसको ?

चिंतन - पूरी कायनात ने पढ़ा है सर ।

मेंबर - आप यह कहना चाह रहे कि विज्ञान से भारत की परम्परा परिपूर्ण है ?

चिंतन - मैं नहीं सर , यह तथ्य कह रहे । गर्ग ऋषि ने ज्योतिष , आयुर्वेद , वास्तु शास्त्र , तारामंडल पर काम किया । चरक मुनि ने चरक संहिता में कई महत्वपूर्ण उल्लेख किये हैं उसमें आज का *digestive system* भी है जिस पर अविष्कार के एकाधिकार का दावा पाश्चात्य सभ्यता करती है ।

कणाद ने परमाणु विज्ञान पर काम किया । वह परमाणु विज्ञान के जनक हैं ।

पश्चिमी विचारधारा को पस्त करते हुये तथ्य हैं जो एक अनर्गल प्रलाप न होकर हमारी उपलब्धियों का बखान करते हैं ।

मेंबर - आप कहना चाह रहे हैं कि हमारा विज्ञान बहुत ही श्रेष्ठ था ।

चिंतन - सर वह श्रेष्ठतम था । वाराह मिहिर का गणित और खगोल विज्ञान से सजा हुआ उनका ग्रन्थ “ पंचसिद्धांतिका ” जिसमें पाँच प्रचलित विचारधाराओं का मिश्रण है । सुश्रुत का शल्य चिकित्सा का ज्ञान नायाब है । सर आप शुल्य सूत्र देखें भारतीय गणित दिखेगी अपने संस्कारों के साथ । पाइथागोरस का प्रमेय क्या है ? लीलावती का ही तो सिद्धांत है । सर , सबसे बड़ी बात जो एक आदर्श अस्पताल की आज की संकल्पना है वह चरक ने बहुत पहले ही कर दी थी । किस तरह से इमारत बने , किस तरह लोग काम पर लगाए जाए , किस तरह का स्टाफ हो , किस तरह का वातावरण हो , किस तरह से मरीज़ों से पेश आया जाए । सबसे बड़ी बात जो किसी आधुनिक अस्पताल में नहीं है वह चरक की संकल्पना में था कि किस तरह से मरीज़ों को मानसिक रूप से स्वस्थ रखकर उनका इलाज किया जाए ।

मेहरा सर - आप जो यह सब कह रहे इससे तो लग रहा हम सब कुछ जानते थे फिर हमारी छवि बेहतर क्यों नहीं ?

चिंतन - यह पश्चिमी मीडिया की ताक़त है जो झूठ दिखाकर भरमाती है । हम प्राजित रहे । हम सामराज्यवाद से पीड़ित थे । हमारे ही लोग विदेशी सभ्यता , विदेशी भाषा , विदेशी रीति में गौरव करते रहे । हमारी अपनी उपलब्धियों को हम ही नकारते रहे ।

मेहरा सर - आपकी हाबी है ज्योतिष । इसका मतलब वही है कुंडली देखना , भविष्य बताना ।

चिंतन - जी सर

सर - आपने कहाँ से सीखा है मतलब कैसे आपको रुचि आयी ।

चिंतन - शावक को क्रौन सिखा सकता है शिकार करना वह तो इस संस्कार के साथ-साथ जन्म लेता है ।

मेरा - शावक क्या है ?

चिंतन - शेर का बच्चा जिसे अंग्रेजी में cub कहते हैं ।

मेरा - pls elaborate what you said , I am not getting it .

चिंतन - सर हमारे यहाँ पंडिताई - जजमानी का काम होता है । हम लोग जन्म लेते ही इस काम में लग जाते हैं । संस्कृत सीखो, कुंडली बनाओ ।

मेरा - यह पंडिताई - जजमानी क्या होता है ?

चिंतन - सर मरनी - करनी, विवाह कराना, पूजा-पाठ कराना, कथा सुनाना यह सब हमारे परिवार की जीविका का माध्यम है । इसी को पंडिताई-जजमानी कहते हैं ।

मेरा सर - आपने भी यह कराया है ?

चिंतन - बहुत कराया है ।

मेरा सर - यह जो हिंदू विवाह में मन्त्र पढ़े जाते हैं पूरी रात सप्तपदी के, इससे क्या होता है ? यह क्यों ज़रूरी है ।

चिंतन - सर भगवान क्यों आवश्यक हैं । वह आपकी हमारी आस्था के प्रतीक हैं । वैसे ही यह मन्त्र एक आस्था को जन्म देते हैं । अग्नि के समुख आस्थावान होकर संकल्प करना जीवन में साथ देने का ।

सर - आपकी हाबी है ज्योतिष । आपने कितने लोगों का भविष्य बताया है ?

चिंतन - सैकड़ों लोगों का

मेरा सर - अपने बगल वाले मेंबर की तरफ इशारा करके, इनका बता सकते हैं ?

चिंतन - कुंडली हो तो सर अभी बता देता हूँ ।

मेरा सर और सारे मेंबर मुस्कराने लगे ।

मेरा सर - आपने अपना भविष्य देखा है ?

चिंतन - अपना भविष्य एक ज्योतिषी को नहीं देखना चाहिए , उसे अपने कुँडली के चक्र से दूर रहना चाहिये ।

सर - किसी ने तो देखा होगा , जब आपके यहाँ सभी इस काम को करते हैं ।

चिंतन - हाँ सर

सर - क्या कहा देखकर ?

चिंतन- राजयोग है मेरे कुँडली के चक्र में ।

सर - यह तो फिर ठीक नहीं गणना । यह तो होने वाला नहीं । राजशाही रही नहीं । लोकतन्त्र आ गया । हर कोई क्रानून से काम करता है । आप की पुलिस की नौकरी, आपकी चाहत जिस नौकरी की है या जो मैं किया या कर रहा इसमें सेवा का तत्व है । इसमें राजयोग कैसा ?

चिंतन - इसको ही राजयोग कहा है ।

सर - क्या कुँडली में ऐसा लिखा होता है ?

चिंतन - नहीं सर , यह ग्रहों की अवस्थिति के आधार पर गणना करके बताया जाता है ।

मेहरा सर - आप कितना भी कहें कि यह ज्योतिष का नियम है कि व्यक्ति को अपनी कुँडली नहीं देखनी चाहिये पर आपने देखी तो होगी ही ।

चिंतन - जी सर

मेहरा - अभी कहा आपने कि मैंने नहीं देखी ? ख़ैर बताएँ आप को भी राजयोग दिखा ?

चिंतन - जी सर ।

मनुष्य बहुत स्वार्थी होता है । मैं तो था ही । अभी तक इंटरव्यू जिस तरह चल रहा था उससे मैं दुःखी था । मेरा इंटरव्यू थोड़ा बीच- बीच में गड़बड़ा रहा था और मेरा कमल व्यूह पकड़ा गया । यह चिंतन सर तो राजधानी की गति से जा रहे थे । अब मैं परसन्न हो गया । अभी तक शांत सुन रहा था अब मैं मुखर हो गया । अब मुझे लगने लगा कि चिंतन सर तो गये काम से झूठ पकड़ा गया । मेरे बाद इनका इंटरव्यू हुआ था इसलिये इनको मेरे इंटरव्यू के आधार पर आँका जाएगा । मेरा खराब नंबर इनको बेहतर नंबर दे सकता था । यह कुलटा शशि तो लूट ही ली होगी नंबर राजेश प्रकाश के आई आई टी के अनुभव के आधार पर । बाकी बचा यह चिंतन सर ले जाते तब मुझे क्या मिलता ।

कई बार दूसरे की असफलता बहुत सुकून देती है। मुझे सुकून आ गया कि मेरी ही नहीं इनकी भी चोरी पकड़ी गई। मैंने कई बार देखा है कि यह अपनी कुंडली को देखकर कहते थे कि राजयोग भाग्य में और मैं कर्मयोगी सफलता दूर जाना चाहे मैं चहेट कर पकड़ ही लूँगा। इनको अपनी कुंडली रटी थी। इन्होंने कुंडली देख-देख कर उसका कागज़ तार-तार कर दिया था। यह तो सरासर झूठ बोल रहे थे।

मेरी तो चोरी पकड़ी गई या नहीं यह संदेह के घेरे में है यह तो रंगे हाथ पकड़े गए और गुनाह कबूल भी किया।

कागज़ की कश्ती पर दरिया पार करने का करतब दिखाने का दावा करने वाले को अब ऊपर आसमानों से गिर रही बरसात से निपटना होगा। इसके बाद के मंज़र में इसके अश्कों का सैलाब होगा। पर ऊपर से मैंने कहा कि सर बहुत सही जा रहा इंटरव्यू पर छबती नाँव को भँवर में नीचे तल तक जाने को देखने को आतुर था। मेरी स्वार्थपरता कह रही थी, अगर मैं नहीं तो कोई और नहीं। अगर यह जंगल मुझे लकड़ी नहीं देगा तो यह किसी और को भी नहीं दे सकता मैं पूरे जंगल को जलता हुआ देखना चाहता हूँ।

मैंने कहा ...

“सर फिर क्या हुआ “

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 35

चिंतन सर ने मेरी और शशि की तरफ़ देखा। वह पूछे इंटरव्यू कैसा जा रहा। मुझे बिल्कुल भी अच्छा न लगा उनका शशि की तरफ़ देखना। जिसका रूप मुझे कभी मनोहर लग रहा था, जिसे मैंने मिश्रा सर से मिलवाया था, जिसे मैंने मदद की थी, वह अब मुझे शत्रु की तरह लग रही थी और मुझे अपने सारे कृत्य अपनी निरी मूर्खता लग रहे थे।

मैं ठगा हुआ सा महसूस कर रहा था। पता नहीं राजेश प्रकाश के वक्तव्य में कितनी सच्चाई है पर यह कहना उनका कि “कोई सुंदर लड़की पहले गई तो वह नंबर लूट ले जाएगी”, जब-जब उसको देखता लगता था कि यह सब एक ठग की तरह लूट ले गई और मैं लुटे हुये मुसाफ़िर की तरह इंतज़ार कर रहा राहों में सहायता के लिये।

चिंतन सर के इंटरव्यू का पहला भाग अच्छा गया । वह जैसे-जैसे सवालों का जवाब बता रहे थे वैसे - वैसे मेरा दिल बैठता जा रहा था । जैसे ही वह घेरे में आए मेरा दिल बल्लियों उछलने लगा । मैं ईश्वर से एक कुत्सित हृदय से प्रार्थना कर रहा था कि अब थोड़ा इंटरव्यू गड़बड़ा जाए तो एवरेजिंग हो जाए ।

मिश्रा सर , चिंतन सर , शाशि , रजनीश सिन्हा , अमित चौधरी सब सलेक्शन पाएँगे तब मेरा नंबर कैसे लगेगा । सबके पास कुछ न कुछ खास है । इसके पास रूप है और धूमा फिरा कर बात कहने की कला , मिश्रा सर के पास ज्ञान , चिंतन सर के पास कई टन का आत्मविश्वास , अमित चौधरी तो ऊपर से ही लिखा के लाए हैं ... अमित चौधरी आई ए एस , रजनीश सिन्हा के यहाँ तो खदान है अफ़सरों की , इनके यहाँ तो कुत्ते , बिल्ली भी आई ए एस हो जाते हैं ।

मेरे पास क्या है ?

कुछ भी तो नहीं । न मेरे पास व्यक्तित्व है , न कोई आकर्षण है , न कोई खास डिग्री है , न नंबर है पिछली परीक्षाओं में , ऊपर से पकड़ा भी गया छल करते हुये । मुझे इनके धायल हो जाने पर ही रेस में आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा । अगर यह अपने सधे कदमों से चले तब इनसे पार पाना आसान न होगा । इनके ख्वाबों की सिसकियों पर ही मेरे ख्वाबों का अटटहास होगा ।

सर बोले , “ बाबा कहाँ खो गये ? ”

मैंने कहा कहीं नहीं । मैं खो गया था आपके अप्रतिम जवाबों में ।

वह बोले अभी तो climax बाकी है ।

इंटरव्यू का बाकी बचा भाग आरंभ हुआ उसी तरह की क्रिस्सागोई में ।

सर - आप यह जो ज्योतिष के बारे में कह रहे यह विज्ञान के किस सिद्धांत पर काम करता है ।

चिंतन - ग्रहों के चक्र और उनकी स्थिति के गणितीय अध्ययन पर

सर - आप यह कह रहे कि यह जो Jupiter Saturn , moon , sun आदि का universe में movement है उसकी scientific study के आधार पर ।

यह कुछ उसी तरह है जैसे हाइड्रोजन , आक्सीजन मिलायें तब पानी बन जाता है ?

चिंतन - तक्रीबन वैसा ही ।

सर - अगर यह सही है तब एक ज्योतिषी की भविष्यवाणी दूसरे से अलग क्यों होती है ?

चिंतन - यह अलग इसलिये होती क्यों कि *prediction* में फर्क होता है ।

सर - वह क्यों होता है ?

चिंतन - हर ज्योतिषी का *prediction* अलग होता है ।

सर - अगर आप जो कह रहे हैं वह होता है तब *objectivity* कहाँ है ? यहाँ तो *subjectivity* आ गई तब यह विज्ञान कैसे हुआ ?

चिंतन - आपकी आध्यात्मिक शक्ति *prediction* में काम आती है । इसलिये वह ज़रूरी है अनुमान को चक्र के अनुसार बताने के लिये ।

सर - आप खुद ही कह रहे यह अनुमान है तब यह विज्ञान कैसे हो गया ? अब आध्यात्मिक शक्ति अगर निर्धारण करती है तब क्या ज़रूरत इस कुंडली चक्र की । आप वैसे ही बता दो आध्यात्मिक शक्ति से ।

चिंतन - दोनों का संयोग आवश्यक होता है ।

सर - आपका यह कौन सा अवसर है ?

चिंतन - चौथा पर इंटरव्यू का तीसरा ।

सर - आप यह बता सकते हैं कि आप का चयन पिछले साल क्यों नहीं हुआ ?

चिंतन - स्पष्ट नहीं बता सकता ।

सर - आपने चिंतन किया ही होगा , आप का नाम ही है चिंतन

चिंतन - किया था ।

सर - आप कोई एक कारण बता सकते हैं ?

चिंतन - शायद मेरा एक जवाब कि संस्कृत किस तरह से प्रशासन में सहायक होगी मैं ठीक से न बता सका था ।

सर - उसी सवाल का उत्तर आप एक साल बाद फिर से दे दीजिये ।

चिंतन - संस्कृत सबसे प्राचीन भाषा है । इसकी लिपि देवनागरी और भाषाओं से साझा की जाती है । इस कारण भाषा सीखना आसान होगा । यह संस्कारों की भाषा

है । यह एक रचनात्मकता को सृजित करती है । वैसे हर भाषा में कुछ न कुछ खास होता ही है पर संस्कृत का देश के संदर्भ में इतिहास उल्लेखनीय रहा है ।

मेहरा सर अगले मेंबर की तरफ देखकर इशारों से आप

मेंबर - आप पुलिस सेवा में हैं, क्या चुनौतियाँ हैं पुलिस के सम्बुद्ध आज के परिप्रेक्ष्य में ।

चिंतन - मैंने पावर की एक समस्या बड़ी है । हमारे पास आबादी के बढ़ने के अनुपात में फ़ोर्स नहीं बढ़ायी गयी ।

मेंबर - क्या ज़रूरत फ़ोर्स बढ़ाने की । दौर यह आ रहा कि enforcement को कम किया जाए, लोगों को जागरूक किया जाए । यह प्रयास हो कि बल का प्रयोग कम हो और लोग खुद क़ानून का पालन करें ।

चिंतन - यह होना मुश्किल है अभी

मेंबर - क्यों?

चिंतन - लोगों में शिक्षा, साक्षरता का अभाव है और इस अभाव के कारण जागरूकता क़ानून के प्रति बढ़ाने में समय लग सकता है और क़ानून की स्थापना के लिये क़ानून के भय की आवश्यकता होती है ।

मेंबर - तब तो चुनौती शिक्षा और साक्षरता का अभाव है न कि पुलिस बल की कमी । “क़ानून का भय होना ज़रूरी है”, यह तो संविधान नहीं कहता । संविधान तो क़ानून के सम्मान की बात करता है । यह कोई पुलिस राज्य या मिलिटरी राज्य तो है नहीं । संविधान एक welfare state मतलब कल्याणकारी राज्य की बात करता है । इस राज्य की संकल्पना में तो क़ानून का भय हो यह तो कहीं कहा नहीं गया ।

चिंतन - सर किसी भी तरह के स्टेट की संकल्पना की जाए एक संस्था की आवश्यकता होती है जो क़ानून को स्थापित करें अन्यथा अराजकता का जन्म हो जाएगा ।

मेंबर - कैसे ?

चिंतन - हर ज़िले में असामाजिक तत्व होते हैं, वह क़ानून को हाथ में ले लेते हैं । उनको कौन समझाएगा, यह कल्याणकारी राज्य है आप क़ानून का सम्मान करो । वह सम्मान की बात तो कभी समझते ही नहीं वह उल्टा पुलिस पर आकरमण कर देते हैं ।

मेंबर - आप ऐसे लोगों को गिरफ्तार करें । जेल भेजे । ऐसे प्रावधान हैं ही कानून में जो यह कहते हैं कि उचित कदम उठाया जाए इनके खिलाफ़ ।

चिंतन - यह भी आसान नहीं क्योंकि इनमें से कई के पास राजनीतिक संरक्षण होता है ।

मेंबर - समस्या राजनीतिक भी है ।

चिंतन - जी सर ।

मेंबर - इसका उपाय क्या है ?

चिंतन - राजनीतिक संरक्षण इनका बंद हो और पुलिस का राजनीतिकरण न किया जाए ।

मेंबर - यह कैसे होगा ? वह जनता से चुनकर आते हैं । जनता का विश्वास है उनके पास । जो आप राजयोग कह रहे अगर वह है तो उनके पास है नौकरशाह को तो उनकी नीतियों पर काम करना होगा ।

चिंतन सर धिरते जा रहे थे । इंटरव्यू एक रोचक मोड़ पर उनकी किस्सागोई भी कमजोर पड़ रही थी । मैं खुशी में फूला न समां रहा था । मैं इस युद्ध में हारते योद्धा की पराजय गाथा सुनने को बेचैन हो रहा था । यह पहले दौर की जीत जितनी मुझे परेशान कर रही थी उतना ही यह उनका सवालों में धिरना आळादित कर रहा था । मुझे लग रहा था मैं हारी हुई बाज़ी जीत रहा । संग्राम उनका, पौरुष उनका फैसला मैं अपने पक्ष में देख रहा था । इनकी हार में मेरी जीत होगी ऐसा मेरे अंदर भाव आ रहा था ।

मैंने उत्सुकता से पूछा फिर क्या हुआ ?

चिंतन - यह एक गठजोड़ है राजनीति के साथ अपराधियों का जो एक बड़ी चुनौती है देश के समुख

मेंबर - कोई और चुनौती ?

चिंतन - सर संसाधनों की कमी है । पुलिस का आधुनिकीकरण आवश्यक है । सिपाहियों के काम के घंटे बहुत अधिक हैं । उनके स्वास्थ्य का उचित ध्यान नहीं रखा जाता । हाउसिंग की समस्या बहुत विकट है । हर शहर - क्षेत्र में पुलिस कालोनी बनाई जानी चाहिये ।

मेंबर ने चेयरमैन की तरफ देखा और इशारों में कहा कि मेरा हो गया ।

मेहरा सर ने चिंतन सर से कहा कि आपका दिन शुभ हो और भविष्य उज्ज्वल हो यह कहकर विदा कर दिया ।

शशि चापलूसी करने लगी । बोली , “ सर आपने तो तोड़ दिया । अब आप हमको याद रखना भूल न जाना जब टीवी में आपका नाम एनाउन्स किया जाए ” ।
उसके चेहरे को देखकर मैंने मन में कहा
“ चापलूस और झूठी ”

सर ने पूछा , शशि तुम्हारा कैसा हुआ इंटरव्यू वह अपना इंटरव्यू बताने को तैयार हुई ।

मेरी कोई रुचि उसके इंटरव्यू में न थी पर सुनना पड़ा क्योंकि मुझे दिखा चिंतन सर का अतिशय आग्रह उसको सुनने के लिये । मैं भी चिंतन सर के संसाधनों का दोहन करना चाहता था । उनकी जीप से दिल्ली घूमना चाहता था । चापलूसी मुझसे बड़ी करने की कला विरलों को आती थी पर मैं कहता हर बात पर था , मेरे लिये मेरा आत्मसम्मान सर्वप्रिय है । पर हक्कीकत यह थी मेरे लिये मेरा स्वार्थ सर्व प्रसुख था । मैं किसी भी हद तक जा सकता था , अपने हित साधन के लिये । पर यह मेरी ही अकेली प्रवृत्ति है क्या?

इलाहाबाद में हर कोई मेरी ही तरह था जो भी सिविल सेवा परीक्षा में बैठना चाहता है । यहाँ हर कोई दूसरे की सिसकियों में अपने सांत्वना के स्वर डाल कर एक अलग तरह की जुगलबंदी से अपने कानों को संतुष्टि प्रदान करना चाहता था । आप पूछने जाओ कौन सा विषय लूँ मुख्य परीक्षा में तो राय ऐसी देंगे जो आपको बर्बाद कर दे । आप पूछो किताब कौन सी पढ़ूँ तो जिन किताबों का नाम वह बताएँगे वह आपकी असफलता को सुनिश्चित कर देगी । कहते हैं लड़कियाँ तो और गई गुज़री हैं । उनका बस चले तो रात को आपके नोट्स ही जला दे । वह अपने सतीत्व की तरह की रक्षा अपने मटीरियल की करती हैं ।

पर यहाँ के परीक्षार्थी गुरु घंटाल हैं । एक गुरु घंटाल मैं हूँ ही जो अपनी कथा लिख रहा पर मेरे ही तरह के गामा पहलवान हर और दिख जाएँगे । आप कितना भी दिग्भ्रमित करो वह गंतव्य तक पहुँच ही जाएँगे ।

रेत को निचोड़कर पानी को निकालने का दुर्गम काम बड़े ही तन्मयता से यह कर लेते हैं । इनके पास अपने ज़िंदा रहने की शर्त है , अपने हिस्से का अज़ाब खुद सहकर कोई साथ दे न दे यह विपरीत परिस्थितियों में ज़मीं पर ज़िंदा रहना जानते हैं । इनके पास इस माहौल में जीने की एक अजीब हवस है , यह जीने से बाज नहीं आते उसी परीक्षा में बार- बार फेल होकर भी ।

यह अपने ख्वाब के चिराग को न जला पाने की हालात में बदहवास सुबह तक उदास ज़रूर रहते हैं पर एक सुबह के इंतज़ार में रात की स्याहियों में जुगनू के टिमटिमाने में आने वाले कल की रोशनी देखते हुये हर रात एक नई सहर की उम्मीद लिये अपनी किताबों में ख्वाब और ख्वाहिश को एक साथ सहेजे नींद में जाने से पहले यह ज़रूर कहते हैं,

ऐ मौला मुझे मेरा सहर देना ।

ऐसी ही भीड़ में अपना मुक़ाम तलाश रही थी पिछली साल घायल हुई शशि तिरपाठी और जूझ रही इंटरव्यू बोर्ड से ईश्वर से यह प्रार्थना करते हुये ...

बस अब और नहीं

मुझे मेरा हक दे दो भले ही वह नावाजिब ही सही ।

मुझे तेरी नवाजिश की दरकार है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 36

शशि तिरपाठी एक होनहार छात्रा थी । उनको ऐसा ए दर्शन शास्त्र में विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था । यह समाचार ही बहुत था उस कक्षा के प्रतिभावान पुरुष मानसिकता को आहत करने के लिये । इस समाचार ने एक आकरामक मानसिकता को जन्म दे दिया चौतरफ़ा हमले उस पर हो रहे थे । द्वितीय स्थान प्राप्त धनंजय सिंह तो मानों आसमान से गिर गए हों और वह इस हमले का नेतृत्व कर रहे थे , बाकी लोगों में कई लोग दलबदलू भी थे । ऐसा नहीं था कि सारी लड़कियाँ शशि के साथ थी , ईर्ष्या का तो जीवन में स्थान होता ही है जो कई बार अपने नज़दीकी के व्यक्ति को भी स्वीकार करने में बाधा उत्पन्न कर देती है । यह पता ही नहीं चलता कि कब ईर्ष्या घृणा का स्थान ले गई और आत्मघाती हो गई । यह एक ईर्ष्या ही तो थी जो कई और कारकों के साथ मिलकर देश का विभाजन करा गई ।

अब एक ठाकुर को कहाँ बर्दाशत हो सकता था , एक महिला उससे आगे निकल जाए वह भी चुनार के ठाकुर को जो चुनार की ही पृष्ठभूमि पर देवकीनन्दन खतरी के उपन्यास चन्द्रकान्ता के उपन्यास के नायक से अपने शौर्य की तुलना करता हो ।

वह एम ए प्रथम वर्ष में प्रथम स्थान पर थे और शशि दूसरे पर । शशि ने एम ए दूसरे साल तराजू का पलड़ा अपने पक्ष में गिरा लिया । पहले साल ठाकुर साहब 4 अंक आगे थे पर दूसरे साल वह 7 अंक पीछे हो गये और फोटो फ़िनिश में 3 अंक से मात खा गए । अब ठाकुर साहब कहाँ मानने वाले, वह तो तर्क निकाल ही लेंगे । शशि को वाइवा में उनसे 6 अंक ज्यादा प्राप्त हुये थे । अगर लिखित परीक्षा देखी जाए तो धनंजय सिंह आगे थे ।

यह वाइवा में जुगाड़ चला, नहीं तो वह टाप कैसे करती, लिखित परीक्षा का टापर तो मैं ही हूँ । एक चल रहा अधोषित युद्ध, धोषित युद्ध में परिवर्तित हो गया । वह चुनार के ठाकुर थे तो यह सोहगौरा तिवारी थी । इनके पास भी कोई कम इतिहास तो न था । यह तीन की ब्राह्मण थी । इनका कुलीन रक्त था ब्राह्मण का । एक संघर्ष एम ए का कभी पुरुष बनाम महिला का तो कभी ब्राह्मण बनाम ठाकुर का आकार ले लेता था छिपे रूप में ।

ठाकुर साहब बड़बोले थे और यह चालाक थीं । इनको अपना कार्ड खेलना बेहतर आता था । एक आरोप धनंजय सिंह का यह भी था कि संगम लाल पांडेय तत्कालीन विभागाध्यक्ष ने जाति वादी भावनाओं से प्रेरित होकर इन्हें टाप करा दिया । उन्होंने सरे आम आगाज़ कर दिया कि अगली टकराहट IAS में होगी और पता लग जाएगा कौन कितने पानी में हैं ।

शशि ने भी जवाब तगड़ा दिया कि मैं समहन के कछार की हूँ जहाँ गंगा जी बगल से बहती हैं । गंगा की नदी की धारा युक्त गहराई में तल को नापने वालों से मुकाबला वह करने की सोच रहे जो गंगा की सहायक नदियों के छिछले पानी में पैर धोया करते हैं । मैं उनके हौसले की दाद देती हूँ, पर वक्त को फ़ैसला करने दो । वह न्याय करेगा ।

दोनों ही प्रतिभावान थे । शशि ने दर्शन शास्त्र और इतिहास से मेंस दिया और धनंजय सिंह ने दर्शन शास्त्र और संस्कृत से । दोनों ही मेंस पास किये थे पिछले साल का पर रैंक दोनों को न मिली थी । कहते हैं कि धनंजय ने जब देखा कि उनका न हुआ तब वह शशि का पता करने लगे परिणाम । शशि का परिणाम देखकर वह थोड़ा सामान्य हो गये ।

किसी को अफवाह फैलाने की ट्रेनिंग लेनी हो तो वह इलाहाबाद आकर इन अभ्यार्थियों के साथ रहे । वह ऐसी ट्रेनिंग पाएगा कि यह अफवाह सम्राट व्हाट्सएप भी कहेगा, गुरु जी आपके चरण कहाँ हैं ।

इनके एम ए के सहपाठी इस संघर्ष में बहुत मज़ा लेते थे । एक कपोल कल्पित अफवाह फैला दी कि धनंजय सिंह अपने नाम के अनुरूप अर्जुन हो गये थे उस दिन जब आई ए एस का फ़ाइनल रिजल्ट आया था । जैसे अर्जुन ने कहा था कि मैं अग्नि

में समाधि ले लूँगा अगर जयदरथ का वध न कर सका और धनुष बाण के साथ अग्नि में प्रवेश कर रहे थे , वैसे ही धनंजय सिंह ने कहा कि अगर मेरा न हुआ और शशि का हो गया तो मैं अपनी सारी पुस्तकों के साथ अग्निमेषित हो जाऊँगा । भला हुआ कि वह नहीं हुई नहीं तो उस दिन आसमान में धुँआ उड़ रहा होता ।

जो कुछ जो बेहतर कहानी गढ़ते थे वह बोले , धुँआ उड़ा था आग जली थी यह किताब और नोट्स लेकर गये थे अपने को भस्म करने पर तभी बता दिया गया कि उसका नहीं हुआ । जो और गपोड़ी थे वह कहते थे उनके बाँये हाथ में जो जला हुआ निशान हैं वह उसी आग का है ।

यह बात- बात फैलते इन दोनों तक पहुँच गई और कई के संबंध इनसे ख्राब हो गये । तीन लोगों की शिनाख्त इस अफवाह को फैलाने के लिये की गई और उनका हुक्का पानी बंद हो गया । इन तीन लोगों की जिनकी शिनाख्त हुई थी उसमें से एक सिविल सेवा में बाद में चयनित हो गये और दो राज्य सेवा में हैं पर सुना है इनकी बातचीत आज भी नहीं है और हुक्का- पानी अभी भी बंद है । इलाहाबाद के सिविल सेवा अभ्यार्थियों का हुक्का- पानी बहुत महत्वपूर्ण है । यह दोनों पढ़ने में बेहतर थे । इनका हुक्का- पानी बंद करना मायने रखता था ।

एक होनहार रूपवान छात्रा बहुत सा अरमान संजोये इंटरव्यू बोर्ड का दरवाज़ा खोलकर प्रवेश करते हुये । मेरा सर से आँखें मिली अभिवादन हुआ और एक नया दिन एक सुनहरे कल की तलाश के साथ शशि के एक लंबे दौर से चल रहे युद्ध के अंतिम द्वार पर ।

मेरा सर - आप इलाहाबाद से हैं ।

शशि - जी सर ।

मेरा सर - आपने बीए में इतिहास , दर्शन शास्त्र और राजनीति शास्त्र लिया और एम ए दर्शन शास्त्र से किया ।

शशि - जी सर , मैं दर्शन शास्त्र की गोल्ड मेडलिस्ट हूँ ।

मेरा सर - yes yes , I forgot to mention it . It is mentioned here rather clearly mentioned . यह जो दर्शन शब्द है , यह क्या signify करता है ?

शशि - सोचते हुये , सर यह एक विचारधारा को अभिव्यक्त करता है ।

मेहरा सर - क्या कोई भी विचारधारा दर्शन है ? आप का कुछ भी विचार हो वह दर्शन बन जाएगा । अगर विचारधारा ही दर्शन है तब तो हर कोई दार्शनिक है । एक विचारधारा तो सबमें कुछ न कुछ होती ही है ।

शशि - सर यह फ़िलासफ़ी दो शब्द फ़िलास और सोफ़िया से बना है । यह दोनों ग्रीक शब्द हैं । इनका अर्थ है प्रेम और विद्या की देवी सरस्वती । इसका मतलब यह हुआ विद्या- प्रेम यानि ज्ञान के प्रति अनुराग । प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई जीवन- दृष्टि, जीवन - मूल्य या दर्शन होता ही है । किसी का अच्छा तो किसी का बुरा । पर दर्शन तो होगा ही । पाश्चात्य दर्शन में बौद्धिक चिंतन को प्रधानता है तो भारतीय में आत्म- साक्षात्कार की महत्ता है । यह दर्शन शब्द ही कहता है साक्षात् देखना । साक्षात्कार के साधन हैं श्रुति और तर्क । आत्मा को जानें यह भारतीय दर्शन का उद्घोष है । बौद्धिक चिंतन और आत्म ज्ञान यह दर्शन का सार है ।

सर - आपके अनुसार हर व्यक्ति दार्शनिक है ।

शशि - जी सर ।

सर - इतिहासकार भी दार्शनिक है ?

शशि - जी सर

सर - इतिहास लेखन में तथ्य हैं मात्र, वह दर्शन कैसे हुआ ?

शशि - उसमें विवेचन होता है ।

सर - मैं विवेचन की बात नहीं कर रहा । मैं इतिहास के तथ्य की बात कर रहा । क्या मात्र तथ्यों का ज़िकर करना दर्शन है ?

शशि - सर जो भी लिखा गया उसमें लिखते वक्त दर्शन आ जाता है ।

सर - आप यह कहना चाह रहीं कि जो भी लिखा गया वह दर्शन है ?

शशि - जी सर ।

सर - मैं पिछले क़रीब दस मिनट की यहाँ इस कमरे की कार्यवाही लिख देता हूँ । जो आपने अनुभव किया है, बताएँ इसमें क्या दर्शन है ? जो इतिहास राजाओं ने लिखवाये अपनी प्रशस्ति के लिये उसमे क्या दर्शन है? राजाओं की प्रशस्ति, इल्लतुतमिश, बलबन के इतिहास में जो झूठ लिखा गया उसमें क्या दर्शन है ?

शशि- सर , यहाँ की कार्यवाहियाँ जो पिछले दस मिनट से चल रहीं वह तो पूर्ण दर्शन है । हम सिर्फ़ दर्शन की बात कर रहे और साक्षात्कार की पूरी संकल्पना ही अपने आप में एक दर्शन है ।

यह जो राजाओं का इतिहास है, हो सकता है वह सही न हो, उसमें अतिशयोक्ति हो पर है तो वह दर्शन ही ।

सर - आप इलाहाबाद से हैं । आपने प्रयाग प्रशस्ति के बारे में सुना होगा ।

शशि - जी सर

सर - बताएँ उसमें क्या दर्शन है ?

शशि - सर, हरिषेण ने समुद्र गुप्त की प्रशस्ति में चंपू शैली में उनकी उपलब्धियों को लिखा है । इसमें जीत का दर्शन है ।

सर - वह काव्यात्मक हो सकता है, वह प्रशस्ति हो सकती है, वह उपलब्धि हो सकती है चाहे अतिशयोक्तिपूर्ण ही क्यों न हो पर वह दर्शन किस तरह है, यह आप बताएँ ।

शशि - सर, वह प्रशस्ति विचार कर लिखी गई, वह एक राजा की उपलब्धि पर लिखी गई, वह एक भाव को समाहित करके लिखी गई और आज तक लोग उसको पढ़ते हैं और देखते हैं उस राजा की महानता की ओर जिसने दिग्विजय किया । इसमें उसकी विजय का दर्शन है, उसकी महानता का दर्शन है ।

सर - भारतीय दर्शन को आप किस तरह से देखती हैं ।

शशि - आत्मा साक्षात् अनुभव करने योग्य है । यह अनुभव मनन, ध्यान, समाधि से प्राप्त होता है ।

सर - थोड़ा और स्पष्ट करेंगी ।

शशि - वेद भारतीय साहित्य के ही नहीं अपितु विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं । वेद के दो भाग हैं - मंत्र और ब्राह्मण । यहाँ से उत्पन्न होकर जो विचारधारा ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यक, उपनिषदों से होती हुई एक वेदांत की धारा बहाती, शंकराचार्य, मध्व से होती हुई अद्वैतवाद और विशिष्टाद्वैत से आगे बढ़ती हुई गांधी और आधुनिक युग तक आती है वह हमारे भारतीय दर्शन का भाग है ।

सर - मन्त्र क्या है ? वह तो किसी देवता की स्तुति में प्रयुक्त होने वाले वाक्य हैं । इसमें क्या दर्शन है ?

शशि - मंत्र समूह को संहिताएँ कहते हैं और संहिताएँ चार हैं - ऋक्, साम, यजु, और अथर्व ।

सर - यह मन्त्र कौन समझता है । कौन देखता है इसमें दर्शन है । ऋग्वेद आदि के मन्त्रों के बारे में भी कहा गया है कि यह बाँूर अर्थ समझे उच्चारण किया जाता है ।

जब व्यक्ति समझ ही न रहा हो जो उच्चारण किया गया वह क्या दर्शन समझेगा ?

शशि - वह न समझे पर दर्शन तो है ही उसमें ।

सर - क्या उस व्यक्ति के लिये दर्शन है उसमें, जो उच्चरित करके बगैर समझे पढ़ रहा ? अगर समझ ही न आ रहा कि वह क्या पढ़ रहा तब कैसा दर्शन? आप के लिये मेरे लिये या किसी और के लिये स्पैनिश भाषा में लिखा कुछ भी कैसा दर्शन है क्या पता ? यह दर्शन होकर भी उसके लिये तो शून्य ऐसा है ।

शशि - जी सर

सर - इसका मतलब हुआ कि दर्शन सापेक्ष है ।

शशि - सर जिस तरह आप कह रहे उस तरह सापेक्ष हो सकता है पर अपनी उपादेयता और उपयोगिता में यह निरपेक्ष है । यह सबके लिये सर्व सुलभ है । आप आत्म चिंतन एवं आत्म निरीक्षण करे यह उपलब्ध होगा ।

सर - मोक्ष क्या है ?

शशि - ब्रह्म ज्ञान मोक्ष है । बंधन से मुक्त होना मोक्ष है । मोह से मुक्त होना मोक्ष है । नचिकेता ने यम के प्रलोभनों को स्वीकार न किया और आत्मज्ञान के आगे तुच्छ समझा यह मोह से मुक्ति है ।

सर - आपको मोक्ष की आकांक्षा है ?

शशि - सर हर मानव को है ।

सर - आप यह परीक्षा क्यों दे रही यह तो मोह है । यह मोक्ष की तरफ़ किस तरह ले जा रही ?

कमरे में एक पूर्ण शांति । कोई कुछ न बोल रहा । शशि नर्वस होने लगी । वह ग़लत उत्तर न होकर भी ग़लत रास्ते पर चला गया । उसने सुन रखा था कि अगर एक बार इंटरव्यू गड़बड़ाने लगता है तो सँभालना आसान नहीं होता । मेहरा सर के पास पैंतीस साल का विदेश सेवा का अवसर था वह जानते थे किस तरह अभ्यार्थी से उसका सबसे बेहतर निकाल कर परीक्षित किया जाये । वह अपने कौशल पर अंदर ही अंदर गर्व करने लगे । वह इस कला में माहिर थे किस तरह एक हताहत अभ्यार्थी को पुनः परीक्षित उसी आहत अवस्था में किया जाये । शशि ने भी अपने को सँभाला और बोलना आरंभ किया ।

शशि - सर जीवन को आश्रमों में बाँटा गया है और जब उचित समय आएगा तब इन दुनियावी मामलों से हटकर उस अंतिम लक्ष्य “मोक्ष” पर केन्द्रित करूँगी ।

सर - मतलब आप संन्यास लेगी ।

शशि - सर संन्यास का मतलब जंगलों में जाना नहीं विदुर की तरह बल्कि जीवन में रहकर ही मोक्ष के लिये काम करना ।

सर - कैसे ?

शशि - सामाजिक सेवा करके

सर - कौन सी सेवा की है आपने अभी तक

शशि - आगे करूँगी

सर - यह तो मोह हो गया । किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये कुछ करना । आप पढ़ें नचिकेता - यम का संवाद, वह तो जो आप कर रहीं उससे इतर कुछ कह रहा ।

शशि - जी सर

पुनः एक अभ्यार्थी को डराने वाली शांति कमरे में । ऐसी शांति कोई अभ्यार्थी नहीं चाहता । पर शशि के पास धैर्य था । वह अपना ख्याब खोना नहीं चाहती थी । पलकों में संजोया स्वप्न इतने नज़दीक आकर आँखों से छिटक कर गिर न जाए यह चाहत रखते हुये वह साहिल की तरफ भाग रही थी तूफान से अपनी नाँव को बचाने के लिये । उसने ईश्वर को याद किया और पुनः अपने पूरे तौफीक के साथ अपने को तैयार किया अगली लहर के लिये ।

सर - आप ने गाँधी का ज़िकर किया । गाँधी के दर्शन का । क्या है उनका दर्शन? क्या ख़ास था गाँधी में जो औरों से उनको अलग करता है ।

शशि - सर, उनका अपने पर विश्वास और कठिन फ़ैसले लेने की क्षमता । वह चम्पारन गये । वहाँ तकरीबन साढ़े दस महीने रहे । उस समय चम्पारन किसी रेल लाइन से न जुड़ा था । वह वहाँ पर राजनैतिक ही नहीं सामाजिक आंदोलन भी चला रहे थे । उन्होंने सफ़ाई, गौ रक्षा आदि कई और मुद्दे वहाँ हल किये । चम्पारन की सफलता ने गाँधी को नेतृत्व दे दिया भारत में । वह उनका प्रयोग इतना सफल हुआ कि हर कोई गाँधी की तरफ देखने लगा । 1922 में आंदोलन वापस ले लिया चौरी चौरा कांड के बाद यह कठिन फ़ैसला था । अपने मुक़दमें में अपने ऊपर लगाए आरोप को स्वीकार कर लिया, यह भी आसान फ़ैसला न रहा होगा । तिलक ऐसे महान नेता कहते हैं कि मैं निर्दोष हूँ वहीं गाँधी कहते हैं अगर एक आततायी सरकार का विरोध करना अपराध है तो मैं अपराधी हूँ और इस अपराध के लिये क्रान्तुन की कठिन सज़ा मुझे दी जाए और मैं इस सज़ा को स्वीकार करता हूँ ।

यह एक अलग दर्शन था जो विश्व ने देखा न था । अहिंसा के प्रति अतिशय आग्रह और अपने पर विश्वास यह गाँधी का दर्शन है । एक बात और जो गाँधी के साथ थी वह उनकी लोकतन्त्र में आस्था थी जो गाँधी की एक बड़ी देन है ।

सर - वह तो उपनिवेशवाद का दौर था उसमें लोकतन्त्र कैसा था ? क्या आप उस समय की लेजिस्लेटिव काउंसिल को लोकतन्त्र कह रहीं ।

शशि - सर , गाँधी के आने के बाद कांग्रेस के सारे प्रस्ताव लोकतान्त्रिक ढंग से पास होने लगे । कांग्रेस वर्किंग कमेटी का गठन हुआ । यहाँ तक कि गाँधी ने उस प्रस्ताव पर भी मतदान कराया जिस पर मतदान की कोई ज़रूरत न थी ।

सर - वह कौन सा प्रस्ताव था जिस पर मतदान की ज़रूरत न थी ? मतदान तो प्रस्ताव पर होता ही है ।

शशि - सर , 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में मतदान की कोई ख़ास आवश्यकता न थी , सारा देश आंदोलित था पर गाँधी ने मतदान कराया । 13 वोट उस प्रस्ताव के विरोध में पड़े । वह मत कम्युनिस्टों के थे जो भारत छोड़ो आंदोलन के पक्ष में न थे । गाँधी ने अपने भाषण का आरंभ उन कम्युनिस्टों के धन्यवाद ज्ञापन के साथ आरंभ किया । यह कहा कि यह लोकतन्त्र के प्रहरी हैं । देश के लोकतान्त्रिक इतिहास में इनका योगदान याद किया जाएगा । विरोध की आवाज़ कितनी भी कमज़ोर क्यों न हो एक पक्ष की बड़ी आवाज के सम्मुख वह सुनी जानी चाहिये । एक प्रचंड लहरों के सम्मोहित करती आवाज में सीपी का अपने अस्तित्व के लिये संघर्ष नजरंदाज नहीं किया जाना चाहिये । विरोध में भी तर्क होता है , उस तर्क का सम्मान अस्वीकार करके भी किया जाना चाहिये ।

इसके विपरीत मुस्लिम लीग में कोई लोकतन्त्र न था । जिन्ना लोकतन्त्र के आग्रही न थे । इसी का परिणाम है भारत में लोकतन्त्र की जड़ें गहरी हैं और पाकिस्तान में लोकतन्त्र पनपा ही नहीं ।

सर - गाँधी की कोई असफलता है ?

शशि - नहीं सर

सर - भारत का विभाजन क्या गाँधी की असफलता नहीं है ?

शशि - वह मुस्लिम लीग के कारण हुई , गाँधी के कारण नहीं ।

सर - स्वीकार तो गाँधी ने किया था ?

शशि - मजबूरी में किया था ।

सर - अभी आपने कहा कि गाँधी के दर्शन का अटूट भाग है कड़े फ़ैसले लेना । अगर मजबूरी में फ़ैसला लिया गया तब यह कड़े फ़ैसले लेना तो उनके दर्शन का भाग नहीं दिखता मुझे । मैं आप से यह समझना चाह रहा ।

शशि - कभी कभी अपवाद स्वरूप समझौता करना पड़ता है ।

सर - क्या गाँधी समझौता वादी थे ? क्या वह समझौता करते थे ?

शशि - जी नहीं ।

सर - यह जो गाँधी की struggle to struggle का दर्शन है उसमें तो समझौता ही है । आपने यह सुना है ?

शशि - जी सर ।

सर - क्या है वह ?

शशि - गाँधी एक आंदोलन को रोक देते थे कुछ समय बाद और फिर से अगले आंदोलन की तैयारी करते थे । इस दौरान वह अगले आंदोलन की ज़मीन तैयार करते थे और रचनात्मक काम करने लगते थे ।

सर - इसमें समझौता नहीं है ? गाँधी - इरविन वार्ता, गोलमेज़ सम्मेलन यह क्या है ?

यह समझौता नहीं है ?

शशि - वह सम्मेलन से वापस आ गए और कोई समझौता नहीं किया ।

सर ने दूसरे मेंबर की तरफ देखा और इशारे से कहा कि आप.....

दूसरे मेंबर ने जो सवाल किया और जो जवाब शशि ने दिया मेरा तो खून ही सूख गया । मैं बहुत प्रसन्न था कि शशि गाँधी में फँस गई है । इस सवाल का जवाब मैंने और मिश्रा सर ने तैयार किया था और जो हमने माडल उत्तर तैयार किया था वह यह न दी थी । हमने गाँधी को समझौता वादी के तरीके से तैयार किया था । यहाँ मुझे दिखने लगा कि सिविल सेवा परीक्षा तैयारी अगर एक से ज्यादा लोग ईमानदारी से एक साथ करें तो सफलता की संभावना अधिक होती है । इलाहाबाद की लड़कियों का एकाकीपन निःसंदेह उनके विपरीत जाता है । यह सवाल हमने और मिश्रा सर ने दो दिन में तैयार किया था और इसका जवाब हमारे अनुसार गलत था ।

पर मेरी सारी खुशी काफूर हो गई जैसे ही शशि का अगला सवाल आया । मन में एक ही ख़्याल आया , यह तो ले गई हारी हुई बाज़ी ।

मेरी अब शाम ढल गई । मैं खौफ़ज़दा हूँ । आने वाली सहर में भी मेरी रात ही शामिल है । अब यह बाज़ी तो मेरे हाथ से गई पता नहीं अब कब यहाँ आकर बैठने वालों में मेरा शुमार होगा । उस सवाल को सुनने के बाद मेरा दम घुटने लगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 37

शशि तिरपाठी में एक ख्रास बात थी वह हार नहीं मानती थी । ऐसा ए प्रथम वर्ष में वह पीछे थी । धनंजय सिंह शायद उससे बेहतर थे । उनकी बी ए में पोज़ीशन थी , विश्वविद्यालय की कला वर्ग की मेरिट लिस्ट में , शशि की न थी । शशि ने जिन विषयों का चुनाव स्नातक में किया था वह विश्वविद्यालय की चली आ रही परम्परा के मानदंड से अपेक्षाकृत एक कम स्कोरिंग विषयों के वर्गीकरण में आते थे , यह भी एक कारण हो सकता है उसका मेरिट लिस्ट में न होने का । शशि का विषय था राजनीति शास्त्र , मध्यकालीन इतिहास और दर्शन शास्त्र । धनंजय सिंह का था दर्शन शास्त्र , संस्कृत और प्राचीन इतिहास ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पिछले कई वर्षों के परिणाम के आकलन के हिसाब से शशि का विषय धनंजय सिंह के विषय की तुलना में थोड़ा कम अंक देता था ।

इसका कोई वैज्ञानिक कारण तो किसी के पास है नहीं पर ऐसा टरेंड था । संस्कृत में लघु सिद्धांत कौमुदी रट डालो , एक बहुत बड़ा काम हो गया संस्कृत का । लघु सिद्धांत कौमुदी के पेपर में यह 75 में 72 नंबर पाये थे और संस्कृत में 150 में 130 से ज्यादा नंबर दोनों साल पाए थे । कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम और कीरातरजुनियम से आने वाले परश्न भी अंक अच्छा देते थे । चिंतन सर को भी संस्कृत में बहुत नंबर मिलते थे , वह संस्कृत के बारे में कहते थे यह हयुमेनटीस का गणित है ।

मध्य कालीन इतिहास का पाठ्यक्रम भी बड़ा था और वह प्राचीन इतिहास की तरह नंबर नहीं देता था । पर धनंजय सिंह इस तर्क को नहीं मानते थे । वह कहते थे युद्ध भूमि में जो जीता वह विजेता जो हारा उसे राज्य त्यागना होगा । मैंने कहा था क्या कि आप क्या विषय लो ? आप भी लिये होते संस्कृत पता लग जाता पानी कितना गहरा है । क्या संस्कृत में ख़राब नंबर नहीं मिलते ? क्या संस्कृत में लोग फेल नहीं होते ? यह भी एक विचित्र संयोग था कि धनंजय सिंह और शशि के दर्शन शास्त्र में बीए के अंक एक ही थे । यह संयोग शशि के पक्ष में जा रहा था , धनंजय सिंह से बौद्धिक संघर्ष के रण में ।

वह ऐसा ए दर्शन शास्त्र में प्रवेश लेने वालों में बी ए की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति थे , पर दर्शन शास्त्र में अंक एक ही थे इसलिये वह मान रही थी कि मुकाबला बराबरी का है ।

कभी शशि ने किसी से कह दिया था कि इनका संस्कृत का अंक हटाकर देखो , मार्कशीट का असली रंग दिख जाएगा । यह बहुत था जंग के आगाज़ के लिये ।

इतना कोई कह दें और ठाकुर साहब बर्दाश्त कर लें , यह हो ही नहीं सकता । ठाकुर साहब का कहना था , जिसको मेरिट लिस्ट ने बहुत दूर रखा हो अपने से वह पेपर में छपे नाम पर सवाल खड़ा कर दे , यह हक्क किसने दिया इस सवाल का जवाब पहले शशि को देना चाहिये ।

एक गर्व, एक दंभ होता ही है या यूँ कहें आ ही जाता है इतने महान परम्परा के विश्वविद्यालय की मेरिट लिस्ट में स्थान बना लेने पर , जहीन वह थे ही और बड़बोला होना तो चुनार के ठाकुरों के रक्त में है । यह समय पूर्व आएस घोषित हो चुके थे ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय परिसर और यूनिवर्सिटी रोड पर ऐसे बाबू साहब समय पूर्व घोषित आई ए एस बहुत दिख जाएगे और इनके पास चापलूस भी होते हैं । वह इस आशा से चापलूसी करते हैं कि कुछ नोट्स मिल जाएगा । हलाँकि मिलना-जुलना कुछ है नहीं ।

इन चापलूसों ने धनंजय सिंह का दिमाग थोड़ा चढ़ा दिया था । वह सब इनको ठाकुर साहब या बाबू साहब कहते थे । इनका नाम ही पड़ गया था , बाबू धनंजय सिंह । अब ठाकुर हैं , दबंग हैं , ज्ञान हैं , तौफ़ीक है तब गुरुर तो बनता ही है और अगर स्वार्थी चंद उम्मीद लिये चमचे मिल जाए तब दिमाग का आसमान पर चढ़ना तो लाज़िमी ही है । अब यह बाबू साहब पढ़ कर मेहनत करके शशि को हराए तब तो लानत है ऐसी ज़िंदगी पर । यह तो सरस्वती के साक्षात् वरद पुत्र हैं । इलाहाबाद में यह मशहूर है , “ हम यार पढ़े नहीं थे पर नंबर आ गये ” ।

इस गुरुर को एक बीए में पोज़ीशन न पाई लड़की चुनौती दे वह कहाँ बर्दाश्त हो सकता था बाबू साहब से ।

शशि के पास गाइडेंस का अभाव था , इसलिये वह बेहतर संयोजन करके विषय न चुन पाई । यह सिविल सेवा परीक्षा का भविष्य आपके बीए में विषय के चुनाव से ही शुरू हो जाता है । इसके बाद दूसरा निर्णायक पड़ाव आता है मेंस के विषय का चुनाव । यह पड़ाव बहुत ही महत्वपूर्ण होता है । अगर यहाँ आप से गलती हो गई तब आप गये काम से ।

मैं जब बी एस सी में था तब मेरे एक परिचित थे शैलेश रंजन । वह chemistry, Anthropology से मेंस दे रहे थे । अंततः उनका चयन न हुआ । वह इसका सारा दोष

Chemistry को देते हैं । उनका कहना था वह विषय चुनों जिसमे मार्गदर्शन आसानी से मिल जाए और मटीरियल कम प्रयास में उपलब्ध हो जाए । मैंने उनकी राय को तरजीह दी थी विषय चुनते समय ।

शशि ने सावधानी से एम ए में अपना कार्ड खेला । बाबू साहब बी ए की सफलता के नशे में थे, अति आत्मविश्वास था । कोई चुनौती थी नहीं वह आराम से चल रहे थे कि झगड़ा दूसरे स्थान का है, पहला तो उनका ही है - “ प्रथम स्थान हमारा ही है, यह तो परीक्षा बस एक लीला है हमारे लिये ” । दूसरी ओर शशि का एक ही लक्ष्य था किसी भी तरह टाप करना । उसने दिन के उजालों में ही नहीं रात के अँधेरों में संधान करना सीख रही थी, उसने अँधेरें को अपना सहचर बना लिया था ।

एम ए प्रथम वर्ष के परिणाम ने बाबू साहब को हिला दिया था । दुश्मन सीमा पर छौकी बना गया इनको पता ही न चला । वह बहुत नज़दीक आ गई थी । पहली बार उन्हें अहसास हुआ, उनको चित भी किया जा सकता है । वह आसन्न संकट को हँस कर नहीं उड़ा रहे थे वह अब टेबल लैंप की धुँधली रौशनी में छुप कर पूरी तैयारी कर रहे थे ।

वह संकट से निपटने की पूरा प्रयास कर रहे थे पर बाहर से निश्चिंत दिखने का नाटक भी कर रहे थे । इनको अंदर ही अंदर यह भय खाये जा रहा था कि अगर परिणाम मन मुताबिक न हुआ, मैं कहीं मुँह दिखाने लायक न रहूँगा । इतने समय से संचित की गई पूरी प्रतिष्ठा धूल धूसरित हो जाएगी ।

वह मेरिट लिस्ट में होकर भी एक नान मेरिट लिस्ट के उम्मीदवार से हार गए, वह भी एक लड़की । यह पूरी ताकत लगा रहे थे पर पूरी गोपनीयता से । ज्ञान, अहंकार, पौरुष, ठकुराई सब पर आकरमण कर रही थी एक ब्राह्मण लड़की, वह भी जिसकी हँसी उड़ाते हुये कभी इन्होंने कहा था, हरि को अस्त्र उठवाने के लिये भीष्म को जन्म लेना होगा ।

यह इलाहाबाद सिविल सेवा परीक्षा के क्षेत्र में जयचंद, मीरजाफर हर किसी में साँस लेते रहते हैं, बस मौका मिलने की देरी है मीर जाफर इनके बाहर निकल आएगा । मीर जाफरी अस्मिता और शिराज़ का संघर्ष दोनों इनके अंदर रहता है और दोनों ही वक्त के इंतज़ार में अपनी छटा बिखरने के लिये ।

इनके चमचे ही हवा फैला रहे थे पूरी सावधानी से कि “बाबू साहब तो लगता है गयो ” । फिर वही कहेंगे कि दिन रात एक कर दिया सवाल शाही शान का है । उसी में से कोई कह देगा कि चार दिन से यह सोये नहीं इतनी कोशिश कर रहे । कोई कह देगा यह भारत - चीन की लड़ाई है, पर चीन हारेगा इस बार । यह भी विरोध क्यों न करें इतने दिन से जी हज़ुरी कर रहे कुछ उम्मीद लिये पर आप सरे आम झूठ बोलते हो

कि मैं नोट्स बनाता ही नहीं । बाबू साहब ने अपने अहंकार से बहुत दुश्मन भी बना लिये थे ।

वह सोहगौरा तिवारी बहुत चालाक थी । वह नम्रता का लबादा ओढ़कर अपनी चाल चल रही थी । उनको पता था जब रात अँधेरी होगी और कहीं कुछ न सूझेगा तब यह लबादा जुगनू बनकर काम आएगा । यही हुआ भी ।

अब आप लाख चाहे रोकना पर यह अफवाह रुकेगी ही नहीं । रुके भी कैसे लोगों के पास इतना समय है वह भी तो व्यतीत करना है । अब दूसरे के बारे में बात करना, निंदा रस लेना तो इलाहाबाद में अमृत छलकने के साथ उस अमृत का भाग रहा है ।

शशि तो पूरी तैयारी से थी । घेर कर ढेर कर दिया बाबू साहब को । बाबू साहब आपे से बाहर हो गये थे पर किस्मत भी कुछ होती है, वह शशि के साथ थी । उसकी नम्रता बाबू साहब के अहंकार पर वाइवा में भारी पड़ गई ऐसा कई जानकारों का आकलन है । अब सच तो विधाता को ही पता है, उससे कौन पूछे ।

मैं शशि के इंटरव्यू में कमी ढूँढ़ रहा था, राजेश प्रकाश ने कहा था कि अगर कोई सुंदर लड़की तुमसे पहले गई इंटरव्यू देने तब वह लूट ले गई सल्तनत और आपके लिये सल्तनत बचेगी ही नहीं । यह गलत है या सही यह तो पता नहीं मुझे । मेरा एक्सपोज़र बहुत ही सीमित था, इस परीक्षा में ।

राजेश प्रकाश ||IT कानपुर के हैं, वहाँ से हर साल थोक के भाव लोग चयनित हो रहे आजकल । दिल्ली, इलाहाबाद और ||IT तीन मुख्य केन्द्र हो चुके हैं । ||IT का प्रतिशत अच्छा खासा है । राजेश प्रकाश दुःखी हैं एक कश्मीरी लड़की सुरभि रैना से जो उनके पहले इंटरव्यू दी और मैं दुखी हूँ अपने ही शहर की शशि तिरपाठी से । इसके इंटरव्यू में मुझे जहाँ - जहाँ कमी दिख रही वह मुझे प्रसन्नता दे रही, जहाँ वह बेहतर बोल रही मेरे अंदर अपने भविष्य के प्रति शंका उत्पन्न हों रही । कई उसके ठीक उत्तरों में भी मैं कमी ढूँढ़ने का प्रयास कर रहा ।

शशि ने अपना इंटरव्यू बताना फिर आरंभ किया ।

मेंबर - आपकी हाबी कुकिंग है ।

शशि - जी सर ।

मेंबर - आप क्या बनाना पसंद करती हैं ।

शशि - भारतीय व्यंजन ।

मेंबर - कोई खास व्यंजन?

शशि - मैं चीनी का उपयोग किये बगैर मिष्ठान बनाना अच्छा जानती हूँ।

मेंबर - कैसे?

शशि - शहद, राब, गुड़ का इस्तेमाल करके

मेंबर - और कुछ

शशि - चाइनीज़ भी सीखा है इधर

मेंबर - मैंगी बनाकर? छात्रावास में तो लोग वही बनाते हैं।

शशि - नहीं सर। मैं पूरा सीख गई हूँ।

मेंबर - अजीनोमोटो का जो इस्तेमाल होता है चायनीज़ में वह नुकसान क्यों करता है?

शशि - उसमें MSG होता है वह burning sensation देता है, सिर दर्द कर देता है, शिथिलता बढ़ाता है और कैंसर की संभावना भी बढ़ाता है पर मैं उसका प्रयोग नहीं करती

मेंबर - उत्तर पूर्व भारत की क्या समस्या है?

शशि - वहाँ एक अलगाव वाद की समस्या है।

मेंबर - वह कैसी समस्या है?

शशि - उन राज्यों की अपनी एक विशेष जनजातीय संस्कृति है। वह आपस में ही लड़ जाते हैं कई बार और दिल्ली सरकार से तो विरोध करते रहते हैं।

मेंबर - कौन से राज्य हैं?

शशि - मणिपुर, नागालैंड, आसाम में यह समस्या थोड़ी ज्यादा है।

मेंबर - कितने राज्य हैं उत्तर पूर्व में?

शशि - आसाम, मेघालय, तिरपुरा, नागालैंड, सिक्किम, अस्सीचल प्रदेश, मणिपुर

मेंबर - इनकी राजधानी?

शशि -आसाम -गौहाटी , मेघालय - शिलांग, तिरपुरा- अगरतला , नागालैंड- कोहिमा , अरुणांचल प्रदेश- इटानगर , मणिपुर - दीमापुर, सिक्किम- गैंगटाक

यह सवाल मुझे ख़त्म कर गया । मेरे पहले इसने इंटरव्यू दिया था । वह सात राज्य ही नहीं उसकी राजधानी भी बता ले गई और मैं सात राज्य न बता सका । इसके बाद मैं गया था इंटरव्यू में । एक सुंदर लड़की, एम ए में गोल्ड मेडल एक कठिन सवाल का जवाब दे गई और मैं एक आकर्षण विहीन बगैर किसी ख़ास उपलब्धियों के एक आसान से सवाल का जवाब न दे पाया, मुझे अंक क्यों दिया जाए ?

मुझे बिलकुल नहीं याद उसके बाद शशि ने और क्या बताया । मैं अपने से संवाद करता स्वयं को धिक्कारने लगा ।

मुझे पूरा अपना शरीर ज़ख्मी लगने लगा । ज़ख्म के दर्द से ज्यादा इस ज़ख्म से बनने वाला नासूर का डरा मुझे सता रहा था । मेरा हौसला, मेरी ताक़त सब कहीं खो गए थे । तितलियों ऐसे ख्वाब, फूलों ऐसी ताबीरें जो मसूब हो चुके थे मेरे अरमानों की फेरहिस्त में वह सब पंखुड़ियों की तरह टूट- टूट कर मेरे ही सामने गिरने लगे । मुझे लगा मेरी शिराओं से लहू टपक रहा । मेरे सारे अरमान, मेरे सारे ख्वाब मेरे सामने ही आत्महत्या कर रहे यह कहते हुये हमने ग़लत आँखों को चुना था अपनी रिहाइश के लिये । ऐसा न था वह उत्तर मैं न जानता था पर वहाँ उस समय वह ज़बान पर न आया । किसी कठिन सवाल का जवाब न दिया होता तो बात और थी एक आसान सवाल के सामने समर्पण कर दिया । मैं अपने आँसुओं को छुपा रहा था ग़मों में मुस्कुराने की कोशिश कर रहा था । मेरी बहुत तारीक रातों का सफ़र शुरू होने वाला था । जिस अज़मत के क्रिस्सों की चाहत थी मुझे अब वह मेरे हाथ की लकीरों में है ही नहीं ।

चिंतन सर भाँप गए । वह दुनिया देखे हुये थे । वह जजमानों से पैसा एंठने में माहिर थे । वह बोले चिंता न करो । यह जो भाग्य है यह बहुत अपरबल होता है । यह क्या कर देगा किसी को नहीं पता ।

मैं बाहर निकला मिश्रा सर खड़े थे । इलाहाबाद के लोगों का ताँता लग रहा था दिन- प्रतिदिन । धनंजय सिंह भी खड़े थे उनका इंटरव्यू तीन दिन बाद था । मैं चिंतन सर , शशि एक साथ निकले । संस्कृत पढ़ना है तो चिंतन सर का सानिध्य चाहिये । धनंजय ने सर का अभिवादन किया । दो तलवारें आमने - समाने थीं , शशि - धनंजय की पर वक्त की नज़ाकत ने शालीनता को जन्म दे दिया । मैंने सामान्य सी बात की । कुछ ख़ास न बताया । चिंतन सर ने कहा कि मामला निपट गया , कल्याण होगा ।

शाम का समय तय था कि मैं फ़ोन करूँगा । मेरे घर के लोग पड़ोस के घर में जहाँ फ़ोन था वहाँ आए हये थे , अपने अर्जन की गौरव गाथा सुनने ।

मैंने फ़ोन मिलाया और जैसे ही फ़ोन से उस तरफ़ माँ की आवाज आई,

मेरे कानों में गूँज गया ,

“ मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये “ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 38

मेरे जीवन का संघर्ष खत्म ही नहीं हो रहा । इंटरव्यू के लिये बहुत ही तैयारी की थी । मैंने कई तरह की रणनीति बनायी , कई तरह का प्रयास किया । मुझे मेंस में शायद अधिक अंक न मिले हों । अमित चौधरी, राजेश्वर सिन्हा, मिश्रा सर, चिंतन सर यह सब अनुभवी खिलाड़ी हैं । इनका ज्ञान भी ज्यादा है । मैं मेंस पास करूँगा , इसकी मुझे उम्मीद कम ही थी । मैं बाज़ी इंटरव्यू के सहारे पलटना चाह रहा था । मिश्रा सर का इस्तेमाल किया । एक नायाब रणनीति तैयार की । लाइब्रेरी में इतना समय बिताया रणनीति के व्यूह निर्माण के लिये । इंटरव्यू में सब कुछ ठीक चल रहा था , मनोवैज्ञानिक ने मुझे पकड़ लिया । शशि का इंटरव्यू मेरे बाद हुआ होता । मुझे नंबर मिल गया होता , तब वह जाती । चिंतन सर का पहले हुआ होता , फिर मेरा , फिर शशि का । यह बेहतर होता । एक आसान सा सवाल मेरे हाथ से निकल गया । उससे बड़ा सवाल शशि बता कर आ गई ।

उसके इंटरव्यू में भी कमियाँ थीं पर मैंने तो एक महती भूल कर गया । पता नहीं राजेश प्रकाश सही कह रहे या गलत कि सुंदर लड़की नंबर लूट ले जाती है । यह सही न भी हो तब भी वह मेरिट में भी कमजोर नहीं है । एम ए का गोल्ड मेडल और पूर्वोत्तर भारत के राज्य और राजधानी और मैं

माँ बोली , मुन्ना कहाँ खो गया ?

मुझे एकाएक झटका लगा कि मेरा सारा ध्यान उसी इंटरव्यू पर है ।

मैंने कहा , “कहीं नहीं” ।

माँ - इंटरव्यू कैसा हुआ ?

मैं - माँ , अच्छा हुआ ।

मैंने फ़ैसला किया कि क्यों बेवजह इसको परेशान करूँ , अब जो होना होगा वह तो होगा ही । यह कुछ और दिन तो चैन से रहे ।

माँ - क्या- क्या पूँछा

मैं - माँ यह - यह सवाल

कुछ सवाल बता दिये , उसको संतोष देने के लिये ।

माँ - तू खुश है ना ?

मैं - हाँ माँ

मुझे बहुत मुश्किल हुई यह झूठ बोलने में । मैंने जान बूझकर फोन काट दिया । कहीं वह पकड़ न ले ।

मैंने फिर फोन मिलाया । जैसे ही माँ ने फोन उठाया , मैंने कहा कि पापा से बात करा दो । मैं जानता था कि मैं कितनी भी महारत झूठ बोलने में रख्खूँ वह पकड़ लेगी । मैंने पिता से इधर - उधर की बातें की । कुछ कहानियाँ गढ़ी । इंटरव्यू पर बात कम किया । बताया कि कल मेरा मेडिकल है । मैं मेडिकल के बाद फोन करूँगा ।

माँ ने फोन पिता से ले लिया और फिर वही सवाल , तू खुश है ना ?

बहुत मुश्किल से कह पाया “हाँ” और फोन काट कर पी सी ओ के बाहर बैठ गया ।

आज शाम की तैयारियाँ ज़ोरों पर थी । सब उत्साहित थे । मेरी अभिव्यक्त क्षमता मेरा सबसे बड़ा हथियार था , मेरा भाषा पर बेजोड़ नियन्त्रण था । यह लोगों को मुझ पर विश्वास दे रहा था । मेरी यही क्षमता मुझ बद्री सर के नज़दीक ले आई । मैं विश्वविद्यालय के चुनाव में भाषण भी देता था और नेताओं को अच्छी कविता और शायरी भी बताता था । छुटभैया नेताओं में मेरी माँग अधिक थी । विश्वविद्यालय के छुट भैया नेता थोड़ा गुंडा मार्का होते थे । उनका पढ़ाई लिखाई से कोई सरोकार न था । उनके लिये बोलना दुर्लह काम था । कुछ चलते फिरते नारों से वह काम चला पाते थे ,

“ चाऊ- माऊ कहते हो भारत में क्यों रहते हो “

“ तख्त बदल देंगे ताज बदल देंगे आने वाला इतिहास बदल देंगे “

“ शपथ ग्रहण करते ही इस वी सी का बोरिया बिस्तर बाँध देंगे “

“ हमने विश्वविद्यालय में प्रवेश सिफ़र आपके संघर्ष करने के लिये लिया है “

“जहाँ आपका पसीना बहेगा वहाँ हम खून बहा देगें “

“तराजू तौल कर देखो किसकी तौल भारी है तुम्हें झंकार प्यारी है , हमें तलवार प्यारी है “

“ कम पड़े अगर तुम्हारी अपनी जवानी , मेरी जवानी में अपनी जवानी मिला लो “।

ऐसे सस्ते नारों के बीच मेरी धूमिल , दुष्यन्त कुमार , बशीर बद्र , शहरयार , निराला की कविताएँ उनको चमत्कृत करती थीं । वह मेरे पास खूब हुआ करती थीं ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में क्वालिफ़ाइंग स्पीच हुआ करती थी छात्र संघ चुनाव में । उस दौर में उसका स्तर बहुत ऊँचा हुआ करता था । मेरी जानकारी में पहले नेता जिन्होंने अपनी क्वालिफ़ाइंग स्पीच से चुनाव मोड़ा था वह अखिलेश सिंह थे । वह अपनी स्पीच के लिये विख्यात थे । उन्होंने आते ही एक धूमकेतु की तरह पहले से स्थापित सुरेन्द्र सिंह और लक्ष्मण मिश्रा को परास्त कर क़ब्ज़ा कर लिया था अध्यक्ष पद पर । मैं जब कक्षा 9 में राजकीय इंटर कालेज में पढ़ता था तब से मैं चुनाव देखने जाता था । इलाहाबाद में आई ए एस बनने और नेता बनने की खाहिश बहुतों में होती है । यह मेरी भी थी । पर मैं बहुत चालू था । यह बताने की ज़रूरत तो अब रह नहीं गई आपको कि मैं कितना बड़ा चालू , फ्राड, 420 और झूठ बोलने वाला हूँ ।

मेरे पास एक दूर दृष्टि थी , मैंने अपने घर का अभाव देखा था । मैंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र संघ भवन पर पूर्व अध्यक्षों का नाम कई बार पढ़ा और पाया कि ज्यादातर अभी भी संघर्ष कर रहे और कोई खास मुकाम ज़िंदगी का प्राप्त न कर सके । मैं जीवन में एक मुकाम चाहता था , प्रसिद्धि चाहता था , गौरव चाहता था और वह भी जल्दी । यह राजनीति वह नहीं दे सकती थी ।

मैंने अपनी माँ को दो धोतियों में ज़िंदगी काटते देखा है । जिस दिन से मेरी बहन का जन्म हुआ उस दिन से माँ सारे ख़र्चों में कटौती करने लग गई । विवाह के दहेज का इंतजाम शुरू हो गया । रिकर्सिंग डिपासिट बैंक में शुरू हो गया । ज़िंदगी की तमाम ज़रूरतों को काटकर बचत

करना आरंभ हो गया । पिता की एक मात्र सामान्य सी नौकरी उसमें बच्चों की पढ़ाई का खर्च और ऊपर से बेटी को दहेज की चिंता , इसने मेरी माँ के बाल बेसमय सफेद कर दिये ।

कभी- कभी दुख भी दूधिया होता है वह प्रसन्नता का संदेश देता अगर यह लगे कि यह अल्प जीवी है । रात की राख से माथे पर भूत लगाने का मन करता है कि ऐ

रात तेरे सहचर में ही इस सहर की तलाश की थी मैंने । मेरा समाचार दुख को दूधिया कर गया था ।

ऐसे वक्त में ईश्वर ने एक कृपा कर दी । मेरे घर के द्वार पर एक आशा का दीपक जला कर । मेरे मामा बहुत ही घमंडी थे । वह जाते कम थे लोगों के यहाँ । उनका शाम का आगमन एक उत्सव की तरह था मेरे घर पर ।

मेरी माँ ने कहा भी , यह अनुराग का आनेवाला रूतबा है जो आने को मज़बूर किये हैं इनको । यह अपने साले शेष मणि की बेटी का विवाह अनुराग से कराना चाह रहे हैं इसलिये बगौर बुलाये आ रहे , खुद कहकर कि बहन जिस दिन इंटरव्यू होगा उस शाम को आऊँगा और तुम्हारी भाभी को भी ले आऊँगा , पांडे जी से भी कहा है कि आप भी आना । खाना खाकर जाऊँगा । त्योहारों, रक्षा बंधन पर आ जाएँ यही बहुत है , ऐसे कहाँ समय है इनके पास ।

मेरी माँ प्रसन्न हुई , किसको अच्छा नहीं लगता अपने भाई - बहन से मिलना । मेरी माँ लग गई सारा व्यंजन बनाने में , मेरी बहन भी काम पर लग गई ।

उधर मेरा फोन रखते ही शाम को मुहल्ले में यह घोषणा हो गई कि इंटरव्यू अच्छा हुआ । पिता ने फोन रखते ही कह दिया , परमपिता ने चाहा तो मुन्ना की फ्रतह होगी । उसने अच्छा इंटरव्यू दिया है । शाम को मामा जी और मौसा जी मामी और मौसी भी साथ आयेंगे , यह समाचार एक खुशी का माहौल घर में दे गई । उसकी तैयारी चल रही थी ।

गीतिका मेरे बहन से दोस्ती गाँठ रही थी । यह तो सबको पता ही था कि अगर मैं मसूरी चला गया तब सारा मटीरियल यहीं रह जाएगा , मेरे यहाँ कोई इम्तिहान देने लायक तो है नहीं अभी । यह मटीरियल अगर मैं न दूँगा तब गीतिका मेरे बहन से निकाल सकती है । चूँकि गीतिका के पास बीए , एम ए की परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन था , इसलिये उसकी मुहल्ले में इज्जत भी थी और मध्य वर्गीय घरों में जो एक शालीनता का संस्कार लड़कियों को दिया जाता है वह गीतिका के पास भरपूर था ।

वह मुझे एम ए में बुरी तरह परास्त की हुई थी और सारी परीक्षा में बहुत अच्छे नंबर प्राप्त की थी , इसलिये मेरे घर ही नहीं पूरे मुहल्ले में उसकी ख्याति थी । मेरी बहन को वह लालच दे रही थी कि मैं अपना नोट्स तुमको दे दूँगी वह बहुत मदद करेगा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं ।

वह भी आई मेरी बहन से पूछने , क्या हुआ ? बहन ने बहुत खुशी की मुद्रा में कहा , भैया ने बहुत अच्छा इंटरव्यू दिया है । अब गीतिका भी चाह रही थी , अनुराग का हो जाए और अगर नोट्स मिल जाए तो मेरा भी अगले साल हो सकता हूँ ।

शर्मा आंटी पूरे मुहल्ले की नारद थीं । कोई खबर फैलानी हो कह दो उनसे , इसे मत बताना किसी को । वह यह कहते हुये कि मत बताना किसी को वह पूरे मुहल्ले में फैला देंगी । यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई मुहल्ले में , इंटरव्यू अनुराग का अच्छा हुआ है और हो सकता है इस मुहल्ले को पहला आइ ए एस प्राप्त हो जाए ।

शाम को मामा - मामी , मौसा - मौसी आए । मौसा के पास फटफटिया थी । मामा के पास बुलेट । मेरी माँ का विवाह अपेक्षाकृत एक कम संपन्न परिवार में मेरे नाना ने किया था । यह ब्राह्मण परिवारों में एक कुलीनता की अवधारणा को ध्यान में रखा जाता है विवाह निश्चित करते समय । वह कौन सा ब्राह्मण है । सभी ब्राह्मणों में कुलीनता एक मानदंड है पर सरयूपारीण ब्राह्मणों में उत्तम ब्राह्मण एक मानदंड शायद कुछ ज्यादा हुआ करता है । विवाह के लिये कन्या को किसी परिवार में देने के लिये इस पर विचार अवश्य किया जाता था ।

मामखोर शुक्ल, सोहगोरा तिवारी , बनकटा मिशर , मधुबनी मिशर , इटार पांडे, सरार दुबे , करैली के ओझा आदि कुलीन माने जाते हैं । गोत्र में गर्ग, गौतम , शांडिल्य यह तीन गोत्र हैं जिनको तीन का ब्राह्मण कहा जाता है । दूसरे कोटि में तेरह के ब्राह्मण होते हैं । पाठक , उपाध्याय की ख्याति थोड़ा कम होती है । अब इस मान्यता का कारण क्या है यह कोई तार्किक ढंग से नहीं बता पाता है , बस परम्परा से यह चला आ रहा ।

मेरे नाना संपन्न थे , उन्होंने अपनी पुत्रियों का विवाह करते समय परिवार की संपन्नता से ज्यादा ध्यान कुलीनता और लड़के पर दिया । मेरे बाबा का परिवार मेरे नाना की तुलना में कमजोर था पर मेरे पिता पढ़ रहे थे और कुलीनता की ख्याति परिवार की थी । शायद यह रक्त की शुद्धता का सिद्धान्त निर्णायक साबित हुआ । मेरे पिता जी को एक सामान्य सी नौकरी मिल गई थी । उस दौर में सरकारी नौकरी का बहुत रुतबा था । पर उस नौकरी में होता कुछ न था । एक छोटी सी तनाख्बाह में अपने गाँव के परिवार का बोझ और बच्चों की परवरिश बहुत मुश्किलातों से हो पाती थी ।

मेरे पिता जी के पास स्कूटर भी पुरानी थी । मौसा के पास जावा थी पुरानी पर मामा की बुलेट थी । मेरे मामा बातचीत में अक्खड़ भी थे । मौसा की जावा का नाम फटफटिया हम बच्चों ने ही रखी थी और वह नाम फ्रेमस हो गया था । वह कई बार बंद हो जाती थी और धक्का देना पड़ता था ।

मामा अक्सर कहा करते थे ,

“ मेहमान बदल दो इसको ” । कभी कहते थे “पांडे जी आपकी यह गाड़ी अब रखने लायक़ नहीं है ” ।

सब लोग साथ आ गये । शाम के भोजन के दौर में मेरा इंटरव्यू सुनाया गया । जितना मैंने बताया था उसमें क्षेपक और प्रक्षेप्य जुड़ गये । इंटरव्यू ऐसा हुआ है कि चयन हो जाएगा, इसकी घोषणा हो गई ।

इलाहाबाद में एक “मैरिज मार्केट” की तरह की अवधारणा है । कई लोगों का यह एक काम है कि विवाह तय कराना और विवाह के लिये लड़के बताना । उस मार्केट में IAS का भाव बहुत ही ऊँचा है । विवाह के बाजार में वह अनमोल वस्तु है । कई संभ्रांत लोगों का यह अरमान रहता है कि उनकी बेटी का विवाह IAS से ही हो । इलाहाबाद में सिविल सर्विसेज में पास हर उम्मीदवार को IAS ही कहते हैं, भले ही वह किसी भी सिविल सेवा की सर्विस में हो ।

मेरी मामी कोई आसान चीज़ न थीं । वह बगैर प्रयोजन के कहाँ आने वाली । वह भी एक लक्ष्य लेकर आई थी । वह बोलने का भी पैसा ले ले । प्यार के बोल अगर वह बोल दे तो वह अनमोल ही है । वह सेमरा की थीं, जहाँ के बारे में कहते हैं कि ठग भी कहते हैं यहाँ सेंधमारी मत करना । यहाँ लोग दूसरे पुरवा में आए ठगों को पकड़ लेते हैं, इनके गाँव तो कोई ठग आता ही नहीं ।

मामी का प्रेम ज़बर्दस्त चोकरा था । शहद की कई बाल्टी उड़ेल दी थी उन्होंने उस दिन प्रेम की वार्ता में । मेरी माँ बहुत समझदार थी, समझ गई कि यह बर्र कहाँ से आज शहद बिखेर रही ।

मामी मुद्दे पर आ ही गई और कह मारा, एक लड़की हमारे निगाह में है जो घर परिवार वाली है और घर में अँजोर कर देगी । शेशमणि की बेटी रेनू मुन्ना से दो साल छोटी है, जोड़ी अच्छी होगी ।

अब माँ तो माँ ही होती है । मन में कहा कि मेरा मुन्ना कितना सुंदर और अच्छा है । वह कितना अच्छा बोलता है । उसके लिये कितनी सुंदर कुमारियाँ ड्योढ़ी पर इंतज़ार करेंगी और वह मोटी रेनू न पढ़ी न लिखी बस डिग्री ले लिया वह उसके लिये ? कभी नहीं

उधर मामा जी मेरे पिता से बखान कर रहे अपने साले की सम्पदा की । उनके रुतबे की । इंजीनियर साहेब के बंगले, कई मकान, प्लाट और कौन सा मकान लड़की के नाम है, कौन सी गाड़ी देंगे विवाह में, कितने संस्कारों वाले वह हैं, उनका कितना नाम है अपने विभाग में आदि आदि

मेरे पिता को ऐसा सम्मान और गौरव पहले कभी न मिला था ।

फिर बात आरंभ हो गई कौन सी नौकरी मिलेगी । मेरे पिता ए जी आफिस में आडिटर थे । वह बस यही देखे थे कि कैसे नई उम्र के लड़के, लड़कियाँ डी ए जी बनकर आते थे । वह उसी में अभिभूत थे । पर मौसा जी ने बताया कि IAS तो सबसे बेहतर है, पर IPS में वर्दी का रुतबा है और IRS में आप बहुत बड़े-बड़े लोगों पर शासन करते हैं, अगर इन तीनों में कोई नौकरी मिल जाए तो बहुत अच्छा है । रेलवे भी बढ़िया है, उसमें सुविधाएँ बहुत हैं । मेरे पिता को ज्ञान कम था, वह पूरी गर्व युक्त मुद्रा में तन्मयता से सुन रहे थे ।

वह सब लोग भोजन करके चले गये । मेरी माँ ने पिता को सोते समय याद दिलाते हुये कहा, तुमको याद है जब मैं मुन्ना का गर्भपात कराना चाहती थी । पहला बच्चा छोटा था । यह जल्दी ही गर्भ में आ गया था । डा. विद्या सक्सेना के यहाँ हम लोग गये थे । उन्होंने दवा दी थी, वह दवा कारगर न हुई, फिर हम लोग दुबारा गए तब उन्होंने कहा कि अब देर हो गई है । अब भर्ती होना होगा अस्पताल में अगर इसको नहीं चाहती हो । चेक करके यह कहा था कि इसकी धड़कनों को सुनो बहुत तेज चलती है । मेरा मातृत्व जग गया और फ़ैसला बदल दिया ।

माँ बोली,

सुनो अगर दवा कारगर हो गयी होती तब

मेरा पिता बिस्तर से उठ

गये बोले

ऐसा न कहो

यह मेरा ही नहीं मेरे पूरे परिवेश का गौरव है ।

मेरे पिता रोते कम थे, वह रोने लगे

वह दोनों रात भर ठीक से सो न सके । एक अपराध भाव जन्म ले गया, अजन्मे की हत्या के प्रयास का ।

माँ ने मौत को देखा मेरे क़रीब आकर वह खड़ी है, कह रही तू चल साथ मेरे । मेरी माँ कह रही मेरे गुनाहों को माफ़ कर, इसे मुझसे छीन कर मत ले जा । वह चीख पड़ी अर्ध सुप्तावस्था में । पिता जग गए । देखा माँ का पूरा शरीर पसीने से लथपथ उसकी साँसें चल रही हैं । माँ ने कुछ न बताया सिवाय इसके कि यह एक दुःस्वप्न था ।

सुबह के चार बजे थे मेरी माँ और पिता गंगा स्नान को चल दिये ।

मैं पीसीओ के बाहर ही बैठा था । देखा शाम हो आई है । करीब एक घंटे से ज्यादा वहाँ बैठा था । पीसीओ वाला चाय पी रहा था । मैंने बात करते समय दरवाजा बंद न किया था बूथ का । वह सारी बात सुन गया था । वह बोला चाय पियेंगे? मैंने भी कहा हाँ, पी लूँगा । उसने पूछा कि आप इंटरव्यू देने आए हैं । मैंने कहा, हाँ । चाय पीते-पीते उसने कहा कि बहुत समस्या है नौकरी की । हर ओर बेरोज़गारी है । मुझे ही देखो, मैं पोस्ट ग्रेजुएट हूँ । मुझे कोई नौकरी नहीं मिली । मैं यह पीसीओ चला रहा ।

मैंने पूछा, “कितना कमा लेते हो”? वह बोला, बस काम चल जाता है । गुज़ारे लायक मिल जाता है ।

मैं इतना निराश था अपने आप से कि मुझे लगने लगा कि कहीं ऐसा वक्त मेरा भी न आ जाए । मैं भी चिंतन सर की सोच रखता था कि जिंदगी तो काटनी ही है, कुछ न कुछ तो करना ही है । मेरी गणित बेहतर थी बी एस सी किये हुये था । staff selection commission की परीक्षाओं में गणित, अंग्रेज़ी और सामान्य ज्ञान आता था, वह देकर कोई नौकरी प्राप्त कर सकता हूँ । पीसीएस इस परीक्षा की तुलना में काफ़ी आसान परीक्षा है, वह पास की जा सकती है । चिंतन सर से जब मैं पहली बार मिला था तब उन्होंने कहा था IAS की तैयारी करो पीसीएस सोकर भी दोगे तो पास कर जाओगे ।

मैं वहाँ से उठा पूसा इंस्टीट्यूट की तरफ चला । मुझे कहीं भी पहुँचने की कोई जल्दी न थी । मैं समय को किसी तरह नष्ट करना चाहता था । किसी भी तरह समय व्यतीत हो । यह समय बीत ही नहीं रहा था । मैं पैदल ही चल दिया पूसा इंस्टीट्यूट की तरफ रास्ता पूछते-पूछते । मैंने सोचा कि इससे समय कट जाएगा । पूसा इंस्टीट्यूट पहुँच कर भी मैं चक्कर मारकर घर गया ।

मैं कपड़ा बदलने को सोचने लगा । आंटी ने पूछा इंटरव्यू कैसा हुआ? मैंने कहा ठीक ही हुआ । आंटी चाय बनाकर लाई । मैं कमरे में अपनी कमीज़ का पहला बटन खोलकर बैठा हुआ था ।

आंटी भी इलाहाबाद की थीं । मेरी माँ की सहेली थी । बोली, अनुराग जब तुम IAS बन जाओगे तब मैं कहूँगी, अनुराग मेरे पास रहकर इंटरव्यू दिया था । मैंने कहा, आंटी पता नहीं वह वक्त कब आएगा । अभी भी 2500 में से 800 का ही चयन होगा, बाकी को तो असफल होना ही है । आंटी बोली तुम 800 में नहीं टाप 100 में होंगे, तुम्हारी माँ की तपस्या सफल होगी । मेरे हाथ में चाय का कप जहाँ था वहीं रुक गया । मैं जैसे ही माँ का नाम सुनता था, मुझे एक ही वाक्य याद आता था,

“ मुझे मोक्ष नहीं , तेरा चयन चाहिये “ /

मोक्ष है मोह से दूरी , माया से बिलगाव , बंधनों से मुक्ति, ब्रह्म को जान लेना , अपनों से मोह न करना , प्रलोभनों से मुक्ति पर वह सब कुछ जानकर भी वह मेरे मोह से मुक्त नहीं हो पा रही । वह अपने पूर्व जन्म के संचित कर्म का त्याग करने को तत्पर है एक दुनियावी चीज के लिये ।

आंटी चली गई । मैं फिर विचार प्रवाह में । मैं हर बार सोचता था कि मैं अपने मस्तिष्क से यह इंटरव्यू निकाल दूँ । पर मैं कितनी भी कोशिश करूँ पर वह मनोवैज्ञानिक का पर्ची भेजना और फिर सात राज्यों का नाम न बता पाना , शशि का नाम के साथ- साथ राजधानी बता देना और राजेश प्रकाश का कहना कि सुंदर लड़की नंबर आपका उड़ा ले जाती है मेरे मनःमस्तिष्क से जाता ही नहीं ।

मुझे राजेश प्रकाश की बात से उतनी समस्या न थी जितनी वह राज्य न बता पाने और फिर शशि के बता देने से थी । मैंने बहुत से संवाद पढ़े थे । यज्ञवल्क्य- गार्गी, यम- नचिकेता , शंकर - मंडन मिश्र, शंकर - कुमारिल भट्ट । मैंने सबके समीक्षाएँ भी की थी अपनी तरह से ।

शशि रूपवान थी । उसको सब हाल में देख रहे थे । पर मेरे मस्तिष्क में उसका रूप नहीं वह सवाल धूम रहा था जो हम दोनों से पूछा गया । वह मेरे लिये गार्गी ऐसी हो गई थी । मैं बगौर शास्त्ररार्थ के हारता हुआ लग रहा था उससे ।

मेरी उपचेतना मेरी चेतना से हर समय संघर्ष करती थी , विवाद करती थी । यह चेतना - उपचेतना संवाद एक अभिन्न अंग बन चुका था मेरे जीवन का । यह मेरी आदत हो गई थी । मैं खुद से ही बात करता था । मेरी सारी पढ़ाई, मेरा सारा ज्ञान किस काम का अगर वह असत्य , फरेब , छल को मुझसे दूर नहीं कर पा रहा । मैंने झूठ क्यों बोला माँ से ? मैंने क्यों बेवजह सपने दिखाये । कह देता सच जो हुआ था । यह पाश ने सच कहा था सबसे ख़तरनाक होता है अपने सपनों का मर जाना । यह सपने किसने दिखाए ? यह झूठा सपना किसने दिखाया ? हक़ीकत जानकर झूठ बोलना एक भौतिक अपराध न भी हों तो एक नैतिक अपराध तो है ही । मैं गाँधी की तरह का साहस रखकर सच क्यों नहीं कह सका ।

मैंने गाँधी का 1922 का दरायल पढ़ा था , ऐसा सच कहने का साहस अगर नहीं है तब यह सारी पढ़ाई व्यर्थ है । ऐसा मैं क्यों नहीं कह सकता -

“ अगर यह अपराध है जो मैंने किया है तब यह अपराध मैं स्वीकार करता हूँ । जज साहब मेरे इस कथन के बाद आपके पास दो ही विकल्प हैं या तो आप अपने पद से इस्तीफ़ा दे दीजिये या तो मुझे इस क़ानून में निहित सबसे बड़ी सजा दीजिये, पर

सजा देते समय आप सोचिये कि जिस क्रान्तुन की रक्षा हेतु आप मुझे सजा दे रहे क्या वह मानवता एवम् नागरिक अधिकारों की रक्षा करता है । क्या यह लोगों के भले के लिये है ? जब मैं यह अपराध कर रहा था तब मुझे यह पता था कि आग के साथ खेलने में उसके साथ जुड़े हुये ख़तरे भी होते हैं । अगर मैं मुक्त किया गया तब मैं यह ख़तरा फिर से उठाऊँगा । अगर यह ख़तरा मैं नहीं उठाऊँगा तब मैं कर्तव्यविमुख हो जाऊँगा । मैंने आज सुबह ही यह सोचा था कि अगर मैं, यह जो मैंने अभी आपसे कहा, वह नहीं कहूँगा तब मैं अपना कर्तव्य निर्वाह नहीं कर रहा । । मैं यह विश्वास पूर्वक कहता हूँ कि इस क्रान्तुन का विरोध करना मेरा धर्म है । मेरा ही नहीं हर उस व्यक्ति का धर्म है जो इससे सहमत न हो, बस शर्त यही है कि वह क्रान्तुन का उल्लंघन करते समय अहिंसा का पालन करे । किस स्वामि भक्ति की उम्मीद मुझसे की जा रही ? क्या स्वामि भक्ति माँग कर ली जाती है ? जज साहब आपने मेरे साथ बहुत दया दिखाई है । आपने मुझे इस क्रान्तुन के तहत सबसे कम सजा दी है । यह पूरी प्रक्रिया आपकी सद्भावना से परिपूर्ण है । मैं आपका इसके लिये आभार व्यक्त करता हूँ“ ।

कहाँ से आता है ऐसा साहस ?

मेरे पास क्यों नहीं आता ऐसी सच बोलने की
शक्ति

मैं अपने आप को एक मनःशील, चिंतनशील व्यक्ति कहता हूँ, पर यह बड़ी- बड़ी किताबें पढ़ना, ज्ञान अर्जित करना यह सब मेरा स्वार्थ युक्त ढोंग है समाज में एक झूठी प्रतिष्ठा प्राप्त करने का । मैं झूठ के बोझों से दबा जा रहा, झूठ पर झूठ । मेरी नाँव भँवर में डूब रही मैं अपनी डूबती नाँव को भँवरों के चक्कर दार वेग में तल की ओर जाते देख रहा था ।

माँ से झूठ बोलना बहुत अखर रहा । पर क्या करता ? उसका चैन छीन लूँ ? कह देता कि इंटरव्यू ठीक नहीं हुआ, क्या होता आज की रात ? वह सो पाती ? आज की ही रात क्यों ? कितनी रातें उसकी बीतती पीड़ा में । पीड़ा किसी एक को होनी ही थी । सच बोलता तो उसको होती, झूठ बोलकर मुझको हो रही । मेरी पीड़ा सहने की शक्ति उससे ज्यादा है । यह रण मेरा है । मेरे हिस्से का दर्द मेरा है ।

आज की रात की ही बात क्यों करूँ ?

क्या कोई रात सो पाती ?

चयन नहीं होगा, कुछ दोष मढ़ दूँगा कि पक्षपात होता है, पैरवी चलती है, कौन है गरीबों का सुनने वाला वह मान जाएगी इसको सच ।

आंटी फिर लौटकर आयी और बोली जूते के फीते भी न खोले तुमने । वह बोली जूते तो उतार लो, आराम कर लो । एकाएक मेरी तन्द्रा टूटी, मैंने फीते खोलने शुरू

किया । आंटी चली गई । मैं आधे खुले फ्रीते का जूता पहने ही लेट गया । मेरे दोनों हाथों की कुहनियाँ मेरे आँखों पर थीं । मैंने कहा अपने से अब अगली प्रारम्भिक परीक्षा 9 जून को है । अभी एक महीने से ज्यादा का समय है, उसकी तैयारी करता हूँ, अब इसमें तो कोई ख़ास उम्मीद दिखती नहीं । अब्बल तो चयन की संभावना कम है और होगी भी तो बहुत ख़राब रैंक आएगी ।

मैं थोड़ी देर बाद उठा, फ्रीते खोले । कापी निकाली, अपना और शशि का इंटरव्यू लिखने लगा । मुझे शशि के इंटरव्यू में कमियाँ दिखने लगीं । वह कई सवाल का जवाब देते समय भटक रही थी और मेरे कई जवाब सधे हुये थे । अगर दो बात हटा दी जाए तो मैं बेहतर था । एक मेरा कमल व्यूह का पकड़ा जाना और दूसरा सात राज्यों का न बता पाना । पर कमल व्यूह पकड़ा गया यह निश्चित तो है नहीं । मुझसे तो नहीं कहा उन्होंने । अगर मैं जवाब में सवाल डाल रहा था तब उन्होंने क्यों पूछा ? । मैंने तो न कहा था, आप पूछो ।

क्या पता मनोवैज्ञानिक ने मेरी तारीफ़ की हो । कई जवाब तो मेरे बहुत अच्छे थे । उपन्यास, कहानी नाटक पर बहुत अच्छा बताया । नाटक, उपन्यास का भेद और नाटक - रंगमंच का सम्बन्ध अच्छा था । यह मूल अधिकार - राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत का जवाब बहुत सधा हुआ था । यह सात राज्य का नाम बहुत आसान सा प्रश्न है । इसमें कौन सा तकनीकी परीक्षण है । यह इंटरव्यू व्यक्तित्व परीक्षण है । यह किव़ज़ टाइप सवाल कोई फ़ैसला नहीं करते ।

सन्नाटों ने मेरा साथ दिया । यह ख़बाब का सफ़र है इसका अभी अंत कहाँ हुआ । यह जो ठंडी बयार मेरे दहलीज़ तक आई है उसे मैं ऐसे जाने न दूँगा । यह जो खुशनुमा मंजर आने वाला आँखों में कैद है यह जाने को तैयार नहीं है । मैं तमाम उम्र जिस ख़बाब को देखने में मुन्हमक रहा अब वह मेरी आँखों से छिटक जाए वह मुझे गँवारा नहीं । मैं तर्क ढूँढ़ लाता था अपने पक्ष में । यह माँ से झूठ बोलना शायद झूठ बोलना न था, यह उससे अपने मन की बात कहना था जो मैं चाहता था होना पर शायद वह न हुआ । यह सब खुद से ही कहकर अपने आप को महफूज़ करने की अपने को शांत करने की कोशिश कर रहा था मैं ।

जो मैं सोच रहा था सच शायद वह झूठ हो और जो लग रहा झूठ वह सच हो । क्या वह एक हादसा था मेरे सूरज को एक हवा झोंके से बुझा गयी या मेरा सूरज कह रहा ऐ हवा तू रह गलतफ़हमी में चिरागों को बुझाकर मैं फिर उभर कर आऊँगा वक्त को देखकर ।

चाँद और चिनार जिस तरह बनाते हैं तस्वीरें रात में शांत झील के हौले- हौले हिलोरे लेते पानी में वैसे ही मेरे मस्तिष्क की शिराओं में बन रही थी कुछ आकृतियाँ पर वह ऐसी ही कुछ अस्पष्ट थीं जैसी होती हैं चिनार की पत्तियाँ पानी की लहरों में, पर यह शायद मेरे ख़बाबों का कारबाँ था जो बिखरने को तैयार न था ।

घड़ी देखा अभी तो 8 ही बजे हैं । आँखों में नींद का नामों निशाँ न था । बाहर खिड़की से दिख रहा था ऊँध रहा हरसिंगार का पेड़ ।

रात अभी बाकी है ।

एक न कटने वाली रात कालिमा लिये चाँद को सताते मेरा इंतज़ार कर रही ।
यह रात कट जाए काश , किसी तरह नींद आ जाए ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 40

शाम को 8:30 बजे आंटी बुलाने आई खाने के लिये । मैं खाने पर गया ।
पूछा आंटी ने माँ से बात हुई ? क्या हाल है उनका ?
मैंने कहा ठीक है ।

आंटी बोली वह इंतज़ार कर रहीं होंगी, तुम कब गपस आओगे । सभी लोग कर रहे होंगे । यह एक बड़ा अवसर है ज़िंदगी का । यह जो दौर तुम जी रहे हो ज़िंदगी का इस समय, यह विरलों को नसीब होता है ।

मैंने खाना खाते - खाते आंटी से कहा , यह बात तो है आंटी । यह परीक्षा बहुत कठिन तो है ही । कई लाख लोग बैठते हैं फिर अंतिम 800 में जगह बनाना आसान तो नहीं ।

आंटी बोली , मैं हर साल देखती हूँ पेपर जब रिजल्ट निकलता है । मैं पूरा रिजल्ट पढ़ती हूँ, एक- एक नाम । इस बार तुम्हारा नाम पढ़ूँगी, वह शुरू में ही होगा ।

अनुराग एकेडमी ज्वाइन करने के पहले मुझसे मिल कर जाना । मैंने अपने पड़ोस वालों को भी बता दिया है, तुम्हारा होगा इस बार । पड़ोस की एक मेरी जानने वाली हैं बगल के फ्लैट में उनकी लड़की भी दे रही । जाने से पहले कुछ समय दे देना ।

मैं आऊँगी मसूरी । मेरा भी बहुत मन है एकेडमी देखने का । मैंने तुम्हारी माँ को पत्र लिखा है और अपनी यह इच्छा ज़ाहिर की है । मैं तुम्हारे माँ और पिता के साथ आऊँगी ।

मैं कुछ खास न बोला बस इतना ही कहा , आंटी सफर अभी लंबा है पर अगर हो गया तब मैं दिल्ली आकर आपको ले चलूँगा । आंटी बोली , जब तुम बड़े आदमी बन जाओगे , तुम्हारा रुआब - रुतबा होगा तब वह भी देखने आऊँगी ।

आंटी सब कुछ बहुत ही अच्छे भाव से कह रहीं थी पर मेरा मन किसी काम में नहीं लग रहा था । मैं पूरी तरह से नकारात्मक हो चुका था । वह सात राज्य का सवाल वह मनोवैज्ञानिक की पर्ची मेरे मस्तिष्क से जाते ही न थे ।

खाना खाना क्या था , वह बस किसी तरह निगलना था । मेरा मन कर रहा था , मैं इलाहाबाद फ़ोन करके माँ से बात करूँ । पर बात क्या करूँगा । वह भी परेशान हो जाएगी अगर पड़ोस में फ़ोन करके कहा कि आप मेरे घर से बुला दौ । वह बुला तो देंगे खुशी-खुशी पर मैं बात क्या करूँगा । मेरे मन में ख्याल आया कि मैं बात क्यों करना चाहता हूँ ?

क्या मैं कमज़ोर पड़ रहा ?

मुझसे यह दबाव सँभाला नहीं जा रहा ?

मैं कोई सम्बल चाह रहा ?

पूसा इंस्टीट्यूट बहुत ही सुंदर और हरा भरा था । मुझे नींद आने वाली न थी । मैंने सोचा टहल कर ही समय काटते हैं ।

मैं बाहर निकला । मुख्तलिफ़ सम्तों में चलते हुये बेचैन नृत्य करती हुई तलातुम के तरह के विचार परवाह के साथ मैंने काफ़ी समय काटा । मैं लौटकर वापस आया । कल सुबह मेडिकल था । बचपन में जो टीका लगता था बाँह में उसके अलावा कोई इलाज तो कभी खास कराया नहीं । कोई मेडिकल टेस्ट वरैरह कभी हुआ नहीं । यह पहली बार टेस्ट हो रहा ।

राम मनोहर लोहिया अस्पताल में मेडिकल टेस्ट होना था । रिजर्वेशन तीन दिन बाद का था । तीन रात और काटनी होगी यहाँ । मैं वापस इलाहाबाद जाना चाहता था । मैंने इस साल की आशा तक्रीबन छोड़ दी थी । अब जाकर पराम्भिक परीक्षा दूँगा । अगले साल की कोशिश करता हूँ । पीसीएस की परीक्षा दूँगा । घर के हालात बाहर से तो लोगों को नहीं पता है , पर मैं तो जानता ही हूँ । मेरी माँ हमेशा कहती थी , जब मैं छोटा था , कल तुम्हारे पापा को कुछ हो गया तब हम कहाँ जायेगे । यह कोई रिश्तेदार तो काम कोई आयेंगे नहीं । मैं घरेलू महिला हूँ , कोई सेविंग है नहीं । हम लोगों को गाँव चलकर रहना होगा । हम शहर नहीं रह पाएँगे । ईश्वर दयालु था । कुछ हुआ नहीं पिताजी को पर एक भय हमेशा रहा ।

मैं वापस घूम कर पूसा इंस्टीट्यूट के आवास में आया । आंटी मेरा इंतज़ार कर रही थी । वह मुझसे बात करना चाहती थी । आते ही कहा कि अनुराग मैं तुम्हारे इंटरव्यू के दिन का इंतज़ार कर रही थी । सोचा था उस दिन तुमसे बात करूँगा खूब । उर्मिला ने लिखा था लड़का संकोची है और कुछ कहता भी नहीं है । वह पहली बार जा रहा घर से बाहर इतने दिनों के लिये ज़रा ध्यान रखना । मैंने पैसा दिया है ज़रूरत भर का पर लड़का है नई उम्र का इसको बहुत किफायत से पाला गया है, तुम भी पूछ लेना एकबार अगर कुछ चाहिये होगा । हो सकता है वह कुछ ख़रीदना चाहे दिल्ली से । कुछ पैसे - वैसे की ज़रूरत होगी तब दे देना उसको । आज तुम्हारा इंटरव्यू हो गया । कुछ चाहिये ? कुछ ख़रीदना है ?

मैंने कहा, नहीं आंटी, मुझे कुछ नहीं ख़रीदना । मेरी कोई ख़ास ज़रूरत नहीं है ।

मैंने घर में कभी आंटी के अलावा किसी और को कभी न देखा इस घर में । सिर्फ़ एक नौकरानी आती थी । वह काम करके चली जाती थी । आंटी भी दिन में काम पर जाती थीं । यह मुझे थोड़ा अजीब लगा कि कोई भी घर पर कोई क्यों नहीं रहता । यह अकेले क्यों रहती हैं । मैंने सोचा था मुझसे क्या मतलब ? मैं आया हूँ इंटरव्यू के लिये, मेरे से क्या लेना देना । मैंने यह भी जानने की कोशिश न की इनका मेरी माँ का ऐसा कौन सा गाढ़ा संबंध है जो मेरी माँ ने आश्वस्त होकर कहा था कि दिल्ली रुकने की कोई समस्या नहीं है । वहाँ शांति के पास तीन कमरों का मकान है पूसा रोड पर, वहाँ जाकर रहना । इलाहाबाद के अभ्यर्थियों को इंटरव्यू के समय रुकने की समस्या होती थी ।

मैंने आंटी से पूछा आप अकेले रहती हो ? आंटी ने कहा, नहीं तो । मैं और मेरा अकेलापन एक साथ रहते हैं । मैं कुछ और पूछता आंटी ने अपनी कहानी शुरू कर दी । शायद पहली बार कोई मिला उनको सुनने वाला ।

मैं और तुम्हारी माँ उर्मिला बचपन की सहेली हैं । मैं, तुम्हारी माँ और रजवंत एक साथ पढ़ते थे । उर्मिला कक्षा में प्रथम, रजवंत द्वितीय और मैं तृतीय आते थे । स्कूल के मास्टर कहते थे तुम तीनों कमोबेश एक ही जैसे हो पढ़ने में । कक्षा 8 के बाद हम लोगों के पढ़ने की कोई व्यवस्था न थी । गाँव में बालिका विद्यालय न था । हम लोगों की पढ़ाई बंद हो गई । रजवंत ने आगे की पढ़ाई की ओर वह पीसीएस हुआ । उर्मिला कहती थी कि अगर हम लोगों को मौका मिलता हम भी अफ़सर हुये होते पर क्या कर सकते हैं अगर नियति ने कुछ और लिखा है । काश शहर में पैदा हुये होते, हमारे पिता को हमारे विवाह से ज्यादा हमारे भविष्य की चिंता होती, लड़कियों की पढ़ाई पर वैसा ही सोचा जाता जैसा कि लड़कों के बारे में । यह पुत्र के लिये पढ़ना ज़रूरी है पुत्रियों के लिये नहीं यह मानसिकता न होती ।

मैंने कहा आंटी वह तो अब नहीं है । फिर मेरे दिमाग़ वही शाशि तिरपाठी आ गई जो मुझे मेरे अंदर ही परास्त कर रही थी ।

मैंने कहा कि आंटी अब ऐसा नहीं है अब तो सब मामला बराबरी का है । मेरे साथ आज कितनी लड़कियों ने इंटरव्यू दिया है । वह मुझसे न तो कम काबिल हैं और न ही अवसर कम दिया जाता है उनको ।

आंटी बोली तुम बात शहर की कर रहे हो , अभी भी गाँव जाकर देखो कितनी लड़कियों को अवसर दिया जाता है । पढ़े लिखे लोग भी कहते हैं कि लड़की बाहर नहीं जाएगी ।

मेरा दौर कुछ और था ।

तुम्हारे नाना बड़े आदमी थे । वह गाँव के सरपंच थे । उनके पास बड़ी खेती थी । वह तुम्हारी माँ के विवाह के लिये तुम्हारे पापा और मेरे पति दो लोगों का चयन किये । पर उन्होंने तुम्हारे पिता से उर्मिला के विवाह का फ़ैसला किया । मैं उर्मिला के साथ ही रहती थी । जब उन्होंने उर्मिला का विवाह तुम्हारे पिता से विवाह का फ़ैसला किया तब तुम्हारी नानी ने कहा कि शांति का विवाह दूसरे वाले से हो जाए । तुम्हारे नाना ने मेरे पिता से कही यह बात कि वह लड़का , अच्छा है उससे शांति के विवाह की बात चलायी जा सकती है ।

तुम्हारे पिता विश्वविद्यालय में प्रवेश लिये थे और यह *Agricultural institute* नैनी में । आपके नाना मेरे पिता को लेकर गये और कहा कि मेरी बेटी की बात कहीं चल रही थी वह वहाँ तय हो गई यह मेरी बेटी न होकर मेरी ही है , विवाह में कुछ आगा - पीछा होगा तब वह मेरी ज़िम्मेदारी है । परिवार , कन्या की ज़िम्मेदारी हमारी है । अगर मैं अपनी लड़की और उसकी तुलना करूँ तो यह बेहतर है । एक पिता इससे बेहतर किसी और की क्या तारीफ़ कर सकता है ।

वह साफ़ा बाँधते थे और अपना साफ़ा मेरे ससुर के पैर पर रख दिया । यह बहुत था मेरे विवाह के लिये । तुम्हारे नाना का नाम था , इज्ज़त थी और उनको बोलना आता था । मेरा विवाह हो गया । हम दोनों का विवाह आस- पास हुआ था । हम लोग विवाह के बाद जब वापस आए तब उर्मिला ने कहा कि बहुत संघर्ष है जीवन में । कुलीन बाभन को देख कर विवाह किया और लड़के का भविष्य है , पर गरीबी है वहाँ पर बहुत है ।

समय बीतता गया । मेरा बच्चा जल्दी हुआ और उर्मिला का देर में । मेरा पहला बच्चा मंगोलाइट हो गया । मैं ही जानती हूँ पीड़ा एक मंगोलाइट बच्चे को पालने की ।

वह कुछ कह नहीं सकता पर उसकी ज़रूरतें हैं । वह खुश हैं पर खुशी अभिव्यक्त नहीं कर सकता । वह दुःखी हैं पर दुःख कैसे बताये ? उसको बथरूम जाना है पर उसे पता नहीं कैसे बताये ? वह एक ज़िंदा लाश है जमाने के लिये पर एक जीवंत भावों से भरा ईश्वर का तोहफ़ा है माँ के लिये । तुम्हारी माँ कीं समस्या थी कि उसको

बच्चा नहीं हो रहा और मेरी समस्या है कि बच्चा हुआ भी तो वह नहीं जो मैं चाह रही
।

फिर मैंने एक बच्चे को जन्म दिया और तक्रीबन 18 महीने बाद तुम जन्म लिये । मुझे याद है उर्मिला का वह खत जो उसने तुम्हारे पैदा होने के बाद लिखा था । बहुत खुश थी । शब्दों में उसने तुम्हारी तस्वीर उतार दी थी । और कहा था, यह दोनों IAS बनेंगे । तुम उस दहलीज़ पर आ गये हो ।

मैंने पूछा .. आंटी अंकल

इतना ही कहा कि आंटी की आँखों से आँसू गिरने लगे । वह बोली क़रीब दस साल लग गए ज़िंदगी में पहले बच्चे के साथ संघर्ष में । पर ईश्वर ने उसको जीवन न दिया था । दस वर्ष बाद वह चल बसा । वह उस सदमे में शायद आ गए । क़रीब एक साल बाद वह सुबह घूम कर आए । मैं चाय बनाकर लाई और जब वापस आई तो देखा
.....

मैं विधवा हो चुकी थी ।

मेरा जीवन एक दूसरे रास्ते पर । मैं अकेली जीवन संघर्ष में एक नाबालिंग अबोध बच्चे के साथ । मेरी उम्र ही क्या थी ? मैं व्याही गयी तब अठारह साल से कम की थी । जब विधवा हुई तब 31 साल की । ईश्वर ने सदबुद्धि दी थी कि मैं उनके साथ आकर बीए पास कर लिया था । इस इंस्टीट्यूट के लोगों ने मदद की और मेरा compensatory appointment एक क्लर्क के तौर पर हो गया ।

एक विधवा का जीवन बहुत कठिन होता है, वह भी कम उम्र की विधवा का । समाज जीने नहीं देता । आपको हर वक्त समाज की आँखों के परीक्षण से गुजरना पड़ता है । आपके हर कदम पर सवाल खड़े होते हैं । हर बात पर आपके ऊपर लांचन लगाने वालों का एक समूह होता है । बहुत दिन बाद एक IAS आफिसर आई । वह बोली जैसा दुख तुम्हारा है वैसा ही हमारा भी । एक विधवा का जीवन कठिन होता है पर शांति हमसे ज्यादा मज़बूत कोई नहीं होता । हम लोग साक्षात् काल को भी हरा सकते हैं । जो ईश्वर दुख देता है वहीं सहने की शक्ति देता है । बच्चा अच्छा करेगा । मेरे बच्चे ने भी अच्छा किया है ।

मैं डटी रही । एक बच्चा था उसका भविष्य था और तुम्हारी माँ की तरह मुझे उसे भी IAS बनाना था ।

वह कहाँ हैं? मैंने जैसे ही पूछा

आंटी फूट- फूटकर रोने लगी ।

मेरी सारी पीड़ा, मेरा सारा दुख सब काफूर हो गया । आंटी मुझे साक्षात् दुर्गा दिखने लगी । इतना बड़ा जीवन संघर्ष और चेहरे पर शिकन नहीं । पति का फ़ोटो अपने में दिल में रखती हैं न कि दीवारों पर । दीवार पर लगी तस्वीर पीड़ा देती है इसलिये मैं दीवार पर नहीं लगाती ।

मैं अपने जीवन का परश्न भूलकर जगत नियंता से आंटी के लिये संवाद करने लगा, यह तुम्हारा आपदा प्रबंधन है ? यह तुम्हारा पालनहार रूप है ?

क्या अज़ली खता थी इसकी जो इतनी सलाबत इसके साथ । इसका गुनाह क्या था ? इतनी अजीयत किसी एक ही के साथ किस लिये ? इसकी रिदा क्यों इतनी खाली रखी तूने ? इसके न सारे ख्वाब सही तो किसी ख्वाब की तो ताबीर दी होती तूने ।

हे परमात्मा गर तू क़ादिर होकर भी गर नहीं जानता पीड़ा अपने बंदों की, नहीं है तुझे सरोकार उनके हर रोज़ के घिसटन की तो कब तक तेरे नाम पर सजदा, भजन और कीर्तन होते रहेंगे ।

निकल तू पत्थरों से देख हालात ऐसे लोगों की जो कुछ अश्क आँखों में लिये तुझसे उम्मीद लगाए बैठे हैं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग -41

आंटी थोड़ा सामान्य हुई ।

उन्होंने पूछा चाय पियोगे ?

मैंने कहा, पी लूँगा ।

आंटी चली गई चाय बनाने । मैं खिड़की पर खड़े होकर बाहर का अँधेरा देखने लगा । दूर मुझे गिरिजाघर दिखा, उसके ऊपर चाँद । जैसे चाँद गिरिजाघर के ऊपर आकर उस सलीब पर रुक गया हो । सलीब पर बने यीशु के मस्तक के ठीक चारों ओर बनाता एक आभामंडल । उस सलीब में मुझे बहते रक्त में कई के रक्त दिखने लग गए उसी में आंटी का बहता आँसू भी टपकता ऐसा दिख रहा मुझे ।

यह जो आंटी मुझसे कह रही, अपना भोगा सच बता रही, वह मुझसे नहीं कह रही वह अपने अंदर के हिलोरे लेते तूफान को बाहर निकालना चाह रही । वह बर्दाशत

नहीं कर पा रही अपने अंदर के थपेड़ों को । बहुत मुश्किल होता है अपने अंदर तूफान को सँभाल कर रखना । जिगरी दोस्त, हमराज़, हमदम कुछ न करें बस आप की बात सुन लें यही बहुत है तूफान की शांति के लिये । हर तूफान साहिल चाहता है, कब तक वह उफनेगा समुद्र के बीच में । कभी तो उसे भी चैन की साँस लेनी है । दो घड़ी का दम लेकर साहिल से लिपटना है । किनारों पर बच्चों के बने घरोंदों से उसे भी खेलना है । यह आतंक, यह आततायी पन भी चाहता है मानवता के साथ रहना । शायद इसीलिये किनारों पर लहरें आकर लौटती हैं और फिर आती हैं हौले-हौले उसी सुकून के लिये ।

यह जो मुन्तशिर होकर भी मुनज्जम लहरें हैं सागर की जो बनाती हैं अज़ली तरन्नुम इनमें शुआएँ पाश-पाश होकर अपना धुन बिखरती हैं रात की सियाही में, ऐसी रात की सियाही आंटी के जीवन में है और इसके अंदर के तूफान में कोई तरन्नुम नहीं है सिर्फ़ एक शोर है भयानक शोर जो उसे सोने नहीं देता होगा ।

मेरे नाना ने मेरी माँ के विवाह के लिये इनके पति को भी चुना था ।

अगर ?

मेरी माँ का विवाह इनके पति से हुआ होता तब ?

मुझे अपनी माँ सफेद धोती सूनी माँग के साथ मुझको गाँव की पगड़ंडी पर मेरा हाँथ पकड़ कर जाते दिखी । मैं चीख रहा, नहीं मैं गाँव नहीं जाऊँगा । मैं अपने स्कूल में ही पढ़ूँगा । मेरे दोस्त हैं वहाँ पर । मैं वहाँ चूरन खाता हूँ, पाँच पैसे की आइसकरीम मिलती है, एक घंटा कहानी के क्लास का है, इंटरवल में स्कूल के मैदान के इमली के पेड़ पर पत्थर मारकर इमली तोड़ता हूँ । मैं नहीं जाऊँगा गाँव, यहाँ बिजली भी नहीं आती, स्कूल यहाँ का गाँव से दूर है । मैं नहीं जाऊँगा गाँव ।

मेरी आँख से आँसू गिरने लगे । यह वह भय था जिसको अपने अंदर रखकर मैं जी रहा था जो माँ ने कई बार कहे थे

“ अगर तेरे पिता को कुछ हो गया तब हमको इस किराये का मकान छोड़कर गाँव जाकर रहना होगा ” ।

मेरी माँ ने यह राज तो न बताया कभी जो उसका और शांति का था । माँ के पास पत्र आते थे । वह कहती थी मेरी दिल्ली की सहेली के हैं । वह पढ़ती थी । कई बार नम आँखें मैंने देखी हैं उसकी । आंटी की ही पीड़ा थी जो आत्मसात की होगी उसने और यह कहती थी कि इनको कुछ हो गया तो गाँव जाना होगा ।

आँटी ने पढ़ लिया था वह नौकरी पा गईं । मेरी माँ तो कक्षा 8 के बाद पढ़ी ही नहीं । वह क्या करती ? बच्चों की पढ़ाई, मकान का किराया, ज़िंदगी की ज़रूरतें और इतनी बड़ी पहाड़ ऐसी ज़िंदगी कैसे काटती वह ।

वह सही कह रही थी, गाँव ही जाना पड़ता । यह अगर हो गया होता तब ? मेरी माँ भी आँटी की तरह बेसहारा हो गई तब ? क्या होता उन सपनों का जो उसने पाला था अपने अंदर यह कहकर कि मेरा और शांति दोनों का बच्चा IAS बनेगा ।

आँटी ने अपने दूसरे बच्चे के बारे में नहीं बताया । कहीं वह भी तो

मैं सिहर गया

इतने में आँटी आ गई वह सामान्य हो गई थी और मैं असामान्य था । वह मेरी असामान्यता को भाँप गई । वह बोली बहुत दर्द हो रहा सुनकर ?

बेटा यह ज़िंदगी है । यह ज़िंदगी कोई पहाड़ की बुलंदी पर खड़े चाँद की तरह तो है नहीं कि झील के हिलोरे लेते संगीतमय पानी में अपनी सुंदरता देखकर आळादित हो जाए ।

यहाँ हर वक्त चाँद की नर्म ठंडी रौशनी में रात की कालिमा के बीच एक काला नाग धूमता रहता है अपनी शिकार की तलाश में । यहाँ सबके अपने - अपने कफ़स हैं, कितना भी चोंच तेज कर लो पर पिंजरे का लोहा चोंच को भोथरा कर देता है ।

मैंने भी चाहा था शबनमी स्याही से लिखना अपना मुक़द्र पर बेलिखे मुक़द्र की ख्वाहिश सबकी होती है पर यह एक सराब है, दिखता ज़रूर हमें पर मिलता नहीं है ।

मैं जानना चाहता था, आँटी के दूसरे बेटे का किस्सा । पर मैं पूछू कैसे ? आँटी उसका नाम आते ही रोने लग गई थी । इतनी पीड़ा जिसके नाम के लेने पर हो उसके बारे में बात करना कितना मुश्किल होगा । मैं सोचता रहा, कैसे कहूँ । चाय पी रहा था आँटी की तरफ देखकर, सम्मान आदर में गुणात्मक वृद्धि हो चुकी थी आँटी के बारे में ।

आखिर दिल कड़ा करके कह ही दिया ।

“ आँटी मुझे अपने उस भाई के बारे में जानने की उत्सुकता हो रही जो मुझसे 18 महीने बड़ा है ” ।

आंटी ने अपनी बात फिर आरंभ कर दी और मैं खो गया सुनने में ।

वह जैसे ही मेरे गर्भ में आया मुझे एक ही चिंता खाये जा रही थी कि कहीं यह भी अपने बड़े भाई की तरह विशेष प्रकृति का बच्चा न हो जाए । अगर ऐसा हो गया तब मैं कैसे सँभालूँगी दो- दो मानसिक रूप से चुनौती पूर्ण व्यक्तित्व लिये हुये शिशुओं को । वह पैदा हुआ । मैंने यह पूछने के बजाय कि लड़का हुआ या लड़की, मैंने यह पूछा वह सामान्य है या नहीं ?

नर्स को क्या पता मेरी पीड़ा । वह बोली लड़का हुआ है । मैंने कहा, मैं जानना चाह रही वह कैसा है ?

नर्स बोली सब बच्चे एक ही जैसे होते हैं बचपन में आगे चलकर बदलते हैं ।

मेरी शंका का वह समाधान उसने न किया, जो मैं चाह रही थी । जब मैंने बच्चे को पहली बार देखा तब मैंने उसको अपने पहले बच्चे से तुलना की और वह उससे भिन्न था । मुझे संतोष हुआ कि, शायद यह सामान्य है । पर मैं डाक्टर से इसकी पुष्टि चाहती थी । डाक्टर आई, मैंने वही सवाल किया पर इस बार अपनी पीड़ा बताकर ।

डाक्टर भली थी । वह बोली तुम्हारा दर्द मैं समझ सकती हूँ पर यह बच्चा सामान्य है, मंगोलाइट नहीं है । ईश्वर ने इसको बहुत बुद्धि, विवेक, सामर्थ्य दिया होगा । मंगोलाइट बच्चे के बाद का बच्चा माँ की पहले बच्चे की निराशा के अवसाद को दूर कर देता है । ईश्वर पहले बच्चे के समय की कमीं को दूर कर देता है ।

यह डाक्टर ने शायद मुझे हौसला देने के लिये कहा हो पर मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी । मैंने अपने पति से कहा कि ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली है । वह महान है, न्यायी है, प्रजावत्सल है ।

उसको घर लेकर आयी । मेरे पाँव जमीं पर न थे सिफ्ऱ इस बात को लेकर कि मेरा बच्चा सामान्य है वह मंगोलाइट नहीं है और मेरे सपनों के पंखों पर बैठकर क्षितिज छूमेगा वह ।

वह कुछ सात साल का रहा होगा जब मैं वैधव्य की न ख़त्म होने वाली पीड़ा के आश्रम में प्रवेश कर गई ।

यह जो चार आश्रम हैं, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्न्यास

यह अधूरे हैं । यह पुरुष प्रधान मानसिकता से बनाये गये हैं । एक और आश्रम है “वैधव्य आश्रम” वह भी लिखा जाना चाहिये था । सती प्रथा को समाप्त तो कर दिया गया पर उस आग की जलती लकड़ी जो वह एक दिन की थी सती होते समय

वह सारे जीवन इस शरीर को ही नहीं अंदर की आत्मा को भी दाहती रहता है । इसकी पीड़ा वही जान सकता है जिसने इसको भोगा है । किसी जीवन को जी लेना और किसी जीवन को भोग लेना दो अलग विचारधाराएँ हैं । मैंने जीवन को जिया नहीं है । मैंने एक जलती आग की आततायी ऊषा को महसूस किया है ।

वह तो चले गये । मैं उनकी बहुत ही शुकरगुजार हूँ । वह बहुत समझदार थे । तुम्हारे नाना ने मेरे लिये पति नहीं देवता चुना था । मैं तुम्हारे नाना को हर रोज़ धन्यवाद देती हूँ, साथ छोटा ही था पर था वह ऐसा कि आँखों में उसका मंजर आज भी मेरे मौजूद है ।

उन्होंने मुझे पढ़ाया, बीए फ्रस्ट क्लास में पास कराया, पूसा के लोगों की एक कोआपरेटिव हाउसिंग सोसायटी बनी उसमें फ्लैट लिया, बचत की, इंश्योरेंस कराया, पहले बच्चे को पालने में साथ दिया, दूसरे बच्चे के समय वह नहीं रहे पर मुझे सक्षम बना कर गये ।

मैंने इसको बेहतर से बेहतर शिक्षा दी । इतने विद्वान् कृषि वैज्ञानिक का बेटा था । वह बड़े कृषि वैज्ञानिक थे । उन्नत बीजों में उनका रिसर्च पूरे विश्व में सराहा गया । आमरपाली आम की क्रिस्मों पर बहुत काम किया ।

बच्चे ने उनका ही दिमाग़ पाया था ।

आईआईटी की प्रवेश परीक्षा में उसको पूरे भारत में 28 वीं जगह मिली । वह कानपुर जाना चाहता था पर मैं पति और बड़े बेटे को खो चुकी थी । मैं उसको साथ रखना चाहती थी । उसको दिल्ली आईआईटी में पढ़ाया । उसको कहा कि तुम आईएस की परीक्षा दो । वह जहीन था । वह हो सकता था । हर परीक्षा में वह अब्बल सा ही रहता था । पर यह आजकल के बच्चों को बाहर जाने का नशा है । सबमें एक भूत सा सवार है, विदेश जाओ डालर कमाओ । देश से, ज़मीन से कोई लगाव ही नहीं । तुम जहीन बनाये गये हो परम पिता के द्वारा, तुम्हारी जवाबदेही है इस ज़मीन के लिये । पर चंद डालरों के लिये तुम बिक जाते हो काम करते हो अमेरिका के लिये ।

इन विज्ञान के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय आंदोलन ठीक से पढ़ाया जाना चाहिये । यह आंदोलन हर पाठ्यक्रम में होना चाहिये, पता तो चले आज़ादी कितना मुश्किल से मिली है । उस पीढ़ी ने कितना खून बहाया है । तुम अपनी क्षमता लगा रहे हो दूसरे देश के विकास में । कोई जवाबदेही ही नहीं है किसी के प्रति, सिर्फ़ अपना जीवन महत्वपूर्ण है ।

मैंने बहुत समझाया पर वह आई ए एस देने को तैयार न हुआ । उसे cornnel university का वज़ीफ़ा मिल गया । वह वहाँ चला गया । मेरी सारी कोशिशें उसको

रोकने की कारगर न हुई । जो दैव संयोग होता है वह कहाँ से टल सकता है ।

मेरा एकाकीपन मेरी नियति है । तुम कुछ दिन के लिये आये हो । तुम्हारे जाते ही वह फिर आरंभ हो जाएगा ।

अनुराग रात के दो बज गए हैं । अब सो जाओ कल मेडिकल है । तुम्हें आलू का पराठा अच्छा लगता है, उर्मिला ने खत में लिखा है । कल नाश्ते में बनाऊँगी । सुबह चाय के समय मिलते हैं ।

शुभ रात्रि ।

मुझे बेचैन कर गई आंटी । इतनी विद्वता की बात करके गई । उसने पूरी नई पीढ़ी को हिला दिया, कुछ ही देर में । मैं भूल गया अपना भविष्य ।

मैंने यह दुनिया न देखी थी जो आंटी ने दिखायी । अपनी सोती - जागती आँखों से सिर्फ़ मैंने अपने स्वार्थ की दुनिया देखी है । मेरे ख्वाबों के पास कोई सामाजिक सरोकार नहीं है । काग़ज की एक नाव बनाकर जो मैं बरसात के पानी में तैरा रहा, उस नाव को कहाँ पता जिस सैलाब में जहाज़ दम तोड़ देते हैं उसी में एक कश्ती सैलाब को उसका हद बता रही । इसकी रात आज बंजर हुई है, कभी ख्वाबों की फ़सल इसके पास भी थी । ज़िंदगी में ऐसा मोड़ आता है जब स्वागत कर रही दिशाएँ ऐसा भँवर बना देती हैं कि कोई ऐसा घुमाव नहीं आता जो सफ़र को आसान कर दे । एक ऐसी दरिया के पास से गुजर रहा मैं जो एक अजीब प्यास दे रही यह जानने को क्या हुआ आंटी के दूसरे बच्चे के साथ जो मुझसे 18 महीने बड़ा था और IAS बनने सर्वथा योग्य था ।

इसके कई सपनें टूटे, एक सपना उसके IAS न बनने का । वह एकेडमी देखना चाहती है । मेरे चयन के बाद मेरा रूतबा देखना चाहती है । वह एक अपना वह ख्वाब देखना चाहती है जो कहीं खो गया ।

यह कब तक देखेगी वह ख्वाब जिसके ताबीर का अब कोई नामो-निशान नहीं है । अब उम्र का बाक़ी सफ़र यह इस शर्त के साथ करेगी कि धूप में साये के साथ कहीं उसके ख्वाब की ताबीर दिख जाए ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 42

आंटी चली गई सोने, पर मुझे कहाँ नींद आनेवाली। मैं बिस्तर पर लेट कर छत देख रहा था। मैं सोने की कोशिश भी नहीं कर रहा था। स्वेटर की तरह ख्वाब बुनने वाली मेरी आँखें जो हर वक्त नींद का इंतज़ार करती थीं आज उनको नींद की चाहत भी न थी। कभी सोचा न था मैंने किसी की ज़िंदगी का संघर्ष इतना बड़ा हो सकता है। आंटी के बेटे का रहस्य अभी तक न खुला था। वह पूरी बात नहीं बता रहीं थी। ज़रूर कुछ ऐसा है जो आंटी बताना नहीं चाह रहीं। वह बेटे की बात अधूरी ही रह गयी। यह कहकर आंटी ने बात अधूरी ही रहने दी कि जब तक़दीर में एकाकीपन लिखा है तब उसका क्या किया जा सकता है।

यह एकाकीपन स्वेच्छा से तो है नहीं, यह आरोपित है। आंटी को गये दो घंटे हो गये। मैंने सोने की न तो कोशिश की और न ही नींद आ रही थी।

मैं उठा खिड़की के बाहर देखने लगा। अपने सायों से लंबे दरख्त, पेड़ के पाँव पर फूल ही फूल। पेड़ की शाखें पकड़ कर उतरता चाँद धीरे-धीरे दूर होता ओझल मेरी आँखों से, दूर आसमानों में आता सूरज अपनी लालिमा लिये यह कहता अब वक्त हो गया है मेरा, ऐ अँधेरों अपनी कायनात समेटो।

मैं आकर लेट गया। आँख लग गई। आंटी सुबह चाय लेकर न आई। वह भी जानती थी, इतनी दर्द सुनकर कौन चैन से सो सकता है। वह आठ बजे आई जगाने, कहा नाश्ता बना रही तैयार हो जाओ।

आंटी ने नाश्ता बहुत अच्छा बनाया था। आलू के पराठे, दही, अचार, सब्जी, हलवा। बहुत यत्न किया था इस सुबह का। जब मैंने कहा, बस और नहीं तब वह बोली, तुम आ गये कुछ बनाने का मन कर गया नहीं तो अकेले आदमी के लिये क्या बनाना और क्या खाना।

मैंने खाना खाया, बल्कि ज्यादा खाया। आंटी को अच्छा लग रहा था मेरा खाना। मैं उनकी खुशी के लिये और खा लिया। आंटी की कहानी ने मेरा सारा तनाव ख़त्म कर दिया था। उसके गम के सामने मेरा सारा मुद्दा लगभग ख़त्म सा हो गया मेरे दिमाग़ से।

मैं तैयार होकर निकला राम मनोहर लोहिया अस्पताल की तरफ मेडिकल के लिये । वहाँ पहुँचा तो देखा एक अज़ीब मजमा लगा हुआ । काफी लोग थे वहाँ पर , मेरी पहली ही मुलाक़ात हुई 6 फ़िट 5 इंच लंबे एक व्यक्ति से । मैंने पूछा कि यह सिविल सेवा अभ्यार्थियों का मेडिकल कहाँ हो रहा ?

वह बोले वही जुगाड़ मैं भी ढूँढ़ रहा हूँ ।

मैं पहुँचा वहाँ पर जहाँ मेडिकल हो रहा था । एक पूरी भीड़ इकट्ठा थी , लोगों को लाइन से लगाया जा रहा । मेरा तो भ्रम ही टूट गया । यह हाल है होने वाले IAS का ?

मुझे लगा कि जायेंगे लोग इंतज़ार कर रहे होंगे , साहब आ गये । पर यहाँ तो पूरी भीड़ लगी है ।

चिंतन सर और मिश्रा सर भी आ गये । वह अनुभवी थे । वह पहले भी इस प्रक्रिया से गुजर चुके थे । मिश्रा सर बोले बहुत अच्छा समय आज बीतेगा । बहुत भिन्न- भिन्न तरह के प्राणी आज मिलेंगे । जब सारा कुछ नाम वाम पर टिक लग गया तब एक लंबे श्याम वर्णीय, आलस्य उनके शरीर से टपकता हुआ मुँह में सिगरेट लटकाये एक पैर को कुछ

घसीटते हुये एक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी दिखे । वह जैसे ही पहुँचे उन्होंने क्लर्क से कहा कि मेरा नाम भी टिक लगा लो , सिद्धांत श्रीवास्तव । वह बोला अभी तक कहाँ थे ?

वह बोले यहीं तो हूँ , आप देख ही नहीं पा रहे , पिछले दो मिनट से यहीं खड़ा हूँ ।

क्लर्क बोला सुबह से काम चल रहा और आप अभी आ रहे । सिद्धांत बोले , कोई काम तो अभी तक हुआ नहीं । नाम पर टिक ही तो लगाना है कौन सा बाइबिल पढ़ना है । बहस करके वह बाहर आकर बैठ गये ।

वह खुद से ही बड़बड़ाने लगे ,

“हम हर काम में देर से आते हैं क्योंकि भारत में आधा घंटा बाद ही काम शुरू होता है । बेवजह की झड़प कर रहा नाम पर टिक लगाने को पूरा मूँड ख़राब कर दिया , अभी आधा घंटा और कुछ नहीं होने वाला “ । जेब से सिगरेट निकाला और उसी क्लर्क के पास गये और कहा ज़रा माचिस देना , वह

आपके पाकेट में दिख रही । कलर्क बोला आप भी पास किये हो इम्तिहान? वह बोले टिक कौन लगाया, दिखा नहीं आपको?

सिगरेट सुलगाकर वह धुँआ का छल्ला बनाने लगे ।

मुझे लगा, क्या आदमी है यह । मैं सुबह से आकर लाइन में लगा हूँ कि कहीं मेडिकल छूट गया तो गये काम से और इनको कोई चिंता ही नहीं । मैंने अपना परिचय दिया और हिंदी मेरी थोड़ा शुद्ध थी । वह बोले मुझे फ़ारसी नहीं आती । मैंने कहा, यह हिंदी है फ़ारसी नहीं है । वह बोले यह फ़ारसी ही है मेरे लिये । मैं काम चलाऊ हिंदी जानता हूँ । यह संस्कृत टाइप की हिंदी नहीं पढ़ता । इनका दर्शन अलग था । यह यूनियन जैक वापस लाना चाहते थे । इनकी मान्यता थी कि जो कुछ भी विकास इस देश में हुआ है वह अंग्रेजों ने किया है । यह अंग्रेज न आते तो हम आज तक वही पुरानी आदिम अवस्था में जी रहे होते । किसी भी तरह का आधुनिकीकरण न होता । न रेलवे लाइन का विस्तार होता न ही हमारे यहाँ आधुनिक शिक्षा का विस्तार होता । वह मैकाले के उस सिद्धांत के समर्थक थे जो कहता है कि देशज भाषाएँ सक्षम नहीं आधुनिक शिक्षा के प्रसार के लिये और अगर अंग्रेज न आए होते तो यह जो स्थापत्य का विकास हुआ वह न हुआ होता । वह अपने तर्क में कहते थे कि 1947 के बाद हमने क्या बनाया, यह बताओ? तुलना कर लो 1947 के पहले की बनाई इमारतों और विकास से आज की ।

वह बोले, तुम्हारा इलाहाबाद का यमुना का पुल और यूनिवर्सिटी कौन बनाया और क्या बना उन अंग्रेजों के जाने के बाद । वह मात्र बीए पास थे, वह भी येन केन प्रकारेण । पर बातचीत से जहीन लग रहे थे ।

मैंने पूछा कि आपका विषय बीए में क्या था? वह बोले याद नहीं । मैं चौंक गया । वह बोले यह सब फ़ालतू सवाल का क्या मतलब । भूगोल और समाज शास्त्र था विषय सिविल सर्विसेज़ में ।

दूसरे थे 6 फ़िट 5 इंच के संजीव टंडन । वह अलग प्राणी थे । उनसे पूछा आपका विषय क्या था? वह बोले गणित । मैंने कहा दूसरा, वह बोले वह याद नहीं है । मैंने देखा उनकी तरफ़ आश्चर्य से । वह बोले गणित में 600 में 600 सही करते हैं । दूसरा विषय किसी मार्केट के काम चलाऊ नोट्स से पढ़ लेते हैं । यह गणित नाव किनारे लगा देगा । दूसरा विषय Anthropology लेते हैं पर वह बस टाइम पास है ।

एक पटना के मिले राजीव सिंह उनकी हाबी थी आम के पेड़ लगाना , जेएनयू की एक लड़की थी उसकी हाबी थी मीरा के भजन गाना ।

यह एक अलग दुनिया थी जो मैंने देखी ही न थी कभी । इतने अलग - अलग तरह के मेधावी लोग , मैंने आज तक न देखे थे । मेरी दुनिया के नायक वही चंद इलाहाबाद के लोग थे जो परीक्षा में सफल हुये थे , पर यह मुझे बड़े नायक लग रहे थे ।

हमारे पास सिविल सर्विसेज के बाहर की कोई सोच न थी पर इनके पास जीवन में उससे आगे की भी सोच थी । यह भी सिविल सेवा में पास होना चाहते थे पर उनके पास एक रणनीति थी कि अगर यहाँ न हुआ तब क्या करेंगे । हमारे इलाहाबाद में तो अगर यह परीक्षा न हुई तो साक्षात् मौत ऐसी सोच थी पर इनके साथ ऐसा न था । हम इलाहाबाद में सिफ़्र कुछ परम्परागत विषय लेकर ही परीक्षा देते थे पर यहाँ तो कई नवीन प्रयोग थे । आई आई टी बम्बई से पास किया मैकेनिकल इंजीनियर मराठी लिया था , आई आई टी बनारस से पास किया पाली भाषा लिये हुये था । भूगोल , समाज शास्त्र, अंग्रेजी साहित्य, सिविल इंजीनियरिंग , कृषि विज्ञान , एनीमल हस्बेंडरी आदि कई विषय लोग लिये थे ।

इलाहाबाद में संस्कृत, हिंदी , दर्शन शास्त्र, इतिहास , राजनीति शास्त्र, विधि ही प्रमुख थे और तक्रीबन 80% से ज्यादा लोग इन्हीं विषयों में से लिया करते थे ।

इलाहाबाद अगर पिछड़ रहा है तो इसका कारण प्रयोग का अभाव भी है ।

संजीव टंडन गणित में सिद्ध हस्त थे । सामान्य अध्ययन यूनिक की गाइड से पढ़ लेते थे और anthropology किसी बाज़ार नोट्स और नदीम हसनैन की किताब से । दो किताब और बतायी योगेन्द्र सिंह की सामाजिक परिवर्तन, श्रीनिवासन की आधुनिकीकरण और जाति व्यवस्था पर । बस हो गया काम ।

यह आसान विधि हमको पता ही न थी । हम लोग मोटी - मोटी किताब पढ़ते थे । बहुत सारा मटीरियल इकट्ठा करते थे । संजीव टंडन बोले यह बेवजह काम क्यों करते हो आप लोग ? सबसे बड़ा मन्त्र मिला ...

What to read से ज्यादा महत्वपूर्ण है *what not to read*

आप के पास समय है सीमित । इस समय का इस्तेमाल आप रणनीति के तहत करो । अगर आप समय लगाते हो वह पढ़ने में जो काम का नहीं है तब परीक्षा के लिहाज़ से आप अपनी असफलता सुनिश्चित कर रहे हो । कम किताब पढ़ो , काम की किताब पढ़ो , पतली किताबें मोटी किताबों से बेहतर होती हैं , ज्यादा किताबों की तुलना में एक ही किताब ज्यादा बार पढ़ो । NCERT को बार- बार पढ़ो । इतिहास , भूगोल की NCERT पूरी रट ऐसी डालो ।

रेलवे में काम कर रहे सतीश शुक्ल मिले जिन्होंने अपनी सिविल सेवा की तैयारी रेलगाड़ी में की । उनको यह पता न था कि वह परीक्षा के समय वह कहाँ रहेंगे उन्होंने सात फार्म भरे थे , सात अलग -अलग केन्द्रों का चुनाव करके । रेलवे की ट्रेनिंग में बहुत ज्यादा सफ़र करना पड़ता था , इसलिये बहुत सा वक्त रेलगाड़ी में गुजरता था । वह रेलगाड़ी में ही पढ़ा करते थे ।

यह सब ज्यादातर लोग यह बाज़ार की कोचिंग का विरोध करते थे । इनका कहना था कि यह कोचिंग का व्यापार वह चला रहे जो सिविल सेवा परीक्षा में कोई ख़ास मुक़ाम नहीं पा सके । जिनके पास अपना ही कोई मुक़ाम न हो वह हमें किस लक्ष्य पर ले जाएगा ।

मुझे मिश्रा सर , चिंतन सर , राजेश्वर सिन्हा , अमित चौधरी की असफलता का कारण दिखने लग गया । वह सब लोग बेवजह बहुत पढ़ते थे । यह सब लोग बहुत सँभाल कर एक रणनीति से पढ़ते थे । पर इलाहाबाद के लोगों के युद्ध के हथियार परम्परागत थे । वह नई बदली हुई परिस्थितियों के साथ अपना सामंजस्य नहीं बना पा रहे थे । इन लोगों के पास परीक्षा की असफलता के बाद की भी सोच थी पर वह सोच पूरे शहर के पास न थी ।

एक बड़ी बात मैंने यह देखी कि कुछ लोग कह रहे थे , मैं चयन के बाद सर्विस ज्वाइन करूँगा या नहीं यह भी निश्चित नहीं है । देखूँगा कौन सी नौकरी मिलेगी तब फ़ैसला लूँगा । IRS के बाद की नौकरी तो शायद नहीं ही ज्वाइन करूँगा । अगर IAS , IFS , IPS , IRS की रँक आ जाएगी तब विचार करूँगा ।

उसी समय आई आई टी बम्बई के रंजन अग्रवाल से मुलाक़ात हुई । वह इंटरव्यू के समय पहली वरीयता IAS को दिये हुये थे । इंटरव्यू के बाद उन्होंने उसको बदल कर पहली वरीयता IRS कर दिया । थोड़ी देर बाद जे एन यू के रितेश सिंह आये , सिगरेट पीते हुये वह सिद्धांत शरीवास्तव के

बचपन के मित्र थे । वह सिर्फ IPS बनना चाहते थे पर उनका सीना 4 इंच फूलता ही न था । जगदंबा मौर्य 5 फ़िट 3 इंच के थे वह चिंतन सर के साथ पढ़े थे , वह हर वक्त अपनी लंबाइ वहीं नापा करते थे कि IPS मिलेगा की नहीं ।

चिंतन सर उनको नेपोलियन बोनापार्ट कहते थे । इतनी विविध दुनिया मैंने कभी देखी ही न थी ।

मेरे सपनों को नया पर मिलने लगा कि अब मैं चिंतन सर और बद्री सर के तरीकों से नहीं इनके तरीकों से काम करूँगा ।

मैंने सिद्धान्त से कहा , एक बात बतायें आपकी हाबी क्या थी ? ...

वह बोले यार सुबह से मूड ख़राब है थोड़ा चैन लेने दो ..

वह फिर सिगरेट सुलगाने लगे ।

सिगरेट का कश छोड़ते हुये बोले

Garedening and music ..

इतने राजीव सिंह जिनकी हाबी आम की विभिन्न क्रिस्म लगाना थी वह सिद्धान्त से बोले आपको बुला रहे ।

वह सिगरेट को जूते से मसलते एक पैर को ज़मीन पर घसीटते कुछ बहुत बेहतर नायाब से शब्दों को बोलते चल दिये कलर्क से लड़ने ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 43

सिद्धान्त श्रीवास्तव का मेडिकल टेस्ट तीन दिन पहले था । वह उस दिन आये ही नहीं थे । कलर्क ने कहा आप का तीन दिन पहले टेस्ट था और आप आज आ रहे । सिद्धान्त बोले , मैं सो गया था इसलिये न आ सका । वह कलर्क बोला आप CMO से परमीशन लेकर आओ । सिद्धान्त बोले वह मैं ले चुका हूँ । मैंने उसी दिन application देकर change करा लिया था । कलर्क ने बोला कि वह चिट्ठी दिखाओ जो परमीशन की है । वह चिट्ठी उनके पास न थी । वह चले गये CMO के पास ।

मैं सोचने लगा क्या व्यक्तित्व है , एकदम बिंदास । कोई फ़िकर ही नहीं । यहाँ मैं हूँ कि बस एक ही काम में लगा हूँ । वह थोड़ी देर बाद आए और बोले अभी फोन आ जाएगा । कलर्क बोला फ़ोन आएगा तब आपका मेडिकल होगा , आप बाहर बैठो । वह बोले ठीक है , हमको भी कोई जल्दी नहीं । वह फिर सिगरेट सुलगाने लगे । मैंने पूछा कि आप क्यों नहीं आए उस दिन ?

वह बोले कि सो गया था , रात में कुछ ज्यादा हो गई थी ।

मैं समझा नहीं । मैंने पूछा क्या ज्यादा हो गई थी ?

वह बोले तुम लोग वेस्ट लैंड वालों को कुछ समझ न आता है । दारु ज्यादा हो गई थी ।

मैंने पूरे आश्चर्य से पूछा आप शराब पीते हो क्या?

वह बोले आप तो गंगाजल पीते होंगे ?

मैंने कहा “हाँ” पर वह तो शुद्ध है , पवित्र है , पावन है ।

सिद्धांत बोले कहाँ लिखा है कि यह अपवित्र है , अपतित है , अपावन है ?

मैंने सोचा कि अपने मुद्दे पर आते हैं , यह बहस करने से कोई फ़ायदा नहीं । पता तो करें कि यह सब किस मिट्टी के बने हैं , कैसे पढ़ते हैं ।

मैंने पूछा इंटरव्यू कैसा हुआ ?

वह बोले मेरी हाबी है western music पर बोर्ड indian music पर ही सवाल कर रहा । मैंने बताया कि दिन के राग , रात के राग , कर्नाटक संगीत , भारतीय संगीत पर भी कुछ बताया वह Western music पर सवाल ही नहीं कर रहे थे , फिर मैंने कहा कि मुझे indian music कम पता है मेरी हाबी Western music है ।

मैंने कहा वह संगीत तो अंग्रेज़ी में होता होगा ?

वह बोले आप कहाँ से पढ़े हो ?

मैं बोला , हिंदी माध्यम स्कूल से । वह बोले तब क्या फ़ायदा इस मुद्दे पर बात करने का ।

इतने में क्लर्क ने बुलाया उनको और कहा कि फ़ोन आ गया है , आप का मेडिकल होगा ।

चिंतन सर और जगदंबा मौर्य साथ ही थे । चिंतन सर ने बताया कि यह महान मेधावी हैं पर ईश्वर ने क़द छोटा कर दिया और अंग्रेज़ी का pronunciation न दिया । यह शेक्सपीयर को शेक्सफ़ीयर बोलते हैं पर पूरा शेक्सपीयर याद है पर हिंदी में । हम लोग एक साथ बीए में अंग्रेज़ी को हिंदी में पढ़े थे ।

संजीव टंडन ने यह सुन लिया । वह आ गए यह पता करने कि अंग्रेज़ी को हिंदी में कैसे पढ़ा जाता है ? बातचीत में चिंतन सर बोले कि नेपोलियन बोनापार्ट की कुँडली देखी है इस बार मैंने , इनका भाग्य परबल है । संजीव टंडन से कहा , आपकी माथे की रेखाएँ ज़बरदस्त हैं , यह कह रहीं , आपका इस बार परबल संयोग है । टंडन साहब पूछे आप ज्योतिषी हो क्या?

जगदंबा मौर्य ने कहा कि यह इनका व्यवसाय है । यह जजमानी करते हैं । ज़ब संजीव टंडन को जजमानी समझ आयी तब वह बोले कि मेरी कुँडली देखकर बता दो मेरा भविष्य क्या है ?

टंडन साहब को अपनी कुँडली याद थी । उन्होंने चक्र एक काग़ज पर बना दिया । चिंतन सर का तो यह रोज़ का काम था । वह तो जजमान को साधते ही थे अपनी इस कला से । वह लगे ग्रह की अवस्थिति और उसका प्रभाव बताने । संजीव टंडन भी कुँडली के बारे में कुछ- कुछ ज्ञान रखते थे । वह दो साल से सफल नहीं हो पा रहे थे इसलिये वह ज्योतिषियों के चक्र कर लगाया करते थे । चिंतन सर ने कहा कि आप IPS नहीं होंगे । आपका IRS का प्रबल योग है । यह बात सीधे निशाने पर लगी । संजीव टंडन ने IPS वरीयता में दिया ही न था । वह IRS बनने की खाहिश रखते थे । चिंतन सर ज्ञानी वहाँ उद्घोषित हो गये ।

एक 6 फ़िट 5 इंच का आदमी IPS नहीं बनना चाहता । एक 5 फ़िट 3 इंच का बनना चाहता है । इसमें एक महत्वपूर्ण कारण परिवेश था ।

मैं एक विरोधाभास से भरा हुआ एक बहुत ही अलग विश्व देख रहा था । यह दुनिया मुझे सम्मोहित कर रहा था । यह समाज का अन्तर्विरोधों कई स्तरों पर था । मैं एक परम्परागत परिवार में पैदा हुआ , एक धार्मिक परिवेश मेरे चारों ओर था पर मेरा कुँडली , पूजा-पाठ में कोई ख़ास य़क़ीन न था । संजीव

टंडन आई आई टी के पढ़े , पूरी ज़िंदगी सिफ़्र विज्ञान ही सीखा , जेएनयू , आई आई टी दिल्ली के परिसर आपस में सटे हुये हैं और उस परिसर का माहौल पाश्चात्य ऐसा है । उसी माहौल में रहने वाला मेयो कालेज अजमेर का शिक्षित एक सम्भ्रांत परिवार के व्यक्ति का होकर कुंडली में अतिशय यक़ीन रखना , मुझे आश्चर्यजनक लग रहा था ।

वह लगातार चिंतन सर से पूछ रहे अपना भविष्य । कुंडली बाँचने वाले बहुत माहिर होते हैं । वह आपका कुछ ऐसा भूत काल , बीता हुआ समय बताते हैं जो सही ऐसा होगा । मेरे हिसाब से वह कुंडली से कम अपने अनुभव और अपनी बोलने की क्षमता से ज्यादा चमत्कृत करते हैं ।

चिंतन सर ने संजीव टंडन के बारे में कहा , ” आप बहुत मेधावी एवम् लगनशील हो पर समय समय पर आप ट्रूट जाते हो लेकिन फिर आप अपने को संगठित कर लेते हो । बचपन में आप के साथ एक दुर्घटना हुई थी पर ईश्वर ने आपका जीवन बचा लिया । आपका मस्तिष्क बहुत तीव्र है आप मेहनती हो पर आलसी भी हो । आप उदारमना हो । आप 10 आदमी को खिला कर शाम को सोने में यक़ीन रखते हो । आप के यहाँ व्यापार होता है पर वह व्यापार आज कल मंदा है थोड़ा । ईश्वर चाहेगा तो आप एक पूरी महकमा पालोगे । आप के बृहस्पति बहुत उच्च घर में हैं । आपके दुख के दिन गये । । आप बोरिया बिस्तर बाँध लो नागपुर के लिये । आपमें IRS का प्रबल योग है “ ।

अब यह कहा चिंतन सर ने कुंडली देखकर पर यह बग़ैर कुंडली देखे भी आप किसी के भी बारे में कह सकते हो । यह ज्यादातर लोगों के साथ सही ही उतरेगा ।

संजीव टंडन खुशी के अतिरेक में । वह जो चाह रहे थे सुनना वह सर ने कह दिया । जीवन की पिछली घटनाएँ सच निकली । चिंतन सर एक महान ज्योतिषी बन गये उस दिन के लिये । सब उनसे पूछ रहे अपना भविष्य । वह माथे की लकीरें और हाथ की रेखाएँ भी देख लेते थे । सिद्धांत ने कहा यह अजीब धंधा फैलाये हैं , खुद हर साल फेल हो रहे । अपना भविष्य पता ही नहीं दूसरे का बता रहे ।

मेडिकल टेस्ट भी धीरे -धीरे बढ़ता जा रहा था । यह सारा नाटकीय कार्यक्रम उस भीड़ में ख़ाली समय में होता था । सिद्धांत उस मीरा की भजन की हाबी वाली जे एन यू की लड़की से पूछ रहे थे कि यह मीरा क्या लिखती

थी । उसने कहा मीरा ने लिखा कम है पर उसमें भाव विहवलता बहुत है । सिद्धांत बोले ... can you translate in

English . चिंतन सर ने कर दिया । चिंतन सर बीए में अंग्रेज़ी कम पढ़े थे अनुवाद ज्यादा सीखे थे ।

ऊँचाई नापने का समय आया । पहली दुर्घटना हो गई । जगदंबा मौर्य जो अपने मोज़े के नीचे रुई लगाकर आए थे , पर रुई बेचारी कितना सँभाले । एकाध इंच की बात हो तो ठीक है यह पाँच इंच का फ़र्क कैसे सधे । 161 सेंटीमीटर की लंबाई नापी गई । वह कह रहे , एक बार और नापे । चिंतन सर कह रहे एक बार और नाप दो , यह काँटा ठीक नहीं बता रहा । जो नाप रहा था वह बोला दो बार तो नाप दिया , कितनी बार नापे । नापने से बढ़ जाएगी क्या? इतने लोग लाइन में हैं , एक ही नापते रहे क्या ।

जगदंबा मौर्य IPS से बाहर । दुख का पहाड़ टूट पड़ा । वह हताश होकर बाहर बैठ गये , मैंने पूछा चिंतन सर से यह IPS के लिये इतने प्रतिबद्ध क्यों है ? देखो कितने लोग हैं जो IPS चाहते ही नहीं । वह मीरा के भजन वाली लड़की , यह संजीव टंडन , यह रंजन अग्रवाल..... आदि , आदि

चिंतन सर एक मनोवैज्ञानिक भी अच्छे थे । वह जजमानों के साथ रहते - रहते मानवीय मन का चित्रण , विघटन सब पढ़ना सीख गये थे । वह बोले यह दबंगों -लठैतों के गाँव में रहते हैं । इनका खेत वह सब क़ब्ज़ा किये हैं । पुलिस भी सुनती नहीं । यह मेरे साथ सेलेक्ट हुये थे यू पी पीसीएस में । इनकी रैंक थी बारहवीं पर पा गए सेल्स टैक्स । यह पाँच इंच इनके जीवन की बहुत बड़ी पीड़ा है । इनको दबंगों ने लतियाया ही है और पुलिस ने भी । एक बात नोट कर लो , जो भी कभी पुलिस का एक थपरा पा जाता है वह पुलिस ही बनना चाहता है । इनके अंदर एक पुलिस रूपी अश्वत्थामा वास कर रहा है । वह कभी मरेगा नहीं । इनके अंदर रहकर ताउमर इनको पीड़ा देगा ।

अगला नंबर आया सीना फुलाने का । मिश्रा सर और चिंतन सर ने इतनी तेज की हवा निकाली की फ़ीता ही नापने वाले के हाथ से छूट गया । मिश्रा सर बोले कि यह पहलवानी का सीना है थोड़ा तगड़ा फ़ीता रखा करो ।

वहाँ दूसरी दुर्घटना घट गयी । रितेश सिंह का सीना चार इंच फूला ही नहीं । वह बोले कि लगता है बाबू गीरी की नौकरी करनी पड़ेगी । सिद्धांत उनके मित्र थे । वह नापने वाले से बहस कर रहे ठीक से देखो । यह है चार इंच । नापने वाले ने एक न सुनी । वह अगले का नापने लगा ।

सिद्धांत की ऊँचाई , सीना सब ठीक निकला । वह भी IPS बनना चाहते थे । पर शायद वह अमिताभ बच्चन से प्रेरणावित थे । वह 6 फ़िट 3 इंच के छरहरे बदन के थे , रंग थोड़ा साँवला था , आवाज़ भारी थी , चलने में थोड़ा एक अंदाज़ था । वह पैर घसीटना थोड़ा सा , मुझे लगता है उन्होंने अमिताभ बच्चन की किसी फ़िल्म से सीखा है । मैंने पूछा आप IPS क्यों बनना चाहते हैं ? उन्होंने जेब से काला चश्मा निकाला और पर लगाया , बालों को हाथ से पीछे किया और बोला समझ आया ?

मैं बहुत अच्छा लगूँगा IPS की वर्दी में ।

मुझे दिखने लगे वह बुलेट मोटरसाइकिल पर बैठे वर्दी में समाये सड़क पर मुक़द्दर का सिकंदर की तरह के अमिताभ बच्चन के रूप में वही गाना गाते । वाकई यह बहुत अच्छे लगेंगे । वहीं दिखे हताश बैठें जगदंबा मौर्य । जैसे ही उनको कल्पित किया वर्दी में लगा अच्छा हुया यह IPS न बने , लोगों का अपनी सुरक्षा के लिये पुलिस पर से विश्वास ही उठ जाता । संजीव टंडन रितेश सिंह से बोले कि रुको अभी जुगाड़ बनाते हैं आपका ।

वह रितेश सिंह को लेकर चले गये । मेरे पास आए आम की नस्लों के विशेषज्ञ राजीव सिंह । उनकी अंगरेज़ी में भी बिहार था और हिंदी में भी । वह बोले बंधु क्या किया है आपने ? आप इलाहाबाद के हो यह तो अंदाज़ा लग गया आपकी भाषा से

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 44

राजीव सिंह थोड़ा शांत दिखते थे पर वह शांत थे नहीं । उनके अंदर का अपना एक अलग तूफ़ान था । मैंने जितना सीखा पिछले कुछ महीनों में उतना मैंने पूरी ज़िंदगी में न सीखा । अगर मैं सिविल सेवा की परीक्षा न देता तो शायद यह जीवन मेरे नसीब में न होता ।

मैं यहाँ से वापस असफल होकर चला जाऊँ तब भी मैं एक ऐसा अनुभव साथ लेकर जाऊँगा जो मुझे जीवन में कोई न कोई मुकाम दे ही देगा । मैंने चक्रव्यूह बनाया बदरी सर के लिये , कमल व्यूह बनाया अपने लिये । मैंने

कितनी किताबें और भाषण पढ़े अपने इंटरव्यू के लिये । आँठी का वह संघर्ष देखा जिस संघर्ष को करने में बड़े-बड़े महानायक भी असमर्थ हैं ।

मेरी यह मान्यता दृढ़ होने लगी कि आप सिविल सेवा की परीक्षा में सफल हो या असफल , आप इस परीक्षा के आधार पर प्राप्त नौकरी ज्वाइन करो या न करो पर यह परीक्षा ज़रूर दो ।

मैं इलाहाबाद जाकर अब पूरे शहर में कहूँगा कि पी सी यस फिर कभी दे लेना पहले इस परीक्षा को दो । अपने अंदर से एक नये नायक को निकलने दो जो बेताब हैं निकलने के लिये आपके संघर्षों की वेदी से ।

इतने विविध लोग मुझे मिले बदरी सर , चिंतन , शशि , धनंजय , रितेश , सिद्धांत, संजीव , वह मीरा के भजन गाने वाली जे एन यू की लड़की और अब यह राजीव सिंह

इनसे बात करके एक अलग ही तरह के व्यक्तित्व का पता चला ।

बिहार के दूरवर्ती इलाके से चलकर दिल्ली विश्वविद्यालय के जुबली हाल तक की उनकी यात्रा रोचक है । इनका भी हाँथ अंग्रेज़ी में तंग है । यह अंग्रेज़ी लिख लेते हैं पर बोल नहीं पाते । यह मेंस पास करने के बाद रोज 20 घंटे अंग्रेज़ी बोलने का अभ्यास करते थे ।

मैंने पूछा कि आप सोते नहीं थे क्या?

यह बोले सोता था क़रीब 7/8 घंटे ।

मैंने पूछा फिर 20 घंटे कैसे अंग्रेज़ी बोलते थे ?

वह बोले मैंने अपने ख़बाबों को भी कह दिया था तुम अंग्रेज़ी में ही आना जब तक मेरा इंटरव्यू न हो जाए ।

मैंने पूछा कि क्या ख़बाबों ने सुन ली बात आपकी ?

वह बोले हम बिहार के उस गाँव के हैं जहाँ दिल तब टूटता है ज़ब यूपीएससी का attempt ख़त्म हो जाता है , ख़बाब दुनिया देखे पर हमने देखे हैं ख़बाब ताबीरों के लिये ।

मेरे ख्वाबों ने मेरा साथ दिया वह मेहरबां थे मुझ पर । मैं दिन में तो अभ्यास करता ही था , रात में सोते हुये भी अभ्यास किया ।

मैंने पूछा , फिर कोई और तैयारी ?

वह बोले यही हो जाए बहुत है और का समय कहाँ । मेरे छात्रावास में कई सीनियर लोग हैं वह कई साल इंटरव्यू दिये हैं , वह माक इंटरव्यू करके मदद कर देते हैं ।

मैंने पाया कि यहाँ इलाहाबाद और दिल्ली में अंतर है । इलाहाबाद में कोई किसी की मदद करता ही नहीं ।

इलाहाबाद में जो लोग माक इंटरव्यू आयोजित करते भी हैं वह बहुत कम लोगों को बताते हैं । मुझे भी जिस माक इंटरव्यू में बुलाया गया , वहाँ यह हिदायत दी गई किसी को बताना मत ।

यह जो सीनियर लोग हैं वह तो नये अभ्यार्थियों को फटकाने नहीं देते । मेरे साथ कितना बुरा बर्ताव किया अमित चौधरी ने । मिश्रा सर को भी पटाने में कितना वक्त लगा । आपको बस किताब का नाम बता देंगे । उसके आगे कुछ नहीं बताते । आधारभूत मूल किताबों के अलावा जो यह advance books हैं उसमें कुछ ही काम का होता है । सारा का सारा काम का नहीं होता । पर यह इलाहाबाद के सीनियर्स सब पढ़वा देते हैं । ए एल बाशम की पूरी किताब पढ़ने की कोई ज़रूरत न थी । उस किताब का कुछ ही भाग काम का था । इसी तरह भारतीय विद्या भवन सीरीज की मोटी - मोटी किताबें , रजनी पाम दत्त , ताराचन्द को पढ़ने की कोई ज़रूरत न थी । दर्शन शास्त्र के लोग राधा कृष्णनन की किताब पढ़ते थे । मुझे पूरी रणनीति ही शहर की ग़लत लगाने लगी । मेहनत बहुत ज्यादा पर परिणाम कम है ।

राजीव सिंह एम ए , एम फ़िल ज्योग्राफ़ी के पर मानसून का सवाल मैंस में लिखे NCERT से और उस पेपर में पाये भी 200 नंबर 300 में । यह एक समझ है इस परीक्षा के प्रति जो मेरे पास न थी । मुझे हाबी का कोई पता नहीं पर इन सबके पास हाबी थी ।

राजीव सिंह ने बताया कि उनकी हाबी थी आम का पेड़ लगाना ।

उनकी इस हाबी पर बहुत अच्छे- अच्छे सवाल हुये ,

मसलन -

यह हाबी आपकी कैसे विकसित हुई ?

उत्तर भारत -दक्षिण भारत के आम में क्या
फ़र्क है ?

बिहार में आम की कौन- कौन सी आम की प्रजाति होती है ?

क्या उत्तर और दक्षिण आम को वर्ण संकरण का प्रयास किया गया ?

आम का पौधा कहाँ से लाते हो ?

मैंने कहा इसका जवाब भी बता दो । वह भले आदमी थे । जवाब भी बता दिया
। इलाहाबाद के लोग अपना इंटरव्यू भी नहीं बताते ठीक से ।

उन्होंने बताया कि उनके इलाके में अकबर ने दस हजार आम के पेड़ लगाये
थे , यह तथ्य बता कर अपनी बात शुरू की । मेरे पिताजी की भी इसमें रुचि
थी इसलिये मेरी भी हो गई ।

उत्तर भारत के आम दो साल में एक बार फल देते हैं जबकि दक्षिण में हर
साल फल देते हैं । इसलिये गुणवत्ता में भले ही उत्तर के आम बेहतर हों पर
मात्रा में दक्षिण के ज्यादा होते हैं । आमों के वर्ण संकर करने का भी प्रयास
हुआ पर वह परिणाम न निकला जिसके निकलने की उम्मीद थी ।

आम की बिहार की मशहूर प्रजाति है - माल्दा, फ़ज़ली, सीपिया, मालभोग,
रोहूपसंद, जहाँगीर पसद, कपूरिया ।

बोर्ड ने पूछा कपूरिया क्यों कहते हैं । बताया मैंने कि इसको काटो तब यह
कपूर की तरह की सुगंध देता है । मैंने आम्रपाली का ज़िकर किया तब
उन्होंने पूछा कि यह पौधा कहाँ से लाते हो ?

मैंने बताया कि ICAR से ।

बोर्ड ने कहा कि ICAR से या IARI से ?

यह मुझे ठीक से न पता था । मैंने कहा कि मैं 152 नंबर की बस पकड़ कर जाता हूँ और पूसा इंस्टीट्यूट के दाहिने ओर की नर्सरी से लेता हूँ । बाद में पता चला कि ICAR एक University है और IARI उसके अधीन है ।

मेरी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी । मैंने पूछा कि यह नायाब सी हाबी थी या आपने विकसित की ?

वह बोले देखो भाई हम कोई बड़े शहर, स्कूल के थे नहीं । छोटे गाँव - शहर से आये थे । दिल्ली पहुँचे सिविल सेवा का लक्ष्य लेकर । यहाँ अपने सीनियर बोले कि हाबी होनी चाहिये इंटरव्यू के लिये । जब हाबी होनी ही चाहिये इंटरव्यू के लिये तो देखा कौन सी हो सकती है । गाँव - देहात में खेती बाड़ी ही आधार है जीवन का । यह आपकी इच्छा है इसको जीविका कहो या हाबी ।

मेरे पिताजी को ज़मीन ख़रीदने का शौक था । उनको ही क्यों कहें, हमारे इलाके में सबका यही शौक था । बाग लगाना भी एक शौक होता ही है । हम ठहरे ठाकुर हलाँकि ठकुरई का विख्यात सा कोई संस्कार है नहीं मुझमें पर किसके पास कितने बिगड़े का बाग है, यह ठाकुरों में एक प्रतिष्ठित देती थी । यह प्रतिष्ठा सबको देती थी पर शायद हमारे इलाके के ठाकुर परिवारों में बाग के प्रति लगाव ज्यादा था ।

हमारे पिताजी आम का बाग लगाते थे, उसी में हम लोग भी रसे रहते थे । इसी को बना लिया हाबी । अब कुछ तो फ़र्ज़ी गीरी इस परीक्षा में चलती ही है । पहले रही थी या नहीं, यह तो नहीं कह सकता पर अब हो गयी है ।

मिश्रा सर पूरी बात सुन रहे थे वह बोले भाई वही जानता है पीड़ा बेवाई की जिसके पैर में बेवाई निकली हो । अनुराग को क्या पता तुम्हारी पीड़ा का, यह तो धकाधक हिंदी में इंटरव्यू में बोल आए । आपकी अंगरेज़ी का सिर न होगा पर पैर होगा पर मेरी अंगरेज़ी का न सिर होता था न पैर ।

मैं कई बार खुद ही नहीं समझ पाता कि जो बोला है मैंने इंटरव्यू में उसका मंतव्य क्या है ? जब मैं ही नहीं समझ पा रहा तब इंटरव्यू बोर्ड का क्या दोष, वह तो असहाय है । इंटरव्यू बोर्ड पूरी ताक़त लगा रहा मुझे समझने की और

मैं कोशिश कर रहा समझाने की । नाकामयाबी दोनों तरफ । मैं असफल समझाने में वह असफल समझाने में । हम दोनों अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर पा रहे । यह दो कर्तव्यविमुख लोगों का संवाद होता था हर साल । मैंने कहा सर इस साल सब ठीक होगा ।

मिश्रा सर घबड़ा गए । मुझे अलग ले गए और बोला बताया तो नहीं कि मैंने भाषा बदल दी । सबका भरोसा है, यहाँ तक गिरगिटान का भी, पर तुम्हारा करना बहुत मुश्किल है । मैंने कहा ऐसा न कहें सर । मैं आपका चेला हूँ ।

सर बोले मेरा पूरा भविष्य है तुम्हारे हाथ, यह अगर लीक हो गया तो यह राजेश्वर सिन्हा, अमित चौधरी लिख मारेंगे यूपीएससी को । यह बात हमारे तुम्हारे बीच दफन हो जानी चाहिये ।

मैंने देखा आसमान में और कहा है परभु तू कितना दयालु है । शिकार मेरे हाथ में दे दिया । अब अगर यह चयनित हो गये और नोट्स, मटीरियल न दिया तब इनकी नौकरी खा जाऊँगा मैं । यह अमित चौधरी, राजेश्वर सिन्हा से डर रहे । मैं साक्षात काल हूँ इनके लिये अगर यह मुझे अगले साल के लिये नोट्स न दिया ।

मैंने कहा सर आपका चेला हूँ आपके लिये खुद को खत्म कर दूँगा और मन में कहा कबूतर खुदबखुद बहेलिये के चंगुल में ।

मुझे खुद नहीं मालूम मैं क्या करूँगा । मेरे रास्ते में जो भी आएगा उसे मेरे साथ नहीं मेरे पीछे भी चलना होगा । मेरे पास अभी तीन अवसर और हैं । मैं लैस कर रहा अपने को आगामी वर्षों के लिये भी । जिन चट्टानों को हथौड़े न तोड़ पाएँगे उनको मैं अपने जज्बे से निकली हवाओं के वेग से तोड़ दूँगा । मेरे पास सिर्फ़ जीने की हवस नहीं है मेरे पास अपनी मर्जी से जीने की चाहत है ।

ऐ माँ तेरे होने से ही मैं बहुत महफूज़ हूँ । मेरे लिये तेरा होना ही बहुत है । तूने की कहा था जिससे मौत हार जाए उससे कौन जीत सकता है । मैं रेंग कर ही सही मंज़िल तक ज़रूर जाऊँगा । तूने अपने जिन ख्वाबों को ज़माने से छिपा रखा था मेरे लिये कि कहीं ज़माने को उसकी नज़र न लग जाए उन ख्वाहिशों का बोझ लिये तेरा जनाज़ा नहीं सजेगा । मेरी ज़मीं पर ज़िन्दा रहने की पहली शर्त है, तुझे तेरे सत्कर्मों से विलग न करूँ ।

मैं आकर तेरे सारे सत्कर्म तुझे वापस कर दूँगा । मैं दुर्योधन नहीं बनना चाहता अपनी राज्य प्राप्ति के लिये जिसने अपनी माँ का सारा तप ले लिया । मुझे कर्ण की तरह अंग राज्य नहीं चाहिये, मुझे अपनी ज़मीन जीतने दो ।

मैं साहिल से तूफानों की तरफ गया हूँ बहकर वापस आने के लिये नहीं, तूफानों पर सवार होकर यह कहने को ए नीला आसमां कुछ और ऊपर हो जा, लहरों में मेरा हौसला समाया है, मुझे तेरी ऊँचाइयाँ कम लग रहीं ।

मुझे विजय चाहिये, किसी भी शर्त पर । मैं जवाब दे लूँगा परम पिता को अंतिम दिन अपने गुनाहों के लिये उसकी इजलास में । मैं कह दूँगा मुझे अपना गुनाह क़बूल है पर यह तो बता, तूने कितनों के साथ न्याय किया है?

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 45

चिंतन सर की ख्याति फैल चुकी थी । संजीव टंडन चिंतन सर के मुरीद हो चुके थे । वह सबसे कह रहे थे कि ज्योतिषी इतना बेहतर मैंने न देखा कभी । हस्त रेखा, माथे की लकीरें, कुँडली का चक्र सब आता है । बचपन से ही यह ज्ञान है । वह सर को पटा रहे थे । गाज़ियाबाद में आकर और कुँडली पर विचार कराने की । सर ने कहा परचम बुलंद हैं अगर आप नागपुर न गये तो मैं कुमारिल भट्ट की तरह अग्निमेषित कर लूँगा अपने आप को ।

सिद्धांत ने पूछा यह अग्निमेषित क्या होता है?

सर ने कहा आग में अपने को जला देना ।

सिद्धांत ने कहा बहुत दर्द होगा यह मत करना । सर बोले यह एक ब्राह्मण का वचन है लिख लो । यह IAS नहीं हो सकते विधाता ने IRS लिख दिया है, बस इनको वह भोगना बाक़ी है । संजीव टंडन बोले कंटाल आ गया हूँ इस पढ़ाई से, मुक्ति दिलाओ IRS के अलावा कुछ और नहीं चाहिये ।

कई लोग सर के पीछे लगे थे अपना भविष्य जानने की आकांक्षा से । उनमें से एक जे एन यू की रागिनी सिंह भी थी ।

रागिनी सिंह सामान्य कद की एक आकर्षक दिखने वाली छात्रा थी । आकर्षण जितना रूप में था उतना ही उनके भाव, भंगिमा और नफ़ासत में भी । वह बोलते समय शहद बिखेर देती थीं । उन्होंने चिंतन सर से अपना भाग्य जानने की प्रबल इच्छा व्यक्त की । संजीव टंडन चिंतन सर की तारीफ़ के पुल जो बाँध रहे थे, वही सुनकर रागिनी आयी थी ।

चिंतन सर का एक ही काम था उस दिन का, लोगों का भविष्य बताना । यह तो उनका पैतृक व्यवसाय भी था । कई बार उनको ढूँढ़ना पड़ता था मेडिकल के लिये, इतने मशगूल होते थे कुंडली देखने में ।

रागिनी ने मनोविज्ञान और anthropology से मेंस दिया था । यह वह दौर था जब anthropology में नंबर मिलना कम हो रहा था । इसके तीन- चार साल पहले यह विषय धूमकेतु की तरह आया था और परसिद्धि को प्राप्त कर गया था । बहुत से लोगों ने इस कामधेनु से अपनी वैतरणी पार लगा ली थी । इस विषय की खोज IIT दिल्ली वालों ने की थी फिर यह जेएनयू में प्रवेश कर गया था । दोनों संस्थानों की चहारदीवारियों में एक साझा संबंध था, इसलिये विषय भी इधर से उधर और उधर से इधर आया करते थे । सामने का ही जवाहर बुक स्टोर धकाधक कोचिंग के नोट्स की फोटोकापी बेचकर अपना बाज़ार तेज चला रहा था ।

सिविल सेवा परीक्षा में विषयों का दौर आया करता है । जैसे दिल्ली में Anthropology की धूम थी वैसे ही इलाहाबाद में हिंदी साहित्य की । कोठारी कमीशन के पहले की परीक्षा पद्धति में इतिहास बहुत परसिद्ध था । दो इतिहास का पेपर ले लो । एल मुखर्जी, सफ़ीयर आदि कुछ आधारभूत किताब पढ़ लो वैतरणी पार । पर नयी प्रणाली में इतिहास का पाठ्यक्रम पहाड़ ऐसा कर दिया गया था, इसलिये इस विषय से नदी पार करना आसान नहीं रह गया था ।

रागिनी का मनोविज्ञान पर नियंत्रण था, उससे वह निश्चिंत थी पर Anthropology में अंक नहीं मिल रहा था, इसलिये वह चिंतित थी । उनकी हाबी भी विशेष थी । मार्डर्न पेंटिंग करना ।

यह “modern painting करना “

शब्द मैंने पहली बार सुना था । इसके पहले यह शब्द मुझे न पता था । मेरी उत्सुकता का कोई अंत ही नहीं हो रहा था उस दिन, चिंतन सर और बद्री

सर ठीक कहे थे कि समय बहुत अच्छा बीतेगा , भिन्न- भिन्न तरह की प्रतिभाएँ अपना जलवा दिखाएँगी ।

मैंने पूछा कि यह माडर्न पेंटिंग क्या होती है ? रागिनी ने बताया जिसमें कल्पनाशीलता की गुंजाइश बनाने वाले के साथ- साथ देखने वाले के लिये भी हो । एक ऐसी रचना जो देखने वाले की कल्पना को उड़ान दे । जो मैंने कल्पित करके बनाया उससे भिन्न भी देखने वाले को मिल जाए ।

मैंने कहा , मैं थोड़ा कम IQ का हूँ , मंद बुद्धि की तरह का हूँ थोड़ा समझने में वक्त लगता है । कृपया स्पष्ट थोड़ा और कर दें । रागिनी ने कहा ,

“One should learn modesty from you “.

रागिनी ने बोलना आरंभ किया । मैंने अनुरोध किया अगर हिंदी में बोलें तो मुझे सुविधा होगी । चिंतन सर बोले , मैडम देख कर लग रहीं हैं अंग्रेज़ी वाली पर हैं हिंदी वाली , चिंता न करो हिंदी में ही समझाएँगी । सर ने कहा , मैडम इस बालक की उत्सुकता शांत कर दो फिर इत्मीनान से आपका भविष्य बाँचते हैं ।

रागिनी ने बताया कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से जो एक कला आन्दोलन विकसित हुआ जिसने कला में एक नये दर्शन का समावेश किया , उसी को आधुनिक चित्रकला कहते हैं ।

यह एक ऐसी विधा है जिसमें पुरानी परम्पराओं का स्थान प्रयोग धर्मिता ले रही थी । कला के बने बनायें मानदंडों को यह तोड़ रही थी । पिकासो , सल्वाडोर डाली , एंडी वरहोल , कलाउड मोनेट आदि नये प्रयोग कर रहे थे । अगर आप फ्रांसीसी करांति के बाद उपजे विश्व को देखो तो आपको दिखेगा कि किस तरह कला पुरातन व्यवस्था का केंचुल उतारकर नये परिवेश में सामने आ रही थी ।

यह प्रयोग चित्रकला के कथ्य में भी था और शिल्प में भी था । तस्वीर के अंदर की प्रकृति भी बदल रही थी और बनाने का ढंग भी बदल रहा था । जैसे एक साहित्य में आन्दोलन होता है वैसा ही कला में भी हो रहा था । रंगों में नवीन प्रयोग हो रहे थे । परम्परागत लाल , नीला , पीला रंग वह होकर भी वह न था जो आप पहले से देख रहे थे ।

वह रंग वैसे न थे बल्कि वह अलग सा होने लगे थे क्योंकि कलाकार बने बनाये रंगों का जो मापदंड था उसकी सीमा को भी तोड़ना चाह रहे थे ।

यूरोपीय , मुगलकालीन चित्रकला शैली या प्रान्तीय चित्रकला शैलियों से चली आ रही कला परम्परा से भिन्न एक पूर्ण स्वतन्त्र चित्रकला शैली हैं जो चित्रकार को पूरी छूट देती है अपने कल्पना के विस्तार की , भाव के अभिव्यंजना की । इस आन्दोलन में *Impressionism* , *Expressionism*, *cubism* , *abstract expression* सब कुछ है , पर में *abstract expression* में बहुत यकीन करती हूँ ।

मैं एक नये विश्व में था । यह पहली बार सुन रहा था , इतनी बारीकी से । सिविल सेवा की तैयारी में कल्चर पढ़ते समय कुछ पढ़ा ज़रूर था पर इतने विस्तार से कभी सोचा ही नहीं ।

मैंने पूछा , यह *abstract expression* क्या होता है ?

रागिनी ने बताना शुरू किया , इस माडर्न स्कूल का आरंभ Paul cezanne ने किया । हर नई वस्तु के स्वीकार करने में वक्त लगता है, स्थापित कला प्रतिमान इसको अस्वीकार कर रहा था पर यह अपनी कलाकृतियाँ बना रहे थे ।

Abstract को अगर आसान शब्दों में बताऊँ तो वह है जिसमें चीजें स्पष्ट न हों बल्कि अस्पष्टता में एक सफल अभिव्यक्ति हो । अगर सब कलाकार ने कह दिया तब क्या रह गया कला में ? कलाकार वह होता है जो पाठक / दर्शक की कल्पनाशीलता को एक उड़ान दे । यह आधुनिक चित्रकला यही कहती है । यह आधुनिक कला एक ही चित्र में कई आयाम छोड़ देती है ।

एक फाँसी का फंदा और एक सामान्य फंदे में फ़र्क है । फाँसी के फंदे में मौत का भय आना चाहिये । यह कलाकार का उत्तरदायित्व है कि वह उसमें भय का सृजन करें और सिर्फ़ फंदे को देखकर दर्शक यह कह दे यह सामान्य फंदा नहीं फाँसी का फंदा है । कश्मीर की वादियाँ बनाए , चिनार के साये को को डल झील में उतारे, चिनार की पत्तियों में फँसी बर्फ़ दिखाए पर कश्मीर की वादी में छिपा दर्द भी रंगों में दिखना चाहिये ।

कश्मीर की सुंदरता में अगर वहाँ का दर्द आप नहीं डाल पा रहे तो आपकी कला अधूरी है । abstract ऐसा बनाओ कि सुंदरता भी हो और दर्द भी हो । यह दर्शक पर छोड़ दो वह कैसे देखता है उसको । इन्द्रधनुष बनाओ पर ज़रूरी नहीं कि रंग वही हो जो VIBHGYOR में है । पूरी आज़ादी है इसमें रंगों के प्रयोग की । VIBHGYOR बनाते हुये भी रंगों में प्रयोग की ।

इतना सुंदर विश्लेषण आधुनिक कला का , इस उम्र में अकल्पनीय मेरे लिये ।

चिंतन सर उनका भविष्य बताने लगे । बोले पति अच्छा मिलेगा । रागिनी बोली इसमें मेरी अभी कोई रुचि नहीं है । मेरा भविष्य बताओ ।

सर बोले राजयोग है ।

रागिनी - यह राजयोग क्या होता है ?

सर - यह राजयोग कहता है कि आपके अनुसार आपका जीवन चलेगा । अगर आपमें नहीं तो आपके पति में प्रबल योग है ।

रागिनी - मेरा बताएँ । पति के योग से भोग में मुझे रुचि नहीं है । मुझे अपने शौर्य पर यक़ीन है ।

सर - आपका शौर्य बहुत दूर तक जाएगा । रागिनी की जन्म तिथि से चिंतन सर ने कुंडली बना डाली । वह इस विधा के माहिर थे । सलाह दी कि आप सोमवार का व्रत करें, शिव की उपासना करें, आदित्य हृदय का जाप करें । सर ने कहा आपका नाम आपके पद से ज्यादा आपके गुण और व्यक्तित्व से होगा । रागिनी सातवें आसमान पर, हर्षातिरेक में भावुक हो गई । हर कोई चाहता है पद नहीं व्यक्तित्व से सम्मान की प्राप्ति हो ।

रागिनी पूछना बहुत चाह रही थीं पर पूछने में एक संकोच भाव था । सर यह समझ रहे थे, सर की पूरी ज़िंदगी ही इसी काम में बीती थी । उनको गाज़ियाबाद की बहुमूल्य पोस्टिंग भी इसी कला की देन है । जब वह मुरादाबाद में ट्रेनिंग कर रहे थे तब वहाँ के डीजी की कुंडली देखकर बताया था कि इस माह के बाद आप यहाँ नहीं रहेंगे आप शासन करेंगे । यह भविष्यवाणी सही साबित हुई और वह एकेडमी से सीधे सीओ सिटी गाज़ियाबाद बना दिये गये । चिंतन सर कहते थे मैं देश की सबसे बड़ी पंचायत संसद में जाऊँगा एक दिन और यह सब दुनियावी क़वायदें हैं रास्ते की ।

इतने में हुंगामा हो गया । गोरखपुर के एक पांडे जी थे । जो कलर ब्लाइंड घोषित कर दिये, वह उच्च स्वरों में कह रहे कि मैं कलर ब्लाइंड नहीं हो सकता आप फिर से चेक करो । पांडे जी की हिंदी बहुत शुद्ध थी । चेक करने वाला मलयाली था । वह समझ न पा रहा कि क्या हो रहा । सिद्धांत कह रहे फ़ारसी नहीं हिंदी बोलो । संजीव टंडन कह रहे हल्ला न करो जुगाड़ बनाते हैं ।

हम लोग चल दिये वह नई आपदा देखने । गोरखपुर के गौरवर्णीय अति आकर्षक नयन नक्षा के हिंदी से अति लगाव रखने वाले कैलाश पांडे जी मलयालम आँख चेक करने वाले पर दुर्वासा का कोप और परशुराम का पराक्रम लिये वाणी से हमला करते हुये, और संजीव टंडन कह रहे, रुको जुगाड़ बनाते हैं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 46

कैलाश पांडे गोरखपुर विश्वविद्यालय के पढ़े हुये एक अतिशय परिश्रमी व्यक्ति । वह बचपन से नौटंकी के शौकीन थे । गाँव के इलाक़ों में मनोरंजन के साधन के रूप में नौटंकी, तमाशा बहुत हुआ करता था । यह नौटंकियाँ रात में हुआ करती थीं और पांडे जी के घर वाले उनको अनुमति नहीं देते थे नौटंकी देखने की, पर वह चतुर स्याने थे । वह तकिया लगाकर बिस्तर में मानव का स्वरूप बनाकर रात में नौटंकी देखने निकल जाते थे ।

नौटंकी लोक कला की एक मूल विधा है । इसमें भाषा नहीं बोलियाँ होती हैं । इसमें बोली की प्रधानता होती है । दूसरे स्तर का थियेटर शहरों में होता था और तीसरे स्तर के थियेटर में प्रयोगधर्मी थियेटर होता है जिसमें बादल सरकार, कारंत, संजय उपाध्याय, गणेश, पृथ्वीराज कपूर का काफ़ी योगदान है । यह नौटंकी की विधा बोलियों की विधा है और आंचलिक बोलियों का इसमें बहुत महत्व होता है । नौटंकी के नायकों के साथ खास बात यह होती है कि वह गायक और अभिनय कर्ता दोनों ही होते हैं । फ़िल्मों की तरह कोई पार्श्व गायक उसमें नहीं होता है ।

यह रंगमंच की एक ऐसी विधा है जिसमें अभिनेता का दर्शक से तादात्म्य एक अभिनय के साथ- साथ एक गायक का भी होता है । राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयों में आज भी इस विधा को पढ़ाया जाता है । देश के कोने - कोने में नौटंकी लोक नाट्य के रूप खुले माहौल में होती थी । बंद प्रक्षागृह का चलन

दूर दराज के इलाकों में न था और न ही कल्पनीय होता है । अंधेर नगरी , चरनदास चोर , घासीराम कोतवाल के साथ - साथ डाकू सुल्ताना , लैला मजनूँ , इश्क का भूत , आदि का मंचन होता था इस लोक विधा में ।

इसमें लड़कियों का रोल भी लड़के करते हैं । पांडे जी ने गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंधेर नगरी में एक चेले का रोल करके बहुत प्रसिद्धि पाये थे और गायन में इनकी विशेष रुचि थी । चेले के रोल का इनका डायलाग पूरे गोरखपुर विश्वविद्यालय में मशहूर था ।

IPS या customs में यह जाना चाहते थे । इसका कारण था इनका वर्दी से अतिशय लगाव । कस्टम की नौकरी में भी वर्दी मिलती है , यह इन्होंने सुन रखा था , यही वह कारण था जो यह कस्टम की नौकरी को वरीयता करम में ऊपर का स्थान दे रहे थे । इन्होंने अपनी सर्विस का वरीयता करम IAS , IPS , Custom , IRS भी कई बार सुना दिया था । अब कलर ब्लाइंड घोषित होने का मतलब यह था कि IPS से पत्ता साफ़ ।

पांडे जी यह मानने को तैयार न थे कि यह कलर ब्लाइंड हो सकते हैं । सिद्धांत ने मदद की दुभाषिया बनकर मलयालयी टेक्नीशियन एवम् पांडे जी के बीच बात बनाने में और यह समझाने में कि कैलाश पांडे की शिकायत क्या है , क्योंकि बार - बार मलयालयी टेक्नीशियन कहे जा रहा था , *I don't understand what he is talking* .

संजीव टंडन ने थोड़ा चापलूसी करके जुगड़ बना दिया और तय हो गया कि एक बार और किताब दिखा दो ।

संजीव टंडन बहुत गुरु चीज़ थे । वह जुगड़ बनाने में माहिर थे । वह पटाये मलयालयी को यह कहकर कि बेवजह यह ऊपर जाएगा CMO के पास कम्प्लेन करेगा क्या फ़ायदा । आप दे दो एक मौक़ा और । अब कलर ब्लाइंड है तो है , आज बदल तो जाएगा नहीं ।

मलयालयी बोला ,

See how he is talking ? First he should learn how to talk and say sorry for his behaviour then I will think .

पांडे जी गजबय ज़िद्दी, बोले मैं क्यों क्षमा याचना करूँ ? मेरी क्या गलती ? मैंने ठीक पढ़ा था , इसने सुना नहीं ठीक से ।

संजीव बोले , मौक़ा है जुग़ाड़ बना लो । लिख देगा अभी “अंधा “, आप घूमते रहना ।

पांडे जी को वर्दी याद आ गई । जिद छोड़ कर माफ़ी माँग ली । वह मलयाली भी कम न था , बोला

I will recheck at the end of all the candidates . Not only him but others also if there is an issue .

He should wait outside and I will call at appropriate time . He should learn how to behave properly . Is he deserving to become IAS , when he has no Sense of talking .

पांडे जी गम खाकर चुप रहे , सवाल वर्दी का था , पर बाहर आकर उसको कोस रहे । संजीव टंडन बोले जुग़ाड़ बन गया है , शांत रहो । ठीक से पढ़ना इस बार ।

हम सब इंतज़ार कर रहे जब पांडे जी कलर ब्लाइंड की किताब पढ़ेंगे ।

किताब आयी चमत्कार हो गया । कटाकट सारा पेज पढ़ गये । जब किताब बंद हुई तब बोले वह 69 वाला पेज फिर से पढ़ा लो , लाल गोले में हरा गोला ।

मलयाली बोला .. it's ok .. you are through please go .

बाहर पांडे जी आये , रहस्योदघाटन किया ।

पांडे जी बोले कि मैं गोरखपुर में आँख के डाक्टर के पास गया , यह पूरी किताब कंठस्थ कर ली । हर किताब के नीचे पेज नंबर होता है । पेज नंबर याद कर लो । पूरे डाक्टर वही किताब से जाँच करते हैं । आप पेज नंबर से बता दो क्या लिखा है नंबर लाल हरे गोले के बीच । पांडे जी ने जेब से एक

पर्ची निकाली और उस पर्ची में पूरा पेज वाइज़ लिखा था । संजीव ने पूछा
आप कलर ब्लाइंड हो क्या?

वह बोले यह नहीं पता मुझको , बस रट डाला ।
संजीव बोला ग़ज़ब जुग़ड़ी हो यार तुम । विंतन सर बोले यह बहुत आगे
जाएगा । इसके पास बहुत जिजीविषा है ।

रितेश सिंह परेशान धूम रहे । सिद्धांत, रितेश , संजीव टंडन सिगरेट का कश
पर कश मार रहे थे । रितेश सिंह के पास अलग तनाव की कैसे सीना फुलने
का काम सधे । संजीव टंडन कह रहे , जुग़ड़ बनाते हैं ।

वह गये सीने वाले के पास बोले कि थोड़ा सा ही उन्नीस- बीस है लिख दो
सही है । वह बोला नहीं पूरा एक इंच का फ़र्क़ है । वह अपील कर लें समय
मिल जाएगा , वर्जिश करके ठीक कर लो । मिश्रा सर पहलवानी किये थे वह
लगे गुरु मंत्र देने कि कैसे सीना चौड़ा होगा । रितेश बोले कि बेंच प्रेस
किया है बहुत जिम में पर काम न बना । मिश्रा सर बोले दंड मारो और ज़मीन
में हाथ रखकर सीना ऊपर उठाओ काम बन जाएगा । वहीं पर रितेश सिंह की
क्लास चालू हो गयी ।

मिश्रा सर ने दनादन दस पुश अप मार दिया , रितेश सिंह दूसरे में ही गिर
गये । सर ने कहा कि यह चिमनी बंद करो । अगर दिन में बीस सिगरेट
पियोगे तब कैसे होगा ? रितेश बोले कि यह मुश्किल है छूटना ।

मिश्रा सर सिद्धांत से पूछे कि तुम पटना से मुंबई कैसे पहुँच गये पढ़ने , लोग
तो दिल्ली आते हैं । सिद्धांत भी भगवान के बनाए एक नायाब हँकीक़त थे ।
वह जिस साँचे से बनाए गए थे , उसको ईश्वर ने तोड़ दिया था । ईश्वर के
पास भी कायनात में ऐसे महारथियों को सँभालने के लिये अतिरिक्त समय
चाहिये , इसलिये फ़ैसला किया कि बस अब और नहीं , यह एक ही बहुत है ।

वह बोले कि उनकी नानी मुंबई रहती थी । वह बम्बई आए थे धूमने और गए
सेंट ज़ेवियर देखने । वहाँ देखा एक लड़की लड़के से माचिस माँग रही
सिगरेट सुलगाने के लिये बस ज़िदिया गये , पढ़ेंगे तो बस यहीं । वह आ गये
बम्बई । वह आ तो गये पर करने लगे अवारागर्दी । यह तो हर एक के साथ है
ही कि रोज़ी- रोटी की समस्या सुलझानी ही है । वह ठहरे ठेर बिहारी सिविल
सर्विसेज़ देना खून में ही है , भर दिया फार्म । अब ईश्वर की दयालुता को तो

कोई जानता नहीं । वह इन पर दयालु हो गया , पहुँच गये चक्रव्यूह के अंतिम द्वार पर । यह सारा दिन रेबैन का काला एवियेटर चश्मा लगाये रहते हैं कि IPS बनेंगे तब लगायेंगे । इतना ही क्या कम है कि यह वर्दी नहीं पहनते ।

संजीव टंडन बहुत ही प्रतिभावान हैं , उनका दिमाग़ कम्प्यूटर को मात दे दे । गणित में रामानुज के समकक्ष ऐसे । चिंतन सर कह रहे कि इनकी कुंडली में बहुत राजयोग है । वह आपदा प्रबंधन में माहिर हैं । वह समस्या का स्वागत करते हैं । वह बगैर समस्या हल किये जिंदा नहीं रह सकते । वह हर दिन सुबह उठ कर दूसरों की समस्या सुलझाते थे । वह सारा दिन IIT में गणित पढ़ते थे । उनकी असफलता का एक कारण यह भी था कि वह खुद कम पढ़ते थे लोगों को ज्यादा पढ़ते थे । रात में वह नहीं सोते थे । वह सुबह पाँच बजे सोते थे । दिन में 12 बजे से वह गणित पढ़ते थे ।

इसके बाद शाम को जे एन यू निकल जाते थे लड़कियों को पढ़ाने । अब ईश्वर ने इतना दिमाग़ दिया वह लड़कियों के काम न आए तो लानत है ऐसे दिमाग़ को । इनकी याददाश्त ऐसी कि यह अपने जन्म के पूर्व की घटनाओं को भी याद कर लें । यह आजकल ज्योतिषियों के चक्कर में दिन रात घूमते रहते हैं , इसी प्रक्रिया में यह कुंडली देखना भी कुछ-कुछ सीख गये । चिंतन सर इनको एक कुंडली के नये गुरु मिल गये ।

वह जुगाड़ के मास्टर , कोई समस्या आ जाए तो वह कहते थे , रुको जुगाड़ बनाते हैं । वह बहुत ही मिलनसार और लोगों को मदद करने में यक़ीन रखने वाले उदारमना थे । वह बीच- बीच में लोगों को खाने का समान भी लाते थे । वह सामान अपने लिये ही नहीं बल्कि बहुत बड़ी मात्रा में लाते थे । कैलाश पांडे , चिंतन सर सब उड़ा जाते थे ।

चिंतन सर को पटाने में संजीव टंडन लगे थे । वह बोले आप शाम को आओ , आई आई टी वहाँ से आपको जे एन यू ले चलते हैं । जे एन यू में रितेश सिंह थे और सिद्धांत उन्हीं के यहाँ रुके थे । सिद्धांत और रितेश पटना के एक ही स्कूल के पढ़े थे । रितेश सिंह ने भी कहा , आओ भइवा , शाम का जलवा दिखाते हैं ।

सिद्धांत दिखते अवारा की तरह थे पर वह बहुत ही genuine आदमी थे । वह बी ए पास थे पर उनका दावा था कि उनको इंजीनियरिंग , डाक्टरी सब आती है । वेद व्यास के बाद किसी को ज्ञान की प्राप्ति हुई तो उन्हीं को हुई ।

वह अपने भविष्य को लेकर चिंतित थे पर वह एक परिपक्व आदमी थे । वह अंदर की चिंताओं को अंदर ही संभाल लेते थे ।

इसी बीच मुलाकात हो गई मोटे एवम् छोटे क़द के अमर गुप्ता जो यू पी के बाराबंकी ज़िले में एस डी एम थे और अपना भविष्य अजमा रहे थे ।

चिंतन सर ने कहा, यह भी ग़ज़बै चीज़ है ।

अमर गुप्ता, एक छोटे क़द के थोड़ा वज़न लिये हुये बहुत ही हँसमुख उम्मीदवार । वाकपटुता एक इनायत ईश्वर की साथ इनके । उत्तर प्रदेश के बाराबंकी ज़िले में एस डी एम सदर । करीब 5 साल पहले की पीसीएस परीक्षा में टाप करके उत्तर प्रदेश प्रान्तीय सिविल सेवा में चयनित हुये । कई बार से सिविल सेवा में भाग्य की आज़माइश हो रही पर संयोग नहीं बैठ रहा । हर बार यूपीएससी आते हैं और मेडिकल करा कर चले जाते हैं । वह पूरी प्रक्रिया में एक ही फ़ायदा देखते हैं कि फ़री में मेडिकल हो जाता है ।

वह सरकारी नौकरी और जीवन को एक नये तरीके से देखते हैं । इनका कहना है कि जीवन का सिफ़र एक कार्य है आराम से आक्सीजन वातावरण से लो और उतने ही आराम से कार्बन डाइऑक्साइड निकाल दो । इस पूरी प्रक्रिया में गांधी के सत्याग्रह का पालन करो, तत्परता आक्सीजन सोखने की हो पर व्यग्रता कार्बन डाइऑक्साइड को छोड़ने की न हो । उसको भी पूरी झज्जत से निकालो ।

गांधी जी कहते थे कि जिसको आप नहीं चाहते उसका भी सम्मान करो, अंगरेजों को देश से निकालो पर सम्मान से ।

गांधी का सत्याग्रह क्या है ?

यह सत्य से आग्रह क्या है ?

सत्य पर टिके रहना । सत्याग्रह में प्रेम है, सम्मान है । यह ऋषियों के लिये ही नहीं है यह जनसाधारण के लिये भी है । सत्याग्रह में अहिंसा शामिल है । यह वैष्णव विचारधारा है । आप टालस्टाय की “द गास्पेलस इन बरीफ़-व्हाट टू डू” पढ़ो जिसमें प्रेम की असीम संभावनाओं के बारे में कहा गया है । यह दोनों महान लोग कहते हैं प्रेम करो अहंकार नहीं, यहाँ आप जिसके पास जाओ वह आपको चाय पिलाकर अपना ऐसा बखान करेगा कि आपको लगेगा कि अपरत्यक्ष रूप से आपसे कह रहा, “बेवकूफ सुन मेरी यशगाथा” । यह एक हिंसा है, विचारों की हिंसा, यह कभी मत करना ।

उस व्यक्ति का भी सम्मान करो जिसे आप पसंद न करते हो या जिसे आप नाकाबिल समझते हो । जिसको आप पसंद नहीं करते उसमें भी गुण होता है, हो सकता है वह गुण आपके लिये मूल्य न रखता हो । यहीं से कार्बन डाईऑक्साइड और तथाकथित आपकी दृष्टि से नाकाबिल लोगों का सम्मान प्रारम्भ होता है । यह कार्बन डाईऑक्साइड ज़रूरी है पौधों के लिये, इसी तरह यह कम काबिल लोग ज़रूरी हैं समाज के संतुलन के लिये । इसलिये यह सम्मान की अवधारणा ज़रूरी है सबके लिये ।

गाँधी की नैतिकता में उत्पीड़न का कोई स्थान न था । यह अपनी बेवजह तारीफ करना सुनने वाले का उत्पीड़न करना है । यह एक प्रकार की हिंसा है, ठीक उसी प्रकार जिस काम में मन न लग रहा हो वह काम करना अपना उत्पीड़न है, अपने प्रति हिंसा है । जब विकल्प आराम करने का उपलब्ध है तो शरीर को कष्ट क्यों देने का ।

उनका कहना था जीवन का चरम लक्ष्य सिफ्ऱ एक है शरीर को सुख देना, बाकी सब डरामा है । आप डरामे से दूर रहो, चरम लक्ष्य की तरफ़ ध्यान दो । इस चरम लक्ष्य की प्राप्ति का पहला रास्ता इस बात से खुलता है कि अहंकार विहीन बनो ।

यह अफ़सरों के पास अहंकार होता है, “मैंने यह किया, मैंने वह किया, मुझसे पहले किसी ने कुछ न किया, मैंने कीर्तिमान स्थापित किया” ।

यह ज़िंदगी में कभी न करना न करने की सोचना । सबसे काबिल अफ़सर तो अंग्रेजों ने दिये जैसा हमें पढ़ाया गया । सन 1853 में जानमार्ल सिविल सेवा परीक्षा आरंभ की गयी । हम लोगों को नाकाबिल घोषित कर दिया गया । परीक्षा देता कौन था अंग्रेज । हम लड़े सत्तर साल “हमहूँ देबै परीक्षा” । चलो आप भी दे लो । आप भी आ जाओ । पर हुआ क्या?

बस कुछ पुल , कुछ इमारतें , कच्चे माल के दोहन के लिये रेलगाड़ी ।

हमारी गरीब जनता को क्या मिला ? रेलगाड़ी बनाकर उनका अनाज भी यूरोप में टूँस दिया , यहाँ सब मर गये अकाल से । यह रेलगाड़ी , यह इमारत से किसका भला हुआ ? आप यह देखो आपके काम से किसका भला हो रहा ? अगर काम से जनता का भला न हो रहा तो शरीर को आराम दो ।

84 लाख योनि के बाद मानव जीवन की प्राप्ति हुई है , ईश्वर ने दिमाग दिया है इसका उचित इस्तेमाल करो ऐसी युक्ति तलाश करने में कि कैसे कम से कम काम करके सुखून के पलों की प्राप्ति हो । आप इन खुद की तारीफ वाली सलोथर बकैती से दूर रहने का प्रयास करें ।

आप इन दुनियावी अहंकारों से दूर रहकर जीवन के चरम लक्ष्य शरीर को आराम देने पर काम करो । अगला जन्म पता नहीं कुत्ते का है कि गिरगिट का क्या पता ? चौरासी लाख योनि तक भटकना होगा । इसलिये इसको सुख से जियो , गलत कामों से बचो , ईश्वर की अराधना करो ।

हर आफिस में जाओ और देखो किसके नाम लिखे हैं 1947 के पहले के अफ़सरों में । यह नाम होगा अंगरेजों का या कुछ हमारे अंग्रेज परस्त अफ़सरों का । पर किया क्या इन सबने यह तो बताओ ?

कोई काम न किया । कहते सब हैं , “हमने यह किया , वह किया“ , पर किया कुछ ख़ास नहीं किसी ने ज़मीनी स्तर पर । बस एक सवाल का जवाब दो , वह जो कुछ भी किये हो आप वह अपने हित में किये या समाज के हितसाधन में ?

एक बात यह बताओ , जो यह स्वयम् की तारीफ करने वाले छोड़ मार्क अधिकारी हैं , यह कौन सा विकास देश का किया , जिससे समृद्धि आ गई ?

हमको तो कुछ ख़ास न दिख रहा , आप लोग काबिल हो कुछ गिनाओं ।

मैं सबसे बड़ी सलाह यहीं दूँगा , यह फ़ालतू का अहंकार,
“मैंने यह कर दिया , वह कर दिया “, मत पालना ।

इस देश में हर अधिकारी इसी वहम में ज़िंदा है , उसने तीर मार दिया । सब लोग फीगर की हेराफेरी करके काम चला रहे । क्षमता का मापदंड यह फ़र्ज़ी आँकड़े हो गये हैं । कोई रिपोर्ट माँगो बाबू से सीनियर मोस्ट अधिकारी तक फ़र्ज़ी आँकड़े के जुगाड़ में लग जाता है । हम तो रिपोर्ट माँगने की पूरी प्रक्रिया का नाम ही रखे हैं “फ़र्ज़ीगीरी ”, अपने आफिस में । कई बार लगता है सरकार तनख्वाह देती है सिर्फ़ रिपोर्टिंग के लिये । एक ही सूचना बार-बार माँगी जाती है , यह भी कोई नहीं देखता कल जो माँगा था कमोबेश वही फिर आज माँग रहे ।

गीता में यह कहीं लिखा होगा पढ़ना ठीक से और अगर न लिखा गया होगा तब गीता अधूरी है ,

“काम जितना कम करोगे उतना ही सुकून से रहोगे ”।

हमेशा परेशान होता है वह जो काम करता है । बस उतना ही काम करे जितना करना मजबूरी है । बाकी समय लगाओ आक्सीजन को सोखने और सम्मान पूर्वक कार्बन डाइआक्साइड को निकालने में ।

यह चमचागीरी चापलूसी जितनी जल्दी सीख जाओ उतना ही अच्छा है , बुरे वक्त पर कोई आदर्श और सिद्धांत काम नहीं आता यही चमचागीरी , चापलूसी काम आती है । दो- चार किलो तेल साथ लेकर चलना । ज़ब भी काम का आदमी मिले लगा देने का । बेकार के चक्कर में मत पड़ना कि मेरा आत्मसम्मान गिर जाएगा । यह बेवकूफ़ बनाने का एक धंधा है , इसमें कोई आत्मसम्मान नहीं गिरता । एक बेवकूफ़ को बेवकूफ़ बनाने में कोई पाप भी नहीं है । जिसको अपनी झूठी तारीफ़ पसंद हो उस मूँद को उसी की बेवजह की तारीफ़ करके अपना काम निकाल लेने में कोई पाप नहीं है । पूरा हिंदू धर्म- दर्शन यही कहता है आत्मा को शांति मिले जीवन में भी और जीवन के बाद भी ।

यह कृत्य शांति की प्राप्ति में किया गया प्रयास है । न तो दुर्योधन की तरह अहंकारी और लोलुप बनों न युधिष्ठिर ऐसे धार्मिक जिनकी धर्म की व्याख्या समझ ही न आये , कृष्ण तो बन नहीं पाओगे उतना बड़ा खोपड़ा तो है नहीं पर उनकी तरह का go getter बनने की कोशिश करो , जैसे भी बन पड़े काम निकाल लेने का ।

जीवन का सिर्फ़ दो लक्ष्य शरीर को आराम और परम शांति की तलाश ।

इस कायनात में सबको गलतफ़हमी है कि आपका ACR आपका काम ठीक कराता है । मैं ऐसी गलतफ़हमी न तो पालता हूँ और न ही बेवजह के इस दर्शन को समर्थन देता हूँ । मेरा ACR टकाटक रहता है जबकि मैं निहायत ज़रूरी काम में से गैर ज़रूरी काम तलाशता रहता हूँ जिसको करने से बच जाऊँ ।

यह जो बाराबंकी की कलमी , दशहरी , सफेदा आम की बाग है , उसके फल की सप्लाई कलेक्टर साहब , कमिशनर साहब और उनके बाबुओं को करता रहता हूँ । बाबू भी पटाने ज़रूरी हैं । यह जो बाबू हैं यह बड़े काम की चीज़ है । वक्त- बेवक्त बग़ौर काम के आपकी तारीफ़ करते रहते हैं । यह तारीफ़ वह नहीं करते उनके रक्त में जी रहा सफेदा , दशहरी करा रहा होता है ।

जब कर्मचारियों का दरान्सफर पोस्टिंग होती है तो सारे अच्छे कर्मचारी इनकी सहायता से मेरे चार्ज में आ जाते हैं फिर उन कर्मचारियों की तारीफ़ करके चने के झाड़ पर चढ़ा देता हूँ । यह कह देता हूँ कलेक्टर साहब ने कहा है कि सबसे बेहतर आदमी दे रहा तुमको । मैं कराता हूँ अपनी मालिश दिन में दो बार और अभ्यास कैसे ज्यादा से ज्यादा आक्सीजन सोख लूँ । मैं जहाँ जाता हूँ वहाँ वृक्षारोपण काम तेज करता हूँ । अगर कोई चीज़ है जो सबसे ज़रूरी है जीवन में तो वह यह पेड़ हैं । यहीं देते हैं शुद्ध आक्सीजन ।

चापलूसी के कई प्रकार हैं । एक प्रकार की चापलूसी चिंतन के पास है सबकी कुंडली देखना । यह अपने आई जी साहब के कुत्ते की भी कुंडली बना कर देख दिये थे । यह भी एक चापलूसी ही है , यह चाहे माने या न माने ।

मैं तो सरे आम कहता हूँ , मैं चापलूसी में बेस्ट होना चाहता हूँ , पता नहीं कौन सी चापलूसी कहाँ काम आ जाए ।

एक बात गाँठ बाँध लो । अपनी भाषा का ज्ञान कभी मत बघारना नहीं तो सारी ज़िंदगी प्रस़फ़ रीडिंग ही करोगे ।

यह जो संजीव टंडन है न , यह बेस्ट अफसर होगा । यह जहीन है , काम भी सीख लेगा , जुगाड़ पर जुगाड़ लगाएगा । यह मिलनसार है , लोगों की मदद करता है । इसके बास को पता ही नहीं चलेगा कि यह उसको किस बाज़ार में बेच आया । वह यही कहता रहेगा , बाज़ार देखकर , अच्छा है यह बाज़ार और यह टंडन बेच कर निकल लेगा ।

यह सिद्धांत ज्ञान हो न हो पूरे विश्वास से ज्ञान समझाएगा । यह पांडे जी सारी ज़िंदगी अपने को प्रस्तुत ही करते रहेंगे । यह राजीव सिंह देशज संस्कार, पेड़ पौधों की पैरवी करते फक्कड़ी विचारधारा का प्रचार करते जीवन बिता देंगे ।

यह अनुराग

इतने में आवाज़ आयी कि अमर गुप्ता का ब्लड प्रेशर रह गया । गुप्ता जी बोले चेक करा कर आता हूँ नहीं तो मेरी विफलता का दोष निर्दोष ब्लड प्रेशर पर चला जाएगा ।

जब सर चले गये तब संजीव टंडन ने पूछा यह है कौन चीज़, जो ज्ञान बगैर माँगे थोक में बाँट रहा ।

चिंतन सर बोले कि यह एक बहुत बड़े दार्शनिक हैं । इनके पास वह सारे नुस्खे हैं जिससे कैसे कम मेहनत में ज़िंदगी को आराम से जिया जा सके । अभी तो कुछ भी नहीं दिया ज्ञान । मैं ट्रेनिंग के समय इनके ही एसिया में गया था । मेरे एसएसपी साहब ने कहा, इसको अमर गुप्ता से दूर रखना, वह सबको सिखाता है काम कम कैसे करो, पर कलेक्टर बोलते हैं अफ़सर ठीक है । इनका एक ही काम है पेड़ लगाना । अभी लौटने दो, यह मजेश हैं । मज़ा ही मज़ा देंगे, आप बस इनका दर्शन सुनो ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 48

अमर गुप्ता अपना रक्तचाप चेक करा कर आ गये । मैंने पूछा सर आपका विषय क्या था सिविल सर्विसेज़ में ?

अमर जी बोले - गणित और हिंदी साहित्य ।

संजीव टंडन ने कहा यह कैसा कंबीनेशन ? गणित और हिंदी ।

अमर जी बोले, यह सबसे पुरातन कंबीनेशन है और सबसे मौलिक । वेद काल से दो ही चीज़ को सीखने पर ज़ोर मिला, गणित और भाषा । बाक़ी सब तो बाद में आये । भाषा और गणित यह दो विषय सृष्टि के मूलभूत विषय हैं । यह जान लिया तो सब जान लिया ।

वह हिंदी लेने का तर्क बहुत नायाब या रखते थे ।

वह बोले कि विषय मेंस में ऐसा लो जिसमें कम बेहतर लोग प्रतियोगिता में हों । यह इतिहास , दर्शन शास्त्र, राजनीति विज्ञान , मनोविज्ञान , भूगोल, अर्थशास्त्र, गणित ,

फ़िज़िक्स में सारे विभाग के टापर पूरे हिंदुस्तान भर के काबिल बैठ जाते हैं । इनके साथ आपकी कापी जाँची गई तो कापी खोलते ही परीक्षक कहेगा , यह कौन बेवकूफ है जो बेवजह समय ख़राब कर रहा ।

इसलिये विषय वह लो जिसमें थोड़ा मुक़ाबला आसान हो । यह समाज शास्त्र , एनथरोपोलाजी, मराठी , पाली , हिंदी , पब्लिक एड बेहतर हैं । इसमें मुक़ाबला आसान है । जिस विषय में बहुत किताब लिखी गई हों उससे भी दूर रहो । कई लोगों का काम ही है दिन रात पढ़ना वह पढ़ मारेंगे और आप उनसे पार ही नहीं पाओगे । जब किताब ही कम है तब पढ़ेंगे कहाँ से ज्यादा । एनथरोपोलाजी में किताबें नहीं हैं तब आप पढ़ेंगे क्या?

आप पूछ लो टंडन जी से या मैडम रागिनी से । यह सब जवाहर का बाज़ार माल , नदीम हसनन , शरी निवासन , योगेन्द्र सिंह से काम चलाएँ होंगे ।

अनुराग से पूछो यह इतिहास बाँच मारे होंगे भारतीय विद्या भवन सीरीज , विपिन चन्द्रा , सतीश चन्द्रा, इरफ़ान हबीब , नुरुल हसन, सुमित सरकार , राम शरण शर्मा, कैटलबी .. पता नहीं कौन -कौन । हम तो इतिहास का सिलैबस देखे । सिलैबस ही कई पेज में था । हमको सिलैबस पढ़ने में ही समय लग गया । कोई बोला विधि ले लो । पता चला उसमें दूसरा पर्चा सोशियो इकानमिक अफेंस का है । उसमें सुपरीम कोर्ट का हाल का जजमेंट पूछ लेते हैं प्राबलम में । यह सुपरीम कोर्ट अपना जजमेंट बदलती रहती है । अब इस रंग बदलती न्याय प्रणाली का कहाँ तक पीछा करें । विचार त्याग दिया इसका भी ।

किसी ने कहा संस्कृत लो । वह भी गणित की तरह नंबर देता है । हाल देखा चिंतन ऐसों का , कहा अपने से ही गुप्ता जी आपके बस का यह नहीं है ।

हम बहुत दिमाग लगाए । पाया हिंदी सबसे बढ़िया । किरनबाला की किताब पढ़ो, कबीर , परेमचंद निपटाओ , निराला पर कुछ लंतरानी मार दो , हिंदी

साहित्य के इतिहास को आधा अधूरा पढ़ लो डाक्टर नागेन्द्र की किताब से , हिंदी भोला नाथ तिवारी से नाव पार ।

एक खास बात हिंदी की यह है कि जो हिंदी के काबिल लोग हैं उनकी प्रारम्भिक परीक्षा फेल होने की पूरी गायरंटी है । अगर हिंदी विभाग में काबिल हो तो प्रारम्भिक परीक्षा फेल ही होना है ।

हिंदी में दो तरह के लोग हैं । एक नामवर सिंह , दूधनाथ सिंह , सत्य प्रकाश मिश्र , राम स्वरूप चतुर्वेदी , मैनेजर पांडे जो कि साहित्य की सेवा करते हैं , साहित्य में मनन - चिंतन करते हैं । वह लोग इन दुनियावी मामलों से ऊपर हैं , दूसरे वह हैं जो हिंदी में काबिल तो हैं पर उनको जयदरथ चक्रव्यूह के पहले ही द्वार पर चोटिल कर देता है । अब हिंदी की कापी उन लोगों के बीच जाँची जाती है जो हिंदी सिविल सेवा के लिये ही लिये हैं वैतरणी पार करने के लिये । एक प्रफ्रेक्ट लेवल प्लेयिंग फ़ील्ड है ।

मैं मोटी किताब तो कभी पढ़ता ही नहीं और हिंदी में पतली किताबों की भरमार है । मैं ज्ञान भारती से बोलता हूँ , भाई पतली किताब दिखाओ । वह हमकों देख कर ही बोल देता है दूर से अभी पतली किताब नहीं आई है ।

इस साल सब कह रहे थे कि नाटक , रंगमंच पर सवाल आएगा । अब इंटरव्यू देने का तो जुगाड़ बनाना ही था , गये उसके पास । जयदेव तनेजा , बच्चन सिंह की किताब दिखाया । मैंने कहा कि इतनी मोटी किताब कौन पढ़ेगा । वह बोला गिरीश रस्तोगी की भी है । जयदेव तनेजा की किताब थी 308 पेज की गिरीश रस्तोगी की 100 पेज की । जब कम मेहनत से काम बन रहा तब ज्यादा मेहनत करना सिवाय बेवकूफ़ी के कुछ नहीं । गोदान पर कहा सबसे पतली किताब दिखाओ , उसने दिखायी राजेश्वर गुरु की । अंधेर नगरी हमने उस नाटक की प्रस्तावना से ही पढ़ लिया । हर बार इंटरव्यू दिया । यह मोटी- मोटी किताब वाले लटक जाते हैं ।

अब मेरा , चिंतन , बदरी का नाम हो गया है , यह कुछ बेवकूफ़ है जो हर बार चले जाते हैं दिल्ली । बोर्ड भी पहचान गया है कि यह हर साल आ जाते हैं टाइम पास करने । इनको कितनौ लतियाओ यह चार बार मेडिकल चेक करायेंगे ही । अब इस बार - बार मेंस पास करने के कारण एक मेरा अतिरिक्त धंधा है , कैसे सिविल सेवा पास करो .. गुप्ता जी के नुस्खे ।

मेरे पास कोई आता है कि कैसे तैयारी करें ?

मैं पहली बात बोलता हूँ शरीर को कष्ट न दो बेवजह / कष्ट दो वजह से दो /
क्या पढ़ना है यह बाद में सोचो , क्या नहीं पढ़ना यह पहले सोचो / जो नहीं
पढ़ना उसकी तरफ देखना ही नहीं ।

मैं एक बात सबसे कहता हूँ अपने वृहद् अनुभव से , यहाँ कोई लंबे चौड़े ज्ञान
की परीक्षा नहीं होती है । ज्ञान चाहिये पर मूलतः यह परीक्षा आपकी समझ
और विश्लेषण क्षमता को परखना चाहती है । एक बेहतर किताब बहुत है ,
बनिस्बत किताबों की भीड़ के पीछे भागने के , इस साल यह बड़ी हवा थी की
नाटक - रंगमंच पर सवाल आएगा हिंदी में । मैं ज्ञान भारती की दुकान पर
खड़ा था । एक बाबू साहब आये । ज्ञान भारती वाला बोला आपका माल आ
गया है ।

हम चौंके कि कौन सा माल आ गया । देखा अंदर से भरत मुनि का
नाट्यशास्त्र कई वालयूम में है वह लेकर दो आदमी निकल कर आ रहे ।
मैंने पूछा , यह क्या है ? बताया बाबू साहब ने जो उसको ख़रीद रहे थे कि यह
नाटक- रंगमंच के सवाल के लिये है । उसको तैयार करने के लिये ।
महाभारत - रामायण सब मिला दो तब भी वह इससे पतला होगा । हम देखने
लगे बाबू साहब को । पता चला वह प्रारम्भिक परीक्षा पहली बार पास किये थे
और ज़ोरदार तैयारी करने के मूड़ में थे । मैंने कहा , बाबू साहब ट्राली मँगाय
लो , ऐसे यह किताब नहीं जाएगी । इसको सम्मान के साथ ले जाओ । साहब
ने कैरियर पर बाँधा । मैंने कहा सँभाल कर चलाना , जब पीछे की सीट पर
लोड ज्यादा होता है तब आगे का हैंडल सँभालने में समस्या होती है । आपको
ज़िला सँभालना है , ऐसा न हो कि पता चला भावी कलेक्टर साहब साइकिल
से गिर गये ।

बाबू साहब चले गये डगमगाती साइकिल लेकर । अब 100 दिन मिलता है
समय इस मेंस परीक्षा के लिये । यह दिन बहुत सँभाल कर लगाओ । जो पढ़ा
है उसको बस लिख दो । एक विधि है , “ चिपकाओ और घुसेड़ो ” । यह विधि
अंग्रेजों को न पता थी । यह 1853 से ही चली आ रही परीक्षा पर जो पहले
सफल भारतीय सत्येन्द्र नाथ टैगोर थे उन्होंने ईज़ाद की यह विधि और
फ़िराक़ गोरखपुरी ने इलाहाबादियों को बता दी । उसके बाद इलाहाबादियों को
तो जानते ही हो , हैं पूरे सलोथर बैठत । पीढ़ी दर पीढ़ी उसका इस्तेमाल
करते रहे ।

यह अमर गुप्ता का प्रवचन वैसे ही चल रहा था जैसे करपातरी जी का माघ
मेला में प्रवचन ।

संजीव टंडन , रागिनी सिंह ने एक साथ पूछा दो शब्द ज़रा समझाएँ...

यह “सलोथर बकैती” क्या है ?

यह “चिपकाओ और घुसेड़ो” क्या है ?

अमर गुप्ता बोले , चिंतन कुछ गुटका - उटका का इंतज़ाम कराओ , तब थोड़ा दिव्य दृष्टि और खुले और इन माडर्न पेंटिंग को थोड़ा समझाएँ यह क्या होता है ।

मैडम आप अपने पेंटिंग में भी सलोथर बकैती कर सकती हो । यह आपके रंग में छुस गया तो आप नामचीन हो जाएगी । यह जो मङ्गबूल फ़िरदा हुसैन हैं यह कभी इलाहाबाद गये थे कुंभ में वहीं से सीख कर आए थे रंगों में सलोथर बकैती । यह जो घोड़ा आप देख रहीं हैं हुसैन साहब की पेंटिंग में । यह घोड़ा आपको सबसे अलग दिखता है । एक अलग क्रिस्म के घोड़े की पेंटिंग ने उनको इतना नाम दिया । यह इलाहाबाद में एक होती है तरफेबाजी । इलाहाबाद के पंडे इकका दौड़ाते हैं और घोड़े को वैसे ही सजाते हैं । यह है सलोथर । मतलब नायाब । सलोथर घोड़ा सलोथर पंडा और इकके की दौड़ , यह है तरफेबाजी । फिर करते हैं सब बकैती कि मेरा घोड़ा सबसे अच्छा ।

सलोथर बकैती को अगर अपभ्रंश की जगह एक संस्कारित भाषा में कहें तो इसका मतलब है सबसे बेहतर और नायाब ढंग से अपनी बात कहना । कहना वहीं पर एक अलग मौलिकता से । इसमें कथ्य से ज्यादा शिल्प का महत्व है । इलाहाबाद में शिल्प शास्त्रीयता है अपनी बात कहने में । यह शिल्प शास्त्रीय रीति से अपनी बात कहना है “सलोथर बकैती” ।

सर ने कहा , चिंतन गुटका अभी नहीं आया । कहाँ गया तुम्हारा मातादीन । सिद्धांत, संजीव , रितेश की चिमनी चालू थी । अमर गुप्ता बोले की यह लोग कितना सिगरेट

पिये यह तो नहीं पता पर हम लोग धुँआ बहुत सोखे ।

सलोथर बकैती से ही सिविल सेवा परीक्षा का द्वार तोड़ना हम लोग सीखे हैं । यह शब्दों का एक जाल बनाना है । एक ही बात को कई तरह से कहने की कला सीखना है । बात वहीं कहना है पर देश, काल परिस्थिति देखकर । कुछ भारी भरकम शब्दों को आसान शब्दों में पिरो देना है ।

अब आप निराला को ही ले लो । वह आसान भी लिखते थे , कठिन भी । वह लिख दिये सबसे आसान शब्दों में , “ वह तोड़ती पत्थर ” और सबसे कठिन , “ राम की शक्ति पूजा ” ।

राम की शक्ति पूजा में पता चला किरणा पद ही ग्रायब कर दिये । मतलब यह कि बगैर verb के ही रचना चालू कर दिये ...

“राघव- लाघव रावण-वारण गत युग्म प्रहर
उद्धृत लंकापति मर्दित कपि- दल- बल बस्तर ” ।

लो एक सलोथर बकैती । करो रिसर्च यह है क्या ?पूरा हिंदी आलोचना लग गया इसकी व्याख्या में । लिख मारा दारागंज की गली में और काम पर लगा दिया पूरे देश को , करो इसकी व्याख्या । उनसे पूछो यह क्या है तो जवाब भी ऐसा कि आप उसकी भी व्याख्या करो - शिव जटा विभूषित अनंत सुखदायी दर्शनार्थ मुक्ति दायी माँ गंगा का प्रसाद । पहली गुत्थी सुलझी नहीं दूसरी पकड़ा दिया ।

अंग्रेज भी न लिखे इस तरह । द्विवेदी काल में आसान- आसान सा क्रिस्सा टाइप लोग लिख रहे थे और आलोचक भी आराम- आराम से व्याख्या कर रहे थे । यह लोग ले आए इलाहाबाद की धरती से एक नया आंदोलन “ छायावाद ” । लगा दिया पूरे देश को काम पर । प्रयोग करो आलोचना में भी । यह क्या है , शुद्ध सलोथर बकैती । हम तो भाँग पीकर गंगा नहाएँगे आप करो हिंदी की आलोचना ।

आजादी की लड़ाई के समय में जब अंग्रेज कह रहे कि तुम भारतीय नाकाबिल हो देश पर शासन चलाने लायक नहीं हो । गोल मेज़ सम्मेलन में खुले आम कह दिया कि तुम संविधान नहीं बना सकते तो देश क्या चलाओगे ।

निराला बोले , रुको बताता हूँ ।

उसी समय यह लिख मारा । प्रकारान्तर से कह दिया कि पहले आओ साहित्य में निपट लेते हैं , गाँधी तो अनशन करके तंग किये ही है । कई अंग्रेज हिंदी सीख रहे समझने को कि यह है क्या नया प्रयोग शिल्प में कि किरणा पद ही खा गये और लिख मारा राम के सहारे राष्ट्रीय चेतना । ठीक से

पढ़ना उसमें महाशक्ति रावण के साथ है पर राम महाशक्ति के न होने पर भी लड़ रहे । यही तो था उस समय सारी ताक़त अंग्रेज के पास गाँधी के पास अनशन ।

यह गाँधी का अहिंसा , सत्याग्रह, अनशन है क्या?
एक शुद्ध सलोथर बकैती ।

हम अपने को पीड़ा देंगे पर दर्द हमें नहीं तुमको होगा । एक नया ड्रामा विश्व की राजनीति में । भाई भूखे हो तो आप परेशान हो आप । यह भूखा होना व्यक्तिगत काम है । यह गाँधी ने सार्वजनिक काम बना दिया । भूखे गाँधी पर परेशान अंग्रेज । कह रहे बापू खा लो । बापू कह रहे नहीं, हम 21 दिन बाद खाएँगे । आप 21 दिन खाना , दास्त , मुर्गा खाकर भी मुझ भूखे से ज्यादा परेशान रहेंगे । सारा देश इंतज़ार रहा कि कब बापू जूस पियें ।

गाँधी जी का ट्रायल पढ़ा होगा आपने ।
संजीव टंडन बोले , हम क्या पढ़े हैं या नहीं यह बात छोड़ो आप अपना इंजन चालू रखो , दिन भी आज का को पास करना है ।

सलोथर बकैती आपको देखकर ही पता चल गया है, क्या होती है । बस आप टाइम पास कर जाओ । रागिनी सिंह ने कहा गाँधी का ट्रायल मैंने नहीं पढ़ा है । बताइये क्या है ?

अमर गुप्ता बोले , मैडम अगले साल की तैयारी में लग गई, ज्ञान भी हींच लो आज के ही दिन । सारा समय लगाओ कैसे काम का ज्ञान मिले । मैडम आप ज़िद्दी में बहुत आगे जाएँगी ।

इतनी भीड़ थी वहाँ पर कि लोग देखने आ रहे थे कि हो क्या रहा । जो आता था वह जाता न था ।

उसी समय एक बहुत ही यंग से दिखने वाली लड़की मुंबई से बीए पास करके हरदम हँसने वाली आ गई , एक शिशु की तरह की अबोधता के साथ बोली मैं पूरा सुन नहीं पायी , फिर से बता दें यह सलोथर बकैती क्या है । मीरा के भजन वाली जे एन यू की लड़की बोली , हर चीज़ रिपीट होती है यहाँ ध्यान से सुनो सब पता चल जाएगा ।

अमर गुप्ता बोले यार आप लोग तो हमको नाटककार बना दिये हो । बगैर टिकट के तमाशा देख रहे । गुटका भी नहीं आया अभी तक ।

संजीव टंडन बोले सर आप तब तक सिगरेट

का कश मार लो ऊर्जा मिल जाएगी, गुटका का जुगाड़ करते हैं । सर यह बताओ आप कौन सा नशा करते हो

अमर गुप्ता सर नाराज़ हो गये बोले कि भाई अब भोजन का अंतराल का समय हो रहा, यह मजलिस बंद करते हैं ।

बद्री सर बोले ...

ऐसा न करें ...

यह “सलोथर बकैती” और “चिपकाओ एवम् घुसेड़ो” को पूरा कर दें । यह सब इसके बगैर अधूरे ज्ञान को लेकर जाएँगे । ज्ञान सम्पूर्ण कर दें ।

अमर गुप्ता जी को ज्ञान देने में ही मज़ा आता था । वह अपने कार्यालय में कोई काम नहीं करते थे बस ऐसे ही ज्ञान बाँटते थे । उनके ज्ञान का मुख्य क्षेत्र था कैसे काम कम से कम किया जाए और हँसी-खुशी में जीवन बीत जाए ।

इतने में एक सिविल लिस्ट, सरकारी नौकरी, ब्यूरोकरेसी, ज्वाइंट सेकरेटरी, नौकरी के अंतरतम के साक्षात् वेद व्यास अनंत कथा वाचक शिव मोहन सक्सेना आ गए ।

अमर सर बोले यह मेरे साथ इंटरव्यू में थे,

यह ग़ज़बै चीज़ हैं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 49

अमर गुप्ता का गुटका आ गया । सर जी ने गुटका का सेवन किया । चिंतन सर ने कहा कि, नाराज न हो सर । यह संजीव टंडन साहब की कुंडली मैंने देखी है । यह बहुत ही बढ़िया आदमी हैं । बस थोड़ा कभी- कभी बेअंदाज हो

जाते हैं । संजीव टंडन ने कहा , सर इंजन चालू करो तेल- पानी चला गया है । सर ने कहा थोड़ा परिचय हो जाए इन नये सूरमाओं का ।

प्रकृति खेर , बंबई से इतिहास में स्नातक पर कानपुर कई साल रहीं हैं । वह बहुत ही कम उम्र की उम्मीदवार थीं । सर बोले आप अपना मार्क शीट ठीक से देखा है , हमको तो आप अंडर एज लग रही हो ।

शिव मोहन सक्सेना के बारे में सर ने खुद ही बताया कि यह तो इंटरव्यू बोर्ड के बारे में सब बता दिये थे कौन सा बोर्ड अच्छा है , कौन सा खराब । कौन जातिवादी बोर्ड है । कौन बोर्ड पिछले साल कितना नंबर दिया था । किस बोर्ड से अंतिम रूप से चयनित होने वाला का प्रतिशत कितना है । कौन सा मेंबर किस सेवा का था , उसकी सेवा में छवि कैसी थी , वह किसका जुगाड़ लगाकर मेंबर बना है । यही नहीं हर मेंबर का चाल - चरित्र- चेहरा सब कंठस्थ था इनको ।

यह भी सक्सेना जी बता दिये थे बगैर कुंडली देखे , यह अलग बात है यह कुंडली भी देख लेते हैं , कितने साल में ज्वाइंट सेक्रेटरी बनोगे । सिविल लिस्ट क्या होती है । हम पीसीएस से आई ए एस कब बनेंगे । हमने कहा कि भाई दिमाग़ को इतना ही लोड दो जितना वह बर्दाश्त कर सके ।

सक्सेना साहब का ज़बरदस्त खोपड़ा है । हार्डवेयर बहुत मज़बूत है । सारी जानकारी को लपेट कर रखे हैं जंबील में । मैंने कहा कि यहाँ सालों से टहल रहे हैं कोई जुगाड़ लग नहीं रहा मसूरी जाने का , क्या करेंगे यह जानकर की ज्वाइंट सेक्रेटरी कब बनेंगे ।

रागिनी ने कहा कि वह गाँधी का दरायल बता दो जिसमें सलोथर बैकती है । सर बोले रागिनी मैडम को माडर्न चीजों में रुचि है - चाहे वह इतिहास हो या पेंटिंग ।

सर बोले , गाँधी जी पर एक ही बार दरायल हुआ 1922 में । उसके बाद अंग्रेजों की हिम्मत न पड़ी दरायल करने की । मैडम यह परी का सवाल है याद कर लो , आज नहीं तो कल आएगा ।

रागिनी ने कहा इसमें वह जो स..... वह कहाँ से आ गई ।

सर का इंजन चालू हुआ ।

सर बोले कि गाँधी जी कोर्ट में आते ही बोलते हैं कि यह जो यंग इंडिया में खबर छपी है, जिस पर आप हम पर आरोप लगा रहे राजदरोह का, वह गुनाह में क्रबूल करता हूँ।

अब जज साहब आपके पास दो ही रास्ता है या तो इस्तीफ़ा दो नहीं तो सजा दो।

अगर आपने हमको बरी कर दिया तो हम फिर चालू हो कर देंगे वही करना जो हम करके यहाँ आये हैं। जज घबड़ा गया कि यह तो हमारी नौकरी ही ले रहा। सरे आम कोर्ट रूम में ही इज्ज़त उतार दी। पूरी भरी इजलास में कह रहे कि आप इस्तीफ़ा दे दो नहीं तो सजा दो। वहाँ तो सब सोच कर आये थे जिरह होगी, बहस होगी, गाँधी जी बोलेंगे माई-बाप गलती हो गई। जो आप कह रहे हो वह ठीक नहीं है। हम जो लिखे और जो आप समझ रहे उसमें फ़र्क़ है। पर यहाँ तो पूरा मामला ही उलटा। जज से ही कह रहे आप इस्तीफ़ा दो। अब इससे बड़ी सलोथर बैठती क्या है।

गाँधी जी एक ही बात पर अड़े रहे हमें सजा दो। वह समय वह था जब काला पानी होता था। बड़े-बड़े सूरमाओं की हालत जेल में बिगड़ जाती थी। वहाँ पर यह ज़िद पकड़ लिये या तो सज़ा दो नहीं तो इस्तीफ़ा दो।

अगर छोड़ा मुझको फिर मैं राजदरोह करूँगा। सजा मिल गई, कह रहे बहुत अच्छा किया। बहुत कम सजा दी, सिर्फ़ 6 साल की दी। बहुत न्याय किया। इतनी सदाशयता कोर्ट ने की, मैं शुक्रगुज़ार हूँ। मेरे हिसाब से राजनीति के सलोथर आदमी सिर्फ़ महात्मा गाँधी हैं। यहाँ तो किया ही किया पूरे जगत में फैला दिया। भारत की देन जब भी संसार में गिनी जाएगी, यह सलोथर देन होगी हमारी। अहिंसा सिर्फ़ हमारी देन है। बुद्ध, महावीर स्वामी, गाँधी यह पर्वर्तक हैं। हमको रायल्टी माँगनी चाहिये अहिंसा पर।

यह एक अलग तरह का नया शिल्प है। अंग्रेजों को, पश्चिमी देशों को पता ही न था यह सब।

शिव मोहन सक्सेना कुछ राय दे रहे थे, वह शायद इतिहास के ज्ञाता थे। अमर सर बोले मेरे पास ज्ञान - वान सीमित हैं, बस थोड़ा सा ज्ञान का जोड़ना आता है।

सर ने बोला कि यह सक्सेना साहब समझा रहे थे कि कौन सी नौकरी में क्या फ्रायदा -नुकसान है । हम तो दो ही नौकरी भरते हैं *Indian Revenue service* , *Indian Railway accounts service* , बाकी तो कोई सेवा हम को चाहिये ही नहीं ।

आक्सीजन सोखने में यह सेवायें सहायक हैं ।

हम देख रहे हैं पुलिस - प्रशासन की किंच - किंच । यह हमारे बस का है ही नहीं । यह मौर्या जी बेवजह परेशान हैं कि ऊँचाई कम है । अब पाँच इंच की कमी तो मोज़ा में रुई लगाकर पूरी होगी नहीं, उसके लिये ईंटा लगाना होगा वह भी दो ।

जब परमपिता ही नहीं चाह रहा आप IPS बनों तब क्यों परेशान हो इसमें बेवजह, काहे को ज़िद कर रहे हो । उसको बनाना होता तब देता न आपको पाँच इंच और लम्बाई । यह कोशिश जो आप कर रहे हो यह नास्तिक विचारधारा है । यह आस्तिकता के विपरीत है । यह परमपिता का अपमान है । यह वैष्णव-सनातन धर्म के विरुद्ध है । जब परभु कह रहा पुलिस में मत जाओ फिर क्यों जाने पर लगे हो ।

यह जो दबंग -लठैत - बकैत हैं, यह किसी के नियंत्रण में नहीं है । आप IPS होकर उल्टा कैडर में चले गये तब क्या होगा ? आप मणिपुर से साध लोगों इनको ?

इन सरकारी नौकरियों की सीमाएँ हैं । इन सीमाओं को समझ कर काम करो । यह बेवजह का भ्रम मत पालो ।

पांडे जी सबसे चालू चीज़ हैं, पूरी कलर ब्लाइंड की किताबें रट गये । इनका IPS , IRTS में नाम दर्ज हो गया । पर IRTS क्यों बनना चाह रहे । पांडे जी बोले उसमें सेलून मिलता है ।

गुप्ता सर बोले, क्या आप सैलून लेकर गाँव जाओगे ?

IRTS में खुन छूस लेते हैं । हुआ सबेरा पता नहीं कौन सा एक काग़ज़ आता है, कहते हैं यह पोज़ीशन है टरेन की । उसी में उलझे रहो । सारा दिन रेलवे का फोन । हमने पता किया कि चिड़िया मार नौकरी रेलवे की कौन सी है ।

प्रकृति ने पूछा यह चिड़िया मार नौकरी क्या है ?

सर बोले जिसमें सिर्फ दस्तख़त करना हो । हमारा नाम है अमर । छोटा सा a बनाया काम हो गया । जिसको काम करना हो करे । करने वाले हर जगह हैं , पर यहाँ सुविधा है काम न करने की , IRS में नहीं है ।

यह रंजन अग्रवाल तो और चालू हैं । यह इंटरव्यू दिये IAS , IPS , IRS का वरीयता देकर पर बाहर निकल कर IRS कर दिये पहली वरीयता । भाई आप भी बता दो अपना यह दर्शन । आप भी ज्ञान दो कुछ ।

रंजन अग्रवाल बहुत ही जहीन क्रिस्म के लगनशील व्यक्ति थे । वह IIT के मैकेनिकल इंजीनियर थे । वह भी शरीर को आराम देने के पक्षधर थे पर अमर गुप्ता से थोड़ा भिन्न तरीके से । वह अपने काम से काम रखने वाले सज्जन व्यक्ति थे । उनको फ़िल्मों का अतिशय शौक था । वह दो फ़िल्में बैक ट्रू बैक देखते थे । वह गोविन्दा के मुरीद थे । उनकी हाबी थी फ़िल्म देखना । उनको फ़िल्म , थियेटर , फ़िल्म का इतिहास सब पता था । आप किसी फ़िल्म, किसी पिक्चर हाल के बारे में पूछ लो उनको सब जानकारी है । वह समानान्तर सिनेमा और मुख्य धारा सिनेमा का अंतर इंटरव्यू बोर्ड में बहुत बेहतर बता कर आये थे ।

उनको कला परखने की पूरी कला का ज्ञान था । वह एक कला समीक्षक सदृश थे । वह कहा करते थे कला को परखना भी एक कला ही है । वह एक कठिन दायित्व पूर्ण कला है । वह अभिव्यक्ति की आज़ादी के समर्थक थे । उनसे इंटरव्यू बोर्ड में पूछा गया , अभिव्यक्ति की आज़ादी से आप क्या समझते हैं ? उन्होंने जार के मुख्यमंत्री काउंट विटी का क्रिस्सा सुनाकर वाहवाही ऐसी लूट ली थी ।

कहा जाता है कि जार के मंत्री काउंट ने अपने सचिव को आदेश दिया कि वह उन लेखकों की सूची बनाये जिन्होंने

अखबारों में उनकी सरकार के विरुद्ध लिखा है । सूची बनकर तैयार हुई तो सचिव ने पूछा “ अब इनको क्या सजा दी जाएगी ? ”

काउंट ने कहा

“इन सबको मैं अपने समाचार पत्रों का संपादक बनाऊँगा । मेरा यह अनुभव है कि सबसे कटु आलोचक ही सबसे बड़ा सच्चा हितैषी होता है ।” फिर माखन लाल चतुर्वेदी की निर्भीक पत्रकारिता जिसमें यह कहना कि मैं जानता हूँ तुम बहुत ताक़तवर हो पर मैं यह जानकर ही तुम्हारे खिलाफ़ लिख रहा । गाँधी का 1942 का भारत छोड़ो अंदोलन के बाद दिया गया बंबई में वह भाषण जिसमें गाँधी जी ने 13 कम्युनिस्टों को धन्यवाद दिया था प्रस्ताव के विपक्ष में मत देने के लिये । गाँधी जी ने कहा था कि यह लोकतन्त्र के प्रहरी हैं और विरोध की आवाज़ एक व्यापक समर्थन की आवाज़ के सामने कितनी भी कमज़ोर, अशक्त क्यों न हो वह सुनी जानी चाहिये । इसके पश्चात् रंजन अग्रवाल ने उसको संविधान के अनुच्छेद 19 से जोड़ दिया ।

अमर गुप्ता बोले , यह “चिपकाओ और घुसेड़ो ” विधि का सबसे सही उदाहरण है । चार - पाँच चीज़ अलग - अलग जगह की चपकाओ पहले फिर देखो और क्या घुस सकता है बीच में , पर बेअंदाज मत घुसेड़ो थोड़ा अंदाज़ रखो ।

वहीं खड़े थे दिल्ली विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र से एम फ़िल रमन शर्मा । वह बोले मैं भारत की आत्म निर्भरता पर सवाल लिख रहा था । बीच में एक टर्न मारा और लिखा ...

India's effort in self reliance need to be appreciated in the light of problems faced by country post independence, however in the field of oil exploration and gems jewellery it is worth noticeable with respect to innovation and use of indigenous technology .

अमर सर बोले लो देख लो एक और मसाला ..

चिपकाओ और घुसेड़ो का ।

सर बोले कि रमन जी आप कुछ लेखक , साहित्यकार टाइप लग रहे हो । बेसमय आपने अपने सिर पर से केश त्याग दिया । लगता है साहित्य, समाज की सेवा करने में यह केश बाधा पहुँचा रहे थे । रमन शर्मा एक अर्थशास्त्र के विद्यार्थी थे पर शौकिया साहित्यकार थे । उनकी हिंदी में कहानी मैगज़ीन में छप चुकी थी । अमर गुप्ता बोले , रुको ज़रा रंजन गुरु का क्रिस्सा हो जाए फिर आप से निपटते हैं । सर बोले कैलाश पांडे से ज़रा नाम नोट करते जाओ । सबकी कहानी सुनना ज़रूरी है । आज के बाद यह गज़बै चीज़ नहीं मिलेंगी ।

रंजन अग्रवाल ने अपने इंजीनियरिंग के तीसरे वर्ष ही फैसला कर लिया कि वह विदेश नहीं जाएँगे । IIT में दो धाराएँ मुख्यतः होती हैं । एक जो सिविल सर्विस देती है और दूसरी जो विदेश में स्कालरशिप और अच्छी संस्थाओं की तलाश करती है पढ़ने के लिये । इसमें से अधिकांशतः विदेश में पढ़ने के बाद विदेश में नौकरी करने लगती है ।

रंजन ने यह फैसला ले लिया कि वह विदेश नहीं जाएँगे । उनका तर्क यह था कि वहाँ खुद से सारा काम करना पड़ता है । वह कोई काम नहीं करना चाहते थे । उनके बारे में एक क्रिस्सा यह विख्यात था IIT में कि एक बार IIT का समूह गया रिवर राफिटिंग करने । रिवर राफिटिंग में खुद राफिटिंग करनी होती है । वह एक आदमी को पैसा देकर साथ ले गये कि यह बहुत मेहनत का काम है , मुझसे नहीं होगा । उनका दूसरा तर्क यह था कि अगर राफिटिंग करेंगे तब प्रकृति की छटा कैसे देखेंगे ।

उनका यह भी कहना था कि व्यक्ति का जन्म बहुत मेहनत के बाद होता है । उसके बाद मेहनत से बचना चाहिये । वह शरीर को तकलीफ देने के पक्षधर न थे । उन्होंने सारी नौकरियों को आराम और बड़े शहरों में जीवन यापन की दृष्टि से परखने के बाद यह पाया कि दो नौकरी उनके अनुरूप हैं - IRS और *Delhi and Andaman Nicobar civil services (DANICS)* । यह दो ही नौकरी में जाएँगे यह इनका लक्ष्य था । इसीलिये पहली IRS और दूसरी DANICS कर दी ।

वह पूरे जीवन को ही एक कला की दृष्टि से देखते थे । उनका मानना था कि हमारा सम्पूर्ण जीवन और जगत बहुविध सूक्ष्म और अमूर्त तरंगों, लयों, स्पन्दनों एवं प्रकम्पनों से बना है , इन्हें मूर्त रूपाकरो या स्वरों से प्रभावी ढंग से व्यक्त करना ही कला है । वह फ्रांस के सुपरसिद्ध फ़िल्मकार गिरये से प्रभावित दिखते थे जो कहते थे आलोचना कठिन काम है , सृजन से भी ज्यादा कठिन । इनको यह पता था जीवन की प्राथमिकतायें क्या होती हैं । इस उम्र में इतनी स्पष्ट समझ कम लोगों के पास होती है ।

इतने में तेज का शोर हुआ , बिहार के कोई तिरपाठी जी थे उनकी आँख 6/6 न हुई और वह बहस कर रहे कि मैं चश्मा नहीं लगाता फिर मेरी आँख 6/6 क्यों नहीं है ।

अमर गुप्ता बोले कि चलो देखें लगता है कोई

ग़ज़बै चीज़ हैं वह

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 50

रमेश नारायण तिरपाठी बिहार के दूर के इलाके से आये थे । इन्होंने सिविल सेवा की पूरी तैयारी गाँव में ही रहकर की थी । यह भी हिंदी माध्यम के छात्र थे । इनको बताया गया था कि अगर आँख पर चश्मा है और आँख 6/6 नहीं है तब IPS , customs , IRTS नहीं मिलेगा ।

यह किसी गाँव के कम जानकार ने ही बताया था जिसका सिविल सेवा से कोई खास ताल्लुकात न था । उस आदमी का यह दावा था कि यह उसको तहसील के SDM ने यह बताया था और पूरा इलाका इस बात पर यक़ीन करता था । इनको सिखाया गया था बचपन से कि IAS कोई काम खुद नहीं करता वह लोगों से करवाता है ।

यह पढ़ने में ज़हीन थे । यह प्राइमरी के स्कूल से लेकर गाँव के पास के तहसील के इंटर कालेज तक टाप किये थे । गाँव के पास के ही शहर के कालेज में भी अपना और गाँव का नाम रौशन किया , फिर परिस्थितियों ने इनको गाँव में जाकर तैयारी करने के लिये मजबूर किया पर यह लगनशील थे ।

इनका गाँव शहर से कुछ ही दूर था । यह गाँव से ही तैयारी करने लगे , पतर- पत्रिकाओं- मैगज़ीन के लिये सप्ताह- दस दिन में शहर के कालेज के पास वाली दुकान पर जाकर ख़रीद लेते थे । यह अपने विषय इतिहास और हिंदी में नंबर अच्छा पाते थे पर सामान्य अध्ययन इनको परीक्षा के द्वार के पास रोक देता था । सामान्य अंग्रेज़ी पास करने के लिये यह दो सौ निबंध , पाँच- सात सौ मुहावरे और न्यू लाइट जनरल इंग्लिश की किताब घोंट मारे थे । यह हर दिन अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करते थे एक उस दुर्घटना से बचने के लिये जिसके शिकार अंग्रेज़ी साहित्य से स्नातक उपाधि प्राप्त चिंतन उपाध्याय हो चुके थे । यह बहुत बड़ी विडम्बना थी हिंदी माध्यम छात्रों के साथ वह सामान्य अंग्रेज़ी में ही फेल हो जाते थे । सामान्य अंग्रेज़ी में फेल होने का मतलब था भर्त्ता हत्या । आपकी कापी जाँची ही नहीं जाएगी ।

इनको सिखाया गया था कि अगर इंटरव्यू बोर्ड कहे पानी लाओ तो तुम खुद मत लाना बल्कि उठकर धंटी बजाना और चपरासी से बोलना तुम पानी लाओ । अगर चल दिये पानी लाने तब आप असफल घोषित, कहीं कोई आई ए एस काम करता है । यह तो देवत्व का आरोपण है । यह नौकरी नहीं इन्द्र का सिंहासन है । इनको गाँव में लोक परम भट्टारक कहते थे । यह विरुद्ध गुप्त वंशीय शासकों ने धारण किया था । जब से मैंस पास कर गये थे तब से आसपास के दस- बीस कोस के लोग इनको देखने और चरण छूने आते थे और कहते थे, हम गरीब का भी ख्याल रखना, हमको भूल न जाना । इनके ससुर ने तो अपने घर के बाहर राजेश नारायण तिरपाठी का बोर्ड भी लगा दिया था । इनके ससुर गाँव के प्रधान थे, इनकी मेधा देखकर इनसे विवाह कर दिया था । उस विवाह से इनके परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ गई । यह इंतजार ही करते रहे कि यह सवाल आए कि आप पानी लाओ और यह धंटी बजाए पर आया ही नहीं वह सवाल ।

यह श्रीमान के श्रीरीमान बोलते थे । बातचीत में बिहारी पुट वैसा ही था जैसा आग पर उबलता बहता दूध दूर से दिख जाए । यह बहुत ही चिंतित थे । इनकी ऊँचाई विधाता ने एक सेंटीमीटर कम कर दी थी या नापने वाले ने बदमाशी की यह कहना मुश्किल है । इनका कहना है कि वह 165 सेंटीमीटर है पर नापने वाले ने 164 लिख दी । वह तीन बार नपवाये थे पर वह टस से मस न हुआ । 164 लिख मारा ।

यह दूसरा संघर्ष कर रहे आँख की जाँच में । वह कह रहे यह टेक्नीशियन श्रीरीमान मुझे कह रहे आप की आँख 6/6 नहीं है पर मेरी है । यह आप श्रीरीमान यह भी कह रहे उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता customs और IRTS की नौकरी प्राप्त करने में दिक्कत न होगी अगर आँख 6/6 नहीं है । पर तिरपाठी जी यह नहीं मान रहे और कह रहे हमको पता है फ़र्क पड़ता है आप लिख दो 6/6 ।

तिरपाठी जी अनुनय- विनय एक भिक्षा की मुद्रा में कर रहे दोनों हाथ जोड़े, “ श्रीरीमान आप 6/6 लिखो मेरी आँख सही है पूरी । आप का अहसान पूरी ज़िंदगी मानूँगा ”

। ऐसा लग रहा कि तिरपाठी जी अभी रो देंगे ।

इसी समय फुटबॉल की तरह लुढ़कते सबसे आगे 159 सेंटीमीटर के अमर गुप्ता, उनके पीछे 6 फ़िट 5 इंच के संजीव टंडन, 6 फ़िट 3 इंच के सिद्धांत

श्रीवास्तव, बद्री सर, चिंतन सर और पूरा काफिला पहुँचा । अमर गुप्ता बोले टेक्नीशियन साहब काहे नाहक ब्राह्मण हत्या का पाप ले रहे हो । ब्राह्मण का आँसू नरक की आग में जला मारेगा ।

संजीव टंडन बोले रुको पहले मैटर समझने दो फिर जुगाड़ लगाते हैं । राजेश नारायण बोले मेरे गाँव

सिद्धांत बोले कि आप यह गाँव या चक्कर छोड़ो । गाँव में क्या कहा गया आप यही रट लगाये हो । आप अपनी समस्या बताओ । सिद्धांत थोड़ा निर्णय तेज लेते थे । उनका दिमाग़ तेज चलता था । वह बोले आपको चाहिये क्या?

रमेश नारायण बोले यह 6/6 लिख दें बस ।

सिद्धांत बोले कहाँ लिख दें ।

अमर गुप्ता बोले माजरा समझ आ गया, टंडन साहब आप जुगाड़ लगाओ । आप सुबह से करना कुछ नहीं बस जुगाड़ लगाते हैं, यह पंडित जी हैं आँधर आप लिखाओ यह नयनसुख हैं ।

कोई और बोले, टेक्नीशियन बोला कैसे लिख दें, 6/6 जब वह है ही नहीं । रमेश नारायण बोले कि है मेरी आँख 6/6 आप फिर से चेक करो । वहाँ इतनी भीड़ होती है कि बार - बार चेक करना आसान नहीं होता ।

अमर गुप्ता बोले आप काहे को परेशान हो ? कलर ब्लाइंड हो क्या?

रमेश नारायण - नहीं ।

अमर गुप्ता- मेरा यह हर साल का कारोबार है । हम, बद्री, चिंतन हर साल आते हैं यहाँ टाइम पास करने । चिंतन की आँख में चश्मा है, आप देखो । यह पुलिस की नौकरी का सुख हींच रहे । आप काहे बेवजह बवाल काटे हो । कस्टम, आई आर टी एस के लिये आपकी आँख ठीक है ।

संजीव टंडन बोले आप काम करने दो इनको चलो यहाँ से । आप का काम लहा हुआ है, बेवजह का फ़िटूर न पालो ।

रमेश नारायण बोले मेरे गाँव में यह बताया गया था कि

सिद्धांत बोले , बहुत दिमाग न खाओ यार । हो गया चलो अब । वह नहीं चेक करेगा दुबारा आप क्या करोगे , बोलो ?

बद्री सर ने समझाया आप को आई पी एस , कस्टम, आई आर टी एस मिलेगी । चलो यहाँ से ।

अमर गुप्ता बोले IPS तो गई इनकी । हमारी और इनकी लंबाई आगे पीछे नापी गई थी । हमारी थी 159 सेमी इनकी 164 । यह लगभग रोने ऐसे लगे थे । मैंने नापने वाले से कहा थोड़ा एडजेस्ट करो । मेरी लंबाई में से तीन-चार सेंटीमीटर निकाल लो और एक सेंटीमीटर इनके में जोड़ दो पर वह सुना नहीं ।

अब वर्दी का एक ही रास्ता है कस्टम जिसमें सप्ताह में एक दिन वर्दी मिलती है नहीं तो यह निकल लें RPF , CISF की तरफ । तिरपाठी जी बोले नहीं मैं वह नौकरी नहीं करूँगा, मैं ऊपर की ही नौकरी करूँगा । सिद्धांत बोले पहले रोज़ी - रोटी का जुगाड़ कर लो सुदामा । परशुराम बनने को आतुर न हो जाओ । तिरपाठी जी बोले इतनी मेहनत किया है गर्व और सम्मान के लिये , वह लेकर रहूँगा । बद्री सर बोले यह लेंगे तो पूरा पाकिस्तान लेंगे आधा - अधूरा नहीं ।

वहाँ से कुछ ही दूर चले होंगे अगली मजलिस की तरफ , रमेश नारायण ने आँख पर चश्मा चढ़ा लिया ।

सिद्धांत बोले यह क्या?

संजीव टंडन - यह क्या ? आप चश्मा लगाते हो ?

राजेश नारायण- हाँ

अमर गुप्ता- अब समझ आया माजरा पूरा । इन शिरीमान साहब को किसी ने कहा होगा कि चश्मा लगाने वाले को IPS , customs , IRTS नहीं मिलेगा । इसलिये यह चश्मा छुपा लिये । यार बहुतै चालू चीज़ हो । यह सब कहाँ से सीखा? सरकार तैयार रहो , चूना लगाने वाले आ रहे ।

अमर गुप्ता बोले , यार बद्री हम लोग चार बार आकर जो फ़न न समझ पाए यह एक ही बार में कर गए । हमारी भी लंबाई कम थी पर कभी ख्याल न आया मोज़ा में रॉई भरने का , यहाँ मोज़ा रॉई से लबालब , यह पांडे जी कलर

ब्लाइंड की किताबे रट मारे , यह शीरीमान चश्मा ही गोल कर दिये । इंटरव्यू में पता नहीं कौन सा गुल खिलाये होंगे ।

रमेश नारायण बोले कि पूरे गाँव में हल्ला है कि चश्मा लगा है वर्दी न मिली । वर्दी के लिये तड़पन है । वर्दी या तो पुलिस में या फिर कस्टम में ।

अमर गुप्ता बोले कि आप और पांडे जी जाओ पालिका बाजार से वर्दी टोपी , सीटी, डंडा ख़रीद लो । उसको लेकर ही वापस गाँव जाओ । वर्दी मिल गई और रात में गाँव में सीटी मारा करो ।

उसी भीड़ में इलाहाबाद की एक और छात्रा शशि तिरपाठी के साथ मौजूद थी । अंग्रेजी साहित्य से विश्वविद्यालय से गोल्ड मेडल लिये हुये । वह इलाहाबाद की प्रख्यात डिबेटर थी । और पीसीएस में उनकी रैंक थी और कहते हैं इंटरव्यू में भरपूर नंबर लूटा था । वह आत्म विश्वास से लैस दिख रही थी । वह हिंदी बोलने में थोड़ा असहज थीं । वह आंग्ल भाषा में माहिर थी ।

वह पीसीएस की नौकरी नहीं करना चाहती थी , इसलिये वेटिंग लिस्ट वाले आग्रह कर रहे थे कि आप इस्तीफ़ा दे दो ताकि उनको वह जगह मिल जाए ।

नाम था , सुरुचि मिश्रा । उनको नौकरियों के बारे में कुछ खास पता न था । वह पूछने लगी कि यह नौकरियों में क्या फ़र्क़ ज्यादा होता है क्या?

अमर गुप्ता बोले पूरी रामायण हो गई पर अभी मैडम पूछ रहीं कि यह कथा रामायण की है या महाभारत की । चलो भाई चालू करो पांडे जी अपना वह आलाप

IAS ,IPS , Custom, IRS , IRTS

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 51

सुरुचि मिश्रा एक निहायत ही ज़हीन छात्रा । अमर नाथ झा , फ़िराक़ गोरखपुरी के देदीप्यमान विभाग की एक उपज ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय का अंग्रेज़ी विभाग एक महान गौरवशाली विभाग है । इस विभाग की इमारत जितनी देखने में आँखों में अपनी आभा बिखेरती हैं उतनी ही इसके अंदर की बौद्धिकता ।

कहते हैं अमर नाथ झा जब अंग्रेज़ी पढ़ाते थे हवायें भी रुक जाती थीं । फ़िराक़ ने खुद ही लिखा है कि कक्षा 5 के बाद उनको भाषा , ग्रामर , वाक्य-विन्यास में कोई कभी समस्या आई ही नहीं । वह पीसीएस और आई ए एस दोनों परीक्षाओं में सफल हुये पर चले गये राष्ट्रीय आंदोलन की तरफ ।

उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापक की नौकरी का आवेदन किया ही नहीं था , पर एक दिन विश्वविद्यालय से पतर आया कि आप एक लेक्चरर के तौर पर कार्य करें । यह वह दौर था इस शिक्षा केन्द्र का जब प्रतिभाओं की क्रीमत हर स्तर पर थी । यहाँ के अध्यापक बहुभाषी हुआ करते थे और भाषा सीखने पर या यूँ कहें एक स्तरीय भाषा सीखने पर ज़ोर दिया जाता था ।

यहाँ कथ्य के साथ शिल्प पर भी ज़ोर दिया जाता था । यक्ष के प्रश्नों का लालित्य और युधिष्ठिर के उत्तरों का पांडित्य दोनों आपके लेखन में दिखना चाहिये ।

फ़िराक़ अंग्रेज़ी को भी हिंदी में पढ़ाते थे । वह कोई विज़िटिंग कार्ड नहीं छपाते थे । जहाँ भी जाते थे अपने नाम “रघुपति सहाय “का पहला शब्द” रघुपति “ ही लिख कर भेजते थे । नेहरू जी ने उनको कांग्रेस का संयुक्त सचिव बना दिया था ।

फक्कड़ी तो वह ऐसे थे कि किसी की परवाह करना उनके लिये संभव न था । कहते हैं एक बार आनंद भवन वह नेहरू जी से मिलने गये , तब नेहरू जी प्रधानमंत्री थे । अपने नाम का पर्चा भेजा , “ रघुपति ” । समझ न आया लोगों को यह कौन है । थोड़ी देर इंतज़ार किया फिर हल्ला करने लगे कि नेहरू से कह देना रघुपति आये थे वह चल दिये , नेहरू जी को पता लगा वह खुद निकल कर आये ।

इनका उर्दू भाषा पर असीम अधिकार था और यह इश्कियाना शायरी की विधा के माहिर थे । इनकी खास आदत थी यह इलाहाबाद रेलवे स्टेशन से शायरों को दरेन से उतार लेते थे और शाम को महफिल लगाते थे । उस महफिल का दौर पूरी रात चलता था और कहते थे , “ यार कुछ नया लिखा हो तो सुनाओ यह धिसा- पिटा रहने दो ” ।

निराला भी महफिल में आते थे और एक क्रिस्सा था कि निराला की मुलाक़ात मलिका ए हिंद रानी से हुई । वह क्रिस्सा हर बार निराला से सुनते थे । निराला जी मूड में आकर बताते थे वह कल्पित घटना कैसे उनकी मुलाक़ात मलिका ए हिंद से हुई । कबीर की पंक्ति , कबिरा खड़ा बाज़ार में लिये लुकाठी हाँथ जो घर ज़ारा आपनों वह चले हमारे साथ , में इनकी पूरी आस्था थी । इनकी पुस्तक “ गुल ए नगमा ” सिविल सेवा के उर्दू साहित्य के पाठ्यक्रम का भाग है ।

ऐसे महान परम्परा के प्रांगण से निकली सुरुचि मिश्रा, इलाहाबाद के सेंट मैरीज कानवेंट स्कूल से निकल कर इन्होंने विश्वविद्यालय में प्रवेश किया । अंग्रेज़ी में एम ए किया और पिछले कई साल का रिकार्ड ध्वस्त किया । मानस मुकुल दास सर का कहना था ऐसी प्रतिभा अंग्रेज़ी में बहुत दिनों बाद आयी है ।

भाषा पर अगाध अधिकार था , जहीन थी , बोलने की कला से लैस थी और क्या चाहिये इंटरव्यू में नंबर लूटने के लिये । पीसीएस परीक्षा में कलम तोड़ नंबर मिला था इनको पर यह दुनियावी मामले कम जानती थीं ।

इनको नौकरियों के बीच का भेद कम पता था । कैलाश पांडे और राजेश नारायण तिरपाठी को दूर - दराज़ के इलाक़ों में रहकर भी इनसे ज्यादा पता था । अंग्रेज़ी साहित्य और मनोविज्ञान से इन्होंने मैंस लिखा था । अपनी वाद- विवाद की प्रतिभा के कारण विश्वविद्यालय के भीतर भी और बाहर भी काफ़ी नाम कमाया था ।

सुरुचि को सिविल सेवा परीक्षा के बारे में चाहे बहुत ज्यादा पता न हो पर वह अंग्रेज़ी साहित्य में माहिर थीं । अंग्रेज़ी विभाग के सामने ही मनोविज्ञान विभाग पड़ता था । वहाँ वह अक्सर ज़ाया करती थीं क्योंकि उनके साथ की बहुत सी लड़कियाँ वहाँ पर थीं । वहीं से उनको पता लगा कि मनोविज्ञान अच्छा विषय है, लाइब्रेरी इस विभाग की अच्छी- खासी बेहतर है ।

मनोविज्ञान की छात्राओं को भी लगा कि यह अगर मनोविज्ञान ले लेंगी तो इनकी ज़ेहनीयत के कारण फ़ायदा सबको होगा , हलाँकि यह ख़्याली पुलाव ही रहा होगा , लड़कियों की गला काटू प्रतिस्पर्धा में कौन किसका साथ देगा इसका फ़ैसला विधाता ही कर सकते हैं । कारण जो भी रहा हो , इन्होंने मनोविज्ञान ले लिया और पिछले ही साल इलाहाबाद में हल्ला हो गया कि एक लड़की नाम रौशन करेगी शहर का ।

वह इंटरव्यू की दहलीज़ से पिछले साल वापस चली आई थी , इनकी दुआ कुबूल न हुई । यह सिविल सेवा का मेंस का पेपर कैसे जाँचा जाता है , क्या मापदंड है यह एक ऐसा रहस्य है जिसका आज तक किसी को भी पता न चल सका । जिस पेपर को बहुत अच्छा करके आओ उसमें नंबर ख़राब मिलता है जो औसत दर्जे का करके आओ उसमें नंबर अच्छा मिलता है ।

राजीव सिंह को भूगोल के एक पेपर में 200 अंक मिल गये 300 में जबकि उनका कहना है कि मैंने मानसून का सवाल NCERT से लिखा था और पेपर ठीक - ठाक ही हुआ था । सिद्धांत कैसे मेंस पास कर गये , यह सेंट ज़ेवियर से लेकर पटना तक ज़ोरों की चर्चा है ।

सिद्धांत खुद अपना रोल नंबर कई बार अपने प्रवेश पत्र से देखकर चेक किये थे । इस सिविल सेवा के क्षेत्र में गपोड़ी , अफवाहबाज बहुत होते हैं । किसी ने फैला दिया था कि सिद्धांत संघ लोक सेवा आयोग गये थे पता करने कि मेरा जो हुआ है मेंस में वह सही है कि नहीं । यह पता नहीं कौन सा फराड टाइप की परीक्षा 1853 में अंग्रेजों ने ईज़ाद की जिसका पूरा रहस्योद्घाटन आज तक नहीं हुआ ।

सुरुचि मिश्रा सब कुछ लिख कर भी वह नंबर न पा सकी जो सिद्धांत टाइप के पैंतरेबाज़ घुमा फिरा कर लिख कर पा गये । संजीव टंडन तो एक ही विषय लिखते थे ठीक से , गणित । उसमें 600 में से 600 सही करते थे । बाकी समय कहाँ पढ़ने का । 12 बजे दिन में सोकर उठते थे और IIT में गणित पढ़ाते थे मेंस के नये अभ्यार्थियों को और फिर शाम का इंतज़ार करते थे । अरे भाई अगर जे एन यू की लड़कियों को यह नहीं पढ़ायेंगे तब मसूरी लड़कियाँ कैसे जाएंगी ।

अब जीवन में लड़कियों का होना तो ज़रूरी ही है । जे एन यू से निकलकर अपनी यामाहा मोटरसाइकिल पर जवाहर बुक स्टोर जाते थे पता करने कोई

माल आया पढ़ने का नया । यह पढ़ते कम थे पर ख़रीद सब लेते थे । वापस पहुँचते थे ॥८॥ रात में ८/९ बजे । उसके बाद सुबह पाँच बजे तक पढ़ते थे ।

आजकल कुंडली भी सीख रहे । दो साल से फेल हो रहे इंटरव्यू में, यह अपनी ज़िंदगी से कंटाल आ गये ।

अमर गुप्ता थे तो एसडीएम पर उनका मन ए एन झा में ज्यादा लगता था । वह प्रारम्भिक परीक्षा का परिणाम आते ही छुट्टी लेकर चले आते थे मेंस की तैयारी करने और यही काम करते थे मेंस के बाद । रिज़ल्ट आते ही आकर डेरा जमा दिया । यह पढ़ते उतना थे नहीं जितना यह कहते थे यार पढ़- पढ़ कर परेशान हो गया । सुबह एक घंटे चाय

के नाम पर यूनिवर्सिटी रोड पर घूमते थे और शाम को दो - तीन घंटे तो उस रोड पर घूमना ही है ।

यह बोलते थे पाकीज़ा फ़िल्म की बदनाम गलियों की रौनक़ भी फीकी है इस सड़क के तथाकथित बौद्धिक लोगों के सामने । सर यह कहते थे अगर सबसे ज्यादा झूठ किसी जगह शाम के ६ से ९ बजे तक बोला जाता है तो वह है यूनिवर्सिटी रोड पर ।

“ यार हम तो बर्बाद हो गये, दो दिन से पढ़ा ही नहीं, यह निराला क्या लिख दिये बेवजह राम की शक्ति पूजा, इसको संस्कृत साहित्य के पाठ्यक्रम में होना चाहिये, इसको बेवजह हिंदी में डाल दिया । इस बार तो मेरा कुछ न होगा, अगली बार देखेंगे । कहीं से नोट्स का जुगाड़ बन नहीं रहा “ ।

अपने कोर ग्रूप बनायेंगे यह सब फ़र्ज़ी झूठे लोग । कोर ग्रूप में कहेंगे बताना मत किसी को जो हम पढ़ रहे, फिर कोर ग्रूप में छोटा ग्रूप, फिर अपना अकेला का ग्रूप । बस चले तो खुद से ही छिपा लें जो पढ़ रहे ।

अमर गुप्ता एक वाक्या साझा करते हैं कि वह किसी के यहाँ गये । वहाँ घर पर कुछ लोग पढ़ रहे थे एक साथ मिलकर । इनको देखकर सब अपना सामान ऐसा छुपाने लगे जैसे पड़ोसन फ़िल्म में सायरा बानू को देखकर सारे लोग अपना चेहरा छुपाने लगे थे जब सुनील दत्त पकड़े गये थे किशोर कुमार के गाने पर गाने का नाटक करते हुये ।

जगदंबा मौर्य के बारे में लोग अफ़वाह फैलाये थे कि यह जो लंबाई लेकर आए थे गाँव से उससे कम हो गई उनकी लंबाई इलाहाबाद में । जब यह गाँव से

आये थे तब IPS की लंबाई थी पर इतना पल्थी मारकर सिर झुका कर पढ़े कि रीढ़ की हड्डी संकुचित हो गई और चार - पाँच इंच लंबाई चली गई ।

चिंतन ने हाई स्कूल -इंटर की तैयारी लोगों के विवाह की जजमानी कराते - कराते कर ली । दो पंडित जाते थे विवाह कराने । चिंतन अपनी पतली सी कापी भी ले जाते थे और उसी बीच वह भी रट लेते थे ओम ओम के बीच । इनके कराये विवाह में पति पत्नी में ठीक से पढ़ती ही न थी । सप्तपदी के कुछ मंत्र तो यह गायब कर ही देते थे ।

बाबू धनंजय सिंह जितना पढ़ते थे उससे ज्यादा भाँजते थे । इस साल क़िला फ़तह कर दूँगा । इतनी गोली मारूँगा कि संघ लोक सेवा आयोग आयोग की दीवारों पर कि वह भरभरा कर गिर जाएँगी । उन गिरे परस्तर खंडों के बीच से एक सिंह की तरह मेरा प्रवेश होगा । मैं इलाहाबाद आया हूँ यहाँ से गौरव लेकर जाऊँगा ।

इनके चाचा दरोगा थे । दरोगा एक छोटा गोल रूलर रखने लगते हैं सी ओ बनने के बाद । वही रूलर लेकर आए थे वह अपने साथ । जब वह IPS बनेंगे तब वही रूलर लेकर जाएँगे अकादमी और यह रूलर कई प्रतिमान स्थापित करेगा । चुनार का ठाकुर बौद्धिक हो जाए वह तो ग़ज़बै ढा देगा । वही ग़ज़बै यह ढा रहे थे जबसे इलाहाबाद आए थे । पर यह जगत् नियंता भी एक अलगै चीज़ है । वह सबका इंतज़ाम किये रहता है । बाबू साहब बहुतै उड़ रहे थे , एम ए के वाइवा में कुछ नंबर कम पकड़ा दिया । इनके पंख ही जल गये ।

जगत् नियंता ने बहुत सँभाल के पंख जलाए । परम पिता ने आपदा प्रबंधन में इनका प्रबंधन ऐसा किया की कि रात में सोते हुये भी इनको नींद न आए । एक लड़की, दूसरे बराह्मण , तीसरे समहन के कछार की चौथे अति महत्वाकांक्षी । तुम एक तीर चलाओगे , वह शर की वृष्टि कर देगी । वह कहती भी थी , तुम्हारे अग्नेयास्त्र का जवाब मेरा वर्णन अस्त्र है । आप चलाओ तूणीर लगा दो आग मेरे पास है वह सब कुछ इस आग से लड़ने के लिये ।

इनका यह संवाद की , “ मैं समहन के तीव्र धारा की गहराई वाली गंगा के कछार की हूँ मुझसे गंगा की सहायक नदियों में पैर धोने वाले भी लड़ने की सोच रहे , मैं ऐसे उत्साह की दाद देती हूँ ”, दर्शन विभाग की दीवारों को भी याद हो गया था ।

अमर गुप्ता ने कहा , शशि वह बाबू धनंजय नहीं दिख रहे । क्या हुआ उनका ? शशि ने कहा , सर मुझे पता नहीं । सर बोले पता रखा करो , आप लोगों का रण - समर ही तो है जो हम लोगों को भी ऊर्जावान रखता है इस बुढ़ौती में ।

अनुराग शर्मा , यार तुमने जितनी साइकिल चलाई होगी पिछले 40/50 दिन में उतना तो कोई आज तक न चलाया होगा । जहाँ जाओ , वहाँ अनुराग मिल जाएँगे । एक दिन गये टाइम पास करने सर सुंदर लाल वहाँ यह टकरा गये । एक दिन गये माहौल लेने ताराचंद वहाँ मिल गये । अमित चौधरी बोले बद्री विशाल को नया चेला मिल गया है । वह बद्री विशाल के यहाँ ही रहता है । बद्री एक रहस्य बता ही दो आज । यहाँ दिल्ली में तुम्हारी और अमित चौधरी की हाथापाई हुई थी क्या? बहुत हल्ला है । कोई हमसे बोला कि आपने पहलवानी का दाँव चला दिया था , कई दिन तक अमित चौधरी सदमे में थे ।

बद्री विशाल बोले , नहीं सर । पता नहीं कौन फैला रहा यह ।

अमर गुप्ता बोले , भाई फैलाया तो हमने भी बहुत है पर पूछ कर , ऐसा हुआ था क्या ?

मैंने कहा नहीं कुछ , बस पूछा ही ।

यह जगत विचित्रताओं से भरा है । यहाँ फैलानेवाले दो तरह के होते हैं , एक वह होते हैं जो जानते हैं और फैलाते हैं पर कहते हैं बताना मत , दूसरे वह होते हैं जो जानते नहीं पर पूछ- पूछ कर फैलाते हैं ।

हम दूसरे वाले शरणी में आते हैं । हमको पता कुछ रहता नहीं पर जिज्ञासा रहती है पता करने की । एक यह हैं सुरुचि मैडम इनको जिज्ञासा किताब में ही है । जो मिले पढ़ मारो । इनको यही नहीं पता कि नौकरियों में क्या फ़र्क है । एक कैलाश पांडे हैं जो गोरखपुर के गाँव में ही कलर ब्लाइंडनेस का इलाज खोज निकाले , वह भी बग़ैर एक धेला खर्च किये ।

मैडम आपका वरीयता करम क्या है नौकरियों का

सुरुचि - IAS , IFS , IPS , IRS , IP&T FAS

कैलाश पांडे- यह p& T पहले क्यों दिया ?

सुरुचि - जिस करम में लिखा था फार्म में जो आया था यूपीएससी से वैसा ही भर दिया यह सोचकर कि upsc ने सीरीज में लिखा होगा , जैसी बेहतर और कम बेहतर नौकरी होगी ।

राजेश नारायण - नहीं मैडम , यह कस्टम की ऊपर है , रेलवे भी ऊपर है ।

कैलाश पांडे - रेलवे में बंगला , नौकर, प्रसी पास , सेलून मिलता है ।

अमर गुप्ता - यह रोटी पानी प्रसी का काम बहुत आता है , पांडे जी को । सुबह से सेलून - सेलून कान खा गये । बुलाओ टंडन जी को .एक जुगाड़ और बनाये ।

एक और आसामी मिला है जिनकों जुगाड़ चाहिये नौकरी की वरीयता बदलने में । पर मैडम आप का नाम तो टीवी में आएगा , आप कहाँ इन फटीचर दुनियाकी मामलातों में लगी हो ।

अरे मैडम आपकी कैफियत ही दूसरी है । आपका तसब्बुर, आपका ऐहतराम सब अलग है । आपका जो इंतख़ाब है वह ही अलग है । आप तो ख़बाब भी अंगरेज़ी में देखती हैं , चिंतन तो ख़बाब में अनुवाद सीखते हैं और यह राजीव सिंह तो अंगरेज़ी बोलने की परैकिट्स भी सपने में किये हैं । इतना कष्ट इन्होंने अपने को दिया है अंगरेज़ी बोलकर कि इनकी आत्मा ही जानती है ।

आप मेरी मानो तो दो में से एक काम करो या तो निकल जाओ विदेश , भारतीय विदेश सेवा में नहीं तो अंगरेज़ी साहित्य की सेवा करो । भारत सरकार की छवि को आप जैसे लोगों की ज़रूरत है । साहित्य को भी है । यह फटीचर सा काम पांडे , तिर्पाठी, बनिया , टंडन को करने दो ।

कैलाश पांडे - विदेश सेवा हमारी भी चाहत है ।

संजीव टंडन - भाई साहब वहाँ करेंगे क्या आप ?दो लाइन अंगरेज़ी बोलने में आप के दिमाग़ में पूरी ग्रामर की किताब घूम जाती है और अनुवाद कर- कर के दिमाग़ हाँफने लगता है ।

अमर गुप्ता - पांडे जी वैसे ही देश की छवि डावाँडोल है , आप उसको रसातल में न डालो । आप यहाँ की रोटी , पानी प्रसी नौकरियों में ज़िंदगी काट लो ।

कैलाश पांडे - हम अंगरेज़ी से स्नातक हैं ।

अमर गुप्ता - यह चिंतन , जगदंबा मौर्य सब अमरनाथ झा , फ़िराक़ गोरखपुरी के विभाग के अंगरेज़ी के स्नातक हैं । यह सबकी कापी एक - एक साल यूपीएससी ने जाँचने से इंकार कर दिया है , आप गोरखपुर के स्नातक हो , जहाँ की पढ़ाई पर हम क्या कहें । यह सब विदेश सेवा भरते नहीं इस डर से कि अंगरेज़ी बोलना पड़ेगा ।

पांडे जी फ़ायर हो गये । यह क्या बात है ? सुबह से इलाहाबाद- इलाहाबाद । ऐसा आप लोग कह रहे कि इलाहाबाद के बाहर सब बेकूफ़ ही हैं । हमारे गोरखपुर में भी एक से एक विद्वान है । जो चाहे हमसे निपट ले , किसी भी मामले में । आप लोग सब इलाहाबाद वाले एक साथ इकट्ठा होकर सबकी हँसी उड़ा रहे सुबह से । मेरा भी ज्ञान किसी ज्ञानी से कम नहीं , बस हम चुप हैं आप सब कहे जा रहे ।

अमर गुप्ता- यह तो गज़बै चीज़ है यार । यह तो कर्ण टाइप है जब देखो लड़ने को तैयार ।

भाई थोड़ा धैर्य रखो । अभी आप को लड़ाते हैं किसी ज्ञानी से । आज बाबू धनंजय सिंह की कमी खल रही । शशि हँसने लगी । सर बोले अभी जाकर शशि के मस्रब की बात हुई । पंडित जी आप नाहक नाराज़ हो रहे हो । अभी एक ज्वलंत समस्या आ गयी है । मैडम का थोड़ा वरीयता क्रम ठीक नहीं लग रहा विद्वानों के हिसाब से ।

मध्यांतर हो गया है । चलो कुछ जल- जोग हो जाए , फिर देखें संजीव टंडन कुछ जुगाड़ लगाते हैं या नहीं इस समस्या पर । सुबह से कह रहे जुगाड़ लगाते हैं पर लगाया तो एक भी नहीं ।

मौर्या जी आप चिंता न करो । बाराबंकी में बंगाली बाबा एक हैं उसका बोर्ड पढ़ा है मैंने उनके पास सबका इलाज है , लंबाई बढ़ाने का भी होगा । उनके पास ले चलेंगे आपको ।

राजेन्द्र नारायण तिरपाठी बोले , ऐसा होता है क्या?

मेरा तो एक ही सेन्टीमीटर का मामला है , हमको भी ले चलो । गुप्ता जी हँसने लगे और बोले

कौन से जात का पिसा आटा खाते हो ,

यह तो ग़ज़बै चीज़ है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 52

यह सिविल सेवा इंटरव्यू के बाद का मेडिकल का दिन बहुत ही रोचक होता है और एक नयी दृष्टि भी प्रदान करता है । इसमें बहुत सी विविध आयामों के व्यक्तित्व के लोगों से आपकी मुलाक़ात होती है ।

मैं इलाहाबाद के एक सामान्य से मुहल्ले में कूपमण्डुकों की तरह का जीवन जी रहा था । मेरा सारा जीवन जीआईसी , विश्वविद्यालय, कटरा के बीच बीता । कभी शहर के बाहर गया ही नहीं ।

मेरे आदर्श की पराकाष्ठा भी सीमित थी । इसमें बद्री विशाल मिश्रा, चिंतन उपाध्याय, अमित चौधरी , राजेश्वर सिन्हा आदि लोगों तक ही इसका विस्तार था । आज यह लगा कि मेरे आदर्श भी बहुत ही सीमित व्यक्तित्व के स्वामी हैं । इनका अनुपालन करके कोई बहुत दूर तक जा ही नहीं सकता ।

यह लोग सुबह से शाम तक अंगरेज़ी को कोसते थे । यह कभी कोशिश ही नहीं किये अंगरेज़ी सीखने की । राजीव सिंह ने जो किया वह बद्री विशाल भी कर सकते थे । राजीव सिंह कौन से दिल्ली के हैं । वह भी तो एक बिहार के दूर- दराज़ के इलाक़े से आये हैं , पर लगन अर्जुन ऐसी । अगर राजीव सिंह 15 घंटे अंगरेज़ी बोलने का अभ्यास कर सकते हैं तो यह क्यों नहीं ?

इन्होंने एक सूतर वाक्य बना लिया , यह अंगरेज न आये होते तो अंगरेज़ी न आती और हमको अंगरेज़ी पढ़ने की बाध्यता न होती ।

सिद्धांत एक अलग मिट्टी के । वह अपनी आवारापन की पराकाष्ठा पर सिविल सेवा के अंतिम द्वार पर आ पहुँचे , जहाँ यह लोग मर- मर कर पहुँचे । क्या पता यह भी तोड़ ही दें । ईश्वर को पटा लिया है यहाँ तक तो आगे का इंतज़ाम भी कुछ किया ही होगा ।

एक नया दर्शन इनके पास है कि अंगरेज न आते तो हम आज मध्य युगीन ही होते । वही समाज हमारा आज होता जो 1700 ईस्वी तक था । बात तो थोड़ा ठीक ही कह रहे कि सारी खूबसूरत इमारत देखो , किसने बनायी है यह

/ तुम अगर अपना इलाहाबाद देखो और खुद फ़ेसला करो कि किसने बनाया उसको , हल्ला करते रहो परयाग- परयाग / एक बार यह सोचो क्या था परयाग, इलाहाबाद बनने के पहले ?

यह वेस्टलैंड था , आप देखो अंग्रेजों के पहले का इलाहाबाद और उसके बाद का इलाहाबाद ।

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, यूडंग किरशिचयन कालेज , एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट नैनी , जमुना पुल , हाई कोर्ट बनाया तो अंग्रेजों ने ।

हमने क्या बनाया - ईश्वर शरण डिग्री कालेज , इलाहाबाद डिग्री कालेज , चौधरी महादेव परसाद डिग्री कालेज - यह सब तो कुछ ख़ास नहीं हैं शिल्प शास्त्रीयता में उनके सामने ।

एक नयी विचारधारा - यूनियन जैक वापस लाओ , यह आज तक दिमाग में ही न आई होगी किसी के , जो इनके पास है , कोई ऐसा सोच सकता है , यह भी एक आश्चर्यजनक तथ्य है ।

इनका कहना है कि पूर्ण स्वराज की जगह हमको डोमिनियन स्टैटस ही माँगना चाहिये था । 1927 के कांग्रेस के मदरास अधिवेशन में झटके में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव नेहरू और सुभाष बोस ने पास करा दिया था । 1928 में कलकत्ता अधिवेशन में गाँधी जी और मोतीलाल नेहरू ने बीच बचाव करके कहा कि राष्ट्रीय सहमति अभी डोमिनियन स्टैटस पर ही है । इसलिये एक साल का समय देकर वही माँग लेते हैं । अगले साल देखेंगे । अंग्रेज भी बचपना कर गये । उनको दे देना चाहिये था हमको डोमिनियन स्टैटस । यह दोनों के हित में था । पर अंग्रेज न माने और पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव 1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में पास हो गया । सिद्धांत के अनुसार इससे देश का विकास रुक गया । वह संपत्ति के दोहन के सिद्धांत पर कहते हैं जब डोमिनियन स्टैटस आता वह भी रुक जाता । वह अंग्रेजों के संरक्षण को देश के विकास के लिये आवश्यक मानते थे । उनका तर्क यह था कि उनके पास अनुभव था और वह एक सुपीरियर रेस हैं ।

उनकी बात सही है या गलत , यह एक अलग बहस का विषय है , पर यह तो एक अलग दृष्टिकोण है ही जिस पर कभी मैंने सोचा ही नहीं । भूगोल इनका भी विषय था , यह सिर्फ NCERT ही पढ़े ठीक से । यह बाकी किताब से कुछ इधर - उधर के मटीरियल से पढ़ा । समाज शास्त्र किसी के नोट्स से

मुख्य रूप से पढ़ा । तर्क भी नायाब , यह परीक्षा पास करनी है कोई अनुसंधान करना है क्या?

अगर यह सफल हो गये तो सफलता लिये ज़िंदगी के मज़े के साथ । सिगरेट पिया , शराब पिया , सेंट ज़ेवियर गये पर क्लास में नहीं गये , दोस्तों के साथ मटरगश्ती की और वह पा लिया जो चिंतन , जगदंबा , बदरी विशाल खून जलाकर भी न पा सके ।

रागिनी सिंह को देखो यह सारा दिन पेंटिंग ही करती हैं । क्या शौक है , क्या नायाब अंदाज़ ज़िंदगी जीने का ।

“ रंगों से खेलो , रंग की ही प्रकृति बदल दो । इन्द्रधनुष बनाओ पर वैसा नहीं जैसा दिखता है । इन्द्रधनुष बनाओ जैसा तुम्हारी आँखों में उत्तरता है , जैसा तुमको भाता है । यह इन्द्रधनुष एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है , पर आपकी कूँची में रंगों में कल्पनाशीलता है , शिल्प शास्त्रीयता है जिससे यह प्रकृति का उत्पादन मरहूम है इसी लिये अजल से ता अबद तक एक ही जैसा यह दिख रहा ।

यह प्रकृति तुम्हारी है जब कैनवास पर तुम रंग बिखेरते हो । तुम जगत नियंता हो उस कैनवास के , तुम क्यों बने बनाये प्रतिमानों से चलते हो । तुम्हारा जन्म ही प्रतिमानों को तोड़ने के लिये हुआ है । अगर प्रतिमानों से बँधा हुआ तुमको ईश्वर ने बनाना चाहा होता तो यह कला की इनायत तुमको न देता ।

उसने यह इनायत दी हैं क्योंकि वह खुद देखना चाहता है कि उसके द्वारा बनायी गई दुनिया किस तरह से और भिन्न हो सकती है । कौन सी अजली तरन्नुम है जो तुम उभार सकते हो , वह खुद चाहता है देखना एक नई सृष्टि में जो काव्य में , गद्य में , रंगों में , मूर्तियों में , नृत्य में , संगीत में तुम उभार सकते हो ।

इसी लिये उसने मानव के अंदर एक कलाकार को जन्म दिया वह भी सबमें नहीं कुछ अपने चुने हुये लोगों में । यह एक उत्तरदायित्व है अब हम पर , हम उसकी आकांक्षाओं पर खरे उतरे । राजा रवि वर्मा की चित्रकारी देखो , उसमें भी कमी दिखेगी । एक हाँथ दूसरे हाँथ से भिन्न दिखेगा । ऐसा क्यों है ? यह कभी सोचा है ?

यह इसलिये है कि सुंदरता पूर्णता में ही नहीं अपूर्णता में भी है । व्यक्ति सम्पूर्ण हो जाए तो वह ईश्वर हो जाएगा । इसीलिये यह माडर्न आर्ट एक अपूर्ण कला है । यह अपूर्णता की हिमायती है ।

इसमें कमियाँ ही कमियाँ हैं । पर वह कमी दिखती नहीं, सामने होकर भी वह आँखों को नहीं खटकती क्योंकि कलाकार आपकी कल्पनाशीलता को एक उड़ान देता है सौन्दर्य बोध की तरफ । उसके द्वारा सृजित लाल रंग, लाल होकर भी वह लाल नहीं होता जो रंग लहू का है, सूरज का है, लोहार की भट्टी के कोयले का है या इन्द्रधनुष का है ।

कलाकार का अपना एक अलग लाल रंग है जो सिफ़र उसका है और उसका सृजन उसने किया है । वह सर्जक है, वह बेपरवाह है, वह लकीरों को तोड़ रहा, वह आगरहों से मुक्त है, वह कल्पनाशील है ।

वह यह सब क्यों कर रहा ?

इसका सिफ़र एक जवाब है, वह कुछ तलाश रहा ।

क्या वह अहंकारी है, जो अपने लिये अलग तलाश कर रहा कुछ नवीन, एक प्रतिमान स्थापित करना क्या एक अहंकार को परिलक्षित करता है व्यक्तित्व में ?

कलाकार अहंकारी नहीं होता । अहंकार कला का नाश करता है । कलाकार को सौम्य एवम् नम्र होना एक प्राथमिकता ही नहीं एक आवश्यकता है ।

फिर वह क्यों कर रहा यह सब ?

वह संतुष्टि की तलाश में है । जिस प्रकार एक योगी को ध्यान में, भक्त को भजन एवम् अरदास में, साधक को साधना में, भ्रष्टाचारी को भ्रष्टाचार में संतुष्टि मिलती है वैसे ही एक कलाकार को सर्जन में मिलती है ।

वह बेचैन रहता है जब तक सर्जन का कार्य आरंभ न कर दे ।

क्या सर्जन की अंतिम परिणति में ही कलाकार संतुष्ट होता है ?

उसको संतुष्टि कब मिलती है ?

जैसे ही वह सर्जन आरंभ करता है उसका लहू शांति प्रदायनी आक्सीजन को ज्यादा मात्रा में धड़कनों की ओर ले जाने लगता है । यह एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है । यह आत्मा की प्रमात्रा के ओर की यात्रा है । यह अद्वैत दर्शन है । कलाकार अद्वैतवादी होता है ।

रागिनी सिंह का यह व्याख्यान मेरे मस्तिष्क से जाता ही नहीं । जब वह यह बोल रहीं थीं उस समय उनकी सुंदरता पर यह विचार प्रवाह भारी पड़ रहे थे । जिंदगी को जीने का एक नया आयाम , एक नई सोच । यह नौकरी सिफ्ऱ एक साधन है जीवन का । यह कोई साध्य तो है नहीं । पर मेरे लिये यह एक साध्य है । यह एक जीवन मरण का प्रश्न है , अगर सफल न हुआ तो अपने को अग्निमेषित कर दूँगा । वहीं रागिनी कह रहीं , अगर नहीं हुआ तो और भी हैं राहें जीवन में , वह तलाश करूँगी । यह जीवन और विश्व संभावनाओं से भरा है । इसको आप सीमित दायरे में मत देखो ।

तीन लड़कियाँ , रागिनी , शशि , सुरुचि , तीन अलग दृष्टिकोण ।

शशि एक संघर्ष कर रही अस्तित्व का इस परीक्षा के सहारे । वह जानती है कि अगर वह सफल न हुई तो उसका जीवन बहुत ही सामान्य होगा । वह गाँव के पृष्ठभूमि की लड़की है । वह पितृ विहीन है । वह ज़िद करके शहर आई है । छात्रावास मिल गया , यहाँ का संस्कार मिल गया , इलाहाबाद विश्वविद्यालय एक जुनून भर ही देता है और इनके पास तो वह पहले से ही था उसमें और अभिवृद्धि हो गई । पिछले साल असफल रहीं यह अब इस साल छात्रावास छोड़ना पड़ सकता है , यह भी चिंता खाये जा रही इनको पर हार मानना इनके खून में है ही नहीं ।

रागिनी के लिये जीवन बहुआयामी है । वह एक लकीर के जीवन में यकीन ही नहीं करती । वह जीवन को एक कला दीर्घा की तरह देखती हैं । उनके लिये जीवन कभी अंत नहीं होता । जीवन हर दिन एक नये अवसर देता है ।

सुरुचि के लिये जीवन ज्ञान प्राप्ति के लिये है । वह दुनियावी चीजों को कम जानती हैं । वह IAS क्यों बनना चाह रहीं यह उनको खुद ही नहीं पता , सब परीक्षा दे रहे हम भी दे देते हैं । वह अंग्रेजी विभाग की लाइब्रेरी में ज्यादा पाई जाती हैं । उनके लिये जीवन जैसा आ रहा , वैसा ही स्वीकार करो ।

जितने छात्र उतनी अलग-अलग दिशाएँ..

सिद्धांत- जीवन ऐश करने के लिये बना है । दिमाग पर लोड कम दो । यह बेवजह की देशभक्ति, अंध राष्ट्रवाद से किसी का कल्याण न होगा । अंगरेजों के योगदान को स्वीकारो और मानो वह हमसे बेहतर थे । यह अंगरेजी सब सीख गये होते अगर यह देशी भाषा , देशज संस्कार का आंदोलन न चला रहे होते आप लोग । यह भाषा ही है , जैसे हिंदी सीखे वैसे अंगरेजी । यह कोई अस्मिता का नाश नहीं हो जाएगा अगर आप दूसरी भाषा में पढ़ना शुरू कर दोगे । “ stop living in the past “ यह इनका सूत्र वाक्य है ।

संजीव टंडन - बस जुगाड़ ही सब कुछ । जुगाड़ के बगैर कुछ नहीं होता । यह जुगाड़ ही है जो सृष्टि चला रहा और यह पृथ्वी शेषनाग के फ़न पर नहीं जुगाड़ पर टिकी है । यह IIT के टापर होकर भी विदेश नहीं जाना चाहते । इसका कारण कोई देश परेम या देश से लगाव नहीं है । इनको इस अवधारणा का पता ही नहीं है अगर पता भी है जो मस्तिष्क में कहीं खो सा गया ।

विदेश न जाने का कारण यह खुद ही बताते हैं , “ मुझे बाहर जाकर माथा फोड़ी नहीं करनी है । यह विदेश घूमने के लिये ठीक है रहने के लिये नहीं । यहाँ रहेंगे अपने चार लोगों के काम आएँगे वहाँ चले गये तो बेकार हो गये ” ।

रंजन अग्रवाल - यह एक अलग ही क्रिस्म के नायाब चीज़ हैं । इनको कोई जाने ना । यह सारा काम चुपचाप करेंगे । यह हर क्लास में फ़र्स्ट आने से बचते थे क्योंकि फ़र्स्ट आ गये तब लोग इनको जान जाएँगे । यह IAS को न लेने का कारण अपना एक अनुभव बताते हैं । एक बार यह लखनऊ से गये रायबरेली अपने किसी दोस्त के साथ सरकारी अधिकारी की लाल बत्ती और बँगले का जलवा देखने । इन्होंने देखा , एक टूटा सा पुराना आदिम जमाने का बड़ा सा बँगला , उसके पोर्टिको में लाल बत्ती की कार , दूर - दूर तक सन्नाटा, बँगले के ही अंदर की झाड़ पर जुगनुओं का शोर ।

इन्होंने पूछा सरकारी अफ़सर से , यहाँ कितने दिन रहना होगा ?

अफ़सर ने कहा कल का तो पता नहीं पर मुझे अढ़ाई साल हो गये ।

रंजन - यहाँ सिनेमा हाल कितने हैं

अफ़सर - हैं तो तीन पर चलता एक ही है

रंजन - उसमें नई फ़िल्में लगती हैं ?

अफ़सर - लगती तो कम ही हैं , हाँ यदा- कदा आ जाती हैं ।

रंजन - आपके ज़िलाधिकारी यहाँ कितने दिन से हैं ?

अफ़सर - दस महीने हो गये उनको आये

रंजन - वह फ़िल्म नहीं देखते ?

अफ़सर- समय कहाँ मिलता है इस किच- किच में । आराम से दो वक्त का भोजन और रात की नींद मिल जाए वही बहुत है ।

रंजन अग्रवाल का फ़ैसला हो गया , IAS लेने का ही नहीं । फ़िल्म देखने के शौक पर IAS की नौकरी को खुशी-खुशी कुर्बान कर दिया । यहाँ मैं हूँ बस वही लाल बत्ती, बंगला , झूँठा अहम और सामन्तवादी मानसिकता ।

अमर गुप्ता का विशेष मत , काम करना सबसे बड़ी बेवकूफ़ी । आज तक काम से किसी को क्या मिला ? आप देख लो इतिहास , सबसे सुखी कौन जो कुछ न किया । राजा दशरथ के चार पुत्र , पर सबसे सुख में कौन ?

शत्रुघ्न

राम जी चले रावण से लड़ने, लक्ष्मण जी लग लिये सेवा करने , भरत जी चले गये नंदीग्राम सत्य के साथ ज़मीन से एक फुट नीचे वास करने । यह सब त्यागी । पर शत्रुघ्न जी रहे महल में । राज चलाया 14 साल । यह सब बहुत ही आदरणीय हैं । यह ईश्वर हैं, पर हर कहानी एक शिक्षा देती है । यह भी दे रही । आक्सीजन सोखने के अलावा जीवन का कोई काम सार्थकता प्रदान नहीं करता । आप यह सीख लो , कैसे काम नहीं करना और अभ्यास करे आक्सीजन को ज्यादा मात्रा में सोखने का ।

अमर गुप्ता इसी धारा प्रवाह में यह भी बोलते हैं , देखो एकदम काहिल न बन जाओ । आप थोड़ा-बहुत काम करो , पर ध्यान रहे वह ज़रूरी काम हो । आप काम करने वालों का सम्मान भी करो और उनको उत्साहित भी करो । उनको मत कहो काम न करो , सब आपकी तरह बन गये तब यह गैर ज़रूरी काम कौन करेगा ?

यह सरकार ज़रूरी काम से ज्यादा तरजीह देती है गैर ज़रूरी काम को । यह रिपोर्ट सबसे गैर ज़रूरी काम है , पर सरकार को यह हर रोज़ चाहिये । यह काम आप बिल्कुल न करो , पर नीचे वालों को कहो कि यह काम ज़रूरी है । यह रिपोर्ट नीचे से वक्त पर मँगा लो और चिड़िया मार कर भेज दो । यह

रिपोर्ट समय पर आ जाए बस , यही चाहत है सिस्टम की । इसको पढ़ने की किसको फुर्सत है , कौन पता करेगा कि यह सही है कि गलत है ।

यह अपना एक वाक्या साझा करते हैं कि वह एक तहसील में उनकी तैनाती थी । वहाँ उस समयकमिश्नर साहब ने एक रिपोर्ट माँगी , गाँव वाइज़ आप वृक्षारोपण की रिपोर्ट दो । मैंने पता किया कि और एस डी एम क्या कर रहे । यह पता चला कि यह पेड़ गिनवा रहे ।

मुझे पता चला कोई बहुत लागी एसडीएम था एक साल पहले बगल की तहसील में , उसने गाँव प्रधानों को काम पर लगाकर पूरा गिनवाया था दो महीने मेहनत करके हर तरह के पेड़ों का वर्गीकरण करके ।

मैंने वही रिपोर्ट माँगायी और सन्न मारकर अपने आक्सीजन सोखने के काम में लग गए । दो दिन बाद वही रिपोर्ट थोड़ा फ़िगर में हेर- फेर करके भेज दिया । हमारे यहाँ सारे एसडीएम लगे हैं पेड़ गिनने में । अब कौन बताए इन बेवकूफ़ों को तहसील बगल की , मिटटी एक , सिंचाई की सुविधा राम भरोसे , सरकार का फंड एक जैसा , काहिल अफ़सर कर्मचारी सब उसी मानव प्रजाति के , फिर एक तहसील का फ़िगर दूसरे से कितना अलग हो जाएगा ?

अगर अलग हो गया तब भी कौन जाएगा गिनने ? अगर चला भी गया गिनने तो हवा , बताश , आँधी - तूफ़ान आया होगा , अब उसका एस डी एम क्या कर ले । पर यहाँ लगे हैं सुबह- शाम ब्लड प्रेशर बढ़ाने में और फ़र्ज़ी फ़िगर के सहारे कमिश्नर को तेल लगाने में । कमिश्नर सेट होता है सफ़ेदा आम से और मेम साहब को सेट करना सबसे ज़रूरी ।

सर यह भी बोले कि इतना काम ज़रूर करो कि आप अपनी निगाह में न गिर जाओ । आप दूसरे के निगाह में गिरकर तो उठ सकते हो पर अपनी निगाह में गिरकर आप नहीं उठ सकते ।

सर ने कहा , एक मैं ज्ञान और देता हूँ जो जीवन में हर सिविल सेवा वाले को याद रखना चाहिये

इतने में खाना आ गया ।

सर बोले थोड़ा इसको हींच लेते हैं फिर वह ज्ञान बघारते हैं ।

संजीव टंडन बोले , सर पूरा गुटका का डिब्बा और बाबा , तुलसी दोनों ले लिया है । आप इंजन चालू रखो , तेल का पूरा इंतज़ाम है ।

सर बोले ...

यार यह टंडन ग़ज़बै जुगाड़ू है ।

यह 6 फ़िट 5 इंच ज़मीन के ऊपर है और ज़मीन के नीचे इसकी टाँग और शेषनाग का फ़ून आपस में टकराते हैं और इन दोनों की टकराहट से जो ऊर्जा उत्पन्न होती है उससे धरती का बैलेंस बना हुआ है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 53

इस सिविल सेवा की परीक्षा ने मेरे जीवन को पूरी तरह से बदल दिया । मैंने प्रारम्भिक परीक्षा के लिये बहुत पढ़ा था, जैसा इलाहाबाद का हर अभ्यार्थी करता है । इलाहाबाद के अभ्यार्थियों में यह एक प्रवृत्ति पायी जाती है कि वह अकट्टूबर, नवंबर से ही प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी शुरू कर देते हैं । इस परीक्षा के परिणाम के बाद वह मेंस के लिये दूसरे विषय की तलाश शुरू करते हैं, इस परिस्थिति में तो परीक्षा में सम्पूर्ण सफलता थोड़ी मुश्किल ही है । मैंने इनसे थोड़ी अलग रणनीति अपनायी थी, शायद इसीलिये मुझे सफलता प्राप्त हुई । मैंने मेंस का काफ़ी कुछ तैयार पहले ही कर लिया था ।

यह शायद एक ऐसी रणनीति थी जो काम कर गई । हिंदी साहित्य लेने का फ़ैसला सिर्फ़ इसलिये किया था कि अंग्रेज़ी पढ़ने की ज़रूरत न पड़े । मैं अंग्रेज़ी पढ़ने में बहुत सहज न था । मुझे अंग्रेज़ी में कुछ भी करने में अतिरिक्त संघर्ष करना पड़ता था, चाहे वह पढ़ना हो, लिखना हो या सुनना । मुझे बोलने में तो असहजता बहुत ही थी । मेरा पूरा मस्तिष्क एक अनुवाद की प्रक्रिया में लग जाता था, जैसे ही मैं बोलने का प्रयास करता था । इस अनुवाद से गुजरने की प्रक्रिया बहुत ही पीड़ादायक होती है, कम से कम मेरे लिये तो थी ही बहुत दर्द देने वाली । मुझे इस दर्द को अपनाने से परहेज़ था, वह भी तब जब दर्द का चुनाव करें या न करें या विकल्प हो आपके पास ।

इस दर्द का एक कारण यह था, मेरा अंग्रेज़ी का शब्द कोश बहुत ही सामान्य क्रिस्म का था । मुझे बार - बार शब्दों की तलाश करनी पड़ती था । मैं व्याकरण के सिद्धांतों में उलझ जाता था । ग्रामर की रटी हुई किताबों के पेज मस्तिष्क में विचरण करने लगते थे । यह उच्चारण मैंने सीखा ज़रूर था

फोनेटिक्स के सहारे और Advance learner dictionary से पता नहीं कितने फोनेटिक्स याद भी किये , पर याद करना और बोल लेना यह दो अलग प्रक्रियायें हैं । मैं पहली प्रक्रिया कर गया था पर दूसरी प्रक्रिया मुझसे नहीं हो पाती थी ।

मैं भी राजीव सिंह की तरह कोशिश करता था , पर राजीव सिंह ऐसी सफलता प्राप्त न कर सका । मैं एक ही शब्द का बोलने में बार- बार उपयोग करता था , यह मेरे अभिव्यक्ति की कमज़ोरी को स्पष्ट रूप व्याख्यायित करती है ।

मेरे हिंदी बोलने में एक शब्द दुबारा आ ही नहीं सकता । मैं शब्दों की जादूगरी बिखरे देता हूँ जब हिंदी बोलता हूँ , वहीं अंग्रेज़ी बोलते समय मैं एक अकिञ्चन बन जाता हूँ । मेरे अपने भीतर ही एक भिक्षु का जन्म हो जाता है , जो पूरे मस्तिष्क में भिक्षा माँगता है शब्दों की और उसे भिक्षा भी मिलती है तो अपर्याप्त, अपूर्ण और मैं निरीहता को प्राप्त कर जाता हूँ ।

मैं इस निरीहता से बचना चाहता था । मेरी सिविल सेवा की पूरी तैयारी एक ही बिंदु पर अवस्थित थी । मैं किस तरह अंग्रेज़ी पढ़ने और बोलने से बचूँ । इसी को ध्यान में रखकर मैंने विषय का चुनाव किया । मैंने भूगोल और एनथरो पर भी विचार किया था , पर उसमें बग़ैर अंग्रेज़ी में पढ़े काम नहीं हो सकता था । मैं न तो अंग्रेज़ी में पढ़ना चाहता था न ही लिखना और बोलना , इसलिये विषय का चुनाव सिर्फ़ एक अवधारणा पर हुआ ।

हिंदी में किस विषय में सबसे ज्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं । यह इतिहास और हिंदी साहित्य के ही साथ था । इतिहास का पाठ्यकरम बहुत ही बड़ा था और उसमें अंक भी कम मिल रहे थे , पर मैं क्या करता ? मेरे पास कोई चुनाव न था । मैंने समुद्र की उफान भरती लहरों को शांत और छिछली नदी की तुलना में चुना क्योंकि मुझे अपनी ताक़त का और कमज़ोरियों का एहसास था । मुझे अपनी हिंदी भाषा की कश्ती पर अगाध विश्वास था जो मुझे तब भी लहरों से लड़ने का हौसला देगी जब जहाज़ तूफ़ान की भयावहता में समर्पण कर रहे होंगे ।

मुझे बहुत धक्का लगा कुछ दिन बाद जब पता लगा कि विश्व इतिहास में अंग्रेज़ी में बेहतर पुस्तकें हैं , हिंदी माध्यम की तुलना में । इतिहास विषय में प्रतिद्वंद्वी ज्यादा सशक्त हैं । सेंट स्टीफेन्स का इतिहास में दबदबा हुआ करता था । दिल्ली विश्वविद्यालय का परचम लहराने लगा था । जे एन यू में

रोमिला थापर , सतीश चन्द्रा , बिपिन चन्द्रा पढ़ाया करते थे । सुना यह भी है कि वह यूपीएससी की इतिहास परीक्षा के माउंटर भी हैं ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय का यूपीएससी की परीक्षा में कोई ख़ास दखल न था । यहाँ तक कि कापी जाँचने में भी कुछ ही लोगों का नाम सुना था । भूगोल से डा सर्विंदर सिंह, गणित से डा माता अम्बर तिवारी , रसायन शास्त्र से डा शिव प्रकाश । यही तीन नाम सुनने में आये ।

यह वह दौर था जब कम्युनिस्ट विचारधारा के अध्यापकों का बोलबाला था । वह जो चाहे पढ़ा दें । जैसा चाहें वैसा इतिहास लिख दें । वह औरंगज़ेब का अपनी टोपी स्वयम् सिलने को एक महान उदारता पूर्ण कार्य लिखकर उसकी अमानवीयता और नृशंसता पर पर्दा डाल दें और कह दें वह एक महान समाज सुधारक और धर्म निरपेक्ष शासक था , उसे मजबूरी में धर्म का सहारा लेना पड़ा क्योंकि राज्य में उलेमा वर्ग की बहुत चलती थी । वह राज्य चलाने की ज़रूरतों को लेकर बाध्य था , इसलिये उसने धर्म का इस्तेमाल किया , हलाँकि वह था पूर्ण रूपेण धर्म निरपेक्ष ।

जिस कर्सर शासक ने अपने ही भाई मुराद , जिसका उपयोग उसने सत्ता प्राप्ति के लिये किया और उसी को कालांतर में बेवजह , साक्ष्य विहीन आधारों पर धर्म विरोधी करार करके फाँसी के तख्ते पर लटका दिया हो , जिसने राज्य के घोषित उत्तराधिकारी दाराशिकोह को चाँदनी चौक की गलियों में हथकड़ी एवम् बेड़ी में बाँधकर सत्ता के प्रतीक सजे हुये हाथियों पर एक अत्यन्त अपमानजनक अवस्था में घुमाया हो उसकी हत्या करने के पहले , उसकी सदाशयता के लिये इतिहास में घटनाओं की तलाश , यह भी एक अजीब कोशिश थी । उसने नृशंसता की सारी हदें पार कर दी थी । दाराशिकोह का कटा सर उसने एक थाल में सजा कर लाल कपड़े में ढककर अशक्त और वृद्ध पिता शाहजहाँ को भेंट करने वाले ऐसे कर्सर शासक की करुरता इतिहास के पन्नों में छिपा दिया गया उसके तथाकथित टोपी सिलने के उदारता पूर्ण कार्य के मद्दिम से आलोक में ।

एक ऐसा इतिहास लिखा जा रहा जिसे हम पढ़ने को मजबूर हैं । जब अकबरनामा - आईने अकबरी पढ़ते हैं तो पाते हैं अकबर में देवत्व और चंगेज़ ख़ान में रुहानियत को तलाश करने की प्रवृत्ति । अब चंगेज़ ख़ान , तैमूर में भी रुहानियत है , यह पता नहीं कहाँ से दिख जा रही लोगों को ।

सन 800 से 1200 के बीच का इतिहास एक इतिहास का अंधकार युक्त काल है, यह कई लोग लिख रहे। यह 1200 के बाद कौन सा सूरज निकल आया, यह मुझे तो न दिखा। इल्टुमिश, बलबन की उपलब्धियों में सिवाय सत्ता पर कङ्जा करने के और कुछ तो मुझे दिखी ही नहीं। बरनी पर अगर यक़ीन किया जाए तो यह दिखता है कि बल्बन सिर्फ़ कुलीन वंशीयों से मिलता था और उसके नथुने करोध में फड़कने लगते थे, अगर वह जन सामान्य को देखता था।

मुग़ल क़ालीन चित्रकारी में सामान्य जनजीवन का कोई स्थान ही नहीं और शाहजहाँ ने तो चित्रों पर आभामंडल ही बनवा दिया दिया, एक देवता की तर्ज पर।

मुझे इतिहास के पन्नों में सन 800- 900 के बीच का कोई खास ज़िक्र नहीं मिलता। यह सवाल मैंने इतिहास के कई जानकारों से किया भी कि इस दौर का ज़िक्र क्यों नहीं मिलता इतिहास के पन्नों में। इसको किसी ने संजीदगी से क्यों नहीं लिखा? पर इसका कोई संतोषजनक उत्तर न मिला मुझे। क्या ऐसा संभव है कि किसी रेस का सौ साल का इतिहास हो ही नहीं?

यह विजेताओं के द्वारा लिखा इतिहास है या विजेताओं की मानसिकता के द्वारा लिखा इतिहास है? पिछले पचास वर्षों से ज्यादा के इतिहास के शोध में वह ज़िक्र क्यों नहीं जो इस देश के इतिहास का सम्पूर्ण मध्य काल है।

राणा प्रताप को जनता का व्यापक समर्थन प्राप्त था, उसने अकबर की सेनाओं को कई बार हराया था पर इसका भी कोई ज़िक्र प्रमुखता से नहीं होता। जब मेवाड़ के प्रति जहाँगीर ने नीति बदली तभी दोनों के बीच

समझौता हो पाया। अकबर और राणा प्रताप के बीच समझौता न हो पाया इसका एक कारण यह भी था, अकबर की ज़िद थी कि राणा व्यक्तिगत रूप से दरबार में हाज़िर हों, जिसके लिये वह तैयार न थे।

एक स्वाभिमान एवम् आत्म सम्मान की गाथा इतिहास में प्रमुखता को प्राप्त न कर सकी और धूमिल हो गई, उसकी आवाज़ कहीं खो गई, एक साम्राज्यवाद के प्रहरी घोड़ों के टापों एवम् रणभेरियों के बीच। अकबर का अपने भाई मिर्ज़ा हाकिम के साथ अच्छा व्यवहार न था पर वह लिखना उसकी महानता के आलोक को कम कर सकता था, इसलिये शायद वह न लिखा गया।

हमें सिविल सेवा परीक्षा में एक ही चीज

सिखायी गई आप कम्युनिस्ट विचारधारा से लिखो । आप अपने को कम्युनिस्ट बनाओं । आपकी अपनी विचारधारा नहीं होनी चाहिये । आप या तो कम्युनिस्ट बनो या बनने का नाटक करो, अगर इस परीक्षा में सफलता प्राप्त करना चाहते हो । सिर्फ़ क़रीब 200 साल का इतिहास 1526 से 1706 के दरम्यान सिर्फ़ चार शासक का काल, महान् मुग्ल काल हो गया और पिछला सारा इतिहास गया तेल लेने । यह 200 साल से कम का इतिहास स्वर्ण काल और 800 से 1200 का काल अंधकार काल ।

अकबर के समय 144 किसान विद्रोहों का इतिहास बताया जाता है पर किसान विद्रोह से क्या होता है, वह तो साम्राज्य विस्तार कर रहा था, अबुल फ़ज़ल देवत्व का आरोपण कर ही रहे थे । अकबर की महानता निःसंदेह थी उसकी सुलहे कुल की नीति को लेकर पर वह भी लिखा जाना चाहिये था, जो उस वक्त में घट

रहा था समाज में, संस्कृति में, लोगों के जीवन में । ऐसा नहीं है कि वह बिल्कुल ही लिखा नहीं गया पर प्रमुखता से नहीं लिखा गया । प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर तो बिल्कुल ही नहीं बताया गया ।

यह लगता है कभी- कभी यह फ़राड़ सा दिखने वाला सिद्धांत श्रीवास्तव ठीक ही बोलता है, हम पैदा ही हुये हैं, शासित होने के लिये । एक विचारधारा का शासन तो है ही हमारे ऊपर । यह विचारधारा जो मेरी नहीं है वह हम पर थोपी जा रही और हम नौकरियों के चक्कर में स्वीकार कर रहे,

“माई - बाप नौकरी दो, हमें रोज़ी- रोटी दो” ,

हम दिन को भी रात कह देंगे भले ही वह सुबह की क्यों न हो । गोरख पांडे ने ठीक ही लिखा है

रानी बोली रात है

राजा बोले रात है

मंत्री बोला रात है

यह सुबह-सुबह की बात है ।

ऐसे ही लोग तैयार किये जा रहे इस परीक्षा के द्वारा सरकार में काम करने के लिये । आप वही करो जो शासन चाहता है, इसकी पहली ही प्रक्रिया शुरू

होती है आप वही पढ़ो और लिखो जो हम चाह रहे । आप लिखो वही जिस विचारधारा का हम प्रसारण कर रहे । अगर मेरी बात नहीं मानी तो जीवन में साँस तो ले सकते हो , पर वह भी आसान न होगा । यह जो विचारधारा का संकट है यह बड़ा संकट है । यह आत्मा को वह स्वीकार करवाना है जिसको आत्मा स्वीकार करने को तैयार नहीं है ।

इस सिविल सेवा परीक्षा की उत्तर लिखने की प्रक्रिया बहुत अलग है , कम लिखो , पूरी बात लिखो और हमारी विचारधारा से लिखो । आज तक किसी ने यह नहीं बताया कि यह विचारधारा का बिंदु कहाँ से आया पर हर कोई कहता यही है । हर सीनियर यही कहता है कि आप इस विचार धारा से लिखो । आप जब इंटरव्यू दो तब आप कम्युनिस्ट माइंड से बात करो । इसका कारण यह बताते हैं कि शासन में इस विचारधारा का प्राधान्य है और जो एक्सपर्ट आते हैं , वह इसी विचारधारा के होते हैं ।

क्या चिंतन सर , बद्री विशाल को नंबर इसलिये तो कम नहीं मिले कि वह इस विचारधारा के नहीं हैं । मैं जानता हूँ यह कम्युनिस्ट तो बिल्कुल ही नहीं हैं ।

कहीं ऐसा तो नहीं मैं भी इनके रास्ते पर

मैं भी कम्युनिस्ट तो नहीं ही हूँ भले ही प्रगतिशील विचारधारा रखता हूँ ।

कहीं मेरा उत्तर इंटरव्यू में कम्युनिस्ट विचारधारा विरोधी तो नहीं था ?

क्या मैं ख़त्म हो जाऊँगा अगर उन्होंने पकड़ लिया कि यह कम्युनिस्ट विचारधारा का नहीं है । मेरे समुख एक नया संकट ,

कमल व्यूह पकड़े जाने से बड़ा संकट विचारधारा के पकड़े जाने का कैसे पता चलेगा मेरे उत्तरों से कि यह कम्युनिस्ट है या नहीं है ?

एक नई समस्या

कैसे निदान हो ?

किससे पूछे ?

मेरे अंदर मेरा इंटरव्यू घूमने लगा

मैं भूल गया कि मेरे सामने खाना रखा हुआ है ।

मैं एक अकेला आदमी
एकदम अकेला
जगह बनायी अपने रहने की
जिसमें मैं खुश रह सकूँ
स्कूल के दहलीज़ में इमली का पेड़
रास्ते में पैदल चलते हुये
दौड़ते रिक्षों पर पीछे लटकना
फिर वह एक सपना
जो मैंने न देखा पर मुझे दिखाया गया
मेरे परिवेश ने चीख- चीख कर कहा मुझसे
तुझे कुछ और नहीं
सिफ़र यही बनना है
न सही अपने लिये हमारे लिये
मैंने शबनम से भीगी धास देखनी छोड़ दी
उस पर उतरे चाँद से अनबन कर लिया
सलाबत अपने साथ की मैंने
ऐसे शनासा चेहरों का एक मंज़र सजा लेता था हर रोज़
जो उस ख्वाब और ख्वाहिश के साझीदार हों
अपनी धड़कनों की संजीदगी के लिये नहीं
उनकी धड़कनों के सुकून के लिये
जो मेरे ख्वाबों के डैनों पर
अपनी ख्वाहिशों का बोझ लादे हैं

हर शाम यही कहता हूँ
ऐ शनाशा चेहरों चलता हूँ
कल फिर मिलूँगा
इसी जगह , इसी तरह

पर मेरा विचार प्रवाह मुझे जीने नहीं देता
एक ख्वाब भर देता है, एक ख्वाहिश जगा देता है

अपने शर्तों पर जीने की
यह कहकर
जमीर की जंग होती है बहुत नेक
एक बार तू लड़कर तो देख ।

पर कैसे लड़ँ, किसके सहारे लड़ूँ। ऐ मेरे जमीर माफ़ कर मुझे तुझे घुट-
घुटकर ही मेरे अंदर जीना होगा, पर मुझे छोड़कर मत जाना ।

मैं ज़िंदा रहना चाहता हूँ, पर सिर्फ़ साँस लेकर ही नहीं तेरे साथ रहकर ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 54
इलाहाबाद डायरी क्या है ?

यह सवाल कई लोग पूछ रहे ।
“यह इलाहाबाद डायरी है क्या ? ”

यह डायरी एक उपन्यास की तरह की संस्मरणों की एक शुंखला है ।

क्या इसमें सिर्फ़ लेखक के ही संस्मरण हैं ?

क्या यह एक आत्मकथा सरीखी है ?
इसमें सिर्फ़ लेखक के ही संस्मरण नहीं है, बल्कि उसमें एक पूरा वह दौर है
जिसे सिर्फ़ मैंने ही नहीं बहुतों ने जिया है ।

यह एक व्यक्ति की आत्मकथा नहीं है । यह एक दौर की आत्मकथा है ।

जगत नियंता की आपदा प्रबंधन के कुछ आशीर्वचन मेरे लिये थे , मैं परीक्षा में सफल हो गया । यह उसकी इनायत है कि उसने कई काबिल प्रतिभाशाली लोगों पर मुझे अधिमानता दी और मैं एक दौर की आत्मकथा लिखने का साहस कर सका ।

क्या यह डायरी सिफ़र परीक्षा में सफल होने वाले की ही कहानी है ?

नहीं , यह एक संघर्ष गाथा है । यह व्यक्ति के भीतर उपजी आशा - निराशा , प्रसन्नता- अवसाद , धैर्य - अतिरेकिता , संयम - विचलन के बीच से गुजरते व्यक्ति के परिवेश और कालजयी संघर्ष जो यूनिवर्सिटी रोड , विश्वविद्यालय परांगण , विभिन्न छात्रावासों , डेलीगेसियों में उपजे अदम्य साहस , जिजीविषा और जज्बे को समाहित करती हुई अपनी एक अभिव्यक्ति प्रदान करती है ।

यह इलाहाबाद के परिप्रेक्ष्य में लिखी होकर भी एक व्यापक भौगोलिक क्षेत्र को अपने में समाहित करती हैं जहाँ भी सिविल सेवा के लिये संघर्ष करने वाले महारथी चक्रव्यूह के लिये अर्जुन का इंतज़ार न करके स्वयम तोड़ने को सन्देह हो जाते हैं ।

यह किस दौर की कहानी कह रही ?

यह डायरी 1986 - 87 से 1994-95 तक के दौर की कहानी कह रही ।

क्या यह आज के दौर से निस्पृह है ?

नहीं , यह आज के दौर में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितने पहले थी । बस फ़र्क़ यह है उस दौर के विश्वविद्यालय की छाया मात्र ही आज के दौर का यह परांगण रह गया है , यह परांगण वर्तमान से नहीं बल्कि अतीत से अपनी शक्ति प्राप्त कर रहा । छात्रों के जज्बे और संघर्षशीलता में कोई कमी नहीं है ।

क्या इस डायरी के पात्र क्या काल्पनिक हैं ?

इस डायरी के ज्यादातर पात्र सजीव हैं । उनके चरित्र- चित्रण में थोड़ी नाटकीयता , रचनात्मकता , कल्पनाशीलता का सहारा लिया गया है ।

यह कहानी सच पूछिये तो उन पतंगबाज़ों की कहानी है जो पतंगों को आसमान में उड़ाकर पेंच लड़ाते हैं । वह न केवल अपनी पतंग को सबसे ऊपर उड़ाना चाहते हैं वरन् वह किसी भी हवा में उड़ रही पतंग को ढील देकर या खींचकर काटने का फ़न जानते हैं । वह अपने नज़दीक से नज़दीक व्यक्ति की भी पतंग बगैर संकोच काट देंगे क्योंकि उनकी पतंग को न केवल सबसे ऊपर उड़ाना है वरन् रास्ते में आने वाली किसी भी बाधा को काटकर उड़ाना है । यह सदी से मझा काटने का हुनर जानते हैं ।

यह पात्र काल्पनिक नहीं हैं । यह उसी छात्रावास में आज भी रह रहे, हो सकता है जो नाम मैंने लिखे हैं वह नाम न हो । यह काल्पनिक दिख रहे पात्रों के भीतर बहुत से असली पात्र रह रहे । यह पात्र बेतकल्लुफ़ होकर यूनिवर्सिटी रोड पर आज भी घूम रहे, यह अलग बात है सिफ़र रोड ही देख पा रही है उनको, हम और आप नहीं । यह अमरत्व का प्रमाण लिये एक अलसाये ऊँधते शहर की कहानी है जहाँ कभी फ़िराक़ की तर्ज पर संघर्षशील अभ्यार्थी कहा करते थे,

“ तुम आने वाली नस्लों से कहोगे तुमने मुझको देखा है ” ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 55

यह विचारधारा का प्रश्न मुझे परेशान कर रहा था । मैंने परीक्षा में मुगलों की धार्मिक नीति लिखी थी । ऐसे अहतर अली, इफ़ितख़ार आलम खान ने इस नीति को बताते हुये खंडों में बाँटकर देखा था । वह मुगल साम्राज्य को धर्म निरपेक्ष ऐसा बता रहे थे । सतीश चन्द्रा ने भी ऐसा ही लिखा था । जदुनाथ सरकार का मत इससे मेल न खाता था । मैंने जो भी लिखा था, उसमें मुझे कमी लगने लगी । मुझे लगा कि मेरा उत्तर शायद एक अलग विचारधारा का है जो एक अफ़वाह के माध्यम से फैली हुई घोषित यूपीएससी में सर्वमान्य विचारधारा है, शायद वह मैंने नहीं लिखी है । पर मेरे अंदर अपने पक्ष में उत्तर आने लगा कि कहाँ यह लिखा है कि कम्युनिस्ट विचारधारा से ही लिखना ज़रूरी है । यह एक कोरी अफ़वाह भी हो सकती है । मैं चिंता मग्न था, एकाएक सिगरेट का धुँआ मेरे चेहरे की तरफ़ आता दिखा । यह धुँआ एक छल्ले की शक्ल में था, सिद्धांत बोला पीछे हटो, छल्ले को पूरा बनने दौ रितेश सिंह और सिद्धांत आपस में बेहतर धुँए का छल्ला बनाने का अभ्यास कर रहे थे ।

मैंने पूछा यह क्या है ?

रितेश बोला , यह एक लंबी कहानी है , इसमें दर्द भी है , मज़ा भी है , उन्माद भी है और उत्सुकता भी है ।

सिद्धांत- यार क्यों वेस्टलैंड वालों से समय खराब कर रहे हो , इनको गंगाजल पीने दो , रात के दारू का इंतज़ाम करो ।

मैं - आप आज दारू पियेंगे?

सिद्धांत -आज ?????

यह तो रौजै का काम होगा अब जब तक रिज़ल्ट नहीं निकलेगा फिर हम निकल लेंगे ज़िंदगी के मज़े की तरफ़ ।

मैं - यह आप कब से शराब , सिगरेट पी रहे ?

रितेश - याद नहीं आ रहा ठीक से सिगरेट कब शुरू की

सिद्धांत रितेश से कहते हुये , याद है न कक्षा 9 में मुखर्जी मैडम के क्लास में पकड़े गये थे ।

रितेश - वह तो पकड़े गये थे पर पी रहे थे पहले से ।

सिद्धांत- वह बाबा भारती के घोड़े वाली कहानी किस कक्षा में थी ?

रितेश - हम तो हिंदी की क्लास करते ही नहीं थे । मुझे नहीं पता यह घोड़े-खच्चर की कहानी । ।

मैं - वह जो सुदर्शन की कहानी है , “ हार की जीत ” ?

सिद्धांत- अब यह दर्शन- सुदर्शन का तो पता नहीं , बस इतना याद है एक बाबा का घोड़ा था जो चोरी हो गया था और फिर चोर रात में बाँध गया था वापस ।

रितेश - जब चोरी कर ले गया , तब वापस क्यों बाँध दिया ?

सिद्धांत- अब इस दुनिया में बेवकूफों की कमी है क्या ? अब अमर गुप्ता को ही देखो , सुबह से ज्ञान पिला रहे । कोई उनसे पूछे , अरे महाज्ञानी आपसे किसी ने ज्ञान माँगा ?

बगैर मतलब ज्ञान की सप्लाई कर रहे । वह चोर भी ऐसा ही होगा , चोरी करके माल वापस करता होगा ।

रितेश- वह एक पक्का चोर था ?

या चोरी का परैविट्स करता था और माल वापस कर देता था ।

मैं - बाबा भारती के पास घोड़ा था , वह घोड़ा बहुत अच्छा था । डाकू खड़ग सिंह ने एक अपाहिज का वेश बनाकर मदद माँगी । जैसे ही बाबा भारती ने उसको घोड़े पर बैठाया , उसने बाबा भारती को धक्का देकर गिरा दिया । बाबा भारती ने कहा , इस घटना का ज़िकर मत करना किसी से नहीं तो लोगों का विश्वास मानवता से उठ जाएगा और कोई किसी की मदद नहीं करेगा । यह बात डाकू के हृदय में बैठ गई और रात में घोड़ा वापस कर गया ।

रितेश- यह तो डाकू की कहानी है , यह चोर की कहाँ है ।

सिद्धांत- इनको कुछ नहीं पता वह चोरी की कहानी है । वह घोड़ा चोरी किया था ।

रितेश - चोरी किया या डाका मारा , पर यह बताओ घोड़ा वापस करने आया था , तब वह उसी घोड़े पर चढ़कर आया था या घोड़े का रस्सा पकड़ कर आया था ?

सिद्धांत- इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि वह रस्सा पकड़ कर आया था या उस पर चढ़कर आया था ?

रितेश - हमको फ़र्क़ नहीं पड़ता पर अमर गुप्ता साहब को पड़ेगा, यह कोई दर्शन निकाल लेंगे इसमें । इनका इंजन इस पर ही चालू हो जाएगा । इनके इंजन का तेल एक गुटके से मिलता है तो दूसरा मुद्दे से । गुटका तो संजीव भइवया ले आया पर मुद्दा भी तो दो , अभी कुछ घंटा आज का बचा है । यह बचे हुये समय में कुछ ख़ास काम तो शायद बचा नहीं पर अंतिम हस्ताक्षर तो सबका लेंगे ही पाँच बजे के आस- पास ।

रितेश , अमर गुप्ता से , सर यह जो घोड़ा चोरी की कहानी है वह जो हम कंभी पढ़े थे , कक्षा याद नहीं आ रही उसमें घोड़ा चोरी क्यों हुआ और चोरी होकर घोड़ा वापस क्यों आया ?

अमर गुप्ता- यह घोड़ा स्वामि भक्त होता है , भाग आया होगा स्वामी के पास ।

सिद्धांत- नहीं सर , चोर वापस कर गया था ।

अमर गुप्ता- चोरी करने के बाद वापस कर गया था ?

सिद्धांत- कहानी में तो ऐसा ही लिखा है ।

अमर गुप्ता - यह कौन सी कहानी है ?

मैं - सुदर्शन की कहानी , “ हार की जीत “

अमर गुप्ता- वही कहानी जो हम लोग कच्छे और हाफ पेंट के दौर में पढ़े थे ?
मैं जी सर

अमर गुप्ता- क्या इंटरव्यू बोर्ड में आज वह कहानी पूछी गई क्या ?
मैं - जी नहीं सर

अमर गुप्ता- तब काहे बेवजह चक्कलस फैलाये हो , बेवजह दिमाग पर लोड दे रहे हो । शिव बाबू सक्सेना की तरह सब का हार्डवेयर नहीं है , उतनै दिमाग में घुसेड़ों जितनी जगह है , बाकी निकाल दो कबीर की तरह , सार-सार को गहयो रहे थोथा दई उड़ाई ।

सिद्धांत- वह घोड़ा चोर वापस क्यों कर गया , जब एक बार चोरी कर ले गया ?

अमर गुप्ता- वह चोर कम्युनिस्ट रहा होगा । उसको जनवादी विचारधारा याद आ गई होगी । चोरी जनवाद के खिलाफ़ है । इसीलिये वह रात में ही आया लौटाने ताकि लोग देख न लें और विचारधारा से विश्वास न उठे ।

सिद्धांत- कौन सी विचारधारा ? किस विचारधारा पर वह चोर विश्वास क्रायम रखना चाहता था ?

चोरी की ?

अमर गुप्ता- उस पर से तो विश्वास उठ ही नहीं सकता , अगर उठेगा तो हम सरकारी नौकरों की जीविका का प्रश्न उठ जाएगा । कामचोरी तो हमारी प्राथमिक विचारधारा है ।

पर यह सवाल उठा कैसे ?

सिद्धांत- हम लोग सिगरेट कब पीना शुरू किये यह प्रयाग के पंडे पूछ रहे ।

अमर गुप्ता- एक जजमानी वाला तो है चिंतन अब पंडा कौन है ?

हमको सुबह से शक था कि यह कैलाश पांडे पंडा है , पर मैंने कहा नहीं ।

आप कहाँ के पंडा हो भाई ?

कैलाश पांडे - मैं पंडा नहीं हूँ ।

अमर गुप्ता- यह सिद्धांत बोल रहा कि कैलाश पांडे पंडा है ।

कैलाश पांडे - इनको क्या पता , यह हमको जानते हैं क्या ?

सिद्धांत- पंडा पर इतने नाराज़ क्यों हो रहे , वह सबसे उच्च बाधन है । वही मरनी - करनी कराएगा ।

कैलाश पांडे - हम इटार पांडे हैं । हमारा गोत्र- कुल सर्वोच्च है ।
सिद्धांत- यह अनुराग शर्मा बोल रहे शर्मा
शरेष्ठ हैं ।

कैलाश पांडे - यह शर्मा बराह्मण हैं पहले यह तो तय हो जाए , शर्मा टाइटिल
बहुत घाल - मेल करते हैं । यह कहीं से कहीं चले जाते हैं ।

पास ही नहीं खड़े थे सुजीत शर्मा उन्होंने कैलाश पांडे की बात का समर्थन
किया ।

पांडे जी फिर फ़ायर हो गये सिद्धांत पर , आप लोग अपनी उत्पत्ति देखो दूसरे
के चक्कर में न पड़ो ।

सिद्धांत बोले , आप कौन से इटार पांडे हो , खींच कर मुर्गा तोड़ रहे । क्यों
खा रहे मुर्गा? आप ही अकेले हल्ला किये हो - “ नान वेज - नान वेज ” ।

पहले करम सुधारों अपना ।

पांडे जी का गुस्सा सातवें आसमान पर ।

अमर गुप्ता बोले यार हम बनिया हैं , टंडन साहब मारवाड़ी लग रहे । हम
लोगों को लग रहा कि हम लोग कहाँ एक उच्च कुलीन के बीच आ गये ।

पांडे जी यह बताओ आप पंडा कहने पर इतने नाराज़ क्यों हो गये ?

रागिनी , सुरुचि एक साथ बोली , यह पंडा क्या होता है ?

अमर गुप्ता- सिद्धांत कहानी को बैकवर्ड मोड में करो , यह मैडम लोग थोड़ा
अंग्रेज मार्का हैं , इनको पंडा नहीं समझ आ रहा । अब कैसे बताएँ इनको
पंडा होता कैसे है ।

आप कभी गंगा किनारे गई हैं ?

सुरुचि - हाँ गई हूँ , माघ मेले में ।

रागिनी - यह माघ मेला क्या होता है वही जो हर साल लगता है इलाहाबाद में

अमर गुप्ता - मैडम आप तो हद कर दिये , आप अमरत्व के प्रमाण पर ही
प्रश्न चिह्न लगा रही । इलाहाबाद वाले आत्महत्या कर लेंगे , यही तो उनकी
थाती है ।

मैडम इनको देख रहीं हैं , कैलाश पांडे को ..

रागिनी - हाँ

अमर गुप्ता- यही है पंडा । पर अभी अधूरे हैं यह । अब आप कल्पना करो गंगा का किनारा , लाल गमछा , माथे पर तीन लाइन का चंदन , चंदन के बीच लाल तिलक , सफेद धोती , यह धिस रहे चंदन बना डालो एक modern art की पेंटिंग । इससे बेहतर दृश्य न मिलेगा ।

कैलाश पांडे - मैं पंडा नहीं हूँ । आप मुझे ही क्यों कह रहे । शर्मा जी का माडल बनाओ मेरा नहीं ।

अमर गुप्ता- आप नाहक नाराज़ हो रहे , पंडा एक आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होता है , वह यहाँ पर आप ही हो , बाकी तो बस ऐसे ही हैं । आप IRS बनकर जाना मुंबई और वहाँ ट्राई करना पिक्चर में । वैसे आप वर्दी में भी बहुत जमागे ।

सिद्धांत- जिस इलाके में यह पोस्टेड होंगे वहाँ का सारा मुर्गा उड़ा जाएँगे । इनका नाम होगा मुर्गा पांडे ।

अमर गुप्ता - सिद्धांत सारी समस्या की जड़ आप ही हो , आप ही बोले यहाँ कोई पंडा है , अब पंडा यह पांडे जी के अलावा कोई लगता नहीं ।

सिद्धांत- हम यह कहाँ कहे यह पंडा हैं । हमने यह कहा कि परयाग के पंडा पूछ रहे हैं कि हमने सिगरेट कब से पीना शुरू किया ।

अमर गुप्ता- यह मामला हल हो गया कब से यह सिगरेट पी रहे ?

संजीव टंडन - हाँ हो गया । और कुछ ?

अमर गुप्ता- यह दास्त कब से हींच रहे ?

संजीव टंडन - सिगरेट पीने के तीन महीने बाद घर से चोरी करके । इनके बाबा दास्त पीते थे , वहीं से निकाल कर पी लेते थे और दास्त की बोतल में पानी मिला देते थे , ताकि दूर से देखने पर पता न चले । एक वक्त ऐसा आया कि दास्त की बोतल में पानी ही रह गया दास्त इनके जिस्म में नाशवान हो गई । इनकी पकड़े जाने पर ठोकाई हुई पर एक अच्छी बात यह हुई कि यह दास्त पीना सीख गये ।

अमर गुप्ता - भाई कोई और तैयारी सिविल सेवा के लिये आपने की , पढ़ाई के अलावा वह बताना । दास्त , सिगरेट के बाद जो समय बचा वह अध्ययन को दिया या कुछ और काम भी किया पठन- पाठन को मरहम रखकर ?

सिद्धांत- इश्क़ ।

अमर गुप्ता - वह भी किया ?

रितेश - वह तो जीवन का सबसे ज़रूरी काम है ।

सिद्धांत- I was desperate to fall in love . I was waiting someone to fall in love .

अमर गुप्ता- पांडे जी यह fall in love किसी पहाड़ी की चोटी से कूदना नहीं होता , पता चला आप गये गोरखपुर कूद पड़े किसी पहाड़ी से , I fall ...

इस काम के लिये एक कन्या चाहिये जो यह स्वीकृति दे कि हाँ अब आप ... करो

यह इश्क का काम बहुत मुश्किल है पांडे जी । यह हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिये बहुत दुर्लभ है । आप सन्न मारकर हमारे तरह बैठे रहो । आपकी ज़िंदगी के उस क्षेत्र का इंतजाम आपके माता पिता कर देंगे । आप करोगे तो आप से नहीं होगा । जिसका काम उसी को साझे वाली कहावत सुनी है ना ...

बस उसका ध्यान रखना ।

भाई सिद्धांत ज़रा अपनी जीवन गाथा सुना ही दो , कैसे सिगरेट , दार्ल , इश्क के साथ सिविल सेवा की तैयारी करें ।

हमारा तो पूरा शहर एक ही काम से जूझता है , वह भी हमसे नहीं हो रहा , चार साल से माथा टेक रहे पर परिणाम निल बटे सन्नाटा ।

सिद्धांत-

यह एक कहानी है जो शुरू होती है उस छोटे से शहर से जहाँ से कभी कोई एक फ़ैसला किसी ने एक चाय की टुकान पर लिया था सामने के एक बिल बोर्ड पर टाई पहने हुये एक इश्तिहार को देखकर

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 56

सिद्धांत शरीवास्तव, यह नाम में ही सिद्धांत नहीं रखते हैं यह जीवन में भी एक अलग सिद्धांत रखते हैं । मैकाले सबसे अच्छा आदमी था , उसने देशी भाषा को नकार दिया यह बहुत अच्छा किया । यह भाषा है ही नकारने लायक , इसमें आधुनिकता का कोई लक्षण नहीं है । यह अंग्रेज न आते तो हम आज भी तलवार-भाला लेकर लड़ रहे होते । यह आज़ादी की लड़ाई गलत ढंग से

लड़ी गई । यह बेवजह स्वराज माँगा , डोमिनियम स्टैटस बेहतर होता । यह अंग्रेज़ को भगाना गलत था , उनको साथ रखना चाहिये था ।

यह अरेंज मैरेज एक आदिम ख्याल है , हर किसी को प्रेम विवाह करना चाहिये । अगर आप से कोई प्रेम नहीं कर रहा या प्रेम कर पाने में आप असफल हो तो आप विवाह क्यों करते हो । यह अरेंज मैरेज बंद कर दो , सिफ़र प्रेम विवाह पर ज़ोर दो , जनसंख्या विस्फोट भी रुकेगा , शांति भी आएगी और समाज में व्याप्त किंच- किंच ख़त्म होगी ।

यह शराब और सिगरेट ज़रूरी है , इससे राजस्व आता है और यह देश के विकास में मदद करती है । हम पीकर मर जाएँगे पर देश के विकास में योगदान देकर जाएँगे । यह जो शराब , सिगरेट का विरोध करते हैं , यह सब लोग विकास विरोधी हैं ।

यह शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन के आग्रही हैं । यह शिक्षा को रोज़गार परक , आधुनिक और आंग्ल भाषा में करने के पक्षधर हैं । यह व्यक्ति के स्वतन्त्र अधिकारों के पक्षधर हैं और कहीं भी लड़ने को तैयार हो जाते हैं । इनका अभी - अभी प्रेम आरंभ हुआ है और यह कहते हैं कि मैं प्रेम में झूबा हूँ । रितेश कहते हैं , “भइयवा मीरा बन गवा है ” ।

यह पटना में किसी फ़ार्मा कंपनी का सामान बेचते थे । यह कहते हैं , मैं बीए पास हूँ पर लोग यक़ीन कम करते हैं । सेंट ज़ेवियर वाले बोलते हैं यह कभी क्लास आए ही नहीं , पटना वाले बोलते हैं यह नानी के यहाँ भाग गए थे , अब वहाँ से क्या किये यह किसी को पता नहीं । यह अपनी डिग्री आज तक किसी को नहीं दिखाए । यह कहते हैं वह मिल ही नहीं रही पता नहीं कहाँ रख दिया ।

यह दावा करते हैं कि मुझे मेडिकल , इंजीनियरिंग , एनीमल हसबेनडरी सब आता है । यह इंजीनियरों को इलेक्ट्रॉनिक सर्किट सिखाने का दावा करते हैं । यह कोई भी डाक्टर मिले उससे कह देते हैं कि तुमसे ज्यादा डाक्टरी तो दवा के दुकान के सेल्समैन को आती है ।

यह बात तो तय है जिसको गाल बजाना आता हो , वह सबसे बड़ा विद्वान है । यह वही गाल बजाने में माहिर है ।

यह पटना की एक फ़ार्मा कंपनी में नौकरी करते थे । एक तथाकथित बीए पास को नौकरी कैसे मिली ?

इस सवाल के जवाब में यह कहते हैं,

“ मैं पटना में सबसे स्मार्ट और सबसे बेहतर अंगरेज़ी बोलता था । अब यह ही पूरे शहर में सबसे स्मार्ट और सबसे बेहतर अंगरेज़ी बोलते हैं , यह इनके अलावा कोई और नहीं कहता था । इन्होंने फ़ार्मा कंपनी के इंटरव्यू में कहा था , “ आप सारे लोगों को हमारे अंडर कर दो । मैं पहले सबका पिछला सीखा दिमाग़ से मिटाऊँगा फिर सीखाऊँगा ” ।

अब कोई चश्मदीद गवाह तो है नहीं , इस घटना का पर यह सच है कि यह उस कंपनी का कुछ बेचते थे , क्या बेचा यह नहीं पता ।

यह कहीं एक चाय की दुकान पर चाय पी रहे थे । इन्होंने सामने के बिल बोर्ड में किसी की टाई लगी फ़ोटो देखी , वह किसी कोचिंग का इश्तिहार था जो लगाया था उसने अपने एक चयनित अभ्यार्थी का । इनको लगा कि यह टाई में निहायत ही स्मार्ट लगेंगे । इनको वर्दी पहनने का शौक था ही । पूरे पटना से लोग रेल गाड़ियों पर लदलद कर दिल्ली जाते थे , यह कहकर कि हम यूपीएससी देने जा रहे । इनका भी मन कर गया । रितेश सिंह पहले ही जा चुके थे दिल्ली, वह वहाँ से तैयारी कर रहे थे कोई दो कमरे का मकान लेकर । यह भी वहाँ पहुँच गये ।

यह एक विकट समस्या थी इनके साथ , यह विषय लें क्या ? कभी पढ़ा तो था नहीं कुछ ख़ास । कोई किताब - कापी से ख़ास नाता तो कभी रहा नहीं । रितेश सिंह ने कहा कि बीए में समाजशास्त्र था वह लेकर प्रारम्भिक परीक्षा दो फिर आगे की सोचते हैं । रितेश को भी लगा यह प्रारम्भिक परीक्षा फेल हो जाएँगे फिर जोश ठंडा हो जाएगा और वापस चले जाएँगे , वैसे ही दो - तीन साल से कुछ पढ़ा- लिखा है नहीं , कौन ऐसे में पढ़ना हो पाएगा ।

सिद्धांत को लगा यह राय ठीक है , पहले प्रारम्भिक परीक्षा निपटाते हैं फिर मेंस का देखेंगे । यह थोड़ा लागी तो थे ही , मस्तिष्क भी ठीक ही था , कायस्थ जो ठहरे । इनके खून में कुछ लिखना - पढ़ना था ही , भले ही यह काफ़ी दिनों से न पढ़े हों ।

चार- पाँच महीना पढ़ा इन्होंने और पेपर कैसा हुआ , इसका कोई ख़ास पता न था इनको । इनके पास एक ही जवाब था जो आया उसको कर दिया जो न आया उसको गेस मार दिया , पर किया पूरा पेपर ।

यह परीक्षा देकर पटना चले गये । इनको यह भी न पता था कि उम्मीद कैसे और किस आधार पर की जाती है इस परीक्षा में । जुलाई के अंतिम सप्ताह में रिजल्ट आया , उस समय यह पटना में थे और रितेश ने फ़ोन करके कहा , “ भइवा गज़ब होई गवा तोहरा परी होई गवा ” ।

यह समाचार कि सिद्धांत प्रारम्भिक परीक्षा पास कर गये जंगल की आग की तरह पूरे पटना में फैल गया । यह अपनी प्रेमिका का पीछा करते थे । वह रिक्शे से जाती थी और यह उस रिक्शे का पीछा करते थे । इन्होंने यह समाचार अपनी प्रेमिका को भी सुनाया । यह समाचार इन्होंने आँख पर रेबैन का एवियेटर का चश्मा लगाकर सुनाया , “ देखो हम कैसे लगेंगे , 6 फ़िट तीन इंच लंबाई , आवाज़ में दम अमिताभ ऐसा , साँवला रंग , चाल दिलीप कुमार ऐसी , बाल फिसलाने की कला देवानंद ऐसी और ख़ाकी वर्दी ” ।

ईश्वर जब जोड़ी बनाता है तब एक बेअंदाज को अंदाज़ वाला या वाली देता है । वह इस बेअंदाज की अंदाजवाली थी । वह बोली शांति से परीक्षा दो , ज्यादा उड़ो मत । पुलिस से अच्छा है तुम आई आर एस लो । जिस तरह तुम्हारे लक्षण हैं , किसी की न सुनना , तुम्हारा पुलिस में कोई गुज़ारा नहीं होगा । यह समाचार ज्यादातर लोगों ने पटना में झूठ माना , यह सिद्धांत और IAS कभी नहीं ।

यह एकाध सप्ताह पटना में फ़ोकस पानी मार कर दिल्ली आ गये । अब दूसरा विषय लें क्या? यह इस स्थिति के लिये तैयार ही न थे । यह मानसिक रूप से मेंस के लिये तैयार ही न हो पाये थे , शायद ज्यादा सही है यह कहना यह किसी परीक्षा के लिये कभी तैयार ही नहीं हुये बस चले गये और दे आये थे । इनका पढ़ाई- लिखाई से कोई उस तरह का नाता कभी न रहा जैसा अमूमन सिविल सेवा परीक्षा वालों का होता था । इस परीक्षा में सिफ़र बीए पास अभ्यार्थी कम ही होते हैं ।

सिविल सेवा परीक्षा में भेड़चाल कई तरह की है । एक भेड़चाल परीक्षा देने की है , सब दे रहे हैं तो हम भी देंगे । यह भेड़चाल अनादि काल से चली आ रही है । वर्ष 1979 में इस परीक्षा में समाजवाद आया , जब गाँव , देहात म्युनिसिपल स्कूलों के पढ़े लोग इस परीक्षा में शामिल होने लगे । यह दूसरा समाजवाद था

। इसके पहले एक समाजवाद 1930 के दशक में आने लगा था । वह एक अलग क्रिस्म का समाजवाद था , एक मजबूरी का समाजवाद । एक नौकरशाही के संकट का दौर था । उस समय बढ़ते राष्ट्रीय आंदोलन के भय से यूरोपीय लोग मिलते नहीं थे , अंग्रेजों को सेवाओं के भारतीयकरण की माँग स्वीकारनी पड़ी थी । इसका परिणाम यह हुआ आईसीएस में बिरटिश वर्चस्व समाप्त हो चुका था ।

सन 1940 तक इस प्रतिष्ठित सेवा में बिरटिश और भारतीय दोनों तक़रीबन बराबर के साझीदार हो गये थे । इस संतुलन को क्रायम रखने के लिये पहले तो भर्ती में कटौती की गई और फिर 1943 में भर्ती एकदम बंद कर दी गई । 1940 से 1946 की अवधि में आई सी एस अफ़सरों की संख्या 1201 से घटकर 939 कर दी गई ।

इस दरम्यान आईसीएस में उन अभिजात परिवारों के आक्सफोर्ड और कैंबिरज में शिक्षित युवक अब नहीं आ रहे थे जिनके पूर्वज भारत में शासन कर रहे थे और जो यह मानते थे कि शासन करना उनका जन्मसिद्ध अधिकार है । इनका स्थान सामान्य स्कूल, पालीटकनिक ऐसी संस्थाओं के लोग ले रहे थे जो राज्य की देवत्व की अवधारणा की बजाय राज एक कोई मिशन न था वरन् सिफ़र जीविका के एक साधन के रूप में देखते थे ।

सन 1947 के बाद यह पुनः यह अभिजात्य वर्गीय संस्कार का आरोपण हुआ । एक ऐसा कृतिस्त सफल प्रयास किया गया जो आज़ादी के आंदोलन के आदर्श एवम् सिद्धांतों के विपरीत था । कांग्रेस और गाँधी के आंदोलनों में शहीद होने वालों के वंशजों को इस इस्पाती दरवाज़े के बाहर कर दिया गया , भाषा का पहरेदार बैठा कर । किसी कोई ज़िम्मेदारी नहीं , कोई सामाजिक सरोकार नहीं उन लोगों के साथ जो यह कह रहे मुझे भी इस तिलस्म को देखना है जिसके बहुत क्रिस्से सुने हैं हमने ।

एक षड्यन्त्र जिसका रचयिता कोई और नहीं वही था जो कह रहा था हम तुम्हारे माई - बाप हैं और हमको वोट दो अपने भविष्य के लिये । हम साल-दर साल ऐसे लोगों को वोट देते रहे जिनका एक ही काम था , हर साल इश्तहार देना , “ सिविल सेवा परीक्षा सिफ़र अंग्रेज़ी माध्यम के लिये ” । यह भाषा ही ज्ञान और काबिलियत देती है , यह भाषा ही मापदंड है क्षमताओं की ।

इन्होंने कुछ न सीखा चीन , जापान ऐसे देशों से जहाँ मातृभाषा में उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया गया । यह लोग साल- दर साल ऐसी शिक्षा व्यवस्था का

पोषण करते रहे जिसका ज़मीनी हक्कीकत से कोई ताल्लुक़ात न था । हर छोटे शहर गाँव देहात की प्रतिभा मन मस्सों कर रह जाती थी एक आतंककारी इश्तिहार देखकर , “ सिविल सेवा परीक्षा सिर्फ़ अंग्रेज़ी में ” ।

42 वे संविधान संशोधन से रूस के संविधान के तर्ज पर मूल कर्तव्य ज़ोड़ दिये गये जिसमें राष्ट्रीय आंदोलन के सिद्धांतों को सम्मान देने की बात लिखी गई , पर यह कर्तव्य नागरिकों के लिये थे शासकों का इससे क्या लेना- देना । एक पूरी पीढ़ी मरहूम कर दी गई सिर्फ़ इसलिये कि उसको अंग्रेज़ी नहीं आती ।

इन कर्णधारों ने बनाया पाठ्यक्रम, आईएएस -पाँच पेपर , आईपीएस -2 पेपर , केन्द्रीय सेवायें -तीन पेपर । एक बार पुनः वर्गीकरण, पुनः एक वर्ण व्यवस्था अभिजात्य सी शासन व्यवस्था में । हम भारतीयों के खून में ही यह घुसा है , भाषा, धर्म, जाति, संस्कार, क्षेत्र के आधार पर आपस में बँट जाना ।

यह उन कर्णधारों से कोई नहीं पूछने वाला कि सत्ता के भारतीयकरण का जो आंदोलन उन 72 प्रारम्भिक राष्ट्रवादियों ने गोकुलदास तेजपाल धर्मशाला बंबई में कांग्रेस के पहले अधिवेशन में दिसम्बर 1885 में उठाया था क्या वह यह वही था जो तुमने 1947 के बाद किया है ? यह एक विश्वासघात था एक पूरी क़ौम के साथ । यह कहना भारतीय भाषायें इसके लिये तैयार नहीं वैसा ही तर्क था जो अंग्रेज देते थे , भारतीय नहीं हैं योग्य अपने ही देश पर शासन करने के लिये ।

जिस समय कोठारी कमीशन की रिपोर्ट 1979 में इलाहाबाद में सुनी गई हर छात्रावास, हर डेलीगेसी में वैसा ही माहौल था जैसा आज़ादी मिलने पर पूरे भारत में था । इसके बाद परीक्षा देने की भेड़चाल में सब शामिल हो गये । एक संतोष की प्राप्ति हुई , परिणाम चाहे जो भी हो । एक अवसर की समानता बहुत ही संतोषपरदायिनी होती है , इसमें तो कोई शक है ही नहीं ।

एक दूसरी भेड़चाल विषय के चुनाव की है । सन 1979 के पहले यह भेड़चाल इतिहास के दो पेपर को लेने की थी, बहुतों ने अपनी वैतरणी इससे पार की थी । अब जिस विषय का माहौल चल रहा वह ले लो । महाजनों येन गत: स पन्था की कहावत यहाँ चरितार्थ है । इलाहाबाद में हिंदी साहित्य की भेड़चाल है । सन 86,87,88 में पूरे देश में खासकर दिल्ली में एनथरो की थी । सन 88 से भूगोल की शुरू हो गई थी ।

यह काबिल महारथी उसी भेड़चाल में यह भूगोल ले लिये । इन्होंने जैसे- तैसे वह परीक्षा दी , रो-पीटकर । अब 100 दिन से कम समय में , वह भी एक विषय एकदम नया रो-पीटकर ही देंगे । पेपर में क्या लिखा , कैसे लिखा इसका कोई ख़ास विवरण न था इनके पास । यह परीक्षा देकर पटना चले गये । मेंस का रिझल्ट आया , जो होना था वह तो पूर्व निश्चित ही था , निल बटे सन्नाटा । यह निराश हो गये , नौकरी जो कर रहे थे वह भी गई , आँख में काला चश्मा लगाकर यह वर्दी कल्पित करके मोटरसाइकिल पर घूम रहे थे वह भी इनके ख़बाब से चला गया ।

अब इन वैशाखनंदन को कौन बताये दरोगा मोटरसाइकिल पर चलता है , आई पी एस नहीं । यह बुलेट मोटरसाइकिल जुगाड़ लिये थे , उसी पर शहर में घूमा करते थे ।

अब शहर में लोग मज़ाक़ भी करने लगे ,

“ बगल हटो एस पी साहब राउंड पर हैं । यह चालान नहीं काटते सीधा अंदर कर देते हैं । यह बहुत कड़े एस पी साहब हैं , यह अपने ज़िला सँभाल लेने के बाद 24 घंटे तक कोई काम नहीं करते सिफ़र गाँधी जी की तरह अपना ज़िला घूमते और समझते हैं ज़िला । यह 24 घंटे का समय गाँधी जी के भारत छोड़ो के नारे की तरह अपने ज़िले में अपराधियों को देते हैं एक नारा चेतावनी की शक्ल में , “अपराधियों ज़िला छोड़ो ” । यह नारा इनके ज़िले का चार्ज लेने के पहले ही शहर में बैनर में और इश्तिहार लिख कर इनकी चश्में लगी फ़ोटो के साथ लग जाता है , नया एस पी सिद्धांत श्रीवास्तव गरीबों का रहनुमा अपराधियों को उनके ख़बाब में घुसकर मारने वाला आपके शहर में । समय 24 घंटे मात्र और मात्र । 24 घंटे बाद न चेतावनी न वारंट सीधा एक्शन ।

बस एक फ़र्क है गाँधी अहिंसा के पुजारी थे और यह मानते हैं कि ब़ग़ैर लतियाये अपराधी नहीं सुधरेंगे । यह पहले तीन- चार रसीद करके तब नाम पूछते हैं , इस चक्कर में कई गरीब निरपराध भी तीन - चार रसीद पा जाते हैं । पर क्या करें साहब अब गेहूँ के साथ घुन तो पिसता ही है । इनका नुकसान तो कुछ ख़ास न हुआ पर अपराधियों का भला हो गया और देश एक ऐसे नायक से मरहम हो गया जो कहता , ” न वारंट न चेतावनी सीधा एक्शन “ ।

यह सिद्धांत श्रीवास्तव थे , कोई बेचारे तो थे नहीं , यह सब सुनकर भी कहते , “वह वक्त भी आएगा वह दौर भी आएगा जब सिफ़र हम ही होंगे ” ।

इनकी मेंस की मार्कशीट आई , इन्होंने रितेश से पूछा , “ यह किसकी मार्कशीट है ?”

रितेश ने कहा नाम तुम्हारा लिखा है , यह तो दिख रहा , बाकी पता करने के लिये चलो चलते हैं यूपीएससी या किसी मंदिर , विधाता से पूछने यह किसकी मार्कशीट है ?

सिद्धांत बोले भाई IPS बनने की कुछ गुंजाइश है , रितेश ने पूछा किसकी ?
तुम्हारी या हमारी ?

सिद्धांत- हम दोनों की ।

रितेश ने धुँये का लच्छा बनाया और कहा कि अगर यह लच्छा बनता हुआ ऊपर गया तब हमारी और बनकर वापस हवा में घूमता रहा तब हम दोनों की ।

सिद्धांत ने भी वैसा ही लच्छा बनाया और कहा जा उस लच्छे के साथ उसको लेकर ही वापस आना ,
न चेतावनी न वारंट सीधा एक्शन ।

दोनों देख रहे धुँए के लच्छे की उर्ध्वमुखी यात्रा जो रहीं उफुक की ओर ।

सिद्धांत कह रहे - ए धुएँ लेकर आना उसको ,
वह वक्त भी आएगा वह दौर भी आएगा जब हम ही हम होंगे ।

रितेश बोले , “ भझवा हम ”

सिद्धांत ने कहा मुकद्दर का सिकंदर में अमिताभ के साथ विनोद खन्ना भी थे ।

सिद्धांत का धुँआ का छल्ला ऊपर जा ही रहा था कि एक तेज़ का हवा का झाँका दोनों छल्ले हवा में उड़ा गया । उनके छल्लों का वजूद ही खत्म हो गया । रितेश ने कहा ,

“ भइवा नसीब में लगता है वर्दी है नहीं ? ”

सिद्धांत- पक्का है , यह छल्ला जा रहा था ऊपर , धूम कर आ रहा था नीचे पर उसी समय यह हवा खेल कर गई ।

रितेश- यह हवा नहीं है , यह तक़दीर है । यह ऐसे ही खेल करेगी । यह ले डूबेगी हम लोगों को ।

सिद्धांत - ले डूबेगी उसको जो तैरना न जानते हो , हमको तैरना आता है । हर कक्षा में बगौर पढ़े इस्तिहान दिया है , हर बार पास किया है । हमारा रिकार्ड है , आज तक फेल किया ही नहीं । यह पहला इस्तिहान फेल किया है । बीए तक पास किया बगौर फेल किये , फ़ार्मा कंपनी का इंटरव्यू पास किया बगौर फेल किये हुये । पेपर में निकला था , “ walk in interview ” . हम पहुँचे , भीड़ लगी थी । हम सीधा , walk in कर गये जहाँ इंटरव्यू हो रहा था । पूछा कैसे आप अंदर आ गये ? हमने कहा तुमने ही कहा था , walk in interview , इसलिये walk in कर गये ।

रितेश - भइवा तुमका पता नहीं है । हम जेएनयू में एम फ़िल में एडमिशन लिये हैं इसी साल , वहाँ का माहौल पागल कर देगा , जिसको देखो दो- तीन किलो किताब लटकाये जवाहर से चला आ रहा । मार घोटा , मार घोटा सब लगे हैं । हमको लगता नहीं , हम सब सट पाएँगे ।

सिद्धांत- चलो एक - एक छल्ला और बनाते हैं धुआँ का अगर छल्ला हमारा , तुम्हारा ऊपर जाकर आपस में मिल गया तो तिरशूल नहीं तो शोले या मुक़द्र का सिकंदर ।

रितेश - इसका क्या मतलब हुआ ?

सिद्धांत- तिरशूल में हैपी एडिंग है । मुक़द्र का सिकंदर और शोले में अमिताभ मरता है , मतलब हमारा खेल खत्म ।

दोनों ने छल्ला बनाया , हवा ने साथ दिया छल्ला मिल गया । सिद्धांत ने काला चश्मा लगाया और बोला , अब मेरी नहीं मेरी ही नहीं मेरी तकदीर की भी आज़माइश का दौर है ।

फ़ैसला हो गया इम्तिहान फिर से देने का । इन सारी टाइम पास क़वायदों के बीच एक आश्चर्यजनक तथ्य था सिद्धांत की इस साल का मेंस की मार्कशीट । उनके समाज शास्त्र और भूगोल दोनों के दूसरे पेपर में 300 में से 200 के आस पास नंबर मिले थे । समाज शास्त्र में 199 और भूगोल में 197 । सिविल सेवा परीक्षा के तक़रीबन हर ह्यूमिनिटीस विषय का दूसरा पेपर एप्लिकेशन का होता है । इसमें थ्योरी से ज्यादा व्यवहार पर ज़ोर दिया जाता है । इसमें मौलिक विचारधारा पर ज़ोर दिया जाता है । यह बहुत कुछ आपकी विश्लेषण एवम् लेखन क्षमता को परीक्षित करता है । यह दोनों विषय के पेपर में इतना अधिक नंबर आने के ही कारण ही वह पूछ रहे थे , यह मार्कशीट किसकी है । यह सामान्य अध्ययन में नंबर कम आने के बावजूद क्वालिफ़ाइंग मार्क्स के नज़दीक आ गये थे । उन्होंने कहा वह मेरे भीतर है जिसको यूपीएससी चाह रही । अभी तक यूपीएसी ने मेरा पूरा कौशल देखा ही नहीं है । यह एक रोमांटिक हादसा किया है इस मार्कशीट ने मेरे साथ , अब मैं रोमांच करूँगा जीवन के साथ । मुझे वह रास्ता दिख गया जिसके साथ मुझे ज़िंदगी के एक लम्बे सफ़र के लिये निकलना है । इस रास्ते पर मैं बार-बार गिरकर भी सफ़र खत्म करूँगा । मैं मंज़िल के क़रीब ही नहीं हूँ , मंज़िल मुझे बुला भी रही है । मैं अभी तक मैं किसी ताकतवर से लड़ा ही नहीं हूँ , एक बार लड़कर देखता हूँ बेपरवाह अंजाम से होकर ।

एक फ़ैसला हो गया इनका फिर से परीक्षा देने का । यह पटना से सामान बाँधे और दिल्ली चले गये । उस समय तक रितेश सिंह जेएनयू में एम फ़िल करने चले गये थे । इन्होंने जेएनयू के पास ही एक अपार्टमेंट ले लिया , ताकि वहाँ से जेएनयू जा सकें और वहीं उनकी मुलाक़ात संजीव टंडन से हो गई । यह और संजीव टंडन थोड़ा एक ही प्रकृति के व्यक्ति थे । संजीव टंडन को पढ़ाने में रुचि ज्यादा थी । यह संजीव टंडन के साथ शाम को जेएनयू जाते थे । संजीव टंडन पढ़ कर पढ़ाते थे और यह वहीं जो कुछ सुन लेते थे वहीं कुछ यह भी पढ़ाने लगते थे । यह बहुत जल्दी मास्टर बन गये थे । इनको बगैर पढ़ाये चैन नहीं मिलता था और इनको ज्ञान बाँटने का बहुत शौक था ।

जेएनयू , आईआईटी के पास रहने का फ़ायदा यह हुआ कि वहाँ पर एक पीयर ग्रूप मिल गया । रितेश को भी जेएनयू में इश्क़ हो गया । उनकी महबूबा भी

मेंस दे रही थी । रितेश उसको पढ़ाने में मशगूल हो गए । यह लोग अपनी प्रेमिका को फियोन्सी कहा करते थे ।

संजीव टंडन , रितेश , सिद्धांत, नमिता चारों एक साथ तैयारी कर रहे थे । इन सबके गुरु थे संजीव टंडन । वह मटीरियल इकट्ठा करते थे और सबको ज्ञान बाँटते थे । जेएनयू की लड़कियाँ इनका इंतज़ार करती थीं । वह आपस में कहती भी थीं टंडन की पाठशाला शाम को लगेगी , शंका-समाधान सब हो जाएगा ।

संजीव टंडन दो बार से इंटरव्यू से लौट रहे थे , उनका मन तैयारी में कम लगता था । वह गणित लेते थे और उसमें 600/600 सही करते थे , इसलिये वह अपने मेंस के रिजल्ट के प्रति बहुत ही निश्चिंत रहते थे । वह मेंस का रिजल्ट देखने में कोई ख़ास रुचि नहीं रखते थे । वह जानते थे कि मेरिट 840 के आसपास जाएगी । 600 गणित में सही है , कितनी भी स्केलिंग करो 450 तो कहीं गया ही नहीं । बचा 400 नंबर 1200 में वह तो आ ही जाएगा । इनकी गणित पर अतिशय निर्भरता इनकी असफलता का एक कारण थी । यह एनथरो कुछ ख़ास पढ़ते ही न थे । जीएस खुद कम पढ़ते थे पर बाँचते ज्यादा थे । इन्होंने सिद्धांत की परीक्षा की चिपकाओ -घुसेड़ो प्रतिभा को पहचान लिया था और कहा था , इनका हो सकता है ।

पुनः परीक्षा का समय आया । इस बार तैयारी बेहतर थी , साथ भी बेहतर मिला । यह चारों प्रारम्भिक परीक्षा पास कर गये ।

यह वह दौर था जब जेएनयू , डीयू इलाहाबाद विश्वविद्यालय पर भारी पड़ना शुरू कर चुके थे और आईआईटी वालों ने इस परीक्षा में बहुत रुचि लेनी शुरू कर दी थी ।

इलाहाबाद एक प्रम्परागत रूप से परीक्षा अभी भी दे रहा था और यह सब नवीन प्रयोग कर रहे थे । इलाहाबाद उन्हीं प्रम्परागत विषय इतिहास , दर्शन शास्त्र, हिंदी , राजनीति शास्त्र, संस्कृत और थोड़ा बहुत विधि के विषयों तक सीमित था जबकि दिल्ली , डीयू . आईआईटी एनथरो, भूगोल , समाज शास्त्र, मनोविज्ञान , लोक प्रशासन ले रहे थे । आईआईटी गणित के सहारे प्रतिमान तोड़ रहा था । समाज शास्त्र, एनथरो, लोक प्रशासन ऐसा लोकप्रिय विषय इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ाया ही नहीं जाता था और भूगोल नंबर दे रहा यह यहाँ के लोगों को पता ही न था ।

इस पूरे शहर की तैयारी की पद्धति में प्रयोग धर्मिता का आभाव था । इतिहास एक पिटा हुआ विषय हो चुका था और दर्शन शास्त्र में अंक नहीं मिल रहे, यह इस शहर को इसका आभास ही न था । दिल्ली की सफलता की कहानी किसी जज्बे या ज्ञान से नहीं बल्कि एक प्रयोगधर्मिता से बन रही थी । वह नये-नये विषयों में प्रयोग कर रहे थे और यह शहर उसी लकीर का फ़क़ीर बना हुआ था ।

इतिहास विभाग का एक कृतिरम सा विभाजन था इस विश्वविद्यालय में । यह विभाजन प्राचीन इतिहास एवम् पुरातत्व विभाग तथा मध्य एवम् आधुनिक इतिहास के बीच कर दिया गया था । प्राचीन इतिहास में बीए, एम ए में अंक ज्यादा मिलते थे इसलिये लोग उसको ज्यादा पढ़ते थे जबकि सिविल सेवा परीक्षा की दृष्टि से मध्य एवम् आधुनिक इतिहास बेहतर हुआ करता था ।

यह विश्वविद्यालय इस परीक्षा प्रणाली से दूर होता जा रहा था । विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम इस परीक्षा के अनुकूल न था । यहाँ के अध्यापकों की आतंरिक राजनीति भी ज़िम्मेदार थी इस शहर की गिरती साख के लिये । पाठ्यक्रम पूरे नहीं किये जाते थे । परम्परागत सवाल ही नंबर के मापदंड थे और न तो प्रयोग पाठ्यक्रम में हो रहे थे न ही प्रश्न पत्रों में । वही बाबा-आदम के जमाने के सवाल साल-दरसाल पूछे जा रहे थे और उन सवालों को रट कर परीक्षा में उगल देना ही विद्यार्थियों की क्षमता का एकमात्र मापदंड था । एक विभाग मनोविज्ञान को छोड़कर किसी और विभाग में कोई ख़ास नव प्रयोग न था ।

इस प्रांगण में किसी तरह का सेमिनार, बौद्धिक वाद-विवाद जो पहले हुआ करता था, वह अब नहीं होता था । जनरल स्टडीज़ के लिये उचित मार्गदर्शन का आभाव था । जो कुछ गाइडेंस कोर्स या कौचिंग खुली भी वह भी एक समुचित मार्गदर्शन नहीं दे पाती थीं ।

इस प्रांगण के कुछ गिने-चुने अध्यापक थे जो इस परीक्षा प्रणाली को समझने में रुचि रखते थे बाकी तो इससे निरपेक्ष होते थे । यहाँ के कुछेक अध्यापकों की रुचि राजनीति में जाने की थी और कुछ अध्यापक अपना चेहरा और नाम पेपर में देखने की उत्कृष्ट अभिलाषा रखते थे और यहीं लोग कुछ छुटभैया पत्रकारों के भी आगे- पीछे घूमा करते थे ।

इसी प्रांगण में कभी वह एक दौर हुआ करता था जब प्रतिभावान विद्यार्थी आईएएस की परीक्षा छोड़कर इस राष्ट्र निर्माण के कार्य के पर्यायवाची

अध्यापन का कार्य सहर्ष किया करते थे । वह दौर अब अतीत की वस्तु बन रहा था और उस दौर की जगह वह दौर अंगड़ाई लेने लगा था जब लोग सीओ , ए आरटीओ , एसटीओ की नौकरी करने को लालायित हो रहे थे , अध्यापन ऐसे पवित्र मंगलकारी कार्य को छोड़कर । जीवन में भौतिकता का प्राधान्य हो रहा था , अफवाह तो यहाँ तक थी कि एक अध्यापक ने दरोगा बनने पर भी विचार किया था ।

उसी दौर में अमर गुप्ता , अनुराग शर्मा, बद्री विशाल , चिंतन उपाध्याय, शशि , सुरुचि की टकराहट थी संजीव टंडन , राजीव सिंह , रितेश , रागिनी , सिद्धांत ऐसे न जाने कितने प्रयोगधर्मी तीरंदाजों से हो रही थी ।

भाषा का मुद्दा भी एक था । यह मुद्दा मटीरियल को लेकर ज्यादा था । अंग्रेज़ी माध्यम में गाइडेंस , न्यूज़ पेपर , बने - बनाये नोट्स, मैगज़ीन बेहतर थे । राउस के इतिहास और समाजशास्त्र के नोट्स थे , जो कि अच्छे कहे जाते थे । इसी तरह वैद्य के एनथरो के । पर समस्या यह थी कि यह सब थे अंग्रेज़ी माध्यम में ।

इन विपरीत परिस्थितियों में भी इलाहाबाद का परचम कोई ख़ास कमज़ोर न था , काफ़ी लोग प्रारम्भिक परीक्षा पास करते थे और इंटरव्यू भी ठीक- ठाक लोग देते थे । यहाँ तक कि अंतिम चयन भी सम्मानजनक था । यह शहर मुख्य रूप से मात खा रहा था टाप 100 में स्थान बनाने में । यह पराजय जज्बे, कठिन परिश्रम या संघर्ष के अभाव के कारण न होकर एक प्रयोगधर्मिता के साहस के न होने के कारण हो रही थी । यहाँ का हर परीक्षार्थी एक बनी बनायी लकीर पर ही चलना चाहता था , वह नये रास्तों को तलाश करने का साहस नहीं करता था । यह सब जाने- समझे रास्ते के नुकीले पत्थरों से भयाकरान्त न थे यह नये रास्तों के सपाट पत्थरों की अनिश्चितता पर प्रयोग के पक्षधर न थे । अब और शहरों का तो नहीं कह सकता पर इस शहर में लोगों के मध्य अविश्वास था , कोई किसी को कुछ ख़ास न बताता था । यहाँ तक कि जो लोग अपने सीनियरों की निंदा उनके स्वार्थी रवैये के कारण करते थे , वह भी सीनियर होने पर वही कृत्य करते थे ।

प्रारम्भिक परीक्षा जिस तरह इन सबने पास की वैसे ही इलाहाबाद से भी लोगों ने थोक भाव में पास की । यहाँ प्रारम्भिक परीक्षा पास करने का कोई ख़ास संकट न था , या यूँ कहें अभी संकट गहराया न था पर आने वाले दिनों में सूरज परहेज़ करेगा रोशनी देने में इसका पूर्वाभास हो रहा था ।

मेंस भी पास किया एक ठीक-ठाक संख्या में। राजेश्वर सिन्हा, सुरुचि मिश्रा के नाम की बोली सट्टा बाज़ार में तेज चल रही थी। मेरा कोई अस्तित्व इस ब्लू चिप कंपनियों के शेयरों के बीच कुछ ख़ास न था, शायद कुछ भी न था। मैं एक डार्क हार्स था अभी तक की दोनों परीक्षा प्रणालियों में। मेरी सफलता मेरे कर्मों से ज्यादा मेरे पुरखों के कर्मों से थी।
मैं दूर खड़ा इन सारी गतिविधियों को देख रहा था।

मैं बार-बार सोचता था कि मेरा क्या होगा, इन महाकाव्य के महारथियों के बीच? मैं कहीं उस उड़ रही पतंग की तरह न हो जाऊँ जिसे कट जाने के बाद लूटने के लिये दौड़ रहे लड़के अंत में पतंग को तार-तार कर देते हैं। मैं कुछ भी सोचूँ अंत में एक ऐसी तस्वीर बना देता हूँ अपनी, जिसमें मेरा चेहरा उस अश्वत्थामा की तरह दिखता है जिसकी मणि भीम ने निकालकर युधिष्ठिर को दे दी थी। यह हर बार मुझको लगता है कि शहर में मैं सुरुचि, शशि, अमित चौधरी से हार रहा तो शहर के बाहर संजीव, रागिनी, राजीव सिंह से। एक सन्नाटे में आग ऐसी लग जाती थी मेरे ही सामने और आग की लपटों के ताप के साथ-साथ आग का हवा से लड़कर उत्पन्न होता हुआ शोर मेरे कानों को परेशान करता था। इस बार मैं दैवयोग से परीक्षा पास कर गया पर जो एक बार होता है वह हर बार हो ऐसा कहाँ होता है। कहानी में किरदार बहुत होते हैं पर ज्यादातर किरदार नायक की प्रशस्ति और उसके कद को ऊँचा करने के लिये सृजित किये जाते हैं। वह जो परमपिता एक महान कहानीकार हैं उसने मुझे एक बड़ी कहानी में जगह दे दी, इससे आगे कुछ दिया है ऐसा लगता नहीं है।

इस महफिल से एक ज़ख्म ही लेकर जाऊँगा मैं, मेरी नज़्म का कोई खैरख्वाह नहीं यहाँ पर। अब कैसे कहूँ ऐ खुदा यह ज़मीन जो दिखाई है इसके शजर पर अधिकार भी दे दो मेरे अपने होने का कुछ गुमान भी हो जाएगा। इतिहास की कलम के चंद लफ़्ज़ मुझको भी मिल जाए, मेरे दऱख्तों को कुछ थोड़ी फैलने की ज़मीन मिल जाए। दिन का मंज़र ढल रहा था, साया लम्बा हो रहा था। वह सामने के पेड़ अपनी आगोश में अँधेरे को बुला रहे थे। यह सब अजनबी आश्ना बन चुके थे। यह सामने की टूटी दीवार पर अजीब से इश्तिहारों का रंग अक्से-हिना की तरह दिख रहे था। मेरे सामने के पेड़ जम्हाई लेते खड़े और सड़कों के सामने के अस्पताल में सन्नाटा आने लगा था। मैं अपने अंदर की जुल्मतों की ज़मीन पर एक चमकते नूर को तलाश रहा था।

यह सोच ही रहा था कि किसी ने हाँथ रखा कंधे पर और कहा

दूसरों की बेलगाम उड़ती ख्वाहिशों के बोझ से परेशान हो ?

यही होता है जब गौरैया के डैनों पर पानी की बूँदें ज्यादा जमा हो जाती हैं और उसे अपने बच्चों के पास एक ख़राब मौसम में पहुँचने की जल्दी होती है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 58

मैंने देखा उनकी तरफ जिन्होंने कहा था ,

“ गौरैया के पंखों पर बारिश की बूँदें कुछ जमा हो जाएँ तो वह वैसे ही परेशान होती है जैसे कि ख्वाहिशों के बोझ से दबा आदमी उड़ना तो चाहता है पर वह स्वतंत्र रूप से उड़ नहीं सकता । ”

सत्यानंद तिरपाठी, चंपारन के रहने वाले वह भौतिकी विज्ञान में एम एस सी की डिग्री लेने के बाद मास कम्यूनिकेशन का डिग्री कोर्स जेएनयू के आईआईएमसी से कर रहे थे ।

उनके पिताजी ने फ़ोन करके उनसे कहा कि आप यह कौन सा झोला छाप काम कर रहे हो ? इससे क्या नसीब में आप अपने लिखोगे और क्या किसी और के । यह यूपी बिहार के लोग अपने बच्चों को इसलिये भी आईएस बनाना चाहते हैं क्योंकि उनको लगता है कि न केवल इससे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी वरन् क्षेत्र, गाँव, इलाक़े का विकास का होगा और चार लोगों का काम होगा ।

यह पिता की सलाह मान कर सिविल सेवा में लग गए और प्रारम्भिक परीक्षा भौतिकी विज्ञान से पास कर ली । अब अगली समस्या थी कि यह दूसरा विषय क्या लें ? यह गणित लेना चाह रहे थे पर वह सहज न हो पा रहे थे उसमें । वह जवाहर बुक स्टोर गये, वहाँ पर देखा कि लोग इतिहास की किताब खरीद रहे और जवाहर वाला राउस के नोट्स की फ़ोटोकापी चिपका रहा था लोगों को ।

इतिहास की ए एल बाशम की किताब अलटा - पलटा, एल मुखर्जी की विश्व का इतिहास, बिपिन चन्द्रा, सुमित सरकार की आधुनिक भारत देखा और

कर लिया फ़ैसला इतिहास लेने का । भौतिक विज्ञान और इतिहास से मेंस लिखा । समय कम था , पूरी तरह पढ़ न पाये थे , मेंस पास न कर सके । मेंस की मार्कशीट आई , इन्होंने देखा भौतिकी विज्ञान जिससे एमएससी किया था उसमें अंक कम आए और इतिहास में अंक उससे बेहतर आए थे ।

असफलता भी कई बार नये द्वार ही नहीं खोलती वह कई बार नायाब द्वार भी खोल देती है । यही इनके साथ हुआ । एक नया द्वार इंतज़ार कर रहा था । भौतिकी विज्ञान छोड़ने का फ़ैसला कर लिया । यह पत्रकारिता में रुचि रख रहे थे , इसलिये यह हिंदी साहित्य भी उलट- पलट रहे थे ।

उन दिनों यह शौकिया निर्मल वर्मा का उपन्यास “ एक चिथड़ा सुख ” पढ़ रहे थे । जेएनयू में भी लोग हिंदी साहित्य लेना आरंभ कर चुके थे । इन्होंने हिंदी में हाथ आज़माने की सोची । प्रेमचंद का “ गोदान ” और मुकितबोध का “ अँधेरे में ” यह लेकर आए । गोदान इन्होंने दो दिन में ही पूरी पढ़ डाली और अँधेरे में कविता का फेंटेसी में की गई लिखावट और कविता का मर्म जो प्याज़ की तरह परत दर परत निकलता है , वह भा गया । यह फ़ैसला हो गया । दो नया विषय हिंदी साहित्य और इतिहास । प्रारम्भिक परीक्षा में भी फ़िज़िक्स की जगह इतिहास ले लिया । यह भी एक विरला ही प्रयोग था , जिससे प्रारम्भिक परीक्षा पास की हो वह विषय छोड़कर नया विषय प्रारम्भिक परीक्षा में । इनका तर्क था अगर न छोड़ता तो तीन विषय में दक्षता लानी होती ।

यह अपने दूसरे प्रयास में इंटरव्यू की दहलीज़ तक पहुँच गये पर एक ऐसी गलती हो गई कि इन्हें 250 में से मात्र 61 मात्र मिले । नक्सलवाद की समस्या को यह सामाजिक - आर्थिक समस्या कह कर पूरा इंटरव्यू देते रहे यह कहते हुये कि यह राजनैतिक से ज्यादा सामाजिक- आर्थिक समस्या है और इसका समाधान बल प्रयोग या बंदूक से नहीं हो सकता । यह पुलिस बल और सेना की ज्यादतियों की बात भी कर गये । इनके अनुसार इससे बात और बिगड़ गई । इनका कहना है कि बोर्ड में कोई सेना का उच्च अधिकारी एक एक्सपर्ट के तौर पर आया था और उसको यह उत्तर न भाया , इसलिये मात्र 61 मार्क्स ही प्राप्त हुये ।

यह फिर आज़मा रहे थे वह भाग्य का खेल जो अलीबाबा के दरवाज़े की तरह है , अगर खुल जा सिमसिम का मन्त्र नहीं मिला तो यह कपाट कभी खुलेगा ही नहीं । यह मन्त्र पीढ़ी दर पीढ़ी खोजती रही और अपने तरह का नया- नया मन्त्र इजाद करती रही । यही मन्त्र यह भी खोज रहे थे ।

इन्होंने पहली बार परीक्षा अंग्रेज़ी माध्यम में लिखी थी , पर जैसा प्रायः ज्यादातर आम स्कूल के हिंदी माध्यम के छात्रों के साथ होता है वही इनके साथ भी था , अंग्रेज़ी में हाँथ तंग था । अब फ्रिज़िक्स हिंदी में लिखी नहीं जा सकती और एक बात सब कहते ही हैं कि अगर अंग्रेज़ी में लिखोगे तब अंक बेहतर मिलेंगे, यह बात सबको आकर्षित करती है अंग्रेज़ी में परीक्षा देने के लिये । हिंदी में लिखने , पढ़ने और बोलने की सहजता को त्याग कर लोग अंग्रेज़ी माध्यम ले लेते हैं क्योंकि लोग यह कहते हैं , “ हिंदी से सफलता कठिन है ” ।

सत्यानंद ने अपनी कमज़ोरियों से ज्यादा अपनी ताक़त से तरजीह दी । यह कमज़ोरियों से निजात पाना चाहते थे और एक हाँथ काटकर जीवन में जीने का फैसला किया अगर वह हाँथ नासूर बन रहा हो पूरे शरीर में ज़हर फैला रहा है ।

अंग्रेज़ी त्यागकर हिंदी की शरण और परीक्षा के तीसरे द्वार पर पिछली साल । इनके अंक लिखित परीक्षा में काफ़ी अच्छे थे और अगर 99 अंक प्राप्त किये होते इंटरव्यू में तो यह सफल हो गये होते ।

इनकी बातचीत से ही एक साहित्यिक अभिरुचि और शब्दों का नायाब चयन टपकता था । इनके बात से एक संघर्ष की वेदी से गुज़रा हुआ व्यक्तित्व दिखता था ।

इनकी हाबी थी करियेटिव राइटिंग । मैंने इतना ही पूछा कि यह करियेटिव राइटिंग क्या है ?

इन्होंने कहा , कैसे मैं कहूँ आसान शब्दों में । यह थोड़ी देर सोचने लगे और बोले

“ जो मन के अंदर उमड़ रहा हो और चाह रहा हो उतरना कागजों पर “

मैं - मतलब जो लिखना अच्छा लगता हो , और कोई उसे पढ़े ?

सत्यानंद- कोई उसे पढ़े , यह भी ज़रूरी नहीं । हो सकता है आपको एतराज़ हो कोई उसे पढ़े । बहुत दिनों तक मैं लिखता रहा बेपरवाह उसके संचय से । मैं लिखता रहा और सब कहीं खोता गया । नहीं रखा सहेज कर कहीं भी कभी भी ।

फिर एक दिन कहीं किसी के हाँथ लग गया कुछ मेरा लिखा हुआ । पूछा उसने, तुमने ही यह लिखा है ?
मैंने कोई जवाब ना दिया ।

जिसने पढ़ा, उसने कहा वही लिखा है तुमने जो मैं कहना चाहती थी । इसमें कहीं मैं भी हूँ ।

उस दिन लगा मुझे कोई भी लेखन व्यर्थ नहीं होता । लिखना एक सार्थक प्रक्रिया है, भले ही वह बचकानी ही क्यों न लगे ।

यह उस अभिव्यक्ति का माध्यम है शायद जो हम उच्चारित करके नहीं कर पाते ।

बहुत दिन बाद किसी ने पूछा मुझसे मैं कैसे लिखूँ ?
मैं भी लिखना चाहता हूँ ।

सोचा कुछ देर मैंने और कहा उससे,

“जो आप कह पाने का साहस नहीं कर पा रहे, जो परम्परायें तुम तोड़ना चाहते हो पर तोड़ नहीं पा रहे, जिसको बहुत शिद्दत से किया प्यार पर तुम कह न पाए हो, किसी का बेवजह दिल दुखाया और उससे क्षमा माँग न सके ।

यह सब लिखो ।”

वह सब लिख गया वह और कहा उसने यह तो क्रान्तिधर्मिता है ।

लेखन वास्तव में एक क्रान्तिधर्मिता है । यह एक नयापन है आपके व्यक्तित्व में । हर एक में लेखक होता है बस आवश्यकता है उसे पहचानने की । हर एक में अभिव्यक्ति होती है बस ज़रूरत होती है उसको क्रम से सजाने की ।

यह ज़रूरी नहीं कि रचनाकार की रचना किसी मानदंड पर आँकी और परीक्षित की जाए । ज़रूरी सिफ़्र इतना है कि अंदर के जज्बात पन्नों पर बिखर जाएँ । बिखरना एक तारतम्य से ही लेखन है ।

एक नदी फिसलती पहाड़ों से समुद्र की तरफ ,एक लेखन है । समुद्र में मिलकर अपनी पहचान खोती नदी हो या बीच में भटकर अपनी अलग पहचान बनाती नदी , दोनों ही एक अभिव्यक्ति है । ग्लेशियर का पिघलना और फिर अनेक जलकुंडों का जन्म देना एक अभिव्यक्ति है ।

अभिव्यक्ति अपने आप में एक जीवन है । लिख कर खुद ही पढ़ना जीवन का एक अलग अनुभव है , स्वर्गिक अनुभव है ।

सिर्फ लिखें बेपरवाह लोगों के नज़रिये से ।

अभिव्यक्ति अपने आप में एक सम्पूर्ण जीवन है ।

मैंने पूछा यह अभिव्यक्ति क्या मौन होकर भी हो सकती है ?

सत्यानंद- हर बार नहीं है ज़रूरी अल्फ़ाज अपनी बात कहने को । आँख की भाषा होती है , चेहरे की अभिव्यक्ति होती है ।

मैं - मैं कुछ समझा नहीं ।

सत्यानंद- यह इन्द्रधुनष क्या है ? यह तितलियों का फूलों से बात करना क्या है ?

मासूम बच्चे के नर्म -नर्म गालों पर धूप

जिसको देख रही माँ स्वेटर बुनते हुये , यह क्या है ?

तारीकी में जुगनू की चमक और अलाव के आग की चिंगारी क्या है ?

चाँद और चिनार जो बनाते हैं तस्वीरें झील की तरंगों में , यह क्या है ?

इन सबको एक आदमी देखता है और भूल जाता है पर कोई और इसे देखकर काव्यात्मकता की ओर बढ़ जाता है । अब अभिव्यक्ति लेखन में है या इन दृश्यों में या दोनों में ?

यह एक प्रश्न है जिसका जवाब ही अपने आप में किरणेटिव राइटिंग है ।

मैं - लेखक किसी पर कब लिखता है ?

सत्यानंद- किसी पर लिखने के लिये उसको ही जानने से काम नहीं होगा । आपको उसके परिवेश को जानना होगा । अगर तुम मुझ पर लिखना चाहते हो तो जब तक तुम मेरा और मेरा चंपारन से संबंध , मेरी और मेरी पीड़ा, मेरा और मेरा संघर्ष नहीं जान जाते , मुझ पर नहीं लिख सकते हो । मैं मज़ाज पर

लिखना चाहूँ में तब तक मज़ाज पर नहीं लिख सकता जब तक यह में न जाऊँ वह कौन सा लेखन था जिसके लिसे अलीगढ़ गर्ल्स कालेज में लड़कियाँ मज़ाज के नाम का लाटरी का पर्चा बनाकर अपने हक्क में होने की शर्त लगाया करती थीं । यह सिर्फ़ जान लेने से कि वह उर्दू शायरी के कीटस थे या उनकी वह शायरी जिसमें वह कहते थे कि , यह आँचल बहुत ख़ूबसूरत लगता है तुम पर लोकिन अगर इसका परचम बना लेती तो और अच्छा है या उनकी कुछ शायरी पढ़कर मैं या तुम या कोई और लिखना चाहें तो वह लेखन के साथ न्याय नहीं होगा ।

लेखक जिस भी वस्तु पर लिखना चाहे उसे उसके परिवेश और उससे जुड़े हुये लोगों को जानना होगा ।

यह लेखन कुछ शब्दनम पर उतरे चाँद को हाथ में उठाने जैसा है , कहीं वह चाँद टूट न जाए ।

मैं - यह तो एक दक्षता की माँग करता है ?

सत्यानंद-इसीलिये तो सारे लेखक अपूर्ण होते हैं । कोई सम्पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाता ।

सत्यानंद बोले , अब इस बात को यहीं रोकते हैं । मैंने कहा , नहीं अभी नहीं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 59

सत्यानंद तिरपाठी ने पूछा, “ कैसा हुआ तुम्हारा इंटरव्यू? ”

मैंने कहा , बहुत ख़राब तो नहीं कहूँगा पर जैसा चाह रहा था वैसा नहीं हुआ । मैंने कमल व्यूह की बात नहीं बतायी पर सात राज्यों का नाम न बचा पाने की बात बतायी । उन्होंने कहा , इससे बहुत फ़र्क नहीं पड़ना चाहिये । यह बात मुझको दिलासा देने के लिये उन्होंने कही थी , यह मैं उनकी आँखों से पढ़ गया । उनका इंटरव्यू बेहतर हुआ था । उनकी हाबी किरयेटिव राइटिंग थी और इस पर वह बेहतर बोले होंगे , ऐसा उनकी बातों से मुझे अनुमान हो गया था ।

इस सिविल सेवा के इंटरव्यू में हाबी एक बड़ा रोल प्ले करती है । इसका एक कारण यह है कि एक दिशा इंटरव्यू की निर्धारित हो जाती है । मेरी भी हाबी

किरयेटिव राइटिंग थी पर मुझे इसका पता ही न था । आज सब सत्यानंद से बात हुई तब लगा , यही हाबी मेरी भी है । अनायास लिखना मेरे व्यक्तित्व में है । मैं अपनी गणित की क्लास में अनायास पीछे लिखता रहता था । वह किसी को कभी दिखाया नहीं क्योंकि वह मुझे कभी स्तरीय नहीं लगता था ।

यह स्तरीय था या नहीं था , यह प्रश्न कभी परीक्षित ही नहीं हुआ । मुझे अपने पर कभी विश्वास ही नहीं था । मैं एक हीन भावना का शिकार हमेशा से ही रहा । यह सच है कि हीन भावना हर किसी में किसी न किसी रूप में प्रवेश करके कहीं अपनी छोटी सी जगह बनाकर रहने लगती है पर मेरे अंदर तो उसने एक राजप्रासाद ही बना लिया था ।

यह हीन भावना अंदर जन्म क्यों लेती है ? इसका अस्तित्व किस पर टिका होता है ? क्या इसका संबंध आपकी क्षमता है या आपके परिवेश से है ? क्या यह आरोपित होती है ? क्या इससे निजात पाया जा सकता है ?

अभी मेरी उम्र ही क्या है ? मात्र 23/ 24 साल । मुझे एक लंबा जीवन जीना है । मुझे अभी और पहाड़ों की ऊँचाइयों की तरफ बढ़ना है । मैं मात्र आईएएस बनकर संतुष्ट होने वाला नहीं हूँ । मुझे जीवन में सार्थकता की तलाश है । यह सार्थकता यह नौकरी नहीं दे सकती । पिछले 50 सालों में कितने इस पायदान को पार करके गये पर उनका कौन सा ज़िकर उनकी अपनी ही किताबों में है । आप अपनी ही किताब लिखो , खुद आप ही पढ़ो और देखो आप का कितना ज़िकर उसमें होता है ।

मैंने तमाम आईएएस अधिकारियों के क्रिस्से सुने हैं वह सत्ता की दलाली, अहंकार की चरम सीमा , समाज से निरपेक्षता एवं एक भौतिकता से भरा जीवन जीने के सिवाय और किया ही क्या है ? वह खुद अपनी ही लिखी कहानी में अपने को नायक बनाने की हैसियत नहीं रखते । उनका जमीर ही कहेगा , तुम इस लायक नहीं हो कि स्याही तुम पर खर्च की जा सके ।

मुझे ऐसा जीवन जीने की कोई न तो अभिलाषा है और न ही लालसा । मेरा सारा छल , प्रपञ्च, फरेब , प्रयास, संघर्ष इसलिये है कि मैं अपने सीमाओं से बने परिवेश से निकल कर एक बड़े कलेवर का मंच चाहता हूँ , जहाँ मेरा अक्स चाँद की पीली धूमिल रौशनी में किसी तैरते हौज़ के पत्तों के बीच ओझल न हो जाए वरन् समुद्र की उफनती लहरों में दूर से दिख रहा हो । मैं किसी भी हद तक जाने को तैयार हूँ , अज़ीयत की पेंच- अंदर - पेंच की पीड़ा को झेलने को भी । मुझे एक जीवन में सार्थकता की तलाश है , उसका द्वार

इसी दिव्य इमारत से निकले कुछ कागज़ के पन्नों पर अपना नाम लिखकर ही प्राप्त हो सकता है ।

मैं अपनी अगली साल की तैयारी में लग चुका था । मैंने फ़ैसला किया अपने ही अंदर सत्यानंद के हिंदी साहित्य के थाह को समझने की । यह हिंदी में पिछले बार बहुत अच्छा नंबर पाये थे । मैंने एक शास्त्रार्थ ऐसा करने का निर्णय लिया उनके साथ , यह सोचकर कि मुझे अपने हिंदी के ज्ञान की गहराई का आभास होगा ।

हर कोई होता है अनजान मेरी युक्तियों से । मैं अपने हक्क का कोई भी काम सहजता से कर लेता था जिसमें छल होगा ही , बगैर छल किये मैं कोई काम करता ही नहीं । मेरी माँ भी कहा करती था , तुमने इतना झूठ बोलना कहाँ से सीखा ।

वह अनजान थे मेरे अंदर के उमड़ते तूफ़ान और शकुनि के एक नये पाँसे से जिसका लक्ष्य सात्त्विक था , पूरी तरह से नियम से था । मैं सिर्फ़ शास्त्रार्थ कर रहा था , अपने को आँकने के लिये और इसका फ़ैसला मुझको बहुत सुकून देता , अगर मेरे पक्ष में न हुआ तब भी । एक इजलास जिसमें दो प्रक्ष और मुंसिफ़ खुद मैं ही ।

मैंने पहला ही सवाल किया , यह रचनाधर्मिता करान्तिकारी क्यों होती है ?

सत्यानंद- मैंने कब कहा करान्तिकारी होती है ? यह रीतिकाल के अधिकांश लेखक , यह राजाओं के इतिहास लिखने वाले दरबारी इतिहासकार , कवि , यह आज की पत्रकारिता में संपादकीय किसी के इशारे पर लिखने वाले यह कौन से कबीर , तुलसी , मुकितबोध , निराला हैं । यह कौन सा करान्तिकारी कार्य कर रहे । यह चंद उम्मीदों के लिये बिके लोग है ।

मैं - पर लेखन तो कर रहे । किरणेटिव लेखन तो कर रहे लोग ।

सत्यानंद- यह लेखन कर रहे पर क्या किरणेट कर रहे ? अगर लिखने के लिये ही लिखना है तब उसमें रचनात्मकता का अभाव झलकेगा ही । यह मेरी मान्यता है । आप यह बताओ अगर कोई कहता है , मेरी प्रशस्ति में लिखो और आप लिखते हो तब उसमें कौन सा सुख मिलेगा ?

मैं - क्या सुख होना आवश्यक है रचना के निर्माण के लिये ।

सत्यानंद-मेरे हिसाब से तो है और मैं ऐसा ही करता हूँ । मैं अच्छा लिखता हूँ या खराब , इसका फ़ैसला तो पढ़ने वाले करेंगे पर मैं लिख कर प्रसन्न होता

हूँ, इसका फ़ैसला कोई और नहीं कर सकता। एक लेखक को आलोचना से बेपरवाह होना चाहिये।

मैं - यह कैसे हो सकता है, यह निरपेक्षता लेखन में कैसे संभव है? हर लेखक को पाठक का ध्यान देना ही चाहिये।

सत्यानंद- कोई पाठक को सोचकर नहीं लिखता है। क्या तुलसी, सूर, कबीर, निराला पहले पाठक को देखते थे तब लिखते थे?

मैं - उद्गार लेखक के हमेशा ही यह तो सोचते हैं कि इसे एक बड़े पाठक वर्ग से रुबरू होना है। उसके सचेतन में यह तो होता ही है कि वह जो भी लिखेगा उस पर प्रतिक्रिया और आलोचना होगी, आज के दौर में तो ऐसा है ही। यह कबीर-सूर-तुलसी एक भक्त थे। उनके काव्य से जो भी उपजा साहित्य के लिये वह उनकी भक्ति से उपजा है। वह कोई इन अर्थों में रचनाकार न थे जैसा हम आजकल देखते हैं। यही मीरा के साथ है। वह लिखीं कम पर भाव विव्लता काफ़ी थी उनमें। भक्त वत्सलता थी इन लेखकों में। संत साहित्य में सामाजिक विषय वस्तु थी, जातीय चेतना भी थी। यह भी सच है कि जो सूर बंद आँखों से देख गये वह लोग खुली आँखों से भी न समझ पाए। यह तुलसी ने जो अन्याय का विरोध करने के लिये राम का आदर्श रखा जिससे जनता में आशा का संचार हुआ और यही बात में निराला ने राम की शक्ति पूजा में किया, क्या यह एक बड़े वर्ग की आशाओं को ध्यान में रखकर नहीं किया गया?

यह आधुनिक युग का लेखक एक पाठक वर्ग को संकेन्द्रित करके लिखता है। आप निर्मल वर्मा के उपन्यासों को लें। वह एक ही लेखक के होकर अलग-अलग वर्ग को अपने में समाहित करते हैं, यूरोपीय संतरास का चित्रण करते हुये भी विविधता लाते हैं।

सत्यानंद- यह वह करना चाहते थे? यह कैसे कोई कह सकता है, अगर वह बात सही है जो आप कह रहे, तब भी। वह बस लिख रहे थे, जो भी विचार प्रवाह आता गया।

मैं - क्या लेखक पाठक से निरपेक्ष होता है?

सत्यानंद- इस सवाल का जवाब देना आसान नहीं, पर मैं पाठक से निरपेक्ष लेखन ही करता हूँ।

मैं - हमारे और तुम्हारे लेखन का पाठक कहाँ मिलेगा।

सत्यानंद- यह भी सही बात है। यहाँ किसको फुर्सत है हमें पढ़ने की।

सत्यानंद सिगरेट सुलगाने लगे । मैंने कहा आप भी पीते हो ? वह बोले , अभी शुरू किया है ।

मैं -इसमें कोई लाभ है , मतलब इसको पीने में ।

सत्यानंद- यह जीवन कोई तराजू की तरह तो है नहीं कि तौलो और माप के जियो । यह जैसा जीवन सामने आ जाए वैसा चलने दो । मांस कम्युनिकेशन में लोग पीते थे , धीरे - धीरे मैं भी यदा- कदा कश मारने लगा ।

मैंने दिखाया दूर से सिद्धांत, रितेश , टंडन कश पर कश मार रहे थे । सत्यानंद बोले वह सब चिमनी हैं , सुबह से देख रहा । मैंने कहा कि मुझे आश्चर्य होता है कि सिद्धांत कैसे मेंस पास किया । उन्होंने कहा कि अगर सिद्धांत से पूछो तो यह वह हमारे - तुम्हारे बारे में कहेगे । यहाँ सब अलगै तीरंदाज़ी करते हैं । यहाँ सब दूसरे पर सवाल खड़ा करते हैं । सबको लगता है कि हम सबसे काबिल हैं । यह परीक्षा बड़ी प्राड मार्क है । यहाँ किसका हो जाए कोई नहीं जानता । यह परीक्षा सबको देनी चाहिये , अगर मेहनत कर सको । यह कब कौन सा द्वार किसके लिये खोल दो कोई नहीं जानता । मैं इतिहास दो - तीन महीने पढ़ा , मुझे फ़िज़िक्स से ज्यादा अंक मिले । मैंने हिंदी कभी न पढ़ी पिछले बार उसने बेहतरीन नंबर दिये और उम्मीद है इस बार भी दिया होगा । इस परीक्षा में विषय का चुनाव एक सधा हुआ कदम है , अगर वह कदम सही पड़ा तो काम आसान हो जाता है । मेरा फ़िज़िक्स को छोड़कर हिंदी लेना एक सधा हुआ कदम है ।

यह एक नाटक है जो हम सब मंचित कर रहे इस परीक्षा में । बेहतर अभिनेता वह होता है जो दी हुई लाइन , डायलाग , दृश्य को अंतिम समय में *improvise* कर दे । यही इस परीक्षा के साथ है । सब लोग पढ़ते कमोबेश एक ही तरह से है , पर जो परीक्षा के आसपास के दौर में रणनीति थोड़ा अलग बनाता है और परीक्षा में एक नवीनता का प्रयास करता है वह थोड़ा आगे निकल जाता है । यह संघर्ष ही थोड़े अंतर का ही है । पहली स्थान और 100 वाँ स्थान अंतर 60/70 नंबर का । 100 वाँ स्थान और अंतिम स्थान फिर अंतर 70/75 नंबर का , 150/160 नंबर के अंतर में सारा खेल खत्म । एक ही नंबर पर 4/5/6 लोग अंतिम द्वार पर होते हैं । प्रारम्भिक परीक्षा में एक ही नंबर पर कई सौ लोग होते हैं । अंतिम कट आफ पर तीन चार सौ होते होंगे । एक नंबर और कम पर कुछ सौ और । यह सब कमोबेश एक ही तरह के होते हैं , पर कुछ परीक्षा हाल में बरता गया संयम या कुछ मस्तिष्क का अभिप्रयोग फ़र्क़ ला देता है ।

मैंने कहा कि यह बात तो सही है कि इस परीक्षा का कोई नियम आज तक किसी को समझ न आया , हर कोई अपनी तरह से व्याख्यायित करता है इसको पर मैंने एक बात देखी है कि कुछ ख़ास होता है जो इसके पार जाता है । मुझे सबसे ख़ास अभिव्यक्ति लगती है , अपनी बात को कह सकने की क्षमता ।

अमर गुप्ता पास आए और बोले क्या चकल्लस फैलाये हो , लग रहा है कोई गंभीर बहस कर रहे हो । सत्यानंद ने कहा , कुछ नहीं हिंदी पर बात कर रहे थे । अमर गुप्ता ने कहा हमने तो कुछ ख़ास पढ़ा नहीं यह विषय पर हमको दिरक समझ आ गई थी ,

“ यह कविता भावना की दृष्टि से भाव प्रधान है और कथ्य में सागरों की तरह की गहराई समाये है । भाषा में एक निरंतर अनवरत प्रवाह है । इसका शिल्प कसा हुआ न होकर भी कहीं से कसे हुये न होने का आभास नहीं देता । निराला आसान भाषा में भी लिख लेते हैं और कठिन भी और आसान भाषा में लिखना सबसे कठिन है पर आसान भाषा में वही लिख वही सकता है जिसको भाषा पर अधिकार हो “ ।

यह मसाला टाइप हम तैयार रखते थे , सवाल आए कुछ घुमा फिरा कर इसको लिखना ही है । ईश्वर बेवकूफ़ों का ध्यान रखता है यह बात चार बार से सिद्ध हो रही , हम हर बार मेडिकल करा रहे ।

अमर गुप्ता बोले चलो देखें अब बचा क्या है ? एक्स-रे बचा है , इन तीनों चिमनियों के एक्स-रे में इतना काला धब्बा निकलेगा कि यह गये काम से ।

राजेश नारायण बोले , शरीमान जी उसमें भी लोचा है क्या? हमारा तो चेस्ट ठीक है । अमर गुप्ता ने कहा पंडित जी आप को ले चलेंगे बाराबंकी के बंगाली बाबा के पास वह आपका इलाज कर देगा । आपका दिमाग़ एक शाक ट्रीटमेंट की माँग कर रहा । आपको कुर्सी से बाँधकर इलेक्ट्रिक का तीन शाक दनादन दे दिया जाए यह मामला सही हो जाएगा ।

सब लोग वापस राम मनोहर लोहिया अस्पताल की ओर जाने लगे ।

मैं सोचने लगा इस कारबाँ का अजाम - ए कारबाँ क्या होगा ? यह सब अजनबी अब आश्ना ह गये हैं पर क्या कभी कोई किसी का हाल मुड़कर पूछेगा ?

मुझे इलाहाबाद की याद आने लगी । वहाँ क्या हो रहा होगा ? एक लम्हा आएगा जब रिज़ल्ट डिस्क्लेयर होगी और उस लम्हे में या तो पत्थर मुस्कुराने लगेंगे या लोग साथ छोड़ देंगे ।

कोई चाँद टूटेगा, जुगनू भी शांत हो जाएँगे, मेरे आँखों से कतरा - कतरा टपकेगा लहू पानी की शक्ल में और वह कहेगी चलो नहीं हुआ इस बार तो क्या बात है आज उनको चैन से सोने दो, जिनके सीने पर लोट रहे थे साँप जबसे तू दिल्ली से लौटकर आया था । खौफ के कई रूप होते हैं, कई अंदाज़ होते हैं यह भी एक खौफ है मेरे अंदर कैसे मैं उससे कहूँगा,

“ माँ मेरा नहीं हुआ “ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 60

जीवन विविधताओं से भरा है । यह एहसास जितना आज हुआ उतना मुझे पहले कभी न हुआ था । रागिनी सिंह का पेंटिंग के प्रति लगाव, इलाहाबाद ऐसे देशज शहर में सुरुचि मिश्रा का अंगरेज़ी के प्रति आग्रह, सिद्धांत का एक फक्कड़ी अंदाज , संजीव टंडन का जीवन का एक जुगड़ के रूप में देखना, रमेश नारायण का गाँव से ही पूरी तैयारी कर देना, सत्यानंद का त्वरित निर्णय एक अपना तैयार विषय छोड़कर कर नया विषय ले लेना, एक गाँव की पितृविहीन लड़की शशि का अपने जीवन का संघर्ष यह कहते हुये अभी हार कहाँ माना मैंने अभी मैंने अपने को आज़माना शुरू ही किया है

यह सब एक अलग जज्बे के लोग हैं जो सूरज को ही निर्देश दे दें कि तेरा काम है जगमगाना तू बादलों में न छुप । यह सब ज़िंदगी से एक रिफ़ाकत कर के चलते हैं चाहे वह कैसी भी हो क्योंकि निभाना इसी के साथ है । इस ज़िंदगी की अज़ीज्यत को कोस कर क्या मिलेगा जब रहना इसके साथ ही है ।

सिद्धांत ने ज़िंदगी में सबकुछ किया, रितेश भी वही कर रहे जो चाहते हैं करना, यह 6 फ़िट 5 इंच का संजीव टंडन अपना एक अलग दर्शन बनाये हुये है । यह लोगों की मदद करता है । यहाँ इलाहाबाद में कोई किसी को कुछ नहीं बताता, यह आईआईटी, जेएनयू दोनों जगह सब बताता है ।

इसका कहना है कि सबका अपना-अपना नसीब है । मैं अपना ही नसीब ले सकता हूँ, दूसरे को रोककर मेरा नसीब नहीं बन सकता । यह जो परमपिता है वह हर एक को उसका हक्क देते समय उसके कर्मों का भी हिसाब करता है । मुझे एक बेहतर घर में पैदा किया, मुझे दिमाग़ दिया यह उसकी इनायत है । मेरे पास ऐसा क्या था कि मुझे ही दिया गया यह सब, किसी और को नहीं । अब यह मेरी जवाबदेही है लोगों के प्रति, समाज के प्रति और मैं उसी जवाबदेही के तहत काम करता हूँ, जो भी ठीक लगता है । क्या यह जवाबदेही सबकी नहीं होनी चाहिये ?

क्या सामाजिक सरोकार सबके पास नहीं होना चाहिये ?

यह लोग जो कमजोर, गरीब छात्रों की मदद कोई क्यों नहीं करता जब वह अपने भविष्य के लिये संघर्ष कर रहे होते हैं, क्या करेंगे यह सब निस्पृह लोग आगे जीवन में जब सफल हो जाएँगे । यह परीक्षा एक व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है । यह आपमें श्रम करने की क्षमता एवम् एक वस्तुपरक दृष्टि का समावेश कर देती है ।

यह पूरी प्रक्रिया में ही आपको निर्णय लेने एवम् संयमित होने का एक बोध देने लगती है । यह सत्यानंद का निर्णय क्या है ? सफलता के लिये नवोन्नेषी मार्गों की तलाश । यह एक पूर्वाग्रह से मुक्त कार्य प्रणाली है । ऐसा ही राजेश प्रकाश ने किया । उन्होंने चार अवसरों में पाँच विषय ले लिये । यह चार अवसरों में पाँच विषय लेना एक बात तो साफ़ कहता है, मुझे किसी भी हालत में इस क्रिले के दुर्ग को गिराना ही है । मैं हार कर वापस जाने के लिये यहाँ नहीं आया हूँ । मैंने जीवन के बहुत से और अवसरों का द्वार स्वयम् ही बंद किया है क्योंकि मैं किसी और विकल्प की ओर देखना ही नहीं चाहता ।

मैं विजय के लिये जिस द्वीप पर आया हूँ वहाँ पर पहले मैं अपनी नाँव जला देता हूँ ताकि वापस जाने का कोई रास्ता ही न रहे । यहाँ पर या तो मेरी विजय होगी या मेरा समापन होगा, मैं हार कर वापस जाना नहीं चाहता । इस असीम संघर्ष करने की क्षमता का मुझे पता न था, आज से पहले ।

सत्यानंद का यह कहना “लेखन एक ऐसी प्रक्रिया है जो स्वयम् को संतोष देती है और अपनी बात कहने के लिये नहीं है अनिवार्यता किसी शरोता की, आप स्वयम् भी अपनी रचना के पाठक हो सकते हैं । यह हो सकता है कि वह आपकी रचना कभी किसी के हाँथ पहुँचे या कभी न भी पहुँचे, पर यह पहुँचना या न पहुँचना एक द्वितीयक प्रक्रिया है न कि प्राथमिक । यह द्वितीयक प्रक्रिया लिखने का उद्देश्य निर्धारित नहीं करती । यह लिखना

अपने आप से मुख्यातिब होना है । यह अपने आप से एक एकांत चिंतन है । यह मेरे लिये एक ध्यान की प्रक्रिया है जिसमें मैं सिर्फ़ अपने साथ रहना चाहता हूँ । यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मेरा निकट से निकटतम व्यक्ति भी मेरे पास नहीं होता । यह मेरी एक ऐसी यात्रा है जो मेरे भीतर होती है, मेरे अपने ही भीतर स्वयम् की तलाश । मैं हर बार लिखने के बाद अपने अंदर कुछ नया पाता हूँ । यह सिर्फ़ एक सुकून की तलाश ही नहीं है, हलाँकि सुकून एक तत्व के रूप में उत्पन्न होता है ।

यह एक अलग दृष्टिकोण है लेखन के प्रति । मैं लेखन को पाठक से जोड़कर देखता हूँ, यह अपने को ही पाठक मान लेते हैं । यह पाठक से बेपरवाह लेखन के पक्षधर हैं और मैं पाठक की अलोचना से लेखन को जोड़कर देखता हूँ । यह लेखन को व्यावसायिक नहीं मानते । यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो हर एक में होती है ।

यह रचना की यात्रा सायास होती है या अनायास ? पर यह शुरू होती है अनायास से ही । मैं जिस ज़िंदगी को न पहचान पाया उसका नुमाइंदा होकर भी वह मेरी रचना यात्रा उधेड़ कर रख देती है । मैंने कभी न सोचा था मेरा जन्म यहाँ किस लिये हुआ, किस लिये मैं साँसें ले रहा पर जब मैं लिखने लगा तब मेरे सम्मुख कई अनुत्तरित प्रश्नों का जन्म होने लगा ।

मैंने अपने गुरुबतों के दौर में बहुत से अरमानों को दफ़नाना चाहा पर मेरे अंदर का जोश उन दफ़नाये हुये अरमानों को कब्र से निकालकर उनसे ही कहता था, इसको पता न था मेरी ताक़त का, तू उठ तूझे लिये इसको लड़ना ही होगा । यह बहुत सी बातें मेरे अंदर तब जन्म लेने लगीं, जब मैं लिखने लगा । लिखने की प्रक्रिया में, मैं काफ़ी पढ़ने लगा और तमाम उन जज्बों से रुबरू हुआ जिन्होंने इतिहास की धारा को मोड़ा है ।

हम लोग पहुँच गये आज के अंतिम कार्यवाही की तरफ । एक्स-रे होना बाकी था, बाक़ी तो सब हो चुका था । रमेश नारायण का एक्स रे बार-बार हो रहा था । वह साँस गलत समय पर छोड़ देते थे । अमर गुप्ता बोले, तुम गये काम से । जिसका एक्स-रे ठीक नहीं होगा वह किसी भी सेवा में नहीं जा सकता । वह तनाव में आ गए । संजीव टंडन ये बोले, “ मेरा जुगाड़ आप इसका भी लगाओ ” ।

संजीव - आपका क्या- क्या जुगाड़ लगाएँ ? आप लंबाई कम किये बैठे हो । आप गाँव के पेड़ पर क्यों नहीं लटके । यह तो सब जानते हैं कि लटकने से लंबाई बढ़ती है ।

रमेश नारायण- हम सारा दिन लटकते थे पेड़ से । इतना लटके कि कई बार पेड़ की डाल ही टूट गई । हम खुद नापे थे गाँव में कई बार । मेरी लंबाई 165 सेमी थी पर यह शीरीमान माने ही नहीं । अब सूत दो सूत का फ़र्क है भी तो क्या फ़र्क पड़ता है, कौन सी दक्षता सूत- दो सूत से चली जायेगी ।

अमर गुप्ता- इन बेवकूफ़ों को कौन समझाये, नेपोलियन तो 5 फ़िट का ही था पर पूरा यूरोप दाय मारा । हम तो अपनी छोटी सी लंबाई में से भी कहा कुछ काट

कर इनके में एडजस्ट कर दो, यह भी इशारा किया की हम कोआपिरेट भी करेंगे आगे जब यह आईपीएस बन जाएँगे पर वह माना नहीं । यह संजीव टंडन बेवजह की 6 फ़िट 5 इंच की लंबाई अकेले ले लिये । यह थोड़ा बहुत हम लोगों को दिये होते । यह जगदंबा मौर्या तो डायमंड जुबली छात्रावास में रस्सी बाँधकर लटकाये थे और उसी में सारा दिन लटकते थे । अब इलाहाबाद के खुराफ़ातियों के बारे में क्या कहें सब हमारे चचा हैं, वह सब हल्ला कर दिये कि यह फाँसी लगा लेंगे अगर इस बार उनका आईएस में नहीं हुआ ।

हमने पूछा, भाई लोग यह फाँसी तो तब लगाएँगे जब नहीं होगा, यह इतने दिन पहले से क्यों रस्सी लटकाए हैं । उन्हीं में से कोई बोला, “वह अभ्यास कर रहे फाँसी लगाने का, ताकि बहुत सुगम यात्रा हो” । दूसरा कोई बोला, “यह वक्त जाया नहीं करना चाहते, जैसे ही परिणाम आया और नहीं हुआ तब यह तुरंत कटिबंध की शरण में” ।

मैंने कहा कि आप लोग बे फ़िज़ूल की अफ़वाह न फैलाओ, वह आईपीएस के लिये लंबाई बढ़ा रहे । लोग बोले, “सर यह सब कहने की बात है, असल मक्सद यही है, किसकी लंबाई लटकने से बढ़ी है” ।

जगदंबा यह बताओ कितनी लंबाई बढ़ी उससे ?

जगदंबा - सर यह सब पता नहीं कौन फैला रहा, हम जाड़ा ख़त्म हो जाने के बाद रज़ाई बाँध कर टाँगें थे ऊपर । मेरा कमरा मेस के पास था और छात्रावास में चूहे हो गये थे इसलिये रज़ाई की सुरक्षा के लिये रस्सी में बाँधकर ऊपर लटकाये थे, यह डायमंड जुबली में कुछ अवांछित तत्व हैं, जिनका एक ही काम है बस फ़ालतू बात करना सारा दिन ।

अमर गुप्ता- यह डायमंड जुबली में ही नहीं पूरे शहर में है । दारागंज से लेकर रसूलाबाद और मुँडेरा चौकी, खुल्दाबाद से लेकर झूसी नीबी के कछार तक

/ गऊघाट - बलुआघाट के पंडे तो दिन में जजमान से माल वसूलते हैं और शाम को भाँग पीकर अनर्गल प्रलाप / इस पूरे शहर के पानी में ही भाँग पड़ी है , अगर कुछ घंटे गलचौरा न करें तो खाना पचेगा ही नहीं / कई बार सूरज भी पूछ लेता है इनसे कुछ देर और रुके अस्त होने के पहले अगर गलचौरा-कोटा न हुआ हो पूरा / यह सूरज से भी कह देंगे तुम थक गये होंगे चलो आराम करो , हम चंदा मामा से काम चला लेंगे कब तक तुम हमारी भूख के लिये इंतज़ार करोगे ।

पर जगदंबा आप चिंता न करो , आप सीधा आईएएस बनोगे , यह लंबाई का चक्कर छोड़ो / यह जो तुम्हारे गाँव के लठैत - दबंग हैं , उनका इलाज टंडन साहब से करा देंगे ।

संजीव टंडन - भाई साहब हमको माथाफोड़ी नहीं करनी अपराधियों से , हमने सीधा भरा है सिफ़्र दो - आईएएस, आईआरएस / बाक़ी कुछ भरा ही नहीं ।

मैं - आपने कुछ और भरा ही नहीं ?

संजीव टंडन - और कोई नौकरी करनी ही नहीं ।

अमर गुप्ता-यह मारवाड़ी टाइप हमको लग रहे , यह बहुत स्पष्ट दृष्टिकोण के हैं / यह बस व्यापारियों से सुख हीचेंगे ।

संजीव टंडन - सर यह हमारे बस का नहीं है गुंडों बदमाशों से निपटना ।

अमर गुप्ता- यह 5 फुटिया लोग कह रहे हम निपटना चाह रहे और आप दुगनी लंबाई लेकर डर रहे ।

संजीव टंडन - सर हम डरपोक हैं बस यही मान लो , अपने को नहीं करना वह डंडा सीटी वाला काम ।

रितेश - भड़वा यह सीना फुलाने वाला जुगाड़ बनाओ , बचपन से वर्दी मे ही देखा अपने को ।

संजीव - रुको , जुगाड़ बनाते हैं ।

राजेश नारायण - हमारा ?

अमर गुप्ता- सन मारकर बैठे रहो / कहीं कोई जुगाड़ नहीं बनने वाला / यहाँ आपका एक्स- रे ही नहीं हो पा रहा ठीक / पहले वह कराओ नहीं तो गाँव वापस जाना होगा ।

थोड़ी देर में सारी प्रक्रिया पूरी हो गई । हस्ताक्षर कराया सबका किसी फार्म में और यह कार्यवाही पूरी हुई । संजीव टंडन का बहुत मन था अपनी ज्योतिषी की विद्या में अभिवृद्धि करने का । वह चिंतन का कुछ साथ चाहते थे । उन्होंने कहा चलो आईआईटी । अमर गुप्ता ने कहा आईआईटी नहीं जे एन यू ले जाओ । रितेश ने कहा, “ चलो भइवा जेएनयू ” ।

अमर गुप्ता - चले जाओ , रात का आलम देखो गंगा ढाबा पर ।

मैं - क्या आलम होता है ?

अमर गुप्ता- सिगरेट पीती लड़कियाँ देखो ।

मैं - लड़कियाँ सिगरेट पीती हैं ?

सिद्धांत- रह जाओगे वही पोंगा पंडित ।

मैं - क्या लड़कियाँ सिगरेट पीती हैं ?

रागिनी - तुमको इतना आश्चर्य क्यों हो रहा ?

सिद्धांत- यह तीसरी क़सम के राजकपूर हैं । इनको हर बात पर आश्चर्य हो रहा ।

अमर गुप्ता- अनुराग जाकर देख लो , क्या पता अब फिर कभी यूपीएससी आना हो न हो , पता चला फिर कभी मेंस पास ही न कर पाए ।

संजीव टंडन बोले चिंतन से , “ चलो सर ”, थोड़ा मेरी कुँडली देख लो , कुछ और लोगों की भी देख लेना ।

चिंतन बोले अमर गुप्ता से कि सर आप भी चलो । अमर गुप्ता बोले मैं कई बार गया हूँ, वैसे बद्री विशाल के मित्र अमित चौधरी अनुपम के यहाँ रुके हैं और हल्ला किये हैं कि अनुपम टाप 10 में आएँगे ।

अन्ततः यह तय हुआ कि चलते हैं जेएनयू । मैं चिंतन के साथ यूपी भवन चला गया । वहीं से जेएनयू आने की बात हुई ।

मेरा परिवेश एक नये संस्कार को देख रहा था । इसके पहले मैंने ऐसा माहौल न देखा था । मैंने पतझड़ों की कहानियाँ ज्यादा सुनी थी , नये मौसम का बहार कम देखा था । मुझे कभी फुर्सत ही न मिली पानी पर लिखी तहरीरों को पढ़ने का , मैं दरिया में अपने डूब जाने के डर से ही पीड़ित रहता था । यह उसकी इनायत है उसने मेरी पलकों को पाकीज़गी से चूम लिया और समंदर में ओस की तरह के मोती मिले न सही पर मिलने की आस उसने जगा दी ।

मैं उत्सुक था देखने को सिगरेट पीती लड़कियाँ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 61

जेएनयू एक शिक्षण संस्थान ही नहीं था यह एक विचारधारा का वाहक भी था । समाजवाद के प्रति नेहरू की एक प्रतिबद्धता जिसका परचम नेहरू और सुभाष कांग्रेस के अंदर लहरा रहे थे । यह दोनों राजनीतिक स्वतन्त्रता के साथ- साथ सामाजिक स्वतन्त्रता की भी बात कर रहे थे । नेहरू कांग्रेस के अंदर रहकर ही कांग्रेस की नीतियों को प्रभावित करने के पक्षधर थे वह दक्षिणपंथियों पर सुभाष की तरह खुले हमले नहीं करते थे , यही कारण है कि नेहरू और सुभाष सामाजिक स्वतन्त्रता पर एक सा मत रखते हुये भी सुभाष की राह कांग्रेस से अलग हो गई । नेहरू का मत था कि समाजवादियों को कांग्रेस के भीतर रहकर ही काम करना चाहिये क्योंकि सारे समाजवादियों का एक सामान्य दृष्टिकोण है , साम्राज्यवाद से संघर्ष और समाजवाद का विकास । कांग्रेस राष्ट्रीय संघर्ष को जन-जन तक ले जाने वाली और उनकी आकांक्षाओं को मूर्त रूप देने वाली एक आधारभूत संस्था है , इसलिये कोई भी संघर्ष इसके नेतृत्व में ही होना चाहिये ।

सुभाष नेहरू की समाजवादी विचारधारा के नज़दीक होकर भी बुनियादी मुद्दों पर कांग्रेस के नेतृत्व, खासकर गाँधी जी , से विरोध रखते थे । 1938 में रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष चुने जाने के बाद , 1939 के तिरपुरी अधिवेशन में पुनः अध्यक्ष बनने की अपनी इच्छा सुभाष ने ज़ाहिर की पर सर्वसम्मति न बन पाने के कारण उन्होंने चुनाव लड़ने का फैसला किया और गाँधी जी के नामित उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया को हराकर अध्यक्ष चुन लिये गये और वह कांग्रेस के अंदर के दक्षिणपंथी नेताओं पर प्रहार करने लगे ।

सुभाष ने सरे आम कांग्रेस के नेताओं को समझौतावादी करार कर दिया , जिससे बहुत से कांग्रेस के नेता नाखुश हुये । गाँधी जी ने इस सुभाष की तिरपुरी कांग्रेस की जीत पर कहा , मैं इस जीत पर उल्लासित हूँ क्योंकि वह अपने विरोधियों दक्षिणपंथ की मूक सहमति से नहीं बल्कि उनके प्रतिद्वंद्वितापूर्ण चुनाव में उनको हराकर अध्यक्ष बने हैं और उनको कांग्रेस अपनी मर्जी से चलाने की छूट मिलनी चाहिये ।

गाँधी और सुभाष के के मतभेद में नीति और रणकौशल से जुड़े कुछ बुनियादी आयाम निहित थे । इसमें मुख्य मुद्दे थे भावी जनांदोलन का स्वरूप और कार्यवाही शुरू करने का समय । सुभाष ने तिरपुरी कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में एक ऐसे कांग्रेस की वकालत की जिसमें सरकार को 6 महीने के भीतर देश को आज़ाद करने को कहा जाए नहीं तो एक सामूहिक सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया जाए । गाँधी जी इस अति उत्साह से सहमत न थे और वह कांग्रेस के अंदर व्याप्त भ्रष्टाचार से आहत थे और यहाँ तक कह दिया कि अगर भ्रष्टाचार ख़त्म नहीं किया जा सकता तो कांग्रेस को ही ख़त्म कर दिया जाना चाहिये । गाँधी और सुभाष के मध्य सारा संघर्ष यह था कि सुभाष चाहते थे कि नीति एवम् कार्यक्रम कांग्रेस का वह बनाएँ और गाँधी उसका नेतृत्व करें, इस बात के लिये गाँधी तैयार न थे । अंततः सुभाष को अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देना पड़ा और उनकी राहें कांग्रेस से जुदा हो गई । यह एक आघात था कांग्रेस के नेतृत्व में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन को ।

कांग्रेस के अंदर के समाजवाद के समानान्तर एक विचारधारा स्वतन्त्र मार्क्सवादी दलों की थी, जो कांग्रेस को समझौतानादी करार किये हुये थे, हलाँकि उनकी जनता में पैठ

सीमित थी ।

पंडित नेहरू की राष्ट्र के प्रति कृत्यों एवम् उनकी समाजवादी विचारधारा को सम्मान देता हुआ यह संस्थान उनके ही नाम पर स्थापित किया गया ।

यह संस्थान भारत में एक राजनैतिक विचारधारा के पोषक संस्था के रूप में भी अपनी ख्याति रखता था । यहाँ के अध्यापकों का बहुत नाम था और कहा जाता था कि इनकी विचारधारा का यूपीएससी में बोलबाला है और प्रश्न बनाने और काफी जाँचने में इन्हीं लोगों की चलती है । अब हक्कीकत क्या है, यह तो किसी को निश्चित रूप से नहीं पता है पर यह एक ऐसा विश्वास था जो बगैर प्रमाण के भी स्थापित था ।

इस जेएनयू की साम्यवादी विचारधारा का देश की राजनीति से जो सम्बन्ध था वह तो था ही इनका विदेश की राजनीति से ख़ासा सम्बन्ध था, ख़ासकर रूस और चीन से । यह मामला ऐतिहासिक था । सन 1939 के द्वितीय महायुद्ध में जैसे ही हिटलर ने रूस पर हमला किया इस युद्ध को इन्होंने जनवादी करार कर दिया और भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध कर दिया । यही नहीं भारत छोड़ो के कांग्रेस प्रस्ताव पर तेरह साम्यवादियों ने प्रस्ताव के विरोध में मत भी दे दिया ।

यह साम्यवादी पूरी आज़ादी की लड़ाई में कांग्रेस को समझौता परस्त और कुलीन, बुर्जुआ वर्ग का साथी करार करते रहे। यह उनकी मान्यता रही कि कांग्रेस लड़ाकू ताक़तों को दबाने का काम करती है और जब आंदोलन एक उफ़्रान पर आता है तब यह लोग सत्ता से समझौता कर लेते हैं। यह कांग्रेस से पूरे नेतृत्व को समझौतावादी करार करते रहे, बेपरवाह इस तथ्य से कि कांग्रेस की जनसमुदाय में कितनी पैठ है।

यह सैद्धांतिक तौर पर गरीबों, मज़दूरों, कामगारों की पक्षधर विचारधारा है। यह आम जनता से तादात्म्य रखकर राजनैतिक - सामाजिक आंदोलन चलाने के पक्षधर हैं। ऐसी विचारधारा के लोगों का विश्वविद्यालयों की छात्र राजनीति में अच्छी ख़ासी दख़लांदाज़ी है, हलाँकि राष्ट्रीय राजनीति में कोई ख़ास असर इनका नहीं है। पर इस जेएनयू परिसर में उनकी तृती बोलती है, छात्र और अध्यापक दोनों स्तरों पर। कहा यह भी जाता है कि अध्यापक के रूप में नियुक्ति के लिये आपका कम्युनिस्ट विचारधारा का वाहक और संवाहक होना आवश्यक है।

इसी जेएनयू परिसर के बाहर एक जवाहर बुक स्टोर है। यह बुक स्टोर ज्यादातर सिविल सेवा से सम्बंधित सामग्री ही बेचता है। यह चार - चार फ़ोटो कापी मशीन लगाकर सारा दिन नोट्स, कोचिंग के मटीरियल, मँहगी किताबों की फ़ोटो कापी, पुराने सफल छात्रों के तथाकथित मटीरियल एवम् नोट्स की प्रतिलिपि बेचा करता है।

यह किताबों के बारे में सारा कुछ जानता है। आप बस विषय बता दो, बाकी पलक झापकते ही सारी उपयोगी किताबें आपके सामने। यह बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक भी है। यह दूर से आते छात्र की ज़रूरत उसके चलने के अंदाज़ से ही जान लेता है और आते ही बोल देगा आपका मटीरियल यह रहा। यह बातचीत से भाँप लेगा कि आपका रुझान किस विषय की तरफ है और उसी के अनुसार बात करने लगता था। इसकी याददाश्त भी तीक्ष्ण है। यह सारे सफल हुये लोगों की पूरी जीवन गाथा जानता है और सुनाता भी है।

“अरे वह अनूप सिंह, दो बार से काम नहीं बन रहा था। मैंने कहा आप हिंदी लो लो। वह बोले मैंने एम फ़िल किया है इस विषय

में, कैसे इसको छोड़ दूँ। मैंने कहा, मेरी बात मान जाओ आप हिंदी ले लो। मैंने ज़बरदस्ती किताब दी और नोट्स दिया। 375 नंबर हिंदी में आये और 51 रैंक, आज मध्यदेश कैडर में हैं”।

ऐसे कई किस्से उसके पास हैं । वह आपका विश्वास बहुत जल्दी अर्जित कर लेता है । पर यह बात सत्य है कि इसको बहुत समझ हैं किताबों की और मटीरियल की । इलाहाबाद में ज्ञान भारती और दिल्ली में जवाहर बुक स्टोर दो सिविल सेवा परीक्षा से जुड़े किताबों को बेचने के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं ।

मैं चिंतन सर के साथ यूपी भवन से राजेश प्रकाश को लेता हुआ जेएनयू पहुँचा । वहाँ का आलम ही अलग था । यहाँ हर ओर एक अलग ही माहौल । यह पूरा परिसर यूपीएससी की परीक्षा की तैयारी से सरबार । कुछ लोग नायक के तौर पर इंटरव्यू दे रहे थे और एक पीछे की पीढ़ी आगामी जून के द्वितीय सप्ताह के प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी में लगी थी ।

यहाँ विषय बार दल होते हैं । जो व्यक्ति जो विषय लेना चाहता है वह उसी विषय के सीनियर के आगे - पीछे धूमने लगता है । वह येन- केन - प्रकारेण यह कोशिश करता है कि कैसे कोई सूत्र एवम् नोट्स इस विषय का मिल जाए । जवाहर वाला एक दिलासा दे देता है, उनको भी नोट्स मैंने ही दिया है, आप आना प्रारम्भिक परीक्षा के बाद आपको भी दूँगा, पर आपका मन नहीं मानेगा । वहीं नोट्स जो जवाहर का ही क्यों न हो वह उनके द्वारा मिले तो ज्यादा संतोष होगा । उनके हाँथ का लिखा मिल जाए तो समझो वैतरणी पार करने की गाय दिख गई । यह परीक्षा कई स्तर पर मनोवैज्ञानिक ढंगों से भी चलती है । यह आपके संतुष्टि पर बहुत कुछ निर्भर करती है । एक आत्मविश्वास किसी सीनियर के दिये हुये नोट्स से सुजित होने लगता है, यह परम्परा अनादि काल से चली आ रही ।

यह वह दौर था जब जेएनयू से चयन बहुत हो रहा था । यहाँ बहुत से लोग आकर एम फ़िल में एडमिशन इस लिये भी ले लेते थे कि परीक्षा में सहायता होगी । यह बात तो शिक्षा के क्षेत्र में सच ही है कि पीयर ग्रूप का बहुत फ़र्क पड़ता है किसी भी स्तर की पढ़ाई में और जब प्रतियोगिता गला काट हो तब तो और भी पढ़ता है ।

यहाँ सारा समय एक ही बात होती थी, कैसे इस परीक्षा का गढ़ तोड़ा जाए । एक नया प्रयोग साहित्य को वैकल्पिक विषय के रूप में लेने का हो रहा था । इस प्रयोग में लोगों ने हिंदी साहित्य, उर्दू साहित्य, पाली साहित्य, मराठी साहित्य में हाँथ आज़माना शुरू किया और सफलता भी प्राप्त की ।

हिंदी साहित्य भी जेएनयू में पेंगे ले रहा था पर इलाहाबाद ऐसी धूम यहाँ पर इस विषय की न थी । यहाँ पर ज्यादातर हिंदी साहित्य इलाहाबाद से यहाँ

आये लोग ही लिया करते थे । मानव विज्ञान (एनथरो) , भूगोल , समाज शास्त्र, इतिहास , राजनीति शास्त्र, लोक प्रशासन की धूम थी । मानव विज्ञान का पारा कुछ गिर रहा था , क्योंकि पिछले दो सालों से नंबर कुछ कम मिल रहे थे और भूगोल का पारा ऊपर चढ़ रहा था क्योंकि इसमें अंक अच्छे मिलने का दौर शुरू हो चुका था ।

इतिहास विभाग यहाँ का बहुत ही सशक्त और मुनब्बर था । प्राचीन इतिहास में रोमिला थापर , मध्य इतिहास में सतीश चन्द्रा , आधुनिक इतिहास में बिपिन चन्द्रा यहाँ राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त अध्यापक थे । यह यूपीएससी की माडरेटिंग कमेटी में भी थे और एनसीआरटी की किताबों को लिखने में इनका योगदान भी था ।

सन 1960 के दशक में जब रोमिला थापर आक्सफ़ोर्ड में ए एल बाशम के अधीन रिसर्च कर रहीं थीं तब प्रख्यात इतिहासकार आर सी मजूमदार ने उनको एनसीआरटी किताबों की इतिहास लेखन समीति का सदस्य बनने का निमंत्रण दिया था ।

इतने महान शिक्षकों से युक्त परिसर के छात्रों का बेहतर होना स्वाभाविक ही है । राष्ट्र निर्माण सीमा पर लड़े गये युद्ध या सीमा के विस्तार से नहीं होता यह कक्षा के अंदर के बौद्धिक विमर्श से होता है जिसका सूत्रधार वह अध्यापक होता है जो जीवन में बेहतर अवसरों को सहर्ष त्याग कर राष्ट्र निर्माण का कार्य करता है ।

इसी बिंदु पर इलाहाबाद पिछड़ रहा था । यहाँ योग्य अध्यापकों की अब भर्ती नहीं हो रही थी । अभी भी हम अतीत के अध्यापकों के नाम और यश की गाथा गाते थे । नव नियुक्त अध्यापक प्रायः पठन- पाठन में अपने पूर्ववर्ती अध्यापकों की तरह की रुचि नहीं रखते थे । यहाँ के अध्यापक अब आतंरिक राजनीति और कुछ शासकीय राजनीति के पुरोधा बनने में लगे थे । यह तो सच ही है कि चंद उमीदों के लिये राजनीति करने वाले अध्यापक के पास कहाँ समय किताबों और छात्रों के लिये । इनके पास लाइब्रेरी के नाम पर कभी भूतकाल में ख़रीदी पुस्तकें ही हैं जिसको या तो उनको धूल ने आवरणित किया है या दीमक खा रहे , कुछ दिन बाद कोई खोजी पत्रकार लिख देगा , नेता बने अध्यापक की किताबें दीमक खा गये , जो अपनी किताब ही न सहेज सके वह देश क्या सहेजेंगे ।

सन 1979 में कोठारी कमीशन ने नया पाठ्यक्रम निर्धारित किया , दिल्ली विश्वविद्यालय और जेएनयू उस पाठ्यक्रम के नज़दीक थे पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने उसके नज़दीक जाने का प्रयास न किया ।

यहाँ सैलाब की ख्वाहिश तो सबको है पर दरिया कोई बहाना नहीं चाहता । ख्वाब की दरकार सबको है पर नींद का कोई इंतज़ाम नहीं है । क़लम की हुरमत महफूज़ रहे यह सबकी चाहत है पर कोई अपने दावात की नायाब स्याही देने को तैयार नहीं । पिछले सफ़र की यादों से मंज़िल पाने का ख्वाब देखने वालों को इसका एहसास नहीं कि रास्ते के जंगल अब और घने हो गये हैं । कभी रिज़ल्ट आने पर शोर से आनंदित होने वाला शहर अब छिटपुट कोलाहल तक सीमित होने लगा है और भविष्यदृष्टा लोग कहने लगे हैं जल्दी ही सन्नाटों को यहाँ पनाह मिलेगी । यहाँ के जज्बे में आज भी रात को दिन से मिलाने की हबस क़ायम है पर अंजाम वह न मिल रहा जो हर एक के ख्वाबों में आज भी महफूज़ है । आँख आज भी उस मंज़र को देखना चाहती है ज़ब मुरझाएं फूल एक समाचार की हवा से तरोताज़ा हो जाया करते थे । आसमानों पर लिखी तक़रीर धुँधली ही सही पर वह आज भी गीता है कुरान है शहर के शहरयारों के लिये । यह एक इश्क़ है शहर का दस्तक देने का , थक जाएँगे दरवाज़े पर यह हाँथ उसको खोल कर ही रहेंगे ।

जेएनयू कैम्पस एक तिलस्म अपने में समेटे हुये । गंगा ढाबे पर रितेश , सिद्धांत मिले । चिंतन सर की लाव लश्कर की जीप रुकी ही थी और हम रितेश की तरफ बढ़ें कि रितेश के पास एक लड़की आई उनके हाँथ से सिगरेट लिया और अपना सिगरेट सुलगाकर छल्ला बना डाला । चिंतन सर ने कहा बहुत ख़बूब वृत्त बनाया । रितेश ने सर का परिचय कराया और कहा बता दो बिंदास अपने बारे में तुम भी

वह बोली ...

“कौन सा नाम बताऊँ बहुतों को रुसवा किया है मैंने और हर रुसवाई ने कोई नाम दिया है मुझको । बहुत से गैरों ने मेरा नाम लहू से लिखा है ” ।

इंतज़ार करो , क्या पता मेरा नाम यूपीएससी ही सबको बता दे ।

श्रुति घोष , एक अलग विचारधारा की लड़की । वह जीवन को वैसे ही देखती है जैसे जीवन उसके समुख आता है । वह परम्परागत संस्कारों की आग्रही बिल्कुल ही नहीं है । वह जीवन में हर एक चीज़ आज़माना चाहती है । उसके लिये महिलाओं का तथाकथित सतीत्व, वह पति परमेश्वर की अवधारणा, स्त्री का सुशील संकोची एवम् धीमी आवाज़ में बात करना , एक मर्यादा की सीमा में रहना आदि .. आदि संस्कार के नाम पर थोपे गये आवरण में कोई रुचि नहीं है ।

उसके लिये शराब पीना , सिगरेट पीना जीवन की एक सहज प्रक्रिया का अंग है । वह अपने boy friend के कमरे में रात रुक जाने में कोई समस्या नहीं देखती है । वह कहती हैं कि मेरे गोदावरी छात्रावास की कई लड़कियाँ भी अपने boy friend के कमरे देर रात जाती हैं और सुबह के उजाले के पहले वापस आ जाती हैं पर मैं सूरज के चढ़ जाने के बाद ही आती हूँ । इसमें गलत क्या है , यह कोई बताये मुझे । यह सब नाटक , ढकोसला करने की क्या ज़रूरत ? मैं सिर्फ़ अपने प्रति जवाबदेह हूँ और किसी के प्रति नहीं ।

उसकी भारतीय दर्शन और मिथकों पर भी एक अलग दृष्टि है । वह नारी अधिकारों की समर्थक ही नहीं है वरन् कहती हैं कि इतिहास ने न्याय नहीं किया नारी के साथ । याज्ञवल्क्य- गार्गी संवाद के समापन पर वह याज्ञवल्क्य को पुरुष अहम मानसिकता से पीड़ित बताती है । उसका कहना है कि महाभारत में सिर्फ़ एक ही नायक है दरौपदी बाकी सब कायर हैं । दरौपदी चीर हरण पर वह कहती है , भीष्म, दरोण यह पांडव महान कायर थे । वह दरौपदी के प्रश्नों का उत्तर ही न दे सके । भीष्म बोलते हैं कि मैं तुम्हारे प्रश्नों का विवेचन नहीं कर सकता , क्योंकि धर्म का रूप बहुत सूक्ष्म है । किसी को सरे आम वस्त्र हीन किया जा रहा हो और आप धर्म की सूक्ष्मता देख रहे हो । इतने बड़े- बड़े दिव्यास्तर, नारायणास्तर , अमोघ अस्तर रखकर आप वहाँ तांडव देख रहे । इतनी हिम्मत नहीं उन लफ़ंगे सरीखे दुर्योधन- दुःशासन का सर काट दो जिसने मानवता को धूल- धूसरित कर दिया ।

यह युधिष्ठिर तो सबसे बड़ा धर्म का ढोंगी है । वह कह रहा दरौपदी का जीता जाना द्यूत में धर्म सम्मत था । यक्ष प्रश्न में उसने नकुल का जीवन माँग लिया । उसने यक्ष से नकुल का जीवन मांगते समय मेरे आत्मसम्मान की प्रवाह न की । बँगेर अर्जुन के मेरा आत्मसम्मान वापस नहीं आ सकता था , पर उसको मेरे आत्मसम्मान से ज्यादा अपने धर्म की चिंता थी । वह महाभारत के युद्ध के दौरान भी झूठ बोला , पर यह कहा मैं धीरे से झूठ बोलूँगा ।

कर्ण एक स्वार्थी व्यक्ति है , इसको इतिहास में नायक कहना , इतिहास से अज्ञानता है । वह अंग का राज्य लेकर अपने ज़मीर को ही बेच बैठा । एक राज्य का लोलुप व्यक्ति नायक नहीं हो सकता । उसने घूत के बाद दरौपदी को वेश्या कहा , यह भी कहा कि इसको नग्न करना कोई पाप नहीं ।

वह इतिहास की बहु पत्नी परथा, पुरानी मान्यताओं पर बेबाक़ राय रखती ही नहीं, वरन् कहने में भी संकोच नहीं करती । सारे लोग बहु विवाह किये । अर्जुन ने नाग कन्या उलुपी से किया , मणिपुर की राजकुमारी से किया , सुभद्रा से किया । भीम , युधिष्ठिर ने भी कई विवाह किये । धृतराष्ट्र ने दासी से युयुत्सु को जन्म दिया , पांडु ने किया पर उन पर कोई सवाल नहीं, पर दरौपदी के पाँच पति इतिहास की व्याख्या का प्रश्न है । यह इतिहास पुरुषों ने लिखा है, यह इतिहास महिलाओं के विपरीत लिखा गया है । उसके पास जीवन के सारे आधुनिकतम विचार हैं और सिगरेट के कश में जीवन का सच देख लेती है ।

उसने सिगरेट का अगला कश छोड़ा और कहा , रितेश इतने नमूने कहाँ से ले आए ?

रितेश - यह हब बड़े विद्वान लोग हैं , ऐसा न कहो । यह अमर गुप्ता सर एसडीएम हैं और चौथी बार इंटरव्यू दे रहे , यह चिंतन सर डिप्टी एसपी हैं और यह भी कई बार से दे रहे , और

श्रुति- बस, बस ... बहुत काबिल लोगों की फौज लाए हो । हम तो पहली ही बार परी पास किये । पिछले बार तो परी में ही लुढ़क गए थे । इस बार इंटरव्यू दिया है । यह लंबू जो बताया वह लिख आए हैं, पता नहीं क्या बताया है । पूरी लड़कियों को तो ज्ञान बांटा है ।

अमर गुप्ता- संजीव टंडन का जन्म परमार्थ के लिये हुआ है । ऐसे लोगों की समाज में ज़रूरत है ।

संजीव टंडन - भाई मेरा पीछा छोड़ो, कोई और बात करो ।

श्रुति- रितेश आज इंतज़ाम है गला तर करने का ?

रितेश- सिद्धांत गया है इंतज़ाम करने ।

श्रुति - कहाँ बैठना होगा ?

रितेश - पहले आ जाने दो , बताते हैं ।

संजीव टंडन अपनी कुंडली दिखाने के चक्कर में थे , वह दो लोगों को और ले आए थे । संजीव टंडन और चिंतन एक अलग जगह बैठकर कुंडली के देखने में मशगूल हो गये । श्रुति ने पूछा , वहाँ क्या हो रहा ?

अमर गुप्ता ने बताया कि कुंडली का खेल चल रहा ।

श्रुति- यह कौन सा खेल है ?

अमर गुप्ता- यह सिविल सेवा का रिज़िल्ट बता रहे ।

श्रुति- आज ही पता चल जाएगा ?

अमर गुप्ता- यह कह तो यही रहे हैं , ग्रह की गणना करके बता देंगे ।

श्रुति- बढ़िया नाटक है यार , यह इलाहाबादियों से कोई सीखे नाटक करना ।

चिंतन सर ने तीनों की कुंडली देखी और बता दिया कि क्या बाधा है सफलता के रास्ते में । उन्होंने किसी को मूँगा तो किसी को मोती पहनने की राय दे दी । आदित्य हृदयस्मरोत का पाठ और महा मृत्युंजय जाप का विधान भी समझा दिया । संजीव टंडन एक ही बात पर लगे थे की आईआरएस का कितना विधान है । वह चिंतन सर ने कह दिया पूरा विधान है ।

यहाँ का माहौल एक दम अलग था । यहाँ सिविल सेवा का पूरा सुरक्षा है जो खुमार बनने को तैयार नहीं है । राजीव सिंह भी आये थे किसी से मिलने वह बोले डीयू , जेएनयू दोनों में उत्सव का माहौल है इस समय । कोई इंटरव्यू देकर आ रहा कोई देने जा रहा । हर दिन ढले एक ही बात , आज किसका क्रिला फ़तह हुआ । कई तीन-चार इंटरव्यू दे चुके हारे हुये महाबली हैं और वह अब इस रेस से बाहर हैं और अपना एक्सपर्ट कर्मेंट देते हैं कि कौन सा बोर्ड कैसे उत्तर देने पर कैसा नंबर देता है । अभी भी इंटरव्यू का दौर चल रहा , अंतिम इंटरव्यू शायद 23 मई को है और उसके बाद अंतिम रिज़िल्ट आएगा । जो इंटरव्यू देकर वापस आ रहे थे , वह अगले साल की तैयारी आरंभ कर रहे हैं , अगला परी जून के दूसरे रविवार को था । मैं भी अब वापस जाकर अपने दूसरे पर्यास के लिये पढ़ना चाहता था । इस बार की उम्मीद तो मुझे कम लग रही थी । मैंने इतने मेधावी लोगों को देख लिया था , इसलिये उम्मीद और कम लग रही थी ।

सिद्धांत तब तक आ गये इंतज़ाम करके । वह काफ़ी प्रसन्न थे , रात का इंतज़ाम उनका हो गया था । वह बोले जो होना होगा वह अब होगा । हमारे कालेज का टापर था अश्विनी चन्द्रा , उसको सब आता था । मैंने उससे

कहा कि तुमको एक ही सीट तो चाहिये और यहाँ 775 सीट हैं। आप एक ले
लो, एक हमको लेने दो तब भी 773 बच जाएगी। वह मान गया बात मेरी,
अपना मटीरियल भी दिया और दिन भर बाँचता था डीडी बसु और बिपिन
चन्द्रा की किताब, हम लोग सुनते थे। उसको पूरा रटा था। सवाल आ भी
गया उसमें से। अब लिख दिया जो लिखना था, बोल दिया इंटरव्यू में जो
बोलना था, अब शांति से कुछ दिन दारू पीने दो। एक हफ्ते बाद सोचेंगे
अगले साल के बारे में, पर अगर इस बार हो गया तब जाकर नौकरी करेंगे
जहाँ भी होगा, मेरे पास अब और परीक्षा देने का बूता नहीं है। यह बहुत ही
किंचाइन का काम है, यह हमारे बस का है नहीं।

संजीव टंडन ने कहा, भाई साहब हम दो साल से लुढ़क रहे, यह हिंदी वाले
भाई साहब तो पैदा होते ही लग गए।

अमर गुप्ता- हमारे इलाहाबाद में तो यह दो पंचवर्षीय योजना का काम कम से
कम है। हमारे यहाँ पैदा होते ही, घर के बुजुर्ग बोल देंगे, यह कलक्टर होगा।
कई तो नाम भी कलेक्टर रख देंगे। हमारे गाँव में एक लेखपाल थे। वह
अपने बच्चों का नाम ही रखे थे - ज़िलेदार, सूबेदार, तहसीलदार, नाज़िम
साहब।

हमारे यहाँ विश्वविद्यालय से तब तक लोग लटके रहे जब तक उम्र ख़त्म
न हो जाए।

श्रुति- क्या कोई और कोई काम नहीं करते?

अमर गुप्ता - करते हैं न, गलचौरा।

श्रुति - यह गलचौरा क्या है?

संजीव टंडन - आप माताजी अपना काम देखो, इनके चक्कर में न पड़ें।

रितेश- श्रुति कुछ सुनाओ, यह बहुत हो गया यूपीएससी - यूपीएससी।

श्रुति- क्या सुनाऊँ?

अपनी आरज़ू? वह जो न मिला उसकी यादें? वक्त के थपेड़ों पर उसकी
तस्वीर मेरी पुतलियों पर। ज़िंदगी उसके साथ गुज़रती तो अच्छा होता पर
उसकी याद में गुजर गई यह भी कुछ कम नहीं। जिसके क़र्त्तल से हमें ऐतराज
था, जिसको दफ़नाने को हम तैयार न थे उसी को समझदारी और रिवाजों
के नाम पर हमने छोड़ा। मेरी आरज़ू एक जुर्म नहीं है, वह अधूरी रह गई वह
एक सजा ज़रूर है।

चिंतन - मैडम, बहुत ख़ूब कहा आपने।

रितेश - अभी तो बस मूँड बन रहा । बनने दो इसको और सुरुर चढ़ने दो ।

श्रुति- वह मेरे बचपन से किशोरावस्था की दहलीज पर आया था , वह मेरे अंदर एक संगीत लेकर आया था । वह मुख्तलिफ सम्तों में चलते अपनी जानिब लेकर एक अजली तरन्नुम की तरह आया था । वह साहिलों से मुझे आवाज़ देता था , मेरी आरज़ू सीपियों के कोख से निकलकर लहरों पर चढ़कर उसके पास आती थी यह कहते हुये मैं तेरा खोया हुआ ख्वाब हूँ , जो कुछ पलकों से छिटक गया , जिसकी तमन्ना तूने दिन- रात अपनी रिदा को फैला कर की है मैं तेरा वह आने वाला भविष्य हुआ हूँ ।

रितेश - फिर ?

श्रुति ने सिगरेट का छल्ला हवा में उड़ाया और कहा ,
मेरे अंदर एक गीत का जन्म हुआ । वह कुरान की आयातों में था , श्लोकों में था , जहाँ देखो वहाँ वह गीत था । मैं सँवारना चाहती थी अपने को उसके लिये , पर वह कहीं न था सामने मेरे । वह मेरे ख्वाबों में आने से भी परहेज़ करने लगा । मैं नहीं थी सँवरीं बहुत दिनों से , मैंने कहा शबनम से , इन्द्रधनुष से , बेखौफ चलती हवाओं से , लटपटाते चिराग से लफ़ज़ साथ नहीं दे रहे , खामोशी में ख्वाब खुद लफ़ज़ क्यों नहीं बन जाते , तभी हवाओं ने लहरों को उठाकर साहिल पर कहा प्यार बंदिशों में नहीं होता ।

अमर गुप्ता- बंदिश क्या थी ?

श्रुति- बस हो गया , अब चलती हूँ ।

अमर गुप्ता - ऐसा न करो मैडम , बहुत दूर से आये हैं एक आस लेकर । आप अफ़साना पूरा करो ।

श्रुति- जिसे तौफ़ीक़ दी है भूल जाने की उसी को हक़ भी है । मुझे वह तौफ़ीक़ न दी तो वह हक़ भी न दिया । मैं उसका निस्फ हूँ , जिसके बग़ैर मैं पूरी नहीं होती , पर उसी को तौफ़ीक़ दी है परवरदिगार ने , है भूल जाने का हक़ भी उसी को । इतनी सलाबत मेरे साथ किसलिये , क्या है मेरा गुनाहे - अस्ल , मैं तेरा निस्फ हूँ यह कोई गुनाह तो नहीं ।

अरे यह रात है तो नींद आनी चाहिये , ख्वाब है तो सुकून मिलना चाहिये । रात है , नींद है पर न ख्वाब है न सुकून है ।

बस अब और नहीं ।

चिंतन - नहीं मैडम , थोड़ा और ।

रितेश - रुको श्रुति, अभी तो शाम रवाँ हुई है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 63

श्रुति धोष जा ही रही थी कि नमिता ने रोक लिया । नमिता रितेश की गर्लफ्रेंड थी, उसने कहा कुछ सुना ही दो । कई बार तुम खुद ही खोजती हो कोई मिले तुम्हारी बकवास सुनने को । अब आज यह कह रहे हैं सुना दो , भाव खा रही हो ।

श्रुति, नमिता को देखते हुये बोली यहाँ क्या सुनाऊँ

कभी शायर के शहर में आना
ख्वाबों का वहाँ होगा बोलबाला
कुछ ख्वाब तेरे भी कहीं छज्जों पर धूम रहे होंगे
दास्तानें हर ओर यादों की शक्ल में टहलती मिलेंगी
रिश्ते बगैर हंगामें के आबाद नज़र आएँगे
तेरा खोया हुआ रिश्ता भी कहीं चहलक़दमी कर रहा होगा
जिसे तूने शिद्दत से चाहा और न पाया
उसके लिये लफ़ज़ खुदबखुद गढ़कर तेरी ज़बानों पर इतराएँगे
क्या पता वह अल्फ़ाज़ तुझे ले जाएँ और नज़दीक उसके
आना कभी एक शायर के शहर में
जब भी ज़िंदगी की चाह हो
आना कभी एक शायर के शहर में ॥

अमर गुप्ता- मैडम कौन सा शहर है जहाँ रिश्ते बगैर हँगामे के आबाद नज़र आते हैं ?

श्रुति- छोड़ो वह दास्तान जहाँ कोई चीखता रहा सब शांत सुनते रहे , वह हारता रहा और हर चीख पर वह आततायी जीतता रहा । मुझे उस मालिक की नेकनीयती पर शक होने लगा जब मैंने देखा अपनी ही ज़मीं पर किसी और को अपना नाम लिखते हुये । वहीं शहर था जो चला गया विभाजन की त्रासदी में उस ओर । मेरे अपने काग़ज पर लिख कर अपनी बात नज़रों की शब्द पहुँचाना भी चाहें तो वहाँ पहुँच नहीं सकती । उस शहर से मेरा रिश्ता जिस गली के सहारे थी , सुनते हैं वह गली किसी अजनबी की हो गयी ।

अमर गुप्ता- यह हादसा तो आपके जन्म के पहले का था , इस छोट की इतनी पीड़ा आपको कैसे हुई ?

श्रुति- बुनियाद तो सबकी एक ही होती है । उस बुनियाद पर बने तल्ले चाहे जब बनें पर जुड़ाव सबका एक ही होता है ।

अमर गुप्ता- मैडम आप इतनी संवेदनशील हैं , काव्यात्मक हैं , कहाँ आप इस फटीचर काम के चक्कर में पड़ रही हो आप साहित्य की सेवा करो । आप उसके लिये ही बनी हैं ।

श्रुति ने सिगरेट का कश हवा में उड़ाया और कहा कि यह आज तक कहाँ किसी को पता चला कि कौन किस काम के लिये बना है । यह लंबू संजीव टंडन गणित के लिये बना है , पर कर क्या रहा ?

यह टीचर बहुत अच्छा होता , पर यह वह काम करना नहीं चाहता । यह आईआईटी , जेएनयू दोनों में क्लास चलाता है पर टीचर नहीं बनेगा ।

चिंतन - यही तो दुर्भाग्य है देश का कि अब सबको बाबू बनना है । हमारे इलाहाबाद में आज तो सभी लोग आईएस बनना चाहते हैं पर कभी टीचर भी बनना चाहते थे ।

अमर गुप्ता- चिंतन तुम , यह कौन सी वक्त की बात खोलकर बैठ गये । वह पता नहीं कब का जमाना था । सन 60 के बाद से ही लोग लग गए थे आई ए एस के फेर में । एकका- दुक्का लोग नहीं गये होंगे इस ओर बाकी तो सब गये ही हैं । यह सवाल सबके दिमाग में है कि कहाँ क्या मिलेगा टीचर बनने पर । यह एक मौलिक प्रश्न तो है ही जीवन का , हमें जीवन में क्या बनने पर क्या मिलेगा । यह जीवन प्रणाली भौतिकतावादी होकर सबको भौंचका कर रही । अब इस नयी उफनतीं दुनियावी सोच में कहाँ वह जगह रह गई अध्ययन-अध्यापन की ।

हमारे साइंस फ्रैकल्टी के ही कुछ टीचर हैं, वह आते ही नहीं। उनका एक ही काम है दिल्ली- लखनऊ की राजनीति करना। किसका - किसका नाम लें हम जब सारे कुँए में भाँग पड़ी हो। इलाहाबाद का अतीत अब बहुत कठिन है वापस लाना और किसको परवाह है इसकी। इतने लोग यहाँ से पास होकर गये, उनके पास शासन के सारे पद थे और वह नीतियों को प्रभावित कर सकते थे पर न बनायी एक भी नीति शहर के विकास की। यह आईएएस का मुद्दा एक बहुत ही छोटा मुद्दा है, इससे बड़े कई मुद्दे हैं। यह जमुना का पुल एक अंगरेज बना गए उसके बाद कितने पुल बने? जमुना का पुल अपनी मियाद पूरी कर गया पर हम लोग लदें हैं उस पर आज भी। यह देश एक अलग परिवर्तन की माँग करता है, सिर्फ़ इलाहाबाद ही नहीं।

नमिता - मूड श्रुति का मत बिगड़ो। उसको शाम रवाँ करने दो आज की। जब आप लोग आईएएस बनना तो करना पूरी प्लानिंग। आज तो फ़िज़ा कुछ और है।

चिंतन - सही कहा मैडम।

श्रुति चिंतन से बोली ऐ पंडित यह बता आज की रात का आलम क्या होगा, छोड़ो कल की बात। देख कुँडली बता जैसा गालिब ने कहा था, एक बामन कहा है यह साल बहुत अच्छा है।

चिंतन - किसकी कुँडली देख कर बताएँ?

श्रुति- बताना आपको फ़राड मार्क दी ही है, बता दो किसी की भी कुँडली देखकर।

श्रुति- मैं अकेले ही बक-बक करूँगी, आप इलाहाबादियों के पास कोई मसाला नहीं है?

अमर गुप्ता - मैडम हम फ़र्जी हिंदी साहित्य के विद्यार्थी हैं। हमारे रग-रग में स्वार्थ भरा है। हम सीजनल हिंदी पढ़ते हैं, सिर्फ़ इस परीक्षा के लिये।

श्रुति- इलाहाबादी हो, फ़राड टाइप का तो लिख ही लोगे। हर आदमी निराला - बच्चन तो नहीं होता। कुछ सुनाओ तब तक मैं एक सिगरेट सुलगा लेती हूँ।

बद्री विशाल - अनुराग, आपके पास होगा एकाध। मैडम की बात माननी पड़ेगी।

अनुराग - सर, मेरा इनके स्तर का नहीं होगा।

श्रुति- मेरा ही क्या है, बस तुकबंदी। कुछ भी सुनाओ।

सिद्धांत- जल्दी यह नौटंकी ख़त्म करो , शाम का कार्यक्रम है ।

नमिता - रुके तुम , तुम्हारे और रितेश के पास दिन ढलते एक ही काम है ।

सुनाओ अनुराग जो भी है ।

अनुराग -

तुम अमन चाहते हो , मुझे जंग करने दो

यह जंग लाजमी है मुझे वादियों में जंग करने दो

यह जंग उस ज़मीन की है जो कभी खो बैठे थे हम

जीत कर भी उसे गवाँ बैठे थे हम

यह जंग है अपनी ही सदाशयता पर जब ठगे गये थे हम

जिसका न कोई जात है , न मज़हब है , न कौम है

जिसके लबों पर सिर्फ़ गुनाह है

उसके शाखे- सितम को न पनपने देंगे इस ज़मीं पर हम

तारीख गवाह है धृतराष्ट्री मानसिकता के हशरों का

यह जंग न सिर्फ़ ज़मीं की है

न सिर्फ़ अमन की है

न सिर्फ़ उस खून की है जो हमने बहाये थे ज़मीं के वास्ते

यह जंग उसूलों की है

जो अपने लहू के रेशों पर जमे थे

उस सुबहे - अमन परचम फहराते हुये ॥

सिद्धांत- यह सितम और सुबह अमन , परचम .. यह क्या है ?

अनुराग -

शाखे -सितम - अन्याय का पौधा

सुबहे - अमन - शांति का सुबह

परचम - झंडा , ध्वज

श्रुति - खत्म कर दो नफरतों को
यकीन मानो हम इतनी नफरतों के लायक नहीं हैं ।

एक चिराग के बुझने से तुम डर गए
एक किनारों को देखो लहरों के आतंक को हर रोज़ खत्म करता है

रिश्तों से दूर हटकर कहाँ जाओगे
दीवार से हटी छत बरसात तक ही चलती है ।

हारने से मुझे कोई गुरेज़ नहीं
पर मुझे लड़ने तो दो ।

वह बार- बार पूछ रहा मेरे बिकने की शर्तें
मैंने लगा दी उसको खरीदने की चाहत ।

ये चुपचाप मंज़र देखने वालों
ये आग तुम्हारे दरख्तों तक जाएगी ।

बहुत चाहा था ज़िंदगी आसान हो जाए
पर ये खून के रेशे सहूलियत चाहते ही नहीं ।

मैंने गांधारी की तरह आँखों पर पटटी बाँधी नहीं
पर तुम्हारे जाने के बाद किसी और को गौर से देखा नहीं ।

वाह - वाह श्रुति का होने लगा । शाम बहुत ढल चुकी थी । अब वापस जाने का वक्त होने लगा । मैं भी आंटी के पास जाना चाहता था । वह मेरा इंतज़ार कर रही होगी । मुझे चिंतन सर ने पूसा इंस्टीट्यूट छोड़ दिया । आंटी इंतज़ार कर रही थी ।

आंटी बोली बहुत देर कर दी । मैंने बताया पूरे दिन का हाल और शाम को जेन्नयू जाना । आंटी खाना लेकर आयी । मैंने खाते - खाते पूछा , आंटी

आपने बताया नहीं अपने बेटे का क्रिस्सा । आंटी ने कहा खा लो चैन से ,
क्या करोगे जानकर ।

मैं चुप हो गया । मेरे खाने के बाद आंटी बोली कि उर्मिला का ख़त मेरे नाम
आया है आज , पढ़ोगे ?

मैंने आंटी के चेहरे की तरफ़ देखा । ख़त पढ़ते- पढ़ते मैं भावुकता के उफ़ान
में खो गया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 64

मैं माँ का लिखा आंटी के नाम पत्र पढ़ने लगा । माँ ने बहुत कुछ लिखा था ,
शायद अपने मन के उद्गार आंटी से कहना चाहती थी ।

“ अनुराग ने तंग बिल्कुल न किया होगा । वह बहुत संकोची है । किसी
बात पर कोई ख़ास दिक्कत नहीं करता । खाने में बिल्कुल भी न ख़रे नहीं
करता । जो भी परोस दो खा लेता है । उसके जीवन की प्राथमिकताओं में
खाना नहीं आता है । थोड़ा मीठा खाने की शौकीन है , पर कहता नहीं है ।
वह तुम्हारे नज़दीक आ गया होगा । वह बहुत मिलनसार है । जब वह तुम्हारे
पास से वापस आएगा तब वह तुम्हें बहुत याद आएगा , पर चिंता न करो मैं
उससे कहुँगी शांति और उर्मिला दो माँ हैं तुम्हारे पास । तुमको याद है न जब
विवाह के समय हम लोग अलग हो रहे थे , मैंने कहा था तुम्हारा विवाह जल्दी
ही होगा । तुम्हारे विवाह पर मैंने कहा था हम लोगों का बच्चा भी आसपास
होगा । अनुराग और ऋषभ आसपास ही हुये थे ।

शांति मेरी जिंदगी तो कट ही गई है , जैसे भी कटनी थी । अब बाकी बची
जिंदगी एक गौरव के साथ कट जाए यही आरज़ू है , यही ख़ाहिश है । मैं हर
रोज़ गंगा की लहरों में अर्चना भीष्म की तरह करती हूँ , बस फ़र्क़ यह है भीष्म
सर्व साधन संपन्न होकर परिस्थितियों से मज़बूर थे और मैं साधनहीन
परिस्थितियों के क़हर से त्रस्त हूँ । मेरी ही नहीं बहुतों की उम्मीदें उससे
जुड़ी हैं । मैं जानती हूँ बहुत सी ख़ाहिशों का बोझ उसके कंधे पर है ... ”

मैं आंटी की ओर देखने लगा । आंटी ने देख लिया कहाँ पर पढ़ते-पढ़ते मैं
रुक गया था । उन्होंने पत्र को कई बार पढ़ा था ।

आंटी बोली , “ अनुराग मेरी भी ख्वाहिश का बोझ भी अब तुमको उठाना होगा । कई बार अपने खून से ज्यादा धड़कनें उस पर भरोसा करती हैं जिस पर रक्त को यकीन होने लगता है । तुम कितनी भी ख्वाहिशें पूरी करो हर एक के अंदर एक ख्वाहिश तुमको तड़पती दिखेगी । तुम हो ही ऐसे , ईश्वर तौफ़ीक़ भी देखकर ही देता है । तुमको अगर तौफ़ीक़ दी है तो तुम्हें उसके निर्देशों का पालन भी करना होगा । तुम समुंदर हो अगर तो तुम्हें साहिल पर बने बच्चों के घरोंदों को सहेजने की ज़िम्मेदारी भी है । तुम लहरों को हौले- हौले भेजो किनारों की तरफ ताकि वह घरोंदों को छूकर निकल जाए और अबोध बच्चे कह सके समुंदर सूनामी रोक लेता है जब घरोंदों को बनाने में मेहनत लगी हो , हमारे घरोंदों को समुंदर का स्पर्श मिला ।

तुम बेवजह भी किसी को ख़त भेज दो लोग उस खत में अपने ख्वाबों की ताबीर तलाश करेंगे । तुम मेरे साथ रहे तो कुछ ही दिन हो पर वह सारे दिन यादगार हैं मेरे लिये । तुम्हारी माँ ने तुमको जो परवरिश दी है वैसी परवरिश में अपने बच्चे को न दे सकी । हम सब एक संस्कारों के गाँव से आये थे । हमारे पूर्वजों ने पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों को जंबील की तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानान्तरित किया , उर्मिला ने तो पूरी संजीदगी से उसको संजोया और तुम्हारे लहू के रेशे में पिरो दिया ।

मैं आंटी के चेहरे की तरफ़ देखता रहा , पत्र मेरे हाँथों में काँप रहा था । मेरे लफ़्ज़ कभी भी बेसहारा न थे , खुदा ने इनायत दी थी मुझे उनको सँवारने की पर जब भी मैं माँ के भावनाओं में पिरोये अल्फ़ाज़ सुनता हूँ मैं इंतज़ार करने लगता हूँ आने वाले शब्दों की शृंखला का । जैसे पाजेब में एक धुँधरू दूसरे धुँधरू से टकरा कर रक्स करने वाले के कदमों की गति से आवेग पाकर आपस में एक संगीत की जुगलबंदी कर देते हैं और बज रहा साज रवाँ हो जाता है धुँधरूओं की टकराहट से वैसे ही मेरी माँ के धड़कनों से निकले शब्द मेरे चारों ओर एक आभामंडल बना देते हैं और भावनाओं का एक तूफ़ान मुझे लहरों के बीच उड़ा ले जाता है साहिल से गहराइयों की तरफ ।

आंटी ने देखा मेरी तरफ़ वह बोली , किस सोच में डूब गये ? जैसे तुम अपनी माँ का पत्र पढ़कर डूब जाते हो वैसे ही मैं अपने बेटे का , पर वह ज्यादा लिखता ही नहीं । मैंने कितनी बार कहा , ज्यादा लिखा कर पर हर बात का एक ही बहाना , “ मेरे पास समय नहीं है ”

यह नयी पीढ़ी कुछ अजीब हो रही , इसके पास रिश्तों को सहेजने का समय ही नहीं है । इनकी दुनिया सीमित है , बस आप खुद , आपकी पत्नी और आपका बच्चा, इसके बाहर की दुनिया का कोई एहसास नहीं । हमारे दौर ने रिश्तों को सहेजा , सँवारा एक समाज और एक दुनिया बनाई पर आज का यह नया वर्ग बेपरवाह है उस सोच से जो हमें विरासत में मिले थे ।

मैंने पूछा, “क्या लिखते हैं वह “?

आंटी ने उनका लिखा एक पत्र मुझको दिया । वह न्यू जर्सी में रहते हैं । पत्र बमुश्किल चार- पाँच लाइन का । पत्र के अंत में लिखा था , पैसा आनलाइन ट्रांसफर कर दिया है । आंटी ने कहा , मुझे पैसे की कोई ज़रूरत नहीं । मैं उसका भेजा पैसा आज तक कभी बैंक से निकाला ही नहीं । जिन शब्दों में उसने लिखा है , “ पैसा आनलाइन भेज दिया ट्रान्सफर कर दिया “ उसकी जगह अपने बारे में कुछ और लिख देता । मैंने देखा आंटी की आँखों में, आँटी की आँखें बहुत सुंदर थीं वह अभिव्यक्ति बगैर शब्दों के कर लेती थी । मुझे साफ़ सुनायी पड़ रहा था ...

न कोई आवाज न कोई चीख न कोई हलचल

वह टूट कर बिखर गया जिसे संजोया था मुद्दतों से उसने

किसी को न दिखा वह टूटकर गिरते हुये

सिर्फ उसके बहते अश्कों से मैंने महसूस किया उसका ज़मींदोज़ होना

वह उसका एक ख्वाब था मेरे सामने ही बिखर गया ॥

मैंने पूछा वह कभी आते हैं ?

आंटी - पिछले दो साल से नहीं आए ।

मैं - आप कभी गई हैं ?

आंटी - नहीं ।

मैं - क्यों?

आंटी - मैं अकेले इतनी लंबी यात्रा करने में असहज हूँ । मैं गाँव की एक लड़की हूँ । मैंने कोई खास यात्राएँ कीं नहीं हैं, सिवाय तीर्थ यात्राओं के । उसमें भी लोगों का साथ मिल जाता है । जब तक वह थे, तब तक उनके शर्ट की क़मीज़ पकड़ कर ही चली, उनके जाने के बाद दुनिया सीमित हो गई, मैं और यह बच्चा ।

ऋषभ का कैरियर महत्वपूर्ण था । यह पढ़ने में ज़हीन भी था, लगनशील भी और भविष्य के प्रति संजीदा भी । यह हमेशा एक ही धून में रहता था कि पिता के सपनों को पूरा करना है । वह जबसे गर्भ में आया था तबसे लेकर उसके पिता की मृत्यु तक की सारे क्रिस्से उसने कितनी ही बार मुझसे सुने थे । हर क्रिस्से में उसे एक ही चीज़ दिखी, उसके जहीन पिता की इच्छा वह उसके कदमों के निशाँ से बड़े अपने निशान बनाये ताकि दुनिया पिता के बनाये निशानों को भूलकर बेटे की बनायी निशानदेही याद रखे । अनुराग कभी पढ़ना कृषि करान्ति तुमकों इनकी शख्सियत का एहसास होगा ।

अब पूरा मेरा जीवन उसको बनाने में बीत गया । मैं उसके साथ ही हमेशा रहती थी । मैं उसका साया थी । वह कई बार कहता था, आफिस मत जाओ । मैं वैसा ही करती थी । उसकी परीक्षा में कक्षा एक से लेकर 12 वीं के बोर्ड तक मैं दो महीने उसके साथ ही रहती थी ।

वह एक ही बात कहता था, माँ मुझे अपराजेय बनना है । माँ मुझे क्षितिज से चीखकर कहना है, “ ऐ नीला आसमान बता दें मेरे मरहूम पिता को हर दिन मैं उसके कदमों के निशान नापता हूँ । वह बड़े ज़रूर हैं पर मेरे हौसलों की ताक़त कुछ कम नहीं । आज जो मेरी पहुँच के बाहर हैं वह कल मेरी पहुँच के नज़दीक होंगे । मुझे किसी चिराग की ज़रूरत नहीं, उसके खयालों की रौशनी किसी उजाले से कम नहीं । वह जिस उजले कफ़न में कभी सोये थे मेरे सामने उस कफ़न का उजाला आफ़ताब की रौशनी पर भारी है । मैं किसी ईश्वर को याद नहीं करता परीक्षा देने के पहले, उसकी नसीहतें आयातों और मंदिर के श्लोकों पर भारी हैं ।

आंटी बिलखकर बच्चों की तरह रोने लगी, अब कौन पूछे उससे तू किस गम में बिलख रही जो छोड़कर तुझको परमपिता के पास चला गया या जो पूरे होशोहवास में रहकर तुझे भूल गया ।

आंटी थोड़ा सामान्य हुई । मुझे उसका जीवन एक कथानक ऐसा लग रहा था , जिसमें कई आरोह - अवरोह हों और हर एक में एक तुषारापात ऐसा सम्मोहन / एक मेरी माँ के लिये चुना हुआ व्यक्ति जिसको मेरे नाना ने न स्वीकारा क्योंकि रक्त की कुलीनता पर उनका अतिशय आग्रह था जबकि वह निःसंदेह मेरे पिता की तुलना में बहुत ही ज्यादा जहीन थे , पर ईश्वर ने आयु कम दी थी उनको । यह परमेश्वर की चाहत थी दो में से एक ही मिलेगा , एक का सम्पूर्ण जीवन दूसरे की जहीनियत पर अल्प आयु । एक मेरी माँ के नसीब में आया तो दूसरा आंटी के , पर दोनों का जीवन अपूर्णता को ही प्राप्त हुआ ।

वह मेरे पिता की तुलना में ज्यादा प्रगतिशील थे । मेरे पिता दक्षियानूसी ख्यालों के थे , उनके मस्तिष्क में मेरी जहीन माँ को आगे पढ़ाने की कोई सोच न थी । आंटी ने खुद ही कहा , हमारी कक्षा में तीन एक स्तर के विद्यार्थियों में मेरी माँ सबसे बेहतर थी । उनमें से एक पीसीएस बना , आंटी ने अच्छी शिक्षा विवाह के बाद प्राप्त की और एक कामकाजी महिला बनी और मेरी माँ सारी जहीनियत के बाद भी वही ढाक के तीन पात ।

शायद आंटी की क्षमताओं को देखकर ही ईश्वर ने इतना बड़ा संघर्ष इनको दिया । ईश्वर संघर्ष भी देखकर देता है शायद , कभी-कभी मुझे लगता है कि वह लड़ने का माद्दा देखकर ही विषम परिस्थितियों का निर्माण करता है ।

आज तक कोई नायक आसान परिस्थितियों में जन्मा हो ऐसा तो मैंने देखा नहीं । ईश्वर या ईश्वर सदृश राम , कृष्ण , भरत , लक्ष्मण, भीष्म, युधिष्ठिर, कर्ण, हरिश्चन्द्र यह सब नायक हैं अपनी विपरीत परिस्थितियों के कारण । एक सामान्य एवम् साधारण सी परिस्थिति में कहाँ किसी नायक का जन्म होता है । मेरे इतिहास का सीमित या ज्ञान तो यही कहता है । जीवन में संघर्ष ज्यादातर तो परिस्थितियाँ आरोपित करती हैं , कहाँ कोई सहज भाव से किसी प्रतिकूल परिस्थिति को आमंत्रित करता है ।

मैं भी किसी बड़े आदमी का बेटा होता , मुझे सब कुछ चाँदी की तश्तरी में सजा कर मिला होता तो मैं क्यों यह संघर्ष करता , जो कर रहा । मेरा अस्तित्व मेरे कुल और मेरे पिता के नाम से नहीं वरन् मेरे पुरुषार्थ पर टिका है । मेरे चचेरे , ममेरे भाइयों का जो हशर हुआ वह हशर मेरा हो , यह मुझे स्वीकार्य नहीं । मेरी माँ लाख कहे तुझे मेरे गौरव के लिये लड़ना है , पर वह तो कह ही सकती है । एक आग जब तक मेरे अंदर नहीं जलेगी तब तक तो

कुछ न होगा । वह मुझसे ही क्यों कह रही तुझे मेरे लिये लड़ना है, अपने किसी और बच्चे से क्यों नहीं कहती? क्योंकि वह जानती है, आग जिसके अंदर है हवा उसी को देनी है ।

वह यह भी जानती है कि मेरे खून के रेशे आम ज़िंदगी से संतुष्ट होने वाले नहीं हैं । उसने बचपन से देखा है इसको हराना शायद किसी के लिये आसान हो भी जाए पर इसको हराकर चैन से बैठना आसान नहीं होगा । मेरे मुहल्ले की गलियों उड़ती पतंग लूटने पर कहा था उसने कभी यह जो

पतंगें कट कर गिरती हैं और जो उड़ रही होती हैं इन सबके मंझे और सद्दी बनाने वाले एक ही होते हैं और बिकने वाली दुकानें भी । इनका उड़ना और कटना उड़ाने वाले की उँगलियों के कौशल पर निर्भर करता है । वह उड़ाने वाले को पता है कब ढीलना है और कब खींचना, क्योंकि ढील देने और खींचने के फ़न में ही छिपा है, हार और जीत का फ़र्क । ज़िंदगी एक संतुलन की स्थापना है । यह संतुलन जो सीख गया वह विजेता नहीं तो धरती तो हारने वालों से पटा पड़ी है ।

उसने कई बार यह कहा था मुझसे,

मुक़द्दर साथ न हो पर ज़ज्बा तेरे साथ होना चाहिये । सबसे ज़रूरी है ख़बाब देखना, तू हर वक्त देखता रह ख़बाब बेपरवाह अपने क़द और हैसियत से । अपने अंदर अजब सी बेचैनियों को घुमड़ने दे, यही बेचैनियाँ तेरे अंदर की आग को जगाए रखेंगी । यह मियादों की बंदिशों में बँधे आफ़ताब पर ही भरोसा मत करना, बेख़ौफ़ हवाएँ तेरे चरागों को सतायेंगी हीं । तू देख उस मुन्तशिर समुन्दर को जो पत्थरों पर सिर पटकता है पर काट देता है वह पत्थर कितने भी मज़बूत होने का दावा क्यों न करें । वक्त का तेवर तू आँक और यह याद रख लाख कोशिश कर लें ये अँधेरें के आतंकी यह सब भी मियादों से बँधे हैं, सहर को तो आना ही है ।

मुझे लगने लगा आंटी और माँ एक अलग मिट्टी के बने लोग हैं । इनको विपत्तियों का सागर दो उसमें ये काग़ज़ की नाँव बहा देंगे । मेरी शरद्धा इस समय उस ईश्वर मे उतनी नहीं है जितनी इन दो महान नायिकाओं में है ।

मेरे नाना ने मेरी माँ का भी विवाह कराया और आंटी का भी पर दोनों विवाह में सिर्फ़ पीड़ा ही है, परिस्थितिजन्य पीड़ा । दोनों ही जीवन के सुख से मरहम रहे, एक का पति असमय चला गया और दूसरे की परिस्थिति इतनी विपरीत कि वह संघर्ष ही करती रह गई । मेरे मस्तिष्क में दोनों का जीवन घूमने लगा

। आंटी का जीवन पूर्ण रूपेण अपूर्ण है पर मेरी माँ का भैतिक सुविधाओं से हीन होकर भी एक उम्मीद है पास उसके । आंटी के जीवन में इतनी घोर निराशा है कि वह अपनी सहेली के बेटे से अपने ख्वाहिश को पूरा करना चाहती है । वह स्पष्ट शब्दों में कह रही , “ अनुराग तुम्हें मेरी ख्वाहिशों का भी बोझ सँभालना होगा ” । आंटी के जीवन की पीड़ा पति से ज्यादा बेटे के अस्तित्वमान होकर भी खोने की है ।

वह जितना कह रही उससे एक बात मैं साफ पढ़ रहा , उसके लफज़ पूरी तरह उसका साथ नहीं दे रहे । उसकी खामोशी में उसके वह ख्वाब हैं जो जाने को तैयार नहीं । वह खुदबखुद लफज़ बन कर ढूँढ़ रहे उसको जो सुन सकें बात उसकी ।

वह कई बार लबों पर आ जाते हैं जिद करते हुये कि तेरे अंदर मुझे घुटन हो रही मुझे बाहर आने दो । ख्वाबों को क्या ज़रूरत है लफजों की ज़ब ख्वाब आँखों में तहरीर बन कर उभर रहे हों ।

ऋषभ निःसंदेह मुझसे बहुत ही बेहतर था पढ़ने में । अगर वह परीक्षा देता तो बेहतर करता ही । आंटी और माँ जितने क़रीब हैं इसको देखकर यह आभास लगाया जा सकता है कि आंटी को मेरी अकादमिक उपलब्धियों का एहसास हुआ होगा । जब मेरा आईआईटी में नहीं हुआ , रुड़की इंजीनियरिंग में नहीं हुआ , यहाँ तक मोतीलाल नेहरू इंजीनियरिंग कालेज में भी नहीं हुआ तब मुझे साफ़ याद है पूरे घर में व्याप्त निराशा का माहौल । कई बार घर में इस बात पर हँगामा भी हुआ कि यह जीवन में क्या करेगा ? मेरे कलर्क पिता ने कहा कि यह मेरे इतना जीवन में कर ले तब भी बहुत है । मेरे सनकी मामा ने तो सरेआम घोषित कर दिया था कि यह तो बर्बाद हो गया । उनके बेटे कुछ ख़ास करने की क़ाबिलियत नहीं रखते थे । वह एक बाबू साहब का जीवन व्यतीत करते थे । एक बर्बाद से लड़कों के पिता को बहुत सुख मिला होगा यह जानकर, यह भी बर्बाद हो गया । यह ईर्ष्या ब्राह्मण परिवारों में तो नस-नस में भरी है । यह खुद कुछ न करेंगे पर दूसरे कुछ करें तब बहुत जलन होती है ।

ऋषभ लगातार परचम गाड़ रहा था । वह सारी परीक्षाओं में अबल आ रहा था । आईआईटी में दो अंकों में रेंक लाया । उसे सारे नामचीन आईआईटी में कम्प्यूटर इंजीनियरिंग मिल रही थी पर पति को खो चुकी स्नेहिल माँ ने अपने ही पास रखने का फ़ैसला किया और दिल्ली आईआईटी में उसने प्रवेश लिया ।

अब इलाहाबाद के गाँव की जन्मी आंटी अपने बच्चे को आईएएस न बनाना चाहे यह तो संभव था ही नहीं । उसने सारे अरमान पाल रखे थे और वह अरमान किसी आम बच्चे से नहीं एक बहुत ही जहीन बच्चे से पाल रखे थे जो तौफ़ीक से भरपूर था , पर दुर्भाग्य आंटी का पीछा ही नहीं छोड़ रहा । आंटी ने बहुत कोशिश की पर वह माना ही नहीं परीक्षा देने को । ऐसे वक्त में उसकी सहेली का एक कम काबिल बेटा पहले ही प्रयास में परीक्षा के अंतिम द्वार पर आ खड़ा हुआ ।

मेरे मन में एक प्रश्न और जन्म लेने लगा , क्या आंटी को मेरे माँ के भाग्य से जलन नहीं हो रही होगी ? उसका काबिल बेटा इस रेस में आया ही नहीं और उसकी सहेली का बेटा नज़दीक पहुँच रहा अंतिम द्वार के ।

आंटी जिंदगी को जितना ही पकड़ने की कोशिश कर रही ज़िंदगी उतना ही उससे दूर जाती रही । आंटी के आत्मा पर इतने ज़ख्म हैं और उसने इतनी पीड़ा को सहा है कि दर्द उसके जीवन का अंग बन चुका है । अगर उसके ज़ख्मों पर नमक लगाओ तो नमक अपनी साख खो बैठेगा । पता नहीं रात में वह कैसे सोती होगी , वह कौन सा ख़बाब अब देखती होगी ? जब बेनाम रिश्तों में सुकून की तलाश शुरू हो जाए तब यह समझ में आने लगता है कि नाम के रिश्तों में हँक की बात बहुत हो रही है ।

मेरे मन में एक ही चीज़ घुमड़ रही थी । यह दर्द के साथ रह रही तो क्या यह दर्द से परेशान नहीं है । वह दर्द से निजात नहीं चाह रही जो मुद्दतो से इसे परेशान कर रहा । आंटी

कह भी नहीं पा रही वह दर्द कैसा है , किसने दिया , क्यों दिया ?

दर्द की ऊँगली थाम कर वह दर्द के साथ रह रही । कहे कैसे वह पीड़ा अपनी और किससे कहे ? शब्दों में लफ़ज़ों में क्या वह ताकत है जो कह सके उसको पूरी तरह । दिन तो कट जाता होगा पर रात में वह दर्द बहुत सालता होगा । जब अकेले में रहती होगी तब वह दर्द उसका और भयावह होता होगा । पर अब लगता है बहुत दिन हो गये रहते साथ इस दर्द के । यह बन चुका होगा हमदर्द उसका , एक पड़ोसी के मुआफ़िक । कैसा भी हो यह पड़ोसी जो रहता उसके भीतर है , गुज़ारा तो इसी के साथ करना हैं । यह चला गया तो कौन मिलेगा गुफ़तगू के लिये ।

आंटी के चेहरे की तरफ मैं देख रहा था । आंटी ने पूछा मुझसे , तुमको मेरी आँखें पढ़ना अच्छा लगता है न ?

ऋषभ को भी लगता था , हर बार यही कहता था तेरी आँखें मुझको क्यों न मिली ।

मैं कुछ कहता , आंटी ने पूछा नींद आ रही है ?

मैंने पूछा , आपको ?

आंटी बोली , मुझे नींद आए मुहतों हो गए । मैं माला फेरते-फेरते सो जाती हूँ जब भी नींद आ जाए नहीं तो यूँ ही रात कट जाती है आँखों को झपकाते - झपकाते ।

अनुराग तुम चले जाओगे , यह सोचकर ही मैं घबरा जाती हूँ । तुम्हारे आने से एक जीवन मिला । तुम बोलते अच्छा हो । तुम्हारी भाषा तो पालनहार का एक वरदान है , मोतियों ऐसे शब्द चुनते हो । वह शाम बहुत कठिन होगी जब तुम प्रयाग राज एक्स्प्रेस पकड़ने के लिये घर से निकलोगे ।

आंटी - चाय पियोगे क्या?

मैं - पी लूँगा आंटी ।

आंटी चाय बनाने चली गई ।

आंटी चाय बनाने चली गई , मैं माँ का लिखा पत्र फिर पढ़ने लगा ,

“ किसी बच्चे के अंदर एक उत्तरदायित्व की भावना का विकास यह बता देता है बच्चा किधर जा रहा है । कोई ज़रूरत नहीं माँ को अपने बच्चे को किसी मनोविज्ञान शाला में ले जाकर उसका मनोवेज्ञानिक परीक्षण कराने की । वह किस तरह सुबह उठ कर आईना देखता है , यह ही बता देता है वह किस ओर जा रहा । अनुराग ने बहुत पहले घर के हालात समझ लिये थे । साल में दो बार बच्चों के कपड़े सिलवाये जाते थे । एक बार इसने कहाँ , माँ तू धोती ले ले इस बार अच्छी सी मेरे कपड़े रहन दे वह चल जाएँगे । जब इंटरव्यू के लिये दिल्ली जाने की बात चली तब सबने कहा घर में फ़र्स्ट क्लास से चले जाओ पर यह स्लीपर क्लास से ही गया । इसने कहा रात भर का ही सफ़र है क्या फ़र्क पड़ता है , हर व्यक्ति को अपनी ज़मीन देखकर चलना चाहिये , कोहरे में दलदल की ज़मीन पर एक-एक कदम संभल कर रखना चाहिये , हर कदम अगले कदम की राह बता देगा पर अगर तेज कदमों से चले तो दलदल कोहरे से ताक़त लेकर तुम्हें ख़त्म कर देगा ।

“..... शांति इसे फूली रोटियों का बहुत शौक़ था । यह बहुत ज़िद करता था इसकी । जब कुछ बड़ा हुआ तब उसने देखा रसोईघर में लकड़ी के चूल्हों में धुँए का प्रकोप और उसने कुछ लाइनें लिखी थीं ...

वह मकान के पीछे का कमरा छोटा सा
छत उसकी काली अभी भी
नहीं जा पाई वह कालिमा कई रंग रोगनों के बाद भी
दिख रहा वह कमरा मुझे कई साल बाद भी पहले जैसा
मिट्टी का चूल्हा
लकड़ियाँ जलती चूल्हे में
उतरती रोटी तवे से
आँच में सेंची जाती हुई
माँ की आँखों में जाता धुँआ
आँसुओं को निकालता हुआ
मैं बेपरवाह सभी से
इंतजार में रोटियों के कहता हुआ
मुझे सिर्फ़ फूली हुई ही रोटी चाहिये ॥”

मैंने यह कविता कई बार पढ़ी । इसने कितने क्रीति से वह दर्द बयाँ किया जो गैस के चूल्हे के न होने का एक दर्द था । गैस मिलती ही न थी । इतनी लंबी लाइन थी उसमें और आम आदमी की कोई सुनवाई न थी ।

यह कविता मैंने बहुत पहले कभी लिखी थी । यह कविता नहीं एक देखा हुआ सच है जो किसी ने भोगा है । यह मेरी बचपन की एक खाहिश हर रोज़ की थी , जो हर बार पूरी हुई । अंतिम रोटी पूरी फूली होती थी और रोटियों के ढेर के ऊपर एक समराट की तरह विराजमान होती थी । मैं इस वाक्ये को भूल ऐसा गया था , पर मेरी माँ को वाक्या और कविता दोनों याद था । मेरी माँ के हिस्से की ज़मीं अभी तक बंजर ही रही है , इलज़ाम इसका बरसात को ही दे सकती हूँ जो उसके हक में न हुई आज तक ।

मैंने अपनी बोसीदा पन्नों पर कई तहरीरें लिखी हैं पर एक भी तहरीर भूला नहीं हूँ । वह तहरीरें मेरे माँ के ख्वाबों की है जो उसने न बताये किसी से सिवाय मुझसे , लोग उसके इतने बड़े ख्वाब देखने वाली आँखों की हैं सियत पर यक़ीन न करते । वह एक बात हर बार कहा करती थी , किसी एक गैर मामूली दास्तान के लिये मैंने जना है तुझको और जबसे यह ख्याल मेरे दिमाग में आया है , मेरे ख्वाबों की तासीर बदल गई है । एक वीरान पुराने मंदिर के चौखट में उड़ते तूफानों के साये में एक काला सा दिया पूरी रात जल जाता है हवाओं से लड़कर और कई बार चल रहे क़ाफ़िले अपनी बुझी मशालों की रौशनी उस दिये से पाते हैं , ऐसी ही दिये की तरह की एक गैर मामूली दास्तान की चाहत है मेरी ।

जितना मैं पत्र पढ़ता जा रहा था , पत्र उतना ही सरगोशियों में पता नहीं क्या- क्या कहता जा रहा था । पत्र वह भी कह रहा था जो उसमें लिखा नहीं था । पत्र के बीच मेरी माँ का चेहरा उभर रहा था रात बिखरती जा रही थी सुबह के फलक की तरफ ।

सामने साफ़- शफ़काक चाँद खिड़की से दिख रहा था , मैं पत्र से सिर उठाकर चाँद की ओर देख रहा था , यह सोचता हुआ उम्मीद के आसार सीने में छिपाये रोज़े-अजल से नाफ़

में एक नज़म गढ़ी है उसने जिसमें कई मक्कून छिपे हैं और उसके अंदर के चिंगारियों की रौशनी सैकल कर रहीं मेरे अंदर के लोहे को , कहीं शबनमी स्याही से एक नज़म उसके लिये मैं गढ़ दूँ ।

आँटी चाय लेकर आई मेरा चेहरा चाँद की तरफ ... आँसुओं की बगावत मेरे पूरे चेहरे पर

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 66

आँटी ने मेरा चेहरा तर देखा , वह बोली यह तुम्हारे म़ज़बूत होने की निशानी है । यह रोना हमेशा कमज़ोरी की निशानी ही नहीं होती , यह आपकी संवेदनशीलता को व्यक्त करता है । एक संवेदनाविहीन व्यक्ति समाज के लिये बोझ होता है । अनुराग , मैंने एक लंबा जीवन जिया है और बहुतों को देखा है । मैंने नौकरी भी पूरी इज़्ज़त और मर्यादा से की है ।

मेरे आवरण पर एक महान वैज्ञानिक की पत्नी होने का गर्व था तो कंधों पर एक उत्तरदायित्व भी था , उनके साथ पर खरा उत्तरने का ।

यह वैज्ञानिक , अध्यापक जिस महानता की स्थापना करते हैं उनसे जुड़े लोगों को उसको संरक्षित रखने की एक ज़िम्मेदारी भी है और आवश्यकता भी । एक पूरी पीढ़ी उनके निर्देशन से आगे बढ़ी हुई भी होती है और एक पीढ़ी बढ़ रही होती है और सारी पीढ़ियाँ उस व्यक्ति से जुड़े लोगों को एक अलग नज़रिये से देखती हैं ।

इसलिये मैंने हमेशा अपने काम को दक्षता से से किया ताकि उनकी साथ पर कोई आँच न आए । मेरी नोटिंग्स और मेरे क्राम की सब तारीफ़ करते थे । इतने बड़े-बड़े अफ़सरों के साथ काम किया पर सबने यही कहा कि उनकी पत्नी हो तुम आम कैसे हो सकती हो । यह सुनकर ही बहुत सुकून मिलता था कि जहाँ भी होंगे वह प्रसन्न होंगे यह सुनकर ।

वह मेरे पति भी थे और गुरु भी । किसी पत्नी को पति एक गुरु के रूप में मिल जाए तो शायद जीवन सफल हो जाए । मैं गाँव से आयी थी , मुझे कुछ न पता था । मेरी एक ही विशेषता थी मैं जहीन और लगनशील थी बाक़ी मेरे गुरु ने जो कहा मैं करती रही । मैंने बीए किया , एम ए किया और कोई ऐसा वैसा नहीं किया , पूरी शिफ्ट से किया और बहुत बेहतर अंकों से किया ।

मैं अपने सारे अनुभव से एक बात तुम्हारे बारे में कह सकती हूँ , इस बार की परीक्षा का परिणाम क्या होगा , अगली बार का क्या होगा , यह तो विधाता ही जानता है पर तुम कुछ ख़ास करने के लिये जन्मे हो । ऐसा कुछ ज़रूर है जो तुम्हारा इंतज़ार कर रहा । वह क्या है , यह कहना मुश्किल है । तुम अगर आईएएस बनोगे तो कोई आम संवेदनविहीन आईएएस नहीं होंगे एक अलग लीग बनाकर जाओगे ।

मैंने कहा , आंटी आप जो आज कह रही हैं मुझसे यह न तो कभी मेरे दिमाग़ में आया न कभी किसी ने कहा । मुझे हर वक्त यही कहा गया , क्या करोगे तुम ? तुम्हारी क्षमताएँ सीमित हैं । कोई सामान्य सी नौकरी करो । मेरे मामा कहते थे क्यों बेवजह समय ख़राब कर रहे , एजी आफिस का आडीटर , असिस्टेंट ग्रेड या स्टाफ़ सेलेक्शन की परीक्षा दो । तुम परिस्थितियों को देखकर काम करो , एक बार कोई नौकरी पकड़ लो बाद में कलेक्टरी करने की सोचना । आप जो यह एक बदला माहौल देख रही वह सिर्फ़ एक परीक्षा

का परिणाम है और कुछ नहीं । यह पलक झापकते ही सब ख़त्म भी हो सकता है ।

इस परीक्षा की इतनी साख है कि किसी को भी देवत्व प्रदान कर दे । यह चार दिन की चाँदनी है, रिज़ल्ट विपरीत आने दो, आप देखना जो आज आसमानों में मुझे उड़ता हुआ देख कर कह रहे क्या उड़ान भरता है यह, वह कहेंगे किसी हवा के झाँके ने इसे मगरुर कर दिया था ।

मेरे पिता ने ही कहा था मुझसे, तुम मेरी तरह क्लर्क हो जाओ तब भी एक उपलब्धि ही होगी । शायद वह गलत न थे मैंने ऐसा काम ही किया था हरदम । मैं विश्वविद्यालय के चुनाव में घूमता था, परीक्षा के कुछ दिन पहले ही पढ़ना शुरू करता था । मेरे नंबर ख़राब तो न आते थे पर ऐसे न थे जो किसी बेहतर भविष्य की ओर इशारा कर रहे हों ।

मुझे नहीं पता आंटी आपने क्या देखा मुझमें बस एक चाहत है मेरी जो यहाँ तक ले आई मैं उम्र भर रेंगते रहने से बचना चाहता हूँ । मेरी कल्पना की उड़ान मेरे बगैर काजलों की आँखों में भी बहुत है और मेरी हसरतों की लौ ऐसी है कि वीरान मज़ारों पर भी दिये जला दे । मेरी क्षमताएँ उतनी बड़ी नहीं हैं जितना मेरा ज़ज्बा है ।

आंटी ने कहा, तू अपने को जानता है इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है । क्षमताएँ कम हैं यह तू इसलिये कह रहा कि तू किसी कक्षा में अब्ल नहीं आया । क्या तुमने सुकरात की मार्कशीट देखी है, तुम्हें यह पता है कि शेक्यपीयर, परेमचंद, निराला, भगत सिंह, तिलक के अपनी परीक्षाओं में अंक क्या थे ?

यह अंक एक धोखा है । मैं तो कहती हूँ यह बहुत सीमित क्षमताओं को प्रदर्शित करते हैं । उस साल आने वाले सवालों को कैसे रट कर लिख दिया गया, इसके सिवाय यह कुछ नहीं बताते । यह शिक्षा पद्धति वह पैदा नहीं कर रही जिसकी इस देश को ज़रूरत है ।

यह बड़े-बड़े नामधारी स्कूल जहाँ सारे चोचले फैलाये गये हैं शिक्षा के नाम पर लेकिन सबसे कम वहाँ शिक्षा पर ही जोर होता है । एक नया ड्रामा हर नामधारी स्कूलों में एक नये नारे के साथ, “ हम व्यक्तित्व के विकास पर ज़ोर देते हैं ” ।

मुझे आज तक समझ न आया कि बगैर शिक्षा और ज्ञान के कौन से व्यक्तित्व का विकास होगा । मैं बड़े-बड़े स्कूलों का विज्ञापन पढ़ती हूँ जिसमें लिखा होता है , “ हमारे यहाँ स्वीमिंग पूल है , घुड़सवारी है , नृत्य, गायन संगीत सिखाते हैं , हम होम वर्क नहीं देते , एक सहज वातावरण में व्यक्तित्व का विकास करते हैं ” ।

मैंने कभी न देखा किसी स्कूल को यह विज्ञापित करते हुये कि हमारे यहाँ अमुक शिक्षक है , यह पाठ्यक्रम है , इतने धंटे की हम गंभीर पढ़ाई कराते हैं । ऐसा क्यों है ? कभी सोचा है ? यह दून स्कूल , शेरवुड मयो कालेज , सनावर ऐसे तमाम अंगरेजों के समय से चले आ रहे स्कूलों ने कौन से विचारक पैदा कर दिये ?

इन स्कूलों में कौन अध्यापक है किसी ने बताया आज तक । हम लोग बचपन में ही यह जान गये थे कि अध्यापक ही एक मात्र कुंजी है देश को सुधारने की । हमारे यहाँ के जो मास्टर थे वह एक ही बात कहते थे लिख कर पढ़ो और ज्यादा से ज्यादा लिखो , पूछना अपनी माँ से बताएगी वह हम लोग कितना लिखते थे । भाषा सीखने पर बहुत ज़ोर था । हम लोग प्रयास करते थे । तुम्हारी भाषा देखकर लगता है तुम्हारी माँ ने वही हमारे देशज संस्कार तुमको दिये हैं । पर आज तक किसी स्कूल के इश्तिहार में मैंने यह न पढ़ा कि हम शिक्षा पर बहुत ज़ोर देते हैं । मैंने भैया को मतलब ऋषभ को बचपन से सिर्फ़ वही बताया जो मेरे मास्टर ने मुझे बचपन में बताया था । मैं सारा दिन लिखने वाला ही खेल खेलती थी साथ उसके । उसकी लिखने की गति भी तेज हो गई थी और बात कहने की क्षमता । सबके जीवन में कक्षा दस की परीक्षा एक बहुत बड़ा आयाम होती है , आप पहली बार एक बड़ी परीक्षा के दौर से गुज़रते हो । हर माँ दसवीं कक्षा के पहले पेपर की समाप्ति के बाद अपने बच्चे का इंतज़ार बहुत बेसबरी करती है , यह जानने को क्या हुआ ?

मैंने भी किया । जब भैया आया तो मेरे पूछने के पहले ही कहा , “ माँ तूने इतना खेल लिखने का मेरे साथ खेला था कि मैं सब लिख गया और समय भी बच गया जबकि और लोग कह रहे थे कि पेपर लंबा था ” ।

जब वह आईआईटी गया तो मैंने पूछा इन नामधारी स्कूलों के कितने बच्चे हैं तेरे साथ । वह बोला , “ मेरे ही साथ नहीं पूरी आईआईटी में एक भी शायद नहीं है ” ।

जानते हो अनुराग ऐसा क्यों है , क्योंकि इन स्कूलों की चोचलों में रुचि है शिक्षा में नहीं । मैं इनको ही क्यों दोष दूँ , जब बाजार में बिक ही यही रहा है तब यह यही बेचेंगे । यह बाजार है जो बिकेगा वही हम बेचेंगे । यह शिक्षा कभी एक परम्परा का वाहक होती थी आज इस बाजारवादी सिद्धांत ने एक बड़े बाजार का वस्तु बना दिया ।

तुम दूर क्यों जाते हो अपना इलाहाबाद विश्वविद्यालय ही देखो जिसका अति गौरवशाली इतिहास रहा है । यह अपने को दूर - दूर तक व्याख्यायित करता था अपने यहाँ के अध्यापकों के नाम से । हर जगह लोग यही कहते थे कि मैं वहाँ पढ़ूँगा क्योंकि वहाँ पर अमुक- अमुक अध्यापक पढ़ते हैं । तुम नालंदा को देखो जहाँ पर दूर - दूर से लोग पढ़ने आते थे । नालंदा में कहते हैं संसार की सबसे बड़ी लाइब्रेरी और बेहतरीन शिक्षक थे । कहते हैं दस लाख पाँडुलिपियाँ बख्तियार खिलजी ने जला दी थी । यह संख्या ही बताती है कि कितनी बड़ी शैक्षिक निधि वहाँ पर थी । यह भी कहते हैं लोग कि वहाँ के भिक्षु , शिक्षार्थी अपना क्रीमती सामान नहीं बहुमूल्य पुस्तकें लेकर बर्मा, थाइलैंड आदि देशों की तरफ भाग गये थे । यह जो एक परम्परा शिक्षा की थी जिससे बाजार बाहर हुआ करता था उसमें बाजार प्रवेश कर चुका है ।

मैं तुम्हारा भी स्कूल जानती हूँ । उस स्कूल के पास खपड़ैल था । भैया यहीं पूसा के अंदर के स्कूल का पढ़ा है । मेरी प्राथमिकता थी कि स्कूल पास होना चाहिये और शिक्षक बेहतर हों । तुम दोनों ही चोचलेबाजों के स्कूल से दूर रहे और इतिहास आगे लिखेगा तुम दोनों की गौरवगाथा । आंटी के आँख में आँसू आ गये , यह एक पुत्र के सम्मान के आँसू थे जिसने जहीनियत की मिसाल क्रायम किया और एक दूसरे पुत्र सदृश व्यक्ति के भावी जीवन की उपलब्धियों की आशा के आँसू थे । दोनों के प्रतिमानों के आँसू उसकी भावनाओं के साथ मिलकर एक तिरवेणी का निर्माण कर रहे थे ।

मैं आंटी को अपलक देख रहा और पूरी तन्द्रा से सुन रहा था । इसे तो भारत का शिक्षा मन्त्री होना चाहिये । इसे तो मानव संसाधन मंत्रालय की नीति बनानी चाहिये । मुझे माँ की वह लाइन मेरे कानों में गूँजने लगी जो हज़ारों बार सुनी थी जिसमें दर्द भी था और विवशता भी , एकदम सही लगने लगी ,

“ काश हमको भी मौक़ा दिया गया होता आज हम भी कुछ होते “ ।

उसकी यह लाइन एक ही बात कहती है ,

कब माँगी थी जहाँ की सारी खुशियाँ मैंने

पर यह ज़रूर चाहा था ऐसी बेबसी नसीब में न होती ।

यह एक बेबसों की कहानी है जो मैं बयाँ कर रहा । कोई परिस्थिति से बेबस हैं तो कोई भाषा से और कोई अपने ख्वाहिशों के बोझ से । मैं बेबस हर तरफ से । मेरी परिस्थिति, मेरी भाषा जिस पर मेरा अधिकार तो है पर उसकी कोई कीमत नहीं, मेरे ऊपर ख्वाहिशों का बोझ ।

मेरी छोटी बहन ने जब वह छोटी थी तो अपनी चचेरी बहन के विवाह के समय कहा था, ”मुझे दीदी ऐसा पति मत देना“ । मैंने भी कहा था नहीं तेरे लिये मैं राजकुमार लाऊँगा और तू ड्यौड़ी पर खड़ी रहना अपने धूँधट के साथ मोतियों की माला पहने । उसके रथ का पहिया ज़मीं पर निशान बनायेगा और तेरा नाम उसी निशान पर उभरेगा और तू कहना माँ से, हाँ यही है जिसका मैंने इंतज़ार किया था ।

वह बोली थी पर भैया मेरे घर की गली बहुत सँकरी है, इसमें रथ कैसे आएगा?

मैंने कहा था, “बेवकूफ़ इसी गली में हमेशा थोड़ी रहना है“ ।

वह बोली थी, “हाँ भैया थोड़ा स़ड़क पर मकान लेना, राजकुमार को आने में सुविधा होगी । पर रथ का पहिया कैसे जानेगा मेरा नाम?“

मैंने भी कहा था उससे, यह समस्या राजकुमार की है उसको इतनी प्यारी, सुंदर, सुशील और मेरे ऐसे चक्रवर्ती भाई की बहन चाहिये तो उसे भी तो कुछ करना होगा । वह मेरे सीने से लिपट कर बोली थी हाँ मेरे भैया तो बहुत चक्रवर्ती हैं । यह सब बातें उसके अबोधपन के समय की हैं, पर यह एक ताँबे पर बने निशान की तरह अमिट तहरीरें हैं उसके यादों की एक लंबी फ़ेहरिस्त में ।

अब वह बड़ी हो गई है । वह निःसंदेह भूली नहीं होगी मेरी वह बात जो कही थी मैंने । एक उसके अंदर के उफन रहे अरमानों को और हवा दी जा रही घर में यह कहकर,

“मुन्ना का चयन होगा तब गुड़िया का अच्छा विवाह होगा“ ।

मैंने जो कभी बचपन में उसके कहा था उससे प्रतिवश यह सिविल परीक्षा के टूटते द्वारों के साथ उसके अंदर और उम्मीद जगा भी रहा होगा । उसके

उम्मीद के चिरागों को और तेल मिल रहा हर बीतते वक्त के सूरज के साथ ।

मैं कैसा भी हूँ पर आज अपने परिवेश में एक आपदा प्रबंधक के रूप में उभर चुका हूँ । मैं जैसे ही सोचता हूँ कि एक झटके में कहीं उस दिन खत्म न हो जाए सबकी ख्वाहिशें जब धौलपुर हाउस से निकलने वाले समाचार में मेरा कोई ज़िक्र ही न हो । कहीं सब एक साथ ज़मीन पर सिर माथे पर रखकर बैठ न जाए यह कहते हुये, “ यह क्या हो गया ? प्रभु तुमसे यह उम्मीद न थी ” ।

यह सोचकर ही अंतरात्मा में एक ऐसा कंपन होने लगता है कि भय रक्त के रेशों के साथ हृदय की ओर बढ़ने लगता है और मेरा हृदय उस बेसहारा की तरह होता है जिसके हाँथ और पाँव बाँध दिये गये हो और एक काला नाग उसकी तरफ जीभ लपलपाते बढ़ रहा हो ।

मैं खामोश रहकर उस शाम का इंतज़ार अब कर रहा जिसमें, फ़क़त आँसू ही बहेंगे सारी रात जश्न होगा, शंख फ़तह के बजेंगे, नई पोशाक न पहनकर भी मैं एक सम्राट की तरह सबको शरण में ले लूँगा और फ़ख़्र के साथ वह गली भी कहेगी तू यहीं पर कभी टायर चलाया करता था, पतंगें लूटा करता था और नालियों से कंचे निकाला करता था या होगी एक शांति यम से यह कहते हुये आसमानों पर साँपँ फ़न लहरा रहे और उनका ज़हर मेरे अंदर उतार दो ।

यह एक ऐसी परीक्षा प्रणाली बन गई है इलाहाबाद शहर में जहाँ पर नौकरी से अधिक गौरव की तलाश होती है और हारने वाला ताउमर इस पराजय से उबर नहीं पाता ।

पर मैं इतना डर क्यों रहा हार से ? माना नहीं हुआ चयन, कौन सा पहाड़ टूट गया ? हर बार कुछ तो हारते ही हैं न ? मैं भी हार गया । यह सारी समस्या, यह सारी परेशानी मेरी निर्मित की हुई है । मेरा न हुआ तो न हुआ, क्या ऐसा अनोखा हो गया जो आज तक न हुआ ?

मैं सबकी ख्वाहिशों का ज़िम्मेदार तो हूँ नहीं । मैंने कब कहे थे मेरे कंधों पर अपनी ख्वाहिशों का बोझ भी रखो और ख्वाब भी मेरी आँखों से देखो । मेरे अलावा मेरे घर में और भी लोग हैं, वह क्यों नहीं आज़माते इस शह और मात का खेल । मेरे अंदर से ही एक गीत का जन्म हो गया ।

पराजय कोई लज्जा नहीं है
पराजय कोई कलंक नहीं है
पराजय कोई अपमान भी नहीं
पराजय यह भी कहती है
हमें अपने आप पर भरोसा है
कुछ ज्यादा भरोसा है
लड़ना एक मजबूरी ही नहीं थी
यह एक शौक भी था मेरा
यह जानकर भी नियति क्या होगी संग्राम की
थक गये थे बोझिल अँधेरों में रहते हुये
रोशनी की एक चाह थी
एक आसरा था कुछ पाने का
देख उसको लड़ गये हम
बेहद घुटन थी सब कुछ वैसा ही स्वीकार करने में
बस खुली हवा के लिये लड़ गये हम
चलो हार गये तो क्या हुआ
पराजय भाग्य में थी तो क्या हुआ
गर्व से कहो
हम पराजित हैं पर टूटे नहीं
हमें खुद पर है भरोसा
जीतने का न सही
फिर से लड़ने का
कौन कहता है यह
कहाँ है यह लिखा हुआ
लड़ना है ज़रूरी सिफ़्र जीतने के लिये
हाँ लड़ना है ज़रूरी स्वाभिमान के लिये
जीतना उतना ज़रूरी नहीं

ज़रूरी जितना है लड़ना
दूसरों की नहीं
अपनी ही आँखों में ज़िंदा रहने के लिये
चलो फिर करते हैं कोशिश
एक बार और
ज़िंदा रहने की
सिर्फ साँस लेकर नहीं
ज़मीर के साथ रहकर
चलो फिर ललकारते हैं उनको
जो माहिर हैं षड्यन्तरों में जीत के लिये

लहरों ने आज समर्पण कर दिया
कुछ कशितयाँ अपनी जिद पर थीं
उसमें एक कश्ती मेरी भी थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 67

मैंने आंटी से पूछा , आंटी यह बताओ कि आपके इतना कहने पर भी ऋषभ ने सिविल सर्विसेज़ की परीक्षा क्यों नहीं दी ?

आंटी ने देखा छत की तरफ़ और कहा , यह ईश्वर ही बता सकता है । मैं तो बहुत चाहती थी । यह मेरी सबसे बड़ी ख्वाहिश था । ऐसा कौन है जो न चाहेगा , उसका बच्चा उसके पास रहे । यह हर एक की चाहत होती है कि उसका बच्चा साथ ही रहे , उसकी आँखों के सामने रहे । मैं इस ज़िंदगी में आज बिल्कुल ही अकेली हूँ । मेरा मायका ख़त्म ऐसा हो गया । मैं कभी जाती नहीं , समय भी कम है और अब वहाँ नई पीढ़ी आ गई एवम् दूसी भी है । मैं पहलें इलाहाबाद जाऊँ फिर आठो/ बस पकड़ूँ तब जाऊँ । यह सब क़वायद हो भी सकती है अगर बहुत लगाव हो , ऐसा लगाव तो है नहीं । यह कहानी मेरी ज़िंदगी की कुछ अलग ही है ।

मैं विवाह के कुछ साल बाद दिल्ली आ गई, जब पूसा इंस्टीट्यूट में यह सहायक कृषि वैज्ञानिक की नौकरी पा गए। मैं पढ़ने लग गई। मेरा बहुत मन था पढ़ने का पहले से ही और इन्होंने बहुत हॉसला और सहारा भी दिया, बस रम गई मैं। यूनिवर्सिटी में जो लोग मेरे साथ पढ़ते थे वह मज़ाक़ भी करते थे कि, “आंटी जी ग़ज़ब चीज़ हैं, सब रट मारा है”। मेरी उम्र बहुत ज्यादा तो न थी पर मैं धोती पहनती थी और मोटा सिंदूर लगाती थी शायद इसीलिये मेरे सहपाठियों ने मेरा नाम आंटी रखा था। पर यह भी सच है बहुत सम्मान दिया उन सबने। मुझे बहुत सिखाया उन लोगों ने। मेरे गाँव का जीवन और मेरा संस्कार बहुत नया था, इस दिल्ली के मेरे सहपाठियों के लिये। वह सब विस्मय भी करते थे, मेरी पृष्ठभूमि के बाद भी पढ़ने के ज़ज्बे को, मैंने पहली ही परीक्षा में स्थापित

दुर्ग को हिला दिया था। मेरी पहली परीक्षा के पहले प्रश्नपत्र में यह मुझे परीक्षा केन्द्र तक छोड़ने गये थे, वैसे ही समझाया जैसे कोई किसी बच्चे को समझाता है, “आराम से लिखना, सोच- सोच कर लिखना, प्रश्न को तीन बार पढ़ना तब लिखना शुरू करना। अपनी कापी में काट- पीट मत करना। एक बार जो दिमाग में आ जाता है उत्तर लिखते समय वह फिर दिमाग पर हाबी हो जाता है और आप उस धारा से हट नहीं पाते हो, इसलिये पहले खूब ठीक से सोच लेना तब लिखने की कोशिश करना”।

मैं वही करती थी जो यह कहते थे। इसका कारण पुरुष मानसिकता की प्रधानता न थी, इनकी असीम क्राबिलियत और क्षमता थी। मुझे कभी- कभी लगता है इनको पता था मैं जल्दी चला जाऊँगा और यह अकेले रह जाएगी इस दर्दनाक दुनिया में जहाँ पर लोग सहानुभूति के नाम पर मलहम में नमक मिलाकर ज़ख्म पर लगा देते हैं। मुझे वह उस वक्त के लिये तैयार कर रहे थे। जो कुछ उन्होंने मुझे बताया पढ़ाते वक्त, वही सब मैंने भैया को बताया जब उसने स्कूल जाना आरंभ किया। जब वह पहला परीक्षा देने गया तब वैसे ही मैंने उसको बताया जैसे इन्होंने मुझे बताया था।

अनुराग, भैया कक्षा दस की परीक्षा देने जा रहा था। मैं उसके साथ सेंटर पर गई। जब वह अंदर जाने लगा तब मैंने उसको रोका और इनकी कलम उसको दी और कहा, इस कलम से तुम कुछ भी कहीं लिख देना पेपर में। मैंने वही सारे वाक्य उससे कहें जो इन्होंने मुझसे कहे थे,

“पेपर मिलते ही ईश्वर का ध्यान करना, पेपर को पहले अलट- पलट कर देखना, फिर एक बार पूरा पेपर पढ़ना, फिर जो प्रश्न करने हैं उनका चुनाव करना, प्रश्न का उत्तर लिखने के पहले तीन बार प्रश्न पढ़ना, तीन बार

मतलब तीन बार दो बार नहीं , कापी के पीछे एक रफ पेज बनाना उस पर सारे प्वाइंट लिख लेना और तब लिखना शुरू करना । हाँ एक बात और , लिखते समय थोड़ा बड़ा लिखना और स्पेस देकर लिखावट पर ध्यान देना । यह रण का अभ्यास चाहे जितना करो पर फ़ैसला रण क्षेत्र देता है रंग शाला नहीं । तुम्हारी तैयारी बहुत अच्छी है बस ज़रूरत है परीक्षक को बताने की । अगर तुम बता न सके तो पढ़ाई का फ़ायदा तुम्हारे ज्ञान के कोष को तो मिलेगा पर वह मार्कशीट में नहीं दिखेगा । आज का दिन मार्कशीट के नाम और साल का सारा दिन ज्ञान के नाम” ।

जैसे मैंने चरण छुये अपने गुरु के आशीर्वाद के लिये , मेरा गुरु मुझसे ज्यादा भावुक था । शायद ऐसा होता ही है , गुरु शिष्य से ज्यादा भावुक और संवेदनशील होता है । यही भैया ने भी किया । एक पूरा दृश्य वैसा ही मेरे आँखों के सामने घूम गया ।

जैसे ही वह मेरा पैर छूकर मुड़ा मैं फफक - फफक कर रोने लगी । जितने लोग वहाँ आये थे अपने बच्चों को छोड़ने सब मुझे देखने लगे । महिलाएँ मेरे पास आकर पूछने लगी , क्या हुआ ?

कैसे बताऊँ परवरदिगार की सलीबगीरी मेरे लिये ? मेरा शोकगीत सुनने का समय शहर की हवाओं के भी पास भी नहीं है । इस नामुरादी के रेगिस्तान में मेरे साथ कौन होगा ? इस बेसहारा के विरह के युग में मेरे हौसलों के सिवा कौन है जो मेरे आँसुओं से कहे , ज़रा सँभल कर बह अभी और भी बहुत से मंज़र बाकी है ।

मैंने अपने को सँभाला । वहीं परीक्षा केन्द्र के बाहर इंतज़ार करती रही । परीक्षा ख़त्म हुई और वह कुछ देर में निकला । वह निकलते ही बोला माँ तेरी साधना सफल होना शुरू हो चुकी है । मैं गढ़ पर गढ़ तोड़ूँगा , बस तू बताती जा कौन सा दुर्ग सबसे मज़बूत है । मुझे आसान गढ़ों को गिराने में रुचि नहीं है , मुझे मज़बूत दुर्ग गिरा कर तुझे दिखाने हैं यह कहते हुये ,

“ देख वह अभेद्य था , वह मज़बूत होने का दावा कर रहा था , जरासंध ऐसा होने का दंभ था उसे अपने आकार और अपने सौष्ठव के कारण । वह डरा रहा था सबको पर उसे न पता न था किसके खून से किसके हौसलों को पीकर जन्मा हूँ मैं “ ।

मेरी आँखें छलक गईं । मैंने कहा तू एक बहुत जहीन आदमी की संतान है , कुछ ख़ास ही करेगा । वह बोला , “ माँ तू हमेशा आधा ही बोलती है । मैं पूरा

किये देता हूँ । मैंने उन

अशकों से लिखना सीखा है कि अगर मेरी रोशनाई और कलम रुकना भी चाहें तो अशक कहेंगे रंग न दिख रहा हो मेरे में तब भी क्या है एक बार चला कर तो देख मुझको, खुदा होने का अहसास ऐ कागज़ तुझे भी हो जाएगा ॥

वह बोला, तू सारा समय यहीं बाहर बैठी होगी जब तक परीक्षा चल रही होगी । मैंने कहा तुझे कैसे पता ? मैं घर जाकर वापस भी आ सकती हूँ, कितना दूर घर है ही यहाँ से ।

वह बोला, माँ तेरी सिसकियों की सदा मेरे कानों में गूँज रही थी । माँ जो वह जन्नत है न बहुत दूर जो दिखती नहीं पर लोग उसको भोगना चाहते हैं, वह जन्नत मेरे साथ रहती है । मेरी याददाश्त बहुत मज़बूत है माँ । तूने बताया था कि ईश्वर तेरा इंतज़ार करता था परीक्षा केन्द्र के बाहर जब तू परीक्षा देती थी, वहीं ईश्वर आज फिर आया था तेरे अंदर समा कर यह देखने, चलो देखूँ तो क्या तालीम दी है इसने उसको, जिसके साथ मैंने बेवफ़ाई की सप्तपदी के मंतरों का सम्मान न करके ।

माँ तूने पता नहीं कितने क्रिस्से सुनाये हैं मुझे उस दौर के । कई क्रिस्से तू बार- बार सुनाती थी । वह सब रट ऐसे गये हैं मुझको । तुझे पता नहीं कितना याद है अपना प्लेसेंटा प्रीविया का वह क्रिस्सा जो मेरे जन्म के साथ जुड़ा है । तूने कहा था जब तुझे पता चला कि बच्चा पीछे है और उसका जीवन रक्षक प्लेसेंटा आगे है गर्भ में और ऐसे बच्चे का जीवन थोड़ा मुश्किल हो जाता है । एक बच्चा अपाहिज और दूसरे का जीवन अधर में, और जीवन की रोज़मर्रा की मुश्किलें । तू अपना ध्यान हटाने और अपना वक्त बिताने के लिये मुझसे बातें करती थी ।

मुझे लगने लगा एक अभिमन्यु अपने अंदर है जो हर रोज़ सुन रहा था कहानी अपनी माँ से । यह महाभारत की कहानी थोड़ी ठीक नहीं है । यह अर्जुन ने नहीं बताया था चक्रव्यूह का द्वार तोड़ना अभिमन्यु को,

यह सुभद्रा ने बताया होगा । कौन एक रात के कुछ पलों में दुर्गम- अभेद्य चक्रव्यूह का राज बता सकता है वह भी पूरी सम्पूर्णता से । यह महाभारत में लिखा नहीं गया है पर यही हुआ होगा यह अभिमन्यु अति उत्साह में समय पूर्व जन्म ले लिया होगा । सुभद्रा ने सोचा होगा कि इसको अंतिम द्वार का रणकाशल बताऊँगी नवें महीने के अंतिम चरण में पर वह पहले ही पैदा हो गया होगा, पर मैंने माँ नौ महीने से भी ज्यादा समय लिया, मैं पूरी शिक्षा

लेकर बाहर आया था । मैं तेरे क्रिस्सों में लुब्धा रहता था , मैं भूल गया था कि जन्म भी लेना है सिफ्ऱ गर्भ में रहकर क्रिस्से ही नहीं सुनने हैं ।

अनुराग , मैं हँसने लगी । मैंने कहा , यह सब कहाँ से तेरे दिमाग़ में आता है ? वह बोला , माँ तूने कहा था न कि कोर्स के बाहर की भी चीज पढ़ो असली व्यक्तित्व का विकास वहीं से होगा । यह कोर्स तो सब पढ़ते ही हैं । मैं वही पढ़ता रहता हूँ । इस बोर्ड के बाद वही पढँगा ।

मैंने आटो बुलाया । आटो मैं बैठकर मैंने पूछा उससे , “ कैसा परिणाम तुझे लग रहा अपना इस परीक्षा का ” ?

उसने कहा , माँ तू यह पूछ रही , जो कहा करती थी कि फैले हुये दरिया में नाँव पर बैठने वाले मल्लाह के बैठने के ढंग से ही उनका खौफ चला जाता है , भरोसा पतवार पर नहीं उसके बाजुओं पर होता है ।

मैंने कहा , तू बहुत बातों में भरमाने लगा है । वह बोला , माँ जो तू सुनना चाहती है वह मैं सुना सकता हूँ , पर बेहतर है तू उसको पढ़ कर देखना । तेरा खुशी में रोने का एक और मौका इंतज़ार कर रहा , थोड़ा सबर कर । माँ तू जितना दुःखी होकर रोयी होगी , उससे बड़े अवसर मैं तुझे दूँगा परसन्नता की अतिरेकता में रोने का दूँगा । एक खौफ से दूर हकीकत की ठोस ज़मीं पर जंग में लड़ती तलवारों के बीच बगैर रक्त के मेरी तलवारें विजयनाद करती हुई और तू कहेगी , “ मैंने बहुत सपने देखे थे लेकिन सपनों की इतनी ताबीरें कभी न देखी ” ।

माँ ऐसी आग लगाऊँगा कि मेरी आग की राख में बची हुई चिंगारी हर ओर उजाला कर देगी । यह मेरा अहंकार नहीं है माँ , यह मेरा संकल्प है जो सिफ़ तुझे पता है ।

अनुराग

इतना ही आंटी कह पायी थी , वह रोने लगी । मैं किंकर्तव्यविमूढ़ देख रहा बहते आँसुओं को । एक ऐसा नायक इसने बनाया था जो महानायकों को शिक्षा दे सके । मैं तो जीवन में सिफ़ एक सैर ही कर रहा था और मंज़िल की तरफ बढ़ गया , यहाँ यह तो क्षितिज की यात्रा पर निकल गया था । मेरे जो भी निशाँ बने हैं वह मेरे घिस्टन को ही बयाँ कर रहे , यह तो अपने सधे

कदमों से अश्वों से कह रहा मेरे पैरों के निशान देख कर चलना नहीं तो रास्ते में भटक जाओगे तुम । यह अपनी राख में छिपी चिंगारी से रौशनी की बात कर रहा मैं चिमनी के धुएँ में छिपी चिंगारी ही हूँ जो कोशिश कर रही किसी तरह इस घुटनभरी चिमनी से बाहर आ जाऊँ तो मेरी भी कुछ रौशनी बिखर जाए ।

मैंने मन ही मन कहा , अच्छा हुआ , इसने परीक्षा न दी नहीं तो यह तो मेरे को ख़त्म ही कर देता और मेरे घर में एक और उलाहना मेरे लिये , “ शांति के बेटे को देखो अंटी छाड़ बंटी मार रहा और एक अपने साहिबज़ादे हैं , इनसे कुछ होता ही नहीं ” ।

मैंने वह ज़मीन देखी जो आंटी अपने नाखूनों से कुरेद रही थी , वहाँ मुझे खुदा का दीदार होने लगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 68

आंटी ने नाखूनों से फ़र्श को खुरचने की कोशिश करते हुये कहा , “ तुम्हें बहुत अजीब लग रही होगी मेरी दास्तान , यह है ही ऐसी । मैंने कहा अजीब नहीं प्रेरणादायक लग रही । यह आप का संघर्ष , आप का जज्बा मिथक कथाओं ऐसा है । यह लिखा जाना चाहिये । यह लोगों को पढ़ना चाहिये । मेरी माँ का जीवन भी संघर्षों का रहा है , पर इतना नहीं । आंटी ने कहा , “ तुमको पता है ? मैंने कहा , हाँ कुछ तो पता है । आंटी बोली , कुछ और सब कुछ में बहुत फ़र्क होता है । तुम बेटे हो , तुम्हारा जन्म बाद में हुआ । हम लोगों का विवाह टीन एज में हुआ था । हमने किशोरावस्था की चढ़ती दहलीज़ पर ही एक नये जीवन को अंगीकार किया । हमें तब कुछ न पता था , जीवन क्या होता है । इलाहाबाद एक परम्पराओं और संस्कारों का शहर है ।

इस परम्पराओं के शहर में जीवन एक बनी बनायी रीति से चलता है । अब विवाह का ही फैलना देखो । तुम्हारे नाना ने दो लड़के देखे और दोनों के ही घर वाले तुम्हारी माँ को स्वीकार करने को तैयार थे । तुम्हारे नाना को चुनाव करना था । वह चुनाव अंतिम रूप से किस आधार पर हुआ ? गोतर , कुलीनता और कौन शरेष्ठ ब्राह्मण है । अब कल तुम्हारा विवाह हो तो यह एक गौण वस्तु होगी पर उस समय यह बड़ी बात थी , सामाजिक प्रतिष्ठा की मानक थी और लोग यह पूछते थे वह कौन से ब्राह्मण हैं । तुम्हारी माँ ने पहली बार मायके आकर अपनी चिंता साझा भी की थी मुझसे , यह कहते हुये

“ गरीबी है , मेरा विवाह इसलिये यहाँ किया गया कि यह पढ़ रहे हैं और इनका भविष्य है पर पूरा घर इन पर आश्रित हैं और आगे बहुत बोझ उठाना पड़ेगा “ / यही हुआ भी । इनको एजी आफिस में क्लर्क की नौकरी मिल गई । नौकरी मिलना वह भी सरकारी एक बड़ी बात होती थी , उस दौर में । यह भी हो सकता है वह बेहतर नौकरी पा सकते थे पर पर्याप्त करने को भी साधन चाहिये । कोई भी खेत कितना भी उर्वर क्यों न हो आम फ़सल तो दे सकता है पर अच्छी फ़सल के लिये खाद- पानी तो चाहिये ही । इन परीक्षाओं में जंग लड़नी होती , कटे हाथ तो तलवार चला नहीं सकते ।

एक सामान्य सी नौकरी में अपना परिवार चलाना मुश्किल ही होता है और फिर एक और बड़ी उम्मीदों का बोझ तो उठाना तो आसान नहीं और उठाने की कोशिश में उठाने वाले की हड्डियाँ ही टूटेंगी , यही हुआ उर्मिला के साथ ।

मैं , उर्मिला साथ- साथ रहते थे । तुम्हारी नानी मुझको बहुत मानती थीं । उनके अनुरोध पर तुम्हारे नाना ने वह दूसरा रिश्ता मुझसे करा दिया । मेरे हालात थोड़ा अलग थे । यह कृषि पढ़ रहे थे । इनको यह नहीं पता यह क्यों पढ़ रहे यह । इतनी अज्ञानता थी कि यह पता ही न था कि पढ़ाई किस तरह की जाए । उस समय रुडकी इंजीनियरिंग का नाम हुआ करता था । इनको यह पता ही न था कि उसके लिये साइंस , गणित पढ़नी होती है । यह पता जब चला तब तक देर हो चुकी थी । एग्रीकलचर इंस्टीट्यूट नैनी से पढ़े और उस समय हरित करान्ति का जोर था । स्वामिनीथन साहब ढूँढ रहे थे नये - नये प्रतिभाशाली लोगों को और भारत में कृषि पढ़ने वालों की बहुत कमी थी ।

यह सहायक वैज्ञानिक की नौकरी आसानी से प्राप्त कर गये । उसके बाद अपनी मेहनत से सफलता के पायदानों पर चढ़ते गये । इनका नाम हो ही रहा था और लग रहा था कि यह बहुत आगे जाएँगे तभी विधाता ने उनको अपने पास आमंत्रित कर लिया ।

मुझे आज भी याद है वह काली भयावह जिसमें उजाला तो था पर उस उजाले में एक यम था मेरे लिये । मैं सुबह जब चाय लेकर गई तब यह बाहर अंतिम संदेश दिये जा चुके थे । मुझे कुछ देर तो यक़ीन ही नहीं हुआ । यह नियमित जीवन रखते थे , हर सुबह पूसा कैम्पस में टहलते थे । मुझे कभी कोई शिकायत इनके स्वास्थ्य में दिखी ही नहीं । इस तरह छोड़कर चले जाना ? मैं स्तब्ध हो गई उनके मृत शरीर को देखकर ।

मैं इनका पूरा शरीर हिलाती रही इस आशा से कुछ शब्द- कुछ स्वर- कुछ हरकत दिख जाए । कैंपस के लोग आए सब कुछ उन्होंने किया । मेरे ससुराल वाले बाद में आए वह बोले मुझसे , गाँव चलकर रहो । यहाँ अकेले कैसे रहोगी ।

मैं गाँव कैसे जा सकती थी । यह मेरा भैया अबोध था । इसका पूरा जीवन पड़ा था । यह गाँव में जाकर क्या करता । मेरे ससुराल में ज़मीन अच्छी थी । उनको भी लगा यह आएगी तो हिस्सा लेंगी । इसलिये शायद खाना पूर्ति ऐसा कहा , कोई ख़ास ज़ोर न दिया चलने पर । एक अकेली औरत पर सवाल खड़ा करना आसान होता है । मेरे ससुराल में लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि वहीं यह किसी के यहाँ बैठ जाएगी । मेरे मायके से कुछ दिन तो चला संबंध पर जैसे - जैसे अगली पीढ़ी बड़ी होने लगी वह भी कम होने लगा । वैसे भी संबंध आने - जाने , मिलने - जुलने से बनता है । मेरे पास इतने साधन न थे कि मैं नियमित आ जा सकूँ । भैया का भी स्कूल चलने लगा । मैं इसको पढ़ाने में रम गई और हमारी दुनिया माँ - बेटे के बीच सिमट गई ।

यहीं कैंपस के लोगों ने बताया कि आप को उनकी जगह नौकरी मिल जाएगी पर वह छोटी नौकरी मिलेगी । यहाँ उसी समय कृषि विभाग की ज्वाइंट सेक्रेटरी एक दौरे पर आयीं थीं । मुझे उनसे मिलाया गया । उनके हालात और मेरे एक जैसे थे । उनके पति भी आईएएस थे पर वह भी हार्ट अटैक के शिकार हुये थे । मुझे मिलने का समय दिया गया । यह कहा गया कि कुछ मिनटों में अपनी बात कह लेना । मैं गई उनसे मिलने , मैं तक़रीबन आधा घंटा इंतज़ार के बाद उनसे मिली । उन्होंने मेरी कहानी सुनी और मेरी मार्कशीट देखी । मेरी मार्कशीट देखकर विस्मय से कहा भी , “यह आपकी मार्कशीट है ? । उनके सवाल के जवाब में मैंने इतना ही कहा , “ यह मार्कशीट मेरे अंक बता रही पर जिन परिस्थितियों में मैंने पाया है उस पर मौन है क्योंकि कागज़ परिणाम ही बताते हैं उसके पीछे की बात बताने का कोई कालम नहीं होता । ” ।

जैसा मुझे उनके साथ वालों ने सिखाया था बात करने को , वैसा ही मैं बोली । मैंने कहा , “ एक क्लर्क की नौकरी मिलती है इस तरह की दुर्घटना में आश्रित को पर मैं पढ़ी लिखी हूँ अगर मुझे ओएसडी बना दिया जाए तो आपकी कृपा होगी । ” । उसने पूछा इस ओएसडी से ऐसा कौन सा फायदा होगा आपको ?

मैंने कहा , “यह मकान बच जाएगा जिसमें मैं रह रही हूँ । इसमें बड़ी उनकी यादें जुड़ी हैं । मैं अगर क्लर्क बनूँगी तब यह मकान छोड़ना होगा । ”

यह बात उसको अंदर तक असर कर गई । उसने इतना ही कहा , “ मैं पूरी कोशिश करूँगी ” ।

मैं वापस आ गई और कुछ दिन बाद ओएसडी का आदेश आ गया ।

मुझे कुछ खास पता न था उनके बचत के बारे में , इनके जीपीएफ के बारे में । इनके साथ वालों ने ही बताया कि जीपीएफ अच्छा जमा किया है , इंश्योरेंस भी कराया है और पैसे की तंगी बिल्कुल न थी । जबसे भैया हुआ था , यह कहते थे कि इसको विदेश भेजेंगे पढ़ने को और शायद सारी बचत उसी लिये कर रहे थे । मुझे न पता था कि विदेश कैसे जाएगा , क्या पढ़ने जाएगा वह होते तो इस पर फ़ैसला लेते पर मैंने उन पैसों को हाथ नहीं लगाया यह सोचकर कि उनके अरमान इस बच्चे के लिये हैं , क्या पता कल ज़रूरत पड़ जाए । मैं भी खूब बचत करती थी । यह सोचकर कि हो सकता है कल इसकी पढ़ाई में ज़रूरत पड़े । भैया होशियार भी था और स्मार्ट भी । उसने कक्षा 8 से ही परिपक्वता दिखानी शुरू कर दी । उसने कक्षा 9 में ही कह दिया मैं आईआईटी जाऊँगा । मैं कहती थी , तुझे आईएएस बनना है । उसने कहा , “ माँ धैर्य रख पहले आईआईटी की कोशिश करने दे , उसके बाद उसमें भी आजमाइश करेंगे ” ।

ईश्वर दयालु होता है अगर वह किसी अज़ली- ख़ता की सजा देता है तो वह अपने पर मजीद भरोसा रखने वालों को जीने का सहारा भी देता है ।

वह समझदार था , मेहनती था और मेरे संघर्ष को समझता था । ईश्वर की असीम कृपा थी उस पर वह जो भी काम करता था वह सम्पूर्णता की ओर जाता था । दसवीं , बारहवीं दोनों के बोर्ड में उसकी पोज़ीशन आई । वह टाप करना चाहता था पर वह बस रह ही गया । आईआईटी जेर्झी में पूरा परचम ही तोड़ दिया , उसमें रँक पचास के अंदर आ गई । वह समय ऐसा था जब कम्प्यूटर साइंस का दौर शुरू हो गया था सब वही लेना चाहते थे वह भी वही चाहता था । उसे सारी आईआईटी मिल रही थी । वह बोला कानपुर की आईआईटी का बहुत नाम है , सब कह रहे वह सबसे बेहतर है । मैंने दबे स्वर में कहा , दिल्ली रह जाओ तो अच्छा है । दिल्ली भी कहाँ कमजोर है , माना कानपुर का नाम थोड़ा अच्छा है । यहाँ रहोगे तब मिलना- जुलना आसान होगा , मैं कैसे रहूँगी तेरे बगैर । उसने सुन लिया , कुछ न कहा । मैं उसके साथ गई थी काउन्सलिंग में । उसने खुशी - खुशी दिल्ली ले लिया ।

उसने कुछ दिन बाद कहा , “ माँ तेरा निर्णय ठीक था , बड़े शहरों की आईआईटी प्लेसमेंट के लिये ठीक होती हैं । मैंने कहा , “ तुझे प्लेसमेंट से क्या लेना- देना ? तुझे सिफ़्र और सिफ़्र आईएएस बनना है ” ।

वह बोला , यह बात ठीक है पर मैं कह रहा कि अगर वह विकल्प मजबूरी में आया तब के लिये बड़ा शहर बेहतर है ।

मैं बोली , “नहीं ऋषभ... कोई मजबूरी नहीं । तुझे वह करना ही है । तुझे मुख्तलिफ़ सम्तों पर चलना भी है और रागबद्ध नगमे ही गाने हैं । तू सारे रास्ते बंद कर दे , तेरा रास्ता सिर्फ़ और सिर्फ़ एक ही ओर जाता है । यह रास्ता अगर कानपुर से होकर जाता है तो तू कानपुर चला जा । मेरे झुलसे हुये पौधों को एक चमन चाहिये और वह सिर्फ़ एक ही तरीके से मिल सकता है । मैंने चट्टानों पर खड़े होकर तेरे लिये छाँव बनाई है यह सोचकर कि तू कभी सूरज के आतंक को रोककर राह बनाएगा औरों के लिये । मैंने तुझे नहीं जना है सिर्फ़ अपने लिये , मैंने तुझे जना है जमाने के लिये । यह नौकरी जो सिर्फ़ अपने लिये होती है , वह नौकरी तू करेगा ??

मैं ऐसा हरगिज़ नहीं चाहूँगी । यह बता तेरे मैं क्या ख़ास बात है जो ईश्वर ने सारे गुण तुझमें भर दिये । उसने तुझे जहीन , लगनशील , रूपवान , संस्कारी सब बनाया । उसने औरों का हक़ मारकर तुझको बनाया । वह परमेश्वर यह सारे गुण औरों में बाँट सकता था और तीन- चार बेहतर लोग बन सकते थे , पर उसने सिर्फ़ तुझको चुना , क्यों?

तुझे नहीं पता अपने ख़ानदान की हकीकत , ऐसा कोई नहीं तेरे पूरे ख़ानदान में । यह ईश्वर की नियामक सत्ता है , यह उसका न्याय है , यह तेरे पूर्व जन्मों का कर्म है जो तू मर्यादा पुरुषोत्तम राम की तरह बना । पर राम की तरह जन्म ले लेना और राम ऐसा आचरण करना दो अलग बातें हैं ।

मैं चाह कर भी वह पूरी तरह नहीं कह पा रही जो मैं कहने की कोशिश कर रही । मेरे लफ़्ज़ मेरा साथ नहीं दे रहे । जब मैं ख़ामोश हो जाऊँगी तब ख़ामोशी में मेरे सारे ख़बाब तुम याद करना जो मैंने कितनी बार कहे हैं तुझसे और वह ख़बाब खुद लफ़्ज़ बनकर मेरे लबों से निकले बग़ैर तुझसे बतायेंगे मैं क्या चाह रही कहना । जिस तरह पिघलती है बर्फ़ चिनार के पेड़ों से कतरा-कतरा सूरज की रौशनी में टपकती है दरिया बनकर चलती है समुद्र से मिलने वैसे ही एक - एक ख़बाब जोड़कर बनाये हैं मैंने ख़बाबों का एक शीशमहल जो न केवल है मेरे लिये , वरन् वह है एक पूरे जमाने के लिये ।

आठीं के चेहरे पर उत्तेजना थोड़ी आ गई थी । उसकी आवाज़ तेज हो गई थी । वह चुप हो गई थी पर उसकी तेज रौबदार आवाज़ उस कमरे में स्थापित

शांति , जिसमें बहुत आवेश भर चुका था आंटी के उद्गारों से मेरे कानों में गूँज रहे थे । उसके अंदर इकट्ठा दुःख अपने को कह गया था । उसका पूरा जीवन एक चिट्ठी की तरह था जिसमें लिखा तो सब कुछ था पर पता पूरा न लिखा था । वह दरख्त थी राहगीर के लिये और वह ऊँचे पत्थरों पर खड़े होकर छाँव बनाती थी जहाँ दरख्त नहीं हुआ करते थे । वह मुझसे कह रही अपनी बेबसी कि मैं अपने को कितना सँभालूँ मैं एक ओर अपने को सँभालती हूँ तो दूसरी तरफ से ढह जाती हूँ । उसके जीवन में गहरा धुँआ इसलिये है कि उसके जीवन में एक जलती मशाल नहीं एक बुझी हुई मशाल को उसके ही आँगन में फेंक दिया गया । यह मशाल न तो जल रही है न तो बुझ रही है , एक धुँआ - धुँआ सा चारों ओर बिखेर रही थी । उसकी सारी खाहिशें अब ज़ख्म बन चुकी हैं ।

मैंने कहा आंटी से , आंटी एक बात पूछूँ?

आंटी - हाँ ... ज़रूर ।

मैं - आंटी, ऋषभ ने इम्तिहान दिया कभी सिविल सर्विसेज़ का ?

आंटी - नहीं ।

मैं - क्यों ? कोई ख़ास बात ? आईआईटी वाले तो क़ब्ज़ा किये हैं इस परीक्षा पर । पिछले साल आईआईटी कानपुर से टाप किया था किसी ने । प्रथम दस में दो- तीन स्थान लोग लाते ही हैं । तकरीबन 30 प्रतिशत लोग टाप 100 में आईआईटी के ही होते हैं । जैसे ऋषभ ज़हीन हैं वैसे ही मेरे इलाहाबाद के राजेश प्रकाश और मेरे साथ मेडिकल कराने वाले रंजन अग्रवाल और संजीव टंडन भी हैं । इन सब को आईएस ही बनना है । राजेश प्रकाश कई बार से प्रयास कर रहे , यही हाल संजीव टंडन का है । संजीव टंडन , रंजन अग्रवाल दोनों ने बताया कि आईआईटी में बहुत माहौल है इस परीक्षा का और लोग तीसरे साल से ही तैयारी शुरू कर देते हैं ताकि पाँचवें साल तक पास करते- करते वह पूरी तरह तैयार हो जाए । यह ऋषभ भी उसी आईआईटी दिल्ली में थे जहाँ माहौल भी था और आपके ख्वाब उसका हरदम पीछा करते हुये उसे उत्प्रेरित भी कर रहे थे । यह कोई आम सामान्य सी नौकरी तो है नहीं जिसको करने या न करने पर विचार किया जाए । यह नौकरी तो देवत्व आरोपित करती है और समाज आपको मात्र इस परीक्षा के पास करने पर ही एक महानायक का दर्जा दे देता है । ऋषभ जिस तरह के थे और जिस माहौल में रह रहे थे , वह उससे अनजान तो न रहे होंगे , तब ऐसा क्या हो गया जो उन्होंने परीक्षा नहीं दी ।

आंटी - अनुराग , बहुत रात हो गई है , अब तुम सो जाओ । अब जो स्वर्ग नुमाइश के लिये ही सजाया गया हो न कि भोगने के लिये , जिसके क्रिस्से ही

कहना बाकी रह गया हो , एक शायर जो एक- दो गीत गा लेता हो और वह गीत भी कोई भावना का उभार न ला सके उन सबका ज़िक्र क्या करना । मैं अपने दुःख से खुद घायल हूँ और जो यह जो तख़्लीक़ है उसका ख़ालिक़ कौन है यह तुम जानना चाह रहे , काश मुझे पता होता मेरे ख़बाबों पर पीछे से वार किसने किया ।

क्यों एक शोकगीत सुनना चाहते हो तुम ? तुम्हें पता है यह ? शोकगीत लिखने वाले जल्लाद नहीं होते वह अपने क़त्ल की दास्तान म़क़तल में लिखते हैं ।

पर अनुराग ख़बाब कभी मरते थोड़ी हैं । वह तो नूर हैं , मंसूर हैं । इसमें सिकंदर और सुकरात भी हैं । सिकंदर चाहता है जीतना जहाँ तो सुकरात कह रहा मेरे तरह से जीत , इस जीत का मज़ा ही कुछ और है । जिस्म की मौत से कभी ख़बाब मरते नहीं । मेरे पति ने जितने ख़बाब देखे थे वह सब मेरे साथ हैं । तुम आ गए हो मेरे ख़बाबों को सहेजने के लिये ।

चलो अब रात बहुत हो गई , कल का सूरज नई उम्मीदें लेकर आएगा , यही सोचकर मैंने एक-एक दिन ज़िंदगी का काटा है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 69

मैं उठ कर अपने कमरे में आ गया । रात बहुत हो चुकी थी । बाहर पूसा कैम्पस दूर-दूर तक फैला था । आंटी का घर बहुत अच्छी जगह पर स्थित था । हर कालोनी में कुछ घर थोड़ा बेहतर होते हैं । वह खुले होते हैं और उनकी लोकेशन बेहतर होता है , ऐसा ही घर आंटी का था । यह हो सकता है कि अंकल का नेचर और प्रतिष्ठा इस बेहतर घर को पाने में मदद की हो ।

आंटी को अंकल ने पढ़ा दिया था , इसलिये आंटी क्लर्क होने से बच गई । जैसे ही मैं सोचता हूँ , यह दुर्घटना अगर मेरी माँ के साथ हुई होती तो परिणाम सोचकर सिहरन आ जाती है । यह अपनी क्षमता से बेहतर काम पा गई और यह घर बचा ले गई । यह घर किसी क्लर्क को तो एलाट नहीं होता और हर जगह प्रतिस्पर्धा एवम् जलन होती ही है । यहाँ भी होगी ही और इस घर की चाहत तो बहुत लोगों को होगी ही ।

यह अंकल की प्रगतिशीलता एवम् दूरदृष्टि थी कि उन्होंने आंटी को प्रोत्साहित किया और वह पढ़ गई । यह पढ़ना इनको रोज़गार में तो मदद

किया ही किया साथ ही ऋषभ को पढ़ाने में भी मददगार हुआ होता । अगर मेरे नाना और उनके पिता परगतिशील रहे होते गाँव से बाहर भेजने को तैयार हुये होते तो उस गाँव की दो लड़कियाँ पीसीएस हुई होती । यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी जो उस गाँव के भाग्य में हो सकती थी पर नियति ने कुछ और ही लिखा था । मेरे ननिहाल में एक एसडीएम और एक डिप्टी एसपी हुए हैं । वहाँ से आज तक कोई आईएएस नहीं हुआ ।

मेरे मेंस पास करने का समाचार बहुत तेज फैला । मेरी माँ ने गर्व से यह समाचार हर ओर बताया । एक मेरे ननिहाल का टेम्पो वाला था , जो सवारी मेरे ननिहाल के पास के बाजार से इलाहाबाद के मानसरोवर टाकीज तक लाता था । उसी के द्वारा यह समाचार माँ ने नाना के पास भेजा था । मेरे नाना गाँव से शहर आए थे , मुझसे मिलने ।

वह बोले मेरी माँ से , “मैं इस दिन के लिये ही जीवित हूँ । मैंने बारह वर्ष तक माघ क्षेत्र में संगम के तट पर कल्प वास किया , चार धाम यात्रा की , सशिया दान दिया । मेरे सारे मनोरथ पूरे हो गये हैं , बस यह मुन्ना मुझे गर्व दे दे , मैं अंतिम यात्रा की तरफ शांति से प्रस्थान कर सकूँगा । ”

मेरी माँ ने कहा , “ नहीं बाबू अभी नहीं । आप मुन्ना का रौब देखकर जाओगे । इसका बंगला , इसका रुतबा , नौकर - चाकर सब भोगना बाकी है अभी । ”

मेरे नाना ने कहा , “ बिटिया यह हो जाए । यह समाचार ही बहुत है । यह हो गया समझो मैंने भोग लिया । ”

नाना ने मेरा माथा चूमा और कहा मेरी माँ से ,” बिटिया मैं तुमसे अपना एक राज साझा करता हूँ । तुम्हारे पति बहुत अच्छे हैं पर मैं तुम्हारा विवाह एक और बेहतर घर में कर सकता था । तुम्हारी माँ ने कई बार कहा मुझसे , तुमने उमिला का मूड काट लिया । उसके साथ ज्यादती की गई । ”

मेरी माँ का सारा दर्द छलक आया । वह आँखों के आँसुओं को रोकने की असफल कोशिश करते हुये बोली ,

“बाबू जो लिखा होता है परारब्ध में वह कहाँ मिट सकता है । यह मेरा नसीब था , जो मुझे मिला । मुझे जो कुछ दुःख - दरिद्र सहना था वह मेरे पूर्व जन्मों का कर्म था । बस आप आशीर्वाद दो मुन्ना सफल हो । यही एक आशा है हमारी सबकी । ”

नाना ने कहा , इसके बचपन में ही कहा था गाँव के पंडित जी ने यह चक्रवर्ती होगा । यह दस आदमियों को खिला कर खाना खाएगा ।
मेरी माँ का रोम- रोम परफुलित हो गया ।

मेरे नाना हम बेटी के बेटों - बेटियों को पैर नहीं छूने देते थे । वह कहा करते थे , “ तुम लोग मान- दान हो , तुम्हारे पैर छूने से हमें मुक्ति की प्राप्ति नहीं होगी । ”

मैं नाना के पास गया , मेरे अभिवादन के पहले ही उन्होंने आशीर्वाद रूप में कह दिया , “ हर ओर उजियारा तुम्हारे नाम का हो । एक मानक की स्थापना मेरे यहाँ भी और शुक्ला जी के यहाँ भी हो । ” हम लोग थे शुक्ला पर पता नहीं कब से शर्मा लिखने लगे थे मेरे पर पिता । यह कहते हैं कि उनके ज्ञान को देखकर शर्मा कहा जाने लगा था उनको तब से शर्मा सरनेम हो गया था । मेरे नाना ने कहा कि तुम्हारे बाबा गणित के विद्वान थे और पूरी तहसील में नाम था पर गरीबी थी आगे पढ़ न सके इसलिये मिडल स्कूल के अध्यापक होकर रह गये , पर एक अध्यापक के तौर पर अच्छा नाम कमाया था उन्होंने । ”

नाना की उत्सुकता थी यह जानने को कब होगा इंटरव्यू, किस तरह होगा , कहाँ होगा , क्या तैयारी होती है ?

मेरी माँ की आँखों में एक ऐसी चमक थी जो एक अलग आभा अपने में समाहित किये हुये थी । वह चमक अपने पुत्र के पराक्रम और अपने पिता के चेहरे पर उभर रहे गर्व से मिलकर प्रकाश पा रही थी । माँ जितना जानती थी उसी में कुछ अपनी समझ मिलाकर कहानी की शक्ल में बात कहनी शुरू की । मैं बैठा सिर नीचे किये सुन रहा था ।

मेरे नाना मेरे यहाँ का पानी भी नहीं पीते थे । यह मान्यता मेरे गाँव के क्षेत्र में थी कि कन्या के यहाँ का अन्न- जल ग्रहण नहीं करना चाहिये । मेरी माँ इसका इंतज़ाम रखती थी और पड़ोस के घर से नाना के लिये चाय - नाश्ता- खाना आता था । यह प्रक्रिया बहुत दिनों से चली आ रही थी , अब तो मेरा रुतबा मेरे घर की ड्योड़ी पर चढ़कर बोल रहा था , हर कोई अवसर की तलाश में था किस तरह से संबंध बेहतर बन सकें और यह एक सुनहरा अवसर था , पड़ोस के दो घरों से नाश्ता- चाय आ गया ।

मैंने पूछा नाना से अब मैं चलूँ , वह बोले थोड़ी देर और बैठो । मैं तुमको मन भर कर देखना चाहता हूँ । यह जो तुमने किया , वह हम लोगों के परिवेश के

लिये अकल्पनीय है । हमारे गाँव का एक ठाकुर डिप्टी एस पी हुआ , एक मुसलमान एसडीएम । वह दोनों रौब से गाँव आते हैं । मेरा पूरा गाँव इकट्ठा हो जाता है देखने को जीप उनकी , जब वह आते हैं । मेरे अपने बेटे न तो इस काबिल थे न ही मेरे बेटों के बेटे । यह तुम्हारा समाचार जब से फैला है , हर कोई कह रहा जहाँ से यह दोनों लोग नौकरी ख़त्म करेंगे वहाँ मुन्ना पाँच - छह साल में पहुँच जाएगा और यह दोनों उसके अधीन काम करेंगे ।

ठाकुर साहब के पिता मिलने आए थे और कहा था , बहुत बड़ा काम हुआ है मेरा बेटा तो इस परीक्षा को दिया ही नहीं । मुन्ना तुम आना अपने ननिहाल , तुम नहीं आए बहुत दिनों से । मेरा दुआरा भी तर जाएगा । माँ ने कहा , “ बाबू यह ज़रूर जाएगा , इंटरव्यू देकर आ जाए , भेजूँगी इसको ।

नाना ने कहा , अब हमारा संबंध भी बड़े आदमियों से होगा । इसके विवाह के लिये बड़े- बड़े रिश्ते आएँगे । यह सुपात्र ब्राह्मण परिवार का है , सुशील और चरित्रवान है । इस पूरे अबरा-डबरा का अकेला आईएस है । यह तो अब इलाके के हर मानिंद आदमी की चाहत होगी कि उसकी कन्या का पाणिग्रहण मुन्ना से ही हो ।

मेरी माँ ने लगे हाथ मेरे मामा की इच्छा से अवगत करा दिया कि वह अपने साले की बेटी के लिये कहना शुरू कर दिये और भौजी भी आयी थीं एक बार यही कहने । नाना कोई आम चीज़ न थे । वह कई साल सरपंच रहे हैं । उनको बोलने की कला बखूबी आती थी । वह उड़ती चिड़िया का पंख पहचान भी लेते थे और वह पंख किस ओर जाएगा यह जान भी लेते थे ॥ उन्होंने कहा , “ मेरे पास भी आए थे और इंजीनियर साहब की काली कमाई का बखान कर रहे थे । मैंने सोचा कि यह बखान एकाएक कैसे ? पर थोड़ी ही देर में अपने अंदर की बात कह दी । यह भी कहा , ” उर्मिला आपकी बात नहीं काटेगी , आप कहेंगे तब वह मान जाएगी । मैंने इंजीनियर साहब को वचन दिया है कि विवाह अपने भांजे से आपकी बेटी का करा दूँगा । मेरी बात ख़ाली नहीं जानी चाहिये । ”

मेरी माँ का दर्द छलक गया । वह बोली “ बाबू मेरे संघर्ष, मेरी पीड़ा को कोई नहीं जानता । मेरी समस्या पर कोई ख़ड़ा नहीं हुआ । यही बच्चा बीमार था , कोई झाँकने नहीं आया । मैं ही जानती हूँ , कैसे मैंने जीवन के साथ निभाया है । इसी बच्चे से कहा था उन्होंने , पहले क्लर्की की नौकरी ढूँढ़ लो , बाद में कलेक्टरी करना । यह बहुत दुःखी था उस दिन । इसके अंदर की जल रही आग को हवा देने के बजाय उस पर पानी गिरा रहे । अब उनके बच्चे कुछ ख़ास नहीं कर पाए तो वह सबके बच्चों से जल रहे । जब वक्त था तब बच्चों पर ध्यान देने का तब तो मशगूल रहे अपने में , कुछ तप किया होता , त्याग

किया होता बच्चों के लिये । । यह बच्चे पालना भी एक साधना है । यह सबके बस का नहीं है । अब जब मेला लुट गया उनका तब दूसरे की दुकानों पर नज़र लगा रहे । “

नाना ने कहा , वह सब बाद की बात है । अभी तो बस इसका इंटरव्यू अच्छा हो जाए , परिणाम पक्ष में आ जाए ।

मैंने बाहर खिड़की से देखा , चाँद ऊपर चढ़ा हुआ । वह पेड़ों के और कैम्पस के अंदर हर ओर अपनी मौजूदगी दर्ज कर रहा । मैं ठोकर खाकर गिरने में सिद्धहस्त हूँ पर मेरे और औरों में फ़र्क यही है कि मैं गिरकर सँभल जाता हूँ और लोग गिरकर उठने में वक्त लेते हैं । एक गरीब घर में रौशनी चाँद के निकलने से ही है वरना अँधेरा ही उसके नसीब में है , पर यह चाँद भी बस दरवाजे तक ही आता है उसके अंदर की रौशनी के लिये चिरागों को ही मनाना पड़ता है । मेरा पूरा परिवेश अब चाह रहा दरवाजे तक तो रौशनी आ गई है अब इसे घर के भीतर लाकर सदा- सदा के लिये स्थापित हो जाना चाहिये ।

मुझे नींद नहीं आ रही । मेरा मन अब इलाहाबाद वापस जाने का कर रहा । अभी तक़रीबन एक महीने से ज्यादा का समय मेरे पास है अगली प्रारम्भिक परीक्षा का । मैंने जिस तरह की प्रतिभाएँ देखी हैं यहाँ इंटरव्यू के समय वह सब इलाहाबाद के स्तर पर बीस लग रहीं मुझे । यह लगने लगा मुझे कि मेरा होना आसान नहीं होगा इस बार । मैं इस रण के दूसरे वर्ष के बारे में सोचने लग गया । एक बात मेरे को खाये जा रही थी , मैं कैसे सामना करूँगा इतनी बेउम्मीद आँखों का परीक्षा के बाद जिनकी आँखों में एक उम्मीद की मशाल मैंने जलायी है ।

यह सोचते - सोचते मेरी आँख लग गई । आंटी सुबह की चाय के साथ आई । आंटी का मेरे बगैर मन नहीं लगता था । वह मेरे साथ ही रहना चाहती थीं । एक अकेलापन जिसका आतंक उसके घर में भी था और मन के अंदर भी वह आतंक मेरी मौजूदगी से कुछ कम हो गया था । मेरे होने से आंटी को हर सुबह भी एक उम्मीद होती है और हर शाम को भी । एक नाउम्मीद की ज़िंदगी में कुछ दिन की उम्मीद आंटी भरपूर जी लेना चाहती थी । उसने न्यूज़ पेपर दे दिया और कहा आधे घंटे में नाश्ता बन जाएगा , आ जाना जब मन करेगा ।

मैंने सिर हिलाकर सकारात्मक जवाब दिया । मैं नाश्ते के टेबल पर आंटी के साथ उसके बनाए पराठे , सूजी का हलवा , आलू मटर टमाटर की सब्ज़ी खा

रहा था । आंटी ने पूछा , “ सब ठीक बना है न ? ” मैंने कहा , “ आंटी आप एक अच्छा रेस्टोरेंट चला सकती थी । ”

आंटी हँसने लगी और कहा अब क्या करना और किसके लिये करना ।

आंटी ने कहा , “ अनुराग एक बात पूछूँ ? ”

मैं - हाँ ज़रूर ।

आंटी - तुम्हारा किसी लड़की से कभी लगाव हुआ ? कभी तुमको कभी किसी ने ख़बाब में जगाया ?

मैं - आंटी , यह सब बड़े लोगों के चोचले हैं । मुझे कौन ख़बाब में जगाएगा । मैं खुद अपना ही ख़बाब देखूँ और खुद ही भूल जाऊँ यह तो हो सकता है पर कोई ख़बाबों में आकर कहे , उठ मुझे तेरा इंतज़ार है , यह सब हमारे लिये नहीं है ।

आंटी - क्यों ?

मैं - आंटी मेरे पास क्या है ऐसा जो कोई मुझे देखकर आकर्षित हो । एक सामान्य सी कद - काठी , सामान्य सा चेहरा , एक निम्न मध्य वर्गीय परिवेश , न कोई भाषा न कोई ऐसा स्मार्टनेस जो लोगों को लगे , कुछ बात है इसमें ।

आंटी - क्यों कहते हो यह? तुम्हारी भाषा मुझे सम्मोहित करती है । यह किसी को भी अंदर तक छू जाए । यह संस्कारों की पोटली है तुम्हारे पास । एक अलग रौब है आपके पूरी भाव भंगिमा में ।

मैं - आंटी , यह हिंदी है । इसका कोई पैरोकार नहीं है । एक अच्छी हिंदी बोलने वालों से लोग कहते हैं , “ थोड़ा हिंदी बोलो यह समझ नहीं आ रही मुझको जो तुम बोल रहे । ” यह लोग गर्व से कहते हैं , मुझे हिंदी थोड़ा कम आती है । एक हमारे विश्वविद्यालय की सुरुचि मिश्रा है । वह भी इंटरव्यू दे रही । हर ओर उसकी चर्चा है । हर कोई कह रहा वह मानक स्थापित करेगी । इसका एक बड़ा कारण उसकी अंग्रेज़ी है । वह बहुत अच्छा बोलती है अंग्रेज़ी । भाषा के स्तर पर जैसी वह अंग्रेज़ी जानती है वैसे ही मेरी हिंदी है , यह भी हो सकता है मेरा भाषा ज्ञान बेहतर भी हो । पर उसकी अंग्रेज़ी के सब दीवाने मेरी हिंदी मेरे ही अंदर सिसक रही ।

मुझे अंग्रेज़ी नहीं आती , यह मैं सरे आम कहता हूँ । मैंने बीएससी के बाद एमएससी इसलिये भी नहीं की क्योंकि मुझे अंग्रेज़ी लिखना नहीं आता था । मैंने अपना फ़िज़िकल केमिस्ट्री का पर्चा बीएससी में हिंदी में लिखा था ।

अगर मैं एमएससी करता तब सिविल सेवा अंगरेजी में मजबूरी में देनी पड़ती । मैंने साइंस छोड़ दिया । मैंने इतिहास और हिंदी साहित्य सिफ्ऱ इसलिये लिया कि इसमें हिंदी माध्यम में काफ़ी सामग्री उपलब्ध है पढ़ने के लिये ।

आंटी - उम्र के साथ तो यह भावनाएँ आती ही हैं । यह एक नैसर्गिक प्रक्रिया है ।

मैं - आंटी आपकी बात सच है पर मैंने एक बिलखती हवाओं के साथे में जीवन काटा है जहाँ हर पत्ता शजर का ज़ख्मखुर्दा है और खौफ़ है परिंदों के मन में पेड़ के कट जाने का जो पेड़ पर बैठे हैं । यह मेरी ही हालात नहीं है, यह बहुतों की है जो मेरे तरह का परिवेश रखते हैं । अब ऐसे माहौल में मैं किस ख्वाब से कहूँ तू ठहर जा मेरी आँखों में । मेरी आँखों में कोई ठहर भी जाए तो क्या वायदा करूँगा मैं उसके अरमानों से ।

आंटी - अनुराग तुम्हारे पास एक बात की दक्षता है, तुम अपनी भाषा अपनी अभिव्यक्ति से किसी को भी रूला सकते हो । यह उर्मिला का भाग्य है तुम मिले उसको, वह किनारों से लिपट कर रो सकती है, चट्टानों पर सिर पटकने के रास्ते पर बीच में तेरी आवाज़ ढाल बन जाएगी । मैं किसे आवाज़ दूँ? किस तरह आवाज़ दूँ?

एक न ख़त्म होने वाला एकाकीपन मैं अपनी ही ज़िंदगी में भोग रही हूँ । यहाँ सब कहते हैं, यह बहुत मजबूत है, किसी को क्या पता मैं अंदर ही अंदर ध्वस्त हूँ बस किसी तरह ईंटों को जोड़ रखा है मैंने ताकि किसी को न दिखे दरार पर दरार अनगिनत दरार जो बन चुकी है मेरे अंदर । मैं एक मचान पर चढ़ तो गई पर सीढ़ी को गिराकर पर उसमें आग लगा दी गई और मैं उन लपटों के बीच जीवन का संघर्ष कर रही । मैंने अपने ख़रगोश की तरह दौड़ने वाले ख्वाबों के लिये बहुत से घरोंदे बनाए थे पर उन घरोंदों में कोई रहने न आया, वह घरोंदे मेरे ही सामने मेरी ज़िंदगी की व्यर्थता की बात कर रहे । मेरे कदमों के घिसटन जो निशाँ बना रहे उसे मैं स्वयम् ही नहीं देखना चाहती ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 70

नाश्ते के टेबल का माहौल गमगीन हो गया था । आंटी जितना ही मुझको देखती और समझती जा रही थी उतना ही वह और दुःखी हो रही थी । वह यह

समझ कर भी कि ऋषभ और मेरी परिस्थितियों में फर्क है , वह हकीकत स्वीकार नहीं कर पा रही । उसको हमेशा यही लगता है कि ऋषभ परीक्षा देता उसके सपने भी पूरे होते और वह उसके पास ही रहता ।

ऋषभ के पास विकल्प थे पर मेरे पास क्या विकल्प था ? मैं एक सरकारी नौकरी के अलावा और क्या कर सकता था । मेरी शिक्षा में ऐसा कुछ न था जिससे मुझे कोई काम मिल सके । मैंने कोई रोज़गारप्रक शिक्षा तो ग्रहण न की थी । मेरी शिक्षा मुझे सिर्फ़ एक सरकारी नौकरी की ही ओर ले जा सकती थी , वह चाहे कलर्क की हो या आईएएस की । यह हालात मेरे ही नहीं , इलाहाबाद में कमोबेश सबके थे ।

इलाहाबाद में एक अपवाद जे के इंस्टीट्यूट था जहाँ से लोग बी. टेक. करके कुछ अलग कर सकते थे , पर वहाँ भी लोग इसी काम में लगना चाहते हैं । जे के इंस्टीट्यूट वालों में भी कई थे जो इस परीक्षा में प्रयास करना चाहते थे । उनके साथ एक समस्या यह है कि उन्हें दो वैकल्पिक विषय नहीं मिल पाते । यह बाधा बड़ी है उनके साथ । इलाहाबाद की हवा में सिविल सर्विसेज़ की अफ्रीम मिली है । यह सबको मद मस्त किये रहती है । राजेश प्रकाश को ही देखो , आईआईटी कानपुर से सिविल इंजीनियरिंग पढ़कर इसमें पिछले चार सालों से लगे हैं और हर साल विषय ही बदल देते हैं । आईटी बीएचयू से अजय सिंह पढ़कर आए हैं , वह भी इसी काम में । जय प्रकाश श्रीवास्तव मोती लाल नेहरू मेडिकल कालेज से एमबीबीएस करके लग गए इसी काम में ।

यह इलाहाबाद का शौक है इस परीक्षा को देना । आप जिससे भी पूछो सब यही कह रहे “सिविल दे रहे ” । सिविल बोलना नहीं आता पर कह रहे “देबै त सिबिलै ” । क्या ऋषभ इलाहाबाद में होता तब वह यह फ़ैसला लेता जो उसने लिया ? क्या वह इलाहाबाद की हवाओं की मादकता से बच पाता ? इलाहाबाद का विद्यार्थी जहाँ भी गया हो उसने कमोबेश परीक्षा यह दी ही है ।

आंटी के अरमान इलाहाबाद से संचालित थे और ऋषभ के आईआईटी दिल्ली से । रंजन अग्रवाल ने बताया था कि आईआईटी में तीसरे साल से ही एक विभाजन हो जाता था । उस विभाजन के बाद एक भाग सिविल सर्विसेज़ की परीक्षा तरफ़ मुड़ जाता था तो दूसरा विदेश की महानतम शिक्षा संस्थानों का वज़ीफ़ा पाने का प्रयास करने लगता था । ऋषभ ने दूसरा रास्ता चुना और लगता है कि आंटी की कोशिशों के बाद भी वह न माना ।

आंटी ऋषभ को बचपन से संचालित कर रही थी और जब संचालन की ओर थोड़ा कमजोर पड़ी तब ऋषभ ने फ्रैसला अपनी मर्जी से लिया, पर ऐसा होता कम ही है कि इतना आज्ञाकारी बेटा एकाएक संवेदनहीन हो जाए। आंटी वह बताने से परहेज़ कर रही कि क्या कारण थे जो इतना बड़ा फ्रैसला ऋषभ ऐसे संस्कारी लड़के ने माँ की इच्छा के खिलाफ़ ले लिया।

यह सच है कि उसकी परिस्थिति थोड़ा अलग थी। उसके पास और भी विकल्प थे। उसने इस दूसरे विकल्प को देख-समझ कर चुना। यह फ्रैसला कोई आवेश में लिया फ्रैसला तो है नहीं। यह एक सोचा समझा फ्रैसला है। यह गलत फ्रैसला था या सही, अब इसका फ्रैसला करना तो आसान है नहीं। जीवन का हर फ्रैसला परिस्थितियों से सापेक्षता रखता है वह निरपेक्ष नहीं होता।

मेरे पिता ने एजी आफ्रिस की नौकरी से ही गुज़ारा किया। उनकी परिस्थिति न थी परीक्षा देने की या क्षमता न थी या दोनों ही स्थितियाँ न थीं। मेरे बाबा और पर बाबा गणित के एक जानकार कहे जाते हैं पर वह गाँव ही रह गये क्योंकि शहर उनकी पहुँच से बाहर था। वह दोनों ही पराइमरी, मिडिल स्कूल के अध्यापक के सहारे जीविका बिता गये। यह सब परिस्थितियों के अनुसार ही चले, यहीं क्यों तक़रीबन सभी ही चलते हैं।

मैं अगर गाँव में रहता, यह शहर की आबो - हवा न मिलती तब क्या यहाँ तक की यात्रा कर सकता था? चिंतन सर के साथ ख़ास बात थी उनका हाई स्कूल, इंटर की परीक्षा का बेहतरीन परिणाम। वह वज़ीफ़ा हमेशा पाए, वह हरदम उत्साहित रहे। मेरे पास ऐसा उत्साह न था कभी। मैं संघर्ष कर रहा था अपने हर एक दौर में। मैं ख़राब विद्यार्थी तो न था पर कोई चमत्कारिक प्रतिभा न थी। मैं औसत से बेहतर विद्यार्थियों की श्रेणी में आता था। मैंने कभी प्रयास ही नहीं किया कि मैं कक्षा में टाप कर जाऊँ। यह प्रयास क्यों नहीं किया?

मुझे हमेशा लगता था कि मेरी कक्षा में बहुत जहीन-जहीन लोग हैं और उनसे पार पाना आसान नहीं होगा मेरे लिये। मेरा मन भी बहुत नहीं लगता था पढ़ने में। मेरे घर की गरीबी के कारण घर का वातावरण अशांत रहा करता था। मेरे पिताजी चाहते थे अपने घरवालों की मदद करना पर मेरी माँ को इससे ऐतराज हुआ करता था। यह मध्य एवं निम्न मध्य वर्गीय परिवारों की समस्या है कि घर में एक व्यक्ति थोड़ा बेहतर होता है और पूरे परिवार का बोझ उस पर आ जाता है। यहीं से आरंभ होती है एक संघर्ष गाथा जो परिवार में न

ख़त्म होने वाले तनाव को जन्म दे देती है । एक उहापोह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और व्यक्ति अपने पिता- माता , भाई-बहन बनाम पत्नी-पुत्र-पुत्री के आत्मिक वाद- विवाद में लिप्त हो जाता है । यह सब लोग उसके भीतर प्रवेश कर जाते हैं और उसके अंदर ही यह सब लोग अपना पक्ष रखने लगते हैं । इन सबकी ख़ाहिशों का बोझ से दबा व्यक्ति असमय वृद्ध हो जाता है और किसी को संतुष्ट नहीं कर पाता , यहाँ तक कि वह खुद भी असंतुष्ट रहता है और अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में यह स्वीकार करता है कि मैं हर ओर से असफल रहा ।

मेरे पिता का भी तक्रीबन यही हाल है , मेरी माँ अपने ससुराल के मुद्दे पर कोई भी मौक़ा उलाहना देने का नहीं छोड़ती । मेरे पिता के पास सिवाय सुनने के और कोई रास्ता ही क्या हे , अगर एक भी वाक्य प्रतिरोध का निकाला तो साक्षात रण - चंडी माँ के मस्तक पर सवार । स्थिति नियंत्रण में रहे , घर में शांति बनी रहे , शाम का खाना चैन से न सही पर किसी तरह नसीब हो जाए इन सारी बातों का ध्यान रखकर मेरे पिता परिपक्वता दिखाते हुये आये हुये तूफान को एक पेड़ की तरह नहीं एक घास की तरह नम्र होकर गुजर जाने देते थे ।

वह पेड़ बनने का एकाध बार प्रयास किये थे पर तूफान ने पेड़ की जड़ों को हिला दिया था । वह जड़ से हिला हुआ पेड़ अब घास बनकर ही रहना चाहता था । मेरे घर में मेरे चाचा के बच्चे , मेरे पिता के तरफ के लोग कम आते थे पर मेरे मामा के बच्चे , मेरे मामा के साले , मेरी मौसी के बच्चे डेरा जमाये रहते थे । मेरे चाचा कभी- कभार आते थे पर यह फटफटिया वाले मौसा जी जब देखो धमके रहते थे । मेरे मुहल्ले के बदमाश लड़कों ने कई बार उनकी फटफटिया की हवा निकाल दी थी , एक बार उनके कार्बोरेटर का तार निकाल दिया था । इस तार निकालने की घटना के बाद मुहल्ले में मौसा जी ने बहुत हल्ला भी किया था जिसका ख़ामियाज़ा बाद में मेरी माँ को झेलना पड़ा था । वह दरवाजे पर आते ही हल्ला करते थे , “ शर्मा जी कहाँ हो , क्या हो रहा ? ”

ऐसा आवाज़ देते थे जैसे कोई आनंद भवन ऐसा मकान है सब कहीं खो गये होंगे । यह ले देकर चार कमरे का मकान बीच का एक आँगन । इसमें अंदर घुसोगे तब दिख ही जाएगा ।

मौसा जी पता नहीं कौन सी विलायत से पढ़े थे । वह यही सीएमपी डिग्री कालेज से बीए पास किये थे , पर यह अपना अंगरेज़ी ज्ञान बहुत बघारते थे । यह बिजली विभाग के मीटर में हेराफेरी करने वाले बाबू थे पर ऐसा पोज मारते थे कि वह बहुत बड़े अफ़सर हैं और पूरा अंगरेज़ी साहित्य बाँच मारा हो । बीए

में जिस गाँव के लड़के ने अंगरेजी ले ली , समझो वह पगला गया । वह गाय-भैंस से अंगरेजी में ही बात करेगा । वह भैंस नहीं बोलेगा वह बफेलो बोलेगा । यह इन्द्रधनुष देखकर बोलेगा , “ वहाट ए रेनबो ” ।

वह यह भूल जाता है कि उसने इन्द्रधनुष के रंगों को कक्षा 9 में “ बैनीआहपीनाला ” से रटा था । इसको “ VIBHGYOR ” से याद ही नहीं हो रहा था ।

मेरे मौसा जी भी ऐसे ही थे , “ बैनीआहपीनाला ” से “ VIBHGYOR ” की यात्रा करने वाले । मेरे पिताजी ने कभी बता दिया था मुझसे कि यह अंगरेजी रो धोकर पास किये थे और बड़ी मुश्किल में सेकेंड डिवीजन बना पाए थे बीए में । मेरी मौसी बोलती थी , “ पांडे बहुत ही तेज थे पढ़ने में और अंगरेजी ऐसी बोलते थे कि इनके सीनियर अफसरों के हाथ से सिगरेट गिर जाती है । ”

मैंने इसको थोड़ा बदल कर बना दिया था कि वह सिगरेट गिरी नहीं होगी बल्कि इनके मुँह पर दे मारा होगा यह कहते हुये क्या बेसिर पैर कि अंगरेजी बोल रहे हो । इनको अंगरेजी बोलने का शौक था पर जब वह अंगरेजी बोलते थे तब उनका चेहरा ज्यादा बोलता था भाषा की तुलना में । जब वह अंगरेजी बोलते थे तब उनके चेहरे से उनके अंदर की यंत्रणा साफ़ झलकती थी पर मानना होगा बंदे को इतना दर्द पर कोई उफ़ निकल जाए ।

दूसरे महान नायक थे मेरे मामा । वह फ्राड शिरोमणि । वह सच बोल दें तो आप समझो आज तो सूरज पश्चिम से उगा । अहंकार की पराकाष्ठा थी उनके पास । किसी की इज्ज़त उतार लेना बाएँ हाथ का काम था । ईर्ष्या से वह लबालब थे । अगर गली का कुत्ता भी पेट भर खा कर आ जाए तो कहेंगे , “ यह बहुत मोटा गया है मारो इसको चार डंडा । ” वह मेरे पिताजी और मौसा जी दोनों पर चढ़े रहते थे । वह पूरे परिवार पर हाबी रहते थे । एक बात तो सच है जिसको गल बजाना आता हो उससे कौन जीत सकता है । यह उसमें माहिर थे और झूठ बोलने में इनकी दक्षता थी । अगर झूठ पकड़ा गया तब ज़ोर- ज़ोर से चीखना और हल्ला करना । सब यही कहते थे कौन इनके मुँह लगे ।

अब वह कुछ सुपरवाइजर टाइप की चीज़ थे , मेरे पिता एजी आफिस में बाबू , मेरे मौसा बिजली विभाग में बाबू । अब बाबू पर अफसर भारी ही होगा चाहे छोटा अफसर ही क्यों न हो । एक फ़र्क और था । मौसा जी मीटर में हेरा फेरी करके थोड़ा-बहुत ऊपरी कमाई कर लेते थे , मामा जी थोड़ा दिलेर थे वह

हेरा फेरी में ज्यादा तेज थे । इसलिये इन लोगों के आर्थिक हालात बेहतर थे मेरे घर की तुलना में । मेरे पिताजी के पास एजी आफिस में कमाई का स्कोप न था इसलिये वह ईमानदारी की डफली लेकर बजाते रहते थे । वह थोड़ा उरपोक थे इसलिये सामने कम बोलते थे पर पीठ पीछे बोलते थे ।

मौसा जी , मामा जी का रहन - सहन भी बेहतर था । भरष्टाचार का पैसा डयोढ़ी पर चढ़कर बोलता है । गाढ़ी कमाई के पैसे में धैर्य होता है और भरष्टाचार का पैसा उच्छृंखल होता है । वह दूध के उफ़ान की तरह होता है उसे बहना ही है । यही था मेरे मामा जी के साथ । वह सिल्क का कुर्ता, परमसुख की धोती पहनेंगे । चलो आप ने पहन लिया पर हर जगह उसको गाने की क्या ज़रूरत ? वह यह कहने से नहीं चूकेंगे कि यह परमसुख की धोती है , मूँगा सिल्क का कुर्ता है । वह सिल्क का कुर्ता कपड़े धोने के साबुन में नहीं लक्स के चूरे में साफ़ होगा । पूरा साफ़- सफ़ाई पर ज़ोर होगा , घर में क़ालीन बिछेगी , सारी काली कमाई वालों का महिमा गान होगा ।

मेरी माँ से थोड़ा कम बनती थी उनकी । मेरी माँ स्वभाव की खर थी । वह जो सच है बोल देती थी । वह उनकी शेखी कम बर्दाश्त करती थी । मेरे मामा कभी - कभी मेरे नाना से बहस कर लेते थे , वह मेरी माँ को पसंद न था । मैंने अपने अनुभवों से देखा है बेटी बाप से लड़ भी जाए पर कोई उसके पिता की तरफ़ आँख उठाए तो वह उसकी आँख निकालने को तैयार हो जाती है । मेरी माँ का यही हाल था । उसकी एक व्यथा थी कि मेरा विवाह ठीक नहीं किया गया पर वह अपने पिता के प्रति समर्पित थी और उसने एक बार मामा से बहस कर लिया था इस बात पर कि वह बाबू से ऊँची आवाज़ में बात क्यों करते हैं । मेरी मामी ने सामने तो कुछ न कहा था पर पीठ पीछे तलवारें खिंची थी । मेरी मामी ने मेरे यहाँ आना बंद कर दिया था और मामा भी थोड़ा कम आते थे ।

ऐसे ही समय में ईश्वर ने चमत्कार कर दिया । मैं मेंस पास कर गया । अब शतरंज की बनी बनायी बिसातें उलट पुलट हो गयीं , घोड़े ने ढाई घर चलकर वज़ीर को मार दिया । शह और मात का खेल रिश्तेदारियों में नये सिरे से सज गया । घोड़ा ढाई घर चलकर शांति से बैठ गया अपने खानें में और सारी मुहरें नये तरीके से शतरंज के खानों को गिनने लगे । गिड़गिड़ाने वालों के हाथ में एक औज़ार आ गया और एक टूटा हुआ रथ नये पहिये पा गया । लबों को चूम कर आँखों की पुतलियों पर एक नया ख्वाब नहीं बल्कि बहुतों की ख्वाहिश रहा ख्वाब ताबीर बनकर दामन में उतरने को मचल रहा । शोर शबनम के गिरने का संगीत बनकर उस पुराने मुहल्ले के बोसीदा मकान में जो दो सालों से पोता न गया हो गूँजने लगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 71

मेरा अकेलापन मुझे बहुत परेशान करता है । मैं अपने आप से ही बात करने लगता हूँ । जैसे- जैसे दिन बीत रहा वैसे- वैसे तनाव बढ़ रहा । अगर कहीं मैं इस बार की परीक्षा में सफल न हुआ और अगली साल की प्रारम्भिक परीक्षा में ही फेल गया तब ?

यह ख़्याल आते ही पूरे शरीर में सिहरन दौड़ने लग गई । यह वाक़्या ताराचंद में हो चुका है । एक अशोक सिंह थे । जब परिणाम आया तो अशोक सिंह का नाम पेपर में छपा था । पूरा रात जश्न चला । रात वह सोये अशोक सिंह आईएएस के रूप में । उनके शुभचिंतकों ने कमरे के बाहर हाथ से लिखकर नेम प्लेट चपका दी ..

“अशोक सिंह आईएएस

मिलने का समय - सायंकाल 4 बजे ।

कृपया वक्त ले कर मिलने आयें । आपका और हमारा सबका समय महत्वपूर्ण है । किसी आकस्मिक समस्या के लिये अविलंब पीए से संपर्क करें “

अशोक कुमार सिंह ने कहा भी , “ यह क्या लगा दिया । अभी तो बहुत समय है इसमें । ” लोग बोले , “ सर समय जाते कितनी देर लगती है । अब यह तो करना ही है । हम लोगों की खुशी के लिये लगा रहने दीजिये । हमारा भी भाग्य है , आप ऐसे प्रतिभावान का साथ मिला । ” रात में ही नोट्स की लुटायी चालू हो गई । हर कोई उनके नोट्स और किताब पर दावा ठोकने लगा । वह सहदय होकर कहने लगे , ” भाई आपस में बाँट लो , मिल जुलकर काम चला लो । ”

पर सुबह का उजाला उनके लिये कालिमा लेकर आया । पेपर में देखा तो रोल नंबर किसी और का था । वह भागे यूपीएससी दिल्ली , पता करने को । वहाँ से बाबू ने डाट कर भगा दिया । वह बदहवासी की भाव-भंगिमा में जीने लगे । उन्होंने वह कमरे के दरवाजे पर लगा नेम प्लेट हटा दिया । पर शरारती और ईर्ष्यालु लोगों ने एक नया नेम प्लेट चुपके से लगा दिये ..

“ अशोक कुमार सिंह आईएस
मिलने का समय - हर वक्त
जीवन जनता के लिये । ”

ऐसे माहौल में प्रारम्भिक परीक्षा दिये अगले साल की और परिणाम निल बटे सन्नाटा । जब वह प्रारम्भिक परीक्षा का परिणाम कृष्णा कोचिंग में देख रहे थे वह वहीं मूर्छा में आ गए । अब वह किसी से नहीं मिलते । वह चाय सुबह पीने नहीं जाते । मेस से खाना कमरे में मँगाते हैं । हर छात्रवास में कुछ मानसिक रूप से अराजक तत्व होते हैं जिनका एक ही काम है मज़ा लेना । वह कहानी में प्रक्षेप्य जोड़ते रहते हैं । उनकी कहानियों का कोई अंत नहीं ।

“ सुना है बाबू अशोक सिंह आजकल नींद में ही बड़बड़ते हैं, मैं आईएस हूँ । भाई एक रात की तो सरकार बनी ही थी । वह चौधरी चरण सिंह हैं । शपथ ले लिया, बहुमत हो न हो क्या फ़र्क़ पड़ता है । ”

दूसरा कहेगा .. “ भाई हैं तो वह काबिल पर कौन क्रीमत करता है क्राबिलियत की । हुआ इनका ही था पर यूपीएससी में घालमेल चला । वह दूसरा अशोक सिंह अपना रोल नंबर लिखा गया, अब यूपीएससी में तो कोई दरांसपरेंसी तो है नहीं, एक गरीब का हक़ मारा गया । ”

तीसरा कहेगा .. ” बहुत अंगरेज हो गये हो । पारदर्शिता नहीं कह सकते थे, यह दरांसपरेंसी कहना ज़रूरी था । ”

दूसरा - भाई वह ठहरे अंगरेजी माध्यम के उनके लिये दरांसपरेंसी कहना ज़रूरी है, तुम्हारे साथ अन्याय होगा तब मैं पारदर्शिता कहूँगा ।

तीसरा - एक अन्याय से आत्मा शांत नहीं हुआ अभी और अरमानों का खून देखने का मन है ।

इसी में कोई बहुत ही खुरपेची और खखेरी होगा । वह कहेगा, “ हर कहानी एक शिक्षा देती है । कभी भी नाम बहुत चलता वाला मत रखो । अब यूनिवर्सिटी रोड पर ढेला मारो वह अनिल, संजय, अजय, अशोक, विजय में से ही किसी को लगेगा । शर्त लगा लो, आप ढेला मारो और जिसको लगेगा उसका नाम इन्हीं में से होगा । यह सिंह सरनेम तो लिखना ही नहीं चाहिये । इसको पूरी दुनिया चेपे है, जिसको कुछ समझ न आया वह सिंह ठोक बैठा । मैं अपने बेटे का नाम संस्कृत की किताब से लेकर आऊँगा । मैं रख दूँगा नाम वाचस्पति, संस्कार शिरोमणी, परश्न- उत्तर पांडे नहीं तो .. बुद्धम शरणम गच्छामि । ” कोई टंटा ही न रहे ।

इतने में कोई समझदार सीनियर आएगा और डॉटेगा, “ क्या मज़ाक़ बनाए रखे हो ? वहाँ वह रक्त के आँसू रो रहा और आप लोग को मज़ाक़ सूझी है । ”

फिर वही सीनियर कहेगा , “ ज़रा बताओ पूरा माजरा क्या था , मैं तो यार इन चक्करों में पड़ता ही नहीं । पर बताओ हुआ कैसे यह ? ”

फिर पूरा लंका कांड खुल जाएगा ।

कहीं मेरा भी यही हाल न हो जाए । मेरे माथे पर पसीना आ गया । धड़कनें तेज हो गईं । मैंने ध्यान हटाने के लिये कपड़ा तह करने लग गया । इतने में आंटी ने आवाज़ दी और पूछा लंच कितने बजे करोगे ?

मैं कुछ जवाब देता आंटी कमरे में आ गई और बोली कुछ ख़ास बना दूँ । उर्मिला ने जो जो लिखा था वह सब बना ही दिया है । कहो तो कढ़ी- चावल बना दूँ । वह तुमको बहुत अच्छा लगता है । मैंने कहा जो मन करे आप बना लो , मुझे खानें को लेकर कोई ख़ास दिक्कत नहीं है । जो भी मिल जाता है खा लेता हूँ ।

आंटी ने कहा , तुम परेशान होगे ना ?

मैं - किस बात को लेकर ?

आंटी - अपने रिज़ल्ट को लेकर ।

मैं - कैसे पता आपको ।

आंटी - यह कपड़ा बेसमय तह करना , यह माथे पर पसीने की हल्की सी तरावट , यह कागजों पर नंबर लिखना यह सब निशानी है तनाव की और यह स्वाभाविक भी है । ऋषभ ऐसा ही करता था । बोर्ड में तो सब सही करके आता था । उसके बावजूद भी नंबर लिखता रहता था । वह आईआईटी में टाप 40 रैंक चाहता था ताकि कम्प्यूटर साइंस कानपुर में सुनिश्चित हो जाए । अब आईआईटी में तो पता होता नहीं रैंक कहाँ जाएगी और कौन है प्रतिस्पर्धा में । इसलिये वह सारा दिन नंबर जोड़ता रहता था । मैंने कहा कि कोई बात नहीं रुक़ा की चले जाना , तेरे पिता का भी मन था वहाँ पढ़ने का पर वह बहुत ही महत्वाकांक्षी था । वह बोलता था , “ नहीं माँ ऐसी रैंक होनी चाहिये कि जो चाहो उस पर कोई सवाल न खड़ा हो । ”

मैंने कहा आंटी ऋषभ ऐसी प्रतिभा तो मेरे पास है नहीं । अब बगैर प्रतिभा के बड़ी महत्वाकांक्षा को पालना उचित नहीं । मैं जिस परिवेश में जन्मा हूँ, मैं वहाँ से बाहर निकलना चाहता हूँ । अब मेरे पास कोई ऋषभ की तरह के बहुआयामी रास्ते तो हैं नहीं । अगर यह नहीं कर सका तब क्या करूँगा, यह भी सोचना है । स्टाफ सेलेक्शन की परीक्षा दे सकता हूँ । मुझे गणित आती है । अंगरेजी तैयार कर लूँगा । सामान्य ज्ञान यूपीएससी के कारण तैयार हो ही गया है । मेरे लिये वह एक द्वार है जो जीविका दे सकता है । मुझसे सीनियर लोगों ने कहा है कि अगर आईएएस बनना है तो आप कोई और परीक्षा न दो । अगर कोई और परीक्षा दोगे तब आईएएस की परीक्षा में बाधा होगी । मेरे पिता बार-बार कहते हैं, तुम कोई और परीक्षा दो । तुम कोई नौकरी करो । यह घर सहयोग माँग रहा, कब तक मैं तुम्हारा बोझ ढोता रहूँगा । उनकी बात भी ठीक है । उनके पास बहुत बोझ है, पर मेरी भी समस्या है । आंटी मैं आईएएस बनना चाहता हूँ ।

यह आईएएस का पाठ्यक्रम एकदम अलग है, इसके साथ कोई और परीक्षा देना आसान नहीं है । यह इंजीनियरिंग कालेज और आईआईटी वाले इसलिये भी सफलता ज्यादा प्राप्त करते हैं क्योंकि वह यही एक परीक्षा देते हैं और हमारे इलाहाबाद में फार्म भरने की होड़ लगी है जो भी फार्म निकले भर दो । मैं इसी परीक्षा की तैयारी तक़रीबन दो साल से कर रहा शायद इसीलिये मैं पहले ही प्रयास में विधाता का आशीर्वाद यहाँ तक के दौर का पा सका । मुझे नहीं लगता कि अगर मैं इस साल के दिसंबर के बाद ज्यादा लंबा मैं यह खींच पाऊँगा । मेरे पिता बहुत ही परेशान हैं इस बात को लेकर कि मेरा भविष्य क्या होगा? वह हर सप्ताह कुछ असफल लोगों का नाम गिना देते हैं और कहते हैं किसी सामान्य नौकरी में जगह बना लो फिर देना । उनके एजी ऑफिस में आडीटर की जगह पिछले साल निकली थी । मैंने भरने से इंकार कर दिया था, इस पर अच्छा खासा हंगामा हुआ ।

मैं उनको कोई दोष नहीं देता, एक लड़का बेरोज़गार घर पर बैठा हो तो आँखों में गड़ता तो है ही । इस इलाहाबाद शहर में हर कोई यही परीक्षा दे रहा, पर होते तो विरले ही हैं । वह भी इसी विश्वविद्यालय से निकले हैं और इसी समाज में रह रहे, उनकी चिंता अकारण तो नहीं है ।

मैंने कोशिश बहुत की है अपने को तैयार करने की पर मैं कर क्या सकता हूँ उसके सिवाय जो कर रहा । अगर नहीं हुआ तब की समस्या तो है ही । मैं अगर 25 साल की उम्र पार कर गया तब स्टाफ सेलेक्शन कमीशन की परीक्षाओं लिये ओवर एज हो जाऊँगा । यह बात मेरे पिता बखूबी जानते हैं और मेरे 25 वर्ष की तरफ बढ़ते कदम उनका चैन छीन रहे । यह यूपीएससी

की परीक्षा एक भयावह आँधी की तरह है , आप कितना भी सँभालो पर छप्पर आपका कब उड़ा ले जाए पता नहीं चलता ।

इस समय तो मैं एक विजय रथ पर सवार हूँ , हर कोई मेरे पराकरम से निकले आलोक में मुग्ध है , रथ का पहिया दलदल में धूँसने तो दीजिये सब यही कहेंगे बचपन में मिट्टी के घरोंदे बनाने वाले ने महलों को बनाने का ख्वाब देखा था ।

आंटी , मैंने एक से बढ़कर महाबली के इस परीक्षा के अंतिम द्वार से वापस आने के क्रिस्से पिछले कुछ दिन में सुने हैं । संजीव टंडन ऋषभ की तरह जहीन हैं पर वह दो साल से वापस आ रहे । मेरे इलाहाबाद के चिंतन उपाध्याय, बदरी विशाल मिश्र कई साल से भटक रहे ।

बदरी विशाल घर से मज़बूत हैं और उनके बाबा का बहुत सपोर्ट है । चिंतन के पास यूजीसी की स्कालरशिप थी और वह किसी पर निर्भर न थे । मैंने वक्त पर ध्यान न दिया । मैंने शिक्षा एक रणनीति की तरह न की । मैं हमेशा से भ्रमित ही रहा । इंजीनियरिंग में मेरा हुआ नहीं और मैंने बेवजह बीएससी कर ली । सारा समय ख़राब किया । मुझे ऐसे हिंदी साहित्य से करना चाहिये था । मैं यूजीसी भी पा जाता और दूर दराज के इलाके में इंटर- डिग्री कालेज खुल रहे , कहीं न कहीं काम पा ही जाता । अब जीवन के इस मोड़ पर पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे हर ओर एक कालिमा ही कालिमा दिखती है । एक और राय लोग दे रहे कि हिंदी पत्रकारिता में अच्छे लोग कम हैं उसका कोई कोर्स कर लो । अब वह कोर्स इलाहाबाद में तो है नहीं , बाहर का खर्चा कौन उठाएगा ।

आंटी ने कहा तुम इतने निराश क्यों हो ? अभी तो रिजल्ट भी नहीं आया है । अभी पहला ही प्रयास है । इस बार न भी हुआ तो क्या हुआ , फिर कोशिश करना ।

मैं - आँटी आपको घर का माहौल नहीं पता है । वहाँ बहुत तनाव है । यह जो जीवन में कमी होती है , वह बहुत से तनाव फ़िज़ाओं में भर देती है । एक पूरे घर में तनाव है । मेरी माँ की शिकायत है कि मेरे पिता ने उनकी अनदेखी करके मेरे ससुराल के नालायक लोगों को पाला गया , मेरे पिता को अपराध बोध है कि उन्होंने अपने घर के लिये कुछ नहीं किया ।

यह सारी सोच यह सारी विचारधारा हमेशा तनाव पैदा किये रहती हैं । मेरे मेंस के रिज़िल्ट ने एक ऐसा वातावरण पैदा कर दिया है कि सारा मामला कुछ समय के लिये नेपथ्य में चला गया है । इन सबको ऐसा लग रहा है कि बस सारे दुःख- दर्द ख़त्म हो गये । मेरा विवाह होगा , दहेज में मकान मिलेगा , अकूल पैसा मिलेगा और जीवन की सारी समस्या ख़त्म । यह एक लाटरी का टिकट है , अगर यह चल गया तो बस वैतरणी पार । मेंस पास करने के बाद तो संभावना बढ़ भी जाती है । मेरे मामा ने अपने साले की बेटी का रिश्ता भरपूर दहेज के साथ पेश ही कर दिया है । यह इस बात का तो संकेत दे ही रहा कि आने वाला वक्त वह नहीं होगा जो बीता हुआ वक्त है ।

यह सारा मामला एक झटके में पलट जाएगा और अगली परीक्षा देना भी आसान नहीं होगा । यह प्रारम्भिक परीक्षा भी कोई आसान परीक्षा तो है नहीं । मैंने पिछले साल के जून के बाद से तो कुछ पढ़ा नहीं उसके लिये । अब रिज़िल्ट आएगा जून के पहले सप्ताह में और परीक्षा है दूसरे सप्ताह में । अगर खुदा न ख़ास्ता मैं वह परीक्षा पास न कर सका तब क्या होगा ?

मैं वापस साँप- सीढ़ी के खेल में नीचे ।

आंटी , मैं परेशान अपने परिवेश से हूँ । मैं करूँ क्या ?

मैं संघर्ष करना चाहता हूँ , मैं लड़ना चाहता हूँ , मैं गिरकर फिर उठना चाहता हूँ । मुझे परहेज़ असफलता से नहीं , लड़ने से भी नहीं है पर मेरी बाँहें तो खोल दो , मुझे लड़कर तो मरने दो ।

आँटी मैं एक भयावह स्थिति की कल्पना से सिहर जाता हूँ । मेरा इस साल का रिज़िल्ट मानो 1 जून को आया । मेरा नहीं हुआ । मेरी प्रारम्भिक परीक्षा 14 जून को है । वह पूरा घर म़क़तल की ज़मीं बन जाएगा । न दिखने वाले रक्त घर के आँगन में बह रहे होंगे । पूरे घर को ज़रूरत होगी एक सुलाने वाले की सैकड़ों लोग होंगे जगाने वाले यह कहकर , “काग़ज़ की नाव यह रेत पर नदी की तस्वीर बनाकर चला रहा था । ”

आंटी , मैं इस बात से उतना चिंतित नहीं हूँ कि मेरा होगा कि नहीं । मैं परेशान अपने न होने के बाद की प्रतिक्रिया से हूँ । मैं एक सामान्य सा आदमी हूँ । मेरा जन्म सबके अरमानों और ख़्वाहिशों के ही लिये नहीं हुआ है । मैं सबकी आँखों का ख़बाब लिख दूँ , एक नयी अलग दुनिया बसा दूँ । यह सब कैसे हो सकता है , वह भी पलक झपकते ही । यह परीक्षा एक लंबे दौर की परीक्षा है , कम से कम मेरे ऐसे सामान्य पृष्ठभूमि के विद्यार्थी के लिये । यह लंबा दौर कोई देने को तैयार नहीं , सबको तुरंत परिणाम चाहिये ।

मैं जानता हूँ अपनी क्षमताएँ, मैंने अकेले मैं बैठ कर अपने को मापा है । यह आईएएस की नौकरी ऐसी कुछ नहीं है जैसा हौवा सबने मिलकर बनाया हुआ है । यह एक नौकरी ही है बस थोड़ी सुविधाएँ ज्यादा हैं और परम्परा से चला आ रहा गौरव है पर हर एक को लगता है बस आईएएस हो गये इन्द्र का सिंहासन मिल गया ।

मैं यह भी जानता हूँ कि पता नहीं कितने आईएएस से उनके परिवार और रिश्तेदार के लोग असंतुष्ट हैं । सब कहते हैं, “ का फ़ायदा भवा इनके अफ़सर बनने से, करेन त कुछ नाहीं । हम जैसे पहले रहे वैसे अबहु । अपने बरे चाहे जैन करे होई, हमें तो कुछ नाहीं देखाय । ”

अब क्या दिखाया जाएगा । कौन सा सर्कस चालू कर दिया जाये कि सब लोग देखें कि आओ भाई जेमनी सर्कस लगा है देखो । यह जो ख़्वाहिशों का बोझ है यह जीने नहीं दे रहा । अब अगर कुछ कह दूँ तो एक लाइन है सबके पास, ” बनने के पहले यह हाल है तो बनने के बाद क्या होगा ? ”

यह एक परीक्षा है । इसको आप उसी तरह लो । उसकी सफलता-असफलता को एक संजीदगी से स्वीकार करो, पर यह तो इलाहाबाद है यहाँ बच्चा पैदा नहीं हुआ माँ के दूध के साथ आईएएस की घुटटी ।

आंटी आप कह रहीं ऋषभ ने ठीक नहीं किया पर क्या गलत किया उसने ? उसका मन लगता था जिस काम में वह उसने किया । वह विदेश जाना चाहता था वह चला गया । वह बड़े काम करना चाहता था वह कर रहा ।

आंटी तमक गई । वह बोली क्या बड़ा काम करेगा वह ज़रा बताओ मुझको ? यह डालर कमाना बड़ा काम है ? बताओ न किस तरह वह बड़ा काम है ? देश छोड़कर विदेश में बस जाना बड़ा काम है ? जिस देश ने तुमको बनाया उसको त्याग दो, यह बड़ा काम है ?

बताओ न मुझको, कौन सा बड़ा काम ऋषभ करेंगे सिवाय डालर कमाने के और करना भी क्या है उस डालर का । बताते हैं उनको कुछ डेढ़ लाख डालर उनकी पत्नी को एक लाख डालर मिलता है और काम करते हैं 16 घंटे । इस डालर का क्या करना ?

मैंने कहा उनका विवाह हो गया ?

आंटी चुप हो गई । पूरे कमरे में श्मशान ऐसी नीरवता ।

मैंने कहा ... आंटी

आंटी बोली बस बहुत हो गया

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 72

एक नीरवता मेरे और आंटी के बीच व्याप्त हो गई । आंटी ने जिस तरह हाथ उठाकर कहा था ..

“ बस बहुत हो गया ... “

आंटी की आँखों में एक तेज था यह कहते हुये , मैं सहम ऐसा गया ।

उससे एक बात निश्चित थी कि आंटी को कहीं अंदर तक मैंने आहत कर दिया था । यह उसका निजी मामला है , यह उसके अंदर का ज़ख्म है , यह उसकी एक पीड़ा है जिसके साथ वह जी रही । मुझे ज़ख्म की तरफ बढ़ने वाली हवाओं को रोकना चाहिये था पर मैंने तो और हवा दे दी । कुछ ज़ख्म इतने संवेदनशील होते हैं जो हवाओं के संवेग से ही बेहाल कर देते हैं , पूरे जिस्म को ।

एक व्यक्ति ने तप किया हो और तप का मनोवांछित आशीर्वाद प्राप्त भी हो जाए पर उसको भोगने से उसे वंचित कर दिया जाए , अब इससे बड़ा दंड विधाता और क्या देगा ? मैं थोड़ा बेवकूफ़ी तो करता ही हूँ । क्या ज़रूरत थी इस मुद्दे को छेड़ने की । मैं अपनी बात करता , बेवजह ऋषभ की बात मैंने शुरू कर दी । मुझे सियाह से भरे कथाओं के जंगल में जुगनुओं की जुबान को समझ कर जंगल को पार करना चाहिये था । यह ज़रूरी तो नहीं है कि हर क्रिस्से को जाना ही जाए । जहाँ रौशनी न हो और खाई होने का अंदेशा हो , वहाँ ठहर कर रौशनी का इंतज़ार करना बेहतर होता है ।

यह आंटी जो अपनी ही आग में जल रही उसे और जलाने की क्या ज़रूरत थी । यह घर में किसी की कोई तस्वीर नहीं लगाती । इस घर के हर सम्त से एक सन्नाटे का सैलाब उभरता है पर इसके लिये वह एक चीखता सन्नाटा है । यह अपने कान बंद कर लेती है ज़ोर से यह कहते हुये , “ मत चीख ऐ सन्नाटे मुझे खामोशी की आवाज़ बहुत सताती है । ”

ऐसा ही चीखता सन्नाटा मेरे और आंटी के बीच इस समय । मैंने धीरे से कहा , “ आंटी.... क्षमा करना शायद मैंने ठीक न कहा ”

आंटी ने चेहरा ऊपर उठाया ... दो मुक्तादल गालों पर लुढ़क गये ।
मैं आत्मिक ग्लानि में ।

आंटी ने कहा , “ मेरी कहानी दीवारों के साथे में सिमटने की कहानी है । मेरी कहानी मेरे ही नहीं मेरे उस पति के अस्मानों के बिखर जाने की कहानी है जिसकी आँखों से मैं ख्वाब देखा करती थी । मेरी आँखों में वह तौफीक न थी कि क़द और हैसियत से बड़े ख्वाब देख सकूँ ।

मैंने अपने पति की आँखों से ख्वाब देखकर ऋषभ की आँखों में भर दिये और उर्मिला तुम्हारी आँखों से निकले ख्वाबों के सहारे जीना चाह रही । तुम क्या-क्या बोल गए तुम्हें होश है ? माँ बेटे से उम्मीद न रखें तो किससे रखे ? अनुराग सोचकर बताओ मैं और उर्मिला किससे उम्मीद रखूँ ? मेरा पति चला गया और उर्मिला का पति काबिल नहीं ।

अब ख्वाहिश हो या ख्वाब वह कभी काबिलियत, हैसियत, परिवेश देखकर तो आते नहीं । यह सब सावन के झूले हैं, जो एक पेड़ पर लटक रहे हैं । यह पेंग लेते हैं न केवल अपने बल पर वरन् दूसरे छोर पर खड़े झूले वाले आदमी की ताक़त से । अपने - अपने झूले पर मैं और उर्मिला हैं और देख रहे दूसरी तरफ़ अपने - अपने बेटों की ओर जो हौसलों से लबालब है और मन कर रहा हमारा आसमानों को चूमने का और हम झूले पर चीख़ रहे यह कहते हुये और ज़ोर की पेंग लगा, मुझे क्षितिज को छूना है । बता इसमें गलत क्या है ?

एक जर्जर नाव लहरों से टकरा रही और तुम कह रहे हो पतवार से क्यों उम्मीद वह कर रही । यह पतवार की गलतफ़हमी है कि नाव उसके सहारे चल रही । ढूबने दो नाव को लहरों में पतवार का कोई अस्तित्व नहीं बचेगा । दिये में कितनी भी ताक़त हो क्या वह ब़ौर चिंगारी के जल सकती है ?

अनुराग ऐसा है , तू बहुत परेशान दिख रहा और तेरे अनुसार सारी परेशानी की जड़ वह लोग हैं जो तुझसे उम्मीद लगाए बैठे हैं और तुम एक पाक साफ़ निःस्वार्थ से परिपूर्ण धर्मात्मा हो । तुमको किसी से कोई उम्मीद नहीं । अपने अंदर झाँक कर देखो तुम , एक तेरे स्वार्थ से भरे मनःस्थिति की गर्म हवा निकलेगी और तेरा पूरा चेहरा झुलस जाएगा । तुझे ईश्वर का शुकरगुज़ार होना चाहिये , कोई तो है , तुझसे उम्मीद रखने वाला ।

तू देख मेरी तरफ़ , ठीक से देख । मेरी आँखों के नीचे के काले गढ़े तू देख । यह गढ़े मेरे जीवन की कहानी बताते हैं । इतना पैसा मेरे पास है कि मुझे ही नहीं पता । उनका जीपीएफ़ , उनकी बचत , इंश्योरेंस , मेरी तनख्वाह और न मेरा कोई शौक़ न कोई खर्च ।

ऋषभ इतना जहीन था कि वह वज़ीफ़ा पाकर काफ़ी अपने को सँभाल गया था । वह बहुत पहले आत्म निर्भर हो गया था । उसने जिन-जिन स्कूलों में पढ़ा वहाँ कोई खास फ़ीस वैसे ही नहीं होती थी और भैया स्कूल में इतिहास बनाता और तोड़ता था , इसलिये फ़ीस माफ़ भी होती थी और वज़ीफ़ा भी मिलता था । मेरे पति ने जितना बचाया था इसकी पढ़ाई के लिये वह खर्च ही नहीं हुआ और जब विदेश गया पढ़ने तब पूरी स्कालरशिप के साथ गया ।

मेरी आमदनी के स्रोत में अब एक और आमदनी ऋषभ का डालर पर डालर आन लाइन ट्रांसफ़र । पर मैं क्या करूँ उसका ? मैं शौक किसके लिये करूँ ? कौन है यहाँ मुझको देखने-निहारने वाला । मैंने अपने सारे कपड़े ज़रूरतमंदों में बाँट दिये । मैं कम से कम कपड़े रखती हूँ । यहाँ के लोग कह रहे आप कार खरीद लो , ऋषभ भी बोलता है , पर मैं करूँगी क्या? कौन है मेरे यहाँ आने वाला । आज न रहा अब मेरा मायका न मेरा ससुराल । मेरे जीवन में कोई क़ाफ़िला नहीं है । सब साथ चलने वाले एक-एक करके उम्र की रफ़तार के दरम्यान या तो पीछे छूट गये या कहीं भटक गए । मेरी ज़िंदगी के सारे रिश्ते एक बच्चे के दायरे में सिमट गई थी । वह चला गया , यह सिमटी हुई ज़िंदगी वीरान हो गई । अनुराग , ज़िंदगी में कोई चाहिये जो आपसे उम्मीद रखे , उसके बगैर ज़िंदगी पूरी नहीं होती ।

तुम देख रहे हो यह खिड़की , इससे दूर जुगनू दिखते हैं । मैं बैठकर यहाँ से उन्हीं जुगनुओं को देखती हूँ और दूर से आ रहा मद्दम-मद्दम उनका आभासी शोर कानों को संगीत देता है । यह आँख से उनको देखना , कानों में उनका संगीत और जाड़े की हवा बस यही मेरा जीवन है । पर वह नामुराद जुगनू भी कई बार बेवफ़ाई कर जाते हैं मुझसे । अब जब अपनों ने ही साथ निभाने से

इंकार कर दिया तब मैं उन जुगनुओं से शिकायत क्यों करूँ ? यह तो बेचारे अच्छे हैं वक्त- बेवक्त आ जाते हैं मेरा मन बहलाने ।”

आंटी शांत हो गई । उसकी शांति मुझे आत्म मंथन की ओर ले जा रही थी । मैंने ऐसा क्या कह दिया जो आंटी नाराज़ हो गई । मैंने तो यही कहा था लोग मुझे पढ़ने दे , मुझसे त्वरित सफलता की उम्मीद न रखें । मैं अपने को दिव्यास्त्रां- ब्रह्मास्त्रां से लैस करना चाहता हूँ । मैं एक पूरा युद्ध लड़ना चाहता हूँ । मेरे लहू के निशान धरती पर बनें न कि मेरे भागते कदमों के निशान । यहाँ सूरज का तेज सबको चाहिये पर रात के गुजरने का इंतजार कोई नहीं करना चाहता ।

मेरे पिता मुझसे हर दिन कहते हैं, “ नौकरी करो - नौकरी ढूँढो “ यह न कहे मुझसे ।

मैं उनकी अधीरता और उतावलेपन से परेशान हूँ ।

मुझे लगता है आंटी मेरी ऋषभ की तरफदारी वाली बात से नाराज़ हो गई । मुझे ऋषभ के विदेश जाने के मुद्दे को नहीं छूना चाहिये था । मैंने जो यह कहा कि ऋषभ ने वही किया जो उसे ठीक लगता था और यह एक उचित कदम है । यह शायद आंटी को अंदर तक आहत कर गया ।

वह इस बात को आज तक पचा नहीं पाई कि ऋषभ उनकी अनदेखी करके विदेश चला गया । यह तो सच है कि हर माँ बच्चे को सामने रखना चाहती है । जब मैं मेंस पास किया था तब मेरे मामा ने कहा था कि कैडर अगर उत्तर पूर्व का या दक्षिण का मिल गया तब तो घर से दूर जाना होगा । यह यूपी कैडर प्राप्त करने के लिये तो टाप टेन में आना ही होगा । कई बार टापर भी अपना कैडर नहीं प्राप्त कर पाते ।

कैडर के एलाटमेंट में “ इनसाइडर ” , “आउटसाइडर ” का कोटा सिस्टम है और यह पता नहीं होता कि किस वर्ष कौन सा कोटा प्रधानता प्राप्त करेगा । यह सुनकर मेरी माँ घबरा गई थी । वह कई बार समझने का प्रयास की और अंत में उसको यही समझ आया कि मैं अगर अंतिम रूप से सफल हुआ जैसा मैं चाह रहा तब भी यूपी कैडर पाने की संभावनाएँ ही हैं कोई निश्चितता नहीं है । उसने भगवती बाबू के बेटे का जलवा देखा था जो पीसीएस पास करके एसडीएम बने थे । उसे लगा कि अगर यूपी कैडर न मिला तब बेटा भी दूर जाएगा और वह जलवा भी न रहेगा ।

वह तो मिर्जापुर, फतेहपुर, परतापगढ़, रायबरेली में मेरी तैनाती देख रही थी, जहाँ से लाव लश्कर आता रहेगा इस पुराने गरीब मुहल्ले की गलियों में। माँ से पड़ोसी भी कहते थे, “अब तो हम भी देखेंगे लाल बत्ती की कार दुआरे पर खड़ी हुई। कभी हमको भी मिल जाएगा लाल बत्ती की कार में बैठने का सुख।”

मेरा गाँव मिर्जापुर के रास्ते में पड़ता था। मेरी माँ को लगता था कि अगर इसकी तैनाती मिर्जापुर में होगी तब तो गाँव जब चाहे यह आ जाएगा और यह कल्पित- संभावित- भविष्यत स्वर्जन मेरे पूरे गाँव में भी हिलोरे ले रहा था।

मैं बचपन में गाँव ज़ाया करता था, गर्मी की छुटियों में। वहाँ के गरीब बच्चों के साथ खेलता था। गाँव के ज्यादातर बच्चों का एक ही भविष्य होता है, ईंट के भट्टे पर मज़दूरी करना। ईंट के भट्टे के मालिक और माल के ढोनेवाले ठेकेदारों पर भी वह लोग अब अपनी श्रेष्ठता और धौंस बताने लगे थे।

ईंट का बोझ उठाते हुये उसमें से एक बोलता है, “अरे ठेकेदार साहब पता है, मुन्ना भैया शहर कोतवाल होई गयेन। अब पुलिस परेशान करे तब बताय हमें। तोहार काम तो हेरा- फेरी के रहबै करी। टरैक्टर में लाइट न बा। रोड टैक्स तो जमा करब न तू। जब हम गरीबन के मज़दूरी न देब ठीक से तब सरकार के टैक्स का देब। पर अगर पुलिस पकड़े तब बताय हमें। हमहिं तोहार जान- पराण बचैब।”

दूसरा कहेगा -“मोती तू रहि गये गदहा के गदहै। इही कारण से गदहिया गोल से ज्यादा स्कूल में पढ़ न पाए। हम हाई स्कूल पास नहीं कै पावा तो का भवा, हम पढ़े तो हई हाई स्कूल तक। शहर कोतवाल तो मुन्ना भैया के सलूट मारी। अगर सलूट ठीक से न मारेस तो समझ ल नौकरी ओकर गई। भैया कलेक्टर बनहीं। पुरा ज़िला के मालिक। इ जो भट्टा मालिक कामता परसाद और ई ठेकेदार साहब उनके अंडर में होइहें। ज़िला में जो रही वह उनके अधीन रही। ठेकेदार साहब अब तोहार खैर नाहीं। हमार पहुँच ऊपर तक बा। अब मज़दूरी क़ानून से तोहका देहे पड़ी, नहीं तो तोहार डिब्बा गुल।”

ठेकेदार - नचकऊ, मुन्ना भैया की धूम चल रही। अब सब कह रहे हम मुन्ना भैया को जानते हैं। हमने तो कभी न देखा कभी यहाँ। हाँ उर्मिला भाभी आती है, वह भी महीने - दो महीने में और जब फ़सल पकती है तब आती हैं अधिया की खेती कटाने।

नचकऊ - जब छोटवार रहेगे तब आवत रहेन । हम , बिकरमा, मोती , कल्लू सब सारा दिन साथ घूमत रहे और रजिया पर जामुन तोड़य साथ जात रहे । जामुन तोड़े और पेड़ पर चढ़े में भइया माहिर रहेन । इ मोतिया ओनकर पकका चेला रहा और बिकरमा सिखाये रहा पेड़ पर चढ़ना । चाची दौड़ाय - दौड़ाय पकड़ें ओनका पर ओनकर मन बस बगिया में और टहरै में लगे । भ भिंसार चल रजिया के ओरे ।

कक्षा दस के बाद आजब बंद होई गवा । साल- खांड में एकाध बार आवत हूँ अब । पर जब कभौ अझी तब सबके ढुंढ - ढुंढ के मिलहीं । बहुत मिलनसार परानी हैं भैया । मुन्ना भैया के छोट भाय आवत हैं । “

ठेकेदार - कब आये थे वह अंतिम बार , अगली बार आएँगे तब बताना ।

मोती - देख ल नचकऊ भैया , ठेकेदार साहब घबड़ाय गयेन । इनका गिरफ्तार कराउब ज़रूरी बा ।

ठेकेदार - चलो ईंटा भरो , जैसे तुम्हीं कलेक्टर हो गये ।

नचकऊ - “ अरे साहब हमार तकदीर तो इ ईंटा- गारा में बीत गई । पर खुशी तो बा न । अपने डेबरा का नाम अँजोर भवा । ”

ठेकेदार - भैया से कहकर नौकरी ले लेना सरकारी ।

नचकऊ - “ इ त पलानिग हइये बा । न कुछ होई भैया के बंगले पर ही पड़ा रहब । मोतिया अकेलै न निकल जाए , साथ में हमहूँ चलबै । ”

जब ऐसी उम्मीद गाँव के लोगों को हो जबकि अभी कुछ खास हुआ ही नहीं तब आंटी का अपने जहीन बच्चे से अलग रहने को मजबूर हो जाना , निःसंदेह बहुत ही कठिन लग रहा होगा ।

आंटी ने शांति को तोड़ते हुये कहा । तुम्हें बहुत उत्सुकता हो रही है जानने की कि सजदे में जो मशगूल रहा उसके साथ नाइंसाफ़ी कैसे हो गई ? मेरे यादों की उजली कोठरी में अँधेरा कैसे समा गया ? में अँधेरे की सड़क से भोर की ओर चलते- चलते कैसे गहरे अँधेरे में पहुँच गई ? मेरे खानाबदोश ख्वाब क्यों अब मेरी आँखों से परहेज करते हैं ।

अनुराग , हमने ताबीरों के ख़ातिर ख़बाब देखे थे । ताबीर आ भी गई पर वह नहीं जो मैं चाहती थी । जो ताबीर तुमने चाहा वह न मिली तो जो ख़बाब तुमने देखा वह फलित कहाँ हुआ । बहुत दिन तक हमने और ऋषभ ने एक ही ख़बाब देखे , पता नहीं कब उसने ख़बाब अपने मुझसे अलग कर लिये और मुझे पता ही न चला । जब ख़बाब हक़ीकत बने तब पता चला , रात के साथ मैं कभी माँ और बेटे एक दूसरे से जुदा हो गये थे । उसने जुदाई पूरे होशोहवास में की मुझसे और जब उसने कहा , “माँ हमारे ख़बाब अब एक न रहे ” तब मुझे इहसास हुआ जिसे मैं पाल रही थी अपनी आँखों में वह एक निर्जीव ख़बाब थे ।

यह नियति का मेरे साथ एक और धोखा था । मेरे पाँव के नीचे की ज़मीन बहुत पहले दलदल ले गया था पर मुझे इसका इल्म ही न था ।

यह मेरी डायरी है । काग़ज पर नज़्म उभरती हैं इस आशा से मेरी बात कभी उस तक पहुँच जाएगी । मैं जो डायरी मैं लिखती हूँ वह चिट्ठी में नहीं लिखती , उसको दर्द होगा यह पढ़कर । अनुराग तुम एक चिराग लेकर चल रहे । तुम उसके बुझने के डर से ख़फ़ज़दा हो । एक किनारे को देखो जो लहरों के आतंक से हर रोज़ लड़ता है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 73

आंटी आज पूरे आवेश में थी । मैंने उसकी एक दुखती नस पर ऊँगली रख दी थी । वह इस बात पर ख़फ़ा हो गई थी जो मैंने लोगों की उम्मीदों पर सवाल खड़े कर दिये । मेरे समझ में न आ रहा था , कैसे मैं इस मुद्दे को शांत करूँ । मेरी हालात अश्वत्थामा की तरह की हो गई , दिव्यास्तर चला तो सकता है पर वापस नहीं ले सकता । मैंने मुद्दा उठा तो दिया पर कैसे यह शांत हो , यह नहीं पता मुझको ।

मैं कुछ कहने की कोशिश करूँ इसके पहले ही आंटी बोल पड़ी , “ तुम जानना चाहते हो वह सच जो मेरे अंदर दफ़न होने को तैयार नहीं । मेरे अंदर कोई क्रब्बरगाह तो है नहीं जो भीतर ज़मीं के ख़त्म कर दे सारे राज । बस मैं यही कह सकती हूँ लफ़ज़ तुम रुक जाओ , कहाँ किसी के पास वक्त है तुम्हारे लिये । पर अगर तुम जानना ही चाहते हो तो लफ़ज़ अंदर की आग को निकालने को तैयार हैं , वह भी हैं इंतज़ार में कोई उनको कुछ समय तो दे । एक भयावह सन्नाटे का जंगल है यहाँ जो मेरे भीतर से निकल कर मेरे घर के

पिछले दालान से होता हुआ दूर पूसा के पिछले कैम्पस तक विस्तारित है जहाँ पर सिफ़र मेरे साँसों का शेर ही सुनाई देता है । तुम आ गए हो तो साँसों के शेर को भी तुम्हारे साथ से राहत मिली है । “

ऋषभ आईआईटी चला गया । वहाँ वह होस्टल में रहने लगा । मैं ज़ाया करती थी जब भी उसको देखने का मन करता था । वह शनिवार - रविवार आता था । मैं हर सिविल सेवा के पास होने वाले का इंटरव्यू पेपर में पढ़ती थी और पूरी किताब के नाम रट

गये थे मुझे । एनसीआरटी की कक्षा 6 से 12 तक की किताब सारे विषयों की । इतिहास की कक्षा 11, 12 की प्राचीन इतिहास में राम शरण शर्मा, मध्यकाल में सतीश चन्द्रा, आधुनिक काल बिपिन चन्द्रा, संविधान डीडी बसु, भूगोल एनसीआरटी, अर्थशास्त्र न्यूज़ पेपर से और कुछ भाग दत्त सुंदरम से । मैं एनसीआरटी सेल्स आफिस जाकर सब खरीद लाई । मैं आईआईटी जाती ही थी और जवाहर बुक स्टोर पास में ही था, वहाँ से भी जो भी समझ आया और जो जवाहर ने बताया, वह खरीद लिया ।

ऋषभ आया शुक्रवार की शाम उसने सारी किताबें देखी और बोला, “माँ तूने क्यों नहीं दी परीक्षा । तू तो हो ही जाती, इतनी रुचि है तेरी । मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त, यही हाल है हम दोनों का । मुझे परीक्षा देनी है पर सारी तैयारी तू कर रही ।”

उसने कहा, “अभी इसको होस्टल नहीं ले जाते हैं इन किताबों को, अभी पहला ही साल है लोग हँसेंगे अभी । वहाँ लोग तीसरे साल से शुरू करते हैं । मैं घर जब आऊँगा शुक्रवार की रात में तब दो दिन पढ़ूँगा, अभी के लिये इतना ही बहुत है । तूने कह दिया, मुझे आईएस बनना है अब तुम निश्चिंत रहो, परिणाम देना मेरा काम है । आज तक तो कभी निराश किया नहीं तब इसके लिये भी मुझ पर यक़ीन रख, तुझे आँसू बहाने का बहुत शौक़ है वह तेरा शौक़ बरकरार रहेगा, बस तू खुश होकर आँसुओं को गिरने दिया कर, दुःखी होकर गिरने वाले आँसू मुझे बेचैन करते हैं ।”

वह पूरी तन्मयता से शनिवार - रविवार पढ़ता था । उसने पहले ही साल की इंजीनियरिंग में वह सब पढ़ डाला जो मैं लेकर आयी थी और उसका मन भी लगता था पढ़ने में । वह मुझसे सब कुछ साझा करता था । उसने यह भी साझा किया क्या विषय वह लेगा । दो विषय चुनने पड़ते थे, वह कम्प्यूटर इंजीनियरिंग कर रहा था और कम्प्यूटर था नहीं सिविल सेवा में । उसने कहा एक गणित लूँगा उसमें नंबर बहुत मिल जाएँगे और दूसरा फ़िज़िक्स/ एनथरो/ मनोविज्ञान/ भूगोल में से कोई लेगा । यह सारे विषय उसने सिविल सेवा के

पिछले सालों के नंबर को देखकर लेने का विचार किया था । आईआईटी में एक फ्रायदा यह है कि हर साल बहुत लोग सेलेक्ट होते हैं, इसलिये पूरी परीक्षा का टरेंड पता चल जाता है । वह कहता था कि इंटरव्यू के नंबर का कोई भरोसा नहीं, कौन सा बोर्ड पड़ जाए और नंबर आईआईटी वालों को थोड़ा इंटरव्यू में कम मिलते हैं इसलिये लिखित परीक्षा में स्कोर करना पड़ेगा । वह बहुत स्मार्ट था, बोला कि भूगोल लोग बिरलियंट ट्यूटोरियल के नोट्स से पढ़ते हैं सब पर कापी अलग होने के लिये अलग पढ़ना और लिखना पड़ेगा । वह यहाँ तक रिसर्च कर लिया था कि साहित्य में नंबर अच्छे मिलते हैं तो पाली भाषा भी एक विकल्प है । उसी ने पता किया था कि किसी आईटी बीएचयू वाले ने पाली भाषा में बहुत नंबर पाये थे और भारतीय विदेश सेवा में वह गया था । उसने यह भी बताया कि एग्रीकलचर में भी अच्छे अंक प्राप्त होते हैं और अगर पापा देते तो वह हो सकते थे ।

मैंने कहा उससे, “ बेटा वह वक्त और दौर कुछ और था । सिविल सेवा में शामिल होने की उम्र कम होती थी और गाँव के लोगों को इसका पता नहीं होता था । उन लोगों को जब पता चलता था तब तक देर हो चुकी होती थी । वह शुरूआती दौर में ही नौकरी में आ गए थे और बहुत काम था यहाँ पर, इस काम से फुरस्त ही नहीं मिलती थी ।

इसलिये तुम कुछ मत करो । तुम किसी नौकरी के चक्कर में पड़ो ही नहीं, बस इसी की तैयारी करो । तुम्हारे पापा इतने समझदार थे कि वह हम सबका इंतज़ाम कर गये हैं, तेरी पढ़ाई और तैयारी में कोई समस्या नहीं आएगी । वह सब बात सुनता ही था । उसने अंततः फ़िज़िक्स ले लिया यह सोचकर कि नंबर मेंस में ज्यादा से ज्यादा आएँ । वह पहले दो साल तो ठीक चला । वह पढ़ता बहुत था । वह हरदम एक ही काम करता था, सिर्फ़ पढ़ना । इंजीनियरिंग के तीसरे साल से वह घर काम आने लगा । वह बोलता था कि असाइनमेंट बहुत हो जाते हैं जिनकों तैयार करना पड़ता है । मुझे भी लगा कि वह ठीक ही कह रहा है । इस इंजीनियरिंग की पढ़ाई में तो बहुत काम होता ही है । यहाँ साँस लेने की फुर्सत नहीं मिलती ।

मैंने एक परिवर्तन उसमें देखा, वह जब अब छुटियों में आता था तब वह सिविल सेवा थोड़ा कम पढ़ने लगा । उसका बग़ैर पढ़े मन लगता ही नहीं था । वह अब उपन्यास पढ़ता था । मैंने कहा भी, “ भैया यह क्या है, तुम सारा दिन उपन्यास ही पढ़ रहे, इसमें तुम्हारा मन ज्यादा लग रहा । कोई और कोर्स की किताब पढ़ो । “वह बोलता कुछ न था मेरे कहने पर । वह हर बात पर बोलता था, “ जी माँ ” । वही फिर कहा उसने ।

अनुराग , माँ की आँखों में बहुत ताक़त होती है । वह धूप का भी साया देख लेती है ।

एक बार मैं आईआईटी चली गयी जब वह न आया था वीकेंड पर घर । वह मुझे वहाँ न मिला । मैं काफ़ी देर इंतजार की उसका । मैं फिर वापस चली आई । वह अगले दिन घर आया और थोड़ा नाराज़गी दिखाई । उसने कहा , “ माँ मैं कोई बच्चा नहीं हूँ अब । आप बहुत परेशान हो जाते हो । मैं कहीं चला गया था । मुझे नहीं पता था कि आप आओगे । मेरे होस्टल में लोग कहते हैं कि ऋषभ अभी भी माँ काँ पल्लू पकड़े रहता है । ”

मैंने कहा , “ मेरा मन नहीं लग रहा था । रविवार का दिन था । सोमवार को भी मेरा आफिस बंद था । मैंने सोचा चलो तुमसे मिल भी आऊँगी और मन भी बहल जाएगा । अगर तुझे अच्छा नहीं लगता तो अब से मैं नहीं आऊँगी । ”

वह मेरी इस बात पर थोड़ा संयत हो गया और कहा , “ मैं यह नहीं कह रहा कि तुम मत आओ पर अब मैं बड़ा हो गया हूँ , हर आदमी को स्पेस चाहिये । मैं अब कोई प्राइमरी स्कूल में तो हूँ नहीं , जहाँ हर चीज़ संचालित की जा सके । ”

मैंने कहा , “ क्या कहा तुमने , तुमको स्पेस चाहिये ? मैं तुझको स्पेस नहीं दे रही ? यह बता पिछले 6 महीने मैं तुम कितना समय मेरे साथ रहे हो ? मैंने क्या दख़लांदाज़ी तुम्हारे जीवन में की है । तुम मन करता है वीकेंड में आते हो , मन करता है नहीं आते हो । आते भी हो तो शनिवार से ही जाने की बात करने लगते हो । रविवार का नाश्ता बमुश्किल करते हो ।

माना तुमको वहाँ ज्यादा समय चाहिये अपने असाइनमेंट और प्रोजेक्ट के लिये पर कुछ काम यहाँ से भी हो सकता है । ऋषभ , यह मैं नहीं कह रही तू मेरी उपेक्षा कर रहा या यह काम का एक बहाना तू बना रहा है पर जब बर्ताव बदलता है तो सवाल मन के अंदर खड़ा होना लाज़िमी है ।

वह कुछ न बोला , वह चला गया । मैंने भी कहना छोड़ दिया । मैं यह जानती थी कि वह इस काम को कर ही लेगा , जब भी चाहेगा । मुझे लगने लगा कि अगर मैं यह मुद्दा छेड़ूँगी तब एक तल्खी आ सकती है ।

एक दिन उसने कहा उसने , “ माँ मैं विदेश पढ़ना चाहता हूँ । ”

मैंने सुन लिया , पर कोई जवाब न दिया । उसने फिर कहा , “ माँ मैं विदेश पढ़ना चाहता हूँ । ”

मैंने जवाब दिया , “ मैंने सुन लिया है । मेरा इसमें क्या काम है । यह फ़ैसला तुमको करना है । अब तुम बड़े हो गये हो , जो ठीक समझो करो । मेरी जितनी समझ थी उतना मैं बता चुकी हूँ । ”

ऋषभ- माँ वहाँ जाऊँगा तब कुछ और नया देखने को मिलेगा । यहाँ तो इतना स्कोप है नहीं ।

आंटी - वहाँ अगर जाएगा तब परीक्षा कैसे देगा सिविल सर्विसेज़ की ?

ऋषभ- हाँ माँ ... वह नहीं दे पाऊँगा ।

आंटी - तुमने इतना बड़ा फ़ैसला कर लिया है । अब जब फ़ैसला सुना रहे हो तब सुन लेती हूँ फ़ैसला । तुम मुंसिफ़ भी हो और केस भी तुम्हारा, अब इसमें मेरा क्या काम ?

ऋषभ -माँ अगर तुम अनुमति दे

आंटी - अनुमति ??? किसकी ????

आंटी ने हाथ का इशारा भी क्या यह पूछते वक्त ।

ऋषभ -माँ तेरे से पूछ कर ही सारा काम किया है मैंने इसलिये यह भी

आंटी - पूछ कर करता था पर अब नहीं । यह बता तू अनुमति होती क्या है ?

क्या फ़ैसला सुना देना एक अनुमति की चाहत है ?

यह कह देना “मैं विदेश जा रहा “, एक अनुमति माँगना है ?

यह कह देना , “मैं आईएएस की परीक्षा नहीं दूँगा “, यह तेरी आकांक्षा है जिसपर तू पूछ रहा मुझसे ।

यह ख्वाब तीन लोगों ने देखे थे , तेरे पिता , मैं और तूने । हम तीनों ने एक साथ भी देखे और अलग- अलग भी । एक साझा ख्वाब तू तोड़ रहा और कह रहा , “ मुझे सपनों का क़त्ल करना है , मुझे अनुमति दो ।

यह सही नहीं है शायद । ज्यादा सही यह है कि मैंने सपनों का क़त्ल कर दिया है और लो उस लहू से तुम भी अपने हाथ रंग लो । मैं कह रही नहीं मुझे नहीं रंगने हैं अपने हाथ इस लहू से और तू कह रहा , “ माँ क़त्ल तो हो गया अब क्या करूँ मैं ? “

तूने पहले पूछा होता । मुझे पहले बताया होता , कम से कम कल का तो वह ख्वाब मैं न देखती । अब सवाल यहाँ परीक्षा देने और न देने का नहीं रह गया , वह तो फ़ैसला हो चुका है । अब एक नया सवाल मेरी परवरिश पर खड़ा हो गया है । मैं असफल रही उसमें । मेरा बेटा जिसको मैंने अपने सपनों में भी

जुदा नहीं करती थी उसका मेरे पर इतना विश्वास नहीं कि वह अपनी मन की बात मुझसे कह सके ।

मैं कोई गाँव में नहीं रहती । मैं पूसा इंस्टीट्यूट के कैम्पस में हूँ । यहाँ सब समझदार पढ़े - लिखे वैज्ञानिक ही रहते हैं । तुम अकेले यहाँ से आईआईटी और विदेश नहीं जा रहे । तुमसे पहले भी कई गये हैं । वहाँ जाने के बाद क्या हुआ है, यह मुझे बताने की कोई ज़रूरत नहीं है । वह डालर कमाने की मशीन बन गए हैं । यह तू भी जानता है । मैं उनकी माँओं के बारे में सोचती थी, कैसा संस्कार दिया है, इतनी क्राबिलियत इसके बच्चे के पास और बच्चा देश छोड़ रहा जबकि देश को इसकी ज़रूरत है । मेरे पास जीपीएफ का विभाग था । लोग आते थे जीपीएफ एडवांस लेने और बच्चे विदेश जाते समय पैसा लेकर जाते थे उस जीपीएफ का । मैं कहती भी थी, देश में क्या कमी है? यहीं रहने दो । कुछ फ़र्ज़ देश के लिये भी बनता है ।

सब यही कहते थे, “बच्चा है पढ़ना चाह रहा । भेज देते हैं, पढ़कर वापस आ जाएगा ।”

मेरा अनुभव कहता है, विरले ही वापस आए बाकी सब वहीं कह गए । मैं हर बार सोचती थी मन में, ऋषभ तो यहीं रहेगा, कहीं नहीं जाएगा । आज लग रहा मैं कितना बड़ा झूठ अपने से ही बोल रही थी । मैं किस भुलावे में ज़िंदा थी ।

सुनो ऋषभ, तुम मत दो आईएस । तुम आईआईटी में प्रोफेसर बन ही सकते हो । तुम कम्प्यूटर इंजीनियर के टापर हो । तुम देश को हज़ारों काबिल कम्प्यूटर इंजीनियर पैदा करके दोगे । अगर बगौर विदेश गए तुम्हारी क्राबिलियत में हिजाफ़ा नहीं हो रहा तो कोई बात नहीं, तुम चले जाओ ।

तुम छोड़ दो यह सब आईएस का खेल- तमाशा और कह दो मेरी आँखों में आँखें डालकर, तुम कार्नेल यूनिवर्सिटी से पढ़कर आओगे वापस और यहीं आईआईटी में प्रोफेसर बनोगे । मैं यह स्वीकार नहीं कर सकती कि तुम विदेश जाकर डालर कमाओ और भूल जाओ देश को । मेरे संस्कार मुझे यह स्वीकार करने से रोक रहा । यह हो सकता है यह मेरे पुरातनपंथी संस्कार हों और आज की नयी पीढ़ी के लिये अजनबी हों पर अगर तुझे यह स्वीकार्य नहीं है तो तुझे मेरे संस्कारों के लिये किसी नायाब मक़तल की तलाश करना पड़ेगा, जहाँ पर संस्कारों का रक्त ज़मीन पर न गिरे । यह संस्कार रक्त-बीज हैं अपने ही गिरे रक्तों से नया जीवन बना लेते हैं ।

मुझे यह तो बता तुम क्यों विदेश जाना चाहते हो? तुमने कभी न कहा, एकाएक पूरा प्लान बता दिया कि कौन सी यूनिवर्सिटी है, कौन सा कोर्स है,

क्या स्कालरशिप है । यह फ्रैंसला रातों - रात तो हुआ नहीं होगा । इसकी तैयारी कई महीनों से चल रही होगी, पर तुमने मुझे कोई हवा ही न दी ।

ऋषभ- माँ, तुझे यह विदेश जाना मेरा पसंद न था, तुम मुझे आईएस बनाना चाहती थी, मुझे लग रहा था कि यह नौकरी मेरे लिये नहीं है । यह कैडर का झंजट, यह नौकरी की आंतरिक समस्या, यह दो साल की पढ़ाई... यह सब मुझे जँच नहीं रही थी ।

आंटी - बताया तो होता । तुम कह देते नहीं कर सकता यह काम मैं । मैं तो इसलिये कह रही थी कि मैंने बचपन से यही देखा । हर साल पेपर में पढ़ती ही हूँ कि आईआईटी के लड़के ने कौन - कौन सी रैंक प्राप्त की इस परीक्षा में । मुझे लगा तुम भी यह कर लोगे । अब अगर नहीं करना है तो कोई बात नहीं, पर यह विदेश जाने की पूरी प्लानिंग, वह भी बाहर कुछ बताये

मेरे कुछ समझ न आ रहा । अब फ्रैंसला कर ही लिया तब मैं क्या कहूँ । तुम ज़हीन हो, समझदार हो । यह फ्रैंसला सोच- समझकर ही लिया होगा । यह क्या जाना है ?

ऋषभ - अभी माँ डेट फ़ाइनल नहीं हुई पर अभी दो महीने का वक्त है ।

आंटी - कोई बात नहीं, दो महीना बीतने में कितना दिन लगेगा ।

अनुराग, अंगुलियों से तराश कर नाम जिसका किसी कागज पर लिखती थी मैं,

जो ख्वाब मुझसे एक दीवानगी की हद तक मेरी आँखों की पुतलियों से लिपटे रहते थे वह सब कुछ एक झटके में बिखर गया । कफ़स के पंछी की तरह मेरी वह सारी ख्वाहिशें फ़ड़फ़डाने लगीं जो कभी खुले आसमां में उड़ती थीं । मैं फिर से एक टूटे दर्पण की तरह हो गई जो बिखरा है और कह रहा मुझको केई क़रीने से जोड़ दे ।

मैं ढूँढ़ रही उसके जो कुछ न करे ज़ख्मे - दिल का सुन ले दर्द- साज । उस साज मे बहुत से दर्द टूटे तरानों के सिसकते स्वर मिलेंगे । मैंने पुराने राहों पर चलने की आदत छोड़ कर नए मील के पत्थरों को खोजने लग गई ।

मैं सबकी आँखों का ख्वाब लिखना चाहती थी उसके सहारे, एक अलग दुनिया बनाना चाहती थी, उसके सहारे ।

मैं देखे गये ख्वाबों से एक कायनात का सूजन करना चाहती थी , पर वह उसे मंजूर न था जिसने मेरी तक्रदीर पर कलम चलाई थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 74

आंटी शांत हो गई थोड़ी देर के लिये । यह शांति बहुत ही बेचैन करने वाली थी । आंटी ने पूछा तुमको गुड़ अदरक की चाय अच्छी लगती है न ?

मैंने कहा कि माँ ने यह भी लिखा क्या?

आंटी - कल उर्मिला का एक और ख़त आया उसमें लिखा था उसने यह ।

मैं - हाँ, रात में देर तक पढ़ता था मैं । यह गुड़ अदरक बेहतर लगता है और ताज़गी देता है । यह स्वास्थ्य के लिये बहुत बेहतर होता है , आप आज़माएँ । मैं चाय भी नहीं डालता , सिफ़्र गुड़ और अदरक ही पीता हूँ ।

आंटी - एक बात और उर्मिला ने लिखी , तुम खिड़की से पैर बाँध देते थे सोने के पहले । ऐसा क्यों?

मैं - आंटी , हमेशा नहीं बाँधता था , कभी- कभी बाँधता था , सप्ताह में दो दिन । मैंने मिथक कथाओं में पढ़ा था कहीं कि ऋषि दो दिन घनघोर तपस्या करते थे और बाक़ी पाँच दिन सामान्य । मैंने वहीं से यह सूत्र लिया और दो दिन बहुत पढ़ता था ।

आंटी - बहुत से तुम्हारा क्या मतलब है ?

मैं - मैं उन दो दिनों घर से बाहर बिल्कुल ही नहीं जाता था । मैं अपने कमरे में ही रहता था । रात की नींद को भी सँभालता था ।

आंटी - कितने घंटे पढ़ते होंगे उन दो दिनों में ?

मैं - तकरीबन 13/14 घंटे प्रतिदिन ।

आंटी - बाक़ी दिनों में ?

मैं - 10 घंटे तो पढ़ता ही होऊँगा । इस परीक्षा का पाठ्यक्रम बहुत ही बड़ा है , इससे कम में न होगा । कम से कम मेरे ऐसे सामान्य से एकेडमिक बैक ग्राउंड के छात्र से तो न होगा ।

आंटी - तुम्हारा क्या मतलब है “सामान्य से एकेडमिक बैकग्राउंड से ?”

मैं - आंटी मैं ऋषभ की तरह जहीन नहीं हूँ । मैंने कभी टाप- वाप तो किया नहीं । मेरी वह क्षमता भी न थी । मैं बहुत ही सामान्य से स्कूलों में पढ़ा हूँ । उन स्कूलों में पढ़ाई होती थी पर वह बड़े स्कूलों की तरह न थे । उन स्कूलों में भविष्य की कोई बात नहीं होती । सुबह आओ दिन में जो पढ़ा दिया गया ,

वह पढ़ लो और शाम को घर जाओ । यह इंजीनियरिंग, डाक्टरी, सिविल सेवा आदि का कुछ पता नहीं होता था ।

आंटी - तुमको सिविल सेवा के बारे में पहली बार कब पता लगा ?

मैं - मैं हमेशा स्कूल से घर पैदल ही आता था । मेरे घर में और स्कूल में तक्रीबन 3 किमी का फ़ासला था । मैं ही नहीं, मेरे साथ के ज्यादातर बच्चे पैदल ही आते थे । सब एक झुंड बनाकर आते - जाते थे । मैं कक्षा 9 के अंतिम महीनों में रहा होऊँगा । मेरे साथ चल रहा लड़का कमल तिरपाठी बहुत ही जहीन था और उसके पिता सरकारी महकमे के किसी ठीक-ठाक पद पर थे । रास्ता पार करते हुये बच्चे अमूमन बात करते ही हैं, हम लोग भी कर रहे थे । उसने पूछा, “

क्या जिंदगी में करने का इरादा है ? ” मैंने कहा 9 पास हो जाए, अगले साल बोर्ड दे दें इसके आगे का तो कुछ नहीं सोचा । उसने कहा सोचो ।

मैं - तुम क्या करोगे ?

कमल तिरपाठी- मैं आईएएस बनना चाहता हूँ ।

मैं - यह कैसे बनते हैं ?

कमल - यह एक परीक्षा है जो तीन स्तर की है और पास करने के बाद मसूरी जाते हैं ट्रेनिंग के लिये ।

मैंने पूछा इसमें क्या- क्या होता है ? उसे सब पता था । उसने पूरे रास्ते विस्तार से बताया । फिर मैं हर दिन उसके साथ पैदल आने लगा और इस परीक्षा का क्रिस्सा सुनने लगा । वह जिस तरह बताता था, मुझे सम्मोहन इससे होने लगा ।

कक्षा 9 का परिणाम आया । वह कक्षा में प्रथम आया, मेरे अंक बहेतर न थे । मेरे कक्षा के प्रधान अध्यापक ने पाँच छात्रों से कहा कि तुम लोग मिलकर जाना । हम लोग रुके मिलने के लिये । उसने हमारी मार्कशीट देते हुये सलाह दी कि आप लोग विज्ञान छोड़कर कला वर्ग में चले जाओ । उस समय जीआईसी इलाहाबाद का बहुत नाम था । स्कूल अपने रिजल्ट को लेकर सजग रहता था । यूपी बोर्ड में पोज़ीशन आती ही थी और स्कूल का छात्र टाप करे इस प्रयास में छात्र- अध्यापक सब लगे रहते थे । शायद हम पाँच विज्ञान में बहेतर न थे, इसलिये ऐसा कहा गया ।

मैं बहुत निराश हुआ, पर विज्ञान ही पढ़ा । मैंने माँ से भी पूछा यह आईएएस क्या होता है ? उसने बताया जो वह जानती थी और मेरे मामा का एक बेटा जो मुझसे बहुत बड़ा था वह यह परीक्षा देने लगा और मेरे मामा ने उसको

समय पूर्व आईएएस घोषित कर दिया । यह परीक्षा बड़े - बड़े सूरमाओं को ध्वस्त कर देती है तो मेरे मामा के बेटे तो काग़ज़ी शेर थे । वह हवा के सहारे ऊपर उठ रही दरिया की तरंग को समुद्र की सूनामी समझ रहे थे । एक कमजोर से मुँह के फूँक से बजायी गयी बंसी की आवाज़ कब तक संगीत की स्वर लहरियों को बिखेरती वह भी जब विपरीत में सिफ़ोनी के आर्केस्ट्रा के कलाकार स्वर लहरियों को अपने अथक अभ्यास के सहारे फैला रहे हों । उन्होंने प्रारम्भिक परीक्षा में फेल होने का कीर्तिमान बना डाला पर मेरे मामा गाल बजाते रहे बस वह होने वाला है ।

उसी समय मैंने हाई स्कूल पास किया था । मैं इंटर में गया था । वह तीन-चार साल का हंगामा बना गये थे पूरे परिवार में कि एक महानायक आने वाला है । उनका प्रभाव और मेरा उदय एक साथ हुआ । वह इस क्षेत्र से हटे और मैं प्रवेश करने लगा इस दंगल में ।

मेरा भी कोई आसान प्रवेश न था । मैंने एनडीए , सीडीएस के माध्यम से सेना में कमीशंड आफ़िसर बनना चाहा पर लिखित परीक्षा पास कर लेता था , लेकिन इंटरव्यू में नहीं हो पाता था । मुझे अंग्रेज़ी लिखने और बोलने में असहजता होती थी । सेना का इंटरव्यू और साइक्लोजिकल टेस्ट अंग्रेज़ी में होता था । मैंने कई बार प्रयास किया पर सफल न हो सका । वह मेरे लिये निराशा के क्षण थे वहाँ से असफल होकर वापस आना । मेरे घर के हालात यह चाह रहे थे कि मैं कोई नौकरी प्राप्त करके घर में

सहयोग करूँ । मेरे पिता बहुत जल्द चाहते थे मुझसे नौकरी करवाना , मेरी माँ उतनी उतावली न थी । अब यह घर में एक बहस का विषय था और तनाव पैदा कर कहा था । मेरे बस में जितना था उतना मैं कर रहा था । यहाँ आप ऋषभ को जी जान से आईएएस बनाना चाह रहीं , वहाँ मेरे घर में एक ही रट किसी तरह तुम नौकरी करो ।

मेरे मन में मेरे अपने पिता के प्रति सम्मान कम होने लगा । यह किसको अच्छा लगेगा कि दिन - रात एक ही बात नौकरी करो - नौकरी करो , वह भी तब जब आपकी उम्र अभी कुछ खास न हो । मैं अठारह साल का हुआ तब से यह नाटक आरंभ हो गया । मेरा किसी इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश न पा पाना मेरा सारा सुख- चैन छीन ले गया । मेरे पिताजी के एक सहकर्मी का बेटा आईआईटी चला गया और दूसरा मोतीलाल इंजीनियरिंग कालेज इलाहाबाद । यह उनको बर्दाश्त नहीं हो पा रहा था ।

यह जो माता- पिता बच्चों के परिणाम की बेवजह तुलना करते हैं अपने आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये यह एक बड़ी समस्या है । अब आप जीवन में कुछ न कर पाए तो उसके लिये मैं क्या करूँ ? आपके पड़ोसी का बेटा 94% पा गया और आपका 92% तो यह 2% आपसे बर्दाश्त नहीं हो रहा आप अपने बच्चे की ज़िंदगी नारकीय किये हो । वह खुश है अपने 92% से पर आप उसको खुश नहीं रहने देंगे ।

कमल तिरपाठी के पिता , वह आईआईटी वाले का पिता और वह मोतीलाल इंजीनियरिंग कालेज में सफल होने वाले के पिता और मेरे पिता सब एक दूसरे को जानते थे । कमल तिरपाठी ने हाई स्कूल में यू पी बोर्ड में पोजीशन प्राप्त की । बाकी दोनों दो अच्छे संस्थान में गये । कमल तिरपाठी को आईएस बनना था उसने इंजीनियरिंग की परीक्षा दी ही नहीं ।

मैं सबसे फिसडडी । मेरा जीवन नर्क से बदतर । मेरा घर जाने का मन नहीं करता था । मेरा मन करता था आत्म हत्या कर लूँ । आंटी यह मैं पूरी गंभीरता से कह रहा , मेरा मन आत्म हत्या करने का कई बार हुआ पर कर न सका । अगर मैं आत्म हत्या करता तो इसके जिम्मेदार मेरे पिता होते जो मुझे चैन से जीने नहीं दे रहे थे ।

आंटी मेरा चेहरा सलामत था लोगों के चश्मे गर्द भरे भी थे और चिटके भी थे , पर कौन उनसे कहें अपने चश्में पर छाई गर्द को हटाओ । मेरे मामा मुझसे कहते थे कि तुम क्लर्क बनने से परहेज़ क्यों कर रहे । मैंने एक बार बहस कर लिया उनसे यह कहकर कि आपसे क्या मतलब , मैं क्या करूँ । वह बोले भीख माँगोगे तब वह भी नहीं मिलेगी । मैंने कहा लोहार जो अंगारों से खेलता है वह जानता हैं तासीर उसकी जो देख रहे दूर से शोलों का खेल वह सिर्फ़ तमाशा देखें । वह बोले मेरे बेटे ने दिया था वह बहुत तेज था , मैं जानता हूँ हशर क्या होगा तुम्हारा ।

मुझे भी गुस्सा आ गया , मैंने कहा एक बात याद रखिये, जिस चट्टान से गुजरूँगा वहाँ मेरे कदमों के निशाँ ही नहीं मेरे साये के निशान भी बन जाएँगे । आप विधाता बनने की कोशिश न करें ।

वह बोले तुम तक़दीर बदल दोगे ?

मैंने कहा क्या आप मेरी तक़दीर जानते हैं , आपने कुंडली कब से पढ़नी शुरू कर दी ?

बताइये हाथ में कौन सी लकीर नहीं है मेरे हाथों में , अभी मैं चाकू से लकीर खींच देता हूँ । मैंने डालडा के डिब्बों से यमुना पार करने का गुर सीखा है । मेरी प्यास बहुत बड़ी है , पूरी यमुना पी जाऊँगा । मामा जी वक्त का इंतज़ार करिये । एक बात और बता देता हूँ , अगर मैं जूता पालिश भी करूँगा तो मैं ऐसा चमकाऊँगा कि मुग्ल सराय से आदमी मेरे पास ही आएगा जूता पालिश कराने । आज के बाद से कोई मुझको यह राय न दे , मैं क्या करूँ और क्या न करूँ ?

यह मेरी ज़िंदगी है मुझको जीने दिया जाए ।

आंटी , मेरे मामा के तमक कर चले जाने के बाद मेरी माँ ने कहा ,” बेटा तूने एकदम ठीक कहा । किसी को हक्क नहीं तेरे और तेरे सपनों के बीच आने का । तू अपनी पुरानी किताबों के बोसीदा पन्नों की तहरीरें निकाल जिस पर तूने अपने ख्वाब लिखे थे और तू जी वह ख्वाब, कोई तेरे और तेरे सपनों के बीच नहीं आएगा । “

मेरी और मेरे पिताजी की बातचीत लगभग बंद हो गई । मैं यदाकदा ही बात करता था ।

आंटी ईश्वर का न्याय देखिये , इस बार के मेंस में कमल तिरपाठी जो हाई स्कूल के मेरे टापर थे , वह आईआईटी वाला और वह मोतीलाल इंजीनियरिंग वाला जिससे तुलना कर करके मेरे पिता ने मेरा जीवन नारकीय किया था , वह फेल कर गए । कमल तिरपाठी मुझसे मिलने आया । वह अब हिंदी लेना चाहता है एक विषय के रूप में । सत्य प्रकाश मिश्र सर के पास वह गया उन्होंने उससे कहा जाओ अनुराग से मिलो ।

मैं जानता हूँ , जितने आँसू मुक़द्दर में लिखे होंगे वह मेरे आँखों में ज़ज्ब होंगे ही । तरकश तीर रखने से ही वह लड़ने वाले के सीने में समाएँगे नहीं । दुआओं के लिये हाँथ उठा देने से ही कहाँ दुआ कुबूल होने वाली । सिर्फ़ ख्वाबों को देखने से ही जहाँ नसीब होता तो यह आफ़ताब आज पाबंदी तोड़कर सबके लिये मनचाही रौशनी कर रहा होता । मैंने अपने अंदर महसूस किया है मैं अपने लिये ही नहीं बना हूँ , मैं बना हूँ जहाँ के लिये । बस आंटी इस सोच के बाद बदल गया मेरा पूरा चरित्र और मेरा वह तप आरंभ हो गया जो मुझे तौफ़ीक दे रहा दुर्ग पर दुर्ग को तोड़ने का ।

अभी तक किसी से नहीं कहा आंटी मैंने पर मैं आपसे कह रहा , यह मेरा अहंकार नहीं मेरा अपने पर विश्वास है वह वक्त आएगा जब मेरे ऊपर

स्याहियाँ खर्च होंगी और इस पिटे हुये प्यादे से वज़ीर कहेगा तू मुझको जीवनदान दे ।

इलाहबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 75

आंटी ने कहा , अनुराग एक बताओ यह हीन भावना कैसे तुम्हारे अंदर आ गई ।

मैं - हीन भावना कैसे आप देख रहीं ?

आंटी - हर बात में झलकती है । यह अंत में तुमने कहा वज़ीर पिटे हुये प्यादे से जीवनदान माँगेगा ।

मैं - इसमें हीन भावना है या आत्मविश्वास ?

आंटी - अपने को पिटा हुआ प्यादा कह देना , इसमें आत्मविश्वास कैसा ?

मैं - यह हीन भावना आंटी लोग डालते हैं आप में । हर व्यक्ति का जन्म कुछ कमियों के साथ ही होता है । यह तो हो नहीं सकता कि हर माँ महानायक को ही जन्म दे । ऐसा अगर हो जाए तो महानायकों की बाढ़ आ जाए । यह मर्यादा के स्वरूप प्रतिमूर्ति श्री राम ही हर घर में जन्म लें , यह तो संभव नहीं । हर व्यक्ति अपने बच्चे की तुलना करके उसको नष्ट कर देता है । मैं सारी ज़िंदगी कमल तिरपाठी से की गई अपनी तुलना से परेशान रहा । मैंने सुना कि कमल तिरपाठी के पिता ने कमल से कहा कि वह फिसड़डी सा अनुराग मेंस पास कर गया और तुम सारी ज़िंदगी जीत का डंका बजाते रहे और रण के अंतिम द्वार पर उससे ही हार गये , लानत है ऐसी ज़िंदगी पर । अब आंटी यह बताओ , कमल की क्या गलती है ? यह ऐसी परीक्षा है जिसमें क्या हो जाए कोई नहीं जानता । यह नंबर कैसे देती है , कौन सा विषय कब चढ़ना शुरू हो जाए और कब गिर जाए कोई नहीं जानता । दो साल पहले एनथरो का बोलबाला था और अब उसकी पिटाई हो रही । अब भूगोल उफ़ान पर है । अब आप कई साल पहले विषय छुनते हो , आपको क्या पता कि दो- तीन साल बाद टरेंड क्या होगा । यह यूपीएससी में कोई पारदर्शिता तो है नहीं । यह आज तक कोई न जान सका कि नंबर देने का आधार क्या है ? आप जो पेपर बेहतर करो उसमें नंबर बेहतर मिल गये । पर यहाँ माता-पिता , रिश्तेदार सब चाहते हैं , बस आप सफलता का समाचार सुनाओ । क्या यह संभव है कि जो भी परीक्षा में बैठे वह सफल हो ही जाए । असफलता को स्वीकार करना भी सीखना चाहिये । यह जीवन असफलताओं की कहानी से सराबोर है और वही जीवन की सबसे बड़ी निधि है । यह सफलता के आयाम तो कुछ थोड़े ही होते हैं पर

उनको प्राप्त करने का प्रयत्न और उस प्राप्ति के रास्ते की बाधायें और गिरकर फिर उठने की लालसा तथा हर रोज़ एक नया संकल्प यह ही जीवन है, पर यह सफलता का आकांक्षी समाज वह नहीं देखता ।

आंटी मैं आपको एक सलाह देता हूँ और मैं यह भी बता देता हूँ क्या परिणाम होगा मेरी सलाह का । आज रात आप पहले लिखना अपने जीवन की सफलता और फिर सफलता प्राप्ति का पूरा संघर्ष । आप अपनी सफलता लिख डालोगे अधिकतम एक -दो-तीन पेज में और उसके बाद कुछ न मिलेगा आपको लिखने के लिये । जब आप संघर्ष लिखोगे तब आप सारी रात लिखोगे । यह सफलता वाले एक- दो पेज में कुछ खास न होगा । यह कोई उत्तेजना न देगा । पर यह संघर्ष - गाथा आपके आँचल को गीला कर देगी । आप पूरा जीवन एक बार फिर जियोगे और वह डायरी जिसमें आप लिखोगे वह आपके जीवन की सबसे अमूल्य निधि होगी । पर विडम्बना जीवन की यह है कि यह समाज कोई क्रीमत नहीं करता संघर्षों की ।

आंटी - तुमने कब सोचा यह परीक्षा देने को ?

मैं - आंटी , मेरे जीवन के सारे द्वार बंद हो चुके थे । मैं इंजीनियरिंग में न जा सका , मैं आर्मी/एयरफोर्स/नेवल एवीयेशन में कमीशंड आफिसर न बन सका , तमाम प्रयत्नों के बावजूद । अब मेरे पास क्या विकल्प था ? मैं राजनीति भी करना चाहता था । एक दिन मैं विश्वविद्यालय

के यूनियन भवन के यूनियन हाल पर खड़ा था । मैंने देखा सारे पूर्व अध्यक्षों के नाम । मैंने पाया कि सारे के सारे अभी भी जीवन की प्राथमिक ज़रूरतों से ही जूझ रहे । इस शहर इलाहाबाद में गुप्त वंश और परवर्ती गुप्त वंशीय शासकों की प्रम भट्टारक, चक्रवर्ती की उपाधि अगर किसी के साथ जुड़ती है तो वह सिविल सेवा की परीक्षा से सफल उम्मीदवारों के ही साथ जुड़ती है । एक बेहतर जीवन के साथ सम्मान हर व्यक्ति की आकांक्षा रहती ही है । यह आकांक्षा मेरी भी थी , मेरी ही क्यों यह उस शहर के हर व्यक्ति के साथ थी ।

आंटी - तुमको लगा कि तुम इस परीक्षा को पास कर सकते हो ? अगर लगा तो कब लगा ?

मैं - आंटी , मेरा शुरुआती दौर कठिन था । मैंने पहले फ़िज़िक्स, गणित , रसायन शास्त्र का पेपर देखा । मेरे एक सीनियर थे अजय कुमार , वह रसायन विज्ञान से सिविल सेवा दिये थे पर असफल रहे । उन्होंने रसायन शास्त्र लेने से रोक दिया । मैं विज्ञान में असहजता महसूस कर रहा था । हिंदी और अंग्रेज़ी में भी लिखने का एक मुद्दा था । सबने इलाहाबाद में कहा कि इतिहास और हिंदी साहित्य से हिंदी माध्यम सुविधाजनक होगा , बस

फैसला हो गया । जो बात सबसे निर्णयक साबित हुई वह है हिंदी माध्यम में किस विषय में सबसे ज्यादा मटीरियल उपलब्ध है ।

आंटी - तुमको कब लगा कि तुम हो सकते हो ।

मैं - आंटी, मुझे विश्वास कुछ ही महीने में हो गया था कि मेरा हो सकता है । मैंने एक निर्णय लिया कि मैं अगले 18 महीने में कुछ नहीं करूँगा, सिफ़र तैयारी करूँगा । मैंने सारी परीक्षाओं और सारे लोगों से अपने को अलग कर लिया । मैंने लोगों से मिलना बंद कर दिया । मैंने सलाम बांबे और राम लखन दो फ़िल्में एक ही सप्ताह में देखी और निर्णय किया कि अब अगली फ़िल्म 26 साल की उम्र पार करने के बाद ही देखूँगा । यह क़रीब 30 महीने पहले लिया निर्णय है और मैं टीवी, फ़िल्म सब त्याग दिया । एक सामान्य सी पृष्ठभूमि से निकले व्यक्ति को अतिरिक्त करना होता है, यह मेरी सोच थी जो मुझे यहाँ तक ले आई । आंटी मेरा इस साल हो न या हो पर मैं किसी मामूली दास्तान के लिये नहीं जन्मा हूँ । मेरे अंदर की आग किसी जंगल की आग से कम ही नहीं है वरन् उस आग को चिंगारी भी दे सकती है । इसकी जलन हर वक्त में महसूस करता हूँ । गरीब आँखों में आँसू रुठा नहीं करते, वह कतरा- कतरा उतरा करते हैं । वह उत्तरते आँसू हर वक्त कहते हैं, तुझे मेरे लिये लड़ना होगा ।

आंटी, इस दशत में तो कोई आया ही होगा नहीं तो यहाँ पर दिया किसने जलाया होगा? इस घायल से हाथों से मैं भीख माँगता तो कौन था भीख देने वाला, यहाँ तो हक़ अगर आपका हो तो भी वह छीनना ही होगा । मुझे कौन सोने की पालकी पर चढ़ाकर ले जाने वाला था पुलों पर चढ़ाकर मुझे तो तैर कर ही दरिया पार करना होगा । दिल में एक जिद थी जो कुछ और सुनने को तैयार न थी और वह अंदर की आग बुझना भी चाहें तो उसे फिर जलने को वह तैयार थी । मेरी आस का एक टिमटिमाता सा दिया था, जो कितना भी लटपटाये हवाओं के आतंक से पर वह बुझने को तैयार न था । मेरे अंदर जो सहसा जगी एक प्यास थी जो चाह रही थी पी जाना समुदर सारा, चाहे वह खारा ही क्यों न हो ।

आंटी यह मेरी ही कहानी नहीं, यह तमाम उन लोगों की कहानी है जो उस शहर में आते हैं अपने सपने लेकर । यह वह शहर है जहाँ ख्वाब हर जगह उमड़ते दिख जाएँगे । यहाँ बग़ैर हँगामों के ख्वाब आँखों में समा जाते हैं और आपको पता ही नहीं चलता कब ख्वाबों की तासीर बदल गई ।

मुझे ज़िंदगी की चाह थी और यह किनारों पर रेत में और छिछले पानी के बीच डोलती कश्ती से नहीं मिल सकती थी । इसके लिये कश्ती को गहरे पानी में ले ही जाना था । मुझे सदफ के मोतियों की चाह थी और इसके लिये गहरे

पानी में उतरना ही पड़ता । कब तक मैं डरता तूफान से तूफाँ के बीच उस कश्ती को लड़ाना ही था । मैं नहीं रह सकता था किनारों पर ज़िंदा रहकर भी ज़िंदा न रहते हुये , कहा अपनी कश्ती से ले चल मुझे तूफानों के बीच मुझे भी ज़िंदगी की चाह है ।

आंटी - तुमने कब यह भाषा सीखी ? इतनी काव्यात्मक दिल को छूने वाली , यह मदहोश कर देने वाली जिसमें चिराग , जुगनू , आफताब, अँधेरा सब अपने को अभिव्यक्त कर रहा हो ।

मैं -आंटी , मैं इसका सारा शरेय फ़िराक़ गोरखपुरी साहब को दूँगा । वह फ़िराक़ जो बेपरवाह फक्कड़ थे , जो अपना परिचय सिवाय रघुपति सहाय के अलावा और कुछ नहीं देते थे । वह भाषाविद जो उर्दू- हिंदी - अंग्रेज़ी की तहज़ीब का आगरही था । विश्वास युक्त अध्यापक- लेखक- विचारक कहता था नहीं होगा आसान किसी को फ़िराक़ ऐसा होना और तुम जमाने से कहोगे , मैंने फ़िराक़ को देखा है । मैं शायद

कक्षा दस में रहा होऊँगा जब मैंने कहीं पढ़ा कि फ़िराक़ ने कहा था कि कक्षा पाँच के बाद भाषा के स्तर पर मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई और मैं जो चाहता था और जैसा चाहता था वैसा लिख ले जाता था ।

यह पढ़कर मुझे लगा कि भाषा ऐसी होनी चाहिये कि जो आप कहना चाहो वह पहाड़ों पर पिघलती बर्फ़ बनकर नदी फ़िसल रही हों ढलानों पर । मैं अंग्रेज़ी तो बेहतर कर नहीं सकता था पर हिंदी मैंने कोशिश की और मैंने वाद- विवाद प्रतिस्पर्धाओं में अपने भाषा के बहुत झंडे गाड़े । दूसरा मैंने रस्किन बांड को पढ़ा कभी , उन्होंने लिखा था कि एक अच्छा लेखक बनने के लिये आपको एक अच्छा पाठक बनना होगा । मैंने कुछ देर सोचा और मन में उद्गार आया कि रस्किन बांड साहब ने बात थोड़ा अधूरी कही है । एक अच्छा पाठक नहीं वरन् एक सघन पाठक (intense reader) होना चाहिये । मैंने चेखव , शेक्सपीयर, समरसेट माम , परेमचंद, छायावाद , महाभारत , गालिब , मीर , फैज आदि- आदि पढ़ना शुरू किया । मैं लिखने भी लगा । मैंने कई साल तक बग़ैर लिखे रात की नींद का स्वागत ही नहीं किया । पाँच पेज प्रतिदिन लिखना ही है , चाहे जो हो जाये । मेरा कमरा कई हज़ार पेजों से भरा है जिसमें अनायास ही पता नहीं क्या- क्या लिखा है मैंने ।

आंटी -यह बात किसी को पता है ?

मैं -आंटी मेरे बारे में किसी की कोई रुचि नहीं है । यह बात तो तब पता चले जब किसी की कुछ जानने की आक़ांक्षा हो । हर व्यक्ति का भाग्य अभिमन्यु की तरह का तो होता नहीं कि हार में भी जीत देख ली जाए , आपका उत्साह

ही पर्याप्त है आपको आंकने के लिये । मैं लड़ना चाहता हूँ, यह कहो तो लोग पूछेंगे आपके अस्तर क्या हैं?

मैं कैसे बताता और किससे बताता मैंने आफ्रताब के बगैर पथरीले रास्तों पर नुकीले पत्थरों से कहा है मुझे तुझसे लड़ना है अपनी मंजिल के लिये ।

आंटी तन्मयता से सुन रही थी, वह बोली तेरे लिये कढ़ी- चावल बना देती हूँ । तू थोड़ा रुक, मुझे यहीं से आगे और सुनना है । अनुराग तू मुझे आज मदहोश कर । तू और काव्यात्मक हो, मुझे तेरी भाषा और सुननी है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 76

आंटी चली गई लंच बनाने । मैं अपना कपड़ा ठीक करने लगा । अब मेरा इलाहाबाद जाने का मन कर रहा था । वहाँ लोग इंतज़ार कर रहे होंगे । मुझे अगले साल की परीक्षा भी देनी थी । मैं जवाहर बुक स्टोर दिल्ली भी जाना चाहता था । मैं वहाँ से किताब खरीदना चाहता था । मैंने बहुत सुना था दिल्ली विश्वविद्यालय के बारे में और बहुत कहानियाँ सुनी थी सेंट स्टीफन्स दिल्ली के बारे में । वह अकेला संस्थान जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय से टकराने का प्रयास 60 और 70 के दशक में किया करता था पर इस इलाहाबाद को तो मज़ा आता है लड़ने में, टकराने में और अगर प्रतिस्पर्धी पानीदार हो तो मज़ा ही कुछ और है ।

आज यह परिसर लड़खड़ा रहा हो यह अलग बात है पर कभी दौड़ते हुये घोड़ों पर चढ़कर उससे ही कहा करता था ज़रा तेज दौड़ मुझे रुके हुये घोड़ों पर चढ़ना भाता नहीं । यह वह विश्वविद्यालय था जो पहले घोड़ों से रेस करता था फिर दौड़ते हुये ही उस पर सवार हो जाता था । अब यह ज़ज्बा इतिहास ऐसा बनने की ओर है । अब वह बात नहीं रही पर कमज़ोर होकर भी बहुत सी मज़बूती का दावा करने वालों के लिये आज भी प्रेरणा का स्रोत है ।

आंटी का मन खाना बनाने में कम, मेरी कहानी में अधिक लग रहा था । यह एक कहानी मात्र मेरी तो थी नहीं, यह कहानी बहुतों को अपने में समाये हुये थी । मैं कह ज़रूर रहा हूँ पर यह चाहत, यह लक्ष्य, यह संघर्ष, यह वेदना उन सबकी हैं जिन्होंने रात की तारीकियों में अपनी आँखों से कहा था,

“तू कुछ अलग स्वाब देख मेरे लिये , जो बेपरवाह हों कद और हैसियत से । मैं उकता गया हूँ इस नीरस जिंदगी से । मैं जीत नहीं हार में सुख पाना चाहता हूँ । मैं सधी साँसों में नहीं उखड़ती साँसों में जीना चाहता हूँ । ज़रा मैं भी तो देखूँ यह थक कर घिसटते पैर किस तरह मंजिल को देखते हैं नज़दीक पहुँच कर ।”

आंटी ने कढ़ी बनाकर चावल को गैस पर रखा वह फिर वापस आ गई चाय लेकर । वह आकर बोली जो हज़ारों पेज तुमने लिखा उसमें भगवान पर लिखा कभी ?

मैं - आंटी , जिसका मैं बेटा हूँ वह गंगा की लहरों में जीती है वह बचपन से रामायण का पाठ करती है । प्रदोष का व्रत तब आरंभ किया था जब वह किशोरावस्था की दहलीज़ को छूने जा रही थी । मैं भगवान पर न लिखूँ , यह संभव है ?

आंटी - अनुराग मैंने और उर्मिला ने प्रदोष व्रत एक साथ आरंभ किया था ।

मैं - यह आंटी क्यों आरंभ किया था ? मतलब आपने और माँ ने यह प्रदोष व्रत ।

आंटी - यह कहना मुश्किल है कि कारण क्या था उस व्रत को आरंभ करने का । यह जब आरंभ किया था हम लोग गाँव के स्कूल में कक्षा पाँच में पढ़ते थे । हम लोग स्कूल से वापस आ रहे थे । स्कूल से घर वापस आने के रास्ते पर एक सुरजन बाबा रहते थे । उनसे हम लोग कई बार मिलते थे । एक बार वह शिव का महात्म्य हम लोगों को बताये और कहा शिव की आराधना मंगलकारी होती है । हम लोगों को तब मंगल- अमंगल की कहाँ समझ थी पर घर-परिवार-इलाक़े में लोग प्रदोष का व्रत करते थे और हमने भी शुरू कर दिया , बाद में किसी ने कहा कि इस दिन शिव- पार्वती का विवाह हुआ था और किसी ने कहा कि इसको करने से शिव ऐसा पति प्राप्त होता है पर यह सब कारण न थे , कारण एक परम्परा और एक संस्कार था । मुझे तो यही याद आ रहा तुम अपनी माँ से पूछना वह बताएगी और , अगर याद होगा ।

मैं - अरे आँटी कौन यह राग छेड़े? उसको पहले ही शिकायत है कि मैं विधर्मी हो गया । मैं पूजा-पाठ नहीं करता । अब यह सवाल किया तो टेप रिकार्ड चालू ।

आंटी - तुमने भगवान पर क्या लिखा है ?

मैं - आंटी मैंने राम पर बहुत लिखा । उर्मिला पर भी कभी लिखा था । मेरे नाना ने पता नहीं क्यों उर्मिला नाम रखा मेरी माँ का पर मैंने उर्मिला के चरित्र

को एक अलग रूप से देखा है , जिस पर लिखा कम गया है ।

आंटी- तुमने क्या लिखा ?

मैं - आंटी , उर्मिला का चरित्र एक अलग चरित्र है । उसमें त्याग की अपनी पराकाष्ठा है , पर उस पर लिखा कम गया है । मैंने माँ से भी पूछा , तुम कितना जानती हो उर्मिला के बारे मैं । माँ ने कहा जिसके बारे मैं लिखा ही कम गया है उस के बारे में कोई जानेगा कैसे । मैंने तब यह सोचा मैं ही लिखता हूँ । मैंने कभी एक रात जब मैं हर दिन पाँच पेज लिखता था , उर्मिला के बारे मैं लिखने का फ़ैसला किया ।

आंटी - क्या लिखा ?

मैं-मैंने काफी देर सोचा और फिर मैंने राम से उर्मिला की स्तुति कराने का फ़ैसला किया । यह लेखन एक स्वतंत्र विधा है और वह किसी बंदिश से तो संचालित होती नहीं । मैंने उस चरित्र की उदात्तता को समझते हुये , राम की स्तुति के माध्यम से उर्मिला का चरित्र लिखने लगा । यह भी हो सकता है उर्मिला के मूल चरित्र के साथ- साथ एक बेटे का भाव भी उसमें शामिल हो अपने माँ के प्रति जिसका नाम भी उर्मिला है ।

आंटी - क्या लिखा ?

मैं - यही लिखा , राम- रावण के युद्ध में राम रावण को परास्त न कर पाते अगर उर्मिला न होती ।

आंटी - पर उर्मिला तो अयोध्या में थी । वह कैसे पहुँच गई लंका । यह तो कहीं लिखा नहीं ।

मैं - आंटी किसी ने नहीं लिखा तो क्या हुआ , मैं तो रात में लिखता ही था ।

आंटी - यह बहुत ही अलग कल्पना है । यह तुमने कैसे की ? मेरी रुचि हो रही जानने की ।

मैं - आंटी यह बड़ी कविता है , तुमको बोर कर देगी ।

आंटी - याद है तुमको ?

मैं - आंटी , ईश्वर ने मुझे बेहतर याददाश्त दी है । मेरी आँखों के सामने से गुज़रा हुआ लम्हा मेरे सामने ठहर कर कहता है , समा ले तू इसको अपने में , कभी मुझे भी याद दिलाना अगर मैं अपने को ही भूल जाऊँ ।

आंटी - अनुराग , तुमसे बात करना एक लुत्फ़ है । एक सामान्य सी बात को तुम बहुत अलग ढंग से कहते हो ।

यह उर्मिला का क्रिस्सा सुनाओ । यह नायाब लग रहा मुझे । उर्मिला की स्तुति राम से ...क्या नायाब विचार है । राम के चरित्र में एक और संभावना ।

मैं - आंटी , राम एक असंभाव्य में संभाव्य के नायक हैं । वह एक जनवादी नायक हैं । वह दीनबंधु हैं , वह राजतंत्र में लोकतंत्र के आग्रही हैं , वह सेवक का महत्व स्वामी से अधिक मानते हैं । वह जिन रास्तों से चलकर चित्रकूट गये थे उस पर सूरज की गर्मी का आतंक था पर जब उसी रास्ते से भरत गये तब मेघ पूरे रास्ते में था । यह भक्त का महत्व है । राम ने पिता की आज्ञा मानकर राज्य छोड़ा था और भरत ने भाई के प्रेम में राज्य त्यागा था । यह सेवक का स्वामी से अधिक महत्व दर्शाता है । राम में करुणा है दीनता नहीं है । राम के साथ के चरित्रों में अगर कौशल्या और भरत में करुणा है तो निषाद , शबरी में मानवीय सहानुभूति है । राम किसी समझौते के आग्रही नहीं हैं । वह वनगमन के आदेश पर पुनर्विचार का कोई रास्ता नहीं तलाशते और अन्यायी का हृदय परिवर्तन का प्रयास भी नहीं करते । वह त्याग का उदाहरण स्वयम् ही नहीं देते वरन् अपने सह चरित्रों के माध्यम से भी देते हैं । उर्मिला भी भरत एवम् लक्ष्मण के त्याग की शृंखला में ही है , भले ही लिखा न गया हो । वह दौर जब राम की कथा जन- जन में व्याप्त हो रही थी उसी दौर में मुगल साम्राज्य आकंठ सत्ता लोलुपता में लिप्त था । राज्य के लिये पिता के वध का प्रयास पुत्र द्वारा और भाई का भाई के द्वारा करना एक रीति की तरह था । उसी दौर में चित्रकूट के जंगल में तीन भाई बडे भाई के साथ संघर्ष में थे । उस संघर्ष के मूल में त्याग था । एक पिता के चार बेटे , पिता की कीर्ति की रक्षा के लिये त्याग की ओर उन्मुख थे । मुझे इस कहानी में उर्मिला कहीं छूटती दिखी । मैंने कल्पना की लक्ष्मण- मेघनाद युद्ध में उर्मिला की भूमिका और राम की उर्मिला स्तुति ।

आंटी - अनुराग, यह कैसी स्तुति है जो महानतम नायक जो हमारी ही नहीं कई पीढ़ियों का है वह कर रहा ।

मैं - आंटी वह रात में सुनाता हूँ । मुझे जवाहर बुक स्टोर जाना है और राजीव सिंह ने कहा है कि आप दिल्ली यूनिवर्सिटी आना , वहाँ का भी माहौल देख लेना । वह भी देख लेता हूँ , अब पता नहीं कब दिल्ली आना हो ।

आंटी - अनुराग ऐसा न कहो । तुम दिल्ली जल्दी ही आना । मेरा मन तुम्हारे बगौर नहीं लगेगा अब । इस कायनात में नया मंजर तुमने दिखाया है । एक सियाह रात में मैं जी रही थी तुमने एक बोलता चिराग यहाँ जला दिया है ।

मैं - आंटी ज़रूर आऊँगा । आपने जितना मुझको समझने की कोशिश की , आज तक किसी ने न किया । मेरे इंतजार में कभी बरसात का पानी भी न रुका था मेरी काग़ज़ की नाव को बहाने के लिये आपने अपने अंदर के दरिया को रोक दिया मेरी कश्ती के पतवार के संगीत के लिये ।

आंटी - अनुराग तुम कुछ लिखकर मुझे दे देना जाने से पहले , मैं वही पढ़ती रहूँगी तेरी कहानी की तरह ।

मैं - आंटी क्या लिख कर दे दूँ ? मेरी कहानी में उदासी ही तो है । मेरी नींद कच्ची ही रही सिसकियों ने ही जगाया है मुझे । एक मुट्ठी भर ज़मीन की चाहत थी पर वह भी लोग कह रहे तेरे बस में नहीं वह । किसी सुहागन ने खोल दिये जूँडे बरसात में भीगने के लिये , बरसात बूँदा - बाँदी करके चली गई । बस यही एक किरण है उम्मीद की जिसे लोग राख समझ रहे थे हवा ने उसमें छिपी चिंगारी को जला दिया ।

आंटी - अनुराग तू चाहे जो लिखना , मेरे लिये लिख कर जाना और कुछ पेज लिख कर जाना ।

वह राम की उर्मिला वंदना तुम सुना कर जाना ।

मैं लंच करके चल दिया दिल्ली यूनिवर्सिटी की तरफ , राजीव सिंह जुबली होस्टल में रहते थे । मैं बस पकड़कर शहीद चौक के पास उतरा वहाँ से पूछते-पूछते जुबली हाल के राजीव सिंह के कमरे पहुँचा । वह चार लोगों को बैठा कर प्रारम्भिक परीक्षा का ज्ञान बाँट रहे थे । इंटरव्यू देकर लौटा व्यक्ति साक्षात् वेद व्यास हो जाता है । उसको ज्ञान बाँटना ही है । वह बाँटता इसलिये भी है कि ज्ञान के आग्रही बहुत हो जाते हैं । हर होस्टल में कुछ नायक-महानायक का जन्म हो जाता है । नायक राजीव सिंह उनके चार-पाँच चेले और मैं ।

मुझको देखते ही वह बोले

“आओ बंधु आओ , बहुत सही समय पर आये हो ...”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 77

राजीव सिंह ने परिचय कराया उन लोगों से । वह सब पहली बार प्रारम्भिक परीक्षा दे रहे थे । पहली बार भय ज्यादा होता ही है और यह भय अकारण भी नहीं है । इस समाज में जिस तरह की प्रतिष्ठा है इस परीक्षा की ओर यह निर्विवाद रूप से देश की सबसे कठिन परीक्षा तो है ही , तब भय स्वाभाविक ही है । इस परीक्षा में सफलता - असफलता के मध्य एक असंतुलित अनुपात भी एक सिहरन पैदा कर देता है । एक नया व्यक्ति यह समझ नहीं पाता कि

किस तरह इसमें आगे बढ़े । इसकी पूरी पद्धति विश्वविद्यालयों की पढ़ाई एवं
वहाँ की प्रश्नों की पत्रों की परम्परा से पूरी तरह भिन्न है । यह भिन्नता एक
नये सिरे की रणनीति की माँग करती है ।

जो लोग आये थे वह सब पटना से ही थे और राजीव सिंह ने ज्ञान दे दिया ।
राजीव ने पूछा, आप भी जोड़ेंगे इस सलाह शूंखला में कुछ ?

मैंने कहा, जो आपने बताया वह मेरे ज्ञान से अधिक है । मैं भी कुछ सीख
गया, अगले साल के लिये ।

राजीव - अब अगले साल तो आप मसूरी रहोगे, यह परीक्षा का टंटा तो
आपका अब गया ।

मैं - इतनी बड़ी तकदीर लिखा कर आया होता तो क्या बात थी । यहाँ तो
घिसटना तकदीर में एक स्थिर सत्य है ।

राजीव - यह स्थिर सत्य क्या होता है ?

मैं - जैसे सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाएगा, यह एक स्थिर सत्य है ।

राजीव - यह तो सार्वत्रिक सत्य मतलब यूनिवर्सल टर्स्ट है ।

मैं - यार मैं साहित्य का एक विद्यार्थी हो चुका हूँ इस परीक्षा के सौजन्य से । मैं
नये शब्द छूँठता एवं गढ़ता रहता हूँ ।

राजीव - हम लोग हिंदी - अंग्रेज़ी के फेर में न हिंदी के रहे न अंग्रेज़ी के ।

जब गाँव - देहात में थे तब हिंदी ही पढ़ते थे । हम बहुत पिछड़े इलाक़े से आते
हैं, स्कूल में पढ़ने में बेहतर थे । सब नात-हित-रिश्तेदार-परिचित बाबू जी से
कहे कि दिल्ली भेज दो । बाबू जी ने हम दो भाइयों को भेज दिया दिल्ली । हम
लोगों के नंबर बेहतर थे इसलिये दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश भी मिला और
यह छात्रावास भी । इस छात्रावास का मिलना जीवन सहज कर गया ।
दिल्ली आकर पढ़ने का फ़ायदा बहुत हुआ पर हिंदी कहीं पीछे रह गई ।

यहाँ सब अंग्रेज़ी में ही लिखते हैं और सारा मार्गदर्शन इसी भाषा में है । यह
विश्वविद्यालय पढ़ता भी अंग्रेज़ी में ही है, इसलिये अंग्रेज़ी ही माध्यम हो गई
। इलाहाबाद, शायद अकेला विश्वविद्यालय और शहर होगा जहाँ, हिंदी का
प्रचम इस तरह सिविल सेवा में है और कहीं का तो हमने सुना नहीं । चिंतन
सर, बद्री सर और आपकी हिंदी सम्मोहित करने वाली है । ऐसा सम्मोहन
गैर मातृ-भाषा में पाना आसान नहीं ।

यहाँ बहुत से लोग अंग्रेजी बेहतर लिख और बोल लेते हैं पर जिस तरह इलाहाबाद वाले हिंदी में दिल को छू लेते हैं वह नहीं होता । मैं अंग्रेजी में लिखना तो सीख गया पर बोलने में वह नियंत्रण नहीं है । मैं वह तो नहीं ही कह पाता पूरी तरह से जो मन में आता है । मेरे मन में जो भाव आता है वह एक अनुवाद की प्रक्रिया से गुजरता है और इस प्रक्रिया से गुजरने के कारण वह मूल भाव तो कहीं न कहीं अभिव्यक्त होने से रह जाता है । कुल मिलाकर मैं बात ही कह पाता हूँ और बात कहने मात्र से ही आप किसी के दिल को स्पंदित कैसे कर सकते हो ।

मैं -इलाहाबाद में एक मातृ-भाषा हिंदी का आंदोलन चलता है । जिसको अंग्रेजी नहीं आती वह उस भाषा का विरोधी हो जाता है । वह अंग्रेजी बोलने वालों पर तंज कसने लगता है । एक बार एक वाद-विवाद प्रतिस्पर्धा हो रही थी । उस प्रतिस्पर्धा के समापन समारोह के शुरू होने के पहले हंगामा हो गया कि कोई भाषण अंग्रेजी में नहीं होगा । एक ने अंग्रेजी बोलनी चाही पूरा हाल विरोध में शोर करने लगा और जैसे ही वह अंग्रेजी से हिंदी में परिवर्तित हुये समर्थन में पूरा हाल खड़ा होकर करतल ध्वनि करने लगा । इलाहाबाद में लोग हिंदी पर विश्वास करते हैं, उसको अपनाते हैं और उसमें सहज हैं । यह शहर हिंदी में न केवल सहज हैं वरन् एक गर्व की अनुभूति करता है ।

मैं पिछले कई साल से देख रहा कि हर साल एक ठीक-ठाक मात्रा में लोग हिंदी माध्यम से सफल हो रहे । यह सफलता अगली पीढ़ी को हौसला देती है । हालत यहाँ तक है कि अंग्रेजी बिल्कुल न जानने वाला भी या नाम मात्र का जानने वाला भी सफल हो जाता है । अब आप चिंतन उपाध्याय को ही लो, वह अंग्रेजी बोल तो पाते ही नहीं हैं और लिखने में बहुत असहज हैं, पर किसी भी परीक्षा में बैठा दो गढ़ गिरा ही देंगे । चार बार सिविल सेवा दिये उसमें तीन का इंटरव्यू दिये जिसमें न दिये उसमें सामान्य अंग्रेजी में फेल किये, नहीं तो इंटरव्यू देते ही अगर अंग्रेजी पास करते । पीसीएस एक ही बार दिये सफलता ने स्वागत किया । यही हाल कई औरों का भी है । आप उनसे बात करो, आपको मिलेगा इनको अपनी हिंदी पर गर्व है । यह कभी हीनता या दीनता की बात नहीं करते । इनका सूत्र वाक्य है, “ न दैन्यम न पलायनम ।”

मैंने भी इन सबसे ही सीखा । मैं एक सामान्य विद्यार्थी हूँ, जब चिंतन सर से मिला तब उन्होंने बोला कि यह परीक्षा बनी ही है सामान्य विद्यार्थियों के लिये । उन्होंने एक बात कही जिसने मुझे बहुत आत्म विश्वास दिया,

“एक विश्लेषण क्षमता बेहतर अभिव्यक्ति के साथ , यह इस परीक्षा का मूल मन्त्र है , कठिन परिश्रम तो सब करते ही हैं उस पर क्या कहना । आप विश्लेषण क्षमता और बेहतर अभिव्यक्ति पर काम करो , ईश्वर ने चाहा तो दुर्गम सा दिख रहा किला फ़तह होगा । ”

मैं जैसे - जैसे इस परीक्षा को समझता गया , वैसे- वैसे मैं उनकी कहीं गई इस बात से पूरी तरह सहमत होता गया । मेरा सबसे बड़ा हथियार मेरा वह काम है जो मैं अनायास करता था , वह मेरा हर दिन का लेखन । मैंने जब लिखना आरंभ किया था तब मुझे न पता था कि एक दिन यह मेरे लिये अर्जुन का पशुपति अस्त्र साबित होगा जो साक्षात् महादेव ने किरात का रूप धारण करके अर्जुन को दिया था । मुझे भी जगतनियंता ने बाँूर कुछ कहे मेरी सुप्तावस्था में मुझ पर तिरवेणी का जल छिड़क कर कभी यह दृष्टि एक वरदान के शक्ल में परदान कर दिया था ।

यह जीवन निर्धारित एक दृष्टि की प्राप्ति से होता है , बाकी तो सब एक द्वितीयक प्रक्रिया है । एक बार लक्ष्य का निश्चयन हो गया और उसके प्रति सन्दर्भता हो गई तब काफ़ी कुछ कार्य जीवन की सार्थकता का हो गया ।

राजीव - यह जीवन की सार्थकता है क्या?

मैं - यह एक बहुत ही दुरुह प्रश्न है । यह व्यक्ति की अपनी आकांक्षाओं एवम् जीवन से वह क्या उम्मीद रखता है , इस बात से निर्धारित होता है । एक व्यक्ति के लिये राज्य प्राप्ति या शासक बनना ही जीवन की सार्थकता हो सकती है पर महात्मा बुद्ध के लिये ज्ञान की प्राप्ति जीवन की सार्थकता थी और उसके लिये राज्य का त्याग आवश्यक था । अशोक ने अपने कई भाइयों की हत्या करके जिस राज्य को प्राप्त किया उसके लिये बाद में लगा कि भेरी घोष का स्थान धम्म घोष को लेना चाहिये ।

आप दशरथ - राम का संवाद देखिये । दशरथ वचन की रक्षा के आग्रही थे और जिस राम को विश्वामित्र को कुछ दिनों को देने को तैयार न थे उसी को वनगमन का आदेश देते हैं और अनुरोध करते हैं राम से कि मैं आदेश देता हूँ वनगमन का पर मुझे बंदी बनाकर कारागार में डाल दो और राज्य पर अधिकार कर लो क्योंकि राज्य की जनता तुम्हारे साथ है और वह तुम्हें शासक के रूप में चाहती है । राम ने कहा कि जिस समय आपके मन में यह विचार आया मुझे पाप लग गया । दशरथ के लिये वचन से हटना जीवन को निरर्थक कर सकता था और राम पिता के आदेश पालन और वचन की रक्षा

में जीवन की सार्थकता देख रहे । भरत- लक्ष्मण - शत्रुघ्न राम की सेवा में सार्थकता देख रहे थे ।

आप वह वृतांत देखो जब भरत राम से खड़ाऊँ लेते हैं । राम ने कहा , तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा बस तुम एक बात का ध्यान रखो तुम भी वही करो और मुझसे भी वही कराओ जिससे सत्यपिरय पिता की कीर्ति को कोई अपयश की प्राप्ति न हो । यहीं पर राम कहते हैं कि मुझे अपयश से भय लगता है । भरत अपने आग्रह को त्याग कर खड़ाऊँ लेकर वापस अयोध्या चले जाते हैं । यह भी सच है यह सब महानायक हैं फिर भी जीवन की सार्थकता को समझने का मंत्र तो देते ही हैं ।

यह सारे उदाहरण अलग - अलग तरह से जीवन की सार्थकता की बात कहते हैं । हम लोग दुनियावी मामलों में जी रहे एक सामान्य से व्यक्ति हैं , जिनमें स्वार्थ की प्रधानता है । हम इस समय जीवन की सार्थकता इस परीक्षा में ही देख रहे । पर यह परीक्षा की सफलता एक भौतिक जीवन तो बेहतर कर सकती है पर यह कैसे जीवन सार्थक कर सकती है ? यह परीक्षा आज हमारे लिये जीवन - मरण का प्रश्न है , पर जैसे ही इसको हम प्राप्त करेंगे यह भी हो सकता है कि एक व्यर्थता का अहसास हो यह स्वयं से हमीं कहें , “ इसी के लिये हम इतना मर रहे थे ? ”

राजीव - फिर जीवन की सार्थकता किस वस्तु में है ?

मैं - यह बता पाने की हालत में तो मैं नहीं हूँ , पर यह अवश्य कह सकता हूँ इस परीक्षा की सफलता जीवन की सार्थकता का निश्चय तो नहीं ही करेगी । यह जीवन को आसान करेगी , यह एक गौरव देगी , यह मेरे घर वालों को खुशी देगी । यह लोगों को उम्मीद देगी और यह भी हो सकता है मैं उस उम्मीद पर खरा न उतरूँ और खरा न उतरने पर मोहभंग भी हो ।

राजीव - मोहभंग कैसा ?

मैं - चिंतन उपाध्याय को आपने देखा ?

राजीव - हाँ

मैं - वह सफल हुये पीसीएस में । वह एक गरीब घर से आते हैं । उनके छोटे भाई सब नाकाबिल तो नहीं कहूँगा पर कुछ खास करेंगे जीवन में , इसकी संभावना न के बराबर है । उनके छोटे भाई मुझसे ही कहते हैं , “ भैया भएन अफ़सर पर कुछ जनान नाहीं । जैसन घर रहा वैसन रहि गवा । ”

मैंने चिंतन सर से यह बताया । वह बोले , क्या वह लोग जानना चाहते हैं ? सबकी ख्वाहिश बड़ी- बड़ी है और वह सरकारी नौकरी से पूरी नहीं हो सकती ।

अब वही लोग चिंतन सर की पीठ पीछे आलोचना करते हैं । यह मोहभंग है उस छवि के साथ जो समाज ने निर्मित की है , इस परीक्षा के सफल उम्मीदवारों के लिये । एक आभामंडल बना दिया गया है और उस आभामंडल के आलोक में लोग आगे बढ़ना चाहते हैं । जब उनको लगता है कि यह आभामंडल एक छलावा है तब मोहभंग की प्रक्रिया आरंभ होती है । हम लोग अभी सफल नहीं हुये हैं तब हालात यह हैं , सफलता के बाद क्या होगा , यह सोचो । यह समस्या पहली पीढ़ी के लोगों के साथ ज्यादा होती है , शायद दूसरी पीढ़ी को यह दंश झेलना न पड़ता हो ।

राजीव सिंह - क्या तुम किसी सार्थकता की तलाश में हो ?

मैं - जिसने अभावों में जीवन देखा हो उसके लिये अभावों को हटा देना ही एक सार्थकता होती है । उसके लिये न तो आसमां फुरसत में होता है न कोई गज़ल मेहरबान होती है । वह घरोंदों में रौशनी की तलाश करता है । यह जीवन सार्थक हो ही नहीं सकेगा अगर मैं इस परिवेश से बाहर आ नहीं पाऊँगा । एक व्यक्ति जो सामान्य सी ज़िंदगी की रोज़मर्रा के चक्करों में रहता है वह जीने का सहारा पा जाए यह बड़ी बात है , जीने का बेहतरीन सहारा कहाँ उसके नसीब में ।

यह सुलगती धूप चाँदनी बन जाए इसी कोशिश में हम आप लगे हैं । हम लोग हर रोज़ रेत पर लिखते हैं क़सीदे अपने लिये पर लहरें हर रोज़ उन्हें बहा ले जाती है । जो ख्वाब हम देखते हैं वह हम किसी से साझा नहीं करते । एक बात और बता दूँ , आज तो हमारे स्वन्न लोग सुनने को तैयार हैं पर यह आज से कुछ महीने पहले हास्यास्पद हालात हमारी कर देता अगर किसी से साझा करते । हम लोगों की पलकों के पीछे एक लहू का समंदर है जो हमारे अलावा किसी को दिखता नहीं है और यही समंदर हर रोज़ हमसे कहता है , तुझे लड़ना ही होगा न अपने लिये तो मेरे लिये ।

यह भी हो सकता है हम गुजरते वक्त की एक ऐसी तस्वीर बन जाए जिसको कोई बुलाने वाला ही न हो । यहाँ कौन जानता है , कल क्या होगा । यह परीक्षा कब कौन सा करवट ले ले , किसको यह पता है । आज जिन दीवारों पर खड़े हैं क्या पता कल उसके ही मलबों के नीचे हम दबे हों । यह एक जंग है जो हम लड़ रहे और हमको न पता हमारा दुश्मन कौन है । क्या पता कल

हम और आप हीं एक नंबर पर और हममें से एक को ही आगे जाना हो । हम लोगों ने पहाड़ साथ- साथ काटे पर दर्द कह रहा आपमें से एक ही जायेगा और हम बगैर कहे चाह रहे सुनना दूसरे से कि वह कहे तुम पहले जाओ और वह दर्द बंद हो जाए फिर सदा- सदा के लिये । अमर गुप्ता , चिंतन सर , बद्री सर के लिये तो अब बंद हो गया । अब बस प्रतीक्षा है जानने की परिणाम और परिणाम पक्ष में न हुआ तो इनकी हालत वही होगी ,

एक जंगल में बाघ पीछा कर रहा हो , हिरन का झाड़ियों में अटक जाना , एक बहेलिये ने चलाया हो तीर उसका पक्षी के पंखों पर लटक जाना और इनके मुँह से निकली आह यह सलाबत मेरे साथ क्यों हुई ?

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 78

राजीव सिंह ने पूछा , कैसे आये ?

मैंने बताया बस पकड़ कर आया और मैन चौक पर उत्तर कर उसके बाद पैदल चलकर यहाँ तक आया और आप एक लोकप्रिय व्यक्ति हो तो कमरे तक पहुँचने में कोई दिक्कत हुई नहीं ।

राजीव - यहाँ बिहारी छात्र काफ़ी हैं इस छात्रावास में इसलिये लोग एक दूसरे को जानते हैं और वैसे भी रहते- रहते रोज़ एक ही रास्ते से निकलना , मेस में जाना , साथ ही सड़कों पर धूमते टकरा जाना यह सब प्रक्रियाएँ सबको एक - दूसरे से परिचित करा ही देती है ।

मैं राजीव सिंह के साथ जुबली होस्टल से बाहर निकला । दिल्ली यूनिवर्सिटी कैंपस अपने आप में एक विराटता से युक्त था । मानसरोवर होस्टल, जुबली होस्टल , पीजी मेंस , ग्वायर हाल , पीजी वोमेंस होस्टल सब एक आयताकार शक्ल में अवस्थित थे । रामजस, किरोड़ीमल , सेंट स्टीफन्स, हिंदू कालेज सब एक क़तार में उसी कैंपस में थे ।

राजीव सिंह ने बताया कि लोग उन होस्टल को प्राथमिकता देते हैं जो सिंगल सीटेड हैं । जुबली हाल , ग्वायर हाल , पीजी मेंस सिंगल सीटेड हैं और इनकी माँग अधिक रहती है । एक-एक रुम में कई-कई लड़के रहते हैं और कोई चैकिंग नहीं होती है । जुबली हाल में एक जीरा (jubilee hall

inmate resident association) है जो वहाँ की राजनीति चलाता है और उसमें बहुत से लोग वह होते हैं जिनका पढ़ाई - लिखाई से कोई खास ताल्लुक नहीं होता । बहुत से लोग यहाँ विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के लक्ष्य से कम बल्कि कैंपस में बने रहें इस लक्ष्य से विधि पाठ्यक्रम में प्रवेश ले लेते हैं और कोई क्लास- वर्गीकरण नहीं करते । वह श्रुति- स्मृति के सहारे परीक्षा दे देते हैं ।

इलाहाबाद में भी विधि के कोर्स का ऐसा ही माहौल है । कई लोग छात्रसंघ चुनाव में बने रहने के लिये तो बहुत लोग विश्वविद्यालय परिसर में बने रहने, छात्रावास बचाने या कुछ न करने से कुछ करना बेहतर है यह सोचकर इस कोर्स में प्रवेश ले लेते हैं ।

वहीं पर मुझे एक दुकान पर भीड़ दिखी । मैंने पूछा , यह क्या है ?

राजीव ने बताया कि यह जेपी फोटो स्टेट सेंटर है , जहाँ पर धकाधक नोट्स और मँगी किताबों का फोटो स्टेट निकला करता है । यह भी इलाहाबाद के मनमोहन पार्क से साम्यता रखता है , जहाँ पर एक साथ दसियों दुकानें इसी काम में लगी रहती हैं ।

इलाहाबाद की तुलना में यहाँ पर अधिक खुलापन था , लड़कियाँ लड़कों से सहज भाव से मिल रही थीं और स्कूटर- मोटरसाइकिल पर उन्मुक्तता से सवारी कर रही थी लड़कों के पीछे वाले सीट पर बैठकर । यह दृश्य इलाहाबाद में तो नहीं ही होता था । वहाँ पर ज्यादातर लड़के- लड़कियाँ नदी के दो पाट की तरह थे , सिर्फ मनोविज्ञान , अंगरेजी, मोनीरबा में कुछ खुलापन था । इलाहाबाद एक परम्परागत शहर था , वहाँ पर मैंने इस तरह का माहौल नहीं देखा था ।

मैंने पूछा कि यह जो लोग सड़क पर धूम रहे मजनुओं की तरह यह कौन हैं ?

राजीव - यह सब फोसला हैं ।

मैं - यह फोसला क्या है ?

राजीव - *Frustared one sided love affair (FOSLA)* करते हैं और यही नामकरण है इनके काम का ।

इसमें बिहारी लोग बहुत होते हैं । वह एकतरफा प्रेम की कला में माहिर हैं । इनके लिये हर लड़की इनकी मीरा भी है और राधा भी और यह सब कहैया

बनकर टहलते रहते हैं । इनके हक्क में विधाता ने कुछ लिखा नहीं है पर यह बहुत ही प्रयत्नशील प्राणी होते हैं । इनके धौर्य और प्रयास के साथ-साथ इनकी आशावादिता की भी प्रशंसा करनी चाहिये ।

मैं - यह भी परीक्षा देते हैं ?

राजीव - परीक्षा तो यह देनी ही है , कैसे देनी है यह अलग प्रश्न है । अब परीक्षा न देंगे तब कहेंगे क्या और किस बिना पर बाज़ार बसाएँगे अपना । यह सिविल सेवा की परीक्षा एक आशावादिता को जन्म दे देती है और व्यक्ति भविष्योन्मुखी हो जाता है , कुछ समय के लिये ही सही । इसलिये यह पूछना कि कौन परीक्षा दे रहा कौन नहीं यह बेमानी है यहाँ । इस परिसर में सब नहीं तो तकरीबन एक बहुसंख्या में तो लोग परीक्षा देते ही हैं ।

आप देख रहे हो वह जेपी फोटो स्टेट वाला , वह कुछ सौ रुपये में आपके परीक्षा के लिये तैयार कर देगा । आप जाओ , आपको भूगोल , एनथरो, लोक प्रशासन की बिरलियंट ट्यूटरोरियल का नोट्स पकड़ा देगा और आप से बहुत से लोग यहाँ कहते मिलेंगे , “ हमने तो सिफ़ यही पढ़कर काम साध लिया । ”

मैं - क्या ऐसा होता है ?

राजीव - होता भी है और नहीं भी होता है । अब आप मेंस पास किये । आपके पास दूसरा कोई विषय तैयार नहीं । आपका अपना प्रारम्भिक परीक्षा का ही एक विषय है , दूसरे के लिये आप क्या करोगे ?

यही एक रास्ता है । अब प्रारब्ध का तो कोई जवाब है नहीं । वह अगर लिखा है तो इसी में काम हो जाएगा , नहीं लिखा है तो घिसते रहो कुछ न होगा ।

मैं - क्या आपका भाग्य, प्रारब्ध, संयोग में विश्वास है ?

राजीव - विश्वास?.... अति विश्वास...अति-अति विश्वास है ।

क्या तुमको नहीं है ? क्या तुमको नहीं लगता सब कुछ नियत है , सब पूर्व निश्चित है ?

मैं - इस बात पर कभी इतनी गंभीरता से विचार तो किया नहीं पर जिस तरह तुमने अपनी आस्था व्यक्त की उतनी अगाध मेरी तो नहीं है ।

राजीव - हर आदमी शुरू में नहीं रखता पर बाद में इस पर यकीन करने लगता है । इंतज़ार करो , आस्था परिवर्तित होगी ।

मैं - यह हो सकता है । इस जीवन में किसी संभावना से इंकार तो किया नहीं जा सकता । यह जीवन कोई शायराना सा ख्वाब तो है नहीं । यह साँसों का आना जाना जिसे लोग ज़िंदगी कहते हैं वह किसी मल्लाह का इंतज़ार तो करेगी नहीं जीवन रूपी दरिया को पार करने के लिये , हर एक को तैर कर ही पार जाना ही होगा कितना भी नदी उफन रही हो । यह सावन कोई हर एक का ठीका तो लिये नहीं कि बरसात सबके आँगन में होगी ही , अब सावन अगर हमारे हळ में नहीं तब आप कह सकते हो यह आपका प्रारब्ध है । यह जीवन एक मजबूर आदमी का गुस्सा है वह खुद पर ही निकलेगा और सारा ठीकरा इस भाग्य पर ही फूटेगा ।

राजीव- यह तुम जो शायराना- दार्शनिक सी बात कह रहे यह तो मैं कर नहीं सकता पर जो लिखा है जीवन में वह ही होगा , यह सोचकर एक शांति की प्राप्ति होती है ।

मैं - यह बात सच है कि यह सोच एक शांति प्रदान करती है । अब हम लोगों की चाहत क्या है , एक आने वाले लम्हे की रौशनी और उसके लिये हम उस जंगल की तलाश में हैं जो हमें लकड़ी आसानी से दे सके । एक आग सीने में महफूज़ रहे इसके लिये हम सारा जतन कर रहे ।

राजीव - यह आग ही है जो हमें यहाँ तक ले आई ।

मैं - यह बात सही है ।

राजीव - कितनी आशा है तुमको अपने परीक्षा के सकारात्मक परिणाम की ।

मैं - यह जो ख्वाहिशें ही हैं , यह एक चाँद की तरह है । समय और परिस्थिति के अनुसार घटती - बढ़ती रहती है । इंटरव्यू के बाद मैं जब सब लोगों को देखा वह घटते चाँद ऐसी हो रही उस दिन से । मैंने इलाहाबाद से बाहर की भी प्रतिभागियों को देखा और उनकी प्रतिभा तो अधिक है ही ।

इतने में मुझकों यामाहा मोटरसाइकिल पर संजीव टंडन और सिद्धांत शरीवास्तव दिखे । मैंने शोर किया , टंडन साहब ... टंडन साहब

सिद्धांत ने पीछे मुड़कर मुझे देखा , फिर वह लोग मोटरसाइकिल मोड़कर पीछे आये ।

सिद्धांत काला रेबैन का चश्मा लगाए थे । मैंने कहा , “ आप यह चश्मा उतारते भी हो या पहनकर इसको सोते भी हो ?

सिद्धांत- तुम वेस्ट लैंड वालों को बेवकूफी की बात करने में महारत है ।

मैं - यह “ वेस्टलैंड ” क्या है ?

सिद्धांत- यह इलाहाबाद , पटना , कानपुर सब वेस्ट लैंड हैं । यहाँ बस गंगा का पानी पियो और कुछ नहीं कर सकते ।

मैं - तुम तो जैसे लंदन से ही सीधे पैराशूट से आये हो । यहीं ज़िंदगी बीत गई और अब मैकाले बन गये हो ।

सिद्धांत- यहाँ कर क्या रहे हो ?

संजीव टंडन - अभी तक यहीं घूम रहे हो , इलाहाबाद जाना नहीं क्या?

सिद्धांत- यह घूम - घूम कर लड़कियाँ देख रहे । पहले जेएनयू , फिर एलएसआर , डीयू , मिरांडा हाउस । तुम्हारे बस का कुछ है नहीं । राजीव इनको भी फोसला हो गया क्या?

संजीव टंडन ने पूछा कहाँ रुके हो ? मैंने बताया कि पूसा इंस्टीट्यूट में मैं रुका हूँ । वह भले आदमी थे बोले कि मैं उधर से ही आईआईटी जाऊँगा , तुमको छोड़ दूँगा ।

मैं उनके साथ वापस पूसा पहुँच गया । आंटी इंतज़ार कर रही थी । उसने खाना लगाया , मैं और आंटी खाना खाने लगे । आंटी बोली वह राम की उर्मिला वंदना सुनाना आज ।

मैंने कहा , आप को अभी तक याद है , भूली नहीं आप ?

आंटी बोली , मैं इंतज़ार में हूँ इस जीवन में बहुत सी चीजों के और इंतज़ार मेरे जीवन को आसान कर देता है । अनुराग कभी - कभी सोचती हूँ कि जिनके जीवन में इंतज़ार नहीं होता होगा वह कैसे जीवन जीता होगा ।

अब तुम सुनाओ वह ,

राम की उर्मिला वंदना ।

मेरे खाना खाते वक्त आंटी ने पूछा कल की प्रथाग राज है ?

मैं - हाँ आंटी , वह 9:30 पर चलती है दिल्ली रेलवे स्टेशन से और सुबह सात बजे के करीब पहुँचा देती हैं इलाहाबाद रेलवे स्टेशन ।

आंटी - किस क्लास में रिजर्वेशन है ?

मैं -आंटी , यह भी कोई पूछने की बात है , स्लीपर में ही होगा ।

आंटी - क्यों? स्लीपर क्यों ? फ्रस्टर्ट क्लास में ले लिये होते ।

मैं -यह माँ भी कह रही थी पर क्या करना इस फ्रस्टर्ट क्लास का ? रात भर का मामला है , क्या पैसा ख़राब करना ।

आंटी - ख़राब क्यों करना पैसा ? आराम से जाते , अब जीवन एक नये राह की ओर है ।

मैं -आंटी , जिसने जीवन की मामूली सी मामूली ज़रूरतों से भी समझौता करके एक-एक पैसा जोड़ा हो किसी भविष्य की योजना के लिये , उसमें मैं यह सहयोग तो कर ही सकता हूँ कि उसका अपव्यय न करूँ , अगर कोई और सहयोग नहीं कर सकता ।

आंटी -इतना बड़ा पैसा भी नहीं लगेगा एक यात्रा में । मेरा कोई पैसा खर्च होता ही नहीं , ऋषभ भी डालर भेज- भेज कर बैंक बैलेंस भरे रहता है , अगर तुम अन्यथा न लो तो मैं खरीद देती हूँ , यह करना मुझे भी संतोष देगा और अच्छा महसूस होगा मुझे । एक मेरी अपनी संतुष्टि का यह हक्क तो मुझको दो ।

मैं -आंटी , आपका पूरा हक्क है मुझ पर । यह ज़रूरी नहीं हर रिश्ता परिभाषित ही हो , कई रिश्ते अपनी परिभाषा स्वयम् ही गढ़ लेते हैं धड़कनों की संजीदगी से । पैसा आपका हो या माँ का एक ही बात है , पैसे की कदर करनी चाहिये । अब कौन जाएगा रिजर्वेशन कैंसल कराने , नया टिकट खरीदने , मैं गाज़ियाबाद में सो जाऊँगा और सूबेदार गंज में नींद खुलेगी , रास्ते का पता ही न चलेगा ।

आंटी को लग गया कि मैं संकोच कर रहा और वह बहुत परिपक्व थी ही , उन्होंने यह कहकर बात को ख़त्म कर दिया कि टीटी से कहना अगर कोई बर्थ ख़ाली हो तो चले जाना फ्रस्टर्ट क्लास में । मैंने भी कहा , ठीक है आप कह रहीं तो ऐसी कोशिश करूँगा पर आंटी इतने दिनों में मुझको समझ गई थीं और यह अनुमान लगाना कठिन न था कि मैं जाऊँगा स्लीपर में ही , चाहे पूरा फ्रस्टर्ट क्लास ख़ाली ही क्यों न हो । यह फ्रस्टर्ट क्लास का मतलब ऐसी डिब्बा ही था , बस आंटी अपने पुराने दिनों की परिपाटी में फ्रस्टर्ट क्लास कह रही थीं ।

मैंने खाना खा लिया । आंटी ने कहा वह उर्मिला की वंदना सुनाओ , वह क्या है ?

मैं आंटी वह एक कल्पना है । मैं रोज़ लिखता ही था । मेरे घर में धार्मिक माहौल होता ही था । मैंने राम पर लिखने का प्रयास किया । यह भी एक आश्चर्य की बात है , जब मैं लिखने लगा तब प्रभु की असीम कृपा हुई और कलम सरपट दौड़ने लगी ।

आंटी - क्या काफ़ी लिखा ?

मैं - हाँ कई दिन गद्य में लिखा फिर पद्य लिखने लगा ।

अयोध्याजन्मना महानतम मर्यादा प्रतिमूर्ति की ऐसी कृपा हो गई कि मैं जहाँ भी कलम चलाता वहीं एक काव्यात्मकता जन्म ले लेती । आंटी कुछ दिन बाद तो ऐसा हो गया कि राम पर मैं कुछ भी लिख सकता था । इस अप्रतिम-अलौकिक नायक की कहानी सही है या मात्र लोक में गढ़ी गई , शरी राम ऐतिहासिक थे या यह पात्र कपोल कल्पित है इस बहस से अलग एक धरूव सत्य यह है कि हम सबकी चाहत है कि हमारी परम्पराएँ , हमारा परिवार , हमारा समाज राम कथा के आदर्श एवम् मूल्यों से ओत परोत हो । हम किसी भी सभ्यता, संस्कृति, धर्म के हों पर हमारे बच्चों में प्यार उन्हीं चार भाइयों की तरह और सम्मान माता- पिता का वैसा ही हो जैसा राम करते थे । जैसा राम का विश्वास भरत- लक्ष्मण पर था वैसा ही विश्वास हर बड़े भाई का अपने अनुजों पर हो । भौतिकवादी मूल्यों को परास्त करता हुआ अनुराग एवम् त्याग से परे पारस्परिक जुड़ाव पीढ़ियों में हो ।

आंटी - कैसा विश्वास? किस विश्वास की बात तुम कह रहे ?

मैं - आंटी , जब भरत को लक्ष्मण उत्तुंग शिखर से देखते हैं चित्रकूट की ओर आते हुये लक्ष्मण उत्तेजित हो जाते हैं और राम को सम्पूर्ण समर्पित लक्ष्मण भरत के विरुद्ध असम्मान जनक शब्दों का प्रयोग करते हैं । लक्ष्मण के चरित्र में थोड़ा उच्छृंखलता का पुट है । राम कहते हैं,

दुख भी है , पीड़ा भी है , मस्तक में जलती ज्वाला है

धर्म धुरी चलती है जिससे उस पर अविश्वास आज हो आया है ।

लक्ष्मण के आकरोश को देखकर राम कहते हैं

अगर धर्म अपमानित हुआ समुख मेरे

सघनों में समाधिगत हो जाऊँगा ।

लक्षण से ही कहते हैं कि , जाओ तुम भरत को ससमान लेकर मेरे पास आओ । जब राम भरत को देखते हैं तो वह विह्वल हो जाते हैं , उनका धनुष , तूणीर , अधो वस्त्र सब गिर जाता है । राम की अधीरता के बहुत ज्यादा उद्घरण नहीं मिलते पर कुछ उद्घरण जो उपलब्ध हैं उसमें एक यह भी है जब राम भरत को चित्रकूट में देखते हैं । यही नहीं आप एक भाई का असीम विश्वास देखिये । उनको पता है कि जहाँ पिता की कीर्ति का प्रश्न होगा , वहाँ भरत अपना सर्वस्व त्याग देगा , यहाँ तक कि राम के प्रति अनुराग भी ।

भरत का अति आग्रह था कि राम अयोध्या वापस चलें और राज्य सँभाले । वह राम के राज्याभिषेक की सारी तैयारी करके आये थे । वह चाहते थे , राम का राज्याभिषेक चित्रकूट में हो और राम अयोध्या नरेश बनकर अयोध्या वापस चलें । वह किसी भी तरह अपना यह आग्रह त्यागने को तैयार न थे ।

उस समय राम ने कहा , भरत तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा पर तुम मुझसे भी वही कराओ और स्वयम् भी वही करो जिससे सत्यपिरय पिता की कीर्ति पर अपयश का चिह्न न दिखे ।

यही वह समय था जब भरत ने अयोध्या राम से चलने का आग्रह त्याग कर खड़ाऊँ माँगकर उसके सहारे राज्य चलाया और 14 वर्ष तक सत्य के साथ नंदीग्राम में वास किया । राम यह जानते थे , जहाँ पिता की कीर्ति का प्रश्न होगा उसकी रक्षा के लिये सारे भाई सर्वस्व त्याग देंगे ।

यह परम्परा, यह संस्कार जाति , धर्म, भूगोल की सीमाओं से परे है और सबकी चाहत है यही परम्परा हमारे समाज और हमारे परिवार की यही होनी चाहिये । यह आंटी आपकी भी चाहत होगी , मेरी माँ की भी , ऋषभ की और मेरी भी ।

आंटी - मैंने रामायण पढ़ा ज़रूर पर इस दृष्टिकोण से नहीं देखा । यह एक अद्भुत दृष्टिकोण है । यह विकसित कैसे हुआ ?

मैं - अयोध्याकांड सिविल सेवा परीक्षा के हिंदी साहित्य के विषय के पाठ्यक्रम में है । यह हो सकता है , मैंने अपने उस स्वार्थ की पूर्ति के लिये इसको विश्लेषित किया हो ।

आंटी - वह उर्मिला प्रसंग ? वह क्या है ?

मैं - मेरा अलिखित आख्यानों पर बहुत रुचि रहती है । उर्मिला पर लिखा कम गया है । मैथलीशरण गुप्त जी ने लिखा है , बाकी तो कुछ खास लिखा न गया ।

आंटी - तुमने क्या लिखा ?

मैं - मैंने यह संकल्पित किया , अगर मेघनाद मारा न जाता तब रावण तक पहुँचना संभव न होता । यह भी कहा जाता है उसको मारना असंभव था । उसके पीछे सुलोचना का तप था । मैंने लक्ष्मण- मेघनाद युद्ध को उर्मिला- सुलोचना के तप - संग्राम के रूप में देखने की कोशिश की और जब राम अयोध्या वापस आते हैं तब उर्मिला राम से मिलती है । उस राम - उर्मिला संवाद में राम उर्मिला की स्तुति ऐसी करते हैं ।

आंटी - क्या है वह

मैं - सुन ही लीजिए वह काव्यात्मक कल्पित आख्यान....

उर्मिला

हे जगतनियंता पालनहार परभु श्री राम
मैं उर्मिला साथ आपके आयी गर्व से
बन पत्नी वीर लक्ष्मण अयोध्या भूमि
हाथों की मेहंदी का रंग कुछ धुँधला हुआ
कानों में मंगलगान की ध्वनि कुछ मञ्चिम हुई
वह कह बैठे थे आकर एक संकल्प से
वन को जाता हूँ मैं राम जानकी संग
समझ पाती पूरा वृतांत यह नव सुहागन
बता बैठे वह अपना निश्चय विशेष
नयनों की भाषा से संभाषित करते हुये
” उर्मिले करने दे परस्थान मुझे वन को
परभु की सेवा की असीम लालसा रखते हुये । “

सुन संकल्प स्वामी का गर्व से नहायी यह दासी
रोम-रोम पुलकित हुआ चक्षु में राम की आभा लिये
दिया सारा परिधान संन्यासियों का
खोल कर केश बनायी जटा मनोहर
देख विस्मित हुई तेज असीम मुख-मंडल

सुंदर राजकुमार एक मुनि वेश में ।

बस एक बात बता दो हे दयानिधान , कृपानिधान , आपदा प्रबंधक हे
रघुनन्दन परातः स्मरणीय हे श्री राम

“ क्या कभी उसने मेरी कमी महसूस की थी ?
क्या कभी लगा आपको उर्मी है उसके ध्यान में ।”

स्नेह राम का बहता उफनती जल भरी नदियों की लहरो सा
झुका शीश उर्मिला नयन पखारते प्रभु चरण
पवन शांत उत्सुक आळादित सुनने को वह शील संवरित ओजमयी नयन मुख
संवाद
नयनों की भाषा प्रवेशित कर्णों में
करती ध्वनि सुमधुर राम संवादों संग

“हे परम सुशीला , वंदनीय उर्मिले
शील पाता हो आभा जिसके नाम से

देखता था उसको दूर कहीं बैठा हुआ
सजग देखता दसों दिशाओं को
एक बाज़ रूप सिंह मुद्रा में

बोलता बहुत कम था वह वीर कहीं खोया हुआ
कई बार कहा मैंने हम निमित्त मात्र हैं नियति के
मत दे दोष पिता माता और मंथरा को इस काल की गति का
बोला कभी कुछ नहीं पर वह महसूस करता रहा
वन आदेश की मेरी वह पीड़ा जो मुझे कभी हुई नहीं

उर्मिले वह सजग चैतन्य निदरा विजयी महारथी पति तेरा
न था कोई सामान्य मानव जन्मा अनायास धरती पर उत्तरा हुआ

कभी न जीत पाता इंद्रजीत को अगर न होता वह पति तेरा
रावण तक राम-पराकृम पहुँच न पाता अगर मेघनाद न जाता मारा

वह परम सती सुलोचना-पति मेघनाद संरक्षित था उसके सत्त्व से
रहता था सुलोचना कवच मध्य वरदान प्राप्त योद्धा अपराजेय
जिसने हराया हो इन्द्र को , ऐरावत भयभीत हो जिसके रथपहियों के
कोलाहल से
वरदान था उस परमवीर , महावीर, शत्रुहन्ता को
वही हतेगा उसको जिसकी अर्धांगिनी होगी सुलोचना पर भारी

मेरे सारे अमोघ अस्त्र ब्रह्मास्त्र निस्तेज थे
ऐसा उस सुलोचना का तेज़ था
जब मेघनाथ ने चलाया था शक्ति बाण उस पर
सब मल्लधीर विहवल लक्ष्मण के प्राणों को लेकर
किंकर्तव्यविमृद्ध हनुमान , राज्याभिलाषी विभीषण राक्षस कुलधीर, युथपति
अंगद अति गंभीर , चिंतित भंगित सुगरीव, जामवन्त वह बुद्धिवीर
सब देख रहा मेरे नयनों में उगते पंकधीर
पर मैं निश्चन्त था कारण उर्मी का तेज़ था

जब अंतिम चल रहा युद्ध सूक्ष्मातिसूक्ष्म लिये पराकरम विशेष नभ में
सिंहनाद कर रहा वह गर्जित योजित बारम्बार व्यूह निर्मित मस्तिष्क लिये
सबल वह इन्द्रजीत
कर रहा सारा यत्न रखे लंका रक्षा विचार
शक्ति- समर संधान स्पंदित विषम रण क्षेत्र
लोहित लोचित द्वि अपराजेय योद्धा करते हत लक्ष्य बाण
रावण अधर्मरत देख रहा युद्ध विकराल पराकरम विशेष

कोई दूर बैठा योगासन मुद्रा में करता पूर्णाभिषेक तेज पुंज नयनों में दीप्ति
लिये

रख रहा असंदिग्धभाव अगणित धनि परिवर्तित अभंग भाव
रखे विश्वासयुक्त रूधिर स्त्रराव काया विशेष
करता उच्चारित मन्त्र आह्वान आत्म शक्ति परिपूर्ण पति संरक्षा का विचार

जिस पल सुलोचना कमज़ोर पड़ी
उर्मिला का सत्त्व दिखा पूरे तेज़ से तीक्ष्ण आभा प्रमुदित छवि लिये अम्बर में
रिपुदमन करता हुआ

कहा जामवन्त से राम ने पूर्ण संयम विश्वास से
करो तैयारी विभीषण के अभिषेक की
उर्मिला ने तोड़ दिया है कवच रावण का

भास्कर हो गया उदय सायंकाल की बेला में पाता प्रकाश उर्मिला के तेज पुंज से
लक्ष्मण तुणीर चल रहे गर्जित स्वर में
इन्द्रधनुष उभरा असमय आसमानों में
राक्षस करुद्ध असहाय देख रहे शस्त्र प्रबोध महान उर्मि पति का

महाशक्ति लिये अंक में लक्ष्मण को
मन्त्रोच्चारित कर रही लोहित लोचित नयनों से
शशांक नभ में आतंकित छिपा दूर कहीं रवि की आभा में
हत हो रहा बारम्बार वह इन्द्रजीत उर्मि अनुष्ठानित मन्त्रोच्चारित शर संधानों से
ज्यों खिचा अतुलनीय धनु संधान उर्मि पति के अंतिम मन्त्र संवर्धित बाणों का
दिखा पूरा तेज उर्मि का बाणों के शर में चक्राकार
स्थिर अविचिलित ब्रह्मांड, , उदित तेज, मर्दित हतप्रभ राक्षस दल, करुद्ध पराजित आहत इन्द्रजीत
रावण गिरा राजकक्ष में अस्त्र सुसज्जित मुद्रा में
कपिदल नारों में गूँज रहा लक्ष्मण प्राकरम का उदघोष

राम कर रहे उच्च स्वरों में उमिला शौर्य का जयगान
सहसा धनुष उठा नभ की ओर पुलकित लक्षण बोला गर्जित भास्वर स्वर में
परम साध्वी उमिला का तेज फैले नभ में दिवाकर को आच्छादित करता हुआ

कपिदल नारों में गुंजायमान तेरे युगल चरणों का प्रताप
दिख रही दूर से सीता मुझको करती वंदित उमि को ।

आंटी - यह तो अद्भुत कल्पना है । यह तो एकदम अलग है । कुछ और है राम पर ?

मैं - आंटी पूरी रात बीत जाएगी पर राम का आख्यान समाप्त न होगा । पता नहीं कितना लिखा होगा ।

आंटी - मेरी रातों की क्या कीमत । मेरे नींद का कौन सा भरोसा .. कल तू चला जाएगा और मैं जीवन में फिर एकाकी इन्हीं दीवारों के बीच और इनसे करती गुजारिश ऐ पत्थरों कुछ तो बात करो मुझसे ।

मेरी हँसी मेरा एक नक़ाब है जो मेरे दर्द को छुपाती है । मेरी जिन आँखों में लरजते थे कभी खुशी के पैग़ाम अब उन्हीं आँखों को न उर्ज की चाहत है न ज़वाल की । यह जो सन्नाटा कल तेरे जाने के बाद आएगा वह मेरी साँसों की आहट से ही टूटेगा । मैं अकेलेपन से इतना आजिज़ आ गई हूँ कि मैं जलती रौशनी में भी दिये जला देती हूँ इन रोशनियों के साहचर्य के लिये, पर मेरा साथ कौन देगा सिवाय इन बोलती दीवारें के । यह दीवारें जो तुमको लगती हैं निर्जीव वह मुझसे बातें करती हैं, इन्होंने तमाम वह ख़बाब, वह लम्हे देखे हैं जो मैंने जिये हैं ।

मुझे सच्ची बातों से ज्यादा झूठ प्यारे लगते हैं क्योंकि सच तो डराता है पर यह झूठ जीने का सहारा देता है । मैं शायद एक ऐसी गुनहगार हूँ जिसकी सजा क़ानून की किताबों में नहीं है पर जीवन के प्रवाह में है और मेरे हरे-भरे खेत को जंगल कर दिया गया ।

अनुराग, तुमने कुछ लम्हों में मेरी दुनिया बदल दी तू अब पता नहीं कब मिलेगा मेरे लिये तू कुछ और पल लिख दे । मुझे नहीं पता तेरे इस इंटरव्यू का क्या परिणाम होगा पर तू मुझे ज़िंदगी देकर गया । जीवन के रास्ते में भटकते- भटकते मुझे कुछ वह खोयी हुई जन्नत मिल गई जो मेरे आँखों में समाकर मुझसे छिटक गई थी । मेरे दिये आँधियों ने बुझा दिये थे पर चाहत मेरी रौशनी की एक

जुगनू मुझको दे गया ।

अनुराग तुम जानना चाह रहे , कितना मैं सुन सकती हूँ ? मैं सुनना ही चाहती हूँ , तुम यह बताओ कितना तुम सुना सकते हो इस ढहती हुई दीवार को जिसको ज़रूरत है सहारे की ।

मैं एक टूटी कब्ज़ार हूँ जो इंतज़ार में हैं एक मरहम के पर धरती के ज़ख्म तो मिट्टी भर देती है , मेरा मरहम

कौन बनाएगा कौन भरेगा

मैं आंटी , यह बात तो अब मैं या कोई बदल नहीं सकता जो परमात्मा ने चाहा हो लिखना किसी के भी नसीब में , पर एक नज़रिया तो हम जीवन जीने का अलग बना ही सकते हैं ।

यह हो सकता है हर शाम ढले हम परिदों को घर जाते समय अपने बच्चों से मिलने की उत्कंठा के रूप में देखें । यह ही बहुत सुकून है परिदे के लिये शाम को साँप उसके धोंसले में न हो वरन् चहचहाते चूज़े हो । आंटी शाम को गाँव में परिदों का शोर होता है , गाय के खुर से उड़ती हुई धूल होती है और नामकरण ही हो गया गोधूलि की बेला । यह क्या है ?

यह एक आस्तिकता है जीवन की । यह एक मनोहर दृश्य है जो जीवन देता है । मैं बचपन में गाँव जाता था , मुझे सुबह का कौवा बोल भिंसार , शाम का पक्षियों का शोर , दूर से उड़ती गाय के खुरों से क्षितिज की ओर बढ़ती धूल , जितना जीवन मुझे इसमें दिखा उतना मुझे कहीं और न दिखा । मेरे भाई - बहन शहर आने को व्यग्र होते थे पर मैं नहीं । मुझे वह किताबों की ओर लौटता जुलाई का महीना पीड़ा देता था । मेरा स्कूल 8 जुलाई को खुलता था और जुलाई के पहले सप्ताह में हम लोग गर्मी की छुटियों से वापस गाँव से शहर आते थे । मैं धड़कनों में बसा कर आता था वह जीवन फिर अगले साल मिलने की उम्मीद लिये । गाँव में मैं जिन लोगों के साथ खेलता था वह न तो मिलने पर हाँथ मिलाते थे न ही जाते समय गले मिलते थे पर वह मुहब्बत करते थे , दिखावे की दोस्ती नहीं ।

यही कहते थे वे सब , “ मुन्ना बीच में भी आना गर्मी की छुट्टी से पहले भी । ”

मेरे साथ एक लड़का खेलता था कल्लू उसके पिता उसको बहुत मारते थे , वह अपने पिता से नाराज़ होकर घर से भाग गया था । हम लोग उसको पूरी गर्मी की छुट्टी हूँढ़ते रहे पर वह मिला नहीं । मैंने सुना कि मेरे साथ के लड़के

कह रहे , “ अब मुन्ना भैया कलेक्टर बनहीं कल्लुवा के ढूँढ़ निकलही ” । इतनी पुरानी घटना और आज तक उम्मीद की किरण ...

आंटी जिस तरह सर झुकाने से ही पत्थर देवता हो जाता है उसी तरह किसी पर विश्वास करने से बहुत शांति प्राप्ति होती है । मैं किसी के लिये कुछ कर्लूँ न कर्लूँ पर इस समय मेरा होना ही लोगों को उजाला दे रहा । अब इससे बड़ा विश्वास क्या होगा कि मैं उस कल्लू को ढूँढ़ निकालूँगा ।

यह जो नदी - तालाबों में बहाये मिट्टी के दिये सारी रात डोलते हैं पानी में वह एक संदेश देते हैं आस्था और विश्वास का उस बहाने वाले के साथ जुड़ा हुआ जो किसी संकल्प के साथ बहाता है इनको ।

हर कोई ग़ज़ल नहीं लिखता पर ग़ज़ल झिलमिलाती सबकी आँखों में है । आंटी गम के दिन भी खुबसूरत होते हैं और वही वह समय होता है जब ख्वाब आँखों को बार- बार चूमते हैं । हटा तो ज़िंदगी से गम को ख्वाहिश तो बहुत होगी पर ख्वाब कम ही होंगे । यह ख्वाहिश नाज़ायज़ हो सकती है पर यह नाज़ुक से ख्वाब नावाजिब नहीं होते ।

आंटी तुमसे बात करना एक लुत्फ़ है । मुझे कल से इन दैवीय - क्षणों से मरहूम हो जाऊँगा ।

आंटी - अनुराग, तुमसे बात करना एक रुहानियत है , यह रुहानियत का एहसास कल से नसीब न होगा ।

आंटी- अनुराग , इसकी भी संभावना है कि तुम न आओ तो मैं ही आ जाऊँ मिलने तुमसे । एक कुछ दिन पहले का अपरिचित लड़का मेरे शहर से मुझको जोड़ दें और विस्मृतियों के गर्भ में खो गये रिश्ते- नाते स्मृतियों में सजीव हो जाएँ ।

मेरे लिये राम पर कुछ और सुना कर जाना । मेरी आँखों पर लिखी तहरीर पर भी हो सके तो लिख देना इस पर तमाम अफ़साने लिखे हैं जिसको पढ़ने की क्षमता शायद कम ही लोगों में है । कभी वह वक्त आएगा लोग कहेंगे , तू मुझ पर लिख और तब तुमको लगेगा दालानों की धूप , छत की शाम , ऊँघता आँगन , सोया शहर , बाज़ारों की चहल-पहल और पीछा करता सूरज कहीं पहाड़ियों में छिपता और इन सबके बीच खिड़कियों से आ रही शोख हवा के बीच मैंने कभी कहा था मेरी आँखों की तहरीर पर लिख । मैं शायद पहली वह व्यक्ति होऊँगी तेरे जीवन में जो कह रही मेरे अफ़सानों पर लिख ।

मैं - आँटी समंदर के सीने में एक चट्टान होता है , वह कई मौजों को भी देखता है और कई आतंकी लहरों को भी , आप वही चट्टान हो

आँटी - तू मौजों पर लिख या आतंकी लहरों पर चट्टान की दोनों तहरीरें तेरे पास हैं और तू ही पढ़कर लिख सकता है मेरे बारिश से भीगे चेहरे पर आँसुओं से लिखी गाथा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 80

मैं आँटी से शुभ रातिर कहकर कमरे में आया । मुझे यहाँ आये कई दिन हो गये थे पर यह मेरे जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण मोड़ था । मैंने इस तरह की दुनिया पहले न देखी थी न ही सुनी थी । एक विविधता पूर्ण जीवन जो मेरी कल्पनाओं से बाहर था ।

मैं सामान को सूटकेस में लगाने लगा । मेरे घर में कोई सूटकेस था ही नहीं । मैं जब मेंस पास किया तब यह सूटकेस ख़रीदा गया । मैंने एक सामान्य सा ही जीवन देखा था जिसमें जीवन की काफ़ी चीजों को ग़ैर ज़रूरी ही बताया गया । यहाँ तक कि एक किताब है तब उसी विषय में दूसरी किताब की क्या ज़रूरत । मैं इंटर में था तब मैंने सुना था कि कुमार - मित्तल की फ़िज़िक्स की किताब प्राबल्मस के लिये अच्छी होती है । मैंने जब घर में यह माँग की तब कहा गया एक किताब तो है इस विषय में दूसरी का क्या करना ?

यह शायद मेरे ही घर में नहीं अधिकांश घरों में होता है जहाँ कई बच्चे पढ़ रहे हों और आमदनी के साधन सीमित हों । मैंने हमेशा पुरानी किताबें ही पढ़ी क्योंकि बड़े भाई की या मेरे चाचा- मामा के बच्चों की किताबें ही मुहैया करा दी जाती थी । कपड़े साल में दो बार बनते थे और सारे भाइयों के कपड़े एक ही थान से एक ही तरह के ले लिये जाते थे । इसके पीछे तर्क यह था कि इसमें कपड़ा कम लगता है । मैं जब छोटा था तब तो कोई बात नहीं जब थोड़ा बड़ा हुआ तब मुझे बहुत अजीब लगने लगा । यह क्या सर्कस के जोकर ऐसा सब एक ही तरह का कपड़ा ।

मेरे मामा के बेटे की शादी तय हुई । सब कह रहे थे बहुत अमीर घर में विवाह हो रहा , तिलक में बहुत कपड़ा चढ़ा । मेरी माँ आशा भरी नज़रों से देखती रही कि उसके बच्चों को भी कपड़ा मिलेगा पर कौन था जो ध्यान देता । सब लोगों को कपड़े मिले पर बहन के बच्चों को न मिले , हम लोग कपड़ों से

मरहूम रहे । हम भाइयों के लिये अंतिम समय में कपड़ा सिलाया गया । मेरे मामा के लड़के सफारी सूट पहने थे, वह उस समय बहुत चलन में था और हम लोग साधारण कमीज - पैंट । यही नहीं मामा ने कह भी दिया कि मेरी इज्ज़त शर्मा जी ने ख़राब कर दी, बच्चों को भिखमंगों ऐसा कपड़ा पहना कर बारात में ले आए ।

मेरी माँ को यह पता लगा, वह कहाँ बर्दाश्त करने वाली । इलाहाबाद में या यूँ कहें हर जगह ही रितेदारों - नातेदारों में ऊपर से परेम दिखता है पर अंदर ही अंदर जलन और ईर्ष्या भी होती है । मेरे मामाओं और उनके बच्चों में भी आपस में गैंगबाजी थे, वह सब हमसे बढ़े थे और इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करते थे । यह भी एक सत्य ऐसा स्थापित है कि हर परिवार के वृहद कलेवर में एक दो नारद एवम् मंथरा सदृश होंगे ही ।

मेरे एक मामा के बेटे का विवाह बड़े शान- शौकृत से बड़े घर में हुआ तो दूसरे मामा के बच्चों को कहाँ सुहाने वाला । मेरे बड़बोले मामा ने जैसे ही कहा, मेरे बारात के वेश - भूषा और व्यवहार पर, एक जासूस दूसरे मामा के घर से आ पहुँचा वृत्तांत लेकर और आँखों देखा हाल सुना मारा ,

“ सुनू तू हुआ ... चाचा कह रहे थे, शर्मा जी ने हमारी इज्ज़त ख़राब कर दी और यह बेवकूफ मुन्ना हर जगह कूद रहा था । इसको बलहा बनने का बहुत शौक था । जब देखो आगे- आगे कूद रहा था । समधी जी को किसी ने बताया यह इनका भांजा है, वह बड़ी हिकारत भरी नज़रों से देख रहे थे । मैं तो शर्म से पानी - पानी हो गया । शर्मा जी का दरिद्रपन कभी न जाएगा । कुछ ठीक- ठाक कपड़ा सिला दिये होते । मारकीन ऐसे कपड़े की क़मीज़ सिलवा दी थी । यह गरीबी - दरिद्रपन सात पीढ़ियों तक नहीं जाता है ”

मेरी माँ कहाँ किसी की बर्दाश्त करने वाली । वह बिफर पड़ी और बोली,

“ यह गरीबी - दरिद्रपन दिया किसने ? कोई हम डरवार फाँद कर भाग गए थे क्या? जब लड़का देखने की बारी थी तब क्यों न देखा यह गरीबी । तब तो यह परिवार बहुत अच्छा था । जहाँ ले आकर मुझे बाँध दिया गया, वहाँ खूँटे से हम बाँध गए । यह हमारा भाग्य है अब इसके साथ तो हमको निबाहना ही है । सुनो जाकर कह देना, बड़- बड़वार होइहैं तो अपने घर के होइहिं । मैं कुछ माँगने नहीं जाती हूँ उनसे । अगर कभी माँगने जाऊँगी तब नहीं देगे । यह रिवाज हर जगह है कि भांजों का कपड़ा विवाह में मामा बनवाता है, यह नयी रीति है कि भांजों की अनदेखी की गई । इतना बड़ा थाल चढ़ा तिलक में । इतने थान कपड़ा था पर मेरे बच्चों की सुधि नहीं आई उनको । हमारी

जितनी हैंसियत थी हमने किया । जो कपड़ा मुन्ना पहने था उसमें क्या ख़राबी थी । बहुत घमंड हो गया है उनको । रावण का भी घमंड टूट गया था, उनकर का बिसात । मेरा बेटा जहाँ खड़ा होता है अलग दिखता है, गोर-नार है, बड़ी आँखे हैं, अच्छा बोलता है । इसफारी सूट पहन लेने से कोई सुंदर नहीं होता । “

माँ - एक बात यह बताओ दादू यह जब वह कह रहे थे तब कौन- कौन था ?

दादू - बुआ, यह वह दुआरे पर कह रहे थे । दहेज में बुलेट मोटरसाइकिल मिली थी जो वही लेकर आए थे । आस- पास के बहुत से लोग इकट्ठा थे मोटरसाइकिल देखने । बुआ, एकदम चमचमाती मोटरसाइकिल थी और हाफ किक में स्टार्ट हो जाती है । उसकी आवाज भी अलग है, एकदम बँधी आवाज ।

दादू था बहुत बदमाश । वह मुझसे दो साल बड़ा था । वह हर जगह लकड़ी लगाता था । वह रात को मामा का पैर दाबते हुये रहस्य निकाल लेता था । वह मेरी माँ का खबरी था । उसी ने यह भी खबर दी थी कि चाचा कहत रहेन मुन्ना प्रारम्भिक परीक्षा फेल हुआ है पर हवा बाँध रहा कि पास कर गया । यह शर्मा जी का सारा डरामा है विवाह में दहेज लेने के लिये । यह दादू माहिर था मज़ा लेने में । यह पैर दाबते - दाबते बोला ,

दादू - चाचा तोहका पता तो सब रहता है, मुन्नवा के बारे में पता तो होई तोहका, पर मुन्ना रहा बहुत खुश था उस दिन । हम थे उस दिन जब रिझल्ट आया था ।

चाचा - तुमको पता है वह किसका पर नाती है ? उसके परदादा जनेऊ में लाठी बाँध कर गंगा पार कर जाते थे पाही के खेत पर क़ब्ज़ा करने । झूठ-फ़रेब मुन्नवया के खून में है ।

दादू - चाचा, कुछ उम्मीद है मुन्ना के नौकरी- चाकरी की ?

चाचा - कोई देखा है उसकी मार्कशीट

आजतक ? जब कहो दिखाने की तब बात बदल देगा । अब ऐसे लोग कहीं कुछ कर सकते हैं ?

दादू - चाचा तू आईएएस देहे होत तब पक्का आईएएस होइय जातै । पर हमरे तकदीर में तोहार सेवा लिखी रही । अगर होई गये होत आईएएस तब नौकर-चाकर पैर दबाते हमको सौभाग्य कहाँ मिलता ।

मामा उठ कर बैठ गए / सारा दोष नाना पर / मैं तैयारी करने की सोच रहा था कि बाबू पीछे पड़ गए नौकरी- नौकरी अब नौकरी लग गई , विवाह बहुत बचपन में हो गया था , सब अरमान रह गये

दादू - चाचा तोहार ऐसी अंगरेजी डेबरा में केहू के पास नहीं है / आप जब अंगरेजी बोलते हो लोगों के हाथ से बीड़ी गिर जाती है ।

यह सुनकर मामा अंगरेजी बोलने लग गए / मेरे मामा का किसी का अंगरेजी जाँचने का एक ही नुस्खा था

एक अनुवाद करने को कहते थे

“ मेरे स्टेशन पहुँचने के पहले गाड़ी चली गई थी । “

मेरे मामा थोड़ा मानिंद थे , अफ्रसर टाइप थे , कई बार सरपंच रहे नामचीन आदमी के बेटे थे , ज़मींदारी कभी हुआ करती थी ऐसा किस्सा फैला है , ज़मीन गाँव में बहुत थी और कई गाँवों में थी , गाँव में बड़ा दूर तक फैला पक्का मकान था इसलिये वह शादी - व्याह तय कराने में अग्रणी भूमिका निभाते थे और यह अनुवाद हर उस लड़के से पूछ लेते थे जहाँ भी वह लड़का देखने जाते थे और उसकी प्रतिभा पर निर्णय दे देते थे । मेरी माँ कहती थी आज बड़े चौधरी बने हैं , हमारे समय में बाबू अकेले जाते थे ।

यह दादू ऐसी आग लगाकर गया कि वह बुझने का नाम ही नहीं ले रही थी ।

मेरी माँ एक आदमी से यह बात कहती तो बात रुक- छिप जाती । मेरी मौसी , मेरे मौसा , मेरे नाना , मेरे मामा के उस लड़के से जिसका विवाह हुआ सबसे कह मारा । हकीकत तो यह है उससे बर्दाशत नहीं हो रहा था और वह लड़ने पर आमादा थी । मेरे पिता लाख समझाए पर वह कहाँ मानने वाली । कोई उसके बेटे को भिखमंगा कह दे , यह सुनकर ही उसका रक्तचाप 200 पहुँच जाए । मेरे मामा के लड़के जिनके विवाह में यह हादसा हुआ वह मेरे माँ के कोप का शिकार हो गये । उनका नाम घर का बाबा था ।

माँ - बाबा , बहुत बड़े आदमी हो गये हो तुम लोग ?

बाबा - क्या हुआ हुआ ?

माँ - सरे बाज़ार मुन्ना को भैया भिखमंगा कह रहे ।

बाबा - नहीं हुआ / कौन यह कहा तुमसे

माँ - यह छोड़ो कौन कहा , पर इतना भी घमंड ठीक नहीं । यह मुन्ना कौन सी भीख माँगा उनसे , यह तो बताओ ।

वह बराबर कहे जा रहे , “ नहीं बुआ ऐसा कुछ नहीं हुआ । ” / वह मुझसे भी कह रहे कि , “ मुन्ना ऐसा कहाँ हुआ , कब पिताजी कहे थे यह । ”

मेरी माँ तो कह सुनकर शांत हो गई मेरे मामाओं में महाभारत चालू हो गया । किसने उर्मिला से जाकर यह कहा । यह नाटक कई महीने चला । दादू पकड़ा गया । पर वह झूठ बोलने में माहिर था । वह बोला हम बुआ के यहाँ गये ही नहीं बहुत दिनों से । बाबा भैया घर में सबसे बड़े थे , उन्होंने दादू को एक हाँथ लगा भी दिया । वह दादू आया और बोला बुआ सब कह रहे हमने बताया , आपने कुछ कहा क्या?

माँ बोली , इतना कच्चा हमको तुम समझे हो क्या?

दादू दो- चार बात जोड़कर और आग लगा गया ।

हर लहर कितनी भी तीव्र क्यों न हो उसको शांत होना ही है , यह भी शांत हो गई । मेरी माँ ने भी पीछे ही हंगामा किया मेरी मामी भी पीठ पीछे ही तलवार भाँजती रही । मामा रक्षाबंधन पर आये , मेरी माँ ने समझदारी दिखायी , इस मुद्दे को नहीं छेड़ा ।

मेरे यादों के लबरेज ख़ज़ाने मेरा समय ऐसी ही बातों से पास करते रहते हैं । एक वह समय था और एक यह समय है जब मुझे खुली छूट दी गई आप जो चाहे ख़रीद लो । मेरे पिताजी ने अपने जीपीएफ़ ये एडवांस ले लिया था । माँ सारा पैसा रिकरिंग डिपाजिट में डाल देती थी , इसलिये पैसे की तंगी हरदम रहती ही थी । मैंने भी समझदारी का परिचय देते हुये एक सामान्य सा बगैर पहिये वाला सूटकेस लिया , कपड़े भी ज्यादा नहीं सिलाये केवल दो पैंट दो शर्ट । मैंने रेडीमेड कमीज पैंट कभी नहीं ख़रीदा था वह बहुत ही मह़ँगे होते थे ।

मैं अपने सूटकेस में सामान रखने लगा । मेरे पास कुछ ज्यादा सामान तो था नहीं । मेरी कुछ किताबें और समाचारपत्र की कटिंग्स । मैं वह कटिंग्स सहेज कर साथ ले जाना चाहता था , क्या पता अभी कितने साल उनकी ज़रूरत पड़े ।

मैं सोचने लगा इलाहाबाद में क्या हो रहा होगा ।

वहाँ इलाहाबाद में भी मेरा बेसबरी से इंतज़ार हो रहा होगा । अब बस दो रात बची थी , परस्तों सुबह मैं घर पहुँच जाऊँगा । मेरे लिये समस्या बड़ी थी , इस

साल न हुआ तब अगले साल की जद्वोजहद / अगले साल का परी क्ररीब 40 दिन बाद है / एक बार तैयारी की है तो फिर अगले साल प्रारम्भिक परीक्षा में थोड़ी सहूलियत रहती पर कोई भरोसा तो इस परीक्षा का होता नहीं / मैं दो तरह की संभावनाओं पर गौर कर रहा था / एक , अगर इस बार सफल न हुआ और अगला परी हो गया तब क्या होगा ?

दूसरी संभावना की मेरा इस बार न हुआ और अगला परी न हुआ तब ?

यह दूसरी संभावना का ख्याल मात्र ही कंपकंपी ला देता है / मेरी हालत एक काले नाग से डसे व्यक्ति की तरह हो रही जिसको नाग डस कर सामने से ही जा रहा हो और पूरा शरीर ज़हर से नहीं भय से ही नीला पड़ रहा हो / जुगनुओं की बारिश थी एकाएक सब झाड़ियों में छिप गए / मैंने कपड़ा तह करना बंद कर दिया / मुझे माँ का चेहरा दिखने लगा , वह कह रही “ नहीं मुन्ना यह नहीं हो सकता / तूने ठीक से रोल नंबर नहीं देखा होगा / एक पल में दुनिया यूँ ही नहीं सिमट सकती ।

मैंने खुद से ही कहा , यह क्या निराशावादी सोच है / मेरे सामने अभी तकदीर मेरा इंतज़ार कर रही और मैं यह बेफ़िज़ूल की बातों को सोचता रहता हूँ / वक्त की बात है सूरज झुकेगा ही दर पर मेरे / एक खूबसूरत हादसा पहले नहीं हुआ है वह अब होगा / सर्द शाखों पर अलसाये ओस के कतरे पर सूरज सात घोड़ों के रथ पर सवार उसको ढूँढ़ते आयेगा यह कहते हुये तुझ में से निकलकर मेरी किरणें सात रंगों का प्रकाश जहाँ में फैलाएँगी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 81

मैं सोने की कोशिश कर रहा पर वह आसान नहीं दिख रहा / मैं आँख बंद कर लेता फिर अँधेरे में ही आँख खोलकर छत की तरफ़ देखने लगता / इसी कमरे में ऋषभ रहा करता था , यह आंटी ने बताया था / अभी भी उसकी किताबें आलमारी में लगी हैं / रेसनिक हालीडे की फ़िज़िक्स, लोनी की गणित के किताबों के सेट लगे हुये हैं / यह ऋषभ ने इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा के लिये लिया होगा , मैंने भी लिया था ।

मुझे रेसनिक हालीडे की किताब समझ ही न आई थी और लोनी के किताबों के सवाल कठिन लगते थे / मैं आर एस वर्मा की स्टेटिक्स और राम शंकर

श्रीवास्तव कीं डायनैमिक्स पढ़ा । मुझे इतनी रुचि आई नहीं विज्ञान में पर बीएससी कर लिया , उसके बाद विज्ञान की स्ट्रीम को अलविदा कह दिया । शायद मैं विज्ञान के लिये नहीं बना था पर यह कैसे पता लगे कौन किसके लिये बना है । यह पता करना कि किस बच्चे की रुचि किस विषय में है यह शायद बड़े महानगर ऐसे शहरों में होता हो पर यहाँ इलाहाबाद में तो बस एक सिद्धांत चलता है , जो निचली कक्षाओं में थोड़ा भी बेहतर है पढ़ने में वह विज्ञान ही पढ़ेगा । मैं जब जीआईसी गया था कक्षा 9 में तब मेरे अध्यापक ने कक्षा 8 के नंबरों को ध्यान में रखकर विज्ञान पढ़ने का मशवरा दिया पर मेरी रुचि ह्यूमैनटीस और साहित्य में थी , यह मैं भली - भाँति जानता था । इतने कम उम्र में बहुत दूर भविष्य की समझ तो होती नहीं और निर्णय लेने की क्षमता का विकास होना बहुत दुर्लभ होता है ।

मेरे ऐसे परिवेश के छात्र के लिये तो जीवन का हर पग दलदली मिट्टी पर ही होता है । मैं कई बार सोचता हूँ विधाता ने मुझे एक लड़की के रूप में जन्म नहीं दिया नहीं तो अपने चचेरी - ममेरी बहनों की तरह एक बदतर जीवन जी रहा होता । मुझे अपनी चचेरी बहन जो मेरे से दो वर्ष उम्र में बड़ी थी और वह मेरे बहुत नज़दीक भी थी । उसका विवाह 18 साल की उम्र में कर दिया गया था । उसके विवाह के तिलक की रस्म में तिलक चढ़ाने में गया था और उसी के विवाह में मेरी बहन ने कहा था , “मुझे दीदी के पति ऐसा पति मत ढूँढ़ कर देना ” और मैंने कहा था तेरे लिये राजकुमार ड्यूड़ी पर आएगा । मेरी चचेरी बहन ने विवाह के कुछ वर्ष बाद कहा , “मुन्ना भैया हमार मूड काट लेहेन सब मिलकर । जिसके साथ मैं एक पल नहीं रहना चाहती उसके साथ पूरा जीवन निभाना होगा । ”

मैंने उसके शब्दों में छिपी पीड़ा समझकर बहुत दुःखी हुआ । उसी समय यह ख्याल आया था कि अगर मैं लड़की के रूप में जन्मा होता तब मेरा भी यही हशर शायद होता , कौन इंतज़ार करता इतने साल मेरे भविष्य के लिये । यह मध्य एवम् निम्न मध्य वर्गीय परिवारों के साथ समस्या है वह लड़कों को तो अवसर देते हैं पर लड़कियों को कम ही अवसर देते हैं । यह डर रहता है कि लड़की की उम्र अधिक हो गई तो योग्य वर नहीं मिलेगा । मुझे आज तक उनके योग्य वर की परिभाषा समझ ही न आई । वह कौन सा राज राम ऐसा वर खोजते हैं जो आज न मिला तो कल किसी और का हो जाएगा । वह तो बस थोड़ा कुलीन बराह्मण हो , परिवार में कुछ खेती - वेती हो , पढ़ रहा हो . दहेज में बहुत पैसा न देना पड़े , यही प्राथमिकता लेकर वर ढूँढ़ते हैं ।

ऐसे लड़के तो हर गाँव में आवारा की तरह घूमते मिल जाएँगे । मैंने अपनी बहन के पति से कहा कि आप कुछ पढ़ो , कुछ परीक्षा की तैयारी करो । वह

नाराज़ हो गया , हो भी न क्यों वह मेरा जीजा था । यह जीजा , फूफा के पास एक ही कार्यक्रम है नाराज़ होना । किसी विवाह में , किसी कार्यक्रम में जायेंगे बस नाराज़ होना । यह शिकायत की मेरा ध्यान नहीं दिया गया । कई बार तो यह कार्यक्रम का बहिष्कार करके बीच में ही चल देंगे । मेरी बहन को उसने उलाहना भी दिया कि “ अपने भाई से कह देना , हमको सिखाने का प्रयास न करें उसके ऐसे लोग हमारे यहाँ करिंदागीरी करते हैं । ”

मेरे घर की लड़कियाँ बड़ी स्वाभिमानी हैं , या यूँ कहें लड़कियाँ स्वाभिमानी होती ही हैं । वह लड़ पड़ी । अब लड़ाई में तो ज़बान पर नियंत्रण व्यक्ति आवेश में खो ही देता है । वह भी खो बैठी और मुँह से निकल गया , “ कौन सा पाँच बिगहा पुदीना झुरात बा इहाँ , कहाँ करिंदा कह रहे , माई- बाप हुजूर । एक बात और तोहारे पूरे परिवार में कौनो नाहीं बै जो मुन्ना के पैर के धोवनौ होय । ”

यह अंतिम वाक्य बहुत भारी पड़ गया । वह वाक् युद्ध हाथ से होने लगा । वह उस रात बहुत रोई अपने प्रारब्ध पर । मुझसे जब वह अपना दुखड़ा को रही थी तभी मेरे दिमाग़ में यह पहली बार आया कि अगर मैं भी कन्या रूप में जन्म लेता और जिस तरह की विचारधारा और परिवेश है इस उत्तम कुल की एक मात्र अवधारणा पर जी रहे इस शर्मा परिवार की जो दावा करता है कि कई ऋषियों की परम्परा का तप संचित है रक्तों में , मैं भी इसी की तरह किसी से अपना दुःख साझा कर रहा होता ।

मैंने यह भी ईश्वर के आशीर्वाद के रूप में देखा कि मुझको संघर्ष करने का अवसर तो दिया गया । मुझको लड़ने के लिये स्वतन्त्रता मिली भले ही भाषा और परिवेश की रस्सी ने मेरे हाथ बँधे ही क्यों न हो । मैं लड़ तो रहा हाथ बँधे हैं तो क्या हुआ , क्या पता बँधे हाथों से ही मैं जंग जीत जाऊँ और कह सकूँ मैंने कर्ण की तरह अंग का राज्य नहीं लिया बँधे हाथों से अपने रक्त से धरती को लाल कर रक्तरंजित धरती पर अपना हक्क प्राप्त किया है ।

मुझे सामने की आलमारियों पर सजा किताबें दिखीं । इस कमरे में जिस तरह ऋषभ की किताबें सजी हैं उससे ऐसा लगता है जैसे वह अभी भी इसमें रह रहा हो । आंटी ने सबसे अच्छा कमरा ऋषभ को ही दिया था । एक दूर तक दिख रहा पूसा कैम्पस , बगल की खिड़की के पास दरख्त और उसकी टहनियाँ उसके खिड़की तक आती हुई , कमरे में करास वेन्टिलेशन और कमरे से लगा हुआ बाथरूम सब मिलकर कमरे को बहुत आरामदायक बना रहा था । यह मकान अंकल के पूसा में उनके रूतबे का प्रमाण दे रहा ।

मैंने उठकर कमरे की बत्ती जला दी । मैं एक कागज पर अपने मार्क्स लिखने लगा । इतिहास में कितने, हिंदी में कितने, जीएस में कितने । मुझे एक-एक प्रश्न याद हैं जो परीक्षा में आये थे । मैंने सांख्यिकी वाला भाग जो 55 अंक का होता है पूरा सही किया था । पर एक बड़ी गलती हो गई थी । भारत की मौद्रिक नीति पर सवाल था पर मैं झटके में पढ़ने में गलती कर गया और भारत की आर्थिक नीति समझ कर पूरा उत्तर उस पर लिख गया । एक ही काम बेहतर किया था कि उसमें भारत की मौद्रिक नीति का भाग भी कुछ लिख दिया था, इसलिये अंक कम मिलेंगे पर शून्य शायद न मिलें । मुझे बहुत अच्छे से दोनों नीतियाँ आती थीं, अगर सवाल ठीक से पढ़ा होता तब तो यह बहुत अच्छा लिखा होता । मैं काम थोड़ा हड्डबड़ी में करता हूँ, यह एक कमी मेरे व्यक्तित्व में तो है ही ।

मेरी माँ बचपन से ही कहती थी, “ तुझे कौन सी हड्डबड़ी रहती है, हर काम में जल्दबाज़ी । खाना खाना है तो उसमें भी संयम नहीं बस निगल लो । कोई तो काम शांति से कर । ”

गाँव में जब आम तोड़ना होता था तब मैं ज़िद करता था, मैं भी तोड़ूँगा आम पेड़ पर चढ़कर, जितने देर मैं लोग पाँच आम तोड़ेंगे उतनी देर मैं मैं आठ- दस आम तोड़ दूँगा और इसी जल्दबाज़ी के कारण कई बार पेड़ से फिसला पर हर बार बीच की किसी डाली ने सहारा दे दिया । यह परीक्षा - एक नंबर पर लोगों को ऊपर नीचे कर देती है । मैं तो पाँच- छः नंबर आता हुआ खो आया हूँ । यह हर तरह से घातक परिणाम दे सकता है, मेरे चयन में भी और मेरी रैंक में भी ।

हिंदी का दूसरा पर्चा बहुत अच्छा हुआ है । जबसे मैंने हिंदी साहित्य को एक विषय के रूप में देखा, हर कोई एक ही बात कहता था कि हिंदी का दूसरा पेपर मौलिकता की माँग करता है और भाषा पर अधिकार आवश्यक है इस पेपर के लिये । मैंने यह सुनने के बाद भाषा पर काम करना आरंभ कर दिया । यह भाषा बेहतर कैसे हो, यह एक बड़ा सवाल था मेरे लिये, मेरे लिये ही क्यों यह सवाल बड़ा सबके लिये है ।

यह भाषा जीवन पर्यन्त बेहतर करनी होती है । यह कुछ दिनों में बेहतर हो नहीं सकती । यह एक लंबे दौर के यत्न का परिणाम है । मैंने एक से ज्यादा भाषा सीखी । संस्कृत और उर्दू भी सीखा । हिंदी के मानकीकरण में कई और भाषाओं का सहयोग लिया गया । इस सहयोग में उर्दू और संस्कृत का खासा योगदान है । मैंने इन दोनों भाषाओं पर भी काम किया । मद्दा की उर्दू की

डिक्षनरी में पूरी पढ़ गया । हिंदी से हिंदी की डिक्षनरी पढ़ी जो लोग कम पढ़ते हैं ।

यह सारा काम मैं चुपचाप कर रहा था । मैंने किसी को हवा भी न दी कि इस तरह से भी भाषा को बेहतर किया जा सकता है । मैं अपने अस्त्र अपने ही छुपा रहा था , कहीं उसको मेरी ही नज़र न लग जाए । मैंने पूरे संभावित सवालों की एक शृंखला बनाई और सबको हल किया । एक ऐसा “ चपकाओ एवम् घुसेड़ो ” मटीरियल बनाया कि वह कहीं भी घुसेड़ दूँ या चिपका दूँ .. मसलन

“ स्वानुभूति, कल्पना, प्रकृति का मानवीकरण,आध्यात्मिकता, मूर्तिमानता , लाक्षणिकता छायावाद की विशेषता है । प्रकृति का मानवीकरण करने में छायावाद ने संस्कृत के कवियों से ज्यादा स्वच्छंदता दिखाई है । ”

“ छायावादी लेखकों ने काव्यगत सामाजिक सत्य को तत्कालीन सामाजिक आधार के साथ मिलाकर देखा और सत्य कविता के अंदर से उपजता है न कि ऊपर से आरोपित होता है । ”

छायावाद , निराला , प्रसाद पर कोई सवाल आये इसको चपकाना ही है ।

निराला की राम की शक्तिपूजा में राम के विराट रूप की उपमा पहाड़ से करना जिस पर रात का अंधकार उत्तर रहा हो और दूर दो तारे चमक रहे हों ,

“ दृढ़ जटा- मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलिपि से खुल
फैला पृष्ठ पर , बाहुओं पर , वक्ष पर , विपुल
उत्तरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशांधकार
चमकती दूर ताराएँ ज्यों हों कहीं पार ।

मैंने जैसे ही निराला की राम की शक्तिपूजा का सवाल देखा यह चपका मारा
।

एक और चिपकाऊ और घुसेड़ों मसाला था ..

राधव- लाघव- रावण - वारण - गत- युग्म- प्रहर,
उद्धृत - लंकापति मर्दित- कपि- दल- बल- विस्तर ।

इसमें किरया पद का लोप करके एक नवीन प्रयोग शिल्प के स्तर पर , जैसे तार/ टेलीग्राम की भाषा हो । ऐसा प्रयोग विरले ही किसी साहित्य में हुआ है ।

यह भी चिपका मारा । मैंने ऐसे बहुत से मसाले बनाये थे जो जहाँ मौका मिले चिपका दो ।

उपन्यास पर भी बनाया था

“उपन्यास मनोरंजन की ही वस्तु नहीं है यद्यपि मनोरंजन का तत्त्व रहता ही है , इसमें जीवन के बहुमुखी छवि को व्यक्त करने की शक्ति है । जीवन की बहुविविधता का जितना प्रस्फुटन उपन्यास में होता है उतना किसी और साहित्यिक विधा में नहीं होता है । नाटककार को बोलने और विवेचन की छूट नहीं होती कहानी में लघुता की समस्या होती है इसलिये कालखंड और कलेवर सीमित हो जाता है पर उपन्यास एक स्वतन्त्र विधा है , पूर्ण स्वतन्त्र । सावन के झूलों की तरह बढ़ाओ पेंग ऊपर और ऊपर क्षितिज की ओर , देखने वाले कहें और ऊपर जाओ और ऊपर जाओ । यह कविता की तरह की आदर्शवादिता को लेकर नहीं जन्मा है , इसका जन्म आधुनिक काल के यथार्थवादी परिवेश में हुआ है । यह इस पूँजीवादी समाज की अनिवार्य उपज है । इसका स्वरूप इतना शक्तिशाली इसलिये है क्योंकि इसमें साहित्य की सारी विधाओं की छवियों को सन्निहित कर लेने की शक्ति है । ”

ऐसा ही कहानी , नाटक , रंगमंच , कविता , मुक्तिबोध पर भी बनाया और तुलसी पर क्या कहना । वह तो ऐसा बनाया था कि मुझे खुद तुलसीदास होने का भ्रम होने लगा ...

हे राम कहाँ है वह चित्रकूट
जो करता व्याख्यायित संबंधों को
हे राम कहाँ है वह आदेश तुम्हारा
जो करता सम्मोहित लक्षण को
हे तिरभुवन के पद्मनायक

कहाँ है राम का राजतंत्र जो लोकतंत्र से बेहतर था
अब वह नंदीग्राम नहीं दिखती
जहाँ सत्य पारिभाषित होता था
वह स्थान अब नहीं संरक्षित
जहाँ पैदल चल राज्य आपने त्यागा था
वह सब टीले नष्ट हुये
जहाँ चढ़ जनता को समझाया था
वह सिमट गया है राज्य कहीं
जो सरयू तट पर आळादित था
वह राजभवन अब नहीं दिखता
जो पिता- पुत्र संवादों का एक साक्षी
वह न्याय नहीं मिलता अब मुझको
जो राम- राज्य में व्याप्त रहा
संदेश जो उपजा आचरणों से
वह विस्मृतियों में कहीं सिमट गया
सिर्फ एक जगह दिखती है सबको
जहाँ आपका प्रादुर्भाव हुआ
बहुत प्रिय है जन्म तेरा
पर कर्मोंके तुम शासक हो

हे राम , तुम्हारा दर्शन अभिलाष ही मेरा सौभाग्य है
मंदिर बनना महज़ एक कृत जीवन का संतोष मात्र है ।

जो मिला , जहाँ मिला गद्य हो , पद्य हो सबको समेट लिया और कापियों में
टीप दिया । यह पद्धति बड़े काम की है । मैं इसको बहुत लोकप्रिय बनाऊँगा
एक बार कलम तोड़ नंबर तो आने दो ।

यह जो भी पढ़ा है वह तो कहीं न कहीं लिखना ही है , यह मेरा दृढ़ संकल्प
था । यह एक निश्चित लक्ष्य से संचालित परीक्षा है । इसमें मात्र ज्ञान से ही

काम नहीं चलेगा , रणनीत से ज्यादा काम चलेगा । बहुत बड़े- बड़े ज्ञानी रह गये लहरों में उलझकर , चालाक लोग भँवर के किनारे से क़श्ती बचाकर निकल गये । मैं भी वही कोशिश कर रहा । अगर हिंदी साथ दे गई तो नाव मझदार पार हो सकती है ।

मैंने अपने लिखित परीक्षा के अंक लिख लिये पर इंटरव्यू में जो मुझसे तरुणि हुई है वह मुझे बहुत परेशान किये हैं । मेरा कमल व्यूह का प्रयोग पकड़ा जाना , उत्तर पूर्व के सात राज्यों के नाम न बता पाना , यह मुझे जीने नहीं देता । मैं लिखित परीक्षा के नंबर तो लिख गया पर इंटरव्यू के लिखने का साहस न कर सका । मैं अपना ध्यान हटाने के लिये खिड़की के बाहर देखने लगा ।

रात अभी बाकी है । रात के तकरीबन 1 बज रहे । जिस तरह यह रात अभी बाकी है वैसे ही मेरी उम्मीद भी बाकी है । बस फ़र्क यह है रात को पता है कि सहर होगी ही पर मुझे नहीं पता मेरी सहर किस तरह होगी । हर रात के बाद सुबह का उजाला एक प्रसन्नता का संदेश देता है पर हो सकता है मेरी सुबह वह संदेश मेरे लिये लेकर न आए । यह रात तो ख़त्म होगी ही होगी , मैं सो जाऊँ या मैं जगता रहूँ । इन अँधेरों के कितने भी पैर हों , कितना भी तेज भाग लें पर यह वक्त की पाबंदी से बँधे हैं । पर मैं जिस रौशनी की चाहत में सियाह रात के अँधेरों में पथरीले रास्ते पर चल रहा दूर एक बहुत दूर मुझे एक रौशनी जो दिखाई दे रही कहीं वह एक मृग- मरीचिका न हो ।

मैं हर निराशा को अपने काव्यात्मक आशावादिता से तोड़ने की कोशिश करता हूँ । मुझे खिड़की से दूर दिख रहा एक मेहराब उसके पास नुकीले गोल गुम्बद और पुराने बुर्ज । मकान से थोड़ी ही दूर पर बरसाती नाले के बगल से निकलती पगड़ंडी , पीपल के पेड़ के बगल से पीछे से जा रही अलसाई सड़क जिस पर यदा कदा ही कोई आता- जाता है । इस सरकारी मकान के कमरे की खिड़की की सलाखें जिस पर कुछ जंग भी लग गई और इन सबके बीच मेरी आँख क्षितिज की ओर एक ख़बाबों का ज़खीरा लिये हुये और लोगों के ख्वाहिशों का बोझ मेरे कंधे पर इंतज़ार कर रहा एक आफताब की रौशनी का जो सिफ़्र मेरे लिये हो ।

मैंने सोचा अब सो जाता हूँ । यह दिमागी फ़िटूर तो चलता ही रहेगा , तभी मेरी माँ की वह लाइन याद आई जो उसने उस रात कही थी जब मैंने उससे कहा था माँ अब कल दिल्ली जा रहा एक ऐसे रणक्षेत्र की ओर जहाँ का युद्ध और उसके नियमों का मुझे कुछ पता नहीं । उसने कहा था

“ माना तू कमजोर दिखता है , तेरी पतवार पर लहरें भारी दिख रही हों और पतवार के बीच की चटकन भी लोग देख कर कह रहे हों , इसके सहारे दरिया पार कैसे होगा वह भी तब जब साहिल बहुत दूर दिख रहा हो और तूफान की लहरें आकाश को भी छील देना चाह रही हों पर तुझको तो उस पार जाना ही है , तू कश्ती से जा या कश्ती की बेवफाई पर तू लहरों में समां कर जा । तुझे आखिरी दम तक कोशिश करनी ही है । तू बारिश के रुकने का इंतज़ार करके नहीं बादल की बारिश को अपने हाथों में समेटकर लहरों से लड़ते हुये तुझे पार करना होगा दरिया को । तेरे भीतर एक अजीब खौफ है जो मैं देख रही हूँ , तू खौफज़दा लड़ने से नहीं है वरन् परिणाम से है । बस तू लड़ , बाक़ी मेरे कर्म पर छोड़ दे । मेरे संचित कर्म तुझे निराश नहीं करेंगे ।

@kitabwala - tg

मैं अब इलाहाबाद जाने को उतावला हो रहा था । संजीव टंडन ने भी कहा था कि अभी तुम यहाँ टहल रहे हो गये नहीं । मेरी ट्रेन भी आज की ही है । मैंने सारा सामान ट्रूस्स ऐसा दिया अपनी अटैची में । मैंने रूपया गिना, जितना माँ ने दिया था वह ज्यादातर बच ही गया । मेरे पास कोई खास शौक़ है नहीं, बस पकड़कर ही ज्यादातर गया हर जगह । चिंतन सर का गाज़ियाबाद में तैनात होना बहुत सुविधाजनक रहा सारे इलाहाबाद के लिये । मुझे भी उनकी जीप मिल गई थी इसलिये आराम हो गया था । उनकी जीप आज आएगी शाम को मुझे स्टेशन छोड़ने ।

चिंतन सर जुगाड़ टाइप के हैं । यूपी भवन के रेजिडेंट कमिशनर को पटाया हुआ है इसलिये यूपी भवन उनके लिये उनका अपना होटल ऐसा है जिसको चाहते हैं वहाँ रुका देते हैं । वह गाज़ियाबाद ऐसे व्यापारिक शहर के सीओ सिटी हैं कोई भी काम बोलो तुरंत एक आवाज़ अपने अर्दली से, ”मातादीन फ़ोन मिलाओ“ । मातादीन भी तेज है वह तुरंत फ़ोन मिलाकर काम करा देता है । मेरी उनकी मुलाक़ात कुछ महीने पहले ही हुई पर वह और जगदंबा मौर्या प्रान्तीय सेवा में काम कर रहे इसलिये इंटरव्यू की तैयारी का समय न मिला और मेरे से सहयोग मिल गया इसलिये नज़दीकी बढ़ गई और उनको मेरी भाषा अच्छी लगती थी जिसको वह कटबैठी कहते थे । यह अक्सर कहते थे, ”कुछ कटबैठी सुनाओ।“

मैंने देखा घड़ी में तीन बज चुके थे, मैंने बत्ती बंद करके सोने की कोशिश की पर नींद आँखों पर मेहरबां नहीं हो रही थी । मेरा प्रयत्न कब सफल हुआ यह पता ही नहीं चला, सुबह आंटी की आवाज़ आई, “अनुराग तुम्हारी चाय ।“

मैंने कमरे में फैला हुआ प्रकाश देखा और जाती हुई आंटी पीछे से दिखी । जाते- जाते वह कहती हुई जा रही थी, ”आ जाना जब मन करेगा नाश्ता आधे घंटे में तैयार हो जाएगा“ । यह लाइन आंटी अक्सर कहती थी मुझसे सुबह-सुबह । मैं कुर्ता- पायजामा पहने बिस्तर पर बैठकर खिड़की से बाहर देखने लगा । एक दूर से आती सूरज की किरणें छन-छन करके कमरे में आती हुई फैलाती एक प्रकाश- पुंज कमरे में । मैंने अलसायी आँखों को मींचते हुये एक हाथ से चाय का प्याला और दूसरे हाथ से पेपर का पन्ना खोलना शुरू किया । पेपर में पहले ही पेज पर देश की आर्थिक नीति की उपलब्धियों की गाथा थी । मैंने संपादकीय देखा राजेन्द्र माथुर का लिखा लेख था । हिंदी माध्यम के

छात्र नवभारत टाइम्स में राजेन्द्र माथुर के लेख का इंतज़ार करते हैं । उनके पास पढ़ने को सबसे बेहतर यही होता था । मैं संपादकीय पढ़ने लगा । इसी बीच आंटी की आवाज़ आई , “ अनुराग आज क्या- क्या करना है तुमको ? ” मैं कुछ बोल पाता वह फिर बोली , “ मैं आज आफिस नहीं जाऊँगी , कुछ वक्त तेरे साथ रहूँगी । आज शाम को तू चला जाएगा । ”

मैंने कमरे से ही कहा , कुछ ख़ास काम तो है नहीं , सोचा था जवाहर बुक स्टोर जाने को कुछ किताब ख़रीदने की सोची थी पर अब दो मन से हूँ कि जाऊँ या न जाऊँ ।

मैं उठकर नहाया फिर आंटी के पास हाल में गया वह माला जप रही थी । यह आंटी का नित्य का कार्यक्रम था । वह सुबह दो घंटे पूजा करती थी । मैं तो देर से सोकर उठता था पर आंटी हर दिन 4 बजे उठ जाती थी और ईश्वर-ध्यान में मग्न हो जाती थी । कुछ ऐसा ही मेरी माँ करती थी , हम बच्चों को बहुत सारे श्लोक- स्तुतियाँ सुनकर ही याद हो गये थे , जो माँ हर सुबह करती थी ।

मैं सुनता ज़रूर था पर मैंने कभी कोई पूजा - पाठ की नहीं । मेरा मन नहीं लगता था इस धर्म के बाह्य स्वरूप में । ऐसा भी न था कि मैं नास्तिक था , मैं पूर्ण आस्तिक था और धर्मभीरुता मेरे अंदर बचपन में ही प्रवेश करा दी गई थी पर मेरी आस्तिकता में यह धर्म का लोकप्रिय स्वरूप न था । मेरी माँ इसको उचित न मानती थी पर जिस काम में मन न लगे वह करना बहुत मुश्किल होता है ।

मैंने पूछा आंटी से , आप ने कब से इस तरह ईश्वर के भजन में लीन रहना आरंभ किया ?

आंटी - यह तो बचपन से ही आदत थी पर ऋषभ के विदेश चले जाने के बाद वह और अधिक हो गया । यह मेरे लिये एक समय व्यतीत करने का साधन भी है । मैं अगर यह न करूँ तब और क्या करूँ । यह धर्म व्यक्ति को जीने का सहारा देता है । यह मन को भरमाता है । यह चित्त को स्थिर रखने में सहायक होता है । अनुराग , यह जो मन है उसको नियंत्रित करना एक बड़ा काम है । इस मन का नियंत्रण करना सीखना होता है पूरे जीवन , यह मन प्रायः निराशावादी प्रवृत्ति की ओर उन्मुख हो जाता है । यह जो तुम आत्महत्या की घटनाएँ सुनते हो हर दिन यह क्या है ? यह क्षणिक आवेश में अनियंत्रित मन का भटकाव है ।

मुझे इस धर्म के गाह्य स्वरूप से कुछ और मिला हो या न मिला हो पर मुझे जीने का सहारा बहुत मिला है । यह अगर मैं अपने जीवन से निकाल दूँ तब क्या रह जाएगा जीवन में । मुझे अभी एक लंबा जीवन जीना है और वह भी अकेले । मेरी नौकरी अभी कई साल बाकी है और मेरा स्वास्थ्य भी ठीक है । इस बचे हुये लंबे पहाड़ से जीवन का कुछ तो सहारा हो । इस दुश्वार से जीवन को सोकर तो काट नहीं सकते । यह जो पतझड़ है जीवन में इसका मंजर कितना खुद ही पढ़ें । यह जो जमीन है मेरे जीवन की इसमें अब ऐसा तो कोई शजर तो है नहीं कि उसको देखकर परिदे आएँ और उनके उड़ान की रुहानियत में मैं खो जाऊँ । मुझे तो अपने बंजर खेतों से ही गुज़ारा करना है । यह तुम जो सामने जलता हुआ दिया देख रहे हो वह मैं बैठकर देखती रहती हूँ अपने हाथ में माला का फेरा घुमाते हुये

मैंने आंटी के चेहरे को पढ़ते हुये कहा , आंटी एक बात आप बता दो अगर बता सके । मेरे मन में यह बार-बार धूम रहा ।

आंटी - कौन सी बात तुम जानना चाह रहे ।

मैं - आंटी , आप ऋषभ के इंजीनियरिंग के दूसरे साल से आगे बढ़ते ही नहीं हो । वह जैसे ही तीसरा साल आता है आप चुप हो जाते हो ।

आंटी - यह जानकर क्या करोगे ? कुछ दर्द सीने में ही रहे तो अच्छा है । मेरे चेहरे पर जितनी कहानियाँ लिखी हैं वह मुझे दिख न जाएँ इसलिये मैं आइना नहीं देखती और तुम कह रहे उसको मेरे सामने लिखो । यह खिड़कियों से सितारे देख कर काटने वाली बगौर नींदों की आँख को हर दिन डर रहता है कहीं यह सितारे गुम हो गये तो रात कैसे कटेगी, वह मंजर जो सितारों के गिनने में भूल जाती हूँ वह बहुत परेशान करेंगे ।

मैं आंटी के चेहरे की ओर देख रहा था पूरी तरह से शांत और मैं उसके कथनों में खोया हुआ । मैं कुछ बोलता आंटी बोल पड़ीं । तुम अगर सुनना ही चाहते हो वह दास्तान जो एक खूबसूरत तितली की तरह कभी उड़ रही थी मेरे सामने एकाएक किसी ने मसल दिया मेरे ही सामने तो सुन लो ।

मैं - आंटी आप फ़ैसला ले लो , आप क्या चाहते हो । मैं लम्हें में वर्षों को पढ़ना चाह रहा आँसू के कतरे से बना समुंदर अपने चारों ओर देखना चाह रहा । यह एक क्रिस्सा होगा मेरे लिये पर आपके लिये एक दर्द भरे अफ़साने से फिर से गुजरना ॥

मैं बोल कर चुप हो गया । आंटी कुछ देर शांत होकर फिर बोलने लगी ।

यह ऋषभ की इंजीनियरिंग का दूसरा साल था । वह पहले साल की तरह दूसरे साल भी टाप कर गया कम्प्यूटर साइंस में और उसने बताया कि इस बार वह सारे आईआईटी में सबसे बेहतर किया है । वह आईआईटी में और सँवरने लगा । वह जहीन तो था ही साथ ही साथ और मेहनत करने लगा । उसे और बड़ी चुनौतियाँ मिलने लगी और उसे तो मज़ा ही आता था चुनौतियों के साथ खेलने में ।

आईआईटी में लोग तीसरे साल से अपना- अपना भविष्य देखने लगते थे । एक धारा सिविल सर्विसेज़ की थी तो दूसरी विदेश के विश्वविद्यालयों की तरफ़ जाती थी । ऋषभ के पास दोनों चुनाव थे । वह आईएएस के लिये भी पढ़ रहा था और विदेश की ओर भी देख रहा था । यह दूसरी धारा जो विदेश की ओर जाती है उससे मैं अनजान थी । वह मुझे इसलिये नहीं बताता था क्योंकि मैं इसमें नाराज़गी जाहिर करती थी ।

मैंने एक बात अनुभव की अनुराग , कभी बच्चों पर अनावश्यक दबाव नहीं डालना चाहिये । बच्चे माता- पिता से झूठ तब बोलते हैं जब उनको बाध्य किया जाता है । मैंने भी ऋषभ को झूठ बोलने को बाध्य किया । मैं जिस दुनिया को जानती न थी उस पर अपनी राय दे रही थी । यह आईएएस ही एकमात्र दुनिया तो है नहीं । यही एक परीक्षा जीवन यापन को तो बनी नहीं है । यह मेरी समस्या है कि मुझे कोई और दुनिया नहीं भा रही । यह मेरा परिवेश है जो मुझे आळादित कर रहा इस जीवन की कल्पना मात्र से , यह नहीं दे रहा तरंगें उसको पर मैं एक दूसरी दिशा में ढलानों की ओर बह रहे जल प्रवाह की दिशा बदलने की कोशिश कर रही और जब वह न बदल पायी तो दोष जल को दे रही । इसमें जल का क्या दोष वह तो ढलान पर बहेगा ही चाहे वह समुद्र में बहे , संगीतमय जल प्रपात का निर्माण करें या कहीं तालाब -जलाशय के रूप में अपनी अलग पहचान बनाएँ पर वह जहाँ भी होगा देगा जीवन ही ।

मैं चाह रही , वह मेरे अनुसार ही चले । ऋषभ बिल्कुल ग़लत नहीं था , मेरी ख्वाहिशें ग़लत थीं । मेरे ख्वाब परिस्थिति के हिसाब से संजीदा न थे । मैं चाह रही इन्द्रधनुष देखना बेप्रवाह मौसम के मिज़ाज से ।

मैं - आंटी आपको कब पता लगा वह विदेश ही जाएँगे ।

आंटी - जब वह चौथे साल में था तब पता चला । उससे मैंने कहा , “ मुझे लगता है तू आईएएस के लिये गंभीरता से नहीं पढ़ रहा । ” उसने दो- टूक सा जवाब दे दिया ।

“ मुझे यह परीक्षा नहीं देनी है । ”

मैं सन्न हो गई । इतना कड़ा जवाब वह बहुत ही कम देता था । वह बहुत ही संस्कारी था । वह जबान लड़ाने और प्रतिवाद में यकीन नहीं करता था । उसकी छवि इंजीनियरिंग कालेज में भी ऐसी थी । मैंने कुछ देर देखा उनकी तरफ़ और पूछा, “ यह फ़ैसला कब हुआ ? ”

ऋषभ- यह फ़ैसला काफ़ी पहले कर लिया था ।

आंटी - पर तूने बताया नहीं मुझको ।

ऋषभ- जो चीज तुझे तकलीफ़ दे उसका क्या ज़िकर करना ।

आंटी - यह तकलीफ़ तो अभी भी दे रही । अब तूने क्यों बताया ?

ऋषभ- माँ, हर चीज़ की एक मियाद होती है, बात को छुपाने की भी और भुलावे में रखने की भी । अब इसको छुपाना असह्य हो रहा था । मैं कई दिन से सोच रहा था बताने को पर मुझे वह शब्द ही नहीं मिल रहे थे जिसमें पिरो कर तुझे बताऊँ और तुझे तकलीफ़ न हो ।

आंटी - वह शब्द, वह लफ़ज़ मिल गये ?

ऋषभ- नहीं.... माँ कई बार शब्द भी कह देते हैं, मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता । यही मेरे साथ यही हुआ ।

आंटी - एक बेटे को अपनी माँ से अपनी बात कहने के लिये अल्फ़ाज़ों की मिन्नत करनी पड़े, यह एक माँ के परवरिश की विफलता है ।

ऋषभ- माँ, मैं जानता था यह तुझे स्वीकार्य नहीं होगा पर यह सच है मैं इस आईएएस की नौकरी लायक नहीं हूँ ।

आंटी - कहाँ जाएगा पढ़ने बाहर ।

ऋषभ- कार्नेल, मिशीगन, हारवर्ड, येल ... यह चार सोचा है अभी । देखो कहाँ से स्कालरशिप मिलती है ।

आंटी - कैसे मिलती है यह स्कालरशिप ?

ऋषभ- मैं आवेदन दूँगा, वह मेरा काम देखेंगे और फिर फ़ैसला लेंगे ।

आंटी - अगर स्कालरशिप न मिली तब ?

ऋषभ- माँ तब तो जाना मुश्किल है पर मिल जाएगी कहीं न कहीं ।

माँ - पैसा तो है ही बचाया हुआ तेरी पढ़ाई का, उससे चला जा । इन पैसों का क्या काम है ?

ऋषभ- माँ इतने पैसों से नहीं होगा काम पूरा । पर तू परवाह न कर मैं कर लूँगा इंतज़ाम ।

आंटी - अगर विदेश जाएगा तब वापस कब आएगा ?

ऋषभ- यह तो मैं कह नहीं सकता ।

आंटी -ऐसा भी हो सकता है तू कभी वापस ही न आए

अनुराग, इस सवाल के बाद कुछ क्षण की शांति हो गई । मैं उसकी ओर देख रही थी और वह ज़मीन की ओर ।

उसने सिर उठाकर बोला , ऐसा नहीं होगा ।

यह वाक्य मेरे लिये जीवनदायी हो गया । मैं बता नहीं सकती कितना सुकून मुझे उसके इस उत्तर से मिला ।

जैसे झील लहरा रही हो और चाँद उसमें सुकून से रिहाइश कर रहा हो और झील के सतह की मध्यम तरंगों से चाँद का सुकून कोई देख रहा हो भूला कायनात में , वैसे ही ऋषभ देख रहा था चेहरा मेरा । मैंने उसकी जुल्फ़ों को सजाया उसमें मुझे फिर ख़बाब दिखे मैं जीवन में फिर लौट आई इसका यक़ीन मुझे ही नहीं हो रहा था ।

ऋषभ ने कहा , माँ मुझे जाने दे विदेश , मेरा बहुत मन है एक और दुनिया देखने का । मैं तुझे फिर अवसर दूँगा खुशी में रोने का । मुझ पर तेरा यक़ीन ही है मेरी ज़िंदगी में मेरे अस्तित्ववान होने का ।

अनुराग , मुझे तकलीफ़ भी बहुत थी दुःख भी बहुत था उसके इस निर्णय से पर एक माँ की ज़िंदगी होती क्या है , अपनी तकलीफ़ को खुद पी जाना नहीं तो जिसके लिये उसने सारे कष्ट झेले हैं उसको बहुत दर्द होगा । दूसरे के दर्द में जी रही और अपने चेहरे पर मुस्कान लिये सही हर माँ की निशानी है । यह अनुराग समझोगे जब तुम खुद किसी बच्चे के बाप बनोगे और तुम्हारे और तुम्हारे बच्चे के बीच के टकराहट में तुम्हारी पत्नी कहेगी , क्यों नाहक सताते हो उसको अभी वह बच्चा है ।

आंटी शांत हो गई ...

मैंने कहा वह ऋषभ का विवाह

आंटी ने कहा चलो नाश्ता कर लो

आंटी ने नाश्ते के टेबल पर ही पूछा , यह मेरी कहानी तुमको बहुत आकर्षित कर रही ? तुमको व्यग्रता हो रही सब कुछ जानने की । तुम जाकर इलाहाबाद में यह सब सुनाओगे घर पर ?

मैंने कहा , व्यग्रता तो अवश्य हो रही पर किसी और को तो नहीं पर माँ को ज़रूर सुनाऊँगा । मैं जब पढ़ता था देर तक तो कई बार माँ आती थी पूछने कैसा है , क्या तैयारी चल रही ? मेरे पास कोई खास जवाब तो होता नहीं था । अब हर दिन एक ही सवाल का कोई नया जवाब तो हो नहीं सकता । मैं काशज़ों पर यूँ ही लिख कर इधर-उधर रख देता था , वह पढ़ने लगती थी उसको । मेरी माँ को अंगरेज़ी नहीं आती थी पर हिंदी उसकी दुरुस्त थी ।

आंटी - इलाहाबाद में एक बात मैंने देखी है , गाँव- देहात के भी स्कूल में भाषा पर ज़ोर रहता है । हम लोगों के मास्टर जिनको हम लोग पंडित जी कहते थे , वह भाषा पर बहुत ध्यान देते थे । हम लोग तख्ती पर लिखते थे और उसको काले रंग से काला करके चमकाते थे जैसे जूता चमकाया जाता है और फिर सफेद रंग की खाड़िया से दूधिया घोल बनाकर सरपत की कलम से लिँखते थे । तुमने तो शायद न लिखा होगा ।

मैं - मैं शहर के स्कूल में पढ़ा वहाँ इस तरह की परम्परा न थी पर मैं जानता हूँ मेरे चचेरे- ममेरे भाई-बहन ऐसे ही लिखते थे कक्षा 5 तक । कक्षा 5 के बाद वह लोग सामान्य कापी और पेन का प्रयोग करते थे ।

आंटी - अनुराग , मैंने लिखा नहीं कभी जैसा तुम लिखते हो । क्या मैं अब लिखना सीख सकती हूँ ?

मैं - आंटी जिसने ज़िंदगी को ही कह दिया हो तुम कितना भी आतंकी हो मेरे पास हर आतंक का जवाब है , वह कुछ भी कर सकता है । आप के पास जो रचनात्मकता है वह मैं आपके जीवन को देखकर ही समझ गया हूँ , आप लिख ही नहीं सकते आप लिख कर सम्मोहित कर सकते हो ।

आंटी - अनुराग , यह मैंने आतंक आमंतिरत तो किया न था अब लहरों में आकर फँस गई तो क्या करती ?

मैं - आंटी , लहरें बहुतों को उलझाती हैं पर बहुत कम लोग हैं जो लहरों की उलझन को ही सुलझा देते हैं और न केवल अपने लिये वरन् पीछे चल रहे तैराकों को भी दिखा देते हैं रास्ता ।

आंटी - अनुराग तुम कहाँ से लाते हो यह सब वाक्य विन्यास

लहरों को सुलझाना , ऊँधता आँगन , दिल को तेज़ाब से धोना , अहसास में छुपा साँस , खरगोश ऐसे ख़बाब , जुलाहे तू बुन कुछ ख़बाब मेरे लिये , मेरी ज़िंदगी में सलवटें ही सलवटें हैं कितना याद दिलाएँ तूने इतने दिनों में सुनाये हैं मुझे ।

मैं जब रात को वापस जाती हूँ तब हर दिन के तेरे यह विन्यास मैं लिख लेती हूँ । शायद तेरी यही कटबैठी चिंतन सर को भी भाती है । तुझे खुदा की इनायत है अपनी बात कहने की । मैं ऐसा लिख सकती हूँ ?

मैं - आंटी , कोई भी लिख सकता है ।

आंटी - वह कैसे ?

मैं - आंटी , मैंने बहुतों को पढ़ा जो यह कहते हैं कि अच्छा लेखक बनने की प्राथमिक शर्त है पहले आप अच्छे पाठक बनो । यहाँ समस्या यह है हर कोई लेखक तो बनना चाहता है पर पाठक नहीं । अगर आपको मेरा यह सब अच्छा लग रहा है तो इसका एक कारण यह है कि मैं एक अच्छा पाठक हूँ । मैं अच्छा लेखक हूँ या नहीं यह तो मैं नहीं जानता पर मैं एक अच्छा पाठक हूँ , इसमें कोई दो राय नहीं है ।

आंटी - तुम राइटिंग क्लास चलाओ अनुराग

मैं - आंटी , हिंदी में राइटिंग क्लास?

कौन है यह सीखने वाला । मुझे जितनी हिंदी आती है अगर उतनी अंग्रेज़ी आती तो मैं अंग्रेज़ी सिखाकर ही ज़िंदगी काट ले जाता । मेरे शहर में हर चौराहे पर लिखा है “ धुआँधार अंग्रेज़ी बोलना सीखें 40 दिन में फ़ीस मात्र 3000 रुपये ” । आप जाओ उस क्लास में आप पाओगे कि वह बस अंग्रेज़ी बोल रहा एक किसी कानवेंट स्कूल का असफल व्यक्ति । उसकी भाषा का स्तर कुछ ख़ास न होगा पर वह बिक रहा बाज़ार में अंग्रेज़ी के नाम पर । यह धुँआधार अंग्रेज़ी क्या है , यह तो आज तक पता न चला । हिंदी भी आती कम लोगों को ही है पर इसको सीखने की लालसा किसी के पास नहीं है । यह जो हिंदी साहित्य है इसमें भी लेखन में प्रयोग सीमित ही होते हैं । ऐसे माहौल में अगर मैं जीविका की तलाश इस भाषा से करना चाहूँ तो कहाँ संभव

है । इस समाज को सम्मान करना चाहिये लेखकों, विचारकों, अध्यापकों का अगर इस समाज को एक बेहतर समाज चाहिये । मैं कल आईएस हो जाऊँ जो कि एक बाबूगीरी की ही नौकरी है जिसमें आत्मा की आवाज़ पर नहीं शासन तन्त्र पर येन- केन - प्रकारण कङ्गा किये सत्तासीन लोगों के निर्देश पर कई गलत- सही काम करने होंगे पर मैं इस समाज का नायक होऊँगा । मैं अभी हिंदी का अध्यापक होकर या मैं एक लेखक के रूप में लेखन कार्य करूँ सब कहेंगे, “ कुछ काम तो इनको मिला नहीं अब लिख कर समय पास कर रहें । “ मेरे गाँव में लोग कहते हैं जो लोग अध्यापक हैं, “ कोई काम और मिला कि अबै तक पढ़वतै ह “ । अब आंटी ऐसे माहौल आप कह रहे हो कि आप लिखने की क्लास चलाओ । पहली बात तो मेरे में उतनी क्राबिलियत नहीं कि मैं सिखा सकूँ पर अगर क्राबिलियत हो तब भी कौन आएगा हिंदी सीखने ।

आंटी -तुम मुझे सिखाओ । मैं अच्छी पाठक बनूँगी । तुम जवाहर बुक स्टोर जाओगे आज मैं भी साथ चलूँगी । मेरे लिये तुम किताब ख़रीद दो । मैं एक बेहतर पाठक और कम से कम एक काम चलाऊ लेखक बनना चाहती हूँ ।

मैं - ठीक है आंटी । जवाहर से मैं ले आऊँगा, आप कहाँ परेशान होगे ।

आंटी - मैं भी चलूँगी । मैं अकेले घर में क्या करूँगी ?

आंटी और मैं जवाहर बुक स्टोर चले गये । वहाँ पर आंटी ने बहुत किताबें ख़रीदी । परेमचंद, शिवानी, अज्ञेय, रेणु, डा. नागेन्द्र हिंदी साहित्य का इतिहास, गिरीश रस्तोगी की नाटक ... पता नहीं कितनी । जवाहर वाला भी बहुत चालू चीज़ है । वह पहचान लेता है ग्राहक को । वह चिपका मारता है किताब अगर उसको लग जाए कि यह आसामी उसके काम का है ।

उसी किताब की दुकान पर सुरुचि मिश्रा मिल गई । वह अलग ही चीज़ थी । इलाहाबाद के अंगरेज़ी विभाग के अध्यापक बहुभाषा विद हुआ करते थे । अंगरेज़ी ही क्यों इस विश्वविद्यालय में एक से अधिक भाषा सीखना एक शौक हुआ करता है । यहाँ के ज्यादातर अध्यापक हिंदी और अंगरेज़ी में पारंगत होते हैं और कई तो उर्दू और संस्कृत में भी । सुरुचि भी हिंदी की किताब ख़रीद रहीं थी, अंगरेज़ी बोलकर । वहीं पर जेएनयू का पूरा गैंग भी आ गया ... संजीव टंडन, रितेश, सिद्धांत, रागिनी, श्रुति ... बहुत से लोग थे वहाँ पर ।

मुझे देखकर संजीव टंडन बोले .. तुम अभी तक गये नहीं ? यहाँ कोई मुफ्त का रहने का ठिकाना पा गये हो क्या?

सिद्धांत- यह सब इलाहाबादी बहुत जुगाड़ होते हैं । जुगाड़ बना लिया होगा , ऐसा लग रहा रिज़ल्ट देखकर ही जाऊँगे , आईएएस बनकर ही संगम की धरती पर पैर रखोगे । यहाँ टिके रहो जैसे ही यूपीएससी , धौलपुर हाउस में रिज़ल्ट चिपकेगा वैसे ही देख लेना ।

संजीव टंडन - यह रिज़ल्ट खुद मत देखना । मैं दो साल से देख रहा , मेरा नहीं हो रहा । अब मैं खुद देखने नहीं जाऊँगा ।

श्रुति सिगरेट फूँक रही थी , वह बोली मैं तो जाऊँगी देखने । सबका देख दूँगी ।

संजीव टंडन - माता जी , मेरा मत देखना । आप जिसका देखती हो काम तमाम हो जाता है । आप परी का 9 रोल नंबर लेकर गई 2 हुआ , मेंस का 4 लेकर गई सिर्फ़ एक हुआ । यह तो अच्छा हुआ आपके देखने के पहले कोई मेरा मेंस का रिज़ल्ट देख लिया था नहीं तो हमारा कोई जुगाड़ ही न बनता ।

मेरे साथ आंटी थी । मैंने सोचा कि यह सब आवारा मेरी और बेझज़ती करे , इसके पहले आंटी का परिचय देकर माहौल को संजीदा कर देते हैं ।

मैंने आंटी का परिचय दिया और आंटी से बताया उनके बारे में । इतने इंटरव्यू वालों को एक साथ देखकर आंटी प्रसन्न हो गई । उसने जैसे ही सुना कि संजीव टंडन आईआईटी दिल्ली के है, उसने कहा मेरा बेटा भी आईआईटी दिल्ली का इंजीनियर है ।

संजीव टंडन - किस स्ट्रीम में है ?

आंटी - कम्प्यूटर इंजीनियरिंग

संजीव टंडन - क्या नाम है ?

आंटी - ऋषभ मिश्रा ।

संजीव टंडन - ओह ... आप ऋषभ की माँ हैं । वह बहुत जीनियस हैं । उन्होंने बहुत नाम कमाया है ।

आंटी -मेरी बहू भी आईआईटी की ही है ।

संजीव टंडन - मुझे पता है । शालिनी इलेक्ट्रॉनिक्स में थी और ऋषभ कम्प्यूटर में । ऋषभ बहुत तेज थे वह आईएएस देने की सोच रहे थे फिर मूड उनका बदल गया । शालिनी बाहर जाना चाहती थी , ऋषभ ने भी फ़ैसला ले

लिया । ऋषभ ने कम्प्यूटर का होकर भी गणित की कई अनसाल्वाड थ्योरी को साल्व किया था । *he is a true genius ..*

आंटी का माथा गर्व से ऊँचा हो गया । आँटी के चेहरे पर गर्व देखा जा सकता था । वह बहुत प्रसन्न थी । आंटी और सुरुचि ने हिंदी की बहुत किताबें खरीदीं । मैंने जो किताबें ली उसका भी पैसा आंटी ने ही दिया ।

मैं आंटी के साथ वापस आया । मैं घर आया और पूछा , आंटी आपने बताया नहीं कि ऋषभ की पत्नी भी आईआईटी की है । आप ऋषभ के मामले में रुक जाते हो बात करते - करते । आँटी ने कहा , “ कभी ऐसा अवसर आया ही नहीं ” ।

मैं - यह इतना बड़ा वाक्या आप ज़िक्र कर्यों नहीं करते ?

आंटी - मुझे तकलीफ होती है ।

मैं - क्यों ?

आंटी - पता नहीं ।

मैं - आँटी यह जो हो गया सो हो गया । अब उसको आप स्वीकार करो । अब यह तो जीवन की हक्कीकत है कि ऋषभ ने एक अलग क्षेत्र छुना । वह कोई गलत फ़ैसला तो है नहीं । उसका कितना नाम है । इस आईएएस की नौकरी में क्या मिलता ? यहाँ क्या ख़ास है ? मेरे पास कोई विकल्प नहीं है , इसलिये मैं कर रहा ।

आंटी - संजीव तो कर रहा ।

मैं - आंटी वह कर रहा पर उसका लक्ष्य और ऋषभ का अलग-अलग है । आईआईटी में कुछ ऋषभ ऐसे बहुत जहीन होते हैं , उनके लिये यह आईएएस की नौकरी नहीं है , आप यह भूतकाल में जीना छोड़ दो । यह नौकरी एक सामान्य सी नौकरी ही है । इसके साथ एक इतिहास जुड़ा है पर किसी बहुत नवोन्मेषी व्यक्ति के लिये यह नहीं है । मैं एक ऐसी डिग्री और शिक्षा के साथ हूँ कि मैं इसके अलावा और कुछ नहीं कर सकता । यह हालात ऋषभ के साथ नहीं थे । उसके लिये पूरा क्षितिज था । वह नीले आसमान से कह सकता था थोड़ा और ऊपर हो जा , मेरी उड़ान कुछ ऊँची है । मैं किसी इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा का द्वार खोल न सका अपने लिये , जिस शहर में रह रहा उसमें इसी की धूम है । इन परिस्थितियों में मेरे पास क्या विकल्प था । एक विकल्पहीन व्यक्ति की तुलना एक बहुआयामी संभावनाओं के व्यक्ति से करना उचित नहीं है । यह ऋषभ का विवाह कब हुआ ?

आंटी - उसने चौथे साल में ही कह दिया , मैं विदेश जाऊँगा । उसको हर जगह स्कालरशिप भी मिल गई । शालिनी को केवल कार्नेल में ही मिली , वह भी सप्लीमेंटरी लिस्ट में और पूरी न मिली । पर शालिनी अमीर घर की थी , उसके लिये स्कालरशिप का मुद्दा न था , एडमीशन का मुद्दा था । ऋषभ भी कार्नेल चला गया हलाँकि उसके पास विकल्प कई और थे । अब अमरीका से रोज़- रोज़ आना तो संभव नहीं । जब आया पहली बार तब मुझे लगा कि यह शालिनी से विवाह करना चाहता है । मैं कुछ बोली नहीं । मैं अन्तर्जातीय विवाह के पक्ष में थी नहीं । मैं एक पारम्परिक विवाह चाहती थी , पर ऋषभ ने फ़ैसला सुना दिया तब स्वीकार करने के सिवाय रास्ता क्या था ?

मैं - क्या आप खुश नहीं हो इस विवाह से ?

आंटी - हर माँ के अरमान होते हैं विवाह के । यह बच्चे के बढ़ती उम्र के साथ घटते - बढ़ते रहते हैं ।

ऋषभ ने तीसरे साल के बीच से मुझसे बताना कम कर दिया था । मैं रात-दिन आईएएस- आईएएस की रट लगाये रहती थी और मेरे ख़्याल से उसी समय उसकी और शालिनी की नज़दीकियाँ हो रही थीं । शालिनी में काफ़ी अच्छाइयाँ थीं । उससे कोई भी लड़का प्रभावित हो सकता है । वह जो लड़की मिली थी जवाहर पर हिंदी की किताब ख़रीदते हुये उसके ही तरह वह अंग्रेज़ी बोलती थी । वह देहरादून दून के वेलहम्स बोर्डिंग की पढ़ी थी , देखने में सुंदर थी । ऋषभ तो आईआईटी का नायक सरीखा था । उसको ऋषभ का जहीन होना भा गया और ऋषभ को उसका सर्वांगीण व्यक्तित्व ।

मैं - आपको पता नहीं चला यह कभी ।

आंटी - माँ को अपने बच्चे के सुबह उठने और नहाने के बाद शीशा देखने से ही सब पता चल जाता है । ऋषभ तो और बेवकूफ था इन मामलों में ।

वह परफ्यूम कभी नहीं लगाता था । ब्रांडेड कपड़े कभी नहीं पहनता था । वह तो पैसा ख़र्च करने में परहेज करता था । मैंने एकाएक देखा वह इतर लगाने लगा , वह भी बहुत बेहतर क्रिस्म के । उसकी कमीज , उसके पैंट सबका ढंग ही बदल गया । मैंने पूछा भी तो उसने कहा सेमिनार वॉरह में करना पड़ता है । वह वज़ीफ़ा पाता था , इसलिये मुझसे पैसा भी कुछ ख़ास न लेता था । हमारा उसका एकाउंट ज्वाइंट था और वह इतना ज़िम्मेदार था कि कोई उस पर सवाल क्या करे ।

मैं - आपको कब बताया ऋषभ ने कि वह एक फ़ैसला अपने जीवन का ले चुका है ?

आंटी -अनुराग यह सब अतीत की बात है अब । मेरा भी दोष काफ़ी है इन सब मामलों में । मैं इतना ज्यादा आग्रही थी इस बात पर कि वह आईएएस ही बनें और उसको समझने से इंकार करती रही । वह कई बार कहना चाहा कि वह आईएएस नहीं बनना चाहता पर मैं उसको बात कहने ही नहीं देती थी । वह बात पूरी कर ही नहीं पाता था , मैं आधी बात पर ही बात काट देती थी और एक निर्देश ऐसा दे देती थी कि तुझे यह करना ही है ।

मैं एक माँ ज्यादा रही एक मित्र कम । एक माँ को एक मित्र के रूप में पुत्र को स्वीकार करना चाहिये । उसका कोई भी फैसला ग़लत नहीं है , पर मेरी ख्वाहिशों कहती हैं कि उसका हर फ़ैसला ग़लत है । मैं शालिनी ऐसी लड़की लाकर उसको कहाँ से देती ? जिस परिवेश की शालिनी है वह ऋषभ के शौर्य से ही मिल सकती थी । मेरे बस का ऐसा रिश्ता न था । शालिनी के पिता को भी यह सम्बन्ध शुरू में स्वीकार न था पर शालिनी बहुत समझदार थी । उसको अपनी बिसातें बिछाना अच्छा आता है । उसने अपने पिता से कहा कि आप एक बार उससे मिल लो अगर आपको पसंद न आएगा तब मैं विवाह नहीं करूँगी । ऋषभ के पास जो एक संस्कार है , सज्जनता है और ऊपर से सरस्वती का अतुलनीय वरदान , वह किसी को भी मोह ले । वह उसके पिता से मिलने गया ।

कितना पूछोगे अनुराग खाना भी नहीं खाया अभी

इस मकान में एक पत्थरों का ज़खीरा है हर ओर और एक मैं पत्थर सदृश रह रही । यहाँ आज तक इतना न कोई बोला होगा , जितना तुम्हारे आने के बाद यहाँ आवाज़ हुई है । तुम तो आज चले जाओगे पर इन पत्थरों को हर ढूबती शाम के साथ क्रिस्सों का प्यासा कर दिया तुमने । हर दिन की नई सुबह जब मेरा मुँह चूमती है मैं एक उम्मीद लिये अपने हाथों से अपनी जुल्फ़ों को पीछे करती हूँ , कल सुबह के बाद न कोई उम्मीद न कोई आवाज़ों से कंपायमान कोई हलचल बस मेरी वह अनबोलती सीनतन्हाई जिसमें बहुत शोर है जिसकी चीख़ सिर्फ़ मुझको सुनाई देती है । अनुराग , हर रोज़ यही आसमान बताता है मुझको कि आज का दिन तो बीत गया पर रात अभी बाक़ी है । इन कैलेंडर के नंबरों के सिवाय अब और कुछ नहीं है जीवन में मेरे ।

तुम मेरे गुरु हो । मुझे लिखना सिखाओ । एक पति के रूप में गुरु मिला था दूसरा बेटे के रूप में । इन क्रिस्सों के बजाय तुम कुछ मेरे लिखने में मदद करो ।

आंटी किताबों का बंडल खोलकर सजाने लगी । मैंने मदद की खोलने में । मैंने कई कहानी , कविता , उपन्यास की किताबें खरीदवा दी थीं । आंटी और सुरुचि दोनों को जवाहर ने पूरी ताक़त से किताब बेचा । मैं जो- जो किताब का नाम बताता था वह उसके साथ दो और दिखा देता था । उसके दुकान के बाहर एक खुली आलमारी में किताबें लगी थीं उसने कहा इसमें से भी देख लो । मुझे जवाहर वाले ने दो किताब बग़ैर पैसे के दे दी , चलते समय । उसने कहा , “ यह दो किताब नई आई है , आप पढ़ें और लोगों को भी बताएँ । ”

उसे लगा मैं काम का आदमी हूँ और ग्राहक लाकर दूँगा । इलाहाबाद एक गढ़ है ही सिविल सेवा का । उस शहर की अपनी एक बौद्धिकता की छवि है और यहाँ के छात्र अपने परिश्रम के लिये विख्यात हैं । कभी वह भी एक दौर था जब लोग दूर- दूर से पढ़ने इलाहाबाद आते थे । इन दूर- दूर के प्रदेशों में उड़ीसा , आसान , दक्षिण भारत तक शामिल था । इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश मात्र ही धन्यता प्रदान करता था पर अब यह उत्तर प्रदेश और थोड़ा बहुत उत्तर प्रदेश से सटे बिहार और मध्य प्रदेश की सीमाओं तक सीमित हो गया है , पर उत्तर प्रदेश में अभी भी शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र है ।

आंटी किताबों से उत्साहित थी । वह बंडलों को खोलकर किताब सजा रही थी । मैंने सजाने में मदद करते हुये कहा , पहले कहानी पढ़ना । कविता भी पढ़ सकती हो । यह उपन्यास बाद में पढ़ना खासकर यह “ शेखर एक जीवनी ” यह बाद में पढ़ना । इसकी भाषा थोड़ा अलग है । आंटी ने पूछा यह “ पचपन खंभे लाल दीवारें ” ?

मैं यह ऊषा प्रियंवदा का बहुत अच्छा उपन्यास है । यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी से ऐसे ए की हैं और दिल्ली की लेडी शरीराम कालेज और इलाहाबाद विश्वविद्यालय दोनों में रहीं हैं । कोई कहता है यह इलाहाबाद के महिला छात्रावास पर है कोई कहता है दिल्ली पर । वैसे आंटी यह हो इलाहाबाद का महिला छात्रावास या दिल्ली का , जीवन तो कमोबेश एक ही होगा । वह घर से दूर आकर रहना , एकाकी जीवन , बड़ा सामान्य सा नीरस सा भोजन , छात्रावास के अंदर की कैंटीन पर सबका शाम का मिलना , जीवन की अल्हड़ता , आँखों में ख्वाब जिसमें भविष्य भी है , प्रेम की लालसा भी है और एक अनिश्चितता । यह तक्रीबन 150 पेज का उपन्यास है और इसकी नायिका सुषमा मुझे इलाहाबाद की ही लगती है ।

आप उपन्यास पढ़ोगे तब यह आसान नहीं होगा कहना कि वह नायिका इलाहाबाद की नहीं है । यह अलग बात है थोड़ा शहर की संरचना , जहाँ कथा गढ़ी गई , दिल्ली और इलाहाबाद को मिलाकर लगती है । यह जिजीविषा, यह प्रेम की चाहत यह नज़दीक आना दूर जाना फ़िर नज़दीक आना यह सब तो शहर की सीमाओं से ऊपर एक मानवीय भावनाओं का सत्य है । यह राग दरबारी और आधा गाँव आप पढ़ना , शायद आप एक बार में ही पढ़ जाओगे । मैं शिवाजी सामंत का “ मृत्युंजय ” भेजूँगा । वह यहाँ नहीं मिली । वह कर्ण के जीवन पर है ।

आंटी - अनुराग , मैं लिखना चाहती हूँ । तेरे तरह वाक्य- विन्यास बनाना चाहती हूँ ।

मैं - वह आंटी थोड़ा अभ्यास और कल्पनाशीलता दोनों के सहयोग से होगा । शब्दकोश मज़बूत करना होगा । शब्दों का सही चयन सीखने में बहुत वक्त लगता है । आप जितना पढ़ोगे उतना ही सीखोगे । इसमें कोई शार्टकट रास्ता नहीं है । पहले आप भाव बनाओ फ़िर उसको शब्दों में पिरोने का प्रयास करो । एक आवश्यकता , मेरे अनुसार यह है , लिखते समय भावनाएँ उभार पर हों तो शायद बेहतर लेखन होता है । आप जब लिखो तब पाठक की उत्सुकता का ध्यान रखो वह इंतज़ार करे अब क्या होने वाला है । आप उसकी भावनाओं को नियंत्रित करो । यह सब हमारे ऐसे सामान्य लेखक नहीं कर पाते , यह बहुत मंझे हुये लेखक कर पाते हैं पर अगर यह सिद्धांत आप जानते हो तभी यह प्रयास कर पाओगे नहीं तो नहीं कर पाओगे । शब्दों के प्रयोग में विविधता लाओ और शब्द रिपीट न हो तो बेहतर है ।

आंटी - कैसे ? कुछ बताओ ।

मैं - आंटी हर आदमी सपने देखता है । वह ख्वाब में जीता है पर ज़ब ख्वाब जाता है तो उसको तकलीफ़ होती है । आप देखिये कैसे व्यक्त हो रही वह तकलीफ़....

“ऐ ख्वाब ,

तू इस तरह छोड़ के न जा मुझको
आँखों से मेरे ज़ेहन में उतरते हुये
एक अलग कैफ़ियत में तुम आए थे

मेरी बंद आँखों की शबनम में सरोबार होता हुआ
शहज़ादों की कहानी ऐसा मेरे जिस्म के रोम रोम में उत्तेजना फैलाता हुआ
हक़ीकत से दूर कहीं रेगिस्तान में सरोवर ऐसा

अभी- अभी तो आया था तू
मैने तुझको पूरी तरह अभी जिया भी नहीं था

पर आँख खुलते ही कहीं दूर बहुत दूर
जाता दिख रहा है तू

ऐ मेरे ख्वाब
इस तरह तू मुझे छोड़कर न जा

तेरी भी कुछ जवाबदेही है
इन खानाबदोश आँखों के लिये
जिनको देता है छलावा हर रोज
तू अपनी ही रौशनी में
कब तक ढूँढ़ेगी यह आँखें तुझे

चाँद की नरम रौशनी में
दूर झाड़ी में चमकते जुगनुओं की रौशनी में
जुगनुओं के साये में
यह रात तो कट जाएगी
पर अहसास तेरे होने का
पर न मिल पाने का
नहीं हैं लफ़्ज़ यह कह पाने का

मेरी खामोशी में ही बंद हैं
वह सारे लम्हें
जो नाम हैं तुम्हारे

ऐ मेरे ख्वाब
मुझे इस तरह छोड़कर मत जा

किस कदर अकेला हूँ मैं तेरे बगैर सब के साथ होकर भी
मालूम नहीं जो गुजर चुकी है रात साथ तेरे वह बड़ी है
या जो बची है बेबस रात बगैर तेरे वह बड़ी है
इन तड़पती आँखों की बेबसी के लिये ही सही
बगैर ताबीरों के ही सही
पर ऐ ख्वाब इस तरह छोड़कर न जा मुझको ॥”

इसमें उर्दू के शब्द मदद कर रहे बात को बेहतर कहने में । ताबीर का हिंदी स्वप्नफल है, ज़ेहन का दिमाग, कैफियत का अवस्था, शबनम का ओस, खानाबदोश का बंजारा या बेघर । अब आप शब्दों को बदलो वह बात शायद न रह जाए ।

इसी पर आप दूसरा देखें

“ ऐ मेरे ख्वाब
कल शाम सुना वह आये थे
पता नहीं किसका दिल बहलाने
अपना या मेरा ॥”

अब इसमें भावना भी है शब्द भी है और लय भी है पर मैं लय का आग्रही कम हूँ भावना का ज्यादा हूँ । बहुत से लोग मीटर पर लिखते हैं । मैं भी लिखता हूँ पर मैं मीटर से बँधे होने के बजाय भावना पर ज्यादा ध्यान देता हूँ ।

आंटी - यह सब तुमने कब सीखा ?

मैं - पता नहीं कब सीख गया । बस यूँ ही ज़िंदगी को देखते - भोगते - झेलते सब उतरता गया भीतर मेरे और कहीं न कहीं व्यक्त होता गया ।

आंटी बोली खाना जल्दी से बना लेती हूँ तब बात करती हूँ । आंटी खाना बनाने चली गई और मैं अपना सामान बाँधने लगा । कोई ख़ास सामान तो था नहीं पर मैंने पूरा सूटकेस खोला और फिर से सामान देखा और वैसे ही टूँस दिया । मुझे सामान रखने और सजाने का सलीक़ा नहीं आता था । मैंने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि मेरी समाचारपत्रों की कटिंग्स यहाँ न

छूट जाएँ और किताबें साथ चली जाएँ । यह सब रखकर मैं एक योजना बनाने लगा मस्तिष्क में शालिनी के बारे में जानने के और कैसे यह पूरा संवाद हुआ होगा शालिनी और ऋषभ के विवाह का , आंटी - ऋषभ - शालिनी और शालिनी के पिता के बीच ।

मैं सोचने लगा कि कैसे वह वाक्या छेड़ूँ , समय भी कम है और ऐसा वार्तालाप स्थापित हो जाए कि आंटी भावनाओं में आकर बता दे ।

यह आंटी कोई आसान चीज़ है नहीं , यह भी ग़ज़बै चीज़ है । यह जो बताना चाहती है वही बताती है । मैं इतने दिन से था पर यह ऋषभ के इंजीनियरिंग के तीसरे साल में आकर रुक जाती थी । यह संजीव टंडन भी जानता होगा एक परेम कथा जो पनपी है कम्प्यूटर साइंस के चिप्स और इलेक्ट्रॉनिक्स के इलेक्ट्रोड के मध्य । यह संजीव टंडन कहानी अच्छी सुनाता है । वह सुनाएगा रस ले - लेकर । मेरे अंदर का वह नवयुवक जग चुका था जो एक परेम कहानी सुनने को उतावला हो रहा था पर अब सुनाएगा कौन ? आंटी तो निपटा देगी दो- चार वाक्यों में और संजीव अब कहाँ मिलेगा मुझे ।

यह आँखों की शबनम से बनाती तारों की एक शृंखला और पलकों से बरसती एक गजल जब शालिनी और ऋषभ की मुलाक़ात होती होगी और आईआईटी कैम्पस में वह अपने ही आहट से चौंक जाते होंगे एक हिरन की तरह । लफ़्ज़ों के चादर में पनपती वह गजल जो हर रोज़ रवाँ होती है , कौन सुनाएगा अब ।

मैंने फ़ैसला किया , आंटी से ही पूछता हूँ साफ- साफ कुछ तो बताएगी ।

मेरे अंदर से एक आवाज़ आयी , अनुराग तेरा बहुत मन कर रहा शालिनी की तस्वीर देखने काजिसने ऋषभ से जो चाहा करा लिया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 85

आंटी ने कढ़ी - चावल बना दिया । वह बोली अनुराग तुम आज जा रहे हो , यह इस बार की अंतिम कढ़ी है । तुम जल्दी आना , मैं इंतज़ार करूँगी । तुम जब अगली बार आओगे तब मैं काफ़ी कुछ पढ़ लूँगी इसमें से और लिखने की भी कोशिश करूँगी , शायद कुछ लिख ले जाऊँ ।

मैं - आप लिख लोगी , ऐसा कोई काम है नहीं जो आप नहीं कर सकते बस संकल्प करने की बात है । यह संकल्प आप कर चुके हो और अब इसका

फल दिखेगा ।

आंटी - कुछ बेहतर लिख सकूँ , यह कोशिश करूँगी ।

मैं - आंटी , अच्छा और ख़राब का कोई एक निश्चित मापदंड तो है नहीं । यह साहित्य कोई विज्ञान तो है नहीं जो एक फ़ार्मूले पर चलता हो । परेमचंद की सबसे बेहतरीन रचना , “ गोदान ” पर भी कहा जाता है कि लेखक बीच- बीच में आकर बोलने लगता है जो एक रचना की तारतम्यता को तोड़ता है । यह भी कहा जाता है कि वह लिखते समय एक प्रवाह में खो जाते हैं और कई जगह आगे का मौसम पीछे और पीछे का आगे हो गया है । कुछ लोगों का कहना है कि परेमचंद का व्यक्तित्व कुछ- कुछ होरी में है , लेखक एक पात्र के रूप में दिखे इस पर भी मत- मतान्तर है ।

इस उपन्यास के शिल्प पर तो सवाल लोग उठाते ही हैं । यह सब कहीं गई बातें न तो रचना की सार्थकता पर सवाल खड़ा कर पाती है और न ही उपन्यास की उपादेयता पर कोई प्रश्न चिह्न लगा पाती हैं । आप जो भी लिखो वह समालोचन की प्रक्रिया से गुजरेगा ही । परेमचंद का एक उदाहरण दिया क्योंकि यह आप जानते हो ऐसा ही में कई और लेखकों के बारे में कह सकता हूँ ।

आंटी , आप बेप्रवाह रहो लोग क्या कहेंगे , आप अपने अंदर उमड़ रहे उद्गारों को अभिव्यक्त करो । यह लेखन एक खुद से सम्बन्धों की स्थापना है । यह आपके एकाकीपन को दूर करता है । यह आपके अंदर आपको ही बोलने का अवसर देता है । बस आप अपनी आत्मा से संवाद करो । आप अपने अंदर अपने को टटोलो आप एक बेहतर लेखन करोगे ।

मेरी सबसे बड़ी राय यह है , आप डायरी लिखो । आप रोज सोने के पहले अपना दिन लिखें । आरंभ में आप पाएँगी कि आप सिर्फ़ तथ्य लिख रहीं पर शीघ्र ही वहाँ पर भावनाओं का प्राधान्य होगा और जिस दिन आपको यह प्रधानता दिख जाएगी आप की एक लेखक की यात्रा आरंभ हो जाएगी । मुझे आप खत लिखो , आप ऋषभ को ख़त लिखो , आप शालिनी को ख़त लिखो आप को अवसर मिलेगा और लिखने का ।

मैं , अनुराग शर्मा , एक बहुत बड़ा फ़रेबी हूँ । लोग कहते रहें अपने बारे में कि मैं बिसात बिछाने , शह और मात के खेल का माहिर हूँ । पर इन सारे दावों के बीच मेरा घोड़ा ढाई घर चलता है वह वज़ीर भी मारता है और शह भी देता । मेरे शह के बाद रानी सिर्फ़ भाग-भागकर थकती ही है , उसे तो मरना ही है

काले और सफेद चौसठ खानों के बीच । मैंने अंतिम वाक्य बड़ी सावधानी से ऋषभ और शालिनी का विन्यासित किया था , सारा रहस्य जानने के लिये । मैं बेचैन था वह रहस्य जानने के लिये , “ ऋषभ - शालिनी विवाह प्रसंग संदर्भ सहित ” ।

आंटी को अपने जाल में आता देख मैंने गर्म लोहे पर हथौड़ा मारा , “ आंटी ऋषभ को क्या शालिनी ने नियंत्रित कर लिया था ? ”

हथौड़ा सही जगह लगा

आंटी - हाँ यह क्या सकते हो , पर ऋषभ बहुत सम्मोहित था उससे । वह थी ही ऐसी कि सम्मोहित कर ले किसी को भी ।

मैं - आपको कैसे पता चला यह इश्क जो ज़मीन में जड़ें जमा रहा था पर ज़मीन को ही न पता यह कितनी दूर तक जा चुका ।

आंटी - शालिनी बहुत बड़े घर की लड़की थी । ऋषभ को पहले यह न पता था पर जब उसने पृथ्वीराज राज रोड दिल्ली पर उसकी आलीशान कोठी देखी तब उसको लगा कि ख़्वाब को संजीदा करने की ज़रूरत है । पर शालिनी को बहुत पसंद था ऋषभ । यह शालिनी का बुद्धिमत्ता के प्रति आग्रह था जो वह ऋषभ के प्रति आकर्षित हुई और ऋषभ शालिनी के अंदर से टपकते सौन्दर्य और नफ़ासत से अभिभूत था ।

उसने ऋषभ से कहा कि मेरे पिताजी मिलना चाहते हैं । मैंने सब बता दिया है । ऋषभ थोड़ा हिचकिचा रहा था पर शालिनी ने साहस दिया । वह शालिनी के पिता से मिलने गया और पूरा रंगमंच शालिनी ने ही तैयार किया था वह सूत्रधार थी , सारी डोर उसी के हाथ में थी । उसने जैसा कहा वैसा ही ऋषभ ने किया । ऋषभ ने सीधे सपाट शब्दों में शालिनी के पिता से कह दिया वह शालिनी से विवाह करना चाहता है । शालिनी के पिता ने उससे जानकारी हासिल की उसके परिवेश और पृष्ठभूमि के बारे में ।

वह दिल्ली के बड़े व्यापारी थे उनको व्यापार करना खूब आता था , इतना बढ़िया माल खुद चलकर दरवाज़े पर आ गया हो तो उसको ठीक से और तजबीज लिया जाये , इसलिये लंबा इंटरव्यू ऋषभ का हुआ । एक रणनीतिकार के रूप में शालिनी पूर्ण सफल रही और आहूजा साहब को ऋषभ भा गया ।

यह कहते हैं दोनों की आहूजा साहब पहले तैयार न थे पर ऋषभ से मिलने के बाद हाँ कह दिया , यह थोड़ा मुझे ठीक लगता नहीं । शालिनी एक मात्र संतान थी , हर बेटी पिता के नज़दीक होती ही है और उसने बताया ही होगा ऋषभ के बारे में । यह विवाह सम्बन्ध तो आजकल सिफ्ऱ लड़कों की काबिलियत देखकर ही होते हैं । आहूजा साहब दिल्ली के थे वह कोई मेरी तरह परम्परागत परिवेश के तो थे नहीं । उन्होंने खुद भी परेम विवाह किया था तो उनको आपत्ति किस बात पर होगी । ऐसा दामाद उनको चिराग लेकर ढूँढ़ने पर भी न मिलता , पर यह दोनों कहते हैं कि , “ पापा शुरू में आनाकानी कर रहे थे ” ।

यह हो सकता है एक बग़ैर बाप का बेटा और संघर्ष करती गरीब माँ के परिवेश से कुछ आपत्ति रही हो पर मुझे नहीं लगता कोई ख़ास आपत्ति हुई होगी । वैसे भी मैंने बहुत जानने की उत्सुकता नहीं दिखायी कि क्या हुआ था विवाह पूर्व इनके जीवन में ।

मैं - आपको कैसे पता लगा यह पूरा मामला जो अपने उफ़ान पर था पर आप अनजान थे ?

आंटी - पूरी तरह तो अनजान नहीं थी मैं पर मैं जिस किनारे पर खड़ी लहरों को देख रही थी वहाँ पर समुद्र इतना गहरा है यह पता न था मुझको ।

मैं - फिर आपको कैसे पता लगा ?

आंटी - एक दिन शाम को घर की घंटी बजी । मेरे घर की घंटी बजती कम ही है । तुम इतने दिन से आये हो कभी देखा घंटी बजते ? मैंने ऋषभ की पिता की मृत्यु के बाद अपने आप को बहुत सहेजा , इस बच्चे के भविष्य और इसके संस्कार के लिये । यह ज़माना एक नवजावान विधवा के लिये बहुत संजीदा नहीं है । मेरे दामन की तरफ अफवाहों का कोई रुख न हो यह सोचकर मैंने त़क़रीबन सबसे सम्बन्ध ख़त्म ऐसे कर लिये । मैं अपने आफिस में भी लोगों से केवल ज़रूरी बात करती थी । अगर आप किसी के घर जाओगे तब लोग आपके घर भी आएँगे , इसलिये मैं लोगों के घर बहुत ही कम जाती थी । यह ऋषभ छोटा ही था और मैं इसको पढ़ाने में मशगूल हो गयी , इसका परिणाम यह हुआ कि मेरा पूरी दुनिया से मेरा नाता टूट गया ।

ऐसे में एक शाम घर की घंटी बजना मुझे थोड़ा आश्चर्यजनक लगा , कौन शाम को आ गया ?

मैंने दरवाज़ा खोला , एक गोरे लंबे - मोटे से व्यक्ति बहुत सारा फल - मिठाई की टोकरी के साथ खड़े थे । मैं समझ ही न पाई कि यह हैं कौन और किसलिये यहाँ आए हैं । मुझे लगा कि यह किसी का पता पूछने आए हैं । मैंने इसी आशय से पूछा , “ आपको कहाँ जाना है ?

आहूजा जी - शांति मिश्रा जी से मुझे मिलना है ।

मैं - आ जाइये , मैं ही शांति मिश्रा हूँ ।

वह अंदर आ गये , उनके साथ आया उनका ड्राइवर सामान रखकर वापस चला गया ।

आहूजा जी - बहन जी , आप मुझे न जानती होंगी पर मैं आपको जानता हूँ । मैं शालिनी आहूजा का पिता हूँ , वह आपके बेटे के साथ आईआईटी में पढ़ती है ।

मैं - हाँ , ऋषभ ने बताया है मुझे उसके बारे में ।

आहूजा जी - बहन जी मैं एक खास मक्कसद से आया हूँ , अगर आप इजाज़त दें तो मैं कहूँ ।

आंटी - भाई साहब आप ज़रूर कहें , इसमें इजाज़त की क्या ज़रूरत ।

आहूजा जी - आशा है आप मुझे निराश नहीं करेंगी ।

आंटी - भाई साहब मैं आपसे पहली बार मिल रही , आप ऐसे सर्वशक्तिमान , संपन्न व्यक्ति को मुझ जैसी अकिञ्चन क्या दे सकती है ? फिर भी आप कहें ।

आहूजा साहब - मेरी बेटी और ऋषभ के बीच नज़दीकियाँ हैं और वह दोनों विवाह करना चाहते हैं । मैं एक बेटी के पिता के रूप में यह रिश्ता लेकर आया हूँ ।

आंटी - वह दोनों विवाह करना चाहते हैं और आपको यह रिश्ता मंजूर है । मुझे कुछ भी इल्म नहीं इन सारे घटनाकरमों का , यह एक सूचना आप दे रहे जब सब कुछ निश्चित हो चुका तब मेरे “ हाँ ” या “ ना ” का क्या मतलब ? मैं अगर कह दूँ नहीं यह रिश्ता मुझे मंजूर नहीं तब भी कोई फ़र्क नहीं पड़ता क्योंकि सारा फ़ैसला आप कर ही चुके हैं । आपको मुबारक देती हो मैं आपको जीवन की इस उपलब्धि पर , एक कन्या को मनचाहा समर्थ पति मिले यह हर पिता की एक बहुत बड़ी ख्वाहिश होती है । आपकी बेटी का वह मनचाहा

पति है और एक माँ के रूप में मैं यह गायरंटी देती हूँ वह बहुत ही समर्थवान है और वह मुझसे कहा करता था कि , “ माँ तू गढ़ बता मैं उसको गिराऊँगा ” ।

इससे बड़ी बात एक माँ अपने बच्चे के सामर्थ्य पर क्या कह सकती है । आपको एक बेटा मिला वह भी पाला- पोसा बिल्कुल तैयार संस्कारों से भरा , यह आपके पूर्व जन्म के संचित कर्मों का प्रसाद है ।

आहूजा साहब चुप हो गये । वह बहुत समझदार थे ही अगर न होते तो एक पाकिस्तान का रिफ्यूजी इतना बड़ा व्यापारिक साम्राज्य स्थापित कर ले दिल्ली ऐसे शहर में , यह आसान तो बिल्कुल नहीं । वह बोले मैं चलता हूँ , फिर आऊँगा बाकी बातें करने ।

मैंने कुछ न कहा वह चाय पीकर चले गये ।

थोड़ी देर बाद ऋषभ आया । यह सब पूर्वयोजना से था । ऋषभ जानता था माँ अन्तर्जातीय विवाह पर एक अलग सोच रखती हूँ । यह मेरा दोष नहीं है यह मेरा परिवेश है । मैं ऐसी ही पली बढ़ी और विकसित हुई हूँ । इस जीवन के सोपान करम में एक निश्चित विचारधारा का आग्रही हो जाना स्वाभाविक ही था । मेरे पीछे यह मंथन काफी हुआ कि माँ को कैसे बताया या पटाया जाए । आहूजा साहब शालिनी के कहने पर कुछ भी करने को तैयार थे । ऋषभ उनके घर आता - जाता था । वह ऋषभ की प्रतिभा से वाक़िफ़ हो चुके थे । उनका मेरी तरह जाति- परिवार- संस्कार से कोई आग्रह न था , वह तो बस एक अच्छा लड़का अपनी लड़की के लिये चाहते थे और उस मापदंड पर ऋषभ अगर पूरी तरह न सही तब भी काफी कुछ खरा उतरता ही था ।

यह फ़ैसला हुआ कि आहूजा साहब रिश्ता लेकर चले जाएँ और माँ के अहम को भी तुष्टि मिलेगी क्योंकि इलाहाबाद में लड़कियों के पिता ही प्रस्ताव लेकर जाते हैं जिस पर बेटे का बाप बहुत नाटक करता है । मैंने अपना विवाह , तेरी माँ का विवाह और ऐसे कई रोचक प्रसंग कहानियों के शक्ल में उसको सुनाये थे ।

ऋषभ आया , वह चाहता था वह बात छेड़ना पर मैंने कोई ध्यान न दिया । जब वह मेरा कोई उत्तर न पाया तब कहा , “ माँ इतना सामान लेकर कौन आया ? ”

आंटी - एक दिल्ली के व्यापारी थे , किसी व्यापार के इच्छुक थे । वह आये थे ।

ऋषभ- वह कौन थे ?

आंटी - वह कह तो रहे थे कि वह ऋषभ के होने वाले ससुर हैं पर मुझे क्या पता वह कौन थे , तुझे ज्यादा पता होगा ।

ऋषभ समझ गया मेरी अतिशय नाराज़गी । वह चुप हो गया । मैं तो गुस्से से आग बबूला थी ही , मैंने चुप रहना बेहतर समझ रही थी ।

मैंने थोड़ी देर बाद कहा , “ कब है तुम्हारा विवाह ? मेरे पास कुछ पैसे हैं ले लेना , वह काम आएँगे तेरे । अब उनका कोई काम तो है नहीं । तेरी पढ़ाई के लिये थे वह पर तूने काफ़ी पढ़ाई अपनी क्षमता से अर्जित धन से कर लिया । इसका कहीं तो इस्तेमाल हो , इसमें ही कर लो ।

ऋषभ- विवाह ? किसका विवाह ?

आंटी - ऋषभ तुम अगर फ़िल्मों में अभिनय करो तब वह भी बहुत अच्छा करोगे । तुमको ईश्वर ने सर्वगुणसंपन्न बनाया है । मैंने इतना काबिल बेटा जना यह मुझे भी नहीं पता था , दिन प्रतिदिन परतें खुल रहीं जैसे प्याज़ की परतें खुलती हैं । पता नहीं कितनी और परतें खुलनी बाक़ी हैं ।

वह समझ गया कि सारा मामला एक अलग पटरी पर आ गया है । वह जिस युक्ति का प्रयोग किया वह पूरी तरह विफल हो गई है ।

उसने कहा , “ माँ मैं कह नहीं पा रहा था । शालिनी के पिता ने कहा मैं जाकर बात करता हूँ । वह बोले मैं समझा लूँगा । ”

आंटी - वह मुझे समझाएँगे? किस बात के लिये ? मुझे मेरे बेटे के बारे में कोई बात जानने के लिये एक अजनबी की आवश्यकता हो गई है , यह समय मेरा आ गया है । मुझसे आकर कहा जाए कि आपके बेटे के विवाह पर मैं तैयार हूँ ।

उन आहूजा साहब की क्या हैसियत है यह बताओ न मुझको ? एक खून से लिखी कहानी को पढ़ने की ताक़त है उनके पास । यह दास्तान जो मेरे जीवन की है वह पढ़

सकते हैं ? तुम पूछना उनसे , अब तो तुम बहुत नज़दीक हो गये हो उनके । उनके ही नहीं उनके पूरे ख़ानदान के आँखों में इतना आँसू नहीं होगा कि मेरी दास्तान , मेरे दर्द पर बहा सकें । ऋषभ प्यास सराबों से नहीं बुझती उसके लिये मानसून को आना होगा । मेरे पास कोई जीने की हवस नहीं है यह तुझे पता है , जो जीने का सहारा है उस दरख्त पर कुल्हाड़ी मत चला ।

ऋषभ- माँ वह विवाह का प्रस्ताव लेकर आए थे ।

आंटी - नहीं, वह विवाह की सूचना देने आए थे । यह प्रस्ताव होता है ? यह सारा निर्णय सुना देना एक प्रस्ताव होता है ? वह बड़े व्यापारी हैं, उन्होंने जीवन को एक व्यापार के रूप में देखा है मैंने एक संस्कार के रूप में । उनके लिये विवाह दो व्यक्तियों का सम्मिलन है मेरे लिये दो परिवार, दो परिवेश, दो समाज का । मैं तेरा विवाह करने के पहले मैं कई चीज और भी जानना चाहूँगी, अगर वह एक प्रस्ताव की शक्ति में है तो । यह अगर एक सूचना की शक्ति में है तो भारतीय संविधान ने तुझको सारे अधिकार दिये हैं और तू उनका इस्तेमाल कर । यह भी मत सोचना मैं इसका बहिष्कार करूँगी, मैं इसमें शामिल होऊँगी पर यह कहकर कि यह रिश्ता मेरे हिसाब से तूने नहीं किया ।

ऋषभ, यह बता तू कितना जानता है आहूजा साहब के बारे में । यह जीवन कोई काग़ज पर लिखी गजल नहीं है । आज जो तेरी आँखों में एक नज़्म बिखरी पड़ी है जिसे तू समेटने में व्यस्त हैं वह कुछ दिन में एक स्यापा बन सकती है, अगर फ़ैसला ग़लत हुआ । यह सम्बन्ध सिर्फ़ शारीरिक आकर्षण और जीवन की सहूलियतों से ही नहीं चलते, इसके पीछे एक रूह की चाहत होती है । मैं जब विधवा हुई थी मैं तीस साल के आसपास थी । यह तू जान गया होगा अब कि उस उम्र में बहुत से लोग विवाह करते हैं और पुनर्विवाह तो बहुत करते ही हैं । तूने कभी यह जानना चाहा, मैंने फिर से विवाह के लिये क्यों नहीं सोचा ? मैं बहुत सुंदर थी, सलीकेदार थी मेरे चाहने वाले न रहे होंगे ऐसा न रहा होगा, हलाँकि मुझको इसका कोई भान नहीं, क्योंकि जिस गाँव जाना ही नहीं उसका पता क्या पूछना ।

तुझे यह भी लगता होगा, माँ ने मेरे लिये सारा त्याग किया । पर यह कहानी आधी है । पूरी कहानी यह है कि मेरी रुह, मेरी आत्मा तेरे पिता के साथ एक सामंजस्य रखती थी और उसमें किसी और के लिये कोई जगह न थी । मैंने पहली बार उनको विवाह- मंडप में देखा, पर वह एक ऐसे जीवन में मुझको ले गये जिसमें अभाव कुछ रहा भी हो तो वह उनके साथ के कारण पता ही नहीं चलता था । उनका साथ ही मुझे आङ्गादित करता था । पर तुम लोग आज के नये बच्चे सिर्फ़ जीवन की सहूलियतें देखते हो । यह सम्बन्ध जो तुम्हारा बन रहा है इसमें सिर्फ़ सहूलियत देखी गई है और कुछ नहीं ।

ऋषभ- माँ, अगर तुझे नहीं था पसंद यह प्रस्ताव तो आप उनसे इंकार कर देती जो लेकर आया था, मुझ पर नाराज क्यों हो रही हो ?

आंटी - तुम्हें पता है क्या कहा था उन्होंने?

वह सिर्फ़ एक सूचना थी । वह सिर्फ़ यह बताने आये थे कि तुम तीन एक फ़ैसले पर पहुँच गये हो ।

अगर वह एक प्रस्ताव था, जैसा तू कह रहा तो मैं यह प्रस्ताव एक सिरे से खारिज करती हूँ । तू यह मिठाई, फल का टोकरा उठाकर जा और फेंक दें उस आलीशान पृथ्वीराज रोड की बड़ी सी कोठी के सामने ।

मैं फिर कह रही अगर यह प्रस्ताव है तो मुझे अस्वीकार्य है । मुझे नज़रदाज़ करके तू कुछ भी करने को स्वतन्त्र है ।

मैं एक फरियादी ज़रूर हूँ पर मेरी रिदा के पास बहुत आत्मसम्मान है । यह पत्थरों के प्राचीर में स्थापित देवता के सामने भी कहती है तुम सिर्फ़ मेरा हक़ देना । मेरे ख़बाँ के बिखर जाने और अगर मेरी पीड़ा से तू अगर नावाक़िफ़ है तो तू यह मत सोच मैं कोई हाँथ उठाकर फरियाद करूँगी । वह परमात्मा जो क़ादिर है उससे भी कहने की ताक़त रखती हूँ मैं, देख कभी पत्थरों से बाहर निकल कर उनके हालात जो तेरे दर पर भरे नयनों से उम्मीद लगाये रहते हैं । कब तक तेरे नाम पर सजदा - भजन- कीर्तन होता रहेगा अगर उनकी दरखास्त पर तू गौर नहीं करता । यह उस परवरदिगार की ज़िम्मेदारी है वह अपनों की उम्मीद समझे, कोई हाँथ उठाकर ही क्यों हर वक्त माँगे । मैं आसमान की ओर हाँथ उठाकर माँगने वाली फरियादी नहीं हूँ, चाहे वह ईश्वर हो, मेरा पति हो या मेरा बेटा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 86

अनुराग, वह रात बहुत ही कठिन थी । मेरी कुछ बहुत कठिन रातों में से एक थी । तुम जिस कमरे में रुके हो उसमें ऋषभ रहता था । मेरा कमरा हमेशा से वही रहा जिसमें मैं रहती हूँ । कोई आता- जाता ख़ास तो मेरे यहाँ था नहीं, इसलिये बाक़ी के कमरे बंद ही रहते थे । ऋषभ के पिता के काम के कारण सबका उनसे लगाव था । यह मकान उनको चुनकर दिया गया था । यह एक कार्नर का मकान है जिसमें आगे भी लान है पीछे भी लान है, गैरेज है जो ख़ाली ही पड़ा है । पूसा इंस्टीट्यूट ही सबके लान की देख-रेख करता है इसलिये सारे लान बहुत अच्छे हैं । मैं एकाउंट विभाग देखती हूँ और इन मालियों की ज़रूरतें ध्यान रखती हूँ, इसलिये मेरे लान का यह लोग ख़ास ध्यान रखते हैं । तुम कई बार जहाँ देर रात टहलते हो वहीं पर मैं उस रात टहलने लगी । मुझे ऋषभ के कमरे की बत्ती जलती दिखी । मैं उस बत्ती पर

नज़र लगाये टहल रही थी । मेरे दिमाग में एकाएक पता नहीं कैसे यह आ गया कि कहीं यह कुछ उल्टी- सीधी हरकत न कर ले ।

माँ का हृदय हर वस्तु पर मज़बूत होता है पर जहाँ बच्चे का प्रश्न आता है वहाँ पर बहुत कमज़ोर होता है । मैं एक बहाना बनाकर उसके कमरे गई सिफ़्र यह देखने कि वह ठीक तो है, मैंने देखा वह लैपटाप पर कोई काम कर रहा था । उसने पूछा क्या हुआ ? मैंने कहा, मेरा “कल्याण” का विशेषांक नहीं मिल रहा वही देख रही । उसने कहा, “देख लो पर मुझे यहाँ तो कहीं दिखा नहीं ।”

मेरा लक्ष्य पूरा हो गया था, वह संयंत था । मेरी चिंता निराधार थी वह सुलझा हुआ लड़का था । वह भी समझ रहा था कि मामला ठीक से नहीं चला ।

वह घर से बाहर गया ही नहीं दो दिन । हमारी बात भी न के बराबर हुई । एक ख़ामोशी पूरे घर में व्याप्त हो गई । मुझे लगने लगा कि मेरा अगर कोई गुनाह है तो इसकी सज़ा मुझको मिल जानी चाहिये अब यह ख़ामोशी मुझसे बर्दाशत नहीं हो रही थी । दो लोग एक घर में और दोनों मौन, कब तक चल सकता था । न मैं बाहर जाती थी न वह । मैं सामने के लान में टहलती थी और वह पीछे के ।

मैं न रात में सोती थी न वह । घर की खिड़कियों से बहने वाली हवाओं के आँचल पर उदासी बढ़ती जा रही थी चेहरा दोनों का बुझा रहता था । हम दोनों तन्हा हो गये थे, इस तन्हाई का फैसला मैंने ही किया था ।

मैंने दो दिन के बाद सम्बन्धों में चल रहे तनाव को ख़त्म करने का फैसला किया ।

मैंने कहा, “मैं शालिनी से मिलना चाहती हूँ ।”

ऋषभ- क्या करना शालिनी का ? तू ही कहती है हर बात पर, “जिस गँव जाना नहीं उसका पता क्या पूछना ।” अब जब उससे कोई ताल्लुक ही नहीं रखना तब उससे मिल कर क्या करना ?

आंटी - तुमने कब ताल्लुक तोड़ दिया ?

ऋषभ- जब आपने कहा कि, “यह रिश्ता मुझे मंज़ूर नहीं ।”

आंटी - क्या तुमने उसे यह बता दिया ?

ऋषभ- नहीं ...

आंटी - यह भी तो बताना पड़ेगा तुमको कि यह रिश्ता अब मंजूर नहीं तुमको जो तुमने मंजूर किया था । यह जो गणित के जीनियस लोग होते हैं न उनको दुनियादारी का कुछ ज्यादा पता नहीं होता । वह बस जीवन को एक फ़ार्मले में बाँध देते हैं । आज सवाल हल नहीं हुआ तो कल देखेंगे, आज प्रयोगशाला में तार ठीक से नहीं जुड़ा तब कल जोड़ेंगे । ऐसा जीवन में नहीं होता । अगर तुम इस बात पर सम्बन्ध तोड़ रहे हो कि मुझे यह रिश्ता मंजूर नहीं तब कहाँ है तुम्हारा प्यार, इश्क, दीवानगी एक- दूसरे के लिये ?

यह जब प्यार पनपा होगा तब जीने - मरने की क्रसमें खाई होंगी । माँ- बाप को मनाएँगे, पटाएँगे, धिधियायेंगे यह सब कहा ही होगा, भाषा चाहे जो भी इस्तेमाल की हो पर ऐसा ही कुछ कहा होगा ही । पर तुमने इतनी आसानी से उसको छोड़ दिया, उसको भूल गये । तुम लाओ उसको, मैं उससे कहूँगी, “तू भूल जा इसको, यह तेरे लायक नहीं है । जो तेरे लिये मुझसे नहीं लड़ सका, जहाँ पर इसकी जीत निश्चित थी वह तेरे लिये जमाने से क्या लड़ेगा । ”

मैं उसको विश्वास दिला दूँगी, यह महान कम्प्यूटर इंजीनियर ऋषभ मिश्रा सिर्फ बना है कम्प्यूटर के लिये, यह किसी महिला को सुख नहीं दे सकता । जो एक रात की मौसमी हवाओं को न झेल सका वह किसी झंझावात या तूफान को क्या झेलेगा ।

ऋषभ- माँ एक चिराग जला कर उजाला करने की की कोशिश की जो सब करते ही हैं पर वह पूरे घर को जला गई, अब इस रौशनी की खाहिश किसे है ।

आंटी- ऋषभ एक कम्प्यूटर इंजीनियर शायरी करने लग गया । यह भी तू इश्क में सीख गया ।

अनुराग, वह शर्मा गया । वह बोला माँ वह है बहुत अच्छी, पूरी आईआईटी उसको पसंद करती थी । वह बेहतर गाती है, लिखती है । वह आम आईआईटी के लोगों की तरह नीरस नहीं है । तू कुछ वक्त दे मैं उसे समझा दूँगा यह कहकर कि मैं चाहता था यह रिश्ता पर वक्त को मंजूर नहीं, किसी को भी वक्त का सम्मान करना चाहिये ।

आंटी - आहुजा साहब को ऐतराज़ था इससे ?

ऋषभ- हाँ ऐतराज था, वह चाहते थे कि कोई ऐसा मिले जो उनका बिज़नेस सँभाले और उनके घर आकर रहे । मैंने इन सब बातों इंकार कर दिया था ।

मैंने पहले ही शालिनी से कह दिया था मैं बिज़नेस सँभालने या आपके घर आकर रहने की कोई शर्त नहीं मान सकता । जब मैं उसके पिता से मिला था तब उन्होंने यह कहा था कि अगर शालिनी का पति नहीं सँभालेगा तब कौन सँभालेगा ?

मैंने कहा था उनसे कि जिस बात का मेरे पास जवाब नहीं उस पर मैं क्या कहूँ , पर यह उम्मीद मुझसे बेमानी है । उन्होंने यह भी पूछा, अगर तुम नहीं सँभालोगे तब क्या होगा इसका ?

मैंने कहा कि आप दान कर दो किसी संस्था को , किसी अनाथालय को , सरकार को । मैंने शालिनी से पहले ही यह कह दिया था कि यह मुझसे नहीं होगा और न मैं कर सकता हूँ ।

माँ , तेरी सारी बातों में एक बात सच है जो तूने कही थी जब मैंने पूछा कौन आया था तूने कहा था ,” दिल्ली का एक व्यापारी था जो कोई व्यापार करने आया था । ”

वह बहुत ही मँझे हुये व्यापारी हैं । मेरा लंबा इंटरव्यू लिया । उनके पास असीमित धन है और एक सुंदर पढ़ी - लिखी कन्या, इसका बहुत दंभ है उनको । उनका मेरा संवाद बहुत रुचिकर माहौल में नहीं हुआ ।

आंटी - क्या हुआ संवाद ...

ऋषभ बताने लगा पूरा संवाद जैसा हुआ था ।

आहुजा साहब - ऋषभ , मुझे शालिनी ने बता दिया है कि आप और वह विवाह करना चाहते हो । मुझे विवाह से कोई ख़ास आपत्ति नहीं है फिर भी कुछ जानना मेरे लिये आवश्यक है ।

ऋषभ-आपको ख़ास आपत्ति नहीं है या कोई भी आपत्ति नहीं है ।

आहुजा साहब - कोई ख़ास आपत्ति तो नहीं ही है पर मुझे शालिनी के पति के साथ- साथ एक ज़िम्मेदार व्यक्ति भी चाहिये जो शालिनी की मदद कर सके , इस स्थापित साम्राज्य को चलाने में । मैं एक निर्वासित आदमी का बेटा हूँ , मैंने बहुत मेहनत से यह सब बनाया है । मैं इसको लावारिस तो नहीं छोड़ सकता है ।

ऋषभ- यह बात तो ठीक है कि सर आप इसे यूँ ही नहीं छोड़ सकते ।

इतने में चाय नाश्ता आ गया । शालिनी भी आ गई पर आहूजा साहब ने शालिनी से जाने को कहा यह कहते हुये कि थोड़ा मुझे ऋषभ से बात करने दो । मैंने भी इशारों से उससे कहा आप जाओ । वह चली गई । वह अपनी बात पर फिर आ गये ।

आहूजा साहब - आप ऐसा करो ऋषभ थोड़ा समय ले लो । कोई भी फैसला जल्दबाज़ी में मत लो । आप थोड़ा ठंडे दिमाग़ से सोचो । जो कुछ आपके सामने किस्मत ने परोस दिया है वह बहुतों की चाहत है । ऐसा मौक़ा जीवन में बार- बार नहीं मिलता । मैं किसी भी तरह की बंदिश तो लगा नहीं रहा । मैं सिफ़्र यह कह रहा यह तुम लोग सँभालो और मुझे रिटायर करो । मैं कोई गैरवाजिब बात तो कर नहीं रहा । आप दो- चार दिन सोच लो फिर हम लोग फैसला लेते हैं । मैं यह अनुरोध भी करूँगा कि आपकी और मेरी बात शालिनी तक न जाए तो बेहतर होगा । आप लोगों ने फैसला जो लिया है उस पर तो मैं कुछ कह नहीं रहा पर एक पिता होने के नाते मेरा भी अपना कुछ धर्म है , कर्तव्य है यह देखना कि यह फैसला एक भावुकता का तो फैसला नहीं है ।

ऋषभ-सर वक्त तब लिया जाए जब कोई दिमाग़ में दुविधा हो । मेरी माँ बचपन में राम की कहानी सुनाती थी । मैं बहुत छोटा था और राम के वन जाने और भरत के राज्य त्यागने पर जब मैं पूछता था कि यह , जब उनसे कहा गया तब उन्होंने कहा नहीं कि मैं क्यों जाऊँ , कैसे जाऊँ , बहुत समस्या होगी जंगल में , पुनर्विचार करो आदेश पर ।

आहूजा साहब - क्या कहा था तुम्हारी माँ ने इस बचपन के सवाल पर ?

ऋषभ - कुछ फैसले संस्कार से लिये जाते हैं । राम - भरत के संस्कार में आज्ञा पालन था । वह संस्कार प्रभावी था । उनके लिये पिता की आज्ञा सर्वोपरि थी । मैं भी जिस संस्कार में पला उसमें यह कभी आया ही नहीं कि कभी मैं किसी के द्वारा दिये गये सामराज्य को भोगूँ । यह मेरे संस्कार में ही है अपने पुरुषार्थ की ध्वज पताका की छाँव से सूरज के आतंक को रोकना न कि किसी के बनाये महल के परांगण में आसरा तलाशना । मेरी माँ मुझे आईएएस बनाना चाहती थी , मैंने माँ को समझाया कि मुझे आईएएस नहीं बनना है क्योंकि मुझे कम्प्यूटर अच्छा लगता है , उसमें मेरा मन रमता है । मुझे अगर यह स्टील और सीमेंट ही बना कर बेचनी होती तो इससे बेहतर था मैं आईएएस बन जाता , जिसके बनने की संभावना प्रबल थी ही अगर सुनिश्चितता नहीं थी ।

आहूजा साहब - आप सोच लो , शायद आपका विचार बदल सकता है ।

ऋषभ- नहीं, इसमें कोई गुंजाइश नहीं है। यह बात शालिनी को पता है, मैंने कही थी उससे। सर बोझिल साँसों को लेना आसान नहीं होता। जब मेरे पास एक खुला उन्मुक्त वातावरण मौजूद है तब मैं हवाओं की मिन्नतें क्यों करूँ।

आहूजा साहब - अगर मैं इंकार कर दूँ तब ?

ऋषभ- अगर यह एक शर्त है आपकी बेटी को प्राप्त करने की तो मैं ही इंकार कर देता हूँ क्यों मैं आपको इस रिश्ते के टूटने का दोष दूँ।

आहूजा साहब - क्या यही यह लगाव है, यह प्रेम है तुम्हारा शालिनी के लिये ?

ऋषभ- सर प्रेम शर्तों में नहीं हो सकता, कम से कम मैंने तो नहीं सुना। मैं खुद आइने में अपने को देखकर खुद से नजर मिला सकूँ और मेरा ज़मीर मेरे अंदर से चीख कर यह न कहें तू मेरा गुनाहगार है, यह तो एक प्राथमिक शर्त सबके जीवन की होती ही है।

आहूजा साहब- जीवन का एक लक्ष्य होता है जीवन आराम से बीते और व्यक्ति धन कमायें। यह सब आपका इंतज़ार कर रहा। एक लड़की जिसको आप चाहते हो वह मिल रही और साथ में धन- सम्पदा- ऐशो- आराम। इस नज़रिये से देखना, शायद विचार बदल जाए।

ऋषभ- मैं एक वैज्ञानिक का बेटा हूँ, जिसकी आज तक साख अपने काम को लेकर है जबकि उसको यह दुनिया छोड़ें बहुत दिन हो गये। मैं जीवन में यह चाहता हूँ कि मेरे काम से मेरे पिता का नाम हो। मैं जीवन में कुछ करना चाहता हूँ। मेरे कदमों के निशान पर बहुत से लोग और चलें, लोग यह कह सकें यह जो राख दिख रही वह उस चिराग की है जिसने अपने को जलाकर रात को रौशन किया था। एक बात और सर, मेरे आँखों में ख्वाबों का आना बंद हो जाएगा अगर मैंने अपने कम्प्यूटर की पढ़ाई से अपने को अलग कर लिया। आज तक ख्वाब के टूटने से कोई निराश नहीं होता पर ख्वाब के न आने से बहुत दर्द होता है। मैं उस दर्द, उस पीड़ा के साथ ज़िंदगी नहीं जी सकता। सर आपको अपना संघर्ष बहुत बड़ा लग रहा होगा, होगा भी पर मैंने फूल ऐसे खूबसूरत ज़ख्म के साथ ज़िंदगी बितायी है वह भी ज़िंदगी से बँगेर शिकायत किये हुये। यह जो आप एक ग़ज़ल ऐसी ज़िंदगी मुझे दिखा रहे उसी ग़ज़ल के लफ़ज़ कह रहे मुझसे इस ग़ज़ल के बोल में कोई सुकून नहीं।

आहूजा साहब - फ़ैसला तुमने ही कर दिया , मेरी ज़रूरत ही नहीं पड़ी । तुम अपना फ़ैसला शालिनी को बता देना । पर आज मत बताना , एकाध दिन में बता देना , शायद एकाध दिन में सोच बदल जाए ।

ऋषभ- सर , मुझे बसंत के पत्तों से खेलना ही नहीं पतझड़ के पत्तों को भी दिलासा देना भी आता है , आप निश्चिन्त रहें ।

माँ मैं यह कहकर चला आया ।

आंटी - फिर क्या हुआ ?

ऋषभ- माँ एक ही बात बार - बार जिस गाँव जाना न हो उसका पता क्या पूछना । तू ही हर बात पर कहती थी कि इलाहाबाद में सब लोग हरिवंश राय बच्चन जी की एक बात कहते थे कि अगर आपके मन का हुआ तो अच्छा अगर नहीं हुआ तो और भी अच्छा , वह ईश्वर की इच्छा । अब अगर अपने मन का नहीं हो रहा तब बहुत अच्छा, भूल जा यह सबकुछ ।

आंटी - पर यह परिवर्तन कैसे आया जो वह उस शाम आये । एक व्यापारी बेटे से व्यापार न कर पाया तो माँ से करने आया या दोनों से कर रहा ।

ऋषभ- माँ , यह जो संघर्षों से जन्मे लोग होते हैं वह संघर्षों की बहुत कीमत करते हैं । इनको कीमत होती है गहराइयों में उत्तर कर मोतियों को तलाशने वालों की । एक बात तू यह सोच उस धनवान व्यापारी को कौन सा लड़का अपने कौम में मिलने वाला जो उसकी लड़की के लायक हो । वह उस कौम की नायाब लड़की है , उसके जो शौक , अरमान हैं उसके अनुसार लड़का मिलना आसान नहीं । अगर सब कुछ जीवन में पैसा ही परदान कर देती तब तो दुनिया बहुत आसान होती बहुतों के लिये । मुझे नहीं पता कि क्या उनके दिमाग में चला होगा , यह तो वह ही बता सकते हैं ।

तुझे एक शिकायत है कि मैंने कुछ बताया नहीं और एक फ़ैसला तुझको सुना दिया गया । मैं क्या बताता इन सब घटनाओं के बीच । मुझे पूरा विश्वास था कि तुझे समझाना आसान है क्योंकि तूने जीवन भावनाओं के सहारे जिया है और इन्होंने भौतिकवादी परिवेश में । यह लड़की के लिये पति नहीं अपने व्यापार के लिये एक मैनेजर की तलाश कर रहे हैं । मुझे मैनेजरी ही करनी होती तो आईएस देकर भारत सरकार की गर्व से परिपूर्ण मैनेजरी करता किसी बनिये की मैं क्यों करूँ ।

माँ, यह क्रिस्सा यहीं खत्म करते हैं, जिस क्रिस्से ने उस माँ को दो दिन अपने उस बेटे से दूर कर दिया जिससे दो बात करने वह आईआईटी के गेट पर घूमती रहती थी और हर कोई कहता था हल्ला करके होस्टल में, “ऋषभ गेट पर जा तेरी माँ आ रही होगी

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 87

आंटी बातों को एक मोड़ पर ले आकर रोक देती थी। वह जितना बताना चाहती है उतना ही बताती है फिर मुझे यत्न करना पड़ता है। वह बहुत ही गंभीर महिला है। उसका हर शब्द सधा हुआ रहता है। उसके पास एक अलग कैफ़ियत है। वह शब्दों के प्रयोग में भी सतर्क है। अब वह फिर शान्त हो गई। मेरे इलाहाबाद जाने का समय नज़दीक आ रहा था। मैं यह कहानी पूरी जानना चाहता था। मैंने कहा, “आंटी फिर क्या हुआ?”

आंटी - तुम अगली बार आना तब बताऊँगी। विवाह हो गया यह तो तुम जानते ही हो। यह तो बता ही दिया, अब ऐसी कौन सी उत्सुकता बची है। तुम विवाह करना और अगर लड़की चुनने में सहयोग चाहिये होगा तब बताना। मेरे पास एक अनुभव है इस जंजाल को सुलझाने का। तुम थोड़ा साहित्यिक हो और ऐसे लोग भावनाओं में बह जाते हैं और निर्णय भावना कर देती है जो कई बार ठीक नहीं होता। ऐसे मामलों में निर्णय वस्तु स्थिति देखकर करना चाहिये। ऋषभ साहित्यिक नहीं था। वह बहुत ही प्रैविटल था। वह जानता था क्या हो सकता है और क्या नहीं। वह शालिनी को चाहता जरूर था पर जब उसने देखा कि वह उसके जीवन के लक्ष्य में बाधा उत्पन्न कर सकती है उसने बहुत तेज़ फैसला लिया। यह फैसला तुम लेते, मुझे संदेह है। तुम जिंदगी को एक नज़्म की तरह देखते होगे पर वह पूरे एक गणित के सूत्र की तरह। जितना जिद मैंने ऋषभ से किया आईएस देने की और सारा माया - मोह का इस्तेमाल किया उसको समझाने में उतने में कोई और होता तो मान जाता पर वह टस से मस न हुआ। यही शालिनी के मुद्दे पर हुआ। उसके पिता ने सारी युक्ति लगाई पर वह किसी भी तरह से न माना।

मैं सोचने लगा, आंटी तो भाषण पर आ गई। इसको ऋषभ के बारे में बात करना बहुत भाता है। यह घंटों बोलती रहेगी पर बतायेगी वही जो यह बताना चाहेगी। अब यह एक घंटे निकाल देगी भाषण में ही और तब तक हल्ला शुरू

हो जाएगा कि गाड़ी का समय हो रहा चलो रास्ते का खाना बना दूँ और यह किस्सा अधूरा ही रह जाएगा । मैंने सीधे ही पूछने का निर्णय किया ।

मैं -आंटी यह बताओ यह कैसे दोनों नज़दीक आए, यह तो पता चला ही होगा आपको । और यह आहूजा साहब आए कैसे एकाएक जब ऋषभ ने साफ-साफ कह दिया कि मैं आपका कोई काम नहीं देखूँगा ।

आंटी -ऋषभ कह कर अपनी बात निकला, वह शालिनी से बगैर मिले चला आया । शालिनी बहुत ही तेज है । ऋषभ बुद्ध है उसके सामने । वह समझ गई सारा मामला बगैर कहे । वह बचपन से ही सुनती आ रही थी घर में कि उसका पति बिज़नेस संभालेगा और उसके पिता सारे लड़कों को इसी दृष्टि से देख भी रहे थे । यह ईश्वर की इनायत है कि एक व्यापारिक माहौल और संपन्नता के घर में सरस्यती का वरदान भी प्राप्त हो गया और वह लड़की जहीन निकल गयी और ऋषभ की ही तरह वह भी कक्षा 12 की परीक्षा देते ही आईआईटी पहुँच गई । उसकी रैंक ऋषभ से कम थी इसलिये उसको कम्प्यूटर न मिला वह इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स की स्ट्रीम में गई । ऋषभ पहले ही साल से ही आईआईटी में नायकत्व का दर्जा प्राप्त करने लगा ।

अनुराग, यह आईआईटी यह इलाहाबाद यूनिवर्सिटी इन सबका नाम जो हुआ है इसकी यशगाथा का फायदा लेते सब हैं पर इसकी यशकीर्ति को बनाने और बढ़ाने वाले कुछ गिने चुने लोग होते हैं । ऋषभ उन गिने चुने लोगों का भी नायक था । वह कम्प्यूटर में था पर एक प्रोफेसर के साथ उसने प्राइम नंबर की अनसुलझी गुत्थी को सुलझा दिया । उस प्रोफेसर का बहुत नाम हुआ और उनको पद्मशरी भी मिला और शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार भी । जब उन प्रोफेसर साहब का नागरिक सम्मान आईआईटी में किया गया तब मैं भी थी वहाँ बुलाई गई थी । उन प्रोफेसर साहब ने सदाशयता दिखाई और स्टेज पर यह पुरस्कार ऋषभ को समर्पित किया यह कहते हुये कि इस प्राइम नंबर को सुलझाने का प्रस्ताव ऋषभ मिश्रा ही लेकर मेरे पास आए थे और यह पहले अकेले ही काम कर रहे थे और जब समस्या उत्पन्न हुई तब मेरा दिशा निर्देश इन्होंने माँगा । इसका काम देखकर मुझे लगा यह अनसुलझी गुत्थी सुलझ सकती है और फिर मैंने यह कार्य एक संस्थागत रूप से आरंभ किया । इसके बाद का सब इतिहास है जो आप सब जानते हैं जिस पर विश्व के कई विश्वविद्यालय और कई पत्रिकाएँ लिख रहीं । यह आईआईटी दिल्ली के लिये सौभाग्य की बात है कि ऋषभ ने इतनी ऊँची रैंक होने के बाद भी आईआईटी दिल्ली को चुना नहीं तो क्या पता यह गर्व आज आईआईटी कानपुर के हक में जाता ।

यही वह लम्हा था जब ऋषभ पूरे आईआईटी ही नहीं बल्कि सारी इंजीनियरिंग कालेज में नाम प्राप्त कर गया और शालिनी के सपनों का राजकुमार बन गया ।

अनुराग तुम मुझसे यह कहानी मत पूछो , तुम शालिनी- ऋषभ से पूछना , लिखना” एक प्रेम दास्तान जो व्यापार होते- होते रह गई “ ।

मैं - आंटी , वह कहाँ मिलेंगे और मैं कहाँ पूछूगा ? आप सुना दो , आज यह कहानी ।

आंटी - वह आएगा । कह रहा कई महीनों से आऊँगा जल्दी । आहूजा साहब की भी तबियत कुछ नासाज़ चल रही , वह लोग आएँगे जल्दी । तुम आना जरूर जब वह लोग आएँगे ।

मैं - सौ प्रतिशत आऊँगा आंटी । आपने इतना ऋषभ के बारे में बताया है , उसको देखने का बहुत मन है । वह एक नायाब अत्मा है जिसे ईश्वर ने गढ़कर भेजा है ।

मैंने कहा कि आंटी क्या आपको पता है कैसे इन लोगों की नज़दीकी बढ़ी ।

आंटी - हाँ यह सब बाद में पता चला ।

ऋषभ आईआईटी में एक अलग पहचान बना चुका था । शालिनी उससे पहली बार उसी फ्रंक्शन के बाद मिली , यद्यपि दोनों एक- दूसरे को जानते थे ही पर ऋषभ शर्मिला था कभी “कोएड” स्कूलों में पढ़ा तो था नहीं । शालिनी बहुत बेहतर माहौल में पली थी , बचपन में ही देहरादून के वेलहम्स स्कूल में चली गयी थी और एक स्मार्टनेस थी उसमें और परिवार में जहाँ व्यापार होता हो वहाँ नफा- नुकसान की समझ जल्दी विकसित होती है । यह ऋषभ एक बहुत नफे का सौदा था । वह विदेश जाना चाहती थी , जैसे बहुत से आईआईटी वाले जाना चाहते हैं ।

आईआईटी में विदेश स्कालरशिप के साथ जाना एक सम्मान की भी बात है और एक ज़रूरत भी क्योंकि अधिकांश छात्र मध्य एवं निम्न मध्य वर्ग के होते हैं वह बगैर स्कालरशिप के नहीं जा सकते । शालिनी के लिये ज़रूरत से ज्यादा सम्मान प्राप्ति की आकांक्षा थी । ऋषभ ने जो कारनामा कर दिया था वह तो अनहोनी ऐसा था और हर छात्र को एक ठीक- ठाक रिकमंडेशन जिसको लोग “ रिको ” बोलते हैं वह लिखाना पड़ता है अपने यहाँ के लब्ध- प्रतिष्ठित प्रोफेसर से और कुछ अपने काम और अपने बारे में बेहतर लिखना होता है ।

यहीं पर शालिनी ऋषभ के नज़दीक आने लगी । उसने ऋषभ से सहयोग लेना आरम्भ किया और उसकी ऋषभ पर निर्भरता बढ़ने लगी । शालिनी में कई ऐसी बातें थीं जो आम आईआईटी की लड़कियों से उसको बहुत अलग कर देती हैं । सामान्य रूप से आईआईटी की लड़कियाँ रूपवान नहीं होतीं । वह रूपवान भी थी, अच्छा लिखती भी थी और गाती भी थी । वह परिसर के कल्चरल परोग्राम की जान थी । आहूजा साहब के पास धन ही धन था । एक कार वहाँ परिसर में खड़ी ही रहती थी और शालिनी खुले दिल की थी उसका इस्तेमाल और लोग भी करते थे । मैंने जितना शालिनी को समझा उससे यह कह सकती हूँ, कोई भी लड़का उसको पसंद कर लेगा । ऋषभ भी एक लड़का ही था, उम्र उसको भावनाएँ दे रही थीं और शालिनी का रूप या मैं कहूँ रूप से अधिक उसकी नफ़ासत ऋषभ के ख्वाबों में उसको ले गई ।

आंटी ने घड़ी देखते हुये बोली, “कब निकलोगे गाड़ी पकड़ने ?”

मैंने कहा, अभी बहुत समय है आंटी । चिंतन सर आएँगे मुझको स्टेशन छोड़ने, उनको बहुत मज़ा आता है मुझसे गप मारने में । वह आजकल उर्दू सीख रहे और उनको मेरी उर्दू बहुत भाती है । वह अक्सर कहते हैं, “कुछ कटबैठी सुनाओ” । इसका मतलब यह कि कुछ उर्दू में पिरोकर लफ़ज़ सुनाओ । वह फिर वह याद करने लगते हैं जो मैं उर्दू का इस्तेमाल करता हूँ । आंटी हैं वह बहुत प्रेमी जीव । उनको लोगों से मिलना, बात करना बहुत अच्छा लगता है । वह कुंडली देखने में माहिर हैं ।

आंटी - कहाँ से सीखा उन्होंने ?

मैं - आंटी, वह जजमानी के परिवार से आते हैं । उनके यहाँ जजमानी होती है । इस व्यवसाय में कुंडली जानना ज़रूरी है । इसके अलावा वह संस्कृत के विद्वान हैं और यह संस्कृत ज्ञान भी मदद किया ।

आंटी - कैसी देखते हैं ?

मैं - आंटी, मैं तो अपनी कभी दिखाता नहीं । मेरे जन्म का समय भी ठीक से पता है नहीं । मेरा जन्म मेरे ननिहाल में हुआ था और कोई घड़ी देखा ही नहीं उस वक्त पर इसलिये मेरी कुंडली की कोई शुद्धता है नहीं साथ ही मेरा यक़ीन भी कम है पर वह जो बहुत लंबा लड़का संजीव टंडन आईआईटी वाला मिला था वह कहता है कि यह बहुत जानकार हैं । वह अपने साथ- साथ और बहुत लोगों की कुंडली सर को दिखाया है ।

आंटी - वह ऋषभ, शालिनी की देख देंगे ।

में - ज़रूर देख देंगे , अगर आये तो । वैसे तो आना चाहिये पर पुलिस की नौकरी का कोई भरोसा नहीं , पता नहीं कौन सा काम आ जाए ।

आंटी ने कहा मैं चाय बनाकर आती हूँ । मुझे कल से अकेले चाय पीनी होगी , वह अब अच्छा न लगेगा मुझको तुमने आदत खराब कर दी है मेरी । आंटी चाय बनाने चली गई ।

आंटी लौटकर आई और उसने क्रिस्सा सुनाया शुरू कर दिया ।

ऋषभ ने कई नामी यूनिवर्सिटी में आवेदन किया , मिशीगन , हारवर्ड , येल , कार्नेल ... ।

वही नहीं सभी कर रहे थे । उसका प्रवेश होना लगभग तय था क्योंकि उसका काम भी अच्छा था और “रिको” भी अच्छा मिल ही जाता । शालिनी का भी उसने सब बनाया । ऋषभ को हर जगह से बुलावा आया पर शालिनी को कार्नेल मिल रहा था वह भी एशियन वीमेन कैटेगरी में । इन विदेश के विश्वविद्यालयों में यह कुछ कैटेगरी होती है लोगों को आगे बढ़ाने की , उसमें शालिनी को मिल गया । ऋषभ - शालिनी नज़दीक आ चुके थे और मेरे ख़्याल से यहीं पर उन लोगों ने विवाह का फ़ैसला किया होगा । मुझे लगता है शालिनी चाह रही होगी विवाह का मुद्दा हल हो जाए क्योंकि यह वह उम्र थी जब घर में विवाह की बात होने लगती है और लड़कियों पर दबाव पड़ने लगता है । यह लोग इंजीनियरिंग के अंतिम दौर पर थे । मेरा अनुमान है कि आहूजा साहब चाह रहे थे कि मामला निपटा दिया जाए । उनकी रुचि व्यापार में थी । एक बहुत बड़ा सैकड़ों- हज़ारों करोड़ का व्यापार था ही , बस एक मैनेजर टाइप लड़का मिल जाए । शालिनी के लिये लड़कों की कहाँ कमी हो सकती है , हाँ उसके योग्य लड़का मिले इसमें समस्या हो सकती है ।

शालिनी ने ऋषभ से पूछ कर ही घर में बात की होगी और फिर वह हादसा हो गया । यहाँ तक मैं अनजान थी । मेरी जानकारी तब हुई जब आहूजा साहब आए । मुझे यक़ीन ही नहीं हुआ बात यहाँ तक पहुँच गई और मुझे पता ही नहीं । मुझे लगा , यह क्या हो गया ? मैं जिस बच्चे के पल-पल की खबर रखती थी जो मेरी सोती- जागती- खुली-बंद पलकों में रहता था वह मेरे आँखों की शबनम से ही बात को छिपा ले गया । मैं यह जानती थी कि शालिनी , ऋषभ की मित्र है । मैं आईआईटी बहुत जाती थी इससे मिलने । मुझे धीरे- धीरे सब वहाँ जान गये थे । मैं गेट पर पहुँचती थी कोई न कोई कह देता था , “वह आ रहा ” । चौकीदार कह देता था वह कह कर गये हैं माँ को केंटीन भेज देना । ”

मैं शालिनी से कई बार मिली थी । मैं शालिनी ही नहीं और लड़कियों से भी मिली थी जो ऋषभ के साथ थीं । मैं जेएनयू भी गयी हूँ साथ उसके ।

मैं - आपको नहीं पता था बिल्कुल, यह सब कुछ ?

आंटी - एक अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि यह लोग दोस्त हैं, नज़दीक हैं पर यह बहुत बड़ा फ़ैसला था । इस फ़ैसले का मुझे कोई इत्म ही न था । वह तो आहूजा साहब ने एटम बम ऐसा चला मारा था ।

मैं - आंटी एक गुत्थी नहीं सुलझ रही कि वह ऋषभ के इंकार कर देने के बाद की मैं आपका व्यवसाय नहीं सम्भालूँगा और आहूजा साहब ने भी फ़ैसला कर लिया यह संयोग अब नहीं हो सकता तब कैसे वह एकाएक आ गये प्रस्ताव लेकर ।

आंटी - अनुराग, शालिनी बहुत ही तेज है । जब ऋषभ न मिला वापस आते वक्त तब वह सब समझ गई । उसने ही हल्ला - गुल्ला करके अपने पिता से सारी वस्तुस्थिति को समझा लिया । उसने बहुत तेज़ी से स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया । हर बेटी पिता की कमज़ोरी होती है और वह तो अकेली बेटी थी और बहुत काबिल भी । वह जानती थी कि विवाह में लड़की का पिता प्रस्ताव लेकर जाता है । उसने सीधा वह बरह्मास्तर चला दिया । पिता को समझाने में सफल रही कि आप की जो चाहत है कि वह आपका व्यवसाय वह देखें वह आप मुझ पर छोड़ दो, आप बिगड़ी बात बनाओ । उसने ऋषभ की उन उपलब्धियों के बारे में बताया जिससे आहूजा साहब अनजान थे । वह गणित की नायाब खोज, एक जहीनियत । उसने यह भी कहा कि पद्मशरी संयुक्त रूप से दोनों को प्रोफ़ेसर साहब और ऋषभ को मिलना चाहिये था पर ऋषभ भोला था वह काम करता रहा नाम इसको नहीं मिला नाम जिसका वह हक़दार था । यह सुनकर आहूजा साहब के हाथ से तोते ही उड़ गये । उनको लग गया कि वह चाल ग़लत चल गये । एक व्यापारी डर लग गया, चलकर घर आया माल हाथ से निकल गया । यह ऋषभ और आहूजा साहब के बीच बातचीत के एक दिन दिन बाद ही वह प्रस्ताव लेकर आ गये । ऋषभ को यह पता न था कि वह आएँगे । यह भी सच है ऋषभ ने फ़ैसला शालिनी से अलग होने का कर लिया था, यह सोचकर कि यह विवाह सम्बन्ध अनमेल है और वह इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी का बोझ न तो उठाने लायक है न ही उठाने का इच्छुक ।

अनुराग दास्तान यहीं बंद करते हैं, तुम बाकी की दास्तान ऋषभ- शालिनी से सुनना । तुम कुछ नज़म भी लिखना उस परेम पर अगर उस लायक हो ।

मुझे तो सिर्फ़ यह पता है विवाह में क्या- क्या नाटक हुआ बाकी उन दोनों के बीच की कहानी एक माँ को कैसे पता लगेगी ।

वैसे मेरा और शालिनी का भी संवाद बहुत अलग था । एक माँ उस समय थी जो आहत थी इस बात को लेकर कि उसके बेटे के समुख शर्तें रखी गईं ।

मैंने अपने ज़ख्मों को रफू करके दिल को खुश रखने की कोशिश की है, मेरे रफू से कोई छेड़खानी न करे । आहूजा साहब ने उसके साथ व्यवहार ऐसा किया था जैसे वह उसके दर पर भीख माँगने गया हो । वह उस लड़की का हाँथ माँगने गया था जिसे वह अपनी पत्नी बनाना चाहता था ।

अनुराग , मौका सबको मिलता है मुझको भी मिला । मुझे ऋषभ से जो नाराज़गी थी वह तो अलग थी पर आहूजा साहब से बहुत ही ज्यादा था । मैं करछना की हूँ, यह उनको पता न था । यह इलाहाबाद है जो कुछ और सिखाये न सिखाये, सम्मान से जीना माँ का दूध ही सिखा देता है । वह कैसा भी हो वह एक आखिरी चिराग है मेरे लिये, उसके नाम पर मेरा पूरा सफर है । उस पर हाथ लगाने की जुर्त.....

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 88

आंटी अपने रौ में थी वह आवेशित भी थी । उसको दो बातें बर्दाशत नहीं हो रही थीं । एक , उसके बेटे के विवाह का फैसला उसको अँधेरे में रख कर हुआ था और दूसरा , आहूजा साहब उसका बेटा उससे छीनने की कोशिश कर रहे थे । उसको ऐतराज दोनों ही बातों से था पर दूसरी बात से ज्यादा था । अगर बेटा घर- जमाई बन गया तो गया हाथ से । आंटी ऋषभ के बगैर रह ही नहीं सकती थी । पति की मृत्यु के बाद उसका जीवन इसी बच्चे के इर्द-गिर्द धूमता रहा । वह आईआईटी चली जाती थी उसकी एक झलक के लिये और उसी झलक से उसे मरहम करने की कोशिश आहूजा साहब कर चुके थे , यह अलग बात है वह सफल न हुये ।

आंटी ने ऋषभ से कहा मुझे शालिनी से मिलना है ।

ऋषभ - क्या करना है मिल कर ?

आंटी - मुझे तुमको हर चीज़ बतानी है क्या कि मुझे क्या करना है और क्या नहीं । तुम मेरे पति का दर्जा अद्वितीय करने की कोशिश न करो । एक बेटे

की तरह हो उसी तरह रहो । मेरे पति ने भी मुझसे कभी न कहा यह कि , “तुम्हें क्या करना है ”, जबकि वह मेरे गुरु भी थे और पथ प्रदर्शक भी । तुम अपनी हद में रहो । अगर नहीं मिला सकते तो इंकार कर दो । मैं किसी की मुहताज नहीं हूँ, मैं खुद भी मिल सकती हूँ ।

ऋषभ चुप हो गया । वह अगले दिन शालिनी को लेकर आया । उसने मुझसे कहा , सँभाल कर बात करना । यह भी थोड़ा स्वभाव की खर है ।

आंटी ने कहा , तू अपने कमरे में जा । तू मुझको बात करने दे । इन बनिया - बक्कालों ने करछना की लड़कियाँ देखी नहीं हैं । इनका पूरा दिमाग हरा हो जाएगा ।

ऋषभ सहम सा गया । वह वह समझ गया कि माँ के सिर पर माँ भवानी आ चुकी हैं अब इससे बात करने का मतलब यह शालिनी के साथ मुझको भी लपेट देगी । वह अपने कमरे चला गया ।

शालिनी ने आंटी के पैर छुये । आंटी ने मोर्चा सँभाल लिया ।

आंटी - शालिनी मैं तुमको जानती पहले से हूँ पर इस रूप में कि तुम ऋषभ की परेमिका हो या ऋषभ तुम्हारा परेमी है और आप लोग जीवन एक साथ गुजारना चाहते हो इस रूप में हमारा पहला साक्षात्कार है । हम लोग एक खुले माहौल में पारदर्शिता के साथ बात करें तो फ़ैसला लेना आसान होगा अगर इस फ़ैसले में आप मुझे शामिल करना चाहते हो । अगर नहीं चाहते मुझको शामिल करना तब हम लोग चाय पी लेते हैं और कुशल - क्षेम पूछ कर बात ख़त्म कर देते हैं । आप- ऋषभ- आहूजा साहब फ़ैसला ले लो , जो शायद हो ही गया है और मैं आपके कन्यादान के महान उत्सव पर आ जाऊँगी आपको ऋषभ की पत्नी के रूप में लाने के लिये । मुझे ऐतराज इस विवाह से होगा या नहीं , यह एक अलग बात है पर मेरे संस्कार इस तरह के हैं कि मेरी आपत्ति की खबर मेरे धड़कनों को ही होगी और वह धड़कनें उसको ज़ब्त कर जाएगी ।

शालिनी - मुझे आपका फ़ैसला चाहिये । मेरे हक में होगा तब मैं बहुत शुक्रगुज़ार रहूँगी और नहीं होगा तब पुनर्विचार की दरखास्त करूँगी ।

आंटी - मैं अगर यह कहूँ कि आप का और ऋषभ का विवाह नहीं हो सकता तब ?

शालिनी - आंटी यह अन्याय होगा हम दोनों के साथ , मेरे साथ ज्यादा और मैं जानना चाहूँगी यह सलाबत मेरे साथ क्यों? क्या है मेरी अज़ली खता जो मेरे ख्वाबों की ताबीर मुझे नहीं मिल रही वह भी तब जब मैंने ख्वाब वाजिब ही देखे हैं ।

आंटी - तुम्हारे पिता ने जो शर्त रखी है वह तुमको पता है ?

शालिनी - शर्त नहीं थी वह एक अनुरोध था । वह ऋषभ ने अस्वीकार कर दिया । वह बात खून्म हो चुकी है । ऋषभ के अस्वीकार करने के बाद वह आपसे मिलने आये थे । अगर वह शर्त होती हमारे संयोग की तब ऋषभ ने जब उस शर्त को मानने से स्पष्ट शब्दों में इंकार कर दिया था और वह न आये होते । वास्तविकता यह है , मेरे पिता ने जिसे आप शर्त कह रहीं और जिसे ऋषभ ने एक स्वर में अस्वीकार कर दिया उसके बाद वह आप के पास आये थे अपनी बेटी के लिये ।

मैं यह बात फिर कहूँगी और ज़ोर देकर कहूँगी , वह एक अनुरोध था न कि कोई शर्त थी । आंटी आप मेरे पिता के नज़रिये से पूरा परिप्रेक्ष्य देखिये । वह क्या थे आपको नहीं पता है । वह सीमेंट की ढुलाई करते थे अपने पिता के साथ, जब पाकिस्तान से भागकर आए थे अपने पिता और माँ के साथ । उनके पिता एक सीमेंट की ढुलाई करने वाले आदमी थे और उस सीमेंट की ढुलाई करने वाले के बेटे ने इतना बड़ा सामराज्य बनाया और वह उसे सुरक्षित रखना चाहता है , इसमें क्या गलत है । मेरे पिता ने जिस अभाव को देखा है वह अकल्पनीय है । मुझे उनकी गलती बतायी जाए । उनके कहने का ढंग ठीक नहीं होगा , यह बहुत संभव भी है क्योंकि वह आपकी तरह , अंकल की तरह , ऋषभ या मेरी तरह पढ़े लिखे नहीं हैं । उनके पिता की भी कोई उम्र ख़ास न थी जब वह लोग भागकर आये थे पाकिस्तान से और स्कूल-कालेज जाना सबके नसीब में नहीं होता है ।

यह जो वह पढ़ नहीं पाये, परिस्थितिवश , यह पीड़ा उनको बहुत थी , इसी कारण सबसे अच्छी तालीम मुझको दी । आंटी किसी आदमी का मूल्यांकन उसके परिवेश और उसके इतिहास से करना चाहिये तभी उसके साथ न्याय हो सकता है । मैं अपने साथ- साथ उनके साथ भी न्याय किये जाने की गुज़ारिश करूँगी ।

मेरे और ऋषभ दोनों में इतनी समझ नहीं कि हम जीवन का इतना बड़ा फ़ैसला ले सके । जब हम लोगों ने फ़ैसला आपस में लिया तब यह समस्या थी कि इसको कैसे अंतिम परिणति तक पहुँचाया जाए । ऋषभ आपसे बात

करने से संकोच कर रहा था । आप उसे मुझसे बेहतर जानती हैं, वह बहुत संकोची है । वह चाह रहा था यह बात मेरे पिता कर लें तो बेहतर होगा । मैंने अपने पापा से कहा, मैं उनके बहुत नज़दीक हूँ । उन्होंने कहा ठीक है, मुझे ऋषभ से एक बार मिल लेने दो । उन्होंने ऋषभ से उस वक्त कहा, मेरा व्यापार संभालो । आंटी मैं फिर कहूँगी उनके कहने के ढंग में गलती हो सकती है पर इसमें क्या गलत है कि एक व्यक्ति अपने होने वाले दामाद से कहे तुम यह हज़ारों करोड़ का साम्राज्य संभालो और मुझे आराम करने दो ।

आंटी - शालिनी, तुम ऋषभ को जानती हो । वह बहुत सीधा है । वह आहूजा साहब की तरह का दुनियावी मामलों का जानकार नहीं है । वह वाकई कुछ चालबाज़ी कर नहीं सकता, जो इतने बड़े व्यापार को चलाने के लिये एक आवश्यक प्राथमिकता है । वह आईएएस बनने को तैयार न हुआ क्योंकि उसका मन कम्प्यूटर में ज्यादा रमता है साथ ही उन नौकरियों का झँझट इसके बस का नहीं है ।

आंटी - वह कोई सीधा नहीं है । वह सबसे बड़ा चालू है । वह सबको समस्या के गिरफ्त में डालकर अंदर कमरे में लैपटाप पर कोई कम्प्यूटर पर प्रोग्राम बना रहा होगा । मैं, आप, मेरे पापा तीनों परेशान हैं । इस समस्या का जो भी निदान हो उसका फल उनको भी मिलेगा, पर समस्या की पेचीदगियों से वह दूर हैं । अगर यह संयोग नहीं बनता है तब दुःख मुझे ही नहीं उनको भी होगा । पर जब भी कहो इसको सुलझाने को वह हर बात पर कह देंगे, थोड़ा धैर्य रखो । उनके हर काम से लगता है, ईश्वर ने उनको जन्म सिर्फ़ कम्प्यूटर पर प्रोग्राम बनाने और गणित के फ़ार्मूलों को बनाने- तोड़ने के लिये दिया है । आंटी, हर माँ को लगता है उसका बेटा बहुत सीधा है, ज़माने में कैसे आगे जाएगा । यह ज़माना बहुत ज़ालिम है सब उसको परेशान कर रहे, जबकी हकीकत हमेशा वह नहीं होती जो माँ का अपना लगाव देखता है ।

इसी बीच ऋषभ आ गया । उसको डर लग रहा था कि माँ नाराज़गी में कुछ कह न दे । उसने आकर कहा कि बात हो गई आपकी । मैंने कहा, हाँ हो गई । चाय पिलाया उसको । वह कुछ देर और रुकी । उसने पूरा घर देखा । लान में कुछ देर घूमी मेरे साथ फिर वह अपनी बड़ी सी विदेशी कार में चली गई । मैंने ऋषभ से कहा कि तू बता कब विवाह करना चाहता है । तू शादी करके विदेश जा । उसके चेहरे पर खुशी थी । दो दिन बाद आहूजा साहब अपनी पत्नी के साथ आए । एक सामान्य से ढंग से मैं विवाह करना चाहती थी, पर वह थोड़ा शानोशौकत से करना चाहता थे । होटल ताजमानसिंह से विवाह किया, वह लोग विदेश चले गये, फिर कहाँ वापस आना आसान है ।

पर अनुराग , ऋषभ को शालिनी ऐसी लड़की की ज़रूरत थी । उसका कहना है कि ऋषभ को भी पद्मशरी मिलनी चाहिये थी वह भी हँकदार था उस सम्मान का पर वह कह न सका । ऋषभ ने कम्प्यूटर के कई प्रोग्राम बनाए , उन सबका शालिनी ने पेटेंट करा लिया । वह व्यापारी के यहाँ की है , उसे यह सब बहुत आता है । ऋषभ ने उन सब प्रोग्राम की रॉयल्टी से बहुत पैसा कमाया । वह शुरू में काम करता था किसी कंपनी में पर अब खुद की प्रोग्रामिंग और कन्सल्टेंसी करता है । उसने बहुत पैसा कमाया । मेरा बैंक उसके पैसों के बैंक ट्रान्सफर से भरा रहता है , यह अलग बात है उनका ज़िकर सिफ़र बैंक खातों की किताबों में ही है और तो कोई काम उनका है नहीं । मेरी ज़रूरतें इतनी ज्यादा कम हैं कि मेरी अपनी तनख्वाह ही बहुत है उसके लिये और जिस चीज़ की ज़रूरत है वह अब कोई दे नहीं सकता ।

आंटी भावुक हो चुकी थी । वह अब धीर-धीरे शब्द तलाश करके बोल रही थी । वह बोली , अनुराग यह टीस तो है ही , वह बाहर चला गया । वह मेरे पास तो नहीं है । मैं तुमको देखती हूँ , मुझे लगता है आज ऋषभ भी यहीं रहता एक रुतबे के साथ । मेरा बेटा मेरी आँखों के सामने होता । वह कितना भी पैसा कमा ले पर क्या करना उस पैसे का । आंटी काव्यात्मक हो गई ऋषभ को लेकर बयान करने लगीं ऋषभ का जन्म और माँ की आकांक्षा

जब वह नव जन्मा था
तब उसके पिता ने बड़े गर्व से तस्लीम किया था
उसकी शख्सियत को
कहा था मुझसे
एक दिन चक्रवर्ती बनेगा

रात जब आँखों में काजल लगाए मेरे सामने आती थी
अँधेरे वीरान रातों के साये में
सियाह नशेबों में सैलाब की तरह बहते हुये
कुछ ख्वाहिशों लिये मेरी धड़कनों की
एक मज़बूत मलबूस में पिरोया हुआ
हर बार दिखता था
मुझे वह

एक घोड़े पर सवार

पहाड़ों पर चढ़ता हुआ यह कहते हुये
माँ मुझे पहाड़ों की ऊँचाइयों से लगाव है

जब वह छोटा था

हर बार कहता था

मुझ पर भरोसा कर

मेरी कमियाँ भरोसे पर भारी नहीं पड़ेगी

सिखाया है तुमने मुझे लड़ - लड़ कर जीतना

कोशिशें मेरी नाकाम हो सकती हैं कुछ वक्त के लिये

पर वह बेकार नहीं जाएगी

मैं जब- जब सोचती हूँ उसके बारे में

मुझे वक्त पीछे बहुत पीछे

बहुत दूर मुझे ले जाता है

पास उसके

जब पहली बार उसे देखा था

और सोचा था

एक दिन यह दुनिया को सँवारेगा और यकीन होने लगा था

उसका ज़ज्बा कमज़ोरियों पर भारी पड़ेगा

मैं हर रोज़ पूरी शिव्वत से उसकी शरिष्यत को

ताज़ीम करती हूँ

तक़रीम करती हूँ ।

आंटी एक बच्चे की तरह फफक - फफक कर रोने लगी ।

आंटी को मैं हतपरभ सा देख रहा था । यह कोई कविता नहीं उसके अंदर का मुज़मिद लावा था । वह कितनी भी मुनज्जम लगे बाहर से पर अंदर से वह मुंतशिर है । वह अपने अंदर ही अंदर सरगोशियों में बात करती रहती है । उसी समय चिंतन सर का लाव- लश्कर आ गया । उनके साथ एक गाड़ी और थी । उनकी जीप का वायरलेस “ पैंथर टू रिपोर्टिंग- पैंथर टू रिपोर्टिंग ” की आवाज़ कर रहा था । लान से आंटी आँसुओं को पोंछते हुये जीप की ओर देख रही थी । एक लंबे आकर्षक व्यक्तित्व के चिंतन सर गेट का दरवाजा खोलकर अंदर प्रवेश किये उनके पीछे तीन सिपाही चलते हुये आये और वह कुछ दूरी पर रुक गये । चिंतन सर लान में आये और मुझसे कहा , “ बाबा क्या हाल है ? ”

आंटी अभिभूत सी थी ऐसा लाव-लश्कर एवम रुतबा देखकर । पूसा इंस्टीट्यूट एक प्रोफेशनल लोगों का इलाक़ा था , यहाँ के लिये यह नई बात थी । आंटी के आस-पास के मकानों के लान से भी लोग देखने लगे ।

मैंने सर से आंटी का परिचय कराया और अपने माँ और आंटी के सम्बन्धों के बारे में एक- दो लाइन में बताया चिंतन सर को । सर ने आंटी के पैर छुये । आंटी बोली , “ मैं चाय बनाती हूँ ? ” आंटी चली गयी ।

चिंतन सर का मेरा गुफ्तगू शुरू हो गया ।

चिंतन सर - बाबा बहुत सही जुगड़ बनाया रुकने का । कभी हवा भी नहीं दिया कि ऐसा बढ़िया इंतज़ाम है । हम तो भटकते थे पहले के प्रयासों में दिल्ली रुकने में । यह इंतज़ाम देखकर समझ आ रहा कि बाबा का मन क्यों नहीं हो रहा इलाहाबाद वापस जाने का ।

मैं - सर मुझे भी नहीं पता था यह इंतज़ाम । यह माँ ने बताया जब मैं मेंस पास किया और इंटरव्यू के लिये रुकने की जगह खोजी जाने लगी । अब जिस तरह का हम लोगों का परिवेश है कोई इतने बड़े नात- रिश्तेदार तो अपने होंगे नहीं कि वह दिल्ली- बंबई में इस तरह रह रहे हो कि वहाँ जाकर रुका जा सके । वह रह भी रहे होंगे तो बस कामचलाऊ जगह और वहाँ किसी और की जगह बनने की व्यवस्था कहाँ हो सकती है ।

चिंतन सर - बाबा , वह सब अब इतिहास हो जाएगा । बस कुछ दिन की बात है अपना चक्रवर्ती दौर आरंभ होगा । हम हवाओं को निर्देश देंगे , बहो ठीक से ध्वज पताकाएँ हमारी दूर से दिखनी चाहिये ।

मैं - सर इंटरव्यू थोड़ा गोंडा गया है , यह सोचकर चिंता होती है ।

चिंतन सर - प्रारब्ध पर विश्वास रखो । वह अगर पक्ष में है तब यह यूपीएससी के मेंबरान का हाथ पकड़ कर लिखा देगा ...

“अनुराग शर्मा, आईएएस “

समय के कार्य में हस्तक्षेप मत करो , अपना कर्तव्य करो । यह पापी पेट के सवाल का संघर्ष नहीं है यह शाही शान का सवाल है । सवाल खड़ा करने दो ज़माने को , हमारा जन्म जवाब बनाने के लिये हुआ है । ज़माना थक जाएगा सवाल बनाते- बनाते पर हम कहाँ हैं थकने वाले । हमारे ख्वाब कोई काँच के नहीं हैं कि वह टूटकर बिखर जाएँगे वह फौलादी लोहों के हैं कितना भी कोशिश करो खत्म करने की उनको , वह सुरसा की तरह अपने में ही से अपना क़द और हैसियत बढ़ाने लगते हैं ।

इसी बीच आंटी आ गई । मैंने आंटी का पूरा परिचय दिया । ऋषभ और शालिनी के बारे में बताया । यह वह दौर था जब आईआईटी वाले सिविल सेवा पर क़ब्ज़ा करने लगे थे । सिविल सेवा के हर गढ़ में आईआईटी नाम की प्रतिष्ठित बढ़ने लगी थी । वह दौर खत्म ऐसा हो गया था कि लोग इंटर के बाद इंजीनियरिंग न करके बीएससी में प्रवेश लें यह कहते हुये , “मुझे आईएएस देना है ” । 60 , 70 के दशक में ऐसा होता था कि लोग इंजीनियरिंग न करके सीधा बीएससी करते थे क्योंकि आईएएस बनना लक्ष्य हुआ करता था , खासकर इलाहाबाद में । पर अब इस तरह की प्रवृत्ति खत्म हो गई थी । साल दर साल आईआईटी के लोग टाप रैंक पा रहे थे और लोग लाख कोशिश करके भी उनको प्राप्त करना मुश्किल हो रहा था , यह तथ्य एक अलग प्रतिष्ठित आईआईटी के लोगों को दे रही थी । चिंतन सर आईआईटी कानपुर के राजेश प्रकाश के साथ रहे थे यूपी भवन में और उनकी प्रतिभा वह देख ही चुके थे । इस परिदृश्य में वह आईआईटी के छात्रों से अभिभूत थे और फिर ऋषभ तो हीरों में कोहिनूर था ।

चिंतन सर ने आंटी के एक बार और पैर छुये यह कहते हुये , माताजी आप एक अनुराग के माँ की सहेली होने के कारण सम्मानीय हैं तो एक इतने बड़े जीनियस को जन्म देकर पोषित करने के लिये वंदनीय हैं । आप कर्मों की शासिका हैं । कोई बच्चा महान पैदा नहीं होता चाहे वह राम हों भीष्म हों या शिवाजी । सबको आवश्यकता है कौशल्या, गंगा , जीजाबाई की ।

आंटी बहुत प्रसन्न हुई । ऐसी कौन सी माँ है जो अपने बेटे के यशगान पर प्रसन्न न होगी । पिता- माता कितना भी यशस्वी क्यों न हो उसके लिये

सबसे ज्यादा गर्व तब होता है जब लोग उसे उसके बच्चे के नाम से पहचाने । आंटी की आँखों में उमड़ रही भावनाएँ बोल रही थीं जो कोई भी पढ़ सकता था ।

आंटी ने चाय - नाश्ता लगाते हुये बोली ...

आंटी - अनुराग तुम लोग बोलने की कहीं से ट्रेनिंग लेते हो क्या? तुम तो बोलते ही हो अच्छा और यह तुम्हारे चिंतन सर तो मनमोहक हैं ।

मैं - आंटी, यह विद्वानों के विद्वान हैं । इनके संस्कृत का श्लोक सुनकर देवता भी रास्ता बदल देते हैं । यह अपने काव्यात्मक संस्कृत लय स्वर लहरियों से किसी को भी प्रसन्न कर सकते हैं । आंटी इन्होंने हज़ारों विवाह कराये होंगे और ऐसा मंत्रों का उच्चारण किया है कि आज तक सारी जोड़ियाँ सलामत हैं ।

आंटी - अनुराग तुम इनको लेकर आना जब ऋषभ- शालिनी आएँगे । मैं एक बार विवाह इसी लान में इनके मंत्र के उच्चारण से फिर से करा दूँगी ताकि जोड़ी सलामत रहे । मुझे पहले पता होता तब मैं इनसे ही विवाह कराती ।

चिंतन सर - माताजी, मैं कुंडली देखकर हर विवाह में कई अलग - अलग मंत्र का उच्चारण करके जोड़ियों को शांति और समृद्धि का जीवन प्राप्त हो यह प्रार्थना देवाधिदेव से करता हूँ । कहाँ आसान गोली से काम होगा और कहाँ एलजी या थ्री नाट थ्री, यह सोचकर मैं जोड़ियों में मंत्र फूँकता हूँ । जब देखता हूँ केस बिगड़ैल है और यह वर या कन्या बेअंदाज है तब मैं सीधा दुर्गा से रक्तबीज श्लोक माँगकर संधान कर देता हूँ । आप आने दें अपने बेटे - बहू को मैं बाधाओं का समूल नाश कर दूँगा, अगर कोई होगी । महादेव की कृपा आप पर है और आपसे वह बच्चों पर सीधा दरान्सफर हो रही, इसलिये कोई बाधा होनी नहीं चाहिये ।

मैंने कहा चिंतन सर से कि आप कुंडली देख दो ऋषभ और शालिनी की । कुंडली देखना तो चिंतन सर का एक शौक था । वह तो कुंडली देखकर यह भी बता गए थे कि देश में बाघों की संख्या बीस साल बाद कई गुना बढ़ जाएगी । वह डीजे होस्टल की भी कुंडली बना दिये थे होस्टल के पहले पत्थर की स्थापना से ।

आंटी कुंडली लेकर आई । वह कुंडली देखने लगे । यह कुंडली देखने वाले बहुत बड़े मनोवैज्ञानिक होते हैं । वह ग्रह - नक्षत्र से कम अपने मनोविज्ञान से अपना व्यवसाय अधिक चलाते हैं । वह शालिनी की कुंडली पर सवाल खड़ा कर दिये कि यह किसी बाज़ारू पंडित ने बनाई है उसको समझ कम है कुंडली की । ऋषभ की कुंडली का विवेचन किया और बताया बृहस्पति का साक्षात् आशीर्वाद है और बृहस्पति बहुत ही उच्च घर में है । शनि बहुत मज़बूत है और यह लड़का बहुत ज़िद्दी है जो चाहेगा करके ही रहेगा । यह कन्या बहुत भाग्यवान है जहाँ जाएगी भाग्योदय ही होगा । इसके जन्म के साथ ही इसके पिता का भाग्य बदल गया । यह अपने पति के जीवन में भाग्य की अभिवृद्धि वैसे ही करेगी जैसे एक और एक ग्यारह होते हैं ।

अब जो यह चिंतन सर बाँच रहे यह ज्ञान में बगैर कुंडली देखे बघार सकता हूँ । एक आईआईटी के कम्प्यूटर इंजीनियर और गणित के प्राइम नंबर की गुत्थी सुलझाने वाले का अगर बृहस्पति उच्च घर में नहीं होगा तब किसका होगा । यह जो ऋषभ अपनी माँ की बात न माना और आईएस न दिया उसका शनि मज़बूत होगा ही । यदि इसका शनि कमज़ोर हो गया तब ऋषभ का तो कुछ न बिगड़ेगा पर शनि की साथ ही चली जाएगी । बालू की ढुलाई करने वाले पृथ्वीराज रोड के आलीशान मकान का मालिक बनकर हज़ारों करोड़ों का व्यवसाय चला रहे आहूजा साहब की बेटी का भाग्य अच्छा नहीं होगा तब क्या मेरे ऐसे फटीचर का अच्छा होगा । यह पूरा कुंडली का धंधा ही फराड़ है पर कौन कहे ? आप अगर कहो तो आप परम्परा और धर्म के विरोधी हो ।

आंटी - बहुत जानकार हैं आप । आपने सब सच कहा । शालिनी जब गर्भ में आई तब आहूजा साहब ने ढुलाई का काम बंद कर दिया जब पैदा हुई तब सीमेंट और सरिया की उनकी अपनी छोटी सी दुकान हो गई । जब वह तीन साल की थी तब वह सरिया बनाने का एक छोटा सा कारखाना कहीं नज़फ़गढ़ में डाले और जब वह पाँच साल की थी तब एसीसी और गुजरात अंबुजा सीमेंट की पूरी दिल्ली की डीलरशिप पा गए और जब वह नौ साल की थी तब शालिनी सीमेंट बाज़ार में आ गई ।

चिंतन सर - यह शालिनी सीमेंट इन्हीं की है ?

आंटी - हाँ, तुम जानते हो ?

चिंतन सर - माता जी यह तो अपने रिश्तेदार निकले ।

आंटी - आश्चर्य से वह कैसे ?

चिंतन सर - मेरा गाँव का मकान शालिनी सीमेंट से बना है । यह बहुत धर्मात्मा लोग हैं । एसीसी सीमेंट और गुजरात अंबुजा वाले लूटते हैं । वह मँहगी सीमेंट बेचते हैं । उसी बीच यह शालिनी सीमेंट आई यह उन सीमेंटों से काफ़ी सस्ते दाम पर मिलती थी और दुकानदार उधारी भी दे देता था इस सीमेंट के खरीदने पर , क्योंकि इस पर सीमेंट मालिक कमीशन दुकानदार को ज्यादा देता था । हर बोरी सीमेंट पर दुकानदार एक रूपया कमीशन पाता था और यह डेढ़ रूपया देते थे । दुकानदार इनका ही माल बेचता था । पूरा सुल्तानपुर इनकी ही सीमेंट लेता था ।

माता जी बड़े धर्मात्मा आदमी की कन्या है यह । मेरे सारे जजमान भी इनकी ही सीमेंट से ही अपनी गौशाला बनवाये और उस गौशाला की बछिया दान में हमको बहुत मिली और उसका ही दूध मेरे बच्चे गाँव में पी रहे । इस तरह से इनका मेरा सम्बन्ध तो पीढ़ियों का हो गया अब तो यह रक्त से भी रिश्तेदारी में आ गये । इनका पता बताना कभी जाऊँगा । अब तो यह अपने ही हो गये जब शालिनी सीमेंट और शालिनी दोनों ही अपनी ही है ।

मैं समझ गया कि एक जजमान यह पा गये । अब आहूजा साहब को इनके चंगुल से साक्षात् विधाता भी नहीं बचा सकते । यह आहूजा साहब के संसाधन का दोहन भी कर जाएँगे , इस काम में इनकी महारत है ।

पर आंटी बहुत खुश हुई यह सुनकर की यह जाएँगे आहूजा साहब के पास इसी लाव- लश्कर के साथ । इससे आंटी की इज़्ज़त- सम्मान में हिजाफ़ा होगा आहूजा साहब के यहाँ ।

आंटी - अनुराग तुम भी जाना चिंतन के साथ । तुम भी मिल आओ उनसे । मैंने शालिनी - ऋषभ को ख़त में लिखा था जब मुझे यह समाचार मिला था कि तुम इंटरव्यू देने दिल्ली आ रहे और मेरे पास रुकोगे । शालिनी अपने पिता को सब बताती है , यह भी बताया होगा ।

चिंतन - माताजी अब तो जाना ही है । वह साम्राज्य भी अपना ही है । मुझे पहले पता होता तो अनुराग को लेकर जाता । यह आज सुबह भी पता चल गया होता तब आज ही जाते हम लोग । अनुराग तुम जब भी आओगे हम लोग चलेंगे ।

मैं-ठीक है ।

गाड़ी का समय हो रहा था । आंटी का मन पास बैठने का था । वह जल्दी- जल्दी रास्ते के लिये पूँड़ी- सब्ज़ी बना दी । हमकों और चिंतन सर को

खिलाया और वह दुःखदायी क्षण आ गया जिसका इंतज़ार आंटी ने न किया होगा । वह अकेलेपन से तंग थी । मैंने उसका अकेलापन दूर किया था, कुछ दिनों के लिये ही सही ।

अब आज शाम से फिर आंटी, उसकी खिड़की, दूर तक फैला पूसा कैम्पस और उसकी खिड़की से दिखती मेहराब जिस पर चाँद आकर अटक जाता है जिसको आँटी निहारती रहती है ।

मैं चलने लगा । आंटी ने एक सूटकेस दिया इस हिदायत के साथ कि इसको इलाहाबाद में ही खोलना और वह रोने लगी । मैं रोता कम ही हूँ पर मेरे भी आँसू बहने लगे । एक भावनाओं की आँधी बह रही थी साथ उसके जो आज से कुछ दिन पहले अजनबी थी ।

मैं आंटी का भीगा हुआ चेहरा देखने लगा । एक ज़ख्मी चेहरा, जिसको पढ़ने की तौफ़ीक चाहिये । उस पर बहता न दिखनेवाला गर्म लहू पर कोई इलाज नहीं इस ज़ख्म का । अगर इलाज हो तब भी इसने किसी को परखने न दिया । कोई चित्रकार नहीं जो बना सके यह चेहरा और रंगों से कह सके तू चल बिखर इस पर । उसकी कूँची से रंग कहेंगे, मैं चाहता हूँ बिखरना पर ऐ मुसाविर बता, क्या मैं इस क़ाबिल हूँ ?

इसने किसी को अपना हमराज़ बनने न दिया । एक जलती उदासी इसके जीवन में जिसमें कोई आज तक शरीक न हुआ । मेरा उससे एक ऐसा रिश्ता जो आज तक मेरा किसी से न हुआ ।

आंटी का पैर छुआ वह बहुत कोशिश करके वह सिर्फ़ यह कह पायी

“ अनुराग बहुत इंतज़ार मत कराना ... ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 90

चिंतन सर मेरा और आंटी का भावनात्मक क्षण देख रहे थे । चिंतन सर को ईश्वर ने एक अलग तरीके से बनाया था, एक अति महत्वाकांक्षा से लबरेज़ । वह बहुत ही समझदार थे और परिस्थितियों को समझ कर जुगाड़ कर लेते थे

। वह महत्वाकांक्षी अवश्य थे पर एक सज्जन व्यक्ति थे । उन्होंने जीप पर बैठते ही कहा मुझसे , “बाबा अभी समय है गाड़ी छूटने में । मैंने जीआरपी को कह दिया है कि वह स्टेशन पर टीटी को साधे रहे और साहब की सीट वग़ैरह देख ले , अभी ही स्टेशन पहुँच कर क्या करोगे ? ”

चिंतन सर ने मातादीन से कहा ,
“ मातादीन किससे बात हुई है साहब के लिये ? ”

मातादीन - “ साहब , इंस्पेक्टर को मैसेज गया था कि सीओ साहब आएंगे । इंस्पेक्टर बोला है कि मैं रहूँगा स्टेशन पर साहब के आने के पहले । ”

चिंतन सर - “ मातादीन कौन है इंस्पेक्टर ? ”

मातादीन - “ साहब विनोद सिंह है । वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदू होस्टल के पढ़ें हैं । आपको जानते हैं वह । मैंने कहा आने की ज़रूरत नहीं है किसी की ड्यूटी लगा दो । पर वह बोले , साहब का आशीर्वाद मिल जाएगा । ”

चिंतन सर - “ मातादीन हमकों कौन नहीं जानता । हम एक आम अफसर थोड़े हैं । एक छात्र के रूप में हमारे नाम का दिया आज भी जलता था । अफ़सर बने तो इलाके की बेअंदाजी को अंदाज़ी में बदल दिये और ऊपर देख रहे हो सूरज और छिपे हुये नक्षत्रों को , यह भी हमारी निगाहों में रहते हैं । ”

मातादीन - “वह तो है साहब । आप जैसा कोई नहीं । आपने ज़िला सुधार दिया । बड़े- बड़े गुंडे- बदमाश- चोर- डकैत की तो आप कुंडली बना देते हो गरह में हेर-फेर करके उनका सही समय ख़राब कर देते हैं । ”

चिंतन सर - मातादीन , वह पांडव नगर का किस्सा सुनाओ ज़रा साहब को ।

मातादीन - “साहब हुआ ऐसा कि एक बहुतै बेअंदाज ज़मीन माफिया था । वह लोगों पर फ़र्ज़ी केस करके ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेता था । ऊपर से आई जी साहब का मैसेज आया कि इसको ठीक करो , पर हल्ला कम हो । इसने किसी मुख्यमंत्री के आदमी पर हाथ लगा दिया है । साहेब को पता था कि लोकल थाने पर इसका प्रभाव है । साहेब बोले कि इसके घर ही चलते हैं सादी वर्दी में । साहब घर पर गये और घर पर ही कुंडली बना दिये उसकी । उस घटना के बाद ये मशहूर हो गये साहब और नाम पड़ गया , “कुंडली गुरु ” । सब कहते हैं , कुंडली गुरु से बचकर रहना । वह कुंडली देखकर मारते हैं । साहेब वहीं एक काग़ज पर कुंडली बनाकर बता देते हैं कि क्या भविष्य है ।

एक और साहब का किस्सा है । एक तपा बदमाश था , “ बच्चा भवानी ” । साहब उसको पकड़वाये उसको एक मामले में । उसकी हम लोग बलभर ठोकाई किये । उसी समय साहब बोले मत मार और इसको , इसकी कुंडली कह रही यह दो महीने का मेहमान है । यह जब अपनी ही मौत मर रहा तब हम काहे को पाप लें । वह ससुरा मारा गया आपसी गैंग वार में । तब से बहुत लोग बहुत सर के चेला हो गये ।”

चिंतन सर - बाबा , हम तो साइकोथिरेपी कर देते हैं । मैं कुंडली बना देता हूँ जो बड़ा बदमाश होता है और जैसा- जैसा कुंडली कहती है वैसा- वैसा एकशन लेता हूँ । अगर कुंडली कह रही शुक्रवार को यह ग़लत काम करेगा तब हम शुक्रवार को निवारक निरोध में पकड़ कर थाने में बैठा देते हैं । हमारा जो पीएसओ है वह थाने में मैसेज दे देता है कि इनको- इनको थाने में बैठा लो यह सब आज अपराध कर सकते हैं । हमारा काम सुधारना भी है । इस साइकोथिरेपी से सुधार भी देते हैं । वैसे भी अगर हर दिन थाने में पकड़ कर बैठा ही दो तब ससुरा अपराध तो कम हो ही जायेगा और इसीलिये कराइम रिपोर्ट हमारी बेहतर रहती है ।

मातादीन थोड़ा गाढ़ी को संसद - भवन की तरफ से ले चलो ।

मातादीन बोला ड्राइवर से , “राकेश घुमा लो औरंगज़ेब रोड से संसद की तरफ ।”

चिंतन सर - बाबा यह देख रहे हो संसद भवन ... इसमें एक दिन हमारी गूँज होगी ,

“ सत्य जो सोया है झूर से आवरणित है । आवाज जिन अबोधों की यहाँ तक न पहुँची है । व्यवस्था जो चरमरा रही पर कोई संज्ञान न ले रहा । यह जो सब बैठे हैं मूक वर्षों से बेपरवाह लोगों की पीड़ा से , सभापति महोदय उनकी आवाज़ के लिये समर्पित यह चिंतन उपाध्याय अपनी बात उनकी ओर से कहने की अनुमति चाहता है । ”

यह देश की सबसे बड़ी पंचायत मेरा इंतज़ार कर रही ।

मैं - यह प्लानिंग कब बनी सर ?

चिंतन सर - जब से यूनिवर्सिटी पहुँचे । यह चिंतन उपाध्याय यह फटीचर पुलिस की नौकरी में लोगों का निर्देश लेने के लिये नहीं बना है । यह नीति

बनाएगी देश के विकास की और यहीं नहीं पाकिस्तान से छीन कर लाएगा वह क्षेत्र जो पाकिस्तान के क़ब्जे में है ।

मैं- सर आपकी महत्वकांक्षा ग़ज़ब है ।

चिंतन सर - बाबा , यह चिंतन उपाध्याय ग़ज़बै चीज़ है । बस वक्त को करवट बदलने दो ।

मैं - अगर वक्त ने करवट न बदली तब ?

चिंतन सर - तुम किस दिन के लिये हो । बोलना वक्त से , क्यों बेवजह जिद कर रहा यह कहाँ मानने वाला । यह रात से भी कहता है तेरे मेरे धैर्य का इम्तिहान है बस .. हकीकत यह है कि तेरा कितना भी आतंक हो वह वक्त की पाबंदी तक ही है । इसने सूरज के जगने तक तुझसे लड़ने के लिये जुगनुओं की एक फ़ौज बना रखा है । वह उजाला भी करेंगे और शोर करके तुझे सोने भी न देंगे ।

एक बात समझो बाबा , एक बड़ा फ़ैसला लेना होगा बुद्ध की तरह । बुद्ध एक बड़े राज्य के राजकुमार थे । वह राजा बनकर जीवन व्यतीत कर सकते थे , एक समृद्धिशाली भौतिक जीवन । पर अगर वह राजा का जीवन जीते तो इतिहास में कौन जानता उनको । वह ज्ञान की खोज में राज्य, पत्नी और मोह- माया का सबसे बड़ा प्रतीक वह दूध पीता बच्चा सब छोड़कर रात के अंधकार में एक प्रकाश की आकांक्षा लिये जो उनके लिये नहीं वरन् जगत के लिये था , एक सामाजिक करान्ति के लिये गमन कर गये । राम के वंश को देखो , राम के सामने कौन है ? राम- भरत को जो यश मिला वह इक्ष्वाकु वंश में किसी को न मिला , चाहे कितने भी प्रतापी शासक क्यों न हुये हों । इसका कारण क्या है ?

इसका कारण निर्णय है । एक बड़ा निर्णय , एक समाज के लिये समर्पित निर्णय । यह लेना होगा , राम , बुद्ध, अशोक की तरह अलग सोचना होगा । अशोक भेरी घोष करता तो वह इतिहास का एक सामान्य सा नायक होता , पर एक अलग घोष “धर्मघोष” ने उसके नाम के साथ “महान” जोड़ दिया । कुछ ऐसा ही करना होगा । एक ऐसे फ़ैसले के बारे में सोचना आरंभ करो जो समाज से जुड़ा हो ।

यह नौकरी कोई अंतिम लक्ष्य नहीं है । यह सिर्फ़ एक ज़रिया है आगे बढ़ने का । अगर इसी में रम गये तब जीवन की सार्थकता की प्राप्ति नहीं होगी । हम

जन्में हैं किसी गैर मामूली दास्तान के लिये यह हरदम याद रखना होगा । कृष्ण बनना होगा समाज के शकुनियों के लिये ।

मैं - सर आपके पास क़ाबिलियत है । आप कर सकते हो । मैं किस काबिल हूँ । सर आपके इतने बड़े- बड़े अरमान हैं, पर आपने कभी बताया नहीं । आपने हवा ही न दी कभी इतने बड़े प्लान की ।

चिंतन सर - किससे बताता यह खबाब जो मेरे कद और हैसियत से बड़े दिख रहे हैं पर हक्कीकत में मेरी हद में है ।

यह क्यों कहा तुमने कि, “मैं किस काबिल हूँ? ”

यह कहो मैं किस काबिल नहीं हूँ । आत्म विश्वास सबसे ज़रूरी है, बाकी सब तो बाद की बात है ।

एक बात यह बताओ यह आंटी के तुम इतने नज़दीक कैसे आ गये ।

मैं - सर, साथ रहते - रहते । वह अकेली रहती हैं । मेरी माँ की बचपन की सहेली हैं । एक पुत्रवत अनुराग हो गया मुझसे । सर, जिसको लिखने- पढ़ने का शौक होगा वह मेरे नज़दीक आ ही जाएगा । इनको भी शौक है पढ़ने का, अब लिखना भी चाह रही हैं । यह कोई सामान्य महिला नहीं है । यह दुर्गा का रूप है । आंटी की महारत है परिस्थितियों से लड़कर उसको परास्त करने में ।

चिंतन सर - एक बात बताऊँ । तुम इनसे मत बताना कभी ।

मैं चौंक गया । मेरा मन आशंका में आ गया । यह कौन सा रहस्य यह जान गये ।

मैं - क्या सर ...?

चिंतन सर - मैंने कुंडली देखी दोनों की । ऋषभ की कुंडली बहुत नायाब है पर वह कह रही इनके माँ के भाग्य में पुत्र वियोग है ।

मैं - इसका क्या मतलब सर? यह आपको कैसे पता लगा?

मेरा मन आशंकाओं से और भरने लगा । मेरा आंटी से बहुत लगाव हो गया था । उसकी पीड़ा मेरी पीड़ा हो चुकी थी । मेरा मन भविष्य की काली अनहोनी घटना की ओर जाने लगा ।

चिंतन सर - यह कुंडली विचित्र विधा है । यह विवेचन पर आधारित है । यह ऋषभ के लग्न में शनि दसवें स्थान पर है । वह कर्म का स्थान है । उसमें वह बहुत ही मज़बूत है । मंगल का दोष है जिसकी दृष्टि सातवें - आठवें स्थान पर है । यह D1 से D30 का पूरा चार्ट मैंने बना लिया था पढ़कर । यह 12 राशियाँ 360 डिग्री में घूमती हैं । हर के पास 30 डिग्री होता है । पराशर की चन्द्रहोरा - सूर्यहोरा विधि है उसका अध्ययन और ग्रह- लग्न के समीकरण से मैं यह बता रहा । यह वापस भारत नहीं आएगा । वह अमेरिका ही रहेगा । आंटी का वृद्धावस्था में पीड़ा है । उसके निदान की आवश्यकता है ।

मैं - कोई संभावना वापस आने की ?

चिंतन सर - कुंडली से बिल्कुल नहीं दिख रही है पर वह धन बहुत कमायेगा । उसकी कुंडली कह रही वह साम्राज्य संस्थापक होगा ।

मैं - इसका निदान है कि आंटी के प्रतिकूल ग्रहों का शमन हो सके ?

चिंतन सर - यह कुंडली एक विज्ञान पर आधारित है । इसमें सब बाधाओं का निदान है । इसका भी है ।

मैं - वह क्या है ?

चिंतन सर - अब केस हाथ में आ गया है , इसको सुलझायेंगे । हम तो बिगड़ा केस ही सुलझाते हैं । सामान्य केस तो हम हाथ लेते नहीं चाहे वह पुलिस का हो या कुंडली का ।

मातादीन ठीक कहा न ?

मातादीन - हुजूर, आपके ऐसा कोई नहीं । गाज़ियाबाद की तक़दीर है आपके ऐसा साहब मिला ।

चिंतन सर बोले मातादीन तुम बहुत जन्म पहले रीतिकाल के दरबारी कवि थे ।

मातादीन - वह क्या होता है साहब ?

चिंतन सर हँसने लगे और बोले , “ठीक कहा न बाबा ? ”

मैं - बिल्कुल ।

चिंतन सर - माता जी को पुत्र सुख के लिये तुम्हारे पर निर्भर होना होगा ।

सर फिर बोले , असली काम का आसामी तो वह आहूजा साहब हैं ।

मैं - वह कैसे ?

चिंतन सर - यार अब इस आहूजा के आगे नाथ न पीछे पगहा । अब ऋषभ नहीं आएगा तब शालिनी कहाँ आने वाली । अब कोई तो वह साम्राज्य सँभालेगा । अब इस धरती पर हमसे- तुमसे बड़ा काबिल तो विधाता ने बनाया है नहीं । एक बात और है । हमारे इलाके में बेरोज़गारों की भरमार है । हर कोई नौकरी माँगता है । अब सरकारी नौकरी तो कोई दे नहीं सकता । यही प्राइवेट नौकरी सहारा है । आहूजा साहब के यहाँ स्कोप होगा बहुत । इसको पटाते हैं, कुछ गरीबों का कल्याण होगा ।

मैं - सर आप होंगे काबिल, मैं कहाँ से हूँ ।

चिंतन सर - अनुराग मैं फालतू आदमियों पर एक सेकेंड समय नहीं खर्च करता । तुमको पता है कि मैं नहाते वक्त भी छोटे भाई से कहता था तू यह पढ़ मैं सुन रहा । ऐसा आदमी तुम पर इतना समय क्यों लगा रहा, यह कभी सोचा । तुम पहली बार आए थे जब तुम चले गये तब मैंने रमाकान्त से कहा था, यह बहुत लंबी रेस का घोड़ा है । इसको लोग पहचान नहीं पाए हैं ।

मैं - यह सर आपने किस आधार पर कहा ?

चिंतन सर - मैंने तुमसे कहा था कि यह पाठ पढ़कर आना कुछ सवाल पूछूगा, याद है ?

मैं - हाँ सर

चिंतन सर - तुमने जो- जो व्याख्यायें की वह मैंने ही न पढ़ीं थी । मैं सत्य प्रकाश मिशन सर से मिला उसी दिन वह मेरे गुरु सुरेशचंद्र श्रीवास्तव के मित्र हैं । वह किसी की तारीफ़ नहीं करते । वह बोले एक साइंस का लड़का आज आया था । उसको हिंदी साहित्य पढ़ना चाहिये था । वह बहुत अच्छा करता । मैंने नाम पूछा तो तुम्हारा नाम बताया । मेरी अवधारणा पर मुहर लग गयी । यह जो नंबर मिलते हैं परीक्षाओं में यह सब प्राप्त है । आप देखो न टाप टेन पोजीशन होल्डर हर विभाग के, अधिकांश प्रारम्भिक परीक्षा फेल होते हैं ।

मैंने कहा सर यह तो अब परिणाम बताएगा पर चिंता बहुत है । मेरे घर की परिस्थिति भी ठीक नहीं है । यह बहुत दुःखद होगा, अगर न हुआ ।

चिंतन सर - ईश्वर न्यायी है, वह दयालु न दिखकर भी दयालु होता है ।

चिंतन सर ने पूछा आहूजा साहब का पूरा नाम क्या है

मैं - रमेश आहूजा ।

चिंतन सर - तुमको जानते हैं वह !

मैं - नहीं सर ।

चिंतन सर - आंटी का नाम क्या है ?

मैं - शांति मिश्रा ।

चिंतन सर - यह तुम्हारे ननिहाल की हैं ?

मैं - हाँ सर ।

चिंतन सर - त्रष्णम के बारे में कुछ बताओ ।

मैंने बता दिया जो जानता था ।

चिंतन सर - मातादीन

मातादीन - जी साहब ।

चिंतन सर - कल जाना पृथ्वीराज रोड / रमेश आहूजा साहब का बड़ा सा बंगला है । वह शालिनी सीमेंट , शालिनी स्टील के मालिक हैं । बलभर हूटर बजना बँगले के अंदर और इंस्पेक्टर रमन सिंह को साथ ले जाना , वह अंग्रेजी बोलने और बात करने में माहिर है । समय लेकर आना आहूजा साहब से कि साहब मिलना चाहते हैं । आपकी समधन शांति मिश्रा मैडम के रिश्तेदार हैं , यह बताना । मातादीन सुनो , एक बड़ी फल की टोकरी लेते जाना और बंगाली स्वीट वाले से पाँच छह डिब्बा मिठाई बँधा लेना ।

मातादीन - साहब 11 डिब्बा कर देते हैं अब पहली बार समधियाने जा रहे ।

सर बंगाली स्वीट से नहीं उस कामधेनु वाले से लेते हैं जिससे बजरंगी सिंह रंगदारी वसूल करने गया था और उड़ा देने की धमकी दिया था । उसका केस आप अपने हाथ में सीधा ले लिये थे और बजरंगिया यह सुनकर ही फ़रार हो गया था ।

चिंतन सर - मातादीन , हो तुम बहुत होशियार । हम तो चले जाएँगे संसद भवन । तुम अनुराग साहेब के बँगले पर रहना ।

मातादीन-साहब यह जीवन आपका ही है । साँस आपकी ही है ।

मैं - सर कैसे पटायेंगे आहूजा साहब को ?

चिंतन सर - तुमने मारियो पूजो की गाडफादर पढ़ी है ?

मैं - हाँ सर

चिंतन सर - उसमें एक लाइन है , *There is a crime behind every fortune* .

मैं इसको और ठीक करता हूँ।

There is a big crime behind a big fortune .

यह ऋषभ की पत्नी शालिनी 23/24/25 साल की होगी । उसके गर्भ में आने तक तो यह सीमेंट की ढुलाई ही करते थे । ऐसा कौन सा रास्ता है क़ानून सम्मत जो पचीस साल में हजारों करोड़ दे दे । यह सारे गैर क़ानूनी काम किये ही होंगे । यह पुलिस की वर्दी और शोशेबाजी से हाथ आ जाएगा । यह कुंडली है ही , एक ब्रह्मास्तर । यह जितने भी व्यापारी , बड़े अफ़सर हैं वह इसके लपेटे में आ ही जाते हैं । मुझे सीधे पीटीसी मुरादाबाद से गाज़ियाबाद सीओ सिटी मिला । यह कहाँ किसी को मिलता है । मेरे सारे बैचमेट बासी , सिद्धार्थनगर, पड़रौना , जालौन गये । मेरे में क्या ख़ास बात थी ? यही कुंडली काम आई । जो आज डीजीपी हैं वह उस समय पीटासी में सड़ रहे थे । मैंने कुंडली देखकर बता दिया कब आपका भाग्योदय होगा , वह सच निकला ।

मातादीन बोला बीच में , साहब की पहुँच मुख्यमंत्री तक है । साहब को वह भी जानते हैं ।

यह मातादीन बहुत चालू था । वह पक्का चापलूस था । साहब- साहब करता रहता था ।

वह बोला , साहब का क्रिस्सा आल्हा- ऊदल की तरह का है , बस गाते जाओ ।

इतने में स्टेशन आ गया ।

मैं समझ गया कि आहूजा साहब अब गिरफ्त में आ गये । अब सारी ज़िंदगी चिंतन सर से कुंडली ही दिखाएँगे । तगड़ा जजमान मिला इनको ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 91

हम लोगों ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के अजमेरी गेट की तरफ से स्टेशन में प्रवेश किया । गेट पर ही विनोद सिंह इंस्पेक्टर मिल गये । वह चार्ट में मेरी सीट एसी डिब्बे में खोज रहे थे । उनको बाद में पता चला कि मैं स्लीपर में जा रहा । उन्होंने गेट पर ही चिंतन सर को सेल्यूट मारा और कहा , “सर एसी में करवा देता हूँ । ”

सर ने कहा , “कोई ज़रूरत नहीं स्लीपर ठीक है । ”

वह हम लोगों को प्लेटफ़ॉर्म पर स्थित वीआईपी रूम में ले गये । मुझे पहले कभी पता ही न था कि कोई वीआईपी रूम होता है स्टेशन पर जहाँ पर इस तरह बैठने की व्यवस्था होती है । हम लोग तो स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्म पर भटकते परेशान हाल लोगों और गाड़ी में जानवर की तरह दुसे हुये लोगों की अमानवीय हालातों के ही एक चश्मदीद गवाह रहे हैं ।

चिंतन सर ने पूछा विनोद सिंह से , “कब रहे हो आप विश्वविद्यालय में ? ”

विनोद सिंह - सर मैं आप से एक साल आगे था । आप दर्शन शास्त्र में थे बीए में फिर एम ए संस्कृत से किया । आपसे मेरी मुलाक़ात है आप हिंदू होस्टल आए थे शिव प्रकाश मिश्रा के रूप पर । वहाँ आपसे मुलाक़ात है ।

चिंतन सर - हाँ .. वहाँ गया हूँ मैं । शिव प्रकाश एम ए दर्शन से किये थे ।

विनोद सिंह - जी सर

चिंतन सर - जी आर पी में कब आए ।

विनोद सिंह - सर एक साल हो गया ।

चिंतन सर - प्रसन्न हो यहाँ पर

विनोद सिंह - सर बदली हो जाए तो बेहतर है ।

चिंतन सर - साल- खाँड़ और निकालो तब देखते हैं ।

विनोद सिंह - सर आपका डीजीपी साहब से ताल्लुक है , मेरा भी हो सके तो करा दीजिये गाज़ियाबाद , आगे- पीछे देखकर कभी । मैं भी आपके साथ काम कर लूँगा ।

मातादीन - साहब की पहुँच मुख्यमंत्री तक है । डीजीपी साहब तो बाहर साहब से पूछे कोई काम करते ही नहीं ।

विनोद सिंह - पता है । यह सुना है कि साहब ने पहले ही कह दिया था डीजीपी साहब को कि आप जा रहे डीजीपी में ।

चिंतन सर ब्राह्मण ही थे वह भी जजमानी वाले ब्राह्मण । अपनी तारीफ़ सुनना सबको भाता है , ब्राह्मण तो भूखा ही रहती है । वह भी एक ब्राह्मण जो जजमानी करता हो वह तो आतुर रहता है इसका ।

चिंतन सर - मेरा उसमें कुछ योगदान नहीं , वह तो प्रभु की कृपा थी । ग्रह- नक्षत्र का संयोग था ।

विनोद सिंह - साहब .. कभी हमारा भी ग्रह- नक्षत्र का संयोग देख दें ।

चिंतन सर - आना घर पर । मेरी प्रातःकाल की पूजा - वंदना के बाद देख दूँगा । मैं कुंडली सिर्फ़ सुबह देखता हूँ और कोई कितना भी बढ़ा हो, उसे दरवाज़े पर चल कर आना होगा । मैं सोने की पालकी भी भेजो तब भी मैं नहीं देखता किसी के दर पर जाकर । तुम आना देख दूँगा ।

मैं - सर आप किसी के घर जाकर नहीं देखते ?

चिंतन सर - अरे यार यह सब फोकस पानी बनाना पड़ता है । अब यह चार जगह फैलायेगा कि साहब आसानी से कुंडली नहीं देखते । हर व्यवसाय का एक नाटक है । इस कुंडली व्यवसाय का भी है । यह बहुत कुछ आपकी छवि से चलता है । यह सब छवि बनाने में बहुत मदद करते हैं । हम थोड़े कहे कि मेरा नाम, “कुंडली गुरु” रख दो । यही सब रख दिये और यह नाम चल पड़ा । मुख्यमंत्री तक जानता है कि कोई पुलिस वाला कुंडली गुरु है जो तन्त्र- मन्त्र- गरह- नक्षत्र मिलाकर समस्या सुलझा देता है । एक अलग पहचान बन गई है । देखो अनुराग, होगा वही जो राम रचि राखा । यह भाग्य की बात है कि कौन उस राम की लीला का श्रेय ले जाए । हम - तुम उस ईश्वर की माया हैं । अब वह महान मायावी जो माया चाहता है करता है, हम लोग तो उसके चौसर के प्यादे हैं ।

यह बताओ यह उसकी माया नहीं तो क्या है । तुम मेरे साथ रुक सकते थे । यह यूपी भवन अपना ही है । वहाँ के रेज़ीडेंट कमिशनर को मैंने साधा हुआ है । इस बार जो भी इंटरव्यू देने आया और मुझसे कहा इंतज़ाम करने को, सबको वही रुकवाया । मेरा यश भी बढ़ा और उसका काम भी हुआ । पर तुमने हमसे ज़िकर ही न किया । हम लोग कई बार बात किये पर कभी यह बात हुई ही नहीं कि रुकना कहाँ है ।

यह भाग्य था कि आहूजा हाथ आना था । अब वह हाथ आ गया उसकी सुल्तानपुर की सीमेंट की एजेंसी ही ले लेंगे ।

बाबा, इसको साधना ज़रूरी है । यह बहुत काम का आदमी है । तुम्हारा इंटरव्यू देना बहुत बड़ा काम कर गया । ऋषभ ऐसा काबिल और यह आहूजा ऐसा धनपशु हाथ आ गया । आप जल्दी ही आओ फिर से । यह “आपरेशन आहूजा” ज़रूरी है । हम लोग समाज सेवक हैं, हमकों ऐसे लोगों की ज़रूरत है । यह समाज निरे सिद्धांत से नहीं पकड़ में आएगा, संसाधनों का होना ज़रूरी है ।

मैं - सर यह आहूजा साहब किस काम के हैं ।

चिंतन सर - बस तेल देखो तेल की धार देखो । पहला आपरेशन इसी हफ्ते कर दूँगा और अगला तुम्हारे आने पर । यह जो संपत्ति बनती है, बनाये चाहे

जो उसको भोगने वाला भी साथ ही साथ लिख दिया जाता है । अब यह पता करना है वह भोगने वाला , “ कहीं हम ही तो नहीं ” ।

यह कहकर चिंतन सर ज़ोर- ज़ोर से हँसने लगे और बोले मातादीन तुम्हारी व्यवस्था कुछ दिखी नहीं?

मातादीन - सर फ्रेश चाय बनवा रहे उसी में वक्त लग गया । लो सर आ गई । समोसा भी सर ताज़ा है ।

हम लोग चाय पीकर प्लेटफ़ॉर्म पर गये । वहाँ पर मातादीन ने मेरे स्लीपर के बर्थ पर बिस्तर एसी के डिब्बे से लेकर पहले से ही लगा दिया था । स्टेशन पर ही एक लड़का टीटी से सीट के लिये धिधिया रहा था पर टीटी सुन नहीं रहा था । उसने कहा कि मैं इंटरव्यू देने आया था । मेरा रिज़र्वेशन नहीं हो पाया , कोई सीट दे दो नहीं तो मुझे बैठने दो बाथरूम के पास ही , मैं बैठकर ही चला जाऊँगा । चिंतन सर ने जैसे ही “इंटरव्यू” शब्द सुना उसको बुलाया और पूछा कौन सा इंटरव्यू था । उसने बताया कि सिविल सेवा का था । मुझे रिज़र्वेशन नहीं मिला । सर ने विनोद सिंह से कहा , इसका इंतज़ाम करो । विनोद सिंह ने मेरे बगल वाली सीट पर कहा उसे बैठने को और टीटी से कहा इसका इंतज़ाम करो । टीटी ने कहा कर दूँगा ज़रा देख लूँ एक बार पूरी पोज़ीशन ।

चिंतन सर बोले मैं चलता हूँ , फिर मुलाक़ात होगी जल्दी ही । मेरी मीटिंग है पीएचक्यू में दस तारीख को उसमें आऊँगा ।

सर चले गये । मेरे लिये स्टेशन का पूरा अनुभव एक नया अनुभव था । मेरे सीट पर वह लड़का बैठा था । मैं उसके पास पहुँचा । उसने अपना नाम अमोघ तिवारी बताया । वह बहुत परेशान था सीट को लेकर । मैंने कहा अगर कुछ न होगा तब मेरी ही सीट पर बैठ कर चलना । एक रात का ही मामला है , कट जाएगा ।

टीटी थोड़ी देर में आया और कहा , “मुझसे कहा गया है कि आपका ध्यान रखने को । अभी पोज़ीशन बहुत टाइट है । जैसे ही कुछ जगह बनती है मैं आता हूँ तब तक आप इनको अपने ही सीट पर बैठा लें । ”

मैंने कहा कि आप इनको जाने दे इलाहाबाद तक । इनको दरेन से न उतारे , अगर सीट नहीं भी है तो कोई बात नहीं । मेरी सीट पर बैठ कर चले जाएँगे ।

टीटी ने कहा , आप चिंता न करें । मैं गाज़ियाबाद के बाद कोशिश करूँगा नहीं तो अलीगढ़ तक तो पक्का सीट मिल जानी चाहिये ।

मैंने उसको शुक्रिया कहा और अमोघ से बात में मशगूल हो गया ।

यह अमोघ भी हिंदी माध्यम का था । वह बहुत परेशानी में जीवन जिया । वह अपनी कहानी सुनाने लगा ,

“ मेरा जीवन और मेरी सिविल सेवा की यात्रा बहुत उतार चढ़ाव भरी रही । इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद मैंने अपने नानाजी की जिद की वजह से इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया । स्नातक की परीक्षा पास करने तक मुझे सिविल सेवा के बारे पता भी कम था और जाने का कोई इरादा नहीं था । उस समय तक मुझे या तो अध्यापक या फिर आर्मी या पुलिस में जाने का मन था । इसके पश्चात मैं कुछ लोगों के संपर्क में आया जो सिविल सेवा की तैयारी कर रहे थे उनके माध्यम से मुझे इस सेवा की महत्ता और गौरव को समझने का मौका मिला । एक आग जल गई मेरे भीतर जो बुझने का नाम ही नहीं ले रही । अब सिविल सेवा मे जाना मेरे जीवन का एकमात्र ध्येय बन गया । मैंने अपनी आर्थिक स्थिति को देखते हुए पहले यूपीपीसीएस को देने का मन बनाया ।

एमए करने के बाद मैंने यूपीपीसीएस का पहला प्रयास किया , इस प्रयास में मैंने बहुत ज्यादा मेहनत की थी सो सफल होने की उम्मीद बहुत थी , इसका परिणाम आया और मैं सफल रहा पर मुझे पद छोटा ही मिला । मैं ARO का पद पाने में सफल रहा । इस सफलता से खुशी तो बहुत हुई पर संतुष्टि नहीं मिली , अगले साल के प्रयास में मेरा चयन असिस्टेंट कमिश्नर वाणिज्य कर के पद पर हुआ ।

इसी के साथ साथ मैंने यूपीएससी के लिए भी प्रयास किया पहले प्रयास में वहाँ पर अपना पहला इंटरव्यू दिया । उस इंटरव्यू पैनल के जो हेड थे उन्हें हिंदी कहने को ही आती थी और मुझे अंग्रेजी बिल्कुल ही नहीं आती थी । पहला ही प्रश्न मुझसे अंग्रेजी में पूछा गया पहले तो मैं पूरा ब्लैंक हो गया समझ ही नहीं आया कि क्या जवाब दूँ फिर जो समझ आया वो बताया खैर उसके बाद एक अनुवादक आये और उनके माध्यम से मेरा साक्षात्कार हुआ । इंटरव्यू क्या हुआ कैसा हुआ कुछ नहीं पता पर इंटरव्यू में इतने कम अंक आये की अंतिम चयन नहीं हो पाया ।

इसी बीच मे मेरा विवाह हो गया । अगले वर्ष यूपीएससी में मैं फिर साक्षात्कार तक पहुंचा पर मेरा भाग्य मेरे विपरीत चल रहा था । मेरा बोर्ड फिर वही पड़ा जो पिछले साल था । वही व्यक्ति चेयरमैन थे जो पिछले साल थे । उनको हिंदी नहीं आती और मुझको अंग्रेजी । इंटरव्यू बोर्ड के बारे में पता चलते ही

मेरा आत्मविश्वास चला गया । सब कुछ वही हुआ जो जो पिछले वर्ष हुआ । एक अनुवादक आया । वह जो भी समझाया हो मेरी बात को मुझे कुछ न पता । मेरे अंक इंटरव्यू में फिर बहुत कम आये और अंतिम चयन नहीं हो पाया ।

अब तक मेरा धैर्य जवाब दे चुका था मैंने मान लिया था कि मेरा चयन सिविल सेवा में नहीं हो सकता मैं उसके अयोग्य हूँ अब तक मेरी एक बेटी भी हो चुकी थी । पर मेरी पत्नी ने मेरा हौसला बढ़ाया और फिर से पूरी मेहनत से यूपीपीसीएस फिर दिया जिसमें मेरा चयन डिप्टी एसपी के लिए हुआ । यह एक सफलता अवश्य थी पर मेरा मन संतुष्ट नहीं था । एक जुनून था इस परीक्षा के द्वार को तोड़ने का । इसे भी मैंने ज्वाइन नहीं किया । मैंने इस वर्ष अपने जीवन की अंतिम परीक्षा मानते हुए फिर से सिविल सेवा की परीक्षा से दी । मैं प्रारम्भिक परीक्षा में सफल होने के बाद दिल्ली गया तैयारी के लिए पर एक सप्ताह में वापस घर आ गया । मैं किसी को राय नहीं दूँगा दिल्ली जाकर तैयारी करने को । मैं वापस आकर फिर घर पर ही रात-रात भर पढ़ाई करके मुख्य परीक्षा की तैयारी की, इस बार मेरा सब कुछ ठीक चला । मेरा इंटरव्यू मेरहरा साहब के बोर्ड में था । वह हिंदी समझते थे । मैं अपनी बात कह ले गया, यही मेरे लिये बहुत संतोष की बात है । मैंने अपनी पूरी पढ़ाई हिंदी माध्यम से की है और सारी परीक्षा भी हिंदी माध्यम से ही दी है ।

मेरे पिता सिपाही थे । उनकी मृत्यु बहुत पहले हो गई थी । उनकी जगह पुलिस में मेरी भर्ती हो रही थी । मेरे घर के हालात ठीक न थे, मेरे भाई सेना में सिपाही हो गये, घर के हालात ठीक करने के लिये । मैं अपने संकल्प के साथ था । यह मेरा एक मेरा जुनून है आईएएस बनना । मैं उसी जुनून का पीछा कर रहा । पता नहीं वह नसीब में है कि नहीं । “

मैं उसकी कहानी सुन रहा था, नमन करता उसकी संघर्ष शक्ति को । मैंने पूछा कि आप दिल्ली जाने के विरुद्ध क्यों हो

अमोघ- “वहाँ कुछ ख़ास नहीं होता । एक क्लास में 500 लोग बैठते हैं । सारा काम बाज़ारीकरण का है । पूरा मुखर्जी नगर एक मछली बाज़ार है । मेरी समझ यह है कि आप शांति से अपने शहर में पढ़ो, अपनों के बीच रहो और कठिन विश्लेषण परक पढ़ाई करो, बाकी ईश्वर के हाथ छोड़ दो । ”

वह मुझे प्रभावित कर गया । इतना बड़ा संघर्ष, इतनी जिजीविषा, इतना संकल्प । यह बात सच है, पृथकी वीरों से खाली नहीं है, इलाहाबाद की तो बिल्कुल ही नहीं ।

थोड़ी देर में टीटी आया । वह बोला कि सीट मिल गई । अमोघ धन्यवाद देकर चले गये । मैं सोचता रहा । मेरा मानस पटल इलाहाबाद की ओर । माँ से इतने दिन बाद मिलने की उत्सुकता । दिन तो शायद बहुत नहीं हुये पर ऐसा लग रहा जैसे एक अरसा गुजर गया । यह सोचते- सोचते मेरी आँख लग गई । मेरी आँख खुली तो मनौरी पार कर रही थी गाड़ी । मैंने खिड़की का शटर ऊपर कर दिया बमरौली, सूबेदार गंज दिखा इसी के आगे है निरंजन टाकीज, बिजली विभाग । गाड़ी प्लेटफ़र्म नंबर एक पर रुक गई । मैं सिविल लाइंस की तरफ वाले निकास की ओर बढ़ने लगा । मैं ब्रिज पर खड़ा हो गया और देखने लगा शहर

दूर प्लेटफ़र्म पर लिखा पीले रंग पर काले रंग से लिखा, “इलाहाबाद” ...

दूर दिख रहा बुर्ज पत्थर गिरिजा का ... रिक्षे वाले देख रहे आशा भरी निगाहों से आने वाली सवारी और आपस में ऊँगली दिखाकर कह रहे वह मेरी सवारी है ..

मेरे मन में भाव जगा .. मैं अगर इस शहर और संस्कार के मध्य जन्म न लेकर कहीं और जन्मा होता तो मैं आज वह नहीं होता जो आज मैं हूँ ।

शहर इलाहाबाद की वंदना में कुछ शब्द अन्तरात्मा में गूँजने लगे ...

ऐ शहर इलाहाबाद

क्या कहूँ

तुझ पर

बस इतना ही

कुरान की आयातों में तुम हो

श्लोकों में हो

हर जगह जहाँ भी देखता हूँ परेम, शौर्य, सौन्दर्य

भाषा में, साहित्य में तहज़ीब में

हर जगह दिखता है तू

किसी न किसी रूप में

पूछा था कभी किसी ने

क्या है यह ख़ास तेरे इस शहर में

मैंने कहा , पता नहीं
पर कुछ ख़ास तो है ही
जो आळादित करता है सबको
दुआओं से बना है यह
मंत्रों से अभिमंत्रित है
अमृत पान करके अमरत्व का प्रतीक है
हर्ष के अपरिग्रह का
आज़ाद के शौर्य का
अनगिनत प्रेरणादायी गाथाओं का
चश्मदीद गवाह है यह

दर्शन यहाँ पनपता है
महामना का हो या नेहरू का
या शंकराचार्य- कुमारिल शास्त्रार्थ का

हर शहर इलाहाबाद नहीं होता
हर शहर के पास तीन नदियों का संगम नहीं होता
इस शहर को
याद करना ही
एक इबादत
जहाँ से राम गुजरे हों
मर्यादा पुरुषोत्तम बनने के लिये ।

ऐ शहर तू एक ग़ज़ल है पलकों के साये में कर रहा एक तहज़ीब से मुहब्बत ।
यहाँ कुरान की आयतों और गीता के श्लोकों में मुहब्बत है । मैं कहीं भी चला
जाऊँ पर तुझे छोड़कर जाऊँगा यह ख़्याल दिल से निकाल दे । यह वह
ज़मीन है जहाँ खुदा का दीदार होता है ।

मैंने रिक्षेवाले से कहा चलो ... वह बोला कहाँ चलूँ भैया .. कोई पता दो

अब कौन सा पता दूँ अपने दर का जब शहर इलाहाबाद ही पूरा आज देखने का मन कर रहा ।

मैंने कहा रिक्षेवाले से , “सिविल साइंस के हनुमान मंदिर तक चलो बताता हूँ रास्ता आगे का । ”

जर्द पत्तों की ओट में सोये फूल जहाँ खुशबू के होंठ तितली ने छू लिये हैं इस एक शायर के नज्म ऐसे शहर में चहकते परिंदे पता नहीं कौन सा कलाम आज गा रहे पूरे बदन में रुहानियत छा गई ।

पैडल तेज चलाया उसने हनुमान मंदिर सिविल लाइन सामने से गुज़रा , उस पर बना भीष्म का रथ दिखा मुझे और उनका संकल्प उमड़ता मेरे अन्तर्रमन में ...

“आज जो हरिहिं न शस्त्र गहाऊँ
ताँ लाजाँ गंगा-जननी को, सांतनु-सुत न कहाऊँ
स्यंदन खंडि महारथ खंडौं, कपिध्वज सहित डुलाऊँ
इती न करो सपथ मोहिं हरि की, क्षतिरय-गतिहि न पाऊँ
पांडव-दल सन्मुख हाँ धाऊँ, सरिता रुधिर बहाऊँ
‘सूरदास’ रण-भूमि विजय बिनु, जियत न पीठ दिखाऊँ “

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 92

मैंने हनुमान मंदिर के पूरे परांगण को बाहर से नजर घुमाकर देखा , परणाम किया मन ही मन । रास्ते में सड़क पर हलवाई जलेबियाँ बना रहे थे । मैंने सोचा इतना दिन हो गया है घर चल रहा हूँ जलेबी ही ले लेता हूँ । रिक्षेवाले से कहा हीरा हलवाई की दुकान की तरफ मोड़ लो । उस हलवाई का अलग ही जलवा है वह उतनी ही जलेबी तलेगा जितने ग्राहक हों । वह जलेबी भी नंबर से देगा । वह पहले आने वाले को प्राथमिकता देगा । मैंने पहुँचते ही कहा दो किलो जलेबी दे दो । वह बोला , इंतज़ार करो । मैं देखने लगा जलेबियाँ जिस तरह घुमा- घुमा कर हलवाई बना रहा था । मुझे अपना मुक्तिबोध के बारे में तैयार दो चिपकाऊ - घुसेडू बनाया हुआ मसाला याद

आया , “ मुकितबोध की कवितायें देखने में जलेबी की तरह घुमावदार हैं पर हैं बहुत रसीली और मीठी । इनका लेखन प्याज़ की परतों की तरह है । परत दर परत खोलते जाओ । ”

उसने थोड़ी देर में जलेबियाँ तौल दी । मैं चल पड़ा उस पुराने से रिक्षे पर बैठ कर जो रिक्षा घंटी ऐसी आवाज़ चलने में ही कर देता है क्या ज़रूरत इसको घंटी की । मैं अपने पुराने मुहल्ले की बोसीदा गलियों में प्रवेश किया । इस मुहल्ले की सड़कों पर गाय का क़ब्ज़ा रहता है । यह गायें या तो धूमती रहेंगी या सड़क के ही बीच बैठ जाएँगी । मुन्नू दूधवाला सड़क पर ही सर पर साफ़ा बाँधे हाथ में दूध की बाल्टी लिये मिल गया , बोला कब आए मुन्ना भैया । यह छोटे मुहल्लों की ख़ास बात है जो जानते हैं वही पूछना भी है । अब रिक्षे पर अटैची लिये चला आ रहा तो ज़ाहिर सी बात है अभी ही आ रहा , कोई पहले तो आया नहीं । मैंने भी कहा , आ तो बहुत पहले गये थे आज अटैची लेने स्टेशन गया था , यह पीछे छूट गयी थी । इसको लेकर आ रहा ।

मुन्नू दूधवाला बोला , भैया कलेक्टर बनकर भी ऐसी ही मसखरी करना । हम मुन्नू एक साथ पढ़े थे पर मुन्नू भैंस - गाय के पैतृक व्यवसाय में लग गया ।

घर के सामने रिक्षा रुका । एक शोर होने लगा अंदर , मुन्ना आ गया । मेरी माँ दसियों चक्कर लगा चुकी थी दरवाजे का । यह हीरा हलवाई के कारण देर हो गई थी । उसको पता था मुझे जलेबी अच्छी लगती है , उसने मुहल्ले के हलवाई से मँगा कर पहले से ही रखा था । उसकी भावुकता चरम सीमा पर थी , वह रोने लगी । मैंने कहा क्या हुआ ? उसको देखकर मेरी बहन भी रोने लगी । मैंने बहन से कहा , तुझे याद है न वह राजकुमार की बात जब तुमने कहा था दीदी ऐसा पति मत लाकर देना मुझको , मैंने कहा था रथ पर चढ़कर आयेगा वह

दिल्ली में पता चला कि रथ पर अब कोई नहीं चढ़ता सब कारों पर चढ़ते हैं । अब उसमें परिवर्तन करना होगा ” वह कार पर चढ़कर आयेगा ”

वह शर्मा गई ।

मैंने माँ - पिता के पैर छुये , पिताजी के पास गया । वह बहुत खुश थे । मेरे जाने के बाद पूरे उनके आफिस में उनका मान बढ़ गया था , मेरी इस सफलता के कारण ।

मैंने नाश्ता किया । मेरा मन अगले साल की प्रारम्भिक परीक्षा के बारे में सोच रहा था ।

माँ ने पूछा, कैसा था शांति का घर, कैसा रहा प्रवास?

मैं - सब ठीक रहा / घर बहुत ही अच्छा है / आंटी का बेटा ऋषभ बहुत ही क्राबिल है / वह अमेरिका में बहुत पैसा कमाया / आंटी का बैंक एकाउंट डालर से भरा रहता है / वह आपको बहुत याद कर रही थी / उसने बताया कि नाना ने ही उनका भी विवाह करवाया था ।

माँ - हाँ, वह गरीब घर की थी / मेरे ही साथ रहती थी / बाबू ने ही जाकर विवाह भी तय करवाया और विवाह में जितना गल्ला- पाती लगा सब उन्होंने ही दिया ।

मैं - माँ, अब गरीबी अतीत की वस्तु है आंटी के लिये / वह खुद तो कमाती ही हैं, बेटा - बहू दोनों कामकाजी हैं / बेटा तो बहुत ही क्राबिल है / वह बड़े-बड़े कम्प्यूटर प्रोग्राम बनाता है और बहुत पैसा कमाता है / उसका विवाह जानती हो कहाँ हुआ है ?

माँ - कहाँ?

मैं - यह जो बोर्ड लगा है शहर में प्रचार का हर जगह शालिनी सीमेंट, शालिनी स्टील, शालिनी बिल्डिंग मटीरियल उसके मालिक की बेटी से / बेटी का ही नाम शालिनी है ।

माँ - यह लोग ब्राह्मण हैं?

मैं - नहीं माँ / यह आहूजा हैं / यह पंजाबी बनिये होते हैं ।

माँ - कुजात में शादी कर दिया ।

मैं - माँ, यह सब बात पुरानी है / यह सब अब कोई नहीं देखता / बस लड़का- लड़की का मन जहाँ मिल जाए वहाँ लोग कर देते हैं ।

माँ - ऐ लड़का-लड़की के मन मिलने वाले ऐसा कोई मन तुम मत मिला लेना / तुम्हारा रिजिल्ट आते ही विवाह कर दूँगी / तुम और बेवकूफ हो, शायरी - कविता में ही कोई तुमको पोट लेगा ।

मैं विवाह करके ही ट्रेनिंग पर भेजूँगी / तुम आजकल के लड़के संस्कार विहीन हो गये हो / बस मन मिला तो हो गया / यहाँ तुम लोगों का मन तो हर महीने मिलता ही रहता है / क्या गायरंटी इससे मिल गया तो बस इसी के साथ मिलेगा ।

मैं समझ गया कि मामला गलत रास्ते पर है / यह अब भाषण दे मारेगी, संस्कृति - सभ्यता- समाज पर / मैं अपने कमरे में जाकर कमरा ठीक करने लगा / माँ की आवाज़ आई, यह दूसरा सूटकेस किसका है / मेरे ध्यान से ही

उत्तर गया था । मैं कमरे से बाहर बरामदे में आया । मैंने कहा कि यह आंटी ने दिया है मुझको ।

माँ - यह क्या है ?

मैं देख लो खोलकर , मैंने तो देखा नहीं ।

माँ ने खोलकर देखा उसमें रेडीमेड पैंट , शर्ट, टाई , सुनहरे बटन , पार्कर की पेन पूरी पैक की हुई , एक काले डायल वाली सुंदर घड़ी, कई रुमाल से पूरी अटैची भरी थी । एक साड़ी भी थी माँ के लिये । मुझे एकाएक याद आया कि आंटी ने पूछा था , “तुम किस नंबर की क़मीज़ पहनते हो ” ।

मैंने कहा था , “मुझे नंबर का नहीं पता कभी रेडीमेड कपड़े नहीं पहने ” । मेरे न रहने पर आंटी ने मेरी साइज़ माप ली होगी , मेरे कपड़ों से ।

एक पूरी भीड़ घर के सब लोगों की । इस घर में रेडीमेड कपड़े पहली बार देखे गये । हम लोग कपड़े ख़रीद कर ही सिलाते थे । जब भी कपड़े ख़रीदे जाते थे कपड़ों के रंग और डिज़ाइन से ज्यादा उसके दाम पर ध्यान दिया जाता था ।

इतने मँहगें कपड़े और वह भी इतने ज्यादा....

अटैची भी मँहगी थी वीआईपी कंपनी की । मैंने तो कामचलाऊ अटैची ली थी , मुझे पता भी कुछ ख़ास न था अटैची के बारे में ।

वह लोग कपड़े देख रहे थे । मेरा छोटा भाई एकाध क़मीज़ हथियाने की फ़िराक़ में लग गया था ।

मैं वापस कमरे में आकर अपने प्रारम्भिक परीक्षा के नोट्स और किताबें सजाने लगा । मैं मन ही मन रणनीति अगले साल की बनाने लगा ।

मेरा मन एकाएक खटका आंटी की एक पंक्ति पर , ” इसको रास्ते में नहीं घर जाकर खोलना ... ”

आंटी इतनी हल्की महिला नहीं है कि वह इन कपड़ों के लिये ऐसा कहे । वह बहुत ही गंभीर बात करती है । ऐसा कुछ ज़रूर है जिसके कारण उसने ऐसा कहा होगा ।

मैंने कहा छोटी बहन से , ” गुड़िया कपड़े निकाल लो ज़रा वह अटैची देना । ”

उसने सारे कपड़े निकाल लिये और वह अटैची दे गई । मैं अटैची की जेब देखने लगा । मेरा अनुमान सही निकला । आंटी का एक पत्र था । वह जो न कह पाई मुझसे समय कम होने के कारण वह शायद दिल खोलकर कहना चाह रही थी

मैं पत्र खोलकर पढ़ने लगा ,

“ अनुराग मैं बहुत चाहती थी , और बात करना और कहना अपना दर्द पर समय ही कम था । तुम कम समय के लिये आये पर जितना भी समय था वह देवत्व से भरपूर था । एक रुहानियत थी इस घर में । मैं अब दर्द ब्याँ भी करना चाहूँ तो किससे करूँगी अब । मैं हँसू भी तो कौन सुनेगा मेरी हँसी को ।

मैं कई बार सोचती हूँ कि यह एक बहुत बड़ी काबिलियत एक बोझ बन जाती है , कई बार । यह ऋषभ थोड़ा कम काबिल होता तो बेहतर होता । यह तुम कह सकते हो कि एक माँ का स्वार्थ बोल रहा । यह शायद सच भी हो , पर क्या माँ को स्वार्थी होने का हक्क नहीं है । यह समाज क्यों हमेशा एक माँ से ही त्याग की उम्मीद रखता है ? एक पति,एक बेटी , एक बेटा त्याग क्यों नहीं कर सकता । मैं जिससे भी कहती हूँ , सब यही कहते हैं , बेटे के सुख में माँ का सुख है । माँ के सुख में बेटे का सुख क्यों नहीं है ?

यहाँ हर कोई पूसा में कहता है कि शांति कितनी भाग्यवान है । इसका बेटा विदेश से डालर पर डालर भेज रहा , यह जिम्मेदारियों से मुक्त हो गई । मैं क्या करूँ उन डालरों का जो बैंक के खातों में दर्ज एक निर्जीव अंकों से अधिक कुछ और नहीं है । मैं जिम्मेदारी चाहती हूँ । मैं उससे मुक्त नहीं होना चाहती हूँ । मेरा मायका छूट गया । मेरा ससुराल में कोई हक्क न रहा । वह चाहते थे मैं गाँव चलकर रहूँ अगर अपना हक्क चाहिये । न तो वह संभव था न ही मैं वह कर सकती थी । यह बच्चा था जिसका भविष्य मेरे हक्क से बड़ा था । मैंने सब त्याग दिया । अब सब लोग कह रहे यह हकीकत स्वीकार करो , वह वापस देश नहीं आएगा ।

मैं स्वीकार क्यों करूँ , यह हकीकत? मैं इंकार करती रहूँगी । यह हर औरत से कहा जाता है , तुझे इंकार नहीं करना है , पर इंकार करना एक हुनर है , यह हुनर औरत को सीखना होगा । यह बता अनुराग , यह हुनर कहाँ से आता है अपनी बात को बेफ़िकरी से कहने का , वक्त पर वह कह देने का जो

आत्मा चाह रही हो कहना । मुझे वह हुनर चाहिये । मुझसे कोई कुछ भी कहें
मैं यही कहूँगी मुझे बच्चा अपना वापस देश में चाहिये ।

अनुराग, वह कम काबिल हुआ होता तो आज मेरे पास होता । मुझे
क्राबिलियत से डर लगता है । यह बड़ी क्राबिलियत जो सबका ध्येय है जो
मेरा भी कभी था अब बहुत दर्द देती है । यहाँ कोई नहीं समझता एक माँ का
दर्द । एक औरत होना ही एक सज़ा हो गई है ।

तुम तो राम कथा के जानकार हो, दशरथ के अन्याय पर कोई नहीं बोलता ।
तुम भी कुछ नहीं कहे मुझको बताते वक्त । यह दशरथ को अधिकार किसने
दिया बिना कौशल्या से पूछे राम को वनगमन का आदेश दे । कैकेयी ने दो
वरदान माँगे थे । भरत को राज्य और राम को वन । यह पहला तो ठीक था ।
यह दशरथ कर सकते थे पर यह दूसरा ? वह कैसे कर सकते थे ? उनको
कहना चाहिये था कैकेयी से, यह मैं कौशल्या से पूछ कर ही निर्णय ले
सकता हूँ । मेरे से ज्यादा अधिकार उस पर उसका है जिसके खून से,
जिसके दर्द से, जिसकी जीवन पाकर जन्मा है वह । राम ने भी
कुछ न कहा माँ के दर्द पर । मर्यादा पुरुषोत्तम से यह सवाल कौन पूछेगा, “
पिता की कीर्ति बहुत बड़ी वस्तु है और माँ के दर्द का कोई मोल नहीं ? ”

यह पूरा दर्शन, पूरा समाज, यह पूरा लेखन पुरुष मानसिकता से भरा है ।
तुमने ही बताया था मुझको जो भीष्म ने दरौपदी से उसके वस्तर हरण पर
सभा में उसके ही प्रश्न पर कहा था, “ तुम्हारे प्रश्न में धर्म का सूक्ष्म
विवेचन निहित है इसलिये मैं विवेचना नहीं कर सकता क्योंकि दास होकर भी
स्त्री पति की ही संपत्ति है । यह युधिष्ठिर जुरँ में स्वयं को हारकर दास
होकर भी पत्नी का स्वामी तो होगा ही । ”

यहाँ धर्म का मर्म और विवेचन तलाशा जा रहा जब एक स्त्री का सत्त्व,
सम्मान और स्वाभिमान सरे आम लूटा जा रहा ।

यह विवाह एक संस्कार है । यह दो परिवारों का मेल है । यह जो रीति- रिवाज
लड़के वाले या लड़की वाले करते हैं वह आपसी जुड़ाव को मज़बूत करने की
एक प्रक्रिया है जो दो परिवारों को एक करती है । मेरे साथ वह भी न हुआ
। विवाह के बाद आहुजा साहब कभी आये ही नहीं । यह भी हो सकता है कि
मैं एक गरीब बेसहारा हूँ मुझसे एक व्यापार में माहिर व्यक्ति क्यों संबंध रखेगा
। हम दोनों की सोच में ही एक मूलभूत अंतर है, उनके लिये जीवन नफ़े-
नुक़सान का सौदा है मेरे लिये भावनाओं का एक सहेजा हुआ बाग । यह भी मैं

जानती हूँ देर- सबेर ऋषभ उनका काम सम्भालेगा ही । ऋषभ भी एक व्यापारी ही हो चुका है । व्यापार या व्यापारी की परिभाषा है क्या?

“धन कमाने की अंधी दौड़ में लग जाना ।

ऋषभ- शालिनी उसमें लग ही गये ही है । अगर लगेगा कम्प्यूटर की दौड़ से सीमेंट- सरिया की बेहतर है तो इसमें लिप्त हो जाएँगे ।

उमिला से कहना तुमने एक भविष्य को जन्म दिया है, अपने ही लिये नहीं बहुतों के लिये

जल्दी आना .. बहुत इंतज़ार न कराना ।”

मैं पत्र पढ़कर यह अनुमान लगा सकता था वह कितना रोयी होगी, यह लिखते समय। आँसुओं को जब्त करने का मतलब यह नहीं है कि आँसू उमड़े नहीं हैं, इसका मतलब सिर्फ़ यह है कि उसने आँसुओं से भी कहा है तू मेरी मर्जी से ही कपोलों पर आ ।

वह दिन के माथे पर जो सूरज लिख रही थी उसको क्या पता यह उसको उजाला न देगा ।

उसके अश्क- प्रवाह बेसबब नहीं है कुछ तो अंदर लगातार पिघला ही रहा है । जो उसका था वह तो पेड़ से उड़ गया पाले हुये गैर के से कह रही मेरी भी छत पर तू उतर जा । जब आफ़ताब जंगल की रौशनी न दे तब जुगनुओं के परों से लिखे जरीदे से ही एक रौशनी की उमीद करना कौन सा जुर्म है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 93

मैंने अपने कमरे को लगभग ठीक कर लिया । मैंने सारे मेंस और इंटरव्यू की पढ़ने की सामग्री को सम्भाल कर रख दिया । मैंने इतिहास की सारी किताबें निकाल ली । मैं एनसीआरटी, रोमिला थापर, ए एल बाशम, बिपिन चन्द्रा, सुमित सरकार, मजूमदार राय चौधरी, वी के अग्निहोत्री पर ही ज्यादा निर्भर करता था, प्रारम्भिक परीक्षा के लिये । यह किताबें कई बार पढ़ीं थीं इसलिये पन्ना पलटते ही आत्म विश्वास आने लगा । मेरा मन पढ़ने का कर

नहीं रहा था , सोचा आज का दिन गप मार लेता हूँ , जो मेरा सबसे पसंदीदा कार्य है । कल से शुरू करता हूँ पढ़ना ।

मैंने खाना खाया , एक - दो दिन का पेपर पढ़ा थोड़ा सा । इसके बाद सोचा चलूँ यूनिवर्सिटी रोड की हवा ले लूँ । मैंने साइकिल निकाली । वह भी बेसहारा सी पड़ी थी बहुत दिनों से । मैंने देखा हवा ही नहीं टायर में । मेरी जो आदत है वही मैं करने लगा । मैं अपने छोटे भाई पर चीखने लगा ,

“ बेवकूफ साइकिल में हवा नहीं भरा सकता था । तुझे पता था कि आज मैं आऊँगा और कहीं जाना ही होगा । पर किसी को कुछ पड़ी ही नहीं है । ”

कोई और दिन होता तो शायद वह लड़ जाता पर आज की शाम वह नई रेडीमेड ब्रांडेड कंपनी की कमीज़ पहन कर घूमना चाहता था । वह कमीज़ के लिये माँ से कह चुका था । माँ ने भी डाट दिया था यह कहकर , “पहले इस तरह कमीज़ पहनने लायक बनो । अरमान आसमानों के करम केथौं लायक नहीं” ।

मेरी नाराज़गी के बाद उसको लगा अब तो कमीज़ गई हलाँकि वह मेरी सदाशयता जानता था कि मैं दे ही दूँगा अगर वह ज़िद करेगा । पर यहाँ तो सारा खेल ही बिगड़ गया । वह कुछ बोलता इतने में अशोक उपाध्याय आ गये । वह बोलने में माहिर थे । वह सिविल सेवा के द्वार पर दस्तक दे रहे थे । वह मुझसे जूनियर थे । वह आते ही बोले , “ क्या हुआ सर ?”

मैं उनको देखकर शांत हो गया । मैंने कहा कुछ नहीं । उसको जीवन दान मिल गया । मैं उनसे बात करने लगा , और वह साइकिल लेकर चला गया हवा भरवाने । मैंने थोड़ी देर बात की और इतने में वह साइकिल में हवा भरा कर आ गया । मैं जैसे ही चलने लगा वह बोला , ” भैया एक कमीज़ मैं ले लूँ ? ” मेरा गुस्सा कम हो गया था , मैंने कहा ले लो । वह बिजली की रफ्तार से घर के अंदर दौड़ा कमीज़ पर आधिपत्य के लिये ।

मैं साइकिल से पहुँचा यूनिवर्सिटी रोड । यह यूनिवर्सिटी रोड एक सड़क नहीं एक पूरा जीवन है । यहीं पर कभी निराला और फ़िराक़ भी साथ टहला करते थे । यहाँ के यूनियन हाल से पता नहीं कितनी क्रान्ति की मशालें जली थीं । यहीं नेहरू भी आया करते थे छात्रों से संवाद करने । यहीं के यूनियन हाल से सटा जीएन झा होस्टल उसके सामने पीसी बनर्जी होस्टल । यूनियन हाल से एक सीधी सड़क सर सुंदर लाल होस्टल होती हुई आगे बढ़ती हुई किताबों की कई दुकानों , जिसमें परयाग पुस्तक सदन सबसे बड़ी , से बात करते हुये एक चौराहे तक पहुँचती है । इसी रोड पर आधे दाम पर बेचते पुरानी किताबों के दुकानदार अपनी जीविका तलाश करते हुये । इस सड़क के चौराहे से

दायें मुड़ो तो नेतराम कचौड़ी वाले की दुकान , बायें मुड़ो तो कर्नल गंज चौराहा । सड़क पर चाय बेचते दुकानदार और छात्रों का हुजूम । सीधे चलते जाओ तो दिखेगा विजयनगरम हाल का महान गुम्बद , साइंस फ़ैकल्टी और ज्ञान एवम महानता के प्रतिमान सर एण्ड इंजिनियरिंग के नाम पर बना होस्टल ।

इस रोड पर कभी भीड़ कभी कम होती ही नहीं होती । रात की सियाही में ख्वाबों की फ़ौज इन सड़कों पर आपस में संवाद करते हुये इंतज़ार में उस नींद के जिसके बाद इनको आशियाना मिलेगा । यह सारे ख्वाब एक ही माँ के एक ही तरह के बच्चों की तरह हर आँखों में तक़रीबन एक से ही बस फ़र्क़ उन ख्वाबों को हासिल करने के तरीके का है ।

मैंने साइकिल घुमायी पूरे सड़क पर । एक चक्कर लगाया , कई हाँथ उठ गये परिचय के । मैंने साइकिल कोने पर लगायी । मैं जैसे ही खड़ा हुआ मेरे पास लोग आने लगे वह भी जो अपरिचित थे । मुझे आज कुछ खुदा होने का एहसास होने लगा । मेरे पीछे मेरी यशगाथाएँ फैल चुकी थीं । इसमें एक महान कारण चिंतन सर थे । वह पुलिस की नौकरी में थे इसलिये मेंस और इंटरव्यू में पढ़ ठीक से न पाये थे । उन्होंने मुझसे मदद ली थी और मेरा यशगान भी किया । पहली ही बार में परीक्षा के अंतिम द्वार पर दस्तक देने की यशगाथा थोड़ी अलग होती है ।

मेरे इर्द- गिर्द जमा लोग पूछने लगे कि इंटरव्यू कैसा हुआ । मैं भी बताया जैसा मन किया । यहाँ झूठ बोलना ज़रूरी है । यह न बोला तब आप इलाहाबाद के सिविल सेवा अभ्यार्थी नहीं हो ।

मैं अपने झूठ पर आ गया , “ यार कुछ खास तो हुआ नहीं । इंटरव्यू पूरा बर्बाद हो गया । मेंस तो तुम जानते हो कुछ खास पढ़ा नहीं था पर जब क्रिस्मस साथ हो तो गधा सरीखा आदमी भी पहलवान हो ही जाता है । बस हो गया । यह होना जाना कुछ है नहीं इस साल , बस टाइम पास है । ”

एक - पर सर यहाँ तो बहुत हल्ला है कि आप बदरी सर , चिंतन सर , जगदंबा मौर्या सर पर भी भारी हैं वह भी पहले ही परयास में ।

अब क्या था । मैं चने के झाड़ पर । मेरे चेहरे से प्रसन्नता कोई भी देख सकता था ।

मैं - वह सब जमे- जमाये खिलाड़ी हैं , मेरा कोई उनसे क्या मुकाबला ? मैं तो बस तकदीर के सहारे चल रहा ।

दूसरा - सर उनका भाई उमाकांत बोला कि क्या बोलते हैं अनुराग सर । सब रटा है उनको । हमरे भैयऊ का समय गवा अब । अनुराग सर का समय है ।

मैं और सुनना चाह रहा था यह । मन कर रहा था बस यही सुनूँ ।

मैं - कब कहा था ?

दूसरा - सर वह डायमंड जुबली में परितोष सर के रूम में कहें थे ।

मैं - परितोष कौन ? वह राजनीति शास्त्र वाला ?

दूसरा - हाँ सर ।

मैं - कमरा नंबर कौन सा है उसका ?

दूसरा - 32 नंबर है । अभी मैं आ रहा था तब तो मजलिस लगी थी कमरे में ।

मैं चाय खेत्तम करने की जल्दी में । खेत्तम किया और सीधा डीजे होस्टल.....कारण सिर्फ़ एक अपनी तारीफ सुनना ।

परितोष मेरे ही साथ के थे । मेरी पटती कम लोगों से थी या यूँ कहो किसी से भी नहीं पटती थी । मेरी लड़ाई कुछ ही दिन में हो ही जाती थी । इसका एक कारण यह था कि मैं सबको स्वार्थी घोषित कर देता था जबकि मैं भी कम नहीं था । मैं मुँहफट भी था , जो मन आया सामने कह दिया और पीठ

पीछे तो उसका कोई करम ही नहीं छोड़ता था । मुझसे दुश्मनी बहुत मँगी पड़ती थी क्योंकि मैं उस आदमी को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ता था । परितोष भी इसी लपेटे में कभी आ गये थे । पर आज मैं खुद चलकर उनके कमरे में गया और पहुँचते ही कहा , “ भाई परितोष बहुत ऐहसान आपका । आपने जो बताया था ज्ञान भारती पर उस दिन चर्चा में वह बहुत काम आया , इंटरव्यू में वही सवाल पूछ लिया और जैसे ही सवाल पूछा मैंने आपको धन्यवाद दिया । जो आपने कहा वही मैंने बाँच दिया । ”

परितोष झूठ के पुलिंदे पर परसन्न हो गये । और कहा , वह ज्ञान भारती पर जो दोनों विश्व युद्धों में संबंध हम लोग बात किये थे ।

मैं - हम लोग बात नहीं किये थे , आपने बताया था ।

परितोष- वही पूछ लिया क्या ?

मैं - एकदम वही ।

परितोष- फिर क्या किया ?

मैं - वही ठोक दिया जो तुमने कहा था ।

याद है वह ?

तुमने कहा था कि यह जरूर बताना कि परिस्थितियों से ज्यादा विजेताओं की नियति ज़िम्मेदार थी द्वितीय विश्व युद्ध के लिये । हिटलर को जिस जर्मनी ने जन्म दिया प्रथम विश्व युद्ध के बाद उसी जर्मनी ने शांति के लिये नोबेल पुरस्कार विजेता बिली

ब्रांट को जन्म दिया द्वितीय विश्व युद्ध के बाद । इतिहास से सीख लेनी चाहिये और विजय में उन्माद नहीं उदारता होनी चाहिये ।

परितोष बोले , गुरु छा गये , मैंने कहा , मैं नहीं तुम छा गये । यह जवाब पूरे इंटरव्यू की जान है ।

यार , मैंने दिल्ली से ही तय किया था कि इलाहाबाद पहुँचते ही चलकर व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद दूँगा तुमको । क्या पता यही सवाल फ़ैसला कर दे पर इंटरव्यू बहुत जमा नहीं बस कुछ ही सवाल ठीक हुये और यह तो उद्घारक सवाल था ।

परितोष बहुत प्रसन्न हुये । वह वहाँ बैठे लोगों से मेरा परिचय कराये । यह भी कहा कि बहुत प्रतिभाशाली तो हैं ही । एक खास बात यह है कि चिंतन सर को इस बार पढ़ायें हैं और सर भी कहते हैं कि ग़ज़ब की पकड़ है अनुराग की खासकर साहित्य, आधुनिक इतिहास और संविधान पर ।

चिंतन सर का नाम आते ही लोग सावधान हो गये । उनका नाम आते ही संजीदगी आ गई । मैंने अपनी बल भर तारीफ़ सुनी । मेरा पेट ही नहीं भर रहा था । उसके बाद चाय- वाय पिया , झूठ भरपूर बोला और उसके कमरे से निकलते कहा मन में , “ बेवकूफ़ कहीं का ” और मनचाही मुस्कान के साथ पुरानी साइकिल उठायी चल दिया घर की ओर ।

मैं घर पहुँचा तो वहाँ पर दाढ़ आया हुआ था । यह एक दूसरा जोकर है । यह मेरे मामा का लड़का । उसको देखकर ही मन प्रसन्न हो गया कि आज की शाम बेहतरीन होगी । यह मेरी माँ का खबरी कुछ खबर लाया होगा ।

मेरे को देखते ही दाढ़ बोला ।

मुन्ना भैया , “आपई के धूम बा हर ओर “ ।

मैंने कहा , सुना तुम कह रहे थे कि मुन्ना का परी ही नहीं हुआ वह फ़ोकस बाँध रहे पास होने का ।

दादू - “देखू बुआ । हमहीं समाचार दिहा अब हमही पर लांछन । चाचा कहत रहेन सबही से । हम तो कहा चाचा से कि मुन्ना बहुत खुश रहा जिस दिन रिज़िल्ट निकला रहा । और इहउ हमही बताये रहे कि चाचा कहे रहेन ऊ मारीच के तरह का मायावी है । उसके मन में की बात केऊ न पहिचान पाये । वह पास- वास कुछ नहीं किया है । ”

मैं - दादू भैया , हम तो ऐसे ही कह रहे थे । और बताओ क्या हाल है ।

दादू - हमार तौ जानै निकाल लेहे ।

शाम को दादू की जासूसी चालू हो गई । वह लगा क्रिस्सा सुनाने ।

कल हम आये चाचा के यहाँ । चाचा ने पूछा, मुन्ना कब आएगा दिल्ली से । हमको पता था नहीं । हम बोले , आना चाहिये आज- कल में , कल मैं जाऊँगा बुआ के यहाँ । वहाँ बात चल रही थी हरिकेस मामा के बेटी की मुन्ना से विवाह की । चाची कह रहीं थी , यह इज्ज़त की बात है । यह विवाह होना चाहिये । हम हरिकेस को जबान दे चुके हैं । अब हरिकेस को कहाँ पता कि आपकी और उर्मिला की नहीं बनती बाहर तो सबको लगता ही है , भांजा इनका है जो चाहेंगे वह हो जाएगा ।

चाचा बोले , मैं क्या कर लूँ अगर वह नहीं मानेंगे । अब वह लड़का आगे बढ़ गया है । हरिकेस पहले तो नहीं कहे । एकाध साल पहले कहे होते तब हो जाता । वह भी तो मेंस के रिज़िल्ट के बाद से ही कहे । अब ऐसा तो है नहीं हरिकेस ही सबसे चालू हैं , और बाक़ी जनता भोली है । वह उर्मिला है कोई आसान चीज़ नहीं है ।

चाचा बोले , “ दादू कोई रास्ता बताओ कैसे यह काम सधे ।

दादू - चाचा , हचक के पैसा दे दें हरिकेस मामा काम बन जाए ।

चाची - का चाही उर्मिला के । सब हरिकेस देगा ।

चाचा - दादू , हचक के पैसे पर काम हो जाएगा ?

दादू - चाचा , रूपिया की माई पहाड़ चढ़ै । एक बार रूपिया दिखा सब काम बन जाए ।

चाचा - काम बनाओ । पैसे से बात नहीं रुकेगी ।

चाची - शर्मा जी के पास कुछ है नहीं । हरिकेस शादी में तो सब दे हीं साथ ही यह कह दें , शर्मा जी आपकी बेटी की शादी भी हमारा ज़िम्मा । तब शायद बात बन जाए ।

दादू - अरे चाचा उनको सरकार का प्रोजेक्ट ही तो गोल करना है । एकाध और गोल कर दें । सुना है रूपया ख़ज़ाना से निकाल लेते हैं सड़क- पुल के लिये फिर आधा तीहा बनाते हैं । ऐसे ही दो- चार और प्रोजेक्ट गोल कर दें । उनकर बनायी सड़क एकौ बरसात झेल नाहीं पावत । हरिकेस मामा हैं बहुत जुगाड़ । वह सारा विभाग पटाये हैं और बोलने में माहिर हैं । उनका काम बन सकता है बस रूपिया बहा दे , बहती रूपिया में सब लुब्ध जाएँगे ।

चाची - दादू ऐसा कह मत देना कहीं और । हरिकेस ईमानदार सरीखा आदमी है । वह आटे में नमक इतना पैसा लेता है । वह किसी का हक्क नहीं मारता । वह बहुत दानदाता है । हमारी बेटी की शादी में खुले दिल से खर्चा किया । मुझसे बोला , बहिन नेवता - हकार अपनी जगह आप जो कहो वह कर देते हैं । तुम्हारे चाचा कहे स्कूटर दे दो अभी बाद में मैं इसका हिसाब करूँगा । वह बोला , जीजा इतनी हैसियत मेरी हो गई है हम आपसे हिसाब करेंगे । बजाज स्कूटर मिलती न थी उस समय , वह चमन लाल दलाल के यहाँ गये ब्लैक में बजाज स्कूटर ले आकर खड़ी कर दिया । एक दिन वह और एक आज का दिन , कभी ज़िकर नहीं किया । कभी कहो भी तो कहता है , दीदी हमका नर्क में भेजोगी क्या?

उर्मिला के भाग खुल जाएँगे ऐसा समधियाना पाकर ।

दादू - चाची दुई बिटिया त हङ्गन उनके । सब रहि इही जाए । वरासत मिल रही । जितना भी होगा सब होगा इनका ही ।

चाची - कौन समझाए उर्मिला को । उर्मिला अपने बाबू की बात बहुत सुनती है । उनके लिये लाठी लेकर खड़ी हो जाती है । तुम्हारे चाचा और उर्मिला का मतभेद भी इसीलिये है कि वह चाहती है कि बाबू से कोई कुछ न कहे । वह ब्याह कर चली गई है पर अभी भी घर में राजनीति से बाज नहीं आती । दादू एक बार बाबू से बात छेड़ो । वह कह देंगे तब बात बनने की उम्मीद बढ़ जाएगी ।

यह शर्मा जी तो सीधे हैं । यह उर्मिला ही तेज है । यह भी ईश्वर की माया है , हर होशियार लड़की को बेवकूफ पति ही मिलता है ।

दादू माँ से बोला , बुआ इतना चाची के कहते ही महाभारत छिड़ गया ।

चाचा बोले , क्या कहा ? मैं बेवकूफ हूँ

चाची - यह कब कहा मैंने ?

चाचा -अभी- अभी कहा न , हर होशियार लड़की को बेवकूफ पति मिलता है / तुम सबसे कहती हो , मैं बहुत होशियार हूँ । मतलब मैं बेवकूफ हुआ ।

झगड़ा बढ़ि गवा बुआ .. हम ऊपर बाबा भैया के पास चले गये सोने । काफ़ी देर तक आवाज़ आती रही ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 94

यह शहर और मेरे घर का माहौल एक दबाव लगातार मेरे ऊपर बना रहा था । एक आशा का महल कहीं ताश के पत्तों की तरह ढह न जाए । मुझे यह यूनिवर्सिटी रोड पर मेरी बढ़ता नाम , घर में सबकी आशाएँ और अधिक चिंतित कर रही थीं । मेरे इंटरव्यू की मेरी कमियाँ एक दिव्यांग बच्चे की तरह , मुझे परेशान करती रहती हैं , जो किसी से कहता नहीं पर चिंतित तो रहता ही है यह सोचकर मेरी यह कमियाँ मेरे हाँसलों पर भारी न पड़ जाए ।

वह मेरा कमल व्यूह का पकड़ा जाना और सात राज्यों का नाम न बता पाना बहुत परेशान कर रहा था । मेरे पास कोई गणित ऐसा विषय तो है नहीं जैसा आईआईटी वालों के पास होता है । मेरा पेपर कैसा हुआ मैं कुछ कह नहीं सकता । इन हयुमनिटीस के विषयों में कुछ पता नहीं चलता , कैसा हुआ और क्या होगा । हिंदी का दूसरा पेपर किया तो ठीक है पर किसके हाथ कापी जाएगी , उसकी सोच कैसी हो कुछ पता नहीं । यह एक मस्तिष्क के एप्लिकेशन का पेपर है । यह मेरा मौलिक रूप से लिखने का प्रयास कैसे उसको अपील करेगा , यह कहा नहीं जा सकता । यहाँ विचारधाराओं का टकराव है । अब “राम की शक्तिपूजा” और “सरोज स्मृति” में कौन सी कविता बेहतर है की तुलना वाला सवाल तो बहुत ही पेचीदा था । यह कैसे कहा जा सकता है , कौन सी बेहतर है ? मैं कुछ भी लिख दूँ तो जो पेपर जाँच रहा है उसका भी दृष्टिकोण मेरा ही हो , यह कैसे सुनिश्चित हो सकता है । मैंने लिख दिया , “एक में भावना का प्राधान्य है तो दूसरे में राष्ट्रीय चेतना का , एक में शिल्प का नवीन प्रयोग है तो दूसरे में भावना शिल्प से बेपरवाह है , एक में व्यक्ति का भोगा हुआ यथार्थ है तो दूसरे में राष्ट्र की चिंता । “ पर यह मेरा कहना परीक्षक को प्रभावित कर जाएगा इसका निश्चय कैसे हो सकता है ?

इतिहास के पहले पेपर में सल्तनत का का राजत्व सिद्धांत आया था । मुझे ठीक से बलबन का ही आता था बाकी तो बस ऐसे ही जोड़ - जाड़ के लिख दिया था । जीएस में भारत की मौद्रिक नीति आयी थी । वह में जानता भी अच्छे से था पर इटके में आर्थिक नीति पढ़ गया । वह सवाल बेहतर न हुआ । मैं जल्दबाज़ी में बहुत गलतियाँ करता हूँ । यह मेरी कमी मुझे ख़त्म कर सकती है ।

मेरी जो छवि लगातार बनती जा रही थी उसमें तो मैं अब कुछ कर नहीं सकता था , पर यह छवि एक ज़िम्मेदारी का एहसास करा रही , बन रहें मानदंडों पर खरा उत्तरने की । यह चिंतन सर ने हर एक से कह दिया , यह शेर और सांड की लड़ाई है । यह जो शेर बने घूम रहे इलाहाबाद में उसको यह सांड मार गिरायेगा , इसका सधा सींग का निशाना शेर को कई गज दूर गिरायेगा ।

यह सिविल सेवा का इलाहाबाद का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ बात फैलते देर नहीं लगती , जो भी चाहो फैल जाएगा । यहाँ की अफ़वाहों के पास पाँव ज्यादा होते हैं । वहाँ परितोष भी खुश हो गया था मेरे जाने से । वह भी उस फ़र्ज़ी इंटरव्यू के सवाल से करेडिट ले रहा था । इन सबके बीच मैं अनिश्चितता से परेशान था । मैं रात सो नहीं पाया , ठीक से । मैं सुबह उठा , पूरा दिन पढ़ने की कोशिश की पर मेरा मन न लगा । मैंने दिन में सोचा किसी से पूछ कि अगर इंटरव्यू बोर्ड जान गया है मेरी चालबाज़ी तो कहीं 30/40 नंबर तो नहीं दे देगा , मेरे छल को पकड़ने के बाद । मेरे पास एक समस्या मैं पूछ किससे ? मैंने अगर किसी को बताया तो कल पूरे इलाहाबाद में हल्ला । मेरे पास दुश्मन बनाने की महारत है । मेरा हर डेलीगेसी- छात्रावास में चार गाली का बैलेंस रहता है , अब तो और बढ़ गया होगा इस सफलता के बाद । यह बहुत लोग कह रहे , वह इतना काबिल तो न था पता नहीं कैसे मेंस पास कर गया । कुछ लोग यह कह रहे , अगर अनुराग मेंस पास कर गया तब कोई भी कर सकता है । यहाँ तक लोग कह रहे कि निराश न हो , देखो वह बेवकूफ अनुराग पास कर गया तब तो तुम हो ही सकते हैं । यह बस समय का चक्र है थोड़ा धैर्य रखो ।

इन सारे मत- मतान्तर, ईर्ष्या- जलन- डाह , परशंसा- सहानुभूति के बीच अगर मैंने कमल व्यूह का ज़िकर कर दिया तो एक ब्रह्मास्त्र मैंने अपने ही विरुद्ध सबके हाथ में दे दिया । बदरी सर बहुत सहेज के कहे हैं कि कानों- कान किसी को खबर मत होने देना अपने चाल की । यह अगर किसी के हाथ लग गया तब वह शिकायत कर देगा और हम लोग जेल चले जायेंगे और जेल में बहुत तकलीफ होती है । यह सोचकर ही कि “जेल में बहुत तकलीफ होती है ” , और मन डरने लगा ।

मैंने जैसे- तैसे यह रात काटी । मैं सुबह उठा और मेरे आँख से ही कोई अंदाज़ा लगा सकता था कि रात कैसी बीती होगी ।

माँ ने कहा बत्ती तो बंद कर दी थी मैंने जब तुम लेटे थे फिर कब उठ गये पढ़ने? वह बिजली का बिल कम आये इसलिये घर में धूम- धूमकर बिजली बंद करती रहती थी ।

मैंने कोई जवाब न दिया । वह चाय लेकर आई और बोली क्या हुआ ?

क्या इंटरव्यू अच्छा नहीं हुआ ?

यह माएँ सब जानती हैं, भले न बताएँ किसी को । वह बोली ईश्वर बहुत कृपालु है, अगर वह नहीं लग रहा तब भी । वह जो करेगा ठीक ही करेगा । अब जो होनी है वह तो होकर रहेगी, अगले साल की कोशिश करो । इसके भूल जाओ । यह तो बस जानना बाकी है, जो होना है वह तो हो चुका है ।

मैंने कहा, नहीं इंटरव्यू का मुद्दा नहीं है । यह चिंता तो होती ही है सोचकर कि आधे से ज्यादा लोग तो निराश होंगे ही यहाँ पर पहुँचकर भी । उनमें मैं भी हो सकता हूँ । यह परीक्षा अब एक दूसरे स्तर पर है । यहाँ अब हर कोई मज़बूत दावेदार है । दिल्ली में मैंने और बड़े- बड़े दावेदार देखे हैं, जो इस शहर के अभ्यार्थियों की तुलना में एक बेहतर दावेदारी पेश कर रहे ।

माँ - किसी को नहीं पता किसके भाग्य में क्या लिखा है । यह सब भूलकर पढ़ो अगले साल के लिये । यह तुम्हारा तो पहला ही प्रयास है लोग तो कई सालों से लगे हैं ।

मैं - हाँ, वह तो है । अब जो होगा देखा जाएगा ।

माँ - तू भी नास्तिक बना है । न कोई पूजा न वरत न उपवास, कुछ तो किया कर ।

मैं चुप रहा । मैंने कमरे आकर सोचा, सत्य प्रकाश मिश्र सर से बात करता हूँ । वह गम्भीर व्यक्ति हैं । वह किसी से कुछ न कहेंगे ।

मैं शाम को सर के घर गया । वह कमरे से अपने कुछ देर बाद आये बाहर के कमरे में । मुझको देखते ही बोले, अरे अनुराग तुम ... मुझसे कहा कोई आया है । तुम्हारा नाम नहीं बताया ।

मैंने सर के पैर छुये और कहा कि सर आशीर्वाद दें ।

सर - इंटरव्यू कैसा हुआ ?

मैं - सर कुछ खास नहीं हुआ ।

सर - क्या ख्राब हो गया ?

मैंने कमल व्यूह वाली बात और उत्तर पूर्व के सात राज्य न बता पाने वाली बात बतायी ।

सर - यह कौन सी बात है जो परेशान कर रही । यह तो उसकी जिम्मेदारी है क्या पूछे और क्या न पूछे । तुम कह दो हमसे ककहरा पूछो । वह न पूछे । अगर कहकरा पूछ रहे वह तब तो उसका उत्तरदायित्व है, इससे तुमसे क्या मतलब । यह जवाब में सवाल डालना बहुत पुरानी परम्परा है । यह हर इंटरव्यू में होता है । यह वाइवा में भी एमए के हर साल होता ही है । इसमें कौन सी खास बात है । यह जो हाबी भरी जाती है आपके फार्म में यह भी वही है कि आप मुझसे इसमें से पूछो । यहाँ उत्तर से ज्यादा उत्तर देने का तरीका जाँचना होता है ।

किसका बोर्ड था ?

मैं - मेरा सर का ।

सर - वह भारतीय विदेश सेवा वाला । वह पूर्व विदेश सचिव जो थे ?

मैं - जी सर

सर - वह हिंदी पूछा होगा ।

मैं - आपको कैसे पता ?

सर - वह फर्जी साहित्यकार है । वह हिंदी में कुछ लिखता भी है । मुझसे एक गोष्ठी में मिला था । वह एक - दो किताब भी लिखा है । उसकी किताब में कविता से ज्यादा उसकी फोटो होती है । यह जो बाबू साहित्यकार बन जाते हैं उनको साहित्य की परम्परा का अता पता होता नहीं । वह हर जगह अपनी फोटो छापेंगे ।

यह लोग एक प्रोफेशनल कैमरामैन लगाकर फोटो खिचवायेंगे, अपनी पुरानी फोटो को छापेंगे, परिवार की छाप देंगे । यह लेखन से ज्यादा फोटो की छपाई में रुचि रखते हैं । मेरा भी वैसे ही हैं । यह भी कविता लिखते हैं, ऐसा इनका दावा है । इन बाबूओं से देश तो बच नहीं सकता कोई इनसे साहित्य को बचाये । इनको जो काम सौंपा गया है वह करें यह साहित्य के साथ अन्याय करना बंद कर दें । यह एक बड़ी गलतफ़हमी है इन आईएएस

अफसरों को कि उनको सब आता है । वह स्वनाम धन्य हैं । इनको कौन बताये साहित्य का सृजन एक तपस्या है जो त्याग की माँग करती है । एक छोटी सी कहानी लिखने में कई- कई महीने लग जाते हैं । यहाँ तो लोग एक दिन में कहानी लिखने का दावा करते हैं ।

श्री लाल शुक्ल की राग दरबारी पढ़ी है तुमने ?

मैं - जी सर ।

सर - वह 1964 के अंत में लिखना शुरू किये थे और 1968 में छपी । यह कितनी बड़ी साधना का परिणाम है । नरेश मेहता चार- चार साल लेते थे । प्रेमचंद के उपन्यासों की संख्या दहाई का आँकड़ा न छू सकी । रंगभूमि 1925, कायाकल्प 1926, निर्मला 1927, शब्दन 1930, कर्मभूमि 1932, गोदान 1936 । यह हालत है प्रेमचंद ऐसे लेखक की । यहाँ आज के लेखक हर दिन लिखते ही रहते हैं नया- नया उपन्यास, कहानी । सुबह हुई लिख मारा और फिर सुनो उनका अनर्गल प्रलाप साहित्य के रूप में । तुमने गालिब का वाक्या सुना है ?

मैं - कौन सा सर ?

सर - गालिब को जेल हो गयी । वह जेल से छूटकर आये । लोगों ने पूछा सब जेल में कुशल-मंगल था ? गालिब बोले, ”सब तो ठीक था पर पाँच कोड़े रोज़ पड़ते थे और बहुत दर्द होता था । वह जेलर हर रोज़ पाँच शायरी सुनाता था । मैंने कहा एक दिन, ऐसा कर तू पाँच कोड़े मार ले पर यह पाँच शायरी मत सुना । कोड़े मारेगा तब मुझे ही सिर्फ़ दर्द होगा, यह शायरी सुनकर उर्दू की तहज़ीब भी रोती है ।“

जीवन की बहुमुखी छवि को उभारना और उसको शब्दों में व्यक्त कर देना एक चित्रकार से भी बड़ा काम है । यह बगैर रंगों के इस्तेमाल के चित्र बनाना है । एक काले रंग की स्याही से इन्द्रधनुष बनाना है । इसके लिये आप पहले खोकर पढ़ो और वह भी बहुत बड़ी मात्रा में पढ़ो तत्पश्चात् समाज का अवलोकन करें । भगवान नीलकंठेश्वर की तरह विष का पान करो और फिर इस विष से अमृत निकालो । यह है लेखन की एक प्रक्रिया । जब तक आप इस जटिल जीवन- व्यापारों और चरित्रों के बाहरी - भीतरी गतियों को व्यक्त कर पाने में सफल नहीं हो जाते तब तक आपका लेखन कोई अर्थ नहीं रखता । यह आजकल एक नई परम्परा चल पड़ी है उर्दू- संस्कृत के कठिन शब्दों का प्रयोग करके लिखना । यह भाषा को ख़त्म करने की प्रक्रिया है । आप प्रयोग करो पर देखो तो कैसे प्रयोग कर रहे हो । यह शब्द का प्रयोग सीखने में ज़िंदगी गुज़र जाती है । इसके लिये बहुभाषा विद होना पड़ता है । यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंगरेज़ी विभाग के अध्यापक हिंदी में लिखते हैं । यह इसलिये हिंदी में नहीं लिखते कि उनकी अंगरेज़ी कमज़ोर है । वह

अंगरेजी में माहिर लोग हैं । उनको देशज भाषा से लगाव है । उनके भाव इसी भाषा में आते हैं । वह सब माटी से जुड़े हुये लोग हैं । एक बात और बता दूँ अनुराग , सबसे मुश्किल है आसान भाषा में लिखना । वही आसान भाषा में लिख सकता है जिसके पास व्यापक शब्द कोष हो । आप देखो निराला को “राम की शक्ति पूजा ” लिखा एक नव प्रयोग की तरह तो लिखा “ वह तोड़ती पत्थर ” एक आसान भाषा- शैली में । यह आज के लेखक न भाषा सीखना चाहते हैं और न ही समाज के अन्तर्निहित सत्य को समझना ।

यह बताओ तुमसे पूछा क्या - क्या गया इंटरव्यू में ?

मैंने वह सब बताया जो पूछा गया इंटरव्यू में ।

सर - साहित्य का सवाल तो ठीक गया । यह सात राज्य बता दिये होते तो बेहतर होता पर इससे कोई खास फ़र्क नहीं पड़ना चाहिये । कोई उत्तर पूर्व का था बोर्ड में एक्सप्टर्स ? अगर वह होगा तो नाराज़ हो सकता है कि मेरी मिट्टी का इसने अपमान कर दिया । वैसे कोई खास फ़र्क पड़ना नहीं चाहिये ।

अनुराग यह बताओ तुम बाबू क्यों बनना चाहते हो ? तुम अध्यापक क्यों नहीं बनना चाहते ? अभी 22-23 साल के हो । आप एमए हिंदी से कर लो । मैं रिसर्च करा देता हूँ । तुम्हारे पास जितनी प्रतिभा है कहीं न कहीं लेक्चरर हो ही जाओगे । पहले का दौर होता तो इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ही हो जाते पर आज तो बड़े- बड़े मठाधीश हो गये हैं , जो यहाँ का बेड़ा गर्क करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे । फ़िराक़ ने कोई आवेदन न किया था । वह बुलाये गये थे पढ़ाने के लिये । यहीं होना चाहिये । आप बीए से ही देखना आरंभ करो अपने छात्रों को । एक अध्यापक हर व्यक्ति नहीं हो सकता । ईश्वर गुरु का सृजन करके भेजता है । वह ईश्वर का एक नायाब सृजन होता है । वह वशिष्ठ, विश्वामित्र, दरोणाचार्य का अंश लेकर जन्म लेता है । उसको सहेजना समाज का कर्तव्य है । जो ऐसा अंश लेकर जन्मा है उसको पहचानें और उसे समाज को सर्जित करने दो । इस अध्यापक के चुनाव के कार्य को राजनीति और पूर्वाग्रहो से दूर रखो । यह एनज्ञा , फ़िराक़ , टी पति , मेघ नाथ साहा , गोविंद चन्द्र पांडे , आर पी तिरपाठी , माता अम्बर तिवारी , शिव प्रकाश , ईश्वरी परसाद यह सब भी आईएस बन सकते थे पर इन्होंने आईएस बनने से इंकार कर दिया । यह समर्पित लोग थे ।

अनुराग यह पत्थरों को जोड़ देने से महानता स्थापित नहीं होती । यह विजयनगरम हाल , सीनेट हाल कितना भी बड़ा स्थापत्य और महानता का प्रतिमान क्यों न हो इसमें कोई जीवन न होता अगर इस विश्वविद्यालय ने इतने महान अध्यापक न दिये होते । यह विश्वविद्यालय सिर्फ़ इसलिये महान

है कि यहाँ के अध्यापक महान रहे हैं । इन महानता के प्रतिमान अध्यापकों को हटा दो इसमे और मिंटो पार्क के कब्रगाह में कोई फ़र्क नहीं होगा ।

आप अनुराग इस पर सोचो । आप अध्यापक -साहित्यकार बनने का प्रयास करो । यह बाबूगिरी की नौकरी एक सम्मान देती ज़रूर है जिसमें गर्व से ज्यादा दंभ और अहंकार होता पर यह क्या तुमको खुश रख पाएगी , इस पर भी विचार करना ।

तुम फिर से प्रारम्भिक परीक्षा दे रहे होगे ?

मैं जी सर ।

सर - जो हो गया सो हो गया । आगे की ओर देखो । होगा वही जो राम रचि राखा ।

मैंने सर के चरण स्पर्श किये और चल पड़ा घर की ओर यह सोचते ..

अगर अभी चल कर घर में कह दूँ कि मैं आईएस नहीं अध्यापक बनना चाहता हूँ, आज की रात क्र्यामत की रात होगी । आज की रात मेरा घर एक मक्तल होगा । ख्वाबों के आत्म हत्या का दौर शुरू होगा और ख्वाहिशों के क़त्लेआम का । पर हर रक्तबीज ख्वाहिश के गिरे रक्त से उसी ख्वाहिश का पुनः जन्म होगा ।

मैं अध्यापक बनना भी चाहूँ तो चलो पहले एमए करो फिर रिसर्च । इसमें तीन - चार साल लगेंगे । मेरे पास कहाँ से पैसा आएगा इन तीन-चार साल के खर्च का ।

मैंने वस्तुस्थित का मूल्यांकन किया और अगले साल के लिये पढ़ना आरंभ कर दिया अर्जुन की ऐसी लगन से । मैं रात को पैरों को खिड़की में बाँध देता था ताकि हर करवट पर एहसास हो लक्षण- संकल्प का ।

दो दिन बाद आंटी का मोटा सा स्पीड पोस्ट आया । यह क्या ज़रूरी बात आंटी कहना चाह रही थी शीघ्रातिशीघ्र कि उसने स्पीड पोस्ट कर दिया । मैं स्पीड पोस्ट के लिफ़ाफ़े का कवर फाड़ रहा उसके अश्क को पढ़ने के लिये , जो वह सिर्फ़ मुझसे ही साझा कर सकती थी । ।

मैं आंटी का पत्र खोलकर पढ़ने लगा । उसके पहली लाइन से ही आत्मीयता झलकने लगी । वह जहीन तो थी ही और बात कहने की कला आती थी ।

“ मैं अनुराग किससे उम्मीद रखूँ अगर तुमसे न रखूँ । कौन है मेरे क़रीब इतना जिससे मैं कह सकूँ तू मुझसे दूर न जा । मेरे बेलिखे मुकद्दर पर ऊँगलिया चलाकर कौन एक नज़्म लिख सकता है, मेरे लिये । एक सुहाग था वह ख़त्म हुआ, बड़े अरमान तो न थे इस जीवन से पर यह भी सच है बगैर ख़ाहिशों के तो कोई जीता नहीं पर यह ख़ाहिशों दर्द देने से कहाँ बाज आती हैं । मैंने होंठ सी लिये थे ताकि कोई मेरे दर्द की भयावह पीड़ा को पहचान न सके और मैं एक ऐसी कैफ़ियत में रहने लग गई जहाँ मैं अँधेरे में रक्स करती थी अपने दुःखों के साथ मन बहलाने के लिये । एक बात है अनुराग, अब तुमको मेरे दुःख सुनने होंगे, तुमको दुःख होगा मेरे दुःखों को सुनकर पर मैं अब किसे दुख दूँ अगर तुम्हें न दूँ । मैं तुम्हें दुख ज़रूर दूँगी यह जानकर भी यह तुझे तकलीफ़ देंगे ।

मेरे लेखन के गुरु जी, मैं ठीक कह पायी या नहीं, यह बताना । तुमने कहा था कि एक लेखक बनने की प्राथमिक यात्रा तब आरंभ होती है जब तथ्यों का स्थान भावनाएँ लेने लगे । यह लेखन शब्दों की बाज़ीगरी नहीं है । यह मन के उद्गारों का सम्प्रेषण है, आत्म- संवाद है, एक सुकून की तलाश है, एक झारने का संगीत है जो बेपरवाह है लोगों की मौजूदगी से । तुम अपने इसी कहे हुये मापदंड पर बताना, कहाँ तक मैं सफल हुई अपनी बात कहने मैं ।

एक रोचक वाक़्या हुआ । यह वाक़्या तुझको बताने को मैं बहुत बेचैन हूँ, इसलिये स्पीड पोस्ट कर दिया ।

तुम्हारे जाने के बाद एक दिन शाम को वहीं लान में मैं बैठी थी जहाँ तुम रात में टहला करते थे । एकाएक एक बड़ी सी सफेद विदेशी कार मेरे घर के सामने रुकी । मेरे यहाँ तो कोई आता नहीं इसलिये मेरे दिमाग़ में आया कि लगता है आज कोई फिर किसी का पता पूछ रहा । जैसे ही कार का दरवाज़ा खुला, मैंने देखा आहूजा साहब अपनी पत्नी के साथ कार से उतर रहे हैं । वह मेरे घर का गेट खोले और उनके पीछे उनका ड्राइवर मिठाई फल की टोकरी लिये अंदर आया । मुझे लगा कोई खुशखबरी लेकर आये हैं आहूजा साहब, शायद शालिनी माँ बनने वाली होगी ।

वह लोग अंदर आए और मैंने अभिवादन करके पूछा, “ यहीं बैठेंगे या अंदर चलें ? ”

आहूजा साहब - बहन जी यहाँ भी ठीक है ।

मैं अंदर गई, पानी मिठाई लेकर आई ।

मैं जैसे ही आई मिसेज़ आहूजा बोली बहन जी कोई तकल्लुफ़ न करें । मेरा बहुत मन कर रहा था आपसे मिलने का, मैं इनसे हर दिन कहती थी पर इनका इतना काम फैला हुआ है कि समय ही नहीं मिलता ।

मैं - यह बात तो है बहन जी । यह काम जितना बढ़ता है उतना ही लोगों को अपने लिये समय कम मिल पाता है और आदमी खुद से ही दूर होने लगता है ।

मिसेज़ आहूजा - बहन जी पहले सोचा था शालिनी काम सँभालेगी पर वह अमरीका चली गई । इस बार आएगी तब मैं कहूँगी तू यहीं आ और पापा के साथ काम देख, अब इतना बड़ा काम अकेले इनसे नहीं सँभलता ।

मैं - बहन जी चाहती तो मैं भी थी कि ऋषभ यहीं रहता देश में पर यह आजकल के बच्चों को विदेश जाने, डालर कमाने का भूत सवार है । मैं उनको भी क्या कहूँ, क्या दोष दू इस देश के नीति निर्माताओं को भी ध्यान देना चाहिये ऐसी नीति बनानी चाहिये कि बरेन- इरेन न हो, पर यहाँ किसको चिंता पड़ी है ।

इसके बाद मिसेज़ आहूजा आ गई उस मुद्दे पर जिसके लिये वह आई थीं ।

मिसेज़ आहूजा - बहन जी आपने कभी बताया नहीं कि इतने बड़े- बड़े अफ़सरान आपके घर में हैं ।

मैं सोच में पड़ गई कि इस समय के मारी के पास कोई रिश्तेदार ही ख़ास नहीं रह गया जिससे अपने मन की बात कह सके, यह बड़े- बड़े अफ़सरान कहाँ से आ गये ।

मैं - बहन जी मेरे यहाँ कोई नहीं है । मैं किसका ज़िक्र करूँ आपसे । ऋषभ- शालिनी के विवाह के समय सब मैंने बता दिया था अपनी हालत । मैंने कहा था ऋषभ के अलावा कोई और नहीं मेरे जीवन में ।

आहूजा साहब बोले बीच में, बहन जी आपसे कोई सीखे गंभीरता । आपके बहन का बेटा इतना नामी अफ़सरान है और दूसरी बहन का बेटा आईएस बनने जा रहा पर आपमें कोई घमंड नहीं, कोई शेखी नहीं ।

अब मेरा दिमाग़ काम करने लगा । यह लगता है कहीं से जान गये तुम्हारे बारे में ।

मैं भाई साहब अभी वह हुआ नहीं है । उसने इंटरव्यू दिया है । वह यहीं मेरे पास आया था इंटरव्यू देने । आप सबका आशीर्वाद मिले उसको , ईश्वर कल्याण करें ।

आहुजा साहब - बहन जी पता होता तो मैं आता मिलने पर पता ही न चला ।

मैं - अब कैसे पता चले भाई साहब । आप विवाह के बाद सिर्फ़ एक बार आए जब वह लोग विदेश जा रहे थे , उसके बाद तो आप कभी आए नहीं और मेरे पास कहीं आने- जाने की सुविधा तो है नहीं ।

आहुजा थोड़ा सकते में आ गए । गलती किया आदमी बहुत जल्दी बात बदल देता है ताकि उसकी गलती छिप जाओ , यही आहुजा साहब ने किया ।

अनुराग, इसके बाद मिसेज़ आहुजा अपनी बात कहने लगी । उन्होंने बताया, की सुबह-सुबह दो पुलिस की जीप घर के अंदर आ गई । यह तो है ही बहन जी कि इस व्यापार में ऊँच- नीच तो चलता ही रहता है । यह तो सब जानते ही हैं, सही ढंग से , नियम- क्रान्तुन से व्यापार करना वह भी ईमानदारी के साथ आसान नहीं है , इस व्यवस्था में । इनका दिमाग़ तेज़ काम किया और यह पिछले रास्ते से बाहर निकल गए थे । यह जाते- जाते कह गये , ” किसी भी क़ीमत पर कुछ मत बताना । तुम मखीजा सीए को बुला लेना । वह लोग किसी को अंदर तो नहीं आने देंगे लेकिन उसको बोलना वह बाहर ही खड़ा रहे । वह लोग दो विटनेस बुलाने को कहेंगे , तुम अपनी बहन के पति और उसके दामाद को बुला लेना । यहाँ कॉलोनी से किसी को मत बुलाना ।

इस बात की खबर किसी को मत देना कि घर पर इनकम टैक्स वालों की रेड हो गई है । एक बात का ध्यान रखना कम से कम बोलना और कहना मैं व्यापार में कोई रुचि नहीं रखती हूँ और मुझे इस व्यापार के बारे में कुछ पता नहीं है । यह कहकर यह कोठी के पीछे के दरवाज़े बाहर निकल गए ।

इसके बाद सामने वाले दरवाज़े से एक नई उम्र का अफ़सर घर के अंदर आया और उसने नौकरों से पूछा आप के साहब कहाँ हैं ? आप उनको बता दो रमन सिंह इंस्पेक्टर आये हैं और मिलना चाहते हैं ।

नौकर ऊपर आया और कहा मुझसे कि वह साहब को बुला रहे । मैंने कहला दिया कि कह दो साहब नहीं है । नौकर फिर वापस आया और कहा कि वह आपको बुला रहे हैं ।

बहन जी, मेरा तो दिल ही बैठ गया । घबड़ाहट मे मैं अपनी ही बहन का नंबर भूल गई । मुझको उसका ही नंबर याद नहीं आया जिससे मैं दिन में कई

- कई बार फ़ोन करती थी । मैं किसको बताऊँ अपनी समस्या ?
मैं मन कड़ा करके नीचे आई ।

बहन जी मैं बहुत घबरायी हुई थी और मेरा कोई दिमाग़ काम नहीं कर रहा था । यह तो मैं जानती ही थी इन्होंने इनकम टैक्स घपला किया ही होगा और मैं लाख कहूँ कि मैं व्यापार के बारे में कुछ नहीं जानती लेकिन यह भी सच है कि मैं और शालिनी कई कंपनियों में डायरेक्टर हैं । मुझे यह लगने लगा है कि यह तो जेल जाएँगे ही और मैं भी कई कंपनियों में डायरेक्टर हूँ तो जेल जाने की संभावना मेरी भी है । यह सोचकर दिल और घबड़ाने लगा और मेरा दिल मेरे हलक पर आ गया ।

मुझे लगने लगा अब बड़ी हुज्जत होगी , मैं कहाँ अपना मुँह दिखाऊँगी । पहली बार लगा बहन जी कम खाओ , कम में रहो पर पचड़ों से दूर रहो । यह सोचकर ही कि जेल जाना पड़ सकता है मुझे लगने लगा मैं मर ही जाऊँ तो अच्छा है ।

बहन जी , मैंने अपने को सँभाला और नीचे आयी । इंस्पेक्टर ने बड़ी शालीनता से मुझसे पूछा , “आहूजा साफ़ कहाँ है । ”
मैंने कहा वह घर पर नहीं हैं ।

इंस्पेक्टर- . साहब कब तक मिलेंगे । अगर वह कुछ देर में आ रहे हो तो मैं यहीं इंतज़ार करता हूँ ।

मेरा दिमाग़ कुछ काम नहीं कर रहा था एकाएक मेरे मुँह से निकला कि वह दुबई गए हुए हैं उनको आने में वक्त लगेगा । तब बहन जी इंस्पेक्टर ने आपका नाम लिया , अनुराग भैया का नाम लिया और उसने मिठाई और फल की टोकरी दे दी और कहा कि साहब से कह देना कि चिंतन उपाध्याय साहब जो शांति मिश्रा मैडम की बहन के बेटे हैं वह साहब से मिलना चाहते और इसी लिए मैं साहब से समय लेने के लिए आया था । उसने यह बताया है कि चिंतन उपाध्याय साहब गाज़ियाबाद में सी. ओ. सिटी हैं । चिंतन सर - अनुराग- ऋषभ तीनों मौसरे भाई हैं । साहब काफ़ी दिनों से सोच रहे थे कि चलकर आहूजा साफ़ से मिलकरआता हूँ । यह साहब का नंबर है इस पर फ़ोन करके आप बता दीजिएगा साहब कब मिलेंगे ताकि हमारे साहब आकर नमस्कार कर सके । बहन जी मेरी जान में जान आयी है वह आदमी मिठाई और फल की टोकरी रख कर परणाम करके जाने लगा तब मैंने कहा चाय पी की जाओ और उसने कहा जब साहब आएंगे तब मैं फिर आऊँगा उनके साथ तब मैं चाय पी लूँगा । यह कह कर वह चला गया । मेरी जान बची और यह

पता नहीं कहाँ चले गये थे । यह एक दिन के बाद आये और मैं पूरा दिन पूरी रात परेशान रही है और जब यह आए तब मैंने सारा क्रिस्सा बताया । उन्होंने पता किया, कौन है चिंतन उपाध्याय ।

आहूजा साहब - बहन जी, अपने बहुत जानने वाले ग्राज़ियाबाद में रहते हैं । मेरे बहुत से डीलर ग्राज़ियाबाद के हैं । मैंने फ़ोन लगाया यह पता करने को कि यह चिंतन उपाध्याय सीओ सिटी कौन हैं ?

जैसे ही मैंने फ़ोन लगाया, मेरे जानने वाले ने कहा, “आप किस के चक्कर में फ़ैसगए । वह चार चीज़ माँगता है - नाम, पिता का नाम, जन्म स्थान, जन्म समय और फिर कुंडली बनाकर बताता है कि आपके ऊपर कौन सा एकशन होगा । उसका आदमी आता है और जैसे ही यह चार चीज़ ले गया लोग समझ जाते हैं, समय ख़राब आ गया है । वह, “कुंडली गुरु” के नाम से मशहूर है ।

बहन जी वह कल आएँगे घर पर, अगर आप भी जातीं तो बहुत अच्छा रहता, आप कभी आई नहीं हमारे गरीबखाने पर । यह कल आ जाएँगी और आपको साथ लेकर चली आएँगी ।

अनुराग, मैंने जाने से इन्कार कर दिया मैं उनके यहाँ नहीं गई । मुझे बहुत शिकायत है उनके व्यवहार से और इस बात से कि विवाह के बाद कभी व यह पूछने भी नहीं आये कि कैसी मेरी तबीयत है, क्या हाल है ?

मैंने इतना ही कहा कि अगर नाते- रिश्तों, रिश्तेदार के संबंधों को जानना है तो व्यक्ति को समय- समय पर मिलना- जुलना चाहये । यह संबंध मिलने- जुलने से ही प्रगाढ़ होते हैं नहीं तो समय के प्रवाह में यह कहीं खो जाते हैं । जीवन के बहुत से संबंध ऐसे होते हैं जिनका संबंध रक्त से नहीं होता लेकिन वह सम्बंध रक्त संबंधों पर भारी पड़ते हैं । कई रक्त सम्बन्ध होते हैं जिनका कोई वजूद नहीं रह जाता । यह ईश्वर एक साथ पैदा करके भी दूरी कर देता है और अलग- अलग पैदा करके भी एक साथ कर देता है । इसकी माया क्या है, यह क्या करना चाहता है इसके बारे में आज तक कोई भी एक निश्चित रूप से बात नहीं कह सकता ।

अनुराग, तुम आए तुम्हारे आने का ही परिणाम हुआ कि एक ख़त्म ऐसा होता संबंध जीवित होने लगा । हर कोई कहता है वक्त हर ज़ख्म को भर देता है पर ध्यान से देखो वक्त सारे ज़ख्मों को नहीं भरता है ।

मेरे ही बचपन में मेरे पड़ोस के एक बेसहारा का बेटा कहीं किसी मेले में खो गया । मेरा अपना ही बेटा अपाहिज पैदा हुआ । मेरे पड़ोस के मकान में रहने वाले व्यक्ति को ही कैंसर हुआ । दुधमुँहे बच्चों का बाप छिन गया और माँ सारी ज़िंदगी संघर्ष करती रही । यह सब कुछ ऐसे ज़ख्म हैं जो कभी भरते नहीं । उसके निशान कहीं नहीं जाते ।

मेरे भी जीवन के ज़ख्म आज तक ज़िंदा है अब जब यह रुह को आवरणित करने वाली दीवार गिरेगी, तब ही इस पीड़ा का, इस त्रासदी का अंत होगा । मेरी वह तमाम ख्वाहिशें जो आज तक पूरी नहीं हो सकी उनका भी अंत तभी होगा । मैं कितनी भी कोशिश कर लूँ अपनी ख्वाहिशों को ख़त्म करने की लेकिन वह मरने को तैयार नहीं होती ।

अनुराग, मैं यही कहूँगी अज्ञमतें तुझ पर नाज़ करें, तेरी सलाहियत की हदें तेरा प्रकाश दूर-दूर तक फैलायें । मुझे बताना क्या हुआ था जब चिंतन सर आहुजा साहब के यहाँ गये थे और यह आहुजा एक दिन कहाँ छुपा रहा होगा । मैं यह पत्र आहुजा साहब के जाने के बाद ही लिख रही हूँ, मुझे इंतज़ार सुबह तक का हो ही नहीं रहा था । मैं अपनी बात तुम तक कैसे जल्दी से पहुँचा दूँ, यह सोचकर मैंने रात में ही यह पत्र लिखा और सुबह ही स्पीड पोस्ट कर दिया । “

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 96

चिंतन सर ने कहा था कि वह 10 तारीख को इलाहाबाद पुलिस मुख्यालय पर अपनी मीटिंग के लिए आएँगे । आज तो दस तारीख ही है । उनको तो आज मीटिंग के लिये आना है । मैं यह सोच ही रहा था कि उनकी गाड़ी की आवाज़ आयी इस पुराने ग़रीब मोहल्ले की गली में । इस मुहल्ले के ऊँधते से कुत्ते लगे शोर करने गाड़ी की आवाज़ सुनकर, एक कौतुहल में । मेरे सामने के बनिया की दुकान में सब लोग देखने लगे पुलिस की लाल बत्ती की आती हुई जीप को ।

इस सकरी गली में अगल-बगल की साइकिलों की इज्ज़त-आबर्द बचाती हुई जीप दरवाज़े पर आकर रुक गई । मेरा छोटा भाई उनको देखकर प्रसन्न हुआ और आकर मुझे बताया गया कि चिंतन सर आये हैं । मैं मिलने के लिये बाहर के कमरे में गया तो वह बोले, चलो अंदर बैठते हैं तुम्हारे कमरे में,

आराम से बात करेंगे । मैं और चिंतन सर अंदर के कमरे में आ गये । चिंतन सर में आशावादिता भरी रहती है, वह निराश नहीं होते । उनका कहना है कि अगर हम ही निराश हो गये तब अपने जजमान को आशा कैसे देंगे और आशा का दीपक न दिखाया उसको तब हमारे घर में छूल्हा कैसे जलेगा ।

वह बोले, बाबा इस बार दुर्ग गिरेगा और बहुत से हरिषेण का जन्म होगा समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का बखान करने के लिये । एकाध चारण से काम न चलेगा ।

मैंने कहा, सर आपने ऐसा हल्ला कर दिया कि जहाँ भी जाओ सब यही कहते हैं कि चिंतन सर कह रहे हैं इस बार अनुराग का ज़रूर होगा ।

चिंतन सर - कौनसा गलत कहा ? यह तो उम्मीद ही नहीं, एक प्रबल संभावना भी है । अगर तुम्हारा नहीं होगा तो किसका होगा ?

इस परीक्षा के क्रिले के प्रस्तर खंड को खंड- विखंड करने के लिए जो आवश्यक अर्हताएँ हैं, वह तो तुम्हारे पास सब हैं ही । बाबा, यह जो आसमा है न वह दूर दिख ज़रूर रहा पर वह है अपनी उड़ान के भीतर ही । अब तीर कमान से तो निकल चुका है इस तीर की भी ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी साख पर ध्यान रखे धनुष ने तो अपना काम कर दिया है । एक सफर जो लंबा दिख रहा था वह अब छोटा होने की तरफ बढ़ रहा है । वह जो मंज़िल है धुँधली ही सही दिख रही आँखों को । यह नयन हमारे कह रहे चीख कर, जो वह दिख रहा है वह एक जलाशय है कोई मृग- मरीचिका नहीं ।

यह जो यूनिवर्सिटी रोड पर लोग घूमते हैं इनमें से कई का सिर्फ एक काम है चारण- भाट की तरह किसी न किसी की प्रशस्ति में गान करना । अब इस साल उनकी गान का नायक मैंने तुमको बना दिया है । उनका जन्म इसी गान के लिये हुआ है । उनके जन्म की सार्थकता भी इसी में है । यह हमारा उत्तरदायित्व है कि उनको हम अपने पुरुषार्थ से काम सौंपे ।

मैं - यह शेर और सांड की लड़ाई वाला मुहावरा कहाँ से आया ? यह पूरा फैल गया है, “इस साँड़ की सधी हुई सींग शेर को कई गज दूर गिराएगी ।”

यह आइडिया कहाँसे आया है ?

चिंतन सर - यार, गाँव में कभी- कभी लकड़बग्धों को जानवर सींग से हरा देते हैं, वहीं से यह आइडिया आया ।

अब इलाहाबादी आदमी नई विचारधारा नहीं देगा तब तो देश बौद्धिक रूप से नेतृत्व विहीन हो जाएगा । इस इलाहाबाद की धरती पर जन्म हो या यहाँ का कर्म हो , वह एक उत्तरदायित्व सौंप देता है , समाज के नेतृत्व का । हमारे ऊपर बड़ी ज़िम्मेदारी है दर्शन, विचार और सिद्धांत के विकास की । हम सब सिफ़ अपने लिये नहीं जन्म लेते । इसीलिये मुझे देश की सबसे बड़ी पंचायत में जाना ही होगा । यह नौकरी - वौकरी बस एक माध्यम एस्केप वेलोसिटी पाने का ।

मैं - सर , बात बताइए यह आहूजा साहब वाला मामला क्या है ? आंटी का पत्र आया था और मैं आपको आंटी का पत्र दे देता हूँ आप पढ़ लो और बताओ मामला है क्या ?

सर ने आंटी का पत्र पढ़ा और कहा , एक बात बताए तुमको , यह आहूजा है बड़े काम की चीज़ । यह डरपोक है , यह सबसे महत्वपूर्ण बात है । इसका डर अपने बहुत काम आएगा ।

मैं - सर पूरा मामला बताओ ।

चिंतन सर - राकेश , मातादीन को बुलाओ । मातादीन आया और सर ने कहा , “ मातादीन पूरा क्रिस्सा सुनाओ ।

मातादीन - सर कौन सा ?

चिंतन सर - आपरेशन आहूजा ।

मातादीन हँसने लगा , अरे सर वह तो बहुत ही मज़ेदार है ।

मातादीन ने अपने पेट पर अपना डंडा टिकाया उस पर अपनी निकले हुए लेद को स्थापित किया और उसकी पीठ की हड्डी जो थोड़ा धनुषाकार वैसे ही है उसको और धनुषाकार करके लगा पूरा क्रिस्सा सुनाने ।

सर हम गए सुबह - सुबह आहूजा साहिब की कोठी पर । हम लोग जीप का सायरन मारे हल्का सा दरबान घबड़ा कर गेट खोल दिया । जीप को पोर्टिको में लगा दिये ।

रमन सिंह साहब बोले , तुम लोग यहीं रुको मैं अंदर बात करता हूँ । रमन सिंह साहब ने घंटी बजायी हम और चंद्रभान कोठी का मुआयना करने लगे । इतने में देखा एक आदमी दोनों हाथ में अटैची लिए लूँगी और बनियान में

पीछे के दरवाजे से बाहर निकल रहा है। अब साहब हम तो गए थे रिश्तेदारी में तो वहाँ तो कोई तफ्तीश तो करनी थी नहीं, इसलिए अब कोई भाग रहा है तो भागने दो। जब थोड़ी देर बाद रमन सिंह साहब आए और बताए की मैडम कह रहीं, आहूजा साहब दुबई गए हैं, मैं तभी समझ गया लुंगी - बनियान वाला चुपके से निकलने वाला आदमी ही आहूजा है।

साहब, वह आहूजा वहाँ से भागा लूँगी- बनियान में अटैची में काग़ज़ात लेकर और उसके बाद वह एक होटल में गया और अपने लिए कपड़े का इंतज़ाम करके इनकम टैक्स ऑफिस गया। इनकम टैक्स ऑफिस में वह सारा दिन अपनी सिफारिश की कोशिश करता रहा। उसका आईटीओ वह चोपड़ा साहब था। उनसे बताया आहूजा ने कि कुछ लोग हमारे यहाँ मिठाई और फल के छद्म में आए हैं इनकम टैक्स की रेड करने के लिए।

चोपड़ा साहब ने कहा, हम तो कहीं इस तरह तो किसी के घर जाते नहीं। हम तो सिर्फ़ कर वसूलते हैं। सरकार ने वसूलने का काम सौंपा है उसी काम में हम सब लगे रहते हैं। यह अब कौन सा नया दानदाता आया है जो मिठाई फल लेकर रेड करने गया। आहूजा साहब आपको कोई सपना आया होगा, इतना नहीं डरते। वैसे, आहूजा साहब आप पर एक रेड बनती है। इतने दिनों से आप विभाग की आँखों से बचे रहे हो एक बार इसका भी मज़ा लो। एक बात बताएँ आहूजा साहब रेड में बहुत मज़ा आता है एक बात करवा के तो देखो।

आहूजा साहब - सर, यहाँ जान पर अटकी है और आप मज़ाक कर रहे।

चोपड़ा - आहूजा साहब एक बात तो मैं बता दूँ हमने तो कुछ किया नहीं, अब यहाँ एक इन्वीस्टिगेशन विंग वाले हैं अगर उन्होंने किया होगा तो अपना कोई बस नहीं उन पर न अपनी इतनी औंकात है कि हम उनसे पूछें कि आपने कहा रेड किया है और क्यों किये। आप आज का दिन काटो कल बताते हैं क्या माजरा है पूरा।

आहूजा साहब - सर कोई रास्ता निकालो घर में बहुत सामान पड़ा है। चालीस लाख रुपया तो कैश पड़ा है। वह तो निकलवा दो किसी तरह।

चोपड़ा - अब वह 40 लाख तो आप भूल जाओ वह तो गया। यह जो भी कैश मिलेगा उसको तो कोई बचा नहीं सकता आज। वह तो वह ले ही जाएँगे। आप बाद में अपना खाता-बही दिखाना, तब फ़ैसला होगा कि वह आपका है या सरकार का है।

आहूजा - कोई तरीक़ा है उसको बचाने का, कुछ ले-दे कर।

चोपड़ा-कोई तरीका नहीं है । अगर आप 40 लाख में छूट गए तो आप बहुत सस्ते में छूट गए । यह छापे वाले हैं यह तो 10-20 करोड़ रुपया आपसे टैक्स भरवायेंगे । इससे कम पर आपका मामला निपटेगा नहीं । यह इन्वेस्टिगेशन विंग वाले हैं, वह सब बड़े तपे लोग हैं । वह किसी की न सुनेंगे ।

आहूजा- सर हम तो बर्बाद हो जाएँगे ।

चोपड़ा -अरे आपको क्या है आहूजा साहब, आप फिर कमा लेंगे । आप तो माहिर हो माल बनाने में । आप की तो महारत है, कैश में कमाओ माल अंदर कर लो । यह सरकार, यह व्यवस्था, यह गरीब लोग सब गये तेल लेने । कभी कोई टैक्स न दो और मिल- जुल कर मामला सुलटा लो ।

आहूजा साहब समय बदल रहा है । अब आगे बढ़ने के लिये बैलेंस शीट में पैसा चाहिये । यह पैसा टैक्स देने के बाद आता है । आप कुछ देश और समाज के बारे में सोचो । आप कल सुबह हमसे मिलना तब तक हम देखते हैं मामला कहाँ पहुँचा । आप घर जाओ, रेड वाले आपको ढूँढ़ रहे होंगे ।

उसके बाद आहूजा साहब सारा दिन कोशिश करते रहे । अगले दिन आहूजा साहब अपने घर पर गये तब पता चला पूरा मामला क्या है ।

सर, उसके बाद उसने गाज़ियाबाद फ़ोन लगाया साहब के बारे में पता करने के लिये ।

चिंतन सर की तरफ मुख्यातिब होकर मातादीन ने कहा, सर जो सिंह की स्टील वाले नहीं हैं जिनका हमारे आफिस के पास बड़ा सा शोरूम है वह उसके सबसे बड़े डीलर है । उन्हीं को फ़ोन किया था । दिनेश सिंह ने साहब की पूरी हिस्ट्री बता दी और कहा, तुम तो कुंडली गुरु के चक्कर में आ गए हो तो अब तुम्हारा दिन ठीक नहीं रहेगा । उसके बाद ही वह पूसा गये थे ।

चिंतन सर - जब ये सारा मामला निपट गया, इन सब घटनाओं का तो तब तक मुझे कोई पता न था, तब मैं अगले दिन गया आहूजा साहब के यहाँ । उसने बहुत आवभगत किया । उसी ने सारी कहानी बतायी और कहा, सर हम तो थोड़ा से डर गए थे कि ये क़ानून कच्छरी के चक्कर में न पड़ जाए । हम को पता होता कि आप हमारे घर के ही हैं तो हम आपसे ज़रूर मिलते । मैंने कहा, चलो अब पता चल गया है तो मिलते- जुलते रहेंगे । मैंने उसकी कुण्डली माँगी और जो हमारा नियम है हम किसी दूसरे की बनायी कुण्डली तो देखते नहीं । हम तो अपनी खुद बनाते हैं और वहीं आहूजा की कुण्डली बना

डाली , बता दिया कि आप बराह्मणों को दान करो उनको खाना खिलाओ तभी आपका कल्याण हुआ है । यार , अनुराग यह आहूजा ससुरा कमज़ोर निकला । इसकी एक ही बेटी पैदा हुई , एकाध और होती तो उसी से तुम्हारी शादी करा देते । यह अच्छा आसामी है । हम लोगों को अब ज़िंदगी में ऐसे ही लोगों की ज़रूरत पड़ेगी । इन धन- पशुओं को साधना ज़रूरी है ।

माँ ने यह अंतिम लाइन सुन ली थी और कहा चिंतन तुम जाति के बाहर विवाह कराने के लिए कह रहे हो । शांति कह रही है उन लोगों ने विवाह के बाद एक दिन भी दर्शन नहीं दिया और तुम उसी घर में अनुराग की शादी की बात कर रहे हो । चिंतन सर हँसने लगे ।

चिंतन सर - अरे माता जी बहुत सुंदर लड़की है शालिनी और काबिल भी । उसकी बहन होती तब वह भी वैसी ही होती यह सब जाति- वाति का चक्कर छोड़ो अब सार्वभौमिक बनो । यही भविष्य है और आने वाला कल है । इसको हमें स्वीकार करना चाहिए और जल्दी स्वीकार करना चाहिये ।

माँ - अब जब हम लोग नहीं रहेंगे तब आप ये सब करना । हमारी पीढ़ी में तो यह होता दिखता नहीं है ।

चिंतन सर - जितनी जल्दी नए युग को स्वीकार करो उतना ही बेहतर है । अगर हम स्वीकार करने में देरी कर रहे हैं तो इतिहास की प्रवाहमान धारा को रोकने की कोशिश कर रहे हैं । एक समुद्र की ओर ग्लोशियर से पिघल कर बहती नदी को रोकने के प्रयास में सफलता तो नहीं मिलती है साथ ही बाढ़ आने का अंदेशा भी रहता है जिसमें गाँव झब सकते हैं ।

माँ - हमारे जीते जी तो यह होता दिखता नहीं , यह अलग बात है आप लोग खुद कर लो कोई फ़ैसला तब हम क्या कर सकते हैं ।

माँ ने कहा मैं गाँव जा रही । अगर देर हो जाएगा तो रात रुक जाऊँगी क्योंकि देर शाम साधन नहीं मिलेगा आने को ।

माँ महीने - दो महीने में एक बार गाँव जाती थी गल्ला ले आने । वह पास के चौराहे से टैम्पो पकड़ कर तहसील तक जाती थी , उसके बाद पैदल गाँव तक जाती थी ।

चिंतन सर ने कहा , माताजी मेरी जीप ले जाओ । मैं आज अनुराग के ही पास रुकूँगा । मैं कल लखनऊ जाऊँगा ।

सर ने मातादीन को आवाज़ दी और कहा जाओ माताजी के साथ गाँव तक ।
इनको ठीक से ले जाना ।

मेरी माँ हतप्रभ, लाल बत्ती की गाड़ी तीन सिपाही गनर के साथ गाँव जा रही । भगवती बाबू की पत्नी जब अपने बेटे की सरकारी जीप पर घूमती थी मुहल्ले में तब यही उर्मिला शर्मा उसको पानी पी पी कर गाली देती थीं यह कहकर सरकारी सुविधा का दुरुपयोग हो रहा और कोई देखने वाला नहीं है । अब वही इसको पूरे गर्व से इस्तेमाल कर रही और कहा “चिंतन जब जीप बा तब हम मायके भी हो लेंगे एकाध घंटा और लगेगा, बाबू से मिल लेबै” ।

चिंतन - माता जी जहाँ मन करो वहाँ जाओ, हमें जीप का कोई काम नहीं ।

माँ चली गाँव की तरफ़, एक दास्तान बनाने अगले कुछ महीनों के लिये ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 97

माँ के चले जाने के बाद चिंतन सर ने कहा चलो बद्री के यहाँ चलते हैं । यह लेबर चौराहा पास में ही है, पैदल ही चलते हैं । मुझे पैदल चलना अच्छा लगता था । मैं कई बार जब पढ़ कर थक जाता था तब पैदल परेड ग्राउंड की तरफ़ चला जाता था, मैंने कई बार अँधेरी रातों में जब कहीं कुछ दिखायी न दे रहा हो न तो वातावरण में और न ही जीवन में तब शास्त्री पुल पर देर रात चाय पीने जाता था, धीरे-धीरे पैदल चलकर सोचते हुये । वहाँ पर मैं बंद-मक्खन खाता था और चाय पीता था । मुझे वहाँ दरक वालों से भी सानिध्य होने लगा था । मैं दरक वालों का जीवन समझने लगा था, उन दरक डराइवरों की ज़िंदगी जो अपने घर-परिवार को छोड़कर महीनों सामान दरक पर लादे गंतव्य की ओर चलते रहते थे । उनके साथ एक क्लीनर रहता था, उस पर दया मुझे आती थी । वह थोड़ा ज्यादा फटे-हाल रहता था । मैं क्लीनर से अक्सर बात करता था । वह बताता था कि डीज़ल चोरी अगर न करें तब गुज़ारा मुश्किल है । वह सब रास्ते में कहीं ढाबे पर बिछी खटिया पर सो जाते थे । मैं कई बार अपनी किताब हाथ में लेकर जाता था । एक बार तो एक दरक डराइवर मिला जो पहले प्रतियोगिता परीक्षा दे चुका था । उसने अपनी दास्तान मुझे सुनायी और मेरे चाय का पैसा भी दिया । उसने कहा ख्वाब कभी मरते नहीं जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बरगद के नीचे देखे जाते हैं । एक अलग सा रिश्ता उन ख्वाबों से हो जाता है और हवा

से लड़ता चिराग देखकर वह ख्वाब फिर जग जाते हैं यह कहते हुये ऐसे ही कभी मैंने एक जंग लड़ी थी इस चिराग की तरह ।

मुझे शास्त्री पुल की खुली हवा अपने कमरे की बंद घुटन से कई बार बेहतर लगती थी । मैं वहाँ सप्ताह में एकाध बार तो जाता ही था । इस बहाने मैं पैदल भी चल लेता था और वहाँ का माहौल भी ले लेता था । वह सब समाज से जुड़े हुये लोग हैं । उनको बहुत खबर रहती है, क्या हो रहा देश- दुनिया में । मैंने चिंतन सर से कहा कि आपको आज शाम को एक अलग दुनिया दिखाऊँगा, एक अलग संघर्ष ज़िंदगी के जद्दोजहद की ।

मैं, चिंतन सर चल दिये लेबर चौराहे की तरफ । लेबर चौराहा एक बहुत ही अलग तासीर लिये है । यहाँ हर रोज़ सुबह लोग आ जाते थे काम की तलाश में । इस चौराहे की पहचान में पुरुष, बच्चे, बूढ़े, महिलाएँ सब अपने को समाहित किये हुये हैं । एक भारी भीड़ काम की चाहत लिये चौराहे के इर्द-गिर्द जमा हो जाती है । इसमें ज्यादातर खड़े रहते हैं और कुछ पुलिया के दोनों तरफ की मुँड़े पर बैठ जाते हैं, थककर । इनकी एक ही चाहत, काम की तलाश जल्दी खत्म हो ।

मुझे नहीं पता इस तरह का चौराहा कही और इस शहर में या किसी और शहर में है या नहीं । पर यह एक नायाब रोज़गार कार्यालय है जो हर दिन सुबह खुलता है और दिन ढलते बंद हो जाता है । मैं कहा करता था, इलाहाबाद की नायाबियत में वह स्मारक ही नहीं हैं जिसको देखने लोग दूर-दूर से आते हैं । इलाहाबाद की धरोहर में वह जिजीविषा भी है जो यूनिवर्सिटी रोड पर घूमती है बौद्धिकता के सहारे रोज़गार की तलाशने में और यह चौराहा भी है जो मेहनत कशों की दास्तान बयाँ करता है । बस फ़र्क यह यूनिवर्सिटी रोड की जिजीविषा में एक गौरव की चाहत है और इनके पेट की आग इतनी तीव्र है कि उसके बाहर की कोई सोच इनके पास नहीं है । इसी लेबर चौराहे पर एक वृद्ध को काम माँगते देख कर कभी मैंने लिखा था ..

यह जद्दोजहद कब खत्म होगी यह मुझे मालूम नहीं
हर नफ़स पर लगता है ख़तरा अब आज काम नहीं मिलेगा
काँटों पर गिरी ओस की तरह की मेरी ज़िंदगी
हर आने वाले की तरफ लपकती है शाम की आग के लिये
जो चूल्हे से निकलकर मेरे पेट की धधकती आग को बुझाती है

हर कोई कहता है , मुझे मज़दूर जवान चाहिये

अब मौत तो काँधा अभी लेने को तैयार नहीं
मेरी जवानी चली गई इसमें मेरा दोष क्या है

मैं सबसे कहता हूँ , झूठ ही सही , अपने पेट के लिये
बाबूजी , मेरे बाजुओं में जवानों की ऐसी ताक़त है
मेरे ऐसा कहते ही मेरे सामने , कोई जवान मुझसे काम छीन ले जाता है

मैं फिर दौड़ता हूँ दूसरे बाबूजी की तरह
एक आशा से चेहरे की झुरियों से कहता
मुझ पर रहम करो कुछ काम देकर
पर कोई सीधे मुँह बात नहीं करता
मेरे जीवन के मकानों के मुक़द्दर में कोई आँगन नहीं है
मेरे अपने तो बहुत हैं पर कोई अपनापन नहीं है
अजीब जंग है मेरी ज़िंदगी की
न रुह हारती है न जिस्म थककर किसी से फरियाद करता है
दिन जब चढ़ने लगता है तब मैं कहता हूँ
कुछ भी मज़दूरी दे देना बस कोई काम दे दो
कल से न काम मिला न खाना
रात मैंने इसी चौराहे पर काट कर सुबह का इंतज़ार किया था ।

जब मेरा घर बन रहा था तब मेरे पिता दो औरतों को ले आये थे लेबर चौराहे
से घर के पलस्तर के काम के लिये । उन दोनों के छोटे- छोटे बच्चे थे । उन
महिलाओं ने कहा कि यह बच्चे कुछ नहीं दिक़्क़त नहीं करते । मैं काम करती
रहूँगी और यह एक बोरी पर लेटे रहते हैं । मेरी माँ ने हल्ला किया , किसको
लेकर आ गये , आपसे कोई काम ठीक से नहीं होता । एक माँ होकर भी वह
न समझ सकी एक माँ का दर्द उस समय और मुझे अपनी माँ का दृष्टिकोण
ठीक न लगा । मैं तब कक्षा नौ की परीक्षा देकर कक्षा दस के मुहाने पर था । मैं
थोड़ी- थोड़ी दुनियादारी समझने लगा था । यह एक जीवन का सच है कि
आभाव में पले बच्चे थोड़ा जल्दी जीवन का सच समझते हैं और उनकी

संवेदनशीलता भी अपेक्षाकृत थोड़ा अलग होती है । मैं तो अभाव ही अभाव में ही रहा पूरा जीवन , सुविधा , सम्मान , ज़रूरतों सबके ।

मेरी माँ ने हल्ला- गुल्ला करके एक दिन के लिये काम दे दिया । राजगीर काम कर रहा था और अब दिन के नौ बज गए थे । इनको वापस करने का मतलब था , आज के दिन का नुकसान । उसने होने वाले नुकसान को समझकर आज के लिये काम पर लगा लिया ।

जब वह महिलाएँ काम करने लगीं, मैंने पूछा कि आप इतने छोटे बच्चे के साथ ऐसा कठिन काम क्यों करते हो ?

यह पता चला कि यह दोनों बहनें हैं और एक ही घर में व्याही गई हैं । पहले का पति मर गया और दूसरे का शराबी है और वह इन दोनों से मार-पीट करता है । इनके पास मज़दूरी के अलावा कोई विकल्प नहीं । मैंने उनके बच्चों के साथ सारा दिन खेला । शाम को वह बच्चे मुझे छोड़कर जाने को तैयार न थे ।

मैंने माँ से अनुरोध किया , इनको काम पर आने दिया जाये और मैं भी इनके साथ काम कर दूँगा अगर लग रहा यह काम नहीं कर पा रहीं उतना जितना आप चाह रहे कराना । मेरी माँ थी दयावान पर उसकी समस्या अलग थी । जितने पैसे उसके पास थे वह उसमें ही घर का काम पूरा कराना चाहती थी । पिताजी ने जीपीएफ एडवांस लिया था । मेरी माँ ने मामा से उधार पैसा माँगा था , वह शायद देना चाहते थे पर मामी ने ऐतराज किया । मेरी माँ को दाढ़ ने बता दिया था कि बहुत हंगामा हुआ था मेरे मामा के घर में जब मेरे मामा ने कहा था कि उर्मिला का मकान बनने में दिक्कत आ रही । उसके घर का ढाँचा तो बन गया है पर पलस्तर और दरवाजा नहीं लग पा रहा । वह मुझसे पैसा माँग रही , मैं दे देता हूँ । मामी ने कहा था , वह बाबू से माँग ले । बाबू के पास चाँदी और सोने के बहुत सिक्के हैं जो उनको अपने नाना से मिले थे , दो -चार सौ चाँदी के सिक्के दे दें । अब वह सिक्के हमको तो मिलेंगे नहीं सब दाढ़ की माँ ने रखे हुये हैं । उर्मिला के ही काम आ जाए ।

मेरी माँ बहुत ही स्वाभिमानी थी उसने घर का काम बंद करा दिया । मामा ने तो पैसा नहीं दिया जब नाना ने घर का काम बंद देखकर मदद की पेशकश की तब उसने सारा गुस्सा उड़ेल दिया यह कहकर ,

“बाबू किसी को ईश्वर गरीबी न दे , मेरे हक्क में वह है तो मैं झेलूँगी । भैया को पैसा न देना था तो न देते यह कहने की क्या ज़रूरत कि मैं किससे माँगू और

किससे न माँगू । मैंने तो यह भी कहा था कि मैं ब्याज दे दूँगी । इस समय काम बंद हो जाएगा तब थोड़ा बदनामी होगी । एक घर का काम बीच में रुकता है तो लोग तरह - तरह की बात करते हैं । अब बच्चे बड़े हो रहे, दो कमरा बन जाता तो थोड़ी सहूलियत होती । यह मुन्ना रोज़ कहता है कि मुझे अलग कमरा दो मेरा बोर्ड का इस्तिहान है अगले साल । यह इसी बगैर प्लास्टर और बगैर दरवाजे के कमरे में रह लेगा । मैं कुछ बचत कर लूँगी अपने में काट- कपट करके तब प्लास्टर दरवाजा लग जाएगा । “

उसने मेरी मौसी, मेरे मामा के बच्चों सबसे शिकायत की इस बात की । वह अपने बड़े भाई का बहुत लेहाज करती थी । वह उनसे कुछ न कहती थी, भैया- भैया कहकर बात करती थी । मेरे मामा जानते थे यह भैया- भैया की शहद एक मधुमक्खी के छत्ते से निकल कर आ रही । अगर मुझा छेड़ा गया तो यह सब कह मारेगी । यह किसी का सुनने वाली नहीं है ।

मैं उसी बगैर प्लास्टर बगैर दरवाजे के कमरे में रहने लगा था । मुझे वह अच्छा भी लगने लगा था । मैंने तार खींचकर लाइट लगी थी क्योंकि बिजली की वायरिंग हुई नहीं थी और पुराना टेबल फ्रैन लगाकर काम चला लिया था । वह टेबल फ्रैन मेरी माँ ने जब वह किराये के मकान में रहती थी तब ख़रीदा था । मेरे पड़ोस के मैकेनिक चन्द्र ने वह टेबल फ्रैन ठीक कर दिया था ।

इन परिस्थितियों में उसका काम के लिये मज़बूत आदमी की तलाश गलत न था । उसने उनको काम पर लगा लिया । उसका दो कारण था, एक तो बच्चों को देखकर सहानुभूति जग गई दूसरे, उन मज़दूर महिलाओं ने काम भी पूरी ईमानदारी से किया । राजगीर महादेव ने भी उन महिलाओं के काम की तारीफ़ की । वह महिलाएँ रोज़ काम पर आने लगीं । मैं और मेरा छोटा भाई उसके बच्चों के साथ खेलते थे । हम दोनों भाई प्लास्टर के काम में हाथ भी बँटाने लगे । जब वह काम बंद हुआ और यह कहा गया कल से राजगीर और मज़दूर नहीं आयेंगे तब मुझे दुख हुआ । मैं दूर तक छोड़ने गया था बच्चों को । वह जाते- जाते दूर तक हाथ हिलाते रहे मुझको देखकर । वह भी अगले दिन तलाश किये होंगे मुझको और उनकी माँ कह रही होगी लेबर चौराहे पर .

“ मुझे ले चलो बाबूजी यह बच्चे कोई दिक्कत नहीं करते । यह बोरी पर लेटकर खेलते रहते हैं । ”

चिंतन सर ने कहा, कहाँ खो गये इस लेबर चौराहे पर । आगे ही बदरी का कमरा है इस गली में ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 98

चिंतन सर ने पूछा, “ कहाँ खो गये थे ? ”

मैं - सर यह जो जीवन है यह विविध आयामी है । मेरा ही नहीं सबका , पर शायद सब उसको देख नहीं पाते । मैं देख लेता हूँ , कभी - कभी । यह आप लेबर चौराहा देख रहे हैं ?

चिंतन सर - देख तो रहा हूँ , पर तुम दिखाना क्या चाहते हो ?

मैं वहाँ पर कुछ लोग अभी भी बैठे हैं । आप ध्यान से देखें , यह सब वह लोग हैं जो शरीर से अशक्त हैं , कमज़ोर हैं । यह ज़रूरी नहीं कि यह सब बेसहारा ही हो और इनके बच्चे न हों , संभावना वारिस के होने की अधिक है पर वह इनको बोझ समझ बैठें हैं । इनकी ज़रूरत का कोई ख्याल उनको नहीं है । इनकी ज़रूरत भी क्या है , बस दो वक्त का खाना , वह भी साधारण सा , क्षुधा पूर्ति का । इसके सिवाय और कुछ तो यह माँगते नहीं होंगे ।

सर , आपने पाकीज़ा फ़िल्म देखी है ?

चिंतन सर - बहुत पहले देखी होगी , अब तो याद भी नहीं क्या था उसमें ।

मैं - सर उसको मैंने दस बार देखी है । मैं उस फ़िल्म को बार- बार देखा था उर्दू के बेहतरीन डायलाग और उर्दू सीखने की इच्छा से पर मैं वेश्याओं के जीवन को भी समझ गया । मीनाकुमारी कहती है , हमारी ज़िंदगी एक कटी पतंग की तरह है यह कहाँ जाएगी कहाँ हमें पता यह जो हमारी कबरें होगी वह भी पूरी तरह भरी नहीं जाएगी । हमारी अधखुली लाशें हमारी कबरों से चीख़ेंगी ।

यह जो वृद्ध कमज़ोर दिख रहे , इनका अंतिम संस्कार भी गाँव वाले चंदा जमाकर करके करेंगे , इनके बच्चे शायद वह भी न करें । मेरे घर में काम लगा था , दो महिलाएँ बच्चों के साथ आती थीं काम करने । एक का पति न था और दूसरे का पति था पर शराबी था और मारता था । मैंने एक दिन कहा कि उम्र ही क्या है तुम्हारी , तुम बेसमय विधवा हो गई , यह थोड़ा भाग्यवान है इसका पति तो है । वह बोली , भैया यह सबसे दुखी है । मैं , यह और हमारा ससुर तीनों लेबर चौराहा आते हैं काम की तलाश में । हम तीनों को समस्या होती है काम मिलने में । हम दोनों के पास बच्चा है और ससुर बूढ़ा है । लेबर चौराहा ऐसे लोगों को काम देने में दिक्कत करता है । इसका पति कोई काम नहीं करता बस लड़ाई करता है । ऐसे पति से तो पति न होना अच्छा है ।

हमको काम मिलना बहुत मुश्किल होता है , जबकि हम काम करते हैं पूरी ताक़त से । लेबर चौराहे पर काम की मारामारी है और काम जिस आधार पर मिलता है वह हमारे पास नहीं है । ससुर बूढ़ा है और हम दोनों के पास बच्चा है । ऐसे लोगों को कौन काम देगा ।

सर वह घटना मेरे दिमाग़ से जाती ही नहीं । मेरे रात के अँधेरों में वह महिला आती है यह कहते हुये , “मुझे काम दो मेरा बच्चा भूखा है ” । सर , आप कहते हो मुझे देश की सबसे बड़ी पंचायत में जाना है पर आप क्या करेंगे वहाँ जाकर यह तो बताइये । आज तक कोई ख़ास तो काम किसी ने किया नहीं , जनसाधारण के लिये ।

मैं आंटी से मिला । मुझे लगने लगा कि वह भी इन्हीं महिलाओं की तरह असहाय है । उसके पास पैसे की कमी नहीं है पर भावना के धरातल पर वह बहुत गरीब है । वह दूसरे के बेटे से कह रही तुम मेरे बेटे का स्थान लो और जिससे वह कह रही है उसमें न बनने की ताक़त है और न बन सकता है । सर , इन सबके सीने में इतने ज़ख्म है कि कोई भी इनको देखकर आहत हो जाएगा ।

सर , मैं बहुत आता था बद्री सर से मिलने और मैं इस चौराहे पर खड़ा होकर देखता था कि कैसे लोग चुनाव करते हैं मज़दूरों का । सर , कोई दया- धर्म नाम की चीज़ ही नहीं है । मैं उनको ही क्यों दोष दूँ यह एक बाज़ार है और हर बाज़ार डिमांड और सप्लाई के सिद्धांत से चलता है । अब डिमांड में जो है अगर उसकी सप्लाई पर्याप्त है तब कोई और माल क्यों लेगा । मैंने धिधियाते हुये लोगों को देखा है कि कुछ भी दे देना पर काम दे दो । सर , हर दिन एक बहुत बड़ी संख्या में लोग बग़ैर काम के वापस जाते हैं और बहुत से लोग नीबी कलां , कोटईपुर , जमुनी , ककरा- कोटवाँ , कोदवारीपुर तक से आते हैं । एक बार मैं क़रीब तीन बजे आया तो एक बूढ़ा इसी पुलिया पर बैठा था , वह बोला घर जाने का भाड़ा ही नहीं है । उसने बताया , मैं कल से इंतज़ार कर रहा काम का । मैं किताब ख़रीदने के लिये पैसा रखा था , मैंने दे दिया । मैंने सोचा कि एक और लेखक की ओर किताब मैं पढ़ूँ उससे बेहतर है इसकी मदद हो जाए ।

चिंतन सर - अनुराग , किस की समस्या देखोगे ? यह संसार दुखों से भरा है इसी लिये धर्मों में कहा गया है संसार में दुख ही दुख है ।

मैं - सर दुख का एक कारण कहा गया है ,” तृष्णा “ है । पर यह “तृष्णा “यह “डिज़ायर” क्या है ? क्या जीवन की मूलभूत ज़रूरतों की चाहत तृष्णा है ?

सब कहते हैं ईश्वर न्यायी हैं । वह दयालु न दिखकर भी दयालु है, पर हर सुबह कई सौ लोग अपनी रिदा फैलायें यहाँ पर एक मामूली सी उम्मीद लिये चले आते हैं और यहाँ का हाल देखकर तो मुझे नहीं लगता ईश्वर कम से कम इनके लिये दयालु है ।

चिंतन सर - यह सब कर्मों का खेल है । अब इसका क्या किया जा सकता है ?

मैं - सर किसका कर्म ? कब का कर्म ?

क्या यह सब लोग एक गलत कर्म का दंड भोग रहे ? अगर ऐसा है तब भी उसकी दयालुता उसका माफ़ीनामा कहाँ गया ?

हम लोग बद्री सर के कमरे के बाहर पहुँच चुके थे । बद्री सर लुंगी लगाये पूरे बाँह की बनियान पहने दरवाजा खोलकर बैठे थे । बद्री सर और चिंतन सर की मुलाकात पहले इंटरव्यू में आज से तीन- चार साल पहले हुई थी । यहाँ इलाहाबाद में माध्यम से भी आपस में निकटता होने लगती है । अंग्रेजी माध्यम के लोग अपेक्षाकृत यहाँ कम होते हैं और वह अपने को अधोषित सी वर्ण व्यवस्था के करम में ऊपर समझते हैं, इसलिये हिंदी माध्यम वालों का राफता उनसे कम होता है । चिंतन सर और बद्री सर हिंदी माध्यम वालों के आदर्श थे क्योंकि यह लोग अपने पहले ही प्रयास में सिविल सेवा का इंटरव्यू दे दिये थे । इलाहाबाद के छात्रों की एक पिरय नौकरी एसडीएम और डिप्टी एसपी होती है, चिंतन सर उसको पहली ही परीक्षा में प्राप्त करके पीसीएस देना बंद कर दिये थे । बद्री सर ने पीसीएस देने को कभी सोचा ही नहीं, उन्हें लगा आईएस में ही हो जाएगा ।

उन्होंने जैसे ही देखा हम लोगों को आते हुये देखा प्रसन्नता में तेज आवाज़ में बोलकर स्वागत किया, ”आओ महारथियों आओ, रण क्षेत्र के पूजनीय लोग इस थके सिपाही के पास आये, इससे बड़ा सौभाग्य मेरा क्या होगा “ ।

चिंतन सर - हरि को अस्त्र गहाने वाला अगर आशीर्वाद दे तो एक आम सिपाही भी युद्ध में विजयी हो जाता है ।

बद्री सर - अब हमारा समय तो गया, अब अनुराग के हाथ में परचम है ।

चिंतन सर - यह परचम बहुत मज़बूत हाथों में है । यह धूप से आँख मिलाकर बात करेगा, जुगनुओं के परों से रात की सियाही में लिख देगा नया गीत चाँद की परछाई पर । यह साथ दौड़ने वालों से कहेगा और तेज दौड़ बगैर साँस उखड़े दौड़ का मजा आता नहीं । बद्री, चेला तुमने अच्छा तैयार किया ।

बद्री सर - अरे महाराज, यह बड़े- बड़े का गुरु है । यह व्यूह विद्या का माहिर है । इसकी महिमा का बखान हमसे आज न कराओ, आज से कुछ साल बाद करेंगे ।

मैं - सर कोई अपराध, भूल-चूक हो गई क्या?

चिंतन सर - अनुराग, यह तुम्हारे गुरु का परेम है । एक नये इतिहास का सृजन तुमको करना होगा ।

बद्री सर - चिंतन, यह बताओ पीसीएस की कैसे तैयारी करें? अभी तक तो सोचा नहीं था कि देना पड़ेगा । पर अब अगर नहीं होगा इस बार तब देना ही होगा । भाई बच्चों को पालना ही है ।

चिंतन सर - बच्चे ऐश करने के लिये पैदा हुये हैं, अपना भाग्य लेकर । हम लोगों के नसीब में संघर्ष था, उनके नसीब में इसका फल । बस कुछ दिन का इंतज़ार है, हम लोगों का समय आयेगा । यह टीवी में ही नाम आ जाए तो बेहतर है कौन समाचार पत्र में नाम ढूँढ़ें बेवजह ।

मैं - सर, यह हो जाए तो बहुत अच्छा है । मैं टीवी के सामने हूँ और यह समाचार आ जाए,

“आज संघ लोक सेवा आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा का परिणाम घोषित किया । अंतिम रूप से 770 लोगों का नाम विभिन्न सेवाओं के लिये नाम अनुशांसित किया गया । कुंडली गुरु के नाम से विख्यात गाज़ियाबाद के पुलिस उपाधीक्षक चिंतन उपाध्याय ने संस्कृत विषय के साथ देश की सर्वोच्च सेवा में प्रथम स्थान प्राप्त किया । सर, फिर तो हम कहेंगे सबसे, हमने इतिहास निर्माता को देखा ही नहीं है उसके साथ जीवन भी जिया है ।

चिंतन सर - यह तो यार बहुत सही कहा, मैं तो यह सपना अपने इंटर कालेज के दिनों से देख रहा हूँ । ख़बाब देखो तो ऐसा देखो । दो वक्त की रोटी का सपना तो सब देखते ही हैं । वह तो अपना भवितव्य कभी रहा नहीं । हम तो जजमानी वाला काम भी टाप क्लास किये, नये- नये मन्त्र घुसेड़ दिये थे विवाह के मन्त्रों के बीच में । मेरे बाबूजी के जितने बड़े जजमान थे वह कहते थे चिंतन को भी ले आना । मेरे बाबूजी कहते थे उसकी दक्षिणा अलग लगती है । एक कलकत्ता के बड़े व्यापारी थे, अपने क्षेत्र के, वह तो अपने बाग का पाँच पेड़ ही संकल्प कर दिये थे विवाह के समय दक्षिणा में । मेरे पूरे इलाके में अंदोर हो गया । मैं अगर टाप कर गया और मेरी जीवनी तो लिखनी पड़ेगी ही । यह अनुराग तुम ही लिखना । बद्री, अनुराग की एक मशहूर पंक्ति है, ” मैं जन्मा हूँ एक गैर मामूली दास्तान के लिये ।

वह गैर मामूली दास्तान शुरू हो जाएगी उसी ठीकी न्यूज़ से ।

बद्री सर - यह तुम्हारी जीवनी अगर लिखेगा तो उसमें अपनी घुसेड़ देगा । लोगों को कवर पेज से लगेगी कि जीवनी तुम्हारी है पर जब अंदर पढ़ेंगे तब इसकी होगी । इसके ऐसे फ्राडिया से मत लिखाना, किसी ठीक-ठाक आदमी से लिखाना ताकि कुछ ज़िक्र हमारा भी हो जाए ।

चिंतन सर - बद्री रिझल्ट आएगा कब ?

बद्री सर -आज दस मई है । मई के अंतिम सप्ताह या जून के प्रथम सप्ताह में आएगा ।

चिंतन सर - मतलब आज से एक माह पश्चात हमारा समय आरम्भ होगा ?

बद्री सर - पता नहीं कौन सा समय आरंभ होगा ? पर हाँ परिवर्तन ज़रूर होगा जीवन में, हमारे - तुम्हारे लिये । अनुराग के लिये तो अवसर है पर हम लोगों को पुनः मनुष्य के रूप में जन्म लेना होगा इस जीवन को जीने के लिये । हिंदू धर्म तो चौरासी लाख योनियों के बाद मानव जन्म की बात करता है । अब चौरासी लाख योनि के बाद ही आईएएस बनने का ख़बाब देख पाएँगे, अगर असफल हो गये ।

चिंतन सर - बद्री एक बात तो है, मज़ा बहुत आया इस परीक्षा को देने में । एक नई ज़िंदगी देखी । अब परिणाम चाहे जो हो पर एक ऐसा जीवन जिया जो देव तुल्य था । हम सबने कितना पढ़ा, कितना सीखा, कितनी रातों में होस्टल के बाहर निकल कर रात में बदलियों में छिपता, बाहर निकलता चाँद देखा । जिसने यह परीक्षा न दी, वह मरहूम रहा इन सब सुखों से ।

बद्री सर - यह बात तो मैं तुम्हारी मानूँगा । इस परीक्षा का परिणाम तो एक अलग बात है पर यह आपको बदल देती है । मैं तो कहूँगा कि आप इस परीक्षा के बाद नौकरी ज्वाइन करो या न करो पर यह परीक्षा ज़रूर दो ।

मैं - यह परीक्षा पास करके कोई ज्वाइन क्यों नहीं करेगा ?

चिंतन सर - बहुत से आईआईटी के, मेडिकल के लोग हैं जिनके पास और भी अवसर हैं । वह भी इसको एक बार ज़रूर दें । यह परीक्षा ज्ञान के मामले में एक बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास कर देती है ।

तब तक चाय और समोसा बगल के कमरे का लड़का बद्री सर के निर्देश पर लेकर आ गया था । सर ने कहा बद्री चलो, यूनिवर्सिटी रोड चलते हैं । कल मैं सुबह चला जाऊँगा ज़रा वहाँ की भी हवा ले ले । इलाहाबाद आये और

यूनिवर्सिटी रोड न गये तब तो आने का प्रयोजन सफल न हुआ । यूनिवर्सिटी रोड गणेश जी हैं, उनके दर्शन और परिकरमा के बगैर तो कोई कार्य सम्पूर्ण होता नहीं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 99

यह यूनिवर्सिटी रोड है । यहाँ ख्बाब जन्म लेते हैं । यही रोड आगे चलकर छात्रसंघ भवन पहुँचती है और वहीं से ऐतिहासिक कुर्ये से होती हुई सीनेट हाल पहुँचती । इसी सीनेट हाल पर हर साल गाँव- देहात , दूर- दराज़ से लोग एक परिवेश का सपना साकार करने के लिये इकट्ठा होते हैं और फिर आरंभ होती है एक यात्रा जिसमें कुछ गिने- चुने लोगों को मंजिल मिलती है तो एक बड़ी संख्या को जीवन भर का दंश , अपने ही बनाये प्रतिमानों पर खरा न उतरने का ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश भी एक अलग ढंग से होता है । जिसका भी विज्ञान में इंटर में 325 /500 अंक हो और ह्यूमिनिटीस में 300/500 हो वह आ जाए । उसका प्रवेश उसी दिन यूनिवर्सिटी में हो जाएगा । इसके बाद जो सीट बचेगी , उस पर अगली तारीख दी जाएगी । ज्यादातर सीटें भर ही जाती हैं ।

ऐसा मेरा अनुमान है , विश्वविद्यालय प्रशासन कुछ सीट बचाकर रखता है छात्र नेताओं के आंदोलन, धरने, प्रदर्शन के लिये । यह भी तो एक दायित्व है कि राजनीति का प्रशिक्षण भी विश्वविद्यालय दे , नहीं तो देश के राजनैतिक नेतृत्व से विहीन होने का खतरा उत्पन्न हो जाएगा । देश को हर खतरे से बचाना यहाँ के प्रांगण की महती ज़िम्मेदारी है , चाहे वह बौद्धिक हो या राजनैतिक । यह लाल पदमधर की मूर्ति है , जो एक इतिहास का दस्तावेज है जिसने किशोरावस्था में अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ उठायी थी , मृत्यु के भय से बेपरवाह होकर । उसी शहीद की मूर्ति सामने छात्र नेता दहाड़ेंगे यह कहकर ,

“विश्वविद्यालय प्रशासन के अन्याय और आतंक के खिलाफ़ हमारा यह संघर्ष छात्रों के लिये हमारी अंतिम साँस तक जारी रहेगा । हमने विश्वविद्यालय में प्रवेश छात्रों के हित में संघर्ष करने के लिये लिया है । हर ज़ोर- जुल्म के टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है ।

शायरियाँ भी ज़रूर बोलेंगे हर भाषण में । इनकी शायरियाँ भी एक ही तरह की हैं कमोबेश

तराज़ू तौलकर देखो किसकी तौल भारी है , तुम्हें झंकार प्यारी है हमें तलवार प्यारी है ...

सूरत नहीं सूरत भी बदलनी चाहिये

”

उसमें से एकाध भूख हड़ताल पर भी बैठ जाएगा । उस भूख हड़ताली के विरोधी नेता लोग कहते हैं कि यह भूख हड़ताली रात में दबाकर समोसा खा जाते हैं । इन्हीं डरामों के बीच एक और तिथि आएगी बच्ची सीटों के लिये , जो भी आये स्थान पाये । उस दिन जो भी आयेगा नंबर देखकर प्रवेश दे दिया जाएगा , पर होगा मेरिट से ही । यह नेता शरेय ले लेंगे यह कहते हुये , “हमने आंदोलन करके सीट बढ़वा दी , नहीं तो यह कुलपति कहाँ मानने वाला था । ”

हयूमेनिटीस में दर्शन शास्त्र, प्राचीन इतिहास , संस्कृत, राजनीति शास्त्र ज्यादातर लोग चाहते थे । दर्शन शास्त्र और प्राचीन इतिहास की बहार चल रही थी , कारण यह था कि इसमें अंक अच्छे मिलते थे और पीसीएस परीक्षा में भारतीय दर्शन, तत्व मीमांसा , प्राचीन इतिहास और संस्कृति के चार पेपर मिल जाते थे ।

संस्कृत में लोग व्याकरण के पेपर में , जिसमें लघु सिद्धांत कौमुदी हुआ करती थी , उसमें लोग रटकर 75 में से 70 के आसपास अंक पा जाते थे । हिंदी लोग भाषा मज़बूत करने के लिये लिया करते थे ।

अंग्रेज़ी में एक बड़ा अजीब विभाजन था । एक ओर थीं संभ्रांत घरों की अंग्रेज़ी में गिट-पिट करने वाली लड़कियाँ तो दूसरी तरफ होरी , गोबर , चन्दू , चिंतन , जगदंबा ऐसे सर्वहारा जो अंग्रेज़ी इसलिये लेते थे कि गाँव में लोग कहते थे , “ अंग्रेज़ी न पढ़े तब का किये पढ़ाई-लिखाई ” । इनको अंग्रेज़ी की कक्षा से निकलते देखकर आप अंदाज़ा लगा सकते हैं इनकी त्रासदी का । यह पूरी कोशिश करते हैं , क्लास में डिक्षनरी लेकर भी जाते हैं पर समझ कुछ न आता ।

मनोविज्ञान हिंदी माध्यम के लोग कम लेते थे क्योंकि उसका माहौल भी अंग्रेजी का था । इस विषय में हिंदी में किताबें बहुत कम थीं । यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय का शायद अकेला विभाग था जहाँ लड़कियों का वर्चस्व था । यहाँ की एम ए की कक्षा में कहने को चार- छः लड़के होते थे , बाकी लड़कियाँ ही होती थीं । इसी विभाग में सुरुचि मिश्रा ने बहुत नाम कमाया था बाद में वह एमए अंग्रेजी में करने चली गयी थी । इस साल के सट्टा बाज़ार में उसका नाम बहुत ऊपर उछल रहा था ।

अमित चौधरी , राजेश्वर सिन्हा ऐसे दिग्गज भी भयभीत थे उसके नाम से । उसके बारे में तमाम दंत कथाएँ मशहूर थीं , जिसमें आधे से ज्यादा मनगढ़त थीं । इलाहाबाद कहानियाँ बनाने में सिद्धहस्त हैं । मसलन , संगम लाल पांडे सर से इंटरव्यू में पूछा गया कि आप ब्रह्म के बारे में कुछ बता सकते हैं ? सर ने कहा मैं तुम्हें पढ़ा सकता हूँ । इन्द्र देव तिवारी जो आज आरटीओ हैं उनसे इंटरव्यू में कहा गया कि आप इस सवाल का जवाब दें । सर ने कहा इंटरव्यू बोर्ड के चेयरमैन से , पहले आप अपना pronunciation ठीक कर लें । उनको 1965 की परीक्षा में 9 अंक दे दिये गये । वह सुब्रत सर जो आईपीएस हुये वह तो गजबै कर दिये । वह बोले कि आदमी को इंटरव्यू बोर्ड में आने के पहले एक ट्रेनिंग लेनी चाहिये ।

इन सब दंत कथाओं से मैंने दो निष्कर्ष निकाला । एक, ऐसी कथायें उनके बारे में हैं जो थोड़ा स्वभाव से अखड़ और बदमिज़ाज हैं । दूसरा , यह सब ब्राह्मण हैं । जैसे बचपन की सारी कहानियों में ब्राह्मण को पोंगा ऐसा पेश किया गया है , वैसा ही इलाहाबाद में है । मैं हर कहानी में पाता था , “ सुशर्मा नामक एक ब्राह्मण था वह अपनी गाय बेचने चला .. मार्ग में ठग मिले ... कहा बकरी बेचने कहा जा रहे चार ठगों ने एक-एक करके उसको समझा दिया यह गाय नहीं बकरी है और वह बकरी के दाम बेच आया .. ”

मैंने ऐसी कहानी के नायक ज्यादातर ब्राह्मण जाति के ही देखे । इसका कारण जो भी हो पर मैंने सुना उन्हीं के बारे में ।

राजेश्वर सिन्हा, अमित चौधरी सुरुचि मिश्रा को रटने वाला तोता घोषित कर दिये थे । एक वार्तालाप उन दोनों के बीच था जो बहुत फ्रेमस था ।

राजेश्वर सिन्हा - अमित , यह सुरुचि का इंटरव्यू कैसा हुआ ?

अमित चौधरी - वह रटने वाली लड़की, पाँच दस सवाल रट कर बीए टाप कर लिया , वह अभी भी उसी मोड़ में है । इंतज़ार किया नहीं परीक्षा दे दिया । यह

सेंट मैरीज की अंगरेजी से ही काम न चलेगा । पता चल जाएगा , पानी कितना गहरा है ।

यह वार्तालाप बहुत चर्चा में था । हकीकत यह है कि इन लोगों के विरोध के कारण वह और चर्चा में आ गई थी । अंगरेजी वह अच्छा बोल लेती थी । इलाहाबाद में अंगरेजी बोलने वालों की बड़ी इज्जत थी । मेरी मौसी बोलती थी अपने पति के लिये कि यह अंगरेजी बोलते हैं तो लोगों के हाथ से सिगरेट गिर जाती है । दाढ़ बोलता था कि चाचा खेत पर गये काम देखने लगे अंगरेजी में डॉटने , मज़दूरों के हाथ से बीड़ी गिर गई ।

मुझे कभी- कभी लगता है यह दाढ़ का बनाया हुआ है । उसने हम बच्चों के मज़ा लेने के लिये ऐसा बनाया होगा । पर यह बात सच है कि मेरे मामा और मौसा को अंगरेजी के साथ अन्याय करने का बहुत शौक है । वह हर चार छः लाइन के बाद अंगरेजी बोलने की कोशिश करेंगे और असफल होकर वापस हिंदी पर आ जाएँगे , पर हैं वह बहुत लगनशील । पिछले तक़रीबन चालीस साल से कोशिश कर रहे अंगरेजी बोलने की , सफलता तो दैवयोग है पर्यास तो अपने हाथ है , यह उनका मूल मंत्र है ।

मैंने चिंतन सर से कभी कहा , यह सिगरेट- बीड़ी गिराने वाली अंगरेजी में नहीं सीख पाया । कई बार मन करता है खुद ही सिगरेट जलाऊँ और गिरा दूँ सिगरेट अपनी ही अंगरेजी पर । सर बोले , गिराना पर सँभाल के । कहीं वह तुम्हारे नोट्स ही न जला दे । घर मत फूँक लेना इस चक्कर में ।

यूनिवर्सिटी रोड देखकर ही आत्मा तृप्त हो जाती है , ऐसा जलवा वहाँ होता है । इस समय प्रारम्भिक परीक्षा का बुखार अपने चरम पर है , जून के दूसरे सप्ताह में परीक्षा है । यह समय युद्ध के चढ़ते उफ़ान का समय है । इन सबके दिल में एक तूफ़ान है , आँखों में एक ज़िद है , सब कह रहे ऐ ज़िंदगी तू और तकलीफ़ें ला हमने अभी हार कहाँ मानी है । इस दूर तक रेत के तपते हुये सहरे में प्यास भी इनसे पूछ कर ही आएगी । वह सब एक खौफ से लड़ रहे जो दिख रहा उनके घिसे हुये चप्पलों की आवाज़ों से जो असफल होकर जीने का सहारा ढूँढ़ रहे और नयी पीढ़ी आशंकित हैं , कहीं कभी हम भी इसी दौर में न पहुँच जाए ।

इस दिन से बचने के लिये हर एक छात्र पूरी ताक़त से लगा है , रात और दिन के फ़क़र को भूलकर । एक सुर्खर है पूरी सङ्क पर । सङ्क छात्रों से

लबालब भरी हुई , हर ओर एक शोर है जिस शोर में उनके ख्वाबों का शोर भी शामिल है ।

यहाँ इंतज़ार सब को शाम का , कि यह शाम कब होने वाली है । यह अपने-अपने कबूतर के दरबों ऐसे कमरों से , जिसमें दीवारों के भीतर किताबों और ख्वाहिशों के अलावा कुछ नहीं होता है , उससे निकलकर आते हैं खुली हवा में आनेवाले कल की तलाश में गुज़ारते एक और दिन को । यह समय लोगों से मिलने का और झूठ बोलने का होता है यह कहकर , “ यार पढ़ाई कुछ हुई ही नहीं इस बार ” ।

हर दुकान पर छात्र मधुमक्खी के छत्ते की तरह लदे हुये । हर कोई कह रहा , “ कुछ नया मटीरियल आया है क्या?

“ बिपिन चन्द्रा की किताब हिंदी वाली कब तक लाओगे, यह सुमित सरकार हिंदी में छप रही है क्या? हिंदी माध्यम में नया क्या आयी हैडीडी बसु की हिंदी वाली किताब दो प्रतियोगिता दर्पण के साथ यह योजना और कुरुक्षेत्र भी दे दो ... डिस्काउंट तीस प्रतिशत लगाओ ... वह ज्ञान भारती , मौर्या बुक सेंटर और राजू बुक सेंटर तीनों तीस प्रतिशत दे रहे आजकल ”....

पर प्रयाग पुस्तक सदन बीस ही देगा वह तीस नहीं देगा । वह कह देगा , हम इतना ही देंगे ।

इन छात्रों के साथ बाज़ार ने भी साज़िश की एक बार , मुझे याद है वह साज़िश । इन सब दुकानदारों ने आपस में संगठन बनाकर डिस्काउंट बंद कर दिया ।

यह फ़ैसला ले लिया कि हम कोई डिस्काउंट नहीं देंगे अब । किताबें पूरी दाम पर बेची जाएँगी , जो भी दाम लिखा होगा उस पर । आज तक गरीब रियाया के पक्ष में किसने उठायी है आवाज़ जो इन मासूमों के पक्ष में कोई उठायेगा । भारतीय संविधान को पढ़कर परीक्षा में भरपूर नंबर पाने वाले अपने ही अधिकारों से वंचित कर दिये गये । संविधान के अनुच्छेद 39 का संपदा का समान वितरण और सामूहिक हित के लिये संसाधनों का वितरण हो इस पर बड़े-बड़े लेख लिखने वाले भी असहाय थे क्योंकि कौन था उनकी सुनने वाला । पर जैसा अक्सर होता है , ठग ही आपस में लड़ जाते हैं , वह यहाँ भी हुआ । इनमें आपस में लड़ाई हो गयी और यह एक अकृतिम गठजोड़ टूट गया , एक खुशी की लहर जुगनुओं में ।

उसी इतिहास को बयाँ करते सड़क पर चिंतन सर की आवाज़ , “अमित चौधरी क्या जलवा फैलाये हो ? सुना है चक्रव्यूह का अंतिम द्वार हिला दिया है तुमने अपने इंटरव्यू में । ”

सर की आवाज़ सुनते ही लोग देखने लगे और
एक आवाज़ किसी की तेज़ी से ...

कुंडली गुरु की जय हो ॥

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 100

मैंने देखा मुड़कर उस आवाज़ की तरफ जो कह रही थी , “कुंडली गुरु क्या हाल है ?”

वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष कमलेश तिवारी थे । चिंतन सर ने कहा , “ अध्यक्ष जी क्या समाचार है ? बहुत दिन बाद मुलाकात हुई । आप गाज़ियाबाद आये थे अपने किसी चेले के कुछ काम से , उसके बाद से मुलाकात नहीं हुई ” ।

कमलेश तिवारी - हमारा काम है जनसेवा , जो आया साथ चल दिये । अब यह तो एक आशीर्वाद विधाता का है ही कि हर शहर में कोई न कोई इलाहाबाद का होता ही है , अगर वह नहीं है तो कोई उसका जानने वाला है , इसलिये कोई काम हम लोगों का रुकता नहीं । ईश्वर कृपा ऐसे ही इस बरगद पर बनाए रहे । यह बताओ , कैसा हुआ इंटरव्यू ?

चिंतन सर - यह तो विधाता जाने , मैंने तो बेधड़क बोल दिया , जो समझ आया ।

कमलेश तिवारी - आप बेधड़क बोलते हो , अगर धड़क से बोलो तब बेहतर न हो ? एक बार धड़क से भी बोल कर देखो ।

चिंतन सर - अब सिंह कहाँ बदल सकता है । चारा तो मृग ही है घास नहीं ।

कमलेश तिवारी जब अध्यक्ष का चुनाव लड़ रहे थे तब उनका चुनाव कार्यालय केपीयूसी होस्टल था । डीजे होस्टल और केपीयूसी तकरीबन आमने - सामने ही था । उसी चुनाव के दौरान चिंतन सर और कमलेश

तिवारी में आपस में सम्बन्ध बना था और मैं भी उनके सम्पर्क में आया था । सर ने कहा, यह अनुराग है ।

कमलेश तिवारी - मैं जानता हूँ । इन्होंने मेरे कई भाषण लिखे हैं । किसी को भाषा सीखनी हो तो अनुराग से सीखे । अनुराग, तुम्हारा कैसा हुआ ?

इस बार क्या बहार है ? कैसा जाएगा रिज़ल्ट ?

चिंतन सर - यह तो भविष्य बताएगा पर कई नये योद्धा हैं, जिसमें अनुराग सबसे मज़बूत है । नये योद्धा सांड की तरह हैं वह सिंह को मार गिराएँगे । यह अनुराग सांडों का सांड है ।

कमलेश तिवारी - तुम लोगों का सेलेक्शन ज़रूरी है । बगैर आईएएस- पीसीएस के राजनीति नहीं हो सकती । आप लोग रहते हो तो चार काम आसानी से हो जाते हैं और कार्यकर्ताओं का उत्साह बना रहता है । यह जो कैडर एलाटमेंट का नया सिस्टम है यह ठीक नहीं है । आप लोग दूसरे राज्य चले जाते हो और बाहरी लोग यहाँ आते हैं । उनको पता ही नहीं होता कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के नेताओं का स्वाल रखना आईएएस- पीसीएस अफ़सरों का एक धर्म सरीखा रहा है । हम लोग फक्कड़ी आदमी, जिस ज़िले में पहुँचते हैं वहाँ रहना - खाना हमारे यहाँ के अफ़सरों के ज़िम्मे होता है । हम तो बस पहुँच गये, बाकि ज़िम्मा आप लोगों का है । पर यह बाहर से आये अफ़सरान इस परम्परा, इस संस्कृति से अनजान होते हैं ।

यह ज़रूरत है कि मसूरी में एक कोर्स इसका भी हो । यह बताया जाए कि कैसे आप अपने लोगों का स्वाल करो । यह जो आईएएस- पीसीएस की नौकरी है, यह सिर्फ़ अपने लिये ही नहीं होती बल्कि समाज के लिये होती है ।

लगातार लोग इकट्ठे होते जा रहे थे । भीड़ बढ़ती जा रही थी । कमलेश तिवारी के साथ वह लोग भी थे जो आगामी वर्षों में छात्र संघ का चुनाव लड़ना चाहते थे और उनके समर्थक लोग भी थे साथ में । चार इंटरव्यू दिये भावी आईएएस उनके साथ हो तब पूरी रोड लगभग जाम ऐसी हो ही जाएगी ।

अमित चौधरी सर सुंदर लाल छात्रावास के थे, चिंतन सर डायमंड जुबली के । छात्रावासों के लोगों का नाम जल्दी होता था क्योंकि उनके समर्थक तेज बनते थे । अमित चौधरी, राजेश्वर सिन्हा, चिंतन सर, बद्री सर पिछले कई साल से इंटरव्यू दे रहे थे । इन सबके समर्थक और मुरीद काफ़ी थे ।

मेरी पहचान तेज़ इसलिये बन गई क्योंकि मैं इनके साथ रहता था और यह लोग मेरे नाम की हवा बना दिये थे । सुरुचि मिश्रा, शशि तिरपाठी को देखा बहुत कम लोगों ने था पर उनका नाम भी बहुत तेज बाज़ार में दौड़ रहा था । शशि ने पिछले साल इंटरव्यू दिया था इसलिये वह पिछले साल से ही याददाश्त में थी तो सुरुचि एक बड़ी डिबेटर थी, बीए में टाप की थी और अंग्रेज़ी बहुत अच्छा बोलती थी, इसलिये वह कौतूहल का विषय थी । पिछले सालों की तुलना में इस साल लड़कियाँ ज्यादा थीं । बैरहना की रचना दीक्षित भी थी पर उसके बारे में लोगों को देर में पता चला । वह संस्कृत की थी । संस्कृत के अभ्यार्थियों के बारे में चिंतन सर की राय यहाँ महत्वपूर्ण मानी जाती है । वह कह दिये, यार वह बेकार है, कोई खास दम नहीं ।

कमलेश तिवारी सर ने कहा, कुंडली गुरु इन कार्यकर्ताओं को चाय कौन पिलाएगा । अब आप आए हो तो कुछ इनका ख्याल भी करो । यह सब सुबह से देश सेवा में लगे हैं । यह सब मेरे साथ टहल रहे । अब हमारे साथ टहलना तो देश सेवा ही है । यह कहकर कमलेश तिवारी फर्झेंस बुक की सीढ़ियों पर क्षीरसागर में शेषनाग पर विष्णु की मुद्रा में पसर गए ।

चिन्तन सर - अनुराग, सुभाष से बोलो गिने न, बस चाय पिलाता जाए जो भी आए । इस सड़क का बहुत क़र्ज़ है हम पर, वह भी उतारना है ।

मैं - सर, इस सड़क का क़र्ज़ वह इस जन्म तो उतरेगा नहीं उसके लिये बोधिसत्त्व की तरह जन्म लेना होगा ।

चिंतन सर - अध्यक्ष जी, आओ चाय भी पियो और ज्ञान भी लो । यह आपके भाषण में काम आएगा । सुनो, कैसे बोधिसत्त्व बनना होगा इस सड़क का क़र्ज़ उतारने के लिये ।

मैं - सुभाष, चढ़ा दो बड़े पतीले । जरा इलायची - अदरक कायदे से डालना । सुभाष - सर आज तक कोई शिकायत हुई है क्या ?

सामने अब्दुल की सैलून की दुकान थी वहाँ जो भी लोग हेयर कटिंग के लिये आये थे छोड़कर मजमें में शामिल हो गये ।

अब्दुल का उत्तरा और केंची रुक गई ।

कमलेश तिवारी सर ने कहा, जरा ठाकुर से पान बँधवा लो । उनके चेलों ने एक खोखा ककेर पान बँधवा लिया ।

ठाकुर की दुकान पर अमित चौधरी ने सिगरेट सुलगाई , उनके साथ कई और ने सुलगा मारी मुफ्त की सिगरेट

। मैंने मीठा पान लगवा लिया था तब तक अमर गुप्ता सर अमरनाथ झा छात्रावास से आते हुए दिखाई दिए । मैंने चिंतन सर से कहा लीजिए एक और नायाब प्राणी । बाराबंकी की एसडीएम गीरी में इनका मन लगता नहीं यह एनझा में ही पड़े रहते हैं ।

खद्दर के कुर्ते पायजामे मे पाँच फ़िट से बस कहने को ज्यादा अमर गुप्ता सर लुढ़कते हुये चले आ रहे थे ।

वह आते ही बोले , अनुराग , कब आये दिल्ली से ? हम तो सुना कि आप संकल्प किये हो कि रिजल्ट देखकर ही यहाँ से जाएँगे । इन इलाहाबादियों को प्री का रुकने- खाने का इंतज़ाम करा दो , वहाँ से हिलेंगे ही नहीं ।

मैं सर दो दिन हुआ आए ।

अमर गुप्ता- प्रारम्भिक परीक्षा तो दे रहे होगे ?

मैं - हाँ सर , वह तो देनी ही है । इसका क्या भरोसा ।

अमर गुप्ता- हमारा पिंड छूटा इस जंजाल से ।

ठाकुर ज़रा पान लगाना ।

कमलेश तिवारी की तरफ मुख्खातिब होकर कहा , “ अध्यक्ष जी अब आप निकलो दूसरे क्षेत्र की तरफ एम पी , एम एल ए की तैयारी करो । बाँदा निकल जाओ नहीं तो शहर उत्तरी भी है । कहीं भी लग जाओ ।

कमलेश तिवारी - अरे अभी समय है । सरकार की नीतियों के खिलाफ़ छात्र- मोर्चा शुरू कर रहे हैं अगले महीने से । हम लोग जुझारू आंदोलन वाले हैं , देश की समस्याओं पर लड़ने वाले हैं न कि कोई कम्युनिस्ट विचारधारा के छात्र नेताओं की तरह वियतनाम , कम्बोडिया , , रूस , चीन पर बात करने वाले ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एक भाजपा का छात्र संगठन और स्टूडेंट्स फेडरेशन आफ इंडिया तथा प्रगतिशील छात्र संगठन जो बाद में आल इंडिया स्टूडेंट्स असोसिएशन बना दो कम्युनिस्ट विचारधारा के छात्र संगठन थे । इसके अलावा सारे और छात्र नेता

स्वतन्त्र विचारधारा के थे । कुछ का जु़़ाव हेमवती नंदन बहुगुणा के साथ हुआ करता था । कांग्रेस की छात्र शाखा एनएसयूआई का यहाँ कोई अस्तित्व न था । चुनाव में कम्युनिस्ट विचारधारा की पार्टियों के खिलाफ़ दो नारे बहुत लगते थे ।

नक्सलवाद वापस जाओ

चाऊ मऊ कहते हो तो भारत में क्यों रहते हो ।

वर्ष 1982 के बाद प्रगतिशील छात्र संगठन का प्रभाव बढ़ रहा था और इस संगठन ने कालान्तर के वर्षों में दो - तीन पदाधिकारी छात्र संघ को दिये वहीं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का प्रभाव घट रहा था । पर ज्यादातर पदाधिकारी यहाँ पर स्वतन्त्र विचारधारा वाले ही हुये ।

सिविल सेवा के गंभीर अभ्यार्थी इस राजनैतिक प्रक्रिया में सक्रिय भाग नहीं लेते थे पर कई का परिचय किन्हीं न किन्हीं कारणों से छात्र नेताओं से हो जाता था । इन सिविल सेवा के गंभीर अभ्यार्थियों का सम्मान सब करते थे और कहते भी थे इनको पढ़ने दिया जाए , इनको डिस्टर्ब न किया जाए ।

इलाहाबाद में अच्छा भाषण देना एक आवश्यक अर्हता के रूप में छात्र संघ चुनाव में देखा जाता था । यहाँ के छात्र संघ चुनाव के पूर्व के दक्षता भाषण को सुनने पूरा शहर इकट्ठा होता था । यह परम्परा कब आरंभ हुई यह तो नहीं पता पर यह एक स्थापित परम्परा थी और सारे उम्मीदवार दक्षता भाषण की बहुत तैयारी करते थे । पिछले कुछ वर्षों में प्रगतिशील छात्र संगठन ने कुछ अच्छे स्पीकर छात्र राजनीति को दिये थे । यहाँ के भाषणों में बेहतर शब्द- चयन और कविता- शायरी का होना लाज़िमी ही था शहर की साहित्यिक अभिरुचि और इतिहास के कारण ।

एक स्वस्थ राजनैतिक परम्परा का शहर है यह । एक बार उप मंत्री पद पर दोनों उम्मीदवारों को समान मत मिल गए । इस बार फ़ैसला सिक्का उछाल कर किया गया और हारने वाले ने सहर्ष फ़ैसला स्वीकार किया और जीतने वाले को बधाई देकर अगले साल के चुनाव में लग गया । उस जीतने वाले का नाम ही पड़ गया “सिक्केवाला ” ।

ऐसी राजनैतिक मर्यादा वाले शहर में कमलेश तिवारी का यह तंज़ कम्युनिस्ट विचारधारा की पार्टियों पर एक पुराने दौर से चला आ रहा । यह भी लोग कहते हैं कि 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय नारायण दत्त तिवारी और चन्द्रशेखर भी ऐसे ही आक्रमण किये थे कम्युनिस्ट पार्टियों पर । यहाँ

के छात्र संघ भवन के पदाधिकारियों के नामों की नाम पटिटका एक महान गौरव की याद दिलाती है । इसमें पता नहीं कितने बड़े नाम भरे पड़े हैं ... नारायण दत्त तिवारी , चन्द्रशेखर , वी पी सिंह , मोहन सिंह के पी तिवारी , अनुग्रह नारायण सिंह , राकेश धर तिरपाठी

चाय पीकर कमलेश तिवारी अपने क्राफ़िले के साथ चले गये ।

मैंने अमर गुप्ता सर से पूछा आप कब आये ?

अमर गुप्ता- आप दैहिक रूप से पूछ रहे या मानसिक रूप से ? दैहिक रूप से तो आज ही आये पर मानसिक रूप से यहाँ से कभी गये ही नहीं । इस म्योर होस्टल से जाने का मन ही नहीं करता । यह एएन झा होस्टल में एक अलगै आनंद है । सबसे मजा तो यहाँ की रोड पर आता है ।

बद्री सर ने कहा , अनुराग चलें ?

अमर गुप्ता- रुको यार , थोड़ा चकल्लस और फैला लो तब जाओ ।

वहाँ बहुत से पहली बार के प्रारम्भिक परीक्षा वाले अभ्यार्थी थे वह जानना चाह रहे थे , क्या पढ़ें कैसे पढ़ें । एक ने अमर गुप्ता सर से पूछा , सर कैसे पढ़ें ?

अमर गुप्ता- आप पैर को दोनों बाँध दो कुर्सी से , ताकि इस रोड पर न आओ । यह रोड बहुत ख़तरनाक है । यही मन करता है यहीं घूमते रहो । इस घुमक्कड़ी में पड़ गये तब न होगा ।

बद्री सर - सर यह पूछ रहा कि पढ़ें क्या और कैसे ?

अमर गुप्ता- आप भगवान का ध्यान लगाओ । पढ़ाई मन का भ्रम है । इससे कुछ ख़ास नहीं होता । होता वही है जो वह चाहता है । अगर अध्ययन से होता तो आज बद्री ज़िला स़भाल रहे होते । मैं यहीं कहूँगा कम किताब पढ़ो । इस अनुराग की तरह एक झौआ किताब मत पढ़ो । उससे ज्ञान तो मिलेगा पर वह ज्ञान परीक्षा के लिये है , इसमें संदेह है । हिंदी में हम किरनबाला की किताब पढ़ें और कुछ पतली - पतली और । मुझसे कोई बोला नामवर सिंह की अपभ्रंश - अवहटट का हिंदी में विकास पर नामवर सिंह की पढ़ लो । हम किताब की दुकान पर किताब की मोटाई देखकर ही किताब वापस कर दिये । कोई एक नोट्स किसी का मिल गया वही रट मारे , प्रारम्भिक परीक्षा में तो गणित विषय था वह अपने को आता है , सही बात तो यह है कि सिवाय गणित के हमको सिर्फ़ चकल्लस करना आता है । चकल्लस सीखना हो तो बताओ ।

अनुराग तुम लिखा दो किताब का नाम । इनको किताब का नाम लिखे बगैर कोई संतोष न होगा । अभी चिंतन कह देगा हम इतिहास में एनसीआरटी पढ़ते थे और अग्निहोत्री की गाइड से सवाल हल करते थे पर उससे इनका मन मानेगा नहीं । यहाँ इलाहाबाद में जब तक दो- तीन पेज किताब न लिखा दो और हर टापिक पर एक अलग किताब का नाम न लिखा दो , इनका मन ही नहीं भरेगा । इतनी बार सुना है किताबों का नाम कि मैं ही बता देता हूँ वह सारी किताबें जबकि पढ़ी एक भी नहीं ।

चिंतन सर लगे उपदेश देने ... कम किताब पढ़ो पर बार - बार पढ़ो, समाचार पत्र रोज़ पढ़ो , एक समाचार पत्र अंग्रेज़ी में पढ़ो ताकि अंग्रेज़ी बेहतर हो । इस दुनिया में अंग्रेज़ी भी जानना चाहिये । आप मेहनत करो एक तपस्वी की तरह , लगनशील बनो एक कौये की तरह ...

अमर गुप्ता-इतना लंबा ड्रामा करने के बजाय वही सुना दो , काक चेष्टा बको ध्यानम वाली सूक्ष्मिका ।

यार बोर कर दिये आप लोग . चलता हूँ एएनझा होस्टल ... वहाँ कोई आइटम मिलेगा टाइम पास का । यहाँ का कोटा हो गया ।

अनुराग तुम कल सुबह आना । मैं अपना कुछ मटीरियल दूँगा । तुम उसको गंगा में जाकर बहा देना । अब वह सब किसी काम का तो है नहीं और हमारा फटीचर मटीरियल कोई लेगा नहीं पढ़ने को । हमारी बड़ी ख़राब इमेज हो गई है यह पतली किताबों की वकालत करते - करते ।

अमर गुप्ता सर चले गये ।

मैंने कहा सर पैदल ही चलते हैं । बद्री सर ने कहा , यार मैं तो पैदल नहीं जाऊँगा । वह सवारी ढूँढ़ने लगे ।

मैं और चिंतन सर पैदल चल दिये । चिंतन सर बड़े लगनशील और ज्ञान के आग्रही थे । वह पहला कदम घर की तरफ रखते हुये बोले ,

“ यह बोधिसत्त्व क्या है ? ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग -101

मैं और चिंतन सर यूनिवर्सिटी रोड से कर्नलगंज चौराहे , कर्नलगंज थाने होते हुये आनंद भवन के सामने आ गये । सर ने कहा , यह इमारत तो दिव्य है ।

मैं - सर , लोग कहते हैं कि इस इमारत के कारण इलाहाबाद भारत की राजधानी नहीं बना , अंग्रेजों को इलाहाबाद से बहुत लगाव था । उसी लगाव के कारण सिविल लाइंस के आसपास एक क़रीने से बँगले बनाये और जहाँ पर कंपनी बाग है वहाँ पर गाँव हुआ करते थे । उस गाँव को विस्थापित करके यह कंपनी बाग बना दिया ।

चिंतन सर - इस आनंद भवन का राजधानी बनने या न बनने से क्या संबंध ?

मैं - सर उस समय यह आनंद भवन कांग्रेस का दफ्तर ऐसा होता था और यहाँ बहुत से स्वतन्त्रता सेनानी आया करते थे । इस विश्वविद्यालय की करान्तिधर्मिता पर अब क्या कहना । यहाँ की फ़िज़ाओं में ही करान्ति व्याप्त है । शायद इससे अंग्रेज़ डर गये ।

चिंतन सर - मतलब हमने अपने खुराफ़त की क़ीमत चुकायी है ।

मैं - यह भी कह सकते हैं । अब जमीर के साथ ज़िंदा रहने की क़ीमत तो चुकानी होगी । सर इस बरगद की छाया का का सूत्र वाक्य है ,
सवाल खड़ा करना अगर जुर्म है

तो जुर्म ही सही

मुझे जवाब की नहीं

अपने सुकून की तलाश है ।

यह करान्ति अपने सुकून के लिये भी कर देंगे , उबल रहा रक्त कुछ ठंडा तो हो ।

चिंतन सर - बाबा मैंने कुछ पूछा है ?

मैं - क्या सर ?

चिंतन सर - तुमने कहा था कुछ देर पहले , “यूनिवर्सिटी रोड का क़र्ज़ उतारने के लिये बोधिसत्त्व बनना होगा , नहीं तो यह क़र्ज़ उतरेगा नहीं ” ।

यह बोधिसत्त्व क्या है ?

मैं - सर आप बोधिसत्त्व का सिद्धांत तो जानते ही हैं , अब उसमें क्या बताना आप को ।

चिंतन सर - यह सिद्धांत जानना और उसका अभिप्रायोग समझना दो अलग वस्तु है । आप कहना क्या चाहते थे , वह बताओ ।

मैं - सर , मैं क्या था ? कुछ भी नहीं ।

मैं आप की तरह तो था नहीं जो ज़िला टाप करके आया हो आप संस्कृत के विद्वान हो , इस कुंडली विधा के माहिर हो । आप संस्कृत के टापर कहे जाते हो दूसरी पोज़ीशन पाकर भी । वह जो लड़की टाप की है वह भी कहती है एक छात्र के रूप में चिंतन ऐसा संस्कृत का ज्ञाता न भूतों न भविष्यतो । पर मैं क्या था ? इंटर के बाद किसी इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश न पा सका । मेरा बीएससी में भी कुछ ख़ास करतब न था पर आज आप ही कहते हो यह सांडों का सांड है किसी को भी गिरा सकता है । आप के कहने से लोग भी कहने लगे ।

यह सब कैसे हुआ ? इसी सङ्क पर आपसे मुलाक़ात हुई । इसी सङ्क पर फ़िराक़, निराला , एन झा घूमे थे उनका क्रिस्सा सुना , इसी सङ्क ने कहा मुझसे , ख़बाब देखने का हक़ शहज़ादों का ही नहीं यतीमों का भी है वह भी अपने कद और हैसियत से बड़े ख़बाब । एक इश्क़ ज़िंदगी से यहीं पर आरंभ हुआ । यहीं ढलती रात की तन्हाईयों में मैंने सुकून पाया था मैंने ज़ब कहा था अपने से ही मुझे सिफ़्र ख़बाब ही नहीं उनकी ताबीर भी चाहिये ।

यहीं मैंने अपने पूछा था , ऐ उम्र तू कुछ हिसाब कर मेरा , मैंने सिफ़्र साँसें ही ली हैं या कुछ हासिल भी किया है । मुश्किल नहीं है जीना हाँ बहुत मुश्किल होगा जीना यूँ ही बिना उपलब्धियों के , तभी यह आवाज़ अंदर से आयी थी अगर मैंने आज कोशिशों से किनारा कर लिया तब ताउम्र बस साँसें गिनने का काम मेरे हक़ में बाक़ी रह जाएगा । बस सर वहीं से शुरू हुई वह यात्रा जिसके आप चश्मदीद गवाह हो । यह इसी रोड से आरंभ हुई थी । मुझे बोधिसत्त्व बनना होगा , अपने आत्म संतोष के लिये । मैंने एहसान उतार यह सोचना मेरा संतोष मात्र ही होगा , यह उतर तो सकता नहीं ।

सर , यहीं वह लाइन मैंने ईजाद की थी जो आप हर रोज़ बोलते हो ,

“ मैं जन्मा हूँ एक गैर मामूली दास्तान के लिये । ”

सर एक बात बताऊँ आपको आज

चिंतन सर - एक नहीं दो बताओ यार

यह वक्त यहीं ठहर जाए तो कितना अच्छा होगा ।

मैं - सर , एक माँ की कोख भारी है जमीं से , बाप की शफ़क़त है ऊँची आसमां से पर यह जो पाक ख़बाब है इसमें माँ की कोख ऐसी जन्म देने की ताक़त है तो पिता की तरह

शफ़क़त है यह । इस सङ्क ने बहुतों को ख़बाब दिखाये हैं और उस प्रवरदिगार की इच्छा थी कुछ मेरे लिये जो ख़ाहिशें जन्म लेकर पल गई अंदर और उनको पाने की ललक लहू के हर कतरे पर छा गई ।

चिंतन सर - अनुराग कई बार तुम्हारा वाक्य- विन्यास समझ नहीं आता ।

माँ की कोख ज़मीं पर भारी है बाप की शफ़क़त ऊँची है आसमां से यह बताओ
। यह कुछ समझ नहीं आ रहा , क्या कटबैठी बैठा रहे हो ।

मैं - माँ की कोख में असीम ताक़त है पिता का न दिखने वाला अभिव्यक्ति
विहीन प्यार इस आसमां के फैलाव से भी ज्यादा है । यह जो ख़बाब हमने देखा
था और जिसके साथ हम ज़िंदा रह रहे उसमें माँ की कोख ऐसे जन्मने की
शक्ति है तो पिता की तरह का एक प्यार है । आप की ज़िंदगी से यह ख़बाब
हटा दिया जाए , आपके आँखों की शबनम बंजर हो जाएगी । आपकी पुतलियाँ
उजाले में भी अँधेरों के बीच ही रहेगी ।

चिंतन सर - अब ज़रा बोधिसत्त्व वाला फ़ंडा बताओ । वह काम का है ।

मैं - सर , कोई आपसे सीखे ज्ञान के प्रति आगरह ।

चिंतन सर - मैं रोड पर चलते हुये सीख लेता था । कोई मिला मुझसे मैं
कहता था , कुछ बताओ जो काम का हो । मैं किताब की दुकानों पर किताब
को उलट- पुलट

कर अपने काम का ढूढ़ लेता था । मेरे पास कोई पूछने आता था कि कैसे
पढ़ें, मैं कहता था पहले मुझे कुछ नायाब बताओ । आप जाओ , तीन - चार
दिन पढ़ो और फिर आकर कुछ नायाब बताओ । मेरा साथ पाने की चाहत
रखने वाले को ज्ञानी होना पड़ेगा । एक तरफ़ा संवाद नहीं चलेगा , शंकराचार्य
और मंडन मिश्र का शास्त्रर्थ होना चाहिये ।

मैं - सर , आपने मुझे भी भाव नहीं दिया था , जब मैं पहली बार आया था ।

चिंतन सर - पहली बार मैं तो मैं विधाता को भी भाव नहीं दूँगा । यह जीवन
छोटा है , इसकी सार्थकता का पहला बिंदु है , समय का सदुपयोग । अगर मैं
फ़ालतू लोगों के साथ एक क्षण भी बिताया तो जीवन की सार्थकता की अपनी
आकांक्षा के साथ समझौता कर रहा । मुझे किसी भी तरह का समझौता मंज़ूर
नहीं है ।

पर तुम्हें जो स्पार्क है वह विरलों में मैंने देखा । तुम एक ग़ैर मामूली दास्तान
के लिये नहीं एक इतिहास रचने के लिये जन्मे हो । अब बताओ , यह
बोधिसत्त्व क्या है ?

मैं - सर , यह नाम बोधिसत्त्व महायानियें ने दिया ज़रूर है पर यह उपनिषदों
की विचारधारा से पृथक् नहीं है । यह भी पुनर्जन्म के सिद्धांत और आवागमन
की प्रक्रिया से मुक्ति की ही बात करते हैं । अर्हत्व एक अनुशासित जीवन
की बात करता है पर इस अर्हत्व का विकास से आगे की वस्तु है बुद्धत्व को
प्राप्त करना । जो यह अर्हत्व है , यह संकीर्ण है । यह सभी को प्राप्त नहीं

हो सकता । यह अहंवादी है । बुद्धत्व इस तरह की संकीर्णता से दूर है । एक में स्वार्थ है तो दूसरे में परहितवाद । यह जो बोधिचित्त है यह मानसिक क्षमताओं के विकास की बात करता है । बुद्धत्व को एक जन्म में प्राप्त करना संभव नहीं है । जो इस बोधिचित्त का विकास कर रहा हो वह बोधिसत्त्व है । जो एक शरावक होता है वह अर्हत्व चाहता है वह बुद्धत्व नहीं चाहता ।

चिंतन सर - इन दोनों में फ़र्क क्या है ?

मैं - अर्हत्व में सिर्फ़ अपना विकास है, यह सबको प्राप्त नहीं हो सकता, पर बुद्धत्व में बोधिसत्त्व तब तक जन्म लेगा जब तक संसार के हर व्यक्ति को बुद्धत्व की प्राप्ति नहीं हो जाती । यह खुद्दकनिकाय में जो जातक कथायें हैं वह वहीं हैं जो बुद्ध ने जन्म लिया था पिछले जन्मों में और इस जन्म में आवागमन का चक्र टूट गया और उन्हें बुद्धत्व प्राप्त हो गया । यह कहता है कि जिनकों प्रकाश की आवश्यकता है, मैं उनके लिये दीपक हूँ, अगर विश्वाम चाहिये तो मैं शश्य हूँ । मैं यथार्थ रूप में एक दास हूँ । जबकि यह अर्हत्व साधारण व्यक्ति के लिये संभव नहीं है । एक में ज्ञान का संचय है तो दूसरे में प्रेम पर ज़ोर है ।

चिंतन सर - यह आप बोधिसत्त्व क्यों कह रहे थे । हमें बोधिसत्त्व बनना होगा ।

मैं - सर, मैंने यही कह रहा था जातक कथाओं की तरह हमें कई जन्म लेने होंगे इस सङ्क के एहसान को उतारने के लिये । एक जन्म में यह एहसान नहीं उत्तर सकता ।

चिंतन सर - यह जो कुकुर घूम रहे यूनिवर्सिटी रोड पर वह भी लगता है जातक कथाओं की तरह ही हैं । पिछले जन्म में आईएएस रहे होंगे, इस जन्म में कुकुर हो गये ।

मैं - सर, अब मैं इस पर क्या कहूँ । आप कुकुरों की कुंडली बनाकर देख लीजिये, शायद कुछ पता चल जाए । क्या पता जातक कथाओं की तरह यह सब 30/40/50 के दशक के आईसीएस हों ।

चिंतन सर - यह ससुरे अंग्रेज आईसीएस रहे होंगे । इन सबने बहुत पाप किया होगा, वही भोग रहे हैं । यह सब हिंदी वालों का हक़ मारकर आईसीएस बने होंगे, वही पाप है ।

मैं - तब तो सर जो लोग 1947 के बाद के हैं वह बहुत पापी हैं । हमारे पहले की पीढ़ियों को भारतीय होकर भी हिंदी में लिखने न दिये ।

चिंतन सर - वह तो बहुत अधम हैं । वह नर्क नहीं, महा नर्क के अधिकारी हैं ।

हम लोग बात करते - करते जार्ज टाउन , सोहबतिया बाग , अलोपी बाग पार
करके शास्त्री पुल पहुँच गये ।

शास्त्री पुल पर खटिया पर जूता उतार कर चिंतन सर लेट गये । उनकी
आदत पुलिसियाना हो गई थी । आज मतादीन की कमी खल रही थी । वह
सारा काम कर देता था । वह खटिया से ही हल्ला करके बोले , ” कोई चेला
भेजो “ । ढाबे पर सब मुझे पहचानते थे । वहाँ मैं बहुत आता था । मैं हमेशा
एक किताब या कोई कापी साथ लाता था । मुझे देखकर ढाबे पर काम करने
वाले लड़के आ गये और पूछा बंद - चाय ?

मैं - हाँ , दो ले आना ।

चिंतन सर थोड़ा दार्शनिक हो चुके थे । वह बौद्धिक विचार - विमर्श के मूड में
थे ।

वह बोले यह तुम्हारा जो दर्शन है कुछ समझा नहीं ।

मैं - सर छोड़िये । मुँह से निकल गया था । आप तो जानते ही हो , मैं ऐसे ही
हवा में तीर चलाता रहता हूँ ।

चिंतन सर - नहीं कोई तीर तुम्हारा बगैर लक्ष्य के संधानित नहीं होता ॥

मैं - सर , आप सुनना क्या चाहते हो उर्दू या हिंदी ? अब चकल्लस के लिये
अमर गुप्ता सर तो हैं नहीं ।

चिंतन सर - यार उनको लाये होते तो और मज़ा आता । इन दरक डराइवरों
से वह अच्छा टाइम पास करा देते ।

अच्छा एक बात बताओ । यह बोधिसत्त्व ही क्यों कहा ? पुनर्जन्म तो हिंदू धर्म
में भी है । वह भी कह सकते थे ।

मैं - सर , आप रात में पूरा धर्म का माठा कर दोगे । आप क्या चाहते हो ?

चिंतन सर - बस आप यह बताओ हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में क्या संबंध है और
यह पुनर्जन्म बोधिसत्त्व से किस तरह भिन्न है ?

मैं - सर यह नीरस विषय छोड़ों कोई शायरी - वायरी सुना देते हैं नहीं तो राम
पर कहो कुछ सुना देते हैं , बहुत नया लिखा है जो गोस्वामी जी और वाल्मीकि
से जो रह गया वह भी कल्पित कर दिया .. राम का परेम , राम का करोध,
भरत प्रतिज्ञा ... नहीं तो दरौपदी का यक्ष के समुख विदरोह

अधर्मरत रावण पुत्र पराकरम इन्द्ररजीत का

करता लक्ष्मण योजित बार -बार शर संधान
धर्म ध्वजा प्रहरी नंदि ग्राम वासित करता पूर्णभिषेक
हो रहे क्षीण सब शर माया के संयोजन से
कपिदल देख रहे गगन में बाणों का आपस में संबोधन
शक्ति संधान मन्त्र संवर्धित लक्ष्मण हत

चिंतन सर - यह रहन दो । आप पहले वह बताओ ।

मैं - सर यह जो बौद्ध धर्म का महायान है यह क्या है ? इसका विचार भगवद्गीता का ही विचार है । कृष्ण कहते हैं, मैं सर्वोपरि हूँ । यही बौद्ध कहते हैं । उपनिषद् की तरह देहान्तरगमन यह भी कहते हैं । जो मेरी भक्ति करता है मैं उसका कल्याण करता हूँ, यह दोनों ही कहते हैं । बोधिसत्त्व हर व्यक्ति के कल्याण और मोक्ष की बात करता है । वह अधिक संवेदनशील है । वह सबका पथ प्रदर्शक है । वह अहंकार से विहीन है । वह मनुष्य जाति के दुखों से छुड़ाने का संकल्प रखता है । वह उस ज्ञान की प्राप्ति में अपने को लगाता है जो उसे मनुष्य मात्र को मोक्ष प्राप्त कराने के अपने लक्ष्य की प्रति के योग्य बनाएगा । यह ईसाई, जोरूथरस्ट, सभी धर्मों की करूणा को अपने में समाहित किये हुये है । हिंदू धर्म की करूणा में बूद्ध का काफ़ी योगदान है । मुझे पुनर्जन्म की सारी अवधारणाओं में यह बोधिसत्त्व की सबसे उदात्त लगती है, शायद इसलिये मैंने इसको कहा ।

चिंतन सर - अब जाकर बात स्पष्ट हुई ।

मैं - सर आप कम खखेड़ी नहीं हो, जिस चीज़ के पीछे पड़ न जाओ ।

रात के 1 बज चुके थे । आसमा भी फुरसत में था । सड़क पर टरकों का आना जाना लगा हुआ था । टरक के रुकते ही ढाबे के नौकर दौड़ते थे, किसी आशा के साथ ।

चिंतन सर ने कहा, “ अनुराग अगर सेलेक्शन न हुआ इस बार तो जीवन ही ख़त्म हो जाएगा । मैं कहता किसी से नहीं हूँ पर एक आशंका हर वक्त मेरे अंदर निवास करती है । जो बात रुलाती है उससे उत्पन्न होने वाले आँसुओं को रोकने के लिये हँसने लगता हूँ । अगर मेरा चयन नहीं हुआ तब सियाह रात में रोशनी मुझे सताने लगेगी ।

मैंने कहा सर यह परेशानी की बात तो है ही । मैं घर जाता हूँ तो देखता हूँ सबके चेहरे पर टहलती ख्वाहिशें । वह ख्वाहिशें, मुझसे कहती हैं तू मेरा

मक्फतल न बना देना । वह मेरी आँखें ही नहीं हैं जिनमें उजाला ख्वाब कर रहे । वह ख्वाब मेरी आँखों से नहीं वह अपनी आँखों से मेरे सहारे देख रहे । एक उम्मीद ने सबकी दुनियाँ हसीं कर दी है । एक वहम है मेरी क़ाबिलियत का जो सबको हस्तरतें दे रहा , हँकीकत क्या है यह मैं जानता हूँ ।

देखा ऊपर चाँद की तरफ । वह चाँद जो माँ से कुर्ता माँगता था मेरी बचपन की किताबों में । मुझे लगा वह भी मुस्कुरा रहा मेरी हालात पर , मेरी छटपटाहट पर । मैं मुन्तशिर हो रहा अंदर ही अंदर ।

हम लोग पैदल चलते हुये गलियों में घुसे । चिंतन सर की जीप और हम लोग एक साथ पहुँचे गली के मुहाने पर । माँ आगे के सीट पर पूरे गर्व युक्त मुद्रा में बैठी थी । पीछे के सीट पर मेरे मामा का लड़का , माँ का ख़बरी दादू बैठा था ।

मैं समझ गया एक बड़ी दासतां माँ लिख कर आ गई है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 102

माँ के साथ ही हम लोग घर के पास पहुँचे , जीप और हम लोग आगे- पीछे ही थे । चिंतन सर ने पूछा , “ सब ठीक तो रहा माता जी ? ”

माँ- जिसके इतने प्रतापी बच्चे हों उसका सब ठीक ही रहेगा ।

माँ को जीप मिल गई थी वह ज्यादा गल्ला गाँव से लाद लाई थी । दादू को देखकर ही मैं समझ गया कि यह अपने मायके भी भौकाल मार कर आ गई है ।

बहुत रात हो चुकी थी । चिंतन सर ने कहा , “ माता जी कल सुबह मैं चला जाऊँगा जल्दी , शायद मुलाक़ात न हो । जल्दी ही फिर आऊँगा ।

माँ - सुबह चाय पिला दूँगी , कुछ खा भी लेना ऐसे कैसे जाओगे ।

दादू ने मुझसे कहा , “ मातादीन ने बहुत बताया कुंडली गुरु के बारे में , मेरा भी भैयज़ परिचय करा दो । हमें भी आशीर्वाद मिल जाए । ”

मैंने उसको बुलाया और सर से परिचय कराया । हमने कहा कि सर इसको आशीर्वाद दो और बता दो इसका भविष्य क्या होगा ?

सर ने जन्मतिथि, समय पूछा और कुंडली का चक्र खींचकर कहा , “
तुम्हारा जीवन अनुराग की सेवा में बीतेगा ।

दादू ने उनका पैर पकड़ लिया और कहा ,

“ भैया यही हमारी इच्छा भी है । हम अब कहीं न जाब बस मुन्ना भैया के साथ
रहेंगे । ”

चिंतन सर ने कुंडली देखी और कुछ देर उससे बात किया और मुझसे कहा ..

अनुराग इसको आहूजा के यहाँ स्थापित कर देते हैं । वहाँ एक अपना दूत
रहना चाहिये , जो पल- पल की खबर दे । यह उचित व्यक्ति है । यह बात-
चीत के कौशल में निपुण है और हमें अब मैन पावर काफ़ी चाहिये । यह कार्य
मैन पावर रिकर्स्टमेंट का काम अभी से शुरू करना होगा ।

मैं - सर यह कुछ ज्यादा ही तेज है ।

चिंतन सर - यह कुंडली में इसकी मंगल की दशा देखकर लग रहा है । इसमें
स्वामिभक्ति की थोड़ा कमी है ।

दादू - सर , मैं कल हलफ़ उठा लूँगा और अपना सारा जीवन आपको सुपुर्द
कर दूँगा । मुझे अपनी शरण में ले लो ।

चिंतन सर - हर चीज का उपाय है । तुम कल से आदित्य हृदय स्त्रोत और
किञ्चिन्धाकांड का पाठ करो । यह स्वामिभक्ति और मित्रता की भावना का
विकास करेंगे ।

अनुराग , तुम चिंता न करो यह पाठ वह दोष दूर कर देंगे । इसको आहूजा के
यहाँ रखते हैं । मैं जाकर आहूजा को और साधता हूँ ।

मैं - सर , आप आहूजा के चक्कर में इतना क्यों पड़े हो ?

चिंतन सर - बहुत बेवकूफ हो यार । घर आई लक्ष्मी को ढुकरा रहे हो । हर
आदमी का प्रारब्ध होता है । दाने- दाने पर लिखा है खानेवाले का नाम, यह
तो सुना ही होगा । त्याग कोई और करे फल कोई और पाता है , यह कोई नई
बात तो है नहीं ।

यह ऋषभ- शालिनी गठजोड़ हमारे भाग्य से हुआ है । उनके पास धन है हमारे
पास जन । जन धन को खाएगा । यह आहूजा भी बोधिसत्त्व है । वह हमारा
क़र्ज़ा देने आया है और हमें देकर बुद्धत्व को प्राप्त करेगा । हम अगर उसकी
सम्पदा नहीं लेंगे तब वह जीवन चक्र के चक्कर से मुक्त नहीं होगा । तुम
चाहते हो कि तुम इस पाप के भागी बनो कि उसको मुक्ति न मिले ? उसको
मुक्ति देना हमारा कर्तव्य है । आपरेशन आहूजा भाग एक हो गया अब भाग दो
इसी हफ़ते में ।

सर बोले , दादू तुम त्याग को तैयार हो ?

दादू - हाँ सर

चिंतन सर - तुम हमारे लिये घर द्वार छोड़कर हमारे साथ एक लक्ष्य की तलाश के लिये चलने को तैयार हो ?

दादू - हाँ सर ।

चिंतन सर - तुम दिये गये आदेशों पर कोई प्रश्न करोगे ?

दादू - नहीं सर ।

चिंतन सर - रात बहुत हो गई है जाओ विश्राम करो और हमारे अगले निर्देश की प्रतीक्षा करो ।

सब लोग सोने चले गये । चिंतन सर ने कहा , “ सोते नहीं है आज ” । वैसे ही दो बज गया है । सुबह चार बजे निकलना है , अब क्या सोना । मैंने कहा , जैसा आप कहें , अब वैसे भी नींद कहाँ आती है । रात की सियाहियों में सिर्फ़ आशंकाएँ ही आती हैं जो नींद को खा जाती हैं ।

चिंतन सर - बाबा , हिंदू धर्म का बौद्ध धर्म का सम्बन्ध क्या है ? क्या प्रभाव बौद्ध धर्म का हिंदू धर्म पर पड़ा?

मैं - सर इन रात की तारीकियों में यह धर्म का विवेचन क्यों?

चिंतन सर - अनुराग , यह तुम जानते ही हो कि मैं बेवजह कोई बात नहीं करता । पहले बताओ फिर वजह बताता हूँ ।

मैं - सर यह प्रश्न विवेचन की माँग करता है , धर्म का स्वरूप सूक्ष्म है ।

चिंतन सर - तुम भीष्म की तरह बात न करो ।

मैं - भीष्म इसमें कहाँ से आ गये ?

चिंतन सर - सभा - भवन में जब दरौपदी का चीर- हरण हुआ था , उसके पश्चात् दरौपदी ने जब न्याय- अन्याय का प्रश्न उठाया , तब भीष्म ने कहा था कि एक व्यक्ति दास बनकर अपना सब कुछ खोकर भी अपनी पत्नी का स्वामी रहता ही है , इस कारण से धर्म का स्वरूप बहुत सूक्ष्म है और मैं इसका विवेचन करने में असमर्थ हूँ ।

मैं - सर , यह सब बड़ी नायाब- नायाब चीज़ कहाँ से लाते हो आप ?

चिंतन सर - अनुराग , हम लोग बन जाते हैं महंत , बाबा । वहाँ पर ज्ञानी लोगों की कमी है । हमको तो कुँडली में महारत है तुमको भी सिखा देते हैं ।

वहाँ पर भविष्य ज्यादा उज्जवल है । जैसे शंकराचार्य ने सारे बौद्ध समर्थकों को पराजित किया था वैसे ही हम लोग शास्त्रार्थ की परम्परा शुरू करते हैं । एक- एक करके सारे महंतों - मठाधीशों को पराजित करते हैं । उन सबको हराना तो बहुत आसान होगा हमारे लिये । उन बेवकूफ़ों को भाँग पीने और चार किलो भोजन करने के अलावा कुछ आता नहीं ।

मैं - सर, आपकी योजना वृहद है । यह आईएस की नौकरी, मैंने पावर रिक्लॉटमेंट, आहूजा का धन, देश की पंचायत और अब एक अखाड़े का निर्माण । एक जीवन छोटा है आपके लिये ।

चिंतन सर - मानव जीवन बहुत मुश्किल से मिलता है, अगर धर्म की व्याख्याओं पर विश्वास किया जाये । इस चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद मिला मानव जीवन सार्थक होना चाहिये । अब एक व्याख्या आपके बोधिसत्त्व की आ गई । तब तक जन्म लो जब तक हर एक व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति न हो जाए । अपनी मुक्ति से ज्यादा आवश्यक है दूसरे की मुक्ति । परहितवाद ही जीवन है । यह दया, करुणा ध्येय है । एक जीवन में कई जीवन जीने होंगे ।

मैं - सर, आप तो लगे हो आहूजा का धन कङ्जा करने में, देश की पंचायत में जाने के और अब एक नया फ़िटूर महंत का अखाड़ा बनाकर शास्त्रार्थ करना और सभी को पराजित कर अपनी धर्म धजा फहराना । यह सब अहंकारी दृष्टिकोण है । इसमें परहितवाद कहाँ है? इसमें दया, करुणा कहाँ है?

चिंतन सर - यार, इस आहूजा का धन लोगों के काम आए, यही तो लक्ष्य है । यह ससुरा कई बीमारी पाले है अपने अंदर, यह कभी भी टे हो सकता है । यह शालिनी - ऋषभ तो भारत आने से रहे । अब कोई तो यह धन भोगेगा ही । हमसे ज्यादा सुपात्र कौन है इस धन को भोगने के लिये - ब्रह्मण वह भी जजमानी वाला, संस्कृत का ज्ञाता, आचार- विचार से पवित्र, ग्रह- नक्षत्र का ज्ञाता, गंभीर । इससे मैं ऐसी गाय की दक्षिणा लूँगा जो इसको वैतरणी बहुत ही सुविधाजनक रीति से पार करा देगी ।

मैं - सर, आप गाय कहाँ चाह रहे हो, आप तो पूरी सम्पदा चाह रहे हो ।

चिंतन सर - इससे सज्जिया-दान कराऊँगा । इस दान की बहुत महत्ता है । इसमें व्यक्ति अपना सर्वस्व दान कर देता है और अगले जन्म में वह सब प्राप्त करता है । मैं इसका कस्टोडियन हूँ, दरस्टी हूँ । इसको अगले जन्म में देने का वायदा करूँगा, बस इस जन्म में इसे हमें समाज के लिये उपयोग करने दे वह भी अपनी मृत्यु के बाद ।

मैं सर , अगर वह कह दे आप ले लेना मेरी मृत्यु के बाद तब आप कोई यज्ञ कर मारोगे इसकी त्वरित मृत्यु का । आप काउंटर करते ही हो बदमाशों का , इसका भी करा दोगे ।

चिंतन सर - मैंने सारे काउंटर कुंडली देख कर किये हैं । अब जब उसका जीवित रहने का योग है ही नहीं तो मैं क्या कर सकता हूँ । मैं विधाता के काम में कभी दखलंदाज़ी करूँगा ? यह अन्याय मैं नहीं कर सकता ।

एक बार बाबू बजरंगिया को पकड़ा । मैं कुंडली बनाया वहीं जीप पर । बजरंगिया डरा था कई महीने से कि मेरा काउंटर होगा । मैंने एकाध बार और पकड़ा । उसको छोड़ दिया , यह कहकर अभी इसका मृत्यु योग नहीं है । तीन महीने में ही ससुरे ने अंधेर कर दिया । फिर पकड़ा और जीप पांडव नगर पार कर रही थी । मैंने बोला मातादीन से अरे .. अरे .. इसका मृत्यु योग है ।

मातादीन ने कहा , “ क्या करें सर ? ”

मैंने कहा , इसको कहो भाग जाए नहीं तो अगले चौराहे पर जीप का एक्सीडेंट होगा और सब मारे जाएँगे ।

मातादीन ने कहा , तू भाग जा बजरंगी नहीं तो हम सब मारे जाएँगे तेरे साथ । साहब का ग्रह- नक्षत्र से याराना है बगैर तार के दूरसंचार होता है जैसा मेघदूत में होता था ।

बजरंगिया भगा ।

मैंने कहा मातादीन से , बेवकूफ़ों , ईश्वर का आदेश है पालन करो ।
वह वहीं ढेर हो गया ।

इस आहूजा में अभी नहीं है मृत्यु योग । अभी यह व्यापार को विस्तारित करेगा । एक मौर्य साम्राज्य सरीखा साम्राज्य किसी ब्राह्मण को साँपने का योग दिख रहा ।

मैं - सर , यह बुद्ध की तरह रातिर में सब कुछ त्याग कर ज्ञान की तलाश में निकल भी सकता है ।

चिंतन सर - यह मायावी है । इसको माया - मोह से लगाव है । इसके भीतर त्याग की भावना नहीं है । इसको अपरिग्रह के लिये बरेन वाश करना होगा । अब आप यह काम मुझ पर छोड़ो , आप एक वृहद् साम्राज्य के उत्तराधिकारी बनने को प्रस्तुत हो , बाकी बाज़ीगरी मुझ पर छोड़ो ।

मैं - सर यह ख़्याली पुलाव आप अच्छा बना लेते हो ।

चिंतन सर - यह जो असंभव स्वप्न है वह पहले जन्म लेता है । सारे स्वप्न एक असंभावना से आरंभ होते हैं, उसके बाद शनैः- शनैः उसमें एक हल्की सी - बारीक सी संभावना दिखने लगती है । इसके बाद प्रयत्नशील व्यक्ति उस बारीक हल्की सी लकीर को स्पष्ट करता है और अप्रयत्नशील व्यक्ति असंभव मानकर त्याग देता है । यह जो सिविल सर्विस का स्वप्न है, वह भी तो ऐसा ही है । यह तो निर्विवाद रूप से इस देश की सबसे कठिन परीक्षा है और विवाद के साथ यह कहा जाता है कि यह विश्व की सबसे बड़ी और कठिन परीक्षा है । इतनें अधिक मेधावी और वह भी इतनी बड़ी संख्या में किसी और परीक्षा में तो बैठते नहीं । इस परीक्षा के द्वारों को भी हमने अपने कौशल का परिचय तो दिया ही है, वह भी तब जब भाषा और परिवेश दो की अपंगताएँ हमारे साथ थीं ।

यह हर कोई कह रहा था, यह आपके बस की नहीं । आपके अपने मामा ने ही आपसे कहा कि ख़बाब वही देखो जिसको देखने लायक आपकी आँखें हों, पर तुमने न केवल परीक्षा दी वरन् अपने विद्वता का प्रचम भी लहराया । तुम्हारा घोर विरोधी भी यह कहता है रक्त में जज्बा और ज्ञान के प्रति आग्रह हो तो अनुराग ऐसा हो । यह सब कैसे हुआ ? एक असंभाव्य की संभाव्य की ओर यात्रा के प्रयास से ।

मैं - सर यह आहूजा लगता है एक दमड़ी देगा किसी को ?

चिंतन सर - उसकी मजबूरी बाध्य करेगी हमें देने को । उसके पास सबकुछ है पर मैन पावर नहीं है । हमारे पास कुछ और नहीं है पर मैन पावर भरपूर है । यह होश और जोश का मिश्रण होगा । लक्ष्मी का सरस्वती में सम्मिलन ही नहीं समर्पण भी होगा ।

मैं - सर बहुत देर हो गई है, अब सोते हैं । अब कल से प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी योजनाबद्ध तरीके से आरंभ करना है ।

मैंने कमरे की बत्ती बंद की और आँख बंद करके सोने का प्रयास कर रहा था और थोड़ी सी आँख लगी ही थी कि चिंतन सर की आवाज़ आई

यह उपनिषद - भगवद्गीता- बौद्ध में क्या सम्बन्ध है ?

मैं उठ गया । मैंने कहा क्या हुआ सर ? इतनी रात में यह क्यों ख्याल आ रहा ? आप इस पर बहुत देर से क्यों लगे हो ?

चिंतन सर - मुझे लग रहा मेरा दर्शन शास्त्र के पेपर का एक सवाल ठीक नहीं हुआ , मुझे कई दिनों से नींद नहीं आ रही । तुमने जबसे बोधिसत्त्व की बात की चिंता और बढ़ गई है । मुझे ज़रा बताओ ।

मैं बैठ गया और एक संवाद धर्म के गूढ़ सिद्धांतों पर रात के अँधेरों में प्रकाशमान होने लगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 103

मैंने सर से पूछा , “आप क्या जानना चाहते हैं ?”

“ क्या था प्रश्न आपका ?”

चिंतन सर - बुद्ध धर्म और भारतीय दर्शन पर प्रभाव ।

मैं - सर यह सवाल समझने के लिये बुद्ध और भारतीय दर्शन दोनों को समझना होगा । मैं अपनी समझ से बात कहने की कोशिश करता हूँ , बाकी मनन- चिंतन आप कर लेना ।

चिंतन सर - मैं आँख बंद करके ध्यान- मग्न मुद्रा में सुनता हूँ , आप बाँचते जाओ ।

मैं - उपनिषदों से बौद्ध के ओर की यात्रा बहुत ही रोचक है । बुद्ध ने एक ऐसे विचार प्रवाह को जन्म दिया जिस प्रवाह के निर्माता- विचारक कालांतर में कई हुये । उपनिषद एक वातावरण का निर्माण करता है , जिसका अध्ययन जीवन के गूढ़ प्रश्नों पर प्रकाश डालता है और बौद्ध धर्म में मनुष्य के जीवन में विचार की अभिव्यक्ति मिलती है । एक वैभवशाली- समृद्धि देश का राजकुमार जीवन की कुछ घटनाओं को देखकर एक ऐसी 40 वर्ष की धर्म प्रचार यात्रा पर निकलता है जिसका उद्देश्य मानवमातृका कल्याण था । उसके जीवन से जुड़ी घटनाएँ जो कालांतर में ललितविस्तार एवं जातक कथाओं में आती हैं वह बुद्ध की ही उस विचारधारा का निषेध कर देती हैं जो बुद्ध ने कहीं थी । उन कहानियों की संरचना बुद्ध की मृत्यु के क़रीब दो सौ वर्ष बाद हुई , इसलिये इनकी प्रामाणिकता पर सवाल वाजिब ही है । बुद्ध ने कभी न कहा मुझ में देवत्व का आरोपण करो पर इन कथाओं और प्रवर्ती

घटनाओं और जन्में सम्प्रदायों में से कुछ एक ने बुद्ध को न केवल देवता बना दिया वरन् हिंदू धर्म के अवतारवाद में स्थापित कर दिया, नि:संदेह बुद्ध का इसको समर्थन प्राप्त नहीं हो सकता। जिस धर्म की कुछ मान्यताओं के विरुद्ध बुद्ध के धर्म और विचार का जन्म हुआ, उसी धर्म के अवतारों में बुद्ध का स्थापन, यह बुद्ध के विशाल व्यक्तित्व और उसकी विचारधारा के प्रति एक सम्मान है और यह सनातन धर्म बुद्ध के सिद्धांतों के प्रति आग्रह दिखाता स्पष्ट दिख रहा है।

चिंतन सर - बुद्ध का क्या विरोध था वैदिक धर्म से ?

मैं - हिंसात्मक और क्रूर यज्ञ बुद्ध के अन्तःकरण पर आघात पहुँचा रहे थे। परमात्मा के विषय में मिथ्या- विश्वास के कारण मनुष्य के नैतिक जीवन को भारी क्षति पहुँच रही थी। दैवीय आज्ञा का मिथ्या आवरण ओढ़कर निहित लक्ष्यों की पूर्ति का प्रयास किया जा रहा था। आचारशास्त्र को धर्म में मिश्रित करने के कारण बुराइयों का जन्म हो रहा था। पुरोहितों की मध्यस्थता के बिना मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है, यह बुद्ध की स्पष्ट मान्यता थी। मोक्ष एक साधारण प्रक्रिया है, यह जटिलताओं से दूर है। इस दृश्यमान जगत को अपनी व्याख्या के लिये किसी परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है। कर्म का सिद्धांत उसकी व्याख्या करने के लिये पर्याप्त है। जनसाधारण को उपनिषदों का कोई ज्ञान नहीं है, इसलिये मिथ्या विश्वासों का जन्म हो रहा है। पुरोहितों का समाज के धर्म क्षेत्र में आधिपत्य हो रहा है और वह दैवीय प्रतिनिधि होने का मिथ्या दावा कर रहे हैं।

चिंतन सर - एक बात और बताओ, क्या बुद्ध हेतुवादी थे ?

मैं - हम उनको हेतुवादी नहीं कह सकते क्योंकि हेतुवाद या मुक्तिदवाद की परिभाषा में धार्मिक विश्वासों को नष्ट करने के लिये तर्क के प्रयोग के प्रति एक मानसिक प्रवृत्ति होती है। बुद्ध एक निरपेक्ष सत्य के जिज्ञासु थे। वह मन के अंदर किसी आग्रह और पक्षपात के पक्षधर न थे।

चिंतन - तुम कह रहे बुद्ध हेतुवादी न थे। पर मेरी समझ से थे।

मैं - आप ऐसे विद्वान के विचारों पर मैं अकिञ्चन क्या सवाल खड़ा कर सकता हूँ पर आपकी शंका के समाधान का प्रयास करता हूँ।

बुद्ध ने अपना प्रयास केवल निषेध की इच्छा से आरंभ न किया था। वे यथार्थसत्ता का अध्ययन एवं अनुभव बिना किसी अलौकिक प्रेरणा के स्वीकार करना चाहते थे। प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या किसी अलौकिक घटना के हस्तक्षेप के बिना वह करना चाहते थे। बुद्ध मनुष्यों को मोक्ष दिलाने

का कार्य नहीं करता बल्कि उस कार्य- प्रणाली या पद्धति का उपदेश देते हैं जिस पर चलकर मोक्ष प्राप्त किया जा सके ।

चिंतन - बुद्ध और उपनिषद में क्या साम्यता है ?

मैं - प्राचीन बौद्धमत एक नितान्त मौलिक सिद्धांत नहीं है । बुद्ध को अपने उनके समय के धार्मिक विचारों से पूर्ण रूपेण विच्छेदित नहीं किया जा सकता । बुद्ध ने स्वयम् कहा है आत्मसंस्कृति के प्रयत्न के द्वारा जिस धर्म की उन्होंने खोज की है वह एक प्राचीन मार्ग है । बुद्ध ने पुराने आदर्शों को ही अपनाया । बुद्ध की अपनी कल्पना जो विकसित हुई उसमें वैदिक धर्म के बहुदेववाद , धर्म के साथ असंगत समझौतों का अस्वीकरण था ।

चिंतन सर - प्राचीन बौद्धमत उपनिषदों के विचार की एक नये दृष्टिकोण से पुनरावृत्ति मात्र है । यह कहा जा सकता है ?

मैं - हाँ सर , यह कहा जा सकता है ।

चिंतन सर - मेरे इस कथन में कोई संशोधन करना चाहोगे ?

मैं - किसमें? उपनिषदों की पुनरावृत्ति वाले में ?

चिंतन सर - हाँ ।

मैं - सर , गौतम की पृष्ठभूमि देखें । जन्म, पालन , मृत्यु सब एक हिंदू के रूप में । उनके सारे सिद्धांत अर्वाचीन सनातन धर्म से साम्य रखते हुये । मौलिकता क्या थी गौतम में ? पहले से विद्यमान बातों का सुधार किया , करमबद्ध किया , औचित्य परीक्षित किया , तर्क की कसौटी पर कसा ।

कर्मकांड के प्रति विरोध उनका और उपनिषद का एक है । कर्म का सिद्धांत है और मोक्ष की संभावना है , वह भी सभी के लिये । दुःख इस भौतिक जीवन की अनिवार्य घटना है । आप ही बताइये उपनिषद है या नहीं ? यह बौद्ध धर्म प्राचीन सनातन धर्म के दायरे में बढ़ा और समृद्ध हुआ ।

बुद्ध ही कहते हैं , मनुष्यजन्म दुःख है । संसार में कहीं ऐसा स्थान नहीं मिलेगा जहाँ मृत्यु के आकरमण से बचा जा सके । दुःख के कारण में तृष्णा है और बार- बार जन्म लेने का कारण भी तृष्णा है । उपनिषदों ने पहले ही दुःख के कारण की ओर निर्देश कर दिया था । क्षणभंगुरता का सिद्धांत किसका है ?

बुद्ध की स्थापना है - संसार में कुछ भी स्थायी नहीं है । यदि कोई वस्तु स्थायी है , नित्य है तो वह है आत्मा ।

सर आप ललितविस्तार पढ़ें आपकी बहुत सी शंकाओं का समाधान हो जाएगा । जन्म होने पर ही मृत्यु भी संभव है । अज्ञान का विनाश आवश्यक है ।

चिंतन सर - थोड़ा और स्पष्ट करो ?

मैं - हीनयान क्या कहता है ? इस जीवन का लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना है । यह अपनी ही शक्तियों द्वारा मोक्ष की संभावना का विधान करता है । हीनयान, बुद्ध की ऐतिहासिक परम्पराओं को अधिक शरद्धालुता के साथ प्रस्तुत करता है जबकि महायान की महत्वाकांक्षा जनसाधारण की रुचि का विचार करके ऐसी अवस्था बताता है जिसमें उनकी हार्दिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके । हीनयान में एक अहंवाद है जबकि महायान में परहितवाद ।

चिंतन सर - यह हीनयान - महायान का फ़र्क क्या है, दार्शनिक स्तर पर ?

मैं - सर, हीनयान कहता है निर्वाण प्राप्ति के अधिकारी सब नहीं हैं । वह थोड़े से ही व्यक्ति हो सकते हैं जो भिक्षु जीवन व्यतीत करते हैं जबकि महायान ने कहा है कि प्रत्येक मनुष्य बोधिसत्त्व बनने का उद्देश्य रख सकता है । निम्न जाति का मनुष्य भी धर्माचरण करने एवं बुद्ध में भक्ति रखने से मोक्ष प्राप्त कर सकता है । भक्ति की महत्ता का सिद्धांत यहाँ स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । मानववाद और सार्वभौमवाद आदिम बौद्ध धर्म के भाव के सर्वथा अनुरूप पाये जाते हैं । मनुष्य मात्र को मोक्ष के सुख का लाभ पहुँचाना ही बुद्ध के जीवन का ध्येय था । महायान में निर्वाण से अधिक बल ज्ञान संपन्न संत की पदवी प्राप्त करने के ऊपर दिया गया, यहीं बोधिसत्त्व है । यहीं आगे चलकर निर्वाण शब्द का व्यवहार अमरत्व पर केन्द्रित ध्यान की प्रसन्नमुदरा के लिये होने लगा । निर्वाण के विचार के स्थान पर एक स्वर्ग का विचार महायान में आया और बोधिसत्त्व की प्राप्ति के मार्ग में एक व्यक्ति असंख्य दिव्य लोकों में निवास का सुख भोगता है ।

चिंतन सर - निर्वाण का क्या अर्थ है ?

मैं - पुनर्जन्म के बंधन से बरी हो जाना ।

सर अब बंद करते हैं । यह दीवारें भी बोझिल हो रहीं कि इतनी रात में क्या फ़ालतूगीरी चल रही । यह ईंटें भी सोच रही होगी कि कहाँ हमको लगा दिया गया । हमको किसी सिनेमाघर या किसी साजकार के यहाँ लगाया गया होता तो कुछ मनोरंजन होता । यह लेखक- विचारकों के घर में बोझिल माहौल होता है ।

चिंतन सर - अब आप इस ईंट की व्याख्या करो । यह किसके यहाँ लगी होती तो सबसे प्रसन्न होती ?

मैं - सर एक संगीतकार या चित्रकार के यहाँ ये सबसे अधिक प्रसन्न होती ।

चिंतन सर - वह कैसे ?

मैं - प्रकृति के सबसे नज़दीक कौन होता है ?

एक चित्रकार या एक संगीतकार । चित्रकार रंगों में प्रयोग करता है तो संगीतकार स्वर लहरियों में और दोनों ही अपनी आत्मा का तादात्म्य प्रकृति से कर लेते हैं ।

चिंतन सर - लेखक - विचारक क्यों नहीं कर सकता ?

मैं - सर प्रकृति के जितना नज़दीक एक साजकार या चित्रकार जाता है उतना कोई और नहीं जाता । कल्पनाशीलता सबके पास है - शब्दों- रंगों - लहरियों की । मुख्य सब हैं बस एक आयाम का फ़र्क है ।

चिंतन सर - यार मेरा मन पुलिस की नौकरी में लगता नहीं है । मन कर रहा जो चंद गुजरे लम्हों में जो तुमने बता दिया उसके बाद की ज़िंदगी इसी में गुजर जाए तो अच्छा है ।

एक बात और बताओ - यह भगवद्गीता और बुद्ध में क्या समानता है ?

मैं - महायान और भगवद्गीता एक ही बात करते हैं । कृष्ण कहते हैं, मैं सर्वोपरि हूँ, इन्होंने भी बुद्ध को वही दर्जा दे दिया । देवातिदेव की संकल्पना भगवद्गीता में है, यहाँ भी है । सर्वमुंडरीक बगैर लाग लपेट के कहता है, वह सब बोधिसत्त्वों की सृष्टा है, वह संसार का जनक है, वह स्वयम्भू है ।

यह भी बात है कि जीवन के प्रति एक आदर भाव शायद बोद्ध धर्म से ही हिंदू धर्म में आया है । उद्योग पर्व क्या कहता है ? विजय से घृणा बढ़ती है और घृणा से घृणा नष्ट नहीं हो सकती । यह कहाँ से आया ?

चिंतन सर - बाबा मेरा आईएस तो गया ?

मैं - क्यों ?

चिंतन सर - यह सब कुछ नहीं लिखा । यह लिखा होता तो कलम तोड़ नंबर मिलता । तुमने कभी हवा ही न दी कि इतना दर्शन का गहनतम ज्ञान है तुमको जबकि दर्शन -शास्त्र आपका विषय नहीं है तब भी । अब मेरी बाकी रातों की नींद उड़ गयी है ।

मैं जिस नौकरी को करना नहीं चाहता वह करनी पड़ सकती है ।

माँ उठ कर आ गई , सुबह के पाँच बज रहे थे । वह गंगा नहाने जा रही थी । उसने चाय और ब्रेड बनाकर दे दी । वह बोली , मैं गंगा माँ से तुम दोनों के लिये आराधना करूँगी ।

वह चली गई । चिंतित- भंगित - हतित - पराजित मुदिरत चिंतन सर तैयार होने लगे । मैं किताबें सजाने लगा । इतने में पेपर वाला पेपर लेकर आ गया । पेपर में समाचार देखने लगा ,

मन में ख्याल आया ऐ ज़िंदगी कभी तू मुझसे भी हमर्दर्दी कर । मैं जानता हूँ तू मुझसे रुठी है पर यह तो बता तुझे मनाऊँ कैसे ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 104

चिंतन सर थोड़ा प्रसन्न कम थे , उनका मूड ख़राब हो गया था । वह अपना बुद्ध धर्म और भारतीय दर्शन का सवाल ख़राब कर आये थे । मैं यह भी समझ गया कि यह अब जगदंबा मौर्य का भी मूड ख़राब करेंगे , इस रातिर के संवाद का पूरा वृतांत उनको बता कर ।

जगदंबा मौर्य और चिंतन सर में पटती तो थी पर अंदर ही अंदर बहुत प्रतिस्पर्धा थी । यह दोनों एक ही तहसील से आये थे और एक ही कालेज से इंटर किये थे । यह दोनों ही बहुत मेधावी थे , बीए में दोनों का विषय भी एक था - अंग्रेज़ी साहित्य, संस्कृत साहित्य और दर्शन शास्त्र । यह दोनों ही अंग्रेज़ी में पैदल थे और येन- केन - प्रकारण अंग्रेज़ी में पास कर पाए थे । अंग्रेज़ी में दोनों साल 150 में से 60 से कम अंक पाकर भी बीए में प्रथम श्रेणी (फ़र्स्ट डिवीजन) आराम से पा गए थे । संस्कृत व्याकरण के पेपर में जिसमें लघु सिद्धांत कौमुदी हुआ करती है उसमें चिंतन सर को 74/75 मिले थे और जगदंबा मौर्य को 73/75 । यही हाल दर्शन शास्त्र के लाजिक के पेपर में था उसमें तकरीबन 70 /75 के आस- पास दोनों का था और सिविल सर्विसेज़ में दोनों ने ही मुख्य परीक्षा में संस्कृत और दर्शन शास्त्र लिया था ।

चिंतन सर प्रारम्भिक परीक्षा में इतिहास लेते थे और जगदंबा मौर्य दर्शन । यही उनका प्रारम्भिक परीक्षा में इतिहास लेना मुझे उनके नज़दीक ले आया । मैंने इतिहास परीक्षा में लेने का निर्णय जब लिया था तब मैं ज़गह - जगह

भटक रहा था । उस भटकाव में इनसे टकराहट एक दिन हो गई । उस समय मैं बहुत परेशान था । इलाहाबाद के रक्त पिपासु सीनियर्स जिनका एक ही काम है दिग्भरमित करना वह कह रहे थे हर टापिक पर अलग- अलग किताब पढ़ों । अशोक - रोमिला थापर , सिंधु घाटी सभ्यता- किरण थपलियाल , गुप्त युग - उदय नारायण राय , पराचीन शासन व्यवस्था- ए एस अल्टेकर , 800- 1200 - हरिश्चंद्र वर्मा, खिलजी- तुगलक़ - हबीब निज़ामी , मुग़ल काल तो कई किताब से पढ़ना होगा और साथ ही इरफान हबीब नुरुल हसन के लेख पढ़ना । आधुनिक इतिहास - रजनी पाम दत्त, ए आर देसाई , सुमित सरकार , बिपिन चन्द्र, तारा चंद , दक्षिण भारत का इतिहास - नील कंठ शास्त्री ।

विश्व इतिहास में लिप्सन , ई एच कार , डेविड थामपसन , हेज, हेजन , बर्न, कैटलबी एल मुखर्जी से पढ़ो ।

हर किताब में कुछ ही बेहतर होता है , इसलिये टापिक वाइस पढ़ो । यह आईएएस बनना एक असंभव प्रक्रिया है । पता चला कि आप को जो टापिक जिस खास किताब से पढ़ना है वह आप किसी ग़लत किताब से पढ़ गये । मसलन वल्ड वार पढ़ना है डेविड थामपसन से आप पढ़ गये कैटलबी से । यहाँ एक पंथ- प्रदर्शक आवश्यक है, उसके चिराग की रोशनी में आगे बढ़ो । अभी आपका चिराग अँधेरी रातों में दूर तक रौशनी देने लायक़ नहीं है , पर यहाँ लोग यह सुनते कहाँ हैं । परीक्षा का फार्म भर दिया और ज्ञानी बन गये । हमको देखो , हम कितने साल से लगे हैं । मुझे अब समझ में आया कि कैसे पढ़ा जाये और किस किताब में क्या काम का है । इस वर्ष हमारा होगा । हमें पिछले वर्षों तक यह पता ही न था । तुम भाग्यवान हो मुझसे टकरा गये और सही सलाह प्राप्त हो गई । यहाँ इस परीक्षा के क्षेत्र में कदम- कदम पर खतरा है और यहाँ लोग खाई बनाकर ऊपर धास का आवरण बना कर कहते हैं , अब दौड़ो । वह जानते ही हैं कि नीचे खाई हैं और तुमको गिरना ही है और फिर सब मिलकर हँसेंगे । यही कारण है कि यहाँ रिज़ल्ट ख़राब होना शुरू हो गया । पहले लोग बता देते थे कि कैसे पढ़ो , पर अब इस शहर से दया- धर्म का हरास हो रहा । जैसे- जैसे गंगा का पानी कम हो रहा वैसे- वैसे धर्म का हरास हो रहा । विधाता इस शहर पर कृपा करे । एक बात और , भारतीय विद्या भवन सीरीज़ तो ज़रूर देखना , कई बार सवाल सीधे उसी में से पूछ लिये जाते हैं ।

मैं बहुत हताश था , इसमें से कई किताबें अंग्रेज़ी में थी जिसमें हमारा है निल बटे सन्नाटा । यह मुझसे हो ही नहीं सकता था । उसी समय मैं इनसे मिला , इन किताबों की लिस्ट लेकर कि इसको कुछ कम किया जा सकता है ? इतनी किताब तो मैं पढ़ नहीं सकता ।

मैंने किताबों की लिस्ट दिखाई और कुछ राय माँगू उसके पहले ही सर बोले, “ यह है क्या? यह किन अंग्रेज टाइप मुहल्लों का नाम लिख कर लाये हो । ”

मैं - सर में बहुत परेशान हूँ । इतनी किताब पढ़ूँगा कैसे ?

सर - यह कौन दिया ?

मैं - सर सर सुंदर लाल गया था । वहाँ पर चतुर्वेदी सर दिये हैं ।

सर - ई चतुर्वेदिया को एक भी श्लोक नहीं आता नाम रख लिया है चतुर्वेदी । इन सब लोगों के ही कारण धर्म का ह्रास हो रहा । आप इसमें से एक भी किताब न पढ़ो । आप एनसीआरटी की तीनों किताब रट मारो और वी के अग्निहोत्री से सवाल को हल करो । मैं वही करता हूँ और बेधङ्क- धड़ल्ले से इंटरव्यू पर इंटरव्यू दे रहा । उसी समय जगदंबा मौर्य आ गये थे । सर उनको एसपी साहब कहते थे अपने स्कूल के दिनों से ।

इसका कारण यह था कि वह पुलिस की सेवा में जाने के बहुत इच्छुक थे । उनकी इस इच्छा का कार्य- कारण परम्परा से संबंध था । इनके गाँव के ठाकुर जो दबंग और लठैत थे, इनकी कुछ ज़मीन क़ब्ज़ियाये थे और जमीन के संघर्ष में गाहे- बेगाहे इनके पिता और बाबा को कूट देते थे । सर ने किसी को भी न बताने की शर्त बताया था कि एकाध बार यह भी बल भर लतियाये गये हैं । इनकी इच्छा थी कि एक बार एसपी बनें और गाँव में घुसकर सरे आम उन दबंगों और लठैतों को लाठियों से मारते हुये थाने ले आकर बंद कर दें । पर विधाता एक खेल किये हुये था, इनको इसका पता ही न था । यह अपनी लंबाई 165 सेमी नापकर बैठे थे पर वह थी 163-164 सेमी । वह जितनी बार नापो उतनी बार कभी 163 तो कभी 164 सेमी आती थी, कभी- कभी उससे भी कम आती थी अगर मोज़े में रुई न लगायें । उत्तर- परदेश पुलिस में चिंतन सर के साथ उनका भी हो गया था । सर की रैंक थी 11 और उनकी 14 पर मेडिकल वालों ने लंबाई 163 सेमी नाप दी थी वह भी तब जबकि मोज़े में रुई लगाये थे नीचे । इनको विवश होकर सेल्स टैक्स में जाना पड़ा और आजकल कानपुर में है । चिंतन सर कहते हैं कि यह कंबल ओढ़कर धी पी रहे मतलब दबा कर माल कमा रहे ।

चिंतन सर की बात मैंने मान ली और किताबों की संख्या कम करके पढ़ाई की और एक किताबों के सेट को बार- बार पढ़ा और अपनी कहानी कहने लायक बन गया ।

मैं यह जानता था कि यह भारतीय दर्शन और बौद्ध वाला सवाल इलाहाबाद की फ़िज़ाओं में स्थान पाएगा ही और अपनी पहचान बनाने के लिये संघर्ष कर रहे अनुराग शर्मा को पहचान देगा । चिंतन सर पारदर्शिता से बात करते थे और इनकी एक अलग पहचान थी । इसलिये इनके द्वारा समर्थित उम्मीदवार

सट्टा बाज़ार में चल जाता था । यह भी कहा जा सकता है कि यह इलाहाबाद सिविल सेवा के सट्टा बाज़ार के एक आपरेटर थे, यह कोई भी माल बाज़ार में चला सकते थे । मैं अपनी मुहरें बहुत सँभाल कर खेलता था और अपने घोड़े को अंत तक ज़िंदा रखने का पक्षधर हूँ । यह ढाई घर चलकर किसी को भी पारकर रानी को शह भी दे सकता है और वज़ीर को मार भी सकता है । मैं बहुत सँभाल- सँभाल कर अपनी चालें चल रहा था ।

व्यक्ति को अपने क़सीदे सुनने का एक नशा होता है । चारण- भाट लोगों ने ,इसी का इस्तेमाल करके , एक झूठ को काव्य में गढ़कर बहुत धन अर्जित किया है । वह पहले क़सीदे सुनने के नशे से व्यक्ति को रुबरु कराते हैं और फिर उसकी खुराक हर दिन देते हैं । क़सीदे सुनने वाला इतना आदी हो जाता है कि वह उसके बगैर रह नहीं पाता । इसके बाद देव से तुलना करके , झूठ गढ़कर यह चारण- भाट समृद्धशाली होने लगते हैं । यहीं नशा मुझे भी होने लगा था । मैं हर दिन शाम को इंतज़ार करता था क़सीदे गढ़ने वालों का । यह पूरा दर्शन- शास्त्र का सवाल मेरा पूरा एक स्वाँग था , अपने पक्ष में चिंतन सर से क़सीदे गढ़ने का । मेरा घोड़ा ढाई घर बखूबी चल गया था ।

इस ज्ञान को जगदंबा मौर्य तक जाना ही था । अब अगर चिंतन सर की नींद ख़राब हुई है तब उसकी भी ख़राब करेंगे ही । इलाहाबाद का सिविल सेवा का अभ्यार्थी किसी उस ज़रूरी बात को कहने में देर कर सकता है जो आप को प्रसन्नता दे पर जो आप को दुःखी करे उसको वह शीघ्रातिशीघ्र बताना चाहेगा । अगर आप की मौत आ रही हो तब भी वह चाहेगा कि मौत के पहले वह ज़रूरी दुःखदायी बात सुन लो ताकि वह आपके दुःख को देखकर आनंदित हो जाए । एक असीम पीड़ा में जी रहे चिंतन सर कहाँ इंतज़ार करने वाले थे ? वह तो बताने को व्यग्र थे जो बात उनको दिन- रात खाये जा रही हो । वह इच्छुक ही नहीं थे वह बेताब भी थे । उन्होंने यह सारा वृतान्त जगदंबा मौर्य को सुनाया और मेरे क़सीदे भी गढ़े ।

अब जगदंबा मौर्य कहाँ मानने वाले बगैर फुरा- जमोगी के । एक दिन जगदंबा मौर्य उस बोसीदा पतली गली में किसी व्यापारी का शोषण करके उसकी कार में सवार आ गये ।

मेरी गली भी अब गर्व महसूस करने लगी थी । वह इतने दिनों से उपेक्षित थी । चिंतन सर का भौकाल डेढ़ दिन खड़ा रहा और अब जगदंबा कार पर सवार आ गये । मेरे मुहल्ले के बच्चे बहुत बदमाश थे । वह कार का हार्न बजाकर

भाग जाते थे । कार के दरवाजे पर ईंट से लकीर बना देते थे । उनके लिये भी यह कौतूहल का विषय था कि कार- जीप कैसे आ रही हैं ।

जगदंबा मौर्य ने मेरे ज्ञान पर सवाल खड़ा कर दिया और क्रीब डेढ़ घंटे की बहस में यह कहते रहे कि आप की व्याख्या सही नहीं है । मैं भी भिड़ गया कि मैं सही कह रहा और बातचीत थोड़ा बिगड़ गई । जैसा कि अक्सर वाद-विवाद में होता ही है , वह कह बैठे आपने कभी पढ़ा है दर्शन जो आप अपनी बात ठींके जा रहे । मैंने कहा कि मैंने पढ़ा नहीं मैंने लड़ा है । वह थोड़ा नाराज़ हो गये मेरी उद्दिष्टा पर । मैं जूनियर था और मुझे यह नहीं कहना चाहिये था पर मैं थोड़ा बातचीत में आपा खो देता था । जब वह जाने लगे तब मैंने बात सम्भालने के लिये कहा कि सर मुझे नहीं पता क्या सवाल था । जो चिंतन सर ने कहा उस पर मेरी जो समझ में आया वह मैंने बताया । मैं आप की तरह ज्ञानी तो हूँ नहीं । मैं क्या कोई भी गलत हो सकता है ।

वह चले गये पर हकीकत यह थी कि यह सवाल दोनों का ठीक नहीं हो पाया था और दोनों यह सोच रहे थे कि यह लिखा गया होता तो बेहतर अंक मिलते और असफलता का भय दोनों को सता रहा था । चिंतन सर स्वीकार कर गये पर जगदंबा मौर्य स्वीकार करने को तैयार न हो रहे थे । एक वस्तुस्थिति अगर वह आपके अपने अनुरूप न हो तो उसका अस्वीकरण मानव का एक स्वभाव होता ही है , वही जगदंबा मौर्य कर रहे थे ।

जगदंबा मौर्य को यह संवाद मँहगा पड़ गया । मैं अनैतिकता कर गया । चिंतन सर को दिया वायदा तोड़ दिया और बताने लगा कि जगदंबा मौर्य बहुत लतियाये गये थे गाँव में । एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति प्रायः अनैतिक होता ही है । मेरे भीतर की महत्वाकांक्षा तो कर्ण सदृश थी जिसमें भीष्म की जगह दल के नायकत्व की ही आकांक्षा न थी वरन् हरि को परास्त करने की भी चाहत थी । मैं शौर्य प्रदर्शन को व्यग्र था । जो कौशल मेरे पास न था उसको भी आधा-अधूरा सीखकर दक्षता का दावा मैं कर रहा था ।

यह बात धीरे-धीरे फैलने लगी कि चिंतन सर का पेपर ठीक नहीं हुआ । यह वही खुद ही कहने लगे थे । कुछ लोग कह रहे थे कि वह गये काम से और कुछ कह रहे थे वह भाव बना रहे , यह ड्रामा फैला कर । यह शहर अफ़वाहों का शहर है । यहाँ ख्वाब भी अफ़वाह फैला देते हैं आपस में । एक की आँखों का ख्वाब बता देता है दूसरे की आँखों के ख्वाब से कि वह आजकल बड़े ख्वाब देख रहा । इसके बाद पूरे शहर में हल्ला हो जाता है कि वह कद और

हैसियत से बड़े ख्राब देख रहा । इस घटना ने चिंतन सर के साथ मेरे बारे में भी अफ़वाह फैला दी , ढेर सारे झूठ में थोड़ा सा सच मिलाकर ।

मैं अति उत्साह और अपने अंदर की अश्वत्थामा-जनित कुंठा में एक काम और कर रहा था , मैं यहाँ के मठाधीशों को चुनौती दे रहा था । मेरे पास लोग आते थे पूछने के लिये , कैसे मैं तैयारी करूँ और क्या पढँूँ?

मैं अपनी पहली ही लाइन में कहता था कि इन फ़र्ज़ी लोगों से दूर रहो जो हर छात्रावास में एक अघोषित सम्प्रदाय चला रहे । यह सब फ़राड़ लोग हैं । यह दिग्भ्रामित करते हैं । यह चतुर्वेदी, अमित चौधरी , राजेश्वर सिन्हा लोग सिर्फ़ बरगलाते हैं और चाहते हैं कोई सफल न हो यहाँ पर । इस इलाहाबाद का इतिहास देखो । यहाँ पर कौस्तुभ सर ने यूपी बोर्ड टाप किया था । इस कारण से उनको आईआईटी, रुड़की , पिलानी से आमंत्रण मिला बी.टेक. करने का पर वह वहाँ न जाकर बीएससी किया । प्रदीप चंदन सर ने भी यूपी बोर्ड टाप किया आईआईटी के रीजनल परीक्षा में दूसरा स्थान मिला कानपुर की आईआईटी मिल रही थी मनचाही बरांच में , पर वह नहीं गये । यह दोनों आईएएस बने । यहाँ का इतिहास टापरों का रहा है । मैं जीआईसी , ईसीसी , इलाहाबाद विश्वविद्यालय तीन जगह पढ़ा हूँ , जहाँ पर क्लास में अगर कोई अध्यापक न आया तो कोई और अध्यापक आकर पढ़ा देते थे । यह जो जेन्यू डीयू का आजकल जो नाम हो रहा है वह इस विश्वविद्यालय के पसंगा बराबर न हैं और न थे पर ऐसे ही फ़र्ज़ी लोगों ने , जो किसी की मदद करना तो दूर की बात है ग़लत रास्ते बता रहे हैं , इस शहर का रिज़ल्ट ख़राब करा रहे हैं ।

यह मेरा उनकी सत्ता के खिलाफ़ एक खुला विदरोह फैलने सा लग गया था । एक अभ्यार्थी जिसके दूध के दाँत अभी टूटे नहीं वह एक स्थापित साम्राज्य की वैधता पर सवाल खड़ा कर दे , यह कहाँ बदर्शत होने वाला था । मेरे खिलाफ़ सीनियर्स में एक ग़ैंगबाजी हो गई थी । वह सब कहने लगे , अहंकार की पराकाष्ठा है और ज्ञान तो कुछ है नहीं । इस अहंकार और मूर्खता का उत्तर समय देगा । इस जीवन में आईएएस की बात तो दूर है , यह पीसीएस की नीचे करम की नौकरी नहीं पा सकता । यह एक बार भाग्य से मेंस पास कर गया है और अपनी औक़ात भूल गया है । इसको सीनियर-जूनियर की परम्परा का भी भान नहीं है । मैं किसी से मिलता था नहीं , इसलिये यह शीत युद्ध ऐसा ही था और समय के प्रवाह के साथ यह बढ़ रहा था ।

दिन पर दिन बीत रहे थे । हर दिन का ढलता हुआ सूरज मुझे इस वर्ष के परिणाम और अगले वर्ष की प्रारम्भिक परीक्षा दोनों के नज़दीक ले जा रहा

था । एक चिंता इस साल के परिणाम की थी तो दूसरी चिंता अगर मैं परी ही फेल हो गया तब क्या होगा ?

मैं पूरी ताकत झोंकने लगा इस आने वाले परी को सुनिश्चित करने के लिये । मैं चाह रहा था किसी भी हालत में यह न रुके । इसके रुकने का मतलब जीवन का फिर से वहाँ वापस चला जाना , जहाँ से मैंने आरंभ किया था । मैं अब वापस वहाँ नहीं जाना चाहता था , जहाँ से मैंने संघर्ष- यात्रा आरंभ की थी ।

मेरे अंदर एक परिवर्तन होने लगा । मैं ईश्वर के प्रति आग्रही होने लगा । मैं शाम को बँधवा वाले हनुमान जी के मंदिर जाने लगा । मैं यूनिवर्सिटी रोड के बजाय शाम को हनुमान मंदिर जाता था और एक कातर आँखों से उस मूर्ति को देखता था जिस पर गेरुआ रंग पूरा लगा हुआ था और वह पूर्ण विश्राम की मुद्रा में लेटे हुये हैं । मैं उनकी सायंकाल की दिव्य आरती में भाग लेने लगा । मैं उनकी आरती पूर्व की सज्जा प्रक्रिया में भाग लेने लगा । मैं वहाँ के महंत से भी मिलने लगा और मेरी नज़दीकी बढ़ने लगी । मैं थोड़ी देर तक रुकता था और उनसे बात करता था । मेरे पास एक भाषा का कौशल था जो मुझे कहाँ भी एक अलग पहचान दे देती थी । वही कौशल यहाँ भी काम किया और अब मैं हर रोज़ शाम को प्रसाद का लड्डू घर लेकर आने लगा । दिन बीतने के साथ- साथ लड्डुओं की संख्या एवम् मात्रा बढ़ने लगी । मेरी इस बढ़ी हुई शरद्धा पर मेरी माँ बहुत प्रसन्न रहने लगी ।

मैं ऐसे ही एक शाम हनुमान मंदिर से अपने घर पहुँचा तब देखा मेरे घर के सामने एक बड़ी भीड़ इकट्ठा है । मेरा मन किसी आशंका से भर गया कि क्या हुआ , इतनी भीड़ क्यों?

इतने में लोग मेरी तरफ भागते हुये आये और बताया कि सिविल सेवा परीक्षा का रिजल्ट घोषित हो गया है ।

अभी -अभी दूरदर्शन में 8:40 के समाचार में आया है कि “ सिविल सेवा का इस वर्ष का परिणाम घोषित हो गया है । कुल 775 लोगों का अंतिम रूप से चयन किया गया है । आईएएस में 91 , आईपीएस में 112 , आएफएस में 14 और केन्द्रीय सेवाओं में 424 स्थानों के लिये आयोग ने नामों की अनुशंसा सरकार को कर दी है । ”

मेरा दिल हल्क पर आ गया । मैं किससे पूछूँ?

मैंने नाम और रोल नंबर तो दिया है दिल्ली में और उसका फ़ोन नंबर भी लिया है जो साथ में इंटरव्यू दिये थे । मैं उनका फ़ोन नंबर ढूँढ़ने लगा पर वह घबड़ाहट में मिल नहीं रहा था । मेरे घर के सामने भीड़ इकट्ठा होती जा रही थी । यह इस बोसीदा पुराने मुहल्ले के लिये एक बहुत अलग दिन था । यह रिज़ल्ट मेरा ही नहीं इस मुहल्ले का भी था । पूरी गली एक मकां बन चुकी थी । इस मुहल्ले के सारे दरवाज़े खुल गये थे । घर के अंदर कोई न था, सब सड़कों पर थे ।

मैंने आसमां की तरफ़ देखा । मेरे हाथ में वह फ़ोन नंबर आ चुका था । मेरे जीवन का सबसे बड़ा फ़ैसला जो हो चुका था, उसको जानने को मैं बेताब था, डरा हुआ भविष्य की अनिश्चितता से ।

मैंने माँ का चेहरा देखा, मेरे से ज्यादा वह चिंतित थी । मैं संगठित दिखने का असफल प्रयास कर रहा था पर मेरे अंदर का मुंतशिर सैलाब मेरे चेहरों पर साफ़ पढ़ा जा सकता था । मैंने देखा आसमां की तरफ और कहा, ऐ आपदा प्रबंधक मत करना सलाबत मेरे परिवेश के साथ ।

मैं चल पड़ा पीसीओ की ओर एक ऐसा उत्तर सुनने की आकांक्षा लिये जो एक संघर्ष कर रहे व्यक्ति को महानायक स्थापित कर सके ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 105

मैं फ़ोन नंबर लेकर चला अपने परिणाम को पता करने के लिये, मैंने अनिल कीचा को इंटरव्यू के ही समय रोल नंबर दिया था कई लोगों का । उसने कहा था कि मैं रिज़ल्ट देख लूँगा, तुम फ़ोन करना । मैंने धड़कते हुये दिल के साथ फ़ोन मिलाया । मेरा फ़ोन एक बार में ही मिल गया । उसकी माँ ने फ़ोन उठाया और कहा कि वह रिज़ल्ट देखने धौलपुर हाउस गया है । मैंने अपना परिचय दिया और बताया कि मैंने भी इंटरव्यू दिया है और मेरा रोल नंबर उसके पास है । उसकी माँ ने कहा रोल नंबर की कोई ज़रूरत नहीं है, नाम से ही रिज़ल्ट पता चल जाएगा ।

मैं वापस आ गया । मैंने घर पर बताया कि वह रिज़ल्ट देखने गया है, वहाँ से आयेगा तब मैं फिर फ़ोन करूँगा । मेरा मन नहीं लग रहा था । मैं व्यग्र था । मैंने सोचा चलते हैं यूनिवर्सिटी रोड । मैं साइकिल लेकर चला यूनिवर्सिटी रोड । मैं बालसन चौराहे, आनंद भवन होते हुये पहुँचा यूनियन गेट तक । वहाँ तीन होस्टल एकदम पास- पास थे । सर जीएनझा, सर पीसीबी, सर

सुंदरलाल । वहाँ मुझे बाहर से कोई ख़ास हलचल न दिखी । मैं सर सुंदर लाल में प्रवेश किया । वहाँ रिज़ल्ट का हंगामा चल रहा था । बहुत से लोग अमित चौधरी के कमरे के पास मौजूद थे । यहाँ से दस से ज्यादा लोगों ने इंटरव्यू दिया था । होस्टल में अफ़रा-तफ़री का माहौल था । वहाँ से बाहर निकल कर मैं यूनिवर्सिटी रोड पर आया, अब तक रिज़ल्ट निकलने का हल्ला काफ़ी हो चुका था और लोग सड़कों पर रिज़ल्ट के आने के बारे में बात कर रहे थे पर किसी को रिज़ल्ट नहीं पता था । मैंने वहीं के पीसीओ से फिर फ़ोन मिलाया पर वह अभी वापस न आया था । मैं एनझा होस्टल की तरफ़ पैदल चलने लगा । इतने मैं मैंने देखा कि एक बड़ी भीड़ एनझा होस्टल से बाहर आ रही थी । उसमें राजेश्वर सिन्हा भी थे । हर कोई रिज़ल्ट के लिये परेशान था । मैं एक - डेढ़ घंटे वहाँ घूमता रहा । कई लोग मुझसे पूछे भी क्या हुआ ? इस बीच मैंने क़रीब दस बार दिल्ली फ़ोन किया, पर वह वापस नहीं आया था ।

इसी बीच पहली न्यूज़ बरेक हुई सुरुचि मिश्रा का हो गया है । इससे अधिक किसी को कुछ पता न था । किसी ने बताया कि वोमेंस होस्टल से पता चला है कि सुरुचि मिश्रा का हो गया है ।

यह समाचार सुनकर मेरी धड़कनें और तेज हो गईं । इतने मैं दूसरी न्यूज़ बरेक हुई कि, शायद अमित चौधरी का नहीं हुआ है । यह लोगों ने आंकलनके आधार पर कहा कि वह रिज़ल्ट पूछ रहे थे पीसीओ पर । वहाँ से निकलने के बाद चेहरा उतरा हुआ था और वह उसके बाद से नदारद हैं ।

मैं परेशान घूम रहा था । मैं वापस घर आया । मैंने देखा कि मेरे मामा और मौसा दोनों आ चुके थे । मेरे घर के सामने एक बड़ी भीड़ मौजूद थी । मैंने बताया कि वह अभी आया नहीं है रिज़ल्ट देखकर ।

मेरा मन किसी भी चीज़ में नहीं लग रहा था । मैं एक कुर्सी पर बैठ गया । मैं सोचने लगा कि अगर मेरा नहीं होगा तब मैं क्या करूँगा ?

यही सोचते- सोचते मैं उठा और फिर पीसीओ की तरफ साइकिल लेकर चल पड़ा ।

मैं पीसीओ पर पहुँचा । मैंने फ़ोन किया । उसकी माँ ने फ़ोन उठाया और बताया कि वह आ गया है, मैं बुलाती हूँ उसको ।

मेरे लिये इंतज़ार बहुत असह्य हो रहा था । मैं उसका इंतजार कर रहा था । वह आया और कहा तीन लोगों का हुआ है जो लिस्ट आपने दी थी बाकी का

नहीं हुआ है ।

विधाता को मेरे धैर्य की परीक्षा लेनी थी । उसके इतना कहते ही फ़ोन कट गया । मैं फ़ोन मिलाता रहा पर फ़ोन मिल ही नहीं रहा था । करीब 10 मिनट बाद फ़ोन मिला । उसकी माँ ने ही पुनः फ़ोन उठाया । वह जैसे ही लाइन पर आया उसने बताया कि तुम्हारा हो गया है और रैंक 107 है । उसके बाद उसने क्या कहा, मुझे कुछ याद नहीं । वह कुछ और बोले, मैंने कहा कि तुमने ठीक से देखा है?

उसने कहा, “ हाँ, ठीक से देखा है और मेरा नाम और रोल नंबर भी बता दिया । वह इतना ही और कह पाया कि बद्री विशाल का भी हो गया है । मेरे हाँथ के कंपन से फ़ोन कट गया । मैं पूरी तरह से कौपं रहा था । मेरे हृदय की धड़कनें तेज थीं और रुधिर प्रवाह में बहुत संवेग था । मैं घर पहुँचने की जल्दी में था ।

मैं यह भूल गया कि मैं साइकिल से आया हूँ । मैं पैदल घर की तरफ़ भागने लगा । मेरे पीछे पीसीओ वाला भागने लगा, मैं उसका पैसा देना भूल गया था । वह दौड़ता हुआ मेरे करीब आया और बोला मेरा पैसा ?

मैंने कुर्ते के जेब में जितने भी पैसे थे सब निकाल कर दे दिये । मैं फिडीपिडीज था उस समय । मेरे पैरों को पर लग चुके थे ।

मैंने अपनी बोसीदा गली में प्रवेश किया, मुझे दूर से ही भीड़ दिख गई । मैं दूर से ही माँ के चेहरे को तलाशने लगा । मैंने दोनों हाँथ हवा में हिलाकर पूरी ताक़त से चिल्ला कर कहा, मेरा हो गया है ... मेरा हो गया है

मेरी ध्वनि बहुत तीव्र थी । मेरे पिता - माँ को लोग बधाइयाँ देने लगे ।

मेरी साँसें उखड़ी हुई थीं । मैं कोई धावक तो था नहीं । मैंने कभी रनिंग की ही नहीं, पर इस समय एक असीम ताक़त मेरे पैरों में थी और मैं हवा से रेस करता हुआ आया था । मेरी माँ रोने लगी । वह कुछ भी बोल नहीं पा रही थी । उसके जिस बेटे ने इतनी असफलताओं का सामना किया हो और समाज ने जिसको पूरी तरह से ख़त्म घोषित कर दिया हो, उसने अपने पहले ही प्रयास में देश की सबसे बड़ी, कठिन और सम्मानित परीक्षा का दुर्गम गढ़ गिरा दिया हो, इस समाचार ने उसे भावुकता के अपार सागर के उफनते लहरों के बीच पहुँचा दिया । उसके कपोल पूरी पूरी तरह से आँसुओं से भरे हुये थे और मुक्तादल का एक क्राफ़िला आँखों से नीचे प्रवाह बना रहा था । मेरे पिता संयत थे, उनके चेहरे की लालिमा एक अलग प्रसन्नता का ब्यान कर रही थी । मेरी बहन भागते हुये आई और मेरे गले से लग गई ।

मैंने माँ के पैर छुये और उसके गालों पर आँसुओं को पांछते हुये कहा ,

“ तूने अपने सारे सत्कर्म मुझको दे दिये । तूने सारी ज़िंदगी जिस मोक्ष के लिये कार्य किया उसका तूने त्याग मेरे भौतिक जीवन के लिये कर दिया , यह परिणाम तो आना ही था । यह मेरी क्राबिलियत का नहीं तेरे त्याग का परिणाम है । यहाँ आजमाइश मेरी थी ही नहीं । यहाँ आजमाइश तेरी थी । ऐसी कौन सी ताक़त जन्मी है जो माँ की आजमाइश से लड़ सके । जब किसी को ऐतबार न था मुझ पर तूने कहा था अजमतें तुझ पर नाज़ करेगी । ऐसा क्या है जो तू कर नहीं सकता । मेरी कोई भी उम्मीद बेवजह नहीं है । तुम मेरी चाह की सदाक़त हो , मेरा ख्वाब हो । याद है तुझको तू कहाँ करती थी ... हौसलों से कह बाज़ी अभी भी हारा नहीं हूँ , दिन बीता है पर रात अभी बाक़ी है । याद है तुझे अपनी वह लाइन

मेरे खून से मेरे हौसलों को पीकर जन्मा है तू .. सिकंदर नहीं उससे भी आगे है तू । ”

उसने मुझे गले से लगा लिया । वह भावुकता की असीम गहराइयों में थी ... वह बोलने लगी ” तू छोटा था कुछ महीनों का था ... तेरे बचने की कोई उम्मीद न थी ... सब कह रहे थे कोई उम्मीद नहीं है अब आप इसे ले जाओ और सुबह का इंतज़ार करो । धैर्य रखो यह सब जीवन का भाग है ।

मैं यही सोचती थी जो हर रोज़ दिखाता है नये-नये सपने , जो हर रोज़ बताता था ज़िंदगी अपने ढंग से , मेरी आँखों में लरजते थे खुशी के पैगाम जिसके किलकिलाने से वह अब कल नहीं रहेगा । मैं ऐसा कहकर रोने लगी तभी तेरे बदन में हरकत हुई । मैं चीखने लगी कि यह गया नहीं है , यह मौत से लड़ रहा है । इसको लड़ने दो । यह हराकर आएगा उसको । डाक्टर ने तेरे पिता से कहा , यह मानसिक संतुलन खो चुकी है , इसको आप ले जाओ । सिर्फ़ मैं ही वह हरकत देख सकी थी और सुबह के उजाले में तू वापस आने लगा था । मैं जानती थी जो मौत को हरा सकता है , वह हार नहीं सकता । ”

माँ के साथ मुहल्ले की और महिलाएँ अंदर चली गईं । मेरे साथ के लड़के जो मेरे साथ बचपन में खेलते थे वह सब आ गये थे । मैं उन सबसे बात कर रहा था कि मुझे मिश्रा सर आते हुये दिखे । मैंने ज़ोर से चिल्ला कर कहा , “ सर आपका हो गया है । ” उन्होंने साइकिल वैसे ही छोड़ दी बग़ैर स्टैंड लगाए । एक तेज भट्ट की ध्वनि करती हुई साइकिल गिर गई । सर ने मुझे गले लगा लिया और कहा अगर तुम न होते तो मेरा चयन नहीं हो सकता था । मेरे और मेरे चयन के बीच भाषा की एक ऊँची दीवार थी जिसको लाख कोशिश करके

भी मैं पार नहीं कर पा रहा था । तुमने एक झटके में ही वह दीवार गिरा दिया वह भी न कोई चीख़ न कोई हलचल वह सामने ही भरभराकर गिर गई और मैं एक दुसाध्य व्यूह को पार कर गया ।

मैंने सर का परिचय सबसे कराया । मैंने यह भी कहा कि अगर यह न होते तो मेरा नहीं हो सकता था । सर ने कहा, यह इनका बड़प्पन है जबकि हक्कीकत इसके विपरीत है । मेरा होना इनके कारण हुआ है ।

हम लोग अंदर के कमरे में आ गये । बहन ने चाय बना दी । मेरे मामा और मौसा मेरे कमरे में आये जहाँ हम और मिश्रा सर बैठे थे । मैंने मिश्रा सर से परिचय कराया । सर ने दोनों के पैर छुये और कहा आप लोगों के आशीर्वाद से यह असंभव सा लक्ष्य संभावना की सीमा में आया है । मेरे मामा, मौसा इस बात से ही बहुत प्रसन्न थे कि दो- दो आईएएसों ने पैर छुये । वह आशीर्वाद देकर सुबह मौसी और मामी के साथ आने की बात कह कर चले गये ।

उनके जाते ही सर बोले कि मेरी रैंक का पता है ? आपकी रैंक तो बहुत ही अच्छी है । मैं कैसे कहूँ कि वह रैंक बता रहा था और अति अधीरता में मुझसे फ़ोन ही कट गया । मैं सुन ही नहीं पाया । मैंने कहा कि सर रैंक वह बता रहा था तभी फ़ोन कट गया । मैंने कहा कि चलो सर फिर प्रयास करते हैं । मेरी माँ ने कहा कहाँ जा रहे हो रात में ?

मैं - मेरी साइकिल वहीं पीसीओ पर छूट गई है । मैं भूल गया कि मैं साइकिल से आया हूँ ।

माँ - कोई ज़रूरत नहीं उस साइकिल के लिये जाने की । वह तो कैसे ही पुरानी हो गई है । जाने दो उसको ।

मैं ज़िद करके गया । हम लोग जब पीसीओ पहुँचे तब वह बंद हो चुका था और साइकिल भी न थी ।

मिश्रा सर की खुशी लगातार कम हो रही थी । वह रैंक जानने को बेताब हो रहे थे । उनको आशंका हो गई कि उनकी रैंक नीचे है इसलिये मैं बता नहीं रहा । मैंने उनसे वायदा किया कि मैं सुबह- सुबह ही स्टेशन के पीसीओ पर जाकर पता करके आप के पास आता हूँ ।

सर चले गये और मैं वापस घर आया तो देखा माँ गेट पर ही खड़ी थी रात के बारह बजे ।

वह बोली मेरा मन नहीं लग रहा था ,इतनी रात में बाहर नहीं जाते । उसने पहले ऐसा कम ही कहा था । मैं थोड़ा घुमक्कड़ टाइप था , रात- बिरात घूमता ही रहता था ।

मेरे पिता बहुत ही प्रसन्न थे वह माँ की तरह भावुक न थे पर उनकी अंदर भी एक भावना उमड़ रही थी । उन्होंने मुझको संबोधित करते हुये कहा ...,

“ मुन्ना तुमको लगता होगा मैं तुमसे कह रहा जल्दी नौकरी करो और तुम्हारे साथ ज्यादती कर रहा । पर बेटा मैं क्या करता ? मेरे ऊपर दो परिवार का बोझ हमेशा रहा है । एक , अपना और दूसरा गाँव का । वह सब काबिल नहीं हैं । मैं उनको उनके हालात पर तो छोड़ नहीं सकता । मैं बिजली विभाग के बगल बिकने वाले पुराने पैंट - क्रमीज़ पिछले 20 सालों से पहन रहा , यह बात तुम्हारी माँ के अलावा कोई नहीं जानता । इस दो घर की समस्या इस एजी आफिस की बाबूगिरी से नहीं चल सकती । यह नात-रिश्तेदार कोई काम नहीं आते । ईश्वर किसी का समय ख़राब न करे । अगर समय ख़राब होता है तब आपका साया भी आपके साथ मजबूरी में रहता है । अगर उसको स्वतन्त्रता दी जाए साथ छोड़ने की तब वह भी साथ छोड़ सकता है । इतनी रात तुम्हारे मामा- मौसा आज आए । यह जब घर बन रहा था तब घर का का काम रुक गया था क्योंकि जीपीएफ से मैं एडवांस न पा सका था । तुम्हारी माँ ने सहयोग माँगा । इन लोगों के पास ऊपरी आमदनी है फिर भी सहयोग नहीं किया । मेरे उलाहनों और मेरी असमय तुमसे नौकरी करने के दबाव को तुम माफ़ करना । मुझे आज लग रहा कि अगर तुम दबाव में आकर कोई नौकरी कर लेते तो आज जो इतना बड़ा गौरव तुम्हारे पुरुषार्थ से मिला है उससे हम मरहूम हो जाते । तुम्हारे ऐसा साहसी और शौर्यवान बेटा सबको मिले जो विपरीत परिस्थितियों में अपने निर्णय पर टिका रहे । ”

इतना कहते ही उनकी आँखों से आँसू गिर गये । मेरी माँ और मेरी बहन रोने लगी । मैं भावुक था ही । मैं कुछ कहने की कोशिश कर रहा था , पर मेरा गला रुँधा हुआ था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 106

यह एक अलग रात थी , मेरी माँ की याददाश्त की रात । वह मेरे गर्भ में आने से लेकर मेरे आज तक की यात्रा को जीना चाहती थी । वह सब कहना चाहती थी , मेरे पहले स्पंदन से आज तक का सफ़रनामा उसके ख्वाबों का । वह उस पल में लौट जाना चाहती थी जब उसको पहली बार पता चला कि

कोई उसके अंदर प्रकाशवान हो रहा । वह उन अनुभवों से गुजरने लग गई जिसमें असीम पीड़ा में एक महिला को गर्व और आनंद की प्राप्ति होती है ।

वह याद करने लगी कैसे मेरा जन्म हुआ , कैसे मैं स्कूल गया और कितनी शिकायतें मेरी स्कूलों से आती थीं और उसको चिंता मेरे भविष्य को लेकर किस तरह सताती थी । । वह बताने लगी अपने ख्वाब मेरी कोशिशों पर और अपनी पीड़ा मेरी नाकामयाबी पर । उसने कैसा महसूस किया था जब मैंने बुलंदियों को छूमने की अपनी खाहिश से उसको पहली बार रुबरू कराया था ।

उसने कई ऐसे क्रिस्से मुझसे साझा किये जिसका मुझे कोई इलम न था । वह भावातिरेक में थी । वह सोना नहीं चाहती थी । मुझे नींद नहीं आ रही थी ।

वह चार बजे उठी और गंगा स्नान को जाने लगी । उसने मुझसे भी कहा चलने को । कोई और दिन होता तो मैं इंकार कर देता पर मैं आज इंकार न कर सका । मैं उसके साथ पैदल चला गया । गंगा की लहरों से वह निकलने का नाम ही नहीं ले रही थी । उसको जितने मन्त्र याद थे और वह जितना अद्विय कर सकती थी सब उसने किया । उसके बाद वह बँधवा के हनुमान मंदिर गई और पूर्ण शरद्धा से अंजनी पुत्र को धन्यवाद दिया । मैं जब माँ के साथ मुहल्ले में प्रवेश करके अपनी गली में आया तब मुझे महसूस हुआ कि मेरी हैसियत बदल चुकी है । मुझे सब अपनी छतों पर से देख रहे । मेरी माँ की चाल में एक अलग उत्साह था । मेरे घर के पास के बनिये की दुकान का मालिक बाहर आ गया । उसने कहा , मुन्ना भैया कल बहुत अच्छा लगा जानकर । हम रात में ही आना चाहते पर बहुत भीड़भाड़ थी इसलिये न आ सके । उसकी दुकान के सभी लोग बाहर आ गये । मैं एक नये जीवन में प्रवेश कर रहा था । मैं एक गुमनाम जीवन से बाहर आ गया था । मैं स्वभाव से विनम्र था । मेरी माँ ने संस्कार अपने बच्चों में बहुत सँभाल कर डाले थे । मैंने विनम्रता से कहा कि यह आप सबका लगाव और आशीर्वाद था और पूर्वजों का प्रताप था । यह मेरी माँ के सत्कर्मों और पिता के संचित पुण्यों का फल है । मैं घर आया और साइकिल लेकर स्टेशन गया । वहाँ के पीसीओ से फोन करके बद्री विशाल मिश्रा सर का रिज़ल्ट पता किया । बद्री विशाल सर की रैंक 225 थी । अनिल कीचा का नहीं हुआ था , इसलिये मैं और रिज़ल्ट न जान सका । मैंने कल अपनी अतिरेकता में सारा संयम खो दिया था और जिस व्यक्ति ने मुझे मेरा रिज़ल्ट बताया था शिष्टाचार के मानकों का उल्लंघन करके मैंने उसका रिज़ल्ट भी न पूछा था ।

मैं स्टेशन से सीधा बद्री सर के कमरे गया । वह कमरे पर न थे । मैं बगल के कमरे वाले से अपना परिचय देकर बद्री सर के बारे में पूछा । उन लोगों को पता न था कि वह सुबह- सुबह कहाँ चले गये हैं । मैंने सर का रिज़ल्ट बताया और कहा कि आयेंगे तो बता देना । । उसमें से एक ने कहा कि आप वही अनुराग शर्मा हूँ जिसकी रैंक 107 है, सर ने रात में ही बताया था यह । मैंने सकारात्मकता में सिर हिलाया । वह सब हड्डबड़ा कर बैठ गये । वह सर... सर ... करने लगे । उन्होंने कुर्सी निकालकर मुझसे बैठने का अनुरोध किया । ऐसा प्रतीत होता है कि बद्री सर ने मेरी रैंक और अपना रिज़ल्ट रात में ही अपने लाज में बता दिया था ।

वह अल्लापुर के एक लाज में रहते थे । उस लाज में तकरीबन 20 कमरे थे । वहाँ पर सबको मेरा रिज़ल्ट पता था । वह अपने अगल- बगल के कमरे के कुछ और लड़कों को बुला लाया । वह सब मुझे देखना चाहते थे । मैंने एक विस्मययुक्त कौतूहल का विषय बन चुका था, कुछ ही पलों में काफ़ी लोग एकत्र हो गये । वह सब जानना चाह रहे थे कैसे तैयारी की जाए । मैंने थोड़ा बहुत बताया और कहा घर आना विस्तार से बात करूँगा ।

मैंने कहा कि सर को छूँढ़ कर यह बता देना, वह रैंक के लिये चिंतित होंगे ।

मैं वहाँ से अपने घर आया तो देखा कि रामदेशिक संस्कृत विद्यालय से रमाकान्त और सदानंद आये हुये हैं । यह दोनों चिंतन सर से एक वर्ष सीनियर थे और सिविल सेवा के एक प्रबल उम्मीदवार थे पर सफल न हुये थे । उन्होंने ही बताया कि बद्री सर रामदेशिक में सुबह- सुबह आये थे और उन्हीं ने मेरा रिज़ल्ट भी बताया और अपना भी पर उनको अपनी रैंक पता न थी । इन रात के अँधेरों ने अपना काम कर दिया था । मैं एक नायकत्व प्राप्त कर चुका था । रमाकान्त एवम् सदानंद के रहते ही लोगों का आना आरंभ हो चुका था । मैंने उनसे अनुरोध किया कि आप बद्री सर को यह समाचार पहुँचा देना । मैं उनके कमरे गया था पर वह वहाँ थे नहीं ।

उनके जाते ही मेरी माँ ने मुझे बेचैन कर दिया । उसने कहा, “मुन्ना उसने ठीक से रिज़ल्ट देखा है न ? कहीं ऐसा तो नहीं किसी और का रिज़ल्ट हो यह ? यह भी हो सकता है उससे देखने में कुछ शलती हो गयी हो । ”

मेरे पूरे शरीर में एक सुरसुरी सी आ गई । मैं किसी और की बात गंभीरता से लूँ या न लूँ पर माँ की बातों को मैं बहुत गंभीरता से लेता था । मुझे भी लगने लगा कि बात तो यह सही कह रही । अनिल कीचा ने पहले अपना रिज़ल्ट देखा होगा, अपना रिज़ल्ट देखने के बाद ही किसी और का कोई भी देखेगा ।

वह असफल हो चुका होगा मेरा रिज़ल्ट देखने के पहले । उसने मेरा रिज़ल्ट एक असफलता की मनःस्थिति में देखा होगा । असफलता मानसिक हालातों को विचलित कर देती है । ऐसी बिगड़ी हुई मानसिक हालत पर त्रुटि होने की संभावना तो है ही ।

मैं अब पता कैसे कर्ज़ किसी और से । मेरा बहुत ताल्लुकात होस्टल के लोगों से था नहीं । यह जो बात मेरे बारे में फैली है वह फैलाई तो मैंने ही है । मैंने ही रिज़ल्ट पता किया और बताया । मेरे ही स्रोत पर बात आगे गई है । अब अगर अनिल कीचा से गलती हो गई होगी तब तो गये काम से । एक अपमान का दंश झेलना होगा झूठा साबित होकर, अगर अनिल कीचा ने गलत देख लिया होगा । मैं कर क्या सकता था अब । मैं विचलित होने लग गया । मन में संदेह हमेशा नकारात्मकता की ओर लेकर जाता है । मैंने दिमाग़ लगाया और विश्लेषित किया कि एक कोई दरेन शाम को चार बजे के क़रीब आती है दिल्ली से । उस पर लोग दिल्ली से सुबह 7 बजे चलते हैं । वह पेपर लेकर दरेन पर चढ़ते ही होंगे, उस दरेन के एसी बोगी में पेपर मिल जाएगा । यह रिज़ल्ट आज दिल्ली के पेपर में प्रकाशित हुआ ही होगा ।

इलाहाबाद के लोकल पेपर दैनिक जागरण, अमृत प्रभात, एनआईपी में यह खबर छप गई थी कि इस वर्ष की सिविल सेवा परीक्षा का परिणाम संघ लोक सेवा आयोग ने घोषित कर दिया है । इस समाचार के साथ सीटों की संख्या और उनका विवरण भी छाप दिया था । रिज़ल्ट के बारे में कुछ न लिखा था ।

इस छपे हुये समाचार ने लोगों तक रिज़ल्ट घोषित होने की खबर फैला दी थी । मेरे पिताजी के परिचित लोग सुबह से ही आने लगे थे । मुहल्ला रिज़ल्ट पर अपनी खुशी ज़ाहिर कर रहा था और मैं एक संशय युक्त विचार प्रवाह में, कहीं उसने गलत तो नहीं देख लिया । मैंने अपने अंदर ही अपने पक्ष में तर्क दे दिया कि उसने रोल नंबर भी बताया था मेरा, वह गलत कैसे हो सकता है । मैं अपना ध्यान इस बात से हटाने की कोशिश करने लगा ।

मेरे मामा- मामी, मौसा- मौसी, बाबा भैया और तमाम रिश्तेदारों का जमावड़ लग चुका था । मेरा पूरा घर लोगों से भर गया था । इतने में बदरी सर आ गये । वह बहुत खुश थे रैंक जानकर । उनको डर लग रहा था कि कहीं रैंक बहुत नीचे तो नहीं । मैंने फिर से बधाई दी । वह बोले, “ यार मैं पूरी रात सो ही नहीं पाया । उन्होंने बताया कि यह हल्ला ज़ोरों पर है कि अमित चौधरी का नहीं हुआ है ।

मैंने बताया कि मैं कल रात जब बहुत परेशान था रिझल्ट के लिये तब यूनिवर्सिटी रोड गया था । वहाँ मैंने दो उड़ती खबरें सुनी थीं । एक , सुरुचि मिश्रा का हो गया है और दूसरा , अमित चौधरी का शायद नहीं हुआ है ।

मिश्रा सर -यार , यह सुरुचि मिश्रा कौन सी जनावर है , सब इसका नाम रट रहे हैं ।

मैं - सर यह बीए में टाप की थी और एमए अंग्रेजी से कर रही है या कर लिया है । एमए टाप ही किया होगा या करेगी , एमए का मुझे नहीं पता ।

मिश्रा सर - उसकी रैंक क्या है ?

मैं - सर , यह मुझे नहीं पता ।

मिश्रा सर - अमित चौधरी का रिझल्ट कौन बताया ?

मैं - सर , रात में यूनिवर्सिटी रोड पर लोग कह रहे थे किसी ने देखा अमित चौधरी को पीसीओ से बाहर आते हुये और चेहरा उत्तरा था , उसके बाद से वह दिखे नहीं । इस आधार पर लोग कह रहे कि लगता है उनके हुआ नहीं ।

मिश्रा सर - ई सब लोमड़ी हैं । इनका भेद कोई नहीं पाएगा ।

सर ने कहा मैं गाँव चलता हूँ । बाबा को बता देता हूँ । वह मुझसे बार- बार कहते थे , “ बेटा बदरी दुई- चार बिगहा चाहे खेत बिक जाए पर हमार इच्छा बा तोहार नाम पेपर मे पढ़ै के । ”

उनको अति प्रसन्नता होगी । मैं कल आ जाऊँगा तब तक मोर्चा आप सँभालो और खबर इकट्ठा करके रखना । यह कहकर सर चले गये ।

अभी लोगों को इलाहाबाद के रिझल्ट का स्वास पता नहीं चला था , पर रिझल्ट निकलने का शोर हर ओर था ।

इलाहाबाद एक आराम से सुस्ताता हुआ शहर है । यहाँ लोग सुबह दूध जलेबी खाकर आराम करते हैं । एजी आफिस , गवर्नर्मेंट प्रेस , शिक्षा विभाग के बाबू आफिस में कम बाहर की चाय की दुकानों पर गपियाते ज्यादा नज़र आते हैं । ज़िला कच्छरी में तो बात करने का अलग ही ढंग है

“कस हो फरगैया कहाँ हेरान रह इतना दिन से । हमें लगा तू मरि हेराय गये । अब आज आई गवा ह तो चार पान बँधवाय लो । ”

“ ई राजा साहब के हेन कुछ नाहीं बोफोर्स- बोफोर्स के हल्ला कैके बस कुर्सी कब्ज़ियाय लेहेन । एकौ नाम न बतायेन कि पैसा खाएस कौन । नेहरू ,

इंदिरा , शास्त्री , गुलज़ारी लाल और अब राजा मांडा बनेन बहुत लोग इहाँ से प्रधानमंत्री पर शहर के कुछ न मिला । “

“ कस हो तोहार आज तारीख रही का । हमें पतै नाहीं । अब वकील के दस रूपिया पेशी न देब । तारीख पेशकार से लैके पराब तब वकील के कैसे पता चले कि कब तारीख रही । अब खारिज होई गवा केस तब आई ह हमरे पास । जा चार कप चाय लै के आव तब जुगत बनाई सुन चार जोड़ी पानौ लेत आय .. अब बगैर स्विच आन केहे बत्ती कैसे जले ”

ऐसे आरामतलब शहर में सारा काम आराम से ही होता है , किसी को कोई जल्दी नहीं । यहाँ चलने वाली कोचिंग संस्थाओं को भी रिज़ल्ट लेकर आने की कोई उत्सुकता नहीं । यह संस्थाएँ कुछ खास तो पढ़ाती थीं नहीं कम से कम रिज़ल्ट ही लेकर आ जाते , समय से । इतना लूटते हैं गरीब बच्चों को शिक्षा के नाम पर कुछ तो करें , पर करना तो कुछ है नहीं ।

यहाँ के छात्र शहर का नाम अपने लगन और मेहनत से करते हैं , इसमें किसी का कोई खास योगदान है नहीं । यह विश्वविद्यालय कभी रहा होगा महान- महानतम पर अब तो दो- दो साल तक परीक्षा ही नहीं होती । सेशन लेट चल रहा । जो डिग्री दो साल में मिलनी चाहिये उसमें चार साल लग रहे । यह विश्वविद्यालय परीक्षा ही नहीं करा पाता । आप मत पढ़ाओ , कम से कम परीक्षा तो समय पर कराओ । आज से कुछ साल पहले नकल चालू हो गई थी । यह तो कहो यूएन सिंह सर वीसी बनकर आए उन्होंने नकल बंद करा दी नहीं तो यह संस्थान ख़त्म ही हो गया होता ।

मैं अपना फ्रस्टरेशन इस शहर की बेकार सी कोचिंगों और विश्वविद्यालय पर निकाल रहा था । इसका कारण मेरी विवशता थी कि रिज़ल्ट मैं खुद नहीं देख पा रहा । मेरी माँ ने यह क्या कह दिया , “ उसने ठीक से देखा होगा न ? कहीं गलत तो नहीं देख लिया होगा ? ”

यह सुनकर मेरा मन खुद रिज़ल्ट देखने का करने लगा , उसके बगैर मुझे संतोष नहीं हो रहा था ।

मैं बेसबरी से इंतज़ार कर रहा था , दोपहर बाद के समय का । वह दरेन 4:20 पर आती थी । मैं स्टेशन पहुँचा और दरेन के एसी डिब्बे में प्रवेश किया । मैंने जीवन में पहली बार एसी डिब्बे में प्रवेश किया था । एक संभ्रांत से दिखने वाले सज्जन व्यक्ति से मैंने पेपर माँगा । वह इलाहाबाद ही उत्तर रहे थे । उन्होंने टाइम्स आफ इंडिया मुझे दे दिया । मैंने जल्दी से पेपर खोला और अपना नाम ढूँढ़ने लगा । मुझे घबराहट बहुत तेज हो रही थी । मैं अपना नाम

अपनी आँखों से देखना चाहता था । मुझे मेरा नाम ही नहीं मिल रहा था । मैंने दुबारा पेपर फिर देखा, पर मुझे अपना नाम न दिखा । मैं हताशा में अपने हाथ की मुट्ठी भींचने लगा । मुझे लगा कि माँ सही कह रही थी, अनिल कीचा से गलती हो गई । अब मैं क्या करूँ ?

मेरे हाथ से वह पेपर नीचे गिर गया । मुझे लगा कि इस स्टेशन की दीवारें मेरे ऊपर गिरती जा रही हैं और यह खड़ी टरेन मेरी तरफ चलती हुई आ रही है । उन सज्जन ने कहा कि क्या हुआ ?

मैं- मैंने इस बार आईएस का इंटरव्यू दिया था । कल फोन से पता किया तो नाम था, पर पेपर में तो है ही नहीं ।

सज्जन ने पेपर जमीन से उठाया और पूछा क्या नाम है आपका ?

मैं- अनुराग शर्मा, रोल नंबर 23526 ।

उन सज्जन ने एक निगाह में ही नाम देख लिया और कहा, यह है तो ।

इतना घबड़ा क्यों रहे हो ? धैर्य रखें, आप आईएस बन चुके हो । अब देश का भार आपके कंधों पर है सर

इस उत्तरदायित्व के लिये अपने को तैयार करिये । देश को अपने नाज़ करने दीजिये । मैं उम्मीद करूँगा जिन आदर्शों को लेकर आपने जीवन यात्रा शुरू की है उसके साथ न्याय करेंगे ।

मैं राजीव त्यागी हूँ । मैं जे के सीमेंट का एमडी हूँ । मैं इलाहाबाद में सीमेंट प्लांट लगाने हेतु सर्वेक्षण के लिये आया हूँ । आप मेरे भविष्य के अधिकारी हो । अब आप से मिलने के लिये मुझे इंतज़ार करना होगा । सर, याद रखियेगा मैंने आपका नाम पेपर से देख कर बताया था ।

यह मेरा विजिटिंग कार्ड है । मैं होटल यात्रिक में रुका हूँ । आप आयें, मुझे बहुत अच्छा लगेगा आपके साथ समय बिताकर । मैंने उनको दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया । उन्होंने मेरे जुड़े हाथ को अपने दोनों हाथों से पकड़ा और कहा, बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर ।

मुझे पहली बार किसी ने अपना विजिटिंग कार्ड दिया था ।

मैं वहीं स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्म नंबर एक से सिविल लाइंस की तरफ जाते हुये बिरज की सीढ़ियों पर बैठकर अपलक अपना नाम पेपर में देखता रहा पता

नहीं कितनी देर तक । मैंने उसी सीढ़ियों से आसमां की तरफ देखकर कहा

....

वह सारे ख्बाब जो मुकम्मल होने का इंतज़ार कर रहे थे, वह सारे ख्बाब जो मेरे सीने में साँस ले रहे थे, वह सारे ख्बाब जो मेरे कद और हैसियत से बड़े थे, वह सारे ख्बाब जो मैंने संजोये थे, वह मेरे सारे अरमान जो बिखर कर भी मेरे पास थे

वह सब मुंजमिद होकर एक साथ इस अखबार के आधे पेज पर मेरे नाम के छ: अक्षरों में । मैंने अपने दोनों हाथों में उस आधे पन्ने को एक रिदा की शक्ल देकर उठाया । मेरा हाथ आसमां की तरफ और कहा मैंने, “ऐ परवरदिगार तेरी महती कृपा इस अकिंचन पर मेरे पास कोई अल्फाज़ नहीं जो कह सकें शुक्रिया तेरी इस इनायत पर”

मैं पलटकर उन्हीं सीढ़ियों पर अपनी रैंक गिनने लगा ।

मुझे अपनी रैंक 107 से 102 मिली । पाँच रैंक का हिजाफ़ ... प्रसन्नता की अतिरेकता ।

सुरुचि मिश्रा तो कमाल कर दी ... 49 रैंक ... राजीव सिंह -233 , सिद्धांत शर्वीवास्तव- 249 संजीव टंडन - 195 , शरुति घोष -303 । रितेश सिंह - 155 , सत्यानंद तिरपाठी- 183 , चिंतन सर - 317 , जगदंबा मौर्य- 525 , राजेश्वर सिन्हा -249 । रंजन अग्रवाल- 61 । शशि तिरपाठी- 188 , धनंजय सिंह -425 , अमर गुप्ता सर - 283 , प्रकृति देशपांडे -99 , रागिनी सिंह - 299 ...

मैं घर जाने की जल्दी में था । मैं माँ का संशय दूर करना चाहता था । मैंने अखबार का एक पेज जिसमें रिजल्ट था उसको कमीज का बटन खोलकर अंदर एक निधि की तरह सीने के पास सुरक्षित रखकर बाकी पेपर को रेल की पटरियों पर उड़ाता बिरज से सिविल लाइंस साइड सीढ़ियों पर उतरने लगा ।

मैं स्टेशन से बाहर निकला । मुझे ज़िंदगी हसीन लगने लगी । मैं धीरे- धीरे साइकिल स्टैंड की तरफ बढ़ने लगा । मेरी व्यग्रता कम हो रही थी । मैं संगठित हो रहा था , हर बीतते वक्त के साथ । मैं जीवन के इन क्षणों को भरपूर जीना चाहता था ।

मैंने साइकिल स्टैंड से निकाली और एक हाथ से साइकिल की हैंडल पकड़कर धीरे- धीरे चलने लगा । मैं थोड़ी देर बाद साइकिल पर सवार होकर पत्थर गिरिजा से पैडल को धीरे - धीरे मारते हुये सिविल लाइंस की सड़कों पर साइकिल को उतारा । साइकिल हौले-हौले अम्बर कैफ़े , एएच छीलर , काफ़ी हाउस , पैलेस थियेटर , रामा एंड संस , प्लाज़ा टाकीज , इंदिरा भवन चौराहा होते हुये हनुमान मंदिर पहुँची । यह साइकिल भी मेरे साथ भाग-भागकर थक चुकी थी । वह भी कह रही थी मुझसे, अब ज़िंदगी को थोड़ा टहलाओ बहुत भगा लिया तुमने ।

हनुमान मंदिर पर साइकिल रोककर शौर्य के प्रतीक भीष्म की रथ पर बनी प्रतिमा को प्रणाम किया और अंदर हनुमान मंदिर में प्रवेश किया । मुझे मूर्ति में आज एक अलग जीवन दिखा , संभवतः मेरा चीजों को देखने का दृष्टिकोण बदल रहा था । मेरे अंदर परिवर्तन हो रहे थे जिसका आभास कुछ-कुछ मुझे होने लग गया था । एक आत्म विश्वास व्यक्तित्व में आ रहा था । इस समाज की मेरे प्रति बढ़ती स्वीकार्यता और सकारात्मकता एक आत्म सम्मान का प्रवेश मेरे में तीव्र गति से करा रही थी ।

मैंने हनुमान जी के दर्शन किये , हनुमान चालिसा पढ़ी , अपने शरद्धा के सुमन अर्पित किये और दंडवत प्रणाम के माध्यम से पूर्ण समर्पण करके अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की ।

मैं घर वापस आया , समाचार दिया और पेपर दिखाया जिसमें रिज़ल्ट निकला हुआ था । मेरे घर के सारे लोग मेरा नाम बार- बार पढ़ रहे थे , पेपर में । मेरी माँ का संशय दूर हो गया । एक निश्चिंतता आ गई सबके मन में , समाचार की सत्यापित सत्यता जानकर । मेरी माँ ने मेरे छोटे भाई से कहा देखकर वापस कर देना यह पेपर , इसे सँभाल कर रखना है । यह काग़ज का टुकड़ा मेरे अब तक के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है ।

इस समय तक रिज़ल्ट पूरे शहर में फैल गया था । किसका हुआ और किसका नहीं , यह लोग तक़रीबन जानने लगे थे । इस बार फिर इस वर्ष इंजीनियरों का ही बोलबाला था । टाप 100 में इलाहाबाद से सुरुचि मिश्रा

अकेली थी । मानव स्वभाव कभी संतुष्ट नहीं होता । मुझे एक क्लर्क की नौकरी मिली होती तो भी मैं करता ही पर एक नया फ़िटूर मेरे दिमाग़ में । अगर रैंक 100 होती तो मैं भी टाप 100 में होता और लोग कहते शहर से दो टाप 100 में हैं । मैंने सोचा एक बार और रैंक गिनते हैं क्या पता हो ही टाप 100 में । 107 से तो 102 आयी ही है । अनिल कीचा तो गिन नहीं पाया था , ठीक से ।

मैं रैंक फिर से गिनने लगा । इस बार रैंक 103 आ गई । एक रैंक का नुकसान हो गया । मैंने फिर से गिना इस बार 102 आ गई । मैंने पता नहीं कितनी बार गिना और रैंक 102 पर ही आकर रुक गई ।

मैंने अपने छोटे भाई , अपनी बहन सबसे गिनवाया यह सुनिश्चित करने के लिये कि रैंक कौन सी है ।

जैसे - जैसे वक्त बीत रहा था वैसे - वैसे रिझल्ट की हवा बहती जा रही थी । इस हवा को सबसे ज्यादा बहा रहे थे , अगले साल के अभ्यार्थी । वह सब इस क्षेत्र के भावी उम्मीदवार थे और ऐसा ही गौरवशाली समय उनके भी जीवन में आये , यह आकांक्षा लिये वह भी संघर्ष कर रहे ।

अब यह आंकलन आरंभ हो गया कौन सी सर्विस मिलेगी । इलाहाबाद के ज्यादातर हिंदी माध्यम के छात्र आईएफएस नहीं भरते थे । इसके दो कारण थे । एक , अंग्रेज़ी न आना । अगर अंग्रेज़ी नहीं आती तब इस विदेश सेवा में काम कैसे करेंगे । दूसरा , जंगल में मोर नाचा किसने देखा । इलाहाबाद के अभ्यार्थियों को भौकाल चाहिये । भौकाल बिना सब सून । यह भौकाल विदेश सेवा में तो मिलेगा नहीं । यहाँ के ज्यादातर अभ्यार्थी निम्न मध्यम वर्गीय परिवेश से आते हैं । एक छोटी संख्या मध्यम वर्गीय घरों से और एक नाम मात्र के उच्च वर्गीय परिवेश से । इस सामान्य परिवेश के अभ्यार्थियों के पास पारिवारिक ज़िम्मेदारी रहती है । आप चिंतन सर को ही ले लो । वह घर के बड़े बेटे थे । उनके तीन छोटे भाई थे , दो बहनें थीं और उनके चचेरे - ममेरे भाई । उनके इलाहाबाद आने के बाद कई उनके पीछे- पीछे शहर इलाहाबाद सुलतानपुर से आ गये । वह सब दिमाग़ से पैदल मार्का थे और परिश्रम करने की कोई ख़ास ललक न थी उनके पास । वह जमात कुछ ख़ास कर पाएगी इसकी उम्मीद तो कम ही थी पर इलाहाबाद की परम्परा का पालन करते हुये , लगे हैं परीक्षा देने में । परीक्षा से ज्यादा वह चिंतन सर की नौकरी में रुचि रखते थे ।

उनकी इच्छा थी कि भैया पैसा कमाएँ और वह सब बैठकर पराठा - सब्ज़ी ठेले । चिंतन सर यह काम नहीं करते थे , इसलिये वह सब उनकी आलोचना

करते थे । यहाँ पर जो लोग यह सब काम नहीं करते उसके बारे में कहते हैं, “भयेन अफ़सर ज़रूर भैयऊ पर घर रहि गवाँ चूड़िहार ऐसन ... कुछ जनान नाहीं अफ़सरी ...”

इसका मतलब यह है कि उसने लूट- पाट
करके बड़ी गाड़ी- बड़ा मकान न बनवाया । कुछ अफ़सर पेट्रोल पंप ले लेते थे । लोग उसका उदाहरण देते थे ।

“फलाने के बेटवा के देखअ मेन रोड पर पेट्रोल पंप लै लेहेस ।”

“ओका देखअ एक पीसीएस के छोटवार नौकरी बेसिक शिक्षा अधिकारी में अंजोर केहे बा । ऊ बहुत तिकड़मबाज बा, कई प्लाट मेन शहर में खरीद लेहेस । गाँव में कौनो खेत बिकै, डाक लगाइ देत है, जे हमसे अधिक दई उहै खेत लै जाई ।

“अरे भैया रूपिया के माई पहाड़ चढ़ै, ओसे डाक में केव जीती । एक रूपिया के माल पर सवाय- डेढ़ के बोली लगाइ देत बा । उ कुछ दिना में कुल डेबरवय लिखाय ले ।”

इन परिस्थितियों में जो उस रास्ते पर नहीं जाता उससे परिवार - नात - हित-रिश्तेदारों का मोहभंग होने लगता है और उसकी आलोचना आरंभ कर देते हैं ।

मेरा भी परिवेश कमोबेश ऐसा ही था । मेरे से भी उम्मीदें थीं । मेरे सहारे ही भविष्य देखा जा रहा था, ऐसी परिस्थिति में विदेश अगर मैं चला गया तब तो ख्वाहिशों का म़क़तल घर में बन जाएगा । लोगों को पता न था, मैं अपने समय से आगे की चीज़ था । मैं देखने में बेवकूफ़ लोगों को लग सकता हूँ पर हूँ नहीं । मेरा दिमाग़ चलता तेज़ है । मैं शतरंज अच्छा खेलता हूँ, चौसठ खानों के कार्ट- बोर्ड में भी और जीवन में भी । मैं हर चाल चार आगे की चाल सोचकर चलता हूँ । मैं अपने दिमाग़ से कम सामने वाले के दिमाग़ से ज्यादा खेलता हूँ । मेरा घोड़ा और वज़ीर मर रहा हो तो कई बार वज़ीर को मर जाने देता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ, इस घोड़े की नायाब ढाई घर की चाल किसी भी वक्त बहुत काम आ सकती है । मैंने शतरंज के खेल में कभी भी दोनों घोड़ों को मरने ही नहीं दिया, एक अंत तक ज़िंदा ही रहता था, मेरे निर्देशों पर गदर मचाने को ।

इसी सिविल सेवा के शतरंजी बनावट में मैंने नौकरियों की आतंरिक संरचना और कैडर के एलाटमेंट की प्रक्रिया का गहन अध्ययन किया हुआ था । मैं कैडर का इनसाइड - आउटसाइड कोटा एलाटमेंट सिस्टम पूरी तरह समझा था और यह जानता था कि यह किस सिद्धांत के तहत काम करता है । मैंने पुलिस नौकरी की समस्या और कैडर की अति अनिश्चितता समझ कर आईएएस के बाद आईआरएस को वरीयता करम में स्थान दिया था । इलाहाबाद में सब कहते भी थे जो मैंने सुन रखा था , “ इनकम टैक्स राजा की तरह की नौकरी है । ”

इलाहाबाद सिविल सेवा के सफल उम्मीदवारों के लिये अघोषित सा एक विवाह- बाज़ार है । यह बाज़ार सिविल सेवा परीक्षा के बाद बहुत सक्रियता प्राप्त कर जाता है । इस बाजार में कई ऐसे ठीकेदार मार्का लोग हैं जिनका काम ही है विवाह करवाना । यह लोग नौकरियों के बारे में ठीक- ठाक जानकारी रखते हैं और कुछ अधिकारियों से उनका संपर्क भी रहता है । ऐसे लोग रिज़ल्ट के बाद ज्यादा गतिशील हो जाते हैं और वह रैंक से आपकी नौकरी बता देंगे, कई आपके कैडर का भी अनुमान लगा देंगे और कैडर ख़राब होने पर बदलवाने की भी बात करेंगे । यह दो- चार फ़र्ज़ी कैडर बदलवाने के उदाहरण भी दे देंगे । वह यह भी कहेंगे कि हम सबसे बेहतरीन परिवार में रिश्ता करवायेंगे और दहेज भरपूर मिलेगा । यह सब पूरा सज़रा लेकर आएँगे एक विवाह प्रस्तावक की हैसियत से । यह लोग ज्यादातर बिल्डर, व्यापारी या प्लांटिंग करने वालों की पैरवी करते हैं । इनका आकर्षण पैदा करने का ढंग भी एकदम नियत ऐसा है और वह ऐसी ही बात हर जगह करेंगे

“ परिवार ख़ानदानी है । आज भी यह लोग पीढ़ा पर बैठकर भोजन करते हैं । इतना धन- धान्य हो गया पर आज भी बग़ैर सूर्य का दर्शन - आचमन किये जल ग्रहण नहीं करते । साहब जहाँ भी जाते हैं अटैची में गंगाजल और रामायण साथ चलती है । यह उन लोगों में से नहीं हैं कि विवाह किया और सिफ़्र लड़के से ताल्लुकात रखें , यह पूरे परिवार से ताल्लुक रखने वाले लोग हैं । इनके यहाँ आज भी बाबा जी की ही चलती है भले ही साहब कितने बड़े आदमी क्यों न हो गये हों । यह आज भी अपने पिता के सामने बैठते नहीं हैं । इनके यहाँ बहन- बेटियों का बड़ा मान- दान है । आप कुछ कहें न कहें जो संकल्प कन्या का है वह तो देना ही है । आपको कहने का अवसर ही नहीं देंगे । एक प्लाट सिविल लाइंस में पाँच साल पहले लेकर बिटिया के नाम संकल्पित कर दिया है , वह तो है ही और बाक़ी जो आदेश आप करें । यह आपके आदेश से बाहर नहीं जाएँगे । आपने जो कहा वह अटल सत्य , उस पर कोई प्रश्न ही नहीं उठेगा । विवाह ऐसा करेंगे कि आप भी कहेंगे कि

क्या स्वागत किया है । ऐसा परिवार पूरे डेबरा में कोई और नहीं है
कन्या बहुत ही संस्कारी है जहाँ भी जाएगी उजाला कर देगी । ।”

इनकी सक्रियता रिजल्ट के अगले दिन ही आरंभ हो जाती है । यह लोग
जिनके विवाह की पैरवी करते हैं उनसे कार ले लेते हैं और उन कारों में सवार
होकर घूमने लगते हैं ।

कमोबेश ऐसे ही एक व्यक्ति साइकिलों की आबरू की परवाह न करते हुये
अपने कार से गली के किनारों पर खड़ी साइकिलों को धकियाते हुये मेरी
गली में प्रवेश कर गये । मेरा घर शायद वह देर से ढूँढ रहे थे । वह मेरे ही
घर के सामने पूछ रहे थे कि यहाँ एक लड़का आईएएस हुआ है, उसका घर
कौन सा है ?

मेरे मामा का लड़का दादू उसी समय आया था । माँ ने समाचार नाना के पास
सुबह- सुबह ही भेजवा दिया था । नाना ही क्या, जो जहाँ भी उसको मिला
समाचार दे मारा । वह समाचार ही तो दे रही थी जब से रिजल्ट आया है,
भगवती बाबू के यहाँ तो गंगा तट से आते ही दे दिया था । उसको बता दिया
था किसी ने, भगवती बाबू का बेटा अब मुन्ना के अंडर में काम करेगा , वह
क्लास 2 है, मुन्ना सीधा क्लास 1 । वह क्लास 1 और क्लास 2 की व्याख्या
करने में मशगूल थी । मेरे मामा और मौसा तो क्लास 3 हैं । जबसे मेरे मामा ने
मेरे मकान बनने पर उधार पैसा उसको न दिया था और उसको पैसे की कमी
के कारण बंद कराना पड़ गया था तब से वह उनसे नाराज़ थी । भगवती बाबू
का बेटा ही नहीं उसका भाई भी मुन्ना के अंडर काम करेगा , यह सोचकर
उसकी आत्मा और तृप्त हो गई थी ।

दादू थोड़ा मज़ाकिया था और बातचीत का कौशल था उसके पास । इसी
कौशल से वह पारिवारिक राजनीति की खबरें निकाल कर मेरी माँ को खूब
देता था ।

वह बोला, “श्रीमन आपकी यात्रा सम्पूर्ण हो गई , आप गंतव्य पर आ चुके
हैं, जहाँ पर आप खड़े हैं वहीं से प्रताप आरंभ होकर चहुँदिश को आच्छादित
कर रहा है । मैं उस आईएएस का भाई हूँ । कहें आप की क्या सेवा मैं कर
सकता हूँ । ”

दादू उस व्यक्ति को घर के अंदर ले आया । यह विवाह का दूसरा प्रस्ताव था । पहला मेरे मामा अपने साले की बेटी का दे ही चुके थे मेरे मेंस के रिजल्ट के बाद । उस व्यक्ति ने अपना परिचय ओम प्रकाश पाठक के नाम से दिया और उसने बताया कि अमृत प्रभात में स्वतन्त्र पत्रकारिता करता है । अमृत प्रभात एक फ्रेमस हिंदी का इलाहाबाद का अख्बार था । उसने कहा कि आपने जग बौराना नाम की सीरीज़ के बारे में सुना होगा कुछ उसी तरह की एक चरवाहा नाम से सीरीज़ शुरू हुई है और वह ही चरवाहा नाम की सीरीज़ लिख रहा है । उसके बातचीत के ढंग से ऐसा लग रहा था वह ऐसे ही मिल-जुल कर काम कराने के क्षेत्र में ही काम ज्यादा करता है, यह पत्रकारिता तो एक मुख्यौटा है एक बुद्धिजीवी आवरण ओढ़ने का ।

आज के दिन की कार का इंतज़ाम उसका हो गया था पर आगे की भी उसकी चाहत है । वह चाह रहा था कि जिसकी कार लेकर घूम रहा है उसको बताने के लिये कुछ मिल जाए, आज शाम को । उसने घर का फ़ोन नंबर और मेरे पिताजी का विज़िटिंग कार्ड माँगा पर वह सब तो मेरे पास या मेरे पिता के पास होने की कोई संभावना थी ही नहीं । मैंने भी किसी का विज़िटिंग कार्ड पहली बार राजीव त्यागी जी का रेलवे स्टेशन पर देखा था ।

उसने कहा कि आप अंग्रेज़ी का अख्बार पढ़ते होंगे ?

मैं - अंग्रेज़ी का नहीं, मैं हिंदी का ही पढ़ता हूँ ।

पाठक - तब तो आपने मेरी चरवाहा सीरीज़ पढ़ी होगी ?

मैंने नकारात्मक उत्तर दिया । वह उस उत्तर से निराश हो गया । उसकी निराशा कम करने के लिये मैंने कहा, “ मैं लोकल पेपर नहीं पढ़ता । मैं दिल्ली से आने वाला हिंदुस्तान और जनसत्ता पढ़ता हूँ । ”

उसने इधर- उधर की कुछ बात की और उसने कन्या के पिता के धन- वैभव के बखान का प्रयास किया पर मेरा नीरस रुख देखकर वह कुछ ख़ास क़सीदे न गढ़ पाया, हलाँकि उसने कोशिश कई बार की । वह यह बता गया कि धनवान व्यक्ति जमीन की ख़रीद- फ़रोख्त और प्लाटिंग का काम करते हैं और बहुत धन कमाया है । मतलब यह कि एक प्लाट को कई- कई लोगों को बेचा है और ख़रीदने वाले परेशान घूमते रहे और यह समृद्धि को प्राप्त करते रहें । इतनी मेहनत और संघर्ष से प्राप्त गौरव में हिस्सेदारी की उनकी चाहत

है । इसकी प्राप्ति की उनकी उम्मीद को गलत भी नहीं कहा जा सकता है , जब इसको बिकना ही है बाज़ार में एक मूल्य पर । एक उस बाज़ार में जहाँ सब कुछ बिकने के लिये ही तैयार होता है उसके लिये वह हर आदमी हक़दार है जो भी मोल देने के लिये तैयार है , मनचाहा मोल देने वाले का अधिकार तो उत्पाद पर ज्यादा होता ही है । वह फिर से आने की बात कहकर चला गया ।

मेरा हिंदी का ही पेपर पढ़ना और वह भी दिल्ली का यह दो कारणों से था । पहला , लोकल न्यूज़ पेपर बहुत ही बेकार थे , वह सिविल सेवा के जीएस में बिल्कुल ही सहायक न थे । दूसरा , मेरा हाथ अंग्रेज़ी में तंग ही नहीं बहुत ही तंग था । मैंने अंग्रेज़ी कक्षा 6 से पढ़नी शुरू की थी । मैं नेहरू जी - इंदिरा गाँधी - राजीव गाँधी जी की शिक्षा नीति का बहुत विरोधी था । इन लोगों ने शिक्षा की मौलिकता और विकास पर कोई ख़ास ध्यान न दिया । मेरी यह मान्यता थी कि मातृभाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिये । मैं अंग्रेज़ी सीखने का विरोधी न था पर अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों की स्थापना का विरोधी था । हम लोग रात में , अपनी भड़ास निकालने के लिये , कई बार सेंट जोसेफ कालेज के गेट और दीवारों पर पत्थरबाज़ी भी कर देते थे ।

हमारे जीआईसी , इलाहाबाद में इंटर में कई लड़के कक्षा दस के बाद अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूल सेंट जोसेफ से कक्षा दस पास कर के आते थे । इंटर में टेस्ट दर टेस्ट वह हिंदी माध्यम के छातरों की प्रतिभा से विस्मित होते रहते थे । मुझे नहीं याद कि एकाध को छोड़कर कोई उनमें से टाप 10/15 में आता था , कक्षा 11, 12 के किसी भी टेस्ट में ।

मेरी याददाश्त के हिसाब से इंटर के बाद होने वाली इंजीनियरिंग के प्रवेश परीक्षा में उनमें से , सिवाय सर्व सिंह के , कोई आईआईटी , रुड़की या मोतीलाल इंजीनियरिंग कालेज में अंग्रेज़ी माध्यम से 10 पास करके जीआईसी आया हो और परीक्षा का द्वार तोड़ा हो । कपिल देव तिरपाठी , प्रदीप महरोत्तरा ने तो आईआईटी समेत कई नामचीन इंजीनियरिंग कालेज में आमंत्रण पाकर भी ढुकरा दिया था । यह सब धुर हिंदी माध्यम के थे और बाद में अपने पहले ही प्रयास में इस सिविल सेवा परीक्षा का गढ़ गिरा गये ।

मेरे गुरुदेव प्रोफेसर (डॉ) श्री आर पी सिंह सर ने , जिन्होंने मुझे इसीसी में बीएससी में गणित पढ़ाया था , अपने एनएनझा होस्टल और विश्वविद्यालय के समय का एक क्रिस्सा मुझसे साझा किये थे ...

“कपिल देव, प्रदीप शुक्ला, अनुज विश्नोई, आर पी श्रीवास्तव मंगज, विश्वभर पति सब एक ही बैच के थे। कपिल देव आल टापर थे। विश्व विद्यालय इस बैच को पढ़ाने में असुविधा महसूस करता था।

एक प्रम्परा आरंभ हुई, हर प्रखवाड़े में शनिवार को हाफ डे करके पूर्व निर्धारित व्याख्यान इन लोगों से दिलवाया जाता था। एक बार क्वांटम मैकेनिक्स पर विश्वभर पति ने 2 घंटे का अद्भुत व्याख्यान दिया। इनके पिता टी. पति गणित के अतिशय विद्वान् प्रोफेसर थे। यह उनके पिताजी प्रोफेसर टी. पति की फील्ड नहीं थी जिस पर विश्वभर पति ने व्याख्यान दिया था इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि इसमें उन्होंने उनसे सहायता ली होगी।

यह उनका अपना कौशल था जो पूरे हाल में सन्नाटा व्याप्त करा गया। इस विषय पर विशिष्ट टिप्पणी प्रोफेसर खरे को करनी थी। यह निर्णय हुआ कि सर की टिप्पणी के पहले शरोताओं से प्रश्न आमंत्रित कर लिया जाये।

इतना सारगर्भित पूर्व निर्धारित विषय पर व्याख्यान था कि किसी सामान्य लड़के से उम्मीद ही नहीं की जा सकती थी कि वह कुछ टिप्पणी करेगा। परंतु मंगज जी, राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव जी खड़े हुए और अपनी लटपटाती भारी और अस्पष्ट आवाज में उन्होंने कहा कि, मिस्टर स्पीकर आपने फला फला लाइन में यह जो लंबा एक्सप्रेशन गणितीय लिखा है यह गलत है और इसको ऐसे होना चाहिए। हम सब आरपी श्रीवास्तव की तरफ देख रहे थे और लगा कि यह व्यक्तिगत अहंकार के कारण ऐसा बोल रहे हैं, यद्यपि यह सब जानते थे कि श्रीवास्तव की फिजिक्स बहुत अच्छी थी फिर भी एक तैयार किये हुये लेक्चर पर इस तरह की त्वरित सारगर्भित टिप्पणी की अपेक्षा कम थी। कुछ देर बाद विश्वभर पति ने बड़े ही शिष्टाचार से राजेंद्र प्रसाद को धन्यवाद देते हुए कहा कि हाँ यह मुझसे गलती हुई थी यह समीकरण नहीं हो सकता। उन्होंने खुलकर आर पी श्रीवास्तव तारीफ की और कहा कि मैंने इस को 15 दिन तैयार किया था पर मानना पड़ेगा राजेन्द्र ने यहीं पर मुझ से पढ़ कर के मेरी यह गलती पकड़ ली। यह प्रभामंडल था उस बैच का। “

कपिल देव सर और राजेन्द्र प्रसाद सर धुर हिंदी माध्यम के थे। कपिल देव सर सरकारी स्कूल सीपीआई एवम् जीआईसी के पढ़े हुये थे। वह आईएएस हुये और आर पी सर ने पीसीएस टाप किया हिंदी साहित्य और अंग्रेज़ी साहित्य दो पर्चा अपने विषय से इतर लेकर। वह उसी साल आईआरएस हुये

। आर पी सिंह सर अद्भुत प्रतिभा रखते थे । वह गणित में सिद्धहस्त थे और हिंदी साहित्य में जीते थे ।

यह दुर्भाग्य है इस देश का, यहाँ के कर्णधारों को अंग्रेज़ी ही चाहिये । 1968 में बना कोठारी कमीशन उसकी कई अनुशंसायें बहुत अच्छी थीं पर वह भी आधी- अधूरी ही लागू हुई । इसके लिये भी वर्ष 1979 की परीक्षा तक इंतज़ार करना पड़ा ।

मेरी 102 रैंक की यशगाथा जो आजकल पूरे मेरे परिवेश में धूम मचा रही इसका कोई वजूद न होता अगर हिंदी माध्यम में परीक्षा देने का विकल्प न होता । बदरी सर ऐसा महान प्रतिभाशाली सिफ़्र अंग्रेज़ी के कारण वर्ष-प्रतिवर्ष आहत हो रहा था । उसको जैसे ही हिंदी में बात कहने का अवसर मिला उसने गढ़ गिरा दिया । चिंतन सर जिसमें आत्मविश्वास इतना ज्यादा था कि वह इंटरव्यू बोर्ड में पूरे यकीन से कह गये, जिसे आप कैम्बे बेसिन कह रहे वह खंभात की खाड़ी है और मुझे पूरे विश्व का मानचित्र याद है । अब इन सबको अंग्रेज़ी नहीं आती तो इसमें दोष किसका है? इनका तो बिल्कुल ही नहीं और क्यों हम ज्ञान पर भाषा को अधिमानता दे रहे । उनके साथ हुये अन्याय की भरपाई कौन करेगा जो पिछले 40 सालों तक आज़ाद देश में अपनी ही भाषा में अपनी बात कहने के हक्क से वंचित किये गये ।

मैं यह भी सुनता था कि इंटरव्यू बोर्ड वाले सनावर, दून, स्पो कालेज और स्टीफेस वालों को ही नंबर देते हैं । कपिल देव सर को भी इंटरव्यू में बहुत खराब नंबर दिया गया था जबकि ऐसा जीनियस तो बहुत विरले ही देखने को मिलता है, यह जीआईसी में हर अध्यापक कहते थे ।

मेरी सफलता का सुरक्ष दून पर चढ़ रहा था । मेरे हीनभावना की केंचुल उत्तर रही थी । मेरी प्रशस्ति गाथा मेरे अंदर बीतते वक्त के साथ एक नव व्यक्तित्व का मेरे अंदर निर्माण कर रही थी । मेरी रातें अब भयावह नहीं होती थीं । अब मेरी सोती आँखों में उजाला हुआ करता था । मेरे गीतों में नया उत्साह आ चुका था । मैं चींटी की चलती हुई रेखाओं से नज्म की प्रेरणा पा जाता था । मैं काश़ज की जहाज और नाव फिर बनाने लगा था । झील की लहरों पर डोलता कमल, धुंध की गहरी गुफ़ा में जलता चिराग, शंख के सीने से उभरते साज, गहरे कुँए से उछल कर बाहर आज़ाद होते मेंढक यह सब मेरी कल्पनाओं में आने लगे ।

मैं कुछ नहीं होकर भी सब कुछ हो चुका था । मुझको मेरे अपने सत्त्व का अहसास अपने अंदर ही होने लगा था । मेरा अपना लम्स एक मुसविर की तरह मुझको ही आकार दे रहा था ।

मेरी माँ रात में आकर मेरे सोते समय मुझको देखकर ज़ाया करती थी । उसका मुझको देखे बगैर मन नहीं भरता था । वह दिन में कई- कई बार मुझको देखती थी । कभी मैंने ही कहा था उससे , बस तू यक़ीन रख बाक़ी को कहने दो जो कहते हैं , मैं अपनी कमज़ोरियों को अपनी ताक़त बनाऊँगा और अपनी ही बैसाखियों से घोड़ों को रास्ता दिखाऊँगा । उसने एक दिन कहा कि तेरी बैसाखियों के निशानों पर चलना आसान नहीं होगा घोड़ों के लिये भी । मैंने कहा , तुझे सब याद है ?

वह बोली , अभी तो कहानी शुरू हुई है ... यह कहकर वह कुप हो गई ।

मैं एक फैसले की दहलीज़ पर आ चुका था । मेरी रँक पर आईएस मुश्किल दिख रही थी । मैं प्रवृत्ति से एक लेखक- विचारक था । मैं जीवन में कुछ और भी करना चाहता था । मैं सिर्फ़ आईएस के तमां और छाया में नहीं जीना चाहता था । मुझे अपनी पहचान चाहिये थी जो मेरे कर्मों और व्यक्तित्व से हो न कि एक पदनाम से । मैं अनुराग शर्मा नाम को आईएस के नाम से ऊपर ले जाना चाहता था । यह दृष्टि भी मुझे शहर इलाहाबाद ने दी । फ़िराक़ की दो बातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है ।

एक , वह कहा करते थे कि भाषा के स्तर पर मेरी भाषा कक्षा 5 के बाद ही ऐसी हो गई कि मैं जो चाहूँ , जैसा चाहूँ लिख सकता था । ऐसी ही भाषा की चाहत मेरी थी ।

दूसरा , वह कोई विजिटिंग कार्ड नहीं छपाते थे । वह अपना परिचय नहीं देते थे । वह किसी से मिलते थे तो सिर्फ़ “ रघुपति सहाय ” या कभी - कभी सिर्फ़ “ रघुपति ” लिखकर चिट भेजते थे ।

एक बार क्रिस्सा है । वह नेहरू जी से आनंद भवन मिलने गये तब नेहरू जी देश के प्रधानमंत्री थे । उन्होंने यही चिट भेजा । नेहरू जी के पीएस ने कहा , थोड़ा डिटेल में लिखिये । फ़िराक़ ने कहा , इतनी ही पहचान है । उसके अलावा की सारी पहचान मिथ्या है । अगर यह पहचान मुझे समय नहीं दिला रही तब मेरा चला जाना उचित है । मेरा नाम नेहरू को बता देना और कह देना मैं मिलने आया था । यह पहचानने की क्षमता का ही फ़र्क़ है कि वह प्रधानमंत्री हैं और तुम बाबू हो । फ़िराक़ चिट फ़ाड़कर चल दिये । पीएस के

लिये जीवन का नया अनुभव था कि एक जननायक - युगपुरुष प्रधानमन्त्री से मिलने की कोई व्यग्रता ही नहीं है ।

वह चलने लगे तब पीएस ने नेहरू जी को बताया । नेहरू जी बाहर आए और फ़िराक़ को लेकर अंदर गये ।

नेहरू जी ने पीएस से कहा, राम का नाम ही बहुत है । वह अयोध्या के राजा हैं, यह भाग्य अयोध्या का है राम का थोड़े हैं । राम को क्या ज़रूरत परिचय देने की ।

यह वाक़्या सही हो या ग़लत पर यह मेरे अंतर्मन में गहरे बैठ गया और मैं जीवन को कई योजन दूर के भविष्य तक देखने लगा ।

मुझे पता था कि आईपीएस की नौकरी में बहुत समस्या है और मेरे जीवन के स्वर्गिक आनंद पठन- पाठन- वैचारिक मंथन में बाधा उत्पन्न करेगी, इसलिये उसको मैंने वरीयता न दी थी ।

मुझे अगर आईएस नहीं मिलती है तब मैं क्या करूँ ?

मैं फिर से परीक्षा दूँ या मैं आईआरएस ज्वाइन कर लूँ ?

यह गुत्थी कैसे सुलझे ?

यह मैं सोच रहा था कि माँ ने कहा सत्य प्रकाश मिश्रा सर से आशीर्वाद ले आओ । उन्होंने तुम्हारा हौसला बहुत बढ़ाया था । मैंने सोचा, सर से ही राय ले लेता हूँ ।

मैं शाम को सत्य प्रकाश मिश्र सर के यहाँ चल दिया ।

मुसाविर- चित्रकार

लम्स- स्पर्श

मैं सत्य प्रकाश मिशन सर के यहाँ के लिये चल दिया । वह अलोपी बाग की ढिंगवस कोठी में रहते थे । मेरा अब मुहल्ले से निकलना लोगों के लिये एक कौतूहल का विषय होता था । मेरे बारे में कहानियाँ गढ़ी जा रही थीं, जिसमें अधिकांश कपोल कल्पित थीं । मेरे से कम उम्र के बच्चों की माएँ अपने बच्चों को मुझ जैसा बनने का उपदेश देती थीं । मेरा चयन होना एक सुखद घटना थी, पर मेरा इस मुहल्ले से चयन होना एक बड़ी घटना थी क्योंकि यह मुहल्ला एक गरीब मुहल्ला था और यहाँ के लोग पढ़ते कम थे ।

मेरी साइकिल आगे थोड़ा बढ़ी ही थी और मैं साइकिल पर सवार होता कि शर्मा आंटी सामने से आतीं दिखीं मैंने नमस्कार किया, आंटी ने मेरे साइकिल की हैंडल पकड़ ली । उनके साइकिल की हैंडल पकड़ते ही मैंने मुड़कर देखा, माँ तो नहीं देख रही? वह इस बात के सञ्चय खिलाफ़ थीं कि मैं शर्मा आंटी के घर जाऊँ । दो तेज लोगों में कम पटती ही है । मेरी माँ भी तेज और शर्मा आंटी के क्या कहने वह तो बसा बाज़ार उड़ा दें और बिखर रहा बाज़ार बसा दे । माँ को न देखकर मैंने चैन की साँस ली, नहीं तो शाम का एक प्रवचन पक्का था ।

शर्मा आंटी - बेटा, तुमने मुहल्ला को एक नई पहचान दी । मैं बगल के मुहल्ले में गई थी अपने देवरानी के यहाँ, वहाँ पर उसके यहाँ लोग मुझसे कह रहे थे कि आप के मुहल्ले में एक लड़का कोई आईएएस हो गया, आप जानते हो कौन हैं?

बेटा, मेरा माथा गर्व से तन गया । मैंने कहा वह मेरे बेटे ऐसा है । मेरे बगल ही रहता है । वह गीतिका के साथ पढ़ता था ।

आंटी ने कहा, बेटा गीतिका को भी कुछ बता दो वह बहुत परेशान है । वह वोमेंस होस्टल गई थी पूछने पर लड़कियाँ ठीक से बताती ही नहीं । आप कुछ बता दोगे तब उसका भी कुछ कल्याण हो जाएगा । वह तुम्हारे साथ ही पढ़ीं है । तुम्हारे बहन के साथ उसकी बहुत बनती है । इसका भी कुछ उद्धार हो जाए । वह मेहनती बहुत है बस थोड़ा रास्ता बता दो ।

मैं - आंटी, वह मुझसे बेहतर है पढ़ने में, उसका हो जाएगा । यह आप लोगों की शुभकामनाओं का प्रताप है कि मेरे ऐसा सामान्य व्यक्ति भी यह गौरव पा गया जिसका शायद अधिकारी वह अपने कर्मों से न था ।

आंटी का दिमाग बहुत तेज चलता था । वह समझ गई कि मैं बात टालने की कोशिश कर रहा । उन्होंने बात को सँभालने की कोशिश में मेरी कुछ तारीफ़

की और कहा , “ बेटा घर आना । तुम्हारे अंकल तुम्हारे पापा से मिलने गये थे तब तुम घर पर थे नहीं । वह बहुत बेताब हैं मिलने को । ”

मैं - ज़रूर आऊँगा आंटी ।

यह कहकर मैं आगे चला ही था कि अगले मोड़ पर मुन्नू दूधवाला मिल गया । वह रोककर बोला , “ मुन्ना भाई अब हमरे बच्चों का ध्यान रखना इतना बड़ा ओहदा मिला है , हमारा भी हक है इसपर । हमार दुःख- दर्द भी देखना । ”

मैंने कहा - ज़रूरी मुन्नू भाई ।

मैंने जल्दी होने की बात कहकर जान छुड़ाई नहीं तो वह साइकिल की हैंडल पकड़ कर खड़ा ही हो गया था ।

मैं सत्य प्रकाश मिश्र सर के घर पहुँच गया । मैं मिठाई लेकर गया था । मैंने जैसे ही सर के पैर छुये , सर ने मुझे गले से लगा लिया । सर ने बोला , “ अनुराग तुमसे उम्मीद थी मुझे इसीलिये मैंने तुमसे कहा भी कि प्रयास करो संयोग बन सकता है । मैं इस बात के सख्त खिलाफ़ भी हूँ कि आलतू - फ़ालतू लोग यह परीक्षा देकर बेवजह भीड़ बढ़ायें पर जब तुम पहली बार आये थे कुछ लिखकर तब ही मुझे लग गया था कि तुममें क्षमता है । । ”

मैं - सर आपका आशीर्वाद है ।

सर - तुम हमारा भी काम बढ़ा दिये हो । तुम सबसे कह रहे हो कि सत्य प्रकाश मिश्र ने मुझे हिंदी पढ़ायी है , जबसे यह रिजल्ट निकला है लोग मेरा घर दाँये पड़े हैं । मैं सबसे कह रहा वह उसकी लगन और प्रतिभा है पर कोई सुनने को तैयार नहीं । हर कोई अर्जुन बनना चाह रहा । अगर दरोणाचार्य में इतनी काबिलियत होती तब तो कौरव - पांडव सब अर्जुन ही होते । वह तो उसकी लगन थी , जो उसे सबसे अलग कर गई ।

मैं - नहीं सर । मेरे हिसाब से , यह आपकी व्याख्या अधूरी है । सामान्य अस्तर तो कोई भी प्राप्त कर सकता है पर दिव्यास्तरों के लिये एक सक्षम गुरु की ज़रूरत है ।

सर ने घर में आवाज़ दी और अपने घर के सब लोगों को बुलाया और कहा , यही है अनुराग । यही कारक हैं घर में उमड़ती भीड़भाड़ के लिये ।

यह इलाहाबाद एक अजीब शहर है । यहाँ नायक का जन्म और समापन तीव्र गति से होता है । यह शहर बहुत जल्दी ही नायकत्व भी देता है और जल्दी ही

आपको स्लेट पर लिखे चाक की तरह मिटा भी देता है । यह वह दौर था जब हिंदी साहित्य सब लेने के बारे में विचार करने लगे थे । इसका कारण हिंदी के प्रति एक सहजता थी । कई लोग हिंदी इसलिये भी लेते थे कि एक विषय तो हिंदी में लिखने को मिल जाएगा ।

सर को सारा रिझल्ट पता था । वह यह भी बतायें कि सुरेश चन्द्र शरीवास्तव का चेला चिंतन भी हो गया है । उनको मेरी रैंक भी पता थी ।

सर - कब ज्वाइनिंग है ?

मैं - सर, अभी तो दो ही दिन हुआ रिझल्ट निकले । मुझे नहीं पता कब होगी ज्वाइनिंग ।

सर मुझे एक राय चाहिये ।

सर - क्या हुआ ? अब कौन सी राय चाहिये ?

मैं - सर, मेरी रैंक 102 है । इस पर आईएएस मिलने की संभावना कम दिख रही । आईएफएस और आईपीएस मैंने ऊपर भरी नहीं । चिंतन सर भी कह रहे थे आईपीएस को नीचे भरना, बेवजह का जंजाल है इसमें । अब या तो मैं आईआरएस की सेवा ज्वाइन करूँ या फिर से परीक्षा दूँ आईएएस के लिये ।

सर - यार, तुम विचारक - लेखक टाइप की चीज़ हो । तुम्हारे लिये सिविल टाइप की नौकरी बहतर है । आईआरएस में भी कोई ख़राबी नहीं है । वह बहुत अच्छी नौकरी है । मेरे पढ़ाये हुये विनोद मिश्रा हैं बंबई में पोस्टेड । वह बहुत प्रसन्न हैं । यह भी सुना है इक्का- दुक्का लोग आईएएस छोड़कर आईआरएस ले लेते हैं ।

मैं - जी सर, रंजन अग्रवाल की रैंक 61 है वह आईएएस भरे ही नहीं है । वह आईआरएस ही ले रहे हैं ।

सर - अनुराग, अब यह फैसला व्यक्तिगत है कि आप क्या चाहते हो । मैं तो अभी भी कहता, तुम अध्यापक बनो । इस नौकरी को ढुकरा दो । एक पौरुष से प्राप्त वस्तु को कबीर की तरह निरर्थक कहकर ढुकरा देना भी व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ कहता है । तुम अध्यापक बनकर एक पूरी पीढ़ी सुधार सकते हो । इस बाबूगीरी में सिवाय डिक्टेशन लेने के और कुछ नहीं करोगे । यह जो अध्यापक होता है वह फ्री फ्लो होता है बाकी सब बाधाओं में जीते हैं । एक अध्यापक कक्षा में छात्रों के जो सर्व हित में है वह अपनी मर्जी से पढ़ाता है । उस पर कोई सत्ता - समाज - व्यवस्था का अंकुश नहीं होता । एक स्वतन्त्र जीवन वह जीता है । वह एक इन्द्रधनुष ऐसी आभा हर रोज़ बिखेरता है अपने लिये भी और छात्रों के लिये भी । मैं जानता हूँ तुम सोच रहे होंगे कि सर का पगलैठी- प्रलाप कर रहे हैं पर जब तुम राय माँग ही रहे तो सही राय देना मेरा

फ़र्ज़ है । पर मैं तुमको कह भी नहीं सकता तुम सब छोड़ दो, जबकि मेरी मान्यता तुम जान ही गये हो ।

तुमको कहाँ से लेकचररशिप मिलेगी । पहले का दौर होता तो पा भी जाते पर आज तो मठाधीशों का दौर है । उनकी अपनी गणित है । तुम उस गणित में कहीं बैठते हो तो ठीक है नहीं तो प्रतिभा लिये घूमते रहो । तुम्हारा अगली प्रारम्भिक परीक्षा कब है ?

मैं - सर, जून के दूसरे रविवार को ।

सर - वह तो दे ही दो । उसके बाद फ़ैसला करना । तुम्हारा काम तो कमोबेश हो ही चुका है, अब एक संतोष की ही बात है । फ़ैसला ले लेना अगले दो-तीन महीनों में । तुमको जाना तो सितंबर- अक्टूबर में होगा ।

मैं - जी सर

मैं चलने को हुआ कि सर ने कहा, कल तुम मेरे विभाग आ जाना । मेरे बहुत से हिंदी के बच्चे प्रारम्भिक परीक्षा में ही अटक जा रहे हैं । उनको कुछ सलाह दे दो । मैंस अच्छा लिखने वाले मुझे कुछ नज़र आते हैं पर पहला ही द्वार नहीं संभल रहा उनसे ।

मैं - सर, कल 12 बजे के क़रीब आता हूँ ।

सर - ठीक है । अगर मैं अपने कमरे में न मिलूँ तब दूध नाथ के कमरे में चले आना ।

मैंने सर से विदा ली और घर की ओर चला ।

मैं घर पहुँचा । मैंने सोचा एक पत्र आंटी को लिख देता हूँ । उसने रिज़ल्ट देख ही लिया होगा । मैंने छोटा सा ही पत्र लिखा ।

“ माँ का और आपका आशीर्वाद एक शब्दबेधी बाण है । यह लक्ष्य को ढूँढ़ निकालेगा थोड़ी सी सरसराहट की ही आवाज़ से । यही मेरे साथ हुआ । आपका प्रताप था साथ मेरे, जो लक्ष्य दूर जाता दिख रहा था वह पहुँच में आ गया सहारे उस आशीर्वाद के ।

चिंतन सर आये होंगे ही आपसे मिलने, वह मुझसे कह कर गये थे कि मैं आंटी से मिलने जाऊँगा । उनका भी हो गया है । रिज़ल्ट तो आपने पचास बार से कम देखा न होगा, मेरे नाम के अक्षरों को तेरी आँखें पी गयी होंगी । आप ध्यान से आज फिर देखना मेरे नाम के अक्षर उस पेपर में । वह और

नामों की तुलना में धुँधला हो गया होगा । यह धुँधलापन कुछ तेरे गिरते आँसुओं से हुआ होगा और कुछ अक्षरों की स्याही को आँखों ने पी लिया होगा ।

मैं जल्दी ही आऊँगा । ऋषभ- शालिनी और आहूजा साहब की खबर देना । “

मैंने अपने छोटे भाई से कहा कल सुबह इसको स्पीड पोस्ट कर देना ।

मैं पत्र रखकर एक कोने में अपने कमरे का बिस्तर ठीक करने लगा और सत्य प्रकाश मिश्रा सर की सलाह पर विचार करने लगा । मुझे लगा सर ठीक ही कह रहे हैं, यह प्रारम्भिक परीक्षा दे लेता हूँ । अभी भी क्रीब दस दिन के आसपास हैं मेरे पास । मैंने पढ़ तो सब एक बार लिया ही है । मैं कुछ माक टेस्ट कर लेता हूँ, इस परीक्षा में समस्या नहीं होनी चाहिये ।

यह मैं सोच ही रहा था कि मेरे बड़े मामा का बेटा दादू आ गया । जबसे मेरा रिजल्ट आया है तब से वह मेरे यहाँ और मामा के यहाँ घूम रहा है । वह एक वक्त यहाँ रहता तो दूसरे वक्त वहाँ चला जाता । बीच- बीच में मौसी के यहाँ भी हो आता । वह कोई गाँव का किसी का झगड़ा चिंतन सर से सुलझाने के फ़िराक़ में भी था । अब उसके भी पर लग गये थे जबसे चिंतन सर ने कहा कि तुम अब हमारी सेवा में रहो । वह था बहुत चालू । मैं, चिंतन सर, बद्री सर तीन तो घर के ही थे फिर सुरुचि मिश्रा, शशि तिरपाठी, अमर गुप्ता आदि का भी नाम उसने अपनी लिस्ट में जोड़ लिया था । उसको लगा कि बहुत बड़ी निधि हाथ लग गई है । माँ ने कह भी दिया था कि जब भी चिंतन आएँगे मैं कह दूँगी । वह और विश्वास जीतने के लिये एक पूरा गुप्तचर बन गया था ।

उसने आते ही कहा, “ बुआ खबर तगड़ी है । मैं कल रात चाचा के यहाँ था और बहुत अंदर का भेद पता चला ।

वह लगा नमक - मिर्च लगाकर क्रिस्सा सुनाने ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 110

यह इलाहाबाद है । यहाँ सब अलग ढंग से होता है । बद्रीविशाल मिश्रा सर कहा करते थे, “ शेर कभी बने बनाये रास्तों पर कहाँ चलता है । उसे तो

रास्ता बनाना ही है । उसी तरह इलाहाबादियों के लिये अगर रास्ता बना है तो उसको उखाड़ देना है और फिर उस पर चलना है । इतनी ऊर्जा है कि वह सीधे- साधे बनाये राहें पर चलने पर खर्च ही नहीं होगी । अरे भाई रात की नींद के लिये थकना ज़रूरी है । यह थकावट भी ज़रूरी है । यह थकावट पाने के लिये ही हर रोज़ कुछ किलोमीटर साइकिल चलाना ज़रूरी है । “

मैं भी यही करने लगा था सेलेक्शन के बाद से । मेरी साइकिल चलाने का प्रतिदिन एवरेज बढ़ गया । मैं अगली परीक्षा के लिये काफ़ी पढ़ लिया था रिज़ल्ट आने के पहले ही । मैं एक माक टेस्ट करता और साइकिल लेकर निकल लेता । इसका एक मुख्य कारण था मेरा नव उदित नायकत्व । अब विजेता घर में ही रहे तो उसकी प्रशस्ति का गान कैसे होगा और अगर होगा तब वह सुनेगा कैसे ? अपनी तारीफ़ सुनने से बड़ा दैवीय आनंद और कहाँ मिल सकता है । इसीलिये तो इलाहाबाद के क़िले के एक ही प्रशस्ति लेख में समुद्रगुप्त, रानी कारुवाकी, जहाँगीर सब समा गये । मैं नेपोलियन सदृश अनुभव करने लगा । वह महान विजेता और मैं भी कुछ वैसा ही महसूस करने लगा । वह फ्रांसीसी क्रान्ति के संदेशों को अपनी विजयवाहिनी के साथ यूरोप के हर देश में ले गया और मैं हिंदी माध्यम की यशगाथा का एक प्रचम बन चुका था । मेरे चारण- भाटों की भरमार थी ।

सुरुचि मिश्रा की रैंक मुझसे ऊपर ज़रूर थी पर मेरे समर्थक उसकी तुलना में बहुत ज़्यादा थे । उसके कई कारण थे, जो शायद एक उचित कारण भी थे । एक तो भाषा का मुद्दा था, वह अंग्रेज़ी माध्यम की थी और मैं देशज खाँटी हिंदी । दूसरा विषय का मुद्दा था, उसका विषय था अंग्रेज़ी साहित्य और मनोविज्ञान जिसका इलाहाबाद से कोई ख़ास लेना - देना न था । अंग्रेज़ी तो कोई लेता ही नहीं था मनोविज्ञान भी इने-गिने लोग ही लेते थे । मैं जन-विषय, जन-भाषा का प्रहरी था । मैं गरीबों का मसीहा था, मेरा विषय इतिहास और हिंदी साहित्य आधा इलाहाबाद लेता था, इसको लोग हिल्ट भी कहते थे । अंग्रेज़ी में तलवार पकड़ने की जगह को हिल्ट कहते थे । इसका तात्पर्य यह हुआ कि हिल्ट ही फ़ैसला कर देता है युद्ध का । तीसरे रोड मास्टरी, वह घुमक्कड़ न थी मेरी तरह, मैं साइकिल लिये घूमता ही रहता था, और सबसे बड़ी बात वह एक अभिजात्य से वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी और मैं एक कर्ण की तरह था शोषित - दलित - सम्मानवंचित - सम्मान आगरही वर्ग के परिवेश का । मेरा पथ विपरीत परिस्थितियों में शौर्य का पथ था और कर्ण की तरह अन्याय का नहीं न्याय के साथ मैं था ।

चिंतन सर और सत्य प्रकाश सर दो मेरे प्रबल समर्थक जिन्होंने मेरा रिज़ल्ट आने के पहले कह दिया था, उसका रिज़ल्ट देखना कुछ भी इतिहास

वह बना सकता है। सत्य प्रकाश सर ने कहा था मुझे उसके हिंदी के दूसरे पेपर का नंबर देखना है। हिंदी का दूसरा पेपर मौलिकता का था। उसमें आप को पढ़ा हुआ कम मिलता था। वह आपके भाषा की समझ और विषय के गृह्णात्म अध्ययन से ही लिखा जा सकता है। ह्यूमिनिटीस के ज्यादातर विषय के साथ यही कहा जाता था। सबमें दूसरा पेपर एप्लिकेशन का था। आप कितना अपनी समझ से लिख सकते हो, यह आपके पेपर में अंक का निर्धारण करेगा। हलाँकि यह आंशिक सत्य है। यह आजतक कोई नहीं समझ पाया कि संघ लोक सेवा आयोग में नंबर मिलते कैसे हैं। ऐसा बहुतों के साथ हुआ है कि कई बार बेहतर किये पर्चे में ख़राब और कम बेहतर किये में अच्छा अंक मिल जाता है। यहाँ एक स्केलिंग विधि चलती है जिसका पता सिर्फ विधाता को ही है।

चिंतन सर ने शेर और सांड की लड़ाई का मुहावरा पहले ही फैला दिया था। इन परिस्थितियों में लोग मेरी तारीफ के पुल बाँध रहे थे और मैं सुनने को बेताब हो रहा था। मेरे अंदर अहंकार का भी जन्म हो रहा था, जिससे मैं अनजान था।

यह अहंकार व्यक्तित्व में कब प्रवेश करता है, पता ही नहीं चलता। गर्व, आत्मसम्मान, अहंकार, घमंड सब एक ही कुल के भाव हैं। जब सकारात्मकता होती है तब उसी कुल से धर्मात्मा का जन्म होता है और जब नकारात्मकता होती है तब दुर्योधन का प्रादुर्भाव होता है। मेरे अंदर दुर्योधन का जन्म तो न हुआ था पर वह प्रयास अवश्य कर रहा था और मेरी बदलती मनोवृत्ति कहीं न कहीं उस प्रयास को सहायता दे रही थी।

इस बदलते परिवेश ने मेरी हीन भावना को कम करना आरंभ कर दिया था। यह हीन भावना कोई लेकर जन्म नहीं लेता। यह समाज के द्वारा आरोपित की जाती है। यह सबसे ज्यादा माता-पिता ही आरोपित करते हैं। आप किसी को सारा दिन नकारा - बेकार - धरती का बोझ कहते रहो, वह हीन भावना से ग्रसित हो ही जाएगा। बहुत से बच्चे अपनी कक्षा में बेवजह अपने साथ के बच्चों को मारते हैं। यह क्या है? यह आकर्षण पाने का प्रयास है जिसकी उसकी चाहत है। यह हीन भावना से ही उपजता है। जब उसको एक सामान्य तरीके से कोई पहचान नहीं मिलती तब वह यह कार्य करने को उद्यत हो जाता है।

हिंदी माध्यम के अधिकांश अभ्यार्थी प्रायः हीनभावना के शिकार होते हैं उनको हर समय कहा जाता है आईएएस बनने के लिये अंग्रेजी माध्यम ही होना चाहिये। एक मेरे सीनियर थे वह मुझसे कह रहे थे आप अंग्रेजी में ही परीक्षा लिखो, जबकि वह हिंदी में लिखते थे। उनकी सलाह थी कि आपके

पास समय है एकाध साल अंगरेजी पढ़ो । जब वह ठीक हो जाए तब अंगरेजी माध्यम में परीक्षा दो । मैंने उनकी सलाह मानकर कोशिश की पर सारा दिन मैं डिक्शनरी ही देखता रहता था । वह कुछ दिन बाद मिले और पूछा क्या चल रहा । मैंने कहा, मुझसे अंगरेजी माध्यम से काम नहीं हो पाएगा । उन्होंने कहा, तुम्हारा रिजल्ट मैं आज ही बता देता हूँ । मैंने उनसे कहा कि यह काम आप संघ लोक सेवा आयोग को करने दो, नाहक तकलीफ न उठाओ । । ऐसे ही लोग इस समाज में हैं और एक बड़ी जिम्मेदारी ऐसे ही लोगों की है जो हीन भावना दूँस देते हैं व्यक्तित्व में ।

एक छूटी - फूटी स्तरहीन अंगरेजी की बहुत इज्जत है पर एक अच्छी स्तरीय हिंदी का कोई लेनदार नहीं है । चिंतन सर, जगदंबा मौर्य बीए में अंगरेजी एक विषय के रूप में लिये, सिफ़र इसलिये कि पूरे ग्रामीण इलाक़े का एक दबाव रहता है सब कहते हैं, “ अंगरेजी न पढ़े तब का पढ़े । ” पर अंगरेजी पढ़ने की पीड़ा वही जानते हैं ।

मुझे भी हीन भावना इसी समाज से मिली । मैं इंटर के बाद किसी इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश न पा सका । यहाँ तक कि इलाहाबाद के पालीटेक्निक में भी प्रवेश न पा सका । उस समय पालीटेक्निक में प्रवेश हाई स्कूल - इंटर के अंकों पर होती थी । मेरा अंक हाई स्कूल- इंटर में इतना न था । मैं बहुत ही महत्वाकांक्षी था, मैं पालीटेक्निक जाना नहीं चाहता था । पर इलाहाबाद शहर में जूनियर इंजीनियर, एक्साइज इंस्पेक्टर आदि की प्रतिष्ठा थी । इस प्रतिष्ठा का कारण उनके द्वारा अर्जित काला धन था । मेरे पिताजी के कुछ परिचित इन पदों पर थे और वह उनके शान- शौकृत से बहुत प्रभावित थे । मेरे पिता बहुत दबाव डाल रहे थे पालीटेक्निक सिविल बरांच से करने के लिये । सिविल बरांच की अधिमानता उस बरांच से जुड़े काले धन को लेकर थी । मैंने घर के दबाव में वह पालीटेक्निक का फार्म भर दिया था, पर मेरा जाने का कोई मन न था । कभी - कभी असफलता भी बहुत सुख देती है । मैंने जब लिस्ट में अपना नाम न देखा, बहुत ही प्रसन्न हुआ । मैंने अपने से ही कहा, जान छूटी ।

मैं कुछ रहा हूँ या न रहा हूँ, मुझे कभी अच्छे अंक मिले या न मिले पर मैं हमेशा से बहुत ही महत्वाकांक्षी रहा हूँ और खुद से कहता था

“मैं जन्मा हूँ एक गैर मामूली दास्तान के लिये । ”

यह बात मैं तकरीबन खुद से ही दिन में कई बार कहता था । वह गैर मामूली दास्तान खोजने की प्रक्रिया मेरे इस परिणाम से मेरे अंदर करवटें लेने लगी हैं । यह सफलता तो एक द्वार है । मुझे कुछ द्वार तोड़कर अभिमन्यु की तरह शहीद नहीं होना है मुझे भीष्म बनना है जिसके सामने हरि भी नतमस्तक हो जाए ।

मैं चक्रव्यूह को बिखेर देना चाहता हूँ । मैं एकाकी युद्धस्थल में एक क्षत-विक्षत परिवेश में उस युद्ध स्थल में जहाँ रुदन ही व्याप्त रहता हो वहाँ इतिहास लिखना चाह रहा था यह कहते हुये, ऐ सेनाओं तुम छिप कर आओ या साक्षात्, धोखे से आओ या दृष्टांत से, अस्त्र से आओ या बगैर अस्त्र के । मैं कुंठित अस्त्रों के बीच लड़कर व्यूह बनाऊँगा तुम्हारे अंत के लिये, क्योंकि मैं जन्मा हूँ एक गैर मामूली दास्तान के लिये ।

मेरे नम्र एवम् विवेकशील व्यवहार में यह दंभ भरने लगा था । मेरे अंदर अहंकार का जन्म हो गया था । यह मेरे बातचीत से स्पष्ट देखा जा सकता था । मैं तलाशने लगा था राजेश्वर सिन्हा, अमित चौधरी को अपने दंभ के प्रदर्शन के लिये । हिंदी बनाम अंग्रेज़ी की लड़ाई का स्वघोषित नायक अनुराग शर्मा उन अंग्रेज़ी के समर्थकों पर आकरमण करने को तैयार हो चुका था जिनका अंग्रेज़ी पढ़ने में कोई दोष न था । उनके पिता सक्षम थे और एक बेहतर स्कूल में वह लोग पढ़े थे । मेरे अंदर की छिपी हीन भावना एक अलग ढंग से प्रतिक्रिया दे रही थी ।

मैं अगले दिन हिंदी विभाग गया । सर ने पहले से ही बता दिया था मेरे आने के बारे में । मेरा विभाग में पहुँचना एक हंगामा कर गया । सर ने हिंदी की सारी कक्षायें स्थगित करके मुझे सुनने का निर्देश जारी किया । पूरा हाल खचाखच भर चुका था । यह हवा फैल चुकी थी कि 102 पोज़ीशन प्राप्त अनुराग शर्मा हिंदी विभाग में आये हैं । मैंने कभी इतनी बड़ी भीड़ न देखी थी । सत्य प्रकाश मिश्र सर बोले दूध नाथ सिंह सर से कि यार ऐसी भीड़ तो हमने आज तक किसी भी नामचीन वक्ता के संबोधन में न देखी । मैं थोड़ा नर्वस होने लगा । इतनी बड़ी भीड़ को मैंने आज तक संबोधित न किया था । सर ने मेरा नर्वस होना देख लिया । उन्होंने कहा सवाल- जवाब की शुंखला में यह सेशन हो जाएगा ।

मैंने कहा कि सर सँभाल लूँगा । शुरुआत किताबों के नाम और कितनी देर पढ़ना चाहिये से हुई पर जल्द ही मैं अपने रो में आ गया । मुझे लगने लगा इन किताबों की जानकारी या पाठ्यक्रम से अधिक आवश्यक है उस जड़ पर प्रहार करना जो सारी समस्या की मूल कारक है । मैंने बात कहनी शुरू की

....

यहाँ सब कहते हैं कि इलाहाबाद के साथ अन्याय हो रहा । हिंदी माध्यम को जानबूझकर दबाया जा रहा । एक सवाल को गंभीरता से सोचो यह माध्यम का प्रश्न कब आता है ? यह आता है मुख्य परीक्षा में और इंटरव्यू में । प्रारम्भिक परीक्षा में सिर्फ़ गोला बनाना होता है । उस गोले की कोई भाषा नहीं होती वह एक ही पेंसिल के एक ही रंग से बनाया जाता है और वह तकनीक के द्वारा जाँचा जाता है । इसमें कोई ह्यूमन इंटरफ़ेस नहीं होता । यह साल दर साल इसी परीक्षा में हम कम क्यों हो रहें । यह इतिहास के ही लोग जो ऐसे इतिहास से करते हैं वह क्यों फेल हो जाते हैं, प्रारम्भिक परीक्षा में । इस हिंदी विभाग में लोग प्रारम्भिक परीक्षा नहीं पास कर पा रहें । मेंस में प्रश्न के उत्तर का एक माडल उत्तर बनाया जाता है । आप उसके हिसाब से नहीं लिखोगे तब अंक नहीं मिलेंगे । यह इंटरव्यू एक व्यक्तित्व का परीक्षण है । यह व्यक्तित्व रातों- रात नहीं बनता । हममें से कितने लोग प्रयास करते हैं अपने व्यक्तित्व के निर्माण का । यह निर्माण अध्ययन, मनन, चिंतन से बनता है । हम अपने को अधिक से अधिक अभिव्यक्त करने की कोशिश करें उससे बनता है । हम अपनी पुरानी पीढ़ी की यशकथाओं और उनकी प्रशस्ति गाथाओं के आलोक में ज़िंदा हैं । कोई भी पीढ़ी, कोई भी वंश, कोई भी समाज इतिहास के आलोक में बहुत दिन ज़िंदा नहीं रह सकता । अगर पानी के नये सोते खोजे नहीं जाएँगे तो प्यास से मरना ही है क्योंकि पुराने सोतों को तो खत्म होना ही है । आफ़ताब भी छब्बता है । द्वीप भी जल में समाहित हो जाते हैं । हमें चाँद और जुगनुओं के सहारे सफ़र पार करना सीखना होगा, हमें नव द्वीपों का निर्माण करना होगा ।

यह एक अलग मिजाज का इमित्हान है । इसके लिये अपने को जलाकर उसी की राख में से कहानी लिखने की कोशिश करनी होगी । आप में से ज्यादातर इस शहर में नये तो हो नहीं । यहाँ होने वाले हादसे आपने देखे हैं । इस हादसे के लोगों को तजबीज करके देख लो, उनमें से ज्यादातर हादसे लायक ही थे ।

यह वक्त तेज चल रहा यह फिर न आएगा, यह रात काली जो दिख रही उसकी सियाही में उजाला देखने की कोशिश करो । हर पत्थरों से फल नहीं गिरते पर वह गिरते किसी पत्थर से ही हैं, यह चलाने वाले का कौशल है । यही कौशल सीखना होगा । बादल को काँधे पर बैठा कर खेतों तक लाना होगा, सूख रही फसलों को वक्त पर बचाना होगा ।

हमें अपने अंदर विश्वास पैदा करना होगा । मेरी सारी सफलता की जो भी गाथा आप सुन रहे उसके पीछे मेरी सिर्फ़ एक पंक्ति है, मेरा एक अपना

विश्वास है जो मैंने इसी यूनिवर्सिटी रोड पर प्राप्त किया है । वही पंक्ति आपको भी बनानी होगी अपने लिये

मैं जन्मा हूँ एक गैर मामूली दास्तान के लिये

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 111

मैंने हिंदी विभाग में अपनी बात खत्म की और साइकिल को यूनिवर्सिटी रोड पर टहलाते हुये धीरे -धीरे पैडल मारते हुये बढ़ने लगा । मैं दोनों तरफ की दुकानों को देखकर जितना भी धीरे संभव था मैं साइकिल चला रहा था । सुभाष चाय के दुकान पर किसी ने आवाज़ लगायी , “ गुरु चाय पी कर जाओ । ” मैं रुक गया मैंने देखा यह आवाज़ तो अमर गुप्ता सर की है , मैं सर... सर.... सर..... करने लगा ।

वहीं पर अमर गुप्ता सर के साथ धनंजय सिंह भी मौजूद थे । अमर गुप्ता सर दो चार को साथ लबझियाये रहते ही हैं । उन्हें प्रवचन देने का बहुत शौक़ है और हमेशा चार- छः लोगों को कम पढ़ने का , काम न करने का ज्ञान पिलाते रहते हैं । धनंजय सिंह की रैंक शशि तिरपाठी से नीचे थी । इस रैंक से कोई खास आपत्ति शायद न हो पर शशि तिरपाठी ने उनसे ऊपर थी और फिर पटकनी दे दी थी उनको , यह उनके दुःख का मूल कारण था । वह इस सदमे से बाहर नहीं आ पा रहे थे । अमर गुप्ता सर बोले आ जाओ अमिताभ बच्चन ज़ंजीर फ़िल्म तो रिलीज़ हो गई । अब आगे दीवार , शोले , मुक़द्दर का सिकंदर कब आ रही । अब जलवा तो आप का ही है आजकल । ऐसा क्या लिख मारे ? इंटरव्यू तो कह रहे थे ठीक न हुआ ।

मैं - मैंने आसमान की तरफ देखकर कहा , सर सब ऊपर वाले की महिमा है , हमारे ऐसे लोगों को भी यहाँ पहुँचा देता है ।

अमर गुप्ता - इलाहाबादी कभी सुधरेगा नहीं । यह फ़ंडा देगा ही । लगता है प्रैक्टिस कर रहे हो कैसे काटना है नये- नये बच्चों का । आज एन झा में कोई कह रहा था कि आप हिंदी विभाग में व्याख्यान दे रहे हो । हमको बताया होता हम भी सुन लिये होते , कुछ ज्ञान मिल गया होता हमको भी ।

मैं - सर , सत्य प्रकाश मिश्र सर ने कहा था । मैं अब क्या कहता उनसे ।

अमर गुप्ता- यह बताओ तुम कैसे ऐसे बिगड़ैल को पटा लिये । एक बार हम गये थे और कहा सर कुछ पतली- पतली किताब बताओ पढ़ने के लिये । यहाँ सब कह रहे डाक्टर नागेन्द्र की किताब पढ़ो हिंदी साहित्य के इतिहास में पर वह तो बहुत मोटी है । सर नाराज़ हो गये । वह कहने लगे तुम्हारे ऐसे लोग ही हिंदी की लुटिया डुबो रहे हो । मैं सन्न मारकर चला आया और यहीं यूनिवर्सिटी रोड पर ढूँढ़ लिया काम चलाऊ किताब । हमने सुना है कि तुमको लिखने में मदद किये हैं और कुछ नोट्स भी लिखा दिये थे । तुम किसी को यार हवा ही न दिये ।

सर का इतना कहना, धनंजय सिंह को चौकन्ना कर गया । वह फिर से परीक्षा देना चाहते थे । उनको लगा कि इसका नोट्स मिल जाए तो सहूलियत हो जाए । वह कुछ बोले कि अमर गुप्ता सर बोले सुभाष से, ज़रा अच्छी चाय बनाना यह बहुत बड़े साहब हैं ।

मैं - सर लगता है आज सुबह से आप को कोई मिला नहीं ।

सर - मिले तो कई पर आप जैसा कोई न मिला ।

यह कहकर सर हँसने लगे ।

मैं - सर, आप कब आये ?

सर - रिज़ल्ट निकलते ही भागने के फ़िराक़ में लग गये । बहुत किचाईन है यार एसडीएम की नौकरी में । अब तो जान छूटी । डीएम को पटाया इमोशनल ब्लैकमेल करके कि बाबूजी की तबियत ठीक नहीं है और भाग आया यहाँ पर ।

मैं - सर, कब तक रहेंगे ?

अमर गुप्ता- अब इस सप्ताह तो नहीं जाऊँगा । अब वैसे भी एसडीएम की नौकरी से जान छूटी । आईआरएस मिल जाएगी । मैं अब इ फटीचर जी हजूरी की नौकरी नहीं करूँगा ।

मैं - सर क्या हाल अमित चौधरी सर का ।

सर - ले लो मज़ा । अब पहले तो चढ़ा दो चने के झाड़ पर पूछो गिर कैसे गये । अगला सवाल आप पूछोगे, उनका हुआ क्यों नहीं ? अब यह तो चिंतन बताएँ क्यों नहीं हुआ । वही तो सबकी कुँडली देख रहे थे ।

यह संजीव टंडनवा जुगाड़ का भी हो गया, वह सुपर फ्राड सिद्धांत श्रीवास्तव का भी हो गया । यार एक बात तो है दास - सिगरेट पीकर भी वह

सब साले हो जाते हैं , हम घिस- घिस कर भी नहीं हो पाते । लगता है बहुत बड़ा खोपड़ा है उन सबके पास ।

मैं - सर कुंडली गुरु कहे थे , संजीव टंडन का हो जाएगा ।

सर - यह पूरा फ़राड है कुंडली गुरु । यह चकल्लस फैलाये है । डीजीपी को सेट किये हैं यही ग्रह का खेला खेलकर । वह जितने की भविष्यवाणी करता है उसमें से कुछ का तो होगा ही । जिसका हो जाएगा , उसका हल्ला हो जाएगा कि कुंडली गुरु बताये थे और जिसका नहीं होगा उसमें कुछ ग्रह-नक्षत्र के धूम जाने की बात कर देगा कि वह ग्रह थोड़ा सा धूम गया । अगले साल हो जाएगा ।

मैं - रिज़िल्ट कैसा रहा यहाँ का ?

सर - यार टाप रैंक कहाँ मिली । सुरुचि और तुम्हारी दो रैंक ठीक हैं बाकी कहाँ बहुत अच्छी आयी । 400 के आसपास काफ़ी की रैंक है । एन झा में धकाधक लोग होते थे । इस बार 8/9 ही हुये जिसमें से हम तो एनझा के इनमें हैं नहीं । हमको गये कई साल हो गये यह बात अलग है यह यहीं पसरे रहते हैं । लोग हो तो रहे हैं , पर वह पुरानी बात अब नहीं रही ।

मैंने चाय पी । लोग बढ़ते जा रहे थे । मुझे पढ़ना था ।

मैं - सर चलता हूँ । फिर मिलता हूँ । आप घर आये , बहुत अच्छा लगेगा मुझको ।

सर - अब आप आदेश दो । हम आ जाएँगे । आप अमिताभ बच्चन हो , हम तो हैं ऋषि कपूर ।

धनंजय सिंह से भी कहा आप भी आना । वह तो आने के अति उत्सुक ही थे , नोट्स की जो अभिलाषा उफान मार रही थी ।

मैंने कहा सर कल सुबह इंतज़ार करूँगा ।

सर - यार बढ़िया जलेबी - दही - कचौड़ी मँगा कर रखना । सुबह बाबू धनंजय सिंह के साथ आता हूँ ।

मैं - जी सर , इंतज़ार करूँगा ।

इलाहाबाद में नोट्स एक अजीब सी चीज़ है । कोई किसी को कोई हवा नहीं देता अपने नोट्स की ।

“ हम तो नोट्स बनाते ही नहीं है “ । यह बात हर कोई कह देगा अगर आपने नोट्स मँगा तो । सारे लोग पढ़ते एक सी ही किताब से हैं पर पता नहीं नोट्स में ऐसा क्या होता है जो कोई देना नहीं चाहता । यहीं धनंजय सिंह ने मुझसे

कहा था कि वह नोट्स बनाने की विचारधारा में कोई यकीन नहीं रखते बस किताबों को अंडरलाइन कर लेते हैं। वही अब नोट्साकांक्षी हो गये हैं।

मैं सर से विदा लेकर आराम- आराम से साइकिल चलाते घर की ओर चला। मैं अब ज़िंदगी को टहलाने लगा था। मैं सारा काम आराम से करता था। मैं घर पहुँचा तो देखा दादू अपनी मुखबिरी की कहानी सुना रहा था और सब डूब कर सुन रहे थे।

मैं भी सुनने लगा वह कहानी।

दादू - बुआ, हम जैसे ही पहुँचे देखा चाचा - चाची, बाबा भैया सब बैठे बात कर रहे थे। हम पहुँचे तब चाचा बोले चलो दादू भी आ गया, यह आजकल मुन्ना की चेलागीरी कर रहा है। मैंने कहा, चाचा का करी हम अब बाज़ार मुन्ना भैया के ही बँधी बा। हम का सबहीं करत हये।

चाची - यह बात तो है। उसने काम ही ऐसा किया है। वह क्या था, और कहाँ पहुँच गया। दो साल पहले कोई सोच सकता था कि यहाँ पहुँच जाएगा।

चाचा - भाग्य है।

चाची - भाग्य ही सब कुछ कहाँ होता है, अपना प्रयास भी तो होता है। भाग्य भरोसे बैठे रहो तब कहाँ कुछ होने वाला।

चाचा - पूरे ख़ानदान में उसके आजतक कोई क्लर्क से ऊपर गया ही नहीं, वह एकाएक जंप मार गया।

चाची - तुम्हारे ख़ानदान में ही कौन है जो अफ़सर हो गया। इतना पढ़ाया अपनी बेटी को वह पढ़ने में अच्छी भी थी। ई बाबा से कुछ हो ही नहीं पा रहा। कौन है तुम्हारे ही यहाँ जो बड़का अफ़सर हुआ है।

चाचा - वह लगा रहा। उर्मिला का बहुत शासन था। वह लगी थी बच्चों पर।

चाची - हर बात पर बस हिरिसबाजी करना। सारा दोष हम पर लाद देना। जब वक्त था तब अफ़सरी के गुरुर में थे, तब ध्यान दिया नहीं।

चाचा - हर बात पर तुमको लड़ना ही है।

चाची - सारी बात छोड़ें, यह हरिकेश की बेटी की शादी की बात चलाओ। हरिकेश को लगता है कि लड़के के मामा हैं, यह जहाँ चाहें करा देंगे। ऐसा होता भी है कि मामा की बहुत चलती है पर एक हमारा ही घर है जहाँ मामा-मामी की कौन सुनने वाला।

दादू - ऐसी बात नहीं है चाची । यह चाचा से बगैर पूछे रिश्ता कहीं भी नहीं कर सके । बुआ जरूर पूछेगी कि कहाँ रिश्ता करें । आखिर चाचा घरे के बड़-बड़वार हैं । इनका समझ बा देश - दुनिया के । इतने बड़े-बड़े लोग आ रहे हैं बियाह के लिये वह सब लोग फूफा के बस के नाहीं हैं । चाचा के हाथ लगावय पड़ी, नाहीं तो काम नसाय जाये ।

चाचा - कौन बड़े-बड़वार आई गवा ?

दादू - चाचा हमरे सामने तो एक आदमी आई रहा तब घरे में केऊ नाहीं रहा । ओका हम खुदै मुन्ना भैया से मिलावा । साँझे के पुलिस की गाड़ी से एसपी ललितपुर आये रहेन ओनसे हमहीं कहा कि इस समय कोई है नहीं घर पर ।

चाचा - किससे तुम मिलाये थे मुन्ना से ?

दादू - चाचा, कौनो ओम प्रकाश पाठक थे । वह आये थे । उनको रामराज मिश्रा भेजे थे अपनी लड़की की शादी के लिये कि समय माँग कर आओ, मिलने का ।

बाबा भैया- ई रामराज मिश्रा जो प्लाटिंग का काम करते हैं ?

दादू - हाँ भैया ।

बाबा भैया - पिताजी अब यह ब्याह रूपये पर तो हरिकेश मामा नहीं कर सकते । रामराज के ऐसन पैसा तो न देई पाइहिं ।

चाची - हरिकेश सब देगा । उसके पास बहुत पैसा है ।

बाबा भैया- अम्मा तोहका नाहीं पता बा रामराज की हैसियत । वह कई करोड़ का आसामी है ।

चाची चिंतित होई गइन । इतने में हरिकेश मामा और मामी आइ गए । तू तो बुआ जनतई हजु केतना मान- सम्मान बा हरिकेश मामा के चाचा के इहाँ । ओनके अउतई माहौल बदलि गवा । चाचा - चाची बहुत खुशी ज़ाहिर केहेन ओनके आवय पर ।

हरिकेश मामा अवतई चाचा के पैर छुएन और कहने बधाई हो जीजा जी आपका भांजा आईएस हो गया ।

चाचा हैं बहुत गुरु चीज़ । उ कब पहला बदल देइहिं पतै न चले ।

चाचा - हरिकेश उसका होना ही था । वह बदमाश था पर वह था लगनशील । हमने पाला है उसको । उसको मैं ले गया था श्यामा देवी भगवती प्रसाद में नाम लिखाने । मैंने नाम लिखाया । वह स्कूल के अंदर जा ही नहीं रहा था । मैंने कहा कि तुमको एक दिन बड़ा आदमी बनना है अपने मामा की तरह और उनसे भी आगे जाना है । मैंने कहा तुमको मेरा नाम रोशन करना है । तुम स्कूल नहीं जाओगे तब कैसे होगा । वह बोला स्कूल में बहिन जी मारती हैं, मैं नहीं जाऊँगा । मैंने कहा, मैं यहीं बाहर बैठता हूँ । अगर मारेंगी तब तुम मुझसे बताना । तुम कह देना मेरे मामा बाहर बैठे हैं । मैं स्कूल में अंदर गया और कहा कि यह डरा है ध्यान रखना । मुन्ना बोला, मामा आप जाना मत स्कूल के बाहर रहना । अगर मुझे मारेंगे तब मैं भाग आऊँगा । मैं सारा समय वहीं बाहर की पुलिया पर बैठा रहा । वह पुलिया आज भी है स्कूल के सामने । वह बाहर निकला स्कूल के बाद मैं उसको लेकर घर आया । उमिला बोलती थी, “ भैया यह बहुत बदमाश है आपके अलावा किसी की नहीं सुनता । समय- समय पर थोड़ा ताकीद कर दिया करो । ”

बुआ इतना कहके चाचा लागेन रोवै । तब चाची कहिन अपने लड़िकन से ज्यादा ई मुन्ना के मानत रहिन ।

हरिकेश मामा से पहले मामी बोली ... “ जीजी अब हमार उद्घार कराव । बेबी और मुन्ना के संयोग बन जाय तो जीवन सफल होइ जाय । ”

हरिकेश मामा - जीजा जी, आप बतायें कैसे करें । आप मामा हैं । आप जो चाहेंगे वही होगा । हमारी बात पहुँचायें और हमको आदेश दें ।

चाचा - हरिकेश रिजल्ट अभी आया है । हम तो अक्सर जाते हैं । तुम भी हो आओ एक बार ।

हरिकेश मामा - जीजाजी आप ही सारी बात कर लें । आप जो कहेंगे हम सब कर देंगे । जब आप कहें हम चले चलेंगे । अब हमको अकेले न भेजे । आप भी साथ चलें ।

चाची - आप साथ जायें । आपके साथ जाने का असर अलग होगा । अरे जो उनको चाहिये सब मिलेगा ही । एक जाना समझा परिवार है, पढ़ी- लिखीं लड़की है । अब और क्या चाहिये, रीति- रिवाज सब करने को तैयार ही हैं ।

हरिकेश मामा - जो भी आप कहेंगे जीजा जी सब करेंगे । दरेनिंग में जाने से पहले बरीक्षा करा दें । जाड़े में पूरे धूमधाम से विवाह कर देंगे ।

चाचा - हरिकेश तोहार बजट का बा ।

हरिकेश मामा - जीजा जी इस लड़के के लिये बजट की कोई बात ही नहीं है । सुपात्र ब्राह्मण है । हमारे मानदान का मानदान है । अगर कुछ ज्यादा दे भी दिया तो कौन सी बात है, घिउ उड़ाल दाली में ।

चाचा - हरिकेश, अगर बड़ा मुँह खोल दिया शर्मा जी ने तब ?

हरिकेश मामा - जीजा जी यह तो हमारी तकदीर होगी अगर वह बड़ा मुँह खोल दिये । उनको खोलने दीजिये, बस यह रिश्ता करवाइये ।

चाचा बोले मामा से इसको पहचान रहे न बड़कऊ भैया का बेटा है ।

हरिकेश मामा - इसको कौन नहीं जानता । यह तो बहुत मज़ाकिया है ।

चाचा -आजकल यह मुन्ना का चमचा बना है । जब से रिज़ल्ट आया है यहीं घूम रहा है ।

हरिकेश मामा - दादू तुम भी हमारी सिफारिश करो । हर लड़का- लड़की का विवाह होता ही है । इन दोनों का संयोग बन जाए यह हमारी चाहत है । अब कथरी के हम लोग नज़दीक के धागे हैं । अगर और नज़दीकी बन जाए तो और भी अच्छा है ।

चाची - हरिकेश तुम बाबू से भी मिल लो । हम तो बात कहेंगे ही । हम तो हैं हीं । उर्मिला अपने बाबू की बहुत लाड़ली है । वह दोनों एक - दूसरे की बहुत सुनते हैं । बाबू भी जानते हैं कि तुम बहुत दिलदार आदमी हो ।

हरिकेश मामा - दीदी, हम अभी चले जाते हैं गाँव । कितना दूर है ही, देर रात तक चले आएंगे ।

चाची - हरिकेश, यह मिठाई- फल इतना लाये हो, इसको लेते जाओ बाबू के यहाँ ।

हरिकेश मामा - का दीदी और ले लेंगे रास्ते में । बाबू भी तो हमारी बहन को अपनाये ही हैं परिवार में, उनका भी एहसान है हम पर ।

मामा चले गये तब चाची ने कहा, देखो मुन्ना आया नहीं जबसे रिज़ल्ट आया । कितने दिन हो गये निकले रिज़ल्ट को ।

चाचा - आएगा वह । अभी कितना दिन हुआ ही ।

माँ ने यह सुनकर कहा कि यह बात तो ठीक कहीं भैया ने । मुन्ना तुमको जाना चाहिये । कल चले जाना । मैंने कहा, ठीक है मैं चला जाऊँगा ।

मैं जैसे ही अपने कमरे की तरफ बढ़ा माँ अपना दुखड़ा रोने लगी कि कोई नहीं आया था नाम लिखाने । उसका कहीं भी मैं नाम नहीं लिखा पा रही थी, तब श्यामा देवी भगवती प्रसाद में गयी और नाम लिखाया । भैया बड़- बड़वार हैं उनकी इज्ज़त है पर समय जब ख़राब था तब खड़े हो गये होते ।

मैं अपने कमरे में पहुँचा तो देखा आंटी का पत्तर खुला रखा था । मैंने वहीं से आवाज़ दी कौन यह चिट्ठी खोला । माँ वहीं ये चीख़ी मैंने खोला क्या हुआ, खोल लिया तो ।

मैं चुप हो गया । मेरी माँ को मुझसे ज्यादा कौन जानता है । मैंने बुद्बुदाकर कहा ... माफ़ कर अनुराग माँ उर्मिला शर्मा....

मैं आंटी का पत्तर पढ़ने लगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 112

मैंने आंटी का ख़त पढ़ना शुरू किया । यह अति भावुकता से भरा ख़त था । उसके जीवन का मैं पहला व्यक्ति था जिसको वह जानती थी और इस परीक्षा में सफल हुआ था । वह अभी भी इस बात से उबर नहीं पायी थी कि ऋषभ ने परीक्षा नहीं दी, नहीं तो वह उसका भी नाम पढ़ती । हलाँकि यह आंटी की गलतफ़हमी है कि वह देता तो हो ही जाता । होने की संभावना प्रबल थी पर कोई सुनिश्चितता कहाँ थी । इस परीक्षा में सफलता का दावा कोई नहीं कर सकता । मैंने पता नहीं कितने महाबलियों के धूल- धूसरित होने के किस्से सुने हैं । यह परीक्षा प्रणाली अजीब है । इसमें सवाल सीधे आते नहीं, अंक कैसे मिलते हैं यह पता नहीं और एक कठिन तिरस्तरीय मूल्यांकन होता है । इसमें सिर्फ़ परिश्रम से ही सफलता मिल जाए यह तो होता नहीं । परिश्रम हो, एक सही दिशा में हो, नियमित हो, लगातार हो, धैर्य के साथ हो और जीवन में अनुशासन हो तब संभावना बनती है । इस संभावना को अपने पक्के परिणाम के रूप में प्राप्त करने के लिये भाग्य का साथ होना बहुत ज़रूरी है । सत्तर प्रतिशत परिश्रम और तीस प्रतिशत भाग्य, यह दोनों जब मिलेंगे तब समाचार पत्तर में आपका नाम छपेगा ।

मेरे साथ भाग्य बहुत प्रबल था , मैं जानता हूँ मेरी क्या हैसियत है । एक विजय की करतल धनि में तमाम पराजय के अवशेष विस्मृति के गर्भ में चले जाते हैं पर विजेता जानता है अपने रण में पाये ज़ख्मों के दास्तान और उपजी पीड़ा का दंश । हर पिघल रहे सूरज पर जब मंज़र पर ही नहीं उसके जीवन पर भी अँधेरा छा रहा होता है और एक ढूबती रौशनी में सर-सब्ज जंगल में जब उसको जुगनू भी नहीं दिखते , वह आँखों को मींच- मींचकर आगे बढ़ने की कोशिश में कदम- दर कदम गिरता है और हर टकराहट पर पैर पर ही नहीं पूरे शरीर पर निशान बन जाते हैं । यह ज़ख्म विजय के उन्माद में कहते हैं , “ लोगों को लग रही यह विजय आसान पर बहुत दर्द भरी दास्तान है यह ”

ऋषभ ने इस परीक्षा को दिया ही नहीं । आंटी उसके अकादमिक उपलब्धियों के आधार पर सफलता की सुनिश्चितता की बात करती है । इस इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हर विभागों के टाप करने वालों को देखो , ज्यादातर तो फेल ही हुये हैं , पर आंटी मानती ही नहीं । बस एक रट , “वह देता तो हो जाता , उसका नाम मैं पढ़ती ।”

अगर वह परीक्षा देता और न होता तब आंटी क्या करती ? वह तो यह सदमा ही बर्दाश्त न कर पाती ।

यह भी अच्छा हुआ ऋषभ ने परीक्षा नहीं दी । यह आंटी उसकी सफलताओं की आदी थी और इस परीक्षा से वह जिस तरह भावनात्मक रूप से जुड़ी है , असफलता तो वह बर्दाश्त ही नहीं कर सकती थी । मेरा जीवन असफलताओं के क्रिस्सों से भरा है और ऋषभ का सफलताओं के । वह महान प्रतिभाशाली है और मैं महान लगनशील । उसने सफलताओं से सीखा है मैंने असफलताओं से । कैसा होता यह द्वन्द्व अगर मैं और ऋषभ लड़ते इसी रण क्षेत्र में । एक सफलताओं के रथ पर सवार और एक कदम दर कदम संघर्ष के धूल से सने शरीर के साथ । यह सफलता की कहानी हार सकती थी इस असफलता की संघर्ष गाथा से । असफलता जीवन में प्रयोग को जन्म देती है । हारने वाला यह जानता है कैसे हार कर जीतने की कोशिश की जाती है । यह जो हर वक्त जीतते हैं वह बड़े संग्रामों के लिये नहीं बने होते हैं । एक बड़ा संग्राम तो वहीं जीत सकता है जिसमें असफलता के गर्भ से सफलता का मंत्र सीखा हो ।

एक नया फिल्म भूमि में । मैं ऋषभ को हराकर यहाँ तक आया होता तो और अच्छा होता । मेरी महत्वाकांक्षाएँ सावन के झूलों की तरह पेंगे ले रही थीं । मेरे में परिवर्तन बदलते वक्त की घड़ियों के साथ हो रहे थे । मैं आत्म

विश्वास से लबालब भरता जा रहा था । इन पिछले कुछ दिनों में जितना मुझमें परिवर्तन हुआ उतना पहले कभी नहीं हुआ ।

आंटी ने सुबह जैसे ही पेपर देखा उसको रिझल्ट दिखा । वह टीवी कम देखती है इसलिये न्यूज़ नहीं सुन सकी । उसने जल्दी- जल्दी मेरा नाम ढूँढ़ने की कोशिश की । वह नाम जल्दी ही पा गई । पेपर में रोल नंबर न लिखा था । वह सुनिश्चित करना चाहती थी कि अनुराग शर्मा वही है कोई और तो नहीं । मैंने उसको एक क्रिस्सा बताया था कि किस तरह एक नाम जो कामन सा नाम था उससे समस्या उत्पन्न हो गई थी और भ्रम बन गया था । वह पेपर के स्टाल पर गई और उस दिन का सारा पेपर ले कर आ गई । उसको रोल नंबर भी एक पेपर में मिल गया । उसने अपनी प्रसन्नता पूरे पूसा इंस्टीट्यूट में व्यक्त की । उसने अपने आफिस में मिठाई बाँटी और हर एक को बताया कि उसके बहन का बेटा आईएएस हो गया है ।

आंटी ने लिखा कि सबसे आश्चर्य तब हुआ जब उसी दिन आहूजा साहब अपनी पत्नी के साथ सायं काल को आए । वह इतनी मिठाई और फल लाए थे कि मैंने पूरे पूसा में बाँटा । उन्होंने बताया कि पेपर में मैंने नाम देखा और दोनों नाम मिल गये , अनुराग भैया के और चिंतन सर के । आहूजा साहब ने अपने आफिस में भी खुशी व्यक्त की और ऋषभ- शालिनी को भी बताया । शालिनी को वह चिंतन का ड्रामा बता चुके थे और शालिनी का ख़त भी आया था जिसमें उसने लिखा था कि पापा का हार्ट अटैक हो जाता उस दिन जिस तरह से घर में हँगामा हुआ ।

उस दिन के ड्रामे पर शालिनी दुखी थी और आंटी खुश थी । आंटी आहूजा साहब से खुश नहीं रहती , यह मैंने पहले ही समझ लिया था । चिंतन सर आहूजा साहब के यहाँ पुनः गये थे और एक बार आंटी के यहाँ आए थे , यह भी आंटी ने लिखा ।

मैं पतर पढ़ता जा रहा था इतने में माँ आ गई । उसने कहा कि यह सब क्या हो रहा ? तुम - चिंतन बहुत धूस रहे हो शांति के घर में । यह उनके घर का मामला है तुम लोग क्यों पड़ रहे हो चक्कर में ।

मैं - कौन से चक्कर में ?

माँ- यह चार पेज की चिट्ठी में सारी उनके घर की राजनीति लिखी है । इससे तुम्हारा क्या लेना - देना ?

मैं - क्या कर रहा मैं ?

माँ - तुम जब से सेलेक्ट हुये हो घूम रहे हो । मैं सब देख रही हूँ । यह अगला इमित्हान देना है तो पढ़ो नहीं तो सारी किताब कापी बाँध कर छोटी बहन को दे दो । उसको पढ़ाओ । यह अवारागर्दी बंद करो । उस दिन शर्माइएन से क्या बात कर रहे थे ?

मैं - किस दिन ?

माँ - मुझे सब पता रहता है । उसके चक्कर में मत पड़ना । मैं सबको जानती हूँ ।

मैं समझ गया कि एक माँ का अपने बेटे पर पजेसिवनेस जग रहा । मैंने सोचा , मैं इस बात को बदल दूँ नहीं तो यह अभी घंटों प्रवचन देगी ।

मैं माँ , कल सुबह अमर गुप्ता सर आएँगे वह एसडीएम हैं बाराबंकी में और मेरे साथ ही सेलेक्ट हुये हैं । नाश्ते में कुछ मँगा लेना ।

माँ - इसी रिज़ल्ट में वह भी हुये हैं ?

मैं - हाँ ।

माँ - क्या रैंक है उनकी ?

मैं - कुछ तीन सौ के आस पास है ।

माँ - चिंतन से ऊपर है कि नीचे ?

मैं - दस - बीस अंक ऊपर है ।

वह यही सुनना चाह रही थी । यह मैं जानता था । हर माँ अपने बच्चे की यशगाथा के लिये लालायित रहती है , यह कोई अपवाद कैसे हो सकती है ।

माँ - यह एसडीएम छोड़कर चले जाएँगे ।

मैं - जाएँगे हीं । कल पूछ लेना तुम ।

माँ - यह भगवती बाबू का बेटा उनके साथ ही है ।

मैं - हाँ ।

माँ - कैसा है वह ?

मैं - कल पूछ लेना तुम सब । सर बहुत अच्छे से सब बताते हैं ।

मैं समझ गया कि कल इसका दिन अच्छा बीतेगा । सर हर किसी का मज़ाक़ बना देते हैं और उनको इस काम में महारत हासिल है । यह भगवती बाबू के पूरे परिवार के खिलाफ़ हल्ला बोले रहती है और जबसे मैं हो गया यह हल्ला बोल कुछ हुड़दंग की शक्ल में हो गया है, घर के भीतर । मैं चाह रहा था कि यह जाये तब मैं बाकी की चिट्ठी पढँ ।

मैं आंटी की चिट्ठी फिर पढ़ने लगा

“ अनुराग , मेरे पास शब्द नहीं हैं मैं व्यक्त कर सकूँ खुशी अपनी , मैं सारा दिन वह पेपर बार- बार पढ़ती रही । मैं तुम्हारा नाम देखती रही । मुझे जीवन में एक और सार्थकता का एहसास होने लगा । मैं उस गुज़रे वक्त में वापस चली गई जब तुम यहाँ आये थे । तुम जब आये थे तब एक विद्यार्थी थे पर अब जब मिलोगे तब एक अधिकारी के रूप में मिलोगे । मेरे तसव्वुर के एहसास की परछाई उस आधे पेज के पेपर में थी । जैसे लहरें जब मुखातिब होती हैं किनारों की तरफ तब किनारे खुद- बखुद हवाओं से जान जाते हैं कि लहरें बढ़ रहीं उसकी तरफ , ऐसा ही मेरे साथ हो रहा था पेपर में तेरा नाम देखते हुय । मुझे लग रहा था उन अक्षरों से तू मुझ में समाता जा रहा है । मेरी खामोश आँखों के इशारे ही सब कुछ बयां कर रहे थे । मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े जो गिर गये उस जगह जहाँ कहीं कुछ नाम थे जिसमें तेरा भी नाम था । बहुतों की फ़रियादें थीं तेरे लिये । सारी मुंजमिद फ़रियादों को नामंजूर करना आसान न था परवरदिगार के लिये । एक खाहिशों की पूरी बस्ती थी जो उजड़ सकती थी अगर नाम न होता पेपर में पर शुक्रगुज़ार हूँ उस परमपिता की जिसने इसको आबाद कर दिया ।

शालिनी - ऋषभ आ रहे हैं जून के पहले सप्ताह में । वह यहाँ एक महीने रुकेंगे । तुम ज़रूर आना । आहूजा साहब भी कह कर गये हैं कि अनुराग भैया से हमको मिलाना इस बार । मेरे पूरे पूसा में तुम्हारी चर्चा है । सब कह रहे कि , नहीं बताया जब वह आए थे इंटरव्यू देने । बहुतेरों के बच्चे परीक्षा दे रहे , वह भी चाह रहे मिलना । तुम जल्दी आना और पत्तर का जवाब स्पीड पोस्ट से भेजना , इंतज़ार असह्य होता है ।”

मैं समझ गया माँ को आपत्ति किस बात से है । मैं शाम को पढ़ रहा था कि माँ ने कहा कि पिताजी बुला रहे सुन लो । मैं पिता जी के पास गया । वह बोले,

“मेरे आफिस में मेरे डीएजी ने मुझको बुलाया था । वह बहुत ही नयी उम्र के हैं । उनकी पत्नी भी उनके बैच की ही डीएजी है । मैं थोड़ा घबराया शुरू में पर

लोगों ने बताया कोई ख़ास बात नहीं है । वह पूछ रहे थे किसका बेटा आईएएस्स हुआ है

मैं गया और मुझे बहुत सम्मान से बैठाया । मुझे सर भी कहा । सारा कुछ पूछा । कहा बहुत ही अच्छी रैंक है । यह भी कहा उसको ले आना एक दिन । क्या तुम्हारा भी आफिस का कमरा इतना ही बड़ा होगा ? उनका कमरा बहुत बड़ा है, दो-दो फ्लोन लगे हैं, बाहर उसकी सेक्रेटरी बैठती है । चपरासी घंटी सुनता है । बहुत से लोग नीचे काम करते हैं । मैं तो पहली बार इतना बड़ा कमरा कभी न देखा था । “

मेरी माँ ज्यादा उत्साहित थी इस उपलब्धि से । वह रैंक के ही फेर में रहती थी ।

मा - क्या रैंक थी डीएजी की ।

वह साहब भी न लगायी बोलते समय ।

पिता - मैं कैसे पूछ सकता हूँ ?

माँ - उसकी रैंक मुन्ना से नीचे होगी । कल इनके अमर गुप्ता सर आएँगे जो एसडीएम हैं और उनकी रैंक मुन्ना से काफ़ी नीचे है । मैं उनसे सब फरिया लूँगी ।

पिताजी - मुन्ना यह सब सपने ऐसा लग रहा । मैं कई बार अपनी आँख मलता हूँ यह निश्चित करने के लिये कहीं यह सपना तो नहीं । यह हकीकत ही है न । मैं सारा दिन आफिस में अब कोई काम नहीं करता, सिर्फ़ लोगों से मिलता हूँ । मेरे सेक्षन अफ़सर भी कहते हैं, भाई शर्मा जी को खुश रखो क्या पता इनका लड़का कल यहीं आ जाए ।

मैं - पापा, आप लोग कुछ ज्यादा ही उत्साहित हो गये हो । लोग होते ही हैं ।

माँ - तेरे ऐसे लोग कम होते हैं । सब टापर टाइप के लोग होते हैं ।

माँ ने ऐसी नस पर चोट कर दी थी कि अब चुप रहने के सिवाय कोई और रास्ता न था । बात तो उसने सही ही कही थी ।

मैंने पिता की आँखों की पुतलियों में चमकते तारे देखे जो रात के चमकने वाले तारों से ज्यादा प्रकाशवान थे ।

मैं जब रात में कमरे में पढ़ रहा था तब माँ मेरे कमरे में आई और बोली कल भैया के यहाँ चले जाना । जब डाली पर फल लगते हैं तब वह झुक जाती है । तुम बहुत समझदार हो , तुमसे क्या कहना पर ऐसा पेश आना कि कहीं से दंभ का आभास न हो उनको । अच्छा - बुरा हर परिवार में होता है । जो कुछ भी खुशी-नाराज़गी है वह मेरे और उनके बीच है , तुमको इसमें नहीं पड़ना चाहिये । वह तुम्हारे मामा हैं , इस उपलब्धि पर उनका भी अधिकार है । यह कह देना , आपके आशीर्वाद से यह सब संभव हुआ है ।

माँ ने दाढ़ को बुलाया और कहा कि तुम कल चले जाना सुबह भैया के यहाँ और बता देना कि .मुन्ना आज आएगा मिलने दोपहर बाद ।

मैं - माँ , इसकी क्या ज़रूरत ? मैं चला जाऊँगा । हर बार तो ऐसे ही गया हूँ ।

माँ - तब की बात और थी । अब की बात और है । दाढ़ जायेगा ही । यह धूमता ही रहता है - यहाँ-बहन और भैया के यहाँ । यह पहले जाकर बता देगा तो अच्छा होगा ।

दाढ़ - हाँ बुआ । बात त तू एकदम सही कहत हज़ । चाचा - चाची के स्वागत के मौका देब ज़रूरी बा , नाहीं त कझहिं पहिले से पता रहता त हम कुछ तैयारी करे होइत ।

माँ - तैयारी क बात त नाहीं बा दाढ़ पर मान ल मुन्ना गवा और भैया न रहने तब भैया कझहिं हमै पता होत तब हम घरहि रहित ।

दाढ़ - बुआ मौसी के इहाँ भी बताइ देर्क का कि चलो परानी सब मिलने को ।

माँ - दाढ़ तोहार मसखरी कबहुँ न जाए ।

माँ चली गई । दाढ़ बोला , मुन्ना भैया तोहरे कारण हमहुँ इज़ज़त पावत हई । हरिकेश मामा आवत रहने मिठाई- फल लैके , पर सब ताला में चाची बंद कै देर्क । याद बा ना , बाबा भैया के बियाह में हम तुम संतरा और मिठाई चोरी कर लिये थे ।

मैं - और वह लिम्का की बोतल । जो कैसे खुलेगी पता ही नहीं चल रहा था फिर हमने दाँत से ही ढक्कन उखाड़ दिया था ।

दाढ़ - हाँ , मुन्ना भैया । हम बोतल चोराय लिहा पर कैसे खुले पतै नाहीं , तब तू दाँत से उखाड़ के फेंक दिहे ढक्कन ।

भैया अब त बड़ा आदमी बन गये ह । हमार एक काम कुंडली गुरु से कराय द ।

मैं- कल अमर गुप्ता सर आएंगे , एसडीएम है बाराबंकी उनसे करा देंगे ।

दादू - बस भैया , काम लहि गवा ।

रात चढ़ रही थी । ख्वाहिशों अब शांत थीं । मेरे हर लफ़ज़ नज़म बनने को बेताब रहते थे । मेरी तमाम हिकायतें अब ग़ज़लों में सँवर गई थीं । जो रात का सन्नाटा कभी सताता था वह अब मंगल गान की ध्वनि दे रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 113

सुबह - सुबह ही अमर गुप्ता सर आ गये । उनके साथ धनंजय सिंह और कोई एक लड़का और था । सर ने उसका परिचय अपने क़ज़िन के रूप में कराया । सर ने कहा , यह कह रहा था मुझे अनुराग से इतिहास के बारे में पूछना है । मैंने कहा , भाई बाज़ार अनुराग की ही है । सब मिल लो । हम लोग तो बूढ़े हो गये । मैंने माँ को आवाज़ दी । उसी आवाज़ के साथ दादू और मेरा छोटा भाई भी आ गया । बाहर सर की जीप खड़ी थी “ उप ज़िलाधीश बाराबंकी ” का प्लेट लगाये । यह मुहल्ला बदल रहा था । यहाँ की सड़कों को गाड़ियों की आदत होने लगी थी । दिन- दो दिन में एकाध विवाह के लिये इच्छुक लोग आ जाते थे । चिंतन सर की जीप आ चुकी थी और अब अमर गुप्ता सर की । मेरे मुहल्ले के बच्चे गाड़ी का हार्न बजाने के चक्कर में बहुत रहते हैं । दादू सारा सामान लगा रहा था नाश्ते का । उसने इशारे से कहा , अपनी बात करने के लिये ।

मैं - सर , थोड़ा कल्याण इस बालक का करा दें ।

सर - यार मैं कोई भगवान विष्णु हूँ क्या? पर बताओ क्या करूँ की इसके कल्याण की प्राप्ति हो , हलाँकि मैं बहुत ख़ास- ख़ास काम में भी क्या न करना पड़े इसके चक्कर में रहता हूँ ।

मैं - सर , इसका एसडीएम कराना से कोई काम है । वह करा दें ।

सर - इलाहाबादी कभी सुधरियें नहीं । अभी जुम्मा- जुम्मा चार दिन हुआ रिज़ल्ट निकले काम का बयाना ले लिया । क्या काम है ?

मैं - बताओ दादू क्या काम है?

दादू - सर ऐसन बा कि लेखपाल

सर - यार पूरी कहानी सुनाय कर खोपड़ी गर्म न करो , संक्षेप में बताओ और शांति से जलेबी चेंपने दो ।

अरे बाबू धनंजय सिंह आप भी ठेलो , आहिस्ता- आहिस्ता ।

यार अनुराग एक बात है । इस शहर के हर मुहल्ले के हलवाई हाथ घुमाने की कला में माहिर हैं । करारी जलेबी है । लो बाबू साहब नहीं तो हमसे सब सफ़ा होई जाई

मैं- सर और आ जाएगी , आप निपटायें इसको ।

सर - स्टाक है न पर्याप्त ??

मैं- जी सर ।

सर दादू की तरफ़ देखकर बोले कि अनुराग इ लगता बहुत शातिर है ।

मैं- सर कैसे पता चला ?

सर - हम तो सारा दिन व्यक्तित्व परीक्षण का ही काम करते हैं । जो भी मिला उसका परीक्षण कर दिया ।

बताओ “चालू” , कौन सा काम है ?

मैं- सर “चालू” नहीं “दादू” नाम है ।

सर - यार एकही बात है दादू कहो या चालू ।

दादू - सर लेखपाल से नक़ल ।

सर - मतलब लेखपाल से काम है ?

दादू - जी सर ।

सर - चले जाओ एसडीएम के पास जय नारायना है । मेरा नाम बता देना । नहीं तो अनुराग का नाम बता देना । मुझको फ़ोन किया था बधाई देने को तो पूछ रहा था यह अनुराग शर्मा कौन है ?

हमने कह दिया वह फ़राड़ो का फ़राड़ है ।

यह कहकर सर हँसने लगे ।

दादू - जी सर ।

माँ आ गई । वह भगवती बाबू के बेटे के बारे में जानने का इच्छुक थी ।

मैंने कहा , मेरी माँ है । सभी ने माँ के पैर छुये । माँ कीं प्रसन्नता आसमानों पर ।

माँ ने हाल- चाल पूछा सबका । मैंने परिचय कराया । मैंने ही कहा , सर एक मेरे मुहल्ले के भी एसडीएम है ।

सर - राकेश वर्मा है न ... मैं जानता हूँ ... बेकार आदमी है ।

मैं - सर वह कैसे ?

सर - याद है जो एक क्रिस्सा सुनाये थे दिल्ली में कि एक रिपोर्ट माँगी गई थी वृक्षारोपण कार्यक्रम पर और एक एसडीएम साहब सारा दिन पेड़ गिनवाय रहे थे ।

मैं - हाँ सर ।

वह - यही राकेश वर्मा थे ।

माँ - कैसा अफसर है ?

सर - आंटी जी इ सब ऐसे अफसर हैं कि सुबह से दीवाल में धक्का देने लगते हैं और यह दीवाल तो हटेगी नहीं पर थक जाएँगे । हम समझावा कई बार कि भाई आराम करो । यह जीवन आराम के लिये बना है पर कोई हमारी सुने तब न ।

माँ - यह आईएएस की परीक्षा दिये थे ?

सर - आंटी जी ऐसा विरला ही कोई होगा इस इलाहाबाद के ज़मीन पर जो यह परीक्षा न दिया होगा । और जो पीसीएस है वह तो देगा ही ।

माँ - क्या हुआ उसमें ?

सर - प्रारम्भिक परीक्षा फेल होने का लाइसेंस था उनके पास । हर बार देते थे और इतिहास में 120 में से 115/116 सही कर के आते थे । चिंतन सही करता था 75/80 । उसका हर बार होता था और इनका कभी हुआ ही नहीं । मैंने एक बार कहा कि देख लो बीच दशमलव तो नहीं लगा है ? वह गुस्सा हो गया । चिंतन बोला कि सौ के बाद गिनती एक से शुरू होती है इसलिये इनका 12/15 ही सही होता होगा ।

मैं समझ गया , माँ को मसाला मिल गया । अब पूरा मुहल्ला जान जाएगा कि भगवती बाबू का बेटा हर बार आईएएस के प्रारम्भिक परीक्षा में ही फेल हो जाता था ।

सर के साथ धनंजय सिंह आये थे । सर ने कहा अनुराग कोई फ़र्जीगीरी न करो । इनको आप बताओ कहाँ से पढ़े हो और इस बालक को भी बताओ । हिंदी के दूसरे पेपर के बारे में बताओ । यह बालक भी हिंदी लेगा । अब मदद करो सबकी ।

मैं - ज़रूर करूँगा सर ।

मैंने ईमानदारी से सब बताया पर नोट्स नहीं दिया । मैं उस पर एक फ़ैसला करके देना चाहता था , पर यह कहा कि नोट्स बनाया है । मैं दे दूँगा ।

सर चले गये । दादू बहुत प्रसन्न था । वह मुझसे पूछ रहा था कि एसडीएम से कैसे मिले । कैसे उनके पास जायें । पता मुझे भी कुछ न था , मैंने यही कहा कि कोई न कोई उनका सहायक होगा उससे सर का नाम बता देना वह ले जायेगा ।

दादू - आपके नाम बताई देई

मुझे लगने लगा कि मेरी भी क्रीमत हो रही है । मैंने कहा , बता देना ।

इस छोटे से वाक्य , “ बता देना ” में गर्व का पुट साफ़ देखा जा सकता था ।

दादू चला गया मामा के यहाँ , जैसे ही अमर गुप्ता सर गये , मैंने सोचा कुछ देर पढ़ लेता हूँ । वैसे बहुत पढ़ने में मन अब लगता न था । मेरे पर निकलने शुरू हो गये थे । इसका एक कारण लोगों का मेरे प्रति बदलता रवैया भी था । एक सकारात्मकता हर ओर व्याप्त हो चुकी थी । मेरे घर में भी लोग मेरा ध्यान ज्यादा देने लगे थे । माँ भी कहती थी , अब कुछ दिन ही यह यहाँ रहेगा फिर चला जाएगा फिर तो यदा-कदा ही आएगा । मेरे पास शाम को हर दिन कोई न कोई आता ही था , “ कैसे पढ़ाई करें ” , यह एक सवाल लेकर । मैं उन सब लोगों से बहुत ही प्रेम से मिलता था क्योंकि मुझे अपना समय अभी भी याद है जब मैं भटका करता था ।

मैं दोपहर के खाने के बाद चला मामा के यहाँ । अपनी साइकिल को हौले-हौले चलाते हुये । मैं मामा के यहाँ पहुँचा । उनके घर की घंटी बजाई । उनका घर मेरे घर से बहुत ज्यादा बेहतर था । बड़े - बड़े कमरे , एक लान , पीछे गैरेज , ऊपर कमरे । पूरा दो तल्ला मकान । एक खुली बड़ी सड़क । कमरों में कार्पेट और बाहर एक बेहतर घंटी , लोगों के बैठने की कुर्सियाँ ।

मेरे पिता कहते थे कि यह सब उस कमाई से नहीं हो सकता जिस नौकरी में वह हैं । उनकी नौकरी के बारे में किसी को ज्यादा पता नहीं हो पाता था । वह अपनी शेखी बहुत बघारते थे । वह अपने को एक बड़े अफ्रसर के रूप में पेश करते थे पर मेरे हिसाब से वह एक सुपरवाइज़र टाइप की नौकरी में थे राजस्व विभाग मे । वह अपने को अफ्रसर कहते थे पर जब से नौकरी कर रहे कमोबेश एक ही तरह के ओहदे पर हैं । वह बहुत लड़ाकू प्रकृति के हैं इसलिये वह हर जगह लड़ने को उद्यत रहते हैं । वह जिस भी परिवार की शादी में जाते वहाँ लड़ाई हो ही जाती । इस लड़ाई का कारण यह होता था कि उनका उचित सम्मान न हुआ । एक बार मेरे मौसा ने कहा कि इनका उचित सम्मान क्या है , यह किसी को पता ही नहीं , यह देश- काल - परिस्थिति से यह खुद ही तय कर देते हैं । मेरे मौसा भी उनसे डरते थे । वह सिफ्र मेरी माँ के मुँह नहीं लगते थे बाकि सबको धकियाये रहते थे । मेरे नाना के पास कुछ सोने- चाँदी के सिक्के हैं , वह चाहते थे उस सिक्के में उनको हिस्सा मिल जाए पर मेरे नाना देने को तैयार न थे । मेरी माँ कहती थी कि हिस्सा किस बात का ? यह उनका अपना है कोई अचल संपत्ति तो है नहीं कि उसमें विरासत चलेगी । यह उनका अपना है , जिसको चाहें दे । मेरे मामा को शक था कि उर्मिला सिक्का रखे हैं । यह शक उनका सही था । मेरे नाना इस डर से कि कोई गाँव में चोरी- डाका न पड़ जाए माँ के पास रखे थे ।

यह राज मेरे नाना और माँ के अलावा कोई नहीं जानता था । मैं जान इसलिये गया कि मुझसे सिक्के गिनवाये गये ताकि इस बात की निश्चितता रहे कि सिक्के कितने हैं । जब मेरा घर का काम रुक गया था तब मैंने कहा कि कुछ सिक्के नाना से ले लो , उसको गिरवी रखकर घर का प्लास्टर करा लो । बाद में छुड़ा कर वापस कर देना ।

माँ ने कहा , यह बात किसी को पता नहीं चलनी चाहिये कि सिक्के हमारे यहाँ हैं । यह उनकी अमानत है । मैं इसको छू भी नहीं सकती ।

मेरे मामा सबसे कहते थे कि सिक्का उर्मिला के पास है पर मेरी माँ और नाना दोनों इससे इंकार कर देते थे । यह भी कहते थे कि उर्मिला का घर बाबू ने बनवाया है , हलाँकि इसमें कोई हकीकत न थी । मेरी माँ का नाना का पक्ष लेना सारी समस्या की जड़ थी पर बाप - बेटी के बीच पड़ने की हिम्मत किसी की न थी । मेरे नाना भी मेरी माँ के व्यवहार- चरित्र और साफ़गोई पर बहुत गर्व करते थे , अब तो एक नया मुद्दा आ गया सोने पर सुहागा ।

मेरी माँ और मेरे मामा के संबंध थोड़ा कम मधुर होने का एक कारण यह था और दूसरा मेरी माँ का खर स्वभाव । वह बर्दाश्त बिल्कुल ही नहीं करती थी ।

मैं मामा के यहाँ घंटी दबाया । एक साथ कई लोग सामने दिख गये । मेरे मामा की बड़ी बेटी भी उसमें थी । वह भी अपने पति के साथ आयी थी ।

मुझे सामने हरिकेश मामा और उनकी पत्नी दिखीं । मुझे बाबा भैया की शादी में इन्होंने अपनी कार से उतार दिया था । मुझे बस में उलटी आती है । मोशन सिक्नेस की समस्या है मुझको । मेरे पिताजी ने अनुरोध किया कि इसको कार से ले चलो, थोड़ा आराम हो जाएगा । मैं जाकर कार में बैठ गया । पर पीछे की सीट पर तीन सवारी थोड़ा आराम कम देती है और आगे की सीट पर मेरे मामा का छोटा बेटा बैठा था । मुझे बहाना बनाकर उतार दिया कि कार बिगड़ गई है, ठीक कराना होगा । जिस बस से मैं चल रहा था उसके बगल से ही वह कार थोड़ी देर में पार कर गई । पर आज तो वक्त बदल चुका था । परेम सबका चोकर आया था । हरिकेश मामा वाली मामी का परेम तो इस तरह चोकरा था जैसे जुगाली करती गाय- भैंस का फेचकुर बरबस बाहर निकल आता है । वैसे ही इनका परेम बरबस उड़ेला पड़ रहा था ।

मेरा स्वागत जितना हो सकता था किया गया । मेरी मामी ने टीका लगाया, यह कहते हुये कि मेरा मानदान तो है ही अब यह पूरे परिवार की शोभा है । मैं अपने घर पर मुन्ना का नेम प्लेट लगा लूँगी । मेरे मामा ने कहा, शाम को मुन्ना मैं घर आऊँगा, तुमको कहीं जाना तो नहीं है? मैंने कहा, “मुझे कहाँ जाना है ।”

शाम को वह हरिकेश मामा के साथ घर आये । विवाह का एक औपचारिक प्रस्ताव दिया । शहर में प्लाट, मनचाही कार, शादी का खर्चा और उसके अलावा जो भी और आदेश दो । यह प्रस्ताव रामराज मिश्र के प्रस्ताव को देखकर दिया गया । दादू ने रामराज मिश्र का प्रस्ताव बता दिया था । वह आकर अपनी बोली पहले लगा गये थे । टेंडर दादू ने लीक कर दिया था । एल1/एल2 टेंडर की गोपनीयता को वह बरकरार न रख सका । वह दोनों तरफ बातें बताता था । वह दोनों पाले में अपने को संतुलित रखने की कोशिश करता था ।

यह सबसे आश्चर्यजनक तथ्य था कि दोनों ही प्रस्तावों में लड़की- लड़के के गुण पर कोई बात नहीं हुई । क्या एक लड़की विवाह में सिर्फ़ इसलिये खुश या संतुष्ट हो सकती है कि उसका होने वाला पति एक ऊँचे पद पर है । भौतिक सुख से इतर क्या जीवन में कुछ और नहीं होता? क्या एक लड़के या लड़की की अपनी कुछ इच्छाएँ नहीं हो सकती? इस झूठी प्रतिष्ठा में क्या लड़की को शारीरिक- मानसिक- बौद्धिक सुख प्राप्त हो जाएगा?

इन सब सवालों पर कोई विचार नहीं होता । अगर चार लड़के चयनित हुये हैं तो यह प्रस्ताव एक ही तरह का चारों के यहाँ जाएगा ।

हरिकेश मामा ने अपनी लड़की को अंगरेजी स्कूल में पढ़ाया, बोर्डिंग में भेजा । वह लड़की अभावों में पले, पाश्चात्य संस्कारों से विहीन, चेहरे पर संघर्ष की झुर्रियों से लबरेज देशज व्यक्ति के साथ क्या सामंजस्य बैठा पाएगी, इस पर कोई विचार नहीं हो रहा । उस लड़की से पूछा ही नहीं जा रहा कि तेरे ख्वाबों की सीरत क्या है । यह एक बाज़ार है जिसमें सिर्फ़ एक चीज़ बिकती है पेपर में छपा नाम । यह पेपर में छपा नाम सब कुछ पीछे छोड़ देता है । यह लड़का एक लाटरी का टिकट है, इसको वक्त पर भुनाना ज़रूरी है । मानवीय मूल्य एवम् संवेदनाओं का कहीं कोई स्थान नहीं है । क्या अनुराग शर्मा का कहीं किसी से परेम नहीं हो सकता? क्या वह संवेदना विहीन है? क्या उसके ख्वाब में कोई नहीं हो सकता?

क्या वह शायरी दूसरों के लिये लिखता है? कोई नज़म बंजर नहीं होती । उसने हिम्मत न की हो जमाने को बताने की पर ग़ज़लों में किसी का ज़िक्र तो हो ही सकता है । हर एक की आँखें तो आज़ाद होती ही हैं बस नींद मेहरबानी कर दे ।

पर यह एक अजीब बाज़ार है, यहाँ का नियम एकदम अलग है । यहाँ सब बिकने को तैयार हैं, ख़रीददार का कोई दोष नहीं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 114

हराषिकेश मामा और मेरे मामा मेरे घर से मिलकर जाने लगे । हरिकेश मामा ने माँ से मिलने की इच्छा ज़ाहिर की । मेरे ख़्याल से मेरी माँ की उम्र और उनकी उम्र आसपास की ही होगी । मेरे मामा मेरी माँ से 7/8 साल बड़े थे और हरिकेश मामा मेरी मामी से 3/4 साल छोटे । इस हिसाब से लगता है कि उम्र आसपास ही होगी पर मेल- मिलाप मेरे परिवार और हरिकेश मामा के परिवारों में कोई ख़ास तो कभी रहा नहीं ।

वह पहली बार मेरे घर आये थे । समृद्धता से ही जीवन- स्तर आता है और जीवन स्तर से ही बहुधा आपस में लोगों में सम्बंधों की स्थापना होती है । समृद्धता के स्तर पर ही एक बहुत बड़ा फ़र्क़ था इन दोनों परिवारों के बीच जो सिर्फ़ मानवीयता से पाटा जा सकता है पर नव धनाढ़य व्यक्ति बहुधा अपनी

ज़मीन छोड़ देता है और ज़मीन छोड़ने का सीधा असर मानवीयता के धरातल से अलगाव का हो जाना ।

यही हरिकेश मामा के साथ हुआ । उनके पिताजी का स्तर मेरे नाना से ऊँचा न था । मेरे नाना बहुत ही मानिंद आदमी थे । वह सुपात्र ब्राह्मण, सदाचारी, कई बार गाँव के सरपंच रहे और खेती - बाग- बगीचे सब परचुर मात्रा में थे । हरिकेश के पिताजी की हैसियत इतनी बड़ी न थी, जहाँ तक सामाजिक प्रतिष्ठा का संबंध है । पर हरिकेश मामा सिविल इंजीनियरिंग करके पीडब्ल्यूडी में सहायक इंजीनियर हो गये । उसके बाद गाँव में खेत खरीदने का सिलसिला आरंभ हुआ और आधा गाँव खरीद मारे । उनके पिताजी गाँव में ब्याज पर रुपया चलाने लगे और इस प्रक्रिया में कई खेत आने- पौने दाम पर प्राप्त हो गये । गाँवों में ज़मीन से सामाजिक प्रतिष्ठा का निर्धारण बहुत होता था, इसलिये वह प्रतिष्ठा बढ़ने लग गई ।

मेरे साथ विवाह की आकांक्षा में सबसे बड़ी बात उस प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि करना था । इस शहर इलाहाबाद में आईएएस से विवाह एक बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त किये हुये था । यह विवाह उनकी प्रतिष्ठा को बहुत ऊपर ले जाता । मैं गरीब घर से ज़रूर आता था पर मेरे नाना - बाबा दोनों का नाम था । मेरे बाबा गणित के एक बहुत ही अच्छे ज्ञाता माने जाते थे । इलाहाबाद में अध्यापकों की वैसे ही बहुत इज्ज़त है और उसमें गणित का अध्यापक, “देवों में देव महादेव” । वह बहुत आगे न जा पाये और मिडिल स्कूल के ही अध्यापक होकर रह गये, पर डेबरा में उनका नाम बहुत था । मेरे नाना के पास एक अलग गुण था, अपनी बात कहने का और लोगों के बीच रहने का । यह दोनों ही उत्तम कुल का होने का दावा करते थे, जिसको सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त थी ।

ऐसे परिप्रेक्ष्य में मैं एक ऐसे रथ पर सवार हो चुका था जिसके घोड़े स्वयम् सूर्य देव के रथ से निकलकर मेरे रथ में जुत गये थे । यह मुझसे विवाह का मुद्दा एक प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुका था, हरिकेश मामा के परिवार के लिये । वह अनजान न थे अपने प्रतिद्वंद्वियों से, इसलिये चालें तेज चल रहे थे ।

वह मेरी माँ के पास आए । मेरी माँ को गर्व की अनुभूति हो रही थी, जिसने कभी सीधे मुँह बात न किया हो वह आज दंडवत है उसके बेटे के प्रताप के कारण । वह आत्ममुग्धता में थी । हरिकेश मामा आये और दोनों के बीच संवाद आरंभ हुआ ।

हरिकेश मामा - बहिन आप हमरे मानदान के मानदान हज़ा / यह मुन्ना पूरे परिवार की प्रगति का द्योतक है / यह आपके सत्कर्मों का फल है जो यह उपलब्धि मिली नहीं तो यह कहाँ आसान है ।

माँ - यह सब आपको लोगों का आशीर्वाद है । बड़े- बूढ़ों का आशीर्वचन है जो प्रतिफलित हुआ ।

हरिकेश मामा - बहिन, अब हमका आशीर्वाद द । हमरे बेटी के अपनाव । ऊ बहुत सुशील बा । पूरे परिवार में एकता बनाय के रखे । हमका बाकी जौन आदेश देबू उस सब सर माथे पर, हम हर बात के अक्षरशःः अमल करिबै ।

माँ - भैया, इ बताव ऐसन बियाह शोभा देत ब ? ऊ घरे के लड़की एक रिश्ता में भाई- बहिन के तरह हैं दुझनौ । बताव इ ठीक रही ?

हरिकेश मामा - बहिन ऐसन रिश्ता ही ठीक होत है । जाना- समझा घर परिवार बा । एक दूसरे के अड़े- गड़े में मौजूद रहबै । क्षेत्र में नाम प्रतिष्ठा बढ़े । हमार बहिन के और तोहरे भैया के बियाहव तो ऐसे बा । हम सब नज़दीक रिश्तेदारी में रहेन । हम बाबू से मिला रहे परसों इसी बियाह के बरे । बाबू कहने बहुत बढ़िया बा, अगर इ रिश्ता होई जाई । बाबू कल अझि बाबू । हमार गाड़ीं जाए ओनकै लइ आवय के बरे । आप पूछ लिहू बहिन । तोहरे भाई के सारे के बिटिया बा । इ हर तरीके से उचित बा ।

हरिकेश मामा ने चाल सही चली थी । नाना की सहमति इस मुद्दे पर ले ली थी । नाना का नाम आने पर माँ इस मुद्दे पर शांत हो गई ।

माँ - भैया अबहिंयै रिजल्ट आई बा । इ मुन्ना कहत बा कि हम विदेश सेवा और पुलिस न लेबै । अब आईएस- आईआरएस का मामला बा । ओका इ मामला फ़रियाय लई द, फिर सोची । अबहिं बहुत समय बा, बियाहे में ।

हरिकेश मामा - बहिन आप के जब मन करै तब बियाह करअ । बस तय कर ल । हम धूमधाम से बरीक्षा कई देई । बिटिया तोहार होई जाए ओकरे बाद साल- दुई साल बाद जब कहबू तब बियाह करबै ।

माँ - भैया, बाबू का कहेन जब तू कह कि मुन्ना से अपने बिटाया के बियाह के बरे ?

हरिकेश मामा - बहिन काल बाबू अझहिं । हमार गाड़ी सबेरे जाए । हमका पता बा कि बगैर बाबू के सलाह के तू फ़ैसला न लेबू । इही बरे हम गये बाबू के सामने आपन अज्ञी डाल दिया । अब कल बाबू अझहिं आप ओनसे समझ ल । ओनसे बड़ा समझदार हम सबके परिवार में ही नाहीं डेबरा में कौनों नाहीं बा । जौन बाबू कहिं देझहें हम उहीं रास्ते पर चलिबै ।

संवाद करके हरिकेश मामा चले गये । अगले दिन दादू आया । उसने हाल सुनाया मेरे मामा के घर का । वह एक अच्छा कथावाचक है । वह मेरी माँ से नजदीकी बहुत चाह रहा था । वह खबरें तेज दे रहा था और मेरी माँ को खबरों में बहुत उत्सुकता रहती थी ।

दादू ने बताया कि रात में चाचा- चाची - मोहिता दीदी - जीजा - बाबा भैया बहुत देर तक मंत्रणा केहेन इहाँ से जाये के बाद ।

हम रामराज वाला प्रस्ताव बताय देहे रहे । इही बरे हरिकेश मामा उहै प्रस्ताव दोहराय देहेन ।

माँ - तू काहे बताय देह ?

दादू - बुआ चाचा पूछेन कि तू रह जब रामराज आइ रहेन ? हम का कहित ? हम त रहबै भये । फिर पूछेन कि रामराज का प्रस्ताव का रहा । हम झूठ नाहीं बोल पावा ।

माँ - आगे से न बताय उनका इहाँ के कौनों बात ।

दादू - हाँ बुआ । आगे से हम सन्न मारि जाब । पर बुआ इ बताव केतना मन बा एनके इहाँ बियाह के ?

माँ - दादू लड़की कैसन बा ? मुन्ना के जोड़ के बा ? इ मुन्ना एतना पढ़ा - लिखा बा । ऐसे तीन- चार साल सीनियर लोग पढ़े बरे ऐके पास आवत हीं । एक दिन जब हम बाबू से मिलके आई रहे तब इ पूरी रात चिंतन के पढ़ाएस फिर कुछ दिन बाद जगदंबा के पढ़ाएस । शांति इतनी पढ़ी - लिखी बा । ऊ लिखे रही कि मुन्ना ऐसन ज्ञानी कम होत हिं इतनी उम्र में । उ लिखे रही, ” मुन्ना बोलता है तो सम्मोहित कर लेता है । “ अब ऐसन लड़का के लड़की जोड़ के मिलै चाही । हम ओकर मूड न काटब पैसा - कौड़ी के चक्कर में । गुड़िया के बियाह मुन्ना अब करै के सक्षम होई गवा बा और ई कई दे । मुन्ना ऐसन भाई जेकर होय ओकरे बहिन के बरे लड़कन के कौन कमी बा । हमार ज़िंदगी कटि गई बा । बिटिया के बियाह के बरे पैसा जोड़े हई थोर - बहुत । हमार मुन्ना बा बहुत ज़िम्मेदार । ओकरे पास इतने बड़े- बड़े आदमी आवत हयें

। गुड़िया का बियाह के कौनो ख़ास चिंता अब बा नाहीं । हम पैसा लै के करब का ?

दादू - इ बात त बा बुआ । हम गये रहे भोरहें तहसील में । लेखपाल नक्ल नाहीं देत रहा हज़ारी के । हम गये पेशकार के पास कहा कि एसडीएम साहेब से मिलै के बा । पेशकार पूछेस कौन हो तुम । बतावा सब । तब उ कहेस , एक चिट पर लिख दो । साहब बँगले पर हैं । इंतज़ार करो । हम लिख दिया अमर गुप्ता सर के नाम और मुन्ना के नाम । एसडीएम बँगला पर बुलाएस । और कहेस अनुराग तुम्हारी बुआ का लड़का है । हम कहाँ हाँ । तब पूछेस तुम्हारे पिता और उसकी माँ सगे भाई- बहन हैं । हम कहा , “ हाँ साहेब ” । ऊँ पूछेस कौन के गाँव के हैं अनुराग । हम सब बतावा । हमका चाय पियायेन और लेखपाल के बोलनवाएन तुरंतै । लेखपाल घबड़ाय गवा । ऊ तुरंतय नक्ल दहेस और गाँव में बाबू से मिलय आय रहा । बाबू अझहिं तब पूछू बुआ तू ।

माँ - भैया- भौजी का बतियात रहेन ?

दादू बताने लगा संवाद ।

चाची - उर्मिला क भाग खुलि गवा । चाहे जेतना रूपिया लै लेय ।

चाचा - वह लालची नहीं है ।

चाची - रूपिया केहू के काटत बा का ?

चाचा - वह अलग बात है पर वह सिर्फ़ पैसे पर बियाह नहीं करेगी ।

चाची - तब काहे पर करहीं ?

चाचा - परिवार , लड़की, सामाजिक प्रतिष्ठा सब देखेगी । लड़के के बाबा भी सम्मानित आदमी हैं । वह अच्छे कुल के बाभन हैं । बाबू ने यही देखकर मूलहा बाभन है बियाह किया था , हलाँकि उर्मिला को शिकायत थी कि न्याय नहीं हुआ साथ उसके ।

चाची - सब भगवान दै तो देहेन एक साथ । अब और का चाही । इ हरिकेश के इहाँ बियाह जरूरी बा । हरिकेश के औरत हमार गोड़ धरि लेहस , कहै लाग , दीदी कौनो तरह कराव बियाह । इ मुन्ना भैया हमरे आँख से जातै नीहिं बा । इतना संस्कारी, कितना अच्छा बोलत है । मन करत ह बस सुनतै रह ।

चाचा - हमरे हाथ में बा का । हरिकेश से हम एक साल पहले कहे रहे कि मुन्ना पर सोच लो । इसका हो जाएगा , यह लड़का लागी है । तब वही हमसे

कहें कि जीजा जी हमको सेलेक्शन वाला लड़का चाहिये वह भी आईएएस /
यह हिंदी मीडियम का लड़का है / इसको अंगरेजी नहीं आती / हिंदी वाले
होते कम हैं / मेरी लड़की हिंदी बोलती ही नहीं, साथ कैसे निभेगा / तब
अगर तैयार होते तब हो जाता / पर तब तो अपने शान में थे ।

चाची - ई बात कहीं बाहर नहीं जाय चाही / अगर उर्मिला को इसकी भनक
लग गई तब तो बियाह न होई पाये / उर्मिला बहुत शेखी में हमेसय रहत रही
अब तक भगवान्य साथ है ओकरे ।

चाचा - मोहिता, तुम्हारी अनुराग बहुत इज्जत करता है / तुमसे पूछने भी
आया था कि कौन सा विषय ठीक रहेगा आईएएस के लिये / तुम बात करके
देखो / कुछ उसका भी मन पता चले / आखिर लड़के का भी तो कुछ रुख
पता हो ।

मोहिता दीदी - जी पिताजी / मैं कल जाऊँगी मुन्ना से मिलने ।

एक बाज़ार पूरी तरह सज गया था / इसमें हर दिन एक नया तत्व प्रवेश कर
रहा था / भौतिकतावाद पूरे उफान पर था / एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार के
वीरान शहर में काया के बाहर खाहिशें झील के किनारे पानी को पैरों से
उछल कर कह रही, ऐ ख़बाब देखने वाली आँखों आसमानों की ओर उछलते
पानी से तुम भी नहा लो ।

अभी शतरंज पर मामा की चाल बाक़ी है, कहानी में बहुत जान बाक़ी है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 115

अगले दिन सुबह हरिकेश मामा की कार मेरे ननिहाल गई / वह मेरे नाना को
लेकर आ गई / हरिकेश मामा की पहली प्रतिष्ठा तब ही बन गई थी जब वह
मदन मोहन मालवीय इंटर कालेज से इंटर पास करते ही रुड़की
इंजीनियरिंग कालेज की प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त कर गये थे / यह
एक बड़ी सफलता थी उस समय की । यह बड़ी सफलता पूरे करछना
तहसील की थी / वह दूसरे व्यक्ति थे जो रुड़की इंजीनियरिंग कालेज इस
तहसील से जा पाए थे / हरिकेश मामा की अकादमिक उपलब्धियाँ कक्षा दस
और बारह की तो थीं पर यह उनकी एक काफ़ी बड़ी उपलब्धि थी । । वह
सिविल इंजीनियरिंग कर रहे थे तभी उनका विवाह करछना तहसील के एक
ब्लाक प्रमुख की बेटी से हो गया । वह एक सम्माननीय परिवार था और

उनके ससुर को क्षेत्र में लोग प्रमुख साहेब कहा करते थे । वह पुराने खानदानी रईस थे । इंजीनियरिंग पास करते ही वह पीडब्ल्यूडी में सहायक इंजीनियर हो गये और आजकल कार्यपालक इंजीनियर पर पदमान हैं । इस सहायक इंजीनियर से कार्यपालक इंजीनियर की यात्रा एक भौतिकवादी दृष्टिकोण से एक उल्लेखनीय यात्रा थी । इनके गाँव में जो भी खेत बिका ज्यादातर इन्होंने ख़रीदा । शहर के अशोकनगर के पाश एरिया में एक बहुत ही आलीशान कोठी बनाई , लखनऊ में प्लाट लिया । नाते- रिश्ते में लोग कहते हैं इलाहाबाद शहर में भी कई प्लाट इनके पास हैं, हलाँकि यह इस पर कुछ नहीं बोलते । यह अपने बारे में कम बोलते हैं लोग ज्यादा बोलते हैं । यह सब उस कमाई से तो हो नहीं सकता जो सरकार पहली तारीख को देती है ।

यह हर साल के दोनों नवरात्रों पर अखंड चंडी का यज्ञ कराते थे । मेरे मामा उस यज्ञ का गौरव - गान महीनों करते रहते थे । हम लोगों को तो कभी किसी कार्यक्रम में बुलाया गया नहीं, इसलिये उनके महलनुमा घर के किस्से ही सुने थे । मेरे नाना ने वह घर देखा था । मेरे नाना को प्रायः सारे कार्यक्रमों में बुलाया जाता था ।

आज मेरे नाना रिश्ते- नातों के सहज नायक की एक नई चमचमाती मार्क 4 एम्बेसेडर कार में बैठकर गाँव से आये ।

वह इस बात से ही काफ़ी प्रभावित थे कि हरिकेश ने मेरे नाती से अपनी बेटी के रिश्ते के लिये गाँव तक की यात्रा की और पैर छूकर कहा कि वह समय फिर आ गया है जब मेरे परिवार की एक और लड़की को आपका आशीर्वाद प्राप्त हो । बहुत साल पहले जो अरदास लिये मेरे पिता मेरी बहन के लिये आये थे आज वहीं अरदास लिये मैं अपनी बेटी के लिये आया हूँ । मेरे परिवार को आपके दयालुता की पुनः आकांक्षा है । मेरे नाना एक भौतिकतावादी जीवन के आग्रही रहे हैं । हरिकेश मामा के पास एक भौतिकवादी जीवन के नायक बनने की सारी अर्हताएँ मौजूद थीं ।

वह हरिकेश मामा का गौरव गान किये और कहा कि कोई ख़राबी इस रिश्ते में है नहीं । यह एक जाना समझा परिवार है । प्रमुख साहेब की नातिन है । एक संपन्न व्यक्ति की बेटी है । अगर और सब मसरब का हो तो इस पर विचार किया जा सकता है ।

जिस परिवेश में मैं पला- बढ़ा था उसमें प्रायः कोई ख़ास दखलांदाज़ी विवाह में लड़के की होती नहीं । जब सारा मामला तय हो जाता है तब एक बार

लड़का- लड़की आपस में एक दूसरे को देख लेते हैं , वह भी एक खानापूर्ति की तरह से है । इस मेल - मिलाप का विवाह के फ्रैंसले से कोई खास सरोकार नहीं होता है , वह तो निश्चित हो चुका होता है । पर मेरी माँ मुझको जानती थी और उसको यह पता था कि मैं इस खानापूर्ति के मेल- मिलाप को स्वीकार नहीं करूँगा , इसलिये उसने मेरे नाना से कहा , “ बाबू मुन्ना के राय लेब ज़रूरी बा ” ।

नाना - बिटिया इतनी बड़ी सम्पदा आ रही । प्रतिष्ठित परिवार है । लड़की हम देखें हई । मुन्ना भी देख लें । एहमें मुन्ना को कौन सी आपत्ति होए । हमरे परिवार में जैसन बहू- बिटिया हई, कमोबेश वैसे बा ऊ । हरिकेश बहुत लाड़ से पाले हयें , सबसे बढ़िया शिक्षक देहें हए ।

माँ - बाबू , फिर भी मुन्ना से बात करब ज़रूरी बा ।

नाना - बिटिया , बात कै ल , पर कौनो ऐसन मुद्दा नाहीं बा कि आपत्ति होई । हम इहऊ नाहीं कहत हई कि इहाँ बियाह तू कई द । बस इहई हमार सलाह बा कि अगर लोकल रिश्ता बने तब बेहतर होत थ । दूर- दराज़ के रिश्तेदारी में ऊ बात नाहीं होत । इ लोकल रिश्ता बा और हर तरह से ठीक बा । एह पर विचार किया जाय सकत बा । बाकी शर्मा जी समझदार हएन । अब हम और का राय

दई सकित ह । हम इहै हरिकेश से कहा , जौन तोहसे कहत हई । अब मुन्ना सबसे बड़ी परीक्षा पास केहे बा । रिश्तन के त भरमार लगि जाए ।

माँ - हाँ बाबू । हर रोज़ गाड़ी आवत ह । सब बड़- बड़वारै आवत हिं । कबहुँ- कबहुँ डरौ लागत ह कि कतौ ऐसन घरे में रिश्ता न होई जाय कि बाद में पटबै न करै । इ मुन्नवौ आसान नाहीं बा । इ बहुतै ज़िद्दी बा , हम लड़कपन से ऐका देखत हई ।

नाना - वक्त के साथ सब समझदारी आई जाए , तू चिंता न कर बिटिया ।

मैं ऊपर के अपने कमरे में पढ़ रहा था । माँ ने आवाज़ देकर कहा कि बाबू आइ हयें । तोहका बोलावत हयें ।

मैं नीचे आया । जिस दिन से संघ लोक सेवा आयोग का परिणाम आया है मेरे पूरे परिवेश में परसन्नता व्याप्त थी , मेरे नाना अपवाद कैसे हो सकते थे । मेरे नाना ने मेरे बाबा का नाम लेकर कहा कि आज वह जीवित होते तो कितने परसन्न होते । उन्होंने पूरे करछना- बारा तहसील में एक गणित के अध्यापक

के रूप में बहुत नाम कमाया था । इस हरिकेश को भी उन्होंने पढ़ाया था । जब मुन्ना छोटा था तब गर्मी की छुटियों में इसको गाँव में वह पूरे पिछले-अगले साल का कोर्स करा देते थे । दादू को भी हम भेज देते थे गर्मियों में । उनका ही प्रताप था कि दादू कुछ पढ़ लिया नहीं तो यह पंचायत में ही रह जाता । मेरे नाना ने मेरे बाबा को याद करते हुये कहा कि गरीबी ज़रूर थी पर सरस्वती का वरदान था उनके पूरे परिवार पर । शर्मा जी भी पढ़ने में बहुत अच्छे थे पर भाग्य में जितना था उतना ही मिला । यह मेरी माँ की सबसे दुखती रग थी । वह जैसे ही अपने पुराने वक्त में जाती थी उसकी आँखें गीली हो जाती थीं । मैं उसकी आँखों में डोलते शबनम की बूँदों में पूरे इतिहास को पढ़ जाता था । पर अब भवितव्य पर किसी का बस तो चलता नहीं ।

मुझे भी अपने बाबा की स्मृति है । वह बहुत ही अनुशासित अध्यापक थे । वह सुबह ही मुझे उठा देते थे, हलाँकि मुझे इससे ऐतराज़ बहुत था, पर गणित का अध्यापक ज़िद्दी होता है, वह भी थे । मैंने अपने जीवन के परवर्ती काल में अनुभव किया कि गणित का अध्यापक अन्य अध्यापकों के तुलना में सरल - सहज तो होता है पर ज़िद्दी बहुत होता है । मैंने अपने बाबा के साथ यह अवलोकित करना आरंभ किया और अपने बीएससी तक के समय में कमोबेश यही पाया । यह सच भी है अगर ज़िद्दी नहीं होगा तब कैसे इन अंकों-सिद्धान्तों से लड़ेगा । आर्यभट्ट, वाराहमिहर अगर ज़िद्दी न होते तो कैसे खोज करते । सिफ्ऱ एक ज़िद्दी व्यक्ति ही खोज कर सकता है । मैंने साहित्य के अध्यापक को भावुक पाया है पर वह विद्वता का दावा बहुत करते हैं । मैंने अपने जीवन में एक भी गणित का अध्यापक न देखा जो विद्वता का दावा करता हो, वह विद्वान चाहे जितना हो । वह साहित्य के विद्वानों की तरह खेमेबाज़ी से दूर ही नहीं रहता वह उसमें प्रायः रुचि भी नहीं रखता । वह नीलकंठेश्वर होकर भी नहीं कहता मेरा कंठ नीला है इसीलिये मैं कहा करता था यह सब “देवों में देव महादेव हैं ।”

ऐसा पहला महादेव मैंने अपने बाबा के रूप में पाया था फिर तो महादेव ही महादेव मिले जीवन में । उनका दिमाग़ ईश्वर ने अलग बनाया था । मैंने कभी गणित का कोई सवाल हल करते समय उनको कापी पेपर का इस्तेमाल करते देखा ही नहीं । वह मुँहजबानी करते थे । समय, गति, दूरी का दुर्लभ सवाल गोरख प्रसाद की किताब का वह धारा प्रवाह बोलने लगते थे । वह अध्यापक मिडिल स्कूल के थे पर पढ़ाते दस बालों को भी थे । कक्षा दस की परीक्षा में पास करने वाले इलाके बहुसंख्यक मेधावी छात्र उनसे पढ़े हुये होते थे । यहाँ तक कि मदन मोहन मालवीय कालेज के गणित के अध्यापक कृष्ण प्रताप सिंह भी बोलते थे कि सरयू शर्मा ऐसा गणित का जीनियस मैंने कभी देखा ही नहीं । पर गरीबी प्रगति में बाधक आ गई । वह कक्षा 12 की परीक्षा

में बहुत नाम कमाकर भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय पढ़ने न जा सके । वह दौरे था जब अध्यापकी मिलना आसान था और प्रतिभा की बहुत कदर थी । उनका अध्यापक बनना कई पीढ़ियों के लिये वरदान साबित हुआ । उनके छलकाये हुये अमृत के कुछ छीटें मेरे भी नसीब में लिखे थे । जम मैं इंटर में पढ़ रहा था तब उनका देहावसान हुआ । मैंने अपने जीवन का सबसे बड़ा गुरु खो दिया था जिसको मुझ पर असीम विश्वास था सिफ़्र इसलिये कि मैं ज़िद्दी था । वह कहते थे जिद जीवन में ज़रूरी है बस उसको नियन्त्रित करने की ज़रूरत है ।

उनका विवाह जब हुआ था तब वह कक्षा चार में पढ़ते थे । इंटर पास करते-करते वह पाँच बच्चों की ज़िम्मेदारी ओढ़ चुके थे । नौकरी करने के सिवाय कोई रास्ता न था । वह सरकारी नौकरी मिडिल स्कूल की पा गए, जीवन थोड़ा गतिमान हो गया । इतनी कमाई न थी कि वह सारे बच्चों को पढ़ने के लिये शहर भेज सकें । इसलिये मेरे पिता ही आ सके शहर पढ़ने बाक़ी सब गाँव में ही खप गये ।

मेरे रिज़ल्ट निकलने के बाद पहली बार किसी ने मेरे स्वर्गवासी बाबा का ज़िकर किया । मेरी शरद्धा नाना के प्रति बढ़ गई । उन्होंने उस नायक का ज़िकर किया जिसने आज की विजयगाथा के प्रचम को लहराने वाले तोरण द्वार की नींव बनाई थी । वह कहा करते थे दो विषय- भाषा और गणित पर अधिकार प्राप्त करो बाक़ी सारे विषय उसके पीछे स्वयं आ जाएँगे । मैं जब गर्मी की छुट्टी में गाँव जाता था तब अपनी कापी किताब और परीक्षा का पर्चा साथ ले जाता था । वह मेरे पर्चे से ही सवाल बनाते रहते थे और हर दिन मुझसे लिखाते थे । वह कहते थे जिसने लिखना सीख लिया वह अजेय हो गया । मात्रा की अशुद्धि और लिखने में शिरोरेखा का न होना तो वह बर्दाशत ही नहीं करते थे, चीखने ऐसे लगते थे । उनकी पंक्ति थी, ” नदवा इ ऊपर की शिरोरेखा के बनाये “ । मेरी माँ बहुत होशियार थी वह पिछले कक्षा किताब और आने वाली कक्षा किताब दोनों लेकर आती थी और मेरे बाबा दोनों पढ़ाया करते थे ।

सबसे पहले किसी ने मेरी प्रतिभा को मेरी माँ के अलावा किसी ने पहचाना था तो वह मेरे बाबा थे । वह कहा करते थे जीवन में कुछ भी नहीं चाहिये आगे बढ़ने के सिवाय लगन के । यह लगन कक्षा की पढ़ाई से नहीं जीवन की सामान्य घटनाओं से देखा जा सकता है । यह मुन्ना सारे गाँव के उन पेड़ों पर चढ़ गया जिस पर लोग चढ़ने से डरते हैं । यह पेड़ की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचे बिना नीचे नहीं आता । सरंगहवा पेड़ पर कोई डाल नहीं है वह सीधा लंबा पेड़ है । यह उस पेड़ पर चढ़ने की कोशिश हर रोज़ करता था और अंत

में गिर- गिर कर वह सीख गया और उसकी ऊँची चोटी पर चढ़कर हल्ला करता था । उन्होंने मुझसे पहली बार कहा था कि जीवन में तुम ज़रूर कुछ करोगे । मैं रहूँ या न रहूँ, मैं देख पाऊँ या न देख पाऊँ पर ज़माना ज़रूर देखेगा ।

कई नायक याद नहीं किये जाते पर याद करने या न करने से उनका नायकत्व कम नहीं हो जाता । इतिहास का निर्माण सिफ़्र प्रतिष्ठा प्राप्त नायकों से ही नहीं होता यह उन विस्मृत के गर्भ में छुपी दास्तानों से भी होता है जिसे याद करने वाला कोई नहीं होता । मेरी आँखों के सामने वह सारा जीवन बीत गया जब मेरे पाँच बजे सुबह उठने की आनाकानी करने पर बाबा कहा करते थे, “मानव जीवन मुश्किल से प्राप्त होता है इसे व्यर्थ मत जाने दो । यह उनकी ही लगाई हुई आदत है कि मैं आज तक सुबह जल्दी उठता हूँ और जब तक सारी दुनिया सो कर उठती है तब तक मैं जीवन की रफ़तार में उनसे आगे दौड़ रहा होता हूँ ।

मेरे नाना मेरी माँ से बातचीत करके जाने लगे । वह बोले, “ बिटिया अब चलत हई तोहरे भैया के इहाँ । हम जल्दिए फिर आऊब । ”

मुझसे कहा, “ मुन्ना भैया तोहरे कारन पटवारी और कानूनगो हमसे मिलै आइ रहेन । गाँव वालेन के बड़ी इच्छा बा तोहै देखर्ह एक के । एक दिना कुछ घड़ी बरे आई जाय । हमरौ दुवार तरि जाए । ”

मेरी माँ ने कहा, “ बाबू जल्दिय मुन्ना के भेजिबै । बस जून के दूसर ऐतवार होई जाय द, तब इ जाये गाँव । ”

मेरे नाना मामा के यहाँ चलने को तैयार हुये । मेरी माँ ने दाढ़ू से कहा “ तूहाँ जा बाबू संगे । बताय का भवा उहाँ । ”

दाढ़ू मेरे पास आया और कहा, “ जात हई बाबू संगे काल अउबै सारी ख़बर लै के । ”

मेरी माँ नाना को छोड़ने कार तक गई । उसने पहली बार जीवन में कार का गेट खोलकर नाना को सर्गर्व कार में बैठाया । मैं दूर से वह दास्तान देख रहा था जो मेरे परिवेश के लिये एक गैर मामूली दास्तान थी ।

मेरे नाना मेरे मामा के यहाँ के लिये चल दिये । वह अभी तक एक सामान्य जीवन ही जिये थे । उन्होंने शादी- विवाह के उत्सवों के अलावा कार का इस्तेमाल न के बराबर किया था । यह कार उनकों गाँव से ले आने गई थी , वह जब तक शहर में रहेंगे उनके साथ रहेगी और वापस गाँव छोड़ने जाएगी । यह बहुत बड़ी बात थी उनके लिये । वह जाते समय मौसी के यहाँ से होते हुये गये । मौसी को शिकायत थी कि इस पूरे मामले में उसको शरीक नहीं किया गया और उसके पति का मान नहीं रखा गया । उसने अपने पिता से उलाहना भी दिया कि हमें कोई कुछ नहीं बताता । यह लड़का जैसे सबका है वैसे हमारा भी है ।

मेरे मामा उम्र में उससे छोटे थे और वह छोटे होकर भी बड़ों का ध्यान नहीं रख रहे , हम तो मानदान हई हमार ध्यान के रखे । मामा ही सारी घटनाओं के सूत्रधार थे । यह सूत्रधार का कर्तव्य है कि वह पूरे नाटक को एक सूत्र में बाँधे पर मेरे मामा सारे नाटक में खुद ही अभिनय कर रहे थे किसी और का भी संवाद खुद ही बोल देते थे इसलिये रंगमंच के तमाम अभिनेता उनसे खफा थे । मेरी मौसी के पास भी एकाध रिश्ते थे पर जब ऑपनिंग बैटसमैन समय दे तब तो नीचे के क्रम के बल्लेबाज़ों को अवसर मिलेगा । वह थोड़ा आकरामक भी हो चुकी थी ।

उसने कहा , “ सर्वेश उर्मिला के फँसाय देहिंहि । एक परिवार वाली लड़की उर्मिला के चाही । पर अब त बातै कुछ और बा । हमसे केऊ राय लई तब हम दई । हमसे त केऊ पूछतै नाहीं बा । जब सब बिगड़ि जाए तब होस आए । केऊ परिवार और मुन्ना के बारे में सोचतै नाहीं बा । ”

मेरे नाना ने समझाया कि ऐसी बात नहीं है । अभी कुछ हुआ नहीं है । जब होगा सबकी राय- मशविरा से होगा । परिवार का ध्यान रखा जाएगा । सबके मान - सम्मान के ख्याल होई ।

मेरी मौसी का रोष कम नहीं हुआ पर वह शांत हो गई यह कहकर , “ समय बड़ा बलवान होत ह बाबू । अब समय हमार ठीक नाहीं बा । बहिन- बिटिया के झज्जत वाला ज़माना गवा । अब त जेकरे पास रूपिया बा ओहि के झज्जत बा । ”

मेरे नाना तो इस समय सबसे बड़े गौरव रथ पर सवार थे । वह मौसी को बहला- फुसला कर मामा के यहाँ चले गये । वहाँ उनका अति स्वागत हुआ ।

मेरी मामी ने बहुत झज्जत की । वह करती पहले भी थीं पर इस बार थोड़ा ज्यादा किया । मेरे नाना ने मेरी माँ के साथ हुये वार्तालाप का सारा वृतांत बताया । सारी बातें वैसे ही हुई थीं जैसे मेरे मामा - मामी चाह रहे थे । इस कारण से प्रसन्नता और अधिक हो गई । यह उनको लगने लगा कि गाड़ी पटरी पर है । मेरे नाना को हरिकेश मामा के यहाँ भी ले जाया गया । वहाँ भी उनका स्वागत हुआ पर नियति को अपना एक खेल दिखाना बाकी था ।

मेरे मामा राजस्व विभाग में थे । उनको कलेक्टर ने बुलाया और कहा कि आपको कमिश्नर साहब याद कर रहे हैं । मेरे मामा की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई । जो व्यक्ति बहुत करोधी और आकरामक होता है, वह बहुधा बहुत डरपोक हुआ करता है । ऐसे ही मेरे मामा की प्रकृति थी । वह बहुत ही करोधी थे और सबसे बदमिज़ाजी कर देते थे पर वह थे बहुत डरपोक ।

कलेक्टर साहब ने जैसे ही बुलाया वह घबड़ा गये । वह कुछ सालों से साइडलाइन पोस्टिंग पर थे । दादू का कहना था कि वह किसी मामले में फँसे हैं । पर दादू की बात में आधी बात गप रहती है और हर बात में नमक- मिर्च लगता है, इसलिये लोग तरजीह उसकी बात को कम ही देते हैं मनोरंजन के तौर पर ज्यादा लेते हैं ।

कलेक्टर साहब - आपको कमिश्नर साहब पूछ रहे थे । आप कैसे जानते हो उनको?

मामा - साहेब हमने बस नाम सुना है उनका ।

कलेक्टर साहब - तुमने कोई सिफारिश लगाई है अपने पोस्टिंग की ?

मामा - नहीं साहेब ।

लंच के बाद आना, चलना है सर के पास ।

मामा - जी साहेब ।

मामा जी को जैसे साक्षात यमराज दिख गये हो । वह घबड़ा गये । वह अपने साथ वालों से पूछने लगे, क्यों बुलाया है । हर कोई अलग- अलग बात कहने लगा । किसी ने डराया कि आपकी शिकायत हो गई होगी । पर एक अधीनस्थ कर्मचारी की शिकायत पर उसको बुलाने का कौन सा तुक ? सीधी कार्यवाही करो, यही होता था राजस्व विभाग में । इसमें डीएम,

कमिश्नर से क्या लेना - देना । यह काम तो एसडीएम ही कर देता है । सारी मंत्रणा के बाद भी कोई बात समझा न आई ।

लिंच के बाद डीएम का अर्दली आया और बोला कि आप कमिश्नर साहब के बंगले चलो डीएम साहब वहीं मिलेंगे ।

मामा को लगा कि आज तो नौकरी गयी । इतने सालों में आज तक किसी कमिश्नर को देखा ही न था । वह एक सामान्य कर्मचारी थे, बाहर चाहे जो शेखी बघारे पर हक्कीकत में वह क्या हैं वह तो जानते ही थे ।

मामा कमिश्नर के बँगले पहुँचे उनकी हिम्मत अंदर जाने की नहीं हो रही थी । इलाहाबाद के कमिश्नर का बँगला बहुत ही बड़ा है । यह अंगरेजों ने बहुत ही शानोशौकत से बनवाया था, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के नज़दीक विधि विभाग के तकरीबन सामने । इस बँगले में कमिश्नर आवास तक पहुँचने के लिये एक लंबी दूरी की यात्रा करनी पड़ती है ।

मामा ने बाहर बैठे सिपाही से पूछा, साहब अंदर बैठे हैं । वह भी रौब से बोला, “साहब लिंच पर अभी- अभी आये हैं ।”

मामा - मुझे मिलना है, हमको बुलाया है ।

सिपाही - जाओ बड़े बाबू बैठे हैं उनको बता दो । कई लोग आये हैं मिलने वहीं बैठ जाना ।

मामा जी बड़े से बँगले को देखते अंदर चले गये और डरते - डरते बड़े बाबू से बोले कि कलेक्टर साहब ने कहा है मुझे यहाँ पर पहुँचने को, साहब ने बुलाया है ।

बड़े बाबू - आप कौन हैं?

मामा - मैं सर्वेश मिश्रा हूँ । मैं राजस्व विभाग में सुपरवाइज़र हूँ ।

बड़े बाबू - डीएम साहब अभी निकले नहीं है अपने दफ्तर से । जब वह निकलेंगे तब उनके दफ्तर से फ़ोन आ जायेगा पर आज दोपहर बाद साहब आफिस घर से ही चलाएँगे और डीएम साहब के साथ साहब की मीटिंग है । आप बैठ जाओ, मैं बुलाऊँगा अगर साहब कहेंगे ।

मामा इंतज़ार करते रहे । डीएम साहब आ गये, थोड़ी देर में बुलावा आ गया । कमिश्नर साहब ने थोड़ा डीएम पर नाराज़गी भी व्यक्त की और कहा कि इनको क्यों ले आए साथ, मैंने तो कहा था कि मैं उनसे मिलना चाहता हूँ ।

उन्होंने अर्दली से कहा , साहब को ड्राइंग रूम में बैठाओ चाय पिलाओ में आता हूँ ।

मेरे मामा के लिये उस ड्राइंग रूम में बैठना कठिन हो रहा था । वह बार - बार दीवालों की पेन्टिंग देख रहे थे ।

थोड़ी देर में कमिश्नर साहब आ गये । मामा घबड़ाकर उठ गये । कमिश्नर साहब ने बैठने का अनुरोध किया । बातचीत का क्रम आरंभ हो गया ।

कमिश्नर साहब - अनुराग शर्मा आपका भांजा है ?

मामा - जी साहब ।

कमिश्नर साहब - आपकी सगी बहन का बेटा है ?

मामा - जी साहब ।

कमिश्नर साहब - मेरी बहन है जो दिल्ली में पढ़ती है । मैं उसके विवाह के लिये लड़के देख रहा था । इस साल कि लिस्ट में मुझे कई ब्राह्मण लड़के दिखे जिसमें अनुराग का भी नाम था । मेरे स्टाफ़ ने बताया कि वह आपका भांजा है । मैं जौनपुर का रहने वाला हूँ । मेरे पिताजी किसान हैं । मैं इसी विश्वविद्यालय का पढ़ा हूँ । मेरा छोटा भाई आईआरएस है वह बम्बई में डिप्टी कमिश्नर है इनकम टैक्स में । वह आईआईटी कानपुर का पढ़ा है । मैं अपनी बहन का विवाह अनुराग से करना चाहता हूँ । उन्होंने आवाज़ दी घर में और अर्दली से कहा मैम साहब को ले आओ । मैम साहब आ गई । कमिश्नर साहब ने बताया कि यह अनुराग के मामा हैं । प्रतीक्षा के विवाह के लिये हम लोग बात कर रहे थे जिस लड़के के उसी के मामा हैं । मैम साहब ने शालीनता से नमस्कार किया ।

कमिश्नर साहब तेज थे । कुंडली , फोटो, बायोडेटा एक लिफ़ाफ़े में बंद करके दे दिया और कहा इस पर विचार कर लें फिर जब आप कहें , अनुराग के घर चलते हैं । यह काम हम आप पर सौंपते हैं , यह विवाह आप ही की ज़िम्मेदारी है । आप हमसे उम्र में बड़े हैं , जैसा आप चाहेंगे और कहेंगे वैसा ही हम कर देंगे । इस नौकरी के झंझट में मुझे समय कम मिलता है । मेरे पिताजी किसान है , छोटा भाई दूर रहता है और अब यह मेरी ज़िम्मेदारी है । मेरी ही बहन है अब मैं तारीफ़ करूँ तो कोई बात बनती नहीं पर संस्कार हमारे परिवार की एक अमूल्य निधि है , वह लड़की में भरपूर है । अगर सब बात ठीक चलती है तो मेरे पिताजी भी आ जाएँगे मिलने वह कितने ज़मीन से जुड़े आदमी हैं , यह आप उनको देखकर ही जान जाएँगे ।

मैं चाहूँगा हमारा और आपका रिश्ता हो जाए बाकी ईश्वर की इच्छा । मुझे लड़के के बारे में सत्य प्रकाश मिश्रा सर ने बताया । यह भी बताया कि वह उनके पास बहुत आता है । सर मेरे भी गुरु रहे हैं और सिविल सेवा में जब हिंदी मैंने लिया था तब सर ने बहुत सहयोग किया था । जब सर ने कह दिया कि लड़का बहुत अच्छा है तब और कुछ बचा रह ही नहीं गया पता करने को । आपको देखकर ही लगता है कि लड़का संस्कारी होगा । आपका परिवार हमारा परिवार कमोबेश एक सा ही है । हम लोग भी पहली ही पीढ़ी के विकास करम में हैं वैसा ही आपके साथ है, बाकी ईश्वर की इच्छा ।

मेरे मामा को यक़ीन ही नहीं हो रहा था । वह इतने अविश्वास में आ चुके थे कि वह इस सत्य घटनाक्रम की सत्यता सत्यापित करना चाह रहे थे । वह कमिश्नर साहब के बँगले में एक दीन- हीन व्यक्ति के रूप में प्रवेश किये थे पर बाहर एक सम्मान के साथ निकल रहे थे । जब वह बाहर निकल रहे थे उस समय कमिश्नर साहब ने दरंग कार्ड चला दिया और अपनी पत्नी से उनका पैर छुवा दिया । यह कार्ड बराह्मणों को सदियों से लुभाता रहा है । कई बार बहुत अच्छा बल्लेबाज़ फुलटास पर आउट हो जाता है, यही मेरे मामा के साथ हुआ । वह पूरी तरह क़ब्ज़े में आ गये थे ।

मेरे मामा उस रामेश्वर नाथ मिश्र के बेटे थे जो अपनी ऊँगलियों पर ठाकुरों से भरे गाँव को नचाता था वह भी तब जब कि जुम्मा- जुम्मा कुछ ही घर बराह्मणों के थे । वह सरपंची का चुनाव अपनी गणित से साल दर साल जीतते रहे । मेरे मामा भी अच्छे ख़ासे प्रारूप थे । मैं भी कम प्रारूप न था, आखिर नाती और भांजा किसका हूँ । चक्रव्यूह, कमल व्यूह बनाकर खुद भी सफल हुआ और बदरी सर का भी बेड़ा पार कराया हलाँकि मेरा उनके लिये चक्रव्यूह बनाना किसी सदाशयता से न था वरन् अपने निहित लक्ष्यों से था कि अगर यह प्रयोग सफल हुआ तो कल मेरा कमल व्यूह और नहीं तो सिफ्ऱ पराक्रम, कोई व्यूह नहीं । मरेगा अगर कोई तो बदरी सर । उसको सानों पर चढ़ाकर चाहता था देखना कैसे सानों पर खेलता है कोई दर्द के बीच । ईश्वर मेरे साथ था और मैं एक गैर मामूली दास्तान के रास्ते पर हूँ ।

पर कमिश्नर साहब सब पर भारी हैं, इस समय । सबकी मति हर ली है उन्होंने ।

मामा सीधे अपने घर गये । वह मेरी मामी से सब साझा करते थे । मुझे और परिवारों और शहरों का तो नहीं पता पर मेरे परिवार में महिलाएँ बहुत ही हाबी रहती हैं पतियों पर । उनको पल- पल की ख़बर चाहिये । मेरी नानी नाना पर

, मेरी मौसी मेरे मौसा पर , मेरी मामी मेरे मामा पर , मोहिता दीदी मेरे जीजा पर और मेरी माँ के क्या कहने वह तो एक तूफ़ान है जिसके सामने कोई पेड़ टिका ही नहीं । वह तो घासों को भी उखाड़ फेंकती है जो पूरी तरह नत मस्तक हैं । पता नहीं मेरा क्या होगा ???????

मामी को सारा वृतांत सुनाया । मामी को यक़ीन ही नहीं हो रहा था । उसकी पहली लाइन थी यह वृतांत सुनकर , ” उर्मिला के भाग खुल गये । ” इस एक पांकित में जितनी भी ईर्ष्या संभव है वह साफ़ देखी जा सकती थी उनके चेहरे पर जब मामी यह बोल रही थीं । मेरी मामी और मेरी माँ में बिल्कुल ही नहीं पटती थीं पर समय मेरी माँ के साथ था हथियार उठाने की जुर्त मेरी मामी कर ही नहीं सकती थीं । इतने दिनों से जो भी उनके अमोघ वाक अस्तर थे वह अब कंठ के ऊपर आने की हिम्मत ही नहीं जुटा पा रहे थे ।

मेरी मामी विस्मित थीं । वह पूरी तरह किंकर्तव्यविमूढ़ हो चुकी थीं ।

मामी - अब का होई ?

मामा - कुछ समझ नाहीं आवत बा ।

मामी - का करब अब हरिकेश का ?

मामा - कमिशनर साहब के हरिकेश मुलाजिम हयें । साहब हरिकेश से कहि देझहिं तब हरिकेशै खुदै कहि देझहिं शर्मा जी से , हमरे बिटिया से नाहीं आप साहेब के बहिन से बियाह कै द मुन्ना क ।

मामी - हमरे जबान के का होई ?

मामा - इहाँ आग लगी बा और तोहका जबान- जबान । बस एक रटि । तू भीष्म पितामह बनि गई हऊ । भ भिंसार एकै रट । हमार माथा खाई गई हऊ जबसे इ मुन्नवा भवा बा आईएएस । पहलेऊ कबहुँ सोचू ह ओकरे बारे में । तब त उर्मिला डाइन बा , बाबू के भड़कावत बा , ओकरे घरे न जा सारा दिन इहई रट । ई हरिकेश से कहा दुई साल पहले तब त ओ अपने शेखी में रहेन कि लड़िका अंगरेज़ी नाहीं जानत , ई गरीब बा , ओका पहिनै - ओढ़ै के सहूर नाहीं बा ।

अब पेपर में नाम छपि गवा तब सब सहूर आई गवा । इहै हरिकेश की बीबी कहत रही , हमार बिटिया के जोड़ के मुन्ना नाहीं बा एक साल पहले और इहई अब कहत बा , “ कैसा मुन्ना बोलता है मन करता है बस सुनते जाओ । यह हमारी आँखों से जाता ही नहीं । ”

ई हरिकेश जैसे अंगरेजी के किताब एक हाँथे में लै के पैदा भवा रहा । यह रुड़की में पहिला साल फेल हो गया था । इसको अंगरेजी आती ही नहीं थी , धीरे- धीरे सीखा पर अब बड़का अंगरेज बन गया है ।

एक महाभारत शुरू हो गया । दादू मौजूद था आँखों - देखा हाल सुनाने के लिये । सुबह चार बजे दादू उठा और मारा तेज- तेज पैडिल साइकिल में , मेरे मामा के घर से मेरे घर की तरफ । वह जितनी तेज साइकिल चला सकता था चला रहा था और चार बजकर पच्चीस मिनट पर वह मेरे घर पर था । मैं सुबह उठकर पढ़ता था और माँ गंगा नहाने जाती थी । वह पहुँचते ही बोला, “ बुआ ग़ज़बै होई गवा । चाचा के चाची धुनि मारने । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 117

दादू को इतने सुबह-सुबह देख कर मेरी माँ थोड़ी चिंतित हो गई । वह उसके आते ही पूछी , “ “इतने भिन्सारे - भिन्सारे ?

का भवा सब ठीक त बा न ? ”

दादू - बुआ , सब ठीक बा । काल त ग़ज़बै होइ गवा । चाचा के त हूँके निकलि गई । कमिश्नर साहेब तलब केहेन ओनका । अब तोहसे ज्यादा के अपने भाई के जान सकै । हर त पूर नटवरलाल । घपला करै में हयें मास्टर । इ इतना बड़ा मकान और हर कमरे में क़ालीन , शानेशौकत इ तीन हज़ार रुपिया महीना के तनखाह के माथे बा का ? इ त ओनके घपला के माथे बा । ओनका लगा कि कौनो घपला पुनि पकड़ा गवा । आज त गये जेल , जब डीएम साहेब कहेन कि चल बुलावा आया है कमिश्नर साहेब ने बुलाया है ।

अरे बुआ.....का बताई सापैं सूधि लेहेस जैसे चाचा के । कुर्सी पर धम्म से भरहराई गये । ओनके साथ वाले एक बाल्टी पानी उड़ेल देहेन कि होश में लाओ । लोग कहेन जूता सुधावअ मिर्गी आई गई बा । ”

माँ हँसने लगी

दादू तोहार जोकरई कभौं न जाए । तू ऐसन बतावत है जैसन ऊहा रहबै करे तू ।

दादू - बुआ रहे त नाहीं हम , पर अनुमान त हैये बा कि का भवा होए , ऐतना त अंदाज़ा लगाइन सकित ह ।

माँ - फिर का भवा ?

दादू - गएन चाचा डेरात- डेरात बँगला में । बँगला में कमिश्नर साहेब के कुकुरवौ भौंकें लाग चाचा के देख कै । चाचा और डेराय गयेन । डर के मारे बुआ ओनकर हालत ख़राब होई गय और चाचा बँगले के भीतरा एक पेड़े से लड़ि गयेन और भहिराय के गिरि गैन । तू देखू अगर आज - कालि में अझिं । ओनके माथे पर गुल्ला बनि गवा बा ।

माँ - दादू ई जोकरई बंद करअ । हमका जाई के बा गंगा नहाय , जल्दी बताव देर होत बा ।

दादू - बुआ कमिश्नर साहेब हैं न इलाहाबाद के ओ चाचा से कहेन अपने बहिन के मुन्ना से बियाह बरे ।

माँ - इलाहाबाद के कमिश्नर.....;???

दादू - हाँ बुआ हाँ ।

माँ - केसे कहेन कमिश्नर साहेब ?

दादू - तू बुआ सुनतई नाहीं हऊ ठीक से कहा तौ चाचा के बोलाये रहेन । चाचा से कहेन । कुंडली , फोटो , बायोडेटा चाचा लै के आई हयें ।

जब चाची सुनिस के कमिश्नर आई गएन बीच मे बियाहे बरे तब लड़ि गईन कि हम जबान देहे हई हरिकेश के । चाचा कहेन काट द जबान चाकू से अगर जबान दै देहे हऊ और बियाह नाहीं होई पावत बा । का करी हम , हमरे बस में बा । चाची सहिय में चाकू निकाल लिहिन और चाचा से कहिन ल काट द जबान । फिर त बुआ जौन महाभारत मचा कि हम सन्न मारके ऊपर वाले कमरा में पराय गये ।

माँ - फिर ??

दादू - ओकरे आगे के अब नाहीं बा पता । हमें गाँव जाय द नाहीं त चाचा के शक होये कि हम तोहसे बतावय बरे ऊहाँ से इहाँ आई गये । छोटकऊ चाचा ओनकर जासूस हयें । हम जैसे कहब कि गाँव चला गये रहे चाचा फुरा जमोगी कै देझिं । अबा पाँच बजा बा । हम छह सवा छह बजे तक पहुँच जाबै गाँव ।

माँ - चाय पी ल ।

दादू - बुआ जल्दी से बनाय द , हम मुन्ना भैया के सलामी तब तक मार देईं ।

दादू चाय पीकर निकला , मारा तेज पैंडल और पहुँच गया सवा 6 बजे गाँव । वह सीधा मेरे छोटे मामा के घर गया ताकि वह कह सके , पूछ लो चाचा से हम त 6 बजे गाँव में थे बुआ के यहाँ गये ही नहीं ।

उधर सुबह- सुबह दादू को न देखकर यह शक हुआ कि वह उमिला के यहाँ गया होगा सब बताने । दादू की प्रकृति से सब परिचित थे पर वह सबकी मजबूरी भी था । वह सेवक था , हर काम करने को तैयार रहता था , हर कार्य- प्रयोजन पर हाजिर होता था , बोलने में माहिर था और समय- समय पर सूचनाएँ हर खेमे को देता था । इसलिये उसकी कुटनीगीरी की आदत को जान कर भी लोग बर्दाश्त करते थे । इन सारे गुणों में सबसे बड़ा गुण था उसकी हाजिरजवाबी और विनम्रता ।

मामा- मामी का रात का संघर्ष सुबह के पक्षियों के कलरव के साथ कम होने लगा । इसका कारण था आसन्न संकट । अब किया क्या जाय ? दो नावों पर सवार हो नहीं सकते थे । एक नाव को छोड़ना ही पड़ेगा । मामा ने माहौल को हल्का करते हुये कहा , मैं तो चाहता ही हूँ हरिकेश के यहाँ विवाह पर कैसे कमिशनर साहेब का मामला निपटै । हम , हरिकेश दोनों उनके मुलाजिम हैं । हम दोनों की नौकरी चली जाएगी ।

मामी ने भी समस्या की गंभीरता को समझा और रात की बात भूलकर मामा के सुलह- सफ्टार्ड के सफेद झंडे के नीचे आकर आपसी विवाद को भूलकर यह मंत्रणा करने लगी । सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि दो में से किसको चुना जाए । मेरे नाना का खुला समर्थन हरिकेश मामा के पक्ष में प्राप्त हो जाने के बाद हौसले बुलंद हो गये थे । पर कैसे मामला अंतिम परिणति को पहुँचे यह समस्या थी ।

दादू को घर में न देखकर चिंता और हो गई । दादू की प्रकृति को देखकर यह अंदेशा स्वाभाविक था कि उसने सब जाकर बता दिया होगा । वह इस मामले पर एक रणनीति बनाकर अपना कार्ड खेलना चाहते थे , अगर दादू बता देगा तब तो समस्या होगी , अब प्रतिस्पर्धा बढ़ रही थी ।

शाम को दादू वापस आ गया । वह बोला तहसील में काम था , इसलिये गये थे । जब मामा ने पूछताछ की तो उसने कह भी दिया कि आप छोटे चाचा से पूछ

लो हम तो सुबह उनके भेंस का दूध भी दुहे थे । यह उनको बहुत राहत दे गया ।

दादू - का भवा चाचा ? कौनो ख़ास बात ?

मामा - एक समस्या आई गय बा ।

दादू - कैसन ?

मामा ने पूरा क्रिस्सा सुनाया ।

दादू - चाचा इ त हम सुने रहे राति के । पर एहमें समस्या का बा ? हरिकेश मामा के इहाँ बात चलतै बा । बाबू लगा हर्झ्य हयें । कमिश्नर साहेब से कहि द बियाह तई होई गवा बा । बात ख़त्म । बात त चलतै बा मामा के इहाँ रफ्तार से ।

मामी - पर बियाह तई भवा कहाँ बा । ई उर्मिला तई करै में नाकौ चना चबवाय दे । अबहिं लेन- देन के बात आए तब सुरसा के तरह मुँह खोल दे ।

मामा - गलत बात न बोलो मोहिता की माँ । वह कुछ कहेस आज तक । गलत दोषारोपण न करअ । अगर रुपिया पर बियाह होए तब रामराज के इहाँ होए न कि हरिकेश के । हमार पाच के जो ज़ोर दबाव बा नाहीं त अब इ बियाह हरिकेश के बस के बाहर बा ।

मामी - कैसे अब बात बने इ बताव , हम जबान देए चुके हई ।

मामा - फिर जबान - जबान ... एकै रट

मामला बिगड़ता , कि दादू ने बात सँभाल ली ।

दादू - चाची के बात त सही बा चाचा । जब चाची कहि देहन एक बार तब पहले इ रिश्ता फरियाय जाय द , तब अगले की बात करअ ।

हमार राय त इहै बा । बाक़ी हमार समझ हैये केतना बा कि हम एक आईएएस के ब्याह में दख़लंदाज़ी करी ।

मामा - सही बताव दादू तू केहू से बताये त नाहीं ह इ बात ?

दादू - कौन सी चाचा ?

मामा - कमिश्नर साहेब के रिश्ता गाली ।

दादू - चाचा हम तोहार सिपाही हई । हम तोहसे बाहर जाब ।

मामा - कतौ ऐसन त नाहीं कर तू कि भिंसारे उर्मिला के बताय के तू गाँव गवा हो ।

दादू - चाचा एतना बड़ा गङ्दारी के आरोप हम पर न लगाव । तू त जानत हुआ चार बजवा जात थ गंगा नहाय । हम कब जाब कब मिलबै ? हम 6 बजे भिंसारे गाँव रहे । छोटकऊ चाचा के गोरुवन के सानी- पानी किछा फिर ओनके बिंगड़ैल - मरकहिया भैंस के दूध दुहा । आज चाचौ आवत हयें मुन्ना से मिलै बरे , ओनसे पूछ ल ।

दादू रोने का नाटक करने लगा और बोला , हमका पाले है तू । हम आपसे दगा करब त हमार कौनो उद्धार न होई । कह त चाचा हम हलफ उठाई लेई , अगर हमरे बात पर यकीन न होय । हम ओतनै बुआ से बताइत ह जेतने के आप आदेश देत ह । हमहुँ चाहत हई कि ब्याह हरकेश मामा के इहाँ होई । मामा हमरे दुःख- सुख में काम अझिं , इ कलेक्टर- कमिश्नर घरवै में न घुसइ देझिं । इ बेबी से बियाह होये तब हमार पाच के इंदरी मुन्ना के इहाँ बनी रहे नाहीं तो बुआ के जातै इ रिश्ता उड़ि जाए । अब एतने तकदीर से मुन्ना भवा बा , फ़ायदा हमहुँ पचन के मिलै चाही न । हम त कहब चाचा इ कमिश्नर के रिश्ता गोलै कै द ।

मामा - उ कैसे ?

दादू - बुआ के का पता कि कमिश्नर साहेब आय हयें । जोर - दबाव लगाय के इहीं बीच बियाह तय कराय द । फिर मार के पीछा सब सून । एक बार तय होई गवा तब बात ख़त्म । ई कमिश्नर साहेब बड़ - बड़वार हयें ओनका बरे कहाँ लड़िकन के कमी बा ।

मामी को यह बात जँच गई ओर बोली इ ठीक बा । ऐसे हमार जबान ख़ाली न जाये ।

मामा - फिर जबान.... जबान

मामी को लगा कि उनके हित की बात हो रही है इसलिये शांत रहना श्रेयस्कर है । वह चुप हो गई यह कहते हुये अब जौन विधाता के लिखा- बदा होये , उहै फलित होये ।

मामा - दादू , कैसे अब बात आगे बढ़े ? बाबू त कहिन देहन , जौन हम चाहत रही ।

दादू - चाचा तनिक गम खा । आज मोहिता दीदी मुन्ना से मिली होझिं । पता करै द का असर पड़ा दीदी के बात क । चाचा , अब ई उ मुन्ना नाहीं रहि गवा

जौन हम-पाच ज़ानत रहे । अब बहुत बड़ा आदमी बनि गवा बा चाचा । बड़े-
बड़े अफ़सर एकर चेला हयेन ।

मामा - के बना चेला ?

दादू - कुंडली गुरु बड़ा तपा हुआ पुलिस अफ़सर हयें ओ ओनकर चेला ।
एसडीएम बाराबंकी अमर गुप्ता है । मुन्ना भैया के एक बार कहे पर हमार काम
जन नारायण एसडीएम करछना से करवायेन । जेतना जने सेलेक्शन पाए हयें
सब अउतै हयें मुन्ना के इहाँ । मुन्ना के बाजार बदल गई ब चाचा ।

बाबा भैया - कुंडली गुरु जो एनकाउंटर करेन कई बदमाशन के अबै हाल में
गाज़ियाबाद में ऊ मुन्ना के चेला हयें ।

दादू - हाँ भैया । बुआ कुंडली गुरु के जीप से बाबू से मिलै गाँव गई रही । हमहूँ
उहीं जीप से आवा रहे । रात भर मुन्ना पढ़ाएन कुंडली गुरु के ।

बाबा भैया - मुन्ना के कुछ नाहीं आवत , हमें सब पता बा । तू देखे रह का जब
पढ़ावत रहने ? तकदीर से होई गयेन, ओनका आवत - जात कुछ ख़ास नाहीं
।

मामी - बड़ा तोहका आवत बा । एकौ परीक्षा पास कै नाहीं पावत ह उम्र तीस
पहुँचत बा । आपन देखअ पहिले । अपनौ कराय ल तकदीर से केऊ रोके बा
।

मामा - जैसे भी हुआ , हो तो गया न । होना चाहिये , बाकी से क्या मतलब ।
ऐसे ही बेवकूफ़ की तरह बक- बक करो और हमारे पर बोझ बने रहो । इस
साल के बाद अपना भार उठाओ , बहुत हो गया अब ।

बाबा भैया उठकर चले गये ।

दादू - चाचा अगर आदेश द त जाई बुआ के इहाँ देखी मोहिता दीदी के का
असर पड़ा । माहौल लेई के बताउब ।

मामा - आज जावा चाहत ह कि काल ?

दादू - चाचा आजै चला जाइत ह अगर आदेश होई आपके । काल - परसो
फिर तोहरे सेवा में हाज़िर होब । आवा तोहार पैर दबाय दई , तनिक मींज दई
तब जाई बुआ के इहाँ ।

दादू पैर दबाने लगा ।

मामा - दादू ...

दादू - हाँ चाचा ।

मामा - मुन्ना के होने में उसके बाबा का बड़ा हाथ है । बचपन में ओकर जड़ मजबूत कैं देहन ।

दादू - ई बात त बा चाचा । हमहूँ जौन कुछ पढ़ा ओनके आशीर्वाद से । बहुत दिमाग़ रहा ओनके पास । पूरी किताबै जैसे रटी होई । कौनो सवाल होई कभौं कापी पेन त छूबै न करै । गर्मी की छुट्टी मे बुआ जब गाँव आवत रही तब बाबू हमहूँ के भेज देत रहने । हम मुन्ना साथै पढ़ी । पर चाचा एक बात बताई , ई मुन्नवा रहा बदमाश पर दिमाग़ रहा एकरे पास । कट से पकड़ै जौन बोबा बतावय ।

मामा - दादू

दादू - हाँ चाचा

मामा - इ मुन्ना के कारण बहुत मान सम्मान मिला । ई हरिकेश और ओकर बेसहूर बीबी बड़ी रूपिया के घमंड में रहत रहिन । मुन्नवा सारा घमंड निकाल देहेस । अब सुबह- शाम तोहरे चाची के सेवा करत हई । इ कमिश्नर साहब ऐतना बड़ा आदमी हयें , ओ चाहें तो हमार और हरिकेश दुइनों के नौकरी खाई जाय । हमका सर... सर कहेन । ओनकर पत्नी हमार पैर छुएन और कहेन , “ बाबू जी हमें आशीर्वाद दें ।

ऐसन बड़े बँगले में मुन्ना रहेगा । बाहर नाम लिखा होगा , “ अनुराग शर्मा ” । उर्मिला और शर्मा जी के तपस्या फलित होई गय ।

दादू - चाचा ई बात त बा । पूरे डेबरा में अंदोर बा । हमहूँ रहिबै चाचा ऐसन बँगला में जब मुन्ना भैया के मिले । चाचा तूहूँ आए । हम - तू संगै बँगला के बगीचा में बैठब । चाचा , बहुत जोर बा मुन्ना के । एसडीएम करछना, जय नारायण के पास गए हम काम से । मुन्ना के नाम और ओनकर एक सीनियर हयें अमर गुप्ता सर , एसडीएम बाराबंकी ओनकर नाम बतावा
चाचा तुरंतै काम केहेन एसडीएम साहेब और कहेन , “आते- जाते रहा करो । ” कुंडली गुरु तपा अफ़स्सर बा चाचा । हम खुद सुना पूरी रात मुन्ना ओनका पढ़वात रहा । ओनहीं के जीप लेहे बुआ धूमत रही और बाबू से मिलै गाँव गै रही । गाँव में घुसतै जीप सायरन मारै लाग , कुल गाँव इकट्ठा होई गवा ।

मामा - दादू बड़ी समस्या है । हम करी का । हरिकेश बेवकूफ़ से कितना कहत रहे दुई साल से , कर लो शादी मुन्ना से । तब उसका दिमाग़ आसमान में था । उससे ज्यादा उसकी बीबी का था । तब दोनों परानी मुन्ना में कमिये- कमिये बतावत रहेन - गरीबी बा , मकान गल्ली में बा , शर्मा जी क्लर्क हैं , कौनों

हैसियत नाहीं बा , मुन्ना हिंदी माध्यम के बा , ओका अंगरेजी नाहीं आवत /
तब कर लिया होता तो आज यह दिक्कत न होती / आज बादशाह होते / अब
मुन्ना का नाम दिन- प्रतिदिन बढ़ रहा / हर रोज़ बधाई देने वाले बढ़ते जा रहे
/ जैसे- जैसे नाम बढ़ रहा लोग और आ रहे बियाह बरे / हरिकेश के पास
रुपिया चाहे जितना होय , हयें तौ एक इंजीनियरै / अब कहाँ कमिशनर साहेब
और कहाँ हरिकेश....

दादू - चिंता न कर चाचा / आप आज तक जौन- जौन काम हाथे लेह सब
पूर्ण केहे ह / इहाँ होये /

मामा - दादू , इ मुन्ना भी आसान नहीं है / तू बतावत ह कि कौन- कौन
ओकर चेला बनत हए / अब दिमाग़ ऊ सब भी देझहिं / ई बियाह हमका अब
शर्मा जी और उर्मिला के हद से बाहर जात देखात बा / एक लाइन मुन्ना बोल
दे , “ हरिकेश की लड़की से शादी न करब “ / बतावअ का करब तब / दादू ,
हमका काम मुश्किल लागत बा /

दादू - चाचा , बाबू बहुत जोर दैके कहे हयें, आप हड्डबड़ा न / बुआ बाबू के
बहुत झज्जत करत ह / एक बार बाबू बस कहिं देय कि , “उर्मिला बिटिया हम
मुन्ना के बियाह हरिकेश के इहाँ तय के दिहा “ / बस बात बन जाए / इंतज़ार
करअ आप / विधि के विधान होए त काम बने चाचा /

चाचा चली अब /

मामा - बाबू ऐसन कहि दई तब त /

दादू - धीरज रख चाचा / बाबू ई बियाह के पक्ष में हयेन /

मामा - कब अऊब अब /

दादू - परसो सबेरे- सबेरे आऊब / चिंता न कर हम मोर्चा सँभाले हई /

दादू निकला साइकिल की पैंडल पर वार करते / वह जल्दी में था पहुँचने के
/ रास्ता पार करना उसके लिये मुश्किल था / वह कोई बात अंदर रख ही
नहीं सकता था /

इलाहाबाद में एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले के बीच की दूरी कुछ ख़ास ज्यादा होती नहीं । तब भी दादू को मेरे मामा और मेरे घर के बीच की कुछ किमी की दूरी बहुत ज्यादा लग रही थी । वह साइकिल तेज चला रहा था , वह जल्दी पहुँच कर पूरा वृतांत सुनाना चाह रहा था । उसको मेरे चयन के बाद एक नया जीवन मिला था । वह भी बेचारा था । उसके घर के हालात ख़राब तो नहीं कहूँगा पर बहुत अच्छे न थे । ज़मीन- जायदाद तो थी पर अब खेती - बड़ी से होता क्या था । वह मेरे साथ ही पढ़ता था हलाँकि मुझसे एक साल बड़ा था । पर परीक्षा देकर कोई नौकरी प्राप्त करना उसके बस की बात नहीं थी । उसका भी विवाह मेरे नाना ने दहेज के लालच में पिछले साल कर दिया था । मेरे गाँव - तहसील - क्षेत्र में दहेज एक बड़ा निर्धारक कारक होता है विवाह के विनिश्चय में । मेरे पिता , मेरे मामा , हरिकेश मामा आदि .. आदि सभी में यह सिद्धांत लागू हुआ है । हरिकेश मामा को मेरे मामा एवम् नाना ने दोनों ने दो साल पहले यह प्रस्ताव दिया था कि आप मुन्ना से बेबी का विवाह कर दो । इसके भी पीछे दहेज ही एक कारण था । मेरी माँ और पिता से नाना ने कहा था कि इस पर विचार कर लें । मेरी माँ के लिये नाक का सवाल सबसे बड़ा होता है । वह हमेशा कहती थी मैं स्वाभिमान की सफेद चादर लेकर अंतिम गति को प्राप्त करना चाहती हूँ । इस मान्यता की महिला कैसे प्रस्ताव स्वीकार कर लें जब तक इच्छुक व्यक्ति घर आकर अनुरोध न करें । मेरे नाना ने कहा था , ” उर्मिला अगर तू पचे तैयार ह त बात हम चलाई । ईरिश्ता ठीक बा । “

मेरी माँ को यह बहुत अखर गया कि उसको नीचे रखकर बात चलाई जा रही है । उसने कहा भी था , “ ऐसा कहा जा रहा जैसे कि हम गर्जियान हई उनके इहाँ बियाह के बरे । “

उसने कह दिया कि अभी वह पढ़ रहा है । अभी वक्त विवाह का नहीं है । पर मुझसे विवाह की विचारधारा मेरे नाना- मामा की थी न कि हरिकेश मामा की । वह बराबर कहा करते थे मुझे आईएस लड़का ही चाहिये । मेरी माँ कहती थी , “ ओनकर चाहत नाजायज त बा नाहीं , रूपिया के माई पहाड़ चढ़ै । “

यह प्रस्ताव मेरे नाना ने विशुद्ध दहेज के लालच में दिया था । एक पिता के रूप में अपनी बेटी के भले को ध्यान में रखकर यह प्रस्ताव दिया था । वह चाह रहे थे कि दहेज मिल जाएँ तो उर्मिला का जीवन थोड़ा आसान हो जाए । वह बगैर दहेज के अपने घर में कोई विवाह नहीं किये थे तब मेरा विवाह एक

अपवाद कैसे हो सकता था । उनकी इसी लालच का दाढ़ू शिकार हो गया था । दहेज के लालच में शादी कर दिये थे उसका । वह कहता भी था मुझसे ,” हमका मिला का सिवाय ज़िम्मेदारी के । दहेज के रूपिया तो ओलै गए । “

मेरे मामा गाँव की ज़मीन में हिस्सा बाँटना चाहते थे जो मेरे नाना बाँटने को तैयार नहीं थे । यह एक घर में आपसी मनमुटाव का कारण था । मेरी माँ तो जैसे हर जगह न्याय का ठीका लिये हुये है । वह मेरे पिता के रोकने के बाद भी इसमें कूद गई और कहने लगीं कि जब तक बाबू जीवित हैं कोई हिस्सा नहीं बटेगा । उनके बाद जो होना होगा । नाना से ज्यादा तीव्र स्वर उसका होता था । इसीलिये मेरी मामी कहती थी कि बहिन- बिटिया के अपने हृद में रहइ चाही । उर्मिला हृद पार कर देती है । उससे क्या मतलब है अपना काम देखे । वह तो अपने यहाँ बाँटवारा करा ली और यहाँ रोक रही है । मेरी माँ का तर्क था कि मैंने ससुर के गुजर जाने के बाद हक लिया अपना । इसमें पूर्ण नहीं आंशिक सत्य है । वह जब बाबा जी ज़िंदा थे तबसे कहना आरंभ कर दी थी । मेरे पिता चाहते थे कि गाँव की ज़मीन छोटे भाइयों को दे दी जाए । उनके हालात बहुत ख़राब थे , पर मेरी माँ नहीं मानी । वह अपना हक- हकूक बना रहे इसलिये हर गर्मी की छुट्टी में तीन महीने गाँव रहती थी और वक्त- बेवक्त जाती रहती थी । ईश्वर मेरे लिये आज का निर्माण कर रहा था । वह तीन महीने मेरे कठोर अध्ययन के होते थे । मेरे बाबा को पढ़ाने का बहुत शौक़ था । अपने वंशजों में मैं उनको काबिल प्रतीत हुआ और उन्होंने सारी ताक़त मेरे में झोंक दी । मेरी भाषा का आज जो भी स्तर है वह उनकी ही देन है । वह भाषा और गणित पर बहुत ज़ोर देते थे । वह भाषा की अशुद्धि तो बर्दाश्त ही नहीं कर सकते थे । मेरी आज जो भाषा है वह मैं अपने स्कूल में ही प्राप्त कर गया था । इसमें उनका बहुत योगदान है । मेरे माँ की हक्क लड़ाई मेरे जीवन के लिये बहुत महत्वपूर्ण साबित हुई ।

मेरी माँ के दबंगई के क्रिस्सों से एक पूरा अध्याय लिखा जा सकता है । मैं कक्षा चार में पढ़ता था । मैं अपनी माँ के साथ तहसील से अपने गाँव पैदल जाता था , ज़ब भी गाँव जाता था । एक बार मैं अपनी माँ के साथ गाँव पहुँचा । वहाँ पर गाँव का एक व्यक्ति अपनी पत्नी को निर्दयता से मार रहा था और गाँव के लोग तमाशा देख रहे थे । मेरी माँ ने हाथ का झोला वहीं सड़क पर मुझे पकड़ा दिया । उसी आदमी के घर की खपड़ेल से एक बाँस खींचकर निकाल लिया और उसकी धुनाई चालू कर दी । वह भागने लगा सहसा मेरे माँ के आकरण से । मेरी माँ ने गाँव वालों को भी बहुत लताड़ा यह कहते हुये कि एक सिरफिरा आदमी एक कमजोर को मार रहा और तुम सब तमाशा देख रहे हो , लानत है ऐसी ज़िंदगी पर । मेरी माँ ने यहीं पर मामला नहीं छोड़ा उसने कहा अभी पुलिस बुलाती हूँ इसको गिरफ्तार कराती हूँ । मेरे परिवार पर

सरस्वती का थोड़ा वरद-हस्त था , इसलिये लोगों को लगता था कि लिखा-पढ़ी में फँसा देंगे हमको । एक नायकत्व मेरी माँ ने प्राप्त कर लिया और उस आदमी की सारी गुंडागर्दी ख़त्म हो गई । मेरा गाँव गरीबों का गाँव था , मेरी माँ के इस साहस के बाद उसकी सेवा में गाँव की महिलाएँ आने लगी थीं और उसको खेती - बाड़ी के काम में सहायत हो गई थी । वह मेरी माँ से पिटा हुआ आदमी कभी अपना हल ठीक कराने लोहार के यहाँ गया था । लोहार ने पूछा कौन आया है ? लोहार की पत्नी ने कहा , ” ओहै जेका तोहार उर्मिला भौजी बलभर धुनें रहिन । “

ऐसे जुझारू व्यक्तित्व से यह उम्मीद करना कि वह कहेगी , ” आवा हम मरत हई अपने बेटवा के बियाह बरे “ , एक नादानी थी ।

दादू को लगता था कि बुआ के साथ रहने में दो फ़ायदा है एक - गाँव की ज़मीन न बाँटी जाए इसमें मदद होगी और दूसरा मैं उसके काम आऊँगा । वह तहसील में घूम- घूम कर कुछ- कुछ काम कराने लगा था वह अमीन-लेखपाल- कानूनगो स्तर पर काम कराता था । इस स्तर के काम के लिये मेरा , चिंतन सर , अमर गुप्ता का नाम ही काम कर जाता था । वह बोलने की कला में माहिर था , यह एक अतिरिक्त गुण था उसके पास । आजकल वह शालिनी सीमेंट , शालिनी स्टील के डीलरशिप के चक्कर में था । वह मेरे साथ दिल्ली जाना चाहता था और चिंतन सर कह दिये थे कि इसको आहूजा के यहाँ स्थापित कर देते हैं । इस बैकग्राउंड में वह मेरी माँ के और नज़दीक आने का प्रयास कर रहा था , हलाँकि वह नज़दीक था उनके ।

उसके आते ही घर में खुशी फैल जाती थी । मेरी माँ का पैर छूकर वह मेरे पास आया । वह आकर बोला , “ मुन्ना भैया हमार अब जीवन कटि जाए । हम हज़ारी के नक़ल निकलवावा । ओकरे बाद गाँव के कई और लोगन के काम करावा । काल थाने ग रहे । हम दरो़गा साहेब के सलाम मारा । दरो़गा तोहका पूछत रहा । हम कहा कि भैया गाँव बहुत कम आवत है । ऊ कहेस जाब साहेब से शहर मिलै । हमका आहूजा साहेब के इहाँ रखवाय द । शक्ति मटीरियल जानसेनगंज वाला ओनकर डिस्ट्रीब्यूशन का काम देखत ह । करछना में कौनो बरांच बा नाहीं । उहै मिल जात त काम बनि जाए । हमार गरीबी कुछ कम होई जाए । “

मैं- दादू किससे कहूँगा मैं ? कैसे होगा ?

दादू - भैया हमका दिल्ली लै चला । कुंडली गुरु लहाई देहिं सब । आहूजा बा त आदमी तोहरै । कुंडली गुरु तोहरेन माथे घुसेन हैं ओकरे भीतर ।

मैं पढ़ना चाहता था । मैंने कहा जाओ अपने बुआ को साधो । आज दो दिन से कोई समाचार मिला नहीं है । पहले उनकी आत्मा शांत कर दो ।

दादू चला गया । मैं सोचने लगा किस राजनैतिक प्रपञ्च में फँसता जा रहा मैं । यह सब मेरे बस का काम है नहीं । उधर पंचौरा शुरू हो गया ।

दादू - बुआ बहुतै तगड़ी राजनीति चलत बा । हमरे पर चाचा शक के हेन । एकदम सही प्वाइंट पे पहुँच गयेन । सीधै कहि देहेन कि तू उमिला से बताय के त गाँव नाहीं गवा रहे । हमहूँ बुआ कच्ची गोली तो खेले नाहीं हई । ओ रामेश्वर प्रसाद मिश्रा के बेटवा हयें तो हमहूँ नाती हये । हम साफ़े इंकार कै दिहा । छोटकऊ चाचा के गवाह बनाई देहे हई । जातै ओनके गोरुअन के चारा-पानी किहा । ओनके भैंस के दूध दुहा । चाचा - चाची के इहाँ के हाल बतावा । चाचा ओनसे पूछिहिं ज़रूर । हम काम पक्का कै देहे हई । हम इहाँ आई रहे तोहरे और मुन्ना भैया के अलावा केहू के पता बा नाहीं । काम बिल्कुल परफेक्ट बा । अब हमार नीति कहत बा कि तू मुन्ना भैया के कुंडली न देहू न ओनका , नाहीं त कुंडली के बहाना मारि के कमिशनर साहेब वाली शादी रद्द कै देझिहिं और हरिकेश वाली पर ज़ोर देझिहिं । चाची बिल्कुल धन्नै पड़ी हई हरिकेश मामा के इहाँ के बियाह बरे । चाचा येन- केन- प्रकारेण बियाह करावा चाहत हई ।

माँ - मुन्ना की कुंडली है ही नहीं । ऊ पैदा भवा रहा तोहरे इहाँ गाँव में । केऊ घड़ी देखबै नाहीं केहेस । टाइमै नाहीं पता बा कि कब ओकर जन्म भवा ।

दादू - तब बुआ कुंडली कैसे मिलउबू?

माँ - चिंतन कहत हये कि मुन्ना के आचार- विचार से बनाय देब कुंडली ।

दादू - पर बुआ उ त सही कुंडली न होये ।

माँ - अब जौन बा तौन बा । अब इतनी पुरानी बात होई गै , हम का करी । इ बेचारा पैदा भवा केऊ घडियऊ नाहीं देखेस । आज सब दौड़ा पड़ा हयें एसे मिलै के बरे ।

दादू - बुआ तोहार केतना मन बा हरिकेश मामा के इहाँ बियाह करै के ।

माँ - दादू , इ मुन्ना कोई जनावर बा का । मनचाहा डैना गले में बाँध दिहा । उ पढ़ा- लिखा लड़का बा । हमै पहिले ओकर क़ीमत नाहीं पता रही । अब देखत हई न । जे केऊ आवत ह ऊ ओकर गुणगानै करत ह । अब ऐसे लड़का के लड़की ओकरे जोड़ के मिलै चाही । अब हरिकेश के बिटिया होई या केहू और के , होई चाही मुन्ना के जोड़ के । हमै लड़की चाही मुन्ना के लायक , अगर हरिकेश के बिटिया होए त ठीक बा , बाबुव चाहत हयें कि बियाह उहीं होई जाइ पर लड़की के बारे में त केऊ बतजत नाहीं बा ।

दादू - बुआ ई बात त बा । इहाँ बस दहेजै के बात होती बा । चाचा बाबा भैया के वियाह दहेजै के चक्कर में केहेन ।

माँ - बाबा और मुन्ना के का जोड़ । एक हीरा एक कौड़ी । बाबा के बस के कुछ नाहीं बा । ओ बस एलएलबी पास कै लेई और काला कोट पहिन लेई

दादू - पर चाचा माल त दुहि लेहेन ।

माँ - ओनकर पेट कभौ न भरे ।

जैसे ही दादू मेरे मामा के पास से चला एकान्त में मामा का दिमाग़ तेज गति से काम करने लगा । मामा ने पहली चाल चल दी । एक ऐसी चाल जिसका काट आसान न था । मामा सीधे हरिकेश मामा के यहाँ सुबह - सुबह चल दिये ।

मामा - हरिकेश ऐसा करो आप अकेले जाओ शर्मा जी के पास , किसी को न ले जाओ । मामला लेन- देन पर अटका है । हमारे सामने लेन- देन की बात हो नहीं पा रही । शादी उनको करनी ही है , गरीबी है ही उनके यहाँ , यह सबको पता है । उनको यह नहीं समझ आ रहा बात कैसे आगे बढ़े । हमारे सामने पैसा माँगने में हिचक आ रही है । मेरी सलाह है कि आप खुद जाओ और पैसे की बात करो । यह बात आपके और शर्मा जी के बीच हो । यह तुम हमको भी न बताओ ।

हरिकेश मामा - पर जीजा , हम आपसे कुछ कभी छिपाय सकित ह का ? आज तक छिपावा नाहीं ।

मामा - यह वक्त बहुत कठिन है । उनके पास लोग आ रहे । सब रूपिया ही लेकर आ रहे हैं । बहुत बड़े- बड़े लोग आ रहे हैं । अभी तुमको एहसास नहीं है कि कितने बड़े- बड़े लोग आ रहे । अगर मैं बता दूँगा तब तुम भी घबड़ा जाओगे । जितनी जल्दी हो यह शादी तय करो । शर्मा जी को लग रहा कि कुछ पता नहीं रूपिया कितना मिलेगा । खुल कर बात करो , दिल खोल कर बात करो और आज शादी तय कर लो । बाद में समय- सुदिन निकाल कर बरीक्षा इसी महीने करा देंगे ।

हरिकेश मामा की पत्नी मेरे मामा के पैर पर ही लेट गई । जीजा जी सारा दुःख- दर्द हर लिये आप । इसी महीने की 27 तारीख को बहुत अच्छा सुदिन है , उस दिन बरीक्षा कर देंगे । अगर शर्मा जी कहेंगे तब हम ई घर उनको दे देंगे और 27 तारीख के पहले ई घर खाली करके हम अपने दूसरे घर में चले जाएंगे । इसमें वह लोग आकर रहें । जो भी माँगेंगे हम सब देंगे ।

मेरे मामा के होश ही उड़ गये । इतना बड़ा मकान बरीक्षा में ही दे देंगे ।

मामा ने कहा , सँभाल कर बात करना । ऐसा न हो बहुत बड़ा मुँह खोल दें ।
हरिकेश मामा की मामी - जीजा जी हमका मुन्ना चाही , क्रीमत चाहे जो हो ।
हमार दुई बिटिया हर्दय हर्द । बा सब ओनकर ही , पहिले लै लेई या बाद में
लेई । बस मुन्ना हमका मिले , यही हमारी खाहिश है । जीजा जी ... आपौ
चला जा । आपै कहिं देई ई मकान बरीक्षा में हम देबै । बाकी चाही और जौन
कहिहि उर्मिला दीदी या जीजा जी । हम सब तरह से तैयार हई ।

मामा - हरिकेश को अकेले जाने दो । ईश्वर ने नियत किया है सबका भाग्य ।
अगर मुन्ना और बेबी का नियत है तो वहीं होगा ।

हरिकेश मामा की मामी - जीजा जी हम आपके आह्सान से कभौं ऊपर न
पऊबै ।

मामा वहाँ से विदा लेकर चल दिये । मामा की यह पहली चाल थी । मामा की
अब दूसरी चाल

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 119

हरिकेश मामा के घर में खुशियाँ ही खुशियाँ । वह एक समाजिक प्रतिष्ठा
प्राप्त करने को अधीर हो रहे थे । उनको ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह
इंच दर इंच अपने लक्ष्य के नज़दीक आ रहे हैं । उन्होंने अपनी बेटी को गौर
से देखा और अपनी पत्नी से कहा जब लगातार दो बेटियाँ पैदा हुई थीं तब तुम
कितनी दुःखी हुई थी कि बेटा नहीं हुआ । एक बेटा कम से कम हुआ होता ।
हमारा वंश चलता । हमारा नाम रोशन होता । पर आज हमको लग रहा कि
बेटियाँ हुई कितना अच्छा हुआ । जीजा जी के बेटों की तरह ही बेटा हमारा भी
हो गया होता तब ? इतनी धन - संपदा परमेश्वर ने दी थी , बेटे के बिगड़ने
की संभावना तो थी ही , हमारे लाड़- प्यार में । सबके नसीब में अयोध्या
कुमार ऐसे बेटे कहाँ होते हैं । यह मुन्ना ऐसे बेटे तो बिरले पैदा होते हैं । वह
सिर्फ आईएएस ही नहीं है वह एक बहुत ही सुसंस्कृत तथा पढ़ा- लिखा
लड़का है ।

उनकी पत्नी ने कहा , ईश्वर की सब माया है । हमको ऐसा बेटा मेरे गर्भ से
नहीं बेबी के माध्यम से प्राप्त होना था । यह बेबी हमारे सम्मान में अभिवृद्धि

के लिये हमारे यहाँ जनी हैं। हमको मुन्ना ऐसा बेटा बदा था। उर्मिला दीदी ने हमारे लिये पाल-पोस कर इतना काबिल बनाया। उनकी ऐसी काबिलियत कहाँ है हर किसी के पास। उर्मिला दीदी के तरह दबंग होगा मुन्ना भी। बड़ा दबंग अफ़सर बनेगा। जीजा सब पर भारी हयें सब ओनसे डर कर रहित हिं, सिवाय उर्मिला दीदी के। अब मुन्ना-बेबी हमारे आँखों के सामने रहेंगे। यह घर जैसे उनके लिये ही बनवाया गया हो।

हरिकेश मामा - अभी त बहुत बहुत तारीफ़ करते हज़। ऐसन तेज रसूखदार समधिन सँभालब आसान न होये।

मामी - हमें का मतलब समधिन से। बियाह होई जाए ओकरे बाद कार्य-प्रयोजन में मुलाक़ात होये। कौन समधी-समधिन से रोज-रोज मुलाक़ात होत बा।

हरिकेश मामा - मामी ने बेबी के सपनों को भी पर लगा दिये थे। उसकी भी उम्र ख्वाबों के तासीर बदलने की थी ही। उस बदल रही तासीर की ताबीर मिले, इसकी पूरी कोशिश हरिकेश मामा कर रहे थे। पर यह सारा परयास बेबी को अच्छा पति मिलने की इच्छा से अधिक एक सामाजिक प्रतिष्ठा की प्राप्ति का था। इलाहाबाद शहर के नव धनाद्य इन आईएएस लड़कों से विवाह के लिये बहुत उत्सुक रहते हैं। यह विवाह उनको रातो-रात एक सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान कर देता था और इन चयनित लड़कों के घर वालों को अतिशय धन।

सरस्वती के वरदान प्राप्त पुत्रों का लक्ष्मी की कृपा पात्र व्यक्ति द्वारा करय शायद एक बेहतर अभिव्यक्ति है, इन विवाह-संबंधों की व्याख्या का। मैंने अपने से पहले के चयनित ज्यादातर लोगों को इस बाज़ार में बिकते ही देखा है, वह भी सरेआम और पूर्ण निर्लज्जता के साथ। चिंतन सर कहा करते थे इनमें से ज्यादातर को बिकना ही है चाहे बाज़ार विवाह का हो या नौकरियों में काम-धाम का। इनका जन्म ही बिकने के लिये हुआ है। यह संघ लोक सेवा आयोग इंटरव्यू में इनकी बिकाऊ प्रवृत्ति को ही नहीं पकड़ पाता काहे का व्यक्तित्व परीक्षण करता है। यह पूरी परीक्षा प्रक्रिया ही एक तरह का धोखा है।

हरिकेश मामा ने कामधेनु स्वीट से बलभर मिठाई ख़रीदी। सिविल लाइंस चौराहे के फल वाले से झांपी दर झांपी फल का अंबार खड़ा करवाया और उस पुरानी बोसीदा गली की निरीह साइकिलों को धकियाते घर पहुँच गये। इतना बड़ी मात्रा में फल-मिठाई देखकर मेरे घर में अचंभे का वातावरण

व्याप्त हो गया । जो लोग आते थे वह मिठाई लेकर प्रायः आते थे पर इस तरह भौंडा प्रदर्शन कम हुआ था ।

हरिकेश मामा कन्या की कुंडली ओर फ़ोटो लेकर आये थे और आते ही वह मुद्दे पर आ गये ।

हरिकेश मामा - जीजा जी आप हमरे मानदान के मानदान हये । ई लड़की घर की ही है । सबने देखी है । उर्मिला दीदी ने भी बाबा के व्याह में ठीक से देखा है । मुन्ना ने मेरे ख्याल से कभी न कभी देखा ही होगा, जीजा के यहाँ के पारिवारिक कार्य- प्रयोजन में । मुन्ना- बेबी आपस में बातचीत कर लें, यह भी ज़रूरी है । मेरे हिसाब से जोड़ी बहुत अच्छी है । यह फ़ोटो - कुंडली दे दे रहा हूँ । हमारे जीजा जी ने बताया कि मुन्ना की कुंडली है नहीं । आप कहें तब हम बनाय के मिलवाय दई वैसे बेबी के कुंडली से पति बहुत प्रतापी होगा ऐसा बताया गया है । अब आज मुन्ना से बड़ा प्रतापी कौन है ।

पिताजी - ठीक बा । ज़रा हमका भी समझ लई द । जब भी हम फैसला लेब तोहरे प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार करब । उर्मिला के बाबू आपके सिफारिश ज़ोर दै के करे हयें ।

हरिकेश मामा - हम विवाह में घर, विवाह का खर्च, मनचाही कार, घर-गृहस्थी के एक-एक सामान संकल्पे हई । ओकरे ऊपर और जौन आदेश होई । सारा आदेश पालन होये उहौ खुशी- खुशी । अब मुन्ना के प्रतिष्ठा बनि गई बा, परिवार से सुपात्रता जगज्ञाहिर बा तब सारे मानिंद लोग ही अझिं । पर जीजा जी हमका आप केहू से कमज़ोर न पज़बअ बल्कि हम बीस पड़ब । हमका आशीर्वाद और आदेश दुझनौ द ।

पिताजी - ई शादी घर- परिवार में जाने समझे लोग के बीच हो रही है । यह सब मुद्दा कोई दिक्कत नहीं करेगा ।

हरिकेश मामा - जीजाजी आप चाहें तो हमारा तैयार मकान ले लें जिसमें हम रह रहे और चाहें तो नया । आप जो भी चाहें ।

पिता ने माँ को आवाज़ दी और कहा हरिकेश आये हैं । ज़रा एनहूँ के सुनि ल ।

माँ आ गई ।

हरिकेश मामा ने वही बात दोहरा दी ।

माँ - भैया , कतौ त कतौ त मुन्ना के बिहाय होई बै करे । अब इहाँ संयोग होये त इहई होई जाए । बाबू और भैया तो हमसे दुई साल पहले से कहत हएँ । पर तब तू कभी नाहीं आए । हम सोचा कि तोहका लगा होए कि मुन्ना बेबी के जोड़ के नाहीं बा ।

हरिकेश मामा को माँ ने एक ही वार में चारों खाना चित्त कर दिया । किसी को लड़ना सीखना हो तो मेरे माँ से सीखे । उसको भिगो- भिगो कर मारना बहुत आता था । वह अपने संघर्षों, अपने जीवन चरित्र से एक उपन्यास की नायिका बनने का हक्क रखती है । मैं तो किसी भी कथा का एक सामान्य नायक ही बन सकता हूँ । वह अपने परिवेश में लिखी किसी के भी ऊपर के कथा की एक असामान्य नायिका बनकर सारे नायकों को आच्छादित करने की क्षमता रखती है ।

माँ - एक बात त हकीक़ित बा भैया । मुन्ना सरकारी स्कूल के पढ़े बा और तोहार बिटिया बा एसएमसी के । मुन्ना के अंगरेज़ी नाहीं आवत और इ स्वीकार करय में हमें कौनो एतराजौ नाहीं बा । अब इ अंगरेज़ी- हिंदी के मेल होई पाए कि नाहीं इहउ एक बार विचार ल । तोहार बिटिया अंगरेज़ी में पढ़े-लिखे बा और ओका महारत होए अंगरेज़ी में । अब जौन नफ़ासत ओकरे पास होए ऊ त मुन्ना में होई नाहीं सकत । जब बाबू दुई साल पहिले हमसे कहें रहेन तब हम इहै बाबू से कहे रहे । इहै विचार करि के शायद तोहार तब मन मुन्ना से बियाह के न रहा होये । इ बात ठीकौ बा । अब लड़िका- लड़की के जोड़ न बनै त रिश्ता करब ठीक नाहीं होत बा । तू सिफ़ आईएएस के नाम पर न जा । लड़िकन - बच्चन के जोड़ौ देखअ ।

हरिकेश मामा के हाथ से तोते उड़ गये । यह तो संवाद उनकी कल्पना से बाहर था । वह इसके लिये तैयार न थे । यह तो सिलेबस से बाहर का सवाल पर्चा में आ गया । यह सवाल उनसे हल ही नहीं हो रहा और परीक्षक कह रहा पहले यही सवाल हल करो , तब अगला प्रश्न पढ़ने दूँगा ।

माँ ने जूते को माठे में भिगो-भिगो कर हरिकेश मामा को ऐसा मारा कि दर्द तो हो पर जूते की उपटन गालों पर न हो । उसका वह दर्द छलक रहा था जो पिछले दो सालों का था जब नाना- मामा कह रहे थे और यह कहते थे वह लड़का बेबी के लायक नहीं है । एक माँ ने जिसने अपने पूरे जीवन का कर्म अपने पुत्र को सुपुर्द कर दिया हो अपनी सद्गति की आकांक्षा को त्याग कर वह कैसे बर्दाश्त कर सकती थी वह संवाद जो उसके पीठ पीछे होते हुये

उड़कर उसके कानों तक आकर कर्ण से बेचैनी को मस्तिष्क में प्रवाहित कर रहा हो और वह भी उसके आत्मसम्मान पर चोट करते हुये ।

हरिकेश मामा - बहिन हम कबहुँ नाहीं कहा कि मुन्ना बेबी के लायक नाहीं बा / ई त उ कन्या के सौभाग्य होई जेका मुन्ना ऐसन पति मिले / अब हमार इच्छा बा कि ई सौभाग्य हमरे बेबी के होई जाए / हमसे जब कहा गवा तबहि से हमार और हमरे पत्नी के मन मुन्ना बरे बनि गवा रहा पर लड़िका के पढ़ाई में कौनो बाधा न होई एह बरे हम इंतज़ार करब बेहतर समझा / आप पूछ लई , हम इहई बाबू से कहा , इहई दीदी से और इहई जीजा से ।

माँ - भैया आप कहि देह बात आपन / बाबू- भैया- भौजी सब चाहत हयें / हमहूँ घरेलू लड़की चाहत हई / हम ज़रूर विचार करबै इ रिश्ता पर / मुन्ना कुछ बोलत नाहीं पर हमार फ़र्ज़ बा ओकर राय- मशविरा लै लई / जीवन तो ओका जियै के बा / हम - तू त बियाह कै के अलग हटि जाब / अगर ओका लड़की पसंद आई जाए तब आपत्ति केहू के का होई सके / परिवार त जाना समझा हइये बा ।

हरिकेश मामा प्रणाम- नमस्कार- अभिवादन करके चले गये ।

दादू ने अपना काम कर दिया / वह जाकर सारा समाचार दे आया / हलाँकि यह समाचार माँ से पूछ के दिया था / माँ ने कहा था कि यह बात तो उनको हरिकेश बताएँगे ही , तोहार मन बा त तुहिं बताय द ।

मामा शाम को आये , उन्होंने आते ही पूछा कि हरिकेश ने क्या कहा ।

माँ ने सब कुछ जैसा हुआ था बता दिया / यह भी कहा कि जब आप और बाबू दुई साल पहले कहत रहे तब त ओनके कानों में जुआँ नाहीं रेंगी ।

अब त एकौ दिन चैन नाहीं पड़त बा / ओनकर बस चलै त कालै बियाह होई जाय ।

मामा ने कहा कि यह रिश्ता सर्वथा योग्य है / ऐसा रिश्ता, ऐसी घरेलू लड़की, लोकल विवाह , धन- सम्पदा से भरपूर घर , दिलदार आसामी , आगे भी ध्यान देने वाला परिवार सब एक साथ नहीं मिलेगा । हमार राय बा कि आप एका मान ल / बाबू भी राय देहें हये / यह रिश्ता हाथ से निकल जाए तब ऐसा रिश्ता दूसरा नहीं मिलेगा , हलाँकि रिश्ते बहुत से अच्छे- अच्छे आएँगे पर सर्व- सम्पन्न और हर तरह से उपयुक्त रिश्ता आसानी से नहीं मिलता ।

माँ - भैया हम सब समझत हई पर ऐतनौ का जल्दी बा । अब मुन्ना के का उमरै का बा । बेबी मुन्ना से तीन साल छोट बा । कौन उम्र निकल जाति बा । ओनसे कहअ थोड़ा गम खाई जाय । हम जब करब तब ज़रूर विचार करब । हमहूँ लोकल रिश्तै चाहत हई ।

मामा - हरिकेश बियाह के जल्दी में नाहीं हये । ओ चाहत हयें बियाह तई होई जाय बस्स ।

माँ - भैया हम तय त न करब । जब बियाह करब तब ओनकर ध्यान रखबै , पर चाहे जौन होई जाय हम जबान न देब कि जब बियाह करब तब तोहरेन इहाँ करब । इ हम काहे कही । तुहीं बताव इ उचित बा ?

मामा - का ख़राबी बा तय करय में ? तय कै ल । ओनका संतोष होई जाए । घर- दुआर लै ल ।

माँ- हमें कौनो लालच घर दुआर के नाहीं बा । हम बियाह तय त न करब । कल का होये हमका का पता । अबै बियाह जब करबै नाहीं हई तब हम तय काही करी । समय आये तब देखब ।

मामा - मुन्ना के बियाह तय न करबू, इ फ़ैसला कई लेहे हऊ ?

माँ - हाँ भैया ।

मामा को इसी लाइन का इंतज़ार था ।

मामा - उर्मिला आप यही बात हरिकेश से कह दो । वह तय करना चाहते हैं । तुम कह दो हम तय नहीं करेंगे । जब समय आयेगा तब बात करेंगे ।

माँ - ठीक बा भैया ।

मामा शतरंज के खानों को देख रहे थे पूरी सावधानी से । प्यादा चल चुका था । घोड़े को वह ढाई घर चलाकर बाहर निकाल चुके थे । ऊँट के तिरछे खाने के लिये जगह बन गया था ।

यह मामा की दूसरी चाल थी । अब मामा की तीसरी चाल एक सधी हुई चाल

मैंने अगले साल की परीक्षा देने का फ़ैसला कर लिया था । मैंने यह विचार किया कि प्रारम्भिक परीक्षा दे लेते हैं तब तक सर्विस का फ़ैसला हो जाएगा । इसके बाद आगे का निर्णय करूँगा । हलाँकि मेरे घर के लोग - परिचित लोग - इष्ट मित्र यह कह रहे थे कि रैंक ऐसी है कि आईएएस में ही थोड़ा दिक्कत है बाकी की सर्विसेज़ मिल ही जाएगी । आप ज्वाइन कर लो । मैं चिंतन सर का इंतज़ार कर रहा था । उनकी राय मेरे लिये बहुत मायने रखती है । बदरी सर कह रहे थे कि आप मेरे साथ चलो एकेडमी , छोड़ों सारा चक्कर ।

मैं सुबह- सुबह उठा । मेरी आदत ही थी सुबह उठने की , मैं परीक्षा देने के लिये हमेशा ही समय से पहले चल देता था । मेरे जीवन में एक अनुशासन हमेशा से रहा है । मेरी तमाम खामियों को बावजूद इस अनुशासन ने ही मुझे यहाँ तक पहुँचाया है । मैं समय पूर्व उत्तर प्रदेश संघ लोक सेवा आयोग पहुँच गया । एक बहुत बड़ी भीड़ परीक्षा देने आई हुई थी । इस परीक्षा को देना एक राष्ट्रीय शौक है , कम से कम इलाहाबाद में तो ही है । हर कोई कहेगा, “ हम सिबिल देत हई ” “ देब त सिबिलै नाहीं त करब खेती ” । अरे बेवकूफ़ के पेड़ “सिविल “तो ठीक से बोलना सीख जाओ । पर यहाँ तो इलाहाबाद विश्वविद्यालय के यूनियन हाल के सामने एक कुआँ है जिसमें पानी भी नहीं है पर जैसे ही वह कुआँ पार किये उस जल विहीन कुँए के अंदर एक सिविल सेवा परीक्षा की तासीर की हवा निकलती है जो आपको इस परीक्षा से सम्मोहित करा देती है और फिर यही वाक्य आपका सूतर वाक्य , “ देबै त सिविलै देबै ” ।

इसी सिविल सेवा की भाँग का नशा लिये एक बड़ी भीड़ लोक सेवा आयोग के प्रांगण में अपने भविष्य को अपने ही आँखों में नहीं वरन् दूर- दराज़ के परिवेश के भी आँखों में सजाए परीक्षा के पहले द्वार पर ।

इतिहास मेरा वैकल्पिक विषय था । इलाहाबाद की तकरीबन आधी जनता इतिहास ही लेती थी , प्रारम्भिक परीक्षा में । कई लोग ऐसे भी थे जो मुख्य परीक्षा में इतिहास नहीं लेते थे पर प्रारम्भिक परीक्षा में लेते थे । अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान , दर्शन शास्त्र और विधि के विद्यार्थियों ने यह प्रयोग करना आरंभ किया था और सफल भी हो रहे थे पर पिछले कुछ सालों से इतिहास का पेपर बहुत ही कठिन आ रहा था और यह विषय सम्मलना मुश्किल हो रहा था । यह संघ लोक सेवा आयोग की एक स्थापित सी परम्परा ऐसी मुझे लगती है कि जो विषय ज्यादा लोग लेने लगते हैं उस विषय की पिटाई चालू हो जाती है । 1979 के पहले इतिहास बहुत ही सुरक्षित विषय माना जाता था और

वैतरणी पार करने के लिये एक सक्षम गाय । 1980 के आरंभिक वर्षों में भी ठीक था पर 1987 से इस पर आकरामकता आरंभ हो गई थी । यही हाल मानव विज्ञान के साथ था । शुरू में मुख्य परीक्षा में अंक मिल रहे थे पर अब नहीं मिल रहे थे । भूगोल का ज़ोर बढ़ता जा रहा था । इस साल का इतिहास का पेपर बहुत ही कठिन था, लोगों की हालत ख़राब थी । पर मेरी हालत ठीक ही नहीं थी वरन् बहुत ही अच्छी थी । मेरा विषय तैयार पहले से ही था पर जबसे मैंने पुनः परीक्षा देने का फ़ैसला किया तब से मैंने सारा घर- बार छोड़कर अपने ऊपर के कमरे में लगातार पढ़ता रहा । मैं 12 घंटे के आसपास आराम से पढ़ लेता था । मेरे पास एक नवोन्मेषी प्रवृत्ति हमेशा से रही है । मेरी इस प्रवृत्ति का लोगों को आभास नहीं हो पाता था । मैं पाँच -छः दिन बहुत पढ़ता था और उसके बाद के एक दिन का दूसरा भाग मैं नहीं पढ़ता था । मैं उस दिन के दूसरे भाग में धूमता था और अपने प्रतिद्वन्द्वियों की थाह लेता था । यह परीक्षा आप एक अदृश्यमान प्रतिद्वन्द्वी से लड़ रहे होते हो । आपको पता नहीं होता आपके सामने वाले की ताक़त क्या है । सामने वाले की ताक़त जानना भी ज़रूरी होता है । मैं जल की गहराई नापता था उस दिन के आधे भाग में । इससे मानसिक आराम भी मिलता था और प्रतिद्वन्द्वी की थाह का भी आभास होता था ।

मेरी दूसरी रणनीति थी, अपने से बेहतर अभ्यार्थियों के साथ रहने की । मैं अपने से कमज़ोर अभ्यार्थियों को बहुत जल्दी ही छोड़ देता था । मेरे से मजबूत अभ्यार्थी मेरा लक्ष्य हुआ करते थे । मैं दिन- रात उनको परास्त करने की युक्ति तलाशा करता था । मैं जब तक यह संतुष्टि अपने अंदर न प्राप्त कर जाऊँ कि मैं उससे बेहतर हो गया हूँ तब तक मैं संघर्षरत रहता था । यह चिंतन सर, बदरी सर करमशः दर्शन और विधि के विद्यार्थी थे पर मैंने उनको दर्शन और संविधान में पछाड़ने का बीड़ा उठा रखा है था । मैं सफल शायद न हो सका हूँ पर मेरे प्रयत्नों ने मुझमें सुधार बहुत किये । इसी लिये यह सब मेरे सीनियर होकर भी कहते थे, “आसान नहीं है उसको हराना पर बहुत मुश्किल है उसको हरा कर चैन से सो पाना ।”

पहला पेपर वैकल्पिक विषय का देकर मैं निकला, अगले पेपर के बीच में दो घंटे का शैप था । मुझे इन दो घंटों में अपने असीम नायकत्व का अहसास होने लगा । हर ओर एक ही शोर था, “अनुराग शर्मा भी परीक्षा दे रहे हैं ।” यह लोगों को आश्चर्य लग रहा था कि मैं परीक्षा क्यों दे रहा । लोग आपस में ही कानाफूसी कर रहे । अमित चौधरी भी परीक्षा दे रहे थे उसी सेंटर से । वहीं अमित चौधरी जिन्होंने मेरे साथ बहुत बदमिज़ाजी की थी जब मैं उनसे पूछने गया था, जब मैं तैयारी आरंभ कर रहा था । पर आज माहौल कुछ और था । वह खुद मेरे पास आए । मुझे बधाई दी और कहा कि परीक्षा क्यों दे रहे

हो ? आईएएस तो मिल जानी चाहिये ? बाकी तो सारी सर्विसिंज में कोई दिक्कत है नहीं ।

मैं- सर पता नहीं आईएएस कहाँ पर जाकर रुकेगी । मिल भी सकती है और नहीं भी ।

अमित चौधरी आईएफएस प्रथम वरीयता में लिखते थे । वह बोले आईएफएस तो पिछले साल 118 तक गई है । इसमें तो कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिये ।

मैं- आईएफएस नहीं भरा है मैंने ।

अमित चौधरी- क्या भरा है ?

मैं- आईएएस, आईआरएस ।

अमित चौधरी - सुना है कोई आईआईटी के रंजन अग्रवाल हैं जिनकी रैंक 61 है पर आईएएस नहीं भरा है ।

मैं- जी सर, मेरे साथ मेडिकल में थे वह ।

अमित चौधरी - ऐसा क्यों किया ? क्या वह बहुत लालची हैं ? वह करप्शन करना चाहते हैं क्या ?

मैं- सर मुझे नहीं पता । पर वह कह रहे थे कैडर ख़राब होने का डर रहता है इस इनसाइड - आउटसाइड कैडर एलाटमेंट सिस्टम में । अगर गलत काम करना ही होगा तब कहीं भी किया जा सकता है, यह आईआरएस ही क्यों चाहिये उस काम के लिये । यह प्रवृत्ति है जो गलत काम कराती है न कि सर्विस ।

अमित चौधरी अपने मुद्दे पर आ गये । वह बोले मैं विषय बदल कर हिंदी लेना चाह रहा, उसमें आजकल नंबर मिल रहे हैं । मैं सत्य प्रकाश मिश्र सर के पास गया था उन्होंने तुमसे मिलने की सलाह दी है ।

मैं अमित चौधरी का चेहरा देखने लगा । समय इतना बलवान होता है, यह मैंने सुना तो था पर देखा पहली बार ।

मैं- सर आप आदेश करें, मैं हाजिर हो जाऊँगा ।

अमित चौधरी-पेपर के बाद मिलते हैं ।

दूसरे उत्तरार्द्ध में सामान्य अध्ययन का पेपर था । यह भी मैंने बहुत अच्छा किया । मेरे ही पास मेरे मुहल्ले की गीतिका की सीट थी, उसको भी मैंने

कुछ प्रश्न का उत्तर इशारों से बता दिया । मैं सफलता के बाद काफ़ी बदल गया था, इसका अहसास मुझे होने लग गया था ।

मैं वहाँ से यूनिवर्सिटी रोड, होस्टलों के चक्कर लगाता अपनी प्रश्नस्ति गान सुनकर घर पहुँचा तो पता चला कि आज हरिकेश मामा का काम ख़त्म हो गया, कम से कम तात्कालिक रूप से । वह शाम को फिर आये थे और वह चाह रहे थे कि विवाह तय कर लिया जाये । पर मेरे पिता ने कहा, “तय करना उचित नहीं है । मुझे अभी पता भी नहीं कि मुन्ना शादी कब करना चाहता है । वह ज्वाइन करेगा कि फिर से परीक्षा देगा, यह भी पता नहीं है । अगर आपको जल्दी हो तो आप कहीं और प्रयास कर लो । मुन्ना के अलावा भी ब्राह्मण लड़के आईएएस हुये हैं, ऐसा कौन सा मुन्ना में सुखाब के पर लगे हैं ।”

वह जिद करते रहे, मेरी माँ ने देखा कि पिताजी जोड़ा ठीक से नहीं कह पा रहे, उसने साफ-साफ कह दिया कि अगर अभी शादी करनी ही नहीं तब तय करने का कोई मुद्दा बनता ही नहीं ।

हरिकेश मामा ने बात शालीनता से की और कहा कि मेरी अर्जी पर विचार करना । मैं कहीं नहीं जाऊँगा । मैं मुन्ना का इंतज़ार करूँगा, मेरे बेटी के नसीब में अगर वह नहीं होगा और उसका विवाह कहीं आप और कर दें तब हम अपनी बेटी का विवाह करूँगा । माँ ने कहा कि विधाता जोड़ी बनाकर भेजता है, जिससे बनाया होगा उससे ही जोड़ा बनेगा । विवाह की बात समाप्त हो गई । हाल-चाल की औपचारिकता हुई । चाय पिया और भरे मन से मेरे मामा के यहाँ सीधे गये और सारा वृतांत बताया ।

मेरी मामी तो जैसे अटारी से नीचे गिर गई हो, उसको यक़ीन ही नहीं हो रहा था कि इतनी जल्दी यह हो गया । उनको मामा की बिछायी बिसातों की हवा ही न थी ।

मामी - उर्मिला के दिमाग़ आसमान पर चढ़ि गवा बा । ऐसा नीक रिश्ता दुकराई दिहिन । ओनकर आग-आँधियार बा । कौनों गड़दा में गिरिहिं तब समझ में आई । हम त भला चाहत रहे । गरीबी दूर होई जाए ओनकर पर जब नसाबे होत ह तब त ऐसन परभु मति हरि लेत ह ।

मेरे मामा से कहा, सुनत ह अपने बहिन के कारस्तानी । अगर बियाह नाहीं करै के रहा तब पहिले दिन कहि देहे होतन । हमरे भाई के नाहक दौड़ायेन ।

मामा - ठीक तो नहीं किया । का कहिन ?

हरिकेश मामा ने सारा क्रिस्सा एक दूसरे तरीके से फिर सुनाया उस आदमी को जो इस क्रिस्से का लेखक था । मामा ने कहा , थोड़ा धैर्य रखो । हम बाबू से बात करब । देर- सबेर मामला बने , हड्डबड़ा न थोड़ा धीरज रखअ ।

मामी - का बाबू से बात अब करबअ । अब हमार भाई ओनके दरवाजे पर न जाए । बहुत होई गवा । एक पेपरे नाम का छपि गवा सब पगलाई गयेन । कौनो ज़रूरत नाहीं बा बाबू से बात करय के ।

हरिकेश मामा - ऐसन बात नाहीं बा बहिन , जीजा बात बाबू से कै लई । हम त बिटिया के बाप हई , हमार कौन इज्जत चली गई । हमका त दुआरे- दुआरे भटकय के नसीब में लिखा हइय बा ।

हरिकेश मामा चले गये ।

रात में सोते समय मामा ने मामी से कहा कि ऐसी उम्मीद उर्मिला से न रही हमका । उ कौनो लेहाज नाहीं केहेस । हम कहे रहे कि जवाब न दिहू हरिरेश के पर ऊ मानी नाहीं , ओका त तू जनतय हऊ ।

अब एक सलाह द हमका ।

मामी - अब कौन सलाह चाही ?

मामा - इ कमिश्नर साहब के फ़ोटो कुंडली के का करी?

मामी - जा मार द उर्मिला के मुँहे पर और कहि द ल ऐका चबा । हमार सोने एस भाई ओकर एतना अपमान केहेन । ओनकर अस ओकरे इहाँ चपरासी लाग हयें ।

मामा - मोहिता की माँ , गुस्सा न करो ठंडे दिमाग से सोचो । तू हऊ बहुत दिमागदार । ई कमिश्नर हमार माई- बाप बा । काल पूछे कि “कुंडली- फ़ोटो का क्या किया ” ... तब ..का कहब हम ... कौनो दिमाग द

मामी चने के झाड़ पर । मामा ने तारीफ करके क़ाबू पा लिया था उन पर ,
नहीं तो थी वह बड़ी अपरबल ।

मामी - जा दै द शर्मा जी के और अब ओनके ब्याह के चक्कर से हटि जा ।

मामा - ई बियाह होये ना , ई हमहू जानत हई । ऊ लडकिय मुन्ना के रिजेक्ट
के दे । ऊ दिल्ली के सेंट सटीफेस में पढ़त बा । ई मुन्नवा सरकारी स्कूल का
पढ़ा । ई मुन्नवा जेतनै बेसहूर होये ऊ उतनै स्मार्ट । अब कौआ - हंस के
कौनों जोड़ा बन सकत ह का । कौनों चांस नाहीं बा ।

मामी - हमार त जी तब जुड़ाये जब इहै बियाह होइ और उर्मिला बल भर पावैं ।

मामा - तब तोहार राय बा कि हम कुंडली - फ़ोटो कमिशनर के बहिन के
उर्मिला के दै देई ।

मामी - कराय द इहै बियाह । मुन्ना के बँगला में रहै बरे ज़इहिं जब उर्मिला उ
डंडा लै के दौड़ाये तब एनकर दिमाग ठीक होये ।

मामा की तीसरी चाल ... बहुत आसानी से कहला लिया मामी से , जो वह
चाहते थे । उसकी राय न लेते तो वह कच्चा खा जाती कि मेरे भाई के रेस
रहते तू दूसरे के रिश्ता लै के जात हये । ऊँट ने तिरछा मार कर विपक्षी घोड़े
को गिरा दिया था और लक्ष्य के नज़दीक पहुँच गया ।

अब उनके हाथ में घोड़ा हवा में लहरा रहा था , ढाई ओर किस ओर चले ,
दायें कि बायें । अब शह की तैयारी थी । मात में अभी वक्त है ।

मामा मकड़ी की तरह जाला बुन रहे थे । पता नहीं वह क्या चाह रहे थे ।

पूरी रात मामा 420+420 जुड़कर कितना होता है सोचते रहे ।

हर सूरज के छूबते ही वह खेमा बदल देते थे । वह किस खेमे में है इसकी
खबर न इस पक्ष को न उस पक्ष को ।

अब मामा की नायाब चौथी चाल

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 121

मामा की एक पर एक चाल सफल हो रही थीं । वह चालें इस कुशलता से चल रहे थे कि 64 खानों के शतरंज के बोर्ड पर ऐसा लग रहा दोनों पक्ष की मुहरें उनसे ही निर्देशित हो रही हों । दादू ने माँ से कहा, “बुआ कुछ समझि आवत बा नाहीं, ई कमिशनर वाला रिश्ता गोल कै देझिंहि का चाचा । हमका लागत बा, ऐ चाहत नाहीं हयें कि मुन्ना के बियाह कमिशनर के इहाँ होई ।”

माँ - दादू, उ रिश्ता हमरे जोड़ के नाहीं बा । इहाँ मुन्ना के बियाह उचित न होये ।

दादू - बुआ, कमिशनर के हाबा- डाबा, गाड़ी- घोड़ा त आवय द । ऐसे हवापानी बढ़े, बियाह बाद के बात बा ।

माँ को यह बात जँच गई ।

माँ - मतलब ओ रिश्ता के चोरी करत हयें । हरिकेश के खातिर लोगन के रोकत हयें ।

दादू - बुआ, हमका शक बा कि कुछ बड़ा रिश्ता ओनके पास और बा पर हरिकेश मामा रेस से बाहर न होई जाए एकरे कारन छुपाये हये । हैं त पूर नटवरलाल । अब तोहसे जादा अपने भाई के के जाने । बुआ, अगर तू न होतू त गाँव के खेती - बारी बँट गई होतै । हमरे बाबू में कौनों दम बा नाहीं और तोहार बाबू बहुत डेरात हयें ओनसे । अब त बुआ ताकत बढ़ि गई बा मुन्ना के होई जाए से । तू कुंडली गुरु के जीप से गै रहू बाबू से मिलै । कुंडली गुरु के हवलदार मातादीन बहुत होशियार बा । ऊ मार साइरन पर साइरन धौंक देहेस गाँव में । गाँव में अंदोर होई गवा । चाचा के बंसतवा ठाकुर हैरान केरहे रहा । चाचा कहेन मातादीन से । ऊ बसंतवा उहीं जात दिख गवा । मातादीन बोलाएन और कहेस ई कुंडली गुरु के साइरन है । जिस दिन नाम और जन्मतिथि लिख लूँगा, सीधे टिकट कट

जाएगा । बुआ.... ओकर त हूके निकरि गई । ऊ भिंसारे आय घरे और चाचा से सुलह- सफाई के बात करै लाग । चाचा ई क्रिस्सा बड़कऊ चाचा के बताएन । बुआ अब हम उहऊ खेत जोत लेब जौन बारी पर बा । ऐ चाचा कहें रहेन बारी के खेत केऊ न जोते जब तक बँटवारा न होई जाए ।

माँ - झगड़ा - झँझट न करत जा, शांति से काम चलावअ ।

दादू - बुआ , जौन करब तोहसे राय- मशविरा लै के करब / बुआ अगर आज-
कल में ऐ कमिश्नर के रिश्ता न बतइहिं तब कुछ जुगत लगाए परे ।

इतने में मौसी आ गई / हरिकेश मामा के रिश्ते पर “ना ” हो जाने से , वह
बहुत खुश थी / उसको बहुत पीड़ा थी कि उसको दरकिनार कर दिया गया
था / वह बोली , उर्मिला ठीक केहू कि हरिकेश के इंकार कै दिहू / बहुत गर्मी
बा ओनका रूपिया के ।

माँ - दीदी , हम इंकार नाहीं किया । ओ धन्नै पड़ि गयें कि बस आजै तई कई
ल / अब इ त नाहीं होई सकत ।

मौसी - उर्मिला , तोहअ अगर घर- दुवारे लड़की चाही तब हमरेऊ
पास एक रिश्ता बा / हमरे दमादे के जीजा ओएनजीसी देहरादून में बड़ा
अफसर हयें / अब ओ हरिकेश के तरह के काली - कमाई तो रखे नाहीं हयें
पर परिवार और लड़की बहुत बढ़िया बा / ई बियाह तोहरे मसरब के बा /
तोहार जीजा अझिं शर्मा जी से बतियावय बरे ।

माँ - ठीक बा दीदी , पर मुन्नवा बहुत गुस्सात बा आजकल ई डरामा देखकर
/ कहत ह जब करय के होये बियाह तब के बात तब बा , ई का रोज- रोज के
नाटक फैलाये हऊ ।

मौसी - उर्मिला , इहऊ बहुत भाग से नसीब में होत ह कि दुआरे पर देखुआरू
आवत- जात हयें / जौन चीज़ आसानी से मिल जात है , ओकर क्रीमत नाहीं
होत ।

मेरे फुफा आ गये / वह सीओडी छिंवकी में कुछ क्लास थरी में ही होंगे / हम
बच्चे लोग बचपन से ही सबका मज़ाक़ बनाते दे जिसमें जीजा-मौसा-फूफा-
बड़े भाइयों के साले - सालियाँ मुख्य केन्द्र बिंदु में होते थे / फूफाजी के बारे
में कहते थे कि वह पलंग में लगने वाली सफेद पट्टे वाली नेवाढ कमर में
बाँध कर चोरी करके लाते हैं / इसी लिये उनके घर की हर चारपाई में सुतली
की बाध नहीं सफेद रंग का पट्टा वाला नेवाढ लगा होता है ।

दादू कहता था , हमार परिवार नटवरलाल के गैंगन के परिवार है । मौसा
बिजली के मीटर में हेरा- फेरी करते हैं , छोटकऊ चाचा दूसरे के खेत के
ऊख रात में काट लेत हैं , तोहार फूफा पलंग के पट्टा चोर हयें और हमार
बड़कऊ चाचा त झूठ के फेहुआँ पिए हैं / भ भिंसार दे झूठ पर झूठ / अंगरेज़ी
बोलय में ऐसन माहिर बतावत हिं अपने के कि एनकर अंगरेज़ी सुनिकर हाथें
से सिगरेटै गिरि जात ह / ई त शुकर मनाव ऐ कम बोलत हयें अंगरेज़ी नाहिं

त आगि लग जाए । अगर ऐ विदेश कभौं गए और सारा दिन अंग्रेजी बोलेन त जरि जाए ऊ देश । बाबा भैया के बियाह बनारस के साड़ी व्यापारी के यहाँ कर दिये थे । ओसे कक्षा में रिसर्च कै के दुई साल लगावय वाले बाबा भैया के बारे में कहे रहेन , कि लड़का टापर है मेंस दे रहा है । आईएएस होने वाला है । अभी कर लो तो सस्ते में पढ़ेगा नहीं तो बाद में रेट बढ़ जाएगा । ओइसे ई बात झूठ नहीं रही निचले करम से टापर रहा होइहिं भैया , आखिर सिगरेट गिरावन के बेटवा हयें कौनो मामूली आदमी के खून थोड़कौ बा ओनकरे भीतर ।

दादू यह भी कहता है कि बियाह में माल- टाल लेई बरे फ़र्जी मेंस के एडमिट कार्ड देखाये रहेन । बियाह में बुलेट मोटरसाइकिल और 51,000 रुपिया झाड़ि लेहे रहेन ।

दादू की बात पर पूरा विश्वास मैं नहीं करता था । वह सच- झूठ को फेंटता अच्छा था । पर मोटरसाइकिल तो मिली ही थी , कैश का नहीं पता । विवाह बहुत शानदार हुआ था । मामा ने मेरी माँ से ही कहा था , उर्मिला ऐसा स्वागत और ऐसी शानदार खातिरदारी कभी पूरे डेबरा में नहीं हुई थी । मेरी माँ बहुत नाराज थी जो बहन के बच्चों को कपड़ा नहीं दिया गया था , जबकि तिलक में कई थान कपड़ा चढ़ा था । मेरी माँ ने ठीकरा मामी के सिर फोड़ दिया था और कहा ऐसन स्वागत गवा भाड़ में भाँजन के दुई लत्ता न मिला ।

मेरे फूफा को मेरे मामा गँवार कहते थे और उनको किसी कार्यक्रम में नहीं बुलाते थे , इसलिये वह भी उनसे नाराज़ रहते थे । मेरे मामा से नाराज़ लोग रहते थे पर उनकी दबंगई से लोग डरते थे और कुछ कहते न थे । किसी को भी सरे आम बेआबरू कर देने में उनकी महारत थी । किसी शादी में अगर लड़ाई न हुई हो तब समझ लो वह उस विवाह में शरीक नहीं हुये हैं ।

मेरे फूफा सिर्फ़ इतना ही कहे मेरी माँ से कि मुन्ना की माँ हमरौ ध्यान रखू । हमरे लड़िकन - बच्चन के नौकरी- पाती कतौं लगि जाए तो बहुत पुण्य मिले । तोहरे मानदान के लड़िका- गदेल हयेन, ओनहू के हक बा मुन्ना पर । माँ ने पैर छूकर कहा जीजा तोहार आशीर्वाद बा । ई तोहरै लड़िका है जैसे हमार बा । आपके बरे हमका ओसे कहें पड़े । आप सीधा ओसे कहउ ।

माँ ने बुलाया पैर छुआ मैंने । मैं इस नाटक से आजिज़ आ चुका था कि मेरे गँव - रिश्तेदारी से लोग आ रहे और मैं लगा हूँ एक ही काम में , पर उनका कोई दोष नहीं । इस जीवन में कुछ देखा ही नहीं उन लोगों ने ।

मामा शाम को आ गये । आते ही अगली चाल चलनी शुरू कर दी , यह मामा की बड़ी चाल थी । इसी पर अगली चाल केन्द्रित थी । मेरे पिता घर पर न थे , कुंडली और फ़ोटो मेरी माँ को दे दिया । मामा ने सारा वृतांत अपनी तरह से बताया और यह भी कहा कि हम चाह रहे थे कि हरिकेश पर “हाँ” , “ ना” हो जाए तो इस पर बात बढ़े । मामा चाल बहुत सँभाल कर चल रहे थे । उन्होंने कहा , “ बहिन इही बरे कहा तोहसे कि हरिकेश से कहि द कि अभी हम रिश्ता तय न करब । यह रिश्ता अब हमारे लायक है कि नहीं , यह तो नहीं कह सकता पर संबंध जोड़ना चाहते हैं साहब ” ।

मेरी माँ फ़ोटो निहारने लगी । वह फ़ोटो से ज्यादा उस परिवेश से मुग्ध थी जहाँ से संबंध आया था । उसने मुझे बुलाया और फ़ोटो दिखाई । यह पहली फ़ोटो थी जो माँ ने मुझे दिखाई थी । मेरे मामा ने बताया कि सेंट स्टीफ़ेन्स बहुत ही नामी कालेज है जहाँ से वह पढ़ रही है और वहाँ पढ़ाने का बहुत ख़र्च लगता है । मैं तो मुफ़्त में पढ़ा हूँ । सरकारी स्कूलों में बस नाम की फ़ीस लगती थी । इसीसी में वैसे ही फ़ीस कम लगती थी पर मैं जुगाड़ था , फ़ीस माफ़ करा लिया था । यही काम विश्वविद्यालय में किया । मेरे जीवन की पूरी पढ़ाई की फ़ीस दो- चार हज़ार रुपया भी न रही होगी । माँ को यह बात पता ही थी । वह बोली इ फ़री फ़ंटूश में पढ़ने वाले का इ रूपिया झाँक कर पढ़ने वाली से कैसे जोड़ बैठे । उसको हर बीतते दिन के साथ और गर्व हो रहा था मेरे पराक्रम पर ।

मामा मुद्दे पर आ गये । वह बोले कि मैं कल कमिश्नर साहब को लेकर आता हूँ । एक बार मिलने में क्या हर्ज है बाक़ी की बात बाद में करते हैं ।

माँ भी चाह रही थी देखना , कमिश्नर होता कैसा है । उसने नाम ही सुना था ऐसे पदनाम धारियों का , कभी देखा था नहीं । कल शाम का समय तय हुआ उनके आने का । माँ ने मुझसे कहा ठीक से पहन ओढ़ लेना ई कुर्ता और जींस ही हमेशा पहने रहते हो ।

मामा कमिश्नर साहब के यहाँ गये । उनसे सारी बात बताई और कहा वह लोग आपसे मिलना चाहते हैं । मैंने कल शाम के लिये कहा है । अब साहब आप जैसा आदेश करें , वैसा ही मैं करता हूँ । कमिश्नर साहब ज़मीन से जुड़े आदमी थे । वह एक जौनपुर के किसान के बेटे थे । वह पारिवारिक परम्पराओं और रीति- रिवाजों से परिचित थे । उन्होंने मेरे मामा से कहा , “ मिश्राजी मैं कमिश्नर बाद में हूँ पहले एक लड़की का भाई हूँ । यह मैं संबंध जोड़ने का आग्रह एक बहन के भाई की तरह कर रहा हूँ । उनका आदेश सर- माथे पर । यह आपका परयास है जो वह तुरंत मिलने को तैयार हो गये ,

हमें तो चलना ही है अपनी अर्जी लेकर । आप मिल गए हैं बड़ी सहूलियत हो गई है हमको ।

कमिश्नर साहब ने बड़े बाबू से पूछा कल शाम का क्या कार्यक्रम नियत है । उसने बताया कि सर एक मीटिंग है कमिश्नरी के बजट अनुदान पर । कमिश्नर साहब ने कहा कि इसको परसों पर कर दो, कल शाम को कहीं जाना है । वह जी सर कहके चला गया । कमिश्नर साहब से मामा ने कहा, साहब कल शाम को आऊँगा और आपको लेकर चलूँगा ।

अगले दिन शाम को मामा कमिश्नर के बैंगले पहुँचे । वह अब इस बैंगले के खौफ से मुक्त हो चुके थे । यहाँ पर अब एक सुपरवाइजर राजस्व विभाग की तरह नहीं एक उस लड़के के अभिभावक के रूप में आते थे जिसे एक सर्व साधन संपन्न व्यक्ति अपनी बहन सौंपना चाहता था । वह जिस लड़के की क्षमताओं पर सारी उम्र सवाल खड़ा करते रहे और उसे एक क्लर्क की नौकरी की सलाह देते रहे उसी लड़के ने कमिश्नर को उनके चौरस के खेल का प्यादा बना दिया था । उनको खुद कई बार यक़ीन नहीं होता था, यह सपना है या एक हक़्कीकित । अब वह इस बैंगले के अभ्यस्त हो गये थे और यहाँ के कर्मचारी भी उनको आदर देने लगे थे । वह कमिश्नर की लाल बत्ती की गाड़ी और एक पुलिस की पायलट जीप के साथ मेरे घर की ओर चल दिये ।

रास्ते में बातचीत का सिलसिला आरम्भ हुआ ।

मामा - साहेब, हम सब साफ- साफ सब आपको बता देते हैं ताकि आपको फ़ैसला लेने में सहूलियत हो सके । लड़के का घर छोटा सा ही है वह भी गल्ली में है । पिता क्लर्क हैं, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ हैं । लड़का सरकारी हिंदी माध्यम के स्कूलों का पढ़ा है । वह पढ़ने में ठीक-ठाक था कोई टापर न था पर है बहुत ही सुसंस्कारित और महत्वाकांक्षी ।

कमिश्नर साहेब - आपका भांजा है । वह संस्कारी होगा ही । हमने पता किया है उसके बारे में वह बहुत आगे जाएगा और आपको और गर्व होगा आगे भी अपने भांजे पर, आप परयास करें यह संबंध स्थापित हो जाए ।

हमारा भी ऐसा ही परिवेश है । हमारे पिता किसान हैं । हम दो भाई भी हिंदी माध्यम में ही पढ़ें हैं । यह बहन मुझसे 12 साल छोटी है । मेरे ही साथ हमेशा रही है, मेरी पहली पोस्टिंग से । मेरी पोस्टिंग का कोई भरोसा रहता नहीं

इसलिये दिल्ली भेज दिया पढ़ने को । हम तीनों भाई - बहन पढ़ने में अच्छे रहे । मेरा छोटा भाई भी आईआईटी कानपुर का कम्प्यूटर इंजीनियर है, वह भी हिंदी माध्यम का ही विद्यार्थी रहा है इंटर तक । वह आजकल असिस्टेंट कमिश्नर है मुंबई में । उसकी शादी भी हम साधारण ही किये, हलाँकि रिश्ते बहुत आये । मेरे पिता किसान हैं, मेरी माँ है नहीं । मेरे पिता मेरी बहन के जल्दी विवाह के जिद पर अड़े हैं, हम इंतज़ार करना चाहते थे कुछ दिन और ताकि वह भी सिविल सेवा की परीक्षा दे ले, पिता इंतज़ार को तैयार नहीं । पिता जी कह रहे उसको मेरे रहते मेरे सामने मुझे विदा करने दो, जहाँ जाएगी वहाँ पढ़ेगी ।

मामा - सर पर आप अब तो बहुत बड़े अफ़स्सर हैं, आपके लिये यह बहन का विवाह कौन सा बड़ा काम है ?

कमिश्नर साहब - मिश्रा जी, यह सब भ्रम है । कोई बड़ा- छोटा नहीं होता । यह दूरी हमारी बनाई हुई होती है ।

मामा कमिश्नर साहब को लेकर घर आ गये । मेरी माँ ने पहले ही पिता से अनुरोध किया था कि हमको ज़रूर बुला लेना, हम भी देखब कमिश्नर होता कैसे है ।

कमिश्नर साहब ने मेरे पिता जी को प्रणाम किया । मेरे पिता ने मेरी माँ को बुलाया, जैसा कि पहले तय था ही । मेरी माँ के पैर छुये कमिश्नर साहब ने ।

माँ ने कहा, बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर । बातचीत बढ़ाने के लक्ष्य से कहा, “आप आये हमारा सौभाग्य है और मिलकर बहुत अच्छा लगा आपको भैया ने ही बताया होगा अनुराग के बारे में ।”

कमिश्नर - नहीं माता जी इन्होंने नहीं बताया । दरअसल हम और अनुराग गुरु भाई हैं । सत्य प्रकाश मिश्रा सर से मैंने भी हिंदी पढ़ी है जैसे अनुराग ने पढ़ी है । उनसे ही ज़िक्र किया था कभी बहन के विवाह के लिये तो उन्होंने ही बताया और यह भी कहा कि ऐसा हिंदी का जानकार इस उम्र में कम मिलता है । सर तारीफ करने में थोड़ा कंजूसी बरतते हैं, इसलिये उनकी तारीफ बहुत मायने रखती है । उन्होंने कहा कि आप उससे विवाह की बात सोच सकते हो, लड़के के बारे में तो मेरी गायरंटी है बाकी की बात आप देख लो । अब माताजी बचा क्या रह गया, इसके बाद पता करने को । फिर पता चला कि लड़के के मामा सुपरवाइज़र हैं रेवेन्यू विभाग में । मैंने कलेक्टर से पूछा, उन्होंने इनको दूढ़ निकाला । हम आपकी सेवा में हाज़िर हैं । माताजी, सब ठीक रहा तो लड़की भी सेलेक्शन पाएगी । मैं विवाह अभी न करता पर वह बिन माँ की बच्ची है । हर पिता को लगता है कि मेरे सामने विवाह हो जाए

, मेरे बाद बेटे- बहू क्या करेंगे क्या पता । वह मुझसे भी कहे , मेरे भाई से भी कहे कि इस साल लड़का देखकर विवाह कर दो । वह बहुत ही सीधे- साधे किसान हैं । खेती- बाड़ी हमारे पास है , उसी में लगे रहते हैं । अगर बात आगे चलेगी तब वह भी आयेंगे आशीर्वाद लेने । मेरी बहन घरेलू लड़की है । मेरे साथ छोटे- छोटे जिलों में रही है । हो सकता है वह अनुराग की तरह हम सबको गर्व दे इसी परीक्षा को पास करके ।

हम यह भी नहीं कह रहे आप शादी कर ही लो , पर विचार कर लिजिये । मेरी नौकरी में बहुत झाँझट है , समय कम रहता है । मैं मिश्रा जी को यह काम सौंप देता हूँ , इनको आफिस से छुट्टी दिला दूँगा , यही इस काम को निपटायें । यही मालिक हैं इस विवाह के दोनों तरफ से ।

मेरे मामा की बाँछें खिल गईं । मुझकों बुलाया गया । कमिश्नर साहब ने रैंक पूछी , मेरी वरीयता पूछा और आगे क्या विचार है यह पूछा । मैंने कहा कि प्रारम्भिक परीक्षा दी है , अभी कुछ सोचा नहीं । कमिश्नर साहब ने कहा कि आईएएस तो टच एंड गो लग रहा है , इस रैंक पर । बाकि तो सब मिलनी चाहिये । मेरे आईआरएस को दूसरी वरीयता पर कहा यह ठीक किया । उन्होंने कहा कि उनके भाई की रैंक 127 थी उसने भी आईएएस के बाद आईआरएस ही दिया था । यह इनसाइडर - आउटसाइडर एलाटमेंट सिस्टम के कारण आईएएस में कैडर एलाटमेंट एक बड़ी समस्या है । हलाँकि देश अपना ही है कोई भी कैडर मिले पर कुछ कैडर घर से बहुत दूर कर देते हैं । आईआरएस एक बहुत ही अच्छी नौकरी है और इस समस्या से मुक्त है । अभी समय है जो मन चाहेगा वैसा फ़ैसला ले लेना , जीवन की एक बड़ी समस्या तो हल हो ही चुकी है । जो भी करोगे उचित ही होगा , चाहे फिर से प्रयास करो या सेवा ज्वाइन कर लो ।

कमिश्नर साहब चले गये । मामा उनको छोड़कर वापस आए और माँ से कहा कि जल्दीबाज़ी न करो । थम के फ़ैसला ल । सोच- समझ कर चलअ । मेरी माँ कमिश्नर के आलोक में ढूबी हुई थी और कहा जैसन कहबअ भैया वैसइ हम चलब ।

मामा ने घोड़े को ढाई घर चलाकर खानों में दाई ओर स्थापित किया । रानी घिर चुकी थी । वज़ीर उठाकर बोले अब बहुत हो गई लीला शह और मात एक साथ करते हैं ।

मामा अंतिम चाल चलने को कहते हुये ए शतरंज के मोहरों बहुत छकाया है ।

मामा का दरोण व्यूह रच चुका था कल रथ पर दिग्विजय का झंडा लहराने की आकांक्षा थी उनकी ।

देखें नियति क्या कहती है , उस पर तो किसी का ज़ोर नहीं ।

अब मामा की आखिरी चाल

यह इलाहाबाद है , यहाँ कुछ छिप जाए यह संभव ही नहीं है । कहते हैं गंगा का बड़ा पाट पर्याग वालों ने ही बनाया था । जब इन्द्र पुत्र जयंत के कुंभ से अमृत छलका तब किसी ने देख लिया था और यह कहा , “ मैं तुम्हें बता रहा किसी और को मत बताना ” । इसी तरह पूरा पर्याग जान गया । सब मिट्टी ही खोद ले गये । गंगा-यमुना को दो बड़े पाट दे गये । एक बात कहो और सिफ़र यह कह दो , “ केहु के बताये ना ” । इस पूरे शहर में फैल जाएगा , यह कहते हुये ,” केहु के बताये ना ” । अब यह कैसे छिप सकता था कि सर्वेश मिश्रा ने खेमा बदल दिया है । मेरे पिताजी कह रहे थे , यह दादू ही बता आया होगा नहीं तो कैसे दो दिन में ही हरिकेश को पता चल गया । दादू से पूछो तो एक ही लाइन , “ गंगा माई के कसम हम केहु से कुछ नाहीं बताव । हम ओतनई बताइत थ जेतने के हम आदेश पाईत हअ , कह त हम हलफ उठाई लेई ” ।

मैं भी प्रारम्भिक परीक्षा देकर खाली हो गया था । मेरा भी मन किया टाइमपास करने का , मैंने दादू को अपने कमरे में बुलाया ।

मैं - दादू , यह बताओ कौन बताया हरिकेश मामा को यह खबर ।

दादू - भैया हमका लागत बा कि बाबा भैया बताए होइहिं ।

मैं - वह क्यों बताएँगे ?

दादू - भैया ओनका हरिकेश मामा सपोर्ट करत ह । तू त जनतय ह कि बाबा भैया के बुद्धि बा रबड़ छाप । ओनके बस के इ परीक्षा - वरीक्षा बा नाहीं । ओ करबे हये पीडब्ल्यूडी के ठीकेदारी । ओ चाहत हयें ओनके नज़दीक जाब । ओये बताये होइहिं ।

मैं - यह रबड़ छाप बुद्धि क्या है ?

दादू - भैया सूजा घुसरे रबड़ में और निकाल ले , रबड़ ससुरा जस के तस । ओनके दिमाग़े में कुछ उपटतै नाहीं । चाहे जेतना पढँ , सुबह उठय तो सब सफ़ा ।

मैं - दादू यह बात समझ में नहीं आ रही , ऐसा क्यों करेंगे । यह तो मामा के हित के खिलाफ़ बात है । मैं भी जानता हूँ बाबा भैया को , यह काम वह नहीं कर सकते ।

अच्छा जाओ नहीं बताना है तो मत बताओ ।

दादू को लग गया मैं नाराज़ हो जाऊँगा । मेरी नाराज़गी वह किसी कीमत पर नहीं चाहेगा । उसने कहा भैया अपने तक रखअ तब बताई ।

मैं - बताओ ।

दादू - हमहि बतावा ह ।

मैं - तुमको क्या फ़ायदा इसमें ?

दादू - भैया चाचा हमहअ पचें के बहुत हैरान केहें हयें । खेत- बारी मनचाहा बाँटा चाहत हयें । खेत ऊहै चाहत हैं लेय बरे जहाँ पानी के सुविधा होई या सड़कें पर होई । घरे में तीन कमरा में ताला लगाय लेहें हयें । बुआ कहि देहे बा कि कौनो खेत तब तक न बँटे जब तक बाबू हयें । बाबू बुआ के शह पर ठिका हयें नाहीं तो ओनसे डेरात बहुत हैं । हरिकेश मामा के गाड़ी लै के जब देखअ चढ़ि जात हिं गाँव । हम सौचा ओनके और हरिकेश मामा में लकड़ी लगाई दई । एक बात और बताईत थ । जब बुआ गई रहीं कुंडली गुरु के जीप से तब चाची कहेन रहिन कि हमका रौब- रूतबा देखावय के आई रहीं । ऐसन रूतबा हम बहुत देखे हई ।

मैं - काहे इन सब चक्करों में पड़ते हो ? क्या फ़ायदा मिलता है ?

दादू - भैया जेकरे पैर में बेवाई फटी होत ह ऊहै बेवाई के पीड़ा जानत थ । तू बड़- बड़वार होई ग ह , तोहका का पता बा । अगर सब सिंचाई वाला खेत और सड़के पर के खेत लै लेइहिं तब हम पांच त मरि जाब भूखन ।

मैं - ऐसे कैसे ले लेंगे । न्याय- धर्म भी तो है कुछ ।

दादू - भैया ओनकरे पास कौनों न्याय- धर्म नाहीं बा ।

यह कहकर वह नाटक करने लगा रोने का जो हमेशा करता था ।

मैं - कोई बात नहीं है । माँ है ना । वह सँभालेंगी बटवारा ।

दादू - भैया उहै सहारा बा । भैया एकदिन कुंडली गुरु के सायरन ओनके दुआरे पर बजवाय देतअ । थोड़ा घबड़ावय द ओनका । दे सायरन पर सायरन । हयें चाचा बहुत डरपोक । अब हमरे पास कौनो पावर बा नाहीं तब हमका दबाये हयें नाहीं तो ठकुरन के मोहें नाहीं लगतेन । ओनहन न सेटेही ओनका । बना रहै राजस्व विभाग के अफ़लातून । ऐनकर फ़र्जीगीरी हम पकड़े हई । बाबा भैया के बियाह के कार्ड में लिखे रहेन ,

“भवदीय सर्वेश मिश्रा राजस्व अधिकारी “

। बुआ बताएस कि कमिश्नर साहेब कहे रहेन कि ए सुपरवाइज़र हयें । अब इहों अंदोर करब सँभाल के ।

जैसे ही हरिकेश मामा ने सुना यह समाचार उनकी नींद ही उड़ गई । उनसे ज्यादा उनकी पत्नी की । यह कभी ख्याल में ही न आया था कि जीजाजी खेमा बदल लेंगे । उनको लगा कि बाबू से बात होगी और जो संबंध पिता-पुत्री का है, यह काम बन जाएगा । हरिकेश मामा को भी लगा कि वह अनावश्यक जल्दी कर गये और विवाह को तय करने की ज़िद पर अड़ गये । अभी कुछ दिन ही रिज़ल्ट आये हुआ था, इतनी जल्दी भी नहीं करनी चाहिये थी । उन्होंने अपनी पत्नी को बुलाया और कहा, “विभा, सब मामला उलट गया ।”

विभा - का भवा ?

हरिकेश मामा - जीजा जी कमिश्नर को लेकर उर्मिला के यहाँ चले गये, कमिश्नर के बहन का प्रस्ताव लेकर ।

विभा - सत्यानंद शुक्ला के लै के गये ।

हरिकेश मामा - हाँ ।

विभा - के बताएस ?

हरिकेश मामा - ई छोड़अ के बताएस ।

विभा - अफ़वाह होए । कमिश्नर न जाए ।

हरिकेश मामा - तेरे मोहें घिव- शक्कर, अगर न गवा होए । पर सूचना पक्की बा ।

विभा - तब का करबअ ।

हरिकेश मामा - जात हई जीजा के इहाँ ।

विभा - हमहूँ चली ?

हरिकेश मामा - चलो ।

दोनों चल दिये मामा के यहाँ ।

हरिकेश मामा पहुँचे, दुआ- सलाम हुआ ।

मामा - का हाल बा हरिकेश?

हरिकेश मामा - ठीक त नाहीं बा । एके चिंता खात जात बा, बेबी के बियाहे के ।

मामा - जहाँ बदा होये , उहीं होये / बहुत परेशान न हो ।

हरिकेश मामा - जीजा सुना ह कि कमिश्नर इलाहाबाद गयेन रहेन ।

मामा का दिमाग़ बहुत तेज चलता था , वह समझ गये कि रहस्य अब रहस्य न रहा / उनको लगा यह फिर लगता है उर्मिला के यहाँ गये थे और वहीं से भनक लगी होगी / मामा हर परिस्थिति के लिये तैयार रहते थे / उन्होंने तेज़ी से मोर्चा सँभाला ।

मामा - हाँ । हमहिं लै के ग रहे ओनका त ।

विभा मामी - जीजा हमसे कौन गलती होई गई जौन हमार साथ छोड़ि के कमिश्नर के साथ होई लेहे ।

मामा - एक -दुई गलती होई त बताई । हम दुई साल से कहत हई कि कै ल बियाह मुन्ना से तब तोहका लगा कि हमार कुल रूपिया जीजा अपने भाँजा के देवावा चाहत हैं । हमार बाबू गाँव से आई रहेन इहि बरे । तोहरे घरे गयेन कहई बरे कि मुन्ना- बेबी का जोड़ा ठीक बा । पर तुहिन कहे रहू न कि हमरे बेबी के जोड़ के मुन्ना नाहीं बा । ओकर घर में काम रुकि गवा । हम कहा 25 बोरी सीमेंट दै द , तब दिहू ? तब बियाह बायें हाथ का खेल रहा । एक बार उर्मिला कहे रही आवैं तब त करी । बगैर आए कैसे बियाह के देई । आज मुन्ना का होई गवा तब दौड़त हऊ , उहौ साँस छोड़ि के । तोहका पता बा मुन्ना का चीज़ होई गवा बा । कमिश्नर साहेब कहेन हमसे खुद , ओकरे ऐसन क़ाबिल आदमी मिलब मुश्किल बा । बड़ा-बड़ा ज्ञानी ओकर चेलागीरी करत हयें । कुंडली गुरु तपा पुलिस अफ़सर हयेन । ओनकर जीप - लाव- लश्कर लेहे उर्मिला धूमत बा । हमरे गाँव के हमार खेत ऊ हमें नाहीं लेई देत बा । बाबू कहत हयें उर्मिला के सामने हम तोहार खेत बाँटब । बाबा के अम्मा कहिन उर्मिला से हमार खेत बँटवाय द । ऊ कहत बा कि बाबू के जिंदा रहत एक धूर ज़मीन न मिले । बाबू कहेन कि सर्वेश लड़ाई करत हयें ज़मीन बरे । ऊ कहेस कहि द आय के हमसे ज़मीन लै जाई । ऊ दुर्योधन बनि गई बा कि एक सूत ज़मीन न मिले जब तक बाबू जियत हयें ।

तू बियाह केहे होतू , मुन्नवा आज अपने पास होत , कुल हेकड़ी उर्मिला के निकरि जात । पर जब आग - अधियार होत ह तब ऐसन मति हरि जात ह जैसन तोहार बा ।

हरिकेश मामा - विभा मामी की सारी गर्मी मामा ने उतार दिया । यहीं चुप नहीं हुये और आगे चालू हो गये ।

मामा - ई बतावअ् कमिश्नर हरिकेश से अगर कहें कि हमको अनुराग के यहाँ ले चलो त हरिकेश का करिहिं ? ऐ लै के ज़इहिं कि सस्पेंड होइहिं । ना नुकुर करिहिं तो सस्पेंडौ करे चार इन्क्वायरी ऊपर से चालू कै दे और जेल के हवा खियाय दे । इ शहर के ही नाहीं चार- पाँच शहर के बिधाता बा ऊ । बतावअ हरिकेश अपने मेहरास्ल के ... तू जाबअ कि न जाबअ ?

हरिकेश मामा - जाएन पड़े जीजा ।

मामा - तब बतावअ हमरे पास रास्ता का रहा । तोहार मेहरास्ल बा निरा बेवकूफ़ । हीरा हाथ आई गवा रहा उहौ खुदिय चलि के आई रहा ऐ समुदर में उछाल देहेन अब कहति हयें तूफान से हीरा माँगी के द हमका । ई तूफान ऐसे दै दे हीरा ? कई के जान लै ले ई तूफान ।

हरिकेश मामा - विभा मामी पानी - पानी हो गये । मामा ने एक और हथौड़ा मारा ।

मामा - तोहका ई बताएस के ? हमार कौनो मन तोहका ई बतावई के नाहीं रहा । हम सोचे रहे एकाध- बार कमिश्नर अझिं ज़इहिं , बात ख़त्म होई जाए । इ बेमेल बियाह बा । ऊ उर्मिला बा पगलान । सबै के दौड़ावत बा । रामराज थकि गयेन । जे आवत बा सबहि के दौड़ावति बा । ऊ बियाह अबहिं तय करें न । तनिक हल्ला- गुल्ला कम होये त बाबू के लगाऊब और बियाह कराऊब । ई बियाह तोहै नाहीं हमहू कि चाही । मुन्नवा अगर कंटरोल में न आए त उर्मिला एक धूर ज़मीन न लेई दे हमका । बड़कऊ भैया के गदेल ओकर चाकरी करत हआ । ई 420 दादू जबसे मुन्ना भवा बा ऊ गाँव जाबै नाहीं करत , ओनहि के चाकरी में लगा बा । तोहका कुछ ख़बर हईय नाहीं बा । ई शालिनी सीमेंट - मटीरियल वालेन हजारन करोड़ के आसामी हयें । ओनके प्रॉपर्टी क़ब्ज़ा करै के चक्कर में मुन्ना पड़ा बा । कुंडली गुरु के लगाए बा दिल्ली में । दादू जात बा दिल्ली ऊहिं रहे अब । ददुआ के पेटे कुछ पचत त बा नाहीं । हर और हल्ला केहे बा ।

विभा मामी रोने लगीं । जीजा जी बड़ा अपराध भवा । हम तोहका कुछ नाहीं कहा । तोहै हमार पालनहार हए । मुन्ना के हमका दियावअ कौनो तरह । हमसे भूल त बड़ी होई गई बा ।

मामा - चुपचाप बैठी रहअ , कुछ दिन में कमिश्नर के बियाह कराऊब कैंसिल तब तोहार बात बढ़ाऊब । हमार कई लाख की संपत्ति गाँव के फ़ंसी बा । ई

तोहरे दमादे से हमका मिले , नाहीं त उर्मिला न लेई दे । हरिकेश तू कुछ न बोलअ उर्मिला और शर्मा जी के खिलाफ । हमरे घर - परिवार - समाज में बेटा माँ के खिलाफ़ सुन नाहीं सकत ।

अपनी पत्नी की तरफ़ मुड़कर मामा ने कहा , तुहूँ सुन ल कुछ दिन उर्मिला के खिलाफ़ ज़हर न उगलअ ।

मामी - हमसे का मतलब बा ।

हरिकेश मामा - जीजा जी हमका का आदेश बा अब ? हम का करी ?

मामा - तू सन्न मारि के अब बैठअ । बस बाबू के साधअ । उर्मिला के परान उहिं बाबू नाम के तोता में बा । उहि तोता के चारा- पानी देत रहअ । शनिचर के गाँव चला जा । बाबू के हाल-चाल लै ल और कहि देहअ तोहसे मिलै आई रहे , बियाह- सियाह के बात न कर अबै । विभा के भी लेहे जाए ।

विभा मामी - हमहूँ चली जाब जीजा जी ।

मामा के पैर पर विभा मामी गिरकर रोने लगी , “ जीजा हमार उद्धार करिअ । मुन्ना के हमें दिवाअ द । ”

मामा - धैर्यवान बनअ । बदा होए त ज़र्रुर मिले । समय आए पर हुकुम के एकका चलाउब ।

शनिचर को बलभर मिठाई - फल नाना के गाँव गया । दादू ने जितना खाया उससे ज्यादा गाया ।

मामा अब अपनी अंतिम चाल की ओर । वह अगले दिन सुबह- सुबह कमिशनर साहब के बैंगले पर गये । कमिशनर साहब आफिस में बैठ चुके थे । मामा को देखा तो बोले , मिश्रा जी आप सुबह- सुबह सब ठीक तो है ?

मामा जी - सब ठीक है साहब । एक अर्जी हमारी है । अगर आदेश हो तो अर्ज करें ।

कमिशनर साहब - मिश्रा जी आप शर्मिंदा न करें । आप कहें ।

मामा - साहेब हमने आज तक कभी माइनिंग विभाग में काम नहीं किया है । वहाँ बहुत पहुँच वाले ही जा पाते हैं । अगर आप की कृपा हो तो

कमिशनर साहब - आप उस विभाग में काम करना चाह रहे हैं ?

मामा - जी साहेब ।

कमिश्नर साहब ने बड़े बाबू को बुलाया और पूछा वहाँ कौन पोस्टिंग करता है ?

बड़े बाबू - करते कलेक्टर साहब हैं ।

कमिश्नर- हमारे आफिस से नहीं होता ?

बड़े बाबू - होता था पहले पर आप के पहले वाले साहब ने कलेक्टर को दे दिया करने को ।

कमिश्नर- तब यहाँ से भी हो सकता है ?

बड़े बाबू - जी साहब ।

कमिश्नर साहब - बड़े बाबू , कलेक्टर को फ़ोन लगाओ ।

कलेक्टर साहब लाइन पर आ गये ।

कमिश्नर साहेब - यह माइनिंग विभाग की पोस्टिंग कौन करता है ?

कलेक्टर साहेब - सर , करता मैं ही हूँ पर आपसे पूछ कर ?

कमिश्नर साहेब - कौन है वहाँ पर सुपरवाइज़र लेवल पर ?

कलेक्टर साहब - सर तीन पोस्ट हैं तीनों का नाम आपके ही द्वारा आया था । एक करछना के मन्त्री जी का आदमी है । एक लोकल एम पी का और एक मुझे बताया गया मुख्यमन्त्री कार्यालय पंचम तल से नाम आया था ।

कमिश्नर- एक हमारे ख़ास हैं उनको एडजस्ट

करना है ।

इतने में फ़ोन कट गया । मामा की आधी जान हवा में कि अब क्या होगा ?

इतने में फ़ोन आ गया कलेक्टर साहब का ।

कलेक्टर साहब - सर बतायें कैसे करें । एक को हटाना पड़ेगा ।

कमिश्नर साहेब- किसको हटाओगे ?

कलेक्टर साहब - सर यह तो समस्या है । दो तो लोकल आदमी के लोग हैं और तीसरा लखनऊ से है । आप जैसा कहें ।

कमिश्नर साहब - ऐसा करो मुख्यमन्त्री के आदमी को हटा दो । पता नहीं कौन फ़ोन किया था , अब याद भी नहीं । वह जब लखनऊ जाएगा फिर फ़ोन आएगा तब देखेंगे । तब तक यह सरकार रहेगी कि नहीं यह भी नहीं पता ।

कलेक्टर साहब - जी सर ।

कमिश्नर साहब - इनको आज ही आदेश पारित करके ज्वाइन करा देना । कोई संस्तुति चाहिये तो फ़ाइल भेज देना ।

कलेक्टर- जी सर ।

कमिशनर साहब - मिश्रा जी पहले ही कहा होता । नाहक संकोच कर रहे थे । कोई और काम ?

मामा - सर बहुत बहुत धन्यवाद । बड़ी कृपा है आपकी ।

कमिशनर साहब - मिश्रा जी कभी अनुराग को लेकर आइएगा । मेरी पत्नी मिलना चाह रहीं । अभी उनको शर्मा जी के यहाँ ले जाना ठीक नहीं लग रहा । यह शर्मा जी को लगेगा कि मैं दबाव डालने की कोशिश कर रहा । अब आप वहाँ हैं ही तो मुझे चिंता करने की क्या ज़रूरत ।

मामा - जी साहब , मैं आज ही बात करता हूँ ।

कमिशनर साहब - कोई जल्दी नहीं है । आराम से ।

मामा दुआ सलाम करके बहुत ही प्रसन्न मन से बँगले से बाहर निकले । इतनी खुशी उनको शायद बहुत ही कम बार मिली होगी , जितनी आज मिली । एक सबसे मलाईदार पोस्टिंग । सारी चालें सही खानें पर ।

मामा पहुँचे अपने ऑफिस । आदेश आ गया । माइंस विभाग ज्वाइन कर लिया ।

मामा की सारी चालें सटीक थीं । मामा ने शतरंज की बिसात उसी दिन से बिछाना शुरू कर दी थी जिस दिन पहली बार कमिशनर साहब के बँगले से बाहर निकल रहे थे ।

जैसे ही उनको कमिशनर साहेब का प्रस्ताव मिला उनका दिमाग माझनिंग विभाग की पोस्टिंग पर गया । वह पता नहीं कितने सालों से अथक प्रयास कर रहे थे पर तक़दीर मेहरबां न हो रही थी । वह हरिकेश मामा के संबंध की पैरवी बहुत कर चुके थे । उनको रास्ते से हटाये बगैर कमिशनर साहब की बात गंभीरता से हो नहीं सकती थी और बगैर गंभीर हुये वह पोस्टिंग नहीं मिल सकती थी । पहली युक्ति निकाली उन्होंने कमिशनर का रिश्ता दाढ़ को बताया । वह जानते थे कि दाढ़ जाकर बताएगा ही । सुबह चार बजे जब दाढ़ उठा और साइकिल लेकर भागा तब सारा शहर सो रहा था पर मामा जग रहा था । पूरी रात उनकों नींद नहीं आई और हर चाल सजा रहे थे । वह इंतज़ार कर रहे थे कब दाढ़ जाए और यह सूचना मेरे घर आए । जैसे ही दाढ़ उठा उनकी अधखुली आँखों में खुशी ही खुशी । यह सुनिश्चित करने के लिये कि दाढ़ ने मेरी माँ को बताया या नहीं , उन्होंने दाढ़ से पूछा कि तुम उर्मिला से

बताये तो नहीं । उसके हाव- भाव से भाँप गये कि यह बता आया है और मेरे घर में इस नये रिश्ते की खुशी होगी ।

दूसरी चाल चली उन्होंने हरिकेश मामा को दूसरा मुहरा बनाकर और उनसे पैसा- संपत्ति का लालच दिलवाया और जिद करवाया कि विवाह तय कर लो तथा जल्दी से जल्दी विवाह कर लो और ऐसा करो इसी महीने वरीक्षा हो जाए , वरीक्षे की तारीख की ओर इशारा भी किया । वह चाहते थे कि हरिकेश विवाह तय करने की ज़िद करें और बात थोड़ा बिगड़ जाए । वह जानते थे कि उमिला दधीचि की हड्डियों की बनी है उसको ख्रीदना आसान ही नहीं नामुकिन है । हरिकेश मामा जिद कर गये । चाल सही खाने पर ।

अब वह चाह रहे थे कि मेरी माँ इंकार कर दे , यह काम मेरे पिता नहीं कर सकते थे , वह लोगों को अनावश्यक नाराज़ नहीं करते थे । मेरी माँ आवेश में जल्दी आती है और वही यह काम कर सकती है । मेरी माँ उनका अगला मुहरा बन गई और उससे कहलवाया दिया कि हम रिश्ता अभी तय नहीं करेंगे ।

जब हरिकेश मामा को ना हो गया तब उन्होंने मामी को दिमाग़दार कहकर अगली चाल चली और उनसे कमिश्नर के प्रस्ताव को आगे बढ़ाने की अनुमति ले ली , ताकि घर में शांति बनी रहे और कमिश्नर का रिश्ता लेकर मेरे घर आ गए और कमिश्नर साहब का पदार्पण हो गया ।

वह कमिश्नर साहेब के साथ वार्तालाप में यह जानने की कोशिश करते रहे कि यह वाक़ई विवाह करना चाहते हैं या सिफ़र कई रिश्तों में बात चला रहे उसमें से एक रिश्ता यह भी है । वह पूरे रास्ते मेरे और मेरे घर की वास्तविकता बताते रहे ताकि वह यह भाँप सकें कि कमिश्नर साहब वाक़ई विवाह के इच्छुक हैं या परिवार - लड़का देखकर चले जाएँगे । मामा कमिश्नर साहेब की सारी बातचीत से यह समझ गए कि वह इच्छुक ही नहीं बल्कि मन बना चुके हैं इस रिश्ते के लिये ।

जब वह संतुष्ट हो गये कि बाज़ी उनके हाथ में है तब उचित समय पर अंतिम चाल चल दी । पिछले बीस सालों से माइनिंग विभाग की मोटी कमाई वाली पोस्टिंग वह न पा सके थे , जबकि कोशिश हर साल करते थे । इतने बरसों की ख्वाहिश मेरे रिज़ल्ट निकलने के एक महीने के अंदर पूरी हो गई । अब जेब में कमीशन का रुपया लेकर हर शाम घर आने लगा । रामेश्वर नाथ मिश्र का ही रक्त है जो ठाकुरों से भरे- पूरे गाँव में गणित लगाकर साल- दर साल

सरपंच होते रहे , यह बाज़ीगरी इस परिवार के रक्त में है । उर्मिला भी छोटी बाज़ीगर नहीं है । मामा चले चाल पर चाल , वह ऐसी शतरंज की खिलाड़ी है कि बाज़ी अगर खिलाफ़ जा रही हो तो चेस बोर्ड ही फाड़ देती है ।

मामा की इतनी बड़ी चालें और एक आंटी का एक पत्र शतरंज की बिछी बिसात पर ।

आंटी का पत्र भी अभी ही आना था जब वह हर शाम को रूपया अपने टेबल पर गिन रहे होते थे .. 100,300,500,2000,4500 ...

आज का दिन तो ठीक गया । कल मंगलवार है टेंडर खुलेगा महेवा और झूँसी के बालू के ठीके का । कल बँधवा वाले हनुमान जी से होकर सुबह आएँगे ।

पर सोमवार- मंगलवार के बीच एक रात भी आती है , डरावने सपने लेकर .

एक रात की राख से फिर दूधिया सुबह आया होता । एक पैगाम और यह सूरज मेरे लिये लाया होता । ये पक्षी मेरे पेड़ों के कोई और कलाम रुहानियत का सुनाये होते । यह रात आज ख़त्म न होती तो कितना अच्छा होता ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 123

राजस्व विभाग के उप विभाग माइंस एंड माइनिंग की पोस्टिंग बहुत मायने रखती थी । इस विभाग में पोस्टिंग पाना आपकी कद और हैसियत को बढ़ा देता था । मामा की कद और हैसियत में दूज के चाँद की तरह बढ़ोतरी हो रही थी । “एक तो बाधन , दूसरे भइया दावा कि सबसे ऊँच अटारी पर चढ़ा वेद हाथें में लेहे पैदा भवा सुपातर-मूलहा बाधन , बुलेट मोटरसाइकिल की भड़भड़ती रौबदार आवाज़ के साथ कलेक्टरी में प्रवेश, भाँजा आईएएस, माइंस विभाग में पोस्टिंग अब और का बचा रहि गवा मिसिर महराज के पावे के बरे । बस सम्मान ओढँ रूपिया बिछावें “ । यह मामा के साथ वाले कलेक्टरी में उनके बारे में कहा करते थे ।

यह कलेक्टर को समझ न आ रहा था कि एकाएक सुबह कौन सी पैरवी आ गई कि पंचम तल के आदमी को हटाया गया और उसी दिन ज्वाइन कराने का

भी आदेश दे दिया गया । कलेक्टर ने अपने सहायक से कहा सर्वेश मिश्रा को लेकर आओ । मामा ने ज़िंदगी में इतने ऊँचे पदाधिकारियों को बहुत ही कम देखा था , मुलाक़ात तो न के बराबर । एक सुबह कमिश्नर और उसी दिन शाम को कलेक्टर दो- दो को देख लेना , एक कोई सामान्य बात न थी । वह कलेक्टर के ऑफिस में गये । एक बड़ा कमरा , सन 1900 के पहले के अंग्रेज़ अफ़सरों से लेकर आज तक के अफ़सरों के नाम कमरे की दीवारों पर लगी लकड़ी के पटियों पर लिखे हुये , चारों ओर दीवारों से सटी कुर्सियाँ , एक बड़ी सी मेज़ और उसके सामने दो क्रतारों में लगी कुर्सियाँ , उस मेज़ पर कई फ़ोन रखे हुये , फ़ाइलों का अंबार और उन फ़ाइलों के अंबार के बगल में एक बड़ी सी कुर्सी पर बैठा चश्मा लगाए एक सामान्य कद-काठी का एक दुबला- पतला क़रीब तीस साल का लड़का जिसके चेहरे पर आभा के नाम पर सिर्फ़ सादगी झलक रही थी ।

मामा कुछ घबराये से हुये थे और नमस्कार किया दरवाज़े के पास से ही । कलेक्टर ने चश्में के अंदर से ही आँख की पुतलियों को ऊपर किया और कहा , “ आप सर्वेश मिश्रा हैं ? ”

मामा - जी साहेब ।

कलेक्टर साहेब ने बैठने को कहा ।

कलेक्टर साहेब - आप कमिश्नर साहेब को कैसे जानते हैं ।

मामा की सारी हूक निकल चुकी थी और उनका गला सूख रहा था । कलेक्टर साहेब ने उनकी असहजता को भाँप लिया और आराम से बैठने को कहा । घंटी बजाकर चपरासी से पानी मँगाया और कहा पानी पीजिये । मामा पानी पीने लगे ।

कलेक्टर साहेब - चाय लेंगे आप ?

मामा ने “धन्यवाद सर “कहने की कोशिश की पर कह नहीं पाये , सिर हिलाकर कुछ बुद्बुदाकर कहा , “ नहीं साहेब ” ।

कलेक्टर- घबरायें नहीं । आराम से बैठ जाएँ । आप कमिश्नर साहेब को कैसे जानते हैं ?

मामा थोड़ा सामान्य होने की कोशिश कर रहे थे , पर बहुत सफलता नहीं मिल रही थी । दिमाग़ उनका तेज़ काम करता था , पर आज नहीं कर रहा था ।

मामा - साहेब , दूर की रिश्तेदारी है ।

कलेक्टर साहेब - किस तरह की रिश्तेदारी है ?

मामा - मेरे बहन के पक्ष से रिश्तेदारी है ।

कलेक्टर साहब - आपकी बहन क्या करती है ?

मामा - बहन कुछ नहीं करती , उसके पति एजी आफिस में हैं उनके ही माध्यम से दूर के रिश्तेदार हैं ।

कलेक्टर साहब - अनुराग शर्मा कौन है आपका ?

मामा को लगा झूठ पकड़ा गया । अब क्या करें , कह तो चुके थे झूठ ।

मामा - मेरा भांजा है साहेब ।

कलेक्टर साहब - जिसका चयन हुआ आईएएस में इस साल वहीं आपका भांजा है ?

मामा - जी साहब ।

कलेक्टर साहब - मैं भी एनझा का इनमेट रहा हूँ । वहाँ के लोग आते रहते हैं मेरे पास । वहीं से पता चला उनके बारे में और मेरे स्टाफ़ ने बताया कि आपके रिश्ते में हैं वह ।

आप माइनिंग में क्यों इतना जाने के लिये परेशान हैं ? साल के बीच में आपने ट्रांसफ़र करा लिया । इंतज़ार किया होता मार्च का । मार्च के बाद कर देता , वह आदमी अपरैल में ही आया था और जून में ही आपने ट्रांसफ़र करा दिया वह भी इस शर्त के साथ कि आपको आज ही ज्वाइन करना है । इतनी तेज रेस जिंदगी की क्यों दौड़ रहे हैं आप । यह क्या पता नहीं मुझे या कमिश्नर साहब को कि आप क्यों जाना चाहते हैं वहाँ पर । उम्र में आप मुझसे बड़े हैं इसलिये

यह मेरा अनुरोध है आपसे और मैं आपका कलेक्टर हूँ इसलिये यह आदेश है , आपके लिये , आप ईमानदारी से काम करें और किसी तरह की शिकायत का मौका न दें । आप लोगों से कम मिलें । इस माइनिंग के काम में जो लोग शामिल हैं उसमें से ज्यादातर असामाजिक तत्व हैं । उनको संभालना हमेशा से प्रशासन के लिये एक चुनौती रही है और उनके राजनैतिक प्रभुत्व भी होते हैं । आशा करता हूँ आप कार्य निष्पादन में निष्पक्षता और सतर्कता बरतेंगे । मैं आपसे यह भी कहूँगा संबंधों का नाजायज इस्तेमाल न करें , अभी अनुराग ने सेवा आरंभ नहीं की तब आपका यह हाल हैं आप आगे क्या करोगे ?

मामा की कलेक्टर साहब ने चार-छः लाइन में हालात ऐसी कर दी जैसे चौक के घंटाघर चौराहे पर मामा को सरेआम जूते पड़े हों । पूरा शरीर पसीना छोड़ रहा था । वह इतना ही कह पाए, “जी साहेब” ।

कलेक्टर साहेब ने जाने का इशारा किया ।

मामा बाहर निकले उनकी धड़कने तेज चल रही थी । वह आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गये । उनको कुछ समझ न आ रहा था कैसे यह उलझता मामला सुलझे । कलेक्टर के चेहरे पर उभर रही दृढ़ता के भाव मामा की आँखों में नाच रहे थे ।

दूसरी तरफ विभाग में उनकी हवा बह रही थी कि दो महीने में ही आदेश आ गया और पंचम तल की सिफारिश लगाकर आये हुये आदमी को हटाकर कुर्सी पर क़ब्ज़ा कर लिये । जो आदमी हटाया गया था वह किसी को मोटी रकम देकर मुख्यमंत्री कार्यालय तक पहुँचा था और अभी वह अपनी लागत भी न वसूल पाया था कि सर्वेश मिश्नर काम तमाम कर दिये । मामा को लगा कि उनका हार्ट फेल हो जाएगा । बेटे के विवाह में पाये बुलेट पर बैठकर किसी तरह घर पहुँचे । मामी उनको देखते ही समझ गई कि कुछ उल्टा- सीधा हो गया । मामा बदहवास थे । एक कलेक्टर इस तरह कह दे वह भी एक सामान्य से कर्मचारी को यह बहुत बड़ी बात थी । मामा का दिमाग़ शून्य हो चुका था । वह क्या करें, यह बिल्कुल समझ न आ रहा था । मामी बोली, “कम खातअ बनारस बसतअ, ई नाहक जंजाल में पड़ि गवा हअ” । सारी रात मामा सोचते रहे, क्या करें? कमिश्नर साहब के पास जाएँ क्या? पर जाकर कहेंगे क्या? कुछ गलत तो कलेक्टर साहब ने कहा न था । अगर कमिश्नर साहब से कहा और कलेक्टर को लग गया कि मेरी शिकायत कर दी गयी तब तो जान ही मार देगा । अभी तीस- बत्तीस साल का ही होगा, आगे बड़ी नौकरी पड़ी है । वह कच्चा ही खा जाएगा । यह सब कलेक्टर- कमिश्नर आपस में मिले होते हैं । यह कहाँ मेरी सुनेंगे । मैं जानता ही कितना हूँ कमिश्नर को । यह बहुत कठिन रात थी उनके लिये । यह रात काटनी मुश्किल थी । किसी तरह आँखों में रात कटी । अधखुली आँखों में दुःस्वप्न आया कि मामा का द्रांसफ्रर भी हुआ और स्पष्टेशन भी । मामा सपने में रोने लगे । मामी ने जगाया और पूछा, “का भवा?”

मामा की आँख खुली और पाया कि वह अभी भी माइंस विभाग में हैं । उनको चैन मिला, एक गिलास पानी पिया और सो गये ।

अगले दिन आफिस गये । एसडीएम ने बुलाया और उनका विभाग उनको समझाया । उसने बैठने को भी न कहा । वह नाराज़ था क्योंकि जो आदमी

हटाया गया था उसके साथ इसके लेन- देन का संबंध था और यह आदमी एक तो नया आया है अभी इसको समझना होगा , दूसरे यह हल्ला हो ही गया था कि यह आदमी कमिश्नर का है और उस आदमी को बहुत अपमानजनक तरीके से आदेश आने के दिन ही कार्य मुक्त करके इनको ज्वाइन करा दिया गया था । एसडीएम ने कहा कुछ नहीं पर व्यवहार रुखा था और बहुत भारी मन से सबसे मलाईदार पोस्ट का काम सौंपा और कहा कि आज की फाइल आप ही क्लीयर करके ऊपर भेज देना । राम स्वरूप को कार्य मुक्त कर दिया गया है और वह कोई काम नहीं पायेगा ।

मामा ने , जी सर कहते हुये कहा जैसा आप कहेंगे वैसा ही मैं करूँगा । मामा ने सारी फ़ाइलों को क्लीयर किया । काम में वह तेज थे ही और शाम बहुत हसीन थी आज उनके लिये । शाम को एक पैकेट मिला । वह पैकेट ले लिये । घर गये तो देखा उसमें 6000 रुपया था । उन्हें पता चला कि हर रोज़ शाम को पैसा बँटता है वहाँ पर हर काम को करने के बाद । उनको यह तो पता था कि मलाई है पर गाय इतनी ज्यादा दुधारू है कि दूध नहीं सिफ़्र मलाई ही देती है , यह नहीं पता था । दिन अच्छे बीत रहे थे । हर रोज़ मेरी माँ को उनकी धुर विरोधी मेरी मामी भी आशीर्वाद देने लगीं और बाबा भैया रोज़ कोसे जाने लगे ।

मेरी माँ मेरे जन्म के पहले से गंगा नहाती थी । वह विवाह करके जब आई थी तब सत्रह साल की थी । जब मेरे पिता के साथ रहने शहर आई थी तब करीब 20-21 साल की थी और तबका दिन और आज का दिन शायद ही कभी गंगा न नहाया हो । कार्तिक में यमुना नहाती थी और बाक़ी सारे महीनों गंगा । कई बार मुझको भी ले जाती थी , यह कहते हुये कहाँ से यह अधर्मी पैदा हो गया कोई रुचि पूजा- पाठ में नहीं है । मेरी माँ के गंगा नहाने पर मेरे मामा- मामी दोनों मज़ाक़ बनाते थे उसका पर अब एक नया परिवर्तन उनके भीतर देखने को मिला ।

अब मेरी मामी भी गंगा नहाने लगीं । उनको लगा कि मेरे सेलेक्शन मे माँ गंगा का बहुत योगदान है । यह मेरी माँ ही कहा करती थी कि माँ गंगा ने ही हमको बच्चे दिये , माँ गंगा ने मुन्ना ऐसे लफ़ंगे- शरारती को सुधारा । इसके पास दिमाग़ था पर दिन - रात अवारापन करता रहता था । पता नहीं कहाँ से इसको बुद्धि आ गई कि पिछले तीन- चार से पढ़ने लगा और माँ गंगा ने ही इसका चयन करा दिया नहीं तो इससे पता नहीं कितने बेहतर सङ्क पर धूम रहे हैं । माँ की बात काफ़ी हद तक सही भी है । जीआईसी , ईसीसी , यूनिवर्सिटी तीनों में मेरी कक्षा में मुझसे बेहतर लोगों की भरमार थी पर मेरे अलावा किसी का सेलेक्शन नहीं हुआ इस बार । यह परीक्षा भाग्य के बाऊर तो

कोई पास नहीं कर सकता । पर भाग्य खुलता भी है तो केवल मेहनत करने वालों का , ऐसा तो कभी किसी ने देखा नहीं कि अकर्मण्य के भाग्य में अलीबाबा का “ खुल जा सिमसिम ” नसीब हुआ हो । मैंने मेहनत तो बहुत ही की थी पर मेरी ही तरह के लोग और भी थे जिन्हें इस गौरव की प्राप्ति न हुई ।

मेरी मामी का गंगा नहाना चर्चा का विषय बन गया था । एक दिन दादू रात मामा के यहाँ रुका था । वह सुबह उठकर मामा की गाय को चारा दे रहा था । उसने देखा कि मामी गंगा नहाने जा रही हैं । उसने पूछा

“कौनो तयोहार बा का चाची ? ”

मामी ने बताया , “गंगा नहाय हम रोज़ जाति ह आजकल ”

बस क्या था , दादू ने पैंडल मार दी और मेरी माँ के पास पहुँच गया ।

दादू - बुआ सुनू तू ?

माँ - अब का भवा ?

दादू - चाची गंगा नहायअ लागिन ?

माँ - “इ मोह और मसूर के दाल...कब से इ नया परपंच सुर्क केहेन धरा-बवंधर के रहई वाली हई ... अगर फरेब न केहेन तब त गाँव के साखै चली जाए ” ।

दादू - बुआ ओनका लागत बा कि तोहार बरकत में गंगा मैया के आशीर्वाद बा / ओऊ कलपत हई आशीर्वादे बरे । पर बुआ सवारथ के पूजा न फले । गंगा मैया बहुत होसियार हई ऊ मनई देख के आसीरवाद देइहैं । चाची के त चेहरवय पर लिखा बा , “ चाची 420 ”

माँ - “गंगा माई के आसीरवाद त हमरे साथ हइयै बा , एहमें कौनो दुई राई बा का । सारे काबिल रहिं गयेन और इ आवारा मुन्नवा होई गवा , कुछ त बात हइय बा । पहिले त कहत रहेन गंगा के पानी में लहास बहत ह । इ पानी गंदा बा । ई उर्मिला पता नाहीं कैसे नहात ह ओहमें । अब का भवा ? गंगा माई पहिचान लेति ह सही भक्तन के । ई दुई- चार दिन के नसा बा सब उतरि जाए ” ।

दादू -“ई बात बुआ सही कहत हउ तू । एक बात त बा बुआ, तू जौन कहत हऊ सब सहिन होत ह । तू कहे रहू एक साल पहले कि मुन्ना कुछ बने ज़रूर और होई गवा ” ।

माँ - “ओकरे में जौन परिवर्तन आइ ह ऊ देखि के हम कहा और बाकी एकरे भागि में जौन लिखा रहा ऊ इ पायेस । एक बात और कहत हई दादू हम रही कि नहीं पर नोट कै ल ... ई मुन्नवा बहुत आगे जाए । हम ओका पेटे में जबसे आई ब तबसे देखत हई , इ बहुतै लागी बा ” ।

दादू- “बुआ तू कहाँ जाबू हम और तू चलब मुन्ना के बँगला में रहब । गाय पालि लेब और गाई के सेवा करब । इह लोक सुधरे और पर लोकौ ” ।

माँ - “अब बेटवा ओहमें समय बा ” ।

दादू - “बुआ समय जाति कहाँ जनात बा । देखअ तोहार भाई झूठ बोलतै-बोलतै बुढ़ाई गयेन । ऐतना झूठ- फरेब ओनकै मूडी के बार देखे बा कि अब त ओनकर सफेद बारौ धोखा दई में माहिर होई गवा बा । छोट-मोट छल-कपट त ओनकर मूडी के बारै कै देत हअ ” ।

माँ - दादू तोहार जोकरई कभौं न जाए ।

दादू - “ बुआ एक बात बा तोहार बाबू के जेतना गदेल भएन सब बिधाता के अलगए बनाए हयें । भगवान बाबू के लड़िका देत गएन और साँचा तोड़त गएन , इही बरे वैसन दूसर कतौ नाहीं देखातेन । हमरे बाबूजी के देखअ कुंभकर्ण के बाद ओये बनेन सिवाय सोवै के कौनो काम नाहीं , बड़कऊ चाचा के देखअ दिन - रात देश बेचय के जुगत में लगा हयें , छोटकऊ चाचा रुपिया में तीन अठन्नी भजावय के चक्कर में रहत हयें और राति-बिरात केकरे खेत के ऊखि काटि लेई कुछ पता न चले । हम अपनय ऊखि न बचाई त उहऊ काटि लेय । बड़की बुआ अपने पट्टीदारन के मेड़ काट लेति हय । बस तू बुआ धर्मात्मा निकर्सँ ।

माँ - जीजा त ऐसन नाहीं हयेन ।

दादू - बुआ । ओ हयें बगुलाभगत । बाबू के पाही के ज़मीन ओनका देहे रहेन जोतै बरे उहऊ लै लेहेन ।

माँ - दादू ऊ त अपने बिटिया के देहे हएन एहमें कौन ऐतराज ?

दादू - बुआ ऐतराज करय वाला हम कौन होत हई पर हम नियत बतावत हई । कबहुँ जिकिरौ नाहीं करतेन ओकर ।

दादू बोला , “बुआ अब चलत हई । बड़की बुआ के इहाँ से होई के हम जाबै नाहीं तो ओ पूछिहीं का बात भई इहाँ । हम गोलि कै जाबै कि छोटकी बुआ के इहाँ गए रहे ” ।

कल मामा के यहाँ टेंडर खुलने वाला था झूँसी और महेवा के बालू के ठीकों का और आज ही आंटी का एक पत्र माँ के नाम आ गया । माँ पत्र पढ़कर

रोने लगी । वह मेरे कमरे आई और उसकी आँखों से आँसू गिर रहे थे । मैंने देखा उसकी तरफ़ मैंने पूछा , “ क्या हुआ ? ”

उसने मुझे अपने गले से लगा लिया । मैं कुछ समझ नहीं पा रहा था । उसने आंटी का पत्र मुझको दे दिया । पत्र बड़ा था और आंटी की पीड़ा से भरा था । मैंने पढ़ना शुरू किया । औपचारिकताओं के बाद उसने जो लिखा था , वह बहुत ही दर्दनाक था ।

“उमिला अनुराग आईएस हो गया । यह बहुत खुशी की बात है । मैं एक राय बगैर माँगे देती हूँ ताकि तुम्हारी हालत मेरी तरह न हो जाए । मेरा बेटा ऋषभ एक बड़े घर में ब्याहा गया । वह दिल्ली आया हुआ है । वह मेरे घर में नहीं अपने ससुराल में रहता है और मुझसे मिलने आता है , जबकि होना उल्टा चाहिये था । उसका ससुराल का मकान एक बहुत बड़ी कोठी है और वहाँ गाड़ियों - नौकरों का अंबार लगा है । सुविधाओं का पूरा एक मायाजाल है । बाथरूम कमरों से बड़े हैं । उसको हमारे सरकारी सीलन भरे घर में असुविधा होती है । अगर तुमको मेरी तरह आँखों में अश्रू की धारा के साथ नहीं जाना है तो जितना सामान्य संभव हो अपने स्तर को देखते हुये एक समझदार लड़की से विवाह करना । अनुराग बहुत शौर्य युक्त है । मैंने परखा है उसको । वह सब कर लेगा । मैं फिर कहूँगी विवाह करके लड़का मत खो देना जैसा मैंने खो दिया है ।.... अनुराग ने कहा था आन को । उसको भेजना ऋषभ-शालिनी भी मिलना चाहते हैं ।”

मैंने कहा , इसमें ऐसा क्या है जो तुम परेशान हो । माँ ने कहा पहला काम करो यह कमिशनर की बहन की कुँडली फोटो भैया को देकर आओ और अभी देकर आओ ।

मैं - तुम्हारे हर काम में आवेश रहता है । दे देना जब अगली बार आएँगे तब ।

माँ - नहीं अभी देकर आओ वापस ।

मैं - मैं नहीं जाता वापस देने ।

माँ - तुम भी ऋषभ के रास्ते पर जाना चाहते हो ।

मैं - माँ तेरा दिमाग़ भगवान ने अलगै बनाया है हर बात में खुराफ़ात ।

माँ - अच्छा तो मैं खुराफ़ात कर रही हूँ । अगर तुम नहीं जाओगे तब मैं अभी रिक्षा पकड़ूँगी ओर फेंक कर आ जाऊँगी ।

मेरे पिताजी ने बात सँभाली कि सुबह चला जायेगा अभी रात हो गयी है । माँ इस शर्त पर मानी कि सुबह आठ बजे के पहले दे आना वापस और कहना अब शादी- ब्याह की कोई बात नहीं होगी । मैंने भी सोचा कौन इस ज़िद्दी के मुँह

लगे इस समय । अगर हाँ न बोला तो रात भर में पूरा घर सिर पर उठा लेगी । मैंने कहा , “ मैं आठ बजे के पहले उनको फ़ोटो- कुंडली देकर घर वापस आ जाऊँगा । यह रात तो शांति से कटने दो । कल तो कमिश्नर की गाड़ी और उसका हाबा- डाबा बहुत अच्छा था । अब क्या हुआ ? अभी भी वक्त है यह सब नाटक बंद करो जब समय आयेगा तब विचार करना । ”

मैं सुबह सात बजे के पहले ही घर से चला । मामा के यहाँ पहुँचा । इतने सुबह मुझे देखकर मामा ने खुशी जाहिर की और कहा मैं आने वाला ही था आज को । कमिश्नर साहब कहे थे कि उनकी पत्नी तुमसे मिलना चाहती हैं आज शाम को तुमको लेकर उनके घर चलना है ।

मैंने थोड़ी देर मामा के चेहरे की तरफ़ देखा और मन में कहाँ आज तो इस घर में दोज़ख की आग जलेगी ।

मैंने वह लिफ़ाफ़ा पकड़ा दिया । मामा लिफ़ाफ़ा पहचान गये और कहा यह क्या है ?

मैं - माँ ने कुंडली फ़ोटो वापस भेज दी है ।

मामा मतलब समझ गये पर कई बार व्यक्ति अंतिम दम तक आशा को जीवित रखना चाहता है ।

मामा - क्यों वापस भेजा ?

मैं - बाकी बात उनसे ही पूछ लीजियेगा । मुझसे कहा वापस दे देना और कहना अब शादी- विवाह की कोई बात नहीं होगी ।

मामा कुर्सी पर बैठ गये । आज दिन के टेंडर का क्या होगा , आज शाम के कमिश्नर साहेब की इंतजारी का क्या होगा ।

मैं उठा और चल दिया । वह पीछे से आवाज़ देते रहे पर मैं साइकिल पर पैडल मार चुका था , मुझे आठ बजे के पहले घर पहुँचना था ।

वाकई चेस बोर्ड फट चुका था , उनका घोड़ा ज़मीन पर गिरा हिनहिना रहा था जिस पर बहुत नाज था उनको , अब उसके ढाई घर चलने के लिये कोई ज़मीन नहीं बची थी ।

यह एक कठिन सुबह थी । ऐसी सुबह की कल्पना मेरे मामा को न थी । मेरा रुखापन उनको बहुत खला । अब मैं वह मुन्ना तो रहा नहीं जिसको मोशन सिक्नेस होने के बावजूद भी उसको कार से उतार कर बस में बैठा दिया गया हो और हरिकेश मामा की कार बस के बगल से निकल गई हो धृँवा उड़ाते हुये । अब तो मेरे चेहरे के उभर रहे भावों की क्रीमत होती थी और चेहरे की कठोरता मेरे परिचितों - रिश्तेदारों के अंदर सिहरन पैदा कर देती थी । मैं इस निम्न मध्यवर्गीय परिवार की ध्वज पताका बन चुका था । अब यह प्रतीकात्मक ध्वज पताका बगैर चाय पिये ही चल दे तब तो माथा ठनकेगा ही । मामी ने मेरी आवाज़ सुनी । वह रसोई से निकल कर आती तब तक मैं दरवाज़े से बाहर निकल रहा था और मामा कह रहे थे कि चाय पीकर जाओ पर मैंने हाथ उठाकर ही इंकार कर दिया, वह भी बगैर पीछे मुड़े । आते ही मामी ने पूछा मुन्ना आते ही जल्दी से क्यों चला गया ? वह मिला भी नहीं मुझसे, नहीं तो पैर छूकर ही जाता था । क्या हुआ ?

मामा - पता नहीं । यह कहकर मामा ने लिफ़ाफ़ा मामी को पकड़ा दिया ।

मामी - यह क्या है ?

मामा - देख लो ।

मामी - यह तो कमिश्नर के बहन की फोटो- कुंडली है । वापस कर दिया ? नहीं पसंद आया ?

मामा - पता नहीं । कुछ मुन्ना बोला ही नहीं ।

मामी - क्या मुन्ना को लड़की पसंद नहीं आई ? फोटो से ही निर्णय कर दिया ?

मामा - यह सब उर्मिला की माया है । मुन्ना के का चले ई सब मामले में ।

मामी - बियाह त मुन्ना के करै के बा । ज़िंदगी त उहै निभाये ।

मामा - जब उर्मिला तैयार होई ज़इहिं तब मुन्ना के नंबर आए । ऊ त जयदरथ बनीं बा । महादेव के बरदान पाये बा, केतनौ भीम बना रहअ हम घुसइन न देब चक्रव्यूह में ।

मामी - तब ? अब का होये ?

मामा - शाम के कमिश्नर साहेब के झहाँ मुन्ना के लै के जाये बरे कहे रहे साहेब से, अब त कुल मामले पलटि गवा ।

मामी - अब का करबअ ?

मामा - दिन में बड़ा काम बा आफिस में ओका निपटाए के जाब उर्मिला के इहाँ
।

यह इलाहाबाद एक अजूबा शहर है । यहाँ प्रशंसा और बुराई दोनों में अतिशयोक्ति का प्रयोग होता है । अगर खिलाफ़ हो गये तो मिंटो पार्क के क्रबरगाह में गाड़ देंगे और अगर प्रसन्न हो गये तो सिविल लाइंस के पत्थर गिरिजा पर चढ़कर क़सीदे गढ़ देंगे ।

मामा का समय ठीक चल रहा था । उनकी बुलेट मोटरसाइकिल रुकते ही चपरासी दौड़कर आते थे । आफिस वाले आपस में इनके बारे में बात करते थे । एकाएक दरांसफर एक महत्वपूर्ण प्रभाग में हो जाना उनके जयघोष की ध्वनि का कारक बन रहा था । कुछ लोग जयगीत गा रहे थे तो कुछ ईर्ष्या से ग्रसित हो रहे थे , पर चर्चा सभी कर रहे थे और एक सवाल सबकी जुबान पर , ” कैसे एतना बड़ा काम कराएन ? अब त सर्वेश मिसिरा धुनि मरिहिं रूपिया “ ।

राम संजीवन ने कहा , ऐ फरगइयाँ , ज़ोर होई त मिसिर महाराज के तरह पंचम तल के मनई के नाहीं छोड़ेन । आदेश करवायेन और ओका कुर्सी से फेंक देहेन । राम सरूप फ़ाइल पर दस्तखत करत रहा तबै समाचार आई गवा कि तख्ता पलटि गवा । इहऊ आदेस आई गवा , तुरंतै हटअ मिसिर महराज आवत हयें फटफटिया पर चढ़ा “ ।

“ऐ फरगइयाँ इ बतावअ जौन फ़ाइल पर राम सरूप दस्तखत केहे रहा जब सामाचार आई रहा ओकर घूस के ले ? मिसिर लेझहिं कि राम सरूप ?”

फरगइयाँ - देखअ नियाय त इहै बा कि जे दस्तखत केहेस घूस उहि के होए पर अब दया- धर्म कलियुग में कहाँ रहि गई ।

राम संजीवन - पर फरगइयाँ इ बतावअ जौन आधा दिन राम सरूप काम केहे रहा ओकर रूपिया के लै जाए ?

फरगइयाँ- “देखअ नियाय के तराजू तो राम सरूप के साथ बा । पर सर्वेश मिश्रा के ज़ोर तगड़ा बा । कमिश्नर सत्यानंद और कलेक्टर संजीव रंजन दुझनौं हयें ईमानदार । अब ई त कहब ठीक नाहीं बा कि कमिश्नर के रूपिया देहे होईहिं ई पोस्टिंग बरे । अब जब रूपिया नाहीं लाग बा तोहार । तू पाई ग ह पोस्टिंग व्यवहार में तब ई बेचारे के आज के कमाई लै जाय दअ । ई त माल खर्चा करै रहा इहाँ बरे “ ।

राम संजीवन - फरगइयाँ तनिक इ फरियावअ हमें समझ में आवत नाहीं बा ,
इ बदमिग लड़ाका सर्वेश मिश्रा कहाँ से लहाएस जुगाड़ । इ त सबसे
लडतई रहत हअ ।

फरगइयाँ - इ जमुना पार के बाभन है । इ जेतना भुई के ऊपर बा ओतनै भुई
के नीचे बा । कमिश्नर साहेब के एकै कमजोरी बा । ओ हयें बाभनवादी । इहै
कतौं से काम कै गवा बा । अब इ लूटि मारे । रेट बढ़ाए इ आपन । ऐकर
खोपड़ी बहुत तेज बा । कानून क्रायदा के पेचीदगी एका बहुत आवत हअ । हर
काम में खुडपेंच करे । जौन काम होत रहा एक रूपिया में ओहमें डेढ़ माँगे ।
राम सरूप बढ़िया आदमी रहा । जौनई पावइ रखि लेई और ईमानदारी से
एसडीएम के बतावई । ऊ रहा ईमानदार आदमी । इ त बड़ा बेईमान बा ।
एसडीएम के बस चटाय- पोंछाई दे ओनकर हक्क न दे । भाई केहू के हक्क
मारब ठीक नाहीं बा ।

राम संजीवन - फरगइयाँ उड़तै- उड़तै सुनत हई , बड़ी पावर बा मिसिर के
पास ।

फरगइयाँ- दुई साल से सड़त रहेन एकाउंट विभाग में । घंटा पावर बा । केहू
से न बतवअ तब एक बात बताई पर हलफू उठावअ की न बतउबअ केहू से ।
अपने मेहरास्त तक से नाहीं ।

राम संजीवन - फरगइयाँ हम पेट के बहुत गर्व हई । इ बात हमरे अंदर धूमे
और उहीं सोई जाये । हम आजतक केहू के बात केहू से नाहीं बतावा ।

फरगइयाँ- कलेक्टर साहब के चपरासी बताये रहा कि कलेक्टर बहुत भद्र
उतारेस एनकर । बलभर देहेस , बगैर माठा में भिगोये जुतियाएस । बहुत
हुज्जत केहेस एनकर अपने चैंबर में । सर्वेश मिसिरा के मिर्गी आई गई रही ।

राम संजीवन - ऐसन केहेस इ कलेक्टर संजीव रंजन ? देखात त सज्जन ह
ई । का बहुत डाटेस का ? तनिक बतावअ बिसतार से , हमहूँ कुछ रसि लेई
।

फरगइयाँ- लंबरदार , इ हए आईएएस, इ सब कौनों सड़क छाप लड़ाई त करे
ना । अब बिधाता के एकै लाइनैं बहुत बा । चैंबर में धूसझ के सर्वेश के हिम्मतै
नाहीं पड़त रही , चपरासी ढकेलेस ओनका भीतर । संजीव रंजन कलेक्टर
कुर्सी पे बैठाए के दे जूता .. दे जूता ऐनकर बारै बनाए देहेस । हमार कुल

खबर बहुत सच रहत ह / हम तौ बात फैलाइत नाहीं , चाही जेतना केऊ पूछै
/ एक खबर और बा पर ऊ हम न बताऊब / ऊ बताय देब त हंगामा होई जाए
और ऊ बहिन- बिटिया के इज्जत के ख़बर बा / ई बात कहब शोभा नाहीं देत
/

राम संजीवन - जूता खोलके मारेस ई संजीव रंजन कलेक्टर?

फरगैया - समझा करअ सजीवन, बातें से मारेस , लजवाई देहेस / कहि देहेस
हमैं पता बा काहे आवा चाहत ह हियाँ / ऐतना बहुत बा सुपरवाइज़र के रात
भर जगावय के बरे /

राम संजीवन - बतावअ आपन दूसर ख़बर फरगैया , हम केहू से न कहब /

फरगैया - नाहीं भइवा , ऊ त न कहब /

राम संजीवन - चलअ फरगैया तोहार हम पर बिसवास नाहीं बा जबकि तोहार
ख़बर हम केहू से नाहीं बतावा आज तक / जब बताये ह तब तूहिं बताये ह /
हम त सन्न मारि जाईत ह / हम पेटे से बहुत गर्स हई /

फरग़इयाँ - ल सुन ल फिर पर केहू से न बताए /

राम संजीवन - फरग़इयाँ , इ ख़बर हमरे संगे जरे समसान में लकड़ी के संगे ,
बतावअ त तनिक /

फरग़इयाँ- सर्वेश मिश्रा बहुत तगड़ी गोटी चले हएन / ओनकर भांजवा
आईएएस भवा बा न , ओकर बियाह करावत हए कमिश्नर के बहिनी से / पूरा
पावर उहीं भाँजवा से बा / अब ई लूटि मारे साल- दुई साल में / कमिश्नर के
मुख्यमंत्री बहुत मानत हयेन / अरे भाई इलाहाबाद ज़िला के कमिश्नर केऊ
ऐसई बन जाए का ? कमिश्नर के सीधै हाट लाइन बा पंचम तल से नाहीं त
केहू के हिम्मत पड़े कि हटाई देई राम सरूप के / राम सरूप पंचम तल के
आदमी है / ओका धोबी पछाड़ दाँव लगाई के सर्वेश मिश्रा ओकर सीना
आसमान के देखाय देहेन /

राम संजीवन - मतलब अब ई कमिश्नर एकरे भांजा के सार होई जात बा /

फरग़इयाँ - सर्वेश के चाल त इहई बा /

राम संजीवन - तब त ई अब बेअंदाज होई जाए / बहुत पावर पाई जाए / ई त कुल बलुए लूट ले / तक्दीर के चाभी पाई गवा बा सर्वेशवा / एक बात ई बतावअ , बियहवा होई जाए का ?

फरगइयाँ- हमार मन बोलत बा ई बियाह होई जाए / आजकल आईएस मिलतै केतना हयें / अब बाभन त मूलहा हइये बा / कमिश्नर अब अपने बहिन के बियाह आईएस से न करहीं तब का हम- तू करबै ।

राम संजीवन - ई बात त बा / अबै बियाह के बात चलतै बा तबै ई सर्वेश गोटी खेलि गवा / बियाह के बाद त ई एकाध चार्ज और लै ले / का पता माइंस विभाग के तीनों कुर्सी लै लेई ।

फरगइयाँ- बस देखत जा / ई सर्वेशवा खेल बहुत खेलाए इहाँ पर / ई बा पूर मदारी / ऐकर बीन बजै लाग बा / देखअ केतना अकड़ि आई गई बा कुछै दिनन में / रूपिया में बड़ी गरमी बा भइया / बेवजह मनई कहति ह कि जेठ के गरमी तपत ह , ई रूपिया के गरमी के सामने कछु नाहीं बा ।

राम संजीवन - के बेहतर मनई बा दुझनौ में सर्वेश मिश्रा और राम सरूप में ?

फरगइयाँ- दिमाके में सर्वेश मिश्रा के कौनो जोड़ नाहीं बा पर बा लालची / राम सरूप बा तनिक बेवकूफ पर सीधा और ईमानदार परानी बा / ई मिल बाँटि के खाये में बिसवास रखत ह और सर्वेश त केहू के हिस्सा न दें / अरे भाई सबै के हक बा / अब ईमानदारी भी कौनौ चीज़ होत ह न / जेकर जौन हक- हकूक बनत बा , ओका त देई चाही / पर ई सर्वेश मिश्रा चपरसियन के हक्कौ खाई जाय त अचरज न करअ ।

राम संजीवन - फरगइयाँ के बताएस तोहसे ऐतने भीतर के खबर ?

फरगइयाँ- कौन खबर

राम संजीवन - इहई कि अपने भांजे के बियाह कमिश्नर के बहिन से करावत हयें ।

फरगइयाँ- अब ई सब त न पूछअ हमसे / हमार जिंदगी निकल गई कलेक्टरेट में / पता नहीं केतना कलेक्टर- कमिश्नर आएन और चला गएन / ओनकरे घरे के एक- एक मुलाजिम हमार आदमी बा ।

संजीवन अब ई सर्वेश मिश्रा डबल गाँधी जेबा में रखत ह ।

राम संजीवन - ई डबल गाँधी का ह ।

फरगइयाँ- अरे महराज 500 के नोट सिंगल गाँधी , 1000 के नोट डबल गाँधी / इहाँ घूस जब बड़ा होत ह तब कहति ह लोग ठीकेदार से हमअ रक्म

डबल गाँधी में रूपिया देहअ / तोहै एतनव नाहीं पता बा ?

राम संजीवन - हमरे पास कौन भांजा आईएएस बा कि ओकर बियाह कौनो
कलेक्टर- कमिश्नर के इहाँ कराई और सिंगिल- डबल गाँधी के सेवाद पाई /
चलअ चाय पियावअ /

ऐ छोटे दुई चाय लै के आ तनिक मीठा ठीक से डाल देहे , कम से कम भिंसारे
के चहिया तो मीठ बनाऊ /

फरगइयाँ एक बात कही ?

फरगइयाँ- कहअ सजीवन

राम संजीवन - बहुत पहुँचा फ़क़ीर हए तू /

फरगइयाँ- हमार मनई हरि ओर हयें / हमें ख़बर सब रहत ह पर हम केहू से
कहित नाहीं /

राम संजीवन - ई बात त बा / तू पेटे से गंभीर हये , बस अपने ख़ास- ख़ास
के हवा देत ह बाकि त केहू के पतै नाहीं कुछ इहाँ के राजनीति /

अब शाम तक यह बात फैल गई कि कलेक्टर नहीं चाहता था पर सर्वेश
मिश्रा कलेक्टर की मर्जी के बग़ैर कमिश्नर से कहलाकर आ गये , कलेक्टर
नाराज़ भी है और नाराज़गी ज़ाहिर भी की पर सर्वेश के का फ़र्क़ पड़े जब
कमिश्नर ओनके जेब में बा / भाई पावर होई त ऐसन होई / गयेन कलेक्टर
तेल लेई बरे / अब भांजा आईएएस बनि गवा / दबी जुबान यह भी बात होने
लगा , “कमिश्नर एनके भांजा के सार होई जात बा , सर्वेश मिश्रा के त हाथें
नाहीं गोड़ौ के अंगुरी घिउ में /

मामा ने किसी तरह दिन का टेंडर निपटाया / जिस पार्टी को टेंडर मिला वह
मामा से मिला / टेंडर का काम मामा के ही मेज़ से होता था / कोई और दिन
होता तो वह बहुत खुश होते पर आज तो जान कहीं और अटकी थी / वह
अपने आफिस से सीधा मेरे घर आए / माँ बाजार गई थी / मेरे छोटे भाई के
साथ बैठे कुछ देर / पहले वह इंतज़ार नहीं करते थे , अगर माँ- पिताजी नहीं
है तब वह चले जाते थे , पर आज तो बात ही कुछ और थी /

मेरी माँ ने उनकी बुलेट मोटरसाइकिल दूर से ही देख ली और वह सीधा ऊपर
मेरे कमरे में आई /

माँ - भैया आई हयें , हम देखा ओनकर बुलेट / हम ऊपर आई गये , पहिले तोहसे पूछि लेई तब जाई ओनसे मिलै ।

मैं कल रात से ही गुस्से में था , जबसे वह ज़िद पर अड़ी थी कि अभी कुंडली - फ़ोटो वापस देकर आओ । मैं बिफर गया । यह क्या नाटक है । मैं छत से कूद जाऊँगा । तुम बहुत परेशान कर रही हो । रात में जाओ- सुबह जाओ .. कुंडली दे आओ ।

पर वह कहाँ डरने वाली मेरी गिदड़ धमकियों से ।

माँ - त कूद जा न । हमें काहे बतावत ह । सुनअ ई आईएस और अफ़सरी के रुआब अपने मुलाजिमन के देखाए । हमका देखउब त इहै हाँथ मोड़ि के तोड़ि देबै । बड़ा अफ़सरी छाई गै बा , अबहिय से । वह गुस्सा होकर चली गई ।

मामा ने उसको देखते ही बोला उर्मिला काहे भेज दिहू फ़ोटो- कुंडली वापस ?

माँ - भैया , ई हमरे जोड़ के रिश्ता नाहीं बा । तू त देखेन ह गाँव के मकान । अब तक कच्चा बा । बस एक कमरा पक्का बना बा , गेहूँ- पाती रखै बरे । ई सहर के मकान देखअ, बस ईंटा जोड़े होई बांकी का बा एहमें । ई घरे के हालत त तोहसे छिपी बा नाहीं । पैसा कम पड़ि गवा रहा , काम बंद कराये पड़ा रहा । ई बड़- बड़वार के इहाँ के लड़की हमरे इहाँ न चलि पझिं । आपन लड़िकऊ देखई चाही । एक तीरघाट एक मीरघाट ऐसन रिश्ता कैसन चले । हम नाव- गाँव के चक्कर में कई लेई बियाह और लड़िका के जिंदगी ख़राब होई जाय , इहाँ त ठीक नाहीं बा ।

मामा - शादी बियाह बाद के बात बा । ऐका वापस काहे करत हज । साहेबौ त जल्दी में हये नाहीं । तोहसे खुदै कहेन कि हमका जल्दी नाहीं बा , आराम से विचार कै ल ।

माँ - भैया ओ बड़वार मनई हयें । कालि के कहि सकत हिं कि हमका पहिले बताई देहे होतअ , बिना मतलब कुंडली - फ़ोटो रखि लेहे । अब शहर के ओ मालिक हयें , काहे नाहक में ओनकर नाराज़गी लेई । ई मुन्ना काल नौकरी या तो एनके महकमे में या ओनके भाई के महकमे में करे । बिना मतलब के काहे कौनो नाराज़गी मोल लेई । जब हमका बियाह ओनके इहाँ करइन के नाहीं बा तब काहे रखी ओनकर अमानत ।

मेरे मामा ने मेरे पिता को समझाने की कोशिश की पर मेरे पिता थे सुलझे हुये आदमी । वह माँ की तरह आवेश में नहीं आते थे । उन्होंने कहा , “ जिस गाँव जाना नहीं उस गाँव का पता - ठिकाना क्या पूछना और क्या जानना ” ।

मेरे मामा गिड़गिड़ाने ऐसे लगे । मैंने उनकी ऐसी गिड़गिड़ाहट कभी न देखी थी । वह एक दबंग व्यक्ति थे । पर मेरी माँ टस से मस न हुई । मामा ने मेरा भी सहारा लेने का प्रयास किया पर मैंने माँ की आँखों की तरफ देखा मुझे लगा उसकी बड़ी- बड़ी बोलती आँखे मुझसे कह रहीं , “ खबरदार ” । मैं डर सा गया । अभी एक घंटे पहले ही मेरा हाथ मरोड़कर तोड़ने की धमकी देकर आई थी । वह धमकी मेरे अंदर ज़िंदा थी । मैं उससे बहुत डरता था । वह जब किसी और तरह नहीं जीत पाती थी तो अंतिम ब्रह्मास्त्र था आँखों से मुक्तादल की धारा बहा देना ।

मैंने सोचा कि एक भी शब्द निकाला तो यह पूरी रात विवेचना कर डालेगी । मैंने अनसुना ऐसा कर दिया ।

मामा को भविष्य अंधकारमय दिखने लगा । पर वह हार मानने वाली चीज न थे । उनको लड़ना आता था । वह मोटरसाइकिल किक मारकर स्टार्ट किये , मोटरसाइकिल चल दी उनकी अगली चाल की तरफ । वह अंतिम दम तक बचाना चाहते थे अपनी आबरू जो अब जुड़ चुकी थी माइंस विभाग की कुर्सी के साथ जो एक प्रतिष्ठा भी दे रही थी और गाँधी जी को जेब में रहने को मजबूर कर रही थी ।

गाँधी की छपी हुई तस्वीरों से प्रेम करने वाले मामा की चाल गाँधी की तरह विस्मित करती हुई ।

मामा की बुलेट रफ्तार के साथ अगली चाल की तरफ । यह पापी पेट के साथ- साथ शाही शान का भी सवाल था । अगर कुंडली- फोटो वापस हो गई तो क्या होगा , यह सोचते ही मामा का हाथ मोटरसाइकिल के हैंडल पर कमजोर पड़ गया और मोटरसाइकिल एक पेड़ से टकरा गई । यह कहो रफ्तार धीमी थी कुछ न हुआ ।

मामा उठे और मोटरसाइकिल उठाई एक ऐसी रफ्तार लगाई कि आफताब के निकलने के पहले उनकी चाल चल जाए । वह कल के सूरज के झूबने के पहले इस मामले को हल करना चाहते थे ।

मामा की मोटरसाइकिल जमुना पुल पार कर गई । वह गाँव पहुँचने की जल्दी में थे । उनके और नाना के संबंध थोड़ा तल्ख़ थे । इसका कारण गाँव के ज़मीन का बँटवारा था । मेरे नाना मेरे बड़े मामा के साथ रहते थे । मेरे बीच वाले मामा को लगता था कि वह सारा कुछ बड़े बेटे को देते हैं । इसमें सच्चाई भी थी । हर आदमी को अपने कमज़ोर , अपाहिज बच्चे से लगाव ज्यादा होता है और मेरे बड़े मामा कमज़ोर थे अपने दोनों भाइयों की तुलना में ।

वह चाहते थे ज़मीन बाँट दी जाए । मेरे नाना के पास गाँव में और गाँव के बाहर ज़मीन बहुत थी । पाही की कुछ ज़मीन मेरी मौसी को दे दिये थे जिस पर मेरे छोटे मामा ऐतराज करते थे । सीलिंग के क़ानून से ज़मीन बच जाए इसलिये पाही की ज़मीन मौसी के नाम और गाँव की ज़मीन कुछ बच्चों के नाम थी जिसमें दो बीघा ज़मीन मेरे माँ के नाम भी थी और वह बहुत मौक़े की ज़मीन थी पर वह मेरी माँ ने न कभी वह ज़मीन माँगी न लेने का इरादा रखा , पर ज्यादातर ज़मीन अभी भी नाना के नाम थी । माँ कहती थी ज़मीन-जायदाद के चक्कर में पड़ जाएँगे तब बच्चे पढ़ नहीं पाएँगे । अपने मामा-मौसी के बच्चों के हशर को देखकर लगता है वह सही कह रही थी ।

गाँव की ज़मीन बाँटने पर पहले मेरे नाना आनाकानी कर रहे थे पर जब दबाव बढ़ने लगा तो मेरी माँ ने सलाह दी और कहा ज़मीन के चार हिस्से होने चाहिये । एक पिता का और तीन बेटों का । मामा का कहना था कि इससे बड़े भाई तो आधा पा जाएँगे और आधे में हम दो भाई । इसका मतलब हमको एक चौथाई मिलेगा । इस बँटवारे के मुद्दे पर मेरे दो मामा एक साथ थे और बड़े मामा अकेले थे पर साक्षात् दुर्गा साथ हों तब किस बात की चिंता । मेरी माँ नाना के साथ थी और सलाह देती रहती थी , खुराफाती दिमाग़ तो था ही उसका । मैं कई बार सोचता था , काश इसका पूरा दिमाग़ मिला होता , नसीब में कुछ अंश ही था ।

मामा इस प्रस्ताव पर काफ़ी दिन इस पर ऐतराज करते रहे । पर जब इस पर तैयार हुये तब कौन सा खेत कौन ले इस पर विवाद हो गया । मामा ने सिंचाई के साधन और सङ्क के पास के खेत की माँग की । तर्क यह दिया कि जब आधा आपके पास है तब यह चुनाव की सुविधा हमें दी जाए । बड़े मामा का कहना था बाबू जिसके साथ रहेंगे वह खेत का काम देखेगा और खेत लेगा । बाबू के न रहने पर खेत तीनों भाइयों के बीच बाँट दिया जाएगा । बीच वाले

मामा ने कहा , ठीक है बाबू हमारे साथ रहें । पर बाबू ने कहा जहाँ मेरा मन लगेगा वहाँ मैं रहूँगा और उनका मन बड़े मामा के साथ लगता था । इसी बीच सरकार ने नाना की बाग की कुछ ज़मीन का अधिग्रहण कर लिया । उस अधिग्रहण के कारण नाना को 12,000 रुपया मिला । मेरे दो मामा चाह रहे थे , इस प्रतिदेय की प्राप्त राशि को भाइयों में बाँटा जाए । मेरे नाना ने बाँटने से इंकार कर दिया । मेरे बड़े मामा के बच्चों ने इस पैसे का इस्तेमाल किया । नाना के इस दृष्टिकोण से असंतोष मेरे दो मामाओं को ही नहीं उनके बच्चों को भी था । बाबा भैया और मोहिता दीदी ने भी कहा इसमें सब का हक्क है , सबको मिलना चाहिये । मेरी मौसी भी मुँह बाये खड़ी थी कि कुछ उसको भी मिल जाए । मैंने भी माँ से कहा था कि बेटी के बच्चों को भी मिलना चाहिये । माँ परिणाम जानती थी । उसको पता था कि नाना कितने कंजूस हैं , उसने इस मुद्दे पर कोई प्रतिक्रिया न दी उल्टा मुझे ही डाँट दिया यह कहकर , “ कुछ पढ़- लिख के बन जाओ इस भिखमंगई से कुछ न होगा । ”

उसी समय पता नहीं कौन मेरी माँ से बता गया कि कोई कोर्ट का फ़ैसला आ गया है कि जितना हक संपत्ति में बेटों का है उतना ही बेटी का । माँ ने ज़मीन का बँटवारा टालने के लिये तर्क दे दिया कि संपत्ति 6 भागों में बाँटो । तीन भाई दो बहन और एक बाबू । मेरी मौसी उछलने लगी । वह थोड़ा बेवकूफ़ मार्का थी । वह बोली , “ उमिला आपन और हमार खेत अगलै-बगलै कराऊ नाहीं तो सर्वेश हमरे खेत के मेड़ काटि लेइहिं ” । माँ ने कहा , “दीदी इ सब बाबू के रहत बँटवारा न होई एका बरे कहत हई , हम का करब खेत लेई के ” । मेरी मौसी कम दखल देती थी और वह थोड़ा दब के रहती थी क्योंकि वह पाही की नाना की ज़मीन का उपयोग करती थी ।

मामी ने किसी से कहा , “ हमहूँ त देखी कोर्ट के फ़ैसला ” । जब माँ ने यह सुना तब वह बोली , “ सब देखाऊब कचेहरी में ” । यह सारे तर्क माँ अपने पिता के समर्थन में देती रहती थी जिससे खेत न बँटे । मेरे मामा ने गाँव के घर के तीन कमरों में ताला लगा दिया था जिस पर माँ ने विरोध किया पर नाना ने कहा , “जाई द ओनका अगर इहिं में संतोष बा त कै लेई द संतोष । कौन कमरा के कमी बा । एक - दुई कमरा और बनवाई लेब अगर ज़रूरत पड़े । अबहीं त कौनो ज़रूरत बा नाहीं ” ।

मेरे मामा मेरी माँ के रवैये से खुश नहीं रहते थे । उनको ऐतराज था कि उमिला बेवजह हमारे घर के मामले में अड़ंगा लगाती है । माँ कहती थी , “ जब तक बाबू जियत हयेन तब तक जेतनै सबके घर बा इ ओतनै हमरो बा । ओनके बाद तोहार व्यवहार ठीक रहे तब आउब नाहीं त हम झांकय न आऊब

“ । बड़े मामा कहते थे , “बाबू के बाद हम हई , उर्मिला तोहार घर ई वैसय रहे जैसे बाबू के समय में रहा ” ।

मेरे बीच वाले मामा ने हल्ला कर दिया था जिसको छोटे मामा भी फैलाते थे , ”बाबू ने उर्मिला का मकान बनवाया है ” । माँ कहाँ जवाब देने में पीछे रह सकती है । वह तो आशु कवि ऐसी है कि जवाब लेकर जाओ तैयार है सवाल के साथ । उसने जवाब दिया , “बाप- बेटवा मिलकर ठीक से बियाह हमार कै नाहीं पायेन तब दहेज दई बरे तैयार नाहीं भयें अब हमार मकान बनवाय के बात कहत हयेन ।”

माँ के इस विवाह के ठीक से न करने के उलाहने पर पर नाना बहुत दुःखी हो जाते थे । कहते हैं कि सिर्फ एक हज़ार रुपये दहेज और न देना पड़े इसलिये माँ का विवाह गरीब घर में यह तर्क देकर कर दिया गया कि लड़के का भविष्य है । मेरे बीच वाले मामा नौकरी करते थे पर उन्होंने कोई सहयोग न दिया । मेरी माँ कहती है , ”जब हज़ार रुपया और देने की बात आई तब भैया ने अनसुना ऐसा कर दिया । बाबू इंतज़ार करते रहे पर वह न आये , इस डर से कि हज़ार रुपया इनको देना पड़ेगा तब बाबू ने जो उचित समझा वह किया ” । यह कहानी मैंने पता नहीं कितनी बार सुनी होगी । माँ को मेरे पिता से कोई शिकायत न थी पर उसको इस बात की शिकायत थी कि मेरा विवाह बहुत ही गरीब घर में कर दिया गया , जबकि नाना सक्षम थे , मामा नौकरी कर रहे थे और एक बेहतर समृद्ध घर में विवाह हो सकता था ।

एक ख़ास बात थी कि यह तल्ख़ियाँ बातचीत के दौरान नेपथ्य में रहती थीं और लोग बात प्रेम से करते थे ।

इतनी देर रात मामा के मोटरसाइकिल की आवाज़ को गाँव के शांत वातावरण ने पहले से ही सुन लिया गया , जब मामा गाँव की लगी हुई सड़क से उतरकर गाँव में प्रवेश किये तब गाँव वाले जान गये कि साहब आ गये हैं । मेरे ननिहाल में लोग सोचने लगे क्या हो गया जो इतनी रात को साहब आ गये ।

मामा पहुँचे । वह चेहरे से चिंतित दिख रहे थे । उन्होंने नाना से अकेले में बात करने की इच्छा ज़ाहिर की । उन्होंने अकेले में नाना को सब कुछ बताया सिवाय इसके कि इस संबंध का इस्तेमाल अपनी पोस्टिंग के लिये कर लिया है । नाना ने पूछा , “एहमें हमार भूमिका का बा ” ।

मामा - आप मेरे साथ चलो और उर्मिला को समझाओ कि इतनी जल्दबाज़ी न करें इस रिश्ते को “ ना ” कहने की । कमिशनर साहब भी जब जल्दी में हैं नहीं तब क्यों उर्मिला जल्दी कर रही ।

नाना - जब उर्मिला के मस्रब के नाहीं बा बियाह तब ठीके बा , “ ना ” कहब ।

मामा - मस्रब के काहे नाहीं बा ?

मेरे नाना दहेज के बहुत आगरही थे । वह बगैर दहेज के कोई विवाह किये ही नहीं थे । यह दहेज गाँव- देहात में प्रतिष्ठा का प्रश्न था कि किसके विवाह में कितना मिला । वह हर विवाह के लिये आने वाले से कहते थे , “ अपना संकल्प बताइये ” । यह इसलिये पूछते थे कि कहीं ऐसा न हो जाए कि वह देना ज्यादा चाहता हो और यह कम माँग ले । पर देना वाला भी कम घुटा हुआ नहीं होता था वह कहता था , “ तोहरे ऐसन बड़वार मनई के देई के हमार हैसियत नाहीं बा , बस बिटियई बा हमरे पास ” । नाना पहुँचे हुये आदमी थे । जो कहा कि “सिफ़ बिटिया हमरे पास बा ” .. उसका प्रस्ताव वहीं ख़त्म । उनकी छवि ऐसी बन गई थी कि वह बगैर दहेज लिये विवाह अपने घर में नहीं करेंगे । नाना कहते भी थे , “ ई छवि त बढ़िया बा । आदमी पहिले से तैयार होई के आवै ” । कहते हैं कि मेरे बड़े मामा के एक बेटे का विवाह इन्होंने तय करने के दो दिन बाद ही कैंसिल कर दिया था क्योंकि दूसरा आसामी तीन हज़ार रुपया ज्यादा दे रहा था । अगर किसी विवाह में लड़की का भाई न हो तो क्या कहने । नाना कहते थे , “ नथुनी में संपत्ति झूलत बा । अब एहमें का पता करै के बा । ऐसे बढ़िया रिश्ता अब कहाँ मिले ।”

मेरे बड़े मामा के एक बेटे का विवाह एक ऐसे घर से आया जहाँ लड़की का कोई भाई न था । मेरी माँ ने कहा कि लड़की देख लें तब तय करें । नाना ने कहा , “ बिटिया ओकरे संगे एतनी बड़ी जायदाद बा , अब लड़की त सब एकै जैसे होत हई । हम पता कै लेहे हई लड़की नीक बा ” । मेरी माँ ने लड़की देखने के औपचारिक कार्यक्रम में शरीक होने से इंकार कर दिया । उसने कहा कि अगर मैं जाऊँगी और लड़की ठीक नहीं लगेगी तब मैं इंकार कर दूँगी । कोई विवाह ज़मीन से होता है क्या? सबसे आश्चर्य मुझे तब हुआ जब यह पता लगा कि जिसका विवाह हो रहा है वह खुद भी लड़की से ज्यादा जायदाद में रुचि रख रहा है । उम्र के इस पड़ाव पर उसके ख्वाब में उसकी होने वाली पत्नी नहीं लहलहाते खेतों में गेहूँ की बालियाँ आ रहीं हैं और वह स्वप्न में चीख रहा , मैं इन लहलहाते खेतों का मालिक हूँ । वह नहीं चाह रहा था कि बुआ लड़की देखने जाएँ क्योंकि वह कोई भी फ़ैसला ले सकती है । उस फ़ैसले को न मानने का सीधा मतलब उसको नाराज़ करना और कोई अपने भीष्म को नाराज़ करने का साहस नहीं रख सकता था । वह उस कायर -

डरपोक सेना की अकेली महारथी और उनकी महादेव थी । मेरी माँ ने एक बार ही इंकार किया और यह इंकार लोगों के हित में था इसलिये कोई मनाने नहीं आया । माँ ने भी कहा , ” ठीक है जिसकी जैसी मति वह वैसा ही करेगा । ”

इस मानसिकता में पूरा जीवन जिये हुये मेरे नाना ने दहेज का मुद्दा मामा से छोड़ा ।

नाना - “दहेज कमिशनर साहेब से के माँगे ? तू माँग सकत ह ? ए सब नाम बड़ा दर्शन थोड़ा वाले आसामी हयें । उर्मिला ठीक कहति बा । एक तौ हमारे जैसन साधारण समाज से ऊपर के मनई हैं और बहुतै बड़ा आदमी हयें । के एनसे दहेज के बात करे ? तू ओनकर मुलाजिम , तोहार हिम्मत पड़े ? ”

मामा - “बाबू तोहका दहेज के सिवाय कुछ नाहीं देखात ह ।

नाना - “अगर दहेज न लेई चाही , दहेज लेना गलत है , तब तू काहे लै लेहे बाबा के बियाह में दहेज ? 51000 रुपिया नगद और बुलेट मोटरसाइकिल तू पाए ह एक बेरोज़गार के बियाहे में । उर्मिला का बेटा ज़िला टाप है आज के दिन । बाबा ओकरे पैर के धोवन नाहीं हयें । हर केऊ बियाह करा चाहत बा और तू कहत ह कि दहेज न ल । पँचदेवरा के भोला पयासी के नाम सुने होबाअ तू । कलकत्ता में बड़ा व्यापारी हयें । काल ओ आई रहेन । हमसे खुद कहेन कि हमार एके बिटिया बा । हमरे पास दुई गाँव में खेत बा । सब तोहरै होए । और रुपिया जेतना कहअ , हम देबै । अब तू बताव हमका , आवत लक्ष्मी के उर्मिला “ना “काहे कहे । बेचारी बड़ी गरीबी में जिंदगी बिताई बा । अब भगवान सुनि लेहे बा ओनकर तब तू कहत ह कि नाहीं उ दहेज न लेई । काहे न लेई इ त बताई द हमका । तू चाहत ह कि हम कहीं कि उर्मिला तू दहेज न ल ऐ कमिशनर साहब हयें ? हम त कहब उर्मिला मौका न छोड़ूँ , बलभर के ल । जब दई वाले तैयार हयें तब लेई में कौन समस्या बा ? ”

मामा की कोई चाल काम नहीं कर रही थी । वह समझ नहीं पा रहे थे क्या करें । वाक़ई उर्मिला ने चेस बोर्ड फाड़ दिया था । घोड़ा चलाए कहाँ अपना । मामा ने अगला प्रयास किया ।

मामा - “बाबू हम ई कहाँ कहत हई कि जिन ल दहेज , पर दहेजै सब कुछ नाहीं होत । रिश्ता- नात कुछ होत ह । ”

नाना - कैसन रिश्ता- नात ? ऊ पचीस साल से परेशान बा । हमका बताई द तू कौन नात- हित ओकरे काम आएन । तोहसे माँगेस 6000 रुपिया ।

ओकर घर के काम रुकि गवा तू देहअ / तोहार छोट भाई हयें हम ओनहू से
कहा कै द मदद / ओ कहेन हमरे पास कहाँ बा “।

मामा - “बाबू तुहुँ त मदद नाहीं कहे रहे उर्मिला के “।

नाना - “हाँ हमहुँ नाहीं किया / हमरे पास बा का / खेत बा और कुछ पुरान
चाँदी के रूपिया / खेत हम बेचि नाहीं सकित / तू पचे हल्ला करबअ / चाँदी
के रूपिया ऊ लेहेस नाहीं ।

हम त कहब कौनौ मुरव्वत न करअ और बलभर दहेज लै लेई / बाद में केझ
काम न आए सिवाय ई रूपिया के / हरिकेश के बियाह ठीक बा / रूपिया बा
और विरासत बा “।

मामा - “बाबू तू चल हमरे संगे / ई कमिश्नर के रिश्ता अबै “ ना ” न कहा जाय
/ चार -छः महीना बाद देखा जाए “।

नाना - “का होई जाए इ छः महीना में “?

मामा - अच्छा परिवार बा / दहेज देझहिं / कुछ कम ज्यादा होये तब हम दै देब
/

नाना - “सर्वेश तू ओकर घरे के काम बंद कराय देहे रहे / तब नाहीं देहे उधार
पर रूपिया जबकि ऊ बियाजौ देई के तैयार रहीं / अब तू मुलाजिम ह
कमिश्नर के तब कमिश्नर के तरफ से दहेजौ देई के तैयार होई गई हय /
बड़ी तोहार महिमा न्यारी बा “।

हम त कहब त हरिकेश के बियाहे बरे कहब / ऊ बियाह ठीक बा / अपने
मस्सरब के बा / ऊ बियाह चलि जाए / हरिकेश दुई बार आई रहेन हमसे मिलै
बरे / हमसे सब बताई चुका हयें कि का देब और इहौ कहें हयें कि हमरे एकाध
गदेलन के नौकरी लगाई देझहिं /

मामा - “बाबू, कमिश्नर साहेब पूरे घर के नौकरी लगाई देझहिं / आप के नाहीं
पता बा ओनकर ताकत “।

नाना - “अब इहि बरै त बियाह न करब / सब कुछ मिल जाए ऐसन रिश्ता
तलाश करत जा / अब मुन्ना के बाद और केझ कुछ कै पाए अपने परिवार में
हमका त देखात बा नाहीं ।

हमसे तू चाहत का ह, हम का कै देई एहमें, हमका तू बस इहै बताय दै “।

मामा - “बाबू आप चलो शहर मेरे साथ / उर्मिला से कह दीजिये कि
कमिश्नर के रिश्ता अभी कैसिल न करे “।

नाना - “हमरे कहे मानि जाये “?

मामा - “हाँ । ऊ मानि जाये ।

नाना - “ई हरिकेश के बियाहे बरे बाबा के अम्मा जबान देहे हई ओकर का ?”

मामा - “ओकरे बारे में बाद में देखा जाए ।

नाना - “तू ह केकरे संगे ? कमिशनर या हरिकेश ?”

मामा - “बाबू, कमिशनर के रिश्ता हरिकेश से बेहतर बा ।

नाना - “कमिशनर से ऊपर के कोई आई जाये काल बियाहे बरे तब ?”

मामा - “बाबू, ई ज़मीनी परिवार बा । ई सब तरह से ठीक बा । मुन्ना हमारा भी खून है । हम ओकर भला देखि के सब कहत हई आप चलिये साथ मेरे ।

ज़िद करके, विनती करके मामा बुलेट पर नाना को पीछे बैठा कर चल दिये शहर की ओर ।

हर कोई आज मशगूल है अपने प्यादों को चलाने के लिये पर कभी बिलखती हवाओं, जख्मखुर्दा पत्तों और बिना परिंदे के शजर के तरह की ज़िंदगी को जिया था जिसने यह सोचकर कभी वक्त मेरा भी आयेगा, आज उसने चेस बोर्ड को फाड़ कर उसके इतने टुकड़े कर दिये हैं कि शातिर खिलाड़ी उस बोर्ड को जोड़कर अपना घोड़ा चलाना चाहे तो भी उस जोड़े हुये बोर्ड में सफेद - काले खानों में फ़र्क करना मुश्किल हो रहा और घोड़ा ढाई घर चलकर अपने ही प्यादे मारने लगता है ।

उस फटे हुये चेस बोर्ड पर रामेश्वर नाथ मिश्रा का दिमाग तेज काम कर गया जैसे ही गाँव की ठंडी बहती हवा मोटरसाइकिल की गति से और तेज महसूस होती हुई उनके साफ़े पर लगी, उनके दिमाग में सारी समस्या का हल आ गया । उन्होंने चाल चल दी बस बताना बाक़ी था । आखिर बाप तो बाप ही होता है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 126

नाना रातो- रात शहर आ गये । मामा के घर में उनका दिव्य इंतज़ाम किया गया । मोहिता दीदी भी अपने पति के साथ आ गई थी । बाबा भैया वाली भाभी भी एक नयी बहू थी घर की । वह भी सेवा में लगी थी । नाना को फ़ोटो दिखाई गई, बायोडेटा सुनाया गया । कन्या और परिवार की की भूरि- भूरि-

प्रशंसा की गई । कमिश्नर साहब की बहन में वह सारे गुण भी तलाश लिये गये थे जो विधाता से भी आरोपण न हो सका था । अगर आज वह यह अपना प्रशस्ति गान सुन लेती तो वह भी धन्यता को प्राप्त हो जाती । उसका प्रशस्ति गान दैव तुल्य हुआ था - इन्द्र की पत्नी शची की तरह रूपवान , मैनका की तरह की मोहक मुस्कान , सतीत्व और संस्कारों का ऐसा गान कि सीता - उर्मिला को मिला कर ही प्राप्त हो सकता है । यह बखान जो भी सुनेगा , वह नंगे पाँव चलकर जाएगा और घुटनों पर बैठकर दोनों हाँथ आसमां की तरफ उठाकर कहेगा , “ हे देवी इस अकिञ्चन को स्वीकार करो ” ।

कमिश्नर साहेब तो क्या कहने वह राजा दिलीप की तरह के गो सेवक , राजा रघु-अज की तरह के शौर्यवान , प्रभु राम की तरह सौम्यता के प्रतीक हैं और वह विवाह के बाद एक रोज़गार कार्यालय चलाएँगे जहाँ से मधुबनी मिश्रा परिवार के एक- एक आदमी को दो- दो नौकरी देंगे । यह नौकरी मेरे नाना की सबसे कमजोर नस थी ।

मेरे परिवार में काबिलों की एक पूरी खेप है । बड़े मामा के बड़े बेटे बीए पास करने में असफल हुये तमाम बेमतलब के प्रयत्नों के बाद । दूसरे बाले तृतीय शरणी के पुरोधा थे पर बीए पास कर गये । इस तृतीय शरणी के बीए पास पुरोधा का विवाह एक मात्र कन्या के ज़मीन-जायदाद से लदे परिवार में करके जायदाद विरासत में प्राप्त कर ली गई थी । तीसरे बाले कोई कक्षा एक साल में आज तक पास ही नहीं कर पाए । वह जिस कक्षा में भी जाते , वहाँ की कुर्सी मेज़ से इतना लगाव हो जाता है कि वहाँ से उनका जाने का मन ही नहीं करता । चौथा दादू , दिन - रात जोकरई करना और नामाबर बना दो या कासिद सबके लिये तैयार । बाबा भैया तो प्रारम्भिक परीक्षा फेल होने का लाइसेंस लिये थे । दादू कहता ही था इनका दिमाग रबड़ की तरह का है । उसमें सूजा डालो और फिर निकालो कोई फ़र्क ही नहीं पड़ेगा, जस का तस । मोहिता दीदी पढ़ने में ठीक थीं पर ईश्वर का आशीर्वाद न मिला ।

मेरी मौसी के लड़कों का भी कमोबेश यही हाल था । एक फ़र्जी डाक्टरी की डिग्री लेकर कहीं से आ गये थे और पूरे गाँव को सुई लगाते रहते थे , कोई रात- बिरात बीमारी में उनके गाँव के आस- पास का मरीज़ उनको घर पर बुला ले , वह सीधे ग्लूकोज़ की बोतल चढ़ाने लगते थे । उनका कहना था , इसमें पैसा अच्छा मिलता है । कितनों की गाथा लिखूँ , सब भगवान के बनाये नायाब नमूने हैं । दूसरे को बिजली विभाग में मौसा किसी तरह से फ़िट कराये थे । तीसरा बीए तृतीय शरणी में गर्व पूर्वक उत्तीर्ण होकर बीएड कर रहा था

या यूँ कहें आने वाली नस्लों को शिक्षा प्रदान करने के नाम पर बर्बाद करने की ट्रेनिंग ले रहा था ।

यह सब लोग जो भी परीक्षा देता था उसका मज़ाक बनाते थे । बाबा भैया , मोहिता दीदी या मैं , कोई इनसे न बचता था । जब परिणाम आता था तब कहते थे , “ सुना ह पेपर में नाम छपि गवा पर आँखिन से देखात नाहीं बा ” ।

“कलेक्टर साहेब का घर है दरवाजे से सिर झुका कर अंदर आओ “

.....
“कलेक्टर साहब का दौरा हमरे गाँव में कब होई “

“ रामायण बा 27 तारीख के । आई जाया कलेक्टर साहेब , भगवान इंतज़ार में होइहिं “

मेरे छोटे मामा किसी जेमिनी सर्कस के भागे हुये जोकर हैं । वह बचपन में रामलीला में विदूषक का काम करते थे और वह बहुत लोकप्रिय थे । उनकी पहली प्रस्तुति नारद मोह के नाटक में होती थी और यह नाटक रामलीला के पहले ही दिन खेला जाता था । वह नारद बनते थे और उनका “ नारायण-नारायण ” का संवाद बहुत फेमस था । उनको देखते ही लोग कहते थे “नारायण- नारायण ” ।

कंजूसी की कोई प्रतियोगिता हो तो उसके एक अच्छे उम्मीदवार होंगे वह । एक दमड़ी भी उनसे खर्च नहीं होती थी ।

दादू मेरे साथ बहुत रहता था । वह सबसे चालू था । उसको मेरे बाबा के कहने के कारण समझ आ गया था , मैं कुछ कर्लूंगा इसलिये बुआ का मज़बूत गढ़ पकड़ लो । उसकी समझ का आधार यह था कि वह गर्मी में आता था मेरे बाबा के यहाँ । नाना भेजते थे कि जाओ मुन्ना के साथ पढ़ो । बाबा बहुत ही कठोर अनुशासक थे । गाँव के कई बच्चे आ जाते थे पढ़ने । गाँव वाले कहते थे , “ उर्मिला भौजी के गर्मी के स्कूल चलत बा ” ।

मेरे नाना की तरह मेरे बाबा भी दहेज के आग्रही थे । मुझे तो पूरा जमुना पार ही संपत्ति का आग्रही लगता है , जहाँ मिले हथिया लो । उन्होंने अपने बड़े बेटे का विवाह संपत्ति की आकांक्षा से कर दिया था और मेरे बड़े पिताजी को

ससुराल में संपत्ति मिल गई थी । मेरे बाबा की तनख्वाह 64 रुपया महीना थी । वह 16 रुपया मेरे पिताजी को देते थे और बाकी में घर चलाते थे । उनकी कमाई में एक ही बेटा पढ़ सकता था और मेरे पिता पढ़ने में ठीक थे इसलिये यह अवसर उनको मिला । बाकी दो पढ़ सकते थे या नहीं इस पर आजमाइश ही नहीं हुई क्योंकि आजमाइश करने का भी साधन न था । मेरे बड़े पिताजी के बच्चे ननिहाल में संपत्ति पा गये और उसी में रम गये, पढ़ाई का काम पीछे छूट गया । मेरी माँ ने अपने अनुभवों से यह सीखा कि संपत्ति के चक्कर में पढ़ने से बच्चों की पढ़ाई में बाधा आती है इसलिये उसने अपने को इन दुनियावी मायाजालों से दूर कर लिया था ।

माँ मुझे पढ़ाने के चक्कर में गर्मी की छुटियों में गाँव में स्कूल ऐसा माहौल बना देती थी । मेरे घर के और गाँव के बच्चे भी पढ़ने आते थे । दादू के आने के बाद मेरे बड़े पिताजी के भी बच्चे आने लगे थे पढ़ने, पर बाबा पर आरोप थे कि वह दुई अखियाँव करते हैं । मुझे ही पढ़ाते हैं, बाकी को तो बस टाइम पास करते हैं । बाबा कहते थे, “मैं अध्यापक हूँ विधाता नहीं जब ईश्वर दिमाग़ में गोबर भरि मेरे देहे बा तब हम का करी” । बाबा से अच्छा अध्यापक बनाने के लिये ईश्वर को अतिरिक्त प्रयत्न करना पड़ेगा । उन्होंने मेरी प्रतिभा पहचान ली थी और मेरी घिसाई कर दी ।

माँ ने एक अनुशासन की स्थापना कर दी थी । बच्चे समय पर आएँ । अपनी टाट- बोरिया लेकर आएँ और समय पर जाएँ । मैं बहुत ही बदमाश था, मैं मौका देखकर भाग जाता था, मेरे भागने पर माँ मेरी और दादू की धुलाई भी कर देती थी और उसके डर से हम लोग पढ़ते थे । दादू कहता था, “मुन्ना बुआ बड़ी निर्दयी बा” । मैं कहता था, “पूरी कसाई बा” । एक बार हम और दादू पैदल शाम को अपने बाबा के यहाँ से नाना के यहाँ भाग गये । वह समझ गई कि हम लोग भाग गये हैं । वह अगले दिन सुबह गई और मारते हुये हम दोनों को ले आई ।

एक नियम माँ ने बना दिया था कि जो बच्चा काम कर लेगा वह जल्दी जा सकता है । मैं तेज था अपना भी काम कर लेता था और दादू को नक्ल चुपके से करा देता था और हम दोनों भाग जाते थे बाग में आम बिनने, जामुन तोड़ने या पेड़ पर चढ़ने । बाबा ने माँ से कहा था, “यह बहुत तेज है बस बदमाश है पर ऐसे बच्चे जीवन में कुछ कर लेते हैं” । यह दादू को समझ आ गया था, इसलिये वह मेरे साथ ही लगा रहता था ।

नाना की चाहत थी कि बड़े मामा के बच्चों की नौकरी लग जाए । मौसी चाहती थी उसके एक बच्चे की लग जाए । पर नाना का अतिशय लगाव बड़े मामा के साथ था । हरिकेश मामा उनकी यह कमी पकड़ लिये थे और कहा था कि वह एक नाती की नौकरी लगवा देंगे । यह भी कहा था कि अगर नौकरी पाने के लिये लाख- खाड़ घूस लगे तब वह भी दे देंगे । नाना के नातियों में आपसी प्रतिस्पर्धा का जन्म हो गया था कि नाना किसके लिये कहेंगे और नाना की पूरी सेवा हो रही थी । गाँवों में यह मान्यता है कि बगैर पैसा खर्च किये कोई काम नहीं होता । हर काम घूस से ही होता है । सारी नौकरियाँ सिर्फ़ सिफारिश या घूस से ही प्राप्त हो सकती हैं । इसी मान्यता के आधार पर मेरे मामा के बेटे कहते थे , “ नौकरी लागत ह या त ज़ोर से या रुपिया के बल से । घूस- अखोर देई के होई त काल नौकरी लागि जाए ” । हरिकेश मामा का प्रस्ताव मेरे बड़े मामा के यहाँ ऊपर चढ़ने लगा था । एक तो बहुत फल-मिठाई का दो बार सेवन हुआ और नौकरी की उम्मीद जग गई थी ।

मेरे नाना को तोते की तरह पूरी रात पढ़ाया गया । वह पूरी रात सबकी बात सुनते रहे और अंत में मोहिता दीदी ने अंतिम ड्राफ्ट तैयार किया , कल क्या कहना है । उस अंतिम ड्राफ्ट में सिर्फ़ यही था कि कमिशनर के रिश्ते पर अभी कोई फैसला न लें । मुन्ना मामा के साथ कमिशनर के यहाँ जायेगा ।

सारी बातचीत के बाद नाना ने कहा कि शर्मा जी तो मान जाएँगे पर उर्मिला पर कुछ नहीं कह सकता । मैं उसको बचपन से जानता हूँ । उसके दिमाग में जो आ गया वह हटाना मुश्किल है । मामी ने कहा , “ बाबू तोहार बात आज तक कभी काटे बा ? ”

नाना -“आज तक हम ऐसा कुछ कहे भी नहीं जो काटने लायक है ” ।

मामी - “बाबू , एहमें काटै लायक का बा ”?

नाना - “हमका लागत बा मुन्ना एहमें तैयार नाहीं हयें । उर्मिला एतना कड़ा रुख मुन्ना से पूछि के ओकरे कहे से लेहे होइहिं , नाहीं त एतने जल्दी ऐसन फैसला नाहीं होत जबकि सामने वाला कौनौं चर्चा नाहीं करत बा ” ।

मामी - “बाबू , उर्मिला के सामने मुन्ना के हैसियत नाहीं बा कि कुछ कहि सकै ” ।

नाना - “पहिले के बात कुछ और रही । अब बड़ा अफ़सर होई गवा बा । दादू हमसे बताए बा कि कुंडली गुरु ऐसन अफ़सर के मुन्ना पढ़ावत ह । उर्मिला कुंडली गुरु के जीप से हमसे मिलै ग रही ” ।

मामी - “बाबू तुहु मुन्ना से कहि देहअ एक बार ” ।

नाना - “मुन्ना से कहे पर काम न बने । कहे उर्मिला से पढ़े “।

सब वार्तालाप हो गया । मामा के साथ- साथ बाबा भैया और मामी भी चिंतित थीं । मामी शाम को रूपया गिनती थीं । हर दिन हज़ारों में रूपया आता था । टेंडर का पैसा बाबा भैया ने गिना था । अभी एक महीना ही हुआ था लक्ष्मी की कृपा का । यह कृपा इतनी जल्दी चली जाएगी , इस पर सब परेशान थे । जो हर वक्त यह दुहाई देती थीं , “ हमरे जबान के का होए ” , वह इस बात पर लग गई कि किसी तरह बस मुन्ना कमिश्नर के यहाँ चला जाए ।

रात में मामा - मामी ने काफ़ी देर तक बातचीत की ।

मामी - “का लागत बा तोहका “?

मामा - “कुछ नाहीं कहि सकित । बाबू के भी विश्वास कम बा कि उर्मिला मान जाए “।

मामी - “कमिश्नर के कौनौं और लड़िका बताय द । यह भी एक रास्ता बन सकता है “।

मामा - “अगर कौनों और लड़िका कमिश्नर के चाही तब हमार का काम बा । हम मदद करब बियाह तय करय में , इहै सोच के हमका बोलायेन रहे साहेब । कमिश्नर साहब के त मुन्ना चाही ।, अगर मुन्ना न चाही तब हमसे साहेब के का मतलब । मुन्ना हमार भांजा है । हर घरे में मामा के बहुत चलत ह इ त समाज के रीति हइय बा , इहै साहेबौ के दिमाग में बा “।

मामी - “हमार घर त बिधाता अलगै बनाये हयें । इहाँ नाते- रिश्ते के कौनौं कदर नाहीं बा “।

मामा - “बातचीत से हमका ई लगि गवा बा कि साहेब मुन्ना से बहुत प्रभावित हयें । हम एक बार कहा पोस्टिंग बरे । साहेब पंचम तल के आदमी के हटाई देहेन और कहेन कलेक्टर से , “ आज ही कार्य भार देकर ज्वाइन करा दो “ । यह बहुत बड़ी बात है “।

मामी - “ऐसन मुन्ना में कौन सुखाब के पर लगा बा “?

मामा - “मुन्ना के मार्केट बहुत तेज बा । सत्य प्रकाश मिश्नर कौनौं हिंदी के अध्यापक हयें ओ कमिश्नर और मुन्ना दुझनों के पढ़ाये हयें । ओ कहि देहें हयें कमिश्नर से कि मुन्ना से बियाह करअ , इ बहुत आगे जाये “।

मामी - “अब और केतना आगे जाए । होई त गवा आईएस “।

मामा - “उर्मिला के बेटवा हई इ मुन्नवा । देखत नाहीं हऊ इ उर्मिला सबै के कैसन नाक नाथे बा । कक्षा 5 पास बा उर्मिला । हम एम ए पास हई और एक अधिकारी हई । छोटकऊ बीए फेल हयें पर नौकरी करत हयें पर आज तक हम दुझनौ भाई मिलि के गाँव के खेत नाहिं बाँट पावा । सबसे मँगा खेत ओकरे नाम बा । ऊ धमकी देत ह कि अगर झिगड़- तिगिड़ करबअ तब हमार मन जेका आए ओका लिख देबइ । बाबू के मति मारी रही कि सड़कै के ज़मीन ओकरे नाम लिख देहेन । बाग- बगीचा लिखे होतेन । सीलिंग से बाबू बहुत डेराय ग रहेन । पाही के ज़मीन लिख देहेन बहिन के और सबसे टाप के ज़मीन उर्मिला के । खेत लिखब त मजबूरी रही कि खेत सीलिंग में जात रहा पर का ज़रूरत रही सड़क पर के खेत लिखै के , कौनो और खेत लिखे होते । बहुत मँगा खेत बा । सबके नाम लिखेन दुई- दुई बिगहा सीलिंग बचावई बरे । उर्मिला के खेतौ बा दुई बिगहा पर दाम दस बिगहा के बराबर बा ।

मामी - “उर्मिला खेत लै ले का ?

मामा - “अबै तक त नाहीं कहेस कि लेब और न कभौं गई खेत देखई । कभौं ज़िक्र नहीं सुना हम उर्मिला से खेत के बारे में । पर लेवा चाहे त केऊ का करे । बगैर क़ौनों पावर के त नाकों चना चबवाय देहे बा अब त पुलिस और बंदूक लै के गाँव गई रही । छोटकऊ बतायेन कि कौनों मातादीन हवलदार गवा रहा उर्मिला के संगे । छोटकऊ कहने मातादीन से , इ बसंतवा ठाकुर गुंडा बना घूमत ह और हमका हैरान केहे बा । ओका पकड़ि के मुर्गा उहिं दुआरे बनाई देहे रहा । मुन्ना कौनो आम अफसर न बने , उर्मिला के खून बा । ऊहौ देखू कौन- कौन गुल खेलाये ।”

मामी - “अगर ई बियाह के बात इहीं ख़त्म होई गई तब तोहरे पोस्टिंग के का होये ?

मामा - “उहै त सबसे बड़ी चिंता बा ।

मामी - “का कमिश्नर हटाई दे ?

मामा - “ई विभाग में पोस्टिंग कलेक्टर के आफिस से हमार भई बा । कमिश्नर साहब ज़ोर देकर निर्देश दिये थे , हमरे बरे । कलेक्टर - एसडीएम दोनों नाखुश हैं । अब नाखुश आदमी के त बहाना चाही हमका हटावई बरे ।

मामी - “ओ काहे नाखुश हैं ?

मामा - “ऊपर से ज़ोर लगाय के हम आई हई । हमसे पहिले वाला ओनकर आदमी रहा । ऊहौ ज़ोर लगावत बा । जिस दिन कमिश्नर के हाथ सिर पर से हटा , हम हटि जाब ।

मामी सिहर गईं, यह सुनकर / वह रोज़ रूपया गिनने की आदी हो चुकी थीं ।
अब यह हर शाम का दैवीय क्षण चला जाएगा यह सोचकर ही अंदर से काँप गईं ।

मामी - “कैसे काम होए ?”

मामा - “मुन्ना हमरे संगे कमिशनर साहेब के यहाँ चला चले बस / अगला कुछ महीना कट जाएगा / उसके बाद कौनौं जुगत लगाऊब ” ।

मामी - “इ त बड़ा काम बा नाहीं । कौन बियाहे बरे कहत त हई ” ।

मामा - “काम बहुत बड़ा नाहीं बा पर के ई ज़िद्दी उर्मिला के समझावै ? ओकरे दिमाग में एकै बात अटकी बा ई फोटो- कुंडली हमरे घरे से हटावअ ” ।

मामी - “हमहूँ चली का काल ? हम मुन्ना से हाथ- पैर जोड़ब / आखिर हमहूँ ओकर मामी हई । आज तक कुछ नाहीं कहा । हमरे सामने पैदा भवा रहा अपने ननिहाल में ” ।

मामा - “चलू काल / देखअ भाग्य में का लिखा बा ” ।

बात करते - करते एक शून्य की ओर निहारते हुये मामा - मामी ने रात काटी ।

सुबह हो गई थी , आफ्रताब लालिमा लिये सम्मोहित कर रहा था , मंद समीर भी गर्मी से कह रहा था ज़रा थमो अभी वक्त हमारा है , पक्षी रुहानियत का कलाम गा रहे थे , हरसिंगार के पेड़ों ने ज़मीन पर सफेद - लाल रंग की क़ालीन बिछा दी थी पर किसी में कोई भी सुकून और सौन्दर्य मेरे मामा- मामी को न मिल रहा था न दिख रहा था । उनके जीवन की सिफ़्र एक चाहत थी

....

मोटरसाइकिल चलाते मामा पीछे बैठा हुआ मैं कमिशनर के बँगले में घुसता हुआ ।

सफलता एक प्रेम गीत है जो हर कोई गाना चाहता है । गरीबी एक ऐसी धून है जिसे सब बजता देखकर कानों को कमज़ोर दिखने वाली हथेलियों से मज़बूती से बंद कर देते हैं । मेरे जन्म के समय किसी को घड़ी में वक्त देखने का समय न था । सेठौरे के लिये सोंठ भी बामुशिकल ही मिली थी । मेरे जन्म के समय न गए गए सोहर आज गए जा रहे , ऐ विधाता ऐसी तक़दीर सबको देना । अगर इस विधर्मी अकिंचन पर तेरी इनायतों की बारिश हो सकती है

तब तो हर एक को हक है अपनी रिदा फैलाकर चीखकर तुझसे पूछने का , “कौन सी कैफ़ियत थी तेरी जब उसको तूने सूरज के घोड़े खोलकर दे दिये । मैं इंतज़ार करूँगा उसी तेरी कैफ़ियत का तेरे रहमोकरम के लिये” ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 127

नाना , मामा , मामी शाम को आ गये । मामा काम निपटा कर आफिस से आज जल्दी चले आये थे । मेरी माँ नाना को देख कर प्रसन्न होती हीं थीं , उसको प्रसन्नता बहुत हुई पिता को देखकर , पर एकाएक आने और मामा-मामी के साथ होने के कारण वह समझ गई कि बात मेरे विवाह से सम्बन्धित ही होगी ।

उसने पूछा अपने पिता से , कब आये ? नाना ने उत्तर में मामा की ओर इशारा करते कहा कि यह कल सर्वेश शाम को गाँव गये थे और मैं इनके ही साथ आया । माँ सारे माजरे का अनुमान लगा गई और दिमाग़ में रणनीति बनाने लग गई ।

मेरी मामी नाना के यहाँ के संपत्ति विवाद में मेरी माँ की आकरामक भूमिका से नाराज रहती थीं इसलिये वह मेरे घर बहुत ही कम आती थीं । इसलिये उनको देखकर माँ को थोड़ा और आश्चर्य हुआ । एकाध बार मेरे पिता ने कहा था , “ क्यों दख्खलंदाज़ी करती हो दूसरे के मामलातों में ? ” पर माँ तो शंकराचार्य से भी शास्त्ररार्थ कर ले मेरे पिता क्या चीज़ हैं । उसका तर्क था , “यह मामला दूसरे का कैसे हो गया ? यह मेरे पिता का मामला है । यह उनके हित के खिलाफ़ जाता है । यह मेरा दायित्व है , उनके हित की रक्षा करना । भैया सरासर गलत कर रहे हैं । बाबू के जिंदा रहते संपत्ति कैसे बाँटी जा सकती है । भैया चाहते हैं कि खेत बाँट दिया जाए और वह अपने हिस्से का खेत अधिया पर दे दें और गाँव का गल्ला बेचें । यह तो अन्याय पूर्ण बात है । वह बेवजह घर के तीन कमरों में ताला भी लगा लिये हैं । ”

मेरे पिता भी समझा न पाए उसको और वह मोर्चे पर खड़ी रही । मेरी मामी के मन में खटास मेरी माँ के प्रति उसके इस रवैये से आना स्वाभाविक ही था और रिश्तों का वह एक सुमधुर ताना - बाना न रहा और एक संबंधों का उलझा हुआ मकड़जाल बन गया जिसमें सब सँभाल- सँभाल कर चलते थे ।

यह सारी बातें एक- दूसरे के खिलाफ़ पीठ पीछे ही होती थीं इसलिये संबंधों में खिंचाव होकर भी एक कम आत्मीयता लिये हुये सहज संबंध बने हुये थे ।

नाना ने आते ही “बाप तो बाप होता है” की चाल चल दी । माँ को अकेले पाकर कह दिया , “हमका गाँव से लै के आई हयेन । हम चला आई हई संगे पर जौन तोहका ठीक लागे तू करअ । हमार कहब मजबूरी बा , बाकी तू बहुत समझदार हऊ ” ।

जैसा कि मामा ने पूरी रणनीति पहले से ही निश्चित की हुई थी , वैसे ही बात आरंभ हुई । नाना ने माँ पूछा , कुंडली - फ़ोटो क्यों लौटा दिया ?

माँ - “बाबू जब कमिशनर साहेब के इहाँ बियाह नाहीं करै के बा , तब काहे ओनकर सामान रखी ?”

नाना - “जब साहेब आइहिं तब देखा जाए? अबइहें कौन जल्दी बा ? ओ त कुछ कहत हयें नाहीं अबै तक ।”

माँ - “बाबू , जब हमका करइन के नाहीं बा बियाह तब काहे हम रखी ओनकर फ़ोटो- कुंडली ।”

नाना - “ज़रा थमि के सोच ल । ऐसन कौन हड्डबड़ी बा “?

माँ - “बाबू हम सोचि लेहे हई । मुन्ना के पिता जी कहत हए , न करिबै एनके इहाँ बियाह । ए बहुत बड़वार आदमी हएन और एनके इहाँ की लड़की हमरे इहाँ न चलि पाए ।”

नाना - “का देखाय गवा शर्मा जी के ऐसन कि लड़की न चलि पाए ? ऐसन त कुछ नाहीं देखात बा बायोडेटा- फ़ोटो से “?

माँ - “बाबू जोड़ा देखि के काम करै चाही । हमार मुन्ना कैसन बा का हमका पता नाहीं बा का ? जिद्दी लड़िका है । एकर केसे पटे और केसे न पटे एकर अहसास बा हमका । एका एक साधारण लड़की चाही । ऊ नौकर- चाकर के बीच पली बा । दिल्ली के अंगरेजी कालेज के पढ़ी बा । मुन्ना ओकरे लायक नाहीं बा । हम बियाह कै देई नाम- प्रतिष्ठा के लालच में और काल अलग होई जाएँ दुझनौ तो का तोहका अच्छा लागे ? बाबू हमार ज़माना चला गवा कि तू जहाँ हमका भेजि देहे और चाहे जैसन घर - पति- परिवार होई निभावत जा , चाहे रोई के चाहे गाई के । अब ऊ ज़माना रहा नाहीं । अब मामूली- मामूली बात पर घर टूटि जात बा ।”

मामा - “उमिला अगर तोहका लागत ह कि साहेब दहेज न देझहिं तब इ शंका मन से निकाल द । हमार ज़िम्मेदारी बा दहेज के । जेतना केऊ और दे , ओसे

कम साहेब न देझहिं । अगर कम देझहिं तब हम हई बीच में । एकर चिंता तू न करअ “ ।

माँ - “भैया हम आज तक केहू से कहा दहेज बरे ? राम राज मिश्रा दुई बार आई चुकने । ओनकर बिचौलिया ओम प्रकाश पाठक हर चौथे दिन आवत हएन । अगर दहेज के लालच होत तब त ऊ बियाह होई ग होत । ओ त कहत हयें जौन कहअ तौन दई दई । पर हम का करब दहेज ? एक बिटिया के बियाह करै के बा । ओकरे बरे कुछ पैसा जोड़े हई । मुन्ना बा बहुत समझदार । मुन्ना के नाम होई गवैय बा । मुन्ना के एक बद्री सर हयेन । ओऊ अक्सर आवत हयेन मुन्ना के लगे , ओऊ काल कहेन हमसे कि माता जी आपके एक नाहीं कई लड़िका आईएएस होई ग हयेन । आप गंगा नहा । गुड़िया के बियाह हम सब कै देबई । अब भइया एक सहारा त होई गवई बा । हमका कुछ न चाही । भैया , हमका परलोक में भी जवाब दई के बा । हम ऐसन काम करी कि हम भगवान से आँख मिलावय के साहस कै सकी । हम रोज़ गंगा नहाई जात हई । हनुमान जी के मंदिर जाति हई । हम लालच में ऐसन काम न कै दई कि हमार हिम्मत मंदिर जाई के न पड़े । केहू और के निगाह में हम गिरी कि उठी ओसे ज्यादा ज़रूरी बा हम अपने निगाह में न गिरी । ”

मामा - “तब दहेज न लेबू का उर्मिला? अगर दहेज नाहीं लेई के बा तब ई साहेब से अच्छा कौन बियाह बा ?” एक प्रभावशाली परिवार , एक सुन्दर-सुशील - पढ़ी- लिखी लड़की, अड़े- गड़े काम आवै वाला रिश्ता और जौन तोहार ख्वाहिश होई उहौं पूर होए , और का चाहत हऊ ?

माँ - “ भैया तू कहत सब ठीक हअ । ओ बड़- बड़वार त हइयै हयेन । रिश्ता अड़े- गड़े केतना काम आवत है , ई त भैया तुहूँ जानत ह और हमहूँ जानत हई । मुन्ना के रिजल्ट के बाद बहुत रिश्ता जिंदा होई गवा । ऐसन- ऐसन संबंध जिंदा होई गएन जेकर हमका पता नाहीं रहा । जे- जे हमसे नाराज़ रहा सब नाराज़गी भूलि गवा । रही बात दहेज के त हम इहऊ नाहीं कहत हई भैया कि हमका कुछ न चाही । अब हमार हैसियत मुन्ना के बियाह के खर्चा करै के त बा नाहीं । ई बियाहे के खर्चा त जे बियाह करे ओका करे पड़े । हम जौन दुई पैसा जोड़े हई ऊ त गुड़िया के बियाहे बरे बा । पर हम बेटवा न बेचब । हम बहुत मेहनत से पाले हई ओका । जब मुन्ना पैदा होई के रहा हमरे पास बहुत गरीबी रही । हम मजबूरी में बाबू के इहाँ चली गये । एकर आज तक कुंडली नाहीं बनि पाएस । कै बजे पैदा भवा हमका पतई नाहीं बा । केऊ समय देखबै नाहीं केहेस । ई छः महीना के रहा तब तकरीबन मरि गवा रहा , गंगा माई की दया रही ई बचि गवा । एतना बदमाश रहा ई कि हमका लाग कि का करे ई पर ईश्वर के दया रही ई सुधारि गवा और हम पूरी जिंदगी लगाई दिहा एका पढ़ावै में , अब एका पैसा के लालच में बेचि दई तब का मिले हमका । हमका मुन्ना चाही कि रूपिया ? तूहिं बताई द भैया ?”

मामा - “उर्मिला बहिन , के कहत बा कि मुन्ना के बेंच द । ई दहेज सनातन संस्कार है । भगवान राम के बियाह में भी दहेज लिहा ग रहा । देई वाले के पास संपदा बा , अपने बिटिया के खुशी- खुशी देत बा । एहमें का गलत बा ?”

माँ - “हम कहाँ कहत हई कि इ संस्कार नाहीं बा । बिल्कुल देई अपने बिटिया- दमाद के खुशी- खुशी देई पर हम दहेज के नाम पर बियाह न करब । बाबू के हेन बियाह बड़कऊ भैया के दूसरे बेटवा झुलई के संपत्ति के लालच में । का मिला बाबू के और का मिला भैया के ? झुलई ससुरारी चला गएन । आपन घर-दुआर छोड़ि के ससुरारी रहत हएन । अपने माई- बाबू के बजाय सास- ससुर के सेवा करत हएन । घरे के लड़िका घरे से बाहर चला गवा । हमका ओका देखे मुद्दत होई गवा । जब मुन्ना के रिजल्ट आई तब आई रहा और हम ओका दुई साल बाद देखा । हमार ससुर हमरे जेठ के बियाह के देहेन संपत्ति के लालच में । आज तक रोवत हयेन । बेटवा - नाती सब चला गयेन । जब गर्मी में मुन्ना के पढ़ावय लागेन तब ओनहन आऊब शुरू के हेन देखा- देखी । हमार ससुर कहेन , “ ए सब इहाँ रहे होतेन त हम जड़ि मज़बूत कै देईत , पर का करी गलती हमही से होई गई बा ” ।

भइया हम मुन्ना के बाऊर नाहीं रहि सकित । ऊ रात में सोवत ह त हम जाई के देखित ह ओका बरे । हमरे पास अपने ससुर और बाबू के ऐसन करेजा नाहीं बा कि आपन पाला- पोसा लड़िका केहू कै दै देई और बड़ा मकान - जमीन- जायदाद - रूपिया लै लेई ।”

नाना - “बिटिया हम झुलई के बियाह किहा कि संपत्ति बढ़े , परिवार के ताक्त बढ़े । अब जेकरे पास संपत्ति बा उही के कीमत बा ।”

माँ - “बाबू , का करबै हम संपत्ति लै के । ओका के देखे ? का हम संपत्ति लै के ऊपर जाब ? हम त बाबू न करिबै संपत्ति पर बियाह । संपत्ति का बा मुन्ना के पास ? ओकरे पास चार जोड़ी कपड़ौ न होये , जा ओकर कमरा देख ल ऊपर , बिस्तर पर दरी बिछाये बा , कमरे में पंखा लू फेंकत बा । पर आज ओकरे नाम के हवा बहति बा । रोज़ शाम के मेला लगत ह इहाँ । सब कहत हयें कि हमका पढाई द । हमसे कालि कहत रहा , माँ नीचे वाला कमरा दै द हम और बद्री सर पढ़ावा चाहित ह । हमार ससुर गरीबी में मरि गएन पर पूरा डेबरा ओनका याद करत बा । ई भगवती सिंह , हरिकेश रुड़की गयेन इंजीनियर बनैं ओहमें ओनकर केतना हाँथ बा । बाबू ई संपत्ति के चक्कर में हमरे जेठ के लड़िका बर्बाद भयेन , हमरे बहिन के तू पाही के जमीन दै देहे ह कुल बहिन के घर ऊँहीं में लपटियान बा , और बड़के भैया के हाल देखतअ ह । हमका बाबू गरीब के इहाँ बियाहि देत गए सब केव मिल के । शायद भगवान की ई चाहत रही , ई मुन्ना हमरे नसीब में रहा । का पता जमीन- जायदाद

होत तब मुन्ना उहीं में लगि जात और पढ़ाई न करत । जौन मुन्ना नाम कमाई लेहे बा अब ऊ सैकड़ों बिगहा ज़मीन - जायदाद पर भारी बा ।”

मामी - “उर्मिला , परिवार बड़ - बड़वार के बा । ओनकरे इहाँ करें से प्रतिष्ठा मिले । लोग ओनके इहाँ रिश्ता करत चाहत ह और तू दुकरावत हऊ ।”

माँ - “ भौजी , हम दुकरावत नाहीं हई । हम ओनकरे लायक नाहीं हई । हम गरीब- गुरबा हई । हमार मकान तू देख ल , सिफ्ट ईंटा जोड़ि पाए हई और कुछ नाहीं बा एहमें । एहमें एक रोज़ कमिशनर के बहिन रहि नाहीं सकत । अब हमार बहु हमरे घर न रहि पाये ऐसन काम हम काही करी । हमरे घरे ऊ न रहि पाये , एहमे ओकर कौनौ दोषौ नाहीं बा । ओकर समाज अलग बा । ओकर रहन- सहन अलग बा । अब दुई अलग - अलग समाज के मेल त होई नाहीं सकत । अब हम आसमान के ख्याब देखीआपन ज़मीन भूलि के इहौं त उचित नाहीं बा । ”

मामा - “साहेब के मेम साहेब चाहत हयें मुन्ना से मिला । ओका भेजि द हमरे संगें । अबै

“ ना “ न कहअ । साहेबौ नवम्बर के बाद चाहत हयें बियाह । तब के तब देखी जाए ।”

माँ - “भैया , जब हमका करैन के नाहीं बा तब हम काहे लटकाई । मुन्ना का करे मिलि के ओनसे । ओनकर फोटो- कुंडली लौटाइ द । ओ आपन बहिन के रिश्ता कतौ और देख लई । कौनौं मुन्ना अकेल आईएस बा का ?”

माँ ने चेस बोर्ड ऐसा फाड़ा था कि मामा को कोई ज़मीन ही नहीं मिल रही थी चाल चलने को । उनका घोड़ा हिनहिना रहा था , ऊँट मिमिया रहा था , हाथी पीड़ा में चिंगधाड़ रहा था , वज़ीर चारों तरफ से धिरा कुछ खाने चलने की भीख माँग रहा था और रानी मौत का इंतज़ार कर रही थी । सारे मरे हुये मोहरे इंतज़ार कर रहे थे कि कब परास्त होकर थके हुये मुहरें आयें और हम सब एक साथ डिब्बों में बंद हों जाए ।

मामा की सबसे गलत चाल हो गई । यह चाल कोई अनाड़ी भी न चलता , जो मामा ऐसे शातिर निराशा के अवसाद में चल गये । हताशा में उठाया गया आत्मघाती कदम । न केवल चाल गलत थी बल्कि चाल चलने का ढंग भी गलत था । उनकी आवाज में रोष आ चुका था और टूटती उम्मीद ने विक्षिप्तता को आमंत्रण दे दिया था । यह संघर्ष दो ऐसे लोगों के बीच के संघर्ष में तब्दील हो गया , जिसमें एक पूरा मुनज्जम था तो दूसरा मुन्तशिर ही नहीं मुज्जतरिव भी हो रहा था । उसे मुख्तलिफ़ सम्तों में दूर- दूर तक सियाह रातों में किसी रौशनी की उम्मीद नहीं हो रही थी । इस नाउम्मीदी में जहाँ उनकी

लहरों को किनारों को सहेजना चाहिये था , हौले- हौले अजली तरन्नुम के साथ किनारों की ओर बढ़ते हुये , वहाँ तलातुम ही तलातुम उनके जिह्वा से बहने लगे । शायद स्वार्थ उनको अंधत्व की ओर ले बढ़ा था ।

मामा - “उर्मिला तब तू कमिशनर साहेब के रिश्ता आजै “ ना “ कहि देबू ? ”

माँ - “भैया , अनुराग के पिता जी हमसे उहीं दिन “ ना “ कहि देहेन जेह दिना मुन्ना आपके इहाँ गवा रहा वापस देई बरे फोटो-कुंडली । अब ओ हमसे अधिक समझदार हयें । ओनका दुनियादारी हमसे अधिक आवत हई । आप ओनकर फोटो- कुंडली वापस कै द । हमार ई रिश्ता से पिंड छोड़ाई द , हमरे मस्सरब के नाहीं बा । हमका चैन नाहीं आवत ह जब- जब सोचित ह ई रिश्ता के बारे में । हमका अपने मुन्ना के साथ अन्याय करै बरे न कहअ । ”

मामा - “ ई बियाह करे से अन्याय होई जाए मुन्ना के साथ ? ”

माँ - “भैया , अब एह मुद्दे पर बात करे से कौनौ मतलब नाहीं बा । हमका जौन कहै के रहा , सब कहि दिहा । ”

मामा - “उर्मिला हमार कौनो हक्क नाहीं बा मुन्ना पर ? ”

माँ - “काहे नाहीं बा ? हम कब कहा कि तोहार हक्क नाहीं बा । तोहार आशीर्वाद हमरे संगे हमेशा रहा । हम तोहरे सामने जन्मा । ई मुन्ना ननियौरे में जन्मा , ऊहिं पला- बढ़ा बा । जब ऐकर नाम हम नाहीं लिखाय पावत रहे स्कूल में तुहिन बताए रहअ कि “ श्यामा देवी भगवती परसाद ” में जा , नाम लिखि जाए । तोहार हक्क हम पर न होये तब केकर होये । ”

मामा - “तब मुन्ना के हमरे संगे कमिशनर साहेब के इहाँ जाए द और अबई ई रिश्ता के “ ना “ न कहअ । ”

माँ- भैया , ई न होई पाए ।

मामा - “हमार कौनो इज्जत नाहीं बा ? ”

माँ - “भैया , ऐसन हम का किहा कि तोहार इज्जत घटि गै ? ”

मामा- “एतने देर से हम - बाबू - तोहार भौजाई एकै बात रटत हई पर तू सुनतई नाहीं हऊ । ऐसन ज़िद होई गई बा कि रिश्ता के लिहाज़ चला गवा बा ”

माँ- “भैया , हम कौन लिहाज़ नाहीं करत हई इ बताई द हमका । बस हमका भैया इ संबंध करब उचित नाहीं लागत बा । । ”

मामा - “हम अनुचित बात करत हई ? ”

माँ - “हम ई त कहा नाहीं कि आप अनुचित बात करत ह हम कहा हमका उचित नाहीं लागत बा । होई सकत ह तोहार बात उचित होइ पर हमका नाहीं लागत बा ।”

मामा - “तब केकर बात चले ?”

माँ - “भैया , मुन्ना के बियाहे में हम केहू के न सुनब । हमका जौन मुन्ना के हित में ठीक लागे हम उहई करब । अब हमका इ संबंध ठीक नाहीं लागत बा ।”

मामा - “तू हमका आपन घर छोड़वैबे हऊ ।”

माँ - “भैया , हम ऐसन कौन अपराध के देहे हई कि तू हमार घर छोड़ि देई के बात करत ह ?”

मामा - “हमार एतना अपमान किहा गवा । हम रिरियात- घिघियात हई एक छोट से बात पर और हमार बात नाहीं सुनत जाति बा । हम तोहार घरि छोड़ि के जात हई । अब हमार - तोहार रिश्ता आज से ख़त्म ।”

माँ - भैया , अब अगर इहै शर्त बा बहिन और भाई के रिश्ता के सलामती के और तोहका उ कमिश्नर जेका तू तब जाने ह जब मुन्ना आईएएस बनि गवा और आज ऊ तेहरे ऐतना नज़दीक होई गवा बा कि बहिन- बहनोई , भांजा-भांजी सबके त्याग देई के बात आई गई तब हम का कहि सकित हअ । भैया हमका नाहीं पता रहा कि हमरे राखी के डोर ऐतनी कमजोर बा । तू हमसे ढेर दुनिया देखे हए , हमसे बहुत अधिक पढ़ा- लिखा हए , अब हम और का कहीं । भैया गरीब हरदम गरीबै रहे चाहे जेतना कोशिश रोशनी के पीछा करै के के लेई ऊ । जब-जब फ़ैसला अमीरी-गरीबी के बीच होए , गरीब के हिस्से में कभौं चाँद के रोशनी न मिले । चाँद हमेशा दुई आँखियाव करे । हम बस एतनै त कहत हई , न हम न हमार मुन्ना कमिश्नर के परिवार लायक हई और त हम कुछ कहा नाहीं ।”

मामा ने मामी से कहा , चलो अब नातेदारी रही नहीं । बहुत हो गया । मामा ने मोटरसाइकिल स्टार्ट की और मामा - मामी चल दिये ।

मेरी बहन भागती हुई और बोली , “ भइया लड़ाई हो गई , जल्दी चलो माँ बहुत रो रही है ।”

मैनें पूछा उससे , “किससे लड़ाई हो गई ? क्यों रो रही है माँ ?”

बहन ने कहा , “मुझे कुछ नहीं पता आप जल्दी चलो । मामा- मामी नाराज़ होकर चले गये ।”

मैं नीचे पहुँचा । माँ के रोने की आवाज़ और हिचकियों के स्वर एक साथ सुनाई पड़ रहे थे । वह बोलने की कोशिश कर रही थी पर ठीक से बोल नहीं पा रही थी । नाना सामने किंकर्तव्यविमूढ़विमूढ़ होकर बैठे थे और उनका दोनों हाथ सिर पर था । माँ रो भी रही थी और कहने की असफल कोशिश भी कर रही थी पर आँख के आँसू, रुँधा हुआ गला स्वर- प्रवाह को बाधित कर रहे थे । मैंने उसको रोते कम ही देखा था । वह बहुत ही मज़बूत थी । उसको मैंने नानी की मृत्यु के समय अपनी माँ की अंतिम सेज जब कंधे पर रखी जा रही थी तब देखा था इस तरह रोते हुये । वह अंतिम सेज से लटक गई थी और वह नानी की सेज एक ओर लुढ़क गई थी, गाँव के कई लोग मिलकर भी उसको नानी की अंतिम सेज से अलग नहीं कर पा रहे थे, ऐसा रुदन किसी को भी दरवित कर दे । मेरी बहन भी रोने लगी । मेरे समझ में कुछ न आ रहा था, हुआ क्या है? मैंने देखा, नाना की आँखें डबडबा आयीं थीं । वह पूरा प्रयास करके भी आँसुओं की धारा रोक नहीं पाए और बस इतना ही कहा, “जो इतने दिन से बचाया जा रहा था वह आज हो गया । मुझको भी यह दिन देखना नसीब में लिखा था ।”

एक गरीब के हिस्से में कुछ भी आसानी से नहीं आता । ख्वाब ने दस्तक भी दिये, वह दरवाजे से अंदर आ भी गया पर जिन लोगों ने कहा था ख्वाब तेरी हैसियत से बड़े हैं, वही अब ख्वाबों की ताबीर में हिस्सा माँग रहे । उसको तलब जीने से ज्यादा लड़ने की थी । उसके जंग को तमाशे की तरह देखने वाले उसकी जीती हुई ज़मीन में हिस्सा माँग रहे । जो सूरज के ढूब जाते ही नये खेमों में हुआ करते थे वह जंग के समय खेमे की रखवाली की मज़दूरी की बात कर रहे थे ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 128

मैं ऊपर के अपने कमरे से उतर कर नीचे आया । मुझे देख कर माँ और रोने लगी । मैं उसके बहुत ही नज़दीक था । हर महिला अपने पिता, माँ, अपने पति, अपने पुत्र और अपनी पुत्री में से किसी एक के सबसे ज्यादा नज़दीक होती है । मैंने कभी पूछा भी था, “तुम इन पाँचों में से किसके सबसे ज्यादा नज़दीक हो? “ उसने कहा, यह कोई सवाल है?

मैं - यह सवाल क्यों नहीं हो सकता?

माँ - तुम राम पर रिसर्च करते रहते हो । अयोध्या कांड तुम्हारे सिविल सेवा के पाठ्यक्रम में ही है जो सामाजिक संबंधों की सबसे बड़ी व्याख्या करता है

। परम्परा का मूल्यांकन तुमनें कई बार किया है, साथ मेरे । तुम राम किंकर उपाध्याय की राम कथा सुनने देर रात भगतराम जय नरायन के घर के पंडाल जाते हो, तुमको यह उत्तर नहीं पता ?

मैं- इसका सम्बन्ध राम से क्या है ? राम की नानी का ज़िक्र कहीं मिलता नहीं । राम की बहन थी नहीं और राजा दशरथ के पास रानियों का अंबार था और वह कैकेयी के सबसे नज़दीक थे, इसलिये उसमें तो अधिक समस्या है नहीं । पर तुम्हारी परिस्थिति राम कथा से एक दम अलग है । एक आज्ञाकारी पति मिला है । बेटी बहुत सलीकेदार है । नानी के मृत्यु पर तुम्हारा रुदन देखा ही है, नाना के लिये तुम अकेले लड़ रही हो, उससे मैं नज़दीकी का अंदाज़ लगा सकता हूँ । मैं इस समाज के स्थापित मूल्यों से एक लायक बेटा न होकर भी तुमसे नज़दीक तो हूँ ही, सबसे नज़दीक का तो दावा नहीं कर सकता पर बता तो कितना नज़दीक हूँ मैं ।

माँ- समाज का स्थापित मूल्य क्या है ?

मैं- एक पढ़ने- लिखने वाला हर कक्षा में प्रथम आने वाला, हाँ में हाँ मिलाने वाला और हरदम ख्याल रखने वाला बेटा ही एक आदर्श बेटा माना जाता है । मैं तो वैसा हूँ नहीं ।

माँ- तुम्हारे पिता में जो अच्छाइयाँ लोग कहते हैं वह मुझे कुछ अच्छाई नहीं लगती । सब कहते हैं कि वह संतोषी हैं, शांत है, चार बात गम खाकर चलने वाले हैं । यह संतोष जीवन की प्रगति में सबसे अधिक बाधक होता है । यह लालच, संतोष, महत्वाकांक्षा सब आपस में ही एक उलझे हुये शब्द हैं इसको सुलझाना सबको नहीं आता । तुम्हारे पिता को तो बिल्कुल नहीं आता । उनके जीवन का परम लक्ष्य है हर शाम को अपने आप से ही कहना, “ संतोष जीवन का मूल है ”, और कोई तो यह सुनेगा नहीं । वह एजी आफिस की कलर्की पा गए, उसी में संतुष्ट हो गये । उसी में रम गए जबकि वह उससे अधिक के हक़दार थे । गम खाकर क्यों चलना जीवन में । जहाँ बात उसूलों की हो वहाँ टकराना ज़रूरी है । तेरी बहन के पास उम्र के साथ कोई समझ ही नहीं आ रही । मेरी माँ बहुत लालची थी, मेरे पिता के बढ़े हुये लालच में उसका भी योगदान है । मेरे ख्याल से मैंने तुम्हारे सवाल का उत्तर दे दिया ।

मैं- माँ बात पूरी नहीं हुई । पूरी कर दो । वह बात साफ़ कह दो जो घुमा-फिरा कर कह रही हो ।

माँ- मैं जितना तेरा सम्मान करती हूँ, उतना किसी का नहीं करती, तुम जीवन में बहुतों से सम्मान अर्जित करोगे । तेरे पास जो महत्वाकांक्षा है, जो लगन है वह क़ाबिले तारीफ़ है । मुझे जीवन में हर वक्त संतोष की बात करने वाले व्यक्ति बिल्कुल नहीं भाते । तुम्हारे पिता और तुममें जो एक संघर्ष है वह एक महत्वाकांक्षा से उपजा है । वह चाहते हैं कि तुम कहीं भी जीवन को स्थापित करके जीवन जियो और तुम जीवन का एक बहुत ऊँचा मुकाम देख

रहे हो , जो हमारे परिवेश के बाहर की सोच है । जब बच्चा छोटा होता है तब वह पहली बार पलटने का प्रयत्न करता है । बच्चा पहली बार जब पूरी तरह पलट लेता है तब उसके चेहरे पर एक संतोष और उपलब्धि का भाव आता है । हर माँ अपने बच्चे को निहारने में सुख पाती है । मैं भी तुझको निहारा करती थी । मैंने तेरा वह पलटना पहली बार का देखा है और मुझे पूरी तरह याद है कि तूने कितना संघर्ष किया था उस पेट के बल से पीठ के बल होने में । पर सबसे बड़ी बात मैंने क्या देखी कि तुम पीठ के बल होकर शांत नहीं हुये जैसा अमूमन बच्चों के साथ होता है । तुम पीठ से फिर पेट पर आ गये और यह क्रम लगातार चलता रहा । एक-दो दिन में ही तुम इस काम में पारंगत हो गये । मैंने भैया के बच्चों को पाला है और यह प्रक्रिया उनके साथ भी देखी है । तुम एकदम अलग थे । मुझे तुम्हारी असीम महत्वाकांक्षा का अहसास उसी समय हो गया था और तुम्हारी सफलताओं- असफलताओं के बीच मैंने लगातार देखा है । किसी के नज़दीक आप तब ही जाते हो जब आप उसका सम्मान करते हो । बहुत बार आप लोगों को चाहते हो , दया करते हो पर अगर सम्मान नहीं करते तब आप उसके बहुत नज़दीक नहीं जा सकते । मेरे ख़्याल से मैंने तुम्हारी बात का जवाब दे दिया ।

माँ के साथ मेरा यह संवाद मेरे जीवन का सूत्र- वाक्य बन गया और मैंने पाया कि मैं उनके ही नज़दीक अपने जीवन में जा पाया जिसका मैं सम्मान करता था ।

मेरी और उसकी नज़दीकी का आधार भी शायद एक प्रस्पर सम्मान की भावना थी । वह मामा के यहाँ अपने नाम लिखा खेत लेने नहीं गई , मेरी मौसी को ज़मीन दी गई पर उसको कोई गिला न था कि उसे क्यों नहीं दिया गया वह उससे बेपरवाह रही , नाना का खेत बँटा तो वह उस बेशकीमती दो बीघा खेत पर दावा कर सकती और वह उसके हिस्से में आ ही सकता था , क़ानून तो उसका ही था पर उस खेत से ज्यादा उसको अपनी मान्यताओं और उस्तूलों की परवाह थी , भले ही वह एक नजरिये से विवाद में ही क्यों न हों ।

एक समय के लंबे प्रवाह में उपजा उसका और मेरा नज़दीकपन मुझे देखने के बाद माँ को और रोने के लिये उकसा गया । मुझे देखकर उसने इतना ही कहा , ” मेरे साथ अन्याय किया जा रहा है “ और रोने लग गई । दुःख मुझे उसके रोने का बहुत हुआ , हलाँकि मुझे इस रुदन की पृष्ठभूमि नहीं मालूम थी । माँ कुर्सी पर बैठी थी , मैंने उसका सिर अपने कमर से के ऊपर के भाग से लगाया और कहा , “ चुप हो जा “ । नाना से पूछा क्या हुआ , नाना ने जब वाक्या बताया तब मैं आवाक रह गया । मुझे यक़ीन ही नहीं आया कि यह हो

गया । मेरी माँ मेरे आने के बाद धीर-धीरे थोड़ा संयत होने लगी । उसकी हिचकियाँ कम होनी शुरू हो गई । मैंने बहन से कहा, चाय बना दो । वह रसोईघर में चली गई । मैंने माँ से कहा, तू इतनी मजबूत है तुझे रोना शोभा नहीं देता । मेरे तमाम जीवन के कमज़ोर छड़ों पर तुमने कहा था, ”रोना एक भावना के साथ- साथ कहीं न कहीं कायरता की भी अभिव्यक्ति है“ । माँ को मेरे आने से ढाढ़स आ गया था । उसने मुझसे कहा यह रोना मेरी विवशता को अभिव्यक्त कर रहा । वह रौ में आ गई और उसकी शिकायतों का पिटारा खुल गया ।

माँ - यह ज़माना ही ऐसा है, जिसने ज़िंदगी में हमारे लिये कुछ न किया वह आज हमको धमकी दे रहा । इतनी ओढ़ी हुई ज़िम्मेदारियाँ सर पर थीं कि ज़िंदगी काटना ही एकमात्र लक्ष्य जीवन का था, कैसी कटी है यह ज़िंदगी हम ही जानते हैं । दो धोती में ज़िंदगी बीत गई, किसी शौक के लिये कभी सोचा ही नहीं । बच्चों को दीवाली पर होली और होली पर दीवाली पर नये कपड़ों का आसरा दिलाकर इनका मन बहलाते थे । ज़मींदार के घर की बेटी हूँ । तीन गाँव में ज़मींदारी थी । इतना खेत था कि एक गाँव के खेत धिंगरा ले गये । एक गाँव का खेत मजबूरी में बहिन को देना पड़ा न कि स्वेच्छा से, जो गाँव में खेत है वह सँभल नहीं रहा पर हमारे घर का प्लास्टर नहीं हो सका । मेरा बेटा पूरा 6 महीना बगैर प्लास्टर, बगैर दरवाजे बगैर वायरिंग के कमरे में तार खींचकर रहा । उस समय कोई नहीं आया पास मेरे । किसी ने तिथित्योहार पर भी मेरे बच्चों के हाथ में कभी कुछ न रखा । जब घर का काम रुक गया तब इन्हीं से रूपया ब्याज पर माँगा पर कोई जवाब न दिया । छोटकऊ ने कहा, “हमरे पास कुछ नहीं बा“ । मेरे बाप- मेरे भाई- मेरे हित- मेरे नात कोई दिखाई नहीं दिये और आज हमसे वहीं कबूल कराना चाह रहे जो उनका मन है । हम कबूल अगर न करें तब हमको अहंकार हो गया है । यह समाज की रीति है । यह हमारा खून है जो एक अजनबी के लिये हमको धमकी दे रहा । माँ मेरी तरफ मुख्खातिब हुई । दुर्गा उसके अंदर जग चुकी थी ।

माँ- मुन्ना तुम अभी जाओ और वह फोटो- कुंडली लो और उस कमिशनर के दरवाजे पर फेंक आओ और कह देना कि हमारा सर्वेश मिश्रा से कोई ताल्लुक नहीं है ।

नाना - “उर्मिला, थोड़ा धीरज रखअ ।“

माँ - “ नहीं बाबू, अब बहुत होई गवा । अब जब संबंध के लाज- लिहाज़ नाहीं रहि गवा बा तब हम ओनका समझाई देब कि हमहूँ कौन मिट्टी के बनी हए । ओनका पता नाहीं बा हम हई के ।”

नाना - “मुन्ना ज़रा शांत करअ अपने माँ के ।”

इतने में मेरे पिताजी भी आफिस से आ गये । वह भी सारा घटनाक्रम सुनकर चौंक गये । उन्होंने समझाया कि अभी शांत रहो । एक आदमी बेवकूफ़ी किया तो इसका मतलब यह तो नहीं सब बेवकूफ़ी करे ।

माँ - “हम अबहिं जाबै , अगर तू सब न जाबे तब । हमका ऊ फ़ोटो- कुंडली अभी ही चाहिये । जाओ लेकर आओ , कल वापस होनी चाहिये । अगर न केऊ जाए तब हम जाबै ।”

मैं - “तुमको वह फ़ोटो- कुंडली चाहिये बस ना ?”

माँ - “हाँ और अभी ।”

मैं - “अभी जाकर ले आता हूँ , उसके बाद तो शांत हो जाओगी ?”

माँ - “तुरंत जाओ ।”

मैं - “इस समय शाम के 6:30 है । यह कुंडली- फ़ोटो 9 बजे के पहले आ जाएगी । कल सुबह जहाँ तुम चाह रही वापस करना , वहाँ वापस पहुँच जाएगी । अब शांत हो जाओ , पिता जी अभी- अभी आये हैं ज़रा चैन से चाय पी लेते हैं ।”

मैं उसके गुस्से का इलाज जानता था । मैं बचपन से देख रहा उसको । उसको गुस्सा जितना तेज आता था उतना ही तेज उत्तरता था बस उसके गुस्से के समय उससे उलझो मत । उसकी बात मान ली गई थी वह थोड़ा संयत हो गई ।

मैं चाय पीकर मामा के यहाँ चलने लगा । मेरे पिता जी और नाना दोनों ने कहा कि ज़रा धैर्य रखना , गुस्सा मत दिखाना । सर्वेश तो बेवकूफ हैं हीं ।

मैं मामा के यहाँ पहुँचा । वहाँ का आलम श्मशान घाट की तरह था । मोहिता दीदी - उनके पति राकेश जीजा जी , बाबा भैया - भाभी मामा - मामी सब आँगन के पास के बड़े से बरामदे की डाइनिंग टेबल पर बैठे थे । उन सबको देखकर एक अहसास तो मुझे हो गया कि पश्चात्ताप का दौर चल रहा । कोई भी मामा के इस कदम के साथ न था । मेरी मामी मुझको देखकर रोने लगीं । मेरी हैसियत समाज में बहुत बदल चुकी थी । मैं अब एक महीने पहले वाला अनुराग तो रहा नहीं । अब मेरे चेहरे के भावों की कीमत होती थी ।

मामी के रोने पर मैंने कोई प्रतिक्रिया न दी । मैं अभिवादन करके कुर्सी पर बैठ गया । मेरे अंदर आकरोश कुछ कम न था , आखिर वह मेरी माँ ही न थी

मेरी सर्जक भी थी । एक गीली मिट्टी के टुकड़े को हाँथ में उठाकर उसने चाक पर ऐसा चलाया था कि बनी हुई आकृति की सुन्दरता की हर ओर विवेचना हो रही थी और बाज़ार में ख़रीददारों की भरमार थी, सब ख़रीददार भी कह रहे थे, “यह अनमोल है” ।

मेहिता दीदी ने कहा, मुन्ना बहुत ग़लत हो गया । यह होना नहीं चाहिये था ।
मैं- क्या ग़लत हो गया दीदी ? यह तो सही हुआ । यह होना ही था एक दिन ।
इसको पहले होना चाहिये था, देर में हुआ ।

मेहिता दीदी - ऐसा न कहो मुन्ना । पिताजी बहुत दुःखी हैं ।
मैं - क्यों? किस बात के लिये ?

मेहिता दीदी - उनको गुस्सा आ गया इस बात के लिये ।

मैं - इनको गुस्सा करने का क्या हक़्क़ है ?

मेहिता दीदी - जो हो गया उसको भूल जाते हैं ।

मैं - मैं कौन होता हूँ इस बात पर फ़ैसला करने वाला । मैं सिर्फ़ एक संदेश वाहक हूँ । मुझसे जो कहा गया उससे ज्यादा बात करने का कोई अधिकार मेरे पास नहीं है ।

मेहिता दीदी - क्या कहा गया मुन्ना भैया ?

मैं - फ़ोटो- कुंडली वापस ले आओ ।

और सुनना चाहोगी क्या कहा है उसने उससे, जो रिश्ता तोड़ कर बुलेट मोटरसाइकिल पर चढ़ कर अहंकार आया है वापस उस गरीब के घर से । यह इनका स्वार्थ इन पर हाबी है जो इनकी मति हर चुका है । एक मुलाजिम अपने आका को खुश करने के लिये किसी भी हद तक जाने को तैयार है । वह एक गरीब- बेसहारा आप को वह लगती होगी जिसको यह धमकी दी गई कि मेरी तुम्हारा रिश्ता ख़त्म हुआ, पर वह न तो गरीब है और न ही बेसहारा । ज़माने को वह ज़रूर गरीब दिखती होगी, पर उसकी धोतियों में जो पैबंद नजर आते हैं, उसके हर पैबंद से मेरी विजयगाथा बनी है, अगर यह एक विजयगाथा मानी जाती है । दूसरी बात जो उसने कही है वह आपको रात सोने नहीं देगी । उसने कहा है कि यह फ़ोटो- कुंडली कमिशनर के दरवाज़े पर फेंक आओ और अगर कोई नहीं फेंकेगा तब मैं मुँह पर मारकर आऊँगी और जो रिश्ता आपने कमरे के बंद दरवाज़ों के भीतर तोड़ा है वह सरे आम तोड़ने जा रही ।

मेरी मामी और जोर- ज़ोर से रोने लगीं । राकेश जीजा जी ने कहा , “ भावावेश में कई बार वह मुँह से निकल जाता है जो आदमी कहना नहीं चाहता । इस बात को यहीं ख़त्म करते हैं । यह बहन- भाई के रिश्ते में होता ही है । मैं और मेहिता कल पिताजी को लेकर आएँगे । यह मामला सुलझ जाएगा । हर परिवार में ऐसा हो जाता है कभी- कभी । पर यह रिश्ता ख़ून का है , कहीं ऐसे टूटता है क्या ? ”

मैं जीजा जी आप मुझसे उम्र और पद दोनों में बड़े हो । यह धृष्टता लग सकती है आप की बात काटना पर मेरी यह सलाह है कि इस मामले को यहीं ख़त्म कर देते हैं । मामा अपने घर रहे , माँ अपने घर रहे । जिस कार्य- प्रयोजन पर मामा जाएँ वहाँ माँ न जाए और जहाँ माँ जाए वहाँ मामा न जाए । यह रिश्तेदारों के ऊपर है वह जिसको चाहे उसको बुलाये । अगर मामा को कोई बुलाता है तो माँ को न बुलाये और माँ को बुलाये तब मामा को न बुलाये । मैं माँ को एक सलाह और दूँगा , हलाँकि वह मेरी कुछ सुनेगी मुझे उम्मीद नहीं है । पर मैं कहूँगा ज़रूर कि अपने मायके से वह सारे संबंध ख़त्म कर दे । अगर संबंधों की आधारशिला इतनी कमज़ोर है कि एक अजनबी के सवाल पर रक्त का लाल रंग बदरंग हो जाता है तब इस संबंध को ख़त्म हो ही जाना चाहिये । एक बड़ी शिकायत उससे यह है कि वह हस्तक्षेप करती है आपके यहाँ के संपत्ति के बँटवारे में । मैं उससे कहूँगा वह भी न करें , हलाँकि उसका कहना सही है कि पिता के जीवित रहते घर में बच्चे बँटवारा नहीं करना चाहिये । कल अगर बँटवारे की बात इस घर में लोग करें तो क्या वही रुख आप सबका होगा जो गाँव के बँटवारे पर है । मेरा यह कार्य क्षेत्र नहीं है पर मैं कह इसलिये रहा हूँ कि न्याय- अन्याय की तुला निरपेक्ष होती है ।

मामी - “ मुन्ना तू बहुत समझदार हए । एक बात गलत मुँह से निकलि गई बात ओका सँभालै के ज़िम्मेदारी घरे के समझदार लोगन के है । ”

मैं “मामी , मुझे यहीं नहीं समझ आ रहा कि जिस कमिश्नर से आपका परिचय इसलिये हुआ कि आपका भांजा आईएस हो गया है और वह भी कुछ दिन पहले ही मुलाक़ात हुई आपकी , उसके लिये आप अपनी छोटी बहन को त्याग दे रहे हो । यह कमिश्नर कुछ महीने में ट्रांसफ़र हो जाएगा फिर आपसे मुलाक़ात नहीं होगी अगर विवाह होगा तब भी । अगर विवाह न हुआ तब तो उसका दरबान दरवाज़े से ही भगा देगा । मैंने भी थोड़ी - बहुत दुनिया देखी है , मेरे समझ में इस अतिशय मदांधता का कारण समझ नहीं आ रहा । ”

मामा - मुन्ना बेटा , इस समय मेरा कोई दिमाग काम नहीं कर रहा ।

मैं - कोई बात नहीं । अब आप आराम कीजिये । मुझे वह फ़ोटो- कुंडली दे दीजिये । मैं चलूँ । माँ इंतज़ार कर रही होगी । मेरे पास 9 बजे तक का ही

समय है , कहा है तब तक लेकर आ जाओ । क्या पता वह 9 बजे के बाद कमिशनर के घर पर मुझे भेजे कि वापस करके आओ यह । यह तो घर पहुँचने के बाद ही पता चलेगा कि 9 बजे के बाद का उसका प्लान आफ एक्शन क्या है ?

मेरी इस पंक्ति पर सबसे के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी । मेरी माँ को सब जानते थे । वह कुछ भी कर सकती थी , अगर जिद पर आ जाए । मोहिता दीदी - बाबा भैया थोड़ी देर ना नुकुर किये पर मेरा दृढ़ रुख देखकर दे दिया , साथ में यह भी कहा , ” मुन्ना भैया कमिशनर पिता जी का सबसे बड़ा साहब है , ज़रा समझदारी दिखाना आप बहुत समझदार हो “ । राकेश जीजा मुझको बाहर तक छोड़ने आये और कहा , “ इनको तो सब जानते ही हैं कि यह कितने गुस्सैल हैं और गुस्से में आपा खो देते हैं , तुम बहुत ही सुलझे हो बात सँभाल लेना “ । मैं फ़ोटो- कुंडली लेकर घर आ गया ।

जब तक मैं घर पहुँचा , मेरे पिता जी ने माँ को समझा कर संयत कर लिया था । मेरे पिताजी एक बहुत ही सुलझे हुये आदमी थे । वह जीवन के वास्तविक प्रश्नों का समाधान भावनाओं से नहीं करते थे जबकि मेरी माँ अक्सर भावावेश में आ जाती थी । वह फ़ोटो- कुंडली देख कर संतुष्ट हो गई । उसकी एक ज़िद पूरी हो गई ।

वह रात में मेरे कमरे में आई । उसने पूछा कि क्या माहौल था भैया के यहाँ । वह बहुत आहत थी रिश्ता टूटने की बात से । वह रिश्ता टूट जाए , इसकी पक्षधर बिल्कुल न थी पर मामा ने कोई रास्ता छोड़ा ही न था । वह कुछ न कह कर उठ कर चले गये होते तो बेहतर होता पर उनके ऊपर तो एक अलग भूत सवार था ।

मैंने सारा हाल सुनाया और कहा मामी रो रही थी ।

माँ- “ ई सब झरामा बा । जब भैया कहत रहेन तब त कुछ नाहीं बोलिन , अब झरामा फैलाये हईं रोवै के । “

मेरा मन नहीं था फ़ोटो जाकर वापस करने का । मुझे बड़ा अजीब लग रहा था , जिससे मेरा कोई परिचय नहीं , जिसको मैं जानता नहीं खास उसको मैं जाऊँ फ़ोटो- कुंडली लौटाने । पर अगर कहा , “ मैं नहीं जाऊँगा लौटाने “ , तब तो यह यहीं कच्चा खा जाएगी और मामा का सारा गुस्सा उड़ेल देगी । उसकी ज़िद मैं जानता था । मैंने अपने मन में कहा कि जिस तरह चक्रव्यूह , कमलव्यूह बना कर अपना और बदरी सर का सेलेक्शन कराया है वैसा ही व्यूह बनात हूँ । अगर यह फ़ैसला गई उसमें तब काम हो गया नहीं तो कल जाना

ही होगा वापस करने , और कल की बात कल देखेंगे । मैं लगा वाक्य-विन्यास गढ़ने । मैं जब प्राड , साजिश करता हूँ तब मेरा वाक्य- विन्यास बेहतर बनने लगता है । मैं हूँ तो एक स्थापित पैदाइशी प्राड , भले ही लोगों को पता न हो और साजिश करने में तो महारत है मेरी कभी वक्त मिला तो बनी हुई सरकार गिरा दूँगा ।

मैं - “अब बताओ क्या करना है इस अमानत का । “

माँ “ काल जा वापस कै आवा । “

मैं - “क्या कहूँगा ?”

माँ - “कुछ भी कह देना ?”

मैं - “माँ मेरा कोई अनुभव तो है नहीं इस काम में । कोई बहिन का विवाह अभी किया है नहीं । वह किये होते तो सीख गये होते । मुझे समझ नहीं आ रहा कि कैसे कहूँ , क्या कहूँ । तुम बताओ क्या कहूँगा । जैसा कहोगी वैसा कह दूँगा । “

माँ - “तब कैसे करबअ तू गुड़िया के बियाह ? इ सब त सीखे पड़े । गुड़िया का अच्छा बियाह तोहरे पिता के बस के बात नाहीं बा । ऊ त तोहका करे पड़ी , नाहीं त बेचारी हमरे तरह रोये सारी ज़िंदगी । “

माँ जाल में आ रही थी । मेरा काम बनता ऐसा दिख रहा था ।

मैं - “माँ , गुड़िया के बियाह के चिंता तुम रहने दो , यह मेरा काम है । मैं तब तक सब सीख लूँगा । मैं यह भी कहूँगा जो दो पैसा जोड़ा है उसको खाओ-उड़ाओ । मैं कर दूँगा विवाह गुड़िया का । तुम बिना मतलब इ रिकरिंग डिपासिट - विपासिड के चक्कर में पड़ी हो । अब यह सब बंद करो , खर्चा करो जहाँ मन करे । अब कौन चिंता है गुड़िया के विवाह की , ईश्वर की इनायत हो गई है । जो लाख- दुई लाख रखे हो उसको उड़ाओ अपने ऊपर । गुड़िया का विवाह से आपका इतना ही मतलब है कि कन्या दान आपको करना है , बाकी सब भूल जाओ ।

मेरी माँ की आँखों में फिर आँसू आ गये और बोली , “ मुन्ना जब तुम 6 महीने के थे सब कह दिये थे तुम मर गये हो । हमको एकाएक तुम्हारे बदन में हरकत दिखी । मेरे अलावा कोई और न देख पाया था , अगर हम भी न देख पाये होते तब आज क्या होता ?

मैं माँ, तू कैसे न देख पाती ? तेरी आँख तो मुझ पर गड़ी ही थी ।

माँ मेरे दिमाग में एक बात घूम रही है । तुम बहुत दिमागदार हो, ज़रा तुम भी सोचो ।

माँ - क्या?

मैं मामा ने कहीं चाल तो नहीं चली मुझे कमिशनर के यहाँ भेजने की ।

माँ - वह कैसे ?

मैं देखो तुम अड़ी थी कि मुन्ना नहीं जाएगा कमिशनर साहेब के यहाँ । बस यही एक मामला था बाकी तो कोई मामला था नहीं । फ़ोटो वापस करें न करें यह तो कोई ख़ास मुद्दा था ही नहीं । अब झूठ - फरेब तो उनके मोटरसाइकिल के एक्सीलेटर के साथ धीमा- तेज होता है । उनको लगा होगा कि यह एक रास्ता है मुन्ना को भेजने का । ज़रा सोचो, ... मैं कमिशनर के यहाँ जाऊँगा और फ़ोटो दूँगा कहूँगा इसको रख लीजिये जब समय होगा तब बात आगे होगी । इसके अलावा इतने बड़े आदमी से मैं क्या कहूँगा । बाद में मामा कहेंगे कि मुझे अनुराग को भेजना था मेरा साहेब के पास इसलिये ऐसा किया था मैंने । अब कमिशनर को थोड़ी पता है कि यह नाटकबाजों का परिवार है, हर रोज़ लीला करते हैं यह सब । वह हैं तो आखिर मेरे मामा ही । मामा से नज़दीक भांजे से अधिक कौन हो सकता है । अब हम लोग उस रिश्ते के अपवाद हैं, यह बात अलग है ।

माँ - “ ई न होये । तू बिना मतलब अरथ निकालत ह । और ई बात कि हमार रिश्ता ख़राब होई गवा बा बाहर केहू के कानौ - कान ख़बर न होई चाहे । ”

मैं - माँ, किसी को ख़बर न होगी आप चिंता न करो अगर वह कह देते हैं तब बात अलग है, वैसे वह क्यों कहेंगे यह कहना तो उनके हित के खिलाफ़ जाता है ।

देखो, मेरे जो दिमाग में जो समझ आया मैंने कह दिया । आप बाकी समझ लो पिताजी से । मैं तो सुबह चला ही जाऊँगा । बाद में मत कहना कि हमको बताया क्यों नहीं यह चाल थी । आप पिताजी से विचार- विमर्श कर लो और फ़ैसला बता दो मुझको । जैसा कहेंगे कर दूँगा । एक बात और बता देता हूँ । सुलह- सफ़ाई की बात कल से शुरू हो जाएगी । अब सुलह - सफ़ाई करना है कि नहीं, यह भी सोच लो ।

माँ - “ तोहार का राय बा ? ”

मैं कर भी सकती हो , नहीं भी कर सकती हो । भगवान राम तो कहते हैं , शरणागत की रक्षा होनी चाहिये और जो प्रायश्चित्त करें उसको क्षमा कर देनी चाहिये । बस एक काम करना , बल भर सुनाना । पूरी ज़िंदगी की कसर निकाल लेना , साथ में मामी को भी लपेट लेना । पूरा दिल एक बार में ठंडा कर लेना । भगवान राम ने भी इन्द्र पुत्र जयंत को क्षमा तो कर दिया था पर एक आँख फोड़ दी थी दंड देकर जब उसने सीता जी के चरण पर आकृमण किया था कौआ बनकर । तुम आँख मत फोड़ना बस पूरी भद्रा उतार देना । दंड

तो बनता है ।

माँ- यह सुलह- सफाई की बात आजै कैसे आ गई ?

मैं माँ , तुम आम आदमी की माँ नहीं हो । तुम एक गैर मामूली दास्तान लिखने वाली की माँ हो । अभी तो दास्तान लिखनी शुरू ही किया है । अपने चश्में का नंबर ठीक रखना , बहुत किताबें लिखीं जाएगी । माँ याद है एक बार मैंने कहा था ,

ऐ नीला आसमां कुछ ऊपर हो जा

मेरे हैसलों की उड़ान कुछ ऊँची है ।

अब तो यह आसमान की ज़िम्मेदारी है अपने आबरू को बचाने की , उड़ान तो मेरी जारी है । एक तीर कमान से निकला है कई तीर कह रहे अब मेरी बारी है ।

वह हर्षातिरेक में थी । मेरी अंतिम कुछ लाइनों ने उसको चने के झाड़ पर चढ़ा दिया था । वह बोली तुम राम पर आजकल कम लिखते हो । उन पर लिखा करो , इससे कुछ पूजा- पाठ हो जाएगा ।

मैं - आज लिख रहा हूँ कल सुनाऊँगा ।

आप मुझे सुबह बता देना , मुझे सत्य प्रकाश मिश्रा सर के यहाँ जाना है । मैं वैसे ही अपना दिन संयोजित करूँगा । पिताजी से ठीक से समझ लेना फैसला लेने के पहले वह इन सब मुद्दों में बहुत समझदार और सुलझे हुये हैं ।

माँ- ठीक है ।

मैं पिताजी के पास गया और कहा , यह ठीक लगता है कि मैं जाऊँ और इतने बड़े आदमी को कुंडली- फोटो वापस करूँ ? यह बात क्या उचित है कि

जिसके विवाह की बात हो रही है , वह जाए और बिना मतलब की बात करे एक सम्मानित बड़े अधिकारी से । मेरी जगह आप जाओ तो बेहतर होगा , अगर जाना ही है । पर मेरी राय है कि किसी का भी इस काम के लिये जाना उचित नहीं है । मेरे पिताजी क्लास वन अफसरों से मिलने से बहुत घबड़ाते थे । मैं जानता था कि उनकी हिम्मत ही नहीं पड़ेगी जाने की । उन्होंने कहा , तुम्हारा जाना तो ठीक नहीं है । मैंने कहा , पिताजी हड्डबड़ी किस बात की फ़ैसला हो ही गया है , वह दो-चार-छः दिन में आएँगे ही तब शालीनता से दे देना क्यों बेवजह का किसी को नाराज़ करना , अगर काम बगैर समस्या के हो सकता है तो क्यों समस्या को आमंत्रण देना । पिताजी को मेरी बात समझ आ गई और कहा ठीक है मैं समझा दूँगा । मुझको लगा , मेरी जान छूटी पर यह उर्मिला शर्मा है जब तक काम हो न जाए आप कुछ नहीं कह सकते । पर मुझे लगा कि व्यूह बन गया है , तकदीर ठीक होगी तब इस बेवकूफ़ी के काम से जान छूट जाएगी ।

यह सोचकर मैं शांति से रात सो गया । मैं सुबह 4:30 पर उठता था और माँ तक़रीबन उसी समय गंगा नहाने जाती थी । जैसे ही माँ चाय लेकर आई मैंने देखा मेरे कमरे में माँ के पीछे परिवेश होता हुआ दाढ़ । मैंने कहा , देखो माँ आ गया ।

जब से नाना को मामा गाँव से लाये थे उसका मन गाँव में लग नहीं रहा था । वह गाँव से मामा के यहाँ के लिये दिन ढलते ही चल दिया था । मेरे मामा के यहाँ से निकलते ही वह वहाँ पहुँच गया था । पूरी रात पंचायत हुई , सुबह का इंतज़ार उससे नहीं हो रहा था । माँ गंगा नहाने चली गई और दाढ़ बोला ,

“मुन्ना भैया मज़ई आई गवा , पंछी तड़फ़ड़ात बा तनिक जाल और टाइट करअ “...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 129

माँ के लिये कल की शाम दुःखद थी पर रात बहुत खुशगवार । वह अपने भाई के साथ हुये झागड़े से बहुत आहत थी तो मेरी बातों से बहुत मुदित । मैंने उसके सिर का सारा भार जैसे उतार दिया हो । मैं जिस परिवेश में जन्मा हूँ उस परिवेश में सारी उम्र दो कामों में खप जाती है । एक , दो ईंटा जोड़ कर अपने लिये छत बनाना और फिर पैसा- पैसा जोड़ कर बेटी का विवाह करना । जीवन में कोई तीसरा काम होता ही नहीं ।

मेरी माँ ने कभी अपने लिये ज़ेवरात ख़रीदे ही नहीं थे । मेरी माँ को अपने मायके से भी कोई ख़ास ज़ेवरात न मिले थे । मेरे नाना का आग्रह अपने बेटों के लिये अधिक था । वह जो भी पैसा इकट्ठा करते थे, खेत ख़रीदते थे । उनके मामा उनको गद्दी पर लेकर आये थे और उनके मामा की ज़मींदारी थी । वह ज़मींदारी तीन गाँवों में थी, पर उनकी खेत की हवस मिटती ही न थी । सारा समय ज़मीन- ज़मीन करते रहते थे । वहीं ज़मीन उनके और मेरे मामा के बीच संघर्ष का मुद्दा हो गयी थी । उन्होंने अपनी दोनों बेटियों का विवाह साधारण ही किया था । ईश्वर की ऐसी कृपा थी उनके ऊपर की जब वह गाँव का अपना पुराना मकान तोड़कर नया मकान बनवा रहे थे तब उनको मकान में गड़ा हुआ ख़ज़ाना मिल गया जिसमें 55 सोने की और 2500 चाँदी की मुहरें थीं । उसमें से एक भी मुहर अपनी किसी बेटी को न दिया था सारा सुरक्षित था उनके पास । उन्होंने सझिया दान किया था और उसमें भी बड़ी मुश्किल से चाँदी की एक मुहर दान में दी थी और उसका ज़िक्र यदा- कदा ऐसा करते थे जैसे राजा बलि ने वामन अवतार को तिरलोक दान में दे दिया हो । उनकी सारे जीवन की चाहत अपने बड़े बेटे और उनके बच्चों को मदद देने की थी । यह उनकी एक तरफ़ा सोच भी घर में असंतुलन पैदा करती थी ।

मेरी माँ मेरे नाना के इस दृष्टिकोण तथा अपने साथ न्याय न किये जाने पर भी पिता के हक के साथ खड़ी रहती थी । वह कभी पायल बनवाना चाहती थी, उसको लगा नाना दो- तीन चाँदी की मुहर दे देंगे तब वह पायल बनवा लेगी, पर वह भी उसके नसीब में न था । वह किसी से कुछ माँगे यह तो उसके रक्त में था ही ही नहीं पर मुझे पता है वह उम्मीद कर रही थी ।

वह पूरी रात मेरी कही गई बातों को दिमाग में घुमाती रही, “ गुड़िया का विवाह मेरी जिममेदारी है । आप इ रिकरिंग डिपासिट- विपासिट बंद करो । जो लाख- दो लाख रुपया जोड़ा है खाओ -उड़ाओ । आप का इतना ही काम है आप कन्यादान करने आ जाना । ” वह इतनी ज्यादा खुश थी कि वह अपने पति से बोली, “ वाक़ई मुन्ना बड़ा हो गया है । ” पिता जी ने पूछा, क्या हो गया ?

माँ ने पूरा वार्तालाप सुनाया । मेरे पिता के चेहरे पर गर्व और संतोष के भाव एक साथ आये ।

मेरी माँ की पहली रिकरिंग डिपासिट एकाउंट के समय में ही उसके साथ गया था, इलाहाबाद बैंक के काउंटर पर । मुझे पूरा याद है कैसे वह तल्लीनता से

समझ रही थी कि कितना जमा करने पर कितना फ़ायदा होगा । वह 100 रुपया प्रतिमाह का रिकरिंग डिपासिट था । किसी ने उससे कह दिया था कि बैंक का नियम है कि अगर महीने के पहले सप्ताह तक वह 100 रुपया जमा न हुआ तब सारा जमा पैसा बैंक ज़ब्त कर लेगी । वह इस भय से ग्रसित रहती थी कि कहीं बैंक समय पर पैसा जमा न करने पर जमा रकम ज़ब्त न कर ले , नियम से 3 तारीख से पहले पैसा जमा कराती थी । मैं ही जाता था जमा करने वह 100 रुपया और वापस आकर रसीद देता था । वह रसीद को संदूक में सँभाल तक रखती थी । जब तीन साल की रिकरिंग पूरी हो जाती थी तब वह उसका एफडी कर देती और दूसरी रिकरिंग आरंभ कर देती थी । वह ज़मा एफडी रकम 6 साल में दूना हो जायेगा , इस आशा से दिन गिना करती थी । मेरे पड़ोस की शर्मा आंटी ने बता दिया था कि पंजाब नेशनल बैंक में साढ़े पाँच साल में दूना होता है उसने मुझे पंजाब नेशनल बैंक दौड़ा दिया पता लगाने को और वहाँ जाकर पैसा जमा कर दिया । जब मैं और माँ पैसा इलाहाबाद बैंक से निकालकर पंजाब नेशनल बैंक जा रहे थे तब उसको सारा इलाहाबाद डाकू लग रहा था और पूरे रास्ते चारों ओर चौकन्ना होकर देख रही थी । मुझसे कहा , तुम बायीं तरफ़ देखना और मैं दायीं तरफ़ कोई नज़दीक आये तो सावधान रहना । पूरे रास्ते वह एक बाधिन की तरह कुछ हज़ार रुपयों को अपने शावक की तरह सँभाले हुये थी कि कहीं लकड़बग्धे न आ जाएँ । जैसे बाधिन दूर ज़ंगल में उठती किसी आवाज़ से चौकन्ना हो जाती है अपने शावक के लिये वैसे ही वह हर पास की गुजरने वाली साइकिल की आवाज़ से सतर्क हो जाती थी । मुझे वह साथ ले गई गए बैंक रिक्षे से पर वापस ले आई पैदल , काहे को नाहक रिक्षे में पैसा खर्च करना । जब भी पिताजी का इनकरीमेंट लगा या कुछ तनख्वाह बढ़ी , वह घर में कभी खर्च न हुई हमेशा बैंक में ही गई ।

उसे हमेशा लगता था कि लड़की के विवाह को तय करने लिये जो एक आभा मंडल बनाने की ज़रूरत होती है , वह मेरे पिता से न होगा । वह सीधे - सज्जन आदमी हैं । वह कह देंगे , “ परिवार संस्कारी है , हम मूलहा बराह्मण हैं , लड़की सलीकेदार है , पढ़ी- लिखी है , हमारे पास बहुत पैसा है नहीं बस यही लड़की है । औपचारिकताएँ विवाह की पूरी कर देंगे बस । ”

अब ऐसी बात करोगे तब हो चुका कोई विवाह ढंग का । यहाँ तो विवाह में झूठ चलता है । अपने बारे में बढ़ा-चढ़ा कर कहा जाता है । अपने पुरुखों का गौरव - गान किया जाता है । जितना होता है उससे ज्यादा बताया जाता है । यह विवाह मुन्ना करेगा तब झूठ-सच बोलकर भरमा देगा लड़के वालों को और अगर यह करेंगे तब सच ही सच कहकर भगा देंगे लड़के वालों को ।

अब तो मुन्ना अकेला है नहीं । उसके पास बहुत लोग हो गये हैं । बदरी सर भी कह रहे थे , “आप गंगा नहाओ , बहिन का बियाह हम लोग कर देंगे ।

अनुराग न होता तो हमारा चयन न होता । अब यह काम हम लोगों का है, आप निश्चिंत रहो “। अरे मैं चिंतन को तो भूल ही गई । वह तो ऐसी कुँडली मिलाएगा कि राम- सीता की भी न मिली होगी । यह गुड़िया है बहुत भाग्यवान , ऐसा प्रतापी भाई मिला । एक मेरे भाई हैं मेरी जड़ ही खोदते रहते हैं“ ।

यह सोचते- सोचते ही वह रात सो गई । वह हमेशा सुबह चार बजे उठती थी और मैं 4:15 से 4:30 के बीच । वह नियम से चाय बनाकर लाती थी सुबह और तब जाती थी गंगा नहाने । मैं तब तक या तो उठ चुका होता था या मैं उठ रहा होता था । आज भी यही हुआ । पर आज वह बहुत प्रसन्न थी । मैंने कहा भी कि तेरे अंदर और बाहर मैं कोई भेद नहीं है । जो अंदर होता है बाहर दिख जाता है । तू आज बहुत खुश है । वह वाकई बहुत खुश थी और बोली मैं एक फरेबी की माँ ज़रूर हूँ पर मैं फरेबी नहीं हूँ । मैंने कहा , “ माँ इस जमाने में ज़िंदा रहने के लिये फरेब ज़रूरी है । एक सीधे - सादे व्यक्ति को यह ज़माना जीने नहीं देता । तू अपने पति को ही देख ले । उनकी सज्जनता एक अवगुण बन गई है । ”

उसने कहा , इस बात को मुझसे ज्यादा अब कौन जानता है ।

वह गंगा नहाने पता नहीं कब से जाती थी पर जबसे मेरा मेंस का रिज़ल्ट आया था , उसने गंगा तीरे की अपनी यात्रा में चप्पल का उपयोग करना त्याग दिया था । अब वह गंगा नहाने नंगे पैर ज़ाया करती थी । ईश्वर ने मुझे उसका बेटा पता नहीं क्या सोचकर बनाया , यह भी एक रहस्य है मेरे लिये , वह जितनी ही धर्म- परायण मैं उतना ही धर्म की परम्पराओं से विमुख । मेरे भीतर आस्तिकता तो थी पर धर्म की परम्पराओं के अनुपालन का आग्रह न था । वह सबसे ज्यादा प्रसन्न मेरे भगवान राम पर लेखन से होती थी क्योंकि उसको लगता था , इसी बहाने ईश्वर का नाम तो मैं ले लेता हूँ । वह मुझसे बोली कि राम पर जो तुम कल लिख रहे थे , लिख लिया ? मैंने कहा , लिख लिया है आज मैं सुनाऊंगा ।

राम की शक्तिपूजा का मैंने सरलीकरण करके उसको दे दिया था उसका भी कुछ छंद उसने अपनी परार्थनाओं में शामिल कर लिया था । उसको सबसे अच्छा उसमें लगता था ,

“ हे पुरुषसिंह तुम भी यह शक्ति करो धारण
आराधन का दृढ़ आराधन से दो तुम उत्तर । ”

मेरे मानस पटल पर गाँव का पुराना चित्र कई बार बनता था जब हम और वह साथ बैठते थे बचपन में ... सर्द हवा कान को बेधती हुई , अलाव से हम

उम्मीद लगाए हुये , पत्तों को पेड़ों के नीचे से उठाकर डाला था इस अलाव में । एक ही पेड़ की टहनी और पत्ते एक साथ जलते हुये बनाते आग अपने ही रिश्तों से और हमारे उसके रिश्ते सुदृढ़ हो रहे इस अलाव के ताप से । मुझे कई बार लगता है जब जीवन आगे बढ़ेगा तब वह सब कुछ बहुत याद आयेगा जो कभी बहुत सामान्य सी घटना लगती रही होगी , सबके लिये । मेरे दरवाजे के सामने का आम पेड़ जब गिरा तब मुझे बहुत दुख हुआ क्योंकि इसी पेड़ पर पहली बार हम सब चर्चेरे भाई-बहन चढ़े थे , पेड़ के ऊपर ऊँचाइयों को छूने के लिये । मैंने उस समय भी सबसे ऊपर की टहनी को तोड़कर ज़मीन पर गिरा दिया था ।

माँ चली गई गंगा नहाने । मैं छत के छज्जे से देख रहा उसको दूर जाते हुये गली के मोड़ से निकलकर सड़क की राह लेते हुये । माँ ने गंगा की प्रतिष्ठा बढ़ा दी थी मुहल्ले- परिचितों- नात - रिश्तेदारों में यह कहकर , “ मुन्ना में ऐसी कोई खास क्राबिलियत न थी । उससे क्राबिल आदमी पड़े हैं और सड़कों पर धूम रहे हैं । यह माँ गंगा का आशीर्वाद था जो उसके भाग्य में । जो शायद न लिखा था तकदीर में पर माँ ने अपनी धारा से लिख दिया । ” अब गंगा माँ के भक्तों में अभिवृद्धि भी हो रही थी । पड़ोस की शर्मा आंटी भी अपनी बेटी गीतिका के लिये माँ के साथ दो- चार दिन गई पर साधना- तपस्या सबके बस की बात नहीं है । यह त्याग अगर इतना आसान होता तब तो दधीचि ही दधीचि होते इस मायावी संसार में और शायद संसार में अपरिग्रहता कुछ सम्मान प्राप्त कर गई होती ।

माँ के जाते ही दादू ने पूछा , मुन्ना भैया हुआ क्या? मैंने संक्षेप में उसको बताया , हलाँकि वह क्रिस्सा सुनकर आया था पर वह बहुत प्रसन्न था इस घटना से । उसके मनमाफिक ही काम हुआ था । अभी तक तो हरि ने कहा था युद्ध में मैं साथ रहूँगा पर अस्तर नहीं उठाऊँगा अब तो हरि ने अस्तर उठा लिया है । अब कितनी भी अक्षौहिणी सेना हो सामने उसका नाश होना सुनिश्चित है । वह अपनी प्रसन्नता नहीं छिपा पा रहा था । वह इस बात पर लगा था कि बारी की ज़मीन वह जोत वे पर पारिवारिक संघर्ष में वह जोत नहीं पा रहा था । यह बात हर बार सामने आती थी कि पहले बँटवारा हो जाए तब बारी की ज़मीन जोती जाए । उसे उम्मीद हो गई कि अब ज़मीन जोतने पर फ़ैसला हो जाएगा । एक बार बुआ कह दे तब वह नाना को समझाकर जोत लेगा । नाना भी कहते थे झगड़ा- झङ्झट न करो ।

दादू ने बताया कि मामा के यहाँ बहुत गम का माहौल था , जब वह पहुँचा । मामी सबसे ज्यादा परेशान थीं । वह मामा को डाँट रही थीं कि ऐसा क्या हो गया था कि यह बेवकूफ़ी की बात करने लगे । सारा कुछ शांत माहौल में ही

हो रहा था और मैं मुन्ना को हाथ- पैर जोड़कर मैं मना लेती जाने के लिये , इतने में आपके सिर पर बरम आ गये । उर्मिला ने कुछ ऐसा तो कहा न था कि नाता- रिश्ता तोड़ने की बात की जाए । मुन्ना है बहुत लिहाज़ वाला लड़का, मैं कहती तब जरूर चला जाता साहेब के घर , आखिर साहेब सम्मान से ही तो बुला रहे थे । हर आदमी बड़- बड़वार से मिलना चाहता है , मुन्ना क्यों नहीं मिलना चाहता पर सारा किया - धरा पानी कर दिया ।

बाबा भैया जीवन में अपने बल पर कुछ करने से तो रहे । वह टेंडर का रूपया गिने थे । अभी साल के कई और टेंडर बाकी थे । मामा शातिर खिलाड़ी थे उन्होंने टेंडर की भरी हुई एक पक्ष की राशि को विरोधी खेमें को लीक कर दिया था । हरष महराज हर बार टेंडर पाते थे । पर मामा ने विरोधी पक्ष भवानी मलीहावाले को बता दिया था और हरष महराज के टेंडर से दस पैसे का अंतर करके वह टेंडर प्राप्त कर गये थे । यह दस पैसे का अंतर विभाग में क़्रयासों के दौर को जन्म दे गया । मामा को उत्कोच दो तरीके से मिला । एक जो नियमित मिलता ही था इस काम में दूसरा टेंडर की शर्त को लीक करने का । दूसरा उत्कोच बड़ा था । कलेक्टरेट में फरगेंया इस बात को फैला रहा था , यह कहकर कि , “ एक बात बताई अगर तू केहू से न बतावअ, सर्वेश काम तगड़ा केहेन । जौन आज तक केऊ नाहीं करेस ई मधुबनी मिसिर के देहेन । सर्वेश बेचि देझिं विभाग अगर सालौ- खाँड़ रहि गयेन । ”

बाबा भैया वह उत्कोच की रक्म कई बार गिने थे और यह भी कहा था , “पिताजी चार नोट ठीक नहीं है । एका बदलवाय ल । ई बाज़ार में न चले । ”

मामा ने वह चार नोट जब वापस किया तब भवानी मलीहावाले ने चार सौ- सौ की नोट और दे दिया , यह कहते हुये , “ महराज सब तोहरै है । इहौ रख ल । इ चार नोट और लै ल । बस कृपा बनाए रहअ । ऐसन नोट से तोहार घरि भरि देब । ”

बाबा भैया ने वह चार तथाकथित ख़राब नोट भी बाज़ार में चला लिया । मामी को खुशी हुई की घूस की रक्म चार सौ रूपया बढ़ गई ।

बाबा भैया पूरा साल का घूस जोड़े बैठे थे । उनको इस काम में बहुत आनंद आता था और मामी सामने बैठ कर प्रफुल्लित होती थीं जब नोटों की गिनती बढ़ती थी 400..500..2200.....6100.... 7200.... 9900.... 10,000 । जैसे ही दस हज़ार हुआ मामी ने नोटों का बंडल सुतली से बाँध कर अलग कर लिया और बाबा भैया फिर 100 से नये सिरे से चालू हो गये । मामी घूस 100 की नोटों में चाहती थीं बजाय 500 के । इससे एक तो

पैकेट बड़ा दिखता था जो हर्ष में अभिवृद्धि करता था और दूसरा पता नहीं कब सरकार बड़ी नोटें बंद कर दे , कुछ साल पहले बंद किया ही था । एक और कारण यह था कि अफ्रवाह थी कि पाँच सौ की नोट मार्केट में बहुत नक्ली चल रही है । यह माइनिंग के ठीकेदार दर नंबर के फरेबी होते हैं , इतनी मेहनत से आत्मा जो जीना चाहती है गर्व से , उसके गर्व और स्वाभाविमान को मक्तुल में क़त्ल करके अर्जित किया धन नक्ली निकल जाए यह लालच का नंगापन कहाँ स्वीकारने वाला ।

मामी और बाबा भैया को एकाएक लगा कि अब आगे नोट गिनने को न मिलेगा । वह भी परेशान हो गये थे । पूरा घर वही रक्म बार- बार गिनता था । मामा को कई साल बाद घूस लेने का अवसर मिला था । यह अवसर हाथ से जाता दिख रहा था । इस सुलह- सफाई की आकांक्षा का उत्प्रेरक तत्व किसी लगाव से उत्पन्न न होकर एक स्वार्थ से उत्पन्न हुआ था और यहाँ माँ अपने भाई को खोना नहीं चाहती थी , इसलिये वह भी सुलह - सफाई की इच्छुक थी बस उसके दरवाजे पर चलकर मामा को आना चाहिये । चाँद को हाँथ जोड़कर चिरागों से मिन्नत करनी चाहिये और चिराग यह कह सके मुझे हवाओं से लड़कर रौशनी करना आता है बदली से डरने वाले चाँद ज़माने में तुझसे ज्यादा मेरा सिक्का चलता है । चाँद कितनी भी रौशनी कर ले पर दलानों से अंदर दीवारों के भीतर चिराग का ही सामराज्य चलता है ।

मैंने दादू से कहा , “ माँ को आने दो तब विस्तार से बताना । एक ही बात को अभी कई महीने बार- बार तुमकों सुनाना है । मैं एक बार कम कर देता हूँ । मैं माँ के आने पर सुन लूँगा ।

माँ का नित्य का कार्यक्रम था । रामघाट पर गंगा नहाने का , लौटते हुये हनुमान जी के बँधवा वाले मंदिर जाने का फिर हाथ में डोलची लटकाये उसी रास्ते से चलते हुये वापस सड़क से गल्ली में प्रवेश करके घर के सामने के शिव जी के मंदिर में पूजा करने का । वह बचपन में हम लोगों को चार बजे उठाकर चली जाती थी गंगा नहाने । मैं उसके जाते ही सो जाता था और जैसे ही दरवाजे के सामने के छोटे से मंदिर की घंटी बजती थी उठ कर बैठ जाता था और पढ़ने का नाटक करने लगता था । कभी- कभी मैं घंटी की आवाज़ सुन नहीं पाता था और सोया हुआ पाया जाता तब तो सुबह- सुबह घर में हंगामा और निदरा में ही मेरी पिटाई आरंभ हो जाती थी । कई बार वह घर से निकल कर कुछ देर में वापस आ जाती थी यह सुनिश्चित करने कि कहीं मैं सो तो नहीं गया । मैं भी थोड़ा इंतज़ार करके सोता था । मैं जानता था कि वह आपस आकर चेक कर सकती है । मेरे रवैये से वह बहुत खुश नहीं रहती थी पर जब से मैंने जीवन में कुछ करने के बारे में सोचा तबसे मैं सुबह उठने

लगा । यह बहुत ही अच्छी विधि है जीवन को एक सही दिशा में ले जाने के लिये, जब तक सारा ज़माना सो कर उठता था मैं सड़कों पर सरपट दौड़ रहा होता था अपने लक्ष्य की तरफ ।

माँ गंगा नहा कर आ गई । वह भी बेसब्र थी सुनने के लिये कि क्या हुआ कल की रात जब एक गीदड़ ने ने आवेश में आकर एक शेर से लड़ने का बयाना जंगल में ले लिया था ।

माँ ने चाय बनाई और दाढ़ु ने शुरू की वह दास्तान जो दिन के उजाले के ख़त्म होने और अगले दिन के उजाले बीच हुई थी एक डाइनिंग टेबल पर मंथन करते हुये थी कि स्वार्थ किस भेष में जाए उदारता का चोला ओढ़कर ।

दाढ़ु - “ बुआ पूरे घरे में जैसे मुरदानगी छाई रही । जब मुन्ना भैया निकलने तकरीबन तबहीं हम पहुँचा रहे । हम गेट खोलि के साइकिल भीतर किहा कि गेट के आवाज़ सुनी के लोग देखें लागेन हमरे ओर । ओनका लाग कि मुन्ना भैया वापस आई गयेन । हम गये भीतर । हमका समझि आई गवा कि कुछ गड़बड़ बा । तब बाबा भैया खुदै बोलेन कि पिताजी और बुआ में लड़ाई होई गई बा । हम जब पूरा क्रिस्सा सुना तब हमहूँ कहा कि इ बिना मतलब के लड़ाई होई गई । एकर कौन ज़रूरत रही ?

बाबा भैया बोलेन अब इ बतावअ दाढ़ु इ मामला कैसे पटरी पर आए । हम कहा बुआ, कि अब ई त भारी समस्या होई गै । बुआ बहुतै मरजाद वाली बा । ओका समझाउब आसान न होये । तब बुआ, मामी बोलेन तू मुन्ना के संगे हमेशा रहत हअ । मुन्ना के समझाई द । मुन्ना उर्मिला के मनाय ले । इ घरे के मामला बा । एका बाहर न जाई चाही । ”

माँ - “ तब ओनकरे मोहे में दही ज़मीं रही । तब काहे नाहीं बोलिन कि तू गलत करत हए । तब त उठि के ओऊ चलि दोहिन संगे । रिश्ता के कौनौं कीमत नाहीं बा ई सारा डर बा कि कमिश्नर ओनकर बड़का अफसर बा । अगर कमिश्नर के ई पता लगि जाए तब ओनकर बहुत भद्द होए । ”

दाढ़ु - “ पर बुआ कमिश्नर से के बताए ई बात । उहाँ त ए डींग मरबै करहीं । ”

माँ - “ हम बताउब । अबहिं मुन्ना जाए फ़ोटो- कुंडली वापस करै बरे, इहै बताई दे । नाहीं त हमका 6 रुपिया खर्चा करै पड़े रिक्शा के, 3 जाई के और 3 आवै के । 6 रुपिया में ऐ स्स्पेंड होई ज़इहिं । कुल गर्मी निकरि जाए एनकर । ”

नाना - “ बिटिया ई काम न करअ । ओकर नौकरी न ल । कैसो बा पर बा ह त तोहार भाइन । ”

माँ - “बाबू, काल तुहूँ त रहअ / तू देखअ नाहीं? ”

दादू - “ बुआ एक चीज़ हमका और उड़तै- उड़तै समझि आई राति के ?

माँ - “का ” ।

दादू - “हम राति के चाचा के पैर मींज के निकला तब चाची आइन सोवै के । हम रसोई में पानी पियत रहे तब चाची कहिन कि इ तोहार कुर्सी कै रोजि और बनी रहे । चाचा कहेन पता नाहीं, जेतना दिन भगवान बदये होइहिं ओतने दिन रहे । अब लक्ष्मी के कृपा जब तक होये तब तक कुर्सी रहे । अब लक्ष्मी रुठि गई हैं तब का करी हम । ”

चाची कहेन, “लक्ष्मी तो रुठि हैएन हईन नाहीं तो ऐसन आग- अधियार तोहार काहे होत । हम मुन्ना के लगे जाइ के सोचतै रहे कि सरस्वती तोहरे जिहवा पर सवार होई गइन और तोहार मति हरि लोहिन । ”

बुआ हमका लागत बा चाचा कुछ नटवरलालगीरी केहें हयेन । हम आज जाब कलेक्टरेट । उहाँ से सब पता लगाइ लेब । ”

माँ - “तू कैसे पता लगऊबअ । ”

दादू - “बुआ , हम बहुत ग हई चाचा के लगे ओनके आफिस । उहाँ एक फरगैया बा । ओका सब खबर रहत हअ । हमार ओकर बहुत पटत हअ । हम ओकर गोड़ बहुत मीजें हई । ऊ सेमरी के हई और हमरे अम्मा के तरफ से दूर के नात मे अउबौ करत हअ । ओसे कुल भेद मिल जाए । ”

माँ - “ जा तब लै के आई जा भेद । अगर कुछ फ़ायदा लेहे होइहिं तब त एनका हम घरे बैठाई देबै । ओनका अबा पता नाहीं बा हम केकर बिटिया हई । ”

दादू - “ई त पता बा बुआ । अकेल मामा के गद्दी पर बाबू आए रहेन और कुल गाँव के ज़मीन लीलि गएन । तू मामूली आदमी के बिटिया त हउ नाहीं । बुआ एक बात कही । ”

माँ - “ कहअ ” ।

दादू - “तोहार बबुओै कम नटवर लाल नाहीं हयें । ऐ हयेन जमीन माफिया । ज़मीन देखने नाहीं कि एनकर लार टपकै लाग । ए जेकरे दुआरे जाब शुरू केहेन , समझ जा ओकरे ज़मीन पर एनकर निगाह बा । ”

माँ - “ पर का मिला ओसे एनका । ”

दादू - “ बुआ मिला न । सब नाती नालायक होई गएन । सब ज़मीनी में लपटियान हए । झुलई भैया ससुरारी में खेते के मेंड नापत हएन और बुढ़ज रात के जोड़त- गाँठत हएन हमरे पास केतना खेत बा । ”

माँ ने कहा धीरे बोलो , बाबू सुन लेंगे ।

दादू - “नाहीं बुआ , कुछ न सुनि पझिंहि । एनकर दिमाग़ चाचा पर लाग बा ।
आखिर हरन त खूनौ चाही जैसन होई ।”

मैंने पिताजी से पूछा , क्या हुआ वापस करने का ? वह बोले शांत रहो , वह भूल गई है , जब कहेगी तब देखा जाएगा । मैं सारा दिन सोचता रहा कि अब कहेगी पर उसने कुछ न कहा । मैंने शाम को कहा , “माँ मैं ढिगवस्स कोठी जा रहा सत्य प्रकाश मिश्रा सर के यहाँ ” । माँ ने पूछा , कब आओगे ? मैंने जवाब दिया कि समय तो लगेगा ही । सर को अपनी कहानी सुनानी होती है । मैं घर से निकला , सर के यहाँ पहुँचा । मैं सर के घर में प्रवेश ही किया था कि देखा कमिश्नर साहब अपनी पत्नी के साथ बैठे थे । कमिश्नर साहेब कोई कविता संग्रह निकाल रहे थे । उस पर सर की राय ले रहे थे । वह अक्सर आते थे सर के पास । यह संयोग था कि आज मैं और वह एक साथ ठकरा गए । सर ने कहा , अनुराग अच्छा हुआ तुम आ गये । मैं सत्यानन्द से कहने ही वाला था , एक बार अनुराग को दिखा दो । वह भी राय देगा । वह कुछ उद्दृ जोड़ देगा , कुछ आगे- पीछे करने की राय दे देगा । अब आप लोग अफसर हो , लिखने का ड्रामा करना तो ज़रूरी ही है । देखो इनकी पांडुलिपि ।

मैंने देखी पांडुलिपि और कहा , अगर इजाज़त हो तो कुछ ठीक करूँ ।
कमिश्नर साहब ने कहा , ज़रूर करो । देखूँ तो कुछ ।
मैं उनकी कविता ठीक करने लगा ।

1. एक ख़ामोशी है ख़्वाब की
लफ़ज़ छूँढ़ रहा मैं
पर लबो पर लफ़ज़ जो आ रहे
वह वह नहीं जो ख़्वाब कहना चाह रहे ।

2. कोई ज़रूरत नहीं मुझे अँधेरे में चिरागों की
रौशनी तेरे ख़्यालों की कुछ कम नहीं उजालों के लिये ।।।

3. वह नदी कुछ किनारों से नाराज़ है
वह अपने आप में सिमटी जा रही ।

4. सुना है ख्वाब भी कहते हैं नींद से
रुक ज़रा अभी रात बाकी है ।।।

सर - अनुराग एकाध बड़ी कविता भी ठीक करो ।
मैं - जी सर, करता हूँ कोशिश

क्या कहूँ
तुझ पर
बस इतना
कुरान की आयातों में तुम हो
श्लोकों में हो
हर जगह जहाँ भी देखता हूँ परेम
हर जगह दिखती है तू
किसी रूप में
पूछा सी ने
क्या है यह
दुआ किसी के लिए
मैंने कहा पता नहीं
बस लिख रहा यूँ ही
किसी की याद में
याद करना भी
एक इबादत ही तो है ।

कमिशनर साहब - सर, यह तो मेरी कविता रही नहीं । सारी अनुराग ने बदल दी ।

सर - मैंने तुमसे कहा ही था, इसकी असीम प्रतिभा है हिंदी में । पर तुम लोग बाबू बनोगे अध्यापक नहीं । अनुराग एक बार पूरी पढ़ लो और सब मत

बदल दो कि सत्यानंद के “घोस्ट राइटर” बन जाओ । तुम सँभाल कर ठीक करो, ताकि यह कह सकें कि मैंने लिखा है ।

मैं सर मेरी क्या बिसात इतने बड़े लेखन पर मैं कुछ टिप्पणी कर सकूँ । पर मुझे दे दें । मैं भी पढ़ लूँगा और कह सकूँगा किताब छपने के पहले मैंने पढ़ी थी । कमिश्नर साहेब ने अपनी पत्नी से कहा, यह सर्वेश मिश्रा जो आये थे उस दिन उनका भांजा है जिससे प्रतीक्षा के विवाह की बात चल रही ।

कमिश्नर साहेब की पत्नी मुझे अपलक निहारने लगी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 130

कमिश्नर साहेब की पत्नी ने मुझसे कहा बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर । मैंने कहा भी था इनसे कि मैं अनुराग से मिलना चाहती हूँ । इन्होंने आपके मामा से अनुरोध भी किया था और मैं इंतज़ार भी कर रही थी ।

मेरा मन किया मैं कह दूँ कि कौन मामा ? मैं किसी मामा को नहीं जानता । पर मैं शांत रहा । मैंने कोई प्रतिक्रिया न दी उनकी इस बात पर सिफ़्र इतना ही कहा, यह एक सुखद संयोग है सर के यहाँ पर आप से मुलाक़ात हो गई मैं तो सर से मिलने अक्सर आता रहता हूँ ।

मैडम धारा प्रवाह अंग्रेज़ी बोल रही थीं । वह लखनऊ के चीफ़ कमिश्नर की बेटी थीं । वह लोरेटो कानवेंट लखनऊ और दिल्ली के लेडी श्री राम कालेज की पढ़ी हुई थीं । सिविल सेवा के सफल अभ्यार्थी ज्यादातर आते हैं बहुत ही सामान्य घरों से पर उनका विवाह एक बेहतर सम्म्रांत, समृद्ध एवम् प्रभावशाली घरों में होता है और ज्यादातर लोग विवाह के बाद अपनी ज़मीन त्याग देते हैं और ससुराल की ज़मीन पर क़ालीन बिछाने लगते हैं । अगर ससुराल भी उसी शहर में हो जिस शहर में उनका घर है तब भी वह अपने घर के बजाय अपनी ससुराल में रहना पसंद करते हैं । खुदा न ख़ासता अगर साला नहीं है तब तो ससुराल ही घर होता है और सास- ससुर की ऐसी सेवा करेंगे की शर्वण कुमार भी पनाह माँग जाये । कमिश्नर साहेब भी मेरी ही तरह के तक़रीबन पृष्ठभूमि के आदमी थे पर उनकी पत्नी का परिवेश उनके परिवेश से कई कदम आगे था । कमिश्नरी पति की और चीफ़ कमिश्नरी पिता की उनके सिर पर साफ़ा बाँधे बैठी थी । कमिश्नर साहेब को दबैलहा बनाए होंगी ऐसा अनुमान लगाना कठिन न था, मेरे लिये । वह तो अंग्रेज़ी से ही दबेस देगी सर को बाक़ी बात तो बाद है । मुझे उनकी धारा प्रवाह

अंगरेजी से ज्यादा उनके अंगरेजीपन से आपत्ति हो गई । मैंने सीधे स्पष्ट तौर पर कह दिया, मुझे आप की अंगरेजी समझने में दिक्कत हो रही है । मुझे अंगरेजी नहीं आती इतनी । मैडम ने स्वप्न में भी इस वाक्य से संवाद आरंभ होने की कल्पना न की थी ।

मैं- क्षमा करें मैडम । मुझे अंगरेजी समझने में दिक्कत होती है । हिंदी में बात करना सहज होता है मेरे लिये ।

मैडम - कोई बात नहीं, मैं अंगरेजी स्कूलों की पढ़ी हूँ । हिंदी के माहौल में कम रही हूँ । इसलिये अंगरेजी में सहज होती हूँ मैं ।

मैं - यह बात तो है मैडम, आप को थोड़ा समस्या तो होगी हिंदी में बात करने में अगर कभी हिंदी बोला ही नहीं है । अब हम लोग हिंदी स्कूलों के पढ़े हैं । हम अंगरेजी कक्षा 6 से शुरू करते हैं । अब इतनी देर में पढ़ना शुरू करने पर और माहौल न मिलने पर दिक्कत तो होती ही है ।

मैडम - जनरल इंग्लिश का भी पेपर होता है । वह कैसे करते हो आप लोग ?

मैं-कई सवाल का जवाब मैडम ईश्वर ही दे सकता है, मैं कैसे दे सकता हूँ । हम लोग अंगरेजी कैसे पास करते हैं इसमें हमारी क्राबिलियत से ज्यादा ईश्वरीय अनुकंपा की बात करनी चाहिये । हम लोग ग्रामर रट लेते हैं । निबंध में पता नहीं क्या लिखते हैं, बस लिख देते हैं । एक बात हमारे सीनियर कहते हैं कि पेपर पूरा करके आओ पास हो जाओगे । यही हम सब करते हैं । पेपर पूरा कर देते हैं । जब मेंस का रिजल्ट आता है और रोल नंबर छपा होता है तो पहली प्रतिक्रिया होती है, “ हमहूँ अंगरेजी में पास हो गये ” । हनुमान जी का दर्शन मेंस की परीक्षा के के बाद रोज़ करने लगते हैं इस अनुरोध के साथ, “ हे अंजनी पुत्र अंगरेजी में पार लगा देना । ” मेरे ख़्याल से देवताओं में अपेक्षाकृत रूप से हनुमान जी की भाषा कमजोर है । इसीलिये वह कमजोर भाषा वालों के सबसे बड़े देवता माने जाते हैं ।

मैडम - यह कैसे पता कि हनुमान जी की भाषा अपेक्षाकृत कमजोर है, अन्य देवताओं की तुलना में ।

मैं- मैडम पढ़िये आप रामायण, रामचरितमानस । आप को कहाँ हनुमान जी बोलते हुये मिलते हैं । जब लंका जाना था तब भी वह कहाँ बोले, वह तो जामवंत बोले कि आप ताकतवर हो । अंगद - रावण संवाद हनुमान जी से भगवान राम ने न करवाया जबकि वह बेहतर होते मेरे ख़्याल से, पर परभु तो सर्वज्ञानी हैं । हनुमान जी के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व को भी शायद समझा हो । हनुमान जी के समुद्र लाँघने पर एक विवेचन शाप का है कि हनुमान जी को अपने ताकत का भान नहीं था और दूसरा यह कि उनके पास भाषा की

समस्या थी । महाप्राण निराला ने राम की शक्ति पूजा लिखी पर हनुमान जी से कुछ न कहलवाया । अब सारे विद्वान अगर एक ही बात कह रहे हैं तो यह हो तो सकता है । पर हमको इससे क्या, हम तो उनको भाषा से कमज़ोर लोगों का देवता मान कर पूजते रहे और कल्याण आप देख ही रही हैं ।

सर - यह बात तो सही है कि हनुमान जी की अभिव्यक्ति सीमित है कथाओं में ।

मैडम- आपकी हाबी क्या है ?

मैं - मेरी कोई हाबी नहीं है सिवाय साइकिल चलाकर घूमने की ।

मैडम - कुछ तो लिखा होगा इंटरव्यू के लिये ।

मैं - हिंदी उपन्यास पढ़ना लिखा था , पर सर कहते हैं कि यह कोई हाबी नहीं होती ।

सर - यह सब फ़र्ज़ी लोग हैं । पढ़ना हाबी होती है । यह हिंदी उपन्यास पढ़ना कौन सी हाबी है । इनकी तकदीर अच्छी थी मेहरा के बोर्ड में पड़ गए । हिंदी पर कुछ सवाल अच्छे आ गये , काम हो गया ।

कमिश्नर साहेब - क्या सवाल हिंदी पर पूछे गये ?

मैंने थोड़ा सा बताया । जवाब भी सुनाया । कमिश्नर साहेब ने कहा नाटक-रंगमंच- उपन्यास के सवाल तो अच्छे थे जवाब भी अच्छा था । कमिश्नर साहेब और मैडम जाने लगे । मुझसे मैडम ने घर आने को कहा , यह भी कहा कि कहो तो मैं कार भेज दूँगी , आना कभी । और कौन से देवता के बारे में क्या जानते हो यह बताना । कमिश्नर साहेब ने कहा कि यह मेरी किताब देख लेना और सलाह देना । मैं अगले महीने विमोचन कराना चाह रहा हूँ राज्यपाल से ।

मैंने कहा , ज़रूर सर । मैं देख लूँगा ।

वह लोग चले गये । उनके जाने के बाद सर ने पूछा कि क्या विचार है ? आईएएस अगर नहीं मिलती है तब क्या करना है ? फिर से दोगे या ज्वाइन करोगे ?

मैं - सर , समझ नहीं आ रहा । आपकी क्या राय है ?

सर - सत्यानंद तो कह रहे थे ज्वाइन कर लो । आईएएस में कैडर का झांझाट है । इनके ससुर भी आईआरएस हैं और छोटा भाई भी । अब इसने बेहतर राय कौन देगा । मैंने कहा , जैसा आप कहें सर ।

सर - क्या विचार है विवाह का ? सत्यानंद के यहाँ करोगे ?

मैं - सर , यह करने लायक है ? मैडम के हालात आपने देख ही लिया । इनकी बहन सेंट स्टीफेन्स में पढ़ती है । मेरा परिवेश आप जानते ही हैं । मेरे पास ज़िम्मेदारियाँ हैं । मैं एक बहुत ही कच्ची गृहस्थी के घर से आता हूँ । यह सर बेमेल संबंध है हर तरफ से ।

सर - तब इंकार कर दो ?

मैं - कैसे करूँ? मेरे पिताजी संकोची हैं और मामा जो विवाह बढ़ा रहे वह स्कीमी हैं । मेरा कहना उचित है नहीं । सर , आप कह दे ।

सर - यार अनुराग , हम न तीन में न तेरह में । हमारा इसमें कौन सा रोल है । यह हमसे लड़के के बारे में पूछे मैंने बता दिया । यह पूछे कैसा लड़का है , मैंने वह भी बता दिया जो मैं जानता था । आज पति- पत्नी तुम्हारा इंटरव्यू भी ले लिये । तुम्हारी ज्ञानता- अज्ञानता भी परख लिये । अब और क्या रह गया । बस फैसला जल्दी ले लो । यह सब बड़े आदमी हैं, बेवजह नाराज़गी मत लो ।

मैं - जी सर ।

मैं सर से कुछ इधर - उधर की बात किया । उनकी कुछ कहानी कुछ सुनी और घर आ गया ।

मैंने घर आकर माँ को सारा किस्सा बताया । वह भी थोड़ा चौंक गई इस अप्रत्याशित मुलाक़ात से । वह मेरे और सत्य प्रकाश मिश्रा सर की बात से प्रसन्न थी । वह भी इस मुद्दे पर आ गई और पिताजी से अनुरोध किया , कोई मामले का निदान जल्दी से जल्दी करने का । वह एक तनाव का अनुभव करने लगी थी । वह एक घरेलू महिला थी उसने इस तरह का जीवन में उतार - चढ़ाव न देखा था । उसको लगने लगा , कहाँ हम फँस गए । मैंने जैसा वृतांत कमिशनर साहब की पत्नी का बताया उससे वह और डर गई । । उसने पूछा , उनकी बहन भी ऐसी ही होगी ? मैंने कहा संभावना तो है ही । कुंडली - फ़ोटो को वापस करने का मुद्दा जो सारा दिन शांत रहा पुनः विचारणीय हो गया ।

दादू कलेक्टरेट गया । मामा आज नहीं आये थे । वह कल की घटना के सदमे में थे । दादू फरगेंया से मिला । फरगेंया ने रस लेकर सब बता दिया । मेरे मामा की छवि बहुत ख़राब हो गई थी । लोग जलते ही हैं जो व्यक्ति समृद्धि की ओर अग्रसर होता है । मेरे मामा बहुत स्पीड से समृद्ध हो रहे थे , इसलिये ईर्ष्या ज्यादा हो रही थी । टेंडर लीक करने की बात खुद भवानी मलीहावाले ने ही लीक कर दी थी । वह चार सौ- सौ के नोट वापस करना

एक बहुत ही निंदनीय कृत्य के रूप में देखा जा रहा था और रस ले- लेकर चर्चा कर रहे थे इसका । फरगेंया ने कहा दाढ़ू से , “ ऐतन लालची मनई हम जमुनापार में नाहीं देखा , जैसन सर्वेश मिश्रा हयेन । एतना रिश्वत लेहेन पर चार सौ रूपियौ बदल लेहेन । टेंडर लीक कै देहेन , ऐतना गिरि गयेन ओ । हरषू महराज छोड़िहिं न ओनका । शिकायत कलेक्टर संजीव रंजन से आज-काल में होये । सब डेरात हएन कि ऐनके मूडे पर कमिश्नर के हाथ बा , पर कमिश्नरौ त कभौं जाए इहाँ से । ओकरे जातै ए बलभर लतियावा ज़इहिं । तोहार चाचा हयेन और हमरेऊ दूर के रिश्ते में आवत हयें ए पर सबके सिर झुकाई देहेन ए अपने कदरसना से । “ दाढ़ू के ही सामने राम संजीवन आ गया था और उसने राम संजीवन और फरगेंया का क्रिस्सा सुनाया ।

राम संजीवन - “ फरगेंया आज मिसिर महराज आएन नाहीं । ”

फरगेंया-“ अब एकाध दिना त पखवाड़े में रूपिया गिनै के बारे में चाही । कौन हमरे- तोहरे तरह के खाली मनई हयें ओ । इ रूपिया बड़ी मायावी होति है । ई अपने में मनई के लपटियाय लेति ह । अब गिनि लेई द आज इत्मिनान से रूपिया । कालि अझिं । ”

राम संजीवन - “ कुछ पता चला रेट टेंडर लीक करै के ? ”

फरगेंया - “ तुहाँ बेसहूरी के बात करत ह । ई सब काम के कौनो रेट होत ह का । जौन मोहे से निकला तौन लै ल । एक चाल सर्वेश और चलत हएन । केहू से न बतावअ तब कही । ”

राम संजीवन- “ हम तोहार आज तक कौनौ बात केहू से बतावा का । हम अपने मेहरारूओ से नाहीं बताइत । हम पेटे से गर्स हई । ”

फरगइयाँ- “ ई बात त हम मानब तोहार । इही बरे हम केवह तोही से बताइत हअ । ”

राम संजीवन - “ बतावअ खबर । हमका उत्सुकता तेज होत बा कि अब इ सरवेस और कौन लीला फैलाये । ”

फरगइयाँ-“ठीका अबै तक तीन साल में एक बार दिहा जात हए । जब मोहिन्दर सिंह कलेक्टर रहेन तब ओ एका एक साला से तीन साला केहे रहेन । ई सरवेस दिमाग़ लगाए बा । कहत बा एसे राजस्व के नुकसान होत बा । अब एका फिर से हर साल किहा जाय । ”

राम संजीवन - “ ई त कमिश्नर साहेब से होये । ओनका शासन के बिसवास में लेहे परे तबै होई पाए । ई त काम कलेक्टर संजीव रंजनौ से न होई पाए । पर अगर हर साल के ठीका होई जाए तब त ई बहुत कमाये । ”

फरगेंया - “ इ हम तोहसे कहे रहे , बहुत बड़ी खोपड़ी बा सरवेस मिसिरा के लगे । अब अगर ई तीन साला से एक साला होई गवा तब हर साल ई लीक करें टेंडर । एका टेंडर के मामले में मास्टरी बा । ई बीए में अरथसास्तर पढ़े बा । एम ए राजनीति सास्तर लेहे रहे बा । एका केऊ खेदे न पाए । ”

राम संजीवन - “ई केतना कमाए लेहे होये अबै तक में ? ”

फरगेंया - “ हमरे हिसाब से टेंडर लीक करै के पाँच लाख लेहे होए । तीन साल के टेंडर बा । दुई घाट के टेंडर बा । एसे कम का ले ई । बाकी रोज़ के छुट्टा काम में रेट ऐकर राम सर्लप से ढेर बा । अब तू त गणित पढ़ा हअ कक्षा दस तक , जोड़ि ल ऐकर आमदनी । ”

राम संजीवन - “ अगर इहै रफ्तार रही एकर तब इ कंपनी बागै ख़रीद लें । ”

फरगइयाँ - “ एकर दरिद्रता अब चली गई बा । अगर तिसाला से टेंडर एक साला होई गवा तब त ई टाटा- बिड़ला के टक्कर दे । ”

राम संजीवन - “होई जाए एकसाला ? ”

फरगइयाँ - “सिरीमान राम सजीवन एक बात त तू जान ल । ई है मारीच । ऐसन सोने के मृग बनाए कि सब लुध्य जड़हिं । ई बनाए परस्ताव राजस्व फ़ायदा के , पर एकर स्कीम बा लूट - पाट के । कमिश्नर साहेब के समझाए । अब कमिश्नर के त मानदान होई जात बा ई । बियाह होई जात बा एकरे भांजवा से । अब कमिश्नर एकर न सुनिहिं त का हमार- तोहार सुनिहिं । ”

राम संजीवन - “ई बतावअ , का कमिश्नर के एकर कारस्तानी पता न होये ? ”

फरगइयाँ - “कमिश्नर अपने चाल में हयेन । एक पोस्टिंग कै देहेन । उहीं में बियाह के बात बनि जाय तो ओनकर त काम होई गवा न । एतना बड़ा रेट आईएएस के बियाहे के बा । अब एक पोस्टिंग से बियाह सधत बा , तब त कौन इ घाटे के सौदा बा । ”

राम संजीवन - “ एनकर बेटवा त ऊ आईएएस बा नाहीं , ह त भांजा । अब गायरंटी त बियाहे के सरवेस दै न पझहिं । ”

फरगइयाँ - “ बियाह होई में समय बा । तब तक सरवेस लूटि मरिहिं । बियाह होई जाए त बहुतै बढ़िया नाहीं त लूट- पाट त चलतै बा । जब गाड़ी रुकि जाए तब देखा जाए । ”

राम संजीवन - “ तोहार का अनुमान बा बियाह पर , इ होई जाए ? ”

फरगेंया - अब आईएएस के बियाह के बारे में कुछ कहब आसान नाहीं बा । कब का होई जाए , कब कौन बड़ी पारटी आई जाए । कमिश्नर हयेन त बड़ी पारटी पर एनसे बड़वार पारटी भी प्रदेश में बा । ई आल इंडिया सर्विस है ।

आईएएस भी आल इंडिया । अब बियाह में बोली आल इंडिया लगे । ई कमिश्नर तैयार रहें, आल इंडिया बोली बरे । पर सरवेस घरे के मनई बा और साहेब के संगे मज़बूती से खड़ा बा । एकरे पास माया बा । कबीर कहे हए न, “माया महारागिनी हम जानी” । ई ठगौ बा । ऐसन ठग कम देखे होबअ तू । का पता ई अपने बहिन- बहनोई- कमिश्नर सबै के ठगि लेई । देखत जा एकर चाल । ई एह समय त अश्वत्थामा बना बा । कलेक्टर संजीव रंजन कलपत हएन, एका हटावय के बरे पर ओनकर चलत नाहीं बा । ”

राम संजीवन - “कैसे पता तोहका फरगेंया कि ओ कलपत हएन ? ”

फरगेंया-“ह तू निरा बूरबक । अरे एहमें दिमाग़ लगावय के बात बा का । पूरा विभाग जानत बा सरवेस के कदरसना । कलेक्टर संजीव रंजन इहीं एनझा के पढ़ा हयेन । ओनके होस्टल के पढ़ा कई इहाँ वकालत करत हयेन । यूनिवर्सिटी के कई पूर्व छात्र नेता टहरत रहत हीं इहाँ पर । एक बात और बताई अगर तू केहू से न बतावअ । ”

राम संजीवन - “फरगेंया हम पेटे से गर्ज हई । हम आज तक तोहार बात केहू से नाहीं बतावा । ”

फरगेंया - “कौनौ - कौनौ बात तू बताई देत ह । ”

राम संजीवन - “कौन बात हम बताए हई ज़रा बतावअ त हमका । ”

फरगेंया-“ल सुन ल पर भूलि जा एका । इ ठाकुर बा ना । ”

राम संजीवन - “कौन ? ठाकुर भुलई सिंह ? ”

फरगेंया-“हाँ । इ कलेक्टर संजीव रंजन के जासूस बा । एसे सावधान रहअ । ई बंगला पर जात ह समाचार लै के । ”

राम संजीवन - “तब इहि से सब समाचार कलेक्टर पावत होये । ”

फरगइयाँ-“हाँ । ”

राम संजीवन-“तब त पता होये लूटपाट जौन चलत बा । ”

फरगइयाँ-“देखअ विभाग छूट देत ह कि खर्चा- लेहनी लै ल । बाल - बच्चा पाल ल पर जौन सरवेस करत हएन, ई विभाग न स्वीकारे । आटा में नमक तो कलेक्टरौ लेत होइहिं चाहे जेतना ईमानदारी के नाटक करै पर अब कुल नदियै पी जा , एका त बरदाशत न करिहिं । ”

राम संजीवन - “अब का होये ? ”

फरगेंया-“हम त इधर के बात उधर करित नाहीं । हम अपने काम से काम राखित ह । हम न अफवाह सुनी न फैलाई, हलाँकि हमार सूचना तन्त्र बहुत

मज़बूत बा । तू आपन मनई ह तोहसे हम चार बात कै लेइत ह । केहू से कहअ न । चल चाय मँगाई ल । अब सरवेस के तकदीर बा ओनकर भाँजा आईएएस होई गवा बा , हम - तू क़ाही संताप करी । हमरे घरे के गदेल त कुल ससुरे नालायक हयेन । एक हमार भतीज बा तीन साल से लगा बा पर कुछ फरियातै नाहीं बा । सबके हनुमान जी सरवेस ऐसन तकदीर देई । “

मेरी माँ - पिताजी के हाँथ से जैसे पाले हुये तोते उड़ गये हों । दाढ़ को लगा कि सारा जीवन हम बुआ के सेवा किये पर मलाई चाचा मार गये वह कुंतलो में । मेरी माँ का गुस्सा सातवें आसमान पर । नाना से कहा , देखा भैया का किरया- कलाप ? कोई इतना भी गिर सकता है और उसका वह टेप रिकार्डर्स चालू हो गया कि .. हमारे काम कोई नहीं आया ... मेरा बेटा 6 महीना बगैर प्लास्टर , बगैर दरवाज़े- खिड़की, बगैर वायरिंग के कमरे में रहा हमकों रूपिया नहीं दिये जबकि ब्याज भी हम देने को तैयार थे वह रुआँसी होकर अपने पिता पर पिल पड़ी । आज नाना का भी समय ख़राब था । वह नाना को भी लपेट मारी ... मेरे बाप के पास तीन गाँव की ज़मींदारी थी ... एक गाँव के खेत धिंगरा खा गये पर हमरे वक्त पर हमार बापौ काम नाहीं आएन

मुझसे बोली मुन्ना बताओ क्या करें अब हमार ख़ून खौलत बा

मैंने कहा कल तक धीरज रखो । कल वापस कर दूँगा ।

मुझे लग गया कि अब इस पर फ़ैसले का वक्त आ गया है । यह फ़ैसला अगर अभी न लिया गया तब मुश्किल आ सकती है । मैंने दाढ़ को दौड़ाया बाज़ार और कहा एक अच्छा सा लिफाफा लेकर आओ । वह चला गया बाज़ार । मैं कमिश्नर साहब की कविता पर काम करने लगा । मैंने तक़रीबन दस कविता ठीक की । वह बेहतर बन गई थीं । मैंने एक पत्र लिखा ।

“ यह संबंध बहुत अच्छा होता , अगर हो जाता पर कन्या बहुत ही क़ाबिल है और ऊँचे परिवेश की है । अनुराग उसके लायक नहीं दिखता । इसलिये यह संयोग उचित न होगा । ”

मैंने यह पत्र लिफ़ाफ़े के अंदर डाला । साथ

में फ़ोटो- कुंडली- बायोडेटा - उनकी किताब पांडुलिपि डाल दी ।

लिफ़ाफ़े के ऊपर नाम लिखा बड़े बड़े अक्षरों में सर्वेश मिश्रा ।

मैं और दादू सुबह दस बजे साइकिल लेकर चल दिये कमिश्नर साहेब के बँगले की तरफ़ । मैंने कमिश्नर साहेब के बँगले में प्रवेश किया । मेरे जीवन में सारे काम पहली ही बार हो रहे थे , इतने बँगले में प्रवेश भी मेरा पहली बार ही हो रहा था । मुझे पता था कि इस समय वह आफिस में होंगे घर पर नहीं । मैंने उनके स्टाफ़ को वह लिफ़ाफ़ा दिया और कहा कि साहेब से कह देना सर्वेश मिश्रा साहेब ने भेजा है । स्टाफ़ जानता था मामा को । वह पूछा वह आये हैं क्या? मैंने कहा , “ नहीं यह भेजा है , मैं उनका स्टाफ़ हूँ । साहेब को ध्यान से दे देना । ” कमिश्नर साहेब के स्टाफ़ ने कहा , “ साहेब को मेरा नमस्कार कह देना । कहना मैंने याद किया है , कई दिन से वह आये नहीं । ” मैंने कहा , ज़रूर कह दूँगा ।

मैं बँगले से बाहर निकला दादू मेरा बाहर इंतज़ार कर रहा था ।

मैंने कहा दादू से चलो यूनिवर्सिटी रोड की तरफ़ , मुझे दिखा कृष्णा कोचिंग के सामने से वह विशाल लाइब्रेरी जहाँ मैं बहुत ज़ाया करता था , फिर साइकिल मोड़ी दिखा हालैंड हाल फिर यूनियन हाल और वह साइकिल स्टैंड जहाँ साइकिल रखकर अंदर प्रवेश करता था मैं जैसे ही साइकिल मुड़ी यूनिवर्सिटी रोड की तरफ़ मन में विचार कौँधा यह सारे व्यूह बनाने की मेरी कला निर्थक है अगर शकुनि के पाँसों को मैंने आग में जला न दिया । मैं अपनी पहली चाल चल चुका था । अब अगली की बारी है । हरि तू लक जा अभी

मेरी अभी बारी है ।

मामा इंतज़ार करो भयावह रात अभी आनी बाकी है । अभी तक तुमने देखा है मेरी आँखों का भोलापन उनके शोलों की अब बारी है । उस बग़ैर प्लास्टर-बग़ैर खिड़की दरवाज़े के कमरे से ही एक काल जन्मा है तुम्हारे लिये नहीं नहीं तुम्हारी कुत्सित प्रवृत्तियों के लिये ।

मेरे ज़ेहन की बस्ती में एक आग लग चुकी थी । मेरे अंदर ख़ाक ही ख़ाक बन चुका था उस आग से । जो जख्म बने थे वक्त के दौरान उसका दर्द अब भी मेरे भीतर था । एक दास्तान जो बन रही थी मुझे अँधेरों में रखकर उस दास्तान के ख़त्म होने का वक्त आ रहा था । तीर चलाने का फ़न तो मुझे आता था पर अब कमान में तीर चुन- चुन कर डालने का वक्त आ गया था ।

पहला तीर चल चुका था , तरकश से दूसरा तीर चुनकर चलाने का अभी वक्त नहीं आया था । पहले ही तीर की पीड़ा घातक तो होगी और बहुत तड़पन भी होगी ।

दाढ़ को कुछ समझ न आ रहा था । उसने पूछा , “ मुन्ना भैया अब क्या होगा ?

मैंने कहा ,

जाना कल उस बसे हुये शहर की तरफ
जिंदगी वहाँ नाराज़ नज़र आएगी ।

दाढ़ - भैया समझा नहीं ।

मैं - एक आग बरसने जा रही बस इंतजार करो ।

मुझे सिविल लाइंस में हनुमान मंदिर के थोड़ा पहले ब्राइट कोचिंग का बोर्ड दिखा । मेरा दिमाग़ इस समय विदुर की तरह काम कर रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 131

मैंने ब्राइट कोचिंग का बोर्ड देखा । मेरा दिमाग़ बहुत तेज काम कर रहा था । मेरे दिमाग में ख्याल आया कि चलें देखें अंदर कौन सा नाटक हो रहा है । मैं और दाढ़ साइकिल वहीं बाहर खड़ी करके कोचिंग के अंदर गये । पता किया तो ज्ञात हुआ कि पहले मंजिल पर आईएएस की क्लास चलती है । मैं पहले मंजिल पर गया । एक कमरे के बाहर लिखा था शोभ नाथ मिश्रा, निदेशक आईएएस पाठ्यक्रम । वह ऐसा लिखवाया गया था कि आईएएस होने का भ्रम हो रहा था । दाढ़ ने कहा , “ का करबआ हिआ चलअ चुन्नी लाल के झहाँ छोला भटूरा खाई । ” मैंने कहा रुको , थोड़ा यहाँ एक कार्यक्रम चला देते हैं , दिमाग में कुछ चल रहा है । हम दोनों उस कमरे में प्रवेश किये जहाँ पर वह बोर्ड लगा हुआ था ।

चपरासी ने रोकने की कोशिश की पर इलाहाबाद में चपरासी से कहकर अंदर जाना थोड़ा लोगों को कम अच्छा लगता है । मैं धकिया कर अंदर घुस गया । सामने पतले - दुबले शोभ नाश मिश्रा जी कुर्सी पर बैठे थे । कुर्सी उनके क़द और हैसियत से बड़ी थी । उनको लगा कोई आ गया एडमिशन लेने । आमदनी की आशा हो गई ।

मैं - मुझे कुछ जानकारी चाहिये ।

शोभनाथ - बताएँ आप क्या जानना चाहते हैं ?

मैं - आपके यहाँ कौन पढ़ाता है ?

शोभ नाथ - हमारे यहाँ क़ाबिल लोग पढ़ाते हैं ।

दादू - “ई “लोग” कौन सी जाति है । ई त कभी सुना नहीं । क़ाबिल सिंह , क़ाबिल तिवारी , क़ाबिल यादव त सुना पर क़ाबिल लोग आज तक नहीं सुना । ”

शोभ नाथ - “मसखरी करने आये हो कि पढ़ने? मेरे पास फ़ालतू बात के लिये समय नहीं है ।”

मैं - इसकी बात रहने दे सर । अब एडमिशन लेंगे , पैसा देंगे तब पता तो करेंगे न कि कौन पढ़ा रहा । अब पैसा भी बहुत गाढ़ी कमाई का है ।”

शोभ नाथ - “तो आप पूछिये न , हम कहाँ कह रहे कि हम नहीं बताएँगे । इनके पास कोई तमीज़ नहीं बात करने की ।”

मैं - बता दीजिये आपके यहाँ कौन- कौन पढ़ाता है ?

शोभनाथ - “हमारे यहाँ सिविल सेवा के इंटरव्यू दिये लोग , यूनिवर्सिटी के नामी टीचर और कुछ दिल्ली के अध्यापक आते हैं पढ़ाने ।”

मैं - “कुछ नाम बताएँगे ?”

शोभ नाथ ने कुछ नाम बताया पर मेरी उसमें कोई रुचि तो थी नहीं । यह तो संवाद आरंभ करने के लिये मैंने कहा था । मैं तो कुछ और ही सोचकर आया था ।

मैं - अगर मैं पढ़ाना चाहूँ तब ?

मेरी उम्र 23/24 साल की थी ज़रूर पर मैं था दुबला - पतला इसलिए उम्र और कम लगती थी । मैं अध्यापक हो सकता हूँ यह मानना मुश्किल था किसी

के लिये मेरी शारीरिक संरचना को देखकर ।

शोभनाथ- आप क्या पढ़ाओगे? पहले आप पढ़ो ।

मैंने अपना परिचय दिया । वह मेरा नाम सुना था । इलाहाबाद में सिविल सेवा पास करते ही आप देवत्व प्राप्त कर जाते हो । आपको बहुत लोग जान जाते हैं । मैं वह देवत्व प्राप्त कर गया था ।

शोभ नाथ - “इसी साल जो अनुराग शर्मा 102 रैंक पाया है, वही आप हो ?”

दादू - “तोहका के बनाए देहेस निदेशक ? तोहका उठि के सलाम मारै के चाही और तू सवाल करतअ ह । अब राशन कार्ड देखाई का । ”

शोभनाथ- “अब अगर यह बात करेंगे तब मैं कोई बात नहीं करूँगा । ”

मैंने कहा , दादू चुप रहो , ज़रा बात कर लेने दो ।

मैं - “क्या पूछ रहे आप ? ”

शुभनाथ - “पहले कभी पढ़ाया है ? ”

दादू - “का कोई आदमी किताब -कापी - कलम लै के पैदा होत हअ का । हर आदमी सीखता ही है । क्या आप पैदा होते ही पढ़ाने लग गए थे क्या? ”

शोभनाथ शरा - “मैं कोई बात नहीं करूँगा अगर यह बोलेंगे । यह कोई ढंग नहीं बात करने का । ”

दादू को लगा कि मैं टाइम पास करने आया हूँ, इसलिये वह भी टाइम पास करने लगा ।

शोभ नाथ - “इनको बात करने की कोई तमीज़ नहीं है । उनको चुप कराओ । ”

दादू - “अब तू कौनौ परीक्षा पास नाहीं केहे ह आज तक और लगाए लेहे ह बोर्ड आईएएस के । एक आईएएस से सवाल करत हअ पढ़ाए लेब कि नाहीं । जब भैया कक्षा में आपन लेक्चर चालू करिहिं सरस्वती बहि जाए और उहिं तू बूडि जाबै । बिना मतलब के बात करत हअ । चल भैया कृष्णा कोचिंग , उहाँ काम बनि जाए । ”

मैं - “देखिये मिश्रा जी मुझको तो है पढ़ाना । मुझे काम चाहिये । अब आप दो या कोई और दे । आप मत दो , मैं कोशिश करूँगा राऊस में , कृष्णा कोचिंग , इलाहाबाद आईएएस स्टडी सेंटर । कहीं न कहीं काम मिलेगा ही । अब आप को मेंस फेल क़ाबिल लग रहे मैं चयनित हूँ आप मुझसे सवाल कर रहे । ”

शोभ नाथ - “ मैंने कब कहा कि मैं काम नहीं दूँगा । हर कोचिंग वाले को योग्य अध्यापक चाहिये । आप चयनित हो । आप चार काम की बात बताएँगे ही । पर यह जो आपके साथ हैं वह बात ही नहीं करने दे रहे । मुझे समझ तो लेने दो । यह पढ़ाना और ज्ञान होना दो अलग- अलग बात है । ”

मैं - “ ठीक है । आप टेस्ट कर लो । एक क्लास में । ”

शोभ नाथ - “ क्या लेंगे पढ़ाने का ? ”

मैं - “ आप कितना देते हैं एक क्लास का ? ”

शोभनाथ- “ सौ रुपया । ”

मैं - “आप सौ रुपया दे रहे मेंस फेल अध्यापक को । मेरा ज्यादा होना चाहिये । ”

दादू - “बात त भैया ठीक कहत हएन । अब कौवा , हंस और राज हंस का फ़र्क त होत है । भइया मानस के राजहंस हएन । ”

शोभ नाथ - “यह कैसे पता लगेगा , हंस - राज-हंस का फ़र्क ? ”

दादू - “नाऊ - ठाकुर केतना बार बस समने अउतै बा । आप पढ़वाई ल । तोहार कुल मास्टरन के होई जाए छुटटी । ”

मैं - “यह ठीक कह रहा , आप क्लास करा लो । पर सौ रुपया कम है । ”

शोभनाथ- “कितना चाहिये ? ”

मैं - “दो सौ । ”

शोभनाथ - “यह तो ज्यादा है ? ”

दादू - “भैया के पाँच सौ माँगए के रहा । तू हए मिश्रा । बाभन ह एका बरे लेहाज केहेन । ”

मैंने दादू को आँख दिखाया कि जोकरई मत करो , सीरियस बात करने दो ।

मैं - “आप का क्लास है एक घंटे का । मैं डेढ़ घंटे पढ़ा दूँगा । आप मुझे दो सौ दे दो । कोई खास फ़र्क नहीं पड़ेगा । बात तकरीबन वही पड़ेगी । ”

शोभनाथ- “मैं यह कोचिंग चलाता हूँ । मैं मालिक नहीं हूँ । मैनेजमेंट तैयार नहीं होगा । मैं डेढ़ सौ कर सकता हूँ । इससे ज्यादा नहीं । ”

मैं - “ठीक है । पर मेरी आज की क्लास का पैसा आप दे देना अगर मुझे काम न दिया तब भी । मुझे आप पैसा आज की क्लास का आज ही दे देना , भले ही आपको मेरी क्लास पसंद न आये । अगर आपको मेरा काम पसंद नहीं आएगा तब भी मेरी आज की मजदूरी तो बनती ही है । मैं बगैर उसके नहीं पढ़ाऊँगा , आप कोई समाज सेवा तो कर नहीं रहे । आप भी तो खींच कर पैसा लेते ही हो । अब ऐसा न हो कि आप मुझसे पढ़वा लो और फिर आप कहो कि आपने ठीक नहीं पढ़ाया , इसलिये पैसा नहीं दूँगा । आप मुझे आज के क्लास का पैसा देने का वायदा करो तब मैं क्लास लूँगा । यह पैसा भी क्लास के ख़त्म होते ही दे दीजिएगा । बात तो बड़ी लगेगी पर क्लास के बाद यहाँ पर विस्मय ही होगा , मैं ऐसे ही कुंदन नहीं बना हूँ बहुत आग में तपाया है अपने को । ”

शोभनाथ - “ कुछ खास समस्या है जो आप पढ़ाना चाह रहे और आज ही पैसा भी माँग रहे । ”

मैं - “कुछ वैसा ही समझ लीजिये । अब दया- धर्म के नाम पर तो आप देने से रहे , मेरी मेहनत पर ही दे दीजिएगा । ”

शोभनाथ- “आप क्या पढ़ाओगे? ”

मैं - “एक कहानी आपने सुनी होगी “ सौ टका ” की । वह कहता था , दाम हमारा काम तुम्हारा । दाम जो हम माँगे काम जो तुम बोलो । वहीं मैं कह रहा । दाम हमारा काम तुम्हारा । कोई भी विषय जीएस का पढ़ा दूँगा । इतिहास में कोई भी भाग । संविधान की गृह व्याख्या , भूगोल, सामान्य विज्ञान , भारत की आर्थिक नीति । आप को चाहिये क्या ?

दादू - मिश्रा जी तुहूँ पढ़ि ल , ज्ञान बढ़ी । ज्ञान जीवन में ज़रूरी बा ।

शोभनाथ जी ने दादू को घूरा पर बोला कुछ नहीं ।

मैं - अभी कौन सी क्लास है ?

शोभनाथ- मेरी क्लास है ।

मैं - किस टापिक की ?

शोभनाथ- राष्ट्रीय आंदोलन की क्लास है मेरी , आप ही पढ़ा दो । मैं यही पढ़ता हूँ ।

मैं - “ठीक है । क्लास लगाओ । दादू तुम भी बैठ जाओ क्लास में ।”

राष्ट्रीय आंदोलन तो मेरे लिये कुछ था ही नहीं । मैंने दो घंटे में पढ़ाया सिफ्ऱ कांग्रेस के पहले का राष्ट्रवाद , कांग्रेस की स्थापना का मिथक और कांग्रेस के स्थापना का सच । मैंने करीब बीस मिनट पढ़ाया होगा , 1885 - 1900 के घटनाक्रमों व्याख्या और विश्लेषण । मुझे परिणाम पता था । छातरों में विस्मय था । ऐसा कभी पढ़ाया ही नहीं गया था । ज्यादातर कोचिंग कुछ नहीं पढ़ती हैं ।

मैं जीआईसी , इसीसी , इलाहाबाद विश्वविद्यालय के महान अध्यापकों से पढ़ा हूँ । मुझे पता था कैसे वह क्लास में मुदित और बैचैन चेहरों को देख कर पढ़ाते थे । वह सब बहुत धीरे- धीरे क्लास की ग्राह्यता का स्तर देख कर पढ़ाते थे । मैंने अपने उन्हीं अध्यापकों को याद करते हुये , मस्तिष्क में उनकी ही क्लास का चित्र खींचते हुये भाषा को सहज ग्राह्य बनाते हुये क्लास चलायी । अगर गुरु फेल नहीं हुआ और मुझे यहाँ तक पहुँचा गया है तब उसका स्मरण मात्र ही मुझे सफल कर देगा , यही सोच कर मैंने दो घंटे पढ़ाया । शोभ नाथ मिश्रा को लगा कि यह तो सस्ते में मिल गया । दाम तक़रीबन वही है , कोई खास फ़र्क नहीं है और क्लास का समय ज्यादा । उसने कहा मैं आपको दो सौ रुपया प्रति लेक्चर दूँगा , आप डेढ़ घंटे की क्लास लें । आज पहला दिन आपका बहुत अच्छा रहा , मैं भी आपकी क्लास अटेंड करूँगा ।

दादू - “ हम कहे रहे न मिश्रा जी ऐसन सरस्वती बहे कि आप बूड़ि जाब । आप थोड़ा पढ़ि के औबअ तब और समझि में आये । ”

शोभनाथ उससे लड़े उसके पहले ही मैंने कह दिया , यह मेरा भाई है थोड़ा मज़ाकिया है , इसकी बात को अन्यथा लें ।

शोभनाथ मिश्रा ने कुछ नहीं कहा उसकी बात पर , मुझसे कहा कल से रोज़ शाम चार बजे से आपकी क्लास होगी , मैं आपको हर दिन पैसा क्लास के पहले ही दे दूँगा । मैंने कहा , उसकी कोई ज़रूरत नहीं है । आप जब चाहना तब दे देना , बस दे देना । वह मुझे मालिक से मिलाने ले गया , वह तक़रीबन मेरी ही उम्र का था । वह भी दो बार पूछा , आप ही अनुराग शर्मा हैं । उसने कहा , बहुत खुशी हुई आपके साथ जुड़कर । मेरी कोचिंग के लिये यह बड़ी बात है ।

मेरी खुशी की कोई सीमा न थी । मैंने तीस दिन की पूरी अपनी कमाई जोड़ी , जितना मेरे पिता घर लेकर आते थे महीने में उससे ज्यादा थी यह ।

सौ- सौ के दो नोटों को निहारा मैंने , मेरे जीवन की पहली कमाई था । दोनों नोट दो जेब में रखा कि अगर गिरे भी तो एक नोट बच जाए । मैं और दाढ़ गए चुन्नी लाल के यहाँ , दो प्लेट छोला- भट्टरा खाए , आईसकरीम खाए और घर आकर माँ को बताया । माँ बोली दो सौ रुपया एक बार पढ़ाने का ... “तोहार पिताजी मास्टरै होई ग होतेन .. ” । मेरा छोटा भाई बीस रुपया लेकर चला गया शिव की चाट खाने । मेरी बहन ले ली बीस रुपया । मैंने कहा सब उड़ा दो कल फिर मिलेगा । अब तो हर रोज़ मिलेगा । माँ उसी पैसे से दरवाज़े पर सब्ज़ी के ठेले से पाँच किलो टमाटर खरीद ली । दाढ़ गया एक किलो इमरती और बीस समोसा ले आया । मैंने कहा , “ इ ससुरा पैसा खर्चा ही नहीं हो रहा । ” रात में दाढ़ पूरा पैसा गिना बोला , “ भैया अब अब बहुत बचा बा और कालि के दिन शुरू होई गवा । आज पुन मिले । चलअ शास्त्री पुल पर बंद मक्खन खाई । ” हम और वह चल दिये शास्त्री पुल । वह बोला भैया हमहूँ पढ़ब । हमार नाम लिखाई द । अब तू ह तब पैसा इ थोड़िकौ माँगे । ”

मैंने कहा ठीक है , कल से मेरे साथ चलना ।

मेरी माँ को हल्ला करने में बहुत रुचि होती थी । देर रात तक हल्ला हो गया । प्रतिदिन का दो सौ , महीने का 6 हज़ार और काम डेढ़ धंटे का । अगर आठ धंटे का एवरेज निकालो तब त रुपिये - रुपिया । शर्मा आंटी बोली मेरी बेटी को भी ले जाओ । मेरी माँ कोई लड़की मेरे नज़दीक आये वह सतर्क हो जाती थी । माँ होती ही ऐसी हैं । माँ ने कहा अपनी बहिन को भी ले जाओ । मैंने कहा धीरज रख । अभी पहला ही दिन है । अभी गाँव बसा नहीं लुटेरे चल दिए लूटने ।

उधर कमिशनर साहब सत्य प्रकाश मिश्रा सर के घर से निकले वह आवाक रह गये थे मेरी क़लम की ताक़त देखकर । वह दो साल से फ़र्ज़ी कविताएँ लिख रहे थे । सरकारी अधिकारियों को थोड़ा लिखने का शौक हो जाता है , भले ही रचनात्मकता हो या न हो । वह किताब लिख गये थे पर सत्य प्रकाश मिश्रा सर हर बार कह देते थे और ठीक करो । वह खुद ठीक नहीं करते थे । उनका कहना था कि मेरा काम है सलाह देना न कि लिखना । उनकी कुछ कविताओं को जिस तेज़ी से मैंने ठीक किया था उससे साहेब का प्रभावित होना स्वाभाविक ही था । उनको लगा कि जितना सत्य प्रकाश सर ने तारीफ़ की है उससे ज्यादा दम है मुझमें । अपनी पत्नी से पूछा , “अनुपमा कैसा है यह लड़का? ”

अनुपमा - थोड़ा रस्टिक बैकग्राऊंड है , उतनी नफ़ासत नहीं है पर क्राबिलियत तो बहुत है । जिस तरह बात करता है और जिस तरह कविताओं को बदला वह तो क्राबिले तारीफ़ है । शादी हो जाएगी , इससे लिखा- लिखा

कर छापते रहना किताब / एक किताब में ही तुमको सालों लग गए यह तो वन वीक में राइटिंग कर देगा ।

कमिश्नर साहब - प्रतीक्षा परीक्षा दे रही / इंतज़ार कर लेते हैं ।

अनुपमा - उसका होना जाना कुछ नहीं है । विवाह करके बात ख़त्म करो । बाबूजी भी कह रहे कि शादी कर दो । लड़का बहुत अच्छा है । एक बार हाथ से निकल जाएगा तब कहोगे , कर लिया होता तो अच्छा होता । अंग्रेजी आ जाएगी नौकरी में सब सीख ही लेते हैं ।

कमिश्नर साहब-यह घर से कमज़ोर है । दहेज की चाहत होगी । वह भी एक समस्या है । हर व्यापारी, ठेकेदार , बिल्डर लग जाता है ऐसे लड़कों के विवाह के लिये और मार्केट बन जाता है दहेज का ।

अनुपमा - बात कर लो साफ-साफ / देख लो क्या चाहते हैं । लड़का आगे जाएगा , इसमें कोई दो राय नहीं है , मेरे पापा से भी बात कर लो । उन्होंने तीन- तीन लड़कियों की शादी की है । उनको अनुभव है । वह सभी की शादी में मदद करते हैं इसमें भी कर देंगे । परिवार में एक ढंग का लड़का आ रहा है , आगे- पीछे सोच कर विवाह कर लो । एक- दो लड़के और भी देखें हैं , इसमें और उनमें कोई तुलना ही नहीं है ।

कमिश्नर साहब - तुम्हारे हिसाब से यह शादी कर ली जाए ।

अनुपमा - कोशिश करके कर ली जाए । यह नौकरी पा गया है और आगे भी कुछ बेहतर करेगा । जिस तरह यह बात करता है वह भी पूरे विश्वास से यह कोई साधारण बात नहीं है । यह मेरी राय है बाकी आप और देख लो । लड़के को भी लड़की पसंद आनी चाहिये । एक बार मिला दो , जब प्रतीक्षा आती है । अनुराग की भी राय ले लो । हमारी - तुम्हारी राय से तो विवाह होगा नहीं ।

कमिश्नर साहब - कल इनके मामा को बुलाता हूँ ।

अनुपमा - बुला लो । पर सीधा अनुराग के पिता से बात करो ।

कमिश्नर साहब - ठीक है । इनके मामा को बुलाता हूँ । फिर तय करके बात ख़त्म करता हूँ । नवम्बर में कर देते हैं विवाह ।

अनुपमा - मामा से कहना अनुराग को लेकर आएंगे एक बार घर पर । सर के यहाँ ठीक से बात नहीं हो पायी ।

कमिश्नर साहब - कल बात करता हूँ ।

कमिश्नर साहब दिन भर काम में उलझे रहे । उनको शाम सात बजे ध्यान आया कि आज सर्वेश मिश्रा को बुलाना था । वह सात बजे कलेक्टर को

फोन मिलवाये और कहा कि कल सुबह- सुबह ही सर्वेश मिश्रा को मेरे घर भेज देना । कलेक्टर साहब समझें कि वह सुबह ही चाह रहे मिलना । एक आदमी मामा के यहाँ रात में ही भेजा गया कि सुबह कमिश्नर साहब ने घर पर बुलाया है । मामा को तो बेहोशी आ गई । मामी गिरी भरहरा खाई । मामा के यहाँ दादू की खोज होने लगी । मामी बोली, “सिवाय मुन्ना के चप्पल साफ़ करे के और कौनौं काम ओकरे पास नाहीं बा । “ जब देखअ तब दौड़ा पड़ा बा उर्मिला के इहाँ । “

सुबह - सुबह कमिश्नर क्यों बुलाये , यह सबको रात भर जगा गया ।

उधर कमिश्नर साहब घर पहुँचे । उनके स्टाफ़ ने वह लिफ़ाफ़ा पकड़ाया और बताया सर्वेश मिश्रा ने भेजा है । साहब ने पूछा वह आये थे क्या? स्टाफ़ ने बताया कि किसी के हाथ भेजा था ।

साहब ने खोला लिफ़ाफ़ा.. फ़ोटो- कुंडली- बायोडेटा- ठीक की हुई कविताएँ और वह पतर ...

“ यह संबंध बहुत अच्छा होता , अगर हो जाता पर कन्या बहुत ही क्राबिल है और ऊँचे परिवेश की है । अनुराग उसके लायक नहीं दिखता । इसलिये यह संयोग उचित नहीं दिखता । ”

मैडम ने पूछा क्या हुआ । साहब ने वह पतर मैडम के हाथ में दे दिया मैडम ने कहा मैडम ने पढ़ा वह पतर और कहा यह कब हुआ कल तो सब कुछ ठीक था ।

अब क्या होगा

कमिश्नर साहब मेरी ठीक की हुई कविताएँ पढ़ने लगे , वह बहुत बेहतर हो चुकी थीं । वह चिंतित हो गये । उनको लगा मेरी किताब अब कैसे छपेगी ।

किसी को नहीं मतलब लड़के को कैसी लड़की चाहिये या लड़की को कैसा लड़का । सब को अपनी ही पड़ी है । अब कमिश्नर साहब को बहनोई नहीं एक लेखक चाहिये जो धकाधक लिखे और साहब की किताब का विमोचन हो

....

साहित्यकार सत्यानंद मिश्र की समाज में स्थापना हो , हर ओर प्रशस्ति गान हो , वह अधिकारी तो सक्षम हैं पर कमाल का साहित्य सृजन करते हैं ।

वह सर्जक बनना चाह रहे ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 132

रात बहुत कठिन थी , इधर भी उधर भी किसी को भी चैन न था । मैंने बहुत बेहतर युक्ति लगाई थी । फ़ोटो वापस की मैंने नाम लिखा है मामा का । अब झेलें मामा । वह लाख कहें, हमको नहीं पता पर कमिशनर कहाँ सुनने वाला । दो सौ रुपया प्रतिदिन का जुगाड़ भी हो गया था । मेरी छोटी बहन नई साइकिल माँग रही थी । मेरी माँ से कुछ माँगो वह सुनती बाद में थी “ना “पहले कर देती थी । वह जानती थी यह सारे भूत हरदम बिना मतलब की कोई न कोई माँ लेकर हाजिर हो जाते हैं, इसलिये सुनने से पहले ही “ ना “ कह दो । मैंने सोचा कि हज़ार रुपये में साइकिल आती है उसको साइकिल दिला देता हूँ, पर मुझे क्या पता कि माँ आमदनी सुनते ही स्कीम बना देगी । वह उसका भी रिकरिंग डिपासिट सोचकर बैठ गई थी । वह आयी मेरे पास उस समय दादू बचा हुआ पैसा गिन रहा था । वह बोली कल बैंक में खाता खोल लो और रिकरिंग डिपासिट चालू कर दो । बैंक ब्याज देती है । मैंने कहा, क्या माँ यह बचत - बचत का काम करना , खाओ- उड़ाओ ऐश करो ।

माँ- एतने मेहनत से गृहस्थी बनी है, सब उड़ा दोगे ।

मैं - कितना रिकरिंग डिपासिट करना है तुमको ?

माँ- पाँच सौ रुपया महीना का कर दो । गुड़िया के विवाह तक और जमा हो जाएगा , उसके विवाह में सहायत होई जाए ।

दादू - “बुआ , गुड़िया के बियाहे में समय बा । तब तक मुन्ना भैया बड़ा अफ़सर होई के कतौं पोस्टेड होइहिं, ओकर चिंता न करअ । “

माँ दादू पर नाराज़ हो गई । उससे बोली हमको दिमाग न दो । बचत ज़रूरी है । मैंने सोचा बात ख़त्म करते हैं । मैंने कहा , तुम कर लेना एक और रिकरिंग डिपासिट । वह बोली इतना पैसा मास्टरी में है ? तुम्हारे बाबा को तो नहीं मिलती थी । मैंने कहा , “ माँ यह मास्टरी नहीं एक व्यापार है । लोग कोचिंग खोलते हैं, मनचाहा पैसा लेते हैं । हमको तो कुछ भी नहीं दिया । 60 लोग थे पढ़ने वाले । सबसे 15000/20000 लिया होगा । हमको क्या दिया कुछ भी नहीं । इतनी बड़ी- बड़ी इमारतें हर कोचिंग वालों की कुछ सालों में ही ऐसे ही थोड़े बन जाती है । ”

माँ- आईएएस बनने के लिये कोचिंग लोग करते हैं ?

मैं - माँ, लोग दिल्ली जाते हैं आजकल / वहाँ कई साल रहते हैं ।

माँ - तब गरीब - गुरबा का बच्चा तो हो ही नहीं सकता , कहाँ से पैसा पाएगा , कहाँ से कोचिंग करेगा ।

मैं यह तो है माँ ।

माँ - तुम्हारा तो बगैर कोचिंग के हो गया ।

मैं - माँ, तुम थी न , तप-पूजा-पाठ-गंगा स्नान के लिये । सब को लगता है मेरा चयन मेरी पढ़ाई से हुआ , हक्कीकत कहाँ पता लोगों को ।

माँ - मुन्ना गरीब बच्चन को तुम पढ़ाओ ।

मैं - ठीक है माँ । करता हूँ यह काम ।

माँ चली गई । दाढ़ू बोला , “मुन्ना भैया एक गलती होई गई ।”

मैं - क्या?

दाढ़ू - “बुआ से कहई के रहा सौ रुपिया मिले हर दिन । सौ बचि जात । अब त ई हिसाब माँगे । मनमर्जी के हम पचे न उड़ाई पउबै ।”

मैं - कुछ नहीं माँगेगी । उसको रिकिंग डिपासिट का भूत सवार रहता है । पाँच सौ रुपया महीने दे देंगे । वह जाकर खोल लेगी , फिर कुछ नहीं पूछेगी । एकाध लेक्चर ज्यादा ले लूँगा अगर उड़ाने में पैसे की कमी लगेगी ।

उधर कमिशनर साहब रात में मेरे द्वारा ठीक की हुई कवितायें देखने लगे ।

1. जाने क्या तुम कह गए सरगोशियों में झील में उतरे चाँद को देखकर सुबह तक बिखरती रही मैं ।

सरगोशी - सिर जोड़कर बात करना ,
कानाफूसी करना

2. कोई हवाओं को समझाए इतनी वहशत भी ठीक नहीं
एक अकेले चिराग के लिये समुंदरों से आना ठीक नहीं ।।।

3. लिखने का शौक है लिख जाता हूँ मैं

पर यह ज़रूरी नहीं जो भी लिखूँ वह नगीना ही
हो ॥

4. कुछ नज्मों कुछ ग़ज़लों का भी शुमार निसाब में हो
मुल्क से मुहब्बत कैसे की जाती इसकी भी कुछ तवज्जो बचपन से हो ॥

निसाब - पाठ्यक्रम
तवज्जो - ध्यान देना

5. मेरी कहानी रुख बदलना ही चाहती थी
नहीं तो तुमसे मुलाक़ात क्यों होती ॥

6. वह सरहद पार की ज़मीन भी मेरी ही थी
मेरे अनजाने में वह मुझसे बाँट कर ले गये
किसने हक दिया था उनको मेरी ज़मीन और मेरी साँसों को बाँटने का ,
वह भी तब जब मेरी रज़ामंदी किसी ने माँगी नहीं ॥

7. सब की चाहत एक है
शजर हो , शहर हो , दरिया हो , क़बिरस्तान
मैं या तुम
कोई तो आये तोड़ने खामोशी मेरी ॥

8. रिश्तों में कुछ उधड़न सी आ गई
इसके पहले वह सबको दिखने लगे
चलो अपनी ग़लती मान लेता हूँ मैं
बारीक सी रफ़ू होकर वह सिल जाएगी ॥

9. उसने पूछा क्या तुम मुझको भूल सकोगे ?

मैंने कहा “हाँ”

पर भूलना क्यों

जब ज़िंदगी याद रखने में हसीन है

चाहे तुम मिलो या न मिलो ॥

10. शिक्स्त हो गई आज हमारी तो क्या हुआ

आज हम लहुलुहान हैं तो क्या हुआ

जिन्होंने कभी हराया था मुझको जाकर पूछों उनसे

जीत का जश्न कितने दिन चला था उनका ॥

11. मैं सबकी आँखों का ख़बाब लिखना चाहता हूँ

एक अलग दुनिया बनाना चाहता हूँ

ह़कीकत के इस ख़ूनी एहसास को बदल कर

हर एक के ख़बाब में बसे कायनात का सुजन करना चाहता हूँ ॥

12. माँ से मिलने लायक नहीं रहा

कभी उसने बताया था एक औरत होने का अर्थ क्या होता है

कभी उसी ने कहा था पेंसिलों से तू बना एक औरत की शख्सियत

मेरी बनाई शख्सियत पर कहा था उसने

“ मैंने जिस्म नहीं शख्सियत बनाने को कहा था तुझसे ”

उसी आकृति में आधे चेहरे में हँसी आधे में गम और आँखों में तमाम ख़यालात
लिये

मस्तक पर तेज़ झोड़ दिया था उसने

उसी ने कहा था यह वह शख्सियत है जो जीते जी मरने से परहेज़ रखती है
डरना इसे कबूल नहीं है

यह रिश्ते की बुनियाद तो बनाती है पर बीच में दीवार बनने नहीं देती
गौर से देख तू इसे , तेरे जीवन में बहुत सा स्पंदन लेकर यह फिर आएगी
तेरे ख्वाब बन नहीं पाएँगे अगर यह तेरे जीवन में नहीं आएगी
सहेज कर रखना इस आकृति को यह तेरे बहुत काम आएगी
पर आज के दौर को देखकर मैं शर्मिंदा हूँ
शर्मिंदगी किसी के कामों से जितनी है उससे बड़ी अपनी चुप्पी से है
लोग दरिया में झूब रहे और हम अपनी कश्ती बचाने में ही मशगूल हैं
यह एक महज़ इत्तिफ़ाक़ है कि मैं कुछ क़ाबिल बना
पर यह इत्तिफ़ाक़ नहीं है कि मैं कायर बना

यह मेरी एक ओढ़ी हुई लाचारी है
आवाज़ चीख़ कर मेरे अंदर ही दफ़न हो जाती है
मेरे पास कोई जवाब नहीं अपने ही सवालों का

क्यों नहीं निकलती है आवाज़ जिसे निकलना चाहिये
क्यों नहीं उबलता है रक्त जिसे उबलना चाहिये
परिंदों अपने कलरव से कह रहे यह है दररक्त भी बोल रहा

“मर्द आज अपनी माँ से मिलने लायक नहीं रहा ।”

कमिश्नर साहब ने मेरी यह ठीक की हुई कविताएँ मेम साहब को दीं । मेम साहब ने कहा तुमको तो उर्दू आती नहीं , इतनी उर्दू कहाँ से लिखे । यह आखिरी वाली तो तुम्हारी है नहीं । ऐसे शब्दों का इस्तेमाल तुम करते नहीं ।

साहब - हाँ आखिरी वाली मेरी नहीं है । कोई भी मेरी नहीं है सही मायनों में ।
यह अनुराग ने ठीक करके सब बदल दी है ।

मेम साहब - ऐसा तो तुम लिखते नहीं, अब यह कविता अगर छापोगे तब दस कविताएँ अलग और बाकी सब अलग हो जाएँगी । देख कर ही लगेगा कि दो अलग- अलग लोगों ने लिखी है । सत्य प्रकाश सर के यहाँ इतने दिन से जा रहे हो वह आज तक एक भी ठीक नहीं किये । इसने एक दिन में ही दस- बारह को बदल दिया । तुमने लिखा कुछ था और वह लिख कुछ और गया ।

जल्दी- जल्दी में मेरी भरत पर लिखी एक कविता का पन्ना उनकी पांडुलिपि में चला गया था , जो मैंने माँ के लिये लिखा था । माँ मुझसे राम पर लिखने को बहुत कहती थी , उसको लगता था कि यह विधर्मी इसी बहाने भगवान का नाम ले लेगा । वह मेम साहब के हाथ आ गयी पांडुलिपि पलटते - पलटते ...

भरत प्रतिज्ञा

कहाँ हैं वह प्रकाश पुंज माँ
जो मुकितदायी हैं महज अपने नयनों के प्रकाश से
वायु कोहरे को हटाता है
जिसके दर्शन की आस से
कहाँ हैं माँ
वह संयमित , नम्र , भविष्य दृष्टा मर्यादा पुरुषोत्तम राम

क्या कहा तुमने माँ ?
ज़रा फिर से दुहराओ पूरा वाक्य अपना
वह गये हैं वन में छोड़कर राज्य मेरे लिये
कहने पर तुम्हारे पिता की आज्ञा मानकर ?
यह राज्य जो योग्यता से मिलता रहा रघुवंशियों को
एक अयोग्य को साँप वन चल पड़े रघु बगैर प्रजा का विचार किये
मैं बिना राम के एक खंडित पुरुषार्थ का स्वामी
गांडीव भी जिसका नहीं होता सकिरय
बगैर राम के आशीर्वाद के

तूने माँ होकर न पहचाना अपने ही बेटे के सीमित पुरुषार्थ को
यह लिप्सा है तेरी राज्य की
मेरे नाम के सहारे
यह दुर्भाग्य है मेरा
तेरी लिप्सा का कारक बना
राम को वन भेजकर

बता एक बात मुझको एक बार यह सोचकर
क्या कहा था राम ने वन के आदेश पर
क्या किया था मनन उन्होंने आदेश के किसी वाक्य पर
क्या पूछा था कारण वनगमन के आदेश का ?
क्या पिता की आँखें डबडबायी थीं राम को देखकर
क्या भरे गले से कहा था उन्होंने आदेश मेरी जिह्वा का है मत मान तू मेरे हृदय
को जानकर
क्या यह नहीं कहा पिता ने
“मैं असहाय हूँ वचनों से अपने
पर तुम तो सक्षम हो
बना बंदी मुझे कर लो अधिकार अपने राज्य पर “
क्या लक्ष्मण करोध में आये थे यह आदेश सुनकर
जानकी ने क्या कहा था अन्याय के क्षणों पर

मैं जानता हूँ राम आहत हो नहीं सकते
करोध उनको आ नहीं सकता
लिप्सा को भय है अपनी ही हत्या का
वह राम के सम्मुख आ नहीं सकती
त्याग जिससे होता है पारिभाषित
वह रुका न होगा क्षण मात्र भी वैभव की इस नगरी में
सीता कुछ कह नहीं सकती

दोनों माताएँ असहाय हैं पिता की तेरी अनुरक्षित पर
 सामने पेड़ों की नुची हुई पत्तियाँ
 बियवान वन में दिन में चीखते सियार
 घरों में छूल्हे के धुओं का नदारद होना
 रोटी छीनकर भागने की फिराक में रहने वाले
 मुँडेरों पर भूखे बैठे शांत कौए
 बगैर शब्दों के कह रहे मुझसे चीखकर
 हमारी दुर्दशा का उत्तरदायी है तू
 तेरा जन्म हमारी विपत्तियों का कारक है
 हमारी वेदना को पहचान
 मुक्ति दे मुझे इस त्रासदी से
 उठा गांडीव चला हम सब पर
 कर राज्य तू इस शमशान जैसी अयोध्या पर
 हे कुल कलंकिनी कैकेयी
 माता है तू
 शाप तुझे दे नहीं सकता
 पर दसों दिशाओं को साक्षी मानकर
 अटल प्रतिज्ञा करता हूँ मैं
 तू त्याज्य है
 मैं त्याग करता हूँ तुम्हारा
 मैं जीवन पर्यन्त नहीं करूंगा संबोधित तुझे “माँ” के संबोधन से ॥

मेम साहब ने पढ़ा और साहब को पकड़ा दिया यह कहते हुये , “ यह कविता
 नहीं एक विस्मय है । यह बाँध लेगी किसी को भी । ”

साहब ने पढ़ा और पूछा मैडम से आश्चर्य की अभिव्यक्ति चेहरे पर लिये , यह
 सब इसी ने लिखी होगी ?

मैडम - सत्य प्रकाश मिश्र सर सही कहते थे , इसको आईएस नहीं साहित्यकार होना चाहिये ।

सर - अब क्या किया जाए ? सब तो वापस कर गये सर्वेश मिश्र ।

मैडम - आप भी तो सोते रहे । एक बार गये फिर भूल गये दूसरे के हाथ में काम पकड़ा कर ।

सर - अब क्या करें यह बताओ ?

मैडम - चलो घर चलते हैं इनके । मैं भी साथ चलती हूँ । कहो तो पापा को बुला लूँ । उनको बात करना अच्छा आता है । कुछ दहेज देना पड़े दे देते हैं । आप कमिशनर हो । बहुत लोग हैं जो खड़े हो जाएँगे विवाह की मदद के लिये ।

साहब बहुत सुनते थे मेम साहब की । वह सामान्य घर के थे , मेम साहब बड़े घर की । मेम साहब की ही चलती थी हर दुनियावी मामलों पर ।

मैडम - अगले महीने आप ने राज्यपाल से किताब विमोचन की तारीख ले ली है । वह इलाहाबाद आ रहे विमोचन करने । प्रकाशक रोज़ आता है पूछने कब छापें । आपके पास बहुत काम है समय नहीं मिलता । अनुराग को दे दो । यह दो- तीन दिन में कर देंगा ।

साहब को जीवन मिल गया । एक बेहतर किताब , राज्यपाल, मंत्री, सांसद , जज , प्रदेश के अधिकारी , सैकड़ों की संख्या में मातहत और राज्यपाल रमा कान्त शास्त्री जो महान विद्वान हैं विमोचन भाषण में प्रशस्ति गान करते हुये गुंजायमान होता प्रथाग संगीत समीति का सभागार लोगों से भरा हुआ ...

“ सत्यानन्द अधिकारी हैं , विचारक हैं , साहित्यकार हैं , भाषाविद हैं । गणित - भौतिक विज्ञान के छात्र रहे पर साहित्य के रसिया , उर्दू के लफज़ों को हिंदी में समाहित करते हुये काव्य के सर्जक हैं यह । मेरे जीवन के तक्रीबन 50 से ज्यादा के लोक जीवन में जिसमें मैं मुख्यमंत्री रहा , केन्द्र में कबीना मंत्री रहा , राज्य सभा का उप सभापति रहा , पता नहीं कितनी बार सांसद रहा और बहुत से अधिकारियों ने मेरे साथ काम किया पर मैंने सत्यानन्द मिश्रा ऐसा प्रतिभावान न देखा । धर्म के संस्थापक जिस पर कभी अविश्वास लक्षण को हो आया था और राम ने कहा था लक्षण से

दुख भी है पीड़ा भी है मस्तक में जलती ज्वाला है

धर्म धुरी चलती है जिससे उस पर अविश्वास आज हो आया है ।

उसी धर्म के प्रतीक भरत की प्रतिज्ञा, साहित्यकार सत्यानंद मिश्र के शब्दों में

मैंने ऐसा भरत पर लेखन कम ही देखा है ...

राज्यपाल का काव्य पाठ किताब के ऊपर का आवरण उत्तरता हुआ मंच पर ... पूरा हाल खड़ा होकर करतल ध्वनि करता हुआ । अगले दिन के सारे समाचार पत्रों में एक ही मुख्य समाचार

कमिश्नर सत्यानंद की साहित्य सर्जना विमोचन राज्यपाल रमाकान्त शास्त्री के कर कमलों द्वारा, पुस्तक बेस्ट सेलर बनने की ओर ...

सारे परिचितों- रिश्तेदारों-प्रदेश में एक ही चर्चा..... सत्यानंद मिश्र को इस साल का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ और यह पदम शरी के लिये नामांकित हो गये हैं ।

मेम साहब ने पूछा, “ कहाँ खो गये ? ”

साहब अपने स्वप्न से बाहर आये । बहुत ही खूबसूरत स्वप्न था । पिछले कई वर्षों का स्वप्न साकार होता दिख रहा था ।

अनुराग शर्मा उनके मनः स्थिति में उनके बहन का पति बन चुका था । अब यह विवाह करना ही है येन- केन प्रकारेण ।

सर ने कहा , तुम ठीक कहती हो । कल पापा को बुलाओ । यह विवाह तय करना है । वह जैसे भी करें इसको तय करें ।

मैडम - मैं कल पापा से बात करती हूँ ।

रात में कमिश्नर साहब स्वप्न में अपनी पुस्तक का विमोचन देख रहे थे और उधर मामा के यहाँ दाढ़ू खोजा जा रहा था । मामी ने बाबा भैया से कहा जाओ उसको लेकर आओ । कल सुबह कमिश्नर साहब से मिलना है कुछ पता तो चले । पता नहीं उर्मिला कौन सा ड्रामा फैला दी हो । हमको इतने साल हो गये इस घर में पर ई मधुबनी मिश्रा परिवार का नाटक समझ ही न आया ।

बाबा भैया की बुलेट सरपट मेरे घर की ओर ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 133

बाबा भैया रात में आये , उनके बुलेट की आवाज़ से माँ थोड़ा अचंभित हुई , इतनी रात गये क्यों आये । हलाँकि पहले भी रात- बिरात आये हैं पर इस बार बात कुछ अलग थी क्योंकि मामा से माँ का थोड़ा आपसी मतभेद हो गया था । अब मामा ने घर छोड़ा था तब बच्चे भी छोड़ ही देंगे । बाबा भैया ने माँ -पिता जी के पैर छुये और पूछा दाढ़ू कहाँ है ?

माँ - “का भवा ?”

बाबा भैया - “कुछ खास नाहीं , अम्मा बोलाए बा ?”

माँ - “काहे बरे ?”

बाबा भैया - “हमका नाहीं पता बा ।”

माँ ने बताया कि मुन्ना और दाढ़ू शास्त्री पुल गये हैं बंद मक्खन- चाय खाने को । इंतज़ार करो अभी आ जाएँगे । वह कुछ देर इंतज़ार किये फिर बोले , “उहीं जात हुई , मिल लेबै । ”

बाबा भैया हम लोगों को छूंठ लिये और दाढ़ू दूर से ही देख लिया उनकी मोटरसाइकिल और बोला , ” भैया निशाना सही लगा बा । रात- रात भटकत हयें , लागत बा कमिशनर साहेब धुनि मारने चाचा के । ”

मैं - “कैसे पता ?”

दाढ़ू - “ देखअ न राति में मारीच के मृग आई गवा बा । अब देखअ नाटक । मुन्ना भैया हमका बारी के खेत जोति लेई द । मौका बढ़िया बा । बस एक बार छुआ कहि देई । ”

मैं - “अब इ खेत के बात कहाँ से आ गई यहाँ । ”

दाढ़ू - “दुश्मन कमज़ोर बा , इहै समय बा । ”

इतने में बाबा भैया आ गए । दाढ़ू पैर छुआ , मैंने भी छुआ । दाढ़ू बोला , “ भैया सब ठीक त बा न “

बाबा भैया - हाँ सब ठीक बा ।

दादू - “कैसे रात में रथ निकला भैया तोहार , इत तोहार निदरा के समय बा / अब तक एक नींद तू लै लेत हअ चाहे काल परीक्षा होई तबउ / भैया तोहार डिस्पिलिन ग़ज़ब के बा / रात के दस बजा नाहीं कि आप बिस्तर पर / इहै बरे तोहार शरीर निरोग बा और चेहरा चमकत बा / कौनौ चिंता हइय नाहीं बा / ”

मैं - “अब भैया को क्या चिंता / ई बड़े आदमी के बेटे हैं / बड़ा तीन तल्ला का मकान है / बुलेट मोटरसाइकिल है / घर में गाय पली है / सुबह - शाम दूध मलाई छानों / कमरों में क़ालीन बिछी है / चिंता तो हम लोगों को है / न आगे नाथ न पीछे पगहा / ”

बाबा भैया - “मुन्ना अब पिताजी - बुआ के वाहे जौन संबंध होई / हमार - तोहार ओकरे कारण न बिगड़ै चाही / उहौ दुई- चार दिन में ठीक होई जाए / पिताजी ठीक नाहीं केहेन , इत हमहू कहब / ”

मैं - “अब दो आदमी का संबंध तो बराबरी में होता है / अब एक बड़ा आदमी छोटे आदमी को धमकी ही देगा / छोटा आदमी डरेगा ही / ”

बाबा भैया - “आज के दिन तोहसे बड़ा आदमी के बा / पूरा शहर तोहरे पीछे भागत बा / अब हमसे नाराज़गी न देखावअ / ”

मैं - “छोड़अ भैया , अब ई सब बात / ”

मैंने कहा दादू भैया के लिये चाय- मक्खन ले आओ / दादू ने आवाज़ दी , चाय- बंद के लिये /

मेरी बात से माहौल तल्ख हो गया था ।

मुझे शायद ऐसा नहीं कहना चाहिये था पर दर्द अंदर था / इसलिये अभिव्यक्त हो गया / भैया ने चाय पिया / बाबा भैया न कहना, “ चलअ अम्मा बोलाए बा / ”

दादू ने पूछा , “ काहे हमका बोलावत हएन इतने राति के / ”

बाबा भैया -हमका नाहीं पता , अम्मा कहेस जा लै के आवअ / पिताजी मिला चाहत हयेन / ”

मैं - “चले जाओ / ”

दादू-“भैया , एतने रात में त न लै चलअ हमका / काल आई जाब / ”

पर बाबा भैया माने नहीं और लेकर चले गये । दादू का दिमाग़ तेज था । वह समझ गया कि क्यों बुलाया गया होगा । उसको लगा कि कमिशनर ने बुलाकर झाड़ा होगा , पर वह चाह रहा था उससे कुछ न पता चले । वह सूचना निकाल ले । दादू पहुँचते ही बोला , “ चाचा तोहार गोड़ पिरात होये , द मींज देई । हम कई दिना से आवा नहीं एहमें दर्द होत होये । ”

मामा - “ तोहका रात के गोड़े में दर्द के बरे नाहीं बुलावा ह । ”

दादू - “ हमका त चाचा इहै लाग , और हम कौन काम के हई । ”

मामा - “ का होत बा उर्मिला के इहाँ ? का चलत बा ? ”

दादू - “ चाचा हमका कुछ नाहीं पता ? बुआ के तू जनतए ह । अब ओसे इ मुद्दे पर बात करै के मतलब बा , हम आपन आसरा खोई देई । हम गरीब- गुरबा मनई हई । अब मुन्ना भैया के बजार चलि निकली बा । हमार छोट- मोट काम होई जात ह ओनके सहारे । अब बुआ के नाराज़ करब तब त हम गये काम से । ”

मामा - “ आज का भवा ? ”

दादू - “ चाचा हमका कुछ पता नाहीं बा । हम चला ग रहेन सुबहै कच्चेरी । हमका एक नकल निकलवावै के रहा । हम ग रहे तोहरेव लगे पर पता चला आप नाहीं आई ह । पेशकर बहुत समय लेहेस नक्कल निकारै के । हम साँझे के आवा त पता चला मुन्ना ग हयेन पढ़ावै के । मुन्ना लौट के आयेन आठ बजे । हम मुन्ना के कमरा में रहे । अब बुआ के मूड ठीक बा नाहीं , एह बरे हम नाहीं गये बुआ के सामने । आखिर जाना का चाहत ह तू । घरे के माहौल ठीक नाहीं बा इ त तोहका अंदाज़ा हइये बा । ”

मामा - “ काल सुबह कमिशनर अपने बँगला पर बुलाये हयेन । कतौ कमिशनर से कौनौ बात त नाहीं भई ओनके घरे में केहू से । ”

दादू - “ चाचा आप बड़वार अफ़सर ह । कमिशनर कौनौ मीटिंग के बरे बोलाए होये । अब इहै एक काम बा का कमिशनर के पास कि दिन- रात बहिन के बियाहे में लपटियान रहे । आप बेधड़क जा । आपके कौनौ मीटिंग होये । आप मीटिंग के डाटा लै ल अपने संगे । उहै काम होये । ”

मामा को समझ न आ रहा था , कैसे कुछ पता चले , यह तो दूसरा दरैक पकड़ रहा । यह कुछ बता ही नहीं रहा । मामा थे शातिर । वह समझ गए कि दादू बताना नहीं चाह रहा , इसको पता न हो इसकी कोई संभावना नहीं है ।

रात में एक हरकारा आकर सुबह कमिशनर साहब के बँगले पर आने का निर्देश दे , यह एक असाधारण बात है ।। मामा के हिसाब से यह विवाह का ही मामला है , और कुछ तो हो नहीं सकता । मामा सोचने लगे कैसे इससे समाचार निकलवायें , कुछ तो ज़रूर हुआ है ।

रात में दादू मामा के पैर दबाने लगा । पैर दाबते- दाबते बोला , “ चाचा तू हमका बहुत परेशान नज़र आवत हअ ”

मामा - “ कल सुबह पेशी बा । पता नाहीं काहे बरे साहेब बुलाये हएन । ”

दादू - “ चाचा , ओ कमिशनर हएन कौनौं बिधाता थोड़ौ हएन । कौनौं बिगवा हएन का कि लीलि लेझहिं । ”

मामा - “ ई मुन्ना के बियाहे के बात करिहिं । अब हम त कौनौं बात कर्झ नाहीं सकित । अब हमार कौनौं हैसियत रही नाहीं । ”

दादू - “ चाचा अगर इजाजत द तब एक बात हमहू कही । ”

मामा - “ कहअ । ”

दादू - “ चाचा अब मुन्ना के बियाह हमरे पचन के समाज से ऊपर जाई चुका बा । अब ई हमरे- तोहरे बस के बात नाहीं बा । ”

मामा - “ ई तू काहे रहत हअ । ”

दादू - “ चाचा एतनी बड़ी- बड़ी पार्टी आवत हइन कि अब हम पचे बरात में चलि के आनंद लेई , बस ऐतन हमार रोल बा । ”

मामा - “ कौन बड़ी पार्टी आई गई ? ”

दादू - “ चाचा एक दुई होई त बताई , इहाँ त मेला लाग बा । ”

मामी - “ मुन्ना अकेल आईएस बा का ? और बाभन आईएस भये हएन । ई सारा ज़ोर मुन्नै पर काहे बा , न घर न दुवार ऐसन का बा मुन्ना में । आईएस हटाय द केथा लायक बा ई बियाह ? ”

दादू - “ चाची ज़ोर मुन्नै पे बा , ई बात नाहीं बा । ऊ पार्टी जौन आवत ह ऊ सबके इहाँ जात ह । अब जहाँ काम लहि जाए । अब जे आवत बा ऊ घर- दुआर सब देई के तैयार बा । अब कौन ज़रूरत बा घर- दुआर के । अब तू हरिकेश मामा के लै लअ , आपन अशोक नगर के कोठी देई के तैयार हए । ”

मामी - “ अब ईश्वर उर्मिला के संगे बा , जेका चाहे तेका दुआरे पर दौड़ावै । ”

दादू - “ चाची एक बात कही हम ? ”

मामी - “ कहअ । ”

दादू - “ हरिकेश मामा चूक गएन । ई बियाह सस्ते में होई जात रहा तब । बाबू कहे रहेन मामा से कै ल इ बियाह तब मामा तैयार नाहीं भएन । तब कै लेहे होतेन तब आज के दिन ओ वज्र होतेन । हमरौ पाच के फ़ायदा होत घरे के लड़की जात घरे में और मुन्ना के घरे में हमार पाच के क़ब्ज़ा होत । अब त चिंता होत बा हमहू के । ”

मामी - “ तोहका काहे के चिंता बा ? ”

दादू - “ ई अब मुन्ना के बियाह कौनौ टेढ़ टाइप के लड़की से होई गए । अब तू त बुआ के जनतै हऊ । नाक पे मक्खी ऊ बैठै देत नाहीं । मुन्ना आईएस होई गएन ओनका एक दिन कहेस , “ हमसे आईस गीरी न देखावअ अपने मुलाजिमन के देखावअ । ज्यादा हमसे बहस करबअ त ई हाँथ मोड़ि के तोड़ि देबै । ” अब सोचअ अगर ऐसन ऊ कहि देहेस मुन्ना के दुलहिन से तब का होये , अगर लड़की समझदार न रही । हम त कहबअ मुन्ना के कुंडली से ज्यादा ज़रूरी बा बुआ के कुंडली से लड़की के कुंडली मिलावा जाए , अगर परिवार में एकता चाही । ”

मामी - “ बस कुछ दिन और लकअ उर्मिला के सारी शेखी निकरि जाए । बलभर दे ओनका । हमार जिउ त तबै जुड़ाये । हम दरवाज़े पर गये रहे । हमार एक पैसा के सम्मान नाहीं केहेन । ”

चाची - “ बुरा न मानें त एक बात कही । ”

मामी - “ कहअ । ”

दादू - “ चाची हम हई छोटवार मनई । हमार ई सब बात कहब ठीक नाहीं बा , पर चाचा के इ नाहीं कहे के रहअ की हमार - तोहार रिश्ता ख़त्म । अब कुछो बा , हई तो घरे के बिटिया । हम त रहे नाहीं पर जैसन हमका गुड़िया बताएस कि बुआ बहुत रोएस जब चाचा उठि के चलि देहेन । अब चाची ई कमिशनर ऐसन पियारा होई गवा कि बहिनै के छोड़ि देर्ई । ”

मामा थोड़ा भावुक हो गये । वह थे तो भाई ही । बहन बहुत रोई आने के बाद यह उनको दरवित कर गया । उनके आँख में गीलापन आ गया । वह कुछ न बोले पर दुख उनके भीतर का महसूस किया जा सकता था ।

मामी - “ अब गुस्सा आईए जात ह । अब ठीक त नाहीं भवा । अब बड़वार भाई हएन , एतनौ हक़ नाहीं बा । अब इहि बात पर नाराज़ होई जा । ”

दादू - “ के नाराज़ बा ? बुआ त कुछ कहेस नाहीं आज तक । ”

मामी - “ मुन्ना त कहत रहा बाबा से शास्त्री पुल पर , तू बड़ा आदमी ह । बड़ा मकान बा । क़ालीन बिछी बा । गाय पली बा । इ ढंग होत ह बड़े भाई ये

बात करै के । जब से रिजल्ट आई बा , कुल घरवै पगलाई ग बा । हम त चाहत हई कौनौ ठीक- ठाक घरे में बियाह होई जाई , नाहीं त हमसे का मतलब बा । दहेज ओनका मिले , परिवार ओनका मिले हमका का मिले एह सब क़वायद में ।”

दादू -“ नाहीं चाची ऐसन नाहीं बा । हमहूँ के मिले , हम त आसरा लगाए हई । मुन्ना के होई जाए से बहुत फ़र्क आई गवा बा । ओनकर अमर गुप्ता सर एसडीएम बाराबंकी हएन । मुन्ना के इहाँ मुलाकात भइ रही । हम कहा कि हमार नक़ल निकलवाय द लेखपाल हैरान केहे बा । सर कहेन , चला जा जय नारायन एसडीएम के पास हमार नाम लै के । इहाँ कहेन कि मुन्ना के ऊ जानत ह । हम गए । हमसे पूछेस , “अनुराग की माँ तुम्हारे पिता की सगी बहन है । हम कहा , “ हाँ साहेब ”

। हमका बैठाएस चाय पियासेस । तुरंतै लेखपाल के तलब केहेस । लेखपाल , कानूनगो दुझनौ बाबू से मिलै आई रहेन । हम करछना थाने गए । थानेदार कहेस हम साहब के सलाम करै साहब के घर जाबै । बसंतवा ठाकुर गाँव के तपा गुंडा बा । छोटकऊ चाचा के बारी में बहुत जद्द- बद्द कहे रहा , कुल गाँव डेरात ह ओकरे नंगई से । जब बुआ गै रही बाबू से मिलै कुंडली गुरु के जीप से तब चाचा कहेन बुआ से । बुआ बोलाएस मातादीन के उ ग रहा बुआ के संगे सिकोरिटी में । कहेस पकड़ लाओ बसंतवा ठाकुर को । ओकर गुंडई निकाल द । । उहिं समय बसंतवा ठाकुर देखाई ग । मातादीन पकड़वाय के दुआरे पर मुर्गा बनाई देहेस । पूरे गाँव में अंदोर होई गवा । अब ई सब मामूली फ़ायदा बा । एतना बड़ा सम्मान कभीं हम त नाहीं सोचे रहे चाची । चाचा एक बात और बताई दई , मुन्ना कौनौं आम आईएस नाहीं बा । कुंडली गुरु बहुत क़ाबिल हएन , ई सब कहत ह पर हम खुद सुना जब मुन्ना ओनका पढ़ावत रहेन । ब्राइट कोचिंग में अब जात हयेन पढ़ावै , एक लेक्चर के पझिं सौ-सौ के दुई नोट । एक रखैं एक जेबा में और दूसर रखैं दूसरे जेबा में , उड़ावै मन- माफ़िक । चाचा एक बात और हम कहब , मुन्ना बहुत दिलदार बा । हमहूँ के देहेस बीस रुपिया । अब हमार त नीति कहत बा , मुन्ना से बैर न करअ । मिलाप करअ । आप कहअ त हम कुछ बात चलाई । आप थोड़ा झुकि जा । दुधार गाई के चार लात सहे पड़त ह । “

मामी - “ हम त न झुकब । हमका का मतलब बनि रहए कलेक्टर के महतारी । हमार एक पैसा के मान नाहीं राखिन । ”

दादू - “ चाची कौन मान नाहीं राखेस बुआ । बात होति रही । कमिश्नर के इहाँ मुन्ना के हमहिं लै के चला जाय में सक्षम हई । कुछ जुगुत लगि जात । मुन्ना बा सरल । बात मानि जात ह जल्दी । कौनौ ज़रूरत नाहीं रही ऐतना

कठोर कदम के । अब चाची हमार छोटवार बुद्धि बा हमार समझ आप सबके तरह त बा नाहीं , पर हमार नीति त झुक के चलै में बा । हम त लड़ि सकित नाहीं और काहे लड़ि जब मज़बूत आसामी साथ रहा चाहत बा । “

मामा - “ कुछ कमिशनर साहब के बियाहे पर बात भै बा , सही बताए । काल हमका साहेब के सामने पेश होई के बा । “

दादू - “ चाचा ओनकर कौनौ चर्चा हम नाहीं सुना । चाचा हम त कहब कि हरिकेश मामा वाला बियाह करावत जा । मुन्ना के घरे में

इंद्री हमार सबके अधिकारपूर्वक बनी रहे । इ बड़- बड़वार के घरे के लड़की पता नहीं कौन रुख लै ले । हरिकेश मामा बेवकूफ़ी केहेन । बुआ- फूफा के मन रहा बियाह करै के रहा जब बाबू कहे रहेन , पर तब त मामा अपने शान में रहेन । “

मामी - “ केऊ ऐसन आपन बिटिया फेंक देत हअ का । का रहा मुन्ना के पास । अवारागर्दी करत रहा । रात- रात भर यूनिवर्सिटी के चुनाव में घूमत रहा । नेतन के भाषण लिखत रहा । जहाँ देखअ उहिं घूमत बा । बाद में सुना उ खुदौ नेता बनत चाहत बा । भाषणों दई लाग रहा । बस हिंदी जानत रहा , कुछ लिखि- बोलि लेत रहा , बाकी त कुछ आवत रहा नाहीं । अब ऐसन लड़िका से के बियाह करे । ”

मामा - “ हरिकेश के घमंड बहुत बा अपने संपदा के । हमसे कहे रहेन , “ जीजा जी हम दमादै नाहीं वारिसौ चाहत हई । अब ई त देख- ताकि के करबै । इ मुन्ना एह लायक नाहीं बा । “

दादू - “ चाचा तब ओ भोगै । आग अधियार होत ह तब ऐसन बुद्धि होई जात ह । अब बेबी कौन हूर हईन । हम देखें नाहीं हई का ओनका । ई सेंट मेरी अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़

लेहे से ई मेनका- रंभा होई ग हई । तनिक बिटियौ देख लेहे होतेन आपन । चाचा अब आवत बा गुस्सा । एक ठे शीशा द मामा के और कुल परिवार देखें आपन चेहरा । हमार भाई बा मुन्ना । चाचा एक बात हम कहि दई , हम ओकरे संगे बचपन से हई , बा ऊ बहुत दिमाग़दार । ओकर बाबा कहे रहेन जौन दिना ई ठान ले कुछ करि गुज़रे । अब परिणाम तोहरे सामने बा । एक बात हम और कहत हई , मुन्ना के जोड़ के लड़की मिलब आसान नाहीं बा । जहाँ स्याही उड़ेल देत ह उहीं अक्षर बोलै लागत ह । “

मामा - “ दादू एक बात करेजा पर हाथ रखि के बोलअ । “

दादू - “ पूछ ल चाचा । हम जौन कहब सचि कहब । कहअ त रामायण पर हाथ रखि दई । “

मामा - “ तोहका कुछ नाहीं पता बा कि कमिश्नर के मसले पर का भवा उर्मिला के इहाँ । ”

दादू - “ चाचा हमका कौनौ खबर नाहीं बा । ”

मामा - “ कमिश्नर आई रहेन का । ”

दादू - “ हमरे जान में त नाहीं आई रहेन । अब ओ आई होतेन , तब पतै होते । एतना ऊँच अधिकारी अगर आए त पतै होई जाए । ”

मामा - “ कुंडली - फ़ोटो केकरे पास बा , जौन मुन्ना लै गवा रहा । कतौ वापस त नाहीं केहेस । ”

दादू - “ ऊ तोहरे लगे रही । मुन्ना कब लै गएन । ई त हमका पतै नाहीं बा । अब लै ग हएन तब बुआ रखे होए । अब वापस के करे । केकर गोड़ पिरात बा कि जाई के वापस करे । जब साहेब अझिंहिं तब लै जझिंहिं । ”

मामा - “ हाथ हमरे सिर पर रखि के कहअ कि सब सच - सच बतावत ह । कुछ छुपावत नाहीं ह । ”

दादू रोने का नाटक करने लगा । बोला , “ चाचा हम तोहार सिपाही हई । तू हमका पाले ह । अब हम ऐसन धोखा करब तोहसे , हमहुँ के भगवान के एक दिन जवाब देई के बा । हमरौ आत्मा बा जौन कहत ह कि झूठ बोलब पाप बा । हमहुँ बचपन में तख्ती पर लिखे हई , ” झूठ बोलना पाप है नदी किनारे साँप हैं । “ हमका चाचा झूठ बोलै में बहुत डर लागत थ । अब तोहसे झूठ बोलब तब त हम अश्वत्थामा के तरह तड़पब । हम सिपाही त तोहार हई पर हम हई गरीब आदमी । मुन्ना के सहारे दुई काम होई जात बा । आगे के उम्मीद बनी बा । एका बरे हम मुन्ना के चापलूसी करत हई । अब तू त जनतै ह कि बुआ के केतना चलत ह मुन्ना पर । अबौ कहि देत ह मुन्ना से तोहार हाथ मोड़ि के तोड़ि देब तब बुआ के खुश राखब ज़रूरी बा पर चाचा इ हम पुनि कहब , हम हई तोहार सिपाही । हम तोहसे बाहर कबहुँ न जाब । कहअ त काल गंगा में खड़ा होई के हम ई कहि देई । ”

मामा - “ मतलब कमिश्नर साहेब के बियाहे के “ ना ” नाहीं भवा बा । ”

दादू - “ हमरे हिसाब से कमिश्नर साहेब रेस में हये । अब बड़े घरे में बियाह के त बुआ डेरात हइयै बा । इ डर त स्वाभाविक बा । ”

मामा ने चैन की साँस ली । पूरा नया प्लान बन गया । कल कमिश्नर से मिलेंगे । हाल- चाल होगा । कमिश्नर कहेगा , “ क्या हुआ ? बात कहाँ तक पहुँची ? ”

में कहूँगा , “बात चल रही है । बहन को आप परीक्षा दे देने दें । नवंबर में विवाह करा देंगे । भांजा हमारा है । हमने पाला है, पढ़ाया है, कक्षा एक से आज तक का सारा खर्चा मैंने उठाया है । आप निश्चिंत रहें । यह हमारी ज़िम्मेदारी है । नवंबर तक मामला टालते हैं । उसमें पाँच- छः महीने हैं । जमुना पार के सारे ठीके, अरैल का ठीका, छतनाग का .. कई ठीके हो जाएँगे तब तक । एक मकान मोहित का बनवा देते हैं । वह बनवाएगी तब बहुत समय लगेगा । अभी वह किराये के मकान में रह रही है । नवंबर तक तो दो मकान बन सकता है । सबका अलग- अलग मकान हो जाएगा । कमिशनर के यहाँ से निकलेंगे नेतराम के यहाँ से कचौड़ी- जलेबी- मिठाई ले लेंगे और सीधा जाएँगे उर्मिला के यहाँ । वह मुँहफट्ट है पर है सीधी । बहुत जल्दी दरवित हो जाती है । दो- चार आँसू बहाऊँगा सब काम हो जाएगा । ईश्वर ने बहुत काम नहीं बिगाड़ा है । अभी भी स्थिति नियंत्रण में है ।

दादू बोला . “चाचा चली अब हम । हमहूँ सोई जाई । काल के का आदेश बा । तू त जनतै ह हम जौन करित ह, तोहरे राय से करित ह । अगर कहअ त हम भिंसारे बुआ के इहाँ चला जाए । देखी का माहौल बा । अब रात में बाबा भैया लै के आई हयेन बुआ सोचत होए कि का होई गवा । अगर तोहार सुलह-सफाई के मन होई त हम माहौल बनाई काल सबेरे । आप और चाची मंत्रणा के ल । अब न मन होई तोहार सुलह के तब हम छोटवार मनई हई का कहि सकित ह । पर हम त कहब कि सुलह-सफाई कै ल । तोहार छोटवार बहिन बा । मानदान बा । ऐसन ज़िद्द नाहीं ठीक बा । अगर ओकर कौनौ गलती बा तबौ जाई द, माफ़ कै द । आप पदौ में बड़ा है और हैसियत त डेबरा टाप हईय बा ।”

मामी - “हमार मन त सुलह के बिल्कुल नाहीं बा । हमार मान नाहीं रखिन । पर हइ त घरे के बिटिया । अब छोड़ि त देब ना । जब हम बियाह के आई रहे तब बहुत छोटि के रही । बिना माई के बिटिया बा, हमार फ़र्ज़ बनत ह कुछ । तू सँभाल के बात करअ । ऐसन न लागै कि हम गरजू हई ।“

दादू - “ हम त तोहार सिपाही हई । जैसन कहबअ वैसन करब ।”

दादू सोने ऊपर के कमरे में गया । वह बहुत प्रसन्न था । वह बारी का खेत जोतना चाहता था । उसका दिमाग उसी पर लगा था । वह मामा के व्यवहार से खुश नहीं रहता था, पर मामा के डर से चुप रहता था । वह था स्कीमी और अंदर ही अंदर स्कीम लगाता रहता था । यह घटनाक्रम उसके मसरब

का था । वह सुबह के इंतज़ार में था । कल का दिन तो बहुत रोचक होने वाला था ।

सुबह दो रफ्तार एक साथ पकड़ी ... एक साइकिल की एक मोटरसाइकिल की । एक कमिशनर के यहाँ ... एक मेरे यहाँ

मामा को क्या खबर वाक्रई मामा एक दलदली ज़मीन पर पर घने कुहरे के कुहासे के साथ चल रहे थे । पर उनके अंदर एक उम्मीद की आग दाढ़ू ने जला दी थी । पर उनको क्या पता शह और मात के खेल में हर कोई अब अपनी तरह से खेल रहा था । जिस रास्ते पर मामा की मोटरसाइकिल चल रही थी वह इस वक्त उनकी समझ से एक उम्मीद भरा रास्ता था ... पर और नाम भी हैं इस रास्ते के एक नई इबारत लिखी जा चुकी थीं जिससे अनजान थे वह । एक शातिर खिलाड़ी हारी हुई बाज़ी को जानने के लिये बेटे के दहेज में मिली 350 सीसी की काली बुलेट मोटरसाइकिल पर सवार हवा से बातें करता हुआ पहुँच गया कमिशनर के बँगले के अंदर ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 134

मामा मोटरसाइकिल से उतरे । वह दिमाग में स्कीम लगा रहे थे । कुछ कम्युनिकेशन गैप हो गया था । कमिशनर साहब ने कहा था , “ कल सुबह भेज देना । ” पर इतने सुबह की बात न कहीं थी । मामा सुबह 7:30 बजे ही पहुँच गये । मामा को साहेब का स्टाफ़ जान गया था । वह उनको आदर भी देने लगा था । मामा ने साहेब को संदेश देने को कहा । संदेश अंदर गया । थोड़ी देर में बुलावा आ गया । मामा एक बड़े से डराइंग रूम में बैठकर असहज हो रहे थे । यह उनसे तीन - चार शरणी ऊपर के अफ़सर थे । मामा ने देखा सामने वाले दखाज़े से साहब अंदर आते हुये । मामा की हृदय गति तीव्र हो गई । वह घबड़ा कर उठ गए । साहब ने हाथ के इशारे से बैठने को कहा , पर मामा इंतज़ार करते रहे कि जब साहब बैठ जाए तब वह बैठें । वार्तालाप आरंभ हुआ ।

साहब - कैसे हैं मिशरा जी ?

मामा - आपकी कृपा है ?

साहब - आपके अपने बहन- बहनोई से कैसे संबंध हैं ?

मामा - साहब मेरी बहन ही है । अब आज साहब आप अपनी बहन के लिये लड़का तलाश रहे ऐसा ही मैंने भी किया था । बस सामर्थ्य का फ़र्क है ।

साहब - आपने रिश्ता अस्वीकार क्यों कर दिया ?

मामा - साहब , हमारा सौभाग्य है आपने हमको अवसर दिया इस रिश्ते के लिये । हमको आपने अपनाने की इच्छा ज़ाहिर की । हम क्यों अस्वीकार करेंगे ।

कमिश्नर साहब ने बगल की मेज़ से वह लिफ़ाफ़ा उठाकर मामा के हाथ पकड़ा दिया । और कहा यह क्या है ?

मामा को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था । कुछ समझ नहीं आ रहा था । मामा इस परिस्थिति के लिये तैयार न थे । उनके सारे प्लान उड़ गये अब वह क्या करें । वह तो सोच कर आये थे कि कहानी गढ़ेंगे और नवम्बर तक काम हो जाएगा , पर यह तो कुँडली का चक्र ही उल्टा हो गया । वह पेपर ज़मीन पर गिर गया जो मैंने लिखा था । उसको कमिश्नर साहब ने हाथ से उठाया और मामा से कहा आप लिफ़ाफ़ा पढ़ें, नाम देखें । मामा ने देखा नाम उनका ही लिखा था ।

कमिश्नर साहब - यह आप वापस कर गये । मुझे बताया होता । क्या ज़रूरत थी इस तरह वापस करने की ?

मामा के गले में जैसे कुछ अटक गया हो । वह कुछ बोल ही नहीं पा रहे थे, बहुत कोशिश करके भी । उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं । साहेब ने वह काग़ज़ का टुकड़ा पकड़ा दिया जिस पर लिखा था ,

“ यह संबंध बहुत अच्छा होता , अगर हो जाता पर कन्या बहुत ही क़ाबिल है और ऊँचे परिवेश की है । अनुराग उसके लायक नहीं दिखता । इसलिये यह संयोग उचित न होगा । ”

मामा अक्षरों में आँख गड़ाकर साहेब से नज़रें चुरा रहे थे ।

साहब - यह आपने नहीं भेजा ?

मामा - नहीं साहेब ।

साहेब - आपको इसका कोई पता नहीं है ?

मामा - नहीं साहेब ।

साहेब - आपके संबंध कितने ख़राब हैं अपनी बहन से ?

मामा - साहेब संबंध बहुत अच्छे हैं ।

साहब - तब यह क्या है ? आपको पता ही नहीं और इंकार हो गया ।

मामा - साहेब मैं खुद आश्चर्य चकित हूँ ।

साहब - आप यह संबंध करा सकते हैं ?

मामा - साहेब हम पूरी कोशिश करेंगे ।

साहब - अगर करा सकते हैं तब आप इस मामले में पड़े नहीं तो मैं किसी और को यह काम सौंपूँ ।

मामा को जीवनदान मिलता दिख रहा था । उनकी चेतना इस बात से वापस आने लगी ।

मामा - साहेब , यह संबंध मैं कराऊँगा । यह मेरा वायदा है ।

साहब - मेरी मुलाकात अनुराग से हो गई है एक जगह । मेरी पत्नी भी साथ थीं । यह संबंध करने का फैसला हमने ले लिया है , अब आप देखें किस तरह हो सकता है । मेरी पत्नी अनुराग से एक बार और मिलने की इच्छा रखती है , कभी ले आना उसको । हमको बताते रहो कहाँ तक बात पहुँची । हम जल्दी विवाह करना चाह रहे । आप थोड़ा अपने काम पर भी ध्यान रखें वह बहुत ही संवेदनशील कुर्सी है , कोशिश करें शिकायत की गुंजाइश ही न बनें ।

मामा - जी साहेब । हम पूरा ध्यान रखेंगे ।

मामा कमिश्नर के कमरे से निकले । उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रहीं थीं । अंतिम लाइन कमिश्नर साहब की , “ आप थोड़ा अपने काम पर ध्यान रखें वह बहुत संवेदनशील कुर्सी है , कोशिश करें शिकायत की गुंजाइश ही न बनें । ” यह बहुत कठोर लाइन थी । यह एक संदेश दे रही थी कि अगर काम न बना तब कुर्सी गई । मामा अपना कृत्य जानते ही थे । हरष महराज सरे आम आरोप लगा ही चुके थे मामा पर भ्रष्टाचार का । तरह- तरह की बातें हो ही रही थीं इनके बारे में । कमिश्नर ऐसे बड़े अफ़सर का यह कहना बहुत मायने रखता था । मामा का सारा जलेबी - कचौड़ी- मिठाई लेकर मेरे घर आने का प्लान धूल धूसरित हो गया ।

कमिशनर साहब के यहाँ आते समय मामा की बुलेट बहुत तेज आई थी पर अब जाते समय वह एक्सीलेटर बढ़ाना ही भूल जाते थे , मोटरसाइकिल रुक गई वोमेंस होस्टल के सामने । वह अपने घर का रास्ता ही भूल गए । लल्ला चुंगी पर रुक कर पूछे कि किस तरफ से रास्ता मुट्ठी गंज को जाता है । उनका कोई दिमाग़ काम नहीं कर रहा था । वह शहर में दो प्लाट ढूँढ़ रहे थे कि अगर नवम्बर तक का भी समय मिल गया तब दो प्लाट हो ही जाएगा । मोहिता का मकान बनवाना ज़रूरी है , यह मामी हर रोज़ कहती थीं । पर यहाँ तो सारा मामला ही पलट गया । किसी तरह मामा घर पहुँचे । उनका इंतज़ार घर में बेसबरी से हो रहा था । मामा को देखकर मामी समझ गई कि लगता है मामा की सारी प्लानिंग फ़ेल हो गई । मामा की आदत थी मामी से सब बताने की । मामी को मामा के आफिस की भी ख़बर रहती थी । मामा ने सारा वृतांत बताया , मामी को भी गश आने लगा । यह क्या हो गया , ईश्वर इतना निर्दयी नहीं हो सकता । अभी एक महीना भी नहीं हुआ रूपया गिनते और सारी खुशी ले लिया ।

यह समझने में तो कोई समस्या ही नहीं थी कि दादू मनचाहा झूठ बोला और फेंट- फेंट कर झूठ बोला । मामा को लगा कि एक पूरी साज़िश रची गई उनके खिलाफ़ और वह उस रची हुई साज़िश में चारों तरफ़ से घेर कर दौड़ा- दौड़ा कर आहत किये गये । वह दो लाइन का पत्र कौन लिखा होगा इसमें तो कोई दिमाग़ लगाने की ज़रूरत ही नहीं । यह मेरे अलावा और कौन लिख सकता है । ऐसी हिंदी में ही लिखता हूँ । लिफ़ाफ़े पर सर्वेश मिश्रा बड़े - बड़े अक्षरों में मेरी ही राइटिंग थी । मेरे पिता की छवि पूरे परिवार में एक सज्जन और सरल व्यक्ति की है । मेरी माँ भावना में आ जाती है पर दिल की साफ़ है ।

मेरी छवि एक फ़रेबी की है । अब कब क्या किया जाए ? मामा को मेरा सारा फ़रेब बचपन से आज तक का याद आने लगा ।

मैं बचपन में ननिहाल जाता था । मैं मामा के यहाँ अनाज चुराता कई बार पकड़ा गया हूँ । मैं अनाज चोरी करके गाँव के बनिया के दुकान पर गुड़ वाली सेव , तेल वाली जलेबी खाता था । बाद में मामा के लड़के जो मुझसे कुछ साल बड़े थे वह सिगरेट पीते थे । मैं तब छः - सात साल का रहा होऊँगा , वह सब दस- बारह के । वह सब सिगरेट पीते थे । मैं भी सिगरेट पीने की माँग करने लगा । वह सब इंकार कर देते थे क्योंकि मैं पूरी सिगरेट पीने की ज़िद करता था । मैंने घर में उनकी शिकायत कर दी थी कि यह सब सिगरेट पीते हैं । उसके बाद समझौता हुआ कि शिकायत मत करो तुमको भी पिलायेंगे

। मैं उनके साथ पीना सीख गया था । मैं एक बार अनाज चुराकर गया और सिगरेट माँगा । बनिया चौंक गया । एक इतना छोटा बच्चा सिगरेट माँग रहा । गाँव का बनिया था । मामला घर तक आ गया , “ उर्मिला के बेटवा सिगरेट ख़रीदत रहा उहौ पूरा पैकेट । ”

मैंने सोचा था मैं अकेले पिऊँगा , यह सब एक बार ही धुँआ निकालने देते हैं । मेरे नाना- नानी - मामा बड़ा हंगामा किये । मुझे तलब किया गया । मैंने कहा मुझे इन लोगों ने भेजा था ख़रीदने को । मेरे मामा के दो बेटे फ़ॅस गए । मैंने उम्र की दुहाई दी जो स्वीकार कर ली गई । अब इतना छोटा बच्चा कैसे पी सकता है ? मैंने कहा मुझको तो पता ही नहीं , कैसे सिगरेट जलाई जाती है । मेरे मामा के दोनों बेटे अपनी सत्यता की दुहाई देते रहे । वह दुहाई सच्ची थी पर कौन सुनने वाला था । उनका शरीर कई दिन तक दर्द करता रहा । मेरी नानी ने कहा , “ उर्मिला से न बतावत ज़ाया केऊ नाहीं त निरदोष लड़िका पीटा जाए । ” रात में मैं नानी के पास सोता था । मैं अपनी स्थिति मज़बूत करने के लिये कुछ और चुगली कर गया । मेरे मामा के लड़के और गाली खाए । उन्होंने फ़ैसला किया मुझको अपने ग़ैंग से बाहर निकालने का । मैं भी संघर्ष की मुद्रा में आ गया । मैं अनाज चोरी करने में बहुत माहिर था और बेटी का बेटा होने के कारण पकड़े जाने पर कोई दंड नहीं मिलता था , हलाँकि मुझको पकड़ना आसान भी न था । मुझको बाहर करने का दो नुकसान था , एक तो वह चोर गया जो पैसे के इंतज़ाम में मदद करता था और दूसरा एक दुश्मन जो छिप कर वार करता था , वह सामने आ जाएगा । एक समझौता हुआ । मुझे मनचाही सिगरेट मिलेगी और मैं शिकायत नहीं करूँगा । मैंने पूरी सिगरेट पीने की माँग की । कुल दो सिगरेट ख़रीदी गई थी । हम लोग 6 लोग थे । यह माँग अन्याय पूर्ण थी पर क्या करते मजबूरी थी । अंत में यह तय हुआ कि आधी मैं पिऊँगा । उनका तर्क यह था कि मैं सिगरेट बर्बाद करता हूँ , धुआँ गले के अंदर लेकर नाक से नहीं निकाल पाता । इसलिये सिगरेट के साथ न्याय नहीं हो पाता । मैं कोशिश करता था पर मुझसे होता नहीं था । मेरी उम्र कम थी , इसलिये थोड़ा मुश्किलात होती थी । पर ऐसा कौन सा काम है जो मैं कर नहीं सकता , यह मेरी सोच तब से थी । मैं कोशिश करता रहा और एक दिन सफल हो गया । मुझे याद है अपना वह दिन , मेरे पास असीम विजय भाव था । मैं चिल्ला पड़ा , “ हो गया ” , “ हो गया ” ... आर्किमिडीस क्या शोर किया होगा ” यूरेका “ “ यूरेका ” ... जो मैंने किया था ।

इस बीच मैंने एक नायाब सलाह बाबा भैया को दी । यह घर से अनाज चोरी करने में तमाम ख़तरे हैं । हम खलिहान से अनाज चोरी करते हैं । बाबा भैया की रबड़ बुद्धि थी ही जैसा दाढ़ु कहा करता था । उनको कोई भी बात

समझाने में वक्त लगता था और मेरा दिमाग़ “ बाँस- फाड़ ” था । जैसे बाँस के एक सिरे पर हल्का सा दो- फाड़ का निशान बनाओ और पूरा बाँस दो भागों में खींचकर फाड़ दो , वही हालत मेरी थी । मैंने सलाह दी कि इतना बड़ा खलिहान सजा है । हर ओर अनाज ही अनाज है । दस- दस बैल दँवाई में लगे हैं । कहीं से भी चोरी हो जाएगी । दाढ़ बोला , बहुत मज़दूर काम कर रहे हैं , जमुना तो सोता ही नहीं । यह काम कैसे होगा ? मैंने कहा , जमुना भी आदमी ही है । उसकी आँख लगेगी । जैसे ही आँख लगेगी हम लोग यह काम कर लेंगे ।

दाढ़ -“यह कैसे पता लगे कि जमुना सोई गवा ।”

मैं - उसके नाक से आवाज़ निकलती है जब वह सोता है । जैसे ही आवाज़ निकले अंजाम दे देंगे ।

दाढ़ - पर हम पचे इहाँ रहब कैसे रात में ।

मैं - उसकी तरकीब बनाते हैं ।

मैंने नानी से रात खलिहान में सोने की इच्छा ज़ाहिर की । वह मेरी सारी बात तकरीबन मान जाती थी । उसने कहा , अकेले मत सोओ । मैंने कहा भैया भी रहेंगे । नानी ने भैया से कहा , इसका रात में ध्यान रखना यह बहुत छोटा है । दो बोरी घर से लेकर हम लोग गए । जैसे ही जमुना के नाक से आवाज़ निकली हम लोग काम में लग गए । नाना का इतना बड़ा खलिहान था कि बोरी - दो बोरी कहाँ गयी किसी को क्या पता । पहली बोरी बाबा भैया के हवाले थी वह खेतों की तरफ से होकर लेकर पानी की चक्की के पीछे वाले जानवरों के पुराने घर में रख आए जहाँ अब कोई नहीं जाता था । दूसरी बोरी में मैं , दाढ़ और लालू भैया थे । हम लोग शरीर से कमज़ोर थे पर बोरी भर लिये थे ज्यादा । पर कुछ ही दूर जाकर थक गए । वह जानवरों का बाड़ा वहाँ से अभी भी दूर था , जहाँ सामान रखना था । मैंने कहा बोरी थोड़ी ख़ाली कर दो यह बहुत भारी है । हमने बोरी से कुछ अनाज निकाल कर वहीं खेत में फेंक दिया । बाकी ले जाकर उसी जानवरों के पुराने बाड़े में रख दिया । वहीं फेंका हुआ अनाज घातक हुआ । वह फेंका हुआ अनाज अगले दिन से चर्चा में आ गया था । योजना । सटीक थी सब , कई दिन का इंतज़ाम हुआ था । अगले दिन से वह अनाज हर दिन निकाल- निकाल कर बेचने का सिलसिला दिमाग़ में था । पहले दिन का अनाज बेंचा गया । मुझे इतना बड़ा दिमाग़ देने के लिये दो सिगरेट मिली । एक मैंने जेब में रख ली । पर विधाता को कुछ और मंज़ूर था । मेरी माँ मेरे बगैर रह नहीं पाती थी , उसका मन लगा रहता था मेरे पर । वह अपने ससुराल से मायके आई यह सोचकर चलें मुन्ना को देख आते हैं । मेरी नानी मुझे देखना चाहती थीं इसलिये कुछ दिन के लिये मैं भेजा जाता था गर्मी की छुट्टी में अपने ननिहाल । मेरा घर और ननिहाल

पास ही था । मेरी माँ आई उसने मुझे गले लगाया और कहा , “ मेरा बागडबिल्ला है यह ” और पता नहीं कैसे उसको लगा कि मेरे जेब में कुछ है और वह सिगरेट उसके हाथ में आ गई । फिर उसके बाद तमाचों की बौछार और रहस्य दर रहस्य से पर्दा उठता हुआ । मेरी माँ ने एक- एक करके सबकी बलभर टुकराई की और वह अनाज सब पकड़े गए जो खेत में फेंके गए थे और बाड़े में छिपाए गए थे । रहस्य से पर्दा उठा एक 6 साल का बच्चा इतना बड़ा चोर- डैकेत-झूठा मुझ पर आरोप लगा यह सब बच्चों को बर्बाद कर रहा । मेरी माँ मुझको लेकर मेरे अपने घर चली गई और पूरी रात रोई । तभी मेरे बाबा ने मेरी बागडोर सँभाली और पढ़ाने लगे ।

मामा को वह सब याद था । यह घटना बहुत दिन तक चर्चा का विषय रही थी । मामा के दिमाग में यह धूम रही थी । उनके करोध और विवशता की कोई सीमा न थी । मामी ने पूछा क्या हुआ ?

मामा ने कहा , “ एक साँप जन्मा है परिवार में । मुन्नवा पूर साँप बा । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 135

मामा का दिमाग कोई आम दिमाग न था । वह उड़ती चिड़िया के पंख भी पहचान लेते थे बल्कि उसमें कितने पंख टूटे हैं यह भी गिन लेते थे । मामा को यह समझते देर न लगी कि बाज़ी हाथ से छूट ही नहीं रही वरन् वह तक़रीबन हार चुके हैं , पर वह हार मानने वालों में न थे इस हारी हुई बाज़ी को भी बचाने का यत्न करना चाहते थे । हलाँकि कोई ज़मीन ही नहीं बची जिस पर खड़े होकर वह लड़ सके । मामा को यह लगा कि दाढ़ु ने एक प्रायोजित झूठ बोला और यह सब एक योजना के तहत हुआ । और कमिशनर के सामने उनकी इज़्ज़त उत्तरवाने की पूरी साज़िश में वह शामिल था । दाढ़ु पर मामा का कोप हर घड़ी बढ़ता ही जा रहा था । मामा यह भी समझ गये कि यह अंतिम कार्यवाही उर्मिला के कहने पर मैंने ही की होगी । शर्मा जी अगर करते तो मुझसे कह कर करते, वह ऐसा नहीं कर सकते । इतने शातिर तरीके से उर्मिला का दिमाग नहीं चला होगा कि चिट्ठी बनाये , लिफ़ाफ़े पर मेरा नाम लिखे कमिशनर की नामौजूदगी में मेरा स्टाफ़ बनकर जाए और दे आये । वह अधिक से अधिक कही होगी , यह रिश्ता अब मैं नहीं करूँगी । इस तरह का अंजाम मैं ही दे सकता हूँ । मामा को रिश्ता न होने का फ़ायदा-नुकसान की आशा - निराशा के साथ- साथ कमिशनर की वह पंक्ति खल

रही थी कि “आपके अपने बहन - बहनोई से कैसे रिश्ते हैं ? ” उनको लग रहा था किसी ने सरे बाज़ार उनकी इज़्जत-आबरू पर हाथ लगा दिया ।

यह पंक्ति मामा से बर्दाशत ही नहीं हो रही थी । जिस कमिशनर के आवास में वह बहुत शान से एक रिश्ते की बैसाखी लेकर प्रवेश किया करते थे , कमिशनर साहब ने उस बैसाखी को उपयोग करने के हक पर ही सवाल खड़ा कर दिया । यह रिश्ता शर्मा जी - उर्मिला को अस्वीकार ही करना था तो मुझको करने देते । यह रिश्ता मैं लेकर आया था , यह मुझे ही निपटाने देते । यहाँ तो सारा हक्क ही छीन लिया और सरे- बाज़ार तौहीन कर दी । मामा के मुँह से निकला , “ तुमसे यह उमीद न थी उर्मिला । ”

मामी ने यह सुन लिया और पूछा , हुआ क्या यह पूरा विस्तार से बताओ । आधी अधूरी बात बताया है । पूरी बात बताओ । मामा ने फिर से तक़रीबन वही बताया जो पहले बताया था ।

मामी - “ अब का होये ? ”

मामा - “ पहले उस झूठ के जंगल दाढ़ का इलाज होगा । उसका हाथ- पैर तोड़कर रख दूँगा । उसकी इतनी हिम्मत बढ़ जाएगी , कभी सोचा ही न था । ”

बाबा भैया - “ पिताजी ओकर इलाज बहुत ज़रूरी होई गवा बा । ओकर मन बहुत बढ़ि गवा बा । सब के ऊ बेवकूफ समझत ह । हम ग रहे बुआ के इहाँ , हमसे मिला शास्त्री पुल पर हम पर टांट कसत रहा , ” भैया इ त तोहार सोवै के समय बा । अब तक त एक नींद तू मार लेत हअ । डिस्प्लन होई त भैया ऐसन । चेहरा चमकत बा , इही डिस्प्लन के माथे । ”

बर्दाशत होत नाहीं रहा पर किहा ओह समय , पर गुस्सा बहुत आई रहा । ऐसन- ऐसन व्यंग्य मारत रहा कि का कही । ई मुन्नवा के संगे रहत- रहत अपने के बड़ा आदमी समझै लाग बा । हमरे हिस्सा के खेत जोति के कुल गल्ला-पाती लै लेत बा और हमहिं से रार । हमरै बिल्ली हमहिं से म्याऊँ । पिताजी इस बार खेत बटि जाई चाही , चाहे जौन होई जाए । बुआ के मन होई लड़ाई के त ओऊ लड़ि लई , पर खेत त अब बँट के रहे । ऐतना हिम्मत इ ददुआ के बढ़ि गई बा । हम सपनों में नाहीं सोचे रहे । ओका ऊहि बुआ के इहाँ मारब । हमार खून खौलत बा पिताजी । ”

मामी - “ एहे बरे भगवान छोट मनइन के कुछ नाहीं देत ह । जैसे दुझ जून के रोटी द मोटाई सूझै लागत ह । उर्मिला के उहै हाल होई गै बा । दरिदरापन

सात पुश्त नाहीं जात हैं । इ मुन्नवा है त दरिद्रै के घरे के । ओकर बाबा - परबाबा का रहेन केहू से छिपा बा का । ओकर परबाबा के खाई के नाहीं अटत रहा । ओकर बाबा मास्टरी करत रहेन और महीना के अंत में उपवास के नौबत रही । गाँव के दबंग ठाकुर खेत पर कङ्बजा केहे रहेन । उर्मिला के बियाहे के बाद बाबू कोट- कचेहरी - थाना - दुआरा कै के ज़मीन दियायेन । पर ज़माना ऐसन बा कि केऊ एहसान कहाँ मानत हआ । बाबू ज़मीन दियाई देहेन उहीं ज़मीन पर उर्मिला कङ्बजा केहे हईं, नाहीं त का कङ्बजा करतिन , “ ठेंगा ” । आज बेटवा आईएस होई गवा बा पगलाई गै बा । इहई हालत रहे तब ओका पागलखाना भर्ती केहे पड़े एक दिन । ”

बाबा भैया - “ अम्मा हम जात हईं, ददुआ के घसीट के लै आउब । ”

तब तक मामा का दिमाग़ शांत हो गया था । वह अपने आफिस का मूल्यांकन करने लगे । उनके दिमाग़ में चालें बनने लगी । वह दिमाग़दार थे, इसमें कोई दो राय तो थी ही नहीं ।

मामा - “ रुको अभी । ओकर इलाज ज़रूरी बा पर सँभाल के करबअ । अबअ रुकि जा । अगले महीना दुई ठीका और बा । अगर अबहिं बवाल करबअ तब ठीक नाहीं बा । ”

मामी - “ का हाथ पे हाथ धरे बैठा रहबअ का । आफिस के स्थिति पे ध्यान द । दुई दिना के आमदनी नाहीं आई बा घरे, पहिले ऊ त लै आवा । पता नहीं कब फ़रमान आई जाय दरांसफ़र के । इ कुलक्षिनी उर्मिला त हमअ बर्बाद करै में लगी बा । ”

मामा ने योजना बनाई । मामी से कहा कि साहब - मेम साहब मुन्ना से कहीं मिले हैं । मुन्ना बा त मायावी । इ सोने के घड़ा में केतना ज़हर अंदर भरा बा इत लोंगन के पता बाद में चलत ह पर इ माया फैलाय के मोहि लेई में माहिर बा । इहै मृग बनि के सीता जी के हरण कराए रहा होए तरेता युग में, एहमें अब हमका कौनौं संदेह नाहीं बा । इ साहेब - मेम साहेब दुइनौं के मोहि लेहे बा । अब साहेब कतौं और बियाह नाहीं करा चाहत हयें । आज के बातचीत से लग गवा कि कौनौं हालत में ओनका मुन्ना चाही । ऐतना बड़ा अफ़सर एह तरीके से फ़ोटो वापस कै देहे के बाद ऐतना झुकि के बात करै इ साधारण बात नाहीं बा । तू चली जा । जरा पता त करआ, कहाँ साहब से मुन्ना मिला रहा । का बात भै रही । कौनौं ख़ास बात भई बा, पता करब ज़रूरी बा । उर्मिला बा दिल के साफ़, सब बताई दे । ओकरे में छल - कपट नाहीं बा । उ मन से

ख़राब नाहीं बा , बस मुँहफट बा । असली तिकड़मी इ मुन्जवा लागत बा अब । अब ओका कंट्रोल में उर्मिला कै पाए और केऊ न कै पाए । ज़रा बढ़िया मिटाई- उठाई लेत जाऊ । सारा दिन घरे रहू । परेम से बात करू । हम शाम के अउबै । ददुआ से कुछ न कहू अबै । हम ओका तब तक जूतै - जूता मारब जब तक हमार दुझनौ पैर के नागरा ट्रट न जाए , तनिक कुछ दिन धीरज धरअ । “

मामी - “ ऐसन का बा मुन्जवा में , न देखई लायक न सुनै लायक । हरिकेश के मेहरास अलगै रोवत हईन , “ जीजी हमका मुन्नै चाही ” । अब कमिश्नराइन कहत हई , “ हम और मिला चाही थ एक बार । “ कौनों जड़ी-बूटी सुँधावत हअ का ई । औरतन पर ओकर जादू ज्यादा चलत बा । “

बाबा भैया -“ कुछ ओका आवत - जात नाहीं । बा निरा बेसहूर । बस पेपर में नाम छपि गवा बा कुल दुनिया पागल होई गै बा । रटि के लिखि देहे बा , कुछ दम नाहीं बा ओकरे में । हमहूँ जानित हअ ओका । “

मामी - “ तुहूँ छपवाय ल नाम । पाँच - सात साल से त लगा ह । ओंकार नाम छपा तोहार आज तक रोल नंबरौ नाहीं छपा । तू घरे के बीस हज़ार रुपिया दै के उहिं ब्राइट कोचिंग में पढ़े जात रहअ जहाँ ऊ पढ़ावै जात बा । कुल कोचिंग - ओचिंग केहे तू और और भवा का निल बटे सन्नाटा । ऊ जेका बेसहूर कहत ह रोज़ दुई सौ रुपिया पावत बा उहीं ब्राइट कोचिंग में पढ़ाई के । तू त ददुओं से गया गुज़रा ह । ऊ कम से कम मुन्ना के संगे रहि के चार बात सीखत त बा , तू रहि जाबअ अपने शेखी में । सूप त बोलै त बोलै चलनी का बोलै ज़ेहमें बत्तीस छेद । “

बाबा भैया की सारी गर्मी उतर गई । मामा आफिस चल दिये और मामी दोपहर में चल दी मेरे घर की ओर ।

दादू सुबह - सुबह ही आ गया था मेरे घर । उसके लिये रात कठिन हो रही थी मामा के यहाँ काटना । इतनी सूचना का लोड बँगैर निकाले उसको चैन ही नहीं पड़ सकता था । उसने माँ से बताया कि बहुत जिरह हुई मेरे साथ । पूरा घर मिलकर जिरह किया पर हम कोई भेद न दिये ।

माँ - “ का भवा , तनिक विस्तार से बतावअ । “

दादू -“ बुआ हम हई तोहार सिपाही । हमका केतनौ डेरावय - ससवावैय , पर हम उगिलब न । हमसे कोशिश बहुत केहेन चाचा- चाची पर बुआ हम भरमाय

दिहा । “

माँ - “ कैसे भरमायअ ? ”

दादू - “ हम पहिलेन कहि देहा कि हम हई तोहार सिपाही । ”

माँ - “ इ त तू राह चलब सभै से कहत ह / बतावअ आगे का भवा । ”

दादू - “ बुआ ओ लाग रहेन इ जानै बरे कि का स्टैंड बा कमिश्नर के बियाहे पर / हम कहि देहा ओ रेस में होइहिं, बड़वार मनई हयेन और पार्टी लंबी बा / हमसे पूछेन कि का भवा फ़ोटो के / हम कहा ऊ त तोहरे पास बा / ओ कहेन मुन्ना लै गवा / हम कहा , तब बुआ के पास होए / हमसे पूछेन वापस त नाहीं भै , हम कहा केकर गोड़ पिरात बा कि जाये वापस करै / जब साहेब अझिं तब लै जइहिं / अब आज सबेरे पेशी बा / ग हएन / कतौ कमिश्नर गुस्सा में सस्पेंड त न कै देए बुआ ? गएन सुबह माइनिंग सुपरवाइज़र बनि के लौटेन शाम के सस्पेंडेड सुपरवाइज़र बनि के / बुआ इ बतावअ जब ओनका सस्पेंड होई के चिट्ठी मिले तब ओनकर कौन द्रशा होए ? ओ जइहिं मोटरसाइकिल पर लोकिन अझिं खटिया पर / ऐसन धक्का लागे कि भहराई जइहिं । ”

माँ - “ इ मामला खत्म होई जातै , हम इ बियाह के जंजाल में परेशान होई ग हई । हम त अब मुन्ना से कहबअ तू अपने हिसाब से कै ल आपन बियाह । हर रोज़ सांझ के इ गाड़ी के रेला से हम परेशान होई गई बा / सबके चाय पियावअ न लेना एक न देना दुई । हमका कौनौ घर - परिवार- नात हित में मस्सरब के लड़की नाहीं देखान नाहीं त उहिं से के कै बियाह पिंड छोड़ाई लेइत । अब मुन्ना के जोड़ि के लड़की त चाहीं कम से कम / सब मामला कुछ साल में खत्म होई जाए , बाद में रहि जाए लड़िका - लड़की के जोड़ी और साथ । पर का करि जे आवत ह सिवाय अपने धन- सम्पदा-रौब- रुतबा के सिवाय और कौनौ बात करतए नाहीं बा / अब रौब-रुतबा त मुन्नाउ के होई जाए , अब एका बरे बियाह का करी । ”

दादू - “ इ बात त बा बुआ । ”

माँ - “ मुन्ना लिखि ठीक से देहे रहा कमिश्नर साहेब के लिफ़ाफ़ा में । अब इ बात सही हइयै बा कि जोड़ न तो लड़की-लड़िका के बा न त हमरे समाज के । इह घरे में चारौ दिन कमिश्नर के बहिन रहि नाहीं सकत । अब हम कलपब अपने बहू के बरे अपने नातिन के बरे , जब कभौं तिथि- त्योहारे आइउ जइहिं तब आउतै भागै- भागै के बात होई लागे । तू - मुन्ना- छोटू-बाबा - लालू - मोहिता - सुशीला - मंजू सब संगें आवत रहअ गर्मी में केतना अच्छा माहौल रहत रहा , ऐसन माहौल आगे बना रहय इ हमार चाहत बा । मुन्नवा पकड़ा ग रहा सिगरेट रखे रहा जेबा में उहीं समय , याद बा न । ”

दादू - “ खूब याद बा बुआ । एक- एक के धुनाई कहे रहू । हम त पराय ग रहे छत पर । हम बचि ग रहे । मेन मार त मुन्ना खाये रहन । ”

माँ - “ भौजी कहिन कि मुन्ना कुल लड़िकन के बिगाड़त बा । मुन्ना के संगत में बाबा बिगड़ि गवा । बहिन कहेन कि जब मुन्ना आये तब हमार गदेल न जइहिं , इ सब के चोरी सिखाई दे और नशेड़ी बनाए दे । हम एका अकेले भेजै बंद कै दिहा । जब जाई संगे लै जाई और संगेन लै आई । एका कई साल राखा शासन में नाहीं त इ बेराह चलि पड़ा रहा । ”

दादू -“ बुआ , बाबा भैया देश भरे के परीक्षा देहेन , का भवा ? मोहिता दीदी के केतना नाम चाचा फैलाये रहेन । भ भिंसार टेप चालू , मोहिता चालीसा के । ऐसन लागय कि आजै कलेक्टर के चार्ज लै लेइहिं । भवा का , नर्सरी के पढ़वात हई । एक बात कहब बुआ, मुन्ना रहा बहुत दिमाग़दार । पूरी प्लानिंग बनाई देत रहा , कैसेन अनाज चोरी करअ, कहाँ रखअ । इ दुई सिगरेट न लेहे होत तब तू न पकड़ पाउतू । एक त इ बहुत तेज पी लेहे रहा । हमसे कहेस दूसर बारी में शाम के पियब । तब तक तू आई गऊ । ”

माँ - “ भगवान संगे रहेन । आज के दिन नसीब में रहा , नाहीं त पता नाहीं आज का होत । ”

वार्तालाप करके दादू मेरे पास आया । मैंने कहा मेरी क्लास है शाम को हमको पढ़ने दो । वह वहीं सो गया ।

दोपहर में मेरी मामी आ गई । दो किलो मिठाई , देहाती का पूरा मिटटी की हांडी भरा रसगुल्ले की दो हांडी । एक पूरा समोसे का काग़ज़ का खोखा । आते ही मेरी मामी ने सारा तमाम मेज पर रखकर मेरी माँ को गले से लगा लिया और कहा , “ उर्मिला हमका नींद नाहीं आवत बा जबसे हम ग हई ओह दिना से । जब तोहार महतारी के लोग काँधे पर उठाये रहेन और तू ज़मीन पर लोट- लोट कर रोवत रहू तब हम कहे रहे , हम हई उर्मिला । जब हमार गौना भ रहा , तब तोहार उमर आठ साल के रही । हमरे संगे तू रही हउ कई साल । तोहार भझ्या खाना नाहीं खायेन दुई रोज़ जब उ हादसा भवा बा । अब हम का कही ऊ घटना पर । तोहार भैया तोहरे पर जिउ छिड़कत ह पर कभौ- कभौ गलती इंसान से होई जात ह , अब ओका दिल पर न ल । तोहरे भैया कहेन कि हम मोह देखावय लाई नाहीं रहि ग हई कतहूँ । हम खुदै आपन मोह शीशा में देखई लायक नाहीं रहि ग हई । हम कहा , हमार बिटिया बा उर्मिला । हम जाब सब ठीक होई जाए । हम सोचा कि तोहका गुस्सा होए एह बरे दुई- चार दिन बाद चली । हमअ पूर्ण विश्वास बा कि हमसे बाहर हमार बिटिया कहाँ जाए । ”

माँ मेरी सहज थी । वह तीन- पाँच नहीं कर पाती थी । वह स्पष्टवादी थी और चीज़ों को जो जैसा कहता था , वैसा ले लेती थी । वह भावुक हो गई । उसकी आँखों में आँसू आ गये । वह बोली , हम तो कुछ कहे ही नहीं । हम बस इतना ही कहे हम बड़े घर में विवाह नहीं कर पाएँगे । इसके अलावा तो कुछ कहा नहीं । हमारा घर देख ल भौजी , एहमें कौनौं बड़े घर की लड़की नाहीं रहि सकती है । हम बहुत कष्ट सहि के पाला है अपने बच्चों को । हमार मन मुन्ना के बगैर लागत नाहीं ।

मामी -“ रोवअ न उर्मिला । ”

माँ- “ भौजी काहे न रोई । अब हमार मन नाहीं लागत अपने बच्चन के बगैर । मुन्ना से लगाव ज्यादा होई गवा बा । तू जनतई हऊ कि मरि के बचा रहा इ जब छोट रहा । तबसे हमार मन लाग रहत ह ओकरे संगे । हमका लागत बा अब इ जाए ट्रेनिंग में तब हमार का होए । हमका डर लागत बा , कतौ गलत बियाह होई गवा और हमार लड़िका हमसे दूरि चला गवा तब का होए । दुई उदाहरण घरे में बा । हमरे ससुर केहेन हमरे जेठ के और बाबू केहेन बड़कऊ भैया के बेटवा झुलई के । तू भौजी दुझनौं के हालत देख ल । का मिला बाबू के , का मिला हमरे ससुर के । महामाई सकाई जाय ऐसन धन- सम्पदा पर , हमका न चाही । हमका साँझ के मुन्ना मिल जात हअ , चार बात प्रेम से कै लेत हअ हमार जिउ जुड़ाई जात ह । भौजी हम कौशल्या ऐसन महान नाहीं हई कि दशरथ कहि देहेन हमरे वचन के रक्षा बरे वन जा और कौशल्या कहेन पिता कहत ह त जा । हम त कहि देइत कि तू न जा , हमार मन न लागे तोहरे बिना अब फैसला कै ल केकर बात मनबआ , माता के कि पिता के ।

अब भौजी उ पढ़ावै लाग बा । दुई सौ रूपिया रोज़ पाए । ओकरे में आपन पुरुषार्थ बा । हम ओका छोटवार से जानत हई , ऊ बहुत ज़िद्दी बा । एक बहुत बड़े घर के शान वाली लड़की लायक ऊ नाहीं बा । एक बात त भौजी तुहँ जानत हउ कि केहू के देहे से केऊ अमीर नाहीं होई जात और केऊ दहेज के रूपिया से टाटा- बिड़ला आज तक त न बना बा न बने । अब भवा कुछ नाहीं पर तरह- तरह के बात फैलय लाग बा । हम सुना ह कि हरिकेश कहत हएन कि शर्मा जी के बहुत रूपिया चाही , राम राज कहत हएन कि बिगवा अस मोह बाए हएन शर्मा जी , केतना पावैं केतना लै लेई । हम आज तक केहू से कहा का कि हमका का चाही ?

इहऊ हम सुनत हई उड़त- उड़त खबर कि बहुत दौड़ावत हएन शर्मा जी । हम कहत हई का कि तू दौड़ाउ । हम बियाहय न करब । मुन्ना के जहाँ मन होई कै लेई । हम परेशान होई ग हई । हमका चैन से रहई देत जा । आपन धन- संपदा - रौब- रुतबा अपने पास रखें सब लोग । हम जब कुछ माँगब तब न देइहिं हमका । हम जीवनी में एकै बार माँगा ज़ब जीपीएफ के रूपिया समय

पर नाहीं निकरि पाएस । हम तब चाहा कि रूपिया मिल जाई चाही बियाजै पर । हमरे ऊपर के दुई कमरा का प्लास्टर- दरवाजा - वायरिंग के काम रुक ग रहा । हमका नाहीं मिला पैसा कोशिश तमाम किहा , हम काम बंद कराई दिहा । जब जीपीएफ के पैसा मिला तब करावा काम । उहीं दिना से कान पकड़ा, चाहे जौन होई जाय इ जिंदगी में केहू से पैसा न माँगब । भौजी , भगवान बहुत देहेन हमका । जौन दिन आज नसीब भवा बा न हम एह दिन लायक़ रहे न इ मुन्ना एह लायक़ बा , पर भगवान आशीर्वाद देहेन । अब ऐसेन कौनौं काम हम न करी कि भगवानौ पछताय कि केका हम आशीर्वाद दिहा । “

मामी - “उर्मिला, हरिकेश के मोहें में त जबानै नाहीं बा । उ इ नाहीं कहि सकत । अब हर केऊ चाहत ह कि बना काम नसाई जाई , एका बरे चुगली करत हएन । हरिकेश त हमसे कहेन , दीदी तू जैसन कहबू हम कै देब । हरिकेश के दुलहिन त हमसे कहिन हमका मुन्ना चाही दीदी कैसउ करावअ इ बियाह । दहेज के त कौनौ बात हइयै नाहीं बा । “

मेरी माँ बहुत खुश थी कि सुलह- सफाई हो रही है , भले ही मंशा कुछ और हो । मेरी माँ मेरी बहन से बोली जाओ मुन्ना को बुला लाओ , बता दो शहर वाली मामी आई हैं । मैं नीचे आया , मामी के पैर छुआ । मामी ने मेरा सिर पकड़कर मेरा माथा चूमा और कहा , मेरा राज दुलारा है ।

मैं कुछ देर मामी से बात किया । मेरा कोचिंग जाने का समय नज़दीक आ रहा था , मुझे पढ़ना था पढ़ाने के लिये । मैंने मामी से कहा , मुझे पढ़ाने जाना है । अगर आप रहेंगी तब तक तब लौटकर मिलूँगा । मामी ने कहा , मैं इंतज़ार करूँगी , मिल कर जाऊँगी । मैं ऊपर गया , दाढ़ू डरा हुआ था । वह पूछा , “ का भवा ? ” मैंने कहा रसगुल्ला खा लो बताता हूँ । बहन को आवाज़ देकर एक हांडी रसगुल्ला मँगाया । दाढ़ू बहुत शौक़ीन था मिठाई का । खाते - खाते फिर पूछा , ” का भवा ? ”

मैंने चप्पल की ओर इशारा किया

वह बोला चाचा के कमिश्नर धुनि मारेस ???

मैंने कहा नहीं , सारा रहस्य खुल गया है मामा अभी आ रहे हैं ... इतना जूता पड़ेगा कि सिर के बाल आधे हो जाएँगे । मेरे मामा का पूरे घर में खौफ़ था ।

दाढ़ू के हाथ से रसगुल्ले की हांडी गिर गई .. सारा शीरा और रसगुल्ला फ़र्श पर बिखरा हुआ और आधा रसगुल्ला दाढ़ू के मुँह में फँसा हुआ न अंदर जा रहा न बाहर आ पा रहा ।

मैं क्रीब 3 बजे तैयार होने लगा कोचिंग जाने के लिये । मैं कभी जीवन में कहीं जाने के लिये कोई ख़ास तैयार हुआ ही नहीं था । मैं कंधी का भी इस्तेमाल बहुत कम करता था । मैं अपने हाथ कीं उँगलियों से अपने घने काले बालों को पीछे ढकेल देता था । मेरे कमरे में किसी भी चीज के लिये जगह बचती ही न थी इतनी किताबें और कापियाँ होती थीं । मैं लिखता बहुत था और उसके लिये यूनिवर्सिटी रोड से तौल कर बिकने वाली कापियाँ खरीदता था । मेरे कमरे में एक छोटा ट्रांजिस्टर हुआ करता था । मेरे घर में टीवी था ही नहीं और रामायण सीरियल देखने आसपास के घरों में जाते थे । इंटरव्यू के लिये भी मैं अपने कमल व्यूह की मस्तिष्क में बनाई संरचना के कारण इतने तनाव में था कि अपने शारीरिक प्रस्तुतिकरण पर बहुत संजीदा न हो पाया था । मैंने कभी अपने को शीशे में ख़ास निहारा ही न था और मेरे कमरे कोई शीशा था ही नहीं ।

आज पहली बार एक अलग दृष्टिकोण से अपने को देखा । एक ऐसी दृष्टि से कि लोग मुझे देखेंगे , हलाँकि मैं जानता था कि एक अध्यापक अपनी शारीरिक संरचना से नहीं वरन् अपनी मानसिक ताकत से पहचाना जाता है । यह मेरा दूसरा दिन था एक अध्यापक के तौर पर । पर यह दिन सबसे महत्वपूर्ण था मेरे लिये क्योंकि मैं पिछले क्लास में तो ऐसे ही एक्सटेमपोर पढ़ाया था । आज मैं तैयारी के साथ जा रहा था पढ़ाने । हमको किसी ने माता अम्बर तिवारी सर का क्रिस्सा सुनाया था कि वह बीएससी की क्लास के लिये भी हर दिन दस सवाल हल करके जाते थे । वह गणित के पुरोधा थे और उनके लिये बीएससी की कक्षा क्या रही होगी ? इतने सालों का अध्ययन- अध्यापन फिर भी इतनी संजीदगी अपने छात्रों के प्रति , इतना सम्मान अपनी कक्षा के लिये शायद इसीलिये इलाहाबाद का शैक्षिक माहौल पूरी दुनिया में पहचाना जाता है और एक अलग नज़रिये से देखा जाता है । मैं भी उसी परम्परा को ध्यान में रखते हुये कई घंटे पढ़ा था और कई तरह से अपने लेक्चर को समायोजित किया था ।

मैं एक अर्थ में सौभाग्यशाली था कि मैं बहुत ही महान अध्यापकों से पढ़ा हूँ । प्रभाकर गुणे सर की त्वरित गति का अध्यापन पर निगाह हर एक पर , मुनीर आलम सर की अंगरेज़ी- उर्दू शायरी की मिश्रित शिक्षा , डी के चटर्जी सर का आधी बात सुनते ही समझ जाना कि समस्या कहाँ है , एस पाठक सर का पूरे क्लास में एक भी सेकेंड सिवाय पढ़ाई के कोई बात न करना , शंकर

शरण तिरपाठी सर का चीजों का सरलीकरण करने की असाधारण क्षमता , बवायज सर का हँसी- मज़ाकूर के बीच पढ़ाना, डी कुमार सर की मेंडलीफ की आवर्त सारणी को सहज पारिवारिक संरचना की तरह पढ़ाना, एस के जैन सर का बहुत ही धीमे- धीमे रुक - रुक कर पढ़ाना , आर पी सिंह सर का ब्लैक बोर्ड पर समीकरण लिखना और सवाल हल करके चाक को घसीट कर कहना यह डिफरेंशियल समीकरण कुछ नहीं है बस एक बार ट्रिक आ जाए । मैंने पूरी एक महान अध्यापकों की पीढ़ी देखी है । यह सब मेरे लिये बहुत ही मददगार था । मैं सोच रहा था साइकिल चलाते हुये कि मैं किसको फालो करूँ ? मैंने सोचा मैं सबको मिला देता हूँ । देखें क्या होता है ?

मैं कोचिंग नियत समय के पहले पहुँच गया । यह मेरी बचपन की आदत थी कहीं भी समय से पहले पहुँच जाना । मुझे आज तक याद ही नहीं है कि मैं कभी किसी जगह कभी भी समय के बाद पहुँचा हूँ ।

मैं परीक्षा कक्ष में भी आधे घंटे पहले पहुँच जाता था । मैं अपनी सामान्य सी प्रतिभा के बावजूद भी अगर यहाँ तक पहुँच सका कि मैं अपनी कहानी बयाँ कर सकूँ तो उसका सबसे बड़ा कारण मेरे जीवन में अनुशासन का होना है । मैंने अपने जीवन में समय की बहुत क्रीमत की है । मैंने वक्त की पाबंदी पर बहुत ध्यान दिया है , मैंने सुबह जल्दी उठकर और रात देर तक जगकर दोनों विधियों को आज़माया है और मैंने यह मूल्यांकित करने का प्रयास किया है कि कौन सी विधि बेहतर होगी , सुबह उठना या देर रात तक जगना । मैंने इसमें यह भी विश्लेषित करने का प्रयास किया कि किस तरह और किस समय पढ़ा जाए जिससे समझ में अधिक आए ।

मैं किसी भी काम को बैलवत नहीं करता था वरन् उसमें नीर- क्षीर विवेक का इस्तेमाल करता था । मैं इलाहाबाद के परिदृश्य में समय से आगे की चीज़ था । मैं पहला सफल उम्मीदवार था जिसने सफल होते ही पढ़ाने का काम आरंभ कर दिया । जब लोग अपने जीत के जश्न में मशगूल थे तब मैं अपनी एक अलग दास्तान लिखने की कोशिश कर रहा था , एक गैर मामूली दास्तान । लोग जीत के जश्न में हैं और वह जीती हुई ज़मीन से खुश थे और मैं एक नई ज़मीन तलाश रहा था । वह ऊँट पर बैठकर अपनी ऊँचाई नाप कर अपने क़द पर खुशी का अटटहास कर रहे थे और मैं पहाड़ों की चोटियों की ओर चल पड़ा था , यह देखने वहाँ से आसमां कितना नज़दीक है । मुझे सूरज के नज़दीक पहुँचने का शौक आ चुका था , भले ही उसकी तपिश मुझे झुलसा ही क्यों न दे । मैं नयी लकीर खींचना चाह रहा था मेरी खींची पुरानी लकीर से बड़ी हो । मैं एक चित्र बनाना चाह रहा था और उस चित्र में बने सूरज के

माथे पर अपना नाम लिखना चाहता था । मेरी एक नई चाहत , मेरी अपनी एक नई स्थापना एक अध्यापक के रूप में । मैं सर्जक बनना चाह रहा था अपनी कविताओं का नहीं वरन् लोगों के जीवन का । एक नई महत्वाकांक्षा मेरे अंदर बलवती हो रही थी ।

मैं ब्राइट कोचिंग पहुँचा । जितनी भी कोचिंग सिविल सेवा के लिये काम करती हैं उनमें तकरीबन सभी या ज्यादातर सफलता के सुनश्चयन का भ्रम फैलाती हैं और पढ़ाने वालों का समाज में स्थापन अफ़वाहों के सहारे करती हैं पर उनके कृत्यों के कारण कुछ ही दिनों में पढ़ने वालों का कोचिंग की गुणवत्ता और फरेब को देखकर मोहभंग हो जाता है । यह अपने वाक चातुर्य से दलदल के ज़मीन पर एक इमारत बना देते हैं, पर इसको तो ढहना ही है । यह लोग निरीहता का लाभ ले जाते हैं और दूर- दराज से आने वाला व्यक्ति जब तक अपने ख्वाब के चौटिल होने का अहसास करता है तब तक इनका काम तो हो ही जाता है ।

यह अफ़वाह भी बहुत ही सुनियोजित तरीके से फैलाते हैं ... ” यह जो राकेश सर हैं इनको आपीएस मणिपुर कैडर मिला था पर नहीं गये .. ” , “ यह जो सिन्हा सर हैं यह तीन बार इंटरव्यू दिये थे पर हर बार बोर्ड में लड़ जाते थे , यह इतने क़ाबिल हैं कि बोर्ड मेम्बरान को भी सिखा दें .. ” , “ यह जो राम कुमार सिंह सर हैं यह तो प्रारम्भिक परीक्षा के मास्टर हैं । कुछ भी पूछो सोते- सोते बता देते हैं ... ” ।

ऐसे भ्रम और कुहासे के बीच जीवन जी रहे निरीह छात्रों के बीच एक सफल उम्मीदवार का आना जिसकी शहर में इस समय तूती बोल रही हो एक बड़ी बात थी । कभी मैं भी हरि दर्शन को प्यासा था पर आज तो इन छात्रों के सम्मुख हरि आ रहे , भए प्रकट कृपाला दीन दयाला की तर्ज पर । ब्राइट कोचिंग ने दो सौ रुपया पूरा वसूल करने का कार्यक्रम अच्छा बनाया था । क्लास एक बड़े हाल में थी , छात्रों की तादाद 200 और माइक लगा हुआ । यह मुझे पता ही न था । मैं तो कल की क्लास के 40/50 बच्चों को पढ़ाने आया था । इतने छात्र एक रात में ?

व्यापार- व्यापार होता है । यह कुछ लोगों को बहुत आता है , सबको नहीं आता । यह कोचिंग का व्यापार इलाहाबाद में बहुत लोगों को आता है । नर्सिंग होम और कोचिंग के व्यापारी इलाहाबाद में पटे पड़े हैं । आप किसी भी रोड पर जाओ आपको दो दुकानें पक्का मिलेंगी , एक कोचिंग की और दूसरी नर्सिंग होम की । इन दोनों में जीवन रक्षक और राष्ट्र के लिये समर्पित कहे

जाने वाले कृत्य का कुछ लोग नगनतम व्यापार करके उनको शर्मसार कर रहे जिन्होंने वाक़ई इस देश को कई गैर मामूली दास्तान दिये हैं ।

मुझे पता चला कि इन्होंने रातो- रात अपने यहाँ के छात्रों से कह दिया कि अनुराग शर्मा पढ़ायेंगे यहाँ पर और जो भी आना चाहें आए और क्लास कर ले पंदरह दिनों तक , बगैर शुल्क के । मुफ्तखोरी तो इलाहाबाद की नसों में है । अब मुफ्त में एक आईएएस पढ़ा रहा तब क्या कहना । सब भाई - बहन लोग जुट गए । हिंदू होस्टल वाले तो पैसा देंगे नहीं । उनका तो एक ही वाक्य है , “ अब हमहूँ से पैसा ? हमार हिंदू होस्टल रहब बेकार बा अगर हम पैसा दे दिये । ”

कोचिंग वाला कहेगा कि हम डिस्काउंट दे देंगे । पर वह कहेंगे , “ हम देंगे कहाँ से डिस्काउंट । डिस्काउंट तो कर दो पर उ डिस्काउंट के बाद जो पैसा है वह कौन देगा । वह भी आपको देना पड़ेगा । ”

मैंने सुना था कि इसी होस्टल वाले राउस कोचिंग में घुसकर कट्टा दिखाकर नोट्स लूट ले गये थे । पर जब यह सब होस्टल पहुँचे तब पता चला लूटना कोई और विषय था लूट किसी और विषय का नोट्स गये । अब ऐसे लोग मुफ्त का आमंत्रण कहाँ छोड़ने वाले । क्लास चली । सवाल जवाब ज्यादा हुआ । अब ऐसी भीड़ में तो आप के पढ़ाने की एक सीमा होती है , शंका समाधान ही ज्यादा हुआ । पर मालिक होशियार था उसने कुछ अपने आदमी बैठाये थे और कुछ सटीक सवाल कराकर एक- दो टापिक पढ़वा दिया , ग्राहक खींचने के लिये । पूरे शहर में एक शोर अनुराग शर्मा पढ़ा रहे हैं , जो कभी न हुआ इलाहाबाद में वह हो रहा ।

बद्री सर रात को आए और बोले , “ गुरु इ कौन नया तंबा फोड़त ह । कुछ बचे न । सब इहीं जन्म में निपटाय द , कुछ अगले जन्म के लिये बाकी न छोड़ना । कुछ छोड़ दो किसी और के लिये ” ।

मैं - “ सर , आपको कौन बताया ? ”

बद्री सर - “ इ लेबर चौराहा पर हमारे नाम का दिया जलता है । जो वहाँ से गुजरता है वह आशीर्वाद लेकर जाता है । कोई आशीर्वाद लेने वाला बता गया । ”

मैं - “ सर बस ऐसे ही समय पास कर रहे । ”

बद्री सर - “ यह लोक कल्याण की भावना से प्रेरित है या स्वार्थ की ? ”

मैं - “ समझा नहीं सर । ”

बद्री सर - “सब समझ में आ रहा है । तुमसे बड़ा चतुर सयाना कौन मिलेगा । पर चलो पूछ रहे हो बता ही देते हैं साफ- साफ । यह माल लिये बगैर तो तुम करोगे नहीं । पूरी दुनिया को तुम बनाओ बेवकूफ पर हम तो तुम्हारी नस- नस जानते हैं । यूपीएससी को बेवकूफ बनाने वाले से बड़ा फ़रेबी अब आज के दिन कोई और कहाँ मिलेगा । लोक कल्याण तो होगा नहीं, 102 रैंक भजा लो जितना भजाना हो । मकान, गाड़ी, बल भर रूपिया, सुंदर लड़की से पेट भरत नाहीं बा अब इ चिल्लर गीरी कोचिंग से ।

मैं - सर, यूपीएससी फ़रेब का फ़ायदा आपको हुआ कि नहीं? अब सर लोक कल्याण तो पूरी तरह नहीं है पैसा तो ले ही रहे । पर ईमानदारी से पढ़ाएँगे अब उसको आप लोक कल्याण कहना चाहें तो कह सकते हैं ।

बद्री सर - हाँ हमको तो तुम्हारे फ़रेब का फ़ायदा हुआ । पर एक बात बताओ यह कोचिंग का ख्याल मन में आया कैसे? यूपीएससी में अंग्रेजी माध्यम लिखकर हिंदी में इंटरव्यू दे देना तो नियोजन था पर माल कमाने का दिमाग़ स्वतः स्फूर्त है या एक लंबी प्लानिंग का हिस्सा?

मैं - सर दोनों ही स्वतः स्फूर्त ही है, पहला और दूसरा दोनों । दोनों का ख्याल एकाएक आया । उसका आया जब मैं आपके पास आ रहा था और इसका आया जब मैं ब्राइट कोचिंग पार कर रहा था और बोर्ड पढ़ा जिस पर लिखा था, “हमारे यहाँ क्राबिल लोग ही सिर्फ़ पढ़ाते हैं” । सर अब आज हमसे-आपसे बड़ा क्राबिल कौन है । मैंने सोचा देखें कौन है हमसे ज्यादा क्राबिल यहाँ पर और अंदर प्रवेश कर गये ।

बद्री सर - “यार पैसा ले लिया तो फिर लोक कल्याण तो नहीं है । एक बात है हिम्मत है तुम्हारे पास बहुत । यूपीएससी में हम डर बहुत रहे थे वह फ़रेब करने में” ।

मैं - “सर, कौन सा पाप कर दिये? हिंदी में बोलना हमारा अधिकार था वह मिल नहीं रहा था वह ले लिया । सर अब तो काम हो गया अब क्या उस पर सोचना । इसको भूल जाइये” ।

सर - “यह लोक कल्याण नहीं है यह स्वार्थ से अधिक प्रेरित है । पूरा मामला पटा कैसे यह बताओ?”

मैंने सारा क्रिस्सा सुनाया कि कैसे हुआ, क्या- क्या बात हुई । सर बोले कि टाइम पास करने गये थे और मामला सही निशाने पर लग गया ।

मैं - “ऐसा ही समझ लें सर” ।

बद्री सर - “यह दो सौ रुपया त बड़ा एमाउंट है । कुछ दिन में तो रईस बन जाओगे ।

मैं- सर कितना बड़ा एमाउंट है । यह मेहनत का काम है ।”

बद्री सर - “यह बात तो है । यह है बड़े किचाइन का काम । रोज़ पढ़ो फिर जाओ पढ़ाने बेवकूफ़ों को । कोचिंग में कुछ उने- गिने को को छोड़ कर बाक़ी सब तो बेवकूफ़ाना मटीरियल ही आता है ।”

मैं- “सर , अब उससे हमारा क्या मतलब । जो आएगा उसको पढ़ाएँगे ।

बद्री सर - “यह बात तो है । पर कोई स्वतंत्रता नहीं होगी । बस जो वह कोचिंग मालिक कहे क्लास में वह पढ़ा दो । अब जब पढ़ाना ही है तो ठीक से पढ़ाओ । इससे क्या होगा ?”

मैं- “सर , दो सौ रुपया मिलेगा । मन लगाकर पढ़ा देंगे , बाक़ी का हमसे क्या मतलब ।”

बद्री सर कुछ देर बैठे , कुछ कहानी अपनी पत्नी के बढ़ते अरमानों की सुनाये चाय पिये और चले गये ।

मेरी मामी ने मेरी माँ से सारी सूचना निकाल ली मैं कहाँ कमिश्नर से मिला , क्या बात हुई । माँ शेखी बघारने में कुछ कम तो थी नहीं । उसको जीवन में पहली बार गर्व की प्राप्ति हुई थी । वह हरिषेण बन चुकी थी । मुझे किन्नर नरेश बनाकर जहाँ- तहाँ प्रशस्ति पत्र गढ़ देती थी और हर प्रशस्ति गान का समापन होता था यह कहते हुये , “ मुन्ना था बहुत बदमाश पर गंगा माई की कृपा रही ” । मामी पर तो रुआब गाँठना ही था , भारत- पाकिस्तान मैत्री वार्ता पर जो थे अब तो यह बताना ही था हमारे आयुध कितने मज़बूत हैं । वह सब बता गयी नमक मिर्च मिलाकर , “ कमिश्नर के लिखऊ सिखाइ देहेस भौजी बैठे- बैठे और साहेब आपन किताब देहेन ठीक करै बरे । साहेब के किताब के बहुत बड़ा विमोचन होई जात बा उहै किताब मुन्ना फिर से लिखत बा ” ।

माँ ने बाबा भैया की रात खराब कर दी थी मामी ने कहा घर लौट कर “ उ मुन्नवा जेका तू बेसहूर घोषित कै देहे ह अपने केथौ लायक नाहीं चमड़ा के जबान से ऊ कमिश्नर साहेब के लिखै सिखावत बा और तू बस पसर के बाप के कमाई खा , उहाँ उ अंटी छाड बंटी मारत बा और तू हमरे सीना पर मूँग दरअ ” ।

शाम को मेरे मामा आए । पिताजी ने सारा मामला संभाला , माँ पृष्ठभूमि में चली गई । मेरे पिताजी ने मेरे मामा को निराश कर दिया , यह कहकर कि अभी हमारा विवाह का कोई विचार नहीं है । जब हमारा विचार होगा तब हम आपसे राय ज़रूर लेंगे । हम आपकी राय के बगैर फ़ैसला नहीं करेंगे । आप जो भी राय देंगे हमारे हित में ही देंगे । हम आपको नज़रंदाज़ करें यह संभव ही नहीं है । जो उस दिन हुआ वह आवेश में हुआ , आप उसको भूल जाएँ । उर्मिला भी भूल गई है , वह खुश हैं कि मामला यह ख़त्म हो गया । परिवार में यह सब होता रहता है । यह आपका बड़प्पन है कि आप आये और मामले को ख़त्म कर दिया नहीं तो आप चाहते तो न आते । आपकी हैसियत हमसे बहुत ज्यादा है और आप बड़े भी हैं पर आपने सदाशयता दिखाई उसका असर बच्चों पर भी पड़ेगा और दोनों परिवार के बच्चे यह सीखेंगे कि कैसे व्यक्ति को सर्वसाधन संपन्न होकर भी झुक कर चलना चाहिये । मुन्ना को तो सीख ज़रूर मिलेगी उसको अभी- अभी सफलता मिली है और जिस तरह के परिवेश का वह लड़का है उसमें छोटी- छोटी उपलब्धियाँ ही अहंकार को जन्म दे देती हैं , यह तो एक बड़ी उपलब्धि है उसके लिये । मेरे मामा - मामी लाख कोशिश करते रहे पर पिताजी विवाह के मुद्दे पर बात करने को तैयार न हुये । मामा ने कमिशनर साहब के घर मुझकों ले कर जाने की बात को एक याचक की तरह कहा । उस पर पिताजी ने कहा , यह आपके और मुन्ना के बीच की बात है । मुझे या उर्मिला को इसमें कोई आपत्ति नहीं आप जहाँ चाहें ले जाए उसको , वह आपका भांजा है । अगर वह लोगों से मिलेगा तो कुछ सीखेगा ही , इसमें कोई आपत्ति की बात तो बनती नहीं । मामा ने मेरी तरफ़ देखा और मेरी राय जाननी चाही । मैंने माँ कीं तरफ़ देखा । वह भाई की सदाशयता से प्रफुल्लित थी और आज तो एक विजेता थी । इस समय सब वही हो रहा था , जो वह चाह रही थी । वह दयावान और बड़े दिल की थी इसमें कोई संदेह नहीं । वह अपने भाई की याचक की मुद्रा देख कर पसीज गई थी । अब जब विवाह का मुद्दा ख़त्म हो गया तब आने- जाने में कौन सा परहेज । उसी ने कह दिया , ” भैया के आदेश होए त मुन्ना काहे न जाए ।”

मामा - मामी के चेहरे पर संतोष के असीम भाव थे , डूबते को तिनके का सहारा ।

मेरे सामने यह सब हो रहा था । मैं बैठा पिताजी को सुन रहा था । क्या परिपक्वता थी उनके बातचीत में । मैंने हमेशा अपने अंदर उनका विरोध ही किया क्योंकि हमारे उनके बीच एक सतत संघर्ष हमेशा से रहा है । वह चाहते थे मैं कोई भी नौकरी ज्वाइन कर लूँ और मैं कहता था मैं नहीं करूँगा । यह हमारे उनके बीच का मतभेद कई बार उग्र रूप धारण कर लेता था और माँ को पिता पुत्र के बीच एक दीवार के रूप में खड़ा होना पड़ता था , स्थिति

को सँभालने के लिये । पर मुझे आज महसूस हुआ में कितने सुरक्षित हाथों में रहा हूँ । हकीकत यह है कि माँ और पिताजी के बीच मेरे जीवन को लेकर एक अलग दृष्टिकोण दो कारणों से था । एक कारण व्यक्तित्व में फ़र्क का था । मेरे पिता थोड़ा सुरक्षित जीवन के आदी थे और नदी के शांत प्रवाह में जीवन जीना चाहते थे । वह चाहते थे जो हाथ में आसानी से आ जाए वह ले लिया जाए । इसलिये वह मुझसे कहते थे कि कोई छोटी- मोटी नौकरी कर लो बाद में परीक्षा देते रहना । इसके विपरीत मेरी माँ को उफनतीं लहरों में तैरने में मज़ा आता था , नहीं तो क्या ज़रूरत थी गाँव- देहांत के झगड़ों में पड़ने की , चाहे उसके मायके का हो या ससुराल का । दूसरा कारण वस्तुस्थिति के मूल्यांकन का था । मेरे पिताजी दुनिया देख रहे थे और माँ दुनिया की बहुत सी हकीकतों को नहीं जानती थी । मैंने आज महसूस किया कि इतने परिपक्व व्यक्ति के बारे में मेरी धारणा जीवन के इतने सालों तक पूर्णरूप से ग्रसित रही है । मुझे अपनी अपरिपक्वता पर अफ़सोस और अपने व्यवहार पर ग़्लानि होने लगी ।

दादू मामा के सामने नहीं आया । यह कह दिया गया कि वह गाँव चला गया है । मामा ने भी कुछ नहीं पूछा उसके बारे में । वह उसका इलाज अपने तरीके से करना चाहते थे , नागरे का नया जूता ख़रीदना लगभग तय ही था , मामा को जब भी दादू हाथ लग गया क्योंकि पुराना तो टूटना ही था ।

मैं अगले दिन ब्राइट कोचिंग पढ़ाने फिर गया । शोभनाथ मिश्रा ने मुझसे कहा आप इतिहास भी पढ़ा दो । एक क्लास और ले लो । बेहतर होगा आप पूरे इतिहास को पढ़ाने का करार कर लो , आप जिस तरह की शर्त चाहें हम उसके लिये तैयार हैं । वह मुझको मालिक के पास ले गया । मैंने कहा था कि मैं पैसा क्लास ख़त्म करते ही लूँगा , इसलिये उनको लगा कि मुझे पैसों की सख्त आवश्यकता है । कोचिंग मालिक ने कहा मैं आपको पैसा पहले ही दे दूँगा , आप पूरा इतिहास पढ़ा दें और सामान्य अध्ययन का भी थोड़ा- बहुत भाग कर दे । आपके क्लास की बहुत माँग हो रही । आप तो जानते ही हैं आधे से ज्यादा शहर इतिहास लेता है प्रारम्भिक परीक्षा में और इधर कुछ सालों से टर्नेंड ऐसा हो गया है कि कहाँ से सवाल पूछे जा रहे कोई पकड़ नहीं पा रहा और परिणाम ख़राब आ रहा । आप क्लास लेंगे तो छातरों को सहूलियत होगी । मैंने कहा कि दो क्लास अगर लूँगा तू मुझसे न्याय नहीं हो पाएगा । उसने कहा , न्याय कौन करने को कह रहा बस क्लास ले लो , जैसा चाहे और जिस समय चाहें आप पढ़ा दें । आप जो भी पढ़ाएँगे अच्छा ही पढ़ाएँगे , हमने कल देख लिया है ।

मैं सोचने लगा कि यह ऐसा क्यों कह रहा । मैंने कहा कल बताता हूँ । मैं क्लास लेकर साइकिल से निकला मुझे हनुमान मंदिर के ऊपर भीष्म का रथ दिखा और वह प्रेरक पंक्ति भी जो मैं गुनगुनाता रहता हूँ ...

आजु जौ हरिहि न सस्तर गहाऊँ ।
तौ लाजौ गंगा जननी कौं सांतनु-सुत न कहाऊँ
स्यंदन खंडि महारथि खंडौ कपिधज सहित गिराऊँ ।
पांडव-दल सन्मुख है धाऊँ, सरिता-रुधिर बहाऊँ ।

.....

मुझे भीष्म अक्सर दिखते थे, मेरे ख्वाबों- ख्यालों में । आज वह फिर दिखे, दूर क्षितिज पर जहाँ सूरज लालिमा लिये अस्त हो चुका था । मुझे लगा सूरज के सात घोड़ों के रथ के साथ भीष्म का रथ आकाश मार्ग में वायुवेग से दौड़ रहा । मैंने पुनः भीष्म के रथ को हनुमान मंदिर के तोरण द्वार पर देखा और अपने जीवन का सबसे साहसिक फैसला कर लिया । मैं गैर मामूली दास्तान की ओर बढ़ने लगा । मैं सर्जक बनना चाह रहा था एक समाज का सर्जक

चल पढ़ा एक नए सफर की तरफ
पुरानी मंजिल छोड़ दी किसी और के लिये ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 137

मैंने सिविल लाइंस के हनुमान मंदिर -भीष्म पितामह रथ के चौराहे से साइकिल मोड़ी अपने घर की तरफ । मेरे दिमाग में बदरी सर की एक लाइन घूम रही थी, “ अगर करना ही है तो ठीक से करो, इससे क्या होगा ” ? मैंने सोचा ठीक से ही करते हैं । यह पढ़ाना खानापूर्ति ऐसा ही है । इससे कुछ खास फ़ायदा अभ्यर्थियों का न होगा । मैं दो सौ रुपया ले लूँगा कुछ पढ़ा दूँगा पर इससे परिणाम न आएगा । परिणाम लाने के लिये एक अलग रणनीति चाहिये और एक पूर्ण स्वतन्त्रता पूरे घटना चक्र को संचालित करने की । यह इस बाज़ार माहौल में न होगा ।

मेरे अंदर एक फ़ैसला हो चुका था । मेरी उम्र थी 23/24 साल और संसाधन के नाम पर पिछले लेक्चर का बचा हुआ 90 रुपया और आज का 200 रुपया और फ़ैसला बहुत बड़ा एक अलग कोचिंग चलाने का और अनुभव के नाम पर दो दिन की क्लास । मैं अपने घर की गली में प्रवेश किया । मेरी सबसे बड़ी राजदार गेट पर ही मेरा इंतज़ार कर रही थी । वह दूर से आती मेरी साइकिल को देखकर संतुष्ट हो गई । मेरे मकान का यह चबूतरा अगर कभी टूटा तो बहुत पीड़ा होगी मुझको क्योंकि यहाँ पर खड़ी होकर वह मेरा इंतज़ार किया करती थी । मैं जानता था मेरे फ़ैसले की क्या प्रतिक्रिया होगी । मैं माँ को ऊपर अपने कमरे में ले गया । मैंने उसको अपने निर्णय से अवगत कराया । माँ चौंक गई । तुम कोचिंग खोलोगे ? कहाँ से पैसा आएगा खोलने का ? कहाँ पढ़ाओगे ? कौन सँभालेगा ? हर कोचिंग में पचासों आदमी लगे होते हैं, कामकाज देखने के लिये । यह कैसे होगा ? यह जो दो सौ रुपया हर दिन मिल रही वह भी हाथ से चला जाएगा । उसने सवालों की झड़ी लगा दी ।

मेरे दो सौ रुपया प्रतिदिन से आशा की किरण सबको हो गई थी । मेरी माँ को रिकरिंग डिपासिट की, बहन को साइकिल की, छोटे भाई को नये कपड़े की । यह सब माँ को ख़त्म होता दिखा ।

माँ मुझसे ज्यादा बहस न की हलाँकि वह मेरी बात से संतुष्ट न दिखी । उसने इतना ही कहा अंत में, “एक अकेला आदमी कैसे कोचिंग चलाएगा ? न पैसा है, न जगह पढ़ाने की, कैसे लोगों को पता चलेगा कि कोचिंग चल रही, न कोई आदमी ”। वह कुछ देर बात की, मुझसे पूछा क्लास कैसी चली और कहा नीचे आ जाओ रोटी बनाने जा रही, तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी । उसने नीचे जाकर पिताजी से सारी बात बतायी । मेरे पिता का व्यक्तित्व हमेशा से ही एक सुरक्षित जीवन के आगरह की बात करता ही था, वह बहुत ज्यादा ख़तरे वाले कदमों में यक़ीन नहीं रखते थे । वह एक संतोषी व्यक्ति थे । साईं इतना दीजै जामें कुटुंब समाय की विचारधारा के पक्षधर और समर्थक थे ।

पिता जी ने मेरा नया फ़िटूर सुनकर आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि उसका दिमाग़ फिर गया है । एक सफलता अपनी हैसियत से ज्यादा पा गया है और वह उससे सँभाली नहीं जा रही है । मुझसे पिताजी की मुलाक़ात शाम को नहीं हुई । मुलाक़ात सुबह हुई और मुझसे कहा, “जो मैं सुन रहा हूँ वह एक फैसला है या एक विचार है, तुम्हारा कोचिंग खोलने का ” ?

मैं “अभी तो एक विचार है पिता जी ” ।

पिता जी - “तब ठीक है । इस विचार को त्याग दो ।

मैं - “विचार है पर निरा विचार भी नहीं है इसको अमली जामा पहनाना चाहता हूँ ।

पिता जी - “वह कैसे करेगे ?

मैं - “इसी पर विचार कर रहा हूँ ।

पिताजी - “यह जो शाम को लड़के इकट्ठा होते हैं उन्होंने “अनुराग सर .. अनुराग सर “कहकर तुम्हारा दिमाग़ ख़राब कर दिया है । यह सब नान प्रैक्टिकल आइडियाज़ हैं ।

मैं - इसमें उनका क्या दोष ?

पिता जी - “वह ही कह रहे होंगे हमको पढ़ाओ और तुम को लग रहा होगा कि इससे हमारा नाम होगा । तुमको नाम - प्रसिद्धि की भूख अतिशय हो गई है । तुम्हारा अति विश्वास तुमको ले डूबेगा । तुम आत्म श्लाघा और आत्म प्रवंचना के शिकार हो गये हो ।

मैं - “वह कैसे पिताजी ?

पिता जी - “लोग तारीफ़ करते हैं तुम सुनते हो और अपने अंदर ही अंदर अपनी एक महामानव की छवि बना बैठे हो । यह छवि कितनी बड़ी हो जाए , इस पर ही लगे हो ।

मैं - “इसमें आत्म श्लाघा और आत्म प्रवंचना कहाँ से आ गई ?

पिता जी - “जब व्यक्ति को अपनी तारीफ़ सुनने का शौक़ बहुत हो जाता है तब वह इन प्रवृत्तियों का शिकार हो जाता है । मैंने दुनिया देखी है और पिछले २०-२२ दिन से तुमको देख रहा , कितना फ़र्क़ आ गया है तुममें , यह कोई भी देख सकता है ।

मैं - “हाँ पिताजी फ़र्क़ आया है , विश्वास बढ़ा है अपने ऊपर और उत्साह जीवन में तो आ ही गया है । यह उत्साह मेरे ही नहीं सबमें आया है । आपमें , माँ में , बहन में , भाई में , रिश्तेदार में । सभी में फ़र्क़ है । सफलता मादकता तो देती ही है , इसमें तो कोई दो राय है नहीं । ”

पिता जी - “इस मादकता को नियंत्रित करो । कोई कदम ऐसा न उठाओ कि तुमको ही बाद में लग जाए यह एक दुस्साहसिक कदम था , मुझे नहीं उठाना चाहिये था । विवेक का इस्तेमाल करो । मेरे ख़्याल से यह उचित नहीं है । हर बात पर ज़िद नहीं करते । ”

मैं - “पिताजी , अगर मैं करना ही चाहूँ तब आपको क्या लगता है , यह हो पाएगा या नहीं ?”

पिता जी - “ठीक है तुम बताओ कैसे करोगे यह सब / समझाओ मुझे, क्या है तुम्हारे पास प्लानिंग इसको अंजाम देने की । ”

मैं “पेपर में इश्तहार दूँगा , पोस्टर छपा कर लगाऊँगा शहर की दीवारों पर और स्कूल कोई किराये पर ले लूँगा जहाँ क्लास चलेगी । ”

पिता जी - “इसमें पैसा कितना लगेगा ?

मैं - “मुझे नहीं पता” ।

पिताजी - “वह पैसा कहाँ से आएगा “?

मैं - “मुझे पता नहीं” ।

पिताजी - “कृष्ण सोचा है”?

मैं - “अभी नहीं” ।

पिता जी - “कब तक सोच लोगे” ?

मैं - “आज शाम तक” /

पिता जी - “तम्हारे पास समय ही कितना है ? अगर ट्रेनिंग में जा रहे तब ”।

मैं “दो महीने से ज्यादा है, इसमें हो जाएगा “ /

पिता जी - “तुम पैसा कमाना चाह रहे या सिर्फ़ पढ़ाना ?

मैं - “दोनों” /

पिता जी - “कितना पैसा मिलेगा ?

मैं - “तक़रीबन बीस - तीस हज़ार रुपया बच जाएगा । हो सकता है कुछ ज्यादा भी हो जाए अगर मैं सफल रहा । पर बीस- तीस की संभावना बनती है”/

बीस - तीस हज़ारररररररररररररर मेरी माँ के मुँह से निकला / इतना बड़ा
पैसा / तुम्हारे पिता मास्टर ही हो गये होते , नाहक इ एजी आफ्रिस की क्लर्की
किये ।

वह इस तरह बोली कि उसकी आवाज़ सुनकर पूरा तनाव का माहौल ख़त्म हो गया । मैंने कहा अब रिकरिंग डिपासिट का नाम मत ले लेना । अभी गाँव बसा नहीं चल दिये लुटेरे लूटने । यह इतनी बड़ी रकम थी कि सबके चेहरे पर अति आश्चर्य के भाव थे । मेरे घर के सारे लोग थे उस समय और सब के चेहरे पर एक अविश्वास का भाव था । एकाएक इतने बड़े पैसे की बरसात दो महीने में कल्पना के बाहर की बात थी ।

पिता जी - “तुम्हारा आंकलन ठीक नहीं है । मेरी सलाह है कि तुम यह विचार त्याग दो और जैसा पढ़ा रहे हो ब्राइट कॉचिंग में वैसा ही पढ़ाओ । इतना भी जीवन में भागम - भाग ठीक नहीं है ।

पिता जी के आफिस जाने की समय हो रहा था । मैंने सोचा क्यों इनका मूड ख़राब करूँ । मैंने कहा कि मैं बद्री सर से राय ले लेता हूँ, नहीं होगा तब विचार त्याग दूँगा । पिताजी थोड़ा संयत हो गये पर वह बहुत समझदार थे मुझको बचपन से जानते थे और वह शाम को फिर समझाएँगे मुझे यह सोचकर चले गये ।

मैं अपने घर से बद्री सर के पास गया । उनसे सारी योजना बताई । सर भी चौंक गये । वह बोले , “ यार कॉचिंग वाले नोट्स देते हैं, पचास तरह का ड्रामा करते हैं । लड़कों को लबझियाना पड़ता है । लड़कियाँ आती हैं पढ़ने, इस शहर की हालत जानते हो । इतने मुद्दे होते हैं यार, यह सब काम हमारे बस का नहीं है ।

मैं - “सर यह करना चाहता हूँ, आप थोड़ी मदद करो “।

सर - “क्या मदद करें “?

मैं - “आप भी थोड़ा पढ़ाना । एक से ज्यादा लोग रहेंगे तब मदद मिल जाएगी “।

बद्री सर - “मैं पढ़ा नहीं पाऊँगा “।

मैं - “क्यों सर “?

सर - “मेरे पास दो समस्या है । एक तो पब्लिक स्पीकिंग की है । मैं सहज नहीं हूँ कई आदमियों के सामने बोलने में । मेरे सामने कोई बैठ जाए तो मैं बता सकता हूँ, समझा सकता हूँ पर एक मंच से संबोधन जहाँ सामने बहुत लोग बैठे कर मेरी ओर देख रहे हों उनको संबोधित करने का मेरा पास कोई अनुभव नहीं है और मेरे लिये असहज होगा । पढ़ाना एक विशिष्ट काम है । इसमें एक अलग तरह का मानसिक नियमन चाहिये होता है, यह काम मुझसे नहीं हो पाएगा । मेरे पास अपने ऊपर विश्वास ही नहीं है कि मैं यह काम कर पाऊँगा । दूसरा भाषा की बात तो है ही । मेरे पास तुम्हारी तरह का भाषा पर अधिकार नहीं है । हम न तो रहे हिंदी के न अंगरेज़ी के । लिखते अंगरेज़ी में थे बीएससी और ला में फिर यूपीएससी भी अंगरेज़ी में लिखे, पर तकनीकी टाइप का लिख लेते हैं, वह प्रवाह न लिखने में है न बोलने में । यह पढ़ाने का काम है इसमें थोड़ी बेहतर भाषा चाहिये । हम कोई गणित- विज्ञान तो

पढ़ाएँगे नहीं जिसमें सूतर काम करता है और भाषा से निरपेक्ष माहौल होता है उसके अध्यापन में । हम ह्यूमिनिटीस के विषय पढ़ा रहे वह भी इतिहास , सामान्य अध्ययन । इसमें थोड़ा भाषा का चमत्कार आये तभी बात बनेगी । वैसे एक अध्यापक की भाषा बेहतर होनी ही चाहिये । वह सिफ़्र पढ़ाता ही नहीं है कक्षा में वरन् एक संवाद की स्थापना करता है , उत्प्रेरित करता है । उसकी अभिव्यक्ति बहुत मायने रखती है चाहे वह चेहरे की हो या भाषा की । उसकी अभिव्यक्ति उसके मौन में भी है , उसके जीवन - चरित्र में भी है । वह एक आदर्श की स्थापना करता है अपने छात्रों के लिये । हम लोग बचपन से लेकर आज तक कितने अध्यापकों से पढ़ें हैं आप उन पर विचार करो और खुद बताओ हम और तुम कहाँ तक उनके कदमों के निशान पर चल पाएँगे अगर एक अध्यापक का चोला ओढ़ते हैं । तुम हिंदी माध्यम में ही लिखे-पढ़े हो और हिंदी पर ध्यान दिया है इसलिये तुम्हारी हिंदी बेहतर हो गई और थोड़ा बोलना तो आम लोगों से बेहतर तो है ही । पर क्या यही एक अकेला मापदंड है एक सफल अध्यापन कर लेने का ? अगर यही है एक मात्र मापदंड तब भी मेरे साथ यह सुविधा नहीं है , हलाँकि मेरी समझ से यह एकमात्र मापदंड नहीं है । आप एक ऐसा काम करना चाह रहे हो जिसमें ज्ञान के साथ- साथ एक सम्प्रेरण क्षमता की आवश्यकता है वह भी एक बेहतर क्रिस्म की । एक काम चलाऊ क्षमता से काम न होगा । अगर तुमको लगता है कि सिविल सेवा के रैंक के नाम पर कोचिंग चल जाएगी तब यह आपकी ग़लतफ़हमी है । हो सकता है रैंक के नाम पर लोग आ जाए पर आने के बाद यह रैंक नहीं आप की कक्षा में आपका कार्य आपके भविष्य का निर्धारण करेगा । छात्र समय नहीं लेता है अस्वीकार करने में । हर छात्र अपने तरह का एक अलग जौहरी होता है । वह वक्त न लेगा आपको स्वीकार या अस्वीकार करने में । वह पहली ही कक्षा में आपके भविष्य का निर्धारण कर देगा । आप उसके लिये बाज़ार का एक उत्पाद हो वह आपको उसी नज़रिये से देखेगा जैसे बाज़ार का कोई और सामान होता है । हमको जो कक्षा नियत की जाती है हम उस कक्षा को छोड़कर दूसरे अध्यापक की कक्षाओं में चले जाते हैं , ऐसा क्यों होता है ? यह भी एक बाज़ारवादी सिद्धांत ऐसा है । हम अपना समय गुणवत्ता देखकर देंगे न कि विश्वविद्यालय के आवंटित नियम के अनुसार । मैं अपनी क्षमताएँ जानता हूँ , मेरा इस अभियान में कोई ख़ास योगदान न हो पाएगा वैसे आप जहाँ कहो वहाँ हम खड़े रहेंगे ।”

मैं - “सर कुछ तो पढ़ा देंगे ? संविधान ही पढ़ा दीजिये , सामान्य अध्ययन के लिये ।

सर - एकाध क्लास ले सकते हैं , कोई पैनल डिस्कशन टाइप करना चाहो तो कर सकते हैं , पर कोई बहुत बड़ी मदद संभव नहीं हो पाएगी । नोट्स का क्या करोगे ? वह कैसे दोगे , कैसे छपाओगे ? यार यह सारा काम बहुत जंजाल का है । ऐश करो , चौराहे- चौराहे घूमो , यूनिवर्सिटी रोड पर अपना

गान सुनो । विवाह के लिये सुंदर - संस्कारी कन्या तलाशो । अपने ख्वाबों में कन्याओं को बेधड़क विचरण करने दो । यह बहुत ही जानमारु काम है, इसको रहने दो । इस समय अपनी कन्या तुमको सौंपने की होड़ लोगों में लगी ही होगी, उस होड़ पर ध्यान दो । हमार विवाह हो गया है पर हमारे यहाँ भी लोग पहुँच रहे हैं । सारे लोग रिजल्ट देखकर दौड़ने लगते हैं, उनको क्या पता किसका विवाह हो गया है और किसका नहीं हुआ है । हमारा लड़का जान गया है कि लोग हमारे विवाह के लिये आते हैं । वह घर के दरवाजे से ही बाबा को आवाज़ देता है, “ बोबा बाबू के बियाहे वाले आई हयेन । ” “ एक आदमी आया तब वह दरवाजे पर चबैना खा रहा था । उससे कहता है, “ तू हमरे बाबू के बियाहे बरे आई ह न, मिठाई लियाये होबअ । ”

मैं - “सर, यह विवाह का मामला बाद का है । अभी इसका कोई वक्त नहीं है । इस पर राय दो सर ।”

सर - “नोट्स अपना ही फोटो कापी करा कर के दोगे ?”

सर - “मैं कोई नोट्स नहीं दूँगा, सिर्फ पढ़ाऊँगा । जो लिखाना होगा क्लास में लिखा दूँगा । वैसे भी कोचिंग के नोट्स किसी काम के तो होते नहीं ।”

सर - “क्या पढ़ाओगे ?”

मैं - “इतिहास पूरा करूँगा, कुछ भाग जीएस का और हिंदी का दूसरा पेपर ।”

सर - “प्रारम्भिक परीक्षा या मुख्य परीक्षा ?”

मैं - “सर दोनों । इंटरव्यू पर भी गाइडेंस कर दूँगा ।”

सर - “इतिहास प्रारम्भिक और मुख्य परीक्षा का पूरा करने का वायदा दोगे और बाकी सब में मदद । कोई नोट्स नहीं देना सिर्फ पढ़ाना । यही है पूरा प्लान ?”

मैं - “हाँ सर ।”

सर - “पढ़ने वाले कहाँ से मिलेंगे ?”

मैं - “सर विज्ञापन पेपर में दूँगा और पोस्टर शहर में चिपकाऊँगा ।”

सर - कितने दिन में कोर्स करोगे ?

मैं - “दो महीना, 60 दिन, 180 घंटे । इसमें तो हो जाना चाहिये ?”

सर - “हो जाएगा ।”

बद्री सर - “पैसा कितना लोगे ?”

मैं - “सर यह नहीं पता अभी । इस पर अभी नहीं सोचा ।

सर - “पहली बात तो मैं कहूँगा आप यह काम मत करो । मुझे कोई भविष्य खास दिख नहीं रहा । पर अगर करो तो पैसा ज्यादा माँगो । सबसे बड़ी कीमत माँगो इस शहर में । सस्ती और मुफ्त के चीज़ों की कीमत कम होती है । इस शहर को तुम्हारी कीमत पता होनी चाहिये ।

मैं - “सर क्या माँगूँ ?”

सर - “1000/1200 महीना का एवरेज आता है, हर कोचिंग का । तुम माँगो 2000 रुपया । इस शहर को पता तो चले गुणवत्ता की कीमत होती है । बेंचों तो ढंग से बेंचों ।

मैं - सर यह तो बहुत ज्यादा है । “

चलो चाय पीते हैं, इस शहर की सबसे गुणवत्ता परक कोचिंग के एकलौटे मालिक अनुराग शर्मा के साथ चाय पीते हैं । मज़ाक़ ही नहीं मसखरी भी अच्छी करते हो । यह सब कहाँ से फिरूर पाले हो यार । इसमें कुछ नहीं होना जाना । मैं चाय पी रहा था पर मेरा दिमाग़ कहीं और काम कर रहा था । इतने में सर ने कहा, नाम सोच लो कोचिंग का उसका रजिस्ट्रेशन करा लो । बाद में उसकी गुड़विल बिकेगी । क्या पता बोली ही लग जाए । यह नौकरी-चाकरी की ज़रूरत ही न पड़े ।

मैंने कहा, सर आप मज़ाक़ उड़ा रहे हो मेरा ।

सर - “जब काम ही कर रहे मजाक उड़ाने वाला तब वही करेंगे । जुम्मा-जुम्मा कुछ दिन हुआ तुम्हारा नाम हुये । पूरे शहर में एक ओपिनियन यह भी है कि तुमको आता- जाता कुछ नहीं बस तकदीर से हो गये हो । इस ओपिनियन वाले भी कम संख्या में नहीं हैं भले ही उसमें ईर्ष्या का ही पुट क्यों न हो । तुम्हारी अकादमिक उपलब्धि भी कोई ऐसी नहीं कि किसी विभाग में तुम्हारे नाम का दीपक जल रहा हो । यह एकमात्र परीक्षा दिये और यहाँ तक पहुँच गये । मेंस का जब रिजल्ट आया था तब तकरीबन सब लोग पूछते थे, यह अनुराग शर्मा कौन है ? मेरे पास बहुत लोग आते हैं और कहते हैं,” तकदीर बुलंद हो तो अनुराग की तरह हो । इस पंक्ति का मतलब समझो और कहने वालों का मंतव्य पढ़ो । मैं कहने वालों का नाम बता दूँगा तो तुम झगड़ा करने लगोगे उनसे । उनमें से कई लोग ऐसे हैं जिनसे तुम नज़दीकी का दावा करते हो । वह ही यह कोचिंग फेल करा देंगे । तुम ब्राइट कोचिंग पढ़ा रहे हो, इस पर ही लोग कह रहे कि 102 रैंक बेच रहे हैं वह । तुम हँसी का हसारथ

कराओगे और कुछ नहीं । यह इतना आसान है पढ़ाना? कहाँ पढ़ाया है? क्या अनुभव है पढ़ाने का?"

मुझे सर की बात सच लगने लगी । वह सच ही कह रहे, मुझे पढ़ाने का अनुभव नहीं है, मेरी अकादमिक उपलब्धि कोई खास नहीं है, यही एक परीक्षा जिसमें मैं सफल हुआ हूँ, तकदीर तो निःसंदेह मेरे साथ है और मुझसे बेहतर लोग असफल हुये हैं । मैं निराश होकर घर आ गया । एक ख़याल तो आ ही गया मस्तिष्क में, मैं पढ़ाने लायक नहीं हूँ । मैं घर आया तो आंटी की चिट्ठी मिली ।

"अनुराग मैं तुम्हारा इंतज़ार करती रही । तुम नहीं आये । ऋषभ- शालिनी - आहूजा साहब सब मिलना चाह रहे । ऋषभ चला जाएगा जल्दी ही । तुम आकर मिल जाओ । मैं भी मिलना चाहती हूँ, इसमें अब क्या कहना । मैं अनुराग शर्मा से मिली थी पर अब मैं मिलना चाहती हूँ" "अनुराग शर्मा आईएएस" से । मैं देखना चाहती हूँ कि तुम्हें क्या परिवर्तन हुआ है । यहाँ पूसा में भी लोग पूछ रहे हैं । हो सके इसी हफ़ते आ जाओ ।"

मैंने माँ से कहा कि मैं चला जाता हूँ । माँ ने कहा रिज़र्वेशन कैसे होगा?

मैं- चिंतन सर ने बताया है कि कोई रेलवे का वीआईपी कोटा होता है उससे हो जाएगा ।

माँ- वह कैसे होता है?

मैं- डीआरएम आफिस से होता है । वहाँ जाकर कोई अधिकारी एसीएम होता है जो इसी सिविल सर्विसेज़ का कोई नया अधिकारी होता है, उससे मिलो वह करा देता है ।

माँ ने कहा ठीक है चले जाओ । मैं टिकट निकाल कर डीआरएम आफिस गया । टिकट एक दिन बाद का था, मैंने वैसे ही किया जैसा चिंतन सर ने समझाया था । मैं टिकट का नंबर देकर वापस ब्राइट कोचिंग से होता हुआ आया । मेरा मन बहुत ही खिन्न था, बदरी सर की बात को लेकर । मुझे लगने लगा कि सर ने सब कुछ ठीक ही कहा है, मैं किसी लायक नहीं हूँ मुझे पढ़ाने का अनुभव नहीं है । मैं 102 रैंक बेच रहा ।

मैं ब्राइट कोचिंग गया । किसी तरह उस दिन की क्लास ली, पर क्लास क्या लिया सिफ़र समय बिताया । मैंने क्लास लेने के पहले ही यह फ़ैसला कर लिया था यह मेरे जीवन की अंतिम क्लास होगी । मैं क्लास के बाद शोभनाथ मिश्रा के कमरे में गया और दरवाज़े के पास से ही कहा, "अब मैं नहीं पढ़ाऊँगा । बहुत- बहुत धन्यवाद अवसर देने के लिये" । मैं कमरे से निकल कर चल

दिया । वह मेरे पीछे चलते हुये रुको- रुको की आवाज़ देते रहे पर मैं सीढ़ियों से उतरकर साइकिल पर पैडल मार चुका था । मैंने अपना उस दिन के क्लास का दो सौ रुपया भी नहीं लिया । मैं अपनी सफलता बेंच रहा यह बात मेरे अंदर तक समा गई थी । मैं घर आया और माँ से कहा कि यह पढ़ाने का काम बंद कर दिया है मैंने । मैं “ना” कह आया ब्राइट कोचिंग से । यह पढ़ाने का काम खत्म हुआ अब मेरा । शाम को पिताजी आये वह मेरे एक फैसले से खुश थे और एक से नाराज । वह बोले कोई परिपक्वता नहीं है । ब्राइट कोचिंग में पढ़ाना चाहिये था , उससे क्या नाराज़गी । यह अपनी कोचिंग न चलाने का फैसला ठीक है ।

मैं बहुत दुखी था । मेरे मन में बद्री सर की पंक्तियाँ धूम रहीं थीं ।

मैंने दाढ़ू से कहा चलो कल सुबह गाँव चलते हैं । दिन भर मैं गाँव से आ जाएँगे । मैंने माँ से कहा , गाँव हो आता हूँ । माँ ने कहा एकाएक कैसे प्लान बना । मैंने कहा मेरी चाची , मेरे पिता के पक्ष वाले गरीब लोग हैं । वह आ नहीं सकते । मुझे ही हो आना चाहिये । जैसे सबका हक है मुझ पर वैसे ही उनका भी है । मैं सुबह पाँच बजे उठा दाढ़ू को जगाया और कहा सात बजे तक चल देते हैं ।

माँ मेरे अंदर की मुंतशिर धड़कनों को महसूस कर गई । वह दाढ़ू से बोली सम्बाल कर जाना , ध्यान रखना इसका । यह बहुत दुखी है ।

मेरी ओर दाढ़ू की साइकिल जमुना पुल पार करके नैनी - रामपुर - करछना होते हुये गाँव की ओर चल दी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 138

मैंने जैसे ही मिट्टो पार्क से यमुना नदी को देखा मेरी सारी यादें ताज़ा हो गईं । जब मैं छोटा था तब कार्तिक माह में कई बार माँ के साथ सुबह यमुना स्नान को आता था । माँ मनकामेश्वर मंदिर पर दर्शन करने आती थी , मैं भी साथ आता था । मैं किशोरावस्था में यहीं सरस्वती घाट पर तैरने आता था । जब मैं पहली बार सरस्वती घाट पर आया था तैरने तब देखा पूरे यमुना में डालडा के डिब्बे ही डिब्बे तैर रहे थे । मुझे पता लगा कि इन डालडा के डिब्बों से तैरना सिखाया जाता है । यह विश्व भर में अकेला शहर है जहाँ पर इस तरह तैरना

सिखाया जाता है । यहाँ तैरना सीखने के लिये सीधे जमुना में कूद जाओ । जो लोग गाँव की पृष्ठभूमि रखते हैं वह तो गाँव के तालाबों का सहारा लेते थे पर शहर वाले गऊ घाट और सरस्वती घाट से सीधे यमुना से ही काम शुरू करते थे । शहर में तैराकी सीखने - सिखाने की इसके अलावा कोई ख़ास सुविधा न थी । एकाध- दो सुविधा थी भी तो वह सर्वसुलभ न थी और एक बड़ी संख्या के लिये अपर्याप्त थी ।

बहुत सीधा सिद्धांत था । दो पाँच किलो का डालडा का डिब्बा लो । उसको रस्सी से बाँध दो । उस रस्सी को कमर से बाँध लो और डिब्बों के सहारे फ्लोट करो ।

एक सीनियर तैराक जिसको सिखाने का कोई व्यावसायिक अनुभव नहीं है बस वह सिखा रहा साल दर साल ऐसे तैरना । इन सिखाने वालों में ज्यादातर मल्लाह हुआ करते थे । जगन्नाथ मल्लाह का इस सिखाने की विधा में काफ़ी नाम था , वह गऊघाट पर सिखाया करता था । जब मैं सरस्वती घाट आता था तब नई उम्र के कई मल्लाह के बच्चे इस काम में दक्षता प्राप्त करने का दावा करते थे । वह सब तैराकी सीखने वालों को लेकर गहरी जमुना में घुस जाते थे जैसे कान्हा कालिया मर्दन करने घुसे थे जमुना में ।

एक बात मैंने देखी थी ज्यादातर डालडा के डिब्बे के सहारे तैरना सीख ही लेते थे । न केवल सीख लेते थे वरन् कई यमुना को पार भी कर लेते थे । यही नहीं उसमें कुछ उत्साही सरस्वती घाट से पुराने जमुना पुल के लंगड़ी कोठी तक जाएगा । और एकाध तो सरस्वती घाट से संगम तक की लंबी अथक जल यात्रा के लिये प्रस्थान कर जाया करते थे । उसमें से ही कुछ अगले साल कोच बन जाएँगे । वही कहेंगे अगले साल के तैराकी सीखने वालों से , “ले आओ पाँच किलो का दो डब्बा और एक रस्सी कूद जाओ विशाल जमुना की गहराइयों में” । ऐसा तैराकी सिखाते कहीं न देखा न सुना । यही तो इलाहाबाद है भैया , जो कहीं नहीं होता वह यहाँ होता है । यह भी लोग कहते हैं कि इन्द्र पुत्र जयंत समुद्र मंथन के बाद अमृत आकाश मार्ग से लेकर जा रहा था । वह अमृत छलका न था परयाग वासियों ने ढेला मारकर गिरा लिया था कुंभ से ।

क्या नायाब तरीका है जमुना का किनारा , उफनती नदी की बहती धारा , लंबा पाट , अपरशिक्षित सिखाने वाले , दो डालने का डिब्बा , एक रस्सी और कूद जाओ गहराइयों में ।

मैं भी जब तैरने आया यहाँ तब यमुना को पार करने लगा । मैं गाँव में ही सिद्धहस्त तैराक हो गया था । मैं नौ - दस साल की उम्र में ही गाँव की ग़ड़ही पार करने लगा था । बरसात में जब दो पास-पास की ग़ड़हियाँ एक हो जाती थीं तब भी मैं पार कर लेता था । मैं शायद सबसे कम उम्र का बच्चा रहा होऊँगा ग़ड़ही पार करने वाला , पर मुझे व्यावसायिक तैराकी की तरह की दक्षता नहीं मिली क्योंकि कोई कोच तो कभी मिला नहीं बस तैरने का स्टेमिना विकसित हुआ और मैं सारा दिन भाग- भाग कर गाँव के तालाब में तैरता रहता था और मेरी माँ मेरे लाल आँखों से पकड़ लेती थी कि यह पानी में तैर कर आया है ।

मैं जब यमुना में तैरने लगा तब एक पाट से दूसरे किनारे के पाट की ओर जाना तो प्रति दिन का काम था । इसके बाद सरस्वती धाट से यमुना पुल गया और फिर सरस्वती धाट से संगम । इन तीनों में सबसे रोमांचक हुआ करता था सरस्वती धाट से संगम । जब यमुना से गंगा में प्रवेश होता था उस समय दो नदियों के धारा के बीच का संघर्ष और एक धारा से दूसरी धारा में प्रवेश बहुत ही रोमांचक होता था । मुझे सारे जीवन मज़ा रोमांच में ही आया । मैंने जीवन में आने वाली चुनौतियों को एक अवसर के रूप में देखा इसलिये मुझे भय कम हुआ रोमांच ज्यादा हुआ । मैंने यमुना पुल पार किया , नैनी जेल , नैनी , डेज़ मेडिकल , गहदइया होता हुआ उस बोर्ड को देखता हुआ जिस पर लिखा था , “करछना थाना सीमा क्षेत्र में आपका स्वागत है ” , ठाकुर बरज मंगल सिंह इंटर कालेज रामपुर पहुँचा । यहाँ मेरे मामा के एकाध लड़के पढ़ें थे । मेरे मामा का घर भी रामपुर के पास पड़ता था । मैं रामपुर से मदन मोहन मालवीय कालेज पहुँचा । वहाँ मैंने साइकिल रोक दी । यहीं मेरे पिताजी पढ़े थे और इंटर की परीक्षा में प्रथम आये थे और बहुत नाम कमाया था । मेरे बाबा सूर्य शर्मा का एक अध्यापक के तौर पर बहुत नाम था और यह उनके क्राबिल बेटे थे पर जीवन में ईश्वर ने संघर्ष लिखा था इसलिये सारी क्राबिलियत के बावजूद भी वह ईश्वर से एक अति सामान्य जीवन का ही आशीर्वाद पा सके । मैंने साइकिल को कालेज के अंदर घुमाया । पूरे कालेज का एक चक्कर लगाया और मैं उस बीते वक्त को महसूस करने की कोशिश करने लगा जब मेरे पिताजी यहाँ पढ़ा करते रहे होंगे । पीले रंग से पोती हुई बिल्डिंग कमरे दूर-दूर बने हुये पीछे बड़ा मैदान पूरे परिसर में आम के पेड़ एक सम्पूर्ण शांति । हम और दादू साइकिल मोड़ कर आगे बढ़े करछना तहसील और करछना थाना आमने सामने ही था । दादू अपने चक्कर में लग गया । वह बोला कि एसडीएम से मिल लो । मैंने कहा , क्या करना एसडीएम का । वह बोला पिछली बार आये थे तो ज़िक्र हुआ था । हमने कहा लौटते वक्त देखते हैं , अभी गाँव चलो । पूरी तहसील काले कोट धारी वकीलों और गरीब किसानों से भरी थी । आज बुधवार का दिन था और आज के दिन एसडीएम की कोर्ट लगती थी । तहसील के अंदर वकील गरीब किसानों से अपनी फ़ीस

वसूल करते हुये दिखे । किसान कह रहे, “ माई - बाप हम ऐतन न देई पाउब
“ पर वकील लगे हैं, “ जो हींच सकै जो हींच “ ।

मैं साइकिल बहुत ही धीमें चला रहा था , मैं इन पलों को शिव्वत से जीना
चाहता था । इक्के वाले दिखे जो कुछ गाँवों में सवारियाँ ले जाते थे । इक्के
पर सवारी इतनी बैठा लेते थे कि बेचारे घोड़े को बहुत परिश्रम करना पड़ता
था । हम लोग सड़क से नहर पर उतर गये चमरौटी , अहिरान , पसियान
होते हुये गाँव में प्रवेश किया ।

हर गाँव की संरचना तक़रीबन एक सी ही होती है । जाति के हिसाब से टोले
बने होते हैं । एक जाति के लोग एक ही टोले में रहते हैं । इसी आधार पर गाँव
के अलग- अलग पूरे का नामकरण हो जाता है । जातियों के आधार पर
प्रायः गाँव के अलग- अलग टोलों का नामकरण होना शायद भारत के
ग्रामीण संरचना की एक विशिष्टता ऐसी है ।

मेरे गाँव में घुसते ही लोगों ने दूर से ही पहचान लिया । दाढ़ भी बहुत आता
था मेरे बाबा से पढ़ने के लिये इसलिये उसको भी सब जानते ही थे । वह
जोकर मार्का था इसलिये उससे लोग खुश भी रहते थे । वह अपने छोटे चाचा
के तर्ज पर दूसरे के खेत की ऊख उखाड़कर चूस लेता था । चने के खेत से
चना चुराकर होरहा बनाने में तो मास्टर था । जैसे ही मैं गाँव घुसा , हर ओर
लोग कहने लगे , “मुन्ना भैया आई गयेन “ । मेरे मकान के सामने एक महिला
को सब लोग मियाइन कहा करते थे । उसके पति को मिया कहते थे । वह
सबसे पहले आई । वह कुछ दौड़ते हुये अपने एक बच्चे को गोद में लिये हुये
आई । आते ही उसने कहा , “ भैया सुना ह तू शहर कोतवाल होई ग हये ।
हम जब से सुना तब से तोहरे चाची से कहे हई भैया अझहिं तब हमहूँ देखब ।
बहुत दिन होई गवा देखे । “ एक हाजी जी गाँव में थे । वह हज करके आये थे
इसलिये उनका नाम हाजी जी पड़ा था । वह बहुत वृद्ध थे । वह बोले , “मुन्ना
भैया आई गयेन एनका देख लिहा एक हज हमार और होई गवा “ । मेरी एक
अलग छवि गाँव में रिझल्ट के बाद बन गई थी । इन निरीह लोगों को ईश्वर ने
ख्वाबों को सहेजने का एक सहारा दे दिया था ।

मैंने चाची के पैर छुये और उसके घर की तरफ़ देखा । गरीबी आकंठ व्याप्त
थी । घर कच्चा था और कमरे भी ज्यादा न थे , धोती फटी थीं ब्लाउज़ पहना
ही नहीं था । उसको धोती से ढँका था । मैंने देखा कि यही हाल अधिकांश
महिलाओं का था । जब ब्लाउज़ ही नहीं है तब बाक़ी और अंतरंग परिधान पर
क्या कहा जाए । मिट्टी के अधिकांश घर थे । मेरी माँ ने दो कमरा बनवाया
था और उसमें ताला बंद रखती थी वह । उन कमरों में भी प्लास्टर न था ।
यह दो कमरा भी मेरी जानकारी में बना था उस समय मैं कक्षा आठ में था ।

उसके पहले हम सारे भाई- बहन गर्मी की छुटियों में कच्चे मकान में रहते थे
/ कच्चे मकान से ज्यादा बेहतर है कहना हम खुले आसमान के नीचे रहते थे
/

हम लोग खाना खाने ही जाते थे खपरैल की छत के नीचे नहीं तो सारा समय आसमान के ही नीचे रहते थे / घर के बाहर की जो दुआर होती थी वहीं खटिया बिछाई जाती थी और वहीं पर सारे बच्चे रात में सो जाते थे / यहीं पर मुझे बिच्छु ने काटा था जब मैं कक्षा 9 में पढ़ता था और बिच्छु का ज़हर गाँव में मन्त्र से किसी ने उतारा था / हम लोग सुबह होते ही बाग की तरफ चले जाते थे और जीवन बाग - घर के बीच दौड़ने में ही बीतता था / धीरे - धीरे गाँव के लोग इकट्ठे होने लग गए / गाँव में कितना भी अच्छा नाम रखो वह बिगड़ ही जाएगा / लखन- लुखुनिया , कल्लू- कल्लुवा , विकरम- विकरमा, सिपाही - सिपहिया , मोती - मोतिया , हज़ारी - हजरिया / कुछ नाम तो पड़ते ही अलग हैं - घुरहवा , मेटिया , बुधुआ .. यह नाम विशिष्ट तरीके से रखे जाते हैं / मेरा नाम भी यहीं बिगड़ा था / मुन्ना से मुन्नवा हो गया था / मुझे बचपन की एक- एक घटना याद है / मेरे बाबा सोंटा रखते थे / सबसे ज्यादा मार दाढ़ू खाता था / मुझे बाबा की मार अपेक्षाकृत कम पड़ी / मैं उस परिवेश का एक जहीन लड़का था ।

मुझे अपने तैराकी सीखने की घटना पूरी तरह याद है / गाँव के नहर में एक तरह का कीड़ा तैरा करता था / लोग कहते थे अगर वह कीड़ा खा लो तब तैराकी जल्दी आ जाती है / मैं वह कीड़ा पी जाता था / अंजुली में पानी लेकर उसमें कीड़ा तैरा कर साबुत पी जाता था / उन कीड़ों की जनसंख्या हम लोगों ने कम कर दी होगी / जहाँ दिखा नहर में कूद कर पानी के साथ पी गये / तैराकी सिखाने के लिये कोई होता तो था नहीं / गाँव में तीन तालाब थे जिसको गड़ही कहते थे उसी में कूद कर सीख गये / भैंस की पूँछ पकड़कर गड़ही पार करने की कोशिश करते थे / भैंस पानी में अंदर चली गई तब तो गये काम से / इनदर आया और बोला , “ मुन्ना भैया याद बा । तू भैंस के पूँछ पकड़ के गड़ही पार करत रहअ । भैंस डुबकी लगायी लेहे रही , हमहिं बचाये रहे । ”

मैंने कहा , खूब याद है / अगर न बचाया होता तब तो आज यह दिन नसीब न होता ।

गोरु चराना एक मुख्य काम होता था / हम लोग जानवर लेकर बाग- बगीचे की तरफ चले जाते थे / सारे दिन जानवर चराई करते थे और हम लोग सायंकाल गोधूलि की बेला में लेकर वापस आते थे / मेरी माँ कहती थी पहले सुबह पढ़ लो तब जाओ / घर में जमुना पाँच पौवा वाला एक घर का मजदूर था / वह परिवार के सदस्य ऐसा था और जाति का पासी था / उसको

मज़दूरी के नाम पर पाँच पौवा मतलब एक किलो दो सौ पचास ग्राम अनाज प्रति दिन मिलता था । यही उसकी पूरी आमदनी होती थी परिवार पालने की । यह पूरा परिवार इस आमदनी के सहारे ही था और पेट भर भोजन यदाकदा ही नसीब होता था । वह खेती- बाड़ी में मदद करता था । हज़ारी उसका बेटा था वह जानवर लेकर सुबह चल देता था और उसकी बहन अपना सुअर लेकर चल देती थी । हम लोग भी साथ चल देते थे । भैंस पर बैठना सबसे प्रिय कार्य था । भैंस पर बैठकर घूमने में देवत्व का अहसास होता था । मेर गाँव का दो कमरा जब माँ बनवा रही थी उस समय बरसात के कारण सड़क बहुत ख़राब हो गई थी । इसलिये ईंटा चमरौटी में उतार दिया था ट्रक वाले ने । ईंटा वहाँ से ऊँट पर लादकर लाया गया । मैंने ऊँट की सवारी बहुत की । सारा ईंटा ऊँट पर लाया गया था और सारा दिन मैंने वहाँ ऊँट की सवारी की । पयागे का ऊँट था । उसने मुझे याद दिलाया कि , ”भैया याद बा न ऊँट के सवारी । कुल ईंटा तुहिन लियाये रहअ हमरे संगे । “
मैंने कहा , हाँ सब याद बा ।

पयागे - “भैया हमार जीवन कटि गवा बा , हमरे बाल - बच्चन के ख्याल राखअ । हमें तोहरै सहारा बा । भगवान दयावान रहा तोहका हमरे बरे भेज देहेस “ ।

बाबूजीवा आया , वह बहुत कमज़ोर हो गया था । वह भी मेरा ही हम उम्र रहा होगा या एकाध साल कम ।

मैं - “ का भवा बाबूजी । इतना कमज़ोर कैसे ? “

बाबूजीवा- “ भैया ठीक से सोये सालन होई ग होये “

मैं - “ क्या हुआ ? “

बाबूजीवा - “ ई पूर पीठ पिरात रहत हअ हरदम । “

मैं - “ डाक्टर को दिखाओ । ”

बाबूजीवा- “ भैया तहसील में देखावा । कहत हएन शहर जा सीटी स्कैन करावअ । अब हमरे पास ताक़त नाहीं बा । “

मैं - “ ज़िंदगी कैसे चलती है ? “

बाबूजीवा- “ भैया इ न पूछअ अब । बस जियत हई । “

मेरी हिम्मत ही न पड़ी उसके आगे के दुःख को सुनने की ।

घुरहवा आया । वह घूर पर पैदा हुआ था । वह जब जन्म लेने वाला था उसकी माँ खेतों में काम कर रही थी । परस्व पीड़ा हुई । उसको घर लाने की

कोशिश की गई पर वह उसी खेत के पास के घूर पर जन्म ले गया । अब इससे बेहतर नाम किसी का क्या हो सकता था । नामकरण ही हो गया घुरहवा । वह बहुत तेज था “सुटेरा” खेलने में । मेरे बारे में एक अफ़वाह फैल गई थी कि इनको फ़ाइटिंग आती है । यह अफ़वाह फैलाने में मेरा ही हाथ था । फ़ाइटिंग में मैं मारते समय मुँह से आवाज़ निकालता था । यही घुरहवा पकड़ लिया था कि आवाज़ मुँह से निकाल कर बैवजह डराया जा रहा है । मैंने पेड़ पर चढ़ना यहीं सीखा था । मेरे गाँव का कोई पेड़ न बचा था जो मैं न चढ़ा होऊँगा । एक पेड़ था संरगहवा वह एक सीधा पेड़ था डालियाँ कम थीं नीचे की तरफ़ । उस पर चढ़ने के लिये सीखने में थोड़ा वक्त लगा था । मैं और कल्लू रोज़ प्रयास करते थे । अब प्रयास विफलता को प्राप्त हो जाए, यह कैसे संभव है । हम दोनों चढ़ तो गये पर उतरना नहीं आता था । कई घंटे परेशान रहे फिर उतरने की कोशिश में फिसल कर गिर गये पर ईश्वर दयालु था कोई ख़ास चोट न लगी । सारे आम के पेड़ों का बाक़ायदा नाम था - तिलरा, गूलरा, केड़ा, मतखोपड़िया, दगलहवा, किरहवा, सिंधूरिहवा । सारे पेड़ों के नाम उस पेड़ के आम के गुण को देखकर रखे गये हैं । मेरे ही नहीं वरन् गाँव के सारे आम के पेड़ों के नाम हुआ करते थे । एक ख़ास बात मैंने यह देखी कि यह नामकरण आम के ही पेड़ों का होता था बाक़ी फलों के वृक्ष का नहीं ।

मेरे ही सामने साइकिल से राम मनोहर पांडे जा रहा था वह मुझे देखकर रुक गया । वह पड़ोस के गाँव के पंडित जी का बेटा था । उसके परिवार को कभी मेरे पूर्वजों ने आम का एक पेड़ दान में दिया था और उस पेड़ का नाम संकल्पहवा था । हम लोगों की पीढ़ी के आते-आते यह कह दिया गया था कि पेड़ संकल्प हुआ ही नहीं था । उस पेड़ के फल को लेकर दोनों परिवारों में संघर्ष हो गया था । अब यह संघर्ष बच्चों के बीच होना ही था और न भी हो रहा हो तब भी मुझे करना ही था । इसने मेरे छोटे भाई को अकेले पाकर कभी पीट दिया था । मौक़ा पाकर मैंने दाढ़ू ने मिलकर इसको बलभर मारा था और मारने के बाद कहा कि इसको नहर में डुबो कर मार डालते हैं आज । उसको घसीट कर नहर तक लेकर आये डुबोने के लिये पर वह शरीर से मोटा था उसको घसीटने में हम लोग थक गए । वह मौक़ा पाकर छुड़ाकर भाग गया । हम लोग दौड़ाये पर वह पकड़ में न आया । दाढ़ू पीछे से चिल्ला कर बोला, “तोहार मौत हमरेन हाथे लिखी बा । तोहका इहीं नहर में गाड़ी के मारब ॥” वह रोता हुआ घर गया और उसकी माँ, उसके चाचा - चाची सब शिकायत लेकर आए । पर शिकायत असर कम हुआ क्योंकि माँ ने ही कहा था मारने को क्योंकि उसने मेरे भाई को मारा था । मैंने माँ से शौर्य गान भी किया था मारने के बाद यह कहकर, “बलभर मारा उसको ॥” मेरा छोटा भाई काफी छोटा था पर मैंने राम मनोहर को पकड़कर उससे भी पिटवाया, यह कहकर जितना चाँटा इसने मारा था उससे एक ज्यादा तुम मारो । मेरी माँ चौंक गई

यह सुनकर कि मैं नहर में उसको डुबोने जा रहा था । मैंने कह दिया यह झूठ बोल रहा । पर वह इतना डर गया था कि मुझको देखते ही सरपट अपने गाँव की तरफ भाग जाता था । मैं चिल्ला कर कहता था , “ भाग ले - भाग ले जितना भागना है मौत त हमरेन हाथ लिखी बा ” ।

वह मेरा पैर छुआ और बोला , ” मुन्ना भैया हमार मौत नाहीं ज़िंदगी तोहरे हाथ लिखी बा ” । मैंने दाढ़ की तरफ देखा कहा , “ याद बा ? ”

दाढ़ - “ भैया इ ससुरा बहुत मोट रहा । तनिक पतला रहा होत तब ओह दिना नहरें में डुबोई देहे होइत । ”

वह हँसने लगा और कहा , “ अगर मुन्ना भैया हम पराई न ग होइत तब का सही में हमका डुबोई देहे होतअ ? ”

मैं - राम मनोहर उ बचपन की बात है । वह अलग समय था ।

राम मनोहर - “ भैया हम अपने गदेलन के लै के आवत हई ज़रा आशीर्वाद दै द । हम कुल क्रिस्सा सुनाये हई आपन- तोहार । एक बार चरण- रज मिल जाए ओऊ सब तरि ज़इहिं ” ।

वह चला गया साइकिल तेज चलाते हुये अपने बच्चों को लाने ।

कल्लुवा बचपन में अपने पिता से मार खा कर भाग गया था । वह मेरे साथ बहुत रहता था । जब वह भाग गया था हम लोग आस-पास के गाँव में बहुत खोजे पर वह न मिला । किसी ने बताया कि वह किसी साधु के साथ चला गया । हम लोग हर साधु को शक भरी निगाह से देखते थे । मैंने उसकी माँ से पूछा , “ वह लौट कर आया ? ” उसकी माँ दुःखी होकर बोली , “ पाला पोसा बेटवा नसीब में नाहीं रहा भैया ” ।

मेरे साथ सबसे ज्यादा मोती रहता था । वह मेरा हम उम्र ही रहा होगा पर बूढ़ा लगने लगा था । वह ईंट के भट्टे पर मज़दूरी करता था । उसे देखकर मुझे बचपन की याद और आने लगी जब सुबह-सुबह जाता था इससे कहने चलो गोरु चराने चलना है । हम लोग अपने-अपने जानवर लेकर चल देते थे ।

मैं रज़इया पर जामुन तोड़ने जाता था , वह मेरे घर से क़रीब तीन मील होगा । हम लोग सुबह ही चल देते थे सारे बच्चे । मेरी चचेरी बहनें और पड़ोस के

नाऊं की बेटी इसरावती भी साथ जाती थी । इसरावती बोली , “भैया केतना अच्छा समय रहा हम सब जात रहे । भैया चाची अबौ तोहका बागड़ बिल्ला कहत हई ।” मेरी माँ मुझे बागड़ बिल्ला कहती थी और फिर मेरी चचेरी बहन सुशीला भी कहने लगी थी । मैंने कहा तुम्हारी चाची में कोई फ़र्क आ सकता है क्या? मेरी माँ ने जिसको बहुत मारा था बाँस से जब वह अपनी पत्नी को पीट रहा था वह भी खड़ा था मैंने कहा , ” इससर इनसे पूछों इनको ज्यादा पता है माँ का ।” इससर बोली , “ चाची के ऊ काम के बाद सारे लोग डेराई ग रहेन । “

पास के ईंट के भट्टे पर मेरे साथ खेलने वाले अधिकांश लोग काम करते थे - लुखुनी , विकरमा , शोभई , कलुआ , मोती ... । भट्टा वाला पैसा समय पर न देता था । बेगार भी कराता था । लुखुनी ने शिकायत की । मैंने पूछा क्यों नहीं देता ? विकरमा ने कहा , “ भैया हम का कही आप पूछ लेतेन एक बार । हमार हमेसा कुछ पैसा दबाये रहत हअ । पूर पैसा कबूँ नाहीं देत ह । “

पूरे गाँव की एक खाहिश हमरे गदेल के कतौ लगाय द । गरीबी का संपूर्ण राज्य हर ओर । कमर के ऊपर वस्त्र बच्चों में तो किसी के पास न था । महिलाओं के पास ब्लाउज़ न था । ज्यादातर पुरुष लुंगी टाइप ही पहने थे । ठीकेदार थोड़ी देर में आ गया । मैंने कहा कि इनका पैसा क्यों नहीं देते ? लोगों ने कहा तिथि- त्योहार पर भी हैरानी रहती है । गाँव में सारे ठीकेदार कुछ दिन का पैसा दबाये रखते हैं ताकि लोग बँधुआ मज़दूर की तरह काम करते रहें । दादू ने कहा , “ भैया दरोगा से अबहिं चलत समय कहि देहअ एनका थाने में बंद कै दे तब दिमाग़ सही होइ जाए । “

ठीकेदार डर गया बोला भैया हम हिसाब काल तक सबके कै देब । दादू बोला , “ कालि के मतलब कालि । अगर कालि न केहे और शिकायत मिली त जेल के चक्की पीसबअ “ ।

मुझे जीवन का अहसास पहली बार हुआ । मैं अपना वह जीवन भूल गया था जो यहाँ मैंने बिताया था । मैंने ऐसी गरीबी का प्रत्यक्ष रूप से पहली बार शायद अनुभव किया । मैं बचपन में जब आता था तब ऐसी संवेदनशीलता न थी , मेरे पास । एक असहायता का बोध होने लगा । इतनी उम्मीदें मुझसे ? मैं इस इलाके का पहला आदमी था जो यहाँ तक पहुँचा । एक उम्मीद ऐसी बनी है लोगों में कि मुझे उनकी उम्मीदों से डर लगने लगा । यह उम्मीद तो पूरी हो नहीं सकती । मेरी चाची रोने लगी । उसने मेरी माँ से भी बहुत ही बदतर जीवन देखा था । मेरे पिताजी तीन भाई थे । मेरे पिता जी और मेरे दादा हम उम्र थे । दोनों की उम्र में 16 महीने का फ़र्क था । और बचपन में एक ही क्लास में पढ़ते थे । मेरे चाचा आठ साल छोटे थे । बीच में दो बुआ थीं

जिनको बस किसी तरह किसी के साथ विदा कर दो , इसी प्राथमिकता के तहत विवाह किया गया ।

मेरे पिताजी का दिमाग तीक्ष्ण था । मेरे दादा पढ़ने में कमज़ोर थे तुलनात्मक रूप से पर ख़राब न थे । अब 64 रूपये महीने की तनख्वाह , खेत ज्यादा था नहीं और जो था भी उसके एक भाग पर दबंग ठाकुरों का क़ब्ज़ा था , पाँच बच्चे उसमें दो लड़कियों का विवाह । इन परिस्थितियों में एक बच्चा ही पढ़ ले यही बहुत है । मेरे पिताजी को अवसर मिला , बाकी सब घर ही रहे । मेरी चाची मेरे बाबा से शिकायत करती थी और कहा करती थी , “ केहौ मोती केहे , केहौ धोंधा केहे केहो झौआ तले दबाय देहे ” । मुझे बात में पता चला कि वह मोती पिता जी को , धोंधा दादा जी को , झौआ तले अपने पति के लिये कहती थी । वह रोने लगी और कहा , “ मुन्ना हमका जिंदगी में कुछ नाहीं मिला तन भर कपड़ौ नाहीं मिला , पेट भर खानौं हर समय नाहीं मिला । ”

मैं गरीबी - असहायता - लाचारी देखकर इतना दरवित हो चुका था कि चाची के रोते ही बहुत कोशिश करके भी अपने को रोक न सका और मेरी आँखों से आँसू गिरने लगे ।

मेरे साथ पता नहीं कितने आँसू बह निकले ।

मेरा ईश्वर की बनायी व्यवस्था से विश्वास उठने लग गया । उनकी ज़रूरतें सिर्फ़ दो वक्त की रोटी और तन ढँकने का कपड़ा, इसके सिवाय और क्या है । यह भी नहीं मिलता । मेरे पिताजी ने कभी कहा था जब मेरी माँ विरोध करती थी कि घर को मदद न करो ,

“ मैं उनको मरते हुये नहीं देख सकता । मुझे उनके हक्क को मारकर पाला गया है । मुझे रात में नींद नहीं आती है जब यह ख़याल आता है कि वह सोलह रूपये मुझे दे देने के बाद सिर्फ़ 48 रूपये बचते थे और वह जीवन के लिये अपर्याप्त हुआ करता था ” । मेरे पिताजी के पास कितना बड़ा जीवन बोध था , इसका भी मुझे अहसास होने लगा ।

मेरी चाची को हिचकियाँ आने लगी । वह मुझसे उम्मीद लगाए बैठी थी । मैं अपने को असहाय महसूस कर रहा था । इतनी ख़्वाहिशों और उम्मीदों का बोझ मेरे ऊपर । कल जब ख़बाब टूटेंगे तब क्या होगा ?

मेरे चेहरे पर आँसुओं का एक तर्जुमा बन गया । मुझे यह अहसास हो गया , मुझे एक ख़्वाहिशों के बोझ तले ताउमर रहना होगा , एक अधूरी न पूरा हो पाने वाली ख़्वाहिशों का बोझ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 139

राम मनोहर पांडे अपने बेटे को लेकर आ गया । राम मनोहर मुझसे थोड़ा ही बड़ा रहा होगा पर गाँव में एक बड़ी समस्या समय पूर्व विवाह की है । 16 साल का लड़का या लड़की हुई नहीं कि विवाह का भूत सवार हो गया बड़े-बुजुर्गों के सिर पर । लड़कियों के लिये कहा जाता है, “ कब करबअ बियाह जब बिटिया डरवार डाकै लागै तब ”?

दादी सबसे बड़ी डरामेबाज होती हैं । वह सुबह- शाम एक ही रट चालू कर देंगी,

“हम नाती के बियाह देख के जाई चाहत हई । बगैर बियाह देखें हमें न जलायअ । एकाध पन्ती देख लेइत त जिउ जुड़ाई जात । सुनत हअ , अबकी जौन देखुआर आई जाएँ बियाह जेठ उतरतै कै द । हमरे भाई के ससुरारी के सुषमवा बहुत नीक बा , जोड़ी बढ़िया बा , दहेजौ बरे बम्बई जाई के रूपिया कमान हएँ उहीं कै दअ ” । यह नाटक बूढ़ी माँ का चालू हो जाएगा और अठारह पूरा होने के पहले विवाह - गौना , उन्नीस ख़त्म होते बच्चा पर उनके मरने का कोई दूर- दूर तक अता- पता ही नहीं । विवाह के पहले तो ऐसा लगेगा कि यह कल ही चल देंगी मनैया घाट की तरफ पर बच्चा पैदा होगा , वह प्राइमरी स्कूल जाने लगेगा पर कहाँ उनको जाना है ऊपर । मोह - माया ऐसी व्याप्त है उनके अंदर कि ईश्वर भी कह रहे यमराज से , “ भाई रहन दो उनको वहीं , बेवजह मोह - माया वालों की भीड़ मत इकट्ठा करो यहाँ पर ।

यही माहौल राम मनोहर पांडे के यहाँ था । वह सत्रह साल के भी न हुये कि विवाह हो गया । अठारहवें साल की दहलीज को बस छुआ ही था कि गौना । अब कोई आसान चीज़ तो यह थे नहीं । जजमानी के यहाँ के संतान थे । कई गाँव में जजमानी थी । दान में में प्राप्त अन्न में बहुत ताक़त होती है , दे मारे धरती को दो पुत्र बीस साल पूरा होते ही । उनका बड़ा लड़का 6 -7 साल का होगा जिसको लेकर वह आये थे । उससे मेरा पैर छूने को कहा और मुझसे कहा , “ भैया आशीर्वाद द आपके तरह का चक्रवर्ती और यशवान होई । भैया भगवान दिमाग देहे हएन बस चित्त लगि जाए पढ़ै में ” ।

मैं कुछ बोलूँ । उसके पहले दादू बोला , भैया इसका जन्म हमारी गलती से हुआ ।

मैं - “वह कैसे ?”

दादू - “ हमसे कोताही होई गई । जब एनका पकड़ि के लिवायत रहे नहरें में डुबोई के मारे बरे । ए रहेन लुंगी बनियान में । तू पकड़े रहअ बनियान हम पकड़े रहे लुंगी और घसीट के लै आई रहे दगलहवा पेड़े तक । बस थोड़िकै फासिला रहि ग रहा एनके जिंदगी अउर मौत के बीच । ई बहुत मोटि होई गवा रहा , मुफ्त के दक्षिणा के अन्न खाई के । हम पचे रहे दुबर- पातर । इ नहरें के पास लुंगी उतार के सरपट भागा । हमरे हाथें रहि गई लुंगी तोहरे हाथे एकर फटी बनियान और ई जिउ छोड़कर परान । हम पचे खेदा एक पर इ हमका थकाई मारे रहा और भगाय ग । अगर एकर पटरा वाली जँधिया पकड़े होइत तब इ न भागि पाये होत । और उही दिना राम - नाम सत होई जात । भैया एक बात अउर कहब ई रहा बहुत डरपोक, पूरे रस्ता रहम के भीखै माँगत रहा । एकरै खूनै में दक्षिणा माँगब वास करत हआ ” ।

दादू के बात करने का अंदाज़ निराला होता था । सारा माहौल सामान्य हो गया और राम मनोहर भी हँसने लगा ।

मैंने कहा ज़रूर बेहतर करेगा । ईश्वर कल्याण करेगा । राम मनोहर बोला , “भैया हम चाहत हई हमरे बाद के पीढ़ी इ पंडिताई के काम न करे । अब ई काम में कौनो रस नाहीं रहि गवा । पहिलेव रूपिया तो नाहीं रही पर इज्जत रही । अब उहाँ नाहीं रहि गई ” ।

मैंने पूछा संकल्पहवा पेड़ का क्या हुआ जिसके कारण झगड़ा हुआ था । पता चला कि वह गिर गया था कभी आँधी में । मेरे समय के काफ़ी पेड़ आँधियों से गिर गये थे । किसी ने पेड़ों की सुरक्षा का प्रयास न किया । किसी को पता ही न था कैसे पेड़ों के गिरने से बचाया जाता है , अभी भी नहीं पता है । नये पेड़ लगाने की कोई दृष्टि ही न थी । जीवन जैसे भगवान भरोसे चल रहा है वैसा ही चलने दो । कोई नयी सोच न थी और न है । मैंने पूछा हरऊ, रजवा , रोहिता कहाँ है । यह पता चला वह सब बंबई में वाचमैनी का काम करते हैं । पड़ोस के गाँव के शिव मणि मिश्रा हैं वह वाचमैनी करने गये थे । अब वह वाचमैनी के ठीकेदार हो गये हैं । उनके पास लोग जाते हैं और डबल शिफ्ट में काम करते हैं । एक अमानवीय जीवन जी कर कुछ पैसा कमा लेते हैं अपने परिवार के लिये । पर असली अमीर शिव मणि मिश्रा हुये । वह 15- 20 प्रतिशत तनख्बाह का ले लेते हैं काम देने के लिये । उन्होंने गाँव में बड़ा बँगला बना लिया है । पिछले नव रातिर में वृहद शतचंडी यज्ञ किया जिसमें पानी की तरह पैसा बहाया गया और अब ब्लाकप्रमुखी का चुनाव लड़ने जा रहे ।

मैंने सामने का आँवले का पेड़ देखा जिस पर मैं पहली बार चढ़कर ऊँचाइयों की ओर गया था , उसके बाद तो मुझे ऊँचाइयों से इश्क हो गया । मुझे घर के बगल का परिवार के साझे का कटहल का पेड़ दिखा जिसमें से रात में मैंने कटहल तोड़कर भूसा में गाड़ दिया था कि यह जब पक जाएगा तब अकेले खाऊँगा पर मैं बाद में भूसे में उसको ढूँढ ही नहीं पाया था । मेरी माँ ने जब वह महकने लगा तब जाना कि यहाँ कटहल गड़ा है । मेरी बड़ी माँ पेड़ का कटहल गिन कर रखती थी जब सुबह एक कटहल कम दिखा तब उसने बहुत हल्ला किया और मैंने भी कहा था , इस गाँव में चोरी बढ़ गई है । जब चोरों के नाम पर क्रयास लग रहे थे तब मैंने भी कई नाम सुझाये थे चोरी करने वालों के । मेरी माँ महक के बाद समझ गई चोर कौन था पर बहुत हल्ला हो जाएगा अगर यह भेद खुल जाएगा इसलिये उसने मुझे अकेले में डॉट - समझाकर छोड़ दिया था । मेरी यादों का पिटारा खुल चुका था । मैं उस वक्त में लौट चुका था जब जीवन एक धीमी रफ्तार से चल रहा था और वह एक ज़मीन तैयार हो रही थी जहाँ पर मैं आज खड़ा हूँ । मेरे सर्जक अपना काम कर रहे थे और एक नियति लिखी जा रही थी । यह एक मामूली ही दास्तान है पर जिस परिवेश में मैं जन्मा- पला- पोसा वहाँ के लिये यह एक गैर मामूली दास्तान है । बहुत सी मिट्टियाँ चाक पर चढ़ाई जाती हैं पर हर मिट्टी के तकदीर में गणेश की मूर्ति नहीं होती । तकदीर मिट्टियों की भी होती है । मेरे सर्जक अपना काम पूरी शिफ्त से ज़रूर कर रहे थे पर तकदीर मेरी मिट्टी की भी थी इसके नसीब में गणेशत्व था ।

मैं एक बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति था । मैं गरीबी देखकर इतना दरवित हो गया कि मैं वह काम कर गया जिस पर मुझे अपनी माँ के कोप का शिकार होने की निश्चित संभावना थी पर यहाँ भावनाओं ने मुझ पर पूर्ण नियंत्रण किया हुआ था और जीवन के प्रश्न भावनायें हल करने का प्रयास कर रही थीं ।

मैंने गाँव का एक मात्र बगैर प्लास्टर का पक्का मकान खोला जो माँ ने पेट-तन काट कर बनाया था । मैंने अपने चाचा के लड़के को बुलाया और कहा कि अनाज ले जाओ । चाची बोली , “बहिन से पूछे हअ” । मैंने कहा “हाँ” । उन्होंने ही कहा कि दे देना ।

चाची - “ का कहिन ? कुलि दै देहे ? ”

मैं - “ हाँ ”

चाची - “ बहुत दयावान हई बहिन । इहै देखि के त भोलेनाथ लड़िका के साहब बनाई देहेन । ”

एक बोरी गेहूं उतना ही धान और एक बोरी से कुछ कम दाल था । चाची ले गई । मेरे पास 290 रुपया था कोचिंग का पढ़ाया हुआ । मैंने दाढ़ से कहा कि गाँव के बनिया के यहाँ गुड़ वाला सेव होगा, जितना हो खरीद लाओ बच्चों को खिला दो । दाढ़ ने वहीं से आवाज़ लगायी । बनिया की दुकान पास ही थी । वह बोला, “ भैया हम अवतर्झ रहे । ”

वह गुड़ वाला सेव ले आया पर ऊँट के मुँह में ज़ीरा था वह । इतने बच्चे थे कि वह कम पड़ गया । मैं चाची को सौ रुपया देकर सबको अभिवादन करके चल दिया ।

मैं जैसे ही आगे बढ़ा, दाढ़ बोला, “ बुआ मारि डाले । तू सब बाँट देहे और ओसे पूछबाँ ।

नाहीं कहे हअ । झूठ ऊपर से बोलि देहअ कि बुआ कहे बा दै दअ सब ।

मैं - “ क्या करता और ? देख रहे हो हालत । काश मैं भी कोई राजा होता, कुछ होता मेरे बस में इनके लिये करने को । जितनी विवशता इनकी है अपने लिये कुछ न कर पाने की उतनी ही मेरी है इनके लिये कुछ न कर पाने । हर और विवशता ही विवशता है इस कायनात में ।

दाढ़ - “ बुआ हल्ला न करे ? ”

मैं - “ उसका हल्ला एक छोटा मुद्दा है । अगर मैं कह देता उससे नहीं पूछा है तब कोई छूता ही नहीं । चोरों डरे, बग़ैर पूछे लेई बरे । ”

दाढ़ - “ जानि गई तब ? ”

मैं - “ कैसे जानेगी ? अब वह आयेगी तीन - चार महीने बाद । तब तक सब खा कर यह लोग बराबर कर देंगे । मैं चला जाऊँगा ट्रेनिंग पर । वह एकाध दिन हल्ला करेगी । कर लेने दो । तुम मत बता देना । ”

दाढ़ - “ हम मरि जाब पर उगलब न । हम तोहार सिपाही हई । ”

मैं - “ यह बताओ तुम हो किसके सिपाही । यह कहते तुम सबसे हो । ”

दाढ़ - “ असल में हम हई तोहार गुप्तचर । हम हर खेमा में जाइए थ तोहार गुप्तचर बनि के और इहै कहित ह कि हम तोहार सिपाही हई पर हम हई तोहार सिपाही । ”

मैं - “ सिपाही जी एका भूलि जा । जब दिक्कत आएगी तब देखेंगे । ”

दादू बोला , भैया हमरे गाँव होइ ल । हमरौ थोड़ा नक्शा - पानी होई जाए । मेरे मस्तिष्क में पहले से ही जाना था । मैं आंटी के मायके जाना चाहता था । मैं अगर उसके माइके से होकर आऊँगा और वहाँ की खबर दूँगा तब उस ज़ड़विहीन हो चुकी आत्मा को अच्छा लगेगा । मैंने कहा चलो चलते हैं । हम लोग करछना वापस पहुँचे दादू बोला कि एसडीएम से मिल लेते हैं । मैंने कहा तब तुम्हारे गाँव नहीं चल पाऊँगा । वह बोला अगली बार मिलते हैं । पर दादू की तक़दीर अच्छी थी । सामने से ही दरोगा बुलेट से आता दिख गया । दादू दरोगा साहब - दरोगा साहब कहकर रोका और बताया यही मुन्ना भैया हैं करछना वाले जो आईएएस हुये हैं । दरोगा उत्तर कर सेल्यूट मारा । मेरे जीवन में यह पहला सेल्यूट था जो किसी ने मारा था , मैं रोमांचित हो गया । मुझे नहीं पता था कि इसका कैसे जवाब दिया जाता है । दरोगा के सरेआम सड़क पर मारे सेल्यूट ने लोगों में उत्सुकता को जन्म दे ही देगा । मैं साइकिल से उतरा ही था कि एक सिपाही दौड़कर मेरी साइकिल पकड़ लिया । दादू बोला सिपाही जी ज़रा हवा चेक कराई लेहे साइकिल के । वह बोला “ जी सर ” । ल हमरेऊ के चेक कराई देहअ । सिपाही बोला , “ जी सर ” । सड़क की ही मिठाई की दुकान का बेंच तुरंत ख़ाली कर के पोंछ दिया गया ।

दरोगा -“साहेब , बैठें ।” मुझे पता चला रिझल्ट आने के अगले ही दिन एसडीएम साहब से । वह बतायें कि उनका कोई मित्र हैं जो एसडीएम बाराबंकी हैं , उनका हुआ है और उन्होंने ही बताया कि करछना के भी एक कोई अनुराग शर्मा उनका हुआ हैं । “

मेरे समझ में कुछ न आ रहा था । मैं कैसे जवाब दूँ । मैंने कहा कि अपने गाँव गया था ।

दरोगा - सर मैं यहाँ हूँ , मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताएँ ।

दादू - “ दरोगा साहेब , भैया गाँव ग रहेन । इनके गाँव में एक ईंटा भट्टा ठीकेदार बा । उ मजदूरी नाहीं देत् गरीबन के तनिक टाइट के देतअ । गाँव के नाम

दरोगा - “ साहब का गाँव का नाम पता है । वहाँ के ईंट भट्टा वाले और ठीकेदार को जानता हूँ साहब । ”

दादू - “ दरोगा साहब आजै टाइट के देहअ । ”

दरोगा - “ साहब अभी करता हूँ । ”

दरोगा ने आवाज़ दी और कहा कि नहर के आगे की बीट वाला सिपाही कहाँ है । पता चला कि वह गया हुआ है क्षेत्र में । दरोगा ने कहा एक हवलदार से कि जाओ नहर पार करके वहाँ के ईंट भट्टा के ठीकेदार को जीप पर बैठाकर ले आओ ।

दादू हवलदार ये बोला , “ साहेब एकाध थपरा गाँव में लगाइ देहअ । ”

हवलदार - “ जी साहब ” ।

हम लोग चाय पिये समोसा खाए और चल दिये साधु कुटी , करेहा , केशवरपुर होते हुये ननिहाल की ओर । मैंने कहा दादू यह दिमाग में कैसे आया ?

दादू - “ का भैया ”

मैं - “ दरोगा को गाँव का काम सौंप दो ” ।

दादू - “ अरे अब और कौन काम करिहिं अगर इ काम न करिहिं तब ” ।

वह अपने चक्कर में था । साइकिल चलाते- चलाते बोला , “ भैया ऐसन हमरो काम कराई द ” ।

मैं - “ कौन सा काम ” ?

दादू - “ हमार बारी वाला खेत जोतवाइ दअ ” ।

मैंने कहा ठीक है , दिमाग लगाता हूँ ।

दादू - “ कुंडली गुरु के लगाय द । काम होई जाए ” ।

मैं - “ क्या चाहते हो ” ?

दादू - “ हम खेत जोति लेब आपन मेहनताना खर्चा निकारि के चाचा के हम कुछ दैउ देब । पर ओ जिद केहें हयें कि बारी बाँटे के बाद जोते पहिले नाहीं । अब ओ बाबू के हिस्सा देवा नाहीं चाहत हएन । चार हिस्सा होई जाई एक हिस्सा बाप के तीन बेटवा के , पर ओ बाप के हिस्सा पर तैयार नाहीं होत हएन । अब त बबुउब जिद्दियाय ग हएन कि हम केहू के न देब । इ झगड़ा में बहुत नुकसान होतअ बा । तुहिन कहि दअ एक बार चाचा से , ऐह समय नस दबान बा , ओ तोहका नाराज़ करै के हैसियत में नाहीं हये ” ।

मैं - “ ठीक है । माँ से पूछता हूँ ” ।

उधर जीप मेरे गाँव पहुँची । हवलदार ने पकड़ा ठीकेदार को । दो- चार हाँथ सबके सामने लगाया । वह माई- बाप करता रहा पर हवलदार जीप पर बैठा कर ले गया । देर रात वह वापस आया । थाना ने भी कुछ वसूल लिया था उससे । पूरे गाँव में लोग अपनी - अपनी तरह से व्याख्या और हल्ला करने लगे कि वह बहुत मारा गया । बहुत रिरियान ठीकेदार पर भैया के आदेश रहा । दरोगा के सुनै के त मजबूरी रही नाहीं त भैया उहीं दरोगा के सस्पेंड के देतेन । पूरे ज़िले के दरोगा भैया के मातहत हयेन । दरोगौ के आपन नौकरी पियारी

बा । उ बलभर लतियायेस ठेकेदार के देखअ काल ऊ भचक- भचक के चले । अगले दिन हिसाब हो गया । लुखुनी हीरो हो गया ।

लुखुनी - “ हमहीं कहा भैया से । तोहरे सब के मोहें में दही ज़मी रही । हमें भैया बहुत मानत हअ । हमार प्लानिंग बा कि हम भैया के बंगले पर रहबअ । अब हम ई काम न करबअ । ”

विकरमा- “ भैया के मेन आदमी इ मोतियवा रहा । इ सबसे पहिले लंबर के भैया के चेला रहा । ”

घुरहवा - “ कुछ ऐसन प्लानिंग करअ कि हम सभै के कलियाण होई जाए । ”

राजा विकरमादित्य और भोज का क्या गौरव गान हुआ होगा जो मेरा उस गाँव में हुआ , उस दिन ।

मैं अपने ननिहाल पहुँचा । मेरे नाना बड़े आदमी थे । वह इलाके के बहुत मानिंद आदमी थे अपने व्यवहार, चरित्र, मृदुभाषिता और तिकड़मी दिमाग़ के कारण । मेरे नाना का घर और शांति आंटी का मायका आमने - सामने था पर समृद्धता में एक बीच की सड़क ने बहुत फ़र्क कर दिया था । सड़क के इस तरफ़ आलीशान बड़ा मकान, दरवाजे पर कुँआ और बड़ी सी जगत, बगल में हनुमान जी का मंदिर उसके सामने बड़ा सा बैठका मेहमानों के लिये और बगल में कई चरही जानवरों की और पीछे गोरु बाड़ा । आंटी का मकान कच्चा था, छोटा था और वहाँ गरीबी थी मेरे नाना की अपेक्षा पर मेरी चाची से उनकी हालत बेहतर थी । मेरी और दादू की साइकिल रुकी । नाना दरवाजे पर ही बाहर के बरामदे की चारपाई पर बैठे थे । उनके आँखों की ज्योति कुछ कमज़ोर थी, दादू उतरा और बोला बाबू, “ मुन्ना भैया आई हयेन ” ।

नाना - “ कहाँ हयेन ? ”

मैं - “ नाना, मैं यहाँ हूँ ” ।

नाना ने मेरे चेहरे को अपने दोनों हाँथों से महसूस किया और कहा भैया हमार अहो - भाग्य आप यहाँ आए । मैं नाना के पास बैठ गया । दादू अंदर गया और बताया कि मुन्ना आया है । मेरे बड़े मामा घर पर न थे । छोटी मामी दौड़कर बाहर आई और मुझको गले लगा लिया और बोली, “ मुन्ना हम आवै के सोचत रहे । तोहरे मामा से कहा कि चलअ मुन्ना से मिलि आई । हमारा बेटा बहुत बड़ा अफ़सर हो गया है । मेरी बड़ी मामी और सारे ममेरे भाई भी आ गये । मेरी भाभियों का बुलवा आ गया अंदर से कि मुन्ना भैया को भेजो । मैं अंदर

गया । मेरी भाभियाँ बहुत उत्साहित थीं । बड़ी भाभी बोली , “अब मुन्ना के बियाह के इंतज़ार बा । पहली बार एक अलग दुलहिन घरे में आये । बड़े घरे के बहुत पढ़ी लिखी “ ।

दूसरी भाभी - “ पर हमका पहिचाने ? हम सब गाँव देश के हर्झ । उ शहर के बा । हम त सुना कमिश्नर साहेब के बहिन दिल्ली पढ़त बा ओसे बियाह होत बा । इतना बड़ा अफ़सर के बहिन उहौ दिल्ली पढ़ी हमैं पचे का पूछे “ ।

दादू - “ कुछ दाना - पानी न पूछत जात हउ बस गोलचौरा करअ “ ।

मैंने चाय पी । कुछ देर बात किया और आंटी के मायके चला गया । मेरे नाना मधुबनी मिश्र थे और आंटी थी मार्जनी मिश्रा । यह जाति करम में मेरे नाना का दावा था कि वह बेहतर बराह्मण हैं और आंटी मोटा बराह्मण । अब इस बात का कोई आधार तो है नहीं बस सामाजिक मान्यता ही है जो चल गया सो चल गया । आंटी के पिता रहे नहीं । उनके भाई थे । वह खेती - बाड़ी से ही जीवन काटते थे । अब गाँव में सिफ़्र खेती ही एक सहारा हो तो जीवन कठिन हो ही जाता है । अभी भी खेती प्रकृति से काफ़ी संचालित होती है , हलाँकि सिंचाई के साधन हो ज़रूर गये हैं । यह सिंचाई के साधन भी सस्ते नहीं है । डीज़ल मँहँगा है इसलिये पंप से पानी महँगा पड़ता है । नहर में दबंगई चलती है । लोग नहर काट लेते हैं इसलिये आम गरीब के हिस्से में नहर का पानी आसान नहीं होता । बैल पालना अब आसान रहा नहीं और ट्रैक्टर की जुताई भी पैसा चाहती ही है । कुल मिलाकर खेती में जीवन ही किसी तरह चल पाता है । आंटी के घर में मेरे नाना की तरह ज़मीन भी न थी । मेरे नाना के पास बहुत ज़मीन थी और उनके दो बेटे नौकरी करते थे और उनके पास पुराना पैसा भी था जो खर्च किया ही न था । कुछ ज़मीन सरकार ने अधिग्रहीत कर ली थी उसका भी अच्छा ख़ासा मुआवज़ा वह पा गये थे । ईश्वर ने मदद कर दी और सड़क उनके ज़मीन के सामने से चली गई । उनकी कुछ ज़मीन के दाम रातों - रात आसमान छूने लगे , उसी में दो बीघा ज़मीन मेरे माँ के नाम था, जो सीलिंग से बचने के लिये नाना ने उनके नाम लिखा था । मेरे चयन के बाद सबको अंदर ही अंदर लग रहा था कि अब उमिला ज़मीन लेना चाहेंगी तब तो कोई रोक ही न पाएगा । वह पहले ही किसी के नियंत्रण में न थी अब तो महान परम परतापी बच्चे की माँ हो चुकी है । सबके दिमाग में था यह पर कोई कहता न था । आंटी के बड़े भाई ने बातचीत में कह दिया , “बहिनौ के ज़मीन त बा न सड़क पर ?” मैंने कहा , मुझे नहीं पता । मैं नहीं चाहता था कि यह मामला उठे पर वह एक चिंगारी छोड़ गये थे दादू के सामने ।

मैंने ऋषभ के बारे में और आंटी के बारे में बताया । यह भी बताया कि ऋषभ बहुत बड़ा आदमी खुद भी बन गया है और विदेश में बड़ा कारोबार कर रहा है

। उसका विवाह भी एक बहुत ही अमीर घर की पढ़ी- लिखी संस्कारित लड़की से हुआ है । आंटी के बड़े भाई रामदीन ने कहा , “ भैया केहेन त कुजात में । हम त ऐसन बियाह के पक्ष में हई नाहीं ” ।

मैं - “ज़माना बदल गया है । अब यह सब बात कोई नहीं देखता ” ।

रामदीन - “ भैया हम त ऐसन बियाह के मान्यता नाहीं देझत । जौन बच्चा पैदा होए उ त बाधन न होए ।

मैं - “ कहे न होए ? ”

रामदीन - “ भैया धरमै त हमरे संगे बा । बाकी त कुछ बा नाहीं । अब हम धरम के रक्षा न कै पावा तब त हम भरष्ट होई गये ” ।

मैं - “ एहमें धरम कहाँ से आई गवा मामा ”?

रामदीन - “ अब तू पाच नये जमाने के हउ । पर हमरे हिसाब से त शांति धरम से भटक गै हझन । ऐसन बियाह हमें सुहात नाहीं बा । हम ओकरे हाँथे के छुआ त न खाब ” ।

मुझे लगा बिना मतलब बात करने का कोई अर्थ नहीं है जब इस तरह की बेवकूफी की बात यह कर रहे । मैंने कहा , “ मामा मैं कल दिल्ली जा रहा । मैं आंटी के यहाँ लौँगूँगा । कुछ कहना हो तो बता दें , मैं कह दूँगा ” ।

रामदीन - “ भैया हली - भली बताई देहेअ । अब और हम का कही । हम त बहुत गरीब हई । ओ सब बहुत बड़वार मनई होई ग हयेन ”

।

मैं लौटकर आया तब तक यह घर में निर्णय हो गया था कि मुन्ना को रुकने को कहा जाए । यह कल जाए । मैंने कोशिश बहुत की रात में ही जाने की पर उन सबकी ज़िद के आगे मैं बेबस हो गया । मैं उन सबका आग्रह टाल न सका । नाना ने टरंप कार्ड चला दिया , “ भैया हम कुछ दिना के मेहमान हई , हमरे रहत एक दिन रुक जा । पता नहीं अब कब मौका मिले इहाँ आवई के ” । गाँव में नाना के अड़ोस- पड़ोस में लोग कहने लगे , “ उर्मिला के बेटवा जौन आईएस होइ गवा बा आई बा ननियौरे । अरे उहै जौन बचपनै में सिगरेट पिएत रहा । लड़िका बेराह चलि पड़ा रहा पर उर्मिला सुधार देहेस ” ।

मेरे बचपन में सिगरेट पीने की घटना रात में सबसे ज्यादा चर्चा में थी ।

मेरा नाना के यहाँ रात रुकना एक बड़ी घटना पूरे गाँव के लिये हो गई । मेरे नाना ने संदेश भेजा अपने कई जानने वालों को कि मेरा आईएएस नाती आया हुआ है और रात रुकेगा । मेरे नाना की प्रतिष्ठा बहुत थी । मेरे नाना के ही सामने हरि शंकर रहते थे । वह अपने बच्चों का नाम रखे थे फ़ौजदार , ज़िलेदार , सूबेदार , तहसीलदार । वह सिर्फ़ नाम ही नहीं रखे थे वरन् उनकी चाहत भी थी कि यह सब जिलेदार , तहसीलदार बनें । गाँव में यह मान्यता है कि गाय के दूध से दिमाग़ बढ़ता है । इसलिये गाय का दूध यह बच्चों को बचपन से पिला रहे थे या यों कहें तुँसा रहे थे । कई संभ्रांत लोग तो गाँव में हर बच्चे के नाम एक गाय ही कर देते हैं । हरि शंकर के पिताजी दुबरी मेरे पास आये अपनी पूरी पलटन- सूबेदार , जिलेदार , फ़ौजदार , तहसीलदार , रौबदार को लेकर । एक- एक का परिचय कराया और कहा , “ बाबा हमहूँ चाहत हई एनहौंन बनि जाए तोहरे तरह कुछ । आशीर्वद द । हम दूध से तरि कहे हई सबके । शाम के बगैर दूध के त रोटी खातेन नाहीं और भिंसारे गाई लगी नाहीं कि फेन वाला दूध सीधे बाल्टी से । भइया एक- एक किलो दूध के कोटा सबके बा । चार गाय राखें हई । एतने में होई जाए कि और बढ़ाई ।

मुझे जीवन में पहली बार नामकरण - दूध - दिमाग़ - अफ़स्सर बनने का नायाब रिश्ता देखने को मिला । मैं कुछ कहता वह अगला सवाल दाग दिये , “ भैया तोहार दूध के खपत केतना रही हर रोज़ के ? ”

अब मैं क्या जवाब दूँ इस पर । शहर में दूध इतना मँगा है कि वह एक विलासिता की वस्तु ऐसा हो चुका है । मैंने कहा , “ नाना मुझको दूध बहुत अच्छा नहीं लगता इसलिये कुछ खास नहीं पिया ।

दुबरी नाना - “ का कहत है बाबा । बगैर दूध पिये ऐसन दिमाग़ बढ़ि गवा । हम त बलभर भरे हई । ”

मैं - “ नाना ठीक किया है । इससे फ़र्क आएगा । थोड़ा पढ़ें भी दूध के साथ - साथ । ”

दुबरी नाना - “ भैया हम एनहन के चार बजे उठाई देत हअ । शासन तगड़ा बा और मन लगावत हएन । तू कुछ डगर बताई द , बाकी त प्रभु के जैसन कृपा होए । ”

मैं दूध पीकर आईएएस बनने का ख़बाब रखने वाले फ़ौजदार- सूबेदार - ज़िलेदार - तहसीलदार - रौबदार से कुछ बात किया । मैं जानता उन सबको

था ही । उसमें से एक मेरे हम उम्र था , बाकी छोटे थे । जब मेरी सिगरेट पीने की घटना फैली उसके बाद सब कहते थे , “ उर्मिला के बेटवा कुल गाँव के बर्बाद कैंदे । अपने गदेल के ओसे बचायअ । ” यह फ़ौजदार - सूबेदार मुझसे कुछ समय दूर रहे पर गाँव में सब बच्चे साथ ही खेलते थे , यह सब कुछ ही दिन की बात थी पर मेरे सेलेक्शन ने सिगरेट के धुँए को एक चर्चा में ला दिया । “ अरे भइया दिमाग़दार रहा । अपने दूनी उम्र के लड़िकन के दिमाग़ देत रहा । ”

यह सब “ दार ” भाई गाँव के स्कूल में ही थे और रामपुर के ठाकुर बर्ज मंगल सिंह में पढ़ाई करके शहर के इलाहाबाद डिग्री कालेज गये थे । यह परिवार भी गाँव के धनाद्य परिवारों में आता था और नाना के तरह की प्रतिष्ठा की चाहत हो चुकी थी । मेरे सेलेक्शन का फ़ायदा मेरे नाना को बहुत हुआ । वह प्रतिष्ठित व्यक्ति थे , उनको जानने वाले काफ़ी थे इसलिये क्षेत्र में उनका नाम अधिक हुआ । मेरे पिता का पक्ष गरीब था वह इस तरह की प्रतिष्ठा प्राप्त न कर सका और वह बेचारे कहते भी तो किससे कहते । वह तो रोज़मर्रा की ज़रूरतों में ही परेशान रहते थे । नाना समझदार थे , वह परिस्थितियों का मूल्यांकन तेज करते थे । वह जानते थे कि इस सफलता पर उनका एकाधिकार है और उन्होंने एक अखंड रामायण का भी प्रस्ताव मेरे सामने रखा , यह कहकर कि एक दिन का समय निकाल लो हमारा बहुत मन है भगवान को धन्यवाद देने का । मंदिर में अखंड रामायण कराकर 100-200 आदमी को खाना खिला दें । यह कार्यक्रम विशुद्ध एक नाम प्राप्ति की आकांक्षा से प्रेरित था । यह भी अगली पीढ़ी के दहेज प्राप्ति में मदद करता । यह गाँव में दहेज कुछ वस्तुओं से निर्धारित होता था , कौन से ब्राह्मण हो मतलब सुपात्र ब्राह्मण की माँग ज्यादा थी , कितनी ज़मीन है , कैसा मकान है , कितने परिवार में लोग हैं ताकि अड़े- गड़े लड़ाई झगड़े में भी काम आ सकें और परिवार की रिश्तेदारियाँ कहाँ - कहाँ हैं । अब नाना को एक और बिंदु मिल गया , “ हमार नाती आईएएस बा अब ओहू के तोहका देखि के संकल्प बतावई के चाही ” । नाना ने कह भी दिया कि अगर अब विवाह करते तब तुम्हारे नाम का फ़ायदा मिलता और दैजा में वृद्धि होती । मेरे नाना की सारी अंगुलियाँ धी में । मेरे छोटे मामा बोले , “ उर्मिला के बियाह शर्मा जी से हमही बताये रहे । शर्मा जी हमरे संगे पढ़त रहेन मालवीय कालेज में । कक्षा में प्रथम आवत रहेन । हमही बाबू से बताये रहे उ रिश्ता पहिली बार । हमरे योगदान बा सबसे बड़ा मुन्ना के जन्म में ” ।

यह बात सच है कि मेरे पिताजी , मेरे छोटे मामा और गाँव के रमेश पाठक एक साथ पढ़ते थे और मेरे मामा पढ़ने में फिसड़ड़ी थे । यह कक्षा में कई बार फेल किये थे फिर मेरे नाना ने जहाँ इनका सेंटर पड़ा था वहाँ पर कुछ नक्ल का जुगाड़ कराकर पास कराया था , वह भी कई साल के फेल होने का इतिहास बनाने के बाद । जब - जब यह फेल होते थे तब- तब नाना कहते थे

कि सुविधा होती तो उर्मिला पढ़ती । एक नालायक पर सारा खर्चा करो पर ढाक के तीन पात पर जो पढ़ सकता था उसके लिये कोई सोच नहीं बनी कभी ।

मेरे मामा ने जैसे ही यह कहा उनकी पत्नी ने कहा , ” ऐ एकै बार में जानि ग रहेन कि शर्मा जी बहुत आगे जइहिं और इ गरीब घर में गुदड़ी में लाल हयेन । अब देखअ मुन्ना कअ औंधियारे में उजियार कैसे होई गवा “ ।

मैं समझ गया कि अब कल माँ का टेप चालू होगा जब यह सुनाऊँगा “तीन- तीन गाँव में खेत रहा , गड़ा धन रहा , एक गाँव के खेत धिंगरा खाई गयेन पर पाँच सौ रुपिया नाहीं निकरी कि ढंग से घर- दुआर देखि के बियाह करतेन” ।

मेरी माँ के विवाह में नाटक बहुत हुआ था । बाबा दो हज़ार माँगे थे । उस समय पिताजी बीए प्रथम वर्ष में थे । मेरे पिताजी देखने में बहुत सुंदर थे । एकदम श्वेत वर्णीय लालिमा लिये हुये रंग अच्छा नयन- नवश , बीए में पढ़ रहे थे । सुपात्र बराह्मण थे ही सामाजिक मान्यताओं से , बाबा एक अध्यापक के रूप में प्रतिष्ठित थे । ऐसे में दहेज माँगना बनता ही था । बाबा ने नाना से पूछा “ क्या इरादा है ? ”

नाना घुटे हुये तीरंदाज़ थे । वह कहाँ दमड़ी खर्च करने वाले । उनको लेने में तो बहुत विश्वास था पर देने के नाम पर मूर्छा आ जाती थी ।

नाना - “ हमार बिटिया बहुत सुंदर - सुशील - काम काज में निपुण है । हमारे पास बहुत खर्चा है पर यथाशक्ति हम देंगे और दरवाज़े पर आपका सत्कार करेंगे । हमें आशीर्वाद दें ” ।

बाबा - “ आप सुपात्र बराह्मण और इलाके का सबसे क्राबिल लड़का चाह रहे हैं । यहाँ लोग हाई स्कूल फेल का बड़ा दहेज ले लेते हैं । यह तो वज़ीफ़ा पाया नाम कमाया लड़का है और देश के सबसे बड़े संस्थान में पढ़ रहा ” ।

बाबा अध्यापक थे । वह अपने सबसे बड़े मुहर पर दाँव खेल रहे थे । खेत-घर से कमज़ोर थे पर लड़के से मज़बूत थे । वह चाह रहे थे बातचीत खेत-घर के बजाय लड़के पर केन्द्रित रहे । मेरे छोटे मामा हाई स्कूल फेल थे पर उनके विवाह में नाना ने भैंस , गाय , घोड़ा 1200 रुपया कई साल पहले ले लिया था । बाबा ने हाई स्कूल फेल जानबूझकर कर कहा था ताकि हाई स्कूल और बीए के लड़के का रेट साफ़ हो जाए । नाना तो तिकड़म में माहिर थे । अध्यापक सहज होता है । उसके अंदर दैवीय वास होता है । वह अबोध

बच्चों के साथ रहते- रहते निश्छलता की ओर हर दिन बढ़ता रहता है । ऐसे ही मेरे बाबा थे । उन्होंने साफ़- साफ़ बात करने का फ़ैसला किया ।

बाबा - मिश्रा जी , हमारी हालत किसी से छिपी है नहीं । ज़मीन पर दबंगों का कब्ज़ा है । हम भी चाह रहे झगड़ा- झँझट से बेहतर है बच्चे पढ़ें । कोर्ट-कचेहरी फ़ैसला देता रहेगा । हमारी तनख्वाह से ही जीवन चलता है । घर सामने है आप देख लीजिये । दो पैसा मिल जाएगा तो विशेष को पढ़ाने में मदद हो जाएगी । आप जो भी देंगे वह इसकी पढ़ाई में ही उपयोग होगा । मेरे पास पढ़ाने की शक्ति नहीं है । आपको ईश्वर ने बहुत दिया है । आप दे देंगे तब हमारा कुछ भला हो जाएगा । यह बात घुमा-फिरा के कहने के बजाय स्पष्ट बता दें कि आप क्या देना चाहते हैं ।

नाना बहुत तेज थे पर एक अध्यापक की स्पष्टवादिता ने उनको कमज़ोर कर दिया । वह बताना नहीं चाह रहे थे । वह चाह रहे थे बाबा की बनायी ज़मीन पर खेलना पर बाबा ने ज़मीन बनाने से इंकार कर दिया । उस दिन वार्ता विफल रही । मेरे नाना यह समझ गये थे कि इस लड़के का भविष्य है । यह समझने के लिये किसी अन्वेषण की आवश्यकता थी ही नहीं । उनका अपना बेटा जो साथ पढ़ता था वह ही दिन- रात गुण गाता रहता था ।

एक सप्ताह बाद नाना फिर आये और इस बार मेरे बाबा के भाइयों के साथ आये , एक दबाव बनाने की मंशा के साथ । मेरे बाबा ने कुछ ही देर में विवाह करने से इंकार कर दिया यह कहकर हमको जहाँ दैजा अच्छा मिलेगा वहाँ विवाह करूँगा और दो- चार नाम भी गिना दिये कि कौन - कौन आया था और क्या दैजा दे रहा था । मेरे नाना को बाजी हाथ से जाती दिखी । मजबूरन उनको अपना कार्ड खोलना पड़ा और एक हजार रुपये का परस्ताव रखा । मेरे बाबा उम्मीद ज्यादा कर रहे थे । उन्होंने कहा कि इतने में करना होता तब तो पिछले साल ही कर देता , तब से अब तक वह आगे बढ़ गया है । इंटर मालवीय कालेज में टाप किया और विश्वविद्यालय में पढ़ रहा । बाबा की चाहत दो हज़ार रुपये की थी । नाना इतना माँ के विवाह में खर्च नहीं करना चाहते थे हलाँकि हैसियत थी ।

नाना लौट गये । मेरे शहर को मामा भी गये मेरे पिताजी को देखने और घर देखकर बहुत निराश हुये । उन्होंने विवाह यहाँ न करने की सलाह दी और कहा कि दो हज़ार लायक तो यह विवाह बिल्कुल ही नहीं है । इतने पैसे में बेहतर विवाह हो सकता है । नाना ने सहयोग माँगा पर उन्होंने टाल- मटोल किया और कानपुर चले गये जहाँ पर वह नौकरी कर रहे थे ।

अंत में दबाव डालकर पंद्रह सौ रुपया और एक भैंस , एक जोड़ी बैल की शर्त पर विवाह तय हुआ । विवाह तय होने में नाटक बहुत हुये । पर विधाता ने मेरा जन्म नियत किया हुआ था एक संयोग से और कभी- कभी लगता है अगर यह संयोग न होता और मैं किसी और संयोग की उत्पत्ति होता तो क्या मैं यहाँ पहुँचता ? मेरी माँ कोई और होती तो क्या मैं इस दिग्विजय को कर पाता ?

मैं गाँव के बच्चों की तरफ देखने लगा । मेरे साथ वाले भी थे जो अब अपनी दुनिया में लीन हो गये थे और मेरे से कुछ बाद वाला भी थे जो एक आदर्श के तौर पर मुझे देख रहे थे । मैं काफ़ी बच्चों को जानता था । मेरा बचपन यहाँ काफ़ी बीता है । गाँव में एक ही प्राइमरी स्कूल था । मैं भी दाढ़ू के साथ उस प्राइमरी स्कूल में बहुत बार गया हूँ । वहीं सब कक्षा 5 तक पढ़ते थे । उसके बाद ठाकुर बर्ज मंगल सिंह राम पुर , मदन मोहन मालवीय करछना या सुभाष चन्द्र विद्यालय छीतूपुर ज़ाया करते थे , इंटर तक की पढ़ाई के लिये । गाँव का स्कूल बहुत पुराना था । मेरी माँ भी इसी स्कूल से पढ़ी थी । पर आश्चर्य की बात यह है कि इतने सालों के बीत जाने के बाद आज भी गाँव में यही एक स्कूल है । मेरे गाँव में तो कोई स्कूल कभी रहा ही नहीं । वहाँ के बच्चे दूसरे गाँव जाते थे पढ़ने । कोई कन्या पाठशाला तो बना ही नहीं । मेरे ख़्याल से पूरे तहसील में कोई कन्या पाठशाला थी ही नहीं । मेरे छोटे मामा कन्या पाठशाला का मुद्दा लेकर गाँव प्रधान का चुनाव लड़े थे चुनाव चिन्ह कुर्सी लेकर और चुनाव के पहले ही कह दिया कि कुर्सी पहले ही मिल गई । पर वह चुनाव हार गये । हम लोग बहुत मज़ाक़ बनाते थे उनका । उनका चुनाव प्रचार का ढंग निराला होता था , “ कुर्सी पर बोट दो । कुर्सी वाला पैदल चलकर आया है । ” पर न तो वह और न ही कोई और कभी इस दिशा में सोचा । जब बहुगुणा जी का ज़ोर था करछना-बारा तहसील में उस समय गुरु प्रसाद शास्त्री, रमा कांत मिश्रा, बरम दीन सिंह तीन नेता मेरी माँ के इलाक़े के थे उनसे अनुरोध किया गया और शीतलादीन द्विवेदी, सत्य नारायण मिश्रा, रमाकान्त शुक्ल मेरे इलाक़े के थे । कुछ प्रथास हुआ भी पर फलीभूत न हुआ । गाँव में कक्षा 5 तक लड़के- लड़कियाँ साथ पढ़ते हैं और हर कक्षा में प्रथम 5/7 स्थान में 2/3 लड़कियाँ होती ही थीं , पर उनके भविष्य पर कोई ध्यान नहीं देता था । मेरी माँ और आंटी तो कक्षा में प्रथम और द्वितीय आती थीं जो तीसरे स्थान पर आता था वह एसडीएम बना बाद में पीसीएस परीक्षा में बेहतर स्थान प्राप्त करके । अगर अवसर मिलता तो माँ भी होती । पर मेरे नाना ने बेटों को पढ़ाया और एक सामान्य सा दहेज देकर बेटी का विवाह कर दिया जबकि बेटी बेटों से ज्यादा क़ाबिल थी । गाँव की शिक्षा व्यवस्था पर शासन का ध्यान हमेशा से ही मुझे कम ही लगा और कन्या शिक्षा तो कभी हासिये और फुट नोट पर भी स्थान प्राप्त न कर सकी ।

एक बड़ा दरबार ऐसा लगा था । मेरे नाना , मामा , मामी , ममेरे भाई सब बैठे थे । मेरी मामियाँ घूघट में थीं और भाभियाँ दरवाजे के पीछे से झाँक लेती थीं कौन - कौन आया । एक ख़ास बात यह मैंने देखी मुझसे मिलाने हर कोई अपने बेटे / नाती ही ले कर आ रहा था । एक भी बेटी/ नातिनी लेकर नहीं आया । मैंने मामी से पूछा कि यहाँ लड़कियाँ नहीं पढ़ती हैं क्या?

मामी - “ ओ पढ़ि के का करिहिं । जाइ के त बा केहू के घरे और करै के बा चूल्हा- चौका । ”

मैं - “ अब ज़माना वह नहीं रहा । अब लड़कियाँ भी काम कर रहीं । सुरुचि मिश्रा, शशि तिरपाठी , रचना दीक्षित इस बार मेरे साथ ही हुई हैं । ”

मामी - “ अब इहाँ त कौनौ सुविधा बा नाहीं । ”

मैंने कहा किसी लड़की को भी लाओ , ऐसा तो हो नहीं सकता कि पूरे गाँव में दो- चार लड़कियाँ भी क़ाबिल न हों । वहीं एक लड़की खड़ी थी । वह जुड़वा भाई - बहन थे । भाई को मुझसे मिलाया गया पर उसको नहीं । पता चला वह अपने भाई से पढ़ने में बेहतर है पर इस पर कोई ध्यान ही नहीं है । शिक्षा का स्तर बहुत ही ख़राब है । गाँव के स्कूल के बाद का कोई ठिकाना नहीं । गाँव के स्कूल में भी मास्टर नियमित रूप से नहीं आता । ज्यादातर लोग घर के तमाम खेती के काम को तरजीह देते हैं न कि अध्ययन को , सिवाय

कुछ परिवारों को छोड़कर । मेरे मामा के यहाँ भी शिक्षा पर पर कोई ख़ास ज़ोर न था । बस एक कक्षा से दूसरी कक्षा में बढ़ते जाओ । मेरा सेलेक्शन कुछ और किया हो या न किया हो पर लोगों को शिक्षा के प्रति संजीदा कर गया था । मैं दो गाँवों में आज रहा । इन दो गाँवों का अनुभव यह कहता है कि लड़कियों को शिक्षा देना किसी की प्राथमिकता में है ही नहीं । बस वह साक्षर हो जाए इसके आगे की कोई सोच नहीं है । दुनिया बदल रही इसका इनको कोई अहसास नहीं है । एक परम्परागत तरीके से जो बीस- तीस साल पहले पढ़ाई का ढरा था वहीं आज भी है । एक बहुत ही अफ़सोसजनक स्थिति का मुझको अहसास हुआ और इसमें सुधार की कोई गुंजाइश दिखती ही नहीं है । बेरोज़गारी तो होगी ही अगर शिक्षा की प्राप्ति न होगी । वस्तुपरक, रोज़गार परक शिक्षा तो किसी के सोच में कहीं थी ही नहीं । वह इलाहाबाद जो शिक्षा के लिये विख्यात हुआ करता था अब शिक्षा की दौड़ में लड़खड़ाने लग गया था दूसरे शिक्षा केन्द्रों की तुलना में , हर एक स्तर पर ।

मेरी उम्र के तक़रीबन लोगों में से सबका विवाह हो चुका था और ज्यादातर के बच्चे हो चुके थे । मेरे अलावा मेरे चाचा - ताऊ- मामा - मौसी सबके बच्चों का विवाह हो चुका था । तक़रीबन सब का विवाह इंटर या बीए तक हो जाता था । दादू मुझसे एक साल बड़ा था पर इसका विवाह जब हुआ था तब यह

इंटर में था । मेरे बड़े मामा के पहले बेटे का विवाह जब हुआ था तब वह हाई स्कूल की परीक्षा दिये थे । झुलझ भैया जो घर दमदा होकर घर से ससुराल चले गये हैं वह विवाह के समय बीए प्रथम वर्ष में थे । मैं अकेला हूँ जिसका विवाह नहीं हुआ । मेरे लिये रिश्ते बहुत आये पर मेरे पिताजी विवाह करने को तैयार न थे । मेरे नाना चाह रहे थे कि हरिकेश मामा के यहाँ मेरा विवाह हो जाए । वह विवाह भी तमाम संपदा प्राप्ति की आशा के बावजूद भी कुछ ही बात चल सकी । हो सकता है शायद वह हो गया होता पर हरिकेश मामा तब थोड़ा अनमयस्क थे । पर वह आये होते तब भी होने कीं गायरंटी न थी । मेरे पिताजी सारे विवाह को यह कहकर “ ना ” कह देते थे कि अभी पढ़ने का समय है विवाह का नहीं । मेरे नाना भी सिफ़्र दहेज देखते थे और कुछ भी नहीं । वह भी इतने समझदार होकर भी यह नहीं देखा पाये कि समय पूर्व विवाह प्रगति में बाधक है । वह दादू के विवाह में पन्द्रह हज़ार तिलक का प्रस्ताव पाकर अति प्रसन्न हुये । । मेरी माँ ने दादू के विवाह का विरोध किया था । यह कहा था कि अभी विवाह का वक्त नहीं है और इतना दूर विवाह क्यों किया जा रहा है । यह साफ़- साफ कहा था , “ बाबू इतने दूरी बियाह काहे करत हअ जब नज़दीक के संबंधन के भरमार बा ” । नाना ने कहा था , “ बिटिया एतना इहाँ केउ न दै पाए ” ।

तिलक का पन्द्रह हज़ार चर्चा का विषय था ।

मेरा विवाह न हुआ , यह दूर दृष्टि मेरे पिता की थी । यह एक संयोग तो नहीं हो सकता कि परिवार में एक ही लड़के का विवाह न हुआ हो जबकि सब का हो गया और दहेज भी उनसे ज्यादा मिल ही रहा था । यह एक सोचा - समझा परिपक्व निर्णय था । यह निर्णय भी मेरी आज की सफलता में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । धीरे- धीरे लोग जाने लगे । अंदर से भाभियों ने कहा कि सारा समय धिंगरा ले लेंगे तब हमको और हमारे बच्चों को कौन सा समय मिलेगा । बात उनकी ठीक भी थी , मेरा बचपन इनके साथ बीता था वह भी सुनना चाहती थीं मेरी दास्तान जो एक गैर मामूली है इस परिवेश के लिये ।

खाना जितना बेहतर बन सकता था बनाया गया । मेरी रुचि का पता था ही इनको । मैं बचपन में सेंवई खाने की बहुत ज़िद करता था । नानी तक़रीबन रोज़ ही बना देती थी मेरे लिये । मैं और दादू सबसे छोटे थे और हम लोग खाते थे पर मुझे ज्यादा दिया जाता था । बड़ी भाभी बोली , “ हमरे बियाहे में तू 8/9 साल के रहअ और उ पहिला बियाह रहा ज़ेहमें तू ग रहे और बियाह पूरा देखें रहअ । तू

हमरे डोली में बैठ ग रहअ और हमार मोह देखई के बहुत कोशिश केहे रहअ । तोहका दुलहिन के मोह देखय के बहुत मन करत रहा । जब हम आवा तब तोहार नानी बताएन कि मुन्ना पूरे गांव में जब बियाह होई केहू के इ जाई के

नई दुलहिन देखि के आवै और रात में बतावई के कैसे हम देखा । इ ज़मीन में लेटि के घूँघटे में मौंह आपन घुसेड़ देत रहअ । “

भाभी बोली , “ अपने दुलहिन में धीरज राखअ और रात के इंतजार करअ नाहीं त कइहिं इ कैसन दुलहा बा कौनौ धीरज नाहीं बा ” ।

यह बात सच थी । मुझे बहुत उत्सुकता होती थी नई - नवेली दुल्हन देखने की , यह शादी होती कैसे है ? यह पूरी रात क्या होता है विवाह के संस्कार में , यह उत्कंठा बहुत थी मेरे अंदर । मैंने जग कर पूरी रात शादी देखी थी । मैं इक्के पर बैठकर विवाह में गया था ।

भाभियों को भी अपने बच्चों की चिंता हो रही थी । वह सब चाह रही थीं कि कुछ उनके बच्चों को भी दिशा दी जाए । अब मेरे पास कोई जादू की छड़ी तो थी नहीं पर एक ऐसा विश्वास सबका मेरे प्रति बनता जा रहा था कि मैं खुद भी असहज अपने को पा रहा था । दहेज एक बड़ा चर्चा का मुद्दा था ।

बड़ी भाभी - “ सुना हरिकेश मामा आपन कोठी बरीक्षा में देत हएन ।”

छोटी भाभी - “ ऊ करोड़न के कोठी ?

बड़ी भाभी - “ हाँ ।

मामी - “ दुई साल पहिले बाबू कहे रहेन के बियाह के ल तब ओ अपने शेखी में रहेन । अब ओनकर बड़ा साहब कमिश्नर आई गवा बा , अब ओनकर का चले ”

भाभियों ने कहा , “ मुन्ना भैया इहिं हमरे पास सोई जा । कुछ क्रिस्सा हमहुँ के सुनाई दअ और । केतने साल बाद आई हअ तू । हम तोहार बँगला देखई आऊब । हमहुँ त देखि अपने देवर के शानौ शौक़त ।”

मुझसे बड़ी भाभी रोने लगी । वह बोली , “मुन्ना भैया हमार लड़िका तोहरे माथे हयेन । हमअ कुछ होई जाये त ए सब तोहरेन सहारे हएन ।”

उसने मुझे भावुक कर दिया । मेरे सामने इनके विवाह का पूरा चितर घूमने लगा जब मैं इक्के पर बैठा था रात में विवाह देखा इनके माँग में सिंदूर डाला जा रहा था और मैं उचक - उचक कर इनका चेहरा देखने की कोशिश कर रहा था ... इनकी डोली में मैं बैठ गया और इनके घूँघट के भीतर झाँकने की कोशिश कर रहा था पूरा एक कालखंड मेरी आँखों के सामने

मैं खाना खाकर आया । पर कौन मुझे सोने देने वाला था । सारी रात बात होती रही ट्रेनिंग में जाने की , कब जाने की , आंटी के यहाँ की , आहुजा के धन की , कुंडली गुरु की , ऋषभ के अन्तर्जातीय विवाह की और मुझे ताकीद करना कि तुम ऐसा-वैसा मत करना । दादू ने पहले ही कहा था शालिनी सीमेंट , बिलिंग मटीरियल की एजेंसी के बारे में । मेरे छोटे मामा चालू थे और कंजूस भी । वह बोले , “ हमका बहुत अनुभव बा । हम चलाई देब बिज़नेस । एनके पचे के बस के बात नाहीं बा ” ।

भाभियों रात में बाहर आ गई उनका भी मन नहीं लग रहा था अंदर । एक ने कहा ,” भैया अब हमका तू कब मिलबअ । एक बार ट्रेनिंग पे जाई के पहले और आई जाये । अब त तू मिलबअ न बस तोहार याद रहि जाए । बियाहे में हमका बिसरी न जाए । हमका बोलाये ज़रूर । हमहूँ देखी एक आईएएस के बियाह कैसन होत ह । वैसे बुआ हमका भूले न । हम बहुत सेवा केहे हई बुआ के । हम पचे बहुत मानत हअ । ई शहर वाले चाचा हमार पचन के मान बाबा के बियाहे में नाहीं रखने , ऐसन न केहअ भैया “ ।

मैं क्या जवाब देता इस पर । मामा ने वाक़ई किसी का भी ख्याल नहीं रखा था । मैंने कहा , “ भाभी अभी बहुत वक्त है । आपके बगैर कुछ नहीं होगा “ ।

रात में आँख लग गई । सुबह उठा । मैं जल्दी जाना चाहता था । पर बगैर नाश्ते के कौन जाने देगा । पूँडी- सब्ज़ी- सूजी का हलवा खाकर मैं शहर की ओर चल दिया । दादू से कहा कि मैं चला जाऊँगा तुम क्यों परेशान होते हो । वह भी आने में कम इच्छुक था । मेरी साइकिल चल दी शहर की ओर - छरिबना , रामपुर , गौहनिया , नैनी , डेज़ मेडिकल , आईटीआई , बीपीसीएल नैनी जेल , जमुना पुल , ईसीसी होते हुये ।

मुझे अपनी असीम विवशता का एहसास हो रहा था । एक ख्वाहिशों का बोझ मेरी साइकिल पर लद चुका था । मेरी साइकिल उस बोझ के कारण तेज नहीं चल पा रही थी ।

काश मैं सक्षम होता

मेरा पूरा रास्ता एक विचार प्रवाह में ही बीत गया । मैं जैसे - जैसे एक- एक गाँव पार करता गया मेरा पूरा बचपन एक चित्र की तरह मेरे समुख उपस्थित होता गया । यहीं रामपुर में चकबंदी के समय दो कमरे बने थे चकबंदी अधिकारी के लिये और बड़ी गहमा-गहमी होती थी चक ठीक कराने के लिये । यहीं से टैंपो पकड़ कर हम लोग शहर जाते थे । गाँव से करछना या रामपुर पैदल ही आते थे । कभी - कभार गाँव का इक्का मिल जाता था । माँ अपने मायके से ससुराल या ससुराल से मायके इक्के पर ही जाती थी । उस इक्के को चारों ओर से कपड़े से ढँक दिया जाता था । उसने वह वाक्या साझा किया था जब मेरे जन्म के बाद वह पहली बार बहुत गर्व से एक माँ का बोध लिये मायके से ससुराल इक्के से गई थी । वह खुद मुझको अपने गोद में लेकर मेरे बाबा के पास गई थी और मुझको उनके चरणों में रख कर कहा था कि इसको आशीर्वाद दें आपके तरह का यशस्वी बनें । मेरे बाबा ने कहा था यह बहुत आगे जाएगा । माँ ने कहा इसको यश मिले । मुझे अपयश से बहुत डर लगता है । मैं इसके यशवान होने का आशीर्वाद माँगने आई हूँ । बाबा ने मुझे गोद में उठाकर कहा था यह मेरा शिष्य हो गया आज से और मेरे जीवन तक रहेगा । मेरी माँ भावुक हो गई थी और उसने मेरे बाबा के दोनों पैर पर अपना सिर रख कर मेरे लिये आशीर्वाद लिया था । मेरी सिगरेट पीने की घटना के बाद वह बहुत निराश हो गई थी । मेरे बाबा को बताया था उसने । उन्होंने कहा , कुछ मत कहो उससे । यह सब अबोधपन हैं इसमें कोई मानसिक दुष्कर्म नहीं है । मेरे बाबा ने पूछा था , “ तुमने क्यों पिया था ” ? मैंने कहा था कि मुझे धुँआ उड़ाना अच्छा लगता है । बाबा ने गुण- दोष समझाया था और कहा था तुम एक सुपात्र ब्राह्मण हो तुम्हारे लिये यह शोभा नहीं देता । मैंने प्रत्युत्तर में कहा था कि मेरे नाना भी तो सुपात्र ब्राह्मण हैं , उनके यहाँ के बच्चे भी तो पिये थे , मैं अकेला थोड़ी पिये था । बाबा ने इसका कोई समुचित जवाब नहीं दिया और कहा था , तुमको बहुत आगे जाना है । तुमको मेरा नाम रौशन करना है । मुझे लोग तुम्हारे नाम से जाने ऐसा कुछ तुमको करना है । उन्होंने मेरी माँ की तरह आकरामक होकर नहीं बल्कि परेम से समझाया था और मैं समझ गया था । एक अध्यापक के पास अपना एक अलग मनोविज्ञान होता है चीजों को सँभालने का ।

मैं जब अयोध्याकांड पढ़ने लगा सिविल सर्विसेज़ के लिये तब मुझे राम की वह व्याख्या मिली जिसमें राम ने कहा था , “ मुझे अपयश से डर लगता है ” । माँ से मैंने बताया कि यह राम ने भी कहा था जो तुमने मेरे जन्म के समय बाबा से कहा था । तब से माँ मुझसे राम की कथा सुनने लगी थी । मैं राम किंकर उपाध्याय जी का प्रवचन भी सुनाता था । मुझे जमुना पुल से दूर गंगा का अहसास हुआ । माघ मेला के समय मैं माँ के साथ प्रवचन सुनने आता था । माँ तीन पंडाल में जाती थी कथा सुनने, करपात्री जी , त्यागी महराज और अंगद शरण । अंगद शरण जी बाद में किसी उमा भारती नामक एक साधुनी

के परेमपाश में आ गये थे और उनसे विवाह करने के बाद प्रतिष्ठा अपनी खो बैठे थे । उसके बाद उनका पता न चला पर वह एक नये उभरते वक्ता थे और बोलते बहुत अच्छा थे । मुझे बाद में पता चला कि कई साधु अपने पूरे प्रवचन का मामला एक पूर्व संरचित संरचना की तरह चलाते हैं । वह कुछ रामायण- महाभारत की घटनाओं एवं कथाओं पर नियंत्रण कर लेते हैं । उपस्थित लोगों में अपने लोग बैठा देते हैं और वही लोग पहले से पूर्व निश्चित प्रश्न पूछ लेते हैं , महंत का उन प्रश्नों के उत्तर पर यशगान होने लगता है ।

मैं जब पढ़ रहा था उसी समय मिथक कथाओं के प्रति मेरा आकर्षण होना आरंभ हुआ था । मैं राम कथा के मर्म को जानने की कोशिश करने लगा था और कुछ-कुछ थोड़ा - बहुत जानने - समझने लगा था । उसी समय चिंतन सर से मुलाकात हुई थी और एक ख्याल हम दोनों के मन में आया था कि कुछ न होगा तब महंत बन जाएँगे । चिंतन सर ने कहा था ,

“ यह भी काम बुरा नहीं है । हम लोग माघ मेला के महंतों से बेहतर अखाड़ा चलाएँगे । तुम राम कथा का प्रवचन करना , मैं संस्कृत साधूँगा , कुछ कुंडली - हस्त रेखा सिखा दूँगा । माथे की लकीर बाँचना और चेले बनाना जीवन कट ही जाएगा । ”

मैंने बहुत से महंतों को बगैर ज्ञान और क्षमताओं के भी एक ठीक-ठीक जीवन जीते देखा ही है । मैंने तो मानस पीयूष , रामायण, राम चरित मानस , मूल महाभारत सब पढ़ा ही है । मैं कई बार अकेले मैं अभ्यास भी करता था कि अगर एक संत की तरह प्रवचन देना होगा तो कैसे दूँगा । मैंने माँ से कभी कहा भी था यह और वह चौंक भी गई थी । उसको शक हो गया कि मेरे अंदर वैराग्य जग रहा है और मैं रात- बिरात बुद्ध की तरह घर छोड़कर चल दूँगा । उसको क्या पता कि यह बुद्धत्व बहुत संचित कर्मों से मन में जन्मता है । मैंने तो इसी जन्म में इतने प्राड किये हैं कि कई जन्म लेने पड़ेंगे इस जन्म के पाप नाशन के लिये । यह तो एक प्राड संरचित हो रहा था जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिये , अगर कुछ और न कर सका । एक सोच बन रही थी एक वैकल्पिक व्यवसाय के बारे में एक बेहतर जीवन जीने के लिये ।

यह ध्यान आते ही मेरे मन में एक ख्याल आया कि अगर मैं आज ही सब यह छोड़कर निकल पड़ूँ वैराग्य की ओर एक ज्ञान की खोज में तो शायद एक महात्मा का कैरियर एक आईएएस से बेहतर होगा । मेरे आश्रम के तोरण पर लिखा होगा , “एक ऐसा महात्मा जिसने दुनिया का सुख त्याग दिया जगत कल्याण के लिये - स्वामी अनुरागान्द ”

। मेरे प्रवचन के पहले मेरे चेले मेरा परिचय देंगे , “ महात्मा जी ने जीवन के सुख- वैभव- गर्व के प्रतीक ईश्वर प्रदत्त सिंहासन का त्याग कर दिया जगत कल्याण के लिये । यह नौकरी जो सबके जीवन का मूल लक्ष्य है उसको महात्मा जी ने अस्वीकार कर दिया । यह सन्द्वेश हैं जगत कल्याण के लिये । यह आधुनिक बुद्ध हैं । संसार का त्याग संसार के उत्थान के लिये । अब अमृत वर्षा होगी स्वामी

आईएएस छोड़कर तो कोई आज तक महात्मा बना नहीं है । मैं पहला होऊँगा और राम की पूरी कथा का काव्यपाठ करूँगा । मेरी कल्पनाएँ पेंग लेने लग गईं । मैं राम का सम्पूर्ण काव्य लिखूँगा । जो राम पर लिखने से रह गया वह मैं लिखूँगा । जो वाल्मीकि और तुलसी की कल्पना से रह गया वह मैं कल्पित करूँगा । मैं एक नया इतिहास बनाऊँगा । मैं इसी माघ मेले में अमृत वर्षा करूँगा । सावन के झूले क्या पेंग लेंगे जो मेरे दिवा- स्वप्न ले रहे थे , मुझे राम पर लिखी अपनी एक कविता भी याद आने लगी ...

राम करोध नहीं कर पाता नियंत्रण आप पर
नहीं हुये असहज परशुराम के वाक् आकरमण पर

Xxxxxxxxxxxxxxxx

Xxxxxxxxxxxxxxxx

हे राम आप सहज थे परशुराम के असीम करोध पर
विचार कर रहे थे लक्ष्मण के करोध के औचित्य पर
नहीं आये अतिरेक में प्रसन्नता के
जब राजा दशरथ ने गले से लगाकर कहा राज्य अब देता हूँ तुमको
कहा था मेरा भविष्य ही नहीं अब जगत का भी ध्यान रखना है तुमको
नहीं हुये असंयमित जब राजा कातर होकर कह रहे राम वन जाना होगा
तुमको
तुमने शीश नवाया सम्मान से पिता को

सम्मान दिया माँ कैकेयी को

Xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

Xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

उद्वेलित , अनियंत्रित , आन्दोलित परजा से कहा
प्रतीक्षा करो धर्म राज भरत के रथ की
वह आता ही होगा धर्म धुरी धारण किये सिंहासन सुशोभित करने
धर्म धर्म लहराता हुआ
वह दशरथ नहीं है ,
वह राम नहीं है
वह अति महान है
नीति नियामक ,
कष्ट निवारक ,
परजा पालक ,
दशरथनंदन है
वह शासक नहीं ,
वह राजा नहीं है ,
वह साक्षात् सेवक है
जनता का

Xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

जब धूल उड़ रही थी आसमानों में
संशय था सबकी आँखों में
भरत की सेना के पदचापों से
तुम कह रहे गंभीर , निश्छल मुद्रा में
धर्म बढ़ रहा मेरी ओर करता परवेश मेरे हृदय में

अनुज लक्ष्मण के क्रोध को अनायास कहकर ताडना दे रहे

आँख बंद किये कह रहे
वह धूल उड़ाता आता मेरी ओर
वह व्याख्या है धर्मों की
उसका अपमान कुल, धर्म, मर्यादा और मेरा अपमान है

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

पर राम आपको करोध भी आता है
इन्द्र पुत्र जयंत के दुस्साहस पर
सूपरणखा की अनैतिकता पर
सागर की हठ धर्मिता पर
रावण के अन्याय पर
पर हर करोध में राम आपके विरला सा संयम है
करोध में असीम मर्यादा है
यह मर्यादित करोध मुझको भी दो हे नाथ
मेरे पास पीड़ा है, छटपटाहट है, करान्ति की आकांक्षा है
सब कुछ बदलने की बेचैनी हैं
करोध है पर करोध की मर्यादा नहीं है
हे परभु मुझे ही नहीं उन सबको करोध की मर्यादा दो
जिनके भी खून में उबाल हो
राज्य, समाज व्यवस्था के सुधार के लिये ////

मुझे लगने लगा जैसे यह मैं पाठ कर रहा एक बड़ी भीड़ के समुख और
करतल ध्वनि मुझे रोमांचित कर रहीं ।

राम करोध नहीं कर पाता नियंत्रण आप पर
नहीं हुये असहज परशुराम के वाक् आकर्मण पर

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

XXXXXXXXXXXXXXXXXX

हे राम आप सहज थे परशुराम के असीम करोध पर
विचार कर रहे थे लक्ष्मण के करोध के औचित्य पर
नहीं आये अतिरेक में परसन्नता के
जब राजा दशरथ ने गले से लगाकर कहा राज्य अब देता हूँ तुमको
कहा था मेरा भविष्य ही नहीं अब जगत का भी ध्यान रखना है तुमको
नहीं हुये असंयमित जब राजा कातर होकर कह रहे राम वन जाना होगा
तुमको
तुमने शीश नवाया सम्मान से पिता को
सम्मान दिया माँ कैकेयी को

XXXXXXXXXXXXXXXXXX

XXXXXXXXXXXXXXXXXX

उद्घोलित , अनियंत्रित , आन्दोलित परजा से कहा
प्रतीक्षा करो धर्म राज भरत के रथ की
वह आता ही होगा धर्म धुरी धारण किये सिंहासन सुशोभित करने
धर्म ध्वजा लहराता हुआ
वह दशरथ नहीं है ,
वह राम नहीं है
वह अति महान है
नीति नियामक ,
कष्ट निवारक ,
परजा पालक ,
दशरथनंदन है
वह शासक नहीं ,
वह राजा नहीं है ,

वह साक्षात् सेवक है

जनता का

Xxxxxxxxxxxxxxx

जब धूल उड़ रही थी आसमानों में

संशय था सबकी आँखों में

भरत की सेना के पदचारों से

तुम कह रहे गंभीर, निश्छल मुद्रा में

धर्म बढ़ रहा मेरी ओर करता प्रवेश मेरे हृदय में

अनुज लक्ष्मण के करोध को अनायास कहकर ताड़ना दे रहे

आँख बंद किये कह रहे

वह धूल उड़ाता आता मेरी ओर

वह व्याख्या है धर्मों की

उसका अपमान कुल, धर्म, मर्यादा और मेरा अपमान है

Xxxxxxxxxxxxxxx

पर राम आपको करोध भी आता है

इन्द्र पुत्र जयंत के दुस्साहस पर

सूपरणखा की अनैतिकता पर

सागर की हठ धर्मिता पर

रावण के अन्याय पर

पर हर करोध में राम आपके विरला सा संयम है

करोध में असीम मर्यादा है

यह मर्यादित करोध मुझको भी दो हे नाथ

मेरे पास पीड़ा है, छटपटाहट है, करान्ति की आकांक्षा है

सब कुछ बदलने की बेचैनी हैं

करोध है पर करोध की मर्यादा नहीं है

हे प्रभु मुझे ही नहीं उन सबको करोध की मर्यादा दो

जिनके भी खून में उबाल हो राज्य , समाज व्यवस्था के सुधार के लिये ||||

मुझे लगने लगा जैसे यह मैं पाठ कर रहा एक बड़ी भीड़ के सम्मुख और करतल ध्वनि मुझे रोमांचित कर रहीं । यह पूरी याद नहीं आ रही थी पर ऐसी ही बहुत लिखी ही हैं और लिख लूँगा । यह ख्वाहिशों का बोझ भी कम हो जाएगा । यह सब छोड़कर वैराग्य ले लेता हूँ । मैंने सोचा चलो दिल्ली में चिंतन सर से राय लेता हूँ । क्या पता यही एक गैर मामूली दास्तान बन जाए । मैं यही विचारते - मथते अपने घर के मोड़ पर आ गया । मैं घर आया तो माँ - बहन थोड़ा चिंतित थे । मैंने यह कहा था कि मैं शाम तक आ जाऊँगा पर रात तक न आया । यह तो समझ गये थे कि मैं नाना के यहाँ चला गया होऊँगा क्योंकि अपने घर तो सारा दिन न लगता । माँ ने उलाहना ऐसा भी दिया , “ यह क्या बात है ? सबकी जान निकाल डाली । कहकर गये होते कि रात नहीं आऊँगा । मैं पूरी रात इंतजार करती रही ” ।

मैंने बताया पूरा क्रिस्सा । मायके की बात पर तो हर स्तरी परस्पर होती ही है , माँ भी हुई । मैंने नाना का प्रस्ताव बताया कि रामायण कराने का । माँ ने कहा कराना तो मुझे चाहिये था पर बाबू कराना चाह रहे तो इसमें भी कोई हर्ज नहीं है ।

मैंने कहा कि इस सबका क्या फ़ायदा ? सारा नाटक होगा , घर का तनाव और बढ़ेगा । हर पक्ष कहेगा मैं भी करूँगा । शहर वाले मामा तो पैसा से सरोबार हैं इस समय , कल वह कह दिये मैं भी करूँगा । तुम करो , नाना करें , मामा करें फिर यही होता रहेगा । नाना को भागवत सुनना है वह सुन लें , नाहक इस काम में उलझ रहे ।

माँ - “ के के रहा घरे पर “?

मैं - “ सभी थे । रात में पूरा गाँव इकट्ठा हो गया था । छोटे मामा कह रहे थे कि उर्मिला के लिये शर्मा जी के लिये लड़का हमीं बताये थे । हमहीं उर्मिला के विवाह में सबसे ज्यादा ज़ोर डालें थे , इसलिये मुन्ना पर हमारा हक्क सबसे अधिक है ” ।

माँ - “ कौनों एहसान कै देहेन का । हर भाई बहिन के बियाह करत हआ । एकउ दमड़ी खर्चा केउ केहेन नाहीं आज तक । हमरे लड़िकन के हाथें दुझ्यौ रूपिया आज तक नाहीं धरने । जब समय रहा मदद के तब केउ खड़ा नाहीं भवा । हमार घरे के काम रूकि गवा रहा , बाबू कहेन मदद कै दआ । ऐ दुझ्नौ परानी कहेन , हमरे लगे का बा । अब सब कूदत हयेन हक जतावइ के बरे ।

समय बनि जाई तब सब खड़ा होई जात हअ , बिगड़े पर केऊ न देखाते ।
और के के रहा ?

मैं - “ अब किसका - किसका बताऊँ ? बहुत हो गया । ”

माँ - “ तनिक ठीक से बताई दअ का भवा , के- के आई रहा । का बाति भई ,
भौजी के का हालि बा , दुलहिनन का कहिन ? ”

मुझे थोड़ा गुस्सा आ गया , मैं बोला , कल से साइकिल पेर रहा हूँ नाहक एक
गाँव से दूसरे गाँव धूम रहा । न जाता तो तुम्हारा डरामा चालू हो जाता ।

माँ - “ हमसे अफ्रसरी न झाडअ । सन् मारि के समाचार पूछत हई तब हमका
पारा देखावत हअ । कौनौ अहसान कई देहअ का ददियौरे- ननियौरे जाइ के
। बगैर अफ्रसर बने त इ हाल बा । काल कुर्सी पाए के बाद का करबअ ।
ऐसन पारा हम बहुत देखे हई । हमसे तनिक आवाज़ नीची कै के बात किहा
करअ । हम कौनौ शर्मा जी न हइ कि बर्दाश्त कै लेबअ । जबान सँभाल के
बात किहा कहअ हमसे । ”

मैं शांत हो गया । मुझे आज दिल्ली जाना था , मैं दिन भर का डरामा न हो यह
सोचकर थोड़ा नम्र बन गया ।

मैं - “ शांत ही तो हूँ । हल्ला कहाँ कर रहा । हल्ला तुम कर रही , बिना
मतलब । ”

माँ - “ अच्छा अब हम हल्ला करत हई । जबसे तोहार रिज़ल्ट निकला बा ,
अफ्रसरी छाई गई बा । ”

मैं - “ बताओ क्या जानना चाहती हो ? ”

माँ - “ शांति से बताओ , के - के रहा । का का बात भय । ”

मैंने पूरी कहानी सुना दी । वह बोली , “ हरि शंकरा हमसे दुई- तीन साल छोट
बा । ओकर दिमाग भगवानै बनाये हए । कुछ ओका नाहीं समझि आवत रहा ।
बड़ी मुश्किल से हाई स्कूल पास केहे रहा । अमीनी करत हअ तहसील में । ई
रौबदार , जिलेदार , सूबेदार नाम राखे से और दूध तुसाए से आईएएस अगर
बनई के होई तब त सब अहिरय आईएएस बनय । अब कुल गाँवे के
आईएएसय बनई के बा । दुलहिन का कहिन । ”

मैं - “ बड़ी भाभी कह रही थी कि हमको बियाह में भूल न जाना । शहर वाले
चाचा हमारा कोई मान नहीं रखे बाबा के विवाह में । हम भी देखेंगे आईएएस
का विवाह कैसा होता है । ”

माँ - “ ई बात त बा । भैया केहू के मान नाहीं रखेन । एतना कपड़ा चढ़ा
तिलक में पर केहू के दुई लत्ता नाहीं देहेन । बियाहे के बाद बहिन - बिटिया के

धोती हमेशा मिलत हुआ उहौ बेराय के । पर भैया बस काम चलाऊँ काम केहेन । भौजी कहिन केका- केका दई झौआ भर त लेवैया खड़ा हयेन । जैसे हम गंगा जी के किनारे के भिखमंगा हई । हम त धोती फेंक के चली आए रहे । कौनौं हम धोती बरे मरत हई का ॥

मैं - “ क्यों ऐसा किया मामा ने ? ”

माँ - “ दरिद्रतापन । भौजी में ढेर दरिद्रापन बा । का पावैं का भरि लई । कबहुँ पेट न भरे ॥ ”

मैं - “ तुम ऐसा न करना ॥ ”

माँ - “ हम त मुन्ना के बियाहे में दिल खोल के खर्चा करबअ । सब के मान राखब । ई बेचारी दुलहिन के केव ध्यान नाहीं राखत जबकि हर कार-परोजन पर सब सँभाल लेति ह । बहुत जांगर बा एनहन के पास ॥ ”

मैं - “ अब हो गया ? सब तो बता दिया । चाय तो पिला दो । ”

माँ ने आवाज़ दी बहन को कि भैया को चाय बना दो ।

मैं - “ माँ तू बचपन से ऐसे ही लड़ाकू थी ॥ ”

माँ - “ अब का भवा ॥ ”

मैं - तेरे मन का एक काम न हो तू सीधे लड़ने लगती है । अब नाना के यहाँ की बात खोद- खोद कर पूछ रही है । वही बात बार- बार घुमा- घुमा कर । बता ही रहा हूँ पर लड़ने पर अमादा हो जाती हो । मैं दिल्ली जा रहा चिंतन सर से आने को कहूँगा । तू उनकी जीप लेकर चली जाना । घूम आना । एक रात जीप लेकर रुक जाना । ”

माँ - “ कब अझिं चिंतन ? ”

मैं - “ एक सप्ताह में आ जाएँगे । मैं कुछ जुगाड़ लगाऊँगा । यह क्या है ? सुना तुमने बसंतवा ठाकुर को मातादीन से पकड़वा के मुर्गा बनवा दिया था , ऐसा क्यों किया ? ”

माँ - “ ओकर दिमाग बढ़ि गवा रहा । मातादीन न रहा होत तबौ ओका न छोड़ित हम । ओकर कुल गुंडई निकारि देइत । इ छोड़कऊ भैया बहुतै डरपोक हएन । हमसे बसंतवा बहिन- बहिन करै लाग । हम कहि देहा एह बार त सस्ते में छोड़ि देहा अगली बार तोहार कुंडली बिगाड़ देबअ ॥ ”

मैं - “ तुम भी चिंतन सर का फ़ार्मूला सीख गई हो ॥ ”

माँ - “ चिंतन बा तेज । इ कुंडली वाला खेला अच्छा चलाए बा ॥ ”

मैंने चाय पी । मैं सामान रखने लगा शाम की यात्रा के लिये ।

मेरे मस्तिष्क में आंटी - ऋषभ घूमने लगे । सबसे ज्यादा शालिनी , वह बहुत सुंदर है , बहुत सलीकेदार है ऐसा आंटी ने कहा था । रागिनी सिंह , वह कोई नई पेंटिंग बनाई होगी । सिद्धांत शरीवास्तव , दारू पी डाला हो एकाध कुंतल । संजीव टंडन , पता नहीं अब किन लड़कियों को पढ़ा रहा होगा । वह किसका जुगाड़ बना रहा होगा । वह तो पूरी आईआईटी की कुंडली चिंतन सर को दिखा मारा होगा । वह मीरा का भजन गाने वाली जयपुर की रहने वाली जेएनयू के गोदावरी होस्टल की लड़की स्मृति चक्रपाणि.... उसको कहूँगा विद्यापति को गाये, कबीर को गाये । यह अंगरेजी में पढ़े लोगों को कुछ पता होता नहीं । एक बार मन से कबीर गा दो , कुछ न कुछ कबीर अंदर रह ही जाएगा । विद्यापति की लिखी लाइनों को स्पर्श कर दो , लम्स ही आकार दे देता है । पर कहाँ इन सबको है पता कबीर , महाकवि विद्यापति का । यह अंगरेजी में पढ़ाई करने वालों को कुछ पता नहीं होता । हम हिंदी वाले न हों तब तो देश का संस्कार ही ख़त्म हो जाएगा । असली राष्ट्र के प्रहरी तो हम ही लोग हैं जो बच्चियार खिलजी की मानसिकता से लड़ रहे । । इनका डिक्षण भी हिंदी का ठीक नहीं होता , बस गाना है । अरे भाई कुछ दिन हमारी चेलागीरी करो , कुछ हमसे हिंदी सीखो । पर अंगरेजी सीखने में पूरा जीवन लगा देंगे और हिंदी के लिये समय ही नहीं है । वह सिगरेट का धुँआ और श्रुति घोष की शायरी । वह चंपारन के तिरपाठी जी जो स्वान्तः सुखाय के लिये रचना करते थे । रितेश सिंह का सीना फूला की नहीं ? वह आम की खेती वाले राजीव सिंह.. उनको आंटी से कहकर आम की और क्रिस्म दिला दूँगा । पता नहीं चिंतन सर आहूजा को कितना पटाये होंगे एक बहुत अच्छा अगला कुछ दिन । पिछली बार सब संघर्ष कर रहे थे अब तो सब अश्वमेध यज्ञ में सफल हो चुके हैं । मैंने सोचा बद्री सर से मिलकर दिल्ली जाता हूँ । मैं लेबर चौराहे पर पहुँचा वही आवाज हमको काम पर ले चलो साहब हम पूरा मन लगाकर काम करेंगे हमरे शरीर पर न जाओ हमारे अंदर ताक़त बहुत है

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 142

मैं बद्री सर के कमरे में पहुँचा । वहाँ कई लोग बैठे थे । वह सब अगले साल की परीक्षा देने वाले लोग थे । सर का नाम बहुत था । वह हर साल इंटरव्यू देते थे । उनके लिये मैंस सहज होता था ।

वह एक बहुत ही बेहतर अभ्यार्थी की प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके थे । उनके पास बहुत लोग आते ही थे , खासकर प्रारम्भिक परीक्षा के बाद । वह मिलनसार थे , सहज थे , हँसमुख थे और अहंकार विहीन थे , इसलिये लोग भी उनके पास अधिक आते थे , नहीं तो यहाँ पर प्रारम्भिक परीक्षा पास करते ही लोग चने के झाड़ पर चढ़ जाते थे ।

मैं जैसे ही पहुँचा सर ने मेरा परिचय कराया । अब तो यह नाम शहर में फैल चुका था । मेरा नाम सुनते ही वह सब खड़े हो गये । हिंदी साहित्य उस दौर में बहुत लोग लेने लगे थे । इलाहाबाद में हिंदी साहित्य , इतिहास , दर्शन शास्त्र बहुत लोग लेते थे । उसके बाद राजनीति शास्त्र और संस्कृत आता था । मेरे चयन ने हिंदी का परचम और लहरा दिया था । यह कहा जा रहा था कि हिंदी के कारण वह यहाँ तक पहुँच गये , हलाँकि अभी मार्कशीट आयी न थी इसलिये निश्चितता से नहीं कहा जा सकता था पर क्यास लगाये जा रहे थे ।

इलाहाबाद में गलचौरा के लिये कुछ तो चाहिये । यह जो सिविल सेवा परीक्षा परिणाम है कई तरह की किंवदंतियों को जन्म दे देता है । वह जो फ़्लाने है वह तो नींद त्याग दिये थे । जो लक्ष्मण बनेगा वहीं मेघनाद को हतेगा , वह लक्ष्मण बनने की राह पर था , हमको पता था । दूसरा कहेगा , कुछ नहीं बस तक़दीर थी । बगैर तक़दीर के कुछ हुआ है आज तक । यह जो ढेकाने थे न उनसे बड़ा क़ाबिल तो आज तक हम किसी को देखा ही नहीं , आज कलक्टरी करै के समय में सुभाष के दुकान पर खड़ा होई के सिगरेट फूँकत हये । अनुराग शर्मा आज हीरो बने धूम रहे हैं , हमारे सामने कृष्णा कोचिंग में प्रारम्भिक परीक्षा का रिज़ल्ट देखे थे । उनका रोल नंबर था , पर उनको विश्वास नहीं हो रहा था । वह तीन लोगों से और दिखवाये थे अपना रोल नंबर । वह अपने हाथ से रगड़ कर मेरे सामने देखे थे रोल नंबर । अब तक़दीर है , आज उनके नाम का दिया जल रहा नहीं तो कुल औँकात ओनकर हमका पता बा । कोई कह देगा , पर सत्य प्रकाश मिश्र सर तो कहते हैं कि उसको हिंदी आता है ।

इ तुम सुने थे ? तुम्हारे सामने कहे थे ? यह अनुराग शर्मा का नाटक है । वह खुद ही फैला रहे हैं , अपनी प्रसिद्धि के लिये । वह आत्म प्रशंसा के बहुत शौकीन हैं , होते सब हैं पर वह कुछ ज्यादा ही हैं । अब कोई नहीं कर रहा तो खुद ही कर लो । वैसे हैं अनुराग बहुत चापलूस । चापलूसी करे होंगे सर की । सुबह- शाम दंडवत कर रहे होंगे । अब मंदिर पर हर दिन जाओ प्रसाद चढ़ाव तब भगवानौ को अच्छा लगता है । कोई कह देगा , एक बात तो है एक ही साल में निकाल ले गया चाहे जैसे भी यह बात तो मानने पड़ेगी ।

हाँ यह बात तो हम भी मानेंगे कि तक़दीर हो तो अनुराग शर्मा ऐसी । हम लोगों की तक़दीर तो हौस पाइप से लिखी है, इतना मेहनत कर रहे पर परवरदिगार की कृपा नहीं हो रही ।

ऐसा नहीं है तुम्हारा भी दिन आयेगा । घूरौ के दिन फिरत है तू त मनई हय यार ।

यह बात तो सच है कि भाग्य मेरे साथ था और सत्य प्रकाश मिश्रा सर अपनी जान छुड़ाने के लिये लोगों से कह भी रहे थे, “अनुराग से मिलो” । उनका यह कहना मेरी प्रतिष्ठा में बहुत अभिवृद्धि कर गया था ।

वैसे हक्कीकत यह है कि इलाहाबाद का सिविल सेवा का अभ्यर्थी बहुत निरीह होता है - गरीबी, दिशाहीनता, अंगरेज़ी न जानना सब एक साथ मिलकर आतंकित करते रहते हैं उसको ।

सर ने कहा, “अनुराग तुम भी बता दो, कुछ कल्याण हो जाएगा इनका” ।

मैं - “सर आप मेरे गुरु हो । आपने बता दिया अब क्या रह गया” ।

बद्री सर - “गुरु गुड़ रहि गवा चेला तो चीनी होइ गवा” ।

मैं - “सर यह आपकी सदाशयता है, पर मैं तो ताउमर कहूँगा आप न होते तब यह दिन मेरे नसीब में न होता” ।

बद्री सर - “यह पारस्परिक प्रशंसा को रहने देते हैं । आप कुछ बता दो इनको, मैं चाय वाले को आवाज़ देता हूँ” ।

मैंने जो कुछ पूछा गया बता दिया । उन सबने कहा, “सर घर आऊँगा” । मैंने भी कहा, “जरूर आना” । वह सब चाय पीकर चले गये । उनके जाते ही मैंने सर से कहा कि मैं दिल्ली जा रहा आज ।

सर - “कुछ ख़ास बात ? दिल्ली में कोचिंग खोलबे हअ का महराज” ।

मैं - “अरे नहीं सर” ।

बद्री सर - “हमको लगा कि इलाहाबाद में पैसा कम मिलेगा । यहाँ के अभ्यार्थी गरीब हैं और मुफ्तख़ोर हैं, इसलिये दिल्ली बेहतर कर्म क्षेत्र होए । एक बात बा अनुराग, हम सुने रहे “जहाँ न जाये कवि वहाँ जाये कवि” पर तुम नया मुहावरा दे दिये, जो न सोचै कोई उ सोचै अनुराग” ।

मैं - “सर आप भी मज़ाक उड़ा रहे । वह सब मुद्दा ख़त्म हुआ । मैंने ब्राइट कोचिंग भी छोड़ दिया । अब इस जंजाल से मुक्ति मिली” ।

बद्री सर - “ठीक किया । यह बहुत बेकार काम है । पढ़ो फिर पढ़ाओ और कोई अनुभव भी नहीं अध्यापक होने का हम सबके पास । यह एक प्रशिक्षित - दीक्षित आदमी का काम है । हम सबके लिये नहीं बना है ।

मैं - “ सर वह इतिहास की बात हो गई । जा रहा दिल्ली सोचा आपसे मिल कर जाऊँ ।

बद्री सर - “ यह तो ठीक सोचा । पर एकाएक कैसे विचार आया ?

मैं - “ सर यह विचार एकाएक नहीं आया । मैं दिल्ली में आंटी के यहाँ रुका था । उनका लड़का अमेरिका से आया है । आंटी दूर के रिश्ते से मौसी लगती है । आंटी चाह रहीं मैं आकर मिल जाऊँ, बस यहीं कारण है जाने का ।

बद्री सर - “ अब चयन हो गया है बाजार बस गया है । सब पूछ रहे हैं, नहीं तो आज कोई पूछने वाला न होता । हमने असफलता तीन साल देखी है और इस साल सफलता । तुमको असफलता का दंश नहीं पता, कितना दुखद होता है वह । रामचन्द्र शुक्ल जैसे ईर्ष्या पर लिखे वैसे ही असफलता पर लिखना चाहिये था उनको । क्या पता लिखा ही हो हम कौन सा पूरा रामचन्द्र शुक्ल पढ़ गये । हम तो बस चिंतामणि पढ़े हैं । असफलता पर हर कोई ताना मारता है । हर कोई क्षमता पर सवाल उठाता है । जिसको इस परीक्षा की ए, बी, सी भी नहीं आती वह भी कह देता है, “ इनके बस के इ काम बा नाहीं नाहक समय बर्बाद करत हएन । रेलवे के फार्म निकला बा उहै भरि देहे होतेन कम से कम रेलवे के पास लै के बाबू- माई के तीरथ कराई देहे होतेन । ई परसासन बहुत गंभीर विसय है एका अनाड़िन के हाथ सरकार न दे । अखाड़ा में माटी हर साल चाटत हएन पर जब तक देह न तोरवाई लेझहिं तब तक न मनिहिं ।

इस बार वही लोग वंदना कर रहे । वही लोग कह रहे, इनका तो होना ही था । जाओ इस सफलता का सुख लो । थोड़ा लड़कियाँ भी देखना शुरू करो इतने लोग विवाह के लिये आ रहे हैं । आंटी के कौनौ बिटिया त नाहीं बा ? सावधान रहना लोग लफझिया लेते हैं । कब तक आओगे ?

मैं - “ सर आप तो मेरी माँ की तरह बात कर रहे हो । तीन - चार दिन में आ जाऊँगा ।

बद्री सर - “ भाई माता जी के अनुभव होए, उन्होंने सुना होगा । वैसे हो तुम बहुत चालू । तू ऐसन गुड़ नाहीं हअ कि चींटा खाई जाई । पर कई बार सेर के सवा सेर मिल जाते हैं । ज़रा ध्यान रखना ।

मैं - “ज़रूर रखूँगा सर । पर अगर मसरब की लड़की मिले तब इसमें खराबी क्या है ?

सर - “ नाते- रिश्ते के जो अमीर लोग होते हैं वह पहले आप पर ध्यान नहीं देते अब सब कहेंगे हमार मन शुरू से इसी लड़के पर था । ऐसे लोगों के यहाँ बिल्कुल न करना । यह सब बहुत स्वार्थी होते हैं । पर मस्रब की लड़की मिले तो कोई ख़राबी नहीं है । इसीलिये कह रहा देखना शुरू करो । देखोगे तभी मिलेगी । ”

मैं - “ यह बात तो है सर । ”

सर - “ अगर समय मिलेगा तब जवाहर बुक स्टोर चले जाना और कुछ किताब लिख देता हूँ लेते आना , मेरा साला भी ज़ोर मार रहा परीक्षा देने को । अब मेरारू से तो शांति चाहिये ही । ”

मैं - “ ज़रूर सर । सर एक बात रह गई आपको बताने से । ”

सर - “ कौन सी ? ”

मैं - “ अमित चौधरी विषय बदल रहे ? ”

बदरी सर - “ कैसे पता ? ”

मैं - “ मुझसे ही बताया । ”

बदरी सर - “ कब कहा ? ”

मैं - “ सर प्रारम्भिक परीक्षा के समय यूपीपीएससी के हाल में मुझसे कहा । ”

बदरी सर - “ क्या कहा ? ”

मैं - “ कहा कि मैं विषय बदल कर हिंदी लेना चाह रहा हूँ । सत्य प्रकाश मिश्रा सर के पास गया था उन्होंने मुझसे तुमसे मिलने की सलाह दी है । ”

बदरी सर - “ वह उसके बाद मिला ? ”

मैं - “ नहीं सर । ”

बदरी सर - “ वह तुम्हारे साथ कितना बदमिज़ाजी किया था । अब सहयोग चाह रहा । किसी काले चोर की मदद कर देना पर उसकी मत करना । ”

मैं - “ ठीक है सर । ”

बदरी सर - “ तब तो बहुत बड़े क्राबिल के पेड़ बने थे । हिंदी जैसे नंबर बरसा रही है । इसमें भी लोग खराब अंक पाते हैं । अंतिम अवसर है । तीन - चार महीने बाद परीक्षा । हिंदी जैसे कामधेनु गाय है , जो चाहे दुहि ले । बड़ा अंग्रेज बना घूमता था । i am not comfortable in Hindi.. यही बोलता था न । यह सब ठग हैं । इनको और ठगो , उल्टा- सीधा बताय के । शठे शाठयम समाचरेत “ । ”

मैं - “ अगर मेरे पास आया तो क्या करें ” ।

बद्री सर - “ निकालो लाठी और लाठिन - लाठी हन दो । इसी लायक है । ”

मैं - “ सर इतना गुस्सा नहीं करते ” ।

बद्री सर - “ बहुत दया धर्म जीवित न हो जाए । यह सब उसके लायक नहीं हैं ” ।

मैं - “ ठीक है सर । मैं दिल्ली से आकर बात करता हूँ । आज तो चला ही जाऊँगा ” ।

बद्री सर - “ चिंतन से मिलोगे ” ?

मैं - “ ज़रूर सर ” ।

बद्री सर - “ उनको ले आना इलाहाबाद ” ।

मैं - “ ठीक है सर ” ।

मैं चलने लगा बद्री सर ने कहा एक बार और चाय पीकर जाओ । मैंने उनकी सबसे कमज़ोर नस छू दी थी । मेरा हर काम सुनियोजित होता है । मैं चार चालें आगे की सोच कर चलता हूँ । मेरी चाल का अंदाज़ा लगाना आसान नहीं होता । मैं रुक गया । चाय पीते- पीते सर ने पूछा, “ कुछ बताया तो नहीं ” ?

मैं - “ नहीं सर ” ।

बद्री सर - “ उसको जो पाठ्यक्रम में नहीं है वह पढ़वा दो ” ।

मैं - “ सर उसको अभिज्ञान शाकुन्तलम पढ़वा देते हैं हिंदी में । नहीं तो चिंतन सर से कहते हैं कि उसके अच्छे ग्रहों की चोरी कर ले कुंडली देखते समय ” ।

बद्री सर - “ सत्य प्रकाश मिश्रा सर को भड़काओ । कह दो यह पापी है ” ।

मैं - “ सर यह कैसे कहें ” ?

बद्री सर - “ कुछ दिमाग़ लगाओ । ”

मैं - “ ठीक है सर ” ।

बद्री सर - “ उनसे आज मिल के जाओ ” ।

मैं - “ वह कहाँ किसी को भाव देने वाले हैं नहीं । आप और अमर गुप्ता सर भी गये थे , क्या हशर किया था आपको पता ही है । अमर गुप्ता सर को तो कह

दिये थे तुम्हारे ऐसे लोग हिंदी का नाम बर्बाद किये हैं जबकि सर की कोई गलती न थी बस इतना ही कहा था हिंदी साहित्य के इतिहास पर डाक्टर नागेन्द्र की किताब मोटी है कोई पतली किताब बता दें । इसी पर वह भड़क गये । वह अमित चौधरी की हिंदी सुनकर ही भगा देंगे ॥

सर - “ नहीं यार और दिमाग़ लगाओ । किसी भी तरह वह धुसने न पाये । यह सब साले साँप हैं । मायावी राक्षस हैं । यह सब बहुत कमीने हैं । किसी भी तरह रोको , यह सत्य प्रकाश सर के यहाँ धुस न पायें ।

मैं - “ सर वापस कर आके दिमाग़ लगाता हूँ ॥

बदरी सर - “कितने दिन में आओगे ?

मैं - “ सर तीन- चार दिन में ॥

सर - “ तीन कि चार ?

मैं - “ सर तीन रुकूँगा और चौथे दिन आ जाऊँगा ॥

सर - “ यह हिंदी बनाम अंगरेज़ी की लड़ाई है । जो हिंदी वालों का अपमान किया है वह हिंदी से सफल होने का हक्क नहीं रखता ॥

मैं - “ सर चिंता न करो । इस मुद्दे पर लौटकर विचार करते हैं ॥

मैं यूनिवर्सिटी रोड के चक्कर काटता अपने घर आया । मेरी हाबी हो गई थी साइकिल चलाना । रोज़ दस - पन्द्रह किलोमीटर चला ही देता था साइकिल । माँ ने मिठाई का डिब्बा और एक साड़ी दी आंटी के लिये । एक साड़ी और एक शगुन शालिनी के लिये दिया , यह कहते हुये कि यह तुम शालिनी को ही देना यह कहते हुये कि मैंने भेजा है । मेरे पास वही पुराना सूटकेस था जो मैंने लिया था इंटरव्यू के समय । उसी में सारा सामान पैक किया । शाम को पिताजी आये । वह किसी पचड़े में नहीं पड़ते थे । उनसे कोई मतलब नहीं था किसी भी पंचौरे से । मेरी माँ को घर की एक- एक राजनीति में रुचि रहती थी पर पिताजी से कोई ताल्लुकात नहीं था । वह मुझसे एक भी बात मेरे गाँव की यात्रा के बारे में न किये । वह इसी बात पर ज्यादा लगे थे कि मैंने ब्राइट कोचिंग में पढ़ाना क्यों बंद कर दिया था । उन्होंने आते ही मेरे साथ चाय पीते हुये पूछा कि सब पैक कर लिया , कितने दिन दिल्ली रहोगे ?

मैं - “ पैक करने को कुछ है ही नहीं । कपड़े रख लिये । दिल्ली तीन दिन रहूँगा ॥

पिताजी - “ तुम सारा फ़ैसला भावुक होकर उत्तेजना में क्यों लेते हो ? यह ठहराव तुम्हारे अंदर कब आएगा ?

मैं - “ कौन सा फ़ैसला उत्तेजना में भावुकता भरा है ” ?

पिताजी - “ यही ब्राइट कोचिंग में पढ़ाना छोड़ने वाला ” ।

मैं - “ यह भावुक फ़ैसला नहीं था । यह एक सोचा- समझा फ़ैसला है । मुझे लगा कि पढ़ाने का फ़ैसला एक उचित फ़ैसला नहीं है । मेरे पास पढ़ाने का कोई अनुभव है नहीं । मैं शायद न्याय नहीं कर पाऊँगा लोगों के साथ ” ।

पिताजी - “ यह जिस उम्र के लोगों को पढ़ा रहे थे वह कोई प्राइमरी के तो थे नहीं । यह सब तुम्हारे ही उम्र के थे । यह विश्वविद्यालय में परम्परा रही है कि जो भी ऐसे टाप करता था उसको लेक्चरर के लिये प्रस्ताव देते थे और वह सब कोई ट्रेनिंग तो करते नहीं । यह ट्रेनिंग छोटे क्लासेज़ के लिये होता है । एक परिपक्व ऊँची कक्षा के छात्रों के लिये नहीं होती । यह तुम्हारे आगे के जीवन के लिये बहुत उपयोगी होती । अभी तक तुमने अपने लिये पढ़ा था , अब औरों के लिये पढ़ते । यह औरों के लिये पढ़ना एक अलग आयाम देता व्यक्तित्व में । एक बड़ी लोगों से खचाखच भरी क्लास को प्रतिदिन संबोधित करना एक अलग अनुभव होता है । एक अध्यापक अनुत्तरित प्रश्न पूछने वाले छात्रों की चुनौतियों से रुबरु होता है और उसमें एक तराश आती है । वह एक अवसर आया था , वह तुमनें गँवा दिया ” ।

मैं - “ आप ही तो कह रहे थे , यह ठीक नहीं है । अभी क्या अनुभव है तुमको ” ?

पिताजी - “ यह मैंने आपकी अपनी कोचिंग चलाने के फ़ैसले के लिये कहा था न कि यहाँ पढ़ाने के लिये । यहाँ पढ़ाना तो ठीक है , भले ही पैसा न मिले । यह जो तुम व्यापार की प्रक्रिया आरंभ कर रहे थे उस पर मेरा ऐतराज़ था । मुझे क्या किसी को भी कोई ऐतराज़ पढ़ाने से क्यों होगा ? तुम दिल्ली से वापस आकर पढ़ाना शुरू करो ” ।

मैं - “ ठीक है पिता जी । आकर पढ़ाना शुरू करता हूँ ” ।

मैं तकरीबन साढ़े सात बजे घर से निकला । प्रथागराज ट्रेन 9:30 बजे जाती थी । मेरे सामने से फिर वही सारे स्टेशन बमरौली , मनौरी, मनोहरगंज , फतेहपुर , कानपुर गुजरते हुये । मैं सुबह दिल्ली के अजमेर गेट साइड से होता हुआ आंटी के पूसा रोड के कैम्पस में प्रवेश किया । कितना बदल गया था सब कुछ वही होकर भी मेरी एक सफलता से । सच सफलता नया जीवन देती है ।

आंटी के घर की घंटी बजी । बेवक्त भी आया था । आंटी चौंक पड़ी । इक उम्र हो गई थी इस घर में किसी भूले- बिसरे के आये हुये । आंटी की आँखों में कछूतर के परों ऐसा रेशमी उजाला हो गया ।

मैंने आंटी के पैर छुये । आंटी ने मेरे माथे को अपने होंठों से स्पर्श किया । आंटी के लम्स से ही एक आकार का अनुभव मुझे मेरे अंदर होने लगा और एक नई भावना संचरित होने लगी । वह पूरा परिदृश्य मेरे सामने घूमने लगा

जब मैं आंटी से पहली बार एक अपरिचित के तौर पर मिला था , फिर साहचर्य ने हम दोनों के बीच नज़दीकियों को जन्म दिया , उसने यह कहकर मेरे सारे सत्कर्म तुझे मिले मुझे भावुक कर दिया था , कितने दुःख- दर्द आंटी ने अपने मेरे साथ साझा किया था । मैं एक अजनबी था जब पहली बार इससे मिला था पर अब इसके बहुत करीब आ गया हूँ और उसका पुतर न होकर भी एक पुतर सदृश हो गया हूँ । मैंने घर में एक शांति देखी । घर में कोई न था , आंटी के सिवाय । मैंने पूछा, “ ऋषभ- शालिनी कहाँ हैं ?

आंटी - “ वह लोग अभी आयेंगे ” ।

मैं - “ कहीं गये हैं क्या ” ?

आंटी - “ हाँ ” ।

मैं - “ इतने सुबह- सुबह ” ?

आंटी - “ वह सब दस - ग्यारह बजे के बाद आते हैं ” ।

मैं - “ कहाँ से ” ?

आंटी - “ शालिनी के घर से ” ।

मैं - “ क्या रात वहाँ रुके थे आज ? क्या वह शालिनी के यहाँ ज्यादातर रात रुकते हैं ” ?

आंटी - “ वहीं रहते हैं वे लोग । दिन में आते हैं कुछ देर के लिये । फिर चले जाते हैं शाम को ” ।

मैं - “ यहाँ नहीं रहते ” ?

आंटी - “ नहीं । मैंने लिखा भी था ” ।

मैं - “ मैंने सोचा कभी- कभार रुकते होंगे वहाँ । क्यों नहीं रुकते यहाँ ” ?

आंटी मायूस हो गई । उसने मायूसी छुपाने की बहुत कोशिश की पर वह असफल रही । उसने कहा , “ मेरे पास बहुत सुविधायें हैं नहीं । यह लोग

विदेश में रहकर एक अलग जीवन शैली के आदी हो चुके हैं । यह सरकारी मकान है । इसकी बनावट आदिम जमाने की है । इसके बाथरूम पुराने तरह के हैं । दीवारों में थोड़ा सीलन रहती ही है । कमरे भी सरकारी घरों के बहुत बड़े बनाये जाते नहीं । डराइंग रूम बड़ा बना देते हैं और कमरे छोटे बना देते हैं । हर कमरे के साथ बाथरूम होता नहीं । घर में पूरे वक्त काम करने वाला कोई नौकर है नहीं । यह सब असुविधाजनक होता है । आहूजा साहब की बहुत बड़ी कोठी है । दसियों कमरे हैं । आगे- पीछे लान है । नौकरों की भरमार है । दरवाजे पर कारों- डराइवरों का क्राफिला खड़ा है । मेरा जितना बड़ा कमरा है उससे बड़ा बाथरूम है । बाथरूम आधुनिक तरीके का है , बेडरूम बड़ा है । यह सब देखकर कोई भी वहीं रहना चाहेगा ।

मैं सोचने लगा । मेरी माँ होती आंटी की जगह तो क्या करती ? वह तो हाथ घुमाकर ही तोड़ देती । मेरा ही नहीं शालिनी का भी , इस हरकत पर । आहूजा साहब और मिसेज़ आहूजा का तो एक कर्म न छोड़ती । हर सुबह - शाम कहती कि कैसा संस्कार दिया है बहू ससुराल रहना नहीं चाहती । मुझे याद है झुलई भैया जब घर दमदा हुये थे तब उसने कितना हंगामा किया था । झुलई भैया वाली भाभी को भी उसने बहुत सुनाया था यह कहते हुये , “ संपत्ति के गुरुर में न रहअ । सास - ससुर के सेवा करअ भगवान के तोहकौ जवाब दई के बा ” । झुलई भैया से कहा था , “ पढ़ाई- लिखाई करअ जीवन बनावअ । ई तीस बिघल्ली खेते में कुछ न होई जाये ” ।

मुझे कुछ नहीं सूझ रहा था कि मैं इस संवेदनशील मुद्दे पर क्या कहूँ । मैंने विषय बदलने की चाहत से कहा , “ आंटी मैं सामान किस कमरे में रख दूँ ” ?

आंटी - “ किसी भी कमरे में रख दो सारे कमरे तो खाली ही है । चाय बनाती हूँ तुम नहा लो ” ।

मैं वापस आया तब तक आंटी चाय बना चुकी थी । उसने पूछा कैसा अनुभव रहा सेलेक्शन के बाद ? तुम बहुत तनाव में थे जब तुम आये थे उस बार । जिस दिन रिजल्ट आया था मैंने सुबह- सुबह ही देख लिया था । शाम को आहूजा साहब अपनी पत्नी के साथ आये और बोले , “ आप बहुत भाग्यवान हैं । आपका एक बेटा आईएएस हो गया ” । मैंने भी कहा , “ इसमें कोई दो राय नहीं है कि मैं भाग्यवान नहीं हूँ । ईश्वर ने मेरे हिस्से में दुख दिये हैं तो सुख भी दिया है । ऋषभ- शालिनी - अनुराग सब एक से बढ़कर एक प्रतिभाशाली हमारे यहाँ हैं । यह तो इनायत है परमपिता की है नहीं तो प्रतिभाओं का जखीरा कहाँ सबके नसीब में होता है ” । वह अपने साथ बहुत मिठाई लाये थे । मैंने पूरे पूसा में उसको बँटवा दिया था । आहूजा साहब की पत्नी ने कहा , “ बहन जी शालिनी अकेली बेटी थी । मैं सोचती थी एकाध बच्चे और होते तो

कितना अच्छा होता , ईश्वर ने इतना कुछ दिया है एक बच्चा और दे देता मुझको । पर तकदीर में जितना लिखा होता है उतना ही मिलता है । पर उसने सुन ली । ऋषभ ऐसा बेटा मिला अब तो अनुराग भी मिला हम सबको । आप कहती ही हैं कि वह जीवन में बहुत आगे जायेगा । मातारानी की कृपा बनी रहे सब बच्चों पर “ ।

वह दोनों पति-पत्नी बहुत खुश थे और कह रहे थे इस बार अनुराग आयेंगे तब हमको ज़रूर मिलवाना , पिछली बार आये थे तब मुझे पता न था । मैंने भी कह दिया कि ज़रूर मिलवाऊँगी इस बार आयेगा तब । तुम्हारे चिंतन सर से कुछ इनका संबंध हो गया है । यह चिंतन सर के आफिस भी गये थे और चिंतन सर भी इनके यहाँ गये थे “ ।

मै - “ क्यों इतना आना- जाना बढ़ा “ ?

आंटी - “ पता नहीं । पूछना उनसे । यह बताओ सेलेक्शन के बाद कैसा अनुभव हो रहा । उर्मिला तो बहुत खुश हुई होगी ? बात भी होने वाली है । तुम्हारे पिता ने क्या कहा । उनका पहला रिएक्शन कैसा रहा ? कैसे रिज़ल्ट पता लगा और पता लगने के बाद तुम्हारा रिएक्शन क्या था ? बहुत सुखद विस्मय हुआ होगा ? एक अभूतपूर्व अहसास हुआ होगा “ ?

मै - “ आंटी जिस परिवेश में मैं पला- बढ़ा और जो मेरी अकादमिक उपलब्धियाँ थीं उसको देखते हुये यह मेरे लिये निःसंदेह एक बड़ी उपलब्धि थी । मैं ऋषभ की तरह न तो जहीन था और न ही परीक्षाओं के गढ़ों को गिराने का कोई इतिहास मेरे पीछे था । मैं तो एक धूमकेतु की तरह अँधेरों में उजाला करते हुये उभरा । ईश्वर की कृपा थी । इसके साथ- साथ आपने और माँ ने अपने सारे सत्कर्म मुझे दे दिये थे , शायद यह मेरे भाग्य और परिश्रम से ज्यादा उसका यह परिणाम है “ ।

आंटी - “ बग़ेर मेहनत के तो कुछ होता नहीं । तुमने परिश्रम किया और भाग्य ने साथ दिया । तुम ऋषभ ऐसे जहीन लोगों से बेहतर रोल माडल हो समाज के लिये जिसने एक स्थापित मान्यता को नकार कर सफलता प्राप्त की । अब लोग तुमको देखकर यह हौसला कर सकते हैं कि एक सामान्य से अकादमिक पृष्ठभूमि का व्यक्ति एक दुर्गम दुर्ग पर विजय प्राप्त कर सकता है । तुम्हारे तरह की उपलब्धियाँ ज्यादा प्रेरक होती हैं बनिस्बत ऋषभ जैसों की उपलब्धियों के ।

आंटी का ध्यान और हटाने के लिये मैंने कहा कि आप लिख रही हो ? कुछ पढ़ा जो ख़रीदा था ?

आंटी - “ काफ़ी पढ़ लिया है । फिर चलूँगी तुम्हारे साथ दुकान पर मुझे और दिला देना । ”

मैं - “ ज़रूर आंटी । आंटी, मैं आपके मायके गया था । रामदीन मामा से मिला और जो सामने वाले हरिशंकर मामा हैं जिनके बच्चों का नाम फ़ौजदार, सूबेदार, तहसीलदार, जिलेदार, रौबदार हैं उनसे भी मिला । वह सब भी आईएएस बनना चाह रहे और दिमाग़ दूध पीकर खूब मज़बूत कर रहे । ”

आंटी - “ हरिशंकर तो दिमाग़ से मोटा था । हमसे - उर्मिला से दो- तीन साल छोटा रहा होगा । अब बाप का दिमाग़ पाया होगा तब क्या आईएएस होंगे ? ”

मैं - “ आंटी कोई दुबरी नाना को बता दिया है कि गाय का दूध पीने से दिमाग़ तीक्ष्ण होता है इसलिये सुबह - शाम दूध की नदी बहाये हैं । मैंने माँ से कहा यह तो माँ ने कहा कि अगर दूध पीने से आईएएस बनना होता तब तो सारे अहिरय आईएएस बन गये होते । मुझसे दुबरी नाना पूछ रहे थे, “ तोहार दूध के खपत केतना रही ? ” अब आंटी शहर में तो दूध बहुत महँगा है कौन पी सकता है, जिस तरह दुबरी नाना पिला रहे । मैंने कहा कि मैं दूध नहीं पीता तब वह बोले, का कहत ह बग़ैर दूध के खपत के आईएएस बनि गये । ”

आंटी - “ यह गाँव वाले ऐसे ही भ्रम पाल लेते हैं । रामदीन का क्या हाल है ? ”

मैं - “ आंटी ठीक ही है । गरीबी है हर तरफ । अब खेती से कुछ होता नहीं । खेत भी बहुत तो है नहीं । दरवाज़े वाला खेत बेच दिया था बेटी के विवाह के समय । दामाद भी कुछ नहीं करता । वह मुझसे कह रहे थे कहीं दामाद को लगा दो । मैं कहाँ लगा दूँ ? मेरा बस सेलेक्शन हुआ है पर भ्रान्ति ऐसी है कि मैं कहीं भी कुछ भी करा सकता हूँ । मेरे ददिहाल - ननिहाल में सबकी एक ही माँग, कहीं लगा दो रोज़ी - रोटी का ठिकाना हो जाए । ”

आंटी - “ यह बात तो है । हर ओर बेरोज़गारी है । सरकार कितना रोजगार पैदा करे जिस तरह जनसंख्या बढ़ रही है । निजी क्षेत्र तो इलाहाबाद में कुछ ख़ास आये नहीं । एक नैनी है जहाँ कुछ प्रयास हुआ पर सुना है वहाँ भी फ़ैकिटर्याँ दम तोड़ रहीं । शिक्षा भी तो रोज़गारपरक नहीं हो रही है । हर जगह शिक्षा एक ढर्र की है जिसका बदलती व्यवस्था से कोई सरोकार नहीं है । कृषि विज्ञान एक अच्छा क्षेत्र है पर न तो ज्यादातर लोगों को इसके बारे में पता है और न ही पढ़ने की ज्यादा सुविधा है । ”

मैं - “ आंटी, पूरे शहर इलाहाबाद में एक पालिटेक्निक है और एक आटीआई । इतने बड़े शहर को देखते हुये वह कुछ भी नहीं है । किसी के पास कोई सोच ही नहीं है किस तरह से रोज़गार और शिक्षा को जोड़ा जाए । इस निरुद्देश्य बीए, एमए की पढ़ाई से क्या होगा । कितने लोग इस सरकारी

नौकरी में खप सकते हैं । पूरा शहर इलाहाबाद आईएएस - पीसीयस की परीक्षा देता है । सीट कितनी आती है ? आईएएस में 800 और पीसीयस में 300-400 । हज़ार - बारह सौ सीट और एक लाख के आस- पास परीक्षा देने वाले , अधिकांश को तो निराश होना ही है ।

आंटी - “ यह कोई नौकरी के लिये तो परीक्षा देता नहीं । यह तो एक गौरव की परीक्षा है । तुमको क्या तनाख्वाह मिलेगी ? यह 2200-4000 की स्केल है । इसमें बस जीवन चल सकता है पर हर कोई इसको पास करना चाहता है । थोड़ा - बहुत सरकारी सुविधा है पर मुख्य कारण समाज में इसकी स्थापना है । यह एक दैवत्व प्रदान करती है । इस समय हर व्यक्ति तुमको अपनी कन्या सौंपना चाह रहा , हर व्यक्ति तुम्हारे नाम के साथ जुड़ना चाह रहा । इसका क्या कारण है ? तुम किसी के लिये कुछ करो या न करो पर इस समय तुम्हारा नाम ही बहुत है एक आशा के संचार के लिये । यही वह कारण है इस परीक्षा को साल दर साल लोग दे रहे । अब नौकरियाँ तो हैं नहीं उसके लिये क्या किया जाये । देश की व्यवस्था ही ऐसी है नौकरियों का सृजन नहीं हो रहा , जनसंख्या लगातार बढ़ती जा रही । ”

मैं - “ यह बात तो है आंटी । अभी बहुत कुछ प्राप्त करना है राष्ट्र को । एक नवोदित देश की अपनी समस्या होती ही है । ”

आंटी - “ यह नवोदित देश नहीं रहा अब । हमने वह किया ही नहीं जो हमें करना चाहिये था । ”

मैं - “ आंटी आप कितने बजे आफ्रिस जाते हो ? ”

आंटी - “ मैंने छुट्टी ले लिया था जब यह लोग आये थे , फिर मेरे साहब ने कहा कि आप कुछ देर के लिये आ जाया करो फिर जब मन करे चली जाओ , आप के होने से काम सम्मल जाता है । मुझे भी लगा यह ठीक है , मैं रहती भी तो कैम्पस में हूँ आने जाने में तो कोई समय लगता नहीं । वैसे भी मैं क्या करूँगी सारा दिन , यह लोग भी तो घूमते रहते हैं । इनके जिम्मे भी बहुत काम है । बहुत सी ज़िम्मेदारियाँ ओढ़ रखी हैं इन लोगों ने । आहूजा साहब का भी कुछ- कुछ काम देखते हैं यह लोग । उनका पूरा सिस्टम कम्प्यूटराइज कर रहा ऋषभ । इससे पारदर्शिता आ जाएगी और यह लोग न्यूयार्क से भी थोड़ा बहुत मदद कर देंगे । ”

मैं - “ क्या आहूजा का काम ऋषभ सम्भालने लगे ? ”

आंटी - “ मुझे नहीं पता । मैं पूछती भी नहीं । यह लोग कुछ बता देते हैं , मैं सुन लेती हूँ । बाकी मैं तो कोई रुचि रखती नहीं उसमें । ”

मैं - “ आपने ही कहा था कि विवाह की शर्त थी कि आहूजा साहब का ऋषभ काम देखें , वह शर्त विवाह में अङ्ग डाल रही थी ? ”

आंटी - “ वह सब बात पुरानी हो गयी । कौन सँभालेगा अगर बेटी- दामाद नहीं सँभालेंगे । कोई और तो है नहीं । विदेश भी गये हैं पैसा ही कमाने । अब यहाँ भी पैसा बरस ही रहा है । अब इस बरसात को क्यों छोड़ेंगे । जब जीवन का एक लक्ष्य निर्धारित हो चुका है तब उसकी प्राप्ति जैसे भी संभव हो वैसे करनी ही है । कोई छोटा- मोटा पैसा तो आहूजा साहब के पास है नहीं । तुम भी जाकर देखना हवेली और उनकी शान- शौकृत । एक दिन तुम भी रुक जाना उनके यहाँ देखना ऋषभ की ससुराल जो विश्वकर्मा ने बनाई है । ”

मैं - “ आंटी तू बहुत अच्छा हिंदी बोलने लगी है । अच्छा मुहावरे भी बोल लेती हो । ”

आंटी - “ मेरा गुरु है एक । वह सिखाता है । ”

/

मैं - “ आंटी आप नेचुरली गिफ्टेड हो । आप खुद में बहुत क़ाबिल हो । आप आदर्श हो बहुतों के लिये , मेरे लिये तो हो ही । जिस तरह का संघर्ष आपने किया और जो आपकी जिजीविषा है वह अनुकरणीय है । मैंने माँ से भी कहा कि आंटी ऐसी महिलायें ईश्वर कम बनाता है , और बनाना चाहिये । अगर ऐसी महिलायें कायनात में हों तो संघर्ष करने की क्षमता बढ़ जायेगी , इस जमाने की । ”

आंटी - “ अनुराग तुम मेरे बेटे हो । तुम बेहतर ही सोचोगे मेरे बारे में , पर ऐसी कोई उपलब्धि मेरी नहीं है । मैंने सिर्फ़ अपना एक बेटा पाला और क्या किया ? यह तो सभी करते हैं । मैंने कौन सा कार्य समाज के लिये कर दिया , मैंने किसके आँसू पोंछ दिये । अपने ही आँसुओं को बहाकर खुद ही पोंछ लेना यह कहाँ की उपलब्धि है । ऋषभ जहीन था , ईश्वर का वरदान प्राप्त व्यक्ति है वह । वह मिट्टी को हाथ लगाये तो सोना हो जाये । अब पारस पत्थर को गढ़ा तो क्या गढ़ा । मुख्य काम तो उर्मिला ने किया । तुम कितने बदमाश थे , कितनी बार असफल हुये । तुम्हारे पिताजी तुमको एक सामान्य नौकरी के लिये दबाव डाल रहे थे , घर के हालात भी ठीक ही ठीक थे । ऐसी परिस्थिति में उसने तुमको यहाँ तक पहुँचाया । एक उत्तम मिट्टी वाले खेत की मिट्टी को सधे हुये चाक पर चलाकर एक आकृति बना देना और एक तालाब की चिपचिपी मिट्टी को टेढ़े चाक पर चलाकर गणेश को सुमुख रूप से जमाने के सामने रख देना इन दोनों में बहुत फ़र्क होता है । ”

मैं - आंटी आप क्या शब्द गढ़ने लगे हो । यह कब सीखा ?

आंटी - जब से तुम कहकर गये कि कम से कम दो हज़ार शब्द रोज पढ़ो और 500-700 शब्द रोज़ लिखो तब से वहीं कर रही । हो सकता है वह फ़र्क

लाया होगा ।

मैं - “ आंटी यह एक ऐसी विधा है अपने आप को सुधारने की जो फेल हो ही नहीं सकती । आप भी उसके एक उदाहरण हो ” ।

आंटी - “ अनुराग तुम अध्यापक भी अच्छे होते । तुम हर चीज को नए तरीके से देखते हो ” ?

मैं - “ आंटी जो व्यक्ति जिस काम के लिये बना है यह उसको खुद ही पता नहीं होता और न ही वह काम मिलता है । अब एक जिंदगी की दौड़ है , हम सब दौड़ रहे जैसे ज़माना दौड़ा रहा । आप आफिस कब जाओगे और कब आओगे ? आप अपना आने- जाने का समय बता दो , मैं वैसे ही अपना कार्यक्रम बनाऊँ ।

आंटी - “ तुमको कहाँ जाना है ” ?

मैं - “ आंटी , मुझे जेएनयू और दिल्ली यूनिवर्सिटी के जुबली होस्टल जाना है । मेरे साथ जो इंटरव्यू दिये थे उनसे भी मिल लेता हूँ ” ।

आंटी - “ कितने दिन रुकने का विचार बनाकर आये हो ” ?

मैं - “ तीन दिन ” ।

आंटी - “ चिंतन से मिलने गाज़ियाबाद जाओगे ” ?

मैं - “ नहीं आंटी । उनको संदेश अगर हो जाएगा तब वह ही आ जाएँगे ” ।

आंटी - “ आहूजा साहब से कह देना वह तो कूद कर संदेश भेज देंगे ” ।

मैं - “ क्या आहूजा साहब से उनका इतना ताल्लुक़ात है ” ?

आंटी - “ अच्छा ख़ासा है ” ।

एक बात है अनुराग तुम्हारे होने से किसी और को कोई फ़ायदा हुआ हो या न हुआ हो , मुझे बहुत मान - सम्मान मिला पूसा मैं , आफिस में और समिधियाने मैं , पहले यह आहूजा साहब झाँकते भी न थे । अब कहते हैं , बहन जी आप से मिले ब़ौरे मेरा मन नहीं लगता । मिसेज़ आहूजा कहती हैं , बहन जी जैसे ही यह आफिस से आते हैं मैं कहती हूँ चलो बहन जी मिल आते हैं वह अकेली ही हैं । हमारा फ़र्ज़ है कि उनका ध्यान रखें । यह सब तुम्हारे आने और उस चिंतन के आदमियों के घर जाने के बाद हुआ जब आहूजा साहब घर से भागे थे । ”

मैं - “ आंटी वह वाक्या बहुत रुचिकर था । आहूजा के घर चिंतन सर के लोगों का जाना , गाड़ी का सायरन बजाना , आहूजा साहब का लुंगी बनियान

में घर के पीछे से भागना ... । मैं भी पूछूगा और सुनूँगा पूरा वाक्या , आहुजा साहब से ही “ ।

आंटी - “ मेरे सामने ही पूछना । मैं भी सुनूँगी । मेरा पूछना ठीक नहीं होगा । तुम बच्चे हो पूछ सकते हो । समधन होने के नाते मेरा पूछना ठीक नहीं है ” ।

मैं - “ ठीक है आंटी , मैं आपके सामने पूछूगा ” ?

आंटी - “ पर कैसे पूछोगे ” ?

मैं - “ यह आप मुझ पर छोड़ दो । मैं आपको हँसा- हँसा कर पेट में बल करा दूँगा ” ।

आंटी - “ थोड़ा सँभाल कर पूछना । उनकी बेटी को बुरा न लग जाये ” ।

मैं - “ आप निश्चिंत रहो । सब लोग हँसेंगे । मैं सबके सामने पूछूगा । आंटी वह लोग कब तक आयेंगे ” ?

आंटी -“ पता होता तो वह सुबह ही आ गये होते या तुमको स्टेशन से ही ले लेते । वह दोनों बहुत ही उत्सुक हैं तुमसे मिलने को । वह पूछें कई बार थे मुझसे कि कब तुम आओगे । यह भी कहा था न हो तो इलाहाबाद ही चलते हैं मिलकर आ जाते हैं । मैं यह भी तुमको लिखने वाली ही थी । मुझे पता न था तुम्हारा कार्यक्रम पर यह कहा था कि वह आयेगा ज़रूर । तुम्हारा आना भी एकाएक हुआ , इसलिये किसी को पता न था । ऋषभ- शालिनी दिन में एक बार आते ही हैं , बस समय का ठिकाना नहीं होता है । मैं आफिस से जाकर जल्दी आती हूँ । तुम नाश्ता कर लो लगा देती हूँ ” ।

मैंने नाश्ता किया । आंटी आफिस चली गई । कुछ देर बाद मकान की घंटी बजी । मैंने दरवाजा खोला और

सामने एक बहुत ही सुंदर बर्फ जैसे सूरज की रौशनी में चमक रहा हो ऐसा दूधिया रंग , होंठों पर लालिमा , काजल आँखों के किनारे से तीक्ष्णता लिये आँखों की अभिव्यक्ति बढ़ाते हुये , ईश्वर की एक नायाब कृति , काव्य के लिये गढ़ी गई सलवार - कुर्ते में बालों को हाथ से पीछे करते हुये शालिनी और उसके पीछे आता हुआ ऋषभ ... हल्के- हल्के बाल गिरते हुये चौड़ा माथा ऊँचा कद चेहरे से ही तेज चमकता हुआ ...

पर मेरी निगाहें शालिनी पर

मैंने कहा .. मैं अनुराग हूँ शांति मिश्रा का दत्तक पुत्र

शालिनी - अनुराग एक साथ बोल पड़े...

ओह “अनुराग किस्सा सुनाने वाला “.... यही माँ ने तुम्हारा नाम रखा है

...

मेरी आँखों में अबर का एक टुकड़ा आ गया जिस पर शालिनी की खूबसूरती तैरने लगी । ऋषभ की खोज नायाब थी जिंदगी को एक आँचल में समाने की क्षमता शालिनी के दुपट्टे में थी जिसमें ऋषभ कैद हुआ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 144

ऋषभ बहुत आत्मीयता से मिले । उन्होंने बताया कि पता नहीं कितने किस्से तुम्हारे मैंने माँ से सुने हैं । हम लोग जब आये तब पता चला तुम यहाँ आये थे इंटरव्यू देने और काफी कुछ समय माँ के साथ बिताया । माँ को सबसे ज्यादा अच्छा तुम्हारे बारे में बात करना लगता है । तुम क्या हो या क्या नहीं हो यह तो मुझे नहीं पता था जब मैं माँ से इस बार पहली बार मिला था पर पिछले तक़रीबन एक माह में ही मैं सब कुछ जान गया हूँ तुम्हारे बारे में ।

मैंने ऋषभ को ध्यान से देखा । वह एक तेजस्वी व्यक्तित्व से अपने को आभासित परथमदृष्ट्या ही करा देते हैं । उसके पहनावे चाल- ढाल से ही एक अभिजात्यता टपक रही थी । एक सुंदर लंबी लाइनदार आसमानी कलर की कमीज , पैंट सेल्फ चेक की , चमाचम चमकते जूते , बड़ी डायल की घड़ी, पैंट के जेब झाँकती हुई रूमाल , परफ्यूम का आवरण , कफलिंग से सजी हुई शर्ट की कलाई , चमकदार बेल्ट यह सब उसको सुशोभित कर रहे थे । एक अमीरी सिफ़्र परिधान से ही झलक रही थी । इसके विपरीत मैंने आज तक घड़ी पहनी ही नहीं, सिवाय परीक्षा कक्ष के , मैंने कमीज- पैंट सिलवा कर पहने थे जिसमें वेश- भूषा से सज्जित करने के बजाय सिफ़्र कपड़ा पहनना एक लक्ष्य होता था , कभी परफ्यूम के बारे में सुना ही नहीं, जूता मैं पहनता ही न था । मेरा जीवन चप्पलों में ही बीता । मेरे बाल बहुत धने थे पर मैं कंधी के बजाय हाथ की अंगुलियों से बालों को पीछे ढकेल ऐसा देता था । ऋषभ के बाल मेरे आधे भी न होंगे पर उसने मेरे ही सामने कंधी निकाल कर बाल को करीने से सहेज लिया । जिस रफ्तार से बाल कम हो रहे हैं वह कुछ ही वर्ष तक कंधियों को जेब में रख पाएगा । उसका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक था । उसको देखकर एक विद्वान व्यक्ति का आभास जाता है और वह बहुत ही नपा तुला बोलता है न कि मेरे और चिंतन सर की तरह कि कोई मिला नहीं कि भाषण चालू । वह किसी को भी पसंद आ जाए । उसका ऊँचा कद ,

बोलने का तरीका और मुद्रा में एक अहंकार विहीनता और नम्रता का पुट आकर्षित करने की सम्पूर्ण क्षमता रखता है।

शालिनी एक सफेद रंग का कुर्ता, काले रंग की सलवार, गुलाबी रंग का दुपट्टा बड़ी-बड़ी बोलती आँखें नफासत टपकती हुई और बोलती तो ऐसा जैसा मधुमकिखयाँ मकरंद लेकर जा रहीं हों और टपक रहा हो उनके शरीर से। भाषा पर उसका नियंत्रण ऋषभ से बेहतर था और शब्दों को होंठों से झंकारित कर देती थी बोलने से पहले। ऋषभ का उसको पाने के लिये ज़माने से लड़ना पूरी तरह जायज था। वह ईश्वर की एक तराशी हुई कृति थी और दोनों की एक बहुत नायाब जोड़ी बनायी थी, परमपिता ने। शालिनी ने कहा, “अनुराग हम लोग बहुत दिन से इंतज़ार कर रहे। मैंने तुम्हारी सारी चिट्ठियाँ माँ जी से माँग कर पढ़ी। मैंने वह सारी किताबें देखीं जो तुमने माँ जी को खरीदवाईं और कई किताबों के पहले पेज पर तुमने काफी कुछ लिखा भी है जो किताबों के प्राक्कथन सरीखा हो गया है, एक और प्राक्कथन जो लेखक के अलावा खरीददार भी लिख गया जो लेखक से रह गया हो कहना। माँ जी उन किताबों को लेकर बहुत आग्रहशील हैं। मुझे भी लिखने का शौक है पर तुम्हारे या माँ जी की तरह मैं लिख नहीं पाती। सबसे अच्छा मुझे लगा तुम्हारा और माँ जी का स्पीड पोस्ट करना। जल्दी लिखो, जल्दी भेजो, जल्दी पढ़ो कहीं देर न हो जाये। तुम्हारी तारीफ के पुल माँ जी बाँधती रहती ही हैं।

मैं - “मेरे पास कुछ खास प्रशंसक कभी रहे नहीं। मैं आपके या ऋषभ की तरह जहीन विद्यार्थी था नहीं। मेरे पास आंटी की ही तरह के दो-एक प्रशंसक हैं, उनसे ही गुज़ारा कर लेता हूँ।

शालिनी - “अब तो भरमार होगी प्रशंसकों की। देश की सबसे बड़ी परीक्षा के विजयी नायक हो। हमारे यहाँ आईआईटी में तो हर वर्ष हम लोग ऐसे नायकों की ओर देखा करते थे।”

मैं - “इन प्रशंसकों और छात्र जीवन के प्रशंसकों में बहुत फ़र्क है। यह पेपर में छपे नाम से संचालित लोग हैं जबकि छात्र जीवन के प्रशंसक हर दिन आपको क्लास में देखते हैं। आपके द्वारा अध्यापक से किये अनुत्तरित प्रश्न से वह सम्मोहित होते हैं। वह हर मासिक टेस्ट में आपकी कापी देखते हैं कि इसको 20/20 गणित में, 19.5/20 विज्ञान में, 17/20 साहित्य में कैसे मिला। वह प्रयास करते हैं अपने अंक बढ़ावाने से अधिक आप के अंक कम कराना अध्यापक से और अध्यापक कहता है, “नहीं होगा आसान किसी का इसके तरह होना पर कोशिश हर एक को करनी चाहिये इसके नज़दीक पहुँचने की।” वह जो संतुष्टि देता है वह इस परीक्षा का परिणाम भी नहीं देता। यह एक लाटरी सरीखी है और वह हर दिन तूफानों से कश्तियों को

लड़ाकर कहना है , “ देखो लहरों का आतंक और उस पर मेरी कश्तियों का साहस । मैं अतल गहराइयों में उतर कर रत्नाकर की निधि निकाल लाया हूँ इन तृफानों से लड़कर “

। जो संतुष्टि उसमें है वह इस परीक्षा के परिणाम में नहीं है । वह संतोष मुझे न मिला और मुझे जीवन में उसकी रिक्तता का अहसास होता है पर आपने और ऋषभ ने उसका भरपूर रसास्वादन किया ॥

शालिनी - “ माँ जी ठीक कहती थीं तुम सामान्य सी बात से भी अपने को सम्मोहित कर लेते हो । मैं तो कापी लेकर बैठूँगी जब तुम और माँ जी बात करोगे , मैं सब लिख लूँगी । यह मेरे बहुत काम आएगा जब मैं न्यूयार्क की हिंदी- उर्दू समिति में जाऊँगी । उनको भी लगेगा मैं इस बार सही मायने में देश होकर आई हूँ , कुछ भाषा साथ लेकर आई हूँ ॥

ऋषभ -“ अनुराग , मेरी संजीव टंडन से मुलाकात हुई थी जब मैं आईआईटी गया था । उससे मैंने तुम्हारा ज़िक्र किया था तब उसने बताया कि जवाहर बुक स्टोर पर तुम और माँ साथ गये थे और मुलाकात हुई थी ॥

मैं - “ हाँ , मैं आंटी के लिये किताब लेने जा रहा था । आंटी ने कहा मैं भी चलूँगी । मैं और आंटी साथ गये थे । आंटी ने आपका ज़िक्र किया था तब उसने कहा था कि , “ ऋषभ मिश्रा ऐसा जीनियस आईआईटी में कई- कई साल बाद आता है” ।

शालिनी - “ संजीव टंडन सिविल वाला जिसकी लंबाई खत्म नहीं होती । वह बहुत आवारा क्रिस्म का है । वह सारा दिन यामहा मोटरसाइकिल लिये घूमता रहता है । उसको गणित बहुत आती है सबको पढ़ाता रहता है , लड़कियों को खासकर” ।

मैं - “ उसको कुंडली में बहुत रुचि है । वह सारा दिन वहीं दिखाता रहता है । चिंतन सर की महारत है कुंडली देखने में । वह उनके पास ही घूमता रहता है आईआईटी से गाज़ियाबाद । चिंतन सर से आप लोग नहीं मिले होंगे । वह भी ईश्वर की नायाब कृति हैं । वह विवाह कराने में सिद्धहस्त हैं । आंटी ने कहा था कि मैं ऋषभ - शालिनी का विवाह एक बार फिर से चिंतन से करा देती हूँ उनके द्वारा आह्वानित - आराधित मन्त्रों से , ताकि जीवन और प्रेममय रहे ॥

शालिनी - “ वह तो पुलिस की नौकरी करते हैं ।

मैं - “ वह उनका पास टाइम जाब है मैन काम है जजमानी करना ॥

शालिनी -“ ऋषभ यह अच्छा आइडिया है एक बार फिर से विवाह करते हैं , पिछली बार मजा कम आया था । इतना पैसा तुमने कमाया है कुछ खर्च करो । मैं वह सारे संस्कार- रीति - रिवाज फिर से करना चाहती हूँ और शादी का कार्ड फिर से छपाऊँगी और कार्ड पर लिखूँगी , “ एक परिपक्व फैसला

पुनर्विवाह का फिर से उसी के साथ जिससे किया था पिछली बार “ । अनुराग तुम थोड़ा और इसको अच्छा लिख देना । लहंगा- ज़ेवरात - हाथ की मेंहदी पाँवों की पायल सब अलग और मैं वही होकर भी वह नहीं रहूँगी । एक नई दुल्हन बनना चाहती हूँ मैं फिर से । अनुराग यह आइडिया अच्छा है “ ।

ऋषभ- “ एक बार तो विवाह करने में हम सब के हर करम हो गये । तुम्हारे पिता जी ने जो इंटरव्यू ले मारा जो यूपीएससी क्या लेगा । पता चल इस बार बाहर का रास्ता दिखा दिया “ ।

मैं- “ मैंने ऋषभ की जहीनियत के बहुत क्रिस्से आंटी से सुने हैं । आंटी से आप ऋषभ का ज़िकर कर दो बस । आंटी के पास कथाओं का भंडार है “ ।

ऋषभ - “हम लोगों ने एक गणित के प्राइम नंबर की थ्योरम साल्व की थी अपने एक गाइड के निर्देशन में और उसको इंटरनेशनल जर्नल्स ने बहुत छापा । वह कई साल से

अनसाल्वाड थी इसीलिये थोड़ा नाम हो गया था । वैसे भी कम्प्यूटर आईआईटी में कम मिलता है और उसकी मेरिट टाप पर जाती है इसलिये थोड़ा नाम हो ही जाता है । पर वह संजीव टंडन भी बहुत जीनियस है । वह उदयपुर से आया था । उसकी रैंक अच्छी थी पर उसको किसी ने कह दिया था कि सिविल अच्छी बरांच है इसलिये उसने ले लिया था । वह भी गणित में माहिर हैं पर वह पढ़ता कम है धूमता ज्यादा है । दो साल से नहीं हो रहा था उसका इस बार हो गया । उसको आईआरएस ही ज्वाइन करना है । इस बार आईआईटी दिल्ली का काफ़ी बेहतर रिज़ल्ट है । टाप 100 में कई नाम हैं “ ।

मैं- “ इलाहाबाद का भी इस साल का परिणाम ठीक है पर पहले की तुलना में यह शहर कमज़ोर पड़ रहा “ ।

ऋषभ- “ यह मैथ्स, फीजिक्स में नंबर पाना आसान है । मैथ्स के एक पेपर में 15 में से 5 और दूसरे में 12 में से 5 सवाल करने होते हैं । यह बहुत सुविधाजनक हो जाता है । आप कई भाग छोड़कर भी पूरा पेपर कर सकते हो , इसलिये यह विषय यहाँ काफ़ी हिट है “ ।

मैं- “ आपने नहीं सोचा कभी परीक्षा देने को “ ?

ऋषभ- “ माँ बहुत चाह रही थी पर मेरा मन नहीं लग रहा था । शुरू के एक-दो साल सोचा पर फिर मुझे कम्प्यूटर में बहुत रुचि थी , इसलिये मैंने छोड़ दिया हलाँकि माँ अभी तक कहती है देना चाहिये था । तुम्हारे रिज़ल्ट के बाद भी कह रही थी दिये होते तो तुम भी होते । पर इस परीक्षा में होने की कोई गायरंटी नहीं है । कई लोग देते हैं , कहाँ सबका होता है । इसका टरेंड आजतक कोई निश्चित रूप से बता न सका । आप जिस पेपर को समझो मैंने

बेहतर लिखा है उसमें अंक कम मिल जाते हैं अपेक्षाकृत कम बेहतर किये पेपर से ।

मैं - “ यह तो बात तो है ही । पर काफ़ी कुछ फ़ेयर सिस्टम है । अगर फ़ेयर नहीं होता तब हम सब का कहाँ होता । ”

इतने में आंटी की बाई आ गयी । शालिनी उसको दिन के खाने के बारे में बताने लगी कि क्या- क्या बनाओ । उसके निर्देशन के ढंग से यह लगने लगा कि यह लोग अक्सर दिन का खाना यहीं खाते थे । शालिनी ने पूछा कि चाय पियोगे या काफ़ी । मैं कभी काफ़ी पिया ही नहीं था , मुझे क्या पता काफ़ी का । हमारे लिये तो दूध भर कर मीठी चाय ही सबसे बड़ी विलासिता थी । पूरे दूध की चाय “ नीलू चाय ” दाम दो रुपया , यह इलाहाबाद के छात्रों की सबसे बड़ी विलासिता की वस्तु और साथ में बंद-मक्खन । बदरी सर और चिंतन सर यह चाय बहुत पीते थे । मैंने कहा मैं चाय पियूँगा और ऋषभ से कहा , “ आप तो ब्लैक काफ़ी ही लेंगे ” ? ऋषभ ने भी सकारात्मक सिर हिलाया । जब ब्लैक काफ़ी आई तब उसमें दूध था ही नहीं । हम लोग कभी- कभी नींबू की चाय पीते थे जब दूध नहीं होता था । चाय बनाकर उसमें नींबू निचोड़ देते थे मुझे कुछ वैसे ही देखने में लगी । अब मेरे जीवन का एक अलग ठेंठ दृष्टिकोण था , जो न्यूयार्क के रईसों से कहाँ साम्यता रख सकता था । मेरे अंदर एक जिज्ञासा थी यह जानने की कि यह सब कितना माल पीट रहे अमेरिका में । मन में एक इलाहाबादी की तरह आया कि आहूजा पीट रहा सरिया - सीमेंट बेंच कर वह भी सीमेंट में रेत मिलाकर , यह पीट रहे कम्प्यूटर में कुछ आकृति घुमा- फिराकर । हर ओर मालै-माल और हम लोग छूछें हाथ लिये घूम रहे । ऋषभ बड़े चाव से वह काली काफ़ी धीरे - धीरे छोटी- छोटी चुस्की के साथ पी रहे । वह ऐसा पी रहे कि एक बार में कुछ बूँद ही मुँह में जा रही , मैं एक दरिद्र की तरह चाय आयी और घोंट गया । अब हमारे इलाहाबाद में ऐसे ही चाय पीते हैं । ऋषभ मेरा चाय पीना देख रहा था वह भी सोचा होगा ऐसी भी क्या जल्दी थी चाय को इतने जल्दी हल्क में उतारने की ।

आंटी कुछ देर बाद आ गई । आंटी ने पूछा शालिनी से क्या बोला खाना बनाने के लिये ? शालिनी ने कहा दो सब्ज़ी , दाल , चावल और रोटी । आंटी ने बुलाया बाई को और कहा मैं बनाती हूँ तुम तैयारी करो । अनुराग को कढ़ी अच्छी लगती है वह भी बना देते हैं । आंटी काम में बहुत तेज थी । यह करछना की लड़कियाँ होती बहुत तेज हैं । यह बहुत प्रतिभाशाली होती हैं । मेरी माँ भी ऐसे ही तेज है । किसी भी शादी - विवाह में जाती थी सारा काम फटाफट कर देती थी । मैंने कहा भी , “ आंटी यह करछना की लड़कियाँ

बहुत तेज होती हैं । आप आफिस से काम करके आई और पूरा किचन भी कंट्रोल कर लिया “ ।

शालिनी - “ सच कहा अनुराग , माँ जी का हाथ बहुत तेज चलता है । फटाफट काम निपटा देती है ” ।

आंटी - “ यह बचपन से ही हम लोग काम करने लगते हैं । हम लोग बच्चे पालना भी सीख जाते हैं । हमारे जो छोटे- भाई बहन होते हैं उनको भी हम लोग ही पाल देते हैं । तुम्हारी माँ सबसे छोटी थी अपने घर में और मैं अपने घर में सबसे बड़ी । तुम्हारी माँ को तुम्हारी मौसी ने ही पाल दिया और मैंने अपने भाइयों को । खाना तो घर का हम लोग ही बनाते थे , हमारी माँ कम ही बनाती थी , इसलिये हाथ सध जाता है । अब नई पीढ़ी उस तरह से काम नहीं करती जैसे हम लोग करते थे । शालिनी तो होस्टल में ही रही है । पहले वेलहम्स देहरादून और फिर आईआईटी । आईआईटी में ही मुश्किल या गये फिर चले गये विदेश तब कहाँ समय मिला सीखने को । पर यह सीख गई है थोड़ा-बहुत अपने पति को खुश करने भर का ” ।

शालिनी -“ मैंने काफ़ी कुछ सीखा इस बार । पिछली बार आये थे तब भी सीखा था , पर इस बार ज्यादा सीखा ” ।

मैं - “ आंटी इनको क्या सीखना । महराज- खानसामा- शेफ़ जिसको चाहें रख ले । इनके पास कौन सी कमी है ” ।

आंटी - “ अनुराग चाहे जितनी सुविधा हो पर एक औरत को रसोई का का काम आना चाहिये । अब हमको तो सही संस्कार दिया गया । अब यह सही है या गलत यह एक अलग बात है ” ।

ऋषभ - “ कौन सी सर्विस मिल रही है , कुछ पता चला ” ?

मैं - “ रैंक 102 है । इस पर आईएएस मिलेगा कि नहीं मिलेगा यह कहना मुश्किल है । आईपीएस, आईएफ़एस भरा नहीं है । उसमें जाना है नहीं । आईआरएस ही भरा है आईएएस के बाद । अगर आईएएस नहीं मिलती है तब आईआरएस ही मिलेगी । अब आईआरएस ज्वाइन करें या फिर से आईएएसके लिये परीक्षा दें , अगर आईएएस नहीं मिलती है यह भी एक फ़ैसला करना होगा ” ।

ऋषभ - “ आईएफ़एस एक बहुत अच्छी सेवा है वह क्यों नहीं चाहिये ” ?

मैं - “ मुझे विदेश नहीं जाना है ” ।

ऋषभ - “ क्यों ” ?

मैं - “ मेरे पास ज़िम्मेदारियाँ हैं । मेरी माँ है जो मेरे बगैर रह नहीं पाती । अगर मैं घर कुछ घंटे देर से पहुँचू तब वह चबूतरे पर खड़ी होकर गली के मोड़ से

मुड़ती हर साइकिल को वह देखती रहती है इस आशा से कि वह मेरी साइकिल होगी । मेरी छोटी बहन है उसकी शादी करनी है । इतने नात - रिश्तेदार - परिचित - हित - संबंधी हैं जो मेरी तरफ एक आशा भरी नज़रों से देख रहे हैं । मैं भले ही उनके लिये कुछ कर सकूँ या न कर सकूँ पर उनकी आशा जीवित रहनी चाहिये । मैं अगर विदेश चला गया तब उनकी आशाओं पर तुषारापात हो जाएगा । मुझे ईश्वर ने यहाँ तक पहुँचाया है तो सिर्फ़ इसलिये नहीं कि मैं सिर्फ़ अपने ही बारे में सोचूँ । उसकी उदारता का एहसान है मुझ पर । परमपिता ने बहुत से मुझसे बेहतर लोगों पर मुझे अधिमानता दी है, उसको यह नहीं लगना चाहिये उसका निर्णय गलत हो गया ॥

ऋषभ - “ बहुत बेहतर सर्विस है भारतीय विदेश सेवा । मेरे आईआईटी का ही एक बंदा वाशिंगटन में है । मैं उससे मिला था वाशिंगटन में । बहुत आराम है, बहुत ठाठ है । काम भी क्या है, मुख्य रूप से लोगों से मिलना देश की छवि को सुधारना । नयी परिस्थितियों में देश के वाणिज्य और व्यापार के विस्तार पर ज़ोर दिया जा रहा है । आप शहर के सबसे पाश इलाके में रहते हो आपके पास सारी डिप्लोमेटिक इम्युनिटीज उपलब्ध हैं, फ़ारेन एलाउंस मिलता है और पूरा विश्व आप घूम लोगे । एक बहुत ही शानदार जीवन होता है । इस जीवन को त्यागने का कोई कारण तो दिखता नहीं ॥ ”

मैं - “ यह सारी बातें आपकी सही हैं पर यहाँ फ़र्क पराथामिकता का है । एक अकेला अपना जीवन बनाम समाज का जीवन । मुझे ईश्वर ने यहाँ तक सिर्फ़ अपना अकेला जीवन जीने के लिये नहीं पहुँचाया है । मैं इतना क्राबिल हूँ नहीं जितनी बड़ी सफलता मुझे दी गयी है । मेरे परिवेश की बहुत सी आकांक्षायें हैं मुझसे और वह सब बहुत ही वाजिब इच्छायें हैं उनकी । मेरा विदेश सेवा में चला जाना उनके लिये एक मानसिक आघात होगा । यह उनके लिये असह्य हो जाएगा । मेरी माँ ने, मेरे पिता ने मेरे साथ के लोगों ने बहुत से स्वप्न देखे हैं वह सब धूल धूसरित हो जाएँगे । उन ख्वाबों की ताबीर मिले न मिले पर एक मक्तल की ज़मीं से तो तो कम से कम वह न गुजरें । ख्वाबों को एक सामान्य मौत मिले उनके क़त्लेआम का पापी तो मैं न बनूँ । मेरी अक्षमता साबित हो यह बेहतर है बनिस्बत इस बात के कि वह कहें, “मुझे मेरे हालातों पर छोड़कर वह चला गया ॥” हर सियाह रात यह न कह सके मेरी ही नींद से इसको तड़पने दे, इसको सोने का कोई हक़ नहीं है । ॥ ”

ऋषभ - “ यहाँ रहकर भी कोई खास मदद तो की नहीं जा सकती । नौकरियों की सीमायें भी हैं और समस्यायें भी हैं ॥ ”

मैं - “ यह बात सच है कि नौकरियों की बहुत सीमायें हैं पर जहाँ से मैं आता हूँ वहाँ आशा का मर जाना बहुत पीड़ा देगा । मैं कुछ करूँ या न करूँ, मेरा होना ही बहुत है उनके अपने अस्तित्वमान होने के लिये । एक दिलासा भी जीवन को पार लगा देती है । आपने दिल्ली शहर देखा है, पूसा कैम्पस देखा

,आईआईटी कैम्पस देखा और ईश्वर का आशीर्वाद था आपने सीधा अमेरिका देख लिया । आपने कभी गरीबी नहीं देखी , कभी अनुभव नहीं किया , आप के सामने कोई ऐसा आदमी नहीं पड़ा जो बचपन में आपके साथ रहा हो और आप से कहे कि मेरे पूरे शरीर में हमेशा दर्द रहता है पर मैं डाक्टर के पास जा नहीं सकता । मेरी माँ एक बात कहती है कि मैं ऐसा कोई काम न करूँ कि मुझे मंदिर में भगवान की मूर्ति से आँख मिलाने का साहस न हो सके । मेरे परिवेश , मेरे जीवन को देखते हुये मेरे लिये विदेश जाकर रहना मेरे अपने ईश्वर अपनी माँ से आँख मिलाने का हक्क मैं गवाँ दूँगा ।

आंटी ने आवाज़ दी कि खाना खा लेते हैं तब बात करते हैं । ऋषभ की प्रतिक्रिया से लग गया कि मेरी बातों का असर उस पर हो गया है । वह कुछ सोचने ऐसा लगा था । शायद कहीं न कहीं आंटी की पीड़ा मेरे अंदर थी जो मेरी अपनी विचारधाराओं में घुलकर अभिव्यक्त हो रही थी । मैंने बात बदलने के लिये कहा कि चिंतन सर के पास मैसेज कैसे जा सकता है , “ मैं आया हूँ और आंटी के यहाँ रुका हूँ ” । शालिनी ने पूछा कि वह कहाँ होंगे । मैंने कहा वह सीओ सिटी गाज़ियाबाद हैं ।

शालिनी - “ कैसे पता चलेगा आफिस ”?

मैं - “ आहुजा अंकल के पास नंबर होना चाहिये । उनके आफिस से फोन करा दो या डराइवर गाज़ियाबाद चला जाए । चिंतन सर सुनते ही साथ ही चले जाएँगे । गाज़ियाबाद के किसी भी थाने में कुंडली गुरु का नाम ले लो वह वहाँ तक पहुँचा देंगी ।

शालिनी - “ उनका नाम कुंडली गुरु है ” ?

मैं - “ नाम तो चिंतन उपाध्याय है पर वह कुंडली गुरु के नाम से मशहूर हैं । अगर आप उनसे नहीं मिले तो मानव जीवन अधूरा है । वह एक चमत्कारिक व्यक्ति हैं ” ।

शालिनी - “ वह वहीं है जो पापा से मिलने आये थे और पापा को लगा कि इनकम टैक्स की रेड हो गई है ” ।

मैं - “ हाँ वह वहीं हैं ” ।

ऋषभ - “ जिनको कुंडली देखना आता है वही हैं ” ?

मैं - “ उनको क्या नहीं आता यह पूछो ”

/

शालिनी ने डराइवर को बुलाया और कहा गाज़ियाबाद चले जाओ । वहाँ सीओ सिटी गाज़ियाबाद का आफिस कहाँ है यह पता कर लेना । वहाँ चिंतन उपाध्याय साहब होंगे वह सीओ साहब हैं । उनको कुंडली गुरु भी कहते हैं ।

उनसे बता देना अनुराग शर्मा इलाहाबाद से यहाँ आये हैं और उनको लेते आना साथ । अगर पता न मिले तब किसी भी थाने पर कुंडली गुरु का नाम पूछना वह तुमको उनके पास पहुँचा देगा । डराइवर निकल गया कुंडली गुरु को लाने । आंटी ने कहा वह शाम तक आयेंगे ? मैंने कहा नहीं आंटी वह इसी डराइवर के साथ आ जाएँगे, एक डेढ़ घंटे में ।

मैंने खाना धीरे- धीरे खाया यह सोचकर कि कहीं यह सब यह न कहें कौन सा दरिदर है यह चाय भी घोंट गया अब खाना भी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 145

डराइवर चिंतन सर के पास आराम से पहुँच गया । वह गाज़ियाबाद के तपे हुये अफ्रसर थे । उनके पास तक पहुँचना कोई बड़ा काम न था । उनको जैसे ही पता चला मैं आया हूँ वह चल दिये पूसा की तरफ । उन्होंने लगता है अपने डराइवर को निर्देश दिया हुआ था कि गाड़ी का सायरन समय- समय पर बजाते रहो । यह काम यूनिवर्सिटी रोड पर नये चयनित डिप्टी एसपी बहुत किया करते थे । वह जब भी आते थे यूनिवर्सिटी रोड पर दे सायरन पर सायरन मारे रहते थे । यही काम चिंतन सर भी करा करते थे । वह मेरी गली में भी सायरनबाजी करते रहते थे, वही काम पूसा में भी किया । वह कहीं जाते थे तब दरवाज़े को धक्का देकर घुस जाते थे वह कभी चिट नहीं भेजते थे । उनका हर अंदाज़ निराला था । उनकी सायरन की आवाज़ सुनकर आंटी बोली चिंतन तो आ गये । चिंतन सर के बारे में मैंने जो एक पूर्व पीठिका सी बना दी थी वह ऋषभ- शालिनी को आकर्षित कर रही थी, उनके बारे में जानने को । यह दोनों बहुत ही बेहतर छात्र थे । सारी ज़िंदगी पढ़ते ही रहे । इनको खुराफ़ात का सुख मिला नहीं । हम लोग खुराफ़ात करते ही पढ़ लिये । अब इन लोगों के लिये हम सब विस्मय की वस्तु थे । चिंतन सर का क़द काफ़ी ऊँचा था । वह अंदर आये और टोपी उतार कर आंटी का पैर छुये । चिंतन सर के पास यह सांस्कारिक औपचारिकता बहुत थी । परायः इस तरह का संस्कार इलाहाबाद के लोगों में पाया ही जाता है । मैंने शालिनी - ऋषभ का परिचय कराया । वह शालिनी को ध्यान से देखें । वह थी ही ऐसी कि कोई भी आकर्षित हो जाए । मुझसे धीरे से बोले, “ यह आहूजवा कमज़ोर निकला । एकाध ऐसे ही सुंदर लड़की को और जन्म दिया होता तुम्हारा विवाह करा देते और संपदा सँभालते हम लोग ” । मैंने कहा, “ सर आपका ध्यान उसकी संपदा पर बहुत है ” । सर बोले, “ वह लेना ही होगा अगर जीवन में आगे बढ़ना है । बग़ैर धन- पशुओं के राजनीति नहीं होगी । अब हमसे अधिक योग्य उनको मिलेगा कौन देने के लिये । हम लोग अगर भोगेंगे तब उसको पुण्य भी

मिलेगा नहीं तो जितना कालाबाज़ारी और पाप किया होगा इस धन के अर्जन में उससे तो नरकाधिकारी ही होगा । अब आंटी का रिश्तेदार हो चुका है, उसकी पीड़ा हमारी पीड़ा है उसको नर्क की पीड़ा से बचाना होगा । उसको विश्राम सागर पढ़ाकर नर्क की भयावह महिमा का बखान कर देते हैं एक दिन ताकि नर्क का भय बना रहे ॥

आंटी ने कहा, क्या बात कर रहे हो ?

मैं - “ कुछ नहीं आंटी । सर कह रहे कि आंटी के बेटे - बहू की जोड़ी भगवान ने बनाई है बहुत संजीदगी से ॥ ”

आंटी - “ यह बात तो है, जोड़ी ईश्वर ने अच्छी बनाई है ॥ ”

मैंने ऋषभ- शालिनी से सर का परिचय कराया । चिंतन सर संस्कृत के विद्वान थे । वह हिंदी में संस्कृत का बहुत प्रयोग करते थे । उनकी हिंदी संस्कृतनिष्ठ हुआ करती थी ।

चिंतन सर - शालिनी जी आप ईश्वर की अप्रतिम कृति हो । आप को ईश्वर ने बनाते समय सारे सौंदर्य के उच्च मानदंडों का ध्यान रखा और ऋषभ जी आप के वाह्य आवरण से ही एक वशिष्ठादर्शन हो रहा है । आंटी जी ईश्वर ने आपको धरा भोगने के लिये जन्म दिया ऐसा वीरवार को संतति के रूप में देकर ॥

ऋषभ - “ चिंतन जी मैं इतनी कठिन हिंदी नहीं समझ पाऊँगा ॥ ”

मैं - “ अभी तो सर आसान ही बोल रहे । जब यह रवानी पर आयेंगे तब सिफ़र श्लोक से ही बात करते हैं । मैंने एक छात्र के रूप में इनसे ज्यादा क़ाबिल किसी और को नहीं देखा ॥ ”

आंटी चिंतन सर के आने से प्रसन्न हुई । इतना भरा हुआ घर आंटी का पहले कभी न था । हर को अपनों से भरा- पूरा घर अच्छा लगता ही है, आंटी कोई अपवाद कैसे हो सकती है ।

ऋषभ शालिनी को कहीं जाना था । वह लोग यह कहकर चले गये कि हम लोग एक- डेढ़ घंटे में आते हैं । आंटी किचन समेट रही थीं और मुझसे पूछा, “शाम को क्या खाओगे ? चिंतन सर से कहा कि शाम को खाकर ही जाना । जाने की जल्दी मत करना । सर ने कहा नहीं आंटी जी बिल्कुल जल्दी नहीं हैं । सर ने अपने सिपाहियों को बुलाकर पूछा कि कोई वायरलेस पर जरूरी मैसेज तो नहीं आया है । अगर बहुत ज़रूरी होगा तभी मुझे डिस्टर्ब करना नहीं तो डील कर लेना । मातादीन से कहा, साहब को पहचान रहे हो ना ?

मातादीन ने कहा , “ हुज्जूर के बँगले पर ही अब हम रहेंगे , यह वादा हुआ है जब हुज्जूर इंटरव्यू देने आये थे ” । चिंतन सर बोले , “ तुमको बड़ा काम देंगे चिंता न करो ” । वह अपने इलाके का हाल- खबर लेकर संतुष्ट हो गये । मैं और सर बाहर आंटी के लान में कुर्सी निकाल कर बैठ गये । आंटी ने कहा मैं चाय बनाकर आती हूँ । चिंतन सर ने कहा , “ आंटी आप भी आ जाइये थोड़ा इतिनान से गपियाते हैं ” । आंटी बोली , “ आप लोग बैठो , मैं आती हूँ ” ।

चिंतन सर - “ यार बहुत सही तीर चलाये सही निशाने पर तकरीबन लग ही गया । तुम कह रहे थे इंटरव्यू में अंक कम मिलेगा थोड़ा बढ़िया नहीं हुआ है पर लगता है तुम्हारी लफंटूसी भा गई मेहरा को ” ।

मैं - “ सर पता नहीं कौन सा तीर निशाने पर जा कर लगा , पर कोई तीर लगा ही निशाने पर नहीं तो यह परिणाम तो न आता ” ।

चिंतन सर - “ एक नहीं कई तीर लक्ष्य का संधान किये होंगे । एक तीर से यह परिणाम नहीं हो सकता । तरकश खाली हुआ होगा ” ।

मैं - “ सर तकदीर साथ थी । पुण्य कर्म था पूर्वजों का । माँ- बाप की तपस्या थी नहीं तो मेरे ऐसा सामान्य व्यक्ति यह उपलब्धि कहाँ से प्राप्त कर सकता था ” ।

चिंतन सर - “ देखो , पूर्वजों के सत्कर्म के बगैर तो कुछ हो नहीं सकता । पर निरा भाग्य से कुछ नहीं हो सकता । सब कहते हैं कि सत्तर प्रतिशत परिश्रम है और तीस प्रतिशत भाग्य । यह आनुपातिक संबंध भी परिश्रम के पक्ष में झुका हुआ है । माँ के गर्भ में आने से लेकर जीवन की अंतिम यात्रा तक भाग्य तो साथ रहता ही है पर निरा भाग्य कुछ नहीं कर सकता । जो नींद का त्याग करेगा वही मेघनाद को हतेगा । तुम लक्ष्मण बनने की राह पर थे । जो समुद्र पार करके अपनी नाव जला देगा और कहेगा विजय करो या समाप्त हो जाओ , वही नेपोलियन बनेगा । मैंने कर्म की प्रधानता और भाग्य की सीमाओं का अनुभव किया है , इसलिये मैं तुम्हारी सफलता में भाग्य से अधिक तुम्हारे लगन को प्रधानता दूँगा । मैंने यूपी भवन में इंटरव्यू के समय तुम्हारी तैयारी देखी है और बदरी ऐसा महानायक भी मुझसे रिजल्ट के पहले कहा था इसका होगा ही अब कहाँ होगा यह देखना बाकी है । तुम्हारा बुद्धि, बोधिसत्त्व और हिंदू धर्म से अंतरसंबंध का व्याख्यान तो अद्भुत था । वह फिर से मुझे सुनना है कभी । तुम एक कर्म की प्रधानता के साथ- साथ एक और सिद्धांत को स्थापित करोगे जब जगो तब ही सवेरा ” ।

मैं - “ सर , यह जब जगो तब ही सवेरा क्या है ” ?

सर - “ तुम पहले तो कभी खास पढ़ें नहीं । जो पढ़े , इसी परीक्षा के लिये पढ़े । अब आँख खुली तब से ही सवेरा मानकर बचा हुआ समय पूरी तरह उपयोग में लाये , बस काम बन गया । समय को सही ढंग से सुनियोजित कर गये और समय की क्रीमत कर गये , बाकी तो इतिहास बनना ही था सो बन गया । आगे आने वाली पीढ़ियों के लिये यह एक संदेश भी है । एक नये तरीके से युद्ध जीतने वाला महानायक होता है एक परिपाटी पर चलने वाला नायक होता है , इसीलिये कृष्ण, बुद्ध और गांधी इतिहास में एक अलग स्थान रखते हैं ॥ ”

आंटी इतने देर में चाय लेकर आ गई । आंटी ने पूछा क्या बात कर रहे थे । चिंतन सर ने कहा कि भाग्य और कर्म के सिद्धांत का विवेचन हो रहा था । आंटी ने पूछा क्या निष्कर्ष निकला ?

चिंतन सर - “ आंटी इसमें कौन सी बहुत बड़ी खोज करनी है । यह तो अनादिकाल से सत्यापित है , कर्म के सिद्धांत की प्रधानता ॥ ”

आंटी - “ पर बेटा भाग्य भी होता ही है । कैसे कह सकते हो , भाग्य जीवन में होता नहीं है । वह तो रहेगा ही ॥ ”

चिंतन सर - “ आंटी होता है पर मात्रा कम होती है भाग्य की तुलना में ॥ ”

मैंने सोचा कहाँ यह भाग्य- कर्म के पचड़े में पड़े कुछ और बात करते हैं ।

मैं - “ आंटी यह लोग कब तक रहेंगे ? ”

आंटी - “ टिकट तो 12 जुलाई का है पर अभी उसको आगे बढ़ायेंगे ॥ ”

मैं - “ क्यों आगे बढ़ायेंगे? रहने का मन है या कुछ काम है ? ”

आंटी - “ रहने का मन भी हो सकता है पर काम भी काफ़ी है । आहूजा साहब का पूरा सिस्टम ऋषभ कम्प्यूटराइज कर रहा है । वह बड़ा काम है उसमें समय लगेगा ॥ ”

मैं - “ क्या आहूजा साहब का काम अब सँभालेंगे यह लोग ? ”

आंटी - “ कौन सँभालेगा अगर यह नहीं सँभालेंगे ॥ ”

मैं - “ तब तो भारत वापस आना होगा ॥ ”

आंटी - “ नहीं वह आसान नहीं है । इनका काम बहुत बढ़ता जा रहा है वहाँ पर । पहले किसी कंपनी में दोनों काम करते थे । पर अब अपनी कंसलेंसी का काम करते हैं । शालिनी को व्यापार बहुत आता है । यह उसके खून में है । उसको खतरा उठाना आता है , ऋषभ को वह नहीं आता और यह थोड़ा सँभल कर चलना चाहता है । शालिनी ने ही कहा कि हम किसी के लिये काम क्यों करें अपना काम करते हैं । ऋषभ तो एक अलग मिट्टी का बना ही है

जहाँ भी हाथ लगा दे वह सोना हो जाये । उसने कई नायाब कम्प्यूटर प्रोग्राम बनाये और शालिनी ने उन सबका पेटेंट

करा लिया । अब जो भी उस प्रोग्राम का इस्तेमाल करेगा वह इनसे अनुमति लेगा और रायलटी देगा । इससे इनका बहुत काम बढ़ा और आगे भी बढ़ेगा, ऐसा लग रहा है । इसलिये मुझे इनका आना तो अभी नहीं दिख रहा संभव निकट भविष्य में ।

चिंतन सर - “ आंटी जी कितना पैसा कमा लिया होगा ? ”

आंटी - “ यह तो मैं न बता पाऊँगी पर तीस

लाख से ज्यादा तो इसी साल मेरे एकाउंट में ही दरांसफर कर चुके हैं । मैंने उन सबकी एफडी कराकर इनको ही नामिनी कर दिया है । पूसा के स्टेट बैंक की मैं सबसे बड़ी ग्राहक हूँ । मेरी अपनी तनख्वाह ही मुझसे खर्च नहीं होती । मेरा कोई खर्च ही नहीं है । मैंने एक- दो बार रोका भी कि मुझे कोई ज़रूरत नहीं मत भेजो मुझे पर यह नहीं मानता । अगर मैं वही बात बार- बार कहूँगी तो इसको अच्छा नहीं लगेगा । मेरा ही बेटा है, मुझे तो जानता ही है । क्या पता पैसा सुरक्षित रखने के लिये ही भेज रहा हो । अब जिस काम में इसको संतोष मिले वहीं करते हैं । संतोष जीवन में सबसे ज़रूरी है, न केवल अपना वरन् अपने लोगों का भी । मेरा जीवन तो जैसे कटना था वह कट गया । अब इन बच्चों का कट

जाए खुशी में यही चाहत है । अब अगर इनको बाहर रहने में खुशी है तो वह ही सही । यह खुश रहें, यही बहुत है मेरे लिये ।

इतने में शालिनी और ऋषभ आ गये । वह लोग किसी बैंक के काम से गये थे । यह लोग इमिरती और समोसा लेकर आये थे । चिंतन सर ने कहा, यह ब्राह्मणोचित कार्य है । जहाँ भी जाओ मिष्ठान लेकर आओ ।

आंटी ने कहा कि चिंतन इन लोगों की कुंडली देख दो । सुना है तुमको इस काम में महारत है ।

चिंतन सर - “ आंटी यही तो हमारा मुख्य काम है । यह पुलिसगीरी तो बस पेट पल जाए इसलिये करते हैं, वैसे अगर कोई जजमान कुंडली देखकर खुश होकर दक्षिणा दें दे तब ब्राह्मण को अस्वीकार नहीं करना चाहिये । अस्वीकरण जजमान को पाप का भागी बनाता है । ”

आंटी कुंडली लेकर आ गई । चिंतन सर कुंडली देखने लगे ।

चिंतन सर थे बहुत नाटककार । वह बोले मुझे थोड़ा ध्यान करना होगा, कुंडली देखने के पहले ताकि हमारे साथ दैवीय शक्ति रहे । सर हाथ- मुँह धोया, आचमन किया, कुछ मन्त्र पढ़े और कुंडली देखना शुरू किया ।

चिंतन सर ने धन-वैभव - संपदा - यश - कीर्ति सब प्राप्त होने के बारे में बता दिया ।

हर माँ की एक इच्छा , “मुझे नाती- नातिनि कब मिलेगा ” । यही प्रश्न आंटी का था । चिंतन सर ने कहा कि इसमें बाधा है । एक मन्त्र का जाप करना होगा । मन्त्र लिख कर दे दिया और कहा आंटी से आप ही चाहे जाप कर देना अगर यह न कर सकें पर श्रेयस्कर होगा अगर शालिनी जी करें । आंटी ने कहा अनुराग की कुंडली देखा है ?

मैं - “ आंटी मेरी कुंडली ही नहीं है ” ।

आंटी - “ क्यों ” ?

मैं - “ आंटी , मैं अपने नाना के यहाँ गाँव में जन्मा । मेरे जन्म के समय किसी ने समय देखा ही नहीं । अब कुंडली के लिये जन्म का समय तो होना चाहिये ” ?

चिंतन सर ने कहा , इनको थोड़ा विश्वास भी कम है । अब यह विश्वास और आस्था कोई सुई से इंजेक्शन की तरह तो दी नहीं जा सकती । यह समय के प्रवाह से आती है , जब आने का संयोग होगा तब आ जायेगी ।

आंटी शाम के खाने की तैयारी करने लगी । शालिनी आंटी के साथ चली गयी । ऋषभ भी अंदर चले गये । सर ने कहा कि यार यह सब तो तगड़े धन पशु हैं ।

मैं - “ वह कैसे ” ?

चिंतन सर - “ आंटी के बैंक में ही अगर तीस लाख भेज दिया है तब सोचो इसके पास कितना होगा । मैंने आहूजा का लाखों रूपया गाज़ियाबाद में फँसा था वह वसूल करा कर उसको लबज़ियाया हूँ अब तो यह भी तगड़ा आसामी दिख रहा ” ।

मैं - “ इनका क्या करोगे ” ?

चिंतन सर - “ हमारा लक्ष्य बहुत बड़ा है और उसके लिये इन सबका सहयोग ज़रूरी है । समाज का उत्थान हमारा मुख्य कर्तव्य है और उसके लिये धन की आवश्यकता है । आहूजा पर तो नियंत्रण हो रहा है और अपना एक आदमी वहाँ स्थापित कर दिया है । पर मुझे अब अपनी शाखा विदेश में भी दिख रही है ” ।

मैं - “ आहूजा के यहाँ कैसे किया ” ?

सर - “ आहूजा के कई देनदार थे गाज़ियाबाद में । आहूजा परेशान था । मुझसे कहा और मैंने कहा कि पूजा- पाठ करे । आहूजा के यहाँ के पंडित को

भगाकर अपने चचेरे भाई रामकांत को पंडित के रूप में स्थापित कर दिया है । वह पूजा- पाठ कर रहा । वह घर का संस्कार बदल रहा है । अब गाजियाबाद से पैसा दिलाना किसी से हमारे लिये कौन सी बात है । सबसे पैसा भी दिलवाया और पैसे पर ब्याज भी । आहूजा है बड़ा कंजूस , दमड़ी खर्च नहीं करता पर है धार्मिक, धर्म पर खर्च करता है ।

अब तो हम विदेश भी जा सकते हैं । इनको सबको कमाने दो और हमको भोगने दो । ईश्वर बहुत कृपालु है, स्वयम जजमान घर चल कर आ गया तब पंडित धर्म का निर्वाह तो करना ही है ।

हम लोग शाम का खाना खाये । मुझसे पूछा गया , कल का क्या कार्यक्रम है । मैंने कहा मुझे जुबली होस्टल और जेएनयू जाना है लोगों से मिलने । आंटी ने पूछा , कैसे जाओगे ?

मैं - “151 नंबर बस मिलती है पूसा गेट से , उससे चला जाऊँगा ” ।

चिंतन सर - “ मेरी जीप छोड़ देगी और फिर वापसी में बस से आ जाना ” ।

शालिनी - “ मेरी कार ले जाओ । यह जीप छोड़ेगी और फिर बस ढूँढ़ेंगे आप । जुबली होस्टल एक कोने पर जेएनयू दूसरे कोने पर , बहुत असुविधा होगी ” ।

मैं - “ आप लोगों के पास भी बहुत काम है , आपकी कार सारे दिन के लिये व्यस्त हो जाएगी मेरे साथ ” ।

शालिनी - “ कई कारें हैं पापा के आफिस में । यह काम ही है लोगों के लिये कार भेजना । अक्सर कार की फरमाइश होती रहती है इसलिये दो - तीन कारें इसी काम के लिये लगी ही हैं । उसी में से एक कार आ जायेगी । आप जब तक दिल्ली रहों आप उसका इस्तेमाल करो ” ।

मैं साइकिल पेरने में मास्टर था । मुझे यह पता ही न था कि लोग कार दूसरों को देने के लिये भी रखते हैं । हमारे यहाँ तो पड़ोसी साइकिल भी माँग ले तो कह देते थे कि साइकिल में हवा नहीं है और अगर वह लेकर साइकिल गया तब वापस आने पर पूरी साइकिल को चेक करते थे कि सही सलामत है या नहीं, दोनों टायरों की हवा तो ऊँगली से दाब कर पक्का ही चेक करना ही है । वह ऐसा चेक करते थे कि जैसे वह टायर की हवा पी गया हो । यहाँ कार रखी गई है कि कोई माँगे तो दे दो । मेरे मन में भाव आया , “ यार असमानता की भी हद होती है ” ।

ऋषभ- शालिनी खाना खाकर चले गये । मैं और चिंतन सर खाकर पूसा कैंपस में टहलने लगे । पूसा कैंपस अपने आप में एक दिव्य परिसर था । मेरी

सारी यादें वापस आने लगीं । जब मैं पिछली बार यहाँ आया था । मैं यहीं रात में टहला करता था । कैंपस की इसी सड़कों पर मैंने अपनी सबसे कठिन रात गुजारी थी, इंटरव्यू के दिन की ओर ले जाने वाली रात । यहीं पर मैं अपने कमल व्यूह के असफल हो जाने पर हताशा में इंटरव्यू के बाद कहा था, “लगता है मैं समर हार चुका हूँ” । यहीं माँ का वह अंतिम कथन याद आया था जब मैं इंटरव्यू देने के लिये घर से निकल रहा था, “मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये । मैं अपने सारे पुण्य तेरे नाम करती हूँ”, और मैं रोने लगा था ।

चिंतन सर ने पूछा, “क्या सोच रहे हो? कहाँ खो गये?”?

मैं - “सर इन्हीं सड़कों पर कभी ट्रूट रहे खाबों का एहसास हुआ था बस उन्हीं लम्हों में मैं वापस पहुँच गया था” ।

चिंतन सर - “इतिहास छोड़ो, आगे का क्या विचार है?”?

मैं - “अब आईएएस नहीं मिली तब या तो आईआरएस सेवा में काम शुरू कर दें या फिर से परीक्षा दें, यह एक फैसला करना है” ।

चिंतन सर - “यह एक बहुत ही छोटा फैसला है, कोई बड़ा फैसला लेने को तैयार हो?”?

मैं - “सर समझा नहीं” ।

चिंतन सर - “जितने गुणों को तुमको ईश्वर ने दिया है उसमें तीन - चार लोग बन सकते थे । ईश्वर ने चार लोगों का गुण एक व्यक्ति में डाल दिया । ऐसा क्यों किया उसने यह सोचो । जब वह एक व्यक्ति को कई प्रतिभाओं से संवरित करता है तब उसकी चाहत होती है कि वह केवल अपने ही नहीं संपूर्ण समाज के बारे में सोचे । ऋषभ को परमपिता ने कोई ख़ास गुण न दिया सिवाय कम्प्यूटर में टिक-टिक करने के ... क्यों? क्योंकि वह सिफ़्र अपने लिये ही जीवित रहने वाला व्यक्ति है । परमपिता हर काम बहुत विचार

करके करता है । उसने तुम्हारे अंदर संवेदना, मननशीलता, वाक् क्षमता, जिजीविषा, अध्ययन, विश्लेषण, संघर्ष, अपराजेयता, सामाजिक सरोकार, ज़मीन की मिट्टी से तूफान खड़ा करने का जज्बा क्यों दिया? क्या सिफ़्र इसलिये कि तुम एक सुंदर धनवान कन्या से विवाह करके एक सामान्य जीवन बिताओ? कदापि नहीं । अगर सिफ़्र एक सामान्य जीवन की चाहत उसे तुमसे होती तब वह तुम्हें इस तरह न बनाता जिस तरह गढ़ा है उसने । वह कोई गाँव का कुम्हार नहीं है, वह विश्वकर्मा ही नहीं है, वह सर्जक है, वह प्रजापालक है, वह लोगों को आपदाप्रबंधन के लिये भेजता है । वह अपनी हर संतान के हित का ख्याल करता है उनको न्याय प्रदान करने वाले व्यक्ति का सर्जन करता है । वह कुछ भी अनायास नहीं करता, वह सब कुछ सायास करता है । उसने तुमको बनाते समय ही यह सोचा होगा, यह अपने

लिये नहीं जमाने के लिये जियेगा । यह अपना दर्द नहीं दूसरों का दर्द समझेगा , यह कबूतर के रेशमी परों से ज्यादा बाज की आँखों से दूर तक जीवन देखेगा । यह परीक्षा जहाँ तक तुमको पहुँचाना चाह रही थी पहुँचा चुकी है । इसके आगे अब रुटीन ज़िंदगी है । अब आगे का जीवन एक लकीर का जीवन है उसमें कोई आळादित करने वाला तूफान नहीं है । अब तुम एक आदेश लेकर काम करने वाला ही बनोगे अगर इस नौकरी के पायदानों पर चढ़ना चाह रहे हो तो । अगर अपने अंदर की आवाज़ सुनोगे तब व्यवस्था तुमको एक किनारे कर देगी ।

मैं “ क्या करूँ मैं सर आपके अनुसार ” ।

चिंतन सर - “ तुम बुद्ध बनो ” ।

मेरे कानों में चिंतन सर की आखिरी लाइन झंकारित होने लगी

तुम बुद्ध.... बुद्ध..... बुद्ध बनो ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 146

चिंतन सर की पंक्ति “ तुम बुद्ध बनो ” मेरे कानों में गूँज रहीं थी । बुद्ध नाम ही अपने आप में आकर्षित करता है । मैंने पूछा , “ सर यह बुद्ध मैं कैसे बन सकता हूँ । यह बुद्धत्व कहाँ सबके भाग्य में है ” ।

सर -“ यह सच कहा तुमने बुद्धत्व न तो सबके भाग्य में है और न ही सब लोग उसको प्राप्त करने की आकांक्षा कर सकते हैं । मैं तुमको ओशो का एक क्रिस्सा सुनाता हूँ । एक युवक ओशो के पास गया । उसने ओशो से कहा कि मेरे मन में बहुत ख़राब- ख़राब ख़याल आते हैं । ओशो ने पूछा कैसे- कैसे ख़याल आते हैं? उस युवक ने कहा मेरे मस्तिष्क में महिलाओं को लेकर बहुत से ख़याल आते हैं । ओशो ने कहा कि इसमें ख़राबी क्या है ? अगर यह ख़याल तुम्हारे पिता के मस्तिष्क में न आते तो आज तुम्हारा अस्तित्व न होता । अगर हमारे पूर्वज, पर पूर्वज इन विचारों की हत्या कर रहे होते तब इस सृष्टि का विकास कैसे होता ? इस ख़याल को और बढ़ाओ, यह ईश्वर का आशीर्वाद है । हर व्यक्ति बुद्धत्व के लिये नहीं बना होता है । ईश्वर अगर बुद्धत्व देना चाहेगा तब माया - मोह - परिग्रह से मुक्ति वह स्वयम देगा । तुम जीवन का आनंद लो और जैसा जीवन तुम्हारे सम्मुख आ रहा उस तरह उसे स्वीकार करो । अगर यह बुद्धत्व तुम्हारे भाग्य में होता तब परमपिता ने तुमको

एक अलग आशीर्वाद दिया हुआ होता और वह आशीर्वाद इस सांसारिक माया में न तो नष्ट होता और न ही व्यर्थ जाता । यह मैं अपने बद्री या ऋषभ से उम्मीद नहीं कर सकता जो मैं तुमसे कर रहा ।

मैं “ सर ऋषभ से क्यों नहीं आप से क्यों नहीं । ऋषभ एक महान प्रतिभाशाली है ” ।

चिंतन सर - “ क्या प्रतिभा है उसके पास ? तुम अपनी और उसकी तुलना करके देख लो और बताओ इस जीवन के किस सामाजिक सत्य से साक्षात्कार वह कर सकता है ? ”

मैं “ सर मेरे अंदर क्या है ? कुछ तो नहीं दिखता मुझे । आपके हिसाब से ऋषभ के पास कोई ख़ास गुण नहीं है । पर उसने आईआईटी की प्रवेश परीक्षा में तक़रीबन टाप सा किया था , गणित के वह सिद्धांत हल कर दिये जो लोगों के लिये पहेली बने थे और उसी पर पद्मशरी इसके गाइड को मिला । यह अमेरिका में इतना पैसा कमा रहा और नये-नये तरीके की खोज कर रहा । मैं इंजीनियरिंग की सारी परीक्षा में फेल किया । मेरी अकादमिक उपलब्धि कुछ है नहीं । मुझे हिंदी भाषा के अलावा और कुछ आता नहीं और हिंदी भाषा में भी कोई निराला - आचार्य शुक्ल तो हूँ नहीं । एक हीन भावना से मैं बचपन से ग्रसित रहा हूँ । अभाव ही रहा जीवन में और उससे उपजने वाली पारिवारिक ज़िम्मेदारियों मुँह बायें खड़ी हैं । मैं बुद्ध की तरह का त्याग करूँ इसका सीधा सा अर्थ है मैं अपने सब लोगों से कहूँ, तुम स्वप्न मत देखो । तुमको कोई अधिकार नहीं स्वप्न देखने का , मैं तुम सबको त्याग रहा हूँ ” ।

चिंतन सर - “ मैं किसकी व्याख्या पहले करूँ ? एक व्यक्ति जो हीन भावना का शिकार है पर बुद्ध बन सकता है या उसकी जो समाज के मानदंडों से एक सफल व्यक्ति है पर संवेदना विहीन है । जो अपनी माँ के वक्ष के दूध के प्रति संवेदनशील न हो वह किस तरह समाज का नेतृत्व कर सकता है । वह अपना जीवन जी सकता है , वह व्यक्तिगत उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है वह बैंक के क्लर्क को अपने पासबुक के दाईं ओर बहुत से शून्य लगाने और उसको बढ़ाने का कार्य दे सकता है , इसके अतिरिक्त उसकी इस समाज में कोई उपयोगिता नहीं है । उसकी माँ को भी यह धन रास नहीं आ रहा और वह कह रही यह धन व्यर्थ है । वह एक उद्देश्य विहीन जीवन की अंधी दौड़ में दौड़ रहा । क्या धन संग्रह मात्र जीवन का लक्ष्य हो सकता है ? उससे पूछो , तुम्हारे जीवन का उद्देश्य क्या है ? वह नहीं बता सकता । वह क्या जब पैदा हुआ था तब ऐसी कमरे , बीस नौकर , बड़ी कोठी और एक झौआ रूपया लेकर माँ के गर्भ से आया था । वह एक मामूली सरकारी कर्मचारी का बेटा है जो बचपन में ही अनाथ हो गया था । एक अनाथ को यहाँ तक जिसने पहुँचाया उसको ही वह भूल सा गया है । आंटी के चेहरे की चमक देखो जब

एक भरा- पूरा परिवार दिखता है । यह तुम्हारे आने के बाद हुआ । वह मेहमानों की तरह आता है और चला जाता है । वह अगर कहें कि मैं समाज सेवा करना चाहता हूँ तब मैं कहूँगा , तुम रहने दो । इतने पवित्र शब्द को कलंकित न करो । यह शब्द बोलने का अधिकार भी सबको नहीं है । जो किसी की आँखों के अंदर परिस्थिति जन्य सियाही को नहीं देख सकता वह जीवन को व्यर्थ कर रहा । मेरे पास एक मामला आया । बेटे ने पिता को घर से निकाल दिया । वह वृद्ध शिकायत दर्ज कराने आया था और उसने कहा मेरे पूरे जीवन की कमाई वह दो कमरे का मकान है जहाँ से मुझे निकाल दिया गया है । ऋषभ ने घर छोड़ दिया । बताओ दोनों में कितना फ़र्क है । एक परिणाम के तौर पर बात एक ही है कि परिस्थितियाँ ऐसी उत्पन्न हो गयीं कि साथ नहीं रह सकते । उस आदमी में और ऋषभ में क्या फ़र्क है तुम बताओ मुझको । अगर है तो थोड़ा ही है और वह फ़र्क सिर्फ़ धन से दिख रहा । मेरी व्याख्या में अतिरिंजना हो सकती है और शायद है भी पर दर्द उस व्यक्ति के भी पास था और आंटी के पास भी है । अपने बच्चों के साथ न रह पाने का दर्द दोनों के पास है , बस आंटी समझदार है , विद्वान हैं और सबसे बड़ी बात वह परिस्थितियों से समझौता करना जानती है । उसका पूरा जीवन ही समझौते में बीता है ।”

मैं - “ सर आप मेरे में पता नहीं क्या देख रहे । मुझे जीवन का एक नया अनुभव हो रहा ।

चिंतन सर -“ मैंने एक दृष्टिकोण तुम्हारे सामने रख दिया । फ़ैसला तुमको करना है । यह हीन भावना तुम्हारे भीतर समस्याओं एवं परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हुई है । यह समाज के द्वारा थोपी गयी है । यह स्कूल- कालेजों की पढ़ाई का जीवन की सार्थकता में एक सीमित योगदान है ।

मैं - “ सर यह काम आप क्यों नहीं कर रहे जो आप मुझे करने को कह रहे । आप त्याग क्यों नहीं करते जो मुझे करने को कह रहे ।

चिंतन सर - “तुम यह मत सोचो मैं तुमको किसी समस्या में झाँक रहा । यह मैं क्यों नहीं कर सकता इसका एक कारण मेरी अपनी समस्या है और दूसरा मेरे पास वह क्षमतायें नहीं हैं जो तुम्हारे पास हैं ।

मैं - “ सर मेरी समस्या भी विकराल है । मेरा विवाह नहीं हुआ है और मेरे पास अपने बच्चों की ज़िम्मेदारी नहीं है । यह ही एक फ़र्क आप कह सकते हो अपने और मेरे बीच , बाकी समस्यायें तो मेरे पास हैं ही । मेरे पिताजी ने जीपीएफ़ से बहुत एडवांस लिया हुआ है मकान बनवाने के लिये । उन्होंने शहर में भी मकान बनवाया और गाँव में भी दो कमरे जोड़े हैं । उनके पास अपने भाइयों की ज़िम्मेदारी रही है । वह जितना कुछ अपनी सीमाओं में कर सकते थे उन्होंने किया , बहुत सी बातें मेरी माँ को नहीं पता है जो उन्होंने

अपने भाइयों के लिये किया । मेरे बड़े पिताजी को ससुराल में ज़मीन मिली थी । उस ज़मीन की रजिस्टरी के लिये उनके पास पैसा न था । अगर उस ज़मीन की रजिस्टरी न होती तब उस ज़मीन पर उस गाँव के पट्टीदार लोग दावा ठाँकते और कोर्ट- कचहरी का झङ्घट होता । उस समस्या के निवारण के लिये भी पिताजी ने जीपीएफ से पैसा निकाला था जो मैं जानता हूँ पर माँ नहीं जानती । मेरे पिताजी ने मुझसे यह साझा किया था जब मैं अवारागर्दी कर रहा था , यह कहते हुये कि बहुत कच्ची गृहस्थी है इसको ध्यान में रखकर जीवन को आगे की ओर देखो । मेरी बहन का विवाह बहुत ही ज्यादा सामान्य होता अगर मैं चयनित न होता । मेरे गाँव के मेरे अपने लोग हैं । मैं सबको छोड़कर बुद्धत्व की खोज में चल दूँ यह कहाँ का न्याय है “ ?

चिंतन सर - “ यह एक गाँव के लोग और तुम्हारा अपना एक परिवार - तुम इसके बाहर भी सोचो “ ।

मैं - “ सर आप जिस बुद्धत्व की बात कर रहे वह है क्या “ ?

चिंतन सर - “ अपने जीवन को प्राणि मात्र के लिये लगा देना । अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण, अपरिग्रह । बोधिसत्त्व की संकल्पना शायद बेहतर इसको अभिव्यक्त कर सकती है । संसार का जब तक अंतिम व्यक्ति मुक्ति प्राप्त नहीं कर जाता तब तक अपनी मुक्ति के बारे में विचार ही नहीं करना । खुदकनिकाय पढ़ा ही होगा । जातक कथाओं का ज़िक्र है उसमें । वह सब क्या हैं ? बुद्ध के पूर्व जन्म की कथा और बुद्ध का प्राणि मात्र के कल्याण के लिये कार्य करना । यह वह अहरत्व नहीं है जो सिफ़्र स्वयम की मुक्ति की बात करता है यह वह बोधिसत्त्व है जो हर प्राणि मात्र के कल्याण के लिये बार-बार जन्म लेता है और उनकी मुक्ति के लिये आग्रहशील है । वह तब तक जन्म लेता रहेगा जब तक हर एक प्राणि को मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो जाती है । उसको अपनी मुक्ति की कोई शीघ्रता नहीं है उसका हेय है उसका लक्ष्य है हर एक को मुक्ति प्रदान करना । तुम सक्षम हो इस कार्य के लिये । मेरी जानकारी में तुम्हारे अलावा मुझे कोई और सक्षम नहीं दिखता । सब त्याग दो । एक परिवार के बजाय वसुधा के परिवार पर कार्य करो । यही बुद्धत्व है । तुम कोई और नाम देना चाहो तो तुम दे सकते हो पर संकल्पना वही होगी “ एक त्याग की उनके लिये जो समाज की निचली पंक्ति में हैं और सर्जक ने तुम्हारा सृजन सिफ़्र अपने सीमित परिवेश के लिये नहीं एक वृहद परिवेश के लिये किया है “ । तुम इस चुनौती को स्वीकार करो “ ।

मैं - “ पर सर यह सुझाव मुझे ही क्यों? मैं ही त्याग क्यों करूँ वह भी अपनों के अरमानों को सूली पर छढ़ाकर “ ।

चिंतन सर - “ मैं जो सलाह तुमकों दे रहा वह किसी और को नहीं दे सकता , यह मैं पहले ही कह चुका । मैं खुद भी तुम्हारे इतना संवेदनशील और बहु

आयामी व्यक्तित्व नहीं रखता । यह एक अवसर है । यह दुबारा नहीं आयेगा । अभी जो भी फ़ैसला लोगे वह तुम्हारे जीवन को एक नई दिशा देगा । राम के कुल में बहुत प्रतापी राजा हुये पर यश तीन के ही हिस्से में आया राम, भरत, लक्ष्मण । क्यों? इन तीनों ने त्याग किया । यह अवसर है एक त्याग का । सब त्याग दो जगत कल्याण के लिये । यशोधरा बहुत सुंदर थी, शीलवान थी, राहुल बहुत मोहक था । पर बृद्ध ने सब त्याग बाकि सब इतिहास है । यह एक विचारणीय प्रश्न है, फ़ैसला लो जो उचित लगे ॥

मैं - “ सर आप चाह रहे हो मैं यह सब कुछ जो प्राप्त हुआ है उसको छोड़कर संन्यास ले लूँ ॥ ”

चिंतन सर - “ मैं यह कह रहा तुम इस सेवा को मत स्वीकार करो । तुम समाज के लिये कार्य करो । समाज के लोगों के लिये जियो । ईश्वर तुमको एक बेहतर धन-धान्य से परिपूर्ण घर में जन्म दे सकता था पर वह तुम्हें तराशना चाहता था इसलिये समस्याओं के बीच तुमको जन्म दिया । तुम किस काम के लिये बने हो यह सोचो । तुम्हारा इस सेवा को अस्वीकार करना शायद समाज के लिये एक बड़ा निर्णय होगा । अब यह संन्यास है या जीवन में रहकर जन उद्धार इस पर विवेचना की जा सकती है पर मैं क्या चाह रहा कहना तुम समझ रहे हो ॥ ”

सर ने मुझे सम्मोहित ऐसा कर लिया था । मैंने पूछा और सर विवाह ?

चिंतन सर - “ इन दुनियावी मसलों से दूर रहने और इन्द्रियों की अशक्तता पर विजय पा सकते हो तभी मेरी राय मानों नहीं तो जीवन तो आमोद-प्रमोद है । ईश्वर ने आमोद-प्रमोद का तो वरदान दे ही दिया है । वह तो सहज रास्ता है ही तुम्हारे समुख । फ़ैसला ले लेना, कोई जल्दी नहीं है ॥ ”

मैं - “ सर आप की एक पंक्ति में क्या सलाह है । यह बहुत लंबा उपदेश हो गया ॥ ”

चिंतन सर - “ मैं कहूँगा आप यह सेवा अस्वीकार कर दो । ज़मीनी स्तर पर कार्य करो । लोगों के उत्थान में सन्नद्ध हो एक दिन एक अलग इतिहास बनेगा । यह नौकरी कोई इतिहास बनाने की क्षमता नहीं रखती ॥ ”

मैं - “ सर जीवन कैसे चलेगा ? ”

चिंतन सर - “ यह चिल्लर बाज़ी की बात कर रहे हो, जिसकी तरफ़ ज़माना एक आशा से देख रहा हो उसके लिये अपने जीवन की क्या समस्या । तुम्हारे साथ चलने वालों का जीवन आसान हो जायेगा, तुम्हारे जीवन की क्या समस्या ॥ ”

मैं - “ सर यह बहुत नवीन और गूढ़ प्रश्न है । यह कभी मेरे मस्तिष्क में आया ही नहीं । आप एक दुनियावी राय दो ” ।

चिंतन सर - “ क्या ” ?

मैं “ एक कोचिंग चलाना चाहता हूँ । मैं लोगों को पढ़ाना चाहता हूँ । मैं जो लोग आईआरएस की परीक्षा दे रहे उनकी मदद करना चाह रहा ” ।

चिंतन सर - “ धन की लालसा है या सिफ़्र मार्गदर्शन करना है ” ?

मैं - “ सर दोनों । इसमें पैसा लगेगा । किराया उस जगह का जहाँ पढ़ाना होगा , प्रचार करना होगा । यह सब मैं कहाँ से लाऊँगा ” ?

चिंतन सर - “ किसी कोचिंग में भी यह काम कर सकते हो ” ।

मैं “ सर ब्राइट कोचिंग में पढ़ाया दो- तीन दिन पर मैं नया प्रयोग करना चाह रहा , वह वहाँ नहीं हो सकता ” ।

चिंतन सर - “ क्या प्रयोग है ” ?

मैं - “ सर मैं मेंस और प्रारम्भिक परीक्षा एक साथ पढ़ाना चाह रहा । यह कोई नहीं करता शहर इलाहाबाद में । गुणवत्ता प्रक शिक्षा का अभाव है । आप की क्या राय है ” ?

चिंतन सर - “ इसको ज़रूर करो । यह उत्तम विचार है । मैं भी आऊँगा पढ़ाने । मेरा थोड़ा बोलने का अभ्यास हो जाएगा । ”

मैं “ पर सर मेरे पिताजी और बद्री सर रोक रहे ” ।

चिंतन सर - “ सुनो सबकी पर करो अपने मन की । अगर दिल कह रहा कि यह करना है तब करना ही है । दिल पर हाथ रखकर पूछ लो । जो आवाज़ आये वह कर दो ” ।

यार यह दार्शनिक बात बहुत हो गयी । यह बताओ मुझे आईआरएस मिलने की कितनी संभावना है ” ।

मैं - “ सर एक अशोक तिरपाठी सर हैं कानपुर में आईआरएस हैं वह कह रहे हैं कि आप की रेंक पर वह मिल जाएगी ” ।

चिंतन सर - “ चलो तुमने मेरा थोड़ा दिल हल्का कर दिया मेरे आईजी साहब कह रह थे टच एंड गो हो सकता है । मैं अब यह पुलिस की नौकरी नहीं करना चाहता । मैं पाँच - सात साल आईआरएस की नौकरी करके सुलतानपुर-अमेरी से ही चुनाव लड़ूँगा और स्थापित साम्राज्य को ही ध्वस्त करूँगा और मुख्य पेज पर होगा समाचार पत्रों के , एक फ़क़ीर ने जनतंत्र की स्थापना की । ”

मैं - “ सर एक बात विवाह पर मुझे बतायें ” ।

चिंतन सर - “ पूछो , कुछ भी पूछो सरस्वती का आवाहन हो चुका है ” ।

मैं - “ अगर मैं किसी कन्या से विवाह करना चाहूँ जो समाजिक मान्यता को तोड़ रहा हो । जो हमारे परिवेश के लिये रुचिकर न हो तब आपकी क्या सलाह है ” ।

चिंतन सर - तुम किस विषय पर बात कर रहे प्रेम विवाह या अन्तर्राजातीय विवाह ? ”

मैं - “ सर दोनों ” ।

चिंतन सर - “ अगर प्रेम हो गया है किसी से तब तो बाँध को तोड़ना ही है । प्रेम में एक असीम ताक़त है एक अविश्वसनीय सी करान्ति धर्मिता है पर वह प्रेम शारीरिक आकर्षण से इतर होना चाहिये । वह सिफ़्र लिप्सा से प्रेरित नहीं होना चाहिये और अगर ऐसा प्रेम है तब करान्ति स्वयमेव होगी , वह नहीं रुकेगी ” ।

मैं - “ सर अन्तर्राजातीय विवाह ” ?

सर - “ इसमें धर्म का विषय गूढ़ है , इसका विवेचन करने में मैं असमर्थ हूँ ” ।

मैं - “ सर आप भीष्म नहीं विदुर की तरह ज्ञान गंगा का बेलौस प्रवाह करो । यह किंतु- परंतु मत लगाओ ” ।

चिंतन सर - “ यह भीष्म और विदुर का फ़र्क़ समझाओ ” ।

मैं - “ सर चीर हरण पर दरौपदी ने प्रश्न किया था कि मुझे जुएँ के दाँव पर लगाना कितना धर्मसम्मत था जबकि युधिष्ठिर अपने को जुएँ में हारकर एक दास हो चुका था । भीष्म ने कहा था , एक व्यक्ति दास होकर भी अपनी पत्नी का स्वामी तो हो सकता है । यहाँ धर्म का विवेचन गूढ़ है इसलिये मैं तुम्हारे प्रश्न का स्पष्ट उत्तर नहीं दे सकता । विदुर ने स्पष्ट कहा था जब युधिष्ठिर अपने को जुएँ में हारकर दास बन गया तब वह अपनी पत्नी को जुएँ के दाँव पर नहीं लगा सकता । विदुर- भीष्म- कृष्ण की ज्ञान तिरकेणी में विदुर की ज्ञान धारा सबसे स्पष्ट बात कहती थी । वह धर्म के अवतार थे । वह शापित थे । धर्म को शाप दिया गया था और धर्म को मानव रूप में जन्म लेना था , इसलिये शायद वह धर्म होकर धर्म के तत्त्वों का विवेचन स्पष्ट रूप से करते थे । क्या पता आप भी धर्म ही हो । क्या पता आप भी किसी पूर्व जन्म के पापों को भोगने के लिये इस मानव जीवन में अवतरित धर्म ही हो । ”

चिंतन सर - “ यह धर्म का विदुर के रूप में जन्म की कौन सी कथा है ?

मैं - “ सर वह छोड़ो, यह बताओ मुझे अन्तर्जातीय विवाह करना चाहिये या नहीं ” ?

चिंतन सर - “ नहीं कदापि नहीं ” ।

मैं “ क्यों सर ” ?

चिंतन सर - “ तुम अपना परिवेश देखो । लोगों की मान्यताओं को देखो । वह सब कितना इसको स्वीकार कर पायेंगे । एक परिवेश से निःस्पृह कार्य व्यक्ति को नहीं करना चाहिये । अपने लोगों की उम्मीदों को अपने सुख के लिये धूसरित न करो । मैं इस बात का पक्षधर नहीं हूँ कि अपने निहित सुख के लिये अपनी माँ और अपने पिता को कष्ट दिया जाये ” ।

मैं “ सर आप दोनों बात कर रहे हो । अभी क्रान्ति की बात कर रहे थे जो कि भावनाओं से संचालित नहीं होती और अभी आप एक पारिवारिक जीवन के मानदंडों की बात कर रहे जो क्रान्ति को रोकती है ” ।

चिंतन सर - “ यह प्रेम विवाह यह अन्तर्जातीय विवाह कौन सी क्रान्ति करते हैं । यह कौन सा जगत कल्याण करते हैं ? मैं एक व्यापक समाज के हित के लिये एक क्रान्ति की बात कर रहा न कि स्वयम के सुख के लिये । यह बुद्धत्व की सारी प्रक्रिया की तुलना तुम एक वैवाहिक सुख से कर रहे हो । एक में तुम जितेंद्रिय हो रहे हो और दूसरे में इन्द्रियदास । एक में विजेता का गौरव है तो दूसरे में निरा दासत्व । अब फ़ैसला तुम पर है, मैंने अपना धर्म निभा दिया है ” ।

मैं “ सर इस बुद्धत्व की प्रक्रिया में भी तो वही होगा । अपने लोगों की इच्छाओं का धूल-धूसरित होना ” ।

चिंतन सर - “ दोनों में फ़र्क है । एक में स्वयम का सुख है वह भी क्षणिक-तात्कालिक और दूसरे में दूरगमी एवं चिरातन । एक में जगत का कोई कल्याण नहीं है और दूसरे में कल्याण ही कल्याण । तुम्हारी अपनी माँ ही पहले तो शोक में जायेगी और फिर कहेगी मैंने जगत नायक को जन्म दिया है । तुम नायक बनकर संतुष्ट क्यों होना चाहते हो जब महानायक बनने का द्वार तुम खोल सकते हो ।

मैं और चिंतन सर लौट कर आये । हम लोगों ने रात का खाना खाया । देर रात चिंतन सर चले गये और कहा कि कल दोपहर बाद आऊँगा । शालिनी ने कहा कि कार कल सुबह आ जाएगी । रात में मैं आंटी से बात करने लगा । आंटी ने कहा, “ अनुराग जीवन बहुत आसान नहीं होता । कई बार लोगों को लगता है आपके पास सब कुछ है पर कुछ भी नहीं होता । मैं अपनी और उर्मिला की तुलना करती हूँ तो पाती हूँ उर्मिला ने तुमको संस्कार दिये और मैंने ऋषभ को शिक्षा दी । काश में भी संस्कार दे पायी होती ।

मैंने पूछा , आंटी मैं समझा नहीं । आंटी बोली रात बहुत हो गई है , अब सोते हैं कल बात करते हैं ।

मैं रात में बहुत देर तक सोचता रहा । मेरी आँख बहुत देर में लगी । मुझे लगा मैं बुद्ध की तरह घर का दरवाजा खोलकर घर से बाहर जा रहा । मैंने अंतिम बार अपने घर के बाहर से पूरे मकान को देखा और अंतिम बार पूरी गली को चलकर देखा । मैं पीछे मुड़कर नहीं देखना चाह रहा था उससे मन कमज़ोर हो सकता था , मैं वापस जा सकता था । मैं धीरे- धीरे चलता जा रहा था । मैं पहाड़ों पर चढ़ रहा ... एक बहुत ऊँचे पहाड़ों पर जहाँ से दूर- दूर तक आसमान का शून्य ही शून्य दिखाई दे रहा । मेरे कानों में एक आवाज़ आ रही थी मेरी माँ की मुन्ना मिल नहीं रहा कहीं चला गया उसको खोजों और मैंने अपने दोनों हाथों से कान बंद कर लिये ताकि कोई मोहक ध्वनि मुझे कमज़ोर न कर सके ।

आंटी की आवाज , “ अनुराग तुम्हारी चाय और तुम नींद में अपने दोनों कान बंद क्यों कर रहे थे ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 147

मैं उठ कर बिस्तर पर बैठ गया । मेरे बाल बिखरे हुये थे । आंटी ने कहा , अनुराग तुम्हारे बाल बहुत खूबसूरत हैं । ऐसे बाल लड़कियों को मिलने चाहिये थे । उनकी ख्वाहिश बहुत होती है , घने - काले केशों की । वह सब आँवला लगाती हैं अपने बालों को काला एवम् घना करने के लिये , अब तो और भी उत्पाद बाज़ार में आ गये । तुम भी कुछ लगाते हो क्या?

मैं - “ आंटी मैं तो कभी सरसों का तेल भी न लगाया । कंधी भी तक़रीबन ना की तरह इस्तेमाल करता हूँ । यह मेरे दायें हाथ की चार अंगुलियाँ हैं इनसे ही बालों को पीछे ढकेल देता हूँ कंधी की शक्ल बनाकर ।

आंटी - हम लोग गाँव में आँवले के साथ- साथ बरगद का दूध भी लगाया करते थे ।

मैं - “ इससे कुछ होता है “ ?

आंटी - “ पता नहीं , पर गाँव की लड़कियाँ लगाती रहती हैं । बाकी तो कुछ पता नहीं । हम लोगों के पास और तो कुछ होता न था अपने को सँवारने -

सजाने का । तुमको शालिनी कैसे लगी “ ?

मैं - “ आंटी वह सुंदर तो बहुत है । बात भी सलीके से करती है । बात-व्यवहार वाली भी लगी “ ।

आंटी - “ बात - व्यवहार वाली कैसे लगी “ ?

मैं - “ आंटी मैं बस से जाने को कह रहा था । उसने अपनी कार का प्रस्ताव दिया । मैं ना- नुकूर कर रहा था पर वह मानी नहीं । यह बात- व्यवहार ही है और क्या है “ ?

आंटी - “ यह बात - व्यवहार है और कुछ नहीं ? “

मैं - “ और क्या होगा इसमें आंटी “ ?

आंटी - “ तुम एक निवेश की एक वस्तु हो चुके हो । तुम वह अनुराग नहीं रहे जो आज से एक माह पूर्व थे । आज तुम्हारे साथ एक आशा सबकी जुड़ चुकी है । तुम्हारे साथ लोग जुड़ रहे हैं । चिंतन ऐसे कई और लोग तुम्हारे साथ जुड़ चुके हैं और आगे और जुड़ेंगे । तुम सब लोग समाज की भौतिकतापरक मानसिकता के अनुसार बहुत उपयोगी पराणी बन चुके हो अपनी इस सफलता के बाद । आज नहीं तो कल काम आओगे ही । साथ ही साथ तुम्हारे नाम का उल्लेख भी समाज में एक सम्मान देगा ही । यह कार सरकारी अधिकारियों के लिये ही रखी गयी है । तुम भी उसी शरणी में आ ही गये हो । चिंतन गाज़ियाबाद में पोस्टेड हैं और वह कोई आम अफ़स्सर है नहीं , एक नामी अफ़स्सर हैं । वक्त- बेवक्त काम आयेगा ही । जिस तरह की नज़दीकी आहूजा साहब ने बनाई है , कुछ काम लिया ही होगा । यह सब तुमको नहीं समझ आ रहा “ ?

मैं - “ आंटी , यह मेरे दिमाग में तो नहीं आया “ ।

आंटी - “ यह सब सीखना शुरू करो । दुनिया इतनी आसान नहीं है । अब तुम एक छात्र जीवन से बाहर निकलो । तुम कुछ चिंतन से सीखो , देखो उसको कितना सब आता है । वह पूरी दुनिया को चरा रहा है । तुम भी उसी की तरह बनो । यह सहजता एक अच्छी बात है पर कभी - कभी सहजता अवगुण भी लगने लगती है , अगर लोग उसका फ़ायदा उठाने लग जायें । तुम पिछली बार आये थे तब मुझे तुम्हारा सारा समय मिला था पर इस बार तो इतने लोग हैं कि मुझे समय ही नहीं मिल रहा । कल दो घंटे चिंतन तुमको लेकर पूसा धूमते रहा और पता नहीं क्या बात तुम लोग करते रहे “ ।

मैं - “ आंटी कुछ ख़ास नहीं बस ऐसे ही बात करते रहे कि अब आगे क्या करें । जीवन का भावी कार्यक्रम कैसे निर्धारित करें “ ?

आंटी - “ भावी कार्यक्रम में एक तो विवाह का मुद्दा है । उस पर क्या सोचा है ? कब करोगे ? उर्मिला क्या कह रही ? ”

मैं - “ आंटी , आपका एक पत्र आया था जिसमें आपने कुछ ऐसा लिखा था कि ऐसा विवाह न करना कि बेटा हाथ से चला जाए । मेरे बड़े मामा का एक बेटा अपने ससुराल चला गया संपत्ति की आकांक्षा से , यह उदाहरण उसके सामने था ही और इतने में आपका पत्र आ गया । वह घबड़ा गयी है । वह किसी भी बड़े घर में विवाह नहीं करना चाहती है और अब ज्यादातर लोग जो आ रहे वह धन- वैभव- प्रतिष्ठा से सरोबार लोग ही हैं और हमारे परिवेश से एकदम अलग हैं ” ।

आंटी - “ विवाह अपने समकक्ष ही उचित होता है अगर परिवार में एक संतुलन चाहिये । यह समकक्षता विहीन संबंध एक असंतुलन को जन्म दे देता है और समय के बढ़ते प्रवाह के साथ- साथ यह भेद को गहरा करता है । यह बहुत पीड़ा देता है , केवल और केवल पीड़ा । तुम अगर इंटरव्यू देने न आये होते तब मेरा और आहुजा साहब का संबंध तक़रीबन ख़त्म हो गया था । ऋषभ के विवाह के बाद वह कभी आये ही नहीं । वह तब आये जब चिंतन के सिपाही- दरोगा इनकी कोठी पर गये और वह इनकम टैक्स की रेड समझकर भयग्रस्त हो गये थे । उसके बाद उनको तुम्हारे बारे में पता चला , तुम्हारा रिजल्ट उन्होंने पेपर में पढ़ा और मेरी तुम्हारी अंतर्गता का एहसास हुआ । उनको लगता है कि तुम मेरी बहन के बेटे हो , यह एहसास बनाने में चिंतन का काफ़ी योगदान है । उनको क्या पता कि हम आपस में रिश्तेदार न होकर तुम मेरी सहेली के बेटे हो । यह अलग बात है यह संबंध कई खून के रिश्तों पर भारी पड़ रहा और सच कहूँ अनुराग यह संबंध मेरे जीवन का सहारा बना है ” ।

मैं - “ आंटी यह बात तो सच है कि हमको भी आपके बारे में इंटरव्यू में दिल्ली रुकने का जब प्रश्न मेरे सम्मुख आया तब ही ठीक से पता चला । अब हम लोगों की रिश्तेदारियाँ और संबंध तो गाँव- देहांत में ही होती है । इलाहाबाद शहर से बाहर तो कोई संबंध विकसित कभी हुआ नहीं और न ही संभावना बनती थी । मैं अगर चिंतन सर से कहा होता तब वह मुझे शायद यूपी भवन में रुका देते जैसे और लोगों को रुकाया पर यह मेरे मस्तिष्क में आया नहीं । माँ ने आपका नाम लिया और काफ़ी विश्वास और अधिकार से लिया बस यहीं चला आया । मेरा आपके ऐसी दिव्य आत्मा के साथ जुड़ाव परमेश्वर ने सुनिश्चित किया हुआ था और बाक़ी तो सब घटनायें हैं जो आज भी मैं सोचकर आह्वादित होता रहता हूँ ” ।

आंटी - “अनुराग कई बार जो गर्भ से नहीं जन्मता और आपका दूध नहीं पीता वह गर्भ और दूध के सम्मान प्रति ज्यादा आग्रहशील होता है । इस तरह की

व्यवस्था ईश्वर समाज में एक आशा के संचार के लिये करता है । एक आशा सबको चाहिये नहीं तो आशाविहीन जीवन जीना बहुत दूभर होता है ।

मैं - “ आंटी जो नियत होता है जो प्रारब्ध में होता है वही प्राप्त होता है । मेरे प्रारब्ध में इस सफलता के साथ- साथ आप भी थे और वह तमाम लोग थे मैं जिनके साथ इस इंटरव्यू के साथ जुड़ा और जीवन एक अलग डगर पर चलने लगा । ”

आंटी- “ विवाह के लिये सोचना - देखना शुरू किया “ ?

मैं - “ नहीं आंटी । ”

आंटी - “ कोई लड़की है निगाह में “ ?

मैं - “ नहीं । ”

आंटी - “ कभी किसी से लगाव- जुड़ाव- प्रेम-इश्क हुआ । ”

मैं - “ नहीं । ”

आंटी - “ क्यों “ ?

मैं - “ इसका जवाब मैं कैसे दूँ ? मुझसे कौन प्रेम करेगा ? मुझमें क्या था जो कोई मेरी ओर आकर्षित होगा ? मैंने जीवन में ऐसा कुछ तो कभी किया नहीं कि कोई कहे , “ मेरे ख्वाब नींद के इंतज़ार में तुम्हारे लिये । ”

आंटी - “ ऐसा क्यों कह रहे तुम ? तुम एक संस्कारिक लड़के हो । एक अच्छे परिवार से आते हो । तुम पढ़े लिखे हो । तुम लफज़ों से तिलिस्म बिखेर देते हो । बात करने का सलीक़ा है । इसके अलावा और क्या चाहिये किसी के स्वप्न का सूर्य बनने के लिये “ ?

मैं - “ आंटी मेरे जीवन की सफलता की पूरी दास्तान एक महीने से भी कम की है । इस एक महीने पहले मुझे कोई नहीं जानता था और मेरी कोई उपलब्धि नहीं थी । मैं एक ठीक- ठाक विद्यार्थी ही था कोई लब्ध - प्रतिष्ठित छात्र तो कभी रहा नहीं । मैं कक्षा दस के बाद कक्षा ग्यारह में गया । जीआईसी इलाहाबाद मेरे हिसाब से हिंदी माध्यम के स्कूलों में पूरे उत्तर प्रदेश में सबसे बेहतर था और अगर सबसे बेहतर पर सवाल था तब भी सबसे बेहतर की प्रतिस्पर्धा में वह बहुत ही सम्माननीय था । मेरे कक्षा में प्रभाकर गुणे सर ने पूछा कितने लोगों के अंक 80 प्रतिशत से अधिक हैं ? क्रीब दस- पन्द्रह हाथ ऊपर उठ गये । यूपी बोर्ड में अस्सी प्रतिशत अंक प्राप्त करना एक दुर्लभ कार्य है , आसान नहीं है प्राप्त करना । मेरा उस कक्षा में कोई अस्तित्व न था । यहीं हाल बाद में ईसीसी और विश्वविद्यालय में भी रहा । अब यह अलग बात है ईश्वर ने अंतिम वरदान के लिये उन सब के ऊपर मुझको अधिमानता दी । उसकी इनायत मुझ पर रही और आशीर्वाद बहुतों ने

माँगा पर उसने अपने चुने हुये लोगों में मुझको स्थान दिया । पर इस सुखद घटना के पूर्व के सारे वर्षों में तो मैं किसी उपलब्धि का भागी कभी रहा ही नहीं । एक उपलब्धि विहीन, सामान्य सी शक्ल- सूरत रखने वाला एक अति सामान्य परिवेश में जन्मा व्यक्ति जो जीवन को गंभीरता से न ले रहा हो उससे कौन प्रेम करेगा “ ?

आंटी - “ अनुराग यह हीन भावना तुम्हारे भीतर कब आयी “ ?

मैं - “ आंटी यह हकीक़त है । यह हीन भावना नहीं है । बताइये इसमें हीनता कहाँ है यह तो वास्तविकता है “ ।

आंटी - “ जब व्यक्ति अपनी कमियों को ही देखता है तब वह हीन भावना से ग्रसित होने लगता है । यह भावना का आरोपण समाज और वह व्यक्ति दोनों के कृत्यों से होता है । समाज तुम्हें निरर्थक और उपयोगिता विहीन कहने लगता है और व्यक्ति उसको स्वीकार करने लगता है “ ।

मैं - “ व्यक्ति के पास रास्ता क्या है “ ?

आंटी - “ व्यक्ति को प्रतिकार करना चाहिये “ ।

मैं - “ कैसे “ ?

आंटी - “ अपने गुणों की तरफ़ देखकर “ ।

मैं - “ गुण होने तो चाहिये “ ।

आंटी - “ कोई भी गुणविहीन नहीं होता । हर कोई ईश्वर की नायाब संतान होता है । हर किसी को ईश्वर कोई न कोई गुण देता ही है । व्यक्ति को वह पहचानना चाहिये । समाज को भी वह गुण देखना चाहिये । इस बात पर विचार करने के बजाय, क्या मेरे अंदर नहीं है यह विचार करना चाहिये क्या मेरे अंदर है और उसकी अभिवृद्धि का प्रयास करना चाहिये । कुम्भकार का चाक, लोहार की धौँकनी और स्वर्णकार की फुँकनी से कमजोर नहीं है । हर एक का अपना महत्व है । अगर फुँकनी स्वर्ण को ज़ेवर बना देती है तराश कर तो कुम्भकार लक्ष्मी-गणेश बना देता है समृद्धि की आराधना के लिये । अब आप एक कुम्भकार को हेय दृष्टि से देखो कि वह स्वर्णभूषण नहीं बना पाता तब तो कुम्भकार हीन भावना का शिकार होगा ही । तुमको मैं दिन- रात ऋषभ की कसौटी पर कसूँ कि वह आईआईटी का टापर है, कम्प्यूटर इंजीनियर है, गणित आती है तब तो तुम हीन भावना के शिकार होगे ही । मैं इसी को पलट देती हूँ । तुम में भाषा की नफासत है, तुम्हारे पास साहित्य-दर्शन का ज्ञान है, कई भाषाओं को तुमने सीखा है, इतिहास - दर्शन - व्यवस्था की व्याख्या कर लेते हो, संवेदनशील हो तब यह पूरा मामला ही एक

दूसरे धरातल पर चला गया । पर यह समाज एक पिटी - पिटाई लीक पर चलता है । इसको बदलने की आवश्यकता है “ ।

मैं - कौन बदलेगा इसको “ ?

आंटी - “ हमें ही बदलना होगा । बचपन से ही बच्चों को समझना होगा । उनके अंदर हीन भावना न आये इस पर ध्यान दिया जाना चाहिये । व्यक्ति के नैसर्गिक गुणों का क्रमिक विकास हो यह प्रयास करना चाहिये । यह हर अध्यापक, हर माता- पिता का कर्तव्य है कि वह इस विकास प्रक्रिया का भागी बने “ ।

मैं “ आंटी सैद्धांतिक रूप से यह सही है जो आप कह रही हैं पर हर कोई उसी पर ध्यान देता है जिससे कम परिश्रम में परिणाम प्राप्त हो जाये । अध्यापक भी उसी बच्चे पर ज्यादा ध्यान देना चाहता है जो त्वरित ग्रहणशील हो । जो समझने में समय लेता है उस पर से अध्यापक का ध्यान हटने लगता है । विरले ही हैं जो उनके लिये समय निकालते हैं । जीवन की रफ़तार इतनी तेज है कि जो दौड़कर बस पकड़ सकता है वही बस पर चढ़ सकता है । यहाँ कोई किसी को रास्ता नहीं देता , धक्का मारकर रास्ता बनाना पड़ता है । आप जो कह रही हैं वह सच होकर भी समाज में स्थापित कब होगा यह कहना मुश्किल है । यह जीवन पूर्ण रूपेण भौतिकवादी हो चुका है । इस समाज में दया- धर्म- ममता का ह्रास हो रहा है । किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके गुणों से ज्यादा उसके पदमान और धन से होती है । मेरे सर्वेश मामा को आप जानती ही हो । उनके साले हैं हरिकेश मामा । उनसे एक- दो साल पहले मेरे नाना ने कहा कि अपनी बेटी का विवाह मेरे नाती मुन्ना से कर लो । मेरे नाना ने सोचा कि विवाह में दहेज वह अच्छा दे देंगे और मेरी माँ का जीवन आसान हो जायेगा । आप तो मेरे नाना को जानती ही हो , विवाह में दहेज उनके लिये विवाह के निश्चयन में सबसे बड़ी प्राथमिकता होती है । हरिकेश मामा ने उनसे कुछ न कहा पर मेरी मामी से कहा कि मुन्ना मेरी लड़की के लायक नहीं है । मुझे दामाद ही नहीं एक उत्तराधिकारी भी चाहिये , मुझे मुन्ना के पिछले इतिहास को देखते हुये वह अपील नहीं कर रहा और मैं अपनी बेटी का विवाह आईएएस से करना चाहता हूँ । अब जबसे रिज़ल्ट आया है तब से वह और उनकी पत्नी कह रही मुझे मुन्ना ही चाहिये । उनकी पत्नी धन्नैं पड़ी हैं अपने आग्रह को लेकर , वह अपनी सारी संपदा मेरे नाम पर लुटाने को तैयार हैं । अब आप बताइये इस 25-30 दिनों के अंतराल में ऐसा क्या हो गया कि सारे मापदंड बदल गये । मेरे अंदर जिन गुणों को आप देख रहीं उससे ज्यादा वह देख रहीं । सुना यह भी कहा , “ मुन्ना क्या साइकिल चलाता है । मन करता है बस देखते रहो “ । अब मेरा साइकिल सुबह से शाम पेरना , मुझे ही वह साँस फुलाऊ प्रक्रिया पसंद नहीं , उनको सूर्य के सात घोड़ों के रथ की तरह मोहक लग रहा है । आप शालिनी को ही

लीजिये उसने ऋषभ से विवाह करने के लिये कितना संघर्ष किया । क्या वह यह संघर्ष मेरे लिये करती ? क्या यह एक प्रेम विवाह है ? बिल्कुल नहीं । यह एक सुविधाजनक संबंध है । एक बेहतर क्राबिल जीवनसाथी की तलाश में मैं ऋषभ टकरा गया । अब हम लड़के लोग तो सुंदरता और नफ़ासत के आगरही होते ही हैं । बस दिखी नहीं कि फिसल गये “ ।

आंटी - “ तुम फिसले की नहीं “?

मैं - “ नहीं “ ।

आंटी - क्यों? कोई दिखी नहीं ? किसी का इंतज़ार कर रहे “ ?

मैं - “ आंटी इंतज़ार शायद बेहतर है सारे विकल्पों में से “ ।

आंटी - “ अगर शालिनी तुमसे कहती जैसा उसने ऋषभ से कहा तब तुम क्या करते “?

मैं - “ जो प्रश्न न आया , न आ सकता था और न आने वाला है , उस पर क्या विचार करना “ ।

आंटी - “ मैं इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहती हूँ “ ।

मैं - “आपको इसका जवाब पता है “

आंटी - - “ मुझे उत्तर तुमसे सुनना है “ ।

मैं - “ किसलिये? पीड़ा बढ़ाने के लिये या कम करने के लिये “ ?

आंटी - “ मुझे उत्तर जानना है “ ।

मैं - “ मैं यह उत्तर नहीं दे सकता “ ।

आंटी - “ क्यों “ ?

मैं - “ ऐसे प्रश्न का उत्तर क्या देना जिसका कोई मतलब ही न हो । वह बहुत सुंदर है , नफ़ासत से परिपूर्ण है । उसकी सुंदरता मैं एक अज़ली तरन्नुम है वह जब हँसती है तब अनगिनत आहंग से वह बगैर गाये गुनगुनाने लगती है । वह विद्वान है , समझदार है उससे कोई भी विवाह कर सकता था “ ।

आंटी - “ मैं तुम्हारा फैसला सुनना चाहती हूँ “

।

मैं कुछ बोलूँ इससे पहले ही शालिनी दरवाज़े से प्रवेश करती दिखी । उसने पूछा क्या बात हो रही थी । मैं और आंटी आपसी संवाद में इतने खो गये थे कि यह पता ही न चला कौन कब आ गया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 148

शालिनी का यह पूछना , “ क्या बात हो रही थी ” , मुझे और आंटी दोनों को यह सोचने की ओर ले गया कितना इसने हम लोगों की बातों को सुना होगा । आंटी ने कहा भी कि मुझे पता ही न लगा कि तुम कब आ गई ।

आंटी - “ ऋषभ कहाँ है ” ?

शालिनी - “ माँ जी वह थोड़ा देर लगा रहे थे तैयार होने में तब मैंने सोचा कि मैं अनुराग वाली कार से चलती हूँ वह आ जायेंगे थोड़ी देर में । वह थोड़ा समय लेते हैं तैयार होने में ” ।

मेरी कार कौन सी है ? मैं तो कार यदा- कदा ही देखा हूँ । विवाह- शादी में भी कार कम ही मिलती थी इस्तेमाल करने को । हम लोग बस से ही रिश्तेदारों के विवाह में जाते थे । एक बस कर दो और दूँस दो उसमें अगर विवाह दूर का है । पास का है तब पेरो साइकिल । मुझे मोशन सिक्नेस की शिकायत थी इसलिये मैं साइकिल बेहतर समझता था । बाबा भैया के विवाह में बनारस और दादू के विवाह में रीवाँ दो ही जगह विवाह में गया बस से नहीं तो इक्का से जाता था और कई में तो साइकिल से ही गया । अपनी एक - दो चचेरी बहनों के विवाह में तिलक चढ़ाने गया तो साइकिल से ही गया । तिलक चढ़ाने में उत्सुकता होती थी क्योंकि खाने को बहुत अच्छा मिलता था और सत्कार होता था । हँकीकँत तो यह है मैं आज तक कार से चला ही नहीं हूँ , एक ही बार बैठा था बाबा भैया के विवाह में उसमें भी उतार दिया गया था कुछ बहाना बनाकर । आज कार मुहैया करायी जा रही सौजन्यकर्ता... शालिनी आहुजा मिश्रा । मेरे अंदर कार देखने की उत्सुकता हुई । मैंने खिड़की से कार देखी , एक सफेद रंग की चमचमाती लंबी कार ऐसी कार मैंने देखी न थी । मेरे शहर में ज्यादातर एम्बेसेडर और फियेट कारें थीं ... ऐसी कार इलाहाबाद में शायद न हो । हरिकेश मामा के पास जो कार थी वह एम्बेसेडर थी और कमिश्नर साहब भी एम्बेसेडर से ही आये थे । मेरे मन में अपने बचपन के गाँव के समय का मुहावरा याद आया ... “ घूरौ के दिन लौटत हअ ” । वाक़ई मेरे दिन बदल रहे थे , जिसका अब मुझे एहसास होने लग गया था ।

अब इस कार को लेकर आज तो पूरा दिल्ली दाँय दूँगा । पर तेल तो भराया होगा न , ऐसा तो नहीं कि तेल मुझको भराना पड़ेगा? मेरे पास तो कुल पाँच सौ रुपया ही है । उसी में सारा काम करना है । अगर तेल भराना पड़ गया तब क्या होगा ? यह पेट्रोल वाला मामला साफ़ है नहीं । यह हो सकता है बस यहाँ से जुबली होस्टल और वहाँ से जेएनयू और फिर वापस आंटी के यहाँ

तक का ही पेटरोल हो या वहाँ तक का भी भराना पड़े । मेरे मामा हल्ला करते रहते हैं यह तेल बहुत मँगा है, अब यह मँगा तो सबके लिये है, कौन यह सब ऐसे दानदाता हो गये कि मुझे कार दे दें कि रेलो पूरी दिल्ली । मेरे मामा कहते थे, “बुलेट मोटरसाइकिल को रखना हाथी पालने ऐसा है । यह बीस-पच्चीस से ज्यादा एवरेज देती नहीं । उनके पास दो बुलेट हो गयी थी । एक पहले की जो वह सीओडी छिवकी से मिलिट्री से आक्षन में 4000 में लाये थे फिर सहदेव मैकेनिक राम बाग वाले से 6000 रुपया और लगाकर बनवाये थे । दूसरी बुलेट मोटरसाइकिल बाबा भैया के विवाह में पाये थे और हुआ सबेरा बाप- बेटा लग गये बुलेट पोंछने में । वह गाहे- बेगाहे यह ज़िकर कर देते थे कि वह करछना तहसील में बुलेट रखने वाले पहले व्यक्ति हैं और इस समय दो- दो बुलेट मेंनटेन कर रहे । जब बुलेट ही बीस- पच्चीस का एवरेज देती है तब यह लंबी कार तो पाँच- दस का ही देती होगी । यह तेल भराने वाला मामला फरिया जाये तब ही मैं लूँगा । मेरे मामा पहले तो किसी को बुलेट देते न थे और जब देते थे तब पाइप लगाकर मुँह से हवा पाइप की गायब करकर सारा तेल टंकी से निकाल लेते थे ताकि जो ले जाये तो वह पहले पेटरोल पंप जाये और यह भी उम्मीद करते थे कि जब वह वापस करे तब एक- दो लीटर पेटरोल गाड़ी में भरा कर दे । अगर यह आहूजा भी मामा की तरह चालू निकला कि पाइप लगाकर मुँह से फूँक खींचकर तेल निकाल लिया तब तो हम गये काम से । मेरे मामा हर किसी को कहते थे उसके बारे में जो उनकी बुलेट माँगकर ले गया, “इतना दरिदर आदमी आज तक न देखा । मैंने संकोच में गाड़ी दे दी नहीं तो मैं सिंगल हैंड ड्राइव गाड़ी रखता हूँ किसी को देता नहीं पर इनको क़रीब जानकर दे दिया पर मेरा पेटरोल भी पी गये और हवा तक न भरायी बुलेट में । बुलेट मेंनटेन करना आम काम नहीं है । यह बड़े- बड़े को तबाह कर देती है । यही आहूजा साहब न कहें बाद में, “मेरी गाड़ी ले गये और पेटरोल पी गये । भाई गाड़ी दी है, आप ले जाओ पर ऐसा करो कि पेटरोल तो भरा लो । कोई भलमनसाहत का ज़माना रहा ही नहीं” ।

अब अगर आहूजा साहब ऐसा सोच रहे हों तब क्या होगा ? क्या पता यह भी कहा हो ड्राइवर से पाइप लगाकर मुँह से खींचकर निकाल लो पेटरोल, जो चढ़ेगा कार पर वह तेल भरायेगा । पता चला यहाँ से निकलें और पेटरोल पंप पर कार खड़ी कर दे और कहे “क्या परोगराम है साहब जी आपका, कितना तेल डलवा दें ?

यह सब बहुत ही किंचकिंच का काम है । पाँच- दस रुपये में बस मिल जाएगी जाने की और इतने में ही आने की । यह बेवजह का तनाव कौन ले ।

मैं - “ शालिनी जी मैं बस से चला जाऊँगा । यह कार नाहक आप भेज रहे । यह खड़ी ही रहेगी सारा दिन । मैं पहुँच जाऊँगा तब कार खड़ी हो जायेगी । यहाँ आप के साथ चलती रहेगी , उपयोग होगा । ”

शालिनी - “ यह कारें खड़ी ही रहती हैं सब । यह सुबह से शाम तक चलती थोड़े रहती हैं । जहाँ जाना है वहाँ पहुँच कर खड़ी हो जाती है । सारे लोग आफिस जाते हैं काम करने कार से और सारा दिन कार खड़ी ही रहती है । यह कारें उपयोग की वस्तु हैं कोई दिन - रात चलती थोड़ी हैं । आपके साथ रहेगी तब थोड़ा सहूलियत हो जायेगी आपको , समय की बचत हो जायेगी और काम ज्यादा हो जायेगा । ”

उसी समय ऋषभ आ गये । उनसे शालिनी ने कहा , अनुराग थोड़ा संकोच कर रहे कार लेकर जाने में । ऋषभ ने कहा किस बात का संकोच ? जैसे यह तुम्हारी कार है , मेरी कार है वैसे ही अनुराग की है । इसमें क्या संकोच । अब मेरे और अनुराग में क्या बाँटा रह गया है , सब साझा ही है हम लोगों का ।

मैं - “ बहुत पेट्रोल खर्चा होगा बेवजह । ”

ऋषभ - “ पेट्रोल की टंकी भर जाती है हर सोमवार को वह पूरे सप्ताह चलती है , इतना भी कोई खर्च नहीं होता । आज सुबह ही भराया गया होगा । कितना पेट्रोल लग जाएगा , दस- पाँच लीटर पेट्रोल लग ही जायेगा तो क्या हुआ ? आप ले जाओ इसको । ”

ऋषभ ने ड्राइवर को आवाज़ दी और ड्राइवर आ गया ।

ऋषभ - “ साहब को ठीक से ले जाना , जहाँ भी यह जायें । ध्यान रखना । ”

ड्राइवर - “ जी साहेब । ”

आंटी - “ तुम बहुत संकोची हो अनुराग । इतना नहीं सोचते । ”

मैं थोड़ा मन ही मन खुश हुआ , पेट्रोल का कोई झंझट नहीं है । अब मेरा “जिव ”

भी पैसे को लेकर चिड़िया ऐसा । जितना जेब में कम पैसा उतना ही छोटा “जिव ” मेरा । मुझे लगा मेरा पाँच सौ रुपया अगर चला गया तब क्या होगा । वह पैसा बच गया और अब तो बस का टिकट भी नहीं लगेगा ।

शालिनी नाश्ता साथ लेकर आई थी । बहुत बेहतरीन कचौड़ी- जलेबी - समोसा - दही बड़ा बहुत सामान लेकर आई थी । सबने नाश्ता किया । ऋषभ ने कहा कब तक आओगे ? मैंने कहा , शाम तक आ जाऊँगा ।

ऋषभ - “ मुझे कुछ तुमसे बात करनी है । मुझे थोड़ा समय देना । चिंतन सर कब तक आयेंगे आज ? ”

मैं - “ उनका कोई भरोसा नहीं वह दोपहर बाद कभी भी आ सकते हैं । पुलिस की नौकरी है , टहलना ही एक काम है उनका । जब मन करेगा चल देंगे अगर कोई आकस्मिक काम न आया । ”

शालिनी - “ मुझे भी माँ जी की तरह कुछ किताब हिंदी की दिलाओ और ऐसा ही उस पर लिख देना जैसा माँ जी के किताब में लिखा था ” ।

मैं - “ आप क्या करोगे हिंदी की किताबों का ” ?

शालिनी - “ मैं न्यूयार्क के हिंदी समिति की सदस्या हूँ और इस बार उसकी सचिव बनना चाहती हूँ । अगर थोड़ा हिंदी बेहतर हो जायेगी तब बनने में मदद हो सकती है ” ।

मैं - “ सचिव बनकर क्या मिल जायेगा ” ?

शालिनी - “ इन सब कामों का व्यापार में बहुत महत्व है । लोगों से संबंध होता है । भारतीय मूल के लोगों में आपकी पहचान बनती है । इसके बहाने आप व्यापार की बात करते हैं । मैं सचिव बन जाऊँगी तब विदेश मंत्रालय से जुड़ कर यहाँ की संस्कृति के विस्तार पर कार्य करूँगी । सिर्फ़ पैसा कमाना ही लक्ष्य तो है नहीं वह तो कमा ही रहे अच्छा- खासा , कुछ अपनी अलग पहचान भी बननी चाहिये । क्या पता कल यह पहचान कुछ और दे जाये ” ।

मेरे मन में यह बार- बार धूम रहा था कि यह पता करें कितना कमाते हैं यह लोग । मुझे लगा कि एक अवसर हाथ आया है , पता कर ही लेते हैं ।

मैं - “ क्या जो लोग विदेश जाते हैं वह बहुत पैसा कमाते हैं ” ?

शालिनी - “ यह लोगों के कौशल और उनके भाग्य पर निर्भर करता है पर हाँ कई लोगों ने बहुत कमाया है ” ।

मैं - “ आप लोगों ने कितना कमाया होगा ” ?

शालिनी - “ अभी तो कुछ खास कमाया नहीं । डेढ़ साल तो किसी के साथ काम किया । वहाँ पर ऋषभ को एक लाख डालर प्रति वर्ष और मुझे अस्सी हजार डालर प्रति वर्ष मिलता था , थोड़ा बहुत और इनसेंटिव भी मिलता था पर अब अपना काम कर रहे और पिछले डेढ़ साल बहुत अच्छे गये । हमारे कई प्रोग्राम बहुत नये बने हैं और सब पेटेंटेड हैं । वह हमने बहुत बेचे , अगले एक - दो साल बहुत बेहतर जाने की उम्मीद है । कुछ कोशिश हम और देशों में भी अपने प्रोग्राम बेचने की कर रहें । हम भारत में भी अवसर तलाश रहे , यहाँ भी कम्प्यूटर युग आ रहा और हम लोग देख रहे अगला कुछ वर्ष यहाँ भी एक अवसर के रूप में ” ।

मैं “ अपना काम करना किसी और के यहाँ काम करने से बेहतर क्यों है ? आप को दूसरे के यहाँ काम करके भी तो बहुत मिल रहा था ” ।

ऋषभ - “ वह दस रूपये मेरे काम से कमायेगा तब दो रूपया मुझकों देगा । यहाँ ऐसा हो जायेगा कि दो- चार साल में ही रायलटी की ही इनकम बहुत होगी । शालिनी को एग्रीमेंट की बहुत समझ है इसने बहुत नये- नये क्लास उसमें डाल दिये हैं । मेरी सहमति के बगैर मेरे किसी परोग्राम का कोई भी उपयोग संभव ही नहीं है । देखो आगे कैसे मार्केट रिसपांड करता है हमारे काम को , अभी तो बहुत ही बेहतरीन रिसपांस है । यह भी हो सकता है कि इस वर्ष हमारे कई नये परोग्राम और लांच हो जायें । पैसा कमाना तो एक अलग बात है वह तो कमा ही रहे हम मार्केट लीडर बनना चाह रहे ” ।

मैं हतपरभ रह गया इन पर लक्ष्मी की कृपा देखकर । इतना पैसा ! लाखों डालर कमा रहे और पता नहीं कितना और कमायेंगे । अब तो धन- वर्षा ही होगी । हम बेवजह मामा की संपत्ति को देखकर झिल्ली करते रहे । बेचारी मामी दस हज़ार की गड्ढी को सुतली से बाँधकर सात संदूकों में रख देती थी और हम लोग दिन- रात कोसते थे कि लूट लिया जमाने को । यहाँ तो थाह ही नहीं पैसे की । शून्य भी दाईं ओर जुड़ते- जुड़ते अलसा जाता होगा , क्या वही काम बस जुड़ते रहो । बैंक का क्लर्क थक जाता होगा इनके रूपये गिनते- गिनते । यह लोग बैंक में रूपया लेकर कैसे जाते होंगे ? मेरी माँ तो कुछ हज़ार रूपये के एफडी को पूरे जतन से रिक्शे पर लेकर गई थी और पूरा शहर इलाहाबाद उसको डाकू लग रहा था । यहाँ तो $1,80,000 \times 60$.. रूपया ही रूपया शून्य थक जायेगा जुड़ते - जुड़ते । अब तो पता नहीं कितने शून्य जोड़े होंगे जबसे अपना काम कर रहे । यह लोग बैंक पैसा कैसे ले जाते होंगे जमा करने ? बोरे में नोट भरते होंगे फिर बैंक के गेट पर बोरा उतारते होंगे । गेट के बाहर एक तरफ बोरा ऋषभ और एक तरफ शालिनी पकड़ते होंगे और हाँफते हुये बैंक के अंदर जाते होंगे । बैंक अपने कई कर्मचारियों को लगा देता होगा और सारे दिन इनका ही रूपया गिना जाता होगा ।

हमारे अलोपीबाग की इलाहाबाद बैंक की बरांच वाले तो गिन ही नहीं सकते । वह तो थक जाते हैं कुछ हज़ार में ही । एक बार मेरी माँ दस- दस का नोट लेकर गई थी और दो दस- दस के नोट गिनने में कुछ गलती हो गयी । उसने फिर से गिनवाया । कैश काउंटर वाला पंडित जी लड़ने लगा कि आप के दस- दस रूपये के नोट के लिये हम सारा दिन नहीं बैठे हैं । माँ भी लड़ गयी थी यह कहते हुये कि हम छापते हैं क्या ? आप बंद करा दो दस- दस रूपये का छपना । ज्यादा इगड़- तिगड़ किया तो नौकरी खा जाऊँगी , हमारे पैसे से तनख्बाह मिलती है तुम्हारी । वह भी लड़ गया , पर माँ की आवाज़ को तेज

कराने की गलती वह कर गया था । मैंनेजर आया और माँ को शांत कराया । माँ मुझसे बोली , “ मुन्ना लिख एक शिकायत सरकार को इस बैंक के खिलाफ़ , मैं बैंक अब नहीं चलने दूँगी यहाँ पर ” ।

अगर यह लोग दस- दस के नोट लेकर गये तब क्या होगा ?

दस- दस क्या सौ- सौ के भी गिनना आसान नहीं । वह तो बैंक वाले बेचारे थक ही जायेंगे और अगर रूपया ठीक से न गिन पाये तब ? माँ की तरह अगर शालिनी ने भी कहा फिर से गिनो , तब क्या होगा ? क्या फिर से गिनेंगे ? इतना भी काम देना बैंक वालों के लिये ठीक नहीं । वह बेचारे दो / तीन हज़ार की नौकरी करते हैं और इतना सारा काम । अगर कुछ रूपया गिनने में दिक्कत आयी , रूपया ज्यादा हो और गिन कम गया हो तब ? वह तो बैंक वाले का हो गया । यह भी ठीक है दो- चार नोट कम गिन दो , इनको पता ही क्या चलेगा ? यह तो थक गये होंगे रूपया ढोकर लाने में ही , अब कहाँ ताकत बची होगी फिर से चेक करने की । इसीलिये यह विदेश जाने की ज़िद कर रहे थे । इनको कोई बताया होगा कि वहाँ बहुत माल है । पर दया- धर्म तो है नहीं । यह तो दिख नहीं रहा कि कुछ गरीब - गुरबों को दान कर दें । मेरे गाँव चले वहीं कुछ दे दे लोगों को । वह बेचारा बाबूजीवा पूरा पीठ दर्द कर रहा उसका इलाज ही करा दें । अब मैं कहूँगा कि कुछ दान - धर्म करो । मैं उतने अच्छे से नहीं कह पाऊँगा चिंतन सर से कहता हूँ कि इनको लबझियायें और गाँव के लिये कुछ खर्च करने को कहें ।

पर चिंतन सर से कहना ठीक नहीं वह हर बात

पर सुल्तानपुर - सुल्तानपुर करते हैं । वह हैं बहुत चालू । वह अपना चुनाव क्षेत्र बना रहे हैं और हर काम उसी आशा से करते हैं । मेरे करछना , मेरे इलाहाबाद को क्या मिलेगा ? यह आहूजा- ऋषभ- आंटी यह सब हैं तो मेरे आदमी , पर चिंतन सर क़ब्ज़ा कर रहे । मैं अब चिंतन सर को कटाता हूँ । मैं अब अपने लिये इस्तेमाल करूँगा । अगर चिंतन सर चुनाव लड़ सकते हैं तो मैं क्यों नहीं लड़ सकता ? मेरे मैं क्या कमी है ? ऐसा क्या है उनमें जो मुझमें नहीं है ? मुझे उनकी चाल समझ आ रही । मुझे दिला रहे संन्यास, खुद करेंगे भोग- विलास । मैं रात में कुर्ता- पायजामा पहन कर बुद्ध की तरह अपनी माँ - बहन को कलपता छोड़कर चल दूँ और उसी रात यह अपनी पत्नी के बगल लेट कर कहें , “ रीता देखो वह जा रहा संन्यास की तरफ अब उसके भी सारे आदमी मेरे हुये ” । मैं कहता ही रहूँ कि मैं गैर मामूली दास्तान लिख रहा और मेरी ही स्याही लेकर यह अपनी दास्तान लिख लेंगे । मैं कोई संन्यास- वन्यास नहीं लूँगा । मैं बेवकूफ़ दिखता ज़रूर हूँ , मैं बेवकूफ़ लगता भी हूँ पर मैं

बेवकूफ बिल्कुल नहीं हूँ । चिंतन सर में समझ गया सारी चाल तुम्हारी । अगर धन का भोग करना है तो मैं करूँगा , कोई और क्यों करे ।

शालिनी ने कहा , अनुराग

मेरी तन्द्रा टूटी

अनुराग , मेरा हिंदी वाला काम कराना । मुझे न्यूयार्क हिंदी समिति का सचिव बनना ही है । ऋषभ ने कहा शाम को मिलते हैं , मैं थोड़ा बैंक जा रहा । ऋषभ - शालिनी चले गये । आंटी ने कहा तुम बहुत संकोची हो । तुम चिंतन से सीखो । वह बहुत जानता है दुनियादारी । वह देखो कैसे सबको चराता है । मैंने आंटी की तरफ़ देखा और मन ही मन कहा , “ आंटी अब देखना मेरी भी चराई । मैं खेत में बाड़ा लगा दूँगा वह चरायेंगे क्या खुद ही चारा नहीं पा पाएँगे ।

आंटी ने कहा ... अनुराग मेरे सवाल का जवाब ?

मैं “ कौन सा ” ?

आंटी - “ अगर शालिनी ऋषभ की तरह तुमसे कहती विवाह करो , तब तुम क्या जवाब देते ” ?

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 149

आंटी आपके प्रश्न का उत्तर सरल नहीं है । यह प्रस्ताव मेरे पास क्यों आता ? शालिनी के योग्य मैं बिल्कुल नहीं हूँ । शालिनी कोई आम लड़की नहीं है । वह जीवन में कोई भी काम अनायास नहीं करती । वह भावनाओं में बहकर कोई फ़ैसला नहीं करेगी । उसने यह फ़ैसला बहुत सोच- समझकर लिया है । उसके पिता जिस वर्ग और मानसिकता के समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं वह मानसिकता एक ऋषभ ऐसा लड़का उसके लिये तलाश नहीं कर सकती थी । वह जिस परिवार और समाज से आती है वहाँ पर पढ़ाई का कोई ख़ास महत्व नहीं है । शालिनी उस समाज की एक अलग लड़की है । उसने यह काम स्वयम अपने हाथों मैं ले लिया और उसे अपनी ताक़त का अहसास था । उसने पूरे घटनाक्रम का सक्षम संचालन किया ।

प्रायः लड़के लड़कियों की सुंदरता - सलीके - तहजीब से प्रभावित होते हैं और लड़कियाँ अपने जीवन साथी में सब गुणों के साथ- साथ प्रेमी या पति में बौद्धिकता के प्रति आग्रही होती हैं और बौद्धिकता को अधिमानता देती ही हैं । शालिनी ऐसी लड़की तो अवश्य ही देगी । इसमें प्रेम से अधिक सुविधा एवं सामंजस्य की संभावना का विचार मूल में था । यह एक सोचा-समझा दुनियादारी को ध्यान में रखकर लिया गया फैसला है । इसमें भावनाओं ने कम जीवन की वास्तविकताओं ने अधिक अहम रोल का निर्वाह किया है ।

अगर मैं जीवन की सफलता को , जो ऋषभ चाह रहे , ध्यान में रखकर देखूँ तब मेरा निष्कर्ष यह है कि ऋषभ को प्रगति के लिये

शालिनी की आवश्यकता थी । अब यह कहना आसान नहीं कि ऋषभ ने यह फैसला लेते समय यह सोचा था या नहीं । शालिनी ने निश्चित रूप से सारे पक्षों पर विचार किया होगा । उसके पास फैसले लेने की असीम क्षमता है, ऋषभ से तो बहुत ही ज्यादा । आप खुद ही देखो , उसने कितनी तीव्रता से अपना काम आरंभ करने का फैसला किया । उसने एग्रीमेंट के प्रावधानों पर ध्यान दिया , शायद यह उनके भविष्य के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हो । वह अपने पिता से भी बड़ा साम्राज्य स्थापित कर सकती है । आप देखें वह हिंदी क्यों सीख रही है ? वह एक उद्देश्य के तहत सीख रही है । वह जीवन की रफ्तार में हर एक को धकेल कर आगे बढ़ना चाह रही । वह अमेरिका में अपनी एक अलग पहचान भाषा के आधार पर बनाना चाह रही , वह भी मूलतः व्यापार के लिये । उसकी जहीनियत पर तो कोई प्रश्न है नहीं । वह आईआईटी से पढ़ी है । सारी कक्षाओं में तक्रारीबन अवल ही आई । उसकी सुंदरता और नफ़ासत पर कोई बात कहने को है ही नहीं । वह शब्दों से ही नहीं आँखों से भी बोलती है और जुगनुओं सरीखा उजाला बिखेरती है । उसकी आप साज- सज्जा देखें कहीं से अतिरिक्त नहीं लगता । वह सजकर भी सहजता का अहसास देती है । उससे कोई भी विवाह कर सकता था ।

आंटी - “ मैं तुमसे पूछ रही । तुम करते या न करते ” ?

मैं - “ मैं नहीं करता ” ।

आंटी - “ सारी तारीफ़ तुम ही कर रहे और तुम ही कह रहे कि मैं विवाह न करता । पर ऐसा क्यों ? ”

मैं - “ आंटी , यह चाँद सबको उजाला नहीं देता । कुछ घरों में प्रकाश दीपक ही दे सकता है । सूरज घर में ले आओ प्रकाश के लिये पर उसकी तपिश किसके बस की है । वह तो जला देगा । यह शालिनी बहुत प्रकाशवान है और मेरे छोटे से घर में सबकी आँखों को चुँथिया देगी । अपने क्रद और हैसियत से बड़े ख्याब मैंने देखें ज़रूर हैं पर अपनी सीमाओं का मुझे पता है ” ।

आंटी - “ क्यों नहीं कर सकते ” ?

मैं - “ आंटी , मेरे और ऋषभ के परिवेश में बहुत फ़र्क है । मेरी माँ और ऋषभ की माँ में बहुत फ़र्क है । मेरी और ऋषभ के जीवन कि प्राथमिकताओं में बहुत फ़र्क है । उसको ईश्वर ने आज़ादी दी थी फैसले लेने की मुझे नहीं है ”
।

आंटी - “ तुमको क्यों नहीं है आज़ादी जो ऋषभ के पास है ” ?

मैं - “ मेरा जन्म कर्ण की तरह हुआ है । ज़िम्मेदारियों को एक संस्कार के रूप में ग्रहण करके मैं गर्भ से निकला हूँ । मेरी माँ ने सुभद्रा की तरह मुझे गर्भ में ही यह सिखाया था तुझे सिफ़र अपने लिये ही नहीं जीना है । मैं ऋषभ की तरह फैसला अगर लेना चाहूँ तो मुझे पहले वह सारी शिक्षायें जो नाभिनाल से प्राप्त हुई हैं , उन्हें भूलना ही नहीं होगा वरन् मुझे चीख- चीख कर कहना होगा कि यह सब बातें बेफिजूल थीं जो तू अपने रक्त और अपनी धड़कनों से मुझे बताया करती थी । मेरी यह चीख हर रात बहुतों के कानों में ध्वनित-प्रतिध्वनित होगी । इस चीख का डेसीबेल तो शायद कम ही हो पर यह ध्वनि एक असीम पीड़ा देगी ।

मेरे और ऋषभ के परिवेश में बहुत फ़र्क है । आप का व्यक्तिगत जीवन दुखद रहा है पर भौतिक जीवन में एक धन की जो आवश्यकता होती है उसमें कोई ख़ास समस्या न रही । अंकल के पास पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ न थीं । वह समझदार थे । उन्होंने बचत की आपको पढ़ाया और आप भी स्मार्ट थीं एक वर्लर्क के बजाय ओएसडी बनने में सफल रहीं । मेरी माँ का जीवन बहुत संघर्षमय रहा । उसे एक बड़ी ज़िम्मेदारी न चाहकर भी स्वीकार करनी पड़ी । उसने कब कहा था कि एक वृहद परिवार की समस्यायें उसको प्रदान किया जाये । वह तो मौन विद्रोह करती रही , यह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है पर समाज की संरचना के दबाव में वह तमाम विरोध के स्वर अंदर ही अंदर उबलते रहे पर मुखरता को प्राप्त न कर सके । वह एक ऐसे समाज में रही जहाँ पर बहुत सी मान्यताओं को ध्यान में रखना पड़ता है । आपके और ऋषभ के साथ यह समस्या न थी । एक फैसला आप दोनों ने ले लिया , बात ख़त्म हो गयी । यह मेरे साथ नहीं है । मेरी बहन के विवाह के तमाम स्वप्न मेरी माँ ने मेरे नाम के सहारे देखे हैं , वह सब ध्वस्त हो सकते हैं । जो नाम आज समाज में स्तुत्य है वह कल एक कालिख के रूप में देखा जायेगा , सिफ़र मेरे एक फैसले से । मैं छलिया हो सकता हूँ , झूठा हो सकता हूँ , मैंने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये छल भी किये हैं पर मुझे आँखों से गिरते आँसुओं का दर्द पता है और यह आँसू जो मेरे निर्णय से बहेंगे न तो वह मुझे सुख देंगे न ही उसको जिसको मैं सब्ज- बाग दिखाऊँगा भावी जीवन का । जिस शहर-तहसील - गाँव के परिवेश में आज भी विवाह का फैसला मामखोर शुक्ल, इटार पांडे, करैली ओझा , मधुबनी मिश्र , बनकटा मिश्र , सोहगौरा तिवारी से होता हो और जहाँ पर तीन - तेरह के ब्राह्मण पर विचार हर संस्कार के

पहले होता हो वहाँ पर एक अन्तर्जातीय विवाह करके मैं अपने चयन से भी भी बड़ा तूफ़ान खड़ा कर दूँगा । इस तूफ़ान की लपटों से इतनी गर्म हवा बहेगी कि सब झुलस जायेंगे ।

आंटी - “ तुम अन्तर्जातीय विवाह के विरोधी हो “ ?

मैं - “ नहीं “ ।

आंटी - “ तब इतना विरोध क्यों “ ?

मैं - “ मेरे समर्थक होने से रातों - रात माहौल नहीं बदल जायेगा । मैं मानसिकता नहीं बदल सकता उस परिवेश की । अभी बहुत वक्त चाहिये इसको स्वीकार्य रूप देने के लिये । मेरा व्यक्तिगत मत उस समाज पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ पायेगा । ”

आंटी - “ तुम्हारे पास जमाने से लड़ने का साहस नहीं है, क्या ऐसा लगता है तुमको “ ?

मैं - “ हाँ मेरे पास वह साहस नहीं है । मैं एक फ़ैसले से तमाम लोगों को रोता हुआ नहीं देख सकता । मुझे कल कुछ हो जाये तब मेरी शव यात्रा कहीं भी निकले पर मेरे नाम पर रोने वालों की एक कतार होगी और वह कतार ऐसे लोगों की होगी जिनकों मैंने सिवाय उम्मीदों के और कुछ न दिया । मैं उनके ख्वाबों को ताबीर दूँ या न दूँ पर उनके ख्वाब देखने के हक्क को महफ़ूज़ रखना चाहता हूँ । उनकी तमाम उम्मीदें पूरी न होंगी यह भी मैं जानता हूँ पर उम्मीद के साथ ज़िंदा तो रहने दो “ ।

आंटी - “ जब तुम ही कह रहे यह उम्मीद पूरी नहीं हो सकती तब क्यों झूठी दिलासा “ ?

मैं - “ आंटी इस झूठे दिलासे पर कायनात टिकी है । ईश्वर किसकी मदद करता है यह किसको पता है ? एक दिव्यता एवम् महानता की अवधारणा ही तो है कि कोई हमारा पालनहार है जो हमारे सियाह अँधेरे जीवन में एक रौशनी प्रदान करता है । किसने उसको देखा है ? ख्वाब आँखों में आना बंद हो जायें तो जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा । मैं उनके जीवन को आसान तो नहीं बना सकता कम से कम मुश्किल तो न बनाऊँ “ ।

आंटी - “ इस मुद्दे पर किसी को तो कदम उठाना होगा । किसी को साहस दिखाना होगा । यह तो बदलना होगा । किसी को शुरूआत करनी होगी “ ।

मैं - “ यह शुरूआत मैं नहीं करूँगा अगर कर सकता हूँ तब भी “ ।

आंटी - “ क्यों “ ?

मैं - “ मेरी माँ आपकी तरह समझौता नहीं करेगी । मैं उसको जानता हूँ । वह गंगा में जल समाधि लेना शरेयस्कर समझेगी बनिस्बत इस संबंध को स्वीकार

करना । मुझे फैसला अपने जीवन और उसके जीवन के बीच भी लेना होगा । मैं उसके जीवन को दाँव पर लगाकर कोई फैसला नहीं कर सकता अगर मुझे मेनका, रंभा या शुचि ऐसी ही पत्नी क्यों न मिले ।

आंटी - “ऋषभ का फैसला कैसा है ?

मैं - “इस प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दूँगा” ?

आंटी - “क्यों ? उत्तर दे पाने में असमर्थ हो या देना नहीं चाहते ?

मैं - “इसका भी उत्तर नहीं दूँगा” ।

आंटी - “क्या यह प्रश्न दुर्लभ है ?

मैं - “नहीं, इसमें कोई दुर्लहता नहीं है” ।

आंटी - “तुम ट्रेनिंग पर गये और तुमको कोई लड़की पसंद आ गयी तब क्या विवाह नहीं करोगे ?

मैं - “नहीं” ।

आंटी - “अगर प्रेम हो गया तब ?

मैं - “मेरी समझ से अकादमी में कोई प्रेम नहीं होता, हलाँकि मुझे इतना स्पष्ट शायद नहीं कहना चाहिये । पर मेरी मान्यता प्रेम को लेकर थोड़ा अलग है । यह सब संबंध अकादमी में सुविधा के संबंध हैं । आपको एक जीवन साथी चाहिये । वह कमा रहा हो, वह आपकी नौकरी से सामंजस्य रख रहा हो । आप को एक सहज जीवन मिल जाता है । लड़का- लड़की एक दूसरे के साथ सहयोजित होने को तैयार हो जाते हैं । इसमें कौन सा प्रेम है ?”

आंटी - “प्रेम क्या है ?

मैं - “वह त्याग है । वह तपस्या है, एक सात्त्विक प्रेम में लिप्तता है तो निर्लिप्तता भी है, वह लिप्सा से परे है वह चिरंतन सत्य है । इस प्रेम की उत्पत्ति सिफ़्र सांसारिक माया- मोह जनित ही नहीं है । उर्मिला का प्रेम है जिसमें लक्ष्मण से शिकायत हो तब भी उसके कर्तव्य के प्रति सम्मान है । भरत का प्रेम है जिसमें राज्य का त्याग ही नहीं है वरन् त्याग की एक नयी परिभाषा है । लक्ष्मण का प्रेम है जिसमें उच्छृंखलता है तो सिफ़्र प्रेम जनित है । मीरा का प्रेम है जिसमें परम्परा से विद्रोह है, भाव विह्वलता है । दधीचि का प्रेम है जो जगत कल्याण के लिये है । बुद्धत्व में प्रेम है । बुद्ध का अपनी पत्नी और अबोध बच्चे के त्याग में प्राणि- मात्र के प्रति प्रेम है । यह प्रेम त्याग की एक आवश्यक शर्त के साथ ही जन्म लेता है । भारतीय परम्परा में प्रेम ही प्रेम है । यह अकादमी में विवाह कई बार सिफ़्र कैडर बदलने के लिये

किये जाते हैं । इनका नाम ही पड़ गया है “ कैडर बेस्ड मैरेज ” । एक बेहतर कैडर पाने की आकांक्षा के अतिरिक्त उसमें और कुछ भी नहीं होता । इतना बड़ा स्वार्थ समाहित है जीवन साथी चुनने में तब प्रेम कैसा ? प्रेम एक उदात्तता की बात करता है । इसमें कौन सी उदात्त प्रवृत्ति है । आप चार लड़की देख रहे वह चार लड़के देख रही । इसमें से जिससे एक संयोग बन गया चल दिये एक साथ हाथ पकड़ कर । ”

आंटी - “ तुम्हारे अनुसार विवाह में प्रेम आवश्यक है ” ?

मैं - “ यह होना तो चाहिये , हलाँकि यह एक आदर्शवादी अवधारणा है । हर जोड़े में प्रेम का मिल पाना आसान नहीं है । हमारे परिवेश में जो विवाह होते हैं उसमें इस बिंदु पर गौर कम ही किया जाता है ” ।

आंटी - “ अगर प्रेम नहीं है तब क्या विवाह- विच्छेद कर दिया जाना चाहिये ” ?

मैं - “ विवाह - विच्छेदन एक पाश्चात्य अवधारणा है । यह भारतीय संस्कारों में है नहीं । यहाँ तो जन्म- जन्मान्तर तक के साथ के बात कही जाती है । मेरी माँ सबसे ज्यादा प्रसन्न उस ज्योतिष से होती है जो कह दे आप मृत्यु के समय सध्वा रहेंगी । उसके लिये पति का साथ सबसे बड़ा बात है , यही आपके साथ भी होगा । आपने तक़रीबन तीस साल की उम्र में पति खोया । आपके पास पुनर्विवाह का एक अवसर तो था ही । पर निर्णय लेते समय परम्परा, रिवाज, मान्यताओं और ज़िम्मेदारियों के साथ- साथ उस व्यक्ति की भी स्मृति रही होगी , जिसके साथ आपने ज़िंदगी के बेहतरीन वर्ष बिताये थे । आपके तरह के अपने पति के बारे में विचार और उसकी शेष-स्मृतियाँ कितनों के पास हैं ?

यह विवाह - विच्छेद हमारी परम्परा का अंग न होकर भी एक बहुत ही प्रशंसनीय अवधारणा है । अगर साथ रहना एक बोझ लग रहा हो और जीवन नारकीय बन जाये किसी की उपस्थिति-मात्र से ही तब तो उस मन्त्र की अर्थहीनता को स्वीकार करना ही चाहिये जो कभी अभिमंत्रित हुये थे अग्नि को साक्षी मानकर ” ।

आंटी - “ यह दहेज के आधार पर किया गया विवाह ” ?

मैं - “ आप उसमें भी प्रेम तलाश कर रही हो ? तुम भी आंटी ”

आंटी - “ मैं पूछ रही ” ।

मैं - “ आंटी अब व्यापार और प्रेम का घालमेल न करो ” ।

आंटी - “ जो लोग तुम्हारे विवाह के लिये आ रहे वह तुम्हारा संस्कार भी देख रहे । परिवार भी देख रहे ” ।

मैं - “ आंटी यह संस्कार पिछले पच्चीस दिन में ही जन्म ले गया । मैं पहले असंस्कृत था और पेपर में नाप छपते ही मेरा संस्कार बदल गया ? मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा ऐसी लड़की से पाणिग्रहित होने पर जो कहें कि मुझे तुम्हारे संस्कार, तुम्हारे ज्ञान, तुम्हारी भाषा, तुम्हारी सुस्पष्टता से प्रेम है । पर शायद मुझे भी एक जुएँ की प्रक्रिया से गुजरना होगा, तक़दीर के जुएँ से । यह प्रार्थना अवश्य करूँगा ईश्वर से जो मिले वह धरातल पर हो, कम से कम ” ।

आंटी - “ प्रेम व्याख्यायित करो ” ।

मैं - “ आंटी तू जान ही मार लेती है । अच्छा है तू यूपीएससी के इंटरव्यू बोर्ड में नहीं बैठी नहीं तो कोई सेलेक्ट ही न होता ” ।

आंटी - “ क्या शालिनी-ऋषभ का विवाह प्रेम विवाह नहीं है ” ?

मैं - “ बिल्कुल नहीं ” ।

आंटी - “ तब यह क्या है ” ?

मैं - “ यह एक सुविधा का संबंध है । यह दोनों के भावी जीवन से मेल खाता था । यह इनको एक सामंजस्य दे रहा था ” ।

आंटी - “ तब प्रेम विवाह क्या होता है ” ?

मैं - “ आंटी, मैं दो- चार महीने दर्शन शास्त्र पढ़ता हूँ तब आपके सवालों का जवाब देता हूँ । इतने गूढ़- गूढ़ प्रश्न का उत्तर देना आसान नहीं है । मैं भी भीष्म की तरह कह रहा, आपके प्रश्न में धर्म का एक प्रश्न है वह बहुत गूढ़ है इसलिये मैं इसका विवेचन नहीं कर सकता ” ।

आंटी - “ भीष्म ने क्यों कहा था ” ?

मैं - “ आंटी बस कर । आज तो तू जिज्ञासा प्राकाष्ठा पर है । तू शंकराचार्य की तरह जगत का विवेचन कर रही ” ।

आंटी - “ अगर कभी प्रेम हो गया तुम्हारा तब ? उस समय क्या करोगे ? ”

मैं - “ अगर वह प्रेम हो गया तब देखा जायेगा ” ।

आंटी - “ तुम हर बात को घुमाकर कह रहे हो । सुस्पष्ट करो । तुम शालिनी से विवाह न करते यह तो बताया पर ऋषभ का विवाह शालिनी से ठीक है या नहीं, यह नहीं बताया ।

मैं - “ आंटी जो हो चुका उस पर क्या प्रश्न करना, क्या मंथन करना ” ।

आंटी - “ मैं जानना चाहती हूँ ” ?

मैं - “ यह मंथन ज़रूरी है क्या? जो हो गया सो हो गया । एक परम सुंदरी - कृष्ण सदृश महान रणनीतिकार बहु आयी है उस पर गर्व करो यह संधि - विच्छेद रहने दो ” ।

आंटी - “ मुझे तुम्हारी राय जाननी है ” ।

मैं - “ इसके दो दृष्टिकोण हैं । ऋषभ के दृष्टिकोण से यह ठीक हुआ । ”

आंटी - “ दूसरा दृष्टिकोण क्या है ” ?

मैं - “ वह जानना ज़रूरी है ” ?

आंटी - “ हाँ ”

मैं - “ दूसरा आपको ध्यान में रखकर दृष्टिकोण बनता है ” ।

आंटी - “ उसमें क्या है ” ?

मैं - “ बहुत गलत हुआ है ” ।

आंटी - “ विवाह ऋषभ का था इस पर मुझकों ध्यान में रखकर फैसला क्यों लिया जाना चाहिये था ” ?

मैं - “ इसका जवाब रहने देता हूँ । कुछ प्रश्न न बनें तो बेहतर होता है और अगर बन भी गये तो अनुत्तरित रहना शरेयस्कर होता है ” ।

आंटी - “ क्यों ” ।

मैं - “ उत्तर पीड़ा देते हैं ” ।

आंटी शांत हो गयी । उसके चेहरे की कांति कमज़ोर पड़ गयी । मैं कहना न चाह रहा था पर वह मान ही नहीं रही थी । वह इतना ही कही , “ अनुराग तेरे बगौर मेरा जीवन अधूरा था । यह लोग अपने पतियों के लिये कहते हैं , यह मैं अपने उस बेटे के लिये कह रही जो मेरे गर्भ में न आकर भी मेरा सबसे बड़ा राजदार है ” ।

आंटी ने मुझे भावुक कर दिया । मैंने कहा , “ आंटी बहुत मुश्किल होगा किसी के लिये मुझसे वह सम्मान पाना जो तूने पाया है । अब मेरे जीवन में आने वाले हर व्यक्ति को तेरे व्यक्तित्व के मानदंडों पर कसा जाएगा और बहुत बड़ी परीक्षा से उसको गुजरना होगा ” ।

वह पूछी , ” कब तक आओगे ” ?

मैंने कहा , “ शाम तक ” ।

आंटी ने इतना ही कहा , “जल्दी आना में शाम का बेसबॉरी से इंतज़ार करँगी “ /

मैं राजीव सिंह के पास जुबली होस्टल चल दिया । राजीव सिंह भी एक अलगै प्राणी थे । मैं कार में बैठा , एक नयी कार , एक बड़ी कार , मुझे यह भी न पता दरवाजा किस ओर खुलेगा । दरवाजा डराइवर ने खोला । मैं कभी इतनी इज़्जत पाया ही न था , आजतक । मैं डराइवर से ही कह बैठा ‘ “ भैया नमस्कार “ /

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 150

यह कार में बैठना अच्छा तो लग रहा था पर मैं बहुत सहज न था । मैं कभी कार में ही नहीं बैठा था और यह तो बहुत ही शानदार कार थी । कार लंबी थी , सीटें बड़ी मुलायम थीं । डराइवर बोला” सर , कूलिंग ठीक है “ ?

मैं “ यह क्या होता है “ ?

डराइवर- “ सर “एसी “चल रहा है । अगर कम- ज्यादा करना हो तो बता दें , वह ठीक कर देता हूँ जैसा आप चाहें “ /

मैं “ यह कैसे होता है “ ?

डराइवर - “ साहेब यह “एसी “कंपनी से लग कर आता है और यह बहुत अच्छा ठंडा कर देता है कार को । एक बटन होता है उसको धुमाने से यह कम ज्यादा होता है । “

मुझे क्या पता इसका । मैं तो भरी जून की दुपहरी में भी साइकिल ही पेरता था , जहाँ भी जाना होता था । मैंने मन ही मन कहा , “ हे ईश्वर तूने क्या तक़दीर लिखी है मेरी “ /

मैं - “ ठीक है , कार ठंडी है । कैसे हैं आहूजा साहब “ ?

डराइवर- “ साहब बहुत अच्छे आदमी हैं । हम लोगों का बहुत ख्याल रखते हैं । आप तो बहुत बड़े साहब हो । हमारी तक़दीर है कि हमको चांस मिला आपकी सेवा का । वह गाज़ियाबाद वाले कुंडली गुरु साहब हैं जब वह आये थे और भाग- भागी हुई थी तब हम कोठी पर ही थे । हम साहब के बहुत विश्वास के आदमी हैं । तब पता चला कि शालिनी बिटिया की ससुराल तो बहुत बड़े घर में है । ऋषभ भैया के मौसी के दो - दो लड़के आईएस हो गये हैं । शालिनी बिटिया है बड़ी भाग्यवान “ ?

मैं - “ वह कैसे ” ?

डराइवर - “ सर ब्राह्मण पति मिला । इ पंजाबी लड़की को ब्राह्मण पति मिल जाये और वह भी ऋषभ भइया ऐसा । साथ में दो- दो आईएस परिवार में । यह तो साहब बहुत ही भाग्य की बात है न ” ।

मैं - “ आप भी ब्राह्मण हो ” ?

डराइवर - “ साहेब हम पीड़ी के सोहगौरा हैं ” ।

मैं - “ कौन पीड़ी जो करछना में है ” ?

डराइवर - “ हाँ साहब । आपका नाम पूरे करछना में अंदोर हो गया है । हम गाँव जाब तब बताऊब सबके कि हम साहब के सेवा में रहे कुछ दिन । साहेब कहाँ चलना है ? ”

मैं - जुबली होस्टल दिल्ली यूनिवर्सिटी और फिर जेएनयू चलना है । पता है यह सब कहाँ है , रास्ते का आइडिया है ” ?

डराइवर - “ साहब हमका दिल्ली का चप्पा- चप्पा पता है । जब शालिनी बिटिया आईआईटी में थी तब हमारे ड्यूटी थी आईआईटी की । जेएनयू सामनेन त बा । हम कार लै के सुबहे-सुबह चले जाते थे ” ।

मैं - “ क्या काम था कार का वहाँ ” ?

डराइवर - “ कौनौ काम नाहीं रहा साहेब । अब ए बड़ - बड़वार मनई हयें । पैसा इफ्रात बा । एक गाड़ी खड़ी कै देहेन बिटिया के बरे ” ।

डराइवर - “ साहेब पानी - वानी पिहीं ” ।

मैं - “ यह पानी कहाँ है ” ?

डराइवर - “ साहेब इ कार में काजू- बादाम - पानी रहत हअ । इ सब साहब लोग जो कार इस्तेमाल करत हअ वह उनके लिये होत है ” ।

उसने पानी की बोतल और काजू का एक पैकेट दिया । मैंने सोचा , वाकई यह सब बहुत रईस हैं । कार में ही काजू - बादाम रखते हैं । हमारे यहाँ तो जो नाम- मात्र का होता है वह माँ ताले में बंद रखती है नहीं तो हम लोग सब खा ही जायें ।

डराइवर बहुत ही तेज था । अब पीड़ी का सोहगौरा तिवारी तेज न होगा तब कौन होगा । वह बातचीत में कह गया , “ साहेब हमरे बच्चन के ख्याल रखअ । पढ़य-लिखै में ठीक हएन ओनहन , साहेब के सहारा मिल जाये तब थोड़ा

सहूलियत होई जाये । जब तक आप दिल्ली रहबअ हमार ड्यूटी आपै के साथ बा । हमार पीडी के तेवारी होब काम आई गवा आपके सेवा का अवसर मिल गवा । “

बात करते - करते मैं दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर के पास पहुँच गया । मुझे सामने सेंट स्टीफन्स कालेज दिखा जहाँ कमिशनर साहब की बहन पढ़ती है । यह सारे कालेज एक लाइन में ही हैं सेंट स्टीफन्स, एलएसआर, हिंदू । एक बहुत ही अलग आभा बिखेर रहा था इस व्यापक परिसर का स्थापत्य ।

जुबली होस्टल पहुँच गया । जुबली होस्टल दिल्ली विश्वविद्यालय का एक लब्ध प्रतिष्ठित होस्टल था । इसका भी नाम पिछले कई वर्षों से हो रहा था । यहाँ से बहुत लोग चयनित हो रहे थे साल- दर साल सिविल सेवा में । इसी होस्टल के कमरा नंबर 108 में राजीव सिंह रहते थे । उनके साथ उनके भाई संजय सिंह भी रहते थे । यह कमरा राजीव सिंह के नाम एलाट था और उनके भाई अनधिकृत रूप से उसमें रहते थे । यह जुबली होस्टल में एक प्रम्परा की तरह था कि एक कमरे में कई लोग रह रहे होते हैं, एक अधिकृत बाकी सब अनधिकृत । मैं सीढ़ियों से चढ़कर ऊपर गया तो पाया राजीव सिंह पटरा की जाँघिया और हाफ बाँह की बनियान पहने बैठे थे । मुझको देखकर उन्होंने अति प्रसन्नता ज़ाहिर किया और कहा कि बहुत गर्म है यार यही हमारा परिधान है कमरे में ।

राजीव सिंह - “ बधाई हो बंधु । बहुत सही काम हुआ तुम्हारा पर तुम बहुत प्राड निकले, कहा इंटरव्यू बहुत ख़राब हुआ है पर पूरा क़िला ही ध्वस्त कर दिया । क्या ऐसा कर दिया था ” ?

मैं - “ इस परीक्षा का कुछ नहीं पता । यह क्या करवट ले बैठेगी कह नहीं सकते । मेरा इंटरव्यू कई तरह से ठीक न था । मुझे लगा कि बोर्ड को लग रहा मैं जवाब में अगला सवाल डालने का प्रयास कर रहा और बोर्ड इससे नाराज़ हो गया । मैं उत्तर पूर्व के सात राज्यों का नाम ही न बता सका । यह बहुत बड़ी बात थी । यह बात यह भी दर्शाती है कि इस उम्मीदवार को कितनी समझ है देश के भूगोल की । जिसको भूगोल ही नहीं आता वह आईएस क्या बनेगा । पर अंत भला तो सब भला । ”

राजीव सिंह - “ प्रारब्ध की बात है । जो लिखा था वह मिल गया । ”

मैं - “ क्या करोगे ? परीक्षा दोगे या जवाइन करोगे ? ”

राजीव सिंह - “ प्रारम्भिक परीक्षा तो दे दी है हलाँकि पेपर बहुत अच्छा हुआ नहीं पर हो जाना चाहिये । आईआरएस मिल जानी चाहिये । अब एक दिमाग़

में दुविधा बनी है । देखो रिजल्ट आने दो तब फ़ैसला करेंगे । तुम क्या कराएंगे ? आईएएस तो थोड़ा मुश्किल है तुम्हारे रैंक पर भी , बाकी तो सब मिल जाएगी । ”

मैं - “ मैंने और कुछ भरा ही नहीं है । आईएएस के बाद आईआरएस ही भरा है । अगर आईएएस न मिली तो आईआरएस ही मिलेगी । मैंने प्रारम्भिक परीक्षा दे दी है । पेपर ठीक ही हुआ है । जब समय आयेगा तब फ़ैसला ले लेंगे । ”

मैंने थोड़ी देर इधर- उधर की बात की फिर पूछा , “ जेएनयू चलोगे ? ”

राजीव सिंह -“ यार , जाने का मन तो है पर बहुत दूर है जेएनयू । बस में बहुत भीड़ होगी । कुछ काम है क्या वहाँ ? ”

मैं - कोई काम तो है नहीं । उन लफ़ंगों से मुलाक़ात हो जायेगी । ”

राजीव सिंह - “ यार मटियाओ । बहुत दूर है और बस में बहुत गर्दा होगी ” ।

मैं - “ बस का क्या करना । कार है । ”

राजीव सिंह - “ तुम कार से आये हो ! ”

मैं - “ हाँ ” ।

राजीव सिंह - “ हमको वापस तो छोड़ दोगे यहाँ पर । अब ऐसा न हो कि आप जेएनयू से निकल जाओ और हम रह जायें वहाँ पर तकते । ”

मैं - “ आप को यहाँ तक छोड़ दूँगा । ”

राजीव सिंह की जैसे लाटरी निकल गयी हो । वह तुरंत तैयार हुये । हम लोग बाहर आये होस्टल के । राजीव सिंह भी यदा- कदा ही कार पाये थे । वह मुझसे थोड़ा कम दरिदर रहे होंगे पर दरिदरापन था उनमें भी । कार देखकर वह बहुत प्रसन्न हुये । वह बोले यह तुम्हारी कार है ?

मैं - “ मेरी ही समझो जब तक हमारे पास है । ”

राजीव सिंह - “ यह कार कहाँ से लहाये ? यह तो कॉन्टेंसा कार है । ”

मैं - “ यह क्या होती है ? ”

राजीव सिंह - “ यह नयी कार है , बहुत मँहँगी है और लोग कहते हैं बहुत ही आरामदायक है । ”

मुझे कार के बारे में कुछ न पता था । तिवारी ड्राइवर ने दरवाजा खोला । वह तेज था । वह बातचीत से समझ गया कि यह साहब भी आईएएस की परीक्षा पास किये हैं । उसने इनको भी काजू - बादाम का प्रस्ताव दिया । वह

भकोसने लग गये । वह इतना भकोस गये कि पानी के सहारे उनको अंदर लीलना पड़ा ।

राजीव सिंह - “ कहाँ से यह इंतज़ाम हुआ ? कोई विवाह वाला आसामी है क्या ? ”

मैं - “ इसमें विवाह के आसामी की बात कहाँ से आ गयी ? ”

राजीव सिंह - “ हम लोगों के परिवेश में ऐसी सुविधायें इतनी शीघ्रता से वहीं से पराप्त हो सकती हैं और कोई जुगाड़ तो दिखता नहीं । ”

मैं - मेरी गाँव के रिश्ते की मौसी लगती हैं । उनके बेटे के ससुराल यहीं दिल्ली में एक बड़े उद्योगपति के यहाँ हैं, वहीं से कार मिली है । ”

राजीव सिंह - “ चलो चढ़ने को मिली है, बाकी क्या अनुसंधान करना । ”

तिवारी झराइवर - “ साहब जब तक दिल्ली रहेंगे तब तक यह इनके पास ही कार रहेगी । हमारी ड्यूटी साहब के साथ ही लगी है । ”

राजीव सिंह - “ तब तो साहब कभी जायेंगे ही नहीं । ”

तिवारी झराइवर - “ इ त हमार तक़दीर हअ अगर साहब इहीं रुक जायें । ”

जेएनयू गेट पर पहुँच गये । राजीव सिंह ने पूछा जाना कहाँ है ? मुझे कुछ न पता था कि कहाँ जाना है । मैंने पूछा, “ कोई कैसे मिलेगा ? ” राजीव सिंह ने कहा, गंगा ढाबा चलते हैं वहीं पर मुलाक़ात हो जायेगी नहीं तो रितेश सिंह बरह्नपुत्रा होस्टल में हैं उनसे पता चल जाएगा । हम लोग गंगा ढाबा पर पहुँचे । कार का एक अलग नक्शा हमारी भाव भंगिमाओं में आ चुका था । राजीव सिंह जेएनयू बहुत आये थे उनको जेएनयू के बारे में सब पता था । उन्होंने नींबू- पानी के लिये बैरे से कहा, उसी समय मुझे रागिनी सिंह दिखी । मैंने राजीव सिंह से कहा वह वहीं लड़की है न जिसकी हाबी पेंटिंग थी ।

राजीव सिंह - “ तुमको बहुत याद रहता है । वह थीं तो मेडिकल के दिन पर हाबी क्या थी यह याद नहीं है मुझे । ”

मैं - “ चलो उनके ही पास चलते हैं । तब तक कुछ समय कट जायेगा । ”

रागिनी सिंह - जेएनयू के सोशल साइंसेज़ विभाग की छात्रा थीं । एक औसत क़द, गोरा रंग, बड़ी आँखें सफेद सलवार - कुर्ता गुलाबी दुपट्टा, अपनी समग्रता में एक आकर्षण बिखेरती हुयी ।

मैंने रागिनी सिंह को बताया अपने और राजीव सिंह के बारे में । चिंतन सर ने उनकी कुँडली देखी थी यह बताया । उनको यह याद था कि चिंतन सर

सबकी कुँडली देख रहे थे । मैंने यह भी कहा कि आपकी हाबी पेन्टिंग है जो आपने यूपीएससी के फार्म में लिखा था ।

रागिनी सिंह - “ तुमको सब याद है । ”

मैं - “ हाँ याद रहता है मुझको कुछ- कुछ । रागिनी जी मैंने बहुत नायाब हाबी यह देखी आपकी । यह कब से शौक जगा रंगों से खेलने का । ”

रागिनी सिंह - “ यह तो पता नहीं कब से जगा । शायद होली के रंगों से । सबसे पहला रंग शायद वहीं हाथों पर अनुभव किया होगा मैंने । या उससे भी पहले । ”

मैं - “ उससे पहले कब ? ”

रागिनी - “ कभी सोचा है रंग सबसे पहले कब बने होंगे , कब महसूस हुये होंगे । ”

मैं - “ नहीं । ”

रागिनी - “ इन्द्रधनुष ने शायद सबसे पहले रंगों को मानव जाति के सम्मुख प्रस्तुत किया होगा । एक वैज्ञानिकता के आधार पर उत्पन्न प्रकृति का वरदान या उसके भी पहले सियाह रात के अँधेरों से उत्पन्न काला रंग । रंगबोध ही तो जीवन है । मेरे जीवन से रंगबोध निकाल दो मेरा जीवन शून्यपराय हो जायेगा । यह रंग संयोजन क्या है ? क्या यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है ? इसका उद्देश्य क्या है? यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है किसी भी मुसाविर के लिये । रंग - संयोजन का मुख्य उद्देश्य भावों को अभिव्यक्त करना और रसात्मक आनंद प्रदान करना है । यह एक रचनात्मकता तो है ही । ”

मैं - “ यह रचनात्मकता लेखन से किस तरह साम्यता रखता है और किस तरह भिन्न है ? ”

रागिनी सिंह - “लेखन के पास अपने अक्षर हैं । उनका स्वर - व्यंजन में विभेद किया गया है । हिंदी में आधे अक्षर भी हैं , अंग्रेज़ी में नहीं हैं और उर्दू में नुक्ते हैं और हिंदी की ही तरह अक्षरों के मिलन- सहमिलन की प्रक्रिया है । जैसे- जैसे सम्यता का विकास हुआ , नये- नये शब्द गढ़े जाने लगे । शब्द- कोष का विकास हुआ । एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में प्रवेश करने लगे और प्रयोगधर्मिता को प्रोत्साहन दिया जाने लगा । उसी तरह रंगों के साथ हुआ । रंगों की भी अपनी वर्णमाला है । यह रंग कलाकार की वर्णमाला है । यह प्रारम्भिक VIBGYOR बदलने लगा । यह रंग भड़कीले - चटकीले न थे । यह धूमिलता लिये हुये थे । बादलों के रंग को हल्का करना और आकाश में चमकती बिजली का चित्रण करने के लिये सोने के रंग का प्रयोग किया गया । फिर तो समस्त पृष्ठभूमि ही सोने के रंग से चित्रित होने लगी तथा पानी एवं कमल के चित्रण के लिये चाँदी के रंगों का प्रयोग किया जाने

लगा । साहित्य में एक सर्जनात्मकता वैदिक काल से ही आने लगी थी । आरण्यक, ब्राह्मण और उपनिषद् ग्रन्थों ने नवीन दृष्टिकोण दिया साहित्य को । ऋचाओं में प्रयोग हो रहे थे । वह सर्जनात्मकता व्यक्ति के अन्तर्निहित सत्यों को शायद पूरी तरह कह नहीं पा रही थी । या मनुष्य को लग रहा था कहीं न कहीं कि अभिव्यक्ति का विस्तार होना चाहिये । यह विस्तारवादी प्रवृत्ति मनुष्य के रक्तों में है चाहे वह साम्राज्य का विस्तार हो या अभिव्यक्ति का । वह ईश्वर के समीप जाना चाहता था, और समीप । यह अति समीपता की आकांक्षा सिर्फ़ भाषा से ही संभव न हो पा रही थी । वह सर्जन करने लग गया । वह पत्थरों के पास गया वह स्याहियों के पास गया, वह रंगों के पास गया । वह गढ़ने लगा पत्थरों से, रंगों से । एकाशम पत्थरों से, गुफाओं की दीवारों से, रंगों से वह सहायता माँगने लगा अपनी एक अलग अभिव्यक्ति के लिये । भवित का विकास होने लगा । अगर कला के क्षेत्र में करान्ति न आती तो भवित का कितना विकास होता ? यह भी एक प्रश्न है । अगर कला एक उच्चतम एवम् नवीनीकृत अवधारणा की आग्रही न होती तो क्या ईश्वर आज उस रूप में हमारे समुख होता जिस रूप में वह है ।

मैं - “यह सात रंग ही हैं” ?

रागिनी सिंह - “ नहीं ” ।

मैं - “ कितने रंग हैं ? ”

रागिनी सिंह - “ असंख्य, अनगिनत । यह कूची पर है वह कितने रंगों को जानती है । ”

मैं - “ कुछ समझा नहीं । ”

रागिनी - “ लहू का लाल रंग, करोध का लाल रंग, सूरज का लाल रंग, उदिशा में निहित लाल रंग क्या सब एक हैं ? लाल रंग करोध जनित भी है चेहरे पर और नायिका के गालों पर प्रेमजनित । चलो तुमको अपनी पेंटिंग दिखाती हूँ । बहुत से नये सवाल जन्म लेंगे और बहुतों का समाधान हो जायेगा । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 151

रागिनी सिंह का कमरा ! एक रचनाकार का कमरा । अपनी साँसों में कला को समाहित किये जमाने से बेपरवाह, एक चार मजबूत दीवारों के बीच स्वयम् को स्वयम् में खोजने की प्रक्रिया में लीन रहने वाले का रिहायशी आशियाना, एक जीवन के संघर्ष - दौर में । होस्टल के कमरे के एक कोने

में कैनबस का स्टैंड , उस पर टँगी एक आधी- अधूरी सर्जना और फर्श पर बिखरे हुये रंग कहते कहानी एक संतुष्टि की ।

पर संतुष्टि किसकी ?

रंगों की ?

जो संतुष्टि प्राप्त कर रहे कैनबस पर बिखर कर अपने बिखरने की अदम्य इच्छा रखते हुये , मौन में अभिव्यक्ति करते कहते हुये “मुझे अगर न सजाओ तो बिखरो ही कहीं और रंगों से सहमिलित करके , मुझे अकेलापन रास आता नहीं” ।

कैनबस के रंगों को सोखने की चाहत ?

जो कह रहा , “मेरे जीवन को रंगों से भर दो । मुझमें अभिवृद्धि कर दो । मैं एक काश़ज़ का मामूली टुकड़ा रहकर ही ख़त्म नहीं होना चाहता ” ।

या ,

सर्जक के आँखों की न मिटने वाली प्यास जो चाहती है अपलक निहारना , अपनी सर्जना को और महसूस करना चाहती है अपनी सर्जनात्मकता को हर पल अपनी धड़कनों की तरह ।

मैंने पूछा , यह क्या है ?

रागिनी सिंह - “प्रयोग ” ।

राजीव सिंह - “ कैसा प्रयोग ? ”

रागिनी सिंह - “ रंगों का ! कभी सोचा है रंग की उत्पत्ति कैसे हुई या यों कहें रंगों का सज्जान कैसे हुआ ? अगर इस मान्यता को स्वीकारें कि पृथ्वी जल से निकली है तब तो पास से जल का सफेद ऐसा रंग , दूर जल का नीला रंग , आसमान का आसमानी रंग ... इन्हीं तीन में से किसी एक का अहसास आदि मानव को हुआ होगा सबसे पहले । सूरज का लाल- पीला मिश्रित रंग उदिशा के साथ तभी दिखा होगा । उसी समय आँखों की निस्तब्धता को भंग करता हुआ आभासित हुआ होगा अरुण प्रकाश । अस्तित्वमान हुआ होगा प्रातःकालीन सूर्य का तेजवान रंग और अस्त होते हुये सूर्य का सम्मोहित करता केसरिया रंग । जंगल के पत्तों का हरा रंग , पेड़ की छालों, टहनियों का मटमैला रंग हमारे दृष्टि में आया होगा । फूलों के मोहक रंग ने भी उसी समय आँखों को कौतूहल दिया होगा । पर रंग संयोजन एक विस्मय पैदा करता हुआ तो इन्द्रधनुष ही रहा होगा । इन्द्रधनुष के रंगों का एक साथ आना निस्संदेह मानव के मस्तिष्क के लिये रंगों की आभा का एक तुलनात्मक अध्ययन रहा होगा । हमने जंगलों को नष्ट किया अपनी आवश्यकता के लिये । उस नष्टवान प्रक्रिया में एक तीव्रता आयी आग के अविष्कार के साथ

और एक उप उत्पाद के रूप में राख हमारे सम्मुख प्रस्तुत हुई - एक अलग रंग राख का -एक नायाब रंग । सृष्टि के विकास क्रम में रंगों ने शायद सबसे पहले आळादित किया होगा । यह भाषा तो बहुत बाद में आयी होगी । “
मैं “ पेंटिंग कब आयी होगी ? ”

रागिनी - “ बहुत मुश्किल है कह पाना । भारत में अजंता की गुफाओं के पहले के तो कुछ खास प्रमाण मिलते नहीं । रंगों में भी अगर देखो तो आरंभ में लाली लिये हुये भूरी त्वचा के अवशेष जो मिलते हैं वह भी शायद बाद के ही हैं । आंध्र काल की साँची शैली जो हम लोग कल्चर में पढ़ते हैं यह भी चित्रकला की पूर्वता अवस्था थी । हरे और नीले रंग का प्रयोग तो बाद में किया गया । रंगों का वैविध्यपूर्ण प्रयोग बहुत बाद की घटना है । ”

राजीव सिंह - “ मैडम , यह जो आप बता रहे हो रंगों का इतिहास और रंगों का क्रमिक विकास यह एक सायास प्रक्रिया थी या अनायास ? ”

रागिनी सिंह - “ यह रचनात्मकता का विकास एक सायास प्रक्रिया ही रही होगी । जो भी अनायास हुआ लगता है वह सायास प्रक्रिया का एक अंग ही है । आप कर कुछ रहे थे हो कुछ गया । पर आप प्रयास तो कर ही रहे थे । ”

मैं - “ यह रंग कितने हैं ? ”

रागिनी सिंह - “ यह वर्णमाला के अक्षरों की तरह एक निश्चित संख्या में नहीं है । यह हमेशा नवीनीकरण की प्रक्रिया से गुज़रते रहते हैं । हर नवोन्मेषी एक नये रंग संयोजन का सृजन कर देता है । यह जो सारे रंग तुम देख रहे मेरी चित्रकारी में इसमें से कोई भी वह शुद्ध वाला रंग नहीं है जो हम देखते हैं , या जानते हैं । मसलन यह कैडियम रेड- यह लाल और पेल येलो से बना है । यह स्कारलेट रेड -लाल और थोड़ा प्रपल कलर का मिश्रण है , किरमसन रेड - रेड और आरेंज का मिश्रण है और एक चुटकी भर नीला मिला दिया , वर्मिलियन रेड- ब्लैक और आरेंज का सहमिलन । यह एक प्रयोग है , एक स्थापित प्रयोग , एक स्वीकार्य प्रयोग । पर कलाकार वह भी प्रयोग कर सकता है जो आज तो अस्वीकार्य हो पर क्या पता आगे वह नज़ीर बन जाए । यह तो एक उदाहरण है , ऐसा ही संयोजन आप और भी कर सकते हो । यह मङ्गबूल फ़िदा हुसैन का घोड़ा क्या एक प्रपंचरागत घोड़ा है ? उनका रंग संयोजन क्या प्रपंचरागत है । यह “मोनालिसा “ या किशन गढ़ की “बनी - ठनी “ की मुस्कान एक प्रम्परागत मुस्कान है ? क्या उसमें रंगों का सौन्दर्य नहीं है । क्या जब वह चित्रकारी बनायी गयी होगी तब यह सोचा गया होगा कि यह एक अद्भुत मुस्कान के रूप में अविस्मरणीय हो जायेगी । यह पहाड़ी पेंटिंग में महिलाओं का अधोवस्त्र उनके सीने के उभार एक शैली से दूसरी से भिन्न

क्यों हैं ? मुझे स्पष्ट उत्तर नहीं पता पर शायद यह चित्रकार की अपनी कल्पना हो एक स्त्री के सौंदर्यबोध को लेकर । “

मैं - “ आप कैसे करती हैं पेंटिंग ? किस तरह आरंभ करती हैं ? कोई स्केच खींचती हैं ? ”

रागिनी सिंह - “ स्केच तो बहुत ही कम , तक़रीबन न के बराबर / बहुत छोटी पेंटिंग में कभी- कभार / अधिकांश पेंटिंग रंग से ही बनी हैं / इसमें कुछ और नहीं किया गया / सीधा रंग , ब्रश और कैनबस । ”

मैं - “ कोई परिकल्पना होती है , जब आप आरंभ करती हैं बनाना । ”

रागिनी सिंह - “ बहुत vague सी / बहुत ही अस्पष्ट । ”

मैं - “ किसी ख़ास परिकल्पना के बग़ैर कैसे बन जाती है एक नायाब कृति ? ”

रागिनी सिंह - “ रचना एक free flow प्रक्रिया है / आप बहने दो अपने आप को / जाने दो जहाँ वह ले जा रहा हो / वह ही दिग्दर्शक है / आप रंगों को बिखरने दो / वह बना जायेगा कुछ जैसा वह बनाना चाहता है । ”

मैं - “ यह लेखन से भिन्न है / लेखन में तो एक परिकल्पना बनानी पड़ती है । ”

रागिनी सिंह - “ कैसे बनाते हो ? ”

मैं - “ कई बार मैं कविताओं का अंत सोच लेता हूँ पहले फिर शब्दों को गढ़ता हूँ धीरे- धीरे / अंत से आरंभ की साम्यता और कई बार आरंभ आ जाता है पर अंत के लिये संघर्ष करना पड़ता है / इस संघर्ष में बहुत सी रचना अधूरी रह जाती है / मैंने दो बार उपन्यास लिखने का प्रयास किया और पूरा प्लाट निर्मित किया पर बीच में ही मैं भटक गया या संतुष्ट न हुआ / कवितायें तो बहुत बार बेकार हो गयीं और मैंने स्वयम ही नष्ट कर दीं । ”

रागिनी - “ क्यों नष्ट किया ? ”

मैं - “ मुझे वह संतुष्ट न कर सकीं । ”

रागिनी सिंह - “ मुझे लफ़ज़ों में उतना अभिव्यक्त करना नहीं आता जबकि मैंने बीए मे अंग्रेज़ी और हिंदी दो भाषाओं को पढ़ा है / मुझसे कहा गया कि आप दो भाषा लोगे तब बीए की अंकतालिका उतनी बेहतर न होगी / पर मैंने दोनों भाषाएँ पढ़ी क्योंकि मैं भाषा पढ़ना चाहती थी / मैंने सिविल सर्विसेज़ में भी हिंदी साहित्य लिया पर वह नैसर्जिक प्रतिभा भाषा के साथ नहीं है जो रंगों के साथ है / मैं बचपन में गुड़हल का फूल भी बनाती थी तो मेरी कला अध्यापिका कहती थी , “ कुछ ख़ास हैं तुम्हें । ” पर मैं तुम्हारी रचनात्मकता

की तरह एक अवधारणा को बनाकर चित्र नहीं बनाती , हो सकता है दक्षता का फ़र्क हो । मुझमें वह दक्षता न हो कि पहले पूरी अवधारणा निर्मित कर लो तब रंगों को आदेश दो । मेरे रंग मचलने लगते हैं जैसे ही कुछ अस्पष्ट सा मस्तिष्क में आता है , फिर कूँची चलने लगती है । सबसे बेहतर शब्द में कहूँगी “ I generally go with flow ” . जैसे हाथ चल रहा चलने दो guided by some intuition . मैं कुछ भी अपने पर आरोपित करके चित्रकारी नहीं करती । मेरी वहीं चित्रकारी सबसे बेहतर बनी है जो एक प्रवाह में चलती गयी है । ”

मैं - “ आप एक चित्र बनाने में कितना समय लेते हो? ”

रागिनी सिंह - “ तुम लिखने में कितना समय लेते हो ? ”

मैं - “ कई बार तो विचार प्रवाह इतने तेज आते हैं कि बस कुछ सेकेंड में ही शायरी या कविता बन जाती है फिर कुछ समय उसको कागज पर उतारने में । ”

रागिनी सिंह - “ इतना तीव्र लिख लेने का कारण शायद तुम्हारा अक्षरों पर अतिशय नियंत्रण हो । एक तेजमयी विश्वास हो । यह भी हो सकता है तुम्हारी शब्द- साधना अप्रतिम हो । मैं तो जीवन का उल्लास बनाती हूँ । यह उल्लास कागजों पर बिखरने में थोड़ा समय लेता है । लेखक विद्वता का एक आग्रही होता है और चित्रकार एक सौंदर्य का । लेखक के पास शब्द- संयोजन का शब्द -सौन्दर्यबोध होता तो है पर वह शिल्प से अधिक कथ्य का आग्रही होता है । एक चित्रकार के रूप में भी कथ्य आवश्यक है पर एक चित्रकार शिल्प शास्त्रीयता का एक लेखक की तुलना में अधिक आग्रही होता है । चित्रकार को सौंदर्यबोध देना ही है पर लेखक एक बहुत बड़ी बात कई बार अनगढ़ भाषा में भी कह जाता है । अब माडर्न आर्ट के प्रचार और स्वीकार्यता से मानदंड बदल अवश्य रहे हैं पर मेरे अनुसार चित्रकारी में सौंदर्य- बोध एक आवश्यक अवयव है । ”

मैं - “ यह लेखन के साथ भी है । बगैर सौन्दर्य के तो सब अधूरा है । ”

रागिनी - “ यह अकाटय सत्य है तभी तो सत्यम्- शिवम्- सुंदरम् की अवधारणा में सुंदरता का एक महत्वपूर्ण स्थान है । यह अवधारणा जीवन के लगभग हर पक्ष में है । मैं सिर्फ़ एक आग्रह की सीमा की बात कह रही । ”

मैं - “ आप कितना समय लेती हैं अपने उल्लासपूर्ण सौन्दर्य से लोगों को आळादित करने में । ”

रागिनी सिंह - “ मैं स्वयम ही आळादित अधिक होती हूँ अपनी कृति के निर्माण पर , अगर कोई सराह दे तब ईश्वर की कृपा । मैंने कुछ पेंटिंग दो दिन में

बनाई है और कई- कई दो साल में । अब यह बहुत ही मुश्किल है कहना कि किसमें कितना समय लग जाये ।

आप यह पेंटिंग देखो ...सिर्फ रंग हैं और कुछ नहीं, कोई भी आकृति कहीं भी नहीं । कोई भी रंग पारम्परिक नहीं हैं । आप आसमान देखो, नीला नहीं है । जब पानी बरसता है तब आसमान की तरफ देखो बीच के बादल रंग बदल देते हैं । उन रंगों की व्याख्या आसान नहीं । यह अनुभवजनित है । यह रंगों का संयोजन बहुत कुछ अवलोकन से होता है । इस चित्रकारी में आप रात का दृश्य देखो जब शहर से बाहर के वीरानों में सिर्फ चाँद की रौशनी रहती है और जहाँ से शहर धुँधला दिखायी देता है, आप किस रंग से बनाओगे वह धुँधलापन और वह आसमान, जो पारम्परिक आसमान के रंग से अलग है ? यह पूरी छटा बनती कैसे है, यह भी समझना होता है एक चित्रकार को । इस दृश्य का निर्माण मस्तिष्क में शहर, वातावरण के घनत्व, पृथ्वी और चाँद की अवस्थिति की संकल्पना पर निर्भर करता है । यह एक चुनौती है चित्रकार की - एक नायाब संकल्पना - रंगों का संयोजन और फिर अनुभूत करना - वहीं बना जो मैंने बनाना चाहा था या कुछ और बन गया । कई बार कुछ और बनना बेहतर हो जाता है आपके अपनी संकल्पना के साँचे में गढ़े दृश्य से । यह एक चुनौती होती है । मैं एक कलाकार के रूप में हर दिन नयी चुनौतियों को स्वीकार करती हूँ । शायद इसीलिये एक रचनाकार औरों से अलग होता है क्योंकि वह चुनौतियों से हर दिन रूबरू होता है । मेरी काश्मीर की पेंटिंग देखो आप । किसी पेंटिंग में कोई आदमी नहीं है । किसी ऐसे इलाक़े का ज़िकर नहीं है जो आप जानते हो । बस पहाड़ - चिनार - बर्फ़- वादियाँ - सूरज की रौशनी - रात की चाँदनी और मेरी कल्पनाशीलता, यह सब रंगों से अभिव्यक्त करती हैं अपने को । ”

मैं “ क्या इसमें वादियों का दर्द है ? ”

रागिनी सिंह - “ यह मैं देखने वालों पर छोड़ देती हूँ । हर बात कह देना रचनाकार की अपरिपक्वता है । उसका अपने दर्शक पर विश्वास न होना है । शब्द हों, रंग हों, मिट्टी हो, पत्थर हों गढ़ दो । गढ़ कर सराहने वाले पर यक़ीन रखते हुये उसकी मेधा, उसकी कला- दर्शना को व्याख्यायित करने दो । अगर सारी बात आप ही कह गये तब आप एक कथावाचक हो न कि एक कलाकार । मैं एक अस्पष्टता को अपनी रचना में समाहित किये हुये एक कलाकार बनना चाहती हूँ न कि एक प्रवचनकर्ता । ”

मैं - “ जितनी मेरी समझ है अल्फाजों की, शब्दों की एक सीमा भी होती है, अगर वह प्रयोगों के सान पर न चढ़ें । रंगों के विषय में ”

रागिनी सिंह - “ सबकी सीमायें होती हैं - शब्द- व्यक्ति- मस्तिष्क- मेधा तब रंग अपवाद कैसे हो सकते हैं ? हर रंग की एक सीमा होती है और कई बार

रंग खुद ही कह देते हैं , “ प्रयोग करो ... मेरी सीमाओं को तोड़ो मैं विस्तारित होना चाहता हूँ । ”

मसलन गरे कलर - डिप्रेशन, अवसाद , निराशा , मोहभंग कितनी भी तरह से व्यक्त किया जा सकता है , पर कई बार नहीं कह पाते रंग बात मेरी क्योंकि सीमाओं में रंग भी बँधे हैं , इसीलिये प्रयोग करना पड़ता है एक बेहतर अभिव्यक्ति के लिये । कई बार गरे में काला मिला देती हूँ अवसाद की अभिव्यक्ति को और प्रखर करने के लिये , जो मैं कहना चाह रही वह गरे तमाम कोशिश करके भी नहीं कह पा रहा ।

जैसे हिंदी में शब्द है “घर” , “बेघर “, “निघर “.... थोड़े से परिवर्तन से मायने बदल जाते हैं वैसे ही रंगों के साथ है थोड़े से परिवर्तन से , थोड़े से और रंगों के मिश्रण से कहने की क्षमताओं में परिवर्तन आ जाता है । लाल रंग में एक चुटकी भर नीला रंग डालो आप देखें कितना फ़र्क आता है । यह अलग-अलग भावनाओं को प्रतिनिधित्व करने लगते हैं । इनकी अभिव्यक्ति की तीक्ष्णता बहुत कुछ इन रंगों के साथ- साथ पूरे चित्र में किस तरह इनका समायोजन है , इस पर निर्भर करता है । कुछ भी निश्चित नहीं है , सारा कुछ आपकी कल्पनाशीलता पर है । चित्रकारी के तकनीकी पक्ष पर मेरी पकड़ कुछ ख़ास नहीं है , मैं एक प्रयोगधर्मी चित्रकार हूँ , स्वतः स्फूर्त प्रक्रिया का अंग मेरी रचनाओं में अधिक है ।

आगर यूरोप के पुनर्जागरण से लेकर आज तक देखो तो पन्द्रहवीं शताब्दी से आज तक दो महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखेंगे एक विषय में और दूसरे रंगों में । चित्रकला के विषयों में क्रमिक परिवर्तन होता रहा है , धार्मिक - दरबारी -लोक जीवन -एबस्ट्रैक्ट । पुनर्जागरण काल के आरंभ से पूर्व चित्रों में एक अजीब सी उदासी और एकरसता दिखाई देती है । पुनर्जागरण काल में विषय जीवन से लिये गये । आदमी चित्रित होने लगा । प्लास्टर और लकड़ी के पैनल के स्थान पर कैनबस का इस्तेमाल आरंभ हुआ । शोख और चटक रंग अब वर्जित नहीं रह गये । तैल चित्रों का परम्परा शुरू हुई । चित्रकार सर्वथा मौलिक प्रयोग करने लगे , विषय में ही नहीं रंग में भी । विंची , एंजेलो , राफेल, टिशियन ने कालजयी चित्र दिये । विंची ने चित्रों के लिये शरीर और विभिन्न भंगिमाओं और मुद्राओं का अध्ययन किया । उनकी “लास्ट सपर “ में ईसा मसीह और उनके अनुयायी विभिन्न जीवन के प्रतिनिधि लगते हैं । “ मोनालिसा “ एक साधारण युवती का चित्र है । उसमें सौन्दर्य के शास्त्रीय प्रतिमान नहीं है पर एक रहस्यमयी मुस्कान है जो आज तक लोगों को रोमांचित करती है । एंजेलो की घनीभूत पीड़ा का संघर्ष और कला में प्रयोग और कला के प्रति समर्पण एक प्रेरक कहानी है । अब कितना कहूँ , हरि

कथा अनंता । बस यहीं बंद करते हैं । यह मेरे जीवन की कुछ बहुत यादगार शामों में से एक है । ”

मैं - “ मैडम कुछ और व्याख्यायित करो , अभी पिपास शांत नहीं हुई । ”

रागिनी सिंह - “ फिर कभी । मैं अपनी पेंटिंग देती हूँ । आप लोग एक- एक ले जाओ । ”

राजीव सिंह - “ मैडम आप फिर से परीक्षा देंगी या सेवा ज्वाइन करेंगी । ”

रागिनी सिंह - “ जो रैंक है लोग कह रहे आईआरएस मिल जायेगी । न भी मिले तो क्या है ? कुछ तो मिलेगा ही । वैसे मुझे आडिट एंड एकाउंट लेना चाहिये था । अब जो हुआ सो हुआ । मैंने प्रारम्भिक परीक्षा ही नहीं दी है । अब बहुत हो गया । जीवन दूसरी तरह आरंभ करेंगे । ”

मैं - “ और चित्रकारी ? ”

रागिनी सिंह - “ वह तो जीवन है मेरा । ”

मैं, राजीव सिंह, रागिनी गंगा ढाबे पर वापस आये । अब तक शाम होने लगी थी, कुछ ज्यादा । वहाँ पर संजीव टंडन, सिद्धांत शरीवास्तव, रितेश सिंह, श्रुति घोष समेत जेएनयू का एक बड़ा भाग एकत्रित था । सिद्धांत ने मुझे आवाज़ दी, “ ऐ वेस्टलैंड वाले फ़राड हीरो ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 152

यह जेएनयू का गंगा ढाबा - एक अलग दुनिया, कम से कम हमारे ऐसे गंगा किनारे वालों के लिये । सिगरेट का धुआँ, एक बेफ़िकरी, एक बड़बोला पन, छोटे शहरों के लड़के - लड़कियों का बड़े शहरों में अस्तित्व तलाशना ...

सिद्धांत की आवाज़, “ ऐ वेस्टलैंड के फ़राड हीरो ” , सुनकर मैं उस तरफ़ मुड़ गया । एक बड़ी भीड़ इस साल के चयनित महारथियों की । एक लंबी फेरहिस्त मेरे मस्तिष्क में घूम गई ।

श्रुति घोष - कलकत्ता के पास के एक छोटे से इलाके बरधमान से होकर भी हिंदी - उर्दू शायरी में रुचि । वह सिगरेट के धुएँ में जीवन देख लेती है ।

वह लफ़ज़ों में जीवन जी लेती है । उसको रुचि है जीवन की विविधताओं में है न कि बनी बनाई लकीरों में । वैविध्य उसकी एक आस्था है ।

संजीव टंडन - उदयपुर की छोटी सी सीमा से सीधा आईआईटी दिल्ली आ गये । वह जब आईआईटी आये तब उनको न पता था कि कौन सी ब्रांच लेनी चाहिये । उदयपुर में सिविल इंजीनियरिंग का ही नाम प्रचारित था वहीं ले लिया । वह आईआईटी से अधिक विचरण शाम को जेएनयू में करते थे । वह खुद कम पढ़ते थे लोगों को ज्यादा पढ़ाते थे , खासकर लड़कियों को । वह अध्यापक ही बने होते तो बेहतर होता पर उनका कहना था एक ही बात को हर साल बाँचना बहुत ही मगजमारी का काम है । यह उनके जीवन के जुगाड़ से मेल नहीं खाता । वह आजकल कुंडली की विधा सीख रहे हैं और उनके स्वप्न में ग्रह- नक्षत्र आते हैं । उन्हें हर रात आशंका रहती है कि उनकी कुंडली के अच्छे ग्रह अपना स्थान तो नहीं बदल रहे , और शनि की दृष्टि कहीं वकर तो नहीं हो रही । वह इस आपदा से बचने का उपाय खोजते रहते हैं । वह कुंडली को बहुत संभाल कर रखते हैं । उनको हमेशा लगता रहता है कि उनके ग्रह कागजों में घर बदल रहे इसलिये वह कुंडली देखकर उनकी अवस्थिति को सुनिश्चित रखना चाहते हैं । सावधानी हटी दुर्घटना घटी के वह ब्रांड एम्बेसेडर बन सकते हैं ।

रंजन अग्रवाल- नवाबों एवम् तहज़ीब के शहर लखनऊ से आईआईटी दिल्ली आ गये । वह एक अलग क्रिस्म के नायाब ईश्वर की कृति हैं । वह कई बार एक दिन में तीन शो फ़िल्म का लगातार देखते थे । कोई भी फ़िल्म रिलीज़ हो वह उसका पहला शो देखते थे । वैसे तो उन्हें सारी फ़िल्में देखनी ही है पर गोविंदा की तो ज़रूर देखनी है । वह गोविंदा के इतने मुरीद कि एक गोविंदा फ़ैन क्लब आईआईटी में चला रहे और इरादा उसको नागपुर -मसूरी में भी चलाने का है । उनसे आप फ़िल्मों पर बात करिये वह अपनी मैकेनिकल इंजीनियरिंग की डिग्री से अधिक उस पर बता देंगे । वह 61 रँक पाकर आईआरएस ले रहे , यह एक राष्ट्रीय समाचार बन रहा इस साल । वह जब इंजीनियरिंग के तीसरे वर्ष में थे तब उन्होंने यह पता करने की कोशिश की , किस तरह जीवन आराम से जिया जा सकता है । उनके जीवन की एक ही प्राथमिकता कैसे जीवन सहजता और आरामदायक तरीके से जिया जा सकता है । वह जीवन को पूर्ण रूपेण जीने के पक्षधर हैं । न तो वह किसी के काम में दख़लांदाज़ी करते हैं और कोई उनके काम में करे वह नापसंद करते हैं । उनको दुनिया का खूब पता है । वह धन की क़ीमत करते हैं । ढाबे पर चार दोस्त खाना खायें और बिल आये 210 रूपया तब वह पूरा हिसाब करेंगे 52:50 रूपया प्रति व्यक्ति । वह ढाबे वाले से छुट्टा पैसा लेकर सबका हिसाब कर देंगे । उनके लिये यह सिद्धांत और पारदर्शिता का प्रश्न है । वह

एक बहुत ही संजीदा व्यक्ति हैं । उनकी अपनी मान्यतायें हैं । मसलन , व्यापार में किंच- किंच है , विदेश में सारा काम खुद करना पड़ता है , नौकरी में आराम है वह भी सरकारी नौकरी में , प्राइवेट में तो खून चूस लेगा मालिक अगर पैसा अधिक देगा , जीवन में धन की आवश्यकता है । उनकी निंद्रा निर्बाध रहे , वह सुबह नौ बजे सोकर उठ सकें ऐसी कौन सी नौकरी होगी , यह पता करने लगे । यह आईपीएस तो उन्होंने इस आधार पर अपनी प्राथमिकता से काट दिया कि आप पिक्चर देख रहे हो और दो मज़हबी शराबी लड़ गये और आप को पिक्चर छोड़नी पड़ी । अब पर्दे पर माधुरी दीक्षित नाच रहीं हो और गाना चल रहा चोली के पीछे क्या है और दो मज़हबी शराबी लड़ गये , परिणाम यह हुआ कि मादकता से अंधत्व की ओर जाना पड़ा.... ना .. ना .. यह काम बिल्कुल नहीं । उन्होंने उसी यूपीएससी के मेंस के फार्म में ही उस सेवा को काट दिया । आईएएस के बारे में पता किया कहाँ - कहाँ रहना होगा और वहाँ वह सिनेमा कैसे देखेंगे । उत्तर- पूर्व भारत में , बिहार के छोटे शहरों में , देश के तमाम कैडर के छोटे शहरों में कितने पिक्चर हाल है , इसका एक सर्वेक्षण कर मारा । परिणाम निराशाजनक रहा । ज़िले को एक बेहतर कलेक्टर और प्रदेश को एक तर्कसंगत सोच वाला सचिव मिलने से रह गया । अब विदेश जाना ही नहीं तब विदेश सेवा को एक स्पष्टता से बात करने वाले कूटनीतिज्ञ से मरहूम होना ही होगा । हो सकता था भारत को एक बेहतर विदेश नीति में कुछ सहायता मिलती पर भवितव्य पर वश किसका । किसी परम ज्ञानी ने कहा “ आप सारा जीवन बंबई - दिल्ली में एक सुख के साम्राज्य में दुख की अनावश्यक करान्ति के बगैर व्यतीत कर सकते हो अगर आईआरएस की सेवा का चुनाव कर लो । इनकी कल्पना के उद्यान हरे- भरे हो गये । भारतीय राजस्व सेवा के भाग्य खुल गये । देश की अर्थव्यवस्था को एक महान प्रहरी मिल गया , हलाँकि यह अपने जीवन से अधिक महत्व ईश्वर के जीवन को भी नहीं देते है । ”मनुष्य स्वतन्त्र विचारधाराओं का पराणी होता है वह किसी और की विचारधारा से उत्तेजित नहीं होता “ , इससे शायद जन्मना ज्ञापित थे । यह खुद ही कहते हैं , “ भाई हमको जीने दो । हमारी साँसें बहुत महत्वपूर्ण हैं । ”यह शंकर के अद्वैत दर्शन के अलग व्याख्याकार हैं -

“मैं और मेरा जीवन ” । सहजता , स्पष्टता और पारदर्शिता इनके जीवन का आधार है ।

सिद्धांत शरीवास्तव- ऐसा व्यक्तित्व विरले ही निर्मित हुआ होगा । विश्वकर्मा ने इनको बनाने के पश्चात यह अनुभव किया , बस एक ही बहुत है ऐसा मृत्युलोक के लिये और भगवान विष्णु के आदेश को अस्वीकार करके वह साँचा तोड़ दिया जिससे इनका निर्माण हुआ । वह इनकी आत्म- विस्मृति के भी पक्षधर न थे , निस्तब्धता झँझावात के आने तक तो अपना साम्राज्य

सुरक्षित रख सके । । इनकी बीए की डिग्री , इनका विषय , इनकी शिक्षा के बारे में लोगों को बहुत कम पता है । यह सेंट माइकेल पटना से कक्षा बारह किये उसके बाद यह अपनी नानी के यहाँ बंबई आ गये । उसके बाद सीधा पता लगा कि यह यूपीएससी दे रहे । बीच का सारा कालकरम भारतीय इतिहास के 800- 900 ईस्वी के तरह का है , जो कहीं मिलता ही नहीं आप कितनी भी कोशिश कर लो । पर यह इंजीनियरिंग- डाक्टरी- विमान शास्त्र सब जानने का दावा करते हैं । अगर आप इनके दावे को चुनौती दो तब तो भगवान ही मालिक है आपका ... चुने हुये शब्द जो कहीं लिखे नहीं जा सकते वह आपकी आत्मा को झकझोर देंगे । इनकी जहीनियत का तो लोहा मानना ही पड़ेगा, जो ज़मीन अथक परिश्रम , त्याग- तपस्या से भी प्राप्त करना आसान नहीं वह ज़मीन इन्होंने रंगीन पानी और धुँये के साहचर्य के साथ प्राप्त कर ली और दावा ऐसा , “ हम तो बहुत कम लिखे पेपर में ” । अगर ज्यादा लिखते तब पता नहीं क्या होता ? यह दयालु हैं , यह शायद परीक्षक को हीन भावना से ग्रसित नहीं करना चाहते थे इसलिये कम लिखा । परीक्षक एक अध्यापक ही होता है , उसका सम्मान शायद यह करते थे , यह एक अनुमान है इनके बारे में कुछ भी निश्चय से तो कहा ही नहीं जा सकता है । देश खुशनसीब है ऐसी महान प्रतिभा चयनित हुई । यूपीएससी की गलती का परिणाम देश के भाग्य में था और एक लंबे क्रद , साँवले रंग का खूबसूरत बाँका जवान भारत सरकार की सेवा में आया जो खुद ही कहता है .. TDH एक नया टर्मेंड है । आप अगर TDH क्या है यह पूछो तब सिगरेट के छल्ले के साथ कहेंगे... “ गाँव से आये हो क्या ? ” , इतना भी नहीं पता tall , dark , handsome ... और यह कहते हुये यह काले रंगों वाला रेबन का चश्मा ज़रूर लगा लेंगे । ऐसे एन श्रीनिवासन के संस्कृतिकरण के सिद्धांत के साक्षात उदाहरण हैं यह सिद्धांत श्रीवास्तव जो छोटे शहर से पलायन करके बड़े शहरों की महिमा का गान कर रहे । हिंदी की बात तो न ही करो तो बेहतर है । मैकाले अंगरेजी का समर्थन क्या करेगा जो यह साहब करते हैं । यह यारों के यार हैं । इनके बारे में रितेश सिंह कहते हैं कि यह बहुत ही जिन्यून व्यक्ति हैं और आँख बंद करके इन पर विश्वास किया जा सकता है । देश की तक़दीर है जहाँ पर हर ओर विश्वास का संकट है , एक विश्वसनीय व्यक्ति भारत के इस्पाती दरवाजे में प्रवेश कर रहा है ।

सत्यानन्द तिरपाठी- भौतिक विज्ञान में परा स्नातक । दिल्ली चले आये पत्रकारिता का कोर्स जेएनयू के मास कम्युनिकेशन इंस्टीट्यूट से करने । पता चला इसमें बहुत संघर्ष है । यहाँ झोला ढोते रहो , पर होगा कुछ नहीं । लगे यूपीएससी देने । पहली बार दिया फ़िज़िक्स और इतिहास से । कुछ न हुआ उस बार । अपने अकादमिक इतिहास से पीछा छुड़ाया और इतिहास एवम् हिंदी साहित्य ले लिया । परीक्षा का गढ़ गिरा मारा , 175 रँक के साथ । शब्दों के बेताज बादशाह हैं । सुना है आजकल नयी कविता लिख रहे हैं यह ।

इनका लक्ष्य है कि अगले दो महीने में मैं यह किताब छाप दूँगा पर ऐसा कई संकल्प यह पहले भी कर चुके हैं। उनसे लिखने के बाद की प्रक्रिया का काम बिल्कुल संभलता नहीं है। प्रतिभा बहुत है पर आलस्य का क्या किया जाये, पता नहीं ईश्वर महान प्रतिभाशालियों को शापित क्यों कर देता है किसी एक ओर से।

स्मृति चक्रपाणि- जयपुर से जेएनयू की यात्रा। गोदावरी होस्टल, सोशल साइंसेज़ विभाग और पराग से रंजित इनके कपोलों की आवृति मीरा - विद्यापति- सूर - कबीर के भजनों के साथ - यह है इनका जेएनयू का सम्पूर्ण जीवन। संगीत, योग, भाषा में रुचि है। संस्कृत सीख रहीं आजकल। उनको लगता है भाषा सीखना गायन में मददगार होगा। एक अलग इच्छाशक्ति जीवन के विविध आयामों की। कहते हैं कि यह जयपुर के किसी बड़े अफ़सर की बेटी हैं और अक्सर जयपुर से कार आती है इनके कुशल क्षेम पूछने। ईश्वर ऐसी ही तक़दीर सबको दे।

रितेश सिंह - बचपन से ही सिद्धांत के साथ पढ़े, सेंट माइकेल पटना में। जब सिद्धांत ने यूपीएससी देने के अपने हैसियत से बड़े अरमान को समाहित किये हुये पत्र लिखा था तब इनकी प्रतिक्रिया थी, “भइवा लगता है कल कुछ ज्यादैय चढ़ा लिये होई”। पर एक दिन सिद्धांत बगैर किसी किताब-कापी के एक सूटकेस लेकर आ गये यह कहते हुये “हम भी वर्दी पहनेंगे। वर्दी के पीछे एक ही तर्क था, “मैं बहुत स्मार्ट हूँ और वर्दी पहन कर बहुत जमेंगे हम”। पर इनके पास तर्क शरीर- सौष्ठव का तो हो नहीं सकता, यह बहुत ही दिलेर होने का दावा करते हैं। अच्छा होता शोले फ़िल्म के जय- वीरु की कहानी में कुछ इन लोगों के जीवन से भी लिया गया होता। रितेश सिंह दुबले - पतले थे पर वह बचपन से पटना की गलियों में एक एसपी की तरह चलने का ख़बाब रखकर साँस लेते रहे। बहुत अरमान है इनका, एक बड़ी दंगाईयों की भीड़ उन्मादित हो और यह नेपोलियन की तरह अपने घोड़े के टापों से भीड़ को अवशेष हीन कर दें। उनकी रैंक भी आ गई आईपीएस की पर सीना ही नहीं फूला। वह आजकल जिम में ही रहते हैं। बेंच प्रेस करते हैं ताकि सीना चौड़ा हो जाये। सीना फुलाने का अभ्यास तो नीद में भी करते रहते हैं। कई बार स्वप्न में ही कहने लगते हैं, “हो गया.. हो गया...”। ईश्वर इनके ख़बाबों की ताबीर दे। लोगों की मदद करना इनके खून में है। जितना इन्होंने लोगों की सहायता की होगी सिविल सेवा के तैयारी की, बहुत विरलों ने उतना सिफ़्र सोचा होगा करना तो एक दूरगामी प्रक्रिया है।

राजीव सिंह - यह किसानी ज्यादा बेहतर करते। यह कृषि पढ़ते, आम का बाग लगाते, मुरिंगा- मुनगा उगाते तो शायद देश के लिये अच्छा होता। पर

यहाँ तो गाँव में जन्म हुआ नहीं कि “ भैया नाम रोशन करिहिं । भैया कलेक्टर बनिहिं ” । बस दो भाई दो आस- पास के ज़िले की कलेक्टरी का ख्वाब लिये दिल्ली आ गये । एक को होस्टल मिला तो दूसरा अनाधिकृत घुस गया । अब भाई हैं तो खाँटी ठाकुर , भले ही शरीफ़ ही सही । अब हमसे आप हिसाब करोगे कि हमारे कर्मरे में कौन रहता है । जुट गये परीक्षा देने । एक भाई पास कर गया दूसरा अगले साल करेगा , यही आशा का संदेश गाँव में फैला दिया गया । अब हम यह तो नहीं कहेंगे कि हमारा एक लड़का फेल हो गया ।

इलाहाबाद की सुरुचि मिश्रा- एक ऐसे शहर में अंग्रेज़ी का परचम लहरा रही जो हिंदी का आगरही है । अंग्रेज़ी साहित्य और मनोविज्ञान से एक अनूठा कारनामा कर डाला । उसकी प्रशंसा में कम क़सीदे गढ़े गये मेरी तुलना में क्योंकि मैं दबे- कुचले - सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहा था । मैं एक जननायक था और वह एक अभिजात्यता का प्रतीक बन गई सिर्फ़ इसलिये कि मैं हिंदी के सहारे अपनी जगह बना रहा था और वह अंग्रेज़ी में सिद्ध-हस्त थी । पर शहर चाह रहा , लड़कियाँ चाह रहीं , लड़के चाह रहे ऐसी विदुषी इलाहाबाद विश्वविद्यालय को और मिले ।

शशि तिरपाठी- धनंजय सिंह की पुस्तक मानसिकता को आहत करती हुई इलाहाबाद की गिनी - चुनी लड़कियों में अपनी पहचान बनाती हुई ।

चिंतन उपाध्याय - वह ममत्व से भरे अहंभाव से परिपूर्ण हैं । एक अपने व्यक्तित्व को ऊँचा दिखाने के प्रयास में हरदम लीन हैं । उनके जीवन में एक असाधारण उद्विग्नता है । उन्होंने साधना की शरण अवश्य ली है पर छल का पुट उनकी साधना में भी है । वह सारा काम वही करेंगे जो उनके लक्ष्यों की सिद्धि में सहायक हो । अपने लक्ष्यों की सिद्धि के लिये किसी की आहुति चढ़ा देना उनकी असाधारण उद्देश्यपरक उद्विग्नता का भाग है । व्यक्ति के परख में इनके चक्षु तीक्ष्ण हैं , विशेषतः जो मानव इनके उत्थान की सीढ़ियाँ बन सके । इनका अमरता के सिद्धांत पर व्याख्यान , जन्म- मृत्यु का अन्तरंग- संबंध का बखान , बुद्धत्व का महिमामंडन , सृष्टि - प्रलय का विवेचन , कुंडली - ग्रह- नक्षत्र का आवरण एक ही लक्ष्य से निर्देशित है - जीवन के विकास में कैसे तीव्रगति प्राप्त की जाये । क्षमतायें सीमित हैं पर महत्वकांक्षाओं का दिन- प्रतिदिन विस्तार हो रहा । एक बात अवश्य है , ज़मीन से जुड़े होने के कारण प्राणि- मात्र के हित और क्षेत्रियता के विकास के पोषक हैं , पर इसमें समाज हित से अधिक व्यक्तिगत आलोक का आगरह है । यह शीघ्र ही कोई नया आवरण धारण करेंगे । चोला बदलने में यह गिरगिटान के भी शिक्षक हो सकते हैं । एक बात इनके अंदर है जो बहुत ही प्रेरक है - “संघर्ष कैसे किया जाए ।” इनका उदारवादी होना और उदारमना में विश्वास रखना

राजनीति के फलित ज्योतिष के हित में जायेगा और एक देश को एक बेहतर राजनेता प्राप्त होगा ।

बद्री विशाल मिश्र - जिनसे अंग्रेजी ही न सम्भली बहुत सालों तक । उनके बारे में इलाहाबाद में उनके विरोधी कहते थे , “ अंतिम द्वार पर लतियाये जाने का विधान लेकर पैदा हुये हैं । ” पर इस बार के दिग्विजयी हैं । देर से ही सही पर झंडा तो गाँव में लगा दिये उनके बाबा पाँच फुट और ऊपर मंदिर में रिज्ल्ट आते ही । यह भी सुना है कि पूरा गाँव जा रहा हनुमान जी को झंडा चढ़ाने ।

अमर गुप्ता - जिनको काम उतना ही करना है जितना अति आवश्यक हो । इस “अति आवश्यक “की परिभाषा सिर्फ़ वही जानते हैं । उनको सारे काम में बैफिजूल काम ढूँढ़ना ही है । उनकी हर वस्तु की नायाब व्याख्या है यहाँ तक कि मिथक कथाओं की भी , “ यह देव- दानव बिना मतलब लड़ रहे । अरे भाई इतना बड़ा बरह्माण्ड है आपस में बाँट लो , काहे को कट मर रहे हो । अब इतनी अप्सरायें यह देवता रखे हैं दे दो कुछ दानवों को , पर नहीं हम तो नहीं देंगे , चाहे सृष्टि ख़त्म हो जाये । यह जाति व्यवस्था मानव में तो बाद में आयी पहले यही देवता लोग फैलाये देव- दानव का नामकरण करके । ”

यह वह कुछ लोग हैं जो अगले तीन से ज्यादा दशकों तक देश की सामाजिक - राजनैतिक - आर्थिक संरचना के कर्णधार बनेंगे । उनमें एक में “ अनुराग शर्मा “ अपनी जगह तलाश रहा इन सबके बीच ।

क्या शाम है जेएनयू गंगा ढाबा, सूरज उत्तरता हुआ जीवन चढ़ता हुआ

.....
मेरे पहुँचते ही शरुति घोष ने कहा

कोई तलाश कर फ़रिश्ता एक क्रिस्सों की फेरहिस्त से
जो कह सके यहाँ सब बेवफ़ा हैं वफ़ा की उम्मीद एक सराब है ।

“ कुछ समझे “ यह कहकर वह मुस्कुराने लगी । उसकी मुस्कुराहट में एक सम्मोहन का माधुर्य था , लफ़ज़ों में गहरायी कम भी हो तो स्वर में एक सौन्दर्य था ।

श्रुति घोष अपने रौ में थी वह सिगरेट का कश निकाल कर राजीव सिंह से बोली कैसे हमारी याद आ गई ?

राजीव सिंह - “मैडम आप तो याद आते ही हो ?”

श्रुति- “ किस तरह ? ”

राजीव सिंह - “ मैडम दिव्य आत्मायें हर तरह से याद आती हैं । ”

श्रुति- “ तब मैं नहीं कोई और है , आज ख़बाब में पहचान लेना । मैं एक ही तरह से याद आती हूँ । सिगरेट पिओगे ... अरे नहीं .. नहीं .. धर्मच्युत हो जाओगे । ”

सिद्धांत- “ ऐ गंगा किनारे वाले फ्राड हीरो हैं , पता नहीं क्या लिखा कि नंबर बरस गया । ”

मैं - “ हिंदी में कुछ ठीक नंबर आ गया होगा । ”

सिद्धांत- “ यह भाषा बंद कर देना चाहिये । इसी में सारे लोग चले आते हैं । सिर्फ अंगरेजी ही एक भाषा है । बाकी सब के पास तो कुछ है नहीं । न कोई इतिहास न कोई परिष्कार । ”

श्रुति- “ ऐसा बंगला के बारे में मत कहो । बंगला में बहुत बड़ा इतिहास - परिष्कार- दर्शन-लालित्य सबकुछ है । ”

सिद्धांत - “ भोजपुरी में है , मैथिली में है , अवधी में है सभी में है । आज ये 100 साल पहले कुछ था ? यह बताओ कितनी भाषाओं को क्लासिकल भाषा का दर्जा मिला । पहले कुछ पढ़ लो , बिना मतलब की बहस । मैकाले ठीक कहा था कि भारतीय भाषायें अयोग्य हैं । पर यहाँ तो ज़िद है , हमार माता है हमार भाषा ओका हम न छोड़बै । अंगरेजी अपनाये होते आज पता नहीं कहाँ होते हम । ”

मैं - “ कहाँ होते ? ”

सिद्धांत- “ जहाँ हो वहाँ से कुछ ऊपर होते । यह स्वीकार कर लो अंग्रेज एक सुपीरियर रेस है । उनके पास बहुत दिमाग़ है । वह न आये होते तो आज तक भाला लेकर लड़ रहे होते । कभी बम्बई जाओ वीटी स्टेशन देखो , साउथ मुंबई देखो ... क्या बनाया है ... तुम्हारे इलाहाबाद का जमुना का पुल देखो कुछ बनाये उनके जाने के बाद । जबसे वह चले गये बस ईंटा जोड़ा और कुछ किया ? कोई शिल्प- शास्त्रीयता है ? बस बेवकूफ की तरह बक- बक करते रहो । , हमार देश - हमार भाषा - हमार माता ” ।

मैं “ यह भाषण रहने दो यह बताओ , यह क्लासिकल लैंग्वेज क्या होता है ? ”

सिद्धांत- “ कुछ दुनियादारी भी पढ़ो, वही सूर - कबीर- तुलसी - चन्द्रगुप्त मौर्य रट रहे हो । क्लासिकल लैंग्वेज उसको कहते हैं जिसके पास परम्परा हो , समृद्धशाली इतिहास हो , अतीत हो , एक बेहतर पुस्तकालय हो । यह कितनी भारतीय भाषाओं के साथ है । पाली , उर्दू मराठी , हिंदी ले लो ... नंबर मिल जाये । ”

राजीव सिंह - “ आप लेकर देख लो न , क्या हशर होता है ? ”

राजीव सिंह - “ मैडम इनके लिये सामान्य हिंदी ही पास करना मुश्किल है जबकि हैं यह पटना के , यह हिंदी साहित्य क्या लेंगे ? ”

मैं “ क्या हिंदी लिखने में हाथ काँपता है ? हिंदी बहुत मुश्किल है सँभालना साहित्य के स्तर पर । एक बहुत बड़ा कलेजा चाहिये । एक साधना चाहिये । नींद - विलासिता - सुरा का त्याग चाहिये । भाषा ऐसे नहीं आती , उसके लिये त्याग करना पड़ता है । यह कोई सिगरेट का छल्ला नहीं है कि मुँह में धुँआ घुमाया और बना दिया , इसके लिये भाषा से प्रेम करना होता है । दो आत्माओं- अपनी और भाषा की - से संबंध स्थापित करना होता है । जैसे एक सुगंधित एवम शीतल समीर हृदय को शांत करता है वैसे ही भाषा हृदय को शांत करती है । यह उद्विग्नता को नियंत्रित करती है और हृदय में सौन्दर्य का सूजन करती है ”

सिद्धांत- “ यह क्या कहा गया , मुझे कुछ समझ न आया । ”

श्रुति- “ छोड़ न यह सब बात , यह सब तुम्हारे लिये नहीं है । ”

मैं - “ क्या प्लान है , फिर से परीक्षा दोगे ? ”

सिद्धांत- “ परीक्षा ! रिजल्ट के अगले दिन कह दिया जिसको जो ले जाना हो ले जाओ ... अब अपना पढ़ाई से कोई मतलब नहीं । तीन दिन बाद जो बचा सब जवाहर को दे आया - सारा किताब- कापी , सब कुछ और कह दिया जिसको देना हो दे दो । मेरे कमरे में कोई एक कागज़ नहीं है । अब मेरा इस सिविल सेवा की पढ़ाई से कोई नाता नहीं । जान छूटी .. बहुत चिकचिक काम है । ”

मैं “ अब क्या करोगे ? ”

सिद्धांत- “ जिंदगी जियेंगे । और क्या करेंगे ? ”

मैं “ कैसे जियोगे ? ”

राजीव सिंह - “ रात में गंगा जल पियेंगे ? ”

सिद्धांत- “ यह सब फ़ालतू काम वेस्टलैंड वाले करें और अमरत्व प्राप्त करने की कोशिश करें । रात को रुको देखो क्या होता है ? ”

मैंने रितेश से पूछा, कोई जुगाड़ बनाया टंडन गुरु ने ?

संजीव टंडन - “ बन जायेगा । अपील करनी होगी । ”

मैं - “ वह कैसे होगा ? ”

संजीव टंडन - “ इनको डीओपीटी सेवा एलाट कर देगी अभी , इसी मेडिकल के आधार पर । इसके बाद अपील का चांस मिलेगा । उस पर मेडिकल बोर्ड बैठेगा । वह रि चेक करेगा , उसी में जुगाड़ बनेगा । ”

मैं - “ तब तो आईपीएस अभी एलाट नहीं होगा । ”

संजीव टंडन - “ भाई साहब यह वर्दी पहनने का काम कुछ दिन बाद आयेगा तब तक मेडिकल बोर्ड जुगाड़ बना देगा । फ़ाउंडेशन कोर्स में कुछ नहीं होगा । वहाँ सब ट्रेनिंग तक्रीबन एक ही है । जनवरी में जब नेशनल पुलिस एकेडमी, हैदराबाद जायेंगे तब वहाँ ख़ाकी पहन लेंगे । अभी से ख़ाकी पहन कर क्या घूमना ? ”

मैं - “ सिद्धांत का क्या होगा ? यह साँवला रंग , लंबा क़द , तीक्ष्ण नाक-नङ्कश , भारी आवाज़ , आँखों पर चश्मा... और ख़ाकी वर्दी... फिर जलवा ही जलवा ... ”

संजीव टंडन - “ यह नागपुर चलें । वहीं कल्याण होगा । ”

मैं - “ आप का क्या परोग्राम है ? ”

संजीव टंडन - “ मुझे तो आईआरएस ही चाहिये थी । वह मिल गई है । । अब और माथाफोड़ी नहीं करनी है । तुम क्या कर रहे हो । आईएस तो मुश्किल है थोड़ा, बाकी क्या भरा है ? ”

मैं - “ आईएस के बाद आईआरएस भरा है । आईएस नहीं मिली तब आईआरएस ही ज्वाइन करेंगे या फिर से परीक्षा दे । ”

संजीव टंडन - “ क्या करोगे ? ”

मैं - “ अभी सोचा नहीं । ”

यही यह लोग मिले थे आज से कुछ दिन पहले मेडिकल परीक्षा के दौरान , उस समय सब का जीवन अनिश्चित था । आज सबके जीवन को एक दिशा मिल गयी है । एक दिशा के प्राप्त हो जाने से पूरी सोच ही बदल गई है । जो कश्ती दूर- दूर तक ज़मीन तलाश रही थी लहरों से लड़ते हुये वह अब लहरों

को ही किनारों पर हौले- हौले बहने का उपदेश दे रही । जीवन से एक सामंजस्य बनता दिख रहा । हर एक के आँखों के स्वप्न एक नयी आभा पा चुके हैं । समाज - प्रदत्त गौरव निःसंदेह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है सबके लिये । जैसे मेरे घर में रौशनी चराग से नहीं मेरे सफलता समाचार से हो रही आजकल , वैसा ही इनके यहाँ भी हो रहा होगा । लिख बहुत लोग लेते हैं पर हर एक पर नज़्म मेहरबान नहीं होती पर इन सब पर है , यह इनके अंदर से निकल रहे शब्दों से ही लग रहा है । इन सबके कल्पना के उद्यान में बसंत ही बसंत है । उनके वक्षस्थल पर एक अलग तासीर लिये वायु धड़क रही । एक समाचार जीवन में कितना परिवर्तन ला देता है ।

मैं अब वापस जाना चाहता था । मुझे लगा आंटी मेरा इंतज़ार कर रही होगी । मैंने देखा कि राजीव सिंह वहाँ नहीं हैं । मैंने देखा एक दूसरी बेंच पर राजीव सिंह , स्मृति चक्रपाणि, श्रुति घोष बात कर रहे थे । मैं वहाँ गया और कहा , “ चलो चलते हैं । ”

राजीव सिंह - “ थोड़ा और रुको । यह स्मृति चक्रपाणि हैं । यह भी थीं मेडिकल के दिन । यह भजन गाती हैं । ”

मैं “ किसके ? ”

स्मृति - “ मीरा के ।

मैं - “ मीरा के ही क्यों ? मीरा ने तो लिखा कम ही है । औरों से क्या बैर ? साहित्य तो गीतों से भरा है । ”

स्मृति - “ बैर नहीं है । मीरा में एक भाव विह्वलता है । गाती सबका हूँ । ”

मैं “ और किसका ? ”

स्मृति - “ विद्यापति , तुलसी , सूर , कबीर, जायसी ”

मैं - “ आप यह कहो मैं प्रेम- गीत गाती हूँ । यह भी कह सकती हो जो दिल में उत्तर गया उसको रागों में ढाल देती हूँ । मैं जोगिनी हूँ रागों की । ”

श्रुति- “ ऐ जोगी यह पहले यह बता , प्रेम है क्या ? ”

मैं - श्रुति शाम बहुत ढल चुकी है । प्रेम और संगीत का राग छेड़ दोगी तो स्वर लहरियाँ चाँद को आमंत्रित कर देंगी और यह रात ठहर जायेगी । ”

श्रुति- “ ठहरा दो न रात आज ... किसको सुबह चाहिये ? कुछ लम्हे कर दो नाम हमारे जो हो जायें मुंजमिद हमारी शिराओं में ... ”

रास्ता पहुँचने का उस तक एक लफ़ज़ के सहारे ... जिसकी सूरत एक मीनार के बुर्ज की तरह बनी है मेरी आँखों में छल लफ़ज़ों से और बता प्रेम क्या है मीरा का प्रेम राम का प्रेम..... नहीं तो अपना ही प्रेम.... ”

स्मृति- “ श्रुति तुम बताओगी या राजीव? ”

राजीव सिंह - “यह बाँचना हमारे बस की बात नहीं है । मुझे सिफ़र सुनना है ।”

श्रुति- “ यह बतायेगा न गंगा जल आहुति जन्मना । ”

स्मृति- “ वह कौन है ? ”

राजीव सिंह - “ इतनी कड़ी हिंदी न बोलो कि ऊपर से निकल जाये । ”

श्रुति- “ अब जीना परेम में है , समझना परेम है और भाषा की सीमा है , तब क्यों परेम के समझ के प्रति आगरह है ? ”

मैं - “ श्रुति , तुम बहुत अच्छा बोलती हो । ”

श्रुति- “ यह एक दैवीय हस्तक्षेप है मैं नहीं वह बोल रहा आसमानों से उतर कर मेरे अंदर ”

मैं - “अब चलने दो मुझे ” ।

श्रुति- “ परेम व्याख्यायित करो पहले । ”

मैं - “एक सागर तरह गंभीर है परेम जो निस्तब्धता में बगैर शब्दों के व्यक्त हो जाता है अगर मानस पटल पर उसका आत्मा में समावेश हो जाये । ”

श्रुति- “ किसका समावेश ? ”

मैं - “ अब आज नहीं , कभी और करते हैं व्याख्या परेम की । ”

स्मृति- “ कभी और कब ? ”

राजीव सिंह - “ कल पर रखें ? ”

श्रुति- “एक मर्कज़ की तलाश है मेरी भटकती धड़कनों को

मंजिल का पता नहीं पर एक तम्हीदे - सफ़र तो हो ।

राजीव सिंह - “ तम्हीदे - सफ़र ” , “मर्कज़ ”

क्या है ?

श्रुति - “ यात्रा की भूमिका “और “केन्द्र ” / ”

स्मृति - “कल आओगे ? ”

राजीव सिंह का बहुत मन था रुकने का पर मैं जाना चाहता था ,आंटी -
ऋषभ- शालिनी इंतज़ार कर रहे होंगे , इसलिये मैंने रोकने के बाद भी जाने

का आगरह दिखाया । राजीव सिंह ने बगैर मुझसे पूछे कह दिया कि कल हम लोग फिर आयेंगे । सिद्धांत का समय हो रहा था रात के जशन का । वह जेएनयू के ही सामने किसी अपार्टमेंट में रहते थे । वहाँ सिर्फ़ सोते थे, बाकी समय वह जेएनयू में या संजीव टंडन के पास आईआईटी में घूमते रहते थे । मैंने उनसे कहा कि चल रहा अब । संजीव टंडन ने पूछा, कैसे जाओगे ?

तुमको बस पर बैठा देता हूँ । तिवारी इराइवर वहीं खड़ा था और बोला हम साहब की सेवा में है, कार खड़ी है । सिद्धांत बोले कार से आये हो ?

हमको छोड़ दो बाहर तक । वह रितेश से बोले तुम लोग आओ मेरे कमरे पर मैं चल रहा । मैंने सिद्धांत को एक अंगरेज़ी शराब की दुकान पर उतारा । वह ओल्ड मांक की कुछ बोतल खरीदे । मैंने उनको कमरे पर उतारते समय पूछा, इतना पी लोगे ?

वह मेरी तरफ घूर कर बोले, “ रह जाओगे पूरे पोंगा... कुछ सीखो ...

मैं “ इसका स्वाद कैसा होता है ? ”

सिद्धांत- “ कभी शहद पिया है ? ”

मैं “ हाँ ”

सिद्धांत- “ कभी शहतूत खाया है ? ”

मैं “ हाँ ”

सिद्धांत- “ दोनों को मिलाकर जो मिठास नहीं आ सकती वह इसमें है । कल आना । शाम को इंतज़ार करूँगा । ”

मैं “ क्यों इंतज़ार करोगे ? ”

सिद्धांत- “ बेवकूफ़ देखने से उम्र बढ़ती है । ”

यह कहकर बोले “ शुभ रातिर ” ।

मैं और राजीव सिंह चल दिये जुबली होस्टल की ओर । तिवारी इराइवर बोला, “ साहब इ सब जेतना बैठा रहेन सब आईएस भई ग हयेन ? ”

राजीव सिंह - “ हाँ सब हो गये । काजू और है ? ”

तिवारी - “ साहब इफराद बा । ”

एक पैकेट लेकर राजीव सिंह चालू हो गये । मुझको भी दिया ।

राजीव सिंह - “आपके मालिक के पास कितनी गाड़ी है ? ”

तिवारी - “साहेब जैसन मालिक गाड़ी खरीदत है वैसेन केउ साइकिलौ न खरीदें । जौन गाड़ी आई बाज़ार में ओका खरीद लेइहिं । बहुत शौक बा गाड़ी के । ”

राजीव सिंह - “विदेशी कार भी है ? ”

तिवारी - “का नाहीं बा इ पूछअ । का बा इ नाहीं । ”

राजीव सिंह - “कल ज़रा साहब के लिये कोई विदेशी कार लेकर आना । ”

तिवारी - “ठीक बा साहेब । काल हम सेठै के कार लेइ लेब । साहब बरे त सेठ कुछौ कर्फ देइहिं । ”

राजीव सिंह - “क्यों कर देंगे कुछ भी । ”

झराइवर तिवारी - “साहेब हम बामन हई । हम सब समझित हअ । अब साहब बडे काम के चीज होइ ग हयें । एक काम कभौं कराइ लेइहिं सब उसूल होइ जाये । फ़ोन पर अपने बिरादरी में हल्ला केहे हयें कि शालिनी के देवर आईएस होइ गवा । हक्क हमार बा कहइ के पर लूटे ओ पड़ा हयेन । ”

राजीव सिंह - “यह बात तो है । गाँव- देश के आदमी का हक्क पहला है । ”

झराइवर तिवारी - “साहेब आप जैसन मनई भगवान कम बनावत हअ । ”

जुबली होस्टल आ गया । राजीव सिंह उत्तर कर कार से गये और थोड़ी दूर चलकर वापस आ गये और कहा , “कल आना ज़र्र और जल्दी आना । तिवारी से कहा , “झराइवर साहब कल सुबह गाड़ी जल्दी लेकर आ जाना । ”

तिवारी - “साहेब हम गाड़ी सुबहै- सुबह लगाइ देब । साहब इ काजू के पैकेट लेहे जा , काल हम और बढ़िया सामान रखवाय लेब साहबन के बरे । ”

राजीव सिंह काजू भकोसते चल दिये जुबली की सीढ़ियों की तरफ । उनकी कल की व्यग्रता मुझे समझ न आई ।

कार चल दी आंटी की तरफ रात थोड़ी हो गई थी आंटी इंतज़ार में होगी मेरे

मैंने जैसे ही बाहर के लान के गेट का दरवाजा खोला वह गेट की तरफ आ गई । वह बोली हर खटके पर मैं तेरी राह देखने लगती थी ।

तेरे बगौर मेरा मन नहीं लगता

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 154

आंटी ने पूछा , “ कहाँ इतनी देर हो गयी ? ”

मैंने आंटी को पूरे दिन की दिनचर्या बताई । आंटी ने कहा , “ इस बार मुझको तुम्हारा समय ही नहीं मिला , इतने लोग तुम्हें अब चाहने वाले हो गये हैं । तुम पिछली बार आये थे तब एक नायक बनने की प्रक्रिया में थे और इस बार एक नायकत्व प्राप्त कर चुके हो । इतने छोटे से अंतराल में कितना कुछ बदल जाता है । यह समाज बहुत तीव्र गति से अपनी धारणायें बदलता है । इस समाज के लिये सफलता ही सबसे आवश्यक वस्तु है वंदना करने के लिये । चिंतन भी आये थे , इंतज़ार करके चले गये । शालिनी- ऋषभ भी राह तुम्हारी देख रहे थे , अभी- अभी थोड़ी देर पहले गये हैं । ”

मेरे पास आंटी की बातों का कोई जवाब न था । वह सब कुछ सही ही कह रही थी । मुझे थोड़ी आत्मगलानि भी हुई और मन ही मन कहा मुझे थोड़ा पहले आना चाहिये था ।

मैंने पूछा आंटी से “ कुछ ख़ास बात .. कोई वजह मेरे इंतज़ार की ? मुझे नहीं पता था वह लोग इंतज़ार कर रहे हैं , अन्यथा मैं पहले ही आ जाता । ”

आंटी - “ पता नहीं ... कुछ ख़ास क्या होगा ? बात करना चाह रहे होंगे शालिनी को न्यूयार्क की हिंदी समिति पर कुछ सलाह की चाहत हो सकती है ... । कह रहे थे आहूजा साहब भी मिलना चाह रहे । तुम एकाएक बहुत माँग में आ गये हो और माँ को समय तो मिल ही नहीं रहा । ”

मैं - “ आंटी आहूजा साहब से मिलना ज़रूरी है ? ”

आंटी - “ बेटा वह ऋषभ की ससुराल है , शालिनी का मायका है । ऋषभ ने कैसे उस समय कहा था मेरा -अनुराग -शालिनी का अब कुछ बँटा थोड़े रह गया है , जो मेरा है , शालिनी का है वह अनुराग का भी है । उसने कितने अपनत्व से कहा था । अब तुम नहीं जाओगे तब ठीक रहेगा ? तुम खुद ही बहुत समझदार हो , मुझको इस पर क्या कहना । ”

मैं - “ आप भी चलना जब मैं जाऊँगा मिलने आहूजा साहब से । ”

आंटी - “ अब समधियाने में समधन का जाना बहुत अच्छा नहीं होता । ”

मैं - “ क्यों ? ”

आंटी - “ हम बचपन से यही सुनते - देखते आये हैं । यही एक संस्कार की तरह सिखाया गया है, हलाँकि अब वह बात नहीं रही, बहुत समय बदल गया है फिर भी बेवजह क्या जायें । मैं बात भी क्या करूँगी उन लोगों से । ”

मैं - “ आप चलना । बात करने का काम मैं संभाल लूँगा । वह तो पूछना ही है कि जब चिंतन सर के आदमी गये थे तब वह किस तरह भागे थे । ”

आंटी - “ वह बात संभाल कर पूछना, ऐसा न हो कि उनको लग जाये कि तुम मज़ाक़ कर रहे हो । ”

मैं - “ आंटी आप चिंता न करो । बहुत रस ले- लेकर पूछूगा । बस आप हँसना मत । ”

आंटी - “ खाना खाया है ? ”

मैं - “ खाया तो नहीं है पर भूख नहीं है । ”

आंटी - “ ऐसे कैसे सो जाओगे । खाना बना हूँ, चपाती ही तो बनानी है, मैंने सोचा था तुम आओगे तब बनाऊँगी । अभी बनाती हूँ । ”

आंटी ने खाना बनाया । मेरे साथ बैठी रही

जब तक मैं खाता रहा । खाने के बाद पूछा, “ अनुराग नींद आ रही है ? ”

मैं - “ नहीं आंटी ” ।

आंटी - “ आओ लान में बैठते हैं । ”

मैं और आंटी लान में बैठ गये । आंटी ने पूछा, “ अनुराग तुम्हारे विवाह की तो चर्चा पूरे शहर में होगी ही ? तुम इतनी बड़ी परीक्षा बेहतर रैंक से उत्तीर्ण किये हो । हर प्रभावशाली व्यक्ति उस समय से साक्षात्कार करना चाहेगा ज़ब उसकी कन्या तुम्हारे साथ अग्नि के फेरे ले रही हो और वह गर्व से पाँव पूजने की रस्म को संपादित करे । वैसे ही यह बहुत ही गौरवपूर्ण क्षण होता है किसी भी माता- पिता के लिये पर अगर कन्या एक योग्य हाथों में सौंपी जाये तब विदाई के समय गिरने वाले आँसुओं की तासीर कुछ और ही होती है । जो समाज की मान्यता है उसको देखते हुये तुम शहर के योग्यतम व्यक्ति हो किसी भी कन्या के वरण- समर्पण के लिये । मेरी बहुत आकंक्षा है तुम्हारा विवाह देखने की । उमिला भी उत्साहित होगी । कौन- कौन आया था प्रस्ताव लेकर ? कोई पसंद आया ? ”

मैं “ आंटी , यह विवाह का प्रश्न अभी थोड़ा दूर ही है । जो लोग आ रहे हैं न तो वह हमारे लायक हैं और न उनकी कन्या ही होगी । एक अनमेल विवाह दो व्यक्तियों के ही बीच ही नहीं होता , यह दो परिवेशों के बीच भी होता है । एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार के लड़के के साथ अनमेल-संबंध स्थापना की संभावना बहुत होती है , इतनी बड़ी सफलता के बाद । हमारा जीवन , रहन-सहन अति साधारण है । एक धनाढ़य वर्ग की कन्या या एक प्रभावशाली परिवार- जन्मना शायद मेरे लिये उपयोगी हो भी जाये पर मेरे परिवार और संस्कार से वह सामंजस्य नहीं बैठा सकती । आपने और माँ ने अपने सारे सत्कर्मों को मेरे नाम कर दिया और उसका परिणाम है यह दिविजय , नहीं तो ऐसा कुछ मेरे में न न था कि असीमता का आशीर्वाद मुझको प्राप्त होता । अब ऐसे फ़ैसला के होने का भय सताता ही है जो मेरे व्यक्तिगत हित में तो शायद हो पर परिवार के हित में न हो । मेरी अपनी संवेदनशीलता ही मुझसे कहती है , अपने व्यक्तिगत भौतिक सुख के साथ-साथ एक अपराध-बोध से बचने का प्रयास करना अन्यथा वह तेरे वक्षस्थल पर तेरे साँसों के साथ प्रतिदिन उफनता - उभरता रहेगा और तू निस्तब्ध रातों में एक आतंरिक झङ्घावात के साथ ही जीवन जीने के लिये शापित हो जायेगा । आपने माँ को एक चिट्ठी लिखी थी । उस चिट्ठी के बाद माँ के हौसले पस्त हो गये हैं । ”

आंटी - “ कौन सी चिट्ठी ?”

मैं “ जिसमें आपने कहा था , ऐसा विवाह करना अनुराग का कि लड़का अपना अपने पास रह सके । ”

आंटी - “ वह तो एक सलाह की तरह की बात थी , मैंने यूँ ही लिखा था । मेरा कोई भय उत्पन्न करने का मंतव्य न था । ”

मैं “ एक इलाहाबाद के कमिशनर हैं जिनके मातहत में मेरे सर्वेश मामा काम करते हैं । मामा बहुत प्रयास कर रहे उस विवाह के लिये । माँ और मामा की लड़ाई भी हो गयी थी , उस विवाह को लेकर । कमिशनर साहब से मेरे गुरु सत्य प्रकाश मिश्र सर ने मेरी तारीफ़ कर दी है । उनके प्रशंसा के शब्द उनके कानों में उद्घोषित होते रहते हैं और वह एक सशक्त आग्रही हैं विवाह के । मेरी माँ ने आपके पत्र के बाद वह विवाह अस्वीकार कर दिया पर एक मातहत मामा के अंदर सवार है और वह किसी भी हालत में यह संबंध कराना चाहता है । इसके अलावा जितने भी शहर के मानिंद ब्राह्मण हैं वह अपनी कन्याओं के लिये आये ही हैं । सर्वेश मामा के एक साले हैं हरिकेश मामा वह भी बहुत प्रयासरत हैं मेरे नाना के माध्यम से । पर यह सब मुझसे विवाह नहीं करना चाहते बल्कि उस व्यक्ति से करना चाहते हैं जिसका नाम कुछ दिन पहले समाचार पत्र में छप गया है । मेरे अंदर ऐसा क्या है कि कोई मुझे अपनी कन्या देने के लिये इतना इच्छुक हो जाये कि सत्कर्मों के संचय के लिये तीर्थयात्रा की ओर निकल पड़े । आंटी यह इलाहाबाद का जो एक

विवाह बाज़ार है वह एक सट्टा बाज़ार की तरह खुल जाता है रिजल्ट आते ही / राजा जनक ने राम के प्रति भी वह आग्रह न दिखाया होगा सीता-राम परिणय के लिये जो यह नव- धनाढ़य वर्ग दिखाता है पेपर में छपे नामों के लिये । “

आंटी - “ ऐसा कुछ क्यों नहीं है तुम्हें ? एक प्रतिष्ठित परिवार है , तुम्हारी अपनी खूबियाँ हैं । तुम्हारे बाबा- नाना का नाम है । ”

मैं - “ आंटी , मेरे नाना ने एकाध साल पहले इन्हीं हरिकेश मामा से कहा था कि तुम उर्मिला के बेटे से अपनी बेटी का विवाह कर दो । आप तो जानती ही हो कि नाना की बात का कितना मान है इलाके में पर इन्होंने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था । अब आज स्थितियाँ बदल गयीं हैं । इस बदली हुई स्थिति के लिये ज़िम्मेदारी तो इस परीक्षा के परिणाम की ही है । ”

आंटी - “ किसी से तो विवाह करना ही होगा । लड़की तो अच्छी होना ही चाहिये , कम से कम बौद्धिकता का एक सामंजस्य तो आवश्यक है एक बेहतर जीवन के लिये । तुम्हारे मस्तिष्क में कोई हो तो बात अलग है । ”

मैं - “ कुछ व्यक्तियों को सुविधायें परिवेश के साथ मिलती हैं और कुछ को अपंगता । व्यक्ति को देश- काल- परिस्थिति का ध्यान रखकर निर्णय करना चाहिये । मैं किसी अनावश्यक करान्ति के लिये प्रस्तुत नहीं हूँ । ”

आंटी - “ तुम प्रेम विवाह को एक सिरे नकार रहे हो । ”

मैं - “ तकरीबन । ”

आंटी - “ तुम्हारा आज तक किसी से प्रेम हुआ है ? ”

मैं - “ यह प्रेम महानगरों की वस्तु है , इलाहाबाद के संस्कारों में इसकी स्वीकार्यता कम है , आप जिस प्रेम की ओर इशारा कर रहीं हैं । यहाँ आप एक लड़कियों के कालेज के बाहर खड़े हो जाओ तो पुलिस मुर्गा बना देती है । अब ऐसा प्रेम कौन करे, जहाँ सरेआम मुर्गा बनने का भय हो । प्रेम को पल्लवित होने के लिये जो एक उर्वर भूमि और अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है , इलाहाबाद में उसका अभाव है । मेरे जानने वालों में भी किसी का प्रेम मैंने नहीं सुना । एक पक्षीय स्वप्न केन्द्रित आकांक्षा की बात अलग है वह तो हर युवक- युवती का मौलिक अधिकार है पर वह एक परिणामहीन चाहत है , उसमें किसी पारस्परिकता का कोई अंश नहीं होता । दिल्ली के लड़के उसको “FOSALA ” कहते हैं । ”

आंटी - “ यह “ FOSALA ” क्या है ? ”

मैं - *Frustrated one sided love affair* “

आंटी - “ तुम्हारा प्रेम में कोई यकीन नहीं है ? ”

मैं - “ मैंने यह कब कहा आंटी कि मेरा प्रेम में कोई यकीन नहीं है ? प्रेम के बिना जीवन अपूर्ण है , जीवन व्यर्थ है । प्रेम जीवन की प्राण- वायु है । एक सात्त्विक- समर्पित प्रेम की प्राप्ति ईश्वर का वरदान है । मैंने सिर्फ़ अपने व्यक्तिगत जीवन और शहर की मान्यताओं की बात की है । मैं तो प्रेम का ही लेखक हूँ , मेरी मान्यताओं , मेरे जीवन से प्रेम जनित स्वप्न निकाल दो मेरे कलम की स्याही ही सूख जायेगी । ”

आंटी - “ तुम्हारा पहला प्रेम किससे है ? ”

मैं - “ आंटी , मैं समझा नहीं । ”

आंटी - “ तुमने सबसे अधिक प्रेम किससे किया .. माँ ... पिता ... बाबा ... बहन .. भाई .. मित्र.. माँ ... या कोई और । ”

मैं - “ इसमें से कोई नहीं । ”

आंटी - “ माँ भी नहीं ? ”

मैं - “ नहीं । ”

आंटी - “ कौन है वह ? ”

मैं - “ मैं स्वयम हूँ । मैंने जितना प्रेम अपने आप से किया उतना किसी से न किया न कर सकता हूँ । ”

आंटी शांत हो गयी । वह बोली , तेरी बातें बहुत भरमाती हैं ।

मैं - “ आंटी , आज प्रेम का ही आग्रह है । मैं जेन्यू में था मेरे साथ वाले लोग यही बात कर रहे थे और आप भी यही बात करीब- करीब कर रही हो । ”

आंटी - “ अनुराग , मैंने पूरे जीवन किसी से इस तरह बात नहीं किया जैसे तुमसे करती हूँ , यहाँ तक अपने पति और अपने बेटे से भी नहीं । यह हो सकता है वह दोनों विज्ञान के विद्यार्थी थे इसलिये इतना मनन- चिंतन इन विषयों पर उनका न रहा हो । वह सूत्र- समीकरण में अधिक व्यस्त रहने वाले लोग रहे हों और जीवन के इस मानवीय आयाम से निस्पृह रहे हों । जब से मैं तुम्हारे संपर्क में आयी हूँ मेरी आस्था गैर विज्ञान के विषयों के प्रति और बढ़ गयी है और मुझे यह लगने लगा है कि विज्ञान के साथ ह्यूमिनिटीस अवश्य पढ़ना चाहिये , एक बेहतर संवेदनशीलता के लिये । मैं एक संवेदनशीलता जीवन के बहुआयामी दृष्टिकोण के प्रति , और एक लगनशील आग्रह जीवन को समझने का तुम्हारे आंतरिक हृदय -सिंधु में जो देखती हूँ , वह मुझे विरले ही मिलता है । ”

मैं “ आंटी मैंने जीवन में दुःख- अभाव - परेशानी - तकलीफ़ अपनी उतनी नहीं देखी हैं जितनी औरों की देखी है । मैं गाँव जाता हूँ हृदय आदर हो जाता है । यह लगने लगता है जगत वाक़ई मिथ्या है । न्याय असंभव है । आँसुओं को बहना ही है , एक आँख में बंद होगा अश्व-स्त्राव तब दूसरे में आरंभ हो जायेगा । ”

आंटी - “ यह बताओ , एक साथ एक व्यक्ति से ही प्रेम हो सकता है या एक से अधिक से भी । ”

मैं “ आंटी रहने दे न यह बात । पूरी रात इसी में तू बिता देगी । यह बता तूने कभी किसी किताब का विमोचन देखा है ? ”

आंटी - “ नहीं पहले यह बताओ ?

मैं “ आंटी तू प्रश्न पर प्रति- प्रश्न, उप- प्रश्न, पूरक - संपूरक प्रश्न नहीं करेगी तब ही मैं बताऊँगा ।

आंटी - “ तुम तसल्ली से बता दो मैं क्यों करूँगी ? ”

मैं आंटी यह प्रेम एक व्यक्ति से ही हो सकता है , यह नायक- नायिका के प्रेम की सीमित व्याख्या से संचालित है । जबकि प्रेम असीम है , अनंत है , सर्वव्यापी है । यह पिता - पुत्री, माँ- बेटे , भाई- भाई , मालिक - नौकर , शासक- शासित, अध्यापक- छात्र.... आदि-आदि विविध रूपों में हो सकता है और एक साथ होने में कोई समस्या भी नहीं है । मैं तो यह कहता हूँ यह कई स्तरों पर होता ही है । प्रेम पात्रता देखकर स्वयमेव जगिरत हो जाता है । मेरा पता नहीं कितने मेरे अपने अध्यापकों से प्रेम है जिसका शायद उन्हें आभास नहीं है । यह प्रेम सम्मान- जनित भी होता है , अनुराग- जनित भी होता है । यह नाशवान भी होता है और अविनाशी भी होता है । यह ब्रह्म की तरह एक सम्पूर्ण व्याख्या से परे है । इसकी व्याख्या का प्रयास अवश्य किया जाता है पर हर प्रयास के बाद निष्कर्ष यही निकलता है कि यह पूरी तरह से व्याख्यायित नहीं हुआ । जिस तरह राम की हर वंदना अपूर्ण होती है दूसरी वंदना के लिये उसी तरह प्रेम की हर व्याख्या अपूर्ण होती है प्रेम की एक और व्याख्या के लिये ।

दो व्यक्तियों के मध्य ही प्रेम दो स्तरों पर हो सकता है , मसलन मेरे और आपके में प्रेम मातृत्व- पुत्रवत ऐसा है तो हिंदी भाषा हमारे आपके बीच एक दूसरे प्रेम की स्थापना करती है । मेरे और मेरे अध्यापक के मध्य एक ज्ञानदाता और ज्ञानग्राही का प्रेम है तो पिता- पुत्र या भाई- भाई सदृश प्रेम है ।

परेम बहुआयामी है , बहुदर्शी है , बहुविध है ... शब्द कम पड़ जायेंगे इसको व्याख्यायित करने में । परेम ही परेम है जीवन में । यह एक साथ जगत में बहुतों से हो सकता है और होता भी है । “

आंटी - “ बस एक सवाल और परेम की दैहिक सीमायें कितनी हैं? ”

मैं - “आंटी यह जेएनयू के लड़के- लड़कियों को पूछने दे । तू ही सब पूछ मारेगी ? ”

आंटी - “ क्यों तुम उनको बताओगे और मुझको नहीं? ”

मैं - “ देवी उर्मिला को पता लग जाये कि आप उनके बेटे से क्या- क्या बात करती हैं तो वह तो मूर्छित ही हो जायेगी । ”

आंटी - “ अच्छा चलो अभी मत बताओ , अब बताओ क्या होता है यह विमोचन । ”

मैं - “ कोई लेखक किताब लिखता है । उसके बाद वह किताब छापी जाती है । छपने के बाद एक बड़ा जलसा होता है जिसमें किताब लोगों के बीच लायी जाती है । लेखक और उसके शुभचिंतक उस किताब के बारे में उपस्थित लोगों को बताते हैं और किताब कैसी भी हो अच्छा-अच्छा ही बोलते हैं । ”

आंटी - “ यह तुम कर रहे हो ? ”

मैं - “आंटी यह काम साधन संपन्न लोग करते हैं । मैं कहाँ उस श्रेणी में आता हूँ । मैं अगर लिख भी लूँ तो छापेगा कौन ? ”

आंटी - “ फिर तुम किसकी किताब की बात कर रहे हो ? ”

मैं - “ इलाहाबाद के कमिशनर एक किताब लिख रहे हैं या लिख लिये हैं । उनकी किताब की पर्सफ़ रीडिंग शायद मुझको करनी पड़े । उस किताब का विमोचन उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रमाकान्त शास्त्री करेंगे । तुम आना । तुमको बहुत अच्छा लगेगा । ”

आंटी - “ अच्छा लिखते हैं कमिशनर? ”

मैं - “ आंटी कमिशनर हैं अच्छा ही लिखेंगे । कौन कहेगा आप अच्छा नहीं लिखते । बड़ा मज़मा होगा , लोग होंगे । आप भी देखना । ”

आंटी - “ कब होगा ? ”

मैं - “ तारीख नहीं पता ? ”

आंटी - “ हमको अंदर जाने देंगे ? ”

मैं - “ अरे आंटी ... आप भी .. आपका बेटा किताब को ठीक करेगा , सुधारेगा उनका लेखन , पर्सफ़ रीडिंग करेगा । दो साल से नहीं छाप पा रहे । सत्य

प्रकाश मिश्रा सर ने कहा अनुराग से कुछ मदद ले लो । मैंने सर के घर में ही ठीक कर दी थी कुछ कवितायें । वह बहुत व्यस्त मानव हैं आंटी, वह मेरे बगौर किताब नहीं छाप पायेंगे । एक तीव्र आकांक्षा अपने बहन के विवाह की भी है, क्या पता तू उनकी कल रिश्तेदार भी हो जाये, विधि का विधान कौन जानता है । “

आंटी - “ तुम अभी कह रहे थे कि “ ना “ कह दिया है उनको । “

मैं अभी “ना” कहा है, आगे भवितव्य कौन जानता है । जीवन कई बार असंभावनाओं के गर्भ से संभावना का जन्म करा देता है । “

आंटी भावुक हो गयी । वह बोली, “अनुराग तुम भी लिखना किताब, तुम भी करना विमोचन । मैं जीवित रही तब उसमें आऊँगी । “

मैं - “ आंटी, इसमें आओ ना । बहुत अच्छा लगेगा । आप शालिनी - ऋषभ को भी ले आओ । वह भी एक दुनिया देखेंगे । मेरी माँ चार उपदेश भी ठीक देगी इन दोनों को, जो आप नहीं दे पाओगे । ”

आंटी हँसने लगी । वह बोली, उर्मिला ऐसी औरत कम बनती हैं, भयहीन-तृष्णारहित - आत्मसम्मानी ।

मैं - “ आंटी, जितने में तीन - चार अधिनायक बन सकते थे, उतने में ईश्वर ने एक बना दिया । अरे परमात्मा और घरों का उद्घार करते । एक ही घर में भेज दिया । आप उसके मन का दस काम करो और एक काम न करो मन का तब आपने उसके मन का ग्यारह काम नहीं किया है । हे काली माँ, हे दुर्ग न्याय का सिद्धांत कहता है कि दस काम ठीक किया है उसका तो कोई ज़िकर हो ... नहीं वह विस्मृत हो जायेगा और बस ग्यारहवाँ... चलो एक काम नहीं हुआ एक दिन हल्ला कर लो .. दो दिन कर लो पर नहीं आज से तीन महीने बाद भी उसी का ज़िकर... वह शनि शांति का व्रत करती है । मैंने कहा एक दिन, तू बेकार व्रत करती है । पता कर शनि स्वर्यं उर्मिला शांति का व्रत करता होगा । उसका जमाने में अस्तित्व बरकरार है जब तक तुझसे भिड़ा नहीं है, जिस दिन भिड़ जायेगा उस दिन उसकी सदियों से फैलायी माया धूल- धूसरित हो जायेगी और यह रोड के सब्ज़ीवाले शनि मंदिर तोड़कर वहाँ आलू का गोदाम बना देंगे और शनि ग्रह के बकर दृष्टि की संकल्पना इतिहास की वस्तु बन जायेगी । ”

आंटी - “ यह तुमने कहा उससे ? “

मैं - “ इतनी हिम्मत मेरी कि मैं इस तरह कहूँ, कुछ घुमा- फिरा कर कह दिया । ?

आंटी - “ इलाहाबाद तो बहुत बदल गया होगा ? ”

मैं - “ कुछ ख़ास नहीं । बस वैसा ही है । थोड़ा भीड़भाड़ बढ़ गई है । ”

आंटी - “ और गाँव । ”

मैं - “ गाँव में कुछ ख़ास नहीं बदला । बस कुछ सड़कें बन गयीं हैं । बिजली के कुछ तार खिंच गये हैं पर बिजली आती कम ही है । अभी भी गाँव के बाहर की ही सड़कें ज्यादा बनीं हैं । गाँव के अंदर की सड़कें कम ही बनीं हैं । बरसात के समय बहुत दिक्कत होती है । गाँवों में पानी बाहर निकालने का कुछ ख़ास प्रयास नहीं किया गया है । बहुत कीचड़ हो जाता है बरसात के समय । ”

आंटी - “ अनुराग एक बार मेरे ससुराल भी हो आना । मैं गई ही नहीं कभी । जब ऋषभ के पिता का देहान्त हुआ था तब वह सब लोग आये थे । मुझसे कहा गाँव चलो वहीं रहो । मैं गाँव जाकर क्या करती ? बच्चा छोटा था , इसका पूरा भविष्य दाँव पर लगा था । यहाँ नौकरी मिलने की उम्मीद थी । मैं चली जाती तब क्या होता यहाँ पर । एक बार गयी थी , मुझसे बेहतर बर्ताव न किया गया । एक कम उम्र की विधवा के जीवन पर लांछन लगाना आसान होता है , वही प्रयास किया गया । यह भी हो सकता है कि उनको लग रहा होगा कि यह जमीन - जायदाद माँगेगी , इसलिये इससे छुटकारा पा लेना बेहतर है । तुम जाना इस बार । ”

मैं - “ ज़रूर जाऊँगा आंटी । ”

रात बहुत हो गयी थी । हम लोग सो गये । सुबह आंटी चाय लेकर आई । वह जल्दी ही उठती थी । सात बजे ही ऋषभ आ गये । इतनी जल्दी वह कभी आते न थे । उन्होंने मुझसे कहा , “ अनुराग मुझे तुमसे कुछ बात करनी है । तुम्हें मेरी मदद करनी होगी । ”

मैं - “ मैं किसी लायक हूँ मदद करने के यह मेरी खुशकिस्मती है । आप आदेश करो । ”

ऋषभ ने जो सहायता माँगी , मैं सुनकर आवाक रह गया ।

यह आंटी की पूजा का समय था । वह इस समय कोई भी व्यतिकरम नहीं चाहती थी । वह चाय देकर पूजा में लीन हो गई । ऋषभ उसी समय आये , वह अकेले ही आये थे उनके साथ शालिनी न थी । ऋषभ बहुत ही स्पष्ट बात करने के पक्षधर थे । वह कोई भी बात बग़ैर भूमिका के करते थे । यह शायद मेधावी लोगों के अंदर की एक ख़ास बात हो या गणित - कम्प्यूटर- विज्ञान के जहीन लोगों की । उन्होंने आते ही स्पष्ट तौर पर कहा .. ” मुझे तुम्हारी मदद चाहिये । “

मैं - “ यह बहुत सौभाग्य होगा मेरा , अगर मैं किसी तरह आपके काम आ सकूँ । आंटी से मेरा जो भी संबंध विकसित हुआ है वह नया अवश्य है पर उसमें आत्मीयता ही आत्मीयता है । उसके बहुत इहसान हैं मुझ पर । अगर मैं कुछ तुम्हारे लिये कर सका तब आंटी को भी बहुत प्रसन्नता होगी और मुझे उसके प्रसन्नताओं की बहुत कीमत है । “

मेरे इस उत्तर से ऋषभ के चेहरे पर संतोष के भाव देखे जा सकते थे । वह जो सोच कर आये थे वह उनको संपूर्णता की ओर जाता दिख रहा था । एक हल्की सी आशा कपोलों को गुलाब- रंजित कर देती है । मुझे वह रंजन दिखने लगा ।

ऋषभ - “ तुमको माँ की जिम्मेदारी लेनी होगी ? “

मैं - “ उनको किसी की क्या आवश्यकता? वह कई को खुद पाल सकती हैं । उन्होंने आपको यहाँ तक पहुँचाया , मेरे मार्ग के बाधा - हनन की प्रक्रिया में सहायक रहीं हैं । ऐसी तेजस्वी महिला पहाड़ों को चीर कर मेरे लिये रास्ता बना देगी । अभी उसकी अपनी भुजाओं में इतनी शक्ति है कि वह मुझे सहारा दे दे , मेरे बाजुओं में वह शक्ति नहीं है कि मैं इसको सहारा दे सकूँ और इसको सहारा चाहिये क्यों ? “

ऋषभ - “ मैं आज की बात नहीं कर रहा । “

मैं - “ कब की कर रहे हो ? “

ऋषभ - “ आज से 10/15 साल बाद की । जब यह और वृद्ध होंगी । उम्र की गणना सतायेगी और एक सहारे की आवश्यकता होगी । “

मैं - “ आप हो , शालिनी है ... आप का पूरा साम्राज्य है ... आपका यश- गौरव है ... एक बड़ा साम्राज्य विरासत का है और निःसंदेह उससे बड़ा साम्राज्य निर्माणाधीन है । अब इतने बड़े साम्राज्य के स्वामी की माँ मुझ अकिञ्चन के रहमोकरम की आकांक्षी हो जाये यह तो स्वप्न- कल्पित भी नहीं है । पर मेरी सेवा का लाभ उसे मिले इससे बड़ा बैकुंठ मेरे लिये और क्या हो सकता है ? “

ऋषभ- “ अनुराग एक बड़ा फैसला हमारे जीवन में आ रहा । यह मैं सिफ्ट तुमसे अभी साझा कर रहा । माँ से मत कहना अभी । उसको समय देखकर बताएँगे ।

हमारा काम अमेरिका में बहुत तीव्र गति से बढ़

रहा है और बहुत ही शीघ्र हम और देशों में विस्तारित होंगे । यूरोप में हमारे उत्पाद की माँग आ रही है और कई एजेंट हम लोगों ने वहाँ नियुक्त कर दिये हैं जो कह रहे शीघ्र ही हम मार्केट लीडर की दौड़ में शामिल हो जायेंगे । एक इतिहास निर्मित होने की ओर है । हम अमेरिका में बसने की प्रक्रिया में हैं, ग्रीन कार्ड प्राप्त शीघ्र ही हो जायेगा । भारत से संबंध अब कुछ खास नहीं रह जायेगा । मेरा भारत आना अब बहुत आसान न होगा पर माँ की देखभाल करनी ही है । तुम इस ज़िम्मेदारी को अगर ले लो, मुझे बहुत संतोष होगा । ”

मैं- “ इस प्रस्ताव में एक संतोष की तलाश मात्र है या वाक़ई एक ज़िम्मेदारी का भाव है ? ”

ऋषभ - “ माँ है वह मेरी, उसकी ज़िम्मेदारी मेरी ज़िम्मेदारी है । मेरा देश में वापस आना संभव नहीं । वह विदेश जाकर रहेगी नहीं । अब कुछ तो करना होगा ? तुमसे वह बहुत नज़दीक है । उसकी आत्मा को बहुत शांति मिलती है जब तुम नज़दीक होते हो । यह मैंने पिछले कुछ दिनों में अनुभव किया है । शालिनी ने भी कहा कि अनुराग सबसे उचित होंगे माँ का ख़्याल रखने के लिये .”

मैं- “ आप चाह रहे हो कि मैं आंटी की ज़िम्मेदारी लूँ ? ”

ऋषभ - “ हाँ ” ।

मैं- “ आप मुझसे से क्या चाहते हैं, किस तरह की ज़िम्मेदारी ? ”

ऋषभ- “ जिस तरह की भी माँ की ज़रूरत हो । ”

मैं- “ जैसे ? ”

ऋषभ - “ हर एक की ज़रूरतें होती ही हैं, स्वास्थ्य की, जीवन की तमाम छोटी - मोटी बातें ”

मैं - “ उनकी ज़रूरतों का फैसला कौन करेगा ? क्या उनसे इस बात की इजाज़त ली है कि मैं तुझे किसी को सौंप रहा हूँ ? क्या वह एक वस्तु है जिसको किसी को सौंप दिया जाये ? माँ के गर्भ से किसी के जन्म का निर्णय माँ की इच्छा पर है और वह एक जीव वैज्ञानिक प्रक्रिया का निर्धारण

करती है जिससे उसकी भावनाओं के आवेग को एक आनंद की प्राप्ति हो और सुष्टि का विकास हो ।“

ऋषभ - “ वह स्वयम् यह फ़ैसला करेगी , अपनी आवश्यकताओं का । वह कोई वस्तु नहीं है , यह मैं जानता हूँ । वह किस तरह प्रसन्न रहेगी यह जान- समझकर मैंने तुमसे अनुरोध किया है । यह एक पूर्णतया विचारित निर्णय है , इसमें भावावेश का पुट नहीं है ।”

मैं - “ उनके फ़ैसले पर उचित- अनुचित का निर्णय कौन करेगा ? जब व्यक्ति उम्र- दराज़ होने लगता है , वृद्धावस्था जब अपना साम्राज्य व्यक्ति के विवेक पर विस्तारित करने लगती है तब व्यक्ति का नीर- क्षीर विवेक लोपित होना आरंभ हो जाता है और एक समय ऐसा भी आता है जब वह व्यक्ति कोई निर्णय नहीं कर पाता । उस समय निर्णय कौन लेगा ? ”

ऋषभ - “ तुम लोगे ? ”

मैं - “ किस अधिकार से ? ”

ऋषभ- “ एक पुत्र के अधिकार से ? ”

मैं - “ वह तो मैं हूँ नहीं । ”

ऋषभ - “ तुम उसके पुत्र सदृश हो । ”

मैं - “ सदृश होना और पुत्र होना एक बहुत बड़ा अंतराल रखता है । ”

ऋषभ - “ उसके लिये कोई अंतर नहीं हमारे - तुम्हारे में । ”

मैं - “ आप उससे यह प्रश्न करके देख लो , पुत्र में और पुत्र सदृश में क्या फ़र्क़ होता है ? ”

ऋषभ- “ मैं उसको इस मुद्दे पर समझा दूँगा । ”

मैं - “ ऋषभ एक बात मैं कहूँगा आप अपनी माँ को कम जानते हो । उसको समझाना किसी आम व्यक्ति के बस की बात नहीं है , कम से कम हमारे - तुम्हारे बस की बात तो बिल्कुल नहीं है । ज्ञान कम हो सकता है पर विवेक एवम् तर्क की खान है वह । तुम्हें पता है मैं आंटी से कैसे मिला ? अपने स्वार्थ के कारण मिला । मैं अगर मेंस पास करके इंटरव्यू देने दिल्ली न आता तब मेरा और आंटी का कोई संबंध विकसित ही न होता । मेरी माँ और आंटी दोनों का विवाह 25-27 साल पहले हुआ । इन 25-27 सालों में यह लोग कभी न मिले । जो भी समाचार एक - दूसरे के बारे में जाना वह पत्र के माध्यम से जाना । अब यह गाँव की परम्परा और संस्कृति है कि एक लुप्त-प्राय से संबंध में ऐसा विश्वास था मुझे आसरा दिल्ली में प्रदान करने का जो आज के दौर के जीवंत संबंधों में भी शायद न हो । इस मेरे स्वार्थ की बुनियाद

पर बने संबंध पर तुम्हारी इतनी आस्था है यह बहुत सुखद आश्चर्य मुझे दे रही और साथ ही यह दो बातें स्पष्ट रूप से बयाँ कर रही- पहली , तुम लोगों पर विश्वास बहुत तीव्र करते हो । पर यह मैं मान नहीं सकता कि इतनी जल्दी किसी पर विश्वास कर सकते हैं आप । दूसरा , अपनी ज़िम्मेदारियाँ आप किसी और को सौंप कर संतोष की प्राप्ति

करना चाह रहे , यह अपनी ज़िम्मेदारी से मुँह मोड़ना भी कहा जा सकता है । दूसरी बात मुझे अधिक उपयुक्त लगती है । एक बात और बताइये आप वह मैं आपके बगैर कहे कह देता हूँ , “ मैं तुमको इस सेवा के लिये क्रीमत दूँगा । ”

ऋषभ -“ यह मैं न कहता । मैं जानता हूँ यह बात आपको अच्छी न लगती । ”
मैं “ चलो बता ही दें । मैं निर्लज्ज होकर , नैतिकताविहीन होकर पूछ रहा , कितनी क्रीमत आपने लगाई है मेरी ? ”

ऋषभ -“ वह बड़ा मुद्दा नहीं है । ”

मैं “ आंटी जब अशक्त होंगी , कमजोर होंगी , निर्णय नहीं ले पायेगी तब मुझे ही इनके बैंक , पैसे , संपदा का ख्याल रखना होगा । तुम जिस तरह पैसा भेज रहे वह शीघ्र ही एक बड़े धन के रूप में प्रवर्तित होगा । ”

ऋषभ - “ हाँ सारे फ़ैसले तुमको ही लेने होंगे । और पैसा काफ़ी होगा इसमें कोई दो राय नहीं है । ”

मैं “ ऋषभ जी मैं एक दरिदर सा व्यक्ति हूँ । मैं पाँच सौ रुपया लेकर दिल्ली आया हूँ । हर रात मैं यह सुनिश्चित करता हूँ कितना पैसा बचा । मैं इस पाँच सौ में से सौ- सौ की चार नोट पैंट के अंदर बाली चोर जेब में रखता हूँ , अति सुरक्षित रखने की आकांक्षा से । आपके नौकरों- डराइवरों का जो वेतन होगा तक़रीबन उतना ही मेरे पिता मेरी माँ को प्रति माह घर का खर्च चलाने को देते होंगे । दरिद्रता बहुधा ईमान डिगा देती है , दरिद्रता एवम् अभाव में अपराध प्रवृत्ति जन्म लेने की संभावनायें होती ही हैं । भूखे पेट की सुपाव्यता की सीमा होती है । ऐसे व्यक्ति को आप करोड़ों रुपयों का अधिकार दे रहे , किस विश्वास पर ? मैं कल पैसा लेकर भाग जाऊँ तब आप क्या करोगे ? हक़ीकत में मैं एक फ़राड सा आदमी हूँ । मैं अपने लाभ के लिये कुछ भी कर सकता हूँ । मैंने उस व्यक्ति के साथ छल किया जिसका अंतिम अवसर था सिविल सेवा का । मैंने उस पर प्रयोग किया उत्तर में सवाल डाल कर इंटरव्यू दिलवाने का , यह सोचकर कि अगर इस पर प्रयोग सफल रहा तब मैं करूँगा नहीं तो कोई और तरीका अपनाऊँगा । मेरे छल - मेरे कपट के क्रिस्से कोई और जाने न जाने मैं जानता हूँ । आप एक बहुत ही अयोग्य व्यक्ति को चुन रहे अपनी देवी सदृश माँ के देख- भाल के लिये । मैं आपको आगाह करता हूँ कि यह काम आप न करें , मेरे साथ तो बिल्कुल न करें । आप विदेश होंगे और मैं सारा पैसा लेकर भाग जाऊँगा , आंटी का बचा जीवन

अंधकारमय हो जायेगा । आप बाद में यह मत कहना , “ अनुराग तुमसे यह उम्मीद न थी । ”

मुझसे सिवाय छल के आप कोई और उम्मीद कर नहीं सकते । चुनाव आपका है । ”

ऋषभ - “ अनुराग , यह उत्तरदायित्व तुमको लेना ही होगा ? तुम पर हम सबका बहुत विश्वास है । तुम माँ के बहुत नज़दीक हो , वह तुम्हारे बारे में बात करते ही प्रसन्न हो जाती है । तुम माँ का बहुत ख्याल रखोगे , मुझसे भी अधिक ”

मैं - “ क्या तुम अब वापस कभी नहीं आओगे भारत ? ”

ऋषभ - “ ऐसा नहीं है कि मैं नहीं आऊँगा कभी , पर अमरीकी नागरिकता की ओर हम बढ़ रहे । गरीन कार्ड पहले लेंगे फिर नागरिकता भी हो जायेगी कुछ वर्षों में । ”

मैं - “ यह सब फ़ैसला कब हुआ ? ”

ऋषभ - “ पिछले कुछ महीनों में । ”

मैं - “ आंटी को कब बताओगे ? ”

ऋषभ - “ पता नहीं ! अभी सोचा नहीं है । ”

मैं - “ पर बताना पड़ेगा । ”

ऋषभ - “ बाहर बताये भी काम चल सकता है अभी , जब समय आयेगा तब देखा जायेगा । ”

मैं - “ वह समय कब आयेगा ? ”

ऋषभ - “ कुछ सालों बाद ”

मैं - “ तब तक एक भुलावा देते रहोगे वापस आने का ? वह तो चाह ही रही तुम वापस आ जाओ । ”

ऋषभ - “ मेरा पूरा जीवन , मेरा पूरा कैरियर एक रोमांचक मोड़ पर है । मैं कुछ भी कर सकता हूँ , अपने कैरियर में इस समय जीवन के वास्तविक प्रश्नों का उत्तर वास्तविकताओं से दिया जाना चाहिये न कि भावनाओं से । भावनायें प्रायः अपरिपक्व निर्णय देती हैं । मेरे लिये भावनाओं में बहने का समय नहीं है । इस समय एक अवसर पूरे विश्व के समुख है । ईश्वर ने उस अवसर में भागीदारी के लिये मुझको भी चुना है । जीवन में ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते हैं । इस प्राप्त हुये अवसर का लाभ उठाना भी एक कला है जो सबको नहीं आती । हर व्यक्ति को अवसर मिलता है पर हर व्यक्ति उस

अवसर का सदुपयोग नहीं कर पाता और यहीं से एक फैसला हो जाता है सफल एवं असफल व्यक्ति के मध्य ।

एक नयी करान्ति , कम्प्यूटर के क्षेत्र में इंतज़ार कर रही , वह कोई भी कर सकता है । मैं उस करान्ति का साक्षी नहीं , एक सह नायक भी नहीं , एक नायक बनना चाहता हूँ ... एक सम्पूर्ण नायक । कोई और जीवन के रफ्तार में दौड़ने लगे उससे तेज और उससे बहुत तेज , उससे पहले और बहुत पहले मैं दौड़ना चाहता हूँ , एक तीव्र गति - एक बहुत ही तीव्र गति वायु से भी तेज , प्रकाश से भी तेज । उस रफ्तार की तेज़ी के लिये जिस पथ की , सड़क की आवश्यकता है वह भारत में नहीं है । मैं भारत रहूँगा तब एक मामूली व्यक्ति बनकर रह जाऊँगा पर अगर मैं अमरीका में रहा तो एक कम्प्यूटर करान्ति के नायकों में शुमार हो सकता हूँ । मेरी महत्वाकांक्षा के पर बढ़े हो चुके हैं और वह एक विशाल क्षितिज चाह रहे उड़ने के लिये , यह जो उफुक तुम देख रहे हो ऊपर यह बाधित कर देंगे बढ़े हुये डैनों को ।

मैं “ अगर मैं यह कहूँ कि आप माँ के लिये एक वृद्धाश्रम खोलना चाह रहे यह शायद एक उचित अभिव्यक्ति होगी हमारे आपके वार्तालाप के लिये । ”

ऋषभ- “ आप शब्द-जाल में बातों को मत उलझाओ , मेरी समस्या समझने का प्रयास करो और मेरी सहायता करो । यह एक बहुत बड़ा एहसान होगा आपका मुझ पर । ”

इतने में आंटी आ गयी । उसने पूछा .. ऋषभ कब आये ? शालिनी कहाँ है ? वह नहीं आयी ? मुझे पता ही नहीं चला तब तुम आ गये । यह अनुराग से क्या मन्त्रणा चल रही है । अनुराग तुम अपनी कोई चाल तो नहीं सिखा रहे इसको ? तुम - चिंतन सब जमाने को चराने में माहिर हो । तुमको सारी माया आती है , यह ऋषभ तो सज्जन है । यह स्पष्ट बात करता है , यह इलाहाबादियों की तरह चीजों को घुमा- फिरा कर नहीं कहता ।

मैं - “ आंटी , यह जिस स्पष्टता से बात कर गये वह मेरे लिये अकल्पनीय है । मैं नतमस्तक हूँ इस स्पष्टता के समुख और मैं अस्पष्ट रहना चाहता हूँ । ”

आंटी - “ क्या स्पष्टता थी इनकी बात में ? ”

मैं - “ आंटी , बस यही कहा कि ईश्वर न्यायी है या नहीं इस पर विवेचन होना चाहिये । वह लोगों को उचित देश- प्रदेश- परिवार - परिवेश में उसकी क्षमताओं का आंकलन करके जन्म नहीं देता । यह गौरैया उड़ना चाह रही पर थक जाती हैं जल्दी । वह चील उड़ना चाह रहा डैनों में ताकत भी है पर

आसमान तक पहुँचाने की हवा यहाँ मौजूद नहीं है । अमेरिका की गैरेया थकती ही नहीं । वहाँ के चील को उत्तम गति वायु का साथ मिलता है और वह आसमान खोदकर खा जाता है । इसलिये अमेरिका के चील भारत के चील से मज़बूत हैं । “

आंटी - “ तुम क्या कह रहे मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा ? “

मैं-आंटी तेरी और माँ का की एक ही आदत है , हर वस्तु को जानना ... जिज्ञासा , उत्सुकता , व्यग्रता जब बँट रही थी तब सबसे पहले पंक्ति में आप ही लोग थे । महात्मा ऋषभ का ज्ञान पुंज है , वहाँ अमेरिका में कौन सुनेगा इनकी । वहाँ तो जो सुनेगा वह भी पैसा माँगेगा सुनने का । अब यहाँ हम हैं , आप हो , आहूजा साहब है हम लोग सुनेंगे और पैसा भी नहीं माँगेंगे । पैसा बच रहा और सुनाने का अवसर मिल रहा चित भी मेरी पट भी मेरी । “

आंटी - “ ऋषभ , शालिनी कब तक आयेगी ? “

ऋषभ - “ आ रही होगी वह माँ । मैं थोड़ा जल्दी आ गया आप लोगों के साथ समय बिताने । “

इतने में शालिनी आ गयी । नाश्ता किया । शालिनी ने शाम को घर आने का आमंत्रण दिया और यह भी कहा कि चिंतन सर को पापा ने कह दिया है । मैं बाहर निकला आज की यात्रा के लिये । आंटी गेट पर आयी और बोली कि आज जल्दी आना कल की तरह देर मत करना । “

मैंने कहा , “शीघ्र आऊँगा ” । डराइवर तिवारी मिला गेट पर नई कार के साथ । उसने कार चला दी ... वह बोला साहब को ले लें । मेरा थोड़ा मूँड आफ था , मैंने कहा कौन साहब ?

डराइवर तिवारी - “ साहब उहै काजू वाले साहब ... ऐसन मनइन के खिवाये में मन लागत हअ । केतना प्रेम से काजू काल खायेन साहब । ओ अपनेन ओर को लागत हअ । “

मैं - “ कैसे पता ? “

डराइवर- “काजू खाई के ढंग से लागि गवा । आज पिश्ता, काजू , बादाम , खजूर , किसमिस सब बा । “

मैं - “ इतना मँहँगा सामान कौन देता है ? “

डराइवर तिवारी - “ साहेब इ सब स्टाक से लेइत थ हम । सब डराइवर से बाबू इगिड- तिगिड करत हअ पर हमसे हिम्मत स्टाक बाबू के नाहीं पडत । अब त हम कुंडली गुरु के नाम के अदरबौ दै देइत हअ । “

मैं ड्राइवर की बात सुनता रहा थोड़ी देर ... मैंने ड्राइवर से कहा वापस घर चलो, आज मेरा मन नहीं कर रहा कहीं जाने को ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 156

मैंने जैसे ही कहा ड्राइवर से , “ वापस चलो ”, उसने पूछा , “ का होई गवा साहेब ? ”

मैं - “ अभी मन नहीं कर रहा कहीं जाने का । ”

ड्राइवर तिवारी - “ अगर तबियत ठीक न होई तब चली कौनौं डाक्टर के इहाँ एकाध गोली खाइ ल तबियत चंगी होई जाए । ”

मैं - “ तबियत ठीक है , उसमें कोई समस्या नहीं है । ”

ड्राइवर तिवारी - “ साहेब तनिक आराम कई ल तब चलित हअ । ”

मैं वापस आया / आंटी ने पूछा , ” क्या हुआ ? गये नहीं ! ”

मैं - “ मेरा मन नहीं किया जाने का । ”

आंटी - “ तबियत तो ठीक है न ? ”

मैं - “ हाँ , एकदम ठीक है । ”

आंटी - “ चाय बनाती हूँ । ”

मैं - “ आप आफिस जाओगे ? ”

आंटी - “ अगर तुम रहोगे तब मैं नहीं जाऊँगा , नहीं तो कुछ देर घूमकर आ जाती हूँ । यहाँ भी बैठकर क्या करूँगी । ”

मैं - “ आंटी एक बात बताओ । ”

आंटी - “ अब कौन सी जिज्ञासा आ गयी , मेरे जिज्ञासु के पास ? ”

मैं - “ जब सब लोग चले जायेंगे तब कैसा लगेगा आपको ? ”

आंटी - “ मैं वह सब सोचकर अपना आनंद तनु नहीं करना चाहती । इस समय मैं आनंद की असीमता पर हूँ । मैं उस आनंद की असीमता - दिव्यता-विराटता को भोगना चाह रही हूँ , न कि कुछ और सोचकर उसमें किसी तरह की न्यूनता का समावेश करना चाहती हूँ । मैं इन्द्रधुनष देख रहीं और उसका नयनाभिराम आनंदित कर रहा , क्या होगा जब यह रंग हट जाएँगे क्षितिज से इसको मैं क्यों विचारूँ अभी । यह सब जानते हैं जीवन एक दिन

समाप्त होगा पर जीवन की क्षणभंगुरता की अवधारणा ही अगर मस्तिष्क में सदैव व्याप्त रहे, तब तो जीवन का प्रमाद रहेगा ही नहीं । “

कुछ ही देर में शालिनी आ गयी । शालिनी आंटी से जानना चाहती थी, शाम के लिये खाने में क्या किया जाये, किस तरह से खाने का प्रबंध हो । मैं आंटी - चिंतन सर अमिष भोजन नहीं करते थे । ऋषभ भी भारत से बाहर जाकर ही मांसाहारी भोजन आरंभ किया था, पर आंटी को यह पता न था । आहूजा साहब ने अपने दो- चार परिचितों को बुला लिया था, इसलिये शालिनी जानना चाह रही थी कि कुछ अमिषहार व्यंजन भी रख लिये जायें अगर कोई आपत्ति न हो । आंटी एक बहुत ही सुलझे हुये व्यक्तित्व की स्वामिनी थी । उन्होंने कहा, मुझे कोई ऐतराज नहीं, अनुराग को भी नहीं होगा । जो तुम सबको सहज लगे कर लो । आंटी का आफिस से बुलावा आ गया किसी काम के लिये । शालिनी ने भी कहा कहा मैं ज़रा कुछ काम करके आती हूँ, मैं और ऋषभ अकेले रह गये । ऋषभ के भीतर एक तुमुल युद्ध तीव्रमान था, वह इस मुद्दे पर एक समाधान चाहते थे । उन्होंने अपनी बात पुनः आरंभ कर दी ।

ऋषभ - “अनुराग तुम्हें मेरे अंदर एक संवेदनहीनता दिख रही होगी, जैसा प्रस्ताव तुम्हारे सम्मुख मैंने रखा । तुम हर एक वस्तु को भावनाओं के चश्में से देखोगे तब कभी भी जीवन को वास्तविक अर्थों में व्याख्यायित नहीं कर पाओगे । जीवन को एक आदर्शात्मक ढाँचे से निकालकर एक जीवन के यथार्थ के साथ समाहित करके देखने का प्रयत्न करो, तब मुझे बेहतर समझ पाओगे ।”

मैं - “मैंने कौन से आदर्श की बात की मैंने? मैंने यथार्थ ही कहा, जीवन का यथार्थ ।”

ऋषभ - “स्पष्ट तो नहीं कहा, पर संकेत तो था ही एक आदर्श की ओर । बहुधा एक व्यक्ति का आदर्श दूसरे से भिन्न होता है, इसका कारण परिस्थितियाँ एवम् कालकरम होते हैं ।”

मैं - “मैंने ऐसा कोई अकल्पनीय आदर्श का उल्लेख तो किया नहीं । मैंने तो सिफ्ऱ यही कहा कि हर व्यक्ति का अपना एक उत्तरदायित्व होता है जो उसे स्वीकार करना चाहिये ।”

ऋषभ - “मैंने अपने किस उत्तरदायित्व को अस्वीकार किया है? ”

मैं - “तुम विदेश बसना चाहते हो, किसलिये? ... सिफ्ऱ धन के लिये या कोई ओर मंतव्य है? .. अगर विदेश चले गये सदा- सदा के लिये तब तो जो

माँ के प्रति एक उत्तरदायित्व है वह तो अधूरा ही रहा । सिवाय धन के और क्या कारण है आपके विदेश जाने का ? “

ऋषभ - “ चलो यह मैं मान ही लेता हूँ कि मैं विदेश बस रहा केवल और केवल धन के लिये तब भी कौन सा अपराध हो गया ? मैंने कौन सा ऐसा कार्य कर दिया कि मैं मृत्यु के उपरांत नरक का अधिकारी हो गया ? ”

मैं - “ अपरिग्रह एक परम्परा का भाग है । यह निश्चित रूप से तुम्हारे सिद्धांत में लोभ का आवरण देख रही है । त्याग एवम् उच्च आदर्शों का अभाव है अगर मात्र अधिक धन प्रदान करने में असमर्थ होने के कारण यह देश त्याज्य है । ”

ऋषभ - “ कौन सी परम्परा है जो मुझे रोक रही है ? कौन सा दर्शन है जो कह रहा त्याग मुझे करना चाहिये । ”

मैं - “ यशोधरा बहुत सुंदर थी , पुत्र राहुल नवजात था और मोहक था । बुद्ध एक शक्तिशाली गणराज्य के उत्तराधिकारी थे । रात में किवाड़ खोलकर वह चल दिये पराणि मात्र के कल्याण के लिये । उसी धर्म में बोधिसत्त्व की संकल्पना जन्म लेती है जो कहती है मुक्ति आपका लक्ष्य तब तक नहीं हो सकती जब तक संसार का अंतिम व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त नहीं कर जाता । अपनी मुक्ति को लंबित - विलंबित करो और पुनः- पुनः जन्म लो इस जगत के कल्याण के लिये , और अपने आत्म- सुख का त्याग करो । ”

ऋषभ- “ दो अलग- अलग युगों की तुलना का कोई अर्थ नहीं । यह तात्पर्य विहीन है । यह एक आत्म प्रवंचना है , अपने पुराने संस्कारों के नाम पर । बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति की जगत के लिये , त्याग किया जगत के लिये यही सहस्राब्दियों से कहा जा रहा और आगे भी कहा जायेगा । पर क्या आज ज्ञान प्राप्ति करके समाज की कोई सेवा की जा सकती है ? तुमने, मैंने , शालिनी ने और हमारे जैसे बहुतों ने ज्ञान प्राप्ति की अपने- अपने अर्थों- संदर्भों में पर उनका क्या उपयोग है यह बताओ । कम्प्यूटर इंजीनियर आईएएस बनता है , डाक्टर आईएएस बनता है वह कहाँ कौन से ज्ञान का उपयोग करता है । हर समय इतिहास से अवशेष निकाल कर आदर्श की शिक्षा देना कहाँ तक उचित है ? क्या है हमारा इतिहास ? युद्धों का इतिहास देखो ... भागते हुये की पीठ पर वार न करो ... उसको क्षमा करो ताकि कल वहीं मज़बूत होकर हमारी अस्मिता का हनन कर दे ... यह पूर्व मध्यकालीन युद्ध नैतिकता क्या आज कोई प्रासंगिकता रखती है । कर्ण ने इन्द्र को कवच- कुंडल दान कर दिया । हमारा इतिहास उसके कसीदों से भर गया । वह दान यह जानकर भी हुआ , छल किया जा रहा । कर्ण ने विश्वासघात किया अपने साथ , अपने मित्र के साथ..... सिर्फ़ एक थोथी आदर्शवादिता मैं दानी हूँ ऐ

इतिहास के महान नायक तुमको यह ही नहीं पता है कि तुम्हारा लक्ष्य क्या है ? तुम दानी बनना चाहते हो या शूरवीर ... अगर चुनाव दान और शूरवीरता के मध्य है तब आपको फ़ैसला करना ही नहीं आता । तुम मृत्यु को आमंत्रित कर रहे हो ... तुम चाहते क्या हो ?

एक आदर्शवादी उदारवादिता या युद्ध जीतना । कृष्ण की अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रता थी और वह लोगों के थोथे आदर्शवाद को एक यथार्थ के शर्संधान से आहत कर रहे थे, किसी को इसका अहसास ही न था । युधिष्ठिर प्रत्यक्ष मिथ्या- संभाषण कर गये और कह रहे मैं “ किन्तु हाथी “ धीमे स्वर में कहूँगा , क्यों सत्यवादी होने का स्वाँग रच रहे महानता के तथाकथित नायक । तुम्हारी अनैतिकता भी कोई कम नहीं है धर्मराज , पर नहीं मुझे नाटक करना है और आगे आने वाली पीढ़ियाँ कहें वह कितना महान था वह सच तेज बोलता था और झूठ धीरे । तुम मुझे इस गीता - महाभारत - पुराण - मिथक कथाओं से समझाओगे कि सत्य कहाँ वास कर रहा । तुमने कभी जानने की कोशिश की, इन सारी घटनाओं के पीछे का सच क्या है ? सिफ़्र यह कह देना कि ऋषभ नैतिकता विहीन हो गया । वह अपनी माँ को बेसहारा छोड़कर जा रहा , वह धन से भावनाओं का व्यापार कर रहा , वह जीवन का व्यापारी हो गया , एक अन्याय होगा मेरे सारे प्रयत्नों- प्रयासों एवम् सदाशयता के साथ । मैं उतना ही नैतिक हूँ जितना तुम हो , बस परिस्थितियों का फ़र्क है । भविष्य बतायेगा देश के कौन कितने काम आयेगा । किसने इस ज़मीन के लिये कितना कार्य किया , एक बाबू जो सरकार के गलत- सही आदेशों पर नृत्य करता रहा या एक करान्तिधर्मी जो करान्ति के पदचाप को सुन रहा जब लोग एक करान्ति की आसन्नता से अनजान थे । ”

मैं “ क्या फ़र्क है कौन सी करान्ति की आसन्नता तुम देख रहे हो , देश - त्याग किस करान्ति के लिये आवश्यक है ? ”

ऋषभ - “ मैं समय से आगे की वस्तु हूँ । मैंने दो साल पहले सारी कक्षाओं में पढ़ा है । मैं जिस उम्र में आईआईटी से बाहर से निकल रहा था उस समय कई मेरी उम्र के लोग आईआईटी में प्रवेश कर रहे थे । यह शालिनी कहती है कि तुमने प्राइम नंबर की थ्योरम गलत गाइड के साथ की । वह सारा श्रेय ले गये , वह पद्मशरी प्राप्त कर गये , तुमको कुछ ख़ास न मिला । मुझको क्या मिला इस बेवकूफ़ को क्या पता । यह तुम - शालिनी - मेरे गाइड और ऐसे तमाम लोग सिफ़्र आज देख रहे और मैं एक संपाती की तरह का पक्षी हूँ जो पहाड़ों के पार , क्षितिज के उस ओर देख रहा और कल क्या होगा यह समझने का प्रयास कर रहा । शालिनी की एक ही रट है तुम्हारा नाम पद्मशरी के मानद स्तंभों में शुमार होना चाहिये था , उसे क्या पता मैं पद्मशरी लेने वालों में नहीं वितरित करने वालों में शामिल होना चाहता हूँ । मैं पद्मशरी से बड़ा बरांड शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित करना चाहता हूँ और

उसके लिये धन चाहिये । मैं किसी भी क्रीमत पर एक बड़ा धन एकत्र करना चाहता हूँ ।

जैसा तुमने कहा सुबह , “मैंने सिफ़र जीवन में छल ही छल किया है और अपनी ज़रूरतों के लिये मैंने लोगों का उपयोग किया है । “ ठीक वहीं मैंने भी किया है , हो सकता है मेरी अनैतिकता उस कार्य में तुमसे अधिक ही हो । मैं आज के दिन के लिये काम कर रहा था , मैं आने वाले कल के लिये काम कर रहा था । मैं एक बड़ा नाम चाहता था । मेरी पद्मशरी के तमगे में कोई रुचि न थी , मैं उसे अस्वीकार कर देता अगर वह मुझको मिलता । मैं पद्मशरी अस्वीकार करके पद्मशरी स्वीकार करने वालों से एक बड़ा नायक बनता । मैंने अपने गाइड से भी कहा , “ सर इसको अस्वीकार करो । आप पत्र लिखो राष्ट्रपति को , धन्यवाद ज्ञापित करते हुये और राष्ट्र कार्य एवम् राष्ट्र गर्व सर्वोपरि है , मैं यह पद्मशरी अस्वीकार करता हूँ । वह नहीं माने , वह गलतीं कर बैठे । मैं अपने गाइड की कमजोरी जानता था और उनकी ताक़त भी । वह सम्मान की क्षुधा से पीड़ित थे , वह हर समय खबरों में बने रहना चाहते थे । वह तकनीकी रूप से इतने दक्ष न थे पर उनको यह खूब आता था , कैसे कार्य परचारित किया जाये । मैंने उनका चुनाव किया न कि उन्होंने मेरा । मैंने पराइम नंबर की गुत्थी तक़रीबन सुलझा ली थी पर एक छात्र की कौन सुनेगा , वह कैसे उसको बड़े मंच पर ले जायेगा ? रिसर्च में एक गाइड का होना आवश्यक होता ही है । मैंने अपने अवलोकन से यह निष्कर्षित किया , यही व्यक्ति है जो अन्तराष्ट्रीय मंचों पर ले जा सकता है । वह मिलनसार थे , वह नम्र थे , अहंकार विहीन थे और विश्व- सम्मेलनों में ज़ाया करते थे । मैंने उनका उपयोग किया । हमारा नाम हुआ न कि सिफ़र उनका । मैंने आज के दिन के लिये कार्य किया था बीते हुये कल का गौरव उनको देकर । यह जीवन एक व्यापार है , एक चौसर का खेल है । इसमें वही विजयी होता है जो दूरदृष्टि रखता है । जो व्यक्ति बाज़ार में किसी उत्पाद के निर्माण में पहले प्रवेश करता है वही उसका अधिकांश लाभ ले जाता है , मुझे अधिकांश लाभ चाहिये । मैं आईएएस बन सकता था । वह एक कठिन कार्य अवश्य था पर मेरी संभावना के दायरे में था । गणित के एक पेपर में 15 में से 5 और दूसरे में 12 में से 5 प्रश्न करने होते हैं । इसमें मैं शत- प्रतिशत सही कर लेता और दौड़ आरंभ होने के पहले ही मैं 200 मीटर आगे होता । पर मैंने बनने से इंकार किया और माँ को निराश किया । तुम कुछ साल नौकरी कर लो और फिर मुझे बताना जो पाना मेरे लिये सहज था वह मैंने माँ को निराश करके क्यों त्याग दिया । ”

मैं-“ आप देश में भी कोई और नौकरी कर सकते थे , व्यापार कर सकते थे । ”

ऋषभ - “मेरा ध्येय नौकरी करना कभी रहा ही नहीं । मैं स्वतन्त्र कार्य करना चाहता था । इस देश में व्यापार हो सकता है ? लाइसेंस - परमिट राज का जमाना है । विदेशी निवेश, एफडीआई आ नहीं सकता, ऐसी सरकार की नीतियाँ हैं । मेरे पास पूँजी है नहीं, सरकार सहयोग करती नहीं, बैंक लोन देगी नहीं, हर जगह भ्रष्टाचार व्याप्त है । मैं कौन सा व्यापार करता यहाँ पर । कम्प्यूटर में मेरी विशेषता है, उसका यहाँ अभी नामों- निशान नहीं । यहाँ की व्यवस्था बीस साल पीछे चल रही और मैं बीस साल आगे का आदमी हूँ । यह एक चालीस वर्ष का अंतराल है । मुझे कम समय में एक लंबी दूसी तय करनी है । मैं एक सामान्य जीवन जीना चाहूँ तब उसके लिये यहाँ जगह थी और है पर मैं जिस तरह का भविष्य चाह रहा उसके लिये यहाँ पर कोई स्थान मुझे अपने लिये फ़िलहाल तो नहीं दिख रहा । तुमको दिखेगा तब बताना ।

अनुराग जीवन को एक बनी - बनायी लीक से अलग चलाकर दौड़ना सीखो । हर वस्तु को नीर- क्षीर- विवेक की कस्टोटी पर कसो न कि एक भावना से संचालित आदर्श के धरातल पर । जीवन में अस्वीकार करना सीखो । जीवन के बड़े लक्ष्य की तरफ़ देखो । मेरी एक सलाह है, एक भाई की सलाह है । तुम इस आईएएस/ आईपीएस/ आईआरएस पदनाम को इतना छोटा कर दो कि यह पदनाम तुम्हारे नाम से प्रकाश पाये न कि पदनाम से तुम्हारा नाम । यह जो सिविल सेवा के अधिकारी हैं, यह सारा जीवन सिफ़्र एक आभामंडल में जीते हैं कि कभी इतिहास की एक सुखद घटना हुई थी और उनको राष्ट्र की एक सबसे बेहतर सेवा प्राप्त हो गयी थी । तुम इस सेवा को अपने आफ्रताब का दास बना दो । यह पनाह माँगे तुम्हारे सम्मुख और कहे यह मेरा धन्य भाग्य आपने मुझे स्वीकारा.... जीवन में सार्थकता की तलाश करो, किसी भी मूल्य पर । मेरा सारा प्रयत्न एक जीवन की सार्थकता की तलाश का है उसमें वह भी शामिल है जो तुमको अनैतिक लग रहा है ।“

मैं- ऋषभ....

ऋषभ - रुको.. सिफ़्र सुनो... मुझे पूरी बात कहने दो ।

तुमको लगता होगा, मैं विदेश बस रहा हूँ । मेरी कुछ ज़रूरतें होंगी । मेरी कोई व्यक्तिगत आवश्यकता है ही नहीं । मैं आहूजा साहब के वृहद साम्राज्य का अकेला वारिस हूँ । मेरे पास भोग - विलास के सारे संसाधन हैं । मैं जिस शालिनी की असीम सुंदरता पर मोहित था उसकी सीरत का प्रशंसक था उसको भी मैंने त्यागने का निर्णय कर लिया था जब आहूजा साहब ने विवाह के लिये अपने काम को सँभालने की शर्त रखी । मैंने शालिनी से भी कहा तुमको मुझसे प्रेम मेरी शर्तों पर करना होगा, मेरी महत्वाकांक्षाओं के पर करतरने की इजाज़त किसी को भी नहीं है ।

तुम सोचते होंगे , मैं यहाँ नहीं रुका , शालिनी के यहाँ रुका क्योंकि मैं सुविधाभोगी हूँ । शालिनी के यहाँ रुकना एक मजबूरी है । वहाँ काम करना पड़ता है । उनकी समस्यायें हैं । वह व्यापार जिस तरह चलाते हैं वह एक पुराना तरीका है । मैं उसको कम्प्यूटरीकृत कर रहा । मेरे पास अपने जीवन के लिये कोई समय नहीं है । मेरी महत्वाकांक्षाओं ने मेरा जीवन मुझसे ले लिया है , यह उचित है या अनुचित एक अलग बहस का विषय है । जिस तरह तुम्हारी माँ ने तुमको अति महत्वाकांक्षी बनाया है वैसा ही मेरी माँ ने मुझको बनाया पर अब उसके लिये यह एक बोझ साबित हो रहा ।

मेरा अमेरिकी नागरिकता लेना मेरी बाध्यता है , मेरी मजबूरी है , मेरी विवशता है । मैं कब तक वीज़ा वर्क परमिट के सहारे काम करूँगा । हर देश अपने नागरिकों को सुविधाये देता है , व्यापार- वाणिज्य के विस्तार में । कल अमेरिकी सरकार यह नियम निकाल दे सारे विदेशी देश छोड़कर जाओ या हम व्यापार में अपने नागरिकों को वरीयता देंगे या बाहर के लोगों के व्यापार पर अतिरिक्त कर लगायेंगे , तब क्या होगा । यह प्रतिस्पर्धा का युग है । इसमें आपको अपने प्रतिस्पर्धी को देखकर अपनी नीतियों - रणनीतियों का निर्माण करना होता है । एक अमेरिकी सरकार का हमारे विपरीत फ़ैसला हमें ख़त्म कर सकता है । मेरी बढ़ती ताक़त से अमेरिका के व्यापारियों को आज नहीं तो कल आपत्ति होगी ही , मैं उनकी आपत्ति के पहले ही आपत्ति का निदान चाहता हूँ । मैं उनको शस्त्र- विहीन कर देना चाहता हूँ । मैं जिस तरह कम्प्यूटर करान्ति में एक अग्रणी भूमिका चाह रहा वैसे वह भी चाह रहे । अमेरिका यह भूमिका एक विदेशी को क्यों करने देगा ? मैं कम्प्यूटर करान्ति का सह नायक भी नहीं , नायक भी नहीं ... मैं एक महानायक बनना चाहता हूँ ... मुझे अपने रक्त पर चलना पड़े मैं उसपर भी चलूँगा । यह भावनायें एक अशक्तता को जन्म देती हैं , मुझे इस पर विजय पानी ही है । तुम सहयोग दोगे तब मैं इसका आभारी रहूँगा नहीं दोगे तब मैं कोई अन्य मार्ग देखूँगा । मेरे अंदर कृष्ण का वास है नई संरचना के लिये नई व्यवस्था के लिये ... नैतिकता ... अनैतिकता की परिभाषा लक्ष्य तय करेगा कोई और नहीं

एक समय मैं ऐसा देखना चाहता हूँ , कम्प्यूटर के क्षेत्र में भारत का परचम अमेरिका के क्षितिज पर लहराये और उसके लिये अगर मुझे अपनी माँ की भावनाओं के बहते रक्त- धार पर चलना हो , मुझे वह भी करने में कोई आपत्ति नहीं । इतिहास इस बात का फ़ैसला करेगा , मैंने उचित किया या अनुचित ?

मेरी माँ ही यह फ़ैसला कर दे परिणाम देखकर ... मैंने उसके भावनाओं की परवाह न करके अमेरिकी ध्वज पर भारतीय ध्वज फहरा दिया

मैंने पाप किया या पुण्य.....

पाप और पुण्य के निर्धारण में परिस्थितिजन्य व्याख्या भी निहित होती है ।

मुझे खुली बाहों से लड़ने दो .. यह भावना के धरातल मुझे कमज़ोर कर रहे हैं ... यह मेरे हाथों में बँधी रस्सियाँ तुम एक झटके में खोल सकते हो मैं ही नहीं क्या पता इतिहास भी तुम्हारा एहसान मंद हो अगर मैं सफल रहा ।

तुम्हारा एक सहयोग आने वाली नस्लों के घोड़ों के लिये एक नायाब रास्ता दे सकती है और अगर मैं असफल रहा तब भावनाओं के आग्रही मेरा पुतला हर दशहरे के रावण की तरह जलायेंगे । तुम्हारे हिस्से में सिर्फ़ यश ही आयेगा अपयश का नीलकंठ बनने के लिये मैं प्रस्तुत ही हूँ ।

पर मैं बेपरवाह हूँ परिणाम से मैं प्रयत्नशील हूँ भविष्य के लिये

ऋषभ भावुक हो चुका था ... मैं किंकर्तव्यविमृद्ध था ... उसने अपने जेब से रुमाल निकाली अपनी आँखों को पोछा ... उसके रुमाल में लगे कुछ मुक्तादल उसकी विवशता को अभिव्यक्त कर रहे थे ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 157

आंटी उसी समय आ गयी और उसने ऋषभ को चिन्तित देखा । उसने ऋषभ से पूछा , “ क्या हुआ ?

ऋषभ - “ कुछ नहीं । ”

आंटी - “ तबियत ठीक नहीं है क्या? ”

ऋषभ - “ सब ठीक है । ”

आंटी - “ ज़रा लेट जाओ , देर रात तक काम किया होगा , आराम करते नहीं । दो- चार दिन कोई काम मत करो , बस धूमो - टहलो - जीवन को एक अलग तरीके से देखो । तुम शालिनी कहीं चले जाओ , चाहे अनुराग को भी साथ लेते जाओ ... मन बहल जायेगा थोड़ा । ”

ऋषभ- “ यह तो सुझाव ठीक है माँ । हम सब लोग चलते हैं, आप भी चलो । ”

आंटी - “ मुझे कहाँ ले चलोगे.... तुम सब चले जाओ । ”

ऋषभ - “ माँ जयपुर नज़दीक है वहाँ चलते हैं । एक दो दिन में आ जायेंगे । ”

इसी समय शालिनी आ गयी वह बोली , “ जोधपुर भी चलेंगे । वहाँ का किला बहुत खूबसूरत है और एक डराइव भी हो जायेगी । काफ़ी दिन हो गये कोई हालीडे किये । ”

मेरा हाथ अपनी जेब पर गया , सौ- सौ के चार नोट और एक सौ रुपया फुटकर था । यह सौ- सौ के चार रुपल्ली में भ्रमण कैसे होगा ? अब मैं इनका पैसा किस अधिकार से खर्च कराऊँगा । माँ को पता चलेगा ही , वह तो जान ही खा जायेगी यह कहकर , क्यों पैसा खर्च कराया उन लोगों का । यह “डराइव” , “हालीडे” क्या होता है ?

मेरी उत्सुकता बढ़ रही थी , इन शब्दों को जानने की । मेरा और ऋषभ का संवाद थोड़ा बेहतर वातावरण में न हुआ था , बातचीत में उत्तेजना आ गयी थी । इसलिये मैंने ऋषभ के बजाय शालिनी से पूछने का निर्णय लिया । वह बातचीत बेहतर करती थी थी ।

मैं - “शालिनी , यह “डराइव” क्या होता है ? ”

शालिनी मेरे हाव-भाव , सवाल- जवाब , शारीरिक अभिव्यक्तियों से अब तक यह समझ चुकी थी कि यह दरिद्रता का एक सम्पूर्ण पेड़ है । जैसे बंदर के हाथ बटेर लग जाती है और वह उछलता रहता है वही हालत मेरी थी । एक पेपर में छपे नाम के सहारे मैं सारी समस्याओं का हल करना चाहता था । इस समय मैं दर्शन- विज्ञान- रंग- कला- चित्रकारी - संगीत - जीवन के विविध आख्यानों का एक सर्वोच्च टीकाकार अपने को मान बैठा था । रागिनी की चित्रकारी के रंगों की व्याख्या मैं करूँगा , राजीव सिंह के आम के बाग पर भाषण मैं दृग़ँगा , लेखन पर बोलने का सर्वाधिकार सुरक्षित है , आज जेएनयू गया होता तब स्मृति चक्रपाणि के संगीत पर भी मैं ज्ञान देता ही , मैं कोई आम आईएएस थोड़े हूँ मैं इलाहाबाद का आईएएस हूँ । आप किसी भी विषय पर बात करो मुझसे बड़ा ज्ञानी आपको कोई न मिलेगा , दावा के स्तर पर । मैं लेखन , रंग , चित्रकारी , सामाजिक संरचना , दर्शन सबकी व्याख्या करने को तत्पर रहता हूँ । मैं ही नहीं इलाहाबाद से जो भी चयनित

होता है वह रातों- रात इतना बड़ा ज्ञानी अपने को मानने लगता है कि वह शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में परास्त करके उन्हें अग्निमेषित करने का स्वप्न देखने लगता है । यह तो अच्छा हुआ जब शंकराचार्य- कुमारिल शास्त्रार्थ हुआ था तब सिविल सेवा परीक्षा नहीं थी नहीं तो कुमारिल तो हारे ही थे शंकराचार्य भी हारते ही । इतने बड़े- बड़े विद्वान् एक रात में पैदा हो जाते हैं परेस के छापाखाने से रात में, किससे- किससे शंकराचार्य संघर्ष करते । यह सब अपने आप को सबसे बड़े लेखक- कवि- विचारक भी मानने लगते हैं ।

मुझे एक वाक्या याद आता है । एक कार्यक्रम में विद्या निवास मिश्र जी आये थे । उसी कार्यक्रम में एक नये चयनित व्यक्ति को बोलने का अवसर दे दिया गया । वह कवि होने का दावा भी कर रहे थे, हलाँकि यह दावा मैं भी करता हूँ इसलिये मुझे उनकी आलोचना करने का अधिकार नहीं है, पर मैं तो बेहतर लेखक हूँ । एक बेहतर लेखक होने का दावा मेरा है, वैसे यह दावा सब लेखकों का है । वह मंच पर गये एक आईएएस होने का अहंकार लेकर और वह यह जताना चाह रहे थे कि मैं आईएएस तो धेलुये में हो गया, असल में तो मैं सर्जक हूँ, काव्य- सर्जक । वैसे इलाहाबाद में हर तीसरा व्यक्ति मौलिक लेखक ही है । हर पाँचवा व्यक्ति गुनाहों का देवता लिखने का दावा कर देगा और दसवाँ व्यक्ति मुकितबोध के लेखन में सुधार कर देगा । यह आईएएस साहब दसवें व्यक्ति की कोटि में आते थे । उन्होंने प्रलाप आरंभ किया अब मैं अनर्गल तो कह नहीं सकता, यह आईएएस हैं, वेदों की ऋचायें इनके उच्चारण से सम्मानित होती हैं ...

“प्रत्येक युग का काव्य एक स्वीकार्यता का आग्रही होता है । वह प्राचीनता से पोषित होकर समय के संदर्भ में नवीन होता है । स्वतन्त्रता के पश्चात् के काव्य आंदोलन एक नये विशेषण को लेकर आये । पूर्ववर्ती काव्य परम्पराओं का परित्याग कर भी रहा पर जुड़ाव भी रख रहा आज का हिंदी काव्य एक ऐतिहासिक महत्व रखता है । यह आत्मकेन्द्रित, शिल्प पटु और नव्य काव्यमार्ग के अन्वेषी के तौर पर स्वीकार कर लिया गया है । काव्य धारा युग - सापेक्ष होती है, अतः नयी कविता को समय से काटकर देखना अनुचित है । मैं कविता को एक नये अर्थों में देखता हूँ और कविता से वेद को प्रवाहित करता हूँ । मेरी कविताओं से वेद निकलता है । वेद का प्रवाह करती मेरी नयी कविता”

विद्या निवास मिश्र सर यह सुनकर ही थोड़ा उत्तेजित हो गये । जब वह बोलने आये तो पहले वह इन्हीं आईएएस साहब पर केन्द्रित हो गये ।

विद्या निवास मिश्र - “ यह जो एक आईएएस साहब हैं जो अभी बने नहीं है बस इनका नाम पेपर में छपा है यह वेद को अपनी कविता से निकाल रहे । इन्होंने वेद उतना ही पढ़ा होगा जितना संघ लोक सेवा आयोग पूछता है और संघ लोक सेवा आयोग यही पूछता है कि गायत्री मन्त्र का उल्लेख कहाँ हुआ है , गायन का उल्लेख किस वेद में है , वेद का कालकरम क्या है ... आदि - आदि सतही प्रश्न । ज्ञान के महान पुंज ने वेद का आवरण पृष्ठ भी न देखा होगा और कविता से वेद निकाल कर यहाँ अपना काव्य- पाठ कर बैठे । यह नयी कविता - अकविता आंदोलन ने व्यक्ति को लेखन की एक छूट दे दी है और उसी छूट का लाभ उठाकर यह सब लोग सर्जक बन गये । न हुये आज निराला यहाँ पर नहीं तो लाठी लेकर चहेट लिये होते और सारी आईएएस गीरी निकल गयी होती । महोदय वेद से कविता निकलती है , न कि कविता से वेद । पहले आप संदर्भ सीखो बोलने का अभिव्यक्त करने का और लेखकों की गोष्ठी कोई आपके मातहतों का जमावड़ा नहीं है जहाँ आपकी जयकार करना एक पूर्व निर्धारित शर्त है । ”

मैं भी इलाहाबाद का ही हूँ , वह भी करछना का “खाँटी इलाहाबादी ” । मुझे तो सब आता ही है । पर उत्सुकता सीखने की भी है । दो शब्द नये आ गये .. ड्राइव और हालीडे ... यह दोनों मेरे शब्द कोश में हैं नहीं । अब शब्द कोश का विस्तार एक लेखक को करना ही है । मैंने सीधे ही शालिनी से प्रश्न किया ।

मैं - “ यह ड्राइव क्या होता है ? ”

शालिनी - “ सड़क पर कार चलाना । कई बार निरुद्धेश्य सड़क पर कार चलाना , कई बार एक लंबी दूरी की यात्रा कार से करना । ”

मैं - “ यह सड़क पर कार चलाना ही क्यों? साइकिल चलाना क्यों नहीं ? ”

शालिनी - “ उसको साइकिलिंग कहते हैं ? ”

मैं - “ दोनों में क्या फ़र्क है ? बात एक ही है ... सड़क पर दूरी नापना । हमारे साइकिल चलाने में तो निरुद्धेश्यता ही निरुद्धेश्यता रहती है । माँ से नाराज़गी हुई लिये साइकिल चल दिये , पढ़ने से मन उचटा लिये साइकिल चल दिये यूनिवर्सिटी रोड । ”

शालिनी - “ साइकिलिंग लोग सेहत के लिये करते हैं और ड्राइव आनंद के लिये । ”

मैं - “ मुझको साइकिलिंग में भी आनंद मिलता है । पेर दो साइकिल घर से गाँव तक , रास्ते में दस लूपया की भूँजा ले लो बस । ”

शालिनी - “ यह भूँजा क्या होता है ? ”

मैं - “ रास्ते में लोग ठेला लगाते हैं । उस ठेले पर चना , लाइ , मूँगफली , मटर रखते हैं । आपके सामने गर्म- गर्म भूँज देते हैं और नमक- मिर्च- मसाला साथ में दे देते हैं, उसको चबाते हुये निकल जाओ जहाँ जाना हो । इस भूँजे में बहुत ताक़त होती है । आपने कभी नहीं खाया ? ”

शालिनी - “ नहीं । ”

मैं - “ आप चलो इलाहाबाद । आप लो साइकिल । साथ में यह भूँजा । मेरे गाँव चलो । रास्ते का आनंद लो , यह फ़र्ज़ी जीवन का प्रमाद छोड़ो , देखो जीवन क्या होता है । गाँव देखकर तबियत हरी हो जायेगी । अगर आप को साइकिल चलाने में समस्या होगी तब आप कैरियर पर बैठ जाना , दाढ़ू चला लेगा । दाढ़ू रास्ते में ही मेरा दल छोड़कर आपके दल में शामिल हो जायेगा यह कहते हुये , “ हम तोहार सिपाही हई ” , आप एक नयी डराइव देखो ... यह कारों में बैठकर जाओगे और धर्म शालों में रुक़ोगे इससे कुछ आनंद न आयेगा । ”

शालिनी - “ यह सिपाही वाला क्या है ? ”

मैं - “ कौन सा ? ”

शालिनी - “ हम तोहार सिपाही हई । ”

मैं - आप चलो इलाहाबाद सब पता चल जायेगा । आपके जीवन की तमाम अवधारणायें बदल जायेंगी । ”

आंटी - “ अनुराग यह सब पाँच- सितारा होटलों में रुकते हैं । यह सब धर्म शालाओं में नहीं रुकते । ”

मैं - “ आंटी वह तो मैंने देखा नहीं । मैं माँ को लेकर गया था , “गया ” दर्शन कराने , मैंने देखा सब धर्मशालाओं में ही रुकते हैं । ”

आंटी - “ यह सब विदेशी हो गये हैं । वहाँ यह सब समस्या नहीं है । ”

मैं - “ यह हालीडे क्या होता है ? ”

शालिनी - “ आप जब काम से उकता जाते हो तब थोड़ा आराम करने के लिये कहीं चले जाते हो । हर साल व्यक्ति एक- दो हालीडे करता ही है , खासकर वर्ष की समाप्ति के बाद दिसंबर एवम् मार्च में । ”

मैं - “ यह तो कोई ख़ास बात नहीं है । यह हम लोग भी करते हैं । पढ़ने से थक गये शास्त्री पुल चले गये या यूनिवर्सिटी रोड चले गये । अब आप लोग कहीं- कहीं जाते होंगे पर हम लोग हर साल गर्मियों में नानी - नाना , दादा- दादी के यहाँ जाते थे । उसमें बहुत मज़ा आता था । आप लोग नहीं जाते थे ? ”

शालिनी-“हम लोग निर्वासित लोग हैं, रिफ्यूजी हैं। हमारी कोई ज़मीन नहीं। हमारा सब छिन गया। हमारे बाबा आये थे भागते हुये मेरी दादी और मेरे पिता के साथ, तब मेरे पिता बहुत ही छोटे थे। मेरे बाबा - दादी कुछ दिन लोगों की दया पर रहे, कुछ भी न था उनके पास। मेरे बाबा ने सीमेंट की ढुलाई करके जीवन काटा उस समय। यह एक फ्रैसला जो सन 47 का था वह हमारी ज़मीन हमसे छीन ले गया। हम लोग लाहौर के हैं। मेरे बाबा की बड़ी कोठी और कारोबार था लाहौर में.... सब छिन गया। सब कहते हैं... जिसने लाहौर नहीं देखा उसने कुछ न देखा। यह पंक्ति मेरे पिता से कह दो वह रोने लगते हैं। यह जो तुम दादा-दादी, नाना-नानी के घर जाने की कहानी सुना रहे हो वह मैंने स्कूल में बहुत सुनी पर अफ़सोस मेरे पास अपनी ज़मीन न थी। काश वह रही होती।

आंटी- “अनुराग इनकी ज़मीन तो इतिहास ने छीनी पर मेरी ज़मीन होते हुये भी मुझे नसीब न हुई।”

आंटी रोने लगी ... सारा माहौल गमगीन हो गया.....

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 158

आंटी की उदासी बहुत ही ज़ायज थी। वह हर तरह से ज़मीन से उखड़ चुकी थी। वह दिल्ली में रह रही, ऋषभ की ससुराल दिल्ली में ही है पर कोई संबंध ख़ास उनसे है नहीं। उसका मायका इलाहाबाद के एक गाँव में है, उन लोगों से कोई वास्ता कभी रहा ही नहीं, अब जब कभी आना-जाना ही नहीं हुआ तब पारस्परिक लगाव का न होना लाजिमी ही है। उसका अपने ससुराल से संबंध तो उसके अपने पति की मृत्यु के समय ही टूट गया था। ऋषभ के जाति के बाहर के विवाह पर आंटी के भाई ने बहुत ही गलत टिप्पणी की ही थी, वह यह दर्शाती है कि आने वाले समय में भी संबंधों में कोई ख़ास सुधार की उम्मीद नहीं है। जिस तरह से आंटी का अपने ससुराल से संबंध ख़त्म ऐसा हुआ था उसको देखकर लगता है उसको ससुराल में कोई हक़ मिलता अब दिख नहीं रहा। ऋषभ देश त्यागने की राह पर है। वह अब अकेली है दिल्ली की इस परायी ज़मीन पर। आंटी अपने जीवन में ही मशगूल रही और पूरा जीवन ऋषभ की लुध्ता में बीत गया जिसका परिणाम यह हुआ रही कि पूसा में भी कोई ख़ास संबंध किसी से विकसित न हुआ। वह न तो निर्वासित है न उसको देश निकला दिया गया है, फिर भी ज़ड़विहीन। उसने कोई हिजरत नहीं की पर हिजरत की पीड़ा आसन्न है समुख उसके। वह अपने जीवन में एकाकी है, अपने श्वासों के साथ।

उसका सारा लगाव मेरे प्रति मूलतः इसलिये है कि मैं उसकी सारी बातों को तन्मयता से सुनता हूँ और वही करता हूँ जो वह चाहती है । एक अलग तरीके का उसके जीवन में जो एक ख़ालीपन है उसका कोई उपचार मुझे दिखता नहीं । अभी तो वह कार्य कर रही पर जब कुछ वर्षों बाद वह सेवानिवृत्त होगी तब क्या करेगी ? मेरी माँ इससे बहुत ही बेहतर हालात में है । उसका पति है , तीन बच्चे हैं , परिवार आगे बढ़ेगा । मायके - ससुराल में माना थोड़ी टकराहट है संबंधों में जो कटुता को कई बार जन्म दे देती हैं , फिर भी संबंध तो स्थापित ही हैं , वह भी उसकी शर्तों पर । वह इन संबंधों की मिठास-कटुता के मिश्रण में ही खोयी रहती है । मेरे गाँव में जमीन कम ही सही पर एक आधार तो है । मेरी नौकरी में इतना पैसा न हो कि मैं किसी की मदद कर सकूँ फिर भी एक नाम तो है , मैं आस-पास के शहरों में रह तो सकता ही हूँ । माँ-पिता जी आकर मेरे साथ रह सकते हैं । पर इस आंटी के जीवन में तो पूरी तरह एक कालिमा ही कालिमा दिख रही । इसके पास कहने को सब कुछ है पर हकीकत में कुछ भी नहीं है । इसके पास बैंक में बहुत पैसे जमा हैं पर वह इसके किसी काम के हैं नहीं । मेरी माँ के पास कोई संपदा नहीं है , पर एक जीवन है , आंटी के पास बहुत धन है पर जीवन नहीं ।

यह एक बहुत ही जहीन महिला है , यह अपने भविष्य से बेखबर नहीं हो सकती । यह इसके गिरे हुये आँसू भविष्य की अनिश्चितता की ही बात कह रहे । मुझे लगता है शायद इसीलिये कह रही थी मुझसे , मेरे ससुराल एक बार तुम होकर आना ।

आंटी ने कहा , “ अनुराग जीवन में क्या चाहिये यह भी व्यक्ति को पता होना चाहिये । तुम नयी पीढ़ी के लोगों को शायद बेहतर पता होता है , हम लोगों को उतना पता नहीं होता था । हम लोग तो जैसा जीवन एक लकीर पर चल रहा चलते जाओ । ”

मैं “ आंटी यह सब विवेचना का प्रश्न है ? हर कोई अपनी - अपनी तरह से बातों को संदर्भित करता है और जो बहुधा परिवेश से संचालित एवम् निर्देशित होता है । मेरा जो परिवेश है वह ऋषभ का नहीं है , शालिनी का नहीं है । मेरी मान्यतायें , मेरी महत्वाकांक्षायें मेरे परिवेश से निर्धारित होती हैं । मैं वह नहीं करना चाहूँगा जो ऋषभ करना चाहेंगे और ऋषभ वह नहीं करना चाहेंगे जो मैं करना चाहूँगा , अगर यह मान लिया जाये कि मेरी और ऋषभ की क्षमतायें एक हैं तब भी । मैं अगर आईआईटी करता , कम्प्यूटर इंजीनियरिंग से करता तब भी मैं आईएएस की ही परीक्षा देता , क्योंकि मेरे शहर में गौरव इसी परीक्षा

से प्राप्त होता है , यह सही है या गलत है यह एक अलग बहस का विषय है ।
“

ऋषभ - “ अगर तुम यह करते तब तो सारी आईआईटी की पढ़ाई बेकार हो जाती । ”

मैं “ वह कैसे ? ”

ऋषभ - “ आईआईटी की एक- एक सीट बहुत महत्वपूर्ण है , कितना मुश्किल होता है आईआईटी में प्रवेश और उसमें भी दुर्लहतम है कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की बरांच पाना । एक छात्र को इंजीनियर बनाने में कितना खर्च होता है , सरकार ही अधिकतर फीस देती है । हम लोगों से फ्रीस नाम मात्र को ली जाती है । आप पढ़े एक विशेषज्ञ की तरह और कार्य कर रहे एक सामान्य की तरह । क्या आवश्यकता थी इस विशेषज्ञता को प्राप्त करने की । ”

मैं - “ हर व्यक्ति का अधिकार है जो वह चाहे चुनाव करे । एक तर्क यह भी दिया जा सकता है , उसके लिये भी जो आईआईटी से पढ़े पर देश के बाहर चला जाये , “ वह देश के कोई काम न आया ” । जो यहीं पढ़ा , देश में रहा वह किसी न किसी तरह देश के काम तो आयेगा ही पर जो जिसने एक वृहद ज्ञान प्राप्त किया देश के संसाधनों का इस्तेमाल करके पर वह विदेश चला गया वह तो देश के लिये तो अनुपयोगी रह गया । ”

ऋषभ- “ वह उस ज्ञान का उपयोग तो कर रहा । पर अगर आईआईटी पढ़कर आईएस बन गये तब तो प्राप्त ज्ञान पूरी तरह अनुपयोगी रह गया । ”

मैं “ ऐसा नहीं है । वह जहाँ भी काम करेगा , उपयोग में आयेगा ही , देश के भीतर ही है ज्ञान प्राप्तकर्ता । जो बाहर चले गये वह तो ज्ञान ही लेकर चले गये , वह किस काम आयेगा देश के ।

ऋषभ - “ यह एक बहुत ही सीमित सोच है । पूरा विश्व आपस में जुड़ाव की ओर है । एक क्षेत्र में किया गया कार्य दूसरे क्षेत्र को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा । ज्ञान का कहीं भी उपयोग हो अंततः वह मानवता के ही काम आयेगा । जो तुम भारतीय दर्शन समझा रहे थे मुझको वह प्राणि- मात्र के लिये था , देश- काल की सीमाओं से परे जगत- कल्याण के निमित्त । ज्ञान प्राप्त करके व्यक्ति बाहर जायेगा , देश का ही नाम करेगा । वह विदेशी मुद्रा कमायेगा देश में भी भेजेगा । अगर देश उस तरह का वातावरण नहीं दे पा रहा जिस तरह के वातावरण की आवश्यकता उस ज्ञान को उपयोग में लाने के लिये आवश्यक है तब तो देश के बाहर जाना ही शरेयस्कर है । यह सरकारों का उत्तरदायित्व है कि ऐसी नीतियों का निर्माण करें कि बौद्धिक सम्पदा का देश से निर्गमन रुक सके । यहाँ की सरकारें उस दिशा में कोई कार्य नहीं करती अनायास छात्रों पर दोषारोपण करती हैं , एक देश भवित का नारा

देकर । कोई स्वेच्छा से हिजरत नहीं करता , सब मजबूरी में ही करते हैं । सरकार वह सारे प्रयत्न कर रही जिससे देश के भीतर विदेशी मुद्रा का आगमन हो और लोगों का बाहर जाकर काम करना एक सशक्त प्रक्रिया है देश के विदेशी मुद्रा भंडार को समृद्ध करने की ।”

मैं बहस और आगे बढ़ाना नहीं चाह रहा था । यह पूरा विवाद व्यक्तिगत होता जा रहा था । मेरा आंटी- ऋषभ - शालिनी से एक बहुत ही आत्मीयता का संबंध विकसित हो चुका था । यह सब मेरे रक्त- संबंधों में न थे पर लगाव उस संबंध से कोई कम न था । मैं बेवजह का विवाद करके संबंधों में कटुता उत्पन्न नहीं करना चाह रहा था , हलाँकि मैं ऋषभ से सहमत न था । मैंने बात बदलते हुये कहा , “ ऋषभ आपने कभी पुस्तक का विमोचन देखा है ? ”

ऋषभ आज के युग से बहुत ही आगे की वस्तु था । वह सब कुछ जानता था ।

ऋषभ- “ मैं गया तो नहीं हूँ कभी पर जानता हूँ । यह लोग करते हैं अपनी पुस्तक की प्रसिद्धि के लिये । पर यह क्यों पूछ रहे हो ? ”

मैं- “ एक इलाहाबाद के कमिशनर कर रहे पुस्तक का विमोचन । मैं उनके किताब की प्रकृति रीडिंग कर रहा । उत्तर प्रदेश के राज्यपाल विमोचन करेंगे । आंटी ने देखा नहीं है कभी विमोचन । आप भी इलाहाबाद कभी आये नहीं हो । अपने माता-पिता का घर देखा नहीं , आप वह भी देख लेंगे । ”

ऋषभ- “ कब है विमोचन ? ”

मैं- “ तिथि तय नहीं है पर है जुलाई में ही । ”

ऋषभ- “ 12 जुलाई को हमारे जाने का टिकट है । ”

मैं- “ पर शायद आप जा नहीं रहे उस दिन । ”

ऋषभ- “ हाँ , यह विचार चल रहा कुछ दिन और रुकने का । ”

मैं- “ आ जाओ इलाहाबाद .. आपने इतनी उपलब्धियाँ हासिल की हैं । आपके पूर्वजों को पता तो चले , कितना आगे उनका वंशज गया है । । शालिनी जी आप भी आना , आप की तो पूरे शहर में ख्याति है । आपका नाम पूरे शहर में टैंगा है । ”

शालिनी- “ वह कैसे ? ”

मैं - “ गली - गली चौराहे - चौराहे पर बोर्ड लगा है ... घर में मज़बूती चाहिये तो ख़रीदें ... शालिनी सीमेंट .. शालिनी बिल्डिंग मटीरियल.. नक्कालों से सावधान यकीन सिफ़र शालिनी पर करें ।

मेरा एक मामा का लड़का है वह सबसे कहता है हमारे ससुराल का माल है यह बहुत मज़बूत है । ”

शालिनी -“ यह कौन लिखकर टाँगता है शहर में ? ”

मैं - “जिसको माल बेचना है । यह आपके पापा बतायेंगे । पूछता हूँ शाम को । ”

दोपहर का खाना हम लोगों ने जल्दी ही खा लिया । ऋषभ- शालिनी जाने लगे और बोले शाम को जल्दी आ जाना , डराइवर है ही वह लेकर आ जायेगा । जैसे ही ऋषभ गये आंटी मेरे पास आयी और बोली , “ अनुराग जो मैं न कह पायी तुमने सब एक झटके में कह दिया । तुमको ईश्वर ने मेरे लिये बनाया था । एक खत्म ऐसा संबंध था हमारा - उर्मिला का वह एक प्रगाढ़ता को प्राप्त कर गया । ईश्वर एक कार्य कई निमित्त को ध्यान में रखकर करता है । तुम्हारा यह चयन पता नहीं कितने निमित्तों को ध्यान में रखकर ईश्वर ने गढ़ा है । ”

आंटी भावुक बहुत शीघ्र होती थी , मेरी माँ की तुलना में तो बहुत ही शीघ्र । मैंने कहा , “ आंटी डराइवर खड़ा है , जेएनयू होकर आ जाते हैं । आप भी चलो । ”

आंटी - “ मैं क्या करूँगी चलकर । ”

मैं - “ आंटी चलो ... आपके लिये मैं जवाहर बुक स्टोर से कुछ और किताबें ख़रीद दूँगा । शालिनी को भी हिंदी की किताबें चाहिये , वह भी हम लोग ख़रीद लेंगे । उसको न्यूयार्क हिंदी समिति का सचिव बनाने में हम लोग भी अपना प्रयास कर दें । उसके लिये यह पद धनार्जन का साधन है , हम लोग भी इस महान धनार्जन- यज्ञ में अपना योगदान कर दें । आप यहाँ अकेले बैठकर क्या करोगे चलो ... कुछ क्रिस्सा ही सुनाऊँगा रास्ते में । वहीं से चल देंगे ऋषभ की ससुराल की तरफ । ”

आंटी - “ तेरे क्रिस्से बहुत सुने हैं । तुमसे कोई सीखे कहानी सुनायी कैसे जाती है । ”

मैं - “ आंटी , कहानी में मेरे अभी बहुत जान बाकी है , चलो आप । ”

आंटी तैयार हो गई चलने को । वह बोली मैं कपड़े बदल लेती हूँ ।

आंटी कपड़े बदल कर आयी । मैंने पहली बार उसको इस तरह देखा ...
श्वेत साड़ी काला बार्डर, चेहरे का दूधिया सफेद रंग, कुछ काले केश सफेद
बालों के बीच चाँद और बदली की तरह, सूनी माँग, होंठ प्राकृतिक गुलाबी
, चेहरे पर तेज, बाल करीने से काढ़े हुये, एक छोटी बालों को उसके कमर
तक ले जाती हुई .. एक शांतिमय प्रकाश माथे की लकीरों पर ... तेजपुंज
बिखरता आंटी के व्यक्तित्व से ..

मुझे आभासित सा हुआ चाँद एक आभा लिये पीछे उसके मस्तक के ... और
हफ्फ कह रहे मुझसे, "आज इसी को पिरो दे मुझमें एक ग़ज़ल जो दिख रही
उसको कहीं उतार दे ..

मैंने कहा ... "आंटी आप बहुत सुंदर हो .. मुझे माँ की खूबसूरती बयान करना
कई बार नायिका की सुंदरता के वर्णन से ज्यादा मोहक लगता है । मेरे लफ़्ज़
मुझसे कहते हैं .. इसने दुःखों को जमाने से छुपा कर रखा है अपनी धड़कनों
में इसकी शब्नमी आँखों में एक नायाब नज़्म मौजूद है " ।

आंटी - "माँ की सुंदरता तुम नायिकाओं से भी अच्छी करते हो .. उर्मिला की
भी ऐसी ही करते होंगे ... ।

मैं - "आंटी उसको कब क्या ख़राब लग जाये अब कह नहीं सकते । आप
उसकी तारीफ़ करो और कह देगी पढ़ना नहीं है बस फ़िज़ूलबाजी है दिमाग़ में
। वैसे आंटी वह कभी सजी- सँवरी ही नहीं । यदा- कदा शादी- विवाह में
कभी- कभार नहीं तो बस संघर्ष करती रहो मदर इंडिया की नर्गिस की तरह ।
बहुत ही कठिन रहा उसका जीवन ।

आंटी - "मेरे और उर्मिला के जीवन में बहुत ही संघर्ष रहा, दोनों का संघर्ष
अपने- अपने तरह का, पर उसका संघर्ष मेरे से कठिन रहा होगा पर मेरी
तरह भविष्यहीन नहीं है ।

आंटी ने बहुत बड़ी बात कह दी, एक बहुत ही कम शब्दों में ।

मैं और आंटी बात करते - करते बाहर कार के पास आ गये । तिवारी ड्राइवर
इंतज़ार कर रहा था । मुझे देखते ही वह बोला "साहेब तबियत ठीक बा नअ
? "

आंटी को देखकर तिवारी ने उनके पैर छुये और कहा, "अहोभाग्य हमार
आपके सेवा के अवसर मिला । "

झराइवर तिवारी - “ कहाँ चली साहेब ? जुबली होस्टल से सिंह साहेब के लै लेई ? ”

आंटी - “ यह सिंह साहेब कौन है ? ”

मैं - “ जुबली होस्टल में रहते हैं , वह भी मेरे साथ ही सेलेक्ट हुये हैं । वह भी जेन्यू मेरे साथ कल गये थे । आज साथ ही चलने का कार्यक्रम था पर मैं रुक गया । उनको भी ले लूँ आंटी , वह इंतज़ार कर रहे होंगे । ”

आंटी - “ हाँ ले लो । वह भी इलाहाबाद के हैं । ”

मैं - “ नहीं आंटी , वह बिहार से हैं । ”

तिवारी झराइवर - “ माता जी हयेन ओ बहुत बढ़िया मनई । ”

कार जुबली होस्टल की ओर चल दी

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 159

मैंने कार में बैठते ही आंटी से पूछा, “ आप तो दिल्ली को पूरा जानते ही होगे , इतने सालों से यहाँ रह रहे हो ? ”

आंटी- “ मैं दिल्ली उतना ही जानती हूँ जितना मेरा काम पड़ता है । मैं पूसा कैम्पस के बाहर बहुत ही कम जाती हूँ , कोई काम ही नहीं पड़ता और मेरे पास कोई शौक तो है नहीं । ”

मैं-“ आंटी , आप फ़िल्म व़ग़ैरह नहीं देखते हो ? ”

आंटी - “ पता नहीं कब देखा होगा अंतिम बार । ऋषभ के पापा की मृत्यु के बाद तो जीवन पूरा ही बदल गया । मेरे जीवन में एक ही लक्ष्य पिछले कई वर्षों तक रहा , “ ऋषभ का जीवन ” । उसको सक्षम बनाने के प्रयास में मैंने अपना जीवन एक साधक की तरह और घर को एक गुरुकुल सदृश बना दिया था । मैं टीवी नहीं देखती , रेडियो कभी- कभार ही सुनती हूँ । ईश्वर ने साधना का परिणाम भी दिया , ऋषभ निःसंदेह अपने हम- उम्र के लोगों में बहुत ही आगे की वस्तु है । मैं अनुराग एक फ़र्क़ तुम्हारे और ऋषभ की प्रवरिश में देखती हूँ , मैंने उसे एक संरक्षण में पाला और उमिला ने तुमको जमाने से लड़ाकर पाला । तुम दोनों ही नायाब हो पर तुम्हारी संघर्ष क्षमता अद्वितीय है । ”

जैसे ही कार मुड़ी , मैंने देखा पूसा परिसर में कुछ फ्लैट बनाये जा रहे हैं । मुझे अपने बचपन के संघर्ष वाला दौर याद आ गया । मैंने आंटी से कहा , “ आंटी एक राज अपना साझा कर्त्ता , पर तुम मेरी माँ से मत बताना । ”

आंटी - “ कितने राज हैं तेरे पास ? ”

मैं “ आंटी, मेरी कहानी में विक्रम- वेताल की कथा की तरह की कई कहानियाँ छिपी हैं । मैं ऐयार नहीं हूँ पर बहुत ऐयारी की है मैंने । ”

आंटी - “ बताओ विक्रम , वेताल की कथा । ”

मैं “ यह बात तब की है जब मैं कक्षा 9 में था और मेरा घर बन रहा था । उस समय सीमेंट परमिट से मिलती थी और कलेक्टरेट में जाकर सुबह- सुबह लाइन लगानी पड़ती थी । मेरी माँ मुझको लाइन लगाने सुबह- सुबह भेज देती थी । हर बार सीमेंट 5 बोरी ही मिल पाती थी । सारा दिन लाइन लगाओ फिर शाम को परमिट की पर्ची लेकर आओ । अगले दिन सीमेंट के वितरक के पास जाओ और फिर सीमेंट रियायती सरकारी दर पर खरीद कर लाओ । उन दिनों सीमेंट में ब्लैक का धंधा ज़ोरों पर था और सरकारी दर और ब्लैक के दर में दुगने का अंतर होता था । कलेक्टरेट वाले कालाबाज़ारियों से मिले होते थे, इसलिये परमिट देने में बहुत हीला - हवाली करते थे । मैं हर तीसरे-चौथे दिन सीमेंट की पर्ची वाली लाइन में लगने के काम से आजिज़ आ चुका था । मैंने एक नायाब रास्ता निकाला इस मसले का । बाबू लोग परायः एक ही तरह की कलम से लिखते थे परमिट की पर्ची पर , जिस कलम से बाबू लिखकर सीमेंट की पर्ची देता था मैंने भीड़ में एकदिन वह कलम चोरी कर ली , सीमेंट की पर्ची की धक्का- मुक्की के बीच । वह 5 बोरी की परमिट देता था और मैं आगे 1 उसी कलम से लिख देता था । पन्द्रह बोरी की जब पहली बार पर्ची मिली तो मेरी माँ चौंक गयी , यह कैसे हुआ ? मुझे झूठ बोलने में महारत हासिल थी , अभी भी है । मैं जानता था कि अगर यह सच बताऊँगा तब मेरी कुटाई होगी ही । मैंने झूठ बोल दिया कि मैंने रो-धोकर पटा लिया है बाबू को । मैं 5 के आगे 1 लिखने का काम हर बार करने लगा । मेरे मन में सीमेंट की कालाबाज़ारी करके पैसा कमाने की इच्छा जग गई । मैंने सोचा जहाँ 1 लिखते हैं वहाँ 2 लिख देता हूँ । पर मुझे डर लगने लगा कि अगर 2 लिखूँगा तब कालाबाज़ारी में माहिर सीमेंट का डीलर पकड़ सकता है । मैंने दो बार लाइन लगायी और मैं एक पर्ची और पा गया । अब उसको बेचूँ कैसे ? मैंने एक साहसिक फ़ैसला किया पर्ची सीमेंट वितरक को ही बेचने का । मैंने सीधे वितरक को ही परस्ताव दे दिया और वह चौक गया , इतना छोटा बच्चा और कालाबाज़ारी कर रहा

उसने मुझको धमकाने की कोशिश की पर मैं भी चालाक था । मैंने उसको सोने का अंडा देने वाली मुर्गी का किस्सा सुनाया और कहा कि मुझे पकड़वा कर आप उस मुर्गी की हत्या कर दोगे जो हर दिन आपको फ़ायदा पहुँचायेगा ।

मैंने लालच दिया और पर्ची देने का । अब लोभी के गाँव में ठग कहाँ उपवास करने वाले । उसने मुझे पहले पचास रुपये दिये फिर उसको लगा कि यह काम की चीज है पच्चीस रुपये और दिये यह कहते हुये कल फिर पर्ची ले आना । मेरी तक़दीर खराब थी या उस सीमेंट डीलर की, मेरी माँ के पास पैसा ख़त्म हो गया और घर का काम रुक गया । मेरी आमदनी का स्रोत बस एक ही बार मेरा साथ दे पायी । एक समस्या आ गयी, मैं कैसे घर से बाहर जाता सारा दिन के लिये । मेरे मामा ने पैसा न देकर मेरे घर का काम तो रुकवाया ही मेरी नयी- नयी आमदनी का स्रोत भी ख़त्म कर दिया । “

आंटी - “ यह सब तुम्हारे दिमाग में कैसे आया ? कक्षा 9 में यह बात तुम्हारे मस्तिष्क में आ गयी , यह एक आश्चर्य की बात है । ”

मैं - “ यह सब परेशानी के लम्हों की दासतां हैं । परिस्थिति जीवन में सब सिखा देती है । ”

आंटी - “ वह कालाबाज़ारी की बात कैसे दिमाग में आयी ? ”

मैं - “ मुक़द्दर का सिकंदर फ़िल्म देखी थी उसमें अमिताभ बच्चन कुछ ऐसा ही काम करते थे, वहीं से परेरणा आयी । ”

आंटी , ऋषभ सही कहता है , इस देश के कर्णधारों को सोचना चाहिये व्यवस्था कैसे सुधरे , व्यापार- वाणिज्य के लिये अनुकूल वातावरण का निर्माण किस तरह हो , लोग अपनी क्षमता का उपयोग कर सकें । एक गरीब आदमी अपना मकान नहीं बनवा सकता । यह पूरा प्रशासन- तन्त्र कालाबाज़ारियों से मिला हुआ होता है । यह जो शालिनी सीमेंट - शालिनी बिल्डिंग मटेरियल का साम्राज्य खड़ा हुआ है यह भी इसी कालाबाज़ारी के साम्राज्य से ही उपजा होगा । ”

हम लोग जुबली होस्टल से राजीव सिंह को लेकर जेएनयू के सामने के जवाहर बुक स्टोर पहुँच गये । जवाहर बुक स्टोर अपने आप में एक अलग दुनिया है । वहाँ पर दार्शनिकों का जमावड़ा रहता है । सबसे बड़ा दार्शनिक तो दुकानदार ही है , सिविल सेवा के हर विषय पर उसकी अपनी राय है एवम् किताब बेचने की विधा में माहिर है । वह हर तरह का मटीरियल रखता है । पुस्तकों की कापी राइट की तो धजियाँ उड़ा रखी हैं इन किताब वालों ने दिल्ली - इलाहाबाद में । किताब पाँच सौ की है , ले लो डेढ़ सौ में फ़ोटो कापी । राजस , राव , बिरलियंट के नोट्स हैं ... आप बस बोलो आधे घंटे में फ़ोटो कापी हाज़िर तीन- तीन फ़ोटोकापी मशीन लगी है ... धकाधक काम चालू ये सब हारे हैं तो सिर्फ़ हिंदी वालों से । हिंदी की किताब के दाम इतने कम होते हैं कि फ़ोटोकापी का रेट अधिक हो जाये ।

यूरोप का इतिहास - लाल बहादुर वर्मा- 50 रुपया
गोदान- 30 रुपया
गोदान समीक्षा - राजेश्वर गुरु - 40 रुपया
गोदान समीक्षा - सत्य प्रकाश मिश्रा - 50 रुपया
परम्परा का मूल्यांकन- राम विलास शर्मा - 75 रुपया ...
राग - विराग - निराला - 30 रुपया
मुक्तिबोध- अँधेरे में - 30 रुपया
डिस्काउंट अलग से दे देंगे ...
संस्कृत वाले तो जजमान का सम्मान करते हैं वह तो मूल्य दक्षिणा की तरह लेते हैं ।

समाजवाद की स्थापना में हिंदी से बड़ा योगदान लेनिनवादियों- मार्क्सवादियों का भी नहीं है । हम लोग हिंदी साहित्य दो कारणों से लेते थे एक हिंदी में बलभर पढ़ने- लिखने की छूट है , कोई तनाव नहीं अंग्रेज़ी में किताब पढ़ने का और दूसरे हज़ार रुपया में किताब तैयार घोटने को । हिंदी के अध्यापक भी उदार होते हैं , डॉ- डपट देते हैं यह कहकर कि , “ भाषा सीखो , इज़्ज़त न ख़राब करो इलाहाबाद की ” , और बता देते हैं कैसे पढ़ो । यह डॉना - डपटना ही गुरु - दक्षिणा है ।

अमर गुप्ता सर कहते हैं , पतली- पतली किताब हिंदी की ख़रीदो वह दो- चार वक्त के चाय - पान के खर्च में मिल जायेंगी और यह सारे हिंदी वाले अध्यापक वैकुंठ ही प्राप्त करेंगे , इतनी दुआ हम लोगों की इनको लगती है । वहीं जवाहर पर सत्यानंद तिरपाठी मिले वह हिंदी की किताबें ख़रीद रहे थे । मैंने पूछा , “ क्या करोगे इतना ” । वह बोले , “ हम हिंदी की किताब हर माह खरीदने का कोटा बना लिये हैं , ताउमर ख़रीदने का । इतना एहसान हिंदी का है मेरे पर , यह हिंदी न होती तब हम सिविल सेवा कभी पास नहीं कर सकते थे । अंग्रेज़ी में लिखकर हम क्लर्क की भी परीक्षा नहीं पास कर सकते । ”

वहीं आप विदेशी लेखकों को देखो ... अंग्रेज़ी के लेखकों को देखो लूट ही लेंगे । पता नहीं क्यों अंग्रेज़ी के अक्षरों के समावेश से किताबों का दाम आसमान छूने लगता है , शायद इनको लगता है कि दाम कम कर देने से किताब की हैसियत कम हो जायेगी । एक अभिजात्य संस्कार शायद किताब पर छपे मूल्य से आ जाता होगा , शायद इसीलिये अंग्रेज़ी शराब भी देशी शराब से मँहगी होती है जबकि बनाने की प्रक्रिया तो एक ही है । मुझे शराब

का अनुभव तो है नहीं पर गुणवत्ता में देशी शराब बेहतर लगती है । शराब का काम है नशा चढ़ाना । अंगरेजी शराब वाले पीकर घर में सो जाते हैं पर देशी वाले पूरे मुहल्ले हल्ला करेंगे , अपनी पत्नी -बच्चों से लड़ेंगे । जो वस्तु कम दाम में बेहतर कार्य कर रही वह हेय हो गई सिफ़्र इसलिये कि वह देशी है और दाम कम है ।

आंटी का शालिनी के प्रति अनुराग था । उसने दिल खोलकर किताबें ख़रीदी , उसके लिये । आंटी बहुत ही सहज और दयावान थी , उसने मुझसे कहा सारी किताब ख़रीद दो वह कहाँ पायेगी यह सब न्यूयार्क में । मैंने मदद कर दी बेहतर किताब ख़रीदने में । जवाहर वाला एक मोटा आसामी पाकर परसन्न हुआ और एक पुरानी न बिक रही किताब मुझको खुश होकर इनाम में दे दी । उसको लगा , यह आगे और ग्राहक लायेगा पर वह किताब सौ रुपये से कम के दाम की थी , अब हिंदी के किताबों की बिक्री का कमीशन भी हिंदी की ही तरह का होगा । मैं भी हद दर्जे का खुराफ़ाती ही हूँ , मैंने किताब कौन सी है इसके बजाय दाम ही पहले देखा और मन ही मन कहा , “ तेरी कभी बरकत नहीं होगी जो छल किया है तूने सस्ती किताब देकर “

... पर आँगन में मूसर लुढ़काने से डाँगर नहीं मरते ... मेरी बददुआओं का कोई असर नहीं हुआ वह दिन दूनी रात चौगुनी किताबें लोगों को चिपकाता रहा । इस सिविल सेवा परीक्षा में अभ्यार्थियों को कुछ मिले न मिले पर दुकानदार - कोचिंग चलाने वाले - होस्टल चलाने वाले धुँआदार पैसा कमाते हैं । हर गाँव- शहर में पिता- माता बग़ैर अपने बच्चों की रुचि - प्रतिभा मूल्यांकित किये ज्ञांक देते हैं इस परीक्षा में , और इस परीक्षा से जुड़े व्यवसाय को और मज़बूती प्रदान कर जाते हैं । यहाँ वर्ष - प्रतिवर्ष निराश लोगों का जत्था गाँवों की ओर वापस जा रहा होता है और कोचिंग संस्थान नयी- नयी ज़मीन लेकर विशाल अट्टालिकाओं के स्वामी हो रहे होते हैं । जो इस परीक्षा के बारे में बहुत ही सतही जानकारी रखता है वह सफलता का मन्त्र रखने का दावा करता है , जो कभी एक बार प्रारम्भिक परीक्षा या मैंस पास कर लिया वह एक मारीच का छद्म आवरण बनाकर लोगों को ठगे जा रहा । बिचूँ का ज़हर उतारने का मन्त्र न जानने वाले विषधारी सर्प के गरल को उतारने का दावा करके पूरे बाज़ार में क़ब्ज़ायमान हैं । मैंने स्वयम् अपनी आँखों से देखा बराइट कोचिंग में किस तरह इनके भविष्य के साथ अन्याय किया जा रहा ।

राजीव सिंह की जेएनयू मेन कैंपस में जाने में बहुत रुचि थी , रुचि मेरी भी थी पर उनकी अधिक थी । हम लोग गंगा ढाबा पर पहुँच गये । आंटी ने आस-पास का माहौल देखा .. बैफ़िकरी में घूमते लड़के- लड़कियाँ... एक ही सिगरेट से बारी - बारी सिगरेट पीते लोग एक खुला माहौल । आंटी जेएनयू

आयी थी , जब ऋषम आईआईटी में पढ़ा करते थे , इसलिये उसके लिये कोई खास बात न थी यह । राजीव सिंह ने कहा तुम लोग यहीं रुको मैं देखकर आता हूँ , कोई मिल जायेगा तो कुछ समय अच्छा बीतेगा । आंटी ने पूछा , “ कब से जानते हो तुम इन लोगों को ? ”

मैं “ यही इंटरव्यू के समय परिचय हुआ । ”

आंटी - “ इतनी जल्दी प्रगाढ़ता हो गयी ? ”

मैं “ अब आंटी बाकी जीवन साथ ही बीतेगा , यह सब भी मेरी ही तरह चयनित हुये हैं । अब सबके जीवन की धारा एक ही दिशा में बह रही है तब थोड़ा नज़दीकी आना स्वाभाविक ही है । ”

राजीव सिंह श्रुति घोष, स्मृति चक्रपाणि, रितेश सिंह के साथ आ गये । आंटी ने इतने लोगों को देखा वह प्रसन्न भी हुई सबको एकसाथ देखकर ।

श्रुति ने आते ही अपनी एक शायरी सुना दी ,

...

पूछती थी पता तेरा हर किसी से
हर कोई यही कहता था
वह बहुत साल पहले यहाँ रहता था
पता नहीं क्यों तू मुझसे ही नहीं
शहर से भी बैवफ़ाई कर बैठा ॥

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 160

आंटी श्रुति की शायरी से प्रभावित हो गयी । श्रुति लिखने के मामले में जन्मना जहीन थी । वह कभी भी , किसी भी समय शब्दों को तोड़-मोड़ कर भाव उत्पन्न कर देती थी । रितेश ने सिगरेट सुलगायी और श्रुति की तरफ बढ़ा दिया, कश खींचने के लिये । श्रुति ने अंगूठे और तर्जनी के बीच सिगरेट को पकड़ कर एक लंबा कश लिया , धुँये को नाक से निकालते हुये रितेश को वापस कर दिया । आंटी के चेहरे से लग गया कि उसको यह पसंद नहीं है पर उसने कहा कुछ नहीं । रागिनी और संजीव टंडन भी आ गये । रागिनी आईआईटी बहुत ज़ाया करती थी वहाँ पर उनका भाई सिविल

इंजीनियरिंग कर रहा था , यह भी लोग कहते थे रागिनी की धड़कनें आईआईटी के किसी बंदे ने कैद कर ली है , पर रागिनी इसको नकारती रहती है ।

संजीव टंडन आंटी को जानते थे , पिछली बार जवाहर पर मैंने आंटी का परिचय ऋषभ की माँ के रूप में कराया था । ऋषभ अपनी तेजस्विता और शालिनी अपने रूप- माधुर्य के कारण पूरे आईआईटी में विख्यात थे । लड़कियाँ वैसे ही गणित की उच्च कक्षाओं में कम ही होती हैं और आईआईटी में तो लड़कियाँ लड़कों की तुलना में बहुत ही कम आती हैं , अध्ययन के लिये । शालिनी ऐसी रूपवान तो शायद ही कभी आयी हो । वह बहुतों के ख्वाबों में रही होगी पर उसके लिये ऋषभ ही बना था । संजीव टंडन ने यह बताया था , “ जब ऋषभ - शालिनी के विवाह की खबर पहली बार फैली तब पूरी आईआईटी में एक मातम था .. उस रात एक मकतल था ख्वाबों का ... हर ओर रक्त ही रक्त... न दिखने वाला लहू जो महसूस किया जा सकता था हर कमरे के बाहर ।

संजीव टंडन ने बताया कि ऋषभ- शालिनी आईआईटी आये थे और अमरीका में यह लोग बहुत अच्छा कर रहे । आंटी का चेहरा तेजमय हो गया , गर्व से । वह ऋषभ से कुछ खास नहीं पूछती थी इस विषय पर , इसका एक कारण आंटी की एक दुख समाहित नाराज़गी भी थी , जो ऋषभ आंटी की बात न मानकर अमेरिका चला गया । जबसे आंटी ने मुझको देखा तब से आंटी का यह दर्द और भी उभर गया था । पर जब आज संजीव टंडन ने यह मामला छेड़ा तब वह और जानना चाह रही थी , ऋषभ की उपलब्धियाँ । उसकी उत्सुकता के झूले पेंग लेने लगे ।

आंटी - “ मुझे तो बेटा यह आप लोगों का काम और विदेश की कार्यविधि समझ कम आती है । ऋषभ भी अंतर्मुखी है इसलिये वह ज्यादा बोलता नहीं , मैं भी कम ही पता करती हूँ , उसका काम । तुम लोग नये ज़माने के हो , हमारी सोच से थोड़ा तारतम्य कम ही बैठता है । ”

संजीव टंडन - “ आंटी वह बहुत ही जीनियस है । हम लोगों से सीनियर था वह तीन साल , और बहुत तेज उसने विदेश जाने का विचार बना लिया था । वह जमाने की रफ्तार से तेज दौड़ने वाला बंदा है । उसकी प्राइम नंबर के रिसर्च ने उसको हीरो बना ही दिया था , वह इस बार कम्प्यूटर इंजीनियरिंग के लड़कों को रिकॉर्ट कर रहा अपने साथ काम करने के लिये । वह जिस तरह से लाभ में भागीदारी का प्रस्ताव दे रहा वह बहुत ही आकर्षित कर रहा नये पास आउट को । उसके गाइड कह रहे यह शीघ्र ही बड़ा नाम करेगा । इस साल के कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की टाप फ़ाइव रैंक को वह अपने साथ अमेरिका ले जा रहा ।

आंटी का चेहरा बेटे की प्रश्नस्ति से कांतिमय हो गया । उसके चेहरे की आभा में संजीव टंडन के शब्दों के साथ- साथ तेज बढ़ता जा रहा था ।

आंटी - “बेटा मुझे कम्प्यूटर तो आता नहीं । मैं गाँव की एक महिला हूँ । दिल्ली ऋषभ के पापा के साथ आयी थी । मैं हयूमेनिटीस ही पढ़ी हूँ, गणित - विज्ञान तो मुझे आता नहीं । इसलिये मुझे ज्यादा समझ नहीं है तुम लोगों के काम की । यह आईएएस की परीक्षा की ही बात इलाहाबाद में सब करते हैं, इसलिये यही हम लोगों को अधिक पता रहता है पर अब दुनिया में नये- नये रास्ते विकसित हो रहे, और भी राहें जीवन की खुल रहीं जो न थी हमारे वक्त पर । ”

संजीव टंडन - “आंटी जी उसके लिये आईएएस नहीं था । वह एक अलग तरीके का बंदा है । उसका दिमाग कम्प्यूटर में, गणित में बहुत फ़ास्ट चलता है । कम्प्यूटर और गणित में अगर दिमाग एक तरह से ही तेज चले तब बेहतर करने की संभावनायें बढ़ जाती हैं । उसका मोटो ही है, “*stop living in the past*” । हम लोग भी इंतज़ार में हैं देखने को वह दिन जब वह कुछ बड़ा करेगा । वह अब भारत वापस नहीं आयेगा, उसके लिये इस देश का क्षिति छोटा पड़ेगा । ”

आंटी को आखिरी लाइन लग गई, “अब वह भारत वापस नहीं आयेगा । ”

आंटी - “क्यों नहीं आयेगा ? कुछ दिन काम करेगा फिर वापस आयेगा । ”

संजीव टंडन बहुत तेज था वह समझ गया कि यह बात किसी भी माँ को बेध सकती है । उसने भूल सुधार ली यह कहकर, “मेरा मतलब है अभी वक्त लगेगा आने में । काम को सेट करने में समय लगता है । एक बार कर लेगा तब आ सकता है । ”

मैंने बात बदलते हुये स्मृति से पूछा, क्या रैंक है ? क्या मिलेगा ? उसने कहा, आईपीएस/ आईआरएस मिल जायेगी ऐसा लोग कह रहे, पर मैं आईआरएस ही लूँगी । अब और कोई परीक्षा के लिये पढ़ने की ताक़त नहीं रह गयी मेरे पास ।

श्रुति घोष ने कहा, “यह सारा दिन एक ही बात रैंक.. नौकरी.. सर्विस... आजिज़ आ गयी मैं । कुछ और बात करो... यह बहुत हो गया । पिछले

25 -26 दिन से एक ही बात ... अब यह नौकरी की बात बंद करो ...
स्मृति तुम ही सुना कुछ ... चल इसी को लयबद्ध कर दे ।

वह एक ग्रैर मामूली दास्ताँ थी
जब हम मिले थे एक अजनबी की तरह
कुछ खास न हुआ हमारे दरम्यान उस रोज
सिवाय कुछ तहज़ीबी संवादों के
पर उस रोज़ से बदल गयी मेरे ख्वाबों की तासीर ।

स्मृति गाती है । उसे भजन गाना पसंद है, उसे रागों की समझ है । मैंने पूछा
, “ क्या किसी शास्त्रीय गायन पद्धति से गाती हो ?

स्मृति - हाँ, गा लेती हूँ ।

श्रुति- “ इसको गा ..

होरी खेलई बनेगी, रुसों अब न बनेगी
मेरी कहो तू मान नवेली, जब वाँ रंग मैं सनेगी
कई बेरी गई तू नहीं मानत, ऊँची करि ठोड़ी भौहें तनैगी .. ।

मैं “ यह तो धमार है ।”

श्रुति- “ देखो जीएस का ज्ञान न घुसेड़ो यहाँ पर । इसको गाने दो । ”

स्मृति - “यह है क्या? ”

मैं “आचार्य बृहस्पति की पुस्तक है “ संगीत चिंतामणि “ , इसमें ज़िक्र है
इसका / इसका मतलब यह है कि फगवा (फाग का उपहार) दिये जाने पर
ही नायिका होरी खेलेगी । ”

श्रुति- “ यह तो शोले फ़िल्म ऐसा हो गया ... होली कब है .. होली कब है ...
बसंती नाचेगी ... ”

मैं कुछ तुलसी ही गा दो ...

स्मृति - “ तुलसी मैं कौन सा ! ”

मैं “जनकसुता कई सुधि भामिनी

जानहि कहि करिबर गामिनी
पंरा सरहि जाहु रघुराई
तहँ होइहि सुगरीव मिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुबीर
जानतहूँ पूछहू मतिधीरा ॥
बार- बार परभु पद सिर्स नाई
परेम सहित सब कथा सुनाई ॥”

इसी को गा दो धमार शैली में ।

श्रुति- “ धमार शैली में ही क्यों? ”

मैं- “धमार में लोकजीवन की धूम है । गोपियों का वर्णन, होली का वर्णन बहुत है । यह पखावज पर चलती है और ताल भी धमार ही है, मात्राएँ भी 14 होती हैं । परयोग धर्मी शैली है । तुलसी का पूरा काव्य ही लोकजीवन का है । ”

श्रुति- “ फिर जीएस का ज्ञान घुसेड़ मारा । कभी गाया है ? कभी राग अलापा है ? बस सिविल सेवा में राग पढ़ लिया, बन गये तानसेन । यही समस्या है तुम लोगों के साथ । ”

मैं- “ तुम लोग कौन ? ”

श्रुति- “ इलाहाबादी ... यहाँ जेएनयू में भी आ रहे एमफिल करने ... सब तुमको आता है ... अधजल गगरी छलकत जाय मुहावरे का वाक्य परयोग.. ... “ इलाहाबाद का आदमी सिविल सेवा की परीक्षा देकर सबसे ज्यादा ज्ञान बघारता है उसी तरह जैसे अधजल गगरी छलकत जाय.. ”

मैं- “ मुझे राग आता है । ”

श्रुति- “ सिवाय फ्राड के और कुछ नहीं आता ... चल छोड़ स्मृति तू गा ... / ”

स्मृति - “ होली तो उन्माद का प्रतीक है, जो तुम कह रहे तुलसी का गाने को उसमें कौन सा जीवन- लालित्य है? ”

मैं- “ आशा तो है । आशा अपने आप में एक लालित्य है । ”

श्रुति- “ यह सब विमर्श छोड़ो ... बस गायन करो ...

श्रुति... स्मृति राग अलापने लगे ... रितेश मेज़ को बजाने लगे

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 161

आंटी ने कहा .. “संगीत एक प्राणायाम हैं , एक भक्ति है ... एक वंदना है यह स्वतः को जानना है , तुम लोगों के कंठ में सरस्वती का वास है संगीत एक सहज प्रक्रिया है जीवन की ... यह सभी के जीवन में समावेशित है । ईश्वर जिसको अपना सामीप्य देना चाहता है उसी को स्वरों से अनुगृहीत करता है ...

चींटी के पग नुपुर बाजे , वह भी साहेब सुनता है ,

तुम लोगों का भक्तिरस युक्त गायन
तो सीधा .. परमात्मा तक पहुँचेगा ।”

स्मृति ने कहा , “यह तो कबीर ने कहा है ।”

आंटी -“कबीर हो , तुलसी हो .. हैं तो यह सब लोकजीवन को ही समर्पित । यह गायन तो लोकजीवन के लिये ही है । गायन का आरंभ तो प्रकृति के तादात्म्य से ही हुआ होगा .. कौन सा पहला स्वर रहा होगा ?

कब संगीत का बोध पहली बार हुआ होगा ?

जल में तैराकी से उपजा स्वर ? ... जलचरों की जुगलबंदी लहरों के साथ ? ... या नाव के चप्पू का स्वर पानी से खेलता हुआ या उससे भी पहले हवाओं का शजर से .. उसकी डालियों से .. पत्तियों से केलि करना .. बनाता एक स्वर लहरियाँ और उसी में छूबता मनुष्य...पर ईश्वर की वंदना शायद सबसे पहला लयबद्ध स्वर रहा होगा ।

उसका गुणगान ही परम ध्येय रहा होगा , संगीत के सृजन का । तत्पश्चात् संतों - सूफ़ियों - फ़क़ीरों ने इसमें अपना योगदान दिया ही है । ऋग्वेद काल से ही संगीत के अवशेष मिलते हैं पर मध्य काल से संगीत का एक प्रसार होता है जो जन- जन में व्याप्त होने लगता है ।

श्रुति- “आपको संगीत आता है क्या आंटी ?”

आंटी - “जब मैं दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ने गयी तब मैंने संगीत को एक विषय के रूप में चुना था, सीखा भी पर विधि का विधान कुछ और था मेरे लिये, जिसके सम्मुख नतमस्तक सबको होना ही पड़ता है।”

स्मृति - “संगीत का शास्त्रीय रूप आपने सीखा है।”

आंटी - “हाँ तब सीखा ही था। भरत का नाट्यशास्त्र उसी समय पढ़ा था जिसमें भारतीय संगीत के प्राचीनतम लक्षण मिलते हैं। भारत में संगीत उस समय विकसित हो गया था, बाद में यह क्लासिकल म्युसिक विकसित हुआ। यह जो संगीत के सात स्वर हैं षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धौवत, निषद जिसको हम सा, रे, गा, मा, प, ध, नि कहते हैं यह यूरोपियन मेजर स्केल से साम्यता रखते हैं। यह जो 22 श्रुतियाँ हैं यह इन्हीं सात स्वरों में विभक्त हैं।

आप लोगों ने फ़िज़िक्स पढ़ी ही होगी जिसमें स्वर की उत्पत्ति का सिद्धांत व्याख्यायित है। किसी पदार्थ में २५६ बार कंप होने पर षड्ज, ऐसे ही कंप होने पर ऋषभ, ३२० बार कंप होने पर गांधार स्वर उत्पन्न होता है, और इसी प्रकार बढ़ते बढ़ते ४८० बार कंप होने पर निषाद स्वर निकलता है। कंपन ही स्वर का निर्धारण एवम् नियन्त्रण करते हैं। कंपन जितना ही अधिक और जल्दी जल्दी होता है, स्वर भी उतना ही ऊँचा चढ़ता जाता है। अगर क्रमवार देखो तब षड्ज से निषाद तक सातों स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं। एक सप्तक के उपरांत दूसरा सप्तक चलता है, जिसके स्वरों की कंपनसंख्या इस संख्या से दूनी होती है। इसी प्रकार तीसरा और चौथा सप्तक भी होता है। यदि प्रत्येक स्वर की कंपनसंख्या नियत से आधी हो, तो स्वर बराबर नीचे होते जायँगे और उन स्वरों का समूह नीचे का सप्तक कहलाएगा।

भारत में यह भी माना गया है कि ये सातों स्वर क्रमशः मोर, गौ, बकरी, करौंच, कोयल, घोड़े और हाथी के स्वर से लिए गए हैं, अर्थात् ये सब प्राणी क्रमशः इन्हीं स्वरों में बोलते हैं, और इन्हीं के अनुकरण पर स्वरों की यह संख्या नियत की गई है। भिन्न भिन्न स्वरों के उच्चारण स्थान भी भिन्न भिन्न कहे गए हैं। जैसे,—नासा, कंठ, उर, तालु, जीभ और दाँत इन छह स्थानों में उत्पन्न होने के कारण पहला स्वर षड्ज कहलाता है। जिस स्वर की गति नाभि से सिर तक पहुँचे, वह ऋषभ कहलाता है। ऐसे ही हर स्वर का विज्ञान है। ये सब स्वर गले से तो निकलते ही हैं, वायों से भी उसी प्रकार निकलते हैं। इन सातों में से सा और प तो शुद्ध स्वर कहलाते हैं, क्योंकि इनका कोई भेद नहीं होता; पर शेष पाचों स्वर दो प्रकार के होते हैं—

कोमल और तीव्र। प्रत्येक स्वर दो दो, तीन तीन भागों में बंटा रहता हैं, जिनमें से प्रत्येक भाग 'श्रुति' कहलाता है।

राग भी यहीं से जन्म लेते हैं जो पाँच या अधिक नोट्स से बनते हैं और जिस पर एक मेलोडी आधारित होती है। राग दिन और रात में इसी मेलोडी के आधार पर बाँटे जाते हैं। यह राग समय और भावनाओं दोनों के आधार पर विभक्त हैं। राग भैरव का संबंध भय से, राग कौशिक खुशी और उन्माद से। कभी सोचा है, यह राग परहरों में क्यों विभक्त हैं? एक वैज्ञानिकता इसके पीछे है। पंचम को देखो यह रातिर और परेम से संबंधित है, भारतीय स्वर प्रतिनिधित्व करते हैं किसी न किसी मनःस्थिति का। यह भी एक आश्चर्यजनक तथ्य ही है कि राग यूरोप के मेजर स्केल से साम्यता रखते हैं। यहाँ तक कि वाद्य यन्त्रों में भी साम्यता है। वीणा की आप दस स्ट्रिंग देखिये, यह इजिप्ट के वाद्य यंत्र से साम्यता रखता है।

यह संगीत पूरी तरह से एक मानवतावाद और अन्तर्राष्ट्रीय वाद से जुड़ा है। जब जगत को अन्तर्राष्ट्रीयवाद की संकल्पना का ज्ञान न था तब संगीत में यह विद्यमान था। “

आंटी ने मुझसे कहा, “बहुत देर हो गयी, अनुराग अब चलते हैं, शालिनी के घर भी जाना है। ऋषभ कह कर गया है जल्दी आना।”

स्मृति- “आंटी आप को तो बहुत संगीत आता है। कुछ और बताइये।”

मैं भी विस्मय में था, इतने दिन साथ रहा पर आंटी ने कभी अपने अंदर का यह रहस्य न खोला।

श्रुति- “आप आंटी गाते भी हो।”

आंटी- “गाती थी.. अब तो नहीं गाती। अनुराग उर्मिला से पूछना वह बतायेगी मेरा कंठ कैसा था। यह संगीत एक रियाज़ माँगता है। अगर रियाज नहीं करोगे तब आप गा नहीं पाओगे। चित्रकारी हो, लेखन हो या संगीत - सबमें एक निरंतरता की चाहत होती है। अगर वह नहीं है तब आप के हाथों से विद्या छूटने लगती है। तानसेन ने ध्रुपद शैली को परवान चढ़ाया। यह परवान उनके रियाज़ से ही चढ़ा और कई रागों को जन्म दिया। उसके बाद ख्याल आया और वाद्य यन्त्रों का भी अविष्कार हुआ। ध्रुपद के साथ वीणा का सामंजस्य था और ब्रज भाषा का। इस संगम ने प्रबंध गायकी को

कमजोर कर दिया । ख़्याल ने धरूपद को कमजोर किया । धमार में लोकजीवन का उल्लास था, शब्दों की सरलता थी वह भी उभरने लगा । यह रियाज़ से ही संभव है, रागों पर नियन्त्रण । मेरा रियाज़ अब होता नहीं, इसलिये कंठ में वह माधुरिमा नहीं है ।

स्मृति - “आंटी क्या अंतर है धरूपद और ख़्याल में?“

आंटी - “धरूपद में स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग चार अंग होते हैं, ख़्याल में स्थायी और अंतरा प्रमुख होते हैं । ख़्याल में “तैयारी” के साथ तानों का प्रयोग होता है, जबकि धरूपद में तानों का प्रयोग वर्जित होता है । एक ख़ास बात यह है कि ख़्याल नारी के कंठों के अनुकूल है, इसलिये अधिक सहज है । गमक और मुक्की का प्रयोग ख़्याल में होता है । कुछ गमकों का प्रयोग धरूपद गायन में वर्जित है । यह वर्जना धरूपद को ख़्याल से कम लोकप्रिय कर गयी ।

मेरे ख़्याल से, इसीलिये स्मृति सिर्फ़ “ख़्याल” में ही गा रही है । यह नारी के कंठ के अनुकूल है और अधिक स्वच्छंदता प्रदान करती है ।“

स्मृति - “आंटी, मैंने इतना विश्लेषण न तो कभी किया न ही सुना । जो हमारे संगीत के गुरुजी हैं वह भी कभी मुझसे यह सब नहीं कहे । अब मैं यह तो नहीं कहूँगी कि उनको पता न होगा, पर शायद हमको इस योग्य न समझा हो ।“

आंटी - “इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिये शास्त्रीय पक्ष पढ़ना होगा । मेरे पास किताब है, मैं अनुराग या ऋषभ से भेज दूँगी आप पढ़ना । मेरे अब वह किस काम की?“

आंटी ने एक ऐसी आभा बिखेर दी थी कि सब हतप्रभ उसको देख रहे थे । मेरा सम्मान आंटी ने बढ़ा दिया ।

श्रुति ने मुझसे पूछा, “आंटी तुम्हारी माँ की बहन हैं?“

आंटी ने कहा, “यह मेरा बेटा है । ईश्वर ने इसे मुझे प्रदान किया है, बगैर प्रसव की पीड़ा के । कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जिनको व्याख्यायित करने में शब्द असमर्थ होते हैं । यह मेरी बहन का बेटा है, यह अगर कहा जायेगा तब मेरा और अनुराग का जो संबंध है वह पूर्णरूपेण व्याख्यायित नहीं हो सकता । मैं इसकी माँ से भी कहूँगी यह मेरा बेटा है ।“

आंटी ने एक सम्मोहन बिखेर दिया था अपने ज्ञान और अपनी भाषा की जातूगरी से । यह प्रशांत महासागर से भी गहरी और महासिंधु की तरह गंभीर है । इसको समझ पाना आसान नहीं ।

स्मृति - “ आंटी फिर आना आप । ”

आंटी - “ आप लोग आना । यह अनुराग अभी है एक- दो दिन और है उसके साथ आ जाओ , नहीं तो आप लोग ही आना । मैं पूसा कैंपस में ही रहती हूँ , वहाँ आना बहुत आसान है । मैं अनुराग के पास एकेडमी तो आजँगी ही , वहाँ हम मिलेंगे ही । ”

मैं , आंटी , राजीव सिंह जेएनयू से आहूजा साहब के यहाँ चले । ड्राइवर तिवारी से आंटी ने कहा हम लोगों को आहूजा साहब के यहाँ उतारकर राजीव को होस्टल छोड़ आओ ।

जैसे ही आहूजा साहब की कोठी के सामने कार रुकी , मैं कोठी देखने लगा । पृथ्वी राज रोड दिल्ली पर कुछ बँगले एक लाइन से बने थे और उन बँगलों में सबसे बड़ा और शानदार आहूजा साहब का मकान । एक दो तल्ली कोठी , सामने बड़ा लान जिसमें अशोक के लंबे पेड़ , एक बाग की शक्ल दे रहे लान को , पोर्टिंगों में दो बड़ी कारें , दरवाज़े पर दो दरबान बन्दूकें के साथ , एक ऊँचा महलों ऐसा मोटा बड़ा लोहे का गेट ... दरवाज़े पर लिखा “ मगध ” और गेट पर नींबू - मिर्ची लटका हुआ ...

मैंने आंटी से कहा “ इसी में जाना है ? ”

तिवारी ड्राइवर - “ साहेब से बड़ा मकान दिल्ली में बहुत कमै लोगन के पास होई । भीतर कमरै- कमरा हअ । हम ड्राइवर नौकर के पाँच कमरा पीछे बा । ”

मैंने जीवन में ऐसा मकान अंदर से न देखा था । इलाहाबाद का आनंद भवन - जवाहर बाल भवन हम लोग बचपन से ही देखते थे और सिविल लाइंस , जार्ज टाउन के वकीलों - डाक्टरों के बड़े- बड़े बँगले इलाहाबाद में हुआ करते हैं , वही हम लोग देखते थे , बाहर से साइकिल चलाते हुये । पर इतना शानदार बँगला शायद ही किसी का हो । इस दिल्ली ऐसे शहर में इतना बड़ा बँगला अकल्पनीय था मेरे लिये । मैंने आंटी से पुनः पूछा , “ इसी में जाना है ? ”

आंटी मेरी भाव भंगिमा से समझ गयी कि मेरे अंदर विस्मय ही विस्मय है , विराटता को देखकर । उसने कहा , “ मैं भी बहुत ही कम आयी हूँ । मैं भी बहुत सहज नहीं हो पाती हूँ , इतनी विलासिता के मध्य । ”

पोर्टिको के अंदर से दायीं ओर एक ऊँचा दरवाजा , अकबर के बुलंद दरवाजा सदृश एक ऊँचा मुहाना जो घर के भीतर का प्रवेश द्वार था । वह द्वार खुला एक बड़े हाल में जहाँ लोग बैठकर इंतज़ार करते होंगे जो भी मिलने आता होगा । इस हाल के दोनों ओर दरवाज़े थे जो खुलते थे दो कमरों की तरफ । नौकर ने देखते ही दौड़कर बायीं ओर के हाल का दरवाजा खोला ... पूरे कमरे में कालीन .. दीवारों पर चित्रकारी... कमरे के एक कोने में एक स्त्री नर्तकी की मुद्रा में और पश्चिम दीवार पर बड़ी सी विष्णु की पद्मनाभ की पैंटिंग.... मेरी असहजता अपनी पराकाष्ठा पर इतने बड़े- बड़े सोफे और इतनी भव्यता तो मैंने देखी ही न थी , सिर्फ सुनी थी मिथक कथाओं में इन्द्र का दरबार , उनका जीवन और विलासिता ... आज सजीव देख रहा जो सुना था मैंने किस्से- कहानियों में

मेरे मस्तिष्क में एक ही बात उभरी ...

इतनी भी असमानता ठीक नहीं..

मेरे इस विचार में मेरी अभावजनित कुँठा भी थी और ईर्ष्या भी ।

ऐसा अकल्पनीय वैभव , रावण के महल ऐसा ...मैंने दूरदर्शन के रामायण सीरियल में देखा था । रावण के सभा- कक्ष सदृश हाल था आहूजा साहब का , जहाँ पर दो गरीब आंटी और मैं बैठे थे और तीसरा महान दरिद्र किंतु लोभी चिंतन उपाध्याय आने वाला है । इस वृहद कक्ष में सिर्फ एक राजसिंहासन लगाने की आवश्यकता थी जिस पर आहूजा साहब विराजमान हो जायें ऐश्वर्य और सम्पन्नता की सीढ़ियों पर चढ़ते हुये और एक प्रशस्ति- गान हो , पर मैं न लिखूँगा इस डकैती का यशो- गान । मेरे गाँव के लोग भूख

से बेहाल हैं और एक यह आहूजा है , रहने वाली दो मुर्गी, मकान पाँच बीघे ऐसा । लोगों को घुसकर मकान क़ब्ज़ा कर लेना चाहिये । मेरे अंदर की करान्ति धर्मिता जग गयी । मैं कोई करान्ति कर सकूँ या न कर सकूँ पर मेरे रक्त में करान्ति की लाला मज्जा का निवास निःसंदेह है ।

शालिनी को जैसे ही पता चला कि हम लोग आ गये हैं , वह भागती हुई ऊपर से नीचे की ओर आयी । उसकी सज्जा से लग रहा था आज और लोग आने वाले हैं । शालिनी ने आते ही आंटी के चरण स्पर्श करने का नाटक ऐसा किया । यह चरण स्पर्श एक नाटक ऐसा ही होता है , बस थोड़ा सा रीढ़ की हड्डी को धनुषाकार करो हाँथों को घुटनों के पास ले जाओ, हो गया चरण-स्पर्श । मेरे बाबा तो नाराज हो जाते थे । वह कह देते थे , ऐसे पैर छूना हो तो रहने दो । यह शरद्धा की बात है न कि खानापूर्ति की । एक बार एक व्यक्ति आया यह कहने कि , हमारा बेटा बहुत बेहतर नहीं किया कक्षा दस में । वह बस येन- केन प्रकारेण पास हुआ है । बाबा ने कह दिया , जैसा संस्कार है वैसा ही परिणाम होगा । उसको संस्कार सिखाओ । उनके संस्कार की परिभाषा में शरद्धा युक्त चरण- स्पर्श भी आता है ।

शालिनी ने नौकर को आवाज़ दी , वह पानी लेकर आया । शालिनी के हाव-भाव से लग गया कि मैं कुछ पहले आ गया था । वह थोड़ी देर बाद हम लोगों के आने की उम्मीद कर रही थी । मैंने बात- चीत को बढ़ाने की मंशा से कहा , घर तो काफ़ी बड़ा है ।

शालिनी - “ हाँ घर बड़ा है । पापा ने बहुत पहले सस्ते दामों में ले लिया था , आज तो यह संभव ही नहीं है लेना । आओ तुमको घर दिखाती हूँ । पापा बस आ ही रहे हैं , माँ को बुलाती हूँ ।”

शालिनी ने घर दिखाना आरंभ किया , जिस हाल में हम लोग बैठे थे उसी से सटा एक बड़ा डाइनिंग हाल था जिसमें पचास - साठ लोग आराम से एक साथ खाना खा सकते थे । उसी कमरे की दीवारों पर शराब की बोतलें लगी थीं । यह एक “बार “है , ऐसा शालिनी ने बताया । मुझे तो “बार “के बारे में पता था नहीं । उस बार नुमा जगह के सामने मेज़ और ऊँची कुर्सियाँ लगी थीं । कमरे से बाहर निकल कर सामने का लान और पोर्टिको आता था । कमरे के बाहर एक बड़ा हाल था जहाँ पर सोफे लगे थे और वहीं से पीछे की तरफ रास्ता जाता था , जहाँ से एक गेट बाहर निकलने का था और पीछे की ओर लान भी था । मेरे दिमाग़ में ख्याल आया कि यहीं से आहूजा साहब लुंगी-बनियान में भागे होंगे जब चिंतन सर के आदमी आये थे । यह रूपया अपने पीठ पर एक मज़दूर की तरह लाद कर भागा होगा । रूपये में बहुत ताक़त होती है , वह स्वयम ऊर्जा दे दी होगी इनको भागने में । रास्ते में कोई दो थबरा मारकर छीन लेता तो ? यह डर न लगा होगा क्या इसको । हमारे इलाहाबाद में तो कोई छीन ही लेता । वहाँ तो अमृत - परभात में छपता ही रहता है , “ महिला की जंजीर सरेआम छीनी गयी , घर में घुसकर दिन-दहाड़े लूट हो गयी । ” यहाँ दिल्ली में लगता है किसी को फुर्सत नहीं है , अपने काम से काम है सबका । सबके पास काम है , धन्धा है व्यस्तता है । हमारे इलाहाबाद में कोई काम ही नहीं है सिवाय चाय- पान की दुकान पर खड़े होने के और बेवजह सवाल पूछने के ।

कोई भी सड़क पर जा रहा हो यह पूछना ही है , “ कहाँ जा रहे हो ? ” “ अगर कुछ सामान हाथ में है तब यह पूछना ही है , “ क्या लिये जा रहे हो ? ” “ अगर न बताओ तो पकड़ ही लेंगे .. अरे भाई दिखाओ तो का लिये जा रहे हो ... यह तो नोटों से भरा बोरा देखकर कहते ... अरे राम के राम इ कहाँ से लूट के आवत हउ महराज ... ”

आहूजा का बोरा तो लूट ही लेते । अच्छा हुआ यह आहूजा व्यापार दिल्ली में किया सरकारी एजेंसी के पहले तो शहरै वाले लूट लेते ।

मैंने देखने की इच्छा ज़ाहिर की बाहर का दरवाजा । शालिनी ने इशारा किया पीछे के दरबान को । उसने दरवाजा खोला । पीछे एक चौड़ी सी ही सड़क थी , कोई सँकरी गली न थी । यहीं से आहूजा साहब अपना माल- टाल लेकर भागे होंगे । हम लोग वहाँ पर थे ही कि शालिनी की माँ , आहूजा साहब और ऋषभ भी आ गये ।

आहूजा साहब का पेट किलोमीटरों विस्तारित था । पेट ने रीढ़ की हड्डी पर दबाव डालकर उस को धनुष बना दिया था । उनकी नाक मोटी थी और अतिशय गोरे थे । उनकी आवाज़ भारी थी । वह बंधीदार पैंट पहने थे । पैंट के दोनों तरफ दो बद्धी थी जो उनके कंधों के सहारे पैंट को समायेजित कर

रही थी । मुझे लगा यह पैंट पेट पर टिका रहे , इसलिये यह दो डोरिया लगायी गयी हैं । अब हम मूढ़ता के महानतम स्तम्भ को क्या पता कि यह फ़ैशन है । मेरी माँ तो कहती थी कि एक थान से ही कपड़ा लो ताकि कपड़ा कम लगे , यह आहूजा साहब तो बेवजह कपड़ा बर्बाद किये हैं दो डोरी लगाकर । ख़ैर यह बड़े आदमी हैं , यह अगर कपड़ा ज्यादा इस्तेमाल नहीं करेंगे तब क्रौन करेगा ।

शालिनी की माँ सुंदर थीं । वह गोरी भी थीं, तीखे नयन- नक्श थे , बाल पूरे काले किये हुये और चेहरे पर पोताई भी थी मेक अप की ।

शालिनी ने मेरा परिचय कराया । आहूजा साहब ने खुशी ज़ाहिर करते हुये कहा , “बहुत खुशी हुयी मिलकर ... बहिन जी और शालिनी से बहुत सुना आपके बारे में ।”

मैं - “मैंने भी बहुत सुना आपके बारे में । चिंतन सर ने भी बताया है । आंटी और शालिनी जी तो आप का यशोगान करते ही रहते हैं ।”

आहूजा साहब - “मैं बहुत छोटा सा आदमी हूँ । बस एक छोटी सी यह कुटिया ही है । यह हमारे मान- सम्मान बनाये है । मैंने पैसा तो नहीं कमाया पर इज़्ज़त बहुत कमायी है । ऋषभ- शालिनी - आप - कुंडली गुरु साहेब .. आप सब लोगों के कारण हमारी समाज में प्रतिष्ठा अब तो और भी बहुत बढ़ गयी है । मैंने आज अपने एक- दो और लोगों को शाम को बुलाया था खाने पर , उन लोगों ने बता दिया कुछ और लोगों को । आप सबका इतना बड़ा नाम है कि वह खुद ही हमको फ़ोन किये यह कहते हुये , “भाई साहब हमको भूल गये आज शाम को इतने अफ़सरान अपनी बिटिया के घर के आ रहे और हमको आपने पूछा ही नहीं ।”

मैं - “अंकल जी यह सब कृपा है पूर्वजों की .. मेरी माँ की .. आंटी की तपस्या है .. यह गौरव मिला ... नहीं तो हम कहाँ इतने काबिल थे । बस आशीर्वाद है ।”

आहूजा साहब - “बहन जी बहुत गंभीर हैं । कभी इन्होंने ज़िक्र भी न किया अपने बहन के बच्चों का । वह तो कुंडली गुरु ने बताया तब पता चला ।”

मैं - “मैं कहता आंटी ही हूँ आपकी समधन जी को पर यह मेरी माँ से ही कह देती हैं , अनुराग मेरा बेटा है ।”

आंटी - “यह समधन शब्द बहुत दिन बाद सुना मैंने । यहाँ दिल्ली में तो शब्दों का अकाल है । हिंदी में ऐसी पंजाबी घुसेड़ मारा है कि हिंदी के शब्द हमारे शब्द- कोश से बाहर हो गये ।”

शालिनी - “यह समधन क्या होता है ।”

मैं - “ यह एक डाके का शब्द है । जब लड़की- लड़के के मध्य नज़दीकी आ जाये और संबंधों में अपहरण ऐसी प्रक्रिया आरंभ हो जाये और वह भी पूरे रीति- रिवाज के साथ । तब वह दो लोग जो कभी बहुत नज़दीक थे दूर होने की प्रक्रिया को स्वीकार कर रहे होते हैं विवशतावश , ऐसे लोगों को समधी - समधन कहते हैं । ”

शालिनी - “ मेरी समझ कुछ न आया । ”

आंटी - “ यह सारा दिन ऐसे ही भरमाता रहता है , इसकी बात सुन लो बस । इसकी बात एक डायरी में लिख लो . कभी काम आयेगी । ”

मैं - “ शालिनी तुम हमको और आंटी को न्यूयार्क बुलाना , हिंदी सचिव के चुनाव मे मदद के लिये । मैं आपकी जीत सुनिश्चित कर दूँगा । और यह बात चिंतन सर को न बताना नहीं तो वह हवाई जहाज़ के डैने से लटक कर आ जायेंगे । ”

शालिनी - “ जरूर .. माँ जी तब आ भी जायेंगी , ऐसे तो नहीं आयेंगी । यह डैने से लटकने वाली बात तो मैं सबसे बताऊँगी । यह बहुत नायाब है । ”

मैं - “ अभी क्या देखा .. जब चंदन - मंदन लगा लेंगे तब देखना ... ”

शालिनी - “ अनुराग तुम बात को प्रतीकों में बहुत कहते हो । ”

आंटी - “ यही तो इसका कौशल है । ”

ऋषभ - “ अनुराग , तुम्हारा यह सुझाव बहुत ही अच्छा है । तुम और माँ एक साथ न्यूयार्क आओ । ”

मेरा हाथ फिर जेब में गया ... सौ- सौ के चार नोट और सौ रुपये का फुटकर ... इतने पैसों को लेकर न्यूयार्क कैसे जाऊँगा । मेरा सारा ज्ञान सिर्फ़ सामान्य अध्ययन पढ़ने के कारण है । रंग हो , साहित्य हो , कला हो , संगीत हो या देश की तमाम विशेषताएँ - समस्याएँ । यह भारत की मौद्रिक नीति में पढ़ा है कि रुपये की पूर्ण कन्वर्टिबिलिटी हुयी है नहीं । यह रुपया डालर में बदलेगा तब सरकार साठ रुपया का एक डालर देगी । यह सौ- सौ के चार नोट साढ़े 6 डालर होंगे और फुटकर तो वह बदलेगा ही नहीं , भगा ही देगा । पासपोर्ट भी नहीं है । इस बात को चिंतन सर से बचाना ज़रूरी है । वह तो कल से ही लग जायेंगे अमेरिका के चक्कर में । वह तो दोहन में मास्टर हैं । अंगरेज उपनिवेशों का दोहन क्या किये होंगे जो चिंतन सर किसी आसामी का करते हैं । यह ईमानदारी का ड्रामा करते हैं पर कह देते हैं गाँव में सीमेंट गिरा दे , सरिया गिरा दो , बजरी गिरा दो । यह जो गाँव का मकान बना है , वह बना तो ऐसे ही दोहन से ही है । यह सुल्तानपुर के लिये काम कर रहे और मैं बेवकूफ हूँ करछना - इलाहाबाद के लिये कोई काम नहीं कर रहा ।

इनका भाई रमाकान्त यहाँ पंडित होकर घंटी बजा रहा सुबह - शाम । वह निरा बेवकूफ है सिवाय घंटी बजाने के और तो कुछ कर नहीं सकता । मैं ही किसी को करछना से लाया होता । दाढ़ को ही कर देता । दाढ़ तो तेज है वह तो मन्त्र ही पढ़ मारता । पर मेरे और चिंतन सर में एक फ़र्क है, मैं लोगों पर विश्वास कम करता हूँ और चिंतन सर कर लेते हैं । मुझे लगता है दाढ़ चार सौ बीसी करेगा पर चिंतन सर का कहना है आदमी अपना आगे जाये, यह जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिये । इसीलिये करछना पीछे चल रहा है । वहाँ जो आगे जाता है वह अपनों की जड़ खोदता है, यह जौनपुरिहा- सुलतानपुर वाले अपनों के लिये काम करते हैं । अब मैं करछना - इलाहाबाद के लिये काम करूँगा । पहला काम चिंतन सर को कठाओ ... वह ईस्ट इंडिया कंपनी हैं.. फरमान लेकर आते हैं और राजस्व पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं ।

इतने में आवाज़ आयी ... अरे बाबा मैं भी आ गया ...

देखा तो मातादीन चिंतन सर के साथ धुसा और वह आहूजा साहब को पूरी ताक़त से सेल्यूट मारा जैसे इक्कीस तोपों की सलामी एक ही आदमी दे रहा हो ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 163

चिंतन सर ने आते ही मुझे गले लगा लिया । वह बोले, “बाबा तुम्हारा यशोगान चहुँओर है । अमित चौधरी के पिताजी एडीएम सिटी होकर गाजियाबाद आ गये हैं । वह मुझसे मिले थे और कह रहे थे, “अमित बता रहा है कोई इलाहाबाद का अनुराग शर्मा है जो विद्वान है हिंदी में ।”

मैं “सर यह इलाहाबाद है भैया, यहाँ सँभल कर रहो । यहाँ लोग चने के झाड़ पर चढ़ाकर गिरा देते हैं और फिर गिराकर उसी चने को

आग में जलाकर होरहा खाकर कहेंगे, उसी खेत का है जिसमें उ बकलोल चने के झाड़ पर चढ़ा था ।”

चिंतन सर - “नहीं वह बहुत सीरियस थे और मदद माँगने आये थे । वह कह रहे थे कि अमित हिंदी साहित्य लेना चाह रहा है, अनुराग आपका मित्र है, कह दो नोट्स दे दे । अब तुम तो जानते ही हो, महादेव का दरबार है कुंडली गुरु का । जो आया उसको मनोवांछित वर मिलेगा, बशर्ते कुंडली सही हो ।

मैंने कुंडली बनायी , उसका योग है इस वर्ष का और वह भी एक ब्राह्मण के सहयोग से । मैंने तुम्हारी तरफ से आश्वासन दे दिया उनको , “ कल्याणम अस्ति” कह कर । ”

मैं “ सर , वही मुझसे कहे थे , नोट्स की तो बात मुझसे करना मत , न तो मैं बनाता हूँ और न बनाने की सलाह देता हूँ । मेरे साथ बहुत बदमिज़ाजी की थी उन्होंने । मुझे बैठने को भी न कहा । मैं निर्लज्ज की तरह बैठ गया । मेरे सामने सिंगरेट सुलगा कर धूँयें के बनते वृत्त की तरफ देख रहे थे । वह छत की तरफ जा रहा निर्जीव धुँआ मुझ पर अधिमानता पा रहा था । वह सारी उम्र हिंदी को हेय ट्रृष्टि से देखते रहे अब लोग कह रहे हिंदी में नंबर मिल सकता हैं तब हिंदी लेना चाह रहे । हिंदी - संस्कृत में नंबर पाना इतना आसान है क्या? इन भाषाओं के अध्यापक आपकी कापी खोलते ही कह देते हैं , इसको भाषा का ही ज्ञान नहीं है तब इसकी कापी में आगे देखें क्या? ”

चिंतन सर -“ वह धुँआ निर्जीव नहीं सजीव था । उसमें उसका अहंकार स्थापित था , जो अब ध्वंस हो चुका है और उसके ध्वंसावशेष पर वह विलाप कर रहे हैं । सत्य प्रकाश मिश्रा सर के पास दोनों बाप - बेटे गये थे । सर ने कहा है कि अनुराग से मिलो । सर ने तुम्हारी ऐसी समां बाँध दी है कि मनोकांक्षा की पूर्ति के लिये बँधवा वाले हनुमान मंदिर जाते समय तुम्हारा भी दर्शन आवश्यक हो गया है । अब यह बात तो सच ही है कि भाषा के पेपर में अंक प्राप्त करने के लिये भाषा पर अधिकार तो आवश्यक है ही । मैं भी कापी चेक करूँगा तब यह मानदंड होगा ही मेरे सामने और होना भी चाहिये । बात शिल्प की नहीं है बात एक परम्परा की है । हर भाषा की एक परम्परा होती ही है जिसको भाषा के विद्यार्थी को जानना ही नहीं चाहिये वरन् सम्मान भी करना चाहिये । भाषा एक माँ सदृश होती है , जिसके बगैर जीवन अर्थहीन होता है । ”

उसी समय आहूजा साहब के परिचित लोग भी आ गये । पीछे के मंदिर में घंटी बजने लग गयी । रमाकान्त गेरुआ धोती और अधो - वस्त्र पहनकर आरती लेकर आ गया । आहूजा साहब के घर में ही एक छोटा सा मंदिर स्थापित था जहाँ पर सारा दिन जाप चलता था और सुबह- शाम आरती होती थी । आहूजा साहब का परिवार धर्मग्राही था , अधिकतर धन- पशुओं का होता ही है । चिंतन सर ने अपने भाई को वहाँ लगवा दिया था पुराने पंडित के अनुपयोगी होने की बात कहकर । रमाकान्त निरा बेवकूफ था । वह किसी परीक्षा को पास नहीं कर सकता था पर चिंतन सर ने उसका जुगाड़ बना दिया था , घंटी बजाने का बाकी तो कुछ उसके बस का है नहीं ।

आहूजा साहब के परिचितों को शायद पहले ही बता दिया गया था कि यह सब दक्षियानूसी ख़्यालात वाले लोग हैं इसलिये अमिषाहार और मदिरा का सेवन आज वर्जित होगा । आरंभ सूप से हुआ और मुझसे पूछा बैरे ने “ कौन सा सूप लेंगे ? ”

खाने में चुनाव? यह तो एक नयी विचारधारा है । हम लोगों के घर तो जो बन गया वह टूस्सो । खाना भी तय हैं क्या बनना है .. सुबह नाश्ते के नाम पर चाय - रोटी और अगर दिन बेहतर रहा तो डबलरोटी चाय .. दोपहर का खाना ... चावल - दाल- रोटी .. सब्ज़ी रोज़ नहीं बनती थी । शाम को रोटी सब्ज़ी । इसमें चुनाव कैसा ? गाँव में तो हालत और अलग थे । सुबह के कलेवा में नून - तेल - रोटी या धी- गुड़- रोटी .. दोपहर सिर्फ़ चावल दाल । शाम को दाल - रोटी । गाँव में सब्ज़ी की खेती सीज़नल थी , वह सीज़न में ही प्राप्त होती थी । शाम को कभी- कभी चावल की खीर मिल जाती थी । मुझे सेवई बहुत पसंद थी , माँ वह कभी- कभी बना देती थी ।

बैरे ने जैसे ही पूछा , “सूप कौन सा पियेंगे ? ”

मैंने पूछा , “ कौन सा है ? ”

बैरे ने चार नाम गिना दिये । जैसे मल्टीपिल च्वाइस प्रश्न की परीक्षा में उत्तर न आने पर किसी एक पर भी टिक लगा दो , वही मैंने यहाँ भी किया । कहा दूसरा वाला दे दो । मुझे न पता कि दूसरा वाला है कौन सा । शालिनी ने सुन लिया और कहा ट्रॉमैटो सूप बहुत बार पिया होगा , तुम यह चाइनीज़ लो ...

अब उसे क्या पता .. मेरे लिये सब नया ही है ।

मैंने कहा , “ ठीक है ” ।

मुझे चाइनीज़ सूप के अंदर का नूडल्स केचुये ऐसा लगने लगा , जैसे ही अंदर चम्मच डाला । मुझे लगा यह तो केंचुआ डालकर लगता पका दिया है । मुझे खाने में भी रबड़ ऐसा आभासित हुआ । पर अब क्या कर सकता था । सूप का शोरबा पी गया और वह केचुआकार आकृति को छोड़ दिया ।

चिंतन सर ट्रॉमैटो सूप लिये थे , वह टमाटर - सेब - अनार जहाँ मिल जाये दाब जाते थे , इस अवधारणा के ज्ञान के कारण इससे रक्त अधिक बनता है । वह कुछ देर तो चम्मच से पिये फिर कटोरे में जैसे दूध पीते हैं वैसे ही वह सूप भी पी मारे ।

इतने में मातादीन ने बाहर सायरन बजा दिया । यह चिंतन सर की स्टाइल है । प्रायोजित सायरन था । सायरन की आवाज़ पर सब चौकन्ने हो गये ।

चिंतन सर ने स्पष्टीकरण दिया कि यह ऐसे ही समय- समय पर बज जाता है कोई चिंता की बात नहीं । पर आहूजा साहब ने कहा , सर आपका समय - समय पर बजता होगा पर मेरे अंदर तो यह हर समय बजता रहता है , ठीक उसी तरह जैसे पाकीज़ा फ़िल्म में मीनाकुमारी को लगता है कि रात के तीन बजे कोई टरेन पटरियों से उतर कर उसके दिल में प्रवेश कर रही है वैसे ही रात- बिरात लगता है कि कोई सायरन लिये घर में घुस आया और घर को तहस - नहस कर रहा । “

मैं- “ यह सायरन - पाकीज़ा - मीनाकुमारी कुछ समझा नहीं । ”

आहूजा साहब - “ पाकीज़ा देखी है ? ”

मैं- “ पता नहीं कितनी बार । मानसरोवर टाकीज में लगती हैं पुरानी पिक्चरें उसमें देखी हैं । पाकीज़ा जब- जब आयी तब- तब देखी । ”

आंटी-“ क्यों देखी इतनी बार ? ”

मैं- “ उसके उर्दू के डायलाग सुनने के लिये । ”

शालिनी - “ याद है कोई डायलाग ? ”

मैं- “ यह पूछो कौन सा नहीं याद है ? ”

शालिनी - “ एक सुनाओ ? ”

मैं- “ नवाब साहब - मिज़ाज कैसा है आपका ? ”

मीनाकुमारी - इनायत है आपकी ।

नवाब साहब - आपकी नज़र तो उतारी गयी होगी । अपनी जान का सदका भी उतरवा लीजियेगा , कहीं हमारी नज़र न लग जाये । ”

पर साइरन और पाकीज़ा का क्या रिश्ता?

आहूजा साहब के तीन मित्र सपरिवार आये थे राकेश चोपड़ा , प्रदीप केड़िया , लक्ष्मीकान्त अग्रवाल

अग्रवाल साहब ने कहा , “ भाई साहब यह समझ न आ रहा आपका सायरन और रेलगाड़ी का संबंध ... ज़रा साहब लोगों से हमारा भी परिचय करा दें । ”

आहूजा साहब - यह अनुराग और चिंतन जी शालिनी के देवर हैं और यह दोनों ऋषभ की मौसी के लड़के हैं । शालिनी- ऋषभ को विदेश जाना था इसलिये

इनकी शादी जल्दी- जल्दी में हुई और कोई आ नहीं पाया । अनुराग जी इंटरव्यू देने आये थे तब ऋषभ के घर पर ही रुके थे और यह चिंतन जी को तो सब जानते ही हैं, “ कुंडली गुरु “ शाज़ियाबाद वाले ।
.... यह दोनों इस बार की परीक्षा में आईएएस हो गये हैं ।

कुंडली गुरु के नाम पर वह सब चौंक गये । चिंतन सर का नाम कुंडली गुरु बहुत मशहूर था । वह तीनों चिंतन सर को देखने लगे

प्रदीप केड़िया - “ आहूजा साहब , हम लोगों का सौभाग्य है यह लोग अफ़सरान हो गये , अब दिल्ली में इनकी तैनाती हो जाये तो हम लोगों को आराम हो जाये । ”

मिसेज़ आहूजा - “ मैं भी यही कहूँगी , यह लोग दिल्ली आ जायें पोस्टिंग लेकर ... हम सबके लिये बहुत अच्छा होगा । ”

आहूजा साहब ने बात आगे बढ़ायी और कहा कि एक दिन चिंतन जी के आदमी आये घर पर यह पूछने के लिये कि , साहब मिलना चाहते हैं कब आयें और यह लोग लगे सायरन बजाने । मुझे मार्च में ही मेरा आईटीओ चोपड़ा धमकाया था कि अगर एडवांस टैक्स नहीं दोगे तब हम रेड कर देंगे । वह एडवांस टैक्स बहुत जमा कराना चाहता था । मेरा केस भी स्कर्स्टनी में चल रहा था । वह बहुत सताया था हमको और उसकी शिकायत लेकर कमिश्नर के पास मैं चला गया था । कमिश्नर देखने में सज्जन था । उसने चोपड़ा को बुलाकर डाँटा भी पर यह सब आपस में मिले होते हैं । चोपड़ा ने कहा था , मैं छोड़ूँगा नहीं तुमको । सायरन -पुलिस देखकर तिवारी डराइवर भागता हुआ आया और बोला , “ साहब लगता है रेड पड़ गयी , आप भाग लो मैं बहलाता हूँ इनको बातों में । ”

मेरा दिमाग़ ही न काम करे ।

मिसेज़ आहूजा -“ भाई साहब क्या बतायें इनको ब्लड प्रेशर भी है और शुगर भी है । इनका पूरा शरीर पसीने - पसीने हो गया । यह करें तो करें क्या? इनकी तालू बैठ गयी और कोई आवाज़ ही नहीं निकल रही थी । मैंने एक गिलास पानी दिया और वह पानी भी हल्क से नीचे नहीं उतर रहा था मुझे लगा आज तो

आहूजा साहब - “ मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था , मैं करूँ क्या.. घर में करीब चालीस लाख कैश था , सारा कैश का हिसाब का काग़ज़ था ... अब

अपनी लाइन तो कैश की ही है ... कैश का लेन- देन लिखना ही पड़ता है , नहीं तो कौन देगा । लाकर में भी कैश था । मैंने जल्दी - जल्दी में दो सूटकेस में जो कुछ आ सकता था वह डाला ... लाकर की चाभी ली और बनियान - लुंगी में पीछे से निकला । मैं जब निकल रहा था तब दो पुलिस वाले पीछे के गेट की तरफ आ रहे थे ।

मुझे लगा कि देख लिया अब तो ख़ैर नहीं । मैं भागा । अब भागने का अभ्यास तो है नहीं , कुछ कदम भागा होऊँगा साँसें फूलने लगीं , आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा , पर विधाता सहायक हुआ और एक आटो वाला मिल गया ... उससे कहा मुझे होटल ले चलो । मुझे याद ही नहीं आ रहा था , किस होटल में जाना हैं । संजीव नंदा जी का होटल कलेरजिस याद आ गया । वहाँ गये और एक कमरा लिया । मुझे लगा कि इनकम टैक्स वाले आ रहे पीछे मेरे । ज़रा सा हवा का झाँका आये , दरवाजे पर कोई भी आवाज़ काल की ही लगती थी । हम लोगों ने कहानियाँ सुनी ही हैं कैसे यह लोग भेष बदलकर आते हैं , वह सारी कहानियाँ मुझे डरा रहीं थीं । मैं एक बेनाम आदमी बनकर कमरा लिया । मैं सारा दिन डरता रहा । होटल वाले से ही पैंट - कमीज मँगवायीं और पहन कर अपने सीए मखीजा के यहाँ गया । वह अलग डरा हुआ था कि कहीं उसका आफिस न कवर कर लें ।.... भाई साहब इतना डर तो आज तक कभी आया नहीं ...

मैं उसी चोपड़ा आईटीओ के पास गया और रोने लगा । मुझे श्मशान वैराग्य आ गया था और कहा मेरा सबकुछ ले लो , बस मेरी जान बख्शा दो ।

मैंने मिसेज़ आहूजा की तरफ देखा ... और पूछा आंटी आपको भी डर लगा होगा ?

मिसेज़ आहूजा - “ बेटा मुझे लगा कि कम में रहो .. इस झंझट से दूर रहो ... यह तो चले गये पर मेरी तो जान ही अटक गयी .. कल शाम को ही चालीस लाख रुपया आया था ... मैंने सोचा था डायमंड का सेट लूँगी ... पर एक झटके में सब चला गया ... इतना पैसा कैसे हट सकता था ... ? यह तो सब छोड़कर भाग गये हमारे ऊपर , हमको कोई अनुभव तो है नहीं इन सब काम का । कभी रेड देखी तो है नहीं बस सुनी ही है कि आते हैं तो दो-तीन रहते हैं और बहुत पूछताछ करते हैं । यह भी सुन रखा था कि बहुत डराते हैं और कोई- कोई तो मारते भी हैं । मातारानी को हम याद करने लगे ।

बेटा कोई सहारा तो था नहीं अपने पास .. अब तुम लोग हो गये हो एक सहारा दिख रहा पर हम लोग बिज़नेस वाले हैं .. हमारे यहाँ कोई अफ़सर तो

कभी हुआ नहीं... सरकार का डर तो लगता ही है...”

मैं - “ आंटी फिर आपको तो चैन आ गया होगा जब सच पता चला होगा कुछ देर में ? ”

मिसेज़ आहूजा -“ बेटा यह कहकर गये थे कि उन पर विश्वास न करना । वह सब भरमाते हैं और सच- झूठ बोलकर सारा सच उगलवा लेते हैं । जब यह कहा गया कि यह ऋषभ के मौसी के बेटे हैं, तब थोड़ा जान में जान आयी पर तभी इनकी सलाह याद आयी कि कुछ मत बताना, वह सब फरेब करते हैं । पर कुछ देर में लग गया कि यह सब बहन जी के ही घर के हैं और हम लोग अगले दिन बहन जी के यहाँ गये तब जान में जान आयी । ”

आहूजा साहब - “ बेटा जब तक हम लोग बहन जी से मिल नहीं लिये तब तक बेचैनी बनी रही । जब इनसे मुलाक़ात हो गयी तब तुम्हारे बारे में भी पता चला और चिंतन जी के बारे में भी । यह शालिनी जन्मी है गृह- उद्घारक बनकर । जब बेटी पैदा हुई थी तब हम लोग दुःखी थे जैसा अमूमन हमारे समय के लोग होते थे, पर ईश्वर ने हमारे साथ बहुत न्याय किया एक बेटी को जन्म देकर नहीं तो ऋषभ- आप - चिंतन जी कैसे मिलते ?

यह लग रहा होगा आप लोगों को कि कर चोरी हम लोग करते हैं । पर करें क्या? कैसे करें व्यापार... ? यह तन्त्र भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन देता है । जहाँ जाओ काम कराने सब पैसा माँगते हैं । अब यह पैसा कहाँ से आयेगा ? व्यापार से ही आयेगा । हम टैक्स अदा करके तो रिश्वत दे नहीं सकते । कर चोरी करनी ही पड़ेगी । अगर नहीं करेंगे तब व्यापार बंद हो जायेगा । ”

अग्रवाल साहब - बहन जी हमारा क्रिस्सा तो और दर्दनाक है ... हमको नाहक मारा इन इनकम टैक्स वालों ने ...

मैं - “ आपको क्यों मारा ?

अग्रवाल साहब -“ बच्चों का नाम कभी भगवान के प्रचलित नाम पर न रखें ..

यह प्रचलित नाम ही मार डाला हमको

चिंतन सर - “ क्या हुआ ? ”

अग्रवाल साहब - “बर्बाद हो गये और क्या हुआ ? ”

मैं - “ कैसे ? ”

अग्रवाल साहब - बात एक दिन की है जब हम सुबह सो रहे थे और घंटी बजी

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 164

लक्ष्मीकान्त अग्रवाल- “ बात एक सुबह की है - एक जाड़े की सुबह की - जब रजाइयों में जीवन स्वर्गिक होता है और हम नींद में बेहोश ख्वाबों के साथ हकीकत से एक दूर की ज़मीं पर टहल रहे थे , दरवाज़े की घंटी बजी । नौकर ने घंटी सुनते ही दरवाजा खोल दिया और चार- पाँच लोग एक छोटा सा परिचय देकर कि हम लोग आयकर विभाग से हैं घर के भीतर क़ब्ज़ायमान हो गये । उन्होंने सभी घर के सदस्यों को हाल में बैठा दिया और मेरे बारे में पता करने लगे । मेरी पत्नी ने मुझे जगाया यह कहते हुये , “ बहुत बड़ी विपत्ति आ गयी है , रेड वाले आ गये हैं । ” मेरे तो जान - पराण सूख गये । आहूजा साहब के पास तो बँगला है , पीछे लान है , दरवाज़े से भागने की सुविधा है । पर मेरे पास क्या है ? हमारा मकान फ्लैट नुमा है । एक सबसे ऊँचे फ्लोर पर हमारा मकान है और हर फ्लोर पर दो फ्लैट हैं , ऊपर की छत हमारे और हमारे पड़ोसी की कामन है । हम तो बस भागने के नाम पर छत से कूद कर आत्महत्या ही कर सकते हैं ।

हमारे और पड़ोसी के नाम में भी साम्यता है । मेरा नाम लक्ष्मीकान्त अग्रवाल और उनका लक्ष्मी कुमार मित्तल । वह मकान के सामने सिफ़्र लक्ष्मी ही लिखते हैं , पता चला रेड दोनों घरों में है । मेरा दिमाग़ काम नहीं कर रहा था , पर संयम से मैंने काम किया । मैंने सुन रखा था कि बहुत से लोग फ़र्ज़ी आयकर नामधारी बनकर विभाग का नाम लेकर आ जाते हैं रेड करने , मैंने तहकीकात करने के लिये उनका आईडी कार्ड माँगा , वह उन लोगों ने दिखा दिया । मैं एक रेड में विटनेस के तौर पर गया था और वारंट पर हस्ताक्षर किया था । मैंने पूरी कार्यवाही देखी थी । मैंने कहा , ” साहब अब आप लोग आ ही गये हो रेड के लिये तो मैं विटनेस बुला लेता हूँ आप मुझे वारंट दिखा दीजिये तब तक चाय पानी करते हैं ।

वह सब भले लोग थे और बोले कि हम लोग जाँच- पड़ताल कर रहे हैं यहाँ पर दो लक्ष्मी नाम हैं , फ्लैट नंबर लिखा नहीं है वारंट में । वारंट में सिफ़्र लिखा है फ्लोर है पते की जगह । हम लोग तहकीकात कर रहे हैं , बात चल रही कंट्रोल रूम से और जैसे ही पता चल जायेगा आगे की कार्यवाही आरंभ करेंगे , आप सब लोग निश्चिंत होकर आराम करें इसी मुख्य कक्ष में , तब

तक मामला समझ में आ जायेगा कि सरकार किससे अपनी योजनाओं के लिये अतिरिक्त सहयोग की आकांक्षी है । यह एक यज्ञ है जिसमें हम सब शरीक हैं । अब जिसका भाग्य होगा वह ही इस महान् वाजपेय यज्ञ में आहुति दान करेगा , आप ईश्वर से प्रार्थना करो जो भी चाह रहे , समर्पण देश के लिये या लोभ स्वयम् के लिये ।

मेरी जान में जान आयी कुछ समय के लिये और पूछा , “ क्या ऐसा हो सकता है कि यह रेड मेरे यहाँ न होकर सामने के मकान में ही हो । उस भलामानस ने कहा कि ईश्वर की आराधना करो । वह बहुत न्यायी है । वह फ़ैसला करके आदेश दे देगा कुछ समय में कि किसके साथ क्या रुख अद्वितीय किया जाये , हम तो मात्र उसके हाथ की कठपुतली हैं ।

मैंने पूछा , “ आप ईश्वर से सीधा आदेश लेते हैं रेड करने के लिये ।”

भलामानस - “ हम कोई काम दैव इच्छा के बगैर नहीं करते । ”

अग्रवाल साहब - “ साहब ज़रा बतायेंगे कैसे आपका और परमात्मा का तादात्म्य होता है । हम लोग तो आज तक आप लोगों को एक बहुत ही अलग रूप में देखते रहे हैं । ”

भलामानस - “ देखो जो दिखता है वह बहुधा सच नहीं होता और जो सच होता है वह कई बार दिखता नहीं । ”

अग्रवाल साहब - “ साहेब मैं समझा नहीं । ”

भलामानस- “ जो आपने सामने तस्वीर भगवान की लगायी है उसके पीछे एक गुप्त जगह हो सकती है , दिख रही भगवान की तस्वीर पर हो सकता है पीछे काला धन । आराधना प्रकारांतर से किसकी हो रही ? जो अदृश्यमान है दृश्यमान के पीछे । उसमें आप डायमंड रख सकते हो और लाकर की चाभी भी । अभी ईश्वर का आदेश आयेगा तब वह सरकार ले जायेगी और अगर नहीं तो आप के पास ही रहेगा । है वह काला धन ही पर ईश्वर का आदेश है कि इसके पास यह कुछ दिन और रहे तो आप रखे रहो पर अंत में यह नाशवान ही है । सूम का धन शैतान ही खाता है अगर उचित ढंग से इस्तेमाल न हुआ । ”

भाई साहब , मेरा तो दिल ही धड़कना बंद हो गया । उसने सही कहा था वहाँ पर डायमंड रखा था और लाकर की चाभी तो घर में रहती ही है । मैं मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि यह रेड लक्ष्मी मित्तल के यहाँ हो न कि अग्रवाल के यहाँ । मैं चापलूसी करने लगा और पटाने की कोशिश में लग

गया कि मामला ले- दे कर निपट जाये । मैंने कहा भी , “ साहेब हमारी जान छोड़ दो , हम आपसे बाहर नहीं हैं । हम आपकी सेवा करेंगे । ”

पर वह बहुत पहुँचा हुआ फ़क़ीर मुद्रा आवरणित अधिकारी था । वह बोला , हमको तुम क्या दोगे ... हम तो राष्ट्र के प्रहरी हैं .. हमको पहले ही दिन शिक्षा दी जाती है एकेडमी में ... कबिरा खड़ा हजार में लिये लुकाठी हाथ जो घर ज़ारा आपनो वह चले हमारे संग । हम आधुनिक बुद्ध हैं । हम जगत कल्याण को सन्नद्ध हैं । हम जो कुछ यहाँ से ले जायेंगे वह क्या अपने घर ले जायेंगे ? यह गरीबों में बाँटा जायेगा । ईश्वर के दो एजेंट हैं -एक हम सहयोगी अदृश्यमान रूप में और दूसरा दृश्यमान भारत सरकार ... एक एजेंट एकत्र करेगा और दूसरा बाँटेगा । यह सड़क , यह एयरपोर्ट, यह अस्पताल, यह स्कूल कौन बनाता है ? हम ही बनाते हैं आप से अपयश लेकर । हमारी विडम्बना यह है कि आप हमें सब जल्लाद समझते हो और जनता सारा श्रेय सरकार को देती है । हमारे हिस्से में है क्या... सिर्फ़ अपयश ... हम सब नीलकंठेश्वर हैं .. पर हम निर्विकार भाव से अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे ।

हम लोग एक “टैक्समैन शपथ” लेकर जीवन आरंभ करते हैं ।

अग्रवाल साहब - “ वह शपथ क्या है जो आप लोग लेते हैं ? ”

भलामानस- “उस शपथ में मूलतः यह होता है कि हम पक्षपात रहित , भय-राग- द्वेष-पूर्वाग्रह से विमुक्त होकर सबके साथ एक समान व्यवहार करेंगे । हम आपका एक भी पैसा सरकार को नहीं देंगे और सरकार का एक भी पैसा आपको रखने नहीं देंगे । ”

अग्रवाल साहब - “ सर हमको यह पता ही नहीं था , हम तो एक जल्लाद की तरह आप लोगों को देखते रहे हैं । पर सरकार बुरा न मानें तो एक बात पूछें ? ”

भलामानस- “ अवश्य पूछो । ”

अग्रवाल साहब - “ हम लोग तो पापी लोग हैं , दे- लेकर काम कराते हैं , जो आपके विभाग में हम रिश्वत दिये हैं वह आप लोग भगवान को पूरा चढ़ा देते हैं या कुछ कट रखते हैं । ”

भलामानस- “ऐसा आरोप उचित नहीं है । हर व्यवस्था में कुछ गलत लोग होते हैं जो नाम बदनाम कर देते हैं , उनके विरुद्ध कार्यवाहियाँ होती रहती हैं । हम सब त्यागी लोग हैं । यह देश- दुनिया - माया से बहुत दूर हैं हम लोग । हमारे में और तपस्वी में कोई फ़र्क ख़ास नहीं है । हम लोग लक्ष्मण सदृश निदरा त्यागी हैं । अब आप के यहाँ दो- तीन रहेंगे । आप को समय- समय पर सुला

देंगे पर हम नहीं सोयेंगे । लक्ष्मण राम की सुरक्षा में नींद का त्याग किये थे और हमारा राम यह देश है । इस देश के लिये हमने सब त्याग दिया है । ”

अग्रवाल साहब - “ हमारे यहाँ मत जगिये सर । यहाँ रहने दीजिये आज जगने को । हम बहुत एहसान मानेंगे अगर आप घर जाकर आज सो जायेंगे ।

भलामानस- “ हम तो परभु के आदेश से संचालित हैं । जो आदेश होगा वह हम करेंगे । ”

अग्रवाल साहब - “ अगर आप की रेड के समय हार्ट अटैक हो गया कोई मर गया तब ? ”

भलामानस- “ परभु के हम अकेले कर्मचारी तो हैं नहीं, अब अगर हमारे साथ-साथ यमराज को भी आदेश आ गया तब वह पालन करेगा ही आदेश का, पर मेरा अनुभव कहता है कि हम लोग आपस में सहयोग करते हैं और एक काम कर रहा होता है तब दूसरा वहाँ नहीं जाता । ”

अग्रवाल साहब - “ सर एक बात तो कहेंगे आप और यम आते एक ही तरह हो, जब व्यक्ति सो रहा होता है, आप लोग धर- दबोचते हो । ”

भलामानस- “ प्रातःकाल सारी इन्द्रिया जागृत होती हैं और एक नयी शुरूआत दिन की होती है उस समय हम एक अवसर देते हैं, सत्य को अपनाने का । ”

अग्रवाल साहब - “ सर हमको तो इसका अनुभव है नहीं और ईश्वर से प्रार्थना है कि इस अनुभव की छाया से मुझे दूर रखे पर एक उत्सुकता है कि आपने कितनों को सुबह- सुबह जगाकर आज तक सच स्वीकार कराया होगा ? ”

भलामानस- “यह हमारा रोज़मर्च का काम है, कोई गणना तो रखते नहीं, पर जिस सुबह हम आते हैं उस सुबह तो वह झूठ ही बोलता है पर अगली सुबह वह तोते की तरह बोलता है । अगर ईश्वर का आदेश होगा तब झूठ से सच के बीच की दरिया आप भी पार करोगे । ”

अग्रवाल साहब - “ नहीं सर हमको बर्खा दें, हमारी सात पुश्तें आपका अहसान मानेंगी । ”

इतने में पता चला कि यह रेड मेरे घर में न होकर लक्ष्मी मित्तल के यहाँ है । यह समाचार आते ही भलामानस बोला, ईश्वर का आदेश आज नहीं है आपके लिये पर हमारी आप की मुलाकात होगी जल्दी ही । मैंने खुशी में दो बार पूछा “ सर, मेरे यहाँ रेड नहीं है न ? ”

भलामानस - “ अभी तो नहीं लग रही पर भविष्य का क्या भरोसा ... वह आदि है .. अनंत है .. वह सबके लिये ऐश्वर्य और कष्ट के निमित्त का निर्माण करता है । उसका आदेश आपके लिये कुछ और है , आज । मेरे आपके सत्संग का समय इतना ही निश्चित था , बाकी अब मित्तल साहब के नसीब में है । ”

अग्रवाल साहब -“ सर आपके साथ सत्संग करके बहुत ज्ञान की प्राप्ति हुई । ”

भलामानस- “धनार्जन के साथ- साथ ज्ञानार्जन भी करो । यह धन काम न आयेगा , ज्ञान और दान ही काम आयेगा । ”

अग्रवाल साहब - “ आप एक उद्घारक के रूप में आये हैं । आप के चरण छूना चाहता हूँ । ”

भलामानस- “ आप इस समय प्रसन्नता के अतिरेक में हैं , आप को लग रहा कि मेरी जान इस विपदा से छूट गयी और आप मानसिक संतुलन खो रहे । आप अपनी उम्र के आधे व्यक्ति का चरण स्पर्श करना चाह रहे । माया का त्याग करो , यह माया आपको एक मानसिक असंतुलन दे रही ।

मीठी मीठी माया तजी न जाई

अग्यानी पुरिष को भोली- भोलि खाई । ”

अग्रवाल साहब - “ सर आप बहुत ऊँची- ऊँची बात करते हैं । आप की बात से इतना ही समझ आ रहा कि अपना सब कुछ देकर सङ्क पर भीख माँगों , इसके अलावा तो और मैं कुछ समझा नहीं । पर सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि आप अपने लिये कुछ नहीं माँग रहे । मैं आपको रिश्वत देना चाह रहा था वह आपने लेने से इंकार कर दिया और रेड भी नहीं की । हमको क्या पता कि ईश्वर का आदेश क्या था , वह तो आपके और सीधे परमात्मा के बीच हाट लाइन है । सिद्ध- महात्मा तो आँख बंद करके ध्यान लगाते हैं परमात्मा से संवाद के लिये , पर आप तो खुली आँखों से परभु इच्छा जान जाते हो । ”

भलामानस - “ यह उसकी कृपा है । वह आदेश देता है , बगैर माँगे । हमारी क्या बिसात हम उससे कह सकें , “ आदेश दें परभु ” । एक बात और कहूँ अग्रवाल साहब ? ”

अग्रवाल साहब - “ आदेश करें सर , मैं आपका ताउम्र एहसानमंद हो चुका हूँ । ”

भलामानस- “ आप बहुत ही स्वार्थी व्यक्ति हैं । आपने एक बार भी नहीं कहा पड़ोसी का भी ख्याल रखो । राम कथा पढ़ा करो ... राम ने भरत से कहा था

बाँटी विपत्ति सबहिं मोहि भाई

तुम्हहिं अवधि भरी बड़ि कठिनाई । ”

अग्रवाल साहब - “ सर यह क्या है ? ”

भलामानस - “राम ने भरत से कहा , आओ भाई विपत्ति का बँटवारा करते हैं । विपत्ति के बँटवारे में राम ने कहा मैं कम ले रहा तुम को अधिक दे रहा । इसको आज सारे दिन समझते रहना । ”

अग्रवाल साहब - “ सर इतना ज्ञान दिया है यह भी समझा ही दीजिये । ”

भलामानस - चित्रकूट में राम ने भरत से कहा कि संपत्ति का बँटवारा भाइयों में होता है पर वह हमारे तुम्हारे बीच हो नहीं सकता क्योंकि पिता ने सारी सम्पत्ति तुमको दे दी है । बस एक ही वस्तु बची है बाँटने को , वह है विपत्ति है , उसके बँटवारे में मैं कम ले रहा तुमको अधिक दे रहा क्योंकि तुम्हारा काम कठिन है । अब यह क्यों कठिन है यह बताने के लिये रात रुकना पड़ेगा हमें आपके प्रासाद में । ”

अग्रवाल साहब - “ सर मैं ज्ञानी हूँ नहीं हूँ पर जिज्ञासु हूँ और तीक्ष्ण बुद्धि जिज्ञासु । मैं सब समझ गया , आप रात अन्यतर भवन विश्राम करें , शायद लक्ष्मी मित्तल के ही यहाँ करेंगे । हमें सेवा का अवसर कभी अवश्य दें और अपना आशीर्वाद प्रदान करें । यह भगवान की कृपा है आप ऐसा भलामानस आया नहीं तो हमने कितने - कितने क्रिस्त्से आतंक के ही सुने हैं । आपने इतने प्रेम से हम सबको रखा , आपका अहसान पूरी ज़िंदगी न भूलूँगा । आपने मेरी बहुत सहायता की । पर इतना त्याग कैसे आता है सर , हम लोग तो सुबह उठते ही गाँधी फोटो गिनने के फेर में लग जाते हैं । ”

भलामानस- यह त्याग लाना पड़ता है .. बस यही कहूँगा ... जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि है मैं नहीं । ”

अग्रवाल साहब - “ सर आप लोग ट्रेनिंग में यह मेंटल थिरेपी का कोर्स करते हो क्या ? ”

भलामानस - “ यह क्यों कहा ? ”

अग्रवाल साहब- “ सर जो श्मशान वैराग्य आपने मेरे अंदर जगा दिया वह मुझे अपने पिता जी को जलाते समय भी न हुआ था । आप ऐसे कुछ अफसर हो जायें तो झोला लेकर जंगल भागने वालों की भीड़ आरंभ हो जाये और एक नया ट्रांसपोर्ट धंधा जंगल पहुँचाने का आरम्भ हो जायेगा ।

सर में आपको भगवान मानता हूँ, पता नहीं आपने कौन सी माया चला दी ...
हमारी विपत्ति खत्म हो गयी ।”

भलामानस-

“वो जो महकता है वहकता है
उसकी भी एक मियाद होती है
जुल्फ़ जो बिखरती हैं धड़कनों के लिये वह भी पानी में पनाह माँगती है
रौशनी भी निकलती है, उम्मीद भी परवान चढ़ती है
पर क्या भरोसा उस मालिक का हर साया भी उभरता है सिमटने के लिये । “

वह भलामानस मेरे घर से चला गया अपना लाव - लश्कर लेकर

आंटी - “ वह बहुत अच्छा आदमी था । वह बहुत मदद किया आपकी । उसने
विपत्ति को रोक दिया । ”

बहन जी वह बहुरूपिया था .. वह बातों- बातों में भरमा गया ...

उसकी हर लाइन करोड़ों की थी ..

आंटी - “ वह कैसे .,, ? ”

अग्रवाल साहब - “ वह कह कर गया है कि यह राज किसी को मत बताना
नहीं तो लोगों का दीन- ईमान पर से विश्वास उठ जायेगा । अब इतने बड़े संत
- महात्मा की बात तो माननी ही पड़ेगी । ”

मैं - “ क्या था वह राज .. ”

अग्रवाल साहब - “ विपत्ति का क्या बखान करना ।

वह जाते - जाते कह गया था

मैं आज तो जा रहा

पर मैं लौटकर आऊँगा ज़रूर

काल को सुना बहुत बार था पर देखा पहली बार था ...

वह मानव नहीं था एक काल था ... साक्षात् काल

आंटी बोली , “वह भूत था.... वह मनुष्य नहीं था”

अग्रवाल साहब - “ मेरे रोंगटे आप देखें ... सब खड़े हो गये हैं

वह क्या था यह मत पूछो

वह इलाहाबादी था ... बस इतना ही कहूँगा

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 165

मैं - “ क्या हुआ फिर ? पूरा क्रिस्सा तो सुना दीजिये । “

अग्रवाल साहब - “दास्तान लंबी है । “

आंटी - “ लंबी ही सही , सुना दीजिये । यह बच्चे भी नौकरी ज्वाइन करने जा रहे , यह भी कुछ सीख लेंगे । “

आहूजा साहब - “ अग्रवाल साहब बता ही दो ... एक फ़िल्मी कहानी ऐसा रोमांचक मोड़ है इसमें । “

अग्रवाल साहब - “ क्या बतायें आहूजा साहब .. जैसे ही भलामानस अपना लाव- लश्कर लेकर गया , हम लोग निश्चिंत हो गये । मैंने पत्नी से कहा ज़रा सुकून से चाय पीते हैं , सुबह- सुबह तो जान ही निकल गयी थी । “

मेरे बड़े बेटे राहुल ने कहा , “ पापा यह बहुत पहुँचा हुआ आदमी है । यह आज मित्तल साहब को तो ख़त्म ही कर देगा । “

मैंने बेटे से कहा , इसको सब पता है । इस भगवान की मूर्ति के पीछे डायमंड है , देखो वह जानता था ।

बड़ा बेटा राहुल - “ पापा वह कैसे जाना होगा , यह तो एक अनुमान होगा । “

अग्रवाल साहब - “ अनुमान ही हो पर मेरी धड़कन तो रुक ही गयी , कुछ पल के लिये । “

छोटा बेटा रोहित - “ पापा यह डायमंड यहाँ से हटा देते हैं , पता नहीं वह फिर आ जाये । “

अग्रवाल साहब - “ यह बात तो ठीक है , पर कहाँ रखोगे ? ”

रोहित - “ मौसी के यहाँ रख आते हैं । ”

अग्रवाल साहब - “ठीक है रख आओ । ”

वह डायमंड लेकर निकला कि पुलिस ने रोक लिया । चार पुलिस वाले उसी फ्लोर पर थे और कहा अभी यहाँ से जाने की किसी को इजाजत नहीं है , यह साहब का आदेश हैं । मेरा बेटा वापस लौट आया

भाई साहब तभी वह विपत्ति का बँटवारा करने की कहानी सुनाने वाला भलामानस एक सूटकेस के साथ घर में घुसा ।

इस बार उसके चेहरे पर एक अलग दृढ़ता थी , आँखों में एक चातुर्य था और बाड़ी लैंग्वेज से लग रहा था कि वह आकरामक है । उसने आते ही कहा , घर के सारे दरवाजे बंद किये जाये । मेरे ऊपर के छत से एक व्यक्ति उत्तरता हुआ आया और कहा , “ सर ऊपर दरवाजा बंद करके ताला लगा दिया है । उसने कहा आप सब लोग एक लाइन में खड़े हो जाओ । हम सब लोग समझ ही नहीं पा रहे थे क्या हो रहा है । मैंने कहा , साहब

इतना की कहा होगा , उसकी चीख निकल पड़ी यह कहते हुये शट.. अप .. कोई कुछ नहीं बोलेगा । उसने कहा सब लोग मेरी आँखों में देखो , कोई अपनी पलक नहीं झुकायेगा । हम सब लोग उसकी आँखों में देखने लगे । उसने आँख घुमायी और अपने साथ वाली एक महिला अधिकारी से मेरी बहू की तरफ इशारा किया । उस महिला ने मेरी बड़ी बहू के हाथ पकड़ लिये , मेरी बहू रोने लगी । उसने कड़कदार आवाज में कहा , कोई नाटक नहीं और आदेश दिया सब की तलाशी लो ।

डायमंड मेरे छोटे बेटे के पैंट की जेब से मिल गया , उसने बहुत दृढ़ता समाहित आँखों से मेरी ओर देखकर कहा , इसको घर से हटाने का प्रयास हो रहा था । मेरी निगाहें झुक गयीं । उसने दूसरे इंस्पेक्टर को इशारा किया । उसने मेरे छोटे बेटे का हाथ पकड़ लिया और फिर उसने हमारे घर के फ़ोन से कहीं फ़ोन किया और थोड़ी देर में तीन लोग और आ गये । वह बहुत दृढ़ हो चुका था । मेरा छोटा बेटा और बहू दोनों को कमरे में दो कोनों पर बैठा दिया और पूरे घर की तलाशी उसके लोगों ने आरंभ कर दी । मेरी बहू को वह लोग अकेले एक कमरे में ले गये और एक घंटे बाद वह लोग बाहर आये और बोलेईश्वर का आदेश आज आप के लिये भी था , ईश्वर ने निर्णय लेने में वक्त लिया , वह मेरा काम आसान करना चाहता था ।

अग्रवाल साहब - “ सर आपको अगर विपत्ति देनी ही थी तब आप सुबह ही दे दिये होते । हमको दिलासा देकर चले गये और फिर वापस आ गये । एक विश्वास बना दिया था आपने मुकित का वह टूट गया । ”

भलामानस- “ईश्वर न्याय के अंतिम पायदान पर बैठता है । वह कोई जिरह - बहस - गवाही का अवसर नहीं देता । वह आँख में पटटी बाँधकर एक तुला लेकर न्याय प्रदान करने में विश्वास नहीं रखता , वह कर्मों का हिसाब करता है और कर्म - समय- फल में वैसा ही सम्बन्ध है जैसा विज्ञान में दूरी - समय - गति का है । जिस तरह ढलान या चढ़ाई क्रमशः एक त्वरण या मंदन को उत्पन्न कर देता है उसी तरह कर्म , प्रति कर्म , अति कर्म , अधम कर्म समय- काल-परिस्थिति से संचालित होकर धनात्मक या ऋणात्मक दिशा में कर्मफल देते हैं । ”

अग्रवाल साहब - “ सर इतने कम समय में कौन सा कर्म हमने कर दिया कि एक खुशी का लम्हा मायूसी में बदल गया । ”

भलामानस - “ बुलाओ इनकी बड़ी बहू राधिका जी को । ”

राधिका जी आ गयीं ।

भलामानस - “ राधिका जी आप बतायें , ईश्वर ने मुकित देकर बंधन क्यों प्रदान किया । ”

राधिका - “ जब साहब लोग आये थे उस समय में किचेन में सुबह की चाय बना रही थी । हमने यह सुना किचेन से कि इनकम टैक्स से लोग आये हैं । हमारे मायके में रेड पड़ चुकी है और मुझे पता था कि जो भी चीज मिलती है उसमें से ज्यादातर यह लोग ले जाते हैं , अगर हम यह न बता पाये कि यह कैसे प्राप्त की गयी है । हमने जो भी सामान जल्दी- जल्दी मिला सबको एक सूटकेस में भरकर सीढ़ियों से ऊपर गये और पानी के टंकी के पीछे छिपा दिया । ”

भलामानस - “ जब भी रेड होती है हम लोग सब कुछ छान मारते हैं । यह ऊपर की छत की भी तलाशी हमारे लोग कर रहे थे और वहाँ यह सूटकेस मिला । सूटकेस को मित्तल साहब के यहाँ लाया गया और मित्तल साहब ने कह दिया यह हमारा नहीं है । जैसे ही मित्तल साहब ने सूटकेस को अपना मानने से इंकार कर दिया , सारे लोगों का आवागमन रोकने का सञ्चाल आदेश पुलिस वालों को पुनः दिया गया और पुलिस वाले ने यह भी बताया कि आप के यहाँ से कोई बाहर जाना चाह रहा था । मेरा शक यकीन में बदल गया कि इसके अंदर की लाकर की चाभी , पैसा , गहना आप का ही है । इसके बाद का सारा काम राधिका जी ने सच बोलकर आसान कर दिया , हलाँकि सच

स्वीकार करने में इन्होंने थोड़ा समय लिया पर वह चलता है , हर कोई अपनी बरसों की कमाई से स्नेह- लगाव- अनुराग तो रखता ही है ।

अग्रवाल साहब ने आंटी की ओर मुखातिब होकर कहा , बहन जी उसके बाद जो हुआ उसका क्या बयान करूँ ... पूरा दिन .. पूरी रात... अगला पूरा दिन ... अगली शाम को हमने कहा कि साहब खत्म करें अब । उन लोगों को मानसिक रूप से थकाना आता है । बहुत प्रेम से बात करके सारी बात निकलवा लेते हैं । उसकी एक- एक लाइन एक- एक करोड़ की थी , हमसे 10 करोड़ टैक्स जमा करवाया । हमारा सारा गहना - डायमंड - घर का कैश सब ज़ब्त हो गया ।

मैं दरिद्रता की प्रतिमूर्ति शून्य गिनने लगा कि दस करोड़ में कितने शून्य होते हैं । मैंने अपने जेब का सौ- सौ का चार नोट पकड़ कर दस करोड़ में कितने शून्य होते हैं यह गिनने लगा , आठ शून्य... इतना पैसा देकर भी यह ज़िंदा है । मेरी माँ का एक बार 600 रुपया गिर गया था , वह महीनों अफ्रसोस ज़ाहिर करती रही । मैं दिल्ली से लौटकर जाऊँगा तब हिसाब माँगेगी और बचा पैसा ले लेगी ।

मैं - अग्रवाल साहब वह नहीं समझ आया जो भलामानस सबसे आँख मिलाने को कह रहा था और फिर आप की बहू को पकड़ कर ले गये । “

अग्रवाल साहब - “ वह बहुत तेज था , उसकी आँख बड़ी- बड़ी थीं और हिंदी बहुत ही शुद्ध बोलता था । वह हर बात को बहुत फेंट कर कहता था । उसकी हर बात मुझे आज तक याद है जो उसने कही थी , आँख मिलाने का आदेश देते समय उसके स्वर ओजवान थे और शब्दों में सम्मोहन था ...

“ इस सामने माँ दुर्गा की तस्वीर का स्मरण करके मेरी आँखों में देखो ..सिफ़र मेरी आँखों की पुतलियों में देखो .. यह बात मन में रखते हुये देखो कि आप में से किसी ने भी पिछले दो घंटे में कोई छल नहीं किया है । यह एक यज्ञ है जिसका संचालन हो रहा । यह ईश्वर की प्रार्थना है जो मैं कर रहा , ईश्वर का वास है हम सबमें .. निगाह मिलाओ मुझसे ...बगैर पलक झपकाये .. मिलाओ निगाह मुझसे ... ”

जैसे ही उसने तेज आवाज में कहा निगाह मिलाओ मुझसे ... बगैर पलक झपकाये .. मिलाओ निगाह मुझसे ...

मेरी बहू जिसने वह सूटकेस रखा था वह निगाह न मिला सकी । उसने उसी को पकड़ा कमरे में ले गया और चार लोगों ने मिलकर एक घंटे में सब उगलवा लिया , उससे यह कहकर कि अगर सच बोलोगी तब हम छोड़ देंगे नहीं तो अभियोजन होगा और बाकी बची ज़िंदगी जेल की सलाखों में बीतेगी । चोर का दिल कितना होता ही है । उसने सब उगल दिया । लाकर की चाभी ही मिली थी पर लाकर का डिटेल उससे निकलवा लिया । लाकर से सामान निकाल कर और मेरी बहू का स्टेटमेंट दिखाकर दो दिन में मुझसे भी सब कहला लिया और दस करोड़ का चेक साइन करा लिया मुझसे । पर आदमी अच्छा था । उसने बहुत सी बातें बतायीं कैसे हिसाब - किताब ठीक से रखो । कैसे नियम - क्रान्तुन का पालन करके भी टैक्स बचाया जा सकता है । मैं अब जब भी कोई समस्या होती है , उसी से राय माँगता हूँ । मेरे दोनों बच्चे उससे मिलने जाते रहते हैं । उसने कहा था आज यह रेड बहुत ख़राब लग रही है पर यह रेड एक अध्यापक है और बहुत कुछ ऐसा सिखायेगी जो जीवन में आज तक न सीखा होगा । उसने यह भी कहा कि मैंने पता नहीं कितनी रेड आज तक की है पर जिसके भी यहाँ रेड किया सबके यहाँ बहुत बरकत हुई है , लक्ष्मी का और अधिक आशीर्वाद मिला है । उसकी बात एक दम सही है , मेरे यहाँ बहुत संपन्नता उस रेड के बाद आयी । वह दस करोड़ सरकार को देने का फ़ायदा यह हुआ कि हमारी कैपिटल बन गयी और हम एक नयी फ़ैक्ट्री स्टील की लगा सके । हमने आहूजा साहब को भी पैसा दिया जब व्हाइट मनी की ज़रूरत थी इनको । इनको लोन देने से हमारे और आहूजा साहब के संबंध और भी बेहतर हो गया । आहूजा साहब ने आज सिर्फ़ तीन लोगों को बुलाया अनुराग- चिंतन - ऋषभ शालिनी से मिलने । यह हमारा सौभाग्य है जो हम इतने बड़े लोगों से मिल सके । न वह रेड होती न कैपिटल बनती न आहूजा साहब से मित्रता होती । यह मित्रता न होती तब आप लोग कहाँ मिलते मुझ ऐसे सामान्य आदमी से । वह भलेमानस उस जाड़े की सुबह विपत्ति के आवरण में एक सार्थक सोच का प्रकाश लेकर आया था । वह मेरे जीवन में एक नयी रौशनी लेकर आया था ।

चिंतन सर - “ तब तो आहूजा साहब उस दिन नयी रौशनी से वंचित रह गये । इनको भी प्रकाश पुंज की प्राप्ति होनी चाहिये ”

आहूजा साहब - “ अरे सर ऐसा न कहो, बरब्शो इस गरीब को । अग्रवाल साहब , कभी हमको भी मिलाना उस भलेमानस से । ”

अग्रवाल साहब - “ ज़रूर मिला देंगे पर आपको क्या ज़रूरत अब । यह दो भलेमानस तो बहन जी के घर में ही जन्म ले चुके हैं । यह हमारी शालिनी बिटिया हम सबकी उद्धारक स्वरूप है । अब तो भलेमानस घर में ही आ गये ।

आंटी - “ यह क्यों कहा आपने कि वह इलाहाबादी था ? ”

अग्रवाल साहब - “ बहन जी किसके पास इतनी ऊर्जा और समय है कि फेंट- फेंट कर बात करे , भाषा का चमत्कार बिखेरे और हर बात पर ईश्वर की सदाशयता की दुहाई दे । मेरी ज़िंदगी बीत गयी इसी आयकर विभाग के लोगों से बातचीत करते हुये .. पंजाबी होगा तो सीधे मुद्दे पर बात करेगा , हरियाणवी होगा तो बात से ही लट्ठ चला देगा , बिहारी होगा तो चार काम छोटे- मोटे अपने लोगों के पकड़ाता रहेगा , मद्रासी होगा तो क्या कहना चाह रहा यह समझाने में ही पूरा दिन निकाल देगा । कनपुरिया होगा तब सारी बात कर जायेगा पर आप समझ ही न पाओगे वह चाहता क्या है पर वह जानता है वह क्या चाह रहा । कनपुरिया ने अगर एक काम किया तो वह जितना करेगा उससे अधिक हल्ला करेगा । हैदराबादी - गुलटी होगा तब तो वह अपने मतलब की बात ही करेगा और हर बात में अपने ही फायदे की वस्तु देखेगा , उसके लिये एक ही नैतिकता है कैसे उसका अधिक से अधिक फायदा हो । इलाहाबादी होगा तब वह पहले एक भाषण देगा फिर पूछेगा .. आप का मुझसे ही काम है

इस भलेमानस ने बाद में बताया कि मैं इलाहाबाद से हूँ पर उसके कहने से पहले ही जान गये थे कि वह इलाहाबाद का है और जाते- जाते कह गया ... मैं आज से तुम्हारा वशिष्ठ हूँ साम्राज्य विस्तार करो .. ईश्वर- आशीर्वाद तुम्हारे साथ है ..

यह कौन कह सकता है .. मैं वशिष्ठ हूँ..

वशिष्ठ की कहानी भी जाते - जाते सुना गया । अब लोग अपना काम करके घर जाते हैं पर वह वशिष्ठ- दशरथ- जनक - भरत राज्यारोहण की कहानी सुनाने लगा ।

इतनी फुर्सत किसको है सिवाय गलचौरा विशेषज्ञ इलाहाबादी के ..

पर एक बात है बहन जी उसने अपरिग्रह की विचारधारा को मेरे पूरे घर में जन्म दे दिया था कुछ समय के लिये , यह कहकर हर्ष बनो ... प्रयाग में सर्वस्व दान न भी कर सको तो वर्ष में एक बार कुछ दान करके आओ ज़रूरतमंदों को । जो रिश्वत तुम मुझे सुबह देना चाहते थे वह संकल्प है तुम्हारा गरीबो - मजलूमों के लिये , वह उनका हक्क है और वह दान कर देना

.....
बहन जी यह सब एक लच्छेदार भाषा में कौन अभिव्यक्त कर सकता है

अग्रवाल साहब अपनी बात कहकर चुप हो गये । एक नीरवता व्याप्त हो गयी , भलामानस सबके मानसिक पटल पर था ।

आंटी अपने कलाई पर लगी घड़ी को देख रही थी । आहूजा साहब ने यह देख लिया और पूछा “खाना लगवाया जाये ? ”

आंटी ने कहा , “खा लेते हैं.. रात हो गयी है.. बातचीत में समय का पता ही न चला । ”

आहूजा साहब ने शालिनी को इशारा किया । शालिनी ने आवाज़ दी और दो लोग भागते हुये आ गये । खाना लगाने का आदेश हो गया । बगल के कमरे में भोजन की व्यवस्था थी । जब भोजन लग गया तब बैरे ने चलने का अनुरोध किया । उस अति विशालकाय कक्ष का दरवाजा इस विशालकाय कक्ष से लगा हुआ था । यह दो कमरे बनाये ही इस तरह गये थे कि लोगों की आवभगत और सामाजिक संबंधों में सहूलियत हो सके । आहूजा साहब लोग रहते पहले माले पर थे और नीचे का पूरा भाग सामाजिक जीवन और अतिथियों के लिये था ।

मैंने जैसे ही उस कमरे में प्रवेश किया देखा कि चमचमाती बड़ी - बड़ी थालियाँ , कटोरी , चम्च सब सजे हुये थे । हाथ में लोग व्यंजन लिये परोसने को तैयार थे । जब व्यंजन परोसे जाने लगा , चिंतन सर ने कहा , “ दबा कर हींचना .. ऐसा मौका बार - बार नसीब नहीं होगा । ”

मैंने कहा , “सर यह तो एक मोटा आसामी लग रहा है ।”

चिंतन सर -“ बहुतै मोटा .. इसको दुहना ही होगा । यह प्लेट- कटोरी - चम्च सब चाँदी के हैं । ”

मैं - “ यह सिफ़र चाँदी ही चाँदी है ? ”

चिंतन - “ यह चमक देख रहे हो .. वजन देखो .. यह सब शुद्ध चाँदी है । ”

मेरे मन में पुनः वह कालखंड धूम गया जब माँ चाँदी की पायल अपने लिये बनाना चाह रही थी । उसकी इच्छा थी कि नाना पाँच चाँदी के सिक्के बगैर माँगे उसको दे दें । शायद वह माँगती तो नाना दे भी देते पर माँगना तो उसके

रक्ताणु में है ही नहीं । मैं लगा जोड़ने कि इतनी प्लेट-कटोरी - चम्मच में कितनी पायल बन जायेगी ।

चिंतन सर - “ क्या सोच रहे हो ? ”

मैं - “ सर इतनी प्लेट- कटोरी - चम्मच में कितनी पायल बन जायेगी ? ”

सर - “ रहोगे ताउमर दरिदर के दरिदर.. अब इन सब चीजों से ऊपर उठो । मुझे पता है कि तुमको लग रहा होगा कि हमारे गाँव - देस की महिलाओं के पास पायल - करधनी नहीं है और यहाँ चाँदी का भोंडा प्रदर्शन हो रहा । पर चिंता न करो हम लोगों को ईश्वर ने प्रतिभा दी है समाजवाद के विस्तार के लिये । इन सबका दोहन होगा और यह दोहन जनता - जनादन के बीच जायेगा । ”

मेरे मन में भाव चिंतन सर के विरुद्ध उपजना आरंभ हो चुका था । एक बार किसी के विरुद्ध मस्तिष्क सोचने लगता है तब वह रक्त की हर शिराओं में उसके प्रति पूर्वाग्रह का संवहन करता रहता है और परिणाम यह होता है कि आरंभ में विरोध फिर दुराव और अंततः यह एक घृणा में परिणति हो जाता है , अगर समय रहते इस तीव्रगामी पूर्वाग्रहित रक्त संवेग पर लगाम न लगाया जाये । मेरे अंदर चिंतन सर के प्रति विरोध भाव उपजने लग गया था । इस विरोध भाव के मूल में प्रतिस्पर्धा थी । दो महत्वाकांक्षी या यूँ कहें अति महत्वाकांक्षी व्यक्ति जो एक ज़मीन जीतने के लिये साथ लड़े थे , दोनों ने अपनी- अपनी ज़मीन जीती भी पर अब उस जीती हुयी ज़मीन के आधार पर महत्वाकांक्षायें एक अलग उड़ान की आग्रही हो रही थीं । शहर इलाहाबाद के व्यक्ति की महत्वाकांक्षा अध्यापन- वकालत - सिविल सेवा की नौकरी से सीधे लखनऊ या दिल्ली के उच्चतम सिंहासन की ओर बढ़ने लगती है । जितने लोग आईएस- पीसीएस होते हैं उसमें से कई लोग राजनीति की ओर उन्मुख होने लगते हैं । उनकी सोच का दायरा विस्तारित होने लगता है , वह जन- सम्पर्क और जन- जागरण अभियान आरंभ कर देते हैं । इस अभियान के मूल में समाज सेवा बहुत ही गौण होती है राजनैतिक महत्वाकांक्षा का प्राधान्य होता है । चिंतन सर भी यही कर रहे ।

चिंतन सर मुझे एक सहयोगी के तौर पर देख रहे हैं । वह चाह रहे मैं उनका लक्षण बनूँ , उनके लिये त्याग कर्त्ता और दीपावली के दीप उनके नाम पर जलें । त्याग की एक मूर्ति बनाकर कभी- कभार मुझको याद कर लिया जाये और सारा नाम- यश - राज्य सुख उनको प्राप्त हो । मैं दिखता बेवकूफ हूँ , लगता बेवकूफ हूँ पर मैं इस भलेमानस से कम चालू नहीं हूँ । मुझे भी भले मानस की तरह तिलस्म फैलाना आता है , यह अलग बात है परिस्थितियों ने

मेरे हाथ बाँध रखे हैं । एक बार हाथ में बँधी रस्सियाँ थोड़ी ढीली तो होने दो मैं उसी रस्सी के रेशों से इनको बाँधकर लटका दूँगा । मुझसे बड़ा प्राड विधाता ने कम ही बनाया होगा । इन्होंने मेरी सदाशयता ही देखी है, मेरा आक्रमण कहाँ देखा है । मैं इनके सुलतानपुर को करछना के मनैया घाट पर अग्निमेषित कर दूँगा और अंतिम संस्कार की जजमानी इनसे ही कराऊँगा । मैंने मन ही मन निर्णय ले लिया एक संघर्ष का ...चिंतन उपाध्याय बनाम अनुराग शर्मा । मेरी अपनी कुँडली नहीं बनी है तो क्या हुआ, मैं सादे काग़ज़ पर कुँडली चक्र बनाकर मनमाने ग्रह भर दूँगा उसमें अगर कुँडली ही आवश्यक होगी हार - जीत के फ़ैसले के लिये ।

मैं “ सर आप जो करोगे सुल्तानपुर के लिये करोगे ? ”

चिंतन सर - “ ज़ाहिर सी बात है .. वहीं हमारा कर्म क्षेत्र है । वहीं से हमें चुनाव लड़ना है तब काम वहीं करना होगा । तुमको मेरा सहयोग देना होगा । तुम मेरे प्रथम सहयोगी की भूमिका में होंगे । तुम्हारे पास बहुत से ऐसे ख़ास गुण हैं जो बहुतों में दुर्लभ हैं । उन गुणों का जगत हित में योगदान लेना होगा । एक ग्लोशियर कोई जीवन नहीं दे सकता जब तक सूर्य की किरणें उसको तापित करके जल में परिवर्तित न कर दें और वह जल किसी प्रयोजन का न होगा जब तक ढलानों का साथ न मिले उसे मानव जीवन के मध्य ले आने के लिये ।

मैं एक ढलान हूँ तुम्हारे लिये तुमने तप से अपने को तपा कर निर्मल जल बना लिया है अब इसे मानव के उपयोग स्वरूप स्थापन का प्रयास मुझे करना होगा । ”

मैं “ सर, मेरे करछना - इलाहाबाद को क्या मिलेगा, अगर मैं आपके साथ सुल्तानपुर के विकास में लग गया ? ”

चिंतन सर - “ इतना सीमित दृष्टिकोण मत रखो । दोनों शहर जुड़े हुये हैं । मैं जब लखनऊ में शासन की बागड़ोर सँभालूँगा तब तुम करछना - इलाहाबाद के बारे में सोचना और उस समय प्रदेश का चातुर्दिक विकास होगा । मुझे पहले ज़मीन तैयार करने दो । अगर हम आरंभ में ही क्षेत्रवाद के पचड़े में पड़ जायेंगे तब एक वृहद लक्ष्य की प्राप्ति से हम वंचित हो जायेंगे । ”

मैं - “ सर आप बात बहुत महत्वकांक्षी बात कर रहे । यह तब होगा जब आप नौकरी से इस्तीफ़ा दो, चुनाव लड़ो, मन्त्री - मुख्यमंत्री- प्रधानमंत्री बनो ... यह सब बहुत दूर की कथा है अभी । पहले तो क्षेत्र का विकास मूल मुद्दा है । ”

चिंतन सर - नौकरी से इस्तीफ़ा तो देना ही है । यह सब धनपशु एकत्रीकरण कार्यक्रम क्यों किया जा रहा है ? क्या कोई मुझे गरीब बालिकाओं का विवाह

कार्यक्रम संचालित करना है इनके सहयोग से ? नहीं... एक अश्वमेध यज्ञ करना है दिग्विजय के लिये , इनके संसाधनों के उचित समायोजन से । “

मैं - “ सर अगर आप मुख्यमंत्री बन गये तब आप मेरे कहने पर मेरे क्षेत्र का विकास कर दोगे पर अगर आप ऐसी -एनएलए तक ही सीमित रहे तब तो सुल्तानपुर का विकास होगा , पर करछना का नहीं होगा । ”

चिंतन सर - “ तुम क्या चाहते हो ? ”

मैं - “ करछना- इलाहाबाद का विकास ? ”

चिंतन सर - “ कैसे ? ”

मैं - “ जैसे आप सुल्तानपुर का चाह रहे ? ”

चिंतन सर के हाथ का निवाला मुँह की ओर जाते- जाते रुक गया ।

वह बोले , “ तुम वही कह रह रहे हो जो मैं समझ रहा । ”

मैं - “ जी सर । ”

चिंतन सर - “ इस कार्य में बहुत त्याग है । ”

मैं - “ हर त्याग के लिये मैं तैयार हूँ । ”

चिंतन सर - “ तुम करना क्या चाहते हो ? ”

मैं - “ एक गैर मामूली दास्तान लिखना । ”

चिंतन सर - “ कैसे ? ”

मैं - “ नहीं पता मुझको अभी । ”

चिंतन सर - “ अगर उस दास्तान से मेरा विरोध है तब ? ”

मैं - “ तब भी लिखूँगा । ”

चिंतन सर - “ उस दास्तान में मैं एक खलनायक बन जाऊँ तब । ”

मैं - “ तब भी लिखूँगा । ”

चिंतन सर - “ अगर वह दास्तान मेरे अरमानों के रक्त बिंदुओं पर चलकर लिखी जा रही हो तब ? ”

मैं - “ सर , मैं महत्वाकांक्षी हूँ , मदांध नहीं हूँ । मैं सकारात्मक रक्त बिंदुओं की तासीर जानता हूँ । मैं ससम्मान उन बिंदुओं को प्रणाम करता हुआ आगे निकल जाऊँगा । ”

चिंतन सर - “ हम एक होंगे तब बेहतर कार्य करेंगे और अलग- अलग होंगे तब हमारा विकास बाधित होगा । इस पर पुनर्विचार करो । ”

मैं जो कहना चाहता था , वह कह गया था । मैं बात को बढ़ाकर उनके भोजन का स्वाद और ख़राब नहीं करना चाहता था , वैसे ही उनको खाने में नमक तीखा लगने लगा था जबकि किसी और को शिकायत न थी । मैंने बात को सँभालते हुये कहा , “ सर जैसा आपका आदेश होगा , वैसा ही करूँगा .. मैंने अपने अंदर के उद्गार कहे हैं । आप तो सर घाट- घाट का पानी पिये हैं अब आपसे क्या कहना । ”

सर के चेहरे पर थोड़ा संतोष भाव आया । वह बोले, “ दास्तान हमारी तुम्हारी एक ही होगी .. बस इंतज़ार करो । ”

भोजन करने में मैं मशगूल हो गया । यह मेरे जीवन का सबसे बेहतरीन भोजन था । मैं इससे पहले बाबा भैया के विवाह में ही एक उच्च स्तरीय भोजन किया था , पर वह कुछ भी न था इसके सम्मुख । यहाँ बनाये गये पता नहीं कितने व्यंजन मैंने पहली बार देखे । मारवाड़ी खाना क्या होता है , यह मुझे पता ही न था । वह भी व्यंजनों की लंबी फ़ेहरिस्त में शामिल था । छप्पन प्रकार के व्यंजन का शास्त्रीय प्रतिमान जो मैंने ग्रन्थों में सुना था , कुछ वैसा ही इंतज़ाम दिख रहा था ।

खाना खाते- खाते बहुत देर हो गयी । आहूजा साहब ने रात रुकने का प्रस्ताव किया । इलाहाबादी आंटी कहाँ रुकने वाली रात समधियाने । वह यह कहकर कि मुझे सुबह की पूजा - अर्चना में असुविधा होगी इसलिये रुक नहीं पाऊँगी , अनुराग चाहे तो रुक जाये । मैंने भी कहा , मैं आंटी के साथ जाऊँगा ... मैं नहीं रुकूँगा ।

जैसे ही कार चली , आंटी ने कहा , जब मैंने कहा था कि अनुराग चाहे तो यहाँ रुक जाये .. यह मैंने कह ज़रूर दिया था पर तुम अगर रुकते तो मुझे अच्छा न लगता ।

मैं- “ आंटी मैं क्यों रुकता । आप से बात करने में जो मज़ा है वह तो देवताओं के संसर्ग में भी नहीं है । ”

मैंने इतना ही कहा था .. आंटी ने मेरा माथा चूम लिया ।

आंटी ने घर पहुँचकर डराइवर तिवारी को धन्यवाद दिया और सौ रुपया देना चाहा , पर डराइवर ने लेने से इंकार कर दिया , यह कहते हुये .. “ माता जी हम मान- दान से लै के नरकै में जाब । हम शालिनी बिटिया के घरे से लै लेब तब हमार कभीं उद्धार न होये । ”

आंटी ने कहा , “ हम खुशी- खुशी दे रहे हैं । तुम इतने दिन से अनुराग के साथ लगे हो । रात- बिरात साथ ही रहते हो , रख लो । ”

तिवारी डराइवर- “ साहब हमरे डेबरा के हयेन , हम ओनसे हिसाब आपन कै लेब और हम लंबा हिसाब करब माता जी । ”

आंटी ने प्रथास किया पर वह लेने को तैयार न हुआ ।

आंटी ने वापस आकर कहा , तुम सोना चाहते हो ?

मैं- “ मेरी आँखों में कोई नींद नहीं है । ”

आंटी- “ तब रुको मैं कपड़े बदल कर आती हूँ , कुछ देर बात करेंगे । ”

आंटी आ गयी वापस । जून के महीने का अंतिम दिन था । दिल्ली की गर्मी अपने चरम पर थी । उमस जान मार रही थी । मैं और आंटी लान में आकर बैठ गये । आस- पास के घरों की बत्तियाँ जल रहीं थीं । आंटी ने कहा , यह सारे घर एक दूसरे के साथ बने हुये हैं पर तन्हा हैं , जबकि एक दूसरे की परछाइयों भी आपस में हर रोज मिलती हैं गुफ्तगू भी करती हैं पर एक अजनबीपन है इनके बीच । गाँव के घर दूर- दूर होते हैं परछाइयाँ कभी नहीं मिलती पर एक लगाव होता है । यही संस्कार घरों से संबंधों में विस्तारित हो जाता है । शहर में और गाँव में यही फ़र्क है , आपसी संबंधों के धरातल पर । आज की शाम देखो .. पूरा इंतज़ाम था , एक इन्द्र के राज्य की तरह का वैभव था पर अपनापन नहीं था । हम लोग गये , कुछ संवाद किया , खाना खाये और चले आये

मैं- “ आंटी मैं समझा नहीं , आप क्या कहना चाहते हो । ”

आंटी - “ एक कृतिरमता व्याप्त थी हर एक के चेहरे पर । जो लोग आये थे आमंतिरत होकर वह तुम्हारे और चिंतन में भविष्य की उम्मीद रख रहे थे और आहुजा साहब अपनी विलासिता का प्रदर्शन करते हुये यह भी कह रहे थे , तुम लोगों की उपस्थिति के द्वारा प्रकारान्तर से , मैं एक निरा व्यापारी ही नहीं हूँ मेरे घर में लक्ष्मी के साथ सरस्वती का भी वास है । ”

मैं “ अब यह तो आंटी उनका हँक है । शालिनी ने एक बड़ा काम तो किया ही है पढ़ - लिख कर और फिर आपकी बहू बनकर । ”

आंटी - हाँ यह तो है ही । अनुराग , मेरे जीवन में तीन पुरुष आये ... मेरा पति .. मेरा बेटा .. और तुम .. मेरे पति को विधाता ने मुझसे असमय छीन लिया .. मैं ईश्वर के कृत्य को एक षड्यन्त्र तो कह नहीं सकती .. वह आदि है .. वह अनंत है .. मेरी कोई अजली खता होगी जिसका मुझे दंड मिला .. दूसरा मेरा बेटा .. जिसके पास मेरे लिये सारी सदिच्छाएँ हैं पर मेरे लिये वक्त नहीं है । मुझे समय चाहिये बेटे का न कि सदिच्छा । तीसरे तुम आये .. जिसके पास मेरे लिये स्नेह ही स्नेह है । मेरी तुम्हारी मुलाकात आज से क़रीब दो महीने पहले हुयी और आज तुम मेरे सबसे नज़दीक हो । एक जो नायक- नायिका का एक छवि मैं इश्क़ होता है वैसा ही मेरा तुम्हारा वात्सल्य प्रेम विकसित हुआ । मैं अपने अंदर का एक राज तुमसे साझा करती हूँ । मेरी और तुम्हारी कोई रिश्तेदारी तो है नहीं । तुम्हारे नाना गद्दी पर इस गाँव आये थे । तुम्हारे नाना को उनके मामा लेकर आये थे और तुम्हारे नाना के मामा और मेरे बाबा आपस में पट्टीदार थे । यह संबंध हमारे और उर्मिला की मित्रता से विकसित हुआ था । मैं कई बार सोचती हूँ कि अगर ईश्वर ने एक बेटी मुझको दी होती तब मैं उर्मिला से अनुनय- विनय करके अपनी बेटी के लिये तुमको माँगती । पर ईश्वर ने वह अवसर मुझको न दिया । मेरे मन में हमेशा यह रहता है , कल तुम्हारा विवाह होगा और वह किसी एक अच्छे घर में ही होगा तब तुम्हारे समय के दावेदारों की संख्या और बढ़ जायेगी । उस दावेदारी में सबसे कमज़ोर दावेदारी मेरी ही होगी । यह तुम मेरा स्वार्थ भी कह सकते हो , जो शायद है भी , पर यह मेरे मन में घुमड़ बहुत दिनों से रहा है इसलिये मैंने सोचा तुमसे साझा करती हूँ । ”

मैं “ आंटी , व्यक्ति के जीवन में कई व्यक्ति आते हैं पर समय के साथ उन संबंधों को कई अग्नि परीक्षाओं गुजरना होता है । अभी मैं आपकी बचपन की एक सहेली के बेटे के रूप में आया और एक नज़दीकी हो गयी । अभी यह एक बेनाम रिश्ता है जिसमें सिवाय एक - दूसरे के प्रति सम्मान और आस्था - विश्वास के और कुछ नहीं है । बेनाम रिश्तों में बहुधा बहुत लगाव होता है क्योंकि वह हँक की बात नहीं करते । जो नामधारी रिश्ते हैं उनमें अधिकार और कर्तव्य एक साथ समाहित होते हैं और वह कई रिश्तों के तिरकोण- चतुष्कोण के मध्य संतुलित होते हैं । मेरा आपका संबंध अभी जो आप चाह रहीं वह हो जाये तब संबंध का एक नाम हो जायेगा । मैं आपकी बेटी का पति बन जाऊँगा और यह संबंध वही परिणाम दे सकता है जो ऋषभ- शालिनी- आहूजा साहब - आपका का दे रहा है , एक दर्द । मुझे आपसे कोई संबंध चुनना है तो मैं इस बेनाम रिश्ते को ही प्राथमिकता दूँगा न कि रिवाजों की डोरी से बाँधे गये संबंध को । ”

आंटी - “ वह दर्द क्यों देगा ? ”

मैं “ आंटी , जितना मुझे आप से बात करना अच्छा लगता है उतना अपनी माँ से नहीं लगता । इसके दो कारण हैं - एक , मेरा आपका संबंध माँ- बेटे के साथ- साथ एक मित्र का भी है । दूसरा , आप बहुत पढ़ी - लिखी हो , विद्वान् हो और ज्ञान के प्रति आग्रह भी है । मेरी माँ के साथ मेरा संबंध माँ- बेटे का है पर मित्रता का पुट नहीं है और उसका दुर्भाग्य था कि वह शिक्षा प्राप्त न कर सकी जो आपके नसीब में थी उससे वह मरहम रही , परिस्थितिवश । यह एक कारण है सकता था अगर आप की बेटी से मेरा विवाह होता तब विवाह के उपरान्त आपसे नज़दीकी और अधिक होती और मेरी माँ को यह पसंद नहीं आता । संबंधों के त्रिकोण का संतुलन किसी ज्यामितीय के सिद्धांत से संचालित न होकर गणितीय सूत्र- सिद्धांत से रहित भावनाओं से संचालित होते हैं , जिसमें एक ही सूत्र होता है समझदारी और विवेक । हमारे जीवन के संबंध बहुत एक - दूसरे के प्रति प्रस्पर अधिकार- उत्तरदायित्व को समाहित किये होते हैं बहुधा मोह इनको संचालित करता हैं और यह मोहजन्य संबंध कोई तर्क सुनने तैयार नहीं होते । ऋषभ आहूजा साहब के यहाँ रुकता है । मैं यह नहीं कह रहा यह उचित है या अनुचित पर क्या कभी यह जानने की कोशिश की गयी , वह वहाँ क्यों रुकता है । अगर तर्क है तो भी कोई माँ स्वीकार न करेगी इसको । इसलिये आंटी यह अच्छा हुआ आपकी कोई बेटी न हुई नहीं तो आप जैसे ही विवाह का प्रस्ताव रखती संबंधों में एक रस्साकर्सी आरंभ हो जाती । अगर विवाह न होता तब तो यह संबंध आपस में कड़वाहट को जन्म देकर ख़त्म सरीखा ही हो जाता और अगर हो जाता तो पता नहीं कितने नये समीकरणों को जन्म दे देता । मैं सीधे - सपाट संबंध का पक्षधर हूँ जो किसी समीकरण और सूत्र से संचालित होने के बजाय हँसी और आँसुओं की भावनाओं से संचालित हों । और आंटी इस बात का कोई सुनिश्चयन भी नहीं है कि मैं आपके बेटी के योग्य होता या वह मेरे योग्य होगी । ”

आंटी - “ अब जो है ही नहीं उसके बारे में क्रयास लगाने का कोई ख़ास मतलब है नहीं । यह मेरे मस्तिष्क में आया इसलिये तुमसे साझा किया पर तुम क्यों न होते उसके लायक । तुमको जो भी पति रूप में प्राप्त करेगी वह सौभाग्यशाली होगी । ”

मैं आंटी यह मान्यता जून के पहले सप्ताह से बनी है । मेरा अभी पेपर में नाम न छपा होता तब कोई मुझमें किसी गुण को न देखता , अगर होता तब भी । मेरे में अवगुणों की भरमार है पर आज मेरा घोड़ा सरपट दौड़ रहा है और उसके टापों की आवाज़ और खुरों से उड़ने वाली धूल एक विस्मय और तिलस्म को जन्म दे रही और लोग सवार की प्रशस्ति का गान कर रहे । ”

आंटी - “ कब की तुम्हारी दरेन है ? ”

मैं “ आंटी , आज शाम की ही है । ”

आंटी - “ आज तुम चले जाओगे , फिर मैं अकेली हो जाऊँगी । ”

मैं “ आप चलो मेरे साथ । कुछ दिन इलाहाबाद रहो । मेरा घर बहुत अच्छा तो नहीं है पर आप थोड़ा एडजस्ट कर लेना । ”

आंटी - “ घर के अच्छे- ख़राब होने का कोई मुद्दा नहीं है । वह उमिला का घर है । वह जैसा भी है मेरा ही घर है , पर चलना संभव नहीं है । यह ऋषभ-शालिनी आये हैं , इन लोगों का कार्यक्रम पता होता नहीं । इनके साथ समय गुजार लेती हूँ , पता नहीं अब कब यह लोग आयें । ”

जैसे ही आंटी ने यह कहा मेरे अंदर ऋषभ की पंक्ति कोई गयी , “हम लोग अमेरिकी नागरिकता प्राप्त करने की ओर बढ़ रहे हैं । ”

मैंने आंटी के चेहरे की तरफ देखा - एक शांति व्याप्त थी , आने वाले झंझावातों से बेखबर । एक समुद्र शांत है उसको नहीं पता सूर्य और चन्द्र अपनी स्थिति को बदल रहे । वह तो प्रकृति के नियम से संचालित बेपरवाह हैं अपनी बदलती अवस्थिति से पर यह समुद्र... सलाबत तो इस समुद्र के साथ होनी है .. सदियों से हो रही है एक जटिल वक्रतल की शृंखला लहरों से बनेगी इसके अंदर शब से लेकर उदिशा तक .. इसको नहीं पता इसका गुनाहे-अस्ल क्या है , कौन सी इसकी अज़ली - ख़ता है जो यादेशतीत में लम्हा- लम्हा कष्ट ही कष्ट का प्रदान करेगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 168

आंटी ने कहा , “ क्या ऐसा देख हो रहे मेरे चेहरे की तरफ ? ”

मैं - “ कुछ नहीं , बस यही देख रहा कितनी लकीरें तेरे चेहरे पर हैं । ”

आंटी - “ यह लकीरें वक्त ने बनायी हैं । इन लकीरों में बहुत सी दास्तानें हैं । क्या उमिला के चेहरे पर लकीरें नहीं हैं ? ”

मैं - “ हैं पर शायद तुमसे कुछ कम हैं ? ”

आंटी - “ऐसा क्यों है ? ”

मैं “ वह सोचती कम है । उसके मन में जो आता है वह अभिव्यक्त कर देती है । ख़ामोशी अंदर ही अंदर जलाती है और अभिव्यक्त अंदर की आग को

बाहर निकाल देती है । वह अपनी बात बेलौस कह देती है । वह परवाह ही नहीं करती कि सामने वाले पर उसकी बातों का क्या असर होगा । वह सामने वाले की भावनाओं की क़ीमत कम करती है , अपनी बात कहते समय । उसको नींद बहुत अच्छी आती है , वह दिन भर काम करती है , और थक कर निश्चिंत सो जाती है । हम लोगों पर शासन तो करती ही है आस- पड़ोस में कोई मिल जाये उस पर भी कर देती है । मेरे सर्वेश मामा की आकरामकता का सारी रिश्तेदारी में आतंक है पर वह माँ के सम्मुख आत्मरक्षा की मुद्रा में रहते हैं । यह शायद एक कारण है सारी समस्याओं से जूझने के बाद भी खुश रहने का । आपकी तुलना में उसका जीवन अधिक कठिन रहा है । आपने एक कम उम्र में पति को खोया पर उसके बाद आप सँभल गयीं । एक बेहतर नौकरी मिल गयी । आपके पास आर्थिक समस्यायें बिल्कुल न था थी , एक ही बेटा था और बहुत ही तेजस्वी था , अंकल के घर की कोई ज़िम्मेदारियाँ आप पर थोपी नहीं गयीं और अनचाहे रिश्तों को ढोने का कोई बोझ न था । मेरी माँ के तीन बच्चे थे और वह सब सामान्य ही थे कोई ओजस्वी था नहीं , घर की ज़िम्मेदारी तो थी ही साथ ही अपने ससुराल का बोझ न चाहते हुये भी कुछ तो सँभालना पड़ा ही पर वह फ़िकरमंद होकर भी बहुत चिंतित नहीं रहती थी । वह हर बात पर यही कहती थी , “ होइहिं वही जो राम रचि राखा । ”

मुझे लगता है आंटी यह सूतर वाक्य उसकी बहुत मदद करता था । ”

आंटी- “ उमिला की तरह की जिजीविषा कम लोगों के पास होती है “

मैं- “ जिजीविषा आपकी और उसकी एक ही तरह की है , बस अंतर समस्याओं को किस तरह देखा जाये इस में है । वह चीजों को भूल जाती है और आप याद रखती हो । वह आने वाले परिणाम अपने कर्म करने के बाद हरि की सदिच्छा पर छोड़ देती है पर आप ऐसा नहीं करते हो । एक पति का होना और न होना भी फ़र्क तो लाता ही है । मेरी माँ के पास पति का एक सहारा है कि अगर कोई कार्य अगर बिगड़ेगा तब वह सँभालेंगे ही और उसको उनकी परिपक्वता पर बहुत यक़ीन है और वह हैं भी बहुत परिपक्व । आप के पास इस सुविधा का अभाव है और जीवन में यह रिक्तिता निःसंदेह एक असुरक्षा की भावना को जन्म देते हैं और यही है फ़र्क कर रहा चेहरे पर बन रही लकीरों में , आपके और मेरी माँ के बीच । आंटी एक बात कहूँ ? “

आंटी - “ कहो .. ज़रूर कहो .. तुमको सुनना एक संगीत है जिसमें सुमधुरता है जिसमें बगैर रागों के नाद होता है । ”

मैं- “ आंटी , जब मैं आपको एक बीते हुये कल की तरफ़ से जाता हूँ और कल्पित करता हूँ जब आप उम्र के उस पड़ाव पर रहे होंगे जिस पर जीवन की भावनायें और संवेदनायें हर वक्त रक्स ही करती हैं , आप की सुंदरता पर

तो कुछ कहना ही नहीं , और आपके और अंकल के सानिध्य में उपजा प्यार-लगाव समय का आभास ही नहीं होने देता होगा । “

आंटी - “ अनुराग , अब उस समय के बारे में क्या कहूँ ? यह ज़िकर आजतक मुझसे किसी ने किया ही नहीं । मैं सुंदर थी या नहीं यह तो देखने वाले पर है मेरा संस्कारजन्य रूप- माधुर्य अधिक चर्चा में था इस पूरे पूसा कैम्पस में । जब मैं विवाह के बाद आयी थी तब इनके मित्र लोग आये थे और सब यही कहते थे , भाभी जी को कहाँ से आप ढूँढ़ कर लाये । जब मैं पढ़ने लगी और दिल्ली विश्वविद्यालय जाने लगी वहाँ भी मेरे साथ के लड़के - लड़कियाँ मेरी तारीफ ही करते थे और मेरे अध्यापक कहते थे आपकी उपस्थिति मात्र से कक्षा का वातावरण बदल जाता है । मुझे आधुनिक परिवेश मेरे साथ के पढ़नेवाले सहपाठियों ने सिखाया और एक संस्कार जो पीठियों से होता हुआ मुझ तक पहुँचा था वह मैंने उन लोगों को दिया । अब ईश्वर ने जो भी दिया वह सब स्वीकारना ही है , यह उसका फैसला है जिसमें सिर्फ न्याय ही होता है अगर मुझे न्याय न लग रहा हो तब भी । मेरा अपने पति से साथ छोटा ही रहा , कुछ वर्षों का ही रहा पर जितना भी रहा उसमी आत्मीयता और प्रेम की पराकाष्ठा ही रही । मैं एक गरीब घर से आयी थी । मेरे मायके में कुछ ख़ास न था । जीवन की सहूलियतों के लिये मुझे इनसे वह सब मिला जिसकी मैंने कभी कल्पना भी न की थी । तमाम प्रेम आख्यान पनाह माँग सकते हैं , हमारी प्रेम कहानी के समुख । अब तुमको क्या सुनाऊँ , तुम्हारी पत्नी से कुछ साझा करूँगी शायद तुम्हारे जीवन में वह प्रेम वर्षा कर दे , प्रेरणा लेकर ।“

मैं - “ आंटी , एक बात और कहूँ ? “

आंटी - “ एक नहीं दो- तीन- चार कहो ... पूरी रात कहते रहो , मैं बेताब तुमको सुनने के लिये । “

मैं - “ आंटी , आप थोड़ा अपने मायके की मदद कर दो । आप सक्षम हो और सहायता कर सकते हो अपने मायके का ... ससुराल का तो मुझे नहीं पता पर आपका मायका मदद चाहता है । रामदीन मामा की हालत बहुत ख़राब है । उनका घर किसी बरसात में गिर सकता है । बेटी के विवाह के लिये खेत बेचना पड़ा । आप कुछ मदद कर दो । “

आंटी - “ मैं क्या मदद कर दूँ , कैसे कर दूँ । “

मैं - “ इतना पैसा ऋषभ ने कमाया है और जैसा मुझे दिख रहा वह पैसों का पहाड़ खड़ा कर देगा । मैंने बहुत से लोगों को देखा है पर ऋषभ ऐसा आकरामक महत्वाकांक्षी नहीं देखा है । मैं - चिंतन सर और तमाम इलाहाबाद के मेरे देखे गये लोग बहुत ही महत्वकांक्षी हैं पर अपनी महत्वाकांक्षा के लिये जो जिद ऋषभ के पास है वह विरले ही होगी , मैंने तो नहीं देखी । “

आंटी - “ ऐसा क्या खास देख लिया ? ”

मैं - “ आपने कहा आईएस दो , वह उसने न दिया । उसने पद्म शरी अपने गाइड को लेने दी लोग कहते हैं , खासकर शालिनी , कि वह ऋषभ की बेवकूफ़ी थी पर वह उसकी योजना थी । वह पद्म शरी ऐसे मानद सम्मानों से आगे की वस्तु है । जो हमारे लिये बड़ी चीज़ है वह उसके लिये दुच्ची वस्तु है । वह अपने कार्ड बहुत सँभाल कर खेलता है । वह एक दशक बाद आने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान पहले कर लेता है । अगर उसको लगेगा कि देश त्याग देने से उसको अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हो सकती है तब वह यह भी कर सकता है । उसकी उड़ान इतनी ऊँची है कि आसमां को ऊपर होना पड़ेगा नहीं तो उसके डैने आसमान को आहत कर देंगे । ”

आंटी- “ क्या वह वापस नहीं आयेगा । ”

एक वाक्य मेरे मुँह से गलत निकल गया था । यह वाक्य आंटी को लग गया , मैंने भूल सुधारते हुये कहा .. वह ज़रूर आयेंगे । इतना बड़ा आहूजा का साम्राज्य उसका सर्जक यहाँ पर है .. इन सबको छोड़कर कहाँ जायेगा ।

आंटी - “ कौन है उसका सर्जक? ”

मैंने आंटी की ओर इशारा किया । यह बात आंटी को भावुक कर गयी । वह बोली , “ बेटा पैसा तो ऋषभ का है । मैं कैसे खर्च कर सकती हूँ । ज्यादातर पैसा मेरे बैंक में उसका दिया हुआ ही है । और यह सारा पैसा जो मैंने बचाया है और यह जो नौकरी जो मुझे मिली वह उसके पिता की ही है , इन सब पर अधिकार उसी का है । वह कहते थे जो भी हम करेंगे , ऋषभ के लिये ही करेंगे । यह आदेश सदृश है मेरे लिये । यह सब ऋषभ का है उनके आदेशानुसार जो मेरा भी मेरे पास है , मैं कैसे खर्च कर सकती हूँ ? ”

मैं - “ आंटी , आप ऋषभ को ही करने दो । ऋषभ - शालिनी बहुत ही उदार हैं । आप उनसे कुछ भी कहो वह ज़रूर करेंगे । ”

आंटी - “ मैं नहीं कहूँगी बेटा , उनको यह लग सकता है कि मैं अपने मायके में उनका पैसा गँवा रही हूँ । ”

मैं - “ आंटी , आप इलाहाबाद इन लोगों को लेकर आओ । रामदीन मामा की हालत देखकर कोई भी दरवित हो जायेगा । ऋषभ आपके बगैर कहे ही कर देगा । आंटी , ऋषभ के लिये दो- चार लाख रुपये ऐसे ही हैं जैसे हम लोगों के लिये दो - चार सौ रुपये । आंटी , समय का इंतज़ार करो ऋषभ का नाम पूरे विश्व में होगा । ”

आंटी - “ यह तुम किस आधार पर कह रहे ? ”

मैं - “ आंटी कई बातें शब्दों में बताना आसान नहीं , पर आभासित होने लगती हैं । ”

अपने बेटे के बारे में अच्छा- अच्छा सुनकर आंटी बहुत प्रसन्नवदन हो गयी थी । उसने कहा , “ अनुराग सोते हैं सुबह उठना है पूजा के लिये भोरबेला में ।

मैं - “ हाँ आंटी बहुत रात हो गयी । ”

आंटी - “ तुमको आज शाम को जाना है , आज कहीं मत जाना , मेरे को ही अपना समय देना । ”

मैं - “ ठीक है आंटी । ”

मैं अपने कमरे में लौट कर आया । मेरे अंदर एक ही सवाल घुमड़ रहा था , “ कैसे चिंतन सर से इन लोगों को दूर किया जाये । ” चिंतन सर गिर्ध की तरह दृष्टि गड़ायें हैं इन लोगों के धन- वैभव पर । जो प्रस्ताव ऋषभ ने मुझको दिया अपनी माँ के देखभाल का अगर मैं अस्वीकार कर दूँगा तब वह किसी और को देगा ही । उसका अपनी माँ से बहुत ही लगाव है । वह किसी भी तरह से एक ऐसा व्यक्ति चाहता है जो यहाँ पर उसकी माँ कीं ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करे , इस काम के लिये वह कोई भी क्रीमत देने को तैयार है । मैंने जैसे ही कहा था कि मेरी इन सेवाओं की कोई क्रीमत भी लगायी होगी तब उसने तुरंत कहा कि इसका कोई मुद्दा नहीं । इसका सीधा तात्पर्य है वह किसी भी क्रीमत पर तैयार है । मैंने अगर उसका प्रस्ताव इंकार कर दिया और यह प्रस्ताव चिंतन सर के पास चला गया तब तो वह एक वृद्धाश्रम ही खोलने का आश्वासन दे देंगे और सारे विदेश गये हुये जहीन लोगों की एक सूची तैयार करके सारे बुजुगों को एक भवन में इकट्ठा करके माल- माल हीचेंगे । यह बेवकूफ रमाकांत घंटी बजा रहा आहूजा के यहाँ कल इनका दूसरा बेवकूफ भाई इन्द्र मणि एक वृद्धाश्रम का प्रबंधक बन जायेगा तीसरा बेवकूफ शांतिमणि आहूजा साहब की कार चलाने लगेगा और कही एक्सीडेंट्स में मार ही देगा । यह ऋषभ- शालिनी का भारतीय साम्राज्य सँभाल लेंगे , मैं रह जाऊँगा निरा बकलोल । मेरी भी नालायकियत की कोई सीमा नहीं है , यह कहो समय रहते बुद्धि आ गयी । अब पहला दाँव चलता हूँ , आंटी - ऋषभ को इलाहाबाद के कमिशनर साहब के पुस्तक विमोचन में ले चलने की कोशिश करता हूँ । अपनी नज़दीकी बढ़ाता हूँ , ऋषभ के प्रस्ताव पर विचार करता हूँ

चिंतन सर .. मैं दिखता बेवकूफ हूँ , मैं लगता बेवकूफ हूँ पर शकुनि के साँचे को विधाता देख रहे थे जब मेरा सर्जन कर रहे थे मुझे कई शकुनियों से

लड़ने के लिये निर्मित किया है..

मेरे ऐसा फ्राड जमाने में विरला ही होगा सदाशयता समाहित किया हुआ
फ्राड ... शठे शाठयम समाचरेत ... आपके छल का जवाब मेरा प्रति छल
होगा ...

अब तुम्हारी हर चाल पर सिर्फ तुम्हारी ही मात होगी ।

जब मैं ज़िद पर उत्तरता हूँ तब रानी को प्यादे से ही मारता हूँ भले ही मेरे हाथी
- घोड़ा- वजीर शह और मात के खेल में आकरामक मुद्रा में ही क्यों न हो ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 169

मैं सुबह सो ही रहा था कि आंटी चाय लेकर आ गयी , समय की क़ीमत और
अनुशासन आंटी से सीखने लायक है । वह कितना भी देर में सोये पर सुबह
ईश्वर की प्रभात आरती करेगी ही । यह संस्कारों की एक पुंजस्वरूपा है ,
इसका दर्शन मात्र ही संस्कार का आरोहण व्यक्तित्व में करने लगता है ।
मुझे देख कर कहा , “ चाय पी लो और अगर सोने का मन हो तो और सो लो
। ” मैंने कुछ न कहा , चाय पीकर समाचार पत्र का इंतज़ार करने लगा ।
आज रविवार का दिन था , आंटी की छुट्टी ही थी , वैसे भी वह जबसे ऋषभ
आया था आफिस से छुट्टी लेती ही रहती थी ।

थोड़ी देर में ही ऋषभ की कार का हॉर्न बज गया । आंटी ने कहा , “ आज तो
बहुत ही सुबह- सुबह यह लोग आ गये । ”

ऋषभ- शालिनी नाश्ता लेकर आये थे । आंटी ने कहा मैंने नाश्ते की तैयारी
कर ली थी ।

ऋषभ - “ माँ वह भी खा लेंगे । यह शालिनी की माँ ने अपने महाराज से बनवा
कर भेजा , यह कहते हुये कि कल देर रात हो गयी थी और सुबह थोड़ा
असुविधा होगी नाश्ता बनाने में । दिन का खाना भी महाराज को बनाने को
बोला है , वह भी तिवारी जी लेकर आ जायेंगे ।

आंटी - “ अनुराग को कढ़ी अच्छी लगती है , वह मैं बना दूँगी । खाना यहीं का
खा लेते हैं । ”

शालिनी - “ कढ़ी मैंने कहा हुआ है बनाने के लिये । कढ़ी तो माँ आपको भी
अच्छी लगती है , इसलिये सब कह दिया है बनाने को । आज शाम की दरेन
है अनुराग की इसलिये आप खाना बनाने में समय मत लगाओ । ”

मैं और ऋषभ नाश्ता करके लान में बैठ गये, ठंडी हवा चल रही थी। ऋषभ ने कहा आओ पूसा कैम्पस में टहलते हैं। जैसे ही कुछ दूर हम लोग गये ऋषभ ने कहा, “क्या सोचा मेरे परस्ताव पर?“

मैं - “कौन सा परस्ताव?“

ऋषभ - “माँ की देख-भाल का।“

मैं - “इसमें मुझे करना क्या होगा?“

ऋषभ - “तुम माँ की जिम्मेदारी सँभालो। उसका ख़्याल रखो। मुझे अमेरिकी नागरिकता बहुत शीघ्र मिल जायेगी। यह बात अभी किसी से हमने साझा नहीं की है। न तो माँ से की है और न ही शालिनी के माता-पिता। इसका कारण यह है कि यह लोग इसको स्वीकार नहीं कर पायेंगे। वह सब सदमे में आ जायेंगे। जब उचित समय देखेंगे तब बतायेंगे। शालिनी ने भी कहा अनुराग से सहायता लेते हैं, वह इस समस्या का हल कर देगें। तुम अगर माँ का ख़्याल रखोगे तब मुझे बहुत सहृलियत हो जायेगी।“

मैं - “कोई और नहीं हो सकता....“

ऋषभ - “यह कोई बाज़ार में सामान ख़रीदने ऐसा नहीं है कि आप बाज़ार में जाओ और जो चाहो वह ख़रीद लो। यह एक भावनात्मक रिश्ता है। इस समय मेरी माँ के दो बेटे हो चुके हैं - एक मैं और एक तुम। तुम हमारे किसी रिश्तेदारी में नहीं आते पर सबको लगता है तुम मेरी मौसी के बेटे हो। यह कौन कह रहा? मेरी माँ ही कह रही। यह एक बहुत बड़ी बात है। माँ ने मुझसे भी कहा था, वह मेरे गर्भ से जन्मा नहीं है पर मुझे उसकी याद उतनी ही आती है जितनी तुम्हारी आती है।“

मैं - “क्या मुझे आंटी के लिये कुछ करने के लिये वचन देना या शपथ लेकर कहना आवश्यक है। क्या मैं यह कहूँ... मैं ईश्वर की सौंगंध खाकर कहता हूँ, जब तक जिज़ँगा आपकी माँ का ख़्याल रखूँगा और पूरी निष्ठा के साथ आपको दिया वचन पालन करूँगा।“

ऋषभ - “नहीं।“

मैं - “तब बताओ क्या करना होगा मुझे आपको विश्वास दिलाने के लिये? क्या आंटी के लिये कुछ करने के लिये मुझे किसी लालच या किसी प्रलोभन की आवश्यकता है?“

ऋषभ - “नहीं।“

मैं - “कुछ बातें शब्दों के बगैर ही अपनी गरिमा रखती हैं। इस पवित्र संबंध की गरिमा को ध्यान में रखते हुये मैं इतना ही कहूँगा तुम निश्चिंत रहो और कभी आंटी ही कहेगी, “ऋषभ अनुराग ने मेरा ख़्याल तुम्हारी ही तरह रखा।“

ऋषभ भावुक हो गया , उसके चेहरे पर संतोष के भाव थे । वह बोला , “
अनुराग में एक ऐसी जंग की तरफ बढ़ रहा हूँ , जहाँ कभी ऐसी परिस्थिति
उत्पन्न हो सकती है कि मेरे ऐसे बाहरी लोगों के खिलाफ़ पूरा देश खड़ा हो
सकता है । मैं आज एक सामान्य सा प्रतिस्पर्धी दिख रहा हूँ पर कल मेरे
सामने हो सकता है उनको खड़ा होना आसान न हो और तब वह सारे
हथकंडे अपनाये जा सकते हैं जिसमें नैतिकता सिफ़र विजय हो । मैं कई साल
आगे की वस्तु स्थिति देख रहा हूँ , जब कोई सरकार आये और अपने लोगों
के व्यापारिक हितों को ध्यान में रखते हुये बाहरी लोगों को बहिष्कृत करने लग
जाये । यह हर देश का दर्शन होता ही है और शायद उचित भी है कि अपने
नागरिकों को अधिमानता दे । मैं यह प्रश्न उठे उसके पहले ही मैं नागरिक
बन जाना चाहता हूँ । मेरी नागरिकता का प्रश्न शुद्ध रणनीति का है पर यह
न तो माँ समझेगी और आहूजा साहब समझ कर भी न समझना चाहेंगे क्योंकि
उनके पास एक सामराज्य है जिसे वह मुझे सौंपना चाह रहे । ”

मैं - “ आप अपनी माँ की समस्या हल करना चाह रहे पर आहूजा साहब की
देखभाल । ”

ऋषभ - “ उनकी समस्या नहीं है उतनी । वह माँ की तरह भावुक नहीं है और
उनके पास एक बड़ा पैराफर्नेलिया है । माँ की समस्या के कारण कुछ
विशिष्ट हैं । हम लोगों ने जिस तरह एकाकी जीवन जिया उसमें कोई नात-
रिश्तेदार है नहीं और माँ भी मेरे विवाह से बहुत खुश थी नहीं , उसने मेरा
आग्रह देखकर यह संबंध स्वीकार कर लिया । शालिनी समझदार लड़की है
उसने माँ से संबंध सामान्य कर लिया है , पर माँ के संबंध आहूजा साहब से
कुछ ख़ास ठीक नहीं है । आहूजा साहब एक अलग संस्कृति के व्यक्ति हैं ।
उनकी रिश्तेदारी में बहुत रुचि नहीं है , वह संबंध मुझ तक ही सीमित रखना
चाहते हैं । यह संबंधों को अपनाना और इनका निर्वहन व्यक्ति स्वेच्छा से
करता है , यह कहकर नहीं कराया जा सकता । यह तुम्हारा आईएएस हो
जाना और चिंतन सर का गाज़ियाबाद में एक प्रभावशाली पद पर होना संबंधों
को सुधार रहा , वरना एक ही शहर में रहकर माँ और आहूजा साहब अजनबी
से ही थे । इसमें दोनों पक्षों के अपने- अपने संस्कारों का योगदान तो है ही
दोनों के व्यक्तित्व भी अपनी अहम भूमिका अदा कर रहे । माँ मिलनसार है
नहीं और आहूजा साहब तो बड़े आदमी के दंभ में हैं ही । माँ को समझाना
आसान नहीं है और आहूजा साहब को मैं कुछ कहूँ यह उचित मुझे लगता नहीं
और अगर मैं कुछ कहूँ तब भी कोई सकारात्मक दीर्घकालिक परिणाम मुझे
नहीं दिख रहा । ”

मैं और ऋषभ वापस घर की ओर एक लंबा चक्कर लगा कर आने लगे । मैंने
कहा , “ ऋषभ , आप कभी गये भी नहीं हो अपने माँ और अपने पिता के

घर । तुमने गाँव का जीवन और वहाँ की समस्यायें देखी नहीं हैं । तुम एक बार अगर जाकर देखोगे तब तुमको उनकी असहायता का एहसास होगा । हमारे तुम्हारे में ऐसा कुछ नहीं हैं जो परमात्मा ने हमें जहीन बनाया और अपना आशीर्वाद दिया । ईश्वर ने जीवन में हमें इतना आगे बढ़ाया है, सिफ़र इसलिये नहीं कि हम केवल अपने लिये ही जिंदा रहने हेतु सोचें । हमारे साथ जुड़े लोगों का हम पर हक़ है । हमें उनका हक़ स्वीकार करना चाहिये, चाहे वैधिक रूप से कोई हक़ उनका न भी बनता हो । ईश्वर से हम अपने लिये कुछ भी माँगते समय एक नैतिकता और अपने कर्मों की दुहाई देते हैं । उन मजलूमों के प्रति भी हमारा नैतिक कर्तव्य है । ईश्वर कोई प्रत्यक्ष आदेश नहीं देता पर वह एक उत्तरदायित्व निभाने की अपेक्षा अवश्य करता है जब भी वह किसी को भीड़ से एक अलग व्यक्ति के रूप में सर्जित करता है ।

ऋषभ- “ क्या चाहते हो ? ”

मैं- “ इलाहाबाद आओ । आप स्वयम् देखो एक जमीनी हकीकत । आपके अंदर जितनी संवेदनशीलता है वह अवश्य उन सबके लिये कुछ करने हेतु प्रेरित करेगी । हमें - तुम्हें अपने ही जीवन में सीमित न रहकर समाज के उन लोगों के बारे में भी सोचना चाहिये जिन्हें कतिपय कारणों से ईश्वर का वरदान वैसा न मिला जैसा हमें - तुम्हें मिला । ”

ऋषभ - “ समय कम है, अब । पहले कहा होता । ”

मैं- “ यह मेरा अनुरोध है । हो सकता है ईश्वर ने मुझे तुमसे किसी उद्देश्य के लिये मिलाया हो । ”

ऋषभ - मैं अवश्य प्रयास करूँगा आने का । ”

हम लोग पूसा लौटकर आ गये । आंटी इंतज़ार कर रही थी । उसने पूछा , कहाँ गये थे ? ”

मैंने कहा, “ यूँ ही गप मार रहा था ऋषभ से । ”

थोड़ी देर बाद शालिनी आयी और बोली ... “

मेरे पास शब्द नहीं हैं शुक्रिया अदा करने के । ”

मैं - “ क्या किया मैंने ? ”

शालिनी - “ ऋषभ ने अभी- अभी बताया पूसा कैम्पस यात्रा का विवरण । मैं जानती थी क्या वार्तालाप होगी । मैं इंतज़ार कर रही थी परिणाम का । ”

इतने में आंटी आ गयी ... मैंने बात बदलने की कोशिश में कहा .. आंटी तेरी बहुत बहुत नायाब है .. मुझसे बहुतों ने कहा मुझ पर लिखो पर लिखने लायक

तो ऋषभ ले उड़ा ।

शालिनी - “ अनुराग लिख दो मुझ पर .. ऋषभ से कहूँगी तब वह फिर कोई कम्प्यूटर का प्रोग्राम लिख देगा । इश्क साहित्यकारों- लेखकों से करना चाहिये कुछ तो पता चले जीवन में भावनाओं की लहरों का .. यह विज्ञान वाले एक पेज भी नहीं लिख सकते और इनके लिये भावनायें भी गणित के सूत्र की तरह हैं । यह जो एक ही बात को घुमा- घुमाकर कहना है , इसी में तो जीवन की रवानी है । ”

मैं - “ ऋषभ नहीं खेल पाते लफजों से आप तो बहा सकती हो लफजों की धारा अंदर के उफनते तूफान को बिखेरने के लिये । ”

शालिनी - “ सामने वाले की रुचि भी होनी चाहिये , अब कुछ कहो वह भाव के बजाय शब्दकोश में ही लग जायें अन्वेषण करने तब तो सारा मज़ा ही किरकिरा हो गया । ”

आंटी - “ तुम अनुराग खूब लिखोगे अपनी माशूका पर । ”

मैं - “ आंटी , जो अभी है नहीं उसके बारे में क्या सोचना पर तुम्हारी बहु किसी भी प्रेम- आख्यान की नायिका सरीखी है । ”

शालिनी- “ माँ मुझ पर ही लिखने दीजिये आज । वहीं ऋषभ से पढ़वा लूँगी । ”

मैं - “ शालिनी अब वक्त वह बीत गया जब मैं तुम पर लिखता । मुझसे संजीव टंडन ने बताया था कि जब ऋषभ- शालिनी के विवाह की खबर आईआईटी में फैली तब बहुत मातम मानाया गया , हर कमरे में । आपके चाहने वालों की बहुत लंबी क़तार थी । ”

शालिनी - “ वह लंबू संजीव टंडन सिविल इंजीनियरिंग वाला ? ”

मैं - “ हाँ । ”

शालिनी - वह ऐसे ही अफवाह फैला रहा है । ”

मैं - “ अफवाह भी लोगों की हैसियत से ही उड़ती है । अब आपकी हैसियत थी , इसलिये अफवाह भी बेताब थी उड़ने के लिये ।

शालिनी एक अनुरोध है आपसे ..

शालिनी - “ क्या? ”

मैं - “ आप , माँ , ऋषभ इलाहाबाद आओ । एक पुस्तक विमोचन है । बहुत ही शानदार होगा । ऋषभ की जमीन भी देखो... कहाँ से यह वटवृक्ष अपनी जड़ें प्राप्त कर रहा

मैं कह ही रहा था कि चिंतन सर की जीप का सायरन बोलने लगा । आंटी बोली .. दूसरा बातूनी आ गया

मैंने मन ही मन कहा देर कर गये गुरु बिसात बिछ भी गयी और चाल चल भी दी ... अभी तो प्यादा ही चला है .. घोड़ा चलूँगा तब देखना ... यह सुल्तानपुर क्या खाकर लड़ेगा करछना-इलाहाबाद से ..

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 170

चिंतन सर ने लान का गेट खोलकर भीतर प्रवेश किया । उन्होंने आंटी का चरण पूरी शरद्धा से स्पर्श करते हुये कहा आपका दर्शन मात्र ही पापनाशक है । ऋषभ से कहा ओजस्वी व्यक्ति वंदनीय होता है और समय आपके लिये कई हरिष्णेण और अबुल फ़ज़्ल को जन्म देगा । शालिनी से कहा , सौन्दर्य जीवन अवश्य है पर सत्यम् - शिवम् - सुंदरम् का संगम ही जीवन को सार्थकता प्रदान करता है । अगर सौन्दर्य के साथ सरस्वती का वरदान प्राप्त हो जाये तो उस विदुषी की सुंदरता का गौरवगान होता है और अनुराग सरीखे सौन्दर्याग्रहियों को रचनात्मकता की एक पृष्ठभूमि प्राप्त हो जाती है । मात्र रूप ही माधुर्य को जन्म नहीं देता । “

आंटी - “ चिंतन , अपनी लच्छेदार भाषा से तुमने आज सब की सुबह बहुत ही सुहानी कर दी । “

मेरे मन में भाव आया , “ आये और लपेटना लब्जियाना चालू । आज तो किसी की खैर नहीं , सबको लपेट मारेंगे । “

मैंने कहा , “ सर इस अकिंचन पर भी कुछ नज़रें- इनायत हो जाये । “

चिंतन सर - “ आप तो मेरे हृदय में वास करते हो । आपका रिश्ता चक्षु से नहीं धड़कनों से है । मेरे शब्दों को भी मर्यादा मेरी धड़कनों से प्राप्त होती है । “

आंटी ने कहा नाश्ता कर लो । चिंतन सर ने कहा अवश्य करेंगे । आंटी ने शालिनी से कहा बहुत नाश्ता तुम लेकर आयी हो । चिंतन के लाव - लश्कर को भी करा दो । मैंने कहा , मैं बुला देता हूँ उन लोगों को , यहीं लान में कर

लेंगे । मैंने मातादीन को आवाज़ दी और वह भाग कर आ गया । नाश्ता करते-करते सर ने पूछा, “ क्या कार्यक्रम है ? ”

मैं - “ आज की गाड़ी है । आज शाम को परयागराज से चला जाऊँगा । ”

चिंतन सर - “ क्या करोगे जाकर ? रुको एकाध दिन और । ”

मैं - “ सर तीन दिन हो गये , आज चौथा दिन है । अब चलता हूँ । आज का रिज़र्वेशन है । अब टिकट भी बदलवाना पड़ेगा । ”

चिंतन सर - “ वह कोई ख़ास बात नहीं है । ”

उन्होंने मातादीन को आवाज़ दी और कहा साहब को आज जाना है । पर जाने का मन कल है क्या करें ?

मातादीन - “ सर जो गाड़ी आज जा रही वह कल जायेगी । ”

चिंतन सर - “ जो यात्री आज जाने वाले हैं उनका क्या होगा ? ”

मातादीन - “ सर जब गाड़ी कल जायेगी तब वह भी कल जायेंगे , साहब के साथ । ”

चिंतन सर हँसने लगे और बोले , “ तुम्हारा भी कोई जवाब नहीं । अरे बुद्धिमान प्राणी मैं कह रहा टिकट बदलवाने को । ”

मातादीन - “ सर वह भी हो जायेगा । ”

मैं - “ सर चलने दो आज । कई दिन हो गये । ऋषभ - शालिनी- आंटी - आप -शालिनी के माता- पिता सबसे मुलाक़ात हो गयी है । मेरा परयोजन फलितार्थ हो चुका है , अब चलता हूँ । ”

आंटी - “ अब कब आओगे ? एकेडमी जाने के पहले एक बार ज़रूर आना । ”

मैं - “ ठीक है आंटी आऊँगा । ”

चिंतन सर - “ शाम को मेरी जीप छोड़ देगी स्टेशन । ”

शालिनी - “ सर तिवारी है , वह छोड़ देगा । ”

चिंतन सर - “ ठीक है मैं स्टेशन पर मिलता हूँ । ”

सर ने मातादीन को आवाज़ दी और कहा कि जीआरपी दरोगा की ड्यूटी लगा दो और कहना मैं शाम को आऊँगा । साहब की बर्थ नंबर ले लो , वहाँ पर टीटी को सहेज भी देना ।

मातादीन - “ जी साहब । ”

शालिनी- “ यह सब क्या है डयूटी लगाना , सहेजना ... बड़े नक्शे हैं आप लोगों के । ”

चिंतन सर -“ शालिनी जी शाम को चलियेगा , देखियेगा अनुराग बाबू का नक्शा । ”

शालिनी - “ मैं ज़रूर चलूँगी । मैं भी तो देखूँ , यह इलाहाबाद वालों का नक्शा । ”

चिंतन सर कुछ देकर बैठकर चले गये । शालिनी -ऋषभ भी यह कहकर , अभी आता हूँ , चले गये । आंटी ने पूछा , “ ऋषभ से क्या बात हुई ? ”

मैं - “ कुछ ख़ास नहीं । ”

आंटी - “ यह कुछ ख़ास नहीं क्या होता है ? ”

मैं - “ यूँ ही इधर- उधर की बातें की । ”

आंटी - “ यह इधर- उधर की बात क्या होती है । तुम मुझे क्यों भरमा रहे हो ? अगर नहीं बताना चाहते तो कोई बात नहीं । ”

मुझे झूठ बोलने में महारत हासिल है पर आज मेरे लिये झूठ बोलना बहुत मुश्किल हो रहा था । एक ऐसा राज़ था जो खुलते ही सबको मुन्तशिर कर सकता था । मैं यह कैसे कह सकता था कि ऋषभ अब यहाँ वापस न आयेगा, वह भारतीय नागरिकता त्याग कर अमेरिकी नागरिकता ले रहा और आपको एक अजनबी के हाँथों सौंप कर कर जा रहा .. एक ऐसा अजनबी जिसके बारे में उसे कुछ भी नहीं पता । मैं आंटी का सब कुछ लेकर भाग भी सकता हूँ , मुझ पर यक़ीन करना बिल्कुल ही उचित नहीं है । मैं कितना भी एक बेहतर इंसान ऊपरी तौर पर क्यों न लगूँ पर किसी व्यक्ति को जानना एक लंबी प्रक्रिया है और ऋषभ ने मात्र कुछ घंटों के साहचर्य में अपनी सबसे अमूल्य निधि मुझकों सौंपने का फैसला कर लिया । ऋषभ वस्तुतः एक संतोष की तलाश कर रहा था , वह अपने मन को बहला रहा था । ऐसा उसने क्यों किया ? क्या मैं यह फैसला अपने माँ - पिता के लिये ले सकता हूँ ?

शायद वह रात के वीरान अँधेरों में आत्मा के धिक्कारने पर एक संवाद की ज़मीन तैयार कर रहा है । जब उसका ज़मीर उसे झकझोरे तब उसे अपनी आत्मा को जवाब देने के लिये कुछ तो हो । उसकी रुह जब उससे प्रश्न करे, “ तूने यह क्या किया ... तूने अपने सर्जक को ही बेसहारा छोड़ दिया उसे अपने भीगे नयनों के साथ और वह अभिशप्त है आँसुओं को खुद ही पोंछकर उन पोंछे हुये आँसुओं से गर्म हवाओं से शीतलता माँगने के लिये । ”

वह सिफ्फ़ अपने अंदर के धिक्कारते हुये ज़मीर से तर्क-वितर्क-कुतर्क के लिये मेरा चुनाव कर रहा है । यह ऋषभ भी जानता है कि उसके तकर्कों में बहुत जान नहीं है फिर भी एक जिरह तो रात के सियाह अँधेरों में वह कर ही लेगा ।

आंटी - “ क्या सोचने लग गये ? ”

मैं - “ आंटी थोड़ा दुःख हो रहा है ? ”

आंटी - “ किस बात पर ? ”

मैं - “ आज मैं चला जाऊँगा , ऋषभ बारह जुलाई को जाने को कह रहे । इतना अच्छा माहौल चल रहा इस समय सब उड़ जायेगा । ऋषभ कह रहे थे कि अब कुछ दिन ही रह गये यहाँ पर और अगली बार कब आना होगा , यह नहीं पता । ”

आंटी - “ ऋषभ यह कह रहे थे ? ”

मुझे लगा कि आंटी ने पकड़ लिया मेरी आँखों से कि मैं झूठ बोल रहा । पर मैं बात सँभालते हुये कहने लगा , “ किसको अच्छा नहीं लगता अपनों के पास रहना । ”

आंटी - “ यह चुनाव तो ऋषभ का ही था । वह ही विदेश जाना चाहता था । मैं तो चाहती थी वह भी तुम्हारे ही तरह परीक्षा देता । अब विदेश से तो रोज-रोज कोई आ नहीं सकता । यह कोई दिल्ली- इलाहाबाद तो है नहीं , ज़ब मन किया चल दिया । इस आवागमन में पचास तरह की समस्यायें हैं.. टिकट लो , वीज़ा लो .. एक लंबी यात्रा करो .. यह टिकट भी कौन सस्ता मिलता है । ”

मैं - “ आंटी , आप विदेश नहीं जाओगे ? ”

आंटी - “ ऋषभ यही बात कर रहा था तुमसे ? ”

मैं - “ नहीं , यह तो मैं कह रहा कि आप विदेश जा सकते हो , अगर वह नहीं आ सकते । ”

आंटी - “ मैं क्या करूँगी वहाँ पर ? वहाँ एक बंद कमरों का मकान , अपने देश - दुनिया से दूर .. न कोई जानने वाला न मिलने वाला । मैं नहीं रह सकती । तुमको लग रहा होगा ... मेरा बुढ़ापा कैसे बीतेगा ? मैं हरिद्वार चली जाऊँगी , किसी आश्रम- मठ में परमु की सेवा करते जीवन काट लूँगा । ईश्वर ने जब जीवन में दुःख दिया है तब तो वह दुःख तो हमको भोगना ही है । यह जन्म तो गया , अब अगले जन्म को ईश्वर सँवारे .. सद्गति प्राप्त हो ... दामन बँगैर किसी कालिमा के श्वेत चादरों में सिमट जाये ।

अनुराग “

आंटी रोने लगी । उसके आँखों से अश्रू- धारा बहने लगी ...

वह बोली .. “ अनुराग मेरा अंतिम संस्कार तुम कर देना । मुझे मुखाग्नि.....

मेरी आँखों से भी आँसू टपक गये ।

मैंने कहा , “ आंटी इस तरह की बात आप क्यों कर रही हो ?“

आंटी - “ अनुराग जीवन की वास्तविकता स्वीकार करनी चाहिये । “

मैं - “ कौन सी वास्तविकता ? “

आंटी - “ अब ऋषभ वापस नहीं आयेगा । “

मैं “क्यों वापस नहीं आयेगा , दो- एक साल की बात है वह वापस आयेगा , वह कुछ समय के लिये काम करने गया है कोई बसने तो गया है नहीं । “

आंटी - “ अनुराग , इतने नासमझ तुम हो नहीं जितनी नासमझी की बात कर रहे । आहूजा साहब की शानो-शोकृत जिसमें केवल विलासिता ही विलासिता है , हज़ारों करोड़ का व्यापार जो किसी को भी प्रलोभन दे दे , यह सब ढुकरा कर जाने वाला वापस आयेगा ? तुम किसको बहला रहे हो ? “

मेरा कलेजा मेरे मुँह पर आ गया । जिसको ऋषभ ने एक राज की तरह एक पोटली में मज़बूत गाँठ बाँधकर सात संदूकों में बंद ऐसा होने का भ्रम पाल रखा है उसी पोटली की गिरहें खोलकर वह राज आंटी ने सरे आम आसमानों में उड़ा दिया ।

आंटी - “ जिसमें उसको खुशी हो वह करे । वह आया कुछ दिनों के लिये , पर एक जीवन दे गया । आज सुबह नीली पैंट- आसमानी क़मीज़ पहन कर वह घर में गेट से प्रवेश कर रहा था । मुझे याद आया वह समय , जब वह इंटर में पढ़ता था ऐसे ही कंधे पर बस्ता रखे घर में घुसता था और दरवाज़े के गेट से ही माँ- माँ हल्ला करता था । एक पूरा वक्त बीत गया पर अभी भी मुझे वही कालखंड याद आता है । अनुराग , जब तुम एकेडमी के लिये घर से निकलोगे तब उमिला भी बहुत रोयेगी जैसे मैं रोयी थी ... ऋषभ जब एयरपोर्ट के लिये निकल रहा था पहली बार कार्नेल यूनिवर्सिटी जाने के लिये , पर तब कहाँ पता था मुझे वह अब वापस नहीं आये.....

आंटी पूरा वाक्य भी न कह पायी और उसका रँधा हुआ गला उसकी अभिव्यक्ति क्रम को तोड़ गया । एक ऐसा गमगीन माहौल उस शांत वातावरण में बन गया कि कोई भी कुछ बोल नहीं पा रहा था ... सिवाय एक कोयल के जो मकान के पीछे के पेड़ पर सुमधुर ध्वनि उत्पन्न कर रही थी , पर उस सुमधुरता में किसी की रुचि नहीं थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 171

आंटी थोड़ी देर में सामान्य हुई और उसने फिर पूछा , “ तुम्हारी और ऋषभ की क्या बात हुई ? ”

मैं - “ बताया तो मैंने । ”

आंटी - “ औरों से झूठ बोलना और माँ से झूठ बोलने में फँक्क होता है । तुम झूठ बोलने में कितने भी माहिर हो पर माँ से झूठ बोलने के लिये प्रशिक्षित नहीं हो तुम । एक प्रशिक्षण लेकर आओ , झूठ बोलने में और दक्षता हासिल करो , अगर मुझसे झूठ बोलना चाहते हो । ”

मैं - “ झूठ क्यों बोलूँगा मैं ? ”

आंटी - “ ऋषभ मेरे गर्भ में नौ महीने से ज्यादा रहा है । उसने जन्म लेने में नियत नौ महीने से अधिक समय लिया और यह मेरी आँखों में पिछले छब्बीस सालों से रह रहा है । मैं इसकी एक- एक रग से वाक़िफ़ हूँ । यह बेवजह किसी को पाँच मिनट नहीं देने वाला और तुम्हारे साथ पूसा की सड़कों पर घंटों टहल रहा ... क्यों ? ”

मैं उसकी आँखों में चिंता और शारीरिक चाल- चलन में एक व्यग्रता देख रही ज्यों- ज्यों उसके जाने का समय नज़दीक आ रहा । एक माँ बच्चे के आँख की पलक के झपकने से यह जान जाती है , बच्चे के मन में क्या चल रहा है । क्या बात हुई तुम्हारी उससे ? ”

मैं - “ उसने कहा , मेरी माँ का ख्याल रखना जब मैं यहाँ नहीं रहूँगा । ”

आंटी - “ बस इतनी सी बात ? ”

मैं - “ बात का मर्म यही था, कहने का ढंग - तरीका अलग हो सकता है और पुनरावृत्ति एक ही बात की कई बार हुई । ”

आंटी - “ तुमने क्या कहा ? ”

मैं - “ जो मैंने कहा होगा वह आप जानती हो । ”

आंटी - “ हाँ मैं जानती हूँ । अनुराग, तुम्हारा- मेरा संबंध है इसमें ऋषभ का कौन सा निहोरा । तुम मेरा ख़्याल रखो न रखो , इसमें ऋषभ की भूमिका कहाँ से आ गयी । यह ख़्याल रखना न रखना भावनाओं और लगाव से होता है , यह किसी के अनुरोध या निर्देशन से संचालित नहीं होता है । वह अपने किसी आईआईटी के सहपाठी से यह अनुरोध किया होता तब मैं सुनती परिणाम ... तुम तो तो हाँ कहोगे ही । वह नहीं कहेगा तब भी मेरा ख़्याल रखोगे । यह किसी से कोई वायदा ले लेना , फ़र्ज़ अदायगी का एक आवरण है न कि फ़र्ज़ अदा करना । ... यह संबंध सिर्फ़ तुम्हारा-मेरा है । इस संबंध की स्थापना में ऋषभ तो कहीं नज़र आते नहीं । ऋषभ ही क्या, उर्मिला का भी योगदान तुमको जन्म देने तक ही सीमित है , जहाँ तक मेरे -तुम्हारे संबंधों का प्रश्न है । मैं तुम्हारी माँ से कभी नहीं मिली गाँव छोड़ने के बाद । पत्र भी कभी - कभार आते थे , दो महीने में या तीन महीने में एकाध बार । तुम इंटरव्यू देने आये और तुमको मैंने जाना , तुमको जानना एक आधार है हमारे - तुम्हारे संबंधों के बीच । मैं तो यह कहूँगी तुम्हारे कारण मेरे और उर्मिला के संबंध अब प्रगाढ़ हो रहे न कि उर्मिला के कारण मेरे - तुम्हारे । तुम्हारे कारण उर्मिला का सम्मान मेरे मन में अधिक बढ़ा । यह जो संस्कार उसने तुमको दिये वह अमूल्य हैं पर संस्कार की ग्राह्यता भी उसने सुनिश्चित की । पर यह सुनिश्चयन भी ब़ग़ैर तुम्हारी अदम्य इच्छाशक्ति के संभव न था । ”

मैं “ आंटी वह वापस आयेंगे । उनके लिये इस देश में अभी अनुकूल वातावरण नहीं है । अनुसंधान की जो सुविधा वहाँ है वह यहाँ है नहीं और वह एक लक्ष्य से विदेश गये हैं । ”

आंटी - “ किसको बहला रहे हो तुम ? किस महान लक्ष्य की तुम बात कर रहे हो ? पैसा कमाना ही तो है । कौन सा आर्यभट्ट , सी वी रमन का काम कर रहे वह । कुछ कम्प्यूटर की जगलरी करो , प्रोग्राम बनाओ और बेचो , बस यही ख़ास बात है कि उस वस्तु का भारत नहीं विदेशों में ही बाज़ार है । यह खरीद - बेंच का धंधा है और है क्या? क्या कोई पाइथागोरस की प्रमेय उचित परिणाम नहीं दे रही उस पर काम कर रहे , क्या कोई मानवता के विकास के लिये अति आवश्यक अनुसंधान कर रहे ... बताओ न मुझे ... कौन सा ऐसा नायाब काम है ... शालिनी एग्रीमेंट देखती है ताकि जो यह बनायें उसकी पूरी क़ीमत वसूल हो , धन अनवरत मिलता रहे हो और चोर बाज़ारी न हो । यह सीमेंट- स्टील बेचने के व्यवसाय से किस तरह भिन्न है सिवाय इसके कि यह साफ- सुथरा व्यापार है और ग्राहक थोड़ा पढ़े- लिखे , ऊँचे किस्म के , आधुनिक एवम् विदेशी लोग हैं । एक उत्पाद बनाकर बेचना तो एक करय- विकरय ही हुआ न ? तुम एक धंटा से अधिक घूमे यह नहीं पूछा ...

यह स्पष्ट करो मुझे , सीमेंट - स्टील - दवा बनाना और कम्प्यूटर प्रोग्राम बनाना एक बनाने की प्रक्रिया में अलग- अलग हो सकते हैं पर बेचने की प्रक्रिया तो कमोबेश एक ही है , अगर अलग है तो कैसे अलग है ? “

आंटी ने मुझे पूरी तरह निरुत्तर कर दिया था । उससे तर्क करने का मतलब उसको और नाराज़ करना था । मैं चाह रहा था बात बदल जाये पर वह बदलने को तैयार न थी ।

मैंने कहा , “ आंटी अब इसका हल क्या है ?

आंटी - “ किस बात का ? ”

मैं - “ ऋषभ के जाने और आने का । ”

आंटी - “ कहाँ आने-जाने का ? ”

मैं - “ विदेश । ”

आंटी - “ मैं उसकी दुविधा समझ सकती हूँ । वह एक बहुत ही संवेदनशील लड़का है । वह स्वेच्छा से गया इससे अधिक बेहतर शब्द यह कहना है कि वह अवसर की तलाश में अमेरिका जाने के लिये विवश था । उसके लिये इस देश की जमीन पर इस तरह का काम नहीं था , जैसा काम वह चाह रहा । वह त्याग नहीं करना चाह रहा इस देश के लिये , वह अवसर चाह रहा आगे बढ़ने के लिये । वह विदेश गया था अवसर की तलाश में पर अब परिस्थितियों के कारण वह विवश है वहाँ रहने के लिये । मैं अगर कह दूँ उससे , तुम विदेश और मुझमें एक को चुनो तब वह क्या चुनेगा मैं जानती हूँ । मैंने शालिनी से विवाह पर प्रश्न खड़ा किया था , उसने शालिनी को त्यागने का निर्णय कर लिया था । इस विवाह के होने में शालिनी का बहुत योगदान है और वह हर शर्त मानने को तैयार थी जो भी मुझे स्वीकार्य हो ।

मैं अपने संस्कारों की आग्रही थी और हूँ , पर मैं यह भी देख रही थी सिवाय जाति के बाहर होने के शालिनी में कोई कमी नहीं है । मेरे संस्कार- रीति - रिवाज का आग्रह इतना भी संकीर्ण नहीं हैं कि मैं धड़कनों की आवाज़ न सुन सकूँ ।

मैं माँ हूँ , मैं ऐसा जीवन उसे नहीं दे सकती हूँ जो हर रात के अँधेरों में एक दुःस्वप्न की तरह उसके साथ रहे और ज़िंदा रहने का तात्पर्य सिर्फ़ साँसें लेना रह जाये । कोई भी व्यक्ति अपने ख्वाबों के बगैर ज़िंदा नहीं रह सकता

, साँस लेकर शरीर को ढोना अलग बात है । जीवन में आगे बढ़ना और बहुत आगे बढ़ने की चाहत रखना उसको अपने पिता के रक्त से प्राप्त हुआ है । वह अति महत्वाकांक्षी है और यह वह विरासत में लेकर जन्मा है । मुझसे अधिक उसे कौन जान सकता है । वह जो भी अनुरोध मेरे देख-भाल के लिये कह रहा , तुम सब स्वीकार कर लो , चाहे करो या न करो । उसको चैन से अमेरिका जाने दो , उसको उसके ख्वाबों के साथ जीने दो । उसे इस समय सिर्फ एक व्यक्ति संतोष दे सकता है और वह तुम हो । मैं एक माँ की हैसियत से यह आदेश देती हूँ और एक मित्र की हैसियत से अनुरोध करती हूँ , तुम उसकी सारी बातें मान जाओ , वह जो भी कहे । अनुराग मैं यह भी कहूँगी , तुम कुछ ऐसा करो कि उसे यह पूर्ण विश्वास हो जाये कि तुम उसकी सारी बातें मान गये हो और मेरी देख- भाल में कुछ शर्तें भी तुम शामिल कर दो । “

मैं “ आंटी , ऐसा करने से क्या फ़ायदा होगा ? “

आंटी -“ वह एक व्यापारी बन चुका है । उसको लगता है कि सब कुछ ख़रीदा जा सकता है । उसने अकल्पनीय पैसा कमाया है । वह बहुत प्रसन्न होगा , अगर वह तुम्हारे लिये कुछ कर देगा , उसे और संतोष प्राप्त हो जायेगा यह सोचकर कि माँ एक सुरक्षित हाँथों में है और उस सुरक्षा को प्राप्त करने का उसने समुचित प्रबंध किया है । इस जीवन में एक भ्रम ही है जो जीने का सहारा देता है और हर व्यक्ति एक भ्रम की तलाश में है - नाम , प्रतिष्ठा, सत्कर्म सामाजिक सेवा के आवरण में । वह भी कुछ ऐसा ही तलाश रहा , इस तलाश का सकारात्मक परिणाम उसको एक संतोष देगा । तुम उसको संतोष प्रदान करो । उसको एक भ्रम का कुहासा दो । “

मैं “ आंटी संतोष आपको होगा या ऋषभ को । “

आंटी - “ मेरा संतोष .. ऐसा क्या कह रहे हो ? “

मैं “ आपको मेरी घरेलू हालातों का पता है । आप मेरी मदद करना चाहती हो । आप जानती हो कि मैं मदद लूँगा नहीं , इसलिये आपने यह रास्ता चुना एक साथ दो काम ।

आंटी , देश का बहुत नुक़सान हुआ आप किसी ज़िम्मेदार पद पर नहीं स्थापित नहीं हुये । यह क्लर्की टाइप की ओएसडी के लिये आप नहीं बने थे । आप निश्चिंत रहें , ऋषभ संतुष्ट होकर विदेश जायेगा ।

आंटी ... कितने लम्हे- कितने साल बीत जाते हैं इस तलाश में कोई मिले जिस पर अटूट भरोसा हो । हम कई बार अपनों के लिये कई समझौते करते हैं और समझौतों के दाग रुह पर पड़ते जाते हैं क्योंकि समझौते सही बात पर लड़ने के साहस में बाधा उत्पन्न करते हैं । ज़ख्मों के जंगल हमारे शरीर पर

होते हैं जो अपने सिवाय किसी को दिखायी नहीं देते .. हम उनका दर्द ज़ब्त करते रहते हैं ताकि किसी को हमारे ज़ख्मों की खबर न हो । आंटी चाँद घटता ही है क्योंकि रात की मियाद है , प्यार भी कुछ वैसा ही होता है घटता - बढ़ता रहता है , अगर साहचर्य न हो -विश्वास न हो तब घटेगा ही । पर जब घटता है यह प्यार तब बहुत दुःख होता है । चाँद के घटने पर आफ़ताब को दोष दे सकते हैं पर यह आपस में घटने वाला प्यार किसको दोष दे. सिवाय अपने को ... ”

आंटी - “अनुराग अगर यह प्यार माँ बेटे का कम हो रहा हो तब दोष किसको दोगे

मैं - “आंटी , कुछ बातों का जवाब सिफ़र रुदन है और कुछ नहीं । ”

आंटी - “ माँ इस घटते प्यार में कोई तर्क निकाल लेगी जो किसी और संबंध में शायद न निकले । ”

मैं - “ क्या होगा तर्क? ”

आंटी - “ परिस्थितिजन्य विवशता । ”

मैं - “ आंटी , इस बार इलाहाबाद जाकर गंगा के तट पर आराधना की मुद्रा में हाथ उठाकर पूछूगा ईश्वर से , इन मेरे जख्मखुर्दा हाथों को बिलखती हवाओं को सहेजने का काम देकर जो मजीद भरोसा तुमने मुझ पर किया है ... सच बताओ यह किसकी परीक्षा का दौर है मेरी या उसकी जिसने अगाध विश्वास किया है एक अजनबी पर गुमशुदा घाटियों में एक राह की तलाश में ।

आंटी - “ मैं समझी नहीं । ”

मैं - “ आंटी आप अगर पूछेंगी मुझसे , मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है , तब मैं कहूँगा ”

आंटी - “ क्या? ”

मैं - “ विश्वास । ”

आंटी - “ कैसा विश्वास ? ”

मैं - “ कोई अपनी माँ को आपको सौंप दे वह भी एक पूर्ण विश्वास से इससे बड़ी विश्वसनीयता उस व्यक्ति की क्या हो सकती है । मैं आने वाली नस्लों को बताऊँगा ... किसी ने मुझ पर इतना विश्वास किया था ... और

आंटी - “ और क्या? ”

मैं “ मुझे एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी का गर्व पूर्वक एहसास हो रहा है । तुमने कहा था अनुराग मेरे गर्भ से जन्मा नहीं है पर बगैर परस्पर पीड़ा के प्राप्त हुआ यह मेरा बेटा है । यह आपने जेन्यू में कहा था , ऋषभ वहाँ नहीं था पर इस बात को आपने शब्दों से कहा था ऋषभ ने यह बात खामोशी से मुझ पर यक़ीन करके कहा है । ”

ऋषभ - शालिनी के आने से गेट की आवाज़ हुई । आंटी अपने आँसुओं को पोंछने किंचेन में चली गयी । मैं दरवाजे की तरफ़ देख रहा एक अपूर्व सुंदरी चलती हुई आ रही थी एक तेजवान के साथ जिसके सीरत के क़सीदे अभी आंटी ने गढ़े थे .. चिंतन सर ने सही कहा था अगर रूपवान पर सरस्वती की कृपा हो जाये तब विदुषी की सुंदरता का गौरवगान होता है ।

शालिनी ने कहा , “ अनुराग ... कहाँ खोये हो ..

मैं - “ एक नज़्म गढ़ रहा एक विदुषी के सौन्दर्य पर

शालिनी -“ गढ़ों “

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 172

मैं शाम को तिवारी झराइवर के साथ स्टेशन की ओर चला । मेरे साथ ऋषभ -शालिनी भी थे । ऋषभ के चेहरे पर संतोष के भाव थे , वह बहुत ही परस्पर था । वह जो चाह रहे थे वह हो गया था , पर उनको आंटी के अंदर के तूफानों का आभास लेश-मात्र न था । एक गलतफ़हमी भी जीवन को सहजता प्रदान कर देती है । ऋषभ को सहजता प्राप्त हो गयी थी । चिंतन सर , मेरे पहुँचते ही पहुँच गये थे । जीआरपी का इंस्पेक्टर पहले ही गेट पर मिल चुका था । उसने बताया कि गाड़ी छूटने में समय है तब तक वीआईपी रूम में बैठते हैं । नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफ़ार्म नंबर एक के वीआईपी रूम में मुझे बैठा कर वह इंस्पेक्टर वहीं बगल बैठे चिंतन सर की जी हुजूरी करने लगा । यूपी में हर कोई गाज़ियाबाद-नोएडा में नौकरी करना चाहता है । चिंतन सर ने अपना डीजीपी से नज़दीकी का भौकाल बना रखा था । उस भौकाल के निर्माण में जितना योगदान उनकी कुँडली विद्या का था उतना ही भ्रम फैलाने की क्षमता का । सर के पास एक तौफ़ीक़ है बातों को विस्तारित करने की । यह अपने जजमानी के समय में दुर्गा शप्तशती के मन्त्रों को विवाह के मन्त्रों में डालकर एक अलग ढंग से विवाह मन्त्र का निर्माण कर मारे थे , एम

ए टाप किया नहीं पर असली एम ए टापर का नया खिताब गढ़ मारा , कुंडली गुरु का नामकरण किया ताकि नाम प्रचारित हो एक नये तरीके से , डीजीपी की कुंडली देखकर अपना तो काम साधे ही अब उसको ही प्रचारित करके पूरे यूपी की दरोगा - सीओ से चेलागीरी कराते हैं और गाहे- बेगाहे सीनियरों को भी चेंप देते हैं । इनका नाम “ कुंडली गुरु ” के बजाय “ गोली गुरु ” बेहतर होता । जहाँ देखो दे गोली पर गोली । अब यह बेचारा जीआरपी दरोगा.....

चिंतन गुरु - “ दरोगा साहब जिंदगी कैसी कट रही ? सब कुशल-मंगल तो है ! ”

दरोगा - “ सर आपका आशीर्वाद है । ”

चिंतन सर - “ हमारा तो जन्म ही आशीर्वाद देने के लिये हुआ है , क्यों मातादीन ? ”

मातादीन - “ सर आपकी छत्र-छाया ही सूरज की गर्मी से बचाती है , नहीं तो इस छत के बस में है कि गर्मी दूर कर सके । सर , आदेश हो तो एक बात कहे ? ”

चिंतन सर - “ दो बात कहो , एक बात काहे कहोगे ? अब बात बोलने में कोई पैसा लगता हैं क्या ? ”

मातादीन- “ सर आपका आशीर्वाद जिसको भी मिला बहुत बरकत हुई उसकी । ”

चिंतन सर - “ अब हम तो ठहरे निरे बैरागी । हमारे पास सिवाय आशीर्वाद देने के और है क्या ? ”

मातादीन - “ सर और चाहिये क्या ? जिसको आपका आशीर्वाद मिल गया समझ लीजिये बारह साल कल्प वास हो गया । ”

चिंतन सर - “ ईश्वर है जो चाहता है वह करता है । उसने हमारा चुनाव जगत कल्याण के लिये किया है , अब हम उसके आदेश से बँधे हैं । कुछ दिन आप सबका साथ नसीब में था वह मिला अब चलेंगे अनुराग बाबू के साथ कुछ दिन रहेंगे , फिर तो देश की सबसे बड़ी पंचायत हमारा इंतज़ार कर ही रही है । ”

मातादीन - “ सर थोड़ा हला- भला इ दरोगा साहेब के होई जाय ”

चिंतन सर -“ माँगो जो भी माँगना है ... वरदान मिलेगा । ”

दरोगा - “ सर गाज़ियाबाद काम करने का बहुत मन है आपके साथ । जीआरपी में मेरा कार्यकाल पूरा हो रहा है ... अगर साहब का आशीर्वाद हो जाये

.....”

चिंतन सर - “ कौन करेगा ? ”

दरोगा - “ सर करता डीजीपी आफिस ही है .. एक बार साहब अगर डीजीपी साहब से कहि देय तो ”

चिंतन सर - “ होम डिपार्टमेंट भी तो होगा । पहले वह तुमको जीआरपी से निकालकर डीजीपी के अधीन भेजेगा तब तो डीजीपी कार्यालय काम करेगा ? ”

दरोगा - “ सर , उसमें बहुत समस्या नहीं है । वह हो जायेगा । मेरा कार्यकाल भी पूरा हो गया है । बस साहब डीजीपी साहब को साध दें ... ”

चिंतन सर - “ मातादीन .. ”

मातादीन - “ जी हुँझूर ... ”

चिंतन सर - “ इनका डिटेल लिख लो । अगली बार लखनऊ चलेंगे तब इनका उद्घार होगा । ”

मातादीन - “ जी सरकार । ”

दरोगा ने सर के पैर छुये और सर ने कहा कल्याणम - अस्ति....

शालिनी ने मुझसे पूछा , “ आप सब लोग नौकरी ऐसे ही करते हो ? ”

मैं - “ कैसे ? ”

शालिनी - “ यह बड़ी- बड़ी बे सिर पैर की बातें । यह भरम - तिलस्म- झूठ का आवरण ... ”

मैं - “ इसमें कौन सा भरम- तिलस्म है ? कौन सा झूठ का आवरण है ? ”

शालिनी - “ एक नया नाम “ कुंडली गुरु ” रख लेना । यह बड़ी- बड़ी बातें डीजीपी से कह दूँगा ... कल्याण होगा .. वरदान देना ... यह एक मसीहा और खुदा बनने की श्रलतफ़हमी कैसे आ जाती है ? ”

मैं - “ समाज जिम्मेदार है इसके लिये । समाज की कुछ आशायें इस सत्ता के छद्म युक्त आवरण से पूर्ण भी होती हैं । ”

शालिनी - “ वह कैसे ? ”

मैं - “ अभी आपको - हमको कोई समस्या आये , हम सबसे पहले क्या करेंगे ? उस समस्या को निपटाने के लिये सम्बन्धित विभाग में अपना परिचित तलाश करेंगे । वह परिचित हमारी मदद करेगा , इस आशा से हम उसकी ओर देखेंगे । मन में एक आशा का वह संचार कर देता है , मात्र यह कहने से आप चिंता

न करो मैं देख लूँगा । विडंबना यह है कि आजादी के इतने सालों बाद भी हम आज तक सरकारी मशीनरी की कृपा पर ज़िंदा हैं । एक दरोगा एफआईआर में हमारे - तुम्हारे खिलाफ़ कुछ भी लिख दे , हम - तुम ख़त्म हो जायेंगे । हमारा - तुम्हारा कोई सुनने वाला नहीं है , अगर कोई पहुँच नहीं है महकमें में किसी प्रभावशाली व्यक्ति तक । यह जो समाज का , व्यक्ति का सरकार की कृपा पर ज़िंदा रहने की बाध्यता है वह ही इन नौकरियों को सम्मान दे रही । इस समाज में साल - दर - साल हर व्यक्ति अपने बच्चों से कह रहा , अगर कहीं देवत्व इन्द्र के सभा कक्ष के बाहर है तो वह इस स्टील फ्रेम के सिविल सर्विस में है । यह अंगरेजों का बनाया हुआ तिलस्म है जिसका धुँआ आज तक सभी के आँखों में व्याप्त है और एक समोहन का प्रभाव उत्पन्न कर रहा ।”

शालिनी - “ क्या यह सही है , लोग उम्मीद क्यों लगाते हैं ? ”

मैं - बुरा न मानो तब एक बात कहूँ ? ”

शालिनी - “ हाँ ”

मैं - आपके पिता की चिंतन सर की नज़दीकी क्यों हुई ? आपके घर में इतने लोग आये और जिन घनिष्ठ लोगों को नहीं बुलाया गया वह निराश क्यों हुये ? आपके पिता के और आंटी के संबंध मेरे और चिंतन सर के आंटी के बहन के बेटे घोषित हो जाने के बाद क्यों बेहतर हुये ... कभी सोचा है ? ”

शालिनी - “ नहीं । ”

मैं - “ सोचना । ”

शालिनी - “ तुम बता दो । ”

मैं - “ कई प्रश्न बगैर उत्तर दिये अच्छे लगते हैं । प्रश्नों का भी अपना लालित्य होता है , और हर व्यक्ति उस लालित्य को उत्तरों से पूर्ण नहीं कर सकता । शायद उत्तर व्यक्ति की मनःस्थिति के अनुसार होता है । यह सामाजिक संरचना गणित के सूत्र से संचालित नहीं होती । यह भ्रम पूरी संरचना के चलने में ग्रीस- तेल का काम करता है , इसको गति प्रदान करता है । ”

शालिनी - “ तुम जवाब दे दो । ”

इतने में टीटी आ गया और कहा गाड़ी प्लेटफ़ॉर्म पर लग गयी है , साहब अब चलें समय हो गया ।

मैं सामान उठाया चलने को , मातादीन ने मेरी अटैची और आंटी का दिया हुआ खाने का सामान उठा लिया मेरे हाथ बढ़ाते ही । हम लोग प्लेटफ्रॉर्म की तरफ चल दिये ।

शालिनी - “ तुमने सवाल का जवाब नहीं दिया । ”

मैं “ आप इतना ही पूछना अपने पिताजी से कि आप आंटी से मेरे विवाह के बाद कितनी बार मिले और कितनी बार उस चिंतन सर के आदमियों के घर आने की घटना के बाद । एक बात और पूछ लेना कि चिंतन सर से जो भी काम कराया उसमें कितना फ़ायदा उनको हुआ और यह कहने से कि शालिनी के दो देवर आईएएस हो गये हैं समाज में कितना उनको नाम - रुतबा मिला । हर वस्तु मौदिरक रूप से या एक तुला पर नापी नहीं जा सकती है । कई बातें सिर्फ़ महसूस की जाती हैं , ख़ासकर- हर्ष- विषाद - दुःख - वात्सल्य- परेम- घृणा

यह पूरा समाज एक भ्रम की स्थापना पर टिका है । इस समाज में सफल वही है जो भ्रम को बेहतर ढंग से स्थापित कर सकता है । जो सबसे बड़ा फ्राड है वह सबसे अधिक सफल है ।

ईश्वर भी तो एक भ्रम ही है एक सकारात्मक भ्रम.....उसको देखा किसने है .. उसकी रहमत मिले या न मिले पर रहमत की उम्मीद ही सुकून प्रदान करती है । यह परार्थना- पूजा- भजन- अरदास इससे व्यक्ति को दूर कर दो , वंचित कर दो ... उसको सानों पर चढ़े जाने से अधिक कष्ट होगा , अगर वह आस्तिक है । एक बाँह में सुई लगती है दर्द के पहले ईश्वर- आराधना आरंभ हो जाती है , आने वाले कष्ट की कल्पना मात्र से । यह जीवन का भ्रम एक जीने का सहारा देता है । मेरी माँ और आंटी का जीवन इसका साक्षात उदाहरण है । अपने अंदर टटोल कर देखना .. वह एक भ्रम की सत्ता ही थी जिसने सारे आपके अवसाद के क्षणों में एक जीने का सहारा दिया है ।

शायद यह एक भ्रम है जो यह सेवा फैलाती है हर ओर , जिसमें सफल व्यक्ति की और उससे जुड़े लोगों की आशा को पनाह की प्राप्ति होती है । मेरे गाँव चलो और देखो .. जिनके लिये मैं जीवन में कुछ भी न कर पाऊँगा वह भी एक उम्मीद पर ज़िंदा हैं और कहता है आपको ईश्वर ने मेरे लिये बनाया है और आप ईश्वर के एक संदेशवाहक हो , एक अभिकर्ता हो मेरे लिये यह क्या है ? यह एक भ्रम है । मैं भी इस भ्रम को नहीं तोड़ना चाहता ... मैं इस तिलस्म को बरकरार रखना चाहता हूँ , इसमें मेरी अपनी एक

आत्मशलाधा का पुट भी हो सकता है पर उनको नाउमीद भी मैं नहीं करना चाहता , एक आस भी कम नहीं जीवन जीने के लिये ।

शालिनी- “ अनुराग..... ”

मैं “ क्या हुआ ”

शालिनी - “ तुमसे मिलना जीवन की एक उपलब्धि है मेरे लिये ”

मैं हँसने लगा ... और कहा ... शालिनी जी मुलाक़ात में थोड़ी देर हो गयी आपके विवाह पर बहुतों ने मातम मनाया मैं मातम मनाने से मरहम रहा मैं भी मातम मनाया होता

एक बात मैं कहूँगा ... दुहराऊँगा जो आंटी ने मुझसे आपके बारे में कहा

शालिनी - “ क्या? ”

शालिनी मैं सिवाय इसके कि वह जाति के बाहर की लड़की थी इसके अलावा वह गुणों की खान है

शालिनी - “ ऐसा कहा था माँ ने . ? ”

मैं “ कहा कुछ ऐसा ही था ... अब मैं अगर किसी बात में नमक - मिर्च न लगाऊँ उसको वैसा का वैसा ही कह दूँ तू तो जो एक ब्रांड अनुराग शर्मा का बना है उसके साथ अन्याय हो जायेगा । ”

दरेन चलने को तैयार हो गयी / मैं दरेन पर चढ़ गया , दरेन धीरे- धीरे प्लेटफ़ॉर्म से चलने लगी ... मैंने चलती दरेन से ऋषभ से कहा , “ इलाहाबाद आना मैं इंतज़ार करूँगा

ऋषभ ने भी सकारात्मकता के साथ हाथ हिलाया ।

दरेन ने रफ्तार पकड़ना शुरू कर दिया दिल्ली-इलाहाबाद ...

रातिर ने अपना कार्य किया , नींद ने अपना और ख़बाब मेरे तो पर्दे के पीछे खड़े ही रहते हैं ... नींद से शिकायत करते ... ऐ नींद यह वक्त मेरे केलि-करीड़ा का है , अब और इंतज़ार न करा / कब आँख लगी और कब ख़बाबों में मैं खो गया इसका पता ही न चला सूबेदारगंज पर दरेन की तेज रफ्तार कम होने लगी , डिब्बे में घर पहुँचने की व्यग्रता लोगों की गतिविधियों से

झलकने लगीं । मैं उत्तरा उसी रेलवे स्टेशन पर जहाँ की सीढ़ियों पर बैठकर मैंने अपनी रैंक गिनी थी और आसमान की तरफ उसी समाचार पत्र को एक रिदा की तरह लहरा कर कहा था ऐ परभु तूने इन पन्नों में मेरी तकदीर लिख दी है । मेरी आँखों के सामने एक पूरा कालखंड पुनः घूमने लगा । मैं बिरज से सिविल लाइंस की तरफ उतरने लगा .. दूर प्लेटफॉर्म नंबर आठ पर दिखा पीले रंग के बोर्ड में काले रंग से लिखा “ इलाहाबाद ” और रिक्षेवाले मेरी तरफ इशारा करके आपस में लड़ते हुये , यह मेरी सवारी है ... ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 173

मैं स्टेशन से बाहर निकला , रिक्षा वाला बोला साहब 7 रुपया लूँगा .. मैंने कहा मैं दस दूँगा ।

रिक्षेवाला - “ साहब मज़ाक काहे कर रहे हो गरीब आदमी से । ”

मैं “ पहले किसने शुरू किया मजाक ? ”

रिक्षेलावा - “ साहब 5 रुपया तो बनता ही है ? ”

मैं “ चलो , खुश रहोगे आज । ”

रिक्षेवाला - “ भैया जी , आप लगता है दिल्ली से आ रहे ? ”

मैं - “ दरेन दिल्ली से आ रही तब दिल्ली से ही आया होऊँगा । ”

रिक्षेवाला - “ हमार मतलब इ रहा कि आप रास्ते में अलीगढ़ , कानपुर से नहीं चढ़े होंगे । ”

मैं “ हाँ , दिल्ली से ही आ रहा । कितना कमा लेते हो एक दिन में ? ”

रिक्षेवाला - “ साहब , बस दाल - रोटी चल जाती है । गर्मी में बहुत रिक्षा खींचात नाहीं और अब उम्र भी हो गयी है । ”

उसके अंतिम शब्द , “ अब उम्र भी हो गयी है ” , मेरे कानों में हथौड़े की तरह बजने लगे । मेरा रिक्षे पर बैठना मुश्किल हो रहा था । मुझे ग्लानि होने लगी । मेरे मस्तिष्क में यह विचार आया कि मैंने क्यों यह रिक्षा चुना । चेतना - उपचेतना में संघर्ष आरंभ हो गया । अगर चेतना कहती तूने गलत किया इस रिक्षे पर बैठकर तब उपचेतना कहती , अगर तुम न बैठते तो कोई और बैठता और अगर कोई न बैठता तब यह भूखा ही मर जाता । इसी उहापोह में मैं पहुँच गया अपनी बोसीदा गली में ।

मेरा मुहल्ला भी एक अलग ही पहचान रखता है सड़क अतिक्रमण के मामले में । मेरा ही क्यों इलाहाबाद के तमाम मुहल्ले शायद ऐसे ही हैं । लोगों ने सड़क पर अतिक्रमण किया हुआ है । नाली के ऊपर ऐसा चबूतरा बनायेंगे कि एकाध फुट तो जगह चबूतरे की बढ़ ही जायेगी, कोई सोच नहीं कि अगर सड़क चौड़ी होगी तब सहूलियत उनको ही होगी । पर जब तक सड़क का कुछ भाग हथिया न लो चैन ही नहीं पड़ेगा, नाली के ऊपर का भाग तो उनका है ही । सड़क पर खटिया बिछा लेंगे । दूध वालों की भैंस- गाय तो सड़क पर रहेगी ही और वह निर्बाध टहलती भी दिख जायेंगी । एक ही बदलाव बहुत बड़ा इस मुहल्ले में विकास के नाम पर पिछले कई वर्षों में हुआ है, वह है मेरा । मेरी इज्जत-प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि एक अति विकसित देश के जीडीपी की तरह हुई है और रातों - रात मेरे मुरीदों और मेरे पदचिन्हों पर चलने वालों की एक लंबी क्रतार खड़ी हो गयी है ।

मैंने मुहल्ले में प्रवेश किया । लोगों के हाथ उठने लगे, आवाजें आने लगीं ..
“ मुन्ना भैया कहाँ गवा रहे ... कब जाबअ टरेनिंग में । ”

मैं आधा - अधूरा जवाब देता अपने घर के सामने पहुँच गया । रिक्षे वाले को मैंने सारा फुटकर दे दिया जो भी सौ - सौ के चार नोट के अलावा था । वह भी विस्मय से देखता रहा । मैंने कहा, ईश्वर दयालु है । मैं कुछ खास तो कर नहीं सकता जब बहुत गर्मी हो तब रिक्षा मत चलाना समझ लेना यह किसी सवारी का पैसा है । यह कोई बड़ा पैसा है नहीं, बस मेरा एक संतोष है । मैं यहीं रहता हूँ, कभी आना । मुझे बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर, यह कहकर मैंने उसको प्रणाम किया । यह प्रणाम एक सम्मान था जो शायद उसने अपनी कहानी कहकर अर्जित किया था । मैंने माँ के पैर छुये, पिताजी घर पर न थे । वह सुबह - सुबह किला के परेड मैदान में टहलने चले गये थे । मैं ऊपर के अपने कमरे में सामान रखने चला गया ।

मैंने अपने कमरे को देखा, जो चश्मदीद गवाह है मेरे एक दौर का । वह एक न लिखी हुई डायरी है मेरे संघर्षों की । मेरे कमरे में दो बिस्तर थे । एक तख्त पर दूसरा ज़मीन पर । मैं दोनों पर अदल- बदल कर पढ़ता था । इस समय किताब करीने से लगी हुई थीं पर पहले वह हर ओर बिखरी हुई होती थीं । दोनों बिस्तरों पर दरी और एक तकिया ही होती थी । बिस्तर के ऊपर चबूतरा का इस्तेमाल मैं करता नहीं था । मेरे कमरे की तख्त खिड़की से सटी होती थी और उस खिड़की में एक बड़ी डोरी लगी थी । मैं कई बार उस डोरी से अपने पैर बाँध देता था, सोने के पहले । मुझे अगर अधिक पढ़ना होता था तब नींद का त्याग करके मैं यह डोरी- बंधन का कार्य करता था । इस पैर में डोरी बाँधने का फ़ायदा यह था कि नींद टूट जाती थी । मैं उस डोरी की

तरफ देखने लगा । मेरे पीछे से दाढ़ू आ गया , बोला “ मुन्ना भैया क्या देख रहे हो ? ”

मैंने डोरी की तरफ इशारा किया ।

दाढ़ू - “ भैया , इ डोरी तू हमसे केतना बँधवाये हअ । ”

मैं “ हाँ ... आज सब इतिहास हो चुका है पर इन सब नायाब प्रयोगों ने ही मुझ ऐसे सामान्य व्यक्ति को सफलता के दुर्गम गढ़ को तोड़ने की शक्ति प्रदान की । ”

मैं और दाढ़ू नीचे आ गये । माँ को पूरी कहानी सुननी ही थी , मैंने आंटी के समधियाने के शानों- शौकत , शालिनी की सुंदरता , ऋषभ की तेजस्विता और चिंतन सर की रेलवे स्टेशन की कहानी सुनायी । माँ का कहाँ मन भरने वाला एक बार मैं । वह तो यह कहानी बार- बार सुनेगी ही घुमा- घुमाकर और फिर फेंट- फेंटकर सुनायेगी सबको । माँ इस बात से अति प्रसन्न थी कि शायद वह लोग इलाहाबाद आयें पर चिंतित भी हो गयी यह कहकर , “ हमार घर त ओनके रहई लायक बा नाहीं । ”

मैंने कहा , वह आयेंगे तब यहाँ थोड़ी रहेंगे । वह सब बड़े आदमी हैं होटल में रहेंगे , आहूजा साहब के इतने आदमी हैं , इतने डीलर- डिस्ट्रीब्यूटर हैं , सब इंतजाम वह लोग ही कर देंगे ।

माँ ने बताया कि कमिशनर साहब मेरी ग़ेर मौजूदगी में अपनी पत्नी के साथ एक बार और आये थे और मुझे पूछ रहे थे । यह भी कहकर गये हैं कि जब भी अनुराग आये तब कहना मैंने याद किया है और मुझसे आकर मिले । मेरी माँ इस बात से बहुत प्रसन्न थी कि कमिशनर साहब ने शादी - विवाह के प्रकरण को छुआ ही नहीं । मेरे मामा और माँ के सम्बंध भी सामान्य ऐसे हो गये थे और वह भी दो बार आये थे , मेरी अनुपस्थिति में और बहिन- बहिन ही करते रहे ।

दाढ़ू डरा हुआ था । वह उस हादसे के बाद भागता घूम रहा था । वह ज्यादातर मेरे ही यहाँ रहता था । मैंने पूछा .. “ इनका और मामा का मामला निपटा ? ”

दाढ़ू - “ मुन्ना भैया हम तो सुग्रीव के तरह बुआ के पास ऋषयमूक पर्वत पर रहत हई नाहीं तो बाली हमें खाई मारे । हमार मामला निपटवाय देतअ । हमार आज़ादी चली गै बा । ”

मैं “ हम क्या करें इसमें । ”

दादू - “ मुन्ना भैया एक बार चाचा से कहि देतअ कि जाई द जौन होई गवा
तौन होई गवा । तोहार बात न टालिहिं । ”

मैं - “ हमसे क्यों कहला रहे हो .. साक्षात हनुमान - भीम - आळ्हा के अवतार हैं
न इनसे कहलाओ । ”

दादू - “ इ के बा ! ”

मैं - “ तोहार बुआ । ”

दादू - “ बुआ त सहारा हइयै बा पर हम हई तोहार सिपाही । तू एक बार कहि
देबअ तब ओनका लगि जाये कि इ मुन्ना भैया के पक्का सिपाही हअ एहपर
हाथ सँभाल कर लगावअत जा । ”

मैं - “ क्या करें हम बताओ अपने पक्के सिपाही के लिये ? ”

दादू - “ हम तू संगेन चाचा के इहाँ चली , सब काम बनि जाये । ”

मैं - “ ठीक है , माँ से पूछ लें नहीं तो वह जान खा डालेगी , हमसे पूछ के काहे
नाहीं केहेअ . बड़का आईएएस बनि ग हअ .. बाकि क्या कहेगी पता ही है । ”

दादू - “ ठीक बा , हम बुआ के पटाई लेब । ”

मैं थोड़ी देर बाद बदरी सर के कमरे चला गया । वहाँ सर से गप मारा और
उनके साथ यूनिवर्सिटी रोड - सिविल लाइंस घूमकर वापस शाम को घर
आया । शाम को दादू के साथ मामा के यहाँ गया । मामा - मामी प्रसन्नता के
अतिरेक में आ गये मुझे देखते ही । मामी ने आगे बढ़कर मेरा माथा छूमा , दादू
के पैर छूने पर कोई उत्तर न दिया । मैंने ही बात आरंभ की और कहा जो हो
गया सब भूल जाइये । मामा और माँ में भी कुछ हो गया था पर माँ पूरा भूल
चुकी है और यहाँ तक कहा कि भैया के मान हम न रखबै तब के रखे । यह
अंतिम लाइन निशाने पर लगी और मामी बोली .. “ उर्मिला दिल के बहुत साफ़
बा । उ मोहें से चाहे जौन कहि देय पर कुछौ मन में नाहीं राखत , पर दादू के
ऐसन झूठ नाहीं बोलै के रहा । ”

मैं - “ अब कैसे हुआ क्या हुआ इसको भूल जायें । इस बात में कोई ख़ास
फायदा न होगा । इसकी गलती ही सही पर माफ़ कर दें । ”

दादू रोने की मुद्रा में आ गया और बोला .. “ चाची हमका चाचा पाले हये .
हम बहुत छोटवार रहे तब हमका चाचा एक गाय के एक थन के दूध फ़िक्स
कै देहे रहेन .. हमरे में जौनौ खून बहत बा सब चाचा के दया से बहत बा ।
हमार कौनौ गति न होये अगर चाचा से हम छलि करी । हम जब तक जियब
इह घरे के करिंदा बनकर रहब । हमैं त्यागअ न । हम तोहार सिपाही हई । ”

मामा - मामी मेरे आने से बहुत प्रसन्न हो चुके थे । वह भी इस बेफजूल की बात पर समय ख़राब नहीं करना चाहते थे । मामा ने कहा, “ अब मुन्ना कह रहा माफ़ करने को तब तो करना ही पड़ेगा । भांजा है, मानदान है, कुल का दीपक है, अब मुन्ना के बात न मानव तब केकर मानव, पर तू सुधरि जा इलकड़ी लगावै के काम से बाजि आवअ .. मुन्ना कब तक तोहका बचैइहिं । ”

दादू- चाचा, चल हम अपराधी हई । दस जूता मारि ल हमका । तोहार जूता हमार सर .. नाहीं त हमार जूता हमारै सर .. पर मन में कुछ न राखअ ... हम तोहार सेवा जन्म- जन्मान्तर तक करिंबै । ”

मामी ने कहा, “ बस होई गवा नाटक अब बंद करअ, हर दम एकै राग अलापत हअ । ”

दादू - “चाची ... ”

मामी - बस होई गवा तोहार माफीनामा ... चाचा कहेन न अपने में सुधार लै आवअ .. ”

दादू - “ चाची अब हम कौनों शिकायत के मौका न देब । ”

मामी-“मुन्ना खाना खाकर जा आज तू जायअ । तू गाँव जात हअ ननियौरे, तब बँगैर खाये कभौं न आवत हअ पर ममिऔरे तू आवत थ और जल्दी चला जात हअ । आज रुकअ और खाना खाई के जा । ”

दादू - “ हाँ, मुन्ना भैया आज खाना इहीं खा । ”

मैं - “ ठीक है । ”

दादू बहुत खुश था । उसकी समस्या हल हो गयी थी । बाबा भैया ने कहा, “ मुन्ना तोहार भाभी बोलावत हई । हमसे कई बार कहिन कि मुन्ना भैया से मन भर के कभौं बात नाहीं भई । ”

मैं भाभी के पास गया । भाभी ने कहा, मुन्ना भैया हमार मदद करअ । ”

मैं - “ भाभी आप कहो.. आप आदेश करो । ”

भाभी - “ कुछ अपने भैया के भी सिखाय -बताय द, एकाधै साल बचा बा एनके पास । हम कब तक अम्मा- पिताजी के सहारे रहबै? एनकरौ नौकरी लग जाय । ”

मैं - “ ज़रुर भाभी । भैया बहुत काबिल हैं, बस तकदीर काम नहीं कर रही । होई जाये एह साल । ”

मैं सोचने लगा .. कितनी उम्मीदें इस कमजोर कंधों पर आ चुकी हैं । दाढ़ी रात मामा के यहाँ रुक गया । वह बोला , “ काम लहि गवा बा । एनका- पाँच के साधि के काल अउबै । एह समय लोहा सही गरम बा , बस चोट- दुई चोट में सीधा होइ जाये । ”

मैं खाना खाकर वापस आ गया ।

मैं अगला पूरा एक दिन अपनी किताबें नोट्स ठीक कर रहा था , मैं आगे की योजना सोच रहा था । एक चुनौती जीवन में खत्म हो जाती है तो दूसरी चुनौती मैं तैयार कर देता हूँ । मुझे बगैर चुनौतियों के चैन ही नहीं आता ।

अगले दिन सुबह पिताजी की चीखने ऐसी आवाज़ आयी ... उर्मिला .. उर्मिला

...

माँ दौड़ीं- दौड़ी गयी और पूछी क्या हुआ ?

पिताजी ने कहा , “क्या खाया था तुमने जब यह पेट में था .. बहुत ज़िद्दी है .. कितना भी समझाओ पर करेगा अपने मन का ... ”

माँ ने कहा , हुआ क्या?

पिताजी ने पेपर का पन्ना माँ को पकड़ा दिया .. देखो

छपा था मोटे अक्षरों में ...

“सिविल सर्विसेज़ फ़ोरम ... एक नवीन प्रयोग ...

सिविल सेवा प्रारम्भिक और मुख्य परीक्षा की एक साथ तैयारी

सिविल सेवा के चयनित अभ्यर्थियों द्वारा

दिन - 60 ,

घंटे - 200 ..

पाठ्यक्रम पूरा ..

कोर्स आरंभ होने की तिथि - 9 जुलाई .. सायंकाल 4 बजे ...

संपर्क करें केड़ी मेमोरियल स्कूल गीता निकेतन मंदिर के सामने

संपर्क समय - प्रतिदिन- सायं - 4-6

कोर्स संचालक ...

अनुराग शर्मा
सिविल सेवा चयनित रैंक 102

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 174

माँ ने आवाज़ दी ... मुन्ना- मुन्ना....

मैं उत्तर कर नीचे गया । एक समाचार पत्र आज का पूरा खुला हुआ और सिविल सर्विसेज़ फोरम का इश्तिहार सामने पूरी दास्तान कहता हुआ ।

पिताजी - माँ- भाई-बहन सब उस इश्तिहार को देखते हुये ।

पिताजी - “ यह क्या है ? ”

मैं - “ यह इतना स्पष्ट लिखा है कि अब और कुछ बताने को बचा ही क्या है , है भी हिंदी में , पढ़ लीजिये । ”

पिताजी - “ तुम तो रहे थे कि अब इस काम से मेरा कोई वास्ता नहीं फिर यह कैसे ? ”

मैं - “ झूठ तो बोलना मेरा काम ही है , अगर चीजों को बढ़ा चढ़ाकर न बोलूँ , दूसरों का मज़ाक न उड़ाऊँ , झूठ न बोलूँ तब तो जो एक मेरा बरांड है उसके साथ अन्याय हो जायेगा । ”

माँ - “ ऐ झूठ के फेहुँआ पियव वाले उ बतावअ इ सब कब किया ? ”

मैं - “ दिल्ली से वापस आकर । ”

माँ - “ दुई दिना में ? ”

मैं - “ हाँ । ”

पिताजी - “ यह फिर झूठ बोल रहा । यह पहले से ही पूरी योजना बनाकर दिल्ली गया होगा । उस दिन झूठ बोला कि मैं अब नहीं पढ़ाऊँगा । ”

मैं - “ उस दिन सच कहा था । पर दिल्ली से इलाहाबाद के रास्ते में आते समय कानपुर के आस- पास गाड़ी पटुँची तब यह विचार आया और फिर इश्तिहार आपके सामने है । ”

माँ - “ पैसा लगेगा इस काम में ? ”

मैं - “ हाँ । ”

माँ - “ कितना ? ”

मैं - “ पाँच हज़ार रुपया क़रीब अभी लगा है और 2000 रुपया महीना किराया हैं के डी मेमोरियल पब्लिक स्कूल का , जहाँ कक्षा चलेगी । ”

माँ - “ पाँच हज़ार रुपया ... इतना पैसा ... ”

मैं - “ कुछ भी सस्ता नहीं है , यह इश्तिहार 2000 रुपये का है , 3000 का पोस्टर छपा है । ”

पिताजी - “ तो तुम अब नौकरी न करके यह कोचिंग चलाओगे ? ”

मैं - “ यह 60 दिन चलेगी , बस । ”

माँ - “ यह पैसा कहाँ से आया ? ”

मैं - “ यह घर गिरवी रख दिया है , इलाहाबाद बैंक को और बैंक मैनेजर से कहा है कि अगली बार उर्मिला शर्मा रिकरिंग डिपाजिड जमा करने आयेंगी तो कागज पर साइन करा लेना । पर चिंता न करो घर छड़ा दूँगा । ”

माँ - “ इत्यु कहि देहअ और उ मानि गवा । तोहका पैसा दै देहेस । ”

मैं - “ अब कुछ आईएस का भी रसूख है समाज में । नहीं देगा तब कल मैं जब कुर्सी पर आऊँगा उसको सस्पेंड कर दूँगा । ”

माँ - “ हमका न चरावअ । हमअ पता बा बैंक के परीक्षा दूसर होत हअ । आईएस के बैंक से कौनौ मतलब नाहीं बा । ”

मैं - “ अब तुमको पता है पर उस मैनेजर को नहीं पता था । सब तुम्हारी तरह शुकदेव- वेद व्यास तो हैं नहीं कि सारा ज्ञान लेकर ही पैदा हुये हैं । वह डर गया और दे दिया । ”

माँ - “ मैं कहीं दस्तखत करूँगी ही नहीं । न मैंने लिया और न हमसे कोई मतलब । ”

मैं - “ ज़बरदस्ती दस्तखत करा लेंगे । पुलिस करायेगी ज़बरदस्ती । ”

माँ - “ आवइ द पुलिस के । कुल थाना - दुआरा ओनकर निकाल देब । ”

पिताजी - “ यह बिना मतलब की बात मत करो । यह बताओ पैसा कहाँ से मिला ? ”

मैं - “ रुपया ब्याज पर लिया । ”

पिताजी - “ कितना ब्याज है ? ”

मैं - “ 24 % ”

माँ - “ इतना ब्याज के देहेस ? हम उहीं जमा करी । इ सब बैंक त देतेन नाहीं इतना बियाज । मुन्ना तू आधा घंटा से भरमावत हअ । बतावअ त इ सब भ कैसे ? ”

मैं - “आप लोग हर बात को बात का बतंगड बनाते हो । बद्री सर से पाँच हज़ार लिया है । कोचिंग चलेगी वापस कर देंगे , नहीं चलेगी तब तनख्वाह मिलेगी तब वापस कर देंगे । बद्री सर घर से मज़बूत हैं , वह बोले कोई बात नहीं जब मन करे तब देना और नहीं भी दोगे तब भी क्या फ़र्क़ पड़ता है अब तो जीवन साथ ही बीतेगा । के डी मेमोरियल स्कूल गये । उसका मालिक श्याम जी मिश्रा है । वह जानता ही था मुझको कि मैं एक महान दबंग नामी गिरामी आत्मा उर्मिला शर्मा का बेटा हूँ और इसी साल सेलेक्ट हुआ हूँ । उसने 1500 रूपया महीना माँगा मैंने कहा मैं दो हज़ार दूँगा पर मैं एडवांस नहीं दूँगा 15 दिन बाद दूँगा । वह मान गया । ”

पिताजी - “ यह सारा कार्यक्रम बनाया और मुझसे बात करने की ज़रूरत न समझी । ”

मैं - “ आप तो रोकते ही । आप ने रोका ही था पहले । जब फ़ैसला पहाड़ों पर चढ़ने का ज़ज्बे ने ले ही लिया तब पैरों को चढ़ना ही है बेवजह पैरों से पूछकर क्यों उनको कमज़ोर करना , उनको तो आदेश सुनना ही है । ”

पिताजी - “ मतलब आपके ज़ज्बे ने जो कह दिया वह मुझे सुनना ही है । ”

मैं - “ पिताजी आप बेवजह भावुक न हो और इमोशनल ब्लैक मेल न करो । आपकी सुनता तो आज क्लर्क ही होता । आप मुझे करने दो यह काम । इस काम में अगर घाटा हुआ भी तो सिफ़्र कुछ हज़ार का ही है पर लाभ की संभावना ही संभावना है । ”

यह बात पिताजी को समझ आ गयी । उनको भी अपनी ग़लती का एहसास मेरे चयन के बाद हो गया था कि मैं बेवजह इसको क्लर्क की नौकरी के लिये बाध्य करने का प्रयास कर रहा था । वह बोले , “ ठीक है जब कर ही रहे हो , सोच ही लिया है तब थोड़ा ध्यान से करना । अब तुम्हारा एक नाम हो गया है , एक प्रतिष्ठा बन गई है उसका ख़्याल रख कर करना । पर तुम अकेले कर लोगे सब ? ”

मैं - “ कर ही लूँगा । देखेंगे आगे । अभी तो सिफ़्र प्रचार का कार्य आरंभ किया है , आगे की बात आगे देखेंगे । मेरे कार्य से आप को गर्व ही होगा , बस थोड़ा धैर्य रखें । ”

माँ - “ एहमें केतना पैसा तोहका मिल जाये ? ”

मैं - “ कोई रिकरिंग -एफडी मैं नहीं करने वाला । पता चला आप चालू हो गये रिकरिंग डिपासिट लेकर । ”

माँ - “ केतना पैसा मिले ? ”

मैं - “ 25-30 हज़ार तो मिल ही जायेगा । ”

माँ - “ खर्चा काटकर ? ”

मैं - “ हाँ । ”

माँ - “ ऐतना पैसा ... मास्टरी के काम बढ़िया बा , तोहार पिताजी उहै केहे होतेन । ”

मैं - “ तोहार पैसा के हबस कभौं न जाये । हर बात पर तोहार पिताजी इ नाहीं उ केहे होतेन । इ रिटायरमेंट की तरफ बढ़ रहे और आप अभी इसी पर लगे हो । ”

इतने में दादू साइकिल भगाते आ गया । मैंने कहा , सबेरे - सबेरे ही चल दिये । मुन्ना भैया ग़ज़बै होई गवा । हम रात के चाचा के पैर मींजित रहे और कहा , चाचा हमका बिल्कुल हवा नाहीं रही कि कमिश्नर साहेब के बियाहे पर का चलत बा । तू समझत हअ हम ओनकर सिपाही और ओ सब समझत हयें कि हम तोहार सिपाही अब दुई धारा में हम फ़ंसा हई । अब हम कैसे समझाई कि हम हई तोहार करिंदा पर फ़ायदा त चाचा हमका चाही न । मुन्ना से फ़ायदा के उम्मीद बा । हम तहसील -कचहरी में छोट- मोट काम कराई के जीवन काटत हई । अब मुन्ना के नाम से कुछ सहूलियत मिल जात हअ तब उ त लेबै करब न । चाचा इ बतावअ तोहका मुन्ना के नाम के फ़ायदा भ कि नाहीं । अब हम सबके होत बा । एक मज़बूत पार्टी के साथ लपटियान हई , कुछ उम्मीद से । पर अगर तू कहि दअ कि हमका और मुन्ना में एक के चुनाव कै लअ तब तू त जनतै हअ हम केकर चुनाव करबै । तू हमार खून हअ , हमका पाले हअ । हम तोहसे बाहर जाब , इ आप सोच कैसे लेहअ । आज आप के हम झूठ लागत हई पर समय आये जब हम सही साबित होब । एक बात बताई चाचा । ”

मामा - “ हाँ । ”

दादू - “ केहू से कहअ न । ”

मामा - “ हाँ । ”

दादू - “ कमिश्नर साहेब के इहाँ बियाह के सारा ड्रामा मुन्ना केहे हयेन । तू त जनतै हअ मुन्ना केतना बनतू बा । ओका लाग कि अगर कमिश्नर के इहाँ बियाह होये तब ओकर कौनौ भाव न रहि जाये । ओनके इहाँ दुई- दुई आईएएस पहिलेन से हयें । मुन्ना के शौक होई गवा बा कि सुबह से शाम तक

आपन तारीफ सुनइ के । चाचा एहमें कौनौ बेजा बातौ नाहीं बा । जब तुहूँ आपन छोटवार नौकरी पाये रहा होबअ तब तोहका शौक चर्चान होये आपन तारीफ सुनै के । पर आप गर्स गंभीर मनई हअ और इ मुन्ना आजकल के लड़िका हयें आप जैसन गंभीरता कहाँ हम- पचे में । चाचा एक बात और कही ? ”

मामा - “ हाँ कहअ ? ”

दादू - “ तनिक दूसर पैर द ओहका दबावत रहित हअ । अगर आप आईएएस भ होतअ तब आज कहाँ होतअ ? आप ऐसन पर्सनालिटी पूरे डेबरा में नाहीं बा । एक मामूली नौकरी से आप अफ़सर बनि गयअ और पूरा डेबरा जानत हअ । अगर आईएएस भ होतअ चाचा ... तब आज त कमिशनर कम से कम होतअ ”

मामा - “ अब जौन तकदीर में रहा उ मिला । पर तू पचे केऊ नाहीं भये । मुन्ना होई गवा । मोहित नाहीं भई , बाबा से कौनौ उम्मीद नाहीं बा । तोहरे इहाँ बस स्कूल जा घरे चला आवा बाकि त कभौं पढ़ाई से नाता रहा नाहीं । एकाध अपने घरे में भ होतअ तब आज उर्मिला के इतनी बड़ी शेखी न होत । अब इ बात त मानेन पड़े तो उर्मिला के साथ भगवान हयेन । कुल खानदान में एकै लड़िका भअ और उहौ पढ़ाई में कौनौ तेज नाहीं रहा । मोहिता ओसे तेज रही , पांडे जी के राजू मुन्ना से तेज रहा । पर भवा त अकेले मुन्नवा । इहीं जीआईसी- ईसीसी के पढ़ा बा , जाई के पूछ ल कौनौं अध्यापक से , केहू के ओकर नामों न याद होये पर आज सब कइहिं हमरे इहाँ के उ पढ़ा बा ।

एक बात इ बतावा , “ मुन्नवा अब उर्मिला के न सुने । उ सब काम अपने मनि के करे । ”

दादू - “ चाचा अब ओका दिमाग देई वाले बहुत होई ग हयेन । अब ऊ केहू से कुछ नाहीं बतावत । हमका त चपरासी समझत हअ । हमका बस आदेश देत हअ । अब हमार भला चपरासी बनई में बा तब हम उहै करब । जिंदगी जियई के बा चाचा । अब चपरासी बनि के जियै में सहूलियत मिले तब उहई करब । चाचा एक बात और बताई पर इ हमरे तोहरे बीच रहे । ”

मामा - “ बतावअ । ”

दादू - “ इ शालिनी सीमेंट वाले नाहीं हयें । इ बहुत बड़ी पार्टी बा । शांति रही न जौन बुआ के साथ पढ़े रही , गौवाँ वाली ओकर बेटवा बहुत तेज बा और विदेश में रुपिया पीटत बा । मुन्ना ओनका पटाई लेहे बा । चाचा इ बा पूर मारीच पता नाहीं कौन विद्या लगावत हअ कि सबके मोहि लेत हअ । इ बात केहू के पता नाहीं बा । इ और कुंडली गुर्स मिलके कौनौ खेला करत हयेन । चाचा , एकबात और कहा ...

मामा - “ हाँ । ”

दादू - “ जाइ द अब बहुत रात होई गई बा । ”

मामा - “ कहाअ । ”

दादू - “ पैसा कमाई के चक्कर में मुन्ना लगा बा । हम उड़त- उड़त सुना हअ कि इ कोचिंग चलाये पर बतावत नाहीं बा केहू से कुछ । इ फूफा के त कुछ समझौब नाहीं करत । बस बुआ से डेरात हअ । एकर माया केऊ न समझि पाये । इ पिछले जन्म में मायावी ऐयार रहा होये । ”

मामा - “ चलअ जब जौन मन होई तौन इ करै । हमार - तोहार तब अब इ सुने न । ”

मुन्ना भैया हम इ कहि के सोई गये , सुबह पेपर में इश्तहार तोहार आई गवा । चाचा कहेन एतना देर रहा घरे पर कुछ ज़िकर नाहीं करेस । हमहूँ कहा , देख ल चाची तुहूँ .. अब उ केहू से कुछ नाहीं बतावत । अपने सिपाही पे बिना मतलब नाराज होत जात हअ तू पचे । बाबा भैया कहेन , “ दादू ठीक कहत बा .. मुन्नवा बहुत घमंडी होई गवा बा । ओका भगवान औकात से ऊपर देझ देहें हयेन और ओसे सँभलत नाहीं बा । ”

मुन्ना भैया बहुत सही काम बनि गवा बा । चाचा कहेन इ मुन्नवा कहाँ जावत चाहत बा ... अंत में कहेन चाची से एक बात बा ... ऐसन लगन बहुत कम बा लोगन के पास ... उर्मिला के गंगा भक्ति बल भर फली

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 175

मैं थोड़ी देर बाद दादू को लेकर बद्री सर के पास गया । मैंने उनसे आर्थिक सहयोग लिया था , इसलिये वह वह सब जानते ही थे । उन्होंने अखबार में इश्तहार को देख भी लिया था । सर के लाज में भी लोग इश्तहार देखकर जान चुके थे । सर ने बताया कि यहाँ लाज में भी लोग पूछ रहे हैं, यह क्या है और क्या प्रक्रिया है पूरी पढ़ाने की । मैंने सर से दादू को मिलवाया और कहा कि यह लोगों की इन्क्वायरी का जवाब देगा और आज शाम से यह के डी मेमोरियल स्कूल में बैठेगा । सर ने दो - चार पाँच सवाल दादू से किये कुछ देर बात की और दादू को चाय लाने सामने की चाय की टुकान पर भेज दिया और मुझसे कहा , “ यार , तुम इतने समझदार आदमी हो , इस जोकर मार्क

आदमी को कहाँ बैठा रहे हो इन्क्वायरी काउंटर पर । यह गंभीर मामला है ,
गंभीर आदमी तलाश करो । ”

मैं “ कैसे गंभीर लोग ? ”

बद्री सर - “ इतने चेले आ रहे होंगे पूछने- जाँचने उसी में से किसी को बैठाओ । सिविल सेवा परीक्षा दिया हुआ आदमी आप बैठाओ , वह सही जवाब देगा और भौकाल बनायेगा । आप कोचिंग को एक व्यावसायिक जामा पहनाओ । इसके बस का भौकाल बनाना नहीं है । किसी दूसरे के जेब से पैसा निकालना सबसे कठिन काम है और यह इलाहाबादी एक रूपया नहीं देने वाले आसानी से । यह भी हो सकता है जो आप खर्चा किये हो सब पानी में चला जाये , हलाँकि यह तो ख़तरा लेना ही होगा किसी नये परयोग के लिये । हम तो कह रहे थे कि आप मत करो यह काम, आपके घर में भी लोग रोक ही रहे थे पर अब आपकी ज़िद है तो है । मैं इसलिये ज़ोर देकर “ ना ” नहीं कहा , आप कहोगे कि रूपया नहीं देना चाहते इसलिये विरोध कर रहे । इलाहाबाद वालों से पैसा निकाल पाना आसान नहीं है । तुम दिये किसी को एक रूपया ... ? हम दिये ... ? नहीं न... , ।

मैं “ सर अब तो वह बात पुरानी हो गयी अब तो चलाना ही है । ”

सर - “ इससे पोस्टर चपकवाओ .. साफ़ सफाई कराओ .. पैसा - वैसा रखे .. यह भौकाल का काम किसी इलाहाबाद के भौकाली तेज लड़के को दो , जो एक समाँ बाँध सके । इस समय तुम्हारे नाम का दीपक जल रहा ... जिससे भी कहोगे दौड़ेगा साथ काम करने को और कह देना पढ़ लेना बैठ कर .. तुम अशोक सारस्वत को जानते हो ? ”

मैं “ जो बी.काम. करके हिंदी से एम ए किया है ? ”

बद्री सर - “ हाँ , उसको बैठाओ.. भौकाल बनायेगा .. दो - चार सच झूठ बोलेगा । उससे आदमी बात न करना चाहे तब भी वह व्याख्यान दे मारेगा । वह दिमाग़ से तेज है और आज नहीं तो कल सेलेक्शन होगा उसका । उसके साथ और दो लोग बैठाओ । डिस्काउंट करना ही नहीं है । जो फ़ीस है वहीं कहो ... न दें कोई बात नहीं पर डिस्काउंट अगर किये तब यह पूरा अभियान उड़ जायेगा । इ इलाहाबादी हैं , पूरा पैसा देंगे नहीं , यह तो तुम जानते ही हो । फ़ीस शहर में सबसे बड़ी माँगों ताकि कम ज्यादा होकर भी कुछ तो हाथ लगे । तुम्हारे बस की बात नहीं है कोचिंग की तरह छात्रों से फ़ीस वसूलना , हलाँकि पैसा तुम्हारा ध्येय नहीं है फिर भी अब जो काम कर रहे हो उसके कुछ नियम - क्रान्तुन होते ही हैं उसको पालन करना ही होगा । यह कोचिंग एक फ्राड लोगों का काम है , आप देखो न बराइट कोचिंग , कैवल्य कोचिंग पूरे शहर में कोचिंग का जाल फैला है निरीह छात्रों को ठगने के लिये । वह सब माया फैला कर ठगने में सिद्धहस्त हैं । वह सब ठगने में डाक्टरेट की

डिग्रीधारी हैं । तुम उनकी तरह काम नहीं कर पाओगे जहाँ तक व्यावसायिक लाभ का संबंध है । माना तुम एक नयी हवा ले आना चाह रहे , यह प्रशंसनीय कदम है पर होम करते हाथ न जल जाये , कम से कम तुम्हारी लागत तो निकल जाये । इस इलाहाबाद की धरती का जो भी छात्र होगा वह पूरी फ्रीस देगा ही नहीं । वह कभी पूरी फ्रीस यूनिवर्सिटी को नहीं देता, तुमको क्या देगा । एक बात साफ़- साफ़ कहना ...” नो डिस्काउंट “ । अगर पैसा नहीं देंगे तो नहीं दें, पर कोई चक्कर डिस्काउंट का रखना ही मत । कौन तुमको टाटा- बिडला बनना है, इस कोचिंग के माथे । एक तुमको संतोष चाहिये, वह मिल जायेगा । ”

मैं- “ ठीक है सर । ”

बद्री सर - “ सत्य प्रकाश मिश्रा सर से कैसा ताल्लुकात है ? ”

मैं- “ ठीक है सर । ”

बद्री सर - “ ठीक है कि अच्छा है ? ”

मैं- “ अच्छा है सर । ”

बद्री सर - “ उनको बुलाओ उद्घाटन भाषण के लिये । उनका आना बहुत फ़र्क़ लायेगा । आप उनको साधो । एक हवा बँधनी ज़रूरी है, सिफ़र पढ़ाई से कुछ न होगा । यह पढ़ाई तो तब समझ में आयेगी जब लोग आयेंगे .. पहला काम भीड़ इकट्ठा करो । बड़े- बड़े मगरमच्छों का बोर्ड लगा है कोचिंग के नाम पर उनसे लड़ना है और रणनीति से लड़ना है । ”

मैं- “ ठीक है सर । ”

मैं अशोक सारस्वत के पास गया, वह भी अल्लापुर में ही रहते थे । वह छोटे क़द के बहुत बोलते हुये बातूनी व्यक्ति थे । उनके पास पूरे शहर की खबर रहती थी । वह बता देते थे, कौन क्या पढ़ रहा और क्या झूठ बोल रहा । वह लोगों का चयन होगा कि नहीं यूपीएससी के पहले ही घोषित कर देते थे । जो हिंदी माध्यम का छात्र अंगरेज़ी में लिखता था उसके बारे में कहते थे, “ विधाता इनसे रुठ गया है नहीं तो ऐसी कुबुद्धि क्यों आती ? ” बद्री सर के बारे में कहा करते थे, “ सर का चयन तब तक नहीं हो सकता जब तक इनकी अंगरेजी समझने वाला योग्य व्यक्ति यूपीएससी में सरकार नियुक्त नहीं करेगी । ” वह पढ़ने के साथ- साथ गुप्तचरी और ऐयारी का भी काम करते रहते थे । उनका एक शौक़ था दूसरों के बारे में पता करना और फिर उसको शहर में फैलाना । वह हिंदी विभाग में रिसर्च कर रहे थे और बीए की हिंदी की क्लास लेते थे । वह अपना विषय तो पढ़ाते थे ही वह दूसरे अध्यापक का विषय भी पढ़ाने में ही चेंप मारते थे और यह घोषित कर देते थे उसको कुछ नहीं आता है । इनके बारे में एक वाक़्या है कि यह किसी दूसरे अध्यापक का कामायनी

का लेक्चर भी पढ़ा मारे थे और इस कारण इनको विभागाध्यक्ष की डॉट भी खानी पड़ी थी पर यह यह डॉट - वॉट से ऊपर उठे हुये थे , इन पर इसका कोई फ़र्क नहीं पड़ता था । दूध नाथ सिंह , राम स्वरूप चतुर्वेदी , सत्य प्रकाश मिश्र के अलावा अधिकांश के बारे में वह कह चुके थे उन सबको कुछ नहीं आता । उनका कहना था बेवजह के लेखन पर रोक लगनी चाहिये , यह बैंदंदाज लेखन हिंदी की हानि कर रहा । उनको आप शाम को किताब की दुकानों पर खड़े हुये ही पाओगे और आप कोई भी किताब ख़रीद रहे हो , वह बेमाँगे राय दे देंगे , अगर राय न मानों और उनसे बहस कर लो तब तो आप गये काम से और आपको यह सुनना ही है , “ आप का आग औंधियार है विधाता ही आपकी मदद करे तो करे नहीं तो लक्षण ठीक नहीं है ” । वह किताब की दुकानों पर ही सीख लेते थे । उनका सूतर वाक्य था , अगर हमसे मिलो तो कुछ सीखो- सिखाओ नहीं तो बेवजह समय मत ख़राब करो । एक बार उनके मौसी के लड़के आये उनके कमरे पर रात रुकने इन्होंने उनको यह कहकर भगा दिया कि तुम जब कुछ सिखा नहीं सकते तब किस काम के । मैं रिश्तेदारी तीन साल बाद निभाऊँगा अभी मुझे पढ़ने दो । यह किताबों का प्राक्कथन बहुत पढ़ते थे । यह मौर्या बुक सेंटर और राजू पुस्तक केन्द्र पर किताबों का प्राक्कथन पढ़ने बहुत ज़ाया करते थे । इनका कहना था , कहाँ पैसा है बहुत किताब ख़रीदने का । जिस किताब का प्राक्कथन बहुत अच्छा लगता था , उसे वह किसी को ख़रीदवा कर पढ़ लेते थे । वह मुझको देखते ही बोले .. “ सर आप .. अपना कमरा ठीक करने लगे । मैंने उनको पूरा क्रिस्सा सुनाया । वह आज का अख़बार नहीं देखे थे । मेरे कहते ही खोला और कहा , “ सर यह तो बहुत बेहतर कदम है । इन सब कोचिंग वालों की छुट्टी हो जायेगी । मैं सर बैटूँगा शाम से और लपेट दूँगा सबको , आप चिंता न करें । उनको लेकर मैं दिनेश मिश्रा के पास अल्लापुर गया । दिनेश प्राचीन इतिहास के बहुत ही जहीन विद्यार्थी थे । वह बहुत ही प्रतिभावान थे पर ईश्वर प्रतिभावान लोगों को आलसी कई बार बना देता है , यही दिनेश के साथ हुआ । यह एक ऐसे छात्र थे जो अवश्य सफल होंगे अगर परिश्रम करेंगे पर कई बार इनके अंतःकरण में अध्यापक बनने की लालसा हिलोरे मारने लगती है । इनको अपना लक्ष्य ही नहीं पता है , यह लेक्चरर और सिविल सेवा के बीच घूमते रहते हैं । यह मानसिक भ्रम इनके प्रगति के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा है । यह जो भी काम करेंगे अच्छा ही करेंगे , अगर अध्यापक होंगे तब भी समाज का बहुत भला होगा पर कहाँ लेक्चररशिप मिलती है आजकल । लेक्चरर बनने के लिये फ़ोर फ़र्स्ट क्लास की एक अर्हता की लोग बात करते हैं वह भी उनके पास हैं और बेहतर अंकों के साथ है । आईएएस की परीक्षा के चक्कर में इनकी एमए प्रथम वर्ष की मार्कशीट उतनी बेहतर न थी पर अपनी लगन से दूसरे वर्ष करिश्मा कर डाला । मुझे इनसे इतिहास पर विमर्श करना सबसे अच्छा लगता है , इसका कारण इनकी विश्लेषण क्षमता है । वहीं राजीव शाही से मुलाक़ात हो गयी ।

वह इंजीनियर थे और इंजीनियरिंग की एक अच्छी- खासी नौकरी से त्यागपत्र देकर सिविल सेवा में भविष्य तलाशने इलाहाबाद आ गये थे । राजीव शाही लंबे क्रद के आकर्षक व्यक्ति थे , मृदुभाषी थे और संजीदगी से स्पष्ट- सारगमित बात करने के पक्षधर थे । यह तीन बहुत ही प्रतिभाशाली लोग कोचिंग की इन्क्वायरी सँभालेंगे । मुझे लग गया , यह कार्य बहुत ही सुरक्षित हाथों में है । यह सब विषय भी जानते हैं और आने वाले को बातचीत में ही पढ़ा मारेंगे । अगर ट्रेलर इतना सुंदर होगा तब फ़िल्म की विश्वसनीयता बन ही जायेगी ।

मैं सत्य प्रकाश मिश्रा सर के पास गया । वह भी इश्तहार देख चुके थे और कहा , ” इ कौन सा नया नाटक आरंभ कर रहे हो । आराम करो , जीवन जियो और धूमों - टहलो ... यह सब बहुत चिक- चिक का काम है ।”

मैं “ सर मैं यह करना चाहता हूँ । मैं वाक़ई मदद करना चाहता हूँ । मैं जिन समस्याओं से गुजरा हूँ उससे कम लोग गुजरें , यह मेरी चाहत है सर । यहाँ लोगों को सही मार्गदर्शन प्राप्त हो , यह मेरी दिली ख्वाहिश है । ”

सर - “ पैसा भी लोगे ? ”

मैं - “ सर मजबूरी है , पैसा लेना । मैं एक निम्न मध्य वर्गीय परिवार का लड़का हूँ । अगर पैसा नहीं लूँगा तब कैसे चलाऊँगा । इसमें सर दसियों हज़ार का ख़र्च है , मैं कहाँ से लाऊँगा ? ”

सर - “ एक बात मैं कहूँगा । ”

मैं - “ कहें सर । ”

सर - “ आप की जो भी फीस- फास हो बता देना । पैसा मत माँगना । जो दे देगा तब भी ठीक, नहीं देगा तब भी ठीक । तुम्हारी ज़िंदगी बन गयी है औरों की मदद करो । यह हर्ष के अपरिग्रह की भूमि है , अपरिग्रह जीवन में ले आओ और इसका समावेश जीवन में अभी से आरंभ कर दो । ”

मैं - “ ठीक है सर । एक अनुरोध है आपसे । ”

सर - “ कहो । ”

मैं - “ सर पहले दिल आप आकर आशीर्वचन दे देते तो ज़रा उत्साह वर्धन हो जाता । ”

सर - “ कब है ? ”

मैं - “ 9 जुलाई शाम चार बजे । ”

सर - “ ठीक है आ जाऊँगा । पर एकाध घंटे में ही छोड़ देना । एकाध हमारे हिंदी विभाग के अच्छे विद्यार्थी हैं उनको भी पढ़ा देना । ”

मैं - “ जी सर । ”

मैं सीधा साइकिल डिगवस कोठी से बद्री सर के लेबर चौराहा के पास वाले लाज की तरफ मोड़ा और सर को यह समाचार दिया । सर ने कहा , काम हो गया । अब बस आप अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो , वह मूल है ।

दिनेश मिश्रा , अशोक सारस्वत , राजीव शाही बहुत बेहतर ढंग से लोगों को पूरे कार्यक्रम के बारे में बताते रहे । इनका भी अपना एक रसूख्र था और एक छात्र के रूप में यह तीनों बहुत ही सम्मानित थे । इनके बैठने से कोचिंग के स्तर में प्रारम्भिक दौर में ही सकारात्मक धारणा बनने लगी । रात - रात भर घूमकर मैं , दाढ़ू और मेरा छोटा भाई पोस्टर चपकाते थे ।

एक पूरे शहर में शोर हो गया । यह पहला प्रयोग था इस तरह का इसलिये इसकी चर्चा बहुत थी । जो विरोधी थे वह भी आलोचना करके इस अभियान को लोगों के निगाह में लाने में सहयोग कर रहे थे । एक शहर जहाँ पर स्थापित सफल अभ्यर्थियों की बाढ़ हो वहाँ पर एक नव जन्मा प्रयोगधर्मी हो रहा , यह भी एक विस्मय की बात थी ।

इन्क्वायरी के समय लोगों से यह कहा गया कि अभी फ्रीस देने की कोई ज़रूरत नहीं है । हम फ्रीस अभी लेंगे ही नहीं अगर आप दोगे तब भी , आप दस दिन बाद फ़ैसला कर लेना । हमारा लक्ष्य एक पथ ज्योति जलाना है न कि धनार्जन करना । हमारा प्रचार बहुत काम आया । अब पैसा नहीं माँगा जा रहा , दस दिन फ्री है तब तो इलाहाबाद के भाई- बहन टूट ही पड़े । हर जगह नाम ही बिकता है समाज में.. मेरा , बद्री सर , चिंतन सर और सत्य प्रकाश मिश्रा सर का नाम खूब बिका .. यह भी कह दिया गया कि पाठ्यक्रम तो अनुराग शर्मा ही पढ़ायेंगे ज्यादातर पर सहयोग सबका है ।

उस स्कूल पर एक बोर्ड लग गया ..

“ सिविल सर्विसेज़ फ़ोरम -

संचालक - अनुराग शर्मा “

मैंने बहुत गर्व से वह बोर्ड देखा जब वहाँ पर लगाया गया । मुझे लगने लगा .. मैं एक गैर मामूली दास्तान की तरफ बढ़ रहा । मुझे लेश- मात्र भी संदेह न था अपने अभियान की सफलता पर । मैं विश्वास से लबरेज़ था , पहले दिन । मैं घर से माँ का पैर छू कर निकला यह कहकर आज मेरी परीक्षा का दौर है .. परीक्षक एक व्यक्ति नहीं एक पूरा समाज है .. मुझे शिक्षक होने के गर्व का

अहसास हुआ और मेरे आँखों के सामने छवि घूमने लगी मेरे शिक्षकों की जिन्होंने मुझे इस क़ाबिल बनाया और यहाँ तक पहुँचाया ।

उद्घाटन दिवस .. के डी मेमोरियल स्कूल और पूरे कमरे में तिल रखने की जगह नहीं ... अपनी आँखों में अपना ही नहीं एक पूरे परिवेश - परिवार का ख्वाब लिये बेचैन आत्माओं का शहर बस गया था उस कमरे में जहाँ अगले 60 दिन .. 200 घंटे सरस्वती का आवाहन होना था ।

सत्य प्रकाश मिशन सर का उद्घाटन भाषण ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 176

“ यह एक नवीन प्रयोग है । यह एक साहसिक कदम है , एक उस व्यक्ति के द्वारा उठाया गया कदम है जिसने कष्टों को अनुभव किया है और उस अनुभव की पीड़ा को सकारात्मकता के साथ आत्मसात् किया है । आनंद का अमृत और वेदना का विष यह हर व्यक्ति के जीवन में आता है और उसका स्रोत इसी धरती के यथार्थ से होता है । अगर यथार्थ की धरती छोड़कर कल्पना के आकाश में विचरण करना व्यक्ति आरंभ कर दें तब वह और चाहे जो हो वह यथार्थवादी नहीं हो सकता । अनुराग यथार्थवादी हैं , सिफ़्र एक बात से कि इन्होंने लोगों की पीड़ा को समझा है । कोई भी कार्य जब आरंभ होता है तब उसका एक लक्ष्य होता है और प्रायः यह लक्ष्य धनात्मकता और सकारात्मकता से युक्त होता है । सन 23 में जब “ मतवाला ” प्रकाशित हुआ , निराला ने उसके मुख्यपृष्ठ के लिये दो पंक्तियाँ लिखीं ..

“ अमिय गरल शशि - सीकर रविकर राग- विराग भरा प्याला

पीते हैं जो साधक उनका प्यारा है यह मतवाला ।

निराला ने सोचा था , “ मतवाला ” ऐसा पत्र होगा जिसमें सनातन द्वन्द्व पर रचनायें प्रकाशित होंगी पर शायद ऐसा हुआ नहीं । निराला की यह पंक्तियाँ “ मतवाला ” सार्थक न कर सका , वह निराला ही सार्थक कर सके । मैं एक बहुत आशावादिता के साथ यहाँ आया हूँ और मैं आशा करता हूँ कि मुझे इस बात पर गर्व हो कुछ समय बाद कि मैं एक कार्यक्रम में गया था और एक नया प्रतिमान उस कार्यक्रम से उद्भूत होकर स्थापित हो गया , पर यह प्रतिमान अनुराग से अकेले स्थापित नहीं होगा । यह काम आपको भी करना होगा , जब आपका समय आयेगा । एक बड़ा परिवर्तन एक व्यक्ति से नहीं होता चाहे वह कितना भी योग्य और कर्मठ क्यों न हो । एक परिवर्तन के लिये समाज को

आगे आना होगा । परिवर्तन प्रकृति का नियम है, पर सकारात्मक परिवर्तन के लिये प्रकृति योगदान माँगती है । आप हिंदी साहित्य को ही देखें । द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता को छायावाद ने ख़त्म किया और आलोचना को एक नयी ज़मीन दी । छायावाद के बाद का काव्यमय रस प्रगतिवाद बना । छायावाद में ही स्वच्छन्दतावादी कल्पना और यथार्थ का संघर्ष प्रकट होने लगा था और निराला ऐसे कवि ने छायावाद के भीतर ही छायावाद का अतिकरमण करके एक नयी काव्यभूमि का सृजन किया । ”तोड़ती पत्थर“, ”कुकुरमुत्ता“, ”नये पत्ते“ आधुनिक हिंदी कविता में उभरती हुयी यथार्थवादी चेतना का स्पष्ट संकेत देते हैं । छायावाद के नवजागरण की मूल्य दृष्टि विचारधारा की नैतिक चेतना विश्व मानवतावाद की स्वीकृति से संदर्भित होती हैं तो प्रगतिवाद के पीछे एक निश्चित परिस्थितिजन्य वास्तविकता है । ”रूपाभ“ और ”तारसप्तक“ का प्रकाशन आधुनिक हिंदी कविता के अनुभव और मुहावरे में हो रहे बुनियादी परिवर्तन की दृष्टि से उल्लेखनीय घटनायें हैं । प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की उपलब्धियाँ भी हैं और सीमायें भी हैं पर नयी कविता में उनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता ।

यह विकास क्यों संभव हुआ क्योंकि लोगों ने पिटी- पिटायी लकीरों को तोड़कर चलने का प्रयास किया । यह प्रयास लोगों ने न किया होता तो हम द्विवेदी युग की इतिवृत्ति से आगे न बढ़ सके होते और आलोचना को भी नयी ज़मीन पराप्त न होती ।

ऐसा ही प्रयोग उपन्यास में हुआ किन्तु कविता उपन्यास में फ़र्क है । कविता का जन्म एक अनिवार्य आशावादिता को लेकर हुआ था, किन्तु उपन्यास का जन्म आधुनिक काल के यथार्थवादी परिवेश में हुआ है । उपन्यास का स्वरूप शक्तिशाली है क्योंकि उसमें साहित्य की सारी विधाओं की छवियों को सन्निहित करने की शक्ति है । प्रेमचंद- पूर्व युग के उपन्यास का कोरा मनोरंजन और सुधारवादी भावना प्रेमचंद युग की एक साहित्यिक सोदृश्यता से भिन्न थी । सोदृश्यता हिन्दी- उपन्यास क्षेत्र में पहले- पहल प्रेमचंद में ही व्यक्त हुई । प्रेमचंद ने उपन्यास को यथार्थ की ओर मोड़ा । प्रेमचंद के बाद का युग मोहभंग का युग था । स्वतन्त्रता के पश्चात् विभाजन से उपजा मोहभंग । लेकिन इस मोहभंग के साथ- साथ यौन का यथार्थ, मनोविज्ञान का विश्लेषण और समाजवादी एवम् सामाजिक उपन्यास भी लिखे गये, किन्तु हिंदी उपन्यास की मुख्य स्वर सामाजिक रहा । सामाजिक यथार्थ के साथ- साथ मन का यथार्थ भी प्रमुख स्वर रहा । साहित्य के हर क्षेत्र में प्रयोग धर्मिता बनी रही नाटक में भी लेखन और मंच में प्रयोग होते रहे । गोदान और राग दरबारी का नाट्य रूपान्तरण करके मंचित किया गया ।

पर यह शहर अब प्रयोग धर्मी न रहा । हम आज भी इतिहास के अस्थिपंजर में अपने श्वासों को तलाश रहे हैं । यह अस्थिपंजर प्रेरणा दे सकता है पर

जीवन नहीं । यह शहर आज रफ्तार में पीछे है, क्यों? कौन ज़िम्मेदार है इसका ? इतने लोग यहाँ से सफलता के क्षितिज को स्पर्श करने का आनंददायक गौरव प्राप्त करके गये और तमाम मानद पदों को विभूषित किया पर कोई लौट कर न आया इस शहर के लिये । आपके अस्तर मध्यकालीन हो रहे और आप उनसे आधुनिक आयुधों से लैस योद्धाओं से लड़ने का प्रयास कर रहे । यह नायकत्व का संघर्ष है और हम इस संघर्ष के मूक दर्शक न बन जाये इसका अंदेशा हमारे समुख खड़ा हो चुका है । यह दर्शन की भूमि रही है, यहीं शंकराचार्य- कुमारिल का शास्त्रार्थ हुआ था । यहीं से नेहरू और महामना के दर्शन ने जगत को प्रभावित किया था । हमारे पास सामाजिक सरोकार रहा है । पर आज यह हर्ष का अपरिग्रह, बुद्ध का त्याग, राम की मर्यादा सब किताबों की वस्तु बनकर रह गयी है । मेरे पढ़ाये तमाम अफ़सर यहीं पर तैनात हैं, वह सिवाय अपने लिये बड़े- बड़े आलीशान मकान बनाने और एक झूठे दंभ का भ्रम पालने के सिवाय कुछ नहीं करते । हर व्यक्ति को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास होना चाहिये । जो उत्तरदायित्व का एहसास इस सिविल सर्विसेज़ फ़ोरम की टीम ने किया है वहीं कल आप भी करो जब सक्षमता को प्राप्त करो । इस अभियान का कोई विशेष दूरगामी प्रभाव न पड़ेगा, अगर यह 60 दिन के पश्चात बंद हो जाती है । यह मात्र एक पीढ़ी के लिये ही वरन् अनवरत आने वाली पीढ़ियों के लिये एक संस्थागत केन्द्र के रूप में स्थापित होना चाहिये । यह गौरव एक व्यक्ति का नहीं एक शहर का ही नहीं, समाज का होगा, प्रदेश का होगा अगर किसी ऐसी संस्था की स्थापना होती है जो दीर्घजीवी हो और व्यक्ति एवम् समाज के लिये समर्पित हो । यह एक दिशा में किया गया प्रयास है, ऐसा ही प्रयास और दिशाओं में भी होना चाहिये । मेरी सारी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद इस नव प्रयोग के लिये हैं और मुझे विश्वास है कि यह बाज़ारवादी सिद्धांतों से संचालित न होकर एक शुद्ध अंतःकरण से एक पीड़ा के निदान का प्रयास है ।

मैं अंत में यहीं कहूँगा .. है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार ... स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर- फिर संशय .. कौन है तम के पार . के कह ..फिर सुना - हँस रहा अट्टहास रावण खलखल..अस्ताचल रवि जल छलछल- छवि .. दुख ही जीवन की कथा रही क्या कहाँ आज जो नहीं कही

..

धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध

धिक साधन जिसके लिये सदा ही किया शोध । ...

पर

पुनः सबेरा , एक और फेरा हो जी का ..

होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के वंदन में हुई लीन ।

विजयी भव ... मेरी सारी सदिच्छाएँ मेरी सारी शुभकामनाएँ आप सबके साथ हैं....

सर के भाषण का जादुई असर हुआ । उनका सम्मान तो था ही और उद्घोषन सर ने पूरे अन्तःकरण से किया । । सर ने इस

नव जन्मा संस्था से लोगों कीं अपेक्षायें बढ़ा दी थीं । मेरे लिये भी एक उच्च मापदंड की स्थापना कर दी थी , वह प्रकारान्तर में कई बातें ऐसी कह गये थे जो मेरे लिये थी और मुझसे वह आशा कर रहे थे कि यह अभियान बाज़ारवादी सिद्धांतों से नहीं एक शुचिता की भावना से चलाया जाना चाहिये , पर हकीकत में मैं अपना कुछ लाभ भी देख रहा था । मैं पूरी शिद्धत से पढ़ाना अवश्य चाहता था पर मुझे पैसे का लोभ तो था ही । मैं सबसे झूठ बोल सकता हूँ , पर अपने से नहीं । सर चले गये और योजना के मुताबिक बद्री सर ने आने वाले दिनों की रूपरेखा समझायी । यह बद्री सर और मेरे बीच पहले से ही तय हो चुका था कि कक्षा आरंभ राष्ट्रीय आन्दोलन से किया जाये । इसका कारण मेरी राष्ट्रीय आन्दोलन में अतिशय रुचि , विषय पर नियन्त्रण और आन्दोलन के तिलिस्म में लोगों को बाँध लेने की क्षमता थी । मैं किसी भी क्रीमित पर इस अभियान को एक ऊँचाई पर ले जाना चाहता था । मैं वापस उस दौर में लौट चुका था जब मैं अपने मेंस की परीक्षा के लिये 12/13 घंटे प्रतिदिन पढ़ता था , पर एक छात्र के रूप में पढ़ना और एक अध्यापक के रूप में पढ़ना मैं दो अलग- अलग प्रक्रियायें हैं । एक में स्वयम की संतुष्टि होती है तो दूसरे में एक कक्षा में एक संतुष्टि की मानसिक अवस्था में मुदित चेहरों को देखना । मेरे लिये मुदित चेहरे आगे आने वाले दिनों के लिये एक लक्ष्य बन चुके थे । मैं नयी चुनौतियों के लिये अपने को माँजने लगा ... मेरे अंदर एक ही बात थी नयी - नयी चुनौतियों को स्वीकार करना ... मेरे लिये कल का दिन सबसे बड़ा दिन होने वाला था जब मैं एक शिक्षक के रूप में समाज के समुख उपस्थित होऊँगा प्रारम्भिक राष्ट्रवादियों की संघर्ष गाथा के साथ ...

मेरी अपनी संघर्ष गाथा का कहीं अन्त नहीं ...

पहले दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ । अशोक सारस्वत खोजी प्रवृत्ति के थे । उन्होंने उसी स्कूल में एक बड़ा कमरा देख लिया ताकि लोगों को बैठने में सुविधा हो । मैंने कहा , “ यह आरंभिक बुखार है जो मुफ्त के आमंत्रण और सत्य प्रकाश सिंह सर के नाम के कारण चढ़ रहा है , शीघ्र उत्तर जायेगा । “प्र अशोक सारस्वत न माने उनका कहना था यह नवीन प्रयोग है लोगों के सिर पर चढ़ कर बोलेगा । सर , जब सरस्वती बहेंगी यहाँ पर लोग उसमें डूब जायेंगे और बगैर पैसे के तो सर एक भी आदमी को पढ़ाना नहीं है । यह सब फ़ालतू कोचिंग को पैसा दे देते हैं , यहाँ तो शुद्ध ज्ञान ही ज्ञान बँट रहा है । उनकी सलाह पर मैं उस स्कूल के मालिक के पास गया और बड़े कमरे की माँग की यह अनुरोध करते हुये कि शाम को तो कोई स्कूल चलता नहीं और इस कमरे के बजाय वह दूसरा बड़ा कमरा दे दिया जाये । यह स्कूल चलाने वाले शुद्ध व्यापारी होते हैं । इनके पास पैसा कमाने के अलावा और कोई काम होता ही नहीं । यह अपने यहाँ पढ़ाने वाले अध्यापकों का भी शोषण करेंगे छात्रों के अभिभावकों का तो करना ही है । वह समझ गया कि मुझे क्यों बड़ा कमरा चाहिये और वह लाभ की हिस्सेदारी की ओर उन्मुख हो गया और 3000 रुपया उस बड़े कमरे का माँग बैठा । मैं चौंक गया इस व्यावसायिकता से संचालित स्वार्थयुक्त रुख देखकर । इसी ने कहा था कि अच्छा है आप यह कार्य कर रहे , लोगों का भला होगा , हमारा स्कूल सहयोग कर रहा इस कार्य में यह प्रसन्नता की बात है । आज की भीड़ देखकर उसको लगा कि यह तो पैसा ही पैसा पीटेगा और हमको उस लाभ में भागीदार नहीं बनाया जा रहा । अशोक सारस्वत कई तरह से समझाने का प्रयास किये पर वह टस से मस न हुआ और साथ में यह भी जोड़ दिया कि पैसा एडवांस में चाहिये । वह मेरी मजबूरी समझ चुका था । वह जानता था कि पोस्टर लग चुका है , समाचार पत्र में विज्ञापन आ चुका है और हर जगह केन्द्र के रूप में के डी मेमोरियल का नाम छप चुका है , अब यह तो मेरे शिकंजे में है और मुँहमाँगी कीमत मिलेगी ही । उसकी सोच ठीक ही थी , मुझे उसकी शर्त स्वीकारनी पड़ी , बस अनुनय - विनय करके सात दिन की मोहल्लत माँगी स्कूल कमरे के किराये को अदा करने की । वह उसने मोहल्लत बहुत अहसान के साथ दी यह कहते हुये कि सात दिन का मतलब सात दिन , मतलब आज के इतवार से अगला शनिवार ... अगला इतवार नहीं होना चाहिये , मेरे पास स्वीकार करने के अलावा रास्ता ही क्या था ?

मेरा मन बहुत खिन्न हुआ , ऐसा व्यावसायिक पन । यह पूरा स्कूल शाम को खाली है । वह कमरा थोड़ा बड़ा है सहूलियत हो जायेगी और क्या खास है दो कमरों के बीच पर शायद आज की भीड़ देखकर उसको लगा कि उसने अपनी पूरी कीमत वसूल न की और वह वसूलनी चाहिये । मैं घर आया और

माँ से बताया कि सब ठीक रहा , सब अच्छा ही होगा । वह इस बात से परेशान थी कि इतना क़र्ज़ इसने सिर चढ़ा लिया है वह कहाँ से उतारेगा अगर इसकी कोचिंग न चली । वह ऋण लेने के सिद्धांत के सर्वथा विरुद्ध थी और हर बात पर कहती थी , “ कम खा बनारस बसअ । ”

मैं दूसरे दिन गया ... मैं बहुत ही तैयारी से गया था । मैंने विषय आरंभ करने से पहले कहा , “ इस जीवन में कोई भी वस्तु है जो हमें ख़त्म करती है वह है हमारी हीन भावना । वह हमें नकारात्मकता की ओर ले जाती है । इस हीन भावना का हमारे अंदर समावेश सबसे अधिक हमारे अपने लोग ही करते हैं , यह कहकर तुमसे यह नहीं होगा तुम्हारे पास कोई दिमाग़ नहीं है और तुम इस जीवन में कुछ नहीं कर सकता । यह निष्कर्ष हमारे बचपन की कक्षाओं की अंक तालिका और हमारे आस- पास के लोगों के साथ की तुलना पर आधारित होता है । यह हमारे अपने लोगों के धौर्य की कमी और हम पर अविश्वास को दर्शाता है । हर बात पर एक बात कही जाती है , इसके पास कोई टैलेंट नहीं है । यह टैलेंट होता क्या है ? यह कहाँ से आता है ? यह क्या माँ के गर्भ में ही प्राप्त हो जाता है या जीवन के संघर्षों में प्राप्त होता है । यह कहना यह जन्मना बेवकूफ है , यह उस माँ के विरुद्ध दिया वक्तव्य है जिसने असीम पीड़ा को सहकर आपको जन्म दिया है । मैं तो कहता हूँ टैलेंट होना ही नहीं चाहिये । यह एक बोझ है । यह आपको आलसी बनाता है , यह आपको मेहनत करने से रोकता है , यह आपकी

प्रयोगधर्मिता के रास्ते की बाधा है । कल सत्य प्रकाश मिशन सर ने हिंदी साहित्य की एक विकास यात्रा को व्याख्यायित किया और वह विकास यात्रा क्या कहती है ... प्रयोगधर्मी बनो । यह टैलेंट हमको यह कार्य करने से रोकता है । एक बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति बहुधा प्रयोगधर्मी नहीं होता । एक बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति जीवन के आरंभिक वर्षों में बहुत कुछ आसानी से प्राप्त कर जाता है । यह आसानी से सफलता पाया व्यक्ति प्रयोग इसलिये नहीं करता क्योंकि जब सफलता मिल रही उसकी प्रतिभा से ही तो वह प्रयोग क्यों करे , क्या आवश्यकता प्रयोग की । व्यक्ति को जीवन के प्रारम्भिक दौर में सिर्फ़ असफल होना चाहिये । यह असफलता एक शिक्षक है , शायद सबसे बड़ी शिक्षक । आप अपने जीवन की सफलताओं की कहानी लिखो .. आप चाहे जितनी उदारता से लिखो वह पेज - दो पेज से अधिक न होगी । आप अपने जीवन के असफलताओं की कहानी लिखो , आप सारी रात लिखोगे । अब तलाशो ... प्रयोग कहाँ संभव है ? सफलता में बिल्कुल संभव नहीं है और असफलताओं में प्रयोग की असीम संभावनायें हैं । जीवन वहीं से आरंभ होता है जहाँ पर संभावनायें हैं । संभावना जीवन की सार्थकता के लिये आवश्यक है , इसलिये आप असफलताओं का स्वागत करो , भयहीन होकर और प्रयोग धर्मी बनो । भय का नाश आवश्यक है । जीवन को भययुक्त मत बनाओ , रोमांचक बनाओ ।

समुद्र की गगनचुंबी लहरों में एक व्यक्ति भय देखता है तो एक कुशल तैराक जीवन का रोमांच देखता है । एक भागता हुआ सिपाही प्राण खोने के भय से भयभीत होता है तो एक योद्धा इस युद्ध का बेसब्री से इंतज़ार करता है । चलो यह मान लेते हैं एक व्यक्ति जीनियस है और आप नहीं हो । जो जीनियस है वह एक पाठ को समझने में तीन घंटा समय लेता है और आप पाँच घंटे । पर अगर आप 6 घंटे पढ़ोगे और वह जीनियस तीन घंटे तब कौन जीतेगा । अगर वह 6 घंटे पढ़ता है और आप 12 , वह दस घंटे पढ़ता है और आप अठारह बताओ कौन जीतेगा ? सिफ़्र और सिफ़्र आप । एक ही सूरत पर आप हारोगे अगर आपका और उसका पढ़ने का समय एक हो जाता है , वह समय एक होने ही मत दो । आप अपनी कमज़ोरियों को समझो । आप उनको ताक़त बनाओ । अपनी कमज़ोरियों को अपने मज़बूत पक्ष से सम्पूरित करो । इतिहास लिखा किसने है ? सिफ़्र उन लोगों ने जिन्होंने जीवन में असफलताओं को अनुभव किया है । मैं अपना ही उदाहरण देता हूँ । मेरी कोई भी मार्क शीट ऐसी नहीं है जिस पर कोई खास गर्व किया जा सके । मैं इंजीनियरिंग कालेज की सारी प्रवेश परीक्षाओं में पूर्णतया असफल रहा । बदरी सर , चिंतन सर और तमाम इलाहाबाद के नामधारी मुझसे पीछे रहे .. क्यों ?

आप कह सकते हो भाग्य आपके साथ था .. पर मैं कहूँगा मेरा कर्म प्रधान था और भाग्य ने साथ दिया । यह लोग बहुत ही प्रतिभाशाली हैं पर मैंने जो घंटों की व्याख्या की है अभी उसी ने मुझे जीवन में आगे आने का अवसर दिया । मैंने यह स्वीकार करते हुये कि मेरी अपनी प्रतिभा की सीमायें हैं उसको अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है । मैंने कठिन परिश्रम से सीमाओं की बनी- बनायी लकीरों को तोड़ने का प्रयास किया । आप आने वाले दिनों के मेरे व्याख्यान से जान जाओगे कि मेरा कर्म कितनी प्रबलता से मेरे साथ था । यह आने वाले 200 घंटे आपको इस बात को स्वीकार करने के लिये प्रोत्साहित करेंगे कि कर्म मूल है और भाग्य सहयोग करता है न कि इसका विपरीत होता है । मैं आपको हर बीतते हुये दिन के साथ अपनी इस बात पर विश्वास करने को बाध्य करूँगा और कर्म की प्रधानता का सिद्धांत , मैं हर दिन प्रतिपादित करूँगा । हम यूपीएससी के प्रश्न पत्र बनाने वाली संस्था को चुनौती देंगे कि आप बनाओ प्रश्न जो हमने हल न किये हो । यह एक अभियान है जिसमें आपसे धन अवश्य माँगा जा रहा पर वह हमारी मजबूरी है , कोई भी संस्था किसी भी उद्देश्य के लिये क्यों न चलायी जाये उसके लिये धन की उपलब्धता एक अनिवार्य शर्त होती है और यही अनिवार्यता हमारे -आपके बीच धन का सम्प्रिलन बिंदु बना रही है । यह अधिक बेहतर होता कि इसमें धन के आदान - प्रदान की कोई शर्त न होती पर कहाँ जीवन में हर कुछ वही होता है जो आप चाहते हो । आप एक सप्ताह तक पढ़ कर फ़ैसला गुणवत्ता और अपनी उपयोगिता के अनुसार कर लें । अगर यह आप सबके लिये उपयोगी है तब इसको आगे बढ़ाते हैं और अगर

आप सब लोगों को लगता है इसकी कोई उपयोगिता नहीं है तब इसको अगले रविवार बंद कर देते हैं या उन लोगों के साथ आगे बढ़ते हैं जिनको मेरे सहयोग की आवश्यकता है । मैं पढ़ाना चाहता हूँ.. मैं आप सबका चयन पूरी सदिच्छा से चाहता हूँ... बाकी फ़ैसला आप पर है । हम आरंभ करते हैं अपना पाठ्यक्रम उस समय से जब 1857 की क्रान्ति के बाद देश में निराशा का माहौल था.. शोषणकारी सत्ता का शोषण अपनी पराकाष्ठा पर था और प्रारम्भिक राष्ट्रवादियों ने बिरतानी शासन की आर्थिक नीतियों के परखच्चे एक सधी हुई भाषा में कानून के दायरे में रहते हुये उड़ाने शुरू कर दिये ... “

प्रतिदिन कक्षा तकरीबन तीन घंटे चलती थी । यह मेरे जीवन का बहुत ही कठिन परिश्रम का समय था । मैं कहीं नहीं जाता था , किसी से नहीं मिलता था । मैं 10/12 घंटे पढ़ता था और तीन घंटे पढ़ाता था । मुझे तीन घंटे प्रतिदिन बोलना दिन बीतने के साथ कठिन लगने लगा । मैं 90 मिनट के बाद अंतराल लेने लगा । मेरी इतनी कठिन पढ़ाई इलाहाबाद के आरामतलब अभ्यार्थियों के बस की बात न थी । जो कभी विश्वविद्यालय में कक्षा किया ही न हो या कहने को किया हो उसके लिये इतनी देर तक बैठना और सारगर्भित युक्त लेक्चर सुनना आसान न था । जो संख्या शुरुआती दिनों में 100 के आसपास था वह शुक्रवार तक 50 हो गयी । इसके दो कारण थे । एक , पैसा शनिवार को देना पड़ेगा और दूसरा बहुत कठिन पढ़ाई के लिये हर कोई तैयार नहीं होता ।

मैं शनिवार को बहुत निराश था । एक भी आदमी ने पैसा न दिया था । रविवार को स्कूल मालिक को 3000 देना था । मैंने नाहक बड़ा कमरा लिया । उस छोटे कमरे में ही काम हो जाता । मैंने अति उत्साह में सारी बेवकूफियाँ की थीं । वह 1500 माँगा , मैंने कहा 2000 दूँगा पर एडवांस न दूँगा , बिना मतलब बड़ा कमरा माँगने गया और अपने ऊपर हज़ार रूपये का बोझ और बढ़ा लिया ।

मेरी माँ समझ गयी मेरी चिंता को और पूछा , क्या हो गया ? मैंने सब बता दिया । उसने पिताजी को बताया । पिताजी ने मुझे बुलाया और कहा मैं रोक ही रहा था , तुम सुनते ही नहीं हो । आपने दो महीने के लिये कमरा लिया है । आप कोचिंग बंद कर दो , आपका नुकसान एक महीने का ही होगा । मैंने कहा , तीन हज़ार भी कहाँ से आयेंगे । मेरे पास अब एक रूपया नहीं है और जो मेरा नाम ख़राब होगा वह अलग । माँ ने कहा , मैं सोमवार को फ़िक्स डिपाजिट तोड़कर पैसा दे दूँगी । तुम स्कूल वाले को तीन हज़ार दे देना । इस झंझट से छुटकारा मिले बद्री का हिसाब कर देना जब तनख्वाह मिलेगी । मैंने कुछ न कहा , पर कोचिंग बंद करने का फ़ैसला हो गया । कल कोचिंग

का अंतिम दिन होगा । मैं रात में अशोक सारस्वत के यहाँ गया और उनको लेकर दिनेश मिश्रा के यहाँ गया । उनको सारी कहानी बतायी और कहा , इस प्रयोग को कल बंद करने के अलावा कोई रास्ता नहीं है । अशोक सारस्वत बोले , “सर तीन हज़ार क्यों देने का । कोचिंग बंद करके भाग लेते हैं । वह पैसा माँगेगा तब इतने छात्र नेताओं के लिये काम किया है चढ़ जायेंगे स्कूल पर । सर आप आईएएस हो , इतनी हिम्मत पैसा लेगा ? कुंडली गुरु को लगा देते हैं यह उल्टा पैसा देगा । ”

मैंने कहा , “ यह सब ठीक नहीं है । मैं कल क्लास करके चला आऊँगा । आप लोग कोचिंग को बंद करने की घोषणा करना और ईमानदारी से बगैर भावुक हुये कारण भी बता देना । मैं सोमवार को स्कूल मालिक का हिसाब कर दूँगा । अब ईश्वर को जो मंजूर है वहीं होगा । ”

मैं यह कहकर भारी मन से धीरे- धीरे साइकिल चलाता अपने भाग्य को दोष देता घर की ओर चला । जिसने कर्म पर इतने बड़े- बड़े व्याख्यान दिये थे वह भाग्यवादी हो चुका था अपनी असफलताओं का बोझ उस साइकिल की पहियों पर ढोते हुये । शायद नियति यही थी मेरी मुझे सामने दिखने लगा कल का यूनिवर्सिटी रोड जहाँ लोग कहेंगे .. वह अपनी रैंक भैंजा रहे थे ... आता जाता कुछ है नहीं ... वह क्लास चला रहे थे सारे लड़के क्लास से उठ कर चल दिये जब वह ब्लैक बोर्ड पर लिंख रहे थे भाग्य था नौकरी पा गये नहीं तो गंगा किनारे उनको भीख भी न मिलती मेरे दुःख की कोई सीमा नहीं ... मैं घर जाने का इच्छुक न था , मैंने साइकिल परेड की तरफ़ मोड़ दी समय व्यतीत करने के लिये ... मुझे आज कहाँ नींद आने वाली ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 178

मैं साइकिल चलाते - चलाते थोड़ी देर बाद परेड की पुलिया पर बैठ गया । उस समय वहाँ कोई न था । मुझे दूर से अकबर का किला और हनुमान मंदिर के बाँध पर जल रही बिजली दिख रही थी , पर न तो किले की विराटता मुझे आकर्षित कर पा रही थी न ही बिजली की रौशनी मेरे अंदर के अँधेरे को प्रकाश से दूर कर पा रही थी । मुझे इस बात की चिंता अधिक हो रही थी कि जब यह कोचिंग बंद होगी तब यूनिवर्सिटी रोड , डेलीगेसी और होस्टलों में क्या प्रतिक्रिया होगी । मेरी सफलता वैसे ही कोई नहीं पचा पा रहा है । यह एक बड़े बहस की बात हर ओर है कि अनुराग को यह रैंक मिली कैसे । बद्री सर या चिंतन सर कितने भी मेरे शुभचिंतक क्यों न हों , इनको भी यह अच्छा तो न लगा होगा कि जो कल तक मज़ारों पर भीख माँगता था वह आज मज़ारों

पर बिरयानी बाँट रहा । मेरा समाचारपत्र में कोचिंग का विज्ञापन छपा देना और पूरे शहर में हज़ार पोस्टर चिपका देना सभी के मन में ईर्ष्या भर गया है । यह सभी कह रहे कि सफलता ने इसका मानसिक संतुलन बिगड़ दिया है, ऐसा कोई करता है कि पैसा लो और पढ़ाओ और यह क्या पढ़ायेंगे, इनको आता ही क्या है । मैं परसों से यूनिवर्सिटी रोड जाने लायक नहीं रहूँगा । यूनिवर्सिटी रोड तो दूर की बात मैं घर से निकलने लायक नहीं रहूँगा । मुझे आठ हज़ार रुपये का जो नुकसान हो रहा वह तो छोटा नुकसान है, पर यह जीवन भर का दंश होगा । यह बात यह इलाहाबाद के ईर्ष्यालु लोग एकेडमी तक यह बात ले जायेंगे और सब मुझ पर हँसेंगे, पर अब किया ही क्या जा सकता है ? जो होना था वह हो चुका है । मैं परेड ग्राउंड से बद्री सर के घर गया और उनको सारा क्रिस्सा सुनाया और यह भी कहा कि मैंने कोचिंग बंद करने का फैसला कर लिया है । बद्री सर थोड़ा चिंतित से लगे, मेरी सारी बात सुनकर । मुझे लगा उनको लग रहा है कि मेरा पैसा तो अब गया । मैंने कहा, “ सर मैं आपका पाई- पाई चुका दूँगा । आप थोड़ा धैर्य रखें । जैसे ही तनख्वाह मिलेगी, पहला काम होगा इस ऋण से मुक्ति प्राप्त करना । ”

बद्री सर - “ इतनी हल्की बात न करो । सबाल इस ऋण का नहीं है, यह कोई ऋण है भी नहीं । इसको भूल जाओ । यह वापस करो या न करो, कोई विशेष बात नहीं है । मुझे अपयश की चिंता हो रही, न केवल तुम्हारी बल्कि मेरी अपनी, चिंतन की और सत्य प्रकाश मिश्रा सर की । यह माना तुम चेहरा हो पर नाम हम सबका भी जुड़ गया है, इस अभियान से । मैंने भी लोगों से कहा है कि यह अच्छा प्रयास है । उस दिन मैं भी उपस्थित था उद्घाटन के दिन और मैंने पूरे आने वाले कार्यक्रम की रूप रेखा समझायी थी । तुम इसको बंद न करो, किसी भी तरह चलाओ । ”

मैं - “ सर हर कार्य का कुछ प्रोत्साहन बिन्दु होता है जहाँ से ऊर्जा का संचार होता है । वह बिंदु इसमें अब है ही नहीं । अगर आप कह रहे कि पैसा मत लो और पढ़ा दो तब वह मुझसे न हो पायेगा । मैं भी दो पैसे की उम्मीद से ही यह कार्य कर रहा था । जब सारे चयनित लोग सफलता के उन्माद के साज से उत्पन्न अपनी प्रशस्ति गीत के संगीत में नृत्य कर रहे उस समय मैं एक तपस्या कर रहा । पर यह तपस्या मैं किसलिये कर रहा ? कोई भी कार्य किसी न किसी इच्छा से संचालित होता है । जब वह इच्छा पूरित होती नहीं दिखती तब व्यक्ति की आस्था उठने लगती है । मैं अब अपने कार्य के प्रति ही आस्थावान न रहा । मुझे लग रहा यह सब मुझे बेकूफ़ समझ रहे और मेरे अंदर उन लोगों के लिये द्वेष भाव जन्म ले रहा जो मेरे ही सामने बैठकर पढ़ रहे । सर एक भी व्यक्ति पैसा न दिया, यह कहाँ से स्वीकार्य है ? मैं क्यों पढ़ाऊँ ? मैं बड़ी बात कह रहा यह लगेगा आपको, पर साक्षात् सरस्वती का वरदान उतारा है कक्षा में मैंने । 15 घंटे से अधिक कक्षा चल चुकी पर अभी

मैं कांग्रेस के स्थापना की पृष्ठभूमि से गाँधी के चौरी - चौरा कांड के बाद के दरायल तक ही पहुँचा हूँ । इतना कठिन परिश्रम और श्रम की कोई कीमत नहीं, मुझसे न हो पायेगा यह उदारता उनके लिये जो स्वार्थ में आकंठ लिप्त हैं । मैं अगर स्वार्थी दिख रहा कुछ चंद उम्मीदों को हृदय में संजो कर तब वह कौन से परमार्थी हैं जो एक शर्त के साथ आरंभ हुये अभियान की शर्तों का सम्मान नहीं कर रहे । यह तो पहले ही कह दिया गया था यह कोई मुफ्त का कार्यक्रम है नहीं इसमें धन का आदान-प्रदान एक शर्त के रूप में शामिल है । अब सर अपयश हो तो हो, पर मैं नहीं चला पाऊँगा यह कार्यक्रम । मेरे लिये हर दिन बहुत मुश्किल हो रहा है, 10/12 घंटे पढ़ना और तीन घंटे बोलना और उनके लिये जिनको मेरी कोई कीमत नहीं ।”

सर चिंतित दिखे । उनको भी आने वाले कल की चिंता होने लगी जब इस अभियान की विफलता से उत्पन्न अपयश का विषयान करने को वह बाध्य होंगे ।

मैं सर के कमरे से निकला, मैं साइकिल को यूँ ही घसीटते एक हाथ से हैंडल पकड़े पैदल चलता हुआ घर आया । माँ बाहर चबूतरे पर खड़े होकर मेरा इंतज़ार कर रही थी । उसने आते ही पूछा, “कहाँ चले गये थे ?”

मैं “मैंने थोड़ा झूठ बोला और कहा, कल कोचिंग बंद करनी है उसी की प्रक्रिया को पूरा कर रहा था । अशोक सारस्वत, दिनेश मिश्रा को समझा रहा था कैसे कल बात करनी है । मेरा कोचिंग बंद करते समय रहना ठीक नहीं है । मैं कल की क्लास लेकर चला आऊँगा और वह लोग कह देंगे कि यह कोचिंग अब नहीं चलेगी । मैं तुम्हारा फ़िक्स डिपासिट तोड़ना नहीं चाहता, कल कुछ सोचूँगा स्कूल मालिक के किराये के बारे में ।”

माँ - “फ़िक्स डिपासिट कराया था बच्चों के लिये ही । तुम कोई जुआ में तो पैसा हारे हो नहीं । एक अच्छे उद्देश्य के लिये काम कर रहे थे पर वह न चल सका । तुम बिल्कुल परेशान न हो । मैं सोमवार को फ़िक्स डिपाजिट तोड़कर दे दूँगी ।”

उसने यह भी बताया कि कमिश्नर साहब आये थे । उनकी किताब का विमोचन 5 अगस्त को है और राज्यपाल से समय

वह लखनऊ जाकर ले आये हैं । राज्यपाल इलाहाबाद आयेंगे पुस्तक के विमोचन के लिये । वह सत्य प्रकाश मिश्रा सर के यहाँ आये थे और यहाँ भी आ गये । वह कहकर गये हैं कि कल अनुराग को सुबह- सुबह भेज देना, किताब में कुछ सहायता करनी होगी ।

मैं - “ तुमने कुछ बताया तो नहीं कोचिंग के बारे में । ”

माँ - “ वह जानते थे । उन्होंने पेपर में विज्ञापन भी देखा था और सत्य प्रकाश मिश्रा सर ने बताया था कि वह पहले दिन गये थे और काफ़ी भीड़ थी । ”

मैं - “ तुमने कुछ और तो नहीं बताया । ”

माँ - “ तुम्हारे पिता जी से बात हुयी थी । तुम तो जानते ही हो कि तुम्हारे पिता कितने गंभीर आदमी हैं , वह कोई हल्की बात तो करेंगे नहीं । उनको कुछ नहीं बताया । कल चले जाना , इतने बड़े आदमी हैं दो बार आ चुके हैं । ”

मैं - “ कल चला जाऊँगा । ”

अगले दिन सुबह अशोक सारस्वत और दिनेश मिश्रा आये । वह लोग कोचिंग बंद हो इसके पक्षधर न थे । यह दोनों बहुत ही जहीन विद्यार्थी थे , इनको लग रहा था कि कोचिंग चलेगी तब बहुत सहूलियत हो जायेगी परीक्षा पास करने में । दिनेश ने कहा भी , “ सर मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ पर इस तरह इतिहास न कभी पढ़ा और न सोचा । “ गाँधी का दरायल अभी चल ही रहा था कल की कक्षा में , दिनेश की चाहत थी कि वह दरायल पूरा करके तब कोचिंग बंद की जाये । मैंने दिनेश को ए जी नूरानी की किताब दे दी जिसमें गाँधी का पूरा दरायल विस्तार से लिखा था । मैंने कहा , यह पढ़ लेना अब पढ़ाना मुश्किल है । अशोक सारस्वत ने कहा , “ सर यह तो अंगरेजी में है यह हमको कैसे समझ आयेगी आप दो- चार दिन और इंतज़ार करो हम कोशिश करते हैं पैसा निकालने की । ”

मैं - “ यार देखो , मन उचट गया है मेरा इस काम से । यह काम बहुत लगन का है पर जब मन किसी काम में न लगे तब वह नहीं करना चाहिये । बगैर मन के किये काम में कोई परिणाम नहीं आता । ”

मैंने बताया कि मैं कमिश्नर के घर जा रहा उनकी किताब का विमोचन है 5 अगस्त को । सत्य प्रकाश मिश्र सर ने कहा है कि पर्सफ़ रीडिंग कर दो उनके किताब की । अब सर के इतने एहसान हैं मेरे ऊपर उनका आदेश है मानना ही है ।

अशोक सारस्वत - “ सर कमिश्नर इलाहाबाद सत्यानन्द मिश्रा किताब लिख रहे ? ”

मैं - “ हाँ । ”

अशोक - “ सर मैं भी चलूँ । ”

मैं - “ चलो । ”

अशोक - “ सर मेरे गाँव में ज़मीन का एक काम हैं इसडीएम सुन नहीं रहा , आप एक फ़ोन करा देंगे उनसे ? ”

मैं - “ वह उदारमना हैं । आप कह देना अपनी समस्या, वह समाधान निकाल देंगे । ”

मैं, अशोक और दिनेश कमिश्नर के बँगले पर पहुँच गये । अशोक ने कहा , “ सर ऐसा ही बँगला आप का भी होगा और हम लोग आकर बँगले में पसर जायेंगे और चपरासी से कहेंगे बनाओ आलू- मटर - टमाटर की सब्ज़ी और पराठा । सर , चेंप मारेंगे चार पराठा सुबह - सुबह ।

मैं - “ तुम्हारा खुद का भी बँगला ऐसा ही होगा । तुम्हारा भी चयन होगा । ”

अशोक - “ कैसे होगा सर ? आप पढ़ा ही नहीं रहे हो । मैं तो सोचा था आपका पढ़ाया हुआ ही लिखेंगे परीक्षा में पर यह इलाहाबाद वाले कोचिंग ही बंद करा मारे । यह सब हैं ही फेल होने लायक़ । जब इनको यह ही नहीं समझ कि कैसे माल को सस्ते दाम पर लिया जाये तब तो यह आईएएस होने लायक़ ही नहीं है । आप जो पढ़ा रहे वह बेशकीमती हैं पर कोई क़दर ही नहीं शहर को । ”

मैंने चपरासी से अपना नाम बताया , जैसे ही चपरासी अंदर गया वैसे ही बाहर आ गया । मुझे ले गया कमिश्नर के ड्राइंग रूम में । उस ड्राइंग रूम की विराटता देखकर अशोक और दिनेश अचंभित हो गये । अशोक ने कहा कि सर घर के अंदर चलने के लिये मोटरसाइकिल रखे होंगे साहब । इस घर में पैदल तो चल नहीं सकते । हम लोगों के गाँव में जिस तरह कई- कई बच्चे लोगों के होते हैं अगर वैसे ही कई बच्चे साहब के हो जायें और उसमें से एकाध बच्चा इस बड़े घर में खो ही जायेगा, तब दो- तीन दिन लगेगा उसको ढूँढ़ने में । इतने में कमिश्नर साहब की पत्नी आ गयीं और उन्होंने कुशल - क्षेम पूछा और कहा कि मैं एक दिन गयी थी तुम्हारे घर तब तुम दिल्ली गये थे । उन्होंने चपरासी को आवाज़ दी । वह चपरासी को चाय- पानी के लिये समझाने लगी तभी अशोक ने मेरे कान में कहा , “ सर आपने मैडम को भी लपेट मारा है । यह भी आपसे मिलने घर गयी थीं । बद्री सर सही कहते थे अनुराग मायावी है । ”

उसी समय कमिश्नर साहब आ गये । मैंने दिनेश और अशोक का परिचय कराया । अशोक एमए हिंदी में टाप किये थे और दिनेश की एमए में पोज़ीशन थी । इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पोजीशन होल्डरों की बहुत प्रतिष्ठा होती थी । सर ने भी खुशी ज़ाहिर की उनसे मिलकर और कहा , “ अनुराग किताब को लेकर बहुत तनाव है । पाँच अगस्त को विमोचन है और अभी तक किताब

छपी नहीं है । तुम थे नहीं प्रस्तुति रीडिंग का काम एक हिंदी विभाग के रिसर्च स्कालर को दिया है, वह कर रहा है ।”

अशोक - “ किसको दिया है ? ”

सर - “ विवेक रंजन को . ”

अशोक - “ सर उससे तुरंत वापस लीजिये । वह पूरा गोंड देगा । मैं जानता हूँ उसको, मेरे से दो सान सीनियर था और वह भी एक रिसर्च स्कालर के तौर पर पढ़ाता है । मैं उसका विषय एक - दो बार पढ़ाया हूँ और उसके बाद उससे लड़के पढ़ते ही नहीं । अब सर आ गये हैं, पूरी किताब का काया- कल्प हो जायेगा । सर, किताब का कवर पेज भी बाढ़ियाँ बनाइयेगा, अंदर तो अच्छा होगा ही आप ऐसे विद्वान ने लिखा है और सर प्रस्तुति रीडिंग कर देंगे । सर, आप निश्चिंत रहें पाँच अगस्त को गौरव गान ही होगा ।”

उसी समय चपरासी आकर बोला कि मन्त्री जी का फ़ोन है । वह अपनी किताब की पांडुलिपि मुझको देकर बोले तुम उसको देखो, मैं आता हूँ और चपरासी से कहा साहब लोगों का ध्यान रखना । उनके जाते ही अशोक बोले, “ सर तेल- पानी सही लगाया न ? ”

मैं “ थोड़ा धीरे चलो । ”

अशोक - “ सर यह सब सम्मान के भूखे दंभी लोग हैं । इनको आता जाता कुछ नहीं बस किताब लिखकर साहित्यकार बनना है । देखिये सर यह कविता महान साहित्यकार की ..

मैं क्यों आऊँ तेरे पास
यहाँ उगी है सुंदर घास
पवन मग्न था सारी रात

अब इनको इतना भी नहीं आता कि प्रेमिका के लिये लिखे प्रेम-गीत में घास से तुलना सर प्रेमिका का आने का मन हो तब भी वह नहीं आयेगी ।

यह दूसरी देखिये

“ख्वाब, ख्वाहिश . शबनम , चाँद
जहाँ भी देखता हूँ ख़ालिश तुम ही हो ..”

अब “ ख “ ही “ ख “ लिख मारो ...

सर इनकी इस किताब को यहीं आग के हवाले कर देते हैं , कुल 100 कवितायें हैं और आप नयी लिख दो एक किताब । आप 100 कविता लिख मारेंगे एक सप्ताह में । वही छपा देते हैं , इनके नाम से ।

इतने में कमिश्नर साहब आ गये और पूछा कैसी हैं कवितायें ..

अशोक - “ सर क्या लिखा है आपने । सर , आपकी लेखनी में सरस्वती है । यह किताब तो सर हंगामा करेगी । सर इसकी प्रकाशन रीडिंग कर देंगे और निखर जायेगी । ”

सर - “ अनुराग , इस सप्ताह कर दो काम पूरा ताकि जल्दी यह प्रकाशक के पास पहुँच जाये । ”

अशोक - “ सर आप निश्चिंत रहें । यह काम समझिये हो गया । आप बाकी काम देखें । यह काम अब हम लोगों का है । सर के लिये एक सप्ताह बहुत है । ”

कमिश्नर साहब के चेहरे पर संतोष था , वह बोले तुम लोग काम करो .. मैं ज़रा लोगों की समस्याएँ सुन लेता हूँ , बहुत लोग इंतज़ार कर रहे । ”

सर चले गये , मैंने अशोक से कहा , “ तुम दादू से मिले हो ? ”

अशोक - “ वह कौन है ? ”

मैं - “ आज मिलाता हूँ शाम को , वह तुम्हारा कुंभ के मेले का बिछुड़ा हुआ भाई है । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 179

कमिश्नर साहब थोड़ी देर बाद आये यह देखने काम कैसा चल रहा । उन्होंने पूछा भी , “ कितनी प्रगति हो गयी । ” वह थोड़ा उतावले हो रहे थे । अशोक ने कहा , “ सर विश्वकर्मा को आपने काम सुपुर्द कर दिया है , आप निश्चिंत रहें , स्वर्ण युक्त भवन का निर्माण होगा और रत्नाजडित कलश शीर्ष पर स्थापित होगा , सर की स्याही में सरस्वती का वास है । ”

कमिश्नर साहब बहुत प्रभावित हुये और प्रसन्न भी । अशोक ने कहा कि सर ज़रा प्रकाशक को बुला लीजियेगा , उससे भी समझ लें कैसे वह कार्य कर रहा । मैं हिंदी का विद्यार्थी हूँ मुझे प्रकाशन , विमोचन की समझ है । मैं तो विमोचन समारोहों में जाता ही रहता हूँ । सर ने अपने पीएस को बुलाया और

कहा कि यह जो भी कहें कर देना । सर ने मुझसे कहा , यही सारा कार्य का संयोजन कर रहा । तुम जो भी कहोगे यह कर देगा ।

मैं कमिश्नर साहब की कवितायें ठीक करने का प्रयास कर रहा था कि अशोक ने कहा , “ सर साहब हैं बहुत प्रतिभाशाली । ”

मैं “ कैसे पता लगा ? ”

अशोक - “ सर यह पद्य से गद्य की ओर और गद्य से पद्य की ओर ऐसे चले जाते हैं जैसे संगम में गंगा यमुना की ओर और यमुना गंगा की ओर बेधड़क प्रवाहमान होती है । यह लगता है कई जन्म पहले हरिष्णेण रहे होंगे । यह चम्पू शैली में लिखते हैं । जब मन आया गद्य जब मन आया पद्य बस इतना ही हैं खास इनमें जो इनको हरिष्णेण से अलग करता है , इनको कोई मतलब नहीं किसी भी शिल्प शास्त्रीयता से । यह बेधड़क का शैली के लेखक हैं । इनको पड़ोसन पिक्चर पहले दिखाइये सर । उसमें महमूद को देखें ठीक से और घोड़ा - चतुर , चतुर- घोड़ा न करें । सर यह देखें , यह तो किसी और का लिखा है हेर- फेर करके लिख मारा अपना नाम देकर । सर , इनको एक राय देते हैं , यह रामधारी सिंह दिनकर की किताब का कवर पेज फाड़ कर उस पर अपना कवर चपका लें , कौन रामधारी सिंह जिंदा हैं कि केस कर देंगे । सर यह निराला से भी आगे जायेंगे । ”

मैं “ वह कैसे ? ”

अशोक - “ सर निराला के बारे में कहा जाता है कि वह किरया- पद का लोप करके एक नयी तरह की रचना करते हैं , पर साहब तो संज्ञा- सर्वनाम सबका लोप करने में सिद्धहस्त लगते हैं । यह एक सर्वनाश शैली का अविष्कार कर रहे हैं । सर अच्छा है अक्खड़ साहित्यकार निराला , फिराक , रामवृक्ष सिंह , भैरव प्रसाद गुप्ता न रहे नहीं तो वह सब इनको इसी बँगले में घुस कर दौड़ाइ मारते । सर एक बात और बतायें हमें ? ”

मैं सर की कवितायें पढ़ रहा था , बगैर सिर उठाये कहा , कहे ।

अशोक - “ इस किताब को जलाकर बनी चाय भी बेस्वाद होगी । ”

मैं “ ऐसा नहीं है , यह देखो... यह कविता ... ”

अशोक - “ कुछ थोड़ा बहुत ठीक है पर अधिकांश तो बेसिर पैर की ही हैं । सर आपके ठीक करने के बाद भी कविता कह रही मेरा और शृंगार करो । सर एक बदसूरत शक्ल का अतिशय शृंगार भौंडेपन की ओर जाता है । आपकी चुनौती शृंगार के साथ- साथ भौंडेपन से बचने की भी है । मेरी राय तो यही है कि आप इनकी किताब को मारिये गोली और फिर से नयी लिखिये । यह है कमिश्नर , आदमी काम का हैं । इसको घूस देते हैं नयी किताब लिख

कर और काम कराते हैं लोगों का । सर आपको कोचिंग पढ़ाकर पैसा ही चाहिये न , इन्हीं से ले लेते हैं पैसा , किताब की प्रूफ रीडिंग के नाम पर । यह आपको ठीक नहीं लग रहा हो तो किसी आसामी को पकड़ कर कोई काम करा लेते हैं और उससे पैसा ले लेते हैं । आपको पैसे से मतलब है वह कैसे आया इससे क्या मतलब । आप बस पढ़ाइये, हम लोगों का चयन ज़रूरी है । सर अब तो यह बँगला और प्रेरित कर रहा पढ़ने को , आज से दो घंटे पढ़ाई का कोटा और बढ़ा देते हैं , सर आप कोचिंग बंद न करो , आपके बगैर पढ़ाये न होगा चयन हमारा , दिनेश का चाहे हो जाये । यह एजी नूरानी , सुमित सरकार , विदेश नीति , आर्थिक नीति , डेविड थाम्पसन आप पढ़ो और जितना परीक्षा में लिखने लायक हो वह पढ़ाओ , कबीर की तरह सार- सार को गह रहयो थोथा देय उड़ाओ । कोचिंग का प्रतीक चिन्ह भी सूप कर देते हैं । आप अंग्रेजी की किताबों का अनुवाद कर रहे हो । मेरे लिये आप एक अनुवादक- विश्लेषक हो । “

इतने में चपरासी आया पूछने कि मैम साहब कह रहीं हैं नाश्ता करा दो इन लोगों को कुछ चाहिये सर ?

अशोक - “ चाहिये तो बहुत पर तुम देर से आये हो । थोड़ा आलू- मटर - टमाटर की सब्ज़ी और पराठा बना दोगे ? ”

चपरासी - “ जी सर । ”

अशोक - “ ज्यादा मत बनाना बस दस- बारह ही बनाना , हम लोग खाते कम हीं हैं । ”

चपरासी जाने लगा तो उसको बुलाया , कितनी देर लगेगा ?

चपरासी - “ सर बीस मिनट । ”

अशोक - “ यार टाइम थोड़ा ज्यादा ले रहे हो , चलो तब तक चाय ही पिला दो । ”

चपरासी चला गया तब अशोक ने दिनेश से कहा कुछ और चाहिये क्या ?

दिनेश - “ नहीं इतना बहुत है । ”

अशोक - “ संकोच न करो । यह लोग प्रसन्न होंगे अगर कुछ खायेंगे हम लोग । ”

चपरासी चाय लेकर आया । अशोक ने कहा , “ सुनो यार कुछ मिठाई भी लाना पराठे के साथ । ”

चपरासी - “ जी साहब । ”

अशोक - “ कौन सी मिठाई है ? ”

चपरासी - “ सर क्या चाहिये? सब है । ”

अशोक - “ यार दो- तीन तरह की लाना । ”

चपरासी - “ जी साहब । ”

अशोक - “ अब सर इनकी कविता बढ़िया बनाइये । मैं भी थोड़ा व्याकरण देखता हूँ , साहब को व्याकरण की कोई समझ नहीं है । सर , एक बात बताइये ? ”

मैं - “ क्या? ”

अशोक - “ कौन साहब को पगलैटी का काम करने की राय दिया है ? ”

मैं - “ खुद ही कर रहे , शौक है इनका । ”

अशोक - “ नहीं सर , यह कोई बरगालाया है । अब इनके सारे मातहतों को इस किताब को पढ़ने की पीड़ा भवितव्य है उनका । सर कहें तो एक क्रिस्सा सुनाऊँ ? ”

मैं - “ सुनाओ । ”

अशोक - “ एक हमारे इलाके के अफ़सर हैं । वह एक काव्य संग्रह लिखे । अब लिखे क्या कुछ शब्दों के साथ अत्याचार किये । वह मुझसे कहे चलो इस किताब को एक उच्च न्यायालय के जज को भेंट करना है । मैं फ़ालतू आदमी , मुझको क्या , जहाँ चाहे ले चलो । मैं उनके साथ गया । एक बड़े कमरे के डराइंग रूम में बैठे हम लोग , जल- जोग आया । मैं जल- जोग पर केन्द्रित हो गया और देखा थोड़ी देर बाद जैसे कुर्ता हैंगर में टॅंग हो वैसे ही हैंगर मार्का कुर्ता काँधे पर लटकाये लंबा आदमी चलता हुआ आ रहा , हमारी ओर । मैं मिठाई चेंप रहा था बलभर के और जज साहब उसी मिठाई चेंपने के दरम्यान पूछे , यह किताब किसने लिखी है । अफ़सर साहब बोले , मैंने । उन्होंने पढ़ा दो - चार पेज और कहा , इतने लोग लिख रहे बेफिजूल और अगर आप न लिखते तो एक अहसान होता । आपने जितना समय इसको लिखने में लगाया उतना समय पढ़ते तो बहुत अच्छा होता । मेरे सामने कोई मामला आया तो मैं एक आदेश पारित कर दूँगा कि इस तरह का फ़ालतू लेखन बंद हो , क्यों यह काम आप लोग कर रहे ? सर मेरे हाथ में मिठाई थी और पानी का ग्लास समझ ही नहीं आ रहा था पहले किसका सेवन करूँ । मैं बाहर निकला और अफ़सर साहब से कहा , कोई और न मिला .. यह बददिमाग ही मिला किताब देने को । ”

मैं - “ तुम तो यह समाचार फैला मारे होंगे ? ”

अशोक - “ सर यह समाचार उनके गाँव- इलाके के बच्चे- बच्चे को पता हो गया , मैं कहाँ छोड़ने वाला । आप कमिश्नर साहेब से कह दीजियेगा , उस जज के पास न जायेंगे भूलकर भी । ”

इतने में चाय आ गयी फिर दिव्य नाश्ता । अशोक बोला , सर कमरे पर कौन खाना बनाये लंच करके चलते हैं । मैंने कहा , सोने के अंडा देने वाली मुर्जी की कहानी सुनी है न ?

अशोक - “ हाँ सर समझ गया । हम लोग नाश्ता तक सीमित रहते हैं । इस चपरासी को पटा लेंगे काम हो जायेगा । ”

मैंने चपरासी से मैडम को बुलवाया और कहा , “ यह मैं दो - तीन दिन में कर दूँगा । इसको ले जा रहा । सर से कह दीजियेगा कल आऊँगा और मैं बताऊँगा कितना दिन और लगेगा पर एक सप्ताह में कर दूँगा । ”

मैडम - “ अनुराग , अब तुम आ गये हो , यह कार्य हो ही जायेगा । यह पहले तनाव में थे , काम आफिस का इतना रहता है कि समय मिलता ही नहीं , यह एक समस्या है नहीं तो लिखते यह अच्छा हैं । ”

अशोक - “ मैडम साहब अच्छा ही नहीं बहुत अच्छा लिखते हैं । हिंदी साहित्य के साथ न्याय नहीं हुआ जो सर साहित्यकार न बनें पर कोई बात नहीं .. देर से ही सही पाँच अगस्त के बाद तो प्रशस्ति गान साहब का होगा ही । ”

हम तीनों लोग कमिशनर साहब के बँगले से यूनिवर्सिटी रोड होते हुये घर आ गये । माँ ने चाय पिलाया । मैंने पहले सोचा था , आज की व्लास लेकर कोचिंग को बंद करते हैं फिर मैंने सोचा , अब आज भी पढ़ाने की क्या आवश्यकता । जब बंद ही करना है तब बेवजह क्यों जाकर दो- तीन घंटा भाषण दूँ । मैंने कहा , ”आप लोग चले जाना शाम को मैं नहीं आऊँगा , ईमानदारी से स्पष्ट रूप से कह कर कोचिंग को खत्म करने का कारण भी बता देना । मैं इनकी कवितायें ठीक करता हूँ । आप लोग कोचिंग बंद करके आना , शास्त्री पुल चलेंगे और वहाँ का बंद- मक्खन खिलाऊँगा । ”

अशोक - “ सर कमिशनर साहेब के बँगले चलिये , वहाँ की चाय बढ़िया है । मिठाई भी लोग लाते ही हैं , कोई खाने वाला तो है नहीं । हम लोग न्याय कर देंगे । ”

दादू चाय लेकर आया था और वहीं बैठा था वह बोला , “ मुन्ना भैया हमहूँ के लै चलअ , हमहूँ देखी बँगला अंदर से । ”

मैंने अशोक से बोला यही दादू है । यह मजेश है । अशोक ने कहा , “ सर शाम को कोचिंग समापन समारोह के बाद इनको समझते हैं । ”

अशोक और दिनेश कोचिंग बंद करके आने की बात कहकर चले गये । मैं दादू से मामा के यहाँ का हाल- चाल राजनीति पूछने लगा पर मन में एक ही व्यग्रता युक्त उत्सुकता थी क्या होगा आज शाम को जब सिविल

सर्विसेज़ फोरम के समापन की घोषणा होगी .. क्या प्रतिक्रिया होगी लोगों की , समाज की ...

एक मेरा खबाब मेरे सामने ही टूट कर बिखर रहा था .. न आवाज़ न चीख न हलचल औरों के लिये पर बहुत शेर इसके टूटने का मेरे कानों में ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 180

अशोक , दिनेश , शाही शाम को कोचिंग बंद करने गये । अशोक ने दिनेश से कहा , ” यार यह ठीक नहीं हो रहा । “

दिनेश - “ भाई साहब के पास रास्ता ही क्या था ? कोई पैसा ही नहीं दे रहा । ”

अशोक - “ यार आईएएस बन गये हैं । पैसा कमा लेंगे । मुफ्त में ही पढ़ा देते तो कौन सा पहाड़ टूट जाता । हम तीनों लोग तो मुफ्त में ही पढ़ रहे , सत्य प्रकाश मिशन सर के दो चेले भी मुफ्त में पढ़ रहे , दो लड़कियों को भी मुफ्त में पढ़ा रहे कुछ लोग और पढ़ लेंगे .. हैं तो सब गरीब- गुरबा ही । महामायी सकाय जाये ऐसी लालच में । ”

दिनेश - “ कौन सी दो लड़कियाँ मुफ्त में पढ़ रहीं ? ”

अशोक - “ कौन दो हैं यह तो नहीं पता पर दो मुफ्त में होंगी हीं । यह लड़कियाँ पैसा देंगी ? तुम भी बेवकूफ़ाना बात कर रहे हो । एक पैसा न देंगी । सर की फ़ीस भी ऐसी है कि देने का मन करे तब भी देने की हालत ही नहीं । पाँच सौ रुपया लिये होते , लोग खुशी- खुशी देते । माँग भी रहे हैं दो हज़ार रुपया , इससे अच्छा था खेत का रुक्का ही लिखा लेते । ”

दिनेश - “ जब कोई पैसा नहीं दे रहा तब क्यों पढ़ाये भाई साहब ? ”

अशोक - “ कौन नहीं दे रहा ? कह तो सब रहे हम देंगे , हम तीन और सत्य प्रकाश सर के चेलों के अलावा सब देंगे ही देर- सबेर , चलो एक दो लड़कियाँ गोल कर जायेंगी , कुछ आधा- अधूरा देंगे । पचास लोग आज हैं ही, जिस तरह पढ़ा रहे वह ऐसा न भूतो न भविष्यतो पढ़ाया गया , नाम बढ़ेगा ही आगे और अभी लोग आयेंगे ही । अभी बहुतों को नहीं पता है इस अभियान के बारे में और जो लोग पढ़ रहे वह ही प्रचारित करेंगे कोचिंग को । इनके पास एक बढ़िया रैंक है और लफ़ज़ों से माया फैलाने वाले तो मायावी हैं ही यह । लोग आयेंगे ही और देर सबेर दें देंगे पैसा , पर इनको तो लूटना है और रविवार तक ही लूटना है , कितना लूटेंगे ? अब यह तो सभी जानते ही हैं कि इलाहाबाद के लोगों की अंटी ढीली करना कोई आसान काम तो है नहीं । यह

सब रजाई भी तब खरीदते हैं जब जाड़ा चहेटता है नहीं तो अस्थिपंजर , अस्थमज्जा और कुछ किलो शरीर के माँस को चादर से हल्का सहयोग देकर शीत से संघर्ष करते रहते हैं । पर नहीं इनको सारा पैसा रविवार तक ही चाहिये ... जैसे कोई अंग्रेज भारत छोड़ो की तरह गाँधी ने समयबद्ध कार्यक्रम तय कर दिया हो । इतना समयबद्ध जिद तो गाँधी - भगत सिंह भी न करे थे आज़ादी के लिये जितना सर कर रहे कोचिंग की फ्रीस के लिये । हमको सिखा रहे आंदोलन के अंदर आंदोलन और खुद कुछ नहीं सीखना , यह आईएएस क्या हो गये हर आदेश बरह्मा सदृश दे रहे , शनिवार तो शनिवार रविवार भी नहीं । अरे थोड़ा धैर्य रखो , राष्ट्रीय आन्दोलन पढ़ा दिये होते । कुछ न करते गाँधी का दरायल ही पूरा कर दिये होते , पर नहीं जिदिया गये , आज बंद ही करेंगे कोचिंग । आज की क्लास भी निरस्त कर दिया , यही चला दिया होता । एक बात बतायें ! “

शाही - “ बताओ ? ”

अशोक - “ इतने गरीब छात्रों की हाय लेना बिल्कुल ठीक नहीं है , लड़कियों की तो बिल्कुल नहीं । यह सब गरीब- गुरबा लोग हैं , पढ़ाया होता यह सोचकर जो दे उसका भी भला जो न दे उसका भी भला । सत्य प्रकाश मिश्रा सर कहे थे पहले ही दिन , यह हर्ष के अपरिग्रह की भूमि है अपरिग्रह का अपने व्यक्तित्व में समावेश करो , पर जो उनके साथ जो बैठा है वह ही अपरिग्रह विरोधी है तो औरों से उम्मीद क्या करना । अभी यह दहेज में लेंगे पच्चीस - पचास लाख रुपया नक्कद , बड़ा बँगला , गाड़ी - टीवी -फिरज- झौआ भर सामान । आंटी जी - अंकल जी पूरी रात रूपिया गिनेंगे और गिना हुआ रूपिया बिना गिने रूपिया आपस में मिल जायेगा और बार-बार गिनेंगे । इनको कोई अनुभव रूपिया गिनने का है नहीं , हो सकता है सर अनुभव लेना चाह रहे हो इस कोचिंग से रुपया कमा कर गिनने का । दान-दया- धर्म का ह्रास हो गया है इस कायनात में । यह सब समाज के आदर्श पुरुष हैं पर कौन से आदर्श की स्थापना यह कर रहे , सिवाय एक गुणवत्ता के फ़र्ज़ी आवरण में एक बाज़ारवाद की । अभी आप पूछो बुद्ध- बोधिसत्त्व तीन घंटा बोलेंगे पर पूछो इनसे इसका जीवन में समावेश तब दोष देंगे समाज को । यह पानी पी-पी कर सीनियरों को गरियाये हैं पर खुद क्या कर रहे यह कौन पूछे इनसे । यह नया धंधा सरेआम चालू कर दिये , हम बताने का पैसा लेंगे , यह पहली बार पूरे भूमंडल पर हो रहा सफलता को भुनाने का नग्न- नृत्य , इसीलिये इलाहाबाद से अब चयन कम हो रहा । ऐसे व्यापारी मार्की अफ़सर अगर समाज में जन्म लेंगे तब तो ईश्वर नाराज़ ही होगा और कहेगा मैं किसी को अब आशीर्वाद नहीं दूँगा । हम लोगों का अगर न हुआ तब यह जान लो दोष सर का है , हमारा नहीं । सर का पाप है दंड हम लोगों को मिलेगा । ”

दिनेश- “ पर भाई साहब भी क्या करें । इतना पैसा खर्च हुआ , पेपर में इश्तहार दिया , पोस्टर छपाया , पूरी - पूरी रात पोस्टर चिपकाया गया ।

मकान का किराया कितना बड़ा है । यह सब कहाँ से आयेगा ? ”

अशोक - “ देखो तुम लोग सर से मत बताना पर एक बात कहूँगा , हैं यह बहुत लालची । ”

दिनेश - “ यह कैसे कह सकते हो ? ”

अशोक - “ यह पेपर में विज्ञापन , पूरे यूनिवर्सिटी रोड , पूरे शहर में पोस्टर से विज्ञापन क्यों छापा ? सारा ड्रामा अधिक से अधिक भीड़ इकट्ठी करना और माल खींचना । सर का छोटा भाई बड़ा खुराफ़ाती है । उसको लग रहा लोग पिक्चर न देख कर कोचिंग में ही पैसा दे । उसका बस चले तो सारे पिक्चर देखने वाले को कोचिंग में ही पढ़ा मारे । मानसरोवर - रूपबानी - मोतीमहल टाकीज तक पोस्टर चिपका मारा । मानसरोवर टाकीज जाओ , पिक्चर लगी है मेरा गाँव मेरा देश । पोस्टर में धर्मन्दर , विनोद खन्ना घोड़े पर दौड़ रहे और बगल में लगा है पोस्टर .. 60 दिन .. 200 घंटे .. पूरा पाठ्यक्रम... अनुराग शर्मा ... ऐसा लगता है धर्मन्दर , विनोद खन्ना , अनुराग शर्मा तीन हीरो हैं पिक्चर में । विनोद खन्ना एक डाकू और अनुराग शर्मा दूसरे डाकू , इसकी फ़ीलिंग आती है दोनों पोस्टर देखकर । एक बात तो है सर हैं बहुत मायावी ... यह जीवन में बहुत आगे जायेंगे .. माया महाठगिनी हम जानी चलो अब हमसे क्या लेना - लादना ... सोचे थे मुफ्त में पढ़ लेंगे पर अब तृष्णा का कोई इलाज आज तक हुआ नहीं । बुद्ध और उनके चेले कहते रहे ... लालच न करो ... बचपन में पूरा पेज सुलेख में सिखाते रहे मास्टर ... लालच पाप का मूल है .. पर ऐसे- ऐसे लोग आइएनएस बनेंगे तब क्या हला- भला होगा इस देश - समाज का । यह सब आईएएस बनकर भूल जाते हैं सारी आदर्शवादिता , बस मियाँ - बीबी- बच्चे और काला धन इसके अलावा किसी बात से कोई सरोकार नहीं ।

शाही - “ यह मकान मालिक भी कितना किराया माँग रहा , यह भी तो देखो ? ”

अशोक - “ यह तो सबसे बड़ा पापी है । पहली बात तो मेरा चयन होगा नहीं और होने की जो उम्मीद थी उसके खात्मे में यह श्याम जी मिश्रा सबसे बड़ा ज़िम्मेदार है , अगर मैं आईएएस हो गया तो मैं अपने हाथ से इसको लाठी-लाठी पीटूँगा । ससुरे ने टूटहे कमरे का किराया ऐसा माँगा जैसे आनंद भवन हो , इसका परांगण । मैं किसी दिन कमिशनर साहब के बड़े बाबू को पटाकर इसको जार्जटाउन थाने में बंद कराकर पिटवाऊँगा । चलो कोचिंग आ गयी , इस भीड़ को भगाते हैं । यह ससुरे देना- लेना एक नहीं तीन बजे से आकर बैठ जाते हैं । श्याम जी मिश्रा किराया इसी लिये बढ़ा दिया कि कोचिंग चार बजे से है और तीन बजे से बत्ती- पंखा चालू । ”

अशोक ने कहा , “थोड़ा गरिया लेते हैं तब कोचिंग का दाह - संस्कार करते हैं । ”

अशोक - “ एक शब्द है हिंदी का आग- अँधियार / आप सबने सुना होगा पर देखा न होगा / आज आप देख भी लो , वह आपके सामने है / आप हर कोई सामने देखो आग- अँधियार दिख जायेगा / आप लोग अपना ही सर्वनाश करने पर आमादा हो / आप पिछले साल तो फेल हुये ही , इस साल तो होगे ही और अगले साल भी होना ही है / यह जो आप लोग कहते हो , देब त सिबिलै नाहीं त करब खेती / आप सबके घर में कितना खेत है और कितना बिगहा पुदीना झुरा रहा है , यह एक बार और पता कर लो । आप लोग गंगा किनारे जगह ढूँढ़ लो भीख माँगने की , माँगी भीख मिल जाये वही बहुत है बाकी इस जन्म में आपका आईएएस बनना असंभव है / अगले जन्म तो आप बनेंगे कुकुर- सियार - मेंढक / अब कुकुर - सियार - मेघा तो आईएएस की परीक्षा देता नहीं क्योंकि आईएएस बनने की पहली शर्त है मानव बनना , चाहे आप जैसे बेवकूफ मानव ही क्यों न हो / अब आपकी यह बेवकूफ़ी आपको चौरासी लाख योनि के बाद मिलेगी । उस समय पता नहीं यह परीक्षा रहेगी या नहीं , पर उससे पहले तो परीक्षा नहीं दे पाओगे । इस इलाहाबाद में कोई कुछ नहीं करता क्योंकि आप सब - हम सब आग अँधियारी हैं । आप लोग फ़र्ज़ी ब्राइट कोचिंग, कैवल्य कोचिंग लायक हो , जहाँ पढ़ाने वाला बेवकूफ और पढ़ाने वाले तो आप हो ही महानता के पौराणिक स्तंभ , अब आपकी महिमा का बखान तो काकभुशुंडी ही कर सकते हैं । ”

एक छात्र- “ क्या हो गया ? ”

अशोक - “ बताते हैं क्या हुआ ? इस कोचिंग की लागत है पन्द्रह हज़ार रुपया / अभी तक सिर्फ़ 6000 रुपया जमा हुआ / देने वाले कौन मैं ऐ हिंदी का टापर और रिसर्च स्कालर के तौर पर हिंदी पढ़ा रहा , दिनेश , ऐ ए पराचीन इतिहास में दूसरा स्थान, शाही रुड़की के सिविल इंजीनियर । हम तीनों प्रारम्भिक परीक्षा पास कर लेते हैं , मुख्य परीक्षा में समस्या है । न देने वाले कौन ? आप जैसे पचास आग- अँधियारी , जो इस जन्म तो प्रारम्भिक परीक्षा पास करने से रहे , अगर यह कोचिंग न चली । हम तीन लोग पैसा दिये बाकी तो कोई न दिया न नीयत है देने की । मैं सर के यहाँ गया था आज । सर ने हम लोगों का पैसा वापस कर दिया और कहा कि अब यह कोचिंग मैं नहीं चला सकता , जब कोई पैसा नहीं देना चाह रहा । मेरे पास पैसा है नहीं कोचिंग चलाने का , इन स्थितियों- परिस्थितियों में इस अभियान को समाप्त करने के अलावा और कोई रास्ता है नहीं । मैंने बहुत कहा कि यह पैसा आप वापस न करें , यह पैसा रख लें और राष्ट्रीय आन्दोलन ख़त्म करके तब बंद करें । हम लोग इस पर भी तैयार थे कि 6000 रुपये में राष्ट्रीय आन्दोलन ही पढ़ा दें पर आपकी ज़िद है पैसा न देने की और उनकी ज़िद है बगैर पैसा

लिये न पढ़ाने की , अब दो पक्ष का सिद्धांत आड़े आ रहा । दो सिद्धांत पिरय
लोग हैं , हम क्या कर सकते हैं , सिवाय यह कहने के , ईश्वर हम सभी को
विमल बुद्धि दीजिये चलो कोई शोक गीत गाते हैं और कोचिंग बंद करते हैं
.. निराला से बड़ा शोकगीत कौन लिख सकता है ...

दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज , जो नहीं कही
हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर , मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत के- से शतदल!
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण ।

इसी शोकगीत को हम लोग गाते हैं और इस कोचिंग का तर्पण करते हैं और
हम चाहेंगे कि कभी अब हम स्वार्थी लोगों की मुलाकात आपस में न हो तो
अच्छा है । आप जाओ ब्राइट- कैवल्य कोचिंग , मैं तो कही जाऊँगा नहीं, मैं
प्रारम्भिक परीक्षा पास कर लेता हूँ सोते- सोते और वह जो ब्राइट कोचिंग में
चश्मा लगाकर पढ़ाता है जिसके चेहरे से बेवकूफ़ाना मिज़ाज वैसे ही टपकता
है जैसे जेठ की भरी दुपहरी में पसीना उससे पूछना कोई परीक्षा आज तक
पास किया है , अध्यापक बनने से पहले और जब वह जवाब में झूठ मिलाने
लगेगा उसके बोलने के पहले मेरा नाम बता देना और कहना मैंने यह सवाल
किया है , वह सच बोलेगा ।

नमस्कार...

कोचिंग बंद और आपका अंधकारमय भविष्य पूर्ण अंधकार को स्वागत करने
को तत्पर हो रहा ...

एक पूरा शोर कक्षा में

अशोक के कोचिंग बंद करने की घोषणा ने सबके चेहरे पर एक विस्मयादिबोधक आश्चर्य भाव ला दिया । यह एक अप्रत्याशित कदम था , इस कदम के लिये न तो कोई तैयार था और न ही यह किसी की कल्पना में था । लोग कारण पूछने लगे और जानना चाह रहे वह पृष्ठभूमि जो इस निराशाजनक उद्घोषणा के लिये उत्तरदायी है ।

दिनेश - “ इसमें कोई खास अन्वेषण की आवश्यकता तो है नहीं । यह एक परस्पर सहमति से चल रहा अभियान था । इसमें धन की बात तो शामिल ही थी । अब जब वह आप लोगों के द्वारा पूरी नहीं हो रही तब इसको बंद ही होना था । यह पूरा कार्यक्रम एक धन की माँग करता है और कोई छात्र यह धन कहाँ से ला सकता है । सर का चयन हुआ है , पर वह हैं तो अभी छात्र ही । उनके पास कोई आमदनी का ज़रिया तो है नहीं कि वह दस- पन्द्रह हज़ार रुपये खर्च करके यह फ़ोरम चलायें । उनका अपना लाभ तो बहुत दूर की बात है वह एक ऋण- चक्र में आ चुके हैं । यह ऋण कैसे उतरेगा यह भी एक समस्या है । यह प्रयोग बहुत ही सदाशयता से संकल्पित, विस्तारित और संचालित किया गया और हमें इसे आगे ले जाना चाहिये था , पर वैसा नहीं हो रहा । मैं इतिहास का परम्परागत एवम् गंभीर विद्यार्थी हूँ और मैं पिछले कई साल से इतिहास पढ़ रहा , मेरे साथ पढ़े कुछ लोग इस कक्षा में हैं भी । मैंने स्नातकोत्तर, प्राचीन इतिहास के दो प्रश्न- पत्र में सम्मान पत्र प्राप्त किया है और स्नातकोत्तर परीक्षा में द्वितीय स्थान , फिर भी मुझे बहुत सी नयी बातें और एक नया दृष्टिकोण इस कक्षा में मिल रहा है । मैं सर से पिछले एक साल से जुड़ा हूँ और इनकी अप्रतिम विश्लेषण क्षमता से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ है । आप लोगों का भी पिछले 10-15 घंटे में अपना एक निश्चित मन बना ही होगा , कक्षा की उपयोगिता- उपादेयता के बारे में । मैं चाहता था और चाहता हूँ कि यह फ़ोरम चले पर आप लोग नहीं चाह रहे तो क्या किया जा सकता है । इसका इस तरह अंत हम सबने शायद नहीं सोचा होगा , एक बेहतर समापन कार्यक्रम की कल्पना मैंने की थी पर जीवन में वही सब कुछ कहाँ होता है जो आपने जीवन में चाहा हो । मैं अशोक की तरह यह तो नहीं कहूँगा कि जीवन में हम लोगों की फिर मुलाक़ात न हो पर यह ज़रूर कहूँगा , जीवन में हम लोग सर के साथ चलते तो शायद उनके कदमों के निशान हर दिन देखते और कुछ प्रेरणा हमें निःसंदेह प्राप्त होती । यह फ़ोरम आरंभ करने का सुझाव भी मेरा था और अतिशय आगरह भी , सर ने मेरे आगरह का सम्मान किया नहीं तो कौन है जो दस घंटे पढ़े और उसके बाद तीन घंटे पढ़ाये, वह भी एक बड़ी सफलता के बाद । मैं अभी भी चाहता हूँ , यह नव प्रयोग अपनी एक सार्थक परिणति को प्राप्त करें पर जो हमारे भाग्य में लिखा है वही होगा ।”

दिनेश की बात का बहुत असर हुआ । अशोक ने कहा , “ यह संस्थान चल सकता है वह भी अश्व के वेग से , बस शर्त यह है इनके हिस्से का पैसा भी हम ही दें और यह लोग बैठकर कापी में लिखें । मुफ्तखोरी की हम लोगों की आदत पड़ चुकी है । चलो अब मजमा हटाओ । आप लोग चंदा करके इस कमरे का किराया दे दो , इतने दिन सर का खून पिये हो । आप सब रक्त पिपासु हो , अब कल से किसका रक्त पियोगे यह सोच लो , बगैर खून पिये तो ज़िंदा रह नहीं सकते । चलो पापियों का लहू बहुत पिया है , एक सज्जन परमार्थी का भी एक सप्ताह रक्त पिया है । अब आप लोग आदमखोर शेर की तरह हो गये हो , सारा दिन खोजते रहोगे सज्जन- परमार्थी धमनियों से उपजा रक्त पीने के लिये पर एक बात में बता दूँ तुम्हारी रक्त पिपासु क्षुधा का अब कोई भविष्य नहीं है , आपकी व्यास का कोई अंत नहीं होने वाला । यह शहर बिगवों का शहर है । यहाँ बोर्ड लगाकर लोग शिकार ढूँढ़ते हैं और आप लोग तो इतने बड़े बेवकूफ हो कि बगैर धास से ढँकी खाई में गिर जाओगे । एक सवाल इस साल आयेगा परीक्षा में , इस वर्ष सबसे ज्यादा बेवकूफ एक साथ कहाँ बैठे देखे गये , शाही आप खड़े हो जाओ तब मैं जवाब बता देता हूँ । उत्तर है - के डी मेमोरियल स्कूल में चल रही आईएएस की कोचिंग , सिविल सर्विसेज़ फ़ोरम में ।

अब बहुत हो गया । तीन कप चाय पीनी पड़ेगी मुझे इस बकवास में खर्च हुई ऊर्जा को वापस लाने के लिये ।”

कक्षा में हर ओर शोर ही शोर ... कोई फ़ोरम बंद किया जाये इसका पक्षधर न था । कक्षा में दो भाई श्याम नंदन और परेम नंदन थे । इन लोगों ने इस साल की मेंस दिया था पर पास न कर पाये थे । वह उठ खड़े हुये और अनुरोध किया कि सर को बुलाया जाये , हम बात कर लेते हैं । जब ईश्वर फ़र्ज़ीगीरी , बातूनीपन , जहीनियत बाँट रहे थे तब अशोक राहू -केतु की तरह कई बार लाइन बदल- बदल कर लूट ले गये थे । उनकी व्यक्ति के अंदर के उमड़ते तूफानों को समझने की अप्रतिम क्षमता थी । उनको लगा कि मेरा काम फ़री का हो रहा है , अब इसको अंतिम पायदान पर ले जाते हैं । वह लोगों से बोले कि मैं सर को लेकर आता हूँ । वह मेरे पास आये और कहा , “ सर चलिये .. वहाँ समस्या हो रही । जब समस्या उत्पन्न होती है तब कार्य संपादित होने के शुभ संकेत का आभास होने लगता है ।“

मैं के डी मेमोरियल स्कूल की तरफ़ चला । अशोक ने कहा , “ सर एक भी आदमी को मुफ्त नहीं पढ़ाना है , काम बन गया है ।“

मैं “ एक भी आदमी को मुफ्त नहीं पढ़ाना है ” , यह वाक्य आप के खिलाफ़ जा रहा । “

अशोक - “ सर इसको ठीक कर देते हैं , पाँच लोगों को ही मुफ्त पढ़ाना है , बाक़ी सबसे पैसा लेना है । ”

मैंने केड़ी मेमोरियल का माहौल देखा , सारे लोग चिंतित थे । श्याम नंदन ने कहा , “सर पढ़ाइये बाक़ी काम हम लोगों का है । यह हमारी ज़िम्मेदारी है लोगों से पैसा लेना और आपको देना । आप को पूरा पैसा मिलेगा , चाहे जहाँ से पैसा लाना पड़े । ”

मुझे इस पंक्ति के पीछे छिपी छातरों की विवशता ने झकझोर दिया । मुझे अपनी लघुता का एहसास होने लगा । मैं उन सारे घटनाक्रमों का पुनरावलोकन करने लगा जब से मैंने कोचिंग को खोलने का विचार किया था । यह संकल्प मैंने तब लिया था जब मैं हर दर पर एक ही अरदास लिये जाता था , कोई मेरी मदद करे । मैंने हर निराशा पर कहा था , अगर मैं सफल हुआ तब मैं लोगों की एक आशा बनूँगा , मैं एक नयी आस्था को जन्म दूँगा । मैंने अपनी माँ से भी कहा था , “ अगर मुझे ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हुआ तब मैं लोगों के कष्ट को दूर करने का प्रयास करूँगा । मैंने ही हिंदी विभाग में कहा था , मेरा एक सूतर वाक्य इसी यूनिवर्सिटी रोड पर किताब की दुकानों पर सजी किताबों को देखते - देखते बना था , मैं जन्मा हूँ एक ग़ैर मामूली दास्तान के लिये और तुम भी यही एक सूतर वाक्य बनाओ अपने लिये , मैं जन्मा हूँ एक ग़ैर मामूली दास्तान के लिये ।

। मैंने पता नहीं कितनी बार यह पंक्ति खुद से ही कही थी क्या यही है मेरी एक ग़ैर मामूली दास्तान जिसमें मेरी तृष्णा को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है ।

खुदा बनने की ख्वाहिश रखना एक बात है पर खुदा की तरह जीवन जीना एक अलग बात है । राम नाम रख लेने से ही कोई राम नहीं बन जाता , उसके लिये राम ऐसा संयम , त्याग, पौरुष होना चाहिये । यह अपरिग्रह की भूमि है ... पर यहाँ परिग्रह का साम्राज्य हर ओर विद्यमान है । मेरी माँ ने अपने सारे सत्कर्म मेरे नाम कर दिये एक मामूली सी भौतिक उपलब्धि के लिये मुझे कक्षा में सारे निराश चेहरे दिख रहे थे । मेरे बहुत से परिचित लोग कक्षा में बैठे थीं । मैं उसका नायक था , पर उन सबका चेहरा देख कर मुझे लगा ... मैं अपना सारा नायकत्व खो चुका हूँ ।

मैंने सिफ़्र इतना ही कहा , “मुझे आपसे पैसा नहीं लेना चाहिये , यह किसी भी तरह उचित नहीं है कि जिस भूमि का एहसान मुझ पर हो मैं उस भूमि के साथ व्यापार करूँ , पर मैं भी आपकी ही तरह एक अति सामान्य परिवेश की उपज

हूँ । यह एक बाजार है यहाँ पर सदाशयता के लिये भी बाजारवादी सिद्धांतों की तरफ देखना होता है , पर इस बाजारवादी सिद्धांत के विरुद्ध एक बगावत है यह नव प्रयोग... आप पैसा देना चाहें दे और न देना चाहे न दें.. यह बात में आपकी अपनी निर्णय क्षमता और विवेकशीलता पर छोड़ देता हूँ ... आज के बाद धन का फैसला आप करें , कक्षा में अनुशासन बना रहे , यह कक्षा के सुचारू रूप से चलने के लिये आवश्यक है । हम कक्षा आरंभ करते हैं इस संकल्प के साथ

मुझे अपने चिरागों पर भरोसा है .. छूबने दो इस सूरज को यह मियादों से बँधा कब अँधेरों में काम आया है ...

गाँधी ने अपने ऊपर लगाये आरोपों को स्वीकार किया यह एक नैतिक फैसला था या सामरिक गाँधी ने न्यायाधीश से कहा ... मैं अपने ऊपर लगाये आरोपों को स्वीकार करता हूँ.. अब आपके पास दो ही रास्ते हैं ... या तो आप अपने पद से इस्तीफ़ा दें नहीं तो क्रान्तुन के प्रावधानों में लिखी हुई कड़ी से कड़ी सजा मुझकों दें ... मुझको अगर मुक्ति किया गया तब मैं पुनः वही करूँगा जिसके कारण मुझ पर राजदरोह का आरोप लगा है ...

यह न्याय के इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना थी ... यह उठाया गया कदम , एक अभूतपूर्व कदम गाँधी की नैतिकता से उपजा था या यह आन्दोलन की एक सामरिक रणनीति थी और क्यों चौरी चौरा कांड के दरायल के बाद कभी भी गाँधी पर कोई भी दरायल अंग्रेज हुक्मरानों द्वारा नहीं चलाया गया , यह हम समझने की कोशिश करते हैं .. 1922 से 1947 के बीच के घटनाक्रमों की विवेचना के सहारे

एक रफ्तार जीवन की .. फिर कभी पीछे मुड़ कर देखने की ज़रूरत ही न पड़ी सिविल सर्विसेज़ फ़ोरम को .

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 182

इस जगत में अनादि काल से यह स्थापित रहा है और आगे भी स्थापित रहेगा कि गुणवत्ता कीं अधिमानता रहेगी , प्रचार तन्त्र का योगदान अल्पकालिक होता है पर एक सच्चे हृदय एवम् अथक परिश्रम से उत्पन्न हुआ उत्पाद प्रचार तन्त्र के श्वासों से जीवन पा रहे उत्पाद पर भारी ही पड़ेगा और यही हुआ सिविल सर्विसेज़ फ़ोरम के साथ । दिन- रात की परिश्रम अपना रंग दिखाने लग गयी और जो लोग पढ़ रहे थे वह ही प्रचारक बन चुके थे ।

ब्राइट कोचिंग में मैं दो ही दिन गया और कोचिंग के छात्र मेरे बारे में पूछ भी रहे थे कि अनुराग सर क्यों नहीं आ रहे पढ़ाने, उन छात्रों को ब्राइट कोचिंग की दीवारों से लेकर हनुमान चौराहे तक मेरी कोचिंग के पोस्टर ही पोस्टर दिख रहे थे और वह उस पोस्टर के सहारे मेरे क़रीब आ गये ।

यह कोचिंग फ्रीस के मामले में शरद्धा पर आकर स्थापित हो गयी, कोई फ्रीस नहीं जो शरद्धा हो वह दे दो, हलाँकि फ्रीस दो हज़ार रुपये नियत की गयी थी पर अगर देने में अक्षमता हो तो कोई बात नहीं । अशोक ने इस मामले में एक चाल चल दी कि आप पैसा दोगे तब नैतिक दबाव बना रहेगा पढ़ाने का भी और कोर्स पूरा करने का भी नहीं तो कभी भी बंद करके चल देंगे और आप कुछ नहीं कर पाओगे, एक बार के कोचिंग बंद करने की उद्घोषणा एक नज़ीर के रूप में बढ़ा- चढ़ाकर बतायी जा रही थी और अशोक इस कोचिंग को पुनः शुरू कराने का शरेय भी ले चुके थे । यह युक्ति काम कर गयी और लोग पैसा भी देने लगे पर कौन पैसा दिया, कौन नहीं दिया, कितना दिया इस पर कोई न हिसाब था न ही निगरानी । छात्रों की भड़ती भीड़ और उनके द्वारा दिया पैसा एक बड़े पैसा का शक्ल अस्तियार कर रहा था, कम से कम मेरी कल्पना और आशा से बहुत ही ज्यादा था यह । मैं वास्तव में अंदरूनी तौर पर अपरिग्रह की विचारधारा का समर्थक था । अब इतना बड़ा पैसा कैसे सँभले यह भी एक समस्या थी । मैंने पूरे जीवन सौ- पचास रुपये को एक निधि की तरह सँभाल कर रखा था और यह पचासों हज़ार रुपये कोचिंग के आरंभ के कुछ ही दिनों में आ गया यह मेरे लिये एक स्वप्न की तरह था । इस कोचिंग ने मेरी प्रसिद्धि में बहुत हिजाफ़ा किया । मेरे समर्थक डोलीगेसी और छात्रावासों में होने लग गये और वह मेरे नाम पर मरने - मारने को तैयार हो जाते थे । वह एक फ़ौज थी मेरी और मैं उनका नायक । मैं अब एक सफल छात्र ही न रहा वरन् अपनी कश्ती में लोगों को बैठाकर समुद्र की भयावह उफनते तूफ़ान में कूद चुका था लहरों को परास्त करने का संकल्प लिये, वह भी तब जहाज होने का दावा करने वाले किनारों पर सुस्ता रहे थे । पूरा शहर किंकर्तव्यविमूढ़ देख रहा एक रोचक क्षितिज यात्रा जिसमें मैं भगीरथ की तरह गंगा को धरा पर उतारने को उतावलापन में दिखा रहा था । मेरी शख्सियत को नकारना अब आसान नहीं रह गया था । मेरा सूत्र वाक्य शहर में गाया जाने लगा, एक गैर मामूली दास्तान की चाहत छात्रों के कमरों में पनाह पा ही रही थी कि मैंने एक दूसरा नारा दे दिया, यह रास्ता आसान नहीं है पता है मुझे पर ज़िंदगी की चाहत है मुझे चाहे वह मुझे लहू बहाकर ही क्यों न मिले, हज़ार पैर हो अँधेरों के कितना भी तेज भाग ले बस वक्त की पाबंदी तक । हर कोई एक ज़ज्बे से भरा हुआ था और अपनी बैसाखियों को घोड़ों से तेज भगाना चाहता था । मुझे पढ़ाने में असुविधा का अनुभव होने लगा । मैं कोई अध्यापक तो था नहीं और मुझे तीन घंटे रोज़ बोलने में समस्या होने लगी । मैं बीच में पन्द्रह मिनट का अंतराल लेने लगा ।

बहुत से नये छात्र आ गये थे और मैं करीब आठ - दस दिन पढ़ा चुका था और स्वतन्त्रता संग्राम पर मेरा व्याख्यान बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था और अनुरोध हुआ कि नये छात्रों को ध्यान में रखते हुये इसको फिर से पढ़ाया जाये और पुनः मैं पढ़ाने लगा भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन....

1857 की क्रान्ति के पश्चात् की निराशा और 1885 में कांग्रेस के जन्म के मध्य की गतिविधियों को समझने के लिये हमें 1757 की प्लासी की लड़ाई और उसके पूर्व के घटनाक्रमों का आर्थिक महत्व समझना होगा और क्यों वर्ष 1813 भारत के आर्थिक शोषण की एक विभाजक रेखा है। एक प्रश्न आपके मस्तिष्क अवश्य कौंध रहा होगा कि क्या संबंध कांग्रेस के जन्म का इन दूरवर्ती घटनाओं से। कांग्रेस का जन्म भारत के आर्थिक शोषण से जुड़ा हुआ है। 1871 में दादा भाई नौरोज़ी ने कहा, देश निरंतर दरिद्र और पंगु बनता जा रहा है। 1870 में भारतीय नेताओं ने अपने देश की आर्थिक बुराइयों की गहरी छानबीन आरंभ की। 1870 में दादा भाई नौरोज़ी ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया, क्या भारत इस समय अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पर्याप्त उत्पादन की स्थिति में है? उन्होंने सवयम् इसकी नकारात्मक जवाब दिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1886 में भारत की दरिद्रता का प्रश्न उठाया और अपने घोषित कार्यक्रम का एक अंग बना लिया। 1891 के सातवें अधिवेशन में कांग्रेस ने भुखमरी, जनता की शोचनीय हालत की बात उठायी और यह हर अधिवेशन का हिस्सा बन गया।

ब्रिटिश प्रशासकों ने अनेक बार भारत की निर्धनता के लिये भारत की जनसंख्या के आकार और वृद्धि को दोष दिया पर भारतीय नेताओं ने इस धारणा को टुकरा दिया यह कहते हुये कि पश्चिमी यूरोप के बहुत सारे देश भारत की अपेक्षा अधिक घनी आबादी वाले होने के बावजूद अधिक समृद्ध हैं, इस तेज़ी से बढ़ रही जनसंख्या की दरिद्रता का प्रतिकार तेज उद्योगीकरण से किया जा सकता था पर ऐसा न किया गया। इस देश की आत्मनिर्भरता को तोड़कर एक औपनिवेशिक देश बनाने का षड्यन्त्र किया गया। आय से अधिक व्यय कोर्ट- कचहरी और समारोहों पर खर्च एक दूसरा तर्क था पर राष्ट्रवादियों ने यह सिद्ध किया कि अन्य देशों के तुलना में हम मितव्यिता पर भी लगाम लगाते हैं और समारोहों में रुचि भी कम है। प्रशासकों का कहना था, “अकाल हमारे विनाश और दरिद्रता का कारण है और इसमें शासक क्या कर सकता है जब दैव ही भारत से रुठ गया।”

राष्ट्रवादियों के पास तर्क था, दुर्भिक्ष प्रकृति के प्रकोप का फल नहीं है यह मानव की असफलताओं का परिणाम है। जब द्रुतगामी यातायात का साधन उपलब्ध है तब एक विशेष क्षेत्र में फ्रसल के बिंगड़ जाने पर अकाल

की स्थिति क्यों उत्पन्न हो जाती है ? आखिर सारे देश में एक साथ तो फसल ख़राब होती नहीं । यूरोप के बहुत से देश भी अकाल का शिकार बनते हैं पर वे महामारी और भुखमरी से बच जाते हैं । इंग्लैंड तब भी भुखमरी का शिकार न हुआ जब सामान्य वर्षों में उसका उत्पादन उसकी खाद्य आवश्यकताओं के मुकाबले 50 प्रतिशत ही था । अकाल फसल के बिगड़ने का परिणाम नहीं है , बल्कि खाद्य पदार्थों के उपलब्ध संभरण को ख़रीदने के साधनों के अभाव का ही परिणाम है ।

इन तर्कों के पीछे उनका अपना विश्लेषण था जो सन 1757 के बाद के घटनाक्रम की उपज है । यह कंपनी 1757 के पहले एक ट्रेडिंग कारपोरेशन थी जो भारत से सामान लेती थी और विदेश में बेचती थी । यह कारपोरेशन भारत के पक्ष में आयात संतुलन प्रदान करती थी इसीलिये सारे भारतीय शासक इस कंपनी के व्यापार के पक्षधर थे । इस देश से सामान बाहर जाता था और बदले में सोना - चाँदी देश में आता था । सन 1757 के बाद भारत के अंदर का राजस्व इन सामनों को ख़रीदने के लिये इस्तेमाल होने लगा और यहाँ से सामान बाहर जाने लगा , परिणाम यह हुआ कि देश को अब कुछ न मिलता था इन निर्यात के बदले । यहाँ का बलपूर्वक इकट्ठा किया हुआ राजस्व एक इन्वेस्टमेंट के तौर पर प्रयोग होता था और ख़रीदा हुआ माल विदेश जाने लगा । भारत के दुर्भाग्य की कहानी में इंग्लैंड की औद्योगिक करान्ति ने महती योगदान दिया ।

यह एक अद्भुत संयोग है भारत पर अंगरेजों की विजय और इंग्लैंड में औद्योगिक करान्ति लगभग एक ही समय में हुआ । 1757 में क्लाइव ने भारत में बिरिटिश राज्य की नींव रखी और 1760 में फ्लाइंग शटल , 1764 में हरग्रीव की चरखी , 1768 में जेम्स वाट का भाप इंजन , 1776 में कताई मशीन , 1783 में अंगरेजी मलमल के नमूने भारत भेजे गये और 1783 में राइट ने बिजली से चलने वाला कारखाना बना दिया । यह तारीखें अनायास लग रहीं पर यह एक साम्राज्य की स्थापना के बीच के संबंध को दर्शा रहीं । क्या भारत की विजय न होती तब एक औद्योगिक करान्ति को इतनी उर्वर ज़मीन प्राप्त होती ? इतिहासकार देखता है इतिहास की प्रवाहमान धारा इतिहास की अवश्यंभावी संभावनाओं को समझने के लिये । एक विद्यार्थी को इस बहती धारा को समझने की दृष्टि विकसित करनी चाहिये । इस भारत की धोर निराशाजनक दरिद्रता में इन अविष्कारों का कितना योगदान है ?

भारत से बहुत बड़ी मात्रा में संपत्ति आने से देश की नक़द पूँजी बढ़ीं और उससे शक्ति के भंडार में वृद्धि हुई और लूटी हुई संपत्ति और माल लंदन पहुँचने लगा । अविष्कार अपने आप में निर्जीव होते हैं । इनकी सजीवता के लिये धन , कच्चा माल , बाज़ार की आवश्यकता होती है । इस आवश्यकता

की पूर्ति हो रही थी कभी दिग्विजयी रही उस भूमि से जो शौर्य गाथाओं से आह्वादित रहा करती थी आज पददलित होने को बाध्य हैं उनसे जो कभी एक व्यापारिक फरमान का अरदास लिये महान मुग़लों के दरबार में प्रतीक्षारत हुआ करते थे । इस नवोदित साम्राज्य ने रेलवे का जाल बिछा दिया , अपनी पूँजी के निवेश के लिये , कच्चे माल के दोहन के लिये और हमारे बाजार को मशीन निर्मित माल से पाटने के लिये ।

हम यह समझने की कोशिश करते हैं यह भारत की दरिद्रता कितनी उन इस्पातों से चलकर आयी जिसका पहला परीक्षण 1854 में बांबे-थाने के बीच हुआ तो दूसरा कलकत्ता को रानीगंज की कोयला खानों के जोड़ने की इच्छा से । हम बग़ैर कृषि-बाजार , मजदूर , महाजन , रेल , स्वेज नहर योगदान , औद्योगीकरण , विदेशी पूँजी को समझे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन नहीं समझ सकते । इसी आंदोलन से भारत की भावी विदेश नीति , लोकतन्त्र , आजादी - विभाजन का द्वैध , राष्ट्रीय वैचारिक संघर्ष और 1947 का भारत और हमारा संविधान जन्म लेता है ।

कांग्रेस का जन्म और परवर्ती गाँधी आंदोलन भी हम इन घटनाओं के आलोक में कल समझने की कोशिश करते हैं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 183

यह रेल क्या लेकर आई ? यह रेल क्यों आई ? यह किन कारणों से आई और इसका देश में प्रयोजन क्या था ? यह निःसंदेह राजनैतिक और सामरिक कारणों से आई और साथ ही अंग्रेज पूँजीपतियों का दबाव भी था , इसकी स्थापना के लिये । इसके उद्देश्य थे भारत में रेल कंपनियों में बिरटिश पूँजी का विनियोग , रोल मार्ग को कच्चे माल खासकर रूई के निकास प्रणाली के रूप में इस्तेमाल करना , इंग्लैंड के रेल इंजनों , इस्पात की रेलों और मशीनरी को भारत बेचना , रेलमार्ग द्वारा भारत के अंदरूनी बाजारों में बिरटिश कारखानों के मालों , विशेषकर सूती कपड़ों की बिक्री करना ।

इस रेल के इतिहास में महत्वपूर्ण बिंदु थे निजी कंपनियों द्वारा रेलों का निर्माण और संचालन , निजी कंपनियों द्वारा जुटाई गयी पूँजी पर 99 वर्ष की अवधि के लिये ईस्ट इंडिया कंपनी पाँच प्रतिशत प्रतिभूति वार्षिक सूद का भुगतान करेगी , ईस्ट इंडिया कंपनी निजी कंपनियों को आवश्यकतानुसार 99 वर्ष के पट्टे पर बिना मूल्य के भूमि देने का दायित्व होगा , संचालन कंपनी के हाथों रहेगा । भारतीयों का इससे कोई ख़ास सरोकार कभी न रहा और पाँच

प्रतिशत गायरंटीड रिटर्न देने के वायदे के कारण एक बड़ी रकम का बहिर्गमन देश के बाहर हुआ। यह सरकार की एक स्वार्थपरता ही थी कि वह अपने लक्ष्यों के लिये देश के भीतर रेल का विस्तार कर रही थी और पूरी तरह से देश के भीतर की समस्याओं से निपृह थी। यह रेल का व्यापार आरंभिक दौर में बहुत ही अलाभकारी था और व्यय की सारी धनराशि अंग्रेज पूँजीपतियों से आती थी। उनको एक गायरंटीड रिटर्न का वायदा था ही इसलिये उनसे क्या मतलब पैसा कहाँ जा रहा, मकान बनाने, रेल बनाने में या गंगा-हुगली में फेंकने में। भारतीय राष्ट्रवादियों ने रेलों का घातक प्रभाव देखा ही और इसकी व्याख्या भी की। लेकिन कालांतर में यह स्वीकार किया गया इससे एक नये औद्योगिक युग की शुरूआत हुई, अर्थव्यवस्था का गतिरोध खत्म हुआ परिवहन के तरीकों में करान्ति आई, राष्ट्रीय एकता की स्थापना में सहायक हुई।

यह धन की निकासी की व्याख्या प्रारम्भिक राष्ट्रवादियों की एक बड़ी उपलब्धि थी। हम अगर रेल और सिंचाई की थोड़ी तुलना कर लें तब परीक्षा में धन की निकासी और बिरुद्ध शोषण पर बेहतर लिख सकते हैं। 1900 के बाद पहले दो - तीन - पाँच वर्षों तक सिंचाई कार्यों पर सरकारी राजस्व का कुल व्यय लगभग 43 करोड़ थी जबकि रेलवे पर 359 करोड़। कृषि में लाभ भी था और सरकार उससे पैसा उगाहती भी थी, पर इसके विकास से बेपरवाह थी। सिंचाई नहरों के माध्यम से सस्ते परिवहन की संभावना भी थी। बात यहीं तक खत्म नहीं हो रही। सन 1951 तक केवल 9,30,000 लोहे के हल थे जबकि करीब 32 मिलियन लकड़ी के। अकार्बनिक रसायनों का ज्ञान न था, पशु मल और हड्डियों का उपयोग खाद के लिये हो सकता है इससे अज्ञानता थी। 1922-23 तक पूरी कृषि योग्य भूमि का केवल 2 प्रतिशत भाग उन्नत बीजों के अधीन था और पूरे देश में वर्ष 1939 तक केवल 6 कृषि विद्यालय थे और सिर्फ़ 1306 छात्र पढ़ते थे यह हालात उन्नीसवीं शताब्दी में और भी ख़राब थे। इस दारूण स्थिति का कौन उत्तरदायी था?

इसी आर्थिक शोषण की व्याख्या करते - करते प्रारम्भिक राष्ट्रवादियों ने कांग्रेस की स्थापना के विचार को जन्म दे दिया।

कांग्रेस की स्थापना एक बड़ा कदम था भारतीय इतिहास में।

अशोक - “सर वह जो एक भरान्ति है या हकीकत की यह एक हुक्मरानों की चाल थी एक संस्था का गठन करना ताकि देश में 1857 की तरह की करान्ति पुनः न हो सके।”

में “यह प्रश्न एक विवेचन की माँग करता है ।

कांग्रेस की स्थापना का एक मिथक है कि यह अंग्रेजों की चाल थी और एओ ह्यूम जो एक रिटायर्ड ब्रिटिश आईसीएस अधिकारी थे उनके माध्यम से एक संस्था का निर्माण किया जाये जो भारतीयों के भीतर की विद्रोही भावना को अभिव्यक्ति दे सके और पुनः कोई विद्रोह 1857 ऐसा न हो सके । इसके लिये तत्कालीन वायसराय डफ़रिन के निर्देश और मार्गदर्शन पर एक योजना बनायी गयी और ह्यूम ने निर्देश पर कार्य किया । यह मिथक यह कहना चाह रहा कि उस समय एक हिंसक क्रान्ति दस्तक दे रही थी, जो कांग्रेस की स्थापना के कारण बच गयी । यह धारणा यह कह रही कांग्रेस के ब्रिटिश शासन के साथ समझौतावादी तो रही ही अगर निष्ठावान न रही । यह बात को प्रतिपादित करने का सशक्त प्रयास किया गया । यह बात आज तक कही जाती है कि कांग्रेस शुरू से ही गैर राष्ट्रवादी संस्था रही है ।

यहीं से वह विख्यात सेफ्रटी वाल्ब का सिद्धांत जन्म लेता है । गरमपंथी नेता नरमपंथियों पर प्रहार करने के लिये अक्सर इस सिद्धांत का सहारा लेते हुये कांग्रेस का जन्म डफ़रिन के दिमाग़ की उपज बताते हैं । वह यह भी कहते हैं कि लक्ष्य राजनैतिक आज़ादी न होकर ब्रिटिश राज्य पर आसन्न ख़तरों से उसे बचाना था । इतिहासकार रजनी पाम दत्त ने इस सिद्धांत को स्थापित करने का भरपूर प्रयास किया । यह विचारधारा कांग्रेस के चरित्र पर गंभीर सवाल उत्पन्न कर रही और इसके दोहरे चरित्र की बात को समुख लाने का प्रयास करती है । रजनी पाम दत्त का तर्क कांग्रेस नेतृत्व के सम्पूर्ण चरित्र पर ही सवालिया निशान खड़ा करने का प्रयास कर रहा । इन सारी परिकल्पनाओं को एक ऐतिहासिक साक्ष्य बना देने में सात खंडों वाली एक रिपोर्ट की भूमिका रही है जिसके बारे में ह्यूम ने ही कहा है एक असंतोष देश में उबल रहा था । पर इस रिपोर्ट को भी समझने की ज़रूरत है । इन रिपोर्टों में कोई तारीख नहीं है । ह्यूम 1878 में कृषि और वाणिज्य विभाग के सचिव थे, वह कैसे गृह विभाग की फ़ाइलों में संचित असंतोष को पढ़ सकते थे, अगर सीआईडी विभाग की रिपोर्ट असंतोष की है तब भी । ह्यूम शिमला में नियुक्त थे और गृह विभाग की फ़ाइलें दिल्ली में थीं । तीस हज़ार मुखबिर का ज़िक्र मिलता है रिपोर्ट तैयार करने में, इतने मुखबिर आये कहाँ से? अगर ब्रिटिश सरकार पर क्रान्ति का आसन्न संकट था तब वह क्यों कई साल इंतज़ार करती रही?

एक तर्क डब्ल्यू सी बनर्जी का है जो 1898 के एक उनके बयान में आया कि एक ऐसा संगठन बनाने की आकांक्षा थी जो सामाजिक समस्याओं पर विचार करे । ह्यूम नहीं चाहते थे कि राजनैतिक मुद्दों पर बहस हो । जबकि हकीकत

इसकी ठीक उल्टी थी । यह संगठन राजनीतिक चर्चों तक सीमित था जिससे सरकार को भारतीय जनता के विचारों की जानकारी मिले । कांग्रेस के पहले दस साल के अधिवेशन इसकी पुष्टि करते हैं जिनकी चर्चा हम आने वाले क्लास में विस्तार से करेंगे । यहाँ तक डफ़रिन ने ही ह्यूम पर आरोप लगा दिया था कि वह सामाजिक सुधार की जगह राजनैतिक आंदोलन चला रहे वह भी वर्ष 1888 में ही एक भोज के समय । डफ़रिन के निजी दस्तावेज भी कांग्रेस की स्थापना में उनकी किसी भूमिका की बात नहीं कहते । ह्यूम ने कभी सामाजिक मुद्दों को लेकर कोई बैठक कभी भी आयोजित नहीं की । 1888 से ही डफ़रिन कांग्रेस के आलोचक हो गये थे और डफ़रिन ने बंगाली बाबुओं और मराठी बराह्मणों पर हमला करना आरंभ कर दिया था और ह्यूम को 1886 में ही धूर्त, पागल, बेर्मान कहने लगे थे । कर्जन ने तो सरे आम कहा था कांग्रेस लड़खड़ा रही है और मेरी आकांक्षा इसके अवसान को देखने की है । इन तथ्यों को नज़रदाज़ करके आज तक कहा जाता है कांग्रेस एक समझौतावादी संस्था थी और राज के इशारों पर चलती थी । यह इतिहास एक पेचीदी वस्तु है, इसके लिये संयम की आवश्यकता है और मस्तिष्क को पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिये ।

अशोक - “ सर हम लिखेंगे क्या, अगर कांग्रेस की स्थापना पर प्रश्न आता है । आप तो यही कह रहे कि यह मान्यता सही नहीं है कि अंग्रेज अपने हित के लिये इसकी स्थापना किये थे । ”

मैं - “ वह एक बड़ा प्रश्न है, उसके लिये हमें और तथ्य देखने होंगे और कांग्रेस के अधिवेशनों को और समझना होगा । ”

अशोक - “ सर यह लोग दिसंबर में तीन दिन की तमाशा करते थे, खाओ-पिओ और ऐश करो, कोई आंदोलन तो किये नहीं । ”

मैं - “आप एक प्रश्न एक साथ हल करो और दूसरे प्रश्न को एक में मत जोड़ो । तीन दिन का तमाशा अश्विनी दत्त ने कहा था और वह नरमपंथ बनाम गरमपंथ का संघर्ष था उसके लिये एक पूरा लेक्चर लगेगा । ”

अशोक - “ सर आप लिखाओ जो परीक्षा में लिखना है, बाकी हमारा ज्ञानवान से कोई लेना लादना है नहीं । हम कैसे लिखकर आप की तरह रैंक पा जायें बस यही बताओ सर, बाकी कैसे पढ़ना है कैसे हमको बताना है यह काम आपका है । हम तो जो आप कहोगे रट

कर कापी में लिख मारेंगे । अभी रात में जाकर इसको घोंट लेंगे । सर एक बात और बताइये, रजनी पाम दत्त को पढ़ें या न पढ़ें । ”

मैं - “ आपको कोई ज़रूरत नहीं वह पढ़ने की । अमर गुप्ता सर आयेंगे एक दिन और वह पतली किताबों पर अपना दर्शन देंगे । ”

मैंने आज की कक्षा की समाप्ति की घोषणा की । मैं अध्यापन में रमने लगा था । मैं एक बड़ी उपलब्धि पा चुका था , शायद मेरा चयन अब एक छोटी उपलब्धि हो चुकी थी इसके समुख । मैं अपने पिता के निगाह में असीम सम्मान प्राप्त कर चुका था । मेरी असफलतायें लोगों को प्रेरणा दे रही थी । मेरी माँ ने इतने पैसे कभी देखे ही न थे । उसको घर में चोरी होने का डर हर समय लगता रहता था । मेरे घर में रहन - सहन का स्तर थोड़ा बदल गया । मेरा छोटा भाई सुबह जलेबी और शाम को समोसा लेकर रोज़ आने लगा । मेरी माँ ने रिकरिंग डिपाजिट करा ली । यूनिवर्सिटी रोड पर मेरे विरोधी भी कहने लगे , जज्बा हो तो अनुराग ऐसा । मेरा विरोध करना अब किसी के लिये आसान न था ...

मेरे अश्क भी अब जश्न मनाने लग गये थे ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 184

मैं अगले दिन सुबह बद्री सर के पास गया । मैं उनका पैसा वापस करने लगा । सर गाँव चले गये थे और कल रात ही वापस आये थे , इसलिये उनको कोचिंग बंद होने और आरंभ होने के बीच के घटनाकरम का भान नहीं था ।

बद्री सर - “ अरे महराज तू त गजबै ज़िद्दी है । इ पैसा - कौड़ी के हिसाब होत रहे । अब हमका - तोहका रहै के संगेन बा । हमरे बिटिया के बियाहे में दै देहअ इस सब सूद जोड़ि के , काहे नाहक घरे वालन के हैरान केहे हअ । माता जी का सोचिहिं हमरे बारे में । माता जी त इहई कइहिं न इ बद्री से संतोष नाहीं भअ और हमरे बेटवा के जानि खाई गवा पैसा बरे । ”

मैंने सर से सारा क्रिस्सा बताया कैसे कोचिंग बंद होकर फिर आरंभ हुई और एक भीड़ बढ़ती जा रही हर बीतते दिन के साथ । मैंने यह भी बताया कि मुझसे यह पैसा सँभल ही नहीं रहा । मैंने कभी इतना पैसा न देखा न सुना ।

बद्री सर - “ इसको मुफ्त कर दो अब , जो आये दे न दे धन , जैसी उसकी मर्जी । ”

मैं - “ सर ऐसा ही है । लोगों की शरद्धा पर है । यह मुफ्त इसलिये नहीं कर रहा क्योंकि समाज में मुफ्त के चीज़ की कोई क़ीमत नहीं है । व्यक्ति क़ीमत अदा करता है , तभी कुछ कदर करता है । ”

बद्री सर - “ यह बात तो है । कुछ कीमत लेना ज़रूरी है , अपने भी मोटिवेशन के लिये । ईश्वर ने आपका अभियान सफल बनाया , मुझे भी चिंता थी नाम ख़राब होने की । ”

मैंने बद्री सर का पैसा वापस किया और अनुरोध किया कि आप शाम को आयें और माहौल देखें । सर ने कहा ज़रूर आऊँगा , शाम को । मैं वहाँ से अशोक सारस्वत के कमरे पर गया वह पास मैं ही रहते थे । मैंने कहा , मैं कमिश्नर साहब के यहाँ जा रहा , उनकी किताब का काम ख़त्म कर देता हूँ । मेरे पास अब समय कम है । मुझे बहुत पढ़ना पड़ता है कक्षा के लिये और यह दोहरा काम संभव नहीं है । अशोक को अपना हित कक्षा में दिख रहा था और वह भी चाहने लगे थे कि सिर्फ़ मैं पढ़ूँ और पढ़ाऊँ । उन्होंने कहा , “ सर गलती मुझसे ही हो गयी है । वह बेवकूफ़ विवेक रंजन कर रहा था परुफ़ रीडिंग उसको ही करने देते , मैंने बेवजह उसकी बुराई कर दी । अब जो हो गया वह हो गया , आजकल मैं इस काम को समाप्त कर दीजिये । ”

मैंने कहा , “काम हो गया है बस उनको सौंपना बाक़ी रह गया है । ”

अशोक ने मेरे साथ चलने की इच्छा ज़ाहिर की , मैं उनके साथ साहब के यहाँ गया । साहब को पांडुलिपि देखकर बहुत प्रसन्नता हुई । मैंने उनकी कवितायें तो ठीक की ही थीं कुछ और लिखकर कविताओं की संख्या 101 कर दीं । कमिश्नर साहब बहुत प्रसन्न हुये और कहा , किताब तो अच्छी बन जायेगी ।

अशोक - “ सर अच्छी नहीं बहुत अच्छी बन जायेगी । आप किताब का नाम चाहे यह रख दें ... 101 कवितायें मेरी स्याहियों से । ”

कमिश्नर साहब - “ अनुराग नाम यह ठीक नहीं है क्या जो मैंने रखा है ... मेरे ख़बाबों के घराँदों से । ”

मैं - “ ठीक है सर नाम । नाम में कोई ख़राबी नहीं है । यह लेखक का विशेषाधिकार है , नाम रखना और प्राक्कथन लिखना । आप प्राक्कथन भी थोड़ा बेहतर लिखियेगा और किताब के अंतिम कवर पृष्ठ पर अपने बारे में लिख दीखियेगा अपने चित्र के साथ । मेरा सुझाव है कि किताब में चित्र कम से कम जाये तो अच्छा होता है और अगर न जाये तो सबसे बेहतर है । आप लोगों को अपनी रचना से रुबरू होने दीजिये , आप चित्र डालकर अपनी रचनात्मकता से पाठक का ध्यान मत भटकाइये । मैं देखता हूँ बड़े अफ़सरों के लेखन में एक प्रवृत्ति अपने चित्रों और परिवार के चित्रों को रचना के साथ डाल देते हैं , यह आपका अपनी रचनाधर्मिता पर अविश्वास होना भी दर्शाता है और आप लेखन का उचित सम्मान भी नहीं कर रहे । ”

कमिशनर साहब - “ मैं किताब प्रेस में भेज देता हूँ । इलके बाद की बात आपसे करता हूँ । तुम दिन में एकाध बार आ जाया करो । मेरी किताब की प्रगति पर निगरानी कर लो , अगर कहो तो मैं एक कार मुहैया करा दूँ तुम्हारे लिये । मेरे घर पर दो- तीन कार खड़ी ही रहती हैं , उनका कोई काम यहाँ होता नहीं । ”

मैं “ नहीं सर उसकी कोई ज़रूरत नहीं । मैं आ जाऊँगा , वैसे आपका काम हो ही गया है । आप एक बार किताब छप जाने दें , आप एक छपी हुई कापी पुस्तक की पढ़ लें , मैं भी पढ़ लेता हूँ और सत्य प्रकाश सर को दिखा दें । कुछेक अशुद्धियाँ होंगी ही, उसको दूर कर देंगे । यह एक बेहतर किताब का रूप पा जायेगी और पाँच अगस्त को आपका नाम एक अलग तरीके से होगा । ”

सर के चेहरे पर संतोष और गौरव भाव देखा जा सकता था । मैं घर आया , देखा आंटी का पतर था । वह विमोचन समारोह में आना चाहती थी । उसने यह भी लिखा कि ऋषभ - शालिनी और मिसेज आहूजा भी आना चाहते हैं । मेरी माँ मेरा पतर खोलकर पहले ही पढ़ लेती थी । उसको एक चिंता थी लोग कहाँ रुकेंगे । इतने बड़े आदमियों के लिये तो योग्य जगह मेरे पास है नहीं । मैंने कहा तुम साफ- साफ लिख लिख दो अपनी समस्या , वैसे आंटी है बहुत समझदार वह सब इंतज़ाम करके आयेंगी । ऋषभ के पास धन की अतिशयता है और शालिनी तो साक्षात् कुबेर पुत्री ही है , तुम निश्चिंत रहो । मेरी माँ इस विमोचन से बहुत उत्साहित थी । उसने जीवन में कोई ख़ास जलसा न देखा था सिवाय इलाहाबाद के दशहरे के । यह तो एक शहर के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति का जलसा था जिसमें प्रदेश का प्रथम नागरिक मुख्य आतिथि था और उसका बेटा प्रमुख अभिकर्ताओं में से एक था । वह जानना बहुत चाहती थी इस कार्यक्रम के बारे में पर मैंने कहा , शाम को मेरी क्लास है मुझे पढ़ने दे । मैं शाम को चल दिया अपनी कक्षा ओर कांग्रेस के स्थापना के सच को बयाँ करने एक ठसाठस भरी उत्सुक आँखों को मुदित करने के लिये ।

“कांग्रेस की स्थापना का सच क्या है ? क्या यह एक अप्रत्याशित घटना थी ? क्या यह कोई ऐतिहासिक दुर्घटना थी ?

हमें इसके लिये उभर रही राष्ट्रवादी चेतना को समझना होगा , 1860 और 1870 के दशक में उभर रही चेतना । यह कांग्रेस की स्थापना उस उभर रही चेतना की पराकाष्ठा थी । जनता की बढ़ रही जागरूकता, सक्रिय

बुद्धिजीवियों के राष्ट्रीय हितों के लिये संघर्ष की छटपटाहट और एक मंच की चाहत जो अपनी बात को कह सके । आप 1860 के पश्चात् की माँगों को देखें जो बाद में कांग्रेस के मंच से भी मुखरित होती रहीं ... वह क्या थीं ... आयातित सूती वस्त्रों पर आयात शुल्क का मुद्दा, हथियार रखने की आज़ादी देना, प्रेस की आज़ादी, सेना पर खर्च में कटौती, आपदाओं के समय सहायता, प्रशासनिक सेवाओं का भारतीयतरण, भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपियन नागरिक पर आपराधिक मामलों की सुनवाई का अधिकार देना, अंग्रेज मतदाताओं के बीच प्रचार करना कि वह उस दल को वोट दें जो भारतीय हितों का ख्याल रखे ... वर्ष 1875 से 1885 तक यह माँगें मुखर रहीं और लड़ाकू युवा राष्ट्रवादी इसकी माँग करते रहे ।

कांग्रेस की स्थापना के पहले ही कई संस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी मसलन इंडियन एसोसिएशन, मद्रास महाजन सभा, बांबे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन और इस दौरान कई राष्ट्रवादी अखबार निकलने लग गये थे जिसका सिलसिला आगे भी चलता रहा । 1885 तक आते-आते एक अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन का जन्म अवश्यंभावी लगने लगा था । 1875 के बाद से ही आयात शुल्क के मुद्दे पर आंदोलन लगातार चल ही रहा था और उसी समय नौकरी में भारतीयों के प्रवेश का मुद्दा, प्रेस ऐक्ट और आर्मस ऐक्ट

का मुद्दा आ गया । 1881-82 में बागान मज़दूर और स्वदेशी आवरजन अधिनियम के खिलाफ़ आंदोलन चला । 1883 में इलबरट बिल के समर्थन में आंदोलन चला जिसमें प्रावधान था भारतीय न्यायाधीश यूरोपीय नागरिकों पर आपराधिक मुक़द्दमे की सुनवाई कर सकते हैं । 1883 में देशव्यापी आंदोलन चलाने के लिये धन इकट्ठा करने का कार्य आरंभ हुआ और अंग्रेज मतदाताओं से अपील की गयी कि वह भारतीय हित रक्षक उम्मीदवारों को वोट दे । यह सारी घटनायें कह रही कि 1885 के पहले से ही अंदर ही अंदर कुछ उबल रहा था जिसकी स्वाभाविक परिणति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस थी । यह एक प्रयास था राष्ट्र निर्माण का । हम अगर 1885 से 1905 तक का कांग्रेस का कार्यक्रम देखें तब हमारी राष्ट्र - निर्माण के प्रयासों की धारणा और पुष्ट होती है । 1888 के इलाहाबाद अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता जार्ज यूल ने की उसमें यह प्रस्ताव पास किया गया कि हिंदू या मुसलमान प्रतिनिधि के बड़े वर्ग को किसी प्रस्ताव पर आपत्ति हो तो वह प्रस्ताव पास नहीं होगा । 1889 के बंबई अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता विलियम वेडरबन ने की उसमें विभिन्न समुदायों की जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व देने की बात कही गयी । यह आरंभ से ही एक धर्म निरपेक्ष समन्वयवादी देश के निर्माण के आग्रही थे । कलकत्ता के अधिवेशन में दादा भाई नौरोज़ी ने कहा कि देश की व्यापक राजनैतिक माँगों के लिये यह एक मंच है और सामाजिक

सुधारों के लिये यह एक उचित मंच नहीं है । इनका पहला काम था जनता को राजनैतिक रूप से शिक्षित करना और जनमत तैयार करना और एक उपनिवेशनाद विरोध राष्ट्रवादी विचारधारा का निर्माण करना । “

दिनेश- “ क्या सर ह्यूम की कोई भूमिका न थी । ”

मैं- “ ह्यूम की बड़ी भूमिका थी । उनका राष्ट्रवादियों ने इस्तेमाल किया । उनके होने से शक की गुंजाइश कम थी । ह्यूम के रहने से सहूलियत हुई एक मंच को तैयार करने में और अंग्रेजों को यह लगा कि यह मंच उनके हित के विरुद्ध नहीं जायेगा । शुरुआती दौर पर एक नवोदित राष्ट्रवाद सत्ता के आतंक से नहीं लड़ सकता था । ”

कक्षा में किसी ने पूछा और कहा आप सेफ्टी वालव के सिद्धांत को पूरी तरह नकार रहे

मैं - “ हाँ मैं इसको नकार रहा और एक लाइटिंग कंडक्टर का सिद्धांत दे रहा । राष्ट्रवादियों ने ह्यूम का इस्तेमाल एक लाइटिंग कंडक्टर की तौर पर किया । आप को मेरे आगे के व्याख्यानों से यह और भी स्पष्ट हो जायेगा । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 185

प्रारम्भिक राष्ट्रवाद क्या था ? इस राष्ट्रवाद

की चाहत क्या थी ? इसके उद्देश्य क्या थे ? इसका जन-आंदोलन में विश्वास कितना था ? यह कुछ प्रश्न हैं जो एक विवेचन की माँग करते हैं, आन्दोलन के विकास यात्रा को समझाने के लिये । हम इन सवालों का जवाब तलाशते समय 1904 तक अपने को सीमित रखते हैं क्योंकि वर्ष 1905 राष्ट्रीय आंदोलन में एक विभाजक रेखा के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित होती है । वह विभाजक रेखा क्यों है, इस सवाल- जवाब से अपने को दूर रखते हुये हम दिसम्बर 1885 से बंगाल विभाजन के अंग्रेजों की योजना के कार्यक्रम तक अपने को आज की कक्षा में सीमित रखते हैं ।

राष्ट्रवादियों ने देश से धन का बहिर्गमन देख ही लिया था और यह चार तरीकों से मुख्यतः हो रहा था - विदेशी ऋण पर सूद , 1857 की क्रान्ति के बाद भारतीय अंग्रेज सेनाओं के बीच 2:1 का अनुपात कर दिया गया और एक अंग्रेज सिपाही पर देशी सिपाही की तुलना में दुगना खर्च आता था , साम्राज्य का हित बनाये रखने के लिये अनेक युद्ध किये गये जिसका खर्च भी हम को ही वहन करना था । आप यह भी कह सकते हैं भारत के खर्च पर

उपनिवेश को जीतना और उन पर अधिकार बनाये रखना एक अद्भुत उद्यम था राज का । रेल पर पूँजी निवेश किस तरह बहिर्गमन कर रही इस पर हम विस्तार से बात कर ही चुके हैं । भारत पर शासन करने में होने वाले खर्च का एक बड़ा भाग इंग्लैंड में होता था । भारत सचिव ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल का सदस्य होता था पर उसका वेतन भारतीय करदाता देते थे । इंडिया आफिस का खर्च हमारी ही जेब को ढीला करता था । इसको होम चार्जेस कहा जाता था । ब्रिटिश भारत के शासकों के लिये भारत ही विदेश है और विलायत ही अपना देश ।

यह गूढ़ व्याख्या और ब्रिटिश उदारवाद का नक्ली मुखौटा उतारने का सशक्त प्रयास राष्ट्रवादियों की पहली महत्वपूर्ण उपलब्धि थी ।

इनकी प्रारम्भिक माँग क्या था ? अन्य उपनिवेशों की तरह भारत में स्वायत्त शासन , आईसीएस की परीक्षा भारत में हो , एक स्वतन्त्र न्यायपालिका हो , ज्यूरी द्वारा मुक़दमों की सुनवाई हो , शस्त्र अधिनियम कानून वापस हो , भारतीय सेनाओं में भारतीयों को अधिक उच्च पद मिले , नागरिक अधिकारों पर संवेदन शीतला हो , व्यापक गरीबी को दूर करने पर विचार किया जाये , संपत्ति का दोहन नियन्त्रित हो , घरेलू मदों और सैनिक ख़र्चों पर कटौती हो , भारतीय उद्योग को बढ़ावा दिया जाये , तकनीकी शिक्षा का विकास हो , चुंगी - आबकारी करों का ख़ात्मा हो ।

दिनेश - “ सर यह तो एक अभिजन वर्ग को संतुष्ट करने की माँग ज्यादातर है , आम जनता के मुद्दे इसमें कहाँ है ? ”

मैं - “ इन माँगों की व्याख्या भी आवश्यक है । परीक्षा भारत और इंग्लैंड में हो यह कहा जाता है कि यह अभिजन वर्ग को संतुष्ट करने से संबंधित है किन्तु यह व्यापक विषयों से जुड़ी है । भारतीयकरण से नस्लवाद पर प्रहार और संपत्ति के दोहन पर यह रोक लगाता है क्योंकि श्वेत अधिकारियों को दी जाने वाली मोटी तनख्वाहें एवम् पेंशन की रकम इंग्लैंड चली जाती थी और साथ ही यदि भारतीय सेवा में आते तो प्रशासन भारतीयों के लिये अधिक संवेदनशील बनता । ज्यूरी से सुनवाई , स्वतन्त्र न्यायपालिका नस्ली समानता की बात करता है । शस्त्र अधिनियम हमें नैतिक रूप से नपुंसक बना रहा था क्योंकि सिवाय राज के अपने लोगों के और कोई शस्त्र रख नहीं सकता था । यह कहना कि आरंभिक राष्ट्रवादियों ने केवल अंग्रेजी प्राप्त शिक्षा समूह , उद्योगपतियों , ज़मींदारों के हितों की ही चिंता की यह हमारी राष्ट्रीय आंदोलन की समझ की कमी को दर्शाता है । इनके अधिवेशनों में नमक कर , विदेश में भारतीय कुलियों पर किये जा रहे अन्याय , वन प्रशासन से उत्पन्न कष्ट - इन सब मुद्दों से जुड़े प्रस्ताव शामिल रहे हैं । वर्ष 1891 से 1895 तक प्रत्येक

वर्ष वन क़ानूनों के निंदा प्रस्ताव पास किये गये । इंडियन एसोसिएशन ने 1880 के दशक के अंत से ही चाय बागानों में अनुबंधित शरमिकों की दुर्दशा को उजागर करने का आंदोलन चलाया । इनकी प्रेस की आज़ादी का संघर्ष तो नायाब ही था । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का संगठन कोई विशाल व्यापक आरंभिक दौर में न था । यह प्रेस पर बहुत निर्भर रहा करती थी अपनी बात जनता तक पहुँचाने के लिये । 1885 में कांग्रेस की स्थापना करने वालों में एक तिहाई पत्रकार थे । कई निडर समाचार पत्रों ने आरंभिक काल में ही जन्म ले लिया था मसलन जी सुब्रमण्यम की द हिंदू, स्वदेश मित्रम, तिलक का केसरी और मराठा, सुरेंद्र नाथ बनर्जी का बंगाली, शिशिर कुमार एवं मोतीलाल घोष का अमृत बाज़ार पत्रिका गोपाल कृष्ण गोखले का सुधारक । समाचार पत्र कांग्रेस की बात छापते थे और गाँव का इक्का- दुक्का- पढ़ा- लिखा व्यक्ति पूरे गाँव को सुनाता था और गाँव में चेतना का प्रसार हो रहा था । 1870 में ब्रिटिश ने भारतीय दंड संहित में धारा 124 A जोड़ दी और यह कार्य उस धारा के दायरे में आ गया । राष्ट्रवादियों ने इसकी भी काट निकाल ली और उदारवादियों द्वारा ब्रितानी समाचार पत्रों में ब्रिटिश हुक्मरानों की आलोचना को बिल्कुल उसी तरह अपने समाचार पत्रों में छापना आरंभ कर दिया । अब यह क़ानून उन पर तभी लगाया जा सकता था जब मूल लिखने वाले को भी दोषी करार दिया जाये और मुकदमा चलाया जाये । यह आसान न था ।

1877 में अकालपीडितों पर अमानवीयता के मुद्दे पर समाचारपत्रों में आलोचना बहुत मुख्य हो रही थी और राज ने वरनाक्यूलर प्रेस एक्ट पास कर दिया । यह देशी समाचार पत्रों के लिये था । यह मूलतः अमृत बाज़ार पत्रिका पर था, पर रातो- रात अमृत बाज़ार पत्रिका बंगाली से अंग्रेज़ी हो गया और राज ठगा सा देखता रह गया । इस एक्ट का व्यापक विरोध हुआ, सार्वजनिक सभायें हुईं ।

औपनिवेशिक विधायिका का राष्ट्रीय हित में इस्तेमाल किया । यह 1892 के एक्ट से संतुष्ट न थे, अपना विरोध सार्वजनिक किया । सार्वजनिक वित्त के मुद्दे को प्रमुखता से मुखर किया । यह सब निःसंदेह राष्ट्रवादी थे, देश के लिये समर्पित थे और एक ऐसी ज़मीन तैयार कर रहे थे जिस पर भावी जन-आंदोलन विकसित हुआ । यह राज के प्रति निष्ठावान बिल्कुल न थे चाहे इनमें करान्तिकारिता का अभाव ही क्यों न दिख रहा हो । हमें इनका मूल्यांकन राज की असीम ताकत, देश में व्याप्त राजनैतिक चेतना और उस समय की लड़ाकू शक्ति के आलोक में करना चाहिये ।

इन सब उपलब्धियों के बावजूद इनकी कमियाँ तो थी ही । यह कांग्रेस एक दिसम्बर माह का तिरदिवसीय समारोह ही होता था, प्रस्ताव पारित करे

, शिकायत का पुलिंदा बनाओ और पेश कर दो । आरंभिक दौर की माँगों में काउंसिल में सुधार की माँग के कारण इनकी आलोचना होती थी । इनकी आलोचना का कारण इनके लक्ष्य नहीं इनकी कार्य पद्धति है । इनकी जीवन शैली अभिजात्य थी, इनका जनता से कोई ख़ास जु़ड़ाव न था, यह लोगों की संघर्ष शक्ति में यक़ीन नहीं रखते थे । पर 1882 से 1904 तक इन्होंने काउंसिल सुधार से ज्यादा आर्थिक मामलों का ज़िकर किया । हम इन नरमपंथियों को चरणों में देख सकते हैं ।

कांग्रेस के पहले पाँच अधिवेशन में संख्या 72 से बढ़कर 2000 हो गयी । 1887 और 1888 के अधिवेशन का आधार विस्तृत था । इन पाँच सालों में कांग्रेस अध्यक्ष भी कौन- कौन हुआ.... 1886 कलकत्ता दावा भाई नौरोज़ी - पारसी , 1887- मद्रास बदरुद्दीन तैयबजी - मुस्लिम, 1888 इलाहाबाद - जार्ज यूल - अंग्रेज.. दो प्रस्तावों का ज़िकर में पहले कर ही चुका हूँ जब धार्मिक संवेदनशीलता एवं आनुपातिक प्रतिनिधित्व की बात कांग्रेस पहले पाँच अधिवेशन में ही कर गयी थी । 1895-92 के बीच मुस्लिम प्रतिनिधि की संख्या 13.5 प्रतिशत थी जो 1893 से 1905 के बीच घटकर 7.1 प्रतिशत रह गयी । कांग्रेस के नेता इस गिरे हुये प्रतिशत से चिंतित न थे इसका कारण यह था कि मुसलमानों का कोई प्रतिस्पर्धी संगठन तब तक विकसित न हुआ था ।

इसी दौर में तिलक का नेतृत्व सामने आ रहा था । उग्रपंथ पनप रहा था । गणपति उत्सव, शिवाजी उत्सव के सहारे जनता के बीच जाने का प्रयास हो रहा था । 1896- 97 में लगान की नाअदायगी का प्रयोग हो रहा था, बहिष्कार आंदोलन को आज़माने का प्रयास 1896 में सूती कपड़े पर आबकारी के मुद्दे पर हो रहा था । 1897 में चापेकर बंधुओं ने रैड और ऐयरस्ट की हत्या कर दी । अंग्रेजों ने तिलक पर राजदरोह का आरोप उनके केसरी में प्रकाशित लेख पर लगाकर दो वर्ष की कैद दे दी । कांग्रेस ने सार्वजनिक रूप से विरोध किया । अब एक नया लड़ाकू वर्ग विकसित हो रहा था जिसका उस कांग्रेस से विरोध होने लगा जो सिफ़्र प्रस्तावों को पास करे । एक गरमपंथी तेवर आ रहा था जो हक की लड़ाई लड़ना चाहता था । कांग्रेस ने बीज जो भी लगाये हो पर ब्रिटानी शासन के लिये ख़ंजरों की फ़सल तैयार हो रही थी ।

सिविल सर्विसेज़ फोरम की प्रतिष्ठा दिन- प्रतिदिन बढ़ रही थी । इस बढ़ती प्रतिष्ठा का मुख्य कारण था एक विश्लेषण प्रक्रिया प्रक्रिया को समझने की । इलाहाबाद विश्वविद्यालय या यों कहें ज्यादातर संस्थानों में एक पिटी-पिटायी लकीर पर ही पढ़ाई होती है । वस्तुओं को आपस में जोड़ने का कोई प्रयास नहीं होता । मैं घटनाओं को जोड़

रहा था । कांग्रेस के उद्घव को ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीति और संपदा के दोहन से एकीकृत कर रहा था । गाँधी के साथ अम्बेडकर की तुलना कर रहा था ।, गाँधी और सुभाष के संघर्ष को एक नये तरीके से देखने का प्रयास कर रहा था । मैंने भारतीय संविधान में गाँधी वादी मूल्य निकाल दिये तो संविधान की प्रस्तावना से ही पूरा संविधान पढ़ा दिया । कक्षा में बैठने की जगह ही नहीं मिलती थी । अशोक, दिनेश, राजीव शाही कक्षा में आये और देखा जगह ही नहीं । अशोक ने कहा, “ यार यह तो ठीक नहीं । हम ही यज्ञ आरंभ किये हमको ही आरती नहीं मिल रही । श्याम नंदन के पास वह बैठ गये ।

श्याम- “ यह कक्षा कितने दिन चलेगी ? ”

अशोक - “ यह या तो कोई ज्योतिषी बता सकता है या विधाता ? ”

श्याम- “ क्यों ? ”

अशोक - “ यह हैं इस समय सूरज के रथ पर सवार । इस समय जो बोल दें यह सही है । यह हैं बहुत बड़े गोलीबाज । आप लोग इनको पैसा देकर जाने हम बिना पैसा दिये ? ”

श्याम- “ आपने पैसा नहीं दिया क्या ? ”

अशोक - “ यह हमने कब कहा ? हमारे कहने का मतलब यह है कि मैं इनको बहुत पहले से जानता हूँ । यह बगैर पैसा लिये बँधवा वाले हनुमान जी को न पढ़ावें, हमारी - तुम्हारी क्या बिसात । इस समय माल गिनना इनका मूल लक्ष्य है । ”

श्याम- “ सर लालची हैं क्या ? ”

अशोक - “ यह हम सब कहा मैंने, हम तो बस यही कहा कि इनको बगैर पैसे के पढ़ाने में कोई रुचि नहीं और हो भी क्यों... कौन हम इनके नात- रिश्तेदार हैं । हम सब कोई इनसे कम फ़र्ज़ी थोड़े हैं । ”

श्याम - क्या यह फ़र्ज़ी आदमी हैं ? ”

अशोक - “ यह हम कब कहा । अब इनके पास बहुत काम है, थोड़ा बहुत लंतरानी अगर नहीं मारेंगे, तब काम कैसे चलेगा ? पढ़ाई में घाल- मेल करना पड़ता है । ”

श्याम- “ आप कह रहे कि लंतरानी भी मारते हैं घाल- मेल भी करते हैं , इसका क्या मतलब ? ”

अशोक - “ यह कहा मैंने । लंबी क्लास चलाने के लिये कुछ नाटक करना होता है । ”

श्याम- “ यह नाटककार हैं ? ”

अशोक - “ यह कब कहा मैंने ? मैंने कहा नाटक करना पड़ता है । बगैर नाटक के कौन पैसा देगा बताओ ? इस इलाहाबाद में लोग चाय पीकर दुकानदार को पैसा नहीं देते । अशोक पांडेय को देखो जो पीछे बैठा है । यह आज तक नेतराम की कचौड़ी का पैसा न दिया होगा । यह बँगले के कुकुर को देखकर गरियाने लगता है । यह कहता है कि हमको झूर रोटी नहीं मिल रही और यह कुकुर बिस्कुट खा रहा । यह कहता है डीएम बनूँगा तब कुकुर पालने वालों पर फ़र्ज़ी केस करूँगा , यह रात में बड़े लोगों के यहाँ ढेला मारता है , इससे पैसा निकालना आसान है ! ऐसे - ऐसे मायावियों से पैसा कोई महा मायावी ही निकाल सकता है । हम आज तक फ़ीस कहीं जमा नहीं किये , हर जगह फ़ीस माफ़ कराये पर यहाँ देना पड़ा । इनसे बड़ा मायावी कोई इलाहाबाद में पैदा नहीं हुआ । देवकीनन्दन खतरी को इनकी ऐयारी का क्रिस्सा लिखना चाहिये था । वह चुनार के फ़र्ज़ी ऐयारों पर लिख गये । चुनार के ऐयार इनके यहाँ कप - प्लेट धोने की नौकरी न पायेंगे । एक नाटक है गैर मामूली दास्तान की , वह यह ठोकते रहते हैं । भाई क्या गैर मामूली काम किया यह बताओ ? आप जन्म लिये , पढ़ाई में निल बटे सन्नाटा तो नहीं कहूँगा पर कोई उपलब्धि तो ख़ास है नहीं । आप सफल रहे , ऐसे इलाहाबाद में कई सौ लोग सफल रहे पर इनकी दास्तान गैर मामूली बाक़ी सब की मामूली । एक ही ख़ास बात है कई विभाग के टापर पोज़ीशन होल्डर पढ़ रहे क्लास में । ”

श्याम- “ क्यों पढ़ रहे ? ”

अशोक - “ यही तो सिफ़त है । देखो माल बेचना भी एक कला है , वह इनको आती है । भाषा के लफ़ाज़ तो हैं ही यह । अब बाटा का जूता घंटाघर चौराहे पर बेचो तो बरांड भी है और लोकेशन भी है । लखानी का जूता कोठा पार्च में है , बरांड भी कमजोर और लोकेशन भी । रँक है , भाषा है , ज्ञान कम भी हो तो चलता है । ”

श्याम- “ क्या ज्ञान कम है इनके पास ? ”

अशोक - “ यह कब कहा मैंने ? मैं तो यह कह रहा कि ज्ञान से ज्यादा यह भाषा पर निर्भर हैं । देखो वह आ रहे चलो अब कापी पर उतार लेते हैं जो भी यह बाँचे । ”

मैंने क्लास में घुसते ही देखा कल की भीड़ में और वृद्धि हो गयी थी । मैंने भी अपना भाव बढ़ाने की कोशिश की और कहा कि अब कोई और नये लोग न आयें । क्लास भर चुकी है । इस क्लास में अब जगह नहीं है ।

अशोक ने श्याम नंदन से कहा , “

देखो फ़र्ज़ी गीरी । इनका बस चले तो यह के पी कालेज के भाषण देने वाले मंच से पढ़ाकर माल लूट लें , पर गरीब - निरीह छात्रों को डराना ही है । अब आज जो आया है वह पैसा देकर ही जायेगा । “

मैंने कक्षा का आरंभ बंगाल विभाजन से किया । बंगाल विभाजन के कारण क्या थे और इसने राष्ट्रवाद को कैसे प्रभावित किया । सबसे आवश्यक है हमें समझना राष्ट्रवाद के प्रसार में बंगाल विभाजन की भूमिका और इस घटना ने गाँधी के आंदोलन तक देश को आंदोलित रखा । एक ऐसा कदम जो शायद सायास था पर अनायास ही कुछ और दे गया । एक सायास से अनायास की यात्रा है ... यह बंगाल का विभाजन

उस समय बंगाल की आबादी सात करोड़ पचासी लाख थी । यह गुलाम भारत का एक चौथाई भाग था । बिहार और उड़ीसा भी इसी के भाग थे । इतने बड़े राज्य का प्रशासन चलाना कठिन था , पर यह प्रशासनिक कारणों से लिया फ़ैसला न था वरन् कारण राजनैतिक थे । एक अविभाजित बंगाल बड़ी ताक़त था , इसका विभाजन बंगाल को कमज़ोर करता । मक्सद क्या था ? बंगालवासियों को दो प्रशासनिक हिस्सों में बाँटकर उनके प्रभाव को कम करना , मूल बंगाल में बंगालियों को अल्पसंख्यक कर देना । मूल बंगाल में एक करोड़ सत्तर लाख बंगाली और तीन करोड़ सत्तर लाख उड़िया और हिंदी भाषी को रखने की योजना थी । इस विभाजन में एक और अन्तर्निहित विभाजन था .. धार्मिक आधार पर विभाजन ताकि मुस्लिम साम्प्रदायिकता भड़के । ढाका बहुसंख्यक मुस्लिम आबादी वाला एक प्रांत बन जायेगा । पूर्वी बंगाल में मुस्लिमों की एकता स्थापित हो जायेगी और पूर्वी झिला कलकत्ता के प्रभाव से मुक्त हो जायेगा । हम यह सुरक्षित रूप से लिख ओर कह सकते हैं बंगाल विभाजन भारतीय आंदोलन पर एक सुनियोजित हमला था ।

इसका व्यापक विरोध हुआ । ऐसी - ऐसी जनसभाएँ हुईं जो आंदोलन में पहले नहीं हुईं थीं । आनंद मोहन बोस और सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने दो विशाल जनसभाओं को संबोधित किया एक जनसभा में 50 हज़ार और दूसरी में 75 हज़ार लोग इकट्ठा हुये । आंदोलन एक नयी राह पर था । जो पिछले पचास साल में हासिल न हुआ था वह इस आंदोलन से हासिल हो रहा था । 1905 के बनारस अधिवेशन में गोखले ने बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया । 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में अध्यक्ष दादा भाई नौरोज़ी

ने अन्य उपनिवेशों की तरह भारत में अपनी सरकार के गठन की माँग की । गरमपंथियों की आंदोलन पर पकड़ मजबूत हो रही थी , नरमपंथ और गरमपंथ में आंदोलन के तरीकों में मतभेद भी उभर रहे थे । बहिष्कार कपड़ों तक ही सीमित न था वरन् यह सरकारी स्कूलों , अदालतों उपाधियों तक विस्तारित हो रहा था । एक उद्देश्य था , प्रशासन को पंगु बना देना । एक स्वावलंबन का नारा सामने आ रहा था । मुकदमों का निपटारा अदालतों में जाकर नहीं पंच अदालतों द्वारा किये जाने की बात हो रही थी और किया भी जा रहा था । आत्मनिर्भरता, आत्मशक्ति , गाँवों का आर्थिक और सामाजिक पुनरुत्थान एक ध्येय बना । रचनात्मक कार्य होने लगे । सामाजिक सुधार , बाल विवाह पर रोक , शराबखोरी पर लगाम लगाने की बात हो रही थी और सामाजिक कुरीतियों से संघर्ष होने लग गये । सांस्कृतिक क्षेत्र पर प्रभाव सबसे ज्यादा पड़ा । बँगला साहित्य का स्वर्ण काल था यह । आमार सोनार बँगला प्रेरणा स्रोत बना जो बाद में बँगला देश का राष्ट्रगान बना । कला के क्षेत्र में अवनीनदर नाथ टैगोर ने पाश्चात्य आधिपत्य तोड़ा और देशज एवम् पारंपरिक चित्रकला से प्रेरणा ली । भारतीय प्राच्य संस्था स्थापित हुई जिसकी पहली छात्रवृत्ति नंद लाल बोस को मिली ।

इन उपलब्धियों के बावजूद साम्प्रदायिकता का ज़हर भी देखने को मिला । पारंपरिक- रीति- रिवाजों पर अतिशय बल दूरगामी रूप से नुकसानदेह साबित हुआ । इसी आंदोलन के मध्य में कांग्रेस विभाजित भी हुई , जिसकी चर्चा हम विस्तार से करेंगे ।

हम इस आंदोलन की तुलना गाँधी के दर्शन से भी कर लेते हैं , हलाँकि तब तक गाँधी का दर्शन भारत नहीं आया था । यह एक असहयोग आंदोलन ही था । अगर लोग बहिष्कार करेंगे - स्कूलों, अदालतों, सरकारी वस्तुओं और सरकारी संस्थाओं का तब तो फिरंगियों का राज समाप्त ही हो जायेगा । यही तो बाद में गाँधी ने भी कहा । पर एक अंतर था इस आंदोलन और गाँधी के आंदोलन में - गाँधीवादी अहिंसा की हठधर्मिता और करो की ना अदायगी का आह्वान न था इसमें । दूसरा , गाँधीवादी रचनात्मकता एवम् जन- सत्याग्रह के ये क्षणिक पूर्वाभास थे , पर हम निश्चित रूप से कह सकते हैं 1907 के अंत और 1908 के आरंभ में महाराष्ट्र और बंबई में जो दो बड़े कदम उठाये गये वे तिलक की ग्रमदलीय गतिविधियों से जुड़े थे - शराब की दुकानों पर सामूहिक धरना , बंबई के मराठा - बहुल कामगार वर्ग से संपर्क स्थापित करने का प्रयास । इसमें पहला कार्य गाँधीवादी तकनीक का पूर्वाभास है । इससे दोहरे लाभ हुये - सरकार के करों में कमी और सांस्कृतिकरण ।

हम इन आंदोलनों को तथ्यों के बजाय विश्लेषण में देखने का प्रयास करते हैं । सवाल तथ्यों से नहीं आते पर बगैर तथ्यों के विश्लेषण को सजीवता प्राप्त

नहीं होती । हमारा प्रयास होना चाहिये तथ्यों का प्रयोग करके विश्लेषण करें न कि केवल तथ्यों को ही लिखें । जीवन की सार्थकता भी विश्लेषण में ही है । हम हर समय यह सोचें ...

ज़िंदगी तू मेरा हिसाब कर
मैंने सिफ़्र साँसें ही ली हैं या कुछ हासिल भी किया है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 187

यह प्रतिदिन का पढ़ाना एक कठिन कार्य था , दुर्स्थ ही हो रहा था मेरे लिये । मुझे कई बार लगता था एकाध दिन की राहत मिल जाती, पर एक जुनून था जो मुझे आगे खींच रहा था हर दिन । मैंने कभी इस तरह का समयबद्ध जीवन जिया ही न था , जैसा अब जी रहा था । विक्रम के कंधे पर हर वक्त बेताल सवार रहता था । एक दिन की कक्षा समाप्त करो , समाप्त होने के बाद के कुछ क्षणों में ही दूसरे दिन की कक्षा के भार की नैतिकता मेरे कंधों पर । मेरी कक्षा में कुछ बहुत ही जहीन क्रिस्म के छात्र थे जिनके सवाल कभी-कभार मुझे अनुत्तरित कर देते थे पर मैं घुमा-फिरा कर वह दिन निकाल लेता था और अगले दिन पढ़कर विस्तारित कर देता था । मैंने उनसे पैसा लिया था , यह मुझे हर वक्त सालता रहता था । मैं लाख कोशिश करूँ पर मैं अपने अंदर उमड़ रहे सवालों को संतुष्ट नहीं कर पाता था । हर रात के अँधेरों में अंदर एक ही प्रश्न उभरता था , “ क्या यह पैसा लेना उचित था ? ” हर प्रश्न- उत्तर में मैं कितनी भी कोशिश करूँ , मैं अपने अंदर के ज़मीर को संतुष्ट नहीं कर पाता था । मैं सारे सवालों का समापन यह कहकर करता था कि मैं एक बेहतर गुणवत्ता परक अध्यापन कर रहा हूँ । मुझे कक्षा के अंदर भी मेधावी छात्रों में सुधार दिख रहे थे और मुझे यह विश्वास होने लगा था , इसमें से कई सफल होंगे । अशोक ने कई बार क्लास में ही कहा , “ सर आपने यह न आरंभ किया होता तो मेरा तो न होता और अब लगता है हममें से कई का चयन होगा , बस थोड़ा विधाता साथ दे दे तो हम भी छोटी - मोटी गैर मामूली दास्तान लिख लेंगे । सर एक बात और बताइये दिमाग़ में यह गैर मामूली दास्तान वाला खुराफ़ाती विचार आपके कहाँ से आया । “ यह सवाल यक़ीनन रुचिकर था ।

मैंने जवाब में कहा , “ कई बातों का जवाब एकदम सपाट- सीधा नहीं होता । यह जो ईश्वर है न , वह क्या चाहता है , किससे चाहता है , उसी से क्यों चाहता है , यह किसी को नहीं पता । पर हर शब्द को खबाब देखना चाहिये , समाज लाख कहें तेरे खबाब कद और हैसियत से बड़े हैं पर उसे हर बार बगैर किसी को जवाब दिये खुद से कहना चाहिये , यह कद और हैसियत समाज

नहीं व्यक्ति खुद बनाता है । शायद यहीं से यह विचार पनपता है जब व्यक्ति कुछ अलग करने को प्रेरित होता है । हर व्यक्ति कीं शारीरिक संचना तो एक ही होती है पर नायक हर कोई नहीं बन पाता क्यों ? इस सवाल को सोचना , हम इस पर विस्तार से वार्ता करेंगे ।”

मैंने कांग्रेस के विभाजन पर बात आरंभ की । “सन 1895 के बाद से ही धीरे- धीरे एक नयी लड़ाकू पीढ़ी आंदोलन में आ रही थी जिसको बंगाल - विभाजन ने और आंदोलित कर दिया । उसका अनुनय - विनय की राजनीति में यक़ीन न था । यह नयी पीढ़ी लड़ना चाहती थी , अपने अधिकारों के लिये न केवल अंग्रेजों से वरन् उनसे भी जो सीधे संघर्ष में यक़ीन नहीं रखते थे । बंगाल विभाजन के समय से ही यह नयी पौध आकरामक हो चुकी थी । 1905 के बनारस अधिवेशन के दौरान जब गोखले अध्यक्ष थे उस समय गरम पंथी स्वदेशी आंदोलन को बंगाल से बाहर भारत के अन्य हिस्सों में ले जाना चाहते थे जबकि नरमपंथी बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे । नरमपंथी अभी भी याचिकाओं और शांतिपूर्ण तरीकों में यक़ीन रख रहे थे जबकि नया लड़ाकू नेतृत्व इस भिखमंगी राजनीति से आजिज़ आ चुका था । उग्रपंथी आंदोलन को बढ़ाना चाह रहे थे उपनिवेशी सरकार से असहयोग करना चाह रहे थे ।

1906 के कलकत्ता अधिवेशन में तिलक का नाम अध्यक्ष पद के लिये प्रस्तावित हुआ पर नेतृत्व का संघर्ष सामने आ गया । वयोवृद्ध नेता दादा भाई नौरोज़ी को अध्यक्ष चुना गया , संकट दूर करने के लिये । पर आश्चर्य तो तब हुआ जब उन्होंने उग्रपंथी तरीके का समर्थन कर दिया और कांग्रेस के लक्ष्य को पुनः पारिभाषित करते हुये स्वशासन को कांग्रेस का लक्ष्य बताया । 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में स्वदेशी , बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा और स्वशासन के चार प्रस्ताव पास हुय, पर इन प्रस्तावों का मसविदा इतना अस्पष्ट था कि पूरे साल इनकी व्याख्यायें होती रहीं । गरमपंथी आज़ादी की लड़ाई चाहते थे और इनकी मान्यता थी कि जनता जागरूक हो चुकी है और व्यापक आंदोलन आरंभ करने का समय आ गया है । नरमपंथियों के नेता फ़िरोज़शाह मेहता थे वह किसी आकरामक कदम के पक्षधर न थे । पर हक़ीकत यह थी कि दोनों खेमे गुमराह थे । सूरत अधिवेशन में यह अफ़वाह ज़ोरों पर थी कि कलकत्ता अधिवेशन के चारों प्रस्ताव नरमपंथी खत्म करना चाह रहे और संघर्ष हो गया । नरमपंथियों ने गरमपंथियों को कांग्रेस से बाहर कर दिया । उपनिवेशवाद जीत गया । । गरमपंथ नरमपंथ की ताकत था और नरमपंथ गरमपंथ की ढाल, पर यह समझने में यह दोनों खेमे असफल रहे । जो भी सहूलियतें प्राप्त हो रही थीं वह गरमपंथियों के भय से प्राप्त हो रही थी और जो भी आतंक गरमपंथियों पर हो रहा था उसको ढाल की तरह

नरमपंथी कुछ कमजोर कर देते थे । 1916 तक यह बिलगाव रहा और लखनऊ सम्मेलन में दोनों जाकर एक हो सके ।”

मैं पढ़ाकर घर आया ही था कि कमिशनर साहब की कार आ गयी । ड्राइवर ने यह कहा कि साहब ने तुरंत बुलाया है । अशोक, दिनेश, शाही मेरे साथ ही आये थे कोचिंग से घर पर वह भी साथ चलना चाह रहे थे । मैं उनको लेकर साहब के घर गया ।

साहब के यहाँ सत्य प्रकाश मिश्रा सर भी बैठे थे । उनको आमंत्रित शाम के भोजन पर इसी लक्ष्य से किया था कि वार्ता हो जाये । एक छपी हुई पुस्तक हाँथ में थी मेरे ख्वाबों के घराँदों से .. सर का चेहरा कान्तिमय था । सत्य प्रकाश मिश्र सर ने कहा, “अनुराग तुमने उर्दू का प्रयोग कुछ ज्यादा कर दिया है । मैंने कविताओं पर निशान बना दिया है, थोड़ा उर्दू शब्दों को हिंदी से स्थानान्तरित कर दो ।”

मैं वैसे ही बहुत परेशान अपनी कोचिंग से । मेरे पास कोई समय ही नहीं अब इनकी फालतू कविता भी ठीक कर्लूँ । पर मैं क्या कर सकता था, सर को ना कहने से तो मैं रहा । मैंने पूछा, क्या फ़र्क़ पड़ रहा इससे ?

सत्य प्रकाश सर - “यह साफ़- साफ़ लग रहा कि कविता संग्रह में दो लेखक हैं । तुमने जो कवितायें जोड़ी हैं वह अलग लग रहीं । यह किताब सबके हाथ जायेगी, इतने लोग विमोचन समारोह में रहेंगे, यह ठीक नहीं लग रहा । तुमने लिखा अच्छा है, एक बार और देख लो ।”

अशोक - “सर इससे साहब का नाम होगा । एक व्यक्तित्व में कई व्यक्तित्व । साहब का प्रशस्ति गान और होगा । यह हिंदी - संस्कृत - उर्दू समेत तमाम भाषाओं के जानकार हैं । हम लोग हल्ला फैला देंगे, साहब को उर्दू आती है और अगली रचना यह उर्दू में कर रहे । साहब का बहुत नाम होगा ।”

सर ने धूरा अशोक की तरफ़, अशोक समझ गया कि मामला सही नहीं बैठा । वह बात बदलते हुये बोला, सर भीड़ ज़रूरी है विमोचन समारोह में । डेढ़-दो सौ आदमी तो मैं ही ले आऊँगा ।

कमिशनर साहब बहुत प्रसन्न हुये और बोले इतने आदमी कहाँ से आयेंगे ?

अशोक - “सर यह तो मैंने कम संख्या बताया मैंने, पाँच सौ भी हो सकते हैं, थोड़ा भोजन का इंतज़ाम कर दीजिये ।”

साहब - “वह कैसे ?”

अशोक - “सर की कोचिंग में सत्तर लोग हैं । कोचिंग उस दिन बंद कर देंगे और सबसे कहेंगे आप अपने 6/7 मित्र लेकर आओ, विमोचन भी है और

भोजन भी । साहब आपका नाम है, विमोचन है, कोचिंग के परबुद्ध छात्र है और साथ में जल- जोग है । साहब पूरा चौक का दशहरा मेला होगा और आप जब बोलने आयेंगे तब हम लोग दो मिनट ताली बजायेंगे और जब आप बोल चुकेंगे तब हम लोग खड़े हो जायेंगे और बगल वालों को काँचकर खड़ा कर देंगे और स्टैंडिंग ओवेशन देंगे धारा- प्रवाह करतल -ध्वनि के साथ । साहब प्रेस रहेगी ही और अगले दिन मुख्यपृष्ठ पर ... न भूतों न भविष्यतो कमिश्नर सत्यानंद मिश्रा की कविता संग्रह इस वर्ष की श्रेष्ठ संग्रह । हमारे दो- चार परिचित पत्रकार हैं, उनको समीक्षा लिखकर दे देंगे, बस साहब वह छप जायेगा और आपका जयकारा ही जयकारा और कोचिंग के लोग हवा फैलायेंगे कि किताब बहुत अच्छी है । पूरे ज़िले के कर्मचारियों को लगा देंगे किताब ख़रीदों और किताब बेस्ट सेलर हो जायेगी । साहब, अब माल कितना भी अच्छा हो बेचने के लिये प्रचार तो खुद ही करना पड़ता है । यह समाचार भी पेपर में छप जायेगा, दस दिन बाद कि सत्यानंद मिश्रा की किताब बेस्ट सेलर हो गयी । “

कमिश्नर साहब सारी बात को पूरी तन्मयता से सुन रहे थे, उनका रोम- रोम पुलकित था । उन्होंने मुझसे पूछा, आप की कोचिंग में 70 लोग हैं? मेरे बोलने के पहले अशोक ने कहा, “आज सत्तर हैं कल पचहत्तर हो सकते हैं आप की पुस्तक विमोचन के दिन 100 भी हो सकते हैं, सर की कोचिंग में माघ मेला का भूला- भटका शिविर सरीखा माहौल है, जो भी पथभ्रमित, दिग्भ्रमित है आ जाओ रास्ता दिखाना मेरा काम है, बस थोड़ा शुल्क दक्षिणा की तरह दे दो वह भी आपकी शरद्धा पर है । “

कमिश्नर साहब अति प्रसन्न हुये और कहा आयोजन शानदार होना चाहिये । मेरा भाई, उसका परिवार, उसकी ससुराल, मेरी पत्नी के सारे रिश्तेदार, मेरे पिता, मेरा परिवार और मेरी बहन प्रतिक्षा दिल्ली से आ रही । यह यादगार कार्यक्रम होना चाहिये ।

मेरे मस्तिष्क पर एक प्रहार में जागरत हो गया यह सुनकर ...

मेरी बहन प्रतीक्षा दिल्ली से आ रही

मैं खो गया ...

रास्ते में दिनेश ने कहा ... सर कहाँ खो गये ... मैंने इतना ही कहा

शबनम से लिख रहा चाँद की परछाई पर

एक ख्वाब

मैं कमिशनर साहब के घर से वापस आया । मैं थोड़ा प्रसन्न कम था इस बात से कि फिर से पढ़ो उनकी कवितायें और सुधारो । मन में खीझ भी आ रही थी , क्या बेवजह का नाटक है , यह नाटक क्यों कर रहे हैं । उसी समय मुझे प्रतीक्षा का ख्याल आया , सारी खीझ चली गयी और रुमानी ख्याल आने लगे । मेरी माँ ने इतना हँगामा किया कि तस्वीर भी उसकी ठीक से न देखी थी , अब तो तस्वीर भी नहीं है । मेरा मन उसकी तस्वीर देखने का करने लगा , कल्पना लोक में मैं विचरने लगा , मेरी स्याहियों को ताक़त मिल गयी । मेरे दिल में नायाब ख्याल आया , इसी किताब में एक कविता उस पर लिख देता हूँ और बता दूँगा यह कविता तुम पर लिखी है मैंने

मैंने कहा अपने से ही ... लिखता हूँ एक कविता अलग सी ... एक दम अलग जो संवाद को जन्म दे ...

तूने जो लिखा है
क्या वह मेरे पर है ?
मेरे लिये है ?

नहीं तो , मैं तो सिर्फ़ अपने आप पर लिखता हूँ
अपनी तन्हाइयों में अपने ही तन्हा ख्यालों पर लिखता हूँ
अपनी खामोशी में छुपे जज्बातों पर लिखता हूँ
अपने गम अपनी खुशी पर मैं लिखता हूँ
हाँ यह बात और है
तू हर एक में शामिल है ।

यह तो बन गयी । इसको डाल देता हूँ किसी कविता की जगह या जोड़ ही देता हूँ , क्या पता चलेगा साहेब को । मैं यह सोच ही रहा था कि माँ की आवाज़ आयी ... “ मुन्ना यह किसकी किताब है जो तूने नीचे कमरे में छोड़ दी । ”

मुझे याद आया कि जब मैं साहब के यहाँ से आया था तब वह किताब मैंने नीचे ही मेज पर रख दी थी । मैं नीचे गया, माँ प्राक्कथन पढ़ रही थी और बोली इसमें तुम्हारा भी नाम है । मैंने देखा कि साहब ने धन्यवाद ज्ञापित करने की एक पूरा शृंखला बनायी थी जिसमें अपने परिवार के लोगों के साथ मेरा भी नाम था ...” मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँ अनुराग शर्मा का जिन्होंने मेरी किताब की प्रस्तुति रीडिंग की । इनके सहयोग के कारण यह पुस्तक समय से प्रकाशित हो सकीं और व्याकरण का कुछ बेहतर ख़याल हो सका । “

मेरी माँ की प्रसन्नता की प्राकाष्ठा न थी । इतने बड़े आदमी ने अपनी किताब में बेटे को स्थान दिया वह भी उसके ज्ञान के कारण वह भाविभोर हो गयी, उसकी विह्वलता की सीमा न थी । वह शोर करने लगी, मेरे पिताजी, मेरे भाई- बहन सबको इकट्ठा कर लिया और वह पेज बार- बार पढ़वाने लगी । मैं समझ गया कि इसका काम हो गया अगले कुछ दिन तक का, यह सामने का बनिया, वह मुन्नू दूध वाला, वह सब्जी वाला सबको बता मारेगी और मौसी के यहाँ तो कल ही जायेगी और मामा को तो इत्तिनान से बतायेगी ।

मैं किताब लेकर ऊपर आया और जैसा सर ने कहा था वैसा ही करने लगा, पर यह शब्द का परिवर्तन, अदला- बदली आसान काम होता नहीं । जैसे ही आप शब्द बदलो भाव कमजोर होने लगते हैं, पर कोशिश करके वैसा ही कर दिया जैसा सर ने निर्देश दिया था ।

मैं सुबह - सुबह किताब लेकर सत्य प्रकाश सर के पास गया । उन्होंने कहा, “ तुम सोये नहीं क्या? रात में ही कर दिया । ”

मैं - “ सर मेरे पास पढ़ाने का महती दायित्व है और हर समय उसका तनाव रहता है । मैं यह किताब जब तक रखे रहूँगा तब तक एक अतिरिक्त तनाव बना रहेगा । मैंने सोचा इससे निजात पाऊँ, इसीलिये रात में ही कर दिया । ”

सर ने किताब देखी, अलटा - पलटा कुछ पढ़ा और कहा ठीक है दे दो उनको ।

मैं “ सर यह ख़याल कहाँ से आया उनको, किताब प्रकाशित करने का । ”

सर - “ कुछ जोड़-जाड़ के लिखते थे वह पर इनकी मेहराल महान बेशहूरी की पेड़ है । वहीं नशा चढ़ा दी । यह सज्जन व्यक्ति हैं ज़मीन से जुड़े हैं । इनकी पत्नी बड़े घर की हैं । वह आईटीओ के सेवा से प्राप्त सब्जी- फल- दूध से पली हैं । इनके पिता लखनऊ के प्रतापी अधिकारी हैं, आप सुनोगे ही देर - सबेर उनके बारे में । वह पूजा के फूल भी आईटीओ से मँगाते थे और

दीवाली की मिठाई उसी दुकान को वापस बैंच देते थे जहाँ से लोग खरीदकर ले आते थे । एक बार तो एक आदमी दीवाली की मिठाई खरीद रहा था साहब को देने के लिये , लखनऊ का राम आसरे मिठाई वाला वाला उनको जानता था । उसने कहा आप कैश रूपया ही दे दो , अभी आप देकर आओगे और उनका डराइवर आयेगा बेचने वापस । अब ऐसी प्रतापी व्यक्ति की पुत्री हैं , कुछ तो खास करेंगी ही । आप देखना विवेचन के दिन इनके ससुर का जलवा ।

अनुराग थोड़ा अशोक को कंट्रोल करो । मैं जानता हूँ उसको । वह है जहीन पर बैंद्राज हो जाता है । वह मज़ाक़ बना रहा था इतने सीनियर अधिकारी का । उनको कह रहा , यह उर्दू में लिखेंगे । मैंने आँख न दिखायी होती तो वह और बोलता । वह हिंदी विभाग में भी यही करता है । अब तुम लोग सिविल सर्विसेज़ में साहित्य लेते हो , ज़ाहिर सी बात है थोड़ा बेहतर ही पढ़ोगे । उससे कहा कि तुम गद्य पढ़ाओ , उसके बाद कक्षा रेनू सक्सेना की होती है । उसको कामायनी पढ़ाने को कहा है , वह कामायनी भी पढ़ा देता है । चलो कुछ पढ़ा भी दिया कोई बात नहीं , यह कहने की क्या ज़रूरत कि रेनू सक्सेना को कुछ नहीं आता । इस विश्वविद्यालय में जो भी आईएएस की परीक्षा देता है वह सबसे बड़ा क़ाबिल मानने लगता है । उसको थोड़ा कॉन्ट्रोल करो । “

मैं - “ जी सर । ”

सत्य प्रकाश सर - “ यह किताब दे दो । काम भर का हो गया है । अब तुम पढ़ाओ छात्रों को । ”

मैं - “ जी सर । सर एक अनुरोध है । ”

सर - “ बोलो । ”

मैं - “ सर एक दिन नाटक - रंगमंच - उपन्यास- कहानी पर व्याख्यान दे देते । बहुत लोग हिंदी ले रहे और यह थोड़ा विवेचन माँगता है । आप बोल देते , इस पर । ”

सर - “ यह यार बहुत लंबा है । चलो सोचते हैं । कितने लोग तुम्हारी कक्षा वाले हाल में आ सकते हैं । सर 150 लोग आ सकते हैं , हाल बड़ा है । ”

सर - “ ठीक है । अपने विभाग के बच्चों को भी बोलता हूँ आने को । तुम भी पढ़ लो , मैं बता देता हूँ कहाँ से पढ़ना है । तब थोड़ा बेहतर हो जायेगा । तुमसे जो रह जायेगा वह मैं बोल दूँगा । ”

मैं - “ ठीक है सर । ”

मैं सर के यहाँ से वापस आया तो देखा घर में अशोक और दिनेश जलेबी खा रहे थे । मेरी माँ हर आदमी को जलेबी - मिठाई खिलाती रहती थी । अब इतना पैसा ख़र्च कैसे हो , यह भी समस्या थी । हर दिन कोई न कोई पैसा देता ही थी । एक - दो हज़ार रुपया रोज़ ही आता था और मेरे आते ही पूछती थी आज कितना मिला । दाढ़ ही पैसा लेता था , वह आते ही दे देता था माँ को । मेरे पास पहले से ही इतना पैसा था कि मैं अब पैसा लेने के मूड़ में रहता ही न था पर यह सब लोग चक्कर में रहते थे , जो भी और मिल जाये ।

मैंने आते ही अशोक से कहा , “ सर थोड़ा नाराज़ हो गये थे जो तुम कमिशनर साहब का मज़ाक़ बना रहे थे । सर ने कहा वह बहुत मुँहफट है और रेनू सक्सेना की कामायनी की क्लास ख़राब कर दी उसने , पहले के क्लास में ही पढ़ाकर । ”

अशोक - “ अब लोगों ने पूछा कक्षा में तब मैंने बता दिया जो वह पूछें , हम क्या करें जब वह पढ़ा ही नहीं पा रही । मेरी नियुक्ति होना चाहिये थी और हो गयी उसकी , उसका जुगाड़ था । उसको आता कुछ नहीं है पर हो गयी है लेकचरर । मैं तो पहले साहब से उर्दू की जगह तमिल कहने वाला था कि साहब सुहाग के नुपूर की तरह लिखेंगे संगम युग पर वह भी तमिल भाषा में , फिर मैंने नहीं कहा । यह कमिशनर हैं आदमी काम के हैं , इसलिये इनको पटा के रखना ज़रूरी है । ”

मैं - “ तुम्हारा वह काम हुआ एसडीएम से । ”

अशोक - “ सर वह तो बड़े बाबू को साध कर साहब से फ़ोन करा दिया था । वह नायाब तहसीलदार से एसडीएम बना है । वह तो डर ही गया , फ़ोन आने पर । उसके हाथ से तो फ़ोन का चोग़ा ही गिर गया होगा । मैंने उसको किताब का झरामा आपका नाम सब चेंप मारा है । यह भी कहा कि साहब की सौ किताब ख़रीद कर लोगों को बाँटो । उसने कहा ख़रीद तो लें पर इतनी किताब बाटेंगे किसको । मैंने कहा आप तहसील के हर तालाब को बाँटो , साहब का नाम हर तालाब में तैरता हुआ होना चाहिये । सर वह अपना आदमी हो गया है , वह ढंग की तहसील माँग रहा । वह सर दिलाना है , एक बार आप कह दीजिये मिल जायेगी । ”

मैं - “ ढंग की तहसील कौन सी होती है । ”

अशोक - “ सर जिसमें विकास योजनाओं का पैसा ज्यादा आये और विकास पर ज़ोर कम हो । ”

मैं - “ ऐसी कौन सी तहसील है ? ”

अशोक - “ बताऊँगा सर । ”

मैं - “ शाम को गाँधी पढ़ाना है थोड़ा पढ़ने दो , शाम को क्लास में मिलते हैं । ”

अशोक - “ जी सर । ”

वह चला गया । मेरी माँ बार- बार वहीं पेज पढ़ती थी जिस पर मेरा नाम लिखा था । अशोक ने बता दिया था कि सर ने पूरी किताब सुधारी है नहीं तो कमिशनर साहब के कृत्यों से तो दो- चार अक्षर इतने अत्याचारित महसूस कर रहे थे और इतने नाराज़ हो गये थे , वह आमरण अनशन पर जाने वाले थे , पर अ , आ वाले स्वर ने समझाया यह कहकर कि हमारे साथ सब अन्याय कर रहे , यह सरकार तो सबसे ज्यादा कर रही । बड़े- बुजुर्ग अक्षरों ने आमरण अनशन रोका नहीं तो एकाध अक्षर तो जतिन दास की तरह भूख हड़ताल करके शहादत को प्राप्त हो गये होते ।

माँ की प्रसन्नता की अतिरेकता थी । उसने कहा , “मुझे तीन - चार किताब दो यह वाली । ”

मैं - “ क्या करेगी ? ”

माँ - “ मैं बाँटूँगी , लोगों को पता तो चले इतना बड़ा साहब क्या लिखा है तुम्हारे बारे में । ”

मैं - “ किसको देगी ? ”

माँ - “ बाबू , जीजा . भैया और भगवती बाबू की पत्नी । ”

मैं - “ भगवती बाबू के यहाँ क्यों ? ”

माँ - “ बहुत शेखी बघारती है । मुन्ना तू भी लिखना । अशोक कह रहा था , साहेब कुछ नहीं है अनुराग सर के सामने । ”

मैं - “ माँ वह साहब हैं यही बहुत है , बाकी तो सब पीछे- पीछे चलता है । ”

माँ - “ तुम भी साहब हो गये हो । ”

मैं - “ माँ , मैं किताब लिखूँगा तब तुझको समर्पित कर दूँगा । ”

माँ - “ यह क्या होता है ? ”

मैं - “ किताब पर नाम लिखकर उसको सारा शरेय दे देना । ”

माँ - “ अपने पिता जी को भी देना । मेरा नाम अकेले होना ठीक नहीं है । ”

मैं - “ ठीक है , जब लिखूँगा तब तुझसे राय

लूँगा , मुझे शाम की क्लास के लिये पढ़ने दो । ”

माँ वहीं पेज देखती चली गयी ।

मार्च 1919 में रौलट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह पहला देशव्यापी जनसंघर्ष पर इस जनसंघर्ष की पृष्ठभूमि पहले के प्रयोगों पर आधारित है । 24 साल की उम्र में एक देश में असफल हो रहा वकील गुजराती व्यापारी दादा अब्दुला का मुकदमा लड़ने 1893 में डरबन जाता है और डरबन से प्रीटोरिया जाते समय पीटरमैटीजबरग रेलवे स्टेशन पर उसे नस्लवाद का शिकार होना पड़ा और एक इतिहास निर्मित होने लगा । वर्ष 1893 का गुमनाम वकील वर्ष 1915 में सत्याग्रह का अस्त्र- शस्त्र लेकर भारत की भूमि पर एक ख्याति लब्ध नायक के रूप में अवतरित होता है । चम्पारन- खेड़ा - अहमदाबाद के आंदोलन की सफलता ने जनता में उनके प्रति विश्वास को पुर्खा किया और अहमदाबाद प्लेग बोनस विवाद में 15 मार्च 1918 के पहला भूख हड्डताल करके स्वयम को पीड़ित करके विरोधी को अंदर तक प्रभावित करने के आंदोलन का एक ऐसा सिलसिला आरंभ हुआ जिसका परिणाम पूरे विश्व ने केवल देखा वरन् उपनिवेश वाद रंग- भेद के विरुद्ध आंदोलनों का विश्व व्यापक हथियार बना ।

यह सत्याग्रह था क्या? क्या था यह सत्य का आग्रह ? सत्य पर डटे रहना , पर क्यों? क्या यह शांतिपूर्ण प्रतिरोध था ? नहीं यह शांतिपूर्ण प्रतिरोध नहीं था । शांतिपूर्ण प्रतिरोध में प्रेम का स्थान नहीं होता , सत्याग्रह प्रेम से ही प्राण- वायु प्राप्त करता है । यह आत्मसमर्पण नहीं है , यह समर्पण का निषेध करता है और अत्याचारी की मनमर्जी के विरुद्ध एक उदात्त आत्मिक बल का प्रदर्शन है । यह एक शारीरिक अस्त्र नहीं है , यह एक नैतिक अस्त्र है यह अहिंसा से पूरी तरह संचालित है । यह अहिंसा संतों के लिये ही नहीं है , यह जनसाधारण के लिये है । असहयोग और सविनय अवज्ञा मिलकर सत्याग्रह की विचारधारा को पूर्ण करते हैं जिसमें अहिंसा एक प्रम आवश्यक तत्व है ।

यह सविनय अवज्ञा क्या है ? अन्याय पूर्ण क्रानून के विरुद्ध संघर्ष जिसमें पहले वार्तालाप हो , यदि वार्ता विफल हो जाये तब उस क्रानून की अवज्ञा करनी चाहिये । अवज्ञा सविनय भी हो और उदार भी हो और अहिंसक तो होनी ही चाहिये , अगर अहिंसा नहीं है तब तो वह उदार हो ही नहीं सकती । संपूर्ण सविनय अवज्ञा क्या है ? एक शांतिपूर्ण विद्रोह जिसमें राज्य के प्रत्येक क्रानून के अनुपालन से इंकार किया जाना है । अहिंसा कायरों का हथियार नहीं है । कायरता और हिंसा में हिंसा का चुनाव करो , कायरता का नहीं ।

सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह यह गाँधी जी के मूल मन्त्र थे ।

क्या है निष्क्रिय प्रतिरोध? क्या है इसमें निष्क्रियता? यह केवल इन अर्थों में निष्क्रिय है कि इसमें हिंसा नहीं है, सशस्त्रता नहीं है। इसमें सारतः प्रेम की शक्ति है।

यह सत्याग्रह एक सामाजिक परिवर्तन का वाहक है। इसमें नम्रता है, सादगी है, स्वैच्छिक सम्मानजनक आज्ञापालन है, आत्म शुद्धि है, उदात्तता है, कोई व्यक्ति प्रायश्चित से परे नहीं है, ग़लत कार्य के निराकरण का रास्ता अहिंसा से ही निकलता है, सभी का जीवन पवित्र है।

असहयोग क्या है - सारे सहयोग को बंद करना, निरक्षुश सरकार को तोड़ देना असहयोग से, अहिंसात्मकता से, आत्मपीड़न से, त्यागयुक्तता से।

अनशन का उद्देश्य क्या है? यह एक आत्म-शुद्धीकरण है।

दरस्टीशिप का सिद्धांत क्या है? व्यक्ति अपनी ज़रूरत से अधिक जो भी है उसका वह न्यासी है। वह अपने को धन का स्वामी न समझे वरन् न्यासी समझे। यह साम्यवादी और पूँजीवादी विचारधारा से भिन्न है और उसका विरोधी भी।

गाँधी के तमाम विचार अस्पृश्यता, मद्य निषेध, धर्म, राजनीति, साम्प्रदायिकता, धर्म निरपेक्षता पर नायाब हैं। औद्योगिक क्षेत्र में यह दरस्टीशिप सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण है।। अतिरिक्त धन समाज का है। कोई टकराव नहीं है शर्मिक और मालिक में क्योंकि क़ानूनन धन मालिक का है पर नैतिक रूप से समाज का है।

गाँधीवादी दर्शन का लक्ष्य हा सर्वोदय की प्राप्ति अर्थात् सबका भला.. पूँजी और शर्म का शांतिपूर्ण सह अस्तित्व। सत्याग्रह कहता है पूँजीपतियों पर विजय प्राप्त करने के लिये स्वयम को पीड़ा पहुँचाने का समर्थन किया। शर्मिक अपनी शिकायतों के निवारण के लिये अहिंसक असहयोग का आश्रय लें। हड़ताल कुछ शर्तों पर ही हो सकती है... कारण न्यायोचित हों, हड़ताल पर सर्वसम्मति हो, जीवनयापन के लिये हड़ताल के दौरान वैकल्पिक रोज़गार का इंतज़ाम हो, हड़ताल तभी हो जब सारे रास्ते बंद हो जायें।

एक दिन में ही सारे सिद्धांत गाँधी के बताना उचित नहीं है। मैं आगे भी व्याख्यायित करता रहूँगा।

मैं कक्षा ले ही रहा था कि कमिशनर साहब की कार आ गयी के डी मेमोरियल स्कूल में । एक हुंगामा छातरों के बीच । साहब को एक मंच मिला , एक प्रबुद्ध छातरों का मंच । एक मंच मिल जाये बोलने के लिये तब तो ज्ञान बघारना ही है , खासकर यह कहना मैं एक बहुत ही सामान्य परिवार से हूँ .. मेरे यहाँ कोई खास शिक्षा न थी .. मैंने ही धनुष तोड़ा पहली बार ... कई बार लोगों को अपने परिवेश को कमजोर, बेकार , अनपढ़ कहकर अपनी उपलब्धियों का बखान करने में सुविधा हो जाती है । कुछ ऐसा ही कमिशनर साहब ने भी किया । अब तो वह सर्जक हो चुके थे , उन्होंने छातरों को अपने विमोचन समारोह में आमंत्रित किया और यह भी कहा कि सारी जानकारी अनुराग दे देंगे । वह भीड़ इकट्ठा करने के रास्ते पर थे , पर्याग संगीत समिति का हाल भरना चाहिये । अशोक का मंत्र काम कर गया था , साहब को एक बड़ी आशा भीड़ की निरीह छातरों से । मेरी कोचिंग का भी सम्मान बढ़ गया , फ्रायदा उनको ही नहीं मिला मुझे भी मिला । मेरी प्रशस्ति गान में हिजाफ़ा.... साहब ने जाते - जाते कहा कल सुबह घर आना

मैं लौटकर घर आया आँटी का पत्र आ चुका था । आँटी ने सारा विवरण लिख दिया था । वह लोग कार से आ रहे थे , यात्रिक होटल में रुक रहे थे । मेरी माँ यहीं जोड़- घटाना कर रही थी कि कितना ख़र्च होगा ?

मैं भी चाह रहा था एक नयी ऊँचाइयाँ विमोचन समारोह से .. मैं मंच से बोलना चाहता था .. सबसे बेहतर .. सत्य प्रकाश मिशनर सर से भी बेहतर .. मैं अपना भाषण लिखने लगा ... और एक घटना चक्र बनाने की कोशिश करने लगा कि मुझे मंच से बोलने का मौक़ा मिले और मेरा जयकारा हो ...

मैं मंच लूट लूँ ... यह मेरा नया संकल्प.. मैं षड्यन्त्र भी कर सकता था इस कार्य के लिये अगर ज़रूरत पड़ी

मेरी महत्वाकांक्षा मुझे धकेल रही थी आगे ... और आगे

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 190

“एक सिविल सेवा के अभ्यार्थी के तौर पर ही नहीं एक नागरिक के तौर पर कुछ सवालों का जवाब जानना अति आवश्यक है । यह हमारी महान सांस्कृतिक- राजनीतिक परम्परा का एक भाग है ।

राष्ट्रीय आंदोलन का दर्शन क्या है और गाँधी दर्शन क्या है । जब आप यह समझ गये तब एक कदम और आगे बढ़िये और इन दोनों का अंतर्निहित संबंध क्या है ।

कैसे राष्ट्रीय आंदोलन ने आजादी के पश्चात् भारत को प्रभावित किया और क्यों भारत में लोकतन्त्र पनपा और पाकिस्तान लोकतन्त्र की छाया से भी दूर रहा । अगर गाँधी न होते तब स्वतन्त्रता संग्राम की रूप रेखा क्या होती ? गाँधी और सुभाष का संघर्ष क्या है ? राष्ट्रीय आंदोलन के ठहराव के वर्ष क्या थे ? क्या है दीर्घकालिक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रणनीति ? यह आजादी कैसे मिली ? यह अंग्रेजों ने स्वेच्छा से दी या उनके पास सिवाय आजादी देने के कोई और रास्ता न था ? यह विभाजन क्यों हुआ ? यह आजादी- विभाजन का दैध्य क्या है ? कांग्रेस की सफलता तो सब जानते हैं कांग्रेस की असफलता क्या है ? गाँधीवादी आंदोलन के विभिन्न चरण क्या थे और इस गाँधीवादी चरण में ऐसा क्या ख़ास था जो देश वही नेतृत्व सुहा रहा था , यह साम्प्रदायिकता हैं क्या? इसका विकास कैसे हुआ ?

यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनसे आप पूरे जीवन रूबरू होते रहेंगे । यह सवाल प्रारम्भिक परीक्षा , मुख्य परीक्षा या साक्षात्कार के लिये ही नहीं महत्वपूर्ण हैं , यह सवाल जीवन के लिये महत्वपूर्ण हैं । यह आपकी सांस्कृतिक धरोहर है जिस पर आपको गर्व होगा ही , पर जिस पर आपको गर्व है उसको जानना भी ज़रूरी है ।

यह सिविल सेवा की परीक्षा देना इस शहर का शौक है । परीक्षा देना शौक है ठीक से देना शौक नहीं है । काश शहर की तासीर में वह संघर्ष आज भी होता जो पहले हुआ करता था । एक आग अंदर जलनी चाहिये अगर वह आग अंदर नहीं जल रही तब आप यह काम बंद कर दें । एक ज्वाला अगर नहीं धधक रही सीने में तब ईश्वर की असीम अनुकंपा हो तब की बात मैं नहीं कर रहा पर आपके शौर्य से तो परीक्षा का गढ़ नहीं गिरने वाला । मैं एक बात और कहता हूँ साफ- साफ कहता हूँ , अपने अनुभवित सत्य के आधार पर कहता हूँ परम पिता अकर्मण्यता को हतोत्साहित करता है । वह निष्ठिरयता का निषेध करता है । और भी उपाधि हैं राम की पर मर्यादा पुरुषोत्तम ही सबसे अधिक लोकप्रिय क्यों है ? इसमें मर्यादा भी है और पुरुषार्थ भी है । एक मर्यादा विहीन पुरुषार्थ आकर्षित नहीं करता , किसी को नहीं करता , मुझे तो बिल्कुल नहीं करता और एक पुरुषार्थ विहीन मर्यादा कायरता का भान देती है । जीवन का एक ध्येय होना चाहिये , एक कायरता विहीन जीवन । एक कायर व्यक्ति अनैतिक होता है , अपने ही प्रति अनैतिक होता है । पहले आप अपने प्रति नैतिक बनो , देश - समाज की बात रहने दो बाद के लिये ।

फूलों की फसल में तुम छिपे हो , कसमसाती कपोलों के उठान में तुम हो ,
जिन तुम्हारे अपनों की आँखों को नहीं मिल रहा है ख्वाब एक खिलौने की ही
तरह सही तुम उनको ख्वाब ही नहीं एक बदली तासीर का ख्वाब दे सकते
सकते हो और दे भी रहे हो । जो नहीं है आज पास तुम्हारे और देखा था
उसने एक स्वप्न तुम्हारी आँखों की बैसाखियों से उनकी उम्मीदों की आग हो
तुम .. खाक उड़ाने वालों को देखने दो खाक में भी उड़ते तुम्हारे ख्वाब ...

यह तभी होगा जब अकर्मण्यता का नाश होगा । बनो एक समुंदर ... बनो
ध्येय नदियों का ... देखने दो किनारों से लोगों को तुम्हारे अंदर पनपती वह
ताक़त जो अपना सर फोड़ रही है चट्टानों पर , उन्हीं सर फोड़ती लहरों से
पिघल रही हैं चट्टानें दिन परति दिन और विस्तारित हो रहा है समुन्दर , यह
जिद है अज़ली तरन्नुम को समाहित किये हुये लहरों का जो जानती है समुंदर
का वजूद उसके पुरुषार्थ पर टिका है ।”

मेरे उद्बोद्धन के स्वर बदल चुके थे , मैं अपने अभियान को लेकर आकरामक
हो चुका था , बहुत आकरामक । मैं अब औरों की सफलता पर काम कर रहा
था । मैं औरों की सफलता का आग्रही इसलिये था कि यह कार्य मुझे एक
और नाम प्रदान करेगा । मैं अपनी सफलता से आगे की बात सोचने लगा था
। मुझे लगने लग गया कि अगर मैं विमोचन समारोह में बोला तब मुझे प्रसिद्धि
की प्राप्ति होगी , मैं प्रशंसा के प्रति उतावला भी हो रहा था और भूख भी
बढ़ती जा रही थी । मैं यह अवसर बग़ैर कहें प्राप्त करना चाह रहा था । मैं
कमिश्नर साहब के घर गया , अब मेरा स्वागत वहाँ बहुत हुआ करता था ।
एक तो उनके बहन के पति होने की संभावना थी ही और दूसरी बात दो सालों
से जो पुस्तक प्रकाशन से कोसों दूर थी वह नज़दीक ही नहीं आ गयी वरन्
एक तकरीबन तैयार कापी उनके हाथ में थी । सर मुझको देखकर प्रसन्न
हुये , उस समय प्रकाशक भी बैठा था । सर की किताब अंतिम रूप से तैयार
हो रही थी वह लखनऊ जाकर लोगों को आमंत्रित करने की सूची भी बना
रहे थे । मैंने बातचीत के दैरान कहा , “मंच सज्जा कैसे होगी ? ”

साहब - “ मंच बनाने का कार्य उत्तर मध्य सांस्कृतिक क्षेत्र के निदेशक को
सौंप दिया है । वहीं यह काम देख रहे हैं । ”

मैं - “ मेरा मतलब मंच पर लोगों की उपस्थिति , बोलने का करम और
संचालन से है । ”

सर -“ संचालन तो आशा अवस्थी करेंगी । वह ही करती हैं तमाम बड़े
कार्यकरम का इस शहर में । मैंने कई शासन के बड़े कार्यकरम का संचालन

उनसे कराया है । वह बहुत दक्ष हैं अपने काम में, बोलने के क्रम पर सत्य प्रकाश सर से बात करूँगा । “

मैं - “ सर बोलेंगे ? ”

साहब - “ मैं अनुरोध करूँगा पर पता नहीं वह बोलेंगे या नहीं । कई लोग बोलना चाह रहे, मुश्किल लग रहा सबको समाहित करना । कार्यक्रम बड़ा करने पर उबाऊ हो जाता है । ”

मैं - “ संक्षिप्त बेहतर होता है । ”

साहब - “ अनुराग कोचिंग बंद कर देना उस दिन । लड़कों से बोलना कि और लोगों को लेकर आयें । हाल की क्षमता तक्रीबन एक हजार है । राज्यपाल साहब ने कहा है कि हाल भरा हुआ होना चाहिये । अगर हाल खाली रहता है तब अच्छा नहीं लगता । मैं कौन रोज- रोज किताब निकालने - छपाने जा रहा । ”

उसी समय मेम साहब आ गयीं । वह तो ग़ज़बै थीं । मैडम बोली, “ पापा आ रहे हैं, उन्होंने विभाग में कह दिया है वकील, चार्टर्ड एकाउंटेंट, कर दाता काफ़ी बड़ी संख्या में आ जाएँगे । ”

साहब - “ कितने होंगे ? ”

मैडम - “ पापा के हेडकवाटर को बुलाया है, वह परसों आ रहा । वह सारा काम सँभालेगा । यह इलाहाबाद लखनऊ के अधीन आता है, उसमें कोई समस्या न होगी । ”

साहब - “ अनुराग छात्रों की भीड़ के अलग मायने होते हैं, वह प्रबुद्ध वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । उनको ज्यादा से ज्यादा ले आओ । ”

मैं - “ जी सर । ”

मेरी समस्या हल हुई नहीं । मैं वापस अशोक के कमरे गया और वहाँ ये दिनेश के घर गया और मैंने अपने मन की बात कही ।

दिनेश - “ भाई साहब इसमें आपका क्या फ़ायदा होगा ? ”

अशोक - “ सर यह सब चककर छोड़िये बस बढ़िया खाने का इंतज़ाम कराइये बाक़ी उनका मन हो इस किताब का विमोचन करें या वेद व्यास की महाभारत का हमसे क्या लेना - देना । हम तो भोजन पर लगेंगे, कौन सुनेगा इनकी अक्षरों से अत्याचार की गथा । ”

सर एक बात बता दें आपको किसी से कहियेगा मत, यह साहब जायेंगे नरक में, घोर नरक में । ”

मैं - क्यों.. कौन स गलत काम किया ?

अशोक - “ सर हज़ार आदमी को पीड़ा देंगे अपने अत्याचार से । एक पाप तो वर्णमाला का लगेगा उनको पीड़ा देने का और दूसरा पाप हज़ार आदमियों को उस अत्याचार से अति पीड़ित करने का । यह दोज़ख की आग में जलेंगे । हम लोग भी इस पाप के भागी हैं, हमको कल्पवास करना होगा, नहीं तो आग की कुछ लपटें हम लोगों तक भी आयेगी । ”

मैं - “ क्या यह विमोचन समारोह न हो तब ? ”

अशोक - “ यह कब कहा मैंने सर ? ”

वह भोजन अच्छा करायें उससे पाप का नाश न भी हुआ तब भी कुछ शमन तो होगा ही । सर वह जज साहब ठीक कहे थे, यह फ़ालतू टाइप की किताब की छपाई बंद होनी चाहिये । ”

मैं - “ तब मैं न बोलूँ इस समारोह में । ”

अशोक - “ सर आप यह फ़ैसला बोलने न बोलने का तब लेंगे जब आप को कोई कहे बोलने को, अभी तो आप आमंत्रण प्राप्त करने के जुगाड़ में हैं, एक जुगाड़ हो जाये तब दूसरी बात पर विचार हो । ”

मैं - “ यह जुगाड़ हो सकता है ? ”

दिनेश - “ भाई साहब वह कैसे होगा ? ”

अशोक - “ यार तुम भी एक महानै आत्मा हो, यहीं तो यह भी पूछ रहें हैं यहीं । ”

मैं - “ कोई सलाह ? ”

अशोक - “ सर आप सत्य प्रकाश सर से बात कीजिये । ”

मेरा दिमाग काम करने लग गया, काम बन गया ... एक और प्राड़.. एक और झूठ ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 191

मैं नयी - नयी तकनीक विकसित करने की कोशिश कर रहा था । मैं जानता था इस परीक्षा में सफलता आसान नहीं है, ख़ासकर सामान्य बैकग्राउंड के विद्यार्थियों के लिये । मैं भी एक सामान्य बैकग्राउंड का छात्र था, अति सामान्य । मैं यह जानता था कि एक सामान्य अभ्यार्थी की समस्या एक

जहीन विद्यार्थी की तुलना में एक अलग क्रिस्म की तो होती ही है बहुधा उसको हतोत्साहित भी करती है । यह हतोत्साहन से बचाना मेरी सबसे बड़ी चुनौती थी । इनके लिये नये रास्तों की तलाश करनी होगी , कुछ नये नाम के रास्ते जिस पर दिख रही कठिनाइयाँ आसान लगे यह ज़रूरी नहीं पर मृग-मरीचिका न साबित हो जाये , यह अति आवश्यक था । मेरे पास कोई अलादीन का चिराग तो था नहीं , पर लोगों को मुझ पर असीम विश्वास था और यह विश्वास मैंने अपने अथक प्रयास से अर्जित किया था । मेरे लिये इस विश्वास को बरकरार रखना था , विश्वास के टूटने का मतलब था मेरा अपना स्वयम का ख़त्म हो जाना । मुझे उन छात्रों से धीरे - धीरे लगाव होता जा रहा था जो मर मिटने को तैयार थे और उनसे दुराव हो रहा था जो जीवन में आसान रास्तों की तलाश कर रहे थे । इस संघर्ष में कोई आसान रास्ता तो आज तक इजाद हुआ नहीं और हुआ भी है तो मुझे नहीं पता । मुझे असफलता पर लिहाफ़ में मुँह छिपा कर रोने वालों से सङ्क्ष ऐतराज था और उनके रोने के अधिकार पर ही मैं सवाल खड़ा कर रहा था । यहाँ कोई किसी को रास्ता नहीं देता , हर किसी को तेज दौड़ना होगा .. तेज और तेज ... लोगों को गिरा कर आगे बढ़ना होगा .. एक ही नैतिकता है यहाँ पर दूसरे के प्राजय में अपनी विजय , मात्र विजय से कार्य नहीं होगा लोगों की प्राजय भी ज़रूरी है वह भी उसकी जो आपके सबसे ज़्यादा नज़दीक तेज दौड़ने की कोशिश कर रहे , खासकर अंतिम समय में चल रही दौड़ । इतिहास सिर्फ़ विजेता को याद करता है हारने वाला कितनी भी नज़दीकी से क्यों न हारा हो उसका ज़िकर एक प्राजित व्यक्ति के रूप में ही होगा और तमाम क़सीदे जीतने वाले के पक्ष में ही होंगे क्योंकि इतिहास विजेताओं द्वारा लिखे जाते हैं ।

यह पढ़ाई बीतते दिनों के साथ और कठिन लग रही थी लोगों को । मैं प्रश्न-उत्तर का शृंखला और माक टेस्ट के सहारे आगे बढ़ रहा था और लोग मेरी रफ्तार से साथ चल नहीं पा रहे थे । मुझे अपने अंदर और विश्वास आने लगा , एक बड़ी भीड़ मेरे ही सामने कहने लगी , मुझसे शायद यह नहीं हो पायेगा और उनको यह विश्वास दिलाना था तुम एक गौरवशाली गाथा के नायक बनने को जन्मे हो । मेरे अंदर एक नेतृत्व विकसित हो रहा था , मुझे यह लग रहा था मैं बड़ी सफलता की ओर हूँ । मैं धन प्राप्त करने में सफल हो ही चुका था , अब वह मेरा ध्येय रहा ही नहीं अब मैं यह चाहता था यहाँ से निकला हर व्यक्ति इतिहास निर्माण करे । मैं इतिहास निर्माण करने वालों का सृजन करना चाहता था , मैं एक नया सर्जक बनना चाहता था ।

मैं पिटे- पिटाये तरीकों से अलग चल रहा था । मैं एक वैज्ञानिकप्रक व्याख्या हर वस्तु की करना चाहता था । मैंने कक्षा आरंभ की , “गाँधी के दो आंदोलनों को हम एक साथ समझते हैं असहयोग आंदोलन जो 1920-22 का है और

सविनय अवज्ञा जो 1930-32 का है। जीवन का पहला कार्य एक विश्लेषक बनो।। यह जीवन या यह कहें एक सफल जीवन एक विश्लेषण क्षमता के समावेश की माँग करता है। एक आंदोलन में सरकार के प्रति असंतोष था, युद्ध के समय के वायदों के टूटने की पीड़ा थी तो दूसरे में कारण कुछ भी हो लेबर सरकार और वायसराय की सदाशयता में एक वर्ग का विश्वास भी था। एक में, हिंदू-मुस्लिम एकता की पराकाष्ठा थी तो दूसरे में यह एकता निम्नतम बिंदु के आस-पास थी। एक में सिख साथ थे तो दूसरे में सिख विरोधी थे। एक में कांग्रेस के अंदर एकता थी तो दूसरे में कांग्रेस बँटी हुई थी। एक में अहिंसा के प्रति आस्था थी यद्यपि चौरी-चौरा की घटना घट गयी तो दूसरे में हिंसा का समावेश था यद्यपि गाँधी हिंसा के पक्षधर न थे। यह एक-दूसरे आंदोलनों की इन पाँच बिंदुओं से तुलना कीजिये, परिणाम से अपने को दूर रखते हुये। पहले आप आंदोलन की प्रवृत्ति और रणनीति समझिये, यह पाँच बिंदु आपकी कुछ मदद कर सकते हैं। आपको असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन स्पष्ट हो जायेगा अगर आप पृष्ठभूमि और प्रवृत्ति समझ गये।

गाँधी के लिये अहिंसा एक दर्शन था यह एक रणनीति थी? पहली बात कोई भी रणनीति बगैर दर्शन के लंबे दौर तक चल ही नहीं सकती। हर रणनीति के लिये एक दर्शन की आवश्यकता होती है। गाँधी के लिये लक्ष्य था देश की आजादी.. इस लक्ष्य के लिये एक कार्य प्रक्रिया की आवश्यकता थी... इस कार्य के संपादन के लिये उनकी रणनीति थी जन संघर्ष.. इस जन संघर्ष के लिये जातियों - धर्मों में बँटे अशिक्षित समाज को जोड़ना भी था और जगाना भी। यह जु़ड़ाव कैसे हो? इसके लिये एक दर्शन की आवश्यकता थी और वह दर्शन देश की भूमि और संस्कृति से तादात्म्य रखता हो। यह राम की भूमि है जहां वह धनुष धारण करते हैं पर तीर तरकश में रखते हैं और कहते हैं अन्यायियों के दमन के लिये ही बाहर निकलेंगे। यह शौर्य युक्त अहिंसा है। बुद्ध के अपरिग्रह का दर्शन है जो मिल मालिकों और मज़दूरों को एक करने के लिये न्यास का सिद्धांत देता है।

यह पूरा एक दर्शन विकसित हुआ या यों कहें विकसित किया गया। आप दोनों आंदोलन को देखें। 1920 के आंदोलन के पूर्व महानायक ने कहा था, कुशासन करने वाले शासक को सहयोग देने से इंकार करना हर व्यक्ति का अधिकार है और जब उनको गिरफ्तार करके उन पर मुकदमा चलाया गया तब भी यही कहा था और अपने ऊपर लगाये सभी आरोपों को स्वीकार करते हुये कानून की धाराओं में विहित बड़ी से बड़ी सजा देने का अनुरोध किया और यह कहा आप ने जो राजदरोह का आरोप लगाया है वह वस्तुतः यह राजदरोह करना मेरा धर्म है। एक ऐसी सत्ता जिस पर देश को यकीन न हो

उसकी अवमानना हर नागरिक का धर्म है और अगर मुझे मुक्त किया गया तब मैं पुनः वही अपराध करूँगा जिस अपराध के कारण मुझे यहाँ लाया गया है। यह एक अलग आंदोलन- दर्शन था। यही नहीं जब आंदोलन में ठहराव के वर्ष आये, असहयोग आंदोलन से सविनय अवज्ञा आंदोलन के बीच का समय तब वह एक रचनात्मक आंदोलन का काल था।

मार्च 1930 में आंदोलन आरंभ होने के पहले भीड़ को संबोधित करते हुये कहा, ... कैसे संभव है आप यहाँ बगैर किसी समस्या के पहुँच गये? मैं नहीं समझता कि यदि आप को गोलियों का सामना करना पड़ता तो आप मैं से कोई भी व्यक्ति यहाँ होता। क्या इतिहास में ऐसी कोई मिसाल है जहाँ की राजसत्ता ने हिंसापूर्ण विद्रोह को एक दिन के लिये भी बर्दाशत किया हो? यह अहिंसा की ताक़त है, सरकार दुविधा में हैं। आततायी सरकार को पता ही नहीं है कि वह क्या रास्ता अपनाये यह सरकार दिग्भ्रमित भी है और भौंचककी भी। गाँधी के पास एक रणनीति थी संघर्ष- समझौता - संघर्ष... जन- आंदोलनों की आयु बहुत लंबी नहीं होती और नेताओं की तुलना में आम लोगों की संघर्ष करने की एक असीमित क्षमता नहीं होती, अतः संघर्ष का विराम आवश्यक है, यह विराम समर्पण नहीं है वरन् अगले आंदोलन की पृष्ठभूमि है।“

मैं कक्षा समाप्त करके सत्य प्रकाश सर के पास गया और औपचारिक बात करके मैं मुझे पर आ गया।

मैं - “सर यह कमिशनर साहब तो कुछ और ही चाह रहे हैं।“

सर - “क्या चाह रहे?“

मैं - “अपनी फ़र्ज़ी किताब की प्रशस्ति आपसे करवाना चाह रहे हैं विमोचन में।“

सर - “मैं इस किताब का ज़िकर ही नहीं करूँगा।“

मैं - “अगर वह कहेंगे तब?“

सर - “इतनी भी हिम्मत उनकी नहीं है। पर तुम यह क्यों कह रहे?“

मैं - “कल गया था और वह बोले कि मंच पर बोलने का क्रम सर तय करेंगे और सर बोलेंगे किताब पर।“

मैंने अंतिम पंक्ति झूठ बोल दी थी। मैं जानता था कि कहाँ फुरा - जमोगी होगी इस मुद्दे पर और अगर होगी तब देखा जायेगा। सर सोच ही रहे थे कि मैंने अगली बात कह दी कि अगर आपको कहें बोलने के लिये तब आप कह दें अनुराग बोल देगा और आप धर्म संकट से बच जायेंगे।

सर ने कहा , जब कहेंगे तब देखा जायेगा । तुम्हारी कोचिंग कैसी चल रही है ?

मैं - “ सर ठीक चल रही है । आप वह हिंदी वाला व्याख्यान ले लीजिये । ”

सर -“ ले लूँगा , अभी तुम पढ़ाओ । ”

मैं सर से अनुमति लेकर घर आया । मेरे घर आते ही देखा चिंतन सर और अशोक बैठे हुये थे । सर ने कहा , ” बाबा इतना बड़ा कुंभ मेला लगा लिये और बताया भी नहीं । ”

अशोक - “ सर कल आप व्याख्यान दीजिये और वही कैम्बे- बेसिन वाली कथा सुना दीजिये । इस कथा से जितने किलो प्रेरणा प्राप्त होती है वह किसी बनिया के दुकान पर आलू तौलाने पर भी प्राप्त नहीं होगी ।

मुझे लग गया कि अब कल का दिन अच्छा होगा मेरा भी और माँ का भी । माँ चिंतन सर का इंतजार कर रही थी ... जीप - पुलिस - हूटर के साथ मायका - ससुराल दोनों दाँय देगी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 192

जैसे - जैसे दिन बीत रहे थे , वैसे - वैसे कक्षा में भीड़ बढ़ती जा रही थी । अब स्कूल का मालिक भी उदार हो चुका था । वह कक्षा में देर तक पंखा - बत्ती चले इस पर अब ऐतराज नहीं करता था । उसके बदलते रुख का एक बड़ा कारण कमिशनर साहब का कक्षा में आना और अशोक का स्कूल मालिक से यह कहना कि तुम्हारे पास स्कूल चलाने का लाइसेंस है कि नहीं है यह तो हमको नहीं पता पर कमरा किराये पर देने का लाइसेंस तो बिल्कुल ही नहीं होगा और जार्ज टाउन थाने में तुम पीटे जाओगे इसमें कोई संशय नहीं है । मैं अगर आईएस बना तब चाहे जिस ज़िले का डीएम बनूँ उस ज़िले में तो पकड़ कर तुमको बंद करूँगा ही । चिंतन सर कक्षा में आये थे अपनी क्लास लेने अशोक ने मातादीन से स्कूल मालिक को बुलवा कर यह डरावना संभाषण दे मारा था । स्कूल चलाने वाले प्रायः गलत एवम् अवैधानिक कार्यों में लिप्त रहते ही हैं और उसको भी अब अहसास होने लगा कि उसका बर्ताव मेरे साथ ठीक न था , मैं अब मात्र एक सफल विद्यार्थी ही न रही मैं एक शरणी आगे बढ़ चुका था । मेरी कक्षा चलती चार बजे से थी पर तीन बजे से ही हंगामा चालू हो जाता था । कक्षा में फीस का मुद्दा अब रहा ही नहीं । मैंने फीस न माँगने की सख्त हिदायत दे रखी थी पर दाढ़ू का तर्क था , जो प्रेम-भाव से दे रहा है उसको ले लेते हैं , उसको लेने में कौन सा ऐतराज , बस माँगते नहीं हैं किसी से । दाढ़ू ने मेरी माँ को यह समझा लिया था और मैं माँ से बहुत डरता

था या यों कहें उसके डरामे से बहुत डरता था । वह कब कौन सा डरामा कर दें उसका कोई भरोसा नहीं । जब यह फ़ीस लेना बंद करने का मुद्दा चल रहा था तब मैंने कहा कि इतना पैसा तो आ गया है, यही नहीं सँभल रहा बाकी का क्या करना ?

वह बोली, “ पैसा काटत बा तोहका , दुई- चार मन लड्डू चढ़ाई द हनुमान जी के बाँट द गरीब -गुरबन में , गाँव- देश में बहिन - बिटिया के बियाहे में दै दअ । तोहका मोटाई सुझान बा । इही के मारे भगवान दरिद्रन के कुछ देतेन नाहीं जैसे दअ दिमाग में चर्बी चढ़ि जात हअ । ”

मैं समझ गया अब कुछ नहीं हो सकता । यह लड़ाई कर बैठेगी और हर लड़ाई का अंत होगा , “ आपन ई आईएएस गीरी अपने मुलाजिमन के देखायअ, हमसे नीची आवाज़ में बात करअ नाहीं त तोहार कौआ दबाय देब सब दिमाग सही होई जाये । ”

मैंने कहा , “ ईश्वर गज़बें बनाये है तुमको । पिताजी के साथ निबाह होई गवा ... और केऊ रहा होत तब समझि आवत तोहका .. ”

माँ - “ का कहअ .. का कहअ ? ”

मैं - “ कुछ नहीं । ”

माँ - “ नाहीं कुछ त कहे हअ , पुनि से कहअ । ”

मैं - “ कुछ नहीं कहा । पढ़ने दो अब , शाम को खून चूसने वाले आयेंगे क्लास में तुम मत चूसो । ”

माँ - “ काहे ... तब त तोही के रहा शौक खून चुसवावै के , तब त सब कहेन इ काम न करअ पर केहू के तू सुनत हअ । ”

दादू से बोली, “ ए बड़का धर्मात्मा होई ग हएन ... जे परेम से दे ओसे पैसा लै लेहेअ । ”

दादू - “ बुआ हम त परेमै से लेइत थअ और कई बार कहि देत हअ ओनसे एकार कौनौ आवश्यकता नाहीं बा पर इहऊ कहि देत हअ कि बगैर गुरु- दक्षिणा देहे विद्या न फले .. कुछौ द .. ई गुरु- दक्षिणा जरूरी बा । पढ़ ल वेद- पुराण सभै देहे हएन गुरु- दक्षिणा और जे नाहीं देहेस ओकर हालौ देख ल /

एक लड़की कहेस हमार मनीआडर अभैं नाहीं आई बा , जब आये तब देबै , हम मनीआडर के इंतज़ार किहा , कौनौं उतावलापन नाहीं देखावा । ”

माँ - “ लड़कियन से चाहे न ल पैसा । ऊ सब बेचारी बहुत मुश्किल से पढ़ि पावत हईं । दूर- दराज से आवति हअ । दादू एक दिन लड़कियन के घरे लै आयअ देखी ओनका सबके , ओ सब कलेक्टर बनि के कैसन लगिहीं.. एक लड़की कलेक्टर और पूरा ज़िला ओनके भीतर ... ”

मैं - “ माँ सुरुचि मिश्रा हुई है न उसको देखो .. क्या बोलती है वह .. ”

माँ - “ कहाँ की है ? ”

मैं - “ यहीं इलाहाबाद की है । अब जमाना बदल गया है , बहुत लड़कियाँ हो रही हैं । ”

मैं अपने कमरे में आया ही था कि दादू पीछे से आ गया और वह बोला , “ मुन्ना भैया आदेश होई त एक बात कही ”

मैं - “ कहो । ”

दादू - “ ई शालिनी जी आवत हईं , हमका रखवाय देतअ कतौ ओनके व्यापार के महकमें में । ”

मैं - “ क्या करोगे ? ”

दादू - “ कुछ भी । ”

मैं - “ ठीक है , बात करता हूँ । ”

दादू - “ मुन्ना भैया चाचा के हटवाई द उ सीट से । बहुत माल रेलत हये । दुश्मन बहुत मज़बूत होई जाये तब दिक्कत करे हमका । ”

मैं - “ क्या करूँ मैं ? ”

दादू - “ आप के काम ज़ब आये तब हम बतउबै , अबै त हमारै काम बा । अब सिपाही राजा से पूछे बाँैर कौनौ काम त करे न । हम हई तोहार सिपाही । बस तू आदेश द हम ओनका मार गिरौबै । राजा के हाथ सिर पर जब तक रहै सिपाही मज़बूत रहे । एक बानर लंका जलाइ मारेस , दूसर बानर के पैर मेघनाद ऐसन महाबली नाहीं उठाय पायेस , इ सब कैसे भवा ? सिपाही पर राजा के हाथ रहा । ”

मैं - “ क्या करोगे ? ”

दादू - “ ओनकर बदनामी बहुत होई गै बा । काल जाब फरगेंया और राम सजीवन के पास । कुल माझनिंग कांटरेक्टर के डिटेल निकाल लेब और फिर शासन में करब शिकायत पूरे कच्चा- चिट्ठा के साथ । ओनके खिलाफ बैठि जाये जाँच और तब तू धीरे से कमिशनर साहब के कान फूँक देहे .. ए गिरहीं धड़ाम से और हम पूछब , चाचा चोट त नाहीं आईं । ”

मैं “ यह ठीक है ? ”

दादू - “ हमरे पास दिमाग त कम बा जब पढ़ाई के मैटर आवत थअ लेकिन जब लकड़ी लगावै के मामला आवत थअ शक्ति के हमरे अंदर वास होई जात थअ । ”

मैं “ माँ से पूछ लो । ”

दादू - “ नाहीं ओका इनवालव न करअ भैया । ओकर कौनौ भरोसा नाहीं । काल कहि दे तू ह भतीज और ओ हैं हमार भाई , हम भाई के साथ देब भतीज के न देब । बुआ से फ़ालतू बात करबै के नाहीं बा । ऊ तोहार सिट्टी गुम केहे रहत हअ , हमार कौन बिसात । ”

मैं “ कब करोगे ? ”

दादू - “ बस सूचना आवै दअ फरगेंया से । एक बात और बतावअ । ”

मैं “ क्या? ”

दादू - “ तोहार केतना मन बा हरिकेश मामा के इहाँ बियाहे के ? ”

मैं “ यह क्यों पूछ रहे हो ? ”

दादू - “ अगर तोहार मन ओनके इहाँ बियाह के न होय तब संगेन ओनहूँ के निपटाई देई । ओ त पका आम हयेन मारा ढेला लुद से नीचे । ओनकर दुई प्लाट हम जानित हअ , मकान देखने हए , दुई- दुई कार खरीदे हयेन , कार के डिटेल हइआ बा । ”

मैं “ उनका करने से क्या फ़ायदा ? ”

दादू - “ अगर ओनहूँ के लपेट देब तब दुझनौ आदमी अपने-अपने समस्या में लपटियान रझहिं नाहीं त हरिकेश मामा ओनकर मदद करै लगिहिं । हरिकेश मामा हयें बहुत डरपोक । ”

मैं “ यह स्कीम कब बनाये तुम । ”

दादू - “ कई दिन से बनावत हई पर सिपाही के आदेश चाही लडाई बरे , आखिर राजा के आदेश ज़रूरी बा । अब हम केतनौं भाँजी आपन ताक़त पर हई त तोहार सिपाही । ”

मैं उसका चेहरा देखने लगा । मैंने कहा , “ चलो शाम को मामा के यहाँ चलते हैं । ”

वह बोला , “ तब आदेश बा तोहार ? ”

मैं “शाम का माहौल देखते हैं , तुम करोगे तो हई , न आज करोगे तब जब मैं एकेडमी चला जाऊँगा तब करोगे ।”

दादू -“भैया हमका बहुत हैरान केरहे हयेन , ओ बहुत मजबूत होत हयेन । औनकर मजबूती रोकब ज़रूरी बा । ”

मैं शाम को पढ़ाने गया , क्लास में भीड़ और बढ़ गयी थी । यह कक्षा परचून की दुकान की तरह हो गयी थी , कोई दो सौ देता था और कोई पाँच सौ । लड़के दादू से निगाह बचाकर भाग जाते थे । इलाहाबादी लड़के कम चालू कहाँ होते हैं , वह तो गुरुघंटाल होते ही हैं । मैंने खुद ही कह दिया था क्लास में अगर पैसा देने में समस्या हो तो कोई ज़रूरत नहीं , जो आपकी शरद्धा हो वही देना । अब हर एक के पास समस्या ही समस्या थी । अशोक कहता था कि कक्षा के सारे लोगों के गाँव में सूखा पड़ गया है , माँ बीमार है , दो वक्त नहीं एक ही वक्त खाना खाकर काम चला रहे हैं पर तीन बजे से हल्ला चालू कर देते हैं । इन ससुरों को फ्री में आईएएस बनाओ । शाही ने कहा , हम लोग भी तो पैसा नहीं दे रहे । अशोक ने कहा , वह जो कालिनेमी दादू है उससे कहना हमने पूरा पैसा पिछले जन्म में ही दे दिया था नहीं तो वह पीछे पड़ सकता है । इसको साले को भी ठीक करना है । यह कोचिंग मालिक बना धूमता रहता है । तीन बजे से धूम- धूम कर लड़कों को धूरता है । यह है कौन ? इसको तो ऐसी धारा में बंद कराऊँगा कि यह तिहाड़ जेल ही जाये और जेलर से कह दूँगा इससे पूरे क़ैदियों की रोटी बनवाओ , धुँये से ही साले के आँख की ज्योति चली जायेगी । इस इलाहाबाद में आप आईएएस हुये नहीं कि रिश्तेदार साले अंधेर कर देते हैं । इन सबको पेटरोल पंप चाहिये , नौकरी चाहिये , लूटो और इनको दो । जरा पता करो यह है कौन सा आइटम है , इसका इलाज ज़रूरी है । ”

मैंने क्लास आरंभ की ।

“ एक महत्वपूर्ण प्रश्न समझने की कोशिश करते हैं । यह प्रश्न बहुत ही रुचिकर है ... अगर गाँधी स्वतन्त्रता संग्राम में न होते तब इस आंदोलन की दशा और दिशा क्या होती ? ”

दिनेश - “ सर आप कहना यह चाह रहे कि अगर गाँधी दक्षिण अफ्रीका से भारत न आये होते तब आंदोलन किस रूप में होता ? ”

अशोक - “ अरे नहीं ... कोई विधाता गाँधी को जन्म देने का ठीका थोड़े लिये थे , अगर वह जन्मे ही न होते तब आज यह कोचिंग चलती की न चलती ? हम आज़ाद ही न हो पाते शायद .. आज भी हम गुलाम ही होते .. ”

मैं - “ एक संभावना पर विचार करो .. अगर गाँधी राजनीति न करते वह नेतृत्व न करते तब क्या होता ? क्या आज़ादी जल्दी मिलती ? क्या आज़ादी के अहिंसक रास्ते होते ? क्या सुभाष के रास्ते से आज़ादी मिलती ? आखिर यह संघर्ष किस दर्शन पर चलता ?

यह प्रश्न आपको एक दृष्टि देगा , पूरे आंदोलन को समझने की । आप इसको समझने के लिये पहले आंदोलन की सारी धाराओं को समझो । आंदोलन में 1915 के बाद चार धारायें थीं .. गाँधी धारा के अतिरिक्त.. एक साम्प्रदायिक धारा मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा की, दूसरी चरमपंथियों की हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन जिसमें एक साम्यवादी विचारधारा का समावेश भगत सिंह ने किया , तीसरी साम्यवादियों की जो गाँधी के तरीकों से अपनी आपत्ति समय- समय पर ज़ाहिर करते रहे और जन संघर्ष की बात करते थे , चौथी सुभाष चन्द्र बोस कि जो वर्ष 1938 से ही भारतीय राजनीति में जनता की जुझारू क्षमता के आंकलन पर गाँधी से असहमति रखते थे । हमें इस सवाल के जवाब के लिये गाँधी आंदोलन के साथ- साथ इनके आंदोलनों की प्रवृत्तियों को समझना होगा । आप लोग आज यह पढ़ना हम इस पर विस्तार से कल बात करेंगे । आज आप लोग मेरे ही साथ चयनित हुये संस्कृत विभाग के प्रतापी छात्र, मेंस परीक्षा के महारथी , कुंडली गुरु के नाम से पुलिस सेवा में इलाहाबाद का परचम लहराने वाले नायक और मेरे गुरु रहे चिंतन उपाध्याय सर को सुने । ”

अशोक - “ सर एक बात रह गयी कहने से , कैंबे बेसिन विश्व के मानचित्र में कहीं नहीं है और जिसे आप कैंबे बेसिन कह रहे वह खंभात की खाड़ी है । ”

मैंने सर की तरफ देखा और सर का व्याख्यान आरंभ हो गया ...

“यह पापी पेट का सवाल नहीं है यह शाही शान का सवाल है ... मैं लड़ने नहीं आया हूँ मैं जीतने आया हूँ ... मैं लौटकर वापस जाने नहीं लहू बहाने आया हूँ , यह फ़र्क नहीं पड़ता लहू किसका बहता है ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 193

चिंतन सर ने अपना उद्घोषन समाप्त किया । उनका यह होमियोपैथिक की गोलियों की तरह का उद्घोषन मैं पहले भी सुन चुका था , वही बात घुमा- फिरा कर हर बार करते हैं । अशोक ने कैंबे- बेसिन और खंभात की खाड़ी वाली

इंटरव्यू की कहानी फिर से सुनाने का अनुरोध किया । अकबर अपनी गुजरात विजय के बाद बुलंद दरवाजा बनवाने में जो खुशी पाया होगा सर वैसी ही खुशी इस सवाल को बताने में प्राप्त करते थे । इस शहर के खुराफ़ाती लड़के उनकों चने के झाड़ पर चढ़ा कर और मज़ा लेते थे, वहीं क्लास में भी हुआ ।

दिनेश- “ सर आपको वाक़ई नहीं पता था कि खंभात की खाड़ी को इंग्लिश में कैंबे बेसिन कहते हैं? ”

अशोक - “ यार तुम्हारे दिमाग़ का भी जवाब नहीं, अगर पता होता तब बेवजह झगड़ा क्यों करते? कोई सींग निकली है क्या सर को? सर का बस चले तो अंगरेज़ी के अलफाबेट को चहेंट कर लंदन में घुसेड़ दें । सर के साथ अंगरेज़ी ने जो अन्याय किया है उसकी सिफ़र एक सजा है अंगरेज़ी का पूर्ण त्याग और देश निकाला । अब देश निकाला तो होने से रहा पर पूर्ण त्याग सर ने कर दिया । यह अपनी नेम प्लेट हिंदी - संस्कृत में लिखते हैं जिसमें अंगरेज़ी का कोई दूस- दूर तक नामों निशान न हो । ”

परेम नंदन - “ ऐसा क्यों? ”

अशोक - “ भौकाल - एक भौकाल बना रहता है । सर तो आधिकारिक मीटिंग में भी संस्कृत ठोंक देते हैं । ”

चिंतन सर - “ इस संस्कृत का बहुत फ़ायदा है । ”

अशोक - “ सर आप बगैर फ़ायदे के तो कोई काम करेंगे नहीं । जो आदमी चार साल के उम्र की तोतली ज़बान से बोलकर दक्षिण जजमान से गिरवा लिया हो, वह जीवन में बहुत आगे जायेगा । आपकी कुँडली में तो ग्रह-नक्षत्र खुद ही बैठकर सब लिख दिये होंगे । आप तो बवाल काटकर भौकाल बना ही दोगे जिंदगी में, अब यह ज़िम्मेदारी ग्रह- नक्षत्रों की है कि अपनी साख बचायें । सर मुझे लगता है कि ग्रह- नक्षत्र रात में आपकी कुँडली में बैठकर लूड़ो खेलते होंगे, क्योंकि वह हट गये और कोई दूसरा आकर बैठ गया तब तो उनको बैठने की जगह मिलेगी ही नहीं । ”

सर - “ अनुराग तुम्हारा यह चेला बहुत विनोदी है । ”

मैं - “ सर इसका सेलेक्शन होगा ? ”

चिंतन सर - “ यार मैंने कुँडली देखी नहीं और तुमने भविष्यवाणी कर दी । ”

मैं - “ सर ऐसे खुराफ़ातियों का होता है जो कई काम एक साथ कर लेते हैं । आप देखियेगा यह टोपी ही घुमायेगा जब तक आपके साथ रहेगा । ”

सर - “ अनुराग कुछ पढ़ाओ कक्षा में । मैं भी थोड़ा ज्ञानार्जन करूँ, बगैर ज्ञान प्राप्त किये कमज़ोरी का आभास हो रहा है । ”

मैं “ हाँ सर , पढ़ाना होगा ही , एक जिम्मेदारी का भान है मुझको । “

मैंने कक्षा आरंभ की एक सवाल के साथ ..

“अगर गांधी स्वतन्त्रता आंदोलन में न आये होते तब आंदोलन की दशा एवं दिशा क्या होती ?

अगर हम भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन से गांधी को हटा दें तब आंदोलन किस ओर बढ़ता ?

गांधी के आलोचकों की कोई कमी नहीं है , वह भी इस बात पर विचार करें कि क्या गांधी के बगैर स्वतन्त्रता आंदोलन संभव था ?

क्या बगैर गांधी के आज़ादी संभव थी ?

क्या देश का विभाजन गांधी की एक असफलता है ?

क्या देश में साम्प्रदायिकता को रोक पाने में असफलता गांधी की महामानवता पर एक प्रश्न चिह्न लगाता है ?

अनगिनत सवाल खड़े हो सकते हैं सिफ़्र एक कोरी कल्पना से अगर गांधी नहीं तब क्या ? ”

यह बहुत ही रुचिकर सवाल था .. जवाब भी रुचिकर आने लग गये ...

भगत सिंह -आज़ाद सरीखे करान्तिकारी मिलकर अंगरेजों को खदेड़ देते ... हम अहिंसा नहीं हिंसा से लड़ते और शौर्य प्रदर्शन करते , जीत तो तय ही थी ... हमको सुभाष नायक मिलते न कि गांधी -नेहरू जिन्होंने देश को बर्बाद कर दिया पाकिस्तान को बहुत सहूलियत दी गयी .. पटेल - सुभाष यह सहूलियत न देते

मैं “ जिस बिंदु पर मैं बात करना चाह रहा वह आप लोग नहीं पकड़ पा रहे । मैं नीति- दर्शन- विचारधारा की बात कर रहा न कि व्यक्तिगत उपलब्धियों एवं नेतृत्व की । ”

चिंतन सर - “ तुम अपना दृष्टिकोण दे दो तब इस पर विमर्श करते हैं । ”

मैं “ हम पहले समझ लेते हैं गाँधी के पहले का राष्ट्रवाद । हम विचारधारा पर केन्द्रित रहेंगे तब बेहतर होगा क्योंकि हमारा प्रश्न भी विचारधारा का ही है । नरमपंथियों के पास एक भिखर्मंगी राजनीति थी जिसके केन्द्र में सरकार से सहूलियत हासिल करने के अतिरिक्त कुछ और लक्ष्य होता ही न था । वह सब शहरी अभिजात्य वर्ग से आते थे , उनका जनता से कोई लगाव- जुड़ाव न था , उनका जनता की संघर्ष करने की क्षमता में कोई यक़ीन न था । वह आज़ादी और जन- आंदोलन से कोसों दूर थे , वह कांग्रेस को तीन दिन का तमाशा बनाकर रखे हुये थे । उनकी न कोई दूरगामी रणनीति थी और न ही एक समग्र संघर्ष की विचारधारा । वह कलकत्ता के 1906 के प्रस्ताव जिसमें स्वदेशी - बहिष्कार- राष्ट्रीय शिक्षा -स्वशासन का संकल्प था उससे ही पूर्ण रूप से सहमत न थे । वह स्वदेशी आंदोलन को बंगाल से बाहर नहीं ले जाना चाहते थे जिसे गरमपंथी ले जाना चाहते थे और कांग्रेस टूट गयी । ऐसी विचारधारा का गाँधी की विचारधारा से कोई साम्य हो ही नहीं सकता । अगर यह अहिंसक थे तो इसलिसे कि यह भिखर्मंगे थे और भिखर्मंगा कौन सी हिंसा करेगा वह तो कायरता की ही बात करेगा । गाँधी की अहिंसा की विचारधारा एक शौर्ययुक्त अवधारणा से ओत-प्रोत थी । एक शौर्यवान की तुलना सुविधाभोगी से करना अन्याय है । हम इस अन्यायकारी प्रक्रिया से अपने को अलग कर लेते हैं ।

पहला व्यक्ति जो एक अखिल भारतीय प्रसिद्धि को प्राप्त किया , जिसने बहिष्कार और स्वदेशी का नारा दिया , जो आंदोलन को जनता के बीच ले गया , जिसने धार्मिक और जातिगत संकीर्णता को त्यागने की बात की जो निर्भीक था और दो - दो बार लंबी जेल यातना पर गया , निर्वासन को झेला पर आंदोलन को लोगों के बीच ले गया वह थे - लोकमान्य तिलक । पर गाँधी के राजनैतिक रूप से सक्रिय होने के पूर्व ही उनका देहावसान हो गया । इसलिये गाँधी की विचारधारा या व्यक्तित्व के विकल्प के रूप में उनको देखना संभव ही नहीं है और तिलक के दौर मे आंदोलन यहाँ तक नहीं पहुँचा था कि हम आज़ादी की बात कर सकें । राष्ट्रीय चेतना का प्रसार नहीं हुआ था , जातियों - धर्मो-समूहों में बँटे समाज का एकीकरण नहीं हुआ था और हम एक समेकित राष्ट्र बनने की प्रक्रिया का आरंभ ही किये हुये थे , ऐसी स्थिति में गाँधी विचारधारा के विकल्प के बजाय गाँधी विचारधारा की एक पूर्ववर्ती विचारधारा के रूप में हम उनकी विचारधारा को देख सकते हैं पर गाँधी की हठयोग ऐसी अहिंसा और करों की नाआदायगी यह उस वक्त के आंदोलन में न हुआ करती थी और यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह दोनों बिंदु बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुये आज़ादी की लड़ाई में । हम बहस आरंभ हो एक सवाल और हल करते हैं.. क्या 1922 में चौरी- चौरा कांड के पश्चात् गाँधी ने आंदोलन वापस लेकर एक महती भूल की थी ? क्या रजनी

पास दत्त का यह कहना सही है तथ्यों के निरपेक्ष मूल्यांकन से कि गाँधी ज़मींदारों और सामंतों से मिल गये थे और अगर आंदोलन वापस न लिया गया होता तब देश आज़ाद हो गया होता ? यह उनका विशलेषण जनचेतना के व्यापक विस्तार के अपने आँकलन पर है, यह उनका व्यक्तिगत मत सच के धरातल के कितना नज़दीक है यह भी समझने का प्रयास करेंगे । तमाम कांग्रेसी भी गाँधी से सहमत न थे और उनके आलोचक हो गये थे । गाँधी ने 1922 के बाद राजनीति छोड़ दी और रचनात्मक कार्य में लग गये । उन्होंने अपने ऊपर लगाये आरोप स्वीकार किये और 6 साल की सजा को अदालत की न्याय प्रक्रिया की सदाशयता की भूरि- भूरि प्रशंसा करते हुये स्वीकार किया पर स्वास्थ्य कारणों से समय से पहले ही रिहा कर दिये गये थे । वह 1927 के मद्रास अधिवेशन में शामिल हुये वह भी एक प्रेक्षक की हैसियत से । वह कांग्रेस की वर्किंग कमेटी की बैठक में शामिल नहीं हुये । उन्होंने 1927 के मद्रास अधिवेशन में जवाहर लाल नेहरू के पूर्ण स्वराज के प्रस्ताव पर अप्रसन्नता ज़ाहिर की और अपने मत को समाचार पत्र में लिखने की धमकी भी दे दी । चौरी- चौरा कांड के बाद वापस लिया हुआ आंदोलन गाँधी की अपनी विचारधारा और रणनीति से संचालित था न कि किसी प्रकार के दबाव से जैसा कि कई मार्क्सवादी इतिहासकार लिखते हैं । गाँधी अहिंसक आंदोलन चाहते थे उनको लगा यह आंदोलन अहिंसक नहीं है उन्होंने आंदोलन वापस ले लिया । वह यह जानते थे कि सरकार भय के दर्शन और आतंक की विचारधारा से पोषित है । यह आतंक के राज में यक़ीन रखने वाली सरकार चौरी- चौरा की घटना को बहाना बनाकर आतंक करेगी , और वह हिंसा और आतंक के तांडव से नवोदित राष्ट्रवाद को दूर रखना चाहते थे ।

यह घटनाक्रम बताते हैं कि कांग्रेस के अंदर तो कोई चुनौती गाँधी को थी ही नहीं । जब गाँधी पाँच साल 1922-27 तक कांग्रेस में सक्रिय नहीं रहे तब भी उनकी विचारधारा और व्यक्तित्व ही हाबी रहा , भौतिक रूप से अनुपस्थित रहकर भी वैचारिक रूप से वह उपस्थित रहे ।

एक बहुत बड़ी बहस है - गाँधी बनाम भगत सिंह । पर जो हिन्दुस्तान रिपब्लिकन सोशलिस्ट आर्मी बना था उसमें शुरूआती दौर में तो कोई दर्शन था नहीं । भगत सिंह की जेल डायरी , फ़िलासफ़ी आफ बम के अध्ययन से उग्रवादियों का दर्शन समझ आता है । हमारे लिये यह ज़रूरी होगा , उस दर्शन को समझना और उस दर्शन की गाँधी दर्शन से तुलना करना । यह उग्रपंथ कभी गाँधी और उनके दर्शन को चुनौती रहा ही नहीं वरन् मैं तो यह कहूँगा समय के बीतते प्रवाह के साथ यह बम दर्शन गाँधी दर्शन के नज़दीक पहुँच गया । “

पूरी कक्षा में एक शोर हो गया .. बम दर्शन .. गाँधी दर्शन के नज़दीक पहुँच गया ।

मैंने कहा कल इसका जवाब देते हैं ।

चिंतन सर - “बाबा मैं परसों सुबह चला जाऊँगा आप कल सुभाष और गाँधी का मुद्दा भी निपटा दो । वह समझना ज़रूरी है कि अगर सुभाष ही देश का नेतृत्व चलाते तब क्या होता ? ”

मैं - “सर वह बहुत लंबा है समय लेगा । ”

सर - “कल एक कक्षा अतिरिक्त चलाओ । यह मामला फरिया दो । ”

मैं - “ठीक है सर । ”

क्लास ख़त्म हो गयी । मैं, चिंतन सर, दिनेश, अशोक, शाही वापस घर आ गये । चिंतन सर ने पूछा, इतनी बड़ी भीड़ कैसे इकट्ठा कर लिये ?

अशोक - “सर अब यह मुफ्त मार्का कोचिंग है, जो दे उसका भी भला जो न दे उसका भी भला । तिनकोनिया की सब्ज़ी मंडी इससे बेहतर है । पाँच सो रुपया देकर घुस जाओ फिर कौन पूछता है । सर, अशोक पांडवा जानते हैं न... ?

चिंतन सर - “कौन ? ”

अशोक - “सर वही जो कुत्तों के मुँह से बिस्कुट छीन कर खा जाता है, बँगलों में घुसकर कुत्तों को मारता है और नेतराम की कचौड़ी खाकर निकल लेता है । उससुरा एकौ रुपया न दिया होगा, रोज़ क्लास करता है और मुझसे बोला हम पूरा एडवांस दिये हैं । सर इस शहर में मुफ्त का काम बहुत सुहाता है । ”

चिंतन सर - “अशोक तुम दिये कुछ ? ”

मैं - “यह पैसा देंगे ? रोज़ शाम को समोसा - इमरती - चाय इनकी तय है कक्षा बाद । यह मेरे साथ कमिश्नर साहब के यहाँ जाते हैं और ऐसा आदेश देते हैं खाने का जैसे- ससुराल आ गये हों । पराठा - दो सब्ज़ी - दही - गाजर का हलवा - चाय बस ठोकते जाओ । ”

चिंतन सर - “कौन कमिश्नर.. इसत्यानंद मिश्रा... इनको भी पटा लिये हो ।

अशोक - “सर उनकी किताब लिख रहे और पाँच अगस्त को विमोचन है । ”

चिंतन सर - “ यार आजकल तुम बिल्कुल हवा नहीं दे रहे हो । इसको साधना ज़रूरी है । इसकी मेरे डीजीपी से बहुत पटती है । यह काम का आदमी है । हमको भी विमोचन में आना है । ”

अशोक - “ कमिश्नर साहब सर की चेलागीरी कर रहे हैं , उनको किताब निकालनी है । पर सर उनकी कवितायें हैं नायाब

मैं क्यों आऊँ तेरे पास
यहाँ उगी है सुंदर घास
पवन मगन था सारी रात

और दूसरकी ख वाली
ख्वाब.. खामोशी.. मैं और खालिश तुम

यह और अच्छी होती अगर यह होती

ख्वाब.. खामोशी .. खालिश खर - पतवार और ख्रगोश... तुम और मैं खाते खाना ...

बस ख ही ख ...

सर लगता है यह बचपन की कविता ... चंदू के चाचा ने चंदू की चाची को चाँदनी रात में चाँदी के चम्मच से चटनी चटायी टाइप ही लिख रहे थे पर बनी नहीं ।

सर विधाता ग़ज़बै बनाये हैं एनका और मेम साहब को । मेम साहब को बनाने के बाद तो साँचा को आग में जलाकर नष्ट ही कर दिया होगा कहीं गलती से गलती फिर न हो जाये । ”

चिंतन - “ यह मेम साहब कौन हैं ? ”

अशोक - “ लखनऊ के चीफ़ कमिश्नर के यहाँ जन्मी और मुफ्तख़ोरी में पली । ”

चिंतन सर - “ इ बी के चतुर्वेदी की बिटिया हैं? ”

मैं -“ हाँ सर । ”

चिंतन सर - “ इ तुम्हारा गाँधी - सुभाष फिर कभी सुन लेंगे , कल चलो इनके यहाँ । इतना बड़ा आसामी हाथ आया और तुम बताये नहीं । “
मैं समझ गया आपरेशन आहूजा के बाद आपरेशन सत्यानंद मिश्रा... ”

रात में चिंतन सर बोले ... यार अभी सोते नहीं है ... यह बताओ तुम अफीम की खेती या व्यापार शुरू कर दिये क्या?

मैं - “ यह क्यों कह रहे सर ? ”

आंटी .. आहूजा .. इलाहाबाद के परीक्षार्थी और अब सत्यानंद...
कौन सी गोली देते हो ... ”

बहुत ऊँचा क्रिस्म का फ्राड है सब ... ”

नटवर लाल जेल में बंद हैं कि वह जेल से बाहर आ गया ”

बहुत दिन से उसका कारनामा सुना नहीं ”

पैसा कितना कमाये कोचिंग से ... ”

मैं - “ बेहिसाब... ”

चिंतन सर - “ मतलब ... ”

मैं - “ इतना है कि गिनने में ही थक जाऊँगा , कौन गिने ”

चिंतन सर - “ यही कोचिंग चलाओ और फिर संन्यास ले लो .. जगत के लिये काम करो .. यह माया - मोह - नौकरी त्यागो .. गाँधी बनो ... ”

मैं बिस्तर पर लेट गया छत देखते हुये और मुँह से इतना ही निकला

गाँधी ”

चिंतन सर की आँखों से नींद नदारद

अशोक ने चिंतन सर के आँख से नींद ही उड़ा दी थी । उनको विश्वास ही नहीं हो रहा था कि सत्यानंद मिश्रा मेरे क़ब्जे में आ गये हैं । अशोक की आदत है चीजों को नमक- मिर्च लगाकर बताने की , उसने जितना उनसे मेरा संबंध था उससे बढ़ा- चढ़ा कर बता दिया था । मैं रात में सो गया था , मुझे सुबह जल्दी उठना होता था अपनी कक्षा के लिये पढ़ना पड़ता था । मेरी कक्षा में कुछ छात्र मेधावी थे और उनकी चुनौतियाँ आती रहती थीं , उनके कारण कक्षा का स्तर बहुत ही ऊपर जा चुका था । मैं जिस तरह से पढ़ाने का प्रयास कर रहा था वह अलग था ही और लोगों को रुचि भी आ रही थी । यह पैसा न माँगने की परम्परा व्यावसायिक दृष्टि से भी मेरे लिये लाभप्रद हो रही थी । कक्षा में हर दो- तीन दिन बाद यह दादू- अशोक - दिनेश कह देते थे कि फ्रीस दो हजार रुपये है पर आपकी जो इच्छा हो वह दे दीजिये । अशोक हर दिन कक्षा में अलग- अलग जगह बैठकर यह अफ़वाह फैलाता था कि पता नहीं यह नौकरी करने जायेंगे या यहीं हम लोगों को पढ़ायेंगे । यह अगर नौकरी करने के बजाय हमको पढ़ायें तो बेहतर है । एक अकेले आईएएस बनने से बेहतर एक आईएएस की फ्रैज बनायें । सर एक यज्ञ कर रहे हैं और उसमें हवन की आरती का ध्यान देना ज़रूरी है । हम लोग फ्रीस दे देंगे तब मेंस का कोर्स फिर से चलवायेंगे प्रारम्भिक परीक्षा के परिणाम के बाद और यह दिल्ली वाले - आईआईटी वाले जो अंधेरे जोते हैं , हम लोग उनके रथ का घोड़ा ही खोल लेंगे । जब घोड़ा ही खोल लिया तब वह सब दौड़ेंगे कैसे और यहाँ सर सूरज का घोड़ा खोलकर हम लोगों के रथ में जोत दे रहे , अब हम सबको कोई खेदे न पाएगा बस आप एक काम करो कहीं से भी जुगाड़ करो फ्रीस जमा करो । आप पूरी न दे पाओ तो किस्तों में दो , धीरे- धीरे दो एक सज्जन आदमी की मेहनत तो देखो जब सारे सफल लोग ऐश कर रहे हैं तब यह रात- दिन लगकर पढ़ा रहे हैं । मैं सर के दूर से रिश्तेदारी में आता हूँ , मुझसे सर पैसा नहीं ले रहे थे पर मैंने ज़बरदस्ती दिया । आप यह भी देखो कितने सफल लोग जुड़े हैं इस अभियान के साथ - अमर गुप्ता, बद्री विशाल मिश्रा, कुंडली गुरु और सत्य प्रकाश मिश्रा । सत्य प्रकाश सर कहीं नहीं जाते पर यहाँ उद्घाटन में आये और कविता- कहानी -उपन्यास- रंगमंच पर व्याख्यान देंगे ।

यह लड़के ही प्रचार और कर रहे थे , यह प्रचार भीड़ इकट्ठा कर रही । इलाहाबादी लड़के तेज होते ही हैं वह फ्रीस देने में दो सौ - ढाई सौ तक उत्तर आये थे । दादू ने मुझसे शिकायत की छात्रों के इस रुख की , मैंने कहा क्या

करोगे पैसा ? बहुत हो गया अब बंद करो पैसा लेना । वह तो चालुओं का सरदार है, उसे लगा कि कहीं मैं पैसा लेने से रोक न दूँ इसलिये वह शांत हो गया । पर यह सब्ज़ी मंडी की तरह पैसा लेने की प्रक्रिया एक धनात्मक रूप से फलीभूत हो गयी भीड़ बढ़ने लगी और चिल्लर इकट्ठा होने लगा, मेरी माँ ने मुझे बतायें बगैर एक और रिकरिंग डिपासिट खोल लिया । वह अब थोड़ा मुझसे थोड़ा डरने लगी है, यह भ्रम मुझे हो गया जब पता लगा कि उसने दाढ़ू से कहा “मुन्नवा के न बतायअ इ रिकरिंग के बारे में नाहीं त बहुत हल्ला करे । “पर यह मेरा भ्रम ही था वह बेवजह की बहस बचा रही थी पर संघर्ष अगर हुआ तब लड़ने से कहाँ पीछे हटने वाली ।

माँ चार बजे उठती थी और मैं सवा चार बजे उठता था, वह चाय देकर गंगा नहाने चली जाती थी और मैं अपनी कक्षा के लिये पढ़ता था । मैंने जैसे ही बत्ती जलायी चिंतन सर उठ गये । मैंने पूछा, सोयेंगे या जगेंगे ? अगर सोना नहीं हो तो आवाज़ दे देता हूँ माँ आपकी भी चाय लेती आयेगी ।

चिंतन सर - “ यार सोने थोड़े ही आये हैं । “

मैंने आवाज़ दी और कहा, “ सर की भी चाय ले आना । “

माँ बोली कुछ नहीं पर चाय लेकर आ गयी । वह आते ही बोली, “ चिंतन तोहका नींद नाहीं आवत बा का ? तू त सोई जा, इ मुन्ना के त शाम के पढ़ावई के बा, तोहका का करई के बा । “

मैं जैसे ही पढ़ने लगा सर ने पूछा, “ आज क्या पढ़ाओगे ? “

मैं - “ सर आज भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन को संविधान से जोड़ूँगा । “

सर - “ वह कैसे ? “

मैं - “ सबसे बड़ी बात संविधान में क्या है ? लोकतन्त्र, समानता, धर्मनिरपेक्षता, कल्याणकारी राज्य । मैं इसको भारत के स्वतन्त्रता संग्राम से जोड़ दूँगा । “

सर - “ वह कैसे ? “

मैं - “ सन 1885 के कांग्रेस की स्थापना से लेकर 1947 तक के कांग्रेस के अधिवेशनों, गाँधी- नेहरू - सुभाष की विचारधारा, 1920-1930-1942 के आंदोलन इन सबकी व्याख्या करते हुये मैं यह सिद्ध कर दूँगा यह संविधान एक दिन में नहीं बना बल्कि यह राष्ट्रीय आंदोलन में हर दिन बनाया जा रहा था । यह कोई कागज़ का टुकड़ा नहीं है बल्कि यह एक विचारधारा है, एक ऐसी विचारधारा जो हमारे नायकों ने हमारे अंदर कूट- कूट के भर दी है और इसीलिये यह राष्ट्र समग्र भी है और एक भी है । इस देश के भीतर

विवाद हो सकते हैं बहस हो सकते हैं पर यह टूट नहीं सकता । देश की अखंडता जो भारत की प्रस्तावना में है वह हमारे रक्तों से निकल कर वहाँ गयी है । ”

सर - “ यह सब तुम कब सीखे ? ”

मैं - “ सर समस्या सब सिखा देती है , यह जो जीवन है न उसमें आने वाली तकलीफ़ों से बड़ा कोई गुरु नहीं होता । बस इसी ने सिखा दिया । ”

सर - “ सत्यानन्द मिश्रा को ठीक से जानते हो तुम ? यह मुख्यमंत्री के बहुत नज़दीक है । यह मुख्यमंत्री का सचिव रह चुका है । इस समय प्रदेश का सबसे मज़बूत आईएएस है । मेरे डीजीपी की पोस्टिंग कराने में इसका भी योगदान है । ”

मैं - “ सर आप तो कह रहे थे कि मैंने पोस्टिंग करायी । ”

सर - “ अरे यार वह कुंडली देखकर मैंने बाँच दिया था कुछ , वह संयोग से सही निकल गया । अब अफ़वाह फैलाने में मैं भी तुम्हारी तरह ही एक्सपर्ट हूँ । मैंने अफ़वाह फैला दी और कई बड़े जजमान मिल गये सेवा के । मेरी एक मदद करो । ”

मैं - “ क्या सर ? ”

सर - “ इ सत्यानन्द को मेरा जजमान बनवाओ । ”

मैं - “ सर अगर वह मेरी तरह हो गये जिसका कुंडली में कोई यक़ीन नहीं तब वह जजमान कैसे बनेंगे ? ”

सर - “ तुम्हारी कुंडली ही नहीं है , अगर होती तो तुम भी लपेटा जाते इस कुंडली की माया में । ऐसा कौन सा अधिकारी हैं जो इस कुंडली के फेर में न पड़े और अगर नहीं पड़ा तब हमारी एक कुंडली - विशेषज्ञ के रूप में विफलता है । जैसे नशा बेंचने वाले द्वृँद- द्वृँद कर नशेड़ी बनाते हैं वैसे ही कुंडली वाले खोज- खोजकर कुंडली का नशा चढ़ाते हैं । आप बस ले चलो मुझे , मेरा भौकाल बना कर परिचय दो , बाक़ी काम मेरा है , मैं साध लूँगा । इस काम में मेरा पच्चीस वर्षों का अनुभव है । ”

मैं - “ ठीक है सर । ”

मैं पढ़ने लगा , इतने में चिंतन सर ने सत्यानन्द मिश्रा की छपी किताब की प्रति मेरी आलमारी में देखी और पढ़ने लगे । सर बोले , “ यार इसको लपेटना तो बाँयें हाथ का काम है । ”

मैं - “ सर वह कैसे ! ”

सर - “ यह चारण- भाट का आकांक्षी ही नहीं प्रचंड आकांक्षी है । ”

मैं “ यह कैसे कह रहे आप सर ? ”

सर - “ जो आदमी बड़ौर साहित्य का कोई ज्ञान रखे किताब छपाने पर आमादा हो वह तो चारण- भाट खोजेगा ही कि कोई तारीफ़ करें उसकी । इसको चूतिया बनाना बहुत आसान काम है चिंतन उपाध्याय के लिये । मेरा इलाक़ा भी इनकी कमिशनरी में ही आता है । इनके माध्यम से डीएम- एसडीएम सबको गेयर में ले लूँगा और अपने चुनाव- क्षेत्र की विकास योजनायें चालू कर दूँगा । ”

मैं “ सर आप सरकारी नौकर हो , आप यह सब कैसे कर सकते हो ? ”

सर - “ यार बचपन की शादी का नुकसान भी है तो फायदा भी है । एक बेसहूर मार्का मेहरास्त है उसका नाम आगे चला रहा मैं । उसके नाम पर सारा खेल चल रहा है । उसकी पहचान बन रही अब उसकी पहचान है ही क्या सिवाय मेरी पत्नी होने के । जब वक्त आयेगा तब मैं कूदूँगा और वह तो धोख है मैं ही हूँ सबकुछ यह तो सभी जानते ही हैं । ”

मैं “ सर आप कह रहे वह बेसहूर है , तब एक बेसहूर कैसे कुछ करेगा ? ”

सर - “ यार आज बेसहूर है न , कल भी रहेगी यह कहाँ लिखा है । उसके पिता से बड़ा बेवकूफ़ इस जमाने में न मिलेगा । मुझे बेवजह अंगरेज़ी पढ़वा दिया , उसको कक्षा 8 के आगे पढ़ने नहीं दिया । अब तर्क सुनो उस चूतियाधीश का ... हमारे परिवार में लड़कियाँ डेहरी नहीं डाँकती । वह पता नहीं कौन सी दुनिया में जी रहा है । अब मैं पढ़ा रहा हूँ । वह हाई स्कूल पास कर गयी । फेल- पास करते बीए- एमए कर लेगी । उसको कौन सी आईएएस की परीक्षा देनी है । एक डिग्री आ जाएगी और पढ़ाई कैसी भी करो , कुछ तो ज्ञान होता ही है । मैंने यह भी कहा कि तुम क्लास करने को ज़रूर जाओ । यह कक्षा में जो पढ़ाई होती है वह तो एक सिखाने का ढंग है ही , उससे भी ज्यादा व्यक्ति सीखता है मिलने - जुलने से , आपस में संवाद करने से । यह जो सहपाठी आपस में मिलते हैं हर दिन और आपस में एक सामंजस्य- साहचर्य विकसित होता है , इससे जो शिक्षा प्राप्त होती है वह अनमोल है । मैं उसको तैयार कर रहा हूँ । उसकी बेसहूरी अगर खत्म न हुई तब भी कम तो होगी है । मैं कमज़ोरियों को अपनी ताक़त बनाऊँगा । वह कमज़ोर दिख रही पर वह मेरी एक ताक़त साबित होगी , बस वक्त का इंतज़ार करो । ”

सर से बड़ा जीवट का आदमी कम ही होगा । वह पूरी किताब घोंट मारे । यह किताब घोंटाई एक ही लक्ष्य से हो रही थी कैसे कमिशनर को साधा जाए । पढ़ते- पढ़ते वह प्राक्कथन के उस पेज पर पहुँच गये जहाँ मेरा नाम लिखा था । सर बहुत ज़ोर से बोले , “ अनुराग तुम तो बहुत बड़ा दुर्ग गिरा दिये । ”

मैं “ अब क्या हो गया सर ? ”

सर - “ साहब तो किताब में तुम्हारा नाम भी लिख दिये हैं । ”

मैं - “ सर यह किताब मैंने ही लिखी है । । जो कवितायें उन्होंने लिखी थी उसमें से ज्यादातर छपने लायक न थीं । सत्य प्रकाश सर ने कहा मुझसे , इसको ठीक करो । अब ठीक करने की भी एक सीमा होती है पर जो भी बन पड़ा कर दिया । ”

सर - “ यार आज यह आपरेशन बहुत ज़रूरी है । ”

मैं - “ सर पढ़ने दीजिये , आज शाम को पूरी भीड़ होगी और मेरा नैतिक दायित्व है उनके प्रति । मेरे लिये इस समय यह बहुत ज़रूरी है । ”

सर - “ पढ़ो आप । ”

यह कहकर सर नीचे चले गये आज का समाचार पत्र लेने ।

माँ गंगा नहा कर आ गयी । सुबह आठ

बजे ही अशोक - दिनेश आ गये । यह उनका तकरीबन रोज़ का काम था । वह आकर मेरी माँ और मेरे भाई से ही बात करते थे और मेरा इंतज़ार करते थे । मेरी माँ की वह सब चापलूसी करते थे और वह चापलूसी बहुत पसंद करती थी । अशोक कहता था ,

“ आंटी जी अब हर ज़िले में सर के पढ़ाये लोग ही डीएम- एसडीएम होंगे । करछना का एसडीएम तो वहीं बनेगा जिसको सर पढ़ायेंगे । आप उसको किसी को भेजकर तहसील से गाँव बुलवा लेना और लोगों की समस्या का निराकरण करना । आंटी जी आप जनता दरबार लगाना और लोगों की समस्याओं का निराकरण करना । आप बहुत धर्मात्मा हो । अब गुरु की लाज तो भारतीय परम्परा में सब रखते ही हैं । ”

मेरी माँ जिसने जीवन में कुछ न देखा हो उसके लिये यह कपोल- कल्पना ही सही पर जीवन में एक आनंद तो दे ही रही थी । यह इन लोगों की वार्तालाप दादू नाना - मामा तक पहुँचा देता था और शहर वाली मामी कहती थी , “ उर्मिला के भाग खुली गयेन । इ मुन्नवा का रहा और का होई गवा । एर हमार गदेल हएन केथौ लायक नाहीं । ”

मैं पढ़ रहा था और चिंतन सर मेरे बगल की तर्ज पर बैठकर अपनी योजना बना रहे थे कि हल्ला हुआ नीचे से कि कमिशनर साहब की कार आई है और ड्राइवर कह रहा साहब ने अनुराग को बुलाया है । चिंतन सर बोले यह साहब की कार तुमको लेने आती है

मैंने सर के चेहरे की तरफ देखा और मन ही मन कहा कहो सुल्तानपुर करछना के हालात कैसे हैं अभी तो बाज़ी चली कहाँ है मैंने .. यह तो चेस बोर्ड पर गोटी ही सज रही है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 195

मेरे घर के सामने दो -दो लाल बत्ती की गाड़ियाँ, एक चिंतन सर की जीप और दूसरी कमिश्नर साहब की एम्बेसेडर । मेरी माँ के क्या कहने, उसका आज का दिन बेहतर विधाता ने लिखा था । उसी समय मेरे मामा अपने साले हरिकेश मामा के साथ आ गये, यह सोचकर कि विवाह वाले मामले को पेट्रोल- पानी देते रहें ताकि अपना दावा सुरक्षित रहे । वह दोनों लोग कमिश्नर साहब की कार बाहर देखकर घबड़ा गये, अब एक भरष्ट कर्मचारी का जिव होता ही कितना है । वह और हरिकेश मामा डरे- सहमे से बाहर वाले कमरे में घुसे और वहाँ कमिश्नर साहब को न देखकर थोड़ा आश्चर्य व्यक्त किया । उसी कमरे में दिनेश, अशोक, दादू, चिंतन सर, मैं, माँ, पिताजी सब बैठे थे ।

मामा - “ साहब आये हैं क्या? ”

माँ - “ नाहीं ओ नाहीं आई हयेन । ”

मामा - “ साहब की कार तो खड़ी है । ”

माँ - “ इ त इहाँ खड़िन रहत हअ । कमिश्नर साहब मुन्ना के पास आवत रहत ह और मुन्नउ जात रहत हअ । कई बार साहब नाहीं आई पावत हअ कुछ कारण से तब कार आवत हअ मुन्ना के लै जाए बरे । अब बड़ा साहब हएन, बड़ा महकमा बा, आफिस से बाहर निकलब आसान नाहीं बा । ”

मामा - “ कार मुन्ना को ले जाने आई है । ”

माँ - “ इ कार त गाहे- बेगाहे तकरीबन हर दुई- तीन दिन में एक बार त अवतै हअ । हम काल बाबू के इहाँ इहि कार से जाई के सोचे रहे पर समय पर डराइवर नाहीं आय तब हम चिंतन के जीप से चली गये । ”

मैंने मन ही मन कहा, अब समझ आया यह मेरे अंदर गोलीबाजी कहाँ से आई, इतना बड़ा गोला चला दिया कि मामा और मामा के साले दोनों धूल- धूसरित । अगला गोला और दे मारा, “ एनका जानत हअ भैया ? एय हयेन तपा भवा पुलिस अफ़सर कुंडली गुरु, गाज़ियाबाद में एनकर नाम उजियार बा । एनही

के हवलदार है मातादीन जौन बसंतवा ठाकुर के कुल गुंडई निकारि देहे रहा । मुन्ना के संगेन एनकरौ आईएएस में होई गवा बा । “

अशोक -“ अरे कमिश्नर साहब आजकल सर की चेलागीरी कर रहे है । हम लोगों का भी भोजन - पानी ठीक चल रहा है । अभी चलेंगे पाँच- सात पराठा और मटर - पनीर की सब्जी उड़ायेंगे, मिठाई सर आज अच्छी मँगवायेंगे । इसी ड्राइवर को बोल देंगे लेकर आ जायेगा, कौन पैसा देना है नेतराम को । अरे कमिश्नर साहब के यहाँ मिठाई जा रही यही धन्य- भाग्य है हलवाई का । ”

मामा- “ यह साहब क्यों चेलागीरी कर रहे मुन्ना की । ”

अशोक -“ पाँच अगस्त को पता चलेगा, थोड़ा धैर्य रखिये । ”

मामा - “ क्या है पाँच अगस्त को ? ”

माँ- “ गुड़िया ज़रा मुन्ना के कमरे से साहब की किताब लै आवअ त । ”

गुड़िया भाग कर गई किताब ले आई । माँ ने वही पेज खोल दिया जिस पर मेरा नाम लिखा था और कहा, “ इहीं किताब के विमोचन बा पाँच अगस्त के । ” मामा और हरिकेश मामा दोनों ने किताब को अलटा- पलटा, मेरा नाम देखा ।

मामा -“ बहिन मुन्ना ने बहुत नाम रोशन किया । इसकी कोचिंग का विज्ञापन समाचार- पत्र में पढ़ा, पोस्टर देखा लगा रहा दीवारों पर और सुना है बहुत अच्छी कोचिंग चल भी रही है । जहाँ भी जाता हूँ, हर आदमी कहता है इनका भांजा आईएएस हो गया है । बहुत गर्व होता है । कुल- खानदान की प्रतिष्ठा बन गयी है । ”

हरिकेश मामा जिस काम से आये थे वह तो वहाँ कहना संभव था नहीं उस भीड़ में । वह जाते समय माँ के पास आये और बस इतना ही कह पाये, “ बहिन हमरे ऊपर दया - दृष्टि बनाये रहअ, हम तब तक इंतज़ार करब जब तक मुन्ना के कतौं और बियाह तू न कै देबू । जब तू हमका टुकराय देबू तबै हम और कतौं जाबै, विभा आवत चाहत हई अगर आदेश द तब एक दिन ओनहू के तोहार आशीर्वाद मिल जाय । ”

माँ - “ भैया इ तोहार घर बा । अब तोहरे - पाँच ऐसन बड़ा घर नाहीं बा पर जौनौ बा इ तोहरै बा । जरूर आवैं विभा, हमका खुशी होये अगर ओ अझहिं हमरे गरीबखाने में । ”

हरिकेश मामा ने माँ का चरण छुआ और चले गये मामा के साथ । दाढ़ू का मन था कमिश्नर साहब के यहाँ मेरे साथ जाने का पर माँ ने कहा “ तू जा भैया के इहाँ वहाँ की हाल-चाल लै के आवअ , कहाँ भीड़ बढ़ाउबअ कमिश्नर साहब के इहाँ बेवजह । मुन्ना के लिखाई - पढ़ाई वाला काम है उहाँ तू का करबअ । ”

दाढ़ू मन मारकर चला गया । मैं किसी को भी साथ ले जाने के मूड़ में नहीं था पर चिंतन सर को ना कहना मुश्किल था और अशोक तो मानने वाला ही न था । मैं कमिश्नर साहब की कार से गया और अशोक चिंतन सर के साथ आया ।

कमिश्नर साहब इंतज़ार कर रहे थे । उनकी किताब तकरीबन तैयार हो गयी थी । वह बहुत प्रसन्न थे । उन्होंने किताब दिखायी, प्रकाशक किताब की तारीफ़ करने लगा, “ क्या लिखा है साहब आपने । आपमें सरस्वती का वास है, यह किताब तहलका मचा देगी । इसको भारत - भारती पुरस्कार मिलेगा ... ”

कमिश्नर साहब तारीफ़ सुनकर प्रसन्न हो रहे थे पर ऐसा दिखा रहे थे जैसे वह प्रकाशक की बात को कोई तरजीह नहीं दे रहे ।

मैं किताब देख रहा था कि सर ने कहा कुछ कमी है क्या?

मैं - “ छप गयी है ? ”

प्रकाशक - “ अगर छप भी गयी है तब भी कौन सी बड़ी बात है फिर से छप जायेगी, आप बतायें क्या बदलना है । ”

मैंने सर की तरफ़ देख कर कहा सर इस किताब को आप अपने माता-पिता को समर्पित कर दें और पहले पेज पर दो लाइन उनके बारे में लिख देते हैं ।

सर - “ क्या लिखोगे ? ”

मैं - सर लिख दीजिये

“ मुझे कुछ कहना था

यह बात कहने में बरसों लग गये मुझको

जो कह न सका वह लिख दिया है इसमें

काश मैं और बेहतर लिख सका होता

मुझे तुमसे ही कुछ कहना था । ”

पूज्य बाबू जी और माँ को समर्पित

आप मंच पर विमोचन के समय यही पढ़ते हुये समर्पित कर दीजियेगा । माँ तो है नहीं पर बाबू जी की आँख से आँसू गिर जायेंगे और माँ जहाँ भी होगी प्रसन्न होगी । सर भावुक हो गये । उनकी आँखों में आँसू आ गये । वह उठकर मेरे पास आये और कहा अनुराग तुम मानव नहीं हो कोई ईश्वर के दूत हो । तुम न होते तो यह किताब इस रूप में तो न छपती । सर ने प्रकाशक से कहा आप यह पहले पेज पर छाप दो । मैंने कहा, मुझे कुछ कामा, फुल स्टाप में दिक्खत दिख रही है और कहीं - कहीं बिंदी- चन्द्र बिंदी में भी समस्या दिख रही । आप एक घंटे रुको अभी ठीक करता हूँ । मैंने एक कापी अशोक और चिंतन सर को भी दी और वह लोग भी देखने लगे । सर ने कहा मैं कुछ लोगों से मिल लेता हूँ, तब तक तुम देख लो । हम लोगों ने सारी अशुद्धियाँ दूर करके प्रकाशक को किताब दे दी । वह देर रात तक किताब देने का आश्वासन देकर चला गया ।

प्रकाशक के जाने के बाद मैंने चिंतन सर का परिचय कराया कमिश्नर साहब से । चिंतन सर बहुत उतावले थे कुंडली देखने के लिये । मैंने कुंडली विशेषज्ञ के रूप में परिचय ही नहीं कराया, कुछ क़सीदे भी गढ़ दिये थे । सर की पत्नी भी आ गयी थीं और चिंतन सर पा गये तीन कुंडली देखने को । साहब - मेम साहब और प्रतीक्षा की । साहब - मेम साहब का तो बखान किया ही ग्रह- नक्षत्रों की प्रकृति के चिर- परिचित नाटक को व्याख्यायित करते हुये और प्रतीक्षा की कुंडली देखते हुये सर ने कहा, “ कन्या बहुत सौभाग्यशाली है ”

साहब ने कहा यह बताओ इसके विवाह का योग कब है । मैं इसका विवाह करना चाहता हूँ जल्दी ।

चिंतन सर - “ साहब हर कन्या का पति उस कन्या के निर्माण के साथ ही सुनिश्चित हो जाता है । इसकी कुंडली में बृहस्पति उच्च स्थान पर है । यह बहुत ही पराकरमी और शौर्यवान पति प्राप्त करेगी । इसका पति विद्वता, रचनात्मकता, नम्रता से भरपूर, श्री लक्ष्मी युक्त यशस्वी व्यक्ति होगा और जीवन में बहुत उन्नति करेगा ... ”

मेम साहब - “ चिंतन जी आप ने जितनी खूबियाँ प्रतीक्षा के पति में बतायी हैं वह सब तो अनुराग में तक़रीबन है ही । आप अनुराग की कुंडली प्रतीक्षा से मिला दीजिये अगर मिल जाती है तब सारा काम खत्म । ”

चिंतन सर के हाथ से तोते उड़ गये , उनको इसका पता ही न था कि मेरे विवाह की बात साहब के घर में चल रही है । वह समझ ही नहीं पा रहे थे कि क्या जवाब दें ... मेरी तरफ सर ने देखा ... मेरे अंदर फिर वही भाव आया ... कहो सुल्तानपुर ... मुझे आपकी तबीयत नासाज़ लग रह रही है ।

चिंतन सर - “ मैडम संयोग तो अच्छा है पर अनुराग की कुंडली ही नहीं है नहीं तो मिला देता । ”

मैडम - “ क्यों? बना दीजिये अगर नहीं है । ”

चिंतन सर - “ मैडम यह गाँव में जन्मे थे और जन्म का समय देखा नहीं गया अब बगैर जन्म के समय के बनी कुंडली पर प्रश्न चिन्ह रहता ही है । ”

सर ने कुंडली और बाँची , पर उनके मानस पटल पर मेम साहब की अंतिम कुछ पंक्तियाँ अपना स्थान बना गयीं थीं और उनके कुंडली- प्राड विधा की चिर- परिचित धार कहीं खो गयी थी । कमिशनर साहब को किसी मीटिंग में जाना था वह यह कहकर चले गये कि किताब आ जाने दो अंतिम रूप से तब बात करता हूँ ।

मैं , चिंतन सर और अशोक वापस चले घर की तरफ । चिंतन सर ने जीप सुभाष के चाय के दुकान पर रोक दी और कहा चाय पीते हैं । चाय पीते - पीते चिंतन सर थोड़ा गंभीर हो गये और कहा , “ यह तुमने बताया नहीं ? ”

मैं - “ क्या सर ? ”

चिंतन सर - “ साहब की बहन के विवाह का प्रस्ताव आया था । ”

मैं - “ सर वह आया और रिजेक्ट हो गया । अब पता नहीं कितने प्रस्ताव रिजेक्ट हुये सबका लेखा - जोखा कौन रखे । ”

सर - “ क्यों अस्वीकार किया यह रिश्ता? ”

मैं - “ माँ से पूछ लीजियेगा , उसी ने अस्वीकार किया । ”

सर - “ तुम जानते नहीं हो सत्यानंद मिश्रा कौन जनावर है । यह बहुत जुगाड़ चीज़ है । यह सबको साध कर रखता है । मुख्यमंत्री के कमरे में बैधड़क बगैर समय लिये घुस जाता है और इसके जाते ही लाल बत्ती जल जाती है । तुम देखना जैसे ही इलाहाबाद का कार्यकाल पूरा होगा , यह लखनऊ के कमिशनर बनेंगे । मेरे डीजीपी साहेब सड़ रहे थे पीटीसी मुरादाबाद में , इन्होंने ही मुख्यमंत्री से कहकर उद्घार कराया । ”

मैं - “ सर यह मुख्यमन्त्री के विश्वासपात्र कर्मचारी हैं , यही इनकी पहचान है न । ”

सर - “ यह छोटी बात है क्या ? ”

मैं - “ कल यह मेरे विश्वासपात्र कर्मचारी होंगे । बस समय का इंतज़ार करिये । ”

सर - “ तुम वही कह रहे हो जो मैं समझ रहा हूँ । ”

मैं - “ जी सर । ”

सर - “ यह फैसला कब लिया ? ”

मैं - “ अभी लिया नहीं , सोच रहा । ”

सर - “ तुम चुनाव लड़ना चाहते हो ? ”

मैं - “ पता नहीं । ”

सर - “ तब ? ”

मैं - “ एक बड़ा लक्ष्य है , अब उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये जो करना होगा करेंगे , बाकी जैसी ईश्वर की इच्छा होगी , हमारे बस में तो प्रयास करना ही है । ”

सर - “ तुम फुल टाइम राजनीति करोगे ? ”

मैं - “ मैंने अभी कुछ नहीं सोचा सिवाय इसके कि कुछ अलग करना है । ”

सर - “ यह उचित कदम है ? ”

मैं - “ क्यों नहीं है सर ? आप भी तो यही सोच रहे हैं । ”

सर - “ मैं बीस साल बाद यह काम करूँगा । ”

मैं - “ सर मैं बीस साल ख़राब नहीं करूँगा , अभी से यह काम चालू कर दूँगा । ”

सर - “ मतलब सेवा जवाइन नहीं करोगे ? ”

मैं - “ सर सिर्फ लक्ष्य बताया है बाकी कुछ मुझे भी नहीं पता है । अब जब करूँगा तब बताऊँगा । यह भी हो सकता है , यह एक ख़्याली पुलाव बनकर रह जाये । ”

सर - “ नहीं यह ख़्याली पुलाव नहीं होगा तुम जो भी करोगे जी- जान से काम करोगे , मैं इतना तो तुमको जान चुका हूँ । ”

सर की चाय ठंडी हो गयी वह चाय पीना ही भूल गये । मैंने चाय वाले से कहा दूसरी चाय दो सर को, यह विचार प्रवाह में स्वयम् को ही भूल गये हैं ।

सर को ठंडी चाय पीते देखकर फिर मन में ख्याल आया .. कहो सुल्तानपुर करछना के दाँव कैसे हैं.. अभी प्यादों की ही तो चाल चली है.. बहुत परेशान कर रहे हैं मेरे प्यादे ।

अब मैं कोई आम आदमी तो रहा नहीं, मेरे व्याख्यान ने मुझे एक अतिरिक्त सम्मान दे दिया था । जो लोग चयनित थे इस वर्ष मैं उनसे भी आगे की लीग का व्यक्ति हो चुका था । मुझे देखकर लोगों की भीड़ इकट्ठा होने लगी उसमें कई मेरे छात्र थे तो कई पढ़ने के लिये आना चाहते थे । मैंने उदारता दिखाते हुये कहा ज़रूर आओ.. आना शाम को चार बजे । सुभाष को भी दो-तीन सौ रुपया दिया और कहा सबको चाय पिला देना ।

मैं और चिंतन सर घर चले आये । चिंतन सर को यक़ीन ही नहीं हो रहा था कि घटनाक्रम इतनी तेज़ी से बदल गया और वह छोटी-मोटी कुंडली के घिसे- पिटे शगूफ़े के सहारे लोगों को साधते थे यहाँ तो सत्यानंद मिश्रा के बहन का विवाह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया । यही नहीं प्रस्ताव अस्वीकार करने के बाद भी पूरा घर लालायित कि विवाह हो जाये और इतने प्रतापी अधिकारी को कर्मचारी बनाने का खेल दिमाग़ में चल रहा ।

सर ने कहा , “ बाबा हमको भूल न जाना अपनी उड़ान में । ”

मैं - “ सर कैसी बात करते हैं, आप मेरे गुरु हो ।

चिंतन सर - “ मैं गुरु था अब नहीं रहा, अब चेलागीरी तुम्हारी मिल जाये वही एक उपलब्धि होगी । एक बात बताओ, यह सब कैसे हुआ ?

मैं - “ क्या सर ? ”

चिंतन सर - “ यह कोचिंग, यह किताब - लेखन, क़ब्ज़ा कमिशनर, राजनैतिक महत्वाकांक्षा.... जब हम पिछली बार मिले थे तब तो गौरैया की उड़ान थी, यह गरुड़ की उड़ान कब हुई । ”

मैंने आसमान की ओर देख कर कहा , “

सर वह चुनता है लोगों को अपने लक्ष्य के लिये । उसका कोई लक्ष्य होगा । मुझे वह शायद एक निमित्त बनाना चाह रहा है । उसकी माया है मैं तो बस एक प्रत्यक्षदर्शी हूँ और उसके आदेश का अनुपालन कर रहा ।

एक नज़म सुनेंगे सर ।

सर - “ कब लिखा ? ”

मैं - “ अभी लिखा कहाँ , बस सीधा सुना रहा आपको

सर - “ सुनाओ / ”

मैं -

“ मैं जैसा माँ के गर्भ में था

वैसा बचपन में न था

जैसा बचपन में था वैसा अब नहीं हूँ

खिले बाग को देखकर तब मैं विस्मित होता था

आस- पास क्या हो रहा इससे अनजान रहता था

पर अब विस्मय वह नहीं रहा जो कभी हुआ करता था

एक दिन मैं कश्ती लेकर समुंदर में उतर गया

जहाज़ डूब रहे थे लोग चीख रहे थे

पर कश्ती मेरी तूफानों से लड़ रही थी

कश्ती ने कहा मुझ पर भरोसा रख

यह सब जहाज़ के डूबने के पहले जहाज़ से कूद गये

मौत शायद दूर थी पर इनका जहाजों पर यक़ीन न था

क्या पता यह तूफान ही थक कर रुक जाये

अपने पर भरोसा करना सीख

देख यह पतवार टूटी हुई दिख रही

पर लहरों को उनकी हृद बता रही

मत कर समर्पण जब तक काल खुद चलकर तेरे पास आता नहीं है

काल को भी थका कर अपने पराण लेने दे

क्या पता उसकी साँसें तुझसे पहले उखड़ जायें

मैंने सीख लिया अपने पर भरोसा करना

मैं चुपचाप गुजरे ज़मानों की क़ब्रों की तरह

बेवजूद होकर मरने नहीं आया हूँ
मेरी कब्र पर कोई मेला लगे यह अरमान लेकर जन्मा हूँ ॥

सर - “क्या कहना चाह रहे हो ? ”

मैं “ सर अपने पर भरोसा होना चाहिये । अपने पर विश्वास सबसे बड़ी चीज़ है । शकुनि को पाँसों के खेल में हराना असंभव था इसलिये नहीं कि वह पाँसे उसके पिता की हड्डियों से बने थे , बल्कि इसलिये कि उसे अपनी उँगलियों पर भरोसा था । देवराज इन्द्र दधीचि की हड्डी माँगने इसलिये नहीं आये कि हड्डियाँ वज्र की थीं बल्कि इसलिये कि उनको महर्षि दधीचि के तप पर भरोसा था । मैं कोचिंग में सफल इसलिये नहीं हुआ कि मेरी रैंक 102 थी बल्कि इसलिये कि मुझे अपनी विश्लेषण क्षमता पर विश्वास था । आपके सारे कुंडली आंकलन गलत हो रहे हैं । आप बीस साल पुराना फ्रामूला आज भी आज्ञा रहे हो । आप हर व्यक्ति की कुंडली में तक़रीबन एक ही बात कहते हो । आप में तप की शक्ति होनी चाहिये अगर अनुमान की सुनिश्चितता चाहिये । आपका अपने पर ही विश्वास नहीं है । ”

सर - “ मैं क्या करूँ ? ”

मैं “ आप संन्यास ले लो , जीवन को समाज को दे दो आप देखो आप जो कहेंगे वही सत्य होगा । ”

सर - “ मेरी ज़िम्मेदारी का क्या होगा ? ”

मैं “ बुद्ध किवाड़ खोलकर निकले थे तब अगर यह सोचते तब किवाड़ खोलकर वापस आ जाते । आप बुद्ध बनो । बुद्ध को किसी ने कोई आश्वासन न दिया था , पर मैं आपको दे रहा । मैं आपके बच्चों की परवरिश आपसे बेहतर करूँगा । आप मुझे यह फ्राडगीरी यह दुनियावी काम करने दो । मुझे एक गैर मामूली दास्तान पर चलने दो । जब वक्त आयेगा तब मैं आपकी भूमिका बताऊँगा । ”

सर - “ बाबा यह यात्रा कब आरंभ हुई ? ”

मैं “ कौन सी ? ”

सर - “ कब्र पर मेला लगाने वाली गैर मामूली दास्तान । ”

मैं “ सर वह यात्रा जारी है , यह कोचिंग में क्या मैं पैसे के लिये पढ़ा रहा हूँ ? यह उन लोगों की गलतफ़हमी है जो यह सोचते हैं कि मैं पैसे के लिये पढ़ा रहा । मैं उन पैसों की तरफ़ देखता भी नहीं जो लोग देते हैं । मैंने अपने हाथ

से एक भी रूपया नहीं लिया और न किसी से माँगा । यह सामने की आलमारी खोलो वह वैसे ही पड़ा है, जैसे आया है । आप को ज़रूरत हो आप भी ले लो कुछ । मैं एक अभियान की तरफ हूँ जो मेरे अलावा कोई और नहीं देख पा रहा । “

सर - “ वह कौन सा अभियान है । ”

मैं - “ सर थोड़ा सबर कीजिये । ”

मैंने आवाज़ दी गुड़िया को कि ज़रा चाय पिलाना

मैं और चिंतन सर चाय पी रहे थे .. चिंतन सर वाकई चिंतन कर रहे थे

उनको देखते -देखते मन में कहा मैंने ...मुझे संन्यास दिला रहे थे .. यहीं गेरुआ वस्तर पहनाकर बालों का जूँड़ा बनाकर संन्यासी बना दूँगा

क्या सुल्तानपुर चेस बोर्ड से अपनी गोटी ही हटा दी .. करछना का घोड़ा ढाई घर चलने को बेताब हैं पर सुल्तानपुर की मुहरों का पता ही नहीं

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 196

मैं शाम को क्लास लेने चला गया । चिंतन सर भी क्लास में आये थे । आज मेरे यूनिवर्सिटी रोड पर जाने के कारण कुछ लड़के और आ गये थे । जैसे - जैसे मेरी प्रसिद्धि बढ़ रही थी हर दिन लोगों का तांता बढ़ता जा रहा था । मैं बढ़ती भीड़ से उत्साहित हो रहा था । मैं हर दिन बेहतर अपने को ही करने की कोशिश कर रहा था । मैंने जहाँ पर कल कक्षा खत्म की थी वहीं से आरंभ की । यह क्रान्तिकारी चरमपंथ का दर्शन क्या था ? प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान क्रान्तिकारियों का तक़रीबन खात्मा ही हो गया था । विश्वयुद्ध के बाद आम माझी के तहत क्रान्तिकारियों को जेल से रिहा किया गया । गाँधी के द्वारा 1922 में आंदोलन वापस ले लेने के कारण जिन लोगों ने आंदोलन के लिये सबकुछ त्याग दिया था उनको घोर निराशा हुई । राष्ट्रीय नेतृत्व पर प्रश्नचिहन लगने लगे । अहिंसक विचारधारा पर सवाल उठने लगे , गाँधी राष्ट्रीय राजनीति से दूर हो चुके थे । एक ठहराव के कुछ वर्ष थे कांग्रेस के लिये । इस ठहराव के वर्षों में एक विकल्प की तलाश होने लगी । न तो स्वराजी आकर्षित कर पा रहे थे नवयुवकों को न ही रचनात्मक कार्यकरम । एक विचारधारा विकसित हो रही थी कि हिंसात्मक तरीके ही आज़ादी दिला सकती है । उसी क्रान्ति पूरे विश्व को प्रभावित कर रही थी यह भारतीय क्रान्तिकारियों को भी प्रेरणा दे रही थी । शचिन्द्रनाथ

सान्याल की पुस्तक “ बंदी जीवन ” करान्तिकारियों की एक संदर्भ ग्रन्थ बन चुकी थी ।

1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन का गठन हुआ और उद्देश्य था सशस्त्र करान्ति के द्वारा औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेंकना और एक संघीय गणतन्त्र संयुक्त राज्य भारत की स्थापना करना । यहाँ पर यह कांग्रेस से दो अर्थों में भिन्न थे एक हिंसा बनाम अहिंसा और दूसरा गणतन्त्र बनाम डोमिनियन स्टेट्स । कांग्रेस के कार्यकरम में अभी पूर्ण स्वराज दूर-दूर तक न था । 1920 के असहयोग आंदोलन के समय जिस स्वराज की बात गाँधी कर रहे थे उसकी कोई व्याख्या उन्होंने न की पर आम जनता इस स्वराज का अर्थ अंग्रेजों के देश निकाले जाने से ले रही थी । अफ़वाह यहाँ तक फैल गयी कि एक जेल से कुछ क़ैदी भाग गये यह निष्कर्षित करके कि गाँधी का राज्य आ गया है , पर कांग्रेस ने इस स्वराज को कहीं भी व्याख्यायित नहीं किया ।

दिसम्बर 1928 को फ़िरोज़शाह कोटला मैदान में युवा करान्तिकारियों की बैठक हुई और सामूहिक नेतृत्व एवम् समाजवाद एक लक्ष्य बना , यही वह दौर था जब नेहरू - सुभाष की जोड़ी कांग्रेस में समाजवाद के नारे पर बल दे रही थी । करान्तिकारी इस समय आतंकवाद और हत्या की राजनीति छोड़कर संगठित कार्यवाही में विश्वास करने लगे थे पर साइमन कमीशन आंदोलन में लाला लाजपत राय पर आक्रमण ने उन्हें व्यक्तिगत शौर्य की तरफ़ मोड़ दिया ।

हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन ने जनता को जन करान्ति की ओर मोड़ने का निर्णय लिया और पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट बिल के मुद्दे पर असेम्बली में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बम फेंक दिया । यह बम क्यों फेंका गया ? अगर किसी को क्षति पहुँचाना एक उद्देश्य नहीं था तब क्यों फेंका गया ? यह एक मामूली बम था कोई ख़तरनाक बम न था , यह इस तरह फेंका गया ताकि किसी को कोई क्षति न हो । जो पर्चे बम के साथ फेंके गये उन पर लिखा था “ बहरे कानों तक अपनी आवाज़ पहुँचाने के लिये बम । ”

बम फेंकने का उद्देश्य था अपने को गिरफ्तार करा कर अदालत के माध्यम से अपनी विचारधारा का प्रचार.... अपने विचार और दर्शन को जनता तक पहुँचाना । अगर आप गाँधी के ऊपर चलाया गया 1922 का दरायल देखें तब यह करान्तिकारियों का कृत्य गाँधी से प्रभावित लगता है । यही कार्य गाँधी ने भी किया था । अदालत को अपनी बात जनता तक पहुँचाने का माध्यम बनाया था और ब्रितानी हुक्मरान इतना डर गये गाँधी की रणनीति से कि

फिर कभी गाँधी पर दरायल चलाने का उनकी हिम्मत ही न पड़ी । गाँधी के ऊपर सिफ्र एक बार दरायल चलाया गया , 1922 में । यह करान्तिकारियों का अदालत को अपनी विचारधारा के प्रचार का माध्यम बनाना कहीं न कहीं गाँधी की रणनीति से प्रभावित लगता है ।

गाँधी ने महिलाओं को आंदोलन में भागीदारी करने के लिये प्रेरित किया । बंगाल में युवतियाँ करान्ति में भाग लेने लगी थी खासकर सूर्यसेन की करान्तिकारिता में । वह हथियार पहुँचाने , संदेश पहुँचाने का काम तो करती ही थीं , समय आने पर संघर्ष भी करती थी । प्रीतिलता वाडेदार, कल्पना दत्त जोशी , शांति घोष , सुनीति चौधरी उल्लेखनीय नाम है ॥

कांग्रेस के नेतृत्व का आंदोलन धर्मनिरपेक्ष था और इन करान्तिकारियों का भी ।

करान्ति का दर्शन भगत सिंह ने व्याख्यायित किया था । 1925 का एचआरए का घोषणा पत्र देखें उसमें स्पष्ट कहा गया है कि हमारा उद्देश्य उन तमाम व्यवस्थाओं का उन्मूलन करना है जिसके तहत एक व्यक्ति दूसरे का शोषण करता है । बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण, मज़दूरों - किसानों का संगठन , संगठित हथियारबंद करान्ति के लिये कार्य करना इनका मंतव्य था । पर बाद में इनके रुख में परिवर्तन आता है । राम प्रसाद बिस्मिल ने जेल से युवकों को संदेश भेजा कि पिस्तौल, बम , करान्तिकारी षड्यन्त्रों और रिवाल्वर को त्याग कर खुला आंदोलन चलायें । हिंदु- मुसलमान एकता पर ध्यान दें और सारे दल एक होकर कांग्रेस के नेतृत्व में संघर्ष करें । भगत सिंह ने कहा था , “ करान्ति की तलवार में धार वैचारिक पत्थर पर रगड़ने से आती है । ” भगवती चरण वोहरा ने “फ़िलासफ़ी आफ बम “ लिखी । इसमें भी जन करान्ति की बात कही गयी । भगत सिंह का अपनी गिरफ्तारी के पहले ही व्यक्तिगत शौर्य और आतंकवाद से विश्वास उठ गया था वह मार्स्वादी हो गये थे और जनता जनता के लिये करान्ति करें यह कहने लगे थे । 1929 से 1931 के बीच आप भगत सिंह और उनके साथियों के बयानों को देखिये जो अदालत में और अदालत के बाहर दिये थे , उन सबमें यही कहा गया , किसानों और मज़दूरों को संगठित करना अब मुख्य काम होना चाहिये ।

चिंतन सर - “ आप यह कहना चाह रहे हो कि भगत सिंह गाँधी के रास्ते पर जा सकते थे अगर फ़ाँसी न होती या वह आरंभ में ही कांग्रेस में आ गये होते । ”

मैं - “ सर इतिहास की व्याख्या आसान नहीं होती । यह किन्तु- परन्तु से नहीं चलती । मैं सिफ्र यह कहना चाह रहा कि करान्तिकारियों के जो विचार 1920 में थे उसमें 1930 तक बहुत परिवर्तन आ चुका था और वह

व्यक्तिगत शौर्य के बजाय एक चरणबद्ध संघर्ष में यकीन करने लग गये थे और उनका खून- ख़राबे में विश्वास कम होता जा रहा था । वह इस बात को समझने लग गये थे कि जन- आंदोलन ही एक रास्ता है देश की आज़ादी का न कि यह व्यक्तिगत शौर्य से रक्तपात । “

एक छात्र- “ यह तो हम कही पढ़े नहीं जो आप पढ़ा रहे । “

अशोक - “ तभी तो प्रारंभिक परीक्षा फेल कर रहे हो , अब पढ़ लो फ्रिजूल सवाल न करो ।

सर यह बताइये क्या हम यह कह सकते हैं कि गाँधी न होते तब भी आंदोलन उसी दिशा में जाता जिस दिशा में गाँधी ले जा रहे थे । “

मैं “ जब 1930 तक आते- आते करान्तिकारियों ने स्वीकार करना आरंभ कर दिया कि मेरा रास्ता उचित नहीं है , जन- आंदोलन होना चाहिये , किसानों- मज़दूरों को संगठित किया जाना चाहिये , समाजवादी व्यवस्था की स्थापना होनी चाहिये , कांग्रेस के नेतृत्व में सबको एक होकर आंदोलन करना चाहिये , धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त का पालन होना चाहिये , हिंदु- मुस्लिम एकता पर कार्य किया जाना चाहिये । आप कांग्रेस के दर्शन को देखो , नागपुर , लाहौर , कराची अधिवेशन को पढ़ो और करान्तिकारियों की इन बातों से तुलना करो बताओ क्या रह गया किसी और मत को स्वीकार करने के लिये । “

दिनेश -“ सर अंक मिलेंगे ऐसा लिखने पर ? “

मैं “ आप बताओ आप इसके अतिरिक्त और लिखोगे क्या? आप लोग पढ़ो एक दिन जहाँ से भी पढ़ना चाहो और बताओ इसके अतिरिक्त और क्या लिखा जा सकता है । चलो मैं आपके उत्तर को और मज़बूत करता हूँ । करान्ति को करान्तिकारियों ने ही पारिभाषित किया है । इसका लक्ष्य क्या है ? साम्राज्यवाद से मुक्ति, एक ऐसे समाज की स्थापना जिसमें किसी का शोषण न हो , सामाजिक - राजनीतिक - आर्थिक स्वाधीनता । आप भारत का संविधान पढ़ो जो कांग्रेस ने बनाया था , जो करान्तिकारी कह रहे वही तो उसमें है ।

भगत सिंह ने अदालत में कहा था , करान्ति के लिये रक्तपात ज़रूरी नहीं है । करान्ति बम और पिस्तौल की उपासना नहीं है । करान्ति का सिर्फ़ एक तात्पर्य है अन्याय पर आधारित मौजूदा व्यवस्था को समाप्त कर देना । हमें विदेशी शासकों से ही नहीं ज़मींदारों- पूँजीपतियों से भी मुक्त होना होगा । अपने अंतिम संदेश में भगत सिंह ने कहा था , देश में संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक मुट्ठी भर लोग जनता का शोषण करते रहेंगे । भगत सिंह ने

समाजवाद को वैज्ञानिक ढंग से पारिभाषित किया था जिसमें पूँजीवाद और वर्ग-प्रभुत्व का पूरी तरह खात्मा था ।”

चिंतन सर - “ जब यह सब वह जानते थे और कह भी रहे थे तब क्यों बम - गोला चला रहे थे ? ”

मैं - “ यह एक बहुत मौजूँ सवाल है । उनके पास गाँधी की तरह का धैर्य न था । जो चीज़ गाँधी ने कई दशकों में हासिल की वह तुरंत हासिल करना चाहते थे । वह यह नहीं समझ सके कि विचारधारा को जनता के बीच ले जाने में वक्त लगता है , जो गाँधी जानते थे । यह क्रान्ति की विचारधारा कोई धर्म परिवर्तन नहीं है बल्कि यह एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है । क्रान्तिकारियों के पास एक उलझन थी , लोग कहाँ से आयेंगे , उनको नहीं पता था कैडर कैसे बनता है , जनता के बीच जाकर काम करना एक प्रशिक्षण की माँग करता है जिससे वह अनजान थे । वह समय से तेज चलना चाहते थे । उनको लगा कि बलिदान देकर वह युवकों को उद्घेलित कर देंगे । इसके विपरीत गाँधी के पास एक लंबा साउथ अफ्रीका के जन-आंदोलन का अनुभव था । गाँधी का जनता की संघर्ष करने की क्षमता और उनकी सीमाओं का एहसास था । गाँधी ने राजनीति को रचनात्मकता से जोड़ा , जिसका उस दौर में किसी को ज्ञान था । गाँधी सत्ता को थकाना जानते थे और कब जनता थक रही है , यह देख लेते थे । ”

अशोक - “ सर यह बहुत हाई फंडा मामला है थोड़ा आसान कीजिये । ”

मैं - “ बताओ क्या आसान करें ? ”

अशोक - “ सर अगर गाँधी न होते तब भी भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष इसी तरह चलता जैसा चला , यही आप कहना चाह रहे हैं ? ”

मैं - “ गाँधी की जो हठयोग अहिंसा है उसके बारे में कहना तो मुश्किल है पर यह आंदोलन एक जन संघर्ष का ही आंदोलन होता । 1930 तक आते- आते सारे क्रान्तिकारी बम- पिस्तौल की निरर्थकता समझ चुके थे और जन-संघर्ष की ओर उन्मुख होने की बात करने लगे थे । ”

चिंतन सर - “ यह सुभाष बोस का मसला क्या है ? इनको गाँधी काहे चहेट लिये ? ”

मैं - “ सर इसको कल करते हैं । ”

चिंतन सर बोले , “बाबा व्याख्यान बहुत सही रहा । ”

मैं - “ सर , कल करते हैं आपकी शंका समाधान । ”

अशोक - “ सर आप बहुत सही बोले , गाँधी काहे सुभाष को चहेट लिये ? सर यह चहेटना आप बहुत सही शब्द इस्तेमाल किये । यह गाँधी सबको चहेटते

ही थे । यह चहेटेश थे । “

उसी समय दादू आ गया । उसको आज का पैसा इकट्ठा करना था पर वह थोड़ा देर कर गया । अशोक ने दिनेश से कहा, आज उसकी वसूली रह गयी । यह पैसा गोल करता होगा बीच में यह तो पक्का है । दो- चार सौ रुपया मार दो, किसी को क्या पता चलेगा ? कोई भरोसा नहीं यह लोगों के घर जाकर वसूली करता हो । यह देखने में ही कालनेमि टाइप लगता है । इसके पिटवाने का जुगाड़ करते हैं कुछ ।

दिनेश - “यह सर के मामा का लड़का है । ”

अशोक - “ यही तो समस्या है, थोड़ा सा भी दूर का रिश्ता होता तब तो इसका इलाज कर देते । इसको कमिश्नर साहेब के यहाँ लेकर मत जाना नहीं तो बँगला में घुसा नहीं कि गाँव में अंधेर कर देगा । इसर के सारे रिश्तेदार बहुत ही नालायक हैं । इनको अगर इज्ज़त - मरजाद से नौकरी करनी है तब पहला काम करें कि इन सबसे पीछा छुड़ायें नहीं तो यह सब बेंच खायेंगे । ”

मैं - “ किसकी बात कर रहे अशोक ? ”

अशोक - “ कुछ नहीं सर आज का लेक्चर डिस्कस कर रहे, बहुत ही उमदा था । ”

दादू के पास मसाला ही मसाला था । बस रात का इंतज़ार था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 197

रात को सर चले गये अपने गाँव सुल्तानपुर यह कहकर कि वह कल दोपहर बाद आयेंगे । रात में दादू ने क्रिस्सा बताना आरंभ किया । उसने बताया, “हूकै निकल गयी थी चाचा और हरिकेश मामा के, कमिश्नर साहेब की गाड़ी देखकर । पूरे घर में इहीं पर विचार- मंथन होत रहा कि कमिश्नर के गाड़ी मुन्ना के लेई बरे काहे आवत ह । बुआ जब चाची सुननि सारा क्रिस्सा तब कहिन लागत बा कमिश्नर के इहाँ बियाह तै होई गवा बा और बतावत नाहीं हयेन । हरिकेश मामा विभा मामी के लै के आई ग रहेन और मामी के त तू जनतै हऊ, आज तक इहिं में ज़िंदा हई कि हम प्रमुख साहेब के बिटिया हई । ओऊ परेशान रहिन कि अब का होये । चाचा कहेन कि हम दुई साल से कहत रहे, बबुवअ कहत रहेन कि कै ल बियाह । शर्मा जी - उर्मिला के मन रहा । उर्मिला कहेउ रहि एक बार अब कैसे बियाह कै लेई, केऊ देखाय त पहिले । तब विभा कहिन मुन्ना हमरे बेबी के लायक नाहीं बा । अब देखअ

कमिश्नर ओकर चेलागीरी करत हयेन इहौ हम सुना उर्मिला के घरे केऊ कहत रहअ । चलअ माना इ थोड़ा ज्यादा कै देहेस उ लड़िका पर दुआरे पर कमिश्नर के कार और किताब में मुन्ना के नाम त हमहू देखा और हरिकेशौ देखने । हरिकेश अपने बिटिया के बियाह कतौ और देखअ अब हमरे समझ से मुन्ना से न होई पाये । “

विभा मामी - “ ऐसन न कहअ जीजा । कोशिश करअ तोहार भयने बा ऊ । कमिश्नर साहेब बहुत बड़- बड़वार मनई हयेन , ओनकरे घरे के बिटिया न चले उर्मिला दीदी के इहाँ । हम- पचे एक समाज के हई , हमरे घरे के बिटिया सबसे ठीक रहे उर्मिला दीदी बरे । उर्मिला दीदी खर स्वभाव के हई , हमार बिटिया चार बात बर्दाश्त कै ले पर कमिश्नर के बहिन एक बात न बर्दाश्त करे । ”

चाचा -“ हम सब समझत हई विभा पर अगर ओनकर मन साहेब के इहाँ होई जाये बियाह के तब हम का कै सकित हअ । हम और हरिकेश साहेब के मुलाजिम हई । हमार पचन के विधाता ह ऊ । अब तू बतावअ का कै सकित हअ ? हरिकेश तुहिन बोलअ । ”

हरिकेश मामा - “ बात त जीजा आप ठीक कहत हअ पर बिटिया के तकदीरौ होत हअ । का पता हमरे बेबी के तकदीर में मुन्ना के नाम लिखा होई । अब जीजा कोशिश त अंत तक करबै करब चाहे जौन परिणाम होई । हम मुन्ना के बियाहे तक इंतज़ार करब । जब मुन्ना के बियाह कतौ होई जाये तबै हम बेबी के बियाह कतौं और करब । हर लड़की के बियाह तो होईन जात हअ कतौ न कतौ , बेबी के भी होईन जाये अगर मुन्ना से न भवा । पर हम इंतज़ार करब , कौन बेबी के उमर निकली जात बा । ”

मामा -“ ई बात ठीक बा । पर धीरज रखअ , मिलत-जुलत रहअ । बाबू के साधे रहअ । चाहत हम सभै हई कि मुन्ना- बेबी के बियाह होई जाय .. कहअ दादू तोहार का राय बा । ”

दादू -“ चाचा हरिकेश मामा के इहाँ बियाह सबसे उचित बा । बेबी अगर जइहिं बुआ के इहाँ तब मुन्ना के बँगला में हमार- पचन के इंटरी बनी रहे , इ त हम पहिलेन कहे रहे । चाचा आप के बात के क्रीमत बहुत बा बुआ के इहाँ , आपसे पूछे बँगैर कतौ बियाह तय न करे । हमरे समझ से अबअ बियाह तय नाहीं भवा बा कतौं । ”

चाचा - “दादू सुना तू मुन्ना के बहुत नज़दीक होई ग ह आजकल । इहौ सुना हअ कि कोचिंग के मालिक तुहिन हअ । तुहिन पैसा इकट्ठा कै के उर्मिला के देत हअ । केतना पैसा इकट्ठा भवा ? ”

दादू - “ चाचा हम त मजदूर मनई हई । हम कोचिंग शुरू होई के पहिले हर रोज़ चला जाइत थअ । कमरा खुलवाइत थअ , बत्ती- पंखा चालू करित थअ । लड़कियन पढ़े बरे आवत हईन , एक दुई आदमी के रहब ज़रूरी रहत हअ । जौन पैसा मिला शुरू में ऊ त मुन्ना के दै देहे रहे पर अब मुन्ना पैसा नाहीं लेतेन । जे केऊ देत हअ हम बुआ के दै देझत हअ । ”

चाचा - “ केतना लड़िका हएन । ”

दादू - “ संख्या दिन - प्रतिदिन बढ़तै जात बा । होइहिं 60/70 लोग । ”

चाचा - “ फ़ीस केतना बा ? ”

दादू - “ फ़ीस त बा 2000 रुपिया पर सब देतेन नाहीं पूरा पैसा । ”

चाची - “ तबौ 70-80 हज़ार त कमाई होई चुकी होये । ”

दादू - “ कहब मुश्किल बा । कौनौं हिसाब त होत नाहीं न कतौ लिखा- पढ़ी बा पर कमाई सकत हएन एतना रुपिया । रोज़ै त मिलत हअ हजार - दुई हजार । ”

चाची - “ उर्मिला के रोज़ तू देत हअ हजार- दुई हजार ? ”

दादू - “ हाँ चाची .. कभौं- कभार एसे ज्यादौ होई जात हअ । ”

चाची - “ इ मुन्नवा का से का होई गवा । पढ़ाई में कौनौं बहुत तीसमार खाँ त रहा नाहीं पर लगन लागि गै और गंगा माई के कृपा होई गई । ”

दादू - “ चाची उ पहिले का रहा इ त नाहीं कहि सकित पर अब त एकदम बवंडर बा । कुंडली गुर्ल ओसे पढ़त हयेन । कमिशनर साहब एक दिन खुदै कोचिंग आये रहेन । ”

बाबा भैया - “ कमिशनर साहेब कोचिंग में आई रहेन तू देखे रहअ । ”

दादू - “ भैया हम त तब रहे उहाँ पर । हमरे सामने ओ आई रहेन । एक अशोक सारस्वत हयेन बहुत बोलत ह ओ । ओ त इहाँ तक कहेन कि इ किताब पूरी मुन्ना ठीक करें हएन । कमिशनर साहब ओतना बढ़िया नाहीं लिँख पउतेन । ”

बाबा भैया - “ तू देखे रहअ का कि मुन्ना किताब ठीक केहेन ह । साहेब पढ़ा- लिखा क़ाबिल आदमी हयेन , इ मुन्ना बेमतलब अफ़वाह फैलावत हयेन । ”

दादू - “ हम त नाहीं देखा भैया पर किताब में खुदै कमिशनर साहेब इ लिखे हयेन । इ चाचा और हरिकेश मामा पढ़ेन खुदै आप पूछ ल ओनसे । ”

चाची - “ तोहसे बाबा कुछ होई- जाई के बा नाहीं बस इहै कहत रहअ मुन्नवा के कुछ नाहीं आवत । जा तुहूँ कोचिंग में कुछ सीखबै करबअ । ”

बाबा भैया - “ अब हम मुन्ना से पढ़ब ? इ समय हमार आई गवा बा । ”

चाचा - “ तुम्हारा समय तो बहुत ख़राब आने वाला है अगर इस साल कहीं नौकरी न मिली । अपनी बीबी लो और घर से निकलो , हम कब तक तुम्हारा बोझ उठायेंगे । बस हर बात पर मुन्ना को कुछ नहीं आता । कुछ सीखो उससे । हर वक्त बेवकूफ़ों की तरह बात करते हो । दाढ़ लै जा एनहू के कोचिंग में शायद कुछ सुधार आई जाय । एक मुन्ना है घर के सहयोग देत बा और एक ऐ हयेन हमरे पर बोझ बना हयेन । बेवकूफ़ कहीं का । ”

बुआ बाबा भैया के चेहरा देखै लायक रहा । हम मजा लेर्ह बरे कहा बाद में चलअ भैया तोहार मेज- कुर्सी सबसे आगे वाली रिजर्व कै देब । हमेशा क्लास में पीछेन बैठा होबअ तोहार सीट कुंडली गुरु के बगल लगाय देबै । हम पे गुस्सा होई गयेन और कहेन मुन्ना के चापलूसी के अलावा और तू त कुछ करबअ न अब इ जन्म में । हमहूँ कहि दिहा बुआ जरावै बरे ... मुन्ना हमसे कहे हयेन कि तोहार कौनौं चिंता नाहीं बा तू बस अपने बुआ के सेवा में रहअ बाकी तोहार और तोहरे बाल- बच्चन पूरी ज़िम्मेदारी हम देखब । जब तोहार नाम आई गवा त डेराई गयेन । बुआ एक बात बताई ।

माँ - “ बतावअ । ”

दाढ़ - “ तोहार नाम सुनि के लोगन के हूक निकलि जात ह । चाचौ तोहसे डेरात ह । जब से तू बसंतवा के मुर्गा बनवाई देहे होंऊ तब से ओकर सारीं गुंडई चली गई । बसंतवा ठाकुर से गाँव में रामदीन कहेस एक दिन , आवै द उर्मिला बहिन के अगली बार तोहका इ पीपर के पेड़ से उ नीबीं के पेड़ तक मुर्गा बनवाई के चलवाऊब । मुन्ना से सब डेरात हअ पर ओ तोहार तेज आवाज़ सुनि के डेराई जाति ह और जब तू कहत हऊ कि ढेर बोलबअ त तोहार कौआ दबाई देब , तब त मुन्ना के हूक- पूक सब निकरि जात हअ । मुन्ना सोचत होइहिं कि अगर इ कौआ हमार दबाई दे तब हम शाम के पढ़ाउब कैसे ? ”

माँ - “ इ ज़रूरी बा मुन्ना पर शासन करब । सब ओकर दिमाग बढ़ाये हए आजकल । हर तरफ़ ओकर जयकार होत बा । अगर ध्यान न देब तब ओकरे में अहंकार आई जाए । इ अहंकार आवत देर नाहीं लागत और एक बार आई जाये तब जाब आसान नाहीं होत । जिंदगी में उ कुछ देखे बा नाहीं , पर एह समय नाम- शोहरत - पैसा सब ओकरे पीछे भागत बा । जे दस- दस रूपिया के मोहताज रहा होई ओकरे सामने रूपिया के पहाड़ खड़ा होई जाय तब त ओकरे बिगड़े के चांस त हझये बा । ”

दाढ़ - “ मुन्ना समझदार बा । ओकरे में अहंकार न आये । ”

माँ - “ ऐसन नाहीं बा दाढू । इ अहंकार एतने धन- सम्मान पर आई सकत ह , उहौ जब एकाएक आई जात ह । कमिश्नर साहब एतना बड़ा आदमी हयेन । ओ आयेन अपने बहिन के बियाह बरे पर अब ओ मुन्ना पर किताब बरे आश्रित होई ग हयेन । इ कोचिंग त रूपिया छापै के मशीन होई ग बा , तू देखतई हअ । ऋषभ एतना क्राबिल बा दिल्ली से मुन्ना से मिलै आवत बा । इ शालिनी स्टील के मालकिनौ आवत बा । इ नौसिखिया परीक्षा दई वाले दिन- रात सर .. सर कै के एकर तारीफै करत हएन । ऐतना नाम कुंडली गुरु के बा पर ओऊ बाबा- बाबा करत रहत हअ । ऐसन माहौल में घोड़ा के रास ठीक से पकड़ब ज़रूरी बा नाहीं त घोड़ा बेअंदाज होई जाए । ”

दाढू - “ पर ऐसन रास न पकड़ ल कि घोड़ा के जुगाली करै लायक न रहि जाय । बुआ एक बात समझ में आवत नाहीं बा । ”

माँ - “ का ? ”

दाढू - “ इ कलेक्टर संजीव टंडन काहे चाचा के हटावा चाहत बा ? ”

माँ - “ कुछ कहेन का भैया ? ”

दाढू - “ हाँ बुआ । ”

माँ - “ का कहेन ? ”

दाढू - “ हमसे पूछेन , मुन्ना एकबार कहि सकत हअ कमिश्नर से हमरे बारे में ? कमिश्नर से कलेक्टर के फोन कराई दे हमरे बारे में ? इ कलेक्टर खुश नाहीं बा हमसे और हटाई सकत ह हमका , जब मौका कौनौ पाए । ”

माँ - “ इ कब कहेन ? ”

दाढू - “ जब हम चलै लागे तब कहेन । ”

माँ - “ तू का कहअ ? ”

दाढू - “ हम कहा कि मुन्ना से कहि द नाहीं त बुआ से कहि द उ मुन्ना से कहि दे तब मुन्ना कहि देइहिं पक्का । हम इहौ कहा कि जेतना मुन्ना और कमिश्नर में नज़दीकी बा ओका देखत भये काम त कौनौ मुश्किल नाहीं बा । चाची कहिन हमसे , दाढू तू इ काम करावअ । कौनौं कार्यवाही कलेक्टर कै दई ओकरे पहिले फोन होई जात त बहुतै अच्छा रहत । अब जब तक कमिश्नर साहब हये तब तक त तोहरे चाचा के इ कुर्सी मिली रहै , बाकी एनके जाएं के बाद देखा जाए । ”

माँ - “ कौनौ घपला केहे होइहिं ? ”

दाढू - “ सर्वेश और घपला तो पर्यायवाची हझयै बा । बंदर गुलाटी मारब भूल सकत हअ पर तोहार भाई घपला करब कभौं न भूलिहिं । ए त सपनेऊ में

घपला कै देत ह और दूसरे के सपने में घुस के ओकरे साथ सपनेन में घपला कै देझहिं । हम बुआ जाब कलेक्टरेट पता करब फरगेंया से । “

पूरी रात पंचौरा माँ और दादू का चलता रहा । अगले दिन चिंतन सर क्लास चलने के पहले ही आ गये । वह बोले मैं कल चला जाऊँगा ज़रा गाँधी और सुभाष वाला मामला विस्तार से बताओ । क्लास आरंभ हो गयी ... सुभाष-नेहरू और गाँधी के तिरकोणीय संबंधों पर ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 198

गाँधी - नेहरू - सुभाष एक त्रयी स्वतन्त्रता आंदोलन की । नेहरू- सुभाष ने एक लंबे दौर तक गाँधी के साथ कार्य किया पर बाद में राहें अलग - अलग । पहले हम नेहरू- सुभाष का साम्य और विरोधाभास देखते हैं फिर गाँधी से उनके पारस्परिक संबंधों की ओर बढ़ते हैं । आप कुछ घंटे का धैर्य रखें हम इतिहास के एक रोमांचक दौर में प्रवेश करने जा रहे, एक अति रोमांचक । एक ने हमेशा गाँधी के नक्शेकदम कदम पर चलने का प्रयास किया तो दूसरे ने उनके प्रति अति सम्मान का भाव रखते हुये भी अपनी असहमति भी ज़ाहिर की और अनन्तः राहें जुदा हो गयी । एक ने अंत तक गाँधी की अहिंसा में विश्वास रखा तो दूसरे ने 1940 में हिटलर की धुरी शक्तियों के साथ सामंजस्य का प्रयास किया ।

नेहरू और सुभाष दोनों का जन्म क्रमशः 1880 और 1890 के दशक में हुआ, दोनों ही एक संपन्न परिवार से आते थे, दोनों ही कैम्बिरज गये, दोनों ने एक अच्छा कैरियर देश के लिये त्यागा और गाँधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुये । यह दोनों ही यूरोप और एशिया की घटनाओं का विश्लेषण करने में अति सक्षम था और तीस के दशक में यह दोनों बहुत नज़दीक आ चुके थे पर तीस के दशक की समाप्ति तक दोनों के मध्य राजनैतिक दूरी ऐसी बन चुकी थी जो पाटी नहीं जा सकती थी । मुझे कई बार लगता है इतिहासकारों ने इनके व्यक्तिगत संबंधों के साथ न्याय नहीं किया, अन्यथा हमें इतिहास की कुछ और परतें देखने को मिलती ।

चिंतन सर - “ आप किस तरह के न्याय की आकांक्षा रखते हैं, जो इतिहासकारों ने नहीं किया । ”

मैं - “ वह क्या परिस्थितियाँ थीं जो इन दोनों को नज़दीक ले आईं । इनकी विचारधारा क्या थी ? इनकी विचारधारा अगर एक समय पर एक दिख रही थी तब क्या कारण था न केवल यह आपस में दूर हुये वरन् गाँधी और सुभाष

नदी के दो पाट हो गये । मैं इनकी जीवनी और इनके लेखों से वह सारे बिंदु तलाशने की कोशिश करता हूँ । “

दिनेश - “ सर तिरपुरी अधिवेशन में जो गाँधी ने किया वह कहाँ तक उचित था ? ”

मैं “ तिरपुरी अधिवेशन 1939 की घटना है । थोड़ी देर हम लोग उसके दस साल पहले को समझते हैं । किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके व्यक्तित्व से होता है जिसमें उसका बचपन और शिक्षा- दीक्षा शामिल होती है । दस-पन्द्रह मिनट हम लोग उसमें लगा लेते हैं तब शायद आसान हो जायेगी हमारी यात्रा जो आप सब देखना चाह रहे , मेरे शब्दों के बहते प्रवाह के साथ । यह उन दो लोगों की गाथा है जो गाँधी के नेतृत्व में काम कर रहे थे जिसमें दोनों गाँधी का सम्मान करते थे जिसमें एक गाँधी की आलोचना करते हुये भी उन पर निर्भर था तो दूसरे ने पूरी तरह समर्पण करने से इंकार कर दिया । नवम्बर 1989 नेहरू का जन्म , जनवरी 1897 सुभाष का जन्म । एक इलाहाबाद की क्रान्तिधर्मी ज़मीं पर पला तो दूसरा अपेक्षाकृत शांत कटक उड़ीसा में । मोतीलाल नेहरू और जानकीदास बोस दोनों ही साधन संपन्न सफल अधिवक्ता , पर मोतीलाल संपन्नता में काफ़ी आगे । जवाहर लाल ग्यारह वर्ष तक अकेली संतान और एक मात्र पुत्र तो सुभाष नौ भाई- बहनों में एक और ऐसा कोई उद्धरण मुझे नहीं दिखता जिसमें सुभाष को बहुत ही लाड़- प्यार से पाला गया हो , इसके विपरीत जवाहर लाल को वह सारी सुविधायें दी गयीं जो एक मानव स्वप्न में भी कल्पना करता हो । जवाहर लाल को भाषा-विद और संस्कारों से सरोबार करने का प्रयास किया गया । प्रख्यात संस्कृत के विद्वान गंगानाथ झा ने उनको लालित्यपूर्ण संस्कृत का ज्ञान दिया । हैरो और टिरनिटी से शिक्षा प्राप्त करने वाले जवाहर लाल एक बहुत ही मेधावी छात्र नहीं कहे जा सकते पर उनके अध्यापक उनको जहीन कहते थे । जवाहर लाल का पूरा शैक्षणिक जीवन किसी महान उपलब्धि की बात नहीं कहता , कम से कम मैंने तो कहीं नहीं देखा । यहाँ तक जवाहर लाल नेहरू ने भी कभी किसी खास उपलब्धि का ज़िकर अपने आत्म कथात्मक संस्मरणों में नहीं किया । अगर किसी को कहीं दिखे तब अवश्य बताना मुझे । यह एक ऐसा बिंदु है जो दो व्यक्तियों के व्यक्तित्व की तुलना में बहुत सहायक होता है ।

जितना ही जवाहर लाल नेहरू का छात्र जीवन बगैर किसी खास घटना के बिता सुभाष का उतना ही विपरीत दिशा में रोमांचक था । वह एक मानदंड स्थापित करने वाले छात्र थे । 1913 की मैट्रिक परीक्षा में वह कलकत्ता विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किये । वह आईसीएस परीक्षा में अपने पिता को संतुष्ट करने के लिये भाग लिये और मेरिट में चौथा स्थान प्राप्त

कर गये । यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी, यह उपलब्धि और बड़ी हो जाती है जब हम यह देखते हैं कि उनके पास 6/7 माह का ही समय था इस परीक्षा की तैयारी का । पर यह नौकरी जवाइन करना कभी उनका ध्येय था ही नहीं । वह अपने जीवन को राष्ट्र को समर्पित करना चाहते थे, और वही किया भी । अप्रैल 1921 में आईसीएस से इस्टीफ़ा दिया और जुलाई 1921 में वह भारत आ गये । इस दौर में भारतीय राजनीति एक महत्वपूर्ण चरण से गुजर रही थी । नेहरू सुभाष से पहले राजनीति में आये थे और 1912 के बांकीपुर कांग्रेस अधिवेशन में एक डेलीगेट की हैसियत से वह शरीक हो गये थे और उनकी गाँधी से मुलाक़ात 1916 के लखनऊ अधिवेशन में हुई थी । वह गाँधी से अति प्रभावित थे पर सुभाष अपनी पहली मुलाक़ात में गाँधी से प्रभावित न थे । गाँधी और सुभाष की पहली मुलाक़ात 1921 में हुई । सुभाष ने गाँधी से सवालों की झड़ी लगा दी और गाँधी ने पूरे धैर्य से उत्तर दिया । सुभाष ने कुछ मुद्दों पर आंदोलन का भविष्य गाँधी से जानना चाहा, एक - आंदोलन के विविध स्वरूप और चरण, दूसरा - करों की नाआदायगी का आंदोलन में स्थान और महत्व, तीन - यह करों की नअदायगी और सिविल नाफरमानी किस तरह से अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिये विवश करेगी, चार- कैसे गाँधी एक वर्ष में स्वराज देशवासियों को देने का आश्वासन दे रहे । गाँधी सुभाष को पहले प्रश्न पर संतुष्ट कर सके, बाक़ी पर नहीं । वह यह भी समझने में असफल रहे कि गाँधी की वास्तविक आशा इस आंदोलन से क्या है । गाँधी का एक वर्ष में स्वराज देना एक सिफ़र उनका व्यक्तिगत विश्वास था और वह भी इस पर कितना विश्वास करते थे, यह कहना आसान न था । यहाँ पर सुभाष निराश थे और वह एक अंध भक्त होने के बजाय तर्क पर आधारित नेतृत्व की तलाश में थे ।

यह घटनाक्रम गाँधी - सुभाष के संबंधों को अंत तक प्रभावित करता रहा और शायद यहीं से वह एक विरोधाभास बन चुका था जिसकी परिणति 1939-40 में हुई । “

अशोक - “ सर मेरे समझ में कुछ नहीं आ रहा कि यह छात्र जीवन यह गाँधी- सुभाष प्रारम्भिक वार्ता कैसे दोनों के मध्य मतभेद को स्पष्ट कर रही है ? ”

मैं - “ थोड़ा धैर्य रखो, आगे समझ आ जायेगा । ”

चिंतन सर - “ पहले आप यह व्याख्यायित कर दो तब आगे बढ़ो । ”

मैं - “ स्वराज था क्या ? यह किसी को नहीं पता । गाँधी ने कभी नहीं बताया कि असहयोग आंदोलन में स्वराज शब्द का तात्पर्य क्या है । आप 1927 का मदरास अधिवेशन देखें जिसमें गाँधी ने पूर्ण स्वतन्त्रता के प्रस्ताव का विरोध किया था और 1928 के कलकत्ता अधिवेशन में डोमिनियन स्टैटस

की माँग की और एक साल का समय बिरुद्धि को दिया । आप 1928 में डोमिनियन स्टैटस माँग रहे हो और 1920 में कह रहे कि स्वराज एक साल में हम देंगे । यह क्या है ? यह एक नेतृत्व की अपरिपक्वता है । यह पता ही नहीं नेतृत्व को कि हमारा लक्ष्य है क्या ? आप गाँधी का निर्देश पढ़ें 1920 के आंदोलन मे । वह एक लंबा निर्देश पत्र है पर उसमे महत्वपूर्ण क्या है ?

किसी को हम आहत नहीं करेंगे , हम दुकान नहीं लूटेंगे , हम विरोधी को अपनी सदाशयता से प्रभावित करेंगे , ? हम कर देने से इंकार नहीं करेंगे , हम ज़मींदारों को अपने साथ लेकर चलेंगे , हम अभी सिविल नाफरमानी नहीं करेंगे , हम नेताओं की गिरफ्तारी पर विरोध नहीं करेंगे इन सबसे कौन सा स्वराज मिलेगा ?

हम करेंगे क्या ? ... हम विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करेंगे , चरखा चलायेंगे , हिंदू- मुस्लिम एकता करेंगे , शराबबंदी करायेंगे इन सबसे वह आततायी सत्ता देश छोड़कर चली जायेगी ?

सुभाष ऐसा जहीन व्यक्ति समझ गया था कि इससे कुछ होना - जाना नहीं है । आप सुभाष- गाँधी का संवाद फिर पढ़ें....

संवाद में क्या है ?

स्वराज क्या है ?

एक साल में कैसे मिलेगा ?

करों की नाआदायगी और सिविल नाफरमानी से अंग्रेज देश के बाहर कैसे जायेंगे ?

यह एक वर्ष की गणना कहाँ से आ रही है ?

गाँधी सुभाष को प्रभावित करने में विफल रहे । सुभाष को कलकत्ता भेजा गया । वहाँ पर वह चितरंजन दास से मिले और उनके निर्देश में प्रचार का कार्य करने लगे और वह पहली बार जिस नेता से प्रभावित हुये वह चितरंजन दास थे न कि गाँधी ।

यह प्रारम्भिक वार्तालाप दोनों के मध्य एक खाई बना गया था और वह गाँधी के आंदोलन की खामियों को देखने लग गये थे । उनको हमेशा लगता था कि गाँधी की समझ भारतीय जनमानस के बारे में परिपक्व नहीं है और वह जनता की लड़ाकू क्षमता मे यक़ीन नहीं रखते हैं और यही अंततः 1939 में हुआ जब नदी की दो धाराओं ने संगम बनाने से इंकार कर दिया । “

चिंतन सर - “ अब मामला समझ में आया । पर यह गाँधी क्यों चहेटा सुभाष को ? इतने जीव- जंतु पड़े थे कांग्रेस में यह एक अजगर भी रहा होता , यह

लील जाता ब्रिटिश को समय आने पर । “

मैं “ सर , यह गाँधी ने चहेटा नहीं , उन्होंने खुद ही कांग्रेस की अध्यक्षता से इस्तीफ़ा दे दिया । ”

चिंतन सर - “ क्यों? ”

मैं “ सर दिमाग सबका गर्म हो गया होगा , यह व्याख्या सुनकर । सब न तो आपकी तरह जहीन है न जिज्ञासु । दिमाग के तार पर लोड धीरे- धीरे देते हैं । ”

चिंतन सर - “ अगर लोडिंग तगड़ी नहीं लेंगे तब आईएएस नहीं होंगे । 440 वोल्ट से काम नहीं होगा , 11,000 लेना होगा । ”

अशोक - “ सर शार्ट - सर्किट हो जायेगा । हमारा तार अभी उतना तगड़ा नहीं है कि 11,000 वोल्ट की लोडिंग ले ले । आप सर कोई क्रिस्सा सुनाइये खंभात की खाड़ी टाइप । ”

सर क्रिस्सा सुनाने लग गये

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 199

चौरी- चौरा कांड के बाद की घटनाओं ने गाँधी- सुभाष - नेहरू के संबंधों को प्रभावित किया । उसी समय स्वराज पार्टी का निर्माण मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास ने किया पर जवाहर लाल नेहरू ने स्वराज पार्टी की सदस्यता लेने से इंकार कर दिया । वह इलाहाबाद महानगर पालिका में काम करने लगे । यह वह समय था जब बहुत से बड़े - बड़े नेता महानगर पालिकाओं में काम कर रहे थे - चितरंजन दास कलकत्ता, विट्ठल भाई पटेल बम्बई, वल्लभ भाई पटेल अहमदाबाद । यह समय एक अलग समय था देश के लिये । यह देश में एक निराशा का समय था । जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र दोनों ने महानगर पालिकाओं के प्रशासन में काम किया । सुभाष बोस कलकत्ता महानगर पालिका के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के तौर पर इतने अपने काम में लिप्त हो गये कि उन्होंने राजनीति को तक़रीबन छोड़ ही दिया । 1927 में सुभाष पुनः राजनीतिक घटनाक्रम में आते हैं और सुभाष एवम नेहरू गाँधी के नेतृत्व को स्वीकार करते हुये कांग्रेस में कार्य आरंभ कर देते हैं । उसी समय जवाहर लाल यूरोप का अपनी यात्रा पूरी करके 1927 के मद्रास अधिवेशन में भाग लेते हैं । जवाहर लाल की यूरोप यात्रा ने उनके दृष्टिकोण में एक आमूलचूल परिवर्तन कर दिया था । यह वह समय था जब जवाहर लाल पूर्ण स्वतन्त्रता के प्रस्ताव के बारे में विचार कर रहे थे और मद्रास अधिवेशन

में यह प्रस्ताव पास भी कर दिया गया । यही नहीं उन्होंने कुछ दिन बाद जनवरी 1928 में गाँधी जी को लिखा और प्रश्न किया, कैसे एक राष्ट्रीय संस्था अपना आदर्श डोमिनियन स्टैटस के रूप में राष्ट्र के समुख रख सकती है । यद्यपि यह पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव मद्रास अधिवेशन में पास कर दिया गया पर यह प्रस्ताव एक तरंगों को जन्म दे गया जो लहरें बना गयीं । मद्रास अधिवेशन में गाँधी उपस्थित थे पर वह तब तक राजनीति में पूरी तरह सक्रिय नहीं हुये थे, उन्होंने कांग्रेस की वर्किंग कमेटी में भाग नहीं लिया था ।

गाँधी ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और यंग इंडिया में लिखा भी कि यह प्रस्ताव बहुत ही शीघ्रता में पास किया गया और यहाँ तक लिख दिया कि यह कांग्रेस इतने नीचे स्तर पर पहुँच गयी है कि यह एक स्कूली छात्रों की वाद-विवाद संस्था बन चुकी है । नेहरू से स्पष्ट शब्दों में गाँधी ने कहा कि तुम बहुत तेज चलने की कोशिश कर रहे हो, तुम थोड़ा सोच कर चलने की कोशिश करो तुम्हारे ज्यादातर प्रस्ताव धैर्य की माँग करते हैं और तुम्हें एकाध साल का समय अपने प्रस्तावों को देना चाहिये । यह पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव एक दरेजेड़ी साबित हो सकता है, यह गाँधी का विचार कई अन्य सदस्यों ने भी प्रतिध्वनित किया । गाँधी कि इस आलोचना से नेहरू आहत हो गये और उन्होंने गाँधी के नेतृत्व पर ही आकर्मण कर दिया । वह आकर्मण बहुत ही तीक्ष्ण था । उन्होंने गाँधी के नेतृत्व पर अकर्मण्यता, अप्रभावी, अनिर्णयी होने का गंभीर आरोप लगा दिया । पर नेहरू शीघ्र ही समर्पण कर गये, जब गाँधी ने अपने और नेहरू के बीच के मतभेद की विशाल खाई को स्वीकार कर लिया और अपने और नेहरू के बीच के पतराचार को सार्वजनिक करने का प्रस्ताव नेहरू को दे दिया । यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि कैसे गाँधी-नेहरू - सुभाष की तिकड़ी काम कर रही थी और कैसे नेहरू - सुभाष एक तरह की विचारधारा रखते हुये भी एक गाँधी से साम्य बना बैठा और दूसरा अलग हो गया ।

प्रेम नंदन - “सर तथ्य की दृष्टि से लगता है आप सही नहीं कह रहे । यह पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव लाहौर में पास हुआ था न कि मद्रास में ।”

मैं “आप सिविल सेवा की परीक्षा दे रहे हो । आप सामान्य पुस्तकों से ऊपर उठो और सामान्य तथ्यों से भी । आप एक अचेषक बनो और अध्यापक पर तथ्य को न जानने का आक्षेप करने के पहले तथ्य को खँगालने की कोशिश करो । इतना विस्तार से बताने के बाद भी अगर आप को लग रहा कि तथ्य सही नहीं है तब क्या किया जा सकता है । आप लोग इसको पढ़ना आज एनसीआरटी के अलावा की पुस्तकों से आपको तथ्य मिल जायेगा ।

यह मद्रास सेशन बहुत महत्वपूर्ण है । इसमें गाँधी सक्रिय थे, चौरी- चौरा कांड की दुर्घटना के बाद, जवाहर लाल यूरोप से नया दृष्टिकोण लेकर आये थे, यह एक पाँच साल के आंदोलन की सुप्तावस्था के बाद के घुमड़ते बादलों का अधिवेशन था और एक मुसलमान मौलाना अंसारी ने इस अधिवेशन की अध्यक्षता की ।

यही वह समय था जब भारत का संविधान लिखने का कार्य कांग्रेस ने अपने हाथों में लिया और नेहरू रिपोर्ट में मोतीलाल लाल नेहरू ने डोमिनियन स्टैट्स माँगा एवम पृथक निर्वाचन का विरोध किया, जिन्हा ने नेहरू रिपोर्ट को पूरी तरह से अस्वीकार करके अपने चौदह बिंदु दिये और साम्प्रदायिकता का विकास होने लगा ।

सुभाष के लिये मद्रास सेशन इतना दुखदायी नहीं था जितना नेहरू के लिये । वह मद्रास सेशन में भाग नहीं ले सके जबकि नेहरू- सुभाष - शोएब कुरैशी तीनों कांग्रेस के महासचिव नियुक्त किये गये थे । मद्रास सेशन एक वामपंथ की ओर झुक रहा सत्र था और सुभाष वामपंथ से बहुत प्रभावित थे । वह कांग्रेस में वामपंथी तेवर ले आना चाहते थे और सफल भी हो रहे थे । सुभाष ने नेहरू रिपोर्ट पर हस्ताक्षर अवश्य किया था जिसमें डोमिनियन स्टैट्स स्वीकार किया गया था पर वह और जवाहर लाल पूरी ताक़त से रिपोर्ट में पूर्ण स्वराज को शामिल कराना चाह रहे थे, पर उनका दृष्टिकोण अल्पमत में था ।

साइमन कमीशन के विरुद्ध हुये प्रदर्शन में नेहरू और बोस को एक अलग नाम मिला । बंगाल के गवर्नर जैक्सन ने तो वायसराय इरविन को यहाँ तक लिख दिया कि सुभाष सारी हमारी विपत्तियों के मूल कारक हैं ।

1928 के कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता मोतीलाल नेहरू ने की और सुभाष ने ही उनका नाम प्रस्तावित किया था । सुभाष ने कलकत्ता अधिवेशन में मोतीलाल नेहरू का स्वागत सैनिक सम्मान एवम सैनिक अनुशासन के साथ किया । कलकत्ता अधिवेशन में सारा तामझाम सुभाष का ही था ।

चिंतन सर - “ यह तामझाम तो बेहतर शब्द नहीं है, इसका प्रयोग आप क्यों कर रहे हो ? ”

मैं “ सर व्यक्ति का मूल्यांकन एक बड़ी समस्या है और हमें अनावश्यक प्रवंचनाओं से बचना चाहिये । सुभाष का यूनिफॉर्म बिरतानी टेलर ने बनाया, बूट की आवाज़ थी, उन्होंने भूरे रंग के घोड़े पर सवार होकर एक सैनिक दल का नेतृत्व किया, मोतीलाल को हावड़ा स्टेशन पर 101 बंदूकों की सलामी दी गयी, कांग्रेस अध्यक्ष को 21 श्वेत घोड़ों के कैरेज पर बैठाकर ले जाया गया

, यह कांगरेस अध्यक्ष का एक ऐसा स्वागत था जो राजाओं और अधिनायकों को भी पीछे छोड़ जायेगा ।

आप यब बतायें बायकाट एवम स्वदेशी के नाम पर राजनीति करने वाली कांगरेस, जनमानस के साथ तादात्म्य रखने वाली कांगरेस, गाँधी की अहिंसा की नीति पर चलने वाली कांगरेस, विदेशी कपड़ों की होली जलाने वाले आंदेलन से उपजी कांगरेस एक बिरटिश फर्म की सिली हुई यूनिफ्रॉर्म से आगाज़ कर रही अपने अधिवेशन का ... यह उचित है या अनुचित इसका निर्णय आप पर छोड़ता हूँ ।

चिंतन सर - “ आप ही इसको व्याख्यायित कर दो । आपने तो सुभाष को खलनायक कह दिया । ”

मैं “ सिर्फ तथ्य दिये हैं मैंने जो ज्यादातर लोगों को ज्ञात नहीं हैं । मैं गाँधी - सुभाष की विचारधारा का विभेद सामने लाने का प्रयास कर रहा । यह हर स्तर पर था । गाँधी की सादगी से सुभाष कोसों से दूर थे यह कहने के लिये मैंने इतना लंबा विवरण कलकत्ता का दिया । सुभाष का वर्दी से अति आग्रह था । यह आग्रह उनका किशोरावस्था से ही था और बाद के जीवन में वह वर्दी में ही दिखायी दिये । वह धुरी राष्ट्रों के साथ चले गये जिसमें अहिंसा का कोई स्थान न था । वर्दी उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है । एक वर्दी धारी परिवेश पाश्चात्य विचारधारा की ओर ले जा रहा जिसमें अहिंसा की विचारधारा तड़फड़ा रही है और मुक्ति की माँग कर रही है । इसके विपरीत एक अधनंगा फकीर है जिसका वर्दी, पश्चिमीकरण, हिंसा से कोई लगाव ही नहीं है । एक बहुत तेज दौड़ना चाहता है तो दूसरा थम कर लाठी टेककर चलना चाहता है । एक को हर वक्त लगता है कि जनता संघर्ष को अमादा है तो दूसरा जनता की नब्ज को बार- बार टटोलता है और कहता है अभी खून गर्म नहीं हुआ है । एक हर वक्त अति उत्साही है तो दूसरा कहता है उत्साह उचित है पर उत्साहित होना और उत्साह में धैर्य का समावेश करना दो अलग- अलग बातें हैं ।

अशोक - “ सर यह परीक्षा में हम लिख दें जो आप कह रहे ? ”

मैं “ इसको लिखने में कोई नुकसान होगा क्या ? ”

दिनेश - “ सर सुभाष की विचारधारा का समर्थक व्यक्ति इसको पसंद न करेगा । ”

मैं “ सिवाय तथ्य के मैंने कहा ही क्या है ? कोई भी व्यक्ति विचारधारा से बँधा नहीं होता उसे एक तथ्यपरक आंकलन चाहिये वह आप देने का प्रयास करो । ”

चिंतन सर - “ आप आज गाँधी- सुभाष ख़त्म करो चाहे जितनी देर हो जाये । ”

अशोक - “ सर दिमाग़ गर्म हो गया है , थोड़ा अवकाश लेते हैं । ”

मैं - “ दस मिनट बाद आरंभ करते हैं कैसे गाँधी - सुभाष अलग हुये और क्या थी विचारधारा की टकराहट । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 200 & 201

दस मिनट बाद हम लोग इकट्ठा अवश्य हुये पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी । छात्रों ने कहा , बाकी का भाग कल करते हैं । मैंने चिंतन सर की तरफ देखा । वह बोले , मैं रुक जाता हूँ पर कल कर देना । मैं भी बोल- बोल कर थक चुका था हलाँकि मुझे पढ़ाने मैं रुचि आ रही थी । एक भरी हुई कक्षा अध्यापक को आकर्षित करती है और मैं अपने जीवन के उच्चतम बिंदु पर था ।

मेरे राष्ट्रीय आंदोलन की कक्षा शहर में एक अलग नाम प्राप्त कर रही थी । मेरी कक्षा में पढ़ने वाले छात्र मेरे पढ़ाये हुये पाठ को अपने होस्टलों और डेलीगेसी में कक्षा के बाद डिस्क्स करते थे और सबके लिये यह एक सुखद आश्चर्य का समय था क्योंकि इतने सारे तथ्य वह भी इतने बहुविध विश्लेषण से सराबोर एक साथ मिलना आसान न था । यह छात्र हरदिन अपने साथ और लड़के ले आ रहे थे । यह गाँधी- सुभाष - नेहरू का विश्लेषण एक अलग आभा निखार रहा था । मैं अगले दिन की क्लास की भीड़ देखकर आश्चर्यचकित रह गया । पूरे क्लास में तिल रखने की जगह न थी । शशि तिरपाठी, रचना दीक्षित , बद्री सर भी क्लास में । मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि मेरे साथ रण में लड़ने वाले मेरे नेतृत्व को देखना चाह रहे , अगर स्वीकार नहीं करना चाह रहे तब भी । छात्रों के लिये भी एक अलग अवसर था एक साथ इतने चयनित अभ्यार्थियों से रुबरु होना ।

मैंने इन लोगों का परिचय कराया और बताया कि यह लोग मेरे साथ ही चयनित हुये और जिसमें से बद्री सर और चिंतन सर तो मेरे गुरु हैं ।

शशि - “अनुराग , वह वक्त चला गया जब कोई तुम्हारा गुरु होने का दावा करता , अब तो एक नयी हवा शहर में तुम्हारी ही है । कल मेरे होस्टल की एक लड़की ने बताया कि स्वतन्त्रता आंदोलन पता नहीं कितने घंटे से चल रहा और गाँधी-सुभाष - नेहरू के कृत्यों पर व्याख्यान अपनी चरमता पर है ,

मैंने सोचा मैं भी तो देखूँ यह नायाब व्याख्यान । मैंने रचना ये कहा, इसने भी चलने की इच्छा ज़ाहिर की । “

अशोक - “ मैडम पैसा लगता है इसका ? ”

शशि - “ दे दूँगी वह भी । ”

मैंने अपनी बात कल से आगे आरंभ कर दी । यह 1928 का कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन एक बहुत ही महत्वपूर्ण अधिवेशन है, कांग्रेस के इतिहास में । यह अधिवेशन डोमिनियन स्टैटस बनाम पूर्ण स्वराज के लक्ष्य के स्वीकरण के मुद्दे पर हुये संघर्ष के लिये स्मरणीय है । यह अधिवेशन भिखमंगी राजनीति को सदा- सदा के लिये समाप्त करने को संकल्पित था । नेहरू- सुभाष की जोड़ी किसी भी समझौते पर तैयार न हो रही थी । यह किसी भी क्रीमत पर पूर्ण स्वराज्य के संघर्ष को आतुर थे, आतुर दोनों ही थे पर सुभाष अति आतुर थे और धैर्य भी खो रहे थे । यह धैर्य को खोने की सुभाष की प्रवृत्ति आने वाले वर्षों में गाँधी - सुभाष के संबंधों का निर्धारण करने लगी और सुभाष वह विश्वास गाँधी का अर्जित न कर सके जो नेहरू कर गये । यहीं से वह विभाजन रेखा साफ़ दिखने लगती है जो अंत में राहें हमारी - तुम्हारी जुदा हैं, कहला गयी सुभाष से ।

कलकत्ता अधिवेशन में नेहरू रिपोर्ट के डोमिनियन स्टैटस के मुद्दे पर संघर्ष अवश्यंभावी था । कांग्रेस के नरमपंथी पूर्ण स्वराज्य के पक्षधर न थे और वह गाँधी का दृष्टिकोण और उनकी ताक़त जानते थे । गाँधी तब तक राजनीति में बहुत सक्रिय न हुये थे पर नरमपंथियों ने गाँधी को कलकत्ता सत्र में भाग लेने के लिये मना लिया था । गाँधी यह जानते थे कि इस मुद्दे पर नेहरू- सुभाष को रोकना आसान नहीं है और नरमपंथी भी पूर्ण स्वराज्य के मुद्दे पर अपनी अलग राय रखते हैं । नेहरू - सुभाष के तेवर बहुत ही उग्र थे और कांग्रेस के टूटने का ख़तरा था । गाँधी ने विभाजन को रोकने का फ़ैसला किया । उनकी सहमति डोमिनियन स्टैटस पर तो थी पर वह नेहरू रिपोर्ट से पूरी तरह सहमत न थे । गाँधी को जनता के नब्ज की समझ थी और बोलने की कला आती थी और इसमें वह भारत नहीं विश्व राजनीति में अतुलनीय थे । उन्होंने पूर्ण स्वराज्य- डोमिनियन स्टैटस विवाद पर कहा, यह उचित न होगा एक विचारधारा को दूसरे के सम्मुख रखकर यह कहा जाए कि एक विचारधारा विजय का प्रतिनिधित्व कर रही तो दूसरी हीनता का । यह भी गाँधी ने कहा कि मैं डोमिनियन स्टैटस नहीं चाहता क्योंकि यह मेरे स्वतन्त्रता की विचारधारा की प्रगति में बाधक हो रहा है । जवाहर लाल ने दोनों विचारधाराओं के बीच के संघर्ष को सामराज्यवाद के समक्ष समर्पण के रूप में देखा यदि डोमिनियन स्टैटस स्वीकार किया जाता है । गाँधी ने तात्कालिक रूप से डोमिनियन स्टैटस को स्वीकार करने की वकालत की

और दो साल का समय सरकार को देने की बात कही कि अगर दो साल के भीतर यह नहीं मिलता है तब हम पूर्ण स्वराज्य के लिये संघर्ष करेंगे पर बाद में गरमपंथियों के दबाव के कारण यह समय दो वर्ष से एक वर्ष कर दिया गया ।

सुभाष बहुत ही आकर्षणक थे । वह किसी भी समझौते के पक्षधर न थे । वह तुरंत पूर्ण स्वतन्त्रता के लक्ष्य पर काम करने का आग्रह कांग्रेस से कर रहे थे और एक संशोधन प्रस्ताव भी कांग्रेस सत्र में पेश कर दिया । उनका प्रस्ताव पुरानी विचारधारा को नयी विचारधारा की खुली चुनौती था । उन्होंने यह भी कहा कि वह बंगाल के प्रतिनिधियों की आवाज़ को उठा रहे जो पूर्ण स्वतन्त्रता से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे । उन्होंने देश के युवकों में जग रही चेतना का भी हवाला दिया । उनका भाषण अद्भुत था और किसी भी भारतीय परम्परा के विद्यार्थी को पढ़ना चाहिये । भाषण के समापन में उन्होंने एक ऐसा प्रहार किया कि वह किसी क भी अंदर तक बेध दे ...

“नेतृत्व के लिये सम्मान और प्यार.. प्रशंसा और स्तुति एक बात है पर सिद्धांतों के लिये सम्मान एक दूसरी बात है..”

जवाहर लाल सुभाष के संशोधन प्रस्ताव के पक्ष में थे पर जब संशोधन प्रस्ताव पर मत पड़ रहा था तब संभवतः अपने पिता और गाँधी के सम्मान के कारण उन्होंने मत प्रक्रिया से अपने को अलग कर लिया । यह स्पष्ट रूप से गाँधी बनाम सुभाष हो चुका था । गाँधी ने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी थी और सुभाष कांग्रेस अधिवेशन में प्रस्ताव के संशोधन के पक्ष में अपनी बात कह रहे थे , वह भी पूरी आकर्षणकता से । सुभाष का संशोधन प्रस्ताव पराजित हुआ पर यह एक समाननीय पराजय थी , संशोधन प्रस्ताव के विपक्ष में 1350 वोट और 973 वोट पक्ष में । गाँधी ने स्पष्ट कह दिया था कि अगर यह संशोधन प्रस्ताव पास हुआ तब वह राजनीति से संन्यास ले लेंगे । सुभाष ने गाँधी के इस कथन पर उनके द्वारा मतदान प्रक्रिया को प्रभावित करने का आरोप लगा दिया । यह शायद आरोप सच भी था क्योंकि लोगों को गाँधी का नेतृत्व चाहिये था और साथ ही पूर्ण स्वराज्य भी । गाँधी एक साल बाद वही करने का वायदा कर रहे थे पर सुभाष तुरंत चाह रहे थे । सुभाष लड़ाकू वर्गों के नेतृत्व के रूप में उभर रहे थे और लोग स्वीकार भी कर रहे थे पर गाँधी को त्याग कर किसी और को नेतृत्व सौंपना सबके लिये अकल्पनीय था ।

सुभाष ने गाँधी को खुली चुनौती दे दी थी । उन्होंने उम्र, व्यक्तिगत लगाव , वफ़ादारी किसी का भी ध्यान न रखा अपने सिद्धांत को तरजीह दी । वह यह स्पष्ट रूप से कह गये जब बात उनके अपने सिद्धांतों की आयेगी तब वह काल से भी लड़ने में परहेज़ नहीं करेंगे । सुभाष के विपरीत नेहरू ने सिद्धांतों

की तुलना में व्यक्तिगत लगाव और वफादारी को तरजीह दी । यह एक महत्वपूर्ण बिंदु मुझे दिखता है जहाँ पर नेहरू और सुभाष की राहें अलग जाती दिख रही हैं । लेकिन यह भी सच है कि कलकत्ता कांग्रेस ने सुभाष और नेहरू को नज़दीक ले आने में काफ़ी मदद की ।

एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि मोतीलाल नेहरू जवाहर लाल को कांग्रेस अध्यक्ष बनाना चाहते । इस मुद्दे पर गाँधी से मोतीलाल नेहरू ने 1927 में ही विमर्श किया था और इसकी संभावना तलाश रहे थे । 1928 में यह संभव न हो सका क्योंकि सुभाष मोतीलाल नेहरू को कलकत्ता कांग्रेस के अध्यक्ष बनने के पक्षधर थे और कलकत्ता कांग्रेस कमेटी भी यह चाहती थी । जवाहर लाल यह समझ गये थे कि उनका युवा होना नहीं वरन् उनके करान्तिकारी विचार उनके अध्यक्ष बनने में आड़े आ रहे । वह अपने को थोड़ा संयंत भी करने लगे ताकि अध्यक्ष पद पर आसीन होने में आसानी हो जाये । 1929 के अधिवेशन में अध्यक्ष पद के लिये तीन बड़े नाम चर्चा में थे - जवाहर लाल नेहरू, गाँधी स्वयम एवम वल्लभ भाई पटेल । दस कांग्रेस समीतियों ने गाँधी के पक्ष में समर्थन दिया, पाँच ने पटेल और तीन ने नेहरू के । गाँधी का चुनाव हो गया पर उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया । अब एक व्यक्ति की तलाश आरंभ हो गयी जो गाँधी के स्थान पर ज़िम्मेदारी ले सके । गाँधी ने एक नवयुवक के अध्यक्ष बनने की अपनी इच्छा ज़ाहिर की । उन्होंने चुनाव जवाहर लाल नेहरू का किया । जवाहर लाल भी गाँधी के द्वारा छोड़े गये पद को स्वीकार करने में सहज नहीं हो पा रहे थे । उन्होंने गाँधी से पद ग्रहण करने के लिये अनुरोध किया, पर गाँधी तो गाँधी हैं वह क्या करना चाहते हैं यह सिवाय विधाता के कोई और समझ नहीं सकता । जवाहर लाल नेहरू को अध्यक्ष पद स्वीकार करना पड़ा ।

आखिर गाँधी अध्यक्ष क्यों नहीं बने और नेहरू बनने में अनिच्छुक क्यों थे ? यह विश्लेषण बहुत ही आवश्यक है । वायसराय इरविन ने यह कहना आरंभ कर दिया था कि वह कांग्रेस की माँगों से पूरी तरह अवगत हैं और वह कोई हल निकालना चाहते हैं । उन्होंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश मीयरस से मध्यस्थता कराकर कांग्रेस से बात करनी चाही और एक गोल मेज़ सम्मेलन की बात आरंभ हो गयी थी जिसमें वार्ता डोमिनियन स्टैटस को केन्द्र में रखकर होगी । यह कांग्रेस अध्यक्ष के लिये आसान न था कि जब देश पूर्ण स्वराज्य की आँधी में डूब चुका हो तब एक अध्यक्ष डोमिनियन स्टैटस पर बात करे । गाँधी को जनता नब्ज की समझ थी और उन्होंने अध्यक्ष पद त्याग दिया । यह नेहरू भी समझ गये थे और वह अध्यक्ष पद से किनारा करना चाहते थे पर गाँधी को लगा कि पूर्ण स्वतन्त्रता का पक्षधर अगर अध्यक्ष रहकर डोमिनिकन स्टैटस की बात करेगा तब देश के

भीतर माहौल सम्भालने में बेहतर होगा । नेहरू - सुभाष के संबंध ऐसे थे कि नेहरू भी इस मुद्दे पर सुभाष को कुछ प्रभावित कर लेंगे पर हलाँकि सुभाष को मनाना आसान न था क्योंकि जब बात सिद्धांतों की हो तब सुभाष को लिये रक्त संबंध भी महत्वपूर्ण नहीं होते । जवाहर लाल को वह करना पड़ रहा था जो वह करना नहीं चाह रहे थे, गाँधी वह कर रहे थे जो वह करना चाह रहे थे और सुभाष विद्रोह की आग लिये वक्त का इंतजार कर रहे थे ।

@kitabwala - tg

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 202

गाँधी जी दूसरे गोलमेज़ सम्मेलन में भाग लेने लंदन पहुँचे । वह कांग्रेस के अकेले प्रतिनिधि थे । यह भी कहा जाता है कि गाँधी को अकेले नहीं जाना चाहिये था । गाँधी के व्यक्तित्व के मूल्यांकन में यह भी कहा जाता है कि वह एक बहुत बेहतर निगोशिएटर न थे और अगर एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल जाता तब शायद वार्ता बेहतर होती पर जब हुक्मरान कुछ भी देने को तैयार न हो तब परिणाम पक्ष में आने की उम्मीद कैसे की जा सकती है । दक्षिणपंथी खेमे के नेता चर्चिल इस बात से नाराज़ थे कि देशदरोही फकीर को अनावश्यक महत्व दिया जा रहा है । वह भारत में एक सख्त हुक्मत के पक्षधर थे । भारत में भी सत्ता परिवर्तन हो गया । इरविन की जगह विलिंगडन वायसराय बनाये गये और लेबर पार्टी के नेतृत्व में रैमसे मैकडोनाल्ड के नेतृत्व में नयी सरकार पदासीन हुई । भारत सचिव भी एक प्रतिक्रिया वादी समुअल होर बने । उदारवाद का दिखावटी जामा भी उतार कर फेंक दिया गया । गोलमेज़ सम्मेलन में भारत से राजे- महराजे - सम्प्रदायवादी - अवसरवादी बिरटिश सत्ता के चमचे ही भारत की ओर से प्रतिनिधित्व कर रहे थे जो कांग्रेस के रास्ते में रोड़े अटका रहे थे । बिरटिश सत्ता ने अपने चमचों और सम्प्रदायवादियों को उभारकर यह कहलाने और कहने की कोशिश कर रही थी कि कांग्रेस एक हिंदुत्ववादी संगठन है और यह पूरे देश का प्रतिनिधित्व नहीं करती । दूसरी बात हुक्मरान कह रहे थे कि पहले देश के अंदर की साम्प्रदायिक समस्याओं को सुलझा लिया जाये , उसके बाद सुधारों की बात हो । बिरतानी सरकार ने स्वाधीनता की माँग पर विचार करने से ही इंकार कर दिया और गाँधी जी वापस लौट आये ।

अब हुक्मत आकरामक हो चुकी थी । वह कोई सुलह - समझौता नहीं चाह रही थी । नयी शासन व्यवस्था को लग रहा था कि पिछली बार कांग्रेस को बेवजह तूल दिया गया और आंदोलनकारियों का मनोबल बढ़ाया गया । अब शासन की नयी नीति थी - दुबारा आंदोलन छेड़ने का अवसर न दिया जाये , सरकारी कर्मचारियों- नौकरशाहों - राज के प्रति वफादारों लोगों में गाँधी के बढ़ते प्रभाव को रोका जाए , राष्ट्रीय आंदोलन का गाँवों में विस्तार रोका जाए । इस लक्ष्य को अंजाम देने के लिये अध्यादेशों के सहारे शासन की नीति अपनायी जानी लगी और नागरिक अधिकारों को समाप्त कर दिया गया ।

वापस आकर गाँधी जी ने पुनः सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का निश्चय किया । पर सत्ता के दमन और आतंक , लोगों की निराशा को देखते हुये अप्रैल 1934 में आंदोलन वापस ले लिया गया । इस आंदोलन के आरंभ

करने पर ही सवाल खड़े होने लगे , इस आंदोलन से हासिल क्या हुआ यह प्रश्न उठने लगा । नेहरू बहुत उदास हुये और उनके एवम् गाँधी के संबंध ख़राब होने लग गये । सुभाष चन्द्र बोस एवम् पटेल भी गाँधी के आलोचक हो चुके थे । यह कहा जाने लगा कि गाँधी एक नेता के रूप में पूर्ण रूपेण असफल हो चुके हैं । सितंबर 1934 में गाँधी ने कांग्रेस से इस्तीफ़ा दे दिया ।

इस सविनय अवज्ञा आंदोलन का मूल्यांकन बहुत ही सावधानी से करने की आवश्यकता है । यह सच है कि जो ग्यारह सूत्रीय चेतावनी पत्र इरविन को दिया गया उसमें पूर्ण स्वराज्य का कोई ज़िक्र न था । उसमें राजनीतिक संरचना के बदलाव की कोई सोच न थी , यहाँ तक कि डोमिनियन स्टैट्स तक की माँग न थी । नेहरू की आत्मकथा आप पढ़ें आपको नेहरू के आश्चर्यचकित होने का ज़िक्र मिलेगा और तत्कालीन वायसराय ने भारत-सचिव को लिखा था कि नमक सत्याग्रह के आंदोलन की बात देखकर ने मुझको परेशानी कम हुई । यह ग्यारह सूत्री माँग पत्र को हम एक बार फिर से देखते हैं , एक विश्लेषण की दृष्टि से । इसमें आम रुचि के मुद्दे थे , आपराधिक गुप्तचर विभाग में सुधार की बात थी , हथियार क्रान्ति लाइसेंस इत्यादि में सहूलियत की चाहत थी , रूपये - स्टर्लिंग विनिमय अनुपात में सुधार करके उद्योग का संरक्षण एवम् किसानों से संबंधित दो मुद्दे थे - भू-राजस्व में पचास प्रतिशत की कमी और नमक पर सरकारी एकाधिकार की समाप्ति ।

क्या यह पीछे हटना था ? क्या यह बुर्जुवा माँगे थीं ?

हर बार की तरह गाँधी इस बार भी संशयवादियों पर भारी पड़े । सरकार की दमन की नीति असफल हो गई । लोगों का कांग्रेस में विश्वास बढ़ा । सरकार का नक़ली उदारवादी चेहरा पूरी तरह से बेनक़ाब हुआ । 1934 में जेलबंदियों के छूटने पर उनका सम्मान और भारी भीड़ द्वारा स्वागत एवम् 1937 के चुनाव में परचंड विजय इस सविनय अवज्ञा आंदोलन की सफलता से जोड़

कर देखने की ज़रूरत है । गाँधी जी ने 1934 में कांग्रेस नेताओं को संबोधित करते हुये कहा था , मैं न तो निराश हूँ और न ही असहाय महसूस कर रहा हूँ ... देश को जो ऊर्जा मिली है , उसका अंदाज़ा आपको नहीं है , मगर मुझे है । एक ह़कीक़त यह है जो अब सारे राजनैतिक विश्लेषक स्वीकार करने लगे हैं कि गाँधी अपने समकालीन नेताओं की तुलना में बहुत आगे थे । जब लोग रक्त की जाँच करके जनता का अन्तर्मन नहीं समझ पाते थे तब गाँधी आँख की पुतलियों में आँखें डालकर जनता के अंदर की आकांक्षाओं को समझ जाते थे ।

हम असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन की थोड़ी तुलना भी कर लेते हैं, वस्तुस्थिति और स्पष्ट हो जायेगी। चौरीचौरा की एक हिंसा के बाद आंदोलन वापस लेने वाले गाँधी ने चटगाँव, पेशावर, शोलापुर की हिंसक घटनाओं के बावजूद आंदोलन वापस न लिया। छुटपुट हिंसक घटनाओं को व्यावहारिक रूप से अपरिहार्य स्वीकार कर लिया गया था। 1921-22 की तुलना में एक निश्चित जुझारूपन और आरंभ हुआ आंदोलन रोका नहीं जा सकता और रोका भी नहीं जाना चाहिये ... यह एक बहुत महत्वपूर्ण अंतर हम साफ़ देख सकते हैं।

दूसरा अंतर आंदोलन का विस्तार - यह पहले के आंदोलन के तुलना में अधिक विस्तारित था। जेल जाने वालों की संख्या 1921-22 की तुलना में तीन गुनी थी।

तीसरा अंतर - ब्रिटिश अमानवीय चेहरा 1920 में विश्व के समुख पूरी तरह उजागर न हुआ था बल्कि सरकार ने चौरी-चौरा कांड का प्रचार कांग्रेस के विरोध में किया पर 1931 में जो कुछ भी धारसाना में हुआ, वह ब्रिटिश उदारवादी ढाँचे की चूल हिला गया।

चौथा अंतर - धारसाना में सत्याग्रहियों का अनुशासन आज इतने वर्षों बाद भी तमाम विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में आंदोलन का अनुशासन और नेतृत्व का आंदोलन पर मानसिक नियंत्रण के रूप में याद किया जाता है।

पाँचवाँ अंतर - स्त्रियों और किशोरों की आंदोलन में भागीदारी। जितनी गिरफ्तारियाँ नवम्बर 1930 तक हुआ उसमें सत्रह वर्ष से कम आयु के किशोर भी थे और महिलायें भी। कुल 29054 गिरफ्तारियाँ हुईं जिसमें 2025 व्यक्ति सत्रह वर्ष से कम उम्र के थे और 359 महिलायें थीं। यह भारत की सामाजिक संरचना और रुद्धिवादिता को देखते हुये उल्लेखनीय है।

छठाँ अंतर - साम्प्रदायिकता का विकास हुआ और असहयोग आंदोलन की तुलना में मुस्लिम भागीदारी कम रही।

आठवाँ अंतर - कांग्रेस का संगठन बहुत मजबूत हुआ। वह जनसामान्य का दल सुस्पष्ट रूप से बन रही थी।

नौवाँ अंतर - बंबई के व्यापारिक समुदाय का समर्थन असहयोग आंदोलन में प्राप्त न हुआ था पर सविनय अवज्ञा आंदोलन में प्राप्त हो गया। फ़िक्री ने तो यहाँ तक कह दिया था कि वह तब तक गोलमेज़ सम्मेलन में भाग नहीं लेगी जब तक गाँधी जी इससे दूर रहते हैं और जब तक वायसराय डोमिनियन स्टैटस पर कोई निश्चित वादा नहीं करते।

इसके साथ ही ब्रिटिश कपड़ों के आयात में पर्याप्त कमी आई, लगान वसूली में कमी भी आई और दिक्कतें भी, 1930 के चुनावों का बहिष्कार काफ़ी हद

तक सफल रहा ।

शाशि - “यह सब किस किताब में मिलेगा ? ”

मैं - “ इसके लिये गहरे समुद्र में उत्तरना होगा । गोताखोर बनकर मोतियों को तलाशना होगा । ”

अशोक - “ सर इसको लिखा दीजिये । इसको अगर परीक्षक नहीं पूछेगा तब भी कहीं पर घुमा- फिराकर लिख देंगे । यह अच्छा चिपकाऊ - घुसडू मसाला है । ”

मैं - “ गाँधी ने कांग्रेस से इस्तीफ़ा दे दिया । लोग कह रहे गाँधी ख़त्म हो गये पर एक नया गाँधी जन्म ले रहा था । समाज के आमूलचूल परिवर्तन को कृत संकल्पित गाँधी ।

अंगरेजों की बाँटों और राज करो की नीति पुनः एक बार - साम्राज्यवादी साम्प्रदायिकता अल्पसंख्यकों में पहले ही घोली जा चुकी थी पर अब पृथक निर्वाचन दलित वर्ग को । गाँधी का प्रतिकार- एक अनशन यह कहते हुये जितना हक़ है उससे ज्यादा लो पर हम एक साथ हैं , हम एक साथ रहेंगे । गाँधी का तर्क था , यह पृथक निर्वाचन प्रतिगामी भी है औरप्रतिक्रियावादी भी । यह अछूतों को सदैव के लिये अछूत बना देगा । अपनी माँग मनवाने के लिसे 20 सितंबर 1932 से आमरण अनशन पर बैठ गये और एक समझौता हुआ पूना समझौता । दलितों के लिये सुरक्षित सीटें तकरीबन दुगनी कर दी गयीं और हुक्मरानों के नापाक मंसूबे सफल न हुये ।

अगले कुछ वर्ष गाँधी के जीवन का सर्वश्रेष्ठ काल , एक समाज सुधारक गाँधी जिसका राजनीति से कोई लेना - देना नहीं । वह 1930 में ही साबरमती आश्रम एक प्रतिज्ञा के साथ त्याग देता है कि अब स्वराज्य के बाद ही यहाँ गाँधी वापस आयेगा । 7 नवम्बर 1933 को वर्धा से एक हरिजन यात्रा आरंभ होती है - नौ महीने , बीस हज़ार किलोमीटर , प्रतिक्रियावादियों को खुली चुनौती एवम् हरिजनों का सामाजिक-आर्थिक- राजनीतिक उत्थान का संकल्प । दो बार का लंबा अनशन और गाँधी का उद्घोष , या तो छुआछूत को जड़ से समाप्त करो या फिर मुझे अपने बीच से हटा दो । गाँधी की अन्तरात्मा की पुकार , चेतना का निर्देश और हिंदू शास्त्रों को खुली चुनौती , मुझे दिखाओ कहाँ लिखा है छुआ-छूत शास्त्रों में और अगर लिखा है तो वह अस्वीकार्य है , सत्य पुस्तक का बंधक नहीं है ।

गाँधी एक नये उफान पर समय साक्षात्कार कर रहा था एक सामाजिक क्रान्ति आंदोलन में अभी बहुत जान बाकी है और कहानी में बहुत

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 203

जेल से रिहा होने के बाद सुभाष बम्बई आये पर उन्होंने गाँधी की सार्वजनिक आलोचना न की यद्यपि वह गाँधी - इरविन समझौते से सहमत न थे । उन्होंने बंबई से दिल्ली की यात्रा की और गाँधी की अपार लोकप्रियता देखी और उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया कि क्या कभी इस तरह की लोकप्रियता किसी नेता को प्राप्त हुई है ? गाँधी लोगों के सम्मुख एक महानतम नायक के रूप में स्थापित हो चुके थे । सुभाष करांची कांग्रेस अधिवेशन में शामिल हुये । गाँधी पर एक आरोप था कि वह अगर इरविन से वार्ता करने की एक शर्त में भगत सिंह का जीवन रख देते तो शायद भगत सिंह बच जाते । इस बात पर बहस सदियों तक होती रहेगी कि कितना गाँधी ने प्रयास किया और अति उत्साही लेखक यह लिखते रहेंगे कि गाँधी भगत सिंह की लोकप्रियता से डर गये थे और इसलिये उन्होंने भगत सिंह को बचाने का प्रयास नहीं किया । गाँधी ने कितना प्रयास किया और वह प्रयास कम था या अधिक , इस पर सिर्फ़ क्रयास ही लगाये जा सकते हैं । मैं इस विषय पर किसी विशेषज्ञा का दावा तो कर नहीं सकता पर मेरा सीमित ज्ञान कोई निष्कर्ष नहीं दे पा रहा , सिवाय इसके कि शायद गाँधी की अहिंसा की विचारधारा आड़े आ रही होगी इस मुद्दे को बहुत पुरज़ोर ढंग से उठाने में । गाँधी एक राजनीतिक- सामाजिक - मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने में सिद्धहस्त थे और वह अपनी छवि का भी बहुत ध्यान रखते थे , हो सकता है यह छवि आड़े आई हो इस मुद्दे पर कोई शर्त रखने की प्रक्रिया में । मैं निश्चित रूप से इस पर कुछ नहीं कह सकता पर यह सच है कि गाँधी युवा क्रान्तिकारी वर्ग में कुछ अलोकप्रिय अवश्य हुये , जब वह करांची पहुँचे तब उनको काले झंडे दिखाये गये थे ।

भगत सिंह की फाँसी ने सुभाष और नेहरू दोनों को प्रभावित किया । सुभाष ने करांची सत्र के कुछ दिन पश्चात् भगत सिंह और गाँधी इरविन पैकट पर अपनी विचारधारा एक भाषण के दौरान प्रस्तुत की और भगत सिंह को क्रान्ति की मशाल कहा जिसने देश के एक कोने से दूसरे कोने तक लोगों को प्रभावित किया तथा वह एक विजेता है । उन्होंने गाँधी - इरविन समझौते की आलोचना की और उसको असंतोषजनक एवम् निराशापूर्ण बताया । जवाहर लाल नेहरू ने भी भगत सिंह को बचाये न जा सकने पर अफ्रसोस ज़ाहिर किया और उन्हें युवकों के लिये प्रेरक कहा ।

गाँधी - सुभाष - नेहरू के संबंध बहुत सपाट कभी न रहे । नेहरू- सुभाष गाँधी को एक निर्विवाद नेता मानते थे और सम्मान भी करते थे पर समय - समय पर उनकी कमियों पर अपने विचार भी प्रकट करते थे । पर सुभाष का विरोध सार्वजनिक भी होता था और तीक्ष्ण भी पर नेहरू का संयत होता था और उसमें विरोध का स्वर होकर भी तीक्ष्णता कम होती थी । नेहरू गाँधी से संबंध विच्छेद के पक्षधर न थे जबकि वह कई मुद्दों पर मौलिक रूप से उनसे विरोध रखते थे । सुभाष के लिये गाँधी महात्मा थे सम्माननीय थे पर उनके मध्य एक दूरी थी जबकि नेहरू के लिये वह बापू थे, संबंध अतंरंग थे और पिता- पुत्र सदृश थे । नेहरू - सुभाष के संबंध सैद्धांतिक रूप से एक समरूपता पर आधारित थे और दोनों की भारत के भविष्य की दृष्टि कई मायनों में एक सी थी अगर पूरी तरह एक न थी तब भी । दोनों ही बगैर समझौते के स्वतन्त्रता की विचारधारा को गति दे रहे थे और दोनों ही समाजवाद से प्रतिबद्ध थे । किसान और कामगारों का हित और उनकी भागीदारी के बगैर भारत का भविष्य नहीं हो सकता, यह उनकी एक निश्चित मान्यता थी । मोतीलाल नेहरू इन दोनों के बीच एक कड़ी थे । सीआरदास की मृत्यु के बाद सुभाष की निर्भरता मोती लाल नेहरू पर बढ़ने लगी थी और वह मोतीलाल के दृष्टिकोण का बहुत सम्मान करते थे । यूरोप ने दोनों के दृष्टिकोण को बहुत प्रभावित किया ।

1930 का दशक इन दो महान नेताओं का दशक था । 1934 से 1937 के बीच का काल एक राजनीतिक निष्क्रियता से उभरने के प्रयत्न का काल था । नेहरू के विचार गाँधी से अलग हो रहे थे, वह सविनय अवज्ञा वापस लेने और संसद में भागीदारी एवम् रचनात्मक कार्य को नैतिक पराजय मान रहे थे । वह 1934 तक गाँधी विचारधारा से अलग हो चुके थे और कहा भी कि हमारी और उनकी नैतिक सोच अलग है तथा हमारे उद्देश्य एवम् आदर्श भी भिन्न हैं । नेहरू ने गाँधी के संघर्ष की मौलिक नीति का भी विरोध किया जिसे संघर्ष-समझौता - संघर्ष रणनीति कहा जाता है । नेहरू जनांदोलन चलाये जाने के पक्षधर थे और रचनात्मक कार्य को अर्थहीन मान रहे थे । संवैधानिक तरीकों से संघर्ष जिसमें संसदीय राजनीति की वकालत, रचनात्मक कार्य एवम् जनांदोलन तीन में से एक का चुनाव करना सन् 1934 में बहस के दायरे में था ।

नेहरू वामपंथी लहर का नेतृत्व नेहरू कर रहे थे । वह किसी भी तरह की समझौतावादी राजनीति के पक्षधर न थे । गाँधी के दृष्टिकोण कि जब आंदोलन सुप्तावस्था में हो उस समय रचनात्मक कार्य जनता को जागृत करने का एक तरीका है, उससे नेहरू बिल्कुल सहमत न थे । नेहरू का मानना था कि जनांदोलन चाहे जैसा भी हो, कमजोर ही सही पर वह जारी

रहना चाहिये । उनका मानना था कि आंदोलन कमजोर ही सही पर वह व्यवस्था पर चोट करता ही है । यही तर्क नेहरू के थे जिस आधार पर वह सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेने का विरोध कर रहे थे और उसे साम्राज्यवाद से समझौता से कह रहे थे । गाँधी के विभिन्न चरणों में आज़ादी हासिल करने के तरीके से नेहरू का विरोध था और उनका मानना था सतत अहिंसक जन- आंदोलन के माध्यम से एक बारगी ही सत्ता पर क़ब्ज़ा किया जाना चाहिये । “संघर्ष- समझौता - संघर्ष “की गाँधी की रणनीति के विपरीत” सतत संघर्ष से विजय “नेहरू की रणनीति थी । नेहरू का वामपंथियों और संसद में हिस्सेदारी की वकालत करने वालों से भी विरोध था और न तो वह वामपंथियों की तरह अतिवादी हो रहे थे और न ही संसदीय भागीदारी करने वालों की तरह समझौतावादी । कांग्रेस पुनः एक आंतरिक संघर्ष की ओर और राष्ट्रवादी नेताओं को लगने लगा कि कहीं कांग्रेस का विभाजन न हो जाये । गाँधी ने एक बार पुनः कांग्रेस को टूटने से बचा लिया , यह जानते हुये भी आज़ादी हासिल करने का एक मात्र तरीका सत्याग्रह ही है उन्होंने संसदीय राजनीति के पक्षधरों की बात मान ली और विधानमंडल में प्रवेश की अनुमति दे दी । गाँधी का कहना था कि संसदीय राजनीति से कुछ भी हासिल नहीं होने वाला पर जो कांग्रेस के लोग किन्हीं कारणों से सत्याग्रह में शामिल नहीं हो सके हैं और अपने को रचनात्मक कार्यों में नहीं लगा सके हैं संसदीय राजनीति के माध्यम से सक्रिय रह सकते हैं पर वह इस बात का ख्याल रखें कि वह संविधानवादी एवम् सुविधावादी न बन जाएँ । मई 1934 में गाँधी के निर्देशन में चुनाव में भाग लेने का फ़ैसला किया गया । गाँधी ने सविनय अवज्ञा को वापस लेने को समय का तक़ाज़ा बताया और यह व्याख्यायित किया कि यह न तो साम्राज्यवाद से समझौता है और न ही अवसरवादिता के समुख समर्पण । यह लड़ाई स्थगित की गयी है ख़त्म नहीं, स्थगन में भी साम्राज्यवाद की रातों की नींद ग़ायब है । गाँधी का कांग्रेस विचारधारा से विश्वास उठने लगा था और मौलिक मतभेदों को देखते हुये सितंबर 1934 में कांग्रेस से इस्तीफ़ा देने का फ़ैसला किया । गाँधी ने कहा हमारे मतभेद गहरे हैं और बलपूर्वक अपनी बात स्वीकार कराना एक तरह की हिंसा है जिसका मैं सदा से ही विरोधी रहा हूँ । कांग्रेस त्याग कर गाँधी रचनात्मक कार्य करने लग गये ।

नेहरू जिस तरह आकरामक हो रहे थे वह बिरटिश सत्ता को सुहा रहा था । उनके अंदर एक वामपंथी तेवर साफ़ दिख रहा था । वह पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने और समाजवाद की स्थापना की बात कर रहे थे । बिरटिश सत्ता को लग रहा था कि सुधारों के सवाल पर कांग्रेस में फूट पड़ जायेगी । संविधानवादियों - दक्षिणपंथियों - वामपंथियों के मध्य झगड़ा उनको अपने अनुकूल लग रहा था और संविधानवादियों को लालच देकर सत्ता के प्रति निष्ठावान बनाया जा सकता है । नेहरू जिस तरह से दक्षिणपंथियों पर

आकरमण कर रहे थे उसको देखते हुये सभी बड़े अंग्रेज अफसरों ने वायसराय को सलाह दी कि नेहरू को गिरफ्तार न किया जाये । प्रान्तीय स्वायत्ता की कुटिल चाल में संविधानवादी आ ही गये हैं और नेहरू उन पर तीव्र प्रहार कर रहे हैं, यह आपसी संघर्ष हमारे हित में है और नेहरू को सलाखों के भीतर न भेजकर बाहर रखकर कांग्रेस के अंदरूनी झगड़े को बढ़ाकर आंदोलन को कमजोर करने दिया जाये । कांग्रेस में मतभेद गहरे हो रहे थे । एक अहम सवाल था कि प्रान्तों में बहुमत मिलने के बाद क्या किया जाये ? एक बड़ा सवाल था, सत्ता में हिस्सेदारी करना किस तरह संघर्ष की विचारधारा से मेल खाता है ? नेहरू और वामपंथियों ने जवाबी रणनीति अपनाई वही जो सन 1924 के स्वराजवादियों की थी - संसद में प्रवेश करके ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देना कि नये अधिनियम का अमल न हो पाये । फरवरी 1937 में चुनाव हुये । कांग्रेस ने घोषणापत्र में सन 1935 के अधिनियम को पूरी तरह नकार दिया था । कांग्रेस ने बड़ी सफलता हासिल की । 1161 सीटों पर चुनाव लड़ा और 761 पर चुनाव जीता । 6 प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार बनी, मुस्लिम लीग चुनाव में मज़बूत होकर न उभर पाई । मुस्लिमलीग की नरमपंथी साम्प्रदायिकता हार गई थी और अब जिन्ना के तेवर उग्र हो रहे थे । यह चुनाव नेहरू का चुनाव था । वह एक सशक्त जननेता के रूप में उभरे । उनके भाषणों ने धूम मचा दी थी । एक बहुत मज़बूत नेहरू उभर चुका था । सन 1936 में नेहरू लखनऊ कांग्रेस के अध्यक्ष बने और सन 1937 में वह फैजपुर के अधिवेशन के अध्यक्ष इस तर्क पर बनना चाहते थे कि एक वर्ष का समय कम होता है, उन्होंने महात्मा गाँधी से सहायता माँगी और गाँधी ने प्रदान भी की । यही तर्क सुभाष ने हरिपुरा अधिवेशन में अध्यक्ष बनने के बाद तिरपुरी अधिवेशन के लिये रखा, पर महात्मा भी एक दुच्ची राजनीति कर सकता है, यह राजनैतिक विश्लेषकों को स्पष्ट दिखा । कांग्रेस के भीतर का एक बड़ा झंझावत करवटें ले रहा और समय बेसबरी से इंतज़ार कर रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 204

जवाहर लाल नेहरू 1936 के लखनऊ अधिवेशन के अध्यक्ष बने । गाँधी उनको अध्यक्ष बनाना चाहते थे । गाँधी ने कहा आपका अध्यक्ष बनना कई समस्याओं का समाधान करेगा और आप अपनी नीतियों और कार्यक्रमों को दिशा दे सकोगे । यह बगैर विरोध के न हुआ था । यह अपील गाँधी से की गयी कि वह राजागोपालाचारी को चुनाव लड़ने दें, पर जवाहर लाल अध्यक्ष बन गये जो कि तय ही था । अगस्त 1935 में गवर्नर्मेंट आफ इंडिया एक्ट 1935 पास हुआ । इस एक्ट के द्वारा कुछ सुधार अवश्य किये गये पर

सरकार का नियंत्रण बना रहा । मतदाता विस्तार 6. 5 मिलियन से बढ़ाकर 30 मिलियन किया गया पर सबसे महत्वपूर्ण बात यह था कि डोमिनियन स्टैट्स का कोई ज़िक्र न था । इस अधिनियम को सभी ने निराशाजनक करार कर दिया । जवाहर लाल बहुत मुखर विरोध कर रहे थे, गाँधी अधिनियम से न तो संतुष्ट थे और न ही सहमत पर उनकी मुखरता तीक्ष्ण न थी । लखनऊ का जवाहर लाल का अध्यक्षीय भाषण उनके विश्वासों की प्रतिध्वनि ही था और उन्होंने उपस्थित जनसमूह को “ कामरेड ” से संबोधित किया और भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष को विश्व परिदृश्य, विशेषकर एशिया, में देखने का प्रयास किया । समाजवाद - पूँजीवाद - फाँसीवाद सभी को व्याख्यायित करते हुये यह कहा कि पूँजीवाद का एक नया रूप फाँसीवाद है । उन्होंने समाजवाद की भूरि- भूरि प्रशंसा की और उग्र राष्ट्रवाद जिसका प्रतिनिधित्व फाँसीवाद कर रहा से राष्ट्रवाद जो एशिया के कई देशों में जन्म ले रहा से विभेद करने का प्रयास किया । पूर्व का राष्ट्रवाद अपने आधारभूत रूप में फाँसीवादी देशों के संकीर्ण आतंकी राष्ट्रवाद से भिन्न है और अगर पहला एक ऐतिहासिक आवश्यकता है तो दूसरा प्रतिक्रिया की शरणस्थली ।

समाजवाद को न केवल आर्थिक अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया वरन् एक जीवन दर्शन माना । पर जवाहर लाल जिस तरह की कार्यकारिणी परिषद चाह रहे थे वह उन्हें न मिली और उन्होंने गाँधी को लिखे एक पत्र में कहा कि एक आत्मसम्मानी व्यक्ति त्यागपत्र दे देता पर वह बेहया है और पद से चिपके हैं जबकि उनके कई प्रस्ताव अस्वीकार कर दिये गये । समाजवाद के मुद्दे पर संघर्ष सीधा हो गया और सात सदस्यों ने जिसमें राजेन्द्र प्रसाद, पटेल, राजगोपालाचारी भी शामिल थे कार्यकारिणी परिषद से त्यागपत्र दे दिया । बाद में गाँधी जी के हस्तक्षेप के पश्चात त्यागपत्र वापस लिया गया । सबसे आश्चर्य की बात यह है कि गाँधी ने यह नेहरू से स्वीकार किया कि एक पत्र भेजने के स्थान पर त्यागपत्र भेजना मेरा ही सुझाव था । गाँधी की दुच्ची राजनीति आरंभ हो चुकी थी । इसका शीर्ष अभी आना बाकी है ।

गाँधी समाजवाद को कार्यकरम में शामिल नहीं करना चाहते थे और नेहरू उसके लिये कृत संकल्प थे । नेहरू पर आकरमण कांग्रेस के भीतर भी हो रहे थे और बाहर भी । बंबई के 21 भारतीय पूँजीपतियों ने एक व्यक्तव्य जारी करते हुये जवाहर लाल नेहरू के समाजवाद के वकालत की भत्सना की । होमी मोदी ने तो यहाँ तक चेतावनी दे दी कि जवाहर लाल को मास्को तक का टिकट दे दिया जायेगा ।

एक सवाल बहुत ही महत्वपूर्ण है समझना कि गाँधी इन आकरमणों में कहाँ तक शामिल थे । क्या गाँधी नेहरू पर हो रहे आकरमणों के भागीदार थे । बिरला के द्वारा लिखा एक पत्र यह संकेत देता है कि उनकी और गाँधी की

आपसी सहमति नेहरू पर किये जाने आकरमणों में थी । जवाहर लाल का महान अध्यक्षीय भाषण एक रद्दी की टोकरी के आशियाने में चला गया । गाँधी ने अपने आपको एक मासूम दर्शक के रूप में जनता के समुख प्रस्तुत किया पर उनके आदमी नेहरू पर वार पर वार कर रहे थे और घायल नेहरू, बापू-बापू चीख रहे थे । गाँधी नेहरू के आँसू भी पोंछ रहे थे और ज़ख्मों पर मरहम भी लगा रहे थे । गाँधी का लक्ष्य था समाजवाद को हत करना और पूँजीवाद को बचाना । नेहरू एक सधे राजनेता थे और वह पद लोलुप तो न थे, कम से कम ऐसा उस समय आरोप नेहरू पर न लगा जो आज़ादी के समय आरोपित किया गया । पर उन्होंने इस्तीफ़ा क्यों नहीं दिया ? यह एक सवाल है जिसका जवाब तलाशना आवश्यक है । इसका एक कारण यह था कि नेहरू को इस तरह के षड्यन्तरों का आभास तो था पर चक्रव्यूह इतना तगड़ा है यह पता न था और चक्रव्यूह बनाने वाला महात्मा है यह शायद वह जानकर भी विश्वास करने को तैयार न थे । क्या वह एक भुलावे में थे और सच का आभास शायद उनको हो रहा था पर वह उसको स्वीकार करने को तैयार न थे ? इन तर्कों के साथ एक बात यह भी है, नेहरू मासूम न थे । वह यह जान गये थे कि क्या हो रहा है पर वह गाँधी पर अति निर्भर थे । उन्होंने कांग्रेस के अंदर अपने को अकेले पाकर उसी को लिखा जिसने उनको अकेला कर दिया था । वह गाँधी से पूरी तरह आच्छादित थे । वह चुप भी नहीं थे वह लड़ रहे थे और एक लड़ने वाला व्यक्ति अंत तक समर्पण नहीं करता । उसे आशा जीत की रहती ही है । उन्हें गाँधी पर भरोसा था और शायद यही वह कारण थे जो नेहरू को त्यागपत्र देने से रोक ले गये । एक व्यक्तिगत कारण भी था, उसी समय कमला नेहरू का देहावसान हुआ था इस देहावसान ने उनको तोड़ दिया था । मोतीलाल की मौत के बाद ही उनकी भावनात्मक निर्भरता गाँधी पर बढ़ गयी थी वह और भी सुदृढ़ हो गयी ।

शायद इस विपत्ति में सुभाष उनके एक बड़े सहायक हो सकते थे । सुभाष का लड़ाकूपन नेहरू से अधिक था । वह एक अलग मिटटी के बने व्यक्ति थे और उसूलों-सिद्धांतों के नाम पर काल से भी लड़ने का साहस रखते थे पर दुर्भाग्यवश वह इस समय बलपूर्वक सत्ता के द्वारा राजनैतिक गतिविधियों से दूर रखे गये थे । अप्रैल 1936 को जैसे ही वह देश आये उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था ।

जवाहर लाल ने फैजपुर कांग्रेस की अध्यक्षता करनी चाही और गाँधी से अनुरोध किया । यह नेहरू का दुबारा अध्यक्ष बनना ब़ौर प्रतिरोध के न हुआ । पटेल ने महादेव देसाई को लिखा कि यह दू़हा पता नहीं कितना विवाह करना चाहता है । राजागोपालाचारी को पटेल अध्यक्ष बनाना चाहते थे पर राजागोपालाचारी ने अध्यक्ष बनना अस्वीकार कर दिया । नेहरू का तर्क था

कि आठ माह का समय कम होता है एक अध्यक्ष को अपनी नीतियों-कार्यक्रमों को आगे ले जाने के लिये इसलिये उन्हें और वक्त दिया जाये । नेहरू अध्यक्ष बन गये । पर इस कांग्रेस अधिवेशन में नेहरू का स्वर बदला था वह समाजवाद से ज्यादा ज़ोर लोकतन्त्र पर दे रहे थे । नेहरू के लिये यह फैजपुर कार्यकाल भी आसान न रहा, विरोध के स्वर इतने तीव्र थे कि वह एक बार पुनः त्यागपत्र तक पहुँच गये पर वह कांग्रेस को तोड़ना नहीं चाहते थे ।

यह फ़ेसला होना था कि अगला अध्यक्ष कौन होगा ? हरिपुरा कांग्रेस के लिये सुभाष का नाम तय हुआ । यह निर्णय भी आसान न था । गाँधी ने पटेल को लिखा था कि सुभाष पर विश्वास नहीं किया जा सकता था । पर गाँधी यह भी मानते थे कि सुभाष के अलावा कोई और नहीं है अध्यक्षता के लिये । यह समझना थोड़ा मुश्किल लग रहा कि गाँधी ऐसा क्यों मान रहे थे । शायद एक कारण यह था कि ज्यादातर नेता कांग्रेस की अध्यक्षता कर चुके थे और नेहरू तो तीन बार कर चुके थे, सुभाष को अवसर न देना उचित नहीं लग रहा था । सुभाष का व्यक्तित्व तब तक बहुत बड़ा बन चुका था और चितरंजन दास के बाद निःसंदेह बंगाल से आने वाले वह सबसे बड़े नेता थे और वह अखिल भारतीय ख्याति अर्जित कर रहे थे । सुभाष के अलावा संभावित उम्मीदवार राजेन्द्र प्रसाद, पटेल, राजागोपालाचारी हो सकते थे पर वह सब चुनाव के बाद के सरकार बनाने के कार्य में व्यस्त थे । यह मुझे आज तक नहीं पता चल सका कि गाँधी ने किससे इस मुद्दे पर विमर्श किया, इस संदर्भ कोई उल्लेख मिलता भी नहीं । पर विरोध इसका हुआ, राजागोपालाचारी ने साफ़-साफ़ कहा यह एक ग़लत निर्णय है ।

सुभाष हरिपुरा - गुजरात बारदोली होकर पहुँचे । वह एक स्थानीय राजा द्वारा प्रदान की गयी 51 सफेद बैलों की गाड़ी पर सवार होकर कांग्रेस की सभास्थली पर पहुँचे । सुभाष का अध्यक्षीय भाषण अद्भुत था । उन्होंने चेयरमैन और मित्रों कहकर अपनी बात आरंभ की । उन्होंने लेनिन के कथन को अपने भाषण में समाहित किया । उन्होंने औद्योगीकरण की बात की पर गाँधी के दृष्टिकोण की बिल्कुल आलोचना न की । सत्याग्रह-अंहिसा-असहयोग में आस्था ही नहीं व्यक्त की वरन् इसको एक किरणात्मक स्वरूप में पारिभाषिक किया । गाँधी के सिद्धांतों में स्पष्ट आस्था व्यक्त करते हुये यह भी कहा कि उनकों इन तरीकों की सार्थकता में कोई संदेह नहीं है । सुभाष ने समाजवाद की बात कही और कहा कि जब देश आज़ाद होगा तब समाजवाद ही देश के पुनर्निर्माण का एक मात्र रास्ता है । सुभाष ने बहुत प्रयास किया एक सार्थक अध्यक्ष के रूप में काम करने की । वह भी नेहरू की तरह एक और कार्यकाल चाह रहे थे । उन्होंने स्पष्ट इच्छा ज़ाहिर की पर

गाँधी ने ऐतराज ही नहीं किया वरन् विकल्प तैयार करने का कार्य आरंभ कर दिया । महात्मा अब एक मदारी बन चुका था । पर सबको मुँह की खानी पड़ती है, इस मदारी को भी खानी पड़ी ।

कांग्रेस के भीतर का अब तक का शायद सबसे बड़ा दावानल मदारी बनाम

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 205

मेरा व्याख्यान कुछ लीक से हटकर था और कक्षा के छात्रों का स्तर एवम् मेरे व्याख्यान का सार-तत्व बीतते दिनों के साथ बहुत ही ऊँचा हो रहा था । मेरे ऊपर एक अपने द्वारा एक ओढ़ा हुआ उत्तरदायित्व था, अपने को बाज़ार्स माहौल के कोचिंग संस्थानों से अलग रखने का । यह उत्तरदायित्व मुझे बहुत कठिन परिश्रम की ओर प्रेरित कर रहा था और मैं अपने ही बनाये मापदंडों पर खरा उतरने की कोशिश कर रहा था ।

मेरी कक्षा के छात्रों का एक वर्ग बहुत ही जहीन था और कक्षा में जिस तरह दिन- प्रतिदिन छात्रों की संख्या बढ़ती जा रही थी वह मुझे उत्साहित भी कर रही थी और मेरा अपने ऊपर विश्वास भी बढ़ता जा रहा था । मैं अपने अब तक के जीवन के सबसे उच्चतम बिंदु पर था । मैं अपने ही अंदर यक्ष की तलाश करता था, मुझे आम प्रश्नों के नहीं यक्ष के अनुत्तरित प्रश्नों के जवाब देने में रुचि थी । मैं स्वयमेव ही लालित्यपूर्ण प्रश्नों की तलाश करता था, हर सियाह रात की बंद आँखों की मद्दिम सी रौशनी में । मैं उन बनाये हुये दुर्लभ प्रश्नों को कई बार अपने ही कक्षा में लोगों से कराकर कक्षा में अपने पांडित्य की स्थापना करने का प्रयास करता था और बहुधा सफल हो जाता था । यह प्रक्रिया एक पूर्व निश्चित संरचनात्मक संरचना होकर भी छात्रों के हित में थी । अनुराग शर्मा के बरांड में थोड़ा फ्राड तो रहेगा ही ।

मेरी कक्षा में आज चार चयनित लोग थे जिसमें चिंतन सर एवम् बद्री सर तो इलाहाबाद सिविल सेवा क्षेत्र के भीष्म पितामह एवम् दरोणाचार्य सदृश ही थे । शशि तिरपाठी और रचना दीक्षित का इतिहास मुख्य परीक्षा में एक विषय था पर उनके लिये भी कई तथ्य नये थे और आसानी से ग्रह्य न हो रहे थे । हम लोग आधुनिक इतिहास मुख्यतः बिपिन चन्द्रा एवम् सुमित सरकार से पढ़ते थे । बिपिन चन्द्रा का स्वर गाँधीवादी है और सुमित सरकार का वापंथ प्रेरित होकर भी वह रजनी पाम दत्त, ए आर देसाई, अयोध्या नाथ सिंह की

तुलना में थोड़ा संयत वामपंथी रुद्धान रखता था । चिंतन सर ने इच्छा ज़ाहिर की कि गाँधी - सुभाष के पहले आप यह गाँधी - नेहरू और स्पष्ट करो क्योंकि उनको यह बात गले के नीचे से उतर नहीं रही थी कि गाँधी जी इस तरह की राजनीति कर सकते हैं । मेरे दुच्ची राजनीति के शब्द - प्रयोग पर शाशि ने आपत्ति कर दी । मैंने स्पष्ट किया कि मैंने महात्मा गाँधी को कुछ नहीं कहा पर इस तरह मुँह पर कुछ कहना और पीठ पीछे कुछ और करना किस तरह की राजनीति है । दुच्चा शब्द आप हटा भी दो तब भी कोई बेहतर शब्द तो इस तरह की राजनीति के लिये प्रयुक्त नहीं किया जा सकता । मैंने यह भी कहा कि आप पर्यायवाची देख लो जो बेहतर शब्द लगे वह स्थानान्तरित कर दो ।

रचना दीक्षित ने यह कहा कि मैं आपके तथ्यों पर बहस करने की हालात में मैं नहीं हूँ क्योंकि यह सारे तथ्य नये हैं मेरे लिये पर गाँधी जिनको पद - प्रतिष्ठा से कोई ख़ास लगाव न था और वह एक सर्वमान्य महात्मा थे , उन्होंने ऐसा क्यों किया ?

मैं “ आपके इस सवाल का जवाब ज़रूरी है क्योंकि व्यक्ति के सारे कार्य किसी आशा - आकांक्षा से ही प्रेरित होते हैं , गाँधी की भी कोई तो इच्छा रही ही होगी जिसने उनको इस कार्य के लिये प्रेरित किया । इसकी एक व्याख्या गाँधी के अहम से की जा सकती है । वह अहंवादी हो चुके थे । तिरपुरी अधिवेशन के बाद के घटनाक्रम इस बात को और स्पष्टता से सत्यापित कर देंगे , आप कुछ मिनटों का इंतज़ार करें उस व्याख्या के लिये । संकट एक विचारधारा का भी था । गाँधी की अपनी एक विचारधारा थी जो जनसाधारण के उत्थान से जुड़ी थी और चाहें तो आप उसे गाँधीवादी समाजवाद का नाम दे सकते हैं पर यह विचारधारा पश्चिमी समाजवादी विचारधारा से मेल नहीं खाती थी । गाँधी के समाजवादी सिद्धांत अलग थे । वह शासन का उत्पादन के साधनों और संपत्तियों पर नियन्त्रण के पक्षधर न थे । जब मैं गाँधी विचारधारा को पढ़ाऊँगा तब आपको इसका ज्ञान हो जाएगा । वह पूँजीपतियों के लिये एक दरस्टीशिप की अवधारणा दे चुके थे और वह पूँजीवाद के समापन के पक्ष में न थे । उनको यूरोप का साम्यवाद बिल्कुल नहीं सुहाता था । नेहरू और सुभाष धुर समाजवादी थे । भारत के पूँजीपतियों का वर्ग सुभाष-नेहरू पर लगाम लगाने के लिये गाँधी पर प्रत्यक्ष

और परोक्ष रूप से दबाव डाल रहा था । गाँधी उनके दबाव में अगर न भी थे तब भी उनके मत का वह सम्मान करते थे । गाँधी आंदोलन के एक निर्विवाद नेता थे और वह अपने ही ढंग से आंदोलन चलाना चाहते थे । वह पूर्ण स्वराज्य बनाम डोमिनियन स्टैटस के मुद्दे पर राजनीति त्यागने की धमकी दे ही चुके थे और वह धमकी कारगर हो गयी थी । नेहरू के और अपने मध्य के पत्राचार को सार्वजनिक करने की बात कहकर वह सन 1927-28 में ही नेहरू को संयत कर चुके थे । बीस के दशक के उत्तरार्द्ध में ही कांग्रेस में

समाजवादी विचारधारा ज़ोर पकड़ रही थी और इस विचारधारा के संवाहक नेहरू- सुभाष थे । सन 1936 के बाद वामपंथ साहित्य तक में ज़ोर पकड़ने लगा था । लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष का रुख वह नहीं था जो गाँधी चाहते थे । नेहरू लखनऊ अधिवेशन में अन्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य की बात कर रहे थे और देश के आंतरिक मामलों पर एक जुझारू कार्यक्रम की बात कर रहे थे । लखनऊ अधिवेशन में उन्होंने आशा प्रकट की कि कांग्रेस एक वास्तविक साम्राज्य विरोधी संयुक्त जन- मोर्चा बने और उन्होंने सलाह दी कि ट्रेड युनियन एवं किसान सभाओं को सामूहिक सदस्यता दी जाए । नेहरू ने कांग्रेस संगठन के इस रवैये की भी तानाशाही कहकर निंदा की जिस पर गाँधी जी ने 1934 के बंबई अधिवेशन में बल दिया था , जिसमें प्रतिनिधियों की संख्या में कमी , पदाधिकारियों के लिये चरखे की योग्यता की अनिवार्यता और उनके द्वारा नामांकित कांग्रेस अध्यक्ष एवं वर्किंग कमेटी पर कड़ा नियन्त्रण होना था । इससे भी बड़ी बात यह थी कि रचनात्मक कार्य एवं शांतिपूर्ण सत्याग्रह की रणनीति असफल लगने लग रही थी । 1934-35 में गाँधी जी द्वारा आरंभ की गयी अखिल भारतीय ग्रामोद्योग एसोसिएशन कोई खास धनात्मक परिणाम नहीं दे रही थी । इसी निराशा में गाँधी ने सितंबर 1934 में कांग्रेस से विधिवत अवकाश ग्रहण कर लिया था और ग्रामीण एवं रचनात्मक कार्य में लीन हो गये । वामपंथ एक नयी चुनौती प्रस्तुत कर रहा था और पहली बार गाँधी को अपने राजनीतिक जीवन में एक बड़ी प्रतिद्वंद्वी चुनौती से सामना हो रहा था और दो महान नेता नेहरू - सुभाष उनकी प्रतिद्वंद्वी विचारधारा के प्रबल समर्थक ही नहीं वरन् गाँधी को उस और मोड़ना चाह रहे थे । जब व्यक्ति कमजोर पड़ता है तब वह षड्यन्त्रों का सहारा लेता है , यही महात्मा के साथ हो रहा था । वह कमजोर पड़ रहे थे एक नयी बह रही हवा के सम्मुख और नेहरू- सुभाष ऐसे प्रखर वक्ता जननायक बन रहे थे अपनी विचारधारा के सहारे । पर गाँधी ने नेहरू को नियन्त्रित कर लिया येन- केन- प्रकारेण पर सुभाष पर आसान न था नियंत्रण करना । सुभाष ने गाँधी से अनुरोध किया एक और अध्यक्षीय कार्यकाल के लिये पर गाँधी की अस्वीकार्यता के बाद उन्होंने गाँधी को ही चुनौती दे डाली ।

चिंतन सर - “आप ने महात्मा गाँधी पर एक राजनीति करने की बात कही है , आप उसे और सुस्पष्ट करो तिरपुरी पहुँचने के पहले ।

शाशि - आप वह कांग्रेस व्याख्यायित करो जिसमें यह सब घट रहा था । आपकी व्याख्या विचारधारा के भी स्तर पर भी है और अहंवाद पर भी है साथ ही आप कह रहे हो कि कांग्रेस के समक्ष प्रतिद्वंदी भी थे । ”

अशोक - “सर , यह सब हमारे परीक्षा में किस तरह काम आयेगा , यह तो बताइये । हमको परीक्षा से मतलब है । कांग्रेस पर जिसका मन आये क्रब्ज़ा

कर ले हमसे कोई मतलब नहीं सर बस यह बताओ कैसे कलम घुमा- घुमा कर लिखें और नंबर लूट लें । “

मैं - चलो तिरपुरी अधिवेशन की बात अभी रोकते हैं । जवाहर लाल नेहरू को सन 1936 की कांग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष बनाने का निर्णय गाँधी का ही था और नेहरू बहुत इच्छुक न थे पर उन्होंने गाँधी को लिखा कि यह चुनाव कांग्रेस के मध्य के तनाव को कम कर देगा इसका कारण उन्होंने अपनी कुछ खास विशेषताओं को बताया । राजागोपालाचारी अध्यक्ष बनना चाहते थे और यह अपील भी की गयी गाँधी से कि उनको चुनाव लड़ने की अनुमति दी जाये पर गाँधी को नेहरू की तार्किकता में आस्था और उन पर अस्तीम विश्वास निर्णायक साबित हुआ । यह वह काल था जब कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन के पश्चात् निष्क्रिय ऐसी थी और अध्यक्ष के पास एक चुनौती सविरय करने की भी थी । सन 1935 में भारतीय सरकार अधिनियम 1935 पास हो चुका था और सभी ने अधिनियम से असहमति जता दी थी पर कई कांग्रेसी थे जो इतने वर्षों के त्याग के पश्चात् दिख रही सत्ता की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहे थे । नेहरू को यह आभास था कि अगर हम सत्ता के नागपाश में आ गये तब आंदोलन करना मुश्किल हो सकता है । यह अब वह कांग्रेस न रही जो कुछ वर्ष पहले की थी । यह 1922 न था जब गाँधी ने आंदोलन वापस ले लिया और कोई समांतर में नेतृत्व ही न था प्रतिरोध करने को । इन पन्द्रह सालों में सशक्त नेताओं की एक फ़ौज भी खड़ी हो गयी थी और विचारधारा के कई सोते भी फूट चुके थे जो गाँधी की विचारधारा पर प्रश्नचिह्न भी लगा रहे थे । अब गाँधी को अपनी बात स्वीकार कराने के लिये संघर्ष करना पड़ता था और कई प्रस्ताव तो बहुत कम अंतर से पास हुये थे । जवाहर लाल नेहरू का लखनऊ अध्यक्षीय भाषण चौंकाने वाला था । वह गाँधी की स्थापित विचारधारा से दूर जा रहा था । गाँधी को लगा कि अगर समय रहते इस पर लगाम न लगायी गयी तब डोर हाथ से छूट जायेगी । अगर अस्तबल का प्रतापी घोड़ा ही नियन्त्रण के बाहर चला गया तब तो नियन्त्रण गया और सुभाष तो एक करान्ति के एक बेअंदाज अश्व है ही । गाँधी किसी भी क्रीमत पर नेहरू - सुभाष के करान्तिकारी कदमों को नियन्त्रित करना चाहते थे पर साथ ही यह भी जानते थे कि इनका लड़ाकूपन एक निधि है जिसे सँभाल कर एक धनात्मक दिशा में उपयोग किया जाना चाहिये । गाँधी का नेहरू पर विश्वास था पर सुभाष पर बिल्कुल न था ।

29 जून की वर्धा की वर्किंग कमेटी में सात सदस्यों ने त्यागपत्र दे दिया जिसमें तीन गाँधी के बहुत ही खास लोग थे - पटेल , राजागोपालाचारी, राजेन्द्र प्रसाद । इसके पहले ही नेहरू अपनी पीड़ा गाँधी से व्यक्त कर चुके

थे कि यह तीन समाजवाद विरोधी एवम् दक्षिणपंथी नेता किस तरह कार्यकरमों को आगे ले जाने में रोड़े अटका रहे हैं। राजागोपालाचारी ने गाँधी से मतभेद सुलझाने का आग्रह किया। यह मतभेद समाजवाद के मुद्दे पर वर्धा में 29 जून को स्पष्ट हो गया और त्यागपत्र सम्मुख आ गया। बाद में त्यागपत्र गाँधी के कहने पर वापस लिया जाता है। इतना बड़ा घटनाक्रम गाँधी ने क्यों सजाया? क्या यह करना आवश्यक था? जो बात आसानी से हल हो सकती थी उसके लिये एक नेपथ्य का सहारा लेना कितना उचित था?

गाँधी ने खुद ही नेहरू से स्वीकार किया कि एक विरोध के पत्र के माध्यम से आशंकाओं के निराकरण के बजाय त्यागपत्र भेजने का सुझाव उनका ही थी। मुझे पता है आपको मेरी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा होगा। गाँधी का 8 जुलाई 1936 को नेहरू को लिखा पत्र है जो संक्लित है “*together they fought*” में आप पढ़ लें।

अब आप ही निर्णय कर लें यह कौन सी राजनीति है? इसमें गाँधी का कौन सा महा नायकत्व है? इसमें कितनी स्वस्थ राजनीति है? चलिये मैं इसे टुच्ची राजनीति नहीं कहता बताइये यह क्या है? एक समस्या का सृजन करना और फिर उसको हल करना यह कौन सी राजनीति है जो कांग्रेस के इतिहास को गर्व देगी।

पर मैं महात्मा गाँधी की इस ईमानदारी की पूरे मनोयोग से प्रशंसा करूँगा कि सच को स्वीकार करने का साहस था उनके पास। वह इस बात को दफन कर सकते थे और आज यह बात किसी को शायद पता ही न होती और गाँधी एक आपदा प्रबंधक के रूप में याद किये जाते। इतिहास एक बहुत ही पेचीदा वस्तु है। इतिहास-मूल्यांकन एक निरपेक्षता एवम् निष्पक्षता का आग्रही होता है। गाँधी एक अतुलनीय नेता थे और रहेंगे पर अगर मैं सच बयाँ नहीं कर सकता तब मुझे यह कोचिंग बंद कर देना चाहिये। मैं एक अध्यापक के तौर पर आपके सम्मुख आता हूँ और मेरे ऊपर अपने तमाम अध्यापकों की नैतिकता का भार है, सत्य के अन्वेषण का। मैं पढ़ाते समय सत्य का आग्रही हूँ, गाँधी की ही तरह पर किसी महानायक का कृतित्व इतना भी बड़ा नहीं होता कि उस पर वाजिब सवाल खड़े न किये जा सकें।

सुभाष और गाँधी के मध्य मतभेद बढ़ रहे थे । सन 1937 के चुनावों के पश्चात् कांग्रेस बंगाल में विपक्ष में थी और सुभाष बंगाल में कांग्रेस और कृषक परजा दल की सम्मिलित सरकार बनाना चाहते थे । गाँधी की सुभाष से इस मुद्दे पर कई वार्ता हुई थी और सुभाष को लगा कि गाँधी उनसे सहमत हैं । पर गाँधी ने एक पत्र लिखकर वहाँ पर चल रही सरकार को न गिराने की सलाह दी । सुभाष को लगा कि बिरला-आज़ाद ने गाँधी को प्रभावित किया होगा । सुभाष का मत था कि कांग्रेस की सरकार बनाने से कांग्रेस की बंगाल में ताक़त बढ़ेगी और वह गाँधी के सरकार न बनाने के दृष्टिकोण से असहमत थे । सुभाष ने गाँधी को चेतावनी भरे लहजे में कहा भी कि वह अपना निर्णय बदलें ।

उसी समय अगले साल के कांग्रेस अध्यक्ष का प्रश्न आरंभ हो गया । सुभाष ने भी नेहरू के ही तर्क पर एक और कार्यकाल का दावा प्रस्तुत किया । पटेल सुभाष की दावेदारी के सबसे बड़े विरोधी थे । पटेल के विरोध के पीछे व्यक्तिगत कारण थे । पटेल के बड़े भाई विट्ठल भाई पटेल ने अपनी वसीयत सुभाष को कर दी थी और यह मामला इतना तूल पकड़ा कि न्यायालय से ही फ़ैसला हो पाया और वह फ़ैसला अंततः पटेल के पक्ष में गया पर क़ानूनी दाँवपेंचों ने कड़वाहट दोनों तरफ़ भर दी थी ।

गाँधी के चुनाव सुभाष तो हो नहीं सकते थे । गाँधी की प्रथम वरीयता अबुल कलाम आज़ाद पर थी । इसका तर्क यह था कि एक मुसलमान शीर्ष पर साम्प्रदायिक तनाव को कम करने में मददगार होगा । आज़ाद की उम्मीदवारी बारदोली में हुये वर्किंग कमेटी की बैठक में घोषित भी कर दी गयी । आज़ाद ने अपनी उम्मीदवारी के घोषणा के समय तो कुछ न कहा पर बाद में अपना नाम वापस ले लिया ।

आज़ाद के नाम वापस लेने के कुछ कारण थे । उनको यह आभास हो गया था कि सुभाष चुनाव अवश्य लड़ेंगे । सुभाष और आज़ाद दोनों ही बंगाल से आते थे और बंगाल में तो सुभाष अप्रतिमता प्राप्त नेता थे, आज़ाद के लिये सुभाष से लड़ना बहुत ही मुश्किल था । आज़ाद के इंकार के बाद गाँधी ने नेहरू से आग्रह किया और यह भी कहा कि अगर आप नहीं लड़ते हो तब पट्टाभि सीतारमैया एकमात्र विकल्प होंगे । नेहरू पुनः अध्यक्ष नहीं बनना चाहते थे और एक अनिच्छुक उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया को मैदान में उतार दिया गया । पट्टाभि सीतारमैया के अनुसार उनकी अनुमति लिये बगैर उनको उम्मीदवार बना दिया गया था ।

सुभाष के दूसरे कार्यकाल के लिये गुरुदेव टैगोर भी इच्छुक थे । गुरुदेव ने सुभाष के एक और कार्यकाल के लिये गाँधी और नेहरू दोनों से अनुरोध किया । गाँधी ने कहा कि सुभाष को अध्यक्ष के दायित्व से दूर रखा जाना चाहिये ताकि वह अपना सारा समय बंगाल कांग्रेस के भ्रष्टाचार के समापन में लगाये ।

सुभाष ने चुनाव लड़ने का फ़ैसला कर लिया । उनका कहना था कि यह मुद्दा व्यक्तिगत न होकर सिद्धांतों का है । वह साम्राज्यवाद विरोधी नयी नीतियों और विचारधाराओं के लिये संघर्ष की बात कर रहे थे । वह यह भी कह रहे थे कि जिस तरह एक से ज्यादा विचारधाराएँ देश में चल रहीं हैं उनको देखते हुये यह एक चुनाव का लड़ना उनके लिये महत्वपूर्ण बनता जा रहा है । लेकिन यह भी सच है सुभाष नीति- कार्यकरम-विचारधारा की बात कर जरूर रहे थे पर वह क्या है, यह वह स्पष्ट नहीं कर रहे थे । संघवाद पर भावी संघर्ष कैसा होगा, इस पर वह कोई प्रकाश नहीं डाल रहे थे । वल्लभ भाई पटेल और वर्किंग कमेटी के 6 अन्य सदस्यों ने कहा कि जो कुछ भी सुभाष कह रहे वह कांग्रेस की नीति का भाग है और कांग्रेस की नीति - कार्यकरम वर्किंग कमेटी बनाता है न कि अध्यक्ष । अध्यक्ष का पद एक संवैधानिक प्रमुख का पद है और वह वर्किंग कमेटी की बनायी नीतियों को कार्यान्वित करता है । सुभाष ने भी उत्तर दिया और कहा कि वर्किंग कमेटी के सदस्यों को किसी भी पक्ष के साथ नहीं आना चाहिये और पक्षपात रहित चुनाव होना चाहिये । सुभाष ने यह भी कहा कि पट्टाभि की उम्मीदवारी के बारे में कोई विमर्श वर्किंग कमेटी में हुआ ही नहीं था, वर्किंग कमेटी के उम्मीदवार आज़ाद थे जो कि नामांकन की प्रक्रिया में आये ही नहीं । सुभाष ने यह भी कहा कि वह चुनाव लड़ने के इच्छुक बिल्कुल नहीं है पर कई प्रान्तों के लोग उनकी उम्मीदवारी के इच्छुक हैं और वह चुनाव लड़ने को मजबूर हैं । उन्होंने चुनाव से हटने की शर्त भी रख दी । उन्होंने कही कि अगर संघवाद विरोधी आचार्य नरेन्द्र देव को अध्यक्ष स्वीकार कर लिया जाये तब वह चुनाव से हट जायेंगे ।

इस बात पर बहस पहली बार छिड़ी की कांग्रेस अध्यक्ष का वास्तविक कार्य क्या है । सुभाष ने उसे मात्र संवैधानिक प्रमुख का पद मानने से इंकार कर दिया और उसकी तुलना बिरटिश प्रधानमंत्री या अमेरिकी राष्ट्रपति से कर दी । उन्होंने दक्षिणपंथियों पर बिरतानी सत्ता से संघवाद स्कीम पर साँठगाँठ का आरोप लगा दिया । चुनाव हुआ और सुभाष 1377 के मुकाबले 1580 वोट पाकर जीत गये । गाँधी जी की प्रतिक्रिया में शालीनता का अभाव था । उन्होंने यह कहा कि चूँकि उन्होंने पट्टाभि सीतारमैया से लड़ने को कहा था इसलिये यह उनसे अधिक यह मेरी पराजय है । उन्होंने सुभाष को अपने हिसाब से वर्किंग कमेटी चुनने का सुझाव दिया और कहा चूँकि उनके

कार्यक्रम पूरी तरह से अग्रगामी हैं इसलिये उनको पूरी छूट मिलनी चाहिये अपने कार्यक्रमों को आगे ले जाने की । सुभाष ने गाँधी के कथन पर दुःख ज़ाहिर करते हुये कहा कि उन्होंने कभी गाँधी के विरुद्ध मत डालने की अपील नहीं की थी । गाँधी से कुछ मुद्दों पर असहमति किसी भी तरह गाँधी के प्रति सम्मान में कमी नहीं दर्शाती है, गाँधी उनके लिये अति सम्माननीय हैं ।

सुभाष इस बात पर ज़ोर दे रहे थे कि मतदान न तो गाँधी के पक्ष में करने को कहा गया और न ही विपक्ष में । सुभाष जीत के बाद एक सौहार्दपूर्ण वातावरण चाह रहे थे उन्होंने यहाँ तक कहा कि उनका यह सदैव लक्ष्य रहा कि वह महात्मा का विश्वास अर्जित कर सकें, यह मेरे लिये दुर्भाग्यपूर्ण पूर्ण होगा अगर मैं लोगों का विश्वास अर्जित कर सका और भारत के महानतम व्यक्ति का विश्वास प्राप्त करने में असफल रहा ।

सुभाष की जवाहर लाल नेहरू से मुलाक़ात शांतिनिकेतन में हुयी । इस वार्ता का कोई विवरण प्राप्त नहीं होता पर जो पत्राचार नेहरू -सुभाष के बीच हुआ उससे वार्ता का अंदाज़ा लगाया जा सकता है । नेहरू यह समझ नहीं पा रहे थे कि सुभाष चाहते क्या हैं । नेहरू ने कहा कि दक्षिणपंथी- वामपंथी - संघवाद के मुद्दे कभी उनके और सुभाष के मध्य विस्तारित हुये नहीं । उन्होंने कहा कि सुभाष के वामपंथी - दक्षिणपंथी शब्दों के प्रयोग न तो किसी तरह से स्पष्ट है और न उन्हें उचित लग रहे हैं, सुभाष के दक्षिणपंथी शब्द का तात्पर्य उन लोगों के समूह से लगाया जा सकता है जो गाँधी के साथ हैं और वामपंथी वह लोग हैं जो गाँधी के विरुद्ध हैं । नेहरू ने सुझाव दिया कि यह उचित होगा कि सुभाष दक्षिणपंथ- वामपंथ- संघवाद का मुद्दा वर्किंग कमेटी की बैठक में विचारित एवम् व्याख्यायित करें । नेहरू ने स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया कि बग़ैर विमर्श के अपने साथियों पर दोषारोपण एवम् किसी प्रतिरोधी गुट का कह देना उचित नहीं है । यह स्पष्ट हो रहा था कि नेहरू किस ओर जा रहे हैं । सुभाष को संकट की घड़ी में जिससे सबसे अधिक उम्मीद थी और जो विचारधारा में उनके सबसे नजदीक था वह सुभाष को छोड़कर जा रहा था और सुभाष निराशा के भाव की झपकती पलकों से जाते हुये कदमों को देख रहे थे ।

नेहरू मौलिक प्रश्न उठा रहे थे - साम्प्रदायिक एकता, किसान- मज़दूर मुद्दा, विदेश नीति और यह जानना चाह रहे थे कि सुभाष अपने सहयोगियों से किस तरह की भिन्न विचारधारा इस पर रखते हैं । वर्किंग कमेटी के गठन के पूर्व नेहरू इन मुद्दों पर सुभाष से स्पष्टीकरण चाहते थे । नेहरू ने स्पष्ट कहा कि सहयोगियों पर विश्वास और आस्था का होना अति आवश्यक है जन मुद्दों पर किसी भी बात को जनता के बीच ले जाकर आंदोलन करने के लिये । नेहरू ने गाँधी को भी पत्र लिखकर कहा कि व्यक्ति की बजाय नीतियों पर

सारा ध्यान संकेंदिरत होना चाहिये पर गाँधी ने जवाब में वर्किंग कमेटी से त्यागपत्र देने की इच्छा ज़ाहिर की , पर नेहरू को गाँधी के त्यागपत्र देने का कोई कारण न दिख रहा था और यही उन्होंने महात्मा गाँधी से कहा भी ।

गाँधी ने ब्रह्मास्त्र चला दिया था । यह चला हुआ ब्रह्मास्त्र खाली जा ही नहीं सकता था । ब्रह्मास्त्र था - नेहरू को लिखना कि वह त्यागपत्र देना चाहते हैं । उन्होंने बग़ौर त्यागपत्र दिये ही एक अमोघ अस्त्र- दिव्यास्त्र-ब्रह्मास्त्र एक साथ चला दिया था ।

पटेल ने राजेन्द्र परसाद को लिखा कि हमारे लिये बोस के साथ कार्य करना संभव नहीं है । गाँधी के इशारे पर जवाहर लाल नेहरू और शरद बोस के अलावा बाकी सबने वर्किंग कमेटी से इस्तीफ़ा दे दिया । सुभाष बोस ने पूरी कोशिश की इस संघर्ष को टालने की और वह गाँधी से मिलने वर्धा तक की यात्रा भी की वह भी तब जब वह बीमार थे पर कोई निर्णय न हो सका । नेहरू ने इस्तीफ़ा तो नहीं दिया पर कहा कि जब पन्द्रह लोगों की वर्किंग कमेटी में से बारह ने इस्तीफ़ा दे दिया तब वर्किंग कमेटी समाप्त हो चुकी है और उनका इस्तीफ़ा देना या न देना कोई मायने नहीं रखता । बीमारी के बावजूद सुभाष तिरपुरी अधिवेशन पहुँचे और अध्यक्ष के पास कोई वर्किंग कमेटी भी न थी । गाँधी राजकोट में उपवास में थे और वह सत्र में उपस्थित न हो सके । गोविंद वल्लभ पंत ने सत्र में ही एक प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया अब तो संघर्ष अवश्यंभावी हो गया था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 207

गोविंद वल्लभ पंत ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें गाँधी के आधारभूत प्रस्तावों के प्रति विश्वास व्यक्त किया गया और पिछले एक वर्ष से चली आ रही वर्किंग कमेटी में आस्था व्यक्त करते हुये अध्यक्ष से अनुरोध किया कि वह गाँधी जी की इच्छानुसार वर्किंग कमेटी का गठन करे । सुभाष के साथ विडम्बना यह थी कि वह वामपंथियों का भी पूर्ण समर्थन प्राप्त न कर सके जिसके वह समर्थन की बात भी करते थे और प्रतिनिधित्व का दावा भी । कांग्रेस के सबसे बड़े सोशलिस्ट गुट कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने इस सत्र से अपने को अलग रखने का फ़ैसला कर लिया । राजागोपालाचारी जिन्होंने इस प्रस्ताव का मसौदा तैयार किया था कहा , “दो नाव हैं .. एक पुरानी नाव गाँधी द्वारा खेयी जा रही .. और दूसरी एक व्यक्ति के पास नयी आयी है .. महात्मा गाँधी जाने समझे नाविक हैं जो सुरक्षित पार उतार सकते हैं । पर अगर आप नयी नाव से जायेंगे जो कि छिद्र युक्त है तब आप ढूबेंगे ही और

नर्मदा वास्तव में बहुत गहरी है। नया नाविक कह रहा यदि आप मेरी नाव से नहीं जाना चाह रहे तब आप अपनी नाव में मेरी नाव बाँध दो। ... हम एक छिद्रयुक्त नाव को अपनी नाव से बाँधकर नदी की अतल गहराइयों में जाने का ख़तरा नहीं उठा सकते।”

पंत का प्रस्ताव स्वीकार हो गया। यह बहुत ही विचित्र स्थिति पैदा हो गयी सुभाष के लिये। वह कांग्रेस के निर्वाचित अध्यक्ष थे पर गाँधी के आदेश को मानने को बाध्य हो चुके थे। गाँधी जी ने पटटाभि सीतारमैया की हार को व्यक्तिगत रूप से ले लिया था और राजागोपालाचारी के शब्द कह रहे थे कि रुख सुभाष विरोधियों का बहुत ही कड़ा हो चुका है।

सुभाष ने निराशा में सत्ताइस पेज का पत्र नेहरू को लिखा और पत्र के अंत में यह लिखा कि मैं पिछले कुछ समय से देख रहा कि आपके मन में मेरे प्रति तिरस्कार भाव जन्म ले चुका है। सुभाष के पत्र ने विवाद को व्यक्तिगत स्तर तक ला दिया था। सुभाष - नेहरू के बीच भी खाई बनने लगी थी। नेहरू ने सुभाष से कहा कि वामपंथी नारे में जब तक कोई वामपंथी आदर्श न होंगे तब तक वह उसी तरह होगा जिस तरह इस समय यूरोप में दिख रहा है। यह बग़ौर आदर्श का नारा फासीवाद के विकास में सहायक होगा। आदर्शों के अभाव में यूरोप की तरह की संभावना भारत में भी हो सकती है यह मुझे चिंतित एवम् दरवित किये हुये है। आपके और मेरे अन्तराष्ट्रीय मामलों - विषयों पर विचार एक नहीं हैं। मेरे नाजीवादी जर्मनी और फासीवाद इटली की भर्त्सना के विचार को आपकी पूर्ण सहमति प्राप्त नहीं है। हम और आप मानसिक बनावट में अलग हैं और हमारा जीवन के प्रति रुझान और समस्याओं को देखने का तरीका एक नहीं है।

सुभाष ने गाँधी को पत्र लिखा और गाँधी की वर्किंग कमेटी पर संरचना पर विचार जानना चाहा और यह भी पूछा कि वह किस तरह चाहते हैं कि मैं एक पार्टी अध्यक्ष के रूप में कार्य करूँ। सुभाष ने गाँधी से पन्द्रह फरवरी की अपनी और उनकी बैठक का हवाला दिया जिसमें गाँधी ने कहा था, जब तक मैं स्वेच्छा से तुम्हारा दृष्टिकोण स्वीकार न करूँ तब तक स्वयं- नष्ट वास्तव में आत्म- दमन होगा और क्या आप आत्म- दमन की अनुशंसा करेंगे। सुभाष ने कहा आपके पास दो रास्ते हैं - या तो मुझे नष्ट कर दें या मेरे दृढ़ विश्वास के साथ मुझे आगे बढ़ने में सहायता करें। क्या आप चाहते हैं मैं एक कठपुतली अध्यक्ष बनूँ?

सारी कक्षा विस्मय में थी । चिंतन सर ने कहा कि इन महान विभूतियों का पत्राचार ही पढ़ाओ । यह देश किस महानता के दौर से गुजरा , इसका अहसास मुझे आज हो रहा । मैं आज तक गाँधी - सुभाष के संघर्ष को मात्र दे व्यक्तियों के गाँव के झगड़े की तरह देखता था जिसमें प्रधानी के चुनाव में विवाद हो गया पर इतनी गूढ़ विचारधारा की बात कभी मैंने सोची ही न थी । इन इतिहास की किताबों को पेज कम पढ़ जाते हैं क्या जो यह सब नहीं लिखते । सत्य प्रकाश सर सही कहते हैं तुमको अध्यापक होना चाहिये , इस फटीचर बाबू की नौकरी के लिये तुम नहीं बने हो । “

मैं - “ सर वह जो राय है कि मैं सन्यास ले लूँ और जगत के कल्याण के लिये कार्य करूँ , उस पर आपका क्या विचार है ? ”

चिंतन सर - “ वह भी विचार ठीक है । ”

अशोक - “ सर आप बस आईएएस की कोचिंग चलाओ और हम लोगों के सेलेक्शन के निमित्त आपका जन्म हुआ है , बाकी सब माया है । आप सर पढ़ा बहुत अच्छा रहे हैं और हम लोग मुँह बायें सुन रहे हैं पर पूरा बाँचने के बाद हमको लिखा देना जिस तरह परीक्षा में लिखना है । ज्ञान- वान ठीक है पर ऐसा ज्ञान हमारे किसी काम का नहीं जो परीक्षा में नंबर न दे सके । हमको परीक्षा में नंबर वाला ज्ञान ज्यादा दो सर । ”

शशि - “ गुरु जी आप बात अपनी पूरी करो । यह अद्भुत है । इसका समापन कर दो आज । ”

मैं - “ कई घंटे हो चुके हैं , लोग थक गये होंगे । इसको कल करते हैं । ”

बद्री सर - “ तुम नहीं थके ? ”

मैं - “ सर एक तूफान का आह्वान किया है मैंने और साक्षात हनुमान का वास है .. राम काज कीन्हें बिना मोहि कहाँ विश्राम । ”

रचना - “ क्या आवाहन है ? ”

मैं - “ एक ग्रेर मामूली दासतां । ”

शशि - “ वह क्या है ? ”

मैं - “ मुझे अभी नहीं पता , बस उसकी खोज कर रहा । ”

चिंतन सर - “ आगे बताओ । ”

मैं - सुभाष ने गाँधी से याचना की कि वह पूर्ण निष्पक्ष रहें और दोनों पक्षों का विश्वास अर्जित करें । उन्होंने गाँधी के समुख दो प्रस्ताव रखे , वर्किंग कमेटी के निर्माण में सुभाष के दृष्टिकोण का भी ध्यान रखें या वह अपनी ही

बात पूरी तरह से चलायें । अगर वह दूसरी बात पर ज़ोर देते हैं तब हमारी आप की राहें जुदा हो जायेगी ।

गाँधी ने सुभाष के सवालों को सीधा उत्तर न दिया और यह कहा कि मतभेद आधारभूत मुद्दों पर है और इसलिये एक सभी वर्गों की कमेटी बनाना उचित नहीं होगा । उन्होंने सुभाष को सलाह दी कि वह अपनी समझ से अपने अनुसार कमेटी बनायें और चूँकि आपको लगता है कि पंत का प्रस्ताव असंवैधानिक है तब यदि आपका विपरीत पक्ष अल्पमत में है तब में आपको आश्वासन देता हूँ वह आपके कार्य में कोई बाधा नहीं पहुँचायेंगे पर यदि वह बहुमत में हैं तब उनका दमन करना उचित नहीं होगा । गाँधी ने स्पष्ट रूप से कहा कि देश के सामने जिस तरह की चुनौतियाँ हैं उसको देखते हुये कोई बीच का रास्ता नहीं हो सकता । गाँधी परोक्ष रूप से सुभाष को चुनौती दे रहे थे अपनी वर्किंग कमेटी बनाने की और वह जानते थे यह सुभाष बग़ैर उनके समर्थन के नहीं कर सकते, पंत प्रस्ताव ने सुभाष को चारों ओर से बाँध दिया था ।

गाँधी चाह रहे थे कि सुभाष अपनी वर्किंग कमेटी बनायें पर सुभाष गाँधी की सलाह के बग़ैर करने को तैयार न थे । सुभाष ने चेतावनी देते हुये यह भी कह दिया, अगर रास्ते अलग हुये तब गृह- युद्ध भी हो सकता है । सुभाष ने गाँधी को अपनी योजना भी बतायी । सुभाष का कहना था कि अन्तराष्ट्रीय परिदृश्य हमारे लिये अनुकूल है और अगर संघर्ष छेड़ा गया तब आठ महीने में पूर्ण स्वराज प्राप्त हो जायेगा । गाँधी इस आशावादिता से सहमत न थे । सुभाष ने गाँधी से यह भी कहा कि अगर आपको लगता है कांग्रेस बग़ैर अध्यक्ष के संघर्ष कर सकती है तब मैं पद त्याग देता हूँ ।

सारा मामला वर्किंग कमेटी की संरचना पर आकर रुक गया, कोई समझौता नहीं हो रहा था । गाँधी ने स्पष्ट रूप से सुभाष से कहा कि वह अपनी वर्किंग कमेटी बनायें और अनुमोदन के लिये अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सम्मुख प्रस्तुत करें । गाँधी ने यह भी लिखा कि मैं अहिंसक आंदोलन का कोई माहौल नहीं देख रहा, मेरा यह विश्वास है कि कांग्रेस इस समय सविनय अवज्ञा के नाम का भी आंदोलन नहीं चला सकती ।

गाँधी सुभाष के सारे पत्र नेहरू को भेजते थे । नेहरू ने गाँधी से मामले के निस्तारण का अनुरोध किया और गाँधी से नेतृत्व करने का आग्रह किया जो सुभाष चाह रहे थे । सुभाष की तारीफ करते हुये कहा कि उनमें कमियाँ हो सकती हैं पर वह मामला सुलझाना चाहते हैं और मित्रता को आतुर हैं । मुझे यह विश्वास है कि यदि आप चाहेंगे तब कोई न कोई रास्ता अवश्य निकल आयेगा । जवाहर लाल सुभाष से मिलने जेलगोरा भी गये जहाँ सुभाष स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे ।

गाँधी टस से मस नहीं हो रहे थे जबकि प्रस्ताव यहाँ तक दिया गया कि वर्किंग कमेटी का चुनाव गाँधी ही कर दें। एआईसीसी सत्र के पहले तक प्रयास किये गये गाँधी को मनाने का और सुभाष- गाँधी - नेहरू की एक मीटिंग भी हुई पर गाँधी अपनी बात पर अड़े रहे। सुभाष ने कोई रास्ता न देखकर इस्तीफ़ा देने का निर्णय लिया। जवाहर लाल नेहरू ने इस्तीफ़ा वापस कराने का प्रयास भी किया और वह पुरानी वर्किंग कमेटी में ही ज़रूरी फेरबदल करके चलाने की बात करने लगे। उन्होंने आपस के मतभेद को समाप्त करके एक साथ काम करने की अपील भी की पर अब कुछ होना असंभव ऐसा हो चुका था और सुभाष अध्यक्ष पद से मुक्त हो गये। राजेन्द्र प्रसाद ने सुभाष की जगह घोड़े की रास सँभाली जो वस्तुतः किसी और के हाथ में थी।

यह बहुत ही पेचीदा मामला है, इसको थोड़ा विश्लेषित करते हैं। सुभाष का पुनर्निवाचन, पंत प्रस्ताव, गाँधी की हठधर्मिता और सुभाष का त्यागपत्र आपस में जुड़े हुये हैं। गाँधी हमेशा एक उच्च नैतिक स्तर बनाये हुये थे कि सुभाष को वर्किंग कमेटी के चुनाव में पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये पर पंत का प्रस्ताव ऐसा करने की स्वतन्त्रता सुभाष को नहीं देता था। सुभाष गाँधी के एक बंदी सदृश थे उस प्रस्ताव के पास होने के बाद। वर्किंग कमेटी का चुनाव सुभाष पंत प्रस्ताव के रहते स्वेच्छा से कर ही नहीं सकते थे और यह बात गाँधी जानते थे। यह आम लोगों के बीच धारणा है कि गाँधी बहुत ही उच्च नैतिक धरातल पर थे जब वह कह रहे थे कि सुभाष को पूरी छूट मिलनी चाहिये काम करने की, पर पंत प्रस्ताव पास हो चुका था और जब तक वह प्रस्ताव समाप्त नहीं किया जाता तब तक सुभाष अपनी कार्यकारिणी गाँधी के निर्देश के बगैर बना ही नहीं सकते थे। सुभाष ने सारे प्रयास किये गाँधी का आशीर्वाद प्राप्त करने के, नेहरू भी चाह रहे थे और नेहरू ने यहाँ तक कहा कि वह आपकी शर्तों पर मित्रता को आतुर हैं पर गाँधी का हर बात पर एक ही जवाब था, उनको कार्य करने पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त होनी चाहिये। पंत प्रस्ताव साफ़- साफ़ कह रहा कि सुभाष बंधक हैं पर गाँधी उसको जानकर भी अनजान बने हैं। यह एक बड़ी बात है कि एआईसीसी समिति में अध्यक्ष को बगैर कार्यकारिणी परिषद के आना पड़ा, वह भी कोई ढीला - ढाला अध्यक्ष नहीं सदी का महानायक जो अपनी निर्णय क्षमता के लिये विख्यात है। सुभाष की विचारधारा से विरोध किसी का भी हो सकता है, महान पथ प्रदर्शक विरोध को जन्म देता ही है। कोई भी बगैर विरोध के महान नहीं बनता पर सुभाष की देशभक्ति, महानता, करान्तिकारिता में तो संदेह उनके विरोधियों को भी न था।

शशि ने कुछ सवाल खड़े कर दिये ,

- आखिर सुभाष गाँधी से क्या चाहते थे और गाँधी सुभाष से क्या चाहते थे ?
- दोनों के बीच मूल अंतर क्या था ?
- क्या यह मामला सुलझाया जा सकता था ?

मैंने कहा , आज यहीं रोकते हैं बाकी आपके सारे सवाल तकरीबन व्याख्यान में हैं ही । शंका समाधान कल करते हैं ।

चिंतन सर - “ आज निपटाओ इसको , मुझे जाना है । मैं इसी के लिये यहाँ रुका हूँ । ”

मैं “सुभाष गाँधी से चाहते थे कि नीति और कार्यक्रम सुभाष बनायें पर आने वाले सारे आंदोलनों का नेतृत्व गाँधी करें , जिसके लिये गाँधी तैयार न थे । गाँधी सुभाष को अध्यक्ष के रूप में काम नहीं करने देना चाहते थे । मैं दूसरी बात को थोड़ा व्याख्यायित करता हूँ । सुभाष चुनाव जीत गये थे । वह अपनी जीत पर अति उत्साहित थे । वह यह समझ नहीं पा रहे थे कि लोगों ने उनके पक्ष में मतदान सिफ्ट इसलिये किया है क्योंकि वह लड़ाकू राजनीति का प्रतीक हो चुके थे और सुभाष के पक्ष में गया मत यह भी कहता है कि गाँधी के तरीकों से एक वर्ग के लोगों का विश्वास उठ रहा था पर यह भी सच है कि गाँधी के नेतृत्व में अभी भी जनमानस की व्यापक आस्था थी और सुभाष यह जानते थे इसलिये वह चाह रहे थे कि नीतियाँ उनकी हों और नेतृत्व गाँधी का हो । सुभाष की आकरामकता कुछ अनावश्यक भी थी । वह उन सारे लोगों को दक्षिणपंथी करार दे रहे थे जो उनके विरोधी थे और उनको वामपंथी जो उनके साथ है । यह वामपंथ- दक्षिणपंथ की कोई मानक परिभाषा तो हो नहीं सकती । वह संघवाद के मुद्दे पर बोल रहे थे और विरोधियों को सत्ता के साथ साँठगाँठ करने का आरोप बौर प्रमाण के लगा रहे थे । नेहरू ने ठीक ही कहा था कि मुझे आपके और कांग्रेस की नीतियों में कोई महत्वपूर्ण विरोध दिखता नहीं । सुभाष ने जिस तरह से अपना विरोध करने वालों और कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं को समझौतावादी करार कर दिया था वह भी बहुतों को अच्छा नहीं लगा था । यह बात सच है कि कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव में नीति- कार्यक्रम के मुद्दे नहीं आते थे और अध्यक्ष के बजाय नीति- कार्यक्रम वर्किंग कमेटी ही तय करती थी । आजादी हासिल करने के लिये जनसंघर्ष का एक दूसरा दौर आरंभ करना होगा यह गाँधी और सुभाष दोनों ही मानते थे पर गाँधी की धारणा थी कि अभी आंदोलन आरंभ करने का नहीं चेतावनी देने का समय है , क्योंकि कांग्रेस और जनता दोनों ही अभी संघर्ष के लिये तैयार नहीं हैं । गाँधी ने 5 मई 1939 को एक इंटरव्यू में कहा था , “ सुभाष मानते हैं कि लड़ने के लिये हमारे पास पूरी ताक़त है । मैं उनके विचारों के पूर्णतः विरुद्ध हूँ । आज हमारे पास कोई ताक़त नहीं है । साम्प्रदायिक कलह अपनी

पराकाष्ठा की ओर है , बिहार के किसानों पर हमारी उतनी पकड़ नहीं है , जितनी पहले थी । अगर आज मुझे दिल्ली मार्च शुरू करने को कहा जाए तो मुझमें ऐसा करने का साहस नहीं है । बगैर मज़दूरों और किसानों के हम कोई आंदोलन कैसे कर सकते हैं ? देश तो उनका ही है । सरकार को चेतावनी देने लायक शक्ति मेरे पास नहीं है । हम हास्यास्पद हो जायेंगे ।”

हम गाँधी और सुभाष के मध्य मौलिक विरोध को भी समझ लेते हैं । सुभाष कह रहे थे कि कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव कार्यक्रम और नीतियों पर हो और वह नयी विचारधारा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और वह वामपंथ समर्थक एवम् संघवाद के विरोधी हैं पर गाँधी समर्थक सुभाष के इस दृष्टिकोण से सहमत न थे । संघर्ष में नीति- रण कौशल के मुद्दे भी थे मसलन - आंदोलन का स्वरूप कैसा हो और आंदोलन कब आरंभ किया जाये । इस मुद्दे पर भी एक प्रस्पर विरोधी विचारधारा इन लोगों के बीच थी । अन्तराष्ट्रीय परिदृश्य में गाँधी की सहानुभूति मित्र राष्ट्रों के साथ थी पर सुभाष की न थी ।

चिंतन सर - “ यह बताओ गलत कौन था गाँधी या सुभाष ? इसका उत्तर गोलमोल करके न दो , स्पष्ट करके दो ।”

मैं “ महात्मा गाँधी । ”

चिंतन सर - “ व्याख्यायित करो इसको । ”

मैं “ सन 1925 में चितरंजन दास की मृत्यु हो गयी और बंगाल कांग्रेस के सारे महत्वपूर्ण पद जे एम सेन गुप्ता को दे दिये गये । सुभाष और उनके भाई शरत बोस को दरकिनार किया गया । पश्चिम बंगाल में चितरंजन दास के बाद सुभाष सबसे बड़े नेता हुये । नेहरू तीन बार अध्यक्ष हुये । लखनऊ और फैजपुर में तो लगातार हुये । तिरपुरी में गाँधी पुनः उनको बनाना चाह रहे थे जब आज़ाद ने नाम वापस ले लिया । आखिर क्यों सुभाष का इतना विरोध । सन 1940 में आज़ाद अध्यक्ष हुये और वह करीब 6 साल रहे । आजादी के साल कृपलानी बनाये गये । आज़ाद के इतने वर्ष अध्यक्ष रहने का एक तर्क यह है कि कांग्रेस प्रतिबंधित संस्था हो गयी थी द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पर क्या कांग्रेस बिरटिश शासन के कानून से चलती थी ? गाँधी कह रहे कि सुभाष को पूरी छूट मिलनी चाहिये कांग्रेस चलाने की पर पंत प्रस्ताव कह रहा जो करो गाँधी के निर्देश से करो और गाँधी कह रहे मैं निर्देश नहीं दूँगा । सुभाष बीमार थे । बीमारी में वह वर्धा गये और सारे प्रस्ताव दिये जिससे वह काम कर सकें पर गाँधी की एक ही ज़िद मेरा आपसे कोई ताल्लुकात नहीं है । सुभाष थोड़ा आकरामक ज़रूर थे वह उनकी प्रकृति थी पर वह गाँधी से बाहर जाने वाले पराणी न थे । सुभाष के खिलाफ चुनाव लड़ने की हिम्मत किसी के पास न थी , हरि को अस्त्र उठाना पड़े और हरि अस्त्र उठा कर भी हार गया , यह हरि से बर्दश्त नहीं हो रहा था । गाँधी बहुत बड़े और

सर्वमान्य नेता थे उनको बड़ा दिल रखना चाहिये था जब सुभाष शरणागत थे तब राम की तरह उन्हें शरण देनी चाहिये थी । मैं ज़रा दुच्छी राजनीति शब्द पर भी बात कर लेता हूँ । यह शब्द अच्छा नहीं है पर बंगाल कांग्रेस में सुभाष ऐसे नेता को दरकिनार करके जेएम सेनगुप्ता ऐसे दूसरी शरणी के नेता को तरजीह देना , नेहरू के कार्यकाल में वर्किंग कमेटी के सदस्यों से बेवजह इस्तीफ़ा दिला देना , जीते हुये अध्यक्ष को कार्य न करने देना , सहयोग माँगने वाले का अपमान कर देना , सुभाष ऐसे नेता के लिये यह कहना कि यह अध्यक्ष न बनकर पश्चिम बंगाल का भ्रष्टाचार दूर करने का कार्य करें , यह कौन सी राजनीति है ।

सुभाष की आकरामकता एक मुद्दा है , उन पर विश्वास न होना एक समस्या थी पर काम तो करने देते जब वह काम ठीक न करते तब आप उचित कदम उठाते बहुमत तो आपके साथ होता ही क्योंकि वर्किंग कमेटी तो आप ही बना रहे थे । “

अशोक - “ सर अगर यह हम लिख देंगे तब हमारी कापी में राजेन्द्र प्रसाद टाइप लिख दिया जायेगा कि परीक्षार्थी को परीक्षक से ज्यादा आता है । ”

क्लास चार घंटे से ज्यादा चल चुकी थी । मैं भी थक गया था पर एक अध्यापक में महादेव समा जाते हैं और वह ऊर्जा महादेव से प्राप्त कर लेता है , शायद यही कारण था मैं इतनी देर बोल सका ।

मैं कक्षा बंद करके घर पहुँचा तब देखा कमिश्नर साहब मेरा इंतज़ार कर रहे थे और आंटी तथा शालिनी का दो पत्र आया हुआ था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 208

मैंने कमिश्नर साहब को देखकर अभिवादन किया । मेरे घर का ड्राइंगरूम बहुत बड़ा न था । बस चार- पाँच कुर्सियाँ ही रहती थीं , सोफ़ा तो एक विलासिता की वस्तु थी , मेरे परिवेश के लिये । एक मेज थी ड्राइंग रूम में अगर इसे ड्राइंग रूम कहा जाये , हक्कीकित में यह एक बैठका था । मेज़ के चारों ओर कुर्सियाँ रखी हुई थीं और कुर्सी के ताँत भी थोड़ा उधङ्गे हुये से थे । यह रात में हम लोगों के पढ़ने के काम भी आ जाती थी । मेज बड़ी थी और जब मैं छोटा था तब इसी पर बिछा कर सो भी जाता था , कई बार जब घर में मेहमान आते थे और जगह कम पड़ती थी । मेरे छोटे भाई- बहन अभी भी

इसी पर पढ़ते थे । मुझे ऊपर बने दो कमरों में से एक कमरा मिल गया था । मेरे साथ चिंतन सर, बद्री सर, दिनेश, अशोक, दादू भी थे । मेरा भाई ऊपर के मेरे कमरे से कुर्सी ले आया ताकि सब लोग बैठ सकें । कमिश्नर साहब ने कहा कि मैं इंतज़ार कर रहा था । यह बताया गया कि तुम आठ बजे तक आ जाते हो पता नहीं क्यों आज देर हो गयी ।

मैं “ सर आज कक्षा देर तक चली । ”

कमिश्नर साहब अपनी दो किताब साथ लेकर आये थे और मेरी माँ और पिता दोनों को अलग- अलग एक - एक किताब दी, वह भी अपने हाथ से किताब पर दस्तखत करके । वह कुछ देर बात किये और यह कहकर चले गये कि कल सुबह आना बात कर्त्तव्य, परसों लखनऊ जाना है लोगों को आमंत्रित करने के लिये । चिंतन सर कहाँ चूकने वाले, वह तो भूमिका ले ही लेंगे ।

चिंतन सर - “ साहब कहें तो मैं भी चलूँ साथ मैं आप खास- खास जगह चले जाइयेगा और कुछ जगह मैं आप के प्रतिनिधि के तौर पर चला जाऊँगा । ”

कमिश्नर साहब - “ कल आना अनुराग के साथ, बात करते हैं । ”

मेरे मन में भाव आ गया, यह अब लपेट मारेंगे कमिश्नर को और ऐसा आटा गूँथेंगे कि फूली हुई रोटी ही बनेगी इनकी । रुको आटे में पानी डालता हूँ । आटा ही नहीं गूँथ पाएंगे तब रोटी कैसे फुलायेंगे ?

बद्री सर विस्मय में थे वह बोले, “यह कमिश्नर तुम्हारा इंतज़ार कर रहे थे ?”

दादू -“ अरे सर, साहब त घंटन बैठा रहत हअ मुन्ना भैया बरे । ”

अशोक -“ सर अब वह समय चला गया जब सर को लोग हल्के में लेते थे । अब तो कुंतल का बटखरा बनाना पड़ेगा सर को तौलने के लिये यह दस- बीस किलो के बटखरे से काम अब नहीं चलने वाला । ”

दादू और अशोक ने अपना काम कर दिया था । आज रात की नींद तो इनकी गायब ही होनी थी । अशोक ने वह पेज खोल कर पढ़ा दिया जहाँ पर मेरे बारे में सर ने प्राक्कथन में लिखा था । “ मैं बहुत आभारी हूँ अनुराग शर्मा का जिन्होंने इतने कम समय में किताब की प्रकाशनिक काम किया । इनकी प्रकाशनिक की दक्षता इस किताब के त्वरित प्रकाशन में बहुत ही सहायक रही । ”

बद्री सर इसको बार- बार पढ़ रहे थे । थोड़ी देर बाद वह सब लोग चले गये और चिंतन सर किसी से मिलकर आने को कहकर वह भी चले गये । मैंने अपने माँ के रुख में एक आमूलचूल परिवर्तन देखा । वह पहले कमिश्नर

साहब के बहन के प्रस्ताव की ओर विरोधी थी पर आज उसके स्थान में बहुत परिवर्तन था ।

माँ - "मुन्ना कमिशनर की बहन कैसी है ? "

मैं - "तुम इतना जान खा गयी थी कि उसकी फोटो भी ठीक से नहीं देखा । तुम पीछे ही पढ़ गयी कि अभी वापस करके आओ नहीं तो मैं उनके घर फेंक कर आ जाऊँगी । ऐसे माहौल में किसको सचिह्न होगी फोटो देखने में । "

माँ - "कमिशनर साहब त गोर- नार हयें, ऐसे बहिनों होये । "

दादू - "बुआ बा बहुत सुंदर । "

माँ - "तोहका कैसे पता ? "

दादू - "बुआ जब कमिशनर के बहिन के लिफाफ़ा में पैक करत रहे तब हम ध्यान से देखें रहे । बुआ बा बहुत सुंदर । "

इस बातचीत के बीच में मैंने कहा मुझे कल के लिये पढ़ना है और अपने कमरे में आ गया ।

माँ - "दादू पर बा उ बड़े घरे के । हमरे लायक बा नाहीं । "

दादू - "बुआ अब अझहिं त बड़- बड़वारै, इहाँ छोटवारन के त लात अब लागे नाहीं । "

माँ - "अब एतनऊ बड़वार मनई न चाही कि एक तीर घाट तब दूसर मीर घाट । पर दादू तोहार का राय बा एह संबंधे पर । "

दादू - "बुआ हमार त नीति कहत बा कि मज़बूत होई जाई के समय आई गवा बा और अउसरौ हाथ में आई गवा बा । निरा रूपिया पे बियाह न करअ । जहाँ सब कुछ होई उहीं निशाना लगावत जाई । अब हरिकेश मामा के इहाँ बा निरी रूपिया, और कुछ त बा नाहीं । रूपिया लै ल बस । जब रूपिय लई के बा तब तौ जे डाक लगाये उहाँ करअ । हरिकेश मामा के त डाक में रामराज दौड़ाई के मिरिहिं । मामा कझहिं एक मकान तो राम राज कझहिं दुई मकान । मामा कझहिं कार त रामराज कझहिं लड़िका - समधी दुझनों के कार । इ बात बुआ चाचौ कहत रहेन कि अब मुन्ना के बियाह हरिकेश के बस के बाहर होई जात बा । बुआ अगर कमिशनर के पता चलि जाय कि हरिकेश ओनकर प्रतियोगी बना हयें तब रातै के सस्पेंड करें और भिंसारे जेल भेज के जेल के पक्कवन से बल भर थुरियावय के कहि दे, सारी चर्बी उतरि जाये । "

माँ - “ तोहरे अनुसार हमार फ़ैसला फ़ोटो- कुंडली के वापस करब ठीक नाहीं रहा ? ”

दादू - “ बुआ एक बात कही ? ”

माँ - “ कहअ । ”

दादू - “ तू मोहन बरम - हरषू बरम होई के एक बार आवअ । तोहरे सिरे भवानी - बरम - ठाकुर सब एक संगे आवत हअ और तब तू केहू के सुनतू नाहीं । फूफा समझाए कि रात में मुन्ना कहाँ जाये वापस करै , मुन्ना कहेन कि हम रात के न जाब पर तू लागू अभुवाय, नाहीं अबहिं जा इहीं समय जा नाहीं त हम कमिशनर के दरवाजा पर फेंकि अउबै । ”

माँ - “ अरे ऊ शांति के रणरोवा पढ़ि के हम घबड़ाई गये । शांतिउ कौनौ कम बा का , एक हाथ ककरी नौ हाथ बिया । अरे ओकर चिट्ठी आई बा , मुन्ना के दै दअ नाहीं त इ अलगै हल्ला करें आजकल एकरौ दिमाग़ आसमाने पर चढ़ा बा । जबसे कोचिंग के रूपिया देख लेहे बा तब से एकर नख़रा और बढ़ि गवा बा । हमसे कहत हअ तू हमार चिट्ठी काहे खोल के पढ़त हऊ । अरे कौन परेम- पत्र पढ़ि लिहा । जा ओकर चिट्ठी दै दअ । इ बतावअ आज कक्षा कैसन रही ? कुछ मिला ? ”

दादू - “ बुआ कक्षा त बहुत ललन टाप चलत बा । आज त शशि , रचना , चिंतन सर , बदरी सर जब सेलेक्शन पाये लोग पढ़त रहेन । बुआ हमहू मोह बाये सुनत रहे । एक बात बतायी बुआ , तोहार गंगा नहाब फलि गवा नाहीं त मुन्ना ऐसन गदेल हमरे पचन के इहाँ कहाँ पैदा होई वाला । हम सब रबड़ छाप बुद्धि वालन के बीच इ बाँस- फाड़ बुद्धि कहाँ से आई गय । ”

माँ - “ पैसवा केतना मिला ? ”

दादू - “ तीन हज़ार मिला बा । हम चुपके से सँभाल के परेम से तगादा कै के निकारि लेइत थअ नाहीं त मुन्ना के बस चलै त सब मुफ्त कै देर्झ । ”

माँ - “ बड़का हर्ष बना हयेन । अब केऊ राज़ी खुशी देत बा तब लेई में का ऐतराज बा । ”

दादू - “ बुआ हम काम हँसी - खुशी वालई करत हई । मुन्ना भैया बहुत मेहनत करत हएन । इ बात सब लड़िकौ मानत हएन और पैसा कुछ न कुछ सभै देत हएन । एक अशोक सारस्वत हएन , बुआ उ बहुतै चालू बा । कुल पाठ लिख लेता हअ , बलभर सवालौ पूछे पर एक रूपिया नाहीं देहेस । एक बार कहा कि पैसा दै दअ तब हमसे कहत हअ कि , ”

हमको जानते नहीं हो तुम । मेरा नाम अशोक सारस्वत है , दुबारा हमसे यह सब फ़ालतू बात मत करना । ”

माँ - “ मुन्ना से ज़िकर न किहा करअ पैसा के । उ पूछत हअ कभौ ? ”

दादू - “ बुआ , गाँव में कहावत बा जेकर दिमाग बहुत चलत होई और खुराफ़ात करत होई ओकरे मूडे पर दुई बोझ पियरा लाद द सब खुराफ़ात भूल जाये । इहै होई गवा बा मुन्ना के साथ । कभौं पढ़ाये त हये नाहीं । हर दिन तीन घंटा पढ़ावअ दस घंटा पढ़ा छः घंटा सौवअ तब खुराफ़ात के समय कहाँ । ओ त परेशन हयेन कोचिंग में बाकी काम के सुधि कहाँ बा । पर बुआ एक बात बा , तू खूब रूपिया पीटू । ”

माँ - “ गंगा माई के कृपा रही नाहीं त तोहार फूफा ओकरे पीछे पड़ा रहेन कि कोचिंग न चलावअ , एहमें नुकसान बा । ”

दादू - “ बुआ , पर मुन्ना सुनेस नाहीं । ”

माँ - “ हम पहिले दिना से जानत रहे इ कोचिंग ज़रूर चलाये चाहे धरती उलट- पुलट जाई । इ बा बहुत ज़िद्दी । ”

दादू - “ पर बुआ तोहसे बहुत डेरात थअ । ”

माँ - “ डेरात नाहीं उ लेहाज करत हअ । डर के साथ समस्या इ होत हअ कि उ कभौं भी ख़त्म होई सकत हअ पर लेहाज हमेशा बना रहत हअ । जा ओकर चिट्ठी दै दअ । ”

दादू चिट्ठी लेकर आया । उसने बताया , “बुआ कमिश्नर के बारे में पूछत बा । हमका लागत बा कि ओकर एह रिश्ता में मन बनत बा । पहिले ओका लगत रहा कि ए बङ्गवार मनई हये और घमंडी होइहिं पर अब एतने बार मिलै के बाद ओका साहेब अच्छा और जमीनी आदमी लागई लाग हयेन । ”

वह शालिनी और आंटी का दो पत्र लाया था । दोनों ने अलग- अलग लिखा था । ऐसा लगता है कि आंटी को नहीं पता था कि शालिनी ने भी पत्र लिखा है । कार्यक्रम आने का दोनों ने ही लिखा था । आंटी भी संगम नहाना चाहती थीं और शालिनी भी अपनी माँ को संगम ले जाना चाहती थीं । शालिनी ने चिंतन सर का सहयोग चाहा था सुचारू पूर्ण स्नान के लिये । शालिनी ने यह भी लिखा था कि माँ कैसे कपड़े पसंद करती है यह बताना , मैं लाना चाहती हूँ । शालिनी बहुत ही होशियार थी बात- चीत में । उसने लिखा था , “ अनुराग मुझे एक सास और मिली है । मेरे नसीब में मातृत्व सुख बहुत ही ज्यादा है । मेरी माँ , ऋषभ की माँ अब तुम्हारी माँ ... ”

मैं यह पढ़ ही रहा था कि माँ आ गयी , उसने पूछा क्या पढ़ रहे हो ?

मैंने पत्र आगे कर दिया और कहा वही जो तुम पढ़ चुकी हो ।

माँ- “ शालिनी बहुत समझदार है । ”

मैं “ माँ , व्यक्ति को आँकते समय देश- काल - परिस्थिति को देखकर आँकना चाहिये । ”

माँ - “ मैं समझी नहीं ? ”

मैं - “ यही सवाल आंटी से करना । ”

माँ - “ क्या वह बुराई करेंगी शालिनी की ? ”

मैं “ माँ , आंटी ऐसी गंभीर महिला मिलना बहुत मुश्किल है । तुम सवाल पूछना फिर बताना । ”

माँ - “ यह इंतजाम क्या होता है , नहाने का । मैं तो जाती हूँ नहा कर दर्शन करके चली आती हूँ । ”

मैं - “ यह सब बड़े आदमी के चोचले हैं । ”

माँ - “ तुम कैसे कराओगे यह सब ? ”

मैं “ अरे तुम्हारा समधियाना कमिश्नर के यहाँ हो रहा । इतने बड़े आदमी की समधन हो , तुम जो चाहे सब कर सकती हो । ”

माँ - “ ददुआ के पेटे कुछ न पचे , हम त बस पूछा कि कमिश्नर की बहिन कैसे होये और उ आई के गढ़ि देहेस । ”

मैं - “ देख लेना , आएगी विमोचन में । ”

माँ - “ कैसे पता उ आएगी । ”

मैं - “ इतना बड़ा जलसा हो रहा , इतने लोग आ रहे . वह क्यों नहीं आएगी । ”

माँ - “ मुन्ना तुहूँ किताब लिखअ और ऐसन बड़ा जलसा करअ । हमरे जीतै जी केहेअ । हमहूँ देखा चाहत हई ऐसन जलसा अपने मुन्ना के । ”

मैं , माँ को देखने लगा उसके कपोलों पर मुक्तादल लुढ़क रहे थे । एक बगावत हो चुकी थी उसके अंदर भावनाओं की । एक महान विजेता बगावत के सामने नतमस्तक हो चुका था । वह अपने पुत्र के पराक्रम के गर्व में आ़हादित रहती थी , शायद किसी भी माँ के लिये इससे ज्यादा संतुष्टि वैकुंठ प्राप्ति भी प्रदान नहीं कर सकती । मैं उसके लुढ़कते

मोटे- मोटे आँसुओं में झूब चुका था ।

चिंतन सर रात को लौट कर आये । माँ ने खाना खिलाते हुये पूछा, “ अब कब औउबअ ? एह बार आये तब हम बहिन के ससुराल बहिन के लै के जाब । हमसे कहत रही , तनिक हमरेऊ घरे इ चाक- चौबंद-बन्दोबस्त लै के चलअ एक बार । ”

चिंतन सर - “ अब हमारे चाक-चौबंद की क्या ज़रूरत । जब नारायण अनुराग के दर्शन को आतुर हैं तब हमारे ऐसे पचपन करोड़ देवताओं में से एक की क्या ज़रूरत ? ”

माँ - “ चिंतन हमका कहानी न सुनावअ जेतना पूछत हई ओतनई बतावै । ”

मैं चिंतन सर का चेहरा देखने लगा । माँ ने उनकी सलोथर बकैती की हवा निकाल दी थी । वह सोच रहे थे कि वह पूछेगी कौन हैं नारायण ? कौन हैं पचपन करोड़ देवता और वह अपनी भाषा के भ्रम जाल में लुध्या कर टाइम पास करेंगे । वह निर्देश दे बैठी , “ विमोचन पर त तू अजबै करबअ एकाध रोज़ पहिले आई जायअ । ”

चिंतन सर - “ ठीक है । ”

रात में चिंतन सर ने कहा , “ सद्वी की पतंगबाज़ी वाला लोग तुमको कहते थे पर तुम तो काँच से तराशा मंझा रखे हो और एक साथ कई उड़ती पतंग को खींचकर , ढील देकर और खींच- ढील, ढील-खींच करके काटने में माहिर हो । इ मायावी सत्यानंद मिश्रा को कैसे लबाझियाये अपने मंझा में । ”

मैं “ सर मैं मंझा ही बनाता हूँ , लोगों को गलतफ़हमी है कि सद्वी है यह पर जब मुझसे साबिता पड़ता है तब उनको अपने मंझे रहम की गुहार लगाते नजर आते हैं । ”

चिंतन सर - “ भला है मारीच का वह दूसरे युग में पैदा हुआ , इस तुम्हारे दौर में पैदा हुआ होता तो तुम उससे , हे लक्ष्मण - हे लक्ष्मण की जगह हे रावण- हे रावण की आवाज़ निकलवा दिये होते और यह साधू बनकर सीता हरण करने वाला रावण अस्त्र- मुकुट सुसज्जित काया-मुद्रा में लंका के सभा कक्ष में ही गिर गया होता । इतनी माया आती है कभी हवा ही नहीं दिये । यह कोचिंग , यह राष्ट्रीय आंदोलन , यह भाषा का तिलस्म , यह कविता सब माया फैला मारे हो । तुम चाणक्य के लिये उपयुक्त हो । ”

मैं “ आप चन्द्रगुप्त के लिये ? ”

चिंतन सर - “ बहुत सही पकड़े बाबा । नीति तुम्हारी पराकरम मेरा । ”

मैं - “ नहीं सर मैं त्याग नहीं करूँगा । यह चाणक्य बनने की प्रक्रिया में बहुत त्याग है । मैं ऐश करना चाहता हूँ , वह चन्द्रगुप्त को प्राप्त है । मैं चाणक्य नहीं बनूँगा । मुझे कोई शौक नहीं है चुँदई- धोती का आवरण

पहनकर किसी और के लिये राज्य को जीतूँ । मैं स्वयमेव राज्य का भोग करूँगा । “

चिंतन सर के चेहरे पर चिंता की रेखायें आ गईं । उनकी महत्वाकांक्षा की उड़ान को मिलनी वाली हवा में मेरे डैने की ताक़त भी शामिल थी और वह मेरे ऊपर एक अधिकार समझते थे पर वह भी देख रहे थे कि कुछ दिनों से मेरे तेवर बदले- बदले से नज़र आ रहे थे । मैं भी अब दो- तीन महीने पहले वाला अनुराग शर्मा तो रहा नहीं । सफलता ने मेरे हाँसले और मेरे विश्वास दोनों में वृद्धि कर दी थी । मैं सिविल सेवा की सफलता से प्राप्त नायकत्व को इस कोचिंग के द्वारा महानायकत्व में परिवर्तित करने का प्रयास कर रहा था और सफल भी हो रहा था । यह चयनित अभ्यर्थियों द्वारा मेरे ज्ञान का लोहा मानना मुझे अति उत्साहित कर रहा था । कमिश्नर साहब की मेरे ऊपर बढ़ रही निर्भरता भी मुझे अपने ऊपर और यक़ीन दिला रही थी , चाहे वह निर्भरता किसी भी कारण से हो । ऐसा नहीं है यह सब चिंतन सर समझ नहीं रहे थे । वह तो गुरु घंटाल हैं पर उनकी योजना में मैं उनका सहायक था वह अब उन्हें होता नहीं दिख रहा था , यह उनसे पच नहीं रहा था । मैंने उनकी तरफ़ देखा निगाह मिली लगा जैसे वह कह रहे , हमारी बिल्ली हमाहिं से म्याऊँ करने लगी ।

सुबह - सुबह चिंतन सर जल्दी में थे कमिश्नर साहब के यहाँ जाने के लिये , पर मैं सारा काम योजना से कर रहा था । मैं देर में जाना चाहता था और ऐसा दिखा रहा था कि मेरी जाने में कोई रुचि नहीं है । मैंने यह भी कहा कि सर शाम को वह खुद ही आ जायेंगे अगर मैं नहीं जाऊँगा , मैं उनकी एक ज़रूरत ही नहीं हूँ मैं उनकी बैसाखी हूँ इसके बग़ैर वह चल नहीं सकते । मैं ऊँची-ऊँची छोड़ने मैं तो माहिर रहा ही हूँ अब तो मेरे पर निकल आये थे । चिंतन सर को समझ न आ रहा था कि वह अब करें क्या ? सुबह - सुबह ही अशोक - दिनेश भी आ गये । अशोक ने आते ही कहा सर जलेबी आई ? मैंने छोटे भाई की तरफ़ देखा उसने कहा अर्जुन से कहकर आया हूँ वह छान रहा है लेकर आता हूँ । दिनेश ने पूछा सर आज क्या पढ़ायेंगे?

मैं - “आधुनिक इतिहास का तो तक़रीबन सब कुछ हो गया । दो ही महत्वपूर्ण चीज़ बची है - भारत छोड़ो आन्दोलन एवम् आज़ादी - विभाजन का द्वैध । वह करता हूँ तीन - चार लेक्चर में । ”

अशोक - “ सर उसके बाद क्या शुरू करेंगे? ”

मैं - “ सोच रहा भारतीय राजनीति और संविधान कर देता हूँ । वह भी मुश्किल भाग है पाठ्यक्रम का । ”

चिंतन सर - “ संविधान भी ऐसे ही पढ़ाओगे जैसे गाँधी - सुभाष पढ़ाये । ”

मैं “ इससे भी बेहतर करूँगा । ”

अशोक - “ सर तो संविधान के राजा हैं , एक अनुच्छेद को दूसरे से ऐसा जोड़ते हैं जैसे आप विवाह की गाँठ जोड़ देते हैं मन्त्रों के सहारे । ”

चिंतन सर आज हर तरफ से घिरे हुये थे । वह आज अपनी कुंडली ठीक से देखेंगे तो अवश्य यह लिखा मिलेगा , “ आपका आज का दिन ठीक नहीं है । ”

कमिश्नर साहब के बाँगले पर मैं चिंतन सर और अशोक पहुँचे । चिंतन सर को फिर एक झटका लगा । सर ने कहा , “ मैं इंतज़ार कर रहा था , सोचा था तुम सुबह ही सुबह आ जाओगे । ”

मैं “ सर यह कोचिंग बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी हो गयी है , हर रोज़ बहुत पढ़ना पड़ता है । इसलिये थोड़ा समय लग गया । ”

कमिश्नर साहब - “ मैं कल जा रहा लखनऊ । राज्यपाल को आमंत्रण देने के लिये । एक राय दो अध्यक्षता किससे करायें कार्यक्रम की । ”

मैं “ सर क्या विकल्प है ? ”

कमिश्नर साहब - “ मुख्यमंत्री , विधान सभा अध्यक्ष और उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश । मुख्यमंत्री पर मेरा अपना थोड़ा रिज़र्वेशन है । वह जन नेता अवश्य हैं पर साहित्यिक अभिरुचि उनकी नहीं है , पर नाम के हिसाब से वह एक चुनाव तो हैं ही । विधान सभा अध्यक्ष को तो जानते ही हो वह स्वयमेव एक लेखक भी हैं और मुख्य न्यायाधीश की अपनी एक गरिमा है ही । ”

मैं “ सर मुख्यमन्त्री एवम् राज्यपाल को एक साथ बैठाना एक मंच पर कितना उचित रहेगा यह भी एक प्रश्न है और आप किसी राजनैतिक दल से सम्बद्धता सरे आम क्यों प्रदर्शित कर रहे । मुख्य न्यायाधीश पर समस्या यह है कि वह उच्चतम न्यायालय जाने की राह पर हैं और उनका भाग लेना मंच पर बहुत उचित शायद उनके लिये भी न हो । आपको उनके हित का भी ध्यान रखना चाहिये । ”

कमिश्नर साहब - “ यह तो निर्णय हो गया । अब यह बताओ मंच पर कौन - कौन बैठे ? ”

मैं सिर्फ़ तीन लोग - आप , मुख्य अतिथि रमाकान्त शास्त्री और कार्यक्रम के अध्यक्ष विधान सभा अध्यक्ष । ”

कमिश्नर साहब - सत्य प्रकाश सर , उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ? ”

मैं - “ सर आप इस पचड़े से बाहर रहें , कौन बैठेगा । अगर आप किसी चौथे को बैठाओगे तब बहुत से नाम और भी होंगे । आप के मुख्य सचिव आ गये तब , सांसद आ गये तब , गृह मंत्री आ गये तब । आप तीन रहोगे तब कोई प्रश्न उठेगा ही नहीं । ”

कमिश्नर साहब - “ कार्यक्रम में बोलने का क्रम कैसे करें ? ”

मैं - “ सर आप एक बार इस पर सत्य प्रकाश सर से राय ले लें या मैं ही शाम को ले लेता हूँ । उनको अनुभव है । ”

कमिश्नर साहब - “ ठीक है शाम को तुम चले जाना सर के पास । ”

मैं - “ ठीक है सर । ”

मेरा अपना काम तो अभी हुआ था नहीं । मैंने सोचा लोहा गर्म है चोट कर देते हैं , क्या पता काम बन ही जाये ।

मैं - “ सर कहें तो मैं भी कुछ बोल दूँ आपकी किताब और लेखन पर । एक बेहतर प्रभाव पड़ जायेगा और आपके भाषण का भी एक ड्राफ्ट बना दूँगा आप सत्य प्रकाश सर से ठीक करा लीजियेगा । ”

मैंने भाषण लिखने और अपने बोलने की बात एकसाथ कही थी ताकि उनकी रुचि बनी रहे । मैं जानता था उनके पास समय की बहुत कमी है और यह मेरे पक्ष में जा रहा था ।

कमिश्नर साहब - “ ठीक है । मैं भी लिख रहा तुम भी लिखो । दोनों को मिला लेंगे । तुम भी बोल लेना । ”

मेरा सारा काम हो चुका था , मैंने सोचा अब चिंतन सर को भी निपटा देता हूँ ।

मैं - “ सर जहाँ आप न जा पा रहे हों आमंत्रित करने , कार्ड और लिस्ट चिंतन सर को दे दीजिये । यह लखनऊ देते हुए गाज़ियाबाद चले जायेंगे । ”

कमिश्नर सर ने पीएस को बुलाया और कार्ड पकड़ा दिया । चिंतन सर का सारा मंसूबा पानी-पानी हो गया । वह सोचे थे कि साहब के साथ जायेंगे और रास्ते में नज़दीकी बढ़ेंगी , कुछ काम की बात होगी , कुछ सुल्तानपुर की विकास योजना पर सकारात्मक चर्चा करेंगे । पर सब अपना चाहा कहाँ होता है इस जीवन में । सर ने आलतू- फालतू भीड़ बढ़ाने वाले कार्ड उनको पकड़ा दिये । बेगार प्रथा अभी भी ज़िंदा है यह दिख रहा था चिंतन सर के चेहरे को देखकर । वह यह नहीं चाह रहे थे जो हो रहा था , पर मैं जो चाह रहा था वही हो रहा था । मैंने मन में ही कहा , मुझे धोती-

चुटिया पहना रहे थे चाणक्य बना रहे थे स्वयं राज्य करने के लिये । राज्य के जंगलों में आग लगा दूँगा आक्सीजन ही नहीं मिलेगी मर जायेंगे सब के सब ।

कमिश्नर साहब को आफिस जाने की जल्दी थी । बहुत से लोग इंतजार कर रहे थे सर का । वह चले गये । चिंतन सर बोले , “ बाबा लखनऊ चलता हूँ , यह काम भी सिर पर आ गया । ”

मैं - “ सर आप ही तो यह काम ले लिये , मुझसे पूछते तब मैं रोकता । अब आप ही तो लगे हो तेलियाने में । ”

सर चले गये और मैं चला घर की ओर ।

मैं घर पहुँचा और माँ को पूरी कहानी सुननी ही है और न सुनाओ तब गुस्सा करेगी कि , “ ठीक से बताओ । ”

वह विस्मय के साथ पुनः पूछी , “ तुहूँ बोलबअ मंच से ? ”

मैं - “ एक बात तीन बार सुन चुकी , कितनी बार बताई । ”

माँ - “ सोचत हई भैया के इहाँ होई आई । ”

मैं समझ गया कि आज का दिन चिंतन सर का ख़राब था अब मामा - मामी का ख़राब करेगी इसी क्रिस्से में नमक - मिर्च लगाकर ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 210

माँ मामा के यहाँ जाने गयी । वह रिक्शे से ही जाती थी , पर अब वह भी भाव लेने लगी थी । वह पहले गली से निकलकर सड़क पर रिक्शा पकड़ कर जाया करती थी पर आज छोटे भाई से कहा कि जाओ रिक्शा लेकर आओ । रिक्शे के इंतजार के समय मुझसे कहने लगी कि तुम छोटे भाई - बहन को भी पढ़ाओ , उन पर भी ध्यान दो । मैंने पूछा , “ क्या ध्यान दूँ ? ”

माँ - “ ज़रा शासन करो , बताओ कैसे पढ़ें , उनको भी परीक्षा की तैयारी कराओ । ”

मैं - “ किसी के कहने से कुछ नहीं होता , जिसको करना होता है वह खुद ही करता है । यह दोनों सारा दिन मटरगश्ती करते हैं , अब कौन समझाये । मेरे पास इतना समय नहीं है । ”

माँ - “आपन समय भूलि गय का । तुहँ ऐसे अवारा रहअ । हमका न बतावअ कैसे शासन किहा जात हअ । तोहरे पर शासन न केहे होइत त तुहँ झुलई, बाबा, दादू के नाहीं दर - दर के ठोकत खात होतअ । कहत हई समझावअ ओनहन के त हमका उपदेश देत हअ । ”

मेरी तकदीर अच्छी थी रिक्षा आ गया नहीं तो माघमेला का त्यागी महराज ऐसा प्रवचन चालू हो गया था । मैंने कहा, “पैसा दूँ क्या ... वैसे तुमको कौन सा पैसे की कमी हर शाम को सेठानी पैसा दादू से रखवा ही लेती है । सेठानी कितने हज़ार रुपया रख चुकी है ?”

माँ - “ददुआ के पेटे कुछ न पचे । ”

उसका रिक्षा जा रहा था, मैंने पीछे से आवाज़ दी ..” ठीक से मिठाई, समोसा, देहाती का गुलाब जामुन लेती जाना । ”

उसने हाँथ हिलाकर सकारात्मक उत्तर दिया । उसके जाते ही मैंने भाई - बहन से कहा चलो पढ़ो अब । चाहे अभी मत पढ़ो जब वह आये तब उसको पढ़ते हुये मिलना ।

छोटा भाई - “वह पंचउरा करने गयी है । वह जब आयेगी तब कुछ याद नहीं होगा, सिवाय पंचउरा के । ”

बात भाई ने सही ही कही थी । वैसे ही किसी की नहीं सुनती अपने आगे आज तो इतना मसाला है उसके पास कि मामा के यहाँ सबको दबेर मारेगी ।

माँ का मामा के यहाँ एकाएक पहुँचना सबको सुखद आश्चर्य दे गया । मोहिता दीदी का विवाह हो गया था पर वह और जीजा जी अक्सर रहते मामा के ही यहाँ थे । घर में एक बहू आ गयी थी और मामा - मामी अपने समधियाने की तारीफ़ में काठ- लोहे - बाँस सबका पुल बाँधते रहते थे । पर भाभी थी बहुत भली । उनकी अच्छी परवरिश हुई थी, उनको सामंजस्य बनाकर रहना आता था । मामी और मेरी माँ का संघर्ष पता नहीं कब आरंभ हुआ था और वह आगे भी चलता ही पर विधाता ने मामी को आत्मसमर्पण के लिये आदेश दे दिया था मेरे चयन के बाद पर मामी वह आदेश मानने को तैयार न थी । पर माँ अब बड़े दिलवाने हो गयी थी वह चीजों को थोड़ा संयत होकर लेने लगी थी, वैसे वह जन्मना उदार थी और कोई बात मन में नहीं रखती थी । वह अब यह ध्यान रखती थी कि कोई यह न कहें कि बेटा आईएएस हो गया है इसलिये घमंडी हो गयी है । मामा के साथ के झगड़े में उसने बहुत परिपक्वता दिखाई थी और मेरे पिताजी ने भी मुझसे कहा था कि तुम्हारी माँ में भी बहुत कुछ सकारात्मक बदलाव आया है पिछले कुछ समय में ।

मामी ने माँ का स्वागत पूरे मनोयोग से किया । छुट्टी का दिन था इसलिये मामा भी घर पर ही थे और वह मन ही मन माँ के शुक्ररगुज़ार थे अपनी

पोस्टिंग को लेकर । इस समय मेरे परिवेश में सबसे अधिक चर्चा के दो मुद्दे थे - मेरा विवाह और उसमें मिलने वाला दहेज एवं मेरी कोचिंग की सफलता ।

मामी ने यह बात करनी आरंभ कर दी ।

मामी - “ उर्मिला मुन्ना के बियाह पर कुछ मन बना ? ”

माँ - “ भौजी कुछ समझै नाहीं आवत बा कहाँ करी , कैसे जानी कि लड़की कैसन बा । अब लड़की मुन्ना के जोड़ के चाही और घर - परिवार के साथ मिल- जुल के रहै वाली होई चाहे । तोहसे भौजी कुछ छिपा त बा नाहीं , हमार बा बहुत कच्ची गृहस्थी । मुन्ना के पिताजी के जीपीएफ के पैसा काफी कुछ मकान बनावै में चला गवा बा । दुई- चार पैसा जोड़े ज़रूर हई बिटिया के बियाहे बरे पर अब ओहमें कौनौ अच्छा बियाह त होई न पाये । अब मुन्ना के दुलहिन अगर ठीक न आये तब परिवार के एकता कैसे चले । ”

मामी - “ सुना हअ मुन्ना कोचिंग में बहुत पैसा कमायेन । ”

मैं - “ बहुत त नाहीं कमायेन , सब त पैसा देतेन नाहीं और मुन्नौ पैसा पर ज़ोर देहेन नाहीं पर हाँ कुछ त पैसा कमायेन । ”

मामी - “ दाढ़ू त कहत रहेन कि बहुत कमायेन । ”

माँ - “ अब दाढ़ू पैसा लेत रहेन , मुन्ना के देहेन शुरू में । अब मुन्ना नाहीं लेतेन तब हमका देति हअ दाढ़ू । अब हमका त नाहीं पता मुन्ना केतना रखने । हमका जौन मिला ओतनै हम जानित हअ । पर हाँ भौजी पैसा त मिला , पर पैसा से ज्यादा ओका नाम बहुत मिला । जब सब लड़िका चयन के बाद आराम करत हअ तब मुन्ना दिन- रात पढ़त बा और त और ओकरे कक्षा में कई सेलेक्शन पावा लोगौ आवत हएन पढ़े बरे । मुन्ना ऐसन लगन भौजी बहुत कम देखै के मिलत हअ । पहिले त उ धूमै- टहरै में लगा रहत रहा पर पिछले दुई- तीन साल से एकदम बदलि गवा और ओही के परिणाम ओका मिला । ”

मामा - “ उर्मिला सुना कमिशनर साहेब बहुत मानत हअ ओनका । ”

माँ - “ भैया ओ आई रहेन बियाहे बरे पर जब बियाहे के “ना ” कहि देहा तब लाग कि बड़- बड़वार मनई हये ए और नाराज़ होई ज़इहिं पर हये सज्जन परानी । उ बात के बिल्कुल बुरा नाहीं मानने और अक्सर ओनकर कार आवत हअ मुन्ना के बोलावै बरे । बहुत बड़ा जलसा होत बा किताब के विमोचन बरे । साहेब हमका और मुन्ना के पिता जी के बोलावै बरे खुदै आए रहेन और कहेन ज़रूर आवत जा । रामदीन के बहिन शांति ओनकर समधिन ओनकर बेटवा - बहु ओ सब आवत हयेन दिल्ली से और यात्रिक होटल में रुकत हयेन । शांति के समधी बहुतै बड़ा आदमी हयेन और ओनकर बेटवा अमेरिका में बहुत रुपिया कमान बा । ”

मामा - “ साहब जानत हु ओनका का ? ”

माँ - साहब नाहीं जनतेन ओनका । मुन्ना बोलाये बा । ”

मामी - “ मुन्नो बोलावत हएन साहब के जलसा में लोगन के ? ”

माँ - “ भौजी मुन्ना किताब सुधारेन । साहब किताब में लिखौ हयेन इ बात , भैया के हम देखाये रहे । मुन्ना मंच से बोलबौ करिहिं ओह दिना । ”

मामा - “ मुन्ना विमोचन में भाषण देइहिं? ”

माँ - “ हाँ भैया । ”

मामी - “ सबके मुन्ना बोलायेन पर अपने ममियौरे के कौनौं ध्यान नाहीं रखेन । अब अरधेल रामदीनवा के बहिन बहुत नज़दीक होई गै और मामी - मामा - ममेरा भाई - बहिन सब पीछै होई गयेन । एतना बड़ा जलसा , हमार भांजा सर्वे- सर्वा पर हमार कौनौं पूछ नाहीं । ”

माँ - “ भौजी ऐसन नाहीं बा । मुन्ना आये ज़रूर । अबअ त काफ़ी दिन बा जलसा में । ऊ बहुत परेशान बा कोचिंग में , पर आये उ दुई - चार रोज में । ”

इतने में हरिकेश मामा और मामी आ गये । मामी ने बाबा भैया को भेजकर बता दिया था कि उर्मिला आयी है । विभा मामी ने आते ही मेरी माँ के पैर में अपना सिर लगा दिया । माँ के लिये यह अप्रत्याशित था , ऐसा पहले नहीं हुआ था । वह बोली , “ विभा ऐसन न करअ । ”

विभा मामी - “ दीदी तू गंगा नहाई के जीवन काट देहु पूरा । ऐतना पुण्य तोहरे पास बा । तोहार चरण- रज मिलि जाये त कुछ हमरौ उद्धार होई जाये । हमहूँ सुना मुन्ना के कोचिंग के बारे में , बहुत खुशी भै दीदी । बहुत से लोग सेलेक्शन पावत हएन पर मुन्ना ऐसन प्रतापी कौनौं नाहीं बा । इहौ सुना कि कमिश्नर साहब मुन्ना के बहुत मानत हए । ऐतना ज़िला के मालिक हए कमिश्नर साहब और ओ मुन्ना के बात पर चलत हएन , इ बहुत बड़ी बात बा दीदी । ”

माँ सातवें आसमान पर थी । वह समझ नहीं पा रही थी कि इतनी खुशी कैसे समां ले वह अपने दामन में । उसने कहा , “ सब तोहार पांच के आशीर्वाद बा । गंगा माई के कृपा बा । ”

हरिकेश मामा ने कहा , “ बहिन रिश्तन के त भरमार होए तोहरे पास पर हम तब तक इंतज़ार करब जब तक तू हमका ठोकराई न देबू । एक बार हमार बिटिया देख ल , तजबीज ल का पता उ तोहरे मसरब के होए । हम त ओकर बाप हई , हम त कहबै करब कि हमार बिटिया बहुतै अलग बा । ”

विभा मामी- “ दीदी एक रोज़ आई जा । देख ल ओका , समझि ल । उ गऊ बा , चार बात गम खाई के चलै वाली बा । ”

माँ - “ विभा जब बियाह करब तब हम ज़रूर तोहार परस्ताव ध्यान राखब । बबुओं तौहारै रिश्ता बरे ज़ोर देत हयेन , पर अबै समय नाहीं आई बा । ”

हरिकेश मामा - “ बहिन हमका कौनौ जल्दी नाहीं बा और जौन आदेश देबू सब हम मानब । ”

माँ आने लगी । हरिकेश मामा ने कहा कि मेरी कार छोड़ देगी । माँ ने आनाकानी की पर मामा - मामी भी बोले इसी से जाओ , माँ कार से वापस आ गयी और पूरे शाम पंचउरा चलता रहा , माँ - दादू - पिताजी का ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 211

मेरे पिता जी पंचउरा में रुचि नहीं रखते थे पर आजकल वह भी कहानी सुनने के शौकीन हो गये थे । उनको यह यह सब एक स्वप्न सा लग रहा था । वह यह स्वीकारने लगे थे कि उन्होंने मुझको बहुत कम आँका था और कोचिंग की आशातीत सफलता ने उनको अचंभे में डाल दिया था । न कोई प्रचार न कोई कार्यालय सिफ्ट मैं एक अध्यापक स्टाफ़ के नाम पर दादू और थोड़ा बहुत मेरा छोटा भाई पर कोचिंग ने एक इतिहास की स्थापना कर दी थी । उनके विभाग के कई उनके परिचितों के बच्चे भी आते थे पढ़ने और उनके परिचितों ने ही उनको बताया मेरी कक्षा के अंदर के बौद्धिक प्राकृतम के बारे में । मेरी माँ ने कोचिंग के ही पैसे पिता जी के लिये भी कपड़े बनवाये थे । पैसा मिलते ही पहला काम हुआ था सबके लिये कपड़े बनवाना । मेरा छोटा भाई बहुत दिन से ज़िद किये हुये था बनी- बनायी रेडीमेड कमीज के लिये । वह और दादू दोनों अपने लिये रेडीमेड कमीज ले आये थे ।

माँ , दादू , पिताजी , मेरा भाई , मेरी बहन सब बैठ गये और माँ क्रिस्सा सुनाने लगी । माँ की आवाज़ इतनी बुलंद है कि वह धीरे ये भी बोले तब भी दरवाज़े तक पहुँच जाती है । वह लोगों को आधा अपने आवाज़ की तेज़ी से उराती थी और आधा अपनी बड़ी- बड़ी गोल- गोल घूमती बोलती आँखों से । मुझे हमेशा ईश्वर से यह शिकायत रही कि उसकी तरह की आँखें मुझको आनुवंशिकता में क्यों प्राप्त नहीं हुयी । माँ को इस बात की बहुत पीड़ा थी जो हरिकेश मामा और विभा मामी ने दो साल पहले यह कह दिया था , “ मुन्ना हमारे मस्तक का नहीं है । हमको आईएएस लड़का चाहिये और एक वारिस की तरह का ज़िम्मेदार आदमी चाहिये । मुन्ना में वारिस बनने का गुण नहीं है और आईएएस

बनना उसके बस के बाहर है । उसको अंग्रेजी बिल्कुल नहीं आती और हमारी बिटिया सेंट मैरीज की पढ़ी है “

यह बात उन्होंने मेरे नाना से ही कही थी और नाना ने मेरी माँ से कह दिया था । माँ ने तात्कालिक तौर पर दुःखी होकर मुझको बहुत उलाहना दिया था यह कहते हुये , “ तू केथौ लायक होतअ तब आज हमका ई दिन न देखे पडतै , इ हरिकेशवा मोटवार बाभन एक खानदानी मुलहा बाभन के लड़िका के बारे में ऐसन कहै के हिम्मत के लेहेस तोहरे कारस्तानी के कारण “

मैंने कहा कुछ नहीं पर दुःख मुझे भी हुआ था हलाँकि ज्यादातर बातें मामा ने सही ही कही थी । मैं सीपीआई - जीआईसी का पढ़ा हूँ जो एक विशुद्ध हिंदी माध्यम स्कूल हैं । मैं अंग्रेजी थोड़ी बहुत लिख- पढ़ तो लेता था पर बोल बिल्कुल नहीं पाता था । आईएस बनना एक असंभव कार्य अगर न भी हो तब भी मुश्किल तो बहुत ही है और होने की संभावना न होने की तुलना में बहुत ही कम होती है । मैं वारिस तो नहीं बन सकता था उनके साम्राज्य का क्योंकि मैं आवारागर्दी तो करता ही था । अब शहर इलाहाबाद में कहाँ कुछ छिपने वाला , मैं हर चुनाव में घूमता तो था ही और यूनिवर्सिटी रोड पर टहलना मेरा बहुत पिरय कार्य था । पर माँ को यह बात अंदर तक लग गयी थी और जबसे उन लोगों ने यह कहा था माँ उनसे खिंची - खिंची रहती थी और मामा के यहाँ जब मुलाक़ात होती भी थी तब कुछ खास बात नहीं होती थी , वह लोग भी कोई परवाह नहीं करते थे कि माँ ने बात किया या नहीं किया । पर अब स्थिति बदल गयी थी और माँ ने पंचउरा में पहला धावा उन पर ही दे मारा ।

माँ - “ दादू सुन ह तू ? ”

दादू - “ का बुआ ? ”

माँ - “ उ घमंडिन विभवा जौन कहे रही कि मुन्ना हमरे मसरब के नाहीं बा , हमरे गोड़े पर आपन सिर धै देहेस और कहेस कि तू एतना गंगा नहान हऊ दीदी कुछ पुण्य हमहुँ के मिल जाये । अब हम सूपरणखा बरे गंगा नहान हई । ”

दादू - “ बुआ कहे त बहुत गलत रहिन मामी । हमहुँ जब सुने रहे तब दुःख भ रहा । ओ कहि देहे होतेन कि हम आईएस से बियाह करबअ और मुन्ना आइएनएस नाहीं बा । का ज़रूरत रही एतना लंबा चौड़ा बात करै के । ”

माँ - “ तोहरे सामने बात भै रही ? ”

दादू - “ बुआ हम त रहबै करे । हमरे सामने बाबू कहे रहेन चाचा के इहाँ । बाबू ज़ोर दै के कहे रहेन कि इ बियाह तू कै ल , सुपातर बाभन के लड़िका बा

, तोहका ओकर बाबा पढ़ायेऊ हयेन और कतौ बढ़ियै नौकरी पाये मुन्ना । “

माँ - “ दादू तनिक विस्तार से बतावअ का बात भई रही । “

दादू - “ बुआ जौन तू सुने हऊ बात त सब उहै भ रही । बाबुओै के गलती बा , ओ ज़ोर देई लागेन । “

माँ - “ काहे ओ ज़ोर देइ लागेन । “

दादू - “ तू त जनतै हउ तोहार बाप से बड़ा ज़मीन माफ़िया डेबरा में कौनौ दूसर बा नाहीं । जहाँ ज़मीन देखने ओनकर लार ऐसन टपकत है कि रसगुल्लौ वैसन लार न टपकाय पाये । अब हरिकेश मामा हयेन त चोरन के सरताज । ओ जहाँ - जहाँ के काम लेहेन उहाँ- उहाँ के इलाक़ा पक्की सड़क के बस मोहै देखि पाए । ओनकर बनायी सड़क बस एक बरसात तक चलत हअ । अब बलभर काली कमायी बा । मार खेत पर खेत खरीदे हयेन । मकान- जमीन तु जनतै हउ । कुल जुगत लगायेन पर लड़िका के मोह नाहीं देख पायेन । एक बार हरिकेश मामा के छोटवार भाई आई रहेन आपन लड़िका देई बरे , कहेन एका गोद लै लअ । मामा के मन रहा पर मामी के त तू जनतै हउ केतना शनीचर ओनके पोर- पोर में भरा बा । ओ नाहीं मानिन तब । बात बाबुओै तक आई । अब तू जनतै हउ कि रामेश्वर परसाद मिश्रा से बगैर पूछे पूरे खानदान में केउ कुछ नाहीं करत । बाबू से राय- मशवरा लेई आए रहेन हरिकेश मामा और कहेन कि आप विभा के समझाई द तोहार बात आई जाये तब उ समझ जाए , पर बाबू उल्टी गोटी चलि गयेन और कहेन कि अब तोहार उम्र बा, पुत्र प्राप्ति के यज्ञ करावअ , संतान योग होई सकत ह एहमें और कामता पंडित के लगाई देहेन । बुआ पाँच बार यज्ञ भवा पर फल न मिला । बुआ हम त इहौ सुना कि दुई बार मामी के गर्भ आई पर शायद बिटिया रही त गिरवाई देहेन । “

माँ - “ ऐसन पापिन के इहाँ अब अपने मुन्ना के बियाह करब । दुई जीव हत्या के पाप के भागी हयेन , एका हत्यारिन के कर्म भोगे परे , आपन मोह छिपाय के भीख माँग के पन्द्रह दिन गली- गली दुई बार जीवन बिताये तब जाई के क्षमा के अज्ञी लगे , अब गंगा माई उ अज्ञी मनही की न मनही इ ओनके ऊपर बा । “

दादू - “ बुआ एक बात बताई ? “

माँ- “ हाँ बतावअ । “

दादू - “ तोहार बाबू चाल चले रहेन । “

माँ- “ उ कैसे ? “

दादू - “ मामी कहत रहिन कुछ दिन और इंतज़ार कै लेझत हअ जब लड़िका
न होए तब देखब । पर बाबू कहेन आपन लड़िका अपनै होत हअ , तू यज्ञ
करअ और गोद न ल । बुआ एक बात और कही ? ”

माँ - “ कहअ । ”

दादू - “ कहू न केहू से नाहीं तो हमार गरीब के जान लै लेझहिं । ”

माँ - “ कहअ , न कहब केहू से । ”

दादू - “ बुआ हई हम तोहार सिपाही पहलेऊ से हइ सब जनतै रहेन पर मुन्ना
के चयन के बाद सब कहत हएन कि ददुआ सुर्खै से लगा रहा और एका जैसे
पता रहा होई कि मुन्ना होई जाये आईएएस । बुआ अब त हम सरे आम कहि
देति हअ कि हम सुर्खै से बुआ के सिपाही रहा हई । ”

माँ - “ ऊ बात बतावअ , इ सिपाही वाली कहानी बहुत सुन चुकी हई । ”

दादू - “ बुआ , बाबू के निगाह ओनके संपत्ति पर सुर्खै से लगी बा । बाबू
गोदनामा के खिलाफ़ रहेन और पूजा- पाठ में उलाझाई देहेन मामा के । ज़ब
हरिकेश मामा “ ना ” कहेन बियाहे बरे तब बाबू के दुख भ रहा और कहेन कि
सोचे रहे संपत्ति घरे में आये पर लागत बा बदा नाहीं बा । बाबू चाल तगड़ी
चले रहेन और उ चाल मामा के हङ्क में जात रही अगर कै लेह होतेन बियाह
पर विनाश काले विपरीत बुद्धि । ”

पिताजी - “ हरिकेश बिल्कुल गलत नहीं था । उसने सब सही कहा था , कोई
भी यही करता जो हरिकेश ने किया । आखिर इतने पैसेवाला आदमी एक
बेरोज़गार लड़के से विवाह क्यों करेगा ? जो मुन्ना के बारे में तब कहा गया था
तब तो वह सब सही ही , आज वह बात गलत लग रही है तब तो गलत नहीं
थी । ”

माँ - “ तोहका मुन्ना में कमियै- कमियै देखता ह हरदम । पहिले कहत रहअ
कलर्क बनअ , फिर कहअ कोचिंग न चलावअ अब उ चोर- उचकका
हरिकेशवा सही कहत बा । भगवान तोहू के विचित्रै दिमाग़ देहे हयेन , तबै
रहि ग बबुवै । पता नाहीं आफिस के काम कैसे करत होबअ । एतनी बड़ी बात
उ हरिकेशवा कहि के निकलि गवा तोहका एकौ बार लगा कि उ गलत कहेस,
आत्मसम्मान होत ह आदमी के पास । पर तू बस इहै कहअ हरिकेशवा ठीक
कहेस । ओकर मोटी भैंस बिटिया काहे लायङ्क बा , इ उ नाहीं देखेस । ”

पिता जी - “ जाओ लड़ाई करो । ”

माँ - “ उ हरिकेशवा के औकात बा हमसे लड़ाई करे , ओकर पूरा भद्रा उतार
देब । अब करै चबर- चबर , ओकरे मोहे के फाड़ के कौआ निकारि के ओकरे
हाथें में दै देब । ओका सस्पेंड त कराउब आज नाहीं त कल । ओकर हिम्मत

कैसे पड़ि गई इ कहै बरे कि मुन्ना ओकरे बिटिया के लायक नाहीं बा । बियाह न करतअ , हम कभौं कहा कि बियाह करअ । अब थूँक के चाटत बा । उहीं मोहें से कहेस कि हमरे बिटिया लायक मुन्ना नाहीं बा अब उहीं मोहें से कहत बा कि जब तक तू ठोकराई न देबू तब हम कतौ न जाब । हम इंतज़ार करबअ । अहिल्या बनि गवा बा कि हम राम के इंतज़ार करबअ ओनहीं से हमें मुक्ति मिले , दोगला ।

मैं समझ गया कि पिताजी का समय ख़राब है । यह सच कहा गया है कि जिसका जो काम है उसी को वह काम करना चाहिये । पंचउरा पिताजी का न तो काम है न तो उनको आता है , बेवजह करने लगे । मैं कमरे से अपने बाहर आया । मैंने देखा कि माँ का चेहरा शुस्से से लाल हो गया था । उसके अंदर इस बात की पीड़ा बहुत दिन से थी , वह ज़ब्त किये हुये थी । उसका लावा आज फूट पड़ा । उसके बेटे के बढ़ते प्रताप ने उसको अतिरिक्त साहस दे दिया था । उसने मेरी तरफ़ देखा , मैंने कहा बस करो अब ... मैंने पहली बार अनुभव किया माँ के अंदर मेरे प्रति कितना सम्मान आ गया था । वह चुप हो गयी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 212

मैं सुबह कपड़ा पहन रहा था । मैं कमीज की बटन बंद कर रहा था कि माँ मेरे कमरे में आ गयी । उसने पूछा , “ कहाँ जात हअ ? ”

मैं - “ कमिश्नर साहब के यहाँ जा रहा । ”

माँ - “ गाड़ी तो ओनकर अभै आई नाहीं । ”

मैं - “ क्या करना गाड़ी का । मैं चला जाऊँगा साइकिल चलाकर । ”

माँ - “ अरे ओनकर काम बा । ओनकर गरजि बा , अब नाँव- गाँव ओनकर होये तब ओनकर फरज बा गाड़ी भेजें । मुन्ना एक काम आज करअ तू ? ”

मैं - “ क्या ? ”

माँ - “ चला जा भैया के इहाँ ओनहूँ पचन के बोलाई ल विमोचन में । भौजी कहत रहिन काल कि रामदीनवा के बहिन के मुन्ना दिल्ली से कुल कुनबा के साथ बोलाएन और ममिऔरे के कौनौं ध्यान नाहीं बा । अब इ समय आई गवा बा कि हमरे भयने के नज़दीक उ अरधेल रामदीनवा के परिवार आई गवा बा और हम दूर होई गई हई । ”

मैं इन पारिवारिक झामेलों से तंग आ चुका था , मैंने बात अनसुनी कर दी । नीचे से भाई ने आवाज़ दी कि अशोक सर आये हैं । मैं नीचे गया और अशोक से बताया कि मैं जा रहा सर के यहाँ । कमिश्नर साहब के यहाँ जाने के लिये सब तोड़ मारे रहते थे चाहे वह दाढ़ हो , अशोक या मेरा छोटा भाई । सबको बँगले के लान में टहलने में बहुत मज़ा आता था । बँगला था भी बहुत ही बड़ा , विराट एवम् भव्य । यह अंग्रेज लोगों को आता था शान्तों- शौकत से रहना । एक बड़ा सा अहाता , आगे बड़ा लान- पीछे भी लान वह भी विशाल खेतनुमा ज़मीन की तरह , बीच में एक भाग कार्यालय का जहाँ उनके कर्मचारी बैठते थे , बाहर लोगों के इंतज़ार करने के लिये जगह और बगल में उनका विशाल - भव्य आवास । यह उनकी किताब लिखने की इच्छा ने मुझे उस बँगले को राँदने और राँदवाने का अवसर दे दिया था नहीं तो विवाह पर “ ना ” हो जाने के बाद तो परायः संबंध खराब ही हो जाते हैं । मेरी माँ ने भी बँगला देखने की इच्छा ज़ाहिर की थी और माँ से मेरी बहन ने भी कहा था वह भी देखना चाहती है । मैंने माँ से कहा कि यह किसी का घर है कोई आनंद भवन - स्वराज भवन नहीं है कि टिकट लेकर घुस जाओ और घूम- घूम देखो कि यहाँ नेहरू जी पढ़ते थे , यहाँ इन्दिरा जी का विवाह हुआ था और यहाँ गाँधी जी आकर रुका करते थे तथा कांग्रेस की मीटिंग करते थे । मैंने यह भी कहा कि अगर बँगले में तुम गयी तब तुमको विवाह करना पड़ेगा, यह सोच लो तब बात बताओ । मेरी इस बात पर वह पहले तो कुछ न बोली पर कुछ देर बाद बोली , “ऐसन बँगला सब आईएएसएन के मिलत हआ ? ”

मैं - “यह सरकार की संपत्ति है जिसको सरकार कमिश्नर बनायेगी उसको यह बँगला भी देगी ।”

माँ - “चलअ जब तोहका मिले तब देखि लेबै ।”

अशोक को मैं ले जाने के मूड में नहीं था । उसके साथ यह दिक्कत है कि वह कब क्या बोल दे कुछ पता नहीं । वह बातचीत में बहुत ही बेअंदाज है । पर वह घाघों का घाघ है । माँ से बोला , “ आंटी जी चाय रहन दीजिये साहब के यहाँ पी लेंगे ।”

वह बँगले मेरे आमंत्रण के साइकिल साथ लगाकर मेरे चल दिया । मैं न चाहते हुये भी उसको साथ ले लिया क्योंकि मैं थोड़ा संकोची हूँ और कुछ कह न सका । मैंने इतना ही कहा रास्ते में , “थोड़ा सँभाल कर बोलना , साहब कई बार बात को दिल पर रख लेते हैं , बड़े आदमियों के साथ यह समस्या है कि कब वह बुरा मान जायें आपको पता ही नहीं चलता ।”

अशोक - “ इ बात तो है सर , इसीलिये मैं फ़ालतू बात बिल्कुल करता ही नहीं । ”

मैं उसका चेहरा देखने लगा और वह झौंप गया ।

मैंने अशोक से पूछा , “ अशोक तुम कभी किताब के विमोचन में गये हो ? ”

अशोक - “ सर दसियों बार । यह हिंदी विभाग में आमंत्रण आता रहता है और हम लोग जाते रहते हैं । ”

मैं - “ क्या होता है इसमें ? ”

अशोक - “ अरे बेफजूल का नाटक है सर । एक मेज लगा दो । मेज पर लगी कुर्सी के साथ चार- पाँच लोग बैठ जाते हैं । एक साहित्यकार टाइप का आदमी किताब के ऊपर चढ़ी पन्नी उतार देता है बस हो गया विमोचन । उसके बाद झूठ बोलने का कार्यक्रम होता है , चाय बिस्कुट खाओ और घर चले आओ । ”

मैं - “ यह झूठ बोलने का कार्यक्रम क्या होता है ? ”

अशोक - “ सर किताब कैसी भी लिखी गयी हो , पर यह कहना ही है लेखन में नवीन कथ्य है , शिल्प में प्रयोग है , भाव की विविधता है , समाज से सरोकार है जो कहा गया है उससे अधिक नहीं कहा गया है और पाठक की कल्पनाशीलता पर बहुत कुछ छोड़ दिया गया है । ऐसा ही तक्रीबन घुमाफिरा कर हर विमोचन में कहा जाता है । अब सर चाय- बिस्कुट खाना है तब कुछ तो कहना पड़ेगा ही । ”

मैं - “ तुम विमोचन में कभी बोले हो ? ”

अशोक - “ पहली बात तो सर मेरा इतना बड़ा कोई कद है नहीं , न ही शारीरिक न ही बौद्धिक कि मैं बोलने के लिये आमंत्रित किया जाऊँ और दूसरी बात सर मुझे सायास झूठ बोलने से डर लगता है , अनायास की बात अलग है । ”

मैं - “ कितने लोग आते हैं विमोचन में ? ”

अशोक - “ सर पचीस - पचास लोग आ जायें बहुत हैं । किसको आज के दौर में साहित्यिक गतिविधियों में रुचि है । जो लोग आते भी हैं उनको हाथ- पैर जोड़कर लेखक ले आता है और वह सब किताब का विमोचन ख़त्म होते ही कहते हैं , क्या फ़ालतू किताब लिख दिया , कोई और काम नहीं मिला इनको । ”

मैं “ पर यहाँ तो माहौल अलग है , साहब तो इसको एक कुंभ मेला की तरह किये हुये है । ”

अशोक - “ सर साहब अपना विवाह ऐसा फिर से कर रहे । जो कुछ अरमान तब पूरा न हुआ वह सब पूरा कर रहे । अब सर , समरथ के नहिं दोष गोसाई । यह सामर्थ्यवान हैं , इनके लेखन से ज्यादा इनका पद मुख्य स्थान पर है । बेचारे साहित्यकार किसी तरह किताब लिखे , सस्ती- मद्दी जगह पर विमोचन किये और चाय- बिस्कुट भर का ही सामर्थ्य होता है । यहाँ तो सर लखनऊ से राज्यपाल- विधान सभा अध्यक्ष आयेंगे , एक भीड़ हर उन शहरों के मानिंद लोगों की आयेगी जहाँ- जहाँ साहब काम किये हैं । यह मुख्यमन्त्री के कितने नज़दीक हैं यह तो यही जानते होंगे पर हवा तो है ही कि वह उनके बहुत नज़दीक हैं । और सर होंगे भी नज़दीक - चार ज़िलों की कलेक्टरी किये हैं , सीडओ रहे हैं , नगर महा पालिका प्रशासक रहे हैं , इलाहाबाद ऐसे बड़े कवाल टाउन के कमिश्नर हैं और कलेक्टरी भी बनारस - लखनऊ - कानपुर - आगरा ऐसे शहरों की किये हैं , कमजोर तो हो नहीं सकते । अब इनका क्या मुक़ाबला बेचारे गरीब साहित्यकारों से । इनकी कविता पढ़ते समय लोगों के मस्तिष्क में कोई लेखक तो रहेगा नहीं , कमिश्नर ही रहेगा । यह मस्तिष्क भी बड़ा ग़ज़ब चीज़ है सर , यह प्रभावित बहुत ही तेज होती है , और साहब के प्रभाव का आवरण लोगों के सिर चढ़कर बोलेगा । एक अच्छा साहित्यकार लोगों को आमंत्रित करेगा और लोग बहाना मारेंगे न आने का पर यहाँ तो लोग बिन बुलाये आयेगे , सबको यह कहकर अपना भाव बढ़ाना है कि हम साहब के विमोचन में गये थे , हम साहब के नज़दीक हैं । सर यह दुनिया एक भरम पर टिकी है और भरम बरकरार रहे यह सबकी चाहत है । सर एक बात और कहें ? ”

मैं “ कहो । ”

अशोक - “ आपको लगता होगा आपकी कोचिंग आपके ज्ञान से चल रही है , पर इसमें सत्य का अंश थोड़ा ही है । मैं आपके ज्ञान पर कोई बात नहीं कह रहा , वह आपके पास है पर वह सिर्फ़ आपके ही पास नहीं है , औरों के पास भी है । पर आपमें और औरों में एक फ़र्क है - पेपर में नाम छपे होने का । आप वह नाम छपा होना हटा दो , आप देख लो कितने लोग आयेंगे । सर मैं और दिनेश ही नहीं आयेंगे औरों की बात छोड़ दीजिये । सब आ रहे इसलिये कि आप सफल हैं और शायद कोई सफलता का मन्त्र आप से मिल जाये । विकास मिश्रा, ओम प्रकाश गुप्ता, सज्जन सिंह मिलकर कोचिंग चलाये थे । वह लोग भरपूर प्रचार किये पर क्या हुआ ? सर इन तीनों लोगों के बारे में कहा जाता है जो सच भी है कि ज्ञान की अतिशयता है पर भाग्य साथ न था , इसलिये सफल न हुये । जो लोग पढ़ने गये कुछ दिन बाद वही कह रहे थे कि इतना विस्तार में पढ़ाते हैं यह लोग इसी तरह लिखे होंगे इसलिये इनका नहीं हुआ । इनके पास सफलता का कोई मन्त्र तो है नहीं , यह खुदै कुछ न कर

पाये तो हमको क्या बतायेंगे । सर आप जो इतना विस्तार से पढ़ा रहे हैं इस पर कई लोग सवाल करते हैं पर जो आपकी सफलता है वह सबको चुप करा देती है यह कहकर कि विस्तार से पढ़ेंगे तभी बेहतर लिख सकेंगे । उन लोगों में और आपकी पढ़ाने की रीति में कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं है पर वह लोग दस छात्र भी न पा सके और आपके यहाँ तिल रखने की जगह नहीं है, इतने बड़े हाल में भी । सर एक बात और है आपको बिज़नेस करना आता है, वह नहीं आता लोगों को । कम से कम इस उम्र में तो उद्योग वालों को भी नहीं आता ।”

मैं “ वह कैसे ? ”

अशोक - “ सर आपने फ़ीस बहुत ऊँची रखी और यह कह दिया मेरे दुकान का माल सब दुकानों से अलग है । आप ने दाम को गुणवत्ता से जोड़ दिया, फिर फ़ीस देना न देना लोगों की शरद्धा के ऊपर छोड़ दिया । दाढ़ू को लगा दिया लोगों को घूरने के लिये । वह उन लोगों को घूरता रहता है जो पैसा नहीं दिये, लोग लिहाज़ में कुछ तो दे ही देते हैं । वह उन लोगों से ही बातचीत करता है जो पैसा न दिये या कम दिये और कहता है, पढ़ाई में कुछ सुधार चाहिये तो बताओ । उसको आता- जाता कुछ नहीं पर पढ़ाई में सुधार की बात ऐसा करता है जैसे वह ही पूरा लेक्चर तैयार किये हो और इसी बात-चीत में धीरे से तगादा कर देता है । सर एक बार तो पैसा मुझसे भी माँगा । हमको उसको डाँटना पड़ा । सर इलाहाबादियों से पैसा आपने निकाल लिया वह भी हिंदु होस्टल और महिला छात्रावास से यह बहुत बड़ी बात है । पर सर कितना कमाया होगा ? ”

मैं “ यार मैंने कभी गिना तो नहीं । अब तो मैं लेता भी नहीं । यही दाढ़ू लेता है और माँ को देता है । मेरे पास तीस हज़ार रुपये के क़रीब होगा शायद । ”

अशोक - “ सर दाढ़ू पर निगाह रखिये वह बहुत ही प्राड है । आप पूछते नहीं, आंटी जी सज्जन हैं वह हज़ार - पाँच सौ में ही इतनी खुश हो जाती है कि कुबेर का ख़ज़ाना मिल गया । ज़रा पता करिये यह दाढ़ू गाँव में खेत- वेत तो नहीं लिखा रहा । अगर यह पाँच सौ रुपया भी हर दो दिन में पार कर देगा तब एकाध बिगहा खेत लिखा सकता है । आप तहसील से पता करिये यह खेत लिखवा चुका होगा या लिखवाने वाला होगा । ”

बात करते - करते कमिशनर साहब का बँगला आ गया । हम लोग साहब के कार्यालय में पहुँचे । साहब के बँगले में उनके कार्यालय से रास्ता उनके घर के प्रभाग में जाता था । हम लोग उसी रास्ते से साहब के डराइंग रुम में जाते थे । साहब के सारे कर्मचारी मुझे जानते थे और उनके लिये मैं भी उनके भविष्य का साहब हो गया था, इसलिये वह सब मुझे बहुत सम्मान देते थे । सारे विभाग के डराइवर सबसे तेज चीज़ होते हैं, वह सब जानते हैं । इसका

कारण यह है कि वह सारी बात सुनते हैं और साहब के साथ ही हमेशा रहते हैं। साहब का ड्राइवर नवीन यह जान गया था कि मेरे विवाह की बात साहब की बहन प्रतीक्षा से चल रही है और उसने सारे स्टाफ़ को बता दिया था इसलिये मैं साहब का भविष्य में एक अति सम्माननीय रिश्तेदार होने की लाइन की अगरणी पंक्ति में था। मेरे पहुँचते ही सारे स्टाफ़ सावधान मुद्रा में आ गये। साहब घर पर न थे। मैम साहब तक तुरंत समाचार गया और मैम साहब स्वयमेव आफिस में आकर हम लोगों को निवास वाले प्रभाग में ले गयीं और बताया कि विधान सभा अध्यक्ष, राज्यपाल ने पाँच अगस्त को आने का समय दे दिया है। कलेक्टर को आदेश हो गया है कि उस दिन सर्किट हाउस किसी को न दिया जाये। मुख्यमन्त्री को आमंत्रित किया गया है और उन्होंने भी कहा है कि मैं कोशिश करूँगा। साहब मुख्य न्यायाधीश को आमंत्रित करने गये हैं। मैडम अति उत्साहित थीं और वह भी लोगों को बुला रही थीं। मुझकों मैडम ने छपा हुआ कार्ड दिखाया और कहा तुम भी लोगों को आमंत्रित करो। यह कार्यक्रम तुम्हारा भी है। क्या पता अनुराग कल तुम्हारा पैर पूजने का अवसर मुझे मिल ही जाये। मुझे माँ की बात याद आयी जो उसने कहा थी, “मुन्ना भैया - बाबू को भी बुला लो। वह लोग भी देखना चाह रहे।” मैंने कार्ड ले लिया। मैंने दस कार्ड लिया था पर मैडम ने दस और दे दिया।

मैंने पूछा, “सर कब तक आयेंगे?”

मैडम - “कुछ बताया तो नहीं।”

मैं - “शाम को कोचिंग के बाद आऊँगा, मुझे चलने दें, पढ़ना है कोचिंग के लिये।”

मैं चाय पीकर घर चल दिया। रास्ते में मेरे दिमाग में आया, यह उर्मिला शर्मा आज तक उर्मिला मिश्रा ही है। इसके मायके के धिंगरों को सबकुछ चाहिये मेरे पिता जी के परिवार को कुछ नहीं चाहिये। हर बात पर चोर भाई, बेवकूफ बहिन, फ्राड भतीजे, लालची ज़मीन माफिया पिता की ही बात करती है। यह कभी अपने ससुराल की बात नहीं करती। कल मेरी पत्नी अगर यही करे जो यह कर रही तब घर में तांडव फैला देगी। यह कम नहीं है। मैं क्यों बुलाऊँ इन चोर-उचककों को। मेरे पिता जी का परिवार सज्जन है वह कहाँ से इस उचककों के परिवार में फँस गये।

अशोक ने पूछा, “सर कहाँ खो गये?”

मैं - “तीसरी आँख खुल रही। आज भस्म कर दूँगा।”

अशोक - “सर किसको?”

मैं - चलो सुभाष की चाय पीते हैं,

बंद - मक्खन खाते हैं, आज पढ़ाने का मन नहीं कर रहा । आज कक्षा में उदबोद्धन करते हैं । “

अशोक - “ हाँ सर, यह ठीक है । बहुत दिन से क्लास चल रही । लोगों को आराम चाहिये । ”

चाय पीते- पीते मैंने पूछा, “ अशोक तुमने दादू की खेत खरीदने वाली बात क्यों कही ? ”

अशोक - “ सर आपने ही बताया था कि इसके बाबा का ज़मीन से बहुत लगाव है और क्रमशः जो प्रवृत्ति परिवार में होती है वह पुश्त दर पुश्त चलती रहती है । ”

मैं सोच में पड़ गया, इस समय मेरे पिता की सज्जनता की आभा मेरे ऊपर अधिकार किये हुये थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 213

मैं शाम को कोचिंग में गया । मेरा आज पढ़ाने का मन नहीं था । मैं भी थक गया था । मैं हरदिन तकरीबन तीन घंटे की कक्षा लेता था, यह बहुत ही दुर्लभ कार्य था । मेरे इंटर के जीआईसी के रसायन शास्त्र के अध्यापक प्रभाकर गुणे सर कहते थे कि इतने सालों से पढ़ा रहा और कभी - कभी लगता है कि यह घंटी आज न बजती तो अच्छा होता । वह एक बहुत ही आदर्श अध्यापक थे । उनके पास दुर्गा की तरह चार हाथ थे । एक हाथ में डस्टर, एक में चाक, दो आँखे तलाशती कक्षा में मुदित और बेचैन चेहरों को, उनका हवा में उड़ता चाक आकर गिरता एक बेचैन चेहरे पर और वह पूछते समस्या कहाँ पर है इस पूरे समीकरण में । वेद व्यास सदृश थे वह, ब्लैक बोर्ड पर समीकरण लिखते समय चाक की क्या मजाल कहीं फिसल जाये । मेरी भी आज हालत वही थी, मेरा मन नहीं कर रहा था पढ़ाने का । मैंने जैसे ही कक्षा में कहा, आज नहीं पढ़ते हैं बल्कि कुछ इधर - उधर की बात करते हैं, पूरी कक्षा में खुशी की लहर । वह सब भी मेरी ही तरह थक गये थे, इतने दिन की लगातार चल रही कक्षा से । यह सिविल सेवा की तैयारी पूरा निचोड़ लेती है अभ्यार्थियों को ।

अशोक - “ सर इधर की बात करेंगे या उधर की ? ”

मैं - “ यह इधर - उधर की बात में क्या फ़र्क है ? ”

अशोक - “ सर जो फ़र्क गप और शप में है वहीं फ़र्क इधर और उधर में है । ”

मैं “ क्या फ़र्क है ? ”

अशोक - “ गप का बड़ा भाई शप / गप में झूठ के साथ थोड़ा सा सच होता है पर शप में सिर्फ़ झूठ , इसी तरह इधर में होती है बकैती और उधर में सलोथर बकैती । ”

मैं “ क्या फ़र्क है बकैती और सलोथर बकैती में ? ”

अशोक - “ सर बकैत हर जगह पाये जाते हैं पर सलोथर बकैत सिर्फ़ इलाहाबाद में । संगम के किनारे वाले इलाक़ों में जो इलाक़ा गंगा के जितने नज़दीक होगा वहाँ के सलोथर बकैत सबसे बड़े होंगे । इसीलिये दारागंज के सलोथर बकैत सबसे बड़े हैं और इसीलिये छायावाद के सबसे बड़े सलोथर बकैत निराला हुये हैं । ”

मैं “ चलो अशोक की ही बात से हम थोड़ा छायावाद ही आज कर लेते हैं । ”

पूरी कक्षा परसन्न हो गयी । सबको सलोथर बकैती में मज़ा आने लगा ।

शशि - “ अनुराग कुछ सलोथर बताओ छायावाद में , यह काम चलाऊ नहीं । ”

मैं “ बिल्कुल सलोथर बताऊँगा । ”

छायावाद पर व्याख्यान आरंभ हो गया । यह ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था , पर मैंने ख़त्म कर दिया अपने अंतिम निष्कर्ष के साथ

क्या विराट चित्र की संकल्पना है निराला की ..

दृढ़ जटा- मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलिप्त से खुल ...

क्या किरणपद का लोप करके लिखा है ..

राघव- लाघव रावण- वारण गत युग्म प्रहर

पराजय का बोध सन ४० में

मैं हूँ अकेला

देखता हूँ , आ रही ,

मेरे दिवस की संध्या बेला ॥

शशि - “ सबसे बेहतर छायावादी लेखक कौन था ? ”

मैं “ यह बहुत दुर्लभ सवाल है । पर मैं यही कहूँगा निराला के काव्य में बिखराव है अंतःसंगठन का अभाव है , प्रसाद में अन्तर्गतन बेहतर है । कामायनी में कसावट बहुत है पर अगर निराला की यमुना के प्रति , राम की शक्ति पूजा , सरोज स्मृति , तुलसीदास को मिलाकर देखा जाये तो कामायनी पर भारी पड़ सकती हैं । मुझे निराला अलग लगते हैं , यह अलग बात है कि एक कवि की दूसरे से तुलना और श्रेष्ठता निर्धारित करना बहुत ही दुर्लभ कार्य है । ”

शशि - “ गुरु जी एक काम और कर दो , सरोज स्मृति और राम की शक्ति पूजा की तुलना कर दो । ”

मैं “ आज रहने दो , फिर कभी । ”

इतने में बाहर साहब का ड्राइवर नवीन दिखा । वह बोला , “ साहब बुलाये हैं । ” मैंने मौके का फ़ायदा उठाया और कक्षा के छात्रों को प्रेरित करने के लिये कहा , ” ऐसे ही एक दिन तुम्हारी भी लाल बत्ती की कार और ड्राइवर होगा , बस वक्त की बात है । ”

अशोक - “ और सर बँगला ? ”

मैं “ वह तो रहेगा ही नहीं तो आप सब साहब लोग काम कैसे करेंगे , वह बँगला ही नहीं आपका कार्यालय भी है । ”

मैं साहब के घर गया । साहब के पास उनके मातहतों का मजमा लगा हुआ था । साहब ने मुझको भी बैठने को कहा । वह सब लोगों को काम बाँट रहे थे , कौन- कौन क्या काम करेगा .. खाना , पोस्टर , बैनर , आवभगत ।

मेरे लिये यह सब एक स्वप्न ऐसा था । मैं सिफ़्र सुन रहा था । मेरा इन सब काम में कोई काम था नहीं , मैं तो किताब के लेखन पक्ष तक ही सीमित था । साहब ने सबको काम सौंप कर जाने के लिये कह दिया और एडीएम प्रशासन को बोल दिया देखने और निगरानी करने को । एडीएम साहब ने कहा , “ सर निश्चिंत रहें अब यह मेरा काम है आपको कोई शिकायत नहीं होगी । ”

सर - “ मौर्या मैं जानता हूँ आप बहुत ज़िम्मेदार हो इसलिये आपको ही यह काम सौंपा है । ”

एडीएम मौर्या - “ सर हमारा सौभाग्य है आप हमको इस लायक समझे हैं । आपको कार्यक्रम देखकर प्रसन्नता होगी । अब चलूँ मैं सर , अगर आदेश हो । ”

साहब - “ हाँ चलो आप । ”

साहब मुझको लेकर आवास के प्रखंड में चले गये और डराइंग रूम से आवाज़ देकर मैडम को बुलाया । मैडम के आने के बाद सर ने कहा , “ अनुराग एक समस्या है , इसका निदान निकालो । ”

मैं - “ क्या सर ? ”

साहब - “ राज्यपाल ने कार्ड पढ़ा और कहा कि प्रयाग संगीत समिति का हाल बहुत ही बड़ा है । वह हाल भरना आसान नहीं है । एक खाली हाल बहुत ही खराब लगता है , आप ऐसा करो हाल बदल कर छोटा हाल कर लो । उन्होंने कहा कि हिंदुस्तानी एकेडमी का कर लो या उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र कर लो पर केन्द्र का भी बड़ा ही है । यह बताओ हाल भर सकता है ? ”

मैं - “ सर कितनी क्षमता है प्रयाग संगीत समीति की ? ”

साहब - “ एक हजार । ”

मैडम - “ मेरे पापा आ रहे हैं वह भरवाने में मदद कर देंगे सीए, इनकम टैक्स के वकीलों और करदाताओं से । ”

साहब - “ कितने लोग आयेंगे उससे ! ”

मैडम - “ आपके लोग भी हैं, स्टाफ़ भी है । ”

साहब - “ उससे नहीं हो पायेगा । अनुराग तुम बताओ , क्या रास्ता है ? हाल सिर्फ़ भरे ही नहीं बल्कि बौद्धिक वर्ग भी रहे , यह भी ध्यान रखना । एक बात तय है , करना प्रयाग संगीत समिति में ही है , उससे बेहतर कोई और जगह नहीं है और मैं महामहिम राज्यपाल से कह आया हूँ कि हाल खचाखच भरा होगा और लोग सीटों के अलावा खड़े होकर भी आपको सुनेंगे । राज्यपाल इस पर प्रसन्न हो गये और कहा अगर ऐसा होता है तब तो बहुत अच्छा है और बोलने में आनंद आयेगा । एक सुधी शरोता समूह मिल जाये इससे बेहतर क्या होगा । तुम्हारी कोचिंग में कितने लोग हैं ? ”

मैं - “ सर तक्रीबन सत्तर होंगे । ”

सर - “ वह सब आयेंगे ? ”

मैं - “ जी सर । ”

साहब - “ वह और लोगों को लेकर आ सकते हैं ? ”

मैं - “ सर कितने लोगों को आप चाह रहे ? ”

सर - “ तीन सौ लोग कम से कम आप कोशिश करो लाने की । तुम्हारे लोग बेहतर होंगे , समाचारपत्र भी लिखेगा पूरा विश्वविद्यालय उत्तर आया विमोचन में । ”

मैं “ सर खाना बनवा दीजिये , कोशिश करता हूँ । छात्र हैं , सब गरीब ही हैं , थोड़ा भोजन का आकर्षण होगा तब बुलाने में सुविधा हो जायेगी । ”

सर - “ मैं कल खाना बनाने वाले को भेज देता हूँ तुम्हारे पास जो चाहो बनवा लो उससे । ”

साहब ने घंटी बजायी करिंदा हाजिर हो गया । साहब ने कहा , “ बड़े बाबू को बुलाओ । ”

बड़े बाबू आ गये । साहब ने पूछा , ” खाने का काम कौन देख रहा ? ”

बड़े बाबू - “ एसडीएम चायल । ”

साहब - “ एसडीएम चायल को बोलो कल अनुराग के घर सुबह - सुबह सात बजे पहुँच जायें । ”

बड़े बाबू - “ जी साहब । ”

साहब - “ अनुराग हाल भरना चाहिये किसी भी हालात में । मुख्यमंत्री भी आने को कहे हैं । राज्यपाल बहुत ही अच्छा बोलते हैं , बहुत बड़े विद्वान हैं और भीड़ देखकर और अच्छा बोलेंगे । ”

मैं - “ जी सर । ”

मैं चलने लगा तब साहब ने कहा खाना खा कर जाओ । मैंने “ना ” कहा , साहब ने कहा , “ अनुराग यह अपने विवाह का मुद्दा दिमाग से निकाल दो । मैं लड़की का भाई हूँ मैं तो जाऊँगा ही उसके विवाह के लिये । यह विवाह प्रथम से नहीं संयोग से होता है । यह संयोग होगा तब होगा , नहीं होगा तब नहीं होगा । यह संकोच मत किया करो , विवाह की बात हुई है और यह मेरा घर ससुराल सदृश हो गया है । प्रतीक्षा आ रही है , आप मिल लेना । आपको ठीक लगेगी तब बात करेंगे नहीं तो बात समाप्त । तुम एक बहुत ही प्रतिभावान व्यक्ति हो , जीवन में बहुत कुछ करोगे , नौकरी के अलावा भी । अब ऐसे व्यक्ति से कौन अपने बहन - बेटी का विवाह नहीं करना चाहेगा , पर तुम्हारी पसंद प्राथमिक है । प्रतीक्षा में और तुममें एक फ़र्क है प्रवरिश का और पढ़ाई का । वह दिल्ली रही है , अंग्रेज़ी स्कूलों की पढ़ी है , पता नहीं उसका क्या दृष्टिकोण हो , यह भी देखना है मुझे । क्या पता उसे ही तुम पसंद न आओ हलाँकि जिस तरह की वह लड़की है इसकी संभावना नहीं है , फिर भी उसका दृष्टिकोण जानना हमारा फ़र्ज़ है । ”

मैडम - “ अनुराग तुम उसको एक पत्नी के रूप में पाकर बहुत खुश रहोगे , लड़की पर मेरी ज़िम्मेदारी है बाकि रिवाज - दहेज- दैजा पर मेरे पापा जाने और यह जाने हलाँकि उसमे भी कोई कमी नहीं होगी । ”

मैं साहब से कल आने की बात कहकर अल्लापुर अशोक को पास गया और वहाँ से उनको लेकर दिनेश के यहाँ गया । उन लोगों को सारी बात बतायी ।

अशोक - “ सर भोजन का दिव्य इंतज़ाम कराइये , हाल क्या पीड़ी टंडन पार्क भर देते हैं । हर कोचिंग का लड़का तीन आदमी लाया तब ही 200 हो जायेंगे । सर कल मैं भी आता हूँ सुबह , पहले खाने वाला काम देखते हैं । सर शिव की चाट का काउंटर लगवा दीजिये मज़ा आ जाएगा । ”

मैं - “ वह कैसे होगा ? ”

अशोक - “ सर एडीएम चायल है न वह सब करेगा , आप कल देखियेगा । नहीं करेगा तब ससुरा एसडीएम मेजा - बारा - सिराथू बनेगा । पर सर शिव का चाट का काउंटर लगवाइये । ”

दिनेश - “ हाँ भाई साहब , वह लगवा दीजिये । ”

दिनेश का भाई बाबू आ गया वह बोला ,” भैया वह लगवाइये मेरे भी दोस्त आ जायेंगे । ”

अशोक - “ सर काम हो गया , भर जायेगा हाल । ”

मैंने सुबह सात बजे उनको आने को कहकर घर की ओर चला ... रास्ते में मेरे दिमाग में साहब की लाइन गूँजने लगी , “राज्यपाल विद्वान हैं , वह बहुत अच्छा बोलते हैं , एक बड़ी भीड़ देखकर वह और उत्साहित होंगे । ”

बोलना तो मुझको भी है ...

हज़ार से ज्यादा की भीड़... अनुराग शर्मा से बेहतर राज्यपाल बोलेंगे ?

कभी नहीं पूरी जान लगा दूँगा राज्यपाल रमाकान्त शास्त्री अभी तुमने मुझको नहीं देखा है मैं सबसे बेहतर बोलूँगा

रात के ख्वाब में भव्य संगीत समीति का हाल .. मंच से मैं बोलता हुआ और लोग ताली बजाते हुये

लोग देखें ख्वाब मन बहलाने के लिये

मैंने ख्वाब देखे हैं ताबीरों के लिये ।

मैं सुबह उठकर पढ़ रहा था , हलाँकि मेरा पढ़ने में मन लगता नहीं था आजकल । मेरा मन किताब के विमोचन में ही लगा रहता था । कल साहब की बातों ने कई और आयाम खोल दिये मेरे अंदर , मेरे भीतर एक भविष्य अगले कुछ दिनों के लिये हिलोरें मार रहा था । परयाग संगीत समिति का भरा हुआ हाल , महामहिम राज्यपाल का साहित्यिक भाषण , पूरा शहर , पत्रकारों का जमावड़ा, साहब के परिचित अफ़सरान एवम् मानिंद लोग और मेरा हवा में उठता हाँथ बोलते समय और टकटकी लगाये नयन सुरों से कुछ कहती परतीक्षा ।

साहब ने बहुत ही परिपक्वता से कल बात की थी । ऐसी परिपक्वता व्यक्ति के अंदर होनी चाहिये , मेरे भी अंदर होनी चाहिये । पर मेरे अंदर अभी बहुत बचपना है । मैं अभी भी बोफ़िज़ूल के षड्यन्तरों में लगा रहता हूँ । मैं अभी भी लकड़ी लगाता रहता हूँ लोगों के बीच , लोगों की टाँग खींचता रहता हूँ । यह सब मेरी माँ के परिवार से आया है मेरे अंदर , मेरे पिता का परिवार सज्जन है , यह सारे खुराफ़ाती फ़राड़ मेरी माँ की ही तरफ़ है । वह जो गाँव से बिटिया-बिटिया करते बुढ़ऊ नाना आते हैं वह सारे फ़सादों की जड़ हैं । दिन - रात हाय- हाय किसका धन पावें लूट लें , किसकी ज़मीन पावें लिखा लें । मेरे पल्ले हरिकेश मामा की बेसहूर नकचड़ी बेटी बाँध रहे सिर्फ़ इसलिये कि दहेज में बहुत पैसा मिलेगा । माघ मेला में कल्पवास करते हैं और मेला क्षेत्र में सारा दिन एक ही कार्यक्रम घर - परिवार की पंचायत । परवचन सुनने जाते हैं और परवचन के बीच उँगलियों पर गाँव के खेत - खलिहान का हिसाब जोड़ते रहते थे । सझिया दान दिया बाज़ार का सस्ता से सस्ता माल ख़रीदा । पलंग दिया दान में कामता पंडित जी बोले , “ महराज चारौ महीना नाहीं चली । “ जवाब क्या दिया , “ बैठै बरे देहे रहे उछलै बरे नाहीं । ” गाय दान देना था । यह कहा गया बछिया दे दो । पर दिया क्या, पुरानी बूढ़ी बकेन गाय । कामता पंडित जी कहे , “ महराज बछिया दै द । “ जवाब क्या दिया , “ वैतरणी बछिया पार न कराई पाये , इ जानी समझी गाय बा बहुत दिना से हमरे संगे बा , हमरे एक आवाज़ पर दौड़ि के आई जात हअ । “ यह कहा गया सिक्का दे दो , बहुत मुश्किल से एक चाँदी का सिक्का दिया और आज तक गाते हैं कि चाँदी का सिक्का दिया । दाढ़ कहता है , “ का पता बट्टा वाला सिक्का दे दिया हो , एनकर माया विधातै जानई । “ पर मेरी माँ को तो सारा दिन बस एक काम बाबू - बाबू । जैसे इनके अकेले के बाप हैं बाकि सब बिना बाप के हैं । अब इनको भी विमोचन देखना है । एक पैसा की समझ नहीं है साहित्य की पर विमोचन में आना है , क्यों ? पूरे डेबरा में झूठ बोलना है , शेखी झाड़नी है , साहब के कार्यक्रम में गये थे , साहब हमको भी बुलाये थे , हमरे नाती से

संदेश आई रहा । अब साहब कहेन तब त जाई के पड़े , मालिक हयेन , माई -
बाप हयेन कई जिलन के ।

पर जाना क्यों है ? कानूनगो - लेखपाल - नायब तहसीलदार को डराना है
और गाँव समाज की ज़मीन अपने नाम लिखा लेना है । गाँव के सारे बड़े
तालाब लिखा लिया , दो- दो बाग लिखा लिया । उत्तर प्रदेश में स्वतन्त्रता
सेनानी कोटा है । दादू बोलता है , “आज़ादी के लड़ाई में लड़े होतेन तब हमहूँ
के कोटा मिलत और नौकरी मिल जात , पर ए त अंगरेज़न के साथ रहेन
ज़मींदार बना रहेन । अरे बिजली के तारै काटि देहे होतेन । पर आग औंधियार
रहा । हक्कीकत इ बा मुन्ना भैया इ सब ज़िम्मेदार हैं गुलामी के बरे , देश
लड़त रहा था और इ सब ज़मींदारी करत रहेन । ”

और इस दिमागचढ़ी माँ को देखो सबसे कहती है , “ हम ज़मींदार के बिटिया
हई । “ जिस बात पर शर्म करनी चाहिये उस पर गर्व करती है । मेरे पिताजी
भी बहुत दिमाग बढ़ाये हैं इसका , वक्त- बेवक्त इलाज ज़रूरी है इसका । मैं
करता हूँ इसका इलाज ।

इतने में ज़ोर से आवाज़ आयी “ मुन्ना- मुन्ना... कहाँ मरि गवा मुन्नवा सुनतै
नाहीं बा । ”

मुझे लगा जो मैंने मन में जो कहा कहीं वह सुन तो नहीं लिया इसने , यह पूरी
कौवा है सब जान जाती है कहाँ क्या चल रहा है । मैं नीचे गया । वह बोली , “
काल ग रहअ भैया के इहाँ । आज चला जा । इ उचित नाहीं बा कि दिल्ली से
शांति के कुल ख़ानदान आवै .. और इहाँ अपने घरे के लोग न बोलावा जाई ।
”

इतने में बाहर जीप की आवाज़ आई । मेरे विवाह के लिये लोग बहुत आते थे
और यह लोगों का आना सबको बहुत अच्छा लगता था पर नाटक ऐसा करते
थे जैसे तंग आ गये हों इस काम से । माँ ने कहा , “ ई देखवारू जियै नाहीं
देत हएन भिंसारे - भिंसारे जिव खाई बरे आई गयेन । ”

मैंने कहा कि एसडीएम चायल आए होंगे ।

माँ - “ तू जानत थअ ओनका ? ”

मैं - “ लोग मुझको जानते हैं , मैं लोगों को जानूँ यह ज़रूरी नहीं रहा अब । ”

माँ - “ इ पिक्चरन के डायलाग न सुनानअ हमअ । इ बतावअ , ए काहे बरे
आई हयेन तोहरे लगे , भिंसारे - भिंसारे । ”

मैं - “ अब हर बात तुमको बताना ज़रूरी है ? ”

माँ- “ मुन्ना तोहसे हम कई बार कहि देहे हई हमसे अफ़सरी न झाड़ा करअ पर तोहका समझै नाहीं आवत । एकै बात हम केतनी बार कही । ”

इतने में अशोक आ गया दिनेश के साथ । वह बोला सर हमको डील करने दीजिये एसडीएम को । इसको आदेश देते हैं सीधा और कह देंगे कमिश्नर साहब ने कहा है ।

मैं- “ यार यह एसडीएम है । यह कोई चपरासी नहीं है । यह सर ने भेजा है समझने के लिये । यह बात सुनेगा और फिर जाकर साहब से डिस्कस करेगा । ”

अशोक - “ सर यह एसडीएम हमारे आपके लिये है , यह साहब के लिये चपरासी ही है । यह बहुत ही निरीह प्राणी है । सर जो आदमी अच्छे पद पर होता है वह बहुत निरीह प्राणी होता है , उसको अपने पद से हटने का ख़तरा हमेशा सताता रहता है । वह ज़मीर बेंच कर वहाँ आया होता है । यह एसडीएम चायल हमेशा आईएएस को ही मिलता है , यह प्रमोटी पीसीएस होकर यह पद पाया है । यह औँक़ात से ज्यादा पाया आदमी है , ऐसे आदमियों के पास सिवाय डर के कुछ नहीं होता , अभी आप देखियेगा यह किस तरह पेश आयेगा । यह कोई कबीर थोड़े है सर । यह कबीर होता तो कह देता कि मैं क्यों जाऊँ.. मैं एसडीएम हूँ, मैं सरकार का सेवक हूँ, मैं व्यक्तिगत कार्यक्रम के लिये क्यों कार्य करूँ । सर यह सब लतियर लोग है , इनका जन्म ही हुआ है लतियाये जाने के लिये , ईश्वर ने आज मौका हमको दे दिया है । सर बहुत सारी जलेबी - वलेबी - मिठाई लेकर आया है । इसकी जलेबी खा लेते हैं फिर इसी को लतियाते हैं । सर बड़ा बाबू आपके बारे में ठीक से बता दिया है , इसीलिये यह जलेबी - वलेबी लेकर आया है । ”

मैं- यह जलेबी तो ठीक है यह वलेबी क्या है ? ”

अशोक - “ सर जब जलेबी के साथ दही - दूध मिलाकर खाओ तब वह सिर्फ़ जलेबी न होकर जलेबी - वलेबी हो जाती है । यह दोनों लाया है , मैंने देख लिया जब यह जीप से उतर रहा था । ”

माँ- “ हमहुँ के बतावअ का चलत बा इ सब । ”

अशोक - “ आंटी जी का करबू तू सब जानि के । ”

माँ- “ मुन्ना के साथ रहत - रहत तोहरौ दिमाग़ ख़राब होई ग बा । सबके अफ़सरी चढ़ि गई बा । ”

मैं- “ बताता हूँ ज़रा रुको । चाय बनाकर भेज देना । सब कहानी सुनाता हूँ । ”

मैं बाहर के कमरे में गया , एसडीएम देखते ही खड़ा हो गया । मैंने अपना परिचय दिया और अशोक , दिनेश का परिचय कराया ।

एसडीएम - “ सर आपको जानता हूँ मैं । मैंने आपका नाम सुना है । हमारे कलेक्टर साहब भी बताये थे मुझको आपके बारे में । कलेक्टर साहब भी यहीं एएनज्ञा के ही हैं । ”

मैं - “ हाँ जानता हूँ मैं । ”

एसडीएम - “ सर कमिश्नर साहब के आफिस से फोन देर रात आया था और कहा गया कि सुबह - सुबह मैं आप की सेवा में हाज़िर हो जाऊँ , बाक़ी तो कुछ बताया नहीं बस यहीं कहा गया कि अनुराग सर की कमिश्नर साहब ये बात हो गयी है , अनुराग सर बतायेंगे क्या करना है । ”

मैं - “ साहब की किताब विमोचन में खाने का काम आप देख रहे हैं ? ”

एसडीएम - “ जी सर मैं देख रहा हूँ । ”

मैं - “ किसको कैटरिंग का काम सौंपा है ? ”

एसडीएम - “ सर आप तो जानते ही हैं कि शासन में सारा काम डेलीगेट होता है , मैंने भी तहसीलदार को काम डेलीगेट किया हुआ है । उसने काम किया है सबकुछ । कैटरिंग का काम किसको दिया है सर यह नहीं पता मुझे , मैंने यहीं कहा था सबसे बेहतर कैटरिंग वाले को करना । आप क्या चाहते हैं बतायें वह हो जायेगा । ”

अशोक - “ खाने में क्या- क्या बन रहा ? ”

एसडीएम - “ सर सब कुछ बन ही रहा होगा , आप क्या चाहते हैं ? ”

अशोक - “ डोसा बन रहा है ? ”

एसडीएम - “ नहीं बन रहा होगा तब बन जाएगा , आप बतायें क्या चाहते हैं आप ? ”

अशोक - “ एसडीएम साहब यह शिव की चाट का काउंटर लगवा दीजिये । ”

एसडीएम - “ यह तिनकुनिया वाला जो चिरंजीव नर्सिंग होम के बगल में लगाता है ? ”

अशोक - “ हाँ वही । ”

एसडीएम - “ लग जाएगा सर । आज ही उसको संदेश करा देता हूँ पाँच अगस्त को काउंटर संगीत समिति में लगाने के लिये । सर ऐसा करता हूँ अभी तहसीलदार को भेजता हूँ आपके पास और वह कैटरिंग वाले को लेकर आ जाता है , आप जो चाहें बनवा लें । ”

अशोक - “ यह ठीक है । कब तक आयेगा कैटरिंग वाला । ”

एसडीएम - “ सर बारह बजे तक तहसीलदार साहब हाजिर हो जायेंगे कैटरिंग वाले को साथ लेकर , आप आदेश कर दीजियेगा जो आप चाह रहे बनवाना । मैं शाम को पुनः आता हूँ, आपकी सेवा में । ”
मैं - “ ठीक है । ”

एसडीएम साहब दुआ - सलाम करके चले गये ।

अशोक - “ सर इ राम स्वरूप प्रमोटी पीसीएस हैं । यह एसडीएम चायल बन गये हैं इनका भाग्य खुल गया । एल बी तिवारी अकेले पीसीएस थे जो एसडीएम चायल बने वह भी इसलिये कि जी सी चतुर्वेदी दबंग डीएम थे और ऐसे दबंग थे कि एक बार कोई आदमी बहुगुणा जी का सिफारिशी पत्र लेकर आया था किसी दरांसफ़र के लिये । वह पूछ बैठा , क्या होगा अब ? वह बोले , “ देखेंगे ” । वह फिर बोल बैठा कि बहुगुणा जी को क्या बतायें हम । उन्होंने पत्र फाड़कर डस्टबिन में फेंक दिया और कहा , यह कह देना । उस समय एक आईएएस था पर उसको एसडीएम चायल नहीं दिया । चतुर्वेदी साहब बहुत मानते थे एलबी तिवारी को । वह थे भी बहुत ईमानदार और सक्षम अधिकारी । अब ऐसी कुर्सी पर ई राम स्वरूप प्रमोटी पीसीएस बैठें हैं, इनसे आप चाहो तो झाड़ू लगवाओ , यह दिन-रात डरता रहता है कि आज चायल गया कि कल । ”

मैं - “ अशोक , तुम कब पढ़ते हो ? तुम सारा दिन यही पंचउरा करते रहते हो । तुम्हारी यही हालत रही तब कोई सेलेक्शन- वेलेक्शन नहीं होगा । इस प्रवृत्ति को बदलो । ”

दिनेश - “ सर अब यह पूछेंगे , सेलेक्शन तो ठीक है यह वेलेक्शन क्या है ? ”

मैं - “ सेलेक्शन है आईएएस बन जाना और वेलेक्शन है नौकरी पा जाना । नौकरी के भी लाले पड़ेंगे । अब आप लोग जाओ पढ़ो । ”

अशोक - “ सर तहसीलदार आयेगा तब कैटरिंग वाले के साथ , हम लोग रहेंगे तब ठीक रहेगा । ”

मैं - “ तुमको जो बनवाना है लिख दो । वह दे दूँगा । ”

अशोक - “ सर इमरिती गर्म , गुलाब जामुन , रबड़ी, यह तीन चीज़ मीठे में और डोसा ज़रूर करा दीजियेगा । बाकी तो आप देख लीजियेगा । ”

मैं - “ देख लूँगा , आप लोग जाओ पढ़ो, शाम को कक्षा में मिलते हैं । ”

बारह बजे तहसीलदार साहब आये कैटरिंग वाले के साथ और साथ में मेरे मामा हाथ बाँधे एक मातहत के रूप में, तहसीलदार की सेवा में ।

माँ ने पूछा, भैया तू इहाँ कैसे एनके साथ

अब मामा क्या जवाब देंगे

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 215

एसडीएम साहब ने आफिस पहुँचते ही तहसीलदार को बुलाया और मेरा पता लिखकर देते हुये कहा कि आप इनके घर चले जाओ साहब के विमोचन कार्यक्रम पर कुछ निर्देश लेना है, वह आप ले कर आ जाओ। आप अकेले मत जाओ, साथ में उनको लेकर जाओ जिनको कार्यक्रम के खाने का सारा इंतज़ाम सौंपा गया है, साथ में कैटरिंग वाले को भी ले जाना। वह बहुत सवाल पूछते हैं, आप जवाब नहीं दे पाओगे। निर्देश ले आकर मुझको दे देना, ताकि कोई ऊपर से पूछे तब मैं बता सकूँ।

तहसीलदार साहब एसडीएम के चैंबर से निकलकर आये और मामा को बुलाया। खाने का काम मामा के ज़िम्मे सौंपा गया था। वह मलाई वाली कुर्सी पर थे तब यह काम भी उनको ही सौंपा गया, हज़ार आदमी का भोजन।

तहसीलदार - “मिसिरा जल्दी से आई जा, चलै के बा एक नवाब साहेब के पास ओ हमका निर्देश देइहिं कि हम काम कैसे करी। अब इ ज़माना आई गवा बा कि गौतम गोत्र के तीन के बाभन के ई राम स्वरूप पहिले देई निर्देश, अब ई कौनौं नवा नवाब आई ग हयें जेनके घरे जाई के निर्देश लेई पड़े हमका, अब इ समय तहसीलदार के आई गवा बा कि गली - गली निर्देश लेय। हेलवाई केका केहे हअ ? ”

मामा - “ साहब सबसे बढ़िया हेलवाई केहे हई । ”

तहसीलदार - “ तुहूँ विचितरै मनई हअ मिसिरा। के हेलवाई बा, इ पूछत हई और तू कहत हअ सबसे बढ़िया केहे हई । ओकर नाम “ सबसे बढ़िया बा ” का। नाम बतावअ । ”

मामा - “ साहब सुलाकी हेलवाई को काम सौंपे है । ”

तहसीलदार - “ केहु के भेजि के ओसे कहअ, बैरहना के डाट के पुल पर इंतज़ार करई, उहिं हम मिलब। तुहूँ चलअ संगे, पता नहीं कौन गवर्नर हएन जे बहुत सवाल पूछत हएन। ई साहेब के किताब के विमोचन सीता जी के बियाह होई गवा बा । ”

तहसीलदार साहब मेरा घर ढूँढ रहे थे पर वह गलत गली में चले गये और उनको मिल ही नहीं रहा था । तहसीलदार मामा का साहब था, इसलिये वह अद्व में कम बोल रहे थे । मामा ने पूछा, “ कहाँ जाना है साहब ? ”

तहसीलदार- “ गली से निकल कर एक मंदिर है और मंदिर के सामने ही है मकान । ”

मामा - “ पता लिखा है ? ”

तहसीलदार - “ हाँ, यह है पता । ”

मामा ने देखा पता और नाम - अनुराग शर्मा.....”

मामा - “ यह तो हमारा भांजा है । ”

तहसीलदार - “ तोहार सगा भाँजा है ? ”

मामा - “ हाँ । ”

तहसीलदार- “ ई कैसे जानत हअ कमिश्नर साहब के ? ”

मामा - “ यह तो नहीं पता साहब । ”

तहसीलदार- “ सर्वेश तोहार कुल खानदानै खिलाड़ी बा । चलअ अब बतावअ कहाँ बा घर । ”

मामा , तहसीलदार , हलवाई आ गये । बाहर जीप की आवाज़ हुई । माँ को लगा एसडीएम साहब फिर आ गये । मामा अंदर आये , उनके आते ही माँ ने पूछा , “ भैया तू एनके संगे कैसे ? ”

मामा - “ बाद में बताता हूँ, साहब आये हैं, मुन्ना को बुला दो । मैं ऊपर से उतर कर आया । देखा सौ किलो का आदमी , वृत्ताकार पेट जो बहुत दूर तक क्षेत्रफल फैलाये हुये , हवा के घनत्व को कम करता हुआ , माथे पर चंदन का तिरपुंड , कमीज किसी तरह शरीर के चारों ओर लिपटी हुई । उसने मुझे देखा और कहा , “ तुहिन हय भयने सर्वेश के , कौन बामन हय तू । ”

मैंने बात को अनसुनी कर दिया ।

तहसीलदार - “ हम गौतम गोतर के हई तीन के बामन परतापगढ़ी । इ शर्मा त बहुत से औरौ जाति के लोग आजकल लिखत हएन । ”

मैंने फिर अनसुना सा कर दिया ।

तहसीलदार- “ एसडीएम साहब भेजेन हयें और कहेन कि हलवाई लेहे जा संगे । अब का करबअ हेलवाई के हम सब समझे हई । ”

मैं - “ पता करना है क्या- क्या इंतज़ाम है खाने में विमोचन के दिन । ”

तहसीलदार- “ तू का करबअ एहमें , लड़िका - लबारी हअ तू । तोहै का समझ होये , एहिं सब काम के । सारा इंतज़ाम ठीक बा । ”

मैं- “ क्या इंतज़ाम है । ”

तहसीलदार- “ बताई द हो का - का बनावत हअ । ”

कैटरिंग वाला बताने लगा । मैंने कहा , इसमें यह - यह और जोड़ दो । डोसा जोड़ दो ... मिठाई

तहसीलदार - “ अरे सब फ़ाइनल बा । सब ठीकै बनत बा । इ सब बिना मतलब के बात बा , इ बढ़ायी द ऊ बढ़ाई द , किताब के विमोचन पर लोग आवत हएन कि कौनौं बरातें में । इ कमिश्नर के किताब के विमोचन नाहीं सीता के बियाह होई गवा बा , बड़ा जनक बनि गवा हयेन कमिश्नर इंतज़ाम में , लगाई देहे हएन चार-चार मनई इंतज़ाम देखै बरे । ”

मेरा गुस्सा सातवें आसमान पर था ही उसके रुख और भाषा को देखकर , मैं उसकी किसी गलती का इंतज़ार कर रहा था और उसने गलती कर दी , यह कहकर , “ इ कमिश्नर के किताब के विमोचन नाहीं सीता के बियाह होई गवा बा , बड़ा जनक बना हयेन कमिश्नर इंतज़ाम में । ”

मैंने उनकी तरफ देखा और पूछा, “आपका नाम क्या है ? ”

तहसीलदार - “ हमारे नाम से तोहार कौन काम बा । ”

मैं- “ जितना पूछ रहा हूँ , उतना बताओ । उतनी ही बात करो जितनी मैं करना चाहता हूँ । आपका नाम क्या है ? ”

उसके चेहरे पर गुस्सा पूरी तरह झलक रहा था मेरे इस सवाल पर । उसने तैश में आकर करोध मिश्रित आवाज़ में कहा , “ राम पदार्थ मिश्रा, गौतम गोतर ।

मैं- “ जितना पूछूँ , आप उतना ही बताओ , मैंने गोतर नहीं पूछा । ”

तहसीलदार को इस रुख या वार्तालाप की कोई उम्मीद ही न थी । मेरी माँ भी वही बैठी थी , उसको भी उम्मीद न थी । वह भी आश्चर्य में थी ।

मैं- “ श्री राम पदार्थ मिश्रा आप यह बताओ , आपने क्या इंतज़ाम किया है ? ”

तहसीलदार- “ यह काम मेरा नहीं है , यह काम जिसका है वह करे । मुझसे आप उम्र का लिहाज़ रखकर बात करो । ”

मैं “ अगर यह आप का काम नहीं है तब आप क्यों आये ? आपको यह बात कमिशनर से ही कह देनी चाहिये थी या जिसने आप से कहा कि इंतज़ाम करो । मुझसे आप क्यों कह रहे हैं यह सब । मुझे कमिशनर साहब ने बोला कि आप इंतज़ाम देखो , मैंने एसडीएम साहब से कहा उन्होंने आपसे कहा । आप आकर मुझसे बिना मतलब की बात कर रहे और पूछ रहे मैं कौन सा ब्राह्मण हूँ और शर्मा बहुत सी जाति लिख रही हैं आजकल । इतनी हिम्मत आपकी आप अपने कमिशनर को कह रहे ,..... जनक बनि गवा हयेन इंतज़ाम में । अपनी भाषा पर आप ध्यान दीजिये मेरी भाषा पर सवाल करने के पहले । वह उनका कार्यक्रम है जैसे चाहे वह करें , हम आप होते कौन हैं इसमें बोलने वाले । मैं आज साहब से बता देता हूँ , आपने क्या- क्या बोला है । आप कितने साल से इलाहाबाद में हो ?

तहसीलदार- “ बीस साल से । ”

मैं “ कवाल टाउन में पोस्टिंग पालिसी क्या है ? आप चार - पाँच साल से ज्यादा नहीं रह सकते । आप सारा नियम - क़ानून तोड़कर रह रहे यहाँ पर । साहब के पास तीन- चार ज़िले हैं , किसी रद्दी सी तहसील में आपको चायल से उठाकर फेंक देंगे , आपकी सारी गर्मी निकल जायेगी । और बताऊँ ?

....आप लोग रोज़ भरष्टाचार करते हो , पैसा इकट्ठा करते हो ,आप जिससे पैसा लेते हो उनको दूसरी पार्टी का टेंडर का रेट टेंडर पहले बता देते हो , बड़ा मकान - ज़मीन सब खरीदे हो , जिसको जनक कह रहे हो वह आज रात स्पेंड करेगा कल विजिलेंस का छापा डालेगा परसों आप जेल होंगे और यह चंदन , यह गौतम गोत्र सब निकल जायेगा । जब से आये हो सिवाय बकवास के और कुछ नहीं कर रहे हो । आप कहो न उनसे , यह मेरा काम नहीं है मुझसे क्यों कह रहे हो । आप इंकार कर दो , यह उनकी समस्या है काम कराने की । उनसे कहने की हिम्मत है नहीं क्योंकि मलाईदार घूस की पोस्ट पर हो , चायल तहसील क़ब्ज़ियाये हो , मैं कमज़ोर आदमी हूँ मुझको जो चाहे कह दो । आप बड़े बहादुर हो , पाकसाफ़ हो घूस जाओ बँगले में और यही सब उनसे कह दो जो मुझसे कह रहे हो । है हैसियत तीन के ब्राह्मण की उनसे आँख मिलाकर बात करने की । आपने निराला को पढ़ा है ? आप कैसे पढ़ोगे , आपके पास समय कहाँ है आपको घूस लेने से फुर्सत ही नहीं है ... पढ़ना उन्होंने आप जैसे दंभी पर ही लिखा है

ये कान्यकुञ्ज- कुल कुलागांर

खाकर पत्तल में करें छेद ,

इनके घर कन्या अर्थ खेद,

इस विषय - बेलि में विष ही फल

यह दग्ध मरुस्थल- नहीं सुजल ।

तहसीलदार साहब कुछ और सुनायें आप पर , आपकी मानसिकता पर , आपके अहंकार पर , आपकी सज्जनता पर , आपके साहस- दुस्साहस पर या बस इतना बहुत है । ”

तहसीलदार- “ साहब ”

मैं - “ एक शब्द और नहीं बोलने का .. एक हकीक़त सामने आयी , डर कमिश्नर के प्रकोप का आया , मैं साहब हो गया । ”

तहसीलदार- “आप जैसे सर्वेश के भयने हयेन वैसन हमार , इ सोच के घर - परिवार की तरह बात करत रहे । ”

मैं - “ किसी का मैं कोई भयने नहीं हूँ इस समय , जिस काम से आये हो वही काम करो । कहाँ है हलवाई ? ”

हलवाई आ गया ।

मैं - “लिखो .. डोसा , इमरती .. रसगुल्ला... बेवकूफ तेज लिख.. मेरे पास समय नहीं है । एक भी सामान छूटना नहीं चाहिये । इनसे कोई मतलब नहीं इस कार्यक्रम से । तुम इनकी एक बात मत सुनना । ”

हलवाई - “ जी साहब । ”

मैं सुनो , पैसा मुझसे लेना, यह एडवांस पकड़ो पाँच हज़ार , इन उच्च गोत्रीय से एक पैसा मत लेना इस काम के लिये । ”

हलवाई - “ नाहीं साहब ऐसन न करें । ”

मैं - “ यह पाँच हज़ार रुपये रखो नहीं तो जो हालत उन श्री राम पदार्थ मिश्रा की है वही तुम्हारी करँगा और तुम्हारी वह सुलाकी की दुकान बंद करवा दूँगा । रखो यह पाँच हज़ार रुपया । ”

हलवाई ने डर कर पैसा रख लिया । मैंने तहसीलदार की आँखों में आँखें डालकर कहा , “हे गौतम गोत्रीय सुपात्र तीन के बराह्मण श्री राम पदार्थ मिश्रा जी , मैं आपको इस कार्यभार से मुक्त करता हूँ और आपका इस कार्य से कोई ताल्लुक नहीं है । मैं आज सायंकाल साहब से मिलूँगा और कह दूँगा , आप ने बहुत ज्यादती कर दी गौतम गोत्र के सुपात्र बराह्मण को कार्य सौंप कर । एक बात और कहूँगा साहब जी , आप जैसे लोगों के कारण विप्रों का हाल ख़राब है । ”

नमस्कार... अब आप लोग चलें मेरी शाम की क्लास होती है, पढ़ना होता है क्लास के लिये अब मैं आप की तरह यह तो कह नहीं सकता कक्षा में, मैं उच्च गोत्रीय हूँ, सुपात्र बराह्मण हूँ, इसलिये मेरी बकवास सुनो, वहाँ तो छात्र एक मिनट में आपको अस्वीकार कर देंगे, अगर आपने उनकी जिज्ञासा का समुचित समाधान न किया । “

वह लोग जाने लगे, मेरे मामा भी साथ चले गये। मेरी माँ ने कहा शाम को पिताजी से,

“मुन्ना अफ़स्सर बन चुका है।”

पिताजी - “क्या हुआ?”

माँ ने खोल दिया पुराण.... पुराण के बाद दाढ़ू बोला, “बुआ जाति हई चाचा के इहाँ आज त हवाई उड़ी होए, जब तहसीलदारै के इज्ज़त बीच - बाज़ार उतरि गई तब मातहत के त हूँके निकरि गई होए।”

साइकिल दाढ़ू की हवा से बातें कर रही थी, वह बहुत जल्दी पहुँच कर पूछना चाहता था, “चाचा का भवा? सुना है मुन्ना आज तहसीलदार के धरि दरबेसेन.... हमका त कुछ पतै नाहीं चला.. उड़त-उड़त ख़बर हम सुना ह बुआ के इहाँ.... मुन्ना के मूँड बहुत ख़राब बा आज...”

उधर कलेक्टरेड में अगले दिन फरगेंया

“ऐ राम सजीवन ज़रा चाय मगावअ, आज बड़ी तगड़ी ख़बर बा।”

राम सजीवन - “कौन ख़बर बा फरगेंया?”

फरगेंया - “देखअ तू त जनतै हअ हम केहू के बात केहू से कहित नाहीं जबकि हमारे पास सूचना बहुत तगड़ी रहत हअ।”

राम सजीवन - “का बा सूचना इ त बतावअ।”

फरगेंया - “सर्वेश के भयनवा बहुतै तेज बा। अबअ टरेनिंगों नाहीं गवा बा पर नागपाश में कमिश्नर के फ़साये बा। पहिले अपने मामा के पोस्टिंग कराएस मलाईदार महकमे में, पुनि कमिश्नर के विमोचन क्रब्जियायेस। आज तहसीलदार के माठा भिगोई के जूतै-जूता मारेस।”

राम सजीवन - “ख़बर पक्की बा?”

फरगेंया - “तू त जनतै हअ हमार सूचना तन्त्र। हम कौनौ उड़ायी- डकायी बात त करित नाहीं।”

राम सजीवन - “ फरगैंया , इ बात त हम फैलाऊब / हमका अनुमति द तू । ”

फरगैंया - “ काहे फैलावा चाहत हअ । ”

राम सजीवन - “ इ राम पदार्थ हमें बेज्जत बहुतै केहे बा । हमहीं के नाहीं सभै के केहे बा । ”

फरगैंया - “ सँभाल के करअ , हमरे सूचना तन्त्र पर आँच न आवई चाही । एक बात और बतावत हई । ”

राम सजीवन - “ का । ”

फरगैंया - “ इ सर्वेश के भयनेवा इहीं कलेक्टर बनि के आये । ”

राम सजीवन - “ पर अपने ज़िला में त तैनाती होत नाहीं . ”

फरगैंया - “ ऐ सब रामेश्वर मिश्रा के खानदान के हयेन , कुल धंधा एनहन के आवत हअ । लिखि देहे होये कौनौ और ज़िला । पर ऐसन बहुधंधी लोगन के ज़रूरत बा सिस्टम में । राम पदार्थ केहु के कंट्रोल में नाहीं रहा । एकै दिना में दिमाग़ ठिकाने लगाई देहेस । चलअ चाय एक और पियावअ , हमरे सूचना तन्त्र के सुरक्षा ध्यान राखि के बाति फैलाये । ”

एक शोर पूरे महकमें में राम पदार्थ मिश्रा स्पैड होई जात हएन ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 216

यह अफ़वाह ज़ोरों पर थी कि राम पदार्थ मिश्रा और सर्वेश मिश्रा का समय ख़राब आ गया है और शायद सर्वेश बच जाये । फरगैंया ने राम सजीवन से कहा , “ सजीवन इ भयेनवा बा बहुत जुगाड़ी , सर्वेश के बचाई दे पर तहसीलदार राम पदारथ के फँसाई दे । ”

राम सजीवन - “ इ कैसे ? ”

फरगैंया- “ कहि दे कि सर्वेश त कुछ कहेन नाहीं जौन कहेन इ राम पदारथ कहेन । ”

राम सजीवन - “ का होये फाइनली ? ”

फरगैंया- “ इ सर्वेश के भयनवा बा बहुत मायावी । इ कुछ माया फैलाये । ओकरे खून में दुई धारा बा .. एक विद्या के और दूसर चार सौ बीसी के । एक बात बताई दई सजीवन उ जीवन में या त बने कृष्ण के तरह या बने शकुनि उ विदुर न बने । ”

राम सजीवन - “ हम कुछ समझा नाहीं फरगैंया ? ज़रा तनिक समझावअ । अब हमार खोपड़ा तोहरे के नाहीं मजबूत नाहीं बा । ”

फरगैंया - “ देखअ ऐकर बाप हमसे एक साल पीछे रहेन । पढ़ाई में रहेन आला - दर्जा । टाप केहेन मालवीया कालेज में , बीए एमए दुइनौ में फ़स्ट क्लास हयेन पर तकदीर में रही क्लर्की । एजी आफिस के आडीटर के परीक्षा देहेन , मजबूरी रही घरे से कमजोर रहेन , संयोग ऐसन बना बस रहि गयेन उहीं में । पीसीएस कोशीश केहेन , एकाध बार इंटरव्यू तक गयेन पर प्रारब्ध में रहा नाहीं । ओकर बाबा सूर्य शर्मा त अलगै माटी के बना रहेन । जे केउ करछना में गणित पढ़ेस ओनहीं से पढ़ेस । विधाता ओनका सदगति देई । ओत भगवान के मनई रहेन । सूर्य शर्मा के बाप सालिंग राम शर्मा प्राइमरी के गणित के अध्यापक , सूर्य शर्मा ऐसन नाम नाहीं रहा पर रहेन जानकार ओउ । इ सर्वेश के भयनवऊ गणित पढ़े बा । अध्यापकन के परिवार के गदेल तेज होत हएन और इ त पीढ़ी दर पीढ़ी गणित के अध्यापकन के खून पाए बा ।

अब आवा देखअ सर्वेश के तरफ । सर्वेश के बाप रामेश्वर मिश्रा ठगी में माहिर , आई हयेन अपने मामा के गदी पर । जहाँ राड- रेवा देखने खेत लिखाई लेहेन , गाँव समाज के ज़मीन- तालाब पर त बगुला के तरह निगाह लगायेन हएन , हल्का से मौका मिला अंदर । अष्टावकर महराज के इहाँ कल्यास करत रहेन ओनहूँ के खेत लिखाई लेहेन । कौनौं जजमान देहे रहा अष्टावकर के दान में कुकुड़ी - पीड़ी में ज़मीन । पहिले त लेहेन देखभाल के नाम पर फिर हड्डप लेहेन । सर्वेश थर्ड डिवीजन बीए पास तकदीर रही पाई गयेन नौकरी उहौ मालदार विभाग में , सर्वेश के भाई दिनेश रिकार्ड बनाए हयेन हाई स्कूल फेल होई के , कौनौं माई के लाल ओनकर बनावा रिकार्ड तोड़ि न पाए । कौनौं टायर कंपनी में काम करत हयेन और टायर चोरी ओनकर मेन धंधा । तू डेबरा में पूछअ टायर कहाँ मिले , दिनेशै के नाम सुनबअ । दिनेशवा कहत का हअ , हम ताजा टायर बनाई के देब , बस तू आडर दअ । इ टायर न होई गअ , इ गोभी- टमाटर होई ग बा । सब माहिरै नाहीं हएन चार सौ बीसी में इ रामेश्वर , सर्वेश , दिनेश सब चैपियन हएन । चार सौ बीसी में केउ एनका खेदे न पाए । अब सर्वेश के भयनवा दुइनौ धारा पाए बा । विद्या बाप के तरफ से और चार सौ बीसी सर्वेश के साइड से । अब अच्छी बुद्धि जगे तब इ बने कृष्ण , खराब जगे तब बने शकुनि । इ निरा विदुर के तरह के विद्वानै नाहीं बा , इ बा बड़ा चालबाज़ । ”

राम सजीवन - “ कैसे पता बा कि इ चालबाज़ बा ? ”

फरगैंया- “ तू रहि गये निरा बेवकूफ़ के बेवकूफ़ै । सबके नाकन चना चबवाये बा , तोहका देखात नाहीं बा , उहौ तब ज़ब अबहिं टरेनिंगौं नाहीं केहे बा । टरेनिंग के बाद त इ अंटी छाड बंटी मारे । क्लेक्टर संजीव रंजन कल्पत

हएन सर्वेश के हटवाइये बरे , पर भवा का ? मुख्यमंत्री के पंचम तल के सिफारिश के मनई के हटाई के सर्वेश ऐसन लड़ाकू के बैठाई देहे बा , राम पदारथ के नौकरी आज गई कि काल इहाँ तक बात पहुँचि गई बा । विमोचन क्रब्जियाये बा , सुना हअ कोचिंग चलाई के रूपिया पीटत बा । ऐसन चालबाज़ औरो कतौ देखे हअ । पर एक बात कहब सजीवन ऐसन लोगन के व्यवस्था में ज़रूरत बा , निरा विदुर के नाहीं ज्ञानी बने से व्यवस्था न सुधरे । चालबाज़िउ चाही अउर नीतिवान होई के जरूरत बा । भयेनवा में उ सब बा । इ ज्ञानिव बा अउर साथै तिकड़मी बा । इ हेरा फेरी में बहुतै माहिर बा । बस इ मनावअ सजीवन कि भयनवा मामा के नाहीं भ्रष्ट न होई जाई नाहीं त पूरा महकमा इ बेचि खाये ।

राम सजीवन-“ ए त तोहरे रिश्तेदारी में बा न ? ”

फरगैंया - “ तू त सजीवन जनतई ह हम लल्लो - चप्पो करित नाहीं और न चापलूसी जबकि हमरे बहुत नज़दीक के रिश्तेदारी में बा । सर्वेश के भौजी और हमार भौजी सगी बहिन हई । हम फरगैंया मिशिर और ओ मधुबनी । ”

राम सजीवन - “ हमारौ परिचय कराई द , का पता कभौं कामै पड़ि जाये । ”

फरगैंया - “ कहअ कालहै बोलाई देर्ई । दाढ़ ओकरे मामा के बेटवा है , हमरे सेवा में आवत रहत ह । दाढ़ हमरे भौजी के बहिन के बेटवा बा । ”

राम सजीवन - “ बोलाई द ओका , नाहीं त कभौं घरवई लै चलअ , जान - पहिचान होई जाये । ”

फरगैंया - “ बोलवाइत हई मौक़ा देखि के तोहार जान- पहिचान समझअ होई गई , तनिक चाय वाले के आवाज दअ , आवअ एक- एक चाय पी लई । ”

राम सजीवन - “ कब तक हला- भला होए राम पदारथ के ? ”

फरगैंया - “ हमार सूचना तन्त्र कहत बा कि अबअ मामला कमिश्नर साहेब के सज्जान में पहुँचा नाहीं बा । जैसे पहुँचे हला - भला होई जाए , चिंता न करअ सबसे पहिले सूचना तोही के मिले । ”

राम सजीवन - “ इ राम पदारथ के भद्रा उतरब ज़रूरी बा । बहुत अंधेर कहे बा , जेका देखअ ओकर बिना मतलब के इज्ज़त उतार देत हअ । ”

फरगैंया - “ चिंता न करअ , भगवान के इहाँ देर बा पर अंधेर नाहीं बा । ”

उधर दाढ़ मामा के यहाँ पहुँचने की जल्दी में साइकिल तेज भगा रहा था । मामा के यहाँ पूरा मातम था । ऐसा पहले कभी हुआ न था , किसी ने तहसीलदार , वह भी राम पदार्थ मिशरा ऐसा दबंग तहसीलदार , के साथ ऐसा सुलूक कभी किया हो । मामा साथ गये थे और डर लग रहा था कि कोई कार्यवाही हुई तब वह भी लपेटे में आ जायेंगे । मामा इतना तो समझ गये कि मैं

और कमिशनर बहुत नज़दीक हैं, सुबह एसडीएम आया दोपहर में तहसीलदार यह कोई आम बात नहीं थी। मुन्ना ने जेब से पैसा निकाल कर दे दिया और कहा इन लोगों से कोई मतलब नहीं है, यह एक असामान्य सी बात है, जो मेरे कमिशनर साहब के संबंध पर बहुत कुछ कहती है।

मामा ने पूरी बात बतायी। उस समय मामी, मोहिता दीदी और बाबा भैया भी बैठे थे।

मामी - “मुन्ना ऐसन बोलेन ?”

मोहिता दीदी - “पिताजी मुन्ना ऐसा था नहीं, वह बहुत लिहाज़ करता था। उससे यह उम्मीद न थी, कुछ तो ख़ास हुआ होगा जो मुन्ना को अंदर तक लग गयी होगा ?”

मामा - “बस यही ख़राब लगा होए जो तहसीलदार साहब पूछ लिये तू कौन बाभन हअ और इ कार्यक्रम सब ठीक चलत बा तू लरिका- लबेरी हअ तोहै का पता एकर सबके बारे में। पर मुन्ना का गुस्सा ! ऐसन त हम सोचने नाहीं रहे। ओकर चेहरा देखे होतू ऐसन लाग कि उ तहसीलदार के खाई जाए, पूरा चेहरा लाल होई गवा रहा।”

मोहिता दीदी - “पिताजी तहसीलदार साहेब को भी ऐसा नहीं कहना चाहिये था।”

मामी - “का भवा कहि देहेन त, कौन लाठी मारि देहे रहेन। लरिका- लबेरी न हयेन त का हयेन ओ। एक त इहै गलत बा कि एसडीएम- तहसीलदार ओनकरे दुआरै जाय। मुन्ना के जाई चाही अफ़सरान के पास कि अफ़सरान जाई मुन्ना के इहाँ, इ बतावअ पहिले। साहब दिमाग बढ़ाये हएन इ मुन्नवा के। कुल घरवैइय पगलाई ग बा। पहिले त उर्मिला पगलान रही अब मुन्नवौव। दरिद्रन के खाई के मिल जाय त मोटाई चढ़ि जात हअ। शर्मा जी के छोड़ि के सब पगलान हएन और शर्मा जी के त कुछ चलतै नाहीं। अरे पूछि लेहेस तहसीलदार तू कौन बाभन हअ तब कौन अपराध के देहेस ? मनई पूछबै करत हअ। घमंड के सीमा होत हअ, ऐसन घमंड कि अब तहसीलदार ऐसन बड़ा अफ़सर के जौन मनि आवै बोलि दअ। उम्र के लेहाज केहे होतेन अगर पद के नाहीं करै के रहा। अब का होये ?”

मामा - “कुछ पता नाहीं बा। कौनौं दिमाग कामे नाहीं करत बा।”

इतने में दाढ़ू पहुँच गया। उसने गमगीन माहौल देखा। वह तो रामलीला में कई साल नारद, विद्वषक, लक्ष्मण का रोल किया था। उसको नाटक करना आता था। वह अनजान बन के पूछा, “का भवा चाचा ? कुछ ख़ास बात ?”

मामी - “तोहै नाहीं पता ?”

दादू - “ चाची हम त गाँव से आवत हई / हम दुई दिना से गाँव हई , अबहिं चला उहाँ से / सोचा आज इहाँ रुकब काल जाब बुआ के इहाँ , मुन्ना के कोचिंग में रहे पड़त हअ / ”

चाची - “ मुन्ना के कौनौं लेहाज नाहीं रहि गवा बा / न रिश्तेदारी के , न उम्र के , न पद के / ”

दादू - “ भवा का चाची ? ”

मामी - “ तोहार चाचा ग रहेन मुन्ना के इहाँ तहसीलदार के संगे / कुछ तहसीलदार से बहस होई गई / मुन्ना तोहरे चाचा के सामने बहुत चिल्लाय - चिल्लाय के तहसीलदार के अपशब्द कहेन / तोहरे चाचा के साहेब बा , ओनके सामने ओनकरे साहब के साथ ऐसन व्यवहार कहाँ से सोभा देत हअ / ”

दादू - “ कुछ भ होए चाची , ऐसन त न करिहिं मुन्ना / ”

चाची - “ हम झूठ बोलत हई का ? जाये त मुन्ना से पूछि लेहअ / ”

दादू - “ हम इ नाहीं कहत हई चाची कि तू झूठ बोलत हउ बस विश्वास नाहीं होत बा / ”

बाबा भैया - “ मुन्ना के दिमाग ख़राब होई चुका बा / कमिश्नर साहेब के बहिन से लागत बा बियाह तई होई गवा बा , अपने के पूरा कमिश्नर मान बैठा हयेन / कोचिंग से कुछ रूपिया पाई ग हयेन , पहिले दस- दस रूपिया के मोहताज रहेन अब कमाई लेहे हयेन हज़ार -खाँड़ रूपिया , तहसीलदार के रूपिया देखावत हयेन , ओनका अब इ पता नाहीं बा कि तहसीलदार होत का चीज़ है / ”

मामा - “ दादू कितना रूपया कमाये होइहिं मुन्ना? रूपिया त सुना हअ तोहिं लेत हअ / ”

दादू - “ कौनौं गिनती त हम कभाँ किहा नाहीं चाचा / जे देहेस हम मुन्ना के वैसे दै दिहा / अब त मुन्ना लेतेन नाहीं बुआ के देझत हअ / कतौं लिखा पढ़ी त होत नाहीं , पर पचास हज़ार से कम का कमाये होइहिं और नवा - नवा लोग आवत हये रोजै / ”

मामा - “ का अच्छा पढ़ावत हअ मुन्ना ? ”

दादू - “ हाँ चाचा , बहुत अच्छा / कई- कई दिना त जौन ओनकरे संगे आईएएस बना हएन ओऊ आवत हये और कहत ह कि हमका एतना नाहीं आवत जेतना मुन्ना के आवत हअ / ”

मामी - “ उर्मिला के तकदीर बा , अब चाहे जेकर ओ पाच झज्जत - आबरू उतार दईं / ”

दादू - “ चाचा बात त तहसीलदार के बा , तू काहे परेशान हअ ? ”

मामा - “ कौनौंऊं जाँच तहसीलदार पर बैठे तब हम सब ओकरे लपेटे में त आइन जाब / हर जगह हमरे दस्तखत से फाइल आगे जात हअ / सबसे ज्यादा जाँच त माइनिंगै के होए / उहीं सबसे बड़ा राजस्व बा । ”

दादू - “ तब चाचा , अब का होये ? ”

मामा - “ जौन बदा होये / सब ठीक रहा , मुन्ना पाँच हज़ार न देहे होतेन / अब इ त पता चलिन जाए कि मुन्ना खुदै इंतज़ाम करत हयेन और अपने पास से पैसा देत हयेन / दादू तू बस इतना करअ , हमसे पैसा लै लअ और मुन्ना के दै दअ / हमका खाना के इंतज़ाम करै देय मुन्ना / हमेशा से इ माइनिंग विभाग से सारा इंतज़ाम से होत हअ / उहीं बरे इहाँ जे चाहे जौन पैरवी लगवाई के आवय उ खुशी - खुशी दौड़ि के इंतज़ाम करत हअ । ”

दादू - “ चाचा का करि हम एहमें ? ”

मामी - “ दादू हाथ - पैर जोड़ि के इ पाँच हज़ार रूपिया दै दअ / तहसीलदार साहब माफ़ी मागै के तैयार हयेन , ओ सुगर के मरीज़ौ हयेन / बिटिया के बियाहे बरे परेशान हयेन / इ बात कमिश्नर तक न जाई पावै / इहीं मामला निपटाई दअ । ”

दादू - “ चाची हमार सुनिहिं ? ”

मामी - “ मुन्ना बा उदार , ओका हम बचपन से जानित हअ , गुस्सा जैसेन आवत हअ वैसेन चला जात हअ । ”

दादू - “ ठीक बा चाची , कोशिश करबअ / काल जाब त बात करबअ । ”

मामी - “ नाहीं दादू , आजै चला जा / काल तक देर होई जाये / ई पाँच हज़ार रूपिया लेहे जा । ”

दादू - “ चाची जब कझहिं तब आई के लै जाबै । ”

मामी - “ नाहीं दादू तू रखे रहअ / कोशिश- जतन कै केअ दै देहेअ । ”

मामी ने पाँच हज़ार रूपया दादू को दिया / दादू के मनमाफिक चौसर चल रहा था , इतना खुश था कि खुशी में उसकी साइकिल खंभे से लड़ गयी , दरवाज़े से ही बोला ... ऐ बुआ

ऐ बुआ ऐ बुआ ... कहाँ हऊ

माँ - “ काहे गदर पेरे हअ दादू, का भवा ? ”

दादू - “ बुआ जैसन मेघनाद के मरे पे रावण के लंका में शोक भवा रहा वैसन शोक फैला बा ... रावण गिरा सभाकक्ष में पूर्ण सुसज्जित मुद्रा में । ”

माँ - “ हमका गाँव के रामलीला न सुनावअ , बतावअ का हाल - समाचार बा तूफाने के बाद । ”

दादू - “ बुआ इ ज़लज़ला आई गवा बा , भूस्खलन होई गवा बा । चाचा डिरेल होई ग हयेन । ”

माँ - “ उ कैसे ? ”

दादू - “ बुआ चाचिउ के कुल हेकड़ी निकरि गई बा । अब कैसे रूपिया में सुतरि बाँधिहिं अगर हटाई दिहा जाइहिं चाचा मलाई वाली कुर्सी से । ओनकर हाथें के नशा लगि गवा बा रूपिया के सुतरि से बाँधि के आँखी से निहारै के । अब इ नशा न मिले रोज तब तअ पगलई छाई जाये और ओनका नशा मुक्ति केन्द्र में लै जाए पड़े । कबीर सही कहे हये बुआ , माया महाठगिनी हम जानी । ”

माँ - “ मुन्जऊ थोड़ा ज्यादा कै देहेन , एतनी बड़ी बात नाहीं रही जेतना हल्ला ओ केहेन , तनिक कम कहे होतेन । कहब त ज़रूरी रहा पर एतना गुस्सा होई के कहब ज़रूरी नाहीं रहा । अब उम्र में बड़ा बा , पदौ में बड़ा बा , घरे चलि के आई रहा सोभा नाहीं देत केहू के जौन मुन्ना केहेन । ”

दादू - “ मुन्नव त आईएएस हयेन बुआ , पद में उ कहाँ बड़ा बा । ऐसन- ऐसन तहसीलदार पता नाहीं केतना मुन्ना के अंडर में काम करिहिं । ”

माँ - “ अबअ कहाँ भयेन आईएएस? अबअ बस परीक्षा पास केहे हयेन । जब कुर्सी पर बैठि जइहिं तब जौन मन होई तब करिहिं , अबै इ बात करब ठीक नाहीं रही । मुन्ना के पिताजिव नाहीं खुश हयेन इ बात से । आज मुन्ना से बात करिहिं एह मुद्दा पर । अबहिं मुन्ना कोचिंग से आयेन नाहीं । आजकल कोर्स ख़तम करै के चक्कर में लागि हयेन एहि बरे देर तक पढ़ावत हयेन । देखअ पूर झुराई गअ बा मुन्ना । बहुत मेहनत पड़त बा और कुछ खाबौ नाहीं करत ठीक से बस चाहियअ पर ज़िंदा रहत हअ । ओका कुछ दूध , फल-फूल और खाई चाही । ”

मैं कोचिंग से वापस आया । माँ दादू सब बैठे थे , मैं ऊपर कमरे में गया तभी बहन आयी और बोली कि पिताजी बुला रहे हैं । मैं पिताजी के पास गया । वह जाते ही पूछे , “ क्या तुमने ठीक किया था कल ? ”

मैं - “ वह बकवास किये जा रहे थे बेवजह .. । ”

पिताजी - “ मैं सवाल क्या कर रहा ? आप सवाल का जवाब दो बस । ”

मैं - “ नहीं । ”

पिताजी - “ मेरे लिये यह बहुत संतोष की बात है कि तुमने अपनी गलती स्वीकार कर ली । अब मुझे उस मुद्दे पर कुछ नहीं कहना है । तुम कहते हो , मुझे एक गैर मामूली दास्तान लिखनी है । एक गैर मामूली दास्तान लिखने की ख्वाहिश रखने वाले के जीवन में संयम सबसे आवश्यक है । अगर जीवन में संयम नहीं है तब एक दास्तान गैर मामूली दास्तान बनते- बनते भी मामूली ही रह जायेगी । तुम सर्वेश की तरह करोधी क्यों हो जाते हो ? करोध सारे फ़सादों की जड़ है । तुमको उस तहसीलदार की बात अच्छी नहीं लग रही थी , ठीक बात उसने की भी नहीं , तुम सिफ़्र यह कह देते कि ठीक है जो आप कर रहे हैं करें अगर मुझे कार्यक्रम में नहीं शरीक करना चाहते तो कोई बात नहीं है । यहीं बात को खत्म कर देते और कमिश्नर साहब से बता देते । यह क्या ज़रूरत थी उनके विभागीय आंतरिक बात को छेड़ने की ओर पाँच हज़ार रुपया निकाल कर देने की ओर यह कहना कि मैं आपको मुक्त करता हूँ । काम जिसने सौंपा वह मुक्त करेगा आप कौन होते हो मुक्त करने वाले । यह भी मैं कहे देता हूँ आप अपनी प्राप्त सफलता तक ही सीमित न रहो , ईश्वर ने आपको प्रतिभावान बनाया है , उसकी इनायत का सम्मान करो । ईश्वर को भी अपने आप पर गर्व करने दो । हर सर्जक अपनी सर्जना को देखता है अभिभूत होता है , ईश्वर एक प्रथम सर्जक है । आप यह भी सोचो आपके जीवन की क्या बस यही एक सफलता है ? क्या आप जीवन में कोई और सफलता नहीं पाना चाहते ? अगर आप जीवन में और सफलता चाहते हो तब आप को अपने मिज़ाज पर भी ध्यान रखना होगा । आप अयोध्याकाण्ड पढ़ाते हो लोगों को सिविल सेवा की परीक्षा के लिये । राम का आचरण अयोध्याकाण्ड में अपनी पराकाष्ठा पर है । राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने में सबसे बड़ी भूमिका इस कांड की ही है । आप उसको केवल पढ़ो- पढ़ाओ ही नहीं , आचरण में उतारने का भी प्रयास करो ।

एक बात बता देता हूँ अपने अनुभव से ... व्यक्ति को प्राप्त सफलताओं के आलोक में ही आङ्गादित होने से बचना चाहिये । उसे सफलताओं को स्मृति के विशाल भूतल में रखकर उससे उत्पन्न होने वाले अहंकार से दूर होने की संभावनायें हरदम तलाशनी चाहिये और एक बनी लकीर से बड़ी लकीर बगल में ही बनाकर उस पहले की बनी बड़ी लकीर को छोटी करने का प्रयास करना चाहिये । यह जो सारे आईएएस होते हैं इनमें से अधिकांश के जीवन की एक उपलब्धि होती है कि कभी इतिहास में उन्होंने एक परीक्षा पास कर ली थी और उसके बाद उनके जीवन में ऐसा कुछ नहीं होता जो किसी को स्पंदित कर सके , यहाँ तक की उनको भी । वह एक मिथ्या जीवन जीते हैं और लोगों से बेवजह अपनी तारीफ़ सुनने के आकांक्षी रहते हैं ।

मुझे ही नहीं समाज को तुमसे बड़ी उम्मीदें हैं, मुझे आशा है तुम उन्हें नाउम्मीद नहीं करोगे । मैं गाँव जाता हूँ, सबको लगता है दशरथ आ गये हैं । न तो तुम राम हो न मैं दशरथ हूँ पर समाज में एक नयी आशा की किरण तुम्हारे सफल होने से आ गयी है । तुम उनकी उम्मीदों का ध्यान अवश्य रखना चाहें मुझे नाउम्मीद करके भी । पर तुम्हारा कल का आचरण मुझे बहुत निराश कर गया, आशा है आप इसको फिर नहीं दुहरायेंगे । इस बात को यहीं ख़त्म करो, कमिश्नर साहब से ज़िकर की कोई ज़रूरत नहीं । यह पाँच हज़ार रुपये देने की बात किसी के कान में नहीं जानी चाहिये । मुझे पूर्ण विश्वास है तुम जो करोगे सोच- समझकर उचित ही करोगे ।”

मैं- “ ठीक है पिताजी । ”

मैं पिताजी का चेहरा देखता रहा जब तक वह बोलते रहे । उनके चेहरे पर कोई आवेश नहीं थी, कोई भाव नहीं, पूरे शांत चित्त से कह रहे थे । उनके पूरे वार्तालाप में गंभीरता एवम् परिपक्वता का समावेश था । इतने माँ ने कुछ बोलने की कोशिश की पर माँ कुछ बोल पाती पिताजी ने कहा, “ चुप रहो .. जब देखो बेवकूफ़ी की ही बात करती हो ।”

माँ- “ हम त अबा कुछ कहबै नाहीं किहा और तू बेवकूफ़ डिकलेयर कै देहेअ । ”

पिताजी - “ आज कोई नया बुद्ध अंदर जग जायेगा क्या? जो हमेशा कहती हो उसी तरह आज भी कहोगी । ”

माँ- “ हम कुछ कहबै न करब अ, जेकर जौन मनि होई करअ । जब नशाई के होये तब घरे में ऐसनै होत हअ । ”

मैं- “ रहन दो न माँ, हो गया । इस बात को रहने दो यहीं पर । तुमने आज आंटी की चिटठी नहीं पढ़ी । ”

माँ- “ कब आई, हम त देखबै नाहीं किहा । ”

मैं- “ डाकिया जब आया था तब मैं निकल रहा था । उसने मेरे हाथ में दे दिया । ”

माँ- “ का लिखे हइन ? ”

मैं- “ दो अगस्त को ही आ रही हैं । वह लोग दो कार से आ रहे हैं । आंटी अपने मायके ससुराल दोनों जाना चाहती है । वह बेटे - बहु को भी दिखाना चाहती है अपना घर, तुम भी चली जाना साथ में । चिंतन सर की जीप रहेगी वह भी लेते जाना, पर अब उनकी कार पर बैठने के बाद चिंतन सर की जीप पर नहीं मन करेगा बैठने का । ”

माँ - ओनकर कार कौनौ अलग कार बा का ? “

मैं - “ माँ रुपिया के माई पहाड़ चढ़े । एतना रुपिया बा चाहे जौन काम करें । आहूजा साहब बहुत बड़े आदमी हैं । पूरे इलाहाबाद में उतना बड़ा आदमी कोई नहीं होगा । ”

माँ - “ इ रामराज से बड़ा होइहिं ? ”

मैं - “ माँ इ रामराज चिंदी चोर हैं । एक प्लाट चार आदमी को बेंच देते हैं , यही इनका व्यवसाय है । यह कोई व्यवसायी थोड़े हैं , यह तो डैकेत हैं । इनको तो जेल में होना चाहिये । माँ इनको भगाओ , अगली बार आते हैं तब कुंडली फ्रोटो वापस करो । आप इतने बड़े डाकुओं के घर की लड़की के चक्कर में मत पड़ो । ”

माँ - “ तुहिन बताई दअ कैसन लड़की चाही । ”

मैं - “ माँ शालिनी को देखना तुम , क्या सुंदरता है , क्या नफासत , क्या बात करती है । सुंदरता तो ऐसी कि आँख ही न हटे । ”

माँ - “ इ प्रतीक्षा ? ”

मैं - “ सारे फ्रसाद की जड़ तुम हो । इतना जान खा गयी कि कुंडली फ्रोटो फेंक कर आना पड़ा । मैं देख भी नहीं पाया , अब जब नहीं देखा तब कैसे बताऊँ । ”

दादू - “ बुआ हम देखें रहे , नीक बा । ”

माँ - “ तोहै स सब नीकै लागे , तू जहाँ - जहाँ गअ लड़की देखै सबै तोहै नीक लागि रही । ”

मैं - “ दादू तुम भी चले जाना जब आंटी जाएँगी गाँव यह ध्यान रखना रामदीन कुछ ऊट- पटांग न बोल दें । मुझसे कह रहे थे कि बियाह कुजात में कै देहेन शांति बहिन । बोल देना ठीक से पेश आयेंगे । मैंने ऋषभ से कहा है कि मकान अपने गरीब मामा का बनवा दो और उस समय शालिनी भी थी उसने ऋषभ के बोलने के पहले कहा , “ अनुराग जो कहोगे सब कर दूँगी । ” उनके लिये यह बहुत छोटी सी बात है , किसी शालिनी स्टील के डिस्ट्रिब्यूटर से कहना ही तो है । ”

दादू - “ मुन्ना भये लगे हाथ हमरै एक कमरा बाहर वाला बनवाई देहे , आधा काम होई के रुकि गवा बा । ”

मैं - “ रुका त झगड़े में बा न । तोहार चाचा के बँटवारा भवा नाहीं बा एकरे बरे औ रोक देहे हयेन । ”

दादू - “ भैया हम उ मामला सुलटाई लेब , बस लगे हाथ इहौं कराई द । ”

मैं “ गाँव बसा नाहीं लुटेरे चल दिये । वाक़ई बहुत तेज परिवार बा मधुबनी मिसिर के । ”

माँ- “ मुन्ना अब हमरे परिवार पर न चढ़ा । एक कमरा बनवाई ले दाढ़ू त का भवा । घरे के लड़िका ह ई । रामदीनवा के मकान बनि जात बा , एकर एक कमरा में तोहै तकलीफ़ होत बा । सुनअ दुई कमरा बनवायै, कौनौ महल न खड़ा करै लागअ कि हमरे बाबू के मकान कमज़ोर होई जाय उ रामदीनवा के मकान के सामने । ”

मैं “ रामदीन का भयने बनवा रहा है , मैं तो बनवा नहीं रहा । वह बनवायेगा कि नहीं यह भी नहीं पता । तुम लोग पहले ही श्री गणेश कर दो । ”

माँ- “ बड़ा परोपकारी होई ग हअ । तोहसे का मतलब बा केकर मकान बना केकर नाहीं बना । रामदीनवा के कहै दअ , तू काहे ओकर वकालत करत हअ । उ बाबू के मामा के पट्टीदारी में बा । आज तक कभौं पट्टीदार केहू के सग भयेन हअ का । ”

मैं “ लो यह आंटी की चिट्ठी पढ़ो । घर में कुछ कप -प्लेट ठीक से ख़रीद लो । कुर्सी की हालत ठीक नहीं है , इसको ठीक करा लो । एकाध सोफ़ा ले लो । वह लोग बड़े आदमी हैं । ऐसा घर कर दो कि दो- चार घंटे वह लोग बैठ सकें । ऋषभ - शालिनी से भी मेरे संबंध बहुत अच्छे हो गये हैं , वह लोग मेरे साथ ज्यादा रहना चाहेंगे । तुम माँ थोड़ा घर ठीक कर दो , उनको सहूलियत हो जायेगी घर में । ”

माँ- “का - का करी ? ”

मैं “ माँ तुम इन सब कामों में बहुत समझदार हो , कर लो अपनी तरह से । पैसा चाहो तो ले लो , मेरे कमरे में रखा है अगर तुम्हारे पास न हो । ”

माँ बहुत खुश थी , उसने कभी यह दुनिया न देखी थी । उसको तहसीलदार को मेरा डॉटना बहुत भाया था , बस उसको लग रहा था कि भैया के सामने न हुआ होता तो अच्छा होता । शायद मैं न डॉटता तो क्या पता वह ही चढ़ गयी होती यह कहकर , “ तोहार हिम्मत कैसे पड़ी मुलहा बाभन के बभनी पूछै के ” । पर उसका ही खून मेरे अंदर है , वह उसके उबलने के पहले ही उबल पड़ा ।

वह अब प्रतीक्षा और शालिनी में खो गयी थी । उसको भी लगने लगा कि बेवजह कुंडली - फ़ोटो वापस करा बैठी । उसने कहा , “ मुन्ना इ बतावअ शालिनी सुंदर होये ढेर की प्रतीक्षा ? ”

मैं - " मैंने तो प्रतीक्षा को देखा नहीं , शालिनी को देखा है , इसलिये उसी के बारे में कह सकता हूँ । "

माँ - " विमोचन में दुझनौ के संगेन देखब तब समझि आये ठीक से । "

मैं - " पर तुम तो फोटो - कुंडली वापस कर दी हो , अब तो वह रिश्ता अस्वीकार कर दिया है , वहाँ तो बात ख़त्म हो चुकी है । क्या पता वह कहीं अपने बहन का विवाह कहीं तय ही करि लिये हों । "

माँ - " जब तक मुन्ना के बियाह न होई जाये तब तक केऊ कतौ और न जाये । मुन्ना के सामने कौनौ लड़िका केहू के न भाये । "

मैं - " क्या ख़ास बात है मुन्ना में ? "

माँ - " मुलहा बाभन बा सूर्य शर्मा के नाती हअ ... अब और का कही नाहीं त अबहिं ए कइहिं चुप रहअ ... हमका चुप करावै आई हअ ... "

मैं - " लड़ाई न करो , अब शांति का माहौल रखो । "

इतने में अशोक आ गया दिनेश के साथ ... पूछा सर खाने का क्या हुआ ?

माँ - " कुल झगड़ा के जड़ि अशोक तुहिन हअ ... न कहे होतअ खाना के बारे में कुछ न होतै । "

अशोक - " हुआ क्या ? "

मैंने बताया क्या हुआ ।

अशोक - " सर बहुत अच्छा हुआ । तहसीलदार को कुछ काम और सौंपते हैं । यह तो सर पूरे नियंत्रण में आ गया है । विमोचन का भोजन तो अब सर दिव्य होगा , भीड़ ही भीड़ होगी , आप अपना भाषण लिखिये । सर ऐसा लिखिये न कि राज्यपाल को लखनऊ वापस जाना भारी पड़े ।

जाये और लगे किस इलाहाबादी से पाला पड़ गया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 218

अगले दिन सुबह- सुबह 6 बजे मामा की मोटरसाइकिल की आवाज़ के शोर से पूरी गली गुंजायमान हो गयी । इतने सुबह मामा का आना आश्चर्यजनक लगा पिता जी को । माँ गंगा स्नान को गयी थी और पिताजी घर के सामने

चाय का कप हाथ में लिये पेपर वाले का इंतज़ार कर रहे थे । मामा को देखते ही पिताजी ने कहा , “ सब ठीक तो है न ? ”

मामा - “ कहाँ सब ठीक है । नींद किसी को नहीं आ रही । तहसीलदार साहब कल देर रात आये थे , वह बहुत चिंतित हैं । ”

पिताजी- “ ऐसा क्या हो गया ? ”

मामा - “ तहसीलदार साहब बातचीत में अक्खड़ हैं । उनकी ज़बान को कोई लगाम नहीं है । वह अक्सर लोगों से लड़ जाते हैं । एसडीएम साहब से भी बहस कर लेते हैं । एक बार कलेक्टर साहब ने इनकी इन्हीं आदतों के चलते कहा था कि अगर एक भी शिकायत तुम्हारी अब आयी तो स्पेंड कर दूँगा । तहसीलदार साहब ने मुन्ना से ठीक से बात नहीं किया , उनको पता भी न था कि मुन्ना कौन है । उनसे कहा गया कि इनके घर चले जाओ और निर्देश ले लो , मुझे साथ लेकर आ गये । उनकी लड़ाकू- बहसी प्रवृत्ति के कारण मैंने कुछ बताया भी नहीं कि यह कौन है । अगर मैं बताता तब कहते , हमारे ऊपर रौब मत गाँठो , मैंने बहुत आईएएस देखें हैं । जब सारा मामला हो गया तब जाते समय रास्ते में मैंने बताया सब कुछ और विभाग जाने पर उनको पता लगा कि मुन्ना कमिशनर साहब के बहुत नज़दीक हैं । कलेक्टर साहब तो इनको स्पेंड करना चाहते ही हैं , अगर कमिशनर साहब ने कह दिया तब तो बचने की कोई सूरत नहीं है । यह बेटी का विवाह द्वृढ़ रहे हैं , अगर स्पेंड हो जायेंगे तब विवाह में बहुत समस्या होगी । आप तो जानते ही हैं कि विवाह तय करने में कितना हाबा- डाबा मदद करता है । एक स्पेंडड आदमी को समाज एक हेय दृष्टि से देखता है और कन्या के विवाह में बाधा उत्पन्न हो जायेगी , आप किसी तरह से मामले को सुलझायें । मुन्ना भी गुस्सैल हैं , यह हम सब जानते ही हैं , पर यहाँ सवाल हमारी तहसीलदार की पोस्टिंग- नौकरी से ज्यादा एक कन्या के जीवन का भी है । बेटी हमारे पास भी है और आपके पास भी , उसका ख्याल करके मामले का निस्तारण करा दें । मुन्ना के अहम की क्षतिपूर्ति के लिये जो भी शर्त मंजूर है वह सब कर देंगे । ”

पिताजी - “ पहले चाय पियो , इतना तनाव नहीं लेते । इतनी बड़ी बात नहीं हो गयी है । आपसी बातचीत में ऐसा बहुधा हो जाता है । ”

पिताजी ने बहन से कहा ज़रा चाय बनाना और मुन्ना को लेकर आओ ऊपर से बता देना मामा आये हैं ।

मैं नीचे आया । मैंने मामा का कातर चेहरा देखा , वह रुँआसे ऐसे थे । एक अनिश्चित भयावह भविष्य की छाया उनके चेहरे पर व्याप्त हो चुकी थी । डर उनके माथे के लकीरों में घर बना चुका था और वहाँ पर बैठ कर वह मंद- मंद मुस्कुरा रहा था । एक प्रतापी होने का दावा करने वाला सरे आम कह रहा था मैं कायर हूँ , मुझे इस मानसिक संघर्ष से मुक्ति प्रदान करो । उनके

स्वार्थ ने उनके अंदर ईश्वर का वास करा दिया था और वह हरिनाम मन ही मन जपे जा रहे थे , इस विपदा से मुक्ति की भिक्षा माँगते हुये ।

मेरे नीचे आते ही पिताजी ने कहा , “ देखो तुम्हारा गुस्सा और तुम्हारी बेवकूफी ने कितनी बड़ी समस्या को जन्म दे गयी । यह लक्षण नहीं हैं जीवन में आगे जाने वाले व्यक्ति के । तहसीलदार साहब मरीज़ है , उनको कुछ हो गया तो कौन जिम्मेदार होगा । ”

मैं - “ पिताजी बात तो ख़त्म हो गयी , आपने ही कल ख़त्म कर दी । अब हर बार उसी बात को कर - कर के मेरे अंदर अपराध बोध को और तरंगित करने का क्या फ़ायदा ? ”

पिता जी - “ इनकी बात सुन लो और जिसमें इनको संतोष हो और यह चैन से रह सकें , वह कर दो । मामला ख़त्म तुम्हारे तरफ़ से हुआ है , यह तुम्हारे मामा हैं , इनको संतुष्ट कर दो , इनको तनाव मुक्त करो । ”

मैं - “ आदेश करें मामा । ”

मामा - “ यह बात यहीं ख़त्म कर दो । ”

मैं - “ ख़त्म कर दिया । ”

मामा - “ कमिशनर साहब को यह बात पता नहीं चलनी चाहिये । ”

मैं - “ मुझसे बिल्कुल पता नहीं चलेगा और अगर वह किसी और तरह से जान गये तब मैं यह कह दूँगा कोई ख़ास बात नहीं थी , सब सामान्य सी बात थी बस इंतज़ाम को लेकर कुछ शंकायें थीं । ”

मामा - “ यह पाँच हज़ार रुपया वापस ले लो । ”

मैं - “ वह नहीं लूँगा । इतना बड़ा विमोचन चल रहा , मैं एक भागीदार ऐसा हूँ । मैं मंच से बोल भी रहा , यह मेरा योगदान है इस कार्यक्रम के लिये । ”

मामा - “ तहसीलदार साहब को खाने का इंतज़ाम करने दिया जाये , कार्यक्रम से उनको मुक्त न किया जाये । ”

मैं - “ ठीक है मामा आप करें । मैं कर भी नहीं सकता । एक हज़ार आदमी का इंतज़ाम जिस देवत्व के विधान से किया जा रहा वह मेरे बस का नहीं है । अगर तहसीलदार साहब न करते तब कोई और करता , मेरी हैसियत थोड़ी है कर पाने की , वह तो तैश में मुँह से निकल गया था । ”

मामा - “ वह पैसा वापस ले लेते तो अच्छा होता । ”

पिताजी - “ सर्वेश जी इस बात को छोड़ दो अभी , इसको बाद में देख लेना । यह घर की ही बात है । यह आपके मुन्ना के बीच बात है , इसको तूल देने से

क्या फ़ायदा । आप जो चाह रहे थे वह सब हो गया है न । अब एक छोटी सी बात पर जिसका कोई खास मतलब नहीं है अगर मुन्ना ज़िद कर रहे हैं तो मान लीजिये । यह उमिला के बेटे हैं, कोई आसान चीज़ तो हैं नहीं । यह अगर ज़िद नहीं करेंगे तब कौन करेगा । आखिर उमिला के सबसे पिरय पुत्र हैं, अपनी सारी अच्छाइयाँ उमिला ने वरत- उपवास - शक्ति आह्वान करके इनके अंदर प्रवेश कराया है, अब उमिला की अच्छाइयों के साथ- साथ उनके अंदर की ज़िद बोली, हमहूँ जाब नाहीं त काम न बने । वह भी चला गया इनके अंदर । धैर्य रखो, हर व्यक्ति के भीतर एक धीरोदात्त नायक होता है इनके भीतर वह सशक्त है यह मैं जानता हूँ, आप शुक्र मनाओ वह समय पर जग गया और इनके अंदर के विकारों को नियन्त्रित कर गया । यह भी इस समय एक सफलता के रथ पर सवार हैं जिसमें ज़रूरत से ज्यादा घोड़े जोत दिये गये हैं और इनसे इनके अपने रथ के बेअंदाज घोड़े सँभल नहीं रहे हैं । यह योद्धा बेहतर हो सकते हैं और शायद हो भी गये हैं पर सफलता के रथ को हाँकने वाले एक कुशल सारथी तो नहीं ही हैं । यह अपने जीवन के संघर्षों के लिये अर्जुन सदृश तो हैं पर इनको कृष्ण ऐसे सारथी की आवश्यकता है अगर यह एक बड़ा युद्ध जीतना चाहते हैं, छोटे- मोटे युद्धों को जीतने से यह कोई गैर मामूली दास्तान लिखने से रहे । इनको भी मेरा सुझाव है या तो यह अपने बड़े ख्वाबों को ख्वाब तक ही सीमित रहने दें पर अगर यह उन ख्वाबों का स्वप्नफल भी चाहते हैं तब यह अपने व्यक्तित्व में एक बड़ा परिवर्तन लाने का प्रयास करें । आप तहसीलदार साहब से कहो, थोड़ा नियन्त्रण रखा करें जबान और आचरण पर । यह नियन्त्रण कन्या के लिये उचित वर की तलाश में सहायक होगा ।”

मामा के जान में जान आयी । वह इतनी आसानी से मामला हल हो जायेगा, यह उम्मीद लगाकर आये ही न थे । यह पंचउरहा शर्मा- मिश्रा परिवार दही से मक्खन निकालने में भी दो घंटा लगाता है और दही मथ- मथ कर ऐसा माठा करता है कि माठा खुद ही चिल्लाने लगता है अब हमारे अंदर कोई मक्खन नहीं बचा, बस करो अब मथनी को सुस्ताने दो थोड़ा ।

मामा प्रसन्नता के अतिरेक में थे । वह बोले, “मुन्ना तू हमार मान दान हअ / हमें आपन पैर छुई लई दअ / तू काँटा निकारि देहअ हमरे करेजा से ।”

पिताजी हँसने लगे और कहा यह नाटक मधुबनी मिश्रा के पूरे परिवार में बा । कोई और दिन होता तब मामा कुछ कहते पर आज तो पिताजी उनके लिये जीवनदायक औषधि थे । वह पिता जी का पैर छूकर जा ही रहे थे कि माँ दरवाजे पर आ गयी गंगा स्नान करके । पिताजी ने मामा से कहा कुछ ज़िकर न करना नहीं तो एक घंटा पंचउरा और होगा बेवजह ।

माँ- “का भवा भैया एतने भिंसारे - भिंसारे ? सब ठीक त बा नअ ? ”

मामा - “ सब ठीक बा उर्मिला, मुन्ना के बतावैअ आई रहे कि इंतज़ाम कहाँ तक पहुँचा ऐ साहेब के बताई देखिं और कौनौ बात नाहीं बा । ”

माँ- “ हमार त जिउ डेराई लाग जैसनै हम देखा तोहार बुलेट दूर से । ”

मामा ने एक बार और चाय पिया , माँ के मन मुताबिक़ बात किया जो उसको अच्छा लगे । माँ का बहुत मन था उस लड़ाई के मुद्दे पर बात करने का और यह शरेय लेने का कि कैसे बड़ा दिल करके बात को सुलझा लिया गया , पर मामा ने उसकी इच्छा पूरी नहीं होने दी और वह रसास्वादन से महसूम रह गयी । मामा प्रसन्नता के साथ यह कहते हुये चले गये कि मैं तहसीलदार साहब के यहाँ जा रहा , शाम को आफिस से सीधा यहाँ आऊँगा तब बात करूँगा ।

मैं शाम को कमिशनर साहब के यहाँ गया । साहब व्यस्त थे अपने आफिस में । उन्होंने काम के बीच ही पूछा, “ खाने वाला काम सब हो गया ? ”

मैं- “ जी सर । ”

साहब - “ कोई समस्या ? ”

मैं- “ नहीं । ”

सर ने कहा तुम अंदर बैठो । मैं आता हूँ थोड़ी देर में । अर्दली से कहा कि इनको मेम साहब के पास ले जाओ । मैं अंदर गया , मैडम बहुत प्रसन्न थीं । यह विमोचन एक अलग उन्माद दे रहा था उनको । कार्यक्रम में आने वालों की तादाद बहुत थी । जिसको देखो वही आ रहा था । मैडम आमंत्रित लोगों की सूची में काट- छाँट कर रही थीं । कौन कैसे बैठेगा वह यह लिख रही थीं । वह एक बहुत बड़े अफ्रसर की बेटी थीं और लालन- पालन भी एक समृद्धशाली परिवेश में हुआ था और उनका दावा था कि वह नफ़ासत से भरपूर हैं , वह पूर्ण नफ़ासत की आग्रही थीं इस कार्यक्रम के लिये । उन्होंने मेरे बैठते ही पूछा, “ अनुराग हाल तो भर जायेगा ना ? ”

मैं- “ भर जायेगा । ”

मैडम - “ कितने लोग तुम्हारे आयेंगे ? ”

मैं- “ तीन सौ तो आने चाहिये । 75 लोग तो मेरी कक्षा में ही हैं । उनसे कहूँगा कि आप लोग पाँच- पाँच लोग लेकर आओ । यह भी कहूँगा कि राज्यपाल का भाषण सुनना बहुत ही लाभकारी होगा आपकी परीक्षा के लिये । यह छात्र वह सब करने को तैयार होते हैं जो उनकी परीक्षा के लिये लाभकारी हो सकता है । मुझे कोई ख़ास दिक्कत तीन सौ में नहीं रही है । ”

मैडम - “ अगर तीन सौ लोग आ गये तब तो बहुत ही अच्छा होगा । मेरे पिताजी भी आ रहे दो दिन पहले ही । उन्होंने यहाँ मीटिंग रख ली है आयकर

करदाताओं के साथ । वह भी निर्देश दे देंगे वकीलों, सीए को सबको लेकर आने की । “

मैं - “ मैडम केवल हाल भरने से ही मज़ा न आयेगा बल्कि इतने ही लोग पीछे खड़े हों और बाहर भी भीड़ हो तब विमोचन का आलोक और निखरेगा । ”

इसी समय साहब आ गये और बोले कि “अनुराग हाल किसी भी हालत में भरना चाहिये । राज्यपाल किसी काम से आज फ़ोन किये थे और बातचीत में उन्होंने फिर कहा कि हाल भर जाये, ऐसा प्रयास करना । वह राजनेता है, ऐसा ही जीवन जीना चाहते हैं, जहाँ पर लोगों की भीड़ उनको आळादित कर रही हो । । ”

मैं - “ सर उनकी चिंता स्वाभाविक है । विमोचन में कोई आता- वाता है नहीं । पचीस- पचास लोग आ जाते हैं । यह साहित्यिक अभिरुचि लोगों में कम तो है ही, पर आप निश्चिंत रहें यह हाल भर जायेगा । ”

साहब - “ कुछ और रह गया है ? ”

मैं - “ सर सब हो गया है, अगर आप खुद आकर छात्रों को आमंत्रित कर देंगे तो बेहतर होगा । मैं तो कहूँगा ही । आपके पास समय होगा तो आ जाइयेगा नहीं तो कोई बात नहीं । मैं तो पूरी कोशिश कर ही रहा कम से कम तीन सौ लोगों के लिये । ”

मैडम - “ यह कार्यक्रम अनुराग तुम्हारा भी है, तुम्हारा आमन्त्रित करना भी काफ़ी होगा पर इनके जाने से थोड़ा असर बढ़ेगा । ”

साहब - “ तुम कह देना, मैं आ जाऊँगा किसी दिन । ”

मैं सर के यहाँ से घर आ गया । आंटी के आने का दिन नज़दीक आ रहा था । दो अगस्त आने ही वाली थी और पाँच भी जब शालिनी और प्रतीक्षा दो एक साथ होंगी ।

मेरे सपनों को पर लग चुके थे, आज की रात एक नया खबाब देखा मैंने

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 219

तीन दिन बाद कलेक्टरेट में राम सजीवन, “ ऐ फरगेंया का भवा ? कुछ सूचना बा ? ”

फरगेंया - “ लागत बा कॉन्ट्रोवर्सी सुलझि गई । ”

राम सजीवन - “ मतलब ? ”

फरगेंया - “ देखअ एक बात त माने पड़े इ भयेनवा बा बहुत शातिर । एका गोटी चलै बहुत सही आवत हअ । हमका लागत बा कि तहसीलदार हाथ- पैर जोड़ि के मनर्झ लेहें हयेन एका , तहसीलदारौ काम के मनर्झ बा , काम के मनर्झ के माफ़ी देई में कौनौ हरजौ नाहीं बा , ऊ अड़े - गड़े काम आए । इ बात त हझयै बा कि अगर तहसीलदार फँसे तब त मामौं गएन । मामा के कदरशना त तू जनतै ह सजीवन । कौनौं इच्कवायरी बैठे मामा पहिले सूली पर । घपला कम त सर्वेशय केहे हयेन नाहीं । ओनकर नामै बा घपलेबाज । इ भयेनवा सोचे होये कि मामला बढ़ाउब तब मामा गिरिहिं भरहरा खाई । अब मामा के त बचउबै करे ई । ”

राम सजीवन - “ तोहार सूचना तन्त्र का कहत बा ? ”

फरगेंया - “ हमार सूचना तन्त्र कहत बा कि मामला कमिशनर के संज्ञान में पहुँचा नाहीं बा । ”

राम सजीवन - “ का उम्मीद बा , मामला पहुँचे कि न पहुँचे ? ”

फरगेंया - “ जस- जस दिन बीतत बा , उम्मीद कम होति जात बा । साहेबउ लपटियान हयेन अपने विमोचन में , बहुत बड़ा जलसा होत बा , ओनहूँ के पास टैम नाहीं बा । ”

राम सजीवन - “ मतलब राम पदारथ बचि जइहिं ? ”

फरगेंया- “ देखअ का होत हअ , अब कुल गोटी भयनवा के हाथे बा । ”

राम सजीवन - “ इ विमोचन के का खबरि बा । ”

फरगेंया- “ इ विमोचन कौनौ आम आदमी के त बा नाहीं । इ सत्यानंद तपा भवा अफसरानन में हयेन । ऐसन आईएएस कमै हयें परदेश में । ”

राम सजीवन - “ कैसन तपा भवा अफसर हयेन ए ? ”

फरगेंया- “ ऐसन त हम कतौं सुना नाहीं आज तक कि लखनऊ से इलाहाबाद इतनी बड़ी- बड़ी हस्ती आवैं एक किताबे बरे । परम्परा त इहै बा कि जेका किताब के विमोचन राज्यपाल से करावै के होई ऊ आपन अर्जी लगाई देई राजभवन में । जब समय मिले तब राज्यपाल के देइहिं विमोचन और तू आपन दस - बीस मनर्झ लै के चला जा । पर इहाँ त पूरा मजमा शहरै में उतरा चला आवत बा । एक बात त कहब सजीवन .. ”

राम सजीवन - “ का फरगेंया? ”

फरगेंया - “ हम बहुत से आईएएस देखा पर सत्यानंद मिश्रा के ऐसन रसूखवाला नाहीं देखा । ऐसन ऊँची पहुँच और कौनौ आइएस के नाहीं बा । ”

राम सजीवन - “ इ बात त बा फरगेंया , बहुत नामी अफसर हयेन कमिशनर सत्यानंद मिश्रा के । फरगेंया तू त विमोचन में जाबै करबअ , तोहरे रिश्तेदारी

में आवत हअ भयेनवा और सर्वेश, हमहूँ के लेहे चलअ देखि लेई इ राजसूय यज्ञ हमहूँ । “

फरगेंया - “ अबहिं त कार्ड आई नाहीं पर सुना हअ कि खास- खास लोग कलेक्टरेट से बोलावा जइहिं । आवै द कार्ड तोहू के दिआउब एक कार्ड । “

राम सजीवन - “ भैयनवा के तरफ से लै लअ , इहाँ दाल न गले । इहाँ त सभै मार करिहिं जाई के । “

फरगेंया - “ सजीवन तोहका कार्यक्रम में जाई से मतलब बा कि केकरे ओरे से जाई में , तोहका हम लै चलब तू बेफिकर रहअ , ज़रा आवाज दअ एक-एक कप चाय पियत जाई । “

मैं अब लगभग हर दूसरे दिन कमिशनर साहब के यहाँ जाता था । मैं आज शाम को गया तो डराइंग रूम में एक वृद्ध से व्यक्ति बैठे थे । मेरे बैठते ही मैडम ने उनका परिचय कमिशनर साहब के पिता के रूप में कराया । मैंने उनके पैर छुये । मेरे चरण- स्पर्श के समय मैडम ने कहा , यह अनुराग शर्मा हैं । यह लाइन साहब के पिताजी को संयत कर गयी और वह मुझे ध्यान से देखने लगे । मैं उनके देखने के पीछे की छिपी भावना को साफ़ पढ़ सकता था , पुत्री के लिये यह कितना योग्य होगा यह विचार उनके भीतर मंथित हो रहा था । उन्होंने मेरे बैठते ही कहा , “ बधाई हो , आपका चयन हुआ है यह मैंने सत्यानंद से सुना था । आपके माता - पिता बहुत ही प्रसन्न होंगे , उनके पुण्यों का कर्म आपको मिला है । मेरे दो- दो बच्चे सफल हुये हैं , मैं समझ सकता हूँ कि आम परिवेश का लड़का जब सफल होता है तब कितनी प्रसन्नता परिवार में होती है । आप कौन से ब्राह्मण हो ? “

मैं “हम लोग शुक्ला हैं , मामखोर शुक्ल । मेरे पर बाबा अध्यापक थे और एक अच्छे अध्यापक थे लोग उनकों शर्मा जी कहने लगे थे और तब से सरनेम शर्मा लिखने लगे ।”

सर के पिताजी - “ आप अध्यापक के परिवार से आते हो ? “

मैं “ मेरे परबाबा , मेरे परबाबा के चाचा , मेरे बाबा सब अध्यापक ही थे , वह भी सब गणित के अध्यापक थे । मेरे बाबा तो बहुत ही नामी अध्यापक थे । वह किसी भी गणित के सवाल को हल करने में कापी - पेन का इस्तेमाल ही नहीं करते थे , वह मुँहजबानी ही बताते थे । वह कापी - पेन छात्रों को समझाने के लिये इस्तेमाल करते थे न कि हल करने के लिये । मेरे जीवन की सफलता में उनका बहुत हाथ हैं पर यह मेरा दुर्भाग्य है कि वह इस सफलता के चश्मदीद गवाह न बन सके , पर जहाँ भी होंगे वह प्रसन्न ही होंगे , यह जानकर । “

सर के पिताजी - “ यह बात तो है । बच्चों की सफलता और नाम से बेहतर कोई उपलब्धि माता- पिता के जीवन में नहीं होती । बेटा - बेटी यशस्वी बनें इससे बड़ी उपलब्धि और कोई जीवन की हो ही नहीं हो सकती । मेरे दो बच्चे तो जीवन में दिशा पा गये हैं, यह बेटी ही रह गयी है । सुना है तुम लोगों को पढ़ा भी रहे हो, उसको भी कुछ बता दो । वह परिश्रमी है अभी तक की सभी परीक्षाओं में बेहतर किया है, एक दिशा मिल जायेगी तो कुछ जीवन में कर सकने में सक्षम है । वह भी आज सुबह ही आयी है इस विमोचन कार्यक्रम के लिये । मेरा छोटा बेटा भी कल आ रहा है । सत्यानंद ने कहा सब लोग थोड़ा पहले आ जाओ कुछ समय साथ रहे लेंगे । मुझको लेने इनकी कार गयी थी और प्रतीक्षा सुबह की गाड़ी से दिल्ली से आयी है । ”

उन्होंने आवाज़ दी और कहा , प्रतीक्षा को बुलाओ ज़रा ।

प्रतीक्षा ड्राइंग रूम में प्रवेश करती हुई , एक गौर वर्णीय छरहरे क़द की दुबली - पतली लड़की बालों को हाँथ से पीछे करते हुये दुपट्टे को सँभालते गुलाबी रंग के कमीज और काले सलवार के साथ यह कहते हुये , “ क्या है पापा ” । एक नज्म की तरह चलते हुये जैसे पहाड़ पर चिनार में फँसी बर्फ़ से दूधिया रौशनी टपक रही हो , कुछ वैसी ही आभा कमरे में बिखेरते हुये मेरे समुख प्रतीक्षा ...

मैं किसी सुंदरी पर लफ़ज़ों को न पिरोऊँ यह तो हो नहीं सकता , यह तो एक अलग ही सुंदरी थी जो स्पंदित कर रही थी जीवन को । मैं कितना भी नियंत्रण करना चाहूँ अपने अंदर के उमड़ते तूफ़ानों को पर वह कहाँ मानने वाले किसी बाँध की लकीरों को , उफ़ यह पल यहीं ठहर जाता तो अच्छा होता ...

यह चिराग की लौ में एक सोयी हुई उम्मीद है
मुझे कल की रौशनी का इस लौ से मिलने का इंतज़ार है ।

कल जुगनुओं की बारिश में दौड़ रहा था इस उम्मीद से
मेरे काँधे पर सिर रखकर कोई मेरी धड़कनों के धड़कनें का इंतज़ार करेगा
।

मेरे हँक में तुम सब शिद्दत से दुआ करना
मुझे आज वह मिल गयी जिसका मुझे इंतज़ार था ।

मुँह छुपा लेगा यह सूरज इसी के दामन में
मिल गयी एक अलग रौशनी जिसका मैंने इंतज़ार किया था ।

अब रौशनी के लिये चिरागों की कोई मिन्नत नहीं
चाँद चलकर दालान में आ गया जिसका मुद्दत से मुझे इंतज़ार था ।

मेरे दिमाग यह नज़्म चल रही थी और पिताजी ने कहा, इनसे मिलो ...

उनकी बात पूरी होने से पहले ही मैंने दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन की मुद्रा
में कहा ...

मैं अनुराग शर्मा हूँ..

उसने भी दोनों हाथ जोड़कर कहा .. मैं प्रतीक्षा.. बहुत खुशी हुयी आपसे
मिलकर

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 220

प्रतीक्षा के पिताजी ने कहा, “ प्रतीक्षा, यह सिविल सेवा के परीक्षा के लिये
पढ़ाते भी हैं, तुम इनसे कुछ पूछ लो तुमको लाभ होगा । यह ताज़ातरीन
सफल हुये हैं, इनको सारे टरेंड का पता होगा ।

प्रतीक्षा- “ आप क्या पढ़ाते हैं ? ”

मैं- “ मूलतः इतिहास पढ़ाता हूँ पर हिंदी भी पढ़ा देता हूँ, संविधान भी और
फिर जैसा मरीज़ मिला होमियोपैथिक की दवा है मीठी गोली में मिलाकर दे देते
हैं, आप कह सकती हैं मैं सब पढ़ा लेता हूँ, थोड़ा भूगोल एवम् अर्थशास्त्र में
मेहनत करनी पड़ती है, उसमें बहुत सहज नहीं हूँ । ”

प्रतीक्षा- “ एक आदमी सब कैसे पढ़ा सकता है ? ”

मैं- “ विस्मय जीवन का अंग अवश्य है पर विस्मय ही समाज को आगे ले
जाता है और प्रेरणा देता है । ”

प्रतीक्षा- “ मुझे इतनी अच्छी हिंदी नहीं आती । ”

मैं- “ मैं तब तो आपको कुछ बता ही नहीं पाऊँगा, क्योंकि मैं हिंदी ही बोलता
हूँ मुझे अंग्रेज़ी नहीं आती । ”

प्रतीक्षा - “ आपको अंगरेजी बिल्कुल नहीं आती ? ”

मैं - “ ऐसा नहीं है , आती है । सामान्य अंगरेजी का पर्चा पास किया ही है । अगर अंगरेजी नहीं आती तो कैसे पास करता ? ”

प्रतीक्षा - “ अंगरेजी क्यों नहीं सीखी आपने ? ”

मैं - “ इस बात का जवाब उमिला शर्मा ही दे सकती हैं । ”

प्रतीक्षा - “ उमिला शर्मा कौन है ? ”

मैं - “ मेरी माँ है , वह ही गयी थी श्यामा देवी भगवती प्रसाद में नाम लिखाने जब मैं पहली बार स्कूल जा रहा था । वह सेंट जोसेफ जा रही थी पर रास्ते में यही स्कूल दिख गया , यहीं नाम लिखा दिया । ”

प्रतीक्षा - “ आप मजाक बहुत करते हैं । ”

मैं - “ जब आप मजाक उड़ाओगी तब मजाक ही करेंगे । अब इस सवाल का जवाब क्या हो सकता है कि आपने अंगरेजी क्यों नहीं पढ़ी । यह शहर इलाहाबाद हिंदी में ही पढ़ता है , पर आप उमिला शर्मा से यह सवाल जरूर पूछियेगा वह समुचित उत्तर देगी । प्रतीक्षा जी ज़िंदगी कोई मलमल के रेशमी बिस्तरों पर सबको नहीं मिलती , आप सौभाग्यशाली हो आपको मिली । यहाँ लोग खुदा के न मिलने पर मंदिर - मस्जिद के सामने अरदास करते रहते हैं पर बहुतों को अपने कदमों के निशाँ नहीं मिलते , वे क्या अरदास करें और किससे करें ? यहाँ लोगों को एक पैर की ठोकर से गश आ जाता है पर बहुतों के ज़ख्मों से लहू टपक रहा पर बेपरवाह हैं । यह ज़िंदगी बहुत अज़ीब है , आपको अंगरेजी न जानना ही एक समस्या दिख रही पर यहाँ एक बड़ी आबादी स्कूल का मुँह नहीं देख पाती । मेरे बाबा अध्यापक थे , वह कहा करते थे अगर मैंने किसी को बग़ेर पढ़ाये दिन बिता दिया तब मैं कर्तव्य से विमुख हो गया , और यहाँ एक बड़े वर्ग को यह ही नहीं पता कि उसका कर्तव्य क्या है । यह समाज का ऊपरी पायदान एक चोंचलों के आवरण में जीता है और समाज का निचला पायदान एक जीवन की भयावहता में । यह भाषा भी समाज के दो पायदानों के बीच एक खाई बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है । अंगरेजी वाले उस खाई को बरक़रार रखना चाहते हैं और हिंदी वाले उसको पाटना चाहते हैं । अंगरेजी वाले प्रमुखतया भाषा से जीवन के रेस में आगे जाने का अधिकार प्राप्त करने का दावा करते हैं और हिंदी वाले उस अधिकार को मानने से इंकार करते रहते हैं । मेरे ऐसे बहुत से लोगों का सारा जीवन उनके अधिकार को चुनौती देने और उनके दावे को झुठलाने और अपनी सार्थकता को सिद्ध करने में बीत गया , और जंग अभी जारी है .. मैं हाथों को हिलाऊँ तो कोने- कोने में धमाका हो जाये और उस धमाके में वह भ्रम का आवरण न भी गिरे तो कम से कम चूलें तो हिल ही जायें , यही अस्मान लिये हर रोज़ सहर का इंतज़ार करता हूँ । ”

प्रतीक्षा- “ आपने राजनीति क्यों नहीं की , इतना अच्छा आप बोलते हैं , सोचते हैं । ”

मैं- “ वह भी की पर वह मेरे बस की न थी । इसलिये लोगों के भाषण लिखने और समर्थन तक ही सीमित रह गया । ”

पिताजी - “ अनुराग तुमने क्या- क्या किया ? ”

मैं- “ यह पूछे बाबू जी क्या नहीं किया । ”

प्रतीक्षा- “ यही बता दीजिये क्या नहीं किया । ”

मैं-“अब क्या- क्या बतायें बाबू जी , इस पहली ही मुलाक़ात में । ”

प्रतीक्षा- “ हिस्टरी से मैंने आनर्स किया है और एम का दूसरा साल है । इस बार परिलिम दिया है । हिस्टरी और सोशियालजी से मैंस लिखूँगी , अगर पिररिलिम परीक्षा पास हो गयी तब । ”

मैं- “ यह इतिहास बहुत ही दुर्लभ विषय होता जा रहा है दिन - प्रतिदिन । इसका कारण पाठ्यक्रम की विशालता तो है ही जो पहले भी थी पर ज्यादा बड़ी समस्या प्रश्नों को नवीनीकृत ढंग से पूछने की है और एक तुलनात्मक प्रश्नों का भी समावेश किया जा रहा है । अंग्रेजी माध्यम थोड़ा सुविधाजनक है क्योंकि विश्व इतिहास में सारी अच्छी किताबें अंग्रेजी में ही हैं । हिंदी माध्यम का विद्यार्थी विश्व इतिहास के लिये लाल बहादुर वर्मा, दीना नाथ वर्मा और जैन - माथुर तक सीमित है । ”

प्रतीक्षा-“ आपने अंग्रेजी माध्यम की कोई किताब नहीं पढ़ी? ”

मैं- “ किताब तो कोई नहीं पढ़ी पर किताबों के कुछ अंश डिक्शनरी के सहारे पढ़ें हैं । ”

प्रतीक्षा-“ वह कैसे पढ़ते हैं ? ”

मैं- “ एक तरफ़ किताब अंग्रेजी में एक तरफ़ डिक्शनरी । फिर जूझना और असीम पीड़ा का एहसास होना , एक हृदयविदारक चीख जो किसी को सुनायी नहीं देती सिवाय आपने आपको और एक अपनी ही विवशता का रोना जिस पर खुद को ही कोसना । ”

प्रतीक्षा-“ तब तो बहुत दिक्क़त होती होगी ? ”

मैं- “ हिंदी में कहावत है , जेकरे पैर न फटे बेवाई उ का जाने पीर पराई । ”

प्रतीक्षा- “ यह बेवाई क्या होता है ? ”

पिताजी -“ यह पैर में होने वाली एक बीमारी है जो कुपोषण से होती है और बहुत दर्द देती है । ”

प्रतीक्षा- “ क्या हिंदी माध्यम से पढ़कर सफल हुआ जा सकता है , आसानी से ? ”

मैं “ आसानी से तो जीवन में कुछ नहीं मिलता पर सफल हुआ जा सकता है यह मैंने देखा भी है और मैं हुआ भी हूँ । अगर सब कुछ जीवन में आसानी से मिल जाए तब तो जीवन का मज़ा ही चला गया । संघर्ष का अपना ही मज़ा है , चाहे वह कुछ तकलीफ़ देता ही हो । ”

पिताजी - “ कुछ बता दो अनुराग यह कैसे पढ़ें, तुमको अनुभव है । यह भी हो सकता है जब तक यहाँ पर हैं यह तुम्हारी कोचिंग में ही पढ़ लें । ”

मैं “ बाबूजी वह विशुद्ध हिंदी माध्यम की कोचिंग है , शायद इनके मसरब की न हो । ”

पिताजी - “ ऐसा थोड़े हैं कि यह अंग्रेज हो गयी हैं , हिंदी आती ही है जहाँ नहीं समझ आएगी वहाँ पूछ लेंगी । ”

मैं “ जैसी इनकी इच्छा, मेरी कोचिंग के द्वार तो सारे ज्ञान - पिपासा युक्त आत्माओं के स्वागत को इच्छुक रहते ही हैं । स्वागत है इनका अगर यह मुझे सुनना चाहती हैं । ”

पिताजी - “ तुम बलभर तो सुना ही दिये हो , यह भी कोई कक्षा से कहाँ कम है । ”

इतने में साहब आ गये और बोले अनुराग कितने लोग इस साल सफल हुये हैं ?

मैं “ सर पचास - साठ से कम क्या होंगे , ज्यादा भी हो सकते हैं । ”

साहब - “ तुम जानते हो सबको ? ”

मैं - “ तकरीबन सबको जानता ही होऊँगा । जिसको नहीं जानता होऊँगा उसको भी किसी न किसी माध्यम से जान ही जाऊँगा । मैं कोचिंग चला रहा , कोचिंग का पोस्टर हर जगह लगा ही है और कोचिंग भी चल गयी है इसलिये मुझे तो सब जानते ही होंगे । क्या करना है सर ? ”

साहब - “ उन सबको आमंत्रित करो । एक बौद्धिक माहौल बनना आवश्यक है , यह विभाग के कर्मचारी और आयकर दाताओं की जुटायी गयी भीड़ से एक बेहतर भीड़ चाहिये । अब आज के दिन सिविल सेवा के चयनित लोगों से बेहतर कौन होगा । मैं राज्यपाल से दो शब्द उन सबके लिये बोलने का अनुरोध कर दूँगा । तुम उनसे कह देना कि वह अपने साथ दो- चार लोगों को लेकर आयें । ”

मैं “ ठीक है सर । सर आप विश्वविद्यालय के अध्यापकों को आमंत्रित करिये । ”

साहब - “ वह हो गया है । सुरेश चन्द्र शरीवास्तव, दूध नाथ सिंह, संगम लाल पांडे, सत्य प्रकाश मिश्रा सर कर रहे हैं । ”

मैं “ सर एक बात कहूँ, अगर आप अनुमति दें । ”

साहब - “ अरे अनुराग, तुम भी..., कहो । ”

मैं “ सर यह जो एनाउंसर है यह सूट नहीं कर रही, इस बौद्धिक- साहित्यिक माहौल में । आप किसी साहित्यिक व्यक्ति को चुनिये । ऐसा व्यक्ति जो साहित्य जानता हो । ”

साहब - “ कौन है ? कोई है दिमाग में ? ”

मैं - “ हाँ सर । ”

साहब - “ कौन ? ”

मैं - “ राजेन्द्र मिश्रा संस्कृत विभाग के हैं और राम प्रकाश सिंह इसीसी के गणित के हैं, आप दो में से कोई चुन लीजिये । ”

साहब - “ वह तो गणित के हैं । ”

मैं - “ सर मैं भी गणित का ही हूँ । यह गणित वाले बहुत लागी होते हैं जिस चीज़ के पीछे पढ़ न जायें । ”

साहब - “ ठीक है । ”

मैं - “ सर चाहे जिससे कराये यह एनाउंसर से मत कराइयेगा । इनकी सिर्फ़ आवाज़ अच्छी है, बाक़ी इनको कुछ नहीं आता । ”

साहेब - “ शाम को आना, इसको फ़ाइनल करते हैं । ”

मैं सर से अभिवादन करके प्रतीक्षा को कनखियों से देखते एक अलग नशा आँखों में लिये घर पहुँचा । वहाँ अशोक, दिनेश, शाही बैठे मेरा इंतज़ार कर रहे थे ।

मैंने सारे चयनित लोगों को बुलाने की साहब की मंशा बतायी इनको । अशोक बोला, “ सर सुरुचि मिश्रा के यहाँ हमको भी ले चलियेगा, मैं भी चलूँगा । ”

दिनेश - “ भाई साहब मैं भी चलूँगा । ”

शाही - “ सर नाम बहुत सुना है, मुझे भी ले चलियेगा । ”

बद्री सर की पंक्ति याद आ गई , “ ई सुरचि मिश्रा गऱ्बै जनावर बा , पूर अंगरेज बा । ”

मैंने कहा , “ कल सुबह आना आठ बजे चलेंगे सुरचि मिश्रा के यहाँ । ”

माँ बोली , “ कुछ हमहू के बतावअ का होत बा , हमअ केऊ कुछ बतवतै नाहीं बा । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 221

अशोक , दिनेश , साही के जाते ही माँ फिर बोली , “ मुन्ना तू हमका कुछ नाहीं बतावत हअ , का बतियात रहअ तू पचे ? ”

मैं - “ साहब चाह रहे हैं कि सारे चयनित लोगों को विमोचन कार्यक्रम में बुलाया जाये । उसी पर बात हो रही थी कि कैसे बुलाया जाये । सबके पास जाना पड़ेगा , किसी न किसी को । सुरुचि के यहाँ कल जाने की बात हो रही थी । ”

माँ - “ उहै सुरुचि मिश्रा जेकर रैंक तोहरे से ऊपर बा । ”

मैं - “ हाँ , वहीं । ”

माँ - “ साहेबउ गदर केहे हयेन । एक सौ - डेढ़ सौ पन्ना के किताब के जलसा धनुष-यज्ञ के माफ़िक़ केहे हयेन । ऐतने पैसा में पता नाहीं केतना गरीब - गुरबा बच्चियन के बियाह होई जाए । ”

मैं - “ माँ , यह सब बड़े लोगों के चौंचले हैं । यह सब काम उनके अहम की पूर्ति करता है और उसीलिये कर भी रहे हैं । यह समाज में और लोगों से अलग लोग हैं और ऊपरी पायदान पर है , समाज इनके पीछे चलता है । मैं समाज से अलग हूँ , आगे हूँ , यह सब दर्शने का यह एक ढंग है । कौन इनको बताये कि कबीर , निराला , परेमचंद विमोचन नहीं करते थे सिर्फ़ लिखते थे । यहाँ लेखन गौण हैं विमोचन मुख्य है । पता नहीं कितने महीनों से कुछ भी नहीं लिखा होगा उन्होंने पर विमोचन एक कुछ पृष्ठों की किताब का करना है , वह भी एक युधिष्ठिर के राज्यारोहण के वैभव की तरह । अब यही हमारे समाज के अगरणी है , यही हमारे समाज का नेतृत्व कर रहे , हम यह क्या कर सकते हैं सिवाय इनके कदमों के निशान को देखकर चलने के । क्या पता कल मैं भी इनकी ही बनायी धारा पर चलने लगूँ , इसलिये अभी कुछ कहना ठीक नहीं है मेरे लिये । ”

माँ - “ नाहीं मुन्ना तू त रोज़ै लिखत हअ , तू एनसे अलग हअ । तुहूँ करअ ऐसन जलसा । तोहका का बा , तू त चार रोज़ में लिखि मरबअ एक किताब । ”

“

मैं - “ माँ एक और समाचार है जो बहुत अलग है , तुम मेरा कान खा जाओगी उसको सुनकर । ”

माँ - “का बा .. बतावअ जल्दी.. हमै कुछ बतवतई नाहीं हअ आजकल । ”

मैं - “ प्रतीक्षा, ”

माँ - “ का उ आई गई इलाहाबाद । ”

मैं - “ तुमको कैसे पता । ”

माँ - “ ओकर नाम लेतय तोहार चेहरवै बोलत बा । तोहार चेहरवै अलग होई ग रहा जैसै तू ओकर नाम लेहअ । ”

मैं - “ कैसे हो गया था ? ”

माँ - “ छोड़अ इ बात इ बतावअ , कैसन बा ? ”

मैं - “ कैसे तुमको पता कि मैंने उसको देखा ? ”

माँ - “ मुन्ना तू सबसे आपन ई माया फैलावअ हमसे आपन माया न फैलावअ , तोहार हम कुल फ्राड बचपन से देखत हई । तोहार हम एक- एक झूठ पकड़े हई और तोहसे सब सच उगलवाए हई , अब तू हमसे पूछत हअ कि कैसेन पता चला कि हम ओका देखा हअ । उ इलाहाबाद आई गई बा और तू न देखे होबअ इ संभव बा ? जेतना तू लागी हअ अपने काम- धाम के बारे में , अब ई हमसे जादा और के जाने , बतावअ कैसन बा ? ”

मैं - “ ठीक है । ”

माँ - “ ई ठीक है का होत हअ । ऐसन केउ बतावत हअ बियाहे के लड़की के बारे में , अब हम मुन्ना के बियाह , ठीक है लड़की से करब ? ज़रा ठीक से विस्तार से बतावअ । ”

मैं - “ तोहार संभावित समधिउ आई हयेन । ”

माँ - “ पहिले प्रतीक्षा के बतावअ समधि के बारे में जानि लेब जब समय आए । ”

मैं - “ लंबी है , गोरी है , सुंदर है , अंगरेज़ी टकाटक बोलती है , बाल काले हैं , बड़े हैं , नाक तीक्ष्ण है , होंठ गुलाबी है और कुछ । ”

माँ - “ एक बार देखै में सुंदर लागत हअ । ”

मैं - “ हाँ । ”

माँ - “ ज्यादा सुंदर के होये .. शालिनी की प्रतीक्षा? ”

मैं “ यह सवाल कठिन है , शालिनी एक पंजाबी लड़की है , वह बहुत ही गोरी ही , पंजाबी लड़कियों की सुंदरता अलग होती है । मैंने शालिनी के साथ काफी वक्त गुजारा है , वह बहुत ही नफ़ासत और तहज़ीबदार है । प्रतीक्षा को अभी ही देखा है वह भी थोड़ा ही समय मैं वहाँ रहा । उसको पता ही होगा सारा डरामा जो तुम फैलायी हो , इसलिये बात भी संयत होकर कर रही होगी । ”

मैं “ हम कौन डरामा फैलावा इ बतावअ ... उ त संयत होई के बात केहे होये पर तू त धकाधक भाषण चालू केहे होबअ । ”

मैं “ कैसे पता ? ”

माँ “ अब हमका तोहरे बारे में पता करै बरे कौनौं अनुसंधान करें पड़े का । तू उपदेश देहेन होबअ , इ त तोहार अदतै बा । इ आदत तोहार जन्मजातै रही अब पढ़ावई लाग हअ त और बढ़ि गई बा । इ इलाहाबाद शहर में लड़िका - लड़की नदी के दुई पाट के तरह रहत हअ , ऐसन में एक लड़की पाई गअ हअ तू तब आपन विद्वता झाड़े से तू कहाँ चूकै वाला । सुनअ सँभाल के बात करअ , ओहू के बोलै के मौका देहअ जब मिलअ , ऐसन न होई कि अपनै झाड़त रहअ । जे बोलत हअ ओकरे बारे में पता चलि जात हअ जे चुप रहत हअ ओकरे बारे में पता नाहीं चलत । अपनेन बारे में बतावत न रहअ , ओकरेउ बारे में पता करअ । इ बतावअ डरामा का फैलावा हम ? ”

मैं “ इ बियाह वाला डरामा, कुंडली - फोटो लो फिर वापस कर दो । ”

माँ “ उ बात त आई - गई बात होई गई बा । सहेबऊ ओकरे बाद कहेन कि हम जल्दी में नाहीं हई , आप आराम से सोच लअ , त हम सोचत हई आराम से । ”

मैं “ अगर वह फिर न आये विवाह को तब ? ”

माँ “ हम मरी नाहीं जात हई केहू के बरे , जेकर गरज होये उ आये , इहाँ त मेला लगा बा फोटो- कुंडली के । ”

मैं “ ज़रा अब चाय पिलाओ पढ़ना है क्लास के लिये ... हाँ क्लास से याद आया । उसके पिताजी कह रहे थे कि तुम अनुराग की क्लास कर लो जब तक यहाँ हो । ”

माँ “ अगर आये तब हमका संदेशा भिजवाई देहेअ, पीछेन त तोहार क्लास चलत हअ , आई के हम देख लेब । ”

मैं “ वह नहीं आयेगी , उसको हिंदी कम आती है और मेरी हिंदी थोड़ा साहित्यिक मार्का है वह उसके पल्ले नहीं पड़ेगी । ”

माँ “ तोहार पाच के अगर बियाह होई गअ तब कैसे करबअ ? तोहका अंगरेजी नाहीं आवत , ओका हिंदी नाहीं आवत , तू पचे लडबअ कैसे ? ऊ

अंगरेजी में लड़े तू हिंदी में, केहू के कुछ समझै न आये । “
मैं क्या लड़ना ज़रूरी है ? ”

माँ- “ इहै त जिंदगी हआ मुन्ना । अब अ तू लड़िका हआ , तोहका जीवन के सीमित अनुभव बा । अब विधाता तोहका समस्या मुक्त कै देहे हयेन , तोहका शायद ज़िंदगी के आम ज़रूरत के एहसास न होये । तोहका महीना के अंतिम सप्ताह में पैसा ख़त्म होई जात हआ , बच्चन के फ़ीस जमा नाहीं होई पावत बा , गाँव में लागत कैसे लगाई खेते में , घर परिवार के जिम्मेदारी मोह बाये खड़ी बा , एहिं सब बातन से तोहका रुबरु शायद न होए पड़े । अगर पड़े तब इ लड़ाई- झगड़ा होबै करे । इ सारा लड़ाई- झगड़ा हताशा में होत हआ । भगवान बड़ा कृपालु बा , बहुत संभावना बा तोहका इ सब समस्या से न ज़ूझे पड़े । थोड़ा समझदारी देखायअ जीवन में । तोहार भाई - बहन तोहरे ऐसन क़ाबिल नाहीं हयेन । हम एक गलती केहे हई , तोहरे पिताजी से बहुत लड़े हई घरे में जब ए मदद केहे हयेन , पर अब हम चाहत हई कि तू बहिन के बढ़िया बियाह करअ , अब जेतना बढ़िया बियाह तू कै सकत हआ उ हमसे और तोहरे पिताजी से त होये नअ । अब तोहार छोटवार भाई तोहरे एतना क़ाबिल त बा नाहीं , हम चाहब तू ओकरे अड़े- गड़े काम आवअ । अब हमार विचार और तोहरे दुलहिन के विचार इहों टकराई सकत हआ और जौन दुविधा में तोहार पिताजी पूरा जीवन रहेन उहीं में तुहुँ जियै के बाध्य होई सकत हआ । ”

माँ भावुक हो गयी थी । उसकी बड़ी- बड़ी आँखों में बूँदें बनने लगी थी । वह बूँदें धीरे - धीरे और मोटी हो रही थीं । मैं बनती बूँदों का बढ़ता घनत्व देख रहा था , मैंने कभी इतनी तल्लीनता से बूँदों का आकार परिवर्तन देखा ही न था कुछ पानी के छीटों का इकट्ठा होकर एक छोटी बूँद का शक्ल लेना फिर भावनाओं के प्रवाह के साथ उनका बड़ा होना , घनत्व और गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का पालन करते हुये नीचे लुढ़कना... मैंने उन दोनों आँखों से लुढ़कते संवेदी- संवेगी मुक्तादल की ऊर्जा और संवेदना का रूपान्तरण अपने दोनों हाथों की ऊँगलियों में कर दिया , वह भावना के अतिरेक में थी और मुक्तादलों की संख्या का करमिक विकास हो रहा था । मेरी अँगुलियों से वह टकराकर नीचे उनके सहारे वह उसके गालों पर टपक रही थीं ।

मैंने कहा , “ माँ तेरी ऐसी आँख विधाता ने दूसरी न बनायी । ऐसा आँख किसी सुंदरी के पास नहीं है .. न शालिनी के पास न आंटी के पास न प्रतीक्षा के पास कल सुरुचि की आँख देखकर तुझको बताऊँगा ... तुम अपना नेत्रदान ज़रूर करना ... कायनात में यह आँख लंबे दौर तक रहनी चाहिये और जो बहुत भगवान के नज़दीक का व्यक्ति होगा उसको ही यह आँख नसीब होगी ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 222

अगले दिन सुबह- सुबह अशोक एवम् दिनेश आ गये , जल्दी ही आ गये । मैंने कहा , “रात सोये कि जगते ही रहे सुबह के इंतज़ार में । ”

वह लोग थोड़ा झोंप गये ।

अशोक - “ सर अब जब सुबह चलना ही था तो सोचा यहीं नाश्ता भी कर लेंगे और जो कल लिखा है वह दिखा भी देंगे । ”

मेरे भाई की तरफ देखकर अशोक ने कहा , “ जलेबी का जुगाड़ बनाओ । ” भाई बोला , “ ले आता हूँ भैया । ” अब पैसा तो कोई समस्या रह नहीं गयी थी , मेरे कमरे की आलमारी से यह सब पैसा निकालते ही रहते थे । माँ कई बार कह चुकी थी , तुम पैसे पर ध्यान रखो पैसा बच्चों को बिगाड़ देता है , यह सब मनमर्जी का खर्च करते रहते हैं । मैंने बहुत पैसे की तंगी देखी है इसलिये मुझे लगता था इनको आराम का जीवन थोड़ा मिल जाए तो क्या ख़राबी है । कौन सा इतना बड़ा पैसा है कि कोई बिगड़ जाएगा ।

हम लोग सुरुचि मिश्रा के घर पहुँचे । मैं घर नहीं जानता था पर दिनेश जानते थे । पहली ही मुलाक़ात सुरुचि के पापा से हो गयी और पूरा दिमाग़ हरा हो गया । वह एक अलगै प्राणी थे । उनके कई लड़कियाँ थीं शायद इसलिये वह लड़कों के प्रति एक अविश्वासी भाव रखते थे , मजाल है कोई लड़का घर के नज़दीक फटक जाए और अगर किसी ने दुस्साहस कर लिया तब तो उसकी एक- दो पुष्ट तो वह तार ही देंगे । पाकिस्तान की सीमा से कश्मीर में घुसा आतंकवादी तो सुरक्षा बल की निगाहों से शायद बच जाए पर कोई लड़का चार सौ मीटर की गली की परिधि में आ जाए तब वह उनकी शंकालु चक्षु के लाल डोरों से निकले करोधाग्नि युक्त प्रसाद से बच ही नहीं सकता । ऐसे में तीन लड़के दरवाज़े की घंटी बजाकर खड़े हों , ऐसा दुस्साहस तो आजतक किसी ने किया ही नहीं । उन्होंने , लान के ऊपर वाले बरामदे का गेट खोला और बड़े ही कर्कश शब्दों में पूछा , क्या काम है ?

दिनेश ने ही घंटी बजायी थी उसने कहा , “ सुरुचि मिश्रा जी से मिलना है । ”

पापा - “ क्यों? क्या काम है ? ”

अब इस प्रश्न के लिये तो कोई तैयार ही नहीं था । परीक्षा में बगैर पढ़ा हुआ प्रश्न आने पर जो हालत छात्रों की होती है वही हम सबकी हो गयी ।

अशोक - “ अंकल जी सुरुचि मिश्रा से मिलना है । ”

पापा - “ एक ही बात तुम सारे लोग कहोगे क्या बारी - बारी से , यह तो उन्होंने कह दिया , वही तुम भी कह रहे हो । क्यों मिलना है ? ”

अशोक - “ अंकल जी हर कोई आदमी काम से ही नहीं मिलता , कई बार लोग बगैर काम के भी मिल लेते हैं । यह बगैर काम के ही मिलना समझ लीजिये । ”

पापा - “ बगैर काम के मिलने वालों को आने की कोई इजाजत नहीं है मेरे घर में । ”

अशोक - “ अंकल जी हर काम की इजाजत नहीं ली जाती , यह प्रेम-व्यवहार है जीवन में लोग मिलते ही रहते हैं । ”

पापा - “ ऐ प्रेम- व्यवहार से मिलने वाले जाओगे कि पुलिस बुलाऊँ । ”

अशोक - “ अंकल जी पुलिस क्या करेगी ? कौन सा क्रान्तृन तोड़ दिया हमने ? पर वैसे आप बुला लीजिये पुलिस , दरोगा तो हम लोगों को सेल्यूट मारते ही रहते हैं , हम कितना भी रोकें । जिले के एसडीएम डिप्टी एसपी सब अपने ही आदमी हैं । थोड़ा अंदर आकर बात कर लेते हैं । ”

पापा जी बाहर निकल आए और अति गुस्से में आ चुके थे , मैंने बात सँभालते हुये कहा , “ मेरी कोई रुचि किसी से व्यक्तिगत मिलने में नहीं है आप दो मिनट सुन लें , हम लोग चले जाएँगे आप बेवजह का गुस्सा कर रहे हैं । ”

पापा - “ मैं बेवजह का गुस्सा कर रहा हूँ । ”

इतने में सुरुचि की माँ बाहर आ गयी , वह बहुत ही सौम्य लग रही थीं । वह बोली क्या बात है ?

मैं - “ आंटी जी कोई खास बात नहीं है । मैं अनुराग शर्मा हूँ । मैं इसी साल आईएएस की परीक्षा में सफल हुआ हूँ । कमिशनर इलाहाबाद सत्यानंद मिश्रा जी अपनी किताब का विमोचन कर रहे हैं उन्होंने यह कार्ड दिया है और कहा है देकर आ जाओ । वहीं कार्ड देने आया हूँ । ”

पापा - “ कार्ड दे दो , आप लोग जाओ । इसके लिये सुरुचि का क्या काम ? ”

अशोक - “ अंकल जी जिसका कार्ड है उसको ही देंगे न । ”

पापा - “ कार्ड तो हमारा ही होगा , दे दो हमको । ”

अशोक - “ अंकल जी आप का कार्ड नहीं है । आपको बुलाया गया है कि नहीं यह मेरी जानकारी में नहीं है , यह कार्ड सुरुचि जी का है । ”

पापा - “ वह मुझे जानते हैं , मेरा भी कार्ड आ रहा होगा । ”

अशोक - “ अंकल जी आपका कार्ड तो हमको पता नहीं , वह आयेगा कि नहीं , पर जब आयेगा तब आप ले लीजियेगा , यह तो आप का है नहीं कार्ड / वैसे चार ज़िलों के मालिक हैं कमिशनर साहब बहुत से कर्मचारी- अधिकारी काम करते हैं साहब के नीचे , अब किस- किस को वह बुलायेंगे यह तो वही बता सकते हैं , हमको तो इसका कोई अता-पता है नहीं । ”

सुरुचि की माँ- “ अनुराग जी आप ब्राह्मण हो ? ”

अशोक -“ आंटी जी यह बहुत उच्च कोटि के ब्राह्मण हैं । ”

आंटी - “ आओ बेटा अंदर आओ / यह तो देखते भी नहीं कौन आया है , बस जो दिखा चालू हो गये / आओ सुरुचि को बुलाती हूँ । ”

अशोक ने दिनेश से कहा , “ यह तो ग़ज़बै आइटम है यार , सुबह पूरी ख़राब कर दी । ”

कार्ड सुरुचि के पापा ने ले लिया और पढ़ने लगे / कार्ड अच्छा छपा ही था / नाम बड़े- बड़े लोगों का लिखा ही था / राज्यपाल- मुख्य अतिथि, विधान सभा स्पीकर- अध्यक्ष ।

पापा -“ कौन - कौन आ रहा कार्यकरम में ? ”

दिनेश - “ अंकल जी कौन नहीं आ रहा यह पूछिये । ”

अशोक - “ अंकल जी , आप यह समझ लीजिये सब आ रहे हैं जिसको भी आप मानते हैं कि वह मानिंद लोग हैं , परदेश के । ”

पापा - “ आप लोग कमिशनर को कैसे जानते हैं ? ”

अशोक - “ अंकल जी हम लोग घर के ही आदमी हैं , यह समझिये / यह कार्यकरम हमारा ही है । ”

सुरुचि की माँ- “ तुम लोग घर के आदमी कैसे हो गये ? क्या कोई रिश्तेदारी है ? ”

अशोक - “ हाँ आंटी जी , एक बौद्धिक रिश्तेदारी है । ”

सुरुचि की माँ - “ वह क्या होती है ? ”

अशोक - “ जो किताब का नाम लिखा है जिसका विमोचन हो रहा है , उसको सर ने पूरी संपादित की है या यों कहें पूरी किताब को सर ने एक नया रूप दिया है , यह किताब में लिखा भी है प्राक्कथन में , वह पढ़ लीजियेगा , बहुत दिव्य अक्षरों में लिखा है । ”

पापा - “ यह दिव्य अक्षर क्या होता है ? ”

अशोक - “ मतलब मोटा - मोटा बहुत उचित जगह लिखा हुआ , अलंकारपूर्ण भाषा में । ”

पापा - “ जब यह इतने क्राबिल हैं तब यह खुद लिखकर क्यों नहीं छापते अपनी किताब , दूसरों की किताब क्यों लिखते हैं ? ”

अशोक - “ अंकल जी अगली बार कार्ड सर की किताब के विमोचन का लेकर आऊँगा , इस बार कार्ड सुरुचि के साथ - साथ आपका भी लाऊँगा । ”

पापा - “ मेरा भी कार्ड आ रहा होगा , साहब मुझको अच्छे से जानते हैं । ”

अशोक - “ न भी मिलेगा कार्ड तब भी आप आ जाइयेगा, हम लोग रहेंगे ही वहाँ पर । ”

पापा - “ मैं क्लास वन अधिकारी हूँ , कार्ड मेरा आयेगा । ”

अशोक - “ अंकल जी मैं तो बेरोज़गार आदमी हूँ , मुझको क्लास वन - क्लास टू का भेद तो आता नहीं , पर एक ही कार्ड मिला और एक ही नाम लिखा मिला , वही लेकर आ गये । हो सकता है आपका भी कार्ड चला हो , आ जायेगा देर - सबेर । ”

आंटी जी ने नौकर को आवाज़ दी और कहा , “ज़रा चाय बनाना और सुरुचि को भेजना कहना कोई मिलने आया है । ”

सुरुचि मिश्रा गले में दुपट्टा लपेटे आधा दुपट्टा ज़मीन की तरफ लटकता हुआ , चेहरे से टपकती बौद्धिकता , बाल कानों से थोड़ा नीचे , आसमानी रंग की क़मीज़ , कानों में बड़े- बड़े लटकते हुये बाले हवा के सहारे सरल आवर्त गति तरंगित , चाल में एक आत्मविश्वास , रंग गेहुआँ , दोनों हाथों में दो - दो चूड़ियाँ , माथे पर एक बिंदी और एक सिंहावलोकन करती आँखें जिसमें एक रौब था , शायद नव सफलता से उपजा रोब ।

मैंने दोनों हाथ जोड़कर कहा , “मैं अनुराग शर्मा हूँ और मैं इस किताब के विमोचन के लिये कमिशनर सत्यानंद मिश्रा की तरफ से आमंत्रित करने आया हूँ और उन्होंने व्यक्तिगत अनुरोध किया है आपकी उपस्थिति का । वह स्वयमेव आते पर कार्य की व्यस्तता की वजह से न आ सके । ”

पापा - “ साहब खुद आ रहे थे ? ”

मैंने उनकी बात की अनसुनी कर दी , कौन बहस करें यह सोचकर ।

सुरुचि- “ मैं जानती हूँ आपको , हम लोग मेडिकल के दिन एक साथ थे याद हैं , बहुत मज़ा आया था । वह जो कुंडली देखने वाले सर थे वह कहाँ हैं ।

मैं - वह चिंतन उपाध्याय सर है , वह भी आ रहे हैं । ”

सुरुचि-“ वह जो बहुत मज़ाकिया थे एसडीएम बाराबंकी सर , उनसे मुलाक़ात फिर हुई ? ”

मैं - हाँ हुई है , वह भी आयेंगे विमोचन कार्यक्रम में । ”

पापा - “ यह सब लोग कमिशनर साहब को जानते हैं क्या ? ”

अशोक - “ अंकल जी यह सब अनुराग सर को जानते हैं और सर सबको आमंत्रित कर रहे हैं , अंकल आप एक सरलीकृत भाषा में बगैर लाग- लपेट के यह समझिये , सर भी एक सह लेखक ऐसे हैं । ”

सुरुचि -“ मैं अपनी मम्मी को लेकर आ जाऊँ ? ”

दिनेश - “ आप लेकर आ जाइयेगा , हम लोग वहाँ रहेंगे ही । ”

पापा - “ हमारा भी कार्ड आता होगा , साहेब हमको जानते हैं । ”

अशोक - “ अंकल जी आता ही होगा , जब साहब जानते हैं आपको , जब भी अगली घंटी बजेगी बस समझिये कार्ड आ गया । ”

सुरुचि- “ यूनिवर्सिटी रोड पर आपकी कोचिंग का पोस्टर देखा था और सुना है बहुत अच्छी चल रही और आप पढ़ा भी बहुत अच्छा रहे हैं । मैं डब्ल्यू एच जाती रहती हूँ । शाशि दी से मुलाक़ात हुई थी उन्होंने बताया कि वह दो- तीन दिन गयी थीं और काफ़ी भीड़ थी कोचिंग में । ”

मैं - “ सब ईश्वर की कृपा है । ”

दिनेश - “ आप भी आयें कभी । ”

अशोक - “ आइये सुरुचि जी देखें शहर का नव प्रयोग । ”

पापा - “ अभी इनको आता ही क्या होगा जो पढ़ा रहे , ऐसे ही टाइम पास कर रहे होंगे । ”

अशोक - “ अंकल जी आप भी आइये देख लीजिये टाइम पास पढ़ाई कैसी होती है , ज्ञान जब भी मिले , जैसे भी मिले , जहाँ भी मिले ले लेना चाहिये । ”

सुरुचि की माँ- “ अच्छा है पढ़ा रहे हैं , लोगों को दिशा मिलेगी । सुरुचि तो बहुत परेशान थी जब तैयारी कर रही थी । कोई मिलता ही न था बताने वाला । अंगरेज़ी और मनोविज्ञान इलाहाबाद में बहुत ही कम लोग लेते हैं । इस शहर में मार्गदर्शन ठीक से नहीं मिलता । पहली बार सुरुचि इंटरव्यू से लौट आयी थी , इसको पता ही नहीं था कैसे इंटरव्यू की तैयारी की जाती है । आप क्या पढ़ाते हैं ? ”

मैं - “ सभी कुछ पढ़ाता हूँ जो भी लोग चाहते हैं पढ़ना पर इतिहास मुख्य रूप से पढ़ाता हूँ । एक सही दिशा नये छात्रों को देने का प्रयास कर रहा हूँ । ”

पापा - “ पैसा लेते हैं कि मुफ्त में जनसेवा है ? ”

अशोक - “ अंकल जी अब किसी की देह तो पिरा नहीं रही है कि बेवजह पढ़े - पढ़ाये , पैसा तो लेंगे ही । ”

पापा - “ कितना पैसा लेते हो ? ”

अशोक - “ अंकल जी बस इतना लेते हैं कि नून - तेल - लकड़ी का जुगाड़ हो जाये , बाकी बहुत पैसा लेकर कौन आपके ऐसा बड़ा आलीशान मकान बनवाना है । ”

सुरुचि की माँ - “ सब पूछ लीजिये , अरे पढ़ा रहे हैं यही क्या कम है । पैसा देकर भी सही रास्ता मिल जाये यही एक अहसान कर रहे हैं , यह लोग । ”

अशोक - “ आंटी जी पढ़ाने में कोई लोग नहीं है , सर अकेले ही पढ़ा रहे हैं । ”

सुरुचि - “ अकेले पढ़ाना आसान नहीं है , मैं यूजीसी स्कालर हूँ , मुझे पढ़ाना अच्छा लगता है , मैं भी पढ़ाना चाहती हूँ । अगर आप कहें तो दो - तीन क्लास मैं भी ले लूँ । ”

मैं - “ ज़रूर .. जब भी चाहें आप आ जायें , क्लास तो रोज चलती ही है । ”

हम लोग चाय पीकर चलने लगे , सुरुचि के पापा ने दिनेश से कहा , “बेटा मेरा भी कार्ड होगा तुम ले आकर दे देना , कहीं भीड़- भाड़ में रह न जाय , कमिशनर साहब मुझे अच्छे से जानते हैं । कार्ड भेज रहे होंगे पर वह व्यस्त होंगे तुम ले आकर दे देना मुझको । ”

दिनेश - “ जी अंकल जी । ”

हम लोग बाहर निकले , अशोक ने कहा , “ सर अंकल जी एक रूपया में तीन अठन्नी भँजाते होंगे , देखिये समझ गये कि दिनेश ही कार्ड देंगे । मैं तो लाकर दूँगा नहीं । सर पहली बात तो अंकल जी कार्ड- वार्ड कुछ होगा नहीं और अगर होगा भी तब फाड़ के फेंकवा दीजियेगा । मैं बड़े बाबू से लिस्ट देख लूँगा आज । मुझे पूरा विश्वास है इनका कोई नाम तो होगा नहीं और अगर होगा तब सुलेखा स्याही में कोयला डालकर और काला करके गाढ़ी स्याही से पोत दूँगा नाम इनका । सर यह क्या पढ़ायेंगी , यह अंग्रेज़ी ही ज्यादा बोलती हैं , हिंदी में सहज हैं नहीं । सर इनसे जनरल अंग्रेज़ी पढ़वा दीजिये , उसमें भी तो हम लोगों को समस्या है ही । ”

दिनेश - “ यह बहुत ही मेधावी छात्रा हैं , मैं जानता हूँ इनको । यह जो भी पढ़ायेंगी अच्छा ही पढ़ायेंगी । सर मैं इनके पापा को इतना दोष नहीं दूँगा , थोड़ा इलाहाबाद के लड़कों के पास लड़कियाँ को लेकर संजीदगी कम है । मेरे मुहल्ले में एक आदमी के पाँच लड़कियाँ हैं , लड़कों ने पंचकन्या चौराहा नाम रख दिया है उनके घर के चौराहे का और ऊट-पटांग बोलते भी रहते हैं । ”

मैं - “ सब ठीक है पर यह तो कुछ ज्यादा ही शक्की हाँ । यार इ बड़ा चकल्लस का काम है विमोचन में आमंत्रित करने का , मैं किसी लड़की के घर नहीं जाऊँगा अब आमंत्रित करने । यह उनके पिताजी तो पूरी इज़्ज़त ही उतार दिये थे । चलो सुभाष की चाय पीते हैं , पूरा मूड ख़राब कर दिया । ”

अशोक - “ आंटी जी समझदार है , कैसे क्रायदे से पूछ लिया कि , आप बराह्मण हो । जैसे ही आपने हाँ कहाँ तुरंत माहौल बदल गया । ”

मैं - “ ऐसा क्यों? ”

अशोक - “ सर सुरुचि मिश्रा के लिये वर तो चाहिये ही । अब आपसे बेहतर उम्मीदवार इस शहर में आज के दिन तो कोई है नहीं । ”

मैं - “ मारो गोली ऐसे रिश्ते को , यह रिश्ता ससुर के नाम पर ही अस्वीकार करने लायक है । पता चला विवाह के बाद भी पूछ रहे , मेरी लड़की को लेकर तुम कहाँ चले गये ।

सुभाष ज़रा चाय पिलाना अच्छी सी , पूरा मूड आफ कर दिया । ”

अशोक - “ सर अभी पता नहीं इनको किससे टकरा रहे , कल ही स्पैंड हो जायेंगे । ”

मैं - “ एक तो तुम अशोक हर आदमी को स्पैंड कराने पर लगे रहते हो । छोड़ो यह सब फ़ालतू काम , सर का विमोचन हो जाय जान छूटे । इनका कार्ड फ़ाड़कर फेंक देना अगर होगा । बड़े बाबू को लेकर आना मेरे पास लिस्ट लेकर । इनको तो नहिय देना है कार्ड । यह कार्ड ले लेंगे और पूरे विभाग में हल्ला करेंगे साहब से मेरा घरेलू ताल्लुक है । यह अवसर देना ही नहीं है इनको । बताओ कह रहे पुलिस बुला दूँगा । इसीलिये इलाहाबाद की लड़कियाँ कुछ सीख नहीं पाती , सारी क्राबिलियत के बाद भी । अगर ऐसे पिता होंगे तब लड़कियाँ कैसे लोगों से मिलकर सीखेंगी और कैसे आगे जायेंगी । यह परीक्षा अकेले कमरे में बंद होकर आप नहीं दे सकते , आपको एक पीयर गरूप चाहिये । इतनी पिछड़ी हुई मानसिकता है इनकी । मेरी भी बहन है , मैं तो आज तक कभी न कहा कि कोई लड़का न आये । उससे जो भी कहता है मुझसे मिलने को वह कह देती है घर आ जाना । वह अपने साथ के लड़कों को लेकर आती भी है कि भैया इनको बता दो कुछ , यह परीक्षा देना चाहते हैं । हम लोग परीक्षा देने वाले लड़के भी हो सकते थे , हम चले गये पूछने अगर परीक्षा के बारे में तो कौन सा अपराध कर दिया । इनकी माँ

समझदार हैं । सुरुचि मिश्रा कितनी भी तेज हों पर यह समाज के किस काम की जब तक वह लोगों की मदद न करें । वह अगर करना भी चाहें तब भी नहीं कर सकतीं, दरवाजे पर ही चक्रव्यूह के सारे द्वार लगा दिये हैं । हम लोग कमिश्नर साहब का आमंत्रण न ले गये होते तब तो बैरंग ही वापस आते । “

अशोक - “ सर उनकी माँ ने कितने लहाई हुई भाषा में पूछा था , आप ब्राह्मण हो । सर आपके उम्मीदवारों की सूची बढ़ रही है । ”

मैं “ महामायी सका जायें ऐसी सूची में , यह तो विवाह के बाद भी तंग करेंगे । ऐसा ससुर नहीं चाहिये । मेरी माँ तो लाठी ही चला देगी ऐसे समधी पर । अब समधी - समधन लड़ें ऐसा रिश्ता कौन बनायेगा । सुभाष एक चाय और पिलाओ यार .. आज शाम की क्लास भी ठीक से अभी तैयार नहीं है । ऐसा करो तुम लोग एनझ्झा चलो लोगों को निपटाओ राजेश्वर सिन्हा के पास मत जाना वह भी अलग ही कार्टून हैं । मैं आता हूँ सर सुन्दर लाल होस्टल होकर । मैं जैसे ही होस्टल में प्रवेश किया गेट पर ही अमित चौधरी टकरा गये वहीं अमित चौधरी जो मुझसे कहे थे , “ I don't make notes and not aware of hindi medium books ” ..

पर अब तो समय का चक्र घूम चुका है । जीवन में अंग्रेजी की साँसों में ज्यादा आक्सीजन होने की मान्यता रखने वाला हिंदी के द्वार पर सफलता की भीख माँग रहा । वह हिंदी साहित्य एक वैकल्पिक विषय के रूप में लेना चाह रहे हैं । अब हिंदी साहित्य एक वैकल्पिक विषय के रूप में लेना है तब तो अनुराग शर्मा के ज्योतिलिंग पीठ पर सिर नवाना ही है । एक नया विधाता शहर में जन्म ले चुका था और उसकी मान्यता उसके भक्त किंवदंतियों के सहारे स्थापित कर रहे थे । कभी मैं जिसके समुख कातर था वह आज मेरे समक्ष अति निरीह था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 223

सफलता में एक नशा होता है , उन्माद होता है और एक सुरुर रग- रग में व्याप्त होता है , यह सुरुर आप में ही नहीं आपके हित- शुभचिंतक में भी समाहित हो जाता है । असफलता में एक निराशा - हताशा व्यक्ति के पूरे व्यक्तित्व में व्याप्त हो जाती है जो बेचैनी एवम् छटपटाहट के साथ एक व्यग्रता भी दे देती है , यह उस व्यक्ति में ही नहीं उसके पूरे परिवेश को अपने आवरण में ले लेती है । यह बेचैनी - छटपटाहट - निराशा - हताशा आप में से होती हुई आपके निकटतम लोगों में संवहित होती रहती है , और

जैसे - जैसे समय बीतता है यह तीव्रतर होती रहती है और एक स्वयम में अविश्वास भाव जन्म लेने लगता है । इस भाव को हटाना एक बहुत ही संघर्षयुक्त कठिन प्रक्रिया है । यह सफलता- असफलता की व्याख्या ही तो है जो निराला राम की शक्तिपूजा में राम के माध्यम से कर रहे । एक महामानव , मर्यादा पुरुषोत्तम कह रहे ...

धिक जीवन को जो पाता ही आया है विरोध

धिक साधन जिसके लिये सदा ही किया शोध ।

एक महानायक अवसाद में है , पीड़ा में है , जीवन की व्यर्थता का भान हो रहा है उसे और शक्ति संधान कर रहा जीवन के लक्ष्य हेतु ।

अमित चौधरी कभी सफलता के रथ पर सवार थे पर आज वह निरीह हैं । जिसको कभी अपने कमरे में वह बैठाने को तैयार न थे और एक निगाह भर कर देखना भी गवारा न था वह एक आपदा प्रबंधक के रूप में दिख रहा था । अमित चौधरी ने मुझको देखते ही अपनी वाणी में सम्पूर्ण मधु , शारीरिक क्रिया में भरत की सम्पूर्ण नम्रता और चेहरे पर तितलियों की मनोहर आभा लिये मुझसे बोले , “ मेरे अहो भाग्य आज आपके दर्शन हो गये । जो तुमने किया वह आज तक किसी ने न किया । मेरे होस्टल के कुछ लड़के तुम्हारी कोचिंग में जाते हैं , उनके पास तुम्हारी प्रशंसा के लिये शब्द कम पड़ जाते हैं । एक नायाब अभिनव प्रयोग किया है वह भी धन की गौण इच्छा के साथ , यह अतुलनीय है । मेरी सहायता करो आप । मैं हिंदी लेना चाह रहा । मैं सत्य प्रकाश मिश्रा सर के पास गया था , मेरे साथ मेरे पिताजी भी गये थे , इस अनुरोध के साथ कि मुझे सर पढ़ा दें , किसी भी शर्त पर । सर पढ़ाने को तैयार न हुये । तुम्हारा नाम लिया और कहा उससे मिलो वह सब जानता है और सही दिशा दे देगा , कोई दिक्कत आयेगी तो आना मैं यह बैठाकर आईएएस की परीक्षा के लिये पढ़ाने का उबाऊ काम नहीं कर सकता । तुमने कैसे हैंडल किया था उनको, कैसे उनको मनाया था पढ़ाने के लिये ? ”

मैं “ सर मेरे पास इतने संसाधन न थे कि मैं कोई कोचिंग कर सकूँ या किसी से पढ़ने के बारे में सोच भी सकूँ । मैं विज्ञान का छात्र था , मुझे अंग्रेजी आती न थी । विज्ञान के विषय लेता तब अंग्रेजी में लिखना पड़ता जो मेरे बस की बात थी नहीं । वैसे भी गणित , भौतिक विज्ञान मात्र बीएससी करके ली नहीं जा सकती । मेरी हिंदी में रुचि थी और पाठ्यक्रम में कबीर , सूर , तुलसी , परेमचंद का नाम पढ़कर जाना समझा सा पाठ्यक्रम लगा और काफी कुछ मैंने पढ़ा ही था पहले शौकिया रूप में । अयोध्याकाण्ड मेरी माँ ही पढ़ाया करती थी बचपन से और राम किंकर उपाध्याय जी का प्रवचन सुनने मैं अशोक नगर जाया करता था । मुझे अयोध्याकाण्ड रटा ऐसा था । मेरी माँ

कहा करती थी कि मानव मन की सबसे सुंदर आदर्शात्मक व्याख्या अयोध्याकाण्ड में ही है । सर अंग्रेज़ी न जानना और हिंदी में रुचि होना मेरे पक्ष में चला गया । पर सर आपका तो हिंदी से 36 का आँकड़ा है । आप तो मुझसे ही कहे थे कि मैं हिंदी की किताबें पढ़ता ही नहीं । अब ऐसे दृष्टिकोण के साथ एक लंबा जीवन आपने जिया है, वह रातों रात परिवर्तित कैसे होगा ? भाषा माँ सदृश होती है, उसकी माँ के रूप में उपासना की जानी चाहिये अगर उस पर अधिकार प्राप्त करना हो और उससे एक लगाव भी होना चाहिये । मेरी माँ को अंग्रेज़ी नहीं आती, वह विदेशी परिधान नहीं पहन सकती, वह क्लासी नहीं है, कम पढ़ी लिखी है पर क्या वह सम्मान की अधिकारिणी नहीं है ? क्या वह अपनी कमियों के कारण हेय है ? यह तमाम अंग्रेज़ी के जानकार हिंदी को दुत्कार देते हैं, हिंदी कीं कमियों को निकालकर । वह कमी है या नहीं, यह एक अलग विवेचन का विषय पर अगर वह कमी है तब भी क्या वह अस्वीकार्य है ? आज तक मैंने कभी नहीं सुना किसी अच्छी अंग्रेज़ी बोलने वाले के बारे में यह कहा जाए कि वह कठिन अंग्रेज़ी बोलता है, बनिस्बत लोग उसका उदाहरण देते हैं कि वह अच्छी अंग्रेज़ी बोलता है और ऐसा बोला जाना चाहिये । सर आपने ही मुझसे कहा था, थोड़ा आसान हिंदी बोलो मेरे समझ में यह तुम्हारी हिंदी कम आती है । सर आप को हिंदी नहीं आती आप नहीं सीखेंगे और हमारी हिंदी स्तरीय हिंदी है तो वह एक दोष के रूप में देखी जा रही है, ऐसा क्यों? आप शहर में देखो, हर चौराहे पर लिखा है चार हज़ार रूपये में धुँआधार अंग्रेज़ी सीखें, पाँच हज़ार में बेधड़क अंग्रेज़ी बोलें, आपका ध्यान किधर है अंग्रेज़ी का ज्ञान इधर है । आपने कभी हिंदी सिखाने का कोई संस्थान देखा ? अगर नहीं तो क्यों ? हमारी मानसिकता इसकी ज़िम्मेदार है । हमको अच्छी स्तरीय हिंदी नहीं आती यह लोग एक गर्व की तरह बोलते हैं और घटिया, व्याकरण के प्रतिमानों से दूर टूटी - फूटी अंग्रेज़ी बोलना एक व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्ष के रूप में देखा जाता है । आप इसी यूनिवर्सिटी रोड पर पूछिये हिंदी की वर्णमाला, आप खुद देखें कितने लोग बता पाते हैं और जो न बता पायेगा वह गर्व से कहेगा, “ यार यह हिंदी बहुत अजीब है कौन याद रखें और इसका काम ही क्या है जब परीक्षा देनी ही नहीं है इस भाषा में । भला हो सर उस महान आत्मा का जिसने भारतीय भाषाओं को सम्मान दिलाया, ईश्वर उनको सद्गति दे, मैं आज आपके सामने ससम्मान खड़ा हूँ, नहीं तो सर मैं आवाज़ देता और आप कहते मुझे अंग्रेज़ी में आवाज़ दो मैं हिंदी में दी आवाज़ नहीं समझ पाता । सर यह मेरी पीड़ा है जो मैंने बयाँ की, इसमें आपके प्रति मेरा कोई विरोध और दुराव भाव नहीं है । मैं कई बार सोचता हूँ शायद ईश्वर ने मेरी क्षमताओं से बेहतर सफलता इसलिये दी कि वह चाह रहा था कि मातृभाषा का सम्मान बढ़े नहीं तो कोई ऐसा कारण मुझे नहीं दिखता कि आपके ऐसे ज्ञानी का नाम समाचार पत्र में न छपे और मेरे क्रसीदे हर ओर गढ़े जायें । ”

अमित चौधरी - “ अनुराग मेरा हिंदी भाषा से कोई विरोध नहीं है । मैं अंग्रेज़ी स्कूलों में पढ़ा और उसी भाषा में ज्यादा सहज हूँ । हिंदी आती है मुझे , मैं हिंदी साहित्य पढ़ना चाह रहा भले ही एक परीक्षा में सफलता के लिये ही सही , तुम मेरी मदद करो । ”

मैं - “ सर जो भी मेरी हैसियत है मैं अवश्य करूँगा । ”

अमित चौधरी - “ तुम्हारे पास नोट्स हैं कुछ , दे सकते हो ? ”

मैं उनका चेहरा देखने लगा और वही बात मस्तिष्क में धूमने लगी , “ न तो मैं नोट्स बनाता हूँ और न बनाने की सलाह देता हूँ । ”

पर मैंने सोचा , अगर यही मैंने भी कह दिया तब इनके और मेरे में क्या फ़र्क़ रह जायेगा । मैंने कहा , “ सर बनाया है और दे दूँगा । सर सत्य प्रकाश सर का एक व्याख्यान नाटक - रंगमंच - कहानी - उपन्यास- कविता पर होने जा रहा है मेरी ही कोचिंग में , आपका दिल करेगा तो सुन लेना , वह बहुत काम आयेगा । ”

अमित चौधरी - “ बताना कब है , मैं ज़रूर आऊँगा । ”

मैं - “ सर वह पता चल जाएगा , उसको मैं बहुत प्रचारित करूँगा । मैं भी चाह रहा उस व्याख्यान को ज्यादा से ज्यादा लोग सुनें । वह सिविल सेवा परीक्षा के लिये ही होगा और पिछले साल के सारे आये हुये प्रश्न और आने संभावित प्रश्नों का उसमें समावेश होगा । मैं प्रश्न बनाकर सर को दे रहा हूँ । ”

अमित चौधरी - “ मुझे तुम किसी तरह से कहलवा देनी , वह मिस न हो जाये मुझसे । ”

मैं - “ नहीं होगा सर । ”

अमित चौधरी - “ नोट्स कब दोगे ? ”

मैं - “ सर मैं इलाहाबाद के कमिशनर सत्यानंद मिश्रा की किताब के विमोचन में व्यस्त हूँ । उस कार्य को संपन्न होते ही फोटोकापी कराकर आपको आकर दे जाऊँगा । सर आप भी आयें , यह पाँच कार्ड आप रख लें , आप किसी को बुलाना चाहें तो बुला भी सकते हैं । ”

अमित चौधरी बहुत ही प्रसन्न हुये , वह मुझको चाय पिलाने ले गये और चाय पीते - पीते कहा , “ अनुराग असली वाला नोट्स देना । मुझको कोई नक़ली टाइप नोट्स न दे देना । यहाँ लोग असली नोट्स नहीं देते । सब नक़ली दे देते हैं । ”

मैं - “ सर यकीन रखें मुझपर । मैं ना कह सकता था और कह सकता था कि न तो मैं नोट्स बनाता हूँ और न ही बनाने का सलाह देता हूँ । यह न कहकर मैंने नोट्स बनाने की बात स्वीकार की और कहा कि आपको दे दूँगा । ”

आपको नोट्स पढ़कर ही लग जायेगा यह किसी ने रात के अँधेरों में किताबों के महासागर की अतल गहराइयों में प्रवेश करके मोतियों की तलाश की है ।

अमित चौधरी प्रसन्नता के अतिरेक में थे । वह यह उम्मीद ही नहीं किये थे जो हो गया । उन्होंने कहा, “ अनुराग तुम मेरी हिंदी में मदद कर दो , बहुत संभावना है मैं अगले साल तुमसे एकेडमी में मिलूँ । ”

मैं “ ज़रूर सर आप आयेंगे । ”

अमित चौधरी जाने लगे मैं उनको जाता हुआ देख रहा था । मैं बिसमार्क बन रहा था , जिसको हरा दिया उससे क्या बैर ? वह तो शरणागत है , शरणागत को क्या हत करना और क्या उसका मर्दन करना । एक नया सशक्त समर्थक तैयार हो रहा था जो आने वाले दिनों में मेरी प्रशंसा के गीत गायेगा । एक गवैयों की फ़ौज मैं तैयार कर रहा था , क्षमतायुक्त चारण । मैं बगैर रणनीति के कोई काम करता ही नहीं । मेरी यह रणनीति थी अपने नोट्स को मनमोहन पार्क के फ़ोटोकापी वाली सारी दुकानों पर सुबह से शाम तक फ़ोटो कापी कराने की । लोग आयें और कहें मुझे अनुराग शर्मा का नोट्स चाहिये और नलिनी फ़ोटो कापी वाला कहे , ले लाओ 300 रुपया यह तैयार है । मैं पूरे बाज़ार को अपने नोट्स से पाट देना चाहता था । अमित चौधरी से बड़ा कोई नाम था नहीं आज अगले साल की परीक्षा के लिये , वह मेरे नोट्स की फ़ोटोकापी कराने वाला पहला परीक्षार्थी होगा और हर ओर एक शोर .. अमित चौधरी अनुराग शर्मा के नोट्स से पढ़ रहे ।

मेरा अपनी प्रशंसित सुनने की इच्छा बलवती हो रही थी , दिन - प्रतिदिन । मैं अहंकारी हो सकता था इसकी संभावना बहुत बढ़ रही थी ।

सर सुंदर लाल के बाद मैं एनझा होस्टल गया । कार्ड वहाँ बँट चुके थे मैं चयनित लोगों के पास गया और जब मैं राजेश्वर सिन्हा के कमरे में गया तब जिस तरह से मेरा स्वागत किया गया वह मुझे इस बात का एहसास दे गया कि मेरा क़द बढ़ चुका है । मेरी कोचिंग मेरी सिविल सेवा की सफलता पर चार चाँद लगा रही थी , मैं सत्य प्रकाश मिश्रा सर के व्याख्यान को बहुत प्रचारित कर रहा था । वह प्रचार मेरे सारे प्रयासों को एक अलग विश्वसनीयता दे रहा था । मुझे यह स्पष्ट दिखने लगा कि भारी भीड़ विमोचन कार्यक्रम में आयेगी । ईश्वर की सारी अनुकंपा मेरे साथ थी । मुझे मंच से बोलने का अवसर प्राप्त हो चुका था और मैं सबसे बेहतर बोलना चाहता था .. सत्यानन्द मिश्रा , राज्यपाल , स्पीकर सबसे बेहतर ही नहीं बहुत बेहतर । उस एनाउंसर का नाम हटाकर राजेन्द्र मिश्रा सर या राम प्रकाश

सिंह सर का नाम आगे बढ़ा रहा था मंच को पूर्ण साहित्यिक बनाने के लिये । मेरी महत्वकांक्षाओं को पलायन वेग (एस्केप वेलोसिटी) प्राप्त हो चुकी थी । मैं राजेन्द्र मिश्रा सर या राम प्रकाश सिंह सर से भी बेहतर बोलना चाहता था । मैं अपने लिये बड़े-बड़े मानदंड बना रहा था । मैंने अपना बार रेज कर दिया । एक बड़ी चुनौती इन साहित्यिक लोगों पर बीस पड़ने का प्रयास... जीवन एक रोमांचक मोड़ पर था .. वह रोमांच सिफ्ट में ही देख पा रहा था । मैं सूरज के रथ की तरह अपनी साइकिल को हाँकता हुआ घर की ओर चल पड़ा नज्म मन में पढ़ते हुये ...

ऐ नीला आसमां कुछ और ऊपर हो जा
मेरे हौसलों की उड़ान कुछ ऊँची है

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 224

मैं घर पहुँचा , आनेवाले कल को लेकर उत्तेजना आजकल मेरे अंदर हरदम व्याप्त रहती थी । मैं जीवन के एक ऐसे रोमांचक मोड़ पर था कि हर दिन मेरे जीवन में कुछ नया हो रहा था । कक्षा तो अपने आप में ही एक अलग सुरसुरी मेरे अंदर बनाती रहती थी । विमोचन था किसी और की किताब का पर उसमें मेरी अपनी कल्पना पेंगे बना रही थी । मेरे साथ मेरे घर के लोग भी अपनी - अपनी आँखों से नये - नये ख्वाब देख रहे थे । मेरे घर पहुँचते ही मेरी माँ का पहला सवाल “ कैसन बा सुरुचि ? हम कौनौं लड़की नाहीं देखा जौन आईएएस बनी होई । ”

मैं - “ जैसे लड़कियाँ होती हैं वैसे वह भी है । देख लेना विमोचन के दिन । ”

माँ - “ ऊ आये ? ”

मैं - “ माँ यह किसी साहित्यकार की किताब का विमोचन नहीं है , यह एक कमिश्नर की किताब का विमोचन है । लोग दौड़े- भागे आयेंगे । कोई किताब के लिये नहीं आ रहा सब एक नाम है कमिश्नर का जिससे लोग जुड़ना चाहते हैं , इसलिये आ रहे । ”

माँ - “ इ बात बा । नाम त साहेब के बहुत बड़ा हङ्गामे बा । का भवा सुरुचि के इहाँ ? ”

मैं - “ इतनी बेझज्जती हुई कि क्या बताऊँ । ”

माँ - “ का भवा ? ”

मैं - “ उनके पिता का दिमाग फिरा हुआ है । वह बेवजह बहस किये जा रहे थे जैसे हम लोग कोई कन्या हरण करने आये हों । ”

माँ - “ ऐसन काहे केहेन ओ ? ”

मैं - “ विधाता विचित्रै बना देता है किसी- किसी को । कह तो रहे थे कि मैं क्लास वन अफस्सर हूँ पर पता नहीं कैसे क्लास वन अफस्सर है , कोई इस तरह बात करता है ? ”

माँ - “ तू झगड़ा त नाहीं केहअ ? ”

मैं - “ बहुत सँभाला नहीं तो क्या पता हो ही जाता । उसकी माँ ने मामला सँभाल लिया । ”

माँ - “ शांति कि चिट्ठी आई बा । ओ लिखे हई कि हम पचे भिंसारे चलि देब और दुई तारीख के सँझा के चार - पाँच बजे तक पहुँच जाब । ”

मैंने चिट्ठी माँगी और आंटी की चिट्ठी पढ़ी । वह हमेशा लंबा ही लिखती थी । अनुराग लिखकर आगे !!!!! लगाती थी । कभी- कभी तो वह कई बार लगाती थी , इस बार कुछ ज्यादा ही लगा दिया ।

“ अनुराग !!!!!!!!!!!!!!!

जब से मैंने सुना तुम मंच से बोलोगे मेरी उत्सुकता तब से और बढ़ गयी है इस विमोचन कार्यक्रम को लेकर । शालिनी ने आहूजा साहब और अपनी माँ को भी यह बात बतायी । आहूजा साहब कह रहे थे मेरे पास दो दामाद हो चुके हैं । वह भी आना चाहते थे , पर जानते ही हो व्यापार में कितनी समस्या है । वह आ तो नहीं पा रहे पर उन्होंने शक्ति डिस्ट्रिब्यूशन वाले को कह दिया है । वह इनका एजेंट है और बता रहे थे कि वह बहुत बड़ा आदमी है , वह सारा इंतज़ाम देखेगा । मैं गाँव जाना चाहती हूँ , वह इंतज़ाम तुमने कर ही दिया होगा , तुम वैसे भी एक बहुत ज़िम्मेदार लड़के हो ही । जल्दी ही मिलती हूँ ..

शुभाशीष ”

मैं पत्र पढ़ ही कहा था कि माँ ने पूछा , “ शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन उहै जानसेनगंज वाला ? ”

मैं - “ हाँ , वही होगा । कोई और तो है नहीं । ”

माँ - “ उ त बहुतै बड़ा आदमी बा । ”

मैं - “ आंटी इतना बड़ा आदमी थोड़ी है वह । समधियान् एतना बड़ा, बेटा इतना काबिल । ऋषभ को देखना कैसे कपड़ा पहनता है , किस स्टाइल से रहता है । शालिनी तो शालिनी ही है । एक नयी दुनिया तुम देखोगी । ”

माँ - “ मुन्ना हम का बात करब ऐतना बड़ा- बड़ा मनई से । हमार समाज त ऐसन बा नाहीं । ”

मैं - “ माँ तू बहुत तेज है , सब सीख जायेगी । तुझे सब आता ही है यह बात - व्यवहार । पिताजी रहेंगे न घर में सँभालने के लिये । अपने इस अवारा बेटे को समझाओ सारा दिन धूमता रहता है । इससे कहना घर पर ही रहेगा , जब वह लोग आयेंगे । ”

माँ - “ मुन्ना बेटवा थोड़ा भाई - बहिन पर ध्यान द , ऐनहुन के पारि लगि जाय । नाहीं त बड़ी समस्या होये एक भाई ऐतना बड़ा और बाकी भाई - बहन काहेउ लायक नाहीं । ऐनहुन के कोचिंग लै जा , कुछ सीखबै करिहिं । ”

मैं - “ माँ बाँधे बनिया बाज़ार नहीं बसता है । यह इनको नहीं सोचना चाहिये । ”

माँ - “ बेटा ईश्वर सबको एक ऐसा नहीं बनावत हआ । अब सब अंगुली हाँथे के बराबर नाहीं होत हआ । थोड़ा ध्यान दै दअ नाहीं त आगे बहुत दिक्कत होये और हमका बुढ़ापा में बहुत दुख होये अगर ऐका हम दुखी देखब , वैसे तू दयालु हआ ध्यान रखबअ पर अपने पैरे पर ठीक से खड़ा होई जाय त संतोष होये । ”

मैंने देखा वह फिर भावुक हो रही थी । मैं उसको भावुक होने से बचाना चाह रहा था । मैंने बात बदलते हुये कहा , माँ एक सस्ता मद्दा सोफ़ा ले लो ।

माँ - “ मुन्ना बेंत के सोफ़ा मिल जात हआ सस्ता ओकरे ऊपर गद्दी लगाई देब । उहै लै लेब और नवाँ ताँत त कुर्सी में लगतै बा । ”

मैं - “ ठीक है माँ । ”

माँ - “ मुन्ना भैया के इहाँ चला जा । ओनहूँ के इहाँ कहि दअ आवै बरे । साहेबउ के भीड़ चाहबै करे । अपने भाभित के बोलाई लेहआ । अब बाबा के बस के त कुछ बा नाहीं , पता नाहीं कैसे ओकर जीवन कटे । ”

मैं - “ माँ समय ही नहीं है , कहाँ - कहाँ जाऊँ ? ”

माँ - “ कोचिंग बंद कै दअ एक - दुई रोज बरे , जबसे सुर्ख कहे हआ कभौं छुट्टी नाहीं लेहआ तू । ”

मैं - “ ठीक है चला जाऊँगा । दादू से कहना , कहीं जायेगा नहीं आज । ”

माँ - “ गवा बा कचहरी , आवै द त कहब । ”

दादू कचहरी गया था , वहाँ से वह फरगेंया के पास गया । उसकी माँ और फरगेंया की भौजी सगी बहनें थीं । दादू उनको मौसिया कहता था । उसके

पहुँचते ही फरगेंया ने कहा , “ आवअ बहादुर आवअ , सुना हअ तू कैशियर होई गअ हअ , आजकल तू रूपिया गिनत हअ । ”

दादू - “ मौसिया अब मुन्ना भैया के सेवा में हई । रूपिया हमहि लेइत हअ , भैया त बस विद्या बाँटई में लगा हयेन । ”

फरगेंया - “ बिमोचन के का समाचार बा , सुना मुन्ना सर्वे- सर्वा हएन । इ बतावअ ऐसन का बा ओनमें कि क़ब्ज़ियाये हएन सत्यानंद मिश्रा के ? ”

दादू - “ मौसिया बहुतै काबिल हएन मुन्ना भैया । ”

फरगेंया ने चपरासी को आवाज़ दी और कहा कि तनिक सजीवन के बोलाई दअ । राम सजीवन आ गये ।

फरगेंया- “ सजीवन इ दादू के त तू जनतै हअ, इ हमरे भौजी के सगै बहिन के बेटवा हअ । इ भयनवा के सगै मामा के बेटवा हअ । का कहत रहअ तू दादू ? ”

दादू - “ मौसिया मुन्ना भैया बहुतै काबिल हएन । ”

फरगेंया- “ उ कैसे ? ”

दादू - “ मौसिया जेतना आईएएस होई गअ हएन ओउ आवत हएन पढ़ै बरे । ”

फरगेंया- “ मेन फ़ायदा त सर्वेश लै गयेन । बड़ी रूपिया पीटने । ”

दादू - “ केतना पीटे होइहिं मौसिया ? ”

फरगेंया- “ सजीवन बतावअ केतना पीटे होइहिं ? ”

राम सजीवन - “ सात -आठ लाख से कम का पीटे होइहिं । ”

फरगेंया- “ सुनि लअ । सर्वेश के जीवन सुफल होई गवा । एक बात बतावअ / ”

दादू - “ का मौसिया ? ”

फरगेंया- “ सुना तोहार मुन्ना भैया तहसीलदार के एकौ करम नाहीं छोड़ेंगे, कुल कपड़ा उतारि देहे रहेन । का भवा रहा ? ”

दादू - “ मौसिया हम त रहे नाहीं, एहि बरे हमका कुछ पता नाहीं बा । का भवा रहा , तोहार त सूचना तन्त्र बहुत मज़बूत बा मौसिया । ”

फरगेंया - “ चलअ मामला रफ़ा - दफ़ा होई गवा बा , अब ओकर चर्चा केहे से कौनो फ़ायदा बा नाहीं । एक बात बताई, ई तोहार मुन्ना भैया बहुतै जलवा फैलाईहिं सेवा में । तनिक हमरौ जानि- पहिचान कराई दअ । ”

दादू - “ मौसिया आई जा कभौं, कराई देइत हअ । तू त घरे के मनई हअ । ”

फरगैंया- “ सुनि लेहअ सजीवन । “

सजीवन -“ हाँ फरगैंया भैया । “

फरगैंया - “ कब चली । “

सजीवन - “ जब आदेश करअ , हम त तोहरे पाछेन- पाछेन चलित हअ । “

फरगैंया - “ दादू काल हम और सजीवन अउबै, अपने बुआौ- फूफा से मिलवाई देहअ । “

दादू -“ आवअ मौसिया तोहार घरि हअ । “

फरगैंया-“ ई बिमोचन के का समाचार बा ? हम त सुना मुन्ना काम - धाम देखत हयेन । “

दादू - “ मौसिया , हमका ओकरे बारे में कुछ खास नाहीं पता बा । “

फरगैंया -“ का तू बिमोचन के काम में इनबालब नाहीं हअ ? “

दादू -“ नाहीं मौसिया । “

फरगैंया - “ एक काम लहावअ दादू । “

दादू - “ का मौसिया ? “

फरगैंया - “ दुई पास दिवावअ बिमोचन के , हम और सजीवन आवत चाहित हअ । “

दादू - “ कोशिश करब मौसिया । “

फरगैंया -“ कोशिश नाहीं , पक्का करअ , हम सजीवन के जबान देहे हई कि बिमोचन में तू चलबअ । ”

दादू - “ मौसिया तू काल अवतै हअ , बात होई जाए । “

फरगैंया- “ सजीवन रेडी होई जा । मटका के कुर्ता निकाल लअ , उहै पहिन के चलअ । एतना बड़ा जलसा होत बा , हमार पाच के रहब ज़रूरी बा । आफिस से साहब हमर साहब हझयै हयेन और भयेने आपन लपटियान बा । “

मैं शाम को साहब के पास गया साहब ने पूछा क्रिस्से अनुरोध करें मंच संचालन के लिये । मैंने कहा कि राजेन्द्र मिश्र सर संस्कृत निष्ठ हिंदी ज्यादा बोलते हैं और राम प्रकाश सिंह सर साहित्यिक । यह कहना आसान नहीं कि कौन बेहतर है । मैंने पीड़ी टंडन पार्क में राम प्रकाश सिंह सर को सुना है संचालन करते हुये , मुझे तो बहुत अच्छा लगा ।

सर -“ राम प्रकाश सिंह को ही कह देते हैं । “

मैं “ जी सर । ”

सर ने बड़े बाबू से कहा कि कलेक्टर को फोन मिलाओ । उन्होंने कलेक्टर से कहा कल ईसीसी चले जाओ और राम प्रकाश सिंह जी को कार्यक्रम मंच संचालन के लिये अनुरोध कर लो ।

मैं घर वापस आ गया । रात थोड़ी हो गयी थी पर मैंने सोचा मैं मामा का काम आज ही निपटा देता हूँ । मैं मामा के यहाँ दादू के साथ चला , कब मामा के यहाँ मैं पहुँच गया पता ही नहीं चला , पूरे रास्ते कोई बात न की दादू से मेरी आँखों के सामने धूम रहा था मंच .. मंच पर राज्यपाल.. स्पीकर .. कमिश्नर साहब .. राम प्रकाश सिंह सर मंच पर मेरा नाम उद्घोषित करते हये और मैं मंच की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ अपने भाषण के लिये एक उत्तेजना मेरे अंदर .. मेरा रोम-रोम स्पंदित होता हुआ .. दादू ने कहा भैया पहुँचि गये ..

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 225

मुझे कभी जीवन में इतना बड़ा मंच मिलेगा यह सोचा ही न था , वह भी 23/24 साल की उम्र में मिल जाना जब कमिश्नर, राज्यपाल, स्पीकर मंच पर और प्रदेश के नामचीन लोग सामने विशाल कक्ष में टकटकी लगाये नयन सुरों से सुनने को उत्कंठित हों , एक न देखा हुआ स्वप्न साकार हो रहा था । शायद इसीलिये कहते हैं कि अगर समय ठीक चल रहा हो तब उल्टे हाथ से फेंकी गयी कौड़ी भी सही परिणाम देती है । मेरे सामने पूरा मंच धूम रहा था और मुझे अपने चढ़ते कदमों के साथ- साथ तालियों की गङ्गड़ाहट की आवाज़ सुनायी पड़ रही थी । मेरी कक्षा के सारे छात्र मुझे सामने की कई क्रतारों में बैठे दिखायी दे रहे थे और मेरी माँ सामने की पंक्ति में विस्मयादिबोधक आवरण चेहरे पर लिये हुये तथा पिताजी एक गंभीर मुद्रा में मुझे सुनने को बेताब थी । मेरी आँखें भीड़ में सुरुचि, प्रतीक्षा, शालिनी . आंटी को तलाश रहीं थीं । एकाएक दादू की आवाज़ सुनायी दी , “ मुन्ना भैया साइकिल से उतरबअ कि बैठइय रहबअ ? ”

मेरी तन्द्रा टूटी और मैं मामा के विशाल भवन के बुर्ज की ओर देखने लगा । यह वह भवन था जिसके बारे में मेरी माँ कहा करती थी , “ मुन्ना तुहँ ऐसन मकान बनवायअ । ” पर अब इस मकान में रहने वाला अहंकार मेरे रहमों - करम पर ज़िंदा है । मैं अभी भी वापस अपने होश में न आया था । दादू ने फिर कहा , “ भैया अंदर चलअ । ”

मैं इस दूसरी बार उसके कहने के बाद सामान्य हुआ । दादू ने कहा , “ कहाँ खोई ग रहअ ? ”

मैं - “ कहीं नहीं बस दिमाग कई तरह की योजना बनाता रहता है । ”

दादू - “ भैया कम सोचा करअ । तू आजकल बहुतै सोचत हअ । ”

मैंने उसकी ओर देख कर कहा , “ जब जीवन में बहुत तेज दौड़ना होता है तब सुस्ताने का समय कम ही मिलता है । मैं बहुत ही तेज दौड़ना चाह रहा , मेरे पास वक्त कम है और दास्तानें कई बेताब हैं मेरी स्याहियों के लिये । ”

दादू - “ अब कौन सी लिखबअ ? ”

मैं - “ इंतज़ार करो । ”

दादू - “ हम त इंतजारै करत हई , हमार खेत बोवाई दअ , बहुत इंतज़ार होई गवा । ”

मैंने अंदर घर के घुसते- घुसते दादू की तरफ़ देखा और कहा “ जाओ बो लो , कह देना मुन्ना भैया ने कहा है । ”

दादू - “ बुआ कुछ कहे तब ? ”

मैं - “ मुन्ना भैया ने कह दिया बात ख़त्म । ”

दादू - “ तब हल चलवाई दई ? ”

मैं - “ हल - पटोहा सब चलाओ । ”

दादू - “ भैया कौनौं बात होए त स़भाल लेबअ न ? ”

मैंने उसकी तरफ़ देखा पर कुछ कहा नहीं , मैं बदल रहा था हर बदलते दिन के साथ । मैं खुदा तो नहीं पर खुदा का आशीर्वाद प्राप्त व्यक्ति हूँ , यह भाव बलवती हो रहा थे मेरे अंदर । कभी- कभी मैं खुँद से कहता था , “ वह वक्त आयेगा जब मेरे और रब के बीच कोई और नहीं होगा । मैं मानव की सत्ता को अस्वीकारने लगा था , यह बात सिर्फ़ मैं जानता था कोई और नहीं । मैं अब अपनी बात पर किसी “ ना ” को स्वीकार नहीं कर पाता था । यह एक बहुत बड़ा परिवर्तन मेरे अंदर आ रहा था । मैंने दरवाज़े के अंदर पैर रखते हुये कहा , “ जाओ जोत लो । जो कोई आयेगा कहना मुन्ना से बात करो । मैं भी तो देखूँ इस नाम का रसूख कितना है । ”

मैं वाक़ई हवा में उड़ने लग गया था । मेरे अंदर आपदा प्रबन्धक का जन्म हो रहा था । मेरी बात जिस तरह कमिश्नर साहब आँख बंद करके मान रहे थे उससे मैं आत्म श्लाघा और आत्म प्रवंचना की ओर बढ़ रहा था ।

हम लोग घर में प्रवेश किये , रात के साढ़े नौ बज चुके थे और इतनी देर में किसी का भी आना हर घर में थोड़ा विस्मय देता ही है । पर यहाँ तो निश्चित ही दे गया क्योंकि इतनी देर रात तो मैं शायद एकाध बार ही आया ही होऊँगा और संबंध भी ऐसे न थे कि जब मन करे चले आओ । मेरी माँ के अक्खड़ स्वभाव के कारण मेरे घर के और मामा के घर के संबंध मधुर न थे । इन संबंधों की अमधुरता ने कड़वाहट को जन्म दिया ही था पर रिश्तों में पर्दा बना रहे , जग में हँसाई न हो , बाबू के रहते रिश्ता चल जाय , कौन रोज- रोज का मिलना है जितना देर मिलो हँस बोल कर समय काट दो आदि - आदि तर्क देकर रिश्तों को ढोया जा रहा था । पता नहीं कितनी बार ऐसा लगा कि रिश्ता अब टूट जायेगा पर मेरे पिताजी की परिपक्वता रिश्तों को बचा ले जाती थी और रिश्तों की उधङ्गन रफू हो जाती थी पर वह उधङ्गन इतनी बड़ी होती थी कि रफू कितना भी करो वह दिखती बहुत साफ़- साफ़ थी । एक बार मौसी के बेटे के विवाह में मेरे मामा ने मेरे पिताजी से भरे मजमें में संघर्ष कर लिया । मेरे पिताजी ने पूरे लोगों के सामने उनकी पूरी झज्जत उतार दी । यह वह दौर था जब इन्दिरा जी की इमरजेंसी चल रही थी और बंसीलाल बहुत उफ़ान पर थे , मेरे मामा ने मेरे पिताजी का नाम बंसीलाल रखा था और कहते थे यही बंसीलाल मेरे बाबू को दिमाग़ देते हैं और उर्मिला को आगे करके लड़ा देते हैं । वह बंसीलाल - बंसीलाल का संबोधन करके हँसी उड़ा रहे थे , मेरे पिताजी के भीतर परशुराम जग गये और फिर एक भरे पूरे परिवार ने पहली बार मेरे पिता जी का करोध देखा , मेरी माँ तक सहम गयी थी और वह पिताजी को शांत करा रही थी जबकि अक्सर होता इसका उल्टा था । दूसरा वाकया यह हुआ था कि झुलई भैया के विवाह में नाना ने पिताजी को आँगन में आमंत्रित नहीं किया इस भय से कि कहीं मौसा के यहाँ के घटनाक्रम की पुनरावृत्ति पुनः न हो जाये । पर पिताजी अपमान का वह घूँट पीकर नीलकंठ का दर्जा परिवार में प्राप्त कर गये ।

ऐसी पृष्ठभूमि होने के कारण परिवार के बच्चों में भी असर आना स्वाभाविक ही था । मोहिता दीदी को मामा ने समय पूर्व आईएएस बना दिया था और उनका विवाह नहीं कर रहे थे यह कहकर कि जब आईएएस बनेगी तब विवाह करेंगे पर वह आईएएस की प्रारम्भिक परीक्षा ही पास न कर पायीं और उनका विवाह पिताजी के ही विभाग में पिताजी की ही नौकरी वाले व्यक्ति से हुआ , पर मामा कहते थे यह फटीचर नौकरी यह नहीं करेंगे । यह साल- दो साल में पीसीएस हो जायेंगे । पर मैं चाहता था यह ताउमर आडीटर ही रहें ताकि मामा ने मेरे पिताजी का मज़ाक उड़ाने का जितना पाप किया है सबका दंड इनको मिले । मामा मेरा भी बहुत मज़ाक उड़ाते थे कलेक्टर साहब - कलेक्टर साहब कहकर जबसे मैंने यह कहा कि मैं आईएएस की परीक्षा दूँगा । इन सब कारणों से हम लोग बहुत कम जाते थे उनके यहाँ ।

मेरा देर रात पहुँचना थोड़ा आश्चर्यजनक लगा , पर प्रसन्न सब लोग हुये
मुझे देखकर / मैं एक असीम नायकत्व की ओर था । एक नायक का सम्मान
हमारी ही नहीं विश्व परम्परा का अंग है ।

मेरे पहुँचते ही मामी ने कहा , “ मुन्ना जब तू आवत हअ तब मन करत हअ
तोहार आरती उतारी । तू हमार मान- दान त हइयै हअ , बहुत बड़ा सम्मान
देहअ और तोहरेन कारण तोहार मामा के विभाग में एतनी इज्जत बढ़ि गई बा
/ सब लोग कहत हअ कि मिश्रा जी बड़े साहब के आदमी हएन ।
तहसीलदार राम पदारथ केतना रुआबदार हयेन पर एक लड़िका के नाहीं
रोवै लागेन हमरे आगे कि हमारि जान बचावअ, हमका नाहीं पता रहा तोहरे
भयने के बारे में । तू मुन्ना दिल बड़ा कै कै सब भूलि गयअ । शर्मा जी के
बहुत असर बा तोहरे ऊपर । तोहार मामौ कई बार ठीक से व्यवहार नाहीं कहे
हयेन पर शर्मा जी कभौं कुछ नाहीं कहेन । भैया मुन्ना सब कुछ जौन पीछे
भवा सब भूलि जा , ऐसनै बड़ा दिल रखअ । तोहरे सिवाय परिवार में अब और
त

केउ बा नाहीं । तू जैसन दादू के ध्यान रखत हअ वैसन मोहिता - बाबउ के
रखअ । ”

यह कहते - कहते आँखों में उनके नमी आ गयी । इस नमीं में एक माँ की
विवशता थी , कुछ वैसी ही जैसी मेरी माँ के पास अपने छोटे बेटे को लेकर
थी ।

मैं - “ मामी हर किसी को बड़ा दिल रखना चाहिये , व्यक्ति को किसी का
मज़ाक़ नहीं उड़ाना चाहिये और न ही बेवजह अपमानित करना चाहिये । जो
व्यक्ति कमजोर है और सहायता चाह रहा उसकी मदद करनी चाहिये , शायद
इसीलिये मैंने पढ़ाना आरंभ किया और जिसने पैसा दे दिया वह भी ठीक , न
दिया वह भी ठीक । ”

दादू - “ चाची मुन्ना भैया बहुत दयावान हयेन । आजतक एकौ लड़िका-
लड़की से नाहीं कहेन पैसा दअ । अब त ऐ पैसा लेवै नाहीं करतेन । जे केउ
दै देत हअ त बुआ के हम दै देझत हअ । ”

मामी - “ भैया बाबउ के कुछ पारि लगाइ दअ । ”

मैं - “ मामी दादू रहत हअ कोचिंग में , अगर भैया आवई चाहत हअ तब त
हमका खुशियों होये । बाबा भैया के साथ हमार पूरा बचपन बीता बा , अब
बाबा भैया के सिफारिश में तोहार ज़रूरत पड़े ? ”

मामी - “ ज़रा बाबा के और दुलहिन के बोलाई दअ , बताई दअ मुन्ना आई
हयेन । ”

नौकर चला गया बुलाने और मैंने मामी से कहा कि आप भी आइयेगा विमोचन में । कार्ड में मामा - मामी का नाम लिख कर दे दिया । मामी प्रसन्न थीं, कार्ड में अपना नाम देख रही थीं । भाभी आ गयीं । मैंने भाभी से कहा आप ज़रूर आइयेगा ।

भाभी - “मुन्ना भैया हमने सुना कि आप भी विमोचन में बोलेंगे । मेरा बहुत मन विमोचन देखने का तो है ही, कभी देखा नहीं है पर आपको सुनने का मन विमोचन देखने से भी ज्यादा है । आप ने हमको याद किया, यह बहुत बड़ी बात है भैया और बहुत शुकरगुज़ार हूँ ।”

मैं - “आना ज़रूर भाभी ।”

भाभी - “भैया यह हमारा सौभाग्य होगा, आपको सुनना ।”

मैंने कुछ देर बात की । खाना खाते- खाते साढ़े ग्याह बज गये । मामा ने कहा, “कुछ और साहब का आदेश हो तो बता देना मुन्ना सब हो जायेगा ।”

मैं - “सब ठीक है मामा ।”

मैं और दादू घर की ओर चल दिये । मैंने रास्ते में कहा विमोचन के दो दिन बाद खेत जोत लेना । कहना बंसीलाल ने कहा है । अगर और बहस करेंगे तब कहना, “मुन्ना से बात करना । और यह ज़रूर कहना कि मुन्ना ने कहा है कि बंसीलाल का आदेश था खेत जोतने के लिये ।”

दादू - “मुन्ना भैया कौनौं दिक्कत त न होये ?”

मैं उसकी तरफ देखने लगा और कहा ... यह रब की इच्छा है मैं सिफ़र बता रहा ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 226

मैं मामा के यहाँ से अपने घर के रास्ते पर हौले - हौले साइकिल चला रहा था । मैंने दादू से कहा, “दादू इन रास्तों पर हमने कितनी बार साइकिल चलायी होगी । इन्हीं गौतम - संगीत - दर्पण के सिनेमाघरों के सामने से कितनी बार गुजरे होंगे, याद है हम लोग बहुत छोटे थे तब जोधवल वाले मामा के साथ शोले फ़िल्म इसी गौतम टाकीज में देखी थी । हमने अपने- अपने पैसे जोड़कर कई बार लल्लू की चाट खायी है । याद है जब हम लोग एक बार चाट खा रहे थे तब मेरा प्रारम्भिक परीक्षा का रिज़ल्ट आजकल में आने वाला था और मैंने कहा था अगर न हुआ मेरा तब बहुत ही मुश्किल होगी , क्या

करूँगा मैं ? कैसे घर में माँ और पिताजी का सामना करूँगा ? ईश्वर दयानिधान है वह दया का सागर है , कम से कम मेरे लिये तो बहुत ही है । मैं सारी उम्र उसके सम्मान में अपनी आस्था के गहनतम बिंदु तक जाकर उसकी चरण- वंदना करता रहूँगा और जो उसने कुछ लिखने की इनायत दी है उसी का इस्तेमाल करके मैं उसकी प्रशंसा- गीत गाता रहूँगा ।

दादू - “ भैया तू मेहनतउ बहुत केहे रहअ , लगन तोहार अनुकरणीय बा । ”

मैं - “ बहुत से लोग मेहनत करते हैं दादू भैया पर शोहरत मेरे नसीब में थी । ”

दादू - “ ई बात त बा भैया । ”

मैं जैसे ही घर की गली की तरफ मुड़ा दादू ने कहा .. “ भैया एक बात कही ? ”

मैं - “ कहो । ”

दादू - “ खेत जोतै के बारे में बुआ से राय- मशविरा लै लई ? ”

मैं - “ मेरा कहना पर्याप्त नहीं है क्या ? ”

दादू - “ ई बात नाहीं बा भैया , बगैर बुआ से पूछे कौनौ काम आज तक केहे नाहीं हई । अब न पूछब तब ऊ नाराज़ होये और कहे बगैर पूछे काहे केहअ काम । बात काम के करै न करै से ज्यादा बड़ी बात बा बगैर पूछे काम करै के बा और बुआ अगर कहे तू बगैर पूछे काहे केहे , तब हम का कहब ? तू त जनतई हअ बुआ के मिजाज । ”

मैं - “ अगर मेरे पर यक़ीन न हो तब पूछ लो पर एक बात याद रखना रेशम की डोर में बहुत ताक़त होती है चाहे वह साल में एक बार ही बाँधी क्यों न जाती हो । तुम उस रेशम की डोर की उत्पन्न ताक़त से बँधे हुये हो और तुम्हारे चाचा उस रेशम की डोर को अपनी कलाई पर बगैर बँधे हुये भी हर समय अनुभव करते हैं । इनके बीच आपस में कितना भी विरोध हो पर उन सूत के धागों से उपजी भावनायें सारा समीकरण बदल सकती हैं , यह फ़ैसला तुम पर छोड़ता हूँ तुम क्या करना चाहते हो । ”

दादू - “ तोहार का राय बा ? ”

मैं - “ अवतारवाद की संकल्पना पर यक़ीन रखो । विष्णु अवतार लेते हैं कई रूपों में और उसके बाद विष्णु नहीं , लिया हुआ अवतार जगत का कल्याण करता हैं और नव अवतार वही करता है जो विष्णु चाहते हैं और जिसमें सामाजिक व्यवस्था की स्थापना हो । तुम्हारी बुआ क्या कहेगी यह मैं कह नहीं सकता पर मैं वही करूँगा जो तुम्हारे साथ- साथ उसके हित में भी हो , अगर पूछ कर करने की ज़रूरत होगी तब पूछ कर और अगर पूछना लक्ष्य में बाधा देगा तब बगैर पूछे । ”

दादू - “ भैया सब सँभाल लेबअ न ? ”

मैं - “ यक्कीन रखो मुझ पर और मुझको अपनी चालें चलने दो । मैं एक झटके में ही तुम्हारी सारी ज़िंदगी की पीड़ा दूर कर दूँगा, ईश्वर की आराधना करो और सात अगस्त को हल खेत में चलना चाहिये । ”

दादू - “ अगर ओ झगड़ा- झ़ञ्जट करिहिं बंदूक निकालि लेइहिं तब ? तू त जनतई हअ बात- बात में बंदूक निकालि लेत हअ । एक लाइसेंस भैया हमहूँ के दियाई देतअ , अडे- गडे काम आए । ”

मैं - “ कोई ज़रूरत नहीं लाइसेंस की , उनकी गोलियों से बड़ी मारक क्षमता अब मुन्ना नाम में है । उनको निकालने दो बंदूक वह उनकी बंदूक उनके काँधे पर बोझ बन जाएगी । एक चलती गोली मुन्ना के नाम से रुक जायेगी , बंदूक के ट्रिगर पर दबी अंगुली काँप जायेगी , चेहरे पर पसीने की बूँदे टपकेंगी जब तुम कहोगे यह मुन्ना भैया ने कहा है । मैंने उनकी सारी कारस्तानियों को जानकर भी उन पर कुछ नहीं किया । तहसीलदार के विरुद्ध कुछ न करना मेरी योजना का एक अंग है , बस तुम देखते जाओ , मदारी का खेल ख़त्म होने वाला है , उसका तिलस्म टूटने वाला है । ”

दादू - “ ठीक बा भैया । जौन तोहार आदेश होए वैसन करब । ”

मेरे अंदर दशकों की पीड़ा थी । मेरे सामने मेरे पिताजी को बंसीलाल कहा जाता था और मैं मन मसोस के रह जाता था । एक ग़लत कर्म करने वाला अपने अवैध तरीके से कमाये गये धन से उपजे अहंकार से मुझे कई सालों से सता रहा था । मेरे पिताजी सज्जन थे बर्दाश्त कर रहे थे पर मेरे अंदर दरौपदी की तरह की ज्वाला जल रही थी । मैं चाहता तो इनको कमिश्नर साहब से कह कर इनका नुकसान कर सकता था पर नहीं ... मैं खुद इनका नुकसान करना चाहता था । मैं यह बताना चाहता था कि मैं स्वयम सक्षम हूँ तुम्हारे मान मर्दन के लिये । मेरी माँ दादू को इस काम को करने से रोक देती , मैं यह जानता था । मेरे पिताजी तो कभी इस काम के लिये तैयार ही न होते । मैं सबकी अवज्ञा कर रहा था और एक खुला संघर्ष करना चाहता था । मैं चाहता था मामा और बाबा भैया बंदूक लेकर जायें और पूरे गाँव के सामने बंदूक को काँधे पर लटका कर वापस आयें और पूरे गाँव में शोर हो , मुन्ना के नाम से ही यह लोग डर गये । मैं हमेशा के लिये इनको कायर साबित करना चाहता था उसी गाँव में जहाँ उनकी तूती बोलती है । यह जिन रिश्तेदारों के सामने पिताजी को बंसीलाल कहकर मज़ाक़ उड़ाते थे उनके सामने ही उनकी निगाह हमेशा के लिये नीची कर देना चाहता था । यह बाक़ी बची हुई ज़िंदगी एक पददलित व्यक्ति की तरह जियें , यह मेरी सारी रणनीति का एक हिस्सा था । पर यह दादू डरपोक है , यह आसानी से खेत नहीं जोतेगा

जबकि यह चाहता है जोतना । यह बहुत डरता है मामा से । पर इसको यह करना ही होगा , किसी भी कीमत पर ।

मैंने दादू से कहा , “कल दिल्ली से आंटी , ऋषभ , शालिनी आयेंगे तुम यात्रिक होटल में ही रहना । उनको गाँव लेकर जाना है । कल चिंतन सर भी आ रहे हैं , मैं उनसे सलाह लेकर बताता हूँ और क्या करना है । रामदीन मामा को समझा देना कि शालिनी पंजाबी लड़की है इस पर कुछ बेवकूफ़ी की बात न कर दें कि हम पंजाबी बहु के घरे न आवै देब या हम छुआ न खाब । तुम ज़रा डाट कर कह देना कि कोई बेवकूफ़ी न करें । वह बेवकूफ़ मुझसे ही कह रहा था कुजात में शांति बहिन बियाह के दिहिन हम ओनका छुआ न खाब । ”

दादू - “ठीक बा भैया । और उ खेत जोतै वाला काम कब करी ? ”

मैं - “सात अगस्त को टरैक्टर से पूरा बारी वाला खेत जोत लेना । वह लोग आयेंगे ही और ज़रा भी ऊँची आवाज़ में बात करें कह देना मुन्ना से बात करो , वही कहे हैं यह करने को । बाक़ी मैं देखूँगा , तुमसे कोई मतलब नहीं है । ”

दादू - “और बुआ अगर नाराज़ होये तब ? ”

मैं - “एक ही बात बार- बार , मेरे पर छोड़ो यह मुद्दा , आप दिमाग़ मत लगाओ , बस काम करो । चिंतन सर हैं न । मातादीन रहेगा ही , तुम क्यों परेशान हो । उसको समस्या सुलझाने में महारत हासिल है उसको साथ लेते जाना । ”

दादू - “ई त बहुतै बढ़िया बा भैया । जब मातादीन रझैं तब कौनौ चिंता नहीं बा । ”

मैं उसका चेहरा देखने लगा, मैंने मन ही मन कहा साम- दाम - दंड- भेद सब आता है मुझको । मैं जानता था कि तुम बहुत डरपोक हो तुम्हारी हिम्मत नहीं पड़ेगी इतना बड़ा काम करने की , बगैर संबल के ।

मैं सुबह उठा । मैं उठते ही कमिशनर साहब के घर गया । घर के लान में साहब के पिता और प्रतीक्षा टहल रहे थे । सामने के दूर बरामदे में उन लोगों की भीड़ जमा थी जो साहब से मिलने आये थे । यह रोज़ का ही काम था साहब का , वह लोगों से सुबह मिलते थे । मैं साइकिल खड़ी करके सीधा साहेब के पिताजी और प्रतीक्षा के पास गया । पिताजी ने कहा कि मैं तुमको याद ही कर रहा था । मैंने सत्यानंद से कहा भी कि अनुराग दो- तीन दिन से नहीं आया ज़रा बुलाना उसको ।

मैं “ बाबूजी बहुत काम रहता है । यह कोचिंग चलाने का काम बहुत ही कठिन है । यह विक्रम- वेताल की कथा ऐसा क्रम संयोजित है कि वेताल हमेशा विक्रम पर सवार ही रहता है । आप व्लास ख़त्म करो आपके ऊपर अगली व्लास का बोझ सवार हो जाता है । मैं कोई प्रशिक्षित अध्यापक तो हूँ नहीं, मैं भी सीख ही रहा हूँ पढ़ाना । ”

पिताजी - “ यह बात तो है । पर काफ़ी दिन से पढ़ा रहे हो थोड़ा विश्वास तो आ ही गया होगा । ”

मैं “ हाँ कुछ आ गया है पर अभी भी बहुत सहज नहीं हूँ । ”

प्रतीक्षा- “ क्या- क्या पढ़ाया? ”

मैं “ काफ़ी कुछ पढ़ा दिया । प्राचीन इतिहास कर दिया, आधुनिक इतिहास 1939 तक किया है उसके आगे का बाक़ी है । आजकल संविधान पढ़ा रहा । ”

पिताजी - “ एक दिन आता हूँ, मैं भी देखता हूँ कैसा पढ़ाते हो । ”

मैंने मन ही मन कहा बुढ़ऊ बहुत चालू हैं, ठोंक बजाकर देख लो कैसा लड़का है तब लड़की देंगे । यह लड़की भी कम चालू थोड़ी ही होगी । पर मैं भी कहाँ कम चालबाज़ हूँ । यह सब चालबाज़ों का एक सम्मेलन चल रहा है । मैंने अर्दली को आवाज़ दी और कहा कि साहब से बता दो, मैं मिलना चाहता हूँ ।

अर्दली - “ जी साहब । ”

थोड़ी ही देर में अर्दली आ गया और साहब के पास ले गया । मैंने बता दिया पूरा इंतज़ाम और कहा पाँच सौ छात्र आ सकते हैं । मैं आज कोचिंग बंद कर दूँगा दो दिन के लिये और यह सब लोग भीड़ एकत्र करने के काम में तन्मयता से लग जायेंगे । आप हाल भरे जाने की चिंता न करें, हाल में तिल रखने की ज़मीन न होगी । अगर आप उचित समझें तो मुख्य आतिथि को सूचित कर दें और तमाम रसूखदार लोगों को आमंत्रित करें वह भी देखें न भूतो न भविष्यतो विमोचन समारोह ।

साहब बहुत प्रसन्न हो गये । वह बोले, “अगर पाँच सौ छात्र आ गये तब तो बहुत बड़ी भीड़ होगी । ” साहब ने पूछा, “जो लोग चयनित हुये हैं उनका क्या हुआ? ”

मैं “ सबसे बात हो गयी है, तक़रीबन सभी आयेंगे और साथ में एक दो लोग लेकर आयेंगे । ”

साहब - “ मैं राज्यपाल से दो शब्द उन सबके सम्मान में बोलने को कह दूँगा । ”

मैं - “ जी सर । सर क्या हुआ राम प्रकाश सिंह सर के मंच संचालन का ? ”

साहब - “ संजीव रंजन गये होंगे , मेरी बात हुई नहीं , पूछता हूँ । ”

साहब ने कलेक्टर साहब को फोन मिलाया और कलेक्टर साहब ने बताया कि वह गये थे और काम हो गया है । कल वह और राम प्रकाश सिंह सर बात करने आ रहे कार्यक्रम की रूप रेखा पर । सर ने कहा तुम भी आ जाना । मैंने सकारात्मकता में सिर हिलाया । सर ने कहा , “ अनुराग कहो तो एक बात कहूँ ? ”

मैं - “ जी सर । ”

साहब - “ प्रतीक्षा से तुम्हारे बारे में उसकी भाभी ने पूछा , उसने कोई आपत्ति न की इस संबंध पर और प्रतीक्षा ही नहीं कोई भी तुम्हारे ऐसे प्रतिभावान-यशस्वी को भावी पति के रूप में सोचकर ही प्रसन्न होगा । वैसे भी हम लोगों के परिवेश की लड़कियाँ अपनी हामीकारी इन्हीं शब्दों में देती हैं , मुझे आपत्ति नहीं है या आप जो ठीक समझें करें । पिताजी भी कह रहे , ” अनुराग से विवाह से सुनिश्चित करो । ”

तुम बात कर लो उससे , अगर ठीक लगता है तब यह संबंध बहुत ही उचित लग रहा मुझे । तुम अगर सहज हो तब बाकी औपचारिकताएँ पर बात तुम्हारे घर में करते हैं । मेरा तुमसे अतिशय लगाव हो चुका है , मैं किसी और को प्रतीक्षा के पति के रूप में देखने की मनःस्थिति में इस समय तो कम से कम नहीं हूँ । मेरा कोई दबाव नहीं है , तुम स्वतंत्र निर्णय लो प्रतीक्षा को केन्द्र में रखकर फिर जैसा संयोग होगा , जो हरि की इच्छा होगी वही होगा यह तो हम सब जानते ही हैं । इस जीवन का सारा विधान उसी का है , हम लोग तो सिर्फ़ एक कार्यान्वयन के साधन हैं ।

मैं - “ जी सर । ”

मैं चलने लगा , सर ने कहा अनुराग तुमने हिंदी विभाग में कहा था कि मैं एक गैर मामूली दास्तान लिखना चाहता हूँ , यह सत्य प्रकाश सर ने मुझसे बताया था । मैं तुम्हारी गैर मामूली दास्तान देखना चाहता हूँ और विमोचन के दिन तुम्हारे भाषण की मुझे भी प्रतीक्षा है । यह पाँच अगस्त मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन है और इसको महत्वपूर्ण बनाने में तुम्हारा बहुत योगदान है ।

मैं - “ सर यह ईश्वर की सदिच्छा थी जो हमारी आपकी मुलाक़ात हुई । यह मुलाक़ात लग रही है अनायास पर है सायास सर इतिहास निर्माण की प्रक्रिया में हैं आप , मैं उसको अपने सामने घटित होते देखना चाहता हूँ

.....

सर - “ ईश्वर की सब लीला है । ”

मैं - सर एक नज़्म सुनिये

बाहर दालान में हरसिंगार का पेड़ झुका हुआ
करता मुहब्बत ज़मीं से अपने अस्तित्व के लिये
बिखरे हुये फूल
गिरे तो बेतरतीब थे
पर ज़मीन पर बनाते एक सफेद - लाल रंग की मोहक रंगीन क़ालीन
ज़मीन पर बिछे फूल चाह रहे घने काले बाल रिहाइश के लिये
सुबह की अलसाई रौशनी
शोर शबनम का फूलों की क़ालीन पर

काश यही शोर मेरी ज़िंदगी में होता

सर पाँच अगस्त को यही शोर होगा जो बहुत दिनों तक मन- मस्तिष्क को आलादित करेगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 227

मैं साहब के यहाँ से वापस घर की ओर चला । आज शाम को आंटी आने वाली थी । आज कोचिंग में क्लास मैंने बहुत नाम मात्र को लेने को पहले से ही सोच रखा था और अगले तीन दिन पाँच अगस्त तक कोचिंग बंद रहेगी । मैं घर पहुँचा तब वहाँ पर देखा लोगों की बड़ी भीड़ इकट्ठा थी और मुझे यह भीड़ देखकर आश्चर्य भी हुआ । मेरी माँ भीड़ के साथ ही खड़ी थी । मेरे पहुँचते ही दिनेश और अशोक ने मेरे पैर छुये और कहा , “ सर पहला दुर्ग तो गिरा दिया आपने अब अगले का संधान और तीक्ष्णता से करें , हमारी नाव आपके हाथ में है । ” मैं समझ गया कि अगले साल के प्रारम्भिक परीक्षा का परिणाम आ गया है और यह लोग पास कर चुके हैं । परेम नंदन ने कहा कि सर इस बार आपको मेरी नाव पार लगानी होगी । मैंने मन ही मन सोचा , यह परीक्षा दी तो मैंने भी थी , पर मेरा क्या हुआ ? अब मैं कैसे पूछू कि मेरा परिणाम क्या हुआ ? कितना कुछ बदल गया इन कुछ महीनों में । अब मैं

सहजता से यह पूछ भी नहीं सकता , क्या है मेरा परिणाम ? मेरी अपने बारे में अपनी ही विचारधारा बदल गयी है , जो एक सादगी और मासूमियत थी मेरे अंदर वह कहीं खो गयी । यह सच है सबसे कठिन होता है सरल और सहज रहना वह भी तब जब सफलता दर सफलता आपको अंगीकृत कर रही हो । मैं तो इस समय लहरों के उफान पर चढ़ा शंकर के नृत्य के मन्त्रों को उच्चरित करता खुदा होने का भ्रम पाले गा रहा अज़ली तरन्नुम यह सोचता , न किसी ने गाया होगा यह गीत समुद्र की उच्चतम तरंगों से नम को संबोधित करते हुये । इन प्रारम्भिक परीक्षा पास किये गये चेहरों में से कुछ चेहरे ऐसे भी थे जिनको मैं जानता न था , वह पहली बार मेरे पास आये थे कुछ आशा लेकर । मैं एक सामान्य व्यक्ति से देवत्व की ओर बढ़ रहा था , बहुतों की नज़रों में । वह सारे अनजान चेहरे उसी तरह परेशान मुझको दिख रहे थे जैसे कभी मैं परेशान घूमा करता था । मैं भी प्रारम्भिक परीक्षा पास करने के बाद हर दरगाह , हर मंदिर टहलता था आशीर्वाद के लिये और उस समय हर पत्थर के प्राचीर में बैठा खुदा समझने का भ्रम पालने वाला हेय दृष्टि से देखता था मुझको ।

मैंने सबको बधाई दी और कहा , “ इस साल इलाहाबाद को सन 1957 , सन 1975 , सन 1981 को दोहराना होगा । इन तीन सालों में बहुत बड़े-बड़े प्रतिमानों की स्थापना हुई थी , वैसे तो पचास , साठ , सत्तर का दशक तो इस परीक्षा में कमोबेश इलाहाबाद का ही होता था । मैंने कहा शाम को कोचिंग में मिलते हैं , वहाँ विस्तार से बात करते हैं । जो नये लड़के पढ़ना चाहते थे मुझसे उनसे कहा मैंने कि वैसे तो बहुत कुछ पढ़ाया जा चुका है पर जो भी पढ़ना चाहे ज़रूर आये और पैसे देने की कोई बाध्यता नहीं है । मैं उदार होने का अगर ढोंग नहीं कर रहा तब भी मैं इसको रेखांकित अवश्य करना चाह रहा था ।

वह सारे लोग शाम को आने को कहकर चले गये । दिनेश , शाही , अशोक घर के अंदर आये और मैंने पूछा , “ मेरा रिज़ल्ट देखा ? ”

दिनेश - “ नहीं भाई साहब वह तो नहीं देख पाया । मुझे अपना रिज़ल्ट देखने के बाद कुछ और याद ही नहीं रहा । मैं सीधा घर गया वहाँ बताया और यहाँ चला आया । ”

अशोक - “ सर आपका तो हुआ ही होगा । अब आपका रिज़ल्ट देखने की ज़रूरत है ? आपने इतिहास के पर्चे में ही इतना स्कोर किया थे कि बाकी का क्या ज़रूरत वैसे आपका जीएस भी तोड़ ही है । ”

इतने देर में गीतिका और उसकी माँ आ गये । वह भी प्रारम्भिक परीक्षा पास कर गयी थी । उसने सारा श्रेय मुझको दे दिया इस आशा से कि गाइडेंस तो मिल ही जाये और अगर नोट्स मिल गया तब तो सारा काम ही बन गया । उन सबके जाने के बाद मेरा मन विचलित होने लगा, मैं कैसे अपना रिज़ल्ट देखूँ? मैं अब आम छात्रों की तरह जाकर अपना रोल नंबर तलाशने से रहा, मैं पास हुआ कि नहीं । मैं अगर पास न हुआ तब क्या होगा? क्या मैं फेल होकर कोचिंग चला पाऊँगा? मेरे अंदर ही एक संघर्ष आरंभ हो गया, मैं फेल नहीं हो सकता इसके तर्क बहुत थे पर परीक्षा की अनिश्चितता तो है ही, मैंने रात के अँधेरों में रिज़ल्ट देखने का फ़ैसला किया, जब कहीं कोई न हो ।

मैं शाम को कोचिंग गया । मेरे तो होश ही उड़ गये, एक मेला ऐसा लगा था । सौ से ज्यादा लोग थे । जो लोग पैसा दिये थे उनके बैठने की जगह न थी और जो आज पास किये थे परीक्षा वह सीट क़ब्ज़ियाये बैठे थे । यहाँ तो क़ानून व्यवस्था की समस्या उठ खड़ी हुई । अब इस नयी समस्या से कैसे निपटा जाए । मेरा दिमाग़ बहुत तेज़ काम किया, साहब के विमोचन में तो भीड़ ही भीड़ हो सकती है, यह एक अतिरिक्त अवसर हाथ आ गया है, मैंने किसी तरह कक्षा को संयोजित किया, बहुत से लोग खड़े ही थे । मुझे बहुत ऊँची आवाज़ में बोलना पड़ रहा था बात को अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक पहुँचाने के लिये । मैंने सामान्य सी बात की । एक रूपरेखा में स की बतायी, नोट्स की फ़ोटोकापी देने का आश्वासन दिया । आप इलाहाबाद में नोट्स देने की बात कह दो आप तब तक बँधवा के हनुमान जी सदृश रहोगे जब तक नोट्स न दिया । उसके बाद आपकी धज्जी उड़ा देंगे यह कहकर ..

“ यार बड़ा बेकार नोट्स बनाया इसने कैसे इसका चयन हो गया ... ”

“ यह बहुत फ़राड़ आदमी है फ़र्ज़ी नोट्स पकड़ा दिया असली कहाँ देने वाला है ... ”

“ यह बताओ ऐसा लिख कर आदमी आईएएस होता है, इससे अच्छा तो हम बीए में लिखे थे .. ”

कोई - कोई सकारात्मक भी कह देगा पर वह अपवाद स्वरूप होगा ... “ आदमी धर्मात्मा है इसको भगवान सद्गति दे ... पर पूरा तो नोट्स दिया नहीं कुछ माल छिपा लिया .. ”

सद्गति ही दिला दिया नोट्स की तारीफ़ करते - करते । अब इलाहाबादी है गंगा जमुना के बीच की विभाजक रेखा में ही कह देते हैं देखो जहाँ बुल्ला फूट रहा है वहीं पर सरस्वती नदी ऊपर की तरफ़ हिलोर मारे हैं । अगर बुल्ला न

फूट रहा हो तब भी कह देंगे वह फेन देखो सरस्वती का है । तीन तरह का फेन है - एक गंगा माई का , एक जमुना चाची का और तीसरा सरस्वती मौसी का ।

ऐसे महान इलाहाबादी कहाँ किसी को बख्शने वाले । पर तात्कालिक तौर पर नोट्स की बात से बहुत प्रसन्न हो गये ।

एक आवाज़ पीछे से आयी , “ सर कौन - कौन से विषय पर मिलेगा ? ”

दूसरी आवाज़ - “ सर हर विषय पर दे दीजिये । ”

तीसरी आवाज़ - “ सर आपके पैर धो के सारी ज़िंदगी पियेंगे बस लाल बत्ती दिलवा दीजिये । ”

अशोक - “ टारचिया ले लो उस पर लाल पन्नी बाँध के मुड़वै पर बाँध लो । पहली परीक्षा पास करते ही बेअंदाज़ हो जाते हैं लोग शहर में । ”

मैं थोड़ा संयत था , एक संजीदा अध्यापक की तरह दिखने का प्रयास कर रहा था । मैंने सारे वार्तालाप को ध्यान न देते हुये अपना उद्बोद्धन भाषण दिया । मैं हकीकत में अपने विमोचन के भाषण का अभ्यास करने लगा । मुझे लगा कि असर अच्छा पड़ रहा है । मैंने सबको पाँच अगस्त को सायंकाल प्रयाग संगीत समीति में आमंत्रित किया । मैंने कक्षा खत्म की और घर आ गया । मुझे यह विश्वास हो गया था कि ऐसी भीड़ शायद ही कभी प्रयाग संगीत समीति में हुई होगी । मैंने दाढ़ से कहा कि तुम मामा के यहाँ कल सुबह चले जाना और कहना कि खाने का इंतज़ाम 1500 आदमी का कर दें , उस दिन लान भी भर जायेगा ।

मैं यात्रिक होटल गया । मैं पहली बार किसी होटल के प्रांगण में गया था । मुझे यह भी नहीं पता था किस तरह होटल के अंदर जाते हैं , कैसे पता करते हैं होटल के अंदर के रहने वाले लोगों के बारे में । यात्रिक होटल शहर का सबसे नामी होटल था , एक बाहर सुंदर लान अंदर का बड़ा सा बरामदा , सामने रिसेप्शन सब कुछ बहुत ही मनोहारी लग रहा था । मैंने जैसे ही रिसेप्शन पर ऋषभ का नाम लिया उसने पूछा , “ आप अनुराग शर्मा हैं ? ”

मैं - “ हाँ । ”

उसने कहा , “ आप बैठें आपके लिये वह मैसेज छोड़ गये हैं कि कमरे में भेज देना । ”

उसने एक वेटर को आवाज़ दी और वह मुझे कमरे में ले गया । वह दो कमरों का एक सूट था । एक कमरा बाहर एक अंदर बेडरूम । मैं कमरा देखकर हतप्रभ रह गया । मैंने ऐसे शानों - शौकत का कमरा देखा ही न था । ऋषभ

ने कहा कि बगल का कमरा माँ का है और उसके बगल का शालिनी की माँ का । मुझे वह आंटी के कमरे में ले गया । वह भी कमरा वैसा ही था जैसा ऋषभ का था । मेरे दिमाग में आया , इन दो कमरों में आंटी अकेले रहेगी ? मैंने आंटी के पैर छुये , उसने मुझे गले से लगा लिया और कहा , “ अनुराग मैं कब से इंतज़ार कर रही थी इस आनेवाले दिन का । ”

मैं - “ आंटी मुझे भी इंतज़ार था , इस दिन का । मैंने दाढ़ से परिचय कराया और बताया कि यह बड़े मामा का बेटा है । यह आपके साथ ही रहेगा और गाँव लेकर जायेगा । ”

आंटी - “ अनुराग , मैं अपने ससुराल भी जाऊँगी । ”

मैं - “ आंटी यह बहुत तेज है , आप जो कहेगी सब कर देगा । ”

आंटी - “ तुम नहीं चलोगे मेरे साथ ? ”

मैं - “ आंटी पाँच अगस्त को बाद चलो तब थोड़ा सुविधा होगी , इस कार्यक्रम में बहुत व्यस्तता है । ”

आंटी - “ ठीक है पाँच के बाद ही चलते हैं । तुम अपनी माँ को यहाँ लेकर नहीं आओगे आज ? मैं कल आऊँगी पर मेरा मिलने का मन आज ही कर रहा । तुम कार लेते जाओ , बाहर खड़ी ही है । दो कार आहूजा साहब की

लेकर दिल्ली से ही आये हैं , एक कार किसी आहूजा साहब के जानने वाले ने भेज दी है । ”

ऋषभ - “ अनुराग एक कार तुम लेते जाओ , मेरे काम की है नहीं । दो ही कार बहुत है । ”

मैं कुछ कहता , दाढ़ बोला , “ कौन सा कार है । ड्राइवर के बोलाई दीजिये । ”

ऋषभ - कार नंबर दे देता हूँ , कार लान में ही खड़ी है । ”

दाढ़ - “ ठीक बा भैया । ”

मैं काफी देर आंटी - ऋषभ- शालिनी से बात करता रहा । मैंने सारा कार्यक्रम बताया विमोचन का । इतने बड़े- बड़े नाम , इतना बड़ा इंतज़ार , इतनी बड़ी भीड़ एक किताब के विमोचन के लिये , यह एक नयी बात थी इन सबके लिये । मैं बाहर निकलते समय आंटी से कहा , “ मैं माँ को लेकर आता हूँ । ”

दाढ़ ने बाहर निकलते ही कहा , “ भैया बेवजह संकोच करत रहअ । सवारी मिलत बा लै लेई के चाही । ”

मैं “ साइकिल कहाँ रखोगे ? ”

दादू - “ इहीं पीछे वाले खंभा से स्टाई के ताला मारि देबै , के इहाँ से लै जाए पुरान साइकिल । ”

रात का आँचल फैल चुका था , खामोश , उबासी लेते उँधते कुत्ते किसी आवाज पर भौंकने लगते थे । यूनिवर्सिटी रोड पर दुकानें बंद हो रही थीं । सारे चाय की दुकान वाले अपना गल्ला गिन रहे थे और बर्तन को सहेज रहे थे , ऐसे अंधकारमय बुझी हुई बत्तियों की सङ्कोच से गुजर कर मैं कृष्णा कोचिंग के गेट पर पहुँचा । गेट बंद हो चुका था । मैंने दरवाजे के ऊपर से छढ़कर गेट को पार गया । मैंने अपना रिजल्ट एक धड़कते हृदय की धड़कनों को नियंत्रित करते हुये देखा । एक विजय जिसका अब मूल्य प्रमुखतया इसलिये था कि मेरी विश्वसनीय बनी रहे । जो रिजल्ट कभी देखकर मैं उल्लिखित हुआ था आज उसको एक निस्पृह भाव से देखा । मैं सफलता चाहता था पर कारण आज उसका कुछ और था ... मैं महानायक बना रहना चाहता था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 228

मैं एक संतोष भाव से गेट को फाँदकर बाहर निकला । मेरा रोल नंबर मुझे एक झटके ही मिल गया । मैं प्रसन्न था इसलिये कि अगर मैं सफल न होता तब मेरी आगे की सारी कल्पित दास्तानें यहाँ एक विराम पा जाती । मैंने ठीक से कार देखा भी न था उस समय जिस समय ऋषभ ने कार दी थी । उस समय मेरी और तिवारी ड्राइवर के बीच हुई बातचीत मेरे मानस पटल पर घूमने लगी ।

“

मैं नंबर पढ़ रहा था कि तिवारी ड्राइवर पीछे से आ गया और उसने सलाम ठोकते हुये कहा “ भैया पहिचानअ हमका हम तेवारी ड्राइवर तोहरे सेवा में रहे दुई दिना । हम पीड़ी के तेवारी याद आई ? ”

मैं “ अरे तिवारी जी आप .. आप कैसे यहाँ , इनके साथ दिल्ली से आप भी आये हो ? ”

तिवारी - “ भैया हम त शालिनी बिटिया के संगेन रहित हअ जबसे ओ देहरादून से पढ़ि के दिल्ली आइन । हम पाँच साल आईआईटी में ओनके संगेन

रहे । हम त संगे चलै करब जहाँ कतौ शालिनी बिटिया ज़इहिं । हम सुना हअ बहुत बड़ा जलसा होत बा , हमरेउ नसीब में इ जलसा देखई को बदा रहा । ”

मैं - “ कोई कार आई है आहूजा साहब के किसी आदमी की वही कार देख रहा । ”

तिवारी ड्राइवर- “ अरे भैया इहई कंटेसा हई । शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन वाले भेजे हयेन । ”

मैं “ ड्राइवर को बुला दो , ऋषभ कह रहे कि मुझे कोई काम नहीं आप ले जाओ । ”

तिवारी ड्राइवर- “ भैया उ ड्राइवर चाय पियै गवा बा बस अवतै होए । पता नाहीं काहे कार भेजि देहेन कौनौ काम त बा नाहीं , आप लेहे जा काम करावअ, इहाँ फ़ालतू खड़ी रहे । ”

दादू - “ अरे ड्राइवर साहेब तू त हमरे घरे के मनई हअ । तू पीड़ी के हअ और हमार पाही बा कुकुड़ी में । दुङ्नौं गाँव लगा हयेन । तुहूँ सेहरा से बस पकड़त ह और हमहूँ । ज़रा हमरे साइकिली के ध्यान रखे । ”

तिवारी ड्राइवर- “ कहाँ बा भैया ? ”

दादू - “ उहीं पिछले वाले खंभा में चैन से बाँध देहे हई , ताला-चेन बा वज्र ऐसन पर तबौं ध्यान देहे रहअ । ”

तिवारी ड्राइवर- “ निश्चिंत रहअ भैया । लअ तोहार ड्राइवर आई गवा । ”

दादू - “ कहाँ खोई ग हअ भैया ? आजकल तू रहत- रहत खोई जात हअ । कौनौं चिंता खाए जात बा का ? ”

मैं “ चिंता ही चिंता है दादू भैया । यह जो जीवन है वह जब तक सहज रहता है तब तक उसकी क्रीमत का एहसास नहीं होता , जब वह सरलता चली जाती है तब लगता है , काश वह सरलता वापस आ जाती पर यह महत्वाकांक्षा एक ऐसा दुश्चक्कर रच देती है कि आप उससे बाहर निकल नहीं सकते । मैं चाहूँ इससे बाहर निकलना तब भी अब मैं निकल नहीं सकता । ”

दादू - “ भैया हमरे समझि में आजकल तोहार बाति कम आवत हअ । ”

मैं “ दादू , तिवारी ड्राइवर आया , इस समय देश में बनी सबसे बेहतरीन कार सामने थी पर मेरा मन रिझल्ट में लगा था । मैं उस समय सब कुछ यन्त्रवत कर रहा था । मैंने तिवारी ड्राइवर पर ध्यान न दिया, उससे बात

भी की पर मन कहीं और था , कार पर ध्यान ही न गया । मुझे एक ही चिंता खाये जा रही थी कि अगर मेरा न हुआ इस बार की प्रारम्भिक परीक्षा में तब क्या होगा ? यही परिणाम एक साल पहले पक्ष में ज़रूरी इसलिये था कि जीवन को चलाना था पर आज जीवन चलने की समस्या समाप्त हो चुकी है पर यह परिणाम पक्ष में ज़रूरी इसलिये है कि मेरी अपनी एक अलग साख बन चुकी है और उस साख को बटटा न लग जाय । मैं बेवजह एक व्यक्ति का हँक मार रहा । मैं परीक्षा न देता या फेल कर जाता तो किसी एक व्यक्ति को अवसर मिलता । हो सकता है वह व्यक्ति पिछले साल जैसे मैं एक भिक्षुक था वैसे ही मेरी ही तरह का एक निरीह व्यक्ति हो । वह आज असफल होकर एक महान पीड़ा में होगा पर मैंन अपने बारे एक तिलिस्म बनाया है , उस तिलिस्म को बरकरार रखने के लिये मुझे यह परिणाम में पक्ष में चाहिये ही , चाहे वह किसी के रुदन पर ही क्यों न हो । एक बात तो तुम जानते ही हो कि दया सबको प्राप्त होती है पर ईर्ष्या को प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करना पड़ता है । बग़ैर प्रयत्न के ईर्ष्या प्राप्त नहीं होती । गंगा के किनारे के भिखरियों के प्रति सब कीं सहदयता है पर बँधवा के हनुमान जी के गिरि महाराज से सबको ईर्ष्या है ... क्यों ?

हमारे पूरे परिवार में सबको ईर्ष्या तुम्हारे बड़े चाचा से है और सब तुम्हारे पिताजी के प्रति दयावान हैं । क्यों ?

सिफ्ट इसलिये कि तुम्हारे चाचा सफल व्यक्ति हैं , चाहे जैसे भी सफल हुये हो । उनका बड़ा बुर्जदार मकान , कमरों में क़ालीन , बड़ा आँगन , बाहर का लान , पीछे बँधी गाय एक संपन्नता से भरा जीवन सबका लक्ष्य बन चुका है । मेरी माँ ने कितनी बार कहा , “ मुन्ना ऐसन मकान तुहुँ बनवायअ । ”

यह जो पारिवारिक ईर्ष्या तुम देख रहे हो उसी तरह की ईर्ष्या का शिकार मैं उस समाज में हो चुका हूँ जिसमें मैं रह रहा हूँ । मेरे हर कदम को लोग बहुत संजीदगी से देखते हैं और मेरी एक फिसलन मुझे ख़त्म कर सकती है । मैं अगर आज इस परीक्षा में फेल हो गया होता तब कल सुबह पूरे यूनिवर्सिटी रोड , सारी डेलीगस्सी और होस्टल में एक ही शोर होता ... अनुराग शर्मा प्रारम्भिक परीक्षा फेल हो गये , क्रिस्पत कब तक साथ देगी कुछ प्रतिभा भी होना चाहिये । वह पल भर की बुलंदी और शोहरत में आपा खो चुके थे और पैसा कमाने के लिये अपनी रँक भजा रहे , ऐसा कोई करता है । यह जो सारे लोग उनकी कोचिंग में पढ़ रहे उनका भी यही हशर होगा अगर उनके बताये तरीके से पढ़ेंगे..... पता नहीं और क्या- क्या कहते लोग । मेरा फेल होना कई वर्षों तक चर्चा में रहता ।

क्या पता कल लोग कोचिंग में कहते मेरा पैसा वापस करो मुझे तुमसे नहीं पढ़ना है । वह भी गलत न होते पैसा वापस माँगकर , एक अपेक्षाकृत आसान सी परीक्षा में फेल होने वाला कैसे एक बड़ी भीड़ को प्रेरणा दे सकता है । मैंने कोचिंग से कमाया काफ़ी पैसा खर्चा कर दिया है और अगर पैसा वापस

करना पड़ता तो कहाँ से वापस करता । मेरा विमोचन में भाषण होना भी मुश्किल था, मैं स्वयम ही इस मनःस्थिति में न होता कि मंच से जाकर बोल सकूँ । चलो ईश्वर दयालु है वह चाह रहा लिखाना एक गैर मामूली दास्तान मुझसे नहीं तो कोई कारण नहीं दिखता मुझको कि एक छोटे से दौर में साहिल से लहरों की तरफ दौड़ कर हर लहर से कहूँ और ऊपर उछाल मुझको, मुझे अतल गहराइयों की ओर ले चल, मुझे सागर के तल को छूना है । ”

दादू - “ भैया हमका पुनि कुछ नाहीं समझि आवत बा । तू बहुत बहकी - बहकी बात करत हअ आजकल । हमका त लागत बा कौनौ भूत- बरम तोहरे पर सवार बा, कुछ झड़ाई- फुकाई करवाई देई का ? ”

मैं - “ यार दादू छोड़ों यह सब फ़ालतू बात, कंटेसा कार का मज़ा लो । अब जब ईश्वर ही चाह रहा ऐश करो तब हमको उसका आदेश मानना ही चाहिये ”

दादू - “ भैया चलअ बँधवा वाले हनुमान जी के मंदिर, कार के टीका लगाई देई । ”

मैं - “ कौन अपनी कार है जो दर्शन करना ज़रूरी है । आज रहेगी कल चली जाएगी । ”

दादू - “ नाहीं भैया इ चार रोज - पाँच रोज बरे मिली बा । ”

मैं - “ यह कैसे पता ? ”

दादू - “ तोहार त चित्त कतौ और लगा रहा । ऋषभ भैया कहेन कि ऐका अपने पासै रखअ हमका ज़रूरत नाहीं बा । अब जब तक ऋषभ भैया हयेन तब तक त संगै रहे हमरे । ”

मैं - “ अगर कार वापस देबै न करी तब ? ”

दादू - “ इ त बहुतै बढ़िया बा, इ साइकिल चलाई - चलाई के उबियाई ग हई । ”

मैंने डराइवर से कहा चलो बँधवा की तरफ ।

दादू - “ डराइवर साहेब, एसी बा कार में ? ”

डराइवर - “ जी साहेब । ”

दादू - “ तनिक चलावअ । ”

डराइवर - “ साहेब चल रहा है । ”

दादू - “ ठंडी लागत नाहीं बा ज़रा एसी के मोंह हमरे तरफ करअ । ”

झराइवर- “ साहब यह पूरे कार में असर करता है । इसका मुँह किसी तरफ नहीं होता । मैं कूलिंग बढ़ा देता हूँ । ”

झराइवर ने कूलिंग बढ़ा दी और थोड़ी देर बाद दाढ़ बोला इत भैया शिमला होई गवा । पूर बदन जुड़ाई गअ । ”

मैं - “ शिमला कभी गये हो क्या जो कह रहे कि पूरा शिमला हो गया । ”

दाढ़ - “ अरे भैया पढ़े हई न । ”

हम लोग बँधवा वाले मंदिर पहुँचे । मंदिर बंद हो चुका था । मंदिर के बाहर की मूर्ति से दाढ़ ने लाल टीका कार पर लगाया । हम लोग लाल टीका माथे पर लगाकर घर पहुँचे ।

मेरे घर पहुँचते ही कार की आवाज़ से छोटा भाई बाहर निकला । उसने आश्चर्य व्यक्त किया कि कार कैसे ?

दाढ़ - “ ई कार भैया के हय । ”

माँ - “ मुन्ना के कार ? कहाँ से मिली ? ”

दाढ़ - “ इन पूछअ बुआ । अब ई कार इहीं दुआरे खड़ी रहे जहाँ मन करै जा , बलभर चलावअ । हम साइकिल फेंकी आवा । अब साइकिल के कौनौं काम नाहीं बा । ”

माँ - “ काहे साइकिल फेंक देहअ । उ अड़े- गड़े काम आवत । बतावअ कहाँ बा ओका मँगवाई लेई । ”

पूरा घर कार के चारों ओर घूमने लगा । पड़ोस के श्रीवास्तव जी की आवाज़ आयी , “ शर्मा जी नयी कार आ गयी क्या ? ”

पिताजी - “ मुझे कुछ पता नहीं श्रीवास्तव जी , यह मुन्ना पता नहीं क्या- क्या करता रहता है । यह किसी की कार होगी विमोचन कार्यक्रम के लिये मुन्ना को शायद कमिशनर साहब ने दी होगा । यह कहाँ से कार खरीदेगा । ”

सिन्हा जी - “ शर्मा जी यह सबसे बढ़िया कार है , चलिये कुछ दिन के लिये ही सही चढ़िये इस पर । शर्मा जी यह बहुत मँहगी भी है । बेटा आईएस बन गया , कोचिंग में लाखों कमाया है , अब आप कार नहीं लेंगे तब कौन लेगा । ”

माँ - “ मुन्ना तू कार खरीद लेहअ ? ”

मैं - “ माँ आम खाओ पेड़ न गिनो , लोगों को क्रयास लगाने दो न । कुछ काम मुहल्ले वालों को भी देना चाहिये । अब आज रात इनको पंचउरा करने दो । ”

मेरा छोटा भाई मुहल्ले के छोटे बच्चों को भगा रहा था कि कार न छुओ इस पर स्क्रैच आ जाएगा । कार को धूम - धूम कर पूरा घर -मुहल्ला देख रहा और लोग कानाफूसी कर रहे , कहाँ से इतना पैसा मिला ? शर्मा जी तो सज्जन हैं यह मुन्ना पूरा ४२० है । नौकरी में जाने के पहले ही लगता है धूस लेने लगा ।

कोई बोला , नहीं कोचिंग में बहुत पैसा कमाया । तीसरा बोला , यह पैसा फलेगा नहीं । यह गरीब छातरों का खून चूस कर लिया गया पैसा है , आज नहीं तो कल भोगेंगे यह लोग । यह मुन्ना की माँ कम ढोंगी नहीं है । गंगा नहाने का , भवित्व होने का नाटक करती है पर खून चूस कर कमाया पैसा बैंक में जमा कर रही है ।

एक काम मिल गया उस बोसीदा गल्ली में लोगों को , आज की रात भारी थी उनके लिये और मेरी माँ कार के चारों तरफ से देख रही थी । मेरा भाई ड्राइवर से पूछ रहा गेयर कौन सा है और ब्रेक कौन सा । वह खड़ी कार में ही गेयर , ब्रेक लगाकर कार सीखने का अभ्यास कर रहा । ड्राइवर को लगा कि यह कार आज तो तोड़ ही मारेगा पर बेचारा क्या करता । अमीर आदमी का ड्राइवर , बड़े-बड़े लोगों को लेकर आता जाता होगा , इतने दरिदरों को उसने भी शायद पहली बार देखा होगा ।

मैंने माँ से कहा तैयार हो जाओ .. यात्रिक होटल आंटी के पास चलना है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 229

माँ ने पूछा , “ ऐतना राति के चलै के होए ? ”

मैं - “ अब आंटी ने कहा , मैं क्या कहता ? ”

माँ - “ पहिले इ बतावअ इ कार कहाँ से आई ? ”

दादू - “ तू बुआ समझि लअ इ तोहरै कारि हय । ”

माँ - “ कहाँ से आई इ कार , ऐसन कार त हम देखेन नाहीं हये । ”

दादू - “ बुआ अब सब देखबू , बस धीरज रखअ । ”

माँ - “ साहेब देहेन इ कार बिमोचन के काम - धाम बरे का ? ”

मैं - “ नहीं । ”

माँ - “ तब । “

मैं - “ ऋषभ की है , उसने दिया है । “

माँ - “ का हमेशा बरे दै देहेन का ? “

मैं - “ वह भी दे देंगे , अगर कह दूँगा । उनके लिये क्या है यह कार - वार । शालिनी ने दिल्ली में कहा था , मेरा - अनुराग - ऋषभ का कुछ बाँटा थोड़ी है । जो मेरा है वह इसका भी है । “

माँ - “ तू एतना नज़दीक होई गअ हअ ? “

मैं - “ अभी चलो देखना । माँ संबंध रक्त संबंधों से ही नहीं बनते उनको पोसना पड़ता है । आप अपने ही भाई से कुछ दिन न मिलो संबंधों में दूरी आने लगती है । इसीलिये पुराने लोग कहते थे , मिलना - जुलना चाहिये । यह जो हमारे सारे रीति- रिवाज हैं वह भी इसी उद्देश्य से बनाये गये हैं । यह अलग बात है कि हम नयी हवा में उनके भूलते जा रहे और हमारे बीच जो एक संबंधों का ताना- बाना है वह कमजोर होता जा रहा है । मैं दिल्ली गया आंटी के साथ रहा । मैं दिल्ली के पूरे परवास में कहीं नहीं जाता था उसके साथ ही रहता था । अब साहचर्य में एक अलग गोंद तो होता ही है जो जोड़ देता है लोगों को । ऋषभ के साथ रहा मैं और उसने ऐसी - ऐसी बातें मुझसे साझा कीं जो उसने अपनी माँ को भी न बतायी कभी । आंटी ने तो पूरा जीवन ही खोल कर मेरे सामने रख दिया । यह तुम्हारा और आंटी का संबंध ज़रूर था पर वह मात्र औपचारिकताओं तक सीमित था , पर मेरे दिल्ली जाने से एक नया जीवन आ गया उसमें । चलो तैयार हो वह इंतज़ार कर रही होगी । “

माँ को समझ ही नहीं आ रहा था कैसे वह तैयार हो । उसने भी यात्रिक होटल बाहर से देखा था और ऋषभ- शालिनी के शानों- शौकत के तमाम क्रिस्से मुझसे सुने थे उसने । वह सहजता से तैयार नहीं हो पा रही थी । उसने पिताजी से पूछा , “ का पहिनी ? “

पिता जी - “ कुछ भी पहन लो । “

उसके पास कोई खास साड़ियाँ थी नहीं । वह ज्यादातर रोज़मरा की ज़रूरत वाली धोती ही खरीदती थी । बाबा भैया के विवाह की साड़ी वह पहन नहीं सकती थी । उसने नीले रंग की साड़ी पहनी , टिकुली लाल ही लगाती थी , लिपस्टिक तो कभी वह लगाती न थी । आँखों में काजल लगाती थी । उसकी आँखें वैसे ही बड़ी- बड़ी थीं और काजल लगाने के बाद तो क्या कहने ... किसी भी कवि की कल्पना की नायिका की आँखें उसकी आँखों के सामने पनाह माँगने लगे , पैर में आलता हमेशा लगाती थी और लाल सिंदूर मोटा सा माँगों के बीच ...

चप्पल ढूँढ़ने लगी वह मिल ही नहीं रही थी । वह गंगा स्नान के लिये बगैर चप्पलों के ही जाती थी, कहीं खास आना जाना उसका था नहीं इसलिये चप्पल साधारण ही थे उसके पास । बहिन का चप्पल पहन कर वह तक़रीबन तैयार हो गयी, मैंने कहा, “माँ काजल लगा लें तुझे मेरी ही नज़र न लग जाए । तू एक नज़म बन चुकी है.... एक ऐसी नज़म जिसमें सादगी ही सादगी है, एक बर्फ के टुकड़े पर उदिशा के पड़ने से बनने वाली सुंदरता पर वह सादगी समाहित सुंदरता आळादित करती है और बार - बार पढ़ने का मन करता है ।

पिघल रही है बर्फ
तुम्हारे कपोलों पर
दिख रहे हैं प्रतिबिंब ही प्रतिबिंब उसमें
जैसे गंगा में बहाये गये हजारों दिये
मचल रहे हैं पानी पर बनाते एक उज्ज्वल लकीर अपनी और बिंबों की
पानियों के दरमियाँ ।

माँ यह बता, जब पिताजी ने तुझको पहली बार देखा होगा तब अपलक ही देखा होगा ।

माँ - “मुन्ना तोहरे पास कौनौ और काम नाहीं बा । अब अपने दुलाहिन के बारे में लिखअ । हमार पाँच के त समय बीत गवा बा ।”

दादू - “हमहूँ चली भइया ? ”

मैं - “कोई कल कह रहा था यह अनुराग कहाँ दादू, अशोक को लटका कर चल देते हैं । यह जहाँ जाते हैं पूरा दिन बेमतलब की बात में बिता देते हैं । तुम घर रहो । ”

दादू - “भैयन जैसा आदेश द सिपाही के, सिपाही वैसै करे । ”

माँ कार में बैठी । वह कार से बहुत ही प्रभावित थी । उसके लिये चिंतन सर की जीप हा पुष्कर विमान सदृश थी, यह कार तो सूरज के रथ की तरह थी । ड्राइवर ने गाड़ी चलायी, ऐसी आन किया और पूछा, “साहब गाना सुनेंगे ? ”

मैं - “सुना दो । ”

झराइवर ने कार में लगा टेप चला दिया और गाना चालू हो गया , सजन रे झूठ मत बोलो खुदा के पास जाना है

पलक झपकते ही यात्रिक होटल का प्रांगण आ गया । माँ होटल को विस्मय से देख रही थी । उसके जीवन का यह पहला होटल था जहाँ वह आयी थी । वह मेरे पीछे-पीछे एक बच्चे की तरह चल रहा था कि कहीं इस होटल में रास्ता न भूल जाये , मैं मुख्य द्वार से रिसेष्न पर गया । मैं अभी आया ही था इसलिये उसने पहचान लिया और ऊपर भेज दिया । मैंने आंटी के कमरे की घंटी बजायी , आंटी ने झट से दरवाजा खोल दिया , शायद वह मेरा इंतज़ार कर रही थी । बीस साल से भी ज्यादा बीत चुके थे जब माँ और आंटी अंतिम बार मिले थे , एक आते - जाते बीस पैसे के स्टाम्प लगे कागज़ की ताक़त से यह दोनों आपस में इतने सालों से जुड़े थे , अपने दुःख - सुख साझा करते थे , पत्र को पढ़कर एक- दूसरे के दुःख - तकलीफ पर आँसू बहाते थे । एक सेकेंड का भी वक्त न लगा जब दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया और गले लग गये । मेरी माँ रोने लग गयी । मैं खड़ा देख रहा था वह मिलन जो सुदामा और कृष्ण के मिलन ऐसा था या राम और भरत ऐसा , पर था नायाब ही । आंटी ज्यादा समझदार थी उसने माँ से ज्यादा जीवन की विदरूपताओं को नज़दीक से देखा था । एक कम उम्र के वैधव्य से बड़ी दूसरी कोई विदरूपता एक महिला के जीवन की हो नहीं सकती , आंटी ने वह जीवन भोगा था अपार कष्टों के साथ पर इन कष्टों ने उसे बहुत मज़बूत कर दिया था और सिफ़र में ही जानता था कि आने वाले वर्षों में उसे पति के बाद पुत्र को भी खोना है , उस भयावह कथा के लिये स्याही तैयार की जा रही थी । उस स्याही से लिखे पन्नों को पढ़कर मुझे ही सुनाना था आंटी को यह कहते हुये , “ मैं हूँ ना ” ।

माँ संयत हुई । आंटी ने कहा ऋषभ- शालिनी को बुला लाओ अनुराग । मैंने ऋषभ के कमरे की घंटी बजायी । एक घंटी में ही शालिनी ने दरवाजा खोल दिया । वह लोग भी इंतज़ार कर रही रहे थे । मैंने बताया , माँ आंटी के कमरे में है । वह दोनों मेरे साथ आंटी के कमरे में आये और माँ के पैर छुये । माँ ने दोनों को देखा और कहा , “ शांति बहुत अच्छी जोड़ी भगवान ने बनायी है । “ आंटी - “ अनुराग की भी ऐसी ही बनेगी उर्मिला । “

शालिनी - “ आंटी जी मुझे भी दिखाना अनुराग के लिये जो भी लड़की चुनना । मैं आसानी से कोई लड़की नहीं सेलेक्ट करूँगी अनुराग के लिये । अब कोई अगर अनुराग ने चुन ली हो तो बात अलग है । “

माँ - “ अनुराग बहुतै बेसहूर हयेन एह सब काम में । एनके बस के ई काम नाहीं बा , तोही के इ काम केहे पड़े । लोकिन अगर तू अपने ऐसन लड़की खोजबू तब अनुराग रहि ज़हिं बिन बियाहा । “

आंटी - “ उर्मिला अनुराग के लिये शालिनी से कम खूबसूरत लड़की तो लायेंगे नहीं । अब परिवार में एक मानक स्थापित हो गया है, उसका तो ध्यान रखना ही है । कोई लड़की देखी ? ”

माँ - “ नाहीं शांति बहिन अबहिं त इह कामै के तरफ़ ध्यान गवई नाहीं बा । रिश्ता तो बहुत आवत हएन पर कौनौं रिश्ता समझै नाहीं आवत बा । सब बहुत बड़ - बड़वार मनई आवत हआ , अब तोहसे त शांति बहिन कुछ छिपा बा नाहीं, ऐतने बड़े- बड़े घरे के लड़की हमरे घर न चलि पाए । अब जौन साहेब के किताब के बिमोचन होत बा ओऊ आ रहेन अपने बहिन बरे पर हम ना कहि देहा । ”

शालिनी - “ क्यों ना कहा ? ”

माँ - “ ओकर दुई- दुई भाई कमिश्नर हयेन , दिल्ली के कौनौं स्टीफ़न्स कालेज में पढ़े बा अंग्रेज़ी माध्यम में । मुन्ना अंग्रेज़ी में निल बटे सन्नाटा हये । अब परिवार - लड़की - लड़का में कौनौं में मैच बा नाहीं कैसे बियाह करी । ”

शालिनी - “ आंटी जी आप अनुराग को नहीं जानती हो पूरी तरह से । मैं तो कुछ ही समय साथ रही जब दिल्ली आये थे , इनके लिये एक अलग लड़की चाहिये । ”

माँ - “ शालिनी बिटिया तू देख ल लड़की उहौ आई बा बिमोचन में अगर तोहका लागत बा चलि जाए तब कै देब , कतौ त बियाह करै के हइयै बा । जैसन तू पचे कहअ कै देबै , अब हमका कुछ समझि त ज्यादा त बा नाहीं । ”

ऋषभ - “ तुम लोग बात ही करते रहोगे या कुछ खाने को भी मँगाओगे । ”

शालिनी - “ क्या मँगायें ? ”

ऋषभ - “ आंटी जी क्या खायेंगी? ”

माँ - “ हम त खाई के आई हई घरे से , चाय पी लेबै । ”

ऋषभ ने खाने में जितना हो सकता था सब मँगा दिया । थोड़ी देर बाद ऋषभ ने कहा चलो अनुराग लान में बैठते हैं इन लोगों को बात करने दो ।

मैं और ऋषभ लान की दो कुर्सियों पर अगल - बगल बैठ गये ।

ऋषभ - “ अनुराग तुम्हारा तीन जून को रिज़ल्ट आया , आज दो अगस्त है । दो महीने भी नहीं हुये । इतनी बड़ी उपलब्धि परीक्षा में सफल हुये , कोचिंग में सफल हुये , इतनी बड़े समारोह का नेतृत्व ऐसा कर रहे हो , इतनी बड़ी- बड़ी सफलता एक के बाद एक , इसका तुम पर क्या असर हुआ ? ”

मैं “ मेरा दिमाग ख़राब हो चुका है । मैं हरदम नशे में रहता हूँ । मेरे अंदर अहंकार का वास हो चुका है । ”

ऋषभ - “ अहंकार का वास हो चुका है , यह तो ठीक नहीं है उसको बाहर निकालो । । ”

मैं “ नहीं ऋषभ उसको मैं पोस्त रहा हूँ । मुझको उसके साथ रहने में मज़ा आ रहा है । मैं अब उसके बगैर नहीं रह पाऊँगा । यह अहंकार बहुत बढ़िया वस्तु है ऋषभ । यह बगैर नशे करने के अपराधबोध के नशे का सुरूर देता है । एक ऐसी मादकता होती है कि बस मन करता है , यह कभी उतरे ही नहीं । ”

ऋषभ- “ पर यह ठीक तो नहीं है । ”

मैं “ अब सत्य- असत्य , उचित - अनुचित से मैं ऊपर उठ चुका हूँ । मैं अब उस ओर बढ़ रहा हूँ जहाँ मेरी गणी इश्वर इच्छा की तरह है । यह क्लास में लोगों को उपदेश देना , यह भान होना कि यह सारा जलसा इसलिये है कि मैंने किताब लिखी है । मैं न होता तो यह जलसा न होता । यह किताब मेरे बगैर लिखी नहीं जा सकती थी , इस बात में सत्य है कि नहीं है पर यह मैं मान बैठा हूँ और मैं अपने आप को इस इतने बड़े कार्यक्रम के सर्जक के रूप में देख चुका हूँ । ऋषभ सर्जक से बड़ा कोई नहीं होता । यह सर्जना एक उन्माद देती है । तुम किसी कम्प्यूटर का प्रोग्राम बनाओ , कोई चित्रकार नायाब पेंटिंग बनाये , कोई रचनाकार कालजयी रचना लिख दे उसके भीतर एक सर्जक की छवि आती है । बस फ़र्क यह है वह सर्जक नम्र होता है । मैंने नम्रता त्याग दी है , मैं पूरे कार्यक्रम को चलाने वाला एक नायक बन चुका हूँ । ”

ऋषभ - “ यह एक भ्रम भी हो सकता है ? ”

मैं - “ भ्रम ही सही , भुलावा ही सही पर यह मुझे आनंदित कर रहा । मैं इस आनंद में ज़िंदा रहना चाह रहा । ”

ऋषभ - “ अनुराग अहंकारी होना अच्छा नहीं होता । ”

मैं “ यह जानता हूँ बड़े भाई पर मुझे भी अमिताभ बच्चन बनने का शौक है । अभी तक कोई बनने नहीं दे रहा था । अब अवसर मिला है बनने दो । देखा जाएगा जब वक्त कहेगा , बस अब बहुत हो गया । यह बताओ यह कार कितने दिन के लिये है । ”

ऋषभ - “ कौन सी कार ? ”

मैं “ यही जो मेरे साथ है कंटेसा कार । ”

ऋषभ- “ जितने दिन चाहो रखो यार , यह क्या कार की छोटी- मोटी बात कर रहे हो , इतने बड़े दार्शनिक वार्तालाप के बीच । ”

मैं “ अगर वापस ही न कर्सँ तब । ”

ऋषभ - “ यह कोड़ियों के दाम की कार है । यह कितने डालर की होगी ? इसको कौन खरीदता है विदेशों में । शालिनी की कार देखी है , वह देखना । तुम्हारे ऐसे नायाब आदमी को कार देनी होगी तो और बेहतर कार दूँगा । ”

मैं “ ऐसे ही कह रहा था , मेरी साइकिल बहुत है मेरे लिये । ”

ऋषभ - “ नहीं अनुराग तुम कोई भी बात ऐसे नहीं करते । तुम्हारी हर बात में कुछ तत्व होता है । मैं तुमसे एक बात और साझा करूँगा । ”

मैं “ क्या ? ”

इतने में शालिनी आ गयी और बोली की आंटी जाना चाह रही हैं , वह कह रही रात बहुत हो गयी है ।

मैंने ऋषभ से कहा , “ कल आता हूँ और तुमको कमिशनर साहब से मिलाता हूँ । उनका भाई भी आज आ गया होगा । वह आईआईटी कानपुर का पढ़ा हुआ है , क्या पता वह भी ऋषभ मिश्रा के यश और प्रताप से परिचित हो । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 230

मैं माँ के साथ वापस घर आने लगा , रात बहुत हो चुकी थी । उसने सिविल लाइंस के हनुमान मंदिर पर हाथ जोड़ा और मुझसे भी कहा हाथ जोड़ने को । मैं थोड़ा धर्म के वाह्य स्वरूप में विश्वास कम रखता था , पर उसकी बात मानकर हाथ जोड़ लिया । सीएवी कालेज के सामने जब कार पहुँची तब माँ ने पूछा , “ ऐतना बड़े - बड़े दुई कमरे में शांति अकेलेन रझिं ? चारै परानी त आई रहेन सभै इ कमरा में आई जातेन , काहे दुई- दुई कमरा सबकेउ लेहेन रहइ बरे । ”

मैं “ अब माँ यह लोग जीवन के एक दूसरे धरातल पर हैं जिसका हमको - तुमको कोई ज्ञान नहीं है । ”

माँ - “ केतना पैसा एक कमरा के लागे ? ”

मैं “ पता नहीं ? मैंने भी इतना बड़ा कमरा पहले तो कभी देखा नहीं । होटल भी मैं पहली ही बार देख रहा । ”

माँ - “ ऐतना पैसा खर्चा के दृहेन एक किताब के जलसा देखै बरे , कौनौं और काम त बा नाहीं इहाँ आवै के । ”

मैं- “ पैसा खर्चा कैसे हो यह भी एक समस्या है इनके लिये , इतना पैसा है ? यह लोग मिलना भी चाहते थे तुमसे । आंटी मायके - ससुराल जाना चाह रही , ऋषभ- शालिनी को दिखाना चाह रही घर अपना । अब पैसा है तो खर्च करेंगे ही नहीं तो क्या काम पैसे का ॥

माँ- “ ई कार केतने के होए ? ”

मैं- “ मुझे कैसे पता ? मैंने तो साइकिल भी न खरीदा कभी । ”

माँ- “ केतना रूपिया होए एनके पाच के पास ? ”

मैं- “ आहूजा साहब हज़ारों करोड़ के आदमी हैं यह कहते हैं लोग । ऋषभ ने भी काफ़ी पैसा कमाया । पचासों लाख तो ऋषभ ने आंटी के बैंक में जमा किया है । ”

माँ- “ ऐतना पैसा बा एनके पचन के पास ! ”

मैं- “ माँ देखना एक दिन ऋषभ का बहुत नाम होगा । वह बहुत ही ज़हीन है , सरस्वती का मानस पुत्र है । ”

माँ- “ तोहका कैसे पता कि शांति के खाता में पचासन लाख रूपिया पड़ा बा । ”

मैं- “ यह उन्हीं लोगों ने बताया । ”

माँ- “ मुन्ना तू ऐतना नज़दीक कैसे होई गअ एनके सबके एतने कम समय में । ”

मैं- “ पता नहीं माँ । बस इनको मेरे पर विश्वास हो गया । ऋषभ - शालिनी तो सब कुछ बताते हैं । वह लोग विदेश में रहते हैं वह चाह रहे कि मैं आंटी का ध्यान रखूँ यहाँ पर । ”

माँ- “ काहे तू रखबअ ? ”

मैं- “ अब वह लोग विदेश से आयेंगे हैं नहीं तब कोई तो चाहिये ध्यान रखने के लिये । कोई नात- रिश्तेदार तो है नहीं इनका । अब एक मजबूरी है इनके जीवन की , किसी पर भरोसा करना और मैं मिल गया । इसीलिये माँ सब कहते हैं कि जीवन में कोई भोगने वाला होना चाहिये संपदा का । अब इनके पास संपदा बहुत है पर कोई भोगने वाला नहीं है । यह लोग पैसा कमाने की अंधी दौड़ में शामिल हैं , जीवन कहीं छूटता जा रहा । ”

माँ- “ अच्छा जीवन का होत हअ मुन्ना ? ”

मैं- “ जीवन में अपने लोग हों परेम भाव बना रहे । पैसा ज़रूरत भर का हो , जीवन में तंगहाली न हो , बाल- बच्चे सदाचारी हों आत्मनिर्भर हों । घर में

परिचित- नात-रिश्तेदार आते रहे । आप भी लोगों के पास आते - जाते रहो । व्यक्ति अपना ही नहीं लोगों का , समाज का ख्याल रखे । सबसे ज़रूरी है जीवन में प्रेम का बना रहना । वह आज के दौर में बहुत कम हो रहा है । याद है आपको अपने घर का बैठका । वहाँ लोग ऐसे ही आकर बैठ जाते थे और बड़ी मामी से कहते थे , भौजी कुछ सुपारी - उपारी धरे होऊ त खियावअ । मामा कहते थे , चाय बनावअ पहिले । बाबा का याद है किसी भी गाँव चले जाते थे । बाबा से मिलने कोई भी चला आता था । हमारा गाँव का मकान सड़क पर है । दूसरे गाँव से गुजरने वाले साइकिल सवारों को वह रोक लेते थे और बैठकर हाल - चाल पूछते थे । अब वह मानिंद अध्यापक थे उनकी एक अलग ही प्रतिष्ठा थी पर आज भी तो अध्यापक हैं पर क्या उनका जीवन उस तरह का है ? उनका विद्या दान में विश्वास था पर आज के दौर में कितने लोगों का है ।”

माँ - “ तू कबीर ऐसन कहत हअ साई इतना दीजैं जामें कुटुंब समाय ... ”

मैं - “ नहीं वह नहीं कह रहा । वह तो बहुत कम में जीवन चलाने में यक़ीन रखते थे । एक सम्पन्नता थोड़ी ज़रूरी है जीवन में पर अतिशय सम्पन्नता की कोई आवश्यकता नहीं है । जीवन में अपने लोग होने चाहिये और थोड़ी सम्पन्नता । **ऋषभ-** शालिनी - आंटी के जीवन में संपन्नता बहुत है पर अपने लोग कोई नहीं हैं । यह किससे अपना दुःख - सुख साझा करें । यह किससे कह सकें आओ ठहर जाओ कुछ घड़ी मेरे मन की बात सुनो । ऐसे जीवन के खालीपन में मैं मिला जिसके पास समय ही समय है और मनोरंजन करने का थोड़ा गुण भी है । मैं लिख- पढ़ लेता हूँ और इसमें इन तीनों की रुचि है । हिंदी - उर्दू में आंटी और शालिनी दोनों की रुचि है और मेरी तो है ही । अब मैं उसकी सबसे अच्छी सहेली का बेटा हूँ , मुझ पर विश्वास करना आसान है इसलिये नज़दीकी हो गयी । ”

माँ - “ मुन्ना ऐतनी बड़ी कार तोहका दै देहेन इ बड़ी बात बा । ”

मैं - “ बात तो बड़ी है , यह आंटी कंजूस है पर शालिनी बहुत दिलदार है , इसमें दोनों की परवरिश भी एक कारक है । माँ आप देखो न हम लोगों का पारिवारिक संबंध किस तरह का है । तुमने मामा से रूपया माँगा मकान बनवाने के लिये वह भी उधार और ब्याज देने को भी तैयार थी । क्या हुआ ? मैंने बाबा भैया के विवाह के बाद कहा बुलेट हमको भी सिखा दो , मैं भी चला लूँ । उन्होंने क्या कहा ? ज़रा शीशा में मोह देखि के आवअ , बड़ा बुलेट के शोक़ीन होई ग हअ । अब बताओ इस संबंध में ऐसा क्या है जो ढोया जाये ? पर हम लोग चलाना चाहते हैं । क्यों ? यह संबंध जैसे भी हैं कोई है तो अपना पर आंटी - **ऋषभ** के पास ऐसा भी कोई संबंध नहीं है । यह लड़ना- झगड़ना, उलाहना देना , शिकवा - शिकायत होना यह सब जीवन की नीरसता को दूर करता है अगर सरसता नहीं देता तब भी । ”

माँ - “ मुन्ना तू बड़ा ज्ञानी होई गअ हअ / शांति के कुल ज्ञान देहअ हमका कुछ नाहीं देहअ / ”

मैं - “ सबसे बड़ा ज्ञानी इस धरती पर उर्मिला शर्मा है । वह किसी की सुनती है ? यह बताओ तुमने अंतिम बार किसकी बात पूरी सुनी है । आदमी बोलता रहता है बीच में ही तुम लोक लेती हो । माघमेला का प्रवचन छोड़कर और किसी की बात सुनती ही नहीं हो । तुम सुनो तब तो कोई सुनाये । ”

माँ - “ मुन्ना जब तक तू दरेनिंग पर जात नाहीं हअ जैसन शांति के सब बतावत हअ हमकउ बतावअ / ”

मैं - “ ठीक है , कल दीक्षा दूँगा तुमको और दीक्षा पहला मन्त्र है , धैर्य से सुनना । ”

इतने में कार घर की गली में घुस गई । माँ ने कहा , “ पतझ्य न चला समय का । ”

झराइवर ने उत्तरते ही पूछा , “ साहब सुबह कितने बजे आयें ? ”

मैं - “ आठ बजे आ जाना । ”

दादू जग रहा था । उसको नींद कहाँ आने वाली । किसी ने कुछ कहकर उसको आज लटकने न दिया । वह उसको कोस रहा था जिसने कहा था , “ कहाँ अनुराग दादू , अशोक को लटका कर चल देते हैं । यह सब फ़िज़ूल की बात करके पूरा समय ख़राब करते रहते हैं । ”

वह जानना चाह रहा था क्या- क्या हुआ वहाँ पर । उसने पूछा , “ भैया के कहेस हमका लटकन ? ”

मैंने पूछा , “ उससे लड़ोगे क्या ? ”

दादू - “ लड़ब त नअ पर थोड़ा सजग रहब ऐसन लोगन से । ”

मैंने कहा , “ कल सुबह आठ बजे कार आयेगी तुम कार लेकर मामा के यहाँ चले जाना , कहीं और मत चल देना कार लेकर अपनी हवा- पानी झाड़ने । मामा से कह देना कि पंदरह सौ लोगों का खाना कर देंगे । यह मत बताना कार कहाँ से आयी या किसकी है । ”

दादू - “ चिंता न करअ भरमाई देब ओनका । ”

माँ ने कल खाने पर आने को कहा था आंटी को । वह थोड़ा चिंतित भी थी कि इतने बड़े- बड़े लोगों को कैसे वह इस घर में सँभालेंगी । उसने घर- परिवार के ही लोगों की आवभगत की थी । इस तरह के लोगों से तो हम लोग

आज तक अनजान थे । मैंने उसको समझाते हुये कहा , “अब इस तरह के जीवन के लिये भी तैयार रहो । बेटी का विवाह भी बेहतर घर में ही करोगी । वह लोग भी आयेंगे हीं । यह जो जीवन जिया है वह पीछे छूट रहा है और एक नया जीवन सामने आ रहा है । इस नये जीवन का स्वागत करो । कल चिंतन सर आ जायेंगे वह भी सँभाल लेंगे आप परेशान न हों । ”

पिताजी लगता है जब पैदा हुये थे तभी से परिपक्व थे । वह कभी बिना मतलब हँसे भी न होंगे । मैं माँ से कहता भी था कितना बोरिंग पति मिला तेरे को । इनके जीवन में कोई उल्लास ही नहीं । यह हमेशा युधिष्ठिर की तरह उपदेशात्मक मुद्रा में रहते हैं । यह जैसे अवसर खोज रहे हों उपदेश देने का । उन्होंने कहा , “ चिंता की कोई बात नहीं है । यह घर जो है सो है । तुम साफ- सफाई रखती ही हो । वह लोग सब जानते ही हैं, सब सँभल जायेगा , मुन्ना रहेगा ही । ”

सुबह ड्राइवर आ गया । वह समय पूर्व ही आ गया । दाढ़ू और मेरा भाई दोनों सड़क पर ही टहल रहे थे कि कार कब आयेगी । आखिर वह घड़ी आ गयी जब कार दिखी गली में घुसती हुयी । कार के पीछे बच्चों का क्राफ़िला दौड़ने लगा । घर के अंदर शोर हुआ कि कार आ गयी । मेरा भाई भी जाना चाहता था कार पर बैठकर मामा के यहाँ पर माँ ने जाने नहीं दिया यह कहकर कि घर में काम है कहाँ जाओगे । वह मन मसोसकर रह गया । मैंने यहाँ कि शाम को तुम कार लेकर परेड सिविल लाइंस का एक चक्कर लगा लेना । मैं पैसा दे दूँगा तुम चुन्नीलाल का छोला भट्ठरा खा लेना । उसने कहा कि मैं साथ में रोशन को भी ले जाऊँगा । मैंने कहा जितने लोग सीट पर आ जायेंगे सब को बैठा लेना । वह मुहल्ले में शाम को कार पर घूमने का बयाना बाँटने लगा यह कहकर , “ यह जो आईएएस होते हैं न उनको सरकार कार दे देती है ताकि कार पर चलने और संतरी के सेल्यूट के अभ्यस्त हो जायें नहीं तो अफ़सर बनने के बाद पता ही नहीं होता कार और सेल्यूट के बारे में । भैया की ट्रेनिंग चालू हो गयी है । यह

कार ट्रेनिंग के लिये आयी है । हम लोग शाम को परेड और सिविल साइंस चलेंगे । ”

सुबह से ही उसके दोस्त दरवाजे पर टहलना चालू कर दिये , शाम हो ही नहीं रही थी ।

दाढ़ू मामा के यहाँ पहुँचा । उसकी आज की चाल अलग थी । वह चाह रहा था कि लोग कार के बारे में बात करें, पर उसका दुर्भाग्य यह था कि कोई जान ही न पाया कि वह कार से आया है । यह एक नयी कार थी । इसकी आवाज़ कम होती थी इसलिये किसी को कार की आवाज़ सुनायी न दी । उसने मामी

से मामा के बारे में पूछा . मामी ने बताया कि वह पूजा कर रहे हैं । वह बाबा भैया से बात करने लगा । मामा के पूजा करके आने के बाद दादू ने बताया मेरा संदेश ।

मामा -“ पन्द्रह सौ आदमी का खाना ? ऐतना लोग कहाँ से अझिं ? कुल खाना बेकार होई जाये । “

दादू -“ चाचा अब हमका जौन कहै बरे कहा गवा उ कहि देत हई , बाकी हमका नाहीं पता । आप मुन्ना से पूछ लेई । “

मामी - “ मुन्ना खुद काहे नाहीं आयेन ? एतना बड़ा अफ़सर अबहियैं से होई ग हयेन कि संदेशवाहक भेजै लागेन । ओनका आई के समझवाईय के रहा कि केतना आदमी बढ़त हयेन और कैसे बढ़त हयेन । हर काम में पैसा लागत हअ , ओनका का बा हुकुम चलाई देहेन । “

बाबा भैया - ई मुन्ना कहत हयेन कि साहब कहत हयेन ? “

दादू - “ भैया हम छोटवार मनई हई । अब हमार ई हैसियत त बा नाहीं कि बड़ - बड़वार के काम में पड़ी । हमका आपन सीमा पता बा । हम अपने दरमियानै रहित हअ भैया । अब चाचा पूछ सकत हअ इ बात हम त नाहीं पूछि सकित । “

इतने में मोहिता दीदी आ गयीं और उन्होंने घर में घुसते ही पूछा , “ यह कार किसकी खड़ी है ? “

बाबा भैया - “ कौन सी कार ? “

मोहिता दीदी - “ एकदम नयी कटेंसा खड़ी है । कौन आया इस कार से ? “

दादू - “ दीदी हमहीं आवा कार से । “

बाबा भैया -“ कहाँ से मिली ? “

दादू -“ मुन्ना के कार हई । “

मामी - “ मुन्ना के कहाँ से मिली ? “

दादू -“ हमका नाहीं पता । “

मामा - “ कबसे आई बा मुन्ना के पास ? “

दादू - “ दुई- तीन रोज होई ग बा । “

बाबा भैया - “ के देहेस ? का मुन्ना कार खरीदेन का ? ऐतना पैसा कहाँ से आई ? “

दादू - “ भैया हम इ सब पंचउरा में नाहीं पड़ा और न हम पूछा । हम आवत रहे सझिकिली से । मुन्ना कहेन कार लेहे जा । ”

बाबा भैया - “ लागत बा मुन्ना के बियाह तई होई गवा । ई कार उहीं में मिली होए । लागत बा साहब के इहाँ रिश्ता तय होई गवा तबै एतना दिमाग़ बढ़ि गवा बा कि आदेश देत हयेन कि खाना पन्द्रह सौ आदमी के कई द । ”

मामा - “ साहब दहेज न देझिं और एतनी मँगी कार त कभौं न देझिं । ई सब व्यापारी वर्ग वालों का काम है । वहीं सब यह काम करते हैं अफ़सरान नहीं करते । ”

बाबा भैया - “ तब पिताजी पक्का बा रामराज बाजी मारि लै गयेन । ओनकर हैसियत बा देई के और दिलौ बड़ा बा । ”

मामी - “ जब रूपियै पर बियाह करै के रहा तब हरिकेश में कौन बुराई रही , मनचाही कार त ओउ देई के तैयार रहेन । हमरे जबान के कौनौं कीमतै नाहीं बा । हम जबान देहे रहे इ सोचि के कि हमार भयने बा , घरे में रिश्ता होई जाये पर ई उर्मिला के माया केऊ न जाने । अब हरिकेश सुनिहिं कि रामराज के इहाँ रूपिया पर बियाह तई होई गवा तब हमार का रहि जाये । ”

मामा - “ दादू तोहका बिल्कुल नाहीं पता बा कार कहाँ से आई । ”

दादू - “ चाचा कहअ त हलफ उठाई लेई , हमका कैसे पता होये । हमका कुछ बतायेन त ह नाहीं । ”

मोहिता दीदी - “ पिताजी लगता है वरीक्षा हो गया और किसी को खबर नहीं दिया । ”

दादू - “ दीदी वरीक्षा नाहीं भै बा , इ बात के त गायरंटी बा । बुआ मुन्ना के बियाह बहुत धूम- धाम से करे । जहाँ एक बाजा बजै चाहे उहाँ दुई बाजा बजाये । ऐसन प्रतापी लड़िका के बियाह - तिलक - बरुआ-वरीक्षा चोरी से त न करे । ”

बाबा भैया - “ बड़का प्रतापी बना हयेन । तकदीर रही होई गयेन , हमहूँ जानित हअ ओनकर प्रताप केतना बा । ”

मामा - “ बाबा तुम बेवकूफ ही रहोगे पूरी ज़िंदगी । कमिश्नर साहब उसके इशारे पर चल रहे । राम पदार्थ मिश्नर ऐसे दबंग अफ़सर को बच्चों की तरह रूला दिया । यहीं तुम्हारी माँ के सामने वह भोंकार छोड़कर रोने लगा था यह कहते हुये कि गलती हो गयी हमसे । पूरे शहर को पढ़ा रहा , लाखों कमा रहा । तुम क्या कर रहे हो ? हर बात पर बेवकूफ़ी । यह आखिरी साल है , अगले साल अपना इंतज़ाम खुद करना , मैं कब तक तुम्हारा बोझ ढोऊँगा । ”

दादू समझ गया कि मामला गलत दिशा में चला गया है पर वह बहुत प्रसन्न था । वह घर से बाहर निकलते समय बुद्धिमत्ता ... “ सात अगस्त को पता चले कि हम कौन चीज हई । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 231

दादू मामा के यहाँ वापस आया और पूरे घटनाक्रम को अपनी तरह से फेंट-फेंट कर बताने लगा ।

दादू - “ बुआ , जिव जरि गवा सभै के जैसनै कारि के बारे में सुनेन । पहिले त केहू के पतै नाहीं चला कि हम कार से आई हई , ई कार अंदोर त करत नाहीं बुलेट के नाहीं । ई ऐसन चलत हअ जैसैन तालाब में मारअ ढेला और शांति से गोल- गोल गोला बनत जात हअ और पतै नाहीं चलतै , न कौनौ आवाज़ न हंगामा । मेहिता दीदी आईन तब पता चला हम आई हई कारे से । ”

माँ - “ मार देहे होतअ दुई- चार हार्न , ज़ोर - जोर से ।

दादू - “ बुआ इ डराइवरवा मनहूस टाइप बा कहा ऐसे पर उ समझबै नाहीं केहेस । ”

माँ - “ का कहेन कारे पर , कुल पंचाइत बैठि ग होये ? ”

दादू - “ बुआ हमसे लागेन पूछै कुल घर मिलि के , पर हम त भरमावै में माहिर हइय हई । बाबा भैया कहेन लागत बा रामराज मिश्रा बाज़ी मार लई गयेन और मुन्ना के बरीक्षा होई गवा , ई कार उहीं बरीक्षा में मिली बा । पर हम कहा बुआ , बरीक्षा नाहीं भवा बा और बुआ बरीक्षा काहे चोरी से करे ? ”

माँ - “ मुन्ना के बरीक्षा ऐसनै होई जाये ? हम कौनों चोरी से बरीक्षा- तिलक - बियाह - बरुआ काहे करब ? हम त कुल जगहा अंदोर करब । जे हमका नाहीं बोलाए बा हम त ओहू के बोलबैय । ”

दादू - “ उहै त हम कहा बुआ कि जहाँ एक बाजा बाजै के उहाँ बुआ दुई बाजा बजवाये , . एतना परतापी लड़िका के बियाह करत बा बुआ काहे छिपाई के करे । बाबा भैया त पूर जरतुहा हयेन । कहत रहेन कि हमहूँ जानित हअ मुन्ना केतना परतापी हयेन । अरे बुआ ओकरे बाद त चाचा कौनौ करम छोड़ने नाहीं ओनकर । ओनका भागै के जगहवउ नाहीं देहेन । ”

माँ - “ बाबा बेचारा परेशान बा । ओकर बियाह कै देहे हयेन । अब कूबत से ज्यादा बयाना लै लेबअ तब त इहै होए ना । पहिले मोहिता के आईएएस बनाएन फिर बाबा के । मुन्ना से कहत रहेन तू क्लर्कों के परीक्षा दअ और

अपने लड़िकन- बच्चन के आईएएस के देवावत रहेन । बाबा के क्लर्की के परीक्षा देवाए होतेन त कुछ हला - भला होई जात । “

दादू - “ बुआ , ओ बाबा भैया रबड़ छाप बुद्धि के मनई हयेन ओनके बस के इ परीक्षा - उरक्षा बा नाहीं । चाचा बंदूक के लाइसेंस एक अपने नाम कराएन और एक बाबा भैया के । अब ऐसन माहौल में पढ़ाई होई सकत हअ का । बुआ कभी हमरे पर बंदूक न चलाई देय ई जमीन - जायदाद के झगड़ा में । ”

माँ - “ कुल खाल खिंचवाई के भूसा भरवाई देब । हम रामेश्वर मिश्रा की बिटिया हई , एतनी हिम्मत होई जाए हमरे रहते । ”

दादू - “ तू अनुराग शर्मा के महतारिउ त हऊ । ”

माँ - “ ओकर कौनौ ज़रूरत न पड़े । ई मुन्नवा त दुई महीना से आईएएस बना बा । हम दसियन साल से ओनका नाकन चना चबवाये हई । माई के मरतै एनकर झरामा बँटवारा के चालू होई ग रहा । एकाध साल बाबू नात- हित के पंचाईत केहेन तब हमका समझि आई गवा कि हमहि के अब शस्त्र उठाये पड़े । तू पचे छोड़वार रहअ , भैया आई रहेन अपने बदली पर । हम कहि दिहा बाबू के रहत कौनौ बँटवारा न होये । हमसे लड़ि पड़िन भौजी । हमसे कहिन तू के होत हऊ । हमहूँ कहि दिहा .. वाह रे वाह लीला जगत के , हमरे घरे में बाहर के लोग पूछत हयेन हम के हई । कहि दिहा पढ़ ल कानून जेतना हक्क बेटवन के ओतनै बिटिया के । बस तब से मामला पलटि गवा । ”

दादू - “ बुआ तुहिन सहारा हऊ । ”

माँ - “ हम ई मुन्ना- मुन्नी के सहारे थोड़िकै हई । ”

दादू - “ बाबा या मोहिता दीदी केउ कहेस कि लागत बा साहेब के इहाँ बियाह तई होई गवा और उहीं से कार आई बा , तब चाचा कहेन साहेब दहेज न देइहिं । अब बुआ बगैर दहेज के त बियाह कैसे होये ? ”

माँ - “ अब बियाह के खर्चा त हमसे न होये । इ त देहे पड़े चाहे जहाँ बियाह होय । हमरे पास कहाँ पैसा बा मुन्ना के बियाह में खर्चा करै बरे । हम जौन दुई रुपिया जोड़े हई अब ओहमें मुन्ना के बियाह करी या गुड़िया के ? अब साहेबगीरी पर बियाह न होये केहू के इहाँ जमीनी हक्कीकत त समझि के काम केहे पड़े । ”

पिताजी सुन रहे थे बाहर के कमरे से यह वीर गाथा वह बोले , “ ऐ राणा सांगा , खाने का इंतज़ाम कर लो । देखो क्या और लाना है । यह कहानी सौ बार तो सुनायी होगी तुम । ”

माँ - “ ऊ सब होई गवा बा । ओकर चिंता न करअ । चिंतन आएन नाहीं अबअ । भिंसारेन अझहिं मुन्ना कहे रहा । ”

मेरा छोड़ा भाई चुन्नू इसी में लगा था कि कब शाम हो और कब वह कार लेकर उड़ जाये । वह मुझसे काफ़ी छोटा था । मेरे से तीन साल छोटी मेरी बहन थी और वह उससे क़रीब पौने तीन साल छोटा था । वह पन्द्रह- सोलह साल का होगा । उसके कुछ मुहल्ले के दोस्त उससे एक - दो साल कम के उम्र के थे । वह सब घर के आस - पास चक्कर लगा रहे थे । कार पर कितने लोग सवार हो पायेंगे इसका गणित लगाया जा रहा था । रोशन की जगह तो पक्की थी वह तो जायेगा ही । वह चुन्नू का सबसे अच्छा दोस्त था । रोशन ने घर में बता दिया कि मुन्ना भैया के टरेनिंग वाली कार आयी है उससे हम लोग आज शाम को घूमने जायेंगे । उसकी माँ ने कहा , कुछ ऐसा करो तुम भी मुन्ना की तरह बन जाओ । मेरे मुहल्ले की सारी मायें अपने बच्चों में मेरी छवि तलाशने लगी थीं । मेरे पुराने स्कूलों के भाव बढ़ गये थे । लोग श्यामा देवी भगवती परसाद, नवीन महिला सेवा सदन देखने जाने लग गये थे । सीपीआई से कपिल देव तिरपाठी मुझसे पहले आईएएस हो चुके थे और वह निःसंदेह इलाहाबाद के आज तक के सबसे जहीन विद्यार्थी रहे होंगे । जीआईसी , ईसीसी , इलाहाबाद विश्वविद्यालय एक नामी शिक्षा संस्थान रहे हैं इसलिये मेरी सफलता का उन पर कोई ख़ास असर न था वह सब अभ्यस्त थे यह अनुभव करने के , पर मेरे स्कूल बहुत ही सामान्य थे वहाँ निम्न मध्यम वर्गीय घरों के बच्चे पढ़ते थे और मेरी याददाश्त के अनुसार शायद ही मेरे साथ पढ़ने वालों में से किसी ने उच्च शिक्षा के लिये कहीं रुख किया हो , ऐसे स्कूल के लिये यह गर्व का विषय था ही ।

मेरा भाई बार - बार पूछ रहा हम लोग कितने बजे जायेंगे ? मैं उसकी मासूमियत देख रहा था जिसके लिये आज की शाम का ढलता सूरज एक दैवीय क्षण लेकर आयेगा । मैंने पूछा , कब जाना चाहते हो ? वह बोला चार बजे अगर चले जायेंगे तब हम लोग खूब सारा घूम लेंगे । मैं उसके चेहरे की तरफ देखने लगा और मैं यादों के उस झरोखे में चला गया जब मेरी माँ मुझकों खोने के आस - पास थी और आज उसके तीन नहीं दो बच्चे ही होते और यह छोटा बच्चा जिद किससे करता । यह मुझसे ही ज़िद करता था , मेरे सिवाय कौन सुनने वाला है इसकी बातें यहाँ इस घर में । यह बचपन से ही मेरे चारों तरफ घूमता रहता है । मैं न होता तब यह किससे कहता .. मेरे भी कुछ ख़बाब हैं कम से कम सुन तो लो

मेरी माँ का विवाह जब हुआ था तब वह सोलह साल की थी और गौना जब हुआ तब वह सत्रह की थी । उसको विवाह के तीन वर्ष तक कोई बच्चा न हो रहा था । तीन वर्ष बाद मैं उसके गर्भ में आया । ईश्वर की लीला अलग ही थी , जब मैं गर्भ में कुछ ही दिन का रहा होऊँगा तब उसको रक्ताधान होने लगा और बहते रक्त के परवाह से उसे होने वाले बच्चे में कमी न हो जाये इसका भय सताने लगा । उसने आंटी के पहले बच्चे की कहानी और पीड़ा आंटी के

पतरों से सुनी थी । आंटी को पहला बच्चा बहुत जल्दी हुआ पर वह मानसिक रूप से स्वस्थ न था । माँ को भय होने लगा कि यह बच्चा भी कहीं उसी तरह न हो जाये और उसने एक कठिन फ़ैसला लिया भ्रूण को समाप्त करने का । वह बहुत कठिन रात थी उसके लिये , जब उसने यह फ़ैसला लिया और अगले दिन डाक्टर विद्या वर्मा से समय लिया गया मुझको समाप्त करने का । वह पूरी रात वह कलपती रही , सोना संभव ही न था । वह आँसुओं से सूजी आँखों के साथ डाक्टर के यहाँ गयी । मैंने यह कहानी पता नहीं कितनी बार सुनी थी और कई बार अलग- अलग तरीके से काव्य मेरे अंदर इस कथा को सुनकर जन्म लेने लगता है ...

मौत कहीं की भी हो सरहद के इस पार की या उस पार की
बच्चा किसी का भी हो नमाज़ी का या काफ़िर का
बच्चे की मौत हर माँ को सताती है
पर अगर वह बेवजह हो तो ताउमर बहुत ही रुलाती है

बड़ी उम्मीदों से पाला था इस चिराग को अंदर कभी जहाँ में चमकने के लिये
पर अफ़सोस मुझे ही रोकना पड़ रहा इसे सूरज से लड़ने से पहले
क्यों बुझाया इसे बेवजह जो बना था जमाने में किसी ख़ास वजह के लिये ।

वह डाक्टर के पास गयी , डाक्टर ने मेरी धड़कनें सुनी और कहा कि अब देर हो चुकी है , इसको ख़त्म नहीं किया जा सकता । यह प्लेसेंटा प्रीविया का केस है । इसमें प्लेसेंटा आगे होता है बच्चा पीछे होता है , जबकि सामान्य केसेस में इसका उल्टा होता है । रक्त गिरेगा बूँद- बूँद में गिरेगा पर ईश्वर ने चाहा तो सब कुछ ठीक होगा , जाओ ईश्वर की आराधना करो वह सब कुछ ठीक करेगा । पिताजी पूरे रास्ते समझाते रहे और कहते रहे कि उसकी चाहत है इसको जन्म देना । ईश्वर ने तुम्हारा फ़ैसला बदल दिया है , निश्चित रूप से कुछ बेहतर सोचा होगा । माँ बहुत खुश थी मुझे जीवित लेकर वापस आते हुये और उसने आशंकाओं और विपत्तियों से लड़ने का फ़ैसला कर लिया ।

मैं सोचने लगा , अगर वह हो गया होता तब क्या होता ? यह किससे जिद करता कि आसमान फुरसत में है भैया मुझे उससे बातें करनी हैं । यह किससे कहता मुझे चाँद को इस विआ में उतार कर दे दो । यह छोटा बच्चा किससे साझा करता अपने ख़बाब जो देख रहा अपनी आँखों से पर वह ख़बाब पल रहे बड़े भाई के पराकरम से । गाँव के पेड़ के पहली खेप के इक्का- दुक्का पके आमों तक नहीं पहुँचते थे ढेले इसके बाजुओं की ताक़त से यह माँगता था

सहारा मेरे बाजुओं से निकलती रफ्तार का । कोई इसे परेशान करता था तो कहता था , बुलाता हूँ भैया को अभी जिससे जीतना किसी के बस में नहीं । इसे कहाँ से मिलती वह ग़ज़ल जो इसके जीवन को सुमधुर किये हुये हैं

मेरी आँखों में नमी आने लगी ... वह नमी शबनम बनने लगी और एक बरसात मेरे गालों पर ... माँ ने पूछा “ मुन्ना क्या हुआ ? ”

अब कैसे बताऊँ वह कहानी जो पाश- पाश कर रही मुझको .. मैंने इतना ही कहा ... कभी आवाज़ देना रात में अपने अंदर ही और पूछना मुमकिन और नामुमकिन में फ़र्क़ क्या होता है ? तुम्हारे अंदर से एक ही आवाज़ आयेगी ... मुमकिन और नामुमकिन के बीच का फ़र्क़ सिर्फ़ रब की मर्जी होती है और रब पर एक विश्वास उसकी मर्जी को प्रभावित करता है ।

मैंने कहा छोटे भाई से , जब तुम्हारा मन करेगा चले जाना बस आंटी लोगों को चले जाने देना । वह प्रसन्नता के अतिरेक में आ गया । माँ ने कहा , “ जाइके जल्दी आई जायअ धूमै न लागअ कुल शहर । ”

इतने में चिंतन सर की जीप आ गयी । वह आते ही बोले , “ बाबा क्या जलवा है ? ”

मैं - “ सर सब चकाचक है , चिंता न करो । अभी आंटी - ऋषभ - शालिनी आने वाले हैं । ”

चिंतन सर - “ कब आये वह लोग ? ”

मैं - “ कल ही आ गये थे । ”

चिंतन सर - “ साहब के यहाँ कब चलेंगे मिलने ? थोड़ा दुआ - सलाम ठोक देते हैं । मेरे डीजीपी साहब भी आ रहे हैं । वह भी पूछ रहे थे यह अनुराग शर्मा कौन है जिसने किताब की इडीटिंग की है । सत्यानंद कह रहे थे कि वह बहुत जहीन है । मैंने कहा कि सर वह ग़ज़बै चीज़ है । थोड़ा डीजीपी साहब को अर्दब में लेना है , मैंने भूमिका बना दी है बस उसी बनी ज़मीन पर शर- संधान कर देना । ”

मैं - “ सर ज़मीन भी कहेगी मुझे कृतार्थ करो मुझ पर रण करके , बस देखते जाइये इन चौंसठ खानों को , विरोधी भी वही मुहर चलेगा जो मैं कहूँगा । ”

चिंतन सर - “ यह तो बहुत सही बात कही , सब सम्मोहित देख रहे तीरों का संघर्ष विपुल प्रवाह । ”

मैं - “ सर पाँच अगस्त जीवन का बहुत महत्वपूर्ण दिन है । कोई चेला प्रेस में है । ”

चिंतन सर - “ दैनिक जागरण में रवि उपाध्याय हैं , गुरुदीप तिरपाठी हैं सब अपने मित्र ही हैं , करना क्या है ? ”

मैं - “ मेरा भाषण छपवाओ परेस में । मुझे कुछ नहीं चाहिये बस मेरी स्पीच छपवा दो , देखना करान्ति हो जायेगी । ”

चिंतन सर - “ लिख लिया ? ”

मैं - “ लिख लूँगा । ”

चिंतन सर - “ छप जायेगी । मैं रवि उपाध्याय , गुरुदीप तिरपाठी से बात करता हूँ , तुमको मिलाता हूँ उनको । ”

मैं - “ बस सर यह काम कराओ । ”

चिंतन सर - “ साहेब का भाई आया इनकम टैक्स वाला ? उसको साधना है । वह बहुत काम की चीज़ है । ”

मैं - “ सर बहुत काम की चीज आ रहे हैं । वह भाई भी आया है और जो कानपुर के अशोक तिरपाठी हैं जिन्होंने कहा था कि चिंतन उपाध्याय को आईआरएस मिल जायेगा वह उसके बैचमेट हैं वह भी आ रहे हैं । ”

चिंतन सर - “ तुम अपना यह खेल चलाते रहो , हमको काम- काम के आदमी से मिलाते रहो । मैं तो जनसेवा के रास्ते पर चल चुका हूँ , देश की पंचायत बेताब हैं हमारे उद्बोद्धन के लिये । तुम मेरा भी उद्बोद्धन लिखना । ”

मैं - “ सर आप खुद ही विद्वानों के विद्वान हैं , इस अकिञ्चन व्यक्ति की आपको क्या ज़रूरत । ”

इतने में आंटी की कार की आवाज़ आ गयी । मैंने बाहर खिड़की से देखा ... शालिनी श्वेत साड़ी में सिर पर श्वेत में श्याम समाया पल्लू ठीक करते हुये आँखों पर काला चश्मा लगाये जो उसके दूधिया चेहरे के रंग को और उभार रहा था , एक मिशक कथाओं की अप्सरा सदृश कार से बाहर एक पैर निकालते हुये देखती मेरे पुराने मकान की ऊपरी मंज़िल को

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 232

शालिनी कार से बाहर निकल कर मेरे घर को बाहर से देख रही थी । कार के दूसरे गेट से ऋषभ और पीछे की कार से आंटी और शालिनी की माँ बाहर निकले । कार इन लोगों की बहुत ही बड़ी थी । मैं कंटेसा कार से ही अभिभूत था , यह तो उससे आगे की कारें थी । मेरे मुहल्ले के बच्चे आजकल कौतूहल

और विस्मय में ही रहा करते थे । उनके लिये यह एक और विस्मय का बिंदु मिल गया । ऋषभ ने भी बहुत ही अलग तरह की शर्ट, पैंट, चमचमाते जूते, एक बहुत ही आकर्षक बेल्ट लगायी हुई थी । आंटी सफेद साड़ी ही ज्यादातर पहनती थी, उसने वही पहना हुआ था । मैं और चिंतन सर बाहर निकल कर आये और उन लोगों को लेकर अंदर गये । मेरी बहन शालिनी को देख रही थी और उसकी आँखों और चेहरे के हाव- भाव से लग रहा था मानों वह कह रही है, कितनी सुंदर और क्लासी है यह । सबसे संयत पिताजी थे, वह परिस्थितियों की उत्तेजना में भी धौर्य की रिहाइश करा देते हैं । ऋषभ और शालिनी ने उनके पैर छुये । पिताजी को पहले से ही इन लोगों के बारे में पता था इसलिये वह इस तरह का आगमन अनुमानित कर ही रहे थे । घर के अंदर मौजूद दो परिवारों के बीच का फ़र्क़ साफ़- साफ़ देखा जा सकता था, एक को जहाँ लक्ष्मी का अति वरद हस्त प्राप्त था, तो दूसरा लक्ष्मी का आकांक्षी था और पता नहीं कितने वर्षों से लक्ष्मी की कृपा की प्राप्ति का अथक प्रयास कर रहा था । यह अंतर पहनावे में ही नहीं आचरण में भी देखा जा सकता था । एक का आचरण बहुत ही संयत था तो दूसरे के आचरण में अधीरता का पुट था । शालिनी की माँ ने चिंतन सर को देखा और वह ही नमस्कार कर बैठीं, सर के पहले । अब चिंतन सर ने आहूजा साहब को लुंगी- बनियान में भागने पर विवश कर दिया था और दो दिन पूरा घर यन्त्रणा में रहा, अब उस यन्त्रणा के अवशेष मस्तिष्क में तो कहीं न कहीं मौजूद है हीं ।

मिसेज़ आहूजा - “ बेटा पहचाना मुझे ? ”

चिंतन सर - “ कैसी बात करती हैं माताजी, अब अपने घर के लोगों को ही न पहचानेंगे । यह तो हमारा सौभाग्य है आपके पुनः दर्शन हुये । मैं तो आता ही रहता हूँ आपके यहाँ । ”

शालिनी की माँ - “ इधर काफ़ी दिन से आप नहीं आये बेटा । ”

चिंतन सर - “ इधर थोड़ी व्यस्तता थी इसलिये आ नहीं पाया । आप नहीं ले आयी आहूजा साहब को, उनको भी लाया होता । वह भी देखते यह जलसा । कल के ही पेपर में आ रहा पूरी एक पत्रकार वार्ता सर के किताब के विमोचन की पूर्व संध्या पर । ”

शालिनी की माँ - “ बेटा यह बहुत ही झँझट का काम है बिज़नेस, समय ही नहीं मिलता । ”

मैं चौंक गया । यह तो मुझे पता ही न था । मैंने कहा, “ सर यह कब आ रहा है? कैसे पता आपको ? ”

चिंतन सर - “ मैं पुलिस विभाग में हूँ और सीबीसीआईडी का चार्ज है मेरे पास । मुझे सारी गोपनीय खबर रहती है । ”

मैं “ कौन बताया ? आप गये थे क्या साहब के यहाँ ? ”

चिंतन सर - “ अब मंदिर रास्ते में पड़ेगा तब दर्शन करना ही होता है देवता का । मैं साहब के बँगले के सामने से आ रहा था सोचा जयहिंद करता चलूँ । यह जो सीओ की नौकरी है इसमें जयहिंद ही तो करना होता है । ”

मैंने मन ही मन कहा यह बहुत चालू चीज हैं । यह आते समय पटाये , अभी मेरे साथ पटायेंगे , कल डीजीपी के साथ पटायेंगे । यह कुंडली गुरु नहीं पटाऊ गुरु हैं ।

मैं - “ क्या हो रहा था वहाँ ? ”

चिंतन सर - “ कलेक्टर साहब आये थे और वह ही यह प्रस्ताव दे दिये कि विमोचन की पूर्व संध्या पर एक पत्रकार वार्ता हो जाये । अभी साहब का ड्राइवर आ रहा होगा , मेरे सामने ही कहा था अनुराग को और राम प्रकाश सिंह कोई मंच संचालन कर रहे उनको ले कर आओ । यह कौन हैं राम प्रकाश सिंह ? ”

मैं - “ सर यह ईसीसी में गणित के लेक्चरर हैं वह मंच संचालन कर रहे हैं , इस कार्यक्रम का । ”

चिंतन सर - “ संस्कृत विभाग के राजेन्द्र मिश्रा से क्यों नहीं कराया , वह पढ़ाये हैं मुझको वह तो बहुत ही अच्छा बोलते हैं । कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् में दुष्पन्त का अभिनय भी उन्होंने किया था इसी सीनेट हाल में विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में हम - तुम साथ ही साथ गये थे देखने । ”

मैं - “ सर यह सब तो संज्ञान में था ही , और उनका नाम भी विचारित हुआ था । सारे पक्षों को विचार कर ही फ़ैसला हुआ है , आप देखियेगा मंच संचालन पाँच अगस्त को । ”

चिंतन सर - “ जब विचार किया है तब तो ठीक ही किया होगा पर मैंने राजेन्द्र मिश्रा को सुना है इनको नहीं सुना है । ”

मैं - “ सर यह कोई आम कार्यक्रम नहीं होगा , बस प्रतीक्षा कीजिये । ”

चिंतन सर - “ अरे वह प्रतीक्षा आयी है क्या , जो आपके जीवन की एक उम्मीदवार है । वह भी काम कुछ आगे बढ़ाओ । ”

माँ - “ ऊ काम चिंतन शालिनी के दै दिहा काल । अब शालिनी देखि के बताई देई , जैसन शालिनी कइहिं कै देब । अब शालिनी से ज्यादा समझदार के होये हमरे घरे में । ”

शालिनी - “ ज़रूर आंटी जी । मैं देखकर अपनी ओपिनियन दे दूँगी । ”

खाना खाया गया । माँ बहुत ही बेहतरीन खानसामा थी । उसके हाँथों में कुछ हुनर था , वह सामान्य से खाने को भी एक अलग तेवर दे देती थी । मेरा छोटा भाई खाना मिलते ही कह देता था , यह गुड़िया दी खाना क्यों बनाती हैं । वह ज़िद करता था सब्ज़ी माँ ही बनाये । आज तो उसने पूरा कौशल ही दिखाया था । खाना खाकर वह लोग जाने लगे । मैंने कहा ऋषभ से , “ मैं तक्रीबन पाँच बजे आऊँगा और कमिशनर से मिलाने तुमको और शालिनी को ले चलूँगा । चिंतन सर ने मातादीन को काम सौंप दिया है मंदिर , संगम , क़िला अक्षयवट आदि दिखाने का । माँ , आंटी और शालिनी की माँ जाना चाहते हैं इन दर्शनीय स्थलों पर । ”

ऋषभ - “ ठीक है आना , इंतज़ार करूँगा । ”

आंटी के जाते ही मेरा भाई मचल पड़ा अपनी सवारी के लिये । चार पीछे और दो आगे की सीट पर घुसकर बच्चों ने अपने को टूँस सा लिया कार के भीतर । मैंने डराइवर से कहा सम्भाल कर ले जाना और कार आराम से चलाना । भाई को पाँच सौ रुपया दिया और कहा जो बच जायेगा लौटा देना माँ को ।

माँ ने थोड़ा नाराज़गी ज़ाहिर की पाँच सौ रुपये देने पर । उसने कहा , “ मुन्ना तू बिगाड़ि

देबअ एका । ऐतना पैसा न द । ”

मैं - “ जाने दो माँ । मैं जानता हूँ यह बहुत चटोरा है , इसका चुन्नी लाल के एक छोले-भट्ठरे में मन न भरेगा और आईस्क्रीम खायेगा ही । छः बच्चे हैं , यह सब खा जायेंगे । ”

माँ - “ पन्द्रह रुपिया प्लेट त मिलत हअ छोला भट्ठरा और आइस्क्रीम दस रुपिया के । ऐतना रुपिया का करे ई । ”

वह पैसा लेकर भाग चुका था कपड़ा पहनने के लिये । वह जानता था कि माँ लेकर अभी इस पैसों को आधा कर देगी । माँ कह ज़रूर

रही थी पर वह मन ही मन बहुत परस्पर थी जो मैं उसका ख़याल रखता था । वह उसको लेकर चिंतित रहती थी । वह थोड़ा पढ़ने में कम जहीन था , वैसे मैं भी कोई खास जहीन न था पर माँ की आँख बच्चों को जन्म के दिन से देखने लगती है और उसका अपना एक मत बन जाता है अपने बच्चों के बारे में , यह मत किस आधार पर बनता है यह किसी काग़ज पर उतारा नहीं जा

सकता पर अधिकांशतः सही ही होता है । वह हमेशा कहती थी, “ मुन्ना कुछ खास करे ज़रूर । ” वह यह बात अपने अन्य दो बच्चों के बारे में कभी नहीं कहती थी । मेरा जो लगाव अपने भाई- बहन को लेकर था उससे वह बहुत संतुष्ट रहती थी और उसे लगता था कि बचपन में राम की कथा को कहानी के रूप में सुनाने का उसके बच्चों पर बहुत असर पड़ा है, शायद वह सही भी थी । मेरे छोटे भाई - बहन मेरा बहुत लेहाज करते थे और मेरे करोध की संभावना से ही चिंतित हो जाते थे । वह मेरा सम्मान मेरे पिताजी की तुलना में शायद ज्यादा ही करते थे । माँ ने अपने बच्चों में प्रेम भाव की धारा का बहुत ही बेहतरीन संवहन किया था । वह अब थोड़ा निश्चिंत रहने लगी थी । मैंने कहा ही था कि गुड़िया का विवाह कर दूँगा तुम जो दो पैसा जोड़ी हो वह खाओ -उड़ाओ , इस पंक्ति में सत्यता न भी हो तब भी यह किसी भी माँ के लिये बहुत ही सुकून प्रदायनी है और बेटे की प्रवरिश पर गर्व देती ही है ।

कमिशनर साहब का अपनी बहन का विवाह ढूँढ़ना एक उसे और आश्वासन दे रहा था कि मैं भी ऐसा करूँगा , एक पीड़ा बार- बार उभरती थी उसके अंदर एक शिकायत का स्वर लिये कि उसके भाई ने उसके विवाह में कोई सहयोग नहीं दिया । उसका प्रतीक्षा के प्रति एक रुझान इसलिये भी था कि प्रतीक्षा का विवाह उसका भाई कर रहा है जिसमें उसकी भाभी सहयोग दे रही है , इसलिये प्रतीक्षा भी गुड़िया की भाभी बनकर वैसा ही सहयोग करेगी । उसके अंदर एक अपराध भाव था अपने ससुराल में अपने ही व्यवहार को लेकर जो वह मेरे पिता को रोकती थी उनकों घर में मदद करने पर , कारण कुछ भी रहा हो पर वह उसे तर्क के धरातल पर स्वयम ही खरा नहीं उतार पाती थी । वह नहीं चाह रही थी वैसा ही मुन्ना की पत्नी भी उसके घर में करे । उसका दृष्टिकोण अपने ससुराल के प्रति बदल भी रहा था , शायद वह मुझे यह अवसर अब नहीं देना चाहती थी कि मैं कभी कह सकूँ कि तुमने क्या किया वह तो देखो । बहुत कुछ संभावना है उसने इसीलिये उस दिन अपनी गलती को मेरे सामने उसने स्वीकार किया हो ।

मैं उसके चेहरे पर अब निश्चिंतता देख सकता था । वह उस तरह से अपने को असुरक्षित महसूस नहीं कर रही थी जैसा पहले किया करती थी । हर माँ अपनी बेटी को एक बेहतर पति और घर देना चाहती है, वह भी चाह रही थी और जानती थी कि उसके बड़े हुये ख्वाबों को ताबीर में ही दे सकता हूँ । मेरी कोचिंग का प्रचम दूर- दूर तक लोगों को लहराता दिख रहा था और वह लहराता प्रचम उसको और भी आश्वस्त कर रहा था , वह मेरे प्राकृतम से अभिभूत थी । महानतम नायक भी संबल चाहते हैं अपनी सुरक्षा के लिये वह कोई अपवाद कैसे हो सकती है । वह एक महान नायक अवश्य थी पर वह सारे जीवन एक असुरक्षित नायक के रूप में रही है , उसको कभी कोई संबल

न मिला । वह अकेले ही संघर्ष करती रही पर अब तो अर्जुन को केशव की प्राप्ति हो गयी है । मेरा मस्तिष्क बहुत ही धूमंतू हो चला था । मैं एक साथ कई काम करता था इसलिये दिमाग़ इधर - उधर विचरण करता ही रहता है । यह और विचरण करता पर तब तक साहब का झराइवर नवीन आ गया और उसने कहा साहब ने बुलाया है । उसके आते ही चिंतन सर बोले चलो यार यहाँ क्यों बैवजह समय ख़राब कर रहे हो , वहाँ का नज़ारा देखते हैं । चिंतन सर जबसे आये हैं तब से एक गाय के दूध के लिये भूखे बछड़े की तरह खूँटा तोड़ने पर आमादा हैं कि कब खूँटा टूटे और वह चारों थन का दूध पी जाये , वह हर दस मिनट पर कहते थे चलो साहब के यहाँ , वहाँ का जलवा देखें । मैंने कहा , थोड़ा माँ का काम लाइन पर ला देते हैं तब चलते हैं ।

सर - “ छोड़ो यह काम , यह मातादीन सब कर देगा । ”

उन्होंने मातादीन को आवाज़ दी और वह आ गया ।

मैंने माँ से कहा चिंतन सर की जीप है , मातादीन साथ रहेगा । आप लोग संगम , बँधवा , क़िला वगैरह देख लेना । मैं साहब के यहाँ जा रहा ।

माँ - “ कब तक अउबौ ? ”

मैं - “ तुम मेरा इंतज़ार न करना । कार को कल सुबह जल्दी बुला लेना । चुन्नू दर में ही आयेगा , यह तो पता ही है । वह कहाँ मानने वाला आज । ”

माँ - “ कहाँ - कहाँ हम जाई ? ”

मैं - “ संगम , बँधवा , क़िला , कंपनी बाग , सिविल लाइंस धूम लेना । ”

माँ - “ ठीक बा । ”

मैं चिंतन सर को लेकर यात्रिक होटल गया और वहाँ से ऋषभ- शालिनी को लेकर साहब के घर पहुँचा । साहब के घर तो बहुत भीड़ लगी थी , पता चला साहब के ससुर - साले - साढ़े- भाई सब आ चुके हैं । पूरा घर भरा हुआ है और परेस वार्ता की तैयारी चले रही थी ।

चिंतन सर ने कहा , यह साहब का ससुराल पूरा क़ब्ज़ियाये है साहब को । यह दिक्कत है आईएस अफसरों के साथ , आईएस हुये बड़े घर में विवाह हुआ और विवाह होते ही ससुराल क़ब्ज़ा कर लेता है ।

मैं - “ सर उनका भी हक़ है , सबके लिये बड़ा अवसर है । ”

चिंतन सर - “ यार पता करो साहब कहाँ हैं । ”

मैंने बड़े बाबू से कहा , बता दो मैं आया हूँ ।

बड़े बाबू - “आप सर चले जायें आपको क्या पूछना ।”

मैं - “पता कर लो, सारा परिवार आया होगा वह व्यस्त होंगे परिवार में ।”

बड़े बाबू - “सर आप भी परिवार ही हो ।”

यह कहते हुये उसने अर्दली से कहा कि बता दो अनुराग सर आये हैं ।

अर्दली जैसे ही गया वैसे ही बाहर आ गया कि मेम साहब बुला रही हैं । मैं ऋषभ- शालिनी को लेकर अंदर जाने लगा और चिंतन सर से कहा कि बुलाता हूँ पर वह कहाँ मानने वाले वह उठ कर साथ चल दिये ।

उस पूरे बड़े हाल में पूरी भीड़ थी रिश्तेदारों की, एकाध शहर के बड़े लोग भी थे और कलेक्टर संजीव रंजन भी बैठे थे । मैंने ऋषभ- शालिनी का परिचय कराया और यह बताया कि यह लोग दिल्ली से आये हैं विमोचन कार्यक्रम में शामिल होने के लिये । मैंने जैसे ही ऋषभ का परिचय दिया साहब के भाई ने उसको पहचान लिया । ऋषभ ने प्राइम नंबर की रिसर्च पर इतना नाम कमाया था कि वह हर इंजीनियरिंग कालेज में उस दौर में नायक का दर्जा प्राप्त कर गया था । साहेब के भाई देवानंद मिश्रा भी आईआईटी कानपुर के थे और बहुत गर्मजोशी से ऋषभ का स्वागत किया और अपने बड़े भाई से ऋषभ के सम्मान में क़सीदे गढ़ दिये । साहब भी अति प्रभावित हुये और बहुत सुखद आश्चर्य व्यक्त किया कि दिल्ली से इलाहाबाद मेरे कहने पर वह लोग विमोचन में आये । शालिनी की सुंदरता की अपनी आभा थी ही, आईआईटी की छात्रा होना और शालिनी स्टील बिल्डिंग मटेरियल के मालिक की बेटी और चार चाँद लगा गया । सर ने हाथ जोड़कर स्वागत किया और कहा, आप ऐसे लोगों का कार्यक्रम में शरीक होना मुझे बहुत गर्व दे रहा है, बहुत खुशी हुई मुझे आपसे मिलकर । साहब के पिताजी ने कहा ज़रा प्रतीक्षा को बुलाओ वह पढ़ रही होगी और मेरी तरह मुख्य परीक्षा की तैयारी कर रही है । अपने छोटे बेटे ये कहा, “देवानंद, उसको भी मिलाओ ऐसे महान लोगों से, यह विधाता ने सत्यानंद से किताब लिखवा कर एक संयोग बनाया है मेधावी लोगों से मिलने और उनके दर्शन करने का ।”

ऋषभ से कहा, “बेटा मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई आप ऐसे देश को गैरव देने वाले व्यक्ति से मिलकर ।”

प्रतीक्षा पिता का संदेश पाकर पर्दे को उठाकर अपने भाई के साथ हाल में अंदर प्रवेश करती हुई और शालिनी की निगाहें प्रतीक्षा की ओर ...

दो सुंदरियों का आमना- सामना

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 233

मैं सौन्दर्यार्गारही था प्रकृति से ही । मैं सुंदरता तलाशता था और असुंदरता में भी सुंदरता देख लेता था । मैंने सबसे पहली सुंदरता अपनी माँ की देखी थी और जब मैंने उससे सुंदरता बयाँ की तब वह भौंचकरी रह गयी । एक इतना छोटा बच्चा नारी सुंदरता को इस रूप में देख रहा । उसने मुझसे कहा भी , अभी वक्त इसका नहीं आया है । मैं समझ न सका वह क्या कह रही है , पर जब मैं प्रकृति की सुंदरता बयान करने लगा तब उसे लगा मेरे पास एक जन्मजात प्रतिभा है सुंदरता को समझने की । गाँव में मैंने एक बार ज़िद की दूर कहीं जहाँ धरती और आकाश मिलते हुये दिख रहे हैं वहाँ चलने की । वह लाख कहती रही यह आँखों का भ्रम है कहीं नहीं मिलते ज़मीन आसमान पर मैं यह मानने को तैयार न था । मैं खोजता रहा वह बिंदु जहाँ ज़मीन और आसमान मिलते हैं । मैंने तक़रीबन सात साल की उम्र में ही अपनी पहली कविता लिखी होगी और वह भी प्रकृति को एक नारी के रूप में देखते हुये । मेरे बाबा ने वह कविता पढ़कर कहा था , यह कुछ विलक्षण है । इसके बाद मैं सिर्फ़ प्रेम पर ही लिखने लगा । ऐसे सौन्दर्य के उपासक के लिये दो सुंदरियों का आमने सामने खड़ा होना एक अवसर था , सौन्दर्य के तुलनात्मक अध्ययन का । मेरे अलावा कमरे में कोई वह नहीं देख पा रहा था जो मैं देख रहा था । मैं दोनों को देखकर यह सोचने लगा

कब चाँद ज्यादा खूबसुरत लगता है , जब झील में उत्तरता है या जब मेहराब के पीछे आकर मेहराब को निहारता है या जब गिरिजाघर के ऊपर के सलीब पर आकर अटकता है परभु यीशु के सिर के एकदम पीछे बनाता एक आभामंडल ? वह चाँद स्थिर खामोश रहकर साँप की आँखों ऐसा सम्मोहन देता है या जब वह बदलियों से लुकाछिपी करता हुआ मृग की चाल ऐसा बाँधता है देखने वाले को । मैं अक्सर सोचता हूँ चाँद से इतनी ज्यादा मोहब्बत क्यों ? सुंदरता के लिये इतनी व्यग्रता क्यों ? चाँद से संवाद करने की बेचैनी क्यों ? अक्सर सोचता हूँ कि यह चाँद का दाग है क्या? इसकी खामियाँ क्या हैं ? यह दाग चाँद की सुंदरता बढ़ा रहा या घटा रहा ?

ऐसे ही दो चाँद मेरे सामने, मैं चाँद की सोहबत के साथ था न झपक रही पलक मेरी , खुली पलकों में चाँद आँखों की शबनम मे उत्तरता हुआ मेरी कल्पनाओं की पेंगे ऊपर और ऊपर जाती हुई सामने बैठी दोनों ऐसा लग रहा

चाँद उतर रहा है पहाड़ियों पर आ रही मादकता मेरी ओर मैं वक्त की धड़कनों में , मैं उसमें खोता हुआ , मुझे इश्क़ सुंदरता से होता हुआ और द्रौँद्ता कमियों को अच्छाइयों में ... दोनों की अच्छाइयाँ और कमियाँ ... दोनों को पिरोता अपनी नज़्म में ... पता नहीं नज़्म सुंदर होगी या इन दोनों की सम्मिलित सुंदरता ... सुंदरता से मुहब्बत करने वाले कम न होंगे ए नज़्म अगर तू इनको समा कर बिखर गयीं कागजों पर ।

प्रतीक्षा से उसके पिता ने कहा , “ आओ बेटा इधर आओ । ”

शालिनी प्रतीक्षा के बढ़ते कदमों के साथ दोनों हाथ जोड़कर खड़ी हो चुकी थी और अपना परिचय देते हुये कहा , “ मैं शालिनी आहूजा मिश्रा अनुराग की मित्र हूँ और इस विमोचन कार्यक्रम में शारीक होने के लिये अपने पति ऋषभ मिश्रा के साथ आयी हूँ । ”

ऋषभ ने भी खड़े होकर प्रणाम किया । इलाहाबाद की महिलाओं में एक ख़ास बात होती ही है वह अपने बच्चों को संस्कारी बनाने का प्रयास बहुत करती हैं । यह संस्कार की थाती ऋषभ में साफ़ देखी जा सकती है ।

प्रतीक्षा- “ मुझे बहुत खुशी हुई आप से मिलकर । ”

बाबू जी - “ बेटा इनसे मिलो , ऋषभ से । देवानंद बता रहे इन्होंने देश का बहुत मान बढ़ाया गणित में अनुसंधान करके । इनका अनुसंधान बहुत चर्चित रहा और सरकार ने पदम शरी दिया उस अनुसंधान पर । ”

प्रतीक्षा ने ऋषभ की तरफ़ मुख्यातिब होकर प्रणाम किया । उनके पिता ने कहा , “ बेटा चरण स्पर्श करो , ऐसा महान विद्वानों का आशीर्वाद मिलना भी एक ईश्वर का वरदान ही है । ”

प्रतीक्षा ने ऋषभ के पैरों को हाथ लगाकर अपनी पाँचों अँगुलियों को आगे के बालों से स्पर्श करते हुये पीछे ले गयी । कमिशनर साहब यह देख रहे थे । उन्होंने पूछा वह रिसर्च कब की है जो आपने की थी ।

ऋषभ - “ सर मैंने बीटेक के दूसरे साल में आरंभ की थी और तक़रीबन दो साल लगा था । ”

देवानंद - “ भैया वह एक अनसाल्वड प्राइम नंबर की थ्योरम थी । इसको हल करने का प्रयास पहले भी कई बार हुआ पर कोई सफल न हुआ था । इन्होंने जब कर दी तब उस पर बहुत बहस हुआ यह सही है या नहीं पर इनके गाइड ने बहुत अच्छा काम किया उसको इंटरनेशनल जनरल में छपवाया और विश्व व्यापी बहस हुई उस पर अंत में इसको मान्यता प्राप्त हुई और फिर बाकी तो सब इतिहास है । भारत सरकार ने मान्यता दिया , पुरस्कार दिया ।

ऋषभ की रँक बहुत ऊँची थी यह किसी भी आईआईटी में जा सकते थे पर यह सौभाग्य दिल्ली आईआईटी के नसीब में था । “

बाबूजी - “ जीवन में प्रारब्ध ही तो है जो व्यक्ति को कहीं भी लेकर चला जाता है । ”

साहब - “ मैं तुमको राज्यपाल से मिलाता हूँ । तुमको उत्तर प्रदेश सरकार भी सम्मानित करेगी । शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार तुमको मिलना चाहिये । ”

ऋषभ - “ सर , यह रिसर्च जब कर रहा था तब तो कुछ पता था नहीं । उस समय उम्र बहुत ही कम थी , मुझे इन दुनियावी मामलों का कुछ पता न था । मेरे गाइड बहुत अच्छे थे वह ही इसे लोगों के बीच ले गये नहीं तो एक छात्र पर कौन विश्वास करता इतने दुर्लभ सिद्धान्त के हल करने के दावे पर । ”

सबका ध्यान कहीं और था । मेरा ध्यान सिर्फ़ शालिनी और प्रतीक्षा पर था । मैं दोनों को देख रहा था । शालिनी की निगाह मेरी निगाह से मिली वह मुस्कुराने लगी , मानों वह कह रही हो पूरा पी मत जाना इसको आँखों से कुछ बचा भी रहने देना । वह बोली , “ अनुराग आज तो नज़्म लिखोगे ही । ”

मैं “ कैसी नज़्म ? ”

शालिनी - “ वही जो तुम लिखते हो .. शबनम के कतरे पर उतरा चाँद कह रहा शबनम से ख़त्म मत हो जाना घनत्व और गुरुत्वाकर्षण के दबाव से एक प्रेमी नायिका की सुंदरता को देख रहा तुझमें । ”

मैं “ आपने ही लिख दिया , मेरे लिये क्या बचा रह गया । ”

शालिनी - “ यह तो तुम्हारी पुरानी नज़्म है , आज तो नायाब नज़्म गढ़ोगे तुम । ”

प्रतीक्षा यह संवाद सुन रही थी पर वह समझ शायद न पा रही थी शालिनी क्या चाह रही कहना या क्या पता समझ कर नासमझ बन रही हो , इन लड़कियों की माया भगवान ही जाने , मानव के बस में तो है नहीं ।

राम प्रकाश सिंह सर आ गये थे । कलेक्टर साहब बाहर चले गये जैसे ही यह सुना । मैं साहब और चिंतन सर भी चले गये । राम प्रकाश सिंह सर गजबै चीज थे मेरा ही क्लास लगा डाला ।

साहब - “ अच्छा हुआ आप आ गये । आप देख लें मंच कैसे चलेगा । ”

राम प्रकाश सर - “ यह विमोचन कार्यक्रम एक घंटे से ज्यादा का नहीं होना चाहिये । मुख्य रूप से आप बोल दें , फिर मुख्य आतिथि फिर अध्यक्षीय भाषण हो जाये । आप कोशिश करें अपनी बात को दस मिनट में कह लें । ”

राज्यपाल को बोलने दें जैसा ही वह चाहें बोलना । यह कार्यक्रम मुख्यतः मुख्य आतिथि के भाषण का है । वह साहित्यकार हैं, विद्वान् है । उनका चुनाव बहुत ही ठीक किया है । स्पीकर का साहब का अध्यक्षीय भाषण अंत में होगा । बस कार्यक्रम समाप्त । मंच पर आप तीन लोग ही बैठें, आप अगर चौथे को बैठायेंगे तब थोड़ा समस्या होगी । किस - किस को बैठायेंगे मंच पर । ”

साहब - “ अगर मुख्यमंत्री आ गये तब ? ”

राम प्रकाश सर - “ राज्यपाल एवम् मुख्यमंत्री को साथ - साथ ऐसे कार्यक्रम में आमंत्रित करना थोड़ा उचित नहीं होता पर अगर कर ही दिया है तब थोड़ा विचारणीय बिंदु है । उनको मंच पर बैठाना पड़ेगा और विशिष्ट आतिथि का दर्जा भी देना होगा । राज्य के मुखिया की उपस्थिति का सम्मान करना होगा । ”

साहब - “ क्या किया जाये ? ”

राम प्रकाश सर - “ सर वह अगर आयेंगे तो आज रात तक पता चल ही जायेगा । आप पूछ भी लें उमके पीएस से कार्यक्रम । वह अगर आ रहे हैं तब चार कुर्सी लगा दीजिये पर चौथी कुर्सी तभी लगाइये जब उनके आने की निश्चितता हो जाये । ”

साहब - “ ठीक है । बैठने का क्रम कैसा हो ? ”

राम प्रकाश सर - “ बीच में मुख्य आतिथि दायीं ओर अध्यक्ष और बायीं ओर आप । ”

साहब - “ अगर मुख्यमन्त्री आ गये तब ? ”

राम प्रकाश सर - “ मध्य में राज्यपाल- मुख्यमन्त्री बायीं ओर आप और दायीं ओर अध्यक्ष । मुख्य आतिथि मंच की ओर रहें और मुख्यमन्त्री अध्यक्ष की ओर । ”

साहब - “ यह कोई नियम है इस तरह का क्या बैठने के क्रम का । ”

राम प्रकाश सर - “ यह मंच - साहित्य- रंगमंच सबका सब परम्पराओं पर चलता है । अब कोई नियम तो ऐसा है नहीं कि यह तोड़ा नहीं जा सकता पर यह परम्परा विकसित सी है जो मैं कह रहा आप चाहें तो बदल दें जैसा आप ठीक समझें । ”

साहब - “ मैं बदलने को नहीं कह रहा, बस जानना चाह रहा । ”

राम प्रकाश सर - “ मैं कोई एनाउंसर या पेशेवर मंच संचालक तो हूँ नहीं । मैं अध्यापक हूँ । अब अध्यापक प्रायः अनुरोध अस्वीकार करता नहीं और

बेवजह करना भी नहीं चाहिये । आप ऐसे लब्ध - प्रतिष्ठित व्यक्ति का कार्यक्रम है, इसमें शरीक होना सबके लिये गर्व की बात है । मंच की गरिमा बनी रहे यही कार्य मंच- संचालक का होता है । ”

साहब - “ यह अनुराग कब बोलेंगे ? ”

राम प्रकाश सर - “ यह क्यों बोलेंगे ? ”

साहब - “ यह तो मेरे विचार में कभी आया नहीं कि यह क्यों बोलेंगे । किताब को थोड़ा संपादित ऐसा किया है ... ”

राम प्रकाश सर - “ संपादक कहाँ बोलता है । उसका क्या काम ? ”

साहब - “ यह बोलना चाह रहे हैं । ”

राम प्रकाश सर - “ पहले तो मैं कहूँगा यह न बोलें । यह कोई साहित्यकार हैं नहीं और अभी यह इतने बड़े मंच लायक हैं भी नहीं । यह हैं कौन ? ”

साहब ने मेरा परिचय दिया ।

राम प्रकाश सर - “ इस परिचय में कौन सी ऐसी उपलब्धि है जो इतने बड़े मंच पर इनको बोलने के लिये आमंत्रित किया जाये । ”

मैंने मन ही मन कहा . यह तो गया । मेरा ही आग - आँधियार था इनका नाम आगे बढ़ाया, वह एनाउंसर ठीक थी । वह टिकुली, बिंदी, लिपस्टिक लगाकर आती अपनी अच्छी सी आवाज़ में बोल देती अब यह बोलेंगे और अब यह अपने विचार रखेंगे , यह तो ज्ञान ही पिला रहे इतनी देर से और सारा कार्यक्रम क्रब्जिया लिये । मुझे तो यह सब मंच के चौंचलों का पता ही न था , अब क्या होगा ? हर जगह हल्ला कर दिया है कि मैं मंच से बोलूँगा अब यह तो मेरी वाट लगा दिये । यह गणित के अध्यापक बहुत बेकार होते हैं, यह पूरे बेअंदाज होते हैं । यह सब बहुत नीरस होते हैं, नीरस ही हो जायेंगे अगर हर दिन अंकों, समीकरणों से लड़ेंगे । क्या पता सर एक पगलैटी और कर दें कि अगर इतना अपरिपक्व आदमी मंच पर बोलेगा तब मैं संचालन न करूँगा । यह तो बड़ी विकट समस्या खड़ी हो गयी ।

इतने में अपनी बड़ी- बड़ी आँखों से चश्में से देखते हुये मुझसे पूछा , “इस परीक्षा को पास करने के अलावा आप की ओर उपलब्धि क्या है ? ”

बहुत सटीक वार किया था सीधे नाभि पर , मैं दर्द से बिलबिला गया । मेरी वाक्रई इस परीक्षा को पास करने के अलावा कोई और उपलब्धि थी ही नहीं । मैंने बताया कि ईसीसी से मैंने बीएससी की है और यूनिवर्सिटी से एलएलबी । सर ने पूछा कब किया था । मैंने वर्ष बताया उनको याद न आया मैं । उन्होंने उस वर्ष के जहीन छात्रों का नाम बताया । मैंने कहा , मैं भी उसी वर्ष था ।

सेक्षन पूछा मैंने बता दिया सेक्षन 2 था । उनको याद था कि उन्होंने differential equation पढ़ाया था उस साल । एक हथौड़ा और मार दिया सर ने ,

“क्लास तुम नहीं करते थे क्या? तुम्हारा चेहरा याद नहीं आ रहा मुझे । मुझे अपने छात्रों का चेहरा अमूमन याद रहता है , चाहे नाम न भी याद रहे । “

बहुत भिगो- भिगो कर मारा । मुझे अपने ही निर्णय पर पश्चाताप होने लगा , कहाँ से इनका नाम सुझा दिया ।

मैंने अपने ही अंदर अपने ही को कहा ... बहुत बेवकूफ हो तुम अनुराग
जैसे उन्होंने सुन लिया हो और पूछा
कुछ कहा क्या तुमने ... ।

मैं “ नहीं सर ... अब कहने को कुछ बचा ही नहीं रह गया । ”

एक ख्वाब मेरी बंद आँखों में अभी उतरा ही था
पर हकीकत की ज़मीं पर उसको गिरना ही था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 234

राम प्रकाश सिंह सर ने पूछा , “ कितने लोग होंगे हाल में ? ”
साहब ने मेरी तरफ़ देखा ...
सर ने पूछा इनको कैसे पता होगा ।
साहब - “ यह कोचिंग चला रहे हैं । इनके परिचित छात्र बहुत आ रहे हैं । यह कह रहे पाँच सौ तो छात्र ही होंगे । अगर इतने छात्र आते हैं तब हाल भर जायेगा । ”

सर ने मुझसे पूछा , पाँच सौ छात्र आ जायेंगे ?

मैं “ जी सर । ”

सर - “ अनुशासित रहेंगे ? कोई हल्ला-हंगामा तो नहीं करेंगे ? ”

मैं “ सर यह सब आईएस - पीसीएस की परीक्षा देने वाले छात्र हैं और तक्रीबन इस साल के सारे चयनित लोग आ रहे । ”

सर - “ कितने होंगे चयनित लोग ? ”

मैं “ तक्रीबन साठ । ”

सर - “ इस साल के सिविल सेवा के चयनित लोग हैं सब ? ”

मैं “ जी सर । ”

सर - “ वह सब आ रहे हैं ? ”

मैं - “ जी सर । ”

सर - “ यह तो बहुत अच्छी बात है और इसका ज़िकर होना चाहिये । ”

साहब - “ आप मंच से बोल दीजियेगा यह और मैं मुख्य आतिथि से अनुरोध करूँगा कुछ उनके सम्मान में भी बोलने के लिये । ”

सर - “ यह तो उल्लेखनीय बात है ही और इसका ज़िकर किया जाना ज़रूरी है, पर अनुराग तुम यह सुनिश्चित करके कार्यक्रम के पहले मुझे सूचित कर देना । अगर संख्या की निश्चितता बता दोगे तब और बेहतर होगा । ”

मैं “ जी सर । ”

पहली बार सर के चेहरे पर कुछ संतोष भाव दिखा । मैं सही वक्त पर अपना कार्ड चलाना चाहता था । मंच संचालक हैं यह, इनको विश्वास में लेना ज़रूरी है अगर मंच पर बोलना है ।

साहब - “ हाल भर जायेगा । वह भरना ही होगा, मुख्य आतिथि ने जोर देकर कहा है हाल अगर नहीं भरता तब हाल छोटा कर लो, खाली हाल बहुत ख़राब लगता है । ”

सर - “ यह बात तो है ऐसे बड़े कार्यक्रम में हाल भरना चाहिये । विमोचन कार्यक्रम में लोगों की रुचि कम होती है और आपने एक बहुत बड़े हाल में रख दिया है । ”

मैं “ भर जायेगा सर हाल और पूरा भर जायेगा, इसमें संदेह नहीं है । सारे लोग यह कार्य कर रहे हैं इसपर । ”

सर - “ ठीक है, आज की रात भी प्रयास करो, वह किसी भी हालात में पूरा भरना चाहिये, खाली कुर्सियाँ आँखों को चुभती हैं । ”

मैं “ जी सर । ”

इतने में कलेक्टर साहब आ गये और बताया कि प्रेस वाले आ गये हैं पत्रकार वार्ता आरंभ की जा सकती है। मैंने कभी पत्रकार वार्ता देखा ही न था। मैं जानता न भी था यह क्या होता है और कैसे होता है। साहब ने कहा मैं कपड़े बदलकर आता हूँ आप लोग तैयारी करें।

मैं बाहर लाने के पास आ गया। मैंने अर्दली से कहा कि अंदर ऋषभ-शालिनी होंगे उनको लेकर आ जाओ। ऋषभ - शालिनी बाहर आ गये। हम लोग समय पास करने के लिये वहीं बाहर के लान में ठहलने लगे। शालिनी का मस्तिष्क साहब के राज्यपाल से परिचय कराने और राज्य सरकार के पुरस्कार पर लग चुका था। वह ऋषभ की तुलना में दुनियावी मामलों में अधिक तेज थी। उसने पूछा, “यह जो ऋषभ को सम्मान दिलाने की बात कह रहे थे कमिश्नर साहब वह हो सकता है क्या?“

मैं “हाँ।“

शालिनी - “कैसे?“

मैं - “वह बहुत ही रसूखदार अफसर है। सभी कहते हैं कि यह मुख्यमन्त्री-राज्यपाल के बहुत नज़दीक है। यह प्रयास करेंगे तब संभावना है ही।“

शालिनी - “यह प्रयास करेंगे?“

मैं - “यह बहुत ही साफ़- साफ़ बात करने वाले आदमी हैं, बड़े दिल के भी हैं। यह बात स्वयम कही है इन्होंने तब ज़रूर प्रयास करेंगे। ऋषभ का घर भी इलाहाबाद में ही है और प्रदेश सरकार अपने उपलब्धियों वाले बसिंदो का सम्मान करती ही है। अब मेरिट में ऋषभ तो बहुत ही योग्य है ही किसी भी सम्मान को पाने के लिये। इनके काम पर पद्म शरी मिला ही है और अब तो अमेरिका में यह कम्प्यूटर में कार्य करके देश में विदेशी मुद्रा भी भेज रहे देश में। इनसे अधिक उपयुक्त कौन होगा प्रदेश शासन से सम्मान पाने के लिये। कल आप लोगों को साहब मिला ही रहे राज्यपाल से।“

शालिनी - ऋषभ ने पैसा भले ही कमाया था पर वह इस दुनिया से अनजान थे। उन्होंने इस तरह का ताम- ज्ञाम कभी देखा ही न था। यह उनके लिये यह बहुत ही नयी वस्तु थी। ऋषभ ने साहब की बातों को बहुत ग़ंभीरता से न लिया था पर शालिनी की आँखों में चमक आ चुकी थी। वह इस सम्मान से व्यापार का विस्तार और अमेरिका में एक अलग पहचान देख रही थी। वह दुनियावी मामलों में बहुत ही तेज थी।

शालिनी - “यह फ़ैसला कब तक हो जायेगा?“

मैं - “ साहब से पूछ कर बताता हूँ , मुझको भी नहीं पता कैसे यह मिलता है । पर कोई प्रक्रिया तो होगी ही , सर बतायेंगे । ”

शालिनी - “ कल पूछ लेना । ”

ऋषभ - “ अरे छोड़ो शालिनी यह सब बात , कई बार बातें ऐसे ही कही जाती हैं इनका कोई खास मतलब नहीं होता । ”

मैं - “ नहीं ऋषभ ऐसा नहीं है । साहब बहुत गंभीर व्यक्ति हैं वह कोई भी बात फ़ालतूँ नहीं करते अभी आप उनकी प्रेस कान्फरेंस सुनना बहुत ही सारगम्भित बात करेंगे । ”

पत्रकार वार्ता के कमरे में मैं ऋषभ- शालिनी को लेकर गया । एक बड़ा कमरा और कमरे में कुर्सियाँ ही कुर्सियाँ लगी थीं । सामने एक बड़ी सी मेज थी , मेज के साथ एक ही कुर्सी थी । कई माइक्रोफोन मेज पर लगाये जा रहे थे । पत्रकारों में अपना परिचय देने की होड़ थी , वहाँ उपस्थित अधिकारियों से । यह कोई साहित्यिक कार्यक्रम नहीं एक सरकारी कार्यक्रम ज्यादा लग रहा था । चाय के कुल्हड़ों का दौर चल रहा था । मैं - ऋषभ- शालिनी भी चाय का कुल्हड़ लेकर अदरक का स्वादिष्ट चाय पीने लगे । इतने में अशोक सारस्वत और दिनेश साइकिल पेरते आते दिख गये , गेट के अंदर घुसते हुये । मैंने सोचा , यह आज तो बहुत ही काम के आदमी हैं । इनको आज रात दौड़ाता हूँ , भीड़ के लिये । अशोक ने आते ही कहा , “ सर क्या हो रहा यहाँ पर ? ”

मैं - “ पत्रकार वार्ता की तैयारी हो रही है । ”

अशोक - “ कैसी पत्रकार वार्ता ? ”

मैं - “ किताब विमोचन की पूर्व सन्ध्या पर । ”

अशोक - “ सर तब तो नाश्ता- पानी का जुगाड़ होगा ? ”

मैं - “ सब है । ”

अशोक - “ सर एक पत्रकार वार्ता किताब विमोचन के बाद की अगली संध्या को भी होनी चाहिये । सर नाश्ता- पानी का इंतज़ाम बस बढ़िया हो । ”

चाय वाले से कहा कि ज़रा दो चाय देना और एक प्लेट पकौड़ी ले आओ ।

चायवाला - “ पकौड़ी अभी नहीं है , अभी सिर्फ़ चाय ही है । ”

अशोक- “ यार ले आओ हम वीआईपी गेस्ट हैं । ”

चिंतन सर - “ अशोक जाओ तुम ही लेकर आ जाओ यह लेकर नहीं आयेगा । थोड़ा ज्यादा ले आना । पहले ही मामला खाने का निपटा लो यह पत्रकार हैं । ”

सब हींच मारेंगे । “

अशोक - “ जी सर लाता हूँ । “

चिंतन सर - “ यार अमर गुप्ता नहीं आये , वह आते तो थोड़ा समय अच्छा पास होता । “

मैं “ सर वह आयेंगे । मेरी बात हुई है और कहा भी है कि आयेंगे । सर वह बहुत चालू चीज़ हैं, यह तेल लगाने का मौक़ा वह नहीं छोड़ेंगे । वह खुद ही कहते हैं कि मैं बहुत तेलू आदमी हूँ और मेरे चेहरे से ही मेरी तेलू प्रवृत्ति टपकती है । मुझसे कहे थे सर कि अच्छा मौक़ा दिया है तुमने , दो कनस्तर तेल तो मैं लगाऊँगा ही उस दिन । अपना कोई आदमी भेजकर वह दस कार्ड मुझसे मँगाये थे । मैंने पूछा था इस कार्ड का क्या करेंगे ? सर ने कहा था इसको अपने ऑफिस के मेज पर रखे रहेंगे इससे यह मैसेज जायेगा कि सत्यानंद मिश्रा सर के अमर गुप्ता बहुत नज़दीक हैं और फ़र्ज़ी अफ़वाह फैला देंगे मुझको दो बार फ़ोन किया था साहब ने आने के लिये । यह समाज चलता है परसेष्यान से , बाक़ी कौन जानता है हक़ीकत । अब पृथ्वी शेषनाग के फ़न पर टिकी हैं यह अवधारणा पता नहीं कौन फैला कर निकल लिया हम लोग शेषनाग की दे पूजा .. दे पूजा किये पड़े हैं । सत्यानंद मिश्रा मुख्यमन्त्री को पोटे हैं यह किसी ने देखा है क्या पर हर आदमी इनको तेल- पानी लगाये है , क्या पता यही फैलायें हों यह फ़र्ज़ी समाचार । “

चिंतन सर - “ उनको हर एकेडमी में बुलाया जाना चाहिये यह बताने के लिये के लिये , कैसे सरकारी नौकरी करें । लोग बेवजह जान दिये हैं । उनका आक्सीजन सोखने का सिद्धान्त बहुत नायाब है । “

इतने में हल्ला हुआ कि साहब आ रहे हैं, सब लोग बैठ जायें । साहब का पूरा परिवार भी आने लगा । साहब की पत्नी की चाल से ही गर्व टपक रहा था । अब कल से आईएएस अफ़सरों के पत्नियों के मिलन- सम्मेलन में यह एक नायाब महिला होंगी । एक पत्नी जिसका पति सिर्फ़ आईएएस ही नहीं है वह बहुआयामी व्यक्तित्व का स्वामी है ।

पत्रकार वार्ता आरंभ हुई । मैं अपने को वहाँ कल्पित करने लगा कि कभी मैं भी ऐसी ही पत्रकार वार्ता करूँगा । मेरी माँ के शब्द मेरे कानों में गूँजने लगे , “ मुन्ना तुहूँ ऐसन जलसा करअ हमरे जियत रहते । “

मेरी निगाह साहब के पिताजी पर गयी । उनके पूरे चेहरे पर गर्व ही गर्व था । उनकी बेटी और छोटा बेटा दोनों तरफ़ उनके बैठे थे । मुझे वहाँ पर अपने पिताजी और भाई - बहन दिखने लगे । मेरी महत्वाकांक्षाओं को पर लग चुके

थे और कमिशनर साहब की आवाज़ की जगह मुझे अपनी आवाज़ सुनायी देने लगी ।

साहब ने किताब का विवरण दिया । अपने जीवन का परिचय दिया, अपने संघर्षों और अपने पिता के सम्मिलित संघर्ष का ज़िकर किया, अपनी माँ को याद किया और पत्रकारों के सवालों का जवाब दिया । साहब ने किताब लेखन की पूरी यात्रा को बढ़ा-चढ़ाकर बताया । एक बहुत ही सफल पत्रकार वार्ता थी । पत्रकार वार्ता के बाद साहब के मुलाजिम लोग इस काम पर लग गये कि कैसे कल के समाचार पत्रों में यह प्रमुखता से प्रकाशित हो । यह यत्न लोग अपने संतोष के लिये कर रहे थे । यह पत्रकार स्वयम ही इसको मुख पृष्ठ पर छापते ही, अब कौन यह अवसर छोड़ने वाला था साहब के नज़दीक होने और उनको प्रसन्न करने का यह एक अवसर था ।

सारे कार्यक्रम के बाद साहब ने मुझको बुलाया और कहा कि राम प्रकाश सिंह सर से बोलने के क्रम पर बात हो गयी है । सबसे पहले तुम, फिर मैं, फिर मुख्य अतिथि और अंत में अध्यक्षीय भाषण होगा । अगर मुख्यमंत्री आते हैं तब वह मेरे बाद बोलेंगे । तुम कल सुबह आना, मैं अपने भाषण का अभ्यास कर लूँगा एक बार ।

मुझे जीवन दान मिल गया । मेरी चिंताओं का अंत हो गया । मेरा दिल योजनों ऊपर उछला होगा यह समाचार सुनकर ।

मैंने कहा बहुत संयत होकर, “ठीक है सर ।”

मैंने बाहर निकल कर अशोक से कहा, “आप सब लोग आज रात आराम न करो, नीद का त्याग करो आज के लिये लक्ष्मण बनो, एक बड़ी भीड़ इकट्ठा करो । एक ऐसी भीड़ जो आज तक किसी ने देखी ही न हो प्रयाग संगीत समीति के प्रांगण में । मुझे किसी भी हालत में हाल बैठे लोगों से भरा हुआ ही नहीं बल्कि वह खड़े लोगों से भी भरा हुआ मिलना चाहिये । यह कोई आम कार्यक्रम नहीं है एक अप्रतिम मंच संचालक, राज्य के मुखिया, चार ज़िलों के प्रशासक से सजा मंच है, इसको ऐतिहासिक होना ही है और बगैर एक बड़ी भीड़ के इतिहास अधूरा होगा । आप मुझसे रात के एक बजे शास्त्री पुल की चाय वाली दुकान पर मिलना एक सकारात्मक परिणाम के साथ ।”

मुझे मेरे डैने मिल चुके थे जो कतरन की ओर थे । कैंची सामने चल रही थी और एकाएक कैंची की धार कुंद हो गयी और परिंदा नभ की ओर उड़ गया । मैं आसमान की ओर देख रहा था और एक परिंदा ऊपर और ऊपर जा रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 235

यह पत्रकार- वार्ता का पूरा कार्यक्रम बहुत ही बेहतरीन रहा । साहब के पूरे परिवार में प्रसन्नता ही प्रसन्नता थी । अब साहब का पूरा ध्यान कल पर केन्द्रित हो गया , कल के समाचार पत्र में यह पूरा ब्यौरा कैसे आयेगा और कल की शाम कैसी होगी ?

मैं साहब से यह कहने गया कि मैं चलता हूँ , कल सुबह आऊँगा । साहब ने पूछा , “ अनुराग हाल तो भर जायेगा न ? मेरे पास जो संख्या है वह अधिकतम पाँच सौ ही होगी , हाल की क्षमता एक हज़ार है । यह अगर छात्र न आये तब थोड़ा दिवक्रम होगी , राज्यपाल दो बार इस बारे में ताकीद ऐसा कर चुके हैं और मुख्यमंत्री के आने की संभावना दिख रही है , यह हाल अगर न भरा तो थोड़ा रंग वैसा नहीं जमेगा जैसा यह लोग चाह रहे हैं । मैंने साहब को आश्वस्त करते हुये कहा , “ आप निश्चिंत रहें मुझ पर यकीन रखें , हाल में तिल रखने की भी जगह नहीं बचेगी । हज़ार लोग बैठेंगे और दो सौ से ज्यादा लोग हाल में खड़े रहेंगे , सौ- दो सौ लोग हाल के बाहर से अंदर प्रवेश करने की कोशिश करेंगे और हाल के सारे दरवाज़े हम लोग खोल देंगे , यह न भूतो न भविष्यत् ऐसा समारोह होगा । साहब को मेरे विश्वास पर बहुत सुकून मिला और उन्होंने एक लंबी साँस ली और कहा जानते हो अनुराग तुम्हारे अंदर सबसे बड़ी बात क्या है ? तुम्हारा अपने ऊपर अतिशय विश्वास ।

मैं - “ मुझे तो सर कुछ भी नहीं दिखता मेरे अंदर , आप देखिये राम प्रकाश सिंह सर ने पूरा धोबी घाट के पुराने मैले कपड़े की तरह पत्थर पर पूरी बेमुरव्वत से मुझे धो डाला ।

सर हँसने लगे और बोले , “ अध्यापक ऐसा ही होता है । मैं जब यह इस किताब की पांडुलिपि लेकर पहली बार सत्य प्रकाश मिश्रा सर के पास गया था तब उन्होंने भी ऐसा ही कहा था । ”

मैं - “ क्या कहा था ? ”

साहब - “ यह बिना मतलब का फ़ितूर कहाँ से पाल लिये हो , कमिश्नरी अच्छी नौकरी है उसमें मन लगाओ लोगों के हित में काम करो यह लेखन - वेखन फक्कड़ लोगों का काम है कहाँ बेवजह समय ख़राब कर रहे हो । जब

मैंने अपना आग्रह दिखाया कि यह काम मुझे करना ही है तब उन्होंने तुमसे मिलाया और तुमको काम सौंपा । “

मैं - “ राम प्रकाश सिंह सर को आपत्ति क्या थी मेरे बोलने पर ? ”

साहब - “ वह तुमको जानते थे नहीं , तुम विज्ञान के छात्र हो । विज्ञान के छात्र अपवाद स्वरूप ही साहित्यिक रूचि रखते हैं । यह बात तो वह सही ही कह रहे थे कि मंच बहुत ही बड़ा है तुम्हारी उम्र और हैसियत को देखकर । यह भी कह रहे थे कि ऐसे बड़े मंच

पर एक मझा हुआ वक्ता भी गड़बड़ा सकता है , यह तो एकदम नौसिखिया है , इसको कोई अनुभव बोलने का है नहीं । मैंने जब बताया तुम्हारे बारे में , तुम्हारी कोचिंग के बारे में तब थोड़ा विश्वास उनको आया और कहा यह कार्यक्रम आपका है आप चाहे जिसको बोलवायें मैं तो सलाह ही दे रहा । ”

मैं - “ वह आसानी से मान गये ? ”

साहब - “ आसानी से तो नहीं माने पर हाँ बहुत दिक्कत नहीं किये । यही कहा आप खुद बहुत ज़िम्मेदार व्यक्ति है , आपका कार्यक्रम है आपने फ़ैसला ठीक ही लिया होगा , एक बार सोच लें , अगर एक बार फिर सोच कर लगता है कि उसका बोलना ठीक है तब मुझे कोई आपत्ति नहीं बस मैं थोड़ा उसका भाषण जानना चाहूँगा वह क्या बोलेगा । वह बच्चा है अभी , उसको निर्देशन की आवश्यकता है , वह बगैर निर्देशन के मंच नहीं सम्भाल पायेगा , यह बहुत बड़ा मंच है मैं भी ऐसे मंच को जहाँ मुख्यमन्त्री, राज्यपाल, विधान स्पीकर एक साथ हों पहली बार मंच संचालित कर रहा हूँ । मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने बगैर देखें और सुनें मुझ पर इतना विश्वास किया , अमूमन लोग नहीं करते । आप इस प्रदेश के बहुत ही क्षमतावान आईएस अधिकारी हैं , आपके पास और भी विकल्प रहे होंगे ही । मैंने यह साफ़- साफ़ कह भी दिया कि मैं राजेन्द्र मिश्र के पक्ष में था पर अनुराग ने आपको कभी पीड़ी टंडन पार्क में सुना था और वह आपका छात्र भी रहा है इसलिये उसने आपके नाम पर वीटो लगा दिया हलाँकि कलेक्टर संजीव रंजन आपके ही एन झा होस्टल के ही है वह भी राजेन्द्र मिश्र के पक्ष में थे , मैं न तो आपको जानता था न राजेन्द्र मिश्र को इसलिये मैं जैसा लोग कह रहे थे वैसा ही कर रहा था , पर आपसे बात करके लग रहा है कि अनुराग का आपके प्रति आग्रह ज़ायज था । इसके बाद मैंने बोलने का कर्म पूछा , उन्होंने कहा अनुराग से आरंभ कराते हैं । तुम बता देना उनको अपना भाषण कुछ सार्थक सलाह ही देंगे । ”

मैं - “ जी सर । ”

मैं साहब से मिलकर बाहर आया । ऋषभ- शालिनी मेरा इंतज़ार कर रहे थे । जिस तरह का उन लोगों का परिवेश था यह सब उनको एक स्वप्न की तरह

लग रहा था । शालिनी ने कहा , “ मुझे इस तरह के भव्य कार्यक्रम की उम्मीद न थी मैंने सोचा था कि कुछ लोग इकट्ठा होंगे किताब को लोगों के बीच प्रस्तुत किया जायेगा फिर चाय- नाश्ता और हो गया विमोचन , पर यहाँ तो हंगामा ही हंगामा , एक सार्थक हंगामा ।

मैं - “ जैसा आप कह रही हैं , होता वैसा ही है प्रायः पर यह किसी आम साहित्यकार का विमोचन समारोह तो है नहीं , यह एक हर ओर से सक्षम व्यक्ति का कार्यक्रम है । शालिनी तुम भी लिखना तुम्हारा भी ऐसा करेंगे विमोचन । ”

शालिनी - “ मुझसे किताब तो न लिखी जायेगी तुम लिख दो मैं अपना नाम चपका दूँगी उस पर या तुम लिखो किताब कुछ मेरे नाम की भी कवितायें डाल देना । ”

मैं - “ वक्त आने दो तुम सब कर लोगी , ज़िद तुम्हारे अंग- अंग में है । ”

शालिनी - “ अनुराग ज़िद भी तुमसे उधार लेनी होगी इस काम के लिये , दे देना कुछ दिनों के लिये फिर लौटा दूँगी काम करके । ”

मैं - “ काश कुछ होता मेरे पास तुमको देने के लिये । ”

ऋषभ - शालिनी बहुत प्रसन्न थे , शालिनी अति प्रसन्न थी । ऋषभ में गंभीरता शालिनी की तुलना में ज्यादा थी इसलिये “प्रसन्नता ” और “अति प्रसन्नता ” का फ़र्क यहाँ पर नहीं था वरन् शालिनी ऋषभ की तुलना में ज्यादा दूरदर्शी है । वह एक भविष्य देख रही थी अगर वह सम्मान प्राप्त हो गया , जिसका ज़िकर साहब कर रहे थे । ऋषभ कम्प्यूटर- गणित में जितना ही माहिर था दुनियावी मामलों में उतना ही कमज़ोर पर शालिनी इंजीनियरिंग की एक सामान्य छात्रा थी पर दुनियादारी में जन्मना महारत । वह समझदारी पिता के संघर्षों से रक्त में लेकर जन्मी थी । ऋषभ ने कम्प्यूटर प्रोग्राम नायाब बनाये ज़रूर पर उसका दाम वसूलना ऋषभ के बस की बात न थी , यह काम शालिनी ही कर सकती थी और उसने बाखूबी यह काम किया ।

ऋषभ ने मुझसे कहा , “ अनुराग कुछ बात करनी है मेरे साथ चलो । ”

मैं - “ ठीक है , ज़रा चिंतन सर को निपटा देता हूँ फिर चलता हूँ । ”

ऋषभ - “ ठीक है । ”

मैं चिंतन सर को टरकाने की कोशिश करने लगा पर वह बहुत सवाल करने लगे , कहाँ जा रहे ? क्यों जा रहे ? मैं भी साथ चलूँगा । वह आहूजा साहब के पूरे परिवार-पोटन अभियान में लगे हुये हैं । वह इतने बड़े जोंक हैं कि जहाँ

लटक गये खून चूस मारा और सिफत इनकी ऐसी है कि जिसका यह खून चूसते हैं उसको पता ही नहीं चलता कि बोतलों खून निकल गया । यह हमेशा मोटा मज़बूत असामी देखकर ही उस पर धावा बोलते हैं, यह कमजोर आसामियों पर कोई वक्त ज़ाया नहीं करते । इनकी इच्छा थी कि यात्रिक होटल में बैठकर इनकी ही काफी पी- पीकर इनको ही ज्ञान पिलायें । कहीं से सुन लिया है इन्होंने कि काली काफ़ी पीने से ऊर्जा प्राप्त होती है, यह काली काफ़ी को ठंडा करके घोंट मारते हैं । मैंने पूछा भी कि यह काली काफ़ी क्यों और ठंडा करके क्यों घोंटते हैं तब जवाब भी जजमानी वाले पंडित टाइप, “यह बहुत ऊर्जावान बनाती है पर गर्म काफी का स्वाद बहुत ख़राब होता है पीना मुश्किल है इसलिये ठंडा करके नीलकंठेश्वर की तरह घोंट जाते हैं ।”

मैंने कहा, ” सर विधाता ने आपको ग़ज़बै बनाया है । आप ऐसा मसाला कहीं और देखने को न मिलेगा । ”

चिंतन सर - “तभी तो हमको कुछ अलग काम करना होगा, मैं सामान्य काम के लिये नहीं बना हूँ । ”

मैं - “ सर आप घर चलें कुछ इन लोगों का आपसी मसला है, मैं सुनकर आता हूँ । ”

सर - “ यार मैं भी चलूँगा अब मुझसे क्या छिपाना । ”

मैं - “ सर, मैं तो आप को बता ही दूँगा पर यह लोग शायद थोड़ा सहज न हों । मैं आकर सब बताता हूँ । ”

सर किसी तरह मान गये, वह मेरे घर चले गये और मैं ऋषभ के साथ यात्रिक होटल की तरफ चला ।

यात्रिक होटल पहुँच कर ऋषभ ने कहा हम लोग यहीं लान में बैठते हैं तुम शालिनी चेंज करके आ जाओ । शालिनी चली गयी और ऋषभ ने दरबान से काफ़ी लाने को कहा ।

मैं - “ हमको चाय पिलाओ, मेरे पास ऊर्जा की कोई कमी नहीं है और यह काफ़ी मैं नहीं पी सकता । ”

ऋषभ - “ दराई तो करो । ”

मैं - “ मैं चाय पिऊँगा और वह भी अदरक वाली मसाला चाय, यह चोंचले मुझे रास नहीं आते । ”

ऋषभ ने बैरे से कहा साहब के लिये अलग से चाय बनाओं देशी स्टाइल में अदरक ज़र्रर डालना और साथ में करोसान ले आना । ”

बैरा - “ जी सर । ”

मैं - “ यह करोसान क्या होता है ? ”

ऋषभ - “ अभी आयेगा तब देखना । ”

बैरा चला गया ।

मैं - “ कुछ खास बात है ? ”

ऋषभ - “ हाँ । ”

मैं - “ क्या ? ”

ऋषभ - “ यार माँ जिद किये हैं बच्चा- बच्चा... अब मेरे पास कहाँ वक्त है बच्चे- कच्चे के लिये । वह जान खाये पड़ी है कि बच्चा करो , डाक्टर को दिखाओ कोई समस्या हो तो । यह बच्चा करना एक जीव वैज्ञानिक प्रक्रिया है आप उस प्रक्रिया में अवरोध कर दो तब बच्चा नहीं होगा । अब यह कहूँ कि अवरोध है तब वह सुनेगी नहीं और कहेगी अवरोध क्यों और करने की हालत में हम लोग हैं नहीं । ”

मैं - “ क्यों नहीं करना चाहते बच्चा ? ”

ऋषभ - “ समय ही नहीं इस काम के लिये । ”

मैं - “ कह दो जब वक्त आयेगा वह हो जायेगा , अभी वक्त नहीं आया है । ”

ऋषभ - “ वह वक्त कभी नहीं आयेगा । ”

मैं - “ समझा नहीं मैं । ”

ऋषभ - “ मैं बच्चा पैदा ही नहीं करना चाहता । ”

मैं - “ क्यों ? ”

ऋषभ - “ मैं अपनी जिंदगी जीना चाहता हूँ , बगैर किसी दबाव के , बगैर किसी ओढ़ी हुई ज़िम्मेदारियों के । मैं तुमसे अपनी माँ के लिये सहयोग माँग रहा उसकी देख भाल के लिये , मैं यह समस्या अपने बच्चे को नहीं देना चाहता । तुम सोचो एक क्षण के लिये कि अगर तुम न होते तब आज कितनी बड़ी समस्या खड़ी हो गयी थी मेरे सम्मुख , मैं कैसे सुलझाता माँ के देखभाल की समस्या ? अब यही इतिहास फिर से दुहराया जाये बीस- तीस साल बाद वह मैं नहीं चाहता । ”

मैं आवाक रह गया । मुझे कभी स्वप्न में भी यह ख़याल न आया जो ऋषभ ने एक झटके में कह दिया । मेरी माँ तो अभी से हल्ला किये हैं और बच्चे का नामकरण किये पड़ी है जबकि मेरा विवाह भी नहीं हुआ है । वह एक सुंदर- विद्वान लड़की मेरी पत्नी के रूप में इसलिये चाह रही ताकि बच्चा सुंदर और

मेधावी हो । उसने शालिनी की भूरि- भूरि प्रशंसा करते हुये यह कहा भी था कि इनका बच्चा ऋषभ का दिमाग़ पायेगा और शालिनी की सुंदरता , वैसे शालिनी भी कौन सी कम जहीन है वह भी तो आईआईटी की ही पढ़ी है । पर यहाँ तो सारा मामला ही नये ऊबड़- खाबड़ रास्ते पर । शालिनी तब तक आ गयी और वह भी बगल की एक कुर्सी पर बैठ गयी , बैरा काफ़ी और चाय लेकर आ गया । मैंने शालिनी की तरफ़ देखकर बोलना आरंभ किया ।

मैं “ शालिनी , जो ऋषभ ने कहा है क्या इस बात पर तुम तैयार हो , तुम्हारी स्वतन्त्र रजामंदी है इस पर ? शालिनी , मातृत्व एक अलग सुख होता है । बच्चे के जन्म के दिन दो आत्माओं का जन्म होता है । एक पुत्र/ पुत्री का और दूसरा माँ का । वह जन्मदिवस सिर्फ़ बच्चे का ही नहीं है वह माँ का भी जन्मदिवस है । मेरे मत के अनुसार दोनों को उस दिन अपना जन्मदिवस मनाना चाहिये । एक स्त्री बग़ैर संतान के अपूर्ण है , एक पुरुष अपूर्ण नहीं होता बग़ैर बच्चे के पर स्त्री होती है । क्या तुम एक अपूर्ण जीवन जीना चाहती हो ? यह फ़ैसला तुम्हारा है पर यह मेरा हक़ है कि मैं इस गलत फ़ैसले से तुमको रोकूँ । ऋषभ हम और तुम दो अलग- अलग माँओं के गर्भ से उत्पन्न हुये हैं पर मेरे नज़दीक तुमसे ज्यादा कोई और नहीं है । आंटी से मेरी मुलाकात कुछ महीने पहले ही हुई है पर उसका दर्द मुझे बेचैन कर देता है । मेरी माँ तक कहती है मुझसे , तुम शांति को सब बताते हो मुझको कुछ नहीं बताते हो , मैं उसे इतने बड़े दर्द का भागी नहीं बनने दूँगा , वह यह बर्दाश्त नहीं कर पायेगी । मैं तुम्हारे फ़ैसले के खिलाफ़ विद्रोह करूँगा । यह तुम नहीं कर सकते , तुम शालिनी को एक अपूर्ण जीवन नहीं दे सकते । तुम शप्तशती के मन्त्रों को याद करो , तुमने क्या वायदा किया था अग्नि के समुख शालिनी से और समाज से तुम उस वायदे से मत मुकरो , उसका सम्मान करो । तुम अपनी महत्वाकांक्षाओं के लिये एक स्त्री को अपूर्ण ऐसा खंडित जीवन जीने के लिये बाध्य मत करो । यह शालिनी की इच्छा हो ही नहीं सकती , यह तुमने थोपी है उसके ऊपर । ”

ऋषभ - “ यह उसकी भी इच्छा है सिर्फ़ मेरी ही नहीं । ”

शालिनी चुपचाप काठवत थी , वह सिर्फ़ सुन रही थी । वह कुछ बोल नहीं रही थी । मैंने कहा “ शालिनी क्या ऋषभ सच कह रहे हैं ???

शालिनी मौन थी ।

ऋषभ कभी पूछना अपनी माँ से उसका अपना सफरनामा, उसके ख्वाब जो देखे थे उसने तेरे लिये जब पहली बार उसको पता लगा होगा कोई उसके अंदर स्पंदित होने को बेताब है । तुम जब ट्रटती साँसों के साथ उसके आगोश में पहली बार आये होगे , तब उसने देखे होंगे वह तमाम ख्वाब तेरे लिये जो सिकंदर और सुकरात का माँ ने देखे होंगे । तुमने बुलंदियों को छूने की अपनी ख्वाहिश से जब उसको पहली बार रुबरु कराया होगा , कितने तारे उसकी आँखों में जगमगाये होंगे । तेरी नाकामयाबियों पर उसने कितने आँसू अपने आँचल से पोंछे होंगे । नामचीन लेखकों की स्याहियों से प्रवाहित जितनी भी नज़्में, क्रिस्से, कहानियाँ, ग़ज़ल, कवितायें तुमने पढ़ी होंगी उन सबसे ज्यादा दिलचस्प और प्रेरणादायक होगा उन ख्वाबों का सफरनामा जो उसने देखा होगा तेरे लिये ।

ऋषभ संस्कारों में आज तहज़ीब ज़िंदा है , तमाम विनाशकारी विचारों के बाद भी आज यह दुनिया रहने लायक बच्ची सिफ़्र इसलिये कि माँ के ख्वाब आज भी पाकीज़ा हैं , वह माँ किसी की भी हो । माँ हर बच्चे को मरने के बाद भी स्वप्न में आकर ताकीद देती है और इसीलिये हर व्यक्ति को ग़लत काम करने से डर लगता है । हर माँ कहती है राम बनना तो आसान नहीं है पर रावण के अवगुणों से तो तू दूर रख अपने को ।

मेरी माँ ने मेरे सिविल सर्विसेज़ की परीक्षा के दौरान गंगा स्नान की यात्रा में चप्पल पहनना बंद कर दिया , जाड़ा हो गर्मी या बरसात अब पैरों में उसके चप्पल नहीं होते । वह हवाई चप्पल पहन कर जाती थी , वह उसके छोड़े हुये चप्पल मेरे कमरों में सुरक्षित हैं और कई बार लगता है मेरे में कुछ न था इसके त्याग ने मुझे गढ़ पर गढ़ गिराने की ताक़त दी है । तुम देखना अपना स्कूल का वह बस्ता जिसमें नसीहतें किताबों में ही नहीं थी उस बस्ते को सजाकर तेरे काँधे पर टाँगनेवाले की अँगुलियों में थी । यह तुमको गुमान हो सकता है , मैं काबिल था इसलिये यहाँ तक पहुँचा पर हँकीँकत यह है हमसे और तुमसे ज्यादा काबिल लोग सड़कों पर धूम रहे दो वक्त के जुगाड़ के लिये । मैं तुम्हारे सारे कार्य का भागी बन सकता हूँ पर इस कार्य का भागी नहीं बन सकता । अगर तुम यह सोच रहे हो , मैं किसी तरह से आंटी को समझाऊँ कि यह आज के जीवन की रीति है , ऐसा पश्चिमी देशों में होता है और अब यह हवा हमारे देश में भी आ चुकी है , यह देश के परिवार - नियन्त्रण अभियान में मदद देगी ... आदि .. आदि .. तब यह मैं नहीं कर सकता । तुम तीन महिलाओं को अपनी महत्वाकांक्षा की बलि मत छढ़ाओ , तुम तीन महिलाओं को अपूर्ण जीवन नहीं दे सकते , यह सरासर अन्याय है । क्या शालिनी की माँ की कोई इच्छा नहीं होगी ? नानी को अपनी बेटी के बच्चे अपने बेटे के बच्चों से ज्यादा पिरय होते हैं , यह मैंने अपने ही जीवन में देखा है । यह विचार त्याग दो आप , यह विनाशकारी विचार है । यह सभ्यता-संस्कृति के विपरीत है । यह विज्ञान की पढ़ाई बहुत बेकार होती है । यह

सूत्र- सिद्धांत के लोग भावना के धरातल से उठ जाते हैं। उनको जीवन में सारा कुछ गणितीय सूत्र ऐसा लगता है जहाँ भावनाओं का कोई स्थान नहीं होता है। हर विज्ञान के पाठ्यक्रम में ह्यूमिनिटीस भी पढ़ाया जाना चाहिये, पता तो चले जीवन की संशिलष्टता क्या है। मुझे कई बार लगती है कि यह साइन, कास, टैन थीटा जो पढ़ा वह काम कब आयेगा। मैं अपने स्कूल-कालेज में जाकर यह पूछना चाहता हूँ, यह विद्या कब काम आयेगी? मैंने जीवन में जो कुछ भी हासिल किया इसमें इसका योगदान एक सीमा तक है। तुम देख ही रहे हो इस अपने क्रद और हैसियत से बड़े कार्यक्रम को मैं नियन्त्रित ऐसा कर रहा, इसमें मेरे जीवन के अनुभवों और संघर्षों का योगदान ज्यादा है बनिस्बत मेरी पढ़ाई के। यह जीवन इतना आसान नहीं है जितना तुम आज समझ रहे हो। तुमने आंटी का सारा काम मुझको सौंप दिया, मुझ पर विश्वास करके। पर मुझ पर विश्वास करने का आधार क्या है? मैं आंटी से भी दो- तीन महीने पहले ही मिला हूँ और तुमसे तो उनकी तुलना में काफ़ी कम। मैं कल सारा पैसा लेकर भाग जाऊँ उसकी वृद्धावस्था में, और तुम अमेरिका में डालर छापने की मशीन लगा लो, पर क्या फ़ायदा उस डालर छापने की मशीन का जो आपकी माँ को घिस्टन दे दे। मैं जब अपने भाई पर नाराज़ होता हूँ कि यह कुछ पढ़ता- लिखता नहीं है, यह क्या करेगा? मेरी माँ कहती है, मुन्ना कोई आदमी भोगने के लिये भी चाहिये। तुम बहुत बड़ा साम्राज्य खड़ा कर लो पर उस साम्राज्य का सुख प्राप्त करने वाला कोई न हो तब वह सब निरर्थक हो जायेगा। जीवन में आनंद तभी तक है जब तक आपकी खुशी में शरीक होने वाले लोग हैं। यह बताओ तुम्हारी खुशी में कौन शरीक होने वाला है? माँ- सास यहीं रह गयी, ससुर का जो स्वास्थ्य है वह चिंता का विषय है और आप देखभाल नहीं कर सकते। आप बच्चा करोगे नहीं, एक अनुराग शर्मा पर यक़ीन कर रहे हो जिसको आप जानते नहीं, वह सब लेकर भाग नहीं सकता इसकी संभावना शून्य कैसे है, यह बताओ। यह डालर की मशीन सुख नहीं देगी, यह सिर्फ़ पीड़ा देगी। आप यह मशीन बंद करो। आप एक सामान्य जीवन जियो, आपकी महत्वाकांक्षाओं में अपनों का सुख भी शामिल है। आप थोड़ा सा राम कथा पढ़ो। औरंगज़ेब राज्य चाहता था। वह नृशंस हो गया, भरत त्याग चाहते थे वह महामानव हो गये। औरंगज़ेब- मुराद- दाराशिकोह सामूगढ़ और धरमट में भाई- भाई के खून के प्यासे राज्य प्राप्ति का संघर्ष कर रहे थे वहाँ चित्रकूट की पहाड़ियों पर चार भाई त्याग के लिये संघर्ष कर रहे थे, जिसमें भाई के लिये राज्य त्याग मूल बिंदु था। राम राज्य नहीं चाहते थे पिता की आज्ञा थी, भरत राज्य स्वीकार करना नहीं चाहते थे क्योंकि उसे राम ऐसा योग्य व्यक्ति ही सुशोभित कर सकता था। यह औरंगज़ेबी राज्य- धन लिप्सा का त्याग करो, अपने अंदर भरत का वास कराओ।

एक बात बताओ, तुम क्या करोगे इतने पैसे का? तुम शालिनी को भी एक सामान्य जीवन नहीं दे रहे हो अपनी महत्वकांक्षाओं का दास बनाकर।

शालिनी आप इनकी एक बात मत सुनो , आप मातृत्व के सुख का इंतज़ार करो , वह इंतज़ार ही आळादित करता है जैसा कि मेरी माँ ने मुझे मेरे जन्म की प्रक्रिया को साझा करते हुये बताया है ।

ऋषभ एक संयोग तुम्हारे साथ है , यह अच्छा है या ख़राब यह नहीं कह सकता । आंटी बहुत सज्जन है जो तुम कहते हो मान जाती है । मेरी माँ होती तो कान के नीचे एक घुमाकर देती सारी तबीयत हरी हो जाती । अगर तबीयत हरी करानी हो तो मैं कल तुम्हारा प्रस्ताव उसको बता देता हूँ , इस होटल के बैरे भी जान जायेंगे कि उर्मिला शर्मा कौन है ।

शालिनी की आँखें डबडबा गयीं । वह एक स्त्री ही थी , उसके अपने अरमान थे ही । वह बोली , “ अनुराग तुम्हारे बगैर मेरा - ऋषभ का जीवन अपूर्ण था । तुम न मिलते तब जीवन में एक कमी रह ही जाती । ”

इतने में आंटी और शालिनी की माँ गेट से बाहर आते हुये दिखे । मैंने कहा , यह बात यहीं बंद करते हैं । इस पर फिर बात करेंगे ।

आंटी ने आते ही कहा , ” अनुराग क्या कहानी सुना रहे हो । ”

मैं - “ कोई कहानी नहीं सुना रहा आंटी , वही कल के कार्यक्रम पर बात कर रहा । कमिश्नर साहब ने कहा है कि ऋषभ को राज्यपाल से मिलाते हैं और ऋषभ को राज्य सरकार से पुरस्कार दिलाते हैं इनकी उपलब्धियों पर । ”

शालिनी की माँ - “ कमिश्नर साहब मिलवायेंगे राज्यपाल से ? ”

मैं - “ हाँ ज़रूर । ”

शालिनी की माँ - “ हम लोग भी मिल सकते हैं? ”

मैं - “ ज़रूर.. क्यों नहीं ? ”

शालिनी की माँ - “ बेटा फ़ोटो खिंचवा देना , ले जाऊँगी यादगार के तौर पर । मैं कभी किसी बड़े अफ़सरान से मिली नहीं हूँ । जब से तुम लोग आने लगे तभी से कुछ पता चला पहले तो मैं कुछ खास जानती ही न थी । ”

मैं - “ आंटी जी खाने का कार्यक्रम उन लोगों का अलग से है । आप लोग भी उसी में आ जाइयेगा , आपका परिचय भी करा दूँगा । ”

आंटी - “ तुमको वह जानते हैं? ”

मैं - “ अभी तो नहीं जानते पर रात बीतने दीजिये कल जान जायेंगे । ”

आंटी - “ तुम क्या बोलेगे कल ? ”

मैं “ आंटी अभी सोचा नहीं है , कल सुन लीजियेगा । ”

आंटी -“ अनुराग मुझे आगे बैठाना , मैं तुमको बोलते हुये नज़दीक से देखना चाहती हूँ । ”

मैं “ आंटी आप चिंता न करें , चिंतन सर के साथ वाले पुलिस के लोग सारा काम देख रहे हैं वह आपका ध्यान रखेंगे आप निश्चिंत रहें । ”

मैंने घड़ी देखी रात के साढ़े बारह बज चुके थे । मैंने अशोक और दिनेश को एक बजे शास्त्री पुल पर बुलाया था । मैंने ऋषभ से कहा , “आप लोग आराम करो रात काफ़ी हो गयी है । मैं कल सुबह आऊँगा । ”

शालिनी - “ कितने बजे आओगे ? ”

मैं “ मैं सुबह ही आ जाऊँगा , अगर तुम लोग सो न रहे हो देर तक । तुमको सैर करने का मन हो तब कंपनी बाग चलते हैं सुबह । ”

ऋषभ - “ तुम सोओगे नहीं ? ”

मैं “ मुझे कहाँ नींद आने वाली , मुझे चिराग कल जलाना है अपने नाम का सूरज के सामने , वह भी सूरज की रौशनी को कमज़ोर करता हुआ । ”

शालिनी -“ आना , मैं - ऋषभ इंतजार करेंगे । ”

आंटी - “ मैं भी चलूँगी । ”

मैं “ आता हूँ सुबह । ”

मैं घर की तरफ़ चला और सीएमपी डिग्री कालेज के आगे के डाट के पुल पर झराइवर से कहा मुझे उतार दो मैं पैदल चलना चाहता हूँ कुछ दूर , तुम घर से चिंतन सर को लेकर आ जाओ शास्त्री पुल पर । झराइवर चला गया और मैं मन में अपना भाषण संरचित करते हुये शास्त्री पुल की तरफ़ चला । मेरे पहुँचने के पहले ही चिंतन सर पहुँच गये थे । वह बेताब थे जानने को कि क्या ख़ास बात थी जो ऋषभ करना चाहते थे ।

चिंतन सर - “ कौन सी गुप्त बात हुई तुम्हारी और ऋषभ की । ”

मैं “ सर मेरे तो होश ही उड़ गये उनकी बात सुनकर । ”

चिंतन सर - “ क्या बात थी जो होश उड़ा गयी । ”

मैं “ वह लोग पाश्चात्य माडल पर अपना जीवन जीना चाहते हैं । वह बच्चा पैदा करना जीवन का एक अनावश्यक कार्य समझते हैं और इसको एक बोझ की तरह देखते हैं और निःसंतान रहना चाहते हैं । ”

चिंतन सर - “ यह फैसला ले चुके हैं? ”

मैं “ तकरीबन । “

चिंतन सर - “ तुमने क्या कहा ? “

मैं - “ यह एक बहुत ही बेवकूफ़ाना सोच है , इस विचार को मस्तिष्क से निकाल दो । “

चिंतन सर - “ यार अगर वह संतान विहीन रहना चाहते हैं तब क्या बुराई है ? वह तो समाज का कल्याण कर रहे हैं । वह जनसंख्या- नियंत्रण में सहायक हो रहे हैं । “

मैं “ सर इतनी धन- संपदा - नाम- यश सब इकट्ठा करने का क्या फ़ायदा जब कोई उसका वारिस न हो , कोई उसको भोगने वाला न हो ? “

चिंतन सर -“ भोगने वालों की कहाँ कमी है ? हम लोग हैं न । हर व्यक्ति अपना नसीब लेकर जन्म लेता है और संपदा पर भोगने वाले का नाम लिखा होता है । हो सकता है हम लोगों का ही नाम लिखा हो । “

मैं “ आपके हिसाब से उनका निर्णय उचित है ? “

चिंतन सर -“ हर निर्णय का मूल्यांकन देश- काल - परिस्थिति के अनुसार होता है । अब उनकी परिस्थिति में यह शायद ठीक ही हो । “

मैं “ सर यह बताओ आपके मन में उनकी संपत्ति हथियानें का विचार पहली बार कब आया ? “

चिंतन सर - “ यह जजमानी का अपना व्यवसाय है , हम लोग जजमान की ही कृपा पर ज़िंदा रहे हैं और मालदार जजमान तलाश करना हमारा जन्मजात काम है । यह आहूजा बहुत ही मालदार जजमान है , अब यह बगैर वारिस के निपट गया तब इसका कर्म- कांड वैकुंठ यात्रा का विधान हमको ही करना होगा । हम अगर यह कार्य नहीं करेंगे तब पाप के भागी बनेंगे । हम तो अपना कर्तव्य निर्वाह कर रहे , फ़ैसला इनका है संतान करने न करने का पर उस फ़ैसले पर कर्म- कांडीय विधान तो हमको करना ही होगा । ”

मैं “ आप मेरी जगह होते तब आप क्या कहते ? “

चिंतन सर - “ मैं कहता मानव ईश्वर की इच्छा से संचालित होता है , उसकी जो इच्छा होगा वही होगा । वह बहुत दयालु है , सब पर दया करेगा । “

मैं “ सर मतलब इस फ़ैसले में ईश्वर आप पर दया कर रहा है । “

सर हँसने लगे और बोले चलो अब यह मामला तुम अपने स्तर पर निपटा ही दिये होंगे , अब यह बताओ कल का क्या जाल फैलाये हो ?

मैं “ आप बतायें क्या जाल बिछायें? ”

चिंतन सर - “ कबूतर को जाल में लो । ”

मैं “ कौन ? ”

चिंतन सर - “ राज्यपाल । ”

मैं “ उनका क्या करना ? ”

चिंतन सर - “ यार उनसे विद्यालय की स्वीकृति पर काम कराना है । ”

मैं “ सर एक खबर और है ? ”

चिंतन सर - “ क्या? ”

मैं “ संभवतः मुख्यमंत्री के आने का कार्यक्रम अंतिम हो गया । ”

चिंतन सर - “ यह कब पता चला ? ”

मैं “ जब साहब ये मिल कर आ रहा था । ”

चिंतन सर - “ यह सत्यानंद मिश्रा पूरा माया फैला दिया है अब इसको कोई खेदे न पायेगा । ”

मैं “ सर कुछ तो खास बात है , यह आसान बात नहीं है कि लोग लखनऊ से इलाहाबाद इसी एक काम के लिये आ रहे हैं । ”

चिंतन सर - “ इसको सारी माया आती है । पता नहीं कौन सी घुट्टी पिलाता हैं सब मुरीद हो जाते हैं । ”

मैं “ सर अफ़सर अच्छे होंगे , काम अच्छा करते होंगे । ”

चिंतन सर - “ यही कोई ऐसे नायाब परवरदिगार की बनाई एकलौती शशिक्षयत तो है नहीं जिनको काम आता है , ऐसे बहुत से लोग हैं । यह अलग बात है मैनेजमेंट में यह बँगैर एम्बीए किये महारत प्राप्त व्यक्ति हैं । अब हमारे लिये तो अच्छा ही है हमारा साला शक्तिशाली है , विवाह कर लो । यह सर्वथा करने योग्य परस्ताव है । ”

मैं “ सर विवाह एक बहुत ही दुर्लभ मामला है वह किसी की शक्ति और प्रभाव से ही निश्चित नहीं किया जा सकता । एक बात और कहूँ सर ? ”

चिंतन सर - “ कहो । ”

मैं “ सर , मैं कई सत्यानंद को जन्म दूँगा । मेरे क्लास में कई भावी सत्यानंद पढ़ रहे हैं । मैं चाणक्य- दरोणाचार्य के रास्ते पर चल रहा हूँ जिसको मन करेगा चन्द्रगुप्त बना दूँगा और जिसको मन करेगा अर्जुन बनाकर जगत विजेता घोषित कर दूँगा नहीं तो कर्ण की तरह अभिशप्त कर दूँगा । मैं शिक्षक बन चुका हूँ , मैं राष्ट्र - निर्माण के रास्ते पर हूँ । सत्यानंद मेरी दया पर होंगे

न कि मैं उनपर । यह लग सकता है अहंकार पूर्ण पर यह सत्य के समीप है ।
“

चिंतन सर - “ अनुराग यह दूर गंगा माँ की शांत लहरों के ऊपर से उठती हुई संवेदी हवाओं को देख रहे हो , इस गंगा के तट पर तुम्हारे ऐसा जीर्णद्वार आज तक किसी का न हुआ होगा । जिस व्यक्ति को कुछ महीने पहले उसकी गली भी न जानती थी कल वह प्रदेश के तीन महान राजनेता और सैकड़ों मानिंद लोगों को संबोधित करेगा और लोग पूछेंगे यह दुबला - पतला लड़का कौन है । ”

मैं “ सर सब ईश्वर की माया है , उसकी दयालुता है और उसकी प्रजावत्सलता का मैं हमेशा से क्रायल रहा हूँ । ”

अशोक और दिनेश आ गये साइकिल लुढ़काते हुये । उनके चेहरे पर चमक थी । वह लोग बहुत जगह से होकर आये थे और बताया कि लोगों में बहुत उत्साह है कल के कार्यक्रम को लेकर और आपके छात्रों ने ऐसी समां बना दी है कि सब आपको सुनना चाहते हैं । एक भीड़ नहीं , बहुत भारी भीड़ होगी जिसको नियन्त्रित करने का यत्न करना होगा ।

यह बहुत ही आनंद प्रदान करने वाला समाचार था । मैंने आवाज़ लगायी और कहा इनको डबल मक्खन की बंद और स्पेशल चाय पिलाओ ... कल का दिन मेरे जीवन का सबसे बड़ा दिन होने वाला है ...

मैंने आसमान की तरफ आँखें गड़ायी उस ढाबे की चारपाई पर लेटकर और एक नज़्म बनने लगी

यूँ ही ख्वाब न देखे थे मैंने आँखों में सँजोने के लिये
जुगनुओं ने कभी सूरज को हराने की क़सम खाई थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 237

मैंने उसी ढाबे की खाट पर लेटे- लेटे आवाज़ लगाई , एक चाय मुझको भी देना । इस बार ढाबे का मालिक आ गया और उसने कहा , “ साहब मैं आपको बहुत महीनों से देख रहा आप हर रात बारह बजने के बाद ही आते हो । मुझे पता चला कि पहले आप पढ़ते थे पर अब आप बड़े साहब हो गये हो । यह हमारे ढाबे का सौभाग्य है कि आप यहाँ आते हैं , आगे भी आते रहियेगा । ”

वह लड़के से बोला , “ छोटू चाय साहब की मैं अलग से बनाकर ले आऊँगा , तू रुक / “

मैं उसका चेहरा देखने लगा . . . मेरे एकटक देखने पर ढाबे मालिक ने पूछा , “ क्या देख रहे हो साहब ? ”

मैं “ तुम्हारे माथे पर लिखी हैं कुछ लकीरें जो कह रहीं कितना कर्म किया है तुमने और कितना करना बाक़ी है / ”

ढाबा मालिक - “ साहब आप पंडित हो ? आप भविष्य देख लेते हो ? ”

मैं “ हाँ , मैं भविष्यदृष्टा हूँ , मैं लोगों के कर्मों से उनका भविष्य देखता हूँ , मुझे इन अन्तरिक्ष के ग्रहों के चक्र पर या हाथ में बनी रेखाओं पर यक़ीन कम है , मुझे कर्म से उपजे पसीने से बनने वाली लकीरों को पढ़ना आता है / ”

ढाबा मालिक - “ आपने वह कहाँ से सीखी ? ”

मैं “ अपने ही पसीने से बनने वाली रेखाओं को पढ़- पढ़ कर / ”

ढाबा मालिक - “ साहब आपके पसीने की लकीरों ने आपकी क्रिस्मत लिख दी पर ऐसा सबके साथ कहाँ होता है , यह सामने टरक की क़तारें देख रहे हैं , इन टरकों पर क्लीनर चला करते हैं ड्राइवर के साथ , मैंने पिछले बीस साल से किसी क्लीनर की तक़दीर बदलते न देखी जबकि लकीरें उनके पसीने भी बनाते हैं और वह भी बहुत मोटी और मजबूत लकीरें / ”

ढाबे मालिक ने मुझको निरुत्तर कर दिया था । उसने एक बहुत बड़ी बात कह दी थी । मैंने कहा , “ आप सही कह रहे हो , परमपिता की इनायत मेरे साथ थी नहीं तो क्या पता मैं भी एक क्लीनर के रूप में ही तुमको मिलता । ”

ढाबा मालिक - ऐसा न कहें साहब , आप तो बड़े आदमी हैं पढ़े - लिखें हैं । ”

मैं “ अब ईश्वर की कृपा है मेरे सारे पाप धुल गये नहीं तो मेरे मैं और इन ड्राइवरों मैं शायद कोई फ़र्क़ न होता । आप कल शाम को परयाग संगति समिति आना । वहाँ इस शहर के सबसे बड़े अधिकारी का जलसा है , इस छोटू को भी लेते आना । ”

ढाबा मालिक - “ साहब हमको अंदर आने देंगे ? ”

मैं “ आना मैं रहूँगा । आप बता देना मैं अनुराग शर्मा का आतिथि हूँ , यह साहब पुलिस के बहुत बड़े अफ़सर हैं वह वहाँ रहेंगे । आप आना ज़रूर । ”

ढाबा मालिक - “ ज़रूर आऊँगा साहब । ”

उसने उस दिन का पैसा लेने से इंकार कर दिया । उसने कहा , “ साहब आप ऐसे आदमी से मेरी मुलाक़ात हुई , आज आप पैसा न दें । ”

मैंने डराइवर को पहले ही भेज दिया था सुबह सात बजे आने का निर्देश देकर । मैंने अशोक से कहा आप और दिनेश सुबह सात बजे आना बताता हूँ कल का कार्यक्रम । मैं पैदल ही चिंतन सर के साथ घर की ओर चल दिया । चिंतन सर ने रास्ते में पूछा , “ तुम असहज नहीं हो कल इतने बड़े मंच पर बोलने को लेकर ? ”

मैं “ पहले तो न था पर मंच संचालक राम प्रकाश सिंह सर के कहने के बाद हो गया हूँ । ”

चिंतन सर - “ वह क्या कह रहे ? ”

मैं “ वह कह रहे हैं कि मंच मेरे कद और हौसियत से बहुत बड़ा है और अमूमन मेरे ऐसे अनुभव का व्यक्ति इतने बड़े मंच पर नहीं बोलता । यह सुनने के बाद मैं थोड़ा असहज हो चुका हूँ । ”

चिंतन सर - “ यार कहा तो मैंने नहीं पर यह भाव मेरे अंदर भी आया था । यह मंच तुम्हारे ऐसे आदमी के लिये नहीं है । यह कोचिंग क्लास में नौसिखिए लड़के- लड़कियों को पढ़ाना और उस मंच से बोलना जहाँ सामने इलाहाबाद के सांसद, मंत्री, मुख्य न्यायाधीश, न्यायाधीश, सैकड़ों अफ्रसर बैठे हो और मंच पर तीन प्रदेश के सबसे बड़े लोग हों वहाँ तुम्हारा बोलना कुछ उचित ऐसा नहीं लग रहा । यह आसान नहीं होगा किसी के लिये भी अपने को संभाल पाना । ”

मैं “ सर मेरे दिमाग में एक बात धूम रही है । ”

चिंतन सर - “ क्या ? ”

मैं “ कहीं कमिशनर साहब यह इतना बड़ा अवसर विवाह के हेतु तो नहीं दे रहे हैं ? यह कार्यक्रम उनका है , मेरी एक गलती पूरे कार्यक्रम की शोभा बिगाड़ सकती है । यह तो सच है कि मैंने क्या बहुत ही कम लोगों ने ऐसा मंच देखा होगा । मेरी ज़बान लड़खड़ा सकती ही है । यह सारा का सारा ख़तरा साहब किसी उद्देश्य को लेकर ही उठा रहे होंगे । ”

चिंतन सर - “ इसकी संभावना से नकारा तो नहीं जा सकता । साहब की बहन इतने दिनों से आयी है । उसने तुमको देखा भी है । उसकी राय लिया ही होगा और निश्चित रूप से उसकी राय तुम्हारे बारे में सकारात्मक ही होगी । अब तुमको पति रूप में कोई अस्वीकार क्यों करेगा । अनुराग , आज से कुछ वर्ष बाद लड़कियाँ कहेंगी , मेरा भी प्रस्ताव अनुराग के पास गया था । तुम जिस रास्ते पर हो वह इतिहास निर्माण का रास्ता है , तुम कोई आईएएस की नौकरी करने को जन्में नहीं हो । ”

मैं “ सर सफलता जीवन में सब कुछ बदल देती है । मैंने जब प्रारम्भिक परीक्षा दी थी एक साल पहले मुझे कुछ उम्मीद न थी । मैं परीक्षा देकर आया

था उसी दिन एजी आफिस के आडिटर का विज्ञापन आया था । मेरा थोड़ा मूँड ख़राब था क्योंकि कुछ आते हुये सवाल मुझसे ग़लत हो गये थे , हलाँकि यह होता सबके साथ है । मैं बहुत निराश था , मेरे पिताजी ने वह विज्ञापन वाला पेपर मुझे देते हुये कहा आप इसको भरो , यह आईएएस अभी आपके बस की परीक्षा नहीं है । मेरा उनसे झगड़ा हो गया और मैंने उस विज्ञापन वाले पेपर के बीसों टुकड़े कर डाले थे । मेरी और मेरे पिताजी की महीनों बातचीत नहीं हुई । तक़रीबन एक महीने बाद मेरी माँ ने हस्तक्षेप किया और कहा , “ मुन्ना तुम अपने किरया- कलापों से अपने छोटे भाई - बहन को क्या संदेश और संस्कार दे रहे हो । कोई बाप से इस तरह लड़ता है क्या? उन्होंने क्या ग़लत कहा अगर यह कह दिया पहले क्लर्कों की परीक्षा पास कर लो और अभी तुम आईएएस की परीक्षा लायक नहीं हो । मुझे बताओ इसमें कौन सी ग़लत बात कही है उन्होंने । मुझे दुनियादारी नहीं आती जितना उनको आती है और तुम तो अभी बच्चे ही हो । तुम माफ़ी माँगकर घर का माहौल सामान्य करो । ”

मैंने उसकी बात मानकर क्षमायाचना की , पिताजी ने बड़ा दिल रखकर कहा , “ मुझे भी उस वक्त नहीं कहना चाहिये था जब तुम अपना पेपर थोड़ा आशा के अनुरूप करके नहीं आये थे । आप पढ़ाई करो , तुम ज़िम्मेदार लड़के हो कभी- कभी व्यक्ति आपा बेवजह खो देता है । ”

सर आप मेरा मेंस के बाद का सफ़र जानते ही हो । यह तीन - चार महीने की उपलब्धि है , बाकी तो एक गुमनामी का ही जीवन जिया है मैंने । अब आप इस कुछ दिनों के चढ़ते सूरज पर कह रहे कि कभी लड़कियाँ कहेंगी अनुराग के लिये मेरा भी प्रस्ताव गया था , यह आपका मेरे प्रति लगाव है न कि वास्तविकता । ”

चिंतन सर - “ इतिहास को छोड़ो वह जैसा भी रहा हो , वर्तमान देखो , दीपक तुमसे रौशनी माँग रहा । ”

मैं - “ सर मुझे बोलना चाहिये या नहीं ? ”

चिंतन सर - “ तुम दुविधा में हो ? ”

मैं - “ दुविधा में नहीं हूँ पर कमिशनर साहब इतनी मेहनत से इतना बड़ा जलसा कर रहे , कहीं कार्यक्रम की गरिमा को ठेस न लग जाये । सर एक बात बताओ , आप मेरी जगह होते तब क्या करते ? ”

चिंतन सर - “ बाबा , मैं इतने बड़े मंच पर बोलूँगा यह मैं सोच ही नहीं सकता । मैं बात को यहाँ तक पहुँचाना तो दूर कभी सोच ही नहीं सकता था । तुम्हारे ऐसा साहस मेरे पास नहीं है । ”

मैं - “ सर यह दुस्साहस भी हो सकता है । ”

चिंतन सर - “ परबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदय राखि कोसलुपुर राजा
।

अब सब भूल जाओ । कल शाम की तैयारी करो , पता नहीं क्या है समय के
गर्भ में तुम्हारे लिये । ”

मैंने घर की गली में प्रवेश किया मुझे दूर से ही माँ चबूतरे पर टहलती दिख
गई । मैं जब भी कहीं जाता था तब वह मेरा इंतज़ार ऐसे ही घर के अंदर-
बाहर करके करती थी । मैंने आते ही पूछा , ” तुम सोयी नहीं ? ”

माँ- “ तू मुन्ना कहाँ रहि गये । हमार जिउ डेराई लागत थअ जब देरी होई
लागत हअ । ”

मैं- “ बहुत काम रहता है । यह आंटी का कुनबा भी एक अतिरिक्त ज़िम्मेदारी
हो गया है । इस समय मैं दो महान आत्माओं में बाँटा जा चुका हूँ.. तुम और
आंटी । ”

माँ- “ तोहार शांति के नज़दीक बहुतै मन लागत हअ । ”

मैं- “ माँ वह लोग दो- चार दिन के लिये आये हैं । यह ऋषभ-शालिनी विदेश
चले जायेंगे । वह कह रहे क्या- क्या काम करना होगा उनके न रहने पर ।
अब एक पारिवारिक रिश्ता हो गया है , बात सुननी पड़ती है । माँ कहो तो
चुन्नू को काम पकड़ा दूँ , यह इन लोगों का काम देखेगा और सीखेगा । ”

माँ- “ अब एक भाई आईएस और दूसर ओनकर चाकरी करे , तोहार दिमाग़
फिरि गवा बा का ? ओका पढ़ावअ , लिखावअ । ऊ अफ़सर काहे नाहीं बन
सकत । जब तोहरे ऐसन आवारा सुधरी सकत हअ तब उ त कुल बात सुनत
हअ बग़ैर पूछे कौनों काम करते नाहीं । उ सरकार के चाकरी करे कौनों
बनिया के चाकरी - वाकरी उ न करे । ”

मैंने माँ से कहा , “ माँ यह चबूतरा मैं कभी टूटने नहीं दूँगा । यह उन बेचैन
लम्हों का चश्मदीद गवाह है जब मैं देर से आता था और तू व्यग्र होकर हर
गली के मुहाने से मुड़ती हुई साइकिल की तरफ आशा भरी निगाहों से देखा
करती थी । पर जब मैं टरेनिंग पर जाऊँगा तब तू क्या करेगी ? ”

वह आजकल इस बात पर बहुत भावुक हो जाती थी कि मैं टरेनिंग पर चला
जाऊँगा और फिर एक मेहमान के तौर पर घर आऊँगा । वह बेटे को एक
मेहमान के तौर पर स्वीकार करने की मानसिक हालात में न थी । उसकी
आँखें डबडबा गयीं ।

मैंने कहा , “ सो जाओ । सुबह जल्दी उठना होता है तुमको । कल के कार्यक्रम के लिये नयी धोती ले ही लिया होगा । कल सुबह बताता हूँ कब जाना है और कैसे जाना है । ”

मैं और चिंतन सर अपने ऊपर के कमरे में चले गये । मुझे नींद नहीं आ रही थी । मैंने चिंतन सर से कहा मेरा भाषण सुनेंगे ? सर ने कहा , “ सुनाओ । ”

मैंने कहा , “ रहने दीजिये सर .. इसको सीधे मंच से ही प्रवाहित होने दीजिये । ”

चिंतन सर - “ वैसे ही जैसे भगीरथ ने महादेव की जटाओं से गंगा को प्रवाहित किया था । ”

मैं - “ सर काश वैसा ही हो जाये कल ।

चिंतन सर - “ होगा विश्वास रखो । ”

मैं - सर ...

कल जो राख दिखेगी वह इस चिराग की होगी
जिसने अपने को जलाकर रात को रौशन किया होगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 238

मुझे रात में नींद कहाँ मैं पेट के बल लेटकर दोनों हाथों की हथेलियों के ऊपर भार देकर अपने मस्तक को ऊपर किये सामने जल रहे दीपक की पीली लौ को देख रहा था । यह अखंड ज्योति माँ हमेशा मेरे कमरे में जलाये रखती थी । मेरा पूजा- पाठ में कोई विश्वास न था और वह कई बार कह चुकी थी कि मुझे ईश्वर के प्रति आस्थावान होना चाहिये । मैं ईश्वर के प्रति आस्थावान तो था पर धर्म के बाह्य स्वरूप पर विश्वास न था , इसलिये वह मेरी तरफ से ईश्वर की आराधना करती रहती थी और इसी क्रम में उसने मेरे कमरे में एक छोटा सा मंदिर ऐसा स्वरूप बनाकर प्रतिदिन दीपक जलाती थी । मैं उस दीपक की मोटी पीली लौ को देख रहा था जो कमरे के अंधकार दूर करने का प्रयास कर रहा था । मुझे चिंतन सर का सुप्तावस्था में चेहरा उस लौ में मढ़िम- मढ़िम सा दिख रहा था और मन में ख्याल आया कि यह कोई जुगत स्वर्ण में भी लगा रहे होंगे आहूजा की संपत्ति को हड्डपने का या कल के कार्यक्रम में खास- खास लोगों को पटाने का । मैं अपना भाषण ठीक करने लगा । मुझे इस बात की चिंता होने लग गयी थी कि अगर मैं ठीक बोल न सका तब कमिशनर साहब के साथ अन्याय होगा जिसने इतना विश्वास मुझे

पर करके मंच पर बोलने का अवसर दिया । पर अगर मैं सबसे अच्छा बोल गया तब ?

यह सोचते ही धड़कनें तीव्र होने लगीं । क्या ऐसा हो सकता है ? मेरे ही अंदर से आवाज़ आने लगी , क्यों नहीं हो सकता । यह जीवन असंभावनाओं में संभावनाओं की तलाश से ही तो बना है । मुझे यहाँ तक भले ही मेरा नसीब लेकर आया हो पर अब मैं कल आजमाइश करूँगा अपनी ताक़त का , अपनी भाषा का और अपने आत्मविश्वास का । मैंने दीपक को देखते हुये वक्त से कहा , “ ऐ वक्त तू ज़रा धीरे चल तू लौटकर फिर न आयेगा । मैं यह वक्त पूरी तरह जीना चाहता हूँ । मैंने वक्त के पहर से दरखास्त की , ऐ वक्त के मील के पत्थरों तुमसे अधिक हौसलाअफ़जाई कोई कर नहीं सकता , मेरे हौसले को और तराशो । मैं देख रहा घड़ी की चलती सुइयों के सहारे सफ़र कुछ ही रह गया है , कल की ऐतिहासिक संध्या में । मैंने अपने सामने जल रहे चिराग को देखा और कहा सूरज भी तुझसे जलता होगा क्योंकि उसकी बेवफ़ाई पर तू उम्मीद जगा देता है । । मेरी ज़िंदगी में सिर्फ़ एक ही मज़ा है , मैं सपनों को कद और हैसियत से बड़ा बना देता हूँ । इस सुरसा की तरह के विशालकाय मेरे सपने मुझे बहुत आकर्षित करते हैं , यहाँ तक कि तब भी जब मुझे सपनों की ताबीर नहीं मिलती । मैंने स्वप्न फल के बगैर के सपनों का एक ज़खीरा बनाया है और उन मुंजमिद सपनों के ढेर से जब गुज़रता हूँ तब वही सपने कहते हैं , तू फिर कोशिश कर मुझे इस जहाँ में आबाद होना है । अनुराग शर्मा का सिर्फ़ एक बर्रेंड हैं , जहाँ पर लोग ऊँचाइयों पर “असंभावना “लिख देते हैं मज़बूत गाढ़ी स्याही से वहाँ पर वह दौड़ कर उछलता है पूरी सावधानी से सिर्फ़ “ अ “ पर ही प्रहार करता है । दिन- महीने- साल गुज़र सकते हैं पर उस “ अ “ को जाना ही होगा । इस असंभावना को संभावना बनना ही होगा । मुझे कल कई हज़ार दुश्मन बनाने होंगे , कल लोगों के दिलों पर साँप लोटना चाहिये । मुझे और दुश्मन चाहिये , मुझे और विरोधी चाहिये कल मुझे बहुत नाम कमाना है , लोगों को सुकून मेरी बुराइयों से मिलना चाहिये । मेरा ज़िकर , सिर्फ़ मेरा ज़िकर कल होना चाहिये , मेरे प्रतिद्वंद्वियों को इतनी ईर्ष्या हो जाये मुझसे कि उनको मेरे ख़्यालों से फ़ुरस्त ही न हो । मेरी पलकों को चूमकर मेरे अधूरे ख़्बाब मेरी आँखों में समाने लगे । मेरी बंद आँखे स्थिरता प्राप्त करने लगीं , मेरे ख़्बाब में मंच , एक बड़ी भारी भीड़ और वह दैवीय क्षण आने लगा जब मेरा उदबोद्धन चल रहा हो , एक नज़्म मेरी आँखों में उतरने लगी ।

मुझे सुबह मेरा भाई जगाने आया । उसने बताया कि अशोक - दिनेश - शाही भैया नीचे आये हैं । मैंने देखा घड़ी में क़रीब सात बजने वाले थे । मैं नीचे आया और तभी डराइवर भी आ गया । मैंने उन लोगों से कहा कि आप लोग

नौ बजे कमिश्नर साहब के बँगले पर मिलो मैं वहीं आता हूँ । वह सब चाय पीकर चले गये । मैं तैयार होतर यात्रिक होटल गया । उन लोगों के साथ थोड़ी देर कंपनी बाग टहला । मेरे पास समय कम था । मैंने परयाग संगीत समीति उनको दिखा दिया और कहा कि आप लोग चार बजे के पहले पहुँच जाना , बहुत भीड़ होगी और सीटों की मारामारी हो जायेगी । चिंतन सर ने कहा , “सीट की चिंता न करो कुछ कांस्टेबल बैठाकर सीट को छेंकवा दूँगा , वह समस्या नहीं आयेगी । ”

मैं - “ सर जिस तरह कार्ड बाँटा गया है भीड़ ही भीड़ होगी , आसान न होगा सीट को छेंकना । ”

चिंतन सर - “ तुम निश्चिंत रहो । सीओ सिविल लाइन अपने साथ का ही है उसकी ड्यूटी लगा दूँगा , तुम अपने काम पर ध्यान दो यह सब काम मैं निपटा दूँगा । डीजीपी साहब का इंतज़ाम होगा ही उसी में इनका भी शामिल करा दूँगा । ”

ऋषभ- शालिनी - आंटी - शालिनी की माँ सबके लिये यह एक ज़ेमिनी सर्कस ऐसा लग रहा था , उनको कुछ समझ न आ रहा था कि यह सब क्या चल रहा है । आंटी ने कहा , “ अनुराग मैं तुमको नज़दीक से सुनना चाहती हूँ मुझे आगे ही बैठाने की कोशिश करना । ”

मैं - “ आंटी आप चिंता न करें आप लोगों का इंतज़ाम हो जायेगा । सर बहुत ही जुगाड़ चीज़ हैं । यह उड़ती चिड़िया के पर निकाल लेते हैं , यह सब तो मामूली बात है । ”

चिंतन सर - “ बाबा आप निश्चिंत रहो , तुम अपने कार्य पर ध्यान दो । जरा डीजीपी साहब को साध दो , यह सब काम मैं निपटा दूँगा । ”

मैं - “ ठीक है सर । ”

मैं कमिश्नर साहब के पास गया । उनका भाषण पढ़ा । यह भाषण साहब ने किसी साहित्यकार टाइप के व्यक्ति से लिखवाया था । भाषण में संस्कृतनिष्ठ शब्दों का बहुतायत था । मेरे समझ में न आ रहा था , मैं कैसे इनको उचित सलाह दूँ । मेरे पास समय भी कम था और इन शब्दों से युक्त भाषण को मंच से बोलना आसान न था । वह भाषण पूरी तरह याद भी न कर पाये थे और रिहर्सल में उनके आत्मविश्वास की कमी साफ़ देखी जा सकती थी , मैंने सलाह दिया कि आप लिखा भाषण ही पढ़ें , अब इतने कम समय में यह याद तो हो नहीं सकता । मैंने उनके भाषण को थोड़ा ठीक किया और शब्दों की दुर्लहता का सरलीकरण किया तथा भाषा में परवाह लाने का पर्यास किया । साहब का भाषण बेहतर बन गया पर मैंने सलाह दी कि आप लिखा भाषण ही पढ़ें । इतने में राम परकाश सिंह सर अपनी बजाज स्कूटर लेकर आ गये वह

अपनी स्कूटर को स्टैंड पर ऐसे - तैसे टिकाकर अंदर आये और अंदर आते ही पहला उद्बोधन मिश्रित संबोधन मुझको ही दे मारे । मैं उनका छात्र था वह भी क्लास न करने वाला इसलिये वह मेरे पर ज्यादा चूड़ी टाइट कर रहे थे । उन्होंने आते ही पूछा , “ तुम्हारा भाषण कहाँ है ? ”

मैं “ सर वह तो मैं लाया नहीं । ”

सर - “ क्यों ? ”

मैं “ मुझे नहीं पता था कि वह दिखाना होगा । ”

सर - “ तुमको याद है ? ”

मैं “ जी सर । ”

सर - “ बताओ क्या है उसमें । ”

मैं भाषण सुनाने लगा । उन्होंने तल्लीनता से सुना और कहा , “ यह थोड़ा एक अलग कार्यक्रम है , आप जिस पुस्तक का विमोचन हो रहा है उस पर संकेंद्रित होकर अपनी बात कहना , बाक़ी तो सब ठीक है । ”

सर ने पूछा पहले कभी बोला है । मैंने बताया डिबेट बोला है और कक्षा में पढ़ा रहा ही हूँ प्रतिदिन । उन्होंने सलाह देते हुये कहा , “ यह थोड़ा बड़ा मंच है । प्रेस इसको विस्तार से लिखेगा । तुमने आज का पेपर देखा ही होगा कल विमोचन की पूर्व संध्या की पत्रकार वार्ता को कितनी प्रमुखता से छापा गया है । आज तो प्रदेश के तीनों सबसे बड़े व्यक्ति होंगे मंच पर , चिंता मत करना थोड़ा धैर्य रखना । तुम अगर भाषण का कोई अंश भूल जाओ तो उसको याद करने पर समय मत लगाना उसको छोड़कर आगे बढ़ जाना अपने भाषण के अगले भाग पर , श्रोताओं को क्या पता कि तुम भूल रहे हो जब तक तुम अपनी शारीरिक अभिव्यक्ति से बता नहीं देते । एक बात का ध्यान रखना बोलते समय कि तुम तेज रफ्तार में मत बोलना । तुम्हारे बोलने की रफ्तार सामान्य लोगों की तुलना में तेज है और यह तेज रफ्तार अस्पष्टता का सूजन कर सकती है । भाषण वही बेहतर होता है जिनमें स्पष्टता हर स्तर पर हो , भाषा , अभिव्यक्ति एवम् वाक्य- संरचना । मैं आपके कथ्य पर कोई सलाह नहीं दे रहा यह वक्ता का विशेषाधिकार है पर मैं आपके भाषण के शिल्प में थोड़ा सुधार अवश्य चाहूँगा आज सायंकाल के कार्यक्रम के लिये । तुम प्रथम वक्ता हो , तुम्हारा भाषण पूरे कार्यक्रम का स्वरूप निर्धारित कर देगा । तुम बोलते समय मन में विराम लेना और बोलना १, २, ३ ... यह बोलने के बाद बोलना आरंभ करना । तुम हर तीन - चार वाक्य के बाद यह करना रफ्तार पर एक बेहतर नियन्त्रण हो जायेगा , क्या पता कल तुम्हारे भी क़सीदे हों समाचारपत्रों में । तुम अच्छा बोलोगे , इस पर कोई संदेह नहीं अपने पर विश्वास रखना । ”

मैं “ जी सर , प्रयास करूँगा आपके बनाये बिंदुओं पर संतुलन बनाकर चलने का । ”

सर कमिश्नर साहब से मिलकर चले गये । पूरे बँगले में लोगों का ताँता लगा हुआ था । बहुत से लोग आ रहे थे । पत्रकार लोग बँगले के बाहर जहाँ पर साहब के नाम की तख्ती लगी थी उसकी फोटो खींच रहे थे कल के समाचार के लिये । कुछ चालू मार्क्य पत्रकार साहब से मिलकर अपना परिचय बनाने की कोशिश में लगे थे ताकि वह आगे कोई काम करा सकें , पर साहब का निर्देश आ चुका था , कार्यक्रम के बाद मिलेंगे आज दिन में मुलाकात किसी से नहीं करेंगे । मैंने कमिश्नर साहब से कहा कि एक बार आपका भाषण और सुन लेता हूँ तब मैं भी घर जाता हूँ । मैम साहब ने यह निर्णय लिया कि जिस तरह शाम को साहब तैयार होंगे उस तरह तैयार होकर वह भाषण का अभ्यास एक बार कर लें । सर ने कोट- पैंट - टाई पहनी और पूरा परिवार सर के पीछे वाले अहाते में बैठ गया । सर ने लिखा हुआ भाषण पढ़ा । मैंने उसमें कुछ सुधार किया किस तरह पढ़ा जाये । साहब के पिताजी ने कहा , ” अनुराग एक बार तुम यही भाषण पढ़ो सदानन्द दर्शक के रूप में अवलोकन करें । ”

मैं - “ ठीक है बाबू जी । ”

प्रतीक्षा ने सलाह दी कि भाषण का कुछ भाग बगैर देखें पढ़ा जाए तो बेहतर असर डालेगा । यह भाषण पढ़ना थोड़ा कम अच्छा लग रहा है ।

मैं “ बात आपकी ठीक है । मैं सर का भाषण दोनों तरह से पढ़ता हूँ । साहब से मैंने कहा आप थोड़ा आरोह- अवरोह पर ध्यान दें । एक सपाट रेडियो के समाचार की तरह का वाचन भाषण के लिये बेहतर नहीं होता । ”

मैंने सर का भाषण बगैर देखें ही बोल दिया और तकरीबन सारा कुछ बोल दिया । इसके बाद पढ़कर भी बोला । यह तो सत्य ही है कि बगैर देखें बोला भाषण बेहतर होगा ही । साहब के पिताजी ने कहा , “ अनुराग तुम्हारी याददाश्त विलक्षण है । सत्यानन्द जो याद नहीं कर पाये वह तुमने उनको याद कराने में याद कर लिया । ”

मैं “ जी बाबूजी ईश्वर की कृपा है । मेरी याददाश्त बेहतर है , जो भी वस्तु मेरी निगाह के सामने से गुज़रती है वह मेरे अंदर कहीं समा जाती है । ”

साहब के पिताजी - “ सत्यानन्द प्रयास करो इसको याद करने का । अनुराग को सुनकर मैं इस पक्ष में हूँ कि भाषण याददाश्त के सहारे बोला जाना चाहिये न कि पढ़ कर । ”

प्रतीक्षा ने मुझसे पूछा, “ आप अपना भाषण किस तरह देंगे ? ”

मेरी आँखों में जुगनू चमकने लगे इस सामान्य सी पंक्ति पर । मैंने मन ही मन कहा , “मैं स्टेज लूटना चाहता हूँ , जहाँ पर लोग दुनिया अपनी ख़त्म करते हैं वहाँ से मैं शुरू करता हूँ । मैं जन्मा हूँ एक गैर मामूली दास्तान के लिये । वहीं दास्तान लिखूँगा मैं आज । ”

मैंने बड़ी शालीनता से कहा , “मैं याददाश्त के ही सहारे बोलूँगा । मैं कोई पर्चा लेकर मंच पर नहीं जाऊँगा । ”

प्रतीक्षा- “ यही भैया को भी करना चाहिये । ”

देवानंद - “ भैया भाषण की प्रतिलिपि साथ लेकर जायें पर वह याददाश्त के सहारे भाषण देने का प्रयास करें । ”

यह फ़ैसला हो गया कि देवानंद और प्रतीक्षा मदद करेंगे भाषण को याद कराने में और अभ्यास में । मुझसे साहब के पिताजी ने कहा , “ अनुराग तुम दोपहर बाद आ जाना एक बार और सुन लेना । ”

मैं “ ठीक है बाबूजी । ”

मैं सर के घर से बाहर निकला । मैंने देखा शहर में साहब के नाम के बैनर लगे थे जिस पर फ़ोटो आज के मंचासीन अतिथियों की लगी हुई थी । मैं प्रयाग संगीत समीति की तरफ़ से होता हुआ अपने घर की तरफ़ चला । वहाँ स्टेज बनाया जा रहा था । स्टेज पर किताब का पूरा पोस्टर बनाया जा रहा था , बाहर एक बड़ा गेट बन रहा था । राम के राज्याभिषेक ऐसी तैयारियाँ चल रहीं थीं । मैंने बाहर लान में देखा वहाँ पर हलवाई अपने काम में लगे थे । तहसीलदार राम पदार्थ मिश्रा और मेरे मामा खाने के कार्यक्रम में मशगूल थे । वह लोग हलवाई को निर्देश दे रहे थे । मुझे देखते ही राम पदार्थ मिश्रा भागते हुये आये और पूरी शरद्धा से कमर झुकाकर प्रणाम किया । मैंने मामा के पैर छुये । मामा ने कहा तहसीलदार साहब का भी पैर छुओ । मैं उनका पैर छूने लगा पर तहसीलदार साहब ने मेरा हाथ पकड़ लिया । मामा के चेहरे पर गर्व देखा जा सकता था । मैं अब वह मुन्ना न रहा , यह मैं मामा के व्यवहार से आँक सकता था ।

मैं अंधविश्वासी हो चुका था । मेरे पास अब पैसे की कोई कमी न थी । मैं कोई भी परिधान ख़रीद सकता था इस कार्यक्रम के लिये पर मैंने वही कपड़ा पहनने का फ़ैसला किया जो मैंने अपने सिविल सेवा के इंटरव्यू में पहना था । मैं उसी तरह की सफलता चाह रहा था जो ईश्वर ने मुझे उस परीक्षा में दी । मैं घर वापस आ गया , मेरे घर का माहौल भी उल्लासपूर्ण था । मुझे नहीं याद है कि हम लोग कभी सब लोग एक साथ फ़िल्म भी देखने गये होंगे । यह पाँच आदमी के फ़िल्म का टिकट कौन ख़रीदेगा । पर आज सब लोग जा रहे थे , यही नहीं सबने एकाध अपने परिचितों को भी बुलाया था । मेरे पिताजी ने

अपने डीएजी को बुलाया था । कमिश्नर साहब के परिचित और बैचमेट पीएजी साहब थे, वह आमंत्रित थे ही साहब की ओर से, जब मेरे पिताजी ने डीएजी साहब को आमंत्रित किया तब वह बहुत प्रसन्न हुये । पिताजी ने कहा भी मुझसे कि उनको आगे बैठवा देना, सबको आगे ही बैठना था । माँ बोली, “ तू चिंता न करअ हम सबके आगे बैठवाई देबै । मुन्ना के अपने भाषण पर ध्यान दई दअ । हम सीओ सिविल लाइंस से कहि देबै । माँ बहुत तेज़ थी, उसने सबको आगे बैठवा दिया वहाँ काम कर रहे पुलिस वालों को निर्देश देकर ।

मंच सज गया । एकाएक शोर हुआ कि मुख्यमन्त्री फाफामऊ का पुल पार कर चुके हैं । राज्यपाल और विधान सभा स्पीकर पहले ही आकर सर्किट हाउस में रुक चुके थे । पूरा सर्किट हाउस आज ब्लाक किया गया था इन तीन लोगों के लिये, मैंने देखा पूरा हाल भरा हुआ था । पूरे हाल में छात्र ही छात्र थे एक तरफ । आगे की पंक्तियों पर इस साल के चयनित लोग थे । बद्री सर, अमर गुप्ता, राजेश्वर सिन्हा, सुरुचि, शशि, धनंजय, रचना दीक्षित लगभग सभी लोग थे । सुरुचि के माता- पिता भी उनके साथ थे । हाल के पीछे और अगल- बगल कुर्सियाँ और लगाई जा रहीं थीं, लोग घूम-घूम कर देख रहे थे कि कहीं कोई कुर्सी खाली दिख जाये तो वह बैठ जायें । जैसे - जैसे समय बीत रहा था लोगों का सैलाब बढ़ता जा रहा था । साहब अपने पूरे परिवार के साथ आये । साहब के लोगों ने आगे की क्रतारों में बीस-तीस आदमी बैठा दिये थे ताकि कोई विशिष्ट व्यक्ति आये तो सीट खाली कराकर बैठा दिया जाये ।

साढ़े चार बजे राम प्रकाश सिंह सर ने मंच संभाला और अपनी जादुई सम्मोहित करने वाली आवाज़ से सबका स्वागत करते हुये कहा, “ जहाँ कभी अमृत छलका हो, जहाँ कभी हर्ष का अपरिग्रह राज्य प्राप्ति की आकांक्षा पर अधिमानता पाता हो, जहाँ जमुना के किनारों ने अकबर को इतना आळादित किया हो कि उसने एक भव्यतम क़िले के निर्माण का निर्णय ले लिया, जहाँ समुद्र गुप्त की प्रयाग प्रशस्ति पर रानी कारुवाकी का संदेश भी अपनी आभा बिखेरता हो, महामना और नेहरू के दर्शन से अपनी पहचान बनाता गंगा- यमुना सरस्वती की तिरवेणी पर बसे करान्तिधर्मी संस्कारों के शहर ... शहर इलाहाबाद में आप सबका स्वागत है ।

इसी बीच एक शोर हुआ कि मुख्य आतिथि आ गये हैं, कमिश्नर साहब, मैडम, सर का परिवार लपका उनके स्वागत के लिये । पूरे सभाकक्ष में लोग खड़े हो गये । एक साथ तीनों लोगों का प्रवेश सभागार के भीतर और तालियों की गड्गड़ाहट जो धीरे- धीरे मढ़िम हो रही थी जब वह लोग लोग मंचासीन हो रहे थे । मंच पर चार मंचासीन लोग ... मुख्यमन्त्री, राज्यपाल,

विधानसभा स्पीकर और कमिशनर साहब ,माइक पर मंच संचालक राम प्रकाश सिंह सर । मैं अपलक देख रहा था , इतना बड़ा इंतज़ाम और ऐसी भव्यता में पहली बार देख रहा था अपने जीवन में ।

मंच संचालक राम प्रकाश सिंह सर ने स्वागत किया अतिथियों का ,दीप प्रज्वलित हुआ । मैं नर्वस हो रहा था । मुझे कुछ याद नहीं क्या हो रहा , मैं तनाव में आ चुका था । एकाएक मैंने सुना , सर कह रहे .. पुस्तक बगैर संपादन के अधूरी होती है । संपादन सर्जना का एक भाग होता है । पुस्तक लेखन में एक संपादक के रूप में सहभागी रहे हैं अनुराग शर्मा मैं आमंत्रित करता हूँ शरी अनुराग शर्मा को अपनी बात कहने के लिये

मेरी तन्द्रा टूटी .. मैं मंच की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा । मैं माइक के पास पहुँचा , मैं बहुत तनाव में था , मैं भीड़ में माँ को अपनी आँखों से ढूँढ़ने लगा । वह मिल गयी , मैंने उसकी तरफ़ देखा और फिर मेरी निगाहें पूरे सभागार का सिंहावलोकन करती हुई तालियों की गड़गड़ाहट मेरे कानों में गूँज रही थी मैं तालियों के शोर के थमने का इंतज़ार करने लगा अपनी बात कहने के लिये ।

मैं तालियों के रुकने का इंतज़ार करने लगा । तालियों के मद्दिम होते स्वर के साथ मंचासीन लोगों को संबोधित करते हुये अपनी बात कहनी आरंभ की

.....
जिसे इतिहास के ग्रन्थों में कर्म- भूमि कहा गया हो । जहाँ कुमारिल को शंकराचार्य ने विद्वता से अग्निपेषित किया हो , जहाँ देवता भी जन्म लेकर धन्यता को प्राप्त करते हों , जहाँ के शौर्य से डरकर आततायी सत्ता पनाह माँगती हो , जहाँ के मैदान अधिनायकवाद के खिलाफ़ उठी आवाज़ से गूँजते हों , जहाँ से राष्ट्र- राज्य की कल्पना सबको एक सूत्र में बाँधते हुये राष्ट्रवाद की अवधारणा को मूर्त रूप देती हो , भारतीय संस्कृति के इस मुख्य केन्द्र जहाँ से गुजरने वाले शरी राम ने एक स्तरी शबरी को यह अधिकार दिया कि वह राम को झूठे बेर खिलाये , निषाद को इतना बड़ा भाग्य मिला कि राम उन्हीं से कहते हैं तुम मम पिरय भरतहि सम भाई और इसी शहर की सीमा पर स्थित चित्रकूट की पहाड़ियों पर चार भाइयों का इतिहास का एक ऐसा अविस्मरणीय अनूठा त्याग हेतु संघर्ष हुआ कि वह विश्व के जन

मानस को आज तक आळादित करता है । ऐसे शहर इलाहाबाद में आप सबका स्वागत है ।

यह किताब एक सायास प्रयास का परिणाम नहीं है पर अनायास भी नहीं है । लेखन एक सहज प्रक्रिया है वह अनायास होकर भी सायास होती है । किसी बच्चे की पहली मुस्कुराहट एक लेखन है, उसका अपनी माँ की आँखों में देखकर बात करने का प्रयास लेखन है । एक जल प्रवाह फिसलता पहाड़ों पर, एक जल प्रपात मिलता समुद्र में, एक जल आवेग भटक कर रास्ते में बनाता एक अलग पहचान तालाब-नदी-झील की शक्ल में, एक झरना लड़ता पत्थरों से देता संगीतमय जीवन, एक ग्लेशियर पिघलता और फिर जन्म देता अनेक जल कुंडों को.. यह सब क्या है? यह सब एक रचनात्मकता है प्रकृति की... एक लेखन है प्रकृति का ।

समुद्र के साथ मिलकर पहचान खोती नदी एक सहारे के साथ पुरज़ोर ढंग से अपनी बात कहती अभिव्यक्ति है तो एक अलग पहचान रखती नदी एक विद्रोही तेवर के साथ ब़ावती अभिव्यक्ति है । अश्कों का आँखों से गिरना, रंगों से फ़रेब करता बादलों के कंधों पर चढ़कर आता वह इन्द्रधनुष, शबनम के कतरे पर उतरा चाँद, यह सब एक अभिव्यक्ति है जिसे हम किसी न किसी रूप में पढ़ने की कोशिश करते हैं और आळादित होते हैं ।

बादल के टुकड़ों पर शबनम की बूँदों से
लिखा इन्द्रधनुष ने अपने रंगों से
बता रहा मैं पढ़कर सहारे उनके
जो चाहता था कहना तुझसे ।

यह ढलानों से उतरता जल प्रवाह जो अपनी अलग पहचान बनाता है या अपनी पहचान को विशाल जल कुंड में समाहित कर देता है, दोनों ही जीवन देते हैं । एक ज़मीन पर जी रहे जीवन की प्यास बुझाता है तो दूसरा वाष्पीकरण की प्रक्रिया से गुजर कर जीवन देता है । रचनाधर्मिता जल सदृश है, इसका काम ही है जीवन देना । यह हो सकता है रास्ते के पत्थरों से संघर्ष उसकी नियति हो, ऊँचाइयों से गिरना एक भवितव्य हो पर अगर यह पत्थरों से टकरायेगा तब जगत को जीवन उत्पाद देगा और अगर ऊँचाइयों से गिरेगा तब जीवन संगीत देगा ।

यह विमोचन को इंतज़ार करती पुस्तक एक ख्वाबों का खत है जो लिखी गयी है रौशनी के मुहाने पर जब आसमाँ फुरसत में था और चाँद व्यग्र था । उस

चाँद की व्यग्रता को लेखक ने अवलोकित किया था जब चाँद झील में
रिहाइश कर रहा था और शबनम का शोर उसी झील की सतह पर शांत
वातावरण में कर्ण पिरय संगीत का सृजन कर रहा था । शोर शबनम का
साँसों के शोर की तरह आळादित कर रहा था पर लिख गया रचनाकार कुछ
और उससे भी आगे ...

शोर साँसों का होना ही अपना होना नहीं है
यह पता चला मुझे तुझसे मिलने के बाद ।

जाने तुम क्या कह गये सरगोशियों में
झील में उतरे चाँद को देखकर
सुबह तक बिखरती रही मैं तुझमें ।

महाभारत एक युद्ध काव्य ही नहीं है वह हमारी सांस्कृतिक चेतना को हमारे
अंदर तक छूता है । यक्ष प्रश्न एक हमारा जीवन दर्शन बन चुका है । यह
महाभारत की कथा का ही उच्चतम बिंदु नहीं है यह संभवतः देश- काल -
सीमा से परे तमाम कथानकों उच्चस्थ बिंदुओं में एक अति सम्माननीय उच्च
बिंदु है , जो सत्य, न्याय और विवेक को एक अलग ढंग से पारिभाषित करता
है । युधिष्ठिर का राज्य की आकांक्षा को त्याग कर अर्जुन- भीम ऐसे महावीरों
की तुलना में नकुल का जीवन माँगनी हमारी संस्कृति के त्याग एवम् विवेक
की पराकाष्ठा को संदर्भित करता है , पर लेखक ने उस जल - कुंड के समीप
स्तरी के स्वाभिमान को एक अलग ढंग से अवलोकित किया है ।

यहाँ दरौपदी का विदरोह दिखता है युधिष्ठिर की सत्यप्रियता के समुख ,
उनकी यक्ष और दरौपदी कविता में ..

वह वीर पांडव थे
मृत पड़े धरा पर
वह यक्ष था
सवाल कर रहा युधिष्ठिर से
वह युधिष्ठिर थे
जवाब दे रहे यक्ष को

वह दरौपदी थी सुन रही थी सारे कथोपकथन
खोयी प्रश्नों के लालित्य और उत्तरों के पांडित्य में

युधिष्ठिर ने माँगा जीवन नकुल का
दरौपदी मन में ही चीख पड़ी

अब मेरे अपमान का क्या होगा ?
मेरे केश कैसे बँधेंगे अब ?
रक्त दुस्साशन का कौन लाकर देगा ?
तुम्हारा सत्य और धर्म , नकुल का ज्योतिष नहीं ला पाएँगे वह रक्त

मुझे पुनः धर्म की वेदी पर चढ़ाया गया

अब कौन लड़ेगा युद्ध
मेरे लिये , धर्म के लिये

वह चीख रही थी अपने ही अंदर
कहा पूरी ताकत से यक्ष से

मुझे भी अवसर दो
मैं भी तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तर दूँगी

धर्म के नाम पर लड़े जा रहे अधर्मी युद्ध में
मुझे किसी धर्म की रक्षा नहीं करनी है
मुझे भीम - अर्जुन चाहिये
मुझे दुस्साशन का रक्त चाहिये

धृतराष्ट्र का पुत्रांध अनौतिक है
पितामह वचनों का संरक्षण नहीं पापों का कर रहे

वह राज्य का विभाजन अनौतिक था
वह लाक्षागृह नहीं एक षड्यंत्र था
वह एक द्यूत था राजाओं का
मेरी अस्मिता को दाँव पर लगाना गलत था
वह चीरहरण नहीं एक कलंक है भरत वंशियों पर
जो महावीर बैठे देख रहे थे मौन वह तांडव
वह भी अपराधी है

मुझे किसी भी मूल्य पर
अपना सम्मान चाहिये
उसका रक्त चाहिये

पूछों प्रश्नों को यक्ष ... पूछो
मैं उत्तर दूँगी

मुझे अर्जुन - भीम चाहिये
मुझे उसका रक्त चाहिये
मुझे मेरा आत्मसम्मान चाहिये ।।।।

महाभारत के वृहद कलेवर और युद्ध की त्रासदी मौत जिसका अभिन्न अंग है
..... परिणाम किसी के भी पक्ष में हो वह मौत से होकर ही जायेगा , यह देख
लिया लेखक ने इतिहास की ओर मुड़कर..

वह कौरव थे वह लड़ रहे थे बचाने को राज्य अपना
वह पांडव थे माँग रहे थे हक अपना
वह दरौपदी थी लोहितलोचन अपने स्वाभिमान के लिये
वह कृष्ण थे बेताब रचने को नयी व्यवस्था

वह मौत थी बेपरवाह सभी से

इंतजार कर रही थी विजेताओं का

यथास्थितिवाद के लिये , हक के लिये , स्वाभिमान के लिये , व्यवस्था परिवर्तन के लिये

रास्ता मृत्यु से ही था

युद्ध के परिणाम का ,

बदलाव का ,

परिवर्तन का ,

हक का ,

स्वाभिमान का ,

यथास्थितिवाद का ।।।।

एक तेवर है , एक विद्रोह है , एक करान्ति धर्मिता है , एक संघर्ष है , एक आत्मदीप्ति है , एक प्रस्फुटन है , एक स्वाभिमान है सत्यानंद मिश्र जी के लेखन में.. वह लेखन चीख कर कहता है ..,

मुझे कर्ण की तरह अंग का राज्य मत दो

मुझे अपनी ज़मीं जीतने दो

मुझ पर तरस खाकर अपना दिल मत दो

मेरे प्यार को क्रिस्मत में लिखा पलटने दो

मुझे ऐसे मत मारो

मेरी बाँहें खोल दो

मुझे लड़कर मरने दो ।

सर के लेखन में एक चुनौती है.. उनके लिये जो विरोध के लिये विरोध करते हैं

नाराज़ हो तो हो लो ऐ मेरा बुरा चाहने वालों

बहुत से तूफानों ने मेरी कश्ती से आजमाइश की है

कभी पूछना तूफानों से हशर उनका
मेरी कश्ती किनारे पर आज भी महफूज़ खड़ी है ।

बदनाम हैं हम शहर में लड़ने के लिये
जमीर के साथ जिंदा रहने की कुछ क्रीमत चुकानी होगी

मेरे खिलाफ़ लड़ने की कोई हिम्मत नहीं करता
यह भी फ़ख़्र की बात है जब भी हारा हूँ अपनों से ही हारा हूँ ।

कौम की मीरास बचाने के लिये
हमारी दूटी तलवारों ने तोपों से मात खायी है ।

ऐ मेरे लहू तू कितना भी नाराज़ हो जा
वक्त पर तेरे लिये डूबा हुआ सूरज उगा देंगे ।

इस दुनिया में तेरे बाद भी ताज रहेगा
यह ताज हर दौर में काबिलों का मोहताज रहेगा
रख ले सर पर ताज अगर उठा सकता है अपने बाजुओं के दम से
नहीं तो कोई नाकाबिल इसे मजबूर करेगा ।

शिकस्त हो गयी आज हमारी तो क्या हुआ
आज हम लहुलुहान हैं तो क्या हुआ
जिन्होंने कभी हराया था मुझको, जाकर पूछो उनसे
जीत का जश्न कितने दिन चला था उनका ।

तुझसे पहले भी कई आये थे जीत का दावा लेकर
वह अपनी हार में भी जीत की बात किया करते थे अपने क़ानून बनाकर
पाँसा फेंककर शकुनि ने जीता था कभी राज यह सोचकर
अब न आयेंगे कभी पांडव अपना अधिकार जताकर

वीरान महकमे में उड़ते तूफान के साथे में भी बच जाते हैं कुछ लोग झुककर
एक अकेला मैला सा उदास दिया अकेला जीत जाता है हवाओं से लड़कर
जो यह आग लगायी है तुमने मशालों के लिये ज़रूरी कहकर
वह जला रही है बस्ती को रौशनी के लिये ज़रूरी कहकर ।

उर्मिला ऐसे पात्र पर सर की दृष्टि अंदर तक छूती है । वह सुलोचना और
उर्मिला की एक साथ प्रशंसा करते हैं .. लक्ष्मण- मेघनाद युद्ध में । यह
लेखक की महिला पात्रों के प्रति एक संजीदगी बयाँ करती है ...

जब अंतिम युद्ध चल रहा विकराल सूक्ष्मातिसूक्ष्म पराक्रम विशेष लिये
योजित बारम्बार कर रहा इन्द्रजीत लंका रक्षा विचार
कोई बैठा दूर योगासन मुद्रा में करता पूर्णभिषेक तेज पुंज नयनों में दीप्त
लिये

जिस पल सुलोचना कमजोर पड़ी उर्मिला का सत्त्व पूरे तेज से तीक्ष्ण आभा
प्रमुदित छवि लिये दिखा अंबर में सहसा रिपुदमन करता हुआ
कहा जामवंत से राम ने , तैयारी करो विभेषण के अभिषेक की
उर्मिला ने कवच तोड़ दिया है रावण का ।

सर की राम- खंड की अंतिम कविता एक जयघोष है राम का ...

हे राम कहाँ है वह चित्रकूट
जो करता व्याख्यायित संबंधों को
हे राम कहाँ हैं आदेश तुम्हारा जो करता सम्मोहित लक्ष्मण को
हे तिरभुवन के पद्मनायक
कहाँ है राम का वह राजतंत्र
जो लोकतंत्र से बेहतर था
अब वह नंदीग्राम नहीं दिखता
जहाँ सत्य स्वयम पारिभाषित होता था
वह स्थान नहीं संरक्षित जहाँ पैदल चलकर राज्य आपने त्यागा था

वह टीले सब नष्ट हुये
जहाँ चढ़ जनता को तुमने समझाया था
वह सिमट गया है राज्य कहीं
जो सरयू तट पर आलादित था
वह राज भवन अब नहीं दिखता
जो पिता- पुत्र संवादों का एक साक्षी
वह न्याय नहीं मिलता है मुझको
जो राम राज्य में व्याप्त रहा
संदेश जो उपजा आचरणों से
वह विस्मृतियों में कहीं सिमट गयी
सिर्फ एक जगह दिखती है सबको
जहाँ आपका प्रादुर्भाव हुआ
बहुत प्रिय है जन्म तेरा
पर कर्मों के तुम शासक हो

हे राम तुम्हारा दर्शन अभिलाष ही मेरा सौभाग्य है
मंदिर बनना महज एक कृत जीवन का संतोष मात्र है ।

एकाएक तालियों की गङ्गड़ाहट गूँजने लग गयी । मैं रुक गया । मैंने देखा
पूरा हाल खचाखच भरा था । मैंने बगल की तरफ बैठे अतिथियों को देखा ।
उनके चेहरे पर विस्मय था । कोई विस्मित नहीं था तो वह राम प्रकाश सिंह
सर थे, उन्हें मेरा भाषण पहले ही सुना था और सुनकर ही कहा था राम पर
तुम्हारा उद्बोधन बहुत लंबे दौर तक याद किया जायेगा । मैंने देखा भीड़ में माँ
को वह अपने हर्षातिरेक में थी, वह आँखों को पोंछ रही थी । मैं तालियों के
रुकने का इंतज़ार करने लगा ।

मैं तालियों के स्वर में खो गया था । इतनी बड़ी भीड़ मैंने किसी हाल में न देखी थी । मैंने नजर घुमाकर पूरे सभागार का सिंहावलोकन किया , भीड़ आळादित कर रही थी । मैं तालियों के थमने का इंतज़ार करने लगा । मैं मंच छोड़ना नहीं चाह रहा था । मैं अवसर का भरपूर फ़ायदा उठाने की इच्छा से उत्प्रेरित हो चुका था , मैं एक बने हुये प्रवाह को और संवेग देने की कोशिश करने लगा । मेरा तैयार किया हुआ भाषण तङ्करीबन खात्मे की ओर था पर भीड़ से उत्पन्न ऊर्जा मेरे आत्म विश्वास में अभिवृद्धि कर रही थी , मैं एक्सटेम्पोर बोलने लग गया ।

यह परम्पराओं का देश रहा है । हमारी परम्परा वेदों , पुराणों , काव्यों से ऊर्जावान होती हुई समृद्धता की ओर अग्रसर होती रही हैं । ऋषि भरद्वाज ने 600 ईसा पूर्व में विमान शास्त्र के संदर्भ में महत्वपूर्ण शोध किये , पाणिनि ने तक्षशिला में रहकर संस्कृत व्याकरण की अष्टध्यायी का सृजन किया । तक्षशिला के पाणिनि और केरल के शंकराचार्य ने देश को एक सांस्कृतिक सूत्र में बाँधा । भारतीय गणित ज्योतिष की पहली महत्वपूर्ण व्याख्यायें ईसा पूर्व की अंतिम कुछ शताब्दियों में हुईं जो “ ज्योतिष- वेदांग ” एवम् “ सूर्य- प्रजापति ” नामक दो ग्रन्थों में संग्रहित हैं ।

आर्यभट्ट पहले ज्योतिष थे जिन्होंने 499 ई. में सबसे पहले गणित ज्योतिष की अपेक्षाकृत अधिक बुनियादी समस्याओं को उठाया । यह उनके ही प्रयासों का परिणाम है कि ज्योतिष को गणित से अलग शास्त्र माना गया । पाई और सौर वर्ष की उनकी गणना , पृथकी का गोल होना और अपनी धुरी पर घूमना तथा ग्रहण का वैज्ञानिक कारण क्या है .. यह सब उनका निष्कर्ष पाश्चात्य देशों के अविष्कार से पहले की घटना है । भास्कराचार्य की गुरुत्वाकर्षण की समझ का उल्लेख सूर्य सिद्धान्त में है तो गर्ग ऋषि ने ज्योतिष , तारामंडल , आयुर्वेद , वास्तुशास्त्र पर महत्वपूर्ण कार्य है । चरक , सुश्रुत का चिकित्सा पर कार्य , महर्षि कणाद का परमाणु विज्ञान , वाराहमिहिर का खगोल विज्ञान , कपिल मुनि का सांख्य शास्त्र यह प्रतिपादित करता है हमारी परम्पराओं में विज्ञान और वैज्ञानिक तेवर कितना सहज रूप से समाहित है । जब हम सत्यानन्द मिश्र

जी की कवितायें पढ़ते हैं तो यह पाते हैं कि परम्परा , सांस्कृतिक चेतना और वैज्ञानिकता उसी तरह से पिरोयी गयी है जिस तरह से हमारे अतीत की वह थाती रही है ..

जिन स्याहियों को इन्होंने काग़ज़ों पर उकेरा है उसमें प्यार है , इश्क़ है , जीवन है पर साथ में वह सांस्कृतिक तेवर है जो हमें बचपन में सुनाया गया था जब हमें लिखना पढ़ना आता भी न था । यह दरोण और अश्वत्थामा के

मध्य संवाद का सृजन कर देते हैं और पुत्र से चिराग बुझते ही खेमा बदलने की सलाह देकर कल रण भूमि में लड़ने के अवसर की बात करते हैं..

कल प्रातः काल हो तुम समुख मेरे
अपनी प्रत्यंचा लहराते हुये
समय खड़ा हो मध्य हमारे
लिखता कुछ नई गाथा सा
तेरे बाणों के टंकारों से
सम्मानित होगा शौर्य तेरा
दरोण वीरगति समाचारों से
मुक्त होंगे हम दोनों अपने पाप की पीड़ा
से ।

एक ओर दरोण- अश्वत्थामा संवाद है तो दूसरी ओर राम - दशरथ संवाद है जब दशरथ राम से कहते हैं तुम मेरे वचनों को मानने से इंकार कर दो और मुझे बंदी बनाकर कारागार में जीवन का शेष भाग जीने दो और जनता की इच्छा का सम्मान करते हुये राजसिंहासन को सुशोभित करो । राम - संवाद की कल्पना इतिहास पर गर्व करने का आनंद देती है ।

पिता तुम्हारे भीतर मेरा कोई सम्मान शेष नहीं
जीवन मेरा व्यर्थ गया इसमें कोई संदेह नहीं
जिन चरणों को जल से पहले मेरे हाथों का स्पर्श मिला
उन चरणों ने मेरे जीवन को आज निरर्थक समझ लिया
राज्य कभी हेतु न था रघुकुल के उजियारों का
राम राज्य का लोभी है यह है दशरथ के स्पंदन में
पिता, मृत्यु भी त्याग करेगी मेरा जब वह समुख मेरे आयेगी
ऐसे धिक मानव से कौन संपर्क में आयेगा
कल सीता त्याग देगी मुझको सुन आपके वचनों को
पिता यह पाप नष्ट नहीं हो सकता अब इस जीवन के साँसों में

आदेश वन गमन का है, एक और याचना इस राम की है
बता दो पाप- शमन रीति इस राम पाप के कृत्यों का
चौदह वर्ष बाद मिलूँगा पुनः पाप के नाशन को ।

क्या बिंब विधान है सर के पास जब वह भरत के अयोध्या आगमन पर भरत
की आत्मगलानि लिखते हैं

सामने के पेड़ों की नुची हुई पत्तियाँ
वियावान वन में दिन में चीखते सियार
घर में चूल्हे के धुओं का नदारद होना
रोटी छीनकर भागने के फ़िराक़ रहने वाले मुँडेर पर भूखे शांत बैठे कौवे
बग़ैर शब्दों के चीख कर कह रहे

हमारी दुर्दशा का उत्तरदायी है तू
तेरा जन्म हमारी विपत्तियों का कारक है
हमारी वेदना को पहचान
मुक्ति दे मुझे इस त्रासदी से ।

वहीं राम चित्रकूट में भरत के क़ाफ़िले उड़ती धूल पर लक्षण के संशय होने
पर से कहते हैं

तुम बहुत पिरय हो लक्षण मुझको पर मेरी बात का ध्यान करो
अगर राम पिरय है लक्षण को तो भरत का तुम सम्मान करो
वह बड़ा नहीं है सिर्फ़ करम में तुमसे वह योद्धा नीति निधान है
बाणों से उसके जो आहत होता उसका भी वह सम्मानी है

एक आदेश दिये देता हूँ तुमको जिसका तुम सम्मान करो
अगर धर्म अपमानित हुआ समुख मेरे मैं सघनों में समाधिगत हो जाऊँगा

वक्ष मेरे अधीर हुये हैं मिलने को उसके वक्षों से
दसों दिशायें साक्षी होंगी मेरे उसके स्वागत की
इतिहास करेगा वंदन उसका आने वाले समयों में ।

मैं कितना ज़िक्र करूँ सर के लेखन का कृष्ण की मृत्यु को युग का अवसान
कह देते हैं, आज के समाज के पुरुष के कर्मों पर लिख जाते हैं,
“ परिदों की आवाज़ में भी है पेड़ भी यह बोल रहे
कुछ और हो या न हो पर मर्द आज अपनी माँ से आँख मिलाने लायक नहीं रहे
। ”

दो पंक्तियों में जब यह लिखते हैं तब यह दोहों से भी कम शब्दों का प्रयोग
करते हैं, एक नयी विधा का सुजन कर देते हैं

कोई ज़रूरत नहीं मुझे अँधेरे में चिरागों की
रौशनी तेरे ख़्यालों की कुछ कम नहीं उजालों के लिये ।

सुना है वह अपने ख़्बाबों में मुझ पर लिखता है
मेरे ख़्बाबों ने मुझको ऐसा बताया है

वह बुझ गया चिराग तो क्या हुआ
आँधियाँ भी तो हाँफ रहीं लड़कर उससे ।

मैं चीखता रहा वह शांत सुनती रही
मैं हारता रहा वह हर चीख पर मेरे मुझसे जीतती रही ॥

मुझे उस मालिक की नेकनीयती पर भी शक होने लगा
जब तुझे पाया किसी और के नाम को अपने साथ लिखते हुये ।

काग़ज पर लिख तो दी सब बात अपनी नज़म की शक्लों में
पता नहीं बात कब उन तक पहुँचेगी ।

कोई हवाओं को समझाए इतनी वहशत भी ठीक नहीं
एक अकेले चिराग के लिये समुंदरों से आना ठीक नहीं ।

बहुत खून न हो बदन में सरहद को बढ़ाने के लिये
पर बदन में खून इतना जरूर है सरहद को बचाने के लिये ।

जिसको मैंने देखा नहीं वह मेरे बहुत क़रीब है
मैंने तेरे और खुदा के सिफ़र चर्चे ही सुने हैं आज तक ।

मैंने कोई कोशिश नहीं की तुझको करीब लाने की
यह बड़े ख़बाब दखने की मेरीआदत मजबूर कर गई तेरे पास जाने को ।

चलो एक साथ ख़बाब देखते हैं
ख़बाबों को भी बड़ा आशियाना मिल जाएगा ।

कभी कोई रिश्ता बनकर टूटता नहीं
हाँ रिश्तों के नाम बदल जाए तो बात और है ।

तू अपने ख्वाब मत बता मेरे सुन ले
क्या पता तुझे अपने ख्वाब बताने की ज़रूरत ही न पड़े ।

जिस शहर से मेरा रिश्ता था इक गली के सहारे था
उस गली का अपना मकान ही किसी अजनबी को बेच दिया ॥

खुद से ही नफरत अच्छी नहीं
अपने सरहद में ही दीवार अच्छी नहीं ॥

बुनियादें तो सबकी एक ही होती हैं
बेवजह का झगड़ा है कि वह मस्जिद है कि मंदिर है ।

जिस शहर ने अपनी ईंटों से मेरी बुनियाद बनाई
उस इमारत को वह शहर अब अजनबी लगता है ॥

वो मेरी लिखी नज्में ज़मीन पर बिखर गई
देखा हर जगह तेरे को कहते हुये जल्दी समेटो मुझको ॥

तूने “ ना ” तो कभी कहा नहीं
तेरे “ हाँ ” के इंतज़ार का लुत़फ़ भी कुछ कम नहीं ॥

जब तुझे मुझसे कोई शिकवा ही नहीं
तो फिर इश्क़ तेरा अधूरा ही रहा ॥

गर जिंदगी में फरेब न होता तो बहुत मुश्किल था जीना किसी के लिये भी
हर रात आँख बंद करते हैं हम उसी फरेब के लिये ॥

कुछ नज्मों कुछ ग़ज़लों का भी शुमार निसाब में हो
मुल्क से मुहब्बत कैसे की जाती इसकी भी कुछ तवज्जो बचपन से हो ॥

वह नदी कुछ किनारों से नाराज़ है
वह अपने आप में सिमटी जा रही ॥

कोई पूछें दुख उन परिंदों का भी
जिनका आशियाना अपने आशियाने के लिये तुम काटते हो ॥

क़सूर इस नदी का न था जो समुन्दर से मिल न सकी
नसीब में इसके रास्तों की ढलान न थी ॥

मैं इनकी कविताओं में खो जाता हूँ, इनका लेखन मुझे किसी और लोक में
लेकर जाता है। कोई भी महानायक अपने महानायकत्व से जाना ज़रूर जाता
है पर उसका महानायकत्व लोगों की पहचान में आने से पूर्व ही जन्म ले लेता
है। कोई भी विचारक किसी शिक्षा संस्थान में नामचीन होने से पहले ही एक
सैलाब के रूप में बहने लगता है। इस जीवन की सारी उपलब्धियाँ साकार

रूप लेने के पहले ही एक आकार ग्रहण करने लगती हैं जब एक संकल्प व्यक्ति के भीतर जन्म लेने लगता है और वह आसमानों की तरफ़ देखकर उड़ते हुये अपने ख्वाबों के साथ यह कहता है

ऐ नीला आसमाँ कुछ और ऊपर हो जा
मेरे हौंसलों की उड़ान कुछ ऊँची है ।

यह पुस्तक आज हमारे सामने है पर यह एक आकार बहुत पहले ले चुकी थी जब सृजन का पहला कार्य सर की दिवंगत माँ ने सर को सिखाया होगा । यह संकलन इनकी तोतली भाषा से एक सारगर्भित भाषा तक का सफ़रनामा है । यह एक उड़ते ख्वाबों की कहानी है जिसकी ख्वाहिश आसमान के नीले रंग को नज़दीक बहुत नज़दीक से अनुभवित करने की है ।

मेरी सारी शुभकामनाएँ इस लेखन प्रक्रिया के साथ हैं ... यह ख्वाबों की दास्तान है सूरज के साथ भी सूरज की बावफाई के बाद भी .. चाँद कितना भी उजाला दे पर दालान के भीतर रौशनी चिराग ही देगा , झाड़ियों में जुगनू शोर के साथ ही दीप्ति- प्रतिदीप्ति देंगे ...

इस रचना में उदिशा है , दिन की तपिश है , सायंकाल की लालिमा है , चाँद की ठंडी रौशनी है , चिराग का हवाओं के साथ लड़कर सियाह रातों को दी गयी सांत्वना है तो जुगनुओं का शोर है ।

मैंने दोनों हाथ हवा में उठाकर जोड़ते हुये धन्यवाद दिया ... मेरे छात्रों का हुजूम एक साथ खड़ा हो गया । उनके खड़े होते ही खड़े होने का क्रम आरंभ हो गया । राज्यपाल भी खड़े हो गये , उनके साथ सब खड़े हो गये । मैं भीड़ के सम्मोहन में आ चुका था । राम प्रकाश सिंह सर पीछे से आये और मैं माइक से हटने लगा । मैं मंच से नीचे उतर रहा था । मेरी निगाह मेरे पिता जी पर पड़ी , उनका चेहरा अति तेजवान था । माँ के आँखों का बाँध टूट चुका था मुक्तादल का अविरल प्रवाह चल रहा था । मैं मंच पर एक सामान्य से व्यक्ति के रूप में चढ़ा था पर मैं एक महानायक सदृश नीचे उतर रहा था । मुझे कुछ भी याद नहीं उस वक्त सिवाय इसके कि लोग मेरे बैठने का इंतज़ार कर रहे थे ।

मैं जीआईसी, ईसीसी , इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एक गुमनाम छात्र के आवरण से बाहर आ चुका था । मैं प्रतीक्षा को भी जीत चुका था , शायद वह अकेली न थी , मैं किसी और को भी जीत चुका था । मेरी गँैर मामूली दास्तान

का शायद यह दूसरा पड़ाव था , नहीं यह मेरी गैर मामूली दास्तान का पहला पड़ाव था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 241

सभागार ऊर्जान्वित था , लोगों में उत्साह था , उल्लास का माहौल था । राम प्रकाश सिंह सर ने तालियों के थमने का इंतज़ार किया और शांति की ओर बढ़ती करतल ध्वनि के बीच संबोधन आरंभ किया ...

नैमिषारण्य की वह परम्परा जो काव्य- पुराण - इतिहास - कथावाचन के द्वारा इस देश को एक सूत्र में देश बाँधती है और वह सांस्कृतिक परम्परा इस शहर के रग- रग में व्याप्त है एक । इस जमीन के अश्वमेध यज्ञ की आहुतियों ने समाज को एक दिशा दी है । वह दिशा बहुआयामी रही है और विविधता को अपने आप में समाहित किये हुये है । मैं सत्यानन्द मिश्र जी की कविता से ही इनको आमंत्रित करता हूँ इनको अपनी काव्य यात्रा के आळादित क्षणों को आप सबसे साझा करने के लिये ...

मुझे सर बुलांदियों पर चढ़ना है
मुझे अपने हौसलों को जहाँ को दिखाना है
जो कर न सके घोड़ों पर सवार
मैंने माँगी उनसे ही अपनी बैसाखियाँ
अब वही दिखाते हैं रास्ता अपने घोड़ों को मेरी बैसाखियों का ।

प्रदेश के यशस्वी आईएएस अधिकारी , राज्य सरकार के कई महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित करने वाले , कई महत्वपूर्ण ज़िलों के निवर्तमान ज़िलाधिकारी एवम् वर्तमान में खंड आयुक्त इलाहाबाद , कवि- विचारक - विद्वान शरी सत्यानन्द मिश्र

कमिशनर साहब के चेहरे पर गर्व साफ़ देखा जा सकता था । एक बहुत ही सफल समारोह का नेतृत्व वह कर रहे थे । उन्हें सफलता की आशा तो थी पर इतनी बड़ी सफलता की आशा न थी । इस तरह भीड़ का इकट्ठा होना ,

जिले के सारे मारे मानिंद लोग और वह जहाँ- जहाँ काम किये थे वहाँ से बहुत से लोग आये थे । उनके बैच के आस- पास बहुत से लोग थे और सबको रश्क हो रहा था सत्यानंद से आज । यह समाज का सत्य है कि शरीबों - वंचितों - कमजोरों को सहानुभूति मिलती है और सामर्थ्यवान को ईर्ष्या । सत्यानंद मिश्र हर बीतते क्षणों के के साथ अपने सहकर्मियों की ईर्ष्या अर्जित कर रहे थे । वह बहुत मँझे वक्ता न थे । राम प्रकाश सिंह ऐसे मँझे वक्ता के बाद बोलना थोड़ा आसान न था । वह प्रवाह उनके पास न था पर उन्होंने अभ्यास बहुत किया था और भाषण का कुछ पुट लिख कर लाये थे । उनका अभ्यास कार्य कर गया और वह बेहतर बोल ले गये .. उन्होंने मंच के लोगों को संबोधित करते हुये अपनी बात आरंभ की ...

“ मैं हमेशा से यह मानता रहा हूँ अगर मैं उस घर , परिवार और संस्कार में न जन्मा होता जहाँ मैं जन्मा तो आज मैं वह नहीं होता जो मैं हूँ । मैं अगर उन स्कूलों और कालेजों में न पढ़ा होता जहाँ मैं पढ़ा तो जीवन के उन अनुभवों से न गुज़रता जिनसे मैं गुज़रा । अगर मुझे उन लोगों का साथ और मार्गदर्शन न मिला होता जो मिला तो निश्चित तौर पर मैं आज मंजिल की तलाश में किसी चौराहे पर भटक रहा होता । फ़िराक़ की उस ज़मीं पर जहाँ विश्वास युक्त फ़िराक़ खुद कहा करते थे कभी जमाने से तुम कहोगे तुमने फ़िराक़ को देखा है , महाप्राण निराला की कालजयी रचना वह तोड़ती पत्थर को रचने वाला शहर , महादेवी वर्मा और सुमित्रा नंदन पंत का छायावाद जहाँ पनपा हो , आनंद भवन की करान्तिधर्मिता का शहर , नैतिकता इतनी गहरी संस्कारों में कि विश्वविद्यालय की एकेडिमिक काउंसिल की मीटिंग में पुत्र अमर नाथ झा ने महान संस्कृत विद्वान कुलपति पिता गंगानाथ झा के निर्णय पर सवाल खड़ा कर दिया हो , जहाँ के माघ मेले में कल्पवास करना मात्र ही वैकुंठ की प्राप्ति का साधन माना जाता हो , अगर ऐसे शहर में इंटर के बाद सुल्तानपुर से मैं न आया होता तो मेरे पास ख़बाब

तो होते पर ख़बाबों की यह तासीर न होती । मैं साष्टांग प्रणाम करता हूँ उस शहर को जिसकी सीमा में प्रवेश मात्र ही ख़बाबों की तासीर बदल देता है । यहाँ से निकलने वाली ऊर्जा अभिभूत करती है और आज भी यहाँ की ऊर्जा से ऊर्जान्वित प्रतिभाओं के नाम पर कई दिग्विजय और अश्वमेध यज्ञ हो रहे हैं । इसी शहर ने हमें सिखाया

कब तक हम नींद का इंतज़ार करते
हमने खुली आँखों से ख़बाब देखने का हुनर सीख लिया ।

यह वह शहर हैं जहाँ पता नहीं कौन चूमता है मेरी सोती पलकों को

कहीं वह मेरा अधूरा ख्वाब तो नहीं ।

मैं भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित हुआ । परमपिता ने कई मुझसे कई बेहतर लोगों पर वरीयता देकर मुझे यह अवसर दिया । उसकी इनायतों का सिलसिला बरकरार रहा । मुझे अकिञ्चन पर उसकी महती कृपा रही । उसकी कृपा का बहुत बड़ा कारण मेरे माता - पिता का संघर्ष और परवरदिगार में उनकी अगाध आस्था रही है । मैं लिखता तो था पर लिखकर आप लोगों के बीच आ सकता हूँ इस बात का विश्वास मुझे अपने ऊपर न था । मैं बहुत आभारी हूँ सत्य प्रकाश मिशन सर का जिन्होंने मुझे यह विश्वास दिलाया कि मैं आज आप के सम्मुख इस रूप में उपस्थित हो सका । यह एक रहस्य है मेरे लिये कि कुछ स्याहियों के छीटे कागजों पर पढ़ते- पढ़ते कैसे मुझे एक काव्य संकलन के नज़दीक ले गये और एक पुस्तक “ ख्वाब हमारे ” आपके सामने आ सकी । यह सवाल लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं किस पर लिखता हूँ

मैं कौन सा राज़ पर्दफ़ाश कर दूँ
मैं किसको जमाने के सामने खड़ा कर दूँ
किस धड़कन को लफ़्ज़ बनाकर
आपके सामने पेश कर दूँ
किस ऐसे का रसूख बता दूँ
जिसके दीदार में ही नहीं
उसके इंतज़ार में भी मज़ा है
मैं किस ऐसे का ज़िक्र कर दूँ
जिसके तसव्वुर में गुज़री हैं रातें
पर सुबह के उजाले में कह रही मैं तुझे पहचानती नहीं
मैं किस- किस ख्वाब का नाम लूँ

जिसका मिलना एक इत्तिफ़ाक़ था
पर उसका खोना एक साज़िश थी
वह ख्वाब मेरे टूट गया नींद अभी खुली न थी
पंखुड़ी उखड़ गयी वह कली अभी बनी न थी
जिस ख्वाब के लिये साँसों ने कहा मुझसे

तू किस वहम में ज़िंदा है
 उसकी नाराज़गी मेरे होते हुये भी तुझे मार डालेगी
 वह मेरे कुछ नायाब ख्वाब हैं
 जो मुफ़्लिसी में जिंदगी का सुकून देते हैं
 असीरी में आज़ादी का एहसास कराते हैं
 वह तानाशाहों के तख्ता पलट का दिन मुकर्रर किया करते हैं
 यह ख्वाब हैं जो हर वक्त मुझे मेरे मनचाहों से मिलाते हैं
 ये मेरे उम्मीदों की बनती - बिगड़ती आस हैं
 आँख से आँसू का रिश्ता बनाते हैं
 जब तक यह ख्वाब हैं
 तब तक मैं ज़िंदा हूँ
 जिस दिन ये ख्वाब मर गये
 साँसों को लेने का एक फ़िज़ूल काम बाक़ी रह गया
 ये मेरे ही नहीं बहुतों के ख्वाब हैं
 दिखते मेरे आँखों की रौशनी में हैं ।

मैं अबोध था जब मैंने अपनी माँ को खोया था । एक छोटा भाई और एक बड़ेर समझ की बहन मेरे साथ रह गई । पिता के कंधों पर माँ- पिता दोनों का उत्तरदायित्व आ गया । मेरे पिता की उम्र मुश्किल से पैंतीस साल रही होगी । उसने मुझसे तो कहा .. जब तेरे कदम डगमगायेंगे, मन हारेगा , ज़िंदगी परेशान करेगी तब याद रखना वह एक हौंसला जो तेरे पास है नहीं है कुछ इस जहाँ में तेरे हौंसलों बढ़कर । पर यह पंक्ति समझने लायक मेरे भाई - बहन उस समय न थे । मेरे ख्वाबों में उसकी तस्वीर तो आती है - एक धुँधली तस्वीर पर मेरे भाई- बहन उस तस्वीर से मरहूम रहे ... शायद इसीलिये मैं लिख गया

माँ तेरी हर चीज़ सहेज कर रखी है मैंने
 पता नहीं तू कब चली आए ,
 बचपन की मेरी तस्वीर जिसमें दिखती है छवि तेरी ,
 स्कूल का वह बस्ता जिसमें नजर आती है तालीम तेरी ,

वह फटी हुई जर्जर किताबें जिसमें बसी है

जहाँ की नसीहतें सारी ,

माँ तेरी हर चीज़ सहेज कर रखी है मैंने पता नहीं तू कब चली आए ,

तेरे वह आँसू जो बहे थे मेरे चोट खाने पर ,

तेरी वह खुशी जो छलकी थी मेरी हर बुलन्दी पर चढ़ते मेरे क़दमों को
देखकर ,

माँ तेरी हर चीज़ सहेज कर रखी है मैंने ,

माँ तेरी हर चीज़ सहेज कर रखी है मैंने ॥

मैंने तेरे ख्वाब देखे तो नहीं हैं उतने जितने समझे हैं तेरी बोलती आँखों से । मैं
तेरे ख्वाबों पर कितना खरा उतरा यह तो मुझे पता नहीं पर कोशिश हर वक्त
की है खरे उतरने की । मैं जो तुझसे कह न सका वह मैं लिख गया इस “
ख्वाब हमारे ” में ।

यह फ़ैसला वक्त करेगा कि मैं कितना तेरी नसीहतों की बनायी लकीरों पर
चला । यह काव्य संग्रह मेरा मेरे ही ख्वाबों का सफ़रनामा नहीं है , यह तेरे
भी ख्वाबों का सफ़रनामा है । मैं समर्पित करता हूँ यह काव्य संग्रह उन
अभागों को जिन्होंने नहीं देखा अपनी माँ को किसी भी वजह से । इस पुस्तक
से प्राप्त सारी धनराशि यतीम बच्चों को समर्पित है ।”

कमिशनर साहब ने हवा में दोनों हाथ उठाये और प्रणाम की मुद्रा में धन्यवाद
ज्ञापित किया ।

साहब के पिता जी और भाई- बहन रोने लगे । साहब ने समाँ बाँध दी थी
अपने भाषण से । मैं । प्रतीक्षा के अविरल बहते आँसू देख रहा था । मेरी माँ
मेरे बगल में ही थी वह भी आँखों में नमी लिये प्रतीक्षा को देख रही थी ।

कमिशनर साहब ने बहुतों का दिल जीत लिया था , मेरा भी । मेरी उम्मीद से बेहतर वह बोले थे । मेरी शरद्धा उनके प्रति बढ़ चुकी थी । उनकी बात के समर्थन में लोग खड़े हो गये थे । मैं भी खड़ा हो गया था । उन्होंने एक ऐसी पीड़ा को लोगों के सम्मुख उड़ेल दिया था जिसमें लोग बह रहे थे । वह एक प्रशासनिक अधिकारी नहीं एक मानवता की मूर्ति के रूप में सामने आ चुके थे । उन्होंने अपने भाषण से कमिशनर का चोगा उतार कर फेंक दिया था और एक रचनाकार के रूप में सबके सम्मुख आ चुके थे । कमिशनर साहब के ससुर को अपने दामाद पर बहुत गर्व हो रहा था । वह और उनके मातहत अधिकारी जो उनकी मुस्कान में जीवन का सुख देखते थे , वह सब भी खड़े थे । कोई था जो खड़ा न हुआ था तो वह साहब के पिता जी थे । वह जीवन के उस मोड़ पर जा चुके थे जब उन्हें बेबसी में एक नये जीवन को अंगीकृत किया था और विधाता ने एक चुनौती दी थी यह कहते हुये , “ तुझे अब पिता ही नहीं एक माँ के रूप में भी ज़िंदा रहना होगा ताउमर इन अबोधों के भविष्य के लिये और तेरी परीक्षा का दौर आरंभ हो चुका है । तुझे अब इस बात का एहसास होगा अग्नि के सम्मुख लिये गये फेरे और अभिविहित मन्त्र मात्र एक दुनियावी क़वायद ही नहीं हैं वरन् वह ईश्वर के सम्मुख की गयी एक प्रतिज्ञा है । अब तुझे उस प्रतिज्ञा के लिये जीना होगा । ”

उनके आँसुओं की रफ्तार अति तीव्र थी । प्रतीक्षा ने सहारा देकर उनको उठाया और वह मंच की ओर अपलक निहारने लग गये जहाँ पर चार कुर्सियों से सजे डायस के पीछे एक बहुत विशाल आकार का पोस्टर लगा था “ ख्वाब हमारे ” और उस किताब के आवरण पृष्ठ पर एक धुँधली .. एक बहुत ही धुँधली सी कलात्मक कृति में उनकी पत्नी का चेहरा उभर रहा था । पुस्तक का आवरण पृष्ठ बनाने वाले ने ऐसी कलात्मकता का परिचय दिया था कि ख्वाब हमारे शब्द के पीछे दो आँखें थीं जो ख्वाब शब्द के नीचे के नुक्ते को बेधती हुई सामने की ओर देख रही थीं । शायद कलाकार ने मोनालिसा और किशन गढ़ की बनी ठनी पेंटिंग से प्रेरित होकर एक नायाब चित्र उकेरा था जिसमें स्त्री की सुंदरता से अधिक स्त्री के आँखों से टपकने वाली आकांक्षा , चाहत और उसकी भविष्यदृष्टा छवि उभर रही थी । उस स्त्री के पृष्ठ भाग में बोधिसत्त्व और जातक कथाओं का चित्र था , वही बोधिसत्त्व जो तब तक अपनी मुक्ति का आकांक्षी नहीं होता जब तक जगत का हर व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त न कर जाये । जगत के कल्याण के लिये वह अपनी मुक्ति मुल्तवी करता रहता है । इससे बेहतर शरद्धांजलि एक बेटा अपने माँ के लिये क्या दे सकता है जो कमिशनर साहब ने आवरण पृष्ठ में उनको कल्पित करके दिया था ।

साहब अपनी कुर्सी की ओर बढ़ रहे थे हाथों में कागज़ का एक पुलिंदा लिये । वह अपने भाषण से बहुत संतुष्ट थे यह उनकी चाल से ही आँका जा सकता था । एक भरा सभागार उनको अतिरिक्त गर्व दे ही रहा था । राम प्रकाश सिंह सर ने तालियों के लकने का इंतज़ार किया, वह पूरी शांति चाहते थे बोलने के पहले । अगले करम में प्रदेश के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति मुख्यमन्त्री सद्वावना सिंह को बोलना था । जैसे ही मंच संचालक ने कहा, “आप सबको अवश्य इंतज़ार होगा अपने जननायक को सुनने का । जब भी कभी राजनैतिक आंदोलनों का इतिहास लिखा जायेगा वह अधूरा होगा अगर ज़मीं की परतों को तोड़कर उभरने वाले धूमकेतु श्री सद्वावना सिंह के नाम का विस्तारित ज़िक्र नहीं होगा । अगर कभी कोई व्यक्ति जीवन में प्रेरणा लेना चाहेगा तब वह इतिहास के गर्त में विचरित करते हुये श्री सद्वावना सिंह के जीवन से ज़रूर टकरायेगा । छात्र आंदोलनों से राजनैतिक जीवन का आगाज़ करने वाले, किसी भी चुनाव को लड़ा हो विजय श्री के साथ हाथ से हाथ मिलाकर चलने वाले विकास एवम् सामाजिक परिवर्तन के प्रति आस्थावान प्रदेश के यशस्वी मुख्यमन्त्री श्री सद्वावना सिंह अपने रचनात्मक अधिकारी - लेखक के बारे में अपने विचार साझा कर हम सबको लाभान्वित करें मुख्यमन्त्री श्री सद्वावना सिंह ...

नारों और श्लोगनों की गूँज मुख्यमन्त्री जी ज़िंदाबाद के नारों के साथ वातावरण में गुंजायमान होने लगा ...

मुख्यमन्त्री आये तो कमिशनर के अति आग्रह पर थे पर उनको अपने निर्णय पर प्रसन्नता हो रही थी । इतनी बड़ी भीड़ और इतने बड़े-बड़े आदमियों को संबोधित करने का अनायास अवसर उनको मिल चुका था पर वह उस तरह के वक्ता न थे जैसा कि साहित्यिक मंच चाहता है । वह साहित्य से कोसों से दूर थे । वह एक सफल राजनैतिक कार्यकर्ता थे, वह जनांदोलनों से उपजे थे, उन्होंने जमीनी हकीकत देखी थी और साहित्यिक हकीकत से वह पूर्णतः अनजान थे । पर उनको बोलने का अच्छा अनुभव था, रैलियों और राजनैतिक सभाओं के वह जादूगर थे ।

मुख्यमन्त्री ने नारों के बीच ही बोलना आरंभ कर दिया । वह अभ्यस्त थे इस तरह के माहौल में बोलने के लिये ।

उन्होंने ईमानदारी से यह स्वीकार किया कि साहित्य मेरा क्षेत्र न रहा और आज मैंने एक नव युवक अनुराग शर्मा और सत्यानंद मिश्र को सुनते समय

यह महसूस किया कि साहित्य का जीवन में होना अति आवश्यक है । मंच संचालक के बारे में बताया गया कि यह गणित के अध्यापक है यह बात भी मेरे अंदर घर कर गयी कि साहित्य किसी खेमे का नहीं है वह जन जीवन की वस्तु है । यह साहित्य जीवन में भावनात्मकता देता है , जीवन में सदाशयता देता है , लोगों के साथ जुड़ाव देता है और सबसे बड़ी बात एक सुकून देता है । मेरा जीवन एक सुकून की रिक्तता का बोध कर रहा और मैं इस रिक्तता को यथा शीघ्र दूर करने का प्रयास करूँगा । मैं धन्यवाद देता हूँ सत्यानन्द मिश्र को जिनके आग्रह के कारण मैं यहाँ आया अवश्य पर यह आग्रह विधाता ने मेरी बेहतरी के लिये सृजित किया था । मैं लेखन पर तो ज्यादा बात कर नहीं सकता क्योंकि मैंने कभी लिखा है नहीं उन अर्थों में जिन अर्थों में लेखन की बात यहाँ हो रही है और मेरा पठन भी स्वतन्त्र पठन कम रहा है , ज्यादातर ज़रूरतों से परेरित रहा है । मुझे यह भी बताया गया कि इस वर्ष इलाहाबाद से सिविल सेवा में चयनित होने वाले 67 लोग आज की इस संध्या में शरीक हुये हैं । मैं उनको और उनके माता- पिता - परिवार जनों को बधाई देता हूँ जीवन की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर । मैं प्रति वर्ष मिलता हूँ यूपी कैडर में आने वाले अधिकारियों से और उनसे एक ही गुजारिश करता हूँ कि आप लोग कवाल टाउन की पोस्टिंग का प्रयास न करें , आप सब दूर - दराज के इलाकों में जायें और वहाँ की समस्याओं से रुकरु हों । यह वह सेवा नहीं है जो अंगरेजों ने बनायी और हमारा शोषण किया , यह मानव मातृर के कल्याण को समर्पित सेवा है । हम और आप एक ही पायदान पर खड़े हैं , हमारा और आपका जीवन इस समाज को समर्पित है । हम आपके सहयोग से नीति बनाकर आप को सौंप देते हैं उसके कार्यान्वयन के लिये , अगर आपका सहयोग नहीं होगा तब वह स्वप्न साकार नहीं होगा जो राष्ट्रीय आंदोलन में हमने देखा था । मैं आप सबसे अनुरोध करूँगा आप राष्ट्रीय आंदोलन एक बार पुनः पढ़ें और इस बार परीक्षा के लिये नहीं ग्राह्यता के लिये पढ़ें ।

मैं इस पुस्तक के कथ्य और शिल्प पर बोलने के बजाय विद्वानों के विद्वानों के महामहिम राज्यपाल रमाकान्त शास्त्री जी को सुनना चाहूँगा । मेरी सारी शुभकामनाएँ इस पुस्तक के साथ हैं । मैंने किताब पढ़ी और कई कवितायें ऐसी हैं जो दिल को अंदर तक छू जाती हैं ।

इनकी कश्मीर पर लिखी कविता काफिरों की इबादत कितना सच बयाँ करती है वहाँ के माहौल पर

हर शाम होने के पहले ही शहर वह मरने लगता है

न कोई खटखटाता है कोई दरवाज़ा

न कोई आवाज़ देता है शाम की चहलक़दमी को

बस घर के नज़दीक आती बूटों की आवाजें सिरहन पैदा कर देती है
जिस घर की साँकल बज उठती है
वह घर ही नहीं वरन् आस पास का हर घर सिहर उठता है किसी आशंका से
हर दीवार दूसरी दीवार से पूछती है
कि अब किस दीवार के भीतर कफ़न का इंतज़ाम हो रहा
गिरती बर्फ के बीच साँस लेती जलती घाटी के खामोश क़ब्रगाह में
बोसीदा कफ़नों के बीच मुद्दतों से सोये हुये पूछ रहे
अपने को खा रहे कीड़ों से ही
यहाँ हर वक्त धमाका ही धमाका क्यों सुनाई देता है
हमारे दौर में तो कभी कोई धमाका होता नहीं था
सुबह के अज्ञान की आवाज से ज्यादा धमाकों का शोर क्यों सुनाई देता है
क्यों सरकशी ही सरकशी हर ओर छायी है
क्यों बेवजह की बगावत ही सबका शआर है
कफ़न के बिना सिर्फ़ जिस्म के साथ जी रहे मुर्दे
क़ब्र से निकल कर चिल्लाकर अपनों से ही कहते हैं
कभी तो मुझे चैन से सोने दो
मेरी वसीयत को ध्यान से पढ़ना
सबसे नीचे लिखा था मैने
बाँट कर सबकुछ ले लेना जैसा लिखा है मैने
फिर मेरे चैन के लिये अपनों के साथ अमन चैन से रहना तुम
पता नहीं कितनीं मस्जिदें बंद हैं
मंदिरों पर पुलिस का पहरा है
न तो मस्जिदों में कोई आता है न मंदिरों में कभी शंख बजते हैं
मुर्दा रहकर भी हम क़ब्रगाह में ज़िंदा हैं
हर रोज देखते हैं उम्र से पहले लोगों को दफ़न होते हुये
ज़मीं भी बेतहाशा बढ़ती लाशों का बोझ कब तक उठा पाएगी
अब बर्दाशत नहीं होता यह सब कुछ

मेरे सुकून के लिये मुद्दों को खुदकुशी का हुनर कोई सिखा दे
पता नहीं तेरी इबादत कौन क्रबूल करेगा
ज़मीं नहीं खोलेगी तहें अपनी
जब तू आएगा पास मेरे सोने को
नपी हुई ज़मीन और नपी हुई कफ़न का इंतज़ाम कर ले
उस आज़ाद ज़मीं पर जिसके लिये बहुत सी क़बरगाहों को पाट दिया है तूने ।

मेरी सारी शुभकामनाएँ, मेरी सारी सदाशयता, मेरा सारा समर्थन सत्यानंद मिश्र के उस प्रयास के लिये जिसकी धनराशि समर्पित है यतीम बच्चों के लिये । मैं इनकी काव्य यात्रा के कुछ और पड़ाव देखना चाहता हूँ, मैं इस तरह के और कार्यक्रमों में शारीक होना चाहता हूँ । धन्यवाद....

मुख्यमंत्री के चुप होते ही नारे गूँजने लगे .. जब तक सूरज चाँद रहेगा
मुख्यमंत्री जी का नाम रहेगा
देश का नेता कैसा हो मुख्यमंत्री जी जैसा हो

जिंदाबाद के नारे उनके पाठी के कार्यकर्ता और सारे लोग जो सभागार के भीतर, बाहर के दालानों और सड़कों पर छाये हुये थे वह सारे लोग कर रहे थे । मुख्यमन्त्री का अपना एक अलग और होता ही है । बहुत बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं की भीड़ पूरे संगीत समीति हाल के बाहर की सड़कों पर जमा हुई थी । नारों का शोर रुक नहीं रहा था । मंच संचालक नारों के शोर के रुकने का इंतज़ार करने लगे, इसी बीच मुख्यमंत्री अपनी कुर्सी से उठे और शांत रहने का निर्देश दिया । शोर थमने लगा, राम प्रकाश सिंह सर माइक से राज्यपाल का परिचय देकर आमंत्रित करने की प्रक्रिया की ओर आगे बढ़ने लगे ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 243

मुख्यमन्त्री जी ने बोला तो कम ही पर बोला बहुत ही प्रभावशाली था । उन्होंने नव चयनित सिविल सेवा के अधिकारियों का ज़िकर करके एक प्रेरक माहौल बना दिया था सभागार के भीतर, जिसको लंबे दौर तक याद

किया जाना था । उनके समर्थकों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने जो नारे लगाये थे वह नारे पूरे सिविल लाइंस में गुंजायमान थे और उनके समर्थकों का ताँता लगातार प्रयाग संगीत समीति की ओर बढ़ता जा रहा था । सत्यानंद मिश्र जी ने शायद इस तरह के कार्यक्रम की उम्मीद की हो पर मैंने कभी कल्पित ही न किया था किसी भी लुभावने में स्वप्न में कि जीवन के इस महत्वपूर्ण पड़ाव से कभी मैं गुजरूँगा । मैं अपने आप से ही पूछ रहा था , “ कहीं यह एक स्वप्न तो नहीं । ”

इसी बीच राम प्रकाश सिंह सर की बुलंद जादुई आवाज़ कानों में गूँजने लगी

...

“ अध्यापक- पत्रकार - केन्द्र सरकार में भूतपूर्व कबीना मन्त्री , मध्य प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री, वर्तमान में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पदम शरी सम्मान से सम्मानित श्री रमाकान्त शास्त्री जी ... यह सारे परिचय पनाह माँगते हैं जब महामहिम का उद्बोद्धन आरंभ होता है । सर ने कभी पहले कहा था कि जब मैं मंच पर आता हूँ तब मैं सिर्फ एक वक्ता होता हूँ और मैं अपनी सारी पहचान को छोड़कर आता हूँ । मेरा उस दिन सिर्फ एक परिचय होता है कि मैं एक विषय पर बोल रहा हूँ । सर ने यह भी कहा था कि मैं विषय को बगैर पूरी तरह समझे और परिपक्वता प्राप्त किये न तो किसी कक्षा में गया पढ़ाने और न किसी मंच पर आज तक गया संबोधन करने । यह सर की एक अपने संवाद की स्थापना के प्रति एक ज़िम्मेदारी का बोध कराती है जो हम जैसे अध्यापकों को प्रेरणा देती रही , जब मैंने अध्यापन कार्य आरंभ किया । मुझे इस परम्परा का ज्ञान है कि अधिकतर पुस्तकों का विमोचन राजभवन में ही होता है पर सर ने लखनऊ से इलाहाबाद तक की यात्रा की इस विमोचन के लिये यह बहुत ही कृतार्थ करने वाला कृत्य है जिसका मैं पूरे शहर की ओर से सर का आभार प्रकट करता हूँ । सर संस्कृत के विद्वान हैं , राम कथा के मर्मज्ञ हैं और मैं सर से अनुरोध करूँगा सर अपने उद्घोषण में कुछ राम कथा का अंश अवश्य शामिल कर हम सबको एक ज्ञान- भवित- विश्वास- कर्म के चतुष्कोण के साथ इस तिरकेणी के तट पर आलादित करें ।

महामहिम राज्यपाल उत्तर प्रदेश श्री रमाकान्त शास्त्री जी ...

रमाकान्त शास्त्री जी राजनेता संयोगवश बने थे , वह मूलतः एक विचारक - अध्यापक- पत्रकार के सम्मिश्रण थे । उनकी विद्वता उनको सत्ता के शीर्ष तक ले गयी । वह अध्यापन के दौरान ही श्री रवि शंकर शुक्ल के संपर्क में आ गये थे और एक बहुत ही कम उम्र में राज्य सभा में पहुँच गये । राज्य सभा में उनके भाषण जीवन में उनको बहुत आगे ले गये और अपने जीवन के सत्तर के दशक तक आते - आते वह जीवन में तक़रीबन सब कुछ पा गये थे

। वह मंच के बेताज बादशाह थे । उन्होंने बहुत ही बेहतर ढंग से अपनी बात कहनी आरंभ की ।

“ मैं बहुत प्रसन्न हूँ मुख्यमन्त्री श्री सद्ग्रावना सिंह ओर विधान सभा स्पीकर के शब्द त्रिरपाठी जी को मंच पर देखकर । मेरा इनका साथ पता नहीं कितने सालों का है । सत्यानंद ने पुस्तक लिखी और मुझसे जब राजभवन में यह मिले तब इनका पहला ही अनुरोध था कि पुस्तक का विमोचन भरत की नगरी में मैं करना चाहता हूँ, मुझे आशा है आप मुझे निराश नहीं करेंगे । मैंने प्रश्न किया, यह इलाहाबाद है.. पुराणों में यह प्रयागराज है, यहाँ अमृत छलका है, शंकराचार्य का शास्त्ररार्थ हुआ है, हर्ष का सर्वस्व दान है, त्रिरवेणी है, अकबर का शौर्यवान किला है, हरिषण की प्रशस्ति है जो समुद्रगुप्त के विजय से अधिक उसका लेखक आळादित करता है... आप ने सब कुछ जोड़कर भरत की नगरी क्यों कहा ?

जवाब बहुत नायाब था सत्यानंद का ... अयोध्या से चित्रकूट तक का सफर..... “

बोलते- बोलते शास्त्री चुप हो गये और फिर बोलना आरंभ किया

... अयोध्या से चित्रकूट तक की भरत की यात्रा का बहुत बड़ा भाग प्रयाग से होकर गुजरा है या यूँ कहें भरत की पूरी त्यागमय यात्रा इस इलाहाबाद की सीमा में ही है । भरत का त्याग जो विश्व का महानतम दृष्टान्त है उसका सबसे बड़ा चश्मदीद गवाह यह शहर है । भरत का राम को अयोध्या वापस लाने का सारा मनन इसी शहर की सीमा में हुआ है । यह भरत के आध्यात्मिक विकास की नगरी है ।

मुझे बात अंदर तक छू गयी । यह अब भरत की नगरी में आने का आग्रह नहीं था यह भरत की नगरी में आने का आदेश था । मैं वह आदेश स्वीकार करने के अलावा और क्या कर सकता था । इसके बाद मेरी और सत्यानंद की एक वार्ता हुई अगर सत्यानंद अनुमति दें तो मैं यहाँ साझा कर देता हूँ ... ”

यह कहकर शास्त्री जी ने सत्यानंद की ओर देखा .. सत्यानंद मिश्र जी ने हाथ जोड़कर कहा .. अवश्य करें सर ...

“ राम भी वन गये और उनको वापस लाने के लिये भरत भी गये । एक ही रास्ता, एक ही मार्ग, एक ही नगर ... जहाँ से दोनों ने पथ का संज्ञान लिया ।

पर भक्त का पद भगवान से बड़ा होता है वह इसी शहर की सीमा में घटित हुआ । बादलों ने छाया करके भरत के लिये मार्ग जैसा सुखद किया, वैसा राम के लिये न किया था :

किये जाहिं छाया जलद, सुखद बहत बर बात ।
तस मगु भयउ न राम कहँ, जस भा भरतहिं जात ॥

राम ने पिता की आज्ञा पालन करने के लिये राज्य का त्याग किया, भरत ने भाई के लिये सर्वस्व त्याग दिया । उसे किसी वस्तु से कोई लगाव नहीं । वह एक भक्त होकर भगवान से आगे बढ़ गया :

तुलसी रामहु के अधिक, रामभक्त जिय जान ।
ऋणिया राजा राम भे, धनिक भये हनुमान ॥

इस भक्ति की परिणति में एक उत्कृष्ट मानवतावाद है । इस भक्ति का आधार ज्ञान है, दर्शन है । राम ब्रह्म हैं, सीता आदिशक्ति हैं, जीव ब्रह्म का अंश है, एक लोकोन्मुखी दर्शन है, भक्ति का धनिष्ठ संबंध मानवीय सहानुभूति और करुणा से है । मानवीय सहानुभूति, करुणा, त्याग, सर्वस्व त्याग के महानतम नायक भरत को मेरा परणाम है । “

मैं अगर सत्यानंद की किताब का ज़िकर करूँ तो इनकी पुस्तक का “राम खंड” “आज्ञाद देता है और मैंने उसको कई बार पढ़ा । जैसा शेक्षणीयर के बारे में कुछ लोग कहते हैं कि यह एक व्यक्ति द्वारा नहीं वरन् कई लोगों के द्वारा लिखा गया कृतित्व है, ऐसा ही इतिहास में एल मुखर्जी की किताब के बारे में कहा जाता है, बहुत से छात्र सभागार में हैं वह इस बात से अवश्य परिचित होंगे । ऐसा ही आभास मुझे सत्यानंद की पुस्तक को देखकर हुआ । एक प्रशासनिक अधिकारी इतना वैविध्य लिख सकता है, एक व्यक्ति कितने तरीके से सोच सकता है .. इश्क, प्यार, देश, माँ, अन्याय, तानाशाही, महाभारत, कृष्ण, राम, भरत ... सब पर यह लिख गये । मैं ऐसे प्रतिभाशाली प्रशासनिक अधिकारी की कलम को परणाम करता हूँ ।

मेरे भाषण का कुछ अंश वह नव युवक अनुराग शर्मा बोल गया । मैं उसके वक्तृत्व क्षमता से अति प्रभावित हूँ और सत्यानंद ने बताया वह इसी वर्ष सिविल सेवा में चयनित हुआ है । देश को इस तरह के नायकों की तलाश है, ऐसे नायकों को समाज और तैयार करे ।

उसने एक बात कही जो सत्यानंद की किताब से उसने उद्धृत की थी , पर मेरे हिसाब से वह बात कुछ व्याख्या की माँग करती ..

“कहाँ है राम का राजतंत्र जो लोकतंत्र से बेहतर था ।”

राम एक जन तान्त्रिक नायक थे । राम का एक जनतांत्रिक मूल्य था । राम को समझना अपने आप में न केवल एक नायक को समझना ही नहीं है वरन् देश काल की सीमाओं से परे एक युगांतरकारी नायक को समझना है ।

राम ने पिता के वनवास का आदेश स्वीकार किया वह भी तब जब पूरा जनमानस राम के साथ था । यहाँ तक कि जिस भरत को राज्य दिया गया वह भी राम के साथ थे । यह वनवास आदेश की घटना दशरथ और राम दोनों के चरित्र के बारे में बहुत कुछ कहती है । वचन के पालन से परजा संतुष्ट होगी । दोनों ही परजा की संतुष्टि के प्रति आग्रही थे । वह एक राजसत्ता का दौर था । परजा राजा को किसी वचन या भविष्य के किसी आश्वासन पर नहीं चुनती थी फिर भी दोनों के लिये वचन का महत्व था । वह जानते थे कि अगर वचन का पालन नहीं होगा तो परजा आज तात्कालिक रूप संतुष्ट होगी पर भविष्य के लिये एक अनुचित नज़ीर होगी । यह समाज में मूल्यों की स्थापना के प्रति एक भविष्योन्मुखी दृष्टि थी ।

परजा की इच्छा का सम्मान ही लोकतन्त्र है , यह हमारे संविधान में भी है और राम के आचरण में भी है तभी तो शायद लिखते हैं सत्यानंद

उपदेश जो उपजा आचरणों से

इसीलिये जब चित्रकूट में भरत राम को वापस चलने का आग्रह करते हैं तो राम पिता को दिये वचनों का हवाला देते हैं और सारे अयोध्या वासियों से कहते हैं कि पिता को दिये वचनों का पालन अनिवार्य है ।

राम के चरित्र पर दो सवालिया निशान खड़े किये जाते हैं । एक सीता की अग्नि परीक्षा का और दूसरा सीता के परित्याग का ।

यह दोनों ही घटनाएँ यह बताती हैं कि राम को परजा की सोच की और जनता में जा रहे संदेश की बहुत चिंता थी । राम को न तो कभी सीता के सत्व पर कोई आशंका थी और न ही राम और सीता के महान पारस्परिक प्रेम पर कोई सवाल है । राम ने उस युग में एक पत्नी वरत का निर्णय लिया जब एक से ज्यादा पत्नी रखना एक परम्परा भी थी और समाज में वह सर्वमान्य भी था । संभवतः राम उस परम्परा को ख़त्म करने पर आमादा थे और उसकी शुरूआत उन्होंने अपने ही प्रण से की ।

वह शत्रु को भी युद्ध के पहले समझा कर उसको युद्ध से रोकने का प्रयास अवश्य करते हैं पर उनका चरित्र एक सशक्त प्रतिरोध में यकीन रखता है । उनका नैतिक मूल्य खून ख़राबे में यकीन नहीं रखता । वह शांतिपूर्ण समझौते के पक्षधर हैं पर कभी वह ऐसा कोई संदेश जनता में देना नहीं चाहते कि उनकी शांतिप्रियता में कहीं से भी कायरता का अंश दिखे । वह जाति व्यवस्था एवम् समाज के सडे गले मूल्यों में यकीन नहीं रखते थे । वह निषाद को कहते हैं कि तुम मेरे भाई भरत की तरह मुझे प्रिय हो ।

यदा कदा राम के चरित्र पर कुछ सवालिया निशान खड़े करने का प्रयास होता रहा है पर राम की जनतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता उनके आचरण में बहुधा दिखायी देती है ।

राम को समझना जनतांत्रिक मूल्यों को एक नये सिरे से समझना भी है । अनुराग ने सत्यानंद मिश्र की जो कविता पढ़ी वह राम के चरित्र के इन्हीं गुणों को प्रदर्शित करती है । शबरी, गीध की मुक्ति की बात करना एक सामाजिक सरोकार को दर्शाता है ..

सबरी गीध सुसेवकनि , सुगति दीन्ह रघुनाथ
नामु उधारे अमित खल , बेद बिदित गुनगाथ ॥

राम के वनगमन पर सत्यानंद ने लिखा है एक काव्य रूप में कि वनगमन आदेश उन्हें विचलित नहीं करता । वह राम को याद करते हैं ...

हे राम कहाँ हो

हे मर्यादा पुरुषोत्तम
किस किस रूप में देखूँ आपको
एक ईश्वर लीला करते हुये मानव की
एक महान नायक रक्षा करते हुये सत्य की
जो नहीं आता अतिरेक में समाचार सुन अभिषेक का
महान धैर्यवान नहीं होता है विचलित सुन आदेश वनवास का
पिता ने कहा बंदी बनाओं मुझको
अधिकार करो राज्य पर
मत मानों मेरे वचनों को जो कह रहा हूँ मैं

हे राम तुमने पिता से कहा था
पाप उस पल ही लग गया मुझको
जब बंदी मेरे हाथों बनने का विचार आया आपको
भरत से कहा चलता हूँ अयोध्या साथ तुम्हारे
तुम कर लो यह निर्णय पिता की सत्य प्रियता की कस्तौटी पर
वन गये तुम महानायक बने
बहुत से पराकरम का गवाह इतिहास है
अयोध्या का गौरव ऐसा था कि इन्द्र भी तरसता था देखने को उसको
पर अब वह साम्राज्य सरयू नदी के तट पर कहीं सिमट गया है
वह महल जो गवाह है आपके और दशरथ के बीच के संवादों का
वह राजदरबार जो दिया करता था वह न्याय
जो स्वयम् न्याय की परिभाषा बना
कहीं नहीं दिखता मुझको
बस दिखती है
एक जगह
बस एक जगह
जहाँ के लिये संघर्ष है
आप का जन्म कहाँ हुआ था
आपका जन्म स्थान भी बहुत लुभाता है मुझे
वह भी बार बार देखना चाहता हूँ मैं
पर चाहता हूँ देखना
वह स्थान भी
जहाँ आप पैदल चले थे राज्य को त्याग कर
जहाँ आप ने ली थी विदाई अपने लोगों से यह अनुरोध कर
कि अब मैं वन को जाता हूँ
वह नंदीग्राम जहाँ भरत ने १४ वर्ष तपस्या की थी आपके जाने के बाद
हे राम तुम्हारे जन्म से ज्यादा महत्वपूर्ण है

आपका कृत्य
आपका पराक्रम
आपके भाइयों का त्याग
सीता का धर्मपालन
वह अब लोग भूल रहे
संदेश जो उपजा था आपके आचरण से
वह कहीं विस्मृतियों में सिमटता जा रहा
और हम लड़ रहे इस बात के लिये
कि आप जन्मे कहाँ थे
फिर अवतार लो हे राम
कह दो
मैं नहीं मेरा आचरण अनुकरणीय है
मेरा जन्म नहीं मेरा कृत्य ऐतिहासिक है
कहाँ हो हे राम
फिर आओ इसी अयोध्या में
उसी सरयू के किनारे परत्यंचा चढ़ाते
यह कहते
अब लड़ूँगा मैं अविवेक से
अपने विवेक के सहारे
अगला संदेश होगा हमारा
विवेक की जीत हो
अविवेकता के साम्राज्य में
हे राम कहाँ हो
फिर से अवतरित हो
फिर आओ इस अयोध्या में
हे राम कहाँ हो ॥

कितनी सरलता से बात कह गये हैं सत्यानंद अपनी आकांक्षा को दर्शाते हुये

.....

मर्यादा पुरुषोत्तम ने बहुत ही सहजता से वन जाने का आदेश स्वीकार किया । वह न तो विचलित हुये और न ही विस्मित । ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं मिलता जो मर्यादा पुरुषोत्तम की राजा दशरथ के निर्णय पर किसी भी प्रकार की अधीरता को चिन्हित करे । वह सीता और लक्ष्मण को यह समझाने का प्रयास करते दिखते हैं कि अयोध्या में रहकर पिता, तीनों माताओं और प्रजा का ध्यान रखो । सीता पतिधर्म की बात करती हैं तो लक्ष्मण भरत के आने तक अपने आप को राम के बिना राज्य संचालन के अयोग्य बताते हैं । वह यह भी कहते हैं कि मेरे लिये पिता, माता एवं गुरु सब आप ही हो ।

उस समय के समाज में राज्य नगरों तक ही सीमित हुआ करते थे । जनसंख्या भी कम हुआ करती थी । पूरा नगर या नगर के समीपवर्ती इलाक़ों को मिलाकर बनाया गया क्षेत्र ही राज्य की संरचना को पारिभाषित करते थे । राम के साथ नगरवासियों का एक भाग वन की तरफ चल दिया और अंत में कोई रास्ता न देख राम उनको रातिर में सोता छोड़कर चले गये । सुमंत्र और राम का पूरा संवाद धर्म की व्याख्या का संवाद है । मर्यादा पुरुषोत्तम अपने पूर्वजों शिवि, दधीचि और हरिश्चंद्र का धर्म के लिये त्याग बताकर सत्य को एक अंतिम एवं अद्वितीय धर्म कहकर उनहें अयोध्या वापस भेजने का प्रयास करते हैं । यहां राम अपयश को सबसे बड़ा संताप कहकर सुमंत्र को निरुत्तर कर देते हैं ।

कृपानिधान ने केवट से गंगा पार कराने का अनुरोध किया । केवट राम संवाद राम का समाज की मुख्यधारा में पीछे रह गये लोगों के प्रति उनका दृष्टिकोण दर्शाता है । वह सभी को अनुनय विनय करके वापस जाने को कहते हैं पर केवट के अनुरोध पर वह उसे ना नहीं कहते और अपने साथ ले जाने की सहमति दे देते हैं । सुमंत के लिये बहुत कठिन था अयोध्या बगैर राम के वापस जाना । वह रात के अंधकार में नगर में प्रवेश करते हैं पर उनके आने की खबर पूरे नगर में फैल जाती है ।

हे राम तुम कहाँ हो यह जैसे सत्यानंद और अयोध्या वासी एक ही तरह से कह रहे अलग- अलग परिप्रेक्ष्य में ।

शास्त्री जी ने घड़ी की तरफ देखा और कहा कि समय काफ़ी हो गया अब बस करते हैं । लोगों ने और बोलने का अनुरोध किया । राम प्रकाश सिंह सर ने लोगों की ओर से अनुरोध किया कि सर लोग सुनना चाह रहे , यह अवसर बार - बार नहीं मिलता आपको सुनने का ... आप कृतार्थ करें हम सबको । मुख्यमन्त्री ने भी अनुरोध किया यह कहते हुये कि मैं आपको सुनने ही लखनऊ से आया हूँ . आप समय का ध्यान न रखें आप लोगों की भावनाओं का ध्यान रखें जो आपको सुनना चाह रहे ।

राज्यपाल जी फिर माइक पर आ गये ...

मैं मंच संचालक के कुशल मंच संचालन की भूरि - भूरि प्रशंसा करता हूँ और उनकी एक बात से बात आगे बढ़ाता हूँ ...

ज्ञान- भक्ति- विश्वास- कर्म का चतुष्कोण इस तिरक्षणी पर

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 244

ज्ञान - भक्ति- विश्वास- कर्म और तिरक्षणी....

राम कथा में सब है । यदि आप ज्ञानी हो तो दिव्य ज्ञान तत्व मिलेगा । यदि भावुक भक्त हो तो भक्ति का दिव्य रस मिलेगा । यदि कर्म योगी तथा पुरुषार्थ परायण हैं तो राम के चरित्र में पुरुषार्थ की अजश्वर प्रेरणा मिलेगी । राम का चरित्र तो सदगुरु का है ..

सदगुरु ज्ञान बिराग जोग के ।

यह नाम जीवन में एक भरोसा देता है ..

सोवैं सुख तुलसी भरोसे एक राम के ।

यह भी कोई आवश्यक बात नहीं है कि रामकथा के कहने वाले को शरोता ही चाहिये , यह स्वानतः सुखाय की भी कथा है । भगवान शंकर कथा कहते हैं तो शरोता एक पार्वती जी ही है और तुलसी कहते हैं तो भीड़ ही भीड़ है । गंगा

अवतरण और राम का प्रकटीकरण कुछ साम्यता लिये हुये हैं। गंगा का जन्म सबसे पहले तब हुआ जब भगवान विराट से वामन और वामन से विराट बने। इसी प्रकार रामायण भी भगवान के विराट से वामन और वामन से विराट बनने की कथा है। भगीरथ गंगा को सागर तक ले आते हैं जहाँ कपिल मुनि द्वारा शापित सगर के पुत्र भस्म बने पड़े थे। वह सब गंगा के स्पर्श से मुक्त हो जाते हैं। अगर इसको विचारे तो राक्षस शापित ही हैं क्योंकि शाप के कारण ही तो राक्षस बने। लेकिन भगवान राम के चरित्र की इस यात्रा के द्वारा प्रत्येक जीव धन्य होता है। यह परम् ने स्वयम् माता से कहा है,

“आणोरणीयान महतो महीयान।”

राम कथा की तुलना विभिन्न नदियों से की गयी है। जैसे वह मुकितदायी नदियाँ अलग-अलग सब कुछ प्रदान करती हैं वैसे ही राम कथा सब कुछ प्रदान करती है। बस अंतर यह है कि आप को सब कुछ प्राप्ति के लिये उन नदियों की यात्रा करनी पड़ेगी पर राम कथा के माध्यम से वह सब कुछ एक जगह बैठ कर ही प्राप्त किया जा सकता है।

सोवै सुख तुलसी भरोसे एक राम के।

बुध विश्वराम सकल जन रंजनि

सद्गुरु ज्ञान विराग जोग के।

विषयी साधक सिद्ध सयाने
तिरविधि जीव जग भेद बखाने।

यह कथा का मर्म है। यह एक के लिये भी है और अनेक के लिये भी है। शरोताओं की कम भीड़ आपको शंकर की कथा में मिलेगी और भीड़ ही भीड़ तुलसी का कथा में। यह कथा भीड़ से निरपेक्ष।

चाँद स्वर्ग का खिलौना। भगवान राम माँ से कहते हैं, मुझे भी यह खिलौना चाहिये। माँ पात्र में पानी भरकर चाँद का प्रतिबिम्ब उतार देती है। परम् संतुष्ट हो जाते हैं। इसी तरह की कविता हमने स्कूलों में। पढ़ी है... हठ कर बैठा चाँद एक दिन ...।।

सत्यानन्द लिखते हैं

मत फेंको कंकड़ झील में
चाँद रिहाइश कर रहा

चाँद के विविध रूप हम देखते आये हैं जो आळाद देता है । सत्यानंद की कविता में चाँद देखकर मुझे भगवान का वामन रूप याद आ जाता है ।

एक कविता अनुराग ने पढ़ी है

हे कहाँ है राम का राजतन्त्र जो लोकतन्त्र से बेहतर था

मुझे अपने छात्र जीवन का एक वाक्रया याद आ रहा है । मैं छात्र संघ का अध्यक्ष था और छात्र राजनीति में विभिन्न धारायें होती ही हैं । एक कम्युनिस्ट धारा बहुत ही सशक्त होती है । उस कम्युनिस्ट धारा ने एक लेनिन के जन्मदिवस पर कार्यशाला आयोजित की और ज़ाहिर सी बात है अध्यक्ष को बुलाया ही जायेगा । मैं गया और सुनता रहा मार्क्स , लेनिन , स्टालिन के बारे में । वह सब नायक ही हैं इसमें कोई संदेह तो है नहीं । विचारधारा का विरोध होता है और होना भी चाहिये पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि आप विरोधी विचारधारा के नायक का सम्मान न करो । मेरा पूरा सम्मान उनके प्रति था , है और रहेगा । मेरा बोलने का अवसर आया तो मैंने कहा कि अगर शोषण से मुक्ति , वंचितों का कल्याण , एक समतापूर्ण समाज का निर्माण, जाति विहीन समाज की स्थापना का संकल्प , त्याग, सेवा एक वामपंथ की विचारधारा है तब उस वामपंथ की विचारधारा के प्रवर्तक त्रेता युग के मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं और उनके दो प्रबल अनुयायी भरत और लक्ष्मण हैं । राम से बड़ा जन नायक कौन हो सकता है , भरत से बड़ा त्यागी कौन हो सकता है , लक्ष्मण से बड़ा सेवक कौन हो सकता है और शत्रुघ्न से बड़ा संरक्षक कौन हो सकता है जो चौदह वर्ष तक राज्य को चलाता रहा कि एक दिन राम को भरत यह सौंपेंगे । इतिहास की अन्तरात्मा तक तुम सब जाओ और बताओ मुझे इन चार भाइयों ने जिस विश्वास की स्थापना की वह आज भी अड़िग है या नहीं । हम किसी भी धर्म- सम्प्रदाय- मत के हों पर हमारी चाहत क्या है ?

दाराशिकोह , मुराद , औरंगज़ेब , शुजा या राम - लक्ष्मण- भरत - शत्रुघ्न ।

जो सामंतवाद विरोधी मूल्य राम में हैं , जो शोषितों दलितों के उद्धारक राम हैं , जो प्रेम की साक्षात् मूर्ति राम हैं उनसे बड़ा जन हितैषी कौन होगा ?

सर ने जैसे ही यह कहा , तालियों की गङ्गगङ्गाहट ने बाहर चल रहे नारों को कमजोर कर दिया । जो लोग बाहर खाना खा रहे थे वह सब लोग रुक गये । राज्यपाल महोदय ने पूरा माहौल बदल दिया था । मुख्यमन्त्री जी अपनी कुर्सी पर खड़े हो गये और पूरी शरद्धा से झुककर राज्यपाल जी को प्रणाम किया । तालियों के रुकने का शास्त्री जी ने इंतज़ार किया हम अपनी परम्पराओं को नहीं देखते हैं भवभुति शेक्षणीयर से अनेक शताब्दी पहले मानव मन के विघटन का चित्रण कर चुके थे और यूनानी लोग जिस तरह के नाटक को टरेजेडी कहते थे , उनकी रचना में वह शेक्षणीयर और सोफोक्लोस , दोनों के प्रतिद्वंद्वी हैं । पर कोई इसका उल्लेख नहीं करता । राम और कृष्ण की लोकप्रियता ने समस्त वैदिक देवताओं को हटाकर बौद्ध धर्म को निर्मूल करके उपासना को एक आलंबन दिया । गीता ने वैदिक संस्कृति के स्थान पर आत्मवाद , योग और परमात्मा के रूप में कृष्ण को प्रतिष्ठित किया । महाभारत में पहली बार भारत राष्ट्र की कल्पना कविता में साकार हुई । यहाँ के पर्वत , नदियाँ , गण- समाज , सामन्ती राज सबको एक ही सूत्र में बाँधने का अद्भुत प्रयास दिखता है । सत्यानंद ने कितनी कुशलता से लिखा है ..

नहीं सुना ऐसा आदि - अंत
जो उपजा युद्धों की रणभेदी से
श्री कृष्ण कर रहे लघु क़द सबको अपनी चतुर्दिक आभा से
कर दो दूर अगर उनको कालदेश की सीमा से
रिक्त पूरा युग होगा पुरुषार्थों के उद्बोधन से
मृत्यु प्रभु की कहलाती है मध्ययुगीन एक बोधन सी
अश्वत्थामा, विदुर , भीष्म, द्रोण और कर्ण
आकरान्ति आच्छादित व्यक्तित्व महान उस नायक के
जब जब संकट आता है वह देते एक न्याय संधान
भीष्म विवश होते हैं युद्ध त्याग को
द्रोण ग्रसित पुत्र मोह में क्षोभित योगासन मृत्यु ओर
अवसर देते हैं अर्जुन को कर्ण गुरु पाप शरापों पर
अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र को निशस्त्र कुशलता से वह करते हैं
संजय प्रणत हैं उनके समुख यूयुत्सु बदल लेता है पक्ष
सबमें छाया है परभा मंडल प्रभुविश्लेषित न्याय विधानों का

पांडव के वह किरया स्वरूप कौरव मद के नाशक है
पर जो कुछ होता है वह रहते प्रस्तुत पाप के कर्मों को
धृतराष्ट्र - गांधारी करते प्रयास प्रतिशोध पाप की ज्वाला से
केशव भी पाते हैं उसके तप का कुछ अपने जीवन के स्पंदन मे
लेते हैं वह शराप गांधारी का पीप मवाद अभिशापित अश्वत्थामा का
जो मरा वह भी उसमें निहित स्वरूप जो मारा उसमें भी आत्म सन्निहित
सब करते क्रमिक आत्महत्या अपने ही पापों को ढोते
यूयुत्सु जो बदला था पाला न्यायों के आवाहन पर
जिस पक्ष से लड़ा वह अपमानित कर बैठा उसको
विपक्ष ने दोष बहु डाला था उस पर धोषित कर हंता स्वजनों का
मोह भंग उसका भी था विश्वरूप के रूपों से
अंत उसका भी भयावह था उसकी अपनी ग्लानि की पीड़ा से
जो लड़े थे अपने अधिकारों को सर्वपरि मान बहु आयामों से
वह भी भोगे थे पीड़ा युद्धों के परिणामों से
केशव की मृत्यु नहीं साधारण
वह एक युग का पूरा परिसीमन है
न्याय धर्म का भटकाव नव युग का नव परिलक्षण है ॥

बोलते- बोलते शास्त्री जी ने दायें हाथ की तर्जनी को हवा में उठाया और
कमिश्नर साहब की ओर देख कर कहा , यह सत्यानंद तुमने नहीं लिखा ...
तुम ऐसा नहीं लिख सकते ... तुम्हारी स्याहियों में इतनी ताक़त ही नहीं है ...
बताओ यह किसने लिखा ?

पूरे सभागार में निस्तब्धता छा गयी । यह कविता मैंने लिखी थी । मेरा हृदय
मेरे हल्क पर आ गया । मेरी माँ ने भी यह कविता मुझसे सुनी थी । वह भी
मेरी तरफ़ देखने लगी । मुझे लगा कि लगता है कहीं से राज्यपाल महोदय को
कुछ आभास हो गया कि यह किताब लिखायी गयी है ...

शास्त्री जी ने थोड़ा विराम लेकर कहा ...

सत्यानंद यह कविता तुमने नहीं ईश्वर की प्रेरणा की उपज है । जब उसकी
प्रेरणा होती है काव्य, पुराण , इतिहास , कथावाचक देश को एक सूत्र में

बाँध देते हैं । पौराणिक कथाओं में अतिरंजना होती है, अंध विश्वास होता है पर हमारी पौराणिक कथाओं के पहले राष्ट्रीय इकाई के रूप में भारत वर्ष का गौरवगान किसने किया ?

मैं इस देश को प्रणाम करने से पहले इन पौराणिक कथाओं को प्रणाम करता हूँ जिनके द्वारा उद्भूत गौरव गान ने हमें अपने ऊपर विश्वास और गर्व दिया । वह यक्ष प्रश्न जल कुंड पर एक प्रसंग मात्र ही हो सकता है, यह कितना सच है उससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह कितना गौरव शाली है । जो त्याग राम का है, भरत का है, लक्ष्मण का है यक्ष कुंड पर युधिष्ठिर की लिप्सा के त्याग का है यह जन्म जन्मांतर तक सृष्टि को आळादित करता रहेगा ।

एक और प्रसंग में ज़रूर छेड़ूँगा राम का करोध.. यह भी नायाब लिखा है सत्यानन्द ने ...

राम करोध नहीं कर पाता नियंत्रण आप पर
नहीं हुये असहज परशुराम के वाक आकरमण पर
धमकी नष्ट करने की उसको जिसने तोड़ा है शिवधनुष
नहीं कर पाया कोई असर तुम पर
न था कोई तनाव चेहरे पर
जब सारे महान राजा भयभीत, जनक चिंतित
परशुराम के कोप पर
हे राम आप सहज थे परशुराम के असीम करोध पर
विचार कर रहे थे लक्ष्मण के करोध के औचित्य पर
नहीं आये अतिरेक में प्रसन्नता के
जब राजा दशरथ ने गले से लगाकर कहा राज्य अब देता हूँ तुमको
कहा मेरा भविष्य ही नहीं अब जगत का भी ध्यान रखना है तुमको
नहीं हुये असंयमित जब राजा ने कातर होकर कह रहे राम वन जाना होगा
तुमको
तुमने शीश नवाया सम्मान से पिता को
सम्मान दिया माँ कैकेयी को
सीता से भी कहा

लक्ष्मण से भी कहा
माँ कौशल्या से भी कहा
अहो भाग्य है मेरा पिता के वचनों के काम आया वन जा रहा
उद्बेलित , अनियंत्रित , आन्दोलित परजा से कहा
प्रतीक्षा करो धर्म राज भरत के रथ का
वह आता ही होगा धर्म धुरी धारण किये सिंहासन सुशोभित करने को धर्म
धर्म लहराता हुआ
वह दशरथ नहीं है ,
वह राम नहीं है
वह अति महान है
नीति नियामक ,
कष्ट निवारक ,
परजा पालक ,
दशरथनंदन है
वह शासक नहीं ,
वह राजा नहीं है ,
वह साक्षात् सेवक है
जनता का
राम तुमको संवेदनाएँ भी तुमसे आदेश लेकर तुम्हारे रक्तों में प्रवेश करती हैं
जब धूल उड़ रही थी आसमानों में
संशय था सबकी आँखों में
भरत की सेना के पदचापों में
तुम कह रहे गंभीर , निश्छल मुद्रा में
धर्म बढ़ रहा मेरी ओर करता प्रवेश मेरे हृदय में
अनुज के करोध को अनायास कह कर ताड़ना दे रहे
वह भरत नहीं व्याख्या है धर्मों की यह लक्ष्मण से कह रहे
उसका अपमान कुल , धर्म और मेरा अपमान है यह चेतावनी दे रहे

हे राम संशय को तुम भक्तों के मन से नष्ट कर रहे
पर राम आपको करोध भी आता है
इन्द्र पुत्र जयंत के दुस्साहस पर
सूपरणखा की अनैतिकता पर
सागर की हठ धर्मिता पर
रावण के अन्याय पर
पर हर करोध में राम आपके विरला सा संयम है
करोध में असीम मर्यादा है
यह मर्यादित करोध मुझको भी दो हे नाथ
मेरे पास पीड़ा है, छटपटाहट है, करान्ति की आकांक्षा है
सब कुछ बदलने की बेचैनी हैं
करोध है पर करोध की मर्यादा नहीं है
हे परभु मुझे ही नहीं उन सबको करोध की मर्यादा दो जिनके भी खून में उबाल हो
राज्य, समाज, राष्ट्र के लिये //

यह राम के जीवन का एक दर्शन है। आप धनुष यज्ञ का प्रसंग देखें। लक्ष्मण का करोध है जिसमें व्यंग्य है, मुनि परशुराम के करोध में ज्वाला है पर राम में संयम है। राम का चरित्र ही अलग है। मनुष्यवत आचरण है..

चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर हेतु ।

ऐसा व्यक्ति मनुष्य की तरह सामने आता है जिसके बारे में शंकर जी कहते हैं

गिरिजा सुनहु राम की लीला ।

राम के बारे में जितना कहा जाये उतना कम है मैं चाहता था बालि - सुग्रीव पर बोलना, राम के जीवन पर और बोलना पर राम की कथा कभी पूर्ण नहीं होती। यह हमेशा अपूर्ण ही रहती है। राम कथा पूर्ण नहीं होती वहाँ पर विराम लगाया जाता है। और विराम से वह अपूर्ण कथा पुनः आरंभ होती है अगली

अपूर्णता की ओर । मैं इस राम कथा पर विराम लगाता हूँ और अगली बार इस विराम को हटाकर यहीं से अपूर्ण कथा को पुनः आरंभ करूँगा ।

मैं सत्यानंद की चार लाइनों से ही अपनी बात ख़त्म करता हूँ

मैंने कागज पर कुछ उतारा लफज़ों में पिरो कर
भेजा उसी को लिखा था जिसके लिये
वह कह बैठी
चित्रकार अच्छे हो तुम
वह भी बगैर कैनवस , ब्रश और रंग के ॥

ऐसा ही चरित्र है राम का कुछ न चाहिये आराधना के लिये सिवाय शरद्धा
और विश्वास के , चित्र बनने लगता है उस महान का जैसे ही कल्पना आरंभ
होती है उस महान की

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 245

राज्यपाल महोदय ने अपना संबोधन पुनः आरंभ किया ...

मुझे बताया गया कि इस वर्ष के सिविल सेवा के चयनित अभ्यर्थी भी आज की सन्ध्या में कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे हैं । मैं उन सब का नागरिक अभिनंदन करता हूँ । मैं उनसे अधिक उनके माता-पिता का अभिनंदन करता हूँ जिन्होंने परिश्रम का एक संस्कार बच्चों में पिरोया है । यह परीक्षा एक अति परिश्रम की माँग करती है और यह परिश्रम करने का गुण आता कहाँ से है ?

परिश्रम एक संस्कार है जो सब में नहीं होता है । अगर कभी समय मिले तो पुरानी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पढ़ने का प्रयास करना । आप को मिलेगा कि वहाँ पहले चरण में संस्कार पर कार्य होता था । इन सारे संस्कारों में परिश्रम भी एक संस्कार ही है ।

अलसस्य कुतो विद्या.... यह हम सबको स्कूल में पढ़ाया गया है । यह आलस्य क्या है ? यह परिश्रम का विलोम अर्थ है । यह चार बजे सुबह उठकर क्यों पढ़ना चाहिये ? यह जीवन में त्याग के प्रवेश का प्रथम द्वार है । अनावश्यक सुख - कामना से दुराव का आरंभ है । यह कार्य हर माँ बच्चे को कक्षा पाँच के आस पास आरंभ करा देती है । मेरा जीवन के उस प्रथम आचार्य “माँ” को साष्टांग प्रणाम है । मुझे नहीं पता कितनी माएँ यहाँ आयीं हैं पर जो भी आयी हैं उससे मैं व्यक्तिगत रूप से कहना चाहता हूँ राष्ट्र आपका आभारी हैं आपने देश की ज़मीन को एक संकल्पित प्रहरी दिया है । पर उसका सारा त्याग व्यर्थ हो जायेगा अगर आपमें लिप्सा एवम् अहंकार का वास हो गया । राम बनना मुश्किल हो सकता है पर रावण की कमियों से दूर रहना मुश्किल नहीं है । तुम राम बनो या न बनो पर रावण बनकर अपनी माँ को शर्मसार मत करो ।

त्याग- संयम - निर्लिप्तता - अहंकार विहीनता यह राम में है लिप्सा- अहंकार - मादकता - अनैतिकता रावण में है । पर दोनों में एक वस्तु उभय है , वह है शौर्य । पर शौर्य दोनों में होकर भी शौर्य का प्रयोग दो अलग - अलग उद्देश्यों के लिये किया गया । राम ने किया जन कल्याण के लिये रावण ने किया अपने अहंकार और लिप्सा के लिये ।

आप में अहंकार आने की बहुत ही संभावना है । आप अभी एकेडमी जाओगे और कुछ ही महीने में फ़ील्ड ट्रेनिंग पर जाओगे । वहाँ आप को चापलूस , चमचे , स्वार्थी लोग मिलेंगे जो कुछ त्वरित या भविष्य के अनुलाभ की आशा में आपकी प्रशंसा करेंगे । आपके मातहत होंगे , गरीब रियाया होगी , बड़े बँगले , लाल बत्ती की कार , नौकर - चाकर यह सब देख कर आप के अंदर अहंकार भाव का आना स्वाभाविक ही है । ज्ञान , धन , बल तीनों ही अहंकार देते हैं और आप के पास तीनों ही है । मेरा जीवन अनुभवों से भरा पड़ा है । मैं कहानियाँ ही सुनाता हूँ और तो कुछ करता नहीं । एक कहानी और सुना ही देता हूँ । एक शिष्य था वह ज्ञान प्राप्त कर गया और गुरु से बोला गुरु जी मैं शास्त्ररार्थ पर निकलना चाहता हूँ और अपने गुरु के नाम का प्रकाश चातुर्दिक फैलाना चाहता हूँ । वह आशीर्वाद लेकर निकला और लोगों को परास्त करता रहा । इस क्रम में वह अहंकारी होता गया । सबको हरा कर वह आया तब गुरु ने कहा बहुत नाम हुआ आपका , आपने सब को हरा दिया । चेला बोला , बस आप ही रह गये गुरु जी बाक़ी तो सब निपट गये । गुरु शांत रहा , देखता रहा उसके चेहरे को । चेले से रहा न गया , वह अहंकार के वशीभूत था बोल ही पड़ा गुरु जी मैं आपसे शास्त्ररार्थ करना चाहता हूँ । गुरु ने कहा किस लिये ? चेला बोला , मैं आपको भी जीतना चाहता हूँ । गुरु ने कहा , “ मैं हार मान लेता हूँ । चेला सोचा , गुरु डर गया और कहा ,

“गुरु जी एक कागज में यही लिख कर दे दो । “

गुरु एक सहज प्राणी होता है । उसको क्या इस दुनियादारी से मतलब । उसने लिख कर दे दिया । वह काग़ज लिये टहलने लगा । अब गुरु एक सूरमा तो पैदा करता नहीं वह तो अजायब घर बनाता बिगड़ता रहता है । उसने एक दूसरा सिरफिरा भी बनाया था । वह अहंकारी चेला उस दूसरे अजायब घर के प्राणी से मिल गया । उसने काग़ज देखा , अलटा- पलटा और कहा , गुरु हार नहीं सकता ऐसे ही लिख दिया होगा परीतिवश । मैं तुमको हराकर यह काग़ज वापस लूँगा । चेला तो ज्ञान की विजय में मदांध था । शास्त्रार्थ हुआ और अजायब घर के दूसरे प्राणी ने पहले प्राणी को निपटा दिया और काग़ज लेकर गुरु के पास गया और गुरु जी के चरणों में रख दिया । गुरु सब समझ गया , वह तो जानता ही है कि मेरा कौन सा चेला कितनी हैसियत का है । उसने डाँटते हुये कहा , क्यों हराया उसको ? वह एक वस्तु माँगने आया था अब मैं ना कैसे कह सकता था । जो व्यक्ति गुरु को ही हराने की सोच ले वह दया का पात्र है ।

यही हाल रावण का है । वह सबसे जीत गया । गुरु शंकर थे उसके अब उनको हराये कैसे तो उसने कैलाश पर्वत ही उठा लिया यह जताने के लिये वह गुरु शंकर को उठा सकता है । उन्हीं शंकर का धनुष सीता - स्वयंभर में उठाने का साहस न जुटा सका । वहीं राम को देखिये .. सीता असीम सुंदरी , एक बड़े स्थापित राज्य की राजकुमारी, हर व्यक्ति पाने को लालायित .. जब सीता जयमाल लेकर आती हैं तब राजगण की आसवित देखिये ..

पानी सरोज सोह जयमाला
अवजट चितए सकल भुआला
सीय चकित चित रामहि चाहा
भए मोहबस सब नरनाहा ।

पर राम में कोई लिप्सा नहीं । राम तो धनुष तोड़ने के लिये उठे ही नहीं । पर सारे राजा कूद पड़े धनुष तोड़ने को ..

सुनि पन सकल भूप अभिलाषे
भट मानी अतिसय मन माखे ।

यह सब फलाकांक्षी लोग थे । यह सब आतुर थे कि तोड़ने को धनुष कहीं
कोई और न तोड़ दे ।

पर परभु के पास कोई होड़ नहीं थी । राम के पास फलाकांक्षा न थी । पर राम
निष्क्रिय न थे । वह सक्रिय थे । उनका पूरा जीवन सक्रियता का जीवन
है । इसीलिये जब विश्वामित्र ने कहा राम उठो धनुष तोड़ दो । राम ने तोड़
दिया , किसी फलाकांक्षा के लिये नहीं किसी की पीड़ा दूर करने के लिये ।
गुरु का अपमान करने वाला रावण धनुष उठाने का साहस न जुटा सका और
गुरु का सम्मान करने वाला

जीवन में सक्रियता ले आओ ... गुरु का सम्मान करो .. जीवन को जगत
कल्याण के लिये समर्पित करो ...

राम धनुष तोड़ने पर क्या कहते हैं ... यह तो गुरु की कृपा और आज्ञा थी ..

बिस्वामित्र समय सुभ जानी ।
बोले अति सनेहमय बानी
उठु राम भंजु भव चापा
मेटु तात जनक परितापा ।

लंका विजय के बाद माँ कौशल्या यह सोचती हैं

हृदय बिचारति बारहिं बारा ।
कवन भाँति लंकापति मारा ।

भगवान राम कौसल्या जी की ओर देखकर कहते हैं

गुरु वसिष्ठ कुल पूज्य हमारे
इन्हकीं कृपा दनुज रन मारे ।

यह तो गुरु की कृपा है यह कार्य इन्होंने मुझसे करा लिया ।

आसक्तिरहित , फलाकांक्षारहित , सहज जीवन ईश्वर के उन पुत्र- पुत्रियों के लिये जियो जिसको ईश्वर ने आप ऐसी क्षमता नहीं दी है पर उनके लिये आपका निर्माण किया है ।

मेरा पूरा आशीर्वाद, मेरी शुभकामनाएँ आपके आगामी जीवन के लिये हैं । मैं तो जीवन के अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ रहा पर मेरे सारे सत्कर्म आपके साथ हो इस देश- समाज के कल्याण के लिये ।

मैं सत्यानंद की पुस्तक “ खवाब हमारे “

की सफलता की कामना करता हूँ और मैं चाहूँगा ऐसा ही आयोजन यह शीघ्र पुनः करें । इनकी रचनाधर्मिता का उत्तरात्तर विकास हो । मैं भरत के आध्यात्मिक विकास की नगरी में आकर धन्यता को प्राप्त कर गया हूँ । मैं इस कार्यक्रम में आमंत्रण देने के लिये सत्यानंद का हृदय के अंतरिम से धन्यवाद देता हूँ ।

शास्त्री जी ने हवा में दोनों हाथ उठाकर मंच से लोगों का अभिवादन किया । पूरा सभागार खड़ा हो चुका था , तालियों की गड़गड़ाहट रुकने का नाम नहीं ले रही थी । ऐसा अद्भुत व्याख्यान मैंने कभी न सुना था । मैं राम किंकर जी का राम कथा पर व्याख्यान सुनने अशोक नगर बहुत गया हूँ । यह व्याख्यान किसी भी रूप में उस व्याख्यान से कमज़ोर नहीं था । राम किंकर जी के पास अपनी एक शैली थी जो शरोताओं को बाँध लेती थी और शास्त्री जी भी सम्मोहन कला में माहिर थे ।

राम प्रकाश सिंह सर माझक के पास आये और उन्होंने सर को धन्यवाद देते हुये कहा ...

“ यह मेरा असीम सौभाग्य है कि मुझे लेखक - विचारक सत्यानंद मिश्र जी ने मंच संचालन का दायित्व सौंपा । मैं राज्यपाल जी सहमत हूँ कि जो राम की इच्छा होती है वही होता है । मेरे भाग्य में यह अमृत प्रवाह ईश्वर ने नियत किया था और मैं उस रस में ढूब गया । मैं आज बालि सदृश अपने को महसूस कर रहा हूँ जब वह प्रभु के समुख घायल अवस्था में था पर उसने बहुत लंबी छलांग लगायी ..

सुनहु राम स्वामी सन चल चातुरी मोर ।

जैसे बालि के मस्तक पर हाथ रखकर प्रभु ने कहा था
अचल करों तनु राखहु प्राना ।

परभु ने कहा बालि मैं चाहता हूँ तुम जीवित रहो पर बालि ने कहा परभु आपको प्राप्त कर लेने के बाद अब और कुछ पाने को शेष रहा ही नहीं । बालि ने अमरता का परभु का प्रस्ताव त्याग कर कहा मैं ज्ञान और भक्ति दोनों का लाभ पाना चाहता हूँ । ज्ञान वाला लाभ है मुक्ति और भक्ति का लाभ है सेवा ।

सर के उदबोधन ने ज्ञान भी दी और भक्ति भी । हम सब आज बालि सदृश हो चुके हैं । हमको ज्ञान की भी प्राप्ति हुई और भक्ति का संचार हुआ ।

बहुत - बहुत धन्यवाद सर आपके अप्रतिम संबोधन के लिये ।

अध्यक्षीय भाषण स्पीकर साहब ने दिया । वह आते ही यह स्वीकार कर गये कि शास्त्री जी के बोलने के बाद कुछ बचा ही न रहा कहने को । उन्होंने किताब की कुछ कवितायें पढ़ीं, शिल्प विधान पर बात किया और अध्यक्षीय भाषण दिया । कमिशनर साहब की पत्नी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया ।

विमोचन कार्यक्रम मंच पर हुआ । साहब का पूरा परिवार मंच पर था । साहब ने मुझे भी इशारे से मंच पर बुलाया । मैं मंच पर गया । मैंने भी किताब हाथ में लेकर विमोचन कार्यक्रम में शिरकत किया । प्रतीक्षा मेरे बगल ही खड़ी थी । मेरी माँ बहुत ध्यान से मुझे और प्रतीक्षा को देख रही थी । वह आज बहुत ही आह्वादित थी । राज्यपाल जी ने इशारे से मुझको बुलाया, मैं उनके पास गया और उनके चरण स्पर्श किये । उन्होंने कहा तुम जीवन में बहुत आगे जाओगे । तुम्हारी माँ आयी है ?

मैंने कहा, “ जी सर ” ।

राज्यपाल ने कहा मैं उनके दर्शन करना चाहता हूँ ।

मैंने आसमान की तरफ देखा और कहा

ऐ परवरदिगार तेरा शुक्रिया मैं कैसे अदा करूँ ,
तूने ज़मीन की ख़ाक को उठाकर माथे की भूत बना दी है ।

यह पूरा आयोजन एक सुहाने स्वप्न ऐसा था , न केवल मेरे लिये वरन् मेरे पूरे परिवार- परिवेश के लिये । राम प्रकाश सिंह सर ने आयोजन के समापन की घोषणा की और लोगों से रातिर- भोज में शामिल होने का अनुरोध किया । मैं मंच से उतरने लगा । मुख्यमन्त्री और राज्यपाल का सुरक्षा घेरा और प्रोटोकॉल हरकत में आ गया । उन्होंने मंच को चारों तरफ से घेर लिया । मैं मंच से उतरकर माँ के पास आया , उसकी आँखों में आज एक अलग ही चमक थी । मेरी बहन अपनी दो सहेलियों के साथ तीसरी क़तार में थी वह भागकर आगे आयी , उसके चेहरे पर भाई का प्रशस्ति गान साफ पढ़ा जा सकता था , वह एक दिग्विजयी भाई के बहन के गर्व से अभिभूत थी । वह आकर मेरे गले से लग गयी और बोली , “ भैया मेरी तकदीर है कि मैं तुम्हारी बहन हूँ । ”

मैंने कहा , “ बेवकूफ वह वक्त आएगा जब मैं कहूँगा तू मेरी बहन है , बस घड़ियों को विधाता की संरचनात्मक संरचना पर चलने दे ।

मैंने माँ और पिता जी के पैर छुये और माँ से कहा , “ राज्यपाल जी तुमसे मिलना चाहते हैं । ”

माँ- “ हमसे काहे मिलै चाहत हये ? ”

मैं- “ वह तुम्हारे दर्शन करना चाहते हैं , यह कहा उन्होंने मुझसे । तुम विधाता का दर्जा अखिलयार कर गई हो । लोग तुम्हारा दर्शन चाह रहे , तुम्हारा भी एक मंदिर बनेगा .. “ उर्मिला मंदिर ” । लोग समझ नहीं पायेंगे यह तरेता युग की उर्मिला का मंदिर है या आज के युग

का । ”

माँ- “ मुन्ना सही बतावअ ऐसन कहेन राज्यपाल साहेब ? ”

मैं- “ अभी देखना , ले चलता हूँ तुमको । वह मुझसे कहे कि मैं आपकी माँ का दर्शन करना चाहता हूँ । ”

माँ पूर्ण विस्मय में आ गयी । उसी समय आंटी ने मेरे सर को पकड़ कर मेरे माथे को चूम लिया । आंटी यही करती थी जब भी मैं उससे मिलता था । उसने कहा , “ अनुराग आज साक्षात् सरस्वती का वास था तुम्हारे जिह्वा पर । तुम बगैर सरस्वती के सहयोग के ऐसा बोल ही नहीं सकते थे । ”

मैं- “ आंटी आपका आशीर्वाद था , वह किसी सरस्वती से कम तो है नहीं । आपके हाथ की छाया में किस सरस्वती से कम शक्ति है । आंटी चलो बाहर चलते हैं राज्यपाल मिलना चाह रहे हैं , आप सबको मिलाता हूँ । ”

शालिनी - ऋषभ भी आ गये । शालिनी ने कहा , “ अनुराग मैंने ऋषभ से कहा तुम्हारे भाषण के बाद , ऐसा भाषण कोई दे सकता है मैं सोच भी नहीं

सकती । मुझे बहुत ही गर्व हो रहा आज अपने ऊपर । मैं ऋषभ से विवाह करके बहुत गौरवान्वित हुई थी, आज तुमने उस गौरव में आशातीत वृद्धि कर दी । “

मैं - “ शालिनी, क्या मैं वाक़ई इतना अच्छा बोला ? ”

शालिनी - “ इसमें कोई शक ही नहीं । राज्यपाल साहब ने भी बहुत अच्छा बोला पर तुम्हारे बोलने में जो जोश और उत्साह था वह अतुलनीय था । ”

इतने में अशोक मेरे पास आया और बोला, “ सर यह सुरुचि के पिताजी को कार्ड तो मिला नहीं यह आये कैसे ? ”

मैं - “ जाने दो यार, जो आ गया सो आ गया । आप शिव की चाट खाओ, बढ़िया इमरती रसगुल्ला खाओ । यह सब प्रजा हैं अपनी, प्रजावत्सल बनो । ”

अशोक - “ सर खाने का इंतज़ाम तो दिव्य है पर यह पता करना है यह आये कैसे । कार्ड तो मिला नहीं होगा । ”

मैं - “ एक आईएएस बेटी के पिता है वह, वह भी कोई आम आईएएस नहीं अंग्रेज़ी बोलने वाली आईएएस, कुछ हक़्क़ बनता है उनका भी । ”

एक बड़ी गहमा-गहमी थी बाहर लान में । मैंने माँ से कहा आप लोग यहीं रुको खाना मत खाना अंदर एक अलग इंतज़ाम खाने का है वहाँ पर सब लोग होंगे वहाँ ले चलता हूँ आपको । मैं आकर लोगों से मिला । मैंने देखा एक काउंटर पर साहब की किताब बिक रही । साहब के मातहत लोग किताब खरीदने -खरीदवाने में लगे थे और मुख्यमंत्री के समर्थक लोग मुफ़्त में लेने के फ़िराक़ में । वह बहस किये पड़े हैं किताब बेचने वाले से, “ अब हम कार्यकर्ता लोगन से पैसा लेबअ । हम खुन बहाई दिहा इ सरकार के बनवाई में, हम सब ग़रीब लोग पैसा कहाँ से देब । ”

मैंने अपने छात्रों से कहा कि आप लोग खाना खा लेना और जो भी साथ आया है सबको खिला देना । मेरा कहना औपचारिकता मात्र ही था, वह सब अपने काम में लग ही चुके थे । बहुत ही दिव्य व्यवस्था खाने की थी । कमिशनर साहब को जब पता लग गया कि मुख्यमंत्री आ रहे तब उन्होंने एक और अलग इंतज़ाम उनके समर्थकों के लिये करा दिया था । वह सत्यानन्द मिश्र ऐसे ही न थे, उनको वक्त के नज़ाकत की समझ थी और वह जानते थे कि कार्यकर्म के यश गान को यहीं सब दूर दराज तक लेकर जायेंगे, इसलिये कार्यकर्ताओं की खातिरदारी आवश्यक है । मैं सब से मिलकर आया और माँ से कहा आप लोग चलो । मैं सबको लेकर उस वीआईपी क्षेत्र में जाने

लगा । मेरी माँ ने कोई बाहरी दुनिया देखी ही न थी , वह मेरे पीछे- पीछे चल रही थी । वह आज तक किसी बड़े आदमी से न मिली थी । वह नर्वस होने लगी । उसने मुझसे कहा , ” मुन्ना हम का बतियाब एतने रुतबे वाले ज्ञानी आदमी से । “

मैं “ माँ , तू क्यों परेशान है । वह मिलना चाह रहे । मैं सबको साथ ले चलूँगा , पर वह पूछेंगे ही कि तुम्हारी माँ कौन है ? अब इस समय किराये की माँ तो मिलेगी नहीं उनसे मिलाने के लिये , तुमको ही बात करनी होगी । कुछ बात कर लेना । “

माँ “ तू बहुत बड़ा आदमी बनि ग हअ इ चार लाइन स्टेज पर बोलि के । आज तोहका केराया के माँ चाही । तू भूलि गअ जब हकलात रहअ । बहुत उड़अ न हमसे । नानी के आगे ननिऔरे के हाल न सुनावअ हमका । तोहार राज्यपाल जेतना राम कथा सुनाएन हमका सब आवत हअ । “

वह थोड़ा नाराज़ हो गयी , मैंने बात ही थोड़ी बेवकूफ़ी की की थी । पिताजी ने कहा , “ तनाव मत लो । लोग औपचारिकता मैं कह देते हैं । कुशल- क्षेम पूछ कर बात ख़त्म हो जायेगी । यह उनका बड़प्पन है उन्होंने ऐसा कहा । “

मैं सबको लेकर अंदर गया । बाहर बहुत पुलिस लगी थी इतने लोगों को लेकर जाना आसान न था पर चिंतन सर थे इसलिये कोई दिक्कत न हुई । उनका बैचमेट ही पुलिस व्यवस्था देख रहा था उस क्षेत्र की । उस वीआईपी इनक्लोसर की छटा ही अलग थी । मुझे इसका आभास न था । क़रीब पचास आदमियों के बैठने खाने का इंतज़ाम था । कुछ शहर के बड़े लोग थे , सीनियर अधिकारी थे , विशिष्ट अतिथि थे । मैंने चिंतन सर से कहा राम प्रकाश सिंह सर को भी लेके आओ उन्होंने मातादीन से कहा कि जाओ सर को लेकर आओ । वह चला गया ।

मैंने राज्यपाल जी को देखा और माँ से कहा चलो मिलाता हूँ । मैं माँ और पिताजी को लेकर गया । साथ मैं सब लोग चल दिये । राज्यपाल जी से कहा , “ सर यह मेरी माँ और पिताजी हैं । “

राज्यपाल जी काफ़ी पी रहे थे । उन्होंने काफ़ी का प्याला बग़ल रखकर मेरी माँ को प्रणाम किया और कहा ... “ मैं तेजस्वी पुत्रों की माँओं का दर्शन करने का सदैव अभिलाषी रहता हूँ । इसके दो कारण हैं - एक , धन्यवाद ज्ञापित करना कि आपके सहयोग से यह तेजस्वी बना और दूसरा यह अनुरोध करना कि इस पर नियन्त्रण रखने का प्रयास करना । यह तेजस्विता अगर ग़लत दिशा में चली गयी तब राष्ट्र के लिये घातक हो जायेगी । आपकी ज़िम्मेदारी अभी ख़त्म नहीं हुयी है , आपकी भूमिका बदल गयी है । अब यह आपका पुत्र नहीं आपका मित्र हो चुका है । आप इसके साथ एक मित्रवत्

व्यवहार करो । अब आप अयोध्याकांड से किष्किन्धाकांड में प्रवेश कर रहे हो । अभी तक आप कौशल्या थे राम के अब आप राम हो हनुमान - सुग्रीव के । ईश्वर की महती कृपा थी ऐसा बालक मिला और आपकी महकी कृपा समाज पर है आपने ऐसे संस्कार दिये । ईश्वर और माँ जब दोनों सहयोग देते हैं तब राष्ट्र को एक नायक सदृश व्यक्ति मिलता है । मैं आपको धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता था , इसलिये मैंने अनुराग से कहा कि मैं आपकी माँ के दर्शन करना चाहता हूँ । मेरा अहो भाग्य मुझे आपका दर्शन प्राप्त हुआ । मेरे पिताजी को भी प्रणाम किया और कहा आप कभी लखनऊ आयें तो अवश्य राजभवन पधारें । मुझे आपका स्वागत करने में हर्ष होगा ।

मेरी माँ और पिताजी बहुत ही साधारण व्यक्ति थे । उन बेचारों ने दुनिया में कुछ देखा ही न था । वह कुछ बोल ही नहीं पा रहे थे । शास्त्री जी ने दुनिया देखी थी , वह असहजता भाँप गये और मुझसे कहा , “ अनुराग इन लोगों को खाना खिलाओ । ”

शालिनी का मस्तिष्क ऋषभ को सम्मान प्राप्ति हो , इस पर ही लगा था । उसने मुझसे कहा , “ अनुराग कमिशनर साहब ने ऋषभ के सम्मान के लिये कहा था । वह ज़रा बात कर लो नहीं तो यह लोग तो अभी चले जायेंगे । ”

मैंने कहा , “ ठीक है , बात करता हूँ । ”

मैं साहब के पास गया । साहब ने मुझको देखते ही अपने गले से लगा लिया और कहा , “ अनुराग क्या समाँ थी आज की ! मेरा भाषण कैसा था ? ”

मैं “ सर बहुत ही बेहतरीन । आपने बहुत अच्छा तैयार किया था । यह बहुत ही सफल पुस्तक होगी और शीघ्र ही मैं आपकी दूसरी पुस्तक की प्रकृति रीडिंग करूँगा । ”

साहब इस बात से और प्रसन्न हो गये । मैम साहब के तो पैर ही ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे । वह अपने बहनों से बहुत आगे निकल चुकी थीं । वह अब एक प्रशासनिक अधिकारी ही नहीं एक बहुआयामी साहित्यिक व्यक्ति की पत्नी थी । उन्होंने प्रसन्नता ज़ाहिर की और कहा , “ अनुराग तुम एक बहुत अच्छे मैनेजर हो । तुम अपने विवाह का इंतज़ाम भी खुद कर लोगे । मैं तो कह दूँगी , अनुराग का विवाह है वह सब करेगा मैं क्यों कुछ करूँ । ”

मैं “ मैडम यह सर का प्रताप है जो हर ओर दिख रहा । हम सब तो उसमें एक कड़ी हैं । ”

मैंने सर से कहा , “ सर ऋषभ के सम्मान वाली बात कर लीजिये । ”

साहब - “ अरे वह हो जायेगा । वह छोटी बात है । मुख्यमन्त्री की सचिव अनीता मेरी एसडीएम रही है मैंने ही उसको लगवाया है सचिव के रूप में । उससे कह दूँगा फ़ाइल मूव कर देगी । इतनी छोटी- छोटी बातों पर मत परेशान हुआ करो । ”

मैं “ सर मिलवा दीजिये उनको एक बार । ”

साहब - “ बुलाओ उनको वह लोग कहाँ हैं । ”

मैं उनको लेकर आ गया । साहब ने राज्यपाल और मुख्यमन्त्री से मिला दिया और राज्य सरकार से पुरस्कार का अनुरोध कर दिया । मुख्यमन्त्री ने आश्वासन भी दे दिया यह कहते हुये , ” हम तो योग्य व्यक्ति की तलाश करते ही रहते हैं । अब इनकी उपलब्धियाँ तो सम्मान की अधिकारी हैं हीं । ”

शालिनी के चेहरे पर असीम संतोष भाव था । ऋषभ की उतनी रुचि न थी सम्मान में जितनी शालिनी की थी । सारे महत्वपूर्ण लोग जाने लगे । पंडाल खाली होने लगा । प्रतीक्षा मेरे पास आयी और बोली , “ आपने बहुत अच्छा बोला । आपकी हिंदी बहुत ही अच्छी है और इतनी साहित्यिक है कि समझना आसान नहीं है । मुझे भी आप कुछ मेंस के बारे में बताइये । मेरी तैयारी बहुत अच्छी नहीं है , मुझे डर लग रहा कहीं मेरा यह अवसर व्यर्थ न हो जाये । मैं एक सफलता के रथ पर सवार था आज की रातिर, उस रथ के पहिये से बनने वाले निशान स्तुति योग्य थे आज की इस घड़ी में । मैंने ठीक से प्रतीक्षा को आज तक देखा ही न था । आज पहला अवसर था जब मैं उसको एक भरी निगाह से देख रहा था ... काव्यात्मकता जगने लगी ..

दिखते हैं ख्वाब

मिलते जुलते ख्वाब .. दो आँखों में

अक्स मेरे ख्वाब के तेरी आँखों में

झिलमिलाते बेचैन व्यग्र ख्वाब

बेपरवाह ताबीर के

बस उनको तैरना है आँखों की शबनम में ।

गुलाबी कमीज , काली सलवार , सफेद दुपट्टा भौंहें काली , हल्की गुलाबी लिपस्टिक, काजल .. बाल करीने से सजे हुये .. आज उसकी आँखों में मेरे लिये भाव कुछ अलग थे .. स्वीकार्यता के भाव .. टपकते आँखों से .. बोलती

आँखों से कहते बरबस पढ़ने वाले के लिये .. अब आज की रात मुझसे बड़ा पाठक कौन होगा ...

मैं कुछ सँवरना चाहती हूँ तेरे लिए
बता क्या छूता है दिल को तेरे
तुम मत कहो , कोई ज़रूरत नहीं सँवरने की

सुनो , मुझे पूरी शिद्धत से
मैं अपने लिए सँवरना चाहती हूँ
नहीं सँवारा है मैंने अपने को बरसों से
न मिला कोई ऐसा जिसके लिये मैं सँवर सकूँ ॥

मेरी माँ दूर से मुझे निहार रही जब मैं प्रतीक्षा के नज़दीक उससे बात कर रहा । मेरी आँख घूमी , मेरी माँ.. पिताजी .. भाई .. बहन सब देख रहे मेरी और यहाँ तक कि प्रतीक्षा के पिता भी देख रहे
मैं असंयत हो गया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 247

यह एक अलग शाम थी । इस शाम का सुरु रही कुछ अलग था , खुमार उतरने वाला न था । राम प्रकाश सिंह सर आये , वह आते ही मेरे कंधे पर हाथ रखे और कहा , “बोला अच्छा पर समय अधिक लिया । आप और कसावट ला सकते थे भाषण में , पर कोई बात नहीं प्रभावात्मक था । ”

मैंने कहा , “ सर कोई अनुभव तो था नहीं इस तरह का । ”

राम प्रकाश सिंह सर - “ यह बहुत बड़ा मंच था । मैं तुम्हारे बोलने का पक्षधर इसलिये न था कि मुझे आशा न थी कि इतना बड़ा मंच तुमसे सँभलता पर तुमने न्याय किया मंच और कार्यक्रम की गरिमा के साथ । ”

मैंने सर से प्रतीक्षा का परिचय कराया और बताया कि यह कमिशनर साहब की बहन है । इसी बीच एक आदमी आया और बोला कि राज्यपाल जी राम प्रकाश सिंह जी को बुला रहे हैं । सर उधर चल दिये , मैंने प्रतीक्षा से कहा

चलो सुनते हैं कुछ ज्ञान की ही बात होगी अगर शास्त्री जी बुला रहे । मैंने माँ को भी इशारा किया वहाँ आने का । वह भी आ गयी सभी लोगों के साथ ।

राज्यपाल- “ राम प्रकाश जी आप ने जो बालि की व्याख्या की ज़रा वह और स्पष्ट करें वह नायाब सी है । ”

राम प्रकाश सर - “ सर , रामायण भाइयों की गाथा है । राम के भाई , बालि - सुग्रीव , रावण - कुंभकर्ण - विभीषण, जटायु - संपाती । यह भाइयों की कथा बहुत कुछ कहती है ।

राज्यपाल- “बालि - सुग्रीव बताओ । ”

राम प्रकाश सर - “ विरोधाभासी थे दोनों भाई । बालि निर्भय, सुग्रीव भयभीत रहने वाला । बालि में अहंकार पर सुग्रीव में विनम्रता । बालि स्वावलंबी पर सुग्रीव किसी पर निर्भर । प्रतिहिंसा बालि के स्वभाव का एक अंग थी । वह क्षमा करना नहीं जानता था । सुग्रीव बालि की तरह बलवान न था पर बुद्धिमान था , इसलिये सिंहासनाच्युत हो जाने के पश्चात् भी मित्रविहीन न था । उसके पास महावीर हनुमान थे तो प्रबोधवीर जामवंत थे । बालि अति अहंकारी था और वह आगा- पीछा कम सोचता था । वह जानता था कि राम का सुग्रीव को समर्थन है पर तब भी वह लड़ने से पीछे न हटा और कहता है पत्नी तारा से ..

कह बालि सुनु भीरु पिरय समदरसी रघुनाथ
जैं कदाचि मोहि मारही तौ पुनि होउँ सनाथ ।

वह सुग्रीव से कहता भी है कि मैं तुमसे क्या लड़ूँ , तुम अपने आश्रयदाता को लेकर आओ ।

सबसे रोचक है प्रभु- बालि संवाद । यह संवाद यह कहता है कि राम उसको अधम श्रेणी में नहीं रखते हैं । बालि के पास एक ही दोष था अहंकार और उससे मुक्त होते ही वह राम के नज़दीक आ गया । यह घटना यह बताती है कि परिवर्तन की प्रक्रिया की कोई सीमा नहीं होती । गोस्वामी जी उसका चित्रण एक भक्त के रूप में करते हैं जिसके अन्तर्मन में भगवान राम के प्रति भक्ति और प्रीति है । बालि देवराज इन्द्र के अंश से उद्भूत होने वाला पुण्य और सत्कर्म का प्रतीक है । बालि भी अपनी भूल स्वीकार करता है और कहता है

सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूँ मैं पापी अन्तकाल गति तोरी ॥

प्रभु बालि को अमरत्व प्रदान करने की बात कहते हैं पर अब उसमें परिवर्तन आ चुका था वह विनम्र हो चुका था और इस लाभ को अस्वीकार कर देता है । अगर बालि जीवन प्राप्त करता तो कोई सामान्य जीवन वह न जीता । रावण को परास्त करने वाला दिग्विजयी बालि अब प्रभु का कृपा पात्र और स्नेही हो चुका था । वह जीवन प्राप्त करके एक आळादित जीवन जी सकता था पर उसने त्याग वृत्ति का परिचय दिया । उसकी यह वृत्ति विरले लोगों में दिखायी देती है । ईश्वर शरीर की अचलता का वरदान देना चाहें , किसको लालसा नहीं होगी उसे प्राप्त करने को पर बालि उस लालसा से ऊपर उठ चुका है । वह सिर्फ चाह रहा प्रभु की कृपा दृष्टि मिले । वह चाहता है वह कहीं भी जन्म क्यों न लें मन , वचन , कर्म से प्रभु के चरणों में प्रीति बनी रहे । वह स्वयम् ही नहीं अपने पुत्र को भी शरण में देना चाहता है । वह एक पूर्ण समर्पण के पथ पर अग्रसरित है ..

सुनहु राम अति कोमल बानी ।
बालि सीस परसेउ निज पानी ॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना ।
बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं ।
अंत राम कहि आवत नाहीं ॥
जासु नाम बल संकर कासी ।
देत सबहि सम गति अविनासी ॥

अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर माँगऊ ।
जोहिं जोनि जन्मौं कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ ॥
यह तनय मम सम बिनय बल कल्याणपद प्रभु लीजिए ।
गहि बाँहं सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए ॥

यह एक उदात्त भावना है । यह एक महान संत ही कह सकता है । जीवन में बालि ने जो भी किया हो पर मृत्यु के समय उसने जो छलांग लगायी वह साधन की प्रक्रिया का उच्चतम बिंदु है । उसकी इस प्रक्रिया की व्याख्या कई रूपों में की जा सकती है । “

राज्यपाल- “ कितने रूपों में हो सकती है ? क्या है वह व्याख्या बतायें । ”

राज्यपाल ने मुख्यमंत्री से कहा , एक बात है मुख्यमन्त्री जी आपके चहेते अधिकारी कुछ विशेष होते हैं यह मैंने अनुभव किया । यह सत्यानंद तो आप के बहुत ही चहेते हैं । ऐसा विमोचन मैंने तो आज तक न देखा जबकि यह विमोचन करना मेरा नियमित काम है । मेरे पास कोई भी आता है विमोचन के लिये , मैं कभी ना नहीं कहता । मैं थोड़ा शरोताओं का आग्रही हूँ । मैं चाहता हूँ लोग सुनने आयें । मैंने सत्यानंद से कहा भी था कि अगर लोग कम हों तो हाल छोटा कर लो , एक खाली हाल वक्ता की आँख में गड़ता है पर यहाँ तो सिंधु का उफान था । इनके वक्ता कितने अच्छे थे । वह अनुराग कितना अच्छा बोला , सत्यानंद कितना सारगर्भित बोले । इनका मंच संचालक तो नायाब है । कहाँ से लाते हो इतने बेहतरीन लोग । ”

सत्य प्रकाश मिश्रा सर - “ राम प्रकाश पता नहीं क्या गणित पढ़ाते होंगे कक्षा में । यह कक्षा में भी साहित्य ही पढ़ाते होंगे । अनुराग

, राम प्रकाश यह सब साहित्य के साथ अन्याय किये । इनको जो पढ़ना चाहिये वह नहीं पढ़ते जिसमें अपेक्षाकृत रुचि कम है वह पढ़- पढ़ा रहे हैं । ”

राज्यपाल- “ यह भी बड़ी बात है । आप के पास कई विधाये हैं । इस समाज को बहु विधा संपन्न व्यक्ति चाहिये । कभी वह दौर था जब लोग कई भाषायें सीखते थे , कई विषय पढ़ते थे , जब सीखना जीवन का लक्ष्य होता था पर आज तो सारी शिक्षा प्रणाली एक बात से नियन्त्रित है कि नौकरी कैसे मिले और नौकरी प्राप्त कर लेने के बाद तो शिक्षा से कोई सरोकार होता नहीं । राम प्रकाश जी बतायें वह बालि जीवन प्रक्रिया विवेचन । ”

राम प्रकाश सिंह सर - “ सुग्रीव भीरु था पर नम्र था । बालि वीर था पर अहंकारी था । एक भीरु व्यक्ति प्रायः ईश्वर की आवश्यकता का आग्रही अधिक होता है । सुग्रीव की आस्तिकता भीरुताजन्य थी न कि आस्थाजन्य । बालि की आस्तिकता जो मृत्यु के समय दिख रही उसमें न तो लोभ है न भय । वह काम- करोध - मोह - लोभ से प्रेरित नहीं है वरन् एक आस्था से नियन्त्रित है । वह जीवन में आस्थावान क्यों नहीं था ? अहंकार भक्ति और समर्पण के मार्ग में अवरोध कर रहा था । जैसे ही वह हटा वह एक ऊँची छलाँग लगा गया । बालि कुछ भी माँग सकता था अमरत्व, राज्य, पुत्र का भविष्य , पर वह माँगता क्या है मेरे पुत्र को शरण दो । वह राग से विराग की भूमि पर पहुँच गया । वह अहंकार मुक्त, अनासक्त होकर प्राणों का परित्याग कर गया । त्याग में बालि भरत और लक्ष्मण के समीप पहुँच गया । लक्ष्मण वन

गमन के समय कहते हैं आपके बगैर मेरा कोई जीवन नहीं । भरत तो त्याग की प्रतिमूर्ति हैं ही उनका नाम स्मरण ही

मोह माया नाशक प्रवृत्ति को जन्म दे देता है । अहंकारी, आसक्त बालि जीवन के अंतिम चरण में इनके समीप पहुँच गया । प्रभु के पास मुक्ति का द्वार सबके लिये है । वह आपको प्रायश्चित का अवसर देते हैं, यहाँ तक रावण को भी दिया पर रावण बालि की तरह शुद्धता को प्राप्त न कर सका । “

राज्यपाल- “ अद्भुत व्याख्या है राम प्रकाश जी । मैंने इस दृष्टिकोण से बालि के व्यक्तित्व का परीक्षण नहीं किया । आभार आपका आपने बालि के इस नवीन रूप से परिचित कराया । ”

रात हो रही थी । लोग जा रहे थे । यह सत्संग भी समाप्त होने लगा । मुख्यमन्त्री और राज्यपाल जाने लगे । वह लोग रात ही में लखनऊ जा रहे थे । कमिशनर साहब की प्रसन्नता का कोई ओर- छोर ही न था । उनकी पत्नी आसमान में चल रही थी । उनके पिता जी सबसे संजीदा थे । वह सुन सबकी रहे थे बोल बिल्कुल नहीं रहे थे । वह मेरे पास आये और बोले, “ अनुराग तुम इतने तेजस्वी होगे यह मैं नहीं जानता था । मुझे बहुत खुशी हुई तुमसे मिलकर । मैं कल आऊँगा आपके पिता जी से मिलने सत्यानंद - देवानंद को लेकर । मैंने तुम्हारे पिताजी से समय माँग लिया है । ”

मैं- “ बाबूजी बहुत अच्छी बात है, आपके चरण पड़ेंगे घर धन्य हो जायेगा । ”

माँ, मेरा भाई बहन पिताजी सब चले गये । मैंने चिंतन सर को टरकाया । मैं उनको साथ आंटी के यहाँ नहीं ले जाना चाहता था । वह हर बात पर आहूजा की संपत्ति रेलना है इसी में लगे रहते हैं । मैं शालिनी अनुराग अंत में रह गये । आंटी जाते समय कह कर गयी थी अनुराग होटल आना, इंतज़ार करौंगी । मैं बाहर निकला । बाहर अशोक, दादू, दिनेश आदि थे । मेरे मामा और उनके तहसीलदार राम पदार्थ मिश्र जी अन्य कर्मचारियों के साथ खड़े थे । मुझको देखकर वह लोग भाग कर आ गये । मैंने कृतज्ञता से हाथ जोड़ा और कहा आपका इंतज़ाम बहुत ही बेहतरीन था ।

राम पदार्थ मिश्र - “ भैया भूल - चूक माफ़ करना । उस दिन हमको पता न था आपके बारे में और सर्वेश ने बताया भी नहीं । मुझे बहुत अफ़सोस है कि हमने अपने कुल दीपक के साथ ऐसा व्यवहार किया । आज आपको सुना जीवन धन्य हो गया । मेरे सिर पर आप हाथ रख दें, यह मेरी अभिलाषा है । ”

मैं - “ आप मुझे शर्मिंदा न करें । आप मेरे मामा के सहकर्मी हैं इस रिश्ते से आप भी मेरे मामा हुये । आप सबका आशीर्वाद है जो जीवन में कुछ प्राप्त कर सका नहीं तो हमारे ऐसे सामान्य व्यक्ति के लिये यह कहाँ संभव है । आप लोग जायें आराम करें । यह आयोजन आप सबके कारण ही इतना सुंदर हुआ । ”

राम पदार्थ मिश्र भावुक हो गये । मामा ने कहा कि तुम्हारी मासी , मौसी , मोहिता , बाबा सब लोग अभी - अभी गये । मैंने कहा , मामा आप भी जाए । मैं कल आता हूँ घर ।

मामा अति प्रसन्न हुये मेरे इस प्रस्ताव पर और कहा , “ इंतज़ार करूँगा । ”

मैं , ऋषभ , शालिनी यात्रिक होटल गये । ऋषभ ने बाहर के लान से ही आवाज़ दी दरबान को । वह भाग कर आ गया और कहा तीन काफ़ी लाना । मैंने कहा , मेरी चाय

लाना और वह भी मँगाओ जो उस दिन मँगाया था ।

ऋषभ - “ क्या था ? ”

मैं - “ कुछ “ क ” से था । ”

ऋषभ - “ करोसान , ”

मैं - “ मुझे नाम नहीं पता । ”

ऋषभ - “ करोसान भी ले आना साथ में । ”

शालिनी - “ मैं कपड़े बदल कर आती हूँ , मेरी काफ़ी बाद में ले आना । ”

मैं और ऋषभ लान की कुर्सियों में बैठ गये । मेरी और ऋषभ की निकटता बहुत बढ़

चुकी थी और हम दोनों एक दूसरे का बहुत सम्मान करते थे । ऋषभ तो अतुलनीय क्षमता का व्यक्ति था ही । मैं साफ़ देख रहा था उसके लगन से कि वह एक इतिहास निर्मित करने की ओर अग्रसर हो रहा है । जो व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति इतना समर्पित हो कि सब कुछ त्याग दे यहाँ तक कि आने वाली नस्ल भी अगर उसके लक्ष्य के रास्ते में बाधक हो रही तब उसको भी न आने दे , वह क्या नहीं कर सकता । उसका धन से लगाव न था वह कम्प्यूटर करांति का इच्छुक था , धन का आग्रह शालिनी के पास था ऋषभ के पास न था ।

उसने पहला ही प्रश्न किया , “ क्या प्रतीक्षा से तुम विवाह करोगे ? ”

मैं “ तुम्हारी क्या राय है ? ”

ऋषभ- “ बहुत अच्छा प्रस्ताव है , हर तरफ से / प्रभावशाली परिवार , एक सुंदर कन्या, पढ़ी लिखी है । यह जो अरेंज मैरेजेस हैं वह ऐसी ही होती हैं । उस मापदंड पर यह बहुत ही अच्छा प्रस्ताव है । ”

मैं “ कोई वस्तु आपके उपयोग की है या नहीं यह बहुत महत्वपूर्ण होती है । दूर से सूरज रौशनी देता है , तपिश देता है जो मनोहारी होती है पर नज़दीक से वह जला देता है । यह प्रस्ताव बहुत अच्छा लग रहा पर यह मेरे काम का है ? यह बड़ा प्रश्न है । ”

ऋषभ- “ तुम्हारे काम का क्यों नहीं है ? ”

मैं “ ऋषभ , तुमसे अब कुछ छिपा है नहीं । तुमने मेरा घर देख लिया है , इस सामान्य से घर में वह कहाँ रह सकती है । यह हिंदू विवाह एक संस्कार है । यह दो परिवारों के बीच

संबंध की स्थापना करता है । यह विवाह जो तुम कह रहे करने को यह दो व्यक्तियों का संबंध तो संस्थापित कर देगी पर दो परिवारों का नहीं । मैं अपने लोगों के आँसुओं , जिसमें रक्त का लाल रंग तो नहीं है पर ज़मीन पर निशान बगौर रंगों के बना देते हैं पर चलकर जीवन नहीं जीना चाहता । ”

ऋषभ - “ अगर तुमको किसी से प्रेम हो गया और तुम्हारे घर में विरोध हुआ तब क्या करोगे ? ”

मैं “ वह प्रेम जन्म ही नहीं ले सकता जिसकी बुनियाद अपनों के आँसुओं पर हो । ”

ऋषभ - “ तुम प्रेम विवाह के विरोधी हो ? ”

मैं “ नहीं , मैं विरोधी नहीं हूँ पर मैं नहीं कर सकता । मेरे परिवेश मुझे उसकी इजाज़त नहीं देते । ”

ऋषभ - “ अगर प्रेम हुआ और परिणति को प्राप्त न हुआ तब जीवन में कमी रह जायेगी । ”

मैं “ जीवन में रिक्तता रहती ही रहती है । यह जीवन कहाँ सम्पूर्णता को प्राप्त करता है । अब आपका चुनाव है आप कौन सी रिक्तता को चुनते हो । जीवन की सार्थकता आवश्यक है न कि रिक्तता को दूर करना । ऋषभ बुद्ध को पढ़ा है ? ”

ऋषभ - “ थोड़ा बहुत । ”

मैं “ लोग कहते हैं बुद्ध के जीवन की चार घटनायें - जर्जर- वृद्ध को देखना , कष्टग्रस्त बीमार को देखना , एक अन्त्येष्टि के लिये जाते मृतक को देखना और अंत में एक संन्यासी को देखना , इन घटनाओं ने बुद्ध के जीवन पर

गहरा असर डाला और उन्हें जीवन की निरर्थकता का एहसास हुआ । यह गलत मान्यता है । यह सब देखकर उनको जीवन की सार्थकता का एहसास हुआ । सिफ़्र अपने लिये जीवन जीना जीवन की निरर्थकता है समाज के लिये जीना जीवन की सार्थकता है । बुद्ध ने न केवल अपना जीवन सार्थक बनाया वरन् यशोधरा और राहुल का भी जीवन सार्थक किया । वह किवाड़ बंद कर बुद्ध का निकलना उन सबका जीवन सार्थक कर गया जो भी उनसे जुड़े थे । प्रयाग भरत के आध्यात्मिक विकास की नगरी है यह राज्यपाल जी ने कहा । क्यों कहा ? भरत त्याग कर रहे थे । बालि भरत के समकक्ष पहुँच गया सिफ़्र त्याग के कारण । यह प्रेम विवाह जिसमें हर व्यक्ति के आँसू शामिल हैं मुझे रास नहीं आते । मैं एक ऐसी ज़मीन पर नहीं चल सकता जहाँ मेरे पैर के निशान दलदल बना दें और मेरे अपने ही लोग उसमें धँस कर चीत्कार करें और मैं आगे बढ़ता जाऊँ । मैं एक सार्थक जीवन जीना चाहता हूँ । यह निरर्थकता मुझे बिल्कुल मोहित नहीं करती । “

ऋषभ - “ तुम्हारे विचार बहुत अलग है अनुराग । तुम मेरी जगह होते तब शालिनी से विवाह न करते ? ”

मैं - “ अब इस प्रश्न का उत्तर देना ज़रूरी है ? ”

ऋषभ - “ हाँ । ”

मैं - “ शायद मैंने उत्तर दे दिया है । ”

शालिनी इसी बीच आ गयी । वह बोली क्या बात हो रही है ?

मैं - “ क़सीदे गढ़े जा रहे आपके । ”

शालिनी - “ कौन गढ़ रहा ? ”

मैं - “ जब दो नव युवक बैठेंगे तब एक परम सुंदरी , परम सुशीला के ही क़सीदे गढ़ेंगे । अब आप के सामने तो अप्सरायें भी पानी माँग देंगी । ”

शालिनी - “ क्या क़सीदे गढ़े गये , मैं भी तो सुनूँ । ”

मैं - “ ऋषभ पूछ रहे कि अगर तुम मेरी जगह होते तब शालिनी से विवाह करते ? ”

शालिनी - “ उत्तर क्या था ? ”

मैं - “ उस प्रश्न का क्या उत्तर दिया जाये जो प्रश्न ही रूमानियत ला दे । ”

शालिनी - “ अनुराग , आईआईटी की सारी लड़कियाँ ऋषभ से विवाह करना चाहती थीं.. ”

मैंने बीच में ही कहा और सारे लड़के शालिनी से ...

शालिनी - “ यह तो नहीं पता । ”

ऋषभ - “ शालिनी सबके लिये एक अजूबा थी । ”

शालिनी - “ अनुराग , पर कोई कम्पीटशन था ही नहीं । ऋषभ के आस - पास भी कोई न था । इसलिये जब यह समाचार फैला की ऋषभ और हम विवाह कर रहे तब लड़कियों में घोर निराशा हुई । ऋषभ को आप जान जाओ तब किसी और के प्रति आकर्षित हो ही नहीं सकते । अब तुम आईआईटी में होते , तुम और ऋषभ दोनों मेरी चाहत रखते तब कुछ बात बनती । यह ख़्याल ही कि मेरी चाहत ऋषभ और अनुराग दोनों के अंदर है , मेरा ख़बाब दो महानायक कर रहे हैं , यह अपने आप में आनंद दे देता । ”

मैं - “ मामला आंटी के पास जाता कि दो बेटों में से एक के लिये शालिनी को चुन लो । ”

शालिनी - “ तब तो एक भी न मिलता । बहुत मुश्किल से माँ जी मानी । मेरे पापा ने सारा मामला ख़राब कर दिया था । मैंने बहुत यत्न करके सँभाला । ”

मैं - “ शालिनी आप से बड़ा कराइसिस मैनेजर कम होगा । ऋषभ ऐसे भविष्यदृष्टा को आपकी ज़रूरत थी । मैं देख रहा हूँ जब आप और ऋषभ इतिहास लिखोगे । ”

मैंने आसमान की तरफ देखा , रात बहुत हो चुकी थी । मैंने कहा , आंटी से मिलकर चला जाता हूँ । मैं आंटी के पास गया । वह बहुत खुश थी । उसका मेरे प्रति अनुराग ऋषभ से कम न था । वह प्रसन्नता से बोली , “ अनुराग अगर मैं न आती तो यह दैवीय क्षण इस जीवन में न मिलता । ”

मैं - “ आंटी आप आयीं , यह बहुत अच्छा हुआ । ”

आंटी - “ अनुराग मेरे मायके ससुराल चलना होगा । ”

मैं - “ ज़रूर चलूँगा । कल आपका कार्यक्रम बनाता हूँ । ”

मैं घर आया तब तक सब लोग सो चुके थे । सुबह माँ की आवाज ...

“ मुन्ना-मुन्ना तोहार फ़ोटो पेपर में बा ... ”

मैं अपने कमरे से निकल कर सीढ़ियाँ उतरने लगा ।

यह ज़िले के सबसे बड़े अधिकारी की पुस्तक का विमोचन कार्यक्रम था जिसमें परदेश के तीन सबसे बड़ी हस्तियों ने शिरकत की थी। कल शाम सबका रास्ता परयाग संगीत समिति की ही ओर था। साहब ने प्रेस की पूरी आवभगत की थी। सारे प्रेस वाले आये थे। विमोचन कार्यक्रम के बाद प्रेस से मुलाकात भी की थी। यह प्रेस के लिये भी एक अवसर था ज़िले के सबसे बड़े अधिकारी को साधने का। अब माखन लाल चतुर्वेदी की तो पत्रकारिता रही नहीं जो सरे आम अधिकारी से कह सके स्पष्ट शब्दों में, मैं जानता हूँ तुम्हारे पास सारी ताक़त है मुझे गिरफ्तार करने और दंड विधान की पेचीदगियों में उलझाने की पर यह मैं जानकर ही लिख रहा। मैं अगर आवाज़ न उठा सका तो पत्रकारिता के धर्म से च्युत हो जाऊँगा। अब यह शहर के स्थानीय समाचारपत्र के ज्यादातर पत्रकार तो सत्ता को साधने में लगे ही रहते हैं, कुछ अपवाद स्वरूप ही हैं जो सत्ता से बेपरवाह रह कह सकें, कबीरा खड़ा बजार में लिये लुकाठी हाथ जो घर ज़ारा आपनो वह चले हमारे साथ।

सारे पत्रकारों ने पूरी निष्ठा सत्ता के साथ दिखायी और मुख्यपृष्ठ को भर दिया विमोचन कार्यक्रम के कसीदों से और चित्रों से ...

कमिशनर इलाहाबाद सत्यानंद की पुस्तक का अप्रतिम विमोचन राज्यपाल रमाकान्त शास्त्री के कर कमलों द्वारा।

न भूतों न भविष्यत् एक साहित्यिक कार्यक्रम शहर इलाहाबाद में ...

पूरा लखनऊ इलाहाबाद में साहित्यकार सत्यानंद मिश्र के कार्यक्रम में ...

मंच पर विमोचन की तस्वीर मुख पृष्ठ पर थी। मैं भी विमोचन कार्यक्रम में पुस्तक हाथ में लिये खड़ा था। मैं भी बहुत प्रमुखता से तस्वीर में था। मेरे यहाँ दो पेपर आते थे, एक हिंदी और दूसरा अंग्रेज़ी का। अंग्रेज़ी का अखबार आता था अंग्रेज़ी सुधारने के लिये, पर अंग्रेज़ी किसी की न सुधारी पेपर का बिल बस बढ़ता रहा। मेरी माँ हिंदी का लिखा तो पढ़ गयी पर अंग्रेज़ी पढ़ नहीं पाती थी इसलिये पूछ रही थी, “का लिखा बा अंग्रेज़ी वाले में?“

मेरे पिताजी बता रहे थे क्या लिखा है अंग्रेज़ी में। दोनों अखबारों में लिखा कमोबेश एक ही था पर उसे पूरा सुनना था। समाचार पत्र ने मेरा भी नाम प्रमुखता से लिख दिया था और मेरे भाषण को बहुत ओजवान और प्रभावी

बताया । उस बोसीदा की गली में हंगामा हो गया , “ मुन्ना की फ़ोटो अख़बार में है । ”

चिंतन सर की युकित काम कर गयी थी । उन्होंने पत्रकारों को साधा था । मेरे बारे में अलग से अंदर के पेज में एक कालम आ गया था । उस पेज में मेरे बारे में लिखने के साथ- साथ मेरे भाषण का अंश भी छाप दिया था और मेरी छपी हुयी फ़ोटो बहुत ही प्रभावी थी .. मंच पर हवा में हाथ लहराता हुआ और नीचे दो लाइन

हे राम कहाँ है वह राज तन्त्र जो लोक तन्त्र से बेहतर था

मुझे अपने अंदर नायक ऐसा गर्व आने लग गया वह तस्वीर देखकर ।

दादू - “ बुआ , काल त मुन्ना भैया कुल मंचै लूटि लेहेन । ”

माँ - “ दादू बोला मुन्ना बहुत अच्छा रहा । ”

दादू - “ बुआ , चाचा - चाची के त करेजा पर साँप लोटि ग होये । बाबा भैया हर बात पर कहत हअ कि मुन्ना के कुछ नाहीं आवत हम कुल जानित हअ कि ओ केतना पानी में हयेन , तकदीर रही होई गयेन नाहीं त ओनके ऐसन के कहाँ लाति लागे इ परीक्षा में । ”

माँ - “ ओनकर जेतना बुद्धि बा ओतनै त बात करिहिं । ”

दादू - “ अब रबड़ छाप बुद्धि के मनई के बातौ त ओइसै होये । ”

एक फिर मौक़ा आ गया मेरे घर पर लोगों के आने का । यह शायद उपलब्धि करम की विकास यात्रा थी । मैं यात्रिक होटल गया दादू को लेकर , दादू भी एक अलग धरातल पर था आज । मुझसे जुड़े हुये लोग आज एक गैरव को आभासित कर रहे थे । मैं आंटी के पास गया । वह भी पेपर ही पढ़ रही थी । उसने हर बार की तरह अपने दोनों हाथों से मेरा सिर पकड़ कर मेरा माथा चूमा । मैंने उससे कल उसके मायके - ससुराल चलने की बात कही । उसने पूछा ऋषभ- शालिनी को तो ले चलूँगी , पर शालिनी की माँ का क्या करूँ ?

मैं - “ उनका कहाँ ढोकर ले चलेंगी । वह एक अलग समाज की हैं । वह पता नहीं क्या सोचें वहाँ का माहौल देखकर । ”

आंटी वैसे ही बहुत समझदार थी , वह मुझसे बस पूछ रही थी । वह उचित फ़ैसला ली ही होगी । इतने में शालिनी की माँ आंटी के कमरे में आ गयी और

पूछा , “ अनुराग बेटा वह जो कल फ़ोटो खिंची है सबके साथ वह कब मिलेगी ? ”

मैं “ आंटी , आजकल में मिल जायेगी । आपको बताता हूँ शाम को । ”

शालिनी की माँ “ बेटा हो सके तो तीन- चार कापी मेरी हर फ़ोटो की करा देना । ”

मैं “ ज़रूर आंटी । ”

मैं वहाँ से यूनिवर्सिटी रोड आया । मैं बहुत से लोगों से कल मिला ही न था । मैं सीधा एएनझा होस्टल में अमर गुप्ता सर के पास गया । वह बाराबंकी से आये थे । मुझको देखते ही बोले , “ अनुराग तुम तो बहुधंधी हो यार । सारी फ़राड़गीरी तुमको आती है । सब रेल मारा मंच से कि सारी खोज विमान , शस्त्र , आयुध , न्यूक्लियर वीपन , अणु- परमाणु- रेडियोधार्मिता - रेडियो एक्टिविटी सब कणाद , भरद्वाज , वशिष्ठ कर गये थे । यह पश्चिम वाली सारी खोजें फ़राड हैं । यह बताओ कल चिलम लिये थे कि कोई अंगरेज़ी बरांड ले लिये थे । हम लोग बेमतलब के विज्ञान पढ़ा , असली विज्ञान तो कल तुमने पढ़ाया । तुम यह बताओ यहीं सब तो नहीं पढ़ा रहे कोचिंग में ? ऐसा मत करना । यह सब लिख देंगे तब दुई हज़ार रुपिया लेकर तुम तो निकल लोगे पर यह सब बेचारे शून्य की तरफ़ ही निहारेंगे । ”

मैं “ सर , सुबह से कोई मिला नहीं क्या ? ”

अमर गुप्ता- “ मिले तो कई पर तुमसा कोई न मिला । एक बात है , हो तुम बहुत बड़े छोड़ू । ऐसा छोड़ते हो कि लपेटने वाला लपेट ही न पावे । तुम शहर के असली सलोथर बकैत हो । यह बताओ , मंच से कितना बोलना था ? जितना सब बोले उससे ज्यादा तुम अकेले बोले । जब तुम्हारा भाषण खत्म हुआ तब हम कहे बद्री से यह मध्याह्न है । यह अभी पानी वानी पीकर फिर बोलेगा , पर तुम तो बैठ

गये । राम प्रकाश सिंह सर जब अंतिम समय

समापन की घोषणा करने आये तो हमको लगा वह कहने आ रहे हैं अब आपका इंतज़ार खत्म हुआ , अब अनुराग के भाषण का बचा हुआ भाग आप सब सुने । पर ईश्वर दयालु था खाना पानी मिल गया । अब आप खाना खिला रहे इसका मतलब यह तो नहीं कि आप हमारा मानसिक शोषण के साथ-साथ अत्याचार भी कर दो । मैं किसी ऐसे फ़ालतू विमोचन समारोह में नहीं जाता । इन सारे विमोचन समारोह में केवल एक काम होता है .. लिखने वाला कबीर होते - होते रह गया पर है आस- पास ही । मेरा काम तो यार हुआ नहीं । ”

मैं - “ सर थोड़ा चाय - पानी कर लीजिये । आप तो पिल पड़े । अब अगला आक्रमण चाय पीकर करिये । ”

अमर गुप्ता - “ चलो सुभाष के यहाँ चाय पीते हैं । पर तुम बोले अच्छा , थोड़ा और वक्त मिला होता तुमको बोलने का तब अंबेडकर साहब के संविधान सभा के भाषण की तरह तुम्हारा भाषण होता । ”

मैं “ क्या सर .. । ”

सर हँसने लगे । इतने में एक लड़का बगल के कमरे से आ गया । वह मुझको देख रहा था । सर ने कहा , “ ठीक से देख लो , नहीं तो चुटकी काट के देख लो । यह वही हैं जो कल मंच पर अंगद की तरह पैर जमा कर खड़े हो गये थे । ”

सर फिर हँसने लगे और बोले जाओ ज़रा राजेश्वर को बुला लाओ .. बता देना .. महान पराक्रमी , मंच मर्दन , वाचाल , शहर गौरव , हिंदी प्रबोध , इतिहास मर्मज्ञ , संस्कृति संरक्षक

अनुराग शर्मा आये हैं और वह भागते हुये आयेंगे ।

मैंने सर के पाँव पकड़ लिये , सर अब और लोगों के सामने हुज्जत मत करियेगा मेरी ।

सर - “ यार अभी तो कुछ कहा ही नहीं । मैं तो तारीफ़ ही कर रहा । ”

इतने राजेश्वर सिन्हा आ गये । सर ने कहा , देखो सही कहा था न .. यह भागते हुये आ गये । अरे भाई पैजामा पहन लो चलते हैं बाहर का नजारा देखते हैं ।

हम लोग बाहर आये । ए एन झा से सीधी सड़क से क़रीब 300 मीटर पर सुभाष की चाय की दुकान थी । चार होस्टल इर्द - गिर्द में थे - सर एन झा , सर सुंदर लाल , सर पीसी बनर्जी , सर जी एन झा । इस रोड का आलम ही अलग रहता है हर वक्त । छात्रों की भीड़ ही भीड़ रहती है , ख़बाब हर ओर बिखरे रहते हैं । एक के आँखों का ख़बाब दूसरे से कुछ ख़ास भिन्न नहीं होता । एक रक्स होता रहता है हर एक की आँखों में ख़बाबों का और एक अज़ली तरन्नुम हर ओर शांत माहौल में न बजकर भी वातावरण को आङ्गादित करती रहती है । मुझे आज महसूस हुआ वाकई मैं वह अब न रहा जो पहले था । जितने लोग वहाँ पर थे वह सब मुझे ही देख रहे थे । समाचार पत्रों ने मेरी कोचिंग के बारे में भी लिख दिया था । लोग मेरी क्लास करने की इच्छा ज़ाहिर कर रहे थे । मैंने सबसे कहा , जरूर आइये । अमर गुप्ता सर बोले , “ अनुराग मज़ाक़ की बात तो अलग है पर मुझे बहुत गर्व हो रहा तुम पर । जो-

जो काम तुमने किये वह सब कोई सोच नहीं सकता था । तुमने एक नयी दिशा दी है और एक ऐसा मानदंड बना दिया है जिस पर चलना तो दूर की बात उसकी कल्पना करने का साहस करना भी आसान न होगा । इस शहर ने बहुत से आईएस को बनाया और आगे भी बनायेगा पर आईएस बनने के बाद क्या किया जाये यह सिफ्ट तुमको आता है । राज्यपाल जी ने कहा, मैं तुम्हारी माँ के दर्शन करना चाहता हूँ । अनुराग मैं भी यही कहूँगा, मैं भी उनसे मिलना चाहता हूँ एक बार फिर और पूछूगा माता जी आपने क्या खाया था इसके प्रसव के दौरान । अनुराग एक बात कहूँ... यह बहुत गौरवशाली क्षण था कल जब तुम बोल रहे थे । तुमने सब का ख्याल किया, सबको आमंत्रित किया जो चयनित हुये थे । उनको सम्मान दिया और नागरिक अभिनंदन कराया वह भी तब इन ज्यादातर चयनित लोगों का व्यवहार तुम्हारे साथ अच्छा न था । “

मैंने पहली बार यह महसूस किया कि कितने संजीदा व्यक्ति हैं सर । एक मज़ाकिया स्वभाव के व्यक्ति के अंदर कितनी गंभीरता है । पर वह अपने रौ में फिर वापस आ गये ।

अमर गुप्ता- “ यार मेरा काम तो हुआ नहीं, मैं बाराबंकी से आया, पर जो सोचकर आया वह तो हुआ नहीं । ”

मैं “ क्या नहीं हुआ सर ? ”

अमर गुप्ता- “ यार मैं तेलू आदमी हूँ । मेरे चेहरे से ही लगता है कि यह एकाध किलो तेल तो लगा मारेगा, अगर कोई काम का आदमी मिला । कमिश्नर साहब से मिलवाओ, थोड़ा तेल- पानी लगा दें । क्या पता कब काम पड़ जाये । अब तुम्हारे तो वह बहुत ही खास हैं । बस मिलवा दो, तेल- पानी मार कर चलें अपने तहसील । डीएम चिकचिक कर रहा था छुट्टी पर लेकिन कमिश्नर साहब व्यक्तिगत रूप से बुलाये हैं यह सुनकर छुट्टी दे दिया इस शर्त पर कि अगले दिन आ जाना । वह जानता है कि मैं आता हूँ तब एनझा से जाने का नाम नहीं लेता । ”

मैं - “ ठीक है सर । ”

लोग इकट्ठा होने लगे । मुझे शाम की क्लास लेनी थी । मैं बगैर पढ़े क्लास लेता ही नहीं था । मैं घर जाकर पढ़ना चाहता था । वहाँ से सीधा घर आया और शाम का लेक्चर तैयार करने लगा । मैं शाम को कोचिंग पहुँचा । आज वहाँ और भीड़ थी । समाचारपत्र ने बात को और विस्तारित कर दिया था । मैं घर पहुँचा तो देखा, सुरुचि मिश्रा के पिताजी मेरे घर पर पिताजी के पास आये थे ।

मैंने सुरुचि के पिता श्री श्याम मिश्र जी को प्रणाम किया । विमोचन समारोह के बाद बहुत से लोग मुझसे मिल रहे थे । उसमें से कुछ लोग बधाई देने के लिये और कुछ लोग अपना काम निकलवाने के लिये । यह इलाहाबादी होते बहुत चालू हैं । यह कोई आसान चीज़ है नहीं । इनको काम कैसे निकाला जाता है खूब आता है । मेरे मकान के सामने राम लाल थे । वह पोस्टमैन थे , वह दिन - रात इसी बात पर लगे थे कि मेरा ट्रांसफर प्रतापगढ़ से इलाहाबाद करा दिया जाये । अब मुझको पता ही नहीं यह ट्रांसफर होता कैसे हैं पर वह दिन - रात मेरी माँ की तामीरदारी करते रहते थे । माँ भी कम न थी , वह बयाना से लेती थी । उसने मुझसे कहा , ”मुन्ना केहू से कहअ एनकरे बरे । एनकर बच्चा लोग छोट हयेन बहुत दिक्कत होत बा एनका । कुछ धरम के काम करब ज़रूरी बा ।“

सीमेंट मिलती थी परमिट से । परमिट सबको मिलता नहीं था इसलिये ब्लैक का बाजार तेज था । मेरे सामने के महाजन कह रहे , “मुन्ना भैया बीस बोरी सीमेंट के पर्ची दियाअ द ।“

गैस कनेक्शन मिलता न था । मेरे घर खाना चूल्हे पर बनता था । मेरी बहन कह रही , “भैया गैस का कनेक्शन मिल जाता तो आराम हो जाता । मामा के यहाँ गैस है कितनी सुविधा है धुँआ नहीं होता और जल्दी खाना बन जाता है ।“

मुझे समझ नहीं आ रहा मैं इस नयी विपत्ति से कैसे निपटूँ । हर एक की खाहिश का बोझ इस कमजोर काया के ऊपर अवस्थित कंधों पर जो दिखने में तो कमजोर ही है , मैं चाहे जितनी मज़बूती का दावा करूँ ।

मुझे थोड़ा आश्चर्य तो हुआ उनको देखकर अपने घर पर । मेरी उनकी बात भी बहुत अच्छे माहौल में न हुई थी जब मैं उनके घर गया था पर वह बात मैंने भुला दी थी , हलाँकि अशोक कहता था मैं रात को इनके घर पर ढेला मारकर आऊँगा । मुझे लगा कि यह मिलने आये होंगे शायद बधाई देने मेरे चयन पर , हो सकता है यह भी कहने आये हों कि अच्छा बोला आपने विमोचन के दिन । मैं अपने कमरे में ऊपर चला गया । मैं आंटी के पास जाना चाहता था । यह कार भी वापस करनी थी । यह इतने दिन से मेरे पास है और मेरी साइकिल पता नहीं किस हाल में होगी । मैंने दाढ़ को आवाज़ दिया वह ऊपर मेरे पास आया ।

मैं - “ चलो दादू यह कार वापस कर देते हैं और अपनी साइकिल ले आते हैं । यह दूसरे की कार तब तक रखेंगे । ”

दादू - “ काहे मुन्ना भैया ? अबहिं न दअ । जब शांति बुआ चली ज़इहिं तब देहअ । अबअ त काम बा न । ”

मैं - “ अब कौन सा काम है ? ”

दादू - “ गाँव चलई के बा । शांति बुआ के ससुरारी जाई के बा । ”

मैं - “ है तो दो कार ऋषभ की । उसी से चलेंगे । चलो पूछ तो लें कि इस कार का करना क्या है । ऋषभ सोच रहा होगा कि कार मिली लेकर दौड़ाये पड़े हैं । ”

इतने में माँ की आवाज़ आयी , “ मुन्ना नीचे आवअ । ”

मैं - “ यार दादू तुम्हारी बुआ हरदम आग लगाये रहती है और वह चाहती है मैं दमकल लेकर हर समय मौजूद रहूँ । चलो नीचे नहीं तो पूरा मुहल्ला जान जायेगा वह आवाज़ दे रही मुझको । ”

मैं नीचे आया । मेरी माँ के चेहरे पर एक अलग प्रसन्नता थी । वह बोली , “ सुरुचि के पापा आए रहेन । ”

मैं - “ देखा तो वह हैं कि गये ? ”

माँ - “ अबहिं- अबहिं गयेन । ”

मैं - “ बहुत बेकार आदमी हैं । बहुत ग़लत ढंग से बात किये थे अशोक से उस दिन । इनकी पत्नी ने आकर मामला सँभाला नहीं तो बहस हो जाती । ”

माँ - “ अरे ओ आई रहेन बियाहे बरे । ”

मैं - “ किसका बियाह ? ”

माँ - “ सुरुचि के बियाह तोहसे करा चाहत हयेन । ”

मैं - “ अच्छा तो है जोड़ का समधी तुमको मिलेगा । इनका भी दिमाग़ हरा हो जायेगा ऐसी समधन पाकर । पर पिताजी के लिये समस्या होगी । यह बेचारे बहुत सज्जन है । यह ऐसे समधी लायक़ नहीं हैं । इनको थोड़ा मितभाषी सज्जन समधी चाहिये । ”

माँ - “ मुन्ना गाँव के कहावत बा , घूरौ के दिन लौटत हअ । अगर एकर वाक्य प्रयोग करै के होये त तोहरे पर एकदम सटीक बैठत बा । आज से एक- डेढ़ महीना पहिले तोहार कौनौ आसरा नाहीं रहा आज तोहसे लोग आसरा माँगत हयेन । जौन हिंदी माध्यम के लड़िका के कौनौं पुछवार नाहीं रहा ओकरे नाम के आज सिक्का चलत बा । सुरुचि- प्रतीक्षा ऐसन क़ाबिल लड़कियन के बाप तोहरे बरे कल्पत हयेन । भगवान जब देत हअ तब छप्पर फाड़ि के देत

हअ , तोहका त आसमान फाड़ि के दै देहे बा । हम कई बार सोचित थअ कि इ सपन त नाहीं बा कि आँख खुलि और सब हेराई गवा । “

वह गंगा की दिशा की तरफ मुड़ गयी और प्रणाम करके बोली , “ सब गंगा मझ्या के किरिपा बा । ”

मेरी भी उत्सुकता जग चुकी थी । सुरुचि का इलाहाबाद में बहुत नाम था । वह जब एसएमसी में थी उसने तब ही कह दिया था कि मैं आईएस बनना चाहती हूँ और बीए प्रथम वर्ष में वह विश्वविद्यालय में टाप करने के साथ ही विख्यात हो गयी थी । मैंने उसको पहले कभी न देखा था पर लोग उसको देखने जाया करते थे । ऐसी प्रशस्ति गाथा की नायिका का प्रस्ताव निः संदेह धड़कनों को तेज कर ही देगा ।

माँ ने पिता जी से पूछा , “ का कहेन ओ ? ”

पिताजी -“ ज्यादा नहीं कहे कुछ बस यही कहा कि अब इलाहाबाद का लड़का मिल जाये तो कितना अच्छा है लड़की मायके - ससुराल दोनों आराम से आती - जाती रहेगी । सजातीय क्राबिल लड़का मिल गया है । ईश्वर की कृपा है दोनों एक साथ ही चयनित हो चुके हैं । अगर यह रिश्ता बन जाता तब मेरे लिये इससे बेहतर और क्या हो सकता है । हमारे -आपके कई परिचित कामन है । यह शहर है ही कितना बड़ा सब एक दूसरे को जानते ही हैं । आप विचार कर लीजिये इस प्रस्ताव पर , मेरी लड़की की फोटो - कुंडली - बायोडेटा आप रख लीजिये घर में विचार कर लीजिये फिर मैं आता हूँ दो- चार दिन में । अगर हम लोग वरीक्षा इन दोनों के एकेडमी जाने के पहले ही कर दें तब वह बहुत बेहतर होगा , बाकी जैसा संयोग होगा वह होगा । मेरी जो सोच है मैंने आपको बता दी , अब आप जैसा निर्देश करेंगे वैसा करूँगा मैं । ”

मैं - “ पिताजी ऐसा वह बोले ? ”

पिता जी - “ हाँ । ”

मैं - “ वह किसी से लिखाकर लायेंगे यह बोलना । वह तो सरे आम लाठी लिये खड़े रहते हैं , जो भी लड़का घर के आस- पास दिखा ठोक दिया । यह और अशोक तकरीबन लड़ गये थे अगर सुरुचि की माँ न बीच में आ गयी होती । ”

माँ - “ लड़की के विवाह में आदमी विनम्र ही हो जाता है । तोहू के बहिन के बियाह करै के बा , हलाँकि तू हअ विनम्र पर तोहका अवसर बा सीखै के कि कैसे बात- चीत के जात हअ बियाहे में । ”

पिता जी ने कहा कि साहब के पिताजी कहे थे आने को । वह भी आ रहे होंगे । थोड़ी देर में वह आ गये अपने दोनों बेटों के साथ । उन्होंने पिताजी से कहा , “ अनुराग की माँ को भी बुला लो । मैं उनसे भी अपनी दरखास्त दे देता हूँ । ” पिताजी ने माँ को आवाज़ दी , वह तो तैयार बैठी ही थी ।

कमिशनर साहब के पिताजी - “ बहन जी यह बिना माँ की बच्ची है । इसको सदानंद ने ही पाला है । यह अपनी भाभी के ही साथ रही है । हर पिता अपनी बेटी की तारीफ़ करता ही है और विवाह - संबंध में यह सब एक रिवाज़ की तरह है । पर मैं कोई तारीफ़ न करूँगा , मैं आप पर छोड़ देता हूँ कन्या के गुण- दोष का फ़ैसला । मैं यह भी स्वीकार करूँगा कि अनुराग ऐसे व्यक्तित्व के लिये उसके अनुरूप लड़की मिलना आसान न होगा । सत्यानंद ने भी मुझसे कहा कि मैंने इतने लड़कों को अपने जीवन में देखा है , हर साल ही देखता हूँ जो भी आते हैं एकेडमी से पर अनुराग विलक्षण है । अब ऐसे विलक्षण लड़के को अपनी लड़की कौन नहीं देना चाहेगा । बहिन जी जब मैं गाँव से आया था तब सत्यानंद ने कहा था कि दो- तीन लड़के मेरी नज़र में हैं आप देख लो और जिस पर आप कहोगे उस पर बात चलाकर मामले को अंजाम दे देते हैं । पर अनुराग को जान जाने के बाद मैं किसी और को अपनी बेटी के पति के रूप में स्वीकार करने की मनोदशा में नहीं हूँ । मैं बहुत ही स्पष्टवादी हूँ , मैं बगैर लाग- लपेट के अपनी बात कहता हूँ । इलाहाबाद शहर में विवाह में दहेज की प्रथा है , मुझे इस प्रथा की जानकारी है । अगर आपकी कोई इच्छा उस मुद्दे पर हो वह भी मैं पूरी करने की कोशिश करूँगा । ”

देवानंद - “ आंटी जी , आपको किसी ओर से कोई निराशा नहीं होगी । हर लड़की का पिता की संपत्ति में हक़ होता ही है । हम दोनों भाइयों को ईश्वर ने शक्तिमान बनाया है , आप निश्चिंत रहें उन सब रिवाजों की प्रक्रियाओं से । मेरी बहन को आपका घर मिले , आपका आशीर्वाद मिले , उसे अनुराग ऐसा पति प्राप्त हो , वह आपका सानिध्य प्राप्त करके सौभाग्य को प्राप्त करें यह महत्वपूर्ण है बाक़ी रीति- रिवाज आप जैसा चाहेंगे वैसा सब हो जायेगा । ”

मेरे पिताजी ने असीम परिपक्वता का परिचय दिया । वह शांत दिखते थे और थे भी पर वह सिंधु की तरह गंभीर थे और उनकी परिपक्वता की गहराई का अंदाज़ा लगाना आसान न था ।

पिताजी - “ आप का प्रस्ताव जिसके पास भी जायेगा , वह धन्यता को प्राप्त करेगा । मैंने आपकी सुंदर- सुशील कन्या को देखा भी कल । मैं एक सलाह देता हूँ आपको । बेटी के पास भविष्य है । वह मेंस दे रही है और उसके चयन की संभावना है । अभी विवाह की बात करके उसका मस्तिष्क को हम लोग दिग्भरमित न करें । अगर हम लोग विवाह तय कर दें अभी , मैं अनुराग को जानता हूँ , इसने आज तक लड़की देखी ही नहीं है । इतनी सुंदर भावी पत्नी

को देखकर यह उसको पढ़ने ही न देगा । मैं जानता हूँ यह किस तरह से जीवन को लेता है ।”

देवानंद हँसने लगे और कहा , “ अंकल जी ठीक तो है । यह पढ़ायेंगे । यह पूरी दुनिया को पढ़ा रहे हैं, अब पत्नी को तो पढ़ायेंगे ही ।”

पिताजी - “ यह कुछ नहीं पढ़ायेगा । यह माँ- बेटा मिलकर उसको किसी और दुनिया में लेकर चले जायेंगे । मैं अनुराग का विवाह अभी कर नहीं रहा । आप मेंस की परीक्षा प्रतीक्षा को दे देने दीजिये । नवंबर में परीक्षा है उसके बाद बात करते हैं । ”

प्रतीक्षा के पिताजी - “ विवाह तय कर देते हैं, नवंबर के बाद विवाह कर देंगे । ”

पिताजी -“ मेरी राय है इस मुद्दे को अभी विराम पर रखते हैं । किसी भी तरह का मानसिक भटकाव परीक्षा के क्षणों में उचित नहीं है । मैंने अनुराग की साधना देखी है, उसी तरह की साधना की आवश्यकता प्रतीक्षा को है । हम लोग उसकी तैयारी में सहयोग करें । जब भी अनुराग का विवाह करूँगा मैं सबसे पहले आप के प्रस्ताव पर विचार करूँगा । हम लोग नवंबर में इस पर विचार करते हैं, यह मेरा मत है बाकी आप जैसा कहें । ”

कमिश्नर साहब - “ बाबू जी आप की बात उचित है । नवंबर में है ही कितना दिन, अगस्त तो आ ही गया है । मेरा एक अनुरोध है कि मेरे प्रस्ताव को विचार थोड़ा सहदयता से करें और अगर कोई भी मुद्दा बाधक दिखता है तब मुझे उस मुद्दे को सुलझाने का अवसर दें । ”

माँ - “ भैया , तोहरे इहाँ बियाह करै बरे सब लोग लालायित होइहिं । अब यह हमारा भाग्य है आप लोग आये । ”

कमिश्नर साहब - “ माता जी सब लोग हमारे यहाँ लालायित हैं विवाह को यह तो मुझे नहीं पता पर मैं बहुत लालायित हूँ आपके यहाँ विवाह करने को । ”

माँ - “ भैया इ तोहार बड़प्पन है । ”

कमिश्नर साहब के पिताजी - “ यह फोटो- कुंडली वापस कर दी थी वह आप रख लें । आप चाहें तो कुंडली मिला लें । ”

पिताजी - “ मेरा कोई खास विश्वास कुंडली में है नहीं और अनुराग गाँव में जन्मा था । उसके जन्म के समय किसी ने घड़ी देखी नहीं इसलिये उसके जन्म का समय ही नहीं पता । जब जन्म का समय ही नहीं पता तब कुंडली कैसे बनेगी । आप दे दें फोटो- कुंडली में रख लेता हूँ । ”

इसके बाद विवाह की बात बंद हो गयी । विमोचन कार्यक्रम चर्चा में आ गया । वह सब कार्यक्रम से बहुत खुश थे और यह भी कहा कि अनुराग ने बहुत

मेहनत की और कई तरह की छोटी- छोटी बातों का ध्यान रखा । कमिश्नर साहब ने कहा कि मुझे बहुत फ़ायदा हुआ भाषण में अनुराग की सलाह मानकर । अनुराग ने मेरा भाषण इस तरह तैयार कराया कि वह किसी और के भाषण से साम्यता न रखे । उन लोगों ने चाय पी । देवानंद ने माँ से कहा कि अनुराग से कहना मैं मिलना चाहता हूँ । हो सके तो कल सुबह आ जाये । माँ ने कहा , वह कल ज़रूर जायेगा आप से मिलने । वह लोग चले गये ।

उनके जाने के बाद में एक अलग हलचल सुरुचि- प्रतीक्षा का तुलनात्मक अध्ययन ।

दादू माँ से बोला , “ बुआ ज़रा चाचा के इहाँ जात हई । बताई देई ख़बर , आज रात त नींद न आये ओनका इ सब सुनि के । ”

माँ - “ जा , पर कब अउबअ वापस ? ”

दादू -“ बुआ भिंसार होतै चलि देब । ”

दादू मेरे पास आया और बोला , “ जाति हई चाचा के इहाँ । आप चला जा यातिरक होटल । हम भिंसारे आउब । ”

मैं - “ ठीक है जाओ , यह कार ले जाओ तुमको छोड़कर आ जायेगी । ”

वह मामा के यहाँ चला गया । वह एक योजना लेकर गया था । वह अपनी चाल चल रहा था । उसके गाँव का खेत जोतने का दिन नज़दीक आ रहा था । वह मामा के यहाँ पहुँचा । मामा के यहाँ अभी तक विमोचन कार्यक्रम की ही चर्चा थी कि साहेब ने क्या कार्यक्रम किया । दादू एक गुप्तचर था हर व्यक्ति का । हक्कीकत में वह समाचार फैलाने वाला व्यक्ति था पर वह अपने को गुप्तचर मानता था और लोग उसे कासिद की तरह देखते थे ।

दादू ने पहुँचे ही दुआ- सलाम के बाद कहा , “ चाचा कुछ ख़बर बा ? ”

मामा -“ हमका कैसे ख़बर होये , हम त कर्मचारी हई साहब लोगन के । अब मुन्ज राहेबई होई ग हयेन । अब तू ह साहब के मन्त्री जौन सूचना देबअ तौन लै लेब । ”

दादू - “ चाचा अपने सिपाही से ऐसन न कहअ । ”

मामा -“ हमार सिपाही हर रात चिराग बुझतै ख़ेमा बदल देत हअ । इ केहू के नाहीं पता बा कि इ सिपाही बा केकर । तोहू के नाहीं पता बा तू केकर सिपाही हअ । जहाँ मौक़ा मिला उहीं के वर्दी पहिन के सैलूट मारि देहअ । बतावअ का ख़बर बा । ”

दादू - “ चाचा बुआ के त तकदीर राजधानी एक्सप्रेस के तरह भागति बा कतौ स्टापेज लेतै नाहीं बा । ”

मामा - “ का भवा ? ”

दादू - “ अब खानदान में आईएस बहू आवर्झ के तैयारी करअ । ”

मामी - “ पहेली न बुझावअ , साफ- साफ बतावअ । ”

दादू - “ सुरुचि मिश्रा के नाम सुने हअ ? ”

मामा - “ हाँ , उहै जौन आईएस भई बा इहिं साल मुन्ना के संगे । ”

दादू - “ हाँ चाचा , ओकर और मुन्ना के संबंध के बरे सुरुचि के पिताजी आई रहेन । ”

मामा - मामी थोड़ी देर के लिये शांत हो गये , उनको विश्वास नहीं हो रहा था । मोहिता दीदी ने कहा , “ मुन्ना के तकदीर तो लगता है विधाता ने कई बार लिखी है , एक बार में इतना लिखा नहीं जा सकता । ”

मामी - “ हमरे बच्चन के तकदीरों विधाता मुन्नवै में लिखि देहेन । परिवार में तकदीर बाँट देहे होतेन । एक के सब दै दअ और बाकी के झौका से तोपि दअ इ कहाँ के नियाय बा । उर्मिला के कुल दै दअ , जैसे ओ अकेलै भगवान के भवितन हईं और हम सब हत्यारिन हईं उहौं गाय के हत्यारिन । ”

दादू - “ चाची एक और खबर बा ? ”

मामी - “ इहौं खबर उर्मिलै के तकदीरै के होये , हमरे नसीब में त सुनई के लिखा बा , भोगै के त कुछ बा नाहीं । का खबर बा ? ”

दादू - “ कमिशनर साहब आई रहेन अपने बाप और भाई के संगे । फ्रोटो-कुंडली लै लेहेन फूफा और कहेन नवंबर के बाद बात करब । साहेब के पिताजी कहेन कि हम बियाह मुन्नै से करब चाहे जेतना दहेज लागे सब देब । ”

मामा - “ साहब कहेन दहेज देब । ”

दादू - “ चाचा तू त जानत हअ कि हम एकदम खाँटी खबर देइत हअ । हमार अफ़वाह से कौनौं लेना - देना बा नाहीं । हम खबर बस तोहका देइत थअ बाकि लोग पूछत मरि जात हअ हम बताइत नाहीं । बुआ के खबर न होई पावै कि हम खबर लीक कै दिहा । बुआ के अंदर कुछ पचत नाहीं उ खुदै बताये । ”

मामी - “ ममिओरे के कौनौ इज्जत नाहीं राखिन उर्मिला । अगर इ रिश्ता मामा के माफ़त होई जात तब का ख़राबी होत । मामा के मान रहि जात पर नाहीं मामा के कौनौ इज्जत काहे मिल जाई । इ सब उर्मिला के चाल रही । ऊ पूर मंथरा बा ।

बाबा भैया - “ अम्मा हम पचे बराती के नाहीं बस बरात में चली बाकि हमसे का मतलब । मैं तो बारात में नहीं जाऊँगा , जहाँ पिताजी का मान न रखा जाये , वहाँ क्यों जाना । ”

मामी - “ हाँ तू बियाहे में न जाबअ तब ओकर बियाह न होये । आज के पेपर खोलि के पढ़ लअ । मुन्ना केतना बड़ा आदमी होई ग बा पता चलि जाये । केहू से कहि न देहअ इ बात । दाढ़ , तू कहि न देहअ उर्मिला से ऐनकर बेवकूफी । उर्मिला सींग लेहे लड़ाई बरे तैयार रहत हअ हमेशा अब त बेटवा के नाम के नशा सवार होई गवा बा । पता नहीं कब बाबा के अकल आए । ”

दाढ़ - “ चाचा चलअ तोहार गोड़ मींज देई ।”

मामा -“ खाना खाई लअ पहिले ।”

दाढ़ - “ ठीक बा चाचा । ”

मामा - “ दाढ़ ... । ”

दाढ़ - “ हाँ चाचा । ”

मामा -“ बहुत दुःखी हई आज । ”

दाढ़ - “ काहे चाचा । ”

मामा -“ हमार कौनौ इज्जत नाहीं रहि गई । साहब का सोचिहिं हमरे परिवार के बारे में । हम रिश्ता लै के गये तब दुकराई देहेन और साहेब आयेन तब स्वीकार करत हयेन । का ज़रूरत रहा फ्रोटो- कुंडली लौटावई के । हमार भयने हअ । हम जैन कमरा में रहत रहे गाँव में उहीं कमरा में उ जन्मा रहा । बचपन में ननिओरे में पला बा । माई के बहुत नज़दीक रहा मुन्ना । आज माई रही होत तब हम ओसे शिकायत करित पर अब हम केसे शिकायत करी । के बा हमार सुनै वाला । हमार भयने बा पर हमार कौनौ हक्क नाहीं बा । हमार एतना अपमान आज तक कभी नाहीं भवा । भगवान धरती फाड़ देतेन हम इहीं में समाई जाइत । परिवार में ऊँच- नीच होत रहत हअ पर ऐसन न करई चाही कि हम कतौ मौंह देखावई लायक न रही । ”

मामा एक बच्चे की तरह भोंकार छोड़कर रोने लगे ।

मामा का रुदन पूरे घर को गमगीन कर गया । वह बहुत ही आहत थे । उनका लाया प्रस्ताव उनकी तमाम कौशिशों के बाद भी अस्वीकार कर दिया गया और वही फिर से पुनर्विचार के लिये स्वीकार किया गया । वह घर के सबसे क़ाबिल व्यक्ति थे । वह मेरी माँ से कई साल बड़े थे । मेरी माँ विवाह के पूर्व कई साल उनके साथ रही थी और वह जहाँ-जहाँ दरांसफ़र पर जाते थे वह साथ जाती थी । मेरी माँ को उनसे शिकायत हो सकती है और माँ से उनको पर कच्चे रेशम को पकाकर बनाये गये धागे इतने कमज़ोर होंगे इसका अंदाज़ा उनको न था । उन्होंने जब थोड़ा अपने को सँभाला तब कहना आरंभ किया , “ विवाह करना न करना एक अलग फ़ैसला होता है , मुझे उस फ़ैसले से कोई ऐतराज नहीं है । यह फ़ोटो- कुंडली वापस न किये होते । उसको घर में रहने दिये होते । कलेक्टरेट में कोई बात छिपती नहीं , यह भी नहीं छिपेगी । मेरी क्या इज़्ज़त रह जायेगी । मेरा भयने है यह सब कहते हैं और है भी । मामा का ज़ोर होता ही है भयने पर यह सब करके शर्मा जी ने ठीक नहीं किया । उर्मिला को समझ नहीं है पर शर्मा जी तो समझदार हैं । ”

मोहिता दीदी - “ पिताजी , जो हो गया से हो गया । अब इसको सोचकर आप दुःखी न हों । ”

मामा डाइनिंग टेबल पर सजा खाने को तैयार न थे । बड़ी मुश्किल से कुछ खाया । वह बहुत आहत थे । उन्होंने बहुत प्रयास किया था कि फ़ोटो- कुंडली वापस ले ली जाये और अभी विवाह के प्रस्ताव को ना न कहा जाये पर मेरी माँ बिल्कुल न मानी । पर आज कमिश्नर साहब से बहुत प्रेम से वार्तालाप हुआ , न केवल फ़ोटो-कुंडली रख ली गयी बल्कि विवाह के प्रस्ताव पर एक सकारात्मक चर्चा भी हुई । वह खाने की मेज़ से अपने कमरे में चले गये । मोहिता दीदी ने दाढ़ु से कहा कि तुम जाओ थोड़ा पिताजी का मन बहलाओ , कोई और बात करके । दाढ़ु मामा के पास गया ।

दाढ़ु - “ चाचा द तोहार गोड़ मींज देई । ”

वह पैर दबाने लगा ।

मामा - “ दाढ़ु , चलअ अब जौन भअ तौन भअ । तू सही कहे रहअ कि मुन्ना के बियाह हमरे पचन के सीमा के बाहर जाई चुका बा । कालि हरिकेश से कहि देब कि अपने बिटिया के बियाह कतौं और देखब शुरू करौं । मुन्ना से बियाह अब ओनके हैसियत से बाहर होई ग बा । ”

दाढ़ु - “ चाचा , हरिकेश मामा के बियाह ठीक बा । बेबी ज़इंहिं बुआ के इहाँ तब हमार पांच के आउब - जाब बना रहे । ई प्रतीक्षा- सुरुचि से बियाह होई

जाये तब समाजै अलग होई जाये । हम पचे केसे बतियाब और का बतियाब ।
“

इतने मामी भी कमरे में आ गयीं । वह बोली , “ हमार पचन के बात त छोड़ दअ , उर्मिला का बतियहिं ओनसे । उर्मिला के कौन सहुर बा । उर्मिला के लड़ाई करै के सिवा और आवत का हअ । अगर होई ग बियाह प्रतीक्षा-सुरुचि में से केहू से तब देखब , हमहूँ इहिं रहब और तुहूँ । हम सब देखब उर्मिला रकत के आँसू रोझिं जब पतोहू डंडा लै के दौड़ाए । ”

दादू - “ चाची मुन्ना के रहत ऐसन न होये । ”

मामी - “ हमारौ उमर बीति गै बा दुनिया देखत- देखत / बड़े- बड़े तीस मार खाँ के जोर्क के गुलाम होत देखे हई । अपने भाई झुलई के देख लअ । ओ कैसन तीस मार खाँ रहेन पर अपने ससुर हरी मनी मिशरा के चप्पल सबेरे - साम साफ़ करत हयेन । अपने बीमार बाप के देखै कभौं नाहीं आउतेन पर सास - ससुर के खाँसिउ होई जाई तब करमा बाज़ार दौड़ई लागत हअ । ई संपत्ति में बहुत माया बा । जहाँ बियाह होए मुन्ना के ऊ कौनौं कमज़ोर आसामी तो होये नअ । कमिश्नर साहब दहेज देई के तैयार होई ग हयेन । अब रूपिया लै लेबअ तब केउ इज्ज़त काहे करे । अब या त रूपिया लअ या इज्ज़त लअ दुझनौं त न मिले । ”

दादू - “ चाची , रूपिया त हरिकेश मामौ देत हयेन , तब का मामा इज्ज़त न करिहिं ? ”

मामी - “ हरिकेश के बात अलग बा । उ अलग मनई बा । ओकरे में कौनौं घमंड नाहीं बा , बाकी सब त घमंडी हयेन । ”

दादू - “ चाचा त कहत हयेन चाची कि काल हरिकेश मामा के “ना “ बोल देझिं । चाचा कहत हयेन कि हरिकेश मामा से काल कहि देझिं कि अपने बिटिया के बियाह कतौं और देखअ , अब इ मुन्ना के बियाह एनके बस के नाहीं बा । ”

मामी - “ ऐसन न कहअ , ओकर दिल टूटि जाये । हर लड़की के तकदीर होत हअ । का पता मुन्ना बेबी के तकदीर में होय । ”

मामा - “ कौनौं और लड़िका नाहीं हयेन का । ऐसन कौन सुखाब के पर मुन्ना में लगा बा । ”

मामी - “ उर्मिला चाहे जेतना लड़ाकू और ज़िद्दी होय पर मुन्ना बहुत सज्जन बा । अब ऐसन लड़िका भगवान सबके देई । हमार भयने बा , ई गर्व के विषय त हइयै बा । पेपर में केतना अच्छा लिखा बा ओकरे बारे में । मुहल्ला के

औरत लोग गोल बनाई के आई रहि हमसे मिलई बरे और कहिन कि बहिन जी बताया नहीं यह आपका भांजा है । मिसेज़ खन्ना ने बताया कि यह मिश्रा जी के सगी बहन का बेटा है । चलअ अब जौन होये तौन होये , इ बियाह- संबंध विधाता नियत करत हअ , अब जहाँ लिखा होये उहीं होये । “

दादू सुबह आया उसने मामा के दुःख की कहानी सुनायी । मेरी माँ ऊपर से कितनी भी कठोर दिखती हो पर अंदर से बहुत ही मुलायम थी । वह बहुत ही जल्दी दरवित होती थी । उसकी आँख में भी आँसू आ गये । उसने मुझसे कहा , “ मुन्ना भैया के इहाँ चला जा । थोड़ा मनाई देहअ कुछ कहि के । तू कहि देबअ तब ओनकर मन हल्का होई जाये और जौन शिकायत होये दूर होई जाये । ”

मैं- “ क्या कहूँगा मैं ? ”

माँ- “ तोहका बात करै आवत हअ , कुछ बात कै देहअ ओनके मन के । कुछ देर रहि जायअ भैया के घरे सब ठीक होई जाये । ”

मुझे आंटी के साथ गाँव जाना था । मैंने माँ से कहा , “ मैं साहब के भाई से मिलता हुआ आंटी को लेकर गाँव चला जाऊँगा ।

मैं दादू को लेकर साहब के यहाँ । साहब के भाई देवानंद से मुलाकात हुई । उन्होंने कहा आपको आईआरएस मिलेगी । कोई ज़रूरत नहीं फिर से परीक्षा देने की । कैडर की बहुत बड़ी समस्या है । अच्छा किया आईपीएस नहीं लिया । आईआरएस में सारी जिंदगी दिल्ली- मुम्बई में बीत जायेगी । इस आईएएस की नौकरी में छोटे- छोटे शहरों में रहोगे । मेरे बैचमेट हैं खराब कैडर वाले वह सारे समय इसी में लगे रहते हैं कैसे कोई जगह दिल्ली में मिल जाये , चाहे जैसी पोस्टिंग हो बस दिल्ली मिल जाये । ईश्वर ने चार- छः रैंक कम देकर तुम्हारे साथ न्याय

किया है । यह आईआरएस बहुत ही अच्छी नौकरी है । इसको लोग इंडियन रायल सर्विस कहते हैं । मेरी सलाह है आप आईआरएस जवाइन कर लो । ”

मैं सुनता रहा और कहा , “ ठीक है जैसा आप कहेंगे मैं वैसा ही करूँगा । ”

यह एक ऐसी लाइन है जो किसी का भी मन मोह लो । मैं हर बीतते दिनों के साथ बात करने में माहिर हो रहा था । मैंने कहा कि मुझे गाँव जाना है । देवानंद मुझे कार तक छोड़ने आये और कार का दरवाजा बंद करते हुये थोड़ा मुस्कुरा कर बोले , “ मैं अपने एक मित्र ओर अपने बहन के भावी पति को प्रणाम करता हूँ । शीघ्र ही हम पुनः मिलेंगे । मैं आज दिन की दरेन से बम्बई चला जाऊँगा । तुम बंबई आना जल्दी ही । ”

आंटी को यात्रिक होटल से लेकर मैं उसके मायके - ससुराल गया । आंटी का मायका बहुत ही गरीब था । इतनी बड़ी- बड़ी तीन कारें एक साथ गाँव में आयी ही न थी । गाँव में हंगामा हो गया । पूरे गाँव के बच्चे कार की उड़ती धूल के पीछे भाग रहे थे । उन खड़ी कारों के शीशे में सब अपना मुँह देख रहे थे । शालिनी को देखने के लिये बड़ी भीड़ इकट्ठा थी । शालिनी ने साड़ी पहनी थी । वह हल्के गुलाबी रंग की साड़ी में, हल्की लिपस्टिक होंठों पर, काजल से बनी तिरछी भाँयें, आँखों में हल्का काजल, काला चश्मा, पल्लू को सिर पर रखकर सधे कदमों से चलती हुई आसमानों से उतर कर आ रही अप्सरा ही लग रही थी । वह बोलने की कला में अति माहिर थी, वह बोलती थी तो शहद उड़ेलती थी । मैं आंटी - शालिनी - ऋषभ को रामदीन मामा के यहाँ छोड़कर अपने ननिहाल के घर में आ गया । मेरी मामी और भाभियाँ मेरा इंतज़ार कर रही थीं । मेरी भाभियों ने उलाहना दिया, “मुन्ना भैया शहर के ममियौर से सबके लै गयअ जलसा में । शांति बुआ कुल परिवार दिल्ली से आइन पर हमका तू नाहीं पूछअ । हमहुँ देखित अपने देवर के जब तू मंच से बोलत रहअ । हर ओर अंदोर पर जलसा के । पेपर में छपा रहा हमहुँ पढ़ा, पर हमका तू भूलि गयअ । हम बुआ से शिकायत करब । इ दुई आँखियाव न करअ हमरे संगे । ”

मेरा पास इसका कोई जवाब न था । मैंने बात को टाला इधर- उधर की बात करके । सुरुचि मिश्रा चर्चा में आ चुकी थी । एक आईएएस बहू इस परिवार में आ सकती है, यह एक नया उन्माद सबको आनंदित कर रहा था । सुरुचि के बारे में पूछा पर मैं कुछ जानता न था उसके बारे में इसलिये कुछ खास न बता सका, पर उनकी जिज्ञासाओं कोई अंत न था । उन्होंने शालिनी से मिलने की इच्छा ज़ाहिर की । दादू ने दोपहर के खाने का इंतज़ाम अपने घर पर ही किया था । रामदीन मामा की हालत बहुत ख़राब थी । उनके यहाँ बैठकर खाना भी आसान न था । मैंने कहा कि वह लोग आयेंगे खाने तब मिल लेना । मेरे नाना भी बहुत प्रसन्न थे । वह एक अलग जीवन का अनुभव कर रहे थे । उनके अंदर अमीर और संपत्तिवान लोगों के लिसे बहुत आदर भाव था । अब शालिनी एक बहुत संपत्तिशाली व्यक्ति की एकमात्र वारिस थी और ऋषभ ने पैसा कमाया चाहे जितना हो पर दादू ने अतिशयोक्तिपूर्ण हल्ला ऐसा किया था कि वह अमेरिका ही ख़रीद लेगा जल्दी ही । खाने के समय सब लोग शालिनी के रूप पर ही मोहित थे । उसका बोलना बहुत अच्छा आता था । मेरे नाना ने कहा, “ बिटिया तू चली गउ अमेरिका अब तोहरे पिताजी के इतनी बड़ी जायदाद के सँभाले ? ”

शालिनी - “ नाना जी ऋषभ दो भाई हैं, अनुराग और ऋषभ । यह अनुराग सँभालेंगे न । मैं अकेले वारिस थोड़े हूँ, यह अनुराग भी तो एक वारिस है । ”

शालिनी ने यह कहकर पूरे माहौल में एक अलग गर्मी ला दी । मैं एकाएक हज़ार करोड़ की मिल्कियत के आधे का वारिस हो गया ।

मेरे नाना को सब बाबू ही कहते थे । आंटी नाना से बोली , “ बाबू , हम और उमिला बचपन में साथ ही रहते थे । मेरा विवाह भी आपने कराया और पति नहीं देवता प्रदान किया था आपने पर दूसरी पीढ़ी भी एक हो जायेगी यह मैंने कभी सोचा ही न था । ”

नाना - “ बिटिया सब ईश्वर की कृपा है । इस गाँव से दो तेजस्वी बच्चे हुये वह भी एक ही परिवार से निकले । मैं अपने मामा के गद्दी पर आया और रामदीन मेरे मामा के नज़दीकी पट्टीदारी में है । इस गाँव का नाम बहुत रोशन किया इन दोनों ने । मुन्ना ने बताया कि ऋषभ के काम पर पद्मशरी मिला है । ”

मैं - “ बाबू , इनको राज्य सरकार सम्मानित करने जा रही । यह विमोचन में मुख्यमन्त्री- राज्यपाल दोनों ने कहा है । इनको सम्मान लखनऊ में मिलेगा , आप भी चलना । ”

नाना - “ बेटवा , हम सुनि लिहा इहै बहुत बा हमरे बरे , अब हमार कहाँ उमर बा कतौ आवई जाई के । ”

शालिनी ने बहुत दिलदारी दिखाई और कहा कि रामदीन मामा का मकान बनवा देते हैं । दाढ़ लगा था अपने कमरे के लिये जो अधूरा बना था । शालिनी ने कहा वह भी बनवा लेना । गाँव के मकान बनाने में कितना पैसा लगता ही है । शालिनी ने अपनी उदारता से सबका दिल जीत लिया । ऋषभ की तुलना में नेतृत्व क्षमता उसमें बहुत ही अधिक थी । उसके पिता ने उसको बहुआयामी व्यक्तित्व प्रदान करने में सारे प्रयास किये थे और वह उसके कार्यकलापों एवम् स्वयं के संचालन में साफ़ देखा जा सकता था । उसकी उदारता ने मुझको बहुत प्रभावित किया । चलते समय वह रामदीन मामा से बोली , मामा जी कोई आदमी आयेगा , आप उसको बता देना कैसा मकान चाहिये वह सब कर देगा । मेरी भाभियों से मिलने घर के अंदर गयी और बोली , “ अनुराग के विवाह में मुलाकात होगी ही अगर पहले कभी न हुई । मैं अमेरिका चली जाऊँगी कुछ दिन में पर अनुराग के विवाह में ज़रूर आऊँगी , तब आपसे मुलाकात होगी । ”

मेरी मामी ने एक बहू की तरह उसके माथे पर टीका लगाया , नेंग दिया और कहा , “ बहुत अच्छा लगा आप हमारे गरीबखाने में आये । ”

आंटी के ससुराल भी हम लोग गये । वह भी पास के ही गाँव में था और देर रात वापस यात्रिक होटल आ गये । ऋषभ को अगले दिन जाना था । वह

बोला , “ अनुराग आओ बैठते हैं थोड़ी देर । कल मैं चला जाऊँगा , पता नहीं अगली मुलाकात कब हो । ”

मैं - ऋषभ लान में ही बैठ गये । ऋषभ ने कहा , “ अनुराग माँ के पास आते-जाते रहना समय- समय पर । मैं अमेरिका में काम समेट कर वापस आऊँगा , पर इस काम समेटने में भी समय लगेगा । ”

मैं चौंक गया । मैंने पूछा , “ यह फ़ैसला कब लिया ? ”

ऋषभ- “ फ़ैसला लिया नहीं विचार कर रहा । मैं भारत में कम्प्यूटर को स्थापित करूँगा , देखता हूँ सरकार की नीति कैसी बनती है । सरकार उदारीकरण की ओर बढ़ चुकी है । पिछली सरकार ने सोना गिरवी रखा था और नयी सरकार विदेशी मुद्रा , विदेशी तकनीक और विदेशी निवेश आमन्त्रित कर रही है । मेरे पास विदेशी मुद्रा भी है और विदेशी तकनीक भी । मैं समझने की कोशिश करूँगा नीतियों को हो सकता है देश में ही व्यापार के अवसर अनुकूल मिल जायें । ”

मैं - “ शालिनी से विमर्श हुआ है इस मुद्दे पर । ”

ऋषभ- “ नहीं । मैं तुमसे ही अपने दिल की बात कह रहा । अभी माँ को मत बताना नहीं तो वह कल से ही पूछने लगेगी कब आ रहे हो । बस तुम ध्यान रखना उसका । ”

मैं - “ ऋषभ , आंटी के लिये तुमको मुझसे अनुरोध करना पड़ेगा , यह ख्याल अगर तुम्हारे भीतर आ गया तब तो मेरा जीवन ही व्यर्थ हो गया । ”

ऋषभ -“ एक बात कहूँ अनुराग । ”

मैं - “ कहो । ”

ऋषभ - “ मेरी माँ की चाहत यही उपलब्धि थी जो तुमने प्राप्त की । उसकी चाहत वह उपलब्धि कभी न थी जो मैंने प्राप्त की । मैंने अपनी चाहत का ध्यान रखा न कि उसकी चाहत का । इस कार्यक्रम का तुमने नायकत्व किया । वह भी ऐसी ही उम्मीद मुझसे कर रही थी और मैं कर भी सकता था । यह सिविल सेवा की परीक्षा पास करना मेरे लिये बहुत ही आसान था । जब मैं इंजीनियरिंग के तीसरे साल में था तब मैंने मेंस के फ़िज़िक्स, गणित का उस साल का पेपर बगैर पढ़े ही हल कर दिया था । उस दिन शाम को माँ से अपनी यह उपलब्धि साझा की । वह बहुत ही प्रसन्न हुई थी , मैंने उससे कहा भी था कि दो साल बाद के आईएएस के रिज़ल्ट में टीवी पर मेरा नाम सुनना पर

मैं - “ पर क्या ? ”

ऋषभ - “ मेरा शालिनी से प्यार हो गया । वह विदेश जाना चाहती थी । मेरा भी मन कम्प्यूटर में ही लगता था । पर आज भरत का त्याग, राम का आदर्श, हर्ष का अपरिग्रह, बालि का जीवन की निरर्थकता का एहसास जो तुमने, राम प्रकाश सिंह सर, राज्यपाल ने कहा ... वह सब सुनकर

यह कहकर ऋषभ आसमान की तरफ़ देखना लगा ।

मैं “ इससे क्या हुआ ? ”

ऋषभ- “ मुझे अपने पतित होने का एहसास होने लगा । मुझे लगा कि मैं इस आदर्श परम्परा के द्वेष का एक गिरा हुआ आदमी हूँ । मैं इस अपरिग्रह की विचारधारा को पोषित करने वाली ज़मीन का परिग्रही व्यक्ति हूँ । मेरी माँ ने जीवन में कितने कष्ट झेले मुझे पालने के लिये और मैं उसके ख्वाबों को बेसहारा छोड़कर चल दिया जबकि वह पीछे से चीख रहे थे, इस तरह मत जा मुझको छोड़कर । मैं जीना चाहता हूँ । तू अगर चला जायेगा तब मैं जी नहीं पाऊँगा । मेरी माँ ने हर रात ख्वाबों का क़त्ल किया होगा बड़ी बेदर्दी से । उसके सारे ख्वाब चीखते होंगे मुझे मत मारो पर वह एक धारदार कटार से उनका क़त्ल करके हर रात लहू से भरे बिस्तर पर सोयी होगी और कई रातें लगी होंगी इन अनगिनत ख्वाबों को क़त्ल करने में और सुबह की पूजा से पहले वह अपने शरीर से रक्त के एक - एक छींटों को पता नहीं कैसे उसने धोया होगा

ऋषभ के आँख से आँसू वैसे ही बह रहे थे जैसे गोमुख से गंगा बहती है ।
मैंने किसी इतने मज़बूत व्यक्ति को पहली बार रोते देखा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 251

ऋषभ थोड़ा संयत हुआ । मैंने पूछा , “ यह विदेश बसने का फ़ैसला किसका है, तुम्हारा या शालिनी का ? ”

ऋषभ - “ शालिनी का । ”

मैं - “ यह विदेश जाने का फ़ैसला किसका था, जब तुम आईआईटी से गये ? ”

ऋषभ - “ शालिनी का । ”

मैं - “ क्या तुम जाना नहीं चाहते थे ? ”

ऋषभ - “ ऐसा नहीं है कि मैं जाना नहीं ही चाहता था पर हाँ उसका आगरह बहुत था । यह एक लंबी कहानी है । ”

मैं - “ अगर बताने में दिक्कत न हो तो बताओ , अगर लगता है कि मुझे जानना ज़रूरी नहीं है तब रहने दो । ”

ऋषभ - “ तुमसे कुछ भी छिपाने और न बताने का कोई औचित्य नहीं है । कई मामलों में तुमसे बड़ा मेरा कोई हमराज़ नहीं है , शालिनी भी नहीं । यह बात इंजीनियरिंग के दूसरे वर्ष की थी जब मेरा नाम होने लगा था वहाँ की परीक्षाओं में , वैसे भी कम्प्यूटर इंजीनियरिंग के छात्रों का एक अलग रूतबा होता ही है । मैं उसी समय प्राइम नंबर पर काम करने लगा था । शालिनी इलेक्ट्रिकल विभाग में थी । मैं और वह पहली बार बात किये जब मैं इंजीनियरिंग के दूसरे साल में था । तीसरे साल में निकटता हो गयी थी पर तब तक विवाह की कोई बात नहीं हुयी थी । इसकी एक कार थी जो तिवारी ड्राइवर रोज़ सुबह लेकर आ जाता था और वहीं रहता था सारा दिन । शालिनी बहुत उदार है और इसकी कार छात्र - अध्यापक सब इस्तेमाल करते थे , जिसको भी जरूरत पड़ जाये । शालिनी ने मुझसे कहा , “ मैं तुम्हें कार चलाना सिखाती हूँ । ”

वह मुझे कार चलाना सिखाने लग गयी और जब मैं कार चलाना सीख गया तब मैं कार चलाता था और वह बगल के सीट पर बैठती थी । मैं पहले हर शुक्रवार - शनिवार माँ के पास जाता था पर अब मैं कम जाने लगा और माँ को नाराज़गी होने लगी । मैं आईआईटी में बहुत काम है का बहाना बनाने लगा । वह आईआईटी चली आती थी कई बार और मैं शालिनी के साथ बाहर गया हुआ होता था । वह कई बार इंतज़ार करके चली जाती थी और मैं कुछ बहाना बना देता था पर माँ की आँखों से कुछ कहाँ छिपता है । कई बार ऐसा हुआ वह आई और मैं नहीं मिला । एक दूरी माँ - बेटे में बनने लगी । एक बार मैं कार चला रहा था कार सिग्नल पर झटके से रुक गयी , शालिनी ने कहा जीवन की गाड़ी को तुमको झटके से रोककर नहीं सधे हुये पैरों से एक्सीलरेटर को नियंत्रित करके चलाना होगा , मैंने यह जीवन तुमको सौंप दिया है । मैं विस्मय में आ गया । शालिनी मेरे लिये बहुत दूर की वस्तु थी । मैंने कभी न सोचा था कि एक ही झटके में वह अपने मन की बात कह देगी । मैं जो बात कहने के लिये बहुत दिन से शब्द तलाश रहा था , वह उसने बहुत सहजता से कह दिया । मैं यह बात पूरी तरह सुनना चाहता था । मैंने उससे पूछा भी यह कहकर फिर से कहो और स्पष्ट करके कहो , मैं यह बार-बार सुनना चाहता हूँ । उसने और अधिक काव्यात्मक ढंग से यह बात कही पर वह बात छिपा ले गयी जो मैं सुनना चाहता था । उसका हर काम नायाब होता है । उसने जवाब में कहा , “ ऋषभ मिश्रा एक वरदान प्राप्त व्यक्ति है , उस वरदान प्राप्त व्यक्ति को मुझे समझाना होगा मैंने क्या कहा ? ”

मैं कुछ देर के लिये शांत हो गया । कार वैसे ही रुकी हुई थी । सिग्नल लाल से हरा हो गया और फिर हरा से लाल । उस बदलते सिग्नल की ओर देख कर कहा मैंने , “ शालिनी तुमसे विवाह बहुत लोग करना चाहेंगे उसमें मैं भी शामिल हूँ पर कई बार लगता है मेरा यह कदम हम दोनों को ही लिये ठीक नहीं होगा अगर हम आने वाले समय और अपने परिवेश को ध्यान में रखकर सोचें । एक बेसहारा माँ का बेटा हूँ मैं और सामाजिक मान्यतायें इस संबंध को स्वीकार नहीं करेगी । मेरी माँ सामाजिक मान्यताओं को बहुत तरजीह देती है । ”

शालिनी ने कुछ न कहा इस पर । शालिनी से अधिक फ्रॉकस्ड शायद ही कोई हो , तुम भी नहीं होगे । अगर दरोणाचार्य की उस शर- संधान परीक्षा में अर्जुन के साथ शालिनी होती तो वह कहती मुझे चिड़िया की आँख भी नहीं दिख रही , मुझे सिर्फ चिड़िया की पुतली दिख रही है और वह उस सफेद रंग की पुतली को बेध देती । यह उतनी जहीन नहीं है जितनी फ्रॉकस्ड है । इसे आता है कैसे काम और किस तरह किया जाता है । यह इस बात में सिद्धहस्त है कि अगर स्वयं कोई काम नहीं कर सकती तब कैसे उसे कराया जा सकता है , इससे अधिक शायद ही कोई इस विधा में माहिर होगा । इसने आज दिन में गाँव में कहा कि अनुराग , ऋषभ और मैं तीनों वारिस हैं अहूजा साहब की संपत्ति के । यह कोई ऐसी ही कही गयी बात नहीं होगी , इसके पीछे एक योजना होगी । यह बग़ैर योजना के कोई काम करती ही नहीं । यह एक भी शब्द बिना मतलब के नहीं बोलती । इसने तुमसे मिलने के बाद मुझसे कहा था माँ जी के जीवन में आम व्यक्ति आते ही नहीं पहले पति फिर तुम अब अनुराग । कहाँ से लाती हैं यह ढूँढ ढूँढ़कर लोग जीवन में , मुझे ऐसे लोग क्यों नहीं मिलते । यह महत्वाकांक्षा के उच्चतम पिरामिड के बिंदु को स्वयम में धारण करने वाले व्यक्तित्व की स्वामिनी है । इसकी बातें सामान्य लग सकती हैं पर होती नहीं है , इसकी बातों पर ध्यान देना वह बहुत कुछ कहती है शालिनी की अवलोकन क्षमता के बारे में ।

मैं उस समय सिविल सेवा की तैयारी आरंभ कर चुका था । आईआईटी में तीसरे साल से लोग तैयारी करने लगते हैं और इतने लोग चयनित होते हैं कि क्या पढ़ना है और कैसे पढ़ना है यह आप तुरंत ही जान जाते हो । नोट्स लोगों के पूरे आईआईटी में घूमते ही रहते हैं । गणित - फ़िज़िक्स में तो कुछ ख़ास समस्या मुझे न थी बस जीएस को ही ठीक से पढ़ना था । मुझे संविधान और राष्ट्रीय आंदोलन अच्छा लगता ही था , भूगोल विज्ञान की तरह का कार्य- कारण से संचालित विषय है इसलिये उसमें भी कोई दिक्कत नहीं । जीएस में पचास नंबर के क़रीब सांख्यिकी आती है वह आसान ही होता है गणित वालों के लिये । मैं आईएएस टाप करने के ख़बाब बनाने लगा और माँ से कह भी दिया था कि बहुत संभावना है समाचार पत्र से नहीं टीवी से तुझे

मेरा परिणाम पता चले । वह तो लालायित ही थी मुझे आईएएस बनाने के लिये । मैंने ज़ब से होश सँभाला इसी ख्वाब के साथ जीवन जिया । अब इतने बड़े ख्वाब से किनारा कैसे किया जाये ? यह ख्वाब मेरा ही नहीं था , मेरी माँ का भी था और मेरा देवता तुल्य मरहूम पिता का भी था । शालिनी से मेरा प्रेम जैसे- जैसे बढ़ने लगा इस ख्वाब पर शालिनी आकरमण करने लगी । हर आये दिन के साथ यह ख्वाब आहत हो रहा था । उसी समय यह प्राइम नंबर का करिश्मा हो रहा था । यह करिश्मा लोगों को बाद में पता लगा पर शालिनी पहले ही जान गयी थी । वह मेरे साथ ही रहती थी और मैं उसको पढ़ाता भी था । इस प्राइम नंबर की गुत्थी को सुलझाने का प्रयास मुझसे पहले भी कई लोगों ने किया पर कोई कर न सका । यह शालिनी की ही सलाह थी कि प्रोफेसर धर को साथ लिया जाये । वह क्राबिल तो है ही साथ ही साथ वह इसको अंतराष्ट्रीय स्तर पर ले जायेंगे नहीं तो एक देश में पहचान बनेगी पर विदेश में पहचान न बन पायेगी । वह दूरदृष्टि है , वह योजनाएँ निर्मित करने में माहिर है । हम और तुम कितने भी क्राबिल हों पर उसकी योजनाओं का हिस्सा ही बन सकते हैं उस पर नियंत्रण नहीं कर सकते । वहीं हुआ , मैं और धर सर उसकी योजना का हिस्सा बन गये । मैं धर सर के पास गया । कई दिन तक विमर्श हुआ और अंत में धर सर को मेरे काम पर विश्वास आ गया और कहा यह कार्य हो सकता है और अगर ईश्वर ने चाहा तब एक बड़ा गौरव देश को प्राप्त होगा । उन्होंने मुझको निर्देशित करना आरंभ किया । धर सर ने राजेश महर्षि एक और लड़के को इसमें शामिल किया । मुझे उसके शामिल होने से कोई ऐतराज न था । मुझे तो आईएएस बनना था , मैं तो यह काम शौकिया कर रहा था पर शालिनी को ऐतराज था क्योंकि वह मुझे वहाँ देख रही थी जहाँ आज मैं हूँ । उसे लगा कि अगर दो लोग होंगे तब उपलब्धि साझा हो जायेगी । इसने कुछ तिकड़म लगाकर राजेश महर्षि को बाहर कर दिया पूरी शोध प्रक्रिया से । तुम कभी आईआईटी में लोगों से पूछोगे मेरे और शालिनी के बारे में तब मेरी सब तारीफ़ करेंगे और शालिनी को पानी पी - पी कर गाली देंगे । राजेश महर्षि और शालिनी का आईआईटी में खुला युद्ध आरंभ हो गया था । लड़कियाँ शालिनी के खिलाफ़ रहती ही थीं और लोग मेरा कान शालिनी के खिलाफ़ भरने लगे , पर मैं तो दीवाना था शालिनी के रूप-माधुर्य में । तीसरे साल का समापन हो रहा था और शालिनी मुझ पर हाबी हो रही थी । वह आईएएस न देकर विदेश जाकर पढ़ने के लिये लगातार दबाव बना रही थी । तब तक वह प्राइम नंबर का शोध तकरीबन पूरा हो रहा था और धर सर ने उसके बारे में बात करनी आरंभ कर दी । जो अभी तक बहुत कम लोग जानते थे उसको धर सर ने आईआईटी दिल्ली में एक सेमिनार करके सार्वजनिक कर दिया । उन्होंने उस पर लोगों के विचार और आपत्तियों को आमंत्रित किया और अगले एक महीने में हम लोगों ने आपत्तियों पर काम किया और फिर एक सेमीनार करके उन सारी आपत्तियों पर शंका समाधान कर दिया । प्रोफेसर धर ने निदेशक को शोध पत्र देकर कहा कि इसको

अन्य आईआईटियों को भेज दिया जाये । उन्होंने भेज दिया और एक हंगामा खड़ा हो गया सारी आईआईटी में और मैं एक नायक बन गया । यह बात आईआईटी से होते हुये अन्य इंजीनियरिंग कालेजों तक गयी । तुम किसी भी आईआईटी के व्यक्ति से मेरा नाम पूछो वह मुझे जानता होगा । प्रतीक्षा के बहन देवानंद मिश्रा से हम लोग पहली बार मिले वह भी मुझे जानते थे । अब शालिनी के पास मुझे इस बात पर कनविंस करने का एक और मुद्दा मिल गया , इस उपलब्धि के बाद । वह कहने लगी कि अगर आईएस हो गये तब यह सब व्यर्थ हो जायेगा । इतनी कोशिश से यह प्राप्त हुआ है और देश- दुनिया में यह सराहा जा रहा पर तुम एक बाबू बनना चाह रहे सब कुछ छोड़कर , इस काम की वहाँ कौन सी क्रीमत होगी । एक आमंत्रण दे रहे क्षितिज को अस्वीकार करके तुम एक भरमित मृग- मरीचिका के पीछे भाग रहे हो । यहाँ पर वह सही थी । एक बहुत बड़ा क्षेत्र मेरे लिये खुल चुका था । प्रोफेसर धर के पास पत्र आने लगे बाहर के विश्वविद्यालयों से मुझकों उच्च शिक्षा में दक्षता देने के लिये । मुझे फुल स्कालरिप हर जगह मिल रही थी । ऐसा भी आईआईटी के इतिहास में कम ही हुआ था कि आमंत्रित किया जाये पढ़ने के लिये । अब शालिनी एक दूसरी चिंता में आ गयी । जिन जगहों से मुझे आमंत्रण था .. उसमें बड़े- बड़े नाम शामिल थे । तुमको शायद पता न होगा पर येल , स्टैनफोर्ड, मिशिगन , हारवर्ड, कार्नेल में प्रवेश बहुत ही मुश्किल है । शालिनी को डर लगने लगा कि अगर मैं चला गया और उसको वहाँ प्रवेश न मिला तब तो सारा किया धरा पानी हो जायेगा । अब उसके लगन की तो कोई सीमा ही नहीं है । उसने हर जगह आवेदन करना आरंभ किया । मैं उसके सारे डिज़र्टेशन बनाता था । मैंने धर सर से उसके लिये स्ट्रांग रिकमंडेशन लिखवाया । उसकी तकदीर काम कर गयी । कार्नेल में एशियन वीमेन का कोटा है , उसमें उसको प्रवेश मिल गया । मुझे आमंत्रण कई जगह से मिला था पर कार्नेल से न मिला था । मुझे कार्नेल में आवेदन करना पड़ा, हलाँकि जब मैंने आवेदन किया तब बहुत ही सहर्ष मुझे स्वीकारा गया पर धर सर कह रहे थे तुम आवेदन क्यों कर रहे जब लोग हाथों- हाथ तुमको ले रहे और कार्नेल से बेहतर विश्वविद्यालय तुमको प्रवेश दे रहे । पर अनुराग, तुमने परेम नहीं किया है , मैंने किया है । यह परेम अंधा होता है , वह कुछ नहीं देखता । मैं भी अंधत्व में था और कार्नेल जाने का फ़ैसला हो गया आईएस के एक मुद्दतों से संजोये ख्वाब को तिलांजलि देकर । अब एक बड़ी समस्या मेरे सामने थी , कैसे माँ को बताया जाये । माँ सब जानती थी पर मेरे आईएस के ख्वाब को ख़त्म करने और विदेश जाने के फ़ैसले से वह बेख़बर थी । उसको क्या पता उसके ख्वाब उसको बेसहारा छोड़कर जा नहीं रहे बल्कि कोई उनकी हत्या करके उसे बेसहारा कर रहा । अब उसको यह बताना ही था । मैंने दोनों बातें एक- एक करके बतायी । दोनों बातें वह एक साथ सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकती थी । पहले मैंने आईएस न देने की बात बतायी उससे । वह आकरामक हो गयी । उसकी इस तरह की

आकरामकता मैंने पहली बार देखी थी । वह घोंसले में एक चिड़िया के नव जन्मा बच्चे की तरह मुझको रखती थी । उसी चिड़िया ने घोंसले के दीवारों पर चोंच मारना आरंभ कर दिया यह समाचार सुन कर । मुझे सबसे बड़ा दृश्य तब हुआ जब उसने यह कहा , “ तुमने मुझे इस लायक भी न समझा कि मैं तुम्हारे इस निर्णय की भागीदार बन सकूँ । ”

मैं शांत रहा । अब दूसरा भी फ्रैसला बताना ही था । वह जब मैंने बताया तब उसने कहा , “ अगर मरना ही है तब क्या फ़र्क़ पड़ता है कैसे मृत्यु आयी । चाहे सिर को धड़ से अलग कर दो या खंड- खंड करके ख़त्म कर दो , फ़र्क़ बस पीड़ा का ही है परिणाम तो एक ही आना है । ”

मैं सुनता रहा , मैं और कर भी क्या सकता था । इसके बाद शालिनी से विवाह हुआ जो माँ ने तुमको सुनाया ही होगा । ”

मैं “ कैसे पता तुमको कि माँ ने मुझको सुनाया होगा ? ”

ऋषभ - “ अनुराग मैंने दुनिया देखी है , मैं भी आँखों में उत्तरते और उत्तर कर जाते रक्त की यात्रा से निकले संदेश पढ़ लेता हूँ । इस समय मेरी माँ के सबसे नज़दीक कौन है ? .. मैं और शालिनी नहीं ... तुम हो । वह अपना राज साझा करती है तुमसे । यह दर्द साझा न करे , यह हो ही नहीं सकता । ”

मैं “ शालिनी और तुम्हारा विवाह एक दर्द है उसके लिये ? ”

ऋषभ - “ वह बेवकूफ़ नहीं है । वह बहुत समझदार है । मेरे - उसके साझा ख्वाब एक झटके में काफूर हो गये । रात वह सोयी ख्वाब की थपकी से और सुबह थपकी देने वाले को कहना पड़ा , तुमसे मुझे यह उम्मीद न थी । तुम बताओ उसके ख्वाब को यह कहने को मजबूर किसने किया ? यह फ्रैसला मेरा नहीं शालिनी का ही था अब इसमें कौन से अन्वेषण की ज़रूरत है । ”

मैं “ तुम भारत वापस आना चाह रहे हो अगर शालिनी तैयार न हुई तब । ”

ऋषभ - “ अगर वह इस फ्रैसले पर तैयार नहीं होती है तब उसे एक बड़े फ्रैसले के लिये तैयार होना होगा । दोनों फ्रैसले उसके सामने हैं वह आगे बढ़े और एक को चुन ले । ”

मैं “ क्या जो मैं समझ रहा तुम वही कह रहे । ”

ऋषभ - “ हाँ । ”

मैं आवाक रह गया । शालिनी होटल का गेट खोलकर आते हुये मुझे दिखी ।

शालिनी यात्रिक होटल का गेट खोलकर बाहर लान की ओर आ रही थी । उसने टी शर्ट और जींस पहना था एक दुपट्टा ऐसा जिसे लोग स्टोल कहते हैं उसने गले पर लपेटा हुआ था । वह बाल को हाथों से पीछे करते हुये मेरे और ऋषभ की तरफ आ रही थी । हम दोनों ही उसको देख रहे थे । मैं आज उसे एक अलग दृष्टि से देख रहा , एक ऐसी लड़की जिसे सारी विधायें आती हैं जीवन में सफल होने की , जिसके हर शब्द का कोई मंतव्य होता है , जो जीवन को एक लक्ष्य की तरह देख रही , कुछ प्राप्ति का लक्ष्य.. नहीं सब कुछ पा लेने की हवस । मैं उसकी नज़दीक आती काया का अवलोकन करने लगा । उसके चाल में एक अलग आत्मविश्वास है , वह कदम रखती है एक सधा हुआ नपा- तुला कदम , उसे कोई हड्डबङ्गहट नहीं है । सौन्दर्य शालिनी के शरीर में ही नहीं है वरन् उसकी भाव भाँगिमा में भी है , उसके हाथ के घुमाने , सिर के बालों को पीछे करने , दुपट्टे को वक्ष पर सहेजने और आँखों की पलकों को उठाने - गिराने । अगर वह रूपवान न भी होती तब भी अपने सहेजने की प्रक्रिया में भी सम्मोहित कर सकने में सक्षम है ।

वह चलते हुये मेरे और ऋषभ के नज़दीक आ गयी , उसने बगल की कुर्सी को नज़दीक लाते हुये पूछा , “ क्या बात हो रही थी ? ”

मैं - “ वही बात जो दो लड़के करते हैं किसी लड़की के बारे में ? ”

शालिनी - “ वह लड़की है कौन जिसके बारे में बात की जा रही ? ”

मैं - “ अब मैं और ऋषभ किसी आम लड़की के बारे में तो बात तो करने से रहे , किसी ख़ास के बारे में ही बात करेंगे । ”

शालिनी - “ कौन है वह सौभाग्यशाली लड़की जिसके नसीब में यह रात लिखी हो चाँद की मद्दिम रौशनी में .. प्रतीक्षा.. सुरुचि या कोई और ? ”

मैं - “ कोई और । ”

शालिनी - “ अरे वाह अनुराग तुम्हारे तो जलवे हैं यार ... क़तार लंबी हो रही । बताओ कौन है और क़तार में । ”

मैं - “ शालिनी के सामने सब कमज़ोर हैं । ऋषभ तो शालिनी प्रकरण से बाहर ही नहीं आ पाते , किसी और को सौभाग्य कैसे प्राप्त हो । ”

ऋषभ - “ अनुराग के पास भरमाने का लाइसेंस है । समय पास करने के लिये बस मैंने यहीं पूछा प्रेम क्या है ? और यह अपने पेंग में लग गये । ”

शालिनी - “ क्या जवाब दिया ? ”

ऋषभ- “ कुछ खास नहीं बताया , तुमको देखकर रुक गया , कुछ सोचने लग गया .. अभी पूरा जवाब कहाँ दिया । ”

शालिनी - “ क्या है पूरा जवाब ? ”

मैं - “ प्रेम निष्पाप है , निष्कलंक है , स्वार्थ रहित है , योजनायें नहीं बनाता , षड्यंत्र नहीं करता , उसकी भावनाओं का ध्यान रखता है जिससे प्रेम करता है , यही नहीं वह जिससे प्रेम करता है उससे जुड़े लोगों की भी भावनायें आहत न हो इसका भी ख्याल करता है । इसमें अधिकार से अधिक त्याग समाहित होता है । जब बेनाम रिश्तों में सुकून मिलने लगे तब समझो नामधारी रिश्तों में हक्क की बातें बहुत हो रही हैं । ”

शालिनी- “ यह बहुत ही आदर्शवादी अवधारणा है । यह सामान्य जीवन में संभव नहीं है । यह एक यूटोपियन विचारधारा है जो तुम कह रहे हो । ”

मैं - “ क्या है प्रेम की सर्वमान्य, सर्वव्यापी विचारधारा जो जीवन में संभव है । ”

शालिनी - “ एक - दूसरे का ख्याल रखना । एक - दूसरे के प्रति निष्ठावान होना । एक - दूसरे की प्रगति में प्रोत्साहन देना और सहभागी बनना । ”

मैं - “ बस या और कुछ ? ”

शालिनी - “ अब और क्या चाहिये ? ”

मैं - “ एक- दूसरे को व्याख्यायित कर दो । ”

शालिनी - “ एक- दूसरे से मेरा आशय पति - पत्नी या प्रेमी- प्रेमिका से है । ”

मैं - “ इसमें माँ, पिता, बहन, भाई, मित्र नहीं आते ? क्या प्रेम परिवेश को समाहित नहीं करता ? क्या प्रेम अपने प्रेमी या प्रेमिका के माँ और पिता की भावनाओं का ख्याल नहीं करता ? अगर नहीं करता तब या तो प्रेम अपूर्ण है या स्वार्थी है । एक स्वार्थ युक्त प्रेम के लिये किसी और शब्द की तलाश की जानी चाहिये , उसको प्रेम तो नहीं कहा जा सकता , कम से कम जैसा मैं समझता हूँ । इस तरह के संबंध जीवन में अपूर्णता और रिक्तता ही देंगे चाहे जितनी बड़ी भौतिक उपलब्धि प्राप्त न कर ली जायें । यहीं पर बुद्ध धर्म की दो विचारधारा हीनयान और महायान सहायक होती है प्रेम को समझने में । हीनयान का अहरत्व महायान के बोधिसत्त्व के सम्मुख कमजोर पड़ जाता है क्योंकि एक में स्वार्थ है तो दूसरे में स्वार्थ रहितता । एक स्वयम की मुक्ति के प्रति आग्रहशील है तो दूसरा मुक्ति को मुल्तवी करता रहता है जब तक कि

सम्पूर्ण जगत को मुकित प्राप्त नहीं होती । प्रेम महायान का बोधिसत्त्व है न कि हीनयान का अहरत्त्व । “

शालिनी कोई बेवकूफ़ न थी । वह बहुत ही समझदार लड़की थी । वह समझ गयी इशारा कहाँ हो रहा है । वह शांत हो गयी । ऋषभ वातावरण में व्याप्त तल्खी समझ गया, उसने बातचीत का रुख मोड़ दिया । शालिनी के चेहरे से साफ़ लग रहा था कि वह मेरे इस वार्तालाप से परसन्न नहीं है । पर वह भावों को अंदर छिपाने में माहिर थी । वह पारंगत है दुनियादारी के मामलों में । मैं और ऋषभ उसके सामने बहुत कमज़ोर हैं अगर बात योजना बनाने और उसको अंजाम देने को लेकर हो ।

ऋषभ - “ क्या विचार है आगे का ? ”

मैं - “ कैसा आगे का ? ”

ऋषभ - “ सर्विस ज्वाइन करने का ? ”

मैं - “ आईएस मिलेगी या नहीं यह तो अभी पता नहीं । प्रतीक्षा के भाई देवानंद कह रहे आईएस में कैडर की समस्या है आप आईआरएस ज्वाइन कर लो, शायद वही ज्वाइन कर लूँगा । यह कोचिंग का कुछ पाठ्यक्रम बचा है, इसको निपटाता हूँ अगले पन्द्रह दिन में, बाकी और तो कुछ काम अब है नहीं । ”

ऋषभ - “ विवाह का क्या सोचा है ? ”

मैं - “ वह अभी दूर की बात है । वह अभी एजेंडे में है ही नहीं । ”

ऋषभ - “ कमिशनर साहब से क्या कहोगे, वह तो जल्दी में होंगे ही । ”

मैं - “ प्रतीक्षा मेंस दे रही, पिताजी ने कह दिया है कि नवंबर के बाद बात करते हैं । अब नवंबर तक कोई समस्या है नहीं उसके बाद देखा जायेगा । वैसे भी इतनी संपन्नता की लड़की मेरे काम की है नहीं । अगर मेरे काम की हो तब भी मेरे परिवार और परिवेश के लिये वह सूट नहीं करती । ”

शालिनी तब तक सामान्य हो चुकी थी । उसने कहा, “ अब अनुराग ऐसे ही लड़कियों के रिश्ते आयेंगे, अब कोई मध्यम वर्ग का व्यक्ति तो साहस भी नहीं कर पायेगा तुमसे अपनी बेटी का विवाह करने को । ”

मैं - “ यह बात आपकी काफ़ी हद तक सही है शालिनी । अगर वह साहस कर भी ले तब भी उसकी तुलना इन प्रतापी व्यक्तियों को साथ होगी और वह कहाँ टिक पायेगा इन सबकी तुलना में जब तक मापदंड कुछ और न हो जाये । ”

शालिनी - “ कुछ और मापदंड क्या हो उनके टिकने का ? ”

मैं - “ लड़की की क्राबिलियत, संस्कार, परिवार की स्वीकार्यता । यह कहना आसान है पर होता नहीं । अब माँ ने यह काम आप तो सौंप दिया है, आप ही फैसला कर देना जब वक्त आयेगा । ”

शालिनी - “ मैं इस दृष्टिकोण से तो देख ही नहीं सकती । मैं अधिक से अधिक लड़की के गुण- दोष पर विचार कर सकती हूँ । ”

मैं - “ शालिनी, यह जो हिंदू विवाह है वह एक संस्कार है । यह विवाह ही क्यों यह पूरा धर्म ही संस्कारों से भरा है । आप कभी पढ़ना वह दौर जब बौद्ध धर्म के विरुद्ध वैदिक धर्म संघर्ष कर रहा था और शंकराचार्य बौद्धों को पराजित कर रहे थे, पर कहीं हिंसा नहीं दिखती । पराजित की स्वीकार्यता दिखती है । बौद्ध धर्म में कई विभाजन हुये । ब्लैनसांग ने उल्लेख किया है कि हीनयान और महायान धर्म के लोग कई मोनिस्टरीस में एक साथ रहते थे । आप और धर्मों के संघर्ष का इतिहास पढ़ना, ऐसी सदाशयता कहीं न मिलेगी । यह एक संस्कारों का देश है और शहर इलाहाबाद ने तो संस्कारों की विकास यात्रा का नेतृत्व किया है । अब ऐसे संस्कारों के शहर का लड़का क्या कर सकता है ? क्या वह अपने को संस्कारों से विलग कर सकता है । मेरे कंधों पर खाहिशों का बोझ है । यह बोझ कहाँ से आया है ? यह किसने दिया है ? क्या मेरे पास यह स्वतन्त्रता है कि मैं इनको उतार कर फेंक दूँ ? अगर यह स्वतन्त्रता है तो किस क्रीमत पर है ? क्या वह क्रीमत मैं चुका सकता हूँ ? अगर मैं सारी चीजों से निरपेक्ष होकर कोई फैसला करूँ तब क्या मैं जीवन में चैन से रह पाऊँगा । यह शारीरिक आकर्षण, यह बड़े पदनाम की बहन - बेटी, यह बड़ा सारा दहेज का धन अल्प जीवी प्रसन्नता देगा । एक लंबे दौर की प्रसन्नता तब ही मिलेगी जब मेरी पत्नी मेरे विचारधाराओं और मेरे परिवेश को अपना सके और मैं उसके । अगर मुझसे कुछ करने की ज़िद की जाये जो मेरी आत्मा को स्वीकार्य नहीं हो और मैं किसी दबाव वश उसको स्वीकार कर लूँ तब क्या वह संबंध मुझे प्रसन्नता दे पायेंगे । एक अप्रसन्न व्यक्ति दूसरे को प्रसन्नता कैसे दे सकता है ? मैं प्रसन्न होने का नाटक करके सियाह रात में सुबकूँ इससे बेहतर होगा मैं उस संबंध को ही ख़त्म कर दूँ । जीवन हर पग पर एक निर्णय की माँग करता है । जीवन में संतुष्टि सिर्फ़ संतुलित फैसलों से मिलती है । यह प्रतीक्षा से मेरा विवाह शायद मुझे संतुष्ट कर जाये पर वह मेरे परिवेश को संतुष्ट कर पायेगा यह मैं निश्चित नहीं हूँ । ”

मेरे सारे वाक्य शालिनी पर आकरमक हो रहे थे । मैं जान बूझकर कोई आकरमण नहीं कर रहा था पर बात ही ऐसी छिड़ गयी थी जो शालिनी के

विस्तृद्ध जा रहा थी । ऋषभ समझ रहा था सब कुछ उसने वार्तालाप को मोड़ने का फैसला किया और पूछा कल का क्या कार्यक्रम है ?

मैं - “ मेरा कोई कार्यक्रम नहीं है , आप जो आदेश करो । सिर्फ कोचिंग कल चलानी है शाम को । आप दो घंटे की मोहलत दे देना , बाकी जो कार्यक्रम आप बनाओ । ”

ऋषभ ने शालिनी से पूछा दिल्ली चलने का क्या कार्यक्रम है ?

शालिनी - “ मैंने माँ से पूछा वह एक- दो दिन और रुकना चाह रहीं । ”

मैं - “ आप लोगों को जाने की जल्दी है ? अगर जल्दी है तो आप लोग जब चाहे चले जाओ मैं भेज दूँगा आंटी को । ”

ऋषभ - “ नहीं कोई जल्दी नहीं है , सब लोग साथ ही जायेंगे । ”

मैं - “ कब का वापसी का टिकट है ? ”

ऋषभ - “ वह आगे - पीछे हो जायेगा , वह कोई समस्या नहीं है । ”

शालिनी - “ अभी और दिन यहाँ रहना है क्या ? ”

ऋषभ - “ बात करते हैं इस मुद्दे पर । ”

शालिनी - “ बहुत से काम पेन्डिंग हैं वहाँ पर , कई मीटिंग लाइंड- अप हैं उनका क्या ? ”

ऋषभ - “ नहीं होंगी मीटिंग तो क्या हो जायेगा ? ”

शालिनी - “ क्लाइंट आसानी से नहीं मिलते , हमारे प्रतिस्पर्धी बहुत मज़बूत हैं वह सब डील हमारे हाथ से जा सकती है । ”

ऋषभ - “ जाने दो अगर जाती है । यह माया - मोह है , अनुराग के अनुसार । अब माया - मोह को त्यागते हैं । ”

मैं - “ अगर नहीं जा रहे हो कल तब तुमको अपने मामा के यहाँ ले चलता हूँ , मज़ा आयेगा । वह घर हम लोगों के मनोरंजन का घर है । मेरे बड़े मामा का बेटा क्रिस्सा- कहानी सुनायेगा । वह वैसे ही शालिनी भौजी - शालिनी भौजी करता रहता है । ”

शालिनी - “ क्यों करता रहता है ? ”

मैं - “ कल पता चलेगा । कल तुमको अपने गाँव ले चलता हूँ , देखो गरीबी क्या होती है और लोगों को कितनी उम्मीदें मुझसे हैं । ”

मुझे खंभे से बँधी अपनी और दाढ़ू की साइकिल दिखी । मैंने शालिनी से कहा , “ तुमसे यह साइकिल नाराज़ होगी । ”

शालिनी - “ क्यों? ”

मैं “ तुमने यह कार दे दी , मैंने साइकिल को खंभे में बांध दिया , कोई नहीं उसकी खोज खबर लेने वाला । ”

शालिनी - “ मुझसे बहुत लोग नाराज़ हैं , मैंने बहुतों को दुःख दिया है । ”

मामला और किसी रास्ते पर जाये मैंने पूछा , “ कितना बजा होगा ? ”

शालिनी - “ सुबह के चार बज गये । ”

मैं “ इस समय मेरे घर में दो लोग जगते हैं , मैं और मेरी माँ । मैं पढ़ने लगता हूँ और मेरी माँ मेरी सफलता के लिये अपनी साधना आरंभ कर देती है । मैं किताबों के साथ रहता हूँ और वह गंगा की लहरों की तरफ चल देती है । यह कई साल से हो रहा है । मैं अब चलता हूँ , सुबह आऊँगा । इस कार का क्या करूँ ? ”

शालिनी - “ करना क्या है ? ”

मैं “ कल वापस कर देता हूँ । ”

शालिनी - “ मैं अपनी कार दिल्ली से भेज देती हूँ वह बेहतर कार है , जब तक वह कार नहीं आ जाती इसको चलाओ । ”

मैं “ शालिनी हर व्यक्ति को हृद में रहना चाहिये । यह स्वप्न बहुत बड़ा है मेरे लिये । ”

शालिनी - “ क़द और हैसियत से बड़े स्वप्न देखने की शिक्षा देने वाला अनुराग शर्मा अपने स्वप्न छोटे कर रहा है । कल बात करते हैं इस पर । सुबह जल्दी आना । ”

वह दोनों यात्रिक होटल के गेट से अंदर जाने लगे और मैं उनको पीछे से देख रहा था , एक आने वाला तूफान उनके साथ चल रहा था , जो सिर्फ़ मैं देख पा रहा था ।

मैं सुबह तकरीबन 4:15 बजे घर पहुँचा । मैंने देखा सब लोग जग रहे थे । मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ इस समय सब लोग जग रहे हैं । मेरी कार की आवाज़ सुनकर सब लोग गेट पर ही आ गये । मैंने पूछा , “ क्या हुआ ? ”

माँ नाराज़ मुद्रा में आ गयी , वह उलाहने के स्वर में बोली , “ तोहका कौनौ फिकिर बा केहू के ? इ समय होत हअ घरे आवई के ? इहाँ सबके जान अटकी बा और तू पूछत हअ का भवा । ”

मुझे एहसास हुआ अपनी गलती का । मैं बँगेर बतायें कहीं आता - जाता न था । यह पूरी रात घर न आना वाक़ई चिंता का विषय था , मैंने इस मुद्दे पर ध्यान न दिया था । मैंने कहा , “ हाँ गलती हो गयी डराइवर को भेजकर बता देना चाहिये था कि मैं देर से आऊँगा । ” माँ के जान में जान आयी । मैंने पूछा , “ मेरा टरेनिंग पर जाने का समय नज़दीक आ रहा है , मेरे टरेनिंग पर जाने के बाद तू क्या करेगी ? ”

माँ - “ उ चिंता त हमअ खाये जाति बा । एतने साल तू हमरे संगेन हअ । तोहरे रहे से घरे में अनुशासन बना रहत हअ । तोहार सारा काम एतना अच्छा रहत हअ कि तोहार कामै से पूरा घर के अनुशासन बनि जात हअ । अगर घर के बड़वार बच्चा ठीक से रहत हअ तब एकर असर और बच्चन पर पड़त हअ । ई चुन्नुआ और गुड़ियउ पढ़ति हअ तोहार देखा देखी , जब तू चला जाबअ तब एनहन के रास्ता के देखाये ? ”

मैं - “ माँ , हर व्यक्ति अपनी तकदीर लेकर जन्म लेता है । इनकी तकदीर में जो होगा वह मिलेगा तुम गंगा नहाने नहीं गयी ? ”

माँ - “ हमार मन तोहरेन पर लागि रहा , अब जात हई । ”

मैं - “ यह कार लेते जाओ । ”

माँ - “ हम चप्पल त पहिनित नाहीं , ई कार लै के जाब नहाई बरे । ”

मुझे याद आया कि वह जबसे मेरा मेंस का रिज़ल्ट आया था उसने गंगा स्नान की अपनी यात्रा में चप्पल पहनना भी छोड़ दिया था । मैंने कहा , “ यह सब क्या ढकोसला है ? ”

माँ - “ अब एक तुहिन रहि ग हअ हमका सिखावै बरे कि का ढकोसला बा और का ढकोसला नाहीं बा । आस्था एक अलग चीज़ होत हअ । आस्था कौनौ तर्क नाहीं सुनत । अब अगले जन्म चप्पल पहिनब एह जन्म त गंगा मैया के सेवा ऐसै होये । ”

माँ से कहा मैंने , “तुमने मामा के यहाँ जाने को कहा था , आज मैं चला जाऊँगा आंटी - ऋषभ- शालिनी को भी लेता जाऊँगा । आप भी चलना साथ में । ”

मेरी माँ , मेरे मामा - मामी से कितना भी लड़े- झगड़े पर उसका मन उनमें लगा ही रहता है । वह बहुत खुश हो गयी और बोली , “ मुन्ना बहिनौ को बोलाई लेई । ओका शिकायत रहत हअ कि हमका सब लोग किनारे केरे रहत हअ । ”

मैं - “ वह इतना बिगहा खेत ले गई । हमको तो कुछ मिला नहीं । आधा हिस्सा हमारा भी है , क़ब्ज़ा करा लूँगा एक दिन । ”

माँ - “ इ भिखमंगई वाला काम कब से तू सीख लेहअ । तोहका ऐतना भगवान देहेन अबअ तोहार पेट नाहीं भरा । जौन तोहका भगवान देहेन ओकरे सामने इ खेत- बारी के कौन क़ीमत बा । ”

मैं - “ वह तो मैं मेहनत किया , उसमें इनका कौन निहोरा । ”

माँ - “ मुन्ना, तू अकेलेन शहर में मेहनत केरे रहअ का । इ बदरी, चिंतन तोहसे ढेर क़ाबिल हयेन ओनका पछाड़ि देहेअ तू । तोहका भरम बा तू अपने माथे केरहअ । जब तोहका भरम होई लागै तब आपन मार्कशीट देखि के और लोगन के मार्कशीट से मिलाई लेवा करअ । इ दरिद्रापन के बारे में न सोचअ । अच्छा भअ हमका ज़मीन नाहीं मिली नाहीं त तुहूँ बहिन के बेटवन के नाहीं बाबूगंज में फ़र्ज़ी डाक्टरी के डिग्री लै के जोखाम - बोखार के दवा बेचत होतअ । हम जात हई गंगा नहाई जल्दी आई जाब । इ ददुआ कहाँ मरि गवा बा , उ होतई त संदेश भेजवाई देझत भैया के इहाँ । ”

मैं - “ वह मामा के यहाँ गया है अभी आ रहा होगा , मैं उसके आते ही भेज दूँगा तुम जाओ गंगा नहाने , मैं थोड़ा सो लेता हूँ । ”

मैं सोने चला गया । मैं जग कर उठा ही था कि थोड़ी देर बाद दाढ़ू आ गया । वह कल कलेक्टरेट गया था किसी काम से । वह चालू - पुर्जी लड़का था , गाँव - देहात का छोटा- मोटा काम तहसील - कलेक्टरेट से निकाल कर वह अपनी ज़िंदगी चलाता था और इस प्रक्रिया में वह बहुत लोगों से मिलता रहता था और काम- काम के आदमियों को साधता रहता था । उसने आते ही कहा , “ मुन्ना भैया तोहार ज़ोर हर ओर होई गवा बा । ”

मैं - “ अब क्या हो गया । ”

दाढ़ू - .” मुन्ना भैया हम ग रहे कलेक्टरेट तोहार चर्च- चर्चा बा । सब पूछत हयेन इ अनुराग शर्मा कौन है । और इ फरगेंया मौसिया त बहुत ज़ोर बाँधे हयेन । ”

मैं “ क्या ज़ोर बाँधे हयेन ? ”

दादू किस्सा सुनाने लगा.....

फरगेंया - “ अरे सजीवन कैसन रहा कालि के जलसा ? ”

राम सजीवन - “ फरगेंया भैया अब ऐसन जलसा एह जीवन में त न देखि पउबै
। कमिश्नर साहब कुल लखनऊ इलाहाबाद में उतारि देहन । ”

फरगेंया - “ और उ भयेनवा ? ”

राम सजीवन - “ फरगेंया भैया उ त तूफान बा , जेहिं ओर बहि जाये लहरै
उड़ाई लै जाई । इ सर्वेश के तकदीर बा ऐसन गदेल पैदा होई गवा । ”

फरगेंया- “ भाषण कैसन रहा ? ”

राम सजीवन - “ सब एक के टारे एक बस मुख्यमंत्री कमजोर पड़ने नाहीं तो
भयेनवा तोहार , राम परकाश सिंह , राज्यपाल त समें बाधि देहे रहेन । ”

फरगेंया - “ देखअ सजीवन इ जलसा बा विद्वानन बरे । सद्वावना सिंह ठहरे
राजनैतिक मनई । ओनके बस के ऐसन मंच बा नाहीं । तू त जनतै ह सजीवन
हम ऐसन जलसन में जाई के शौकीन हई , हम देखेऊ हई ऐसन कारयकरम
पर जैसन सत्यानंद केहेन ऐसन केऊ नाहीं केहेस । ”

राम सजीवन - “ हम त फरगेंया भैया तोहरे सहारे देखि लिहा नाहीं त एतने
बड़े आयोजन में हमार लाति कहाँ लागत । हम तोहार ऐहसान कभौं न भूलब ।
”

फरगेंया- “ देखअ बहुत मारि रही पास के । कुल कलेक्टरेट जावा चाहत रहा
पर सत्यानंद मिश्रा और संजीव रंजन चुनि- चुनि के मनई बोलायेन । हमार -
तोहार त वीआईपी पास रहा , हम त भयेनवा से सीधै पास लिहा । ”

राम सजीवन - “ फरगेंया भैया तोहार त पहुँच ऊँची बा । ज़रा एक दिन
भयेनवा के संगे एक कप चाय पियाई देतअ , कुछ दुई- चार बात बतियाई
लेइत । हमारउ जिउ जुड़ाई जात । ”

फरगेंया - “ चिंता न करअ ओका इहीं कलेक्टरेट बोलवाउब एक दिना । ”

राम सजीवन - “ आई जाये उ इहाँ ? ”

फरगेंया - “ सजीवन तू हमका हल्के में लेत हअ । हमरे भौजी के सगई बहिन
ओकर मामी बा । चलअ पहिले हम तू एक- एक कप चाई पी लेई फिर पियब
भयेनवा संगे । ज़रा चाय वाले के आवाज दअ । ”

चाय पीते- पीते फरगेंया बोले , “ सजीवन एक सूचना देई अगर केहु से न कहअ तब । ”

राम सजीवन - “ का बा सूचना , राम पदारथ वाली बात कमिशनर तक पहुँची गई का । ”

फरगेंया - “ तू सजीवन राम पदारथ तहसीलदार के पीछेन लाग हअ । अरे माफ़ी माँगि लेहेस । कार्यक्रम के दिन रियात रहा । भयेनवा बड़े दिल के बा , माफ़ कै देहेस । तोहार हम राम पदारथ से मेल कराई देब , चिंता न करअ । ”

राम सजीवन - “ तब कौन समाचार बा ? ”

फरगेंया - “ बहुत सनसनीखेज समाचार बा , केहु के कानों- कान खबर नाहीं बा । हमका खबर सुरवै से रही पर तू त जनतै हअ हमका खबर सब रहत हअ पर हम सन्न मारि के बैठा रहित हअ । हमरे सामने लोग उड़ाई- डकाई के खबर बाचत रहत हअ , हमका पक्की खबर रहत हअ पर हम मोह आपन सिये रहित हअ । ”

राम सजीवन - “ ई बात त बा फरगेंया भैया तू पेटे के बहुत गर्ल हअ । का खबर बा । तोहरे ऐसन सूचना तंतर त भारत सरकार के सीआईडिउ डिपांटमेट के नाहीं बा । बतावअ हमार उत्सुकता बढ़त जाति बा फरगेंया भैया । ”

फरगेंया - “ बताइत थई - बताइत थई ज़रा धीरज राखअ । ”

राम सजीवन - “ फरगेंया भैया तू ऐसन लहाई- लहाई के बोलत हअ कि मनई के सूचना बरे जानै निकल जाई । ”

फरगेंया - “ केहु से ज़िकिर न करअ नाहीं त हम तू दुझनौ नौकरी से हाथ धोई लेबै । ”

राम सजीवन - “ भैया ऐसन सनसनीखेज खबर न बतावअ । अब एह उमर में हमार नौकरी अगर चली गय तब त हम कतौं के न रहब । हम गरीब - गुरबा मनई , इहै नौकरी एक सहारा बा । ”

फरगेंया - “ चलअ जब तोहै नाहीं सुनै के बा तब कौनौं बात नाहीं बा । ”

थोड़ी देर बाद फरगेंया बोला , “लअ सुनि ल पर भूलि जायअ । ”

फरगेंया समाचार पा जाएँ और साझा न करें तो उनको बदहजमी होने लगती है ।

फरगेंया - “ ई किताब सत्यानंद अकेले नाहीं लिखने । ”

राम सजीवन - “ तब ? ”

फरगेंया - “ इ भयेनवा बा न ... ”

राम सजीवन - “ का उ लिखेस ? ”

फरगेंया - पकड़ि लेहअ तू सजीवन / उहौ लिखें बा इ किताब में कई कविता
/ ”

राम सजीवन - “ तोहै पता बा कौन- कौन सी कविता भयेनवा लिखें बा / ”

फरगेंया - “ सजीवन हमार सूचना तंतर बहुतै मज़बूत बा / ”

राम सजीवन - “ ई के बताएस ... दादू ? ”

फरगेंया - “ हम इ लड़िका - लबेरी के सूचना पर यकीन नाहीं राखित / हमरे
पास हर जगह मनई हयेन / ”

राम सजीवन - “ तोहार मनई भयेनवा तक हयेन , बहुतै पहुँचा फ़कीर ह
फरगेंया भैया / पर एक बात कहबअ , इ भयेनवा के सब विद्या आवत हअ ।
तू देख लेहअ ई कौनौं कमाल करें , ई नौकरिय सिफ़ न करे / ई भरमावै में
माहिर बा । पता नाहीं कौन सी बूटी रखे बा , सबके सुँधाई देत हअ । ई बोलै
में त माहिर बा । भैया मिलवाई देहअ हमहूँ के / ”

फरगेंया - “ चिंता न करअ । दादुआ के कौनौं काम बा कलेक्टर संजीव रंजन
से , उ लै के आये भयेमवा के तब इहिं बैठाई के चाई पियब हम तू । ”

राम सजीवन -“ भैया अगर ई होई जात तब त हमार पाँच के रंग पानी जमि
जातै । इ राम पदारथ के पता लगि जात हमरौ ताकत । ”

फरगेंया - “ चिंता न करअ इहिं राम पदरथौ के बैठाई देब । अरे आईएएस बनि
ग होये पर बा त हमरे रिश्तेदारी में , हमरे सगई भौजी के बहिन के सगई
भयेन बा ई , हमसे बाहिर कहाँ जाये । ”

मैंने कहा , “ तुमको बहुत मज़ा आ रहा इन सब काम में । ”

दादू - “ तू त जनतै ह भैया हमार ज्यादातर काम क्लर्कन से पड़त हअ , ऐ
सब बहुत हमरे काम के मनई हयेन । हम काल चार नकल निकाला दुई घंटा
में , चार सौ रुपिया बनि गई । हमरे जातै फरगेंया बोलाएस क्लर्क के , अब
तोहका सब जानि गवै हयेन भैया अब हमार जीवन चलि जाये बस तू हमरे
बाल - बच्चन के ख्याल रखअ । ”

मैं - “ आज शालिनी - ऋषभ - आंटी - आंटी के समधिन सब जा रहे मामा के
यहाँ । तुम जाकर बता दो , और सुनो मौसी को भी बता देना कि वह भी आ
जायेगी । ”

दादू - “ ओनका कहाँ बोलावत हअ , बेसहूरी के पेड़ हईन ओ । ”

मैं - “ देखो , तुम्हारे बाबा के जेतनी संतान सबके साँचा का दूसरा कोई और बना नहीं है । अब यमराज अगर आ जाए तब उससे बहस करना आसान है पर तुम्हारी बुआ से बहस करना बिल्कुल आसान नहीं है । अभी कह दो बहन को न बुलाओ लड़ाई चालू कर देगी । यह सब आपस में लड़ेंगे, बुराई करेंगे पर एक- दूसरे के बगैर रह नहीं पाते । ”

दादू - “ ई बात त बा भैया । ”

मैं - “ दादू ई अच्छी बात भी है न । यह हमारी पीढ़ी में नहीं है यह ख़ास बात जो इन लोगों की पीढ़ी में है, यह होना भी चाहिये । अब छोटे - मोटे मतभेद तो होते रहते हैं पर इसका यह तो मतलब नहीं है कि रिश्ता- नाता तोड़ दिया जाये । मामा रो दिये थे तुम्हारे सामने , मुझसे माँ कह रही जा ओनका मनावअ । यह बहुत बड़ी बात है । तुम मौसी के यहाँ से होते हुये जाना । ”

दादू मौसी के यहाँ से होते हुये मामा के यहाँ गया । वह बहुत चतुर था बातचीत में । वह जाते ही बोला , “ चाची आज त घर तोहार तरि जाये । ”

मामी - “ का भवा दादू ? ”

दादू - “ मुन्ना, ऋषभ , बुआ , शांति बुआ , शालिनी और शालिनी सीमेंट के मलिकिन शांति के महतारी सब आवत हईन इहाँ । ”

मामा सुनकर बात कमरे से निकल कर आये और बोले , “ दादू तू मज़ाक़ न करअ । कहाँ ओनके पास समय बा हमरे घरे आवै बरे । ”

दादू - “ नाहीं चाचा.... हम सही कहत हई । हमका भेजा गवा बा बतावै बरे । चाचा शालिनी बहुतै दिलदार बा । ई रामदीन के मकान बनवावत बा और हम कहाँ हमार आधा कमरा बा इहौं पूरा कराई दअ । उ कहेस चाचा , कराई लअ । ”

मामा - मामी बहुत प्रसन्न हो गई । मामी बोली , “ उर्मिला चाहे जैसन होई पर मुन्ना धयान रखत हअ ममिऔरे के । बाबा के बोलावअ , कहि दअ मोहिता से कहि दई आवै बरे । ”

मामी ने मामा से पूछा , “ हरिकेश- विभा के बोलाई लई ? ”

मामा - “ बोलाई लअ पर कहि देहू बियाहे के चर्चा न करें । ”

दादू - “ चाचा हम चली ? ”

मामा - “ तू कहाँ जाबअ , चलअ इंतज़ाम करावअ खाना के । ”

दादू - “ चाचा हम त तोहार सिपाही हई जैसन तोहार आदेश होई वैसन करब । चाचा एक बात बताई ? ”

मामा - “ बतावअ । ”

दादू - “ शालिनी अम्मा से कहेस कि हमारे पापा के संपत्ति के वारिस हम अकेले नाहीं हई , अनुरागौ वारिस हयेन , चाचा चलअ बात ऐसनै लोग कहि देत हआ लेकिन ई बात इ त बतावत हआ कि मुन्ना के केतनी पैठ बा शालिनी के इहाँ । चाचा , एक बात और बताई ? ”

मामा - “ बतावअ । ”

दादू - “ कुंडली गुरु लगा हयेन अहूजा के संपत्ति पर । ”

मामा - “ ई मुन्नवा के पर-बाबा जनेऊ में लाठी बाँधि के सेमरहा से गंगा नदी पार कै के खेत क़ब्ज़ा करत रहेन । अब एकरे खूनै में खुराफ़ात बा । इ सब चाल मुन्ना के होये । एकरे पास खुराफ़ात के दिमाग़ बहुत बा । ई सात साल के रहा तब सिगरेट पियत रहा । ई नाक से सिगरेट के धूँआ सात साल के उम्र में निकालै सीख ग रहा । उहीं उम्र में ई खलिहान पर चोरी करत रहा , अब आहूजा के संपत्ति गई । ई कुछ माया फैलाये । कमिश्नर साहेब के केतना पटाये बा । ”

दादू - “ चाचा फ़ायदा त हमअ पाँच होत बा ना ओकरे खुराफ़ात के , देखअ तू क़ब्ज़ियाये हआ मालदार जगहा , हमार काम त छोटै- मोट बा पर काम त निकलत बा । ”

मामा के कमजोर नस को दादू ने दबा दिया था , वह चुप हो गये ।

मामी - “ ई मुन्ना नाक चुवावत घूमत रहा कुछ साल पहिले तक , आज देखअ हर जगह इहि के धूम मची बा । ई उर्मिला कौनौ जप केहे होए हरिद्वार के कुंभ में केहू के हवा देहेस नाहीं । हमार माथा तबै ठनका जब ई चार दिन हरिद्वार के कुंभ रहि के आई । हमका बताई देहे होत हमहू कई लेझत पर हमका काहे बतायें ऊ । ”

बाबा भैया बुलेट पर किक मारकर चल दिये मोहिता दीदी और हरिकेश मामा की तरफ

मेरे अंदर परिवर्तन हो रहे थे । मैं सीखने लग गया था कैसे कपड़े पहने जाते हैं । मैं पहले कुछ भी पहन लेता था पर अब कपड़ों में समायोजन सीखने लगा था । इसमें शालिनी का बहुत योगदान है । उसने ऋषभ का पूरा डरेसिंग सेंस बदल दिया था । वह हमेशा यह ध्यान रखती थी ऋषभ क्या पहने और कैसे पहने । मैं भी ऋषभ को अवलोकित करके सीखने लग गया था । वह ऋषभ के कपड़ों का बहुत ध्यान रखती थी । वह कैसे टाई पहने, किस पैंट पर कौन सी टाई पहने, कफलिंग कब लगाये, कब न लगाये, बाल कैसे बनाये । वह तो कपड़े पहनने, बिंदी लगाने, कान के झुमके सब में बहुत ध्यान रखती थी । शालिनी का हमारे और ऋषभ दोनों के जीवन में प्रवेश हो चुका था । मैं शालिनी की रुचियों का ऋषभ को अवलोकित करके जान जाता था । मेरे अंदर आ रहे बदलावों को लोग देख भी रहे थे । मैं घर में और लोगों से अलग होता जा रहा था । मैं पहले कपड़े परेस नहीं करता था पर अब कपड़े परेस करने लगा था । मेरे अंदर आ रहे परिवर्तन दाढ़, गुड़िया और चुन्नू भी देख रहे थे और नक्ल करने लगे । दाढ़ मेरे कपड़े परेस करता था, वह अपने भी परेस करने लगा । मैं शालिनी के पहनने का ढंग माँ को बताता था और कहता था तुम भी ऐसा ही पहनने की कोशिश करो । वह हर बात पर यही कहती थी, “ हमारा वक्त चला गया । ” मैं समझाता था कि तुम्हारी अभी उम्र ही क्या है ? सोलह साल में विवाह हुआ 19 साल की उम्र में मैं पैदा हुआ । तुम्हारी उम्र इस समय 40 के आस- पास है । इस उम्र में लोग विदेशों में विवाह करते हैं पर इस उम्र में तुम संन्यास की मुद्रा में आ गयी हो । तुम अभी कितनी कम उम्र की लगती हो, तुम 35 साल के आसपास लगती हो, इसका कारण तुम्हारा संयमित जीवन और परिश्रम है । मेरी माँ कभी लिपस्टिक नहीं लगाती थी । मैंने शालिनी से एक लिपस्टिक माँग लिया था इसके लिये । मैंने कहा भी कि आज तुम शालिनी की तरह हल्की लिपस्टिक लगाना, तुम तमाम सुंदरियों पर भारी पड़ोगी । मेरी माँ बोली, ” मुन्ना तू त सीख गयअ मेहरासु सजावत के काम बियाहे के पहिले । बियाहे के बाद का होये ? तू त सारा दिन आपन मेहरासु सजावत रहबअ । तोहरे पिताजी के त कुछ नहीं आवत । ”

मैंने उसकी साड़ी और ब्लाउज़ का रंग विपरीत रंग के ऐसा संयोजित करके कहा यह पहनना तुम ।

माँ बोली, “ हम पहिली बार सुनत हई मुन्ना केउ अपने महतारी के एह तरह सजावत हअ । ”

मैं “ माँ, मैंने सब शालिनी को देखकर सीखा है । उस लड़की में चाहे जो कमियाँ हों हमारी नज़र से पर वह एक नायाब लड़की है । मेरी, तुम्हारी, आंटी की शिकायत इसलिये हो सकती है कि वह ऋषभ को लेकर विदेश चली गयी पर क्या उसको अपने भविष्य के लिये सोचने का हक्क नहीं है ? तुम

भी तो पिताजी के साथ गाँव छोड़कर शहर आयी । आंटी भी इलाहाबाद छोड़कर दिल्ली गयी और आंटी के पति का अपने पैतृक घर से कोई संबंध न था । क्या वह सब सही है ? अगर वह सब सही है तब शालिनी कहाँ गलत है । वह कितनी उदार है । ऋषभ के मामा के मकान बनाने का काम उसने अपने हाथ में ले लिया , दादू ने कहा कि मेरा कमरा आधा बना है वह बोली वह भी बनवा लेना । मुझसे कह रही मैं दिल्ली जाकर अपनी कार भेज देती हूँ , वह दिल्ली में किसी काम की नहीं क्योंकि मैं अमेरिका चली जाऊँगी । उसकी कार बीएमडब्ल्यू का है । यह कार पूरे शहर में नहीं है । तुम्हारा नया नाम नाम हो जायेगा , “ उर्मिला शर्मा बीएमडब्ल्यू वाली ” ।

माँ - “ ई कब कहेस ? ”

मैं - “ कल रात में । ”

माँ - “ काहे कहेस ? ”

मैं - “ हर चीज के पीछे मंतव्य होता है , इसके पीछे भी है , बताऊँगा बाद में । तुम लोग तैयार होकर चलो मामा के यहाँ , मैं उनको लेकर आता हूँ । ”

मेरी माँ , मेरी बहन और भाई को साथ ले जाना नहीं चाहती थी । वह दोनों संघर्ष कर रहे थे साथ चलने को पर माँ ने फ़ैसला ले लिया तो ले लिया , वह कहाँ सुनने वाली । मैं कपड़ा पहन कर अपनी बेल्ट बाँध रहा था कि मेरी बहन आयी ।

वह थोड़ा निराश थी । वह बोली , “ भैया मैं भी चलूँगी । ”

मैं - “ चलो , इसमें क्या समस्या है ? ”

बहन - “ माँ ने रोक दिया है कि तुमको और चुन्नू के चलने कोई ज़रूरत नहीं । ”

मैं - “ गुड़िया तुम तो जानती हो उसको , एक बार जो कह दिया सो कह दिया । अब मैं कहूँगा तब लड़ाई करेगी कि तुम अनुशासन ख़राब कर रहे हो । अब जाने के समय बहस अच्छी बात नहीं है । ”

वह निराशा के स्वर में बोली , ”

एक बार कह दो आपकी बात मान जायेगी । ”

मैंने कहा , “ चलो आता हूँ कोशिश करता हूँ । ”

मैं नीचे गया , वह तैयार हो चुकी थी । उससे लिप्स्टिक लग नहीं रही थी । मैंने कहा एकदम हल्के से लगाना । बहन से कहा तू लगा दे । ऐसा लिप्स्टिक

चलाना कि वह बस थोड़ा सा होंठों को स्पर्श करें और दबाव बहुत ही कम देना लिपस्टिक पर और उसको एक बार होंठों पर चलाना और फिर उसी रास्ते से तरह वापस ले आना । उसने वैसा ही किया और हो गया । माँ सुंदर थी ही और वह और बेहतर लगने लगी । माँ ने पूछा , “ कहाँ से सीखअ तू ? ”

मैं “ शालिनी से पूछा था उसी ने बताया । ”

माँ बार- बार शीशे में अपने को देखने लगी । मैंने कहा , “ इसको भी चलने दो । यह भी देखेगी लोगों को । इसको भी यह दुनियादारी सीखने दो । गुड़िया को भी किसी के साथ जीवन बिताना है , अब अब नहीं सीखेंगी तब कब सीखेंगी । इतने लोग होंगे वहाँ पर , सारे लोग देखकर ही सीखते हैं । ”

तीर निशाने पर लग गया । माँ ने कहा चलो । अब वह जब जाने लगी तब चुन्नू कहाँ मानने वाला । माँ का उसके प्रति एक अतिरिक्त लगाव था , वैसे भी छोटे बच्चे से लगाव अतिरिक्त हो ही जाता है । वह बग़ैर पूछे तैयार हो गया । बहन मेरे पास आयी और पूछी , “ भैया मैं क्या पहनूँ ? ”

मैं “ मैं कोई डरेस डिज़ाइनर हूँ क्या? थोड़ा देखकर ऋषभ को सीख गया हूँ नहीं तो मुझे कुछ ख़ास कहाँ आता है । ”

उस बेचारी के पास ज्यादा कपड़े थे ही नहीं । मुझे पहली बार एहसास हुआ उसके साथ मैंने ज्यादती की उसके लिये कपड़े न सिलाये जबकि पैसा मैंने बहुत कमाया । मैं सोचने लगा क्या करूँ । अब इस समय तो कुछ हो नहीं सकता था इसलिये मैंने जो समझ में आया बता दिया और कहा तू शाम को जाकर कपड़े अच्छे ख़रीद लेना । मेरी माँ की कंजूसी से सब तरस्त थे । मैंने कहा उससे ज़िकर न करना नहीं तो वह ख़रीदने नहीं देगी ।

मैं नीचे आया और कहा कि मैं यात्रिक होटल जा रहा , कार भेज दूँगा । तुम लोग मामा के यहाँ पहुँच जाना मैं आंटी के साथ आऊँगा ।

मैं यात्रिक होटल चला गया । मैं सीधा आंटी के कमरे गया । आंटी सिर्फ़ सफेद कपड़े पहनती थी । उसने वैधव्य को अक्षरशः जीवन में उतारा था । मेरी माँ और आंटी की उम्र तकरीबन एक ही थी पर मेरी माँ आंटी की तुलना में युवा लगती थी , शायद इसका कारण एक जीवन में उल्लास का होना था । मेरी माँ के जीवन में सारी समस्याओं के बाद भी एक उल्लास था पर आंटी के पास कोई उल्लास जीवन में था ही नहीं । वह मृत्यु का इंतज़ार कर रही थी जबकि मेरी माँ अभी भी जीवन का इंतज़ार कर रही थी । शायद यह मनःस्थिति एक दूसरे की काया पर प्रभाव डाल रही थी । आंटी मुझको देखते ही प्रसन्न हो जाती थी । वह बोली , “ कल रात चार बजे तुम गये ,

क्या बात करते रहे ? तुम अब माँ की तुलना में भाई- भाभी को ज्यादा समय दे रहे । “

मैं - “ कुछ ख़ास बात तो नहीं किया आंटी बस यूँ ही टाइम पास बात करते रहे । ”

आंटी - “ मुझे भी बताओ वह टाइम पास बात- चीत । ”

मैं - “ कुछ ख़ास नहीं प्रेम की व्याख्या पूछ रहे थे वे लोग । ”

आंटी - “ ऋषभ तो यह पूछने से रहा , शालिनी ही पूछी होगी । ”

मैं - “ हाँ शालिनी को रुचि ज्यादा थी । ”

आंटी - “ तुम्हारी व्याख्या से सहमति थी उनकी ? ”

मैं - “ आंटी आप जो जानती हैं वह क्यों मुझसे पूछ रहीं ? ”

आंटी - “ चलो अच्छा हुआ एक नयी परिभाषा का पता चला उनको । ”

मैं - “ आंटी , आपके मायके - ससुराल में क्या हुआ आपने बताया नहीं । ”

आंटी - “ तुम्हारे पास समय ही नहीं सुनने का तब बताती कैसे ? ”

मैं - “ आज शाम को बताना । ”

आंटी - “ आज तुम मेरे ही कमरे में आना बात करनी है , ऋषभ के कमरे मत जाना । ”

मैं - “ ठीक है आंटी । ”

मैंने आंटी से कहा कि मैं नीचे बैठता हूँ , आप कपड़े बदल लो । शालिनी - ऋषभ भी तैयार हो रहे होंगे । आंटी ने कहा , “ तुम शालिनी के माँ के पास चले जाओ वह कई बार मुझसे कह चुकी हैं कि अनुराग से बात नहीं हुयी है । मैंने कहा , “ ठीक है मैं उनके कमरे चला जाता हूँ । ”

मैं शालिनी की माँ के कमरे गया । वह बहुत प्रसन्न हुयी मुझे देखकर मुझसे कहा कि आहूजा साहब पछता रहे न आकर । मैंने फ़ोन करके सब बताया उनको । वह कह रहे थे कि मुझे भी आना चाहिये था ।

मैं - “ मैंने तो कहा ही था कि वह भी आवें । उनके तो बहुत से डीलर हैं यहाँ पर उनसे वह मिल भी लेते , एक व्यापारिक काम भी हो जाता । ”

शालिनी की माँ - “ बेटा , बहुत फैला व्यापार है , सभल ही नहीं रहा । यह लोग भी विदेश चले गये , अगर यह लोग यहाँ रहते तब इनको सौंप कर

निश्चिंत हो जाते , पर इनकी रुचि नहीं है इस काम में । इतना बड़ा व्यापार इतनी मुश्किल से जमाया गया पर अनाथ हो गया । “

मैं - “ कोई और नहीं है सँभालने वाला ? ”

शालिनी की माँ -“ शालिनी के पापा की तरफ से तो कोई है नहीं यहाँ । मेरी बहन का तरफ से हैं लोग पर उनका भी अपना काम है । अब इतनी मेहनत से जमाया व्यापार किसी को दिया भी तो नहीं जा सकता । ”

मैं - “ यह बात तो ठीक कह रहीं आप । ”

शालिनी की माँ -“ बेटा वह फ़ोटो आयी ? ”

मैं - “ आ गयी होगी , मैंने पता नहीं किया । आज रात को जाता हूँ साहब के यहाँ लेकर आता हूँ । कह तो दिया था कि तीन कापी फ़ोटो की बनवा देना , बनवा ही दिया होगा । ”

इतने में शालिनी अपनी माँ के कमरे में आ गयी । मुझको देखकर थोड़ा प्रसन्नतापूर्वक आश्चर्य में आ गयी और बोली , “ अनुराग रिश्तों को सहेजना तुमको बहुत आता है , यह बात तुमसे सीखने लायक है । ”

मैं - “ अब और कुछ तो है नहीं मेरे पास , यही अगर है तो क्या कम है । शालिनी आपकी सास ने कहा मुझसे कि तुम अपने भाई - भाभी के पास बहुत रहते हो । उसके कहने पर याद आया मुझे तुमको भाभी कहना चाहिये । ”

शालिनी - “ प्लीज़ अनुराग यह मत करो । यह भाभी बहुत अजीब लगेगा मुझको । तुम आज सुबह- सुबह मेरी खिंचाई मत करो । तुम शालिनी बोलते हो तो एक संगीत आता है इस भाभी में कोई संगीत नहीं आयेगा । ”

मैं - “ जैसी आपकी मर्जी , मैंने प्रस्ताव दिया पर आपने अस्वीकार कर दिया । ”

शालिनी - “ एक सिरे से अस्वीकार कर दिया । मैं तैयार होती हूँ । मैं मम्मी को देखने आयी थी । आधा घंटा लगेगा तब चलते हैं । ”

मैं नीचे चला गया थोड़ी देर बाद यह लोग नीचे आये । शालिनी सफेद साड़ी में काले रंग का ब्लाउज़ , एक हाथ में हीरे से चमचमाता कंगन दूसरे हाथ में दो लाल चूड़ी , कान के झुमके नीचे तक लटकते हुये , मोटी बिंदी , हल्का सिंदूर माँग में , हमेशा की तरह हल्की लिपस्टिक , आँखों पर काला चश्मा और एक पैर में पायल । वह चलते हुसे मेरी तरफ आयी और एक हल्के लाल रंग का दुपट्टा ऐसा मेरे गले में लपेट दिया । मैंने पूछा , “ यह क्या है ? ”

शालिनी- “ तुम ऋषभ की तरह टाई पहनते नहीं । यह गले में लपेट देती हूँ , यह बहुत अच्छा लगता है । ”

वह गले में वह दुपट्टा सहेजने करने लगी । मैं असहज हो रहा था । आंटी ने उसको थोड़ा और ठीक कर दिया और कहा , “ अनुराग तुम बहुत अच्छे लग रहे हो । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 255

मैं मामा के यहाँ पहुँचा आंटी के कुनबे को लेकर । मेरी माँ पहले ही पहुँच गयी थी और वह मेरा इंतज़ार कर रही थी । मैंने घंटी बजायी और दरवाज़ा माँ ने ही दौड़कर खोला । उसने दरवाजा खोलते ही कहा , “ मुन्ना कहाँ अटक ग रहअ । सब लोग इंतज़ार करत हयेन देरी से । ”

मैं “ माँ , अब लड़कियाँ समय से तैयार हो जायें तब तो वह जीवन का एक बहुत बड़ा समय व्यर्थ होने से बच जाये , पर उनको तो सँवरना ही है । तुम भी कम नहीं सँवरी हो आज , यह आँखों में काजल , गले में पतली सी सोने की चेन , यह कान में टाप्स सोने के , नाक की कील सब आज तो चमक रहे हैं , यह बिंदी कितने करीने से लगायी तूने माथे के चतुर्भुज के एकदम केन्द्र में , सिंदूर लगाने में तो तेरी महारथ है जैसे यह सिंदूर ही सुहाग की रक्षा कर रहा । पिताजी को दिखाकर यह सब हटाना अपने महानतम व्यक्तित्व के आवरण से । ”

माँ- “ ओनके पास कहाँ समय बा , इ सब देखै के । ”

मामी - “ मुन्ना अपने महतारी से बतियाई के समय घरे में कम मिलत हअ का कि तू इहिंउ माइन में अपने लपटियान हअ । कुछ समय ममिऔरे के दै दआ । घरे जायअ तब अपने महतारी से बतियायअ । ”

मैं मामी की ओर मुड़ा उनके पैर छुये , हरिकेश मामा , विभा मामी , मोहिता दीदी उनके पति अशोक जीजा जी , बाबा भैया , भाभी , दादू , गुड़िया , चुन्नू सबके सब मौजूद थे । एक भरा पूरा परिवार कितना अच्छा लगता है । इस पारिवारिक भीड़ से उपजी ऊर्जा आह्नाद दे रही थी ।

“ थोड़ी गलती होई गई उर्मिला बाबुओं के बोलाई लेहे होइत त अच्छा होत । ओनका बहुत अच्छा लागत सबके एक संगे देखि के ” , मामा ने बातचीत के बीच कहा ।

इसी समय तिवारी झराइवर आंटी के साथ फलों की टोकरी , मिठाई - नमकीन के कई डिब्बे लेकर अंदर परवेश किया और साथ में ऋषभ-शालिनी

/ सबकी उत्सुकता का के केन्द्र आंटी की बहू शालिनी थी , जिसके क्रिस्से यह लोग मुझसे कई बार सुन चुके थे ।

शालिनी इतना सामान लेकर आयी थी वह भी लोगों का अतिरिक्त ध्यान आकृष्ट कर गया था । मैंने हमेशा शालिनी के साथ यह पाया कि उसको आता है , किस तरह से अपने को संचालित करे । उसके रूप से ज्यादा सुंदरता उसके पहनने- ओढ़ने, चलने और अंग संचालन में है । उसने सिर पर पल्लू रखा हुआ था , पल्लू को एक हाथ से सँभाला था और काला चश्मा वह बहुत लगाती थी , पता नहीं धूप से बचने के लिये या सुंदरता को बढ़ाने के लिये । उसने आते ही मेरी मामी का पैर छुआ । ऋषभ ने भी शालिनी के साथ ही पैर छुआ । माँ ने आशीर्वाद दिया , “ सदा सुहागिन रहो । ” यह आशीर्वाद हमारे गाँव- देहात में हर लड़कियों को दिया जाता है , जैसे जीवन में सुहागिन रहने से बड़ी कोई दूसरी उपलब्धि है ही नहीं । उसके बाद पैर छूने का जो करम चला कि शालिनी की कमर ही टूट गयी होगी । उसको अगर पता होता कि इतना कमर तोड़ पैर छूना पड़ेगा तब वह कभी न आती । मैंने दूर से आँख मिलने पर मुस्कुराते हुये बगैर लफज़ों के आँखों से ही कहा , “ इलाहाबाद की बहू बनना आसान नहीं लोग हर तरफ से तोड़ देते हैं । ”

माँ ने मोर्चा सँभाला , वैसे भी उसके सामने बोलना कहाँ आसान है किसी के लिये , पर आज तो वह दो प्रतापी बच्चों की माँ और एक हज़ार करोड़ के वारिस की सास का दर्जा लिये बैठी थी । दादू ने आहूजा साहब के संपत्ति का इतना बखान किया था कि वह पूरे वातावरण में व्याप्त था । शालिनी का यह कहना , मैं अकेले ही अपने पापा की संपत्ति की वारिस नहीं हूँ अनुराग भी है “ , यह एक सनसनी फैला ही चुका था । मेरी माँ भी उस शालिनी के वाक्य को अपने अंदर समाहित कर चुकी थी । मेरे मामा कुछ हज़ार रूपये घूस का रोज पाते थे , शनिवार - रविवार छुट्टी का दिन होता था और उस दिन पैसा घर आता नहीं था । सरकार ने बेवजह पाँच दिन का सप्ताह कर दिया , छः दिन का ठीक था । यह एक दिन की घूस की कमाई चली गयी । यहाँ हजार- दो हज़ार रूपया लेकर मामा आते थे यहाँ मुन्ना वारिस बन गया इतनी बड़ी दौलत का । यह एक नैराश्य भाव दे रहा था मामा- मामी को पर ऊपर से सब प्रसन्नता दिखा ही रहे थे । पूरे वातावरण में आपसी मेल - मिलाप की ऊर्जा क्रायम थी । सबकी रुचि शालिनी को देखने और निहारने में थी । मोहिता दीदी बहुत क्राबिल थी वह पढ़ी- लिखी थी वहीं शालिनी से ज्यादा बात कर रही थी । शालिनी को अंगरेज़ी- हिंदी दोनों भाषायें आती थी । वह उर्दू भी सीख रही थी । मोहिता दीदी ने पूछा , “ आपको इतनी अच्छी हिंदी कैसे आती है जबकि आप अंगरेज़ी माध्यम के बोर्डिंग स्कूल में पढ़ी और विदेश रह रहीं । ”

शालिनी - “ यह है न अनुराग सिखाने के लिये । इसका और माँ जी का करेसपांडेस कोर्स चलता है पत्र के माध्यम से , वहीं मैंने भी ज्वाइन कर लिया है । शब्द- विन्यास सीखने के लिये वह बहुत अच्छा है फिर किताब भी बताता रहता ही है । ”

मैं “ मोहिता दी यह न्यूयार्क हिंदी समिति की बहुत महत्वपूर्ण सदस्या हैं , यह उसकी सर्वेसर्वा होने जा रहीं , जल्दी ही । ”

शालिनी - “ मैं जब सर्वेसर्वा हो जाऊँगी तब जैसा विमोचन कमिशनर साहब का हुआ है वैसा ही एक आयोजन वहाँ कराऊँगी और अनुराग , राम प्रकाश सिंह सर और राज्यपाल जी को आमंत्रित करूँगी अमेरिका में हिंदी भाषियों के बीच हिंदी को बढ़ावा देने और भारतीयों के मध्य अपनी संस्कृति के प्रसार के लिये । ”

मोहिता दी - “ इसका खर्चा कौन उठायेगा ? ”

शालिनी -“ हिंदी समिति के पास पैसे की कौन सी कमी है । वह तो ऐसे मौके द्वूँढ़ते रहते हैं , वह सब गौण वस्तु है । हम भारतीयों से कम आग्रह उनका अपनी संस्कृति से नहीं है । कई बार भारतीय कलाकार आते हैं , सारा खर्च हमारी समिति ही उठाती है । मैं अगर समिति की सचिव बनीं तब मैं इस समिति को साहित्यिक कलेवर दूँगी और लेखकों को आमंत्रित करूँगी । ”

शालिनी एक और मुद्दा दे दिया । अब यह एक और चर्चा शुरू हो जायेगी कि “ मुन्ना अमेरिका जायेगा ।

शालिनी - “ माँ जी भी आयी नहीं है कभी अमेरिका अनुराग माँ को साथ लेते आयेंगे । ”

ऋषभ - “ उसके लिये तुम्हारे हिंदी समिति के सचिव - अध्यक्ष बनने की क्या ज़रूरत , हम ही बुला लेते हैं तुम हिंदी पर कोई सेमिनार कर लेना । अनुराग का हिंदी पर भाषण तो कहीं भी करा सकती हो । जो वह विमोचन में बोला है वही बोल देगा लोग सम्मोहित हो जायेंगे । ”

मैं “ नहीं , मैं और अच्छे से तैयार कर लूँगा । ”

आंटी - “ हम - उमिला दोनों आ जायेंगे । ”

माँ - “ शांति , हम त रेलगाड़िय से बस विंध्याचल , मैहर और एक बार हरिद्वार ग हई । हम न जाई पाउब जहाज़ से । ”

ऋषभ - “ आंटी जी उसमें एक आगे वाला दर्जा होता है जिस पर आप सो सकते हो पता ही नहीं चलेगा रास्ते का । ”

चर्चा हवाई सफर से मेरे विवाह पर आ गयी । अब मेरे विवाह पर बात न हो यह कहाँ हो सकता है । सुरुचि मिश्रा नयी उम्मीदवार हो चुकी थी । वह अंग्रेजी बोलती थी और उसकी अकेली रैंक पूरे शहर में मुझसे आगे थी । उसके पिता शहर के ही आदमी थे और उनको लोग जानते थे । हरिकेश मामा , मेरे मामा दोनों ही उसके पापा को अच्छे से जानते थे ।

एक आईएएस लड़की परिवार की बहू बन सकती है यह एक मुद्दा दिन -प्रतिदिन विमर्शित हो रहा था और आने वाले समय में इसका परिवार पर क्या प्रभाव पड़ेगा और एक आईएएस बहू किस तरह से परिवार के साथ सामंजस्य बैठा पायेगी इस पर हर एक की अपनी राय थी और ज्यादातर राय विरोध की ही थी । ज्यादातर लोग कह रहे थे कि यह यह संबंध एक प्रतिष्ठा परिवार की बढ़ा सकता है पर सामंजस्य का बैठना आसान न होगा , उसका मुख्य कारण मेरी माँ का खर स्वभाव और मेरा और माँ का लगाव था । एक तर्क जो बहुधा लोग दिया करते थे वह यह था कि मेरी माँ मुझ पर पूरी तरह क़ब्ज़ा किये हुये हैं और वह किसी और को मुझ पर क़ाबिज़ नहीं होने देगी , आने वाली लड़की यह बर्दाशत क़तई नहीं करेगी । इसमें क्या सच है क्या गलत यह लोगों के अपने आगरह- पूर्वगरह से विवेचित होता रहता था । मेरी सारी रिश्तेदारियों में मेरा विवाह एक चर्चा का मुख्य मुद्दा था और हर कोई मेरे विवाह में आने का इच्छुक था । माँ से हर कोई कहता रहता था , हमको भूल मत जाना मुन्ना के विवाह में । मेरे पिताजी इन सब पंचउरों से जितना ही दूर थे मेरी माँ इसमें उतना ही लिप्त थी ।

मेरी मामी ने विवाह की बात छेड़ दी यह कहकर , “ उर्मिला कुछ सोचू मुन्ना के बियाहे बरे ? ”

माँ - “ भौजी , हमरे त कुछ समझ में अवतर्झ नाहीं बा । अब सब बड़- बड़वार मनर्झ आवत हयेन । अब केऊ हमार हैसियत त देखि के आवत बा नाहीं , सब मुन्ना के सफलता देखि के आवत हयेन । अब ऐतने बड़े घर के लड़की हमसे कैसे सँभले इ सोच दिन पर दिन होत जात बा । ”

मामा - “ उर्मिला सुना हअ तू कमिश्नर के रिश्ता पर मन बनावत हउ । ”

माँ - “ भैया , कतौ त बियाह आज नाहीं त काल करबै करब । साहेब हयेन बहुत बड़ा आदमी । साहब के बाबूजी आई रहेन और कहेन अब अनुराग के हम ऐतना जानि गअ हई कि कौनों और लड़िका हमअ सोहात नाहीं हयेन , हम इंतज़ार करब जब तक मुन्ना के बियाह न होई जाये । प्रतीक्षा परीक्षा देति बा । नवंबर के बाद बात करिहिं । अब साहब के ऐतना मान बा , सम्मानित परिवार बा , अब ऐतना बड़ा आदमी कहत हयेन हमार फ्रोटो- कुंडली रख लअ तब भैया नाहीं कैसे कही । ”

मामा- “ सुना हअ साहेब कहने कि जौन दहेज चाही हम सब देब । ”

माँ - “ भैया , इत नाहीं कहने साहेब । ओनकर बाबू कहेन कि हमका पता बा इलाहाबाद के बियाहे में दहेज के प्रथा बा , हम प्रथा के मान- सम्मान करब । भैया लोग बदनाम करत हयेन कि शर्मा जी दहेज के लोभी हयेन , लोगन के दौड़ावत हयेन पर केसे हम माँगा दहेज इ बतावअ ? रामराज से पूछ लअ , हरिकेश हयेन इहीं ओनसे पूछ लअ । हम केसे कुछ माँगा । एक बिटिया के बियाह के चिंता बा उ अब मुन्ना के माथे बा जहाँ चाहें बहिन के अटकाय दई या सजाई दई । मुन्ना समझदार बा ई काम के चिंता हटि गई बा । भैया , हम का करब रूपिया लै के , हम त इ काम शालिनी के सौंप देहे हई । अब शालिनी जौन लड़की पर हाथ धै देझहिं उहीं कै देब बियाह । ”

ऋषभ -“ आंटी जी आप गुड़िया के विवाह से निश्चिंत रहें । हम अनुराग किस दिन के लिये हैं । आप बस लड़का ढूँढ़ लेना जो गुड़िया को अच्छा लगे बाकि काम हम कर देंगे । मेरी माँ कहती थी कि कन्यादान किये बाज़ेर मुक्ति प्राप्त नहीं होती । आप लोग मुक्ति प्राप्त करने का जो भी विधान है उस पर ध्यान दो बाकी सब काम हो जायेगा । ”

मोहित दीदी के चेहरे से यह साफ़ लग रहा था कि उनको शालिनी को यह अधिकार देना बिल्कुल अच्छा नहीं लगा । माँ ने उनकी हैसियत शालिनी के सामने गौण कर दी थी ।

विभा मामी - “ उर्मिला बहिन शालिनी जी सब लड़की देखत हई हमरौ बिटिया देखि लई । का पता मुन्ना हमरे बेबिन के प्रारब्ध में लिखा होई । केहू के तकदीर के केउ जानत नाहीं जौन विधाता लिखे होत हआ । ”

माँ - “ विभा हम त कहने हई भैया से कि ज़रूर सोचब जब बियाह करब । पर अबै समय नाहीं आई बा । ”

लोगों ने खाना खाया । मामी आंटी को घर दिखाने लगीं । मैं और ऋषभ बाहर को कमरे में बैठ गये । बाबा भैया हम लोगों के साथ बैठे थे , पर वह कुछ बात कर नहीं पा रहे थे । ऋषभ के नाम की बड़ी हवा बह रही थी मेरे रिश्तेदारियों में - आईआईटी टापर , कम्प्यूटर इंजीनियर , पद्मशरी , अमेरिका में लाखों-लाख डालर कमा रहा , शालिनी सीमेंट का अकेला वारिस कोई भी उससे बात करने में सहज नहीं होता था , बाबा भैया तो ठहरे ठस बुद्धि आदमी वह ऋषभ से निगाह मिलाने का ही साहस नहीं कर पा रहे थे । थोड़ी देर में ऋषभ बोला , “ यार चलो चलते हैं । ”

मैं - “ बोर हो रहे हो ? ”

ऋषभ - “ बहुत , यह हमारे - तुम्हारे लायक बातचीत की जगह है नहीं । ”

मैं हँसने लगा और कहा , “ अभी तो शुरूआत है , आगे देखना क्या होगा । ”

ऋषभ - “ यार इतना ही झेल लिया बहुत है । चलो थोड़ा बाहर ठहलते हैं, यह मुहल्ला ही देखते हैं । ”

हम और ऋषभ बाहर निकल कर चौराहे पर आ गये । चौराहे से सीधी सड़क ईसीसी की तरफ जाती थी । मैंने बताया कि यही वह सड़क है जिस पर ईसीसी है ।

ऋषभ - “ चलो ईसीसी ही देख आते हैं । तब तक यह लोग निपटा लेंगे अपना काम । ”

मैंने तिवारी ड्राइवर को आवाज दी और हम और ऋषभ ईसीसी चले गये । वहाँ गणित विभाग सबसे पहले पड़ता था । एक चक्कर कालेज के अंदर की सड़क का लगाते हुये .. फिलडेलफिया होस्टल, शिक्षा विभाग, इतिहास, भूगोल, कैफ़ेटेरिया, मेन घड़ी वाली इमारत, लड़कियों की डेलीगेसी, पिरंसिपल का बँगला, मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान विभाग होते हुये गणित विभाग में आ गये ।

ऋषभ - “ राम प्रकाश सिंह सर इसी विभाग के हैं । ”

मैं - “ हाँ । ”

ऋषभ - “ वह होंगे ? ”

मैं - “ और कहाँ जायेंगे ? और कौन ठौर - ठिकाना है उनके पास, किसी क्लास में ब्लैक बोर्ड पर चाक घसीट रहे होंगे । ”

ऋषभ - “ चलो मिलते हैं । ”

मैं और ऋषभ अंदर गये । शैलेश्वर पाठक सर कई और अध्यापकों के साथ बैठे थे । मैं अंदर प्रवेश किया और अपना परिचय दिया । समाचार पत्र ने मेरी मदद कर दी थी नहीं तो क्लास न करने वाले को कहाँ कौन पहचानने वाला था । कमिशनर साहब का विमोचन कार्यक्रम इस तरह छपा था समाचार पत्रों में कि सब को पता था कि वहाँ पर क्या हुआ ।

मैंने पूछा राम प्रकाश सिंह सर के बारे में तो मेरा अनुमान सही था वह क्लास ले रहे थे । सर थोड़ी देर में आ गये । ऋषभ का परिचय यहाँ बड़ा परिचय था । उसकी गणित की नायाब खोज का पाठक सर को पता था । उन्होंने पढ़ा था इसके बारे में । पाठक सर ने थोड़ी देर बात करने के बाद ऋषभ से कहा, “ अगर आप के समय हो तो थोड़ा हमारे बच्चों से इस खोज पर बात कर लो । अनुसंधान का परिणाम और अनुसंधान की प्रक्रिया दो अलग- अलग वस्तुयें होती हैं । लोग परिणाम जानते हैं पर वह प्रक्रिया कम लोग जानते हैं जिसके कारण वह अनुसंधान पूर्णता को प्राप्त करता है । आप थोड़ी देर

समय निकाल सको तो यहाँ के छातरों को एक नया दृष्टिकोण मिल जायेगा ।
“

ऋषभ सहर्ष तैयार हो गया । हम लोग थोड़ी देर गणित विभाग में रुके । पाठक सर ने कहा , “ मैं यह प्रधानाचार्य को भी बता दूँगा , यह कालेज के लिये एक बड़ा दिन होगा कि एक कालजयी अनुसंधान की प्रक्रिया का विवरण छातरों के समुख होगा । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 256

ईसीसी गणित विभाग से निकलते ही ऋषभ नर्वस होने लगा । उसने कह तो दिया था कि कल मैं अपना अनुभव साझा करूँगा पर वह कोई इलाहाबाद का बकैत - फकैत तो था नहीं कि जहाँ पब्लिक मिले चालू हो जाये । वह एक अध्ययनशील छात्र था और है । वह अपने तकनीकी मामलों में बहुत ही दक्ष है पर लोगों को संबोधित करने में वह पारंगत नहीं था । उसने कहा , “ यार अनुराग यह मुझसे हो पायेगा ? ”

मैं “ क्या समस्या है ? ”

ऋषभ - “ यार आज तक इस बंदे ने कहीं बोला ही नहीं है । यह इतनी बड़ी भीड़ कैसे सम्भलेंगी । यह विज्ञान वाले लोग ज्यादातर बोल नहीं पाते । ”

मैं “ विज्ञान का मैं भी तो हूँ । ”

ऋषभ - “ तुम विज्ञान- उज्ज्ञान के कोई छात्र नहीं हो । यह मात्र बीएससी की डिग्री किसी तरह रो धोकर ले लेने से कोई विज्ञान का छात्र नहीं हो जाता । तुम पूरे चाय के दुकान पर टहलने वाले इलाहाबादी हो । ईश्वर की कृपा थी , बस यही मनाओ । ”

यह कहकर ऋषभ हँसने लगा । मुझे यह अहसास हुआ कि ऋषभ की मेरी अति निकटता हो चुकी है । ऐसी बात कोई बहुत निकट का ही व्यक्ति कह सकता है । वैसे बात उसने सही ही कही थी ।

मैंने कहा , “ राम प्रकाश सिंह सर भी तो हैं , वह तो मंच लूट लेते हैं ”

ऋषभ - “ वह अपवाद हैं मैंने किसी गणित वाले को इस तरह बोलते नहीं देखा । चलो कल देखा जायेगा , तुम सम्भालने का प्रयास करना । ”

मैं “ यह तुम्हारा अनुसंधान विश्व में नायाब है । यह बरसा- बरस से अनसुलझी गुत्थी तुमने हल की है , इस पर मैं क्या कोई भी क्या बोलेगा । ”

ऐसा करना प्रश्न- उत्तर के माध्यम से बात आगे बढ़ाना, मामला निपट जायेगा । “

ऋषभ - “ चलो कल देखेंगे । ”

मैं मामा के यहाँ वापस पहुँचा । वहाँ कार्यक्रम समापन की ओर था । मेरी माँ का ही मन ही नहीं भर रहा था , पर आंटी और शालिनी अनमस्यक हो चुके थे । मैंने आंटी से कोचिंग के बाद होटल आने का वायदा करके घर आया । मेरी कोचिंग में बहुत भीड़ हो रही थी , यह पूरी तरह मुफ्त की हो चुकी थी । पैसा लेने का कार्यक्रम मैंने पूरी तरह बंद करा दिया था , जिसका पैसा लेना बाकी भी था वह भी न लेने के लिये दाढ़ से कह दिया था । यह बात प्रचारित हो रही थी कि सत्य प्रकाश मिश्र सर का नाटक- उपन्यास- कविता - रंगमंच पर व्याख्यान होगा और आजादी एवं भारत विभाजन की वृहद व्याख्या 1937 से 1947 तक होगी । इस आशा से बहुत लोग बढ़ते जा रहे थे और भीड़ सँभालना भी एक बड़ा काम हो चुका था । मैं भी पढ़ाते- पढ़ाते थक चुका था और मेरा भी मन अब कोचिंग मे कम लगता था । यह पढ़ाने का काम बहुत ही दुर्लभ होता है , यह मुझे समझ आने लग गया था और अध्यापकों के प्रति सम्मान और बढ़ गया था । एक दिन की कक्षा ख़त्म हुई नहीं कि अगले दिन का तनाव आरंभ हो जाता था । मैं कई बार यह महसूस करता था कि मैं अब उस तरह का अध्यापक न रहा जैसा मैं विमोचन समारोह के पहले हुआ करता था । मैंने अपनी क्लास ख़त्म की और यात्रिक होटल गया । मैं सीधा आंटी के पास गया । वह मेरा इंतज़ार ही कर रही थी । उसने मेरे कमरे में प्रवेश करते ही एक सवाल किया जिस सवाल ने मुझे चौंका दिया ।

आंटी - “ यह शालिनी ऋषभ के बीच कुछ हुआ क्या? ”

मैं - “ मुझे कैसे पता होगा ? ”

आंटी - “ तुम तीनों सारी- सारी रात बैठकर बात करते हो , तुमको नहीं पता तो किसको पता होगा ? ”

मैं - “ ऐसा किस आधार पर कह रही हैं आप ? ”

आंटी - “ मुझे कुछ असामान्य लग रहा है इन लोगों के बीच । ”

मैं - “ मुझे नहीं पता । ”

आंटी - “ मेरा वहम भी हो सकता है । ”

मैं - “ वहम ही होगा आंटी सब ठीक ही तो है । आपने बताया नहीं मायके - ससुराल का हाल । ”

आंटी - “ तुम्हारे पास समय ही नहीं । ”

मैं - “ अब बता दो । ”

आंटी - “ रामदीन तो बेवकूफ़ ही है , वह शालिनी अपने जाति की नहीं है इसी धुन में लगा रहा । उसने कहा , बहिन कुजात मे बियाह नाहीं करै के रहा । अब उससे कौन बहस करे पर वह दो- तीन बार यही बात कहा , अच्छा हुआ शालिनी ने नहीं सुना नहीं तो उसको ख़राब लगता । वह उसका घर बनवा रही , इसका ही कम से कम खयाल करता । ससुराल में लोगों को लगा कि मैं अपना हिस्सा लेने आयी हूँ । अब ऋषभ को अपने ससुर की संपत्ति में ही रुचि नहीं उसने खुद ही इतना अधिक पैसा कमा लिया है , अब वह लड़का यह चार- छः बिगहा खेत लेने गाँव आयेगा । यह गाँव की मानसिकता कभी सुधरेगी नहीं । यह लोग वही दक्षियानूसी बात ही करते रहेंगे । ”

मैं - “ आंटी , इसीलिये तो कोई प्रगति नहीं होती इन लोगों की । यह आज भी आदिम अवस्था का अवशेष अपनी संस्कृति का भाग बनाये बैठे हैं । आप देखो यह लोग कितनी लड़कियाँ पैदा किये हैं सब , वह भी सिफ़्र इसलिये कि इनको एक लड़का चाहिये । मैं पता नहीं कितने पढ़े - लिखे लोगों को जानता हूँ एक लड़के की आस में तीन- चार लड़कियाँ जन्म दिये । अब भगवान ही इनको सुधारे तो सुधारे यह हमारे - आपके बस के नहीं है । ”

आंटी - “ कल हम लोग चले जायेंगे । तुम कब आओगे ? अगर ऋषभ के जाने के पहले आ जाओ तो अच्छा रहेगा । ”

मैं - “ आंटी , यह लोग सत्रह अगस्त को जा रहे उसमें कितना दिन ही है । यह कोचिंग चल रही है कोर्स पूरा अभी हुआ नहीं । मुझे ट्रेनिंग पर भी जाना है , आना थोड़ा मुश्किल लग रहा । ”

आंटी - “ ट्रेनिंग पर जाने के पहले आओगे ? ”

मैं - “ ट्रेनिंग पर जाने के पहले जरूर आऊँगा । ”

मैं आंटी के कमरे से निकल कर ऋषभ के पास आया । ऋषभ ने कहा कि हम लोग कल सुबह इसीसी का काम निपटा कर चला जायेंगे । इन कुछ दिनों में मेरा ऋषभ से लगाव बढ़ गया था । कमिशनर साहब ने फ़ोटो भेजवा दी थी , फोटो देखकर शालिनी की माँ बहुत प्रसन्न थी । सारे बड़े लोगों के साथ फोटो थी उनकी । मैंने थोड़ी देर ऋषभ से बात की और घर वापस आ गया । माँ आज के घटनाक्रम से बहुत खुश थी । उसको लोगों से मिलना बात करना बहुत अच्छा लगता था , उसको नहीं पता था कि कल आंटी जा रही है । मैंने उसको आंटी के जाने का कार्यक्रम बताया । माँ ने कहा कि काम होता है वह नौकरी भी करती है जाना ही होगा ।

मैं अगले दिन ऋषभ के साथ ईसीसी गया । ऋषभ बेवजह कह रहा था कि मैं कैसे बोलूँगा । वह अपने तकनीकी काम में बहुत ही दक्ष था । उसके अंदर सरस्वती का वास है, वह जब गणित पर बात करता है तो सम्मोहन के सिवाय कुछ नहीं होता । उसने अपनी पूरी अनुसंधान यात्रा साझा की जिसमें अति समर्पण और लगन की पराकाष्ठा के सिवाय और कुछ न था । मेरी अपनी लगन और कार्य के प्रति समर्पण ऋषभ के सामने कहीं भी न थी । उसको सुनकर मुझे उसके सिविल सेवा न देने के कड़े निर्णय के प्रति सम्मान और उस पर विश्वास होने लगा । उसका सिविल सेवा न देने का फैसला एकदम सही फैसला था । वह क्या करता इस नौकरी में आकर, जहाँ काम की स्वतन्त्रता कई मापदंडों से नियन्त्रित होती है । यह किसी आम काम के लिये बना ही नहीं है । ईसीसी के गणित के सारे विद्वान अध्यापकों ने उससे कई सवाल किये पर वह कहीं एक बार भी अटका ही नहीं । उसने सभी को पूर्ण संतुष्ट किया । मुझे बहुत फ़ख़र हुआ कि ऋषभ से मेरी मित्रता इतनी गाढ़ी हो गयी । ऋषभ का मेरे जीवन में आना निःसंदेह मेरे जीवन की एक बड़ी उपलब्धि थी ।

ईसीसी से मैं और ऋषभ वापस यात्रिक होटल वापस आ गये । उन लोगों को जल्दी निकलना था । वह लोग कार में सामान रख रहे थे और मैं एक बिलगाव की पीड़ा का अनुभव कर रहा था । जब जाने का समय आया तब आंटी ने वही बात फिर कही, “अनुराग हो सके तो ऋषभ के जाने के पहले तुम दिल्ली आना ।”

मैंने भी कहा, “कोशिश करूँगा आंटी ।”

ऋषभ मेरे पास आया और मेरे गले लग गया । उसने कहा, “अनुराग यह यात्रा मेरे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण यात्रा रही है । मैं दिल्ली पहुँचकर बात करता हूँ ।”

मैंने अपने पड़ोस का फ़ोन नंबर ऋषभ को दे दिया था कि कभी फ़ोन करना चाहना तो कर लेना । वह लोग यात्रिक होटल से चले गये । उनके जाते ही मैंने ड्राइवर को धन्यवाद दिया और कहा, “आप का साथ बहुत अच्छा रहा । अब आप जाइये, अब मुझे इस कार की कोई ज़रूरत नहीं है ।”

ड्राइवर ने कहा कि मुझसे आपके साथ ही रहने के लिये कहा गया है, मैंने उसको समझा - बुझाकर वापस भेज दिया ।

मैं और दादू अपनी साइकिल के पास गये । वह इतने दिन से बेसहारा पड़ी थी । उस पर धूल जम गयी थी । साइकिल की हवा भी कम हो गयी थी । हम लोगों ने साइकिल की हवा भराई । वहीं यांत्रिक होटल के बाहर की गुमटी पर बैठकर चाय पी ।

दादू बोला , “ मुन्ना भैया हम पचे यात्रिक के दस रुपिया वाली चाय पियत रहे । ”

मैं “ दादू , यह लोग दिलदार लोग हैं । पैसा बहुतों के पास होता है पर कहाँ कोई किसी को कुछ देता है । इनको देखो , कार दे दी इतने दिनों के लिये । हमारे मामा ने अपनी बहन को उधार रुपया न दिया । यह लोग अपने मामा का मकान बनवा रहे , तुमने कहा मेरा कमरा अधूरा बना है कहा वह भी बनवा लो । यह बताओ इनसे हमारा क्या रिश्ता है ? हक्कीक़त में कोई रिश्ता नहीं है । रामदीन के बाबा और बाहू के मामा पट्टीदारी में थे । यह कोई रिश्ता होता है क्या ? पर यह लोग भले लोग हैं । इनका कमिशनर साहब से क्या लेना- देना । मेरे कहने पर दिल्ली से आये और कितना पैसा खर्च किया । मामा के यहाँ और तुम्हारे यहाँ यह लोग कितना सामान ले गये । यह बताओ हम - तुम किसी के यहाँ जाते हैं तब क्या ले जाते हैं ? आज ऋषभ जो ईसीसी में बोल रहा था मैंने सुना , वह कोई आम आदमी है ही नहीं । यह ईश्वर की नायाब संतान है । दादू , एक बात गाँठ बाँध लो मैं कोई गैर मामूली दास्तान लिखूँ न लिखूँ , यह ऋषभ ज़रूर लिखेगा । इसे ईश्वर ने आम काम के लिये बनाया ही नहीं है । यह भी कोई मामूली बात नहीं है कि माँ जिस काम के लिये जिद कर रही थी वह इसने करने से इंकार कर दिया । इसके पास इंकार करने का हुनर है । जिसके पास इंकार करने का हुनर होता है वहीं जीवन में बड़े निर्णय ले पाता है । एक विधवा का बेटा जो कि बहुत ही संवेदनशील है वह अपनी माँ की ज़िद पर भारी पड़ रहा है । ऐसा क्यों है ? यह ईश्वर की मर्जी है जो यह कर रहा है । यह किसी बहुत बड़े लक्ष्य की ओर जाने वाले रास्ते पर है , अब यह वक्त ही बतायेगा कि वह रास्ता किस मंज़िल की ओर जा रहा । ”

दादू - “ भैया , हयेन त ए सब बहुत दिलदार लोग , एहमें त कौनों दुई राय नाहीं बा । ”

मैं और दादू साइकिल से घर की ओर चल दिये , मेरा जीवन एक पुराने ढर्रे पर आ गया । मैं रोज़ कोचिंग पढ़ाने लगा । इसी बीच सर्विस का एलाटमेंट भी आ गया और मुझे भारतीय राजस्व सेवा एलाट हुई । मुझसे दो रँक ऊपर भारतीय प्रशासनिक सेवा खत्म हुई थी । मैं कोर्स जल्दी खत्म करना चाहता था ताकि ट्रेनिंग पर जाने के पहले मैं इस उत्तरदायित्व से मुक्त हो सकूँ । मैं एक दिन यूनिवर्सिटी रोड से वापस आया । मेरे नाम दो पत्र थे , एक आंटी के और दूसरा शालिनी का । यह दोनों पत्र पढ़कर यह स्पष्ट था कि यह दोनों पत्र अलग- अलग लिखे गये थे और दोनों ने आपस में एक - दूसरे को यह न बताया था कि पत्र मुझे लिख रहे । दोनों ही पत्र में कुशल-क्षेम से ज्यादा कुछ न था और अंत में अलग - अलग तरीके से यह लिखा था , “ दिल्ली पत्र पाते ही आओ । ”

मुझे आश्चर्य हुआ कि आंटी इतने लंबे- लंबे पत्र लिखती थी उसने कुछ क्यों न लिखा इस बार ।

मेरी माँ मेरे सारे पत्र खोलकर पढ़ लेती थी । वह चिंतित हो गयी कि क्या हो गया । मैं चला गया स्टेशन टिकट लेने । मैंने टिकट लेकर चिंतन सर का फ्रार्मूला लगाकर वीआईपी कोटा के लिये डीआरएम आफिस में अनुरोध किया और रात की ही दरेन से दिल्ली चला गया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 257

मैं दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अजमेरी गेट की तरफ उतरा । मेरे पास अब पैसा मेरी ज़रूरत के हिसाब से बहुत ज्यादा हो चुका था और पैसा आत्मविश्वास देता है, इसमें कोई दो राय नहीं है । आने वाले पद और पास आ चुके पैसे के कारण मेरा अपने ऊपर यक़ीन बढ़ चुका था, यह मेरे हाव- भाव और चलने के ढंग से निष्कर्षित किया जा सकता था । अगर मैं बताकर आया होता तब शालिनी-ऋषभ आये ही होते, पर आंटी और शालिनी की चिट्ठी ने पूरी तरह से मुझे चिंतित कर दिया था । मैंने आटो लिया और सीधा पूसा कैम्पस पहुँच गया । पूसा कैम्पस पहुँचते ही मेरी यादों की तहें खुलने लगी - कैसे मैं पहली बार आया था, इंटरव्यू के दिन कितना निराश था पैदल ही यूपीएससी से यहाँ आया था, रात में नींद न आने पर कैम्पस में टहल कर समय व्यतीत करता था । एक पूरा भोगा हुआ जीवन सामने घूमने लगा । इतने में आटो वाले ने पूछा, “कहाँ जाना है? ”

मेरी तन्द्रा टूट गयी और मैं कैम्पस देखने लगा । उससे कहा, “बाँये चलकर आगे से दायें मोड़ लो, वहीं सामने वाले बँगले में जाना है । ”

मैंने आटो वाले को पैसा दिया फुटकर पैसा वापस लिये बगैर ही मकान में प्रवेश कर गया ।

प्रयागराज बहुत सुबह ही आ जाती है, यह आंटी की ईश्वर- आराधना का समय होता है । मेरे घंटी बजाते ही ऋषभ ने दरवाजा खोला और वह बहुत प्रसन्न मुद्रा में बोला, “अनुराग तुम.. एकाएक कैसे? सब ठीक तो है न? ”

मैं उसके इस प्रश्न से समझ गया कि घर में एक संवादहीनता आ चुकी है ।

आंटी , शालिनी का अलग- अलग पतर, ऋषभ का मेरे आने पर आश्चर्य व्यक्त करना एक बहुत शुभ संकेत नहीं हैं । मैंने कम बोलने का निर्णय लिया और कम से कम बताने और अधिक समझने की युक्ति बनानी आरंभ की । मैंने ऋषभ से कहा , “ याद है न आंटी ने कहा था इलाहाबाद से चलते वक्त कि ऋषभ के जाने के पहले तुम आना । तुम आज जाने वाले हो , इसलिये चला आया । ”

ऋषभ ने इस पर कुछ न कहा । आंटी मेरी आवाज़ सुनकर पूजा को संक्षिप्त करके आ गयी । उसने आते ही कहा , “ अनुराग थोड़ा फ्रेश हो जाओ चाय बनाती हूँ । ”

मैंने इशारे से ही पूछा , “ क्या हुआ ? ”

आंटी ने इशारे से ही कहा , बताती हूँ ।

मैं थोड़ी देर बाद खाने की मेज़ पर आ गया । वहीं ऋषभ भी आ गया । मैंने पूछा , “ कब जाना है , मतलब कितने बजे की फ्लाइट है ? ”

ऋषभ ने कोई जवाब न दिया ।

मैं - “ शालिनी कहाँ है ? ”

ऋषभ - “ अपने पापा के यहाँ । ”

मैं चुप हो गया । एक नीरवता व्याप्त थी खाने की मेज़ पर , उस नीरवता को भंग सिर्फ़ कप - प्लेट की ही आपस में हो रहे स्पर्श से उठने वाली आवाज़ कर रही थी , जो चाय पीने की प्रक्रिया में ऊपर नीचे हो रहे थे । मैंने ऋषभ से पूछा , “ आज का क्या कार्यक्रम है ? ”

ऋषभ - “ कुछ खास नहीं । ”

मैं - “ फ्लाइट कितने बजे है ? ”

आंटी - “ आज यह लोग नहीं जा रहे हैं । ”

मैं - “ कब की फ्लाइट है तब ? ”

ऋषभ - “ अभी कुछ भी निश्चित नहीं । ”

मैं समझ गया यह चुप्पा ऋषभ कुछ अभी बतायेगा नहीं । यह आज कहीं जाने वाला है नहीं । इसके रहते आंटी कुछ बोलेगी नहीं । चलता हूँ शालिनी के पास वह सब बतायेगी , चिट्ठी लिखकर बुलाया है तो कुछ तो बतायेगी ही , क्यों बुलाया है ।

मैं युक्ति लगाने लगा शालिनी के पास जाने का । मैंने पूछा , “ शालिनी आयेगी ? ”

ऋषभ - “ पता नहीं । ”

मैं - “ थोड़ी देर में तो आयेगी ही । ”

ऋषभ - “ शायद । ”

“ यह तो पूरा चुप्पा निकला यार । ” यह मैंने अपने ही अपने से ही कहा ।

आंटी - “ कितने दिन के लिये आये हो । ”

मैं - “ कल चला जाता । मैं तो आया था इनसे मिलने के लिये क्योंकि मेरे अनुसार यह आज जा रहे थे । अब नहीं जा रहे तो आज ही चला जाता हूँ । जब जायेंगे तब फिर आऊँगा । ”

ऋषभ - “ रुको एक- दो दिन । ”

मैं - “ रुक जाता पर कोचिंग चल रही इलाहाबाद में । मैं आज नहीं होऊँगा तब हंगामा हो जायेगा । आज तो कोई बहाना बन जायेगा पर कल का क्या होगा ? मेरी क्लासेज़ कुछ ही दिन की बची है, निपटा कर आता हूँ । ”

ऋषभ - “ आज तो रुको, कल की बात कल देखेंगे । ”

मैं - “ ठीक है । ”

आंटी - “ नाश्ता क्या करोगे ? ”

मैं - “ कुछ भी । ”

आंटी - “ मैं बनाती हूँ । ”

यह कहकर आंटी किचेन में चली गयी और ऋषभ कमरे में, मैं आज का पेपर उसी मेज़ पर पलटने लगा । मैं थोड़ी देर में किचेन में गया और पूछा, “ क्या बात है ? ”

आंटी - “ कुछ नहीं बता रहा, बस इलाहाबाद से आने के अगले दिन यह शाम को आ गया । शालिनी आयी नहीं, कह रहा अभी मैं न्यूयार्क नहीं जाऊँगा । यह कुछ बताता ही नहीं । तुम जाओ शालिनी से पूछो क्या हुआ ? ”

मैं - “ आंटी, यह कुछ ख़ास बात है । यह यहाँ वह वहाँ, यह कुछ बता नहीं रहे । मैं नाश्ता करके जाता हूँ । ”

मैंने नाश्ता किया और बगैर ऋषभ को बताये शालिनी के यहाँ चल दिया । शालिनी का मकान एक पूरा राजप्रासाद है । वह दूर से ही अलग दिखता है, आस-पास की अन्य इमारतों से । एक सफेद दूधिया रंग का बँगला, गेट पर बड़ा सा काला गेट जिस पर सिफ़्र लिखा है “ आहूजास ” अंगरेज़ी में । दो दरबान बंदूक के साथ दरवाज़े के बाहर तैनात, सड़क से ही मकान की

ऊपरी मंजिल दिखती हुई और बड़े- बड़े अशोक के पेड़ थोड़ा सा मंजिल को छुपाते हुये , एक बड़ा सा लान पूरी हरियाली लिये हुये । मैं मकान के अंदर प्रवेश किया और बाहर के बड़े से वर्गाकार क्षेत्र के बरामदे में काम कर रहे नौकर से कहा , “ शालिनी जी से कह दो अनुराग मिलने आये हैं । ”

वह , जी सर कहकर चला गया । उसके जाते ही शालिनी सीढ़ियों से दौड़ते हुये उतर कर आती हुई दिखी । वह अपने दुपट्टे को हाथ से सँभालकर पीछे गर्दन के फँकते हुये , कानों के कुंडल लहराते , बाल उसके आँखों के ऊपर आ रहे थे और वह तेज़ी से मेरे पास रही थी ।

उसने आते ही हाँफते हुये कहा , “ अनुराग तुम पर जितना मैंने भरोसा किया तुमने उससे ज्यादा भरोसा मुझको दिया । मैं यह गणना कर रही थी कि कल तुमको पत्र मिलेगा और तुम कल आओगे , तुम आज ही आ गये । ”

मैं - “ शालिनी , हमारी मुलाक़ात इसलिये कि तुम मेरी माँ सदृश आंटी की बहू हो पर तुम्हारे पास सम्मान अर्जित करने की असीम क्षमता है , तुम से मित्रता होना किसी के लिये भी एक निधि है । शालिनी एक बात और कहूँ मैं ... ?

शालिनी - “ ज़रूर कहो । ”

मैं - “ चलो बाद में कहता हूँ , पहले यह बताओ माजरा क्या है ? पति वहाँ , पत्नी यहाँ.. पति कुछ बोल नहीं रहा .. सास को कुछ पता नहीं.. बहू ने क्या गुल खिला दिया कि बेटा देवदास हो गया । ”

शालिनी - “ वह कोई देवदास नहीं है , चलो ऊपर मेरे कमरे में वहाँ बात करती हूँ । यहाँ मम्मी सुन लेगी तो एक और हंगामा होगा । ”

मैं शालिनी के कमरे में गया । यह कमरा क्या था एक पूरा मकान ऐसा था । दो बड़े कमरों के बराबर की जगह , एक बड़ा सा बेड , एक पूरा सोफ़ा , बगल में पढ़ने की गोल मेज , एक तरफ दो व्यक्तियों के खाने की डाइनिंग टेबल , दीवारों पर बनी आलमारियों में सजी कुछ किताबें , कमरे से लगा हुआ बाथरूम और पूरे कमरे में ऋषभ , शालिनी , आंटी , आहूजा साहब और उसकी माँ की तस्वीर । दो बहुत नायाब तस्वीरें थीं अगल - बगल .. आहूजा साहब और उनके पत्नी के विवाह के समय की तस्वीर , उसके एकदम बगल थोड़ा नीचे ऋषभ- शालिनी के विवाह की तस्वीर । मैंने उस तस्वीर को देखा , शालिनी कहा ...

“ शालिनी यह तस्वीर जिस तरह तुमने लगायी है यह बहुत कुछ कहती है तुम्हारे अपने जनक के सम्मान के प्रति । मैंने आज तक इस तरह के तस्वीर का संयोजन कहीं नहीं देखा । ”

शालिनी - “ अनुराग यह तस्वीर नहीं है यह संघर्ष गाथा के नायकों का लेखन है जो सिफ़र में ही देख सकती हूँ । इन दोनों ने मुझको जन्म ही नहीं दिया बल्कि मुझको इस लायक बनाया कि मैं ऋषभ को प्राप्त कर सकूँ । ऋषभ को आप धन- दौलत - रूप से नहीं प्राप्त कर सकते हो , उसको आप प्राप्त करने के लिये अपने आप को अलग साबित करना होगा । ”

मैं - “ शालिनी , मैं वही कहना चाह रहा था जब मैंने कहा कि बाद में कहता हूँ । ”

शालिनी -“ क्या कहना चाह रहे थे ? ”

मैं - “ शालिनी तुम बहुत रूपवान हो , इसमें कोई दो राय तो है ही नहीं । पर तुम्हारी सीरत तुम्हारे रूप को आवरणित कर देती है । मैं जितना तुम्हारे नज़दीक आता जा रहा हूँ उतना ही मैं तुम्हारी वाह्य सुंदरता से अधिक आतंरिक सुंदरता का प्रशंसक होता जा रहा हूँ । ”

शालिनी - “ अनुराग सब नज़म मुझ पर ही न गढ़ दो , हलाँकि तुम जिस लड़की पर भी लिखोगे वह धन्यता को प्राप्त होगी । पर तुम कुछ नायब नज़म उसके लिये बचा कर रखो जो इंतज़ार कर रही इस आशा से कि किसी की धड़कन ... मेरी बिंदी , चूँड़ियों , सिंदूर , पायल से उसके चेहरे पर लालिमा ला देगी । ”

मैं - “ शालिनी , तुमने मानदंड बढ़ा दिये हैं । माँ मुझसे कहती है कोई शालिनी ऐसी लड़की मिलेगी तभी मैं मुन्ना का विवाह करूँगी । मैंने माँ से कहा तब तो मेरा विवाह होने से रहा , शालिनी एक ही बनी थी और वह तुम बेटी या बहू के रूप में प्राप्त कर चुकी हो , अब कोई दूसरी शालिनी है ही नहीं । ”

शालिनी - “ अनुराग मेरा मन छत से कूदने का कर रहा है मैं इतनी प्रसन्न हूँ तुम्हारी इस गद्य में लिखी नज़म को सुनकर जो सिफ़र और सिफ़र मेरे लिये है । ”

इतने में चाय - नाश्ता आ गया । शालिनी मेरी चाय बनाने लगी । हम लोग तो चाय में अदरक कूटकर डाला , दूध डाला , चाय को उबाल मारा और चीनी ठोंका घोंट गये चाय को । यहाँ शालिनी ने गर्म पानी लिया कप में चाय का एक टी बैग डाला , दूध डाला और पूछा सुगर कितना लोगे । अब मेरे को क्या पता कि मैं सुगर कितना लेता हूँ । यहाँ तो चाय के भगोने में जितनी सुगर चली गयी बस उतनी ही लेते हैं । मेरा भाई तो चाय को शर्बत की तरह पीता है , बस मीठी होनी चाहिये , शालिनी ने पूछा जरूर पर मेरे जवाब का इंतज़ार किये बिना एक क्यूब सुगर डाल दिया । हम तो कंदरोल के दुकान से चीनी लाते थे और वही हमारे यहाँ चलती थी , यह सुगर क्यूब तो पहली बार शालिनी के ही घर पिछली बार देखा था ।

मैंने चाय पीते - पीते पूछा , “ कुछ ख़ास बात जो इतनी शीघ्रता से बुलाया आपने । ”

शालिनी - “ हाँ बताती हूँ । ”

मैं - “ क्या हुआ ? ”

शालिनी - “ ऋषभ ने न्यूयार्क जाने से इंकार कर दिया । ”

मैं - “ समझा नहीं , वह क्यों नहीं जा रहे ? ”

शालिनी - “ उनका दिमाग़ ख़राब हो चुका है ? ”

मैं - “ इलाहाबाद में तो अच्छे- भले थे , यह कब ख़राब हुआ ? ”

शालिनी - “ ख़राब वहीं हुआ । इन पर आदर्श का भूत सवार हो गया है । ”

मैं - “ कैसा आदर्श ? ”

शालिनी - “ वह सामाजिक उत्तरदायित्व, समाज - सेवा , जीवन अपने नहीं समाज के लिये है , यह त्याग ही जीवन है , व्यक्ति को अपने नहीं समाज के लिये कार्य करना चाहिये । वह बुद्ध बन गये हैं । थोड़ा सा बहस हुआ मुझसे वह बुद्ध की तरह दरवाजा खोले इसी कमरे का और बगैर पीछे देखे पैदल ही घर से बाहर चले गये । ”

मैं - “ यह कब हुआ ? ”

शालिनी - “ जिस दिन तुमको पत्र लिखा उसी के पहले वाली रात में । ”

मैं - “ समाधान क्या है ? ”

शालिनी - “ यह मुझे पता होता तब तुमको तुम्हारी इतनी व्यस्तता में आने को क्यों कहती , वह भी तब जब तुमको ट्रेनिंग पर जाना है , कोचिंग चल रही है । ”

मैं सोच में पड़ गया और शालिनी आवेश में आ चुकी थी और धारा प्रवाह बोलने लगी ...

“ अनुराग यह समाज पुरुष प्रधान है और रहेगा । कभी किसी महिला की भावनाओं का कोई सम्मान नहीं हो सकता । मैंने सारी शर्तें ऋषभ की मानी । मैं जबसे जन्मी मेरे माता - पिता की एक चाहत कि मेरी बेटी मेरा साम्राज्य सँभालेंगी । मैं बड़ी होने लगी , साम्राज्य बढ़ने लगा । अब उस साम्राज्य को सँभालने वाले की कल्पनायें बदलने लगी । मेरी बेटी और मेरा दामाद

साम्राज्य संभालेगा । ऋषभ से विवाह की वह एक शर्त थी मेरे पिता की । ऋषभ ने वह शर्त नहीं मानी , मैंने समझौता किया और उस शर्त को ख़त्म किया । यह कोई मामूली साम्राज्य नहीं है अनुराग । पापा के काम का टर्न ओवर 2000 करोड़ रुपया साल का है । 8-10 % का शुद्ध लाभ सारे व्यवसाय में आता ही है । अगर आप इस पैमाने पर ही देखो तो तक़रीबन 200 करोड़ का लाभ एकाउंट में रिकार्ड होता है , अब तुमसे क्या छिपाना इस धंधे में कैश का काम बहुत होता है । अघोषित संपत्ति भी अच्छी- खासी है जिसको मैं धीरे- धीरे कम करा रहा रही हूँ । उस चिंतन सर के हादसे वाली घटना ने पापा का भी दृष्टिकोण बदल दिया है और पारदर्शिता लाने का प्रयास बहुत तीव्र गति से चल रहा है । मैंने यह सब कुछ त्याग दिया , सिर्फ़ इसलिये कि मुझे ऋषभ चाहिये था किसी भी कीमत पर । यह बताओ अनुराग लड़की ही अपना घर छोड़कर क्यों जाये , लड़का क्यों नहीं आ सकता । यह कहाँ लिखा है कि लड़की ही विदा होकर लड़के के घर जाये , लड़का क्यों नहीं आ सकता ? यह सिर्फ़ एक रिवाज है , यह एक परम्परा है यह कोई ईश्वर का आदेश नहीं है । दिखाओ मुझे वह धर्म शास्त्र जहाँ यह लिखा हुआ है कि लड़की ही जायेगी लड़के के घर , अगर कहीं लिखा भी है तो मैं क्यों मानूँ , मैं मानने से इंकार कर देती हूँ , यह सत्य किसी पुस्तक का बंधक नहीं है । यह ऋषभ को अपनी क्राबिलियत की गलतफहमी भी है । इनके ऐसे पता नहीं कितने क्राबिल अमेरिका गये और वह किसी की गुलामी कर रहे , बीस - चालीस - पचास हज़ार डालर प्रतिवर्ष पर । मैं गयी और मैंने कहा किसी के लिये क्यों काम करना ? हम अपना काम करेंगे , हमें जीवन जीने के लिये पैसा चाहिये ही नहीं , मेरे ही एकाउंट में इतना पैसा है कि ज़िंदगी ऐश से साल-दो साल चल जायेगी तब तक कुछ कर ही लेंगे । मैं जानती थी ऋषभ की कीमत बाज़ार में क्या है । मैंने ज़ोर देकर एक अच्छी - खासी नौकरी हम दोनों कर रहे थे वह छोड़ दी और अपना काम शुरू किया । काम चल निकला , एग्रीमेंट के प्रावधान मैंने ठीक से बनाये उस पर रायल्टी सारा जीवन मिलेगी । कुछ ही समय में बहुत पैसा कमाया हमने । मैं रिकर्स्ट कर रही नये- नये लोगों को व्यापार बेहतर चल रहा , पैसा तो अब गौण वस्तु हो चुका है , हम लोग रोज़गार दे रहे नये- नये जहीन लोगों को , नाम हो रहा , पहचान बन रही और आप कह रहे सब त्याग दो । यह बताओ मैं क्या जवाब दूँगी अपने अंदर काम कर रहे लोगों को , क्या जवाब दूँगी जो पाँच नये आईआईटी के लड़कों को एक बेहतर स्वप्न दिखाकर अमेरिका ले जा रही । आप तो अपना टिकट कैंसल कर दिया पर उनके टिकट का क्या? आपने ख़बाब बदल लिये पर उनके ख़बाबों का क्या? वह बड़े जहीन लोग हैं , मैंने बड़ी कंपनियों से ज्यादा पैसा देकर उनको इम्प्लाय किया है , अब मैं कह दूँ नहीं तुम जाओ तुम्हारा मालिक देवता बन चुका है और देवता व्यापार नहीं करता । कौन कहता है मत करो समाज सेवा , करो जितना करना है । आप गँव अपना लो , स्कूल अपना लो , अगर ईश्वर ने चाहा तो ज़िला अपना लेंगे विकास के

लिये । एक भविष्य इंतज़ार कर रहा और आप कह रहे मत कर मेरा इंतज़ार मंजिल मैंने उल्टे पैरों से चलना आरंभ कर दिया है ।

मैं “ वह करना क्या चाहते हैं ? ”

शालिनी - “ यही मैं भी जानना चाहती हूँ , वह तो दरवाजा खोले और बुद्ध मार्का चल दिये । मैं कोई यशोधरा नहीं हूँ , मैं आज की नारी हूँ मैं शालिनी आहूजा हूँ । मैं सवाल करूँगी और प्रश्न करूँगी , मैं उन सप्तपदी के मंत्रों का अर्थ पूछूँगी । अनुराग, हर बात को मान लेना भी ठीक नहीं होता , किसी से बेइंतिहा प्यार करना भी उचित नहीं होता । व्यक्ति को सवालों का जवाब देना चाहिये , अपने ज़मीर से उठे सवालों को सुनना चाहिये । मेरा ज़मीर मुझसे पूछ रहा .. क्या सब कुछ ऋषभ के लिये छोड़ देना उचित है ? वह सिर्फ तकनीकी मामले देखते हैं , मैं सारे आधारभूत मुद्दे । मैं चेहरा हूँ पूरे व्यापार का । वह बहुत ही कम लोगों से मिलते हैं और मैं लोगों को सर्च करती हूँ व्यापार के विस्तार के लिये । मेरा काम ही है व्यापार के मुद्दे सुलझाना, अपने ग्राहकों को संतुष्ट करना । अब वह तो जवाबदेह है नहीं और मैं जवाबदेह हूँ सबके लिये । वह किसी गलतफ़हमी में न रहें कि यह नाम-प्रशस्ति उन्होंने प्राप्त की है , तमाम जहीन लोग किसी की चाकरी कर रहे हैं , यह ईश्वर की अनुकंपा है कि हम लोग यहाँ तक इतने कम समय में पहुँच गये । ईश्वर की कृपा का निरादर नहीं होना चाहिये । वह इस तरह मझदार में नहीं छोड़ सकते सब कुछ । ”

मैं “ तुम यही चाह रही अभी वह चलकर काम सँभाले इतनी जल्दी फ़ैसला न करें सब कुछ त्यागने का ? ”

शालिनी - “ उनके मस्तिष्क में क्या चल रहा , यह किसी को पता नहीं । मुझे तो यह भी नहीं पता वह करेंगे क्या ? वह नहीं जायेंगे न्यूयार्क और समाज के लिये कुछ करेंगे यही बात कह रहे , बाकी तो कुछ बताते ही नहीं । यह तो पता चले उनका प्लान आफ एक्शन क्या है ? यह मेरे समझ में तो कुछ आ ही नहीं रहा कि यह जीवन किस ओर जा रहा । ”

मैं - “ शालिनी , मेरी समझ में भी कुछ नहीं आ रहा । मैं इतनी बड़ी बातें समझ सकने लायक भी नहीं हूँ । मैं पूछता हूँ वह क्या करना चाहते हैं , पर मुझसे वह क्यों बतायेंगे ? ”

शालिनी - “ वह कुछ सोचा ही होगा , वह अपनी बात साझा कम करता है । मेरे पापा पूछ रहे कि कब जाना है , अब क्या कहूँ मैं ? ”

मैंने शालिनी से कहा मैं शाम को आता हूँ , पर अगर वह मुझसे भी कुछ न बताया तब ?

शालिनी - “ तुमसे बतायेगा । ”

मैं - “ इतना विश्वास तुम्हारा मुझ पर है ? ”

शालिनी - “ अनुराग , मेरी महारत है मैन मैनेजमेंट में और लोगों को समझने में पर यह बंदा समझ ही नहीं आ रहा । ”

मैं वापस ऋषभ के पास आया । ऋषभ ने पूछा , “ कहाँ चले गये थे ? ”

मैं - “ शालिनी के पास । ”

ऋषभ - “ क्यों ? ”

मैं - “ उसने बुलाया था , पत्र लिखकर । ”

ऋषभ - “ क्या कहा उसने ? ”

मैं - “ मेरा पति बुद्ध हो गया है । ”

ऋषभ ने मेरी आँखों की तरफ देखा , उसकी आँखों में एक दृढ़ता थी , उसने कहा ... “ अभी हुआ नहीं है पर भविष्य कोई नहीं जानता ... चलो कैम्पस में घूमते हैं ... बहुत दिन हो गये बेपरवाह होकर पैदल अनायास चले हुये ... ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 258

मैं और ऋषभ बंगले से निकलकर पूसा कैम्पस की सड़कों पर टहलने लगे । पूसा कैम्पस मुझे पूरी तरह पता था , मैं बहुत ही घूमा हूँ इस परिसर में । हम लोग थोड़ी ही दूर चले होंगे कि ऋषभ ने पूछा , “ क्या बात हुई शालिनी से ? ”

मैं - “ कुछ ख़ास नहीं । ”

ऋषभ - “ तुम न बताना चाहो तो कोई बात नहीं । मैं तुम्हारा दृष्टिकोण समझ सकता हूँ । तुम माँ के माध्यम से मुझसे और शालिनी से मिले हो और तक़रीबन एक साथ ही मुझसे और शालिनी से मिले हो । तुम्हारी मेरी मित्रता और तुम्हारी- शालिनी की मित्रता एक ही तरह की है । तुम्हारे लिये हमारे और उसके में किसी को अधिमानता देना आसान नहीं है और मैं तुमको किसी

धर्मसंकट में नहीं डालना चाहता । हर व्यक्ति के पास कुछ सवाल ऐसे होते हैं जिसके उत्तर हमेशा एक नहीं होते । उत्तर समय के साथ बदलते भी रहते हैं । ऐसा ही मेरे साथ हो रहा है, जबसे मैं जीवन के कई सवालों से रुबरु हो रहा । “

मैं “ जो भी बात हुई है वह मैं बता दूँगा । अब तुमसे मैं कुछ छिपाऊँ , यह मैं सोच भी नहीं सकता । वह कुछ खास नहीं कह रही , उसने यही कहा कि न्यूयार्क में सब कुछ छोड़कर नहीं वापस आ सकते अब देश में । वह एक चेहरा है पूरे तुम्हारे अभियान का , आप ज्यादातर तकनीकी पक्ष देखते हो और वह समायोजन का कार्य देखती है और लोगों से काम ले आने का । उसको लग रहा कि मेरा फ्रेस लास होगा । उसका यह भी कहना है कि हम यहाँ करेंगे क्या? वहाँ सारा कुछ जमा हुआ है , सब कुछ त्याग कर यहाँ आयेंगे तब फिर शून्य से आरंभ करना होगा । एक भविष्य की अनिश्चितता उसे सत्ता रही है । ”

ऋषभ - “ एक अनिश्चित भविष्य सत्ता रहा ? वह एक बहुत बड़े सामराज्य की अकेली उत्तराधिकारी है । तुमको पता नहीं है मैंने कितना पैसा कमाया है । यह रायल्टी क्लाइंट एग्रीमेंट का हमेशा काम भर का धन देता रहे गा । मेरी कोई खास ज़रूरत है नहीं । जितनी ज़रूरत है उसका इंतज़ाम कर ही लिया है । अब सोचेंगे यहाँ क्या करना है । काम तो करना ही , पर पैसा उद्देश्य नहीं होगा किसी काम का । पैसा आ जाये तो आ जाये पर वह गौण होगा , मुख्य नहीं होगा । ”

मैं “ हम लोग थोड़ा शालिनी के दृष्टिकोण से चीजों को देखते हैं, अगर ऐसा करेंगे तब थोड़ी सहूलियत होगी मामले को सुलझाने में । वह एक अलग लड़की है और बहुत ही महत्वाकांक्षी है । उसकी महत्वाकांक्षा के पर एकाएक कट गये इससे वह बहुत चितिंत है , ऐसा मुझे लग रहा । वह धन की आग्रही मुझे नहीं लगती है , वह एक नाम - सम्मान- प्रतिष्ठा के प्रति संवेदनशील है । हो सकता है तुम्हारे अंदर वैराग्य जग गया हो पर उसके अंदर कोई वैराग्य नहीं है , वह दुनिया के मानदंडों पर सम्मान पाना चाहती है न कि समाज से बेपरवाह होकर जीवन जीना । एक रात ही सारा पाँसा आपने पलट दिया , शायद उसको समय देते तब बेहतर होता मामले को अंतिम परिणति तक ले जाने में । ”

ऋषभ- “ अनुराग कड़े फ्रैंसले ही बड़े फ्रैंसले होते हैं और वह बार - बार नहीं लिये जाते । जो फ्रैंसले लेकर बदल देता है वह फ्रैंसलों की अहमियत को नहीं समझता । मेरी माँ और मेरे पिता ने एक स्वप्न देखा था , मेरी माँ ने सारी कोशिश की और हर हथकंडे का इस्तेमाल किया कि उस स्वप्न का स्वप्नफल उसको मिले । मैंने सब सोच समझकर उस रास्ते पर चलने से

इंकार कर दिया जिस पर वह मुझे चलाना चाहती थी । ऐसा न था और न है कि वह स्वप्न मेरी पहुँच से बाहर था या है वह मेरी एकदम पहुँच में था और अभी भी है । अभी भी मैं अठाइस साल का नहीं हुआ हूँ । मैं अभी भी परीक्षा दूँ तब यह परीक्षा पास कर सकता हूँ । यह गणित, फ़िज़िक्स से परीक्षा देनी होगी । गणित में कुछ गलत होगा इसकी संभावना बहुत ही कम है । फ़िज़िक्स का एक पेपर एप्लिकेशन का है एक थ्योरी का । उसमें भी कोई ख़ास समस्या है नहीं । जीएस पढ़ने में कितना समय लगेगा? मुझसे मेरे सीनियर ने कहा जब मैंने कहा था कि मेरी माँ ज़िद कर रही इस परीक्षा को पास करने के लिये, उन्होंने कहा परीक्षा पास करके छोड़ देना । यह कार्य उसको संतोष दे देगा । मैंने यह सोचा एकबार फिर मुझे यह उचित न लगा । जब मैं अपने मरहम देवता तुल्य पिता और अपने एक मात्र जीवन संबंध माँ की इच्छाओं को एक उचित फ़ैसला न मानकर इंकार कर दिया तब इस कुछ धन की लालसा में मैं फ़ैसला बदल दूँगा, यह शालिनी को विचार में भी नहीं लाना चाहिये । वह मेरे नज़दीक आईआईटी के दूसरे साल के अंत से आने लगी थी । यह सारा घटनाक्रम उसे पता है । अब अनुराग यह फ़ैसला बदलने से रहा । मेरा अमेरिका से कोई संबंध नहीं । शालिनी जाकर वहाँ सब कुछ बंद करके आ जाये नहीं तो मेरे साथ का स्टाफ़ है वह बंद कर देगा । एक छोटा आफिस मेरा जूनियर चलाता रहेगा पिछले कामों को सँभालने और एग्रीमेंट की शर्तों के निर्वहन हेतु, मैं तो अब जाने से रहा । “

मैं - “ क्या करोगे यह सोचा है ? ”

ऋषभ ने आसमान की तरफ़ ऊँगली उठाई और कहा देख रहे हो वह क्षितिज
...

मैं - “ हाँ देख रहा हूँ । ”

ऋषभ - “ वह मेरा इंतज़ार कर रहा है । ”

मैं - “ समझा नहीं मैं । ”

ऋषभ - “ सरकार की नीति बदल चुकी है, तमाम क्षेत्रों में विदेशी निवेश आकर्षित किया जा रहा है । मेरे पास निवेश का पैसा है, निवेश लाने की क्षमता भी है और तकनीकी ज्ञान है । एक ऐसा संयोजन है जिसे देश को ज़रूरत है । बस थोड़ा तकदीर काम कर जाये । मैं एक सलाह दूँ तुमको ? ”

मैं - “ क्या सलाह है मेरे लिये ? ”

ऋषभ - “ तुम नौकरी ज्वाइन करो या न करो, इस पर विचार करो । तुम कोई भी काम करोगे इस नौकरी की उपलब्धियों से बेहतर करोगे । यह मेरा विचार है तुम्हें समझने के बाद । मैं यह नहीं कह रहा तुम क्या करो पर मेरा यह मत है तुम्हारे बारे में । मैं एक बात का अनुरोध करूँगा, मुझे इस बात पर कनविंस न करो कि मैं अमेरिका जाऊँ, मुझे करने दो जो मैं करना चाहता हूँ

/ अनुराग तुम कह रहे थे न कि एक गैर मामूली दास्तान के लिये तुम जन्मे हो /
यह आधा सच है , पूरा सच यह है , हम दोनों गैर मामूली दास्तान के लिये
जन्मे हैं । “

मैं - “ यह सब बड़ी- बड़ी बातें तो ठीक है पर करोगे क्या यह तो बताओ । “

ऋषभ - “ मुझे अभी इतना ही पता है मुझे अमेरिका नहीं जाना । मुझे यहीं
कोई काम तलाशना है और क्या काम मिलेगा , यह नहीं पता । “

मैं - “ अगर कोई काम न मिला तो ? “

ऋषभ - “ यार आईआईटी में पढ़ाने का काम तो मिल ही जायेगा । अगर वह
न मिला तब जो बच्चे आईआईटी की प्रवेश परीक्षा देते हैं उनको ही पढ़ाऊँगा
। उस काम में ही कौन सी ख़राबी है । जीवन चलाने भर का पैसा है ही ,
अगर मैं अपनी ज़रूरतों को न बढ़ाऊँ । “

मैं - “ अगर शालिनी नहीं मानी वह अमेरिका जाना चाही तब ? “

ऋषभ - “ वह स्वतंत्र है किसी भी फ़ैसले को करने के लिये । उसका अपना
कैरियर है , यह ज़रूरी नहीं कि वह मेरे ही कैरियर से हमेशा बँधी रहे । “

हम लोग धूमते -धूमते पूरा एक चक्कर लगाकर आ गये मेन गेट पर , मैंने
ऋषभ से कहा , “ घर चलते हैं आंटी परेशान होगी । उसको कुछ भी नहीं
पता । “

ऋषभ -“ माँ को सँभाल कर बताना । उसको यह न लग जाये कि मेरा और
शालिनी का झगड़ा हो गया है । “

मैं - “ सँभाल कर ही बताऊँगा । आपने फ़ैसला सुना ही दिया है , अब यह
फ़ैसला पता ही चलेगा , देर- सबेर । “

ऋषभ - “ थोड़ा समय लेकर बता देना , आज बताना ठीक नहीं है । शालिनी
के पास कब जाओगे ? “

मैं - “ कैसे पता कि मैं जाऊँगा ? “

ऋषभ - “ तुम उसके दूत हो इस समय । उसने भेजा है पता करने को ।
मुझको पता है तुम्हारी और शालिनी की नज़दीकी का । वह मेरी तीन साल
प्रेमिका रही है और फिर मेरी पत्नी बनी । वह मेरी मित्र ज्यादा है प्रेमिका
या पत्नी की तुलना मे । वह मुझसे हर चीज़ साझा करती है और जिस तरह
अनुराग- अनुराग करती है क्या मुझको पता नहीं है कि वह तुमसे कितने
नज़दीक है । उसने इस समस्या पर एक ही व्यक्ति को याद किया और वह
तुम हो , इससे अधिक नज़दीक होने का और क्या प्रमाण हो सकता है । “

मैं - “ तुम्हारे इस बात में सत्यता है , वह जिस तरह भागते हुये अपने कमरे से सीढ़ियों से उत्तरते हुसे आयी थी मेरे पहुँचने पर यह उसकी व्यग्रता और मुझ पर विश्वास को व्यक्त करता है । उसने यह भी कहा कि चलो ऊपर कमरे में बात करते हैं , यहाँ नीचे अगर माँ ने सुन लिया तब एक और हंगामा होगा । इससे लग रहा है कि उसने अपने घर में भी यह नहीं बताया होगा । ”

ऋषभ- “ पता तो चलेगा ही , आज नहीं तो कल । ”

हम लोग घर पहुँच गये । आंटी बेचैनी में लान में धूम रही थी । ऋषभ अपने कमरे में चला गया । मैंने आंटी से इतना ही बताया कि ऋषभ अमेरिका नहीं जाना चाह रहा , शालिनी जाना चाह रही और इसी बात पर तकरार हो गया । आंटी ने पूछा , “ यहाँ क्या करने का इरादा है इनका ? ”

मैं - “ यह तो नहीं बताया पर यही कह रहे कि मैं देश में ही काम करूँगा । ”

आंटी -“ पूछो तो क्या करेगा ? ”

मैं - “ आंटी , धीरे- धीरे पूछते हैं , एक बार में ही सब नहीं बतायेगा यह बहुत चुप्पा है । ”

आंटी - “ इसका भेद कोई नहीं जान सकता । यह क्या करेगा यह किसी को हवा ही नहीं होने देता । तुम शाम को पूछना । ”

मैं - “ ठीक है आंटी । मैं शालिनी से मिल कर आता हूँ , वह भी परेशान है । ”

आंटी -“ उसको लेते आना । ”

मैं - “ ठीक है , कोशिश करता हूँ । ”

मैं शालिनी के पास गया और उसको भी यही बताया जो आंटी को बताया था । शालिनी को कुछ समझ न आ रहा था । वह एक ही बात जानना चाह रही थी कि यह एकाएक कैसे हो गया । अब यह तो किसी को पता नहीं कि कैसे यह हो गया । वह चिंतित थी ही अब और चिंतित हो गयी । मैं कुछ देर बैठा रहा , थोड़ी देर बाद मैंने शालिनी से साथ चलने को कहा पर वह आज जाने को तैयार न हुई । उसने कहा , “ मैं कल आती हूँ । ”

मैं वापस पूसा इंस्टीट्यूट आ गया । ऋषभ घर में था नहीं । आंटी को भी नहीं पता था वह कहाँ गया है । मैंने अपनी और शालिनी के बीच की बातचीत आंटी को बतायी । मैं भी अपनी कोचिंग को लेकर चिंतित था । मुझे समझ नहीं आ रहा था मैं इस मामले में क्या करूँ और क्या कर सकता हूँ , यह दो बड़े आदमियों के बीच का चौंचला है । यह आज नहीं तो कल एक हो जायेंगे । मेरा इसमें रोल ही क्या है , सिवाय इनकी बात उनको बताओ और उनकी बात इनको । इससे अच्छा है यह लोग एक कासिद रख लें जो दोनों के बीच

संदेश के आवागमन में सहायता करता रहे । मैं यहाँ से निकल कर इलाहाबाद जाना चाहता था । मैंने डरते- डरते आंटी से कहा , “

आंटी , मुझे जाने दो ... मेरी कोचिंग बंद पड़ी है । सारे लोग परेशान होंगे उन सबकी परीक्षा भी है । ”

आंटी - “ तुम देख रहे हो यहाँ की समस्या ? यहाँ आग लगी पड़ी है और तुमको कोचिंग की पड़ी है , दो- चार दिन नहीं चलेगी तब कौन सा पहाड़ टूट जायेगा । यह मामला निपटने दो तब जाओ । ”

आंटी के स्वर में थोड़ा रोष भी था और आदेश भी । मैं चुप हो गया और उसको सामान्य करने के लिये कहा , “जैसा कहोगी वैसा ही करूँगा , चलो चाय पिलाओ । ”

वह चाय बनाने चली गयी । थोड़ी देर में ऋषभ आ गया । मैंने पूछा , “कहाँ गये थे ? ”

ऋषभ - “ कार ख़रीदने । ”

मैं - “ क्या करना कार का , शालिनी के यहाँ तो गैरेज खुला है .. कार ही कार है .. ”

ऋषभ-“ एक कार यहाँ भी होनी चाहिये , माँ से कहा कई बार पर वह बोलती है क्या करना ? अब मैं शालिनी के यहाँ से लाकर कार यहाँ रखूँ यह तो उचित नहीं है । ”

मैं - “ कार कहाँ है वह तो लाये नहीं । ”

ऋषभ -“ वह कार ठीक कर रहा , उसमें कुछ एक्सेसरीज़ लगते हैं वह लगा रहा है , देर शाम को यह कल चलकर ले आयेंगे । ”

मैं और ऋषभ रात में फिर पूसा कैम्पस में घूमने लगे । वह अपनी कहानियाँ सुनाने लगा । उसने बातचीत में एक बड़ी नायाब बात कही

“ अनुराग एक बात मेरे दिमाना में घूम रही है तुमसे साझा करता हूँ तुम अपनी राय देना । ”

मैं - “ क्या बात ? ”

ऋषभ - “ यह शादी - विवाह सब सामान्य लोगों के लिये है । जिस भी व्यक्ति को जीवन में कुछ बड़ा करना हो उसे विवाह नहीं करना चाहिये । ”

मैं - “ समझा नहीं ठीक से । ”

ऋषभ-“ अगर ईश्वर ने प्रतिभा दी हो और आपके पास कुछ लीक से हटकर करने की चाहत हो तब व्यक्ति को विवाह नहीं करना चाहिये । यह

एक रुटीन ढर्रे पर चलने वाले जीवन के लिये विवाह बच्चे सब चलते हैं पर आप कुछ नवोन्मेषी करना चाहते हो , जीवन की मान्य धारणाओं से अलग करना चाहते हो तब यह विवाह बाधा उत्पन्न करता है । अगर मेरा विवाह न हुआ होता तब आज मैं पूर्ण स्वतन्त्र होता । मैं अब जवाबदेह हूँ किसी के प्रति और उससे जुड़े व्यक्ति के प्रति । शालिनी , उसके माता- पिता के प्रति मैं जवाबदेह तो हूँ ही । मैं उन सबको एक पीड़ा तो दे ही रहा । यह अनावश्यक कृत्य करना पड़ रहा , जिसकी कोई ज़रूरत न थी । ”

मैं - “ ऋषभ , यह तो मेरे मस्तिष्क में कभी आया ही नहीं । मेरी समस्या तुमसे भी बड़ी है । मेरा विवाह जिन - जिन लड़कियों से सोचा जा रहा वह मेरे घर - परिवेश से समायोजन कर ही नहीं सकती । कोई और पीड़ा से गुजरे या न गुजरे मैं तो गुजरँगा ही । ”

ऋषभ - “ अनुराग, यह लोगों की आकांक्षायें , उनकी उम्मीदें बहुत तकलीफ़ देती हैं ख़ासकर उनकों जो एक लकीर पर जीवन न जीकर अपने नज़दीक वालों को निराश करते हैं । क्या गाँधी , आजाद , भगत सिंह ने अपने नज़दीक वालों को कोई सुख दिया होगा ? क्या इन्होंने अपनों की उम्मीदों को तोड़ा न होगा ? यह जीवन बहुत संघर्षमय है , कोई बग़ैर संघर्षों के कहाँ जीता है । ”

मैं - “ क्या विवाह न करना एक समाधान है ? ”

ऋषभ - “ एक व्यक्ति जो प्रतिभाशाली हैं पर एक स्थापित रिवाजों - मान्यताओं की लकीरों पर जीवन नहीं जीना चाहता और वह चाहता है अपने कदमों के निशान को एक अलग ढंग से बनाना उसको यह विवाह का संस्कार रास नहीं आयेगा । ”

ऋषभ ने एक बहुत बड़ी बात कह दी थी । मैंने सोचते - सोचते पूछा , “ यह तुम किसके लिये कह रहे ? ”

ऋषभ - “ यह मैं अपने और तुम्हारे दोनों के लिये कह रहा । एक राहगीरों के कदमों के निशान को देखकर एक बनी बनायी मंजिल जिसे बहुतों ने प्राप्त किया है न तो वह तुम्हारा ध्येय है न मेरा लक्ष्य । ”

मैं - “ क्या है मेरा ध्येय और तुम्हारा लक्ष्य ? ”

ऋषभ - “ न तो यह मुझे पता है न तुम्हें.. हम दोनों उसी की तलाश में हैं । ”

शाम होने लग गयी थी । ऋषभ का मन घर में नहीं लग रहा था । वह माँ से संवाद बचा रहा था । उसने कहा , “ अनुराग चलो टहलते हैं । ”

मैं और ऋषभ पूसा कैंपस में टहलने लगे । मैंने टहलते- टहलते ऋषभ से प्रश्न किया , “ इस फ़ैसले को लेने से पहले तुमने शालिनी का दृष्टिकोण समझने की कोशिश की थी ? ”

ऋषभ- “ उसने मौका ही नहीं दिया । जैसे ही मैंने कहा मैं अमेरिका नहीं जाऊँगा यहीं कोई काम करूँगा वह पूरी तरह उत्तेजित हो गयी और उसके बाद सिर्फ़ वह बोली । ”

मैं- “ क्या बोली वह ? ”

ऋषभ - “ छोड़ो वह किसी अर्थ का नहीं है । वह एकतरफा सोच थी उसकी । ”

मैं- “ यही शालिनी तुम्हारे बारे में कह रही है कि एकांगी व्यक्तिगत सोच है ऋषभ की । वह सिर्फ़ अपने बारे में सोच रहा है । वह मेरे बारे में, मेरे साथ काम कर रहे लोगों के बारे में, एक नवजात संस्थान के बारे में कुछ नहीं सोच रहा । जब हम विकास की ओर बढ़ रहे और लोगों को रोज़गार दे रहे, धन अर्जित कर रहे तब वह एक अलग दिशा में मुड़ रहे हैं । ”

ऋषभ - “ उसकी सारी बातें सही हैं, पर मेरे सही होने से वह ग़लत और उसके सही होने से मैं ग़लत तो नहीं हो जा रहे । एक तर्क उसका यह है कि हम विदेशी मुद्रा कमा रहे, देश को इन मुद्राओं की ज़रूरत है और अंतिम रूप से इनको जाना तो देश में ही है तब क्या यह देश की सहायता के लिये किया गया कृत्य नहीं है ? वह सही है इस मुद्दे पर । पर यह बताओ कितनी विदेशी मुद्रा मैं भेज दूँगा । इस देश को धन से अधिक जन की ज़रूरत है । ”

मैं- “ मुझे एक बात समझ नहीं आ रही, तुम करोगे क्या यहाँ जो विदेश से बेहतर होगा । ”

ऋषभ - “ सवाल बेहतर और बदतर का नहीं है, सवाल उपयोगिता का है । मैं विदेश में सिवाय पैसा कमाने के और कुछ नहीं करूँगा । धन बहुत अर्जित होगा इसमें कोई दो राय नहीं है । अनुराग, जीवन में जो कार्य एक व्यक्ति सबसे पहले आरंभ करता है वह सबसे अधिक यश एवम लाभ अर्जित करता है जो उसके बाद जो आता है वह एक भीड़ का भाग होता है । जो यह स्टार्ट अप होते हैं इसमें नवोन्मेषी प्रवृत्ति और पीछा करने वाली दो प्रवृत्तियाँ होती हैं । मेरे पास नवोन्मेषी प्रवृत्ति थी । तुमने एक कोचिंग चलायी सफल होकर, यह एक स्टार्ट अप है तुम्हारा पर तुम्हारे बाद यह काम जो दुबारा करेगा वह तुम्हारी नकल करेगा उसमें नवीनता नहीं होगी । समाज नवीन प्रवृत्तियों का बहुत स्वागत करता है । मैं कोई नायाब स्टार्ट अप यहाँ करूँगा । ”

अनुराग , मैं अपने अमेरिका के स्टार्ट अप के लिये शालिनी को बहुत योगदान द्यूँगा । हम लोग न्यूयार्क गये । पहले काम आरंभ किया किसी के अधीन । मुझे और शालिनी को मिलाकर कुल पचास हज़ार डालर मिलते थे । मेरा ज्यादा था और शालिनी का थोड़ा कम । मैं नये - नये विचार बना रहा था , शालिनी भी बहुत जहीन है वह भी मेरे साथ लगी रहती थी । एक दिन उसने कहा कि यह सौ रुपया कमाता है हमारे ही काम से और पाँच रुपया भी हमें नहीं देता है , हम इसके लिये क्यों काम करें ? मैंने कहा , जो बांड भरा है दो साल का उसका क्या करेंगे ? उसने कहा बांड तोड़ने की क्षतिपूर्ति दस हज़ार डालर है , वह दे देते हैं । हमारे पास कौन सी पैसे की कमी है । शालिनी बहुत ही दिलदार है , वह हमारे - तुम्हारी तरह गरीबी और अभाव में नहीं पली है । उसने कहा साल- दो साल तक हम कुछ भी न कमायें तब भी जीवन में कोई समस्या नहीं होगी । हमें जीवन जीने के लिये पैसे कमाने की कोई ज़रूरत नहीं है , बहुत पैसा मेरे बैंक अकाउंट में है । उसने उसी दिन दस हज़ार डालर की क्षतिपूर्ति अदा कर दी और बांड से हम लोग मुक्त हो गये । शालिनी ने थोड़ा कार्य अनैतिक भी किया , आप यह कह सकते हो । बांड में एक नान कम्पीट क्लाज था कि आप हमारे तरह का उत्पाद दो साल तक नहीं बना सकते पर उसने कुछ वैसे ही उत्पाद का पंजीकरण करा लिया और उत्पाद को हेर फेर करके थोड़ा अलग कर दिया । जब मेरा उत्पाद बाज़ार में आया तब मेरा पूर्व मालिक नाराज़ हो गया और वह न्यायालय में मामला ले गया । मैं डर गया पर वह नहीं डरी । उसी समय वह न्यूयार्क के हिंदी परिषद में प्रवेश कर गयी । वह देखने में सुंदर है , योग्यता प्राप्त है , हिंदी - उर्दू कुछ - कुछ तुम्हारी तरह बोल लिख लेती है । उसको अमेरिका के भारतीयों ने हाथों - हाथ लिया और एक भारतीय मूल के बड़े वकील को करके न्यायालय में पुरज़ोर ढंग से लड़ने का फ़ैसला किया । यह मामला भारतीय बनाम अमेरिकी हो गया । हम लोग निचली न्यायालय से केस जीत गये । अनुराग , जब भाग्य साथ हो न तब आपका गलत दाँव भी सही पड़ जाता है । शालिनी ने मानहानि का मुकदमा दायर कर दिया अपने ही पूर्व मालिक पर । मालिक घबड़ा गया । उसने घबड़ाहट में केस ऊपरी अदालत में दायर कर दिया और मामला समाचार पत्रों में उछलने लगा । भारतीय बनाम विदेशी का मुद्दा गरमा गया । शालिनी की हर चाल सटीक बैठ रही थी । उसने भारतीयों को अपनी ओर और करने के लिये न्यूयार्क हिंदी परिषद को दस हज़ार डालर दान कर दिया । यह बहुत बड़ी रकम होती है । ऊपरी अदालत में मेरा पूर्व मालिक केस हार गया । शालिनी ने दूसरा मानहानि का दावा एक और कर दिया यह कहकर कि मेरे खिलाफ मिथ्या प्रचार किया जा रहा । शिकंजा पूर्व मालिक पर कसता जा रहा था । शालिनी ने सिविल सूट के बाद किरमनल सूट भी फ़ाइल कर दिया । उसके खिलाफ नान बेलेबल वारंट जारी हो गया और वह न्यायालय से एंटी सेपेटरी बेल माँगने गया । तकदीर फिर शालिनी के साथ

थी । एक महिला जज बैंच में थी । पूर्व मालिक ने कुछ स्त्री आपत्तिजनक शब्द शालिनी के बारे में कह दिये थे, इसने उसी बात को मुद्दा बानाया और केस खुद ही प्लीड किया । उसकी गिरफ्तारी से बचने की सारी कोशिश विफल हो रही थी । अब उसके पास कोई चारा न था सिवाय आउट आफ कोर्ट सेटलमेंट के । उसने कई प्रतिष्ठित भारतीयों के माध्यम से मुझसे संपर्क किया । शालिनी फिर शतरंज की मुहरें ठीक से चला ले गयी । वह जन्मी ही एक व्यापारिक माहौल में है । उसने आउट आफ कोर्ट सेटलमेंट की दो कड़ी शर्तें रखीं - एक बहुत बड़ी रकम और दूसरा माफ़ीनामा । वह करता क्या, कोई चारा न था । उसको पैसे से आपत्ति कम थी, माफ़ीनामे से ज्यादा थी । मैं माफ़ीनामा छोड़ने को कह रहा था । पर वह बोली, यह माफ़ीनामा तुरुप का इकका है । उसने माफ़ीनामा लिख दिया । शालिनी की अगली चाल से सब बेखबर थे । उसने वह माफ़ीनामा समाचार पत्र में छपवा दिया । वह कंपनी गंभीर समस्या में आ गयी और उसके क्लाइंट हमको अप्रोच करने लगे । अब यह बताओ अनुराग, इतनी मेहनत और युक्ति से बनाया गया सामराज्य छोड़ने में तकलीफ तो होती ही है । मैं उसको बिल्कुल गलत नहीं मान रहा, बस हमारे और उसके लक्ष्य अलग हो चुके हैं । ”

मैं - “ कितना क्षतिपूर्ति में पैसा मिला ? ”

ऋषभ - “ वह तुम गिन नहीं पाओगे । अमेरिका के क्रान्तीन बहुत क्षतिपूर्ति देते हैं । शालिनी वही क्षतिपूर्ति जो न्यायालय देता आउट आफ कोर्ट सेटलमेंट से ले लिया । ”

मैं - “ क्या फायदा हुआ आपके पूर्व मालिक का इस सेटलमेंट से ? ”

ऋषभ - “ वह जेल जा सकता था और कई वर्ष की सजा भी हो सकती थी, इससे बच गया । अनुराग, जब तुम रामदीन मामा का मकान और दाढ़ का कमरा बनवाने की बात कर रहे थे तब मैं मन में ही हँस रहा था, इस सेठानी से माँगा भी तो क्या माँगा । वह बहुत दिलदार लड़की है । अनुराग, कुछ ऐसी कोशिश करो वह अमेरिका न जाकर यहीं काम करे । उसके बगैर हम और तुम दोनों अधूरे हैं । ”

मैं - “ वह मान जायेगी ? ”

ऋषभ - संभावना तो कम है पर तुम प्रयास कर सकते हो, तुम्हारे प्रति बहुत सम्मान है उसके अंदर, क्या पता मान ही जाये । ”

मैं - “ तुमसे क्यों नहीं मानेगी ? ”

ऋषभ - “ बुद्ध रात में किवाड़ खोलकर क्यों निकले वह जानते थे यशोधरा नहीं मानेगी । अगर पत्नियाँ, पतियों की सुनने लगें तब तो धरा का स्वरूप ही कुछ और हो जाये । ”

मैं - “ ऋषभ , आप और शालिनी एक संवाद कर लो स्वस्थ माहौल में बगैर उत्तेजित हुये , शायद कोई हल निकल आये । यह रिश्ते जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं । इन रिश्तों के बगैर जीवन का क्या महत्व ? ”

ऋषभ - “ रिश्ते कोई भी हों वह कई बार बंधन का सृजन कर देते हैं । ”

मैं - “ ऋषभ , अगर तुम्हारी व्याख्या को मानें तब पत्नी-प्रेमिका- विवाह संबंध ही क्यों सारे रिश्ते जीवन की एक उछाल की प्रणाली में बाधक हैं । यह रुटीन जीवन के लिये तो बने हैं पर एक बहुत बड़ी उपलब्धि अगर चाहत है तब तो यह बाधक ही हैं । रिश्तों के ख़त्म करने का क्या दर्द नहीं होता ? क्या यह आत्मपीड़न नहीं है ? ”

ऋषभ - “ आप सारे विश्व के महानतम उपलब्धिवान लोगों को लो , सबने पीड़ा ही दी है अपने नज़दीकी रिश्तों को और स्वयम पीड़ा को भोगा है । राम कथा में राम ने जो पीड़ा भोगी वह तो भोगी पर भरत - माँड़वी , लक्ष्मण-उर्मिला, सीता , मातायें-पिता , अयोध्या वासी सब पीड़ित हुये । कृष्ण ने कहा जो मरा , जो हत हुआ उन सबमें मैं हूँ , जो रक्त बहा वह मेरा ही है , बुद्ध ने सबको पीड़ा दी ... पत्नी , पुत्र , पिता , स्वयम सबको , गाँधी ने बच्चों का ध्यान नहीं रखा । जितने शहीद हुये किसी भी करान्ति में उन्होंने अपनों को तो पीड़ा दी ही । पर अनुराग लक्ष्य सबका उदात्त था , सब निस्वार्थ थे , सब समाज के लिये समर्पित थे । यह जो समाज आज रहने लायक तमाम झ़ंझावातों के बाद भी बचा हुआ है इसका कारण वह चंद त्यागमयी लोग है । ”

मैं - “ बिना रिश्तों के कोई जीवन होता है क्या ? ”

ऋषभ -“ बिल्कुल नहीं होता एक सामान्य व्यक्ति के लिये पर मैं जिस आदर्श अवस्था की बात कर रहा हूँ वह मोह - माया - अनुराग - राग - द्वेष से दूर लोग थे । मैं वह बनना चाह रहा हूँ और तुमको बनने की सलाह दे रहा हूँ । मैं बन सकूँगा या नहीं यह तो मुझे पता नहीं पर यह मेरा ध्येय हो चुका है । अनुराग , एक बात मैं ज़ोर देकर कहूँगा ईश्वर ने मुझको - तुमको - शालिनी को जितनी इनायतों के साथ जन्म दिया है उसमें तीन- चार लोग बन सकते थे । अगर उसने इतना बड़ा वरदान दिया है तो क्या सिफ़र इसलिये कि हम तर्क करें कि रिश्तों के बगैर कोई जीवन नहीं होता , धन जीवन के लिये आवश्यक है , मेरी माँ के आँसुओं की क़ीमत लाखों महिलाओं के आँसुओं पर अधिमानता रखती है । अनुराग , रिश्तों को ख़त्म करो , उसका त्याग कर दो अगर जीवन के वृहद लक्ष्य में वह किसी तरह का अवरोध उत्पन्न कर रहे । शालिनी का त्याग , माँ का त्याग, तुम्हारा त्याग अगर किसी भी तरह समाज के एक सार्वभौमिक विकास के काम आता है तब यह त्याग मेरे ही नहीं तुम्हारे भी जीवन को सार्थक करता है । राम कथा की व्याख्या में कैकेयी और मंथरा

को भी सकारात्मक रूप में देखा गया है क्योंकि जगत के पाप नाशन में उनका भी योगदान किसी न किसी रूप में है । “

मैं - “ ऋषभ , यही तर्क शालिनी से कर लो , समझाओ उसको । ”

ऋषभ - “ वह कहेगी कि अमेरिका बलो सब कुछ समेटते हैं और फिर वापस आने पर सोचेंगे । अनुराग , धन - यश - बल सब माया का सृजन कर देते हैं और आप उससे बाहर नहीं निकल सकते । मैंने बहुत यत्न करके अपने को अलग किया है अब मैं उस माया में वापस नहीं जाना चाहता । तुम अनुमान लगा सकते हो कितना बड़ा साम्राज्य है वहाँ पर । शालिनी ने पाँच आईआईटी के सबसे जहीन लोगों की बोली ऐसी लगायी है इस बार और उनको अमेरिका विश्व की बड़ी कंपनियों से छीनकर ले जा रही है । यह जो क्षतिपूर्ति का पैसा मिल गया इससे व्यापार के विस्तार में बहुत सुविधा हो गयी है , हलाँकि कोई खास दिक्कत पहले भी न थी । वह बहुत ही महत्वाकांक्षी है , हम - तुम कितने भी महत्वाकांक्षी होने का दावा क्यों न करें उसके आस-पास भी नहीं हैं । रूप - जहीनियत - उदार मना - युक्ति पूर्ण होना यह संयोजन विरलों में है पर शालिनी में भरपूर है । उसके पास दुनियादारी की बहुत समझ है । अब ऐसी लड़की मानेगी , यह संदेह पूर्ण है । ”

मैं - “ एक बार संवाद तो कर लो । ”

ऋषभ - “ वह तो करना ही होगा , थोड़ा मामला ठंडा होने दो । ”

मैं - “ ऋषभ यह भरत की तरह का त्याग एकाएक कैसे ? ”

ऋषभ - “ इसको मैं एकाएक तो नहीं कहूँगा , विचार कुछ इस तरह के तो थे ही मेरे पर इलाहाबाद ने मुझे काफ़ी कुछ सोचने को मज़बूर किया । यह जीवन की सार्थकता का प्रश्न जो मंथित हर व्यक्ति के मस्तिष्क में होता ही है , उसका जवाब मुझे मिल गया । ”

मैं - “ क्या जवाब है ... ? ”

ऋषभ - “ हर्ष का अपरिग्रह । ”

मैं - “ कैसा अपरिग्रह ? ”

ऋषभ - “ सब समाज को दे देना ... अपना बल - विवेक - बुद्धि - धन । मैं समाज के लिये ही कार्य करूँगा । ”

मैं - “ वह कार्य क्या होगा ? ”

ऋषभ - “ इंतज़ार करो ... तुमको सबसे पहले पता चलेगा । ”

रात होने लगी , मैं और ऋषभ घर आ गये । आंटी लान में ही टहल रही थी । उसने पूछा , “ खाना क्या खाना है ? ” “ मैं कुछ न बोला । आंटी बोली , “ साहब आप से ही पूछ रही हूँ । ”

आंटी कभी साहब न बोलती थी । मैंने कहा , “ मैं कब से साहब हो गया ? ”

आंटी - “ तुम सब साहब ही तो हो । जब मन करेगा घर में रहोगे जब मन करेगा तब कैम्पस में घूमोगे , जब मन करेगा बाहर चले जाओगे , बता कर गये होते मैं इंतज़ार कर रही थी । ”

इतने में चमचमाती लाल रंग की कंटेसा कार घर के सामने आ गयी । शायद ऋषभ ने कार डीलर से कहा था पहुँचा देना इसको घर पर । ड्राइवर ने ऋषभ से बात किया और कार की चाभी और काग़ज़ात देकर जाने लगा । ऋषभ ने सौ रुपया बख्शीश दी । आंटी और मैं कार को देख रहे थे । ऋषभ जैसे ही अंदर आया आंटी ने पूछा यह क्या है ?

ऋषभ - “ कार । ”

आंटी - “ वह तो देख रही हूँ , पर इसकी क्या जरूरत थी ? ”

ऋषभ - “ कार तो एक चाहिये ही यहाँ पर , कैसे आयेंगे - जायेंगे ? ”

आंटी - “ अमेरिका चले जाओगे तब इसका क्या होगा ? ”

ऋषभ - “ आप तो हो न यहाँ पर । यह अनुराग तो आता ही रहेगा यहाँ पर । एक कार तो होनी ही चाहिये । आप सीख लो कार चलाना । ”

आंटी - “ अब इस उम्र में क्या सीखूँगी । ”

ऋषभ - “ माँ , तेरी उम्र ही क्या है ? यह बेवजह का उम्र-उम्र कहकर आप लोग अंदर से ही वृद्ध हो जाते हो जबकि अवस्था कुछ खास नहीं होती । ”

आंटी कुछ न बोली । वह खाना बनाने लगी । मैं और ऋषभ वहीं लान में बैठ गये । रात में ऋषभ ने कहा चलो कार ट्राई करते हैं । मैं , आंटी और ऋषभ दिल्ली की सड़कों पर घूमने लगे । मैंने कहा चलो चिंतन सर के पास चलते हैं । आंटी ने पूछा , “ कितनी दूर होगा ? ”

ऋषभ - “ आधा घंटा लगेगा यहाँ से । ”

हम लोग चिंतन सर के पास गये । चिंतन सर घर पर थे नहीं वह कहीं राउंड पर निकले थे । घर में संदेश छोड़कर हम लोग वापस घर आ गये । रात में आंटी ने पूछा मुझसे , “ कुछ समझ आया कि क्या चल रहा और क्या होगा ? ”

मैं - “ यह न्यूयार्क नहीं जायेंगे यह तो पक्का लग रहा । ”

आंटी - “ शालिनी ? ”

मैं - “ उनके बारे में कुछ नहीं पता । आंटी आपको पता है कितना पैसा कमाया है इन लोगों ने ? ”

आंटी - “ मेरे एकाउंट में जितना है वह मैं जानती हूँ , बाकी न पूछा न ऋषभ ने बताया । ”

मैंने दोनों हाथ को हवा में फैलाकर कहा इतना सारा ।

आंटी -“ क्या किया उन पैसों का ? ”

मैं - “ रखा ही होगा , लक्ष्मी का बहुत आशीर्वाद है इनको । ”

आंटी - “ पर चैन कहाँ है बेटा इनको । देखो न कितना परेशान है । एक दिन बगैर शालिनी के यह नहीं रहता था पर कितने दिन से अकेले रह रहा है । बहुत प्रेम है इन दोनों में , मुझको याद है कैसे शालिनी इसको मुझसे माँग रही थी जब मैं विवाह के लिये तैयार नहीं हो रही थी । इसका शालिनी से बहुत लगाव है , पर बहुत ज़िद्दी है , जो इसके ज़िद में न आ जाये । इसी समय नात- रिश्तेदार मदद करते हैं , उनका दबाव रहता है । पर यहाँ मेरा कोई नात- हित है नहीं , आहूजा साहब की भी कमोबेश ऐसी ही हालत है , अब कौन समझाये , कौन मामले की संगीनियत समझे । मुझे बहुत डर लग रहा है , कहीं यह दोनों ज़िद में अलग न हो जायें । मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा । तुम भी बच्चे ही हो , तुम्हारे बस का यह सब मामला है नहीं । मैं कह रही थी आईएएस की परीक्षा दे दो , अगर दिया होता तब यह दिन शायद न देखना पड़ता । अब इस उम्र की दहलीज़ पर हर एक का मन पोता- पोती की किलकारी सुनने का करता है , मेरा एक ही बेटा और वह बहु से अलग रह रहा है । तुम अनुराग मुझको शालिनी के पास ले चलो , मैं कुछ कोशिश करती हूँ , हर मुद्दे का समाधान होता है , इसका भी होगा ही कुछ न कुछ

....

यह कहकर आंटी रोने लगी ... मैं आंटी के कमरे से दूर गगन में धीरे - धीरे चल रहे चाँद को निहारने लगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 260

मैं आंटी के पास से ऋषभ के कमरे में थोड़ी देर से आया । मेरे आते ही ऋषभ ने कहा , “ दो परम मितरों में क्या बात हो रही थी ? ”

मैं “ थोड़ा वह दुःखी है सारे घटनाक्रम पर । ”

ऋषभ- “ थोड़ा नहीं , वह बहुत दुःखी है । यह तो अच्छा है तुम यहाँ हो नहीं तो स्थिति बहुत तनावपूर्ण हो जाती । उसका तुम्हारे साथ बहुत मन लगता है , इसका कारण तुम्हारा बातूनीपन है । अनुराग , मैं ज्यादा बात कर ही नहीं पाता । शालिनी भी कहती है तुम बोलते कम हो । हम चारों मे मैं मिसफिट हूँ , तुमको , शालिनी को , माँ को बात करना बहुत अच्छा लगता है , मेरा उसमें बहुत मन नहीं लगता । ”

मैं “ हर व्यक्ति की संरचना अलग होती है । यह बताओ तुम शालिनी से प्रेम कैसे प्रदर्शित करते होगे ? यह प्रेम तो शब्दों, लफ़ज़ों, वाक्य- विन्यास की माँग करता है भावनाओं के अबाध प्रवाहमान होने के लिये । ”

ऋषभ - “ यह बात शालिनी भी कहती है । ”

मैं “ कुछ साहित्य पढ़ो, कुछ सीखोगे , दुनिया समझोगे । यह हर समय गणित , कम्प्यूटर एक बोरिंग काम नहीं लगता ? ”

ऋषभ- “ अनुराग , हर एक की मानसिक बनावट अलग होती है । तुमको जो काम बोरिंग लगता है वह मुझे रुचिकर लगता है और उसी तरह जो तुमको रुचिकर वह मुझे बोरिंग । यह जीवन चकर कोई एक सीधी - साधी लकीर से खींचकर तो बनाया नहीं गया । यह वैविध्यपूर्ण जगत और संरचना विधाता की एक नायाब कृति है । यहाँ सबके लिये कोई न कोई स्थान बना हुआ है । यार अनुराग , यह बहुत हो गया , यह शालिनी वाला मामला सुलझाते हैं । मेरा मन नहीं लगता उसके बगैर । ”

मैं - “ ठीक यही बात आंटी कह रही थी मुझसे । ”

ऋषभ- “ क्या कह रही थी ? ”

मैं “ ऋषभ बगैर शालिनी के रहता नहीं था कभी , बहुत प्रेम- लगाव है इन दोनों में , वह बहुत परेशान है । ”

ऋषभ - “ अनुराग , मामला ही ऐसा फँस गया है । वह किसी भी तरह से गलत नहीं है । मैं उसकी चिंता समझ सकता हूँ । हम लोग अमेरिका में स्थापित हो रहे , बहुत सारा निवेश कर चुके हैं , मैं अगर व्यापारिक दृष्टिकोण से देखूँ तब हानि काफी है पर अब मुझे व्यापार करना ही नहीं है तब हानि - लाभ से क्या मतलब । ”

मैं “ तुम नहीं करना चाहते हो पर वह तो करना चाहती है । अब पति - पत्नी की चाहत जीवन के मूलभूत बिंदु पर अलग हो जाये तब जीवन की गाड़ी कैसे चलेगी ? ऋषभ , यह विवाह दो अति महत्वकांक्षी लोगों का हो गया है , यह बहुत समस्या दे रहा अभी ही , अब आगे क्या होगा यह ईश्वर ही जाने । ”

ऋषभ - “ यह हर उस व्यक्ति के साथ हो सकता है जो एक क्राबिल लड़की को एक पत्नी के रूप में चाहता है । यह तुम्हारे साथ भी होगा । ”

मैं - “ बिल्कुल हो सकता है । ”

ऋषभ - “ उपाय क्या है ? ”

मैं - “ झेलो ... और क्या उपाय है ? ”

ऋषभ - “ कोई तो रास्ता होगा ? ”

मैं - “ हाँ, है । ”

ऋषभ - “ क्या है ? ”

मैं - “ एक व्यक्ति त्याग करे । ”

ऋषभ - “ मैं समझा नहीं । ”

मैं - “ आप दोनों की महत्वाकांक्षाएँ बहुत ही अधिक हैं और आप दोनों ही बहुत ही काबिल हो और जीवन को अपनी गति से चलाना चाहते हो , एक को जीवन की रफ्तार में धीरे चलना होगा । मेरे गाँव में बैलों की जोड़ी में दो बैल होते हैं जो हल को आगे लेकर चलते हैं उनको हम लोग बवइयाँ और दवाइयाँ कहते हैं । बवइयाँ बायीं और और दवाइयाँ दायीं ओर होता है । दवाइयाँ तेज होता है और अगर करम बदल दिया जाये तब हल चलना मुश्किल हो जाता है । तुम दोनों दवाइयाँ हो , कोई भी बवइयाँ बनने को तैयार नहीं है अब यह हल आगे चले कैसे ? ”

ऋषभ - “ अनुराग , तुम्हारी व्याख्या कुछ ठीक नहीं है । वह दवाइयाँ हैं और मैं बवइयाँ इसमें कोई दो मत है ही नहीं और उसका नेतृत्व मुझे स्वीकार्य भी है । मैं कार्य कर सकता हूँ , मैं नेतृत्व नहीं कर सकता । मेरे पास नेतृत्व क्षमता है ही नहीं । मेरे जीवन के एक बड़े भाग का नेतृत्व मेरी माँ ने किया , उसके बाद शालिनी कर रही है । मेरी पराइम नंबर के अनुसंधान में सारा काम तक़रीबन मैंने ही किया पर नेतृत्व धर सर ने किया । धर सर न होते तब यह अनुसंधान एक सीमित दायरे में ही रह जाता , यह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति सिफ़र और सिफ़र उनकी देन है । एक 20-21 साल के लड़के का बात पर कौन यकीन करता ? एक बड़े यकीन की स्थापना और एक विश्वास के स्थापन के लिये एक साख की आवश्यकता होती है , वह साख मेरे पास आज भी नहीं है । मैं बगैर नेतृत्व के जीवन में कुछ नहीं कर सकता । माँ के नेतृत्व का समय जा चुका है अब या तो शालिनी करे या तुम करो , किसी एक को करना होगा । मुझे काम करने दो , बाकी काम शालिनी करे और अगर वह नहीं करती तब तुम करो । अनुराग , कुछ भी हो जाये मैं वापस उस रास्ते पर जाने वाला नहीं हूँ

जहाँ पर सिर्फ़ डालर की छपाई हो और बैंकों में डालर जमा हो । मुझे कोई रुचि नहीं है डालर को छाप कर बैंकों में जमा करने में । “

मैं - “ ऋषभ , तुम और शालिनी दो अलग व्यक्तित्व हो । वह व्यापार में प्रवीण है और तुम काम में । यह जोड़ी अगर ट्रूट गयी तब ? ”

ऋषभ - “ यार , मैं हर समझौता कर सकता हूँ पर अमेरिका जाकर व्यापार नहीं करूँगा । देश की आर्थिक नीति में तेज़ी से परिवर्तन हो रहा । सरकार सोना बेचकर खर्च चला रही थी , हमारे पास कुछ ही दिन का आयात बिल देने का पैसा था । एक बाध्यता थी नयी सरकार के पास नीति को बदलने की । सरकार आर्थिक नीति और उद्योग नीति बदल रही है । विदेशी निवेश को आमंत्रण हो रहा है , ऋण लेने की सुविधा मेरे पास है । अनुराग , पता नहीं तुम कितना अर्थव्यवस्था समझते हो पर एक परंपरागत अर्थव्यवस्था का ढाँचा कि ऋण लेना गलत है ठीक नहीं है । अगर ऋण पर लिया गया ब्याज और सकल घरेलू उत्पाद के मध्य एक धनात्मक संबंध बनता है तब ऋण फ़ायदेमंद होता है । यह समझ अभी देश में विकसित नहीं हुई है , पर यह समझ मेरे पास है । सरकार को विदेशी निवेश चाहिये , एफडीआई पर 51 प्रतिशत की छूट मिल गयी है । मेरे नाम पर पैसा लगाने वालों की कोई कमी नहीं होगी , मेरे अपने पास भी पैसा है । इस मेरी साख और मेरी उपलब्धि का फ़ायदा देश के विकास में हो या स्वयं के धन अर्जन में , बस यही एक मुद्दा है । इस बिंदु पर मैं और शालिनी दो धरूवीय हो चुके हैं , पर न तो मैं गलत हूँ और न ही शालिनी । वह भी कुछ करना चाहती है और मैं भी , बस फ़र्क यह है कि हमारे और उसके काम के ढंग और तरीके अलग हो चुके हैं । ”

मैं - “ यह बात शालिनी को समझायी जा सकती है । ”

ऋषभ - “ मुश्किल है । ”

मैं - “ क्यों? ”

ऋषभ - “ यह जो मैं कह रहा यह व्यापार की दृष्टि से एक ख़तरनाक कदम है । इस देश में व्यापार करना बहुत मुश्किल है । यहाँ लाइसेंस - परमिट राज है । उसने अपने पिता का व्यापार देखा है , मैंने एक बार उनसे कहा कि आप यह कैश का काम क्यों करते हैं ? आप सारा काम खातों में करें । उनका जवाब था , यह सब करना मजबूरी है । यहाँ बहुत से कामों के लिये रिश्वत देनी पड़ती है । अब रिश्वत तो कैश में ही होती है , उसके लिये कैश जनरेट करना ही पड़ेगा । तुमने देखा होगा , शालिनी के यहाँ कारों का क़ाफ़िला है । यह कारें रखी जाती हैं सेवा- भाव के लिये । प्रतिदिन सुबह सरकारी अधिकारियों के यहाँ से कार की फ़रमाइश होती है और फ़ोन की घंटी घनघनाने लगती है । एक व्यक्ति सिर्फ़ इस बात के लिये लगाया गया है कि वह लोगों के फ़ोन सुनें और कार पहुँचाये । तुम एक दिन शालिनी के यहाँ

रुकना । तुमको सुबह- सुबह किसी टैक्सी स्टैंड की फ़ीलिंग आयेगी कि कारें निकल रही हैं गंतव्य की ओर । अफ़सरों से ज्यादा अफ़सरों की पत्नियाँ पागल हैं, उनको बढ़िया कार ही चाहिये । कुछ वरिष्ठ अधिकारियों की पत्नियों को तो विदेशी कार ही चाहिये, अब तुम्हीं बताओ इस देश में मेरे ऐसा आदमी काम करना चाहें तब कैसे कर सकता है । मैं आहूजा साहब की तरह चतुर- चालाक - बहुधंधी नहीं हूँ, मुझसे यह सब नहीं होगा । “

मैं “ तुम यह सब जानकर भी इस देश में काम करना चाहते हो ? “

ऋषभ - “ अनुराग, मैं तुम्हारे और शालिनी के बगैर अपूर्ण हूँ । मैं अकेले कोई गाथा नहीं लिख सकता पर अगर तुम दोनों साथ हो तो एक बड़ी गाथा लिखने की मैं गायरंटी देता हूँ । “

मैं “ शालिनी तो ठीक है, वह इंजीनियर है, व्यापार समझती है पर मैं किस काम का हूँ । मेरी सिफ़्र एक उपलब्धि है कि मैंने सिविल सेवा की परीक्षा पास की है, उसमें मेरी माँ, आंटी के सत्कर्म और भाग्य का योगदान मेरे पुरुषार्थ से ज्यादा है । “

ऋषभ - “ तुमको अनुराग खुद ही एहसास नहीं है, तुम हो क्या । एक बंजर ज़मीन से फसल उगा सकते हो तुम । यह बगैर पैसे के इतनी बड़ी कोचिंग चला लेना, यह कमिश्नर के विमोचन कार्यक्रम को नेतृत्व सरीखा देना, मुझे उत्तर प्रदेश सरकार के सम्मान के लिये आगे बढ़ाना, यह सब कोई आम बात नहीं है । “

मैं “ यह विमोचन में काम इसलिये मिला क्योंकि कमिश्नर साहब की चाहत थी अपने बहन से मेरा विवाह करने की । “

ऋषभ - “ ऐसा नहीं है अनुराग । यह क्षमता से प्राप्त किया गया था, यह हो सकता है कि प्रारम्भिक रूप में तुमको काम में शामिल किया गया हो पर इतना बड़ा कार्य बगैर क्षमता के नहीं मिलता, और तुम बोले भी क्या थे, उसमें सिवाय सम्मोहन के और कुछ न था । अनुराग, शालिनी से बात करो । वह अगर समझ जाये तब जीवन आसान हो जायेगा । “

मैं “ अगर वह न मानी तब ? “

ऋषभ - “ अगर वह नहीं मानती है तब हमारे और उसके रास्ते अलग हो चुके हैं । “

मैं - “ तुम उससे समझौते की चाहत रख रहे हो, तुम चाह रहे हो कि वह तुम्हारे शर्तों पर काम करें । यह समझौते की प्रक्रिया नहीं है, यह तो आदेश मानने के लिये बाध्य करना होगा । “

ऋषभ - “ अनुराग , उसको भी त्यागमयी बनना होगा , लोभ का संवरण त्यागना होगा । उसे मुझे और लोभ में से एक को चुनना होगा । ”

मैं - “ यह तो फ़ैसला हो चुका है । इसमें अब बात क्या करनी है । इसमें सिर्फ़ शालिनी को समर्पण करना है , बाक़ी तो कुछ है नहीं । अगर वह मुझसे कहे कि यह पुरुष प्रधान समाज सारे विकास एवं स्तिरयों के प्रति सद्व्यावना की उत्तरोत्तर वृद्धि के बावजूद भी नहीं बदला है तब बताओ वह कहाँ गलत है । तुमने रात के अँधेरों में एक फ़ैसला लिया अपने जीवन के उजाले के लिये और वही फ़ैसला तुमने दिन के उजाले में उसको सुना दिया उसके जीवन के अँधेरे के लिये , बताओ यह कितना औचित्यपूर्ण है ? ”

ऋषभ- “ मैं तो पहले ही कह चुका हूँ वह बिल्कुल गलत नहीं है । वह अपनी जगह एकदम सही है । मैं जीवन में कुछ अलग करना चाहता हूँ । मेरी रुचि व्यापार में एक सार्वतिरक जीवन के विकास में है , मेरे अपने जीवन के विकास में नहीं वरन् लोगों के जीवन के विकास में । आम आदमी एक बेहतर जीवन जिये मैं इस पर काम करना चाहता हूँ । ”

मैं - “ यह तो बताओ तुम करोगे क्या? यह आम आदमी बेहतर जीवन जिये उसका कुछ प्रारूप तो होगा मस्तिष्क में । ”

ऋषभ - “ हूँ है । ”

मैं - “ क्या है ? ”

ऋषभ - मेरा पहला कदम मैं दूर संचार में करान्ति करूँगा मेरी पहली करान्ति दूरसंचार की करान्ति.... ”

ऋषभ के चेहरे पर बहुत ही दृढ़ता के भाव थे , वह भावुक था ... उसने कहा

.....
मैं देश को करान्तियों से भर दूँगा मैं अपनी माँ की खुशी के आँसुओं इस धरती को पाट दूँगा ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 261

रात हो रही थी , मैं खिड़की पर खड़ा होकर बाहर के लंबे सायेदार पेड़ों और दूर जुगनुओं की चमक को देख रहा था , उनका शोर आ तो नहीं रहा था पर आभासित हो रहा था । मैं बहुत परेशान था , मेरा इलाहाबाद जाना बहुत ज़रूरी है । यहाँ यह दो प्राणी चकल्लस फैलायें हैं जिसका कोई अंत दिख

नहीं रहा था । यह पता नहीं कितना लाखों- करोड़ों डालर कमा कर बैठे हैं और मैं यहाँ कुछ हज़ार में ही बूँद - उतिरा रहा हूँ, यह शालिनी डालर गिनने की शौकीन हो चुकी है वह कहाँ मानने वाली और यह बुद्ध के अवतार बोधिसत्त्व पता नहीं कितने दिन तक प्राणि मात्र को लिये समर्पित रहेंगे । यह त्याग बड़ा काम है, यह सबके बस का है नहीं । यह वैराग्य क्षणिक ही होगा, अगर इनको सेवा ही करनी है तो चलें मेरे गाँव रहें वहाँ पर । यह क्यों सरकार की आर्थिक नीति बदलने की बात कर रहे, वह भी तो व्यापार के दृष्टिकोण से ही कह रहे । मैं गरीब आदमी, दो पैसे का जुगाड़ किया वह भी अधर में लटका है, लोगों से वायदा किया पाठ्यकरम समाप्त करने का पर जिस तरह मामला यहाँ चल रहा मुझे समस्या का आदि तो दिख रहा पर अंत होते दिख नहीं रहा ।

मैंने ऋषभ की तरफ घूम कर देखा वह छत की तरफ देख रहा था । उसने पूछा, “नींद आ रही है?“

मन तो किया कह दें, सोने दोगे तब तो नींद आयेगी । मेरे जवाब का इंतज़ार किये बगैर उसने कहा, “चलो कैंपस में टहलते हैं ।“

मैं एक खिलौना हो गया हूँ इन लोगों के हाथ में । मुझे इंडियन पोस्टल सर्विस ले लेनी चाहिये थी, एक आदमी का समाचार दूसरे को दो, दूसरे का तीसरे को । अब यह रात में घुमायेंगे और कहेंगे, जाओ सुबह शालिनी का मन पता करो, वह पिघली की नहीं पिघली । वह काहे पिघलेगी? उसको गिनना है डालर, वह काहे को मानेगी ।

मैं और ऋषभ चल दिये पूसा कैम्पस में समय को रातिर में नष्ट करने । समय के नष्ट करने की प्रक्रिया में ऋषभ ने कहा, “यार यह मामला सुलझाओ ।“

मैं - “कैसे?“

ऋषभ- “शालिनी को अकेले जाने को तैयार करो अमेरिका । वह जाये और बंद करके आये सारा काम वहाँ पर ।“

मेरे दिमाग़ समस्याओं पर बहुत तेज काम करता है । मैं किसी तरह अगली रात की ट्रेन से इलाहाबाद वापस जाना चाहता था । माँ भी मेरा एकौं करम नहीं छोड़ेगी और कहेगी, “तू बड़का काजी बनि ग हअ । ई मियाँ - बीबी के नाटक में मजा आवत बा तोहका, अपने पर पड़े तब समझि आये ।“

ऋषभ ने मुझे शांत देखकर कहा, “क्या सोच रहे हो?“

मैं - “ यही सोच रहा जीवन महत्वाकांक्षी हो जाये तो कितनी मुश्किल होती है । मैं अपनी ही बात लेता हूँ , एक आसान जीवन जी रहा था । ईश्वर ने सफलता दे दी , जीने का एक सम्मानजनक आसरा मिल गया था , मैं वहीं रुक गया होता जहाँ पर सारे मेरे साथ के और मेरे से पहले के सफल लोग रुक गये थे । पर मैं कोचिंग चलाने लगा , फिर कमिशनर साहब की किताब लिखने में मदद करने लगा , विमोचन संचालन में रत हो गया । यह कोचिंग चलाना बहुत ही कठिन कार्य है वह भी तब जब आप अकेले अध्यापक हो । मुझे पिछले 45 दिन से कोई चैन नहीं , क्लास ख़त्म होने के बाद जो मैं घर पर चाय पीता हूँ बस तक़रीबन वही 30 मिनट चैन के हैं । चाय प्याले से ख़त्म होती है और अगले दिन का तनाव सिर पर सवार । यह जो लोग पहले दिन आये थे पढ़ने वह अब वही नहीं रह गये हैं । यह क्लास कोई आम छात्रों की कक्षा नहीं है । यह महान पराक्रमियों की कक्षा है , इनके बीच खड़े होकर पढ़ाना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है । यह आग के मध्य से रोज़ गुजरने ऐसा है । राम प्रकाश सिंह सर ने एक वाक्या साझा किया था कि विश्वविद्यालय की साइंस फैकल्टी में महान अध्यापकों को भी पढ़ाने में असुविधा हो रही थी इसलिये वह लोग शुक्रवार की संध्या को छात्रों से नियत विषय पर लेक्चर दिलवाने लगे और लेक्चर का स्तर अध्यापकों की क्षमता को पार करने लगा । मुझे कई बार ऐसा अहसास अपने छात्रों से होता है । ”

ऋषभ - “ यह काम किया ही क्यों? क्या मिला बस कुछ हज़ार रूपये , पर पूरी ज़िंदगी कठिन कर ली तुमने . ”

मैं - “ ऋषभ, यह कुछ हज़ार रूपये मेरे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण थे । इन रूपयों से मेरे पूरे घर में शांति और खुशी दोनों एक साथ आ गयी है । मैंने जितनी प्रसन्नता अपने घर में पिछले करीब दो महीने में देखी है उतनी पहले कभी न देखी । माँ को बेटी के विवाह की चिंता बहुत कम हो गयी , घर का खर्च पिताजी की तनख्वाह से नहीं मेरे द्वारा कमाये इन कुछ हज़ार रूपयों से चलता है । मेरे घर में हर काम में कटौती होती थी वह कटौती अब तक़रीबन ख़त्म ऐसी हो गयी है । इन तथ्यों के साथ एक तथ्य यह भी है कि मेरे कोचिंग चलाने में पैसे की चाहत ज़रूर थी पर बड़ा कारण मेरी उफनती महत्वाकांक्षा थी , मैं भीड़ से अलग होना चाहता था । मैं मात्र एक चयनित व्यक्ति की तरह जीना नहीं चाहता था । मैं हर दास्तान के बाद दूसरी दास्तान लिखना चाहता हूँ । मैं सामराज्य का स्वामी नहीं मैं सामराज्य निर्माता बनना चाहता हूँ । यह मेरी भूख , यह मेरे अंदर की आग मुझे चैन लेने नहीं देती । ऋषभ , महत्वाकांक्षा बहुत दुखदायी होती है पर उसके बगैर कोई जीवन नहीं होता । एक महत्वकांक्षा विहीन जीवन एक पशुवत् जीवन होता है । ”

ऋषभ - “ दोनों बात तुम ही कह रहे हो । यह महत्वाकांक्षा ठीक नहीं और आवश्यक भी है । ”

मैं - “ हाँ दोनों ही बात कह रहा , परिप्रेक्ष्य किसी बात के विश्लेषण और मूल्यांकन में कई आयाम दे देते हैं । ”

ऋषभ - “ इसको नियन्त्रित भी कर सकते हो । ”

मैं - “ किसको ? ”

ऋषभ - “ महत्वाकांक्षा को । ”

मैं - “ यह नियन्त्रित नहीं हो सकती । यह ढलानों पर बहती नदी है जो किसी बाँध को स्वीकार नहीं करती । अगर यह नियन्त्रित हो गयी तब यह महत्वाकांक्षा नहीं कुछ और है । ”

ऋषभ - “ कुछ और क्या है ? ”

मैं - “ तब आप एक संतोषी व्यक्ति हो । आप महत्वाकांक्षी नहीं हो बस कुछ चाहत रखते हो । वह चाहत मिल गयी और आप जीवन में रम गये । ”

ऋषभ - “ ज्यादातर लोग तो आपकी चाहत की परिभाषा में ही आते हैं । ”

मैं - “ निश्चित रूप से । तभी तो हर कोई दुख प्राप्त नहीं करता , हर कोई अपने अंदर एक आग रखकर उसकी तपिश को महसूस नहीं करता , तभी तो कायनात में एक बड़ी संख्या, मैं मेरी पत्नी और मेरे दो बच्चों के बाहर नहीं सोचती और विधाता हर किसी को अनुराग , शालिनी या ऋषभ नहीं बनाता । ईश्वर ने हम तीनों को बनाया है तो सिर्फ़ इसलिये कि हम अपने बारे में न सोचकर समाज के बारे में सोचें । मेरी माँ ने बहुत पहले मुझसे कहा था कि तुम्हारे ऐसा इस परिवार में दूसरा नहीं जन्मा इसलिये तुझे मेरा ही नहीं हर माँ का दर्द समझना होगा । मेरी सिविल सर्विसेज़ की सफलता से मेरी माँ की खुशियों के चंद आँसू बहे हैं पर वह आँसू अपर्याप्त हैं इस धरा की खुशियों के लिये , मैं हर साल दक्षिण- पश्चिम मानसून की जून की फुहार के साथ कई माँओं के आँखों से जून में बरसात कराना चाहता हूँ । यह जो मैंने पढ़ाने का काम शुरू किया है मैं अपने जीवन की अंतिम साँस तक करूँगा । मुझे ईश्वर ने किसी मङ्कसद से बनाया है , मैं उसे निराश बिल्कुल नहीं करूँगा । ”

ऋषभ - “ अनुराग , तुम जब बोलते हो तब किसी के अंदर के अलाव की बुझती हुई चिंगारी को जंगल की आग बना देते हो । एक बात बताओ मेरे बारे में तुम्हारा क्या कहना है ? ”

मैं - “ समझा नहीं तुम जानना क्या चाहते हो । ”

ऋषभ- “ मेरे इस फैसले के बारे में तुम्हारा क्या मत है ? ”

मैं - “ यह अमेरिका न जाकर भारत में रहने का फैसला ? ”

ऋषभ - “ हाँ । ”

मैं - “ अगर आप अमेरिका न जाकर भारत की बदल रही व्यापारिक नीति को देखकर यहाँ व्यापार करना चाह रहे तब आप का फैसला सही नहीं है , पर अगर ”

ऋषभ - “ पर अगर क्या ? ”

मैं - “ पर अगर आप यहाँ रहकर देश और समाज बदलने का काम करना चाह रहे तब आप स्तुत्य हो । ”

ऋषभ - “ अगर शालिनी नहीं मानी तब ? ”

मैं - “ ऋषभ यह रास्ता बहुत काँटों भरा है । यहाँ कोई कली को फूल बनते देखने ऐसा आळादकारी दृश्य नहीं मिलने वाला । यहाँ कोई नज्म तितली फूलों को नहीं सुना रही और तुम गढ़ती नज्म में खो गये । यह सब अगर चाहत है तब यह नहीं होने वाला , अगर शबनम पर उतरे चाँद को देखने की चाहत है तब आप अमेरिका चले जाओ । यह नुकीले पत्थरों पर चलने वाला रास्ता है जहाँ पर मील के पत्थर ही कहेंगे , क्यों बेवजह मंजिल तलाश रहा , यह रास्ता किसी मंजिल को नहीं जाता और तुम्हें मील के पत्थरों से कहना होगा इस रास्ते से कोई गया नहीं है इसलिये तुझे भी मंजिल का पता नहीं है । यह काम जो तुम करना चाह रहे वह यह सरकार भी नहीं कर पायी है पिछले चालीस सालों में । तुमसे हर कोई कहेगा , कुछ सेंस की बात करो , यह फ़िज़ूल की बातों के लिये मेरे पास वक्त नहीं है । पर ऋषभ जो फ़िज़ूल की बात करता है , जो नये स्वप्न देखता है , जो स्वप्नों की तासीर बदलने में माहिर होता है , जो आँखों के बंद होने का इंतज़ार किये बगैर स्वप्न देखने की कला सीख लेता है , वही इतिहास लिखता है । ”

ऋषभ - “ अगर शालिनी न मानी तब ? ”

मैं - “ अगर शालिनी के मानने न मानने से तुम्हारे फैसले निर्धारित हो रहे हैं तब मैं फिर कहूँगा, आप अमेरिका चले जाओ । इतनी कच्ची सी शर्त अगर तुम्हारे हौसलों की उड़ान माँग रही है तब यह एक गौरैया की उड़ान है कब उड़ी और कब बैठ गयी पता ही नहीं चला । संपाती और जटायू की कहानी सुनी है ? ”

ऋषभ - “ वह क्या है ? ”

मैं - “ थोड़ा समय लगेगा । ”

ऋषभ - “ समय की कौन सी कमी है । यह रात कहाँ जीने दी रही है , तुम्हारी कहानी ही शायद रात के आतंक को कम कर दे । ”

मैं “ एक गिर्द का जीवन क्या है ? एक ऊँची उड़ान, दृष्टि खोजती शव को , शव पर पड़ती दृष्टि और क्षुधा की पूर्ति । ऊँची उड़ान का लक्ष्य क्या है ? क्षुधा पूर्ति... यह सारे जीवन के तथाकथित सफल लोग यही कर रहे हैं । यह जीवन का यथार्थ है , जीवन की उड़ान का अंतिम ध्येय है , अपनी क्षुधापूर्ति । प्रतिभा , पौरूष , सर्वगुणों से युक्त व्यक्ति ऊपर उठता हुआ दिखायी अवश्य देता है किन्तु उसका लक्ष्य क्या है ? उसका चरम उद्देश्य क्या है ? सिर्फ़ और सिर्फ़ व्यक्तिगत आकांक्षाओं की पूर्ति । इसमें जो अपवाद होते हैं वही समाज के काम आते हैं , समाज को काव्यात्मक बनाते हैं , लेखकों को लिखने का अवसर देते हैं , बाकी तो ईश्वर बस भीड़ बनी रहे धरती पर , आमोद- प्रमोद चलता रहे इसलिये निर्माण कर रहा कायनात में । ”

ऋषभ - “ क्या मनुष्य गिर्द सदृश है ? ”

मैं “ पूरी कथा और मेरा विश्लेषण सुन लो , फ़ैसला कर लेना ।

जटायु और संपाति दो गिर्द थे , दोनों भाई थे । इन दोनों ने संकल्प लिया सूर्य पर विजय प्राप्त करने का । दोनों ही आकाश मार्ग से सूर्य की ओर चल दिये , पर उर्ध्वमुखी उत्थान के साथ अंतरिक्ष में ताप बढ़ने लगा और एक का संकल्प बदल गया । जटायु ने वापस आने का निर्णय लिया , संपाति जटायु के प्रस्ताव से सहमत नहीं हुआ और सूर्य के नजदीक पहुँच गया पर उसके पंख जल गये और वह धरा पर गिर गया । जटायु ने रावण से युद्ध किया और अन्याय के खिलाफ़ युद्ध करके जगत कल्याण के हित साधन में सहायक हुआ । जटायु में कायरता का अंश देख सकते हो पर अहं का आभाव है और विवेकशीलता है ।

संपाति का जीवन दर्शन क्या है ? सृष्टि के समस्त अंधकार को दूर करने वाले दिव्य केन्द्र तक पहुँचना । उसके कार्यों के पीछे अहंकार है पर उसमें अद्वितीय महत्वाकांक्षा है । वह पहला नभ खोजी अंतरिक्ष यात्री था । वह पहला प्राणी था जिसने अंतरिक्ष के सबसे बड़े रहस्य को जानने का प्रयास किया । इसका दर्शन आधुनिक वैज्ञानिक दर्शन के निकट है । वैज्ञानिक जिज्ञासा उसके अंदर थी । वह एक अदम्य लालसा से प्रेरित था । इसकी उड़ान में शारीरिक सामर्थ्य बाधा नहीं बन रही है । उसके पंख नष्ट हो रहे पर वह सूर्य के नज़दीक बढ़ता जा रहा है । यह शरीर तो नष्टप्राय है पर यह नष्ट कैसे हुआ , यह महत्वपूर्ण है । बाद में यही संपाति बंदरों को सीता का पता बताता है । यह दोनों भाई संकल्पित थे और मर्यादा - नायक के सहायक हुये । ”

यह भी सच है ऋषभ हर प्रेरक व्यक्ति में एक अहम भाव होता ही है , बस उसे नियन्त्रित करने की आवश्यकता है । इन दो भाइयों में भी था । बगैर अहम भाव के व्यक्ति महत्वाकांक्षी हो ही नहीं सकता । ”

ऋषभ - “ मैं जटायु बनूँ या संपाति ? तुम्हारी कहानी में जटायु में समझौता , विवेकशीलता है तो संपाति में अतिशय साहस और रहस्यों को जानने की अदम्य इच्छाशक्ति जो जटायु में मुझे कम दिख रही है । ”

मैं - “ तुम संपाति बनो । बहुत से विवेकी जटायु तुमको मिलेंगे तुम्हारा साथ देने के लिये अगर तुम्हारे पंख अपने अभियान में जल गये तब भी । ”

ऋषभ - “ क्या करूँ शालिनी का ? ”

मैं - “ यह तुम्हारा फैसला है ? ”

ऋषभ-अगर वह न मानी तब ? ”

मैं - “ मैं भीष्म की तरह कहूँगा जो उन्होंने दरौपदी से कहा था चीर हरण के बाद जब दरौपदी ने पूछा यह मेरे चीर हरण का कृत्य कितना उचित था । ”

ऋषभ- “ क्या कहा था ? ”

मैं - “ धर्म का स्वरूप जटिल है इसलिये मैं इसकी विवेचना नहीं कर सकता । ”

ऋषभ - “ मैं अगर कहूँ तुम भीष्म की तरह नहीं मेरे मित्र की तरह कहो तब ? ”

मैं - “ एक मित्र के रूप में मेरा निर्णय गलत हो जायेगा क्योंकि मेरे नज़दीक ऋषभ ज्यादा है या शालिनी यह कहना बहुत मुश्किल है । ”

ऋषभ -“ बगैर राग- द्वेष- पक्षपात के अगर निर्णय देना है तब क्या निर्णय दोगे ? ”

मैं - “ तब वही कहूँगा जो विदुर ने दरौपदी के उसी सवाल पर कहा था जिस पर भीष्म ने कहा था , धर्म का स्वरूप जटिल है । ”

ऋषभ -“ क्या कहा था ? ”

मैं - “ दुर्योधन को त्याग दो , यह राज्य को नष्टता की ओर ले जा रहा है । इतिहास में तमाम उदाहरण हैं जब राज्य एवम् राष्ट्र के लिये पुत्र का त्याग किया गया है । ”

ऋषभ - “ तुम शालिनी को त्यागने की बात कह रहे हो ? ”

मैं - ऋषभ , मैं कुछ नहीं कह रहा सिर्फ तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर दे रहा । ”

ऋषभ - “ मुझे फैसला चाहिये । ”

मैं - “ वह तुम्हें करना है । ”

ऋषभ -“ इस फैसले में बहुत तकलीफ है । ”

मैं “ जीवन के बड़े फैसले तकलीफ़ देते ही हैं । ”

ऋषभ-“ मेरी जगह तुम होते तो क्या करते ? ”

मैं शांत रहा , ऋषभ ने फिर पूछा , “ तुम क्या करते ? ”

हम लोग चलते - चलते घर के पास पहुँच गये ...

मैंने कहा , “ गुफ्तगू बंद न हो , बात से बात चलती रहे , सुबह से शाम तक मुलाक़ातों का दौर होता रहे , जीवन में एक भुलावा बना रहे कि ऐसा होता तो वैसा होता , यह हँसती हुई तारों की रात सर पर महफूज़ रहे यह चाहते हो या पत्थरों को काटकर नदी बहा दी जाये जिसमें हमारे खेत नदी के पाट में समाँ जायें । ”

ऋषभ - “ मैं कुछ नहीं चाहता सिर्फ़ यह चाहता हूँ , तुम मेरी जगह होते तो क्या करते ? ”

मैं “ तुम सुन पाओगे ? तुम कर पाओगे ? ”

ऋषभ - “ मुझे कम से कम शब्दों में अपना निर्णय सुनाओ । ”

मैं “ रूपवान , सर्वगुण संपन्न शालिनी का त्याग.....

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 262

मैं अगले दिन सुबह उठा , ऋषभ देर में सोया था । वह अभी भी नहीं उठा था । मैंने यह निर्णय मन ही मन कर लिया था कि मैं आज चला जाऊँगा चाहे जो भी हो । मेरे ऊपर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है , वह सारे लोग परेशान होंगे कि सर है नहीं , पता नहीं कैसे दाढ़ू सँभाल रहा होगा , पर निकलूँ कैसे ? आंटी मेरे जाने के ही नाम पर गुस्सा होने लगती है । यह ऋषभ तो अलग ही राग अलाप रहा । मुझे कुछ समझ न आ रहा कैसे इस जंजाल से निकलूँ । मैंने शालिनी के पास जाने का फ़ैसला किया , आंटी से कहा कि मैं शालिनी के पास जाता हूँ , आऊँगा थोड़ी देर में । आंटी चाह रही थी यह मामला सुलझ जाये किसी भी तरह । मैं शालिनी के पास चला गया । शालिनी मेरा इंतज़ार कर रही थी । वह जानना चाह रही थी क्या हुआ ? वह किसी भी तरह न्यूयार्क जाना चाहती थी , वहाँ उसका बहुत सारा काम लंबित पड़ा हुआ है । उसने मेरे पहुँचते ही पूछा , “ क्या हुआ ? ”

मैं “ कुछ नहीं हुआ , वह यहीं देश में कुछ करना चाहते हैं । ”

शालिनी अपनी योजना बना चुकी थी , वह हमको - ऋषभ को बाज़ार में बेच दें और हम लोगों को पता ही न चले ऐसी क्षमतावान है वह । उसने कहा , “ अनुराग ऐसा है ऋषभ चलें अमेरिका , हम वहाँ का काम कुछ महीनों या एकाध साल में समेटते हैं , अपना पैसा भारत ट्रांसफर करते हैं , जो भी निवेश किया है उसको निकालते हैं फिर वापस आते हैं । अनुराग, तुमको पता नहीं होगा कितना बड़ा पैसा हमको वहाँ प्राप्त हो चुका है । विदेशी मुद्रा के स्थानांतरण में आर.बी.आई की भी गाइडलाइन्स है और अमेरिका की भी । वह गाइडलाइन्स कितना पैसा लाने देगी यह भी नहीं पता मुझे । अनुराग , कई मुद्दे हैं , उन पैसों पर कर का मामला है । यहाँ कर लगेगा तब कितना लगेगा । मेरी सीमित समझ के अनुसार पैसा विदेश में एक इंडियन पासपोर्ट होल्डर

ने कमाया है वह पैसा भारत में कमाया गया है नहीं तो कर नहीं लगना चाहिये । अमेरिकी सरकार के कानून क्या इजाजत इस मुद्दे पर देते हैं , यह मुझे नहीं पता । मैंने अभी तक यह सोचा ही नहीं था कि पैसा वापस लाने की दरुत प्रक्रिया हमारे साथ चल रही है जिसका मुझे आभास ही नहीं है । वहाँ निवेश किया है हमने , इस समय बाज़ार हमारे अनुकूल नहीं है , हमें सब कुछ देखकर चलना होगा । यह सारा फैसला रातोंरात कैसे हो सकता है । वह कह रहे जितन को कार्यालय वहाँ का चलाने दो , हम यहाँ काम देखते हैं । जितन एक हमारा कार्यकर्ता है । वह नहीं सँभाल सकता । मैं भी अकेले नहीं सँभाल सकती । ऋषभ के बगैर तकनीकी पक्ष नहीं चल सकता । इस व्यवसाय में हर दिन करांति हो रही , विदेश के हर कोने में हलचल इस क्षेत्र में हो रही है । यह कोई इतिहास , समाज शास्त्र तो है नहीं कि एक बार लिख दिया बस हो गया । यहाँ तो रातोंरात पूरा आयाम बदल जाता है । हमारी अपने पुराने मालिक से लड़ाई चल रही । वह बहुत ही बड़ा आदमी है । मैंने केस जीता , माफ़ीनामा लिखवाया , इससे वह पूरी तरह आहत है । यह अफ़वाह ज़ोरों पर है कि उसने अपना आदमी मेरे यहाँ प्लांट किया है । हमारे यहाँ पचास से अधिक लोग काम करते हैं , अब यह कैसे पता लगे कि कौन सा आदमी हमारे यहाँ उसके द्वारा डाल दिया गया है । ऐसे माहौल में एक महिला अकेले जाये और काम सँभाले यह कहाँ तक उचित है । ”

मैं - “ शालिनी , एक गलती कर दी तुमने । ”

शालिनी - “ क्या? ”

मैं - “ तुमको इलाहाबाद के लड़के से विवाह करना चाहिये था । वह यहीं आकर इस कोठी में रहता , बाहर पीछे के अहाते में मालिश करता और सुबह - शाम आपके माँ , पिता को पापा - मम्मी करता रहता । आपको घर दमदा चाहिये था । ”

शालिनी - “ मुझसे कौन इलाहाबाद का लड़का विवाह करता ? ”

मैं “ लाइन लग जाती आपको पाने के लिये । ”

शालिनी - “ मेरे सामने जो बैठा है काबिल लड़का चाणक्य नीति का महान शिक्षार्थी उसने तो मुझसे विवाह करने से इंकार कर दिया था । ”

मैं ” यह किसने कहा तुमसे ? ”

शालिनी - “ ऋषभ मेरे पति से अधिक मेरा मित्र है , वह तकरीबन हर बात बताता है । बातचीत में ज़िकर आ गया था । ”

मैं “ मैंने यह नहीं कहा था । मैंने कहा था शालिनी ऐसी लड़की के लिये ऋषभ ऐसा लड़का ही चाहिये था , कोई और उपयुक्त हो ही नहीं सकता था । ”

शालिनी - “ अनुराग , जब किसी से प्रेम हो जाता है तब कुछ भी ऐसा नहीं होता जो बीच में समस्या कर सके । आने वाली समस्या का समाधान होना ही है । मेरे ऋषभ के विवाह में कई समस्याएँ थीं पर हम दोनों ने एक- एक करके सबका समाधान किया , हमने यह फ़ैसला कर लिया कि इस प्रेम को अंतिम परिणति पर ले जाना है , चाहे जैसे भी ले जाना पड़े । अनुराग , ऋषभ ने वह त्याग दिया जो बहुतों का ध्येय होता है । मैंने सुना है कि आईएएस अफ़सर पैसे के लिये किसी भी तरह की लड़की से विवाह कर लेते हैं । विवाह परिवार और पैसे पर होता है न कि लड़की पर । ऋषभ ने हज़ारों करोड़ का साम्राज्य टुकरा दिया , यह छोटी बात नहीं है । यह उसके चरित्र के बारे में बहुत बड़ी बात कहती है । उसने इस छोटी सी उम्र में एक साम्राज्य निर्मित किया और अब वह भी त्यागना चाह रहा है । मैं उसकी क्षमताओं को जानती हूँ , वह फिर साम्राज्य बना लेगा , पर अकेला नहीं बना सकता । उसे मेरे पिता का सहयोग लेना होगा । उसको लाइसेंस - परमिट राज्य की कोई समझ नहीं है । उसे कोई समझ का व्यक्ति चाहिये । ”

मैं “ शालिनी , मेरे जीवन की कुछ उपलब्धियाँ हैं , पर मित्र के रूप में आंटी - ऋषभ - तुम सबसे बड़ी उपलब्धि हो । कल ऋषभ कह रहे थे कि आप एक मित्र की तरह मुझको राय दो । मैंने कहा वह राय गलत हो जायेगी क्योंकि मेरे लिये फैसला करना असंभव है कि मेरे नज़दीक कौन अधिक है .. ऋषभ या शालिनी । ”

शालिनी - “ अनुराग , मेरा मन आज फिर छत से कूदने का हो रहा । उस दिन तुमने मुझ पर नज़म ऐसी गढ़ी तब किया आज फिर खुशी व्यक्त करने के लिये हो रहा , तुम एक दिन मुझे छत से कूदा कर ही मानोगे । ”

मैं “ छत से न कूदो । यह प्रशस्ति - गान करने वालों को लोग पारितोषिक दिया करते थे । तुम वही दे दो और डालर में दो । यह गरीब चारण देखे तो

डालर होता कैसा है और मेरी ख्याति बढ़ेगी मैं डालर में पारितोषिक लेता हूँ ।
“

शालिनी - “ तुम जिस पर लिखोगे वह कुछ भी दे देगा , एक दिन आयेगा लोग
तुमसे कहेंगे मुझ पर लिखो । उस समय मैं कहूँगी इसने मुझ पर लिखकर
स्त्री सौन्दर्य को सराहना आरंभ किया था । ”

इतने में नौकर आ गया और उसने कहा कि साहब अनुराग सर को बुला रहे हैं
।

शालिनी ने कहा मुझसे , “ अनुराग पापा ने कहा था कि अनुराग आयेंगे तब
मुझे मिलाना । वह कल जान नहीं पाये जब तुम आये थे । तुम चलो , मैं कपड़े
बदल कर आती हूँ । ”

मैं नीचे उसी हाल मे आ गया जहाँ पहली बार आया था जब आहूजा साहब ने
खाने पर बुलाया था । इस बार कमरा देखकर सुखद आश्चर्य हुआ । पूरे
कमरे में विमोचन कार्यक्रम के समय की कई तस्वीरें करीने से लगाई गयी
थीं । राज्यपाल , मुख्यमन्त्री के साथ की तस्वीर । एकाध फ्रेम की तस्वीर में
मैं भी था । आहूजा साहब और उनकी पत्नी मेरा इंतजार कर रहे थे । मेरे
अभिवादन का बड़ी गर्मजोशी से जवाब दिया । आहूजा साहब ने कहा, “ मुझे
नहीं पता था यह कार्यक्रम इतना बड़ा होगा नहीं तो मैं भी आता । ”

मैं - “ मैंने तो अनुरोध किया था आपके आने का । ”

आहूजा साहब - “ हाँ , आपने किया था । शालिनी ने भी चलते - चलते एक
बार फिर से कहा मुझसे चलने को , पर बेटा यहाँ का काम बहुत ही ज्यादा है
। एक अकेला आदमी हूँ , सोचा था शालिनी सँभालेगी पर वह भी एक अलग
काम करने लगी वह भी विदेश में , इसलिये समय नहीं मिलता कहीं भी आने
- जाने का । यह राज्यपाल जी मेरे मन्त्री रह चुके हैं । यह स्टील मन्त्री थे
और बहुत नाम था इनका । मैं आता तो इनसे जरूर मिलता । ”

शालिनी की माँ - “ वहाँ तो बहुत अच्छा इंतज़ाम था , हम लोग साथ ही बैठे थे
। ”

मैं - “ शायद ऋषभ को राज्य सरकार सम्मानित करे । जब सम्मान होगा तब
आइयेगा । ”

आहूजा साहब - “ कब है यह सम्मान? ”

मैं - “ यह अभी तय नहीं है । मैं जाकर पता करता हूँ । ”

इतने में शालिनी तैयार होकर आ गयी । शालिनी के अंदर एक खास बात थी
उसको संजीदगी से रहना बहुत आता था । उसको पहनने -ओढ़ने-बात करने

-अपने को संचालित करने में महारथ थी । उसने आते ही पूछा , “ कुछ नाश्ता और करोगे ? ”

मैं-“ शालिनी , कुछ मत खिलाओ और । आंटी से मैंने कहा है कि जल्दी आऊँगा । वह नाश्ता बनायी होगी और कल मुझको डॉट भी दिया था जब मैंने कहा कि मैं जाना चाहता हूँ । ”

आहूजा साहब - “ अनुराग , ऋषभ के मामा का मकान शालिनी बनाने को कह रही थी । मैंने शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन वाले को कह दिया है । आप लोग जैसा चाहो मकान बनवा लेना । उससे मैंने आपके बारे में बताया है , वह आपसे मिलना भी चाहता है । उसने पेपर में पढ़ा था पूरा इलाहाबाद का विवरण । ”

मैं- “ धन्यवाद अंकल । वह बहुत गरीब हैं । आपका बहुत उपकार होगा । ”

आहूजा साहब -“ हमारे रिश्तेदार हैं , हमारा फ़र्ज़ है । ”

मैं और शालिनी बँगले के बाहर निकलने लगे और तिवारी ड्राइवर को कार निकालने का निर्देश हो गया । मैंने शालिनी से कहा , “ अब मैं जो भी नज़म गढ़ूँगा आप पर उसके एवज़ में डालर ही लूँगा । चारण कवि बनने में बहुत फ़ायदा है अगर आपकी सुंदरी डालर वाली हो । ”

शालिनी - “ डालर ही डालर दूँगी । अब वह किस काम का रह गया । मेरे अभी बच्चे भी नहीं हुये और पति वैरागी हो गया । ”

मैं - “ वैरागी पति ठीक नहीं होता क्या? ”

शालिनी -“ कभी एक स्त्री की दृष्टि से पूरी बात को देखो । मैंने अपने प्यार को पाने के लिये पहले पिता का साम्राज्य त्यागा जिसमें दुःख मुझे ही नहीं पिता को भी हुआ । अब पति कह रहा विदेश का भी त्याग दो । अनुराग विदेश के साम्राज्य निर्माण में मैंने बहुत पसीना बहाया है । स्त्री कितनी भी पढ़ - लिख ले , कितना भी आगे बढ़ जाये पर उससे त्याग की उम्मीद समाज को हमेशा रहेगी । उसकी बात- चीत में निराशा का भाव स्पष्ट था । ”

मुझे डर लगने लगा कि यह ऋषभ सब शालिनी को बताता है । वह यह भी बता देगा कि मैंने कहा था , शालिनी का त्याग करो । यह मैं कोई छोटा - मोटा बेवकूफ हूँ नहीं । मैं बेवकूफ का पेड़ हूँ , क्या ज़रूरत थी यह कहने की । मुझे पश्चाताप होने लगा । मैं सोचने लगा , मैं ही बता देता हूँ सब बात ताकि मैं बात सँभाल लूँ नहीं तो ऋषभ पता नहीं कैसे बताये , वह बात । मैंने अपने और ऋषभ के बीच की बात कल रात की बता दी उसको । भीष , विदुर , जटायु - संपाति की व्याख्या और अंत में धीरे से कह दिया कि मैंने कहा कि अगर

तुम अपनी ज़िद पर अड़े हो तो शालिनी का त्याग कर दो । पर मैंने झूठ जोड़ दिया उसमें यह कहकर , शालिनी का त्याग अनुचित होगा । वह भीष्म- विदुर - जटायु - संपाति की व्याख्या में ही खो गयी । उसको अपने पति पर बहुत यक़ीन था इसलिये अपने त्याग के मुद्दे पर उसका कोई ध्यान ही नहीं गया ।

आंटी शालिनी के देख कर बहुत प्रसन्न हुयी । शालिनी पूरी योजना से आयी थी । उसने डालर वापस लाने की समस्या , कर की समस्या , निवेश की समस्या सब बताकर कहा कि चलते हैं अमेरिका और फिर सब समेट कर आने का प्रयास करेंगे । आंटी भी शालिनी के पक्ष में थी और मैं भी यहाँ से निकलना चाह रहा था इसलिये बहती गंगा की धारा के साथ हो लिया । अंततः मामला सुलझ गया । ऋषभ जाने को तैयार हो गया । मैंने अपने कोचिंग की व्यस्तता की बात कहकर जाने की इजाज़त माँगी , वह मिली पर इस शर्त पर कि एकेडमी जाने के पहले दिल्ली आओगे । मैंने वह शर्त स्वीकारी और तो कोई रास्ता न था । मुझे शाम को शालिनी - ऋषभ छोड़ने स्टेशन आये । वह लोग मेरे बहुत ही नज़दीक हो चुके थे । शालिनी बोली , “ अनुराग अब तो शायद हम लोग देश आ जायेंगे , तुम एक एहसान करना मेरे ऊपर , मेरी माँ और अपनी आंटी को लेकर एक बार अमेरिका आ जाना । ”

मैं - “ ठीक है । मैं तो अब डालर वाली सुंदरी का चारण हूँ जो कहेगी मैं करूँगा । ”

ऋषभ -“ यह क्या है डालर वाली सुंदरी का चारण । ”

मैं - “ आपकी खूबसूरत शौर्यवान पत्नी आज बतायेगी , इनसे ही पूछना । शालिनी ने एक पैकेट दिया मुझे और कहा माँ को दे देना । ”

मेरे पास रिजर्वेशन था नहीं । मैं चालू टिकट लेकर टीटी के पास गया और अपना परिचय देकर अनुरोध किया कि मुझको इलाहाबाद तक जाने में मदद करे । टीटी ने कहा आप S 3 कोच में बैठ जायें देखता हूँ । वह भला आदमी था , गाज़ियाबाद के बाद ही सीट दे दी । मैं वापस आ गया अपने पुराने बोसीदा मुहल्ले की सँकरी सी गली में । माँ खुश तो हुयी पर वह उलाहना देने में कहाँ पीछे रहने वाली , “ हमका त लाग मुन्ना तू दिल्ली से मसूरी चला जावअ । अब दिल्ली मसूरी नज़दीकै बा , बेवजह इलाहाबाद आवअ और पुनि जा मसूरी ओसे बढ़िया बा , ओहरैं से निकल जा । ”

मैंने उसको पटाने के लिये समस्या को बढ़ा-चढ़ाकर बताया और यह भी कह दिया मामला छुट्टा-छुट्टी तक आ गया था । पति अपनी पत्नी को छोड़ दे इस कल्पना मात्र से ही वह सिहर गयी । वह सब भूलकर मेरी सच में झूठ मिली कहानी में खो गयी । मैंने कहा , “ एक चीज तो देखा ही नहीं । ”

माँ “ क्या? ”

मैं “ शालिनी ने बड़ा सा पैकेट दिया है । ”

अब वह पैकेट तो सबके विस्मय में डाल गया । शालिनी ने माँ की साड़ी , एक चेन जिसमें डायमंड का लाकेट लगा था , चार- पाँच रेडीमेड क्रमीज़ और एक लिफ़ाफ़े में कुछ डालर जिस पर लिखा था , “ मेरे जीवन का सबसे बेहतरीन मित्र ... ”

वह रूपया तो किसी ने आज तक देखा ही न था , मैंने भी नहीं । मैंने बताया यह एक 100 डालर भारत के बहुत से सौ रूपयों के बराबर है । 100-100 के दस डालर थे उस लिफ़ाफ़े मैं । सब लोग जोड़ -घटाने में लग गये , मैंने कहा , “ माँ मैं पढ़ता हूँ आज की कक्षा है । ”

मैं शाम की कक्षा में गया । मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मैं अब कुछ दिनों में कोचिंग बंद कर दूँगा ।

मुझे देखकर ही सारे छात्र अति प्रसन्न हुये । मैंनें कहा कल से क्लास सारा दिन चलाते हैं और आपका सारा कोर्स खत्म कर देते हैं । मैंने छात्रों को संबोधित किया और कहा कल से आरंभ होगा सबसे बड़ा अनसुलझा प्रश्न..

भारत का विभाजन क्यों हुआ ?

कौन ज़िम्मेदार है विभाजन का- गाँधी , जिन्ना, नेहरू , पटेल ...

व्यक्ति ज़िम्मेदार है या परिस्थितियाँ....

साम्प्रदायिकता भारत में कैसे बढ़ी और इस साम्प्रदायिकता के चरण क्या थे ... साम्प्रदायिकता कहाँ तक ज़िम्मेदार विभाजन में ...

कांग्रेस की विफलता क्या थी ?

हम एक राष्ट्र क्यों नहीं रह सके

क्या विभाजन अपरिहार्य था ?

क्या यह टाला जा सकता था ?

कल से सरस्वती का वास होगा ...

कल सुबह 10:30 पर मिलते हैं और इतिहास की धारा को इसी कक्षा में बहाते हैं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 263

अगले दिन आ गया वह दिन जिसके इंतज़ार में एक लंबे समय से महावीर सदृश तपस्या हर इलाहाबाद का लड़का- लड़की करता रहता है । वह पत्र आ गया जो अधिकार दे रहा था उस जगह की आबो हवा का जो एक ध्येय था मेरा । मुझे पाँच सितम्बर को एकेडमी ज्वाइन करना था । मैंने पत्र को माँ के हाँथ में दे दिया । उसने पूछा , “ यह क्या है ? ”

मैं - “ एक खुशी का पैगाम जिसमें दर्द भी है । ”

माँ - “ इ त अंगरेजी में बा । हमै का समझि आए । ”

मैं - “ पाँच सितंबर को अकादमी ज्वाइन करना है । ”

माँ ने कहा , “ तू बीस रोज बाद चला जाबअ ? ”

मैं - “ हाँ , अगर नौकरी करनी है तब , नहीं करनी तब तो बात अलग है । ”

माँ - “ काहे जाबअ न का ? ”

मैं - “ जाऊँगा , इसी के लिये तो पूरी जान लगायी थी , क्यों नहीं जाऊँगा । ”

माँ - “ मुन्ना हम कैसे रहबै , तोहरे बिना । ”

मैं - “ यह समस्या तुम्हारे ही नहीं मेरी भी है । यह सुबह चार बजे उठना , फिर तुम्हारा चाय लेकर आना , उसके बाद तुम्हारा गंगा स्नान के लिये जाना , फिर वापस आकर सामने के मांदिर में पूजा करना , घर में शिव - स्तुति , गणेश अरती , सूर्य की पूजा , शंख की ध्वनि सबका सब यहीं छूट जायेगा । पर एक बात है , सुबह के उठने से जान छूटी । यह जाड़े का सुबह उठना बहुत खलता था । अब कुछ दिन इस पढ़ने से मुक्ति मिलेगी , इस कोचिंग के कारण बहुत जीवन कठिन हो गया था , यह हर रोज पढ़ाना बहुत मुश्किल काम है , जबसे मैं पढ़ाने लगा मेरी शरद्धा अध्यापकों के प्रति बहुत बढ़ गयी है । ”

माँ - “ तोहार पढ़ै में त बहुत रुचि बा । ”

मैं - “ रुचि है पर यह बाध्यता का अध्ययन है । इसमें रुचि के अनुसार पढ़ना कहाँ है । साहित्य-इतिहास- दर्शन जैसा चाहो वैसा कहाँ पढ़ सकते हो , यहाँ पर । यहाँ तो क्लास के लिये पढ़ना है , वह भी एक घड़ी चल रही है समय की । अब अगर शाम तक तैयार न कर पाये जो पढ़ाना है तब आप के लिये शाम बहुत कठिन हो जाती है । आप का मन नहीं कर रहा आज पढ़ने का पर आपको पढ़ना ही है क्योंकि सायंकाल एक बड़ी जमात आपका इंतज़ार कर रही है । ”

माँ - “ अबै केतना दिन कोचिंग चले ? ”

मैं - “ बस दो - चार दिन । मैं सारा - सारा दिन क्लास चलाकर ख़त्म करता हूँ कोर्स । ”

माँ - “ पढ़ाई लेबअ सारा - सारा दिन ? ”

मैं - माँ , मैं किसी आम गर्भ से जन्मा नहीं हूँ । मैं तेरा बेटा हूँ , असंभावना में संभावना तलाश करना तूने ही सिखाया है मुझको , सब हो जायेगा । ”

माँ - “ हाँ ख़त्म कै दअ , कुछ दिन चैन से साँस लअ । ”

एक ऐतिहासिक क्लास में करना चाहता था । मैं अपनी कोचिंग को एक बहुत उच्चतम बिंदु पर समाप्त करना चाहता था । मैंने अपने अंदर सहेजी इतिहास की तमाम व्याख्याओं को एक सूत्र में पिरोने का कार्य आरंभ किया और अपना व्याख्यान आरंभ किया -

“ कांग्रेस के आरंभिक राष्ट्रवादियों ने सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया , देश के आर्थिक इतिहास का विश्लेषण । इन आरंभिक राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश उदारवाद के चोंगे को बेनक़ाब कर दिया और एक संस्था सन 1885 में बनी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जिसके ज़िम्मे समय के बहते प्रवाह के साथ दो कार्य आये । एक - देश को आज़ादी दिलाना , दूसरा - देश को एक सूत्र में बाँधकर एक राष्ट्र के रूप में संरक्षित रखना । यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पहला काम तो बखूबी कर गयी पर दूसरा काम करने में वह पूर्णतः विफल रही । इस विफलता को कांग्रेस को स्वीकार करना ही होगा । कांग्रेस एक धर्मनिरपेक्ष संस्था थी इसमें कोई बहस नहीं है । सन 1885 में 72 डेलीगेट्स के साथ सन 1889 में 2000 डेलीगेट्स की यात्रा के मध्य कांग्रेस ने पाँच अध्यक्ष चुने , बंगाली , पारसी , मुस्लिम , अंग्रेज और यह अधिवेशन बांबे , कलकत्ता , मदरास , इलाहाबाद चार अलग- अलग शहरों में हुये । दो महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुये - सन 1888 में प्रस्ताव पास हुआ कि अगर कोई प्रस्ताव बहुमत हिंदू - मुस्लिम डेलीगेट्स को स्वीकार्य नहीं होगा तब वह पास नहीं

किया जायेगा , सन 1889 में माइनरिटी क्लास लाया गया , जिसके तहत जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व की बात कही गयी । सन 1887 में कांग्रेस अध्यक्ष बद्रुद्दीन तैयब जी ने मुसलमानों से कांग्रेस में शामिल होने की अपील की , पर बिरटिश शासक बढ़ती जनचेतना के उफान को रोकना चाहते थे । 1888 में डफरिन ने मुसलमानों को पाँच करोड़ लोगों का एक राष्ट्र बताया जो एक ही धर्म और समान रीति - रिवाज मानते थे । राजनीतिक सुधारों में प्रतिद्वंद्विता को बढ़ावा दिया , हंटर ने अपनी रचना इंडियन मुसलमान में मुसलमानों को एक पिछड़ा हुआ समुदाय कहकर उनके प्रति शासन अधिक संजीदा रहे , यह कहकर उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया । काउंसिल सुधारों के स्तर पर भी लैंसडाउन ने इस बात पर बल दिया प्रतिनिधित्व का आधार संख्या अथवा क्षेत्र न होकर शरणी अथवा वर्ग होना चाहिये । इस्लामिक प्रवृत्तियाँ भी थीं पर वह राजनैतिक शक्ल अभी नहीं ले रही थीं । सैयद अहमद खान की साइंटिफिक सोसायटी , आधुनिकतावादी उर्दू पत्र तहजीबुल- अख़लाक़ और अलीगढ़ एंग्लो-मुहम्म्डन ओरियंटल कालेज की स्थापना कांग्रेस की स्थापना के पहले की घटना है और यह मुख्य रूप से संयुक्त प्रांत के

उच्चवर्गीय मुसलमानों को अंग्रेज़ी शिक्षा के गुणों एवं लाभों की ओर आकृष्ट कराने के प्रयास में रत थे । सैयद अहमद ने हमेशा इस बात की आवश्यकता पर बल दिया कि पश्चिमी शिक्षा उच्चवर्गीय मुसलमानों को मिले और एक पढ़े-लिखे अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त मुसलमानों में एक प्रकार की सामूहिक एकता की भावना पैदा हो । इस सामूहिकता की भावना में किसी साम्प्रदायिक तत्व का कोई समावेश न था । साम्प्रदायिकता के विकास की दो अवधारणायें हैं - एक , उपनिवेशवाद की यह उपज है और उससे इसे प्रोत्साहन मिला । इन दोनों क्रौमों का अलग अस्तित्व अनिवार्यतः प्रस्पर विरोधी इकाइयों के रूप में सम्मुख आता है जो मध्य काल से ही दो राष्ट्र के रूप में ही हमें परिलक्षित होता है । दूसरी , राष्ट्रवादी धारणा है जो इसका विरोध करती है और कहती हैं भारत में एक नहीं अनेक समुदाय शताब्दियों- सहस्त्राब्दियों से मैत्री पूर्ण ढंग से रहते थे , लेकिन अंग्रेजों के फूट डालो और राज करो की नीति ने समाज को विभाजित कर दिया । इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता राष्ट्रवाद और साम्प्रदायिकता यह दोनों ही आधुनिक प्रवृत्तियाँ हैं और 1880 के दशक से पूर्व साम्प्रदायिक दंगे शायद ही हुये हों । उस साम्प्रदायिकता के विकास का आरंभ काफी सीमा तक नौकरियों एवं राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के लाभों को लेकर अभिजन वर्गों के संघर्ष से उत्पन्न हुई ।

अलीगढ़ को बिरटिश सरकार का असाधारण सहयोग एवम् संरक्षण मिला । यहाँ तक कि वायसराय नॉर्थब्रूक ने भी दस हज़ार रूपये का निजी दान

दिया । कांग्रेस का आरंभिक दिनों में भी विकास उल्लेखनीय हो रहा था , सन 1887 मद्रास अधिवेशन और 1888 इलाहाबाद अधिवेशन में आधार विस्तृत हो रहा था । ह्यूम ने 1887- 88 में मुसलमानों का समर्थन प्राप्त करने की दिशा में निश्चित प्रयास किये , इसी दिशा में 1887 का वह प्रस्ताव है जिसमें यह कहा गया कि अगर किसी समुदाय के बहुमत को कोई प्रस्ताव स्वीकार नहीं है तो उसे स्वीकार न किया जाये , पर इन प्रयासों को बहुत सफलता न मिली । जहाँ सन 1885-1892 तक कांग्रेस अधिवेशनों में मुसलमान प्रतिनिधियों की संख्या कुल प्रतिनिधियों की 13.5 प्रतिशत हुआ करती थी वहीं 1893- 1905 के बीच 7.1 प्रतिशत रह गयी । यह 7.1 प्रतिशत भी सही आँकड़ा नहीं कह सकते क्योंकि 1899 के अधिवेशन में बहुत से स्थानीय मुसलमानों ने भाग लिया था , जो कि सामान्यतः हर अधिवेशन में नहीं होता है , पर कांग्रेस के नेता इस बात से चिंतित न थे क्योंकि तब तक मुसलमानों का कोई प्रतिस्पर्धी संगठन उभरा नहीं था । यहाँ हमें एक आभास होता है और जो शायद उचित आभास है कि 1887- 88 के पश्चात् मुसलमान जनमत को साथ लाने का कांग्रेस द्वारा कोई प्रयत्न न किया गया ।

यह कांग्रेस की पहली बड़ी असफलता थी जो आने वाले वर्षों में मुस्लिम साम्प्रदायिकता के लिये ज़मीन दे रही थी ।

स्वदेशी आंदोलन ने एक ऐसा आधार प्रस्तुत किया जिस पर हिंदू और मुसलमान साथ चल रहे थे । साम्प्रदायिक एकता की मुखर अपीलें हो रहीं थीं । स्वदेशी आंदोलन में मुसलमान आंदोलनकारियों का एक अत्यन्त सक्रिय एवम् निष्ठावान समूह मौजूद था । पर बंगाल विभाजन पर अंग्रेजों का प्रचार तन्त्र साम्प्रदायिक सौहार्द को कमज़ोर कर रहा था । यह कहकर कि नया प्रांत बन जाने से मुसलमानों को नौकरियों के अधिक अवसर प्राप्त होंगे , उच्च एवम् मध्यवर्गीय मुसलमानों को स्वदेशी आंदोलन के विरुद्ध बहकाने में सफल रहा । ब्रिटिश शासन के प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष सहयोग से अक्तूबर 1906 में ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना हो गयी । पूर्वी बंगाल में दंगे भड़कने लगे और दंगों के केन्द्र में हिंदू ज़मींदार और महाजन थे । कहा जाता हैं अफवाह यहाँ तक फैला दी गयी कि अंग्रेज ढाका के नवाब सलीमउल्ला को राज सौंपकर जा रहे । अफवाहों के बाजार ने साम्प्रदायिकता को बढ़ाने में आग में धी का काम किया और कांग्रेस के पास कोई ठोस सामाजिक- आर्थिक कार्यक्रम न था जो जनसमुदाय को प्रेरित कर सके ।

यह कांग्रेस की दूसरी बड़ी असफलता थी ।

1909 के इंडियन काउंसिल एकट के द्वारा इंपीरियल काउंसिल की 27 चुनी हुई सीटों में से न्यूनतम 8 मुसलमान निर्वाचनमंडलों के लिये सुरक्षित कर दी गयी । मतदाता संबंधी नियम भी स्पष्टतः द्वेषजनक थे । मुसलमान मतदाताओं की आय संबंधी योग्यता हिंदू मतदाताओं की तुलना में पर्याप्त कम रखी गयी । अगर हम राज की नीतियों को देखें तब यह स्पष्ट दिखता है कि व्यवहार और नीति में मुसलमानों के केवल विशेष अभिजन समूहों को ही तरजीह दी जाती थी । अक्टूबर 1906 में मिंटो के पास अलीगढ़ मुसलमान अभिजन समूह शिमला प्रतिनिधिमंडल लेकर गए और साम्राज्य की हिफाजत में मुसलमानों के योगदान का हवाला देकर अलग निर्वाचन क्षेत्र और अनुपात के संब्या में प्रतिनिधित्व की माँग की । इसी समूह ने समीउल्ला के द्वारा आरंभ किये गये मुस्लिम लीग पर क़ब्ज़ा कर लिया । सैयद अहमद का समूह 1880 के दशक से ही नामांकन द्वारा विशिष्ट मुसलमानों प्रतिनिधित्व की माँग कर रहा था और जब चुनाव का सिद्धांत समुख आया तब अलग निर्वाचकमंडलों की माँग का उठना लाज़िमी था ।

यह एक अच्छेण का विषय है, मुस्लिम लीग जैसा संगठन जिसकी सदस्य संब्या दिसंबर 1907 में केवल 400 थी जो एक भिखमंगी नीति का अनुसरण कर रही थी अपने स्थापना के तीन वर्षों के भीतर कैसे इतनी बड़ी सफलता प्राप्त कर सकी । महामना मालवीय ने मुसलमानों को रियायत दिये जाने के कारण इस 1909 के एकट की कड़ी निंदा की । कांग्रेस उस समय विभाजित थी, नरमदलीय राजनीति में कोई दम न था । गरमदलीय उत्प्रेरित करने को थे नहीं और कांग्रेस के अधिवेशनों में उपस्थिति बहुत कम रह गयी थी । नरम दल और गरम दल के झगड़ों ने कांग्रेस को बहुत कमजोर किया और 1907 से 1915 के बीच के समय में कांग्रेस की उपलब्धियाँ बहुत ही कम रही हैं और इसी समय लीग अपनी ताकत बढ़ा रही थी । अगर कांग्रेस एक मजबूत संगठन के रूप में रहती एक सामाजिक-आर्थिक सुधार कार्यक्रम चलाती तो हो सकता है लीग की बढ़ती ताकत पर नियंत्रण हो सकता था पर फ़िरोज़ शाह मेहता की एक ही ज़िद थी, गरमपंथी कांग्रेस का भाग नहीं हो सकते और दोनों समूहों का मिलन उनकी मृत्यु के बाद ही हो सका । उस समय एक महत्वपूर्ण घटना के कारण मुस्लिम अभिजात्य समूह को बहुत धक्का लगा, जब दिसम्बर 1911 में जार्ज पंचम ने दिल्ली दरबार में विभाजन को रद्द कर दिया । अब मुसलमानों और अंग्रेजों के बीच दरारें बढ़ रहीं थीं । इस बढ़ती दरार के पीछे राष्ट्रीय एवम् अन्तराष्ट्रीय दोनों कारक थे । सन 1911-12 में इटली और बाल्कन के युद्धों में इंग्लैंड द्वारा तुर्की को सहायता न देना, अगस्त 1912 में हार्डिंग द्वारा अलीगढ़ में मुस्लिम विश्वविद्यालय बनाने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर देना, 1913 में कानपुर के एक मस्जिद के साथ लगे चबूतरे को तोड़ देना यह कुछ कारण थे

मुस्लिमों का राज से मोह भंग होने लगा । 1912 में तथाकथित “यंग पार्टी” ने मुस्लिम लीग पर क़ब्ज़ा कर लिया और लीग आक्रामक होने लगी तथा अखिल इस्लामवाद का नारा बुलंद होने लगा, एक अखिल इस्लामी एवं बिराटिश विरोधी स्वर ने शासन का ध्यान आकृष्ट कर लिया । अली बंधुओं ने मुसलमानों की पाक जगहों की सुरक्षा लिये धन जुटाने के उद्देश्य से 1913 में अंजुमन - खुदामे - काबा का गठन किया और 1912-13 में अंसारी और ज़फ़र अली खान के नेतृत्व में एक चिकित्सा दल बाल्कन युद्ध में तुर्की की सहायता के लिये गया । मुस्लिम लीग के नए सचिव वज़ीर हसन ने एक प्रस्ताव पारित करवाया जिसमें कहा गया था कि लीग का लक्ष्य संवैधानिक तरीकों से औपनिवेशिक स्वायत्त सरकार है, और इस प्रकार इसे कांग्रेस के अनुरूप बना दिया । यह वह समय था जब कर्मशील नरमपंथियों कांग्रेस के प्रचम से महसूल थे और समझौते सहूलियत के पक्षधर करान्तिकारिता विहीन कर्म रखने वाले मात्र अधिवेशन करने और भाषण कला में दक्ष अकर्मण्य नरमपंथियों का कांग्रेस पर क़ब्ज़ा था । अहंकार और अहम इतना था कि तमाम करान्तिकारी नेता जिसका नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक ऐसे कालजयी नेता कर रहे थे कांग्रेस से बाहर रहने को बाध्य थे । नरमपंथियों की ऐसी जिद थी, तिलक ऐसा नेता कभी कांग्रेस का अध्यक्ष न बन सका ।

यह अहम भाव के नरमपंथियों से युक्त कांग्रेस की तीसरी बड़ी गलती थी जिसने लीग को पाँव पसारने का अवसर दिया ।

दिसंबर 1915 में तिलक के गुट को कांग्रेस सम्मिलित होने की अनुमति दे दी गयी । कांग्रेस और मुस्लिम लीग के एक ही समय में बंबई में हुये अधिवेशनों में कुछ समीतियों का गठन हुआ और एक साझा न्यूनतम संवैधानिक माँगो पर कार्य करने की बात कही गयी । दिसंबर 1916 में पुनः लखनऊ में एक साझी माँग उठाई गयी और विष्वात लखनऊ समझौते के द्वारा हिंदू - मुसलमानों के बीच राजनीतिक मतभेद दूर करने के प्रयास हुये और कांग्रेस ने पृथक निर्वाचन मंडल की बात स्वीकार कर ली ।

यह कांग्रेस की चौथी बड़ी भूल थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 264

सन 1915-16 भारतीय इतिहास का अविस्मरणीय वर्ष, एक महानता नये कलेवर के साथ राजनीति को दिशा देने को आतुर थी । विदेश की भूमि का

सफल प्रयोग भारत की ज़मीं पर अपनी आजमाइश को बेताब था । महात्मा गाँधी का भारतीय राजनीति में पदार्पण । चंपारन, खेड़ा, अहमदाबाद तीन आंदोलन - प्रथम दो का संबंध कृषि से तो तीसरे का उद्योग से । दस महीने से अधिक समय महात्मा गाँधी चंपारन में रहे, पता नहीं कितनी गवाहियों के चश्मदीद गवाह बने और एक नये तरह का आंदोलन समुख आया - शांतिपूर्ण अवज्ञा का आंदोलन, अहमदाबाद मज़दूर मालिक विवाद में प्लेग बोनस के मुद्दे पर प्लेग बोनस की एक धनराशि पर मालिकों को मजबूर कर देना एक उपलब्धि थी और इसी आंदोलन में महात्मा गाँधी ने पहली बार भूख हड़ताल की । महात्मा गाँधी की असीम नेतृत्व क्षमता को देखकर खिलाफ़त आंदोलन का नेतृत्व महात्मा गाँधी को दिया गया । यह अनुरोध खिलाफ़त कमेटी का था कि आंदोलन की अगुवाई महात्मा गाँधी करें जिसे गाँधी जी ने स्वीकार कर लिया । एक प्रश्न इतिहास के अक्षरों में समा गया ... क्या महात्मा गाँधी को एक विशुद्ध धार्मिक मसले पर नेतृत्व करना चाहिये था ?

क्या संबंध था खिलाफ़त का हमारी ज़मीन से ?

क्या ज़रूरत थी देश के बाहर के मुद्दे को देश के भीतर ले आने की ?

क्यों धर्म और राजनीति को मिलाया गया ?

कुछ अति उत्साही लोग यह भी कह देते हैं खिलाफ़त के मुद्दे पर आंदोलन सर्वथा अनुचित था और गाँधी ने धर्म और राजनीति को मिलाकर एक ऐसा मदांध माहौल को बनाने में मदद कर दी जो अंततः देश को बाँट गया । यह गाँधी न करते तो निश्चित रूप से मुस्लिम तुष्टिकरण पर लगाम लगता और देश शायद न बँटता । यहीं से आरंभ होती है वह गाँधी की जीवन यात्रा जिसमें देश विभाजन एक कलंक की तरह उनके दामन में लोग देखने लग गये ।

मैं गाँधी पर लगे आरोपों के बजाय इतिहास पर लगे आरोपों का जवाब देना चाहता हूँ । मैं गंगा- जमनी तहजीब व्याख्यायित करना चाहता हूँ । मैं इतिहास की उस धारा पर बात करना चाहता हूँ जिसमें विपरीत धर्मों और मान्यताओं के प्रति संजीदगी थी, एक स्वीकारात्मक आग्रह था, एक दर्द की समझ थी । भारतीय इतिहास से गंगा जमनी तहजीब समझने की कोशिश कीजिये । ऋग्वेद में 33 देवताओं का ज़िकर है और उन देवताओं के मध्य एक सामंजस्य की स्थापना है । ऋचाओं में जिस एक देवता की प्रार्थना है उसके अंदर सारे गुणों का समावेश है, जैसे ही दूसरे देवता की प्रार्थना एक दूसरी ऋचा में आरंभ होती है उसकी स्तुति में वैसे ही प्रयास होने लगते हैं । देवताओं के मध्य संघर्ष नहीं है । ऋग्वेदीय जीवन में भी सामंजस्य है । बौद्ध धर्म में विभाजन हुआ पर महायान- हीनयान दोनों ही एक ही मठ में कई जगहों पर रहा करते थे ।

गुप्त वंश भारतीय इतिहास में हिंदू धर्म के लिये एक स्वर्णिम काल था । हिंदू धर्म का उत्थान हो रहा था । यह काल धर्म की पराकाष्ठा का काल है पर इसी समय अन्य धर्मों को सम्मान पूर्वक रहने की इजाज़त थी । हमें कई ऐसे पुरातात्त्विक साक्ष्य मिलते हैं जो भारतीय संस्कृति के सामंजस्य की विचारधारा के संदर्भ में बहुत कुछ कहते हैं । 432 ईसवी का कुमारगुप्त के समय का अभिलेख एक महिला द्वारा एक जैन मूर्ति का समर्पण, 426 ईसवी का पाश्वर्की प्रतिमा का अनावरण एक व्यक्ति द्वारा, स्कंदगुप्त की काहौम अभिलेख उसी गाँव में जैन तीर्थकर्णों की पाँच प्रतिमाओं की स्थापना, मथुरा, उदयगिरी ऐसे दूर - दराज के इलाक़ों तक जैन धर्म का प्रचार था और गुप्त शासकों ने कोई आपत्ति कभी न की । शंकराचार्य ने बौद्धों को प्राजित किया पर कहीं हिंसा का कोई उल्लेख नहीं । यह बख्तियार खिलजी की नालंदा ऐसे महान् शिक्षा संस्थान को नष्ट करने की हैवानियत हमारे संस्कारों में कभी न थी, यह गंगा - जमनी संस्कृति अनादि काल से हमारे साथ रही है । यह मर्यादा के नायक राम की कथा में सुसंस्कृति का यह तत्त्व बहुत गहराई से समावेशित है । आर्य- अनार्य संस्कृति को अगर हम राम के जीवन में देखने की कोशिश करें तो निषाद, किरात, बंदर - भालू, शबरी, राक्षस यह सब क्या हैं? राम शबरी को अधिकार देते हैं अपना झूठा बेर खिलाने को, निषादराज को कहते हैं तुम मम पिरय भरतहि सम भाई तो विभीषण को अंगीकार करते हैं । हमें भारतीय संस्कृति के तत्त्वों को समझकर इतिहास की घटनाओं का मूल्यांकन करना चाहिये ।

गाँधी ने कभी कहा भी नहीं कि धर्म और राजनीति को अलग होना चाहिये । वह तो धर्म और राजनीति के समावेश की ही बात करते थे । उनके लिये धर्म एक प्राण वायु सदृश था । एक ऐसा व्यक्ति जो सहयोग और सामंजस्य का पक्षधर हो, अपनी ही नहीं हर व्यक्ति की आस्था के प्रति आस्थावान हो, उसके कृत्यों का मूल्यांकन उसकी आस्था के आलोक में ही करना चाहिये जब तक कि उसकी आस्था की शुचिता के संदर्भ में कोई प्रश्न खड़ा न हो जाये । यह खिलाफत आंदोलन क्या था, यह हमने विस्तार से समझा है । हम यह समझने की कोशिश करते हैं इसका लक्ष्य क्या था । मैं इसको एक रणनीति के तौर पर देखता हूँ । यह हिंदू- मुस्लिम एकता जो कांग्रेस के मंचों पर एक स्वीकार्य कार्यक्रम था की दिशा में एक बढ़ता कदम था । हमारा शत्रु विदेशी राज था जो शोषणमूलक तो था ही अनैतिक भी था । उसका हम पर नियन्त्रण एक अनैतिक मनोभाव से संचालित था । इस अनैतिकता से संघर्ष एक नये तरीके से आरंभ हो रहा था । अब व्यक्तिगत शौर्य नहीं जन भागीदारी आंदोलन का मूल मन्त्र था, हमारा आंदोलन अब सभाओं - सम्मेलनों- दक्षता पूर्ण भाषण - प्रशासनिक सुधारों से आगे बढ़कर गाँवों - शहरों का जनता के बीच उनसे जुड़े मुद्दों की ओर जा रहा था । हम अब

स्वराज की बात कर रहे थे , यह स्वराज कैसे प्राप्त होगा , इसकी समझ के मूल में खिलाफ़त का मामला आप देखने का प्रयास कीजिये और एक ऐसे बिंदु पर अपने आप को संकेंद्रित करिये जहाँ पर भावी आंदोलन को खिलाफ़त का मुद्दा बल प्रदान कर रहा था । मुझे यक़ीन है कि अगर आप इतिहास के तथ्यों को पूर्वाग्रहविहीन होकर देखेंगे तब एक सार्थक बहस हम लोग कर सकेंगे ।

यह खिलाफ़त आंदोलन एक अवसर था , एक व्यापक मुस्लिम वर्ग को साथ लेकर आगे बढ़ने का । एक प्रश्न आप लोग सोचें क्या आजादी की लड़ाई बगौर सारे समाज को एकसूतर में बाँधे हो सकती थी ? क्या व्यापक मुस्लिम समाज का सहयोग लिये बगौर हम एक ताकतवर आततायी सत्ता से लड़ सकते थे ? क्या मुस्लिम समुदाय से जुड़े भावनात्मक मुद्दों की अनदेखी करके हम यह उम्मीद कर सकते थे कि वह स्वतन्त्रता संघर्ष में हमारे साथ आ जायें , वह भी तब जब ब्रिटिश हुक्मरान हर उस मौके की तलाश में था , कैसे आंदोलन कमज़ोर किया जाये । यह एक अवसर था आंदोलन को मज़बूत करने का , क्या यह अवसर गँवाया जा सकता था ?

आप एक कल्पना करिये .. कोरी कल्पना ... कांग्रेस कह देती हमारा खिलाफ़त के मुद्दे से कोई संबंध नहीं , गाँधी जी कह देते में खिलाफ़त आंदोलन का नेतृत्व नहीं करूँगा , क्या होता तब ? हंटर अपनी किताब में कह ही चुके थे एक पाँच करोड़ का मुसलमानों का अलग संसार है । देश में बहुसंख्यक हिंदू मुसलमानों का शोषण करेंगे यह नारा कोई और नहीं ब्रिटिश ही फैलाते रहते थे , वक्त- बेवक्त । कमाल पाशा के द्वारा तुर्की के आधुनिकीकरण करने से कुछ ही वर्षों में खिलाफ़त का मुद्दे पर जो उसने किया तब आगे आने वाले समय में कांग्रेस यह जवाब देते , समझाके ही थक जाती कि कांग्रेस हिंदूवादी नहीं बल्कि एक सामूहिक संगठन है । हर समय एक उग्र राष्ट्रवाद का बुखार समाज पर हाबी होता है और उस बुखार से पीड़ित लोग तथ्यों एवम् तर्कों से परे के विवेचना के आग्रही होते हैं । मेरी कक्षाओं कोई अगर उस बुखार की ज्वाला से तप रहा हो तो उसके सवालों का मैं सामना करना चाहूँगा , मैं उसे संतुष्ट करने का प्रयास करूँगा । मेरी इस समय सिर्फ़ एक पहचान है - एक अध्यापक की पहचान , अँधेरे से बाहर आपको निकालना मेरा नैतिक दायित्व है । हमारे और आपके पास कोई और विकल्प नहीं है , सिर्फ़ एक विकल्प है - या तो आप अपने तर्कों से मुझे प्रभावित करें या मेरे तर्कों को स्वीकार करो । अगर आप अंधकार में हैं तो मेरे प्रकाश के पीछे चलें और अगर मेरे द्वारा फैलाया प्रकाश शरीहीन है तब आप कृष्ण बनकर मेरे सममुख आओ और सत्य से मुझे आळादित करो । सत्यान्वेषण

होना चाहिये , सत्यशोधन हर अध्यापक का लक्ष्य है , यह बात गैर मौजूँ है वह अध्यापक करता है या छात्र करता है । एक छात्र जो अनुत्तरित सवाल कक्षा में करता है वह एक बेहतर अध्यापक का निर्माण करता है , हर अध्यापक ऐसे छात्र का आभारी होता है और आने वाली पीढ़ियाँ ऐसे छात्र की ऋणी होती हैं क्योंकि उसने महान अध्यापक को तराशा है । मैं एक सामान्य अध्यापक हूँ और मैं तराश चाहता हूँ , आप ध्वस्त कर दो मेरे तर्कों को । अगर आप ध्वस्त कर सके तो मैं अनुग्रहीत होऊँगा आपका । पर मैं एक बात और कहे देता हूँ , मैं किसी आम मिटटी का बना नहीं हूँ , मैं आसानी से हार मानने वाला नहीं हूँ , तुमको मेरे साथ दौड़ना होगा , तेज और तेज तुमको अपने कदमों पर ही नहीं अपनी साँसों पर नियन्त्रण रखना होगा , मेरे कदम कई बार लड़खड़ाते हैं पर मेरी सधी हुई साँसें मुझको हौसला देती हैं यह कहते हुये ,” उसके कदमों को ही सिर्फ़ मत देख ... देख उसकी साँसों को वह उखड़ रही हैं जबकि तेरी साँसें संजीदा हैं ।

पर मैं यह ज़रूर कहूँगा , मैं तुमसे हार जाना चाहता हूँ , मेरी हार में मेरी जीत है , पर तुम्हें भीष्म बनना होगा , मैं परशुराम की आराधना कर रहा तुम्हें हराना मेरे ध्येय है पर मैं हारना चाहता हूँ , पर आसानी से नहीं ।

दूसरे सत्र में व्याख्या करते हैं ... आगे की देश क्यों बँटा

आप लोग विश्वाम कर लो । एक घंटे बाद कक्षा पुनः आरंभ करते हैं ।

मैं क्लास समाप्त करके घर आया । मेरी माँ मेरा इंतज़ार कर रही थी । वह इस बात से हिल चुकी थी कि मैं अब कुछ दिन ही उसके साथ रहूँगा । मैं बचपन से लेकर आज तक इसी मकान में रहा , यहीं से गाँव जाता था । वह हरदम साये की तरह मेरे साथ रही । जब मैं उसके साथ न भी रहा तब भी वह मेरे साथ रही , पर अब जीवन एक अलग मोड़ पर । एक बिलगाव अवश्यंभावी हो चुका था । मुझे वह दिन हर बीतते दिन के साथ नज़दीक आता दिख रहा था , जब मैं सामान लेकर इस मकान की डेहरी को पार करूँगा और मेरा इस मकान - गली - शहर से रिश्ता एक बिंदे से एक मेहमान के रूप में बदल जायेगा

सूरज को छूने की खाहिश रखने वाला
अब आता है इस शहर में मेहमान बनकर
पता नहीं इस शहर पर क्या गुजरती होगी ।

मैं भी मेहमान बन जाऊँगा , यह मैं सोचकर भावुक हो जाता था , पर यह विचार हरदम मेरे मानस पटल पर धूमता रहता था ।

माँ ने पूछा , “ कक्षा तोहार होई गय ? ”

मैं “ अभी दोपहर बाद फिर चलेगी । ”

माँ - “ केतना पढ़उबअ ? ”

मैं “ माँ, थोड़ा कोर्स बचा है , वह कर देते हैं । ”

माँ - “ कैसन हयेन गदेल एहमें । केहू के कौनौ भबिष्य बा । ”

मैं “ बहुत । ”

माँ - “ केउ आईएएस बने एहमें से । ”

मैं “ इंतज़ार करो माँ , एक अलग इतिहास बनेगा । इनमें से कई के अंदर बहुत आग है । वह उस काग़ज के पन्ने को अपने अंदर की आग से जला देंगे , अगर कहीं लिखा होगा तुम बन नहीं सकते । ”

माँ - “ ऐतना आग बा ? ”

मैं “ हाँ । ”

माँ - “ तोहरेउ आग से ज्यादा? ”

मैं “ अरे नहीं माँ ... मुझसे ज्यादा आग रखने के लिये व्यक्ति को उर्मिला का बेटा बनना होगा । तेरा नाम उर्मिला ऐसे ही नहीं रखा गया तूने लक्षण जन्मने का संकल्प लिया था । ”

माँ - “ इ चाहत त मुन्ना हर महतारी के होत होअ । ”

मैं “ माँ , चाहत होना और चाहत को अंतिम पायदान पर ले जाना , दो अलग- अलग बातें हैं । तुम्हारे पास चाहत ही न थी , चाहत के लिये लड़ने का जज्बा था । बस वही से जीवन को तूने बदल दिया , मेरा जीवन । ”

वह भावुक हो गयी । वह हर बात पर यह जानना चाहती थी कि मुझसे बेहतर कोई और है क्या? वह एक ऐसे भुलावे को अपने अंदर सँजो चुकी थी कि , मेरे बेटे से बेहतर कोई नहीं । यह चाहत उसकी ही नहीं , हो सकता है हर माँ की ही हो । दादू बैठा था , वह मेरे पास ऊपर आया और पूछा , “ भैया खेत जोति लैई ? ”

मैं चुप था । वह बोला , “ तू चला जाबअ तब हम न जोति पउबै, बुआ पक्ष में बा नाहीं । बतावअ का करी ? ”

मैं थोड़ी देर सोचता रहा और कहा “ जाओ जोत लो कल । ”

दादू - “ बुआ से पूछ लेई एक बार ? ”

मैं “ नहीं । ”

दादू - “ नाराज़ होये तब ? ”

मैं “ उसकी नाराज़गी का अगर डर है तब न जोतो । ”

दादू - “ तू सँभाल लेबअ सब ? ”

मैं “ जाओ कल खेत जोतो । कल शाम तुम्हारे चाचा का सारा साम्राज्य ध्वस्त कर दूँगा । मैं कई दशकों से आतंक फैलाये अहंकार को ध्वस्त करके शहर से जाना चाहता हूँ । ”

मैं किसी के अहंकार को ध्वस्त करने की बात कर रहा था पर मेरे अंदर अहंकार बढ़ रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 265

यह एक जीवन का सत्य है , शरीर में एक सीमित शक्ति होती है , ताकत का अधिकांश भाग मस्तिष्क में होता है जो शरीर पर नियन्त्रण करता है और आदेश देता है । यह आदेश देने वाला जितना सशक्त होता है उतना ही कार्य बेहतर संपादित होता है । एक मजबूत से मजबूत सौष्ठव युक्त काया समर्पण कर देती है अगर मस्तिष्क लड़ने का माद्दा न रखता हो । यह तौफीक उन शिराओं की है जो दिखायी नहीं देती पर दिखने वाले आकर्षक नयनाभिराम रूप को अपने अनुसार संचालित करती है । एक धावक , एक पर्वतारोही , एक तैराक अपने शरीर में मात्र कुछ कैलोरी की ऊर्जा रख पाता है पर लंबी दूरियों की हठधर्मिता , ऊँचे शिखरों का अहंकार , उफान फेंकती लहरों के आतंक का वह मान मर्दन करता है । इस सत्य का निरूपण मैं पिछले कुछ समय से अपने जीवन में देख रहा था । मैं कितनी भी देर तक कक्षा में पढ़ाऊँ मुझे कुछ खास समस्या नहीं होती थी । मैं सारा दिन पढ़ाने की क्षमता से लैस हो चुका था । मैंने आज का दूसरा सत्र आरंभ किया और मेरे कक्षा में परवेश के साथ ही सवालों का सिलसिला आरंभ हो गया । सवाल दो - तीन तरह के थे ।

एक , जब भारत धर्म के आधार पर विभाजित हो गया तब भारत से सारे मुस्लिम क्यों नहीं चले गये ।

दो, गाँधी ने ख़लीफ़ात के मुद्दे को खिलाफ़त कहकर जनता से झूठ बोला ।

तीन , इस तरह धर्म के मुद्दे को राजनीति में लाकर गाँधी ने तुष्टिकरण की नीति आरंभ कर दी जो अंततः देश को विभाजित कर गयी ।

चार , गाँधी का मुस्लिम समुदाय के प्रति अतिशय आगरह था और हिंदुओं को उन्होंने उपेक्षित किया ।

पाँच , गाँधी ने हिंदुओं के लिये कुछ भी नहीं किया , जो कुछ भी किया मुस्लिमों के लिये किया ।

मैं सवाल सुनता रहा । मैंने कहा , “ कुछ और सवाल है ? यह पूर्वाग्रह लेकर अगर आप इतिहास पढ़ना चाह रहे तब मैं यह आजादी-विभाजन के द्वैध का सारा विश्लेषण यहीं रोक देता हूँ , और आप लोग स्वतंत्र हो अपनी विचारधाराओं के निर्माण के लिये । यह एक बड़ी समस्या है हमारे साथ कि हम अपनी विरोधी विचारधाराओं का सम्मान नहीं करते । हम सत्य का अन्वेषण किये बगैर अपनी ही बात को सत्यसिद्ध के रूप में प्रस्तुत कर देते हैं । मुझे आप सबसे ऐसी प्रतिक्रिया की उम्मीद न थी , वह भी तब जब गाँधी की राजनीति अभी आरंभ ही हुयी है और उनका पहला राष्ट्रवादी आंदोलन अभी विवेचित भी नहीं हुआ । महानायकों के चरित्र के साथ मनचाहा खिलवाड़ करने की प्रवृत्ति बहुधा लोगों के पास देखी जाती है और उनमें से ज्यादातर लोग न तो सत्य शोधन करना चाहते हैं और न ही सत्य को जानने के बाद भी आत्मसात् करना चाहते हैं ।

कक्षा में एक शांति आ गयी ।

यह शांति एक अध्यापक के सम्मान की शांति थी जो इलाहाबाद की एक पहचान है । मैंने कहा , “थोड़ा इसे और गहराई से समझने की कोशिश करते हैं । हम वापस चलते हैं तक्रीबन गाँधी के जन्म से पहले और बिरटिश सत्ता का स्वरूप और उसकी नियति को समझने का प्रयास करते हैं । सन 1861 के एक्ट के द्वारा सजावटी तौर पर कौसिलों में अधिकारविहीन भारतीयों को शामिल किया गया । यहाँ से एक होड़ को जन्म देने का प्रयास आरंभ होता है जो आगे चलकर तीव्रतर हुई । सन 1892 के पहले बजट पर विचार करने और सवाल करने की कोई वैधानिक शक्ति न थी , पर सजावट का सामान बनने वालों की कमी न थी । सन 1857 के बाद राजाओं और ज़मींदारों में भरोसेमंद सहयोगियों की उपनिवेशी तलाश आरंभ हो गयी और एक नया चिंतन सामने आने लगा जो राजा को भारतीय सामंती लिबास में पेश करना चाहता था । सन 1860 से पहले पश्चिमी लिबास पहनने वाले भारतीय सैनिकों को अब पगड़ी , कमरबंद और अंगरखा पहनने की हिदायत दी जाने लगी । सन 1858 में गवर्नर जनरल को वायसराय की पदवी मिली और वह

मलिका का एजेंट बनकर पूरे भारत का दौरा करके वफादारी पदवियों और सम्मानों के सहारे ख़रीदने लगा और हम थोक भाव में बिकने के लिये मंडियों में दलालों को खोजने लग गये । यह खरीद - फ्रारोख्त मुख्यतया उनकी की गयी जो पहले से ही बिके क्रिस्म के ही थे । यह लोग महाविद्रोह में कभी दिन दहाड़े तो कभी चिराग बुझते ही खेमा बदल कर स्वयम को राज का भरोसेमंद साबित करने की होड़ में लगे थे । यूरोप और भारत दोनों जगह नाइटहुड का गैर - पुश्टैनी तमगा 1861 के बाद से दिया जाने लगा । बाँटों और राज करो की नीति का सिद्धांत भारत सचिव वुड के 1862 के कथन से दिखने लगता है जब वह इस तरह की रेजीमेंट बना देना चाहते थे कि ज़रूरत पड़ने पर बिना किसी संकोच के सिख हिंदू पर और गोरख दोनों पर गोली चला सके । 1879 के सेना आयोग ने भी मुल्क के आदमी के खिलाफ मुल्क के आदमी के प्रतितुलन की ही बात को दोहराया । भर्ती के नियमों को आप पढ़ें जाति और उपजाति की भर्ती संबंधी भेदमूलकता स्पष्ट दिखेगी । यह एक सिद्धांत प्रस्तुत किया गया , अच्छे फौजी सिफ़र समुदाय विशेष से ही प्राप्त किये जा सकते हैं और यह सिद्धांत सिखों और गोरखों की भर्ती को उचित ठहराने के लिये किया जाने लगा । यह दोनों ही समूह अपेक्षाकृत हाशियाई धार्मिक और उपजातीय समूह थे , जिनके अखिल - भारतीय राष्ट्रवादी आन्दोलनों में शामिल होने की संभावना कम थी । सन 1880 के दशक में करों का जनता दबाव बढ़ रहा था और कांग्रेस के मदरास (1887) और इलाहाबाद (1888) अधिवेशनों में बढ़ता समर्थन स्पष्ट दिख रहा था । यह बढ़ता समर्थन ब्रिटिश शासन की उस तक नीति से जोड़कर देखा जा सकता है जो जनता में असंतोष को बढ़ावा दो रही थी । गाँधी ने भारत आगमन के बाद कृषि के मुद्दे को आंदोलन का आधार बनाने का प्रयास किया क्योंकि रोष अंग्रेजों की कर नीति के खिलाफ हर ओर व्याप्त था । गाँधी के प्रथम तीन आंदोलन चंपारन , खेड़ा और अहमदाबाद को हम लोगों ने विस्तार से समझा ही है , जिसमें से प्रथम दो का मुद्दा कृषि का था । अंग्रेज भी कोई कमज़ोर न थे । कांग्रेस के बढ़ते समर्थन की काट निकाल रहे थे । सन 1892 के सुधार ने कुछ वर्षों तक कांग्रेस के आंदोलनों का जोर कम कर दिया क्योंकि अनेक प्रमुख प्रान्तीय नेताओं को प्रान्तीय और इंपीरियल काउंसिलों में पहुँचा दिया । बंगाल में लाल मोहन घोष , व्योमेश चन्द्र बनर्जी, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, बम्बई में फ़िरोज़ शाह मेहता , गोखले और कुछ समय तक तिलक भी और इम्पीरियल काउंसिल में मेहता और तिलक । आप सन 1894 से 1900 के बीच के कांग्रेस अधिवेशनों को देखें , काउंसिल सुधार की माँग कांग्रेस अधिवेशनों में प्रमुखता न पा सकी । आप ब्रिटिश नीति को संजीदगी से पढ़ें धार्मिक , भाषाई , जाति तीनों स्तरों पर विभाजन के प्रयास हो रहे थे । ब्रिटिश विभाजन नीति मुखरता पा रही थी , हलाँकि ब्रिटिश नीति तो उसका इस्तेमाल कर रही थी हक़ीकत में हमारे बीच दरारों की जड़ होती ही थी । राष्ट्रवादी इतिहासकार बहुधा दीवारों की दरार को मानने से इंकार कर

देते थे जबकि दरार नींव मे भी थी जिसकी चिकित्सा की आवश्यकता थी । लेकिन यह सत्य है कि उपनिवेशवाद ने इन दरारों को बढ़ाने का भरपूर प्रयास किया । 1888 में डफ़रिन ने कांगरेस को एक क्षुदर अल्पमत घोषित कर दिया । सर जान स्टरेची ने कैम्बिरज में छात्रों से कहा भारत न तो एक देश है और न ही एक राष्ट्र । सरकारी नीतियाँ ऐसी बनायी जा रही थी एक समुदाय को प्रोत्साहित करके दूसरे से दूर कर दिया जाये । मुग़लिया सल्तनत ने विद्रोह का नेतृत्व किया था इसलिये आरंभ में मुसलमानों को हिंदुओं की तुलना में अधिक गहरे शक की नज़र से देखा जाता था । पर समय के साथ हृदय परिवर्तन हुआ और मुसलमानों को संरक्षण दिये जाने की बात राज ने आरंभ कर दी और डफ़रिन ने 1888 में उनको पाँच करोड़ का एक क्रौम कहा । एक सीमित मताधिकार जो शिक्षा और संपत्ति पर आधारित था इसके द्वारा चुनी गयी नगरपालिकाओं में हिंदू - मुस्लिम तनाव स्पष्ट देखा जा सकता है । 1909 का पृथक निर्वाचन , तत्पश्चात उसकी लखनऊ में कांगरेस द्वारा स्वीकृति , उबलती भावनायें , मुस्लिम वर्ग का नेतृत्व की चाहत , गाँधी का अखिल भारतीय आंदोलन का संकल्प क्या यह सब समुदायों की एकता की स्थापना के बगैर हो सकता था ? यह सवाल बगैर जवाब दिये में आप पर छोड़ देता हूँ , आप उत्तर की तलाश कर लें ।"

एक नीरवता कक्षा में आ गयी । इन तथ्यों का ज्ञान छात्रों के पास न था । अशोक ने कहा , " सर आप गाँधीवादी इतिहास पढ़ा रहे हैं । "

मैं " इतिहास किसी दायरे में सीमित नहीं किया जाना चाहिये । मेरे द्वारा दिया गया इस सत्र का अभी तक का व्याख्यान सिर्फ़ तथ्यों से लदा है , मैंने न तो तर्क किया और न ही विश्लेषण । अब तथ्य भी गाँधीवादी हो गये , यह तो वितर्क की इंतिहा है । आप लोग ले आओ तथ्य जो कुछ और कह रहे । चलो एक कथा सुनाता हूँ । मेरे कक्षा में एक छात्र था जो जीवन में कुछ ख़ास करने का इच्छुक था । उसने गणित के अध्यापक से कहा , मुझे कुछ ख़ास करना है क्या करूँ । सर ने कहा पाइथागोरस की प्रमेय को गलत सिद्ध कर दो । छात्र ने पूछा , वह कैसे होगा ? सर ने कहा यह तो नहीं पता पर यह बहुत नायाब होगा और पहला सम्मान पुष्ट मेरा होगा आपके लिये । वहीं चुनौती में आपको देता हूँ । आप तथ्यों से जूझो और तथ्यों की काट निकालो , जब तक वह नहीं निकलेगा तब तक आप हताशा और निराशा में गाँधीवादी लेखन ही कहते रहोगे । एक बात का जवाब दो .. क्या गाँधी जो एक अखिल भारतीय स्वराज आंदोलन की तैयारी कर रहे थे , उनके पास इस बात की स्वतन्त्रता थी कि वह अलीं बंधुओं से यह कह सके , यह मुझ मुसलमानों का है इसका मुझसे और कांगरेस से कोई संबंध नहीं है । अगर आपकी बात मान ली जाये और गाँधी अपने को और कांगरेस को मुस्लिम समुदाय के मुद्दे से हटा लेती तब एक समेकित आंदोलन वह भी एक ताकतवर सत्ता के

विरुद्ध क्या चला सकता था ? जो हुक्मरान हमको बाँटने पर तुला था क्या वह यह अवसर त्यागने वाला था ? क्या हम बगैर मुसलमानों के सहयोग के आंदोलन कर सकते थे ? गाँधी पूर्व आंदोलन एक क्षेत्र विशेष एवं उच्च वर्ग विशेष तक सीमित था । इसको गाँवों, पिछड़ी जातियों तक ले जाने की आवश्यकता थी । आप मुस्लिमों के खिलाफ यह दृष्टिकोण रखकर देश की जनता को कौन सा संदेश देने जा रहे थे । मेरा आपसे अनुरोध है मुझे और आगे चलने दें, मैं आपकी सारी शंकाओं को निर्मूल कर दूँगा बस आप पूर्वाग्रह मुक्त रहें । पूर्वाग्रह अगर होगा तब बहुत मुश्किल होगा इतिहास समझना । “

मैंने कक्षा बंद कर दी और कहा कल सुबह ग्यारह बजे पुनः मिलते हैं ।

मैं कक्षा बंद करके घर आया । माँ वहीं चबूतरे पर खड़ी थी । उसका मन ही नहीं लग रहा था । मैंने पूछा, “ यहाँ क्यों खड़ी हो ? ”

माँ - “ हमार मन नाहीं लागत बा । तू देर कई देहआ आज कक्षा में । ”

मैं - “ देर तो नहीं हुयी है, हाँ तुम्हारी मानसिकता बदल गयी है जबसे मेरे जाने का दिन नज़दीक आ रहा है । ”

माँ - “ इहौं बात होई सकत हआ । ”

माँ ने तीन पत्र दिये । आंटी, शालिनी, ऋषभ के । वह खोल कर पत्र पढ़ लेती थी । मैंने खुला पत्र देखकर कहा, “ कोई लड़की मुझे चिट्ठी लिखना भी चाहें तो वह लिख नहीं सकती क्योंकि वह पहली चिट्ठी के बाद ही जान जायेगी कि अनुराग की माँ चिट्ठी पढ़ लेती है । ”

माँ - “ ओका कैसे पता लागे ? ”

मैं - “ ओका नाहीं ओकरे पूरे मुहल्ले- ख़ानदान को पता लग जायेगा । तुम घुस जाओगी घर में यह कहते हुये कि अपने बिटिया के सँभाल लअ एकार चाल - चलन ठीक नाहीं बा हमरे लड़िका के बिगड़त बा तोहार बिटिया । अबकी बार तो छोड़ देत हई, अब दुबारा चिट्ठी- पत्री देखान तब टाँग तोड़ि देबै । ”

माँ - “ मुन्ना तू बहुत चालू हआ । हम तोहार नस- नस जानित हआ । कौनों लड़की के चिट्ठी तू इहाँ आवा न देबअ, कौनों और पता देई देबअ । ”

मैं - “ माँ, तूने अच्छा दिमाग दिया । यही करूँगा । ”

माँ - “ मुन्ना अब केतना दिन बचै बा । हमार शासन, हमार देख- भाल सब ख़त्म । अब त चिड़िया के बच्चा उड़े सीख लेहे बा । अब चिड़िया के चिंता ख़त्म होई गै बा कि कतों घोंसला में साँप न आई जाय । ”

माँ भावुक हो गयी , वह रोने लगी । वह इस सत्य को अंगीकार नहीं कर पा रही थी कि अब कुछ दिन ही शेष हैं मेरे यहाँ पर । माँ ने पूछा , “ मुन्ना तोहार कमरा अब तोहरे बगैर कैसे रहे । कमरौं के दर्द होये । हम उ कमरा अब कैसे देखब । हमार त कमरा में जातै बाँध टूट पड़े । ”

मैं “ गुड़िया या चुन्नू को वह कमरा दे देना । ”

माँ- “ मुन्ना, तू त रामकथा के जानकार हअ । भरत राजगद्धी पर नाहीं बैठि पायने , सारी काबिलियत के बादौ.. कारण इ रहा कि गद्धी हरदम ताक़ीद करत कि तू गद्धी के साथ राम के नाहीं नियाय करअ । इहै हाल तोहरे कमरा के बा मुन्ना , गुड़िया- चुन्नू कमरा के अंदर तोहार आभा देखि के घबड़ाई ज़हिं । मुन्ना तोहरे ऐसन हमरे परिवार में न केऊ भ बा न केऊ होये , हम तोहरे कमरा में केऊ प्रवेश करे ओकर हम परीक्षा लेब इ कहि के , एहमें एक जीवन से लड़ई वाला रहत रहा , अगर ओकरे ऐसन लड़ै के माद्दा होई तब कोशिश करअ ”

माँ रोने लगी मुझे न पता था उसके पास मेरे प्रति इतना सम्मान है
माँ अपने बच्चे के बारे में जितना जानती है शायद विधाता भी न जानता होगा ।

मेरे हाथ से वह तीनों पतर गिर गये मेरे आँसू गिरने लगे

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 266

मैंने तीनों पतर जमीन से उठाये और ऊपर अपने कमरे में चला गया । मैं पतर को पढ़ने लगा । उन तीनों पतरों को पढ़कर एक स्पष्ट आभास हो रहा था कि तीनों के मध्य संवाद कम हो चुका है । आंटी ने एक कहानी की शक्ल में अपनी बात कही थी । उसे बेटे के विदेश चले जाने की बहुत पीड़ा थी । वह लाख कोशिश करे पर वह पीड़ा व्यक्त नहीं हो पाती थी जो उसके भीतर हर शिराओं को चोटिल किये हुये है । वह आज तक यह स्वीकार ही नहीं कर पायी थी कि ऋषभ ऐसा आज्ञाकारी बेटा सबकुछ छोड़कर सदा सदा के लिये अमेरिका चला गया । कोई कितना भी कहे कि ऋषभ वापस आयेगा पर उसके हृदय का अंतरतम कहता था , कौन आज तक लौट कर वापस आया है । उसने एक अपना अवलोकन लिखा , “ अनुराग मेरे कमरे के बगल में एक आम का पेड़ है । उस पेड़ पर एक चिड़िया का एक घोंसला है । चिड़िया का जीवन सँवरा उसके तीन छोटे- छोटे बच्चे हुये । चिड़िया हर दिन सुबह

घोंसले से निकल जाती थी और बच्चे उसका इंतजार करते थे । शाम को चिड़िया के आने के वक्त बच्चे बहुत शोर करते थे , माँ के आने की खुशी में । वह बच्चे शोर चिड़िया के आने के पहले से ही शुरू कर देते थे और दूर से आती चिड़िया को देखकर और तेज हल्ला करने लगते थे । समय बीता बच्चे बड़े होने लगे , चिड़िया उनको उड़ना सिखाने लगी , एक डाल से दूसरी डाल .. एक पेड़ से दूसरे पेड़.. धीरे - धीरे बच्चे उड़ने में पारंगत हो गये और एक दिन विछोह हो गया , वह बच्चे उड़ना सीख चुके थे और फिर चिड़िया अकेली हो गयी । अब कोई शोर नहीं होता , चिड़िया के जीवन में कोई उत्साह नहीं रहा , वह शाम को अनमने ढंग से आती है , एक नीरस सा जीवन जीती है । अनुराग , मेरे जीवन और चिड़िया के जीवन में कितनी साम्यता है । मुझसे ऋषभ कह रहा था कि तुम एक बड़ा मकान ख़रीद लो दिल्ली में , मैं पैसा भेजता हूँ । पर अनुराग मुझे पैसे की कोई जरूरत नहीं है । मेरे पास अपने लिये पर्याप्त धन है । मैं अपने पैसे को ख़र्च कर सकूँ , इसके लिये मुझे अवसर मिलना चाहिये । जो वस्तु मुझे चाहिये वह तो मिल नहीं सकती और जो मुझे दिये जाने की बात कही जा रही उसकी मुझे आवश्यकता नहीं है । यह इस देश में क्यों नहीं रहसकता था , यह बात आज तक मुझे समझ नहीं आ रही । अगर मैं धन की अतिशयता की विचारधारा को हटा दूँ , तब कोई और कारण मुझे नहीं दिखता इन दोनों के विदेश जाने का । पर यह मेरी समझ है , मेरी समझ सम्पूर्ण है इसका दावा तो मैं नहीं कर सकती । मेरी सारी बातों में एक वात्सल्य एवम् मातृत्व का पुट है , हो सकता है वह पुट वह न देख पा रहा हो या देखना न चाह रहा हो जो एक हकीकत हो जीवन की । अनुराग , ऋषभ - शालिनी में बहुत प्यार था पर वह कम हो रहा , यह लोग अक्सर आपस में तकरार कर लेते हैं , कल शाम को फ्लाइट के वक्त भी तकरार हो गयी । शालिनी ने ऋषभ से कहा कि अगर जाकर तुरंत वापस आना है तब जाने का कोई मतलब नहीं , मैं अकेले ही सब सँभाल लूँगी । मैं कोई बात- बात पर रोने वाली और पति के कदम - कदम पर सहयोग की आकांक्षी नारी नहीं हूँ । ऋषभ थोड़ा कम बोलता है उसने चुप रहकर बात सँभाल ली नहीं तो जिस तरह शालिनी आकरमक हो गयी थी मुझे लगा कि आज की यात्रा तो इन लोगों की होने से रही । अनुराग , तुम मुझसे मिलकर एकेडमी जाना । “

ऋषभ का पतर छोटा ही होता है , वह कम शब्दों में अपनी बात कहता है पर उसके कहने में परभावपूर्णता रहती है । उसकी बातों से एकदम साफ़ था कि उसके इरादों से उसको डिगाना अगर असंभव न भी हो तब भी बहुत ही मुश्किल है । उसने साफ- साफ लिखा था कि वह तीन महीने से ज्यादा अमेरिका नहीं रहेगा । अगर शालिनी आना चाहे तो आये न आना चाहे तो न आये पर वह वापस आ जायेगा । वह बहुत ही जहीन था , उसने भारत की बदल रही आर्थिक नीति को समझ लिया था और उसने दूरसंचार के क्षेत्र में

काम करने का निश्चयन कर लिया था । उसने जिस तरह से भविष्य की योजनायें लिखी थीं वह संग्रहणीय है, यह सीखने के लिये हैं कैसे जीवन में कार्य किया जाना चाहिये । उसने यह भी लिख दिया था कि वह आधा पैसा शालिनी के पास ही छोड़ देगा अमेरिका और आधे पैसे लेकर आयेगा और कार्य आरंभ करेगा । उसने दिल्ली में एक व्यापारिक स्थान देख लिया था जहाँ से वह कार्य आरंभ करेगा और अपना कार्य स्थल बनायेगा । उसने मुझसे यह अनुरोध किया था कि अगर जरूरत पड़ेगी तब मुझे जाना होगा उसके कार्य में मदद करने के लिये । उसने पत्र के अंत में लिखा था कि अगर तुम सेवा त्याग कर मेरे साथ कार्य करो तब मुझे बहुत सहूलियत होगी, मुझे तुम्हारी बहुत आवश्यकता है । मैं यह पत्र पढ़ ही रहा था कि माँ चाय लेकर आ गयी । उसने आते ही कहा, “ ई शांति के इहाँ का नाटक चलत बा ? ”

मैं - “ सब पढ़ तो लिया तुमने । ”

माँ - “ ई तू नारद न बनअ । एनकर बात ओनसे कहअ ओनकर बात दूसरे से । केहू के घरे में घुसै के ज़रूरत नाहीं बा । ऋषभ का लिखे हयेन कि नौकरी सरकार के न करअ हमार नौकरी करअ । अब बनिया- बक्काल के नौकरी तू करबअ ? ”

मैं - “ माँ, तू ठीक से पढ़ती है नहीं, बस हर बात पर बाँस लेकर पिल जाओ । यह कहाँ कह रहा है कि मेरी नौकरी करो । वह कह रहा साथ काम करते हैं । ”

माँ - “ तू का काम करबअ ओकरे संगे ? ओका कम्प्यूटर आवत हअ गणित आवत हअ । तू त हअ सिफ्र ओहमें । साइंस तोहसे चली नाहीं । रोई - पीटकर कौनौ तरह बीएससी के लेहेअ हअ । ई त ईसीसी रहा जहाँ पढ़ाय - पढ़ाय के पास करायें देत हअ उहाँ के अध्यापक कतौ और ग होतअ त बीएससीज न पास कै पाये होतअ । अब तू का काम करबअ कम्प्यूटर में । ”

मैं - “ माँ, तुम एके लाठी से सबको हाँकती रहती हो, कुछ तो मुरव्वत किया करो । यहाँ मुझे लगता है क्लास के बाद कि मेरे ऐसा कोई नहीं और अब लग रहा कि मैं अपनी सारी डिग्री जला दूँ । ”

माँ - “ हम कम्प्यूटर के बात करत हई, बाकी त तोहका आवत हअ, ओहमें त कौनौ संदेह बा नाहीं । मुन्ना, ई बतावअ तोहरे बियाहे के का करी ? ऐतना लोग आवत हयेन कुछ त फ़ैसला लेहे पड़े । विमोचन के बाद से सुरुचि के पापा बड़ा तोड़ मारे हयेन । ओ पुनि आये रहने और कहत रहेन कि टरेनिंग पर जाये के पहिले बियाह तय कै दअ । एक बार सुरुचि के देख लअ, अगर तोहरे मस्सरब के होय त बात आगे चलाई नाहीं त हाथ जोड़ी ओनसे । तोहरे पास कौनौ काम के समय बा नाहीं, ई कोचिंग अब बंद करअ, बहुत होई गवा । ”

मैं “ माँ, यह सब लड़कियाँ तुम्हारे काम की हैं नहीं । तुम किसी सामान्य से घर में विवाह करो । ई हाई- फ्राई परिवार , हाई- फ्राई लड़कियाँ नहीं चलेंगी यहाँ पर । ”

माँ “ मुन्ना, जब बढ़िया लड़की मिलत बा तब काहे हम सामान्य लड़की पर जाई । एक के टारे एक लड़की हईन । कमिशनर साहब के विमोचन के बाद त तोहार समाँ कुछ और होई गई बा । हर केउ शहर में अपने बिटिया बरे मुन्नै चाहत बा । एक अच्छी लड़की पढ़ी- लिखी आये तब परिवार आगे बढ़े, अगली नस्ल बेहतर होये । हम काहे सामान्य बियाह करी ? तोहार पिताजी बोलावत हयेन सुन ल ओनकर बात । ”

मैं नीचे आया । पिताजी बाहर वाले कमरे में थे । वह ज्यादातर स्पष्ट और सीधी बात ही करते थे । वह माँ की तरह फेंट- फेंट कर बात नहीं करते थे । उन्होंने मेरे आते ही पूछा, “ तुम्हारा विवाह के बारे में क्या दृष्टिकोण है ? ”

मैं “ समझा नहीं मैं । ”

पिताजी - “ मेरे एजी आफिस में बहुत से लोग हर साल आते हैं मेरे अफसर बनकर और उसमें से कई आपस में एकेडमी में ही विवाह कर लेते हैं । अगर तुम्हारा भी यही दृष्टिकोण हो तब मैं तुम्हारे विवाह की सारी बातें बंद कर देता हूँ और इंतज़ार करता हूँ तुम्हारे फैसले का । अगर तुम वहाँ फैसला नहीं लेते हो तब इस पारम्परिक प्रक्रिया को आरंभ करते हैं । ”

मैं “ आप पूछ रहे कि मैं एकेडमी में अपने किसी सहकर्मी से विवाह का इच्छुक हूँ कि नहीं ? ”

पिताजी - “ हाँ । ”

मैं - “ इसकी कोई संभावना नहीं । ”

पिताजी - “ क्यों ? ”

मैं - “ पिताजी , सूरज की तपिश को बर्दाश्त करने का मादा चाहिये । मेरे से बाद की पीढ़ी इन सब बातों पर सोच सकती है , मेरी पीढ़ी अभी इन नवीन प्रयोगों के लिये तैयार नहीं है । ”

पिताजी - “ क्यों तैयार नहीं है ? ”

मैं “ आप अपने आफिस में जिन जोड़ों की बात कह रहे , उन सबने अन्तर्जातीय विवाह ही किया होगा । सैद्धांतिक रूप से इसमें कोई ख़राबी नहीं है और इसको होना भी चाहिये पर जिस समाज - परिवेश में आप रह रहे उसमें कई समस्याएँ उत्पन्न होंगी , अगर वैसा संबंध हुआ । आप अकेले में माँ से पूछियेगा , वह कितना स्वीकार कर पायेगी इसको । जो वस्तु उन सबको

पीड़ा दे जिन्होंने आप के जीवन को सँवारा है उस वस्तु से दूर रहना ही शरेयस्कर है । “

पिताजी - “ मैं व्यक्ति के अपने जीवन की स्वतन्त्रता का पक्षधर हूँ , मैं तुम्हारी माँ से पूछ लूँगा पर अगर तुम्हारी उस दिशा में कोई सोच हो तब मैं उस दिशा की तुम्हारी यात्रा के पड़ावों का इंतज़ार करता हूँ , पर अगर तुम्हारा दृढ़ निश्चय परम्परागत संबंधों पर ही है तब मैं बात आगे बढ़ाता हूँ । मेरी भी ज़िम्मेदारियाँ हैं , गुड़िया किसी परीक्षा में सफल होगी इसकी संभावना अभी तो मुझको दिखती नहीं आगे की बात अभी नहीं कह सकता । उसका भी विवाह करना है । मैं वह भी कर देना चाहता हूँ , ताकि समय रहते जीवन में निश्चिंतता आ जाये । ”

माँ - “ मुझे एकेडमी में विवाह नहीं करना है पर अभी विवाह थोड़ा जल्दी है । मुझे नहीं लगता मैं उस ज़िम्मेदारी को अभी उठा सकता हूँ । ”

माँ - “ ओहमें का समस्या बा । हम तोहार बियाह के देईत हअ । तू आपन टरेनिंग करअ । जब तक तोहार टरेनिंग चले तब तक बहू हमरे संगे रही ले , केतना समय होत हअ डेढ़ साल । अबअ बियाह करै मैं कुछ महीना त लागिन जाये । ”

पिताजी - “ ठीक है मुन्ना , मुझे तुम्हारा दृष्टिकोण समझ आ गया , जो सबके लिये उचित होगा वैसा करने के बारे में सोचता हूँ । ”

माँ - “ लड़की देखई - समझई के काम शुरू करअ । ”

पिताजी - “ इस काम में तो तुम्हारी महारत है । ”

माँ - “ पहिले इ त समझि आवै कि केका देखै- समझै के बा । ”

पिताजी - “ हाँ ई समस्या त बड़ी है , पर कुछ तो समाधान निकालना ही है । ”

इसी बातचीत के बीच मामा जी आ गये । वह कमिशनर साहब द्वारा बुलाये गये थे । कमिशनर साहब ने उनसे कहा था कि आप अनुराग के यहाँ बातचीत करते रहियेगा , नवम्बर के बाद विवाह करेंगे । मेरे पिताजी से अनुराग के पिता ने नवम्बर के बाद के लिये कहा है पर उनको यह नहीं लगना चाहिये कि हम शांत हो गये हैं और हमारी रुचि कम हो गयी है । हम विवाह अनुराग से ही करेंगे यह आप कह दीजियेगा । आप यह भी कह दीजियेगा कि पिता जी ने कहा है कि हम शर्मा जी को खुश करके विवाह करेंगे । इसी बातचीत के मध्य सुरुचि के पिता जी आ गये , उनकी बेटी की भी ज्वाइनिंग आ गयी थी । वह चाह रहे थे कि विवाह का

सुनश्चयन ट्रेनिंग से जाने के पहले कर दिया जाये । पिताजी ने मामा को खुश करने के लिये कह दिया , आप लड़के के मामा हैं , आप की राय अति आवश्यक है । आप राय दें क्या किया जाये ।

मामा ने पेंतरा बदल दिया , उनको बहुत बड़ा सम्मान मिल गया था । एक आईएएस लड़की के पिता के समुख उसकी अति मेधावी पुत्री के जीवन के अति महत्वपूर्ण फ़ैसले पर अपनी गंभीर राय देने का अवसर छेहरे को तेजवान कर गया । मामा और सुरुचि के पिता पूर्व परिचित थे ही । यह शहर है ही कितना बड़ा, प्रायः लोग एक - दूसरे को जानते ही हैं । मामा अपने रौ में आ गये , “ मिश्रा जी आपका प्रस्ताव थोड़ा देर से आया है । हम लोग पहले से आये प्रस्तावों पर विचार कर रहे । कमिश्नर इलाहाबाद अपनी बहन के लिये प्रतिदिन आ रहे । रामराज मिश्र रूपये की गठरी और जमीन के काग़ज़ात लिये घूम रहे , मेरा अपना ही साला है हरिकेश आप जानते ही हैं उसका प्रताप वह भी चाह रहा पर मेरा लक्ष्य सिर्फ़ एक है लड़के के अनुकूल कन्या । आपने विमोचन में सुना ही है , उसकी कोचिंग की यशगाथा चहँओर है ही । वह कोई आम आईएएस तो है नहीं , वह जीवन में मील के पत्थरों को देखकर चलेगा नहीं वह उन पत्थरों को गाड़ेगा और उछाड़ेगा । ”

सुरुचि के पापा भी कोई कमजोर चीज तो थे नहीं । वह पुरबिया थे । मामा ने उनको जिस आधार पर संघर्ष करने के लिये कहा था , वह तो उनका मजबूत पक्ष था । वह भी शस्त्र से लैस हो चुके थे ।

“ मिश्रा जी मेरी लड़की के योग्य लड़का मिलना आसान नहीं है , यह मैं नहीं पूरा अंगरेज़ी और मनोविज्ञान विभाग कहता है । वह जहाँ - जहाँ पढ़ी वहाँ उसका कोई सानी नहीं था । वह विश्वविद्यालय की प्रख्यात डिबेटर है और उसके बगैर कोई विश्वविद्यालय की डिबेट टीम बनती ही नहीं है । जैसे आप अनुराग के लिये योग्य कन्या तलाश रहे वैसे ही मैं अपनी बेटी के लिये योग्य वर तलाश रहा । मैं धन- दौलत - प्रतिष्ठा में हो सकता है किसी दृष्टि से और नामों से कमजोर दिख जाऊँ पर जहाँ बात कन्या की आयेगी वहाँ मुझे अपनी संस्कारित बेटी पर अगाध विश्वास है । मैं इलाहाबाद में ही विवाह करना का पक्षधर हूँ , इस संयोग का आकांक्षी मैं इसलिये भी हूँ कि यह लोकल संबंध है । शर्मा जी की , आपके परिवार की सब तारीफ़ करते हैं , अनुराग नायाब हैं , इसमें तो कोई संदेह है नहीं । मैं रामराज या किसी अन्य धनवानों से अपनी तुलना नहीं करना चाहता पर रीति- रिवाजों में आप संतुष्ट होंगे , इससे आप आश्वस्त रहें । ”

यह तो एक नया चेहरा था सुरुचि के पिता का । वह मेरे मामा ऐसे बोलते आदमी को पटकनी दे मारे । मामा के पास शांत हो जाने के अलावा और कोई रास्ता था नहीं । मेरे पिताजी ने उनको उचित सम्मान दिया और कहा , “ एक

ही समस्या है कि अनुराग थोड़ा नौकरी पेशा वाली लड़कियों को लेकर मुझे सहज नहीं दिख रहे , अगर वह उसमें सहजता को प्राप्त कर जायेंगे तब सुरुचि से बेहतर और कौन हो सकता है । वह लड़की भी जानी समझी है । जो भी उसको जानता है , वह तारीफ़ ही करता है । अभी अनुराग ने दुनिया देखी नहीं है , शीघ्र ही देखेंगे और रुख में परिवर्तन हो सकता है । इतनी जल्दबाज़ी में फैसला लेना उचित नहीं है कि तुरंत विवाह का निश्चयन कर दिया जाये । “

सुरुचि के पिता - “ मुझे कोई जल्दी नहीं है , एक सुझाव था मेरा वह मैंने दे दिया । मैं पुनः आऊँगा , होगा वही जो संयोग होगा , हम आप तो निमित्त मात्र है । ”

यह कहकर सुरुचि के पिता चले गये । पिताजी मामा देर तक बात करते रहे । मैंने शालिनी का पत्र सरसरी तौर पर ही देखा था , पूरा पढ़ा न था । मैं वह पत्र पढ़ने लगा , जैसे - जैसे पत्र पढ़ता गया मुझे चिंता होने लगी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 267

शालिनी का पत्र बहुत ही मार्मिक था । एक महत्वाकांक्षा से लबरेज़ योद्धिणी का पत्र था वह । वह अपनी बात कहते - कहते भावुक हो रही थी । उसने पूरा वह इतिहास लिख डाला जबसे उसने ऋषभ के साथ जीवन आरंभ किया था । उसने अपने इंजीनियरिंग के तीसरे वर्ष से लेकर आज तक के जीवन का विवरण लिख दिया । वह एक ही बात कहना चाह रही थी कि मैं कब तक समझौते करती रहूँगी । मेरे पापा के साथ ऋषभ को काम नहीं करना था , इनको विवाह के मुद्दे को नहीं सुलझाना था , इनको विदेश में अपना अलग काम नहीं करना था , किसी से मिलने में इनकी कोई रुचि नहीं है । यह सब मैं सँभालती रही , इसका कारण यह था कि मैं यह मानती हूँ , ईश्वर हर व्यक्ति को अलग बनाता है । ऋषभ की अपनी खूबियाँ हैं पर वह खूबी बोझ बनती जा रही है । जीवन के फैसले भावनाओं के उभार को सँभाल कर लिये जाने चाहिये । अनुराग , रियल प्राबल्म का इमोशनल आंसर नहीं होता है । यह जो एक बुद्ध अंदर जीवित हो गया है प्राणि मात्र के कल्याण का संकल्प लेकर यह कब तक जीवित रहेगा , इसकी क्या निश्चितता है ? बोधिसत्त्व की विचारधारा बहुत ही बेहतरीन विचारधारा है । संसार के अंतिम व्यक्ति की मुक्ति तक अपनी मुक्ति को मुल्तवी करना बहुत ही आदर्श अवधारण है पर क्या वह आदर्श जिन रास्तों पर यह चलने का निर्देश दे रहे हैं , वह किसी सकारात्मक परिणाम का प्रतिफलन देगा ? इनको अभी एहसास नहीं है

सरकार की मशीनरी तन्त्र का जो आसानी से कोई काम होने नहीं देती है । मैं एक व्यापारी की बेटी हूँ और जब से होश सँभाला यही कहा गया यह व्यापार तुमको सँभालना है, इसलिये इसको समझने की कोशिश करो, मैंने ताउमर इसको समझा है और इसकी पेचीदगियाँ जानती हूँ । मैं भारत के भीतर के व्यापार की आतंरिक संरचना की रग- रंग से वाक़िफ़ हूँ । मेरे घर के व्यापार में दो व्यक्ति सिर्फ़ अफ़सरों की खुशामद के काम के लिये नियुक्त किये गये हैं, क्या यह काम ऋषभ कर सकते हैं । अनुराग, एक अच्छा उत्पाद बना लेना और उसको बाज़ार में बेच देना, दो अलग- अलग काम है । पहला काम ऋषभ कर सकते हैं पर दूसरा उनके बस का नहीं है । उसके लिये उनको शालिनी या अनुराग चाहिये । वह व्यापार में बुरी तरह असफल होंगे, यह मैं पहले से ही कह देती हूँ । मैं उनकी पत्नी भी हूँ और एक बहुत अच्छी मित्र भी, मुझे उनकी अच्छाइयों - कमियों दोनों का सज्जान है । मैं यह नहीं समझ पा रही कि वह कौन सी जनसेवा व्यापार के माध्यम से करेंगे । व्यापार का एक सीधा सा सिद्धांत है अपने बनाये गये उत्पाद पर अधिक से अधिक लाभ की प्राप्ति हो । यह लाभ प्राप्ति के सिद्धांत को समेकित करता हुआ व्यापार-दर्शन कौन सी समाज सेवा करायेगा, यह हमारी समझ के बाहर है । यह अमेरिका में पैसा कमाकर यहाँ के लोगों पर खर्च कर दे वह एक बेहतर समाज सेवा है बनिस्बत यहाँ आकर वह एक नये सिरे से गलाकाट व्यापार की प्रतिस्पर्धा में शामिल हों । अनुराग, एक हिंदी की कहावत है.. पैसा की माई पहाड़ चढ़ै... यह अमेरिका में पैसा कमा लिया गया है भरपूर इसीलिये सारी बुद्धि भी खुल रही और बुद्ध अंदर के किवाड़ को खोलकर झाँक रहे हैं । यह मैंने अगर अपना काम शुरू करने की ज़िद न की होती तब आज हम लोग कुछ चंद डालरों पर लोगों के यहाँ काम कर रहे होते और कोई दिमाग़ न खुलता किसी का । आशा है मामा के मकान का काम आजकल में शुरू हो जायेगा, शक्ति एजेंसीज वाले तुमसे आज- कल में मिलने आयेंगे, पापा ने फ़ोन करके कह दिया है । अमेरिका तुम आना, अपनी आंटी और मेरी आंटी दोनों को लेकर । यहाँ आना तुम, यहाँ की गोरी मेम भी देख लेना, क्या पता तुम्हारी न बनी कुंडली के नक्षत्र में तुम्हारा संयोग यहीं का बना हो । मैं पुनः लिखूँगी । तुम लिखना, और चार पाँच पेज से कम मत लिखना, मुझे हिंदी में दक्षता चाहिये वह तुमसे बेहतर मुझे कौन दिला सकता है ।

शालिनी - एक मित्र जो देर से मिली अनुराग से, पर चलो मिले तो सही ।

शालिनी ने बहुत अच्छा लिखा था । मुझे मज़ा आने लगा था इस संवादहीनता के बीच के चौधराहट में । माँ कह रही मत घुसो इसमें पर मुझे घुसने में मज़ा आ रहा । अभी माँ कह कर गयी तुम्हारे बीएससी पास करने के लाले थे पर मेरी डोर में दो आईआईटी के महान छात्र थे । मुझे कठपुतली नचाने वाले कठपुतलिये की तरह का आनंद आने लगा । मैंने अपने कमरे में ही जोर से

कहा , “ या ईश्वर तूने अच्छा किया मुझे आईआईटी की प्रवेश परीक्षा में फेल करा दिया , नहीं तो वहाँ भी पास होने के ही लाले पड़ते और यह सब मुझकों घास ही नहीं डालते । एक पेपर में छपे नाम का जितना शोषण मैंने किया इतना तो अंगरेज़ों ने अपने उपनिवेश का भी नहीं किया । मैंने ज़ोर से कहा , बिधाता तो मैं नहीं हूँ पर मेरे और तेरे बीच कोई और नहीं है । ”

इतने में दादू कमरे के अंदर आया और बोला , “ भैया तू त हमार बिधाता हअ , बस हमार खेत जोताई द । ”

मैं - “ कल सुबह का सूरज एक अलग सूरज होगा । मेरे अंदर कृष्ण भी हैं और शकुनि भी है । मैं पाँसों से छल भी करूँगा और कृष्ण का दर्शन भी बाँचूँगा । ”

दादू - “ मुन्ना भैया , ई उड्डाई - डकाई वाली बात रहै द , बस हमअ इ बतावअ कब जोती और कैसे जोती खेत । ”

मैं - “ आज रात गाँव जाओ , दो ट्रैक्टर लो , रात में ही खेत जोत डालो । सुबह के उजाले में वह खेत जोता होगा । खेत जोतकर चले आना यहाँ पर , बाक़ी का काम मेरा है । ”

दादू - “ अगर रातै में आई गयेन तब ? ”

मैं - “ किसके सिपाही हो ? ”

दादू - “ भैया तोहार । ”

मैं - “ सिपाही सवाल करता है ? ”

दादू - “ नाहीं भैया । ”

मैं - “ तब । ”

दादू - “ अगर सिपाही के जान पर कुछ आई जाये तब ? ”

मैं - “ नेपोलियन के बारे में किंवदंती सुनी है ? ”

दादू - “ भैया हम अगर सब सुने पढ़े होईत समय पर तब हमहूँ तोहरे संगे चलित एकेडमी और सुना है एकेडमी में बरदिया घोड़ा मिलत हअ चढ़ै बरे , हमहूँ सवारी गाँठित । ”

मैं - “ नेपोलियन कहता था अपने सिपाहियों से , आधे युद्ध का फैसला सिफ़ इस बात से हो जाता है कि तुम हमारे सिपाही हो । ”

दादू - “ भैया समझि गये , पर बुआ के का करि । ”

मैं - “ सुना नहीं मैंने कहा कि हमारे और रब के बीच कोई नाहीं है । ”

दादू - “ भैया इ त हम सुना बुआ त सुने नाहीं बा । उ त रब से कहि दे ज़रा रुकअ तोहार रबगीरी अबहिं निकालित हई । एक बार पूछ लअ । ”

मैं “ खेत जोतना है कि नहीं ? ”

दादू -“ जोतई के बा । ”

मैं “ तुम भतीजे हो वह भाई है , वह रिश्ता ज्यादा नजदीक है । ”

दादू - “ ई बात त तोहरेज साथ बा । ओ तोहार मामा हयेन । ”

मैं “ एक बदला ले रहा हूँ दादू । तुम्हारे
खेत जोतने में मेरी अपनी रुचि है । ”

दादू - “ ऊ का बा ? ”

मैं “ मामा ने तुम्हारे घर के सामने वाले बरामदे में बीसों आदमी के सामने कहा था कि तुम क्लर्क भी हो गये तो यह बड़ी उपलब्धि है । जिसके जीवन की सारी डिगिरयाँ छुपाने लायक है वह इतनी बड़ी परीक्षा का ख्वाब देख रहा है । जीवन में माँगे भीख नहीं मिलेगी तुमको । ”

दादू - “ हमहूँ त रहे ओह समय । ”

मैं “ हाँ तुम भी थे । उसी गाँव में कल मैं इनको ख़त्म करूँगा । यह रामदीन का मकान बनाने पर मैं ज़ोर क्यों दे रहा , यह पता है तुमको ? ”

दादू - “ नाहीं भैया । ”

मैं “ यह सबसे कहते हैं , यह तुम्हारा

मकान गाँव ऊपर है , इस बात का बहुत दंभ हैं तुम्हारे चाचा को । उस रामदीन दरिदर का मकान इनसे बेहतर होगा । ”

दादू - “ एहमें त हमरउ नुकसान बा । ”

मैं “ किसी भी नुकसान से मेरा कोई ताल्लुक नहीं । बस एक ही लक्ष्य है , उनको ख़त्म करना । यह संकल्प उसी दिन लिया था जिस दिन इन्होंने यह कहा था । उस दिन के बाद से मैं दिन - रात इसी दिन का इंतज़ार कर रहा था । उनके अहंकार का बहुत योगदान है मुझे यहाँ तक पहुँचाने में । ”

दादू - “ भैया एक बात कही । ”

मैं “ कहो । ”

दादू - “ हमका बहुत डर लागत बा अब तोहसे । पता नाहीं कब शंकर के तीसरी आँख खुल जाये । ”

मैं “ अभी तो एक को जलाने दो , बाकी को बाद मैं जलायेंगे । तुम खेत जोतकर यहाँ चले आना , अगर खेत जोतने के बीच आ जायेंगे तब ट्रैक्टर

रोक देना और कहना कि मुन्ना ने कहा था , कोई झगड़ा तुम मत करना , मुझको लड़ने दो । मैं खुद इस लड़ाई का आनंद लेना चाहता हूँ । ”

दादू - “ बुआ ”

मैं - “ तुमको खेत जोतना है कि नहीं ? शंकर की तीसरी आँख का डर है कि नहीं । ”

दादू - “ हम त तोहार सिपाही हई । ”

मैं - “ सिपाही सवाल नहीं करते । तुम जाओ और सुबह आठ बजे तक आ जाना । ”

दादू गाँव चला गया । उसने पहुँचते ही खेत जोतना शुरू कर दिया । रात में खेत जोतना गाँव में एक अलग हल्ला कर गया । मामा का स्वभाव सब जानते थे और एक अनहोनी की आशंका होने लगी । छोटे मामा भागकर रात में ही शहर आये और समाचार दिया । शहर में मामा के तो हाथ से तोते उड़ गये । रात में ही बंदूक से लैस होकर मामा और बाबा भैया गाँव गये । दादू ने कह दिया कि मुन्ना कहे थे जोतने के लिये । यह उनको समझ ही न आया कि मुन्ना ने क्यों कहा । दादू बात बनाने में माहिर था , उसने कह दिया , शायद बुआ अपने हिस्सा के खेत लेवा चाहत हई । ”

मामा - “ उर्मिला का यह खेत तो है नहीं । यह क्यों जोतेंगी वह । ”

दादू - “ चाचा हम त कमज़ोर मनई ठहरे , हमसे जे जौन कहेस तौन करित हअ । बुआ कहेन कि जोत दअ हम जोति दिहा , तू

कहत हअ न जोतअ तब न जोतब । ”

बाबा भैया - “ बुआ कहेन हअ तोहसे ? ”

दादू - “ हमसे त मुन्ना कहेन । अब ई त सब जनतई हअ कि मुन्ना के केतना हैसियत बा । बुआ के नाम से ओ काँपि जात हअ । बगैर बुआ के राई- बात के त न कहें होइहिं । हम झूठ न बोलब हमसे बुआ नाहीं कहेस । मुन्ना हमसे कहेन कि जोति- बोई लअ जौन गल्ला पाती होये सब केऊ बाँटि लअ । ”

बाबा भैया - “ मुन्ना के पेट नाहीं भरत बा , ओनकर कौन हक्क बा इहाँ के मामले में बोलै के । ”

मामा - “ उसका दिमाग़ ख़राब हो चुका है । किसी को औक़ात से ज्यादा मिल जाता है तब ऐसे दिमाग़ फिरता है । दादू तुम बंद करो यह सब , हमारे खेत- बारी का मुद्दा अब मुन्ना सुलझायेंगे , यह समय आ गया है हमारा । ”

दादू - “ चाचा , हम त हई गरीब मनई । हम फ़ौसा हई दुई मज़बूत मनई के बीच । आपके नाम त तपा हझये बा डेबरा में , अब मुन्ना नवा लंबरदार बनत हयेन । ”

हमका आदेश जौन करअ तौनै करबै । आप आदेश करअ , हम पालन करबै ।
“

बाबा भैया - “ तोहका सुनान नाहीं अबअ , पिताजी कहेन न कि बंद करअ इ सब । तोहार दिमाग बहुत बढ़ि ग होई त देई अबहिं परसाद तोहका । ”

दादू - “ भैया हम त बिना बुद्धि के मनई हई , अब तू पचे विद्वान हआ , कै दअ फैसला । ए शरीधर हटावअ टरैक्टर खेते से । ”

मामा - “ कुल खेत त जोत देहअ , अब का रहि गवा । एक धूर अनाज न पड़े चाही एहमें । ”

बाबा भैया - “ दादू , अगर अब तू खेते के नज़दीक देखाई न देहे नाहीं त कौनौ गत तोहार न छोड़ब । ”

दादू - “ भैया , जौन तोहार आदेश होये पालन करब , एक बार मुन्ना से समझ लअ । ”

बाबा भैया - “ हम मुन्ना से समझब , अब ई हमार दिन आई गअ बा । ओनकर गरज होये तब ओ आवैं , हम काहे जाब । हमार खेत, हमार हिस्त्सा मुन्ना के होत हआ । ”

दादू - “ भैया छोट मोह बड़ी बात बा ई , पर हमार फर्ज बा कहै के । अब मुन्ना उ मुन्ना त रहेन नाहीं जौन आज से चार महीना पहिले रहेन । कमिश्नर साहब ओनकर मोह जोहत हआ । डिप्टी कलेक्टर करछना मिलै ग

रहेन , दरोगा करछना हमसे सिफारिश लगावत बा मिलै बरे , कुंडली गुरु तपा पुलिस अफसर चेलागीरी करत हयेन मुन्ना के । अब आप जौन उचित समझअ करअ । कौनौं संदेश होई त दै दअ हम दै देब । हम कहि देब कि बाबा भैया बहुत नाराज़ रहेन मुन्ना के ऊपर । ”

मामा - “ बाबा बेवकूफी की बात न करो । दादू कुछ मत कहना मुन्ना से । मैं उर्मिला से बात करूँगा । यह मुन्ना कुछ ज्यादा ही हद से बाहर हो रहे हैं , उर्मिला को बताना ज़रूरी है । उर्मिला को पता है यह ? ”

दादू - “ चाचा हम त गरीब मनई उहौ बगैर बुद्धि के , हमका का पता अंदर के राजनीति । मुन्ना के खुश रख्वे में हमार स्वार्थ बा । ओनके नाम पर चार काम होई जात हआ । डेबरा के तहसील - कचहरी के छोट- मोट काम मिल जाता हआ और हमार परिवार के पेट पलि जात हआ । पहिले हम चाचा तोहार नाम लै के काम चलावत रहे और अब मुन्ना के नाम चलि पड़ा बा । हमार त अन्नदाता तुहँ हआ और मुन्नौ हयेन । अब हम अन्नदातन के त खुश रखबै करब , चाहे आप होई या मुन्ना । ”

मामा - “ अब खेत के अंदर तबै केउ घुसे जब फ़ेसला होई जाये । ”

दादू - “ जैसन आदेश चाचा , बस मुन्ना से समझि लअ । ”

मामा - “ मुन्ना कौन होत हअ । अगर हक - हकूक है तो उर्मिला का है , मुन्ना न तीन में न तेरह में । ”

दादू - “ बुअे ये समझि लअ । ”

मामा , बाबा भैया गाँव से सीधा मेरे घर आये । माँ ने पूछा , “ भैया एतने भिंसारे सब ठीक त बा ना । ”

मामा नाटक की कला में दक्ष थे ही । आँखों से आँसू गिराकर बोले , “ हम कतौं के नाहीं रहि गये बहिन । मुन्ना के खेत चाही रहा अगर हमसे कहे होतेन , हम आपन कुल जायदाद ओनके नाम लिख देइत । हमार मानदान हयेन , हम ओकरे पिता के पैर पूजे हई , कन्यादान केहे हई । चार- छः बिगहा खेत मुन्ना के नाम पर हम धिंगरा के दै देब , पर मुन्ना से ई उम्मीद नाहीं रही । ”

माँ - “ मुन्ना केहेन का ? ”

मामा ने पूरा क्रिस्सा सुनाया और आँख से बरसात कर दी । माँ का गुस्सा सातवें आसमान पर और ज़ोर से चीखी ... मुन्नवा .. बहन से बोली जाओ ज़रा लेकर आओ उसको ऊपर से .. अभी नौकरी करै गवा नाहीं और दिमाग ख़राब होई गवा बा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 268

माँ की आवाज़ में वैसे ही बहुत तीव्रता है पर यह तो तीव्रतर थी और मेरे कान से घुसकर उसकी आवाज़ मेरे हृदय गति को संवेगी कर गयी । मैं यह समझ गया कि एक कठिन घड़ी मेरे सम्मुख है , पर अब कर ही क्या सकते हैं जो होना है वह तो हो चुका है । एक मन आया कि सीढ़ियों से उतरकर रफूचककर हो जाऊँ शाम तक वापस आऊँगा तब तक उसके करोध पर थोड़ा लगाम लग जायेगा । मैं यह सोच ही रहा था कि डरी- सहमी मेरी बहन आ गयी । उसे डर लग गया कि कहीं दोनों में संग्राम न हो जाये । वह भी जानती थी कि मैं उच्छृंखलता कभी - कभी कर ही देता हूँ । वह माँ का गुस्से से भरा चेहरा देखकर आयी थी और वह भयाकरान्त थी । उसने आते ही कहा , “ माँ बहुत ही गुस्से में है । ”

मैं - “ कोई बिगवा है क्या जो खा जायेगी ? कौन सा पाप कर दिया जो सूली पर चढ़ा देगी । बारी का खेत है , परती पड़ा था कोई जोत - बो नहीं रहा था ,

फसल होगी सबको फायदा होगा । मैं तो कुछ लेने वहाँ से जा नहीं रहा , सबके हित में यह फ़ैसला है । ”

बहन - “ हमको यह नहीं पता पर माँ हल्ला बहुत करेगी बहुत गुस्से में है । ”
मैंने कहा , “ चलो देखते हैं । ”

मैं नीचे आया , मैं कमरे में प्रवेश किया और कमरे की संरचना और माहौल देखकर मैं समझ गया कि पूरा परिदृश्य मेरे विरुद्ध है । मैंने मामा और बाबा भैया को अभिवादन किया । माँ गुस्से से काँप ऐसी रही थी , मामा रोने का नाटक करके मुँह लटकाये बैठे थे , बाबा भैया का बस चले तो मुझ पर आकरमण कर दें । उनकी आँखों से करोधाग्नि लपटें ले रहीं थी । माँ ने मुझको देखते ही पूछा , “ यह गाँव के खेत जोतै बरे तू कहे रहअ दाढ़ से ? ”

मैं - “ हाँ । ”

माँ - “ काहे ? ”

मैं - “ इसमें सबका हित है । ”

माँ - “ मुझ हित - अहित के नाहीं बा , मुझ इ बा कि बगैर हमसे पूछे तोहार हिम्मत कैसे पड़ी । मुन्ना ई यूपीएससी के परीक्षा पास करि के तोहार दिमाग ख़राब होई चुका बा । ई परीक्षा तोहका अधिकार समाज पर शासन के देहे बा हमरे ऊपर शासन के अधिकार तोहका ई परीक्षा से नाहीं मिल गवा बा । ”

मैं - “ इसमें गलत क्या हुआ यह बताओ ? ”

माँ - “ मुन्ना केतनओं क़ाबिल होई के दावा तू करअ पर अबअ तोहार ऊँगली एतनी मज़बूत नाहीं होई गै बा कि हमका अँधेरे में रास्ता दिखावय लायक होई गै बा । ई समाज रीति- रिवाज -परम्परा - मर्यादा से चलत हअ , तू मर्यादा तोड़ि के आगे बढ़ि गअ हअ कल रात में । रात ख़तरनाक होत हअ और अक्सर लोग रस्ता भटक जाति हअ सियाह रातिन में पर तू काल रस्ता नाहीं भटका हअ बल्कि तू गलत रस्ता पकड़ि लेहे हअ । हम सिफ़्र एक आईएस पुत्र के चाहत कभौं नाहीं राखे रहेअ । हम एक जमाने के रास्ता देखावै वाले बेटवा के चाहत रखे रहे , तू हमका निराश कै देहअ अपने ई काम से । हम तोहसे केतना बार कहे हई , राम बनब त बहुत मुश्किल बा पर रावण बनै से बचब आसान बा । ”

मैं - “ मैंने कौन सा रावण वाला काम कर दिया ? ”

माँ - “ रावण में सबसे बड़ा अवगुण रहा ओकर अंहकार । तोहार काल के काम पूर्ण अहंकार से भरा बा । ”

मैं - “ इसमें अहंकार कहाँ से आ गया ? ”

माँ- “ तू हअ का , ज़रा हमका ई बतावअ । ई तोहरे बाप के ज़मीन रही ? तोहार अधिकार का बा ननिऔरे के मामले में दखल दई के । ई हमरे बाप के जमीन , हमरे नैहरे के मामला , हमरे भाई - भतीज के मामला हई , एहमें न तोहार कौनौ भूमिका बा न तोहरे खानदान के । तू अपने अधिकार के अतिकरमण कौन आधार पर करअ , इ बतावअ हमका ? तू कमिश्नर इलाहाबाद के नज़दीक होई गअ हअ , चिंतन तोहार बात सुनत हअ और आपन जीवन सुधारै के इच्छा राखै वाले गरीब लड़किन के हीरो बनि गअ हअ और तोहरे में अहंकार भरि गवा बा । ई अहंकार तोहका इहाँ तक लै गवा कि जेकरे नाम ज़मीन बा ओसे नाहीं पूछअ , अपने महतारी से नाहीं पूछअ और विधाता के नाहीं फ़ैसला सुनाई देहअ । तोहार बेवकूफ़ी अगर काल गोली चलवाई देत काल तब के जिम्मेदारी लेत ओकर ? ”

मैं- “ कौन चलाता गोली और क्यों चलाता ? ऐसे ही गोली चल जायेगी ? ”

बाबा भैया गुस्से से भरे हुये थे । वह वैसे ही मेरी बढ़ते नाम के कारण मेरे प्रति ग्रन्थि पाले हुये थे अपने अंदर और यह ग्रन्थि समय के साथ अभिवृद्धि भी पा रही थी और जटिलता की ओर अग्रसर हो रही थी । वह अपना गुस्सा नहीं नियन्त्रित कर पा रहे थे । वह यह मान रहे थे कि सारी समस्या की जड़ मैं ही हूँ और यह उनका मानना उचित भी था । वह करोध के वशीभूत थे ही मेरी पंक्ति उनको और गुस्से में ला दी । वह तेज आवाज़ में बोले , “ मुन्ना, हमरे ज़मीन पर केउ हल चलाई देय , बगैर हमरे सलाह के यह संभव आज तक भअ नाहीं । पिताजी रोक देहेन नाहीं त दाढ़ के उहाँ हम सोवाई देइत , तू आईएस जहाँ के होबअ उहाँ के होबअ । ई हमरे इहाँ के मामले से अपने के दूर रखअ नाहीं त हम कौनौं लाज- लेहाज न रखि पाउब । हम चूड़ी नाहीं पहिने हई । हम बर्बाद होई जाब पर केउ हमरे इज्जत- आबरू पर हाथ लगाये तब हम चाही मिट जाई पर ओका मिटाई के मिटब । ”

मैं , बाबा भैया की तरफ़ देख रहा था जब वह बोल रहे थे । बाबा भैया गलती कर चुके थे ... एक बड़ी गलती .. माँ का गुस्सा मुझ पर से बाबा भैया की तरफ़ मुड़ गया । मेरा शांत रहना मेरे पक्ष में चला गया और बाबा भैया की बेवकूफ़ी मुझको इस समस्या से उबार ले गयी ।

माँ- “ का कहअ बाबा ? हम चूड़ी नाहीं पहने हई .. हमरे दुझनौं हाथे में चूड़ी बा , पर आज तक केउ इ चूड़ी से लड़ि नाहीं पायेस । इहै चूड़ी मुन्ना के इहाँ तक पहुँचायेस और भौजी के चूड़िन के माथे तू एतनी बड़ी- बड़ी बात करत हअ । अब तोहार इच्छा अगर बंदूक चलावय के बा त चलाई लअ । चलावअ मुन्ना पर , इ बैठा बा । हमहू देखी तोहरे बंदूक के ताकत , चलावअ हमरे सामने । खेतै जोति दिहा गवा बा , कौनौं राजदरोह त होई नाहीं गवा बा , गलती भई बा कौनौं अपराध त भवा नाहीं बा । अब ई गलती के सजा मौत बा

तब दै दअ अबहीं इहीं । दादू तो मोहरा बा ओका मारे का मिले । ओकर त हिम्मत नाहीं बा तोहसे आँखि मिलावै के । ई सारा प्रपञ्च त मुन्ना रचेन , सजा मिलै चाही अगर त मुन्ना के मिलै चाही , बेचारा दादू त मुन्ना के कहे में सारा काम करत हअ । अब तू पचे लड़ि लअ , हमसे कौनौं मतलब नाहीं बा “

मैं सातवें आसमान पर था , मुझे एहसास हुआ नम्रता की ताक्त का । यह नम्रता थी जो मुझे इतनी बड़ी समस्या से निकाल ले गयी । मैं माँ को नाराज़ नहीं करना चाहता था , अब कुछ ही दिन रह गया था मेरे एकेडमी जाने में । मैंने इस बदलती परिस्थिति का पूरा उपयोग करने का फ़ैसला किया ।

मैं “ मुझसे गलती हुयी , इस पर पूछना चाहिये था । दादू ने कहा खेत जोतकर जो भी गल्ला- पाती होगा वह सबके हिस्से में बाँट देंगे । मुझे यह ठीक ही लगा , खेत कई साल से परती पड़ा है । मुझे लगा अगर पूछूँगा तब जैसे कई साल से लोग अलग- अलग राय रख रहे इस मुद्दे पर , यह कभी जोता- बोया नहीं जायेगा । मुझे भी थोड़ा गलतफ़हमी हो गयी थी कि मेरी बात मामा मान जायेंगे पर मुझे यह नहीं पता था कि मामा के निगाह में मेरी कोई क़ीमत नहीं है और बाबा भैया गोली चलाने की हद तक चले जायेंगे । मैंने वस्तुस्थिति का गलत आकलन किया , अपने ही ननिहाल में अपनी स्थिति का गलत मूल्यांकन किया । मुझे यह लगने लगा था कि मेरी इस घर में इज़्जत काफ़ी है और मेरी बात की क़ीमत है , पर मैंने अपने आपको गलत आंका था । मैं अपनी सारी गलती स्वीकार करता हूँ । अब जो हो चुका है वह तो वापस किया नहीं जा सकता । मैं गुनाह कुबूल करता हूँ , आप सजा दे दें । मैं अब अपने ननिहाल से सारे संबंध खत्म करता हूँ । आप सजा मुकर्रर करें , मैं स्वीकार करता हूँ पर मैं जहाँ पैदा हुआ , जहाँ मेरा बचपन गुजरा , जहाँ से मेरी कमल नाल जुड़ी है वहाँ मेरी यह हैसियत है यह मुझे पता नहीं था । मैं और कुछ हूँ या नहीं हूँ , मैं क़ाबिल हूँ या नहीं हूँ.. इसमें दो राय हैं और रहेगी क्योंकि इसका एक मापदंड निश्चित नहीं होता और यह लोगों द्वारा बनाया जाता है जिस पर एक विचार नहीं हो सकता पर मैं बहुत आत्मसम्मानी हूँ , इसमें कोई दो राय नहीं क्योंकि आत्मसम्मान का मानदंड व्यक्ति खुद बनाता है और उस पर किसी दूसरे की परिभाषा काम नहीं करती । मेरे आत्मसम्मान पर बहुत चोट पहुँचायी गयी है और मैं अंदर से बहुत आहत हूँ । मेरी आज की कोचिंग की क्लास मुझे कैंसिल करनी पड़ेगी, मेरी मनोदशा अब आज कुछ भी करने की नहीं है । आप जो चाहें सजा दो , मुझे मंजूर है पर मैं यह संबंध खत्म करता हूँ । अगर संबंधों की आधारशिला इतनी कमज़ोर है तब उसका समाप्त होना ही उचित है । मेरे पूरे जीवन में आपने मेरी क्या मदद की है यह सोचियेगा , आपने अपनी बहन की क्या मदद की है यह भी सोचियेगा और मेरी सफलता से आपको क्या फ़ायदा हुआ है यह ध्यान

में रखकर आप अपने कृत्यों को परीक्षित कीजियेगा , मेरा कृत्य गलत है यह तो मैं स्वीकार कर ही चुका हूँ । ”

यह कहकर मैं कमरे से उठा और अपने कमरे में वापस आ गया । मैं अपने पत्ते बहुत संभाल कर चल चुका था । मैंने जानबूझकर , “माँ के साथ आपने क्या किया है ” , कहा था । सब बहुत कारगर हुआ । मेरे उठते ही कमरे में सन्नाटा हो गया , माहौल बाबा भैया के खिलाफ हो गया था । मेरे कमरे से जाने के बाद माँ ने इस मुद्दे पर बात करने से इंकार कर दिया । मामा सुरक्षात्मक मुद्रा में आ चुके थे । उनको यह लगने लगा कि मामले को ज़रूरत से ज्यादा बढ़ा दिया गया ।

मामा के जाने के बाद माँ मेरे कमरे में आयी । वह अपने बेटे के सम्मान के प्रति बहुत आग्रही थी , वह भी कोई आम बेटा नहीं बल्कि वह बेटा जो प्रतिमान बना रहा , उसको गिरा रहा और नये प्रतिमान बनाने की ओर बढ़ रहा और समाज में माँ को सम्मान दे रहा , वैसे वह अपने सभी बच्चों के प्रति बहुत आग्रही थी ही । वह चाहे जो कहे पर कोई और कुछ कहे वह बर्दाश्त नहीं कर सकती थी । उसने आते ही पूछा , “ मुन्ना ऐसन काहे केहअ? हमसे पूछ लेहअ होतअ । हमसे कहि देतअ कि तोहार मन बा खेत जोतवावै के , हम करवाई देइत तोहका पीछे राखिकर । हम जानित हअ तू ऐसन काहे करअ? हम तोहार उहौ धड़कन पढ़ि सकित हअ जौन बगैर शोर के धड़कत हअ । तोहार अपने मामा से कुछ शिकायत बा , हमरौ बा पर अगर इ शिकायत लै के जीवन में आगे चलबअ तब तू जौन एक गैर मामूली दास्तान लिखई चाहत हअ , उ न लिखि पउबअ । जीवन में आगे मुन्ना उहै बढ़त हअ जौन दूसरन के माफ़ी देत हअ और दूसरे के गलती भूलि जात हअ । अगर एके ग्रन्थि अंदर बाँधे रहबअ त जीवन में जौन उपलब्धि पाई ग हअ उहै गावअ और बजावअ । इ उपलब्धि आज त कुछ लोग गावत -बजावत हयेन पर कुछ समय बाद ओ सब बोर होई जैझिं । तब तू अकेले गउबअ और बजउबअ और सब कझिं एकै बाजा बजावत हयेन बरसा- बरस से । हर आदमी नवा संगीत चाहत हअ । तू नवा- नवा संगीत रचअ अगर कुछ जीवन में कुछ ख़ास करा चाहत हअ । ई आर्केस्ट्रा के गवैया बनई के बजाय तानसेन बनई के कोशिश करअ , समाज के नवा- नवा राग दअ । हम एक मुन्ना आईएस के माँ बनि के नाहीं रहत चाहिए हअ , हम अनुराग जे बहुतन के जीवन बदलि देहेस ओकर महतारी के पहिचान चाहत हई । तोहार बोबा हमसे कहे रहेन , मुन्ना के समय- समय पर ताकीद करत रहूँ एहमें बहुत संभावना बा पर एकर करोध , एकर जल्दबाज़ी एकर सबसे बड़ा दुश्मन बा । ओनकर बात बहुत सही बा । ई तोहार काम जल्दबाज़ी में उठावा कदम रहा । हम तोहका एक सलाह देब , जब कौनौं काम तू करई जा तब जौन पहिला

फ़ैसला आवै मन में ओकरे पर अमल करै पहले कुछ क्षण इंतज़ार करअ । एक फ़ैसला और आये अंदर से , तू दुझनौं फ़ैसला सुन लअ और दुझनौं के गुण- दोष पर विचार करि के फ़ैसला करअ , उ फ़ैसला कभौं गलत न होये । मुन्जा, तू बड़ा आदमी होई गअ हअ , अब इ चिरकुटाही के काम में तू न पड़अ । ”

मैंने इतना नीति- उपदेश पंचतंत्र की कथाओं में भी न पढ़ा था , जितना माँ ने दे दिया कुछ वक्त में । उसने जाते - जीते कहा , किसी का दिल दुखाकर एकेडमी मत जाओ । तुम भैया के यहाँ चले जाना । वह बहुत दुःखी थे तुम्हारी कुछ बातों से ।

मैं “ क्या बात करूँगा मामा के यहाँ मैं जाकर । ”

माँ-“ मुन्जा तोहका बात करै आवत हअ । बाबा बेवकूफ़ हयेन , बेवकूफ़ मनई पर तरस आवै चाही । चला जायअ कुछ ठाकुरसुहाती बात कै देहअ । तोहार जावै बहुत काम कै जाये , अब भगवान बड़ा आदमी तोहका बनाई देहे हयेन तब वैसेअ बर्ताव करै सीखअ । अब तोहरे और बाबा में फ़र्क़ बा एका समझि के बात किहा करअ , तू बाबा के नाहीं बात करअ इ तोहका नाहीं सोहात । ”

माँ यह कहकर चली गयी । माँ की बात से मेरे अंदर एक और चाल कौँधी । मैं अगली चाल बनाने लगा , मैं अनुराग शर्मा किसी शकुनि से कम नहीं हूँ । मामा बस इंतज़ार करो

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 269

मेरा मन बहुत उचट गया था । माँ की इतनी नाराज़गी की उम्मीद न थी । वह जब आकरामक होती है तब कुछ नहीं देखती । उसने सरे आम मेरी धज्जी उड़ा दी थी , हलाँकि उसको भी लग गया कि उसने कुछ ज्यादा ही प्रतिक्रिया कर दी थी इसीलिये वह मेरे कमरे में आयी और थोड़ा शांत भाव से बात किया । मेरा छोटा भाई थोड़ी देर में आया और बताया कि अशोक भाई आये हैं । मैं नीचे गया और वह मेरे चेहरे और हाव- भाव से भाँप गये कि कुछ मामला ठीक नहीं है । उन्होंने पूछा , “ क्या हुआ सर ? ”

मैं - “ यार , कुछ तबीयत ठीक नहीं लग रही । ”

अशोक - “ सर आप भी तो अंधेर किये हो सारा - सारा दिन पढ़ाना आसान काम है क्या ? यह सारा दिन बोलना और आप बोलते भी तेज हो बहुत

मुश्किल काम है ।”

मैं - “ अशोक , आज की क्लास केंसल करते हैं । आज पढ़ा पाना मुश्किल है । कल लेता हूँ , तुम क्लास में यह कह देना । ”

अशोक - “ ठीक है सर , कुछ चाय - वाय पी लेते हैं , आप हमारा यह सवाल देख लें ठीक लिखा है कि नहीं , फिर जाकर कह देता हूँ , आज कक्षा नहीं चलेगी । सर बहुत दिन हो गये कमिशनर साहेब के यहाँ गये हुये एक दिन चलते हैं साहेब का कुक पराठा बहुत बढ़िया बनाता है । ”

मैं - “ यहीं खा लो पराठा कहाँ वहाँ चलेंगे । ”

अशोक - “ सर वहाँ ज्यादा आनंद आता है । ”

मैंने आवाज़ दी बहन आ गयी । मैंने कहा तीन- चीर पराठा बना दो अशोक ने नाश्ता नहीं किया है ।

अशोक - “ सर चार बहुत होगा ज्यादा न बनवायें । ”

मेरे घर का माहौल बहुत तनावग्रस्त था । मेरी बहन को लगा कि इससे कुछ तनाव कम होगा । उसने बात बढ़ाने के लक्ष्य से कहा , “ आप भी खाओगे ? ”

मैं - “ नहीं मैं नहीं खाऊँगा । ”

उसी समय शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन वाला आ गया । उसकी बातचीत से लग रहा था , आहूजा साहेब ने शायद मेरे और अपने संबंध को थोड़ा गंभीरता से बता दिया था । उसने आते ही कहा , “ सर आहूजा साहेब का फोन आया था । उन्होंने आपके बारे में बताया था । मैंने आपके बारे में पेपर में पढ़ा भी है , बहुत खुशी हुयी आपसे मिलकर , आहूजा साहेब ने किसी गाँव के मकान बनाने का निर्देश दिया है , मैं आर्किटेक्ट साथ लेकर आया हूँ आप आदेश करें कब से काम शुरू करना है और कहाँ पर करना है । ”

मैंने आर्किटेक्ट के बारे सुना जरूर था पर यह मेरा पहला अनुभव था यह देखने - समझने का कि मकान कैसे बनता है आर्किटेक्ट की सहायता से । मैं कुछ सवाल करने लगा आर्किटेक्ट से । मेरे सवालों से आसानी से यह अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि मुझे इस मामले में पता कुछ नहीं है पर जानकारी होने का भ्रम फैलाने का असफल प्रयास कर रहा था । मुझे थोड़ी देर सुनने के बाद शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन के मालिक ने कहा , “ सर यह काम आप मुझ पर छोड़ दें , आहूजा साहेब का मुझ पर बहुत एहसान है और यह उनके दामाद के मामा का मकान है , मुझे एक अवसर मिला है आहूजा साहेब को प्रसन्न करने का मैं यह मौका गँवाना नहीं चाहता । ”

मैं - “ कितना दिन लगेगा मकान बनने में ? ”

शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन मालिक - “ सर यह तो मकान देखकर और कितना बनाना है यह देखकर बताया जा सकता है । मकान आज देख लेते हैं और कल से ही काम आरंभ कर देते हैं, हम काम शीघ्र बना कर दे देंगे । ”

मैं - “ कितना दिन लग सकता है, एक अंदाज़ा दे दें । ”

शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन मालिक - “ सर, बगैर देखे और पूरा मामला समझे बताना संभव नहीं पर आप कितने दिन में चाहते हैं? ”

मैं - “ एक महीना । ”

शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन मालिक - “ एक महीना कम होता है मकान बनाने में । ढाँचा बन जाता है जल्दी, पर उसकी फ़िनिशिंग में वक्त लगता है, पर मैं जल्दी करने का कोशिश करता हूँ । ”

मेरे अंदर एक चाल चल रही थी, मामा के मकान से बड़ा और शानदार मकान बनाने का ताकि उनका अहम भाव सदा के लिये चला जाय । वह हर बात पर कहते थे, मेरे मकान से बेहतर मकान पूरे डेबरा में किसी का नहीं है, इस बात में सत्यता भी है । एक बड़ा शानदार मकान, दरवाजे पर कुँआ, मंदिर, बड़ा अहाता, बैठका, जानवरों का अलग से बाड़ा ... यह सब मिलकर पूरे भवन को बहुत भव्यता प्रदान करता था । मैंने मन ही मन सोचा रामदीन मामा का मकान दो मंजिला करा देता हूँ और नक़्काशी करा देते हैं, इनकी सारी शेखी उड़ जायेगी । पर एक समस्या फिर माँ से टकराने की होगी, वह फिर नाराज़ होगी कि मेरे मकान से बेहतर मकान क्यों बनवाया? उसका बहुत लगाव अपने मायके से है, वह किसी भी हालत में यह स्वीकार नहीं करेगी कि रामदीन का मकान उसके बाबू के मकान से बेहतर हो । यहाँ संघर्ष में मैं और मामा नहीं, मैं और अपनी माँ आते जा रहे थे । मैं मामा को आहत करने के लिये उनके सारे गर्व प्रदान करने वाले संग्रहालयों पर हमला कर रहा था पर यह प्रहार माँ के पिता पर भी हो रहा था जो उसे स्वीकार नहीं होगा । वह एक बार मेरे सामने में संघर्ष आ ही चुकी है और बड़ी मुश्किल से मेरी जान बची । बाबा भैया की बेवकूफ़ी मुझे बचा ले गयी नहीं तो माँ का और मेरा संघर्ष अवश्यंभावी हो गया था । मैं एक और संघर्ष आमंत्रित कर रहा था । मैं बाबा भैया की तरह बेवकूफ़ नहीं हूँ, मुझे चूड़ी की ताकत का अंदाज़ा है, मेरी माँ की चूड़ियों के काँच तो लोहे के तोड़ देंगे । मैं असमंजस में आ चुका था । मैं उससे अगर पूछूँगा तब वह कभी इस बात की इजाज़त नहीं देगी कि घर बड़ा बनाया जाये । वह तो यही कहेगा कि दो-तीन कमरा बनवा दो क्या ज़रूरत है महल बनाने की । यह पैसा शांति का है तब भी क्यों बेवजह ख़राब करने का । माँ ने जीवन किफ़ायत में काटा है इसलिये उसको फ़िज़ुल खर्ची बिल्कुल नहीं पसंद है । अगर मैं सही तरीके से वस्तु स्थिति का आंकलन करूँ तब माँ का कहना सही ही है, रामदीन मामा गरीब आदमी हैं उनके कच्चे मकान की जगह एक काम चलाऊँ पक्का मकान

बहुत है और वह उसी में खुश हो जायेंगे । खपड़ैल से पक्के छत का परिवर्तन ही उनको आह्लादित कर देगा पर यहाँ तो मैं कोई और लड़ाई लड़ रहा हूँ । मेरी रुचि मकान से अधिक किसी के मान मर्दन की है । मैं यह सोच रहा था तभी मेरी विचार तन्द्रा शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन के मालिक के आवाज़ से टूटी , “ सर आप चिंता न करें बहुत ही बेहतर काम होगा । आहूजा साहब ने पहली बार कोई काम बोला है । मुझे स्थापित करने में उनका बहुत योगदान है । वह पेमेंट की परवाह किये बग़ैर जितना माल मैं चाहूँ भेज देते थे और कई अच्छे काम उनकी सहायता से मुझे प्राप्त हुये और अब उनके ही सहयोग से आपसे परिचय भी हो रहा , यह एक अवसर है मेरे लिये । ”

मैं “ आप गाँव चले जायें । वहाँ पर दाढ़ नाम का एक व्यक्ति मिलेगा । पूरे गाँव में कहीं भी पूछ लेंगे उसका पता चल जायेगा , वह घर दिखा देगा जहाँ काम करना है । आप उससे कोई बात न करें , बस जगह देख लें और ज़मीन पर कैसे काम होगा इस पर बाक़ी बात हम लोग बाद में करते हैं । ”

मैंने गाँव का पता और जाने का रास्ता समझा दिया । शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन मालिक ने कहा हम लोग सीधे यहीं से गाँव जा रहे , कल सुबह आप से मिलते हैं । मैंने कल सुबह आठ बजे आने को कहकर उनको विदा किया ।

माँ पड़ोस में गलचौरा करने गयी थी , यह उसका अति पिरय कार्य था । वह आसपास के पड़ोस के लोगों की समस्यायें भी सुनती थी और समाधान भी बताती थी । यह मुहल्ला आपस में बहुत जुड़ा हुआ मुहल्ला था , लोगों में आपस में आत्मीयता भी थी और बुराई भी चलती रहती थी । मेरे सेलेक्शन पर लोगों को गर्व भी था और माँ का नाम बाज़ार में पहले से ही था , अब तो वह एक बरांड बन चुका था । हर कोई यहीं कहता था कोई बच्चों को काबिल बनाना मुन्ना की माँ से सीखे । मुन्ना अवारागर्दी करता था पर ऐसा शासन उसकी माँ ने लगाया कि वह सुधर गया । अब सफलता का तो एक अलग जलवा है ही , सफलता किंवदंतियों को जन्म दे देती है । मेरी माँ के शासन पर कई किंवदंतियों का जन्म हो गया था । मेरी माँ के बारे में उसके पीछे महिलायें बहुत चर्चा करती थीं ।

श्रीमती सक्सेना - “तुमको पता है ? उर्मिला शर्मा गंगा नहाने मुन्ना को जगा कर जाती थीं और पाँच मिनट में ही वापस आकर चेक करती थीं कहीं वह सो तो नहीं गया , अगर वापस आयीं और वह सोते मिला तब जो उनके हाथ में आया उसी से प्रसादी शुरू । ”

श्रीमती रस्तोगी - “ यह बात तो है । एक बात और है बच्चों की पढ़ाई पर कभी कोई कंजूसी नहीं किया , जब बच्चों ने पढ़ाई के लिये कोई माँग की तुरंत पूरा किया । ”

श्रीमती मिश्रा- “ पूजा - पाठ मुख्य है । वह दिन - रात पूजा - अर्चना करती हैं , गंगा नहाना और भगवान के प्रति शरद्धा बहुत काम आया , नहीं तो मुन्ना इतना क़ाबिल तो न था ।

श्रीमती दीक्षित - यह उर्मिला बहुत तेज है , यह तन्त्र- मन्त्र जानती है । यह श्मशान में जाकर औघड बाबा से काला जादू कराती है । अनुराग के पापा सीधे हैं यह बहुत चालू है । जबसे बेटा सेलेक्शन पा गया है इसका दिमाग़ आसमान में चढ़ा हुआ है । सुन रहे हैं यह मकान दहेज में ले रही है , सिविल लाइंस में । यह वहीं अब जाकर रहेगी । ”

श्रीमती रस्तोगी - “ इसका वहाँ मन लगेगा ? इसको सबकी पंचायत करनी है , वहाँ कौन इसको घास डालेगा , यह हिंदी भी देशी भाषा में बोलती है , अंग्रेज़ी तो बिल्कुल नहीं जानती । ”

श्रीमती दीक्षित - “ यह बहुत चालू है , यह सब सीख लेगी । यह कोई न कोई रास्ता निकाल लेगी । ”

श्रीमती श्रीवास्तव- “ एक बात है यह किसी को सेटती नहीं । उमा सिंह का कितना रौब दाब था मुहल्ले में , वह कर्मा के ठाकुर के घर से आती है । उसके घर बंदूक वाले बहुत आते हैं , वह सब खानदानी ठाकुर हैं । वह सबको उराकर रखती है । एक बार उमा सिंह के नौकर ने उर्मिला के भाई की बुलेट का तार निकाल दिया था और उर्मिला के भाई ने एक हाथ नौकर को मार दिया । जब उमा सिंह को पता चला वह लड़ने पहुँच गयी । उनको लगा कि जैसे सब डर जाते हैं वैसे वह भी डर जायेगी , पर उर्मिला तो उर्मिला है वह बोली तुम्हारे परिवार के लोग करिंदे का लोटा माँजते थे और हमार बाबू करिंदा पालते थे । ई बंदूक - पिस्तौल इ शहरी लोगन के दिखावअ , हमरे सामने अझहिं तब बंदूक छीन के दुई फाँक कै देब । उमा सिंह ने संदेश घर भेजा , सुबह बंदूक धारी आ गये पर उर्मिला ने कहा राजा बाबू सिंह दिन भूलि गये जब कुल खानदान जेल जात रहअ और हमरे बाप के पैर पर रोवत रहअ । उमा सिंह के भाई ने उमा को ही डाँटा कि तुम किससे रार कर रही , यह सब हमारे मस्तक के तिलक हैं । उसके बाद से उमा सिंह की गुंडई चली गयी ।

श्रीमती यादव - “ पर मुन्ना सज्जन है , वह बहुत शालीनता से रहता है । ”

श्रीमती रैना - “ हम तो कश्मीर से यहाँ आये हैं । यह शर्मा जी का पूरा परिवार बहुत सज्जन है , भाई साहब जब भी मिलते हैं रुक कर हाल चाल पूछते हैं । उर्मिला बहन जी हमसे कह रही थीं मुन्ना की शादी में आपको ही सारा काम देखना है । मुहल्ले में पढ़ने का माहौल बना दिया है , हमारे बच्चे भी मुन्ना को भैया - भैया कहकर पूछते रहते हैं , वह है भी बहुत मिलनसार । ”

माँ खुद तो पंचायत करती ही थी और अपने पीठ पीछे के पंचायत की खबर भी रखती थी । उसको यह सब खबर रहती है । वह मुहल्ले से कहीं से घूम कर आयी , मैंने पूछा क्या पंचौरा किया आज ।

माँ - “ कुछ खास नाहीं , बस चली ग रहे रैना जी के इहाँ , अब तोहार बियाह होये , रैनाइन बहुत सलीकेदार हईन , हमका त एतना आवत नाहीं । रैनाइन कहिन , आप चिंता न करें मैं सब सँभाल दूँगी । ”

मैं - “ मामा के यहाँ जाऊँ मैं ? ”

माँ - “ तोहार मन नाहीं बा जाई के ? ”

मैं - “ बहुत अजीब लग रहा , अभी सुबह - सुबह बहस हुई और दिन में ही चला जाऊँ । ”

माँ - “ मुन्ना तू बहुत कड़ी बात कहि देहे हअ , केउ अपने मामा से ऐसन कहत हअ का । कुल घरे में शोक फैला होये , अब तू घरे के एकमात्र आधार हअ । तू चला जा , बिना मतलब केहू के हाई न लेई चाही । बाबा त हयेन निरा बेवकूफ़ । वैसे एहमें कुल गलती तोहार बा । भैया कुछौ नाहीं बोलेन , उ त इहाँ तक कहेन कि मुन्ना के नाम पर हम धिंगरा के खेत लिख देब । तू बतावअ तोहरे घरे केउ ऐसन काम के देय तब तू का करबअ । हर घरे में कुछ न कुछ मतभेद रहत हअ पर जौन कदम तू उठाई देहेअ उ केउ नाहीं उठावत , आपन गलती मानई में बड़प्पन बा । तू बड़प्पन देखावअ और भैया से कुछ कहानी बनाई के कहिं देहेअ कुछ । ”

मैं - “ क्या कहानी बनाऊँ ? ”

माँ - “ अब मारीच के इ बताये पड़े कि सीता जी के कैसे लुब्धियाई ? तू पूरा मारीच हअ , एह कला में त तू माहिर हअ । चला जा पर जल्दी आई जायअ , तोहार पिताजी साँझौ तोहका हेरै लागत हअ । जैसे - जैसे तोहार जाई के दिन नज़दीक आवत बा , ओऊ विचलित होई लागत हयेन । ”

माँ कोई मौका नहीं छोड़ती थी मुझको धोने का । मैंने कहा , यह तो हमारी छवि है तुम्हारी निगाह में ।

माँ - “ कौन छवि “ ”

मैं - “ मुन्ना मारीच अवतार है । ”

माँ हँसने लगी मुझसे बोली मुन्ना मिठाई लेहे जाये भैया के इहाँ ...

मैं साइकिल लेकर चल दिया मामा के यहाँ ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 270

मैं कई बरसों से मामा के यहाँ आ रहा पर पहली बार मुझे मामा के घर में प्रवेश करने में हिचकिचाहट हो रही। मुझे भी लगने लगा आकर्मकता कुछ ज्यादा ही मुझमें आती जा रही है। मैं एक तथ्य जानता हूँ जो मामा पर भारी पड़ जाती है और जिसका नाजायज़ फ़ायदा मैं उठा ले जाता हूँ, वह है मामा की पोस्टिंग मेरा परोक्ष रूप से योगदान है और वह मलाई काट रहे हैं उस पोस्टिंग के कारण। मेरे अंदर नकारात्मक परिवर्तन बहुत आ रहे हैं। मैं अब लोगों की भावनाओं का कम ध्यान देता हूँ। मैंने घंटी बजाई, दरवाजा बाबा भैया ने खोला, दो प्रतिरोधी - विरोधी - हृदय में विपरीत भावनायें रखें लोगों की निगाहें आपस मे मिली और अंदर ही अंदर एक दूसरे से संवाद हुआ, चेहरे पर भाव आये पर होंठ स्थिर रहे। मैंने उनसे आँख मिलायी और फिर आँख हटाकर अंदर आँगन के पास के बरामदे में रखी डाइनिंग टेबल की तरफ देखने लगा। बाबा भैया ने मुझको धूरा और फिर मेरे आगे बढ़ते ही उन्होंने दरवाजा बंद किया। डाइनिंग टेबल के पास पहुँच कर मैं रुक गया। वहाँ पर कोई न था, मैंने वहीं से पूछा, "कहाँ हैं सब लोग?"

बाबा भैया के चेहरे मेरुखापन तो था ही अब स्वर में भी आ गया।

बाबा भैया - "लोगन से तोहार का मतलब बा?"

मैं - "जो लोग इस घर में रहते हैं?"

बाबा भैया - "इस घर में तौ हमहूँ रहित हअ!"

मैं - "यह जानता हूँ मैं।"

बाबा भैया - "केसे मिला चाहत हअ?"

मैं - "यह कैसा सवाल है भैया?"

बाबा भैया - "जैसन सवाल तू पूछत हअ मुन्ना वैसेय जवाब हम देत हई!"

मैं - "लगता है आपको मेरा आना अच्छा नहीं लगा।"

बाबा भैया - "ई बात हम कब कहा?"

मैं - "आपने नहीं कहा, पर आपकी बात- चीत से ऐसा लग रहा है।"

बाबा भैया - "अब मुन्ना तू बड़ा आदमी बन चुका हअ, रिश्ता- नात - बड़ा-छोटा ऐकर भेद तोहका रहि नाहीं गवा बा। तू भगवान त अपने के शायद न मानत होबअ पर भगवान सदृश मानई लाग हअ अपने के।"

मैं “ ऐसा क्या किया मैंने जो आप यह कह रहे भैया । “

बाबा भैया - “मुन्ना, अपने अंदर झाँक के देख लअ , उचित उत्तर तोहका मिल जाये । “

मैं “ झाँक कर देख लिया , उचित उत्तर मिल गया , मैंने कोई गलत काम नहीं किया है । “

बाबा भैया - “ मुन्ना, ई तू नाहीं तोहरे अंदर के अहंकार बोलत बा । बड़े- बड़े लोग आवत हयेन तोहरे बियाहे के बरे , शहर के लड़िका तोहार चापलूसी करत हयेन , दाढ़ू तोहार चपरासी बनि गवा बा और तू हक्कीकत के जमीन छोड़ि देहे हअ । “

मैं “ कौन सी जमीन छोड़ दिया मैंने ? “

बाबा भैया - “ जौन कभीं नाहीं भवा गाँव में तौन कालि होई गवा । रात मे खेत जोतवाई देहअ उहौ केहू से राय मशविरा केहे बगैर । तू बुआौ से नाहीं पूछअ और कुल फ़ैसला लै लेहेअ । ई दाढ़ू जेकरे पास खड़ा होई के तमीज़ नाहीं बा ओका चाभी दै के कुल इज्ज़त- आबस्त हमार उतरावाई देहेअ । डेबरा में पिताजी के नाम के दिया जलत हअ काल तू ओका बुझाई देहेअ और पूछत हअ कौन हक्कीकत के ज़मीन हम छोड़ि दिहा । भगवान के इहाँ देर बा पर अंधेर नाहीं बा । रावणों के घमंड चकनाचूर होई गवा तोहार का बिसात बा । “

मैं “ भैया , ई त तोहार भाषा बा । केऊ घरे आई गवा बा और आप ऐसे बात कर रहे हैं । आपने ही कहा था कि हम चूड़ी नाहीं पहने हई । आप बंदूक - गोली की बात कर रहे थे । “

बाबा भैया - “ कौन गलत बात किहा । हमार इज्ज़त हमरे जान से ज्यादा प्यारी बा । केऊ हाथ लगाये त हम बर्दाश्त न करब । “

मैं - “ मैंने कोई गलत काम तो किया नहीं सिवाय इसके कि बगैर पूछे काम किया । खेत परती पड़ा था , दाढ़ू जोत के गल्ला- पाती सबमें बराबर बाँट देगा । अब वह परेशान है थोड़ा मदद चाह रहा है कौन सा गलत काम कर दिया मदद करके । “

बाबा भैया - “ तोहार ओहमें अधिकार का बा इ बतावअ, हम त नाहीं जाइत तोहरे घरे के मामले में पर पहिले बुआ अब तू हमरे घरे के मामले में शामिल होई जात हअ । हमका ई बतावअ तोहार या बुआ के कौन अधिकार बा ओहमें पड़ै के । “

मेरा दिमाग़ तेज काम करने लगा । मेरे मस्तिष्क में युकित्याँ बनने गयीं, मेरे दरैप में बाबा भैया आ रहे थे , बस थोड़ा और गहराई में ले जाकर इनको

सागर में डुबोना बाकी है , और मैं सारी विपदाओं से मुक्त हो सकता हूँ ... मैं यह सोच ही रहा था बाबा भैया ने कहा , “बतावअ न हमका ... पूरे डेबरा में जौन बुआ केहेस और जौन तू अब करत हअ केज और केहे बा ? ”

मैं - “ बाबा भैया , अब बात माँ तक न लै के जा । बात हमारे - आपके बीच रह जाये तो अच्छा है । ”

बाबा भैया - “ नाहीं त का करबअ तू ? ”

मैं - “ भैया , आपका जो मन कर रहा आप बोल रहे हो , मैं सब सुन रहा । आप हमसे बढ़कर मेरी माँ तक पहुँच गये और अब पूछ रहे हैं कि मैं क्या करूँगा ? ”

बाबा - “ हाँ पूछत त हई बतावअ न हमका । ”

मैं - “ भैया , मैंने आकर गलती की । मुझे नहीं आना चाहिये था । मैं चला जाता हूँ । ”

बाबा भैया - “ न त हम तोहका बोलावै ग रहे और न हम कहत हई तू जा । तू अपने मन से आई रहा हअ और अब अपने मन से चाहे रहअ और चाहे जा , पर हम एतना जरूर कहब मुन्ना तू कुल मर्यादा त्याग देहे हअ । ”

मैं - “ चला जाता हूँ मैं । ”

बाबा भैया - “ दरवाजा सामने बा , सिटकिनी नाहीं लगी बा ... जौन इच्छा होई तौन करअ .. न हम कहत हई तू इहाँ रुकअ न कहत हई जा । ”

मेरे और बाबा भैया की आवाज़ थोड़ा ऊँची हो गयी थी , बाबा भैया कि कुछ ज्यादा ही ऊँची थी । वह आहत थे , कुछ ज्यादा ही आहत । उनसे करोध नियन्त्रित नहीं हो रहा था । आवाज़ की तेज़ी सुनकर भाभी ऊपर के कमरे से नीचे आ गयी थीं । वह इस परिवार में नयीं थीं और ऐसा उन्होंने पहली बार देखा वह भी एक संघर्ष की शक्ल में । वह पूरी तरह आवाक थी । मैं जाने के लिये उठा उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा मुन्ना भैया हमारी क़सम आप नहीं जाओगे । आप रुको , अम्मा- पिताजी गये हैं हरिकेश मामा के यहाँ वह आ रहे होंगे । मैं क्या जवाब दूँगी उनको जब वह आयेंगे ।

बाबा भैया - “ जाई दअ ऐनका अगर जावा चाहत हयेन तब । ”

भाभी - “ आप शांत रहिये , हमको बात करने दीजिये , बिना मतलब जो मन आ रहा आप बोलते जा रहे हो । ”

इतने में मोहिता दीदी और जीजा जी घर के अंदर दरवाज़े से घुसते दिखे । वह लोग अक्सर मामा के घर ही रहते थे । मोहिता दीदी ने वस्तु स्थिति को

समझते ही सिर पकड़ लिया । वह समझदार थीं, उन्होंने कहा, “ यह क्या हो रहा है ? आप लोग आपस में ही कट- मर जाओ दो- चार बिगहा परती खेत के लिये ।”

मैं चलने लगा , मोहिता दीदी रास्ते में सामने खड़ी हो गयीं । वह बोलीं , “ मुन्ना मेरी कोई इज्जत नहीं ? मेरे बात की कोई क्रीमत नहीं है ? घर में पिताजी - अम्मा हैं नहीं , आप लोग दो भाई लड़ लिये यह कौन सी परिपक्वता है । मुन्ना, आप एक जिम्मेदार व्यक्ति बनने जा रहे हो , आपके फ़ैसलों पर लोगों का भाग्य निर्भर करेगा , आप तो समझदारी से बात करो । यह ज़िद कर लेना कि मैं जा रहा अब मैं किसी की नहीं सुनूँगा , यह तो उचित बात नहीं है । मैं , तुम , चुन्नू , बाबा कोई गलत बात करें तब उसका अंतिम निर्णय भी हम ही कर दें न पिताजी की सुने न बुआ की यह तो ठीक नहीं है और हमारे परिवार की यह परम्परा भी नहीं रही है । तुम तो मुन्ना परम्परा के आगरही हो, मुझे तुमसे एक अलग उम्मीद है । मुझको ही क्यों इस समय तुम समाज के नये उभर रहे लोगों के नायक बन चुके हो , तुम्हारा कोई भी कदम उस अपनी छवि को ध्यान में रखकर उठाना चाहिये ।”

मैं “ आप देखो भैया क्या कह रहे ? ”

मोहिता दीदी - “ मैं तो यह कह नहीं रही कि बाबा भैया सब ठीक कह रहे , वह गलत हैं या तुम गलत हो , इसका फ़ैसला तो मैं कर नहीं रही । मैं बस यही कह रही कि अम्मा- पिताजी को आ जाने दो , उसके बाद जो मन आये करना । ”

यह मोहिता दीदी कह ही रही थी कि जीजा जी ने ने भाभी से कहा , “ ज़रा चाय बनाइये दिमाग गरम कर दिया इन ब्राह्मण पुत्रों ने । मुन्ना बस हो गया , कोई और बात करते हैं । यह सब राजकाज है , हर घर में होता रहता है । ”

भाभी चाय बनाने लगीं , बात का दायरा बदलने के लिये जीजा जी ने पूछा , “ कब जाना है एकेडमी ? ”

मैं “ पाँच सितंबर को । ”

जीजा जी - “ कोचिंग चल रही है ? ”

मैं “ हाँ अभी चल रही है । ”

जीजा जी - “ कितने लोग पढ़ रहे हैं । ”

मैं “ सत्तर- अस्सी लोग तो रहते ही हैं, कभी - कभी बढ़ भी जाते हैं । ”

जीजा जी - “ कितने दिन और चलेगी ? ”

मैं “ दो - तीन दिन में ख़त्म कर दूँगा । आजकल सारा दिन पढ़ाता हूँ । ”

मोहिता दीदी - “ अकेले सारा दिन पढ़ाते हो अकेले । ”

मैं “ हाँ । ”

मोहिता दीदी - “ पढ़ा लेते हो ? ”

मैं “ हाँ, थोड़ा दिक्कत होती है पर कर लेता हूँ । ”

मोहिता दीदी - “ बड़ा स्टैमिना है मुन्ना तुम्हारे पास । ”

मैं “ दीदी, समस्या जीवन में सब सिखा देती है । अब मैं कोई चाँदी का चमच लेकर तो जन्मा नहीं । मैंने जीवन में बहुत संघर्ष देखे हैं, न केवल अपने वरन् अपनी माँ के, अपने पिता के, अपने बाबा के । मैं किसी ज़मींदार के घर तो जन्मा नहीं जहाँ पर धन- धान्य हो, जीवन की सहूलियतें हों, यहाँ तो रात के बाद की सुबह भी मुझे कोई विशेष आशा का संदेश देती नहीं थी । मैं मखमली कालीन के घरों में तो रहा नहीं हूँ, मैं तो खपड़ैल हवा से हटकर पानी को आने का रास्ता न दे दे, इसी की प्रार्थना करता रहा सारे जीवन, शायद इसीलिये मुझे बड़ी- बड़ी बातें करनी नहीं आती और धरा का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझे चलने को लिये कुछ ज़मीन दे दी । दीदी देखो, इस कालीन का रंग संयोजन कितना अच्छा है, तारीफ कारीगर की करने लायक है । ”

मेरा सधा हुआ वाक्य और अंतिम कुछ शब्द ठीक निशाने पर लग गये । मोहिता दीदी बोली, “ जो संघर्ष करता है वही जीवन मे आगे जाता है । ” मैंने आगे जोड़ दिया उसमें, “ वही नम्र होता है और उससे ही नम्रता की उम्मीद की जानी चाहिये । ”

इतने में ही मामा के मोटरसाइकिल की आवाज आ गयी । मामी घर में प्रवेश करने लगी, उन्होंने सबको एक साथ डाइनिंग टेबल पर देखा फिर मुझ पर निगाह पड़ी । मामी बोली, “ मुन्ना कब आये ? ”

मैंने पैर छूने की प्रक्रिया में कहा, “ देर हो गयी । ” मैं हर बार पैर छूने की प्रक्रिया करता था और वह हर बार यह कहकर मेरा हाथ पकड़ लेती थीं, “ मानदान पैर नहीं छूते मुन्ना । ”

मामा भी मोटरसाइकिल खड़ी करके अंदर आ गये । मुझे देखकर थोड़ा आश्चर्य मामा को हुआ । वह जैसे ही बोले “ मुन्ना कब आये ? ” मैंने अभिवादन के साथ कहा, “ मुझे देर हो गयी आये हुये । मैं अपने अपराध के लिये क्षमायाचना करने के लिये आया था । मुझसे महती भूल हुयी है और मैं शर्मिंदा हूँ अपने कृत्यों पर शायद गुनाह इतना बड़ा था मेरा कि माफ़ीनामा मैं चाह रहा लिखना पर स्याही रुठ गयी है मुझसे । मुझसे बाबा भैया ने कहा, आपको बुलाया किसने है यहाँ पर जो आप चले आये । मुझे न पता था मेरे अपने मामा के घर के द्वार जो हमेशा मेरे लिये खुले ही नहीं हुआ करते थे वरन् प्रतीक्षारत रहते थे एकाएक सदा सदा के लिये बंद हो गये । मुझे अपनी

गलती का तो दुःख भी है और पछतावा भी पर इस घर से बहिष्कृत किये जाने की असीम पीड़ा है मुझको । “

मामा - “ मुन्ना किसने कहा यह घर तुम्हारा नहीं है ? यह घर नहीं इस घर की हर वस्तु तुम्हारी है । ”

मामी - “ मुन्ना, के कहेस ई बात तोहसे ? ”

मैंने बाबा भैया की तरफ देखा और कहा , “ अब जो हो गया सो हो गया मामी । मेरी तकदीर में जितना लिखा है उससे अधिक तो मुझे मिल नहीं सकता । मेरी भी गलती है , मुझे वह नहीं करना चाहिये था जो मैंने किया पर वह अपराध अक्षम्य होगा और मेरी त्राहि माम - त्राहि माम की गुहार सुनी न जायेगी , यह मैंने कभी न सोचा था और वह भी उस घर में न सुनी जायेगी जहाँ मैंने अपनी पहली साँस ली थी । यह सब जो आज हुआ वह अकल्पनीय था और है मेरे लिये , पर क्या कर सकता हूँ जब जीवन पाप के दंश में जीना ही मेरा भवितव्य है । ”

मैंने आँसू के छूँद भी गिरा दिये । मामी पसीज गयीं । उन्होंने पूछा , “ हुआ क्या ? ” भाभी ने पूरी बात बताई । मामा को बेहोशी ऐसी आ गयी । बाबा भैया का बुरा वक्त आ गया । मामा ने न आव देखा न ताव और धारा परवाह मुख से ही नहीं नयनों से भी करोधाग्नि लिये संभाषण आरंभ हो गया ...

“ तुम होते कौन हो इस घर में कौन आये कौन न आये का फैसला करने वाले , यह घर मेरा है , मैंने मर- मर कर बनवाया है और तुम मालिक बनकर बैठ गये । मैं घर को किसी धिंगरा के नाम कर दूँगा पर तुमको एक धूर नहीं दूँगा । मैं क्या मुँह दिखाऊँगा बाबू को , उर्मिला को जब उनको पता चलेगा कि हमारे ही घर मानदान का अपमान किया गया । यह आज अफ़सर है इसलिये मैं ऐसा नहीं कह रहा , यह अफ़सर बाद में है , मेरा भयने पहले है । तुम्हारा दिमाग खराब हो चुका है । तुम इस घर से अपना झोरी- झंडी लो और निकलो । दादू ने खेत जोत लिया तो क्या हुआ ? कौन कोई गैर खेत जोत ले गया , घर का ही लड़का है जोत लिया । उर्मिला ने इतना डाटा मुन्ना को , वह कुछ नहीं बोला । तुम वहीं एक बेवकूफ़ी कर आये थे ऊट - पटांग बोलकर , उससे मन नहीं भरा तो फिर यहाँ चालू हो गये । जीवन मे न तो कुछ किया है न कर पाओगे , जिसको बात करने की तमीज़ नहीं वह और कुछ क्या जीवन में करेगा । ”

बाबा भैया की हालत खराब हो चुकी थी । मैं स्पष्ट रूप से अपनी गलती माने बिना भी पाप मुक्त हो चुका था । मैंने भाषा के भ्रम जाल से ही एक तिलिस्म बना दिया जिसमें सब लुध्द हो चुके थे । मामा ने मेरी तरफ देखकर कहा , “ मुन्ना बेटा , मुझे बहुत दुःख है कि इस तरह की बातचीत यहाँ पर तुम्हारे साथ हुयी है । मैं अनुरोध करता हूँ , यह सब भूल जाओ । इसका अब और कहीं

जिकर मत करना । यह बाबा तो बेवकूफ हैं ही , इसमें अब और क्या कहना । अगर बेवकूफ न होते तो उम्र के इस पड़ाव तक बेरोज़गार न होते । “

मैं शांत रहा । मैंने कुछ नहीं कहा । मामी ने भी मेरे मन मुताबिक ही प्रतिक्रिया दी और कहा , “ मुन्ना अब तू चला जाबअ कुछ रोज़ में तोहार बहुत याद आये । इहाँ रहत रहअ तब समय- समय पर आवत रहअ पर अब त दूर होई जाबअ । ”

मैं - “ मामी आप मामा के साथ आना एकेडमी देखने । माँ तो आयेगी ही , आप भी आना उसके साथ । ”

मामी - “ बेटवा , जरूर अउबै । इ त सौभाग्य के बात होये , हमरे बरे । ”

मैंने यही बात मोहिता दीदी और जीजा जी से भी कही कि आप एकेडमी आना । मोहिता दीदी वे कहा , “ मुन्ना हम भी जाना चाहते थे एकेडमी पर भाग्य में न लिखा था , चलो तुम्हारे ही सहारे देख लेंगे । ”

मैं - “ आप नहीं जा पायीं अपनी सारी क्राबिलियत के बाद भी और मैं जा पाया बगैर किसी खास क्राबिलियत के , इससे अधिक भाग्य की व्याख्या क्या हो सकती है । ”

मोहिता दीदी - “ नहीं मुन्ना, तुम भाग्य नहीं अपने पुरुषार्थ से गये हो । यह जो परीक्षाओं के नंबर होते हैं , वह व्यक्ति की सम्पूर्ण प्रतिभा को अभिव्यक्त करने के बजाय उन कुछ सवालों तक ही सीमित रहते हैं जो प्रम्परागत शिक्षा प्रणाली में पूछा जाता है । यह सिविल सर्विसेज़ की परीक्षा एक समेकित ज्ञान को परीक्षित करती है । एक सीमित दायरे में शायद मेरे अंक तुमसे बेहतर रहे हो पर जहाँ पर समेकित व्यापक शिक्षा पैमाना थी परीक्षण की , वहाँ तुम बेजोड़ हो । यह बात तुमने अपनी कोचिंग चलाकर और विमोचन समारोह के कार्यक्रम से और पुख्ता कर दी । तुम एक नायक हो समाज के और तुमसे अधिक प्रेरणा कोई और नहीं दे सकता किसी को , जीवन में आगे बढ़ने के लिये । ”

मैं - “ दीदी , यह आपका स्नेह बोल रहा एक भाई के प्रति । यह बहुत ही अतिशयोक्तिपूर्ण है मेरे ऐसे व्यक्ति के लिये । ”

मोहिता दीदी - “ मुन्ना, नम्रता भी तुमसे सीखनी चाहिये । ”

मैंने मन ही मन कहा , “ यह नम्रता नहीं है , एक ओढ़ा हुआ लबादा है । ”

मैंने चाय पी , पकौड़ी खाई , कुछ और अपनी तारीफ़ करवाई और साइकिल पर पैंडल पर मार दिया अगली आग लगाने के लिये ।

मामा , अब जंग मे और मज़ा आयेगा , बस मेरी चाल देखते जाओ । मुझे सड़क पर शतरंज का बोर्ड दिखने लगा जिस पर मामा चारों ओर घिरे हुये चीख़ रहे और उनके प्यादे घोड़े पर चढ़कर भाग रहे हैं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 271

मेरे मामा के घर से निकलते ही मामा के यहाँ सब चितिंत हो गये । मेरी आग लगाने की आदत से सब परिचित थे । मैं आग लगाने का काम बचपन से करता आ रहा हूँ । जहाँ पर चिंगारी बुझ रही हो और हवायें चिंगारी को शांत रहकर बुझाना चाह रही हों , वहाँ मैं फूँक मारकर आग जला देता था और अगर मेरी फूँक पर्याप्त न हो तब मैं फूँकनी लगाकर राख में बुझ रही चिंगारी को दीप्तमय कर देता था । अब जो आग लगाने के लिये मसाला ढूँढ़ता हो उसको बाबा भैया ने पेट्रोल- डीज़ल - किरोसीन - एलपीजी सब पकड़ा दिया । मेरी लगायी आग को मेरी माँ हाथ में मशाल लेकर पूरा शहर ही जला देगी , यह भय सताने लगा मामा के पूरे घर में । अब कैसे यह डैमेज कंट्रोल हो , यह एक बड़ी समस्या आ खड़ी हुई ।

मामा - “ मुन्नवा बहुत नीच बा , इ एक हाथ ककरी नौ हाथ बिया करे । जेतना भवा बा ओसे बढ़ाय - चढ़ाय के सब बताये । उर्मिला के त सींग हयै बा , बगैर लड़े ओकर सींग संतोष पउबै नाहीं करत । ”

मोहिता दीदी - “ बाबा भैया ने ठीक तो नहीं किया , पर कोई ऐसी भी बात नहीं हो गयी कि अंधेरे हो गया । बाबा भैया बड़े हैं , दो बात कह ही दिया तो क्या हो गया । क्या यह पहली बार हुआ है ? पहले भी हुआ है यह । एक बार गाँव में ही दादू ने कह दिया था मुन्ना से , तुम मत आया करो हमारे घर , तब तो कोई बात नहीं उठायी गयी । बुआ ने उल्टा मुन्ना को ही डाँटा कि तुम जहाँ जाते हो लड़ते हो , मिलजुल कर रहना सीखो । ”

मामी - “ तब के बात और रही । गाँव में चार - चार भैंस और दुई- चार गाय हमेशा दूध देते रहीं । उर्मिला के ससुराल में त कुछ रहा नाहीं । इ मुन्नवा एक गाय के कुल दूध पी लेते रहा । अपने नाम एक गाय कराई लेय रहा और भभिंसार लागै नाचय हमार गाई दुहअ जल्दी । माईउ पगलान रहत रहिन मुन्ना पर जौन कहय ई तौनै करई । तब सुख- सुविधा बरे आवत रहा ननिऔरे , पर अब त बड़का अफसर बनि गवा बा और कुल परिवार पगलान बा । ई जैसेई आग लगाये , उर्मिला पर भवानी चढ़ि जाये और पकड़े रेक्शा पहुँचि के कदरशना चालू कै दे । अब आपन सिक्का खोट बा तब हम का कही , भगवान एक पैसा के बुद्धि बाबा के नाहीं देहेन , पूर बौद्धम बनाई देहेन एनका ।

एक मुन्नवा बा बेसहूरी से सहूरी के तरफ जात बा और एक ए हयेन ... अब और का कही ... “

मोहिता दीदी - “ अम्मा, ऐसन कौनौं बड़ी बात नहीं होई गअ बा । बड़ा भाई हैं बाबा भैया । मुन्ना त जौन मन में आई गवा सब कहेन । क़ालीन के मकान में रहने वाले , ज़मींदार के घर वाले , ज़िंदगी में आरामतलब.... सब तो मुन्ना भी कहे । ”

मामा - “ सब ठीक था पर यह कहना एकदम ग़लत था , घर से चले जाओ । ”

बाबा भैया - “ हम ई नाहीं कहा , घर से चला जा । हम त बस इहै कहा न त हम कहे रहे तू आवअ न हम कहत हई तू चला जा । मुन्ना का कहेन एका केऊ नाहीं देखत बा , सब हमरै कमी निकालत हअ । रात में खेत जोतवाई देहेन , एतना बड़ा अंधेर केहेन एहपर केऊ कुछ नाहीं कहत बा । एक हमरै परिवार बा जहाँ बहिन त बहिन , बहिन के बेटवा घरे में दखल देत हयेन । हम त नाहीं जाइत ओनकरे घरे कौनौं दखल दई बरे । ”

मामा - “ बात तुम सही कह रहे हो पर करोध पर नियन्त्रण किया होता , क्या वजह थी तुमको इस तरह बात करने की । मैं बात करता इस पर । उर्मिला ने मुन्ना को कितना डाँटा , दाढ़ी की तो ख़ैर नहीं छोड़ेगी उर्मिला । मैं जानता हूँ वह कितनी साफ़ दिल है । उसको जो ग़लत लगता है उसमें वह कोई समझौता नहीं करती । मुन्ना ऐसे अंहकारी को भेजा माफ़ी माँगने के लिये , वह माफ़ी माँगने आया और तुम पगला गये । वह कहा होगा , मैं नहीं जाऊँगा । मुन्ना की बाज़ार बह रही है पर उर्मिला धकियाय के भेजे होगी पर तुमको तो कुछ समझ है नहीं , पता नहीं कब भगवान बुद्धि देझहिं । ”

मामी - “ कैसे ई मामला निपटै ? ”

मामा - “ कुछ समझि नाहीं आवत बा । ”

मोहिता दीदी - “ जैसे मुन्ना आये थे वैसे ही बाबा चले जायें और कह दें मुझसे थोड़ा गलती हो गयी है , हमारा मतलब यह नहीं था कहने का जो मुन्ना समझ रहे हैं । ”

मामी - “ अरे मुन्नवा पूरा फ़राड बा । ओका बोलै आवत हअ , इहै बोलै के त रोटी खात बा ऊ । एतना लड़िकन के लब्जियाये बा , रूपिया पीटत बा अपने इहीं गुणों के कारण । बाबा त हयेन पूर बौड़म । उर्मिला के बड़ी - बड़ी आँखिन देख के डेराई जैझहिं । देखें नाहीं हअ जब गुस्सात हअ तब बरधा अस आँखि निकारि के जैसे लील ले ऊ । बाबा अकेले ज़इहिं तब त ए सही सलामत वापसै न अझहिं । ”

मामा - “ गलती इनकी है , यह भोगें । यही जायें और अपना मामला फ़रियायें । ”

बाबा भैया - “ हम कबहुँ न जाब मुन्ना के घरे । हम काहे जाईं , गलती ओनकर बा और माफ़ी हम माँगी , ई कौन न्याय बा । इहाँ हमसे ढेर जद्द- बद्द त मुन्ना कहेन । ”

मोहिता दीदी - “ कौन जद्द - बद्द बात कही मुन्ना ने यह बताइये भैया , बात शालीनता से ही कर रहा था । व्यंग्य मार रहा था वह पर कोई अशिष्ट भाषा का इस्तेमाल तो किया नहीं उसने । ”

मामी - “ उर्मिला के नाहीं पगलाई के नाहीं लड़त मुन्ना । केतना चालबाज़ बा , दादू के फँसाई दहेस , इहाँ बाबा के फँसाई दहेस अब उर्मिला के आग लगाई दें और बैठि के तमाशा देखे । ई पूर मायावी बा , ई भूत - पिशाच रहा होये पिछले जन्मन में । तोहार पिताजी ठीक कहत हअ ओकरे बारे में ... बहुत मायावी बा । माया फैलाई के चला गवा बा , अब सब परेशान रहअ । आपन त चला जाए नौकरी करै , इहाँ सब केउ जूझ के मरअ । घरे में लगाई दहेस झगड़ा... कुल भाई - भतीजा आपस में लड़अ और उ चिट्ठी लिख के तमाशा के हाल पूछे और कहे धीरज राखअ, संपत्ति बरे झगड़ा न करअ । एक शकुनि पैदा भवा बा घरे में जब तक सब के नेस्तनाबूद न कै दे , ओकर जिउ न जुड़ाये । ”

मामा - “ दादू को लाओ खोजकर । वह कुछ करेगा । उसको लगाते हैं मामला सुलझाने के लिये । ”

मामी - “ उहै त कुल रार पैदा केहे बा , ऊ अब का करे ? ”

मामा - “ दादू के एतनी हिम्मत नाहीं होई सकत । ई सब मुन्ना के चालि बा । ”

मामी - “ मुन्ना काहे चाल करत हयेन ? ”

मामा - “ कुछ त बात बा । ”

मामा ने बाबा भैया से कहा , “ गाँव जाओ , दादू को और बाबू को लेकर आओ , परेम से बात करना । अपनी बेवकूफ़ी पर नियन्त्रण रखना । मोहिता तुम भी चली जाओ । हरिकेश के यहाँ चले जाओ उनकी कार लेकर आ जाओ । बेवकूफ़ हो तुम सब , यहाँ पूरे विभाग में सब मेरे पीछे लगे हैं हटाने को , कमिश्नर साहब का सहारा है मैं बचा हूँ । वह कोई रिश्तेदार तो है नहीं हमारे । यही मुन्ना के विवाह का संबंध है जो बचा रहा मुझको , पर कुछ समझ तो तुम लोगों को आता नहीं । ”

बाबा भैया चल दिये हरिकेश मामा के यहाँ कार लेने ।

मैंने घर की गली में साइकिल मोड़ी । मैंने साइकिल को जीने के नीचे खड़ा किया और बिना माँ से मिले ऊपर अपने कमरे में चला गया । थोड़ी देर में माँ को पता चला कि मैं आ गया हूँ । वह ऊपर आयी और बोली , “ का भवा बतायअ नाहीं । ”

मैं - “ ऐसा कुछ बताने को था नहीं , क्या बताता । ”

माँ - “ भवा का ? ”

मैं - “ छोड़ो जो हो गया सो हो गया , हर आदमी की तक़दीर होती है वही उसको मिलता है । ”

माँ - “ पहली न बुझावअ , भा का इत बतावअ । ”

मैंने कहानी बतानी शुरू की , जैसे - जैसे कहानी बढ़ती जा रही थी उसका गुस्सा सातवें आसमान पर

मैं कहानी सुना कर चुप हो गया .. कमरे में एक शांति व्याप्त हो गयी । मैंने शांति तोड़ते हुये कहा , “ मैं कह रहा था नहीं जाऊँगा पर तुम मानी ही नहीं । ”

माँ - “ हमका का पता रहा कि एतना अंधेर कै देझहिं । ”

मैं - “ तुमने उनके सामने मुझको इतना डाँटा मैं सुनता रहा , बाबा भैया गोली - बंदूक तक की बात किये मैं कुछ नहीं बोला । माना एक गलती हुयी खेत जोतवाने की पर वह खेत जोता ही गया था और तो कुछ हुआ नहीं था । यहीं पर काम रुक गया , नुकसान तो दाढ़ का हुआ , डीज़ल बेवजह लगा । मैं घर गया माफ़ी माँग रहा पर नहीं मैं माफ़ नहीं करूँगा , तुम मेरे घर क्यों आये , तुम मेरे घर से चले जाओ , हम बर्दाश्त नहीं करेंगे कोई मेरे आबरू पर हाथ उठाये । अब पता नहीं कौन सा ऐसा अपराध हो गया जो माफ़ ही नहीं हो सकता । ”

माँ चुप हो गयी । मैंने कहा , “ छोड़ो भूल जाओ सब , जो हुआ सो हुआ । अब इनके घर के राजनीति से बाहर आ जाओ । यह लोग आपस में खेत- बारी बाँटे , घर बाँटे , संपत्ति बाँटे क्या करना तुमको । ”

माँ - “ बाहर त आई जाब पर पहले एनके मोहें पर दुई किलो कोयला पोति के तब । अब आ ओनका पता नाहीं बा केसे रार लेत हयेन । ई सारी शेखी इहीं बरे का कि रोज रात के रूपिया गिनत हयेन और ई बेसहूर बाबा जेका न उठै के तमीज़ न बैठै के ऊ कहत बा हमरे घरे से चला जा । तोहार घर गअ महामाई सकाय , हमका कौन शौक बा तोहरे घरे पे आवै के । अब तू देखअ , का गति बनाइत हअ एनकर हम । ”

आग ठीक से लग चुकी थी , अब मैंने सोचा लड़ने दो इनको । मैं चलता हूँ
अपनी पढ़ाई करता हूँ , यह सब राज राज चलता रहेगा । मैं भी कोचिंग बंद
करना चाह रहा था ताकि कुछ दिन चैन से यूनिवर्सिटी रोड पर घूम सकूँ ।

उधर बाबा भैया और मोहिता दीदी नाना के पास पहुँचे । नाना पहले ही डरे
हुये थे इस घटनाक्रम से , दादू भाग कर झुलई भैया की ससुराल चला गया
था , उसको डर लग रहा था कि कहीं रात - बिरात मामा आकर उसकी
धुनाई न कर दें । नाना कार और बाबा भैया , मोहिता दीदी को देखकर और
शंकाग्रस्त हो गये । उन्होंने उन सबके आते ही कहा , “ खेत जोति लिहा
गवा बा पर आगे के कार्यवाही सबके सलाह से होये । अगर खेत बोया जाये
तब उपज के हिस्सा सबमें बाँट दिहा जाये , मेहनत - मज़दूरी हमार , खर्च
सबके और लाभ में सबके हिस्सा बराबर । हम छोटकऊ से कहि देहे हई और
ओ तैयार हयें एहमें । आपौ लोग राई- बात कै लअ , जैसन कहबअ वैसेय
करब । ”

मोहिता दीदी - “ बाबू खेत- बारी महामाई के गईन । ऊ मुद्दा अब नाहीं बा । ई
मुन्ना- बाबा लड़ि पड़ा हयेन , एकर कुछ निदान निकालअ । ”

नाना - “ भवा का ? ”

मोहिता दीदी ने पूरा क्रिस्सा सुनाया । नाना ने माथा ही पकड़ लिया और कहा
, “ बाबा ई तोहका सोहत हअ । ऊ मामदान है । हम पाँव पूजे हई , हमरे घरे
हमरे बिटिया के बच्चा लोग आवत हअ तब हम पचे कहित हअ देवता के वास
घरे में होई गवा बा और तू कहि दहेअ हमरे घरे से चला जा । ”

बाबा भैया - “ बाबू हम ई नाहीं कहा । ”

नाना - “ बाबा जौन तू कहअ ओकर मतलब इहै बा भाषा चाहे जौन होई । तू
हमका कतौ मोह देखावई लायक नाहीं छोड़अ । जब तू सारा नाटक खेलत
रहअ उहीं समय मोहिता के पति आई रहेन ओ का सोचे होइहिं... इहै न कि
इहै व्यवहार हमरेऊ संगे होये । सोचअ ज़रा दामाद के अपमान कै दअ मोहिता
बिटिया पर का गुज़रे । हम इहीं दिने बरे एतना खेत- बारी बनावा , ज़मीन
बढ़ावा , इज्ज़त- प्रतिष्ठा बनावा कि एक दिन तू सब खत्म कै दअ । ऊ
तोहार छोटवार भाई हअ , कुल के दीपक बा । हमसे लेखपाल , कानूनगो ,
नायब , दरोगा मिलै आवत हअ । ई पूरे डेबरा में नाम भवा । बसंतवा ठाकुर
तपा गुंडा बा । तोहरे चाचा के केतनी बार ऊँच- नीच बोले बा तब त तू कभौं
नाहीं आयअ आपन बंदूक - गोली लै के । उर्मिला आयेस कुंडली गुरु के जीप
से और इही दुआरे मुर्गा बनवाई के कुकड़ कूँ बोलवायेस ओसे , ई केकरे माथे
भवा इ बतावअ हमका । दुधारी गाई के चार लात सहई के बात कहीं जात
हअ और ऊ त गलती के माफी माँगै ग रहा और तू इ कै देहअ । बतावअ हम
कौन मोह लै के चली उर्मिला के इहाँ । हमैं माफ़ी दअ तू सब , हमार साहस

नाहीं बा उर्मिला के इहाँ जाई के । तू हमका पाप लगवाई देहअ अब एकर कौनौं शमन नाहीं बा । अरे मानदान घरे आई गवा इ धन्य भाग के बात होत हअ और तू ऐसन केहअ , एकौ बार न सोचअ हम पर का असर पड़े एकर । “

गाँव वाली छोटी मामी , छोटे मामा , मेरी भाभियाँ सब यह वार्तालाप सुन रहे थे , किसी को समझ न आ रहा था इसका निदान कैसे हो । माँ का नाम- रुतबा तो घर में था ही और

अब तो उसके हाथ एक दिव्यास्तर आ चुका था ।

छोटी मामी - “ उर्मिला त अब हंगामा कै दे । “

नाना - “ तू बतावअ अगर हंगामा न करै तब का करै । ओकर बेटवा बा , प्रतापी बेटवा बा , समर्थवान बा । काहे ऊ शांत रहे । “

मोहिता दीदी - “ बाबू दादू कहाँ बा । “

बाबू - “ बिटिया ऊ त उहीं दिना से गायब बा । हमका कुछ नाहीं पता बा । “

थोड़ी देर में जब सब लोग समझ गये कि दादू को ढूँढ़ा जा रहा समस्या सुलझाने के लिये न कि दंडित करने के लिये तब बता दिया कि वह झुलझ भैया की ससुराल गया है । ससुराल कर्मा के पास थी । दूसी तीन - चार किलोमीटर ही होगी । बाबा भैया चले गये उसको ले आने के लिये । दादू भैया की ससुराल में ओसारे में था जब भैया पहुँचे । वह पहले उनको देखकर घबड़ाया और भागने की कोशिश करने लगा पर जब सारा माजरा सुना तब उसके भी होश उड़ गये । उसको बाबा भैया लेकर नाना के पास आये और नाना - दादू को लेकर देर शाम तक वह लोग शहर मामा के यहाँ आये पर माँ ने उसी शाम अपना मास्टर स्ट्रोक चल दिया । नाना - दादू शहर देर शाम पहुँचे ही थे कि उर्मिला शर्मा के मास्टर स्ट्रोक ने सबको बेहोश कर दिया ।

बहुत मुश्किल है मुझको हरा कर चैन से सोना और असंभव है उर्मिला शर्मा को हराकर जीना

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 272

माँ मेरे कमरे से नीचे गयी । उसका रक्त उबल रहा था । वह पहले ही बाबा भैया और मामा पर नाराज़ थी जिस तरह वह लोग बंदूक लेकर सीधे मेरे घर आकर उलाहना दे गये थे और बाबा भैया ने “ हम चूँड़ी नहीं पहने हैं ” कहा जिस पर मामा ने कुछ नहीं बोले । मामा भी बातचीत में आकरामक तो थे ही ,

भले ही डरामा करके आँसू गिरा ही दिया हो । माँ का खून इतना खौल रहा था कि वह शाम तक इंतज़ार करने को भी तैयार न थी । उसने घर के सामने के सुरेश यादव को देखा जो पीडब्ल्यूडी विभाग में काम करता है और आज वह आफिस नहीं गया था । माँ ने उससे अनुरोध किया कि पीडब्ल्यूडी आफिस चले जाओ और वहाँ हरिकेश मिश्रा बड़ा इंजीनियर साहब है उनसे कह दो हमने तुरंत बुलाया है । वह थोड़ा हिचकिचा रहा था जाने में क्योंकि वह एक सामान्य कर्मचारी था और वह कैसे एकज़ीक्यूटिव इंजीनियर के पास जाये पर उसने कई बार उनको मेरे यहाँ आते देखा था इसलिये वह माँ के कहने पर चला गया । हरिकेश मामा ने जब सुना कि उनको तुरंत बुलाया गया है, वह सीधा मेरे घर आ गये । माँ तो इंतज़ार में बैठी ही थी उनके । हरिकेश मामा ने आते ही पूछा, “बहिन का भवा, कुछ खास बात ? ”

माँ - “भैया, कुछ खासै बात रही तबै बोलावा । ”

हरिकेश मामा - “आदेश करै । ”

माँ - “का बताई विधाता के मंजूर नाहीं रहा, अब हम ओहमें का कई सकित हुअ हम और तू । हमार मन रहा तोहरे इहाँ बियाहे के, हमका जानी - समझी लड़की चाहत रही । हम बड़-बड़वार के इहाँ बियाह करै नाहीं चाहित । तोहार रिश्ता बहुतै बढ़िया रहा । हमहूँ के एक बिटिया के बियाह करै के बा अब मुन्ना और मुन्ना के दुलहिन के सहयोग के बिना त उ होई न पाये, सोचत रहे कि तोहरे इहाँ बियाह के देहत पर ईश्वर के मंजूर रहा नाहीं, ई आपन कुंडली - फ़ोटो लै जा, अब संजोग नाहीं बनत बा । ”

हरिकेश मामा - “बहिन, ऐतना नजदीक हम पहुँच गअ हई हमका इहाँ से वापस न भेजअ । गुड़िया के बियाह के हमार ज़िम्मेदारी बा । आप और जीजा बस लड़िका - परिवार देख लअ, बाकी सब हमार ज़िम्मेदारी बा । हम जैसन बियाह बेबी के करबअ वैसई करब गुड़िया के । हमका जब स्वीकार लेहे हज तब हमका न ठुकरावअ । ”

माँ - “भैया, अब हम के होत हई ठोकरावै वाली । दुनिया हमही के ठोकवाति बा । एक साल पहिले बाबू कहने तोहसे कि मुन्ना से बियाह कै दअ, हमार मन तबै से रहा पर तब तोहार मन नाहीं रहा । अब जब तोहार मन बना और हमरौ बना तब हमार भाई - भतीजा हमका ठोकराई देहेन । अब त हम कतौं के नाहीं रहि गये । हमरे तक़दीर मे ठोकरावा जाई लिखै बा । अब तू हमरे भैया के सार हअ और सारे से अधिक ओनके बहुत नज़दीक हअ । जब हमार भाई - भतीजा हमका ठोकराई देहेन तब हम तोहरे इहाँ बियाह कै दई तब बतावअ इ रिश्ता कैसे चले । जब हमार इज़्जत नाहीं राखेन, हमरे बेटवा के घरे से निकाल देहेन तब हमार का रहि गवा । ई रिश्ता आवै वाले समय मे और समस्या पैदा कै सकत हअ । तोहरे पास नाम बा, रूपिया बा तू कतौं

और कै सकत हअ रिश्ता , ऐसन कौन सुखाब के पर लगा बा हमरे में । हई त हम गरीबै- गुरबा । “

हरिकेश मामा - “ बहिन , हम कुछ समझा नाहीं । ”

माँ ने सारा क्रिस्सा सुना दिया । हरिकेश मामा के होश उड़ते जा रहे थे जैसे - जैसे कथावाचक उमिला शर्मा का वाचन चल रहा था । माँ ने कहा , “ भैया अच्छा भअ पहिले ई होई गवा , हम त वरीक्षा के तिथि के बारे में सोचत रहे । हम हूँ चाहत रहे कि मुन्ना के वरीक्षा के देइत ताकि जाड़ा तक बियाह होई जात । अगर वरीक्षा होई गअ होत तब त हम कतों के न रहित । ”

हरिकेश मामा - “ बहिन , अब ओनकरे गलती के सजा हमरे बेबी के त न दअ । ”

माँ - “ भैया , हम सजा केहू और के नाहीं अपने के देत हई । हम कुल परिवार से संबंध खत्म करै जात हई । जे ओनसे संबंध राखे हम ओसे संबंध न राखब । हम इहौ जानत हई कि हमका सब छोड़ि देइहिं , ओ बड़ - बड़वार मनई हयेन , ओनका छोड़ि के हमरे संगे केऊ न आये । पर हमका मंजूर बा इहौ , हमार बाप बहुत डेरात हअ ओनसे , ओऊ हमार साथ छोड़ि देइहिं पर अब और कौनौ रास्ता त बा नाहीं एहमें । हमरे बेटवा के अपमान नाहीं केहेन ओ बल्कि हमरे घर के अपमान केहेन । ऊ बेचारा माफ़ी मागै ग रहा जबकि ऐसन अपराध नाहीं केहे रहा कि माफ़ी मागै के जरूरत रही पर हमही कहा कि मामा के घर बा , चला जा । अज तक केऊ माफ़ी माँगै से छोटवार त भ नाहीं बा । ऊ जाई में संकोच करत रहा पर आपन कोचिंग छोड़ि के गअ और ऐसन व्यवहार केहेन । अब भैया हम केका दोष देई सिवाय अपने गरीबी के । तोहार पैर कुल घर धोवत हअ , काहे बरे जबकि तू सार हअ , हमार अपमान होत बा जबकि हम मानदान हई , बतावअ काहे ?

अब तू धनवान हअ , बड़ा आदमी हअ और हम गरीब - गुरबा हई । भगवान केहू के गरीब न बनावै । चलअ भैया हमार संजोग नाहीं बदा रहा , अब हम तू अजनबी होई जात हई । अब तू ओनकर सार हअ , ओ बड़वार हयेन ओनहीं के पक्ष के बात करबअ और करेऊ चाही । हमें जौन कहै के रहा कहि देहा । हमका माफ़ केहेअ अगर कौनौं भूल चूक होई ग होई । ”

इसके बाद हरिकेश मामा ने बहुत बात करने की कोशिश की इस मुद्दे पर , सुलह- सफाई का प्रस्ताव रखा , यह भी कहा बाबा बेवकूफ़ है , जीजा भी तैश में आ जाते हैं पर परिवार में यह सब होता रहता है । इस तरह का कड़ा फ़ैसला लेना उचित नहीं है । आप शर्मा जी से भी राय - बात कर ले । यह मामला घर के बड़े- बुजुर्ग सुलझा दें , हमारे सबके परिवार की बहुत प्रतिष्ठा है और मुन्ना ने तो उस प्रतिष्ठा को नयी ऊँचाई दी है । यह बात लोगों तक देर- सबेर पहुँचेगी ही तब क्या असर होगा और हम सबकी बदनामी होगी । पर

माँ तो दृढ़ निश्चय किये बैठी थी । उसने हथौड़ा इतनी तेज मारा के जिस गर्म लोहे को लोहे पर रखकर सँवारा जा रहा था वह उस लोहे में ही चिपक गया ।

माँ - “ भैया , लोग जानि जाई एकर हमका कौनो डर त बा नाहीं । हम त कौनो गलत काम किहा नाहीं । दाढ़ के खेत जोतै बरे मुन्ना कहेन उहौ दाढ़ पूछेन कि जोति लई इ कहेस जोति लअ । इ त गाँव गअ नाहीं रहा । बात तोहरे दाढ़ के बीच रही । तू बंदूक लै के घरे आई गअ । हम जेतना होई सका बलभर डाँटा और इ कुछ नाहीं बोला । हम कुछ घंटा बाद कहा कि जा माफ़ी माँग के बात ख़त्म करअ , इ जावा नाहीं चाहत रहा पर हमरे दबाव में गवा और तू बड़ा आदमी हअ तू घरे में आबरू उतरबअ, और हमसे उम्मीद करअ कि हम लतियर के नाहीं सुनी । भैया जीवन में जीतब नाहीं ज़रूरी बा पर सम्मान के बरे लड़ब ज़रूरी बा । हम इहौ जानत हई कि अनुराग के पिताजी के अच्छा न लगे जौन हम करत हई पर भैया ज़िंदगी में जौन ज़मीर कहै उ करै चाही । हमका कुल दुनिया छोड़ि देई पर हम इ लड़ाई लड़ब , इ हमरे सम्मान के लड़ाई बा , हम बर्दाश्त न करब चाहे तू सब मिल के हमका बर्बाद कै दअ । हमार खून खौलत बा । दुनिया जनबै करे ई बात , हमहि सबसे बतउबै कि हमार कौनों रिश्ता नाहीं रहि गवा बा भैया से । ”

उसी समय पिताजी आफिस से घर आये और माँ उठकर चाय बनाने चली गयी । पिताजी के जाते ही हरिकेश मामा ने सारा क्रिस्सा सुनाया और अनुरोध किया मामला सुलझाने के लिये । माँ ने हरिकेश मामा को पूरे जाल में से लिया था । हरिकेश मामा को ऐसा भरम दे दिया कि विवाह लगभग तय ही था अगर यह घटना न घटती । पिताजी को कुछ खास पता न था सिवाय सुबह की घटना के । वह शांत - चित्त प्रकृति के व्यक्ति थे , वह माँ की तरह साहसी - दुस्साहसी न थे । उनको भी माँ के फ़ैसले पर आश्चर्य हुआ । माँ का फ़ैसला बहुत ही बड़ा था । पिताजी ने हरिकेश मामा को मामला सुलझाने का आश्वासन दिया और यह भी कहा यह सब क्षणिक आवेश में हो जाता है । बाबा अपरिपक्व हैं , उर्मिला आवेश में आ जाती है पर मुन्ना समझदार है । आप चिंता न करो सब ठीक हो जायेगा ।

हरिकेश मामा के जान में जान आयी । वह इस बात से बहुत प्रसन्न थे कि विवाह की बात बहुत आगे बढ़ गयी है बस यह मामला सुलझ जाये विवाह हो जायेगा । उनको पिताजी की बात से कुछ ढाढ़स हुआ पर वह मेरी माँ का स्वभाव जानते थे इसलिये बस दिलासा हुयी और यह सोचने लगे कि कैसे यह मामला सुलटा कर विवाह कर दिया जाये । वह मेरे घर में ही कुंडली फ़ोटो छोड़कर अपने घर गये और अपनी पत्नी से सारा वृतांत साझा किया । उनकी पत्नी ने भी बहुत कोसा बाबा भैया को और अपने जीजा को । हरिकेश मामा ने

अपनी पत्नी से कहा , “ चलो जीजा के यहाँ । वरीक्षा बस होने वाला ही था यह मामला फँस गया । ” अपनी बेटी की तरफ़ देखकर कहा , “ बेबी तुम्हारे तक़दीर में जो लड़का लिखा है वह पूरे परिवार को बहुत गर्व देगा । तुम्हारा जन्म ईश्वर ने हमको गौरव प्रदान करने के लिये किया है । ”

हरिकेश मामा मेरी माँ के बनाये जाल में आ चुके थे । वह मामा के यहाँ जा रहे थे मेरी माँ से सम्मोहन- वशीकरण मंत्र के साथ । वह जैसे ही मामा के यहाँ पहुँचे वहाँ सभी को देखकर समझ गये कि मामला इतना सरल नहीं है जितना वह समझ रहे । उन्होंने घुसते ही माँ के द्वारा बुलाये जाने और वार्तालाप का विवरण दिया । इस तरह के विवरण की उम्मीद किसी को न थी । मेरे नाना के तो होश ही उड़ गये । हरिकेश मामा ने बाबा भैया को बहुत डाटा । हरिकेश मामा से सब डरते थे । उनके पास अतिशय पैसा था और बाबा भैया का जीवन पीड़ब्ल्यूडी की ठीकेदारी की तरफ़ जा रहा था जिसमें उनको हरिकेश मामा की सहायता की आवश्यकता थी । मामा ने दाढ़ की तरफ देखा और पूछा बाग कितने बिगड़े का है ?

दाढ़ - “ पाँच बिगड़ा । ”

हरिकेश मामा - “ क्या दाम है बाग के खेत का ? ”

दाढ़ - “ बीस - पच्चीस हज़ार रुपया बिगड़ा । ”

हरिकेश मामा - “ ई दुई कौड़ी के खेत के लिये मुन्ना ऐसे लड़के को तुम लोग दाँव पर लगा रहे हो । तुमको पता है उसकी कीमत ? वह अनमोल है इस समय । बड़ी तक़दीर से ऐसा लड़का परिवार में पैदा होता है । जितना खेत कहो खरीद देता हूँ तुमको और बाबा को और जाओ जोतो पर पहले यह मुन्ना वाला मामला निपटाओ । तुमको पता है , विवाह तय हो गया था पर तुम लोगों की बेवकूफी से सब नष्ट हो रहा । उसका विवाह होता , लड़का घर में रहता । वह कोई आम आईएस नहीं है , देख नहीं रहे हो वह क्या कर रहा है । सारे आईएस आराम कर रहे और वह नये - नये कीर्तिमान बना रहा है । तुम सब बेवकूफ ही रहोगे पूरी जिंदगी । मुझसे कहा होता , यह खेत - बारी का मसला । बो - जोत कर कितने का गल्ला - पाती बेंच लेंगे यह बताओ । दो- चार हज़ार के गल्ला- पाती के लिये बंदूक निकाल लिये । जीजा अब तोहका का कही , ई बाबा त बेवकूफ हईयै हयेन तोहरउ मति मारी रही । ई का ज़रूरत रही बंदूक लै के गाँव जाई के । गाँव ग त गये पर शर्मा जी के इहाँ लै के चला गये और ए बैसाखनंदन बाबा कहत हयेन हम चूड़ी नाहीं पहिने हई । ओकर ताक़त पता बा ? तोहका बीच - बजार में धाघरा- चुँदरी पहिनाई के नचवाई दे । कुँडली गुरु के नाम सुने हअ ? हमका एक ठीकेदार धमकी देहेस हम कुँडली गुरु के आपन रिश्तेदार बताई देहा ओकर हूँक निकरि गै । उहै कुँडली गुरु विमोचन में मुन्ना के चपरासी के नाहीं घूमत रहा । तोहार बाप रंग

गाठे घूमत हयेन , मुख्यमन्त्री के आदमी के हटाई के बैठा हयेन केकरे माथे ? उर्मिला कहत हर्झन काल से हम सबसे कहब हमार भैया से कौनौ रिश्ता नाहीं बा , जे भैया से रिश्ता राखें हम ओसे रिश्ता तोड़ि देब । अब बतावअ के तोहसे राखे रिश्ता ?”

अंतिम लाइन पर नाना हिल गये । वह हरिकेश मामा की तरफ देखकर बोले , “ ऐसन उर्मिला कहेन ? ”

हरिकेश मामा - “ बाबू अब तोहू के फैसला केहे पड़े , उर्मिला या सर्वेश ... ऐसन काम कै देहे हयेन जीजा और ऐ बुद्धिमान के पेड़ बाबा । ”

नाना - “ जब आग - अँधियार होत हअ तब ऐसै बुद्धि भरष्ट होई जात हअ । ई धरती फ़िट जाई और एहमें हम समाई जाई । ”

नाना के आँख से आँसू गिर गये । वह कहने लगे , “ बहुत तकलीफ़ में जीवन काटा है उसने , सिवाय आत्मसम्मान के और कुछ त ओकरे पास बा नाहीं । अरे खेत - बारी जोताई ग रही त कौन सी बड़ी बात होई गै । मुन्ना त बस कहेन रहेन जोतेन त दादू रहेन । तू दादू के मारअ- पीटअ, कौन ज़रूरत रही शर्मा जी के घरे पर चाढ़ि के जाई के । हम का मोह देखउबै शर्मा जी के । केतना सज्जन आदमी हयेन शर्मा जी । ”

हरिकेश मामा - “ बाबू सज्जनता के मूर्ति हयेन ओ । हमसे कहेन कि धीरज रखिये सब ठीक हो जायेगा । ”

मामा - “ दादू , तू मुन्ना के सँभालअ । हम काल शर्मा जी से आफिस में मिलब । मामला बढ़े न चाही और केहू के कानौ- कान खबर न होई चाही । तू जा उर्मिला के इहाँ , मामला निपटावअ । ”

दादू - “ चाचा हमरे बस के अब बा नाहीं बा ई मामला । हम का कहब ? ”

मामा - “ खेत जोतै के समय ई नाहीं सोचे रहअ, तब सोचे होतअ । ”

दादू - “ चाचा हमार बुद्धिन केतना बा । हमका लाग कि खेत परती पड़ा बा , चार दाना अन्न मिल जाये हम सब आपस में बाँटि लेब । पर हमका का पता मामला इहाँ तक पहुँच जाये , हमका न भेजअ । ”

मामा - “ तब तू न जाबअ? ”

दादू - “ ई हम कब कहा , हम न जाब । हम त तोहार सिपाही हई । हम इहै कहा हमका न भेजअ पर भेजबअ तब त सिपाही जाबै करे । ”

मामा - “ जब से मुन्ना छोट के रहा तब से माई और उर्मिला दुझनौ मुन्ना बरे पागल रहत रहिन । उर्मिला से मुन्ना के अपमान बर्दाश्त नाहीं होत ई त देखतै हअ । मुन्ना समझाये तब उर्मिला मानि जाये । ”

बाबू- “ अच्छा भअ आज मुन्ना के नानी नाहीं हई , ई दुःख से ओनका मुक्ति मिलि गई । तू पचे पता नाहीं केतना और दुःख देबअ हमका । ”

दादू रात के अँधेरे में आया और चुपचाप ऊपर मेरे कमरे में आया । वह माँ से डर रहा था । मेरे पास आकर पूरा हाल सुनाया । मैंने सारा हाल सुनते ही कहा ... “ क्या उर्मिला शर्मा तू तो पूरी मेरी माँ निकली ... न एक गोली चलायी और न तलवार रंगा अपना पर हर तरफ खून ही खून चिराग बुझने के पहले ही दुश्मन खेमे के आदमी से खेमा बदलवा कर उसकी तलवार लहू से रंग दी ... मैं चार सौ बीस अगर हूँ तब तू तो चार सौ बीस धन चार सौ बीस हो ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 273

मैं सुबह 4 बजे उठा । मुझे अपनी कक्षा लेनी थी इसलिये मैं उठकर पढ़ने लगा । माँ ने जलती बत्ती देखी वह चाय लेकर आयी । वह अब तभी चाय सुबह लेकर आती थी जब मेरी बत्ती जलती देखती थी , नहीं तो वह गंगा नहाने चली जाती थी । वह जैसे ही मेरे कमरे में आयी उसने मुझे पढ़ते हुये और दादू को सोते ही देखा । माँ ने पूछा, “ ई नासपीटा कब आई गवा । ”

मैं - “ देर रात में आया । ”

माँ - “ का कहत रहा ? ”

मैं - “ हरिकेश मामा गये थे और सारी बातचीत बतायी और यह भी कहा बाबू से कि अब आपको भी उर्मिला और सर्वेश में से एक को चुनना होगा । ”

माँ - “ बाबू कब आयेन ? ”

मैं - “ कल मेरे आने के बाद उनके घर मंत्रणा हुयी और मामले के निपटारे के लिये बाबू को बुलाया गया । बाबू भी दुःखी हैं । उनको इस तरह के संघर्ष हो जाने की उम्मीद न थी , बारी के खेत जोते जाने पर । ”

माँ - “ ई पगलैटी के उम्मीद केहू के नाहीं रही । माना तोहसे गलती होई गै , हम त कहतौ हई कि मुन्ना गलत केहेन डाट- डपट दिहा , भेजा कि माफ़ी माँगे के मामला ख़त्म करअ पर तोहरे सिरे भवानी चढ़ी बा । तू उतार हअ झगड़ा बरे , त आवा करअ झगड़ा । हम झगड़ा केहू से करित नाहीं और जे करई आवत हअ ओसे डेराई के पराइत नाहीं । ”

माँ की आवाज सुनकर दादू जग गया । उसने माँ के पैर छुआ । माँ बोली , “ तोहार सब के पेट भरि गवा ? न भरा होई त और भरि लअ । । ”

दादू - “ बुआ , हमका का पता रहा बात इहाँ तक बढ़ि जाये । ”

माँ - “ तोहरे मोहे दही जमी रही , हमसे एक आखर पूछ नाहीं सकत रहअ । ई मुन्ना कालि के लड़िका ओनका का पता उचित - अनुचित के । अब त दुई फाँक में रिश्ता होई जाई चाहे एहर रहअ या ओंहर । सुना हअ बाबू आई हयेन । ”

दादू - “ हाँ बुआ । ”

माँ - “ कब आयेन । ”

दादू - “ आज साझे के । ”

माँ - “ ओ काहे आई हयेन ? ”

दादू - “ चाचा बोलवायेन हअ । ”

माँ - “ काहे बरे ? ”

दादू - “ सुलह - सफाई बरे । ”

माँ - “ अब का बचा बा सुलह - सफाई बरे । ”

दादू - “ बुआ , इ तनिक कठोर फ्रैसला होई जाये । ”

माँ - “ काहे ? तोहका मोह लागत बा अपने चाचा से , ओनकर साथ छोड़ा नाहीं चाहत हअ का ? उठावा आपन झोरा - झंडी और उहीं रहअ । अगर ओनसे संबंध राखै के होई तब इहाँ न दिखाई पड़ा । बाबू आयेन कौन साधन से ? ”

दादू - “ बाबा भैया और मोहिता दीदी ग रहिन हरिकेश मामा के कार से उहीं से हम सब आवा । ”

माँ - “ जिउ जुड़ाई गवा तोहार ? महाभारत टीवी में देखि के मन नाहीं भरा रहा का ? बगैर असली महाभारत देखें चैन तोहका नाहीं रहा । ऐतना तोहार हिम्मत होई गै कि बगैर हमसे पूछे गए और खेत जोति लेहेअ । ”

दादू - “ मुन्ना से पूछे रहे । ”

माँ - “ मुन्ना के हयेन ? एनकर कौन हक्क बा उहाँ के जाइजाद और उहाँ के मसलन में । इ बिटिया के बेटवा हयेन और एनका उहीं हक से काम करै चाही । एक ठे इम्तिहान का पासि कै लेहे हयेन ऐ शिव होई ग हयेन । बड़ा दर्शन पढ़े के दावा करत हयेन , एनका एतनीं नाहीं पता बा केउ शिव नाहीं होई सकत । विध्वंस और सृष्टि के अधिकार सिवाय शिव के केहू के पास नाहीं बा पर एक परीक्षा का पास कै लेहेन ऐ महादेव बनि बैठा हयेन । ”

दादू - “ बुआ गलती होई गई । ”

माँ - “ तोहरे एक लाइन कहि देहे से सब पाप के अंत होई जाई का ? जौन आग लगाये हअ तापअ ओका और आग कमजोर होई जाए त ए बैठा हइय हयेन लै के फुँकनीं तेज करै बरे । ”

माँ हमको और दादू को डाँट तक चली गयी गंगा नहाने । थोड़ी देर बाद पिताजी मेरे कमरे में आये । वह मेरे कमरे में प्रायः नहीं आते थे । माँ तो मेरे कमरे में धूमती ही रहती थी । जब उसका मन नहीं लगता था वह मेरे कमरे में आकर मुझसे बात करने लगती थी पर पिताजी शायद ही कभी आये हो । उन्होंने आते ही दादू से कहा तुम नीचे जाओ । दादू के जाने के बाद थोड़ा गंभीर चेहरे के साथ मुझसे कहा , “ यह सब क्या हो रहा है ? ”

मैं - “ कुछ तो नहीं हो रहा है । ”

पिताजी - “ यह क्या ड्रामा कर रहे हो तुम ? ”

मैं - “ कौन सा ड्रामा ? ”

पिताजी - “ इतने भोले तो तुम नहीं हो जितना दिखने की कोशिश कर रहे हो । तुम्हारा इस्तेमाल किया जा रहा है और तुम इस्तेमाल हो रहे हो , तुमको यह समझ नहीं आ रहा है ? यह खेत - बासी - मकान का उनका आपसी झगड़ा है , यह सन 73 से चल रहा है जब सर्वेश बलिया में पोस्टेड थे । वह तबसे अपना हक्क माँग रहे हैं , तुम तब बहुत ही छोटे थे । एक दृष्टिकोण से वह सही हैं और दूसरे से वह गलत हैं पर तुमको इससे क्या मतलब । अगर संबंधों में पद की दृष्टि से देखें तब न तो तुम्हारी माँ का न तो तुम्हारा कोई अधिकार बनता है इसमें हस्तक्षेप करने का । चलो वह बहन है उसका कुछ अधिकार है यह मान लिया पर तुम कहाँ से आ गये बीच में । मुन्ना यह जो सफलता मिली है तुमको , तुमसे संभल नहीं रही है । तुम लगातार सफलता पर सफलता प्राप्त कर रहे हो और ईश्वर तुम पर मेहरबान है पर उसकी मेहरबानी उस मुन्ना पर थी और है जो लगनशील है , परिश्रमी है और छल रहित है । पर यह छलिया मुन्ना को वह बहुत देर तक अपनी कृपा नहीं देगा । ”

मैं - “ कौन सा छल किया मैंने ? ”

पिताजी - “ मुझे इस बात का एहसास है कि तुम उन सबके खिलाफ़ आकरामक हो रहे हो जिन्होंने पहले तुम्हारी क्षमताओं पर सवाल उठाया था । पर जिन लोगों ने तुम्हारी क्षमताओं पर सवाल उठाया था वह सब लोग इस समय तुमको सिर पर उठाये हैं । पहले तुम इस लायक़ थे ही कि तुम पर सवाल उठाया जाये । अपना इतिहास देखो न , क्या है तुम्हारा इतिहास ? उस कृत्य पर लोग सवाल उठायेंगे ही पर तुम अपने वर्तमान से अपना भूत बदलना चाहते हो । मुन्ना , वर्तमान से भविष्य बदलता है भूत नहीं । तुम इस

अपने अंदर जल रही अग्नि को शांत करो । सर्वेश बेवकूफ हैं उनको अपने गुस्से और ज़बान पर कोई नियन्त्रण नहीं है । उनके द्वारा पहले की कही गयी बातों पर तुम एक युद्ध की पूर्व पीठिका का निर्माण मत करो । “

मैं - “ कौन सा युद्ध मैं आमंतिरत कर रहा ? ”

पिताजी - “ युद्ध होने में बचा क्या रहा गया ? पहले तुम्हारी माँ तुमको अपनी उँगलियों पर नचाया करती थी और अब तुम उसे नचा रहे हो । तुम जैसा चाह रहे हो वैसा ही हो रहा है । तुम सर्वेश के यहाँ गये ही क्यों , वह भी झगड़ा होने के कुछ ही घंटों में । तुमको बोलना आता है और बाबा बेवकूफ हैं , तुमने उनको अपने टरैप में ले लिया और वह गलती कर गये , जबकि हक्कीकत यह है कि तुम चाहते थे बाबा यही करें जो वह कर गये । मुन्ना , मैं अगर तुम्हारे और बाबा के बीच के संघर्ष को विश्लेषित करूँ तो एक निष्कर्ष साफ दिखता है , बाबा बेवकूफ हैं पर दिल से ठीक हैं , तुम जहीन हो पर दिल से ठीक नहीं हो । ”

मैं - “ यह आप निष्कर्ष कैसे निकाल रहे हैं ? ”

पिताजी - “ मुन्ना , तुम्हारी विश्लेषण क्षमता अद्वितीय है , मेरे जाने के बाद मेरी बात पर गौर करना , तुम भी इसी निष्कर्ष पर आओगे , अगर पूर्वाग्रह से मुक्त होकर सोचोगे । यह झूठ क्यों बोला गया ? ”

मैं - “ कौन सा ? ”

पिताजी - “ हकिकेश की बेटी से तुम्हारा विवाह लगभग तय हो गया था , पर यह मुद्दा आ गया इस लिये अब विवाह नहीं होगा । ”

मैं - “ विवाह मैं तो तय करूँगा नहीं , वह तो आप या माँ करेंगे । क्या पता वह करना चाह रही हो । ”

पिता जी - “ ठीक है , मैं तुम्हारा विवाह उसी की बेटी से करूँगा । तुम याद रखना तुमने ही कहा था यह । यह मत कहना कि मेरा विवाह ठीक नहीं किया गया । मुन्ना , तुम सबको बेवकूफ समझने लगे हो । सुरुचि और प्रतीक्षा को छोड़कर तुम हरिकेश की बेटी से विवाह करोगे ? एक अति महत्वाकांक्षी अनुराग शर्मा एक अति सामान्य लड़की से विवाह करने जा रहा , वह भी तब जब क्राबिल लड़कियों के स्वप्न का वह राजकुमार है । मुन्ना मैं तुमको जानता हूँ जब तुम घुटनों से चलने की कोशिश करते थे , तुम बेहतर फूल को फूलों के गुच्छों से निकाल लेते थे जब तुमको रंगों और सीरत की समझ न थी । मेरे पिताजी कहा करते थे कि मैंने बहुत से बच्चों को पढ़ाया है पर मुन्ना नायाब है , वह यह तब कहा करते थे जब कि तुम्हारी मार्क शीट यह कहने वालों से सवाल करने लगती थी , एक अध्यापक ने कुछ तो देखा होगा तुम्हें । ऐसा लड़का एक येनकेन प्रकारेण बीए पास करने वाली से विवाह करेगा । ”

मैं - “ माँ ने कह दिया होगा , क्या खास बात हो गयी । ”

पिताजी - “ बहुत बड़ी बात हो गयी है । जिस उम्र से तुम गुजर रहे हो उससे हर पीढ़ी गुजरती ही है । मुझे पता है इस उम्र के दरम्यान भावनाओं का उभार कैसा होता है । इस समय अपनी उपलब्धियों के कारण तुम नायाब हो चुके हो । मैंने सुरुचि के पिता से कहा , और भी ब्राह्मण लड़के हैं आप वहाँ कोशिश कर लें । उनके पिता ने कहा , लड़कों की कोई कमी नहीं है और मेरी लड़की के लिये अच्छे रिश्ते चलकर खुद आ रहे हैं पर जो बात अनुराग में है वह किसी और में नहीं है । बात मेरी बेटी के विवाह की नहीं है , बात अनुराग - सुरुचि के विवाह की है । कमिश्नर साहब के नज़दीक तुम इसलिये नहीं आये हो कि तुमने परीक्षा पास की है बल्कि इसलिये आये हो कि तुम्हारे पास बहुत से और गुण हैं । हरिकेश भी इसी लिये परेशान हैं । उन्होंने घर में अपने जाकर बताया होगा यह बात । यह अभी कहा होगा । बस यह मामला निपटा और विवाह हुआ । उस लड़की के बारे में भी सोचो जो तुमको बेवजह पति के रूप में देखने लग गयी होगी , यह निर्मूल आशा क्यों दी जा रही । युद्ध का भी एक नियम होता है पर तुम माँ - बेटे ने सब ताक पर रख दिया है । ”

मैं - “ माँ को समझाइये । ”

पिताजी - “ उसको लड़ने में मज़ा आता है , वह मुझसे भी लड़ लेगी , थोड़ा लड़ने का मज़ा उसका और बढ़ जायेगा । ”

मैं - “ क्या चाहते हैं आप मुझसे ? ”

पिताजी - “ जो आग तुमने लगायी है वह तुम ही बुझाओ । ”

मैं - “ कैसे ? ”

पिताजी - “ यह काम तुम कर ले जाओगे , अगर चाहोगे । तुम्हारे पास आग लगाने और बुझाने दोनों की क्षमता है , बस यह ध्यान रखना तुम्हारी माँ का सम्मान रह जाये , अगर वह न रहा तब आग नहीं बुझेगी । ”

मैं - “ ठीक है , कोशिश करता हूँ । ”

पिताजी - “ सावधानी से करना , कई मोर्चे तुमने खोल दिये हैं । अभी कुछ दिन शांत रहो , वक्त भी कई बार समस्या खुद ही हल करने लगता है । ”

पिताजी चले गये , उनकी परिपक्वता हिमालय की तरह है , उसका ऊपरी छोर ही आँहाद देने लगता है । मैं अपनी कक्षा के लिये पढ़ने लगा । माँ गंगा नहा कर आ गयी , वह अपनी आरती गाने लगी जिसकी आवाज़ मेरे कानों में पड़ रही थी । आरती के बाद पिताजी की आवाज़ सुनायी देने लगी वह दाढ़ को डाँट रहे थे । मुझे भी पिताजी के बात में सच्चाई लगने लगी । हरिकेश मामा

की बेटी से विवाह सुरूचि , प्रतीक्षा को छोड़कर यह सोचकर ही मैं सिहर गया । अभी तो मैंने इश्क़ भी नहीं किया है , सिर्फ़ किस्से ही सुने हैं इश्क़ के । यह इश्क़ कैसे होता है , क्या होता है इसमें , यह सोचते - सोचते मैं कपड़े पहनने लगा अपनी क्लास के लिये । मैं क्लास में पहुँचा , एक खचाखच भरी क्लास ...

मैंने कहा , “ इतनी भीड़.....”

दिनेश - “ सर , हर कोई बेताब है जानने को भारत का विभाजन क्यों हुआ और कौन है वह जिसने एक सीधी अपराकृतिक रेखा खींच दी हमारे बीच पर इतिहास के पन्नों में छुपा है । ”

मेरी कक्षा आरंभ हो गयी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 274

मैं कक्षा में कुछ बोलूँ दिनेश ने कहा , “ सर गाँधी जी और विभाजन पर पहले आप कुछ बता देते उसके बाद आप ऐतिहासिक तथ्यों की ओर जाते तो बेहतर होता । यह अंग्रेजों की बाँटों और राज करो की नीति तथा साम्प्रदायिकता विभाजन के लिये ज़िम्मेदार रही है यह तो एक सामान्य सा तथ्य हो गया है आपके इतने पढ़ाने के बाद । ”

मैं - “ क्या चाहते हो तुम ? ”

दिनेश - “ एक गहन विश्लेषण गाँधी को मूल में रखकर । ”

मैं - “ कांग्रेस को मूल में रखने से काम नहीं होगा ? ”

दिनेश- “ सर कांग्रेस को मूल में रख लेंगे तब तो वह विचारधारा प्राधान्य होने लगेगी कि पटेल और नेहरू समेत कांग्रेस के तमाम नेता सत्ता के लोभी हो चुके थे , उन्हें सत्ता से दूर रख पाना असंभव था , जिन्ना अपनी ज़िद पर अड़े थे कि कांग्रेस एक हिन्दुवादी संगठन है उसको अपने कोटे से मुसलमान को नामित करने का कोई अधिकार नहीं है , मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व सिर्फ़ मुस्लिम लीग करती है और बिराटिश हुक्मरान लीग को बढ़ावा दे ही रहे थे , विभाजन अवश्यंभावी हो गया । ”

मैं - “ तुम चाह रहे मैं गाँधी पर विभाजन का दोष मढ़ दूँ । ”

दिनेश - “ नहीं सर , मैं यह नहीं कह रहा । आप उनको दोषी करार दो या दोष मुक्त यह आपका एक अध्यापक एवम् विचारक के रूप में अधिकार है ।

मैं आपके विश्लेषण को सुनने का आग्रही हूँ । ”

अशोक - “ यार , यह बौद्धिक फ़ितूर छोड़ो जो परीक्षा में काम का है , वह पढ़ते हैं । ”

मैं “ यह परीक्षा में काम का क्यों नहीं , यह सवाल क्या नहीं आ सकता ... विभाजन एक त्रासदी थी , एक अनिवार्य त्रासदी । क्या उस त्रासदी को ढाला जा सकता था ? इस त्रासदी को टालने में असफलता गाँधी के नेतृत्व की असफलता थी ... ”

यह सवाल क्यों नहीं आ सकता ? ”

अशोक - “ सर पूछने को तो कुछ भी पूछ सकते हैं यही सवाल हल कर दीजिये । हम लोग कहीं भी घुसेड़ कर लिख देंगे अगर गाँधी पर कोई सवाल आया । ”

मैं हरिजन में गाँधी जी ने 20 जुलाई 1947 को एक लेख लिखा , अहिंसा को हृदय से स्वीकार न करना ही विभाजन का मूल कारण था और गाँधी जी ने अपनी जवाबदेही को स्वीकार किया था । अपने नेतृत्व पर टिप्पणी करते हुये गाँधी जी ने कहा मेरे नेतृत्व में 30 वर्षों में सिवाय सत्याग्रह के कुछ और न हुआ । यह सत्याग्रह स्वतन्त्रता के लिये तो ठीक था पर इसमें अहिंसा की तरह लोगों का हृदय परिवर्तन करने की शक्ति न थी । लोग सत्याग्रह के समर्थक थे पर अहिंसा के पाठ को समझने और ग्रहण करने को तैयार न थे । मैं और कांग्रेस विचारधारा के स्तर पर कभी एक नहीं रहे जबकि मैं पिछले तीस वर्षों से इसका नेतृत्व कर रहा । मेरे लिये अहिंसा एक धर्म है पर कांग्रेस ने इसको कभी पूर्ण रूपेण स्वीकार नहीं किया । एक नीति के रूप में मैं हमेशा अहिंसा का आग्रही रहा पर कांग्रेस न रही । हमारी जो अहिंसा थी भी वह बहादुरों की अहिंसा न थी । यह एक बहस का मुद्दा हो सकता है अहिंसा की विधि के ग़लत इस्तेमाल के परिणाम थे हिंसा और विभाजन । अपनी असफलता को लेकर गाँधी संवेदनशील भी थे और ईमानदार भी । गाँधी की अहिंसा की विचारधारा हिंदू- मुस्लिम एकता में कोई स्थान न बना पायी । यह विभाजन का कारण मैं मानता हूँ । यह आरोप गाँधी पर लगाया जाता है और जे बी कृपलानी ने तो स्पष्ट रूप से कहा , अहिंसा और असहयोग में ऐसा कोई निश्चयात्मक कदम नहीं था जो एक इच्छित लक्ष्य की ओर ले जाता । पर कौन से इच्छित लक्ष्य की बात कृपलानी कर रहे , आज़ादी या विभाजन । कृपलानी अपनी टिप्पणी में खुद ही स्पष्ट नहीं है । गाँधी सामूहिक आधार पर समस्या का समाधान कर पाने में विफल रहे । हकीकत यह है , विभाजन क्यों हुआ , इस सवाल का जवाब गाँधी से ज्यादा पार्टी और जनता को देना चाहिये । गाँधी ने 4 जून 1947 की अपनी परार्थना सभा में कहा विभाजन जनता के फ़ैसले का सम्मान है । कांग्रेस नहीं आप विभाजन चाहते थे । एक लोकतान्त्रिक संस्था कांग्रेस देश की जन प्रतिनिधि होने के नाते जन

धारणा के विरुद्ध कैसे जा सकती थी । मैं देश विभाजन के विरुद्ध था, मैंने बार - बार कहा देश का विभाजन नहीं होना चाहिये पर जनता का समर्थन प्राप्त नहीं हुआ । जब मैं देश विभाजन का विरोध कर रहा था तब मुझे लगा कि आप लोग मेरे साथ हो पर मुझे अफ़सोस हो रहा यह कहते हुये मैं देश विभाजन का विरोध कर रहा था और आप लोग धार्मिक आधार पर रक्तपात कर रहे थे । मैं किस वर्ग को दोष दूँ, एक वर्ग पूरा मेरे साथ आ गया होता तो यह विभाजन न होता । सारे गैर मुस्लिम ही मेरे साथ आ गये होते तो यह विभाजन न होता । गाँधी जी के इस कथन से एक बात साफ़ झलकती है वह घोर निराशा में थे और यह कथन एक बात की और इशारा करता है कि मुसलमान उनसे दूर जा चुके थे । उन्होंने कहा, मुसलमान उनको अपना दुश्मन मानने लगे थे इसलिये मेरी आशा के केन्द्र हिंदू ही थे । मैं जिसकी ओर आशा से देख रहा था न तो वह मेरे साथ विभाजन के विरुद्ध आये और न ही मेरी हिंसा समाप्त करने की अपील पर कोई ध्यान दिया ।

एक अप्रैल 1947 की प्रार्थना सभा में गाँधी का दर्द एक सम्पूर्ण वेदना को समाहित किये हुये छलक पड़ा, अब मेरी कोई नहीं सुनता । एक समय था जब मेरी बात लोगों के लिये अटल होती थी, पर आज कांग्रेस, हिंदू, मुसलमान कोई मेरी नहीं सुनता । गाँधी ने एक वार्ता के दौरान यह भी कहा, हर व्यक्ति मेरी प्रतिमा को माना पहनाने को आतुर है, कोई मेरी सलाह सुनना नहीं चाहता । जून 1947 की प्रार्थना सभा में गाँधी ने कहा, यदि मैं कांग्रेस के खिलाफ़ विद्रोह करता हूँ तो इसका मतलब समूचे देश के खिलाफ़ विद्रोह होगा । एक काव्यात्मक रूप में यह कहा गया गाँधी रेत के कण में दुनिया को देख सकते थे ।

यह भी लोग कहते हैं जनांदोलनों के अप्रतिम नायक गाँधी ने कांग्रेस को दरकिनार करके विभाजन के विरुद्ध आंदोलन क्यों नहीं किया ? गाँधी एक अहिंसक जन आंदोलन के पक्षधर थे, पर देश में व्याप्त हिंसा के माहौल ने गाँधीवादी विधान के आंदोलन की संभावनाओं का अंत कर दिया । आप लुई फ़िशर की लिखी रचना, “द लाइफ़ आफ महात्मा गाँधी” को पढ़ें, मैं पेज नंबर भी बता देता हूँ, पेज नंबर 435, एक वार्तालाप लिखा है ।

लुई फ़िशर ने पूछा, यदि संविधान सभा विफल हो जाती है, क्या तब आप सविनय अवज्ञा आंदोलन नहीं करेंगे ? “

गाँधी जी का जवाब नकारात्मक था, इतने हिंसात्मक माहौल में सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने की बात मैं सोच भी नहीं सकता ।

यह भी एक तथ्य है 1946-47 में गाँधी जी के नेतृत्व का स्पष्ट रूप से ह्रास हो रहा था । कांग्रेस के निर्णयों में गाँधी जी की भूमिका नहीं रह गयी थी ।

गाँधी जी में वृद्धावस्था के लक्षण भी आने लगे थे । कैबिनेट मिशन पर उनकी प्रतिक्रिया उचित न थी, पहले तो वह उत्साहित थे फिर संशय व्यक्त करने लगे, यह उनकी सहज प्रवृत्ति से मेल नहीं खाता । सन 1934 के आंदोलन की विफलता और कस्तूरबा की मृत्यु ने भी उनको तोड़ दिया था । जो गाँधी की हैसियत हुआ करती थी वह अब न रही, सन 1934 में कांग्रेस की सदस्यता से त्याग पत्र देने के बाद भी गाँधी जहाँ भी जाते थे, कांग्रेस के नेता पीछे दौड़े चले जाते थे निर्देश लेने के लिये पर अब वह दरकिनार थे । गाँधी ने समय की नज़ाकत को समझते हुये सार्वजनिक जीवन से हटने का फ़ैसला किया । 24 जून 1946 को उन्होंने कहा था, आप लोगों को अपने विवेक के अनुसार फ़ैसला करना चाहिये । जब मैं खुद अँधेरे में हूँ तब आप लोगों को कैसे प्रकाशित कर सकता हूँ । कांग्रेस- मुस्लिम लीग के बीच संधि वार्ता के दस्तावेज पर उन्होंने 9 अक्टूबर 1946 को अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी थी, लेकिन बाद में उन्होंने महसूस किया कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था । साम्प्रदायिक दंगे के समय वह स्वयं को असहाय पा रहे थे । मार्च 1947 में वह माउंटबेटेन से मिले और अपना पुराना प्रस्ताव जिन्ना को प्रधानमंत्री बनाने और कैबिनेट के मंत्रियों का चुनाव जिन्ना पर छोड़ देने को कहा । जिन्ना के लिये कुछ शर्तें भी थीं, अमन चैन क्रायम रखना, नेशनल गार्ड को भंग करना, पाकिस्तान के लिये दबाव तो डाल सकते थे पर बल प्रयोग नहीं कर सकते थे । गाँधी जी इस प्रस्ताव के द्वारा जिन्ना को शस्त्रविहीन कर देना चाहते थे । पर गाँधी को अपने प्रस्ताव पर समर्थन न मिला । अंततः 11 अप्रैल 1947 को गाँधी जी ने माउंटबेटेन को लिखा कि वार्ता से मुझको अलग कर दिया जाये और भविष्य में कांग्रेस कार्यकारिणी ही एकमात्र सलाहकार होगी । 16 मई 1947 को गाँधी जी ने जिन्ना को मनाने का एक और प्रयास किया, पर प्रयत्न व्यर्थ गया । अब गाँधी जी को दृढ़ विश्वास हो गया, विभाजन को टालने पर चर्चा करना व्यर्थ की क्रवायद है । आप उस समय की पत्रकारिता और समाचारों को खँगालें तब आपको मिलेगा कि यह कहा जा रहा था, जिन्ना को प्रधानमंत्री बनाने के मुद्दे पर कांग्रेस और गाँधी में अलगाव हो गया, जिसका गाँधी ने बार- बार खंडन किया था ।

अशोक - “ सर आपकी बात ये ऐसा लग रहा है कि अगर जिन्ना को प्रधानमंत्री बना दिया गया होता तब विभाजन रुक जाता । ”

मैं - “ यह तो मैंने कहा नहीं, मैं तो सिर्फ़ यह कह रहा कि घटनाक्रम किस तरह चल रहा था । विश्लेषण का भाग अभी बाकी है, पर तथ्य समझे बगैर हम विश्लेषण क्या करेंगे ? यह लोग जो कहा करते हैं कि गाँधी ने भारत को दो भागों में बाँट दिया नेहरू को राज सौंपने के लिये यह उन लोगों की अज्ञानता को दूर करने के लिये सुस्पष्टता का एक प्रयास है । आप इतने भी अज्ञानी न बन जाओ कि इतिहास की प्रवाहमान धारा की ही अनदेखी कर दो । ”

दिनेश - “ सर यह जिन्ना को प्रधानमंत्री बनाना संभव था ? ”

मैं - “ यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है । मेरे हिसाब से इस पर अमल बहुत मुश्किल था । जिन्ना को प्रधानमंत्री बनाने में बहुत अड़चनें थीं । इस प्रस्ताव से जिन्ना की तुष्टि भले होती हो , खुद जिन्ना पाकिस्तान के प्रस्ताव के मुद्दे पर चर्चा करने के पक्ष में नहीं थे । इसके अलावा पाकिस्तान की माँग करने वाले उसके एकमात्र प्रवक्ता की मनःस्थिति को समझने में गाँधी भले ही सफल रहे हों , किसी व्यक्ति को इतिहास को अपनी जीवनी बनाने की अति भी नहीं करनी चाहिये । सन 1946- 47 में पाकिस्तान के पीछे जो ताक़तें थीं वे एक आत्माभिमानी महत्वाकांक्षा से अधिक शक्तिशाली थीं । सन 1937 के बाद उग्रवादी साम्प्रदायिकता उपजाने और 1940 में पाकिस्तान बनाने का संकल्प करने के बाद अब जिन्ना की भी यह हैसियत नहीं थी कि वह मानसिकता में परिवर्तन ला सकें । जिन्ना की राजनीति का आधार धृणा और भय के द्वैध भ्रम पर आधारित था , वह भय को व्याप्त करके धृणा फैला रहे थे , उनका उदारवादी चेहरा उस कौम को अब स्वीकार्य नहीं हो सकता था जिसके अंदर एक काल्पनिक भय पैदा करके धृणा खून के रेशे - रेशे पर जमा दी गयी थी । साम्प्रदायिकता का रास्ता पहाड़ों से उतरती नदी की तरह का एक ढलान का रास्ता होता है , वह नीचे तो वेग से उत्तर सकती है पर वापस पहाड़ों पर नहीं जा सकती । पाकिस्तान की चाहत का नेतृत्व तो जिन्ना कर सकते थे पर भारत को एक रखने का नेतृत्व करने की क्षमता उनके पास पहले भी न थी , अब तो बिल्कुल ही न थी ।

जिन्ना, मुस्लिम लीग और उनके समर्थकों की तो बात अलग है , क्या बाक़ी लोग जिन्ना को प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकार करते ? बंगाली और पंजाबी हिंदुओं ने मुस्लिम लीग के बजाय अपने राज्यों का विभाजन स्वीकार किया । जिन्ना को प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकार करने की संभावना न के बराबर थी । ”

अशोक - “ इसका मतलब विभाजन अवश्यंभावी था । ”

मैं - “ हाँ । ”

दिनेश - “ यह किसी भी हालत में टाला नहीं जा सकता था ? ”

मैं - “ सारे तथ्य तो खोलकर रख दिये , बताओ कैसे टालते ? ”

अशोक - “ सर थोड़ा साम्प्रदायिकता का कितना योगदान है विभाजन पर , यह स्पष्ट कर दीजिये । यह सवाल बहुत आता है । ”

मैं - “ जरूर । ”

दिनेश - “ सर गाँधी की कोई तो गलती होगी , कहीं आपको कुछ तो मिला ही होगा , इतना पढ़ने के बाद । ”

मैं - “ हाँ , कुछ तो है । ”

अशोक - “ यार गाँधी का मुद्दा छोड़ो , काम भर का हो गया । अब साम्प्रदायिकता पर केन्द्रित करते हैं । सर लंबा - चौड़ा मत बताइये , बस उतना ही बताइये जितना हम लिख सकें । हमको ज्ञान नहीं चाहिये , हमको नंबर चाहिये । ”

दिनेश - “ सर कहाँ से पढ़ा यह सब , यह तो अद्भुत व्याख्यान है । ”

मैं - “ ईश्वर की कृपा है । ”

प्रेम नंदन - “ सर , यह कृपा हम सब पर है । आप ने न चलायी होती कोचिंग तब हम सब वंचित हो जाते इतने गूढ़ ज्ञान से । ”

मैं - “ इसमें भी ईश्वर की कृपा है , मैं तो निमित्त मात्र हूँ । उसकी चाहत थी यह , मैंने बस उसके आदेश का पालन किया है । मेरा सूत्र वाक्य याद रखना , जब भी मन हो हताश - उदास खुद से कहना , मैं हूँ जन्मा एक गैर मामूली दास्तान के लिये । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 275

भारत विभाजन की प्रक्रिया को हम साम्प्रदायिकता के विकास के साथ व्याख्यायित करने का प्रयास करते हैं । भारत का विभाजन धार्मिक आधार पर हुआ या भौगोलिक आधार पर ? यह एक बहुत ही रोचक प्रश्न है । मैं एक इतिहास की व्याख्यान शृंखला में भाग लेने गया । वहाँ एक तर्क यह दिया गया कि भारत का विभाजन धार्मिक नहीं वरन् भौगोलिक आधार पर हुआ । तर्क यह था , “भारत विभाजन का ड्राफ्ट पढ़ें उसमें शब्द है , पूर्वोत्तर एवम् पश्चिमोत्तर भारत के मुस्लिम बहुल इलाके , इसका तात्पर्य यह हुआ कि भूगोल प्राथमिक इकाई है न कि धर्म । ” यह विचारधारा प्रस्तुत करने वाले एक बहुत ही विद्वान इतिहासकार थे । मेरे आश्चर्य की सीमा न रही , अपनी विचारधारा को प्रतिपादित करने के लिये इतिहास की प्रवाहमान धारा को अमान्य करने का एक सुनियोजित तथ्यों को नज़रदाज़ करते हुये पूर्वाग्रह से युक्त प्रयास । एक दूसरे महान इतिहासकार थे उन्होंने व्याख्यान दे दिया , “गुटनिरपेक्षता की अवधारणा अकबर की अवधारणा है । ” एक महानतम साम्राज्यवादी शासक जिसने काबूल - गांधार से दक्षिण भारत तक विजयवाहिनी को दौड़ाया हो , जिसने साम्राज्यवादी आकांक्षा से परेरित

होकर राजधानी को त्याग कर कुछ वर्षों तक लाहौर निवास किया हो , गुट निरपेक्ष शासक हो गया , एक साम्राज्य विस्तार का पोषक जो राणा प्रताप के आत्मसम्मान का मर्दन करके उनको दरबार में एक मनसबदार के रूप में रखने का अति आकांक्षी था , वह गुटनिरपेक्ष की नीति का जन्मदाता हो गया । इस तरह के इतिहास की व्याख्याओं से बचने का प्रयास कीजियेगा , अगर इतिहास को संजीदगी से समझना चाहते हैं । कल के मेरे व्याख्यान के बाद आप में से किसी ने कहा , “ गाँधी का पाखंड है भारत का विभाजन, गाँधी सुभाष

चन्द्र बोस से जलते थे और अगर गाँधी सुभाष चन्द्र बोस का नेतृत्व स्वीकार कर लेते तब जिन्ना भी सुभाष का नेतृत्व स्वीकार कर लेते और भारत विभाजन बच जाता । मैंने गाँधी बनाम सुभाष दो दिन पढ़ाया और अगर आप इतने बड़े व्याख्यान के बाद भी यह धारणा रख रहे हैं तब मेरा कक्षा चलाने का कोई अर्थ नहीं । सुभाष जी देश भक्त थे , महान नेता था , अति प्रतिभाशाली थे पर इसका यह तात्पर्य नहीं वह देश की सारी समस्यायें हल कर सकते थे । भारत का विभाजन जिन्ना- नेहरू - पटेल को प्रधानमन्त्री बनने से भिन्न समस्या थी । गाँधी जी का आँकलन एकदम गलत था कि जिन्ना को प्रधानमन्त्री बना देने से देश का विभाजन बँट जायेगा । सुभाष जी का भी मूल्यांकन कर लेते हैं , क्या सुभाष एक अखिल भारतीय नेता थे ? क्या सुभाष की आवाज में देश में वही ताक़त थी जो गाँधी के पास थी , उनकी मुस्लिम समाज में कितनी पैठ थी ? क्या अतिवादी धुरी राष्ट्रों के साथ मिली आज़ादी भारत में लोकतन्त्र की स्थापना करती ? गाँधी और सुभाष के संघर्ष के मूल में था क्या ? सुभाष चाहते थे गाँधी जी नेतृत्व करें और नीतियाँ वह बनायें , यह गाँधी को स्वीकार्य न था । यह भी सत्य है कि गाँधी जी की हठधर्मिता ने सुभाष को कार्य नहीं करने दिया और स्थितियाँ ऐसी बन गयीं कि सुभाष को इस्तीफ़ा देना पड़ा, जो कि दुर्भाग्यपूर्ण था । पर यह कह देना गाँधी के बजाय सुभाष के हाथों में बागड़ोर होती तो देश न बँटता , यह हमारी इतिहास की बहती धारा की रफ़तार की नासमझी दर्शाता है ।

अशोक - “ सर , यह बात तो कही जाती है अगर गाँधी की हठधर्मिता न होती , गाँधी - सुभाष साथ होते तो जिन्ना को नियन्त्रित किया जा सकता था और शायद देश का बँटवारा बच जाता ? ”

मैं - “ सुभाष बहुत बड़े नेता थे , वह बहुत बड़े देश भक्त थे पर वह विधाता नहीं थे , विधाता कोई नहीं था । आप ऐतिहासिक घटनाक्रम समझने की कोशिश करो । जिस तरह गाँधी का यह प्रस्ताव कि जिन्ना को प्रधानमन्त्री बना दो , विभाजन टल जायेगा एक इतिहास के विकास से असंगत बात है और गाँधी की उस समय व्याप्त समस्या से उनकी नासमझी को दर्शाता है , वैसे ही यह भी निरर्थक बात है , गाँधी - नेहरू - पटेल -

सुभाष मिलकर विभाजन रोक लेते । विभाजन जिन्ना भी नहीं रोक सकते थे, जिस भस्मासुर को उन्होंने जन्म दे दिया था वह उनके नियन्त्रण से भी बाहर था । “

दिनेश - “ यह भस्मासुर का जन्म कैसे हुआ ? ”

मैं “ इसके लिये वर्ष 1935 से वर्ष 1939 के बीच की साम्प्रदायिक राजनीति को समझना होगा । चलो पहले वही समझते हैं आपकी शंकाओं को निर्मूल करने के प्रयास में ।

1937 का चुनाव कांग्रेस - मुस्लिम लीग के बीच एक अपनी- अपनी राहें चलो को स्थापित कर गया । इस चुनाव ने यह सिद्ध कर दिया मुस्लिम लीग का देश पर कोई ख़ास नियन्त्रण नहीं है । कांग्रेस ने हारी हुई मुस्लिम लीग को तुष्ट करके साथ ले आने के बजाय उसको ख़त्म करने का फ़ैसला किया । इस कार्य के लिये कांग्रेस ने मुस्लिम समुदाय में पैठ बनाने और मुस्लिम समुदाय को मन्त्रिपरिषद में शामिल करने की नीति अपनायी । जिन्ना ने कांग्रेस की चुनौती को स्वीकार कर लिया और यहीं पर वह नारा वह देने लगे कि कांग्रेस एक हिंदू संस्था है और इसका मुसलमानों के हित से कोई संबंध नहीं है । यह बात उन्होंने लीग के 1937 के लखनऊ सेशन की अध्यक्षता करते हुये ज़ोर देकर कही । यह बात वह प्रचारित करने लगे कि 6 राज्यों में जहाँ पर कांग्रेस का शासन है वहाँ पर हिंदू शासन है और वहाँ अल्पसंख्यकों का दमन होगा । कांग्रेस के मुस्लिम मौतिरयों पर यह आरोप लगाने लग गये कि उनके पास मुसलमानों का कोई समर्थन नहीं है । जिन्ना ने सारे मुसलमानों को एकजुट होकर एक ही लक्ष्य के लिये कार्य करने का आग्रह किया, खुद को संगठित करने का और यह स्वयम का संगठन घृणा की आधारशिला पर आधारित था । जिन्ना खुद को मुसलमानों के एकमात्र नेता और कांग्रेस को हिंदूवादी कहते हुये उसके एक शतरु बन गये । पहले का विरोध अब शत्रुता में बदल रहा था । जिन्ना ने धार्मिक तार को छू लिया था और वह उसमें नफरत लगातार भर रहे थे । ऐसा नहीं है कि कांग्रेस प्रयास नहीं कर रही थी, कांग्रेस भी ज़मीनी स्तर पर जिन्ना से दो- दो हाथ करने को तैयार थी और प्रस्ताव पास किया कि सभी अल्पसंख्यकों को समान अधिकार मिलेगा । कांग्रेस ने अल्पसंख्यकों को उनके सारे राजनैतिक - समाजिक- आर्थिक अधिकारों की सुरक्षा का आश्वासन तो दिया पर यह सारे प्रयास जिन्ना के उन्माद से भरे भाषणों के सामने हवा हो गये । जिन्ना ने अपना दरंप कार्ड चला दिया था, उन्होंने भारतीय राजनीति को एक सत्ता संघर्ष के केन्द्र के रूप में परिवर्तित कर दिया जिसमें वह साम्प्रदायिक आग को एक बड़े औज़ार के रूप में नहीं वरन् एकमात्र औज़ार के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे । सिकंदर हयात ने उसी समय यह अपील कर दी कि उनकी पंजाब यूनियनिस्ट पार्टी के सारे सदस्य लीग की सदस्यता ग्रहण कर लें । शीघ्र ही फ़ज़ल- उल- हक़ एवम् सर मुहम्मद

सदाउल्ला ने ऐसी ही अपील बंगाल और आसाम में कर दी। इस अपील ने जिन्ना के भाषणों से अधिक मुस्लिम जनमानस को छुआ। उसी समय कांग्रेस और लीग एक उपचुनाव यूनाइटेड प्राविंस में लड़ रहे थे जिसे कांग्रेस जीत गयी पर उसके शीघ्र बाद के तीन उपचुनाव कांग्रेस हार गयी। लीग ने जन जागरण अभियान दूर-दराज के गाँवों में आरंभ कर दिया और कांग्रेस के तिरंगे झंडे के समानान्तर अपना हरा झंडा गढ़ने लग गयी। एक सीधा संघर्ष कांग्रेस-लीग का हर ओर दिखने लगा लखनऊ लीग अधिवेशन के तीन महीने के भीतर लीग की 170 नवीं शाखायें स्थापित हो गयीं। उनमें 90 संयुक्त प्रान्त और 40 पंजाब में थी। सिफ्ट संयुक्त प्रान्त में एक लाख से अधिक सदस्य लीग ने बना लिये। अब जिन्ना मुस्लिम समुदाय के नेता बन चुके थे और मुस्लिम लीग यह दावा करने लगी कि वह ही मुसलमानों की एकमात्र प्रवक्ता है। सन 1937 के चुनावों में हासिये पर रहने वाली लीग मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि होने का दावा करने लगी थी। कांग्रेस से कोई समझौता नहीं यह नया नारा था और कांग्रेस को मुसलमानों के हित से कोई ताल्लुक नहीं यह कांग्रेस स्वीकार करे, यह लीग का दबाव कांग्रेस पर बढ़ता जा रहा था। 12 अगस्त 1938 को एक पत्र जिन्ना ने सुभाष चन्द्र बोस को लिखा, हिंदू-मुस्लिम समस्या पर कांग्रेस किसी भी कमेटी को बनाते समय मुसलमान प्रतिनिधि को नामित न करे, वह सिफ्ट हिंदू सदस्य नामित करे। जब गाँधी अबुल कलाम आज़ाद को वार्ता के लिये नामित करना चाहते थे, जिन्ना ने गाँधी के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

यह जिन्ना की अतार्किक माँग कांग्रेस कैसे स्वीकार कर सकती था। कांग्रेस ने 1937 में यह कहा था, मुस्लिम मुस्लिम लीग को त्याग दें अगर वह कांग्रेस के साथ सत्ता में साझेदारी चाहते हैं। यह एक कांग्रेस की गलत माँग थी पर मुस्लिम लीग का यह कहना कि कांग्रेस एक हिंदू संगठन है यह बहुत ही निंदनीय कथन था उस संस्था के लिये जो लोकतन्त्र एवम् धर्म निरपेक्षता के लिये वचनबद्ध है। लीग ने राजा पीरपुर की अध्यक्षता में मुस्लिम वर्ग पर हुये अन्याय पर एक कमेटी गठित की और कमेटी ने कई तथ्यहीन आरोप कांग्रेस एवम् हिंदुओं पर लगा दिये। कांग्रेस ने जवाब भी दिया और एक स्वतन्त्र जाँच करने की मंशा ज़ाहिर की पर लीग एक अलग मनःस्थिति से कार्य कर रही थी। लीग ने नेशनल गार्ड नाजियों के तर्ज पर बनाया गया और यह एक भय के वातावरण का सृजन हो रहा था।

यह मुस्लिमों के लिये एक राज्य की माँग सर मुहम्मद इक़बाल ने लीग के 1930 के इलाहाबाद के अधिवेशन में की थी पर वह एक अलग राज्य की माँग से अधिक भारत के भीतर एक इकाई के माँग के अधिक नज़दीक है। सन 1933 में रहमत अली ने कैम्बिरज में एक निजी पत्र का वितरण करके यह माँग प्रस्तुत कीं जिसमें पाकिस्तान एक स्वतंत्र ईकाई हो यह बात कही गयी। इन लोगों ने गोलमेज़ सम्मेलन में एक संघीय संविधान की विचारधारा

का विरोध किया और यह स्वीकारा कि उनकी पाकिस्तान की अवधारणा इक्बाल से भिन्न है। सितंबर 1939 में मुस्लिम लीग कार्यकारिणी परिषद ने स्पष्ट तौर पर कहा कि कोई भी संघीय राज्य व्यवस्था अल्पसंख्यकों के हितों के विरुद्ध होगी और यह संसदीय प्रणाली एवम् लोकतन्त्र के छद्म वेश में बहुमत का राज्य स्थापित करेगी जिसमें अल्पसंख्यकों का दमन होगा। फरवरी 1940 में जिन्ना ने यह कह दिया कि कोई भी संवैधानिक समझौता इस तथ्य को आधार बनाकर होना चाहिये कि भारत एक नहीं दो देश है और भारतीय मुसलमान अपने भविष्य का फ़ैसला स्वयं करेंगे न कि कोई अन्य। लाहौर में 1940 के लीग का सेशन जिसमें तक्रीबन एक लाख लोग शामिल थें अपनी अंतिम परिणति पर पहुँच गया जब पाकिस्तान की माँग ही एकमात्र माँग के रूप में समझौते की शर्तों में शामिल कर दी गयी। गाँधी ने लाहौर प्रस्ताव को अपने हरिजन में लिखे एक लंबे लेख में भर्त्सना की पर कोई सकारात्मक सोच एवम् प्रस्ताव सुलह सफाई का न था, एक सवाल यह भी है कि साम्प्रदायिकता के फिसले हुये कदम क्या किसी समझौते के लिये तैयार थे।

हम इस मुद्दे को एक और अलग नज़रिये से देखते हैं। बिरटिश हुक्मरान का मुस्लिम लीग को वीटो पावर दे देना। 1940 का अगस्त प्रस्ताव, , 1942 का किरप्स मिशन, वैवेल योजना, शिमला सम्मेलन, कैबिनेट मिशन योजना सभी में जिन्ना के पास एक वीटो था और जिस मुस्लिम साम्प्रदायिकता को बिरटिश हुक्मरान ने जन्म दिया था वह अब उनके नियन्त्रण के बाहर जा चुका था। देश का विभाजन अवश्यंभावी हो चुकी थी, और परिणाम एक भयावह त्रासदी हम सबके समुख।

पूरा क्लास सुन रहा था, कई तथ्य नये थे उस बीस - बाइस साल की उम्र के छातरों के लिये। अशोक ने सवाल किया, “ हम दोष किसको दें? ”

मैं- “ यह बहुत मुश्किल है कहना पर यह दुर्भाग्यपूर्ण है, जिस राष्ट्र ने सौहार्द का पाठ विश्व को पढ़ाया वह साम्प्रदायिकता के कारण बँट गया। इस साम्प्रदायिकता के तीन चरण हैं। पहला चरण, हिंदू और मुसलमान दो समूह हैं और इनके अपने हित हैं, दूसरा चरण- हिंदू और मुसलमान दो समूह हैं और इनके अलग- अलग हित हैं। तीसरा चरण - हिंदू और मुसलमान दो समूह हैं और इनके हित एक - दूसरे के विपरीत हैं। यही तीसरा चरण देश को बँट गया। ”

दिनेश- “ यह तीसरा चरण कब आया? ”

मैं- “ सन 1937 के बाद। ”

दिनेश - “ यह क्यों आया? ”

मैं “ जिन्ना की अति महत्वाकांक्षा और कांग्रेस की विफलता । ”

परेम नंदन - “ कांग्रेस की क्या विफलता थी ? ”

मैं “ कांग्रेस कोई सामाजिक - आर्थिक सुधार कार्यक्रम न चला सकी जिसके आधार पर एक समग्र राष्ट्र का निर्माण हो सके । ”

अशोक - “ लोग कहते हैं गाँधी पाखंडी थे और नेहरू को राज देना चाहते थे इसलिये देश को बाँट दिया । ”

मैं “ अंधकार एवम् अज्ञानता का उत्तर प्रकाश एवम् ज्ञान होता है न कि कुतर्क । मैं कुतर्कों का कोई जवाब नहीं दे सकता । मैं सिर्फ़ यही कहूँगा मेरा उनके ज्ञान को प्रणाम है, ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे । ”

अशोक - “ हम यह लिख सकते हैं कि विभाजन न 47 में अवश्यंभावी हो चुका था । ”

मैं “ हाँ, बस यह जोड़ देना उस समय की परिस्थितियों में । ”

मैंने कहा, “ अब यह कोचिंग बंद करते हैं । हम लोग एक सितंबर को अंतिम बार मिलते हैं इस सिविल सर्विसेज़ फ़ोरम के मंच पर, उसके पश्चात् इस संस्थान को समाप्त कर देते हैं । ”

परेम नंदन - “ सर हम लोग बहुत भावनात्मक रूप से जुड़े हुये हैं, यह संस्थान समाप्त नहीं हो सकता । ”

पूरी कक्षा में एक शोर, इसको बंद न किया जाये ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 276

मैंने कोचिंग बंद करने का फ़ैसला करलिया था, यह तक़रीबन अंतिम क्लास थी पढ़ाई के लक्ष्य से । कोर्स काफ़ी कुछ पूरा कर दिया था, मैं भी कुछ दिन के लिये एक आराम का जीवन जीना चाहता था । मैंने छातरों से कहा, “ यह संस्थान एक व्यक्ति के प्रयास पर चल रहा था, अब वह व्यक्ति नहीं रहेगा तब आगे यह कैसे चलेगा । यह और बात है कि आप में से जो सफल हों, वह इस परम्परा को आगे बढ़ायें । इलाहाबाद विश्वविद्यालय की हालत आप लोग देख ही रहे हैं सेशन लेट चल रहा है, कोई ख़ास पढ़ाई अब इस परीक्षा को ध्यान में रखकर होती नहीं । अगर हमको शहर का ध्वज बरकरार रखना है तो हमको स्वयम ही आगे आना होगा । हम एक मिशन की तरह से कार्य करें तभी इस परीक्षा से निकलने वाले परिणाम में कोई स्थान अपना बना सकते

है । मैंने अपने इंटरव्यू और मेडिकल के समय तमाम प्रतिभाओं को देखा है, उनसे संघर्ष करना आसान नहीं होगा । आप को उनके आस- पास आने के लिये बहुत शर्म करना होगा । यह एक अभिव्यक्ति की परीक्षा है और आप लोगों को लिखने से एक ख़ास लगाव बनाना होगा, मेरी उत्प्रेरक बातें कोई अर्थ संदर्भित नहीं कर सकेंगी अगर प्रयास एक अलग जज्बे के साथ न किया जा रहा हो, पर यह संघर्ष की ज़मीं रही है और है इसलिये आशान्वित हैं हम सब लोग एक बेहतर भविष्य के प्रति । आप लोगों में से बहुत लोगों का चयन होगा, इसमें कोई दो राय नहीं है । हम लोगों ने पढ़ा बहुत है बस ज़रूरत है उसको संजोने की और उस ज्ञानकोश में अभिवृद्धि की । यह कहकर मैं वापस घर आ गया । घर पर पिताजी मेरा इंतज़ार कर रहे थे उन्होंने कहा यह अपने मामा का मसला निपटा दो आज । मैंने कहा, “ मैं जा रहा हूँ देर रात तक आता हूँ वापस । ”

मैं मामा के यहाँ चला गया । मामा के घर की घंटी मैंने बजायी और बाबा भैया ने दरवाजा खोला, मेरी और उनकी निगाहें मिलीं । दो तलवारें निगाहों के अंदर से निकल कर आपस में टकरायी और टकराने से उत्पन्न आग की चिंगारी साफ़ देखी सकती थी, जो हम दोनों के अलावा किसी और को न दिखी । मेरे मन में भाव आया कि आज मैं नम्रता से अस्तर से तुम्हारे अंग-प्रत्यंग को रंग दूँगा । मैं रंगरेज़ बन चुका था और मेरे अस्तर तैयार थे एक अलग युद्ध के लिये, जिसका बाबा भैया की रबड़ बुद्धि को कोई एहसास न था । मैंने बाबा भैया के पैर छुये और डाइनिंग टेबल पर बैठ गया । मेरे घर पहुँचने का समाचार जैसे ही लोगों के पास गया सब डाइनिंग टेबल पर आने लग गये । मैंने मामी को पहला मुहरा बनाया । उनसे कहा, “ मामी जो नहीं होना चाहिये था वह हो गया । इतनी नाम - प्रतिष्ठा है नाना, मामा और आपके मायके की पूरे इलाक़े में जिसका फ़ायदा मुझको भरपूर मिला । मैं अकेला आईएस तो हुआ नहीं हूँ । कहते हैं शहर से सत्तर से अधिक लोग हुये हैं । सिरसा, मेजा, माँड़ा से भी लोग हुये हैं पर उनको कोई नहीं जानता, मुझे पूरे इलाक़ा जानता है । उसका कारण आप लोगों की प्रतिष्ठा है । मेरा विवाह एक अलग प्रसंग हो चुका है । लोग मुझसे विवाह नहीं करना चाह रहे बल्कि वह इस परिवार से संबंध स्थापित करना चाह रहे । मेरा अपना घर तो गरीब ही है, समृद्धता, प्रतिष्ठा, ज़मींदारी का आवरण, अकृत ज़मीन तो आपकी तरफ से ही है । नाना ने अपने बेटों का विवाह बहुत ही उच्च एवम् कुलीन परिवारों में किया है । यह सब मिलकर मेरे ऐसे सामान्य व्यक्ति को नायकत्व का दर्जा दे रहा । कमिश्नर साहब मेरे से विवाह करना ज़रूर चाहते हैं अपनी बहन का पर उसमें मेरा चयन होना एक बात है, मामा का विभाग में सम्मान भी एक कारण है । ज़िला कचहरी के वकील राम नाथ शुक्ला का लड़का सत्य प्रकाश शुक्ला भी चयनित हुआ है । वह विवाह एक मिनट में हो जायेगा अगर कमिश्नर साहब चाहेंगे पर वह इच्छुक है सर्वेश मिश्रा के भयने के लिये । मुझे अपने बारे में कोई गलतफहमी नहीं है और जब कभी होती है

तब मैं आइने में अपना चेहरा और अपनी मार्कशीट देखकर उसको दूर कर लेता हूँ । मेरा यह सौभाग्य है कि आप लोग मुझे मेरी माँ के पक्ष से मिले जो मेरे सामान्य से परचम को गंगा के किनारे गाड़कर धर्म ध्वजा सदृश बना दिया । “

मामी भावुक हो गयीं, “ मुन्ना तोहार मामा आज तक काम ईमानदारी से केहेन । हम इ त न कहब कि केहू से रुपिया नाहीं लेहेन । अब ई नौकरी हड्ये ऐसन बा बँगैर दुई रुपिया लेहे काम होता नाहीं । ऊपर वाले खून पिय जात हअ रुपिया बरे पर जौन पैसा लेहेन काम ईमानदारी से केहेन । आज तक केह के साथ बैईमानी केहेन नाहीं । जौन काम होई सकत हअ उहीं में पैसा लेहेन , जौन काम नाहीं होई सकत केऊ केतनौ लालच देई पर ऐ सत्य के साथ खड़ा रहेन । एनके साथ वाले ओनका धर्मात्मा कहत हअ । अब जरै वाले तअ अफ़वाह फैलौबै करिहिं । तोहरे आईएस होई जाये के बाद कमिशनर साहब बहुत मानै लाग हये तोहरे मामा के , अब ऐसे कुल दुनिया जरत बा । हम चाहत हई तोहार बियाह हरिकेश के बिटिया से होई जाय , सारा धन केउ और काहे लेई , हमार भयने लेई । हमार खून हअ उ , अब हम त ओकरे हक्क में सोचबै करबअ । जब से तू सोलह बरिस के भअ तबै हम हरिकेश से कहा कि बेबी के हमका दै दअ । अब इ हमार बहू बने , हमरे मुन्ना के बरे ई जन्मी बा । ”

मैं- “ मामी , कमिशनर साहब मामा को बहुत मानते हैं यह तो सब कहते ही हैं । दादू बता रहा था कि फरगैया सबसे कहते हैं कि कलेक्टर संजीव रंजनौ डेरात हअ सर्वेश मिश्रा से । ”

मामी - “ भैया हमार बाबू दबंग , हमार ससुर दबंग , हमार कुल परिवार दबंग अब दबंगई त खूनै में बा , कलेक्टर- कमिशनर अझिहिं चला जझिहिं पर ऐ त झिहिं रझिहिं । अपने दंबगई के कारण ऐ आपन परमोशन नाहीं पाएन पर ओकर कौनौ गम नाहीं बा , आत्मसम्मान सबसे बड़ी चीज़ बा इ दुनिया में । ”

मैं- “ यह बात तो है मामी । ”

सारे लोग यह विपुल- संवाद सुनकर मन्त्र मुग्ध हो रहे थे । मामा का चेहरा गर्व से लाल हो चुका था , मोहिता दीदी को अपने पिता की इतनी ऊँची शाङ्खिस्यत का पहली बार भान हुआ , बाबा भैया को लग रहा था , अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे । और मैं अगली चाल बना रहा था । मैं मामा की ओर मुख्यातिब हुआ ।

“ मामा , मुझे बहुत दुःख है अपने एक अपरिपक्व निर्णय पर जो उस दिन दादू के रोने - गाने पर लिया । मुझे आपसे सलाह लेनी चाहिये थी । दादू ने कहा , हम खेत जोत के गल्ला- पाती सबमें बराबर बाँट देंगे खर्चा काटकर । मुझको भी लगा यह ठीक परस्ताव है , खेत बेकार परती पड़ा है वह जोत लेगा और

बात तो ठीक ही कर रहा । छोटे मामा भी इस बात से सहमत थे पर वह आपके डर से कुछ बोल नहीं रहे थे । माँ ठीक कह रही थी कि तुमसे क्या मतलब हमारे मायके के भाई- भाई के बीच के मुद्दे पर । बात तो सही ही है, मैं होता कौन हूँ बीच में बोलने वाला । “

मामा - “ तुम होते कौन हो, यह विचार कहाँ से आ गया । तुम सबकुछ होते हो । हमसे कहे होते, मैं कर देता जो तुम कहते । बस इतना ही दुःख हुआ कि हमसे पूछ कर किया गया होता, हमारी जानकारी में होता तो बेहतर होता । ”

मैं - “ यह तो गलती हो गयी मामा । बाबा भैया बंदूक चलाना चाहते थे । मैं आ गया हूँ जो चलाना चाहें चला लें, इनकी आत्मा को शांति मिल जाये । ”

मोहिता दीदी - “ मुन्ना कैसी बात करते हो । हमने तुम दोनों को राखी बाँधी है । अगर तुम लोग लड़ोगे तो बीच में मैं खड़ी हो जाऊँगी पहले मुझको पार करो तब दूसरे की ओर बढ़ो । यह बात बिल्कुल ठीक नहीं की तुमने । अभी तक सारी बात तुम्हारी बहुत ठीक था पर यह बात उचित नहीं कही । वह तुम्हारे बड़े भाई हैं, दो- चार बात ऊपर नीचे परिवार में होती रहती है, इसको इतना दिल से नहीं लगाते । ”

मामी - “ भैया, एतनै दिमाग़ एनके पास होत त आज ई दिन न देखे पड़त । एक तीस साल का बियाहा बेटवा बेरोज़गार घरे में रोटी तोड़त बा, ई सोहात हअ केहू के का ? पर का करी भगवान एनका बुद्धिन नाहीं देहेन । एनकरे बाते के बुरा न मानअ । ”

मैं - “ नहीं मामी, मैंने कोई बुरा नहीं माना है । मैं तो खुद चलकर आया माफ़ी माँगने, मैं स्वयम से बहुत शर्मिंदा हूँ । ”

मामा - “ सब भूल जा मुन्ना । ”

मामा ने भाभी की ओर देखकर कहा “ रंजना, आज खाना मुन्ना की इच्छा से बनाओ । जो मुन्ना को पसंद हो । तुमको पता है क्या मुन्ना को पसंद है ? ”

मामी - “ ऐनका अबहिं का पता होये, हमरे सामने त पैदा भवा रहा ई । हर रोज़ साँझे के सेंवई बरे माई से लड़ाई करै । चलअ हम बताइत थअ का मुन्ना के पसंद बा । ”

खाने की तैयारियाँ ज़ोरों पर चालू हो गयीं ।

बात चीत के दौर में मामा ने पूछा, “ कोचिंग कैसी चल रही है ? ”

मैं - “ ठीक ही चल रही । आज ख़त्म कर दिया । ”

मोहिता दीदी - “ सुना बहुत पैसा कमाये । ”

मैं - “ बहुत तो नहीं पर हाँ जीवन आसान हो गया कोचिंग के कारण । ”

मोहिता दीदी - “ कितने लोग पढ़ते थे , सुना है बहुत भीड़ होती थी । ”

मैं - “ सत्तर लोग क़रीब नियमित ही थे और लोग बढ़ते- घटते रहते थे । ”

मोहिता दीदी - “ कितना पैसा माँगा था , हर एक से ? ”

मैं - “ दो हज़ार । ”

मोहिता दीदी - “ तब तो बहुत हो गया होगा । ”

मैं - “ सबने पैसा नहीं दिया । अब शहर में सब लोग जानते ही हैं लोगों को , डिस्काउंट सबको चाहिये । लड़कियों से पैसा लेना आसान है नहीं और मैं भी लेने में कम इच्छुक था । ”

मोहिता दीदी - “ लड़कियों से ऐसी सदाशयता क्यों? ”

मैं - “ माँ का और आंटी का प्रभाव आप कह सकते हो । वह लोग सुविधाओं के अभाव में पढ़ नहीं पाये गाँव में इसलिये उनका असर मुझ पर है और महिलाओं के प्रति संजीदगी है मेरे अंदर । ”

मोहिता दीदी - आंटी कौन , रामदीन की बहन ? ”

मैं - “ हाँ । ”

मोहिता दीदी - “ वह तुम्हारे इतने नज़दीक हो गयी है कि उसका असर तुम पर आ गया है । ”

मैं - “ उसकी कहानी बहुत दर्द भरी है । वह किसी को भी छू जाये । ”

मामा - “ क्या है कहानी उसकी ? ”

मैंने आंटी का जीवन , ऋषभ की जहीनियत, शालिनी की अमीरी सब बतायी और साथ में जलाने के लिये यह जोड़ दिया कि शालिनी कह रही कि मेरे पापा के संपत्ति के तीन वारिस हैं- मैं , ऋषभ और अनुराग । यह मैंने बहुत ज़ोर देकर कहा ।

मोहिता दीदी - “ मुन्ना हमको भी कुछ दे देना , इतनी बड़ी संपत्ति के वारिस हो रहे हो तुम । ”

मैं - “ दीदी यह सब कहने की बात है । उसने कह दिया यह उसका प्रेम और स्नेह है । वह मुझसे कह कर गयी है कि न्यूयार्क अपनी माँ और ऋषभ की माँ को लेकर आना । ”

मामी - “ कब जाबअ विदेश ? ”

मैं - “ अभी तो नहीं सोचा पर मन तो है । ”

मामी - “ सुना हअ तोहरे कहे पर रामदीन के मकान बनावत हई शालिनी । ”

मैं - “ अरे मामी , उनके लिये क्या है दो- चार- पाँच लाख रुपया । गरीब का कल्याण हो जायेगा । ”

मामी - “ सुनत हई दादुओं मंदिर के बगल के कमरा बनावा चाहत हयेन । ”

मैं - “ मामी , दादू से बड़ा प्राड केऊ आज तक पैदा भवा बा का ? गाँव बसा नाहीं लुटेरे चल दिये लूटने । ”

मामी - “ काहे ऊ त तोहार सबसे बड़ा चेला बना बा । तोहरेन कमरा में ज़मीनी पर बिछाई के सोवत हअ । ”

मैं - “ तभी तो मैं कह रहा । ”

मामी - “ मुन्ना तू बहुत सरल हृदय के हअ , हम तोहका सलाह देबअ तू दादू से सावधान रहअ । ”

मामा - “ ददुआ बहुतै नीच बा । ”

बाबा भैया - “ ओ त परसादी पावै लायक काम करतै हअ हर रोज़ । ”

मैंने बाबा भैया का चेहरा देखा और मन ही मन कहा , “ बहुत खूब.. ईश्वर ने तुमको खूब गढ़कर बनाया है । ”

खाना लगने लगा , व्यंजन ही व्यंजन... अभी लाठी नहीं टूटी है पर साँप भी नहीं मरा है , खाना खाकर साँप मारता हूँ , कालिया नाग मर्दन.... रुको मामा पहले भोजन ढकेल लूँ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 277

मैंने खाना खाते- खाते मामा से कहा , “ अगर आप इजाज़त दें तो मैं एक बात कहूँ ? ”

मामा - “ हाँ , ज़रूर कहो ? ”

मैं - “ कहना नहीं है , पूछना है ? ”

मामा - “ हाँ पूछो ? ”

मैं - “ अगर आप को मेरे विवाह का फ़ैसला करना हो तो तब आप कहाँ मेरा विवाह करेंगे ? ”

मामा - “ सैकड़ों प्रस्ताव आया है शर्मा जी के पास कुल शहरै त तोहका दामाद बनावा चाहत बा । ”

मैं - मामा , मेरे में क्या ख़ास बात है , यह बताइये ? मैं कोई फ़िल्म स्टार हूँ , मैं कोई महानायक हूँ ? अब आप का नाम जुड़ा है वह फ़र्क ला रहा । आप देखिये बाबा भैया की कितनी अच्छी शादी हुई । भाभी ऐसी लक्ष्मी मिली , समधियाना पूरे बनारस में बेजोड़ है । यह सब आपके नाम पर ही हुआ । अब मैं भी भांजा ही हूँ , फ़ायदा तो मिल ही रहा । मेरे ऐसे बहुत लोग सेलेक्शन पाकर टहल रहे हैं । ”

मामा - “ कुछ ख़ास बात तो है तुममें । ”

मैं - “ क्या है , बहुत से लोग कहते हैं अनुराग फ़राड है । ”

मामा मन ही मन कहे यह तो सब सही ही कहते हैं , तुमसे बड़ा फ़राड कहाँ मिलेगा पर ऊपर से बोले लोग जलते हैं ।

मैं - “ बताइये आप रामराज , हरिकेश मामा , कमिश्नर साहब में से किसके यहाँ करेंगे ? ”

मामी -“ मुन्ना , तू ई अधिकार देत हअ अपने मामा के , जहाँ चाहय तोहार बियाह कै देर्रे । ”

मैं - “ मामी , यह अधिकार कब नहीं था , यह तो हमेशा रहा । आप जिस कमरे में विवाह के बाद आकर रहीं थी उसी कमरे में मेरा जन्म हुआ है । एक अलग रिश्ता है आपका मुझसे । यह विचार कैसे आया कि मामा का बात मानी नहीं जायेगी ? ”

मामी -“ मुन्ना , बात मानी जाय और बियाह के अधिकार देर्रे में फ़रक बा । ”

मैं - “ मामी चलो यह फ़र्क जो आप को लग रहा है , वह ख़त्म कर देता हूँ , अब बताओ । ”

मामी - “ उर्मिला जियर्रे देझहिं तोहका ? ”

मैं - “ मामी , कोई दिमाग है उनके पास बस लड़ते रहो । वह समझ जायेंगी । ”

मामी - “ मुन्ना , तोहका पता बा हम हरिकेश के जबान देहे हई कि बेबी के बियाह मुन्ना से कराऊब । ”

मैं - “ मामी यह तो नहीं पता है पर मामा को सारा अधिकार है फ़ैसला करने का , यह कर लें । ”

मामी - “ तू मनबअ ? ”

मैं - “ मामी , मैं दादू की तरह कह सकता नहीं कि हम तोहार सिपाही हई पर हई तोहार भयने एहमें त कौनौ संदेह बा नाहीं । अब हम और का कही । ”

मामा - “ देखो मुन्ना माल लेना हो तो रामराज , प्रतिष्ठा लेनी हो तो कमिशनर साहब और जाना- समझा परिवार , घर , लड़की और साथ में कुछ दान- दहेज लेना हो तो हरिकेश । अब बताओ तुमको क्या चाहिये ? ”

मैं - “ मामा , फ़ैसला आप पर छोड़ दिया , आप जो लेंगे मेरे हित में ही लेंगे । ”
मोहिता दीदी - “ मुन्ना, अगर तुम एकेडमी गये वहाँ किसी से लगाव हो गया तब ? ”

मैं - “ दीदी , मेरे लगाव से क्या होता है , लगाव उसका भी होना चाहिये । मेरा बहुत लगाव हो भी जाये पर हिंदी माध्यम के लोगों से कौन प्रेम करेगा ? ”

मोहिता दीदी - “ क्या हिंदी वालों से कोई प्रेम नहीं करता ? ”

मैं - “ कौन करेगा ? मैंने तो आज तक सुना नहीं । यह बेबी, प्रतीक्षा , सुरुचि से पूछ लो । हरिकेश मामा ने कहा ही था एक साल पहले कि मुन्ना को अंगरेजी नहीं आती । अब जिसको अंगरेजी नहीं आती और रुड़की इंजीनियरिंग कालेज में अंगरेजी न आने के कारण फेल हो गया हो वही कह रहा है तब अगर बेबी यह कहे , अनुराग को अंगरेजी नहीं आती इसलिये यह प्रेम योग्य नहीं है , इसमें क्या गलत है । ”

मामी - “ ई तोहसे के कहेस मुन्ना, सब अफवाह बा , लोग जरत हअ हरिकेश से , ओकरे मोहे में त जबानै नाहीं बा । ”

बाबा भैया - “ ई सब कारस्तानी ददुआ के बा , एहर के बात ओहर पहुँचावै के । ओनका जब तक प्रसादी न मिले ओनकर दिमाग़ ठेकाने पर न आये । ”

मैंने बाबा भैया का चेहरा देखा और मन में फिर भाव आया क्या ख़ूब गढ़ा है इनको विधाता ने यह मेरा तगड़ा मोहरा होगा मामा - मर्दन का ।

मामी - “ मुन्ना, बेबी से मिल लअ एक बार, बहुत नीक कन्या बा । ”

मोहिता दीदी - “ मुन्ना, एक बार तीनों से मिल लो क्या पता प्रेम जन्म ले ले । ”

मैं - “ नहीं मोहिता दीदी यह विवाह के लिये कन्यायें हैं प्रेम के लिये नहीं । ”

मोहिता दीदी - “ क्यों ? ”

मैं - “ इनसे मिलने का मतलब यह है कि आप फ़ैसला करो विवाह का । प्रेम में विवाह की बाध्यता नहीं होती । यह दोनों पक्षों के पास सुविधा होती है एक जीवन का स्वतन्त्र फ़ैसला लेने का और लगाव को जन्म देने , प्रेम के पल्लवन - पुष्पन के आधार पर । यह लड़कियाँ प्रेम के लिये सर्वथा अनुपयुक्त हो चुकी हैं , मेरे लिये । ”

मोहिता दीदी -“ मतलब विवाह - पश्चात् में परेम नहीं होता ? ”

मैं “ बहुत कम । परेम क्या होता है ? क्या शरीर से लगाव परेम होता है ? क्या जीवन के आरंभिक वर्षों में ज़ब शारीरिक आकर्षण अपनी चरम सीमा पर होता है तब परेम होता है ? परेम का मतलब है सम्मान, भावना का सम्मान । अगर आप अपने साथी के भावनाओं का सम्मान नहीं करते तब आपके मध्य कोई परेम नहीं है । हम लोग अपने परिवेश में देखते हैं । पति चाहता है अपने घरवालों की मदद करना पत्नी खून पी रही है , नहीं तुम नहीं कर सकते क्या यह पति की भावना का सम्मान है , क्या पति के सोच के प्रति कोई सदाशयता है ? ऐसे में परेम कैसे होगा ? परेम एक त्याग की माँग करता है । अपनी उस सोच का त्याग जो आपके साथी को पीड़ा दे रहा है , अगर आप अपनी सोच उस पर थोपना चाह रहे हो तब यह एक हिंसात्मक कृत्य है । परेम अहिंसा में है , हिंसा में परेम नहीं हो सकता । मेरी कोचिंग के छात्रों और मेरे बीच बहुत परेम है क्योंकि मैंने उनकी परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया । मैं बीस- तीस हज़ार और कमा सकता था अगर कड़ाई से पैसा लेता पर तब मेरे उनके बीच एक वितरक एवम् उपभोक्ता का संबंध स्थापित होता न कि शिक्षक और छात्र का । परेम का जीवन में माँ के बाद जो दूसरा व्यक्ति पाठ पढ़ता है वह शिक्षक होता है और जो परेम की स्थापित मान्यता को तोड़ता है वह रिवाजों के माध्यम से जीवन में प्रवेश करने वाली पत्नी होती है जो अधिकारों की माँग करती है न कि परेम की । इसीलिये बेनाम रिश्तों में सुकून होता है न कि नामधारी रिश्तों में क्योंकि बेनाम रिश्तों में हक्क की कोई बात नहीं होती । मेरी माँ का मेरे पिता से , मामी का मामा से आप वार्तालाप पिछले बीस साल का देखें और बतायें इन वार्तालापों में कितना संवाद भावनाओं के धरातल पर हुआ है और कितनी बार मेरी माँ या मामी ने मेरे पिता और मामा के भावनाओं का सम्मान करके त्याग किया है । अभी आपने पूछा दीदी कि आंटी इतनी नज़दीक हो गयी तुम्हारे कि उनकी सोच तुम्हारे जीवन को प्रभावित कर गयी है । दीदी , ऋषभ आंटी के एकाऊंट में डालर पर डालर ट्रांसफर कर रहा । उसने मुझसे कहा तुम न्यासी बनो इस धन का , तुम मेरे सारे पैसों का ध्यान रखो , मेरी माँ का ध्यान रखो , शालिनी ने हज़ार करोड़ के साम्राज्य के तीन वारिस कर दिये , भले ही सिफ़ उसने कहा ही हो , पर कहा तो । मेरे एक बार कहने पर गाँव में अपने मामा का मकान ऋषभ- शालिनी बनवा रहे , दादू का कमरा बन रहा । मेरा उनसे क्या रिश्ता है ? आंटी का मेरे बिना मन नहीं लगता । वह स्पीड पोस्ट से चिट्ठी भेजती है और मुझसे कहती है तुम भी स्पीड पोस्ट किया करो । यहाँ पाँच बिगहा बारी का खेत है , जिसकी क़ीमत कुछ भी नहीं है , मेरे ऊपर मेरे सगे मामा के लड़के गोली चलाने की बात कर रहे , मेरे अपने मामा ने अपने उस भांजे का सम्मान नहीं किया जिसने उनको गर्व दिया । क्यों ऐसा हो रहा , यह आप विचारित करें । यह फ़र्क़ क्यों है दो रिश्तों के मध्य संजीदगी का ? एक रिश्ता एक अधिकार से प्राप्त हुआ है जिसके खोने का कोई डर ही नहीं है ।

पर आंटी को मैं संयोग से प्राप्त हुआ हूँ और वह इस रिश्ते को संजोना चाहती है , सहेजना चाहती है । एक रिश्ता ईश्वर प्रदत्त है , दूसरा मनुष्य निर्मित । मनुष्य रिश्ता कहीं भटक न जाये इससे चिंतित है क्योंकि उसने मेहनत की है इस रिश्ते को बनाने में । ईश्वर प्रदत्त रिश्ते को बनाने में कोई शर्म लगा ही नहीं है , जो वस्तु बगैर शर्म के प्राप्त होती है उसकी कोई क्रीमत नहीं होती । रिवाजों के माध्यम से मुझे बेबी , प्रतीक्षा, सुरुचि चाहे जो प्राप्त हों , वह एक अधिकार के आधार पर जीवन में प्रवेश करेंगी न कि एक प्रेम के धरातल पर । यह जो अरेंज मैरेज है , यह एक जीवन के साथ धोखा है । यह प्रेम नहीं एक व्यापार है , इस व्यापार को बंद किया जाना चाहिये । हर व्यक्ति को प्रेम विवाह करना चाहिये । जीवन को समझौतों से नहीं प्रेम से निर्देशित किया जाना चाहिये । निर्देशित भी ग़लत शब्द है , शायद संचालित बेहतर शब्द है , नहीं यह भी उचित शब्द नहीं है , जीवन को प्रेम के आधार पर प्रवाहित होना चाहिये कुछ वैसे ही जैसे नदी तड़पती है समुद्र से मिलने के लिये । यह जो नामचीन लड़कों के विवाह संबंध शहर में हो रहे हैं वह मैं भी देख रहा हूँ । रामराज मिश्रा की बड़ी लड़की का विवाह संतोष शुक्ला एसडीएम के साथ हुआ है । आप देखो क्या हालात हैं । वह लड़का रामराज के दिये बँगले में भी नहीं रहता । वह ससुराल में रहता है । कोई भी माँ- बाप यह स्वीकार नहीं कर सकते कि उनका बेटा ससुराल में रहे । उसी शहर में संतोष के माँ- बाप रहते हैं पर वह अपने माँ- बाप के यहाँ नहीं ससुराल में रहता है । उसकी पत्नी अपने ससुराल जाती ही नहीं । जितना संतोष को मैं जानता हूँ , उसने यह कार्य स्वेच्छा से नहीं किया होगा , एक दबाव से किया होगा । दबाव से संचालित संबंध में प्रेम नहीं हो सकता । “

मोहिता दीदी - “ तब मुन्ना तुम प्रेम विवाह क्यों नहीं करते , अगर इतने पक्षधर हो उसके । ”

मैं रामराज पर नहीं वार मोहिता दीदी और जीजाजी पर कर रहा था । वह लोग भी हमेशा मामा के ही यहाँ रहते थे । दीदी कभी जीजा जी के घर जाती ही नहीं थी । मैं हर एक पर वार कर रहा था जो भी मेरी विचारधारा से मेल नहीं खा रहा था । दीदी यह समझ रही थी , उसने भी आकरमण करने का फ़ैसला किया , यह कहकर ।

मैं - “ दीदी आपने बहुत अच्छा प्रश्न उठाया । मेरा अपनी माँ से अतिशय प्रेम मुझे त्याग के लिये प्रोत्साहित कर रहा है । दीदी , बुद्ध की तस्वीर हर घर में लगायी जानी चाहिये आप चाहे उस धर्म के सिद्धांतों से असहमत ही क्यों न हों । नवजात बच्चा बहुत मोहक होता है , चाहे वह बिल्ली का हो , चिड़िया का या कुत्ते का । मनुष्य का तो और भी होता है और अपना बच्चा तो एक अलग जीवन देता है । उस अपने मोहक बच्चे को त्यागकर बुद्ध प्रेम का संदेश लेकर निकल पड़े । प्रेम सिर्फ़ त्याग माँगता है । मैं अपनी माँ से ज्यादा

परेम किसी और से कर ही नहीं सकता । अब आज़ जिससे मुझे सबसे अधिक परेम है उसी को मेरे परेम से दुःख होगा । “

मोहिता दीदी - “ क्या तुम अपना जीवन नहीं जियोगे ? क्या किसी लड़की से परेम करना माँ को दुख देना है , क्या लड़की का अपने ससुराल न रहकर अपने मायके रहना पति को पीड़ा देना है ? ”

मैं - “ दीदी मैं सारे सवालों का उत्तर दे सकता हूँ पर शायद यह उचित समय नहीं है । ”

मोहिता दीदी - “ मैं उत्तर सुनना चाहती हूँ , तुमने मुझको भी लपेट लिया है अपने तर्क के दायरे में । ”

मैं - “ अगर आप लपेट गयी हैं तब वह संयोग होगा , मैंने सायास नहीं किया । ”

मोहिता दीदी - “ मुन्ना सवालों का जवाब दो । ”

मैं - “ परेम अंधा होता है वह जाति , परिवेश , संस्कार, हैसियत देख कर नहीं होता । एक परिकल्पना कीजिये , मेरा परेम सजातीय न होकर विजातीय हो गया । लड़की अनुसूचित जाति या जनजाति की हो गयी । जिस तरह की मेरी सार्वभौमिक विचारधारा है यह होना संभव भी है । मेरी माँ के पास आगरह जाति का है , वह लोगों का छुआ खाना नहीं खाती । बरदहा के शुक्ला ने एक तेली लड़की से विवाह कर लिया है वह आज तक कोसती है उनको । कोई कितना भी समझाये वह इसे स्वीकार नहीं कर सकती , मैं जानता हूँ वह सही नहीं है इस बिंदु पर पर उसको बदला नहीं जा सकता । मुझे अपने एक फ़ैसला लेना होगा , दो परेम के मध्य , मुझे एक परेम चुनना होगा - ईश्वर परदत्त परेम माँ का या स्वयम अर्जित परेम रिवाजों को दरकिनार करके लगाव जनित परेम । वह मेरा विवाह भी नहीं करेगी और कह देगी कोर्ट मैरेज करो । जब मैं अपने पैरों पर चल नहीं पाता था तब वह मेरे दूँहे बनने का ख्बाब मुझे बताया करती थी और मेरे विवाह के संस्कारों को किस तरह करेगी इसके हज़ारों क्रिस्से उसने बनाये हैं , वह सब एक झटके में ख़त्म हो जायेगा । दीदी , मैं झूठा हूँ , फ़राड हूँ , एक अच्छा आदमी नहीं हूँ पर उसके दिये संस्कार मुझे हमेशा गलत काम करने से रोकते हैं और वही संस्कार मुझसे कह रहे तू मक्कल मत बना ख्बाब और ख्बाहिशों का उस बोसीदा सी सँकरी गली में जहाँ की नालियों में हर रोज़ न दिखने वाला खून ही खून बहे । मैं आता हूँ आपके मुद्दे पर जो आपको अंदर तक छू गया । आप जानती हैं कमिश्नर की फ़ोटो- कुंडली क्यों वापस हुई थी ? ”

मोहिता दीदी - “ नहीं । ”

मैं “ ऋषभ आंटी के पास न रहकर अपने ससुराल रहता है । आंटी ने माँ को चिट्ठी लिखी कि विवाह सामान्य घर में करना मेरी तरह बेटा मत खो देना । माँ परेशान हो गयी , कोई भी माँ परेशान होगी । दीदी कल आप माँ बनोगी तब आप भी यह स्वीकार नहीं करेंगी कि आप का बेटा आपके साथ नहीं अपने ससुराल रहे । यह बाबा भैया के ससुर बहुत बड़े आदमी हैं , यह जाकर बनारस रहें क्या यह मामा - मामी को स्वीकार होगा ? मैं बात यहीं ख़त्म करता हूँ नहीं तो बात व्यक्तिगत हो जायेगी । मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ , आपको आहत करना मेरे लिये संभव ही नहीं है पर सच तो सच ही होता है । हमें प्रेम की महत्ता को समझनी चाहिये जैसी बुद्ध ने समझी न कि जैसी आम समझ है । ”

मामा - “ मुन्ना मुझको यह नहीं पता था कि बारी के पाँच बिगहा ज़मीन की जोताई का मेरा विरोध इतने अंदर तक तुमको आहत कर गया । अगर तुम हमसे कहे होते तो मैं खुद यही करा देता । अब जो हुआ सो हुआ , वह खेत जोता जायेगा जैसा तुम चाह रहे । ”

मामा बाबा की ओर मुख्यातिब हुये और बोले , “ काल भिंसारे जा और खेत के जोताई- बोवाई दअ । मुन्ना के ऐतना दुःख पहुँचा हमका पतै नाहीं लाग । ”

“ मुन्ना , तू हमसे कहअ जैन तू चहबअ हम ज़रूर करब । तोहरे ऐसन समझदार आदमी के बात हम काहे न सुनब । ”

मैं विदा लेकर अपनी साइकिल निकाल रहा था । जीजा जी पीछे से आ गये , वह मेरे साथ आगे के चौराहे तक आये । चौराहे पर मेरी साइकिल मेरे हाथ से लेकर खड़ी कर दी और मुझे गले से लगा लिया । जीजा जी बोले , ” मुन्ना जो तुमने कहा वह मैं बहुत दिन से कहना चाहता था । पर यह पागलों का परिवार है । यह सब घूस की कमाई से पगलाये हुये हैं । यह मोहिता मेरी माँ से बदमिज़ाजी कर देती है । वह कभी मेरे घर नहीं जाती । एक बार इसने मेरे पिताजी का सामान घर से बाहर फेंक दिया था । ”

वह रोने लग गये । मैंने कहा , “ यह आपने बर्दाश्त क्यों किया ? ”

जीजा जी - “ मैं क्या कर सकता हूँ ? ”

मैं “ तलाक़ दो इसको । यह अधिकार विधाता को भी मैं नहीं दूँगा मेरी माँ और पिता के साथ यह व्यवहार करे । आप राम को पढ़ो, पिता का सम्मान सब पर भारी है । वह मेरा आसमान है, उस पर आकरमण करने वाले गरुड़ के पंखों को नोच दूँगा मैं । आप इनको हद में रहना सिखाओ , यह सीखने से इंकार कर दें तो इनको वापस जाने वाले मील का पत्थर दिखाओ न कि आगे जाने वाला । मैं जीवन में वह सब कुछ त्यागने की बात कर रहा जो मेरी माँ

को बेवजह कष्ट दे । संयम और भीरुता में फ़र्क होता है । मुझे अभी तक आप संयमी लगते थे अब आप भीरु लग रहे हैं । आपने मेरी निगाह में अपनी प्रतिष्ठा खो दी है, मेरी ही क्यों अपनी निगाह में आपकी कितनी इज़्ज़त है यह आप मुझे छोड़कर जाते समय सोचना । “

मैंने साइकिल पर पैंडल मारा । एक आग लगा दी थी मैंने जो मैं चाह रहा था लगाना । जीजा जी का और मोहिता दीदी का रात में ही झगड़ा हो गया । उस झगड़े में पूरा घर शामिल हो गया ।

मैं हर एक से बदला ले रहा था जिसने मुझ पर

सवाल खड़ा किया था । मैं अंगरेज़ी से बदला लेना चाह रहा था जिसने मुझे अपंग बनाया हुआ था । मैंने अंगरेज़ी माध्यम छात्रों के विरुद्ध एक खुला विद्रोह करने का फ़ैसला किया । मुझे अपनी ताक़त का अहसास था, एक बड़ी सेना मेरे ध्वज के लिये खून बहाने को लालायित थी क्योंकि यह भाषा का मुद्दा स्वाभिमान का भी मुद्दा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 278

मैं देर रात घर की गली में पहुँचा, माँ घर के चबूतरे पर चक्कर लगा रही थी यह बुद्बुदाते हुये, “ ई मुन्नवा कहाँ चला गवा । भैया के इहाँ ऐतना देर त न लके । ” मेरी साइकिल को देखकर उसको चैन मिला । मेरे आते ही वह थोड़ा नाराज़ होकर बोली, “ ऐतना देर कहाँ रहअ ? ”

मैं - “ मामा के यहाँ गया था । वह लोग बोले खाना खाकर जाओ, इसलिये देर हो गयी । ”

पिताजी ने पूछा, “ क्या हुआ ? ”

मैं - “ सब मामला सुलट गया है । बड़े परेम पूर्ण माहौल में वार्ता हुई । कल बाबा भैया खुद जायेंगे सुबह खेत को बोवाने के लिये । ”

पिताजी - “ यह कैसे हो गया ? ”

मैं - “ सदबुद्धि आ गयी लगता है । ”

पिताजी - “ कोई और आग तो नहीं लगा दी तुमने ? ”

माँ - “ तोहका मुन्ना के कौनौं काम सोहात नाहीं । अब खेत खुदै बोबावत हयेन तब आग कहाँ से लागि गई एहमें । चलअ मामला निपटा, अब मुन्ना तू एनके

सबके फेरा में न पड़ा / ए सब आपस में लड़िहिं और एक होई जड़िहिं , तू
तीत के कसाई बनबाई / “

मैं - “ यह बात तो सही है , मेरे पास समय कहाँ है अब । ”

मैं अपने कमरे में ऊपर गया / दाढ़ू बैचैन था पूरे समाचार के लिये / मैंने पूरा
समाचार सुनाया और कहा , “तुम सुबह - सुबह गाँव चले जाओ , बाबा भैया
आयेंगे खेत बोवाने , उनसे उलझना मत / यही कहना जैसा आदेश होये वैसय
काम करब । ”

दाढ़ू बहुत ही प्रसन्न था , वह सुबह ही गाँव चला गया / बाबा भैया नौ बजे
पहुँच गये और अपनी शेखी बघारने लगे ...

“ दाढ़ू हमार दिमाग बहुत गरम होई ग रहा तोहरे कदरशना पर / लेकिन फिर
सोचा कि ई दुई- चार बिघा खेत बरे का रार पाली , चलाए बोवाई देहत हअ
खेत , शंकर - जमुना जरिबंधन के बोलावअ बोवाई चालू करअ । ”

दाढ़ू - “ भैया तोहरे ऐसन दयावान परानी त हम आजतक केहू के देखा नाहीं ।
तू और दया पर्यायवाची हअ / अब हम अगर फिर से छोटवार गोल के कक्षा में
पढ़ी और दया के पर्यायवाची के सवाल आवै त हम तोहार नामै लिखि देब ।
हमरे ऊपर तोहार कृपा हमेशा से रही । ”

बाबा भैया - “ ई रामदीन अरधेलवा के मकान बनत बा ? ”

दाढ़ू - “ हाँ भैया । ”

बाबा भैया - “ ऐतना शान-शौकत से मकान मुन्नवा बनवावत बा ? ”

दाढ़ू - “ भैया मुन्ना के एतनी हैसियत नाहीं बा , ई शालिनी बनवावत हई । ”

बाबा भैया - “ ई सब डरामा मुन्ना के बा / शालिनी का जानै ई रामदीन
अरधेलवा के / मुन्ना के सब चाल बा एहमें । ”

दाढ़ू - “ कैसन चाल भैया ? ”

बाबा भैया - “ ई हमार मकान डेबरा टाप बा / अब हमरे दुवारेन पर हमसे
बढ़िया मकान बनवाई देत बा । ”

दाढ़ू - “ एहमें मुन्ना के का लाभ होये ? अपने नाना - मामा के इज्जत कम कै
देहे से मुन्ना के का मिले ? ”

बाबा भैया - “ बहुत जरतुहा बा मुन्नवा / ओका शुरूवै से हमरे पिताजी से
ऐतराज रहा / ऊ ओनका नीचा देखावा चाहत बा । ”

दाढ़ू - “ भैया , बाबू के तअ मुन्ना बहुत मानत हअ / बुआ के जान बसत हअ
अपने बाप में , ऐसन न होये । ”

बाबा भैया - “ तू न समझबअ मुन्जवा के राजनीति । ऊ बहुतै नीच बा । चलअ खेत बोवाई देई तब हमहूँ चली शहर । ”

बाबा भैया और दादू खेत बोवाने चले गये बारी में । मज़दूर काम करने लगे । नहर के मेंड पर बैठकर बाबा भैया और दादू बात करने लगे ।

बाबा भैया - “ दादू ”

दादू - “ हाँ भैया ... ”

बाबा भैया - “ अब हमका आपस में एकता से रहब ज़रूरी बा नाहीं त मुन्जवा हमका लड़ाई मारे । ”

दादू - “ भैया हम त तोहार आदेश हमेशै माना । ”

बाबा भैया - “ अगर तोहका हमरे और मुन्जा में से एक के गोल चुनै पड़े तब केकरे संगे जाबअ ? ”

दादू - “ भैया ऐसन नौबत काहे आये । मुन्जा तअ अपनै आदमी बा । ”

बाबा भैया - “ ऊ बहुत मायावी बा । काल मोहिता और राकेश में लड़ाई लगवाई देहेस । ”

दादू - “ ऐसन काहे केहेन ? ”

बाबा भैया - “ कुछ समझ आवत बा नाहीं, ऊ कौनौं खेला खेलत बा । ”

दादू - “ भैया ऊ केतनऊ खेला खेलै पर तोहरे ऐसन नीतिवान ऊ नाहीं बा । ऊ तोहका खेदे न पाये । ”

बाबा भैया - “ दादू ... ”

दादू - “ हाँ भैया । ”

बाबा भैया - “ अब हमार सेलेक्शन ज़रूरी बा शक्ति- संतुलन बरे । पिताजी होई ज़इहिं रिटायर । मुन्जा अगली पीढ़ी के बा । हमार पीढ़ी से केउ बा नाहीं । हमार सेलेक्शनै मुन्जवा के नस तोड़े । ”

दादू - “ ई बात त बा भैया , तोहार सेलेक्शन होई जात तब तअ मधुबनी मिशिर परिवार के दिया जलत । भैया अब आईएएस के चांस त बा नाहीं, तू सीधा लअ या त एसडीएम नाहीं तअ डिप्टी एसपी । इहै दुई नौकरी तोहका सोहाये । दिमाग़ तोहार बा तगड़ा पर परीक्षा में कुछ गड़बड़ाई जात हआ । ”

बाबा भैया - “ ऐसन मुन्जा का केहेस कि एकै बार में कुल गढ़ गिराई देहेस , कुछ आइडिया बा । ”

दादू - “ भैया पूर आइडिया बा । ”

बाबा भैया - “ बतावअ । ”

दादू - “ भैया , देखअ तोहार दिमाग मुन्ना से कमज़ोर नाहीं बा बस फरक कथरी के धागा सजावै में बा । ”

बाबा भैया - “ ऊ कैसे ? ”

दादू - “ तुहूँ पढ़ि के माल- मसाला कथरी के धागा के तरह दिमाग में बेध देत हअ , पर परीक्षा में जहाँ काम लाल धागा के बा उहाँ तू हरा धागा उतार देत हअ । बस तू सही धागा उतारै के कला जानि जा तोहका केऊ न पाये । ”

बाबा भैया - “ मतलब मुन्ना सही धागा सही समय पर लगावत हअ । ”

दादू - “ भैया ऊ नाती केकर बा तू त जनतै हअ । सूरज शर्मा बहुत गुरु चीज़ रहेन । मुन्ना सफेद धागा से आपन दिमाग में ज्ञान के कथरी बनावत हअ और परीक्षा में जौन रंग से चाहत हअ उहिं परीक्षा हालै में रंगि देत हअ । तू भैया पहिले से रंगा धागा कथरी में लगावत हअ इहि बरे चाही कौनों और रंग तू परीक्षा में उतार देत हअ कौनों और रंग । ई विधि अपनावअ तू मुन्ना से ढेर नंबर पउबअ । हम त कहब भैया तू पुलिस में जा । तोहरौ नाम कुंडली गुरु के तरह होये । ”

बाबा भैया कुछ देर सोचने लगे जो दादू ने कहा था । सोचते- सोचते कहा ... ”दादू ..”

दादू - “ हाँ भैया । ”

बाबा भैया - “ हमरे सवाल के जवाब देहअ नाहीं । ”

दादू - “ कौन सवाल भैया ? ”

बाबा भैया - “ हमरे और मुन्ना में से केकरे गोल में जाबअ अगर एक के तरफ जाये पड़े । ”

दादू - “ भैया , ई सवाल के जवाब देब ज़रूरी बा ? ”

बाबा भैया - “ हाँ । ”

दादू - “ तू जवाब जानत हअ । ”

बाबा भैया - “ एकबार कहि दअ अपने ज़बान से जौन हम जानत हई । ”

दादू - “ भैया , गोल बदलै वाला सिपाही जीतई वाली सेना के साथ विजेता नाहीं गद्दार कहा जात हअ । मीर जाफ़र , जयचंद विजेता नाहीं कहा जातेन ऐ सब गद्दार कहा जात हअ । हम गद्दार कहावै से पहिले मरि जाब बेहतर समझब / हम तोहार सिपाही हई तोहरेन संगे रहबै , भले सिपाही के तनख़ाह मिलै न मिलै । ”

बाबा भैया - “ दादू .. “

दादू - “ हाँ भैया । “

बाबा भैया - “ जाई दअ अब हम न कहब कुछ । “

दादू - “ कहि दअ भैया , नाहीं तअ अंदरै- अंदर गुडेर मारे और होई जाये कबजियत । “

बाबा भैया - “ बहुत अपमान भवा हमार । हमका भेजा गवा कि जा खेत बोवाई के आवअ । इहाँ गाँव में हम कहि के गअ रहे कि खून बहि जाये पर खेत न बोवाये और हम बैठा नहर पर खेत बोवावत हई । पिताजी से बहुत कहा कि कुछ दिन रुक जा पर मुन्नवा पता नहीं कौन माया खेलेस कि भिंसारेन कहेन जा बोवाई के आवअ । हमहूँ के मौका मिले , मुन्नवा के छोड़ब नअ । “

दादू - “ मोहिता दीदी और राकेश जीजा जी के का मामला बा ? “

बाबा भैया - “ मोहिता रहत हअ हमरेन घरे । ऊ राकेश से कहेस एनका अपने घरे लै जा । ई का ससुरारी पड़ा रहत हअ तू । ओसे का मतलब बा , ई सब बातन से । “

दादू - “ भैया एक बात कही ? “

बाबा भैया - “ हाँ कहअ । “

दादू - “ मुन्ना और बातन में त गलत होई सकत हअ पर ई बात सही कहेस । झुलई भैया ससुरारी रहत हअ , हमका सबके दुख बा । बाबूजी अक्सर कहत हअ , हमार पाला - पोसा लड़िका चला गअ । आपन महतारी - बाप के सेवा करै के जगह ससुर के साइकिल पर लेहे धूमत हयेन और ससुरारी के मेंड नापत हयेन । ”

बाबा भैया - “ ई मुन्नवा से का मतलब बा । आपन काम देखई ऊ । हर जगह काहे धुसत बा । ”

दादू - “ भैया हम त नियाय के बात कहा , वैसे तोहार ई बात त सही बा , ओका हर जगह न धूसै चाही । ”

बाबा भैया - “ काल ओकर बियाह हरिकेश मामा के इहाँ होई जाये त का ऊ न जाये ओनका इहाँ रहई? सब अपने ससुरारी जात हअ रहै बरे । “

दादू - “ भैया ऊ न जाये । “

बाबा भैया - “ काहे न जाये , इतनी बड़ी मिल्कियत बा । जाइके ससुरारिन रहे ऊ । “

दादू - “ भैया , मुन्ना चाहे जौन होई ऊ लालची नाहीं बा । ऊ बुआ के पड़ा बा
। ई कोचिंग में बीस हजार रुपिया और मिल सकत रही पर ऊ लेहेस नाहीं । ”

बाबा भैया - “ तोहका का पता , लेहे होये । ”

दादू - “ भैया, पैसवा त हमहिंन लेत रहे । हम जानित हअ । एक बात और
बताई देई , अगर बियाह रुपिया पर होये तब हरिकेश मामा न कई पझहिं
, रामराज के इहाँ होये । हम एहर के बात ओंहर करित नाहीं , पर ऐतना ज़रूर
कहबअ पैसा में मामा न टिक पझहिं । ”

बाबा भैया - “ का करोड़ रुपिया मिलत बा । ”

दादू - “ भैया हम एहर के बात ओंहर त न करबअ पर तू अंदाज़ा लगावै में
माहिर हअ । ”

दोपहर के खाने के वक्त बाबा भैया और दादू घर पर आये । बाबा भैया ने
गरीब मज़दूर जो रामदीन मामा के यहाँ काम कर रहे थे उन पर गुस्सा
निकाला यह कहते हुये , ” हमरे दुआरे से सब बालू सरिया हटावअ । ”

रामदीन मामा का भाग्य अच्छा था वह न मिले नहीं तो उनका काम तमाम हो
गया होता । उनकी अनुपस्थिति में ही कह दिया , “ भिखमंगई के जिंदगी
जियेन अब पक्का मकान में रझहिं । ”

दोपहर बाद खेत पूरा बो दिया गया । बाबा भैया से ज्यादा जल्दी दादू को थी
शहर पहुँचने की । वह एक महान विजेता था , कई सालों से जो न हो पाया
था वह एक झटके में हो गया वह भी पूरे सम्मान से ।

उसी दिन शाम को संयोगावश कानपुर के एक प्रतापी आईआरएस अशोक
तिरपाठी से मेरी मुलाकात हुई । वह कोई सर्च करने इलाहाबाद आये थे ,
उन्होंने मेरे जीवन की मान्यताओं को हिला दिया

पता नहीं ईश्वर मेरी कितनी परीक्षा लेगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 279

मैं नियत समय पर शाम को अपनी कोचिंग गया । प्रम्परागत रूप से पढ़ाने का
कार्य तो अब रहा नहीं , वह सम्पूर्ण हो चुका था । मैं ऐसे ही उनसे वार्तालाप
करता था और अपने अनुभव साझा करता था । पिछले साल के प्रश्न पत्रों
को कई तरह से विश्लेषित करके कुछ न कुछ तथ्य और बताने का प्रयास
करता था , पर मुख्यतः यह संवाद की स्थापना अधिक होती थी बनिस्बत कि

एक पारम्परिक कक्षा के । मेरी फ्रीस बहुत ही अधिक थी इसलिये बहुत से लोग चाहकर भी शुरूआती दौर में मेरी क्लास नहीं कर पाये थे , अब जबकि कक्षा सबके लिये सर्व सुलभ कर दी गयी थी लोगों का कारवाँ बढ़ता जा रहा था और कक्षा की भीड़ को नियन्त्रित करना आसान न था , खासकर प्रारम्भिक परीक्षा के परिणाम के बाद । मैंने एक पूरी भरी हुई कक्षा में अंगरेज़ी माध्यम पर आकरमण कर दिया , एक बहुत ही तीक्ष्ण आकरमण...

“ यह एक स्वाभिमान का मुद्दा है न कि मात्र भाषा का । हमको एक दूसरी भाषा से उत्पन्न जीवनशैली को जीने के लिये बाध्य किया जाता है जिसमें हमारे देशज संस्कारों के लिये कोई जगह नहीं हैं । हमारे जीवन को, हमारी पहचान को, हमारी आत्मा को एक पाश्चात्य शैली नियन्त्रित किये हुये हैं । उसके नियन्त्रण का सिफ़्र और सिफ़्र एक कारण है अंगरेज़ी माध्यम का परिणाम हिंदी माध्यम से अधिक है । हम अंगरेज़ी माध्यम के छातरों को मीलों पीछे छोड़ेंगे । जैसे हम बाध्य होते हैं अंगरेज़ी में लिखने के लिये हम उनको बाध्य करेंगे हिंदी में लिखने के लिये । पर यह बाध्यता किसी क़ानून, किसी जोर- ज़बरदस्ती से नहीं आयेगी । यह सिफ़्र एक ही तरीके से आ सकती है , वह है हमारी न बुझने वाली प्यास ज्ञान के तलाश की । हमारा परिश्रम, हमारी लगन हमारे रण के लिये दिव्यास्तर बनायेंगे । मैं तुम्हारे लिये दिव्यास्तरों का निर्माण करूँगा , अजेय की संकल्पना को ध्येय बनाकर । हमारी विजयवाहिनी क्रान्ति का संदेश लेकर दूर- दूर तक जायेंगी और अब इलाहाबाद की एक नयी पहचान होगी - हमारी माटी , हमारी भाषा और हमारा संघर्ष । वक्त लग सकता है , इंतज़ार करना पड़ सकता है पर याद रखो इतिहास स्याहियों के लिये बेताब होता है क्योंकि इतिहास को तो बनना ही है , बस अब इतिहास निर्माण कोई और नहीं हम करेंगे । हम इतिहास पढ़ेंगे नहीं , हम इतिहास लिखेंगे । आने वाला समय हमारी ज़मीन , हमारी भाषा , हमारी माँ का होगा ।”

यह उद्बोधन छातरों में एक नवीन ऊर्जा भर गया । वह सम्मोहित थे इस बात से कि हिंदी माध्यम अंगरेज़ी को पीछे करेगा । वह अंगरेज़ी की अपंत्ति से उत्पन्न ग्रन्थि की पीड़ा में ही जीवन जीते थे , उनके लिये यह एक नयी बयार थी । मैंने कोचिंग ख़त्म करके साइकिल चलाते हुये यूनिवर्सिटी रोड , मनमोहन पार्क, नलिनी फ़ोटो स्टूडियो, हिंदू होस्टल, हाथी पार्क, लोक सेवा आयोग होता हुआ सिविल लाइंस पहुँचा । वहाँ कई लोग एक साथ खड़े थे और पता लगा कि कानपुर के किसी एक अधिकारी ने कामधेनु स्वीट्स पर छापा मारकर करोड़ों रुपया कैश बरामद किया है इसलिये वहाँ पर बहुत भीड़ लगी है और तमाशबीनों का ताँता लगा हुआ है । मैंने पूछा , किसने छापा मारा है ? किसी ने एक नये उम्र के अधिकारी की तरफ़ इशारा करके बताया यह कानपुर से आये हैं और इन्होंने ही इस कार्य को अंजाम दिया है । मैं उनके

पास गया और अपना परिचय दिया , यह भी बताया कि मुझे भी आईआरएस मिली है इस बार । सर ने बधाई दी और कहा विभाग में आपका स्वागत है । यह विभाग नयी आर्थिक नीति के आ जाने के बाद से एक नयी प्रक्रिया से गुजर रहा है और नयी - नयी चुनौतियाँ हम सबके सम्मुख आ रही हैं । हमें बेहतर लोगों की आवश्यकता है और आईआरएस के प्रति रुझान व्यक्ति, समाज और अभ्यार्थियों का बदल रहा है , जो देश के हित में एक सकारात्मक सोच है । मैंने सर से नौकरी के बारे में जानने की इच्छा ज़ाहिर की ।

अशोक तिरपाठी- “ अभी नौकरियों के बारे में न जानो तो अच्छा है । अभी आप सफलता के रूमानी आवेग में जीवन जियो , हर चीज़ का एक समय होता है , समय से पूर्व घटनाओं का हो जाना उचित नहीं होता है । विवाह एक सांस्कृतिक पवित्र कृत्य है पर बाल विवाह अपराध है । आशा है मैं अपनी बात तुमसे कह गया हूँ । चलो मिठाई खाते हैं , यह नौकरियों के अन्तर्गत की बातें जानकर क्यों अपनी खुशी पर बढ़ावा लगाना चाहते हो । ”

सर ने मेरी उत्सुकता बढ़ा दी थी अपनी अंतिम पंक्ति से । ऐसा क्या है जो मेरी खुशी में बढ़ावा लगा देगा । मैंने सर से पूछा , “ यह छापामारी आपने की । ”

अशोक तिरपाठी- “ मुझसे करायी गयी है । ”

मैं - “ मतलब आपने नहीं की । ”

अशोक तिरपाठी- “ की मैंने ही पर मैं तो एक आदेश का कार्यान्वयन कर रहा । मेरे पास क्या हैसियत यह कार्य कर सकूँ । ”

मैं - “ पर आये तो आप ही हैं , किया आपने ही है । ”

अशोक तिरपाठी- “ लगता है मानव सब कर रहा पर कराता कौन है , वह जगत नियंता । ऐसे ही सरकारी कार्यों में दिखता चेहरा किसी और का है पर कार्य किसी और का होता है । अब इसी छापेमारी घटना को लो । कानपुर में मुझे सूचना मिली , वहाँ पर मैंने आधारभूत कार्य किया , इलाहाबाद में भी कुछ ऐसा ही मामला है इसका भी सज्जान मिला । मैं आदेश प्राप्ति के लिये अपने उच्च अधिकारी के पास गया । अब उनका “हाँ” “या” “ना” पूरे मामले का निस्तारण करता न कि मेरी संतुष्टि । मेरी संतुष्टि कितने भी समतल धरातल पर क्यों न हो उनकी संतुष्टि के सम्मुख कमज़ोर है , चाहे उनकी संतुष्टि दलदल की आधारशिला पर ही अवस्थित क्यों न हो । ”

मैं - “ मतलब वह “ना” भी कह सकते थे , यह कार्य आप मत करो । ”

अशोक तिरपाठी- “ ईश्वर तो ईश्वर ही होता है । सर्वाधिकार उसके पास सुरक्षित है , वैसे ही सरकारी सेवाओं में जो आपका बास होता है वह सबसे

महत्वपूर्ण होता है । वह जो चाहे कर सकता है क्योंकि बहुत से मुद्दों में निर्णय का अधिकार आपके पास नहीं उसके पास होता है । मैंने इस कार्य को करने में महीनों की तैयारी की थी पर वह कल सायंकाल कह सकते थे यह कार्य आप मत करो । मुझे उनका आदेश मानना पड़ता । “

मैं “ आप अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकते ? “

अशोक तिरपाठी - “ ऐसा मैंने कब कहा , आप अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकते । मैं सिफ़र यह कह रहा बहुत सीमायें हैं और एक सीमा के बाद छटपटाहट है । ”

मैं “ कैसी छटपटाहट ? “

अशोक तिरपाठी- “ आप यह सब क्यों जानना चाह रहे अभी ? आप जितना ही जानेंगे उतना ही निराश होंगे । अभी जीवन में बहुत अवसाद के क्षण आयेंगे , क्यों उसको आप प्रीपोन करना चाह रहे । आप चाहते क्या हैं नौकरियों से ? ”

मैं “ एक समाज के लिये कार्य , एक कार्य की स्वतन्त्रता, एक जीवन के उच्च आदर्शों के लिये कार्य । ”

अशोक तिरपाठी-“ आप कम्युनिस्ट हो क्या? ”

मैं “ क्यों सर ? ”

अशोक तिरपाठी- “ ऐसी बहकी- बहकी बातें वही करते हैं । भइया शर्मा जी यह एक नौकरी है कोई उन्नीसवीं शताब्दी का सुधार आंदोलन चलाने का आवेदन पत्र नहीं दिया था आपने और न ही यूपीएससी ने कोई विज्ञप्ति दी थी उसकी । आप एक बार फिर से मेंस का फार्म पढ़ लो और इस बात को सुनिश्चित कर लो कि किस आधार पर आप परीक्षा में बैठे थे और शासन की क्या चाहत है आपसे । यह सब तो उस फार्म में था नहीं । यह सब कहाँ से सीख कर आये हो आप । ”

मैं “ तब क्या मिलेगा यहाँ पर ? ”

अशोक तिरपाठी- “ यह आपका सवाल क्लायदे का है । आपकी स्केल है 2200- 4000 रुपया । आपको कट- कटाकर मिलेगा तकरीबन 4000 रुपया । एक मिलेगा कमरा आफिस में । रहने को एक मकान । गाड़ी- घोड़ा भी हर पद के साथ होती नहीं ज़ब तक आप संयुक्त सचिव न बन जाओ । ईमानदारी से काम करेंगे तो रहेंगे परेशान । आपके महीने का अंत आपके बचे हुये चिल्लरों से बीतेगा । आपका विवाह ठीक हुआ , कन्या समझदार मिली तब तो ठीक है नहीं तो दो खून पीने वालों के साथ जीवन जीना होगा । ”

मैं “दो कौन ? ”

अशोक तिरपाठी-“ अरे भाई , अब आपका जीवन दो लोगों के हाथ होगा । एक आपका बास जो सरकार देगी और एक आपकी पत्नी जो रिवाजों के माध्यम से मिलेगी । यह दोनों ही खून चूसेंगे , चाहे आपका खून नीम की तरह का तीत ही क्यों न हो । ”

मैं “ सर , अपने मन से हम कुछ भी नहीं कर सकते ? ”

अशोक तिरपाठी- “ यार अनुराग , तुम तो हमारी नौकरी ही ले लोगे यह कहलाकर मुझसे । मैं जो कह रहा वह आप सुनो , जो मैं नहीं कह रहा वह क्यों मेरे मुँह में घुसेड़े पड़े हो । एक होता है तोता जो पिंजरे में बंद होता है और दूसरा जो बाग- बगीचे में उड़ता है । पिंजरे में बंद तोता फड़फड़ा तो सकता है पर उड़ नहीं सकता । वह फड़फड़ाता भी एक सीमा तक है ज्यादा फड़फड़ायेगा तब उसका पंख पिंजरे की दीवार से चोटिल होने लगता है । वह तोता शुरू में चोंच से पिंजरे की दीवार काटना चाहता है पर धीरे- धीरे उसे लगता है कि उसकी चोंच भोथरी हो रही है । वह अगर और काटने का प्रयास करेगा इस पिंजरे के लोहे को तब उसकी चोंच भोजन योग्य भी नहीं रह जायेगी , वह नियति से समझौता कर लेता है और लोहे से बैर बंद कर देता है पर फड़फड़ाता है वह । अब एक मज़बूत व्यक्ति से लड़कर क्या मिलेगा । आप बाग के स्वतन्त्र तोते नहीं हो । ”

मैं “ सर , आप सबकी बात सुनते हो , आप अपने मन का कोई काम नहीं करते ? ”

अशोक तिरपाठी-“ एक कन्फेशन बाक्स मँगा लो और सब हमसे कुबूल करा लो । आप आओगे तब मेरे बारे में जान ही जाओगे अब अपने मुँह अपनी बात क्या करें । यहाँ दो तरह के अधिकारी हैं इस नौकरशाही के समाज में । एक जो पंख कटा दिये हैं और बगैर पंखों के टहल रहे आत्मा विहीन होकर । दूसरे वह हैं चाहे कुछ कर पा रहे या नहीं पर पंख कटाने को तैयार नहीं और अपनी उड़ान की आशा को ज़िंदा रखना चाहते हैं भले ही वह अवसर मिले न मिले । यह नौकरशाही में जो कुछ मानवीयता ज़िंदा है वह दूसरे तरह के अफ़सरों के कारण हैं जो क्षितिज की ओर देखते हैं कफ़स में बंद होकर भी । पर ऐसे अधिकारियों के साथ अच्छी पोस्टिंग की समस्या आती रहती है । एक बात कहूँ अनुराग ? ”

मैं “ जी सर । ”

अशोक तिरपाठी- “ जितना मैं तुमको समझा हूँ इतनी देर में यह नौकरी तुमको पीड़ा देगी । यह सिविल सेवा की नौकरियाँ एक अलग तरह के व्यक्ति की माँग करती हैं । ”

मैं “ कैसे तरह के व्यक्ति ? ”

अशोक तिरपाठी - “ या तो आप कबीर की तरह बेपरवाह हो या दुनियावी मामलों में लीन हो , आप मुझे दोनों नहीं दिखते । ”

मैं “ सर , यह दुनियावी मामलों में लीन होना क्या होता है ? ”

अशोक तिरपाठी - “ चलो कुछ उदाहरण देकर ही बता देता हूँ । एक हमारे यहाँ कमिशनर साहब हैं उनका धंधा है आईटीओ की ट्रांसफर पोस्टिंग में पैसा लेना । एक आदमी एक वार्ड से दूसरे वार्ड गया । उससे पैसा लिया । वहीं आदमी आया और बोला साहब हमको पुराने वार्ड में ही रहने दो । साहब ने कहा उतना ही पैसा फिर लगेगा । अब स्याही फिर से चलानी पड़ेगी , स्याही का खर्चा तो देना होगा । दूसरे एक अफसर हैं वह सारे शहर की सूचना रखते हैं । जिसके विरुद्ध सूचना पा गये उसको सुबह की चाय पर बुलाते हैं और उससे चाय का पैसा माँग लेते हैं , वह सूचना देकर । जैसे ही किसी के पास यह संदेश आया कि साहब ने आपको चाय पर बुलाया है , हल्ला हो जाता है शहर में कल वह लाखों की चाय पीकर आयेगा । तीसरे हैं वह चाहे जितना खाली बैठे हों पर आप समय माँग कर मिलने जाओ और वह भी दो घंटे पहले और कई बार तो समय माँगो आज , वह खाली बैठे समाचारपत्र पढ़ रहे हैं पर समय कल का मिलेगा । एक और हैं वह कहते हैं यह तो ठीक है कि आपने पाँच की आदमी की जाँच कर दी पर शहर के बाकी लोगों को क्यों छोड़ दिया । वह कोई भी अपर्कल देंगे ही नहीं बगैर खुन पिये । कुछ हैं उनको लगता है अगर बदमिज़ाजी अफसरों के साथ गरीब रियाया के साथ न किया तब अफसर हम हुये ही नहीं । यह हैं दुनियादारी वाले अधिकारी । यह अहंकार युक्त अपने सीनियरों की चापलूसी करने वाले सफल अफसर कहे जाते हैं । ”

मैं “ कबीर टाइप के ? ”

अशोक तिरपाठी- “ वह बेचारे पीड़ा प्राप्त लोग हैं । वह एक फ़ालतू चार्ज से दूसरे फ़ालतू चार्ज में घूमते रहते हैं । कभी- कभार ईमानदार - दक्ष लोगों की खोज होने लगती है तब उनको याद किया जाता है । पर वह सब बड़े सम्माननीय लोग हैं । उनकी इज्जत तुम ज़रूर करना , अगर और कुछ न कर सकना । इस बेहया व्यवस्था की संतुलन स्थापना के वह महत्वपूर्ण अवयव हैं । ”

मैं “ सर , आप कैसे अफसर हो ? ”

अशोक तिरपाठी- “ बहुत झङ्घटिया आदमी हो यार तुम , हमरे पीछेन पड़ गये हो । ”

मैं “ नहीं सर , मैं जानना चाहता हूँ । ”

अशोक तिरपाठी- “ चलो बताये ही देता हूँ जो मेरी अपनी छवि मेरे अपने निगाह में है बाकी तुम जानोगे ही देर- सबेर , सभी के बारे में । मेरे पंख जीवित हैं और फड़फड़ाते भी हैं। मेरी क़लम में स्याही भी है और जुबान में शब्द भी हैं, पर मुझे अपनी सीमाओं का ज्ञान है । मेरे ख़्याल से मैंने आपकी जिज्ञासा को कुछ संतुष्टि प्रदान कर दी । ”

मैं “ जी सर । ”

अशोक तिरपाठी- “ बहुत उच्च आदर्शों की पूर्ति यह सेवा करेगी या नहीं करेगी यह तो मैं कह नहीं सकता पर एक बेहतर जीवन जी लोगे , एक सम्मान समाज में रहेगा , आपकी ज़रूरतों का ध्यान यह व्यवस्था रख लेती है । ”

मैं “ सर , मुझे सिफ़र अपने लिये ही नहीं जीना है । ”

अशोक तिरपाठी- “ तब यह सेवा तुम्हारे योग्य नहीं है । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 280

मैं अशोक तिरपाठी सर से मिलकर घर आया , मन अशांत हो चुका था । अशोक तिरपाठी सर ने जो कुछ कहा वह मुझे अंदर से हिला गया । मैं समझता था अब आगे के जीवन में एक स्वतन्त्रता मेरे पास होगी , कार्य विवेकानुसार कर सकूँगा । मेरी मेधा , मेरे विवेक से उचित-अनुचित का निर्धारण होगा , पर यहाँ तो निर्देश बहुधा व्यवस्था की मशीन से प्राप्त करना होगा । मैं इस व्यवस्था को सुधारना चाहता था पर उनके अनुसार मुझे उसका एक अंग बनकर व्यवस्था के मानदंडों के अनुसार जीवन में आगे बढ़ना होगा और कई बार ऐसा करना पड़ सकता है जो मुझे स्वीकार्य न हो । रात में दाढ़ आया वह अपनी विजयगाथा सुनाना चाहता था पर मेरा मन खिन्न था , मैंने उससे कहा तुम नीचे जाकर सो जाओ । वह मेरी आँख देखकर समझ गया कि मामला कुछ संगीन है । उसके जाते ही मैं आँख बंद करके लेट गया । जिस जीवन की प्राप्ति के लिये इतना संघर्ष किया , वह जीवन तो मुझे मिला पर वह दुनिया न मिल रही थी जिस दुनिया को सोचकर संघर्ष किया था । सर की अंतिम कुछ पंक्ति मस्तिष्क में चोट करने लगी ... , “ यह डीएम , एसपी की छवि जो दिखती है वह गरीब रियाया के लिये है , वह एक धोखा हैं, वह करते वही हैं जो शासनादेश होता है न कि जो समाज की आवश्यकता है , शासनादेश अगर समाज के अनुकूल है तब तो ठीक है नहीं तो । आप एक स्वप्नलोक से बाहर निकलो और वास्तविक जीवन की हक़ीकत को स्वीकार करो । ”

अगर मैं हकीकत स्वीकार करने से इंकार कर दूँ सर तब ?

“ अनुराग बाबू , बैल कितना भी बदमाश हो वह खेत जोतेगा ही , घोड़ा कितना भी बिगड़ैल हो जीन चढ़ेगी और लोहे का स्वाद उसको लेना ही होगा , जीना सबको है । ”

इस एक वाक्य में सर ने सब कुछ कह दिया था ।

मेरी आँखें बंद थीं , दोनों कुहनियाँ मेरी आँखें पर थीं । मैं एकाएक उठा और बदरी सर के कमरे की तरफ चल दिया । मैं सर के कमरे में पहुँचा । वह कमरे का दरवाजा खोल कर बैठे थे । मुझको देखते ही बोले , “ अच्छा किये तुम आ गये , मैं सोच ही रहा था तुम्हारे पास आने को । ”

मैं- “ सर एक समस्या है । ”

बदरी- “ अब कौन समस्या रह गयी है । बढ़िया आसामी देखकर विवाह करो , तगड़ा परभावशाली ससुर - साला चुनो, अपनी तो कराना ही हम लोगों की टरांसफ्रर पोस्टिंग में भी मदद करवाना । बढ़िया पोस्टिंग मिले हम लोग रूपिया हींचे , घर- दुआर- परॉपर्टी बनायें । अनुराग, यह लक्ष्य ध्यान में रखकर बारात कराओ जाड़े तक । ”

मैं- “ सर नौकरी में कुछ नहीं है । ”

बदरी सर - “ कौन बताया ? ”

मैंने पूरी कहानी सुनायी बदरी सर को । सर बोले , ” कहाँ तुम आलतू-फालतू लोगों से मिलते रहते हो । वह जिन लोगों की बुराई कर रहे वही तो अपने आदर्श हैं । वही काम तो अपने को करना है । मैं जानता हूँ तिरपाठी जी को । मेरे पहले इंटरव्यू में मेरे साथ थे , वह निकल गये मैं रह गया था । वह ऐसी ही बहकी- बहकी बातें तब भी करते थे । वह सबको ज्ञान पिलाते हैं । उनको लगता है वह सबसे क़ाबिल हैं और बास उनके हिसाब से काम करें । हम अगर तिरपाठी जी के बास हों हम उनकी एक फ़ाइल साइन न करें , जो बास को ज्ञान पिलाये उसको तंग करना ही चाहिये । हम लोग बास को पटा कर रखेंगे अमर गुप्ता की तरह । बास को बेवकूफ़ बनाने की विधा सीखो । हर आदमी की कोई कमज़ोरी होती है वह पकड़ने का फिर मनमाफिक काम कराने का । आप बेवजह परेशान हैं महाराज । ऐश करो , मकान - बंगला लो दहेज में , बीस- पचीस लाख नक्द और घर दुवार का सामान देगा ही , हनीमून मनाओ ऐश करो । हम तो हनीमून मना नहीं सके क्योंकि जब हमारा विवाह हुआ तब यह सब खुराफ़त पता ही न था । आपकी तक़दीर है सब परोस कर मिल रहा है । ”

मैं- “ सर यह सब दुनियावी मामले हैं । ”

बद्री सर - “ दुनिया में रहोगे तब दुनियावी मामले ही देखोगे । अब नौकरी नहीं करना , साधु- संत बनना है , हिमालय जाकर तपस्या करनी है तब बात अलग है । ”

मैं - “ सर यह जीवन इसलिये तो नहीं चाहा था मैंने जैसा आप कह रहे । ”

बद्री सर - “ किसलिये चुना था ? ”

मैं - “ समाज के लिये । ”

बद्री सर - “ हमने कब कहा कि हम चुन रहे यह जीवन समाज के लिये ? तुम्हारी बात मैं नहीं जानता । एक बात कहूँ अनुराग अगर बुरा न मानो ? ”

मैं - “ जी सर । ”

बद्री सर - “ तुम वह अनुराग नहीं रह गये जो पहली बार मेरे पास आये थे । वह अनुराग सहज था , सरल था , माँ के लिये चिंतित था और कहता था मेरी माँ की आँखों की शबनम में एक चाँद उतर आया है जिसकी रौशनी में वह जीवन जीना चाहती है । अब अनुराग एक संश्लेषण की प्रक्रिया से गुजर कर दुर्घट हो चुका है । उसको वह चाँद प्राप्त हो गया है और माँ उस चाँद को सहजे हैं , रोज़ निहारती है , पर अनुराग को अब उसकी आँखों की शबनम में रिहाइश कर रहे चाँद की कोई प्रवाह नहीं । अनुराग तुम पूरी तरह बदल चुके हो । ”

मैं - “ वह कैसे सर ? ”

बद्री सर - “ बुरा न मानों तो साफ़- साफ़ कहूँ । । ”

मैं - “ जी सर । ”

बद्री सर - “ अनुराग स्वार्थी हो चुका है । ”

मैं - “ कैसे सर ? ”

बद्री सर - “ अब इस नये अनुराग को प्रशस्ति का , स्वयम् के सम्मान का , एक ग्रन्थि से संचालित होकर इतिहास से बदला लेने का जुनून सवार हो चुका है । अनुराग , तुम्हारे किसी कृत्य में कोई सदाशयता नहीं है । यह कोचिंग तुमने पैसे के लिये चलाई , जो पैसा तुमने नहीं लिया वह मिल ही नहीं सकता था क्योंकि लोग इससे ज्यादा पैसा देने की न तो हालत में थे न ही तैयार थे । तुमने विवशता को बाज़ार में सदाशयता में परिवर्तित कर दिया । यह कोचिंग सिर्फ़ धन एवम् सम्मान की आकांक्षा से थी न कि कोई भला करने की तीव्र इच्छा शक्ति से । तुमने जो भी कार्य किया उसमें सिर्फ़ तुम्हारा स्वार्थ था । तुमने हिंदी उपन्यास का सत्य प्रकाश का नोट्स दिया मुझको वह तुम्हारी नीति थी , मुझसे हिंदी में इंटरव्यू दिलवाया वह भी तुम्हारी एक सोची समझी

चाल थी । तुमको व्यवस्था का संचालन आता है, तुम एक बहुत चालू- पुर्जा अफ़सर बनोगे, आप सब कुछ भूलकर पाँच सितंबर की दरेन पकड़ो मसूरी की । “

मैं अवाक रह गया यह सब सुनकर, बद्री सर को जितना मैं गहरा समझता था वह उससे भी गहरे निकले । मैंने कहा, ” सर आपकी बात सब सही है । मैं सफलता के लिये लालायित था । मैं कुछ भी करना चाहता था, पर आपने मेरी बात क्यों मानी । “

बद्री सर - “ तुम मात्र लालायित थे, मैं अति आग्रही था । मेरे पास कोई और रास्ता न था । मैं अंग्रेजी में इंटरव्यू देकर हो ही नहीं सकता था । वह चक्रव्यूह की तकनीक नायाब थी । मैं सारी ज़िंदगी तुम्हारा ऐहसान मानूँगा जबकि मैं साफ़ कह रहा तुम स्वार्थी हो और सिर्फ़ अपना ही हित देखते हो । ”

मैं - “ सर, अगर मैं स्वार्थी होता तब मैं यह सब करने की बात क्यों करता ? यह नौकरी स्वार्थ के लिये तो बहुत अच्छी है । ”

बद्री सर - “ तुम एक अलग रास्ते पर चल चुके हो । तुम मदांध हो चुके हो । तुमको लगता है मैं कुछ ऐसा करूँ जो किसी ने न किया हो । ”

मैं - “ यह बात आपकी सही है सर, मैं कुछ ऐसा करना चाहता हूँ जो किसी ने किया हो पर स्वार्थी नहीं हूँ । ”

बद्री सर - “ एक बात और कहूँ, थोड़ा ज्यादा कड़ी है । ”

मैं - “ जी सर । ”

बद्री सर - “ बहुत कड़ी है । ”

मैं - “ कहें सर । ”

बद्री सर - “ तुम इतना अपने में खो गये हो कि तुमको अपनी माँ की भी परवाह नहीं है । उसने अपने सारे सत्कर्म त्यागे, अपना मोक्ष त्यागने की बात कही तुम्हारे चयन के लिये । उसको क्या मिलेगा, अगर तुमने सेवा अस्वीकार कर दी । वह तो कहीं की न रही । एक बार सोचो उस पर क्या गुज़रेगी जब वह सब सुनेगी ? जो व्यक्ति अपने माँ के बारे में बाहर सोचे निर्णय ले रहा उससे बड़ा स्वार्थी दूसरा कौन होगा ? ”

यह बात सुनकर मैं हिल गया । सर ने मुझे चिंतित देखकर कहा, “ यह सब फ़ितूर दिमाग़ में आता रहता है । यह सब जीवन प्रक्रिया का भाग है । व्यक्ति बहुत संवेदनशील होता है । तुम कुछ ज्यादा ही हो । तुम्हारी आदर्श अवधारणा की समाज और व्यवस्था को आवश्यकता है । मैं करूँगा नौकरी

दुनियादारी से तुम करना आदर्श से , एक संतुलन बना रहेगा हम दोनों के बीच । कल से लड़कियों की फ़ोटो देखो उसमें मन को रमाओ , हमारे यहाँ भी बहुत विवाह वाले आ रहे हैं , उनको क्या पता कि हम धनुष बचपनै में तोड़ बैठे हैं , मैं उसमें से बढ़िया- बढ़िया आसामी आपके पास भेजता हूँ । तुम बाज़ार के सबसे खाँटी माल हो भी , थोड़ा समय प्राणायाम- पूजा में लगाओ , मन की अशांति दूर होगी । “

मेरी चिंता बद्री सर ने और बढ़ा दी । उन्होंने माँ को बीच में डाल दिया । अब यह एक नयी समस्या माँ की आकांक्षाओं की । माँ तो कभी मानेगी ही नहीं मेरी बात । मैं बद्री सर के यहाँ से निकला । मेरी चेतना - उपचेतना का संवाद आरंभ हो गया ।

चेतना - “ यह उचित फ़ैसला नहीं है । ”

उपचेतना - “ कौन सा फ़ैसला ? ”

चेतना - “ यह पाया हुआ राज्य त्याग देने का । ”

उपचेतना - “ भोग में कोई जीवन नहीं है । ”

चेतना - “ भोग ही जीवन है । भोग स्वयम् भी करो और अपनों को भी करने दो । ”

उपचेतना - “ त्याग ही जीवन है । ”

चेतना - “ त्याग किसके लिये करना चाहते हैं ? ”

उपचेतना - “ समाज के लिये । ”

चेतना - “ यह नौकरियों के माध्यम से भी कर सकते हो । ”

उपचेतना - “ सीमाओं में त्याग नहीं होता । ”

चेतना - “ तुम पाश्चाताप करोगे अगर निर्णय ग़लत ले लिया । ”

उपचेतना - “ एक सदाशयता से समाज के लिये लिया हुआ निर्णय कभी ग़लत नहीं होता । अनुराग , तुम निर्णय ले । कठोर निर्णय लो । इतिहास का निर्माण करान्ति से होता है । यह करान्ति पहले विचारों में आती है । फिर विचारों में ही इसका विरोध होता है । जब विचारधारा से निकलकर मूर्त रूप लेने का यह प्रयास करती है तब समाज विरोध करता है पर अंततः समाज स्वीकार करता है अगर करान्तिधर्मी अडिग रहता है । तुम अडिग रहो । एक कठोर निर्णय लो । ”

मैं अपने घर कब पहुँच गया पता ही न चला , किसी तरह रात काटी । मैं सुबह उठा और अपने कमरे से पिताजी के पास गया । वहाँ सब लोग बैठे थे ।

पिताजी ने पूछा , “ पाँच सितंबर को जाने की सारी तैयारी कर ली है ? ”

मैं - “ क्या करना तैयारी में ? ”

पिताजी - “ मुझे क्या पता , बहुत से लोग जा रहे हैं उनसे पूछ लो वह क्या कर रहे , तुम भी वैसा कर लो । ”

मैं - “ ठीक है पूछ लूँगा । ”

पिताजी - “ विवाह के बारे में क्या सोचा है ? कब करना चाहते हो ? ”

माँ - “ जाड़े में कैद दअ , ऐनसे का पूछे के बा । एनका का समझ होये बियाह के । ”

पिताजी - “ अगर जाड़े में करना है तब प्रस्ताव पर विचार करना आरंभ करें । लड़की देख लो , मिल लो जो भी ठीक लग रही हो । ”

माँ - “ मुन्ना तोहार सुरुचि पे मन बा ? सुरुचि से मिल लअ । लोकल बियाह बा । लड़किऊ आईएएस बा । नाती दुई - दुई आईएएस के तमगा लै के पैदा होइहिं । सुरुचि के पापा थोड़ा कनूनची टाइप के हयें पर अब हर बियाहे में सब एक साथ त मिलत नाहीं । ”

पिताजी - “ कैसे पता वह कनूनची टाइप है । ”

माँ - “ सक्सेना जी ओनके विभाग में काम करत हअ , ओ बताएन हअ पर कहत रहेन कि लड़की बढ़िया बा । वैसे पढ़ाई में त ओकर बहुत नाम बा । ”

मेरा इन सब वार्तालाप में कोई मन नहीं लग रहा था । मैं नाश्ता करके मन बहलाने के लिये यूनिवर्सिटी रोड की तरफ जाने के लिये निकला तो देखा मेरा छोटा भाई एक बोर्ड लगवा रहा था । मैंने पूछा , “ यह क्या है ? ”

भाई - “ आपका नेम प्लेट । ”

उसने दिखाया काले ब्लैक ग्राउंड में सुनहरे अक्षरों लिखा था

“ अनुराग शर्मा

आईआरएस

सहायक आयुक्त , आयकर ”

मैं - “ यह क्यों लगा रहे हो ? ”

भाई - “ यह तो लगाना ही है । ”

मैं - “ अभी मैं सहायक आयुक्त कहाँ हूँ ? मैं तो अभी सेवा ज्वाइन भी नहीं किया । ”

भाई - “ पाँच सितंबर को ज्वाइन कर लेंगे । ”

मैं “ उसके बाद लगाना । ”

भाई -“ ठीक है । ”

मैं यूनिवर्सिटी रोड गया । साइकिल एक जगह रोक कर रोड पर धूमने लगा । मेरी कोचिंग ने एक अलग पहचान मुझको दे ही दी थी । मैं सुभाष की चाय की दुकान पर रुककर चाय पीने लगा । बहुत से लोग मेरे पास आ गये पूछने के लिये कि मेंस कैसे लिखें । मैंने कहा आज शाम की कक्षा मेंस पर है । आप लोग आओ । सारे होस्टल से लेकर लोगों को आओ । आज मेंस की गुत्थी सुलझाते हैं । मेरा हिंदी बनाम अंग्रेजी का अभियान लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा था । सबके भीतर की ग्रन्थि एक अलग अभिव्यक्ति प्राप्त कर चुकी थी ।

मैं घर वापस आया । शाम को चार बजे कोचिंग गया , एक अप्रत्याशित भीड़ थी । वह भीड़ मुझे संचालित कर गयी , मैं दुविधा से बाहर आ गया । भीड़ को संबोधित करने लगा ,

“ मैंने इस ईश्वर प्रदत्त वरदान को त्यागने का फैसला कर लिया है । मैं सेवा ज्वाइन नहीं करूँगा । मैं लाल बहादुर शास्त्री एकेडमी मसूरी को इलाहाबाद के हिंदी माध्यम छात्रों से पाट दूँगा । अब संघर्ष भाषा का ही नहीं शहर की अस्मिता का भी है । ”

अनुराग करान्तिधर्मी हो चुका था , बेपरवाह सभी से । पता नहीं यह उसके अंदर की ग्रन्थि थी या समाज की पीड़ा जो उसे निर्देशित कर रही थी । कुछ सवालों का जवाब समय देता है । समय भी इंतज़ार में

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 281

मेरी उद्घोषणा पूरी कक्षा में एक नीरवता व्याप्त कर गयी । जिस लक्ष्य को ध्येय रखकर अपने गाँव- देहात से यह सब चले थे उस लक्ष्य की प्राप्ति के बाद कोई सेवा अस्वीकार कर रहा , वह भी सहर्ष यह पूरी कक्षा को विस्मय में डाल गया । दिनेश ने खड़े होकर कहा , “ सर यह फैसला बड़ा है और यक़ीन नहीं आ रहा पर यह कब लिया आपने ? ”

मैं “ यह फैसला बड़ा हो सकता है पर यह जितना बड़ा दिख रहा उससे अधिक यह बहुत ही कठिन है । मैं इसको बड़ा फैसला नहीं एक कठिन फैसला कहूँगा । मेरे पास कोई व्यावसायिक डिग्री है नहीं । मुझे जीवन -

यापन के रास्ते तो तलाशने ही होंगे । इन सारी बातों के कारण यह फ़ैसला लेना बहुत ही कठिन था । “

दिनेश - “ सर एक आदर्शवाद तो हरदम स्तुत्य होता है पर अगर वह यथार्थ के धरातल से हटा हुआ हो तब वह अप्रासंगिक ऐसा होता है । मैं आपके निर्णय पर कुछ नहीं कह रहा और न ही कहने की हालत में हूँ । आप एक बहुत ही समझदार और परिपक्व व्यक्ति हैं । आपकी सोच पूरी शहर को भावना के अपार सागर में बहा ले जायेगी , ऐसा शहर में कभी किसी ने किया नहीं पर यह कितना प्रैविटल होगा इस पर विमर्श एवम् चिंतन की आवश्यकता है । ”

अशोक - “ सर बिल्कुल ही उचित कदम नहीं है । अगर आपको लगता है यह नौकरी त्याग कर कोचिंग चलायें ज्ञान बाँटे और पैसा कोचिंग से कमायें तब आपको ग़लतफ़हमी है सर । यह इलाहाबाद है यहाँ पूरी वाले भरे पड़े हैं । पढ़ेंगे पर वह मुफ़्त का होना चाहिये । आपने एक कोचिंग सत्र चलाकर देख लिया है और इस क्लास में पैसा देने वालों से ज्यादा बड़ी संख्या मुफ़्तखोरों की है । वैसे सर मुझको तो बहुत फ़ायदा होगा अगर आप मेंस की तैयारी करवायेंगे पर मैं अपने स्वार्थ को दरकिनार करके कह रहा , यह निर्णय उचित नहीं है । ”

मैं “ निर्णय हो चुका है , यह सही है या ग़लत इस पर एक न ख़त्म होने वाली विवेचना चलती रहेगी । मैं पढ़ाना चाहता हूँ , शायद सेवा छोड़ भी इसीलिये रहा हूँ । मेरे अपने कैरियर से ज्यादा महत्वपूर्ण है शहर का गौरव जिसकी आभा दिन प्रति दिन क्षीण हो रही है । हम लोग कल से नियमित कक्षायें चलायेंगे । कक्षा में स्थान सीमित ही होते हैं और अगर अभ्यार्थी पर थोड़ा व्यक्तिगत ध्यान देने का उद्देश्य हो तो कम छात्र बेहतर होते हैं । जो लोग इस वर्ष मेंस दे रहे वह ही क्लास करें बाक़ी लोगों के बारे में बाद में विचार किया जायेगा । ”

यह छात्रों को रास कम आया क्योंकि बहुत से लोग जो प्रारम्भिक परीक्षा पास नहीं कर पाये थे वह भी कक्षा में थे । यह तब और कम रास आया जब मैंने कहा , “कोई निश्चित फ़ीस नहीं है जिसका मन करे दो जिसका मन करे न दो । अगर कुछ लोग भी फ़ीस दे देंगे तब संस्थान चलाने में थोड़ा आसानी होगी पर यह मैं आप पर छोड़ता हूँ आप क्या करना चाहते हैं । ”

यह कहकर मैं बदरी सर के कमरे पर गया । वह मसूरी जाने के लिये ज़रूरी सामनों की लिस्ट बना रहे थे । वह ज़मींदार घर से आते थे । घर में खेती-बाड़ी भी थी और क़ालीन का व्यापार भी होता था । उनके बाबा ने उनको बहुत पैसा दिया था मसूरी जाने की तैयारी के लिये । उन्होंने लिस्ट वहीं पर रोक दी और पूछा , “ क्या अंतिम फ़ैसला है ? ”

मैं “ फ़ेसले बदला नहीं करते सर । वह तो जो हो गया वह हो गया । ”

बद्री सर - “ घर में बताया ? ”

मैं “ अभी नहीं । ”

बद्री सर - “ मतलब आपको किसी की नहीं पड़ी है ? आप एकदम स्वतन्त्र हो ? आपके लिये किसी की ख्वाहिशों एवं भावनाओं की कोई कीमत नहीं है ? ”

मैं शांत बैठा रहा । वह फिर बोलने लगे ,

“ अनुराग , भावावेश का निर्णय अगर सदैव नहीं तो बहुधा अपरिपक्व ही होता है । यह एक क्षणिक आवेश का निर्णय है , यह घर में भूचाल ला देगा । मेरे गाँव में मेरे नाम का नेम प्लेट लगा दिया गया है । तुम पुनः विचार करो अपने उतावलापने से परिपूर्ण निर्णय पर , यह सब एक झटके में खत्म कर रहे हो तुम । ”

मैं “ सर मेरा छोटा भाई भी नेम प्लेट बनवा कर ले आया है । वह लगा रहा था , मैंने रोक दिया । ”

बद्री सर - “ अनुराग , बहुत ही गलत कदम तुम उठा रहे हो । करोगे क्या यह छोड़कर , यह सोचा है ? ”

मैं “ अभी नहीं । ”

बद्री सर - “ कौन से तुम आईआईटी के इंजीनियर या मेडिकल के डाक्टर हो जिसके पास कोई विकल्प होता है कुछ करने का । तुम्हारी सारी समस्या उस कोचिंग से आरंभ हुयी है । वह अगर तुम न आरंभ किये होते तब यह नौबत न आती । उसी के कारण तुम्हारा दिमाग़ फिर गया है । चलो जब आपने अंतिम फ़ेसला कर ही लिया है तब उस पर क्या बहस करना । ”

मैंने सर से सारी तैयारियाँ पूछीं । सर ने सब विस्तार से बताया । वह दरेन से देहरादून तक जायेंगे उसके बाद मसूरी टैक्सी करके चले जायेंगे । शहर से बहुत से लोग जा रहे थे इसलिये साथ की कोई समस्या थी नहीं और देहरादून तक सब एक ही दरेन से जा रहे थे । मैंने कहा , सर मैं आऊँगा आपको स्टेशन विदा करने । यह बहुत ही महत्वपूर्ण क्षण है जीवन का ।

बद्री सर - “ अच्छा होगा अगर तब तक आपका दृष्टिकोण बदल जाये और आप भी हमारे साथ चलो । ”

मैं कुछ न बोला , चाय पीकर सर के यहाँ से अपने घर आ गया । मेरे घर पहुँचने के पहले ही हंगामा हो चुका था । दिनेश और अशोक घर आकर पूरी कहानी सुनकर सब सकते में आ चुके थे , किसी को

यह यक्कीन नहीं आ रहा था । मेरे घर पहुँचते ही पिताजी ने पूछा , “ दिनेश और अशोक ने जो कहा वह सही है ? ”

मैं - “ क्या कहा ? ”

पिताजी - “ तुम नौकरी नहीं करोगे और तुमने सेवा त्यागने का निर्णय ले लिया है । ”

मैं - “ हाँ । ”

पिताजी - “ कब लिया फैसला ? ”

मैं - “ आज ही । ”

पिताजी - “ किसी को बताने की भी ज़रूरत नहीं समझी । ”

मैं मौन रहा । मेरे मौन रहने पर पिताजी ने पूछा , “ यह फैसला क्यों? क्या करोगे आगे यह सोचा है ? ”

मैं - “ अभी नहीं । ”

पिताजी - “ मुन्ना सारी समस्या की जड़ यह तुम्हारी कोचिंग है । तुम शहर के गरीब - कमज़ोर छात्रों की प्रशस्ति गाथाओं से अभिभूत हो चुके हो । तुमको यह याद रखना चाहिये कि अगर तुम्हारी यह रेंक हटा दी जाये कोई क्लास में नहीं आयेगा । इस समय तुम्हारे द्वारा उछला हुआ पत्थर अगर गिर भी रहा हो तो लोग उसे संवेगी कहते हैं पर पाँच सितंबर के बाद भी पत्थर यही उपमा पायेगा , यह कहना मुश्किल है । यह जीवन तुम्हारा है तुम स्वतन्त्र हो फैसले के लिये , पर यह मैं ज़रूर कहूँगा यह भावावेश में लिया गया निहायत ही बेकूफ़ाना फैसला है । जीवन को वास्तविकता के धरातल पर जीना चाहिये न कि भावनाओं को जीवन की रास पकड़ा कर मनमङ्गी से संचालित करने की स्वतन्त्रता दी जानी चाहिये । एक बात याद रखना यह फैसला तुमको जीवन में आगे ले जायेगा इसकी संभावना कम है पर यह फैसला तुमको बहुत पीड़ा देगा इसकी संभावना बहुत ज्यादा है । मैं इसके आगे और कुछ न कहूँगा , ईश्वर ने तुम्हारी मति हर ली है । ”

माँ - “ मुन्ना तोहरे बेकूफ़ी के कौनौं इंतिहा हइयै नाहीं बा । बँौर केहू से राय - बात केहे तू एकतरफा निर्णय लै लेहअ । बदरी सर से पूछे रहअ ? ”

मैं - “ हाँ । ”

माँ - “ का कहेन ओ ? ”

मैं - “ कमेबेश वैसा ही कहा जैसा पिताजी ने । ”

माँ - “ भवा का एकै रात में इत बतावअ ? कौन बरम , ठाकुर , परेत , डाइन तोहरे ऊपर सवार होई के तोहार मति भरष्ट कै देहेस ? आखिर भ का ? ”

मैं - “ नौकरी में कुछ नहीं है । ”

माँ - “ के बताएस ? ”

मैं - “ एक कानपुर के सीनियर हैं वह बताये । ”

माँ - “ का ओ नौकरी छोड़ि देहेन ? ”

मैं - “ नहीं । ”

माँ - “ ओ त नौकरी के मज़ा लेत हयेन और दूसरे के लड़िका के बहकावत हयेन । ओनसे कहअ पहिले ओ नौकरी छोड़ि के गंगा किनारे भीख माँगे तब केहू और से कहई भीख मागअ । ”

मैं - “ वह थोड़ी कह रहे कि तुम इस्तीफा दो । वह तो हकीकत बताये उस बतायी गयी हकीकत में कोई आकर्षण नहीं है । ”

माँ - “ मुन्ना तू पहिले खुद नौकरी कै लअ , खुद तजबीज लअ नौकरी के भितरे से तब फ़ैसला लअ । ई पगलन के नाहीं घामे में न दौड़अ जब तरुवर के छाँह मिलत बा । मसूरी जाई के तैयारी करअ ई समाज सेवा के भूत जौन चढ़ा बा सब उतरि जाये जब विपरीत परिस्थिति आये । सारी मोटाई तबै चढ़त हअ जब पेट भरा रहत हअ । ई दुई पैसा कोचिंग से कमाई का लेहअ हअ तोहार दिमाझौ फिरि गवा बा । इहीं बरे भगवान दरिद्रन के कुछ देतेन नाहीं । अब तोहार बियाह करब ज़रूरी बा । तोहका चाही एक डैना , तू होई गअ हअ छुट्टा साँड़ । तोहरे गरदने में बाँधब मजबूत डैना सब तोहार दिमाझ सही रहे । ”

पिताजी की तरफ़ देखकर कहा , “ एनका बरे सुरुचि ठीक रहे । एनकर आईएस के नसौ उतरा रहे और सीधे रास्ते पर चलिहिं । जब हाथी पगलात हअ तब महावत बे मुरव्वत वाला चाही । ”

“ मुन्ना ई कोचिंग के डरामा आपन बंद करअ बहुत होई गवा । जा सबसे मिलब शुरू करअ । मसूरी जाई के पहिले सबसे मिलब ज़रूरी बा । ”

मैं कुछ न बोला , बस सुनता रहा । मैं शांत अवश्य था पर अंदर एक तूफ़ान हिलोरे ले रहा था । मैं वापस अपने कमरे में आया । मैं सोचने लगा अब कैसे यह मामला सुलझाऊँ तभी चिंतन सर के घर आने का शोर हो गया । भाई आया और बताया चिंतन सर आये हुये हैं । मेरे पहुँचने के पहले ही माँ ने सारा गुस्सा चिंतन सर पर उड़ेल दिया ...

“ चिंतन तुहीं ओकर दिमाग ख़राब केहे हअ / तुहिंन कहत रहअ समाज बरे
एक बड़ा निर्णय लेब ज़रूरी बा / तू काहे नाहीं लेतअ , काहे ओका बरगलावत
हअअ / न ओकर बियाह भअ बा न ऊ दुनिया देखेस / तू तअ कुल देखि
लेहअ और ओका भरमावत हअ / “

चिंतन सर - “ माता जी हुआ क्या? “

माँ- “ ओनहीं से पूछअ / बुद्ध बना हयेन / ”

मैं नीचे पहुँचा / चिंतन सर ने आगे बढ़कर मुझे गले लगा लिया /

“ चिंतन सर - “ क्या हुआ बाबा ? “

मैं- “ कुछ नहीं / ”

माँ- “ बतावअ न तू समाज के हित में कमंडल - दंड लै के गली - गली भीख
मगबअ / ”

मैं- “ माँ , तुम जो मन आ रहे कहे जा रही हो / ”

माँ- “ मुन्ना हमसे जबान व लड़ावअ / हमार खून बहुत गरम बा / ”

मैं- “ मैं भी तुम्हारा बेटा हूँ , मेरा भी खून गर्म है / बगैर कुछ जाने - समझे जो
मन आ रही बोल रही हो / ”

चिंतन सर - “ माता जी ज़रा समझने तो दीजिये / थोड़ा गुस्से पर क़ाबू
रखिये / ”

माँ- “ हमरे गुस्सा पर न त क़ाबू बा न क़ाबू करब / समझाई द ई कलेक्टर-
कमिश्नर के

मैं- “ चलिये सर ऊपर चलते हैं / ”

मैं और चिंतन सर ऊपर अपने कमरे में आ गये / चिंतन सर को सारी कहानी
सुनाई / सर बहुत प्रसन्न थे कि उनको आईआरएस मिल गयी है / वह बोले
, “ यार सारी खुशी काफूर कर दी , मैं पुलिस की नौकरी को गरियाता था
अब आईआरएस भी अपनी नौकरी को गरिया रहे हैं / यार , एक बात तो है
सब नौकरियाँ हैं मिथ्या ही , यह बात तो है / तुमको कौन बताया यह पूरी
कहानी नौकरी की / ”

मैं- “ अशोक तिरपाठी सर हैं / वह कानपुर में पदमान हैं / वह कामधेनु
स्वीट्स की सर्च पर आये थे , वही कहानी सब बताये , आप भी मिल लो मन
हो तो / ”

चिंतन सर - “ यह फैसला अंतिम है ? ”

मैं- “ कौन सा ? ”

चिंतन सर - “ सेवा ज्वाइन न करने का । ”

मैं - “ जी सर । ”

चिंतन सर - “ एकदम अंतिम ? ”

मैं - “ सर अंतिम ही है । कोचिंग में घोषण कर दी है । इस समय सारे यूनिवर्सिटी रोड पर हल्ला हो चुका होगा । ”

चिंतन सर - “ क्या करोगे ? मतलब अब आगे क्या इरादा है ? ”

मैं - “ अभी तो कोचिंग चलाऊँगा , बाद में देखता हूँ । सर , अभी जीवन कोचिंग से भी चल जायेगा , बाकी की बात बाद में देखेंगे । ”

चिंतन सर - “ क्या कोचिंग चलाना एक कैरियर के रूप में सोच रहे हो ? ”

मैं - “ सर , इतना बड़ा त्याग करके सिर्फ कोचिंग चलाऊँगा ? यह पूरे घर के अरमानों की हत्या करके बाज़ार में खुद को बेचूँगा , यह आपने कैसे सोच लिया । ”

चिंतन सर - “ यह तो मैं समझ रहा पर जानना चाह रहा । ”

मैं - “ सर , अभी भविष्य का कोई पता नहीं पर मैं समुद्र में प्रवेश करके लहरों पर सवार हो चुका हूँ , अब लहरें मेरी बात सुनकर मुझे क्षितिज पर जाने दें या हठधर्मी लहरें मुझे अतल गहराइयों में समाप्त कर दें , यह फ़ैसला मैं वक्त पर छोड़ता हूँ । पर सर मैं फिर एक नयी कहानी लिखना चाह रहा , इस सिविल सेवा से भी बड़ी कहानी । ”

चिंतन सर - “ स्याही तैयार है , काग़ज भी बेताब है नयी कहानी के लिये पर लफ़्ज तो चाहिये । मुझे वह लफ़्ज नहीं दिख रहे जो स्याही को आळादित कर सके । ”

मैं - “ सर इंतज़ार कीजिये । आपकी क्या राय है इस फ़ैसले पर ? ”

चिंतन सर - “ मैं तो पहले से ही कह रहा एक बड़ा फ़ैसला लेना होगा पर इतनी जल्दी एक बड़ा फ़ैसला होगा , यह मेरी कल्पना के बाहर है । ”

मैं - “ सर , समय का हम लोग इंतज़ार करते हैं , देखते हैं विधाता ने क्या लिखा है । आपकी तैयारी हो गयी मसूरी जाने की । ”

चिंतन सर - “ पुलिस सेवा से त्यागपत्र दे दिया है । इसको स्वीकार कराते हैं जल्दी । कल लखनऊ जाऊँगा डीजीपी से मिलने , सोचा है कमिशनर साहब से भी मिल लूँ । तुम भी साथ चलना । ”

मैं - “ नहीं सर , आप जाओ , अब मैं किसी से नहीं मिलूँगा । ”

रात कठिन थी , मेरी आँखों में नींद के आते ही माँ आ गयी यह कहते हुये , “
मुन्ना तू ऐसा न कर । गुड़िया का अच्छा विवाह करने का तूने वायदा किया है
। तूने ही कहा था जो पैसा जोड़ा है उसको उड़ाओ- खाओ मैं गुड़िया का
विवाह कर दूँगा । एक झटके में ही तू सब समाप्त न कर । ”

मेरी आँख खुली , माँ चाय का कप लेकर खड़ी थी । वह गंगा नहाने
जानकारी थी । उसने कहा , “ मुन्ना एक जवान बेटे से ऐसी बात नहीं करनी
चाहिये जो मैंने कल की , पर तू मेरी परिस्थिति समझ । ”

यह कहकर वह चली गयी । मैं बारजे पर खड़ा देख रहा उसको नंगे पाँव गंगा
स्नान की यात्रा पर जाते हुये । रात के अंधेरों ने अपना काम कर दिया था ,
सुबह पूरे यूनिवर्सिटी रोड पर एक ही चर्चा ...

अनुराग शर्मा ने इलाहाबाद के लिये सेवा त्याग दिया । कोई कह रहा यह
नाटक है तो कोई कह रहा वह ज़मीन के लिये समर्पित है ।

चिंतन सर ने सुबह मुझे पुनः समझाने का प्रयास किया । मैंने उनका अति आग्रह देखकर कहा , “ सर इस मुद्दे पर बात नहीं करते हैं । एक फ़ैसला हो गया है वह आप बदलवाने की कोशिश न करें । ”

मैंने थोड़ी देर में यह समझा कि चिंतन सर की वृहद् योजना का चौसर गड़बड़ा रहा है । उनकी चाहत थी कि मैं नौकरी करूँ , असामी तलाशूँ , आहूजा की संपत्ति क़ब्ज़ियाने में मदद करूँ और वह आठ- दस साल बाद मछलीशहर , सुल्तानपुर, इलाहाबाद , अमेरी में से कहीं से चुनाव लड़ें । उन्होंने अपनी अति महत्वाकांक्षा भी बता दी , “ बाबा यह सारा प्लान गड़बड़ा रहा है । ”

मैं -“ कौन सा सर ? ”

चिंतन सर - “ मेरी योजना थी कि तुम सेवा करो , धन संग्रह का कार्य करो । यह आहूजा निरबंसी हो ही चुका है । शालिनी - ऋषभ आयेंगे नहीं । तुम शालिनी को पटा ही लिये हो । वह खुद ही कह दी है कि तुम एक तिहाई के मालिक हो , यह 300-400 करोड़ के मालिक तुम हो ही गये हो । एक बात बताओ बाबा ? ”

मैं “ क्या सर ? ”

चिंतन सर - “ कहीं तुम्हारा दिमाग़ आहूजा की सम्पत्ति का वारिस होने की आशा से तो नहीं फिर गया है ? ”

मैं - “ सर , मैं दिखता बेवकूफ़ हूँ , मैं लगता बेवकूफ़ हूँ पर बेवकूफ़ बिल्कुल नहीं हूँ । ”

चिंतन सर - “ तुम बहुत चतुर स्याने हो , बेवकूफ़ जो तुमको समझे वह महा मूर्ख है , मैं भी मूर्ख नहीं हूँ । ”

मैं - “ सर , यह जो शालिनी ने भावावेश में प्रीतिवश कह दिया , इसका आप ज़रूरत से ज्यादा अर्थ निकाल रहे हैं । यह लोगों का खून चूसकर , कर चोरी करके , सारे ग़लत कार्य करके अर्जित किया धन किसी को देने वाले हैं । दो- चार कमीज़ उपहार में दे देने वाली सासु ऐसा प्रेम है । सासु भी धन बेटे को ही देती है न कि दामाद को । दामाद को तो बस कमीज - पैंट का कपड़ा देकर निपटा दो । ”

चिंतन सर - “ यहाँ तो बेटा है नहीं । एक बिटिया ससुरा आहूजा और जन्माया होता हम मन्त्र पर मन्त्र मारकर तुम्हारा बियाह करा देते । ”

मैं - “ सर धीरे बोलिये । माँ का वैसे ही पारा चढ़ा है , अगर यह सुन ली कि आप अन्तर्जातीय विवाह की सलाह दे रहे हो , अभी ही हम दोनों का बाजा बज जायेगा । ”

चिंतन सर - “एक बात बताओ । ”

मैं “ जी सर । ”

चिंतन सर - “ कहीं तुम्हारा चुनाव लड़ने का तो इरादा नहीं है ? ”

मैं “ यह क्यों कहा सर ? ”

चिंतन सर - “ यह सारी क्रवायद हिंदी बनाम अंग्रेज़ी , मैं अंग्रेज़ी को परास्त करूँगा , मसूरी को हिंदी माध्यम से भर दूँगा । धर्म - जाति - मज़हब के बीच एक नया नारा भाषा का । यह नारा तो लोगों के सिर चढ़कर बोलेगा ही । ”

मैं “ सर , मुझे अपनी ज़मीन और अपनी हक्कीकत का एहसास है । मैं कद से बड़े ख़बाब ज़रूर देखता हूँ पर राम होने का भ्रम नहीं पालता । सर , मैंने जुगनुओं के परों से अपने लिये रौशनी तलाशी है वह बहुत मुश्किल से मिली थी, और वह रौशनी लोगों को आळाद दे रही थी , मैंने बेवजह छीन लिया । मेरी पीड़ा मैं ही जानता हूँ । मेरी माँ पूरी रात रोयी होगी , वह जितना हताश और निराश मुझे आज सुबह दिखी है उतना मुझे कभी नहीं दिखी । मैंने सारे जीवन इसी बारजे पर खड़े होकर उसको गंगा स्नान के लिये जाते देखा है । वह सुबह मुझे चाय देकर जाती थी और मैं इसी बारजे पर खड़े होकर गली के मोड़ तक उसको जाते हुये देखता था । जब वह मोड़ पर ओझल हो जाती थी तब मैं पढ़ाई आरंभ करता था । उसकी चाल में एक उत्साह हुआ करता था । पर आज उसकी चाल में कोई उत्साह न था । वह यन्त्रवत चल रही थी । सर , यन्त्रवत चाल में एक यन्त्रणा होती है । वह सड़क पर किसी टैम्पो से टकरा भी सकती थी । उसने अपने सारे सत्कर्म मेरे नाम कर दिये जिसका यह परिणाम आप देख रहे हैं । सर , मेरी पीड़ा का आपको एहसास नहीं है । मेरे भीतर एक भरत जन्म ले चुका है जो सारी समस्याओं की जड़ स्वयम् को मानता है और उसे अयोध्या ऐसा राज्य प्राप्त हो जाने के बाद भी एक आत्मग्लानि हो रही है । ”

चिंतन सर - “ क्यों है तुमको आत्मग्लानि, क्या गलत किया है ? ”

मैं “ सर सभी लोगों को आशा देकर मैंने सबकी आँखों से एक झटके में पाये हुये ख़बाब की ताबीर छीन ली । ”

चिंतन सर - “ मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा है , तुम नौकरी क्यों छोड़ रहे । ”

मैं “ सर , कुछ नहीं है नौकरी में । कोई कार्य की स्वतन्त्रता नहीं है । लोगों के कहने पर गलत- सही काम करो । ”

चिंतन सर - “ गलत- सही तुम ही कह रहे । गलत मत करो सही काम करो । ”

मैं “ सर यह बहुत बारीक महीन रेखा होती है गलत- सही के मध्य । यह आसान नहीं विवेचित करना । मैं समझता था देश - समाज के लिये कुछ कर सकता हूँ पर मुझे कुछ भी करने की कोई संभावना नहीं दिखती । ”

चिंतन सर - “ यह आदर्शवाद छोड़ो । चलो सेवा आरंभ करो , चेले बनाओ और फिर मेरे सांसद - मन्त्री बनने का रास्ता सुझाओ । अमेरी से चुनाव जीतकर मैं देश - दुनिया में तहलका मचा दूँगा , बस तुम्हारे ऐसा कृष्ण साथ रहे । ”

मैं “ सर , अब मैं तो नहीं ज्वाइन करूँगा सेवा । आपको मेरी सारी शुभकामनाएँ । ”

चिंतन सर - “ कोचिंग कब से है ? ”

मैं “ आज से । ”

चिंतन सर - “ मैं जा रहा लखनऊ आज । कल आ जाऊँगा । मैं भी उद्घोषन दूँगा । ”

मैं - “ अच्छी बात है सर । ”

सर कमिशनर साहब से मिलते लखनऊ चले गये । दादू ने अपना सूचना फैलाने का काम कर दिया था , दिन में ही रिश्टेदारियों में सुगबुगाहट आरंभ हो गयी कि मुन्ना आईएएस की नौकरी छोड़ रहे हैं । बाबा भैया परसन्न थे और वह यह भी कह मारे लगता है मुन्ना मेडिकल में रिजेक्ट हो गये । मैंने सायंकाल की कोचिंग आरंभ की । भीड़ अनियंत्रित थी , इसका कारण कोचिंग मुफ्त ऐसी थी । जो दे उसका भी भला और जो न दें उसका भी भला । पर कुछ छात्र थे जो इस बात पर लोगों को कनविंस कर रहे थे कि फ्रीस दी जानी चाहिये । इसके पीछे वह दो तर्क दे रहे थे । पहला , मेहनत कोई आदमी इतना कर रहा वह भी अपने जीवन का सुख त्याग कर तब उसकी क्रीमत होनी चाहिये । दूसरा , अगर फ्रीस दे देंगे तब दबाव बना रहेगा नहीं तो जब मन आयेगा कोचिंग बंद कर देंगे , यह सेवा से त्यागपत्र तो दे नहीं रहे बस जा नहीं रहे हैं । वैसे भी यह मूड़ी आदमी हैं कब क्या करेंगे कुछ पता नहीं । इनके दिमाग़ की अस्थिरता तो जग ज़ाहिर ही हो गयी है । अगर हम पैसा दे देंगे तब कोर्स पूरा करने का दबाव होगा और इनका नोट्स भी प्राप्त हो जायेगा । यह दूसरी युक्ति कुछ काम कर गयी और लोगों ने पहले ही दिन पैसा

देना आरंभ कर दिया । इस बार मेरे पास कोई सहायक भी न था । दाढ़ू भी साथ छोड़ चुका था । अशोक पैसा लेने और रखने का काम करने लगे । मैं अनमयस्क था इस काम से । मैं कोचिंग से वापस आया, इस बार माँ ने एक बार भी नहीं पूछा कोचिंग कैसी चली, पैसा कितना मिला । अशोक पैसा लेकर आया तब तक मैं बद्री सर के पास जा चुका था । उसने माँ को पैसा देना चाहा पर उसने लेने से इंकार कर दिया । उसने कहा, “मुन्ना के दै देहअ, हम का करबअ ओनकर रूपिया ।“

मैं रात लौटकर आया, बहन ने सारा वार्तालाप सुनाया । वार्तालाप सुनकर बहुत दुःख हुआ मुझे । आखिर वह शाम आ गयी जब सबको मसूरी जाना था । मेरी कोचिंग के छात्र बद्री सर, चिंतन सर, शशि को जानते थे । उन लोगों ने स्टेशन पर विदा करने की ख्वाहिश ज़ाहिर की और कहा “सर, आज तक हमने किसी आईएएस को विदा नहीं है शहर से । आपको करना चाहते थे पर आपने हमारे लिये सब त्याग दिया है । हम सब चाहते हैं बद्री सर, चिंतन सर को विदाई देना ।“

मैंने बता दिया कि किस दरेन से वह लोग जा रहे और किस प्लेटफॉर्म से दरेन जायेगी । दरेन शाम को है आप सब वहीं आ जाना मैं भी मिलूँगा ।

चार सितंबर की शाम.. जीवन की सबसे कठिन शाम । इस शाम का इंतज़ार मेरे पूरे घर पर था । सबने पता नहीं कितने ख़बाब पाले थे आज के शाम के । मैंने घर में कहा, “जा रहा लोगों को छोड़ने, थोड़ा देर लगेगी ।“

किसी ने मेरी बात पर कोई तरजीह न दी । मैं घर से निकला और जैसे ही सिविल लाइंस के हनुमान मंदिर पहुँचा एक बड़ा बैंड बाजे का कारवाँ सड़क पर चल रहा था । मैंने देखा उस कारवें की तरफ, यह ताराचंद होस्टल का जत्था था । शांत स्वभाव के धीर - गंभीर उपेन्द्र भूषण मिश्रा माला पहने सबसे आगे पैदल चलते दिखे इसके पीछे एक न ख़त्म होने वाली भीड़ । भीड़ इलाहाबाद ज़िंदाबाद के नारे लगा रही थी । बैंड - बाजे गालों के साथ - साथ लड़कों के पास ढोलकें थीं और वह ढोलक की थाप और मंजीरे बजा रहे थे । हनुमान मंदिर पर कारवाँ रुका, उपेन्द्र भूषण और कुछ साथी मंदिर के अंदर गये हनुमान जी का दर्शन किया परसाद चढ़ाया और क़ाफ़िला स्टेशन की ओर । सड़क के दोनों तरफ लोग पूछ रहे थे क्या? जब पता चला वस्तु स्थिति का तब सब लगे दौड़- दौड़ कर उपेन्द्र को देखने लगे । मैं स्टेशन पर पहुँचा, स्टेशन के बाहर एक छात्रों की बड़ी भीड़ थी । हर होस्टल के छात्र थे । इतनी देर में चिंतन सर की पुलिस की जीप को पुलिस वाले धकेलते हुये लेकर आ रहे थे । मुझे पता चला कि पुलिस में परंपरा है कि जब अधिकारी का स्थानान्तरण होता है तब गाड़ी को धक्का मारकर ले जाया जाता है । दसियों पुलिस वाले जीप को धक्का मार रहे थे । चिंतन सर के साथ पूरा डीजे होस्टल था । एनएएन झा वाले थोड़ा संयत थे । वह हल्ला कम कर रहे थे । इतने में हवा में गोलियों की आवाज़ गूँजने लगी, पता चला

बाबू विनोद सिंह भी पुलिस की नौकरी पा गये हैं और हिंदू होस्टल वालों ने कट्टा चलाना शुरू कर दिया बेपहरहवाह व्यवस्था और नियम - क्रानून से । बाबू विनोद सिंह के चाचा धनंजय सिंह भी राइफल लिये आये हुये थे । उनकी खुली जीप में दो नाली और राइफल थी । चाचा धनंजय सिंह ने पुलिस वालों को बुलाया और बोला सलूट मारो तुम्हारा अफसर जा रहा ।

चिंतन सर - “ मातादीन सलामी दो बाबू विनोद सिंह को , यह सीधा एस पी ग्राजियाबाद बनेंगे । ”

पुलिस वालों ने सलूट मारा । चाचा धनंजय सिंह राइफल को पेट पर टिकाकर बोले , “ हम तो दरोगा को अगलेन दिन बुलवाय लिये घर पर जैसै पता चला । अब बच्चा घर का हुआ है तब घर - दुआर की इज्जत त होई चाही । ”

शशि तिरपाठी, रचना दीक्षित भी उसी समय कुँछ वोमेंस होस्टल की लड़कियों और अपने घर वालों के साथ आ गयीं । सुरुचि अपने पिता और कुछ रिश्तेदारों के साथ थी । सुरुचि के पिता जी ने पूछा , आप कौन से डिब्बे में हैं ? “ मैंने उनकी बात अनसुनी कर दी यह सोचकर कौन कहानी सुनाये इस समय ।

हम लोग प्लेटफार्म की तरफ बढ़ने लगे । कपिदल की तरह छातरों का समूह नारे लगा रहा था , “ अभी तो यह अँगड़ाई है आगे बहुत लड़ाई है । ”

एक ऊर्जा पूरे स्टेशन पर व्याप्त थी , इतने देर में राजेश प्रकाश जिनके घर का नाम अंशु था अपने पिता और दो चाचा के साथ आते दिखे । चिंतन सर बोले , “ बाबा इनको एकेडमी में दूध बैंधवा दूँगा और सुबह- शाम दंड लगवाऊँगा । इनका स्वास्थ्य ठीक करूँगा । इन्होंने बहुत सहायता की थी इंटरव्यू के समय यूपी भवन में । बद्री सर मेरे पास आये , वह भावुक थे । उन्होंने मेरे लग कर कहा , “ मुझे कई जन्म लेने होंगे तुम्हारा ऐहसान उतारने के लिये । मैं घर से चल रहा था मेरे बाबा फफक - फफक कर रोने लगे । कहा , बद्री बेटा मैं इसी दिन के लिये जिंदा था । अब मैं शांति से मृत्यु को प्राप्त कर सकता हूँ । अनुराग , तुम न होते मैं सफल नहीं हो सकता था । मैं हर रात तुम्हारे बारे में सोचता हूँ । क्या करिश्मा था , नियम- क्रानून पर अपना विश्वास अधिमानता पा गया । यह हमारा हक्क है हमारी ज़मीन , हमारी भाषा , अपनी माँ के साथ रहना । ईश्वर तुमको जहाँ की सारी यश गाथाओं का नायक बनाये । मैं पहले सोचता था तुम गलत कर रहे हो जो सेवा अस्वीकार कर रहे पर मुझे लग रहा ईश्वर ने तुम्हें मेरे ऐसे बहुत से लोगों के कल्याण के लिये निर्मित किया है । ”

बद्री सर की आँखों में आँसू आ गये । सर के साथ मैंने बहुत वक्त बिताया था । हम दोनों की आपस में बहुत बनने लगी थी । सर ने मेरी तरफ देखकर कहा , “ अनुराग जीवन में कुछ मैं तुम्हारे लिये कर सका तो यह मेरा सौभाग्य होगा

। मैंने बाबा से सारा किस्सा साझा किया है । वह तुमसे मिलना चाहते हैं , समय निकाल कर कभी भदोही चले जाना । “

मैं भी भावुक हो चुका था । मैंने कहा , “ सर जीवन कहाँ मुझे ले जायेगा , यह तो मुझे नहीं पता पर मैं अपनी माँ का अपराधी हूँ । वह मुझसे बात नहीं करती है , मुझसे मिलने नहीं आती है , कोचिंग के पैसे लेने से उसने इंकार कर दिया , वह उत्साहीन होकर गंगा नहाने जाती है । वह वहाँ से देर में आती है , वह वहाँ पर क्या करती है मुझे नहीं पता । “

मेरे आँखों से आँसू झरने लग गये । मेरे रोने की आवाज़ आने लग गयी । मेरी ओर लोग देखने लग गये । सर ने बात संभाली यह कहकर , हमारा अनुराग का साथ रहा है , यह मुझकों विदा करते समय थोड़ा भावनाओं में आ गये हैं । चिंतन सर ने पास आकर कहा , “ अनुराग एक बड़ा फ्रैंसला है यह थोड़ा तकलीफ़ देगा । “

मैं “ सर फ्रैंसला कोई तकलीफ़ नहीं दे रहा । यह तो मैंने सोच- समझकर ही लिया है । यह लेने को किसी ने बाध्य तो किया नहीं पर किसी ने अपना संभावित मोक्ष त्यागा वह मुझे जीने नहीं दे रहा । “

चिंतन सर समझ गये और इतना ही कहा , “ कल्याण होगा । “

चाचा धनंजय सिंह पूरे इंतज़ाम से थे । समोसा - मिठाई भरपूर लाये थे , लोगों ने भरपूर मिठाई खाई । दरेन इलाहाबाद शहर का प्लेटफ़ार्म छोड़ने लगी , इलाहाबाद ज़िंदाबाद के नारे लगने लगे । दूर ओझल होती दरेन में देख रहा था । मैं वापस सीढ़ियों पर चढ़ने लगा । मैं उसी जगह आकर रुक गया जहाँ पर राजीव त्यागी ने मेरा परिणाम मुझे बताया था और मैं वह सीढ़ी निहारने लगा जिस पर मैंने अपनी रँक गिनी थी और स्वयम् से कहा था ,

“वह सारे ख्वाब जो मुकम्मल होने का इंतज़ार कर रहे थे , वह सारे ख्वाब जो मेरे सीने में साँस ले रहे थे , वह सारे ख्वाब जो मेरे कद और हैसियत से बड़े थे , वह सारे ख्वाब जो मैंने संजोये थे , वह मेरे सारे अरमान जो बिखर कर भी मेरे पास थे वह सब मुंजमिद होकर एक साथ इस अखबार के आधे पेज पर मेरे नाम के छः अक्षरों में । “

मुझे याद आया वह क्षण जब

मैंने अपने दोनों हाथों में उस आधे पन्ने को एक रिदा की शक्ल देकर ऊपर उठाया था । मेरा हाथ आसमां की तरफ था और कहा था मैंने , ऐ परवरदिगार तेरी महती कृपा इस अकिञ्चन पर मेरे पास कोई अल्फ़ाज़ नहीं जो कह सकें शुक्रिया तेरी इस इनायत पर

मैं सीढ़ियों से सिविल लाइंस की तरफ उतर रहा था । मेरे पीछे छात्रों का हुजूम था जो इलाहाबाद ज़िंदाबाद के नारे लगा रहे थे । मैंने पीछे मुड़कर देखा , एक भीड़ जो पता नहीं मेरा नेतृत्व चाह रही थी या नहीं पर मैं उनका नेतृत्व करना चाह रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 283

मैं स्टेशन से देर रात घर वापस आया । मैं अपनी साइकिल मकान के सामने के बारजे के नीचे खड़ी करके सीधा अपने कमरे में चला गया । पूरे घर में एक अज़ीब नीरवता व्याप्त थी । मुझे सियारों की आवाज़ कानों में सुनायी देने लगी । मैंने चौंककर देखा यह सोचते हुये यह क्या हो रहा है । मुझे भ्रम का एहसास हो गया और मैं भयग्रस्त हो गया । मैं थोड़ी देर कमरे में बैठा रहा , सोचा चलो माँ को देखकर आता हूँ वह क्या कर रही है । मैं नीचे कमरे में गया । मेरी माँ , पिताजी और छोटा भाई कमरे में शांत बैठे थे । कोई कुछ नहीं बोल रहा था । मैंने शांति तोड़ते हुये पूछा, “ क्या हो गया ? ”

माँ - “ अब का होई के रहि गवा ? ”

मेरे भाई ने बताया कि रामराज के अगुआ ओम प्रकाश पाठक आये थे और रामराज की बेटी की फ़ोटो- कुँडली वापस ले गये । मैंने कहा , “ क्या हो गया अगर वह वापस ले गये तब ? ”

पिताजी - “ बात फ़ोटो- कुँडली वापस लेने की नहीं है , बात पूरे शहर में फैल रही अफ़वाह की है । ”

मैं - “ कैसी अफ़वाह ? ”

पिताजी - “ हर तरह की अफ़वाह । ”

मैं - “ नौकरी मैं नहीं करने जा रहा यह तो सच है अब इसमें कौन सी अफ़वाह है ? ”

पिताजी - “ लोग कह रहे तुम मेडिकल में रेजेक्ट हो गये । ”

मैं - “ पिताजी लोग तो कहेंगे ही । कुछ तो कहना ही है लोगों को , किस-किस का मुँह पकड़ेंगे आप । ”

पिताजी - “ मुन्ना तुमने नौकरी क्यों छोड़ दी ? कुछ तो कारण होगा ? क्या करना चाहते हो ? ”

मैं - “ पिताजी , नौकरी से जो मुझे प्राप्त करना था मैं प्राप्त कर चुका हूँ । यह नौकरियाँ कुछ नहीं देती सिवाय जीवन - यापन के । हर व्यक्ति पांच-

सात साल में इन नौकरियों में निराश होने लगता है । या तो आप इस नौकरी में रम जाओ और जी हज़ुरी करके जीवन बिताओ नहीं तो एक किनारे पर पढ़े रहो । यह नौकरी आपको जबान देकर जबान को तालू से चिपका देती है और क़लम देकर क़लम में अपनी स्याही भरकर मनमाना रंग चलवाती है । जीवन में एक विवशता व्याप्त हो जाती है । मैं विवशता में जीवन नहीं जीना चाहता । ”

माँ - “ एक बड़का ज्ञानी अशोक तिरपाठी हयेन । महामायी सकायी गयी कहाँ से कामधेनुआ के इहाँ छापा मारै आई गयेन और बरगलाय देहेन । ”

मैं - “ उनको बेवजह सब लोग दोष दे रहे हैं । उन्होंने सिफ़्र बताया था जो मैंने पूछा । मैं आयकर विभाग , कस्टम विभाग , कलेक्टर संजीव रंजन , कमिश्नर सत्यानंद मिश्र सबसे पूछा बगैर यह बताये मैं क्या करना चाहता हूँ । सबका यही कहना था ऊपर वालों से मिलजुल कर रहो , उनके अनुसार कार्य करो आप एक सफल अफ़सर बनेंगे । मैंने कहा , मैं सफल नहीं सार्थक अधिकारी बनना चाहता हूँ । कमिश्नर साहब ने कहा , सार्थकता की तलाश इन सेवाओं में अगर असंभव नहीं हो तो बहुत मुश्किल ज़रूर है । ”

“माँ, मैंने पूछा सर आप कैसे बड़े- बड़े ज़िले करते हैं और हमेशा महत्वपूर्ण पदों पर बने रहते हैं , तब उन्होंने कहा इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है । मैंने पूछा , कैसी कीमत ? साहब ने कहा कई बार आइने में मैं अपना चेहरा नहीं देख पाता । मेरा ज़मीर अक्सर कहता है मुझसे , तू वह नहीं रहा जो कभी हुआ करता था । माँ एक बात और कही उन्होंने... ”

माँ - “ क्या? ”

मैं - “ सर कह रहे थे कि मेरा ज़मीर कहता है यह सब छोड़ दो तुम । पर मैं अब छोड़ नहीं सकता , एक नशे की लत लग चुकी है वह मजबूर करती है मुझको । तुम पूछ लेना जब वह फ़ोटो- कुंडली लेने आयेंगे । वह भी ले ही जायेंगे अपनी फ़ोटो वापस । माँ, मेरे पास कुछ न था और न कुछ है सिवाय तेरे आशीर्वाद के , तू मुझे उससे वंचित न कर । मुझे अपनी जगह समाज में बनाने दे । जानती है क्या हुआ अभी कमरे में.... मैं कमरे में गया मेरे कानों में सियार की आवाज़ गूँजने लगी । मुझे एकाएक याद आया कि जब भरत ननिहाल से अयोध्या आ रहे थे तब पूरे रास्ते सियार की आवाज़ उनके कान में आ रही थी और वह विचलित हो गये थे । मैं कमरे में विचलित हो गया । मुझे नींद नहीं आती सिफ़्र इसलिये कि तू मुझसे बात नहीं करती , तू मुझे डाँटती नहीं , तूने कोचिंग के पैसे लेने से इंकार कर दिया , तू मेरी चिट्ठियों को फाड़कर अब पढ़ती नहीं है , तू गंगा स्नान ऐसे जाती है जैसे लुढ़क रही है तेरे चाल का उत्साह चला गया है । तूने मुझे त्याग दिया है , तू मत त्याग

मुझको । मैंने नौकरी छोड़ी है यह दुनिया नहीं छोड़ी है । मैं विजय की ओर अग्रसर होना चाहता हूँ । एक रण जीतकर उससे जो भी प्राप्त होना था वह मैंने प्राप्त कर चुका हूँ । अभी तक मैं पैदल लड़ रहा था अब मैं रथ पर सवार हूँ, मेरे पास दिव्यास्तर हैं। एक बड़ी सेना मेरे नाम पर मरने - मारने को अमादा है और वह सेना कह रही तू विजय का भोग करना चाह रहा या दिविजय करना चाह रहा । माँ, मैं दिविजय करना चाहता हूँ, तू मुझे करने दो । यह चिंदीचोरी की नौकरी जिसमें आप का सीनियर अधिकारी आपसे सारे गलत काम कराना चाहता है करने के लिये तू मुझे मौत से छीनकर नहीं लायी है । मुझे कोशिश करने दे एक गैर मामूली दास्तान लिखने की । मैं अगर न लिख पाया तब भी माँ तू मेरा यक़ीन कर मेरी असफलता की कहानी लोगों को परेरित करेगी । यह भी हो सकता है असफलता की कहानी बहुत सी विजयगाथाओं पर भारी पड़े । संभावना इसकी भी है कि मैं समाप्त हो जाऊँ पर मेरे समाप्त होने की प्रक्रिया भी लोगों को रोमांच देगी । इतिहास जितना विजयों से बना है उससे अधिक संघर्षों से बना है, मुझे संघर्ष करने दे पर अगर तूने मुझे त्याग दिया तब मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा । मेरी श्वास में कोई दम नहीं है, मेरे अस्तित्व में कोई तेज नहीं है । जो कुछ भी है मेरे में वह तेरी उस पंक्ति से है, हौसलों को और तराश ... तेरे में सिकंदर भी है सुकरात भी है

मैं और अधिक बोलने की हालात में नहीं था । मेरा गला रुँध गया था । मेरे आँखों से आँसू अविरल बह रहे थे । सब लोग शांत सुन रहे थे । कोई कुछ न बोला । मैं उठा अपने कमरे में वापस आ गया । मैं अपनी कल की कक्षा के लिये पढ़ने की कोशिश करने लगा पर कोशिश नाकामयाब हुई । मुझे नौकरी त्याग देने का कोई दुःख न था पर माँ का दुःख मुझे जीने नहीं दे रहा था । वह सामान्य हो ही नहीं पा रही थी, कोशिश वह भी कर रही थी सामान्य होने की पर इतना बड़ा सदमा उससे बर्दाश्त नहीं हो रहा था । मेरे जन्म के पूर्व का देखा गया द्व्याब जो फलित भी हो गया पर नसीब न हुआ वह इस अनहोनी घटना पर विश्वास नहीं कर पा रही थी । मैंने आंटी को एक छोटा सा पत्र लिखा और अपने इस निर्णय से उनकों अवगत कराया ।

मैं लेट कर छत की ओर देखकर सोचने लगा अपना भावी अनिश्चित जीवन, पता नहीं कब सोचते- सोचते सो गया । सुबह माँ आज चाय लेकर नहीं आयी । वह गंगा नहाने भी नहीं गयी । थोड़ी देर में भाई आया और बोला मामा, मौसा दोनों आये हैं और बुला रहे हैं । मैं नीचे गया । जैसे ही उन्होंने यह पूछा कि नौकरी तुम क्यों नहीं करना चाहते मैंने कहा, मैं इस मुद्दे पर कोई बात नहीं करना चाहता । उन्होंने बहुत कोशिश की बात करने की पर मैं टस से मस न हुआ और वह लोग थोड़ा नाराज़ भी हो गये और नाराज़ होकर चले गये । मुझे किसी की नाराज़गी की कोई परवाह न थी । उन लोगों के जाने के बाद

माँ आयी और बोली , “ थोड़ा संभाल कर बोला करअ । ऊ सब घरे के बड़वार हयेन लेहाज होई के चाही । ”

मैं उसके इतना बोलने से ही बहुत खुश हो गया । वह बहुत दिन बाद बोली थी । मैंने कहा , ” क्या कुछ गलत बोल दिया ? ”

माँ - “ बताई दआ कि न करब नौकरी । हम कुछ और करब । पर ऐसन नाहीं कहत हआ कि हम बातै न करबअ । ”

मैं चुप हो गया । मैं कोई विवाद नहीं करना चाहता था । मैंने पूछा , “ क्या करूँ अब ? ”

माँ - “ भैया और जीजा के घरे चला जायअ एक - दुई दिन मैं कुछ बताई देहअ , धक्का सबके लाग बा तोहरे फ़ैसला से । ”

मैं - “ ठीक है , चला जाऊँगा । ”

मैं शाम की क्लास अपनी समाप्त करके सत्य प्रकाश मिशन सर के पास गया था । उनको यह बात पहले ही पता चल गयी थी । चिंतन सर ने कमिशनर साहब को बताया था और कमिशनर साहब ने सर को । सर ने पूछा , “ यह फ़ैसला एकाएक कैसे ले लिया । ” मैंने सर को कुछ कारण बताये और अनुरोध किया कि सर आप नाटक - रंगमंच - कहानी - उपन्यास वाला क्लास ले लो । सर ने कहा , “ वह तो ले लूँगा । तुम ऐसा करो एमए हिंदी में एडमिशन ले लो । एमए कर लो क्या पता कल लेक्चरर बनने का ही तुम्हारा मन कर जाये । अब विधाता ने एक अस्थिर दिमाग़ तुमको दिया हैं तो अस्थिरता को ध्यान में रखकर कार्य करो । तुम चौराहे के चारों रास्ते देखते रहो पता नहीं कब एक रास्ते पर मन उचट जाये । तुम अनुराग सीधा चलते हो , उल्टा चलने का भी अभ्यास करो । पता चले कब तुम्हारा मन कर जाये की अब हम उल्टा चलेंगे । एक कहानी सुनाता हूँ तुमको । शंकर - पार्वती जी विचरण कर रहे थे । माता पार्वती ने शंकर जी से कहा वह जो टहल रहा है नीचे वह बहुत दिनों से परेशान दिख रहा है इस पर आपकी दया नहीं हुई है । शंकर जी बोले , यह बहुत बेवकूफ़ है इसके भाग्य में कुछ नहीं है । यह आती लक्ष्मी पर टटिया लगा देगा । पर माता पार्वती नहीं मानी । शंकर जी बोले इसके भाग्य में कुछ है नहीं । भगवान शंकर माता पार्वती का अति आग्रह देखकर गले से साँप को निकाला सोने का बनाकर उसके आगे फेंक दिया । वह बेवकूफ़ बोला सारी ज़िंदगी तो आँख खोलकर चले थोड़ा समय आँख बंद करके चलते हैं और वह सोने का साँप पार कर गया , बगैर देखे । यही तुम्हारा हाल है । चलो अब जो हुआ सो हुआ एमए कर लो फिर देखना आगे । एडमिशन चल रहा है कल फ़ॉर्म भरकर आना विभाग में । मैं अगले दिन गया एमए हिंदी का फ़ॉर्म भर दिया और एमए में प्रवेश ले लिया । मेरा एमए हिंदी में प्रवेश लेना हिंदी विभाग का सेंसेक्स बढ़ा गया । सर ने कहा तुम नियमित क्लॉस करो और ठीक से एमए करो । तुम टॉप तो करोगे ही पर ज्ञान बढ़ाओ

। तुम्हारे लिये डिग्री से ज्यादा ज्ञान महत्वपूर्ण है । इसी बीच एक सनसनीखेज़ हादसा हो गया । कलेक्टर संजीव रंजन का तबादला हो गया और अशोक पिरयदर्शी नये कलेक्टर होकर आ गये । नये कलेक्टर ने आते ही मामा का स्थानान्तरण बगैर किसी विभाग दिये कलेक्टरेट से अटैच करके कर दिया और उनके ऊपर अनियमितताओंका आरोप लगाकर जाँच बैठा दी । मलाईदार माइनस विभाग एकाएक मामा के हाथ से चला गया और हर ओर एक हल्ला पावरफुल सर्वेश मिश्रा बहुत बड़ी पार्टी रहेन पर उड़ि गयेन । क्यासों के बाज़ार में

राम संजीवन ने पूछा , “ फरगेंया भैया का समाचार बा ? तोहरे पास त कुल खबर होये । ”

फरगेंया -“ सजीवन खबर तगड़ी बा । अब टरबाइन बिजली कैसे बनाये अगर बहता तेज धार पानी न मिले । ”

राम संजीवन - “ भैया तनी विस्तार से बतावअ । ”

फरगेंया -“ मँगावअ तनिक मीठ चाहि तब बताई । पहिले स्विच त आन होई जाई । ”

राम संजीवन - “... ऐ छोटे दुई मीठ चाहि लै के आवअ त जल्दी .. ।..

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 284

फरगेंया- “ सजीवन तोहका पता बा ? ”

राम संजीवन - “ का भैया ? ”

फरगेंया - “ भयेनवा ऐसन काम कै देहे बा जौन काम आज तक केऊ नाहीं करेस । ”

राम संजीवन - “ अब कौन नवा खेला खेल देहेस ? ”

फरगेंया - “ पता बा ... ऊ नौकरी के लाति मारि देहेस । जौन नौकरी बरे कुल दुनिया कल्पत हअ तौन नौकरी के ऊ ठोकराई देहेस । ”

राम संजीवन - “ हम समझा नाहीं फरगेंया भैया । ”

फरगेंया - “ भयेनवा आईएएस के नौकरी तियाग देहेस । ”

राम संजीवन - “ का कहत हअ फरगेंया भैया , ऐसन केहेस ऊ ? ”

फरगेंया - “ हाँ संजीवन । बा बहुत बहादुर । ”

राम सजीवन - “ भैया ऊ बा मदारी , कौनौ खेला खेलत होये । ”

फरगैंया - “ ई बात त हमरेऊ समझ में नाहीं आवत बा कि ऐसन काहे केहेस ऊ , का करा चाहत बा । ओकर खोपड़ी बा बहुत बड़ी । ”

राम सजीवन - “ भैया तोहू से बड़ी बा ओकर खोपड़ी ? ”

फरगैंया - “ ऊ पढ़ा- लिखा बा । सूरज शर्मा ऐसन ज्ञानवान , रामेश्वर मिश्रा ऐसन तिकड़म बाज के नाती हअ । झूठ के फेहुँआ पियै वाला सर्वेश के सगै भांजा हअ । अब ओकरे एतना खोपड़ी न त होये हमरे - तोहरे लगे । कुल परपंच ओका आवत हअ , कौनौ प्लानिंग केहे होए । ऐसन नौकरी छोड़ै वाला ऊ बा नाहीं । ”

राम सजीवन - “ का लागत बा तोहका ? ”

फरगैंया - “ कुछ समझ आवत बा नाहीं । ”

राम सजीवन - “ भैया तनि ई सर्वेश वाला मामला फरियावा । ”

फरगैंया - “ सर्वेश अंधेर के देहे रहेन । अब जौन नियम कानून से मिलत रहा ऊ तू लै लअ पर नया- नया आपन अध्यादेश जारी करबअ तब तअ लतियावै जाबअ । ऐ टेंडर के रकम लीक करत रहेन । टेंडर के रकम बदलवावै लागेन । मलीहा वालेन से साँठ- गाँठ के लेहेन । हरषु महराज से पंगा लै लेहेन । हरषु पटायेन दुई - तीन विधायक के , मामला विधान सभा में उठि गवा । सरकार जाँच के आदेश दै देहेस । अब केहू के बलि चढ़ै के रहा । कमिश्नर बा पावरफुल , सज्जन कलेक्टर संजीव रंजन पड़ि गयेन फेर में बेमतलब । नवा कलेक्टर ई आदेश लै के आई हअ ऊपर से कि सारा भरष्टाचार खत्म करअ । अउतै ऊ मिला कमिश्नर से और कहेस ससपेंड करब सर्वेश, राम सरूप के , कमिश्नर बा पहुँची चीज । ऊ कहेस पहिले दरांसफर कै दअ , जाँच बैठाई दअ तब एक्शन लअ । जाँच बैठि गई बा । ”

राम सजीवन - “ अब का होये ? ”

फरगैंया - “ ए होइहिं ससपेंड । सारी पावर रही भयेनवा से । भयेनवा होई गवा पावरलेस । जब भयेनवै पावरलेस होई गवा तब एनकरे पास का रहि गवा । ”

राम सजीवन - “ भयेनवा कैसे पावरलेस होई गवा ? ”

फरगैंया - “ हअ तू पूर बेवकूफ सजीवन । भयेनवा के पास कौन पावर रही ? इहै न कि ऊ कमिश्नर के बहनोई बनै जात रहा । अब जब ऊ बहनोई न बनि पाये तब पावर कहाँ से पाये ऊ ? ”

राम सजीवन - “ का अब बियाह न होये कमिश्नर के इहाँ ? ”

फरगेंया - “ बियाह होते रहा एक आईएएस से । अब जब उ आईएएस नाहीं बा तब का कमिश्नर के पागल कुत्ता काटे बा कि अपने बहिन के भरसाई में झोंक देय । ”

राम सजीवन - “ का बियाह कौंसिल होई गवा ? ”

फरगेंया - “ होईन जाये । अब केऊ न फटके ओकरे दुआरे । अब ज़िला कचेहरी के वकील शुकुल के बेटवा सत्य प्रकाश शुकुल के बजार गरम होये । कुल टूट पड़िहिं भयेनवा से ओकरे ओर । ”

राम सजीवन - “ का भयेनवा के बियाह न होये ? ”

फरगेंया - “ होये पर टुटहा- टमार बियाह होये । अब बड़- बड़वार के इहाँ बियाह त न होये । रहि गअ सूरज शर्मा के घर चूड़िहारै नाइक । अब तकदीर से त केऊ आज तक लड़ि पाएस नाहीं । विधाता सब देहेन पर दै के छीन लेहेन । ”

मैं तीन दिन बाद मामा के घर गया । मेरा सारा रुतबा ख़त्म हो चुका था । मैं जिस घर में कभी पहुँचकर उस घर को धन्य कर देता था उस घर में आज कोई मुझे पूछने वाला भी न था । मामा के घर में हर ओर उदासी ही उदासी । पता चला मामा कई दिन से अपने कमरे से बाहर ही नहीं निकले हैं । वह अपना चार्ज तो पहले ही खो चुके थे अब सस्पेंड होने का भी भय सता रहा था । मैं उनके कमरे में गया पर उन्होंने मुझसे बात करने में कोई रुचि न दिखायी । बाबा भैया ने भी कोई बात न की । मामी ने इतना ही कहा , “ सब लुटि गवा । ” मैंने कोई जवाब न दिया और थोड़ी देर बाद वहाँ से चल दिया , आज किसी ने यह औपचारिकतावश भी न पूछा , चाय पियोगे ।

नया कलेक्टर भ्रष्टाचार के मुद्दे पर बहुत तेज कार्य कर रहा था । वह कमिश्नर की भी कम सुनता था । उसने सारे लोगों को ज़िला से बाहर तहसील की तरफ ट्रांसफ़र कर दिया जो भी तीन साल से शहर में थे । मामा का भी स्थानान्तरण हो जाता पर शायद बड़ी विपदा इंतज़ार में थी इसलिये छोटी विपदा न आयी । सारा माइंस का कार्य कलेक्टर ने अपने कार्यालय से संबद्ध कर लिया और किसी भी एसडीएम को कार्य न देकर सीधे एडीएम नजूल को साँप दिया । मामा का एक नाम- रुतबा था , वह सब एक झटके में समाप्त हो गया । मामा सारी समस्या की जड़ मुझको मान रहे थे । उनको लग रहा था अगर मैं नौकरी न छोड़ता तब यह सब न होता और कमिश्नर साहब कुछ न कुछ करके उनको बचा लेते । शायद इस बात में कुछ सच्चाई भी थी । कमिश्नर साहब ने प्रतीक्षा से मेरे विवाह का विचार त्याग दिया था । मैं एक अस्थिर दिमाग़ का व्यक्ति हूँ यह बात सब लोग कर ही रहे थे । एक व्यक्ति जो सारा वैभव एक झटके में त्याग दे वह करान्ति कर सकता है , देश

के काम आ सकता है पर वह परिवार के लिये उपयुक्त नहीं होता । वह परम्परागत पति धर्म एवम् सामाजिक मान्यताओं से पारिभाषित जीवन के लिये अनुपयुक्त होता है । पारिवारिक ज़िम्मेदारियों का निर्वाह कर पाना उसके लिये आसान न होगा । पारिवारिक ज़िम्मेदारियों एवम् समाज के लिये त्याग के मध्य एक विरोधाभास होता ही है । समाजोन्मुखी व्यक्ति बहुधा अपने परिवार के प्रति लापरवाह होता ही है और वह किसी कन्या के लिये उपयुक्त वर नहीं हो सकता ।

मेरे बारे में चाहे जितनी अफवाह मेरे विरुद्ध उड़ रहीं हों पर एक बात के सब कायल थे कि एक बड़ा फ़ैसला उसने लिया है और बड़े फ़ैसले बहुधा किसी सकारात्मकता से प्रेरित होते हैं । मेरे समर्थकों की संख्या भी कम न थी । वह संख्या दिन - प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी । मेरा कोचिंग में तक्रीबन मुफ्त पढ़ाने की घोषणा और गंगा के किनारे के मंदिर की तरह शरद्धा से जो चाहे दे दो का सूत्र वाक्य और सत्य प्रकाश मिश्र सर का मेरी कक्षा में आकर पढ़ा देना मेरे कद और हैसियत को बढ़ा गया था । सर ने यह भी कह दिया मैं फिर आऊँगा और अगर अनुराग ने शहर के हिंदी माध्यम छात्रों के लिये स्वयम् की उपलब्धि को समाज के हित में गौण समझा है तब हम सब का सामूहिक कर्तव्य है इस यज्ञ को सफल बनायें । यह शहर की प्रतिष्ठा और सम्मान के लिये किया गया त्याग है, आप सब पूरी ताक़त लगाओ । आप इतिहास के आलोक की खंजड़ी बजाने के बजाय अपनी प्रशस्ति गाथा स्वयम् लिखो । सर की यह लाइनें हर ओर गंभीर विमर्श को जन्म दे रहीं थीं । मुझे नकारना किसी के लिये भी आसान न था चाहे वह मेरा घोर विरोधी ही क्यों न हो ।

मैं एम की कक्षा करने लगा । मैं प्रकृति से ही बहुत ही अनुशासन प्रिय था । मैं वक्त पर कक्षा में जाता था । लाइब्रेरी में देर- देर तक बैठता था । मैं अंधाधुंध किताबें खरीद और पढ़ रहा था, मैं एक योजना के तहत कार्य कर रहा था । पूरी कक्षा मुझे मुड़- मुड़ कर देखती थी । राम स्वरूप चतुर्वेदी, दूधनाथ सिंह, सत्य प्रकाश मिश्र के अतिरिक्त अन्य अध्यापक असहज होते थे मेरे कक्षा में बैठने से ही । मेरा ज्ञान और मेरी भाषा हिंदी विभाग में सर चढ़कर बोल रही थी । मेरा कक्षा के अध्ययन के दौरान विश्लेषण और सवालों का खड़ा करना अध्यापन के स्तर को ऊपर उठा रहा था । लड़कियों का नायक मैं जीवन में पहली बार बन रहा था । मैंने एक चाल चली । मैंने बीए की कक्षा पढ़ाने की अनुमति माँगी । वह अनुमति सहर्ष दे दी गयी । मेरी पहली ही कक्षा में रिकार्ड भीड़ हुई । अन्य अध्यापकों के समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया । मैं पूरी ताक़त से बेहतर पढ़ाने की कोशिश कर रहा था । मैं जानबूझकर बीए के पाठ्यक्रम से ज्यादा सिविल सर्विसेज़ का पढ़ा रहा था । मेरे इस बीए के साथ- साथ सिविल सेवा के पाठ्यक्रम को

पढ़ाने की युक्तियों कारण अन्य विभागों के छातरों को ही नहीं वरन् यूनिवर्सिटी रोड से भी लोगों का मेरी कक्षा के प्रति आकर्षण बढ़ा रहा था । मुझे अध्यापक की असीम ताक़त का एहसास था ही , मैं वह ताक़त लेकर आगे बढ़ने की योजना बनाने लगा । मैं सर्वश्रेष्ठ होना चाहता था उसके लिये आवश्यक था सारे अध्यापकों को ख़त्म करना । मैं पूरी मेहनत कर रहा था अध्यापन के स्तर को एक अलग मुकाम पर ले जाने के लिये । मुझे यह साबित करना था मैं ही सब कुछ हूँ । मैं कृष्ण बनना चाहता था , मैं सर्वोपरि होना चाहता था । यह मेरी एक बड़ी योजना थी जिससे सब अनजान थे । मैं दूरदर्शी था , यह बात मैं जानता था । यह मेरी सबसे बड़ी ताक़त थी । मैं वक्त के इंतज़ार में था ।

मेरा आकरमण गुरुओं पर हो गया था । उनकी कक्षाओं को मैंने निर्जीव कर दिया था । मेरे पास कई दिव्यास्तर थे - मेरी रैंक , मेरी भाषा , मेरा त्याग और सबसे बड़ी चीज़ मेरा लगन , संकल्प और पन्द्रह घंटे रोज़ पढ़ना । सीधे घर से कक्षा में बगैर तैयारी के चले आने वाले अध्यापक एक अंधकार में लक्ष्य भेद करने वाले दिव्यास्तर युक्त योद्धा से युद्ध नहीं कर सकते थे । मेरे पास एक ही नैतिकता थी वह थी मेरा विजय चाहे वह किसी के ध्वंस पर ही क्यों न हो । अब अध्यापकों के ध्वंस का वक्त था । मैं उनके ध्वंसावशेष पर अपनी गाथा लिख रहा था । पर यह संघर्ष नैतिक था । मैं युक्त ज़रूर लगा रहा था अपने दिविजय के लिये पर कोई छल अभी नहीं कर रहा था । मानिंद अध्यापक सत्य प्रकाश मिश्र , दूध नाथ सिंह या राम स्वरूप चतुर्वेदी भी मेरी प्रतिभा के क़ायल थे और शिक्षकों से कह रहे थे आप लोग उसकी तरह की विश्लेषण परक दृष्टि रखकर अध्यापन करो । मैं शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने का प्रयास कर रहा था । मैं ध्वंस क्यों कर रहा था ? क्या मात्र शिक्षा के स्तर के लिये ? नहीं मैं बिस्मार्क बन रहा था .. एक साथ पाँच गेंद हवा में और कोई भी जमीन पर नहीं सब के सब मेरे दोनों हाथों के मध्य रहे यह मेरी चाहत थी

मेरी चाल से सब अनजान थे ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 285

आंटी का पत्र आया । वह बहुत निराश थी । उसे मेरे इस कदम की कोई उम्मीद न थी । वह मेरी माँ से अधिक भावुक हो गयी । उसने बहुत दर्द भरे शब्दों में लिखा ,

“ अनुराग, मेरे जीवन में सुख लिखा ही नहीं है । एक बेटे ने अपने जीवन का निर्णय मेरे ख्वाबों से विपरीत लिया और दूसरे ने मेरी ख्वाहिशों की कोई क़दर न की । मुझे इतिहास दुहराता दिख रहा है । मुझे वह दिन याद आ रहा है जब ऋषभ ने कहा था मैं अब परीक्षा नहीं दूँगा । आज वही सारा दृश्य मेरी आँखों के सामने धूमने लगा जैसे ही तेरा यह पत्र मैंने पढ़ा । पत्र पाते वक्त मैं असीम आनंद में थी पर जैसे - जैसे पत्र आगे पढ़ती गयी मैं घोर अंधकार की ओर बढ़ती गयी । मुझे ऋषभ के भविष्य की कोई चिंता न थी क्योंकि वह आईआईटी का कम्प्यूटर इंजीनियर था, पराइम नंबर थ्योरी को हल करके वह शैक्षिक जगत में एक अलग स्थान बना चुका था । उसके जीवन में सारी दिशायें उसका सम्मान कर रहीं थीं । वह एक ऐसे चौराहे पर खड़ा था जहाँ चार राहों में से एक मनचाही राह चुन सकता था, पर तुम अनुराग न कोई डिग्री, न कोई रोज़गारपरक शिक्षा ... मुझे तुम्हारा भविष्य कालिमायुक्त दिख रहा और मुझे आने वाले कल से भर लग रहा है । मैं यह समझ नहीं पा रही क्यों तुमने यह फ़ैसला लिया, क्या सोचा है भविष्य के बारे में । उर्मिला तो बहुत ही दुःखी होगी । अनुराग, तुम एक ऐसी सुरंग में प्रवेश कर गये हो जिसके दूसरे छोर पर कोई उजाला दूर- दूर तक दिखायी नहीं दे रहा, कम से कम मुझे तो नहीं दिखायी दे रहा । तुम्हारे एक कदम ने आँखों की पुतलियों पर जमा हुये ख्वाबों का क़त्ल कर दिया । उसमें कुछ ख्वाब वह भी थे जो इस प्राप्त स्वप्नफल से होँसला पाकर अपनी ताबीर का इंतज़ार कर रहे थे । हम माँओं के जीवन में दुःख ही दुःख है । तुम लोग अपनी अति महत्वाकांक्षा की उड़ान में दूसरों की कोई परवाह नहीं करते । अनुराग, पहले मैंने कहा था एक बड़ी जेहीनियत बोझ बन जाती है और अगर ऋषभ कम कामयाब होता तब देश में ही रहता । पर तुमको देख कर लग रहा अति महत्वाकांक्षा बहुत ही दर्द देती है, उसको भी देती है जिसके अंदर वह होती है और साथ जुड़े हुये व्यक्ति को भी देती है । ऋषभ का अति ज़हीन होना और तुम्हारा अति महत्वाकांक्षी होना पूरे परिवेश के लिये दर्द का कारण बन गया है । काश यह अतिशयता तुम दोनों में न होती । मेरा अनुरोध है, अपने निर्णय पर पुनर्विचार करो और नौकरी ज्वाइन करो ।”

ऋषभ और शालिनी का भी पत्र आया । ऋषभ काम समेट कर देश वापस आ रहा था । वह लिखता कम था । उसने इतना ही लिखा, “मैं जीवन में अधिकांश अकेला ही रहा । अब एक नया रास्ता जीवन का चुन रहा । शालिनी वापस आने को तैयार नहीं है । वह ग़लत भी नहीं है, इतना बड़ा साम्राज्य एक संन्यास की भावना अगर मस्तिष्क को अति प्रभावित कर ले तभी छोड़ा जा सकता है, अगर नफ़े- नुक़सान की गणना आप करने लग जाओ तब त्यागना असंभव है । शालिनी नफ़े-नुक़सान में वस्तुस्थिति का आंकलन कर रही मैं जीवन की सार्थकता मैं । यह दोनों बिंदु आपस में विरोधाभासी हैं । नफ़ा- नुक़सान व्यापार करा सकता है, धन अर्जन करा

सकता है पर जीवन को सार्थक नहीं कर सकता । मैंने बहुतों का दिल दुखाया है अब शालिनी की बारी है

तुम लिखना अपने बारे में । एकेडमी का जीवन कैसा लग रहा है ? मैंने बहुत से क्रिस्से आईआईटी में सुने हैं एकेडमी के । लड़कियाँ कैसी हैं वहाँ, कोई पसंद आ रही ? तुम्हारी नज़्म के झाँसे में कोई आया या नहीं ? नहीं आया तब जल्द ही आयेगा । मछली कब तक बचेगी मछेरे के जाल से जब मछेरा कहेगा

मुझे मछलियों ने बताया है
कोई पानी पर मेरा नाम लिखता है ।

शालिनी कहती हैं अनुराग की दो लाइनें दिल में अंदर तक असर कर जाती हैं....”

शालिनी से मेरा संबंध एक अलग धरातल पर था । वह मेरे बहुत नज़दीक थी । उसका कारण मेरा और उसका भाषा के प्रति एक अलग लगाव था । वह देश वापस नहीं आना चाहती थी और वह अपने माँ - पिता की देखभाल के लिये मेरी तरफ देख रही थी । वह लिखती ज्यादा थी पर इस बार कम लिखा । उसने ऋषभ के अंतिम निर्णय के बारे में लिखा और कहा में सारा कुछ छोड़कर आ नहीं सकती । मेरे ऊपर मेरे साथ कार्य कर रहे लोगों की भी ज़िम्मेदारी है । मेरा सबके साथ एग्रीमेंट है और वह तोड़ना आसान नहीं है । शालिनी को यूरोप में भी काम मिल गया था , धन की वर्षा हो रही थी । इस बेमौसम की बरसात को वह बड़े- बड़े जलकुंड बनाकर भविष्य के लिये सुरक्षित करना चाह रही थी । उसने भी मुझसे एकेडमी के जीवन के बारे में पूछा और कहा मैं शीघ्र आऊँगी, एकेडमी के क्रिस्से बहुत सुने हैं पर देखा नहीं है । एकेडमी देखने की चाहत है वह भी तुम्हारे वहाँ रहते ही पूरी कर लूँगी ।

मैंने तीनों को पत्र लिखा और जीवन में आये झंझावात से अवगत करा दिया । मेरी माँ मेरे पत्र फाड़कर फिर से पढ़ने लग गयी थी । उसने शालिनी और ऋषभ के बीच आये मतभेद पर चिंता व्यक्त की और कहा , “ दुझनौ परानी के एक साथ मिल के रहै चाही । अगर ऋषभ वापस आवा चाहत हयेन तब शालिनी के आवै चाही । पतनी के पति के खुशी में आपन खुशी देखै चाही । इहै विधान बा हमरे सनातन धरम के । सीता राम बरे सब त्याग देहेन । सावित्री सत्यवान के बगौर रहै के तैयार नाहीं भइन । पर आजकल के तोहार समाज नवा ढर्हा पर चलत बा । अपने सिवाय केहू के कौनों कीमत नाहीं बा । ”

माँ को समझाना आसान नहीं है और वह सारी बात जानती भी नहीं । मैंने इतना ही कहा , “ माँ व्यापार के सिद्धांत और मापदंड भावनाओं से संचालित नहीं होते । वह लाभ- हानि की तुला पर तौले जाते हैं उसमें आदर्श की अवधारणा का अगर अभाव न भी हो तब भी उनका स्थान कम ही होता है और आदर्श को यथार्थ के साथ यथार्थ की शर्तों पर समझौता करना होता है । ”

यह कहकर मैं विश्वविद्यालय चला गया । मैं अब विश्वविद्यालय परिसर में अधिक रहता था । मैं लोगों से मिलता था । मेरी एक अलग पहचान थी । मैंने एक नया कार्य आरंभ कर दिया था होस्टलों में जाकर पढ़ाने का , लोगों को संबोधित करने का । मैंने अपनी कोचिंग को सप्ताह में तीन दिन कर दिया । बाकी दिन मैं होस्टलों के कॉमन हॉल में पढ़ाता था । मेरी माँ के जीवन की एक पीड़ा थी कि वह पढ़ न सकी । वह कन्याओं के अध्ययन की बहुत आग्रही थी । उसने मुझसे कहा , “ मुन्ना लड़कियन के पढ़ावअ । ”

मैंने पूछा , “ कैसे पढ़ाऊँ ? ”

माँ - “ हर जगह टहरत हअ , एक दिन लड़कियन को होस्टल में पढ़ावअ । ”

मुझे उसकी राय उचित लगी । मैंने यह बात सत्य प्रकाश मिश्र से साझा की । सर ने कहा , “तुम्हारी माँ बहुत समझदार है । रंजना कवकड़ आधुनिक इतिहास में हैं , वह वार्डन हैं वहाँ की । आज शाम को एक प्रॉविट्रयल बोर्ड की मीटिंग है उसमें मेरी उनसे मुलाकात होगी । मैं कह दूँगा उनसे । किसी को आपत्ति क्यों होगी ? तुम्हारी देह पिरा रही है पढ़ाने के लिये हर कोई खुश ही होगा मुफ्त का अध्यापक मिल रहा , वैसे ही यूजीसी का इतना नाटक है कि अध्यापकों का एपवाइंटमेंट ही नहीं हो पा रहा है हम गेस्ट फ्रैकल्टी से काम चला रहे हैं । ”

मैंने कहा , “ ठीक है सर जैसा आप आदेश करें । ”

अगले दिन पेपर में समाचार पढ़ा शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार ऋषभ मिश्रा को देने की घोषणा सरकार ने कर दी है । ऋषभ का इलाहाबाद का निवासी होना और उसकी अकादमिक उपलब्धि, विदेश का उसका वेंचर इन सबके बारे में समाचार पत्र में छपा था । मैं बहुत प्रसन्न हुआ यह पढ़कर । मैंने समाचार पत्र के उस पेज की फोटोकापी करायी और एक छोटा सा पत्र आंटी, ऋषभ, शालिनी, चिंतन सर को लिखकर उन सबको सूचना दे दी ।

मैंने सोचा चलकर कमिश्नर साहब को धन्यवाद दे आता हूँ । उनके प्रयत्नों से ही यह संभव हुआ है । मैं कमिश्नर साहब के बंगले में गया । एक बड़ी भीड़ जमा थी । मैंने बड़े बाबू से कहा , “ मैं मिलना चाहता हूँ । ” वह मुझको जानता ही था । उसने तुरंत संदेश अंदर भेजा । साहब ने बगल के कमरे में

बैठाने का निर्देश दिया और थोड़ी ही देर में वह उस कमरे में आ गये । मैंने अभिवादन करके ऋषभ के सम्मान का समाचार बताया और सर को धन्यवाद दिया । वह समाचार उनको ज्ञात था । उन्होंने बताया कि मुख्यमन्त्री ने अनुशंसा विमोचन समारोह के चार- पाँच दिन बाद ही कर दी थी । यह जो समय लगा यह प्रक्रिया में लगा समय है । सीबीसीआईडी जाँच करती है व्यक्ति के बारे में । व्यक्ति के बारे में शासन अपने तौर पर पता करता है । यह सब एक क्रवायद है जो पूरी होने में कुछ समय लेती है । सर ने यह भी बताया कि राज्यपाल और मुख्यमन्त्री दोनों ही मेरे बारे में पूछ रहे थे जब वह लखनऊ पिछले सप्ताह गये थे । सर ने मुझसे कहा, अनुराग एक राय देता हूँ, तुम सेवा ज्वाइन कर लो । यह बहुत ही अच्छी नौकरी है । इसको लोग इंडियन रेवेन्यू सर्विस नहीं कहते इसको लोग इंडियन रॉयल सर्विस कहते हैं । न उधौ से लेना न माधव को देना, जीवन को आराम से जीना । हम लोगों पर बहुत राजनैतिक दबाव रहता है, स्थानांतरण का भय सताता है, लोगों से डरना पड़ता है, ऐसा तुम्हारी सेवा के साथ नहीं है । मेरा छोटा भाई है इसी सेवा में और मैं सेवा को भीतर से जानता हूँ । तुम्हारे सामने एक वैभव ससम्मान तुम्हारा स्वागत कर रहा है और तुम उसे त्याग रहे हो । वैभव सबके नसीब में नहीं होता । “

मैं “ सर, अब तो वह बात पीछे चली गयी । एकेडमी में कोर्स आरंभ हो गया है । लोगों ने ज्वाइन कर लिया है । अब तो वह मुद्दा खत्म हो गया । “

कमिश्नर साहब - “कुछ खत्म नहीं हुआ है । तुम कल की ट्रेन पकड़ो बाकी सारा काम मेरा है । वहाँ के निदेशक यूपी कैडर के हैं । मैं और वह साथ-साथ एसडीएम रहे हैं । मैं कह दूँगा कि तुम बीमार था इसलिये वक्त पर जा न सके । सीएमओ को फोन कर देता हूँ वह एक मेडिकल रिपोर्ट बना देगा । हर साल एक दो लोग लेट ज्वाइन करते ही हैं । “

मैं “ सर “

कमिश्नर- “ अनुराग, मेरा व्यक्तिगत स्वार्थ भी है तुम्हारे ज्वाइन करने में । मैं प्रतीक्षा के पति के रूप में किसी और को देख ही नहीं पा रहा । मैं तुम्हारे साथ बहुत ही पारदर्शी रहा हूँ । जब तुमने आईआरएस की नौकरी छोड़ दी तब मैंने जब यह विचार बनाया कि और लड़के देखता हूँ अब तुमसे विवाह तो होगा नहीं । मैं जिससे भी मिलता हूँ उससे तुम्हारी तुलना करने लगता हूँ और मैं घूमकर वापस तुम्हारे पास चला जाता हूँ । “

मैं - “ सर, आपने कहा मुझसे विवाह नहीं हो सकता अब, यह आपने क्यों कहा ? मैं तो वही हूँ जो था बस आईआरएस की नौकरी छोड़ दी । अगर मेरे पौरुष पर यकीन है तब मुझसे ही विवाह प्रतीक्षा का होना चाहिये । हो सकता है कल ऐसा भी हो जाये आईआरएस एक गौण नौकरी हो जाये, मेरी उपलब्धियों के सामने । सर, मैंने यह निर्णय सोच- समझकर लिया है । मेरी

चाहत एक सार्थक जीवन की है । आपने ही मुझसे कहा था एक सफल जीवन और एक सार्थक जीवन में भेद होता है । मैंने जब कहा सर मैं समझा नहीं तब आपने ही कहा था सफल जीवन बहुधा व्यक्तिगत उपलब्धियों का होता है और समाज के हित का अंश अगर होता भी है तब बहुत गौण होता है पर एक सार्थक जीवन के लिये समाजोन्मुखी होना ही होगा । सर, आपके इस कथन ने सारा फ़ैसला कर दिया । मैं सफल नहीं एक सार्थक जीवन जीना चाहता हूँ जो इस सेवा से बिल्कुल संभव नहीं है । सर, प्रतीक्षा ऐसी लड़कियाँ कम बनती हैं समाज में । जिसको भी वह एक पत्नी के रूप में प्राप्त होगी वह धन्य होगा । वह धन्यता मुझे इसलिसे नहीं मिल सकती क्योंकि मैं सफलता नहीं सार्थकता का आग्रही हूँ । सर, मैं एक अति सामान्य परिवेश और सामान्य अकादमिक उपलब्धि की उपज हूँ । यह एक अपंगता है मेरे साथ पर इस अपंगता के बाद भी मैं सार्थकता की तलाश में हूँ । सर, मैं उपलब्धियाँ प्राप्त करूँगा, ज़रूर करूँगा बस वक्त लगेगा । “

कमिशनर- “ तुम प्रतीक्षा से विवाह करोगे ? ”

मैं- “ अवश्य करूँगा सर अगर वह मुझसे विवाह करना चाहती है न कि एक आईआरएस से । सर, शौकत आज़मी को कैफ़ी आज़मी से प्रेम हो गया । शौकत ने अपने पिता से यह राज साझा किया । कैफ़ी मुंबई में कम्युनिस्टों के साथ रहते थे । शौकत के पिता मुंबई उनको लेकर गये और कहा ऐसे माहौल में तुम रह पाओगी । शौकत ने कहा यह जन्नत है । एक कमरे के दड़बे ऐसे कमरे में वह साथ- साथ रहे । कैफ़ी पर शौकत को यक़ीन था । वह नाटक करके पैसे कमाती थी और ज़िंदगी चलाती थी । सर, आप प्रतीक्षा को यह सब बता दें और पूछें वह क्या चाहती है । आप कहें तो मैं उत्तर भी बता देता हूँ । ”

कमिशनर साहब - “ क्या उत्तर होगा ? ”

मैं- “ सर आप जानते हैं उत्तर । ”

कमिशनर साहब - “ अनुराग, बात तुम्हारी सब सही है पर यह समाज ऐसे ही चलता है । ”

मैं- “ सर, समाज गलत चल रहा है । हम उसकी गलत दिशा की रफ़तार को मंदित करने के बजाय त्वरित कर रहे हैं । सर, मैं त्वरित तो नहीं करूँगा इस गलत दिशा के वेग को चाहे मंदित न कर पाऊँ । मैं सर लोगों को पढ़ा रहा । मैं शिक्षा में बदलाव का प्रयास कर रहा, चाहे छोटे स्तर पर ही सही । पर लोग कह रहे वह बेकूफ़ है, वह सिरफिरा है । सर, सिरफिरे लोग ही सार्थकता की तलाश करते हैं जिसका दिमाग ठीक होगा वह सफलता की ओर जायेगा । ”

कमिशनर साहब - “ मैं फिर कहूँगा आप सेवा ज्वाइन करो । कुछ दिन बाद सेवा त्याग देना तब तक अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का इंतज़ाम कर लेना । ”

मैं - “ सर , मैं यथास्थितिवाद से बचना चाहता हूँ । यह नौकरी मुझे यथास्थितिवादी बना देगी । ”

कमिशनर साहब - “ मैं फिर कहूँगा आप नौकरी करो , बाक़ी आपका निर्णय । ”

मैं चलने लगा तब सर ने अपनी दो कहानियाँ दीं पढ़ने को और कहा देखना कैसी लिखी हैं , मैं एक कहानी संग्रह लिखना चाह रहा । मैंने ऊपर से कहा ठीक है सर और मन में कहा , ठीक है महान सफल अफ़सर ।

मैं कमिशनर साहब के यहाँ से सीधे आधुनिक इतिहास विभाग गया । मैडम रंजना कवकड़ से मिला । वह सत्य प्रकाश सर के प्रस्ताव से उत्साहित थीं । कमिशनर सर के किताब के विमोचन ने मुझको बहुत मशहूर कर ही दिया था । उन्होंने पूछा कैसे करोगे ? मैंने कहा रविवार से आरंभ करते हैं । पहले सप्ताह में एक दिन करते हैं फिर अगर लोग चाहेंगे तब दो दिन कर दूँगा । मैडम ने सारा कार्य कर दिया । महिला छात्रावास में मेरी तृती बोलने लगी । मेरी और बहुत सी लड़कियों की उम्र तक़रीबन एक जैसी ही थी , मैं उनके ख्वाबों में आने लगा । बड़ा मदहोश करता है यह जानकर कि मैं किसी के ख्वाबों में आने लगा । मैं एक सुरुर में हरदम रहने लगा । मैंने अशोक , दिनेश , परेम नंदन से भी कहा आप लोग कुछ जगह जाया कर कुछ सिलैबस पर और कुछ मेरे पढ़ाये पाठ

पर बात किया करो । मैंने हिंदी विभाग से बाहर भी पढ़ाना आरंभ किया । मुझे आभास होने लगा कि मैं अपरिहार्य हो रहा हूँ । मैं लोगों की ज़रूरत बन चुका हूँ । मुझे नकारना आसान नहीं है । मेरी परिसर में लोकप्रियता बहुत थी । मैं इसका फ़ायदा उठाकर उन अध्यापकों पर खुला हमला करने लग गया जो विश्वविद्यालय में कम कोचिंग में पढ़ाने में अधिक रुचि लेते थे और हर दिन पेपर में अपना नाम छपवाने की होड़ में लगे रहते थे । मैंने कोचिंग इंस्टीट्यूट पर भी हमला बोल दिया और उनकी गुणवत्ता पर सवाल खड़े कर दिये । जो लोग कभी मेंस पास नहीं किये थे वह वहाँ पर सामान्य अध्ययन पढ़ाया करते थे । उनके ज्ञान और समझ पर मैंने गंभीर सवाल खड़े कर दिये । मैंने छात्रों से कहना आरंभ कर दिया आप कोचिंग में पढ़ाने वाले अध्यापकों से विश्वविद्यालय में पढ़ाई गई कक्षाओं का हिसाब माँगों । एक छात्र के तौर पर मैंने एक पत्र उप कुलपति को लिख दिया छात्रों की तरफ से और उप कुलपति से अनुरोध किया कि अगर अध्यापक अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं कर रहे तब आप उनके एसीआर में उचित टिप्पणी सुनिश्चित करे । मैं शिक्षा को एक जनांदोलन बना रहा था । इलाहाबाद में गुणवत्तापरक अध्यापकों की

कोई कभी कभी रही ही नहीं । वह सब कह रहे थे , बात तो वह ठीक ही कह रहा , अध्यापन का एक स्तर तो होना ही चाहिये । विश्वविद्यालय का स्तर सुधरना चाहिये । पर मेरा हमला कुछ लोगों को रास नहीं आ रहा हलाँकि मुझे लोगों की कोई परवाह न थी । दिन बीत रहे थे , मैं लोगों को सम्मोहित कर रहा था । मेरी योजनायें ठीक रास्ते पर चल रहीं थीं । लोगों को मेरी उपस्थिति खलने लग गयी । एक ऐसा सेट करे यह लोगों को स्वीकार्य न था । मेरे पढ़ाये जाने का विरोध होने लगा । एक बड़े वर्ग ने यह प्रश्न खड़ा कर दिया जिसने इतिहास , साहित्य, दर्शन, संविधान कभी किसी कक्षा में न पढ़ा हो उसके पास पढ़ाने की अर्हता कैसे आ गयी । एक ही व्यक्ति को सब कुछ आता है इसका समर्थन यहाँ के कुछ मठाधीश भी कर रहे हैं । अध्यापन कार्य मछली बाजार हो चुका है जहाँ मन करे बाजार लगा लो । एक स्वस्थ परम्परा के परांगण में अनैतिकता व्याप्त हो चुकी है । अनुराग को ऐसा की कक्षा करने को कहा जाये वह अध्यापन कार्य से दूर रहें । विश्वविद्यालय प्रशासन अगर उनसे पढ़ावाने का आग्रही है तो वह बगैर ऐसा किये ही एक अध्यापक के तौर पर नियुक्ति कर दे , सारे नियम - कानून को दरकिनार करके । यह बात उप कुलपति ही नहीं राज्यपाल तक पहुँच गयी । मेरा कक्षा लेना अब दुर्लभ हो रहा था । इतिहास विभाग में मैं सायंकाल क्लास लेने गया और विभाग के बाहर छात्र तो थे पर कमरों पर मज़बूत ताला लगा था । वह सब मेरे बनाये जाल में फँस चुके थे । उनको पता नहीं था मैं दूरदर्शी तो हूँ हीं मैं कड़े और ख़तरनाक निर्णय भी लेता हूँ । अब वक्त आ गया था एक बड़े निर्णय लेने का , उनको समाप्त करने का । मैंने चेस बोर्ड से उठाया अपना घोड़ा और हवा में लहराता घोड़ा कल सबके अंदर भय उत्पन्न करने वाला था । आज की रातिर सबके सुकून की थी पर कल की रात भारी होगी । कल शह और मात्र का खेल आरंभ होगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 286

मैं शाम को यूनिवर्सिटी से सीधा अपनी कोचिंग गया , यह मैं अक्सर करता था । मैं सफलता का अति आग्रही हो रहा था । मैं पूरी कोशिश कर रहा था एक अप्रत्याशित परिणाम अगले साल की सिविल सर्विसेज़ परीक्षा में प्राप्त करने के लिये । मैं नये- नये प्रयोग कर रहा था । मैं कक्षा तीन- चार घंटे चलाने लगा जिसमें दो घंटे की कक्षा दिनेश देखा करते थे । वह सिर्फ़ लेखन का समय होता था । मैं रात में सवाल बनाता था और वह देर रात आकर मुझसे ले जाते थे । मैं जानता था प्रतियोगिता परीक्षा के जीवन में सुधार मात्र लेखन से हो सकता है , मैं लेखन पर बहुत ज़ोर दे रहा था । मैं दो परीक्षायें

एक साथ देख रहा था , एक इस वर्ष का मेंस और दूसरा अगले वर्ष की प्रारम्भिक परीक्षा । मैं इस वर्ष के मेंस से अधिक अगले वर्ष की प्रारम्भिक और मुख्य परीक्षा देख रहा था । मैं एक लंबी योजना पर कार्य कर रहा था । मैं चाह रहा था इस वर्ष में सफल हों पर अगले वर्ष की प्रारम्भिक परीक्षा में रिकॉर्ड लोग सफल हों , इसीलिये मैंने कक्षायें विश्वविद्यालय परिसर और छात्रावासों में चला रहा था । एक कोचिंग की सीमायें होती हैं पर एक आंदोलन में प्रभावित करने की असीमित क्षमता होती है । मैं शिक्षा के मुद्दे पर एक जनांदोलन चलाना चाहता था । मैं परिसर की कक्षाओं को चलाते समय ज़हीन विद्यार्थियों को भी तलाशता था क्योंकि मैं जानता था यह परीक्षा एक आवश्यक न्यूनतम अर्हता की माँग करती है । यह तो एक सामान्य सी बात है कि अगर मेंस देने वाले अधिक हों तब सफलता की संभावना अधिक होगी ही । मैंने शहर की असफलता के कारणों का विश्लेषण किया और पाया कि हम युद्ध के पहले ही द्वार पर घायल हो जा रहे हैं । । हम प्रारम्भिक परीक्षा ही पास नहीं कर पाते तब आगे हमारा भविष्य कैसे होगा ?

छात्रों से अधिक सफलता का आग्रही मैं हो रहा था और यह कई बार मेरे आचारण में स्पष्ट दिख जाता था । मैंने शहर की बाजार कोचिंग संस्थानों पर हमला बोलना आरंभ कर दिया । मैं लोकप्रिय हो चुका था कमिशनर साहब के विमोचन कार्यक्रम के बाद से ही । सिविल सेवा की सफलता , देवत्व का अस्वीकरण और परिसर में पढ़ाना एक चर्चा का विषय बन ही चुका था । एक दिन यूनिवर्सिटी समाचार कवर करने वाले एक पत्रकार गुरुदीप ने मेरा इंटरव्यू ले लिया और वह जानना चाहते थे कि मैं किस तरह शिक्षा का स्तर सुधारना चाह रहा हूँ । मैंने अपनी योजनायें तो बतायी हीं साथ ही मैंने कह दिया इन कुकुरमुत्तों की तरह के कोचिंग संस्थानों का समापन आवश्यक है । पत्रकार ने पूछा , “ यह आप कैसे करेंगे ? ” मैंने अति उत्साह में कह दिया , “ अलीगढ़ का मोटा और मज़बूत ताला इनके गेट पर लगा दूँगा । ”

पत्रकार- “ वह आप कैसे लगायेंगे ? ”

मैं - “ वक्त का इंतज़ार करिये , आप तालों की फ़ोटो छापियेगा । आपकी भी दुकान मैं चलाऊँगा , सनसनीखेज समाचार देकर । ”

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के ज्यादातर अवारा टाइप के छात्रनेता कोचिंग संस्थानों से उगाही करते थे । यह समाचार छपते ही कोचिंग मालिक चौकन्ने हो गये । उन्होंने छात्र नेताओं से कहा कि इस बेसिर पैर की बात करने वाले को ठीक किया जाना चाहिये , इस कार्य हेतु जितना भी धन लगेगा हम देने को तैयार है ।

छात्र नेताओं में इस मुद्दे पर तकरीबन एकता ऐसी हो गयी । हिंदी विभाग पर हमला हो गया और मेरी बीए की चल रही कक्षा को अस्त- व्यस्त कर दिया

गया और विभागाध्यक्ष से यह सवाल खड़ा किया गया कि कैसे आपने इनको पढ़ाने की अनुमति दे दी जबकि नियम यह है कि केवल रिसर्च स्कॉलर ही पढ़ायेंगे । क्या यह रिसर्च स्कॉलर हैं? बाबू देश को चला रहे और बाबू बना आदमी यह विश्वविद्यालय चलाये यह स्वीकार नहीं होगा । उप कुलपति से कहा गया कि अगर यह आगे से कहीं भी क्लॉस लेंगे तब हम परिसर को चलने नहीं देंगे । आप सब लोगों ने इस विश्वविद्यालय की परंपरा को ख़त्म करने का ठीका से रखा है । मैडम रंजना कक्षकड़ को भी ताक़ीद किया गया यह कहते हुये कैसे एक लड़का महिला छात्रावास में प्रवेश कर रहा है पढ़ाने के लिये । मैडम का स्टैंड अधिक स्पष्ट था । उन्होंने कहा आप लोग कौन होते हो मेरे काम में दखलंदाजी करने वाले । मैं ज़िम्मेदार हूँ उस परिसर के लिये और जो उचित होगा वह करूँगी मुझको आप धमकाने का प्रयास न करें । पर मैं आपको देख लूँगा यह धमकी देकर वह चले गये गये । उसी दिन सायंकाल उप कुलपति ने एक आदेश पारित कर दिया, सिवाय रिसर्च स्कॉलर के कोई भी परिसर में किसी भी क्लॉस की कक्षा नहीं लेगा । उस दिन की शाम अवारा छात्र नेताओं की हसीन थी । हेस्टी- टेस्टी में बलभर मुर्गा और दारू तोड़ा गया, जेब गर्म हो ही गयी थी, काम भी तो शौर्य युक्त था ही ।

मुझे इन घटनाकरमों का कोई इल्म न था । मैं घर से नियत समय पर यूनिवर्सिटी की तरफ चला । मैं जब हिंदी विभाग पहुँचा तब इस घटना का पता चला । अब मैं विश्वविद्यालय परिसर में पढ़ाने के अयोग्य साबित हो चुका था । मुझे बहुत दुःख हुआ । मेरी सारी योजनायें समापन की ओर बढ़ने लगीं । मैंने दूधनाथ सिंह सर की उपन्यास का विकास और गोदाम का महत्व की क्लॉस अटेंड की ओर मुझे काफ़ी मटेरियल मिल गया था मेरी अपनी आज की कक्षा के लिये । मैं हमेशा विश्वविद्यालय से सीधे कोचिंग ही जाता था । मैं कोचिंग पहुँचा तब देखा कि मेरी कोचिंग पर भी हमला इन लोगों ने बोल दिया था । कोचिंग संस्थानों ने मुझे ख़त्म करने की ही शायद सुपारी दे दी थी । मैं अब करता क्या? मुझे एक और भय सताने लगा कि जो थोड़ा पैसा मिला है वह मुझे वापस करना पड़ेगा अगर मैं कोचिंग न चला सका । उस पैसों से मैंने बहुत किताबें ख़रीद ली थीं, कुछ पैसा मैंने माँक प्रश्न पत्रों के फोटो कॉपी पर खर्च कर दिया था । मैं पैसा वापस कैसे करूँगा, मुझे घबड़ाहट होने लगी । मैंने माँ से सारा घटनाकरम साझा किया । उसने सलाह दी कि कमिश्नर साहब की बात मान लो जाकर नौकरी करो । वह कह ही रहे हैं कि नौकरी ज्वाइन वह करवा देंगे । जैसा वह कह रहे वैसा तुम करो । पिताजी ने भी यही कहा । मुझे अपना जीवन अंधकारमय लगने लगा । मैंने रात में चिंतन सर को पत्र लिखकर स्पीड पोस्ट किया और पूछा क्या मैं सेवा ज्वाइन कर सकता हूँ । चिंतन सर का जवाब भी शीघ्र ही आ गया और कहा कि एक मेडिकल सर्टिफिकेट बनवा लो अपनी बीमारी का और आ जाओ । एक - दो

लोग तीन- चार दिन बाद आये थे , तुम थोड़ा लेट हो पर काम हो सकता है । मैं चार दिन से बहुत परेशान चल रहा था । मैं सत्य प्रकाश मिश्र सर के पास सलाह माँगने गया । सर ने कहा , “ यह डरपोक अपनी कुर्सी के लिये डरता रहता है । यह सब स्वार्थी लोग हैं । उनको शिक्षा की कोई समझ नहीं । अरे भाई पहले नियम था कि रिसर्च स्कॉलर पढ़ायेगा । पर वह नियम कोई संविधान हो गया है क्या? संविधान भी तो बदलता रहता है । यह सारा ड्रामा इन कोचिंग वालों से आरंभ हुआ है और यह उप कुलपति तो लतियर है ही । तुम भी अनुराग जबान पर संयम नहीं रखते । अपनी सींग लिये घूमते रहते हो । पहले अध्यापकों पर हमला फिर कोचिंग पर हमला । आप सन्न मारकर अपना काम नहीं करते , आप सुधारक बनने लगते हो । अपनी सीमाओं को तुम बहुधा तोड़ देते हो । तुमको क्या ज़रूरत थी कामायनी पढ़ाने की जब वह बीए के पाठ्यक्रम में नहीं है । गिरिजा सक्सेना की एमए की कक्षा तुमने ख़राब कर दी । तुम्हारी कक्षा में एमए वाले भी बैठते हैं । वह उनकी इज़्ज़त उतार दिये । तुमको अपनी सीमाओं का कोई ज्ञान नहीं है । मुझसे लोग कह रहे कि आपने इसको सिर चढ़ाया हुआ है । आप जाओ नौकरी करो , यह काम तुम्हारे बस का नहीं है । तुम नौकरी भी कैसे करोगे इस तरह का दृष्टिकोण जीवन में लेकर । तुममें बहुत सुधार की आवश्यकता है । थोड़ा बोलते समय संयम रखा करो । तुम पढ़ाते समय भी स्थापित मान्यताओं पर सवाल खड़ा करते हो । मैं नहीं कह रहा खड़ा मत करो , पर बीए की कक्षा को बीए की तरह पढ़ाओ । यह अपना सिविल सेवा का अति आग्रह कक्षा के बाहर छोड़कर लेक्चर हॉल में जाया करो । जाओ तैयारी करो नौकरी करने की , यह काम अब तुमसे न होगा । कौन लड़ेगा इन अवारा लोगों से । यह सब कट्टा- बमबाज लोग हैं , तुम सज्जन पढ़ने - लिखने वाले व्यक्ति हो इनके फेर में न पड़ो । ”

मैं सर के पास से घर वापस आ गया । माँ मेरे कमरे में आयी और पूछी , “ का करबअ ? चिंतन त लिखे हयेन कि काम होई जाये । सहबौ कहत हयेन कि हम कराई देब काम । तोहै पता बा मुन्ना? ”

मैं “ क्या? ”

माँ - “ दादू आज आई रहा और कहत रहा कि हरिकेश मामा कहत हयेन अब हम बेबी के बियाह मुन्ना से न करब । ऊ हरिकेशवा के जबान एतनी बढ़ी बा । ऊ कहत रहा कि मुन्ना में सिवाय आईएस के और बा का , जब उहौ नाहीं बा तब काहे आपन बिटिया के मूडी काटी । ”

मैं - “ माँ , वही तो कह रहे थे मुन्ना ऐसा कोई नहीं । विभा मामी कह रही थीं मुन्ना हमारे मन से जाता ही नहीं , कितना अच्छा बोलता है । अब क्या हुआ ? माँ , मेरा नौकरी छोड़ना इस समाज की हक्कीकत को बयाँ कर गया । आप देखो कभी मेरे से अपनी बहन- बेटी के विवाह के इच्छुक लोगों के कारों का

ताँता इस गली में लगा होता था पर अब कोई नहीं दिखता । माँ तुझको दुःख हो रहा होगा कि अब कोई नहीं आता पर ऐसे लोगों के यहाँ रिश्ता करके क्या करती । सबसे अच्छे तो कमिशनर साहब हैं जिन्होंने साफ़गोई से बात तो की और कहा अनुराग तुम चाहे जहाँ रहो पर मेरे नज़दीक हमेशा रहोगे । सम्मान से बात किया और मदद करने की बात की पर यह सब लोग “

माँ- “ मुन्ना दुःखी न हो । ई समाज ऐसै बा । हम तोहसे ढेर ई समाज देखें हई । तू नौकरी ज्वाइन करअ । तोहार बियाह प्रतीक्षा से कई देब और ई हरिकेशवा के भेजब जेल । हमरे आगे जौनै दिन पड़ा ओकर भदरा उतार देब । कतौं भीड़भाड़ में मिल जात , कौनौं काज प्रयोजन में मुलाकात होई जात और बढ़िया होत , भरे महफिल में ओकर कुल शेखी उतार देइत । और ऊ प्रमुख की बिटिया बनी धूमत बा विभाव , न बोलै के सहूर न बैठै के उहौं बोलै के मारि केहे बा । सूप बोलै त बोलै चलनी का बोलै जेकरे में छप्पन छेद । मुन्ना तू नौकरी में जा । ”

मैं माँ से कुछ न बोला । मैं निराश बहुत था । रात में मेरा वह घोड़ा जो हवा में लहरा रहा था और मुझे लगा था कि वह भय उत्पन्न कर रहा है वह भयाकरांत होकर कह रहा , मुझे बचाओ मुझे चारों ओर से धेर लिया गया है , मुझे जीना है ... अभी और जीना है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 287

मेरे प्रतिष्ठित सिविल सेवा को त्यागने के निर्णय के बाद मेरी दिनचर्या कुछ ही बदली थी पर मेरा जीवन के प्रति दृष्टिकोण काफ़ी बदल चुका था । पिछले कई वर्षों से मेरी दिनचर्या का महत्वपूर्ण भाग था प्रति दिन सुबह चार बजे उठना और तक़रीबन 12-1 बजे तक लगातार पढ़ना पर अब 8:30 बजे तक पढ़ता था उसके बाद दस बजे यूनिवर्सिटी पहुँच जाता था । मैं यूनिवर्सिटी रोड पर धूमता था , यूनियन हॉल पर टहलता था अपनी क्लॉस करता था , बीए वालों को पढ़ता था । मुझे ज्ञान बाँटने का शौक हो गया था , जो मिल जाये उसको ज्ञान बाँट देता था । मैं एक चलता फिरता पौँसला ऐसा था जो प्यासा ऐसा दिख जाए उसकी प्यास बुझाने के काम में लग जाओ , वह कितना प्यासा है , वह मुझसे पानी माँग रहा है या नहीं , माँग रहा है तो कितना माँग रहा है इन सब बातों का ध्यान दिये बँौर पौँसला पूरे वेग से चालू कर देता था । मैं कभी-कभी ज्यादा ही ज्ञान पिला देता था खासकर लड़कियों को । शाम को होस्टलों में धूमता था , ज्ञान भारती की दुकान पर तो मैं महानायक सदृश था वहाँ पर लोग मुझे पूरे नयनों से पी जाना चाहते थे । मैं

रविवार का इंतज़ार करता लड़कियों को पढ़ाने का एक अलग ही आनंद होता था । मैं अपनी कोचिंग में सप्ताह में तीन दिन ज़ाया करता था पर उन तीन दिनों लंबी क्लॉस चलती थी । बाकी दिन अशोक - दिनेश - प्रेम नंदन मेरे बनाये मॉक टेस्ट करवाते थे और डिस्कशन कराते थे । मैं पढ़ता बहुत ही अधिक था । मैं अब एक छात्र की परीक्षा की दृष्टि से नहीं एक अध्यापक के नज़रिये से पढ़ता था । मैं धीरे- धीरे विषय-वस्तु के प्रति एक अध्यापक का नज़रिया प्राप्त कर रहा था । मुझे अनुत्तरित प्रश्नों का भय भी रहता था और कभी - कभी मैं तुरंत जवाब नहीं दे पाता था । मैं उस समय शालीनता से क्षमा माँग लेता था और अगले दिन शंका - समाधान का यत्न करता था । यह एक बहु ही नायाब प्रयोग था , अध्यापक और छात्र लगभग हम उम्र थे और कई मुझसे अधिक उम्र के भी थे । मैं अपनी सीमित क्षमताओं के बावजूद भी अगर आगे बढ़ पा रहा था उसका मुख्य कारण मेरी परिश्रम करने की असीम क्षमता और वह क्षमता मुझे अपने ऊपर विश्वास भी दे रही थी और परिणाम प्राप्ति का आश्वासन भी । मेरी दुनिया बहुत ही सीमित हो चुकी थी बस पढ़ना और पढ़ाना । मेरी विधि लीक से हटकर भी थी और प्रयोग धर्मी भी । मेरे अभ्यार्थियों में बहुत ही गुणात्मक प्रगति हो रही थी , मेरे अंदर वांछित परिणाम की आशा बलवती हो रही थी । मुझे जो भी थोड़ा सा ठीक-ठाक किसी छात्रावास - डेलीगेसी में मिल जाता था उसको कोचिंग की साधना प्रक्रिया में डाल देता था । मैं एक बहुत बड़े परिणाम की ओर देख ही नहीं रहा था शायद अग्रसर भी हो रहा था । मुझे , आज नहीं तो कल बड़ा परिणाम मिलेगा इसका मुझे विश्वास भी था और पूरी उम्मीद भी पर एक ही झटके में सब उड़ गया ।

मैं प्रतिदिन की तरह आज भी सुबह चार बजे उठा , अपनी कुछ इसी सप्ताह की ख़रीदी किताबें निकाली और सोचा इसको भी पढ़ लेता हूँ पर अंदर से एक भाव आया अब पढ़कर करूँगा क्या , पढ़ाना तो अब है नहीं । मेरे लिये एमए का पाठ्यक्रम तक्रीबन काफ़ी पढ़ा हुआ ही था उसमें अभी कुछ ख़ास पढ़ने की ज़रूरत न थी । एमए का क्लॉस अभी आरंभ ही हुआ है सत्र लेट चल रहा है पता नहीं कब परीक्षा होगी , इसलिये मैं पढ़ाने के ही लिये पढ़ता था पर अब । मुझे अपने जीवन की व्यर्थता का भान होने लगा , मैं दोनों हाथों पर सिर टिकाकर हाथ की कुहनियों को अपनी जाँघ पर रखकर तख्त पर बैठा अपने अंदर संवाद कर रहा था कि माँ चाय लेकर आयी और पूछा , “ का भवा मुन्ना? ”

मैंने सिर ऊपर उठाया और कहा , “ माँ सब उलट- पुलट हो गया । न मैं इधर का रहा न उधर का । मैं अब विश्वविद्यालय में पढ़ा नहीं सकता । मैं जिस स्कूल में पढ़ा रहा हूँ वहाँ का स्कूल मालिक भी डर गया कल के हंगामे के बाद

/ वह भी कह रहा , हमें यहाँ अराजकता नहीं चाहिये हमारे स्कूल की साख का सवाल है / यह कोचिंग अब बंद होती दिख रही है / अभ्यार्थी अपना पैसा वापस माँगेंगे ही जब कोचिंग नहीं चलेगी / मैं पैसा कहाँ से वापस करूँगा , काफ़ी पैसा तो किताब ख़रीदने , माँक टेस्ट की फ़ोटोकाँपी और इधर उधर के ख़र्चों में खर्च हो चुका है / यह चिंता मुझे खाये जा रही है । “

माँ - “ केतना पैसा होये ? ”

मैं - “ माँ , पता नहीं कितना होगा , कौन दिया कौन नहीं दिया इसका भी कुछ अता- पता है नहीं । पिछले बार भी कभी हिसाब लिखा नहीं था और इस बार तो क्लॉस चलाने का लक्ष्य ही अलग था । मुझे नहीं पता किसने कितना पैसा दिया । अब जो भी जो कहेगा वह वापस देना पड़ेगा । इतनी बड़ी भीड़ क्लॉस में होती है कुछ भी नहीं कह सकता कितना पैसा किसने दिया । यह शहर भी हर तरह के लोगों का है । अब कुछ लोग झूठ बोलकर पैसा माँगेंगे तब भी मैं क्या कर सकता हूँ , देना ही पड़ेगा । माँ , जब समय ख़राब आता है तब सारी विपदा एक साथ आती है । सत्य प्रकाश सर कह रहे हैं कि तुम इन गुंडों - बदमाशों से नहीं निपट सकते । कोचिंग वालों के पास असीमित धन है और इनके पास जन और हथियार , तुम कैसे लड़ोगे ? माँ बात तो वह ठीक ही कह रहे हैं । ”

माँ - “ मुन्ना हम जौन पैसा जोड़े हर्ई गुड़िया के बियाहे बरे ऊ लै लअ । हम आपन गहना - गुरिया बेंच देब । तू सबके पैसा लौटाई दअ और चला जा एकेडमी आपन नौकरी करअ । ”

मैं - “ माँ , इस तरह सब छोड़कर जाना ठीक है ? ”

माँ - “ मुन्ना , आदमी के आपन ज़मीन देखकर काम करै के चाही । हमार बहुत कच्ची गृहस्थी बा । कुछ हमरे पास तोहरे सिवाय बा नाहीं । ई विश्वविद्यालय बमाजन के अड़डा बनि गवा बा । सुंदरलाल छात्रावास में कुछ दिन पहिलेन गोली चली बा । मुन्ना तू जेहें रास्ते पर हअ ओहमें ख़तरै- ख़तरा बा । हम तोहका खोवा नाहीं चाहित हअ । तू कुछ न करअ । हमका कुछ न दअ । गुड़िया के बियाह हम कतौं कै देब । ओकरे तक़दीर में जौन होये तौन होये बस तू शहर छोड़ि को जा । स्कूल मालिक श्याम जी कहत रहेन कि पच्चीसन लड़िका आए रहेन कोचिंग में और ओनके पास पिस्तौलौ रही । मुन्ना हम ऐसन दुःख न सही पौबै ... हम और आगे कहि नाहीं पावत हर्ई पर तू समझत सब हअ । ”

माँ रोने लगी । वह भयग्रस्त हो चुकी थी । वह चली गई गंगा नहाने । मैं बारजे से उसको जाता हुआ देखने लगा । वह गली के किनारे से मुड़ कर ओझल हो गयी पर मैं बहुत देर तक खड़ा गली में उनकी जाती छाया कल्पित करता रहा ।

मैं वापस अपने कमरे में आया । मेरी आज की तीन क्लॉस थी पर वह सब कौंसिल हो चुकी थी । विश्वविद्यालय प्रशासन ने वह नियम फिर से आदेश रूप में पारित करके मुझे विश्वविद्यालय में पढ़ाने से प्रतिबंधित कर दिया था । मैं किताब को वापस रखकर लेट गया, मुझे कोई नींद नहीं आ रही थी । सुबह - सुबह दिनेश और अशोक आये । उन्होंने पूछा, “ सर अब क्या किया जाये ? ”

मैं - “ कुछ समझ नहीं आ रहा । मुझे तुम्हारा और दिनेश का चयन सुनिश्चित ऐसा लग रहा था । कई और चयनित हो सकते थे पर एकाएक सब ख़त्म ऐसा होता दिख रहा है । ”

अशोक - “ सर मैं कुछ छात्रनेताओं को जानता हूँ उनसे बात करता हूँ, यह कोचिंग तो चलने दें वह । ”

दिनेश - “ सर, कमिशनर साहब से बात करिये । वह मदद कर देंगे तब समस्या सुलझ सकती है । ”

मैं सोचने लगा ...

अशोक ने कहा, “ सर मैं आज छात्र नेताओं से मिलकर बात करता हूँ । मैं कमलेश तिवारी को भी जानता हूँ कुछ रास्ता निकालता हूँ । ”

मैंने कुछ जवाब न दिया, मैं जानता था इसका कोई परिणाम नहीं निकलेगा । यह सब अवारा टाइप के नेता हैं कोचिंग से पैसा लेते हैं इनको कौन समझायेगा ।

मैं एमए की अपनी क्लॉस करने के लिये यूनिवर्सिटी गया । आज मैं सीधा अपने क्लॉस गया । मैंने अपनी सारी कक्षायें की और शाम को घर आ गया । कोचिंग कैसे चले यह समस्या आ चुकी थी । शाम को दो- तीन छात्र घर आये यह पूछने के लिये कि कोचिंग कब से चलेगी ? मैंने कहा, कुछ कोर्स हो गया है । माँक टेस्ट मैं दे दूँगा आप लोगों उसका अभ्यास करो । अब मुझे कोचिंग चलती दिख नहीं रही है । मुझे नहीं याद किसने कितना पैसा दिया था क्योंकि पैसा तो पढ़ाने की पूर्व शर्त थी नहीं पर अगर पैसा वापस चाहेंगे तब मैं वह भी करने की कोशिश करूँगा । मैं सब कुछ छोड़कर एकेडमी वापस जाने का प्रयास कर रहा हूँ । मुझे तनाखाह मिलेगी मैं पाई-पाई सब का वापस कर दूँगा ।

वह लड़के भावुक हो गये । मेरी बात में दर्द भी था और विवशता भी जो मेरे शब्दों की अभिव्यक्ति से अधिक मेरे चेहरे पर बन रहीं लकीरों और आँखों की पुतलियों के माध्यम से सम्प्रेरित हो रही थी । वह सब यह कहकर चले गये

कि सर आपका बहुत ऐहसान है हम पर । इस बाज़ार माहौल में आप अकेले संघर्ष कर रहे और पूरा शहर मौन है । इस विश्वविद्यालय की गरिमा से किसी को कोई सरोकार नहीं है । यह धन का बल , अराजकता की ताक़त , प्रशासन की नपुंसकता और हम छात्र समुदाय का यथास्थितिवाद में रहकर परिस्थिति के समक्ष समर्पण ज़िम्मेदार है इस शहर के समापन की ओर बढ़ते कदम के लिये । अब इस शहर के शैक्षिक माहौल को बचा पाना संभव नहीं दिखता ।

मैं उनकी बात सुनता रहा । मैं सुनने के सिवाय और कर भी क्या सकता था । वह सब चले गये, मेरा किसी काम में मन नहीं लग रहा था , मैं मामा के यहाँ समय नष्ट करने के लिये चल दिया । मैंने रास्ते में लल्लू चाट वाले के यहाँ चाट खायी , रसगुल्ला खाया । मामा के घर के लिये बीस रसगुल्ला खरीदा । मामा के घर गया वहाँ मोहिता दीदी , राकेश जीजा , हरिकेश मामा , विभा मामी , बाबा भैया , भाभी सब बैठे थे । वह सब मामा के यहाँ आयी विपदा के शोक में शरीक होने आये हुये थे । दीदी ने पूछा, “ मुन्ना क्यों नहीं जा रहे नौकरी करने ? ”

मैं - “ दीदी कुछ सोचकर नहीं जा रहा था पर वह अब वह हो नहीं पा रहा तब सोच रहा नौकरी ही करता हूँ । ”

मेरा यह वाक्य पूरे वातावरण को सावधान मुद्रा में लेकर आ गया ।

मोहिता दीदी -“ क्या सोचा था करने को ? ”

मैं - “ एक पूरी खेप तैयार करना चाहता था सिविल सेवा के अधिकारियों की पर वह अब नहीं हो सकता । ”

मोहिता दीदी - “ वह अब क्यों नहीं हो सकता ? ”

मैंने सारा घटनाक्रम बताया । उन लोगों को कुछ पता ही न था इन सब घटनाक्रमों के बारे में । मेरे नौकरी छोड़ देने के समाचार के बाद मेरे में सबकी रुचि कम हो गयी थी और वह लोग कम ही मेरे घर आते थे ।

मामा ने पूछा , “ क्या अभी ज्वाइन कर सकते हो ? ”

मैं - “ कमिशनर साहब ने मुझे सहायता का आश्वासन दिया है । वह मसूरी एकेडमी के निदेशक को जानते हैं और कह रहे कोई समस्या नहीं होगी कुछ लोग लेट हर साल ज्वाइन करते हैं । ”

मामा - “ कमिशनर साहब से कब मिले तुम ? ”

मैं - “ ऋषभ को शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार देने की सरकार ने घोषणा कर दी है और मैं साहब को धन्यवाद ज्ञापित करने इसी सप्ताह गया था । ”

मामा - “ साहब ने पुरस्कार दिलवाया है ? ”

मैं - “ उनके ही प्रयत्नों से संभव हुआ है नहीं तो ऋषभ को यहाँ जानता कौन है । ”

मामा - “ तुम्हारे विवाह के बारे में कुछ कह रहे थे क्या साहब ? ”

मैं - “ हाँ वह मुझसे पूछ रहे थे कि प्रतीक्षा से विवाह करोगे ? ”

मामी - “ का कहअ तू ? ”

मैं - “ मामी , मैं क्या कहूँगा मेरा जीवन ही एक अलग रास्ते पर है पहले कुछ रौशनी तो कहीं दिखे । ”

मामा - “ तुम्हारा कमिशनर साहब से ताल्लुक़ इतना अच्छा है मुन्ना ? ”

मैं - “ हाँ .. क्यों नहीं होगा मामा । मैंने कौन सा गलत काम कर दिया है जो लोग मुझे त्याग दें ? मैंने जीवन की सहूलियतों को छोड़कर संघर्ष का रास्ता अखिलयार किया है , यह कोई निंदनीय कृत्य तो है नहीं । कुछ लोग मेरे बारे में यह ज़रूर कह रहे , यह एक अस्थिर दिमाग़ का व्यक्ति है पर वह भी मेरे निर्णय के साथ संलग्न सदाशयता को देख ही रहे हैं । कमिशनर साहब भी इसी परिसर की उपज हैं वह भी मन से विश्वविद्यालय की हालात सुधारना चाहते हैं और अगर कोई इस कार्य को करना चाहेगा तब उन्हें प्रसन्नता ही होगी । साहब एक कहानी संग्रह छाप रहे हैं और उन्होंने अपनी कहानी मुझे पढ़ने को दिया है । वह मेरी राय चाहते हैं अपनी कहानियों पर । संभवतः शीघ्र ही वह अपनी कहानी संग्रह का भी विमोचन करेंगे । पर मामा आपने क्यों पूछा कि मेरा उनसे संबंध बेहतर है क्या ? ”

मामा - “ लोग शादी के लिये जब आते हैं और अब जब वह नहीं हो पाता तब संबंध प्रायः ख़त्म ही हो जाता है ? ”

मैंने हरिकेश मामा और मामी की तरफ़ देखकर कहा , “ मामा कुछ लोगों को व्यक्ति की कदर होती है । वह पद और रसूख से इतर लोगों के व्यक्तिगत गुण की कदर करते हैं । पर कुछ लोग मेरे बारे में कह रहे हैं उसके पास सिवाय आईएस के नौकरी के और था क्या , वह नहीं रहा तब वह किस काम का । मामा , मैंने जीवन की बहुत हळीक़त देखी इन कुछ दिनों में । जो कहा करते थे मुन्ना कैसा बोलता है , वह मेरे दिमाग़ से जाता ही नहीं और वही लोग अब कह रहे हैं ”

मामी - “ मुन्ना के कहेस ऐसन ? ”

मैं - “ मामी , अब जाने दो । जिसने भी कहा ठीक ही कहा । समय की बात है , हर किसी को ख़राब वक्त के समाप्त का इंतज़ार करना चाहिये , वक्त कितना भी ख़राब हो गुजर तो जाता ही है । मामी , राख और भूत में फ़र्क़

सिफ्फ महादेव पर विश्वास का होता है । जो आदि शंकर पर विश्वास करता है उसके लिये वह भयभूत है बाकी सबके लिये बर्तन माँजने वाली राख । यही विश्वास की आधारशिला जीवन को हर ओर संचालित करती है । मेरा अपने ऊपर यक़ीन था इसलिये मैंने नौकरी त्याग दी , मेरी माँ को मेरे ऊपर विश्वास था इसलिये मेरे फ्रैंसले से असहमत होकर भी मेरे साथ थी पर जो लोग भरष्टाचार के काग़जों में जीवन का सुख पाते हैं वह भौतिकवादी जीवन से इतर कैसे सोच सकते हैं । दोष उनका नहीं है उनके संस्कार और परवरिश ही ऐसी है । “

मामी - “ केका बरे ऐसन कहत हअ मुन्ना? ”

मैं - “ मामी , जिसके लिये मैं कह रहा वह यह जानते ही हैं । अब आपने बात छेड़ दी तो मैंने कह दिया वैसे यह एक सार्वभौम सत्य है मेरे कहने या न कहने से इसकी सत्यता पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा । ”

मेरी यह लाइन हरिकेश मामा और मामी को अंदर से हिला गयी । जो उन्होंने कहा था तक़रीबन वही मैंने कह दिया था । हक़ीकत में मेरी अपनी विवशता थी , मेरा फ्रस्टरेशन था जो मैं निकाल रहा था किसी और रूप में । मैं एक व्यवस्था के दुर्लभ चक्र में असहायता की अवस्था में गिरफ्तार हो चुका था जिस पर मेरा कोई ज़ोर चल नहीं रहा था और अंदर की आग किसी और रूप में बाहर निकल रही थी । वास्तविकता यह थी कि उन्होंने कहा कुछ गलत न था पर मैं अपनी भड़ास निकालना चाहता था उसका एक अवसर मिल गया ।

मामा ने कहा , “ मुन्ना एक मदद मेरी कर दो बहुत अहसान होगा तुम्हारा । ”

मैं - “ क्या मामा ? ”

मामा - “ नया कलेक्टर मुझकों सस्पेंड करने पर पूरी तरह तुला है । मैंने किया सारा काम नियम - कानून से ही है पर अगर कोई काम में कमी निकालने पर लग जाये तब किसी के भी काम में कमी निकाली जा सकती है । तुम कमिशनर साहब से अनुरोध कर दो वह हाथ लगा देंगे तब कुछ भला हो जायेगा नहीं तो सस्पेंड हो जाऊँगा । ”

मामी - ” मुन्ना बेटवा , तोहार मामा बहुत परेशान हयेन , रात-रात भर सोवतेन नाहीं । साहेब से कहि दअ । तोहार बहुत इहसान होये हमरे ऊपर ”

मैं - ” मामी , मैं कैसे कहूँ ? मैं किस अधिकार से कहूँ ? यह विभागीय मामला है वह कह देंगे तुमको इन सब मामलों की कोई समझ नहीं है । ”

मोहिता दीदी - ” मुन्ना भैया तू एक बार कहि दअ बाकी जैसन पिता जी के तकदीर होये । ”

अशोक जीजा जी - “ मुन्ना, तुम एक बार कह दो । वह तुम्हारे नौकरी त्यागने के बाद भी ऋषभ को पुरस्कार दिला दिये , तुमसे अपनी बहन के विवाह के बारे में अभी भी सोच रहे हैं, तुम उनकी कहानी पर राय दे रहे हो इससे साफ़ लगता है वह तुम्हारा कितना सम्मान करते हैं । हो सकता है पिताजी के भाग्य में विपदा कम ही समय के लिये हो । मैं व्यक्तिगत रूप से तुम्हारा बहुत आभारी रहूँगा । ”

मैं ” ठीक है जीजाजी । ”

मैं कुछ देर बाद वहाँ से निकला और घर की तरफ चल पड़ा । मैं पूरे रास्ते सोचता रहा मैं अब कर्त्ता क्या? मेरा नौकरी ज्वाइन करने का कोई मन नहीं था पर मजबूरी मेरे सामने थी, मेरे पास कोई और रास्ता अब बचा था नहीं । मुझे इस पढ़ाने के काम में बहुत मज़ा आ रहा था । मुझे विश्वविद्यालय परिसर के अंदर के अपने रुठबे का नशा हो गया था । मुझे अपनी प्रशस्ति गान सुनने का शौक जग चुका था, पर सबका सब एक झटके में समाप्त हो गया । मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं जाकर एकेडमी क्या बात करूँगा, कैसे कहूँगा कि मैं नौकरी करना चाहता हूँ, वह इंकार कर देंगे तब क्या कहूँगा । मैं कमिशनर साहब का एहसान भी नहीं लेना चाहता था, अगर एहसान ले लिया तब प्रतीक्षा से विवाह करना पड़ेगा । मैं विवाह के बंधन में बँधना नहीं चाहता था, मैं उन्मुक्त होकर एक अलग भविष्य की ओर देखना चाहता था । मुझे ख़तरों से खेलने का शौक था ही अब तो ख़तरों को आमंत्रित करने में आनंदानुभूति हो रही थी । अगर एकेडमी गया तब मैं वहाँ जाकर भी कुछ नये रास्ते तलाश सकता था पर विवाह के बाद तो बहुत मुश्किल होगी, हर काम में उनकी सुनो और सलाह माँगों । यह बड़े आदमी की बहन है खून ही चूस जायेगी अगर इसके मन का न किया । मैं एक अस्थिर दिमाग का व्यक्ति हूँ, मैं कब क्या कर दूँ यह मुझे ही पता नहीं होता । लोगों से बेवजह लड़ना मेरी प्रकृति में है । एक सुशील, सुंदर कन्या मुझे खलनायिका लगने लगी सिफ़र इसलिये कि मेरे जीवन की स्वच्छंदता ख़त्म हो सकती है । मैं कर्त्ता क्या? मैं एक बड़े दुश्चकर में फ़ॅस चुका था । मैं अपनी गली में प्रवेश किया मेरी गली की सरकारी लाइट भी नहीं जल रही थी । न तो रौशनी इस गली में थी और न ही दूर - दूर तक मेरे जीवन में । मुझे दरवाजे पर मेरी बहन मिली । उसकी ख़बाब बुनने वाली आँखों में हरदम ख़बाबों का उजाला हुआ करता था पर वह मुझे निर्जीव लगी । वह अब ख़बाब बुने भी कैसे जब सूत देने वाले जुलाहे ने वादाखिलाफी कर दी । मैं सीढ़ियों पर चढ़ने लगा, पर यह मकान की सीढ़ी थी न कि मेरे जीवन की । मैंने जीवन की एक सीढ़ी को स्वयम् ही त्याग दिया था और दूसरी सीढ़ी बना रहा था जिसकी परिस्थिति के दबाव में भर्तृण हत्या हो गयी थी ।

मैं निराश कदमों से अपने कमरे की तरफ बढ़ने लगा ।

मेरे मामा के घर से निकलते ही इस बात पर मंथन आरंभ हो गया कि मुझे नौकरी वापस मिल पायेगी या नहीं और कितनी संभावना मुझे मसूरी एकेडमी के द्वारा स्वीकार करने की है। मेरे पूरे घर- परिवार - खानदान में कोई तो ऐसा था नहीं जिसे नौकरशाही के पेचीदगियों की समझ हो, मैं अकेला उत्तुंग शिखर तक पहुँचा और जितनी शीघ्रता से मैं छोटी पर पहुँचा था उतनी ही शीघ्रता से धरातल पर वापस आ चुका था। कुछ समय तो बीत ही चुका था अगर बहुत समय न बीता हो तब भी। बाबा भैया के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी थीं जैसे ही मैंने कहा था कि मैं नौकरी करने जा रहा। वह इस बात से बहुत परसन्न थे कि मैं नौकरी से बाहर आ चुका हूँ और अब दर- दर की ठोकरें खाऊँगा। बाबा भैया व्यक्तिगत उपलब्धि प्राप्त करने की कोई खास क्षमता तो नहीं रखते थे पर उनका जीवन सुरक्षित ऐसा था। घर की खेती - बाड़ी, शहर का बड़ा मकान, घर में दो- दो बुलेट मोटरसाइकिल, मामा की काली कमाई, हरिकेश मामा के विभाग में ठीकेदार बनने का संभावित भविष्य यह सब बाबा भैया को एक सुरक्षित भविष्य का आश्वासन दे रहा था। इसके विपरीत मेरे यहाँ तो कुछ था ही नहीं, मेरा भविष्य तो वह नौकरी ही थी जो मैंने त्याग दी थी पर अब पाँसा पलटता दिख रहा था। एक शक्ति संतुलन परिवार में जो मामा के पक्ष में बहुत सालों से था वह मेरे चयन ने एकाएक परिवर्तित कर दिया था। मेरा विवाह किसी बड़े घर में होता ही और सुरुचि मिश्रा के भी मेरी पत्नी बनने की संभावना थी। दोनों ही परिस्थितियों में पहले से स्थापित संतुलन का विस्थापन एकदम मेरे परिवार के पक्ष में हो जाता पर मेरे मस्तिष्क की अस्थिरता ने उनको प्रसन्न कर दिया था, पर पुनः मैं एक अस्थिरता दिखा कर उनको भयभीत कर गया। मेरे घर से निकलते ही निकलते ही बाबा भैया ने मामा से पूछा, “ पिताजी केतनी संभावना बा मुन्ना के एकेडमी ज्वाइन करै के ? ”

मामा के पहले हरिकेश मामा ही बोल पड़े, “

कौनौं त्यागपत्र त मुन्ना देहे हयेन नाहीं। बस

एकेडमी ग नाहीं हयेन। इ सरकारी नौकरी जेतना मिलब मुश्किल बा ओतनै जाब मुश्किल बा। अगर जावा चइहिं तब रास्ता बनि सकत हआ। ”

मामा - “ मुन्ना कौनौं आम चीज़ त बा नाहीं। उर्मिला के खून पाये बा। जौन काम पे लगि जाये ऊ कै के माने। देखत नाहीं हआ जहाँ हाथ लगावत बा उहिं देवार गिराई मारत बा। ”

बाबा भैया - “ अब एक बार जब समय पर नाहीं गयेन तब सरकार काहे ले एनका ? कौन दीवार गिराए देहेन ज़िंदगी में ऐ ? छात्र नेता त कुल एनकर शेखी निकारि देहेन । अब तअ ए पढ़ावैय लायक़ नाहीं रहि गयेन । ”

हरिकेश मामा - “ ई कोर्ट कचहरी के के नौकरी पाई जाये । हम जानित हअ ऐसन कई लोग नौकरी बहाल कराई लेहे हयेन । ”

मामा - “ ओकर ज़रूरत न पड़े । कमिशनर साहब बहुत बड़ा आदमी हयेन , संभावना बा कि ई काम त मुन्ना के ओ कराई देझहिं । कौन गलत काम कै देहे बा । बीस - पच्चीस दिन बाद नौकरी करै जात बा , एहमें कौन बड़ी बात होई गै । ”

मामी - “ कब तक काम एकर होई जाये , एकर दिमाग़ स्थिरै नाहीं रहत ? ”

मामा - “ ई मुन्नवा का करे केहू के कुछ नाहीं पता बा । ई रात सोये कुछ और सोचि

के भिंसारे करे कुछ और । अब देखअ कब तक काम बनत हअ , लाग त बा । ”

मामी - “ तोहार हला - भला कराई दे ? साहब से कहे ई ? ”

राकेश जीजा जी - “ अम्मा जी , मुन्ना दिल का साफ़ है । वह कह देगा और साहब इसकी बात मान भी लेंगे । साहब कहानी लिख रहे हैं , मुन्ना के बगैर वह बढ़िया लिख नहीं पायेंगे । कविता की किताब थी तो साहब की पर मुन्ना का भी योगदान था ही उसमें । अम्मा जी , मुन्ना में कुछ तो खास बात है ही । उसका सारा काम अलग तो रहता ही है । ”

बाबा भैया - “ ओनका पगलई करै आवत हअ बस । एक परीक्षा तकदीर से का पास का कै गयेन पगलाई गयेन । ”

मामी - “ तुहूँ तकदीर से पास कै लअ , केऊ रोके बा का । ”

मामा - “ बाबा , हमरे सामने बेवकूफ़ी के बात न किया करअ । तोहरे बेवकूफ़ी से हम हैरान हई । इहअ तू ददुआ से कहि देबअ और उ एक हाथ ककरी नौ हाथ बिया करे । दुधार गाई के चार लात सही जात हअ । कौनौं सहारा बा नाहीं हमरे पास सिवाय मुन्ना के । कलेक्टर कब सस्पेंड कै दे कौनौं भरोसा नाहीं । ”

मामा ने मोहिता दीदी से कहा , “ मोहिता तू राकेश के लै के चली जा उर्मिला के पास और हाथ- पैर जोड़ि के कहि दअ सिफारिश बरे । उर्मिला कहि दे तब मुन्ना ज़ोर दै के कहि दे । बगैर ज़ोर दै के कहे काम न होये । राकेश घरे के दमाद हयेन एनकर लेहाज उर्मिला करे । ”

मोहिता दीदी - “ठीक है पिताजी । “

मामा हरिकेश मामा की तरफ मुख्यातिब हुये और पूछा , “ हरिकेश, मुन्ना से बियाह करबअ ? अब कौनों बड़ा रिश्ता तअ बचा होये नअ । रामराज चला गयेन , ओए रुपिया उड़ाई के बियाह करा चाहत रहेन । साहेब अपने नाम पर बियाह करा चाहत हयेन ओ तअ रुपिया देझहिं नअ और अब साहब बियाह बरे केतना इच्छुक हयेन इहौ कहब मुश्किल बा । पूरा मैदान खाली बा , बाज़ी तोहरे हाथे बा । चलि जा चाल , लै लअ रिस्क । विभा कहत रहिन मुन्ना हमरे आँखिन से जातै नाहीं बा , लै लअ ओका अपने आँखिन के अंदर । महतारी - बिटिया दुझनों मुन्ना के लील के पी जा अपने आँखिन में , ऐसन मौका फिर न मिले । ”

हरिकेश मामा - “ पर जीजा मुन्ना नौकरी में चला जइहिं ? ”

मामा - “ ई त विधाता के पता होये । अब बेवकूफ़ी त कईन देहे बा नौकरी छोड़ि के । जाई के प्रयास करत बा , जुगाड़ लगावत बा , साहेब हाथ लगाई देझहिं तब काम बनै में और सहूलियत होई सकत हअ । सरकार लै ले कि न ले अब कैसे हम बताई सकित हअ । दामाद होई जाये तोहार तुहूँ मदद केहे ओकर कोट- कचेहरी कै के , अगर सरकार न माने । हरिकेश , ऊ बस एकेडमी समय पर गवा नाहीं बा और कौनौ तअ गलती केहे बा नाहीं । अगर साहब कहत हयेन कि नौकरी मिलि जाये तब ओ कुछ सोचिन के कहत होझहिं , साहब बहुत गंभीर मनई हअ ओ कौनौ बात बगैर मतलब के नाहीं करतेन । एक बात और बताई देझत हअ हरिकेश , ई नौकरी कब तक करे इहौ केउ नाहीं कहि सकत । इहौ होई सकत हअ ऊ मसूरी गवा और साल- खाँड़ में झोरा- झंडी लै के वापस आई जाय । एकर नौकरिउ में केहू से पटे नअ । उर्मिला के खून बा एकरे में और उर्मिला के नाहीं इहव नाक पर माछी बैठ्य न दे । हमार भयने हअ , हम एका जन्म से देखत हई । ई बा बहुत ज़िद्दी , उर्मिला कुल कोशिश केहेस पर टस से मस नाहीं भवा , नौकरी छोड़ि देहेस । ”

हरिकेश मामा - “ जीजा , अब काहे जावा चाहत बा ? ”

मोहिता दीदी - “ बेचारा परेशान बा । गुंडागर्दी बा हर तरफ । पढ़ाना चाहता था पर पढ़ा ही नहीं पा रहा । पूरी कहानी तो सुनाया अभी । अब कोई रास्ता बचा ही नहीं है इसके पास । मामा , अन्याय तो हुआ मुन्ना के साथ । वह लोगों के लिये काम करना चाह रहा था पर लोग काम ही करने नहीं दे रहे । बेचारा कहीं का नहीं रहेगा अगर नौकरी न मिली , पर मामा नौकरी वापस मिल सकती है । ”

हरिकेश मामा - “ अगर नौकरी वापस न मिली तब ? ”

मामा - “ हरिकेश अब ई बात त बा । नौकरी मिलै के उम्मीद बा पर इहो होई सकत हअ न मिल पावै । अब ई सोच के दिल कड़ा कै के फ़ैसला लअ कि होई सकत हअ नौकरी न मिल पाये । वैसे हरिकेश ऊ नौकरी में होत तब ऊ बियाह तोहरे बस के बाहर रहा । ”

हरिकेश मामा - “ काहे हमरे बस के बाहर रहा जीजा ? ”

मामा - “ सुरुचि मिश्रा के पापा के तू जनतै हअ । ओ एक बड़े परिवार से हयेन , बड़ा अफसर हयेन , सुरुचि के नाम के पूरे शहर में अंदोर बा । कमिशनर साहब के नाम के बड़ा जस फैला हइयै बा , बहिनौ बड़े कॉलेज में पढ़ति बा उहो आईएएस बनै के राह पर बा । रामराज के रूपिया के कौनौं अंत नाहीं बा । केतना और परस्ताव बताई सब एक के टारे एक परस्ताव हयेन । अब हम और बाबू केतनौं कही पर बियाह करत समय तुलना त होबै करत हअ । ई तुलना में तू कहाँ टिक पउबअ । हरिकेश , हम तअ कहब जुआ खेलि जा , का पता बेबी के तक़दीर में मुन्ना लिखा रहा होई इहीं बरे इ सब नाटक भवा होई । होई सकत हअ बेबी के नसीब से नौकरी पाई जाई ऊ । ”

हरिकेश मामा - “ अगर नौकरी न मिली तब ? ”

मामा - “ हरिकेश , ई बात त हम पहिलेन कहि दिहा कि ई बात दिमाग़ में रखि के फ़ैसला करअ । एक बात और कहि देत हई हरिकेश ऊ बा बहुत लागी अगर नौकरी न पाये तबौ जिंदगी ई चलाई ले , तू एकर चिंता न करअ । तोहरे बिटिया के ऊ खुश रखे एकर हम गारंटी दै सकित हअ । अब नौकरी वाले मुद्दे पर त केऊ कुछ नाहीं कहि सकत । ”

विभा मामी - “ जीजा , हम बहुत अरमान से आपन बिटिया पाले हई । हमार ओकरे जन्म से चाहत रही कि हम दामाद आईएएस लै के आउब । आईएएस के नौकरी वाला मामला सुलझि जाई दअ पहिले । ”

हरिकेश मामा - “ केऊ चुगली केहे बा हमरे बारे में । मुन्ना के बात से ई बात समझि आवत बा । ”

मामा - “ ऊ सब छोट-मोट मामला बा ऊ कौनौं दिक्कत न करे । ई ददुआ कहे होये ओकरे बाते के कौनौं कीमत नाहीं बा , बाबू सँभाल देइहिं । ऊ सब चिंता न करअ बस आपन मन बनावअ । मोहिता के महतारी तोहका वचन देहे रहिन कि मुन्ना के बियाह बेबी से कराउब अब ऊ वचन पूरा होई के समय देखात बा । तू आपन मन बनावअ , बाक़ी बात हमरे पर छोड़ दअ । ”

हरिकेश मामा - “ ठीक बा जीजा , तनिक हमका सोचि लई दअ । ”

मामा - “ हम कालि सांझि के जाब उमिला के इहाँ तू हमका काल दिन तक बताई देहअ । ”

हरिकेश मामा - “ ठीक बा जीजा । ”

हरिकेश मामा और विभा मामी के जाते ही मामा ने मामी से कहा कि अब हरिकेश मुन्ना से बियाह न करिहिं ।

मामी - “ कैसे पता ? ”

मामा - “ चेहरा सब बताई देत हअ , अब अ तक बछवा के नाहीं तोड़ मारे रहेन अब कहत हएन कि हमका सोचि लेई दअ । तुहुँ देख लेऊ काल नाहीं ऐ अब हफ्तन न देखइहिं । एक बात कही मोहिता के अम्मा ? ”

मामी - “ कहअ । ”

मामा - “ मुन्ना ज़िंदगी में बहुत आगे जाये । ”

मामी - “ ई काहे कहत हअ ? ”

मामा - “ हमार ज़िंदगी बीति गई लोगन के देखत समझत । एतना बड़ा निर्णय आदमी नाहीं लेत भगवान लेत हअ । ई फ़ैसला विधाता के फ़ैसला बा न कि मुन्ना के । अब देखअ का नियति करावा चाहत बा । ”

मामी - “ नौकरी चली जाये तब काहे लायक मुन्ना रहि जइहिं ? ”

मामा - “ देखअ ... हमहुँ इहिं रहब और तुहुँ इहीं रहबू ... देखब ईश्वर के लीला , बस इहै बा उर्मिला के बहुत दुःख बा । ऊ बेचारी बहुत मरि- मरि के काट- कपट कै के पढ़ायेस

पर ओका कुछ नाहीं मिला । ”

मैं रात सो गया , सोया क्या करवट ही बदलता रहा । सुबह चार बजे नींद खुली । मैं पढ़ने लगा । माँ चाय लेकर आई पूछा उसने

“ भैया के इहाँ का भवा ? ”

मैंने सारी बात बता दिया । उसका गुस्सा हरिकेश मामा पर बहुत था ही । वह बोली , “ समय के इंतज़ार बा हमका , समय आये आज नहीं तो काल । ”

मैंने कहा , “ माँ , मेरा अब कमिशनर साहब से एहसान लेकर नौकरी करने का मन नहीं कर रहा है । मैं आज एक तार भेज देता हूँ एकेडमी देखता हूँ वह क्या कहते हैं । बद्री सर और चिंतन सर को लिखा ही है । अब ऐसे ही जाने से कुछ होगा नहीं जब तक उनका रुख न मिल जाये । बगैर एकेडमी का मन जाने वहाँ जाने का कोई फ़ायदा नहीं । ”

माँ - “ साहब के ऐहसान लेई में का बुराई बा ? ”

मैं - “ प्रतीक्षा से विवाह करना पड़ेगा । वह बहुत अच्छी लड़की हो सकती है या है भी पर हमारे समाज लायक नहीं है । आंटी ने जिस तरह ऋषभ को खो

दिया उस तरह तुम मुन्ना को खोना नहीं चाहोगी । “

माँ - “ मुन्ना और ऋषभ में कौन तुलना बा । मुन्ना कौनौं ऐसन काम न करे । हमसे गलती होई सकत हअ पर मुन्ना से नाहीं । ”

मैं “ यह क्यों कह रही हो तुम माँ ? ”

माँ - “ मुन्ना हम बहुत पढ़े नाहीं हई तअ का भवा हम समाज देखें हई , दुनियादारी समझे हई । जौन लड़िका शहर के अपरिचित लड़िकन के बरे आपन जीवन दाँव पर लगाई देहेस , आपन सुख - सुविधा त्याग देहेस , एतने मेहनत से पाई देश के सबसे बड़ी नौकरी त्याग देहेस ऊ अपने महतारी के दर्द न समझे । ऊ ऋषभ के तरह काम करे ? ऋषभ रूपिया और मेहरारू बरे महतारी और देश छोड़ि देहेन और मुन्ना समाज बरे सब कुछ छोड़त बा

ऐसन तुलना तू न करअ । तोहार बात ठीक बा , कौनौं इहसान न लअ केहू के । आज तार कै दअ , बदरी- चिंतन के चिट्ठी आईन जाये आजकल में । अब जौन बदा होये तौन होये , हम त अब एह मुद्दे पर सोचबै छोड़ि दिहा । ”

माँ यह कहकर गंगा नहाने चली गयी । मैंने सुबह ही मसूरी एकेडमी टेलीग्राम करके अपने एकेडमी ज्वाइन करने का अनुरोध कर दिया । टेलीग्राम में तबियत ख़राब होने का बहाना लिख दिया ।

इस बीच मैंने उप कुलपति से मिलने के कई परयास किये , मैंने छात्र संघ अध्यक्ष से भी अनुरोध किया कि मुझको पढ़ाने दिया जाये पर कोई फ़ायदा न हुआ । मेरे ऊपर पढ़ाने के लिये मेरी कोचिंग के लड़कों का दबाव पड़ने लगा । अशोक ने कहा कि वह कमलेश तिवारी से मिले थे और उन्होंने कहा कि कोचिंग वह पढ़ायें इससे किसी को क्या मतलब ? नियम के अनुसार विश्वविद्यालय में रिसर्च स्कॉलर ही पढ़ा सकते हैं पर यह बाध्यता प्राइवेट कार्य में कहाँ है । मैंने लड़कों के दबाव में पढ़ाना आरंभ कर दिया पर दो दिन बाद ही मोटरसाइकिलों का क्राफ़िला मेरी कोचिंग में आ गया । उन लोगों ने कक्षा में घुसकर सबको बाहर निकाल दिया । मुझसे कहा , “ लगता है तुम्हारा कुछ अलग इलाज करना पड़ेगा , बगैर बलभर पाये तुम्हारा दिमाग़ नहीं सही होगा , एक बार में बात समझ में नहीं आती है क्या? ” मेरे कोचिंग के समापन की घोषणा उन लोगों ने वहीं कर दी और कहा कि इतना पैसा लेकर यह पढ़ा रहे हैं , यह छात्रों के साथ अन्याय है । हमारे रहते कोई भी अन्याय छात्रों के साथ नहीं हो सकता । छात्र कहते रहे हमने कोई पैसा नहीं दिया पर वह सब गुंडे थे उनको मनमर्जी ही करनी थी । मैं चुपचाप खड़ा देखता रहा । मेरी मेहनत से बनाये नोट्स को मेरे सामने टुकड़े- टुकड़े करके हवा में उड़ा दिया । कई छात्र गिड़गिड़ाते रहे कि कोचिंग बंद न करायी जाये उनके भविष्य का प्रश्न जुड़ा हुआ है पर उन्होंने सामने पड़े छात्रों को एकाध हाथ

जड़ते हुये मुझको चेतावनी दी कि अगली बार अगर पढ़ाते दिख गये तब सीधा ऊपर सिधार देंगे ।

उन्होंने जाते - जाते हवा में दो फ़ायर भी कर दिये । एक भय का वातावरण पूरे माहौल में व्याप्त हो गया ।

यह उस महान विश्वविद्यालय की छात्र राजनीति का एक चेहरा था जहाँ कभी चुनाव पूर्व दक्षता भाषण चुनाव परिणाम को प्रभावित करते थे । यह वही विश्वविद्यालय है जहाँ पर चुनाव के भाषणों में अन्तराष्ट्रीय मुद्दे गूँजा करते थे । जिस परिसर में प्रवेश मात्र ही धन्यता प्रदान किया करता था और इसका दर्शन उतना ही आळादित करता था जितना अमरत्व का प्रमाण संगम का तट और करान्ति का प्रतीक आनंद भवन । पर आज यह महान संस्थान निरीह होकर कातरता में भिक्षा माँग रहा अपने अस्तित्व सुरक्षा हेतु । मैं किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा देख रहा हवा से नीचे गिरकर ज़मीन में फटे हुये अपने अक्षरों - शब्दों को । मैंने कितनी रातों को लगाया था उनको बनाने में और मेरे सामने ही यह अराजकता के शिकार हो गये । मैं अपने नोट्स के टुकड़ों को इकट्ठा करने लगा, मेरी आँखों में आँसू थे, विवशता के आँसू ।

मेरे घर में शाम को भय ही भय था, मामा भी शाम को घर आये थे वह भी डर गये । मेरा जीवन मेरे पूरे परिवेश के अस्तित्व के लिये अपरिहार्य हो चुका था और उस पर मँडराता कोई ख़तरा हर किसी को कँपा देता था । कभी बंदूक - पिस्तौल से तो अपना साबिता हुआ नहीं था । मेरे पिताजी बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे, उनके लिये तो यह सब अकल्पनीय था । मेरे पास अब कोई रास्ता जीवन का बचा न था सिवाय मसूरी एकेडमी के जवाब का इंतज़ार करने के ।

जीवन में निराशा ही निराशा थी । मेरा जीवन एक ऐसे रास्ते पर था जहाँ पर आगे कोई रास्ता खुल ही नहीं रहा था ।

अब शरीर पर ज़ख्म तो मैंने ही बनाये थे शिकवा किससे करूँ ?

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 289

मेरे घर पर हर ओर तनाव ही तनाव, भय ही भय । यह एक अनहोनी घटना घट गयी थी । माँ को इसी बात की चिंता थी कि कहीं बंदूक मुन्ना पर चल

गयी होती तब वह इस बात से भी चिंतित थी कि कहीं कभी कोई चला ही न दे .. वह मेरी ज़िद भी जानती थी कि यह लड़ ही जायेगा अगर इसके आत्मसम्मान पर ठेस पहुँचायी गयी । माँ ने मामा से रात घर पर रुकने का अनुरोध किया , वह असुरक्षित महसूस कर रही थी । रात वह मेरे कमरे में ही सो गयी । उसने सोने से पहले कमरे की सारी सिटकनियों को ठीक से बंद किया । एक बहुत ही मज़बूत स्त्री भय में थी क्योंकि उसे अपने बेटे के जीवन पर कुछ मँडराते काले बादलों की आशंका होने लगी । उसने रात में मुझसे कहा , “ मुन्ना साहेब से कहअ । साहेब कुछ कै देझहिं तब मामला शान्त होई जाये । ”

मैं “ माँ , क्या कहें उनसे ? वह भी कहेंगे क्यों इन सबके मुँह लगते हो । यह मामला कानून - व्यवस्था और अराजकता का तो है पर यह थोड़ा और मुद्दों को अपने में समाहित किये हुये है । यह एक गठजोड़ है नेताओं और कोचिंग वालों का । यह लोग कोचिंग वालों से पैसा लेते हैं और मैं कोचिंग वालों से लड़ रहा हूँ । यह विश्वविद्यालय प्रशासन पूरी तरह से पंगु हो चुका है , यह अवारा नेता लोग जो चाहते हैं वह करा लेते हैं । सब कहते हैं कौन इनके मुँह लगे , यही इनकी सबसे बड़ी ताक़त है । यह गाली- गलौज करते हैं , कट्टा-बम से फ़ायर करते हैं , लड़कियों को परेशान - हैरान करते हैं और सब चुपचाप तमाशा देखते हैं । जो तमाशा न देखकर इनको रोकना चाहे उसके साथ वही रवैया अद्वितीयार करते हैं जो मेरे साथ किया । इनकी अराजक प्रवृत्ति के डर से कोई आगे नहीं आता इनसे दो - दो हाथ करने । तुम गुड़िया से पूछना वह बतायेगी कैसी - कैसी बातें यह सब लोग करते हैं । यह विश्वविद्यालय कभी महानता का प्रतिमान रहा होगा पर अब गर्त में चला जा चुका है । मैं विश्वविद्यालय में पढ़ा रहा था वहाँ नहीं पढ़ाने दिया , कोचिंग में हुंगामा कर दिया । माँ , तुमने देखा होता लड़के बेचारे कैसे गिर्जगिर्जा रहे थे कि क्लॉस चलने दो पर इन दो कौड़ी के लफ़ंगों ने बहुत गलत ढंग से बात किया उनके साथ और एक- दो को झापड़ भी मार दिया । ”

माँ - “ मुन्ना , का करबअ अब तू ? ”

मैं “ किसी को तो आगे आना होगा , किसी को तो संघर्ष करना होगा । बँैर किसी के आगे आये यह व्यवस्था नहीं सुधर सकती । इसको सुधारना ही होगा । ”

माँ - “ तू अकेल कैसे करबअ ? ”

मैं “ मैं अकेला बिल्कुल नहीं हूँ । मेरे पास एक बड़ी ताक़त है । मेरे से बड़ी ताक़त किसी के पास नहीं है बस ज़रूरत है उस ताक़त के सही इस्तेमाल की । ”

माँ - “ तोहरे पास कौन ताक़त बा ? ”

मैं “ मैंने नौकरी छोड़ी है । मैं एक अध्यापक बन चुका हूँ । मेरा नाम हर ओर है । मेरी सदाशयता में लोगों का विश्वास है । यह मुट्ठी भर लोग जिनके पास कोई समर्थन नहीं है वह मनमज्जी सिर्फ़ इसलिये कर रहे हैं कि कोई उनकी गिरहबान नहीं पकड़ता, मैं इनकी गिरहबान पकड़ूँगा । ”

माँ - “ तू कैसे पकड़ब ? ”

मैं “ यह ज्यादातर लोग हवा में फ़ायर करके लोगों को डराते हैं, यह भय हवा में शोर करके फैलाते हैं । इनमें से अधिकांश के पास इतना साहस नहीं होता कि सीने पर गोली चला सकें, यह सब ज्यादातर काम धमका कर करते हैं । मेरे सीने पर गोली चलाने के लिये जो साहस चाहिये वह इनके पास हो ही नहीं सकता । यह सब हवाई फ़ायर करने वाले लफ़ंगे हैं । कोचिंग में भी हवाई फ़ायर कोचिंग से बाहर निकलते समय किया था इन्होंने । यह सब डरपोक - कायर बिके हुये लोग हैं । यह मुट्ठी भर लोगों व्यवस्था के साथ मनमानी सिर्फ़ इसलिये कर रहे हैं कि हर कोई कहता है मुझसे क्या लेना और यही इनके आतंक को परोक्ष समर्थन दे रहा है । यह किसी आती हुई आँधी का सामना नहीं कर सकते । अब इनको एक तूफ़ान से लड़ना होगा । ”

माँ - “ मुन्ना, तू सन्न मारि के जा आपन नौकरी करअ ई सब चक्कर में न पड़अ । ”

मैं “ माँ, अगर आज मैंने कोशिशों से किनारा कर लिया तब बस साँसें गिनने का काम मेरे हक़ में ताउमर बाक़ी रह जायेगा । विधाता ने मुझे यह दृष्टि दी थी कि मैं नौकरी से बाहर भी कुछ सोच सकूँ तब आज एक और दृष्टि दे रहा है कि अब समय आ गया है अराजकता और अव्यवस्था से लड़ने का, अब संघर्ष ही होगा परिणाम चाहे जो हो । ”

माँ - “ का करबअ ? ”

मैं “ देखो अब नियति में क्या लिखा है । हम सब तो एक निमित्त मात्र हैं जो भी करना होता है वह विधाता करता - कराता है । ”

मैं अगले दिन विश्वविद्यालय जाने को तैयार हो रहा था पर माँ मुझे जाने नहीं दे रही थी । मैं उसको समझा बुझाकर विश्वविद्यालय गया । मैं जैसे ही आनंद भवन पहुँचा मैंने देखा एक बड़ा जुलूस छात्रों का आगे बढ़ रहा था । यह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का जुलूस था जो घंटा, शंख, मृदंग बजाते हुये गेरुए झांडे को हवा में उठाये जन जागरण - जन जागरण - अखंड राष्ट्र - एक राष्ट्र - अखंड भूमि - भारत भूमि का नारा लगाते हुये विश्वविद्यालय परिसर के मुख्य द्वार की ओर बढ़ रहा था । मैं यूनियन हॉल पहुँचा वहाँ पर रमेश शर्मा मुझको मिले और उन्होंने मुझको बुलाया और कहा कि मैं चुनाव लड़ा रहा आप मेरा मेरा समर्थन करो । यह हवा ज़ोरों पर थी कि पूर्व अध्यक्ष

राकेश धर तिरपाठी और कमलेश तिवारी का इनको समर्थन प्राप्त है । पूरा यूनियन हॉल लोगों से भरा था । मोटरसाइकिल ही मोटरसाइकिल हर ओर । इतने में देखा कि एसएफआई के धर्मेन्द्र सिंह का क्राफ़िला आ गया । वह क्राफ़िला यूनियन हॉल से आगे बढ़ते हुये दाम बाँधों काम दो , जातिवाद -सम्प्रदायवाद मुर्दाबाद - छात्र एकता ज़िंदाबाद का नारा लगाते हुये विश्वविद्यालय में प्रवेश कर गया । पंकज पांडेय का एक बड़ा जुलूस नक्सलवाद मुर्दाबीद , चाऊ माऊ कहते हो भारत में क्यों रहते हो का नारा लगाते हुये यूनियन हॉल के समीप लाल पदमधारी की मूर्ति पर पहुँच गया । किसी ने बताया कि आईसा का जुलूस एनझा होस्टल से चल चुका है वह भी शीघ्र ही पहुँचने वाला है । आज विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव के नामांकन का पहला दिन है । पूरा विश्वविद्यालय एक अलग रंग में रंगा था । हर ओर पोस्टर- बैनर लगे हुये थे , छात्रों में सरगर्मी थी और यूनियन हॉल के सामने का परिसर लोगों से पटा हुआ था ।

सन् 1923, से आरंभ हुआ विश्वविद्यालय का छात्रसंघ एक महान प्रम्परा को अपने आप में समाहित किये हुये है । नारायण दत्त तिवारी , सुभाष कश्यप , चन्द्रशेखर, मोहन सिंह , अरुण कुमार सिंह , विश्वनाथ प्रताप सिंह , के पी तिवारी , श्याम कृष्ण पांडे , प्रभाकर नाथ द्विवेदी , अनुग्रह नारायण सिंह , राकेश धर तिरपाठी , अखिलेन्द्र प्रताप सिंह , लाल बहादुर सिंह , कमल कृष्ण राय पता नहीं कितने बड़े नाम इस छात्र संघ भवन की पटिटकाओं पर दर्ज हैं । यहाँ के भाषणों में बड़े- बड़े मुद्दे हुआ करते थे । चुनाव पूर्व दक्षता भाषण सुनने शहर के सारे बुद्धिजीवी आया करते थे । वह दौर ही कुछ अलग था जब छात्र नेताओं की शालीनता उनका जुझारुपन एक गुण हुआ करता था । कई ऐसे लोग भी छात्रसंघ के पदाधिकारी हुये हैं जिनकी उत्तर प्रदेश बोर्ड में पोज़ीशन थी और विश्वविद्यालय के विभाग के मेरिट लिस्ट में स्थान था पर अब राजनीति अराजकता की ओर थी । जातिवाद और गुंडागर्दी पूरी तरह से राजनीति पर हाँबी थी । कई अपराधी भी चुनाव लड़ने लगे थे , न केवल लड़ने लगे थे चुनाव भी जीत रहे थे । इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ पर अपराधिक तत्व क्रब्ज़ा करने का प्रयास हर वर्ष करते थे और अपराध जगत के समर्थन से लोग चुनाव लड़ने लगे थे । जीता हुआ उम्मीदवार भी कई बार हारे हुये उम्मीदवार के भय से ग्रसित रहता था । बहुत से लोग जुलूसों में पिस्तौल- कट्टे लगाकर शामिल होते थे । यह सब कुछ दशक पूर्व अकल्पनीय रहा होगा पर आज यह हकीकत के रूप में तब्दील हो चुका था । अपराधियों का होस्टलों पर क्रब्ज़ा हो रहा था और कई नेता अपने नाम से कमरे कई छात्रावासों में एलॉट करा लेते थे । कुछ ऐसे भी नेता थे जो कुछ साल पहले विश्वविद्यालय छोड़कर जा चुके थे पर उनके नाम का कमरा आज भी छात्रावासों में था । अध्ययन एवं विचार मंथन के लिये विख्यात इस विश्वविद्यालय में अब पिस्तौल लेकर चलना एक सम्मान

की बात थी और गाहे- बेगाहे शौकिया ही परिसर में फ़ायर कर देते थे । सर सुंदरलाल ऐसे छात्रावास में विश्वविद्यालय परिसर में काम कर रहे ठीकेदार से उगाही के मामले में एक गुट ने दूसरे गुट के छात्र पर दौड़ा कर पिस्तौल की गोलियों से घातक हमला कर दिया था । कई छात्रनेता चरपहिया वाहन रखते थे, इनसे कोई पूछने वाला नहीं है कि यह पैसा एक छात्र के पास आता कहाँ से है । कोचिंग संस्थानों और नर्सिंग होम से पैसा उगाही करना इनका मूल कार्य था । अपराधी प्रवृत्ति छात्र नेता विभिन्न पदों का चुनाव हर वर्ष लड़ते ही थे और उनके चुनाव में पैसा पानी की तरह बहाया जाता था । जातिगत समीकरण बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता था । संघर्ष मोर्चा एक ऐसा संगठन था जो जातिगत और गुंडागर्दी के लिये कुख्यात हो चुका था । वैसे भाँग तो पूरे कुँए में ही पड़ी थी किसी एक को दोष क्या देना । कभी वामपंथी रुझान वाले छात्र संगठनों की हवा बहा करती थी पर अब वह हवा अपराध- जाति - क्षेत्र- धन के गठजोड़ के कारण पहले की तरह ताकतवर न रही पर फिर भी उनका अस्तित्व बरकरार था और एक उपस्थिति छात्रों के मध्य उनकी थी ।

राजनैतिक दलों और राजनेताओं से संबद्धता भी कुछ हुआ करती थी और वह पार्टी लाइन पर कार्य करते थे । राजनैतिक दल भी चुनाव में बहुत रुचि रखते थे और कुछ तो ऐसे मठाधीश थे जिनका काम ही था चुनाव लड़वाना और इस युवा शक्ति का दुर्लपयोग करना । शहर के ज़मीन- जायदाद के झगड़े में भी इनका भरपूर इस्तेमाल होता था । अब ऐसे माहौल में छात्र हित, पठन- पाठन का माहौल तो गौड़ विषय हो ही जायेगा । सत्र देर से चलता था, दो साल की डिग्री कई साल में मिलती थी, अध्यापकों का अकाल था । गेस्ट फ़ैकल्टी से कक्षायें चलती थीं । शिक्षा का स्तर तो दूर की बात कक्षा चलाना ही एक चुनौती हुआ करती थी । प्रतियोगिता परीक्षाओं के परिणाम में इस विश्वविद्यालय की दखलदाजी दिन- प्रतिदिन कम होती जा रही थी, लोग प्रारम्भिक परीक्षा ही पास नहीं कर पाते थे तब आगे की बात कोई क्या करे । कभी यूपीपीसीएस में विश्वविद्यालय का एक छत्र अधिकार था पर अब उस पर भी दूसरे शहर ही नहीं दूसरे राज्यों के लोग भी धावा बोल चुके थे । धावा बोलेंगे भी और विजय भी पायेंगे वीर ही वसुंधरा को भोगेंगे । हम सब पराजय की पीड़ा झेल रहे थे । यह पराजय हमारे क्षमताओं की कमी से शायद उतनी नहीं थी जितनी हमारे नेतृत्व की अक्षमता की उपज थी ।

वर्तमान उप कुलपति की छवि बहुत ख़राब थी, उनका शिक्षा से कोई ताल्लुक न था । वह आये दिन दिल्ली पड़े रहते थे अपनी कुर्सी बचाने के लिये । जिस विश्वविद्यालय के उप कुलपति की कुर्सी पर सर गंगानाथ झा, अमर नाथ झा, सर सुंदरलाल ऐसे महान मनीषी बैठे हों उस कुर्सी पर बैठने वाले उप कुलपति किस विधा के जानकार यह भी किसी को पता न था । उन पर

तरह - तरह के आरोप थे पर वह सत्ता के नज़दीक थे इसलिये सात खून माफ़ था ।

मैं यूनियन हॉल पर खड़ा होकर बड़े- बड़े जुलूस देखने लगा । हर कोई बहुत विशाल जुलूस बनाने की तैयारी करता था और कई के जुलूस बहुत ही विशाल होते थे । पर यह विशाल जुलूस छात्रों के सहयोग से कम किराये के इकट्ठा किये गये लोगों के सहयोग से ही प्रायः होते थे । यह लोग सुबह बस भेज देते थे दूर- दराज के इलाक़ों से और पास के विद्यालयों- महाविद्यालयों से दिन के खाने और कुछ पैसे का लालच देकर उनको इकट्ठा करते थे । यूनिवर्सिटी रोड पर माइक बाँधे जा रहे थे । नामांकन करने के पश्चात् वहाँ पर नेताओं का भाषण होना था । मैंने साइकिल स्टैंड पर अपनी साइकिल खड़ी की और पैदल चलता हुआ हिंदी विभाग पहुँचा । मैंने अपनी क्लॉस की और जब क्लॉस करके वापस आया तब देखा पूरे यूनिवर्सिटी रोड पर मंच ही मंच लगे थे । हर उम्मीदवार नामांकन करके आने के बाद अपने समर्थकों को मंच से संबोधित करता था । मैं भी उनकी बात सुनने लगा । एक निहायत ही स्तरहीन भाषणों का फूहड़पन हर ओर व्याप्त था । यह देश के भावी कर्णधार हैं । इन्हीं में से कल का राजनैतिक नेतृत्व विकसित होगा जो विश्वविद्यालय के पश्चात् देश को गर्त में ले जायेगा और हम सब मूक दर्शक बने रहेंगे ।

मैं घर चला गया । मैं अगले दिन घर से नियत समय विश्वविद्यालय को चला । मैं जैसे ही केपीयूसी के पास पहुँचा पता चला यहाँ पर छात्र संघर्ष समिति का कार्यालय है । चुनाव लड़ने वाले छात्र नेता प्रायः अपना कार्यालय किसी छात्रावास में ही बनाते थे । मैंने साइकिल केपीयूसी के भीतर मोड़ी तो देखा एक नेता दाढ़ी बढ़ाये सफ्रेद कुर्ता पहने लोगों को कुछ संबोधित कर रहा था । मुझे यह समझ आया कि जुलूस निकालने की तैयारी हो रही है । हर छात्र नेता प्रतिदिन अपना जुलूस निकालते थे । वह जुलूस विश्वविद्यालय परिसर और यूनिवर्सिटी रोड पर घूमता था और उसके समर्थन में नारे लगते थे । कई बार दो जुलूस के आमने - सामने हो जाने पर मारपीट भी हो जाती थी । केपीयूसी में ही हलवाई एक किनारे पर खाना बना रहा था । जब जुलूस खत्म होगा तब पूँड़ी- कचौड़ी का दौर आरंभ होगा । कई गाड़ियाँ वहाँ खड़ी थीं और उन गाड़ियों का नंबर यूपी 70 न था, इससे साफ़ लग रहा था शहर के बाहर के लफ़ंगे और अराजक तत्व इस विश्वविद्यालय के चुनाव में भागीदारी करने आ चुके हैं । मैं अपनी क्लॉस करने चला गया । मैं जब क्लॉस करके घर जाने लगा तब देखा एक विशाल मोटरसाइकिल का क्राफ़िला जिसमें सबसे आगे रमेश शर्मा एक मोटरसाइकिल की पीछे की सीट पर सफ्रेद कुर्ते में हाथ जोड़े खड़े ऐसे थे । उनका यह मोटरसाइकिल- स्कूटर का लंबा क्राफ़िला केपीयूसी के गेट से महिला छात्रावास तक लंबा था और यह धीरे- धीरे विश्वविद्यालय के मेन गेट की तरफ बढ़ रहा था । उस क्राफ़िले में सैकड़ों

मोटरसाइकिल - स्कूटर रहे होंगे । “रमेश शर्मा नहीं यह आँधी है यूनिवर्सिटी का गाँधी है”, के नारे लग रहे थे । रमेश शर्मा के जुलूस के बाद दूसरा जुलूस आ गया नारा था , “ हमारा लक्ष्य चंदू अध्यक्ष ” । मैं खड़ा होकर सारा जुलूस देखने लगा । मैं घर वापस पहुँचा , माँ थोड़ा चिंतित रहती थी पर मैंने कहा कोई चिंता की बात नहीं है सब सामान्य है । मैं शाम को ज्ञान भारती की दुकान पर गया और वहाँ से डी जे होस्टल गया । वहाँ पर मशालें तैयार हो रही थीं । मैंने पूछा , यह क्या है ? पता चला गाज़ीपुर के प्रतापी नेता सत्य प्रकाश पांडे जिनके जीतने की काफ़ी उम्मीद है उनके समर्थन में रात में मशाल जुलूस निकाला जायेगा और उसकी तैयारी ज़ोरों पर चल रही थी । मैंने सत्य प्रकाश पांडे को देखा वह मुझसे दस - पन्द्रह साल बड़े हो सकते हैं , कम से कम देखने में तो ऐसा लग रहा था । किसी ने बताया कि इनका बेटा भी इस साल विश्वविद्यालय में प्रवेश ले चुका है । मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ यह देख - सुनकर ।

मैंने पूछा , यह कब से विश्वविद्यालय में हैं ? यह किसी को न पता था यह कब यहाँ प्रवेश लिये थे । जबसे जो कोई भी आया उनको देख ही रहा । वह एक बड़े मठाधीश माने जाते थे । उनका चुनाव संचालन संतोष सिंह कर रहे थे । वह सौ किलो से ज्यादा के थे और होस्टल के लॉन में एक खटिया पर लेटे थे । वह जैसे ही खटिया पर से उठने की कोशिश किये वह खटिया ही टूट गयी । किसी ने कहा इनका यह रोज़ का काम है किसी गरीब की खटिया को तोड़ देना । आज उस गरीब चाय वाले का दुर्दिन था । मैं रात में घर लौटकर आया और मैंने एक बड़ा फ़ैसला किया छात्रसंघ अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने का । मैंने राजनीति के दावानल में प्रवेश करने जा रहा था । मैं अंदर से बहुत आहत था और हमेशा मुंतशिर ही रहता था । मैं अगले दिन विश्वविद्यालय गया । आज नामांकन का अंतिम दिन था । मैं बग़ैर शोर - शराबे के शाम को चार बजे सीनेट हॉल गया और अपना अध्यक्ष पद हेतु नामांकन दाखिल कर दिया । मैंने नामांकन दाखिल तो कर दिया पर आगे की राह का मुझे कुछ भी पता न था । मैंने एक नयी राह पकड़ ली थी , एक ऐसी राह जिसमें मेरी पराजय सुनिश्चित थी , चुनाव लड़ने की परंपरागत अवधारणा की दृष्टि से ।

मैंने अपनी साइकिल को साइकिल स्टैंड से निकाला और शहीद लाल पदमधर की मूर्ति के सामने खड़े होकर छात्रसंघ भवन के बुर्ज को देखा और कहा ...

न दैन्यम न पलायनम ... अब रण में मैं उत्तर रहा था .. कई बड़ी सेनायें मेरे सम्मुख थीं .. विभिन्न आयुधों से युक्त अनैतिक सेनायें ... मेरे पास जो

अस्त्र थे वह नये थे और अभी तक परीक्षित न हुये थे । मैं अपने नायाब -
नवीन अस्त्रों को प्रयोगशाला में लेकर जा रहा था पता नहीं परिणाम क्या
होगा । मैं विजय से ज्यादा संघर्ष का इच्छुक था मेरे अंदर उद्गार
उठे....

लड़ना एक मजबूरी थी
पता नहीं क्या होगी नियति संग्राम की
थक गये थे बोझिल अँधेरों में रहते हुये
रोशनी की एक चाह थी
चाह देख लड़ गये
बेहद घुटन थी सब कुछ वैसा ही स्वीकारने में
खुली हवा के लिये लड़ गये हम

चलो हार भी जायेंगे तो क्या हुआ
पराजय भाग्य में थी तो क्या हुआ
गर्व से कहूँगा मैं
पराजित हूँ पर टूटा नहीं
खुद पर था भरोसा मुझे
जीतने का न सही
शिव्वत से लड़ने का

कहाँ है यह लिखा हुआ
लड़ना है ज़रूरी सिफ़्र जीतने के लिये
हाँ लड़ना है ज़रूरी स्वाभिमान के लिये
जीतना उतना ज़रूरी नहीं
ज़रूरी जितना है लड़ना
दूसरों की नहीं
अपनी ही आँखों में ज़िंदा रहने के लिये
ललकार रहा उनको

जो माहिर हैं षड्यन्तरों में जीत के लिये
पर ज़िद तो ज़िद होती है

आततायी लहरें कर देती हैं समर्पण
कुछ कश्तियाँ जब अपनी ज़िद पर होती हैं ॥

अब फूल सा कलाम नहीं लिखूँगा .. ग़ज़ल किसी के नाम नहीं लिखूँगा ...
भौंरों के गीत नहीं तलवार की टंकार सुनाऊँगा ... जलाऊँगा वह चिराग
जिसकी राख भी रौशनी करेगी ।

शायद एक और दास्तान मेरा इंतज़ार कर रही थी ।

अनुराग शर्मा तेरा सबसे बड़ा इम्तिहान तेरा इंतज़ार कर रहा ... बना फिर
व्यूह एक बार इस परिसर के कौरवों के लिये ..

कृष्ण की तरह आवाज मेरे अंदर उठी मैं सबका ध्वंस करूँगा ... इनके
ध्वंसावशेष पर भविष्य का निर्माण होगा मेरी साइकिल यूनियन हॉल से
हालैंड हॉल के सामने की सड़क पर तेज रफ्तार से चलने लगी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 290

मैं घर वापस आकर अपने कमरे में चला गया । मैंने सोचा काहे रात ख़राब
करूँ । मैं अभी बता दूँगा सब रात भर परेशान होंगे और पिताजी से लडाई हो
जायेगी , कल सुबह बताता हूँ । मैं सुबह उठा ही नहीं । माँ ने नीचे से देखा
कि मेरे कमरे की बत्ती जल नहीं रही है इसलिये वह ऊपर आयी ही नहीं । माँ
गंगा नहा कर आयी तब तक पिताजी ने पेपर पढ़ लिया था और प्रत्याशियों
के नामों की सूची पेपर में छपी थी । मेरा नाम वह पेपर में देख कर चौंक गये ।
एक हल्ला घर में शुरू हो गया । मुझे नीचे बुलाया गया । पिताजी ने कहा , “
तुम एकेडमी जाने की कोशिश कर रहे हो और यह काम भी कर रहे हो । यह
गुंडे - बदमाश तुमको किसी केस में फ़ंसा देंगे तुम एकेडमी जाने लायक भी
नहीं रहोगे । ”

मैं चुपचाप बैठा सुनता रहा । पिताजी थोड़ा गुस्से में भी थे । थोड़ी ही देर में मामा की बुलेट मोटरसाइकिल की आवाज़ गूँज गयी । उन्होंने पेपर पढ़ते ही मोटरसाइकिल चला दी थी मेरे घर की तरफ । उन्होंने पिता जी का गुस्सा देखा और कहा रुकिये मुझको बात करने दीजिये । उन्होंने पूछा , “ यह काम क्यों कर रहे हो ? ”

मैं - “ यूनिवर्सिटी सुधारूँगा । ”

मामा - “ कैसे ? ”

मैं - “ थोड़ा इंतज़ार करिये । ”

मामा - “ कौन सी ताक़त है तुम्हारे पास ? ”

मैं - “ एक बड़ी ताक़त है । ”

मामा - “ बहुत रूपिया लगती है चुनाव में । ”

मैं - “ पैसे की कोई ज़रूरत नहीं है । ”

मामा - “ चुनाव हारी जाबअ । ”

मैं - “ पता है । ”

मामा - “ तब काहे लड़त हअ ? ”

मैं - “ कई बार हार में भी जीत होती है । बस आप देखिये हार में जीत कैसे होती है । ”

मामा - “ मुन्ना ज़िद न करअ । ”

मैं - “ मामा , बस अब देखिये आगे क्या होता है । मुझे चुनाव जीतना ही नहीं है । ”

मामा - “ तब क्या करना है ? ”

मैं - “ मुझे उठाने हैं । ”

मामा - “ नौकरी न करबअ ? ”

मैं - “ करूँगा , पहले मसूरी से मामला साफ़ तो हो जाये तब तक यह चुनाव लड़ लेता हूँ । समय ख़ाली है कुछ दिन यह भी कर लेता हूँ , काहे यह काम रह बाक़ी रह जाये जीवन में । ”

पिता जी - “ तुम्हारा दिमाग़ फिर गया है , पगला गये हो । बड़े- बड़े लोग पैसा लगाते हैं । पोस्टर - बैनर - गाड़ी- घोड़ा कहाँ से आयेगा यह सब तुम्हारे पास ? ”

मैं - “ इन पोस्टर- बैनर - गाड़ी- घोड़े- पैसे की कोई ज़रूरत नहीं है । ”

पिताजी - “ बग़ैर पैसे के चुनाव लड़ लोग? ”

मैं - “ हाँ । ”

पिताजी - सब लोग कई - कई साल से चुनाव की तैयारी करते हैं । यह अध्यक्ष पद पर देखो कितने बड़े- बड़े नाम हैं । एक परीक्षा पास करते ही तुम पगला गये हो और सारा कार्य विवेकहीन होकर कर रहे हो । ”

मैं - “ यह एक सोचा समझा फ़ैसला है । यह निर्णय पूरे होशोहवास में लिया गया एक परिपक्व फ़ैसला है । मेरी तैयारी सबसे ज्यादा है । मैंने जब पहली बार कोचिंग आरंभ किया था तबसे मेरी तैयारी चल रही है । पिताजी , मुझसे बड़ी ताक़त किसी के पास नहीं है । मेरी सदाशयता एवम् विश्वासनीयता निर्णायक होगी । मुझको चुनाव लड़ने दें , मुझे हतोत्साहित न करें । मेरी हार भी ज़माने को याद रहेगी । लोग कहेंगे कोई कभी आया था हमारे लिये लड़ने जिसकी हमने कदर न की । ”

माँ - “ मुन्ना , करअ सब अपने मन के , पछतावा होये बाद में । ”

मैं कुछ न बोला । मैं दस बजे यूनिवर्सिटी चला गया । यूनिवर्सिटी मेन गेट पर ही लोगों ने मुझको धेर लिया और पूछा चुनाव क्यों लड़ रहे हो ?

मैंने कहा , बस इंतज़ार करो सब पता चल जायेगा । मैंने देखा कि हिंदी विभाग का ही एक उपाध्यक्ष पद का प्रत्याशी अपना माझे शहीद लाल पदमधर की मूर्ति के पास मंच बनाकर लगा रहा था । मैंने उससे अनुरोध किया कि मुझे आज अपने मंच ये बोल लेने दो । वह सहर्ष तैयार हो गया और कहा कि हम तुम एक गुट बनाकर चुनाव लड़ते हैं । मेरा नाम तो था ही वह उसका फ़ायदा उठाना चाहता था । मेरे पास भी कोई रास्ता न था मैं उम्मीदवारों की भीड़ में सबसे तेज दौड़ना चाहता था । मैं कोई समय नष्ट नहीं करना चाहता था । मैंने कहा , “ ठीक है । आप घोषणा कर दो कि दो बजे मैं संबोधित करूँगा । मैं अपनी क्लॉस करके आता हूँ । ”

मेरे लिये क्लॉस करना कोई ज़रूरी नहीं था पर मैं व्यूह बनाने लगा । यह क्लॉस करके आना मेरी रणनीति का भाग था । मैं जैसे ही आगे बढ़ा घोषणा होने लगी , “ आईएएस की नौकरी को त्याग कर विश्वविद्यालय की गरिमा के लिये लड़ने वाले अध्यक्ष पद प्रत्याशी अनुराग शर्मा आज दो बजे संबोधित करेंगे । आप सब लोग भारी तादाद में एकत्रित होकर उनका संबोधन सुनें । ”

मैं हिंदी विभाग पहुँचा , वहाँ हंगामा मेरे नाम का हो ही चुका था । मुझे सुनने की उत्सुकता लोगों में थी ही । मैं दो बजे यूनियन हॉल पर पहुँचा । एक बहुत बड़ी भीड़ मेरा इंतजार कर रही थी । उपाध्यक्ष पद के प्रत्याशी राम आशीष मौर्या ने मेरे नाम का जयकारा आरंभ कर दिया । मैं मंच पर पहुँच गया । एक बड़ी भीड़ मुझको उत्साहित कर रही थी ।

मैंने अपनी बात कहनी आरंभ कर दी , “ यह संघर्ष मैंने चुना है । यह चुनाव लड़ना मेरी कोई मजबूरी नहीं है यह एक उद्देश्य को लेकर उठाया गया कदम है । इस विश्वविद्यालय, इस शहर के भविष्य के लिये मैंने एक पथरीली राह पर चलने का फ़ैसला किया है । मैंने देश की प्रतिष्ठित सेवा को अस्वीकार किया है इस विश्वविद्यालय की बुज्जती रौशनी को बचाने के लिये । इन स्तरहीन कोचिंग संस्थानों - गुंडों - अराजक तत्वों और कुलपति महोदय का एक गठजोड़ है जो आपके भविष्य के विपरीत कार्य कर रहा है । इस गठजोड़ का मैं समूल नाश कर दूँगा । यह गठजोड़ मुझे पढ़ाने नहीं दे रहा है । विश्वविद्यालय के कुलपति ने इतिहास के गलियारों में धूल फौंक रहे अपरासंगिक से एक सर्कुलर का हवाला देकर आप के भविष्य के विपरीत कार्य किया है , वह भी तब जबकि एक ओर अध्यापकों का अभाव है और दूसरी ओर कुछ गिने- चुने अध्यापक ही पढ़ाने में रुचि रखते हैं । अराजक तत्व जो कोचिंग संस्थानों से पैसा खाते हैं उन्होंने मेरी कोचिंग में गोलियाँ चलवाई, एक भय के वातावरण का निर्माण किया । मैं कल से पुनः कोचिंग आरंभ करूँगा और विश्वविद्यालय में भी पढ़ाऊँगा । आप लोग भारी से भारी संख्या में मेरी कक्षाओं में आये और अगले साल मसूरी को मैं इलाहाबाद के हिंदी माध्यम छात्रों से पाट दूँगा । यह प्रश्न ज़मीन का है , भाषा का है और अपनी माँ का है । मैं देखता हूँ कितनी गोलियाँ इन अराजक तत्वों को पास हैं जो मेरे सीने को बेध सकें । मैं खुली चुनौती देता हूँ उनको , उनके आकओं और अराजकता के सम्मुख समर्पित कुलपति महोदय को कि वह मेरी कक्षा रोक दे अगर उनमें हिम्मत है । मैं अपनी कक्षा करके आपको संबोधित करने आया हूँ , आप मेरे प्रतिद्वंद्वियों से पूछो उन्होंने कब कोई क्लॉस अटेंड की है , जिसने जीवन में एक किताब नहीं पढ़ी वह इस महान विश्वविद्यालय की परम्परा का प्रतिनिधित्व करना चाह रहे हैं । एक मात्र मुद्दा इस चुनाव का है - शिक्षा ... ज़ाति - धर्म- क्षेत्र से ऊपर उठकर अपने भविष्य के लिये मत दें । अब सिर्फ़ संघर्ष होगा , एक भयानक संघर्ष । आपके पास एक अवसर आया है जो ईश्वर ने दिया है उसको ज़ाया मत होने दीजिये । अगर हम आज शांत रहे तो इतिहास हमारे मौन पर प्रश्न करेगा । हम आने वाली पीढ़ियों के हम अपराधी होंगे । मुझे जीत से अधिक लड़ने में यक़ीन है । मैं वह चिराग हूँ जिसे तुमने जलते तो देखा है पर लड़ते हुये नहीं देखा है । आप सब इस चिराग को लड़ते हुये देखना यह कितना हँफायेगा उन आतंकारी आँधियों को । मेरे राह में आने वालों यह सोचकर मेरे सामने आना दीवार से किसी

उफनतीं दरिया को रोका जा नहीं सकता, तूफान किसी तिनके से डर नहीं सकता। मैं चुनाव जीतूँ या हारूँ पर अव्यवस्था एवम् अराजकता को समाप्त करूँगा। कोचिंग संस्थानों में ताला लगाऊँगा, कुलपति से इस्तीफा लूँगा और हर अध्यापक को अतिरिक्त कक्षाओं के लिये बाध्य करूँगा। आप सब अपनी माँ से कह दो अगले वर्ष मैं मसूरी रहूँगा। तुम्हें मसूरी भेजना मेरा काम है, यह मेरा वादा है तुम्हारी माँ से तुम्हारे भविष्य के लिये। कल दो बजे क्लॉस इतिहास विभाग के मुख्य कक्ष में, 3:30 बजे सर सुंदर लाल के हॉल में और सायंकाल 6 बजे मेरी कोचिंग में चलेगी। ऐ अँधेरे के आतंकियों अगर रोक सकते हो मेरे बढ़ते कदमों को कल आ जाना नहीं तो कायरों अपने हद में रहना सीखो। ऐ कुलपति महोदय में आपका वह शिक्षा विरोधी अध्यादेश, जिसने मुझे पढ़ाने से रोका है और जो फ्रमान है एक आतंकारी व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण का मैं फाड़ कर फेंक देता हूँ क्योंकि मुझे नहीं है यक़ीन एक सड़ी-गली व्यवस्था में। मैंने पूरी नाटकीयता के साथ वह आदेश फाड़ कर चार टुकड़े कर दिये जिसमें यह आदेश था कि रिसर्च स्कॉलर ही विश्वविद्यालय में पढ़ा सकते हैं।

मैंने आगे बोलना आरंभ किया, “मेरे अंदर बुद्ध का वास है, मैं सर्वोपरि हूँ, मैं नयी व्यवस्था को जन्म देने के लिये कृत संकल्प हूँ। एक आंदोलन शिक्षा के नाम पर इस परिसर से उठेगा जो देश का नेतृत्व करेगा।”

मेरे द्वारा वह फ्रमान फाड़ते ही ज़िंदाबाद - ज़िंदाबाद के नारे लगने लगे। एक नयी हवा मैं लेकर आया था। एक नये तरह के चुनाव की शुरुआत मैंने कर दी थी। अगले दिन सारे समाचार पत्र में एक ही बात ... एक नया आंदोलन शिक्षा के नाम पर विश्वविद्यालय परिसर में। अनुराग शर्मा एक नया नायक ..

मैंने युद्ध के नियम बदल दिये। मैंने क्लास को हिंदी विभाग में न चलाकर यूनियन हॉल में चला दी। मैं सर सुंदर लाल होस्टल भी गया और शाम को कोचिंग भी चला दी। मेरे पीछे नेताओं में यह मंथन बहुत हुआ कि कैसे इसको रोका जाये पर परिसर में प्रेस की उपस्थिति और भारी भीड़ होने के कारण वह यह नहीं समझ पा रहे थे मुझे रोके कैसें। छात्रों की नाराज़गी का भी डर था। उनको वोट तो लेना ही था। बात फैलने लगी कि अनुराग से उप कुलपति भी डर गया और यह बात फैला मैं ही रहा था। समाचार पत्रों में मेरी खचा-खच भरी क्लॉस की तस्वीर भी छप गयी और कैशन था एक छात्र अध्यापक बनकर चुनाव लड़ रहा।

कचहरी में सजीवन ने फरगेंया से कहा, “फरगेंया भैया कुछ ख़बर देबअ भयनवा के। ई त पूर ऐयार निकला।”

फरगेंया - “ सजीवन हम त तोहसे पहिलेन कहे रहे ओकर खोपड़ी बा बहुत तगड़ी । ”

राम सजीवन - “ अब का होये ? ”

फरगेंया - “ ई बहुत आगे जाये । ”

राम सजीवन - “ ई केतना आगे जाये ! ”

फरगेंया - “ ओका माया फैलावै बहुत आवत हअ / देखत नाहीं हअ कस माया फैलाये बा । ”

सजीवन - “ ई जीत जाये ? ”

फरगेंया - “ जीते त नअ पर नाकन चना चबवाई दे । ”

राम सजीवन - “ ऊ कैसे ? ”

फरगेंया - “ ई झूठ - सच सब बोलै में माहिर बा / सर्वेश के भयने हअ / बस देखत रहअ । ”

राम सजीवन - “ फरगेंया भैया , ई नौकरी न करें का ? ”

फरगेंया - “ ई नौकरी से आगे जात बा अब / ई नौकरी में का धरा बा / एंकर प्लानिंग लंबी जनात बा । ”

राम सजीवन - “ का प्लानिंग बा फरगेंया भैया ? ई सांसद बना चाहत बा का ? ”

फरगेंया - “ एक बात बताई देई सजीवन एतना बड़ा करेजा सबके नाहीं होत / हम तू बाबू के नौकरी नाहीं छोड़ि सकित , ई आईएएस के नौकरी छोड़ि देहेस । ”

राम सजीवन - “ भैया मिलवाई दअ ओसे / कुछ हली - भली के संबंध बना रहे तअ आगे कामै आये । ”

फरगेंया - “ बोलवाइत थअ ओका एक दिन , ज़रा मीठ चाहि तअ मँगावअ । ”

इलाहाबाद विश्वविद्यालय चुनाव शहर में हर ओर चर्चा में रहता था / इस चुनाव में शासन - प्रशासन की भी रुचि रहती थी / मेरे उठाये हर कदम में प्रेस की रुचि होती थी और सबकी निगाहें मेरी ओर मुड़ चुकी थीं / मैं समाचार पत्र के तीसरे पृष्ठ से मुख पृष्ठ पर आ गया था ।

प्रेस को तो छापने का मुद्दा चाहिये / वह मुद्दा मैं दे ही रहा था / कुलपति की छवि बहुत ही ख़राब थी और मैं उस ख़राब छवि पर आकरमण करके आगे बढ़ रहा था / मैंने यह समझ लिया था कि सबसे ज़रूरी है एक साथ सब पर आकरमण करना और यह चौतरफ़ा आकरमण जितना ही तीक्ष्ण होगा मैं उतना ही तेज आगे बढ़ूँगा / मैं चाह रहा था सब मेरे विरुद्ध एक हो जायें ताकि

संघर्ष सबका मुझसे ही हो और तब मेरे लिये चुनाव में आगे बढ़ना आसान होगा ।

उसी बीच चिंतन सर का एक पत्र आ गया जिसने मेरे पूरे घर में खुशियाँ वापस ला दी । सर ने लिखा था कि फ़ाउंडेशन कोर्स में शामिल होने के लिये थोड़ी मेहनत करनी होगी अगर कमिशनर साहब चाहेंगे तब वह काम हो सकता है, उनके एकेडमी के डायरेक्टर से बहुत नज़दीक के संबंध हैं। अगर फ़ाउंडेशन कोर्स नहीं भी करते हैं तब भी कोई फ़र्क नहीं पड़ता सीधे प्रोफेशनल कोर्स जनवरी में ज्वाइन कर लें। ऐसे बहुत से लोग होते हैं जो फ़ाउंडेशन कोर्स नहीं करते वह बाद में कर लेते हैं। नौकरी सुरक्षित है और जनवरी में मैं ज्वाइन कर सकता हूँ, यह बात घर के सारे तनाव को समाप्त कर गयी। माँ ने यह समाचार सारी रिश्तेदारियों में फैला कर मेरी साख को पुनः स्थापित कर दिया।

मामा ने हरिकेश मामा से इस समाचार के बाद कहा, “हरिकेश तू पुनि चूक गयअ। दुई साल पहले मौका बाबू देहे रहेन और कुछ रोज पहिले हम पुनि दिहा पर तू अपने हिसाब में लगा रहअ। हमअ लागत बा मुन्ना के तोहसे संयोग नाहीं बदा बा। तू अउबै नाहीं केहे अगले दिन जब हम कहा कालि हमका बताई देहअ। अब त नौकरी वाला मामला फरियाय गवा। अब पुनि भीड़ चालू होई जाये। अगर ई छात्र संघ अध्यक्ष खुदा न खास्ता होई गवा तब तअ एक तमगा और लगि जाये। अब हम और तू का कै सकित हअ जब विधाता के मंजूरै नाहीं बा।”

हरिकेश मामा - “जीजा ऐसन न कहअ, हमार बहुत अरमान बा मुन्ना बरे। हमार तबियत ख़राब होई ग अ रही।”

मामा - “उहै तअ हमहूँ कहत हई विधाता के मंजूर नाहीं बा नाहीं त ई तबियत उहीं दिन ख़राब होई के रही।”

मैंने दो दिन बाद शाम को अल्लापुर में एक सभा करके एक साथ सब पर पुनः आकर्मण कर दिया यह कहते हुये पच्चीस वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्ति को विश्वविद्यालय चुनाव नहीं लड़ना चाहिये। मैंने अपनी जन्मतिथि सप्तरमाण

सार्वजनिक कर दी और कहा आप लोग उन नेताओं से उनकी उम्र पूछो जो पिछले दस साल से चुनाव लड़ रहे हैं। मेरे पिता की उम्र के व्यक्ति मुझसे चुनाव लड़ रहे हैं। आप किसी भी ऐसे व्यक्ति को मत न दें जिन्होंने छात्र राजनीति को व्यवसाय बना रखा है। मैंने घोषणा कर दी एक नयी रणनीति से चुनाव लड़ूँगा मैं। मेरे लिये अब पुनः चक्रव्यूह कमल व्यूह बनाने का वक्त आ गया था। मैंने कहा कि, “मैं कल युद्ध के नये नियम लेकर आऊँगा, नैतिकता से युक्त नियम। मैं इन अनैतिक कायरों को नैतिकता से लड़ने के

लिये बाध्य करूँगा । कल सुबह ग्यारह बजे शंखनाद होगा शहीद लाल पदमधर की मूर्ति के सम्मुख.... इनकी अनैतिकता ही ज़िम्मेदार है हमारे पतन के लिये

मैं किसको ज़िम्मेदार ठहराऊँ आशियाने को जलाने के लिये जब चिराग ही हवाओं के साथ साज़िश कर रहा हो । इस साज़िश का मैं पर्दाफ़ाश कर दूँगा कल सुबह ग्यारह बजे । “

कल मैं चक्रव्यूह बनाऊँगा ...

समाचार पत्र को फिर मसाला मिल गया । मैं जैसा चाह रहा था सब कुछ वैसा ही चल रहा था । कल एक बड़ा दिन था मेरे लिये ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 291

मैं शाम को अल्लापुर में अपनी सभा ख़त्म करके सीधे अशोक के पास गया और वहाँ से दिनेश के यहाँ गया । मैंने उनसे अपनी रणनीति साझा की और कहा यह चुनाव में अमेरिकी राष्ट्रपति के तर्ज पर लड़ने की रणनीति बना रहा । आप लोग कल सुबह ग्यारह बजे तक मुझे दो विभागों से प्रस्ताव लाकर दे दो जो एक डिबेट करा सकें सारे प्रत्याशियों की । डिबेट मुद्दों पर होगा ।

अशोक - “ सर उससे होगा क्या? ”

मैं “ मैं मुझे पर चुनाव लड़ने को बाध्य करूँगा , इस जाति - क्षेत्र की अवधारणा को पीछे धकेल दूँगा । उनको डिबेट में ले आओ बाकी काम मेरा है । ”

दिनेश मेरा मतलब समझ गये और कहा , “ सर इतिहास विभाग में तो आप जब कहे हो जायेगा । ”

मैं “ जे के इंस्टीट्यूट से प्रस्ताव ले आओ । कोई जेके इंस्टीट्यूट का छात्र अपनी कोचिंग में है ? ”

अशोक - “ सर , राकेश कुशवाहा जेके का भी है और एएन झा का भी है । वह यह कार्य कर देगा । ”

मैं “ आप लोग यह कार्य रात में ही करो , कल चुनाव पलटना है । इस चुनाव को नयी दिशा देना है । ”

अशोक - “ सर आप जीत जायेंगे ? इतनी हवा है उन सब बड़े- बड़े लोगों की आप कहाँ उनसे सट पायेंगे । ”

मैं - “ मुझे चुनाव जीतना ही नहीं है , मैं जीतने के लिये लड़ ही नहीं रहा । मुझे पढ़ाना है और उसके लिये चुनाव लड़ना ज़रूरी है । मैं चुनाव का नामांकन भरते ही फिर से पढ़ाने लग गया और जब तक चुनाव होगा कोई नहीं रोकेगा क्योंकि वोट का सवाल है । छात्र नाराज़ हो सकते हैं पर चुनाव बाद वह सब फिर परेशान करेंगे । मैं पढ़ाना सुनिश्चित करना चाहता हूँ । यह चुनाव मदद करेगा । ”

अशोक - “ वह कैसे होगा सर ? ”

मैं - “ तुम ज्यादा दिमाग़ इसमें मत लगाओ । बस जो कह रहा वह करो । कल सुनना मेरा भाषण । ”

अशोक - “ सर उस बेवकूफ़ राम अशीष मौर्या को कहाँ लटकाये है आप । उसको न बोलने का शऊर न बैठने का वह आपके हर मंच पर हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है और आपके पीछे बोलता हैं अनुराग का मुझे समर्थन है , पर उसको कौन वोट देगा । उसके कारण आपका नुकसान ही होगा । ”

मैं - “ यार मैं कौन सा जीतने के लिये अधीर हूँ । मैं न तो जीतने की चाहत रखता हूँ और न ही जीतने की कोई उम्मीद है । मैं मुझ उठाकर तुम लोगों को पढ़ाने का कार्य साध रहा हूँ । यह राम अशीष मौर्या न हो तब मेरा कोई नाम लेवा न होगा । यह मंच बनाता है माझक लगाता है नहीं तो मुझको कहाँ से मंच और माझक मिलेगा । कोई वोट दे न दे मुझे , मेरा वोट से कोई ख़ास मतलब है नहीं । मैं वोट माँगता ही नहीं हूँ , आप देखना कल क्या करता हूँ । आप सुबह ग्यारह बजे मिलना यूनियन हॉल पर । आप बस दो विभाग से डिबेट का आमंत्रण लेकर आओ बाकी कल देखना , हो सकता है पूरी समाँ ही बदल जाये । ”

मैं उनसे मिलकर घर आया और रात में मोटरसाइकिलों का क्राफ़िला मेरे घर पर । मैं चौंक गया यह देखकर । बराह्मण मठाधीशों का एक गुट था वह । उस गुट के मुखिया थे राजेश्वर तिरपाठी । वह पूर्व अध्यक्ष थे इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ के । उन्होंने आते ही अपना पूरा नाटक चालू कर दिया ।

राजेश्वर तिरपाठी- “ बराह्मण कुल शिरोमणि अनुज अनुराग शर्मा को इस याचक का प्रणाम स्वीकार हो । ”

मैं - “ सर , आप ऐसा न कहें । आप मेरे बड़े भाई हैं । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अनुज अनुराग जितना गौरव तुमने मुझको दिया उतना गौरव मुझे जीवन में कम मिला । मैं धन्य हूँ इस जीवन में तुमको एक भाई के रूप में प्राप्त करके । ”

मैं- “ सर , यह आपकी सदाशयता है । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अनुज अनुराग , मैं एक भिक्षुक के रूप में आया हूँ । आशा है मुझे निराश नहीं करोगे आप । ”

मैं- “ सर , आप आदेश करें । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ ऐसे नहीं । आप पहले वचन दो । आप पहले बड़े भाई के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दो और कहो मेरे द्वार से याचक निराश नहीं जायेगा । ”

मैं- “ सर , मेरे पास देने को क्या है फिर भी आप आदेश करें । ”

राजेश्वर तिरपाठी - “ अनुराग तोहरे पास देई के बा कि नाहीं ई हमरे पर छोड़ि दअ , बस वचन दअ । कल तोहार ऐतिहासिक भाषण सत्य प्रकाश पांडे के मंच पर होये और अनुज अनुराग सत्य प्रकाश पांडे के चुनाव लड़ाहिं । एकै नारा गूँजे काल .. अनुराग शर्मा का जिसे समर्थन वही हमारा नेता है । ”

मैं उनके चेहरे की तरफ देखने लगा । राजेश्वर तिरपाठी ने कहा , “ बाबू संतोष सिंह आप पोस्टर छपाओ एक तरफ अनुराग की फोटो और दूसरी तरफ सत्य प्रकाश की और नारा लिखो नीचे , हमारा अध्यक्ष वही जिसे अनुराग का समर्थन । ”

संतोष सिंह - “ नेता जी , हम अनुराग के नाम से एक अपील छाप देते हैं । इनकी फोटो पोस्टर में लगाकर इनका मुद्दा लिखकर । कल सत्य प्रकाश पांडे कह दें मंच से अनुराग के मुद्दे पर चुनाव हो । मुद्दा अनुराग का चुनाव हमारा । ”

राजेश्वर तिरपाठी - “ संतोष , अनुराग भाई से ज्यादा केऊ ज्ञानी बा नाहीं , ऐ जैसन कहई वैसन करअ और चुनाव संचालन अब तू वैसई करअ जैसन अनुराग कहई । ”

मैं समझ गया कि यह तो बड़ी विपदा आ गयी । यह तो बड़े पहुँचे हुये लोग हैं ।

मैं- “ सर , मेरा कोई चुनाव लड़ने- जीतने का उद्देश्य न था । मेरा लक्ष्य राजनीति तो है नहीं पर मजबूरी ऐसी आ गयी , अब आपको तो सब पता है । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ कौन सी मजबूरी आई गय अनुराग कि तोहका चुनाव लड़े पड़त बा । हम जिंदा हई अबअ , बतावअ हमका । ”

मैं - “ विश्वविद्यालय के एक बेहतर माहौल के लिये लड़ रहा , मुझे लड़ने दें । ”

संतोष सिंह - “ आप लड़ो भाई , हम भी आपके साथ हैं , हम आपकी ताक़त हैं । आप खुद ही कह रहे हो कि हमको जीतना नहीं है । आप वोट काट देंगे । काँटे की टक्कर है मांधाता सिंह और सत्य प्रकाश पांडे में । रमेश शर्मा भी बीच में घुसे हैं अब आप भी आ गये । कुल ब्राह्मण वोट काट दअ । तब जीतेगा कौन ? या तो मांधाता सिंह या कौशल यादव । अब ब्राह्मण के जगह ठाकुर - अहिर के बनाई दअ अध्यक्ष । सनातन धर्म के होई चुकी रक्षा । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अनुराग , एक बात समझि लअ तू । तू हअ हमरे घरे के लड़िका । पिछला चुनाव सत्य प्रकाश 28 वोट से हारा रहेन । तोहरे कोचिंग मैं सत्तर- अस्सी लड़िका हयेन । उहै वोट न कटा अगर तब सत्य प्रकाश जीत ज़हिं । ”

मैं - “ सर , मैं इतना भी कमज़ोर नहीं हूँ कि मात्र कोचिंग के लड़कों से चुनाव लड़ रहा हूँ । एक समर्थन है मेरे पास , यह अलग बात है मैं जीतूँगा नहीं पर लड़ूँगा बेहतर चुनाव । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ ई त अनुराग हमका पता बा , तोहरे नाम के धूम त हयै बा । ”

हर्ष तिवारी ने नाटक करते हुये मेरे पैर पर अपना सिर रख दिया और कहा , “ यह सिर तब तक न उठे जब तक अनुराग भैया हमका समर्थन न देझिं । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ लअ एक और धर्म संकट । हर्ष त बहुतै ज़िद्दी हयेन । ”

संतोष सिंह - “ नेता जी अपने छोटवार भाई से ज़िद्दियान हयेन कौनों गैर से नाहीं । अब तअ अनुराग के माने पड़े । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ भैया अनुराग कुछ चाय- वाय पियावअ , अब हर्ष त धन्नाय गअ हयेन । ए तअ बगैर वचन लेहे न मनिहिं । ”

मैं - “ सर , इन सब बातों की क्या ज़रूरत ? मैं जो कर रहा हमको करने दीजिये । कोई भी जाति का आदमी जीते उससे विश्वविद्यालय को कुछ मिलने वाला है नहीं । अब जाति का मेरे मुद्दों से क्या लेना । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अनुराग ई राजनीति बड़ी बेहया चीज़ बा । तोहै पता नाहीं बा । तोहका करईन के का बा एह गंदे माहौल से । तू जा नौकरी करअ , आईएस्स के ठाठ - बाठ लअ , ई गली - गली के धूल फाँके के काम तोहका न सोहाये । ”

इतने में सत्य प्रकाश पांडे आ गये । यह सब पूर्व नियोजित था । सत्य प्रकाश पांडे ने कहा , “ अगर अनुराग नहीं मानत हयेन तब हमहीं बैठि जात हई । भाई अनुराग अध्यक्ष होई जाई । हमार त एकै चाहत बा बाभन अध्यक्ष होई चाही , न सत्य प्रकाश सही अनुराग सही । ई छात्र संघ पर दुई साल से बाभन अध्यक्ष नाहीं भ हअ , एह साल बाभन होये ।

मैं “ रमेश शर्मा भी तो ब्राह्मण हैं । मैं बैठ भी जाऊँ तब भी दो ब्राह्मण रहेंगे ही । ”

राजेश्वर तिरपाठी - “ अब अनुराग, हमार मोह न खुलवावअ । जान थअ ओनकर बाप के हयेन , मुन्नू लाल जायसवाल । ओनकरे महतारी के ओ राखे रहेन । कुल मुटठींगंज जानत हअ । ओनका केउ बाभन मनबै नाहीं करत । तू सुपात्र बाभन हअ । तोहरे बाबा के नाम बा , तू गौतम गोत्र के मामखोर शुकुल हअ । रमेश शर्मा ऐसन अरधेल अगर समर्थन दै देई तबौ हम न लेब । हर्ष उठअ अब , अनुराग मानि गयेन । अनुराग के जैन खर्चा चुनाव में लागि होई ऊ दै दअ और हमरे तरफ से एक स्कूटर दअ एनका । हमार छोटवार भाई हयेन । अनुराग अब हम चलित हअ । काल होये मुलाकात । परसों से हमार नेता तुहिन हअ । हमका विधान सभा चुनाव लड़ावै के ज़िम्मा तोहार बा । ”

अंत में यह तय हुआ कि आज एक दिन अनुराग और सोच लें पर ब्राह्मण एकता पर काम करना ज़रूरी है । अगर अनुराग अध्यक्ष बनना चाहत हयेन तब अगले साल अनुराग के हम सब लड़ाउब । अब अगर एक क़ाबिल बाभन राजनीति में आवत बा तब त हमार फ़र्ज़ बा ओका आगे बढ़ाई ।

मैंने मन में कहा , यह अजीब ज़बरदस्ती है । मेरे मुँह में शब्द घुसेड़ कर जो चाहो कहला लो । मैं उनको जाते हुये देखता रहा । बीसियों मोटरसाइकिल एक साथ स्टार्ट हुई और इस पुरानी गली ने अपने कान दोनों हाथों से बंद कर लिये ऐसा शोर तो कभी सुना ही न था ।

मैं अपनी चिर-परिचित चाल में सीढ़ी चढ़ने लगा । मैं जैसे ही कमरे में पहुँचा मुझे माँ चिंतित मुद्रा में सामने बैठी दिखी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 292

माँ ने मेरे कमरे में घुसते ही कहा , “ ई सब का होत बा मुन्ना? ”

मैं “ क्या हो रहा है ? ”

माँ - “ पूरा मुहल्ला में हल्ला होई गअ होये । हम एतना मोटरसाइकिल एक संगे आज तक देखबै नाहीं केहे हई । कहाँ तू ऐ सब फेरा में पढ़त हअ । तोहार नौकरी गंगा माई बचाई देहे हईन । तू जनवरी में चला जाबै करबअ अगर अबअ न गयअ तब । काहे इ गुंडन - बदमाशन से रार लेत हअ । तू ई चुनाव न लड़अ । ई सब तोहरे बस के काम बा नाहीं । तू पढ़ावै के कामौ छोड़ि दअ , तोहै पैसा लेई के बा नाहीं , ऐ लड़िका लोगन के जौन भाग्य में होये तौन होये तू काहे आपन जान साँस्त में डालत हअ । अगर एकेडमी जनवरी में जाई के होई तब तू चला जा दिल्ली शांति के इहाँ रहअ एकाध महीना । तू शहर छोड़ि दअ , हमका बहुत डर लागत बा । ”

मैं “ माँ , कैसे यह सब छोड़कर चले जायें ? तुम ही कहती थी जो काम हाथ में लो उसको पूरा करो । ”

माँ ने बात को बीच में ही रोककर कहा , “ अब हमहीं कहत हई कि ई काम तू बीच में छोड़ि दअ और काल दिल्ली चला जा । ऐ सब अवारा लोग हयेन आये दिन विश्वविद्यालय में गोली चलि जात हअ । एक गोली चलि गई कुल जीवन हमार व्यर्थ होई जाये । मुन्ना केऊ चैन से घरे में सोई नाहीं पावत बा । गुड़ियव पढ़त हअ विश्वविद्यालय में उहौ कहत रही कहाँ भइया एनके सबके चक्कर में पड़ि गयेन । तोहार पिताजी तअ बहुतै परेशान हयेन । कौनौं रास्ता निकालअ और ऐसे बाहर आई जा । ”

मैंने कहा , “ माँ कई बार आप ऐसे दलदल में फँस जाते हो कि आगे के दलदल से पीछे का दलदल मुश्किल लगता है और वापस जाने में ज्यादा ख़तरा है । ऐसा ही कुछ यहाँ हो चुका है । ”

माँ - “ मुन्ना तोहरे पास बहुत दिमाग़ बा कुछ करअ , हमका ई समस्या से निजात दियावअ । ”

मैं “ क्या करूँ ? ”

माँ - “ तू कुछ न करअ , तू काल चला जा दिल्ली । इहाँ से तू दूर जा , कुछ उल्टा - सीधा होई जाये तब हम जियब कैसे ? हम तोहरे बगैर न जिउ पाउब । कुछ तोहका होई जाये तब हम फाँसी लगाई लेब । ”

यह कहकर माँ उठकर चली गयी । उसने मुझे पूरी तरह से अंदर से हिला दिया था । वह बात तो सही ही कह रही थी । यह सब कर तो कुछ भी सकते हैं । आज परेम से बात किया मुझे लालच दिया पर कल जब मैं इंकार करूँगा तब यह दूसरा रास्ता अस्तियार करेंगे । यह बात भी सही है कि मेरे साथ है कौन ? यह छात्र वोट चाहे दे भी दें पर कोई साथ थोड़ी ख़ड़ा होगा । वोट

भी पड़ता जाति पर ही है । कोई कितना भी मुझसे पढ़ ले पर संभावना तो है ही कि वह जाति को वोट दे दे । मैं भी कहाँ फँस गया , अब करूँ क्या? माँ मेरी बहुत कमज़ोर नस थी , वह अंतिम लाइन कहकर मुझे हिला गई थी और जिस तरह की महिला वह है वह कुछ भी कर सकती है । रात में मुझे स्वप्न आया कि मैं घायल गिरा हूँ , चुन्नू और गुड़िया कह रहे भैया हमको छोड़कर मत जाओ , मेरा पूरा शरीर पसीने से लथपथ हो चुका था । मेरी आँख खुल गई सुबह के तीन बज रहे थे । मैं कमरे से निकल कर बारजे पर खड़ा हो गया । मेरा मन अशांत था , मैं समझ न पा रहा था क्या करूँ । मैं सोना चाह रहा था पर नींद नहीं आ रही थी । मैं अगर सो जाता तो चैन मिलता । मैंने सुना था कि लोग नींद की गोली लेकर सो जाते हैं सोचा कि अगर वह गोली मिल जाती तो थोड़ा चैन आ जाता । पर वह गोली कहाँ मिलेगी ? कैसे मिलेगी ? यह ईश्वर भी अजीब है जो चाहो वह मिल जाये तो उसे भोगने नहीं देता यह भी तो एक नसीब ही है । मैं चला गया होता एकेडमी वहाँ का जीवन जीता , इन सबको पीड़ा न देता । मेरा जन्म पीड़ा के लिये ही हुआ है - स्वयम् की पीड़ा अपनों की पीड़ा । अब कल विवाह होगा तब मेरी पत्नी की पीड़ा । मैं अपना ध्यान हटाने के लिये प्रतीक्षा और सुरुचि के बारे में सोचने लगा पर मन इतना अशांत था कि मैं उनके बारे में सोच ही न सका । यह एक अज़ीब रात थी जो गुज़र ही न रही थी । मैंने थोड़ी देर में घर से एक छाया को बाहर निकलते देखा , वह माँ थी गंगा स्नान को जा रही थी । मैं उसको जाते हुये देख रहा था वह अब मेरे जीवन के लिये भिक्षा माँगेगी । उसके अंदर एक भय वास कर चुका था और वह उसी भय के साथ रहती थी । उसके जाने के बाद मैं कमरे में आया , पक्षियों का कलरव गूँजने लगा मेरी आँख लग गयी दिन चढ़ गया । मेरा भाई आया बताया कि सुबह के नौ बज गये हैं दिनेश , अशोक , साही , परेम नंदन काफ़ी देर से इंतज़ार कर रहे हैं ।

मैं नीचे गया और उन्होंने बताया कि कार्य हो गया है । राकेश कुशवाहा ने कहा कि वह जेके इंस्टीट्यूट में भी करा देगा और एएन झा में भी । दिनेश ने इतिहास विभाग में कल ही कराने की पेशकश कर दी । मेरा काम हो चुका था । मैंने कहा इसको हर विभाग में कराते हैं । इस मुद्दे पर शाम को कोचिंग में विचार करते हैं ।

दिनेश -“ सर , इस जातिगत राजनीति के माहौल में इसका कोई फ़र्क़ पड़ेगा । ”

मैं -“ एक नयी हवा बहने जा रही है जिसे सिफ़र मैं देख पा रहा हूँ , समय को अपना काम करने दो और मुझे मेरा अपना कर्म । ”

मैं ग्यारह बजे विश्वविद्यालय पहुँच गया । राम अशीष मौर्या मंच और माइक लगाकर घोषणा कर रहे थे कि अध्यक्ष पद के प्रत्याशी अनुराग शर्मा का

भाषण साढ़े ग्यारह बजे होगा , आप सब बड़ी संख्या में आयें और उनके विचार सुनें ।

मैंने मंच संभालते ही अपनी बात कहनी आरंभ की और अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव का ज़िकर किया और चुनाव की पद्धति समझायी । मैंने व्यंग्य करते हुये कहा , “मेरे प्रतिद्वन्द्वियों को तो यह पता भी न होगा कि अमेरिकी चुनाव पद्धति होती क्या है । वह आज शाम को मेरी कक्षा में भागीदारी कर लें । मैं उनको समझा देता हूँ अमेरिका का चुनाव कैसे मुद्दों पर लड़ा जाता है । वैसे अगर वह मेरा क्लॉस नियमित रूप से करें तब शायद द्रेश को एक बेहतर नेतृत्व देने में इलाहाबाद का जो नाम रहा है वह नाम बरकरार रहेगा । कल का एक वाक्या साझा करता हूँ आप सबसे । रात के अँधेरों में जातिगत राजनीति का खेल चला । मुझे बैठाने की कोशिश की गयी सनातन धर्म की रक्षा के नाम पर । अगर सनातन धर्म के रक्षक यह जातिवादी - अनैतिक और हिंसक लोग हैं तब मैं ऐसे धर्म को त्याग देना बेहतर समझूँगा पर मैं जानता हूँ यह अधर्मी धर्म के साथ हो ही नहीं सकते । यह धर्मच्युत स्वार्थी लोग धर्म और समाज का नाश कर रहे हैं । मैं मूक रहकर इस नाशवान प्रक्रिया को होते नहीं देख सकता । मैं चुनाव में कोई पोस्टर, कोई बैनर , किसी मोटरसाइकिल का इस्तेमाल नहीं करूँगा । मैं चुनाव में कोई पैसा खर्च नहीं करूँगा । मैं आप सबसे अपील करूँगा आप इनसे चुनाव में हुये खर्च का हिसाब माँगे , आप पूछें इतना गाड़ियों का क़ाफिला , यह हलवाई का पैसा , यह पूरे शहर में लगा पोस्टर- बैनर कहाँ से आता है । मेरे पास तीन विभाग से प्रस्ताव आया है । वह प्रस्ताव है मुद्दों पर डिबेट करके छात्रों को अपना चुनाव कार्यकरम समझाकर उनसे मत माँगने का । जो के इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड साइंस की तरफ से पहला प्रस्ताव है , दूसरा मध्यकालीन इतिहास विभाग का है , तीसरा एन झा छात्रावास का है । मैं हर विभाग , हर छात्रावास से यह अनुरोध करूँगा कि अध्यक्ष पद के प्रत्याशियों की डिबेट

करायी जाय , उनसे चुनाव के मुद्दे पूछे जाय और छात्र हित के कार्यकरम पर उनके विचार लिये जायें । हम सब एक स्वस्थ राजनैतिक प्रम्परा के लिये कार्य करें और जाति- क्षेत्र की सड़ी - गली राजनीति से परिसर को मुक्त किया जाये । पहला डिबेट है परसों बृहस्पतिवार को दिन में दो बजे जेके इंस्टीट्यूट में , दूसरा शुक्रवार दिन बारह बजे मध्यकालीन इतिहास में और तीसरा शनिवार सायंकाल पाँच बजे एन झा छात्रावास में । मैं एक नयी राजनीति के लिये कृत संकल्पित हूँ । एक जातिविहीन , संकीर्णताविहीन , गरिमायुक्त राजनीति । मैं आह्वान करता हूँ एक शास्त्ररार्थ का । एक शास्त्ररार्थ पर आधारित राजनीति का । मेरा एक ही नारा है - शास्त्ररार्थ- शास्त्ररार्थ । ”

राम आशीष मौर्या ने नारा लगाना आरंभ कर दिया - शास्त्ररार्थ- शास्त्ररार्थ / हर तरफ़ एक ही नारा शास्त्ररार्थ- शास्त्ररार्थ / छात्रों में ऊर्जा आ चुकी थी / एक नयी तरह की राजनीति वह देख रहे थे / ऐसी राजनीति कभी परिसर में आयेगी यह अकल्पनीय था ।

मैंने हाथ उठाकर शांत रहने का अनुरोध करते हुये कहा ... “ शंकराचार्य ने शास्त्ररार्थ करके बौद्धों को पराजित किया था धर्म के उत्थान के लिये । मैं इन सबको पराजित करूँगा परिसर के उत्थान के लिये । मेरा एक ही लक्ष्य है सड़ी- गली व्यवस्था का ध्वंस । मेरा जन्म ही ध्वंस के लिये हुआ है । मैं ध्वंस करूँगा आप नव निर्माण करो ।”

मैंने शाम को कोचिंग में वह सारे सवाल बना दिये जो पूछे जाने चाहिये । हकीकत यह थी कि चुनाव लड़ने की मुझसे बड़ी ताकत किसी के पास न थी अगर चुनाव मेरे तरीके से लड़ा जाय । मैं अपने तरीके से चुनाव लड़ना चाहता था । मैं उनकी कमज़ोरियों को समझ कर आगे बढ़ रहा था । मैं जानता था परम्परागत तरीके से मैं लड़ नहीं सकता और मेरे तरीके से वह लड़ नहीं सकते । मैं अगले दिन मैडम रंजना कक्कड़ से मिला और पढ़ाने की अनुमति महिला छात्रावास में माँगी । मैडम ने कहा कि वह चाहती हैं कि पढ़ाया जाये पर वह विश्वविद्यालय के नियम की अवहेलना नहीं कर पायेंगी । विश्वविद्यालय ने मुझको पढ़ाने से रोक दिया था । मैं चुनाव प्रचार करने महिला छात्रावास गया और मैंने वही मुद्दा वहाँ उठा दिया । मैंने कहा , “ आपका भविष्य खतरे में आ चुका है । मैं पढ़ाना चाहता हूँ पर मुझे पढ़ाने नहीं दिया जा रहा है । पर मैं अगर चुनाव जीता तब मैं पहला कार्य करूँगा इस छात्र- विरोधी सर्कुलर का समापन । “ और मैंने फिर पूरी नाटकीयता से उस सर्कुलर के चार टुकड़े कर दिये ।

मैंने आगे कहा , “चुनाव आपका है - आप चुन लें - आपका भविष्य बनाम यथास्थितिवाद । आपका सिफ़र एक शतरू है , आपका मूकपन , आपकी निःस्पृहता , आपका वैसा ही सब कुछ स्वीकारना जैसा चल रहा है । ऐ गार्गी , लोपा मुद्रा, अपाला , जीजाबाई , लक्ष्मीबाई के वंशजों वक्त आ गया है दुपट्टे को परचम बनाने का । धारण करो दुपट्टा करान्ति का । सीने पर न बाँधकर बाँधों उसे मस्तक पर बनों करान्ति का अग्रदूत पूछे प्रश्नों को उनसे जो आप की हिमायत की बात करते हैं । तुम सीता नहीं दरौपदी बनों । तुम अन्याय को परम्परा के नाम पर स्वीकार न करके अन्यायी के हाथ को मरोड़ दो । आत्मसम्मान के लिये जियो समर्पण एक शतरू है , उसका नाश आवश्यक है । तुम जन्मी हो एक गैर मामूली दास्तान के लिये , लिखो उस गैर मामूली दास्तान को अपने अश्कों नहीं अपने रक्तों से । आह्वान करो महाशक्ति का अपनी रचनात्मक शक्ति को बलवती करने के लिये । संघर्ष करो , रण करो , बलिदान दो - एक नयी व्यवस्था के सृजन के लिये ।

अवसर बार - बार नहीं आता , मसीहा हर रोज़ जन्म नहीं लेता । बनो तुम मसीहा बदलाव का । नहीं है उम्मीद ज़माने को पुर्सों से समाज देख रहा तुम्हारी ओर । अगर फुर्सत मिले तो इन दीवारों पर लिखी तहरीरों को पढ़ लेना , यह दीवारें चीख़ कर कह रहीं इस शहर के दिये बुझे नहीं बुझाये गये हैं जब हवाओं का आतंक था दिये जलने को बेताब थे हमने सामने की दीवार में कई दरारें बना दी थीं हवाओं के लिये । “

मेरी बात का जादू ऐसा असर हुआ और एक छात्रा जो उपाध्यक्ष पद का चुनाव लड़ रही थी उसने चुनाव न लड़कर बदलाव का साथ देने का फ़ैसला किया । मेरे पक्ष में हवा बह चली थी ।

पर जातिगत राजनीति भी पूरे उफ़ान पर थी । राजेश्वर तिरपाठी ने नयी चाल चल दी । रमेश शर्मा और सत्य प्रकाश पांडे के मध्य समझौता हो गया । रमेश शर्मा अगले वर्ष के ब्राह्मण उम्मीदवार होंगे और वह इस वर्ष सत्य प्रकाश पांडे के पक्ष में प्रचार करेंगे और अपनी पूरी ताक़त लगायेंगे । एक विशाल जुलूस रमेश शर्मा का आनंद भवन से आरंभ हुआ जो यूनियन हॉल पर सत्य प्रकाश पांडे के मंच पर पहुँचा और वहाँ पर रमेश शर्मा ने मंच पर अपने अंगुली को ब्लेड से काटकर लहू का तिलक सत्य प्रकाश पांडे के मस्तक पर लगाकर माला पहना कर अपना नामांकन वापस लेने की घोषणा कर दी और चुनाव पूर्व ही सत्य प्रकाश पांडे को अध्यक्ष निर्वाचित घोषित कर दिया । ब्राह्मण बरहमास्तर चल चुका था और एक बड़ी एकता ब्राह्मणों के बीच हो चुकी थी । इस एकता ने सारे समीकरण बदल दिये और ठाकुर खेमे में चिंता के बादल छा गये । रमेश शर्मा एक प्रभावी उम्मीदवार थे और शक्ति का एकीकरण चुनाव के समीकरण को उलझा गया । माधांता सिंह खेमे को भय हो गया कि अगर अनुराग भी बैठ गये सत्य प्रकाश पांडे के पक्ष में तब तो सत्य प्रकाश की जीत पकड़ी । माधांता सिंह के लोग मुझसे मिलने आये और कहा कि आपसे कुछ एकांत में बात करनी है । मैं हालेंड हॉल गया । वहाँ सारे ठाकुर मठाधीश बैठे थे । मेरे पहुँचते ही माधांता सिंह ने मेरे पैर छुये । मैंने मन ही मन कहा एक और नाटक होगा कि चुनाव न लड़ो । मैंने कहा अच्छा हुआ यह मामला यहीं निपट गया । यह सब फिर घर आये होते मोटरसाइकिल जुलूस लेकर तब तो माँ का आज तो हार्ट ही फेल कर जाता ।

मैंने माधांता सिंह से कहा , “ सर आप मेरे बुजुर्ग हैं बड़े भाई हैं । आप मेरा पैर न छुयें । ”

जनमेजय सिंह पूर्व अध्यक्ष थे और वह एक बड़े मठाधीश थे ठाकुरों के । उनका संबंध चन्द्रशेखर से था और वह उनके नज़दीक माने जाते थे । वह गाज़ीपुर के एक बड़े नेता थे । उन्होंने मोर्चा सँभाला ।

जनमेजय सिंह - “ देखअ भैया अनुराग हमार ज़िंदगी इहीं ज़मीन पर बीत गई बा । हम आज तक तोहरे ऐसन साहसी देखा नाहीं । एक बात त हम सबसे कहित हअ , अनुराग बिल्कुल संकीर्ण नाहीं हयेन । एनकर जातिवाद में नाहीं मानवतावाद में य़क़ीन बा । तू मांधाता सिंह के आशीर्वाद दअ । ”

मैं - “ सर , मैं चुनाव लड़ रहा । मैं कैसे आशीर्वाद दूँ । ”

जनमेजय सिंह - “ आप लड़अ चुनाव । हम कब कहा कि न लड़अ । रमेश शर्मा के नाहीं तू बैठि न जा । तू भरपूर लड़अ चुनाव । हम तोहार हज़ार - दुई हज़ार पोस्टर परिसर के आसपास लगवाई देइत हअ । हमसे तू एक जीप लै लअ और बलभर चुनाव लड़अ । सत्य प्रकाश के हरावय में हमार मदद करअ । तू जेतना वोट बाभन के कटबअ हम ओतनै आगे बढ़ब । पैसा- कौड़ी - गाड़ी- घोड़ा सब हम देब । तू आपन चुनाव चढ़ावअ । तोहका भगवान बोलै के कला देहे हइये हयेन । मांधाता सिंह के खिलाफ़ के साथ- साथ सत्य प्रकाश के खिलाफ़ ज्यादा बोलअ और वोट बाभनन के कटि गअ अगर तब काम बनि जाये । ”

मैं - “ सर , मैं जीत गया तब । ”

जनमेजय सिंह - “ अगर तू जीतै लगबअ, तोहार सत्य प्रकाश के टक्कर होइ लागे तब हम आपन कुल वोट पलटि देब तोहरे ओर । तू जीतअ या मांधाता हमका कौनौ फ़र्क नाहीं बा । का मांधाता बोलअ तुहुँ बोलअ । ”

मांधाता सिंह - “ भैया आप त सब कहि देहे हअ । अब हमका कहै के बचा का बा । हम दक्षता भाषण में आपन नाम वापस लै लेब अगर देखब कि अनुराग जीतत हयेन । हमका त भैया तू अन्याय के खिलाफ़ लड़ई के शिक्षा देहे हअ और हम उहै सीखे हई । अब सत्य प्रकाश - रमेश शर्मा के गठजोड़ से बड़ी अनीति और अन्याय त आज कुछ बा नाहीं । एह गठजोड़ से हम - अनुराग मिल के लड़ब । अब अनुराग के चुनाव चढ़ै चाही । ”

जनमेजय सिंह - “ ओकर चिंता तू न करअ । बस अनुराग चुनाव में बना रहई , बाक़ी त सब होइ जाये । वैसे अनुराग ऐसन क़ाबिल और त्यागी आज तक हम केहू के देखा नाहीं । ए विश्वविद्यालय के गाँधी नाहीं बुद्ध हयेन । एह साल के अध्यक्ष त हम नाहीं कहि सकित के बने पर अगले साल के अध्यक्ष अनुराग हयेन । अगले साल अनुराग के मंशा पूर होये और जातिवाद ख़त्म होये । बाभन- ठाकुर के सम्मिलित उम्मीदवार अनुराग होइहिं । ई जाति व्यवस्था के नाश बरे राजेश्वर तिरपाठी के नाश ज़रूरी बा । ओनकर सारा खेला अब जगज़ाहिर होये । ”

मैं समझ गया सारी बात किस ओर जा रही । मैं एक वोटकटवा घोषित हो चुका था मठाधीशों के बीच और यह वोटकटवा हर रणनीति का एक भाग हो

चुका था । मैं अगर ब्राह्मण गुट के एकीकरण के लिये उपयोगी था तो ठाकुर गुट के लिये ब्राह्मणों के नाश का एक अस्तर था । पर मैं उम्र में छोटा, क़द में छोटा, अनुभवहीन बेवकूफ सा दिखने वाला ज़रूर था पर इन सबका बाप था ।

मेरे दिमाग में लोहा डालो वह स्कर्स बनकर बाहर आता था ।

मैं इन सबका ध्वंस करूँगा, यह संकल्प लेकर हॉलैंड हॉल के बाहर साइकिल पर सवार हो गया । कल बड़ा दिन था मेरे लिये ।

मैं जैसे ही हालैंड हॉल से डीजे होस्टल पहुँचा वहाँ छात्रों के एक हुजूम ने मुझे रोक लिया और नारा गूँजने लगा .. शास्त्रार्थ- शास्त्रार्थ । डीजे होस्टल ने रविवार अपराह्न तीन बजे डिबेट का आयोजन किया था और आईसा, एसएफआई, विद्यार्थी परिषद के पास आमंत्रण भेज दिया था ।

मेरा शास्त्रार्थ का नारा परवान चढ़ रहा था । मेरी भाषा सबका नाश करेगी ।

मैं घर पहुँचा पता चला चिंतन सर आये हुये हैं दो दिन की छुट्टी लेकर । वह कहकर गये हैं कि मैं एक घंटे में फिर आऊँगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 293

चिंतन सर को तो विश्वास ही नहीं हो रहा था जब घर आते ही सुना कि मैं अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ रहा हूँ और सारे नेता लोग मुझसे भयभीत हैं और मुझे बैठाना चाह रहे । मेरे भाई ने थोड़ा बढ़ा- चढ़ाकर भी बता दिया था । चिंतन सर यूनिवर्सिटी रोड गये, डी जे होस्टल गये और उनकी मुलाक़ात सत्य प्रकाश पांडे से हो गयी । सत्य प्रकाश पांडे ने सारा क्रिस्सा सुनाया और कहा आप अनुराग को चुनाव मैदान से हटा दो । ब्राह्मण एकता हो रही है और उस रास्ते में बाधा अनुराग ही हैं । वह सौ- पचास वोट के आसामी है और ठाकुरों के हाथ के मुहरा बने हैं । वह जनमेजय सिंह से मिलने हॉलैंड हॉल गये थे और वही उनको चुनाव लड़ा रहे हैं ताकि ब्राह्मण वोट कट जाये । चिंतन सर ने भोलेपन में कहा, “ वह तो एकेडमी ज्वाइन करने का प्रयास कर रहे हैं और कभी भी उनका बुलावा आ सकता है और वह चले जायेंगे । ”

चिंतन सर की यह पंक्ति सत्य प्रकाश पांडे को जीवन दान दे गयी । उन्होंने पूछा, “ यह कैसे पता ? ”

चिंतन सर - “ एक तार किया था एकेडमी को ज्वाइन करने का और मुझे पत्र भी लिखा था । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ क्या लिखा था ? ”

चिंतन सर ने पूरा मामला बता दिया । सत्य प्रकाश पांडे के हाथ में बड़ा हथियार आ गया । उन्होंने हर्ष तिवारी से कहा तुरंत पता करो नेताजी कहाँ हैं , सम्पर्क करो और यह सूचना देकर आओ । हर्ष तिवारी ने यह सूचना राजेश्वर तिरपाठी को दे दी और राजेश्वर तिरपाठी डी जे होस्टल आ गये । राजेश्वर तिरपाठी बहुत ही महीन खिलाड़ी थे । वह मठाधीशों के मठाधीश थे । वह मठाधीशी में जनमेजय सिंह पर भारी थे । सन 70 के दशक में जनमेजय सिंह और राजेश्वर तिरपाठी आमने -सामने महामंत्री के चुनाव में थे और एक चिट्ठी किसी बड़े नेता की राजेश्वर तिरपाठी के हाथ लग गयी थी जो जनमेजय सिंह के लिये लिखी गयी थी । उस चिट्ठी का सहारा लेकर महामन्त्री का चुनाव राजेश्वर तिरपाठी जीत गये थे और उसके बाद अध्यक्ष बनने के लिये जनमेजय सिंह को काफ़ी इंतज़ार करना पड़ा । महामन्त्री और अध्यक्ष हुये दोनों पर राजेश्वर तिरपाठी पहले हुये थे और जनमेजय सिंह बाद में । जनमेजय सिंह को अध्यक्ष पद पर राजेश्वर तिरपाठी ने दो बार गणित करके हरवाया था और तबसे इनमें छत्तीस का आँकड़ा था पर राजेश्वर तिरपाठी थोड़ा ज्यादा शातिर थे और जनमेजय सिंह तो गाज़ीपुर के ठाकुर ही थे , मजाल है कि कहीं मूँछ झुक जाय ।

आज राजेश्वर तिरपाठी के हाथ में एक औज़ार और आ गया । पर वह मँझे हुये खिलाड़ी थे । उन्होंने चिंतन सर से तार और चिट्ठी की कॉपी माँगी , वह चिंतन सर के पास थी नहीं , पर उन्होंने बता दिया कि क्या लिखा था तार और चिट्ठी में । चिंतन सर समझ न पाये क्यों इतना पूछा जा रहा है , वह थोड़ा चीजों को देर में समझते भी थे । राजेश्वर तिरपाठी का दिमाग़ काम कर गया । उन्होंने चिंतन सर से मीठी - मीठी बात करके उनको विदा किया और रमेश मिश्रा , सत्य प्रकाश पांडे से अकेले में बात की ।

राजेश्वर तिरपाठी- “ रमेश अब दुई बात त साफ़ बा । एक , जनमेजय सिंह लड़वात हये अनुराग के । अनुराग ओनसे मिलय गअ रहेन हॉलैंड हॉल और दूसर ई कि अनुराग करिहिं नौकरी । एह समय अनुराग के चाल सबसे तगड़ी बा । ऊ बड़े बड़े मठाधीश पर भारी बा । ”

रमेश शर्मा- “ ऊ कैसन नेता जी । ”

राजेश्वर तिरपाठी-“ हम सब गये , कुछ नाहीं कहेस । जनमेजय हयेन पुरान खिलाड़ी, ओका लड़ावत हयेन । ”

रमेश शर्मा - “ अनुराग लालच में आई के अगर अंतिम समय बैठि गयेन मांधाता तो समर्थन में तब ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ लालची नाहीं बा अनुराग । अगर लालची होत तब ऊ सीधा नौकरी करत । नौकरी में रूपियै - रूपिया बा । हम , तू , जनमेजय का देब ओका । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ चाहत का है ऊ ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ खुराफ़ात । ”

रमेश मिश्रा- “ समझा नाहीं नेता जी । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ ऊ सोचत बा कि अध्यक्ष बनि जाइत तअ और नाम होये / ऊ नाम के भूखा बा / रमेश ऐसन करअ तू और सत्य प्रकाश जा और अनुराग से कहअ कि अगले साल रमेश नाहीं अनुराग लड़िहिं अध्यक्ष के चुनाव / हमार नाम बताई देहअ कि हम कहत हई / ओकर बैठब ज़रूरी बा । ”

रमेश मिश्रा- “ नेता जी पचासौ वोट न पाये / न पोस्टर - न बैनर - न चुनाव प्रचार के वोट दे ओनका ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ तीन सौ से कम वोट न पाये / सौ वोट कोचिंग के माथे , सौ वोट लड़कियन के और कुछ पगलाई के ओकरे बोले पर वोट दै देझिंहि / कुछ पागल हयेन जेनकर एकै काम बा आपन वोट ख़राब करअ / एहमें अधिकांश वोट बाधन के होये । ”

रमेश शर्मा- “ नेता जी अगले साल पर अनुराग मान गये तब हमार का होये ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ हअ पूर बेवकूफ़ / सुनअ नाहीं हअ चिंतन कहत हयेन कि अनुराग ज़इहिं नौकरी करई / अब अगर रहि जाये तअ का कौनौं स्टांप पर लिख देहे हई का / जा बैठाई के आवा ओका । ”

वह लोग मेरे पास आये पर इस बार सिफ़्र तीन लोग - सत्य प्रकाश, रमेश शर्मा, हर्ष तिवारी और हर्ष ने कहा , “ भावी अध्यक्ष को प्रणाम हो / रमेश चलअ राजतिलक करअ अनुराग के / अगले साल अनुराग होइहिं ब्राह्मण उम्मीदवार और अध्यक्ष छात्र संघ के । ”

मैं आजिज़ आ गया था इन सब नौटंकियों से / मैंने आज नौटंकी को समाप्त करने का फ़ैसला ले लिया / कोई नाटक और बढ़े मैंने एक निर्णयक चाल चल दी / मैंने कहा , “ मुझे इस साल अध्यक्ष आप बनने दीजिये / जैसे रमेश मिश्रा सर ने सत्य प्रकाश सर का समर्थन किया है वैसे ही सत्य प्रकाश सर मेरा कर दें / यह नामांकन वापस ले लें / मैं अध्यक्ष बन जाऊँगा और अगले साल सत्य प्रकाश सर बन जायें , जैसे सर ने इतने साल इंतज़ार किया है यह एक साल और कर लें । ”

हर्ष तिवारी - “ तू काहे न करबअ । ”

मैं - “ आम चुनाव है दो साल बाद / मैं लोकसभा का चुनाव लड़ूँगा / मैं छात्र राजनीति बस इसी साल करूँगा / मैं जनवरी से लोकसभा की तैयारी करूँगा / ”

हर्ष तिवारी को तो जैसे पढ़ा हो हिंदी साहित्य और पर्चा पकड़ा दिया गया हो कम्प्यूटर साइंस का और वह पर्चा उलट - पलट रहे हों कि यह गलत पेपर क्यों मुझे दे दिया गया ।

मैंने कहा , “ आप आज फ़ैसला कर लें । मैं कल मांधाता सिंह से भी बात करूँगा । मैं उनसे भी कहूँगा आप न लड़ें, मुझे जीतने दें । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ मान जड़हिं मांधाता ? ”

मैं - “ नहीं मानेंगे तब हारेंगे , बेझज्जती सहेंगे । मैं तो इज्जत बचा रहा उनकी । आप ब्राह्मण हैं आपको मौका दे रहा , आपकी इज्जत से हमको लगाव ज्यादा है । अगर मांधाता सिंह सर बैठ गये तब ब्राह्मण - ठाकुर का संयुक्त उम्मीदवार मैं हो जाऊँगा और वह अगले साल लड़ेंगे ब्राह्मण- ठाकुर के संयुक्त उम्मीदवार के रूप में और आप अगले साल भी हार जाओगे । ”

सत्य प्रकाश - “ एक साल इंतज़ार कै लअ । रमेश शर्मा खुदै आपन सीट देत हयेन तोहका । ”

मैं - “ रमेश शर्मा दो साल उपाध्यक्ष का चुनाव लड़ें हैं वह तो जीत नहीं पाये । अगले साल आप अध्यक्ष और रमेश शर्मा उपाध्यक्ष होंगे । मैं राम अशीष मौर्या को इस साल उपाध्यक्ष बना रहा इनको अगले साल बना दूँगा । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ राम अशीष मौर्या , ई कौन हैं ? ”

हर्ष तिवारी - “ अध्यक्ष जी एक बेवकूफ़ है जो माझक लगाता है अनुराग के मंच पर । ”

मैं - “ नहीं , वह भावी उपाध्यक्ष है । मैं जीतूँ या न जीतूँ वह उपाध्यक्ष बनेगा । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ मतलब तू कुकुर के माथे पर हाथ धरि देबअ त उहौ जीत जाये । ”

मैं - “ सर यह तो मैंने कहा नहीं । ”

सत्य प्रकाश - “ हम लोग पूरी ज़िंदगी लगा दिये और तू एक साल न रुकबअ । ”

मैं - “ मुझे जल्दी ही सांसद बनना है । मैं काहे इंतज़ार करूँ ? आप भी मत इंतज़ार करो । मैं मांधाता सिंह सर को कल बैठा दूँगा । आप ज़िंदगी में नहीं बन पाओगे अध्यक्ष । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ ऐसन आज तक केउ हमसे बात केहेस नाहीं । ”

मैं - “ सर , हर चीज़ ज़िंदगी में पहली बार ही होती है आप सीखो ऐसी बात सुनना । यह राजनीति है , यह बहुत बेहया चीज़ होती है । यह किसी की नहीं

होती । “

सत्य प्रकाश पांडे - “ तब तू न बैठबअ ? ”

मैं - “ सर यही सवाल मैं आपसे कर रहा । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ अब तू देखअ आपन हैसियत तोहार ज़मानत न बचे । ”

मैं - “ सर , मैं चुनाव हराने के लिये लड़ रहा न कि जीतने के लिये । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ केका हरावा चाहत हअ ? ”

मैं - “ सबको । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ केउ त जीते ? ”

मैं - “ हाँ । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ के जीते ? ”

मैं - “ अनुराग शर्मा । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ अबै त कहत रहअ हम जीतै बरे नाहीं लड़त हई , अब ई कहत हअ । कुछ तोहार माया समझि आवत बा नाहीं । ”

मैं - “ सर , संत काव्य के बारे मैं कहा जाता है कि वह भक्ति कर रहे थे साहित्य तो बॉई प्रोडक्ट के रूप मैं सामने आया । वैसे ही मैं आप सबको हरा रहा और मेरी विजय एक बॉई प्रोडक्ट है । ”

रमेश मिश्रा- “ अब हम सब भाई ज्ञानी त हई नाहीं तोहरे तरह , अब तोहार बात समझै बरे ज्ञानी होई चाही । ”

मैं - “ सर , इसीलिये कह रहा मुझको जीतने दीजिये । यह अध्यक्ष पद ज्ञानियों के लिये है , अध्ययनशील लोगों के लिये है । सर , मैं यह भी अपील करूँगा इस पद के लिये जो आदमी किसी भी कक्षा मैं फेल हो गया हो वह चुनाव न लड़े । यह बहुत गरिमायुक्त परिस्सर है और रहा है । मुझे वह गरिमा स्थापित करने दीजिये और मेरा सहयोग कीजिये । ”

यह सब फ़ेल हुये बगैर कोई कक्षा पास करने वाले थे ही नहीं । इनको लगा कि यह एक शगूफ़ा और फैलायेगा ।

सत्य प्रकाश पांडे - “ तू ठकुरन के हाथे बिक गअ हअ । ”

मैं - “ सर , काश कोई मुझे ख़रीद पाता , मैं तो बिकना चाहता हूँ । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ कीमत बतावअ । ”

मैं - “ छात्र संघ अध्यक्ष पद / दे दें वही कीमत है । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ठीक बा अनुराग तू बहुत पछताबाद ।“

मैं - “सर, समय को अपना काम करने देते हैं बाकी जो नियति होगी वह होगी ।“

वह सब मोटरसाइकिल स्टार्ट किये और तमक

कर चले गये। मैंने भी मन में कहा, बेकूफ खरीदने आये थे बगैर कीमत जाने। चलो जान छूटी नहीं तो हर दिन यह नाटक होता।

राजेश्वर तिरपाठी ने सारी बात सुनी और वह तो चौंक गये। उनको यक़ीन न हुआ एक राजनीति का दुधमुँहा बच्चा ऐसी बात करेगा। हर्ष तिवारी ने कहा वह मसखरा है बात मसखरी कर रहा। राजेश्वर तिरपाठी लोकसभा चुनाव इलाहाबाद से लड़ने जा रहे थे और उनका लगा कि वह यही नाटक लोकसभा चुनाव में फैलायेगा। राजेश्वर तिरपाठी ने कहा, “एक रोकब ज़रूरी बा नहीं त ई शास्त्ररार्थ- शास्त्ररार्थ के नाटक लोकसभा चुनावव में करे। एकर एकै काम बा न खेलब न खेलै देब पिल्लू में मूत देब। ऐसन करअ एक पोस्टर छपावअ रात में।“

राजेश्वर तिरपाठी ने मेरे एकेडमी के तार का एक परास्त छापने को कहा ताकि वह असली तार की कॉपी लगे। उसमे लिखा दिया था मैं एकेडमी आकर नौकरी करना चाहता हूँ मुझ पर दया की जाये। मैं बीमार था इसलिये समय पर न आ सका। नीचे लिखा था धोखा.. धोखा छात्रों के साथ धोखा.. यह मौका मिलते ही नौकरी करेगा।

पूरी योजना बन गयी उस पोस्टर को पूरे परिसर में पाट देने की। एक तगड़ी चाल बराह्मण खेमे की। रात में पोस्टर की छपाई चालू हो गयी।

मैं रात में चिंतन सर से मिला। वह यूनिवर्सिटी से घूम घाम कर आये और बोले, “बाबा हवा तगड़ी बा तोहार। जीत- हार के बात अलग बा पर हर तरफ एक ही बात हो रही है कि कोई तो है जो खड़ा हुआ अन्याय के खिलाफ़।”

सर - “मैं हार कर भी जीतूँगा।“

चिंतन सर - “वह कैसे।“

मैं - “सर, राम मनोहर लोहिया नेहरू जी से हर बार हार कर भी अमर हो गये। वह कहीं और से सांसद हो सकते थे पर वह लड़ते नेहरू के ही खिलाफ़ थे। सर, कई जीत हार पर भारी पड़ती है, मेरी भी हार वैसी ही होगी।“

चिंतन सर - “चुनाव जीतने की कुछ संभावना है?“

मैं “ सर , मैं चुनाव मुद्दों की तरफ़ मोड़ रहा अगर वह मोड़ ले गया तब कुछ भी हो सकता है । ”

चिंतन सर - “ कैसे मोड़ोगे? ”

मैंने सारी रणनीति बतायी । चिंतन सर बोले ,

“ व्यूह तगड़ा है पर यह बताओ यह विचार एकाएक कैसे आया ? ”

मैं “ सर सब परमात्मा की कृपा है । पर सर मज़ा बहुत आ रहा है । ”

चिंतन सर - “ यार छुट्टी ही नहीं है नहीं तो मैं रुकता । ”

सर ने एकेडमी की कहानी सुनायी । वह घुड़सवारी प्रतिदिन करते थे । वहाँ पैदल बहुत चलना पड़ता था , एकेडमी पहाड़ी पर थी इसलिये चल- चल कर आदमी थक जाता था । वहाँ आलतू - फ़ालतू काम में उलझाये रहते थे और और सारा दिन व्यस्तता रहती थी । लड़कों - लड़कियों का का इश्क़ हो जाता है और लोग वहीं विवाह भी करते हैं । मैंने सुरुचि के बारे में पूछा । सर ने बताया वह ज्यादा लोगों से नहीं मिलती तुम उससे विवाह कर लो ।

मैंने कहा , “ सर अब विवाह की बात तो पीछे चली गयी मैं एक दूसरे काम में लग गया हूँ । ”

चिंतन सर - “ नौकरी ज्वाइन करोगे ? ”

मैं “ सर करना ही पड़ेगा । माँ बहुत परेशान है । पर मैं नौकरी कब तक करूँगा इसका कोई भरोसा नहीं । ”

चिंतन सर - “ यार मन तो मेरा भी हैं छोड़ने का पर कैसे करूँ । ”

मैं - “ सर आप नौकरी करो । जीवन का आनंद लो । मैं भी जनवरी में आता हूँ । तब तक चुनाव लड़ लेता हूँ , इन छात्रों को मेंस पढ़ा देता हूँ फिर आता हूँ । ”

मैं सो गया । मैं सुबह विश्वविद्यालय पहुँचा वह पोस्टर हर जगह चिपका हुआ था , सारे लोग पोस्टर पढ़ रहे थे और आज ही के दिन जेके इंस्टीट्यूट में डिबेट भी था । मेरा दिमाग़ ही काम नहीं कर रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 294

मैं समझा गया कि यह समाचार इनको चिंतन सर से मिला होगा । चिंतन सर जबसे विश्वविद्यालय में प्रवेश लिये थे तबसे वह नेताओं के आगे - पीछे चक्कर लगाया करते थे । इसका कारण यह था कि उनको लगता था कि यह सब मेरी राजनैतिक महत्वाकांक्षा में मदद करेंगे । इनका पूरा ऑफिस इन सब

नेताओं से भरा रहता था और वह इन सबका कार्य करते थे, भोजन - स्कने का प्रबंध करते थे, स्टेशन तक यह पहुँचवा देते थे। यह राजेश्वर तिरपाठी की बहुत चापलूसी करते थे क्योंकि राजेश्वर तिरपाठी छात्र राजनीति का बड़ा नाम तो थे ही और अब तो वह प्रदेश राजनीति में भी उभर रहे थे। राजेश्वर तिरपाठी को बोलने की कला आती थी, वह मीठा - मीठा बोलते थे और जो भी दिख जाये उसको झुक कर प्रणाम करते थे। वह एक नम्रता का लबादा ओढ़कर ही हर दिन घर से निकलते थे और हमेशा वह एक क़ाफ़िले के साथ चलते थे। जनमेजय सिंह का असामाजिक तत्वों के प्रति लगाव था और वह उनको साथ रखते थे पर राजेश्वर तिरपाठी असामाजिक तत्वों से खुले में परहेज़ करते थे पर बंद कर्मरों में उनसे मंत्रणा करते थे। चिंतन सर ने अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षा उनको पहले ही बता दी थी और झूठा आश्वासन देने में तो राजेश्वर तिरपाठी की महारत थी। वह चिंतन सर को चुनाव लड़ाने का आश्वासन देकर उनका खूब शोषण भी किये थे, उनसे आये दिन पुलिस - प्रशासन का काम कराते रहते थे। चिंतन सर राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पीड़ा से बहुत ही ग्रसित थे। यह एक ऐसी पीड़ा थी जो उन्हें रातिर में सोने नहीं देती थी। अब तो वह रात सो ही नहीं सकते क्योंकि जो वह करना चाहते थे वह मैं कर गया था और उनको यह तो लग गया था हार- जीत चाहे जिसकी हो पर मैं एक सार्थक चुनाव लड़ रहा हूँ और नाम तो मेरा हो ही जायेगा। जो वह कई वर्षों के प्रयास में करने का साहस न कर सके वह मैं एक झटके में हासिल कर गया। ईर्ष्या मानव स्वभाव के चरित्र में प्रायः होती ही है, अब वह मेरे प्रति ईर्ष्यालु भी हो रहे थे। चिंतन सर रात को राजेश्वर तिरपाठी से पुनः मिले और उन्होंने यह बता दिया कि अनुराग चुनाव से हटेंगे नहीं पर वह जीतने में बहुत इच्छुक नहीं है। उसके पास प्रशस्ति सुनने का एक शौक है उसी के वशीभूत होकर चुनाव लड़ रहे हैं।

चिंतन सर को राजेश्वर तिरपाठी की चाल का कोई अंदाज़ा नहीं था। राजेश्वर तिरपाठी राजनीति के बहुत ही माहिर खिलाड़ी थे। उनको समझ पाना चिंतन सर के बस की बात थी ही नहीं। चिंतन सर प्रकृति से एक सज्जन व्यक्ति थे। चिंतन सर की आज की ही दरेन थी वापस देहरादून जाने की। वह मुझसे यूनिवर्सिटी रोड पर मिले। मैंने पूछा, “सर, आपने यह बताया उनको कि मैं एकेडमी ज्वाइन करने का प्रयास कर रहा?“

चिंतन सर - “सत्य प्रकाश पांडे ने पूछा मैंने बता दिया। अब मुझको क्या पता कि यह सब इतना बड़ा नाटक कर देंगे। वह तो एक सामान्य सी सूचना थी।“

मैं “सर, असामान्य आदमी की कोई भी सूचना सामान्य नहीं होती है। मैं अब एक असामान्य आदमी बन चुका हूँ। मेरा किसी से मिलना भी अब

सामान्य घटना नहीं रह गयी है । ख़ेर कोई बात नहीं, आदमी विपरीत परिस्थितियों में ही आगे बढ़ता है । मैं अब इनके हथियार से ही इनको मारूँगा । “

चिंतन सर - “ कैसे मारोगे ? ”

मैं “ सर, अभी बता दूँगा आप जाकर फिर कहीं कह देंगे तब । सर, आपके बस की राजनीति नहीं है । आप चुपचाप नौकरी करो अपने बच्चों का जीवन पालो । यह राजनीति बहुत कुत्ती चीज है इसके लिये शिकारी बनना पड़ता है । वह भी कोई आम शिकारी नहीं म्युनिसिपैलिटी के कुत्ता पकड़ने वाले की तरह हाथ में दो तार का फंदा लेकर फंदे में फँसाकर कुत्तों को घसीटना पड़ता है । सर, अब मैं राजेश्वर तिरपाठी को ख़त्म करूँगा । आप चाहे यह जाकर उनसे कह दो, वह तो आपके बहुत नज़दीक हैं । ”

चिंतन सर मेरी अति नाराज़गी समझ गये और बोले तुमसे ज्यादा नज़दीक मेरे और कोई नहीं है ।

मैं - “ सर, तब आप मेरा एक संदेश राजेश्वर तिरपाठी को देकर आइये । राजेश्वर तिरपाठी को मैं समाप्त करूँगा सदा- सदा के लिये । मेरा अब इन सत्य प्रकाश पांडे, रमेश शर्मा ऐसे पप्पुओं में कोई रुचि नहीं है । अब यह चुनाव होगा राजेश्वर तिरपाठी बनाम अनुराग शर्मा । ”

मेरा मूँड बहुत ऑफ था । मैं घर चला गया और वहाँ से सीधे जेके इंस्टीट्यूट गया । जेके इंस्टीट्यूट के बाहर मेरे विरोध में नारे लग रहे थे .. धोखेबाज़ वापस जाओ.. वापस जाओ..

छात्रों के साथ धोखा किसने किया

अनुराग शर्मा.. अनुराग शर्मा...

परिस्सर का ग़द्दार कौन है

अनुराग शर्मा... अनुराग शर्मा...

मैंने कोई तरजीह न दी इन सब नारों की । मैं जेके इंस्टीट्यूट के अंदर गया । अंदर एक भारी भीड़ जमा थी । विज्ञान संकाय के बहुत से छात्र थे, लड़कियाँ भी थीं और मुझे चुप कराने के लिये मेरे प्रतिद्वन्द्वियों के लोग भी हॉल में थे । मेरे घुसते ही उनके लोग नारे लगाने लगे ग़द्दार वापस जाओ.. वापस जाओ ... वापस जाओ । जेके इंस्टीट्यूट के छात्र बहुत संजीदा छात्र होते थे । यहाँ पर प्रवेश पाना बहुत मुश्किल हुआ करता था और प्रवेश ही गर्व दे देता था । एक नयी विधि के चुनाव में सबकी रुचि थी और इन लोगों ने अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव को पूरी तरह समझ लिया था और एक लड़का और लड़की मॉडरेटर के रूप में थे । मॉडरेटर ने मंच सँभाला

और कहा यहाँ पर नारे अगर लगाये गये तब मैं यह डिबेट कैंसल कर दूँगा । सारे नेता अपने समर्थकों से कहें कि वह सिफ्र प्रश्न पूछे । यह सिफ्र प्रश्न और उत्तर के लिये सत्र है । यह चुनाव का समय था और कोई भी गलत क्रदम छात्रों को नाराज़ कर सकता था । नेताओं ने हाथ उठाकर अपने प्रतिनिधियों को शांत कर दिया ।

पर वह सब पूरी तैयारी से थे और पहला प्रश्न मुझसे ही हुआ । वह प्रश्न भी उसी पोस्टर पर हुआ और पूछा गया कि क्या आप छात्र राजनीति छोड़कर वापस एकेडमी जा रहे हैं ?

मैं “ नहीं । ”

प्रश्न- “ तब क्या यह तार झूठा है ? ”

मैं “ नहीं । यह तार सच है पर तार जो छापा गया है वह झूठा है । असली तार यह है । ”

मैं तार के प्रारूप की बीस फोटोकापी लाया था और दे दिया साथ में वह रसीद भी दे दी जो मुझे डॉक विभाग से मिली थी । मैं अपने रौ में आ गया ।

“ यह तार ज़ब किया था यह उस समय की बात है जब इन कोचिंग संस्थानों के हाथों बिके हुये अराजक तत्वों ने मुझे पढ़ाने से प्रतिबंधित ऐसा कर दिया । यह भी सच है कि अगर एकेडमी ने बुलाया होता तब मैं चला भी गया होता , जीवन जीने के लिये कुछ करना पड़ता है । मेरे पास तो कोचिंग संस्थानों और नर्सिंग होम से धन उगाही का साधन तो है नहीं । पर मुझे फिर लगा यह समय करान्ति का है समर्पण का नहीं । मैं चुनाव में आ गया और चुनाव में आने का लाभ यह हुआ कि मुझे पढ़ाने का अवसर पुनः प्राप्त हो गया । मेरी माँ का बहुत विरोध था और है मेरे चुनाव लड़ने से । वह एक सीमा तक सही भी है , कौन माँ चाहेगी कि उसका बेटा देश की सबसे सम्मानित सेवा को त्याग कर पथरीली राहों पर चले । पर माँ के विरोध के बावजूद मैंने इस ज़मीन के लिये संघर्ष का चुनाव किया जिसकी वजह से मैं आज समाज में सम्मान के साथ खड़ा हूँ । मैं एक स्वस्थ माहौल परिसर में स्थापित करना चाहता हूँ जहाँ पर सिफ्र अध्ययन- अध्यापन हो , अराजकता का समूल नाश हो , महिला वर्ग का उचित सम्मान हो , अध्यापकों की गरिमा का ध्यान रखा जाये । यह सब जो मेरे प्रतिद्वंद्वी हैं इनको एक ही राजनीति आती है - छात्रों को भय में रखना , महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करना और अध्यापकों की गरिमा का कोई सम्मान न करना । आप बाहर देखो मैं साइकिल से आया हूँ और यह सब एक क्राफिले के साथ । उस क्राफिले में एक अच्छी संख्या यूपी 70 नंबर की गाड़ियों की नहीं है । शहर के बाहर की गाड़ियाँ क्यों आयी हैं , वह कौन लोग हैं उनका क्या कार्य इस परिसर के चुनाव से । यह कोई नहीं पूछता इनसे ... क्यों? यह इस बात का जवाब दें । मैं कोई वोट नहीं माँगता

और न मैं वोट माँगूँगा । मैं सिर्फ एक बात कहता हूँ इनको वोट मत दो । मैं एक नकारात्मक राजनीति कर रहा हूँ और उसमें से सकारात्मकता का जन्म होगा । मैं एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार का व्यक्ति हूँ । मैंने अपने परिवेश की ख्वाहिशों का क्रत्तल करके यह रास्ता चुना है । अगर एकेडमी को तार भेजना अपराध है तो वह अपराध मैंने किया है । अगर मेहनत करके हिंदी माध्यम से सिविल परीक्षा पास करना एक जुर्म है तो वह जुर्म मैंने किया है । अगर इन सबका नाश करना एक अपराध है तो वह अपराध मैं हर रोज़ करता हूँ, हर रोज़ करूँगा, अभी भी कर रहा, यहाँ से निकल कर फिर करूँगा । मुझे अगर आप ने वोट दे दिया तब मैं आपकी ताक़त से इनका और नाश करूँगा । आप मुझे वोट अगर देना तब यह सोचकर देना मैं इनको ख़त्म कर दूँगा । अगर इनको जीवित रखना चाहते हो तब मुझको बिल्कुल वोट मत देना, अगर अपने को जीवित रखना चाहते हो तब इनको वोट मत देना । इनसे पूछो इनका कार्यक्रम क्या है? मेरा एक कार्यक्रम है पढ़ाना और पढ़कर पढ़ाना । इनका एक कार्यक्रम है अराजकता फैलाना और असामाजिक तत्वों के सहयोग से अराजकता फैलाना । मैं एक बार फिर कहता हूँ, मैं जन्मा हूँ इनके ध्वंस के लिये । मैंने अपनी अंतिम साँस तक इनको ध्वंस करता रहूँगा । यह आसमान की ऊँचाइयों में विचरण कर रहे बादल में समां जायें, बड़ी-बड़ी कंदराओं के गर्त में छिप जायें, समुद्र की अतल गहराइयों में समाहित हो जायें पर मैं इनको ढूँढ़ निकालूँगा । मैं जन्मा हूँ एक ग़ैर मामूली दास्तान के लिये और वह दास्तान तभी बनेगी जब इनका समूल नाश होगा ... परिसर में अध्ययन- अध्यापन की गरिमा की स्थापना होगी, महिलाओं की परिसर में भागीदारी बढ़ेगी ।

ऐ चिराग बुझते ही षड्यन्तर करने वाले लोगों मेरी आँख का उजाला तुमको बेनकाब कर देगा ।

मैं रविवार को डीजे होस्टल के डिबेट के बाद नयी नीति की घोषणा करूँगा इनके समापन के लिये तब तक मेरा एक ही नारा है - शास्त्रार्थ- शास्त्रार्थ । मेरी खुली चुनौती है शास्त्रार्थ की .. मैं परिसर को अपनी खोयी हुयी गरिमा प्राप्त हो इसके लिये मैं इन बख्तियार खिलजी के वंशजों का समूल नाश करूँगा । इन सबमें बख्तियार खिलजी का वास है, उस बख्तियार की आत्मा को इनके भीतर से निकाल कर समाप्त करना होगा । आपका इनके विरोध में दिया गया हर मत

उस पावन कृत्य में सहायक होगा । इनको तो यह भी नहीं पता होगा बख्तियार खिलजी था कौन । ऐसे व्यक्ति इस जेके इंस्टीट्यूट के छात्रों से मत माँगने आये हैं ।"

माहौल बदल गया । शास्त्रार्थ- शास्त्रार्थ का नारा गूँजने लगा । उसके बाद मॉडरेटर ने मंच संभाला उसने बख्तियार के बारे में पूछा किसी को पता होने

का सवाल ही नहीं था । मेरे छात्र थे ही हॉल में उन्होंने नालंदा का ध्वंस और बख्तियार खिलजी के आतंक पर भाषण दे मारा । मेरे सवाल पहले से तैयार ही थे । ज्यादातर सवाल परिसर पर योगदान को लेकर थे । अब कोई योगदान कभी किया ही नहीं था तब वह बताते क्या । छात्रों ने पूरा धो डाला । यह नया चुनाव का ढंग लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा था । मैंने इतिहास विभाग में पूरा गाँधी का आंदोलन ही बाँच मारा । वहाँ लड़कों ने गाँधी पर कई सवाल कर दिये । वह जवाब तो उनको आता नहीं था । वह जवाब भी मैंने दिया । डीजे होस्टल की डिबेट में मात्र आईएसा, एफआईए और विद्यार्थी परिषद शामिल हुये । मैंने वहाँ पर उनके हार की घोषणा कर दी । मैंने कह दिया वह लड़ने से ही भाग रहे, युद्ध में भागते हुये सेनानी पर हमला करना हमारी परम्परा के खिलाफ है । भागता हुआ सेनानी दया का पात्र होता है । उसके समुख शौर्य प्रदर्शन अनुचित होता है ।

मैंने डीजे होस्टल के डिबेट के बाद घोषणा कर दी कि मैं कल से नयी रणनीति से चुनाव लड़ूँगा । यह शास्त्रार्थ की रणनीति से वह लड़ नहीं पा रहे हैं पर शास्त्रार्थ- शास्त्रार्थ का नारा चलता रहेगा क्योंकि व्यक्ति का विकास शास्त्रार्थ से ही होता है । मुझे अपने प्रतिविहीयों का विकास करना है । मैं उनसे अनुरोध करूँगा कि वह मेरी कक्षा में आकर पढ़ें । मैं कमज़ोर विद्यार्थियों पर अधिक ध्यान देता हूँ । मैं उनको कक्षा 6 की एनसाआरटी से पढ़ाना आरंभ करूँगा । अब आज तक जब कभी पढ़ा ही नहीं तब तो शुरुआत बेसिक से ही करूँगा । समाचार पत्र मुझको ही ढूँढ़ते थे क्योंकि मसाला तो मैं ही देता था । इन सबके पास कोई मसाला तो होता था नहीं । सोमवार को कौन सी रणनीति आयेगी इस पर हर ओर चर्चा होने लगी । समाचार पत्रों ने छाप दिया - शास्त्रार्थ रणनीति पर अनुराग शर्मा की विजय - सोमवार से चुनाव की नयी रणनीति और नया नारा .. मेरी फोटो छाप दी जब मैं जेके इंस्टीट्यूट से हवा में हाथ उठाये बाहर निकल रहा था ।

हर तरफ एक ही चर्चा क्या होगा आगे

जनमेजय सिंह ने अपने कोर ग्रुप की मीटिंग में कहा ... इसका चुनाव चढ़ाओ ... यह बाधनों का नाश करेगा और हमें चुनाव जितायेगा .. अब ठाकुर राज करेगा...

जनमेजय सिंह ने छिपे तौर पर ताक़त झाँक दी मेरे चुनाव प्रचार में ताकि ब्राह्मण वोट भरपूर करें और उनको तो भरोसा ही था ठाकुर वोट एकमुश्त मिलेगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 295

मैं शाम को महिला छात्रावास गया और जिस लड़की ने अपना नामांकन वापस लिया था उसको बाहर बुलाया । उसने जैसे ही सुना मैं आया हूँ वह भागते हुये आ गयी । वह बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा थी, उसका नाम था सरला जोशी । मैंने पूछा आप भाषण दे सकती हो ?

सरला - “ सर दे तो सकती हूँ पर आप ऐसा नहीं दे सकती ।

“कल सुबह आना यूनियन हॉल पर ग्यारह बजे । “

सरला - “ मुझे करना क्या होगा ? “

मैं - “जो नामांकन वापस लेने की बात तुमने कही थी उस दिन जब मैं महिला छात्रावास में आया था वहीं कल मंच से कह देना । कल शाम को एक नायिका का दर्जा तुमको मिलेगा । “

वह उपाध्यक्ष पद की उम्मीदवार थी, उसने नाम वापस लिया था । यह ज़ाहिर सी बात है कि अगर वह उपाध्यक्ष पद की उम्मीदवार बनी थी तब निश्चित रूप से वह यश की इच्छुक थी ही और यश प्राप्ति का आश्वासन थाली में परोस कर मिल रहा है तब तो आँखों में लाल डोरे तैर ही जायेंगे और वह भी कोई और नहीं एक उभर रहा महानायक दे रहा हो ।

इसके बाद मैं डीजे होस्टल गया । वहाँ पर महामन्त्री पद के उम्मीदवार राजेश मिश्रा से मिला । राजेश मिश्रा मुझको देखकर हङ्गबङ्गकर बैठ गये । मैंने पूछा , “ चुनाव क्यों लड़ रहे हो ? “

राजेश मिश्रा-“ लड़ नहीं रहा बस नामांकन भर दिया । “

मैं - “ क्यों भरा ? “

राजेश मिश्रा-“ थोड़ा नाम हो जाता है इसलिये । “

मैं - “ कुछ नाम हुआ ? “

राजेश मिश्रा-“ हाँ थोड़ा हुआ । “

मैं - “ और नाम चाहते हो ? “

राजेश मिश्रा - “ वह कैसे होगा ? “

मैं - “ बस जवाब दो सवाल न करो । मेरे पास जवाब देने का समय नहीं है । “

राजेश मिश्रा- “ करा दीजिये । “

मैं “ कल नामांकन वापस ले लो मेरे मंच से । जितना नाम जीतने पर होता है उतना नाम नामांकन वापस पर होगा और पेपर में नाम फ़ोटो दोनों छपेगी , वैसे भी तुमको लड़ना तो है नहीं । ”

राजेश मिश्रा- “ ठीक है । ”

मैंने उसी से पूछा इसी तरह के फालतू कैंडिडेट के बारे में जो नामांकन करते हैं पर लड़ते- वड़ते चुनाव हैं नहीं । उसने नाम बताये । मैंने उन सबसे यही कहा । मेरे पास पाँच उम्मीदवार हो गये थे जो कल नामांकन वापस लेंगे । मेरी कल की योजना तैयार हो गयी । मैं अगले दिन जब यूनियन हॉल के सामने अपने मंच पर गया तब एक बहुत भारी भीड़ जमा थी । यह भीड़ अपरत्याशित सी लगी मुझको । मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ इतनी बड़ी देखकर । मैं मंच पर पहुँच गया और बाकी लोग आ चुके थे । मैंने मंच पर आते ही अपने शास्त्ररार्थ की रणनीति के विजय की घोषणा कर दी और बताया कि डीजे होस्टल में तो यह महारथी आये ही नहीं । यह एक अज़ीब संग्राम चल रहा लड़ने के लिये इनको ढूँढ़ना पड़ता है । यह सब शास्त्ररार्थ से डरे हुये लोग हैं । मैं आप सबसे इस चुनाव के बहिष्कार का आह्वान करता हूँ । यह पाँच उम्मीदवार हैं जिन्होंने चुनाव का बहिष्कार करके अपना नामांकन वापस ले लिया है । इस परिसर में छात्रसंघ का कोई कार्य नहीं है । यह एक अनावश्यक संस्था है जो अराजकता फैलाती है और पठन- पाठन के वातावरण को दूषित करती है । इस अनावश्यक संस्था के समापन के दो रास्ते हैं - एक क्रान्तून के द्वारा और दूसरा जनमत के द्वारा । हम इसको जनमत के द्वारा समाप्त कर देते हैं । अगर आप चुनाव का बहिष्कार कर देंगे वोट ही नहीं देंगे तब यह संस्था समाप्त ही हो जायेगी । मैं इन पाँच लोगों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने चुनाव की प्रक्रिया से अपने को अलग करते हुये चुनाव बहिष्कार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया है । इतिहास इनके योगदान का ऋणी होगा । यह विश्वविद्यालय अपनी पुरानी गरिमा को प्राप्त करेगा ही और जब भी वह गरिमा प्राप्त होगी यह लोग नींव के पाँच मजबूत पत्थर के रूप में याद किये जायेंगे ।

मेरा नारा है बहिष्कार- बहिष्कार , छात्र संघ का बहिष्कार । मैं अपना नामांकन इसलिये वापस नहीं ले रहा कि मैं इनको जीतने नहीं देना चाहता । मैंने अगर नामांकन वापस ले लिया तब यह लोग अपने कुछ गुणों से वोट दिलाकर चुनाव जीत जायेंगे । आप लोग चुनाव का बहिष्कार करो मैं इनके घर में सेंध मारकर इनके आदमियों से वोट लेकर चुनाव जीतूँगा । मेरी यह अपील है आप ज्यादा से ज्यादा लोग चुनाव का बहिष्कार करो ।

यह छात्र संघ एक पीड़ा दे रहा समाज को । यह राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह ऐसे अनैतिक मठाधीशों को जन्म दे रहा है । मैं इन मठाधीशों की मठाधीशी खत्म करूँगा । चाहे जहाँ से चुनाव राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह लड़ें मैं इनके विरुद्ध चुनाव लड़ूँगा और इनको समाप्त करूँगा

। आप यहाँ बहिष्कार का नारा दीजिये मैं इनके चुनाव क्षेत्र में शास्त्ररार्थ-शास्त्ररार्थ का नारा दूँगा । ऐ मठाधीशों थोड़ा पढ़ाई लिखाई कर लो अभी तो आपके पप्पू भागे हैं अब आपके भागने की बारी है । मैं राजेश्वर तिरपाठी की इलाहाबाद लोकसभा सीट से जमानत ज़ब्त कराऊँगा । जनमेजय सिंह आप भी बता दो कहाँ से लड़ोगे । अगर आप चुनाव गाज़ीपुर से लड़ेंगे तब वहाँ पर आपसे चुनाव राम आशीष मौर्या लड़ेंगे, अगर शहर उत्तरी से लड़ेंगे तब सरला जोशी लड़ेंगी । ठाकुर साहब अब आपकी ठकुरर्ई के दिन जाने वाले हैं, यह आपकी अंतिम मठाधीशी का चुनाव है । इस विश्वविद्यालय से जितनी गंदगी समाज में गयी है वह सब साफ करने की ज़िम्मेदारी भी हमारी है । आप लोग इनके चुनाव कार्यालय में चल रहे पूँडी - कचौड़ी कार्यक्रम में शामिल होइये । इनका ही खाइये और इनका ही बजाइये । वहीं खाइये और वहीं पर चुनाव बहिष्कार का प्रचार करिये । मैं अपील करता हूँ एक शास्त्ररार्थ विश्वविद्यालय परिसर में छात्रसंघ की उपयोगिता पर कराया जाये और उसमें पूर्व अध्यक्षों को बुलाया जाये । राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह को भी बुलाया जाये । मैं अब मठाधीशों को समाप्त करना चाहता हूँ । भीड़ में अशोक ने कहा, ” सर हिंदी विभाग इसको आयोजित करेगा । “

नारा गूँजने लगा शास्त्ररार्थ बहिष्कार पर ।

शास्त्ररार्थ- शास्त्ररार्थ- बहिष्कार- बहिष्कार ।

एक बड़ी भीड़ उत्तेजित हो रही थी । ऐसा प्रतिपल परिवर्तित व्यूह तो इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने देखा ही न था । अगले दिन के समाचार पत्र ने राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह को भी चुनाव में लपेट मारा । समाचार पत्र भी सनसनी फैला रहे थे । “अनुराग शर्मा का ऐलान मठाधीशी का ख़ात्मा हो ”,

“इलाहाबाद लोकसभा क्षेत्र के आगामी प्रत्याशी अनुराग शर्मा । “

“सरला जोशी शहर उत्तरी विधान सभा सीट की प्रत्याशी घोषित । ”

“अनुराग शर्मा का संसदीय राजनीति में आगाज “

“जनमेजय सिंह और राजेश्वर तिरपाठी को अनुराग शर्मा की खुली चुनौती ... ”

“मेरी लड़ाई इन पप्पुओं से नहीं राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह से है -अनुराग शर्मा । ”

“अनुराग शर्मा की चुनाव बहिष्कार की अपील “

“अब रण बहुत भीषण होगा “

शास्त्ररार्थ नीति से विजय की ओर अग्रसरित अनुराग का नया नारा चुनाव का बहिष्कार हो “

“ छात्रसंघ की परिसर में कोई आवश्यकता नहीं - अनुराग शर्मा “

“ उन्हीं की खाओ उन्हीं की बजाओ “

“ आप सब चुनाव का बहिष्कार करो मैं उनके घर में सेंध लगाऊँगा “

“ पाँच प्रत्याशियों ने चुनाव बहिष्कार के समर्थन में नामांकन वापस लिया । “

जिस समाचार पत्र का जो मन कर रहा था वह छाप रहे थे । वह छापें भी क्यों न मैं मसाला ही मसाला दे रहा था ।

समाचार पत्र पढ़ते ही सारे नेताओं के तो होश ही उड़ गये । राजेश्वर तिरपाठी, जनमेजय सिंह की राजनीति ही दाँव पर लग गयी थी । इन दोनों ने आनन - फ़ानन में अपनी विज्ञप्ति जारी की और कहा मेरा चुनाव से कोई वास्ता नहीं और अनुराग बेवजह हमें चुनाव में घसीट रहे हैं, पर इनके कहने से क्या होता है हकीकत सबको पता ही थी ।

चिंतित राजेश्वर तिरपाठी ने संतोष सिंह से कहा , “ संतोष जनमेजय चाल तगड़ी चलेन । “

संतोष सिंह - “ क्या चले ? “

राजेश्वर तिरपाठी- “ अनुराग के ओई लड़ावत हयेन और चुनाव चढ़ावत हयेन । “

संतोष सिंह - “ कैसे पता नेता जी ? “

राजेश्वर तिरपाठी- “ काल अनुराग के सभा में ऐतनी भीड़ अनुराग के बस के बात नाहीं बा । “

संतोष सिंह - “ नेता जी लोकप्रिय हो चुके हैं अनुराग । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ लोकप्रिय होत हयेन पर भीड़ के एक प्रकृति होत हअ / भीड़ बताई देत हअ कि हमार चरित्र का बा । काल मांधाता के जुलूस अनुराग के भाषण ख़त्म होये के बाद निकला रहा । सारे मांधाता के समर्थक पहिले अनुराग के भाषण में गयेन इहाँ भीड़ बढ़ायेन ओकरे बाद जुलूस निकला । “

संतोष सिंह - “ हाँ नेताजी आपके बात में दम है , जुलूस तो उसके बाद निकला है । “

राजेश्वर तिरपाठी चिंतित हो चुके थे । उन्होंने चिंतित स्वर में कहा ... “ संतोष .. “

संतोष सिंह - “ हाँ नेताजी । ”

“ ब्राह्मण राजनीति हाथ से फिसलत बा , ब्राह्मणे नाहीं पूर राजनीति हाथ से फिसलत बा । ”

संतोष सिंह - “ ऊ कैसे नेता जी । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अनुराग लोकसभा के टिकट हमका काटि के पाई सकत हअ । ”

संतोष सिंह - “ पर अनुराग कौनौं दल में हैं नहीं । आपका और मुख्यमन्त्री सद्वावना सिंह से अच्छा ताल्लुक है । अनुराग एक अपरिपक्व बेसहूर आदमी हैं , एनका कौन राजनीति आवत हअ । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अनुराग से ज्यादा राजनीति केहु के नाहीं आवत । ई अलगै मानव बम बा । फ़टि जाये तबाही फैलाई दे और उठे तो कपड़ा झाड़ि के चल दे और पूछे ऐतना मनई कैसे मरि गयेन । कुछ उम्मीदवार वीआईपी उम्मीदवार होत हअ । ओनकर एकै काम होत हअ कौनौं क्षेत्र में घुसि जा और गदर मचाई दअ । ऐसन उम्मीदवार हार- जीत से ज्यादा गदर मचावै में माहिर होत हअ । अगर जनमेजय गाज़ीपुर से लड़हीं तब ई उहुँ गदर मचाये , हमार त जियब दूभर करबै करें इलाहाबाद में । ”

संतोष सिंह - “ नेताजी एकरे बस के बा लोकसभा चुनाव । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ तू कहे रहअ कि एकरे बस के बा अध्यक्ष पद के चुनाव । तू चार अध्यक्ष के चुनाव संचालन के चुका हअ । तोहार चुनाव संचालन बेजोड़ बा । तोहार काट केहु के पास नाहीं रहत । पर तू बदहवास घूमत हअ । लोकसभा चुनाव के बात चालू कै देहे बा .. अनुराग पूर पगलेट बा .. ई का करे ई खुदौ नाहीं जानत , पता चला साइकिल चलावत बा सीधा उलटि के बैठि गवा और साइकिल चल पड़ी पीछे की ओर , गिरि गयेन चार- छः लोग । काल ऐलान कई दे हम सद्वावना सिंह मुख्यमन्त्री के हराउब । ओका त ऐलान करै के बा , बाक़ी काम त ओकर बा जेकरे खिलाफ़ ई ऐलान करे । ”

संतोष सिंह - “ क्या किया जाये नेता जी ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ जनमेजय सिंह के बोलावअ । ओनसे माटिंग फ़िक्स करअ । जनमेजय के त अकल घुटने में बा । एक भस्मासुर पैदा करत हयेन । ”

संतोष सिंह - “ कहाँ बुलाया जाये उनका । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ मुट्ठीगंज बोलावअ । ”

मुट्ठीगंज में राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह की मुलाक़ात हुई ।

राजेश्वर तिरपाठी- “ जनमेजय तू चुनाव चढ़ावत हअ अनुराग के । इहो होई सकत हअ सत्य प्रकाश, मांधाता के बजाय केशव यादव जीत जाई । पिछड़ा तबका के वोट त केशव के मिले । का पता तू एतना अनुराग के चुनाव चढ़ाई दअ कि अनुरागै चुनाव जीत जाई । एक बात समझ लअ, अनुराग लंबी गोटी फेंकत हयेन । ओ हमरे - तोहरे पर आक्रमण एक योजना से करत हयेन । ”

जनमेजय सिंह - का योजना होये ? “

राजेश्वर तिरपाठी- “ ऊ दूरदर्शी बा । एक अलग पहिचान बनावत बा । हमरे - तोहरे खिलाफ़ लाग गवा बा । तू गाझीपुर से लड़ाउ चाहे शहर उत्तरी से ऊ तोहरे खिलाफ़ चुनाव लड़े - लड़ाये । एक बात और बताई देई ऊ चुनाव जीतै से ज्यादा चुनाव हरावै में रुचि रखत हअ । ओका रोकब ज़रूरी बा । ”

जनमेजय सिंह के चेहरे पर चिंता की रेखायें आ गयी और उन्होंने पूछा , “ क्या किया जाये ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अब हमार तोहार एकता ज़रूरी बा । ”

जनमेजय सिंह कुछ बोलें इसके पहले ही भरत सिंह जो जनमेजय के खास आदमी थे वह बोल पड़े “ अरे लिटा देते हैं उसको काम ख़त्म । ”

राजेश्वर सिंह की आँखें बड़ी- बड़ी थीं । उन्होंने अपनी बड़ी- बड़ी आँखों से भरत सिंह की तरफ़ देखा और पूछा , “ का कहअ भरत हम समझा नाहीं । ”

भरत सिंह - “ नेता जी , चार गोली सीने में उतार देते हैं । हफ्ता- दस दिन का हंगामा होगा । हम सब चुनाव का काम बंद करके क्रातिल को गिरफ्तार करो के नाम पर आंदोलन कर देंगे । चुनाव टल जायेगा दस - पन्द्रह दिन के लिये , फिर अनुराग के फ़ोटो लेकर हम लोग चुनाव लड़ लेंगे । ”

राजेश्वर तिरपाठी बहुत ही शातिर राजनीति के खिलाड़ी थे । वह समझ सब रहे थे पर भरत सिंह से कहलवाना चाह रहे थे । भरत सिंह सब कह गये । उन्होंने जनमेजय सिंह की तरफ़ देखा और बग़ैर शब्दों का इस्तेमाल करें आँखों से ही पूछा , “ तोहार का राय बा ? ”

जनमेजय सिंह - “ हंगामा तो बहुत होगा , एक लोकप्रिय नेता है । ”

अब राजेश्वर तिरपाठी के चाल चलने का वक्त आ गया । उन्होंने कहा , “ भरत सँभाल के काम केहअ । वैसे हअ तू बहुत बहादुर और समझदार पर ध्यान देहअ । कहाँ मरबअ गोली ? ”

भरत सिंह - “ आनंद भवन पर ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ नहीं, यूनिवर्सिटी से दूर मारअ । कब मरबअ? ”

भरत सिंह - “ आज मंगलवार है, बृहस्पतिवार को मार देते हैं । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ बतावअ जनमेजय कौन दिन ठीक रहे ? ”

जनमेजय सिंह - “ कौन अनुराग से बहिन बियाहवय के बा कि साइत- सुदिन देखी , कौनों दिन कै दअ कारनामा । चार गोलिन त मारै के बा कौन भागवत सुनै के बा कि लंबा इंतज़ाम करे पड़े । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ वैसे जनमेजय बहिन बियाहवय लायक लड़िका त बा अनुराग पर ईश्वर ज़िंदगी देहेन नाहीं हयेन ओका नाहीं तअ आपन बहिन बियाह देइत । अब जौन ईश्वर के माया होये उहै होये , हम तू का कै सकित हआ । भरत तू गोली मार के चला जायअ बनारस । ”

भरत सिंह - “ठीक बा नेता जी । ”

राजेश्वर तिरपाठी ने मीटिंग ख़त्म होते ही जैसे ही जनमेजय सिंह गये हर्ष तिवारी से कहा , “ हर्ष कालि शाम के अनुराग को डीजे होस्टल के सामने गोली मार दो । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 296

राजेश्वर तिरपाठी के मेरे ऊपर गोली चलाने का आदेश पाते ही हर्ष तिवारी ने पूछा , “ नेता जी जब भरत बृहस्पतिवार को मार ही देंगे तब आप बुधवार को हमसे क्यों मरवाना चाहते हैं । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ भरत हयेन लभलईक । ओ जहाँ चलई चाही दुई गोली चलझहिं 6 और चार हवा में और दुई दायें - बाँये । या त गोली न चलावअ अगर चलावअ तब एका ख़त्म करअ । अगर गोली खाई के ज़िंदा रहि गवा तब तअ कहानी नई लिखि मारे और एक बड़ा नवा नेता सौ प्रतिशत बनि जाये , अगर मरि गवा तब महीना - खाँड़ के हंगामा होये और जनता के याददाश्त बहुत कमज़ोर होत हआ सब भूलि ज़झहिं इ कहि के एक उदीयमान नेता रहा समय के पहिले चला गवा । हर्ष , हर आदमी के मूल्यांकन कै के कदम उठावै चाही । अगर अनुराग के आज ख़त्म न किहा गवा तब एक साल बाद एका केऊ ख़त्म न कै पाये , जेतना जल्दी होये एकर खात्मा होई चाही । एकरे ऐसन नौटंकीबाज़ तअ हम आज तक देखबै नाहीं केहे हई । शास्त्रार्थ- बहिष्कार... का - का लीला लै के आवत बा । गोली मार देहअ और ई बचि गवा तब कहे हम राम के अवतार हई । का पता ई धनुष - बाण लै के चुनाव प्रचार चालू कै दई । अनुराग के अब ज़िंदा रहब हम सबके अस्तित्व के लिये ख़तरा बा । जनमेजय एकर चुनाव चढ़ावत हयेन और ई हमरै वोट काटत बा । ई ब्रह्मण राजनीति के नया उभरता चेहरा बनत बा । ब्रह्माणै नाहीं ई

राजनीति के नया चेहरा बनत बा । एकरे अंदर बुद्ध और गाँधी दुइनों बा , एतनी बड़ी नौकरी के ठोकराई के इ बुद्ध के तरह निकल पड़ा बा तअ गाँधी के तरह नया - नया प्रयोग करत बा । तू देख लेहआ ई वोटिंग प्रतिशत गिराई दे , गिरा प्रतिशत में बाभन वोट ज्यादा होये । ई गिरा भवा वोटिंग प्रतिशत कुल समीकरण बदल दे । ई एक ऐसा मोहरा बा कि बहुत आगे जाये और जे एकर इस्तेमाल करै चाहे ई उल्टा ओकर इस्तेमाल कै ले । हमका सबके मजबूरी में राजनीति एकरे पीछे चलि के करे पड़ि सकत हअ । मुख्यमंत्री सद्वावना सिंह ऐका जानत हअ । कमिशनर साहेब के विमोचन कार्यक्रम में हम गवा रहे । बहुत गदर मचाये रहा , कुल मंचै लूट लेहे रहा । अब पढ़ा - लिखा बा , बोलै के कला भगवान देहेन हयेन , उम्र एकरे साथ बा का पता छात्रसंघ अध्यक्ष बनतै कौनों बड़ी पार्टी में शामिल होई जाय , ऐसन आदमी के त सब दल में लेवा चझहिं । मुख्यमंत्री कहत हयेन कि चुनाव नज़दीक बा । छात्रसंघ अध्यक्ष आपन आदमी होई चाही मांधाता और केशव यादव बिल्कुल न होई चाही । कालि ई अध्यक्ष होई गवा सद्वावना सिंह पार्टी में लै लेहेन तब ई लै गवा इलाहाबाद के राजनीति , हमार सबके राजनीति ख़त्म होई जाये । ”

हर्ष- “ नेताजी का होये अब । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अब एका मरे पड़े । ”

थोड़ी देर सोचते हुये राजेश्वर तिरपाठी बोले ,

“ ई अनुराग के राजनीति हमका समझै नाहीं आवत बा । एकर एक राजनीति समझाइ ई दहिजरा के नाती दूसर शगूफा छोड़ देत हअ । सबसे बड़ा बुद्धिजीवी होई के नाटक बाभन करत हअ और ई चुनाव बहिष्कार बभनै से कराये । कुल ठाकुर - अहिर - पटेल - हरिजन वोट दै देझहिं और बाभन कै देझहिं बहिष्कार तब कैसे जितहिं सत्य प्रकाश । ”

हर्ष तिवारी - “ एहमें अनुराग के भी तअ नुकसान बा । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ जौन हमका - तोहका नुकसान लागत हअ ओहमें एका फ्रायदा लागत हअ । बड़ी विचित्र खोपड़ी बा एकर । ई बतावअ के एका भरमाएस के ई नौकरी न करअ राजनीति करअ ? ”

हर्ष तिवारी - “ नेता जी सुना हअ कौनों कानपुर के अधिकारी आवा रहेन कामधेनु मिठाई वाले के इहाँ छापे मारै ओनहिं से ई मिला ओई भरमाई देहेन । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ का नाम बा ओनकर ? ”

हर्ष तिवारी - “ कौनों तेवारी रहेन । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ ई बाभन ससुरे कभौं न सुधरिहिं । जौन काम करिहिं बेसहूरी के करिहिं । जिताई देहेन ठाकुर के । अरे ई जात नौकरी करत , एक बाभन के परिवार पलत । एक बाभन कन्या से बियाह होत ऊ सुख भोगत पर लियाई के अटकाई देहेन एका हमरे कपारे पर । अब बाभन कमजोर भवा नअ । एक आईएएस के नौकरी गई और छात्रसंघ गवा । ससुरे बाभन कभौं न सुधरिहिं , लतियर रहेन और लतियर रझहिं । “

कुछ देर सोचते हुये राजेश्वर तिरपाठी बोले ,

“ हर्ष एक बात बताई ? ”

हर्ष- “ हाँ नेताजी । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अनुराग पैदाइशी नेता बा । एकर महतारी एका सब कुछ गर्भै में सिखाई देहे होये नाहीं तअ 22/23 साल में आईएएस बनि जा , राजनीति में बड़े- बड़े मठाधीशन के पानी पियाई दअ ई सब ईश्वर प्रदत्त गुण बा । चलअ अब देश के दुर्भाग्य बा कि एतना प्रतिभाशाली नेतृत्व नसीब में नाहीं रहा । ”

“ हर्ष “

हर्ष- “ हाँ नेताजी । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ बहुत मोह आवत बा अनुराग पर । ”

हर्ष- “ ऊ काहे नेताजी ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ एक गरीब घरे के लड़िका , ऐतना प्रतिभाशाली और काल ई न रहे । एकर महतारी पछाड़ मारि के रोये और ओकर बाकी बची ज़िंदगी कैसे गुज़ारे । ”

हर्ष - “ ई बात त बा नेताजी । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ पर हम तू का कै सकित हअ अगर ईश्वर जीवन एका देहेन नाहीं हयेन । चलअ मोह - माया त्यागअ और काल एनकर समापन करअ । दारागंज घाट पर बल भर रोई लेब कुल पाप कटि जाये । सँभाल के मारअ न त ई बचै चाही न त एकर लाश मिलै चाही । ”

हर्ष - “ ओकर चिंता न करअ । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अब घरे चलत हई बहुत मन ख़राब होई गवा बा । ”

हर्ष तिवारी - “ नेता जी बस ई बताई दअ कब करी ई ऑपरेशन अनुराग शर्मा ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ पहिला काम ई करअ तू कि ई काम करावल बच्चा सजीवन से । तू कहअ जयगोपाल मिश्रा से , जयगोपाल कहई रंजन से और रंजन कहई बच्चा सजीवन से ताकि अगर केऊ पकड़ा जाई तब बात तोहरे तक न आवै पावै । ई साफ़- साफ़ कहअ कौनौं क्रीमत पर अनुराग बचै न । गोली मारे के बाद जब अनुराग गिरि जाई तब तीन - चार गोली गिरे अनुराग पर और मारैं ताकि ॐ त स्पॉट मृत्यु होई जाई । अनुराग के मारि के ओकर लहाश उठाई लेई और निकलि जाई बरगढ़ के जंगल के ओर और कतौं जंगल में फूँक देई । अगले दिन अराजकता और परिसर में हिंसा के विरोध में सत्य प्रकाश बैठि जाई आमरण अनशन पर , सारा चुनाव कार्यकरम रद्द कै के । अनुराग के फ़ोटो के साथ जुलूस निकालअ और जुलूस बहुत बड़ा होई चाही , सारे डिग्री कॉलेज से लड़िकन के झाँक दअ । अनुराग के पोस्टर के डिज़ाइन बनवावअ और ओका बाभन कुल शिरोमणि घोषित कै दअ । अनुराग के महतारी - बाबू के पास तुरंत जायअ अनुराग के मरतै , ओऊ सहायक होइहिं योजना में । ”

हर्ष तिवारी - “ ई काम कब करी । काल शाम के कै देई ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ हाँ काल कै दअ । ”

हर्ष तिवारी - “ ठीक बा नेताजी । काल होई जाये काम । ”

जनमेजय सिंह मुटठी गंज से सीधे हॉलैंड हॉल गये । वहाँ पर अपनी कोर ग्रूप मीटिंग में कहा , “ कल अनुराग का मर्डर हो जायेगा । ”

भरत सिंह - “ काम अंजाम देई के बात तो परसों के बा । ”

जनमेजय सिंह - “ ऊ सब एक कुटिल नीति है राजेश्वर की । अनुराग ज़िंदा रहा तो इलाहाबाद में राजेश्वर का ख़ात्मा । अबअ अनुराग छोटवार नेता बा , काल अध्यक्ष बने और कौनौं पार्टी में चला जाये तब ई राजेश्वर के खाई जाये । राजेश्वर से बड़ा राजनीति के लकड़बग्धा केऊ बा नाहीं । ”

भरत सिंह - “ वह कैसे ? ”

जनमेजय - “ ई छात्रसंघ चुनाव से आगे के खेल होत बा । हर भाषण में राजेश्वर के पीछे लगा बा । अनुराग घोषणा कै देहे बा कि इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ब । अब या तो अनुराग मरें या राजेश्वर ख़त्म होई । अब अनुराग के मरे पड़े । राजेश्वर के केहू पर यक़ीन नाहीं बा , ई काम खुद अंजाम दिइयहिं । ”

भरत सिंह - “ भैया , अनुराग तोहरेउ पीछे लाग हयेन । ”

जनमेजय सिंह - “ नाहीं । सरला जोशी , राम अशीष मौर्या और अनुराग के कौनौं तुलना बा , नेपोलियन खुद लड़ै और अपने आदमी से लड़ावै एहमें

फरक बा । “

भरत सिंह - “ भइया तू बहुत ज्ञानी हअ , तोहका इतिहास बहुत आवत हअ । मांधाता भैया के जगह अगर भैया तू गअ होतअ तब शास्त्रार्थ में अनुराग न जीत पउतेन । ”

जनमेजय सिंह - “ हमार मज़ाक़ बनउबअ तब देब पनहिन - पनही । ”

भरत सिंह - “ बतावअ भैया करी का ? ”

जनमेजय सिंह - “ परस्तों नाहीं काल मारअ गोली अनुराग के और ऐसन मारअ कि खून गिरै पर ऊ मरै नअ । अनुराग जिंदा रहई और गोली खाई के जिंदा रहई । भरत ई काम काल जेतना जल्दी होई तू करअ , काल शाम तक राजेश्वर मरवाई देझहिं तू ओकरे पहिले एका घायल करअ । कौनौ हालत पर अनुराग मरै न चाही । ”

भरत - “ भैया, ओका जिंदा रखे से का मिले ? ”

जनमेजय सिंह - “ राजेश्वर तिरपाठी के नाश । ओका जिंदा रहै दअ हम कुल बदला राजेश्वर से निकाल लेब । अनुराग मरि गवा तब बामन वोट के भयंकर धर्स्त्रीकरण होये और सत्य प्रकाश जीत जड़हिं और अगर अनुराग लड़ा तब ओकर चुनाव चढ़ाई के बामन वोट बाँट देब , मांधाता आराम से जीत जड़हिं । बस ठाकुर वोट पर काम करअ और अनुराग के चुनाव चढ़ावअ जीत पक्की बा । हर ओर एक बात कहअ अनुराग और मांधाता के सीधी टक्कर बा । ”

भरत सिंह - “ भैया , शाम के हम गोली मारि सकत हअ , दिन में दिक्कत बा । ”

जनमेजय सिंह - “ जेतना जल्दी होई सकै मार के घायल करअ ओकरे बाद आंदोलन कै के ओका दियाउब सुरक्षा और ऊ होई जाये अजर - अमर । कौनौ क्रीमत पर घातक हमला न होई चाही । ”

मांधाता सिंह - “ भैया , अनुराग के बताई देई तब ? ”

जनमेजय सिंह - “ का बताई देबअ ? ”

मांधाता सिंह - “ इहै कि तोहरे जान पर ख़तरा बा । ”

जनमेजय सिंह - “ बड़ा बेवकूफ़ हअ यार । ऊ पगलान हाथी हअ , ऊ महवातै के मार दे । इहै चुनाव में मुद्दा बनाई दें और कुल खेल नसाई जाये । ”

मांधाता सिंह - “ अगर राजेश्वर तिरपाठी हमसे पहले मारि देहेन तब ? ”

जनमेजय सिंह - “ अब बचावै वाला और मारै वाला अपने काम पर निकल चुका हयेन । अब जौन बदा होये तौन होये । काल जेतना जल्दी होई सकै

काम करअ । अब गोली तअ एकै तरीके से चले चाहि हम चलाई चाहे
राजेश्वर , एक बचाये बरे चले एक मारै बरे । देखअ अनुराग के तळदीर में
कौन सी गोली बदी बा । हम तू तअ निमित्त मात्र हई असली खेला त ऊपर
वाला खेलत बा । “

अगले दिन शाम 7 बजे डीजे होस्टल के सामने मुझ पर गोलियों से ताबड़तोड़
हमला हो गया । मेरी साइकिल वहाँ पर मिली पर मेरा किसी को अता पता नहीं
। हर जगह एक ही शोर अनुराग शर्मा की शायद हत्या हो गयी । उसी रात
हिंदू छात्रावास में महामन्त्री पद के के दो प्रत्याशियों के मध्य गोली चल
गयी ।

अगले दिन के हर समाचार पत्र में एक ही खबर ... विश्वविद्यालय में कई
जगह गोलीकांड

अनुराग शर्मा पर क्रातिलाना हमला .. अनुराग का कहीं कोई पता नहीं ।
महानता का प्रतीक इलाहाबाद विश्वविद्यालय अराजकता के गर्त में
....विश्वविद्यालय चुनाव घोर हिंसा की ओर ।

दस बजे उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश ने मामले का संज्ञान लेते हुये
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, सरकार और ज़िला प्रशासन को नोटिस जारी
करते हुये अगले दिन सुबह दस बजे उप कुलपति , कमिश्नर इलाहाबाद,
ज़िलाधिकारी इलाहाबाद और पुलिस महानिरीक्षक इलाहाबाद रेंज को अदालत
में व्यक्तिगत रूप से उपस्थिति होने का आदेश जारी कर दिया ।

पूरे विश्वविद्यालय ही नहीं पूरे शहर में दहशत का माहौल , हर तरफ एक ही
चर्चा विश्वविद्यालय को बचाने का अंतिम अवसर भी हाथ से गया , एक
मसीहा आया था वह भी अराजकता की बलि चढ़ गया ।

मेरी साइकिल भी नायक बन गयी । वही साइकिल जिससे मैं पूरा इलाहाबाद
घूमता था और जब मेरा संघ लोक सेवा आयोग का परिणाम आया था तब मैं
उत्तेजना में साइकिल को भूलकर पैदल भागा था । हर समाचार पत्र में गिरी
हुई साइकिल की फोटो ... एक समाचारपत्र ने छापा , “अनुराग को अंतिम
बार इसी साइकिल पर देखा गया । ”

हर छात्रावास- डेलीगसी में वही साइकिल की फोटो वाला समाचार पत्र
सबके हाथ में ।

एक निराशा हर ओर ... पढ़ने- लिखने वाले छात्र घोर निराश .. अब हिंदी की लड़ाई कौन लड़ेगा.... कौन अब आश्वासन देगा उत्साह बढ़ाने के लिये ही सही.....

तुम जन्मे हो एक गैर मामूली दास्तान के लिये ...

हर तरफ़ दो तरह की बातें चल रहीं थीं - एक , अगर लाश नहीं मिली तब वह गयी कहाँ कहीं वह जिंदा तो नहीं , पर अगर जिंदा है तो वह है कहाँ । दूसरी , एक नायक चला गया जो अधूरे और अपूर्ण अक्षरों का भी सम्मान करने वाली भाषा के अस्तित्व और अस्मिता के लिये लड़ रहा था ।

मैं चुनाव के समय भी अपनी क्लॉस प्रतिदिन चलाता था । आज शाम को भी लोग कोचिंग में आये और बहुत गमगीन माहौल था , लोग रो रहे थे ... सबका भविष्य असुरक्षित हो चुका था । दिनेश ने कहा , “ पता नहीं सर जिंदा हैं या नहीं । हम लोग सर के घर चलते हैं । ”

दिनेश ने भावुक होकर कहा , “ सर ने कभी बोधिसत्त्व की विचारधारा को समझाते हुये कहा था , हम सबको बोधिसत्त्व बनना होगा, इस शहर की गरिमा के लिये बार - बार जन्म लेना होगा इस अगर दुर्भाग्यपूर्ण घटना हो गयी है जिसको स्वीकारने को हम सब तैयार नहीं हैं तब इस शहर को अब उस बोधिसत्त्व का इंतज़ार करना होगा .. हम सब सर के ख्वाबों के लिये कार्य करेंगे ”

यह सब पढ़ने वाले छात्र थे .. इनका राजनीति से कोई सरोकार न था .. यह सब अपने भाग्य पर रो ही सकते थे । वह सब मेरे घर की ओर चल दिये ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 297

राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह में एक फ़र्क़ था । जनमेजय सिंह आपराधिक तत्वों और राइफ़लधारियों को साथ रखने में कोई ख़ास परहेज़ न करते थे पर राजेश्वर तिरपाठी थोड़ा छिपे तौर पर उनको संरक्षण देते थे । राजेश्वर तिरपाठी ने सद्ग्रावना सिंह के सहयोग से राज्य सरकार से एक गनर प्राप्त कर लिया था इसलिये वह बहुधा शहर के सार्वजनिक स्थलों पर खुले तौर पर मात्र वही गनर रखते थे पर इनके साथ छिपे असलहे होते थे । वह जब गाँव - देहात के क्षेत्रों में जाते थे तब कई राइफ़ल-दुनाली धारी भी रखते थे । गाँव - देहात में राइफ़ल-बंदूक धारी के साथ चलने वाले लोगों की एक

सामाजिक प्रतिष्ठा होती थी और लोग कहते थे मेरे यहाँ विवाह में पचास बंदूकें आयी थीं। कई बार लोग बंदूक वालों को अपने यहाँ के सामाजिक कार्यक्रमों में आमंत्रित भी कर देते थे ताकि बंदूकों की संख्या बढ़ जाये और यह बंदूक गिनकर यह बताना कि हमारे घर के कार्यक्रम में कितनी बंदूकें आयी थीं एक सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि करता था। राजेश्वर तिरपाठी इसको बखुबी जानते - समझते थे और वह अपने क्षेत्र के हर कार्यक्रम में जाते थे और पूरे लाव - लश्कर के साथ। जनमेजय के पास भी लश्कर की कोई कमी न थी पर वह इस तरह का विभेद नहीं करते थे। जनमेजय सिंह के बारे में सब कहते थे वह यारों के यार हैं पर राजेश्वर तिरपाठी के बारे में लोग कहते थे वह लोगों का अपने हित में इस्तेमाल करने में माहिर हैं और कब किस करवट बैठ जायेंगे कोई नहीं कह सकता। बोलने की कला में मीठा- मीठा बोलने और भैया- भैया करने में राजेश्वर तिरपाठी माहिर थे वहीं जनमेजय सिंह अक्खड़ थे। राजेश्वर तिरपाठी की एक नीति थी कि जब वह किसी आपराधिक कार्य का आदेश देते थे तब वह स्वयं परिदृश्य से दूर हो जाते थे और आदेश को एक चक्र की शृंखला बनाकर देते थे ताकि बात उनके तक न पहुँच पाये। वह आदेश देकर एकदम अलग हो जाते थे और कहते थे मुझे इसकी कोई सूचना भी प्रदान न की जाये, मैं सारी सूचना प्राप्त कर लूँगा यह मेरा कार्य है। यहीं यहाँ भी हुआ। उन्हें रातिर में ही पता कर लिया था कि गोली चल गयी है और अनुराग की लाश नहीं मिली तब वह आश्वस्त हो गये कि अनुराग मारा गया और उसकी लाश को किसी दूर - दराज के जंगल में जला दिया गया होगा, बच्चा सजीवन की अपने कार्य में दक्षता और उसका एक लंबा आपराधिक इतिहास भी राजेश्वर तिरपाठी को कार्य संपादन के प्रति आश्वासन दे रहा था। वह नियमित रूप से हर सुबह अपने आवास पर लोगों से मिलते थे और वही कार्य आज भी कर रहे थे।

बच्चा सजीवन रात को मुझे मारने निकले। वह मुझे कहीं न पाये तो सोचा घर पर ही घुसकर मार देते हैं। वह मेरे घर पर मुझे मारने आये पर घर पर ताला लगा हुआ था और वह रात में रंजन के पास गये और बता दिया कि वह मिला नहीं इसलिये आज मार नहीं सका, कल मार दूँगा। बच्चा सजीवन एक शूटर थे। उनको कुछ पता न था सिवाय इसके कि मुझे मारना है और जंगल में लाश जलानी है।

यह बात रंजन ने जय गोपाल मिश्रा को बताया और जयगोपाल ने हर्ष को। हर्ष भी एक भुलावे में थे और उनको लगा कि ऑपरेशन अनुराग हो गया और पेपर ने तक़रीबन वैसा ही छापा था जैसा इनकी प्लानिंग थी कि लाश मिलनी नहीं चाहिये। पर यह समाचार तो उल्टा निकला और यह सुनते ही इनके होश उड़ गये। वह भागे - भागे राजेश्वर तिरपाठी के पास गये। राजेश्वर तिरपाठी इनको देखते ही समझ गये कि काम में कुछ झोल हो गया है और

समाचार पत्र की खबर वह नहीं है जो हकीकत है । राजेश्वर तिरपाठी हर्ष को घर के भीतर ले गये और पूछा, “ का भवा ? ”

हर्ष तिवारी - “ बच्चा सजीवन के पहले किसी ने खेल कर दिया । ”

राजेश्वर तिरपाठी-“ मतलब अनुराग ज़िंदा है । ”

हर्ष तिवारी - “ कैसे पता ? ”

राजेश्वर तिरपाठी-“ अगर सजीवन ने नहीं मारा और क़रार मारै के आज भअ रहा तब काल गोली के चलायेस ? ऊ जनमेजय सिंह के साथ बा और जनमेजय कुल खेल बताई के ओका अपने संगे लै गयेन । जनमेजय घात कै दहेन । ”

अब एक नयी चिंता हर्ष को , कहीं जनमेजय ने यह बता दिया कि मारने की बात हुयी थी और राजेश्वर तिरपाठी कहे थे मारने को तब क्या होगा ? यह चिंता हर्ष तिवारी ने राजेश्वर तिरपाठी को बतायी ।

राजेश्वर तिरपाठी- “ हम त कहा नाहीं तू मारअ अनुराग के । भरत कहेन और जनमेजय तैयार भयेन । ई गोलीकांड के ड्रामा तअ जनमेजय के बा । जा जल्दी से सत्य प्रकाश के लै के आवअ ”

सत्य प्रकाश पांडे , रमेश शर्मा , संतोष सिंह सब आ गये । राजेश्वर तिरपाठी ने कहा भीड़ इकट्ठा करअ , मंच लगावत कलेक्टरेट के सामने हम आवत हई ।

ज़िलाधिकारी से यह लोग मिले और ज़िलाधिकारी को ज्ञापन दिया । परिस्सर में अपराधियों पर नकेल कसी जाये इसका अनुरोध किया । वह लोग ज्ञापन देकर निकले और राजेश्वर तिरपाठी ने पहली बार मंच सभाला इस चुनाव में और कहा , “ मेरा विश्वविद्यालय की राजनीति से कोई संबंध नहीं है पर में अपनी इस मातृ संस्था पर होने वाले किसी हमले का पुरज़ोर विरोध करूँगा । परिस्सर को अपराधियों और शहर के बाहर से आये लोगों से मुक्त कराया जाये । अगर कल तक ज़िला प्रशासन कार्यवाही नहीं करेगा तब मैं भूख हड़ताल पर बैठूँगा । ”

राजेश्वर तिरपाठी ने भाषण देने के बाद कहा , “ सब लोग छात्रावास छोड़ दअ और महिला छात्रावास के पास के बैरिस्टर राम सेवक उपाध्याय के बँगले से काम करो । संतोष चुनाव संचालन अब बेलवेड़ियर परेस वाली बिल्डिंग से करअ । ”

यह कहकर राजेश्वर तिरपाठी चले गये ।

लखनऊ में विधान सभा में इलाहाबाद के विपक्षी विधायकों ने यह मुद्दा उठा दिया और सरकार से जवाब माँगा । सरकार के पास पूर्ण बहुमत न था वह

सर्वजन दल के समर्थन पर टिकी थी । सर्वजन दल ने भी इलाहाबाद के मुद्दे पर सरकार को स्पष्टीकरण देने की माँग की और ज़िला प्रशासन के अधिकारियों पर बिगड़ती क़ानून - व्यवस्था की ज़िम्मेदारी डालते हुये उनके खिलाफ़ कार्यवाही पर विचार करने की बात कही ।

सरकार ने उचित कदम उठाने का आश्वासन दिया । मुख्यमंत्री ने कमिश्नर को फ़ोन किया और मामले का संज्ञान लेते हुये कहा कि वह बहुत प्रतिभाशाली लड़का था । उसका भाषण मैंने आपके विमोचन में सुना है वह बहुत बहुत प्रभावी था , ऐसा कैसे उसके साथ कैसे हुआ । पकड़ो अपराधियों को । वह अगर मर गया होगा तब बहुत समस्या होगी ।

कमिश्नर साहब के तो होश उड़ गये कि यह क्या हो गया । उनको हमेशा ही अपने दरांसफ़र का भय लगा रहता था । किसी सरकारी अधिकारी की सबसे बड़ी चाहत यही होती है कि उसके अनुकूल का यथास्थितिवाद बना रहे । उनको यथास्थिति के बदलने का भय हो गया । उन्होंने राजेश्वर त्रिपाठी, जनमेजय सिंह , सत्य प्रकाश पांडे, मांधाता सिंह , केशव यादव . एसएफआई के धर्मेंद्र सिंह , आईसा के यशस्वी बाजपेई, विद्यार्थी परिषद के संयोग मालवीय सबको बुलवाया और परिसर में उत्तेजक माहौल रोकने की अपील की । यह भी बताया कि उच्च न्यायालय ने कल सबको सुबह दस बजे तलब किया है । कमिश्नर साहब इतने डरे हुये थे कि उन्होंने अनुरोध किया कि अनुराग का आप लोग भी पता करो , उसकी असुरक्षा सबको समस्या में डाल देगी ।

कमिश्नर साहब के यहाँ से निकलते ही राजेश्वर त्रिपाठी ने पूछा जनमेजय सिंह से

“ कौन मारा ? ”

सारा खेल जनमेजय सिंह के अनुसार चल रहा था उन्होंने कहा , “ मुझे नहीं पता । हमार तअ करार आज के रहा । ”

राजेश्वर त्रिपाठी ने कहा , “ जनमेजय समय बहुत कठिन बा हमका - तोहका मिल कर चलय के पड़े । पता करअ अनुराग कहाँ बा । ऊ मरा नाहीं बा । ”

जनमेजय सिंह - “ कतौं ई नाटक अनुराग खुदै त नाहीं फैलाये हयेन । ओनकर नाटक के कौनौं सीमा नाहीं बा । ”

राजेश्वर त्रिपाठी ने कहा , “ नाहीं ऊ ई काम न करे । ई काम करै बरे पिस्तौल-गोली ई सब चाही ओका कहाँ से मिले जब तक केउ सहयोग न दे । ”

जनमेजय सिंह - “ ऊ कुछ भी कै सकत हअ । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ भरत के बोलावअ ओनकर सूचना - तन्त्र अपराधियन में तगड़ा बा , ओ पता लगाई देझहिं ई गोली के चलायेस । ”

जनमेजय सिंह - “ ओनके बाबू के तबियत ख़राब रही ओ रात के चला गयेन बनारस । ”

राजेश्वर तिरपाठी की चाल क्रामयाब हो गयी वह समझ गये भरत सिंह ने गोली चलायी और अनुराग को मारा नहीं है । वह यह भी समझ गये कि जनमेजय को उनकी प्लानिंग का अंदाज़ा हो गया था इसलिये यह सारा काम पहले ही कर दिया ।

मेरे घर पर पुलिस , छात्र नेताओं और पत्रकारों की भीड़ लगने लगी और पूरा मुहल्ला कौतूहल से सब देख रहा । मेरे घर पर ताला बंद था । पुलिस - पत्रकारों ने बहुत कोशिश की मेरे बारे में पता लगाने की पर किसी ने मुँह नहीं खोला । लोगों ने अगले दिन पेपर में मेरे घर की भी तस्वीर छाप दी यह लिखते हुये अनुराग का पूरा घर नदारद .. ख़तरा पूरे परिवार पर ..

अगले दिन पूरा उच्च न्यायालय छातरों , वकीलों पत्रकारों , विश्वविद्यालय प्रशासन और ज़िला प्रशासन से भरा हुआ । मुख्य न्यायाधीश ने पहली कार्यवाही इसी केस से आरंभ की और सवाल पूछा विश्वविद्यालय के अधिवक्ता राम स्नेही सिंह से

“ अनुराग शर्मा कहाँ हैं ? ”

राम स्नेही सिंह - “ मी लॉर्ड वह कहाँ हैं यह नहीं पता अभी । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ कौन पता लगायेगा ? ”

राम स्नेही सिंह - “ ज़िला प्रशासन । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ आप क्यों नहीं ? ”

राम स्नेही सिंह - “ यह कानून व्यवस्था का मामला है । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ आप लिख कर दे दो मुझसे यह विश्वविद्यालय नहीं चल रहा , मैं उचित प्रबंध का आदेश पारित कर देता हूँ । ”

एक शांति छा गयी हर ओर ।

मुख्य न्यायाधीश ने पूछा कौन है ज़िला प्रशासन की ओर से ।

सरकार की ओर से महाधिवक्ता विनोद मिश्रा उपस्थित हुये । उनसे पूछा , “ आपने क्या प्रबंध किया शांति पूर्ण चुनाव का । ”

महाअधिवक्ता कुछ बोलें मुख्य न्यायाधीश के कान में दूसरे न्यायाधीश ने कुछ कहा और उन्होंने सकारात्मकता में सिर हिलाया ।

मुख्य न्यायाधीश- “ अनुराग शर्मा कहाँ हैं ? ”

महा अधिवक्ता- “ मी लॉर्ड कुछ पता नहीं । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ आप पता करो । ”

कल दिन में एक बजे तक आप एक एफीडेविड फाइल करो कि चुनाव शांतिपूर्ण किस तरह आप करायेंगे , कैसे अराजक तत्वों से परिसर को मुक्त करेंगे और अनुराग शर्मा को न्यायालय के सम्मुख प्रस्तुत करो । ”

कोर्ट ने मामला कल के लिये मुल्तवी कर दिया ।

सबके पसीने छूट गये कल तक अनुराग मिले कैसे , अगर ज़िंदा है तब भी । अगर मर गया होगा तब तो बड़ी समस्या । न्यायालय परिसर में इतनी बड़ी भीड़ थी कि बाहर निकलना आसान न था । पत्रकारों ने कमिशनर साहब को धो डाला ।

“ क्या अनुराग की हत्या हो गई ”

“ अगर नहीं तब वह कहाँ हैं ? ”

“ क्या प्रशासन हत्या का दोषी नहीं है ? ”

“ अनुराग को अंतिम बार कब देखा गया और किसने देखा ? ”

डीजे होस्टल के सामने के लेन में गोली चली अभी तक कोई चश्मदीद गवाह क्यों नहीं मिला ? ”

कमिशनर साहब ने कहा , “ मामले की विवेचना चल रही है । शीघ्र ही परिणाम आयेगा । ”

“ क्या कल अनुराग न्यायालय के सम्मुख उपस्थित होंगे ? ”

कमिशनर- “ प्रशासन को अपना काम करने दीजिये , हम लोग पूरी कोशिश कर रहे हैं और न्यायालय के हर आदेश का पालन किया जायेगा । ”

यह कहकर कमिशनर साहब आई जी रेंज के साथ कार में बैठ गये ।

कमिशनर साहब ने बैठते ही आईजी रेंज के पी सिंह से कहा , “ बहुत प्रतिभाशाली लड़का था । मैंने अपनी कुछ कहानियाँ उसको दी थीं पढ़ने के लिये । उसकी साहित्यिक दृष्टि बहुत ही तीक्ष्ण थी । कहाँ वह उलझ गया इन अराजक तत्वों से । ”

आईजी साहब - “ कोई तो मुद्दा उठायेगा ? कब तक ऐसा ही चलता रहेगा । हर कोई यही कहता है इनसे न उलझो इसीलिये पूरी व्यवस्था को यह लोग तबाह किये हैं । वह चुनाव जीते या हारे उसने अराजकता के माहौल पर एक बहस तो खड़ी कर दी । इस मामले पर विचार तो हो रहा । इन छात्र नेताओं का एक ही काम है लोगों को डराकर रखना , शहर के कोचिंग इंस्टीट्यूट और नर्सिंग होम से उगाही करना और छात्रों की भीड़ का बेजा इस्तेमाल करना । मैंने कोई सकारात्मक कार्य तो इन सबको करते देखा नहीं । इस उप कुलपति के खिलाफ तमाम जाँच चल रही हैं पर किसी छात्रनेता ने कोई सवाल क्यों नहीं उठाया ? यह तो सब जानते ही हैं जाँच प्रक्रिया की भी अपनी कुछ सीमायें होती हैं वह भी कई नियम - क्रान्तुन को बंधक होते हैं और मसले का त्वारित निस्तारण नहीं होता । इस विश्वविद्यालय को एक ज्ञानवान एवम् सख्त प्रशासक चाहिये । ”

कमिश्नर- “ ज्ञानवान भी हो और सख्त भी , यह कहाँ से मिलेगा ?

कमिश्नर साहब बहुत ही चिंतित थे और कहा .. “पता करो केपी अनुराग है कहाँ । वह मरा नहीं है । जिन लोगों ने गोली चलायी वह मारना नहीं चाहते थे नहीं तो मार ही देते । ”

आईजी साहब - “ यह कहना मुश्किल है । कई बार आदमी मारना चाहता है पर परिस्थिति ऐसी बन जाती है वह मार नहीं पाता । जहाँ गोली चलायी गयी वह भीड़-भाड़ वाला इलाक़ा था । हो सकता है मारने वाले नौसिखिये रहे हों और भीड़ देखकर घबड़ा गये हों । ”

कमिश्नर साहब - “ अगर अनुराग मरा है तब यह काम किसी बहुत ही दक्ष अपराधी का है क्योंकि मारना और लाश को उठा ले जाना एक प्रशिक्षित सा अपराधी ही कर सकता है अगर वह ज़िंदा है तब आपकी बात सही है । पूरी पुलिस मशीनरी लगाइये पता करिये । मुहल्ले वालों से पूछिये कब देखा है उसको अंतिम बार । जब सब लोग ताला बंद करके जा रहे थे तब किसी ने देखा ही होगा । ”

आईजी साहब - “ पूरा मुहल्ला दहशत में हैं और कोई कुछ भी बोलने को तैयार नहीं है वैसे भी जब पुलिस के हाथ में मामला आ जाता है तब लोग पुलिस से सहयोग कम करते हैं क्योंकि उनको लगता है कि वह भी कहीं लपेटे में न आ जायें । हम कोशिश कर रहे, बहुत से अपराधियों को पकड़ा है पता करने के लिये किसने मारने का आदेश दिया । यह है तो चुनाव से ही जुड़ा मामला नहीं तो एक पढ़ने- लिखने वाले लड़के की किसी से क्या रंजिश हो सकती है । ”

कमिश्नर साहब - “ हाँ, बात तो आपकी ठीक है । उसकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं हो सकती , मैं उसको व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ । ”

ऑफिस पहुँच कर कमिशनर साहब ने ज़िलाधिकारी और एसएसपी को एक साथ बुलाया और कहा सारे छात्रावासों पर छापा मारों । शहर में जो भी गाड़ी यूपी 70 नंबर के अलावा की हो उसकी तलाशी लो जाँच करो और कोई शक हो तुरंत गिरफ्तार करो । कल सुबह तक सारे छात्रावासों को अनधिकृत रूप से क़ाबिज़ हुये लोगों से खाली कराओ । उनके जाते ही कमिशनर ने उप कुलपति, रजिस्ट्रार, डीन को बुलाया और अपना फ़ैसला बताया और एफिडेविट दिखाया जिसमें इन सारे कदमों को उठाने के बारे में लिखकर कल न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करना था । यह भी अनुरोध किया कि आप लोग सहयोग दीजिये । उप कुलपति ने सहयोग का पूरा आश्वासन दिया ।

सारे छात्रावासों में छापे पढ़ने लगे । बहुत से असामाजिक तत्व गिरफ्तार हुये । हथियारों का ज़खीरा पकड़ा गया । विश्वविद्यालय के छात्रावासों में अवैध रूप से बहुत से लोग रहे रहे थे । कई लोगों के नाम कई - कई कमरे होस्टलों में थे और कई लोग बगैर आबंटन के क़ब्ज़ा किये थे । कई लोग विश्वविद्यालय छोड़कर जा चुके थे पर उनके नाम पर कमरे आबंटित थे । दो पुलिस रिकार्ड्स में फ़रार अपराधी भी गिरफ्तार हुये । पूरे विश्वविद्यालय परिसर में हर ओर दहशत का माहौल ।

मैं अब लोकल न्यूज़पेपर से राष्ट्रीय समाचार पर आ गया । बीबीसी ने इलाहाबाद पर एक स्टोरी करके एक न्यूज़ बुलेटिन जारी कर दी । न्यूज़ बुलेटिन ने मुझको बहुत ख्याति प्रदान कर दी । मेरी चर्चा हर ओर थी । दिल्ली के समाचार पत्रों ने भी यह सारी खबर छाप दी और दिल्ली के एक समाचार पत्र ने लिख दिया, छात्र संघ अध्यक्ष पद के प्रत्याशी अनुराग शर्मा की हत्या हो गयी । यह समाचार मसूरी भी पहुँच गया । चिंतन सर और बद्री सर ने समाचार का हवाला देकर निदेशक से अवकाश माँगा, इलाहाबाद जाने के लिये । निदेशक को मेरे तार की याद दिलायी और बताया कि मैं इसी लड़के की ज्वाइनिंग की बात कर रहा था । उधर आंटी भी समाचार पढ़कर हैरान हो गयी । आंटी भी इलाहाबाद चल दी ।

समाचार पत्रों ने बहुत सनसनी फैला दी थी । दिन के एक बजे तक मुझे न्यायालय के समुख प्रस्तुत करना था पर मेरे बारे में कुछ पता न चल रहा था । सुबह नौ बजे ज़िले के सारे अधिकारियों की बैठक हुयी पर किसी के पास कोई सूचना न थी । मुख्यमंत्री पर भी विपक्ष का दबाव था और न्यायालय के समुख आज उपस्थित होना था पर किसी का कोई दिमाग़ काम नहीं कर रहा था । अंत में यह फ़ैसला हुआ कि आज न्यायालय को सारे कार्यों के बारे में बताया जाये और एक दिन का समय और माँग लिया जाये ।

सुबह ही महाधिवक्ता ने सारे कार्यों का ब्योरा दिया, एफीडेविट फ़ाइल किया और मुझे न्यायालय के समुख पेश करने के लिये एक दिन का अतिरिक्त

समय माँगा । न्यायालय ने बहुत फटकार लगाई और अगले दिन दो बजे का समय दिया और कहा किसी भी हालत में अनुराग के बारे में सूचना दी जाये । उसको न्यायालय के समुख प्रस्तुत किया जाये । शाम को एक मीटिंग फिर हुई और यह पता नहीं चल पा रहा था कि अनुराग गये कहाँ । सुबह उठते ही कमिश्नर साहब का दिमाग़ कौंधा । उनको मेरे मामा की याद आयी । उन्होंने आदमी भेजकर मेरे मामा को अपने आवास पर बुलवा लिया । मामा पहले तो छिपाते रहे पर वह कमिश्नर की कड़ी निगाहों के सामने टूट गये और रोने लगे कि लोग उसको मार डालेंगे । कमिश्नर साहब बहुत अनुभवी और पहुँची हुई चीज़ थे उन्होंने मामा से पता करवा लिया कि मैं कहाँ हूँ । मामा ने बता दिया कि पूरा परिवार बहुत डरा हुआ है और वह मेरी बड़ी बहन के घर में है । कमिश्नर को जैसे जीवनदान मिल गया हो । उन्होंने बड़े बाबू से कहा कि कलेक्टर को बुलाओ । कलेक्टर भागते हुये आ गये । उनके आते ही कहा कि अनुराग मिल गया है पर इसको प्रेस से बचाना है और सीधा न्यायालय लेकर चलना है । आप सर्किट हाउस खाली कराओ । सर्किट हाउस में जो भी रुका है कहीं और उन सबको हटाओ । किसी को अभी मत बताओ , किसी भी हालत में यह समाचार लीक नहीं होना चाहिये । कलेक्टर जी सर कहकर चले गये । कमिश्नर साहब ने मामा को घर पर ही रोका और वह उनके साथ लेकर अपने ऑफिस गये और वहीं से कलेक्टर आई जी इलाहाबाद और कलेक्टर को लेकर मेरे मौसी के यहाँ पहुँच गये ।

मेरी माँ उनको देखते ही घबड़ा गयी और चीख़ने लगी , “ साहब सब लोग मिलके मार देझहिं । हम गरीब आदमी हई हमका जियई खाई दअ । जैसन कहबअ वैसय करब । ई चुनाव - उनाव कुछ न लड़े । हमरे लड़िका के बचावअ । ई कुछ गलत नाहीं केहे बा । ”

वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगी । मैंने माँ को इस तरह रोते कभी न देखा था । वह बहुत ही परेशान थी । उसको हर समय लगता था कोई आयेगा और मुझको मारकर चला जायेगा । वह सारी रात किसी भी आहट पर घबड़ा जाती थी । वह अपना मानसिक संतुलन खो ऐसा चुकी थी ।

कमिश्नर साहब मेरे विवाह के लिये कई बार आये थे , उनका भी मुझसे लगाव था ही । जब उनकी किताब छप रही थी तब मैं उनके घर बहुत जाता था और कई बार तो कई - कई घंटे रहा हूँ । कमिश्नर साहब ने कहा , “ माता जी मैं हूँ आपके काहे परेशान हो , अनुराग मेरा छोटा भाई है । ”

कलेक्टर अशोक पिरयदर्शी और आई जी रेंज के पी सिंह मुझे विस्मय से देख रहे थे कि यह दुबला - पतला सामान्य सी कद - काठी का लड़का इतना प्रभावशाली हो गया है कि वह पूरी सड़ी- गली व्यवस्था के सरमायेदारों के लिये खतरा हो गया है । केफी सिंह साहब ने कहा , “ माता जी आप चिंता न करें । अनुराग को कुछ न होगा । हम सब हैं । ”

कमिश्नर साहब ने पूछा सब हुआ कैसे ?

मैं पूरा क्रिस्सा बताने लगा ।

“ मैं डीजे होस्टल के सामने के चर्च लेन में साइकिल मोड़कर घर की तरफ आ रहा था कि हवा में गोलियाँ चलने लगीं । मैं कुछ समझ पाता कि एक गोली मेरे बाँह को छूकर निकली और मैं सड़क पर गिर गया । इतने में एक ने कहा खुन गिर गया अब निकलो । मैं उठा और बदहवास चर्च लेन पर भागने लगा । मेरे बाँये हाथ से खून गिर रहा था । मैं चिल्डरेन अस्पताल के अंदर छिप गया इस डर से कि वह मेरा पीछा कर रहे होंगे फिर मैं चिल्डरन अस्पताल के पीछे से कूद

कर घर की तरफ भागा । मैं बहुत डरा हुआ था । घर में घुसते ही माँ से कहा वह सब मुझे मार डालेंगे ... वह सब मुझे मार डालेंगे । ... मैं यही लाइन लगातार बोल रहा था और मेरे हाथ से खून गिर रहा था । मैं कुछ और बोल ही नहीं पा रहा था । मैंने कहा वह लोग मेरे पीछे आ रहे हैं वह हम सबको मार डालेंगे । घबड़ाहट में हम सब लोग घर से भागकर मौसी के यहाँ आ गये । ”

मेरे बताने के ढंग से भी मेरा डर साफ़ देखा जा सकता था । मेरे हाथ में पट्टी बँधी थी । केपी सिंह साहब ने पूछा यह कहाँ बँधवाई । मौसा के मुहल्ले के एक डाक्टर ने वह पट्टी बँधी थी । गोली ऐसी लगी थी कि धाव गहरा नहीं था ।

कमिश्नर साहब ने कहा , “ चलो मेरे साथ । ”

माँ फिर चीखने ऐसी लगी , “ नहीं साहब न लै जा , सब मिलि के मारि देझहिं । ”

कमिश्नर साहब ने पिताजी से कहा , “ आपने पेपर पढ़ा ही होगा । अनुराग को न्यायालय के सम्मुख पेश होना है । यह न्यायालय का आदेश है अगर हम नहीं करेंगे तब हम सब अवमानना के दोषी होंगे । ”

पिताजी कुछ कहें माँ फिर वही दुहराने लगी । पिताजी समझाना चाह रहे थे पर वह कुछ समझ नहीं रही थी । मैंने कहा , “ माँ जाना पड़ेगा । यह न्यायालय का मामला है । ”

माँ बोली , “ हमहूँ चलब / हम अकेले न जाईं देब । ”

कमिश्नर साहब ने कहा , “ ठीक है माँ जी आप भी चलें । ”

हम लोग चल दिये सर्किट हाउस की तरफ । वहाँ पर मेरी चिकित्सीय जाँच करायी गयी और मुख्य चिकित्साधिकारी से एक प्रमाण पत्र ले लिया गया न्यायालय के सम्मुख परस्तुत करने के लिये । मेरे सर्किट हाउस पहुँचने के

कुछ देर बाद यह समाचार कुछ पत्रकारों को मिल चुका था कि अनुराग ज़िंदा है और उसको न्यायालय में नियत समय पर पेश किया जायेगा । सारे पत्रकार न्यायालय पहुँच गये । पर धीरे - धीरे यह सूचना फैलने लगी कि अनुराग सर्किट हाउस में है और सर्किट हाउस के सामने की सड़क लोगों से भरने लगी । मैं माँ के साथ दिन में बारह बजे उच्च न्यायालय की तरफ के पी सिंह साहब की कार में चला । मैं जैसे ही उच्च न्यायालय के गेट पर पहुँचा लोग मेरी एक झलक के लिये दीवाने थे, मेरी तस्वीर लगातार ली जा रही थी । मैं महाधिवक्ता के चैंबर में गया और महाधिवक्ता ने मुझे समझाया कि कैसे न्यायालय में बोलना है और कहा चिंता मत करना मैं रहूँगा आपके साथ । उसके बाद उच्च न्यायालय के उस न्यायालय कक्ष में गया जहाँ मामले की सुनवाई होनी थी । न्यायालय कक्ष पूरी तरह से भरा था और तिल रखने की भी जगह न्यायालय कक्ष में न थी ।

मुख्य न्यायाधीश ने पूछा ...

अनुराग शर्मा मिले ?

महाधिवक्ता- “ यस मी लॉर्ड । ”

“कौन है अनुराग शर्मा ... ”

मैं अपनी योजना बना चुका था ... आज फिर एक जीवन में नया दिन था

मैं हाथ उठाकर संज्ञान दिया ।

मुख्य न्यायाधीश ने पूछा किसने हमला किया तुम पर

मैं - “ मी लॉर्ड कहानी लंबी है । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ बताइये । ”

मैं अपनी रौ में आ चुका था अब एक और अवसर था जीवन में विरोधियों को समाप्त करने का । पर इस बार मैंने शासन और व्यवस्था पर हमला करने का फ़ैसला किया ।

मैंने माँ की तरफ देखा वह सिर्फ़ मेरी ही तरफ देख रही थी ।

एक ऐसी दास्तान को मैं अपने लफ़ज़ों से लिखने लग गया जो आज़ाद भारत के इतिहास में कम ही लिखी गयी होगी ..

मेरा संबोधन एक सम्मोहन को अपने में समाहित किये हुये लोगों की ओर प्रति पल बढ़ रहा था

एक शब्दों की विजय यात्रा आरंभ हो चुकी थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 298

“ मी लॉर्ड यह एक निम्न मध्य वर्गीय परिवेश की कहानी है जिसमें ख्बाब बंद आँखों में ही नहीं खुली आँखों में भी आते थे । मैंने या कहें मेरी माँ ने मेरे जन्म से पहले एक ख्बाब देखा था जब मैं गर्भ में था और प्लेसेंटा से खाना ही नहीं वह ख्बाब भी वह भेजती थी यह कहते हुये , तुझे आईएएस ही बनना है और मेरा ही नहीं हर माँ का दुःख तुझे समझना होगा । मैंने जीवन में बचपन से एक ही ख्बाब देखा या मुझे एक ही ख्बाब दिखाया गया कि तुझे आईएएस ही बनना है । ईश्वर की कृपा थी , पिता का पुण्य था , माँ के सत्कर्म थे मुझे इस वर्ष की सिविल सेवा परीक्षा में 102 रैंक की प्राप्ति हुई और देश की प्रतिष्ठित नौकरशाही का भाग बनने का आमंत्रण मिला । पर उसी समय मुझे अपने हित से अधिक समाज की उपेक्षित भाषा के सहारे आगे बढ़ने वाले छात्रों के हित का ख्याल आया और मैंने हिंदी माध्यम के छात्रों के भविष्य के लिये सेवा को त्यागने का निर्णय किया । मैंने अपने परिवेश की उन तमाम ख्बाहिशों को एक अपने ही बनाये मक्तुल में क़त्ल किया और बहते हुये रक्त पर अपने कदमों के निशाँ को बनाते हुये बेपरवाह आगे बढ़ गया बग़ैर इस बात का ख्याल किये यह बह रहा रक्त किसकी ख्बाहिश का है । मैं अपनी एक छोटी सी बग़ैर तामझाम की कोचिंग , विश्वविद्यालय परिसर , महिला छात्रावास में नियमित पढ़ाने लगा और गाहे- बेगाहे होस्टलों में पढ़ाता था । मेरे दिन का अधिकांश भाग पढ़ाने में ही जाता था । वहीं पर मुझसे एक भूल हो गयी । मैं एक अपरिक्व कदम उठा गया , अति उत्साह में । मैंने समाचार पत्रों के माध्यम से शहर में चल रही गुणवत्ता विहीन कोचिंग संस्थानों पर हमला करने लगा और अपनी हैसियत से बड़ी बातें करने लगा । एक दिन मैंने कह दिया कि मैं सारी कोचिंग संस्थानों पर ताला लगा दूँगा । मी लॉर्ड इस देश में कई माफ़िया हैं उसी में एक बड़ा माफ़िया है एजूकेशन माफ़िया । वह माफ़िया इस समय बहुत ताक़तवर हो चुका है । दिल्ली के राजेन्द्रनगर , मुखर्जी नगर , कोटा , इलाहाबाद में वह कोचिंग के नाम पर फल फूल रहा है तो देश के कोने - कोने में शिक्षा के प्रारम्भिक , मध्य और उच्च स्तर पर शिक्षा का आश्वासन देकर । इतिहास में अगर झूठे आश्वासनों का एक संग्रह किया जाये तब सबसे बड़ा भाग उस संग्रह पुस्तिका का पिछले दो - तीन दशकों में इन झूठ बोलने वालों के दिये गये झूठे आश्वासनों से भर जायेगा । एक गठजोड़ है छात्र नेताओं एवम् कोचिंग संस्थानों का । कोचिंग संस्थानों के इशारे पर मेरी कोचिंग बंद करायी गयी वहाँ पर गोली चलायी गयी । विश्वविद्यालय प्रशासन ने उनके दबाव में मेरी सारी कक्षायें निरस्त कर दी और मुझे पढ़ाने से अयोग्य

घोषित कर दिया गया , वह भी तब जब छात्र पढ़ना चाहे रहे थे और मैं पढ़ाना चाहे रहा । बाज़ार डिमांड और सप्लाई के सिद्धांत पर चलता है । इस सिद्धांत की फ़िक्र इस विश्वविद्यालय प्रशासन को बिल्कुल नहीं है और अगर कोई कुछ करना चाहे तब उसके लिये प्रतिकूल परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है । मैंने बहुत कोशिश की उप कुलपति से मिलने की पर उप कुलपति के सचिव हर बार कहते थे , सर के पास मिलने का समय नहीं है । मुझे यह लगा कि यह सचिव मुझे मिलने नहीं दे रहे हैं नहीं तो कोई उप कुलपति अपने छात्र से मिलने से इंकार करेगा । मैंने एक स्पीड पोस्ट किया उप कुलपति के नाम और अपनी मिलने की इच्छा और मिलने के कारण का एक विस्तृत उल्लेख किया । मैं तीन दिन बाद पुनः उप कुलपति कार्यालय गया और सचिव से कहा मैंने स्पीड पोस्ट किया था सर को मिल गया होगा मुझे मिलने का समय चाहिये । सचिव ने कहा , आपका स्पीड पोस्ट मिल गया है और सर ने कहा है जब समय होगा तब मिलने का समय दिया जायेगा । “

मुख्य न्यायाधीश- “ आपके पास स्पीड पोस्ट की कॉपी है ? ”

मैं- “ मेरे पास कॉपी भी है और डॉक विभाग की रसीद भी है । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ आप उसको कल फाइल कर दें । ”

मैं- “ अवश्य कर दूँगा । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ carry on ” .

“ मी लॉर्ड यह एक बहुत ही अफ़सोस की बात है कि एक छात्र को अपने उप कुलपति से मिलने के दिये दर- दर की ठोकरें खानीं पड़ रही है । इस विश्वविद्यालय की उप कुलपति पद को सर गंगा नाथ झा , ए एन झा , सर सुंदर लाल ऐसे महान शिक्षाविदों ने सुशोभित किया उसी कुर्सी पर बैठे कुलपति किस विधा के ज्ञाता हैं यह किसी को पता नहीं । मैं एक बदलाव की आँधी लाना चाहता हूँ , पता नहीं ला पाऊँगा या नहीं पर मेरे हाथ हवा में उठे ज़रूर हैं एक आँधी के लिये पर जिसको इस हाथ को सहेजना चाहिये वह उन्हीं हाथों को काट रहा है ।

जब मैं हर ओर से निराश हो गया तब मैंने छात्रसंघ का चुनाव लड़ने का फ़ैसला किया और सारे नियम क्रान्तुर को छात्रविरोधी घोषित करके अपनी कोचिंग पुनः आरंभ कर दी और विश्वविद्यालय में पढ़ाना शुरू कर दिया । मेरे पास पढ़ने वाले छात्रों का समर्थन है इसलिये उनकी नाराज़गी के डर से चुनाव तक यह सब शांत हैं पर चुनाव के बाद वही सर्कुलर फिर लगेगा और मेरी कोचिंग पर हमला पुनः होगा । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ आप को कुछ पैसा मिलता है विश्वविद्यालय से ? ”

मैं “ नहीं । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ कोचिंग से ? ”

मैं “ वहाँ भी कोई पैसा शर्त नहीं है पर कभी कोई सौ - दो सौ रुपया दे देता था पर वह भी सब बंद कर दिया । पैसा मेरे पढ़ाने के लिये कोई शर्त नहीं है । यह भी एक कारण है कोचिंग संस्थानों के भय का कि अगर बगैर धन के आदान- प्रदान के गुणवत्ता युक्त पढ़ाई प्राप्त होगी तब तो इन गुणवत्ताहीन संस्थानों को बंद होना ही होगा । ”

मुख्य न्यायाधीश- “ आप बगैर पैसे के क्यों पढ़ाना चाह रहे जबकि इतनी समस्या है सारे कार्य में ? ”

मैं - “ मैं और मेरा पागलपन दोनों ही ज़िम्मेदार हैं मेरी इस विपदा के लिये । पर मैं अपने इस पागलपन से हद दर्जे तक मुहब्बत करता हूँ और अगर यह पागलपन मेरे जीवन से निकाल लिया जाये तब मेरा शरीर ऑक्सीजन को वातावरण से सोखने वाली एक निरर्थक काया से अधिक कुछ न होगा । ”

मुख्य न्यायाधीश ने पूछा , “ सर्कुलर हैं यहाँ पर ? ”

राम स्नेही सिंह - “ मी लॉर्ड, वह है नहीं पर हम फ़ाइल कर देंगे । ”

जवाब पूरा सुने बगैर कहा उसको दो घंटे में प्रस्तुत किया जाये । मुझसे पूछा , फिर क्या हुआ ?

मैं “ मी लॉर्ड मैंने चुनाव के लिये नामांकन अवश्य कर दिया पर मेरी चुनाव में कोई रुचि न थी और न है । मेरी अध्यक्ष बनने की कोई ख्वाहिश नहीं है । मैं कोई चुनाव प्रचार नहीं करता , मैं कोई वोट नहीं माँगता , मैंने न कोई पोस्टर लगाये न बैनर । मैंने सिर्फ़ इसलिये चुनाव लड़ने का फ़ैसला किया कि मुझे इस चुनाव से पढ़ाने में मदद मिलेगी और तात्कालिक रूप से सहलियत हुई भी पर मैं यह जानता हूँ चुनाव के बाद यह अध्यापन कार्य बंद हो जायेगा । वह सर्कुलर एक रास्ते का अवरोधक है ही जो कह रहा कि मात्र रिसर्च स्कॉलर ही अध्यापन कर सकते हैं जबकि हकीकत यह है कई रिसर्च स्कॉलर मेरी कक्षा में पढ़ने आते हैं । मैंने चुनाव लड़ने के संकल्प के बाद पहला प्रयोग किया अमेरिकी राष्ट्रपति के तर्ज पर डिबेट कराया जाये और छात्रों का सहयोग मिला । मैं मुझे उठाने लगा और यह लोग मुझे पर नहीं लड़ पा रहे थे । एक नयी नीति शास्त्ररार्थ की इजाद की गयी और वह लोग उसमें पूरी तरह पराजित हुये । मैंने चुनाव बहिष्कार का आह्वान किया । यह छात्रसंघ एक अनावश्यक संस्था बन चुकी है । पिछले दस - पन्द्रह सालों में इसने समाज और छात्र के हित में कोई कार्य नहीं किया । इस संस्था ने पहले कभी देश को नेतृत्व दिया होगा पर अब यह देश को नेतृत्व के नाम पर अपराधी , अशिक्षित और असंस्कारित लोग दे रही है । यह राजनैतिक प्रयोगशाला अब कोई प्रयोग समाज के हित में नहीं करती और सत्प्युरिक

एसिड्युक्ट हानिकारक उत्पाद को समाज में प्रवाहित कर रही जो समाज के चेहरे पर एक बदनुमा दाग बना रही । इस राजनैतिक संस्थान से निकले तमाम उत्पाद समाज को गर्त में ले जा रहे हैं और मठाधीश बनकर विश्वविद्यालय को नष्ट करने की प्रक्रिया के सशक्त उत्प्रेरक बन रहे हैं । इस संस्था का रहना कितना आवश्यक है यह एक विचारणीय प्रश्न है और इस प्रश्न पर जनमत एकत्रित करने के लिये चुनाव के बहिष्कार का नारा मैंने दिया । यह संस्था सत्ता में बैठे लोगों का हित साधन तो शायद कर दे पर समाज का कोई हित नहीं कर सकती । यह भी एक विचारधारा मूल में थी जब मैंने छात्रों से अनुरोध किया कि इस चुनाव का बहिष्कार करो । इस संस्थान के उप कुलपति का चुनाव कौन करता है, कैसे करता है यह किसी को नहीं पता । उप कुलपति के विरुद्ध गंभीर आरोप हैं पर कोई जाँच आगे नहीं बढ़ रही है, क्यों? क्या जाँच समयसीमा के भीतर नहीं हो सकती ? इनका कार्यकाल पूरा हो जायेगा और जाँच की प्रक्रिया अधर में ही रह जायेगी । सर, यह वह विश्वविद्यालय है जहाँ अध्यापक पढ़कर पढ़ाने आते थे और किसी कारण से अगर कभी पढ़ नहीं पाते थे तब वह पारदर्शिता से पूरी ईमानदारी से स्वीकार कर लेते थे कि आज मैं पढ़ नहीं सका यह पाठ कल पढ़ाऊँगा । मी लॉर्ड इसी विश्वविद्यालय में एक - दो दशक पहले अध्यापक छात्रों से पढ़ाने में मदद लेते थे और फ़िज़िक्स विभाग ने एक प्रयोग भी किया कि पहले छात्रों से ही व्याख्यान करा लेते हैं तब इस अध्याय को हम पढ़ाते हैं । उसी विश्वविद्यालय में एक व्यक्ति भिक्षुक की तरह टहल रहा यह कहते हुये कि मुझे पढ़ाने दिया जाये जबकि उसकी गुणवत्ता पर कोई सवालिया निशान नहीं है और वह गुणवत्ता के मुद्दे पर अगर कोई सवाल है तब वह उससे रुबरु होने की ख्वाहिश रखता है । मैं सवाल खड़ा करना चाहता हूँ सरकार की क्षमता पर जो ऐसे लोगों को उप कुलपति चुनती है जिसका शिक्षा से कोई सरोकार नहीं है । राष्ट्र का निर्माण सीमाओं पर नहीं होता वहाँ पर सीमाओं की सुरक्षा होती है, राष्ट्र का निर्माण शिक्षा संस्थानों में होता है । जब एक राष्ट्र बनेगा ही नहीं तब सुरक्षा किसकी होगी । इस मूलभूत प्रश्न पर कोई विचार क्यों नहीं होता । मी लॉर्ड मेरी ज़िंदगी छोटी ही बची है, बहुत बड़ा जीवन मेरे पास है नहीं । राजनीति की ज़रूरत उस दिन मेरे जीवित रहने में थी पर हमेशा ऐसा नहीं होगा । जिन लोगों ने मुझे पर हमला किया मुझे मारने नहीं आये थे वह मुझे डराने आये थे और वह इसमें काफ़ी सीमा तक सफल रहे । अगर वह मारना चाहते तो एक निहत्थे आदमी को पाँच -छः असलहे वाले मार ही सकते थे । पर उस दिन मुझे डराना समय की आवश्यकता थी पर महीने - दो महीने बाद मेरा मरना राजनीति की अपरिहार्यता बन जायेगी । एक पक्ष चाहता है मेरा चुनाव न लड़ना एक समीकरण के हित में है तो दूसरे का हित मेरे लड़ने में है । एक पक्ष का मेरे जीवित रहने में हितसाधन हो सकता है तब दूसरे का मेरे अवसान में । इस हित की परस्पर टकराहट के मध्य मेरे जीवन की आयु का निर्धारण होगा । मैं

जिस रास्ते पर चल पड़ा हूँ उस रास्ते पर मुझे राजनीति के समीकरण के लिये एक मुहरे के रूप में ही चलना होगा । राजा तो यह समीकरण बनाने वाले हैं बाकी सब तो प्यादे हैं जिनको राजा की रक्षा के लिये मरना ही है । मेरा मक्कसद हंगामा खड़ा करना नहीं था मेरा मक्कसद एक सार्थकता की तलाश थी पर एक अनैतिक और कर्सर तरीके से सार्थकता प्राप्ति के रास्ते में अवरोध खड़े किये जा रहे हैं । मेरे पास एक बड़ी ताक़त है एक अध्यापक की ताक़त । मैं एक अध्यापक की ताक़त से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा , बदलाव लाना चाह रहा पर वह ताक़त ही मुझसे छीनी जा रही जबकि मेरी सदाशयता और विश्वसनीयता अकाट्य है । लोग कहते हैं दुर्योधन महाभारत के युद्ध का जिम्मेदार है । यह एक ग़लत विश्लेषण है । धृतराष्ट्र का अंधत्व और अनिर्णय तथा भीष्म का अपने वचनों को राष्ट्र से ऊपर महत्व देना उत्तरदायी कारक है । एक इतिहास के अपराजेय नायक का वचन समस्त आर्यवर्त के हित पर प्रधानता प्राप्त कर गया , यह है निष्ठा उस नायक की अपनी ज़मीन के प्रति । वह सर्कुलर समस्त छात्रों के हित पर प्रधानता प्राप्त कर गया यह है समझ इस विश्वविद्यालय के उप कुलपति की ओर कोई समझाना चाह रहा तब आपके पास मिलने का समय ही नहीं है । यह एक बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि एक इतिहास की गतों में धूल फौँक रहा वह सर्कुलर पूरे विश्वविद्यालय की गरिमा की स्थापना के लिये किये गये प्रयोग पर अधिमानता प्राप्त कर गया । मैं किसको - किसको दोष दूँ , मैंने मुख्य मन्त्री को लिखा , राज्यपाल को लिखा पर किसी के पास कोई समय नहीं है । मैं सिफ़र यही कह रहा था मुझे पढ़ाने दिया जाय और वह भी जब कठिपय कारणों से विश्वविद्यालय में शिक्षकों का अकाल हो चुका है । आप को शिक्षक मिल नहीं रहे और कोई पढ़ाना चाह रहा तब आप उसको दुक्कार रहे हैं । सारी कोचिंग संस्थान सिविल सेवा परीक्षा में असफल हुये छात्रों से चलती है और एक सफल हुआ छात्र पढ़ाना चाह रहा पर एक ऐसी उदासीनताइलाहाबाद विश्वविद्यालय का अगर कभी इतिहास लिखा जाये तब इस उदासीनता का ज़िक्र न किया जाये तो बेहतर होगा , इतिहास भी गमगीन हो जायेगा ।

मुख्य न्यायाधीश- “ आप मुख्यमन्त्री, राज्यपाल को लिखे पत्रों की कॉपी प्रस्तुत कर दो । ”

मैं- “ आज ही मैं सब महाधिवक्ता महोदय को दे दूँगा ।

मी लॉर्ड विश्वविद्यालय से बहुत लोग निकल कर गये हैं पर कोई लौटकर न आया इसका ऋण चुकाने पर मैं ऋण चुकाना चाहता हूँ अपनी इस छोटी सी बची हुई ज़िंदगी में । मैं भयग्रस्त हूँ पर कायर नहीं , मुझे भय पर विजय पाना होगा । ”

यह एक उद्बोद्धवन था । एक शब्दों की यात्रा थी । मुख्य न्यायाधीश ने कहा कोई भी छात्र अगर पढ़ाना चाहता है उसके लिये एक नीति बनायी जाये और एक कमेटी केस वाइज़ निर्णय ले । अनुराग को पूरी सुरक्षा दी जाये और क्या सुरक्षा दी जा रही है उसको न्यायालय में कल सुबह प्रस्तुत किया जाये । यह सुरक्षा इनको न्यायालय से निकलते ही प्रदान कर दी जाये । इनको दी गयी सुरक्षा में किसी परिवर्तन को करने से पहले न्यायालय से अनुमति ली जाये । उप कुलपति पर चल रही सारी जाँचों को छः महीने में पूर्ण करके न्यायालय को सूचित किया जाये , किसी भी हालत में यह समयावधि का पालन किया जाये । चुनाव शांतिपूर्ण हों इसकी पूरी जिम्मेदारी ज़िला प्रशासन ले ।

मुख्य न्यायाधीश ने निर्देशों का पालन करने और एक एफिडेविट विश्वविद्यालय और ज़िला प्रशासन को फ़ाइल करने का निर्देश दिया ।

केस की अगली सुनवाई की तारीख भी दी और कहा .. “ Anurag you deserve respect and appreciation for your courage and initiative . ”

मैं महाधिवक्ता के चेंबर में आया । महाधिवक्ता ने भी मेरी प्रशंसा में क़सीदे गढ़े और कमिश्नर साहब से कहा आप इनको पूरी सुरक्षा दो और ऐसी सुरक्षा दो कि न्यायालय संतुष्ट हो जाये , नहीं तो बहुत मुश्किल होगा आपके बाद की पैरवी करना । आपने न्यायालय का रुख देख ही लिया है । राम स्नेही सिंह भी वहाँ पर थे । वह भी एक वरिष्ठ अधिवक्ता थे । उनसे उप कुलपति ने पूछा अब क्या होगा ? उन्होंने कहा , जैसा कर्म है वैसा ही परिणाम आयेगा , बबूल का पेड़ लगाकर आम का फल पाने की आशा आप न करें ।

मैं अब वह अनुराग न रहा जो इस केस के आरंभ होने के पहले था । वहाँ से मैं जैसे ही न्यायालय परिसर के सामने वली सड़क पर आया एक बड़ी भीड़ पतरकारों की थी और वह मुझसे बात करना चाहते थे । मेरा भय दूर हो चुका था मैं वापस रण में जाना चाहता था । मैं लड़ाई को एक निर्णायक मोड़ पर ले जाना चाहता था । यह प्रेस मुझे अपनी बात कहने के लिये एक अवसर के रूप में दिख रही था पर कलेक्टर अशोक पिरयदर्शी मुझको बात नहीं करने दे रहे थे । वह बार - बार मुझसे कह रहे थे आप कोई बात नहीं कर सकते । मैंने उनकी ओर घूर कर देखा और कहा , “ आपको मेरी सुरक्षा काम दिया गया है मुझे नियन्त्रित करने का नहीं । आप अपना काम देखें और मुझे अपना काम करने दें । ”

मैंने पूरी प्रेस कान्फरेंस कर दी । मेरी प्रेस कान्फरेंस सत्ता के प्रतिष्ठान को हिला गयी ।

प्रेस ने पहला ही सवाल पूछा ..

“ आपका अगला कदम क्या होगा ? ”

मैं “ इंतजार कीजिये । ”

“ आपके चुनाव की अगली रणनीति क्या होगी ? ”

मैं “ परसों मैं आम सभा करके चुनाव पर अपनी बात कहूँगा । ”

“ आप पर हमला किसने करवाया ? ”

मैं “ जो अपनी हार सुनिश्चित करवाना चाहते थे । अभी तक मैं एक जन सैलाब को तैयार करना चाह रहा था पर अब जन सैलाब भावनाओं से सरोबार होगा और उनकी हार सुनिश्चित है । ”

“ किसकी हार ? ”

मैं - “ जो बदलाव की आँधी को रोकने का प्रयास कर रहे थे । ”

“ इस हमले में आपके अध्यक्ष पद के प्रतिद्वंद्वियों का हाथ हो सकता है ? ”

मैंने कलेक्टर साहब की तरफ देखा और कहा , “ न्यायालय ने यह कार्य इनको सौंपा है , यह बहुत ही सक्षम अधिकारी हैं । मैं किसी के काम में हाथ नहीं डालता । आप उनसे पूछ लीजियेगा । ”

“ आपने कोर्ट में कहा कि मुख्यमंत्री और राज्यपाल भी शामिल हैं सारी साजिश में । ”

मैं “ मैंने यह तो नहीं कहा , मैंने सिर्फ पत्र की कॉपी दी जो मैंने उनको लिखी थी । आप लोग मुझसे ही सारा सवाल क्यों करते हैं । आप लोग यह सवाल मुख्य मन्त्री , राज्यपाल से पूछिये पत्र की कॉपी जो मैंने न्यायालय को दी है उस पर कोई कार्यवाही क्यों नहीं हुई जबकि पत्र में विश्वविद्यालय की हालात का विस्तृत विवरण लिखकर हस्तक्षेप की माँग की थी । ”

“ पत्र की कॉपी हमें दे दें । ”

मैं “ दे दूँगा । मेरा आप लोगों से एक अनुरोध है इस चुनाव में निष्पक्षता और पारदर्शिता लाने में सहयोग करें । आप लोग दो - तीन सूचना मुहैया कराइये छात्रों को । वह सूचना छात्रों को एक उचित निर्णय लेने में मदद करेगी । मैं अपनी मार्कशीट , जन्मतिथि सब आपको दे देता हूँ आप यह जहाँ चाहें छापें । यही सूचना आप मेरे विरोधियों से लेकर पेपर में छाप दीजिये । लोगों को यह तो पता लगे कि पिछले दस सालों से अधिक समय से यह लोग विश्वविद्यालय

में कौन सा अध्ययन कर रहे हैं । यह कितने साल से फ़ेल हो रहे हैं सिर्फ़ इसलिये कि विश्वविद्यालय में एक लंबा समय मिल सके । यह किस कक्षा में कितने साल रहे, यह तृतीय श्रेणी के विद्यार्थी हैं या द्वितीय श्रेणी के । इनका आपराधिक इतिहास भी देखिये । आप लोग यह सब क्यों नहीं लिखते, इस पर आप लोग अपने पत्र में बहस चलाइये । आप एक स्वस्थ राजनीतिक परंपरा को चलाने में मदद कीजिये । मैं अपना सारा विवरण आपको आज ही दे देता हूँ यह आप कल के समाचार पत्र में छाप दें और वही विवरण मेरे विरोधियों का भी लेकर छाप दें । यह भी एक मुद्दा होगा जो छात्रों को अपना प्रतिनिधि चुनने में मदद करेगा । “

यह कहकर मैं सर्किट हाउस चला गया । वहाँ माँ ने पूछा, “ का करी अब मुन्ना ? ”

मैं - “ माँ, घर चलते हैं । ”

माँ - “ उहाँ केउ आई जाये तब ? ”

मैं - “ चिंता न करो पूरी सुरक्षा होगी । मुझे मारने का एक अवसर था वह उनके हाथ से निकल गया अब मारना दुर्लभ हो गया है । ”

माँ - “ चाभी तअ बा बहिन के इहाँ । ”

मैं - “ भेजता हूँ किसी को वह लोग चाभी, चुन्नू, गुड़िया को लेकर आ जायेंगे । पिताजी तो यहीं हैं । ”

माँ - “ कैसे पता ? ”

मैं - “ मैंने देखा था उनकों कोर्ट रूम में । ”

थोड़ी देर में पिताजी आ गये । कलेक्टर साहब ने एक कार दे दी और वह मौसी के यहाँ से सब को लेकर आने चले गये । मैं जब घर पहुँचा तब देखा बोसीदा पुरानी गली एक सैनिक छावनी की तरह बन चुकी थी । मुहल्ले वाले समझ न पा रहे थे क्या हो गया । मैं जैसे ही कार से उतरा मेरे सामने का बनिया बोला, “ मुन्ना भैया का होई गवा । हम सब लोग त घबड़ाई गये । ”

माँ - “ भगवान साथ रहेन कुछ नाहीं भवा नाहीं तअ अंधेर त होईन गअ रहा । ”

दो दिन से घर बंद था । देर शाम तक मामा - मामी, मौसा- मौसी, बाबा भैया - भाभी, मोहिता दीदी - जीजा जी, हरिकेश मामा - विभा मामी, गाँव से दादू, झुलई भैया, मेरे बड़े पिताजी के बेटे सब लोग आ गये । समाचार पत्रों ने बहुत सनसनी फैला दी थी और वह लोग समाचार पढ़कर घबड़ा गये थे । पुलिस वालों ने घर के चारों ओर बैरिकेटिंग सी लगा दी थी । रात में कमिश्नर साहब डीआईजी साहब को लेकर आ गये । उन्होंने बताया कि एक सीओ को इंचार्ज बना दिया है सारी देख रेख का । वह सब देख रेख करेंगे । कोई

समस्या नहीं होगी , आज कल में हमलावर गिरफ्तार हो जायेगा तब तुम शिनाख्त कर देना । मेरी हमलावर में कोई रुचि न थी वह तो किसी के निर्देशन पर कार्य कर रहा था । थोड़ी देर में अशोक पांडेय सर आ गये वह सीओ इंचार्ज थे सारे मामले के । वह मेरे सीनियर हुआ करते थे और बहुत मेधावी छात्र थे । मैंने आते ही उनको प्रणाम किया । उन्होंने खुद से ही कहा , “ यह हम सबके हित में है और आने वाली पीढ़ी का सौभाग्य है कि तुमने एक साहसिक कदम उठाया है । तुम निश्चिंत रहो , जो भी हमला करने आयेगा वह जीवित नहीं जायेगा । वह एक लंबी क़द काठी के पहलवानी में रुचि रखने वाले व्यक्ति थे । मैंने माँ से उनका परिचय कराया और उन्होंने यही बात माँ से कह दी । माँ को थोड़ी दिलासा हुई और बोली , “ भैया मुन्ना के संगेन रहअ , एका कतौं छोड़अ नअ । ई लुप्पि से गायब होई जात हअ । ”

हम सबके सब ऊपर से सामान्य दिखने की कितनी भी कोशिश करें पर अंदर से सब भयभीत थे । हम लोग एक सज्जनता के माहौल में रहे हैं और खून खराबा कभी देखा ही न था । मेरे पिताजी बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे । वह यह सब तनाव झेल नहीं पा रहे थे । वह रात में मेरे पास आये और पूछा , “ मुन्ना यह सब तुम क्यों कर रहे हो ? ”

मैं - “ पिताजी मुझे खुद नहीं पता कि यह सब कैसे हो गया । मैं पढ़ा रहा था , पढ़ाते- पढ़ाते महत्वाकांक्षा बढ़ गयी और मैं एक बड़ा मंच तलाशने लगा । उस तलाश में विश्वविद्यालय में पढ़ाने लग गया और एका-एक वहाँ बाधा उत्पन्न हो गयी और भावावेश में चुनाव का नामांकन कर दिया । मैं एक बाँध पर खड़ा नीचे नदी का बहाव देख रहा था कि पैर फिसला और मैं नदी की धारा में आ गिरा । अब मुझे खुद समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ । यह मामला न्यायालय पहुँच गया और आप तो थे ही आज न्यायालय में । ”

पिताजी - “ मुन्ना, मैं तुम्हारे किसी कदम से सहमत नहीं हूँ । मैं एक सुरक्षित जीवन का आग्रही हूँ । मैं तो चाहता था कि तुम नौकरी करो , तुम्हारा विवाह हो और एक रुटीन की ज़िंदगी तुम जियो पर आज तुमको न्यायालय में सुनने के बाद मुझे लग गया तुम आम जीवन के लिये नहीं बने हो । मैंने तुम्हारे चयन के दिन कहा था कि ईश्वर ऐसा शौर्यवान बेटा सबको दे , मैं आज उसमें सुधार करता हूँ ईश्वर तुम्हारे ऐसा चक्रवर्ती बेटा सबको दे । तुम्हारे ऐसे कुछ और बेटे होते तब समाज की यह दुर्दशा न होती जो हो रही है । तुम लड़ो अपनी लड़ाई । मेरा अपना स्वार्थ तुमको लड़ाई लड़ने से रोक रहा था पर यह एक ऐसी लड़ाई है जो किसी को तो लड़नी ही पड़ेगी , थोड़ा अपनी माँ का ध्यान रखना वह मानसिक संतुलन खो चुकी है । उसको गंगा नहाने से कुछ दिन के लिये रोक दो । वह तुम्हारी बात सुन लेती है , किसी और की तो सुनती नहीं । ”

यह कहकर पिताजी चले गये । मैं उनके जाने के बाद बारजे पर खड़े होकर नीचे देखने लगा और उनके शब्द मस्तिष्क में धूमने लगे ...”तुम्हारे ऐसा चक्रवर्ती बेटा ईश्वर सबको दे और अगर ऐसे कुछ और बेटे हुये होते तब समाज का यह हाल न होता ... तुम अपनी लड़ाई लड़ो किसी को तो यह लड़ाई लड़नी ही होगी ।”

यह गली सुनसान ही हुआ करती थी , गली में इस समय सिफ्ऱ उँघते कुत्ते ही हुआ करते थे पर आज कई पुलिस वाले बाहर बैठे थे । वह आपस में बात कर रहे थे । मैं उनकी बातचीत सुनने लगा । इतने में अशोक पांडेय सर आ गये मौके का जायज़ा लेने । मुझे नीचे से देखा और कहा आता हूँ । वह मेरे पास आये और पूछा , “ यह बताओ अनुराग तुम जो कुछ कर रहे हो इसके पीछे कोई है क्या? ”

मैं - “ समझा नहीं सर । ”

अशोक पांडेय - “ यह भी एक बात आरंभ हो चुकी है कि कोई अनुराग के पीछे है जो अनुराग को चला रहा है नहीं तो इतनी बड़ी- बड़ी बात कोई एक नौसिखिया राजनीतिज्ञ कैसे कर सकता है ? ”

मैं - “ सर , मेरे अंदर अपरिपक्वता की पराकाष्ठा है । मेरे जो मन में आता है वह कह देता हूँ बगैर परिणाम जाने । यह अलग बात है कि वह अभी तक ठीक बैठ रही है । ”

अशोक पांडे - “ जब अंधेर हो जाती है तब लोग कोई भी अलग तरह की बात सुनने में रुचि रखने लगते हैं । यहीं यहाँ हो रहा । लोग इस सड़ी- गली व्यवस्था से आजिज़ आ चुके थे और एक नयी बयार इनको भा गयी । चुनाव का परिणाम चाहे जो हो तुम एक महामानव बन चुके हो । ”

मैं - “ सर , मेरे ऊपर फिर हमला हो सकता है क्या? मेरी माँ बहुत परेशान है । मेरे अलावा मेरे घर के किसी और सदस्य पर तो हमला नहीं होगा ? ”

अशोक पांडेय- “ अनुराग , बयाना तो तुमसे तगड़ा लिया है । उन सबके बारे में कुछ भी कह पाना आसान नहीं है । यह सुरक्षा कब तक रहेगी यह भी एक बड़ा सवाल है । एक ही बात अच्छी हुई है कि सुरक्षा न्यायालय के दिशा निर्देश पर है बगैर न्यायालय को विश्वास में लिये हटायी नहीं जा सकती , इसलिये जब तक केस चलेगा तब तक तो रहेगी ही । सुरक्षा भी बहुत मज़बूत दी गयी है । एक जीप दो मोटरसाइकिल सवार और दो व्यक्ति तुम्हारे चारों ओर । मैं मुख्यमन्त्री की सुरक्षा व्यवस्था में काम कर चुका हूँ और मुझसे कहा गया है कि कड़ी सुरक्षा करो और मेरे नेतृत्व में सुरक्षा सौंपी भी इसीलिये गयी है ताकि कोर्ट को संतुष्ट किया जा सके पर कोई कुछ नहीं कह सकता कब तक यह सुरक्षा रहेगी । तुम्हारे घर वालों पर तो हमला होने की संभावना कम ही है पर तुम्हारा जीवन अब सहज नहीं रहा । ”

मैं सोचने लगा । मुझे सोचता हुआ देखकर अशोक पांडेय ने कहा , “हर चीज़ की क्रीमत होती है । समाज में आगे जाना चाह रहे हो तब उसकी भी क्रीमत है और अगर समाज सुधार करना चाहते हो तब तो क्रीमत चुकानी ही होगी । बताओ मुझे इतिहास में कौन सा सुधार बगैर क्रीमत दिये हुआ है । तुम्हारे जीवन देने से अगर सुधार आ जाये तो क्रीमत छोटी ही है पर मुझे भय यह है कि कहीं जीवन भी चला गया और कुछ न मिला तब ? उस दिन अगर तुम्हारी मृत्यु हो जाती तब यही होता , तुम्हारी शहादत बेवजह होती । किसी को कुछ न मिलता , पर अब एक उम्मीद दिख रही है क्योंकि तुम मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर लेकर आ गये हो , यह भी एक अच्छी - खासी उपलब्धि है । ”

मैं - “ सर एक एहसान करिये मेरे ऊपर । ”

अशोक पांडेय - “ आदेश करो अनुराग । तुम्हारे ऐसे सदाशयता युक्त व्यक्ति की इच्छा का सम्मान करना ईश्वर की आराधना सदृश है । तुममें ईश्वर का वास है । तुम इतना बड़ा कार्य स्वयम् नहीं कर रहे ईश्वर तुममें विराजमान है और करा रहा , कहो क्या चाहते हो ? ”

मैं - “ सर , मेरी माँ का मानसिक संतुलन ठीक नहीं है । जबसे मुझ पर गोला चली है तबसे उसको कुछ याद नहीं रहता । वह नींद में बड़बड़ाने लगती है । वह गंगा नहाने रोज़ जाती है । अगर कोई रोकेगा तब वह मानेगी नहीं । आप दो पुलिस वालों के साथ उसको गंगा नहाने का प्रबंध करा दीजिये बहुत अहसान होगा आपका । मेरे लिये मेरे जीवन से अधिक उसके जीवन का महत्व है । ”

अशोक पांडेय - “ यह कौन सी खास बात है । यह मैं अभी जाते ही सुनिश्चित कर दूँगा । एक और बात कहूँ अनुराग ? ”

मैं - “ जी सर । ”

अशोक पांडेय - “ तुम एक फ़ैसला ले लो - नौकरी करने का या न करने का । अगर नौकरी करने का फ़ैसला लेते हो तब तुम्हारे एकेडमी जाने तक येन - केन - प्रकारेण यह सुरक्षा चल जायेगी और अगर नहीं जाते हो तब तुमको अपनी सुरक्षा के बारे में स्वयम् सोचना होगा । तुमको अपनी सुरक्षा पर स्वयम् ही कार्य करना होगा यह सरकार के भरोसे नहीं हो सकती खासकर तब जब तुम एक करान्ति करना चाहते हो । सरकार - व्यवस्था करान्तिकारियों की हत्या में रुचि रखती है न कि सुरक्षा में क्योंकि करान्तिकारी यथास्थितिवाद का विरोधी होता है और व्यवस्था पोषक । ”

मैं - “ सर , मैं कैसे करूँगा यह सब , न मेरे पास लोग हैं , न पैसा , न हथियार । ”

अशोक पांडेय - “ रास्ता है । ”

मैं “ क्या? ”

अशोक पांडेय - “ सद्ग्रावना सिंह की पार्टी में शामिल हो जाओ । ”

मैं - “ सर , न मैं उनको जानता हूँ न मेरा कोई उनसे ताल्लुक , वह राजेश्वर तिरपाठी के बहुत नज़दीक हैं । मैं कैसे ज्वाइन कर पाऊँगा । ”

अशोक पांडेय- “ तुम लोगों को नहीं जानते पर लोग तुमको जानते हैं । इस समय अनुराग शर्मा से बड़ा कोई बरांड है नहीं । तुम युवा राजनीति का उभरता चेहरा हो । ऐसा चेहरा राजनीति में कम आता है । तुमको अपने दल में लेने की होड़ चल रही होगी । तुम्हारे पास बारगोनिंग पावर है , जिस दल में जाना कुछ लेकर जाना । मुझसे सलाह करना मैं तुम्हें बहुत फ़ायदे के साथ दल में प्रतिष्ठित करा दूँगा । पर अगर नौकरी करना चाहते हो तब बात अलग है । ”

अशोक पांडेय सर रात में चले गये । सुबह माँ चाय लेकर आयी और मैंने कहा तुम गंगा नहाने सिपाहियों के साथ जाओ । वह थोड़ा आनाकानी की क्योंकि वह पैदल ही जाया करती थी और उसकी आस्था पैदल जाकर गंगा स्नान में थी । पर मैंने कहा तुम्हारे पास दो विकल्प हैं या तो गंगा न नहाना या सिपाहियों के साथ जाना । आप दो में से एक विकल्प चुन लो , तीसरी विकल्प है ही नहीं । पिताजी सही थे वह मेरी बात न काट सकी और सिपाहियों के साथ गंगा नहाने चली गयी । अगले दिन सुबह- सुबह आंटी आ गयी । मुझे जीवित देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा । दिल्ली के एक समाचार पत्र ने मेरे मौत की झूठी ख़बर छाप दी थी । वह तो मेरी माँ के शोक में शरीक होने आयी थी । पर उसे तो जैसे जीते जी ही स्वर्ग मिल गया हो , जिससे वह बेपनाह मुहब्बत करती है वह तो पूरी मुहब्बत के साथ सामने खड़ा था । वह रोने लगी और बताया कि कितनी बरसात इन आँखों से हुयी और ईश्वर से कहा सारा दुख मुझे ही क्यों... एक बेटा विदेश चला गया और दूसरा बेसमय तेरे पास ... मेरे ही बेटों से तुझे इतना लगाव क्योंकि वह क़ाबिल हैं ।

मेरा भाई सारे समाचार पत्र लेकर आ गया था । समाचार पत्रों ने तो गदर मचा दी थी ...

“ अनुराग शर्मा की कोर्ट में विजय .. ”

“ अनुराग एक आँधी है ”

“कोर्ट भावनात्मक हो गया ”

“ अनुराग शर्मा को भारी सुरक्षा प्रदान की गयी “

“ अपराधियों को चौबीस घंटे में गिरफ्तार करने का आदेश “

“ उप कुलपति गंभीर संकट में , उनकी लंबित जाँच प्रक्रिया 180 दिन में पूरी करने का सख्त आदेश “

“ क्या मुख्यमन्त्री की मिलीभगत थी पूरे घटनाक्रम में “

“ मुख्यमन्त्री जवाब दें “

“ राज्यपाल भी लपेटे में “

“ कोर्ट परिसर के बाहर अनुराग शर्मा की ज़िलाधिकारी को कड़ी फटकार ...
तुम मेरी सुरक्षा के लिये लगाये गये हो न कि नियन्त्रित करने के लिये “

“ अनुराग के अगले कदम की घोषणा शीघ्र “

“ अनुराग का मुकदमा सन 1922 के गाँधी की तरह .. जज ने कहा अनुराग
तुम सम्मान के अधिकारी हो । “

“ अनुराग की परीक्षा का दौर .. क्या अनुराग ख़त्म कर पायेंगे विश्वविद्यालय
में व्याप्त अराजकता ? “

मेरी फ़ोटो सारे समाचार पत्रों के मुख्यपृष्ठ पर थी । एक समाचार पत्र ने
लंबा संपादकीय लिख दिया था ।

सुबह मेरे मामा और मौसा आ गये और सब लोगों ने आपस में निर्णय लिया कि
मुन्ना चुनाव न लड़ें और एकेडमी जाने की कोशिश करें और अगर एकेडमी
अभी नहीं जा रहे जनवरी में जाना है तब यह शांति के साथ दिल्ली चले जायें
और वहीं रहे । आंटी ने भी कहा यह ठीक है मेरे साथ अनुराग दिल्ली चलें ।
मैं कुछ न बोला , मैं आज का दिन शांति से गुज़ारना चाहता था । मेरे अंदर
एक अज़ीब व्यग्रता थी । मैं कितना भी सहज दिखने की कोशिश करूँ पर
असहजता मेरे चेहरे पर हरदम व्याप्त रहती थी । मेरे अंदर एक भय था कि
मुझे कुछ हो गया तब मेरे घरवालों क्या होगा ? मेरे पराक्रम पर इनको
असीम आस्था थी और मेरा अस्तित्व इनको एक सुकून देता था । मैंने
गोलीकांड के बाद महसूस किया कि मेरा पूरा परिवेश मेरी तरफ आशा भरी
निगाहों से देख रहा है और मेरे समापन की कल्पना ही सबको हिला गयी ।
यहाँ तक बाबा भैया जिनसे मेरा विरोध था वह भी पूरी तरह विचलित हो गये
थे । दादू जो इतना मसखरा और विदूषक हुआ करता था उसके चेहरे पर से
भी हँसी ग़ायब हो चुकी थी । सबकी एक ही चाहत थी मैं जल्दी से जल्दी
इलाहाबाद छोड़कर एकेडमी चला जाऊँ ।

मैं दिन में विश्वविद्यालय आज नहीं गया , ज्यादातर समय माँ और आंटी के साथ रहा । आंटी ने बताया कि ऋषभ तीन दिन बाद भारत आ रहा है । ऋषभ लिखता कम था इसलिये आगे के कार्यक्रम के बारे में आंटी को कम पता था ।

शाम को अपनी कोचिंग पढ़ाने गया । मेरी कोचिंग में मेरे जीवित होने की खबर के कारण बहुत ही सुखद माहौल था । वह लोग आज पढ़ना नहीं बात करना चाहते थे । मैंने कहा , अब एक ही संकल्प है अधिक से अधिक चयन । यह ईश्वर की कृपा है मैं बच गया । वह मारना न भी चाह रहे हों तब भी इतनी गोलियाँ चली थीं कि कोई गोली लग ही सकती थी पर ईश्वर कृपालु था और है । हम लोग सारी ताक़त झोंक देंगे सफलता प्राप्ति के लिये । छात्रों का मुझसे बहुत लगाव हो ही चुका था और मेरी बातों ने उनमें अतिरिक्त ऊर्जा भर दी ।

मैं कोचिंग से लौटकर आया तो देखा चिंतन सर , बद्री सर घर पर बैठे थे और मेरा इंतज़ार कर रहे थे । मैं उनसे बात कर रहा था पर मुझे क्या पता एक रणनीति बन चुकी थी जिससे मैं अनजान था । हर दिन विस्मयकारी होता था और कल का दिन इतना विस्मयकारी होगा यह तो कल्पना में ही न था ।

बद्री सर ने पहला ही सवाल किया , “ यह किस चक्कर में पड़ गये तुम ? ”

मैं - “ सर कुछ समझ नहीं आ रहा यह सब कैसे हो गया । मैं एक सीधा - साधा पढ़ाने के काम में लगा था । उस काम में कुछ दिक्कत उत्पन्न हुई और उसके समाधान के तलाश की प्रक्रिया में एकाएक भावावेश में अध्यक्ष पद का नामांकन दाखिल कर दिया बस वहीं से गाड़ी एक अलग पटरी पर चली गयी । ”

बद्री सर - “ अब क्या विचार है ? ”

मैं - “ सर कुछ समझ न आ रहा कि मैं क्या करूँ । अब आगे जाने की कोई सहज राह दिख नहीं रही और पीछे जाऊँ कैसे यह समझ नहीं आ रहा । गुत्थी जितना सुलझाना चाहो उतनी ही उलझती जा रही । सर , वीर रस की कवितायें गाने और सुनने में बहुत अच्छी लगती हैं पर उसी कविता को यथार्थ में उतारने के लिये एक ददम्य इच्छाशक्ति और पीड़ा को सहने वाला हृदय होना चाहिये , मेरे पास वह शायद है नहीं । मैं कितना भी वीर होने का

दावा करूँ या बाहर से सहज दिखने की कोशिश करूँ पर मैं हक्कीकत में मैं बहुत डरा हुआ और अति असहज हूँ । सर, अब आगे बढ़ना मेरी मजबूरी हो चुकी है । मैं आगे बढ़ूँ या पीछे हटूँ मुझे मरना ही होगा । बस फ़र्क़ इतना ही है कि आगे बढ़कर मरने में कुछ संतोष है और एक दिन की मृत्यु है, पीछे हटने में पीड़ा ही पीड़ा और हर दिन की मृत्यु । ”

बद्री सर - “इतनी अच्छी नौकरी मिल गयी थी । ईश्वर ने वह सब कुछ दे दिया था जो चाहत थी पर देकर भी भोगना नसीब नहीं हुआ । ”

मैं - “ सर, अब भाग्य में जो लिखा है वह तो टल नहीं सकता । मेरे साथ - साथ मेरा पूरा घर परेशान है । एक बहुत ही कच्ची गृहस्थी है । मुझे कुछ हो जायेगा तब कई पीढ़ी पीछे हम सब पहुँच जायेंगे । एक आगे बढ़ रहा परिवार पीछे चला गया । मेरे पूरे घर- परिवार - परिवेश की कुछ खाहिशें थीं जिसमें अधिकांश छोटी - मोटी ही थीं वह भी पूरी न हुई । मेरा छोटा भाई मेरे नाम की नेम प्लेट लगाना चाहता था, उसने बहुत शौक से बनवाई भी थी पर उसके नसीब में वह भी न आया । सर, मैं जन्मा ही हूँ सबको दुःख देने के लिये । कई बार मुझे लगता है कि किसी समाज सुधार की नहीं मैं अपने अहम की लड़ाई लड़ रहा हूँ । ”

चिंतन सर - “ अगर सब कुछ छोड़कर नौकरी पर वापस लौटना चाहते हो और एक शांति की तलाश में हो तब मामला निपट सकता है । ”

मैं - “ कैसे सर ? ”

चिंतन सर - “ मेरा राजेश्वर तिरपाठी का बहुत अच्छा संबंध है । मैंने बहुत कार्य उनके किये हैं । मैं बात करके सब ख़त्म करा सकता हूँ । ”

मैं - “ सर जानते हैं मुझ पर गोली किसने चलवाई थी ? ”

चिंतन सर - “ नहीं । ”

मैं - “ लोग कह रहे यह राजेश्वर तिरपाठी ने चलवाई थी क्योंकि मैं अगर हट जाऊँगा तब ब्राह्मण वोट का धर्मवीकरण हो जायेगा । सर यहाँ तक तो बात सही है पर मुझे मारा क्यों नहीं, मुझे छोड़ क्यों दिया । ”

बद्री सर - “ हो सकता है गोली चली हो पर निशाने पर न लगी हो । ”

मैं - “ सर सब कुछ मुझे ठीक से याद है । मेरी साइकिल पर एक चलती मोटरसाइकिल ने टक्कर मारी । मेरी साइकिल का संतुलन बिगड़ गया । गोलियाँ सब हवा में चलाई गईं, दहशत फैलाने के लिये । एक गोली मेरे नज़दीक से मेरे बाँह पर ही चलायी गयी थी । वह मारना चाहते तो सीने पर मारते । मैं डरकर भाग रहा था । वह सब मोटरसाइकिल पर थे अगर

पकड़ना चाहते तो पैदल भाग रहे व्यक्ति को पकड़ ही लेते । मुझे मारने में तो लाभ है पर बचाने में राजेश्वर तिरपाठी का क्या लाभ ? यह आप पूछना उनसे । “

चिंतन सर - “ पूछ लूँगा और अगर कहो तो मामला सब निपटा दूँगा । “

मैं “ सर , अब मामला एक के समापन पर ही खत्म होगा । या तो वह मुझे मार देंगे नहीं तो मैं उन्हें बर्बाद करके ही छोड़ूँगा । देखिये सर अब क्या होता है बस आप यही पूछियेगा मेरी हत्या से अधिक लाभ मुझे डराने-धमकाने में कैसे है । “

चिंतन सर - “वह बहुत बड़े आदमी हैं । “

मैं सर , बड़े को छोटा और छोटे को बड़ा बनते कितनी देर लगती है , सब समय - समय की बात है । “

बद्री सर - “ नौकरी ज्वाइन करने का क्या विचार है ? “

मैं - “ कैसे करें ज्वाइन ? “

चिंतन सर - “ तीन लोग लेट ज्वाइन करना चाह रहे हैं । तीनों का आवेदन पत्र आया है । निदेशक विचार कर रहे हैं । कमिशनर सत्यानंद मिश्रा से कहलवा दो काम हो जायेगा । “

बद्री सर - “ यार एफसी नहीं भी करोगे तब भी क्या फ़र्क़ पड़ता है । पीसी के लिये फिर से चिट्ठी आयेगी ही , सीधा पीसी में रिपोर्ट कर देना । यह एफसी बाद में हो जायेगा । बस इस बार कोई नाटक न करना एक दिन पहले ही चल देना ताकि अंतिम वक्त पर कोई विचार बदलने की गुंजाइश हो तब तक आप पहुँच चुके हो एकेडमी, तुम्हारा कोई भरोसा तो है नहीं कब दिमाग़ में क्या आ जाये । “

मैं “ यह बात तो है सर , अस्थिरता बहुत है मेरे अंदर । एक ठहराव का अभाव है । सर , जब चिट्ठी आयेगी तब देखा जायेगा । सर , एक बात कहूँ .. दिल से । “

बद्री सर - “ कहो । “

मैं - “ सर

मुझकों चुप देखकर चिंतन सर ने कहा ... “ कहो । “

मैं “ सर , मज़ा बहुत आ रहा । असली मज़ा राजनीति में ही है । मैंने कल डॉटा ज़िलाधिकारी को । उसकी नौकरी दस साल की है । मैंने कहा अपना काम करो । सर"

चिंतन सर अधीर हो रहे थे और बोले फिर क्या हुआ ? “

मैं “ सर , मैंने कहा तुम्हें मेरी सुरक्षा का दायित्व सौंपा गया है न कि नियन्त्रित करने का । सर जब भी यह पंक्ति याद आती है न ”

चिंतन सर - “ क्या होता है ? ”

मैं “ सर रोंगटे खड़े हो जाते हैं । हम लोग ज़िलाधिकारी का मकान देखते थे और कहते थे कि हम लोग इसी मकान में रहेंगे एक दिन पर सर ... मैंने उसको डॉट दिया । एक बात बताऊँ सर .. ”

चिंतन सर - “ बताओ । ”

मैं “ कल - परस्सों फिर डॉटूँगा । ”

चिंतन सर - “ क्यों ? ”

मैं “ सर , बस यूँ ही बहुत मज़ा आता है । ”

मैं “ सर , एक बात बताऊँ ? ”

चिंतन सर - “ हाँ बताओ । ”

मैं - सर , मज़ा बहुत आ रहा इस राजनीति में बस यह खून ख़राबा न हुआ होता , इसी ने मज़ा बिगाड़ दिया । ”

चिंतन सर - “ यह तो मैं पहले से ही कहता था । इसीलिये तो मैं जबसे विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया काम में लग गया था । ”

मैं “ सर सोचने से काम नहीं होता । ”

चिंतन सर - “ तब किससे होता है ? ”

मैं - “ सर डायरेक्ट एक्शन । आप देखें न मैं एक्शन पर एक्शन ले रहा । सर , आप लोग कब तक हो ? ”

बद्री- “ क्यों पूछ रहे ? ”

मैं - “ आप लोगों के सामने कलेक्टर को डॉटना चाहता हूँ । ”

बद्री सर - “ काहे उसके पीछे लगे हो ? ”

मैं “ सर , बहुत मज़ा आता है । सर , यह बताओ अगर मैं कह दूँ .. I will dismiss you .. तब ज्यादा तो नहीं हो जायेगा । ”

बद्री सर - “ यह करवाना चाहते हो क्या? तुम्हारा क्या पता कल से राजेश्वर तिरपाठी को छोड़कर उसी पर लग जाओ । ”

मैं “ नहीं सर .. बस आनंद थोड़ा आ जाता है । ”

चिंतन सर - “ यह सब फ़ालतू की सलोथरी छोड़ो यह बताओ कल की क्या प्लानिंग है ? ”

मैं - “ सर , मैं कोई प्लानिंग नहीं करता । कोई सुबह - सुबह आता है और एक कहानी देकर जाता है बस वही कहानी मैं सारा दिन लिखता रहता हूँ और शाम तक हंगामा खड़ा हो जाता है और लोग कहते हैं और कहानी लिख मुझे पढ़ना है । सर , मैं कुछ नहीं कर रहा कोई कुछ करा रहा मुझसे । मुझे अभी नहीं पता कि मैं कल कौन सी रणनीति घोषित करूँगा पर यक़ीन मानिये कल तक कोई कहानी मिलेगी और मैं लिख मारूँगा । ”

बद्री सर - “ यार तुम तो मायावी मारीच हो गये हो । ”

मैं - “ सर , यह भी कह सकते हो । पर मैं एक और बड़ी उपमा देता हूँ । ”

बद्री सर - “ कौन सी ? ”

मैं - “ मैं सर्वोपरि हूँ , मैं सर्वतर हूँ , मैं ध्वंस करूँगा निर्माण के लिये .. नव निर्माण के लिये । ”

चिंतन सर - “ यह तो कृष्ण है । ”

मैं - “ नहीं । ”

चिंतन सर - तब कौन । ”

मैं - “ एक परिवर्तनशील बरह्मांडीय शक्ति विश्व का सृजन भी करती है और विनाश भी । मैं उस शक्ति का प्रतीक हूँ जो विश्व पर शासन के योग्य है । संहार भी करूँगा सृष्टि भी करूँगा और इस प्रकार एक परिवर्तन लाऊँगा । मेरे अंदर उसका वास है वह सृष्टा भी है और संहारकर्ता भी , वह महान तपस्ची है । उसके चेहरे की चमक में भक्तों के लिये शीतलता है तो दुष्टों के लिये अग्नि की ज्वाला । मैं वह नहीं हूँ पर उसके सदृश हूँ । ”

चिंतन सर - “ शिव । ”

मैं - “ सही पकड़ा सर । ”

चिंतन सर - “ एक बात कहूँ अनुराग ? ”

मैं - “ दो बात कहें सर । ”

चिंतन सर - “ अनुराग तुमसे बात करने में बहुत मज़ा आता है । ”

मैं - “ सर एक बात कहूँ ? ”

“ कहो । ”

मैं - “ सर , आपने ने दिल्ली में कहा था कि यह संसद देश की सबसे बड़ी पंचायत मेरा इंतज़ार कर रही है । हम दोनों साथ थे पर वह आपका नहीं मेरा

इंतज़ार कर रही थी । आपने एक भाषण पढ़ा था । मुझे दे देना मैं रट लूँगा ,
भाषण देना पड़ सकता है । ”

चिंतन सर - “ तुमको भाषणों की क्या कमी जब चाहो तब लफ़्ज़ बिखेर दोगे
। ”

मैं “ सर , कोई लड़की काम की है एकेडमी में ? ”

चिंतन सर - “ सुरुचि मिश्रा बहुत काम की है । वह भी आयी है इलाहाबाद
हम लोगों के साथ । वह बहुत चालू है । हम लोग छुट्टी माँग रहे थे वह भी
लहा ले गयी । छुट्टी आसानी से मिलती नहीं पर तुम्हारे हादसे पर मिल रही
थी हम दोनों के साथ वह भी ले ली । वह आयेगी तुमसे मिलने । ”

मैं “ सर मैं क्रान्तिकारी हो गया हूँ .. अब मैं किसी के काम का नहीं रह गया

..
कविरा खड़ा बाज़ार में लिये लुकाठी हाथ
जो घर ज़ारा आपनों वह चले हमारे साथ ।

अब सर आप लोग समझदार हैं और क्या कहूँ मैं । ”

चिंतन सर और बदरी सर चले गये यह कहकर कि कल मिलता हूँ । मेरा
काम हो गया था । मैं रात सोऊँगा और वह रात भर जांगेंगे । यह ज़िलाधिकारी
को डॉट्टने में मज़ा आता है यह पंक्ति उनको सोने नहीं देगी । वह सारी
ज़िंदगी ढूँढ़- ढूँढ़ कर ज़िलाधिकारी को तेल - पानी मारते रहे यहाँ उनका
चेला डिसमिस करने की बात कर रहा । मुझे बहुत मज़ा आ रहा था चिंतन
सर को रात भर की परेशानी देने में ।

मुझे और मेरे घर घर पर पुलिस की सुरक्षा मिल जाने से थोड़ा इत्मिनान
सबको हो गया था । भय ख़त्म तो नहीं हुआ था पर भय से लड़ने का एक
सहारा अवश्य मिल गया था । आंटी के आ जाने से माँ को एक ढाढ़स हो गया
था और बातचीत में उसका कुछ समय बीत जाता था । वह सुबह चाय लेकर
आयी और बताया कि शांति के साथ वह गंगा नहाने जा रही । उसने मुझसे
पूछा , “ आज विश्वविद्यालय जाबअ मुन्ना ? ”

मैं “ जाना ही होगा । घर में तो नहीं बैठ सकते । अब तो पुलिस साथ है ,
अब क्यों डर रही हो । ”

माँ - “ ज़रा सजग रहअ , चौकन्ना होई के चारो तरफ़ देखत रहा करअ । ”

मैं “ ठीक है , ध्यान रखूँगा । ”

यह कहकर वह आंटी के साथ वह सुबह गंगा नहाने चली गयी ।

सुबह- सुबह नौ बजे ही अशोक पांडेय सर आ गये । उन्होंने आते ही पूछा , “
कुछ विचार किया ? ”

मैं- “ किस बात पर ? ”

अशोक पांडेय - “ कल कहा था कि तुम सद्वावना सिंह के दल में शामिल हो
जाओ । ”

मैं- “ सर , मैं न तो उनको जानता हूँ न ही उनके दल के किसी आदमी को मैं
अगर शामिल भी होना चाहूँ तब कैर्सी होऊँगा ? ”

अशोक पांडेय- “ मैं हूँ ना । ”

मैं- “ आप जानते हैं उनको ? ”

अशोक पांडेय - “ मैं उनके बहुत नजदीक हूँ । मैं उनकी सुरक्षा में कई साल
रहा । ”

मैं- “ सर , आप कह देंगे तब मैं दल में शामिल कर लिया जाऊँगा चाहे
राजेश्वर त्रिपाठी विरोध करें तब भी ? ”

अशोक पांडेय - “ अनुराग किसी से कहना मत । मैं राज साझा करता हूँ ।
मुझे तुम्हारे सुरक्षा का इंचार्ज उन्होंने ही बनाया है और कहा है उसको
शीघ्रातिशीघ्र दल में शामिल करो उसको एक बड़ी जिम्मेदारी भी दूँगा । ”

मैं- “ सर जो आपने कल कहा था वह एक प्रस्ताव था ? ”

अशोक पांडेय - “ हाँ वह एक प्रस्ताव था और वह उन्होंने ने ही दिया था । ”

मैं- “ सर मुझे न राजनीति आती है न मेरे पास कोई धन या जन है । मेरी
जुम्मा- जुम्मा पन्द्रह दिन की राजनीति है मुझसे उनको क्या फ़ायदा मिलेगा । ”

अशोक पांडेय - “ जो तुम्हारे पास है वह किसी के पास नहीं है । वह न तो
सद्वावना सिंह के पास है न ही विपक्षों नेता राम सिंह यादव के पास । इस
समय युवा राजनीति का तुम बहुत बड़ा चेहरा बन चुके हो । तुम्हारे पास
बोलने की असाधारण क्षमता है । यूपी की राजनीति में ऐसी क्षमता किसी के
पास नहीं है , पढ़ें- लिखे हो , एक बड़ी नौकरी छोड़कर समाज के उत्थान
कार्य में कूद कर एक विश्वसनीयता हासिल कर चुके हो इससे बड़ी बात
नेतृत्व के लिये और क्या चाहिये । ”

मैं- “ सर , चुनाव हो जाने दीजिये , यह है ही कितने दिन की बात उसके बाद
फ़ैसला करते हैं । मैं नौकरी करना चाह रहा । मेरा पूरा घर परेशान है । यह

राजनीति मेरे बस की नहीं है । “

अशोक पांडेय - “ नौकरी में कुछ नहीं रखा है । मुझको ही देखो मैं नौकरी नहीं राजनीति करता हूँ । इस 2200-4000 स्केल की नौकरी में कुछ न मिलेगा । असली मज़ा है पावर में । मैं डिप्टी एसपी की नौकरी में हूँ जहाँ पर अस्सी प्रतिशत गड़दा पोस्ट हैं । मैं मुख्य मन्त्री की सुरक्षा में पहुँचा उनके नज़दीक आ गया । मैं आईएएस- आईपीएस की ट्रांसफर- पोस्टिंग कराता हूँ । मैं बड़े- बड़े माफियाओं से मिलता हूँ । मैं लोगों को मारने का आदेश देता हूँ । मैं किसी को जीवन भी दे सकता हूँ और मृत्यु भी । यह ताक़त है राजनीति की बस राजनीति को पकड़ कर रखो । एक बड़ा दल ज्वाइन करो और सत्ता की सीढ़ी पर चढ़ो । मज़ा संघर्ष में नहीं मज़ा सत्ता में है । ”

मैं - “ सर , इतनी जल्दी क्या है ? मैं अगर नौकरी करना चाहता हूँ तब मुझे पहले वह फ़ैसला लेने दीजिये । ”

अशोक पांडेय - “ अब तुम नौकरी करोगे , इतना बड़ा कैरियर छोड़कर ? जो लोग बीस साल की मेहनत के बाद पाने की सोच सकते हैं पता नहीं पायेंगे या नहीं वह थाली में परोस कर तुम्हारे सामने रख दिया गया है । राजेश्वर तिरपाठी तुमसे पन्द्रह साल तो बड़े होंगे ही और वह जन्मना नेता हैं पर हो सकता है वह तुम्हारा झंडा उठाकर तुम्हारे पक्ष में नारा लगायें । इतना बड़ा अवसर छोड़कर तुम यह एक नेताओं के कृपा पर जीने वाली नौकरी करोगे ? अनुराग , जीवन कुछ लोगों के भोगने के लिये होता है तुम उसमें से एक हो । ”

मैं - “ सर , मुझे अगर राजनीति करनी ही है तब मैं इसी दल की राजनीति क्यों करूँ जिसमें मुझ पर गोली चलवाने वाला हो । ”

अशोक पांडेय- “ किस दल की राजनीति करोगे ? ”

मैं - “ सर विकल्प कई हो सकते हैं , अगर करना ही है तब । ”

अशोक पांडेय - राम सिंह यादव का दल गुंडे बदमाशों का है । सर्वजन दल की नेत्री कलावती कुमारी महान् भ्रष्ट, बदमिजाज और बेसहूर है । तुम सद्वावना सिंह को छोड़कर उनके दल में जाओगे ? ”

मैं - “ सर मैं किसी दल में नहीं जा रहा बस कह रहा कि विकल्प और भी हो सकते हैं अगर राजनीति करनी है । ”

अशोक पांडेय- “ राजनीति अगर करनी है तब आप सिफ़्र सत्ता की करो । जो भी दल सत्ता में आये उसमें शामिल हो जाओ । समय की धारा को समझो और धारा के साथ बह जाओ । यह सिद्धांत, यह नीति , यह अंतरात्मा की आवाज यह सब सदियों से मनुष्य के विकास में अवरोधक रहे हैं । इस सिद्धांत- नीति

- अंतरात्मा की आवाज़ के नाटक से जितनी जल्दी पिंड छुड़ा लोगे तुम उतना ही सफल होंगे । इस जीवन का एक ही लक्ष्य होना चाहिये अपना विकास , वह किस तरह हो रहा है वह गौण वस्तु है । “

मैं - “ सर , तब तो आप राजेश्वर तिरपाठी के भी नज़दीक होंगे ? “

अशोक पांडेय - “ राजेश्वर तिरपाठी का दल बदल मैंने ही कराया । वह सद्वावना सिंह के साथ आना चाहते थे । अब हम लोग एक ही विश्वविद्यालय के थे आपस में परिचय था । उन्होंने मुझसे कहा , मैंने मुख्यमन्त्री से अनुरोध किया वह पार्टी में शामिल हो गये । आज वह इलाहाबाद की राजनीति चला रहे हैं । मैं तुमको मुख्यमन्त्री के सामने शामिल कराऊँगा । “

मैं - “ सर इतनी अधीरता क्यों है कि चुनाव के पहले ही ज्वाइन करो ? “

अशोक पांडेय - “ अध्यक्ष पद की गणित ठीक हो जायेगी । “

मैं - “ क्या है गणित ? “

अशोक पांडेय - “ यह नहीं पता पर एक नयी गणित बनेगी तुम्हारे दल में शामिल होते ही । “

मैं - “ सर , चुनाव के पहले मैं कोई निर्णय नहीं ले सकता । “

अशोक पांडेय - “ एक वादा करो । “

मैं - “ क्या सर ? “

अशोक पांडेय - “ तुम राम सिंह यादव के उत्थान दल में शामिल नहीं होंगे । “

मैं - “ सर , न मैं राम सिंह यादव को जानता हूँ और न सद्वावना सिंह को । न मैं राजनीति कर रहा हूँ और बहुत संभावना है न मैं करूँगा । यह सब बहुत ही काल्पनिक मुद्दे हैं जो आप उठा रहे हैं । “

अशोक पांडेय- “ मैं मुख्यमन्त्री का संदेश वाहक हूँ । यह दे संदेश हैं उनके दल में शामिल हो और अगर तुरंत नहीं हो सकते तब राम सिंह यादव के दल में सत जाओ । अनुराग शासक अनुरोध नहीं करता वह आदेश देता है और उस आदेश का अक्षरशः पालन करना परजा का धर्म होता है । यह जो तुम अनुरोध समझ रहे वह आदेश है । यह बताओ तुमको समाप्त करने में एक मुख्यमन्त्री को कितना समय लगेगा । वह दो कार्यकाल से मुख्यमन्त्री हैं । वह पिछड़े वर्ग के एक बड़े समूह के नेता हैं । वह कल को प्रधानमंत्री भी हो सकते हैं । वह अपनी ताक़त बढ़ाना चाह रहे । तुम्हें कुछ ख़ास बातें हैं वह उनके पक्ष में कार्य करे न कि विपक्ष में इसलिये यह प्रस्ताव भेजा है । राम सिंह यादव बेताब हैं तुमको अपने दल में लेकर सद्वावना सिंह पर वार कराने के लिये । राम सिंह यादव जो भी शर्त प्रस्तुत करेंगे उससे बेहतर डील में

तुमको सद्वावना सिंह से दिलवाऊँगा । अनुराग मुख्य मन्त्री को यह पता लगा है कि तुमको विधान सभा या विधान परिषद में राम सिंह यादव लेकर आने का विचार बना चुके हैं और तुम्हारे पास जो बोलने और मुझे उठाने की असाधारण क्षमता है उसको देखते हुये तुम सत्ता पर गंभीर आकर्मण करने में पूर्णतया संक्षम हो । सद्वावना सिंह बड़े पहुँचे हुये नेता हैं और उनके आदमी हर खेमे में हैं । उनको यह पता चल गया है और उन्होंने मुझे तुम्हारी सुरक्षा में लगाकर बड़ी चाल चल दी है । तुमको अगर मैं शामिल करा ले गया तब मेरा भी कद मुख्यमन्त्री की निगाह में बढ़ जायेगा । मैं भी चुनाव लड़ना चाह रहा और हो सकता है तुम मेरे नेता ही हो जाओ । ”

मैं - “ सर राजेश्वर त्रिपाठी ने मुझ पर गोली चलवाई..... ”

मुझे बीच में ही रोकते हुये अशोक पांडे ने कहा वह गोली राजेश्वर ने नहीं जनमेजय ने चलवाई थी ।

मैं - “ चलिये सर किसी ने भी वह गोली चलवाई थी पर आप राजनीति में इतने लिप्त हो । आप सद्वावना सिंह के लिये सारा कार्य कर रहे हो । सर , क्या आप उनके लिये कुछ भी कर सकते हो ? ”

अशोक पांडेय - “ अनुराग आज मेरा जो भी अस्तित्व है मुख्यमन्त्री के कारण है । मैं एहसान मानने वाले लोगों में से एक हूँ । वह जो कहेंगे वह मैं करूँगा ही । ”

मैं - “ सर , अगर मैं आपकी बात मानने से इंकार कर दूँ तब तो मैं सद्वावना सिंह पर खतरा बन सकता हूँ और यह राजनीति जिस तरह आगे बढ़ रही है वह कह सकते हैं खत्म कर दो उसको । आप के पास रिवाल्वर है उसमें 6 गोलियाँ होंगी हीं आप उतार देंगे मेरे सीने में । सर मैं एक बात समझ गया मुझको मरना ही है एक समीकरण के लिये । या तो मैं अपनी अंतरात्मा की आवाज़ अपने जमीर को मारकर हर रोज़ मरूँ या राजनीति की ज़रूरतों और समीकरणों के लिये एक दिन मरूँ । मैं जीवित नहीं रह सकता । मेरे पास एक ही चुनाव है ... हरदिन मरने का या एक दिन मरने का । सर आप सद्वावना सिंह के आदेश का इंतज़ार कीजिये मुझे मारने के लिये । आप मैं और एक शार्प शूटर में फ़र्क़ सिर्फ़ क्रीमत का है काम तो एक ही है । पहली गोली आपने चलायी मुझे हर दिन मारने की अगर वह गोली न लग सकी तब एक दिन तो आप मुझे मार ही देंगे । । ”

अशोक पांडेय को समझ ही न आया अब वह जवाब क्या दें , बस यही कहा तुम बराह्मण हो , मैं तुम्हारा हित ही सोचूँगा । ”

मैं - “ सर यह जाति ही मेरे जीने का सहारा है नहीं तो मेरे जीवन में और क्या था । आपने सारे प्रस्ताव सिर्फ़ मेरी जाति को देखकर ही दिये हैं । ”

अशोक पांडेय - “ मुख्यमन्त्री को जवाब चाहिये वह भी बारह बजे तक । ”
मैं - “ सर मेरी कक्षा है दिन में ग्यारह बजे । एक अध्यापक को मेरे अंदर जग जाने वीजिये , वह सही फ़ैसला करेगा । ”

अशोक पांडेय- “ मैं कह दूँ फ़ैसला दो बजे तक मिल जायेगा । ”
मैं - “ सर भगवान राम को पढ़िये । राज्य प्राप्ति के समय न कोई प्रसन्नता की अतिरेकता थी और न ही अधीरता और न ही बनवास के समय कोई विचलन । मैं सद्वावना सिंह के साथ गया तो पहले उनको राम पढ़ाऊँगा । उनसे कहो राम पढ़ने के लिये तैयार हो जायें ।

अशोक पांडेय अंतिम पंक्ति को पक्ष में समझ कर बहुत प्रसन्न हो गये ।
वह कुछ कहें मैंने कहा दिन के दो बजने का इंतज़ार करिये ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 301

मैं विश्वविद्यालय के यूनियन हॉल पहुँचा । मुझसे वहाँ पर राम अशीष मौर्य और सरला जोशी मिले । वह लोग मंच को तैयार करके माइक लगा रहे थे । मैंने कहा आज मंच चार जगह लगाना होगा । आज कई आम सभा होगी और पूरी भीड़ लेकर दूसरी सभा की ओर एक जुलूस की शक्ल में लेकर चलेंगे । पहली बार जुलूस निकलेगा और एनाउंस करो कि आज मठाधीशों के मठाधीश की बारी है । इससे ज्यादा मत बोलना । इतने से ही सनसनी फैल जायेगी ।

मैं चला गया अपनी कलाँस लेने । मैं कलाँस लेकर आया तब तक समाँ बन चुका था । एक बड़ी भारी भीड़ मेरा इंतज़ार कर रही थी । चुनाव का दिन एकदम नज़दीक आ चुका था । बड़े- बड़े जुलूस , होर्डिंग, बैनर लगे हुये थे । नेताओं के कट आउट भरे पड़े थे । मैंने जैसे ही मंच से बोलना आरंभ किया सामने से मांधाता सिंह का विशाल जुलूस जाने लगा । एक जीप पर कई किलो की माला पहने भारी वजन के मांधाता सिंह चकाचक सफेद कुर्ते में हाथ जोड़े जीप पर सवार थे और कई मोटरसाइकिल बगल में और पीछे छात्रों की विशाल भीड़..

नारा लग रहा था

“जस - जस दिनवा बीतत बा

मांधांता भैया जीतत बा । “

“ हमारा नेता कैसा हो माधांता भैया जैसा हो “

“ यूनिवर्सिटी की यही पुकार .. मांधाता .. मांधाता “

“ हर ज़ोर जुल्म के टक्कर पर संघर्ष हमारा नारा है “

“ मांधाता नहीं यह आँधी हैं यूनिवर्सिटी का गाँधी है “

मैंने मंच से ही कहा भाई मांधाता सिंह को मेरा प्रणाम

रावण रथी विरथ रघुवीरा

यही नारा मेरी भीड़ में से गूँजने लगा

रावण रथी विरथ रघुवीरा

रावण रथी विरथ रघुवीरा

मैंने हाथ उठाकर कहा बड़े भाई मांधाता सिंह अभिनय भी अच्छा करते हैं ,
ईश्वर ने एक बलिष्ठ शरीर दिया ही है अगर यह रावण का रोल रामायण में
करते तो बहुत अच्छा करते .. बस फ़र्क़ यही है कि रावण ज्ञानी था और
मांधाता भैया को अभी ज्ञान की प्राप्ति करनी है .. पर मैं लगा हूँ ज्ञान देने की
प्रक्रिया में देर - सबेर ले ही लेंगे ।

रावण रथी विरथ रघुवीरा

यह नारा गूँजने लगा ।

“यह चुनाव किस मुद्दे पर हो रहा है यह अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ है । छात्रों
का कोई मुद्दा विरोधियों के द्वारा अभी तक सम्मुख लाया नहीं गया है । मेरे
उठाये मुद्दों पर अभी तक कोई जवाब नहीं आया है । मैंने अपनी जन्मतिथि
और मार्कशीट सार्वजनिक कर दी है । मैं परेस से अनुरोध करूँगा सारे
अध्यक्ष पद के प्रत्याशियों की जन्मतिथि और मार्कशीट समाचार पत्र के
माध्यम से मुहैया करायें और अगर कोई कभी फ़ेल हुआ है तब उसको वोट न
देने की मैं अपील करता हूँ । मैं अपने लिये न वोट माँग रहा हूँ और न माँगूँगा
। मैं इनको बेनकाब करना चाहता हूँ । मैं सिर्फ़ यह कह रहा आपके वोट पाने
का कौन अधिकारी नहीं है , कौन अधिकारी है इसका फ़ैसला आप करें ।
मांधाता सिंह , सत्य प्रकाश पांडे और कमल यादव का आपराधिक इतिहास

भी लिखा जाना चाहिये । मैं आज एक राज खोलूँगा । एक ऐसा राज जो यह स्पष्ट कर देगा कौन - कौन शामिल हैं आपकी तबाही में ।”

मेरा काफिला आरंभ हो गया जुलूस की शक्ल में अगले पड़ाव की ओर , फिर तीसरे , फिर चौथे । मैं सनसनी फैलाता जा रहा था । सबको मेरे ऊपर विश्वास हो चुका था कि यह कह रहे हैं तो कुछ खास होगा ही । पत्रकारों की उत्सुकता मैं जगा गया था । मेरे विरोधी खेमे में भी हलचल हो चुकी थी अंत में मैंने शाम को चार बजे यूनियन हॉल के उसी मंच पर वापस आया और जुलूस बहुत बड़ा हो चुका था । सारे होस्टल से लोग बाहर आ चुके थे । मैंने मौके को देखा और वार कर दिया ।

“एक पक्ष मुझे लड़ाना चाहता है तो एक पक्ष मुझे बैठाना चाहता है , यह विश्वविद्यालय परिसर की बात तो समझ आती है पर मुख्यमन्त्री सद्वावना सिंह मुझको ख़रीदना चाहते हैं क्यों ? वह भी मेरी सुरक्षा में नियुक्त एक अधिकारी के द्वारा । वह मेरी सुरक्षा में भेजे गये हैं मुझे ख़रीदने के लिये । जिस मुख्यमन्त्री के पास मेरी लिखी चिट्ठियों को पढ़ने का वक्त नहीं है जो इस विश्वविद्यालय के सुधार के लिये थी उसके पास सारा वक्त है इस विश्वविद्यालय की राजनीति के लिये । मैं ऐसी सुरक्षा व्यवस्था जिसका मुखिया अपने कर्तव्य में नहीं दलाली में लिप्त हो अस्वीकार करता हूँ । आप सब जानते हैं कि राजेश्वर तिरपाठी और सद्वावना सिंह में कितना नज़दीकी संबंध है । अशोक पांडेय ने स्वयम् बताया कि वह मेरी सुरक्षा में कुछ कारणों से शामिल किये गये । न्यायालय के आदेश का कोई पालन नहीं किया गया । न्यायालय ने कहा इनको समुचित सुरक्षा दी जाये । यह समुचित सुरक्षा है ? एक दलाल सुरक्षा का इंचार्ज है । न्यायालय ने कहा कि चौबीस घंटे में मुझ पर हमला करने वाले गिरफ्तार होंगे पर समय सीमा बीत गयी पर हुआ क्या ? अक्षमता की पराकाष्ठा है । वीसी अक्षम , प्रशासन अक्षम , बिके हुये लोग शिक्षा से कोसो दूर रहने वाले हमारे नेता ... यह हाल है समाज का ।

मैं यह सुरक्षा व्यवस्था अस्वीकार करता हूँ । बहता है मेरा खून सड़कों पर तो बहने दो । पर रक्त की हर बूँद से एक और अनुराग पैदा होगा । सहस्त्र अनुराग पैदा होंगे एक अनुराग की हत्या से । हो सकता है यह मेरा अंतिम भाषण हो । मैं ब़ौर सुरक्षा के यहाँ से निकलूँ और आततायी एक निहत्थे पर हमला कर दें । पर आप याद रखियेगा मेरी मौत के बाद यह संघर्ष जारी रहना चाहिये .. जो आग जली है वह आग जलती रहनी चाहिये ...

मैं सर बुलंदी पर चढ़ना चाहता हूँ

बैसाखियों के हौसलों को जहाँ को दिखाना चाहता हूँ

जो कर न सके घोड़ों पर सवार मैंने उनसे ही माँगी अपनी बैसाखियाँ

अब वही दिखाते हैं अपने घोड़ों को रास्ता मेरी बैसाखियों का ।

यह रास्ता आसान नहीं है

यह पता है मुझे

पर मौत से पहले कुछ ज़िंदगी जीना चाहता हूँ मैं ।

अनुराग शर्मा अमर रहे । अनुराग .. अनुराग .. अनुराग के नारे गूँजने लगे ।
मैं नारों के थमने का इंतज़ार करने लगा । थमते नारों के बीच मैं फिर रौ में
आ गयी

जिसको भी ज़िंदगी की चाह है

धड़कनों को कर दो आजाद अपनी मनमानी के लिये

यक़ीन कर मुझ पर वह तुझे सिर्फ़ ज़िंदगी देंगे ।

तुम सब खुदा हो मेरे लिये कुछ भी फ़ैसला कर दो

कहाँ है इंकार इससे

पर मेरे सवालात का जवाब इंकार से पहले दो ।

एक बात कह देता हूँ मैं

हज़ार पैर हों अँधेरों के

कितना भी तेज भाग लें

बस वक्त की पाबंदी तक ।

इन अँधेरों का वक्त ख़त्म हो गया है । अगर यह मेरी हत्या कर देंगे तब
इनकी नाशवान प्रक्रिया और तीव्र होगी । मैं इस सुरक्षा व्यवस्था को त्याग
देता हूँ । मुझे जिस सुरक्षा व्यवस्था पर कोई यक़ीन नहीं है मैं उसे अस्वीकार
करता हूँ । मैं सर्वजन दल से अनुरोध करूँगा शिक्षा के सुधार पर चल रहे
आंदोलन पर सत्तारूढ़ दल की निस्पृहता को देखते हुये सरकार से समर्थन
वापस ले लें । हम अगला संघर्ष इस सरकार के विरुद्ध आरंभ करेंगे ।

शास्त्ररार्थ की विजय हुई, बहिष्कार विजय की ओर और यह विजय हो रही है

रावण रथी विरथ रघुवीरा

रावण रथी विरथ रघुवीरा

यह नारा गूँजने लगा और मैंने मंच से उतर कर अशोक पांडेय से कहा आप अपना यह कुनबा लेकर जाओ । सरला जोशी से कहा कि अगर मेरी हत्या होती है तब आप अशोक पांडेय पर एफआइआर कर देना यह कहते हुये कि सद्वावना सिंह के निर्देशन पर इन्होंने हत्या करा दी ।

मैंने जानबूझकर प्रेस से कोई बात नहीं की ताकि वह अतिरंजनापूर्ण भी कुछ लिख सकें । मैं सारा सुरक्षा छोड़कर घर चल पड़ा । मैंने साइकिल ली किसी की और साइकिल से घर चल पड़ा । यह सब लोग मेरे पीछे चल दिये । मैं राजनीति के लटके-झटके भी तेज़ी से सीख रहा था । मेरा स्वतन्त्रता आंदोलन का गहन अध्ययन भी मुझे प्रति पल परिवर्तित व्यूह बनाने में मदद कर रहा था ।

थोड़ी ही देर में पत्रकारों ने यह बात फैला दी और कमिशनर साहब के होश उड़ गये । वह रात को कलेक्टर के साथ घर पर आये । मैंने सारी बात बतायी और कहा, सर अब मैं किस पर यक़ीन करूँ । अशोक पांडेय को हटा दिया गया । बात लखनऊ तक पहुँच गयी । अगले दिन पेपर में सब छप गया । आज केस की सुनवाई का दिन था । सबके हाथ पाँव फूल गये । मुख्य न्यायाधीश गुस्से में आ गये यह घटनाकरम देखकर । एक *amicus curiae* को वाद में नियुक्त कर दिया । वरिष्ठ अधिवक्ता राजेन्द्र चौधरी को नियुक्त किया और कहा आरोप गंभीर लगाये गये हैं । अनुराग शर्मा से एफिडेविट फ़ाइल कराइये और उनको निर्देश दीजिये कि जब तक मामला चल रहा है वह समाचार पत्रों से वाद के बारे में बात न करें ।

मुझे शाम को चौधरी साहब ने बुलाया । मैं उनके चैंबर में गया । वह पाइप पीते थे और ऊँचे क़द के आकर्षक हँसमुख व्यक्ति थे । उन्होंने कहा कि जो आपने आरोप लगाया है उस पर एफिडेविट फ़ाइल करना होगा ।

मैं - “ उससे क्या होगा ? ”

चौधरी साहब - “ होना जाना कुछ नहीं है बस रायता फैलेगा, वैसे मैं देख रहा हूँ इतने दिन से तुम रायता फैलाने में माहिर हो । यह प्रतिभा जन्मजात है या कहीं से टरेनिंग ली है । ”

मैं कुछ बोलूँ उसके पहले ही वह बोल पड़े

“ तुम कहाँ इस चक्कर में पड़ गये हो । जाओ नौकरी करो, ईश्वर ने इतनी अच्छी नौकरी दे दी है पर तुम्हारा मन खुराफ़ात में ही लगा है । हो पूरे इलाहाबाद । कहाँ के हो ? ”

मैं - “ करछना का । ”

चौधरी साहब - “ तब तो रायता फैलाओगे ही । अरे वह एक डील ही तो दे रहा था और क्या कर रहा था । अब जो तुम्हारा नुकसान करें वह गलत और जो फायदा करें वह गलत । भाई किसी को तो जीने दोगे । ”

यह कहकर वह हँसने लगे और पाइप से धुँआ निकालकर बोले चाय पियोगे ? अब कल यह मत कह देना कोर्ट में चाय पिला कर कुछ डील कर रहा था । ”

यह कहकर वह फिर हँसने लगे और कहा , “ तुम हो इंटरेस्टिंग आदमी । ”

कुछ सोचकर बोले , “ एक बात बताओ , तुम चाहते क्या हो? यह समाज सुधार , शिक्षा का विकास यह सब तो ऊपरी जामा है असली मकसद क्या है ? राजनीति करने का इरादा है क्या? किस दल से बातचीत चल रही है । सद्वावना सिंह के खिलाफ़ कौन है जो तुमको आगे रखकर चाल चल रहा है । तुम्हारी तो इतनी समझ नहीं हो सकती । ”

मैं - “ कोई नहीं है । ”

चौधरी साहब - “ कोई तो होगा । चलो छोड़ो यह बात अनुराग , मेरा भी एक काम करो । ”

मैं “ कहें सर । ”

चौधरी साहब - “ मेरे लड़के को कुछ पढ़ाओ । उसको कुछ सुधार दो । इतने लड़कों को पढ़ाते हो उसको भी पढ़ाओ । वकीलों के लड़के पढ़ते ही नहीं कितनी भी कोशिश कर लो । ”

मैं “ ज़रूर सर । ”

चौधरी साहब - “ पर खुराफ़ात से समय कब मिलता है तुमको जो पढ़ा लेते हो । ”

मैं “ सर , ईश्वर की कृपा है । ”

चौधरी साहब - “ कुछ ज्यादा ही कृपा है । ”

अगले दिन ने आदेश सुनाया गया और आदेश पारित कर दिया गया । आदेश में यह कहा गया कि अनुराग के लगाये आरोपों की निष्पक्ष जाँच की जाये , अशोक पांडेय के खिलाफ़ विभागीय इन्वेस्टिगेशन आरंभ हो । इनकी सुरक्षा का जिम्मा एक निष्पक्ष व्यक्ति को दिया जाये और उसका पूरा विवरण न्यायालय को दिया जाये । अनुराग के ऊपर किये गये हमले पर अभी तक कोई गिरफ्तारी क्यों नहीं हुई , यह पूछते हुये कहा कि इस मसले पर हुई प्रगति का ब्यौरा प्रस्तुत किया जाये ।

उस दिन शाम को राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह मिले । राजेश्वर तिरपाठी ने कहा , “ जनमेजय भरत जब कहेन कि अनुराग के लेटाई देई तब हम तू रहे और सहमति हमार तोहार तअ रही ओहमें । ”

जनमेजय सिंह - “ यह हमको क्यों बता रहे हैं आप ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ कुछ नाहीं बस ऐसन मोहें से निकलि गअ । अब चलित हआ हम । चुनाव तअ अलगै धारा पर चलत बा । ”

उस रात भरत सिंह की हत्या बनारस में और बच्चा सजीवन की अरैल में हो गयी ।

अगले दिन सुबह राम सजीवन ने पूछा फरगैंया से

“ भैया दक्षता भाषण कब बा ? ”

फरगैंया - “ आज बा सुम्मार , ई बा बेफई के और सुकरवार के बा चुनाव । ”

राम सजीवन - “ भैया तू जाबअ भाषण सुनै ? ”

फरगैंया - “ पहिले तअ हर साल जात रहे पर कुछ सालन से स्तर गिर गअ बा तब जाब बंद कै दिहा । पर एह साल जाब । ”

राम सजीवन - “ भैया हमहूँ के लै चलअ । ”

फरगैंया - “ तू जाबअ अपने गोड़े से कौन हमरे काँधे पर लद के चलबअ , बगलै में त बा विश्वविद्यालय । ”

राम सजीवन - “ मतलब संगे लै चलअ हमका जब जाई लागअ । ”

फरगैंया - “ चलाचलअ संगे । ”

राम सजीवन - “ भैया कुछ सूचना दअ , तोहार सूचना तन्त्र त तगड़ा बा । ”

फरगैंया - “ ज़रा मीठ चाहि मँगावअ , स्विच ऑन होई दअ , तोहार बँगैर सूचना पाये खाना नाहीं पचत । ”

“ ऐ छोटे दुई मीठ चाहि लै आवअ । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 302

राम सजीवन “ फरगैंया भैया ई खेला का होत बा ? ”

फरगेंया - “ ई लंबी गेम खेलत बा । “

राम सजीवन - “ भयनवा जीत जाये ? “

फरगेंया - “ कैसे जीते ? न पोस्टर , न बैनर , न चुनाव प्रचार । ई त बस हंगामा खड़ा करत बा । “

राम सजीवन - “ लड़िका लोग वोट न देझहिं ? “

फरगेंया - “ वोट न माँगअ बस भाषण दअ इ तअ नवा खेला फैलावत बा । ई चुनाव चढ़ावत बा पर चुनाव लड़त नाहीं । “

राम सजीवन - “ चुनाव कैसे लड़ा जात हअ ? “

फरगेंया - “ पोस्टर - बैनर लगई चाही , गाड़ी - घोड़ा दौड़ै , बड़ा- बड़ा जुलूस निकारअ , मठाधीश संगे लपटियाय । हर छात्रावास में मठाधीश होत हअ ओनका साधे पड़त हअ , डेलीगेसी के अलग पंडा हयेन ओनका दान - दक्षिणा दअ । जाति के नेतन के पकड़े पड़त हअ , थोड़ा डर चाही राजनीति बरे लोगन के भरोसा होई चाही कि अड़े - गड़े मैनपॉवर के साथ तू खड़ा होई सकत हअ , भई बिनु होई न परीति । अब ऐ न लगायेन एक पोस्टर न एक बैनर , कहत हयेन कि हम न वोट माँगा न माँगब । बगैर माँगे केउ भीखौ नाहीं पावत । गंगा किनारे के भिखमंगवन के भी रिरियाये पड़त हअ और ओनहननौं गोहार लगावत हअ .. जे देय होऊ के भला जे न देय होऊ के भला । पर एनकर त साज अलग राग अलग । “

राम सजीवन - “ मतलब कुछ न होये एनकर ? “

फरगेंया - “ होये .. कुछ त होइबै करे । कुछ तअ वोट पाए । अब कुछ पढ़वइया, कुछ लड़कियन वोट दै देझहिं पर जितहिं नअ । ऐ सत्य प्रकाश के हराई सकत हअ । एक बाभन के नुकसान कै देझहिं । “

राम सजीवन - “ सुना हअ नौकरी में जावा चाहत हअ । “

फरगेंया - “ अब नौकरी में तअ न जाये । ई राम सिंह यादव कुछ साधे हये एका , ई सुना हअ । होई सकत हअ ओनकरे हाथे में खेलत होय । मुख्यमन्त्री पर इतना बड़ा हमला बगैर बैकिंग के नाहीं होई सकत । केऊ त पीछे बा , का पता कलावतिया चोटिटन साधे होई सद्वावना पर नकेल बरे । कुछ तअ लंबा खेला बा । “

राम सजीवन - “ पेपर में छपा रहा कि कलेक्टर के डॉट देहेस । “

फरगेंया - “ बा त तेज । कलेक्टर के हूक निकार देहेस । न्यायालय के ताकत बा एकरे संगे , कमांडो सिक्योरिटी पाये बा । चलअ भाषण अच्छा सुनै के मिले । बोलै में तअ माहिर बा , उहीं के तअ खात बा । “

राम सजीवन - “ सर्वेश के का होये अब ? “

फरगेंया - “ लागत बा सर्वेश बचि ज़इहिं । जाँच बैठा बा पर भयेनवा होई गवा बा बड़ा मनई ई बचाई सकत हअ । ”

राम सजीवन - “ कलेक्टर सुनि लेइहि ? ”

फरगेंया - “ कलेक्टर के का औँक्रात, ई इलाहाबाद के भविष्य बनि सकत हअ जेह तरह से बढ़त बा । पर एकर खोपड़ी बा बहुत विचित्र, ई कब का कै देअ एका खुदै नाहीं पता बा । तनिक बेसहूरौ बा । ”

राम सजीवन - “ ऊ कैसे ? ”

फरगेंया - “ मुख्यमन्त्री परस्ताव भेजे रहेन । परस्ताव सुने के पहिलेन रेजेक्ट कै देहेस । अरे सुन लेहे होतअ । ऐसन कौन आफ़त आई गअ रही कि तू सुनिउ नाहीं सकत रहअ । अबअ परिपक्व नाहीं बा ई । बहुत लड़कपन बा । ऐका चाही कौनों समझदार मनई जौन समझावै ठीक से । ई मौसमी हवा के तूफान समझ बैठा बा । ”

राम सजीवन - “ तू भैया समझावअ । तोहरे तअ नातेदारी में बा । ”

फरगेंया- “ हमरे लगे आवै तअ हम कुल राजनीति समझाई देइत । हम राजनीति शास्त्र पढ़ेऊ हई और लढेऊ हई । ”

राम सजीवन - “ का समझउब भैया ? ”

फरगेंया - “ कुलि दल से बात चलावअ और जे ढेर देई ओकरे संगे जा । आज समाँ बधी बा सब पूछत हयेन काल चुनाव हारि जाबअ केउ न पूछे । बंद मुटठी सवा लाख के खुली तअ माटी । अबअ मुटठी बँधी बा सौदा कै लअ । रूपिया माँगअ , लाल बत्ती माँगअ , पद माँगअ । देखअ का मिलत हअ । फिर सौदा कै के आगे बढ़ाऊ इहई राजनीति हअ । ई समाज सुधार , शिक्षा के बरे लड़ाई ऐसे का होये । जेका पढ़ै के बा ओ त वोट देत हयेन जाति और क्षेत्र पर और तू ओनहन बेसहूरन बरे लड़त हअ । ई त मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त वाली हाल होई गअ । अहिर वोट दे अहिर के , ठाकुर दे ठाकुर के , बाभन दे बाभन के और तू लगा हअ शिक्षा पर वोट दअ । ऐ इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बरबाद इहाँ के इहै परवृत्ति केहे बा । केशव यादव ज़िंदगी में एकै काम केहेन राम सिंह यादव के परिवार के चेलागीरी और गुंडई पर वोट भरपूर पझहिं , जाति के ताक़त बा , बड़ी पार्टी के सपोर्ट बा । तू देख लेहअ ओकरे कोचिंग में पढ़ै वालेन ठाकुर और अहिर में से कुछ ओका वोट न देइहिं । ई समाज नसाई गवा बा । ऊ मुफ़्त में पढ़ावत बा पर ओकरे मेहनत पर वोट न पड़े जाति पर पड़े । उही से पढ़हिं पर वोट देइहिं जाति पर । कौनौ आपन लड़ाई तअ लड़त बा नाहीं , पर जाति के बाहर केउ वोट न दे ई सोचि के कि ई हमार लड़ाई लड़त बा । अब तू बतावअ कैसे चुनाव जीते ? पर समान के अधिकारी बा , केउ सोचेस तअ विश्वविद्यालय बरे , आज तक तअ केउ सोचबै नाहीं केहेस । एक बात और कही ? ”

राम सजीवन - “ कहउ भैया । ”

फरगैंया - “ बहुत बड़ा जिगरा चाही राजा कहै तू का चाहत हअ और तू कहि दअ तू का दै सकत हअ हमका । एक क्रिस्सा सुनावत हई । एक राजा गवा एक फ़क़ीर के पास और कहेस बोलअ का चाहत हअ हम देब । फ़क़ीर कहेस तनिक ब़ग़ल हटि जा हमार धूप तू लै लेहअ । तू जहाँ जात हअ कुछ लेबै करत हअ तू देबअ का । वैसेह इ भयेनवा बा , कहि दहेस तू देई नाहीं माँगई आई रहअ । हमार भौजी और एकर मामी सगिन बहिन हईन , रिश्ता दूर के बा पर जब मिलत हअ गोड़ई पकड़त हअ । एकर बोबा सूरज शर्मा मरि गयेन ओ एका गणित पढ़ाये रहेन । आज होतेन तअ केतना खुस होतेन । डेबरा के नाम कै देहेस । पहिले आईएस भवा , पुनि आईएस छोड़ेस , फिर पढ़ाएस, अब लाग बा समाज सुधार में । जेतना लोग सफल होई के नाहीं नाम कमाएन ओसे ज्यादा त ई ठोकराई के कमायेस । दक्षता भाषण देखअ ई कैसन चढ़ाये, नाकन चना चबवाई दे सबके । सद्वावना सिंह के खिलाफ़ एफिडेविट फ़ाइल कै देहेस । ई कौनौं सामान्य बात बा मुख्यमन्त्री के नंगा झोरी लै लेहेस । एक पुरान साइकिल लाल बत्ती के क्राफ़िला पर भारी पड़त बा । चलअ एक और मीठ चाहि मँगवअ । उ त जुड़ान चाहि रही तनिक गरम मँगावअ । ”

मैं शाम को घर गया । आंटी मेरे भाई से पेपर सारा मँगाती थी । वह हिंदी , अंगरेज़ी सब पेपर पढ़ती थी । वह अंगरेज़ी पेपर में छपा माँ को अनुवाद करके बता देती थी । अंगरेज़ी पेपर में बेहतर लिखा होता था । मेरे घर पहुँचने के पहले अशोक पांडेय की जगह एस पी यमुनापार सुकृति मानस को इंचार्ज बना दिया गया था और वह घर पर जायज़ा लेने पहुँच गये थे । न्यायालय की नाराज़गी के कारण इस बार प्रशासन ने थोड़ी सतर्कता बरती और एकदम नये अधिकारी को नियुक्त किया । यह उनकी एकेडमी से निकलने के बाद की पहली पोस्टिंग थी । वह नये उम्र के 6 फुट लंबे सुंदर अधिकारी थे । मेरे सुरक्षा प्राप्त हो जाने से माँ के पास आत्मविश्वास आ गया था और आंटी के होने से एक सहारा । आंटी ने कह दिया था कि अनुराग जनवरी में चला ही जायेगा अगर अभी नहीं जायेगा , उसको चुनाव लड़ लेने दो कितना दिन रह ही गया है । मैं भी जाऊँगी उसका दक्षता भाषण सुनने । यह दिल्ली विश्वविद्यालय और जेएनयू में भी होता है , मैं गयी हूँ सुनने । उमिला तुम भी चलना । यहाँ का तो मुझको नहीं पता पर वहाँ तो बहुत अच्छा होता है । माँ ने भी कहा चलेंगे सुनने । शाम को घर पर मेरी सुकृति मानस से मुलाक़ात हुई । वह आईआईटी कानपुर के कम्यूटर इंजीनियर थे । वह एक आदर्शवादी अवधारणा के अधिकारी थे , शायद यह अवधारणा ही उनको यहाँ तक ले आई । वह एक चुनौतीपूर्ण कार्य पाकर प्रसन्न भी थे । उन्होंने कहा , “ सर यह एक सुखद संयोग है मेरे लिये कि मुझे यह कार्य सौंपा गया । आप निश्चिंत रहें , मेरा कार्य मुझको बखूबी आता है आपको कोई समस्या नहीं होगी । एक

ऐसा आंदोलन मैंने किताबों में तो शायद पढ़ा होगा पर साक्षात् देखने का एक अवसर मिला । उन्होंने निर्देश दे दिया कि जो भी बाहरी आदमी घर में आये उसकी तलाशी लेकर ही आने दो और गली में आने - जाने वालों पर निगाह रखो । वह एक कड़ी निगाह के अफ़सर थे और उनकी छवि का भय सिपाहियों पर था ।

घटनायें बंद होने का नाम ही नहीं ले रही थीं । रात में रमेश शर्मा आये और वह बहुत निराश थे । मैंने उनको देखते ही प्रणाम किया और पूछा , “ सर , इस समय कैसे आना हुआ ? ”

रमेश शर्मा- “ मैं सत्य प्रकाश पांडे को छोड़ रहा हूँ । ”

मैं- “ क्या हुआ सर ? ”

रमेश शर्मा- “ राजेश्वर तिरपाठी ने मुझे चुनाव से हटाया था इस आश्वासन के साथ कि अगले साल मैं ब्राह्मण उम्मीदवार बनकर लड़ूँगा , इस साल सत्य प्रकाश को जीतने दो पर सारा मामला उलट रहा है , मैं तुमको सूचना देने आया हूँ तुम सावधान हो जाओ । ”

मैं- “ क्या सूचना है ? ”

रमेश शर्मा- “ आज मुख्यमंत्री ने कहा है राजेश्वर तिरपाठी से कि चाहे जो हो जाये अनुराग शर्मा को सौ वोट भी नहीं मिलना चाहिये । उसको हराओ और बुरी तरह हराओ जो भी संसाधन चाहिये सब लो । पैसा अब चुनाव में और बहेगा । राजेश्वर तिरपाठी की तो बन गयी वह भरपूर पैसा लेगा । ”

मैं- “ सर , यह कौन सी खास बात है । यह तो पता ही था । यह बात बताने आप रात में क्यों नाहक कष्ट किये । चुनाव तो मैं हारँगा ही । अब 100 वोट से हारँ या सौ वोट

पाकर हारँ क्या फ़र्क़ पड़ता है । मैंने कभी चुनाव जीतने के लिये तो चुनाव लड़ा ही नहीं था । सर , मैं आज तक किसी होस्टल नहीं गया , मेरा कोई चुनाव कार्यालय नहीं है , मैं वोट किसी से माँगता नहीं । मुझे कोई वोट क्यों देगा जबकि मेरे विरुद्ध के व्यक्तियों के साथ बड़े- बड़े मठाधीश हैं , पैसा है , एक आधारभूत ढाँचा है चुनाव लड़ने का और आप कह रहे कि मुख्यमंत्री का व्यापक समर्थन भी आ चुका है । सर , मेरा काम हो चुका है । मैं पढ़ाना चाहता था वह काम हो गया है । जो सर्कुलर पढ़ाने में समस्या कर रहा था वह शून्य घोषित हो चुका है । मेरी कोचिंग चल रही है , वी सी साहब डर गये हैं , मेरा जहाँ मन करता है वहाँ पढ़ाता हूँ । अब कोऊ नृप होये हमें का हानि । ”

रमेश शर्मा- “ कौन कह रहा तुम चुनाव नहीं जीत सकते । अंदर की हवा का लोगों को पता नहीं है । अंदर ही अंदर हवा है तुम्हारी । अगर नहीं भी जीतोगे तब भी बहुत तगड़ी टक्कर दे रहे हो । मुख्यमंत्री ने सीबीसीआईडी के रिपोर्ट को जानने के बाद यह कहा है और वह रिपोर्ट की बात सुनकर राजेश्वर भी घबड़ा गये हैं । ”

मैं- “ सर , पर आप क्यों चिंतित हो ? क्या आपको पैसा नहीं मिल रहा सब राजेश्वर तिरपाठी खा जायेंगे इसलिये ? ”

रमेश शर्मा- “ आज रात मांधाता बैठेंगे और सत्य प्रकाश ब्राह्मण - ठाकुर के सम्मिलित उम्मीदवार होंगे । ”

मैं- “ सर , यह तो आपके लिये खुशी की बात है । जीत आपकी और आसान होगी । मैं पहले ही कह चुका हूँ मेरी कोई रुचि चुनाव जीतने में है नहीं । ”

रमेश शर्मा - “ मेरा नुक़सान है । ”

मैं- “ कैसे ? ”

रमेश शर्मा- “ जो डील हो रही है इसमें इस साल सत्य प्रकाश और अगले साल माधांता अध्यक्ष के सम्मिलित उम्मीदवार होंगे । मैं तो गया काम से । मैं अब कभी ब्राह्मण उम्मीदवार हो ही नहीं पाऊँगा । दो साल तो गया । एक प्रस्ताव है मेरा । ”

मैं- “ क्या सर ? ”

रमेश शर्मा- “ तुमको राजनीति की समझ कम है , मैं तुम्हारे साथ आ जाता हूँ और तुमको सारी गणित बताता हूँ । तुम चुनाव जीत सकते हो अगर थोड़ा जातिगत गणित और होस्टल को नियंत्रित किया जाये । पैसा भी मैं खर्च करूँगा । ”

मैं- “ सर एक अजनबी बेसिर पैर के सोच वाले आदमी के साथ आकर आपको क्या मिलेगा ? ”

रमेश शर्मा- “ तुम जिस मुद्दे पर चुनाव लड़ रहे हो उस मुद्दे को साल भर जीवित रखो । मुझे अगले साल चुनाव लड़ाओ । इस जातिगत गठजोड़ के खिलाफ़ मुद्दे का चुनाव । ”

मैं- “ अगर मैं हार गया और अगले साल मैं फिर लड़ा तब ? ”

रमेश शर्मा- “ तबकी तब देखी जायेगी । अभी मुझे उनका साथ छोड़ने में मदद करो । मुझे उस कैंप से निकलना है और जल्दी । ”

मैं- “ सर निकल आइये । आप बड़े नेता हैं । आपको कौन रोक सकता है । ”

रमेश शर्मा - “ ऐसे निकलने पर कोई हवा नहीं बनेगी । तुम्हारे साथ आऊँगा तब हवा बन जायेगी । एक मुद्दा हाथ रहेगा । मैं दो- तीन को और ले आऊँगा जो उपाध्यक्ष, महामन्त्री का चुनाव ऐसे ही नामांकन कर देते हैं । ”

मैं - “ वह क्यों आयेंगे ? ”

रमेश शर्मा - “ कुछ लोगों का काम है कि नामांकन करके चुनाव प्रचार करना और जब थोड़ी बहुत हवा बन जाये तो पैसा लेकर बैठ जाना । कुछ लोग पैसा पा जाते हैं और कई नहीं पाते । इस समय जिनको पैसे का प्रस्ताव अभी तक नहीं मिला है वह अधीर हो चुके हैं । वह आने- पौने किसी भी दाम पर बिकने को तैयार हो जायेंगे । कुछ हज़ार का खर्चा है, मैं आज रात में तीन- चार को ख़रीद लेता हूँ और वह सब कल मेरे नेतृत्व में तुम्हारे शिक्षा के सुधार, जातिविहीन समाज और परिसर से अराजकता का समापन हो इस मुद्दे पर नामांकन वापस लेकर तुम्हारे साथ आ जायेंगे । कल की बहुत बड़ी सभा तुम्हारी होगी । एक हवा बन जायेगी और हो सकता है अनुराग शर्मा अध्यक्ष हो ही जायें । ”

मैं रमेश शर्मा की तरफ देखकर सोच रहा था कि इनको कौन सी शॉक थिरेपी दूँ, इनको यहीं ख़त्म कर दूँ या इनको कल तक इंतज़ार करने दूँ....

मैं यह सोच ही रहा था कि रमेश शर्मा ने यह सोचकर कि लोहा गर्म है और अंतिम वार करके लोहे को तलवार बना ही देते हैं यह कहा .. “ मैं जब साथ आ जाऊँगा तब बताऊँगा तुम्हारे ऊपर किये जाने वाले हमले के पीछे की राजनीति क्या थी ”

मैं शांत था , गंभीर था .. सोच रहा था विधाता तू मुझसे कितनी कहानी लिखवाना चाहता है । मैं जब सोचता हूँ बस कहानी हो गयी तू वेताल बनकर विक्रम को छकाने लगता है ।

रमेश शर्मा बोले .. “ क्या सोच रहे हो ? ”

मैं - “ सर काश मैं बिक सका होता आज मैं कुबेर होता । मुझे ख़रीदने बहुत आये पर कोई मेरी सही कीमत न लगा सका और सर मुझे भी अपनी कीमत पता नहीं है । सर , मैं बिकना चाहता हूँ पर औने-पौने दाम पर नहीं एक पूरी कीमत वसूल कर , पर सर इतने बड़े- बड़े व्यापारी आये वह पूछ भी रहे कीमत मुझसे पर मुझे हमेशा लगता है कहीं मैं सस्ते न बिक जाऊँ इसीलिये बाज़ार उजड़ने की ओर है और मैं अनबिका सौदा ही रह गया । एक कविता सुनेंगे सर ? ”

रमेश शर्मा - “ सुनाओ ... ”

मैं - “एक जंग है उसूल की
जो होती है बहुत नेक
एक बार तू लड़कर तो देख
अपनी निगाहों में अपना क़द बढ़ाकर तो देख
कोई ज़मीन पर गिरकर भी ज़मीर सँभाल लेता है
कोई ज़मीं पर सीधा खड़ा होकर पर भी अपने को गिरा देता है
क़ब्रगाह को फ़ख़्र करने दो समां कर तुम्हें अपने में
शमशान की लकड़ियों को खुशी में धधकने दे जला कर तुम्हें अपने में
उसूल की यह जंग है
एक बार लड़कर तो देख । ”

रमेश शर्मा- “ यह उसूल की ही तो जंग है जो मैं लड़ना चाह रहा । ”

मैं - “ सर आप कल मत आओ मेरे साथ । ”
रमेश शर्मा- “ कब आयें ? ”

मैं - परसों क्यों ? कल क्यों नहीं ? ”

मैं - “ सर , समर्थक नेता से प्रश्न नहीं करते । सिपाही को लड़ना चाहिये जो भी युद्ध नीति हो । युद्ध नीति सेनापति बनाता है और उसमें कई बार कुछ सैनिकों की हत्या का विधान होता है किसी दूरगामी लक्ष्य को लेकर । सर , अब आप आहत होने वाले सिपाही हो या विजय की दुन्दुभी के साथ राज्य भोगने वाले इसका फ़ैसला मुझे करने दो । आप के पास वैसे भी कोई विकल्प है नहीं । । सर , हल का फाल कैसा होगा इस पर किसान लोहार को राय न दे बस वह यह बताये मिट्टी कैसी है खेत की और लोहार पर भरोसा रखे । आप ने बता दिया संग्राम का नया स्वरूप । आप इस लोहार पर यक़ीन रखो अगर खेत से हलाहल फ़सल चाहते हो ।

सर , परसों रण भयानक होगा । जो आज तक नहीं हुआ वह होगा । आप कल से कृता- पाजामा नहीं कमीज पैंट पहनो और मेरी कक्षा में कल एक छात्र के रूप में आओ ।

सर , मैं राजनीति का शकुनि नहीं हूँ मैं रण क्षेत्र का दरोणाचार्य हूँ ...
मैं चक्रव्यूह , कमल व्यूह नहीं ... प्रति पल परिवर्तित व्यूह बनाऊँगा ।

रमेश शर्मा के जाने के बाद मैं अपने कमरे में आया । माँ और आंटी भी थोड़ी देर में आ गये । आंटी ने आते ही कहा , “ अनुराग , तुम्हारे पास समय ही नहीं है । मैं जबसे आयी तुमसे ठीक से बात ही नहीं हो पायी । ”

मैं - “ सच कह रही है आंटी । यह चुनाव हर दिन एक नया झरामा खड़ा कर देता है । ”

आंटी - “ तुम्हारे बारे में तो अब पेपर से ही पता चलता है । वहीं से सारी खबरें मिलती हैं । तुम कुछ बताते नहीं , तुम पूरे नेता हो गये हो । ”

माँ - “ शांति पता नहीं कहाँ से ई भूत सवार होई गवा मुन्ना के । सन्न मारि के गअ होतेन ट्रेनिंग करै अबअ तक एनकर बियाह तई कै देहे होइत और जाड़ा में निपटाई देइत । पर एनका जौन भूत चढ़ि न जाई । ”

आंटी - “ अब यह चुनाव रह ही गया है तीन- चार दिन उसके बाद तो मुक्त हो जायेंगे । ”

माँ - “ एक बरम उतरै तब दूसर चढ़ि जाये । कौनौ भरोसा बा एनकर । ”

आंटी - “ अनुराग , कल कहो तो मैं और उमिला गाँव हो आयें । अब आयी हूँ तो चली ही जाती हूँ । ”

मैं - “ ज़रूर जाओ । ”

इतने में भाई ने आवाज़ दी कि सुकृति मानस साहब आये हैं । मैंने कहा ऊपर भेज दो मेरे कमरे में । सुकृति आ गये मेरे कमरे में । वह मुझसे बहुत प्रभावित थे और मेरे साथ बहुत रहना चाहते थे । इसलिये अक्सर आ जाते थे । उनके आते ही माँ ने कहा , “ भैया तुहाँ मुन्ना के फेर में पड़ि गयअ बेमतलब और ड्यूटी लाग गई । ”

सुकृति- “ नहीं आंटी जी , मैंने यह काम माँगा था । जब अशोक पांडेय वाली समस्या उत्पन्न हुई तब बहुत से लोग सर के साथ काम करना चाहते थे । ”

माँ - “ काहे ? ”

सुकृति - “ आंटी जी यह समाज चलता है पर्सेष्यन पर । सर ने मुख्यमन्त्री का प्रस्ताव जिस निडरता से अस्वीकारा है उससे एक अवधारणा बहुत तेज बनी है कि यह विपक्ष में शामिल होंगे और सरकार पर हमला करेंगे । इस बार शायद सरकार बदल जाये और अगली सरकार में सर का कृद बहुत बड़ा हो सकता है । यह जितने आईएएस , आईपीएस , पीसीएस , पीपीएस अफ़सर हैं यह दिन- रात एक ही जुगाड़ में रहते हैं कि कैसे हर दल के नेता के साथ साँठगाँठ बनी रहे । अब जिस तरह सर की समाँ दिन पर दिन बन रही हर कोई चाह रहा इनसे नज़दीकी बन जाये । ”

आंटी - “ तुम भी कोशिश किये थे क्या ? ”

सुकृति - “ मैं चाहता ज़रूर था पर कोशिश न की थी । पर मैं चाह रहा था एक छात्र आंदोलन को क्रीब से देखना । ”

आंटी - “ ऐसा क्या है इस आंदोलन में ? ”

सुकृति - “ आंटी जी ऐसा तो मैंने कभी सोचा ही न था कि इस तरह का भी आंदोलन हो सकता है । मैं छात्र आंदोलन पर लिखना चाहता था और यह एक अवसर था मेरे लिये । ”

आंटी - “ बहुत लोग प्रयास किये वह न आ सके तुम कैसे आ गये ? ”

सुकृति - “ मेरा बैकग्राउंड काम आ गया । ”

आंटी - “ क्या बैकग्राउंड है आपका ? ”

सुकृति मानस - “ मैं आईआईटी कानपुर का कम्प्यूटर इंजीनियर हूँ । ”

आंटी - “ मेरा बेटा भी आईआईटी दिल्ली का कम्प्यूटर इंजीनियर है । ”

सुकृति मानस - “ क्या नाम है ? ”

आंटी - “ ऋषभ मिश्रा । ”

सुकृति मानस - “ आप ऋषभ की माँ हैं , बहुत सुंदर संयोग है । आपसे मुलाक़ात हो गई । ”

आंटी - “ आप जानते हो उसको ? ”

सुकृति मानस - “ उनको आईआईटी में कौन नहीं जानता , वह तो विधाता की बनायी एक नायाब कृति हैं । उनके प्राइम नंबर के रिसर्च के बहुत किस्से हैं । सुना है आजकल न्यूयार्क में हैं और बहुत पैसा कमाया । ”

आंटी - “ वह इंडिया आ रहा । इलाहाबाद भी आयेगा अनुराग से मिलने । ”

सुकृति - “ बहुत अच्छा संयोग होगा मुलाक़ात हो जायेगी । ”

माँ - “ शालिनिउ आईआईटी के हर्ड , ऋषभ के दुलहिन । तू सब आईआईटी वाला हअ । आईआईटी के परीक्षा मुन्नौ देहे रहेन पर ऐ त अंगरेज़िय में फेल होई गवा रहा होइहिं , देहेन तअ दुर्द दाईं पर एनकरे बस के ऊ परीक्षा रही नाहीं । ”

मैं - “ माँ , सब धो दो । यहाँ मेरी बहार चल रही और इस कमरे में धुलाई । ”

माँ - “ अब जौन सच बा तौन सच बा । एहमें कौन चोरी बा । कौन ग़लत काम के देहअ तू । जौन भाषा पढ़े हअ ओहमें तअ केउ तोहका खेदे न पाये

अब हमार हैसियत तोहका अंग्रेजी स्कूल में भेजे के नाहीं रहे एहमे तोहार कौन दोष । “

माँ अपने अतीत की बात पर अक्सर दुःखी हो जाती थी ।

सुकृति- “ आंटी जी अच्छा हुआ आईआईटी नहीं गये । आईआईटी वालों को इंजीनियरिंग के अलावा और कुछ आता ही नहीं है । सर ने यहाँ कितना कुछ सीखा । दुनियादारी में माहिर है , राजनीति तो ऐसी चला रहे हैं कि परदेश सरकार हिल गयी है । कमिशनर साहब मुझसे कह रहे थे उसका मस्तिष्क इतना तीक्ष्ण है कि आप जो भी अनुमान लगाओ उसकी बनायी कहानी घटनाक्रम के प्रवाह को बदल देती है । ”

माँ - “ भैया , ई समय ठीक से बीत जात । मुन्ना एकेडमी चला जातेन चैन मिलत । राजनीति बड़े आदमी के काम हय । हम गरीब- गुरबा के बस के काम नाहीं बा । उहि दिना गोली लग गई होता तब तअ हमार कुल दुनियय उजड़ि गै होत पर गंगा माई बीच में खड़ी होई गइन मौत डेराई गई । ”

सुकृति - “ आंटी जी यह नौकरी करके क्या करेंगे ? उसमें क्या मिलेगा ? ”

माँ - “ जिये खाई के सहारा चाही बेटवा , हमरे लगे का बा । घर तू देखतै हअ और जिम्मेदारी कपारे पर बा । मुन्ना के नाम के सहारा बा उहै बचि जाई गंगा मैया के बहुत कृपा होए । ”

सुकृति - “ आंटी जी अब सर एक बड़े वर्ग की आशाओं का केन्द्र हैं । यह नौकरी बहुत छोटी चीज़ है । ”

माँ-“ जेतनी हमार समझ बा ओतना हम कहि देहा , बाक़ी मुन्ना तअ अब हमार सुनबै नाहीं करतेन । ई बतावअ सुकृति तोहअ कौनौ काम मिला बा कि ई फ़ालतू सुरक्षा व्यवस्थै देखत हअ । ”

सुकृति - “ आंटी जी , मैं एस पी यमुनापार हूँ । इस सुरक्षा व्यवस्था का इंचार्ज बनाया गया हूँ क्योंकि उच्च न्यायालय का आदेश था किसी सीनियर अधिकारी के निर्देशन में व्यवस्था की जाय । ”

माँ - “ मतलब तू पूर जमुना पार के मालिक हअ । ”

सुकृति - “ यह भी कह सकती है आंटी । ”

माँ - “ तब तअ तू बड़ा काम के मनई हअ । हमअ तअ लाग तोहरे जिम्मे कौनौं काम नाहीं रहा तअ इहीं तोहका शासन लटकाई देहेस । हमरे नैहरे में कुछ ठकुरन के गुंडई सूझी बा , हमरे बाबू के हैरान केहे रहत हएन । दुई- तीन के पकड़ि के गाँव में पिटवाई देतअ , तोहार बहुत जस होए । ”

सुकृति - “ कौन सा गाँव है ? ”

माँ - “ गाँव का नाम है छरिबना , थाना करछना , ई रामपुर से सटा बा । ”

मैं - “ माँ, इसब काहे कर रही हो ? समझा देंगे क्यों पिटवा रही हो ? ”

माँ - “ तू चुप रहअ, ससुरे हैरान केहे हयेन, इलाज ज़रूरी बा । ”

सुकृति-.” आंटी जी , अभी करछना थाने वायरलेस कर देता हूँ दरोगा बुला लेगा थाने उनको ।

माँ - “ थाने न बोलावअ उहीं गाँवै में धुनवाई देतअ , हमहूँ रहित तब धुनवावअ त और बढ़िया रहे । ”

सुकृति - “ ठीक है आंटी जी , कब आप रहेगी ? ”

माँ - “ हम कालि जाब / दरोगा से कहि देहअ आई के हमसे गाँव में मिलै हम सब समझाई देब ओका । ”

सुकृति मानस - “ ठीक है आंटी जी । ”

माँ उस हादसे से बाहर आ चुकी थी और अब सामान्य व्यवहार करने लगी थी । उसने सुकृति से उसकी रैंक भी पूछी और मेरे रैंक से उसकी रैंक नीचे थी । माँ को यह बहुत संतोष देता था जब वह सुनती थी कि मुन्ना की रैंक ऊपर है ।

मैंने अपनी योजना के अनुसार रमेश शर्मा और चार आलतू - फ़ालतू प्रत्याशियों को जिसे रमेश शर्मा लेकर आये थे , अपनी कक्षा में एक दिन बैठाया । एक योजना के तहत उनको नियत दिन मंच पर ले गया और बहिष्कार के नारे का आगाज़ उस दिन फिर कर दिया । मैंने मंच से कहा ,

“ रमेश शर्मा, सरला जोशी , राजेन्द्र मिश्र, बैजू मौर्या, यश सक्सेना, भिखारी शैलार इन सब लोगों ने राजनीति त्याग कर एक छात्र का जीवन स्वीकार किया है । यह सब कुर्त- पायजामें में छिपे छद्म से बाहर आ चुके हैं और कल यह लोग मेरी कक्षा में भी थे । यह सब इतिहास में याद किये जायेंगे अपने त्याग के लिये और अपनी सदाशयता के लिये । इलाहाबाद विश्वविद्यालय एक सुधार प्रक्रिया की ओर बढ़ रहा है और इस सुधार प्रक्रिया में पहला कदम है छात्र संघ का समापन । यह छात्रसंघ तो समाप्त होगा ही चाहे आज हो या आज से कुछ वर्ष बाद पर जब भी समाप्त होगा इनका अप्रतिम योगदान सराहा जायेगा । एक अनावश्यक संस्था का अंतिम संस्कार ज़रूरी है । यह क़ानून से हो नहीं सकता हम इसको जनमत से करेंगे । हम छात्रसंघ का बहिष्कार करेंगे । हम यह दूषित छात्र राजनीति नहीं करेंगे । यह 6 लोग इलाहाबाद ही नहीं पूरे देश की छात्र राजनीति में याद किये जायेंगे । इन लोगों ने परिसर में पठन - पाठन की स्थापना हेतु अपने राजनैतिक भविष्य का त्याग किया है । रमेश शर्मा सर एक बड़े नेता हैं

/ यह छात्रसंघ के पदाधिकारी रह चुके हैं पर इन्होंने छात्रसंघ के बहिष्कार नारे को खुला समर्थन दिया है / हम इस संस्था को हम अवश्य समाप्त करेंगे और मैं आप सबसे अपील करता हूँ कि दसवीं शताब्दी के चोल काल के उत्तर मेरुर अभिलेख के सिद्धांत का पालन कीजिये / उस अभिलेख में कहा गया था पंच महापाप करने वाले ग्राम सभा का चुनाव नहीं लड़ सकते वैसे ही पाँच महापाप करने वाले छात्रसंघ चुनाव लड़ने के अधिकारी नहीं है .इस पाँच महापाप का जो भी दोषी हैं वह आपसे मत माँगने का अपराधी नहीं है ... पाँच महापाप हैं -

- जिसका आपराधिक इतिहास हो ,
- जो किसी कक्षा में फ़ेल हुआ हुआ ,
- जो कभी भी तृतीय श्रेणी में पास किया हो ,
- जिसकी उम्र पचीस वर्ष से अधिक हो ,
- जो सात वर्ष से अधिक समय से विश्वविद्यालय का छात्र रहा हो ।

इन पाँच महापापों में से एक भी पाप करने वाला आपके मत का अधिकारी नहीं है ।

अगर आप इस चुनाव का बहिष्कार नहीं कर सकते तब आप मत देते समय इस सिद्धांत का पालन अवश्य कीजिये / मैं छात्र संघ की जगह जो संस्था आयेगी उसमें इन नियमों का समावेश करने के लिये आंदोलन करूँगा / समाचार पत्रों ने कई के बारे में छाप दिया ही है और जिसके बारे में नहीं छपा है वह पंच महापाप के दायरे में आते हैं / वह या तो प्रमाण देकर अपने को पंच महापाप के दायरे से बाहर निकाल लें अन्यथा नैतिकता के मानदंड के अनुसार वह चुनाव लड़ने के अयोग्य हैं / ऐ बड़े- बड़े मठाधीशों , चुनाव में मनों की माला पहनने वालों , ऐ पंच महापाप के अपराधियों तुम्हारे राजनैतिक जीवन का अंतिम समय आसन्न है / इस अवसान को सहर्ष स्वीकार करो । आप भी अपना नाम इन 6 लोगों के साथ इतिहास में दर्ज करा लो । मैं आज के दिन तक का समय सारे प्रत्याशियों को देता हूँ वह अपना नामांकन वापस ले लें , हम सब कक्षाओं में वापस चलें और इस चुनाव को यहीं खत्म कर देते हैं / मुझे कोई चाह नहीं अध्यक्ष की , पर मेरी यह चाह ज़रूर है कि महापापियों में से कोई अध्यक्ष न हो । मैं तुमको रोकने के लिये यह खड़ा हूँ । तुमने मेरी हत्या करनी चाही पर मौत मेरे साथ गलबहियाँ डाल चल रही तुमको चिढ़ाते हुये । तुम ढंग के एक शार्प शूटर का इंतज़ाम कर नहीं पाये इस विश्वविद्यालय को कैसे नेतृत्व दोगे । मैं बचपन में ढेले मारकर मनचाहा आम

गिरा लेता था और तुम सब इतनी बंदूकें रखकर एक निहत्थे को न मार सके । मैं अब राजनैतिक क़त्ल पर क़त्ल करूँगा । बड़ा सुंदर समाचार है पता नहीं कितना सही है । ब्राह्मण- ठाकुर मठाधीश एक हो गये । सत्य प्रकाश पांडे और मांधाता सिंह गले मिल चुके हैं । एक साइकिल सवार से जीपों - मोटरसाइकिलों- किराये के जुटाये लोगों का क्राफिला लड़ नहीं पा रहा इसलिये दोनों एक हो गये । गोस्वामी जी ने ठीक ही लिखा है

भीड़ लगी नारा लगाने

रावण रथी विरथ रघुवीरा ..

रावण रथी विरथ रघुवीरा

चलो क़त्ल करने में आसानी होगी । दो गोली चलानी पड़ती अब एक ही में काम हो जायेगा । पर यह गोली किसी बंदूक से नहीं निकलेगी यह गोली जनता की आवाज़ से निकलेगी और उनका शोर न तुम्हें जीने देगा और न मरने । अच्छा होता केशव यादव भी उसी समूह में शामिल हो जाते मैं जातिवाद का समूल नाश एक बार में ही कर देता । इनको निपटाने के बाद राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह की बारी है और उसके बाद ..

भीड़ चीखने लगी ...

लखनऊ की अब बारी है ।

मैं दक्षता भाषण के पहले चाह रहा आप सब अपना नामांकन वापस ले लें और चुनाव की यह अनावश्यक प्रक्रिया यहीं रोक दी जाये और हम सब अपनी कक्षाओं में चले । आपका राजनैतिक जीवन बच जायेगा नहीं तो मैं दक्षता भाषण में इनके राजनैतिक जीवन के समापन की घोषणा कर दूँगा ।

मैं प्रति पल परिवर्तित व्यूह बनाता हूँ । आज तुम मान जाओ बात मेरी इस विश्वविद्यालय की अराजकता को खत्म करने में सहयोग करो । मैं अभ्य दान देता हूँ । मैं एक बड़ा वचन देता हूँ मैं तुम्हारी राजनीति में आड़ें नहीं आऊँगा पर अगर तुम मेरे साथ आज न आये तो कल मैं घटोत्कच बनकर पूरी सेना को समाप्त कर दूँगा ।

मेरा प्रति पल परिवर्तित व्यूह कल तुमको समाप्त करेगा । आज की ही रात तुम्हारे पास है कल से समापन का आरंभ होगा , युद्ध विकराल भी है और विकट भी । मेरे दिव्यास्तरों से लड़ने की दीक्षा तुम्हारे पास है नहीं । आज का चिराग बुझने के पहले खेमा बदल दो । कल यह अवसर न मिलेगा । कल मैं नयी युद्ध नीति लेकर आऊँगा । ऐ दक्षता भाषण तेरा इंतज़ार मैंने एक अधीर

परेमी की तरह किया है । कल मैं और यह छात्रसंघ भवन का महान बुज्ज
और उनके समापन की घोषणा

प्रतिपल परिवर्तित व्यूह कौशल विशेष
नैराश्य मन का अब नहीं है कोई अधिश्वेष
जीवन का एक ही लक्ष्य रह गया शेष
धंस उन्हीं का जिनका अहम है कालशेष ।

भीड़ में एक ही शोर
प्रति पल परिवर्तित व्यूह कौशल विशेष ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 304

यह राजनीति है यह मेरे नियन्त्रण में तो है नहीं , चाहे मैं जितना भी नियन्त्रित करना चाहूँ । यह राजनीति कई तत्त्वों को अपने आप में समाहित किये होती है , दौर चाहे जो भी रहा हो पर राजनीति एक शक्ति से ही संचालित होती रही है और शायद होती भी रहेगी , वह शक्ति होती है शासक की लिप्सा और तृष्णा । यह इतिहास का अकाट्य सत्य है कि अनादिकाल से राजनीति शासक की इच्छा से ही संचालित होती रही है । अपने भाइयों की हत्या के आरोप से शासन की बागड़ोर संभालने वाला सम्राट अशोक कलिंग युद्ध की नृशंसता के पश्चात भी महानता प्राप्त कर गया क्योंकि उसने भेरी घोष की जगह धम्म घोष का नारा दे दिया । देवानंमपिय की उपाधि धारण करने वाले शासक से कोई यह नहीं पूछता कि देवता की प्रियता के आवेदन पत्र में क्या पिछले कर्मों के भरने का कोई कॉलम नहीं होता ? यह धम्म एक राजनैतिक अस्तर था या यह एक सदाशयता से संचालित था ? अशोक ने बुनियादी सिद्धांतों पर सबसे अधिक ज़ोर सहिष्णुता पर दिया , वह शायद इसलिये क्योंकि सहिष्णुता साम्राज्य की नयी नीति के अनुकूल दिख रही थी । व्यवस्था की जड़ों की समझ शायद अशोक को न थी इसलिये वह जिस नये साम्राज्यवादी तेवर के साथ व्यग्र हो रहा था वह उसकी आग्रहशीलता को व्यक्त कर रही थी जो उसकी दुर्बलता थी क्योंकि उद्विग्नता सदैव ही दुर्बलता को ही पारिभाषित

करती है और यही हुआ जब अशोक अपने शासन के अंतिम दिनों धम्म के प्रति अतिशय आग्रहशील हो गया । यह आग्रहशीलता बहुधा शासकों में

दिख जाती है और निर्णय अविवेकी हो जाता है ।

यह भी एक इतिहास में सत्यापित सत्य है कि शासक की मुस्कान, हँसी, रुदन, शांति सबकी सब एक साम्राज्यवादी इच्छाशक्ति से प्रेरित होती है । अगर शासक का रुदन तीव्रतर हो जाये तब निःसंदेह यह मानना चाहिये कि शासक इस रुदन के माध्यम से एक नये संग्राम की ओर है और यह उसकी युद्ध नीति का एक भाग है । शासक हमेशा युयुत्सा में ही रहता है । वह कहता है मैं अब कोई युद्ध नहीं करूँगा, मैं कोई विनाश नहीं करूँगा, मैं सबके न्याय के लिये संघर्ष करूँगा, मैं बगैर रक्तपात के रहूँगा, मैंने सारे जीवन संघर्ष किया बहुत से राज्य जीते, मैंने तरह-तरह के प्रदेशों-देशों में अश्वमेध यज्ञ किया, राजधानी में राजसूय यज्ञ किया पर अब मैं कोई विनाश नहीं चाहता अब कोई राज्य नहीं चाहता मैं शान्ति चाहता हूँ । पर यह कह रहा होता है उन शान्त क्रब्बरगाहों की चारदीवारियों के नज़दीक जिसमें से अधिकांश दफ्न हुये उसकी लिप्सा के कारण । वह कह रहा होता है उन नदियों के किनारे जिनके अंदर की मिट्टी में कई लाशें आज दफ्न होने को मजबूर हैं उसकी राज्य लोलुपता के कारण । यह वह कह रहा होता है उन ज़मीनों पर जहाँ कभी गाँव हुआ करते थे वह उजड़ गए क्योंकि वे सह न सके उसका अधिनायकवाद । अब शासक का हृदय परिवर्त्तन हो रहा वह अब राज्य नहीं जीतता, रक्त नहीं बहाता । वह हर जगह घूम-घूम कर सभा लगाता है और कहता है मैं विनाश नहीं चाहता, मैं रक्तपात नहीं चाहता मैं शांति चाहता हूँ और युद्ध से मुक्ति चाहता हूँ अपनी भी तुम्हारी भी । यह उसकी एक नयी युयुत्सा है शांति के नाम पर । इलाहाबाद विश्वविद्यालय के चुनाव में यह युयुत्सा जन्म ले रही थी । चुनाव में धन की कमी मेरे विरोधियों के पास पहले भी न थी पर अब तो सत्ता के दलाल लग गये थे । धन - संसाधन - जातिगत समीकरण-मठाधीशों का संगम सब एक साथ था और समीकरण हर छात्रावासों और डेलीगेसियों में बन रहे थे । सत्ता के शीर्ष से यह आदेश आ चुका था कि इसको समाप्त करो पर शांति के साथ । शासन को शांति एवम् कानून - व्यवस्था के प्रति आग्रह है इसका ध्यान रखा जाना चाहिये । इसका समापन आवश्यक है क्योंकि यह पूरी व्यवस्था के लिये ख़तरा बन सकता है । राजा एक आदेशकर्ता के रूप में ही उपस्थित होता है और बहुधा उसमें अधिनायक प्रवृत्ति होती ही है और वह कर्णविहीन होता है । यही यहाँ भी हुआ आदेश आया और वह वेद वाक्य था जिस पर प्रश्न नहीं हो सकता था । सद्वावना सिंह के आदेश को कार्यान्वित करने के लिये और राजेश्वर तिरपाठी और जनमेजय सिंह शाम को मिले । रणनीति बनने लग गयी और यह सोचकर कल कौन सा प्रति पल परिवर्तित व्यूह आने वाला है । सारी गोटी राजेश्वर के हाथ में थी क्योंकि वह सद्वावना सिंह से सीधे संपर्क में थे और जनमेजय सिंह को ख़रीद चुके थे । जनमेजय सिंह को लगा कि वह अपनी कीमत वसूल चुके हैं पर राजेश्वर तिरपाठी के अनुसार वह औने - पौने दाम पर ख़रीदे गये हैं ।

जनमेजय सिंह - “ भैया राजेश्वर ई मदारी काल कौन खेला देखाये । ई त पूर सड़क के किनारे पिटारा खोलि के साँप के खेला देखावै वाले मदारी के नाहीं डरामा फैलाये बा । अब काल का ई नाग निकारे ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ जनमेजय तोहार एक बेवकूफ़ी कुल खेल नसाई देहेस । उहिं दिना भरत गोली सही मारे होतेन आज हम सब वज्र होईत । चलअ अब जौन भअ तौन भअ आगे के योजना पर काम करत जाई । एक बात त कहब हम जनमेजय एक चीज़ तअ अनुराग सिखाई देहेन सबके । ”

जनमेजय - “ का सिखायेस ई मदारी भैयऊ , कुछ हमहूँ के समझावअ अब तोहार त कपार लाजवाब बा , बतावअ तनिक ई लाजवाब कपार का सीखेस ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ शिक्षा के कौनों विकल्प बा नाहीं । एकरे संगे सिवाय शिक्षा के का बा । न एक पोस्टर - न एक बैनर , एक साइकिली से घूमत बा पर जौन आज तक नाहीं भवा तौन होई गवा । ”

जनमेजय सिंह - “ का होई गवा ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ बामन - ठाकुर के चुनाव में एकता । हम तू एक होई गये । ई कैसे भवा ? ”

जनमेजय सिंह - “ ई तअ मुख्यमन्त्री जी करायेन । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ मुख्यमन्त्री काहे करायेन ? ”

जनमेजय सिंह - “ आम चुनाव कपारे पर बा । इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अध्यक्ष आपन आदमी चाही । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ नाहीं । ”

जनमेजय सिंह - “ तब ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अध्यक्ष तअ एक मुद्दा बा । ई बात मुख्यमन्त्री के पचत नाहीं बा कि अशोक पांडे का खुला परस्ताव सुने बँैर अनुराग अस्वीकार कै देहेन । ई त बात कॉमन सेंस के है कि मनई परस्ताव तअ सुनबै करत हअ चाही स्वीकार करई या न करै । पर परस्ताव न सुनब साफ़ कहत बा कि ऊ राम सिंह यादव के हाथे खेलत बा । अगर अध्यक्ष होई गवा और ओका राम सिंह विधान सभा में कौनों तरह लै के चला गयेन और जौन कपार विधाता ओका देहे हयेन ऊ त अंधेर कै दे । राम सिंह के दल में कुल बदमाशौ हयेन । कौनों बुद्धिजीवी बा नाहीं । राम सिंह का बोलत हअ इ ओनहिं के नाहीं समझि आवत बाकी के का समझि आए । ई कलावती चोटटी शासन के भाग बा और कुल छवि सरकार के ढुबोये बा । अगर तीनों दल अलग - अलग लड़ेन और

अनुराग युवा चेहरा होई के छात्र संघ अध्यक्ष के रूप में सड़क पर निकलि
पड़ा तब सरकार सद्वावना सिंह के वापस न आये । “

जनमेजय सिंह - “ तोहसे बाभन वोट सँभलत बा नाहीं हम ठकुरन के वोट पर
जोर मारत हअ । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ बाभन वोट गोलबंद बा , बस ई पढ़वइया लड़िकन से
ख़तरा बा । ”

जनमेजय- “ का बाभन वोट गोलबंद बा , ऐतना बड़ा नेता रमेश शर्मा तोहरे
हाथें से निकरि गवा । अनुराग के मंच से भाषण देहेस उहौं कुर्ता- पायजामा
उतारि के । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ ऊ हमहिं भेजे हई । ”

जनमेजय सिंह - “ का कहत हअ ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ हाँ , एक बड़ी चाल चले हई । देखअ शायद कामयाब
होई जाई । चुनाव पलटब ज़रूरी बा । मुख्यमंत्री जी के आदेश बा अनुराग
इस लायक न रहि जाई कि आगे राजनीति कै पावै । ओ कहें हयेन चाहे जौन
विधा लगावअ ओका सौ वोट न मिलै चाही । ”

जनमेजय - “ का चालि बा ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ बताऊब तनिक धीरज राखअ । आज राति के रूपिया
बहावअ , शराब बहावअ हर होस्टल में क़ब्ज़ा करअ और अफ़वाह फैलावअ
अनुराग राम सिंह यादव के साथ हाथ मिलाई के दूरगामी कुत्सित लक्ष्य में
लगा हयेन और ई बात काल तक फैल जाई चाही । काल हम एकर प्रमाण
देब । ”

जनमेजय सिंह - “ प्रमाण बा ? ”

राजेश्वर तिरपाठी - “ हाँ बा । ”

जनमेजय सिंह को बदलती राजनीति समझ न आ रही थी । एक तो वह बहुत
रूपया पा चुके थे उसका नशा था ही और साथ में बल भर अंगरेज़ी शराब
पिये थे ।

रमेश शर्मा देर शाम को मेरे पास आये । उन्होंने पूछा , “ अनुराग , छात्र
राजनीति के बाद का क्या विचार है ? ”

मैं- “ सोचेंगे । ”

रमेश शर्मा- “ कोई दल ... सोचा है । ”

मैं “ पहले यह चुनाव तो हो जाये । ”

रमेश शर्मा- “ सुना है राम सिंह यादव के दल में जाने की बात चल रही है आपकी । ”

मैं “ ऐसी कोई बात नहीं चल रही है सब अफवाह है । ”

रमेश शर्मा- “ अगर वह बुलायेंगे तब ? ”

मैं “ तब देखा जायेगा , अगर व्यवस्था सुधारने में कोई भी मदद करते हैं तब इसमें हर्ज क्या है ? पर मैं राजनीति करूँगा या नौकरी पहले यह तो तय हो जाये । यह चुनाव तो होने दो । ”

रमेश शर्मा- “ हमको भी साथ ले चलना । ”

मैं “ अब मेरा नेतृत्व स्वीकार किया है तब साथ ही चलना । एक नयी राजनीति हम लोग कर रहे जो इसमें हमारी विचारधारा के अनुरूप होगा उस पर विचार किया जायेगा । ”

रमेश शर्मा मुझसे मिल कर चले गये । मैंने सुबह का अखबार देखा , मेरे तो होश उड़ गये ...

“ अनुराग शर्मा को राम सिंह यादव का समर्थन.. ”

“ अनुराग के चुनाव में विपक्ष का हाथ ”

“ मुख्यमन्त्री के खिलाफ एफिडेविट एक राजनैतिक साज़िश ”

“रमेश शर्मा और चार अन्य प्रत्याशियों ने अनुराग का साथ छोड़ा और कहा हम विश्वविद्यालय को राजनीति से दूर रखने के पक्ष में थे और हैं.. अनुराग राजनीति कर रहे न कि विश्वविद्यालय का उद्घार - रमेश शर्मा ”

मेरे पास अनुराग की राजनीतिक घटनाओं के सबूत हैं , हम खुलासा करेंगे - राजेश्वर तिरपाठी ”

“ क्या अनुराग बिक गये ? ”

“ विश्वविद्यालय के साथ धोखा ही धोखा । ”

वाक़ई यह परति पल परिवर्तित व्यूह हो गया ।

मेरी माँ ने पूछा .. “ अब का होये मुन्ना... ”

मैंने कहा ..

“ अब संग्राम भीषण होगा ...

अभी तक चुनाव हराने के लिये मैं लड़

रहा था अब मैं चुनाव जीतने के लिये लड़ूँगा । महाशक्ति अंक में मुझको लेकर दक्षता भाषण में उपस्थित होंगी ...

अभी तक यह एक संग्राम था .. अब एक महा संग्राम होगा .. मैं लाक्षागृह के सुरंग से भाँगूगा नहीं मैं उसी में इनको भस्म कर दूँगा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 305

यहाँ रात में साज़िशों रची जा रही थी और वहाँ विश्वविद्यालय परिसर में बल्लियों का घेरा बनाया जा रहा था । सुबह एक पूरा सुरक्षित घेरा तैयार हो चुका था । यह सुरक्षित घेरा सबके कौतूहल का विषय था । मेरी चालों से लोग प्रायः अनजान रहते ही थे । यहाँ फिर वह अनजान थे मेरी तरकीबों से । मैंने एक पत्र लिखा था उप कुलपति को संविधान के अनुच्छेद 19 का हवाला देते हुये कि अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता में कहने और सुनने दोनों का अधिकार है और लड़कियाँ दक्षता भाषण अराजकता और अव्यवस्था के भय से सुनने नहीं आती और लोकतन्त्र सम्पूर्ण नहीं होता । आप या तो उनके सुरक्षित भाषण सुनने की व्यवस्था करें या लिखित रूप से व्यवस्था कर पाने की असमर्थता मुझे ज्ञापित कर दें मैं न्यायालय से उचित व्यवस्था करने की प्रार्थना करूँगा । उप कुलपति अब तक जान चुके थे मेरी बातें कोरी धमकी नहीं होती और मेरी चुनौती में गीदड़ की भभकी न होकर सिंह का शौर्य होता है । उन्होंने लड़कियों के दक्षता भाषण सुनने के लिये अलग प्रबंध करने की माँग स्वीकार कर ली थी । उनके द्वारा माँग स्वीकार कर लेने के बाद मैंने ज़िलाधिकारी से समुचित सुरक्षा व्यवस्था के लिये अनुरोध किया था । अब मेरे अनुरोध में आदेश लोग देखने लगे थे । मैं युवा राजनीति का बड़ा चेहरा था या नहीं यह तो नहीं पता पर लोगों के बीच यह अवधारणा बन चुकी थी कि यह युवा राजनीति का एक बहुत बड़ा चेहरा बन रहा है और धूमकेतु उभर चुका है । मेरे भावी जीवन के अतिरंजनापूर्ण क्रयास भी लगाये जा रहे थे और मेरे भीतर अहंकार भी जन्म ले रहा था । यह अहंकार उस सिविल सेवा के चयन के बाद उत्पन्न अहंकार से भिन्न था और अब मैं बहुधा निर्देश देने लगा था । मुझे यह हर समय लगता था कि एक बड़ी ताक़त मेरे साथ है, अब वह है या नहीं इसका फ़ैसला तो चुनाव परिणाम ही करेगा ।

यह बल्लियों का लगना और छात्राओं का भारी मात्रा में दक्षता भाषण में आने की संभावना मेरे विरोधी खेमे में बैचैनी भर गया । दक्षता भाषण के द्वारा कैसे मुकाम को एक अंजाम पर ले जाकर मुझे एकदम पीछे करके समाप्त किया जाये इस पर एक बड़ी बैठक सुबह - सुबह हॉलेंड हॉल के कैम्ब्रिज कोर्ट में हुई ।

राजेश्वर तिरपाठी - “ रमेश तू ओकरे संगे दुई दिन रहअ तोहका एकर हवै नाहीं लाग कि ई एतनी बड़ी चाल चलि देहे बा । ”

रमेश शर्मा- “ कौन सी चाल ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ लड़की लोग दक्षता भाषण में आवत हईन । ऊ बोलै में माहिर बा , सबके सम्मोहित कै ले । ”

रमेश शर्मा- “ लड़की लोग दक्षता भाषण में हर साल आती हैं कौन सी ख़ास बात हो गयी । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ हअ पूर बेवकूफ़ै रमेश । एकका- दुक्का, दस- बीस लड़की आवत हअ हर साल । एह साल तअ पूर जत्था आवत बा । सरला जोशी एक सप्ताह से कैंपेन चलावत बा कि भारी संख्या में लड़की लोग आवैं । तोहै पांच के रात में दार्ल पियई से फुर्सत बा नाहीं का राजनीति करबअ । हमका आज पहिली बार इ अंदेशा होत बा कि सत्य प्रकाश हारी सकत हअ और अनुराग जीत सकत हअ । अबअ तक हमका लागत रहा कि अनुराग दुई - तीन सौ वोट पझहिं पर गिन लेहे दक्षता भाषण में लड़की लोगन के । जेतना आइहिं सब अनुरागै के वोट देझहिं । ”

रमेश शर्मा - “ पहले पता चल जाता तब भी कैसे रोंक लेते इसको ? ”

जनमेजय सिंह - “ दस- बीस बम फेंकवाई दईत , दस - बीस राउंड फ़ायर देर शाम कराई दईत । डर फैलि जात और वीसी बा डरपोक ओका डेराई दईत कि खून खराबा होई जाये और लड़की लोग डराई जातिन काम होई जात । ”

रमेश शर्मा सोचते हुये बोले , “ अब नहीं हो सकता क्या? डर तो अभी भी फैलाया जा सकता है । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अब ई न होई पाये । अब ई सब उल्टा पड़ि सकत हअ । सुकृति मानस लगा हयेन सुरक्षा में । कौनौं गलत कदम समस्या कै दे । एक बात के ध्यान रखअ अनुराग पर कौनौं हमला न होई चाही न आज न चुनाव के बाद , मुख्यमन्त्री जी के ई साफ़ - साफ़ निर्देश बा । अगर हमला होई गवा तब हमार सबके राजनीति अनुराग बाद में देखिहिं मुख्यमन्त्री अबहिन ख़त्म कै देझहिं । चुनाव शांतिपूर्ण होई चाही इ मुख्यमन्त्री के पहिला निर्देश बा और दूसरा अनुराग के कौनौं कीमत पर हारब ज़रूरी बा । ”

जनमेजय सिंह - “ पहिला निर्देश तअ अपने हाथे बा पर दूसरा ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ आपन वोट जेतना अधिक से अधिक होई डलवावअ । फ़र्ज़ी वोट के सहारा लअ । जे केऊ घरे - दुआरे आपन लोग ग हयेन ओनका वापस बुलावअ । पैसा पर वोट देई वालेन के तलाशअ । एक काम और करअ । ”

जनमेजय सिंह - “ का ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ पढ़वइया लड़िकन के आईडी कार्ड ख़रीद लअ । ”

जनमेजय सिंह - “ ओसे का होये ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ ओनकर वोट अनुराग के मिले । ऊ सब के वोट न पड़े चाही । एक काम और ज़रूरी बा । ”

जनमेजय सिंह - “ का ज़रूरी बा ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ लड़की लोग के वोट कम पड़ब बहुत ज़रूरी बा । ”

रमेश शर्मा- “ ऊ कैसे काम बने ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ सोचब .. पर आज के दक्षता भाषण कैसे निपटें , इ विचार करअ । हमार राय बा दक्षता भाषण में अनुराग के कौनौ जिकर न करअ । ई कहबै न करअ कि हमार लड़ाई अनुराग से बा । ”

सत्य प्रकाश पांडे - “ केशव यादव से लड़ाई बा ई कहि देब । ”

राजेश्वर तिरपाठी - “ नाहीं ... लड़ाई हमार केहू से नाहीं बा । हम जीता हई , यह नंबर दुई बरे लड़त हयेन । इहै चालू करअ और मंच से कहअ दक्षता भाषण में । रमेश तू मंच से नाम वापस लेत समय अनुराग के प्रकारान्तर से ज़िकर करअ पर सत्य प्रकाश तू न करअ । ”

रमेश शर्मा- “ ठीक है नेता जी । ”

मैं सीधा सुबह - सुबह चौधरी साहब के पास गया । वह पेपर पहले ही पढ़ चुके थे । वह बहुत ही मज़ाकिया क्रिस्म के व्यक्ति थे । मेरे पहुँचते ही बोले , “ आओ रायता शिरोमणि.. यह नया रायता फैला दिया । ”

मैं “ सर यह सब अफ़वाह फैलायी जा रही । ”

राजेन्द्र चौधरी - “ यह तो पता ही है । यह सब चुनावी हथकंडे हैं । पर यह बताओ कोई सबूत है उनके पास कि आप और राम सिंह यादव के बीच कोई संबंध है । ”

मैं - “ सर , न मैंने कभी राम सिंह यादव जी को देखा , न मिला , न कोई बात हुई । मैंने पूरे जीवन में नज़दीक से दो नेताओं को देखा मुख्यमन्त्री शरी सद्वावना सिंह और राज्यपाल रमाकान्त शास्त्री जी को और वह भी कमिशनर इलाहाबाद के पुस्तक विमोचन में । बाकी मेरे जीवन में मेरी मुलाकात किसी छात्र नेता से भी नहीं हुई होगी यह सब तो बड़े लोग हैं । ”

राजेन्द्र चौधरी - “ तुम क्या चाहते हो ? ”

मैं - “ सर न्यायालय का आदेश है कि मामला विचाराधीन है इसलिये इस पर कोई बात न की जाये । यह निर्देश न्यायालय ने आपके माध्यम से मुझको दिया है । समाचार पत्र ने छाप दिया है कि एफिडेविट एक राजनीतिक साज़िश है । यह कोर्ट की अवमानना का मामला बन सकता है । ”

राजेन्द्र चौधरी - “ बन सकता है । ”

मैं - “ उसमें क्या होगा ? ”

राजेन्द्र चौधरी - “ वही जो तुम करना चाह रहे । ”

मैं - “ क्या मैं करना चाह रहा सर ? ”

राजेन्द्र चौधरी - “ रायता फैलाना । तुम्हारी इस काम में महारत है । यार , मेरे बेटे को कुछ सिखाओ । उसको भी सिखाओ यह रायता फैलाने का गुण । ”

मैं - “ सर , पढ़ाऊँगा उसको । बस यह चुनाव निपट जाए । ”

राजेन्द्र चौधरी - “ पढ़ाने के साथ- साथ अपना यह गुण भी सिखाओ चाल - फेर वाला । ”

चौधरी साहब ने अपने जूनियर को आवाज़ दी और बुलाया । कहा , “ इनका हस्ताक्षर लो । इनकी पूरी कहानी लिखो जो भी यह कह रहे , ड्राफ्ट बनाकर लाओ देखता हूँ । एफिडेविट बनाओ और आज सुबह ही फ़ाइल करके मेंशन करो शाम को बहस करते हैं अवमानना के मुद्दे पर । ”

मैं - “ आज बहस हो जायेग ? ”

राजेन्द्र चौधरी - “ हो जायेगी और कल के पेपर में छप जायेगा । तुम अपनी राजनीति चलाओ जो चलाना चाहते हो । न्यायालय समन कर देगा समाचार पत्र को और राजेश्वर तिरपाठी को साक्ष्य देने के लिये । जैसा तुम कह रहे हो कोई साक्ष्य तो होगा नहीं वह आज की रात ही परेशान हो जायेंगे । सुनो , मेरे बेटे को साथ ले जाओ उसको भी देखने दो यह दुनियादारी । ”

मैं - “ ठीक है सर । ”

मैं शाम के दक्षता भाषण के लिये तैयार होने लगा । मेरे जीवन का बहुत बड़ा दिन था । मैं पहली बार छात्रसंघ भवन के बुर्ज से बोलने जा रहा था । मैंने भाषण कई बार सुने थे पर बोलने पहली बार जा रहा था । मैं घर वापस पहुँचा । मेरे घर में सब उत्साहित थे मुझको सुनने के लिये । मोहिता दीदी और राकेश जीजा जी मेरा घर पर इंतज़ार कर रहे थे । उन्होंने भाषण के लिये शुभकामना दी और कहा कि हम लोग आयेंगे सुनने । आंटी - माँ - पिताजी - दादू - मामा सब सुनना चाह रहे थे । दक्षता भाषण चार बजे से था । सुकृति मानस तीन बजे आ गये । मैं उनके साथ घर से निकला । आनंद भवन से ही छात्रों की एक बड़ी भीड़ छात्र संघ भवन की ओर बढ़ रही थी । मैं सुकृति की जीप पर खड़ा हो गया । मेरे पीछे सुकृति अपनी रिवाल्वर निकाल कर खड़े हो गये । उसको हमले का अंदेशा था पर मुझको नहीं था । मैं हवा में हाथ हिलाने लगा । भीड़ नारा लगाने लगी ..

शास्त्ररार्थ... शास्त्ररार्थ

रावण रथी विरथ रघुवीरा

रावण रथी विरथ रघुवीरा

बहिष्कार.. बहिष्कार

अनुराग .. अनुराग

मैं डी जे होस्टल पहुँचा वहाँ पर मैं जीप से उतर गया । केपीयूसी से छात्र मेरे साथ हो गये और नारे गूँजने लगे । हालैंड हॉल पहुँचा वहाँ पर सत्य प्रकाश पांडे का विशाल काफिला जा रहा था । उनका क़ाफ़िला उल्टा चल रहा था । वह लोग हॉलैंड हॉल से केपीयूसी होते हुये धूम कर आ रहे थे । दोनों जुलूस आमने - सामने थे । मैंने सत्य प्रकाश पांडे को प्रणाम किया । दोनों ओर से नारे गूँजने लगे । मुझे लगा मेरे नारे में ताक़त ज्यादा है । मैं छात्रसंघ भवन के मुख्य द्वार से छत की ओर चला । वहाँ पर सारे प्रत्याशी पहुँच चुके थे सिवाय सत्य प्रकाश पांडे के । मैंने देखा एक विशाल भीड़ और मुझे आभास ऐसा होने लगा जैसे यह मेरा इंतज़ार कर रही है । लड़कियों का धेरा खचाखच भरा था ।

दक्षता भाषण आरंभ हो गया । रमेश शर्मा ने अपना नामांकन सत्य प्रकाश पांडे के समर्थन में वापस ले लिया । उन्होंने कहा कि मैं विश्वविद्यालय की दशा को सुधारना चाहता हूँ । मैंने अपने राजनीतिक कैरियर का त्याग करने का संकल्प लिया है पर कुछ लोग यहाँ पर निहित स्वार्थों के लिये राजनीति कर रहे । वह बौद्धिकता के छद्म भेष में आपके भविष्य से खिलवाड़ कर रहे ।

मैं अपनी खुन की अंतिम बूँद तक उनकी साज़िश सफल नहीं होने दूँगा ।
विश्वविद्यालय एक सुरक्षित हाथों में रहे यह हम सबकी चाहत है और वह
सुरक्षित हाथ है सत्य प्रकाश पांडे ... मैं इनके समर्थन में अपना नामांकन
वापस लेता हूँ । मदारी का खेल दिखाने वाले का खेल खत्म हुआ । उसके
नाग ने ही उसको ही काट लिया है और उसका विष इस परिसर में न फैले
इसलिये मेरा आपसे अनुरोध है उस मदारी को एक-एक वोट के लिये तरसा
दीजिये ।

सत्य प्रकाश पांडे ज़िंदाबाद
सत्य प्रकाश पांडे ज़िंदाबाद
उनके समर्थक जयकारा लगाने लगे ।

सत्य प्रकाश पांडे ने बहुत जोशीला भाषण दिया । भावनाओं में लोगों को
बहाने की कोशिश की । उन्होंने यह कहा कि मैं जब उपाध्यक्ष था तब मेरे
पिता की मृत्यु हो गयी थी । मैं अपने पिता की अर्थी को कंधा न दे सका
क्योंकि मैं उस समय छात्र हित में भूख हड़ताल पर था । आज भी मेरे स्वप्न
में पिता की वह सफेद चादर लिपटी अर्थी आती है यह कहते हुये ..

सब कुछ मेरे पास होकर भी
वह नहीं था
जिसकी मुझे दरकार थी
तेरा होना मेरे होने का एहसास था
पर अंतिम वक्त पर
तेरा लम्स मुझे आकार न दे सका ।

यह कहकर सत्य प्रकाश पांडे चुप हो गये । उनका गला भर्नाने लगा, आँख
से आँसू गिनने लगे और भीड़ उन्माद में आ गयी ...

जीतेगा भाई जीतेगा
सत्य प्रकाश भैया जीतेगा

हर ज़ोर जुल्म के टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है ।

तुम मेरी ज़िंदगी हो यह सच है
इस एक ज़िंदगी का ही तो भरोसा है

जब कमर बाँध ली सफर के लिये
धूप क्या मेघ क्या साया क्या
रह रह के एक फूल महकता है खून में
इस बदन को मिटटी में दबाऊँगा तेरे लिये ।

यह शाम फिर न आयेगी , यह बादल फिर न बरसेंगे , पर मैं जानता हूँ वह
सुबह ज़रूर आयेगी जिसे पाने के लिये तूफानों से लड़ा हूँ मैं तुम्हारे लिये ।

मेरा किसी से कोई संघर्ष नहीं है । जो लोग चुनाव के पहले ही बिक चुके हैं
अपने राजनैतिक भविष्य के लिये मैं आगाह करता हूँ आपको उन मीरजाफरों
और जयचंदों से । मैं शिराज़ के संघर्ष को आँखों में सजाने वाला नहीं उठा
सकता हूँ बोझ मीर जाफरी अस्मिता का । सब लोग दूसरे स्थान के लिये लड़
रहे हैं । मुझे भारी बहुमत से जितायें मैं एक नयी सुबह इस परिसर को दूँगा

....

छात्र एकता ज़िंदाबाद
उनके समर्थकों के नारे गूँजने लगे ..

मेरा नाम पुकारा गया ..

मैं मंच पर पहुँचा .. मैंने बुर्ज से एक सिंहावलोकन किया और राम की शक्ति
पूजा की पंक्ति को समाहित करते हुये बोलने लगा

अन्याय जिधर है उधर शक्ति कहते छल छल
पर अन्याय नाश का है कौशल विशेष

राघव - लाघव - रावण - वारण - गत युग्म परहर
उद्धृत राक्षस विशेष सन्नद्ध पराजय को

हे पुरुष सिंह तुम भी यह शक्ति करो धारण
आराधन का दृढ़ आराधन से उत्तर

मेरी आराधना का लक्ष्य है .. मेरी पूजा की चाहत है .. मेरे अरदास की अभिलाषा है .. मेरे जीवन का ध्येय है विध्वंस...

मैं विध्वंस करने आया हूँ

मैं विध्वंस के लिये समर्थन माँगने आया हूँ । यह सब निर्माण चाहते हैं मैं विध्वंस चाहता हूँ

मात्र विध्वंस...

चारों ओर कोलाहल .. कुछ सुनायी नहीं पड़ रहा था सिवाय विध्वंस के नारों के

मैं शोर के थमने का इंतज़ार करने लगा ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 306

मैं जन सैलाब देख रहा था । एक अज़ीब उत्साह था लोगों में । उनकी बंद पलकों में भी कभी इस तरह के चुनाव की कल्पना न थी । मेरे प्रतिद्वंदी भी मुझको सुनना चाह रहे थे । मैंने देखा लड़कियों के समूह की ओर, इतनी बड़ी मात्रा में छात्रायें सुनने कभी न आयीं थीं ।

मैंने थमते शोर के बीच बोलना आरंभ किया ,

“ मैं रक्तपात चाहता हूँ , मैं लाशों के ढेर पर चलना चाहता हूँ , मैं अपने कदमों से अविरल बहरे लहू पर न मिटने वाले निशान बनाना चाहता हूँ पर मैं व्यक्ति नहीं मानसिकता की हत्या करना चाहता हूँ । यह जो चेहरे मेरे सामने खड़े हैं मेरे प्रतिद्वंदी बनकर उनसे मेरी कोई लड़ाई नहीं है । यह प्रतीक हैं, यह प्रतिनिधि हैं, यह संवाहक हैं यथास्थितिवाद के । मैं उस यथास्थितिवाद का समूल नाश करना चाहता हूँ । मैं विध्वंस करना चाहता हूँ ... मेरा एक ही नारा है .. विध्वंस.. विध्वंस .. विध्वंस से कम मुझे कुछ भी स्वीकार्य नहीं ”

भीड़ उन्माद की ओर थी ..

विध्वंस के नारे यूनिवर्सिटी परिसर से दूर - दूर तक आगाज़ हो रहे थे .. मैं पुनः शोर के थमने का इंतज़ार करने लगा । थमते शोर के बीच मैं पुनः बोलने

लगी ..

“ यह सच है मैं बिकना चाहता हूँ .. पर यह भी सच है मैं औने- पौने दाम पर नहीं अपनी पूरी कीमत वसूल कर बिकना चाहता हूँ । कोई तो आये ख़रीदार मुझे ख़रीदने मेरी अपनी शर्तें पर ...

मैं मीर जाफ़र भी हूँ मैं जयचंद भी हूँ .. मुझे नहीं ऐतराज मीरजाफ़री अस्पिता के बोझ को ढोने से .. मुझे नहीं गुरेज जयचंद बनने से .. बस एक शर्त है मेरी ... विध्वंस.. विध्वंस .. विध्वंस ... इतिहास याद करें मुझको जैसे भी याद करना चाहे मुझे नहीं कोई ऐतराज पर मुझे विध्वंस करना है मीर जाफ़र बनकर भी जयचंद बनकर भी .. मुझे शीरीज का संघर्ष भी मंजूर , रणा प्रताप का शौर्य भी , मीर जाफ़र की अपनी नीलामी भी .., पर नहीं स्वीकार्य यह यथास्थितिवाद ..

यह लड़ाई है एक दिये और तूफ़ान की .. तूफ़ान आ रहा है सागरों के बीच से पर एक जिद है दिये की तूफ़ान को नेस्तनाबूद करने की ।

दिया विध्वंस करेगा तूफ़ान का ... चाहे तूफ़ान एक प्रलयकारी चक्रवात की शक्ल में ही क्यों न हो ..

बहुत सी करान्तियाँ हुई हैं निर्माण के लिये .. मैं आगाज़ करता हूँ एक करान्ति का विध्वंस के लिये

विध्वंस.. विध्वंस.. विध्वंस से कम कुछ भी स्वीकार्य नहीं.. “

नारे गूँजने लगे हर ओर विध्वंस के .. नारों की तीव्रता से मुझे ऐसा लगने लगा कि मेरे विरोधियों के समर्थक भी इस नारे में शामिल हो चुके हैं ।

“ एक वादी का रास्ता है जिस पर चलकर चोटियों को छूमने की ज़िद है । अज़ल से ता अबद इस फैली फ़िज़ा में मैं कुछ न होकर भी सब कुछ हूँ , मुझको मेरे होने का अहसास देती है जब मेरा लम्स आकार देता है मेरी उस सोच को जो बनी है एक नयी सुबह के लिये पर उस सुबह के लिये ज़रूरी है सब कुछ नष्ट होना .. मैं आह्वान करता हूँ एक विध्वंस का .. विध्वंस से कम मुझे कुछ भी स्वीकार्य नहीं ।

एक रस्साकशी है एक मैदाने - जंग में फ़तह हो या शिकस्त मेरी , रोंदा जाऊँ मैं या लहरायेगा परचम मेरा , मेरी मौत पर उम्र भर के लिये रोने वाली मेरी माँ की आँखों से सांत्वना के लिये यह कहना पड़े मेरा मरना ज़रूरी था एक करान्ति के लिये .. न करान्ति के लिये तो करान्ति के बीज के लिये पर यह सच है विध्वंस ज़रूरी है चाहे वह रास्ता मेरी लाशों पर चलकर ही क्यों न जाता हो । मेरी माँ मेरी पहली कुर्बानी देने को तैयार है उस सुबह के लिये

जिसके लिये काली रातों से लड़ने के लिये मेरे खून के कतरे की ज़रूरत है..
आओ आगे बढ़ो , नभ को बता दो तुम हम तैयार हैं एक विध्वंस के लिये ..

तुम बने हो इस जहाँ में किसी खास मङ्गसद के लिये .. यह बुर्ज, यह दीवारें
कह रहीं.. मेरे खून से मेरे हौसलों से पनपा है तू मैं शांत हो गया ..”

भीड़ कहने लगी

सिकंदर नहीं उसके आगे है तू ...

“ऐ नीले आसमान तू तैयार रह एक विध्वंस के प्रत्यक्षदर्शी बनने के लिये ...

मुझे नहीं स्वीकार्य कुछ भी कम ... “

भीड़ पागल हो चुकी थी ..

हमें विध्वंस चाहिये

हमें विध्वंस चाहिये

हमें यथास्थितिवाद से मुक्ति चाहिये ।

“जाने कितने मुद्दतों के पाप अभी हमारा पीछा कर रहे , चाहे - अनचाहे हमारे
अंधे - अकीदे हमारा इस्तकबाल कर रहे , हमारे अंदर का कुहरा बाहर के
शोर एक भयावह शोर जो कह रहा तेरी कोई सहर नहीं और गहरा रहा पर
अब और नहीं.. मेरे जिस्म की पसलियाँ मुझको कोस रहीं , हर ओर खाक
का गहरा कुँआ कह रहा .. यह भयावह मंज़र तूने ही बनाया था जबकि मैंने
एक हसीन मंज़र तेरे हाथों सौंपा था । मैं जब खौफ़ज़दा होता हूँ तब हर सुबह
एक फुदकती चिड़िया मुझसे कहती है कुछ न कर कम से कम एक बड़ा
ख़बाब तो देख और कुछ न मिलेगा सुकून तो मिलेगा । उसी गौरैया को हर
रोज देखकर एक ख़बाब मैंने देखा था ... मैं हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों से
मसूरी के कमरों को पाट

दूँगा यह सवाल मेरी ज़मीन का है , मेरी अपनी भाषा का है , मेरी अपनी
माँ का है , मेरे अपने संस्कार का है

मैं वोट माँगता हूँ आप सबसे .. मैं अपने बहिष्कार के नारे को वापस लेता हूँ ।
आप सब अधिक से अधिक संख्या में मतदान करें । मेरी रिदा को वोटों से भर
दें ... मेरा आपसे वादा है सजदे में झुके सिर दुवा कुबूल करा कर ही उठेंगे ।
किसी मेरी बहन की अस्मिता किसी अजनबी साये से सहमेगी नहीं, अपने ही
भागते कदमों की आवाज़ से वह सिहरेगी नहीं, उसके नकूशे पा में अब
ताक़त होगी , उसके दुपट्टे का रंग कुछ भी हो पर वह नापाक इरादों में
सिहरन पैदा करेगा उनके लहू में जो कभी बेपरवाह हुये करते थे अपनी पशुत्व

के अहंकार में । यह ज़लज़ला, यह विध्वंस आपके आँखों की खामोशी में छिपे
तेज से भी बल प्राप्त करेगा । मुझे समर्थन दें और विध्वंस का स्वागत करें ।

बादल के टुकड़ों पर
शबनम की बूँदों से
लिख रहा
इन्द्र धनुष के रंगों से

जो चाहता था उतारना
सहारे आपके

एक करान्ति
जो न कभी देखी किसी ने ।

मुक़द्दर मेरे साथ न था पर ज़ज्बा मेरे साथ था
ख्वाहिशों से जूझता रहा मैं ख्वाब हर वक्त देखता रहा
अजब बेचैनियाँ मेरे अंदर घुमड़ती रहीं
मियादों की बांदिश में बँधा आफताब कब साथ देने वाला था
बेखौफ हवाएँ मेरे चरागों को सताती रही
मुन्तशिर समुन्दर पत्थरों पर सिर पटकता रहा
वक्त का तेवर मैं आंकता रहा
जानता था लाख कोशिशों कर लें ये अँधेरे के आतंकी
ये भी मियादों में बँधे हैं
सहर को तो आना ही है ॥

मैं सबकी आँखों का ख्वाब लिखना चाहता हूँ
एक अलग दुनिया बनाना चाहता हूँ
हँकीँकृत के इस खूनी एहसास को बदल कर

हर एक के ख्वाब में बसे कायनात का सृजन करना चाहता हूँ ॥

मुझे आपका समर्थन चाहिये । यह छात्रसंघ के नाम पर चल रहे व्यापार - अराजकता और गुंडागर्दी को समाप्त करने के लिये । मुझे इसका ध्वंस करने दीजिये ... विध्वंस करने दीजिये ..

मैं सायंकाल सात बजे एक प्रेस वार्ता करूँगा वहीं पर जहाँ पर मेरे खून के निशान बनाये थे आततायियों ने एक दिन और पर्दफ़ाश कर दूँगा उस साज़िश का रात के अँधेरों में बनायी गयी थीं शिखंडी का संधान लेकर ।

सायंकाल सात बजे डीजे होस्टल के सामने ...

जय हिंद “

मेरा भाषण समाप्त होते ही भीड़ छँटने लगीं । अब लोगों के पास किसी और को सुनने की चाह न थी । मैंने घूम कर अपने प्रतिद्वंद्वियों को देखा । उनके चेहरे उत्तरे हुये थे । मैं दौड़ में आगे आ चुका हूँ यह उनका चेहरा ही बता रहा था ।

मैंने सात बजे प्रेस वार्ता की । बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा थी । चौधरी साहब ने मामले पर बहस कर दी थी और न्यायालय ने नाराज़गी ज़ाहिर करते हुये निर्देश दिया कि उनके पास जो भी साक्ष्य हैं वह दो दिन के भीतर दाखिल किये जाये । मैंने प्रेस वार्ता में हमला उन दो समाचार पत्रों पर कर दिया जिन्होंने खबर को छापा था । मैंने कहा , “ गठजोड़ बड़ा है । इसमें कुछ समाचार पत्र भी शामिल हैं । बग़ैर तथ्य के समाचार छाप कर वह मुझे समाप्त करने की प्रक्रिया के भागीदार हैं । मैंने अपना पक्ष शपथ पत्र के साथ न्यायालय में दाखिल कर दिया है । मेरा अनुरोध है कि जो भी साक्ष्य मेरे साथ किसी के गठजोड़ का हो वह सार्वजनिक कर दिया जाये । मैं जीवन में किसी नेता से न मिला न वार्ता की । मुख्यमंत्री जी और महामहिम राज्यपाल से मुलाक़ात कमिशनर इलाहाबाद के विमोचन कार्यक्रम में हुई । इसके अलावा मैं आज तक किसी से नहीं मिला । प्रेस अपने उत्तरदायित्व का पालन करते हुये चुनाव में खर्च का हिसाब इन सबसे माँगे । न तो मेरे पास पैसा है और न मैंने चुनाव में कोई पैसा खर्च किया है ।“

चौधरी साहब का अनुमान सही था । रात में ही हड़कंप मच गया । उन दो समाचार पत्रों ने राजेश्वर तिरपाठी से सबूत माँगा । प्रतिद्वंद्वी खेमे में

घबराहट आ चुकी थी । मेरा दक्षता भाषण चढ़ चुका था । मेरी प्रेस वार्ता ने एक सनसनी फैला दी थी ।

सुबह माँ गंगा नहाते जाते समय मेरे पास आयी । वह मेरे भाषण से भावुक थी । उसका ज़िक्र मैं करता ही था पर भाषण में एक अलग तरीके से वह शामिल थी । उसने कहा, “ मुन्ना तू ई सब कहाँ से सीखअ? ”

मैं “ माँ, यह जो विपरीत परिस्थिति है वह सब सिखा देती है । कोई सोने की पालकी लेकर तो आयेगा नहीं मुझे दरिया पार कराने ... मुझे उफनती नदी के लहरों से ही लड़कर दरिया पार करना होगा । बस यही वह एक जीवन की समझ होती है जो सब सिखा देती है । ”

माँ - “ मुन्ना तू बोलअ बहुत अच्छा.. जीत जाबअ इ चुनाव ? ”

मैं - “ कोई काम तुम्हारा मुन्ना हारने के लिये करेगा । जीत- हार का फ़ैसला तो भविष्य बतायेगा पर जीतने के लिये मैं लड़

रहा यह मैं ही वर्तमान को बताऊँगा और मैं यह हर दिन बता रहा उगते सूरज को भी और डूबते आफ़ताब को भी । आसमानों को चीरकर बदीअत की विरासत देने वाले भगीरथ के मन में अगर आशंका होती अपने प्रयत्न को लेकर तब आज गोमुख न होता । माँ चिराग को यह पता है कि अँधेरे को हमेशा के लिये ख़त्म करना उसके बस में नहीं है पर हर शिक्ष्ट के बाद भी उसकी ज़िद हा हर रात अँधेरे से लड़ने की और अपने हिस्से की लड़ाई लड़कर वह अँधेरे को परास्त कर देता है । मैं भी अपने हिस्से की लड़ाई लड़ रहा । ”

माँ गंगा नहाने चली गयी ..

आज मतदान का दिन था और सुबह का समाचार

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 307

सुबह का समाचार दो घटनाओं से भरा था । एक मशाल जुलूस और दूसरा मेरी प्रेस वार्ता । मैं प्रेस वार्ता करके घर वापस आ गया था पर विश्वविद्यालय परिसर में विशाल मशाल जुलूस निकाले गये । मशाल जुलूस हर वर्ष के मतदान के पूर्व संध्या की परम्परा है और कहते हैं कि आज़ादी के वर्ष का मशाल जुलूस पूरे शहर में निकला था । मेरा भी मशाल जुलूस निकला वह भी मेरी अनुपस्थिति में । पहली बार लड़कियों ने मशाल जुलूस निकाला वह भी बहुत बड़ा । पूरा महिला छात्रावास सड़कों पर था और मेरे नाम के

जयकारे लग रहे थे । मेरे सारे नारे नायाब थे । वह सारे नारे मशाल जुलूस में
थे ..

शास्त्रार्थ.. शास्त्रार्थ
रावण रथी विरथ रघुवीरा
बहिष्कार नहीं अब विध्वंस होगा
संघर्ष बहुत भयंकर होगा

दो नील कमल हैं शेष अभी यह पुनश्चण
पूरा करती हूँ देकर आहुति विध्वंस हेतु

होगी होगी जय
जय से कम कुछ कम स्वीकार्य नहीं
विध्वंस जय सोपान आह्वान
होगी जय होगी जय
जय से कम कुछ स्वीकार्य नहीं

हे नारी तुम भी यह शक्ति करो धारण
आराधन का दृढ़ आराधन से तुम दो प्रति उत्तर ।

लड़कियों के जुलूस ने सबकी नींदें उड़ा दी । जैसे - जैसे महिलाओं का
जुलूस बढ़ रहा था उनकी आवाजें हर छात्रावासों के सामने से गूँज रही थीं
और लोगों का ताँता उनको देखने के लिये एकत्रित हो रहा था । एक बड़ी
भीड़ उनको देखने के लिये हर ओर । लड़कियों ने करान्ति का आह्वान कर
दिया था ।

मेरे प्रतिद्वन्द्वियों के मशाल जुलूस विश्वविद्यालय परिसर यूनिवर्सिटी रोड तक
सीमित था पर मेरा कई होस्टलों में, ममफोर्ड गंज, अल्लापुर, दारागंज में
निकला ॥ देर रात तक जुलूस निकलता रहा और एक ही नारा था ...

विध्वंस आज ज़रूरी है
लड़ना एक मजबूरी है ।

यह आंदोलन स्वतः स्फूर्त हो चुका था । मेरी अनुपस्थिति में इतने जुलूस का मेरे पक्ष में निकलना मेरे विरोधियों को सकते में डाल गया ।

दूसरा समाचार जो सबसे अधिक प्रमुखता से था वह था मेरी प्रेस वार्ता और देर रात तक समाचार पत्र राजेश्वर तिरपाठी से मेरे विपक्षी नेताओं से संबंध के सबूत माँगते रहे पर कोई सबूत वह न दे पाये । समाचार पत्र की खबरों ने चुनाव का रुख ही मोड़ दिया था ..

“ एक अनोखा चुनाव विध्वंस के लिये “

“ एक नायक विध्वंस के लिये बोट माँग रहा “

“ अनुराग न्यायालय के द्वार पर पुनः न्याय के लिये “

“ राजेश्वर तिरपाठी के पास अनुराग के ऊपर लगाये आरोपों का कोई सबूत नहीं “

“ लड़कियों ने नेतृत्व संभाल लिया है “

“ चुनाव दिलचस्प मोड़ पर “

“ अनुराग शर्मा सत्य प्रकाश पांडे में कड़ी टक्कर “

“ एक मीर जाफ़र करान्ति के लिये विध्वंस चाह रहा “

“ मतदान सुबह दस बजे से विश्वविद्यालय परिसर में और देर रात तक परिणाम की घोषणा “

“ ज़िलाधिकारी का आग्रह चुनाव शांतिपूर्ण होने चाहिये ... प्रशासन ने शांतिपूर्ण चुनाव के सारे इंतज़ाम किये हैं । “

सुबह आठ बजे सुकृति मानस आये । उनका इस चुनाव में इतना मन लगता था कि वह अपना एसपी यमुनापार के काम की जगह यही काम अधिक देखते थे ।

उन्होंने कहा , “ सर आई जी साहब ने कहा है कि आप आज जरा सावधान रहें हो सकता है आपके विरोधी हताशा में कोई कदम न उठा लें । “

मैं - “ एसपी साहब अब मैं कर क्या सकता हूँ । यह जो जीवन चुना है उसमें तो ख़तरा ही ख़तरा है । यह जो सुरक्षा मिली है यह तो हटेगी ही आज नहीं तो कल । मैं साइकिल से ही चलता हूँ । वह मारना ही चाहेंगे तब कौन रोक सकता है । हकीकत यह है कि मैं सुरक्षित इसलिये नहीं हूँ कि यह सुरक्षा मेरे

साथ है बल्कि बड़ी हक्कीकत यह है कि वह मुझे मारना नहीं चाहे रहे , कारण चाहे जो हो । एक व्यक्ति किसी को मारना चाहे अपने जान की परवाह न करके तब वह किसी को भी मार सकता है । अमेरिकी राष्ट्रपति कैनेडी , महात्मा गाँधी, शरीमती गाँधी , राजीव गाँधी सबकी हत्या हो गयी । एक व्यक्ति मारने पर आमादा हो जाये तब सार्वजनिक जीवन का व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता । इसलिये उसको नियति और परभु से हाथों में छोड़ देते हैं , अपना कर्तव्य करते हैं । यह जीवन एक सार्थकता को प्राप्त हो जाये यह हर व्यक्ति के चेतन - अवचेतन मस्तिष्क की चाहत होती है । मुझे सार्थकता तो प्राप्त नहीं हुई है पर उस रास्ते के दर्शन अवश्य हो गये हैं यह भी कम नहीं है श्मशान की यात्रा में एक संतोष के लिये । “

सुकृति मानस - “ सर , आपके साथ जो समय बिताया वह आज तक के मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि तो निश्चित रूप से है और क्या पता मेरे पूरे जीवन की भी यही सबसे बड़ी उपलब्धि हो । ”

मैं - “ सुकृति आप किसी बड़े काम के लिये बने हो बस समय का इंतज़ार करो । ”

इतने में आंटी और माँ आ गये । आंटी बोली , “ अनुराग आज तुम्हारा चुनाव हो जायेगा तुम मेरे साथ दिल्ली चलो । ”

माँ - “ मुन्ना तोहार ई जंजाल आज ख़त्म होई जाये । तू चाहे जीतअ चाहे हारअ चला जा दिल्ली । इहाँ बहुत झ़ंझ़ंट बा , जब एकेडमी जाई के टाइम आये तब तू आयअ । ”

मैं - “ कब जा रहीं आप दिल्ली? ”

आंटी - “ कल चली जाती हूँ । ऋषभ भी कल आ गया होगा । उसको सब पता चल गया ही होगा । ”

मैं - “ आप क्यों जा रहे हो ऋषभ तो आयेंगे ही इलाहाबाद । ”

आंटी - “ वह आयेगा तब फिर आ जाऊँगी । ”

मेरा आज चुनाव था । मैंने सोचा अभी एक सिरे से ना कह दूँगा तब माँ का भाषण चालू हो जायेगा । मैंने कहा , “ कल चलना आंटी बहुत मुश्किल है । आज चुनाव है । परिणाम चाहे जो हो पर इस तरह जाना ठीक नहीं है । ”

आंटी - “ मैं एक- दो दिन और रुक जाती हूँ । तुम दो- तीन बाद चलो । ”

मैं - “ आप कल चले जाओ । आप देख लो ऋषभ क्या चाहते हैं फिर जैसा आप कहेंगे । ”

आंटी समझदार थी । वह भी जानती थी कि जाना संभव नहीं है । वह माँ के ज़िद के कारण ऐसा कर रही थी । माँ कितना भी सामान्य हो गया हो पर वह उस गोलीकांड की पुनरावृत्ति की कल्पना मात्र से सिहर जाती थी । मैंने भी कहा मैं वोट देकर आता हूँ फिर बात करता हूँ ।

मैं नौ बजे घर से निकला । मैं डीजे होस्टल के पहले से ही पैदल चलने लगा । एक अज्ञीब उत्साह चुनाव का था । बहुत बड़ी मात्रा में मत पड़ने की संभावना साफ दिखने लगी । मैंने अपना मत डाला और बारह बजे तक ही एक भारी भीड़ मतदान के लिये आ चुकी थी । मैं महिला छात्रावास की तरफ मैं गया । वहाँ वोटिंग बहुत ज्यादा हो रही थी । महिला छात्रावास के गेट पर मुझसे एसएफआई के धर्मेन्द्र सिंह मिले । उन्होंने बताया कि इतना लड़कियों का वोट आज तक कभी पड़ा ही नहीं है । यह लड़कियों का इतना वोट पड़ना तुम्हारी लहर बता रहा । मैंने उनकी बात सुन ली पर कहा कुछ नहीं । मेरी चार बजे से कोचिंग की क्लॉस थी । मैंने पूरे चुनाव में अपनी क्लॉस तक़रीबन प्रति दिन चलायी थी । मैं अपने क्लॉस में गया । वहाँ लोगों ने बताया कि मतदान बहुत ज्यादा हुआ है । लड़कियों ने बताया कि लड़कियों को ढूँढ़ कर मत दिलवाया गया । कई सीनियर छात्राओं ने इसको एक जेहाद की तरह लिया और मशाल जुलूस के समय एक-एक कमरे को देखा गया कि कोई कमरे में न रहे । मैंने जुलूस देखा न था पर जुलूस महिला छात्रावास से यूनियन हॉल तक था । कोचिंग के छात्रों ने कहा कि सर जीत में कोई संदेह नहीं है ।

मैं उनकी बात सुनता रहा । हर समर्थक को लगता है कि उसका नेता जीत रहा है । मुझे लगा यही कारण इनके विश्वास का होगा । मैंने क्लॉस लिया पर छात्र पढ़ने के मूड में आज कम थे । यह सब थे तो इलाहाबाद विश्वविद्यालय के ही छात्र जहाँ राजनीति रक्तों में होती है , यह सब बेचैन थे यूनिवर्सिटी रोड जाने के लिये । मैं क्लॉस लेकर घर आया तब देखा घर पर विशाल मजमा मेरे रिश्तेदारों का लगा था । दादू मुझे छोड़कर चला गया था जब मैंने आईएएस की नौकरी त्याग दी थी । उसको लगा अब यह किस काम का । पर सुकृति मानस का मेरे साथ रहना वह भी मेरा सुरक्षा इंचार्ज बन जाना , माँ का अपने मायके में दरोगा को बुलाकर निर्देश देना मेरी खोई प्रतिष्ठा को वापस कर गया था । दरोगा से ज्यादा तो माँ ने ही धरपेट दिया था गाँव के गुड़डों को । वह यह कहकर भी आयी , ” अगली बार सुकृति के भेजब ऊ सब दिमाग़ सही कै दे । “

लोगों ने पता किया यह सुकृति कौन है । पता चला एसपी यमुनापार साहब हैं वह । दरोगा भी घबड़ा गया कि मेरे साहब को ही यह ले बीती तब मेरा क्या करेगी । दादू ने पूछा था कि कैसे एसपी साहब को जानती हो । माँ ने भी पूरे रौब से बताया कि वह मुन्ना का सुरक्षा देखत हयेन । अब कोई बात माँ बग़ैर

फेंटे , घुमा- घुमाकर न बताये तब तो उर्मिला शर्मा का ब्रांड कमजोर हो गया । पूरे रिश्तेदारी में हल्ला हो गया एसपी जमुनापार मुन्ना के सिक्योरिटी देख रहे हैं । रिश्तेदार यह भी देखने आते थे कि मेरी माँ सही कह रही या ऐसे ही झाड़ रही । कुछ को सुकृति दिख जाते थे कुछ को नहीं । जिसको नहीं दिखते थे वह माँ को झूठा बना देते थे और माँ के पास ऐसे लोगों की लिस्ट बन रही थी जो उसको झूठा कहते थे और वक्त के इंतज़ार में थी कि कब भद्रा उतारे उनका । मैंने एक बार सलाह दी कि आप सुकृति को लेकर सारी रिश्तेदारी घूम आओ सारा मामला खत्म हो जाये । वह मुझ पर भी नाराज़ हो गयी यह कहते हुये , “हमसे फ़ालतू बात न किहा करअ अपने हद में रहा करअ । ”

आज तो रिश्तेदारों का मजमा था । पर आज सुकृति अभी नहीं आये थे । माँ बार - बार पूछे , “कहाँ हयेन सुकृति ? ”

मैं - “ मुझे नहीं पता । वह आईपीएस अफ़सर है माँ । वह सुरक्षा की देखभाल के लिये है कोई सुरक्षाकर्मी नहीं है । यह अलग बात है वह आईआईटी का छात्र है यह सब कभी देखा नहीं है और उसको चुनाव में मज़ा आ रहा है इसलिये चला आता है । ”

इतने में सुकृति आ गये । सुकृति को देखने के लिये मेरे रिश्तेदारों में होड़ लग गयी । वह था भी बहुत सुंदर लंबा एकहरे बदन का । दाढ़ तो उसका पैर ही छू लिया । मेरे रिश्तेदार चुनाव के बारे में बात कर रहे थे पर माँ कह रही थी यह जंजाल छोड़कर मुन्ना जायें नौकरी करें , इस राजनीति में कुछ नहीं रखा । सब यह जानना चाह रहे थे कि चुनाव परिणाम कब आयेगा और कैसे हमें पता लगेगा । मैंने बताया कि वह देर रात आयेगा और कल के पेपर में छप जायेगा । देर रात एक प्रेस की टीम मुझसे बात करने आयी और बताया कि वह एक विशेष चुनाव संस्करण कल छाप रहे हैं । उन्होंने बहुत लोगों से बात कर ली थी । लगभग सारे प्रमुख उम्मीदवार और कई पूर्व अध्यक्षों से चुनाव के मामलों में बात किया था । प्रेस ने ही बताया कि हर कोई कह रहा एक अलग चुनाव विश्वविद्यालय में हो रहा है । मुझे पर चुनाव लड़ने की प्रक्रिया आरंभ करके अनुराग ने चुनाव को एक नयी दिशा दी है । वह मेरा लंबा इंटरव्यू लेना चाहते थे । मैंने भी सहमति दे दी इंटरव्यू की । उन्होंने कई प्रश्न पूछे ..

मेरे भावी जीवन की रणनीति पर , मैं राजनीति या नौकरी में से किस व्यवसाय में जाने का इच्छुक हूँ । मैं अगर अध्यक्ष हो गया और जाकर नौकरी ज्वाइन कर लिया तब यह उनके साथ विश्वासघात नहीं होगा जिन्होंने मुझे मत दिया है । मैंने सब सवालों का जवाब दिया । मैंने कहा कि जो भी फ़ैसला लूँगा छात्र और परिसर के हित में ध्यान में रख कर लूँगा पहले परिणाम आ जाने दीजिये ।

पत्रकार - “ अगर आप चुनाव हार जाते हैं तब क्या करेंगे ? ”

मैं - “ अगले वर्ष मैं पुनः चुनाव लड़ूँगा । ”

पत्रकार - “ क्या चुनाव लड़ना ज़रूरी है आपके लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ? ”

मैं - “ मेरे लिये चुनाव जीतना ज़रूरी है मेरे लक्ष्य की प्राप्ति के लिये । मैं बगैर जनमत प्राप्त किये करान्ति नहीं कर सकता । मुझे एक शिक्षा के क्षेत्र में करान्ति लानी है । जो सरकारें इतने वर्षों से नहीं कर सकीं वह मुझे करना है और वह भी जनमत की शक्ति से । मैं पच्चीस साल की उम्र होने तक चुनाव लड़ूँगा और मुद्दों पर लटूँगा अगर इस बार हार गया । ”

पत्रकार - “ अगर जीत गये तब ? ”

मैं - “ विधंस । ”

पत्रकार - “ यह विधंस क्या है ? ”

मैं - “ मुझे जीतने दीजिये पहले । ”

पत्रकार - “ अगर मैं यह कहूँ कि मैं एक छात्र संघ अध्यक्ष से बात कर रहा और छात्रों की ओर से जानना चाह रहा कि वह विधंस क्या है जो छात्र हित में है । ”

मैं - “ मेरे छात्र संघ अध्यक्ष बनते ही विधंस का कार्य आरंभ हो जायेगा । ”

पत्रकार - “ अगर हार गये तब ? ”

मैं - “ विधंस को इंतज़ार करना होगा पर वह होगा ज़रूर । ”

पत्रकार - “ अगर आप चुनाव हार गये तब आप नौकरी नहीं करेंगे , यह मैं कह सकता हूँ ? ”

मैं - “ राम काज कीन्हें बिनु मोहिं कहाँ विश्वराम । ”

नमस्कार... बस आप इसमें से निष्कर्षित कर लें । मैंने सब कुछ कह दिया है इस अंतिम पंक्ति में । आपकी दुकान चला दी है मैंने । यही पंक्ति छाप दीजियेगा कल , आपकी दुकान चल निकलेगी । ”

सुकृति परेस वार्ता के समय साथ ही थे । पत्रकार के जाते ही कहा , “ सर आप रात में मत जाइयेगा विश्वविद्यालय, थोड़ा माहौल ठीक नहीं है । अगर जाना हो तब मैं साथ चलूँगा । आईजी साहब का स्पष्ट निर्देश है कि मैं साथ रहूँ अगर आप रात में विश्वविद्यालय जाते हैं । मैं देर रात आऊँगा जैसे ही चुनाव परिणाम की घोषणा होगी । अगर आप जीत जायेंगे तब यहाँ पर

भीड़भाड़ होगी सुरक्षा घेरा बनाना होगा । जार्जटाउन और कर्नल गंज थाने में पहले से ही कह दिया है । जैसे ही चुनाव परिणाम आता है मैं बताता हूँ । “

मुझे वैसे भी नहीं जाना था । मैंने कहा , “ मेरा काम हो चुका है । मैं चुनाव लड़ना चाहता था एक उद्देश्य के लिये । इस उद्देश्य की कुछ प्राप्ति हो गयी है बाकी लक्ष्य चुनाव परिणाम के बाद निर्धारित होगा । आप जाओ आराम करो रात में कोई ज़रूरत नहीं आने की । ”

मैं वापस अपने कमरे में आ गया । आज दादू बहुत दिन बाद मेरे कमरे में आया था वह भी मेरे कमरे में ही सो रहा था । मैं कितना भी कहूँ कि मुझे चुनाव परिणाम में कोई रुचि नहीं है पर हकीकत कुछ और थी । मैं यह चुनाव जीतना चाहता था । मेरे अंदर एक आग जल चुकी थी । इस आग को मै दावानल की तरह बनाना चाहता था । उसके लिये एक तूफान की ज़रूरत थी । यह चुनाव परिणाम वह तूफान बन सकता था । मेरी भविष्य की बहुत सी योजनायें इस चुनाव परिणाम पर आश्रित थीं । मैं कमरे में समय नष्ट करने के लिये पढ़ने का प्रयास करने लगा पर मेरा मन नहीं लग रहा था । एकाएक मुझे लगा कि कोई शोर चल रहा है सड़क से मेरी गली की ओर ओर । उस शोर के पहले लगा कि कुछ पुलिस वाले आ रहे मेरे घर की तरफ । मैं बारजे पर आकर खड़ा हो गया । मेरे साथ दादू भी खड़ा हो गया । वह शोर तेज होता जा रहा था । मैंने देखा नीचे चबूतरे पर माँ - पिताजी और भाई भी आ गये हैं । आसपास के मकानों से लोग देखने लगे । कई लोग अपने मकान से बाहर आ गये । एक बड़ा हुजूम छातरों का मेरी गली में प्रवेश किया । मैं दूर से उनको पहचानने की कोशिश करने लगा । मुझे पहचान में लोग आने लगे । सबसे आगे राम आशीष मौर्या मालों से लदे थे । मैं यह अनुमान लगा गया कि चुनाव परिणाम आ चुका है और राम आशीष मौर्या चुनाव जीत गये हैं । नारे अब स्पष्ट सुनाई देने लगे थे ..

विधवंस नायक अनुराग शर्मा

अनुराग शर्मा . अनुराग शर्मा

हमारा अध्यक्ष अनुराग शर्मा

मैं छातर संघ अध्यक्ष निर्वाचन हो चुका था । मुझे गर्व का आभास होने लगा ..

मुझे लगा मैं इस भीड़ के ऊपर वैसे ही अवतरित हो रहा जैसे भगवान पद्मनाभ क्षीर सागर में ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 308

मैं छत से नीचे आया । मेरी कोचिंग के और मेरे विश्वविद्यालय परिसर में चली कक्षाओं के तमाम छात्र थे । वस्तुतः यह एक छात्र से अधिक एक अध्यापक की विजय थी । यह परम्परा के साँकल में जकड़ी यथास्थितिवाद जिस पर किसी का यकीन न था पर स्वीकारने को बाध्य थे उसके विरुद्ध एक विदरोह था .. एक सशक्त विदरोह । मैं जैसे ही नीचे आया राम आशीष मौर्या ज़मीन पर लेट गये । राम आशीष मौर्या कभी चुनाव जीतने के लिये चुनाव नहीं लड़ते थे । वह बस यूँ ही नामांकन करके अपनी जाति और इलाक़े के कुछ वोट प्राप्त करके थोड़ा बहुत छात्र राजनीति में प्रासंगिक होने का प्रयास कर रहे थे ताकि जातिगत समीकरण में कुशवाहा / मौर्या जाति के एक नेता के रूप में उभर सकें और देर सबेर ब्लाक- तहसील - ज़िला की राजनीति में कुछ दख़ल बना सकें । उनको ब्राह्मण- ठाकुर - यादव मठाधीश बहुत सताते थे और चुनाव नहीं लड़ने देते थे । जब इन्होंने पहली बार अपना नामांकन दाखिल किया था तब केशव यादव ने मारपीट कर बैठा दिया था यह कहते हुये कि तुम पिछड़े वर्ग का वोट काट रहे हो , बेचारे मन मसोस कर रह गये । पिछली बार लड़े तब ठीक से चुनाव प्रचार भी नहीं कर पाये और पैंतीस वोट प्राप्त हुआ था । बाहुबली इतने चुनाव प्रक्रिया में हॉबी हैं कि वह डरा धमकाकर नामांकन करने पर रोक लगा देते हैं और नामांकन के बाद चुनाव में बैठने का प्रयास करते हैं और चुनाव प्रचार भी ठीक से करने नहीं देते । राम आशीष मौर्या को पिछले दोनों चुनाव में सार्वजनिक रूप से अराजक तत्वों ने अपमानित किया था । इस विश्वविद्यालय की राजनीति में अराजकता और गुंडागर्दी इतनी व्याप्त थी कि एक बार एक जीते हुये प्रत्याशी का कमरा हारे हुये प्रत्याशी ने जबरन क़ब्ज़ा कर लिया और जीते हुये प्रत्याशी को अपना कमरा कहीं और तलाशना पड़ा । ऐसे माहौल में राम आशीष मौर्या के लिये चुनाव लड़ना ही एक चुनौती थी जीतना तो उनके स्वप्न में भी शायद कभी आया ही न हो । पर आज वह छात्रसंघ के उपाध्यक्ष थे वह भी 3900 से अधिक वोट पाकर । उनका प्रतिद्वंद्वी मात्र 1700 वोट पाकर दूसरे स्थान पर था । राम आशीष मौर्या को यकीन ही नहीं हो रहा था कि वह छात्र संघ के उपाध्यक्ष हो चुके हैं । मेरे क्या कहने .. मुझे 5900 से ज्यादा मत मिले थे और सत्य प्रकाश पांडे को मात्र 715 वोट । चुनाव एकदम एकतरफा था । किसी को वह लहर न दिखी जो अंदर ही अंदर चल रही थी । सत्य प्रकाश पिछली बार मात्र 27 वोट से चुनाव हारे थे और पचीस सौ से अधिक मत प्राप्त हुये थे । इस बार उनका सूपड़ा साफ़ हो गया था । अन्य उम्मीदवारों की हालत बहुत ही ख़राब थी । लोग मुझको सुनना चाह रहे थे । वह लोग रिक्षे पर जिस माइक को लेकर नारा लगा रहे थे उसी को लेकर मैं बोलने लगा ..

“ विध्वंस हमारा नारा था और विध्वंस आरंभ हो चुका है । जातिगत समीकरणों की राजनीति का विध्वंस हो चुका है । ब्राह्मण - ठाकुर संयुक्त उम्मीदवार की पराजय यह स्पष्ट कहती है कि विश्वविद्यालय ने जातिगत राजनीति को अस्वीकार कर दिया है । राम आशीष मौर्या की भारी मतों से विजय यह बता रही है कि व्यक्ति की सदाशयता और सहजता किसी भी आतंक को ध्वस्त कर सकती है । मेरे चुनाव में न पोस्टर छपा , न बैनर लगे , जुलूस जो भी निकले स्वतः स्फूर्त थे और चुनाव में धन की अनिवार्यता के सिद्धांत को यह चुनाव पूरी तरह नकार रहा है । मैंने तक्रीबन हर दिन अपनी कक्षा की और हर दिन पढ़ाया , यह मेरा शिक्षा के प्रति अपना लगाव था जिसको आप सबने सराहा । इस शिक्षा के प्रति लगाव को विस्तारित भी करना है और अति गहनता के साथ परिसर में पुनः स्थापित करना है । मेरा एक वायदा है मैं मसूरी एकेडमी के कमरों को हिंदी माध्यम के छात्रों से भर दूँगा आप मेरा सहयोग करें और मैं अपने उस वायदे को पूर्ण करने के लिये कृत संकल्पित हूँ । हम चुनाव को पीछे छोड़कर अपनी कक्षाओं की ओर चलें और अध्ययन- अध्यापन के कार्य में रत हो जायें । मैं यथाशीघर सब विध्वंस कर दूँगा जिसने भी हमारी विरासत को शर्मसार किया है तत्पश्चात् हम निर्माण की ओर अग्रसरित होंगे । मैं आपकी जीत पर आपको बधाई देता हूँ । यह जीत मेरी जीत नहीं है यह आपके संघर्षों की जीत है । आप मेरा यक़ीन मानिये हम इतिहास का निर्माण करेंगे बस शर्त यह है हम सब अपने हिस्से की लड़ाई खुद लड़ें । छात्रायें इस समय यहाँ नहीं हैं पर उन्होंने अपने हिस्से की लड़ाई लड़ने का फ़ैसला किया और उनका यह फ़ैसला चुनाव को एकदम दूसरे धरातल पर लेकर चला गया । ”

मैं इस बोसीदा गली , इस पुराने मुहल्ले से बनने वाला पहला आईएएस था अब पहला महान विश्वविद्यालय के छात्र संघ का अध्यक्ष । मेरे मुहल्ले के सारे मकानों के छत पर लोग थे और बहुत से लोग घर से बाहर निकल आये थे । छात्र सब चले गये । मैं बाहर के कमरे में माँ - पिता जी - आंटी - भाई मुहल्ले के कुछ लोगों के साथ बैठ गया । सुकृति आ चुके थे । सुकृति को इस परिणाम की आशा पहले ही हो चुकी थी । आईजी साहब ने सुकृति को बता दिया था कि सीबीसीआईडी की रिपोर्ट बता रही कि अनुराग के पक्ष में हवा चल रही है और परिणाम अप्रत्याशित होगा । सुकृति ने अपनी कार्य की गोपनीयता के सिद्धांत को ध्यान में रखकर मुझको नहीं बताया था पर चुनाव परिणाम के बाद बताया । माँ अभी भी एक ही बात पर लगी थी कि मैं नौकरी करने जाऊँ । वह बोली , “ मुन्ना ई झंझट अब त्यागअ और जा नौकरी पर । एहमें बहुत समस्या बा । ई हमरे पचन के बस के काम नाहीं बा । ”

सुकृति - “ आंटी जी सर ने बड़े- बड़े मठाधीशों को पानी पिला दिया । कई का राजनैतिक भविष्य नष्ट कर दिया । राम आशीष मौर्या ऐसे आदमी को भारी

बहुमत से उपाध्यक्ष बना दिया । इनसे ज्यादा राजनीति किसको आती है । “

माँ - “ चुप रहअ भरमावअ नअ एनका । मुन्ना के एकेडमी जाई दअ । तू त ठाट से नौकरी करत हअ तनख्वाह लेत हअ हर महीना , गाड़ी- घोड़ा लेहे दौड़त हअ । मुन्ना के पास का बा , का ऐ पूर ज़िंदगी सइकिलै पेरिही का । शलत राय न दअ । समझावअ एनका जाई नौकरी पे , ज़िंदगी जियई , बियाह - सियाह होई नाहीं तअ ऐसनै टहरत रहि ज़हिं । ”

सुकृति को लग गया कि रांग नंबर डायल हो गया है वह चुप हो गया ।

मुझे रात में नींद कहाँ आने वाली थी । मैं एक दूसरे विश्व में था । दादू बोला , “ भैया तू तअ बड़ा मनई बनि गअ हअ । ”

मैं - “ वह कैसे ? ”

दादू - “ तोहसे तीन- चार सीनियर अफ़सर जौन पूरे जमुनापार के मालिक बा तोहरे सिकोटी में लगा बा । चार- चार सिपाही दुआरे बैठा हयेन । बुआ गै रही गाँव करछना थाने के दरोगा चाक चौबंद से आई रहा । बसंतवा और सैदर के गाँव में पुलिस खेद के पकड़ेस गाँव के सड़क से मरतै मारत दुआरे तक लै आई । बसंतवा के घरे छापा मारके दुई कटटा बरामद केहेस । बुआ कहेस अगली बार सुकृति के भेजब , पता लगा सुकृति एस पी साहब हयेन । भैया तू आईएएस तअ भअ रहअ पर एतना बड़ा मनई नाहीं बना रहअ । हम तहसील गअ रहे कुछ काम से जय नारायण डिप्टी कलेक्टर के पेशकार कहेस साहेब कहे हयेन कि अनुराग सर के भाई के बोलावअ । हम गये तब डिप्टी साहब कहेन हमको अनुराग से मिलावअ । हर तरफ अंदोर बा कि अनुराग अब चुनाव लड़हीं जमुनापार से । एसपी जमुनापार सुकृति साहब तोहार सिकोटी इंचार्ज हयेन ई खूब फैला बा । ”

मैं - “ तुम ही फैलाये होंगे यह सब । ”

दादू - “ हम तअ फैलावा हअ पर पेपरौं में तअ हर रोज़ छपत हअ तोहरे बारे में , पर भैया एक दिन तअ लाग कि कुल दुनिया उजड़ि गै । ”

मैं - “ कब यह लगा ? ”

दादू - “ जब तोहरे ऊपर गोली चली । हर ओर इ समाचार फैलै लाग कि तोहका मारि के लहाश उठाई लै गयेन । बाबू बहुत रोयेन , बड़की भौजी तक कलथना मार - मार के रोवत रही । हम आवा घरे पर तब देखा ताला बंद बा । चाचा के इहाँ गये तब चाचा के घरे पर बहुत मायूसी रही । सबके लगा कि हम बर्बाद होई गये । आपस में चाहे जौन मन में मोटाई कभौं - कभार होई जाई पर सबके आशा के केन्द्र हअ तू भैया । अब तोहार आईएएस के उपलब्धि बहुत छोटवार होई चुकी बा । राजेश्वर तिरपाठी केतना बड़ा नेता हयेन । केतना

लाव - लश्कर से चलत हु ओनकरे संगे , इलाक़ा के कुल ठीका ओनकरे आदमी लेत हयेन तू ओनका ललकारअ और हराई देहअ / भैया ई बहुत बड़ी जीत बा / अब तअ तोहार नाम हर ओर बा । “

मैं - “ दादू , यह सब भ्रम है कि मैं जीत गया , मैंने सबको हरा दिया । यह एक नियति थी जो यहाँ तक ले आई नहीं तो क्या है मेरे पास । ”

दादू -“ भैया , ई बात त बा / क्रिस्मत के तअ धनी हअ तुहूँ और हमहूँ नाहीं तअ ओह दिना गोली लग गै होत तब ”

मैं - “ ईश्वर को जो मंजूर था वह हुआ और जो होगा वह होगा । ”

दादू - “ भैया हमार एक अर्जी बा । ”

मैं - “ क्या? ”

दादू - “ चाचा के स्टपेंड होई से बचाई लअ । ”

मैं - “ एहमें तोहार का फ़ायदा होये ? ”

दादू - “ चाचा हयेन हमार / चाची कहत रहिन के ओ सोउतेन नाहीं पूरी - पूरी रात / चाची कहत रहिन हमसे कि तू मुन्ना के नज़दीक हअ , कहि दअ मुन्ना से / मुन्ना कहि देझहिं तब होई जाये । ”

मैं - “ मेरे कहने से होगा ? ”

दादू - “ पक्का होई जाये / तोहार बात केउ नाहीं काटि सकत / तू न करअ भैया तब सुकृति साहेब से कहवाई दअ । ”

मैं - सुकृति की बात मान जायेंगे ? ”

दादू - “ पक्का मान जइहिं / फरगेंया मौसिया बतायेन हअ कि सुकृति और कलेक्टर में बहुत पटत हअ / दुझनों आईआईटी कानपुर के हयेन / कलेक्टर साहब सुकृति के तोहरे इहाँ लगवायेन हअ ताकि कौनों दिक्कत न होई / अशोक पांडे साहब वाली घटना के बाद सब सुरक्षित आदमी चाहत रहेन और कलेक्टर साहब सुकृति के लगवायेन । ”

मैं - “ तुम पूरे जासूस हो । ”

दादू - “ भैया हमार कामै इहै बा । ”

मैं - “ ठीक है देखता हूँ / एक बार अपनी बुआ से पूछ लेना / उसके मायके के मामले में कोई टाँग अड़ाये तो वह लड़ने लगती है / वह इसी बात पर लड़ेगी मुझसे कि हमसे पूछा क्यों नहीं / बड़ी विचित्र राजनीति है तुम्हारे घर की । ”

दादू - “ हम अनुमोदन लै लेब । ”

सुबह के समाचार पत्र ने पूरी कहानी लिख दी थी । एक संस्करण भी छप गया था । एक अलग चुनाव तो हुआ ही था । मुख पृष्ठ पर मेरी आदम क़द तस्वीर छपी थी हाथ हवा में उठाये हुये । वह शायद यूनिवर्सिटी रोड पर खींची गयी थी ऐसा लग रहा था ।

“एक करान्ति का आशाज़ ...”

“महिलाओं ने रुख मोड़ दिया .. “

लड़कियों के मशाल जुलूस की फ़ोटो फिर से छाप दी गयी नीचे यह लिखते हुये .. “जीत का बड़ा अंतर महिलाओं की मतदान में भारी भागीदारी ... “

“चुनाव जीतते ही छात्र संघ अध्यक्ष का आशाज़

ध्वंस होगा निर्माण के लिये “

“मैं अपने वायदे पर क़ायम हूँ आप मेरा सहयोग कीजिये ... अनुराग शर्मा । “

सुबह से ही पत्रकारों का घर पर आना आरंभ हो गया ।

आज शनिवार था .. मंगलवार को मेरा शपथ ग्रहण था । मैं आज तक शपथ ग्रहण समारोह में गया ही न था ...

शपथ किसकी लूँगा मैं

निर्माण की या विध्वंस की

यह सबके लिये कौतूहल का प्रश्न था ।

उधर कचेहरी में राम सजीवन ने फरगेंया से पूछा

भैया भयेनवा अब का करे ? ई का विध्वंस करे ? सब त कै दहेस अब बचा का बा ?

फरगेंया - “ तोहका कुछ खबर हयै नाहीं बा । तनिक दुई मीठ चाहि मँगावअ तब तोहका एकर पलानिंग समझाई । ई पूर चाणक्य बा । “

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 309

राम सजीवन - “ लअ भैया मीठ चाहि । मीठा तेज डलवाये हई , बतावअ पलानिंग का बा भयेनवा के । “

फरगेंया - “ गिरगिटान एतना रंग न बदले होये जेतना इ भयेनवा बदलेस । पहिले चोरी से गवा नामांकन दाखिल केहेस , फिर कहेस न पोस्टर न बैनर

न जुलूस , शास्त्ररार्थ करअ , फिर कहेस बहिष्कार करअ , पुनि रावण रथी विरथ रघुबीरा , पुनि कहेस प्रति पल परिवर्तित व्यूह , पुनि कहेस कुल वोट हमही के दअ । गिरगिटान सात रंग बदलत थअ पर ई तअ सात से ज्यादा बदलेस । “

राम सजीवन - सात से ज्यादा कैसन ? “

फरगेंया - “ तोहार बुदधि रबर बुदधि बा । देखअ ..

पहिला रंग - छातर संघ के बेकार संस्था मानै वाला चुनाव लड़ि गवा ।

दूसर - जुलूस न निकालब पर जुलूस निकालेस और बलभर मसाल जुलूस निकालेस और जानबूझ के जुलूस से बाहर रहा ।

तीसर - शास्त्ररार्थ । आईएसा , एसएफआई , विद्यार्थी परिषद त आवत रहेन शास्त्ररार्थ में पर जैसय सत्य प्रकाश , मांधाता छोडने शास्त्ररार्थ

उहौ पराई चला । ओकर काम होई गअ रहा ।

चौथा - बहिष्कार.. सब केउ बहिष्कार करअ चुनाव के पर हम न करब । हम सत्य प्रकाश , मांधाता के वोट लै लेब और जीतब , ऐसन बहिष्कार तअ हम न सुना आज तक ।

पाँचवा - रावण रथी विरथ रघुबीर । एसपी जमुनापार के जीप पर के चढ़ा?

छठाँ - प्रति पल परिवर्तित व्यूह । केहू के नाहीं बतायेस का बा प्रति पल परिवर्तित व्यूह ।

सातवाँ - “दक्षता भाषण में कहेस हमहीं के कुल वोट दअ और केहू के न दअ । अब जब बहिष्कार करत हअ तब कुल वोट काहे माँगत हअ । “

राम सजीवन - “ ई सातै भअ , सात से ढेर तू कहत रहअ । “

फरगेंया - “ अब कहे निर्माण पुनि कहे पुनर्निर्माण पुनि कहे रचनात्मक निर्माण पुनि कहे सब गिरावअ अब हम नवाँ बनाउब ।

ई भयनवा हअ करछना के राजा साहब माँड़ा के । दुझनाँ एकै तरह के चालू हयेन । राजा कांग्रेस के लै बीतने पर बोफोर्स में एकौ नाम न बतायेन कि के पैसा खायेस । इहौ ऐसे विध्वंस- निर्माण करत समय काट दे । भगवान जेका गाल बजावै के हुनर न दै देई

। ऊ हुनर जे पाई गअ ऊ तअ अजर अमर होई गवा । एका गाल बजावै में महारत बा । कैसन कोर्ट के भरमाई के सिकोटी लेहे जीप पर घूमत बा । बतावअ ऐसन कतौं होत हअ एक आईपीएस अधिकारी तोहार चौकीदार होई गवा बा ।“

राम सजीवन - “ मतलब ई फ़राड बा ? ”

फरगेंया - “ ई हम कब कहा कि कि ई फ़राड बा । ई चालू बा हम ई कहा । ”

राम सजीवन - “ एकर का भविष्य बा । ”

फरगेंया- “ भविष्य उज्ज्वल बा । ”

राम सजीवन - “ कैसे ? ”

फरगेंया- “ ज़रा एक गरम चाही मँगावअ तब हम एकर खेला समझाई । एकर खेला बहुत बड़ा बा । एका भगवान बनायेन ओकरे बाद ऊ साँचा देहेन तोड़ । इही बरे ई अकेलै आइटम धरती पर बा अपने तरह के । ”

राम सजीवन - “ ऐ छोटे , तनिक अलग पेशल चाहि बनावअ दूध और मीठा तनिक तबियत से डाल देहअ और खौलतै चाहि लै आयअ ”

फरगेंया - “ देखअ राजनीति के एक सिद्धांत बा कि एक नारा - एक जुमला लै आवअ और ई बेहया राजनीति चलत हअ नारन- जुमलन से । ओहमें जे माहिर ऊ चल निकला । नेहरू कहेन समाजवाद , इंदिरा कहेन गरीब हटाओ , संजय गाँधी कहेन परिवार नियोजन - पर्यावरण, 77 में जय प्रकाश कहेन समग्र क्रान्ति , राजीव गाँधी खुदै बनि गयेन मिस्टर क्लीन , राजा माँड़ा कहेन भरष्टाचार हटाओ ... पर भवा का ? कुछ नाहीं । समग्र क्रान्ति पर आवै वाली सरकार कुर्सी बरे लड़ि मरी और तीनों साल सरकार न चली । अनुराग के ई जुमला बनावै बहुत आवत हअ । पूरे चुनाव में दें जुमला - दे जुमला । एक जुमला सँभालै विपक्षी ई दूसर धुनि देहेस । दूसर समझअ ई तीसर पकड़ाई देहेस । विपक्षी एकरे जुमलन के बोझै उठावत- उठावत थक गवा । पर एक बात कहब अबअ अनुभव के कमी बा लड़िका - लबारी त अबै इ हयैय बा , कौनों राजनैतिक अनुभव तअ बा नाहीं एनके पास इही बरे इनके भीतर परिपक्वता के कमी बा । इहै एनकर अपरिपक्वता एनकर दुशमन बा , ओका ऐ दूर करैं । ”

राम सजीवन - “ का अपरिपक्वता बा ? ”

फरगेंया - “ अबै चुनाव लड़े के उम्र भई नाहीं बा ऐलान कै देहेन हम राजेश्वर तिरपाठी के हराउब । तोहरे अस- अस मनई के राजेश्वर तिरपाठी गटक ज़इहिं और डकारौ न लेइहिं । अब आज कहत हअ राजेश्वर के हराउब , काल कहब मुख्यमन्त्री के हराउब , कुछ दिना में कहबअ हम प्रधानमंत्री के खिलाफ लड़ब । एकै काम बचा रहि जाये कि कहअ कि आतंकवाद और गरीबी के ज़िम्मेदार अमेरिका बा । हम अमेरिका के राष्ट्रपति के हराउब । देखा ओनका कौनों राजनीति के समझ बा नाहीं । ई राजनीति देखात हअ समतल ज़मीन पर , पर बा ई दलदली ज़मीन पर उहौ कोहरे वाली रात के दलदली ज़मीन । दलदल कोहरा से ताकत लै के एनका डुबोय दे अनुराग के पतौ न चले कहाँ ऐ झँवाई गयेन । ”

फरगैंया चाय की चुस्की लेते बोला ..

“इ चाहि मस्रब के बा .. ई सब तअ बात रही राजनीति शास्त्र के अब सुनअ भयेनवा के असली खेला .. ई जाये विपक्ष में । राम सिंह यादव के पास अहिर - मुसलमान वोट तअ हइयै बा । इ भयेनवा बाभन और बुद्धिजीवी वर्ग जोड़े और चुनाव के समीकरण कुल बदल दे । चोटी कलावती के पास बा हरिजन बोट , सद्वावना सिंह के पास बा कुछ कुरमी , कुछ काछी , ठाकुर , बाभन वोट । अब सत्ता के गणित के सबसे बड़ा खिलाड़ी इहै बा । सत्ता के कुंडली के सबसे तगड़ा सनीचर इहै बा । एकर दृष्टि जहाँ वकर पड़ी उहीं खेल नसाई जाये । खेल बनावै से ज्यादा महारत एकरे पास खेल बिगड़े के बा । एकरे में कई खासियत बहुत विशिष्ट बा । ई बा सुपात्र मूलहा बाभन , सूर्य शर्मा ऐसन नामी अध्यापक के नाती बा , एकर नाना मानिंद बाभन हयेन । ई सब डेबरा में एकरे राजनीति में सहायक होये । आईएएस रहा पर नौकरी त्याग के बुद्ध बनि गवा बा । गाँधी बाबा के नाहीं कमीज फाड के पहिनै लागे और बोलै में तअ सरस्वती के वरदान बा । निकल पड़े सड़क पर दूटहा चप्पल और पुरान साइकिल लै के । बतावअ के लड़े ऐसे । ई राम सिंह के संगे जाये और अगली सरकार बने राम सिंह यादव के ।”

राम सजीवन - “ ई नौकरी पर अब न जाये ? ”

फरगैंया- “ हअ पूर बेवकूफ़े तू । एक आईपीएस एकर पहरेदारी करत बा । ई अगली सरकार के बड़ी ताक्त बने अब ई चाकरी करे ? अरे आईएएस-आईपीएस के ई तबादला करे । एक तगड़ी ख़बर बा केहू से बतायअ न । हम तोही से बतावत हई । ”

राम सजीवन - “ बतावअ , हम न बताउब केहू से । ”

फरगैंया- “ कमिश्नर सत्यानंद मिश्रा हयेन नअ .. ”

राम सजीवन - “ हाँ हयेन तअ कमिश्नर सत्यानंद... तब ? ”

फरगैंया- “ जाई दअ बहुत तगड़ी ख़बर बा , लीक होई जाये तब दिक्कत होये । ”

राम सजीवन - “ भैया , हम आज तक कुछ लीक किहा हअ का ? ”

फरगैंया - “ केहे तअ नाहीं हअ पर .. ”

राम सजीवन- “ अगर बिस्वास न होई तअ न बतावअ । ”

फरगैंया - “ लअ सुन लअ । कमिश्नर सत्यानंद के सद्वावना सिंह लगाये हयेन एका पारटी में लेई बरे । ”

राम सजीवन - “ ई जाये ? ”

फरगैंया - “ एक बात कहब भयनवा लालची नाहीं बा । एका ख़रीद नाहीं सकतअ केउ पर का पता कब मनई के मन भरम जाई । कबीर कहे हये नअ .. माया महाठगिनी हम जानी । ”

राम सजीवन - “ भैया चाहे जौन होई पर बड़ा मनई तअ बनि गवा बा । ”

फरगैंया - “ एहमें तअ कौनौं दुई राय बा नाहीं । ”

राम सजीवन - “ भैया तू मिलवायअ नाहीं । काल बडा आदमी होई जाये थोडा हली - भली कराई दअ । ”

फरगैंया- “ ज़ब कहअ बोलवाई देई हमार भौजी और ओकर मामी सगै बहिन हउ । ”

राम सजीवन - “ एकै राग बा तोहरे पास हमार भौजी ओकर मामी . . . एकरे आगे बढ़ा । ”

फरगैंया- “ तू देखअ .. हमका देखतै हमार गोड़े पकड़े । ओका इहीं कचहरी बोलवाउब । ”

राम सजीवन - “ कब ? ”

फरगैंया - “ ओका शपथ लई दअ । दाढ़ू के आवै दअ आज कालि में । ”

राम सजीवन - “ दाढ़ू बहुत आवत हउ आजकल तोहरे लगे , कुछ ख़ास मामला बा का ? ”

फरगैंया- “ बगैर गरज के मनई मंदिरौ नाहीं जात । ”

राम सजीवन - “ का गरज बा ? ”

फरगैंया - “ आजकल ऊ लाग बा सर्वेश के निलंबन रोकै में । ”

राम सजीवन - “ ऊ कैसे बचाये सर्वेश के सस्पेंड होई से ? ”

फरगैंया- “ हमसे पूछत रहा कैसै कलेक्टर के पास पहुँचा जाई । हम कहाँ अपने बुआ के लड़िका के रहत और कौन सूत्र काहे तलाशत हउ । पर संकोच करत बा अपने बुआ के बेटवा से कहई में । ”

राम सजीवन - “ काहे संकोच करत बा ? ”

फरगैंया - “ ददुआ बहुतै स्वार्थी बा , जब अनुराग नौकरी छोड़ देहेन तब ओका लाग कि अब अनुराग कौनौं काम के हयेन नाहीं और आउब- जाब कम होई गवा । ई सोचेस कि अनुराग के बाज़ार उड़ि गई पर अब तअ जमजोतिया के मेला ओकरे दुआरे लगि गवा बा । ”

राम सजीवन- “ चाचा से तअ पटत नाहीं काहे पैरवी में लाग बा । ”

फरगेंया - “ ददुआ करत हअ तहसील- कचहरी के छोट- मोट दलाली । ई पाइ गअ होये हजार खाँड़ रुपिया बस लगि गवा । ”

राम सजीवन - “ भैया हमका मिलवायअ ज़रूर भयनवा से । ”

फरगेंया - “ बस इहीं हफ्ता, शपथ बा मंगल के बुध - बेफई के बोलवाइत हअ इहाँ और संगेन मीठ चाहि पियब । चलअ कुछ विभाग के काम देखि लेई उहौ ज़रूरी बा । ”

सुबह दस बजे ही राजेश्वर तिरपाठी का पूरा क्राफ़िला मेरे घर पर आ गया । क्राफ़िले में जीप - कार - मोटरसाइकिल- राइफ़ल धारी पुलिस गनर सब थे । राजेश्वर तिरपाठी के साथ सत्य प्रकाश पांडे और हर्ष तिवारी भी थे । आज शाम को आंटी को जाना था इसलिये मैं आंटी से बात कर रहा था । गाड़ियों की आवाज़ से लोग चौकन्ने ऐसे हो गये । चुन्नू ने आकर बताया कि नेताओं का क्राफ़िला आया हुआ है । मैं बाहर के कमरे में आया । राजेश्वर तिरपाठी जितना भी भाव - भाँगिमा - मुख मुद्रा में प्रेम संभव था सब उड़ेल दिया कमरे में ।

राजेश्वर तिरपाठी- “ बधाई हो अध्यक्ष जी । अनुराग तू शहरै के नाहीं परदेश के नेतृत्व देबअ । बहुत समय बाद बाभन जाति में एतना क़दावर नेता पैदा भवा जे हर जाति के वोट लै सकई । अनुराग कई बार अपने से ज्यादा अपने प्रतिद्वंद्वी के जीत सोहात हई । चलअ बाभन अध्यक्ष बना ई बहुत खुशी के बात बा । ”

मैं - “ सर, अध्यक्ष बराह्मण ही होता । प्रखर व्यक्तित्व का ठाकुर उमीदवार तो आपके समर्थन में बैठ ही गया था और जातिगत आधार पर पड़े ठाकुर वोट तो आपको मिला ही होगा । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ कभौं बाभन - ठाकुर राजनीति एक साथ नाहीं होई सकत । मांधाता के सारा वोट धर्मेन्द्र सिंह के मिला । धर्मेन्द्र पाएन 702 वोट और सत्य प्रकाश 715 । एसएफआई के केव नाम लेवा परिसर में बा नाहीं । धर्मेन्द्र बस एसएफआई के झंडा कतौ दम तोड़त ज़िंदा रहई इहीं बरे चुनाव लड़त हअ , ओनका एतना वोट कैसे मिला ? ”

मैं - कैसे मिला ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ कुल ठाकुर वोट पलटि गवा । अब अनुराग तोहार ज़िम्मा बा सत्य प्रकाश के अध्यक्ष बनावै के । अब मंगलवार के तोहार शपथ ग्रहण होई जाये और बहुत शानदार होये शपथ ग्रहण । एतना वोट से आज तक केउ चुनाव जीतै नाहीं बा । अब तू जैसे- जैसे कहबअ वैसे - वैसे सत्य

प्रकाश और हर्ष चलिहिं । हर्ष के उपाध्यक्ष बनवावअ जैसे राम आशीष के बनवायअ और सत्य प्रकाश के अध्यक्ष । ई विश्वविद्यालय के राजनीति तू अब सँभालअ । “

मैं “ सर , मेरे पास क्या हैसियत है इतने बड़े- बड़े नेताओं को चुनाव लड़ाऊँ । एक संयोग था लोग भावनाओं में बह गये और मत दे दिया । जो मुझ पर गोली चलायी गयी वह भावनाओं में लोगों को बहा ले गयी । यह राजनीति मेरे बस की बात है नहीं । माँ मेरी बहुत परेशान है वह कह रही तुम जाकर नौकरी करो अपनी । सर , वह बात भी ठीक कह रही है , मेरे ऊपर ज़िम्मेदारी है और अगर इस विश्वविद्यालय की हिंसक राजनीति का कहीं शिकार हो गया तब क्या होगा । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ हम बताऊब तोहका गोलीकांड के पूर कहानी । ई ठकुरन के कुल कदर्शना हअ , ज़रा माता जी के बोलावअ ओनकर चरण छुई लई । ”

माँ को बुलाया । माँ आ गयी । सभी लोगों ने माँ के पैर छुये । राजेश्वर तिरपाठी हमारे इलाके के बहुत बड़े नेता थे । माँ ने भी उनका नाम सुना ही था । वह भी सुखद आश्चर्य में था जब सब लोगों ने उसका पैर छुआ ।

माँ ने अपना वही राग अलापा कि हम गरीब- गुरबा मनई हई , हमरे बस के ई सब झ़ंझट बा नाहीं मुन्ना जाई आपन नौकरी करई । राजेश्वर तिरपाठी ने कहा माता जी जहाँ भी अनुराग रहेंगे कुल - जाति का नाम रोशन करेंगे । मेरे घर से निकलते ही राजेश्वर तिरपाठी ने हर्ष से कहा , अनुराग का समर्थन आप लोग ले लो । इसको नौकरी पर भेजते हैं और इसके समर्थन पर अगला छातर संघ चुनाव होगा हर्ष और सत्य प्रकाश दुइनौं लोग जीत जाबअ । यह बच्चा है इसको कोई समझ नहीं राजनीति की । राजेश्वर तिरपाठी फिर मुझे समझने में चूक गये वह 420 थे तो मैं $420 + 420 = 840$ था । उनके हाथ से तोते उड़ने को कुलबुला रहे थे और उनको इसका पता ही नहीं था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 310

मैं रातोंरात एक नेतृत्व की क्षमता रखने का दावा करने वालों और नेतृत्व की आकांक्षा रखने वालों का नायक बन गया । मेरे पास कोई जीत का मन्त्र है , कोई चमत्कारिक शक्ति है , मेरे नारे व्यक्ति को सम्मोहित करते हैं , मेरी रणनीति एक विशिष्ट ढंग की है आदि आदि हर ओर चर्चा में आने लग गये । मेरी जीत ने एक बाद सत्यापित कर दी कि परिसर अभी भी अध्ययन-

अध्यापन की परम्परा में विश्वास रखता है क्योंकि मेरी पूरी लड़ाई इसी बात पर थी कि मुझे पढ़ने- पढ़ाने दिया जाये और इसका विरोध करने वाले ही मेरे विरुद्ध थे । बधाई देने वाले और अगले साल चुनाव लड़ने की इच्छा रखने वाले लोग मेरे घर सारा दिन आ रहे थे । मेरी माँ को यह चुनाव बिल्कुल नहीं भा रहा था । पर अब वह अल्प मत में थी । मेरे घर के और लोगों को यह भा रहा था । मेरे पिताजी की भी रुचि इसमें दिख रही थी । वह थे तो तटस्थ पर मेरे प्राकृत्म से अभिभूत थे । वह मुझसे कई बार कह चुके थे कि मुन्ना में तुमको सारे जीवन समझने में असफल रहा और एक बहुत बड़ा अन्याय तुम्हारे ही नहीं समाज के साथ कर रहा था । तुम अगर मेरे दबाव में आकर कोई छोटी - मोटी नौकरी स्वीकार कर लेते तब ? मैंने कहा , “ पिताजी स्वीकार करने के लिये पहले प्रस्ताव तो मिलना चाहिये । मैं क्या स्वीकार करता ? यह नियति थी जो मुझे यहाँ तक ले आना चाहती थी अब आगे का रास्ता क्या होगा नहीं पता ? ”

पिताजी - “ मुन्ना, अब आगे क्या करोगे ? ”

मैं - “ पिताजी पहले मैं पढ़ाता हूँ मन लगाकर । कुछ हिंदी माध्यम के छात्रों का मसूरी जाना बहुत ही ज़रूरी है । यह मत सिर्फ़ इसलिये मिले हैं कि मैं उनके उड़ते ख़बाँ की ताबीर को देने का वायदा कर चुका हूँ । यह मेरा नैतिक दायित्व है कि मैं अपने दिये वचनों के लिये कार्य करूँ । अब सफलता तो ईश्वर के हाथ है पर परयत्न तो मेरे ही हाथ में है । बहुत से लड़के- लड़कियाँ बहुत मेहनत कर रहे उनकों सही दिशा मिल जाये यह कार्य मेरा है । ”

पिताजी - “ परीक्षा तो नवंबर में हो जायेगी उसके बाद ? एकेडमी जाने पर क्या विचार है ? अगर मसूरी ने बुलाया तब ? ”

मैं - “ मसूरी तो अब नहीं जाऊँगा । अगर जाना होगा तब सीधा नागपुर ही जाऊँगा । ”

पिताजी - “ नागपुर तो जाओगे ना ? ”

मैं - “ वहाँ जाना ही होगा । उसके अलावा रास्ता क्या है । माँ बहुत परेशान है , उसकी परेशानी तो दूर करनी पड़ेगी । ”

पिताजी - “ उसकी परेशानी दूर करने जाओगे या नौकरी करने का मन है ? ”

मैं - “ पिताजी , हकीकत यह है कि यह नौकरी अब मेरे लायक है नहीं । पर एक हकीकत यह भी है कि जीवन चलेगा कैसे ? जिस परिवेश में एक आम व्यक्ति का जन्म होता है उसका जीवन बंद आँखों के जीवन और खुली आँखों के जीवन में साम्यता नहीं रखता । मेरी बंद आँखें कितना भी बड़ा ख़बाब देख

लें पर आँख खुलते ही हक्कीकत का दामन उन ख्वाबों की धुँध को भी उड़ा देती है । अब इस पर सोचूँगा आगे , अभी तो समय है । “

पिताजी - “हाँ समय है , कुछ दिन आराम कर लो । बहुत समय से दिन- रात लगे हो । ”

मैं - “ पिताजी बड़े ख्वाब देखने वालों को त्याग करना पड़ता है , यह प्राथमिक शर्त है बड़े ख्वाब के सम्मान के लिये चाहे उनकी ताबीर मिले या न मिले । बड़ा ख्वाब एक सम्मान का आग्रही होता है । ”

इतने में माँ आ गयी । माँ ने पूछा , “ का बतियात हअ ? ”

मैं - “ कुछ नहीं यही कह रहा ... हम गरीब-गुरबा मनई हई हमरे बस के ई झांस्ट नाहीं बा हमका जाई के नौकरी करई चाही । ”

माँ नाराज़ हो गयी और बोली , “ हमका मज़ाक़ बिल्कुल पसंद नाहीं बा । पूछ लअ अपने बाप से केतनी बड़ी ज़मीदारी बा । गरीब - गुरबा नाहीं हअ तअ कौनौ टाटा - बिड़ला हअ का । ई आपन शेखी कतौं और देखाय हमका न देखायअ । बड़का अध्यक्ष बनि गअ हअ हमका समझावत हअ हम गरीब - गुरबा मनई हई । ”

वह नाराज़ हो गयी थी । उसका कोई मज़ाक़ बनाये यह उसको बिल्कुल पसंद न था । वह जिसको जो मन में आये कह दें पर उसको कोई कुछ न कहे यह उनकी चाहत रहती है । मैंने बात पलटते हुये कहा , “ यहाँ सारा दिन लोगों का ताँता लगा रहता है । कहो तो मामा के यहाँ हो आऊँ । ”

माँ - “ शांति जाई चाहत हई भैया के इहाँ ओनहूँ के लेहे जा । ”

मैं - “ ठीक है , तुम भी चलो । चुन्नू लोगों से कह देगा कि आज मैं कहीं चला गया हूँ । ”

माँ - “ मुन्ना, लोग बहुत तक़दीर से दुआरे पर आवत हअ । ओनकर सम्मान करै चाही । ”

मैं - “ माँ , कोई मुझसे मिलने नहीं आ रहा । सबका कुछ मतलब है । हर व्यक्ति को अपनी ताक़त पर कार्य करना चाहिये और उसे हर दिन अपने को तराशना चाहिये । मेरी ताक़त मेरा अध्ययन- मनन - चिंतन है । मुझे उस पर केन्द्रित रहना चाहिये । यह सब मौसमी हवायें हैं अभी लहरा रहीं हैं पर इनको विलुप्त होते समय नहीं लगेगा । आप आंटी चलो मैं आता हूँ । ”

माँ - “ सुकृति नाहीं आयेन ? ओनहूँ के लेहे आया । ”

मैं - “ क्या काम सुकृति का ? ”

माँ - “ समझा करअ तनिक हाबा- डाबा बना रहत हअ । ”

मैं - “ माँ तेरा भी । ”

माँ - “ ददुआ कहाँ मरि गवा बा बहिन के इहाँ से आई नाहीं । चुन्नू जा ओका लै के आवअ । ”

मैं - “ क्या करना उसका? ”

माँ - “ जाई के बताई आवै भैया के इहाँ कि तू आवत हअ । ”

मैं - “ तुम बता दोगी और ऊ बेसहूर तुम्हारी समधिन आ जायेगी कान खाने । ”

माँ - “ के बा हमार समधिन ? ”

मैं - “ विभा मामी .. हरिकेश मामा की पत्नी । ”

माँ - “ लागत बा तोहार बड़ा मन लाग बा ओकरे बिटिया पर । हमका पतै नाहीं कुछ और हमार समधी - समधिन आई गयेन । ”

मैं - “ रहने दो पहले से मत कहो । ”

माँ - “ चुप रहअ तू आपन काम देखअ .. ए चुन्नू जा ओका लै के आवअ । ”

चुन्नू चला गया । अशोक और दिनेश आये और मैंने कहा शाम चार बजे सीधे क्लॉस में मिलते हैं अभी मामा के यहाँ जा रहा । आज से पढ़ाई को एक अलग रफ्तार देते हैं । ”

अशोक - “ हाँ सर एक सीट बढ़ भी जायेगी इस साल शायद वह मेरे लिये ही है । ”

मैं - “ एक सीट कैसे बढ़ेगी ? ”

अशोक - “ आप तो अब जायेंगे नहीं । वह सीट तो बढ़ ही जायेगी । ”

मैं - “ कैसे पता मैं नहीं जाऊँगा । ”

अशोक - “ सर जो चिलम पीने लगता है उसको चम्पा सुर्ती में मज़ा नहीं आता । अब आप बड़े पैमाने का नशा पा चुके हैं यह सब छोटा - मोटा नशा है । सर वैसे आपका राजनीति करना ज़रूरी है । हम लोगों की बढ़िया- बढ़िया पोस्टिंग कराइयेगा और हम लोग रेलेंगे माल । आप अपना सिद्धांत- विधांत बघारिये हम लोग मूल काम में लगे रहें । ”

मैं - “ कभी भूल के भी मत कह देना घर में कि मैं एकेडमी नहीं जाऊँगा नहीं तो माँ घर में घुसना बंद करा देगी । ”

अशोक - “ वैसे सर विचार क्या है जाने का ? ”

मैं - “ मसूरी तो नहीं जाऊँगा । नागपुर पर देखूँगा । अभी तुम लोगों की तैयारी तो करा दूँ वह अधिक ज़रूरी है । ”

अशोक - दिनेश चले गये । चुन्नू दाढ़ को ले आया । सुकृति इस समय मेरे घर के नये नायक थे । वह एसपी यमुनापार थे और कलेक्टर के बहुत नज़दीक थे यह बात सबके सिर चढ़कर बोल रही थी । माँ और आंटी के जाने के थोड़ी देर बाद सुकृति आये और बोले, “ सर कलेक्टर साहब पूछ रहे थे शपथ ग्रहण पर कोई विशेष व्यवस्था करनी है क्या? ”

मैं “ यह काम विश्वविद्यालय का है, यह काम वही करेंगे । मुझे कुछ नहीं पता कि इसमें होता क्या है । महामंत्री परलाद सिंह बड़े नेता भी हैं और साधन संपन्न बाहुबली भी, वही सब व्यवस्था कर रहे हैं चाहो तो उनसे बात कर लो । वह अभी आये थे और कह रहे थे कि बहुत लोगों को बुलाया गया है जिसमें कई पूर्व पदाधिकारी शामिल हैं । गृहमन्त्री शहर के ही विधायक हैं वह भी यहाँ के अध्यक्ष रहे हैं । परलाद सिंह उनके बहुत नज़दीक हैं वह भी आ रहे हैं । अब वह आयेंगे तब प्रोटोकॉल अपने आप ही बढ़ जायेगा । आप बात कर लो उप कुलपति से मुझे कुछ नहीं पता और वैसे भी मेरा काम हो ही गया है जो मैं चाहता था करना । मुझ अब पढ़ाने दो अब इस सिक्योरिटी की भी कोई ज़रूरत नहीं है इसको हटा दो । आप भी अपना एसपी का काम देखो यह फ़िज़ूल का कार्य छोड़ो । ”

सुकृति- “ सर, यह सिक्योरिटी हटाने का फ़ैसला बड़ा फ़ैसला है । यह फ़ैसला कोर्ट ही कर सकती है । कोर्ट का आदेश आपने पढ़ा ही है । ”

मैं - “ एडवोकेट जनरल से कहो इस बात को न्यायालय के संज्ञान में ले आकर बात ख़त्म करें । ”

सुकृति- “ सर, आप क्यों यह करा रहे । केस आज तो ख़त्म होगा नहीं । यह दो - तीन महीने चलेगा । प्रशासन भी समस्या में हैं वह आपके ऊपर के हमलावर को गिरफ्तार कर नहीं पायी है । इस असफलता के कारण प्रशासन भी डिफेंसिव है और खुदा न ख़ास्ता कोई हमला फिर हो गया तब बहुत समस्या हो जायेगी । हमले की संभावना चाहे जितनी भी कम क्यों न हो गयी हो वह शून्य तो नहीं ही है । ”

मैं “ क्यों गिरफ्तार नहीं हो पा रहे हमलावर ? ”

सुकृति- “ सर बहुत बड़ी साज़िश थी वह । भरत सिंह ने हमला किया था उसकी हत्या हो गयी है । यह सब बहुत ही शातिर लोग है । यह सारा निशान मिटा देते हैं । भरत सिंह के जो लोग थे वह सब शहर के बाहर के थे और भरत सिंह के आदमी थे । अब जब भरत सिंह पकड़ में आ नहीं सकते तब आगे का रास्ता ही बंद हो गया । ”

मैं - “ यह जानकर भी अब क्या मिल जायेगा कि कौन था साज़िश में शामिल । चलो मामा के यहाँ चलना है वहाँ से होकर आते हैं । ”

मामा के यहाँ जैसी उम्मीद थी वैसा ही माहौल था । मामी ने अपने सारे भाइयों को बुला लिया था । हरिकेश मामा - विभा मामी को आना ही था । माँ का संवाद या कहें एकतरफा संवाद चालू था , “मुन्ना जनवरी में नागपुर ज़इहिं अगर अबहिं मसूरी न गयेन । सुकृति मुन्ना के रखवाली में रिवाल्वर लै के साथ रहत हअ , उहाँ एक नहीं दुई- दुई । हल्काँ से कुकुर सरसरी केहेस कि रिवाल्वर हवा में । जीप पर चुनाव के समय पीछे जीप पर खड़ा रहत रहेन । मुन्ना तअ बहुत छोट लागत हअ सुकृति के सामने । सुकृति सवा छः फ़िट के बा , ऐतना लंबा मनई कम होत हअ । कुल अध्यक्ष पद के प्रत्याशिन के वोट जोड़ि दअ तबौ मुन्ना से कम बा । ”

दादू - “ बुआ अगर पिछले सालौ के प्रत्याशिन के वोट जोड़ि दअ तबौ जीत ज़इहिं । जेतने वोट में दुई अध्यक्ष बनत हअ ओसे ज्यादा वोट मुन्ना पायेने । अब एनका दुई साल अध्यक्ष रहै चाही , जब वोट दुई साल के अध्यक्ष से ढेर पीये हयेन तब दुई साल रहै चाही । राम आशीष पिछले साल पचासौ वोट नाहीं पाये रहेन ऐह साल पैंतीस सौ वोट से ढेर वोट पायेन । उहाँ वोट तअ मुन्नै के हअ , राम आशीष के के जानै न बोलै के सहूर न बैठै के । राम आशीष के वोट जोड़ि दअ तब मुन्ना के वोट दस हज़ार तक पहुँचत हअ । पेपर में छपा रहा राजेश्वर तिरपाठी उन्नीस सौ वोट पाई के अध्यक्ष बना रहेन एहि हिसाब से तअ मुन्ना पाँच अध्यक्ष के बराबर हयेन । बुआ तू का खाये रहू जब मुन्ना पेट में रहेन ? हमार अम्मा तअ बलभर जामुन खाइन और अमावट । हमार रंग करिया होई गवा और बुद्धि अमावट के नाहीं रबड़ छाप । तू मनतर केहू के देहू नाहीं । ”

उसी समय मैं पहुँच गया । सुकृति को बाहर के कमरे में छोड़कर अंदर गया । हर आदमी जानना चाह रहा सुकृति आये हैं क्या? माँ ने पूछा , “ कहाँ हयेन सुकृति ? ”

मैं - “ बाहर झराइंग रूम में हैं । ”

माँ - “ दादू जा पानी पूछ लअ सुकृति के । ”

दादू - “ जात होई बुआ । ”

सब लोग सुकृति में ही लग गये । मामी ने मौका देखकर माँ से कहा , “ उर्मिला अपने भैया के हला भला कराई दअ । ऊ जाँच बंद कराई दअ नाहीं तअ ससपेंड होई ज़इहिं । ”

माँ - “ कैसे होये भौजी ? ”

मामी - “ मुन्ना कहिं देई नाहीं तअ सुकृति साहेब कहि देई कलेक्टर से । दाढू से फरगेंया बतायेन हअ कि सुकृति साहेब और कलेक्टर साहेब एके आईआईटी के हयेन और बहुत पट्ट हअ आपस में । ”

माँ - “ मुन्ना तू कहबअ कलेक्टर से कि हम कहीं सुकृति से । अब ई जाँच तअ बंद होब ज़रूरी बा नाहीं तअ भैया समस्या में आई ज़इहिं । ”

मैं कुछ बोलूँ वह फिर बोल पड़ी ..

“ भौजी मुन्ना संकोची हयेन । हम कालै सुकृति से कहवाई देब , तू चिंता न करअ । ”

मैं “ माँ , कलेक्टर को बोलवा लो सुकृति से और सहेज के ठीक से कह दो । सुकृति शायद ठीक से न कह पायें । ”

वह समझ गयी कि मैं उसका मज़ाक बना रहा । वह दिमाग से बहुत ही तेज थी । वह बोली ,” चलअ हमका डील करै दअ मामला तोहार सलाह के ज़रूरत होये तब बतउबै । ”

मैंने रविवार को पूरे दिन क्लॉस चलाई । सोमवार को विश्वविद्यालय गया । वहाँ माहौल ही अलग था । राजनीति को एक नयी दिशा मिल रही थी । स्थापित परम्परा की चुनाव में इतनी बड़ी पराजय ने दशकों से स्थापित राजनैतिक मानदंड की छूलें हिला दीं थीं । अब आगे राजनीति किस तरह होगी यह सवाल सबके दिमाग में था । मेरी जीत का उल्लास हर ओर था । मेरी कक्षा में भीड़ बहुत थी । भीड़ पहले भी होती थी पर आज तो लोग देखने को आतुर थे । मैंने अपनी क्लॉस ली और एमए की क्लॉस अटेंडे भी की । सत्य प्रकाश सर की वह क्लॉस थी । उन्होंने कहा , “ यह एक सुखद आश्चर्य है कि छात्र संघ का अध्यक्ष पढ़ना और पढ़ाना चाहता है । अनुराग शिक्षा के स्तर को ऊपर ले जायें यह हम सबकी चाहत है । मैं इनके इस अभियान को शुभकामना देता हूँ । ”

अगले दिन शपथ ग्रहण समारोह था । एक बहुत बड़ा समारोह । बहुत से लोग आये थे पत्रकारों की भरमार थी । मैं शपथ ग्रहण कार्यक्रम के समापन के ठीक पहले माझक पर आया और मैंने एक बार फिर से सबको धन्यवाद देते हुये छात्रसंघ अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देने की घोषणा कर दी । एक शांति हर ओर व्याप्त हो गयी । एक निर्वाचित अध्यक्ष ने शपथ ग्रहण के साथ ही पद से त्यागपत्र दे दिया । मैंने कहा मैं सारे पदाधिकारियों को उनकी विजय पर एक बार पुनः बधाई देता हूँ और उनसे अपील करता हूँ वह कल सायंकाल तक अपने पदों से त्यागपत्र दे दें । मैं बृहस्पतिवार की एक आम सभा का इसी शहीद लाल पदमाकर की मूर्ति के सम्मुख आह्वान करता हूँ । मैं

सारे पदाधिकारियों से यह अनुरोध करता हूँ कि वह अधिक से अधिक संख्या में छात्रों को आमंत्रित करें । अब एक ही रास्ता है या तो मेरे पीछे चलो या मुझसे संघर्ष करो । यथास्थितिवाद मुझे स्वीकार्य नहीं है । चुनाव आपका है मेरे पीछे चलना या मुझसे संघर्ष करना, मुझे दोनों स्वीकार्य हैं । मैं विधवंस का आगाज़ करता हूँ एक करान्ति का आद्वान करता हूँ.. एक करान्ति शिक्षा के लिये, शिक्षा के नाम पर ।

मेरे बाहर निकलते ही पत्रकारों ने चारों तरफ से छेंक लिया । मैंने सुकृति से कहा जगह बनाओ प्रेस वार्ता ज़रूरी है आज

रचनात्मक करान्ति का आद्वान हो चुका है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 311

यह छात्रसंघ अध्यक्ष पद से त्यागपत्र क्यों दिया गया यह किसी के समझ में न आ रहा था, ऐसा किया क्यों गया और इस तरह की नाटकीयता की उम्मीद किसी को थी ही नहीं । प्रह्लाद सिंह एक ज़मींदार परिवार से आते थे, उनके घर में भाँति-भाँति का व्यापार होता था । वह बड़े आदमी थे और वह महामन्त्री का चुनाव एक भारी बहुमत से जीते थे । वह परम्परागत छात्र राजनीति का एक चेहरा बनकर उभर रहे थे । वह पिछले वर्ष तकरीबन एकत्रफा चुनाव में उपमंत्री हुये थे और इस वर्ष उसी तरह वह महामन्त्री हुये थे । वह अगले वर्ष के अध्यक्ष पद के उम्मीदवार थे । अब बड़ी छात्र राजनीति करनी है तब बाहुबली तो होना ही चाहिये और वह तो महाबली थे । उन्होंने कहा, “ग़ज़ब नौटंकी है भाई.. एक अलगै गर्दा फैलाए पड़े हैं हमारे अध्यक्ष जी ।”

उनका वर्तमान सरकार के गृह मन्त्री के साथ एक पारिवारिक रिश्ता है और वह इस कारण से उनके नज़दीक थे । गृहमंत्री भी अपने चेले के अभिषेक संस्कार में उपस्थित थे । शपथ ग्रहण के पश्चात् जलपान का अच्छा इंतज़ाम था और प्रह्लाद सिंह ने बलभर लड्डू की व्यवस्था नेतराम की दुकान से की थी । पर विश्वविद्यालय की राजनीति में एक पागल हाथी प्रवेश कर गया था जो सदियों से बने बनाये बाग को रोंदने पर आमादा था, वह शपथ ग्रहण के बाद का कार्यक्रम भी रोंद गया ।

पत्रकारों की भीड़ लग गई । सुकृति ने जगह बनवा दी पत्रकार वार्ता के लिये । सारे लोगों का ध्यान शपथ ग्रहण से हट गया और मेरी पत्रकार वार्ता

की ओर चला गया । मैंने कहा , “ मैं एक साथ आप सबको संबोधित कर देता हूँ फिर आपके सवालों का जवाब दूँगा । ”

“ मेरी इस विश्वविद्यालय की छात्र राजनीति में कोई आस्था न थी और न है । मैं जिस लक्ष्य को लेकर चुनाव मैदान में आया था वह लक्ष्य पूर्ण हो चुका है अब मेरे अध्यक्ष बने रहने का कोई अर्थ नहीं है । कोई अध्यक्ष क्या कर सकता था और क्या किया है इस सत्य के शोधन के लिये आप पिछले दस-पन्द्रह वर्षों के छात्रसंघ पदाधिकारियों के बारे में पता कर लीजिये और बताइये उनका इस विश्वविद्यालय की समस्याओं से क्या सरोकार रहा है । इस छात्रसंघ भवन पर खड़े होकर जोशीले नारे देने से कोई समस्या हल नहीं होती है और वह जोशीले नारों का छात्रों के हित से कोई सरोकार नहीं होता । जो व्यक्ति पढ़ता ही न हो और न उसके पढ़ने में कोई रुचि हो वह छात्रों की समस्या कैसे हल कर सकता है । जो संस्था छात्रों की समस्या से कोई सरोकार न रखती हो उसका समापन आवश्यक है । मेरे विध्वंस के नारे का यही अभिप्राय था । मैं विध्वंस कर दूँगा इस संस्था का जो व्यक्तिगत हित साधन का एक ज़रिया बन चुकी है और छात्रों की समस्याओं से बेपरवाह है और मैंने विध्वंस आरंभ कर दिया है । ”

पत्रकार- “ आप इसके समापन के बजाय इसमें सुधार भी करने की बात कर सकते थे ।

मैं- “ यह केंसर का रोग है यह ज़ड़ों तक फैल चुका है यह दवा - दुआ किसी भी तरह उपचारित नहीं हो सकता । ”

पत्रकार- “ क्या आप ऐसा विध्वंस कर देंगे कि अब कभी कोई छात्र संघ नहीं होगा ? ”

मैं- “ इसका उत्तर समय आने पर दूँगा , पर इस रूप में छात्र संघ न रहे यह तो पर्यास अवश्य करूँगा । ”

पत्रकार- “ वह किस रूप में होगा ? ”

मैं- “ यह एक बड़ा प्रश्न है । उसका उत्तर समय आने पर दूँगा । पहले मुझे इसे विध्वंस करने दीजिये । ”

पत्रकार- “ अगर आपकी अपील पर किसी ने त्यागपत्र न दिया तब ? ”

मैं- “ आशावादी रहिये , सदाशयता और परमात्मा पर यकीन रखिये । मेरे पास हर तरह की परिस्थिति की योजना है । यह कोई आवेश में लिया गया निर्णय तो है नहीं । यह एक विचारित - मन्थित निर्णय है । यह निर्णय नामांकन दाखिल करने के पहले ही ले लिया गया था । मैं कोई मात्र चुनाव जीतने के

लिये चुनाव नहीं लड़ रहा था । मैं एक शक्ति प्राप्त करना चाहता था अपनी भावी योजनाओं के लिये ।”

पत्रकार- “ क्या हैं भावी योजनायें ? ”

मैं “ अभी तो विधवंस ही हैं बाकी बाद में बताऊँगा पहले यह कर लेने दीजिये । ”

पत्रकार- “ एक संस्था जिसने आपको इतना सम्मान दिया क्या उसका ध्वंस उचित है ? आप तो नेपोलियन की तरह कार्य कर रहे जिसका जन्म करान्ति से ही हुआ पर उसने करान्ति को ही ध्वस्त कर दिया । ”

मैं - “ पर उसकी विजयवाहिनी ने करान्ति के संदेशों से पूरे यूरोप को भर दिया । नेपोलियन में लिप्सा थी । मैं लिप्साहीन और तृष्णाहीन राजनीति की वकालत कर रहा । मैं इस संस्था को जिसने मुझे एक अध्यक्ष के रूप में जन्म दिया उसको ही समाप्त करूँगा और इसकी अर्थहीनता का संदेश पूरे देश में लेकर जाऊँगा । ”

पत्रकार- “ क्या आप छात्र राजनीति को पूरी तरह खत्म करना चाहते हैं ? ”

मैं “ परसो की आमसभा का इंतज़ार कीजिये । ”

हर और हल्ला होने लगा । पूरा शपथ ग्रहण का मज़ा ही किरकिरा हो गया । बहुत सारे पूर्व अध्यक्ष और बड़े - बड़े राजनैतिक मठाधीश - रंगबाज़ - बाहुबली भी मौजूद थे उन सबको समझ ही न आया यह क्या हो गया । हॉलैंड हॉल के कैम्बिरज कोर्ट में मठाधीश मिले । इस बार सब भौचकके थे । राजेश्वर तिरपाठी ने कहा , “ यार एकर खोपड़ी विचित्रै बा । ई काल आत्महत्यों कै ले तब उहौं कौनौं पुनर्जन्म के योजना से होये । कुल गणितै लै उड़ा । ”

जनमेजय सिंह - “ ई करा का चाहत बा ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ लोग शुरूवै से एका समझे में भूलि केहे हयेन । हम गअ रहे एकरे घरे बधाई दई । एकर महतारी कहेस कि ई जाये एकेडमी । हमहुँ के लाग ई जाये पर इ कतौं न जाये इहीं हमरे सबके छाती पर मूँग दले । ”

जनमेजय सिंह - “ मतलब ई राजनीति करे ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ ओहमें कौनौं संदेह अब रहि गवा बा का ? ”

सत्य प्रकाश- “ अगर अनुराग अध्यक्ष से इस्तीफा दे दिये तब अध्यक्ष कौन होगा ? ”

राजेश्वर तिरपाठी - “ दै देहेन कि । ”

जनमेजय सिंह - “ अबहिं देहेन कहाँ भैया । ई अध्यक्ष के कुर्सी आसानी से तअ मिलत नाहीं । मन बदलि सकत हअ ।”

राजेश्वर तिरपाठी- “ अध्यक्ष पद से इस्तीफ़ा एक घंटा में पहुँच जाये । ई बड़ा खेल खेलत बा । कौनों योजना आगे के बा । ई बगैर मतलब कौनों काम न करे । हर काम में दुई योजन दूर तक के योजना रहत हअ एकरे लगे ।”

सत्य प्रकाश- “ अध्यक्ष के बने जब इस्तीफ़ा दै दे ।”

राजेश्वर तिरपाठी- “ राम आशीष मौर्या ।”

सत्य प्रकाश पांडे - “ अगर राम आशीष दै देहेन तब ? ”

राजेश्वर तिरपाठी सोचते हुये बोले .. “ एक काम होई सकत हअ । अगर दुइनों इस्तीफ़ा दै देहेन देकर संभावना बा तब सत्य प्रकाश अध्यक्ष पद क़बिज़ियाय लेई । ए नंबर दुई पर हयेन और अध्यक्ष पराई गवा ।”

जनमेजय- “ फिर से चुनाव होई सकत हअ ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ ऐसी स्थिति कभौं उठी तअ बा नाहीं पर इहौं बात उठायी जात सकत हअ । पहिले ओकर परस्तों के मीटिंग होई जाई दअ । एक बात के ध्यान रखअ कौनों हालत में खून - ख़राबा न होई चाही । मुख्यमंत्री के साफ निर्देश बा और सुकृति मानस शूटिंग चैम्पियन हयेन और कमांडो ट्रेनिंग केहे हयेन ओ अनुराग बरे जान दै देझहिं लहाश बिछाई दे ऊ । एकर ध्यान रखअ तू सब केऊ । परह्लादौ के बताई देहअ । ओ लगातार दुई चुनाव लड़ा हयेन और भारी बहुमत से जीता हयेन । ओनकर ठकुरई के दिमाग़ चढ़ा होये ओका शांत रखै ऊ । ई अनुरगवा मायावी मारीच हअ ई रामौ के जटि ले । चलअ अब चलत हई , हमका सूचना देहअ । गृहमन्त्री जी जात समय कहेन हमसे आई के मिला । जनमेजय चलअ अगर तोहार मन होई ओ जानत तअ तोहू के हये अच्छे से ।”

जनमेजय - “ चलअ देखी ओ का चाहत हअ ।”

जनमेजय और राजेश्वर तिरपाठी पहुँचे गृहमन्त्री के यहाँ । दोनों को देखकर गृहमन्त्री ने सामान्य सी बात की । दोपहर बाद राजेश्वर तिरपाठी को फिर बुलाया और कहा अनुराग को लेकर आओ । राजेश्वर तिरपाठी मेरे पास आये और उनका संदेश दिया । मैंने कहा मेरी क्लॉस है मैं नहीं जा पाऊँगा मिलने । राजेश्वर तिरपाठी आवाक रह गये । गृह मन्त्री बुला रहे और यह पागल इंकार कर रहा ।

राजेश्वर तिरपाठी- “ भैया अनुराग ई गृह मन्त्री हैं । यह सरकार के नंबर दो , नंबर तीन हैं । तुम इनसे मिलने से इंकार करत हअ ।”

मैं - “ सर , मैं अपनी शर्त पर काम करूँगा / यह क्या देंगे मुझको ? ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ का चाही तोहका ? बोलअ सब मिले / हमार वायदा बा / मन्त्री जी बोलावत हयेन ज़रूर कुछ बात होये । ”

मैं-“ आज समय नहीं है मेरे पास / मैं कल मिल सकता हूँ / पर मैं नहीं जाऊँगा मिलने / वह आयें मिलने । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ यह बहुत कड़ी शर्त है इतने बड़े नेता के लिये । ”

मैं - “ अभी शर्त रखी कहाँ है / यह तो मुलाक़ात की बात है / मैं मिलने के बाद शर्त बताऊँगा । ”

राजेश्वर तिरपाठी-“ भैया हम हरकारा हई ज़रूर पर हमार ई कहै के ताक़त गृहमन्त्री से नाहीं बा / तू ऐसन बतावअ कि हम कहि सकी ओनसे । ”

मैं - “ सर , कह दीजिये वह नहीं मिलना चाहता । ”

राजेश्वर तिरपाठी- “ जैसन तू कहअ पर हम कहब एक बार सोच लअ / एक बात बतउबअ अनुराग ? ”

मैं - “ज़रूर सर । ”

राजेश्वर तिरपाठी - “ ई अफ़वाह में केतनी सच्चाई बा कि तोहार विपक्षी नेता राम सिंह यादव से डील होई गई बा और सरकार के समय से पहले गिरावय बरे राम सिंह और कलावती में बात होति बा और तू विधान सभा या विधान परिषद में जाबअ जल्दिन सरकार के नीतियन पर हल्ला बोलै बरे । अब पढ़ाई-लिखाई - भाषण में तअ तू बेजोड़ हअ एहमें तअ कौनौं दुई राय बा नाहीं / तोहार सदन में बड़ी उपयोगिता तअ होबै करे । ”

मैं - “ सर , मेरी आज तक की सिफ़्र एक उपलब्धि है कि लोगों ने अध्ययन की शक्ति को पहचाना है और इस आधार पर चुनाव हुआ और सारे समीकरण फ़ेल हो गये । मेरी उम्र अभी तईस साल है । अगर यह सरकार कार्यकाल पूरा करेगी तब मैं चुनाव लड़ने की उम्र हासिल कर पाऊँगा पर अगर पहले गिर गई तू मैं चुनाव लड़ भी नहीं सकता । कोई अगर चाहे तब भी सांविधानिक रूप से मैं उस योग्य हुआ नहीं हुआ हूँ कि किसी भी सदन में प्रवेश कर सकूँ । सर , आप बड़े नेता हैं । आपको थोड़ा पढ़ना चाहिये , आप कल मुख्यमन्त्री होंगे तब कैसे काम करेंगे । सर , मैं जनवरी में चला जाऊँगा अपनी नौकरी पर मुझसे क्या मतलब इस राजनीति से । ”

राजेश्वर तिरपाठी-“ काहे तब कुल राजनीति नसावत हअ अगर तोहका नौकरी करै के बा । ”

मैं “ सर मैं नष्ट नहीं कर रहा राजनीति बल्कि इसको शुद्ध कर रहा । ”

राजेश्वर तिरपाठी-“ चलअ अब बतावअ हम का करी ? अब हम तोहार संदेश दै देब बाकी जौन राम की इच्छा ।”

उनके जाते ही सुकृति ने पूछा , “ सर इतने बड़े नेता हैं वह आप मिल लिये होते , मिलने में क्या हर्ज था ?”

मैं “ वह एक टरैप था । यह ख़बर फैला दी जाती मैं मिलने गया था और सरकार से डील कर रहा । पत्रकार फ़ोटो भी छापते और मसालेदार ख़बर भी कि अनुराग बिकने की राह पर । यह राजनीति है सुकृति यह चलती है पर्सेप्शन पर । यह नारों और प्रतीकों से चलती है न कि वास्तविकताओं से । गाँधी जी का अधनंगा रहना , तृतीय श्रेणी में सफ़र करना क्या था? क्या जिस नेता के नाम पर बड़े-बड़े आश्रम स्थापित हो रहे थे , कांग्रेस में लाखों रूपया चंदा आ रहा था , बड़े-बड़े उद्योगपति उनके आँखों के इशारे का इंतज़ार करते थे वह कपड़ा पूरा नहीं पहन सकता था ? यह एक प्रतीक था जिसने जनता को छुआ , उनको जनता की तरह दिखाया । अब मेरा हर कदम मेरे भविष्य को तय करेगा । मैं एक बहुत बड़ी लड़ाई लड़ रहा जिसमें मेरे पराजय की संभावना ही संभावना है पर मैं पराजय को जीत की गाथाओं से बड़ा बनाना चाहता हूँ । मैं हर कदम यह जानकर उठाता हूँ कि इसमें पराजय होने की संभावना बहुत है पर चलो एक कोशिश करते हैं और मैं देख रहा कि कोशिश में बहुत ताक़त होती है । मेरा प्रयास की सार्थकता में विश्वास बढ़ने लगा । अभी तक मैं रोशनी के हाथों से लंबाई नापने की कोशिश कर रहा कभी यह बढ़ रही थी कभी घट रही थी रोशनी के मुहाने पर आश्रित होकर पर अब मैं अँधेरे में संधान करना सीख रहा बेपरवाह रोशनी की इनायत के । मैं कोई मलगजी मुहब्बत नहीं कर रहा , मैं गुनगुनाती हँसी देखकर आनंदित नहीं हो रहा मैं बैसाखियों से वह करना चाह रहा जो घोड़ों पर सवार न कर सके । ऐसा न था कि घोड़े कर नहीं सकते थे बल्कि वह कर सकते थे और बखूबी से कर सकते थे पर घोड़े की रास पकड़ने वालों को अपने घोड़ों पर कोई भरोसा न था पर मुझे अपनी बैसाखियों पर असीम विश्वास है यह बैसाखियाँ असफल होकर भी सफलता से बड़ी गाथा लिखेंगी और कई प्रशस्ति गीत बनेंगे यह कहते हुये वह ज़िद्दी बैसाखी थी रास्ते पर निशान बना गई उन निशानों को देखकर घोड़े वहाँ तक पहुँच जाते हैं जहाँ तक निशान बने हैं ।

दो दिन तक राजनैतिक सरगर्मी बनी रही हर कोई जानना चाहता था कि आगे क्या होगा ? यह इस्तीफ़ा दिया क्यों गया ? बृहस्पतिवार को बहुत बड़ी भीड़ थी यूनियन हॉल के सामने । प्रक्लाद सिंह ने संचालन का कार्य संभाला और उन्होंने मुझ पर सीधा आकरमण कर दिया....

“ कुछ लोग अहंकार के वशीभूत हो चुके हैं मात्र महीने भर के राजनैतिक जीवन में । वह सरे आम कह रहे हैं कि या तो मेरे पीछे चलो या मुझसे संघर्ष करो .. मैं उनको संघर्ष के लिये आमंत्रित करता हूँ । मुझे उनकी चुनौती स्वीकार है । मैं ईश्वर के सिवाय किसी के पीछे नहीं चलूँगा । मैं छात्र संघ का महामन्त्री हूँ और रहूँगा । मैं किसी की दया पर यहाँ नहीं आया हूँ मैं छात्रों के एक विशाल बहुमत से निर्वाचित हुआ हूँ । मैंने दो चुनाव लड़े हैं और दोनों मैं विशाल बहुमत से विजयी घोषित किया गया हूँ । मेरे त्यागपत्र देने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । मैं इस छात्र संघ की महान परम्परा को जीवित रखना चाहता हूँ और अपने रक्त की अंतिम छूँद तक जीवित रखूँगा । दक्षता भाषण में कहा था एक महान नेता और सुधारक का दावा करने वाले ने कि मैं रक्तपात करना चाहता हूँ । मैं भी रक्तपात करना चाहता हूँ इस अपनी मातृ संस्था इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र संघ के लिये । पर मैं अपना रक्त पहले बहाऊँगा किसी और का बाद मैं । मैं उनकी सदाशयता का सम्मान करता हूँ, परिसर में चलाये गये किसी सुधार आंदोलन का समर्थन करता हूँ पर छात्र संघ के विध्वंस के लिये उनको मेरी लाश पर से होकर गुजरना होगा । ... ”

उनके समर्थकों ने उनके पक्ष में नारा लगाना आरंभ कर दिया और उसी नारे के बीच उन्होंने मुझकों बोलने के लिये आमंत्रित किया ।

मैं मंच पर आ गया । मुझे अपने सामने एक विशाल जन समुद्र का आभास होने लगा । मेरा समर्थन व्यापक है यह मुझे तालियों ने मेरी बात आरम्भ करने के पहले ही बता दिया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 312

तालियों के शोर के थमने का मैं इंतज़ार कर रहा था पर वह बहुत तीव्र थीं और रुकने का नाम नहीं ले रही थीं । मैं समझ गया कि सम्मोहन अभी क्रायम है इसको आज एक नयी ऊर्जा देने की आवश्यकता है । मैंने हाथ उठाकर तालियों के रुकने का अनुरोध किया और अपनी बात कहने लगा ।

“ मैं कुछ भी कहने से पहले बड़े भाई प्रह्लाद सिंह को मेरे प्रस्ताव का विरोध करने के लिये धन्यवाद देता हूँ । समर्थन की आवाज़ कितनी भी शक्तिशाली और गगनचुंबी लहरों की तरह उफान लेती क्यों न हो पर कश्तियों के डोलने की आवाज सागर को सुननी चाहिये । यही लोकतन्त्र की खूबी है जिसको हमने अपनाया है । यह लोकतन्त्र विरोध का सम्मान करके जन्मा और पनपा है । मैं अगर अपने अभियान में सफल रहा तब उस अभियान की सफलता

की गाथाओं में सबसे बड़ा नाम बड़े भाई परह्लाद सिंह का होगा जिन्होंने एक विरोध का आह्वान किया है । मैं उनके आह्वान के समर्थन में बजने वाली तालियों का स्वागत भी करता हूँ और आपका एक प्रतिपक्षी के रूप में सम्मान करते हुये रण का आगाज़ करता हूँ । यह हमारी आज़माइश का दौर है । यक़ीन मानिये मेरा मैं हार कर भी परसन्न रहूँगा बस मुझे लड़ने दीजिये ..
मेरी विजय से ज्यादा रुचि संघर्ष में है ... मुझे संघर्ष करने दो ..

मुझे कर्ण की तरह अंग का राज्य मत दो
मुझे अपनी ज़मीं जीतने दो
मुझ पर तरस खाकर अपना दिल मत दो
मेरे प्यार को क्रिस्मत में लिखा पलटने दो
मुझे ऐसे मत मारो
मेरी बाँहें खोल दो
मुझे लड़कर मरने दो ।

अमानिशा उगलता गगन अंधकार में मेरी बाँहें खोल दो मुझे लड़कर मरने दो
.. मुझे न तो पराजय से डर है न मौत से मुझे डर है उस मृत्यु से जो मेरी माँ
को मेरी मौत के बाद मेरा अवसान नहीं मेरी कायरता पीड़ा दे ।

किसी भी मुद्दे पर सारे लोग अगर एक हो गये तब लोकतन्त्र कहाँ रहा । यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार क्यों है.. अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता एक व्यक्ति का अधिकार ही नहीं है यह राष्ट्र को एक करने की प्रक्रिया है , यह राष्ट्रीय एकता और अखंडता को प्रति पल मजबूत करती है , यह लोकतन्त्र के जड़ों को पानी देती है । भाई परह्लाद सिंह को राष्ट्र को मजबूत करने की प्रक्रिया में भागीदार होने के लिये बहुत - बहुत साधुवाद देता हूँ ।

एक बात यह सत्य है कि मैं राजनीति में नया हूँ और मुझे राजनीति नहीं आती । पर कौन सी राजनीति की बात यह कर रहे हैं ? यह खून ख़राबे की राजनीति, यह धन - बल - धड़यन्तर की राजनीति जो परम्परागत रूप से इस परिसर में चल रही है । क्या यह एक राजनीति है ? यह एक अराजकता है । भाई परह्लाद सिंह ने कहा मैं भारी बहुमत से चुनाव जीत कर आया हूँ । आप अपने गिरहबान में झाँक कर देखें ... आप एक अराजकता के पागल हाथी पर सवार हैं जो शायद आपको आनंदित कर रहा हो पर इस परिसर को ध्वस्त कर रहा है । पिछले साल आपके ही लोगों ने उप मन्त्री का चुनाव

निर्विरोध ऐसा करा दिया था अपने बल का प्रयोग करके । पिछले साल के महामन्त्री पद पर रहे दूसरे नंबर के प्रत्याशी का चुनाव के एक सप्ताह पहले अपहरण हो गया उनका पता चला चुनाव के एक दिन पहले और उन्होंने नामांकन वापस ले लिया । आपने अपने उप मन्त्री कार्यकाल में सिवाय बीस गाड़ियों के क्राफ़िले के साथ घूमने और अगले साल के महामन्त्री के चुनाव की तैयारी करने के अलावा और किया ही क्या है । अब आप अध्यक्ष पद के चुनाव की तैयारी करेंगे । इसमें छात्रों का कौन सा हित है ? आपने या आप के साथ घूमने वालों को पता है कि जिस पाठ्यक्रम के आप विद्यार्थी हैं उसकी कक्षायें किस विभाग के किस कक्ष में चलती हैं और आपका अध्यापक कौन है । जब मैं यूंग किरशियन कॉलेज से बीएससी कर रहा था उस समय एक छात्र संघ अध्यक्ष परीक्षा टलवाने के लिये अनशन पर बैठ गये । किसी ने आज तक नहीं बताया परीक्षा टलवाना किस तरह छात्र हित में है । क्या आज तक कोई छात्र संघ का पदाधिकारी इस लिये धरने पर बैठा कि कक्षायें नियमित नहीं चल रही हैं , अध्यापकों का परिसर में अकाल ऐसा पड़ता जा रहा , यूजीसी के नियम कुछ इस तरह के हैं कि अध्यापकों की नियुक्ति नहीं हो पा रही है पर किसी को कोई फ़िकर नहीं है । यह दो साल की डिग्री तीन- चार साल में क्यों मिल रही है इस पर किसी ने क्या कदम उठाये । जब प्रतियोगिता परीक्षा देने की उम्र 28 साल तक की है और अक्सर सीमित हैं उस समय यह दो वर्ष का विलोप भविष्य पर कुठाराघात कर रहा है पर पिछले दस सालों में किसी छात्र संघ के पदाधिकारी ने कोई कदम नहीं उठाये । आप यथास्थितिवाद के पोषक हो और मैं उसका विध्वंसक । एक संघर्ष आरंभ हो गया है रचनात्मक क्रान्ति और यथास्थितिवाद के मध्य । मैं आपकी स्पष्टता , साफ़गोई और ईमानदारी की तारीफ़ करता हूँ कि आपने स्पष्ट रूप से उस सड़ी गली व्यवस्था का प्रतिनिधित्व स्वीकार किया जिसका कोई पैरोकार मुझे नहीं दिख रहा था । अब आयेगा मज़ा बाबू प्रह्लाद सिंह इश्क के इस्तिहान अभी और भी हैं बस मुझे चाहिये वह लोग जो यह गान गा सके ..

कबिरा खड़ा बाज़ार में लिये लुकाठी हाथ जो घर ज़ारा आपनो वह चले हमारे सां ...

पर मैं नयी शताब्दी का कबीर चाहता हूँ जो अपना घर जलाने के पहले पूरे महल -प्रासाद -और अट्टालिकाओं को जला कर राख कर दें और उसी राख से नव निर्माण करें । पहले मुझे विध्वंस करने दो .. उस मानसिकता का जिसके तुम पैग़म्बर बने हो । बड़ा दंभ है तुमको अपने चुनाव परिणाम पर । एक बार विश्लेषित करना वह परिणाम कैसे आया है । यह मेरा दंभ ऐसा लगेगा और शायद है भी पर आपके अहंकार का मर्दन करना आवश्यक है । इस चुनाव में बड़े- बड़े महारथी - मठाधीश तबाह हो गये । आप बच गये सिर्फ़

इसलिये कि कोई उम्मीदवार रचनात्मक क्रान्ति का नारा लेकर आपके समुख नहीं आया था । करा लें चुनाव एक बार फिर से .. लड़ो किसी रचनात्मक क्रान्ति के योद्धा से .. जो हाल सत्य प्रकाश पांडे का अध्यक्ष पद पर हुआ और जो गति राम आशीष मौर्या ने अशोक अवस्थी का उपाध्यक्ष पद पर किया उससे भी बुरा हाल आपका होगा । चुन लो नियम - कानून - रणज्ञेत्र.. बस मेरी बाँहें खोल दो ... मुझे लड़ने दो .. परिणाम का अंदाज़ा हो जायेगा मुझे विध्वंस से कम कुछ भी स्वीकार्य नहीं । सात लोगों ने त्यागपत्र दे दिया है । अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और पाँच डेलीगेसी के सदस्यों ने । अभी - अभी प्रकाशन मन्त्री ने मुझसे कहा मैं भी त्यागपत्र दूँगा । अब रह गये आप और उप मन्त्री । उप मन्त्री के पास कोई कार्य नहीं होता । वह मन्त्री के न रहने पर कार्य करता है । जिस तरह से फ़रांसीसी क्रान्ति ने जर्जर व्यवस्था के प्रतीक बास्तील के किले को तोड़ कर क्रान्ति का आगाज़ किया था उसी तरह रचनात्मक क्रान्ति का शंखनाद हो चुका है

आप सब लोग इस्तीफ़ा दो , ख़त्म करो इस बोझ बनी हुई व्यवस्था को हम वैकल्पिक व्यवस्था लायेंगे और इन मठाधीशों और अराजकता के पोषकों का समापन कर देंगे ।

एक चर्चा ज़ोरों पर चलायी जा रही है कि अगर सब लोग इस्तीफ़ा दे देंगे तब पुनः चुनाव होगा । मुझे नहीं पता कि यह संभव है या नहीं पर अगर चुनाव हुआ तब हम पुनः लड़ेंगे और जीत कर पुनः त्यागपत्र देंगे । आप फिर चुनाव कराओ हम फिर लड़ेंगे और पुनः इस्तीफ़ा देंगे । तुम थक जाओगे चुनाव कराते- कराते हम नहीं थकेंगे लड़ते - लड़ते और त्यागपत्र देते - देते । एक ऐलान मैं और करता हूँ अगर मैं इस संस्था को समाप्त करके इस वर्ष कोई वैकल्पिक व्यवस्था न ला सका तब अगले वर्ष हम पुनः चुनाव लड़ेंगे और चुनाव जीतकर पुनः त्याग पत्र देंगे । मैं अगले साल चुनाव लड़ने वाले लोगों के नाम का अभी ऐलान कर देता हूँ अध्यक्ष- अनुराग शर्मा, उपाध्यक्ष- राम आशीष मौर्या, महामंत्री- सरला जोशी, उप मन्त्री- यश पटेल, प्रकाशन मन्त्री- रितु कवकड़ । यह पाँच उम्मीदवार अगले साल के चुनाव- रण योद्धा हैं । हम न चुनाव प्रचार करेंगे, न पोस्टर छापेंगे, न बैनर लगायेंगे । हम सिफ़्र तुम्हारे घर की उर्द्दी को ज़ंगेल में डालेंगे । तुम लाख - दो लाख -पाँच लाख ख़र्चा करो, हम न खर्च करेंगे दमड़ी । तुमको करेंगे बर्बाद और तुमको बर्बाद करके हम देंगे त्यागपत्र । साँप - सीढ़ी का खेल हर साल चलेगा जब तक व्यवस्था नहीं बदलेगी तुमको एक सीढ़ी न देंगे और रेंग कर 99 पर पहुँचोगे वापस शून्य कर देंगे चलो लड़ो .. कितना लड़ोगे... तुम थक जाओगे लड़ते- लड़ते और हम ... रात के अंधकार में संधान करने वाले लोग हैं, हम तो आफ़ताब से भी कहते हैं कोई और होगा विजय के लिये तेरा मुहताज हम तो दूर जलती मशालों को भी बुझा देते हैं । मैं प्रशासन से

अनुरोध करता हूँ वह चुनाव सुधारों पर बहस आरंभ करें और इस व्यवस्था में सुधार करें नहीं तो हम इसी तरह व्यवस्था को नष्ट करेंगे । हम प्रति वर्ष चुनाव लड़ेंगे और छात्र संघ के समाप्त करेंगे । हम करेंगे सिफ्ट पढ़ाई और मसूरी को पाट

देंगे इलाहाबाद के छात्रों से वह भी हिंदी माध्यम के छात्रों से

हिंदी माध्यम शब्द अंदर प्रवेश कर गया .. नारे .. कर तल ध्वनि से जुगलबंदी करने लगे ..

हम आपके साथ हैं

हमें यह अराजकता नहीं चाहिये ।

...आप को मैं एक महीने का समय देता हूँ तुम अपनी उपलब्धियों के साथ आना और हम अपनी एक महीने की उपलब्धियों पर बहस करेंगे और यहीं इसी मंच पर बहस करेंगे । अगर छात्र हित में कुछ न कर सके तब त्यागपत्र लेकर आना ।

आसान नहीं होगा उससे लड़ना जो ख्वाबों को ख़त लिखता हो , धूप को अपना परचम बनाता हो और कहता हो यह राख उस चिराज़ की है जिसने अपने को जलाकर रात को रौशन किया है

प्रतिपल परिवर्तित व्यूह कौशल विशेष
रिपु हृदय दुराकरांत दम्य अशरांत
अहंकार विनाश जो उगलता गगन धन अंधकार
पीड़ा ग्रस्त व्योम करता करान्ति आह्वान
करता गर्जन शर शतशेलसंवरणशील
करता आह्वान महाशक्ति का पापनाशन लक्ष्य हेतु

आज्ञाज़ एक रचनात्मक करान्ति का ।”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 313

“आगाज़ रचनात्मक करान्ति का “ यह उद्घोष हर ओर होने लगा । रचनात्मक करान्ति का नारा एक लयबद्ध तरीके से वातावरण में तीव्रता को प्राप्त करने लगा । मैं लोगों के शोर के थमने का इंतज़ार करने लगा । उस थमते शोर के मध्य मैंने अपनी बात कहनी आरंभ कर दी ...

“ यह रचनात्मक करान्ति है क्या? यह सवाल हर एक के मस्तिष्क में है । वास्तविकता यह है कि परिवर्तन की अनिवार्यता हो चुकी है । यह परिवर्तन आवश्यक हो चुका है क्योंकि समाज की भौतिक स्थिति रसातल में जा रही थी और इस रसातल में जाने का कारण हमारा बौद्धिक हरास है । परिवर्तन एक स्वतः प्रक्रिया है पर गतिरोध इसको रोकते हैं और जब यह गतिरोध समाज के सहज विकास की प्रक्रिया को बाधित करने लगता है तब समाज उद्वेलित होता है । रचनात्मक करान्ति उसी उद्वेलन का प्रतिनिधित्व कर रही है । एक यथास्थितिवाद होता है वह सत्ता पक्ष की सबसे बड़ी निधि होती है और उसमें कोई भी परिवर्तन उनके हित को असुरक्षित करने लगता है । रचनात्मक करान्ति का लक्ष्य यथास्थितिवाद का नाश है । कई बार सुविधाभोगी वर्ग समाज के असंतोष को देखकर और मुखर हो रहे विरोध को शांत करने के लिये कुछ सतही परिवर्तन करता है ताकि एक परिवर्तन का भ्रम खड़ा रहे और सुविधा भोगी वर्ग का अस्तित्व बरकरार रहे । यह रचनात्मक करान्ति उस भ्रम के कुहासे का सर्वनाश करेगी । यह रचनात्मक करान्ति किसका नेतृत्व कर रही ? उस असंतुष्ट वर्ग का जो क्षुब्ध है , परिवर्तन चाहता है पर विरोधियों की ताकत से भयभीत हैं । यह रचनात्मक करान्ति उस भय का नाश कर रही है । यह संघर्ष है एक करान्ति है एक सबकुछ बदलने की चाहत है ।

तुम अपने माँ के ख्वाबों की ताबीर चाहते हो ,
मुझे रचनात्मक करान्ति करने दो
यह जंग लाज़मी है मुझे इन कायरों से जंग करने दो
यह जंग उस ज़मीन की है जो कभी खो बैठे हैं हम
हर बार हार कर मात्र अतीत के गौरव में साँसें ले रहे हैं हम
यह कब तक चलेगा अतीत की गौरव गाथा गाते रहेंगे हम
एक नयी दुनिया अब बसायेंगे हम
यह जंग है अपनी ही सदाशयता पर जब हर साल ठगे गये हैं हम
जिसका न कोई जात है , न मज़हब है , न कौम है
जिसके लबों पर सिफ़्र गुनाह है

उसके शाखे- सितम को न परपने देगें इस ज़मीं पर हम
तारीख गवाह है धृतराष्ट्री मानसिकता के हशरों का
यह जंग न सिफ़ ज़मीं की है
न सिफ़ अमन की है
न सिफ़ उस खून की है जो हमने बहाये थे ज़मीं के वास्ते
यह जंग उसूलों की है
जो अपने लहू के रेशों पर जमे हैं
उस सुबहे - अमन परचम फहराते हुये
यह रचनात्मक करान्ति एक जंग है
हम हार कर भी बतायेंगे जमाने को
हम हार गये तो क्या हुआ
लड़े तो थे अपनी अस्मिता के लिये ।।”

तालियाँ ही तालियाँ हर ओर । एक न रुकने वाली करतल ध्वनि । मैं खो गया
था तालियों में । मैंने मुड़कर देखा उस महाबली को जिसके मोटरसाइकिल के
क्राफ़िले की आवाज़ पूरे यूनिवर्सिटी रोड पर आतंक फैला देती थी और
जिसके क्राफ़िले की मोटरसाइकिल पर छुपे तौर पर हथियार हुआ करते थे ।
वह यथास्थितिवादी हताश बैठा था , सुकृति एक बाज की तरह हर तरफ़ देख
रहा था और भीड़ एक आनंदायक उन्माद में थी । मैंने उन्मादी भीड़ की
तरफ़ देखा और बोलना आरंभ किया ..

“यह सब कौरव हैं जो लड़ रहे बचाने को राज्य अपना
हम पांडव नहीं हैं जो किसी जुँए में हारकर माँग रहे हक्क अपना
हम दरौपदी हैं लोहितलोचित अपने स्वाभिमान के लिये
हम कृष्ण हैं बेताब रचने को नयी व्यवस्था
पर वह एक मौत है बेपरवाह सभी से
इंतजार कर रही विजेताओं का
यथास्थितिवाद के लिये , हक्क के लिये , स्वाभिमान के लिये , व्यवस्था
परिवर्तन के लिये
हो सकता है रास्ता मृत्यु से ही जाता हो

युद्ध के परिणाम का ,
बदलाव का ,
परिवर्तन का ,
हक्क का ,
स्वाभिमान का ,
यथास्थितिवाद का
हमें स्वीकार्य है मृत्यु
यथास्थितिवाद के नाश के लिये
अपने जमीर के लिये
अपने स्वाभिमान के लिये ।”

मौत अब तुझे और इंतज़ार नहीं करना होगा... इस यथास्थितिवाद के न दिखने वाले रक्त से यह परिस्र परिपूर्ण होगा। आह्वान करता हूँ एक रचनात्मक क्रान्ति का , एक रक्तहीन क्रान्ति का , एक धृतराष्ट्री मानसिकता के समापन का , दुर्योधन - रावण के अहंकार और लिप्सा के समापन का ... आगाज़ रचनात्मक क्रान्ति का ...

ऐ मेरे हौसलों तुम्हें अब टूटने का हक्क नहीं
मेरी जंग है आज इस ज़माने से

चराग हम जलायेंगे हर मज़ारों पर
ऐ आफ़ताब तेरी रौशनी के हम मुहताज नहीं

मैं हर उस जगह रौशनी करूँगा
जहाँ भी कायनात अँधेरे की होगी ।

मैं एक ऐलान और करता हूँ .. मैं इस साल की सिविल सेवा परीक्षा में पुनः शामिल होने जा रहा । हिंदी माध्यम की अंग्रेज़ी माध्यम से सीधी लड़ाई होगी । रचनात्मक क्रान्ति के नायक अब अगले 45 दिन सिर्फ़ अध्ययन करेंगे । एक नारा इस विश्वविद्यालय में सदियों से गूँजता रहा है . पढ़ाई- लड़ाई साथ - साथ ... वह अभी तक एक नारा था पर अब वह हकीकत की ज़र्मीं पर

दिखेगा । हमारा लक्ष्य है टॉप 100 में आना वह भी अधिक से अधिक संख्या में । मैं छात्रों के उत्साहवर्धन के लिये परीक्षा प्रक्रिया में प्रवेश कर रहा । आज के बाद से कोई भी मुख्य परीक्षा देने वाला छात्र अपने कमरे से बाहर नहीं निकलेगा । हम पन्द्रह घंटे प्रतिदिन पढ़ेंगे । हमारी टक्कर महाबलियों से है । हम आईआईटी वालों और अंग्रेजी माध्यम के छात्रों को बतायेंगे हमारी तथाकथित अपांगता की शक्ति का । मैं रचनात्मक क्रान्ति के विरोधियों से अनुरोध करूँगा कि वह अगले 45 दिन कार्य करें और बतायें इस परिसर को क्या उपलब्धि है उनकी । मैं एक बार पुनः अपील करता हूँ कि आप सब अपने - अपने पदों से इस्तीफा दें और रचनात्मक क्रान्ति को मज़बूत करें । “

मैंने दोनों हाथ हवा में उठाये और धन्यवाद कहता हुआ मंच से उतरने लगा ... भीड़ के नारे किसी के नियन्त्रण में न थे । मैं वहाँ से पैदल यूनिवर्सिटी रोड की तरफ चलने लगा । मेरे पीछे पूरी भीड़ थी और एक ही नारा था ..

रचनात्मक क्रान्ति

रचनात्मक क्रान्ति ..

यह समझ तो लोगों को आ गया कि यह रचनात्मक क्रान्ति क्या है पर अब यह न समझ आ रहा था जब नौकरी करनी ही नहीं है तब परीक्षा क्यों दी जा रही ..

अगले दिन समाचार पत्र ने छाप दिया एक पूरा सम्पादकीय

“ रचनात्मक क्रान्ति क्या है ? ”

“ रचनात्मक क्रान्ति का नायक पुनः सिविल सर्विसेज़ की परीक्षा दे रहा ”

“ अनुराग शर्मा हिंदी माध्यम का नेतृत्व करने हेतु परीक्षा के रण में ”

“ एक रवितहीन क्रान्ति रचनात्मक क्रान्ति ”

कचहरी में फरगेंया ने सजीवन से कहा ...

“

ऐ सजीवन तनिक गरम मीठ चाहि मँगावअ इ भयनवा तअ रोज़े नाटक कै के पगलवाय देहे बा । एकर मामी हमार भौजी सगै बहिन हर्झन पर हमरे भौजाईउ के कौनौं हवा कभौं नाहीं लाग कि ई ऐतना बड़ा मदारी बा ... ”

राम सजीवन - “ एकै राग बा एकर मामी हमार भौजी .. मिलवायअ नाहीं कभौं .. ”

फरगेंया- “ इहीं बोलवाउब चिंता न करअ तनिक दुई मीठ चाहि मँगावअ । ”

राम सजीवन - “ चलअ कुछ खबर दअ .. ऐ छोटे ... “

उधर हॉलेंड हॉल के कैम्बिरज कोर्ट में सत्य प्रकाश पांडे ने कह दिया जैसे ही इस्तीफा मंजूर होगा मैं अध्यक्ष का कमरा क़ब्ज़िया लूँगा । यह विश्वविद्यालय एक पागल के पगलैटी से नहीं चलेगा । हमारा भी दायित्व है छात्रों के प्रति । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 314

समाचार पत्रों में मेरे पुनः परीक्षा देने पर जो छपा था उसने मेरे घर में भी तूफान खड़ा कर दिया । माँ को नाराज़गी यह थी कि मैंने अगले साल परीक्षा देने का राज पूरी तरह उससे साझा न किया था । वह बोली , “ हमार ई दिन आई गअ बा कि हमका अपने घरे के समाचार अख्बार से मिले । ई मुन्नवा पूर चुप्पा बा । पता नाहीं का सोचत रहत हअ । जबसे एकर नाम के छः अक्षर पेपर में छपि गवा ई पगलाई गअ बा । भगवान दलिल्दरन के इहीं बरे पेट भर खाई के नाहीं देत हअ । जहाँ पेट भरा मोटाई सुझाई लाग । इहै हाल इ मुन्नवा के बा । एक बार आपन कुल मार्कशीट पुनि से देख लई ऊ । आपन रुडकी के प्रवेश परीक्षा वाली मार्कशीट देख लई । कुल 94 नंबर पाये रहा । हर विषय में सौ में 15/20 नंबर पाये रहा । अब बड़का वेद व्यास बना धूमत बा । हमार मोह न खोलवावैं । हम समाचार पत्र में लिखै लागत तब एनकर कुल शेखी ख़तम होई जाये । हमका बेवकूफ समझै के भूल न करै ई । ”

पिताजी - “ इतना गुस्सा क्यों हो रही हो ? ”

माँ - “ ई एतनी बड़ी खबर ढँके रहा । अगर परीक्षा देत बा तब ई मेंस के फार्म भरे होये । चिट्ठी पतरी केहे होये पर कुछ बतउबै नाहीं केहेस । ”

पिताजी - “ मेंस का फार्म भरा है यह तो बताया था । ”

माँ - “ मेंस के फार्म भरि के तअ भूलि गवा । हमहूँ के पता बा कि अगले साल परीक्षा देई बरे चिट्ठी- पतरी केहे होत होअ । हम ज़मींदार के घरे के बिटिया हई । हमका क़ायदा क़ानून सब पता बा । पर ई चुप्पा कुछ बतउबै नाहीं केहेस । कहाँ बा नासपीटा , हमार दिमाग बहुतै ख़राब बा आज । हमसे केउ चालबाज़ी करत हअ तब हमका ठीक नाहीं लागत । इहाँ जान अटकी बा कि एकर नौकरी गई पर ई तअ कुछ औरै खेल केहे बा । ”

माँ ने मुझको सामने पाकर कुछ ख़ास न कहा पर नाराज़गी उसने ज़रूर दिखायी । मेरा रुतबा बढ़ चुका है यह एहसास मुझे माँ कीं प्रतिक्रिया से भी

हुआ । मेरे पीछे तो उसने कोई कसर न छोड़ी पर मेरे सामने उसने कम ही कहा । मैंने उसकी नाराज़गी पर कुछ न कहा क्योंकि मैं जानता था कि वह सीमा का अतिक्रमण करने में देरी न करेगी अगर मैं उलझ गया । मैंने बात बदलते हुये कहा तेरा मेरा चेहरा मिलता है पर आँख तेरी न मिली । वह मिली होती तो अच्छा होता । उसने कहा, “ ई छल - फ़रेब तअ हम दिहा नाहीं ऊ कहाँ से लै के आई गअ तू । ई आँख बड़ी पाई गअ होतअ तब आँखिन में और झूठ समाई लेतअ तू । ” पर वह एक - दो दिन में सामान्य हो गयी । वह मेरे बगैर रह ही नहीं सकती थी । बहुधा माँ सब बच्चों को प्यार करती है पर वह अपने किसी एक बच्चे से ज्यादा नज़दीक होती है । वह बच्चा या तो क्राबिल होता है या नाकाबिल । औसत बच्चे अपनी माँ के नज़दीक अपने सहोदरों की तुलना में कम होते हैं । शायद मेरी क्राबिलियत या मुझे खोकर फिर से पा जाना एक कारण रहा होगा मेरी और उसकी नज़दीकी का । वह रात में आयी और उसने पूरा क्रिस्सा मुझसे सुना कि मैं परीक्षा क्यों देना चाहता हूँ । मेरा यह कहना कि मैं इस शहर के सारे गरीब - कमज़ोर बच्चों को आईएस बनाना चाहता हूँ उसके हृदय को छू गया । वह बहुत ही उदारमना थी और मेरे त्याग की भावना ने उसकी आँखों में अश्रु ला दिये । मैंने यह भी कहा कि मैं बहुत ऊँची रँक लाना चाहता हूँ सुरुचि मिश्रा से भी ऊँची । वह मेरा सुरुचि का संयोग चाहने लग गयी थी और अक्सर मुझसे कहती थी, “ अगर सुरुचि तोहका ठीक लागै तब तोहार बियाह सुरुचि से कै देई । ”

मैं - “ माँ, अब मुझसे कोई विवाह नहीं करेगा । मैं एक अलग रास्ते पर चल पड़ा हूँ । यह रिश्ते जो आया करते थे वह इसलिये आते थे कि मैं एक सम्मानित नौकरी में हूँ पर अब वह बात नहीं रही । मैं राजनीति के दावानल में प्रवेश कर चुका हूँ । मेरे जीवन पर ख़तरा मँडरा रहा है । एक ख़तरे से खेलने वाले बाज़ीगर के करतब पर तालियाँ तो बज सकती हैं पर कोई अपना जीवनसाथी क्यों चुनेगा । ”

माँ - “ ई बात नाहीं बा मुन्ना । जौन - जौन रिश्ता चला ग रहा सब वापस आई गवा । हरिकेश, रामराज, सुरुचि के बाबू सब पुनि दौड़े लागि हयेन । बस एक कमिश्नर साहेब नाहीं आयेन बस । पर तू परीक्षा आपन दै लअ तब हम सोचब पर तोहार बियाह अब हम करब । तोहरे गले में डैना बाँधब ज़रूरी बा । ”

माँ यह कहकर चली गयी और मैं अपनी परीक्षा की रणनीति में लग गया । मैं एक नये अभियान पर था । मुझे यह पता था कि इस वर्ष लोगों की उम्मीदें मुझसे अलग हो चुकी हैं । लोग मुझसे एक चमत्कार चाह रहे हैं । यह सिविल सेवा की परीक्षा एक अलग मिज़ाज की परीक्षा है । इसके परिणाम पर कोई भविष्यवाणी करना संभव ही नहीं है । किस पर्चे में क्या अंक मिल जाये बताया नहीं जा सकता । कई बार बेहतर किया हुआ पर्चा ख़राब अंक दे देता है और औसत दर्जे का पर्चा अपेक्षाकृत बेहतर अंक दे देता है । पर इस बार मेरे पास

पिछले साल का अनुभव था और सफलता एक आत्मविश्वास देती ही है । मैं शह और मात के खेल में यह समझ गया था हर शह मात नहीं देती है पर मात के लिये शह देना ही होगा । मैं अब अपनी पुस्तकों में शह और मात का खेल खेलने लगा । मैं नये - नये सवाल बनाने लगा । पिछले सालों के सवालों को धुमाने लगा और उन्हीं सवालों से नये सवाल बनाने लगा । यह एक स्थापित सा सत्य है कि पिछले वर्ष के प्रश्नों से ही सवाल बहुधा आते हैं पर सिविल सेवा उन सवालों पर प्रयोग कर देती है । उसके प्रयोग कर देने के कारण कई बार वही सवाल अलग सवाल लगने लगते हैं पर वस्तुतः कई बार कई सवाल होते कुछ उसी तरह के हैं । मैं एक प्रयोगधर्मी व्यक्ति था । मुझे प्रयोग करने में एक उन्माद का अनुभव होता था । मैं प्रयोग के रास्ते पर चल पड़ा और मेरे पीछे चल रहे थे वह लोग जिनको मेरे नेतृत्व पर असीम विश्वास था और वह मेरे झूठ को भी सच मानते थे । उनके आँखों पर बँधी हुई पटियाँ मुझे एक ज़िम्मेदारी का भान करा रही थीं और मैं एक सधे हुये कदमों से आगे बढ़ रहा था । जो लोग भी इस वर्ष की मुख्य परीक्षा नहीं दे रहे थे उनसे कक्षा छोड़ने का अनुरोध किया और कहा आपसे मुलाकात मुख्य परीक्षा के बाद होगी । आप मेरे अगले वर्ष के रण के महारथी हो । मेरे पास बाईंस लोग रह गये जो इस वर्ष परीक्षा दे रहे थे । मैं और मेरे बाईंस लोग एक रण में उत्तर चुके थे । मेरी चाहत थी मैंस में अधिक से अधिक अंक प्राप्त करने की । अब मैं सफलता के लिये नहीं एक नज़ीर के लिये लड़ रहा था । मेरी नज़ीर शहर में एक नयी ब्यार लेकर आयेगी और मेरी असफलता शहर के ढूबते चिराग को एक लंबे समय तक के लिये शांत कर देगी । मैं शहर की आशा का एक केन्द्र बन चुका था । अनुराग शर्मा एक ब्रांड था और अब इस ब्रांड की साख का भी सवाल था । मेरा जीवन नियमित हो चुका था । सुबह चार बजे उठना , पढ़ना और शाम को कोचिंग में जाना । वह भी पढ़ने का ही एक भाग था । मैं वहाँ लिखने - लिखाने का अभ्यास कार्यक्रम चलाया करता था । कक्षा के अधिकांश छात्र भी बहुत ही परिश्रम कर रहे थे । मैंने हिंदी बनाम अंग्रेज़ी, दिल्ली बनाम इलाहाबाद, विज्ञान बनाम ह्यूमिनिटीस कई प्रभावोत्पादक श्लोगनों से उनके रक्त में उबाल ला ही चुका था । सवाल अपना ही नहीं जमीन, शहर, मातृभाषा और माँ का बन चुका था । यह सवाल लक्ष्मण के त्याग की ओर हम सबको ले जा रहा था । वैसे तो इस परीक्षा का पाठ्यक्रम कभी ख़त्म हो ही नहीं सकता पर एक संतोषजनक तैयारी हमने परीक्षा के नियत समय के पहले ही कर ली थी । मेरी अपनी सफलता से अधिक जरूरी थी इन सबकी सफलता क्योंकि मेरी भविष्य की योजनाएँ अब मेरी सफलता से नहीं इनकी सफलता से संचालित होने वाली थीं और मेरी योजना क्या है, यह किसी को खबर नहीं । मुझे भी नहीं । मैं भविष्य के गर्त में झाँका नहीं करता । मैं वर्तमान के चौसर का एक बड़ा खिलाड़ी था, यह मुझे अपने पिछले अनुभवों से आभास होने लगा था । मैं

वर्तमान को देख रहा था जहाँ से भविष्य के द्वार खुल रहे थे । एक ही नहीं कई द्वार - नायाब द्वार ।

परीक्षा नज़दीक आ चुकी थी । मैं रणनीति बनाने लगा । मेरी रणनीति में हिंदी का पर्चा महत्वपूर्ण था - खासकर भाषा विज्ञान दूसरे पर्चे में अयोध्याकांड एवं मुक्तिबोध । मैंने रणनीति पलट दी । मैंने सबसे कहा आप भाषा विज्ञान और अपभ्रंश- अवहट्ट का सवाल करो । दूसरे पर्चे में अयोध्याकाण्ड, मुक्तिबोध और अज्ञेय करो । यह मैं इसलिये करा रहा था कि लोग इस भाग को कम करते हैं । इतिहास में आधुनिक इतिहास - विश्व इतिहास पर बहुत ज़ोर दिया । मैं यह समझ गया था कि एक अलग तरीके से लिखना होगा । रंजन अग्रवाल और संजीव टंडन ने कहा था कि सामान्य अध्ययन के पेपर में चार्ट और रेखाचित्र का प्रयोग करो । मैं नयी तकनीक से चार्ट और रेखाचित्र के सहारे सवालों को हल करने लगा । सांख्यकी के सवाल 55 अंक के आते हैं और कला वर्ग के छात्रों के लिये वह दुर्लभ होते हैं । मैं विज्ञान का था और यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि यह भाग बहुत ही संजीदगी से हल किया जाये । आईआईटी - इंजीनियरिंग के छात्र रण में आगे इस भाग से ही हो जाते हैं । हमारा सीधा संघर्ष उनसे है इसलिये इसमें दक्षता प्राप्त करनी होगी । युद्ध पूर्व यज्ञ की पूरी कार्यवाही हो गयी । रण सज चुका था । सेनायें आतुर थीं संधान करने को । दिव्यास्तरों से लैस मैं अनुराग शर्मा उस सेना के साथ विश्व विजय करना चाहता था जिस सेना के सैनिक रण- दुरुंभी के शोर से भयभीत होकर शर - संधान करने से परहेज़ करते थे । पर अब उत्साह उत्तुंग शिखर की तरह नभ से संवाद करना चाहता था । परीक्षा नज़दीक आ चुकी थी । मैं आश्वस्त था अपने परिश्रम पर । परीक्षा हॉल में एक शोर मेरे पहुँचते ही - अनुराग शर्मा पुनः परीक्षा दे रहे हैं । मैंने कहा - मैं नहीं यह शहर परीक्षा दे रहा एक गौरव के लिये । अमित चौधरी ने पूछा - क्या इरादा है ?

मैं “ हिंदी माध्यम के छात्रों से मसूरी को पाट दूँगा यह संकल्प है ... बाकी हरि इच्छा... ”

एक दंभ था मेरे स्वर में ...एक वर्ष में ही कितना कुछ बदल गया था ...मेरे ही अंदर

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 315

मैं प्रकृति से बढ़बोला था । मुझे अतिरंजना सुहाती थी । मेरे अंदर शायद परिपक्वता का अभाव था । मैंने अमित चौधरी से कह दिया , “ मैं इतिहास लिखूँगा , नयी मान्यतायें स्थापित करूँगा । सवाल मात्र मेरा अब रहा नहीं

अब बड़ा सवाल इस ज़मीं का है । पुरुषार्थ तो किया है अब भाग्य से याचना कर रहा आने वाली नस्लों के लिये । “

वह मेरा चेहरा देखता रहा और मैं उसकी आँखों में आँखें डालकर मानो यह कह रहा समय सबका आता है, यह मेरा समय है । यह करना मेरे लिये शोभा नहीं देता था पर मेरे अंदर का अहम भाव जो कभी मर्दित हुआ था आसानी से मेरी याददाश्त से जाने को तैयार न था । वैसे भी मेरी याददाश्त बहुत ही तीक्ष्ण थी । इस देश की सबसे बड़ी परीक्षा जिसे कुछ लोग कहते हैं कि विश्व की सबसे बड़ी परीक्षा है आरंभ हो गयी । मुझे अपने साथ- साथ उनका भी बहुत ख्याल था जो मेरे बाजुओं से चल रही पतवार को देख रहे थे लहरों से संघर्ष करते हुये वह भी तब जब नाव जर्जर थी और भरोसा मेरे बाजुओं पर था । मेरे बाजू भी ज़िद्दी थे । वह पतवार के चिटकन और नाव की जर्जरता से बेपरवाह लहरों से लड़ रहे थे । दिन बीतते गये परीक्षा होती गयी । जो पढ़ा है वह लिख कर आना ही है कहीं न कहीं । चिपकाओ और घुसेड़ो प्रवृत्ति को लगाओ । सवालों को बार - बार पढ़ो रास्ता मिलेगा ही । दिल्ली में जो नयी विधि सीखी थी जो कुछ वहाँ समझा था वह तो प्रयोग में लाना ही था । एक नायाब परीक्षा हम सबने दी । एक नये तरह से लिखने का प्रयास किया गया । मैं आश्वस्त था कम से कम मेंस के सकारात्मक परिणाम को लेकर । मेरी कल्पनाओं को नयी उड़ान मिल चुकी थी । मेरे ख्वाब नित नये पेंग लगा रहे थे । मैंने परीक्षा खत्म होते ही दिनेश और अशोक से कहा, “ सुरुचि मिश्रा का कोई नामलेवा इस साल के बाद नहीं होना चाहिये । मुझे उससे ऊपर की रँक एक से ज्यादा चाहिये । मैं ईर्ष्यालु भी हो चुका था । मेरी नाम और प्रसिद्धि की ख्वाहिश बढ़ती जा रही थी । परीक्षा समाप्त होते ही अगले दिन मैं विश्वविद्यालय गया । मैं राजनीति के दाँव - पेंच लगाने लगा । हकीकत यह है मुझे राजनीति में मज़ा आता था चाहे वह परिवार में हो, छात्र जीवन में या छात्र- राजनीति में । मैंने अपनी कक्षा आरंभ करने का आगाज़ कर दिया । मैं एक रणनीति की तरह अपनी एमए की कक्षायें किया करता था । विश्वविद्यालय प्रशासन ने मेरा छात्र संघ अध्यक्ष पद से इस्तीफ़ा मंजूर नहीं किया था । मेरे जाने के बाद कई और लोगों ने त्यागपत्र दे दिये थे । अध्यक्ष- उपाध्यक्ष- प्रकाशन मन्त्री- डेलीगसी के आठ सदस्यों ने त्यागपत्र दे दिया था, पर किसी का भी इस्तीफ़ा मंजूर नहीं हुआ था । इस्तीफ़ा देने वालों ने ईमानदारी बरती किसी ने भी छात्रसंघ भवन के पद के साथ आवंटित कमरा नहीं लिया । छात्रसंघ में मात्र महामन्त्री और उप मन्त्री रह गये थे । मैंने छात्र संघ को पूरी तरह पंगु कर दिया था । मैंने छात्र संघ का सारा पैसा विश्वविद्यालय प्रशासन को वापस कर दिया था इस अनुरोध के साथ कि इससे पुस्तकों को ख़रीदा जाये । मेरे इस फ़ैसले से बहुत नाराज़गी महामन्त्री को थी पर सब असहाय थे । मैं उसी छात्र संघ भवन में क्लॉस चलाता था और महामन्त्री जिसकी दुदुंभी उसकी अराजकता के कारण बजती थी असहाय था क्योंकि एक व्यापक सहयोग मुझे प्राप्त था । मैंने लड़कियों की क्लॉस

वोमेंस होस्टल में बंद कर दी और उनसे कहा आप लोग भी छात्र संघ में क्लॉस करो । अपने दुपट्टे को फाँसी का फंदा बना देना उनके लिये जो तुम्हारे गरिमा का सम्मान नहीं करते । एक व्यापक भीड़ मेरी कक्षाओं में होती थी । मैंने शहर की व्यावसायिक कोचिंग संस्थानों की नींद हराम कर रखी थी ।

मैं अगले साल की परीक्षा पर पूरी तरह लग चुका था । मेरी यह चाहत थी कि अगले साल के मेंस की परीक्षा कम से कम चार- पाँच सौ लोग दें । प्रारम्भिक परीक्षा में इतिहास एक वैकल्पिक विषय के रूप में लोकप्रिय हमेशा ही रहा । उसको मैंने और लोकप्रिय कर दिया । मैंने सबसे अपील की कि अगर आप अपने विषय में असहज हो या प्रारम्भिक परीक्षा का द्वार नहीं टूट रहा तब आप इतिहास ले लो , वह द्वार में खोल ढूँगा । मेरे पर लोगों का अगाध विश्वास हो चुका था और लोग मेरी सलाह को आँख बंद करके मान लेते थे । दिसंबर का जाड़ा आ गया । मसूरी की फ़ाउंडेशन कोर्स की टरेनिंग ख़त्म हो गयी थी । सबको दस दिन की ब्लाक लीव मिली । इलाहाबाद में वह सारे लोग आ गये जो मसूरी टरेनिंग करने गये थे । उनकी अगले दौर की टरेनिंग अगले साल तीन जनवरी से आरंभ होनी थी । अमूमन मसूरी से आये हुये लोग शहर में एक नायक की तौर पर पूजे जाते थे पर उनके जाने के बाद के तक़रीबन चार महीने में शहर में एक महानायक आ चुका था जिसके समुख वह शरीरीन थे । चिंतन सर सुबह - सुबह घर आये । वह सीधा मेरे कमरे में आये । मैं उस समय पढ़ रहा था । चिंतन सर ने कहा , “ बाबा तुम्हारे नाम का अँजूर है फ़िज़ाओं में । यह नाम न भूतों न भविष्यतों किसी को हासिल होगा । इतना बड़ा जिगरा कहाँ से लाये तुम ? ”

मैं - “ सर , सब परिस्थितियों ने करवा दिया । मैं तो एक निमित्त मात्र हूँ । मेरे पास कौन सी शक्ति है इतने बड़े संकल्प को लेकर चलने की । ”

चिंतन सर - “ बाबा पूरा माजरा सुनाओ । बहुत ही लोमहर्षक रहा होगा चुनाव , तुम्हारी हत्या का प्रयास , कोर्ट- कचहरी , चुनाव जीतना ... यह सब एक उस रण का भाग है जिसका परिणाम अभी आना है । ”

मैं - “ सर , क्या परिणाम आयेगा ? ”

चिंतन सर - “ जो तुमने न सोचा होगा वह आयेगा । यह एक गाथा लिखी जा रहा और लिखने वाला ही जानता है इसकी परिणति क्या होगी । ”

मैं - “ कौन है लिखने वाला ? ”

चिंतन सर - “ परम पिता परमेश्वर । यह उसकी ही बनायी हुई सारी कहानी का एक भाग है नहीं तो जो मात्र जीवन - यापन के लिये एक नौकरी

अभिकल्पित कर रहा हो वह राजनीति के दावानल में प्रवेश कर जाये वह भी एकाएक बाबा एक बात बताओ । “

मैं - “पूछें सर । “

चिंतन सर - “ नौकरी करोगे या राजनीति ? “

मैं उनका चेहरा देखने लगा । मैं उनके अंदर के भाव पढ़ने लगा । उनके अंदर एक तड़पन थी । वह जो करना चाह रहे थे एक मुद्दत से वह मैं कर गया एक झटके में । मैंने उनके चेहरे को पढ़ते हुये कहा , ” सर , अब नौकरी नहीं करेंगे तब करेंगे क्या ? यह राजनीति तो आसान है नहीं । इसमें तमाम इंजिन है । धन बल - जन बल - गुडडे बदमाश इसमें हॉबी हैं । मैं क्या उनसे सट पाऊँगा ? यह सर छात्र राजनीति है । एक मुद्दा हाथ लग गया जो लोगों के दिलों के क़रीब था । वह मुद्दा कारगर हो गया । एक लोगों के अंदर छिपा आकरोश था जो मेरे सहारे अभिव्यक्त हो गया । हर मुद्दे की एक मियाद होती है । उस मियाद के बाद वह उपयोगिताविहीन हो जाता है । मुझे अगर एक लंबी राजनीति करनी है तब मुझे हर वक्त जनता को छूने वाले नये - नये विषय तलाश करने होंगे । यह विषय एकाध साल में लोगों को आंदोलित करना बंद कर देगा । “

उसी समय बदरी सर आ गये । वह यह जानने को इच्छुक थे कि इस साल की परीक्षा कैसी हुई और परिणाम की क्या उम्मीद है । मैं अपने परिणाम के साथ- साथ अपने पढ़ाये छातरों के परिणाम पर भी संजीदा था । उनकी सफलता आवश्यक थी । उनकी सफलता पर ही मेरी सारी भावी योजना टिकी थी ।

“ सर , पिछले अनुभव के आधार पर मैं आश्वस्त हूँ कि मैं इंटरव्यू तो दूँगा ही और मेरे पढ़ाये कई लोग इंटरव्यू देंगे पर मैं एक बड़ा परिणाम चाह रहा । “

बदरी सर - “ क्या परिणाम चाह रहे ? “

मैं - “ प्रथम सौ रेंक के भीतर चार- पाँच रेंक , सफलता सारे 23 की । “

बदरी सर - “ यह तो बड़ी महत्वाकांक्षा है .. बड़ी नहीं बहुत बड़ी महत्वाकांक्षा है । “

चिंतन सर - “ बदरी तुम्हारा यह चेला अब छोटे-मोटे सपने नहीं देखता । इसकी प्यास इतनी बड़ी हो गयी है कि यह सारा सागर पी जाये और सराबों में से भी पानी निकाल ले । ”

बदरी- “ यह किसी का चेला है ? यह महागुरु पहले ही दिन से है । अब तो यह अर्जुन ही अर्जुन शहर में पैदा करने के अभियान पर है । अनुराग तुम्हारा रिजल्ट कुछ भी आ सकता है । तुम अब इंटरव्यू देने एक आम छात्र की

हैसियत से नहीं जाओगे । तुम एक स्थापित करान्तिधर्मी हो चुके हो । तुम इंटरव्यू देने जाओगे तो तुमको बोर्ड जानता होगा । सारे प्रेस ने बीबीसी ने तुम्हारे बारे में बहुत लिखा और कहा है । बाकी सभी लोग सफल हो जायेंगे यह तो कहना मुश्किल है । पर ईश्वर करे ऐसा ही हो । विवाह का क्या विचार किया है ? ”

वह इतना ही कह पाये थे कि माँ चाय - नाश्ता लेकर आ गयी ।

“ बद्री मनावअ एह बार एनकर हला - भला होई जाई । तोहरे पाँच के संगेन एहौं एकेडमी पहुँच जाई । एकरे बवाल से हम परेशान रहित हअ । हमार चिंता हमेशा लाग रहत हअ कि ई कौनौं बवाल पुनि न कै देई । घरे से निकरत हअ तब जब तक वापस न आई जाय हमार मन लगा रहत हअ । ”

बद्री सर - “ माता जी एनकर बियाह आप कै देई सब मामला सुलझ जाये । बड़े बड़े बिगड़ैल रस्ता पर आई गयेन बियाह के बाद , अनुरागौ आई जइहिं । ”

माँ - “ एकर केसे पटे बद्री बेटवा । हम एकर दुई बात सुनि लेइत थअ लेकिन आजकल के लड़की लोग न सुनिहिं । केसे बियाह करी इहौं नाहीं समझि आवत हअ । हमार तअ मन बा एनकर बियाह हम कै देई तब ए एकेडमी जाई । ”

बद्री सर - “ माता जी एकेडमी में बियाह कै सकत हअ । उहूँ कुछ लोग बहुत अच्छा हयेन । ”

माँ - “ बाभन लड़की हएन ? ”

बद्री सर - “ माता जी अब इ सब बाभन - ठाकुर के मामला इहाँ नाहीं चलत । जहाँ मन पटि जाई उहीं मन्त्र पढ़ि जाई । ”

माँ - “ अब इहै करवउबअ तू सब । हम इहीं से बियाह कै के भेजब , एनकर कौनौं भरोसा नाहीं । एनका तअ कौनौं लड़की पोट ले , जिंदगी में लड़की देखें हयेन नाहीं जे दुई बोल मन से बोल दे ए तअ गदगद होई जइहिं । ”

चिंतन सर - “ ऐसा नहीं है माता जी । ई ऐसा गुड़ नहीं है कि चींटा खा जाये । ”

मेरे विवाह का उजड़ा बाज़ार वापस सज चुका था । जो लोग मेरी नौकरी जाने की अफ़वाह से वापस लौट गये थे वस्तुस्थिति जानकर वह सब वापस आ चुके थे । वह सब लोग जो अपनी फ़ोटो- कुंडली वापस लेकर चले गये थे या आना छोड़ चुके थे उनको माँ जब भी पा जाती थी माठा में जूता भिगो - भिगो कर मारती थी । उसने रामराज मिश्र का किस्सा सुनाया किस तरह वह फ़ोटो लेकर चले गये थे और फिर वापस आ गये । माँ ने कह दिया था कि

एक प्लाट दो- दो आदमी को बेचने वाले चोरन के यहाँ अपने सोने ऐसे बेटे का विवाह मैं नहीं करूँगी । उसको कहानी सुनाना अच्छा लगता था । उसने सारी कहानी सुना डाली । चिंतन सर ने कहानी के बीच मैं ही कह दिया , “ माता जी अनुराग शहर के उद्धारक होंगे । आप रिज़ल्ट आने दो हो सकता है कोई चमत्कार हो जाये । ”

वह दिमाग से बहुत तीक्ष्ण थी । उसे भी चमत्कार की समझ थी । उसकी गंगा यात्रा - पूजा - अर्चना अब मेरे तक सीमित न होकर उन सबके लिये हो चुकी थी जिसको मैं पढ़ाया करता था । उसको अपने न पढ़ पाने की बहुत पीड़ा थी और मेरी कक्षा की लड़कियों के परिणाम पर अति सजग थी । वह उस दिन के इंतज़ार में थी जब लड़कों का ही नहीं लड़कियों का भी सकारात्मक परिणाम आये । मैं भी उसके सवालों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देता रहता था ।

बद्री सर - चिंतन सर शाम को कोचिंग पर आने को कह कर चले गये । वह लोग शाम को कोचिंग पर आये । उन्होंने लोगों से अपनी एकेडमी का अनुभव साझा किया । सब लोगों को पढ़ने के लिये उत्प्रेरित किया और उद्घोषण दिया । वह लोग कहीं जाने की जल्दी मैं थे और रात में घर पर आने की बात कहकर चले गये । उनके जाने के बाद मैं अपनी क्लॉस चलायी । क्लॉस खत्म होते ही एक आसमानी कलर की फियेट कार मेरे कोचिंग के सामने रुकी । कार से उतरने वाले व्यक्ति को मैं देख रहा था । वह सुरुचि मिश्र थी । वह मेरे तरफ सधे कदमों से अपने दृपटटे को गले में लपेटते हुये बढ़ रही थी । वह शहर की एक बड़ी नायिका थी । उसको लोगों ने देखा कम था पर उसकी प्रशस्ति बहुत थी । वह मेरे नज़दीक आयी और बोली , “ अनुराग मुझे तुमसे कुछ कहना है । ”

मैं कोई जवाब देता , वह कह पड़ी... “ मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ । ”

यह कहकर उसने आगे कहा , “फ़ैसला कर लेना । अगर कुछ जानना होगा मेरे बारे में तो घर आ जाना । मैंने अपने पापा से भी अपनी यह बात कह दी है । ”

यह कहकर वह वापस कार में बैठकर चली गयी । मैं जाती हुई कार के पीछे उड़ते धुँयें को देखता रहा । आगे के चौराहे पर पर भीड़ के कारण कार रुक गयी । मैं रुकी हुई कार को ध्यान से देखता रहा । भीड़ के छँटते ही कार चली गयी । इतना संक्षिप्त प्रणय निवेदन तो किसी कहानी - उपन्यास में पढ़ ही नहीं था । मेरे अंदर क्या देखा उसने ? मुझे अंगरेज़ी आती नहीं बोलनी तो बिल्कुल ही नहीं । वह हिंदी बोलने में उच्चारण की तरुटि कर देती है । मैं उसको ठीक से देख भी न पाया था । वह अब एक प्रेयसी के रूप में समुख आ चुकी थी । मेरे देखने की दृष्टि बदल चुकी थी । मैं याद करने लगा उसके

परिधान पर सबसे ज्यादा मेरे मस्तिष्क में थे उसके कानों के बड़े-बड़े कुंडल डोलते हुये । मुझसे कोई लड़की प्रेम कर सकती है, कोई मुझसे प्रणय निवेदन कर सकती है, यह कभी मेरे मस्तिष्क में आया ही नहीं । मैं जीवन भर एक हीन भावना का शिकार रहा । मैं हमेशा यह सोचता रहा मेरे ऐसे सामान्य सी शक्ल-क्रद-काठी और हिंदी माध्यम के छात्र के साथ किसका लगाव हो सकता है । मेरा जीवन बहुत ही परिवर्तनशील हो चुका था । मुझसे किसी आम लड़की ने नहीं शहर की सबसे बड़ी नायिका सुरुचि मिश्र ने प्रणय निवेदन किया था । मैं सोचते - सोचते अपने घर का रास्ता ही भूल गया था । मैं अपने घर के बजाय गंगा के समीप के बाँध पर पहुँच गया था । मुझे बाँध से दूर गंगा दिखायी दे रही थीं और लग रहा था सुरुचि गंगा के श्वेत पानी से उभर कर मेरी ओर चलती हुई आ रही है । इतने में हनुमान जी की संध्या आरती आरंभ हो गयी । आरती के स्वर मेरे कानों में गूँजने लगे ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 316

मैं हनुमान जी की आरती बाँध पर से ही सुनने लगा । आरती के स्वर और साज आपस में जुगलबंदी कर रहे थे । मैं वापस बाँध से नीचे उतरने लगा । सड़क के दोनों तरफ बिंदी - चूड़ी - सौंदर्य प्रसाधन के सामान बेचने वालों की दुकानें थीं । वहीं पर धार्मिक पुस्तकें बेचने वाले एक आशा से ललचायी नज़रों से लोगों की तरफ देख रहे थे । मैं पैदल चलता हुआ किले के चौराहे से होता हुआ तिनकुनिया चौराहे पर शिव चाट वाले के पास पहुँचा । वहाँ पर भीड़ ही भीड़ । एक चाट वाला इतनी बड़ी भीड़ कम ही इकट्ठा कर सकता है जितना शिव करता है । शिव का छोटा भाई फुलकी बना रहा और शिव आलू की टिकिया । वह मुझे बरसों से जानता था । मैं कक्षा ग्यारह से इसकी दुकान पर आता था । पहले यह चाट की दुकान

शिव दयाल कोठी के पास लगाता था पर अब यह चिरंजीव नर्सिंग होम के बगल तिनकुनिया चौराहे पर लगाता है । वह मुझे जानता था और हमेशा भीड़ में मुझे अधिमानता देता था । शिव के छोटे भाई ने कहा, “मुन्ना भाई आज पानी के बताशा खा लो ।”

मैं बगैर कुछ कहे पानी के बताशे का दोना उससे लेकर खाने लगा । शिव ने कहा मुन्ना भैया हमरे बच्चा लोगन के ध्यान रखना । यह पंक्ति मेरे लिये आम हो गयी थी । यह अक्सर लोग कहते थे और मैं हमेशा एक ही जवाब देता था, ईश्वर है वह सबका ख्याल रखता है । पर आज मैंने यह भी नहीं कहा । मैं बताशे खाता रहा । मुझे पता ही नहीं चला मैं कितने खा गया । उसने कहा, “मुन्ना भैया तीन पत्ता हो गया और खिलायें ?” मैं अठारह बताशे खा गया पर

मुझे पता ही न चला । मैंने आलू की टिकिया भी खायी और बगैर पैसा दिये ही घर चला आया । शिव की मुझसे पैसा लेने में कोई रुचि अब नहीं रहती थी । मैं अमूमन पैसा देता था पर आज वह ख्याल ही नहीं आया । मैं किसी और दुनिया में था । मैं एक अविश्वसनीयता में था । मुझे यक़ीन ही नहीं आ रहा था कि कोई लड़की मुझे विवाह का प्रस्ताव दे सकती है । वह कोई आम लड़की थी भी नहीं । वह एक नायिका थी शहर की । मैं उससे जलता भी थी । मैं इस बात को लेकर खासा विचारवान रहा करता था कि उसकी रैंक मुझसे अधिक है और हर कोई कहता था कि अनुराग की शहर में दूसरी पोज़ीशन है पहली अंगरेज़ी वाली सुरुचि की है । मैं सीधा अपने कमरे में चला गया । मेरी माँ की आवाज़ नीचे से आयी , “ गुड़िया ई मुन्नवा कहाँ रहि गवा आज । एतना देर तक त कोचिंग चलत नाहीं । ई हमार जान हमेशा अटकाये रहत हअ । एकर बियाह ज़रूरी बा । अब ई हमरे बस के रहा नाहीं एकरे पर शासन वाली होई चाही । जब देखअ टहरतै रहत हअ । आजकल नवा खेला चलाये बा कुल शहरै के आईएस बनाई दअ । बड़का मालवीया जी बनै चाहत बा । ”

मैं कुछ बोलता बहन बोली , “वह आ गये हैं, कमरे में है अपने ।”

माँ - “ हमेशा तअ सीधा इहीं आवत हअ । आज अपने कमरा चला गवा । ”

वह वहीं से शोर की ... “ मुन्ना... मुन्ना ... ”

मैं नीचे गया । मुझे देखकर बोली , “चाय - पानी आज न चाही का ? ”

मैं - “ चाट खाकर आया हूँ । ”

माँ - “ तोहार चटोरापन कभौं न जाये । ”

मैं शांत रहा । पिताजी ने पूछा , “ मुन्ना तुम्हारे विवाह का क्या करें ? ”

मैं - “ पिताजी , इस बार की परीक्षा दी है । इंटरव्यू तो दूँगा इसकी संभावना काफ़ी है । उसके बाद बात करते हैं इस पर । ”

माँ - “ ओकरे बाद कौनौ नवा नाटक तोहार चालू होये । लोगन के हाथ- पैर में सनीचर होत हअ , तोहरे तअ पोर- पोर में सनीचर बा । ई अपने दिमाग़ के कुछ आराम दै दअ । इहौं का सोचत होये हम केकरे पल्ले पड़ि गये । ”

मैं कुछ न बोला । मेरे दिमाग़ में एक ही वाक्य धूम रहा था , “ मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ । ” यह वाक्य कहकर बगैर जवाब का इंतज़ार किये वह चली गयी । क्या उसको मेरे जवाब में कोई रुचि न थी या उसको लगा कि मेरा प्रस्ताव कोई अस्वीकार कर ही नहीं सकता । मैं समझ न पा रहा था मैं इस पर आगे क्या करूँ । मैंने सोचा चलता हूँ बदरी सर के पास पता करता हूँ यह कैसी हैं । मैं बदरी सर के यहाँ गया । सर अगले दिन गाँव जाने की तैयारी कर रहे थे । मुझे देखते ही बोले , “ मैं तुम्हारे पास आने के लिये चिंतन का

इंतज़ार कर रहा था , वह आने ही वाले होंगे ।” मैंने बद्री सर से संवाद आरंभ कर दिया ।

मैं - “ सर , एकेडमी में लोगों के मध्य आपसी संबंध कैसे होते हैं ? ”

बद्री सर - “ हम और चिंतन ही ज्यादातर साथ रहते थे । काउंसलर समूह एक बनता है जिसमें 6-7 लोग होते हैं उनसे संबंध हो जाता है । ज्यादातर अंग्रेज़ी वाले लोग होते हैं उनसे अपना कोई खास संबंध नहीं हो पाता । ”

मैं - “ सुरुचि से कोई ताल्लुक था आप लोगों का एकेडमी में । ”

बद्री सर - “ इलाहाबाद की है वह । अब शहर का अपना एक लगाव तो है ही पर इससे ज्यादा कुछ ताल्लुक मेरा नहीं था । चिंतन कुछ लझियाये रहते थे उससे । ”

मैं - “ कैसी लड़की है ? ”

बद्री सर - “ किस संदर्भ में पूछ रहे हो । लड़की सब अच्छी ही होती हैं । ”

मैं - “ उसके पिताजी एक बार आये थे मेरे घर विवाह प्रस्ताव को लेकर । ”

बद्री सर - “ अरे महराज कहाँ ई नौकरी - चाकरी वाली के चक्कर में लगे हो । बढ़िया घर- दुआर - परिवार देखकर बियाह करअ जीवन के आनंद लअ , ई सब चकल्लस में अब न पड़अ । ”

मैं - “ ऐसे ही पूछा कभी आये थे वह । मैं तब एक आईआरएस था पर अब तो मैं किसी और राह पर हूँ । मेरे बारे में अब लोगों का दृष्टिकोण बदल गया है । ”

बद्री सर - “ पहले तुम मात्र आईआरएस थे अब शहर के महानायक हो । आईआरएस तो अभी भी हो ही । पर आईआरएस अब तुम्हारी एक छोटी पहचान बन चुकी है । यह भी हो सकता है कभी तुम आईआरएस की पहचान बड़ी कर दो । नोबेल पुरस्कार से लोग सम्मान प्राप्त करते हैं । गाँधी का नाम नोबेल पुरस्कार के लिये कई बार गया पर उनको न मिला । गाँधी को पुरस्कार न देने से नुकसान किसका हुआ ? गाँधी का तो न हुआ हाँ नोबेल पुरस्कार को बहुत बड़ा नुकसान हुआ । अनुराग , मैं तुमको तब से जानता हूँ जब तुम कुछ नहीं थे । तुम याद करो इसी कमरे में मैंने कहा था तुम इतिहास लिखोगे । उस समय तक मेरी सोच मात्र इस परीक्षा तक सीमित थी पर आज तुम्हारे कृत्य बहुत अलग हो चुके हैं । अनुराग , इसी शहर में बहुत लोग जन्में प्रशास्ति प्राप्त किये जीवन में आगे बढ़ गये पर किसी ने धूमकर उस शहर की ओर न देखा जिस शहर ने उनको बनाया और वह शहर कराह रहा है एक दर्द से , एक पीड़ा से और उससे निजात चाह रहा , पर उसकी कराह से सब बेपरवाह हैं । अनुराग , जीवन एवम् समाज में जैसा चल रहा है वैसा ही चलने दो या बदलने की जिम्मेदारी लो .. यह चुनाव आपका है । यह चुनाव

आपका भविष्य उतना तय नहीं करता जितना समाज का । तुम्हारा निर्णय तुम्हारा जीवन कितना बदलेगा यह तो मैं नहीं कह सकता पर समाज को पूरी तरह बदल सकता है अगर तुम इस रास्ते पर चलते रहे । तुम नौकरियों के लिये नहीं बने हो । यह नौकरियाँ कुछ ख़ास नहीं देती हैं सिवाय एक सुरक्षित जीवन के । जिसको आग से खेलने का शौक हो उसको एक हाथ में मशाल लेकर चलना चाहिये और उसकी यह ज़िम्मेदारी है कि वह हर उस जगह आग लगा दे जहाँ भी यथास्थितिवाद प्रगति के रास्ते में बाधक हो । तुम विवाह मत करो । तुम अपना जीवन समाज को दे दो । ईश्वर अनुराग हर दिन नहीं बनाता है । वह बहुत दिनों बाद कोई नायाब कृति बनाता है और फिर उस साँचे को तोड़ देता है, इसीलिये महान आत्माओं की पुनरावृत्ति नहीं होती । बुद्ध राजा बने होते, गाँधी वकालत किये होते, राणा प्रताप अकबर के मनसबदार बन गये होते तो क्या होता? आज समाज को प्रेरित करने वाली कहानियाँ कहाँ से आती? हर पीढ़ी का यह दायित्व है कि वह आने वाली नस्लों के लिये प्रेरित करने वाली कहानियों का निर्माण करे । हम कब तक पंचतंत्र की कहानियों से मन बहलाते रहेंगे । इस शहर इलाहाबाद की कहानियाँ पंचतंत्र की कहानियों की तरह बासी होती जा रही हैं । तुम नयी कहानी का निर्माण करो, बदलो वह समाज जो यथास्थितिवादी हो चुका है उसका पोषक हो चुका है । तुमने शिक्षा के क्षेत्र में करान्ति की, छात्र-राजनीति में करान्ति की पर यह स्थानीय करान्ति है तुम व्यापक करान्ति करो । तुममें जज्बा है, साहस है, लगन है, जिजीविषा है और सबसे बड़ी बात तुम प्रयोगधर्मी हो । तुमने जो प्रयोग सिविल सेवा में किया वह अनूठा हो । तुमने जो साहस मुझको दिया भाषा बदलने का वह कोई सोच ही नहीं सकता । मेरी यह नौकरी तुम्हारी दी हुई है । मुझे तुम्हारा अहसान उतारने के लिये पुनः जन्म लेना होगा । “

मैं किंकर्तव्यविमूढ़ होकर बदरी सर की बात सुन रहा था । मैं तो आया था यह फ़रियाने कि सुरुचि कैसी रहेगी एक पत्नी के तौर पर लेकिन सर तो हमको फाँसी का फंदा पकड़ा दिये कि लटक जा इस फंदे से और कह फंदे से अभी मारना मत मुझको और झूलना है इस फंदे से । मैं स्त्री के सुख को त्याग दूँ .. अपने तमाम ख़बाँ को जो मैंने किसी स्त्री के साहचर्य में देखा है और विभोर हुआ हूँ सबको त्याग दूँ? मैंने नींद से मिन्नतें की हैं जिन ख़बाँ के लिये उसको भूल जाऊँ ... मुझे चुप देखकर बदरी सर ने कहा ... “ कहाँ खो गये ? सुरुचि ले उड़ी क्या तुमको ? कबीर सही कहे हैं माया महाठगिनी है .. ई सुरुचि लगता है ले उड़ी तुमको । ”

उसी समय चिंतन सर आ गये और पूछे .. “ सुरुचि किसको ले उड़ी.. वह है बहुत मायावी .. जितना भुई के ऊपर है उतनै भुई के नीचे है । ”

बद्री सर - “ अनुराग के पास सुरुचि के विवाह का प्रस्ताव आया है , वही यह पता कर रहे वह कैसी है । ”

चिंतन सर - “ वह तुम्हारे बस के बाहर की चीज़ है । ”

मैं - “ क्यों? ”

चिंतन सर - “ वह अनुराग आपके काम की नहीं है । तुमको भी मैं जानता हूँ और उसको भी । आप दोनों की विचारधाराओं में साम्यता नहीं है । ”

बद्री सर - “ यार चिंतन, यह कन्या के विवाह का मामला है । इस मामले में ऐसी राय नहीं देते । तुम कितना जानते हो उसको ? अनुराग के तहकीकात करने के पहले ही तुम मन में शंका डाल रहे हो । अनुराग , तुम खुले दिमाग से विचार करना । चिंतन तो हर बात में वेद व्यास बन जाते हैं । ”

मैं - “ सर यूँ ही मैं टाइम पास करने के लिये पूछ रहा था । उसके पिताजी कभी आये थे । उस समय मैं एक सीधा- साधा चयनित व्यक्ति था । उसके बाद तो मैंने बवाल ही बवाल किया । अब बवाली व्यक्ति से विवाह कोई क्यों करेगा । ”

मैंने बात बदलते हुये पूछा , आगे का कार्यक्रम क्या है आप लोगों का ? ”

चिंतन सर ने कहा , “ आप कोचिंग बंद करो एक- दो दिन । हम लोग आनंद से टहलें । हमारे जाने के बाद पढ़ाना । ”

मैं - “ ठीक है सर । ”

काफी देर तक मसूरी के क्रिस्से सुने और देर रात घर आया । रात में माँ मेरे कमरे में आयी । वह ज्यादातर सोने के पहले एक चक्कर मेरे कमरे का लगाती ही थी । उसी अपनी दिनचर्या के तहत वह आयी । वह भी मसूरी का जीवन जानने की इच्छुक थी । मैंने उसको कहानी सुनायी जो भी बद्री सर - चिंतन सर ने सुनायी थी । एकाएक मुझे रख्याल आया यह सुरुचि वाली बात इसको बता देते हैं । अगर सुरुचि के पापा आये और बता दिये कि सुरुचि और अनुराग की मुलाकात हो चुकी है तब तो यह मेरे टुकड़े- टुकड़े कर देगी कि मुझको बताया क्यों नहीं । मैंने उसकी आँखों की तरफ़ देखा और कहा , “ माँ बड़ा एक अजीब वाक़्या हुआ । ”

माँ - “ का भवा ? ”

मैं - “ सुरुचि मेरी कोचिंग में आयी थी । ”

माँ - “ एहमें अजीब का बा ? ”

मैं थोड़ी देर चुप रहा .. माँ बोली .. “ का भवा ... ”

मैं - “ माँ उसने कहा ... ”

माँ का कहेस ऊ /”

मैं - “ उसने कहा ... मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ ... ”

माँ - “ ओनकर बाप - महतारी मरि गअ हयेन का जौन इ कहई बरे ओनका आये पढ़ा । ”

मैं चुप था ... वह बोली .. “ तू का कहाअ ओसे ? ”

मैं - “ उसने जवाब का इंतज़ार ही नहीं किया और चली गयी । ”

माँ - “ तू जवाब का देतअ अगर सुनय बरे उ खड़ी होत तब । ”

मैं - “ यह तो मेरे दिमाग में आया ही नहीं कि मैं कहता क्या । ”

माँ - “ तोहका कौनौ लड़की पोटि ले । तू कौनौ लड़की ज़िंदगी में पाए हअ नाहीं । तोहका जेई मिले उ उर्वशी - रंभा लागे । ज्यादा उर्लचि- सुर्लचि के चक्कर में न पड़ा हमका समझौ दअ । एतना जतन से मुन्ना के पाले हई हम , अब लड़की मुन्ना के मसरब के लै आउब । ”

यह कहकर वह चली गयी । उसको पिताजी को समाचार बताने की जल्दी थी । उसके बेटे के सामने एक लड़की ने उसकी क़ाबिलियत को देखकर विवाह प्रस्ताव रखा है यह उसके चेहरे से साफ़ पढ़ा जा सकता है । उसके जाते ही बदरी सर की बातें मेरे कानों में गूँजने लगीं । आँख लगते ही वह दृश्य मेरी आँखों के सामने घूमने लगा ...

अनुराग मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 317

माँ सुबह गंगा नहाने चली गयी और उसके जाते ही पिताजी का बुलावा नीचे से आ गया । पिताजी कोई गंभीर बात मुझसे माँ की अनुपस्थिति में ही करते थे । उसका कारण यह है कि माँ एक ऐसा इंजन है जो रेल की पटरी पर चलते हुये साथ वाले और विपरीत दिशा से आने वाले दोनों डिब्बों को एक साथ मनचाही दिशा में लेकर चल देती है और सुनना किसी का नहीं बस अपनी बात रेंतना । अब ऐसे माहौल में दूसरे की विचारधारा को वार्तालाप में उचित स्थान कैसे प्राप्त हो सकता है । मैं जैसे ही नीचे पहुँचा बहन चाय बनाकर आ गयी । पिताजी चीजें को स्पष्ट रूप से कहने के पक्षधर व्यक्ति हैं । उन्होंने सीधे ही बगैर लाग- लपेट के कहा , “ सुर्लचि मिलने आयी थी ? ”

मैं - “ हाँ । ”

पिताजी - “ क्या कहा उसने ? ”

मैं - “ वही जो माँ ने बताया है । दो लाइन बोलकर जवाब का इंतज़ार किये वह चली गयी । यह भी कहा अगर कुछ और जानना हो तो घर आ जाना । ”

पिता जी - “ क्या सोचा है ? ”

मैं - “ किस बात पर ? ”

पिता जी - “ उसके घर जाने पर । ”

मैं - “ मेरा जाना उचित होगा ? यह अच्छा लगेगा ? ”

पिताजी थोड़ी देर शांत होकर चाय की चुस्की लेते रहे और मेरी तरफ देखकर बोले , “ इसमें खराबी क्या है ? अगर तुम उसके घर चले गये तब कौन सी बड़ी बात हो गयी ? ”

मैं - “ अब विवाह की बात आरंभ हो चुकी है । मेरे पीछे पचासों लोग लगे रहते हैं । जबसे मैं छात्र- राजनीति करने लगा तबसे मेरे ऊपर कुछ न कुछ लिखने के लिये प्रेस लगा रहता है । यह बात अगर लिख दी तब बेवजह का बखेड़ा होगा । यह सिविल सर्विसेज़ की दुनिया बहुत छोटी है । उसका विवाह मेरे से हो या किसी और से पर संभावना ज्यादा सिविल सर्विसेज़ में ही होने की है । एक अफ़वाह फैल जायेगी कि मेरा और सुरुचि का विवाह हो रहा । कोई और मसाला डालकर प्रेस- इश्क़ लिख दिया तब ? अब किसकी - किसकी कलम और जबान हम पकड़ेंगे । यह शहर एक रुद्धिवादी शहर है । यहाँ किसी भी तरह की नयी हवा का विरोध होता है । यहाँ लड़के- लड़कियाँ नदी के दो पाट की तरह हैं । ”

यह कहकर मैं चुप हो गया । मेरे मौन होते ही पिताजी ने कहा , “ इतना नहीं सोचते । यह मामला संवेदनशील तो ज़रूर है पर इस मामले पर विचार करना ही होगा । तुमसे किसी का पटना आसान है नहीं । तुम अपनी माँ की तरह आवेश में बहुधा आ जाते हो । पर तुम्हारे पास एक नीर- क्षीर विवेक है उसका प्रयोग करो । ”

मैं - “ एक बात बदरी सर कह रहे हैं कि विवाह ही मत करो । ”

मेरे इस पंक्ति पर पिताजी चौंक गये ।

“ ऐसा क्यों कह रहे हैं ? ”

मैं - “ वह कह रहे हैं तुम समाज के लिये कार्य कर सकते हो । इन बंधनों से दूर रहो । ”

पिताजी - “ मुन्ना, हर व्यक्ति को अपने को सही परिप्रेक्ष्य में आँकना चाहिये । तुम कोई बुद्ध बनने की शक्ति नहीं रखते हो । अपने बारे में गलतफ़हमी

नहीं होनी चाहिये । एक लहर ने तुमको ऊपर उछाला है वह लहर नीचे भी जायेगी । तुम अभी उसी लहर के संवेग से गति प्राप्त करके आळादित हो रहे हो । कल मेंस का रिझल्ट आयेगा और तुम्हारा न हुआ तब तुम इसी समाज की प्रतिक्रिया देखना । किसी के बहकावे में आकर ऊट- पटांग फ़ैसला मत कर लेना । यह बात अपनी माँ को मत बताना नहीं तो बद्री का जीवन दुर्लभ हो जायेगा सबका एक संस्कार होता है और वह संस्कार हम सबको प्रभावित करता है । हर जनक के अरमान अपने पुत्र- पुत्री के विवाह के लिये होते ही हैं और तुम तो अपनी माँ के एक ऐसे बेटे हो जिसके माध्यम से उसे समाज में पहचान मिली है । यह बद्री का सुझाव फ़िज़ूल की बातें हैं । तुम सुरुचि से मिल लो । अगर तुम संतुष्ट होगे तब विवाह पर आगे विचार किया जायेगा ।”

मैं - “ क्या सुरुचि पर आपका भी मन है ? ”

पिताजी - “ तुमको देखते हुये अधिक चुनाव है नहीं । यह रामराज और हरिकेश की लड़की तुम्हारे लिये उचित है नहीं । यह व्यापारियों - ठेकेदारों - भ्रष्ट अफ़सरों के यहाँ तुम्हारा विवाह करना मुझे उचित लग नहीं रहा । शहर के आईएएस अफ़सरों का विवाह मूलतः दहेज के लालच पर ही होता है । तुम्हारी उसमें रुचि है नहीं तब और क्या विकल्प है । सुरुचि के अलावा कमिश्नर साहब की बहन भी हो सकती है पर वह विवाह अब करना चाहते हैं या नहीं यह भी नहीं पता । वह तो अब आते नहीं । ”

मैं - “ कैसे पता आपको मेरी रुचि दहेज में नहीं है ? ”

पिताजी - “ अपने बेटे को जानने के लिये किसी दस्तावेज़ को पढ़ना पड़ेगा क्या? जो कोचिंग से पैसा लेने में रुचि नहीं रखता , जो सलाह माँग रहा हो विवाह ज़रूरी है क्या । अब वह किस बात में रुचि रख रहा मुझे पता नहीं होगा । ”

माँ इतने में आ गयी । माँ का आना वैसे ही होता था जैसे भेड़ों के बीच में बिगवा आ गया हो । सब चौकन्ने हो जाते थे चाहे वह कुछ कहे या न कहे । पर वह कुछ कहेगी ज़रूर ।

माँ - “ का फ़ैसला भवा , ऐ ज़इहिं सुरुचि के इहाँ ? तनिक पहिले समझ लअ सुरुचि के घर - दुआर - ख़ानदान । अब ऊ आईएएस बा इहिं पर तअ बियाह न होई जाये । हम बियाहे में एक रूपिया खर्चा न करब । बियाह के खर्चा देहे पड़े ओनका । हमरे पास जौन दुई - चार रूपिया बा ऊ हम एनके बियाहे में लगाई देब तब हम बिटिया के बियाह कैसे करब । ई बात साफ़- साफ बताई देहे ओनका । ”

पिताजी - “ जब विवाह की बात तय होगी तब बता देंगे । ”

माँ - " मुन्ना, तू बताई देहअ ओनसे कि इहाँ हमरे घरे आईएएस गीरी न चले । जैसे बहिन - बहू - बिटिया रहत हअ वैसे रहे पड़े । "

मैं - " एक चिट्ठी में सब लिख दो । मैं अगर गया तब दे दूँगा । पर मैं अब जाऊँगा ही नहीं । "

माँ - " तू जा चाहे न जा पर हम ई बात ओनके बाप से कहि देब जब ओ अझहिं । अब तू गुट्टर गूँ आपस में कै लअ एहसे तअ बियाह होइ न जाये । चार चीज़ समझे पड़त हअ । जब अझहिं तब साफ़- साफ़ सब कहब ज़रुरी बा । अपने बिटिया के शेखी में न रहै औ इ बियाह - सादी के मामला सब परम्परा से बने नियम - क़ानून से होत हअ । मुन्ना कब जाबअ तू ? पर जायअ तबै जब फ़ैसला होई जाय कि बियाह करै के बा । केहू के लड़की देख के छोड़ब ठीक नाहीं होत । "

मैं - " देखता हूँ । पर पहले तुम तो फ़ैसला कर लो । "

माँ - " रुकअ हमका ज़रा समझि लेई दअ । ज़रा भैया- बाबू से समझि लेई । केहू से कहि न देहअ उ आई रहि कहई बरे कि हम तोहसे बियाह करा चाहत हई । ऐसन आज तक हमरे ख़ानदान में भवा नाहीं बा । "

मैं कुछ न बोला । माँ दिन में मामा के यहाँ चली गयी । उसने मामा के यहाँ बम गिरा दिया यह कहकर कि मुन्ना के विवाह पर गंभीरता से विचार हो रहा और सुरुचि मिश्रा पर उसका मन आया हुआ है आप लोगों की क्या सलाह है । माँ ने एक ही झटके शतरंज का पूरा बोर्ड ही उलट दिया और बाज़ी फिर से सजने लगी ।

मामी - " उमिला ई फ़ैसला कब भवा ? हमसे तअ तू राय - बात करबै नाहीं करू । मुन्ना हमारौ लड़िका हअ । हमरौ हक़ बा मुन्ना पर । "

माँ - " भौजी, हम कब कहा तोहार हक़ नाहीं बा । हम त तोहार पचन के राय लेई बरे आई हई । जैसन कहबू वैसन करबै । हमार कहाँ एतनी समझ बा । भैया बड़- बड़वार हयेन दुनिया देखे हयेन ब़ग़ैर एनके राय के तअ हम कुछ करब नाहीं । "

मामा - " उमिला, एक बात त समझि लअ बहू के सुख त न मिले । कामकाजी लड़की बा । हरदम पोस्टिंग पर रहे । घरे - दुआरे कारज - प्रयोजन पर आई पाये न आई पाये कुछ नाहीं कहि सकत हअ । पर आईएएस बा । हमरे ख़ानदान में केउ बड़ी नौकरी तअ आजतक केहे बा नाहीं । मुन्ना पहिला आदमी हयेन । कौनौ बहिन - बिटिया हमरे इहाँ नौकरी केहे बा नाहीं । ई तअ बड़वार नौकरी वाली बहू होये । सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होये एहमें तअ दुई राय बा नाहीं । पर उमिला आपन लड़िकौ समझाई चाही । मुन्ना से पटि जाये ? "

माँ - “ काहे न पठे भैया ? ”

मामा - “ मुन्ना जिंदी बा । हमार परिवेश जैसन बा उहीं से ऊ उपजा बा । का हमार परिवेश एतनी बड़ी नौकरी वाली लड़की के सँभाल पाये । सोच लअ तू इह मामले पर । ”

मामी - “ घर - दुआर वाली लड़की लै आवअ उर्मिला । हम अब सुरुचि के तअ जानत हई नाहीं पर हरिकेश के बेबी के हम जानित हअ । ऊ परिवार में एकता बनाई के रखे और सबके उचित सम्मान दे । हमार तअ इहै राय बा , बाकी जैसन तू और शर्मा जी समझाअ । एक बात और बतावअ उर्मिला? ”

माँ - “ का भौजी । ”

मामी - “ दहेज मिले ए बियाहे में ? ”

बाबा भैया - “ दहेज काहे मिले ? सुरुचि के रैंक मुन्ना से ऊपर बा । काहे दहेज दिहा जाये ऐसन बियाहे में । हमरे हिसाब से तअ कौनौं दहेज न मिले । ”

मामा - “ अब के दहेज के बात करे ? बियाह में कौनौं बिचौलिया तअ बा नाहीं । हर बियाह में एक बिचौलिया चाही । बिचौलिया दहेज के मामला समझ लेत हअ । अब रामराज में ओम प्रकाश पाठक हयेन हरिकेश में हम हई । एहमें कौनौं समस्या बा नाहीं । अगर तू न कहबू तबौ हम समझि लेब । जैसे हरिकेश से पहिलेन बात होई गै बा । मकान देझहिं , मनचाही कार देझहिं , तोहरे बिटिया के बियाह के पूरा खर्चा देझहिं और तिलक में जौन कहबू नक्कद दै देझहिं । ओनका तअ देझन के बा । चाहे आज दै देर्झ चाहे मरे के बाद दै देर्झ । हई तअ सब तोहरै । दुई बिटिया हईन सब ओरासत तअ तोहरै बा । ”

माँ - “ भैया , जौन जे दे अपने बिटिया - दमाद के दे । हमका का लई - लादै के बा ओहमें । ”

मामी - “ उर्मिला , पैसा मिल जाये तब बिटिया के बियाह में सहूलियत होई जाये , इहौ सोच लिहू तू । बाकी अब जैसन तोहार मन होई । हम तअ कहब हरिकेश के इहाँ करअ बाकी जौन तू उचित समझाअ । ”

माँ - “ भौजी , हरिकेश के इहाँ कैसे कै देर्झ । अफ़वाह फैलि गई कि मुन्ना के नौकरी चली गय । इहै हकिकेश कहेन कि जब आईएएस के नौकरी नाहीं बा तब मुन्ना कौन काम के रहि गयेन । अब ऐसन स्वार्थी मनई के इहाँ हम काहे बियाह करी । ”

पूरे माहौल में सन्नाटा आ गया । अब जवाब दिया क्या जाये इसका । बात तो माँ ने सही ही कही थी । मामा ने बात सँभालते हुये कहा , “ऐसा हरिकेश नहीं कह सकते । ई ददुआ झूठ के फेहुआँ पिये बा । एहर के बात ओहर मसाला मिलाय के फैलावत हअ । ”

माँ - “ भैया दाढ़ू कुछ नाहीं कहेस / ई बात बाबू कहेन हमसे । ”

यह वार तो सँभाल पाना मुश्किल था ।

मामा - “ बाबू तोहसे कहेन ? ”

माँ - “ हमसे अकेले कहे होतेन तब हम बात पचाई जाइत । जब ओ कहेन तब मुन्ना और मुन्ना के पिताजी दुइनों रहेन । मुन्ना के तअ जनते हअ ऊ कितना आत्मसम्मानी बा । अपने आत्मसम्मान बरे आपन जान दाँव पर लगाई देहे रहा । ऊ मरि के पुनि जिया । हम कैसे कही ओसे कि तू हरिकेश के बिटिया से बियाह करअ । ”

माँ ने खुद तो मामा के यहाँ खाना खाया पर सबका खाना हराम करके वह कटहल - बडहल- आम - नींबू सबका अचार रस ले लेकर खायी , बाकी लोग बस किसी तरह खाना निगले । वह विदा लेकर वहाँ से चल दी । वह सलाह लेने गयी थी या आग लगाने यह वही जाने । पर वह कोई काम बगैर सोचे नहीं करती । वह इस बात से आहत थी कि उसके बेटे को अस्वीकार किया गया और अब उसके बेटे के लिये शहर की सबसे नायाब लड़की लालायित है । वह आग लगाकर रिक्षे पर बैठ गयी । माँ का रिक्षा अभी चला ही होगा कि बाबा भैया से कहा गया , “ जाओ नीच ददुआ को लेकर आओ । ”

माँ घर आयी और पिताजी से मन्त्रणा की और मुझसे कहा , ”सुरुचि से मिल लअ तनिक समझि में तअ कुछ आवै कैसन बा । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 318

मैं समझ न पा रहा था मैं क्या करॉँ । मैंने आजतक किसी लड़की से शायद ही बात किया हो । मैंने जिन लड़कियों से कुछ देर तक बात की है या तो वह मेरे रिश्ते में किसी न किसी तरह आती थीं या वह मेरी छात्रायें थीं । हृदय के अंदर एक अधीरता लिये किसी लड़की से तो मैंने कभी बात की ही न थी । मैंने सिर्फ लड़कियों को निहारा था उसके आगे की प्रक्रिया पर तो कभी गया नहीं । ईसीसी में सुबह - सुबह लड़के पहुँच जाते थे और गेट के पास के सुभाषचंद्र बोस की तस्वीर के निकट खड़े होकर साइकिल पर आती लड़कियों का अवलोकन करते थे । मैं भी उसी में शामिल रहता था । एक लड़की से मिलना वह भी ऐसी लड़की जिसने बगैर लाग - लपेट के कह दिया , “ मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ ” आसान न था मेरे लिये । मेरे माता - पिता निम्न मध्यवर्गीय परिवेश के होने के बावजूद बहुत ही प्रगतिशील हैं । उन्होंने सुरुचि के प्रस्ताव पर कोई ऋणात्मक प्रतिक्रिया नहीं दी । इनकी जगह कोई और होता तो सुरुचि का चरित्र हनन ही कर देता । इसी बात पर

बहस हो जाती , “कितनी बेहया लड़की है एक पराये मर्द से कह रही मुझसे विवाह करो । यह कहीं शोभा देता है हमारे समाज - संस्कार में ।” पर मेरे पिता ही नहीं मेरी कम पढ़ी माँ ने भी इसको एक सकारात्मक रूप में स्वीकार किया और मुझसे ही कह रही तुम जीवनसाथी के चुनाव की प्रक्रिया को आगे बढ़ाओ । पिताजी ने यह बगैर कुछ खास कहे स्पष्ट रूप से कह दिया कि सुरुचि ऐसी लड़कियाँ ही तुम्हारे लिये उपयुक्त होंगी । मैं उससे कहूँगा क्या? मैं कहता किसी से नहीं पर मेरे मन में तो है ही कि मैं नौकरी करूँगा या ताउमर करान्ति ही करता रहूँ । मुझे करान्ति का आगाज़ करने में बहुत आनंद आता है । मेरी रचनात्मक करान्ति अभी सम्पूर्ण कहाँ हुई है । मेरा विश्वविद्यालय परिसर का सफाई अभियान अभी चल ही रहा है । मैं अगर सेवा स्वीकार करके मसूरी चला गया तब तो यह करान्ति अधूरी रह जायेगी । मैं एक उहापोह में आ चुका था । मैं विवाह को एक बंधन के रूप में देखता था । मैं एक स्वतन्त्र जीवन का पक्षधर था । इस तईस साल की उम्र में विवाह के बंधन में बँध जाना कहीं जीवन की सारी संभावनाओं को समाप्त तो नहीं कर देगा । मेरे अंदर ही प्रश्न- प्रति प्रश्न उठ रहे थे और साथ ही साथ उत्तर भी आ रहे थे । चेतना - उपचेतना का संवाद पराकाष्ठा पर था ।

उप चेतना - “ तुम सोच लो एक बार उसके यहाँ जाने से पहले । तुम जीवन में चाहते क्या हो? तुम्हारा जीवन का उद्देश्य क्या है ? क्या तुम एक सुखी पारिवारिक जीवन से ही संतुष्ट हो पाओगे ?

चेतना - “ किसको जीवन में सुख नहीं चाहिये ? मुझे क्यों नहीं चाहिये? स्त्री जीवन का एक आवश्यक अवयव है ।”

उप चेतना - “ क्या तुम एक युवक की शारीरिक आवश्यकताओं के वशीभूत होकर वह सारे आदर्श दरकिनार नहीं कर रहे जो ध्येय हैं तुम्हारे? ”

चेतना -“ क्यों स्त्री को जीवन की प्रगति में एक बाधा के रूप में देखा जाता है । वह जीवन के उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक क्यों नहीं हो सकती है ? स्त्री के साहचर्य को पुरुष मात्र शारीरिक - भौतिक आनंद के रूप में ही क्यों देखता है ? क्यों उस स्त्री को जो आदि शक्ति है उसको कामुकता और वासना तक सीमित रखा जाता रहे । जीवन में भावनायें शरीर के माध्यम से ही समक्ष प्रस्तुत होती हैं । किसी स्त्री की काया को उसकी भावनाओं के सम्मिलन से देखो और उसके प्रेम को मात्र उसके शरीर के माध्यम से नहीं उसके भीतर अन्तर्निहित भावनाओं से देखो । एक स्त्री के बगैर जीवन अपूर्ण है । उसके साहचर्य में जीवन की संपूर्णता है ।”

मैं सोच ही रहा था , माँ कमरे में आ गयी ।

“ मुन्ना का सोचअ कब जाबअ । ढेर बड़बड़ न करअ उहाँ । तनिक ओकौ बोलै देहेअ । अपनै राग न अलापै लागअ । आपन तारीफ न जोतै लागअ कि हम हिंदी साहित्य के विद्वान हुई । हम कुल किताब खोद- खोद के पढ़ि लेहे

हई । ऊ का पढ़े - लिखे बा इहौ पता कै लेहअ । बेटवा हमार गिरहस्ती बहुत कच्ची बा । चुन्नू के बस के कुछ बा नाहीं । गुड़िया पहाड़ ऐसन बाढ़त जाति बा । हमरे लगे कुछ बा नाहीं ओकरे बियाहे बरे । अगर तोहार दुलहिन ठीक नाहीं आई तब बहुत ज़िंदगी दुश्वार होई जाये ।”

यह कहते - कहते उसकी आँखों में पानी आ गया । उसकी अंतिम कुछ लाइनों में उसकी विवशता झलक रही थी । मैंने कहा , “ क्या तुमको मुझ पर यक़ीन नहीं है ? ”

माँ - “ मुन्ना तोहरे ऐसन लड़िका भगवान बहुतै कम बनावत हअ । ई हमार तक़दीर बा तू हमका मिलअ । बाबा - दादू - छोटू जेतना तोहार चचेरा - ममेरा भाई देखित हअ तब हम सोचित हअ कि हमार तक़दीर भगवान अलगै लिखे रहेन । कुल दुःख - दरिदर हेराई जात हअ हमार जैसै दिमाग़ में आवत हअ कि हमरे पास मुन्ना बा । सवाल यक़ीन के नाहीं बा पर देश - दुनिया देखिके डर तअ लागत हअ ।”

मैं माँ का चेहरा देखने लगा और सोचने लगा , बात तो सही ही कह रही है । शहर के बहुत से लड़के चयनित हुये और उसमें से कई ससुराल जाकर रहने लगे । उसी शहर में उनके पिता - माँ रहते हैं पर वह अपने ससुराल में रहते हैं और अतिथि के रूप में अपने घर आते हैं । दहेज में मकान - ज़मीन - कार आदि लेकर वह जीवन की भौतिकता में खो जाते हैं । वह शहर के हालात देख ही रही है । वह बहुत ही तीक्ष्ण मेधा की है , उसे सब समझ आता है । माँ ने पूछा , “ का सोचत हअ ? ”

मैं - “ कुछ नहीं । कल जाता हूँ सुरुचि के यहाँ । पर मैं विवाह के मुद्दे पर कोई बात नहीं करूँगा । मैं लौट कर बताता हूँ क्या बात हुई ।”

माँ - “ ई फटीचर कुर्ता- जींस पहिन के तू धूमत हअ । ठीक- ठाक से पहिन लेहअ तब जायअ ।”

मैं - “ वही इंटरव्यू वाला कपड़ा है बाकी तो कुछ खास है नहीं वही पहन लूँगा । ”

माँ चली गयी और मैं अपने कपड़े देखने लगा कि मैं क्या पहनूँ । मैं शाम को सुरुचि के घर गया ।

मैंने जैसे ही घंटी बजायी सुरुचि की माँ ने दरवाजा खोला । मैंने कहा , “ मैं अनुराग शर्मा हूँ । मैं भी सुरुचि के साथ सिविल सेवा में चयनित हुआ हूँ । ”

सुरुचि की माँ - “ बेटा , तुमको कौन नहीं जानता । तुम्हारी फ़ोटो - नाम कितनी बार पेपर में देखा । तुम्हारा चुनाव में दिया पूरा भाषण मैंने कई बार

पढ़ा । क्या बोलते हो तुम ! सरस्वती का वरदान है । आओ अंदर आओ । “

मैं घर के अंदर प्रवेश किया , एक बड़ा सा डरोँइंग रूम बाहर के बरामदे से अंदर के घर के मुहाने पर । उसमें एक ऊपर झुमर लगा हुआ , दो बड़े-बड़े सोफे , बगल की आलमारियों पर परिवार की तस्वीरें , बाहर की तरफ की खिड़की पर कूलर , कमरे में दो पंखे , कमरे में दो ट्यूबलाइट , दो सामान्य बल्ब कमरे के दोनों तरफ की दीवारों पर । मैंने सोचा जितना मेरे पूरे घर का बिजली का बिल आता होगा इतना तो इनके इस डरोँइंग रूम का आता होगा ।

इतने में सुरुचि के पापा आ गये । वह पिछली बार तो हम लोगों को दौड़ा लिये थे पर इस बार बलभर प्रेम चोकरा । मेरे मन में उनके फेचकुर छोड़कर उमड़ते प्रेम को देखकर मन ही मन ख्याल आया , ई मुँह और मसूर की दाल । इतना प्रेम... लगता है अपनी लड़की मेरे पल्ले बाँधने का पूरा इंतज़ाम तैयार है । हो सकता है वह दो लाइन सुरुचि ने पूरा परिवार की मन्त्रणा के बाद एक योजना के तहत कहा हो ।

मैं इस विचार तन्द्रा में खोया था कि इतने में सुरुचि के पापा ने कहा , “
तुम्हारी सिक्योरिटी है कि चली गयी ? ”

मैं - “ सिक्योरिटी अभी भी क़ानूनन तो है ही पर मैंने हटा दिया । ”

सुरुचि के पापा - “ क्यों हटा दिया ? ”

मैं - “ एक सिर दर्द था । हर समय पुलिस वाले खड़े रहते थे । कोई काम तो था नहीं उनका । वह भी सोते रहते थे । अब कोई कुछ करना चाहेगा तो कर ही देगा यह सिक्योरिटी क्या करेगी । मैंने ज़िलाधिकारी से कहा आप हटा दें । वह शुरू में आनाकानी कर रहे थे पर फिर मान गये । ”

सुरुचि के पापा - “ तुम ज़िलाधिकारी को अच्छे से जानते हो ? ”

मैं - “ मैं जानता हूँ यह महत्वपूर्ण नहीं है वह मुझे अच्छे से जानते हैं यह ज्यादा महत्वपूर्ण है । कुछ काम है क्या ? ”

सुरुचि के पापा - “ अभी तो नहीं है पर ज़िले का मालिक है वह । उससे काम पड़ता रहता है । कमिश्नर से आपका परिचय कैसे हुआ ? आप तो उनके किताब विमोचन कार्यक्रम के सर्वेसर्वा थे । ”

मैं - “ वह अपनी बहन का विवाह करना चाहते थे । इस सिलसिले में आये थे । वह किताब लिख रहे थे । उनको एक सम्पादक की तलाश थी । उन्होंने सत्य प्रकाश मिश्नर सर से कहा संपादन करने को । सर ने मेरा नाम सुझा दिया और यह भी कहा कि आप अपनी बहन का विवाह इसी से कर दो । बस वहीं से परिचय हुआ । इसके बाद नज़दीकी हो गयी । ”

बहन के विवाह वाला मुद्दा मैंने जानबूझकर डाल दिया था इनके होश ठिकाने में लाने के लिये और होश ठिकाने आ भी गया । वह कुछ देर शांत रहे और नीरवता कमरे में व्याप्त हो गयी । सुरुचि की माँ ने कहा , “ बेटा अब जिसके पास बेटी है वह तो जायेगा ही अपनी बेटी के लिये । यह तो समाज की रीत है । हम भी तो गये ही थे तुम्हारे यहाँ पर तुम्हारे पिताजी ने कुछ कहा नहीं । मैंने इनसे कहा एक बार फिर चले जाओ , देखो क्या कहते हैं । अब बेटी का विवाह तो करना ही है । वह सेलेक्शन पा गयी है । अब तो उसके लिये सेलेक्शन वाला लड़का ही चाहिये । अपने शहर का लड़का मिल जाये तो इससे अच्छा क्या होगा । तुम तो अगले साल ट्रेनिंग पर जाओगे ? ”

मैं - “ आंटी जी परीक्षा दिया है फिर से । इसका भी रिजल्ट देख लेते हैं । इस बार का रिजल्ट आने के बाद देखेंगे । ”

सुरुचि के पापा - “ इनकम टैक्स तो राजा नौकरी है । मेरे एक नज़दीकी के रिश्तेदार हैं उस नौकरी में । मैंने उनका शानें- शौकत देखा है । मैं तो सुरुचि से कहा तुम भी इनकम टैक्स ले लो पर हर कोई आईएएस ही पहले भरता है उसी ने वह भी भरा और हनुमान जी की कृपा थी सफल भी हो गयी । ”

मैं - “ इसको तो होना ही था । ऐसी प्रतापी लड़कियाँ कम ही होती हैं । यह कई साल से कहा जा रहा था विश्वविद्यालय में कि सुरुचि का ज़रूर होगा । ”

सुरुचि के पापा - “ पढ़ने में तो तुम भी अच्छे रहे होंगे ? ”

मैं - “ नहीं, मैं सुरुचि टाइप टॉपर न था । मैं चालू पुर्जा टाइप था । ”

सुरुचि के पापा - “ यह चालू पुर्जा टाइप क्या होता है ? ”

मैं - “ थोड़ा- थोड़ा सब काम कर लेना पर दक्षता किसी काम में न होना । ”

सुरुचि के पापा - “ तुमने जो किया वह तो किसी ने नहीं किया । एक पूरा नया काम किया और कर भी रहे हो । पैसा ख़बू कमाया होगा कोचिंग से ? ”

मैं - “ नहीं, मैं पैसा नहीं लेता । ”

सुरुचि के पापा - “ मुफ्त में पढ़ाते हो .. क्यों? ”

मैं - “ जीवन में एक जुनून होता है जो कई बार पागलपन की हद तक चला जाता है , वही मेरे साथ है । इसके अलावा अब और कोई उत्तर तो मैं दे नहीं सकता । ”

सुरुचि की माँ - “ पूरा इंटरव्यू ले लीजिये , कुछ रह न जाये आज । लो बेटा नाश्ता करो । ”

उन्होंने आवाज़ दी और कहा , “ सुरुचि को बुला दे , बता देना अनुराग आये हैं । ”

सुरुचि थोड़ी ही देर में आ गयी । आज मेरी दृष्टि उसको देखने की बदल चुकी थी । उसके गले का लिपटा दुपट्टा, आधी बाँह की कमीज, बाल कुछ उलझे हुये, कानों में झूलते बड़े-बड़े कुंडल हौले - हौले हवा और सिर के संवेग से सरल आवर्त गति करते हुये, न कोई शृंगार न कोई चेहरे पर मेक-अप एक सहजता से मेरी ओर चलकर आती हुई । और मैं अपलक देखता हुआ । एकाएक मुझे अहसास हुआ मेरा इस तरह देखना शायद लोग निहार रहे । मैंने अपने को सामान्य किया । सुरुचि ने आते ही पूछा, “कब आये?“ उनकी माँ ने ही उत्तर दिया, “बस थोड़ी देर हुआ ।“

उनकी माँ ने पूछा, “और चाय पियेंगे?“

मैं कुछ कहता वह नौकर को आवाज़ देती हुई डराँइंग रूम से चली गयीं ।

मुझे कुछ समझ न आ रहा था कि मैं क्या बात करूँ, किस तरह बात करूँ । मेरी एक लड़की की उपस्थिति के कारण उत्पन्न हुई असमान्यता साफ़ देखी जा सकती थी । मैंने पूछा, “कब वापस जाना है?“

सुरुचि - “4 जनवरी को रिपोर्टिंग है । उसी दिन प्रोफेशनल कोर्स शुरू होगा ।”

मैं “फ्राउंडेशन कोर्स में क्या हुआ?“

सुरुचि - “वहाँ होता जाता कुछ नहीं है पर सारा दिन व्यस्त रखते हैं । बगैर काम के काम पकड़ाये रखते हैं । सारे लोग काफ़ी समय तक पढ़ने के बाद वहाँ पहुँचते हैं और लोगों को आराम में रुचि अधिक होती है । सब चाहते हैं क्रौन या यत्न करें कि काम कम से कम करना पड़े, देर तक सोने को मिले, झूठ बोलकर कैसे सुबह उठकर गराउंड में जाने से बचें, इसी के जुगाड़ में सब लगे रहते हैं । अनुराग, तुम्हारे बारे में तो लोग बहुत पूछ रहे थे । जब तुम्हारी स्टोरी बीबीसी ने प्रकाशित कर दी तब एकाएक तुम सबकी निगाहों में आ गये और हर एक व्यक्ति तुम्हारे बारे में जानने का इच्छुक हो गया । इलाहाबाद के जो लोग एकेडमी में थे उनसे लोग तुम्हारे बारे में पूछने लगे । बदरी सर और चिंतन सर के भाव बढ़ गये क्योंकि उन लोगों ने तुम्हारे साथ तैयारी की थी और बहुत कुछ तुम्हारे बारे में जानते थे । निश्चित रूप से बड़ा रोमांचक रहा तुम्हारा सफ़र इन कुछ महीनों का । वह किस्सा सुनाना कैसा रहा वह पूरा अनुभव चुनाव लड़ने का, चुनाव जीतकर फिर सब त्याग देने का । तुम करना क्या चाहते हो यह किसी को नहीं पता । कुछ तो सोचा होगा क्या करोगे?“

मैं “कुछ सोचकर करता तब यहाँ तक न पहुँचता । जैसे - जैसे परिस्थितियाँ आती गयीं मैं नियति के हाथों आगे बढ़ता गया । मेरी कोई भी

योजना दूरगामी न थी । पर हर प्रयोग ने मुझे एक ऊँचाई दी । यह प्रमपिता की इच्छा थी और मैं तो एक निमित्त मात्र ही था ।”

सुरुचि- “ ईश्वर करे हर किसी को तुम्हारी तरह तक़दीर मिले और सर्जक तुम्हारी तरह सभी को किसी कार्य का निमित्त बनाये । करान्ति करना बहुत लोग चाहते हैं पर करान्ति जिस त्याग की माँग करती है वह करना विरले के ही बस की बात है । यही तुमको औरौं से अलग करती है और एक नायकत्व प्रदान करती है ।”

मैंने साहस किया और बगौर लाग - लपेट के सीधे मुद्दे पर आ गया ।

“ तुमने कब फ़ैसला किया मुझसे विवाह करने का ? ”

सुरुचि- “ हकीकत में यह फ़ैसला मेरी माँ का था जब तुम चयनित हुये थे । यह फ़ैसला मात्र दो आधारों पर था । तुम्हारा इलाहाबाद का होना और चयनित हो जाना । पर मुझे उस फ़ैसले में कोई दिलचस्पी न थी । दिलचस्पी न होने का कारण तुम्हारा परिवेश भी था और मेरी धारणा हिंदी माध्यम के छात्रों के प्रति अच्छी न थी । मैंने अंगरेजी विभाग , दर्शन शास्त्र और मनोविज्ञान के हिंदी माध्यम छात्रों के संस्कार और रवैये को देखा है । उसमें से ज्यादातर आवारा क्रिस्म के और गैर संजीदा होते हैं । पर यह मेरी प्रारम्भिक अवधारणा थी । एकेडमी में जितना मैंने बद्री सर और चिंतन सर से तुम्हारा बारे में सुना उसने एक सम्मान का भाव मेरे ही मन में नहीं वरन् पूरी एकेडमी के मन में भर दिया । तुम देखना जब अगले साल एकेडमी जाओगे तब वहाँ तुम्हारा कैसे स्वागत होगा । ”

मैं - “ यह तुम्हारा फ़ैसला ग़लत साबित हो सकता है । ”

सुरुचि - “ कैसे ? ”

मैं - तुम्हारा फ़ैसला उस व्यक्ति बके साथ जीवन बिताने का है जो सरकारी सेवा में है और उसके व्यक्तित्व में बहु आयाम हैं । पर यह बहु आयामी होना एक बोझ बन जायेगा । ”

सुरुचि - “ वह बोझ कैसे बन जायेगा ? ”

मैं - “ या तो मैं सेवा ज्वाइन नहीं करूँगा या ज्वाइन करके भी कोई करान्ति की ही तलाश करूँगा । एक करान्तिधर्मी के साथ जीवन निभाना आसान नहीं होता । बहुत सी

करान्तिधर्मियों की पत्नी ने कहा है बहुत मुश्किल है एक करान्तिधर्मी की पत्नी बनना । तुम एक बेरोज़गार व्यक्ति की पत्नी बनने को अगर तैयार हो तभी इस मुद्दे को आगे बढ़ाना । आप के घर वाले एक जुगनू की चमक से आह्लादित हैं और आप भी जुगनू के प्रकाश में आने वाले आफ़ताब को देख

रही हैं पर यह मद्दिम सी दिखने वाली रौशनी अँधेरे कि बियावान जंगल में लुप्त हो सकती है । मैं किसी के दबाव में काम नहीं करता । किसी के दबाव में काम न करने वाला व्यक्ति बहुत तकलीफ़ देता है क्योंकि हर व्यक्ति की चाहत होती है वह अपने जीवन को नियन्त्रित करे । एक विवाह संबंध से उपजा जीवन अगर अनियन्त्रित हो जाये तब वह बहुत पीड़ा देता है । इस पीड़ा को महसूस करना और उसके बाद अपने फ़ैसले पर पुनर्विचार करना । सुरुचि आवाक थी उसे ऐसे वार्तालाप की उसे उम्मीद न थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 319

सुरुचि थोड़ी देर तक शांत रही । उसने एकाएक बोलना आरंभ कर दिया ...

“ जीवन में स्वतन्त्रता सिर्फ़ पुरुष को ही चाहिये ? एक अनियन्त्रित जीवन पीड़ा देता है पर यह अनियन्त्रण कौन करता है ? एक पुरुष को हक़ है मनमाना जीवन जीने का पर एक महिला को नहीं है ? मैंने पिछले कुछ महीनों के पुराने सारे पेपर पढ़े जब तुम चुनाव लड़ रहे थे । तुमने चुनाव लड़ा, चुनाव के दौरान प्रतिद्वंद्यों पर आकरमण किया, उन लोगों ने तुम पर हमला किया, पर किसी ने न कहा तुम गैर संस्कारी हो, तुम नैतिकता विहीन हो । यही काम में करती तब क्या होता ? मेरे पर आकरमण करना बहुत ही आसान है । एक महिला की शारीरिक संरचना ही पर्याप्त होती इस परम्परा के शहर के चुनाव में उसे ध्वस्त करने के लिये । तुम पर क़ातिलाना हमला हुआ तुम दो दिन न मिले उस पर किसी ने कुछ न कहा । यही मेरे साथ होता और मैं दो दिन न मिलती तब पहला सवाल यही होता, वह दो दिन कहाँ थी । सारी आज़ादी लिंग सापेक्ष क्यों होती है ? विवाह में बेटियों का सबसे बड़ा गुण क्या है ? हर पिता अपनी बेटी के तारीफ़ में क्या कहता है ? मेरी बेटी बहुत संस्कारी है, वह दो बात बर्दाश्त करके चलती है, सिर नहीं उठाती, उसके पास तो जबान ही नहीं है । यह सिर न उठाना ग़लत बात भी बर्दाश्त करना एक संस्कार है एक महिला के लिये पर यह कायरता है एक पुरुष के लिये । यह दोहरे मापदंड का समाज इस बात पर भी सवाल करेगा कि कैसे मैंने एक लड़की होकर एक लड़के से जाकर कहा कि मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ । यही प्रस्ताव तुमने दिया होता तब कोई सवाल न उठता पर मेरे प्रस्ताव देने पर सवालों का अंबार होगा और मेरी परवारिश पर आँच आ जायेगी । मेरे माता- पिता भी नहीं बचेंगे उनके बारे में कहा जायेगा कैसे पाला कि यह लड़की इतनी बेहया हो गयी । पर मेरा अपने मन की बात कहना मेरा गुण है या अवगुण ? एक लड़की की सगाई टूट जाये यह बहुत बड़ा मुद्दा हो जाता है उसके लिये पर क्या यह उतना ही बड़ा मुद्दा एक पुरुष के लिये होता है ?

अनुराग, जीवन को आप एक सहज प्रक्रिया की तरह देखो । हर वस्तु को संशिलष्टता में देखने की आवश्यकता नहीं है । जीवन में हर कोई किसी न किसी से विवाहित होता ही है । हर कोई चाहता है कि साथी मन के अनुरूप हो और जीवन में सामंजस्य बना रहे । पर यह मन के अनुरूप क्या होता है, यह व्याख्यायित तो हुआ नहीं । मसूरी एकेडमी में भी एक विवाह का बाजार है जो जन्म लेता है कैडर एलाटमेंट के बाद जिसे लोग कहते हैं कैडर बेस्ड मैरेज । इसका शार्ट फार्म है सीबीएम । जिन लोगों का कैडर बेहतर हो जाता है उनकी माँग एकाएक बढ़ जाती है । हर तथाकथित ख़राब कैडर के लोग बेहतर कैडर वाले व्यक्ति को अपने कैडर बदलने की आशा से विवाह प्रस्ताव देने लगते हैं । अब यह कैसा विवाह है? कैडर तो ख़राब हुआ चलो अब जीवन भी ख़राब करते हैं कैडर सुधारने को लिये । यह प्रवृत्ति व्यक्ति की लिप्सा को दर्शाती है । व्यक्ति कितना लिप्सावान है और भारतीय संस्कृति के मूलभूत आदर्शों से कितना दूर है । ऐसा व्यक्ति कितना स्वार्थी और संस्कार रहित है । यह प्रयास उस व्यक्ति के व्यक्तित्व को संदर्भित करता है । मेरा कैडर बेहतर हो गया है । जाति - धर्म- क्षेत्र की सीमाएँ टूट

चुकी हैं । व्यक्ति के अंदर निहित स्वार्थ प्रधानता पा गया है । स्वार्थी व्यक्ति मुझसे विवाह करना चाहते हैं मात्र इस आशा से कि उनका कैडर बेहतर हो जाये । कैडर बेहतर होते ही विवाह जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये किया गया था वह सम्पूर्ण हो गया । मैं इस तरह के विवाह में कोई यक़ीन नहीं रखती । मेरा अरेंज मैरेज में कोई विश्वास नहीं है । मैं विवाह के लिये व्यक्ति की सोच को प्रधान मानती हूँ । तुम यह ज़रूर जानना चाहोगे कि मैं तुमसे विवाह क्यों करना चाहती हूँ । तुमको यह जानना भी चाहिये । तुम्हारी तमाम कमियों के बावजूद तुममें अपनी शर्तों पर जीवन जीने की ललक है और उस ललक में समाज शामिल है । यह समाज - संदर्भिता एक बड़ा कारण है तुम्हारी ओर आकर्षित होने के लिये । तुम एक आम जीवन जीने के लिये पैदा ही नहीं हुये हो । ईश्वर ने तुमको नायाब गढ़ा है । लोग सिविल सेवा से देवत्व को प्राप्त करते हैं पर तुम इस सेवा को गौरवान्वित करोगे । तुम फैसला मेरे पक्षों लोगे तब बहुत ही खुशी होगी मुझे पर अगर मेरे पक्ष में नहीं लोगे तब निराशा तो होगी ही मुझे पर बहुत मुश्किल होगा किसी के लिये भी तुम्हारी आभा में आने के बाद तुम्हें प्राप्त न कर पाना । मैं तुम्हारे फैसले का इंतज़ार करूँगी । ”

सुरुचि यह कह कर शांत हो गयी । मैं किंकर्त्वविमूढ़ था । मुझे समझ न आ रहा था मैं क्या कहूँ इस गार्गी संवाद पर । उसकी माँ आ गयी । उन्होंने कहा, ” बेटा अपने पिता जी से कह देना शाम को सुरुचि के पापा आयेंगे मिलने के लिये । ”

“ज़रूर कह दूँगा । ”

सुरुचि की माँ - “ कब जायें यह । आपके पिताजी शाम को कब तक घर आ जाते हैं । ”

मैं - “ वह ऑफिस से घर ही आते हैं । वह कहीं और तो जाते नहीं । जब मन हो आ जायें । ”

मैं सुरुचि के घर से यूनिवर्सिटी रोड गया । वहाँ कुछ देर अपना गौरव गान सुना । अब मैं जहाँ भी जाता था भीड़ इकट्ठा हो ही जाती थी । अगले साल के छात्रसंघ चुनाव में मेरे प्रचम के नीचे लड़ने वालों की तादाद बढ़ती जा रही थी । मैं जीवन में एक सफलता का आश्वासन बन चुका था चाहे वह अध्ययन हो या छात्र राजनीति । मैं बड़बोला था ही । मैं कहता भी था मैं सबको आईएएस भी बनाऊँगा और देश की दिशा बदलूँगा । मेरा यह कहना मेरे बारे में तमाम क्यास को जन्म दे रहा था ।

शाम को सुरुचि के पिता के आने के पहले सुरुचि के मौसा जी आ गये अपनी बेटी के विवाह के लिये और बातचीत करके जाने के बाद वह सुरुचि के पापा के साथ भी आये सुरुचि के विवाह के लिये । मेरे पिताजी थोड़ा आश्चर्यचकित भी हुये यह देखकर पर उनको ज्यादा आश्चर्य तब हुआ जब देर रात उसके मौसा जी फिर आये यह कहने को कि मैं साथ आ तौ गया था उनके पर मेरा प्रस्ताव आप विचार कीजियेगा मेरी लड़की बहुत समझदार और संस्कारी है । मेरी माँ तो एक ऐसी बिगड़ेल जनावर है कि वह बिगड़ गयी तो बिगड़ गयी । उनके जाते ही बोली , “

ऐसन घरे में हम बियाह काहे करी जहाँ अपसै में मार - काट मची बा । अब मौसा- मौसी बियाह काटै लागेन तब त अंधेर होई गवा समाज में । भगवअ एनका सबके । अब आवैं तू सीधै जवाब दै दअ । ”

वह रात में मेरे पास आई । वह जानने को बेताब थी क्या हुआ सुरुचि के यहाँ । मैंने सारी बात बतायी । माँ बोली , “ मुन्ना ई तअ बड़ी तेज बा । तोहसे सँभरे ? ई तअ तोहका लै उड़े । ”

मैं कुछ बोलता वह बोली , “ देखै सुनै में कैसन बा ? हमरे मुन्ना के दुलहिन सुंदर होई चाही । सुंदर बाल - बच्चा पैदा होई । कुल खानदान में सुधार होई चाही । ”

मैं - “ माँ, एक बात बता तेरे ऐसा कोई सुंदर नहीं है क्या? भगवान ने तेरे साँचे का इस्तेमाल फिर क्यों नहीं किया? पिताजी भाग्यवान थे तुम मिली उनको । ऐसा भाग्य हर किसी का नहीं होता । ”

माँ - “ ओनसे पूछअ भाग्यवान हयेन कि नाहीं । ”

मैं “ वह तो मानते हैं और कहते हैं कि मुन्ना तुम आज जो भी कुछ बने हो अपनी माँ को कारण बने हो । ”

माँ “ भगवान के कृपा रही मुन्ना । ”

माँ चली गयी और रात में आँख बंद करते ही सुरुचि आ गयी यह कहते हुये “ अनुराग मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ अनुराग बहुत दुश्वार होगा जीवन जीना तुम्हारे बगैर .. मुझे तुमसे कुछ ओर कहना है ... मैंने अपनी बात पूरी कह ही नहीं पायी हूँ ... एक गुलाबी दुपट्टा हवा में उड़ रहा था मैं उस दुपट्टे को लेकर दौड़ रहा था और सुरुचि कह रही थी दुपट्टा मेरा वापस कर दो ”

सुबह हो गयी माँ ने आवाज़ दी और कहा “ मुन्ना तू बत्ती जलाई के सोई गअ रहअ काल । ”

ब्लॉक लीव समाप्त हो गयी । सब लोग वापस एकेडमी जा रहे थे । मैं चिंतन सर और बद्री सर को इलाहाबाद रेलवे स्टेशन के प्लेटफ़ार्म नंबर नौ पर गंगा - कावेरी एक्सप्रेस से छोड़ने के लिये गया । वह लोग राष्ट्रीय प्रत्यक्ष कर अकादमी छिन्दवाड़ा रोड नागपुर जा रहे थे । चिंतन सर ने कहा कि अगले साल मुलाकात होगी अगर आईआरएस का चुनाव करना पड़ता है । अगर आईएएस हो गये तब मसूरी जाना । मैंने कहा, “ सर मैं क्या करूँगा यह मैं भी नहीं जानता । मैं ईश्वरादेश के अधीन हूँ , वह जो फ़ैसला करेगा वही मैं करूँगा । ”

अगले दिन पाँच बजे संगम एक्सप्रेस से सुरुचि मसूरी जा रही थी । मैं उसको छोड़ने रेलवे स्टेशन गया । प्लेटफ़ार्म नंबर सात पर सुरुचि के परिवार का पूरा मजमा लगा था । उसकी माँ - पिता - मौसा - मौसी - मामा - मामी और मौसी की वह लड़की भी थी जो एक और उम्मीदवार थी मेरे जीवन की । मैं उसको देखने लगा जो सुरुचि को अच्छा न लगा । उसको सब पता था । उसने कहा बहुत ध्यान से देख रहे हो उसको । मैं थोड़ा झेंप गया । पर मेरा वहाँ आना किसी महानायक से कराया । उनके मौसा ने कहा इनको कौन नहीं जानता । यह तो शहर के नायक है । सुरुचि की मौसी ने कहा बेटा कभी आना घर पर मेरे हम लोग अलोपीबाग में ही रहते हैं । मैंने कहा, ज़रूर आऊँगा । दरेन चलने को हो रही थी । सुरुचि ने कहा आईएएस में तुम्हारा इस बार हो ही जायेगा । एकेडमी में मुलाकात जल्दी ही होगी । मेंस का रिजल्ट आने वाला होगा , मुझे रिजल्ट के बारे में बताना । दरेन चल दी वह दरेन के दरवाज़े से हाथ हिला रही थी । लोगों को लग रहा था वह सबके लिये हाथ हिला रही है पर मुझे लग रहा था वह सिर्फ़ मुझे ही देख रही है । हकीकत क्या थी यह तो नहीं पता पर जीवन में भ्रम बहुत भरमाता है और मैं भ्रम चुका था । जीवन

में यह पहली लड़की थी जो मेरे नज़दीक आ रही थी और मैं इस नज़दीकी से उठने वाले प्रकाश से नहा चुका था । रौशनी अपने मुँहाने से चलकर मेरे तक आ चुकी थी और मैं इस रौशनी से आळादित था । मैं वापस घर की ओर चला । मैं उम्र से लंबी सड़कों पर चल रहा था, कुछ और नज़र्में गढ़ रहा था । मेरी नज़र्मों को ज़मीन एक उर्वर ज़मीन मिल चुकी थी । मैं एक जुलाहा बन चुका था और हर दिन एक नया ख़बाब बुनता था । बफ़ पहाड़ों पर पिघलती थी और वादी में कोहरा सिमट जाता था हर एक बीज अँगड़ाई लेकर ज़मीन की सतहें तोड़ता था और मेरी अलसाई आँखें ख़बाब में मशगूल कहती थीं, उफ़ सुबह हो गयी । आँख खुलते ही देखता था यहाँ कोई नहीं है । जो था वह जा चुका है । मुझे लगता था दरवाज़े से कोई हौले- हौले जा रहा और मुझे अपने हौंठों पर शहद का एहसास होता था जिस पर अपनी जीभ मैं फिराता था । मैं आईना देखता था उस आईने में कोई और भी दिखता था । वह बोलता भी था अनुराग मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ । मैं अपने ही हाथों को छूमकर खुद से ही कहता था जो श्लोक मैं समझ नहीं सकता उसके लम्स मैं महसूस कर रहा । एक ख़बाब का जीवन .. मेरे ख़बाबों का जीवन .. मैं बिस्तर पर जगकर भी ख़बाब देखता था । मैं बंद आँखों से ही नहीं खुली आँखों से भी ख़बाब देखता था ।

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा का परिणाम आ गया । अफ़रातफ़री पूरे शहर में ... क्या हुआ ? बड़बोले अनुराग की कोचिंग का क्या हुआ ? उस महानता का दावा करने वाले बैकेट का क्या हुआ ? पूरी शाम शहर इसी बात को लेकर चर्चा में थी । देर रात कृष्णा कोचिंग ने अपने नोटिस बोर्ड पर रिझल्ट लगा दिया । रात के अँधेरों ने अपना काम कर दिया । पूरे शहर में हंगामा हो गया । अनुराग के तेईस के तेईस मेंस पास कर गये । पेपर ने छाप दिया ... एक महानायक है शहर में ... ।

हर कोई यही पढ़ रहा था । देर शाम कमिश्नर साहब घर आये । वह यह पेपर में पढ़ चुके थे । वह बहुत प्रसन्न थे मेरी सफलता से । उन्होंने कहा, “ अनुराग, खुद को कोई भी सफल हो सकता है पर एक हार को भवितव्य की तरह स्वीकार कर चुकी पीढ़ी के हाथों में अस्त्र पकड़ाकर लड़ने की प्रेरणा देना एक महानायक ही कर सकता है । समाचार पत्र ने ठीक ही लिखा है, “ एक महानायक है शहर में ” । सर ने बताया प्रतीक्षा भी मेंस पास कर चुकी थी । वह इलाहाबाद आ रही है । वह भी मेरी छात्रा बनने की इच्छुक थी । मैं भगीरथ बन चुका था ।

“फरगेंया भैया “

“ हाँ सजीवन “

“ कुछ सुनअ ? “

“ का सुनावत हअ ? “

“ पेपर देखअ आज के ? “

“ का देखावत हअ ? ”

“ अरे भैया भयेनवा तअ बड़ा खिलाड़ी निकरा कुल के कुल कलेक्टर बनत हयेन । ई सहर तअ भैया कलेक्टरन से भरि जाये । कौन माया बा एकरे पास ? ऊ पेपर आउट केहे रहा का ? ”

फरगेंया- “ देखअ ई परीक्षा हअ आईएएस के । एहमें तीन- पाँच चलत नाहीं । ई मेरिट पर काम करै वाला एकज्ञाम बा । जौन भअ बा सब मेरिट से भअ बा । ”

राम सजीवन - “ मतलब भयेनवा जेका पढ़ाये ऊ आईएएस होई जाये ? ”

फरगेंया- “ लागत तअ ऐसन बा । ”

राम सजीवन - “ हमरे गदेलन के पढ़वाई देतअ भैया । न कलेक्टर सही कौनौं जियै-खाई के नौकरी मिल जात । ”

फरगेंया - “ कहि देब चिंता न करअ , हमसे बाहर तअ ऊ जाई नाहीं सकत । हमार भौजी और ओकर मामी सगई बहिन हईन । ”

राम सजीवन - “ भैया , हमार भौजी ओकर मामी सुनि- सुनि के ई कान पकि गवा बा । आज तक नाहीं मिलवायअ तू । अब जब दाढ़ अझिं तब बतायअ हम ओहे से चिरौरी - बिनती करब कि लै चलअ भयेनवा नियरे तू तअ मिलवावै से रहअ । ”

फरगेंया- “ मिलवाउब साथी चिंता न करअ । ज़रा तनिक एक मीठ गर्म चाय मँगावअ । बतावअ सर्वेश के का हाल बा ? ”

राम सजीवन - “ मोहे माछी आवत - जात बा । हर रोज़ कचहरी अउबौ नाहीं करतेन । जहाँ ओनके नाम के दिया जरत रहा उहाँ अब कुकुरौ पूछै जात नाहीं । सर्वेश कहत रहेन भयने बड़ - बड़वार होई गवा तअ हमका का मिला ? हमका तअ कुछ नाहीं मिला ? ”

फरगेंया- “ का लेबे हयेन । कुल माइनिंग विभाग लूटि लेहेन । कौनौ कारवाही आज तक भै नाहीं । महामाई सकाई जाई ऐसन पेटे पर जौन भरतै नाहीं बा । ”

राम सजीवन - “ केतना माल लहाये होइहिं ? ”

फरगैंया - “ जौन चाल चला हयेन ओ बीस लाख से कम का पीटे होइहिं । ”

राम सजीवन - “ भैया एतनी रूपिया ! “

फरगैंया- “ओकरे पास दिमाग्ग बा । जहाँ मिलै के दुई रूपिया उहाँ उ पीटेस तीन और गाहे- बेगाहे चार- पाँच । अपने दिमाग्ग के खाएस ऊ , हम तअ एका घूस न कहब । देखअ पहिले जौन काम के नियम से दुई रूपिया रहा ओहमें ऊ दिमाग्ग लगाई के तीन लेहेस । अब ओहमें रेवनू के कौनौं नुकसान तअ बा नाहीं । ऊ दिमाग्ग लगायेस रेट बढ़ायेस । अपनौ रेट बढ़ायेस और ठीकौ ऊपर रेट पर देहेस । ऊ कुलि सरकार के हक्क में काम केहेस । एहमें भरष्टाचार बा कहाँ ज़रा इ बतावत जा । अब बाभन बा ऊ , ठकुरन के राज चलत बा केहू के सोहात बा नाहीं । ऊ जातिवादी राजनीति में पीसा गवा । बाभन और कुकुर एक बराबर अपने जाति के नाहीं होतेन । सत्यानंद मिश्रा हयेन बाभन पर बाभन के काम न करिहिं और सब जाति के काम करिहिं । इहिं बरे ससुरे बाभन सत्यानाश केहे हयेन आपन और लतियावा जात हअ हर ओर । ”

राम सजीवन - “ भैया बियाह के का होये ? कमिश्नर के बहनोई होत जात रहा भयेनवा ओहमें का भवा ? ”

फरगैंया- “ ऐसन पगलेट के आपन बहिन - बिटिया के दे । साँझ के कुछ कहे भिंसारे कुछ । जेसे एकर बियाह होये ऊ बहुत दुख पाये । एकर कौनौं ठिकाना नाहीं बा । एकर दिमाग्ग बहुत अस्थिर बा । सन्न मारि के गअ होत नौकरी करत , घर - दुआर के काम देखत , घरे के गरीबी दूर करत पर ऐका तअ बड़का समाज सुधार के भूत चढ़ा बा । ऐ जौन आईएएस बनत हयेन एकरे माथे ऊ सब एका कुछ देइहिं का । सब आपन काम निकारि के चलता बनिहिं इ झहिं झोला लेहे टहरत रहे । ”

राम सजीवन - “ भैया तू राय दै दअ नअ । ”

फरगैंया- “ हम काहे देई , हमसे का मतलब ? ”

राम सजीवन - “ तोहार भौजी एकर मामी

फरगैंया - अब बड़वार मनई होई गअ हयेन । अब रिश्तेदारी पीछे होई गई । पर दादू से कहब जब ऊ आये । ”

राम सजीवन - “ भैया मिलवाई देहेअ ओसे , हमारौ कुछ चीन्ह- पहिचान होई जाये । ”

फरगैंया -“ चलअ एक गरम मीठ चाहि मँगवाव । तू तअ कान खाई गअ हअ मिलवावअ- मिलवावअ । चलअ काल चलब ओकरे घरे ... ऐ छोटे मीठ गरम चाहि लै आवअ । ससुरा जुड़ान चाहि लै आवत हअ । ”

मैं दो दिन विश्वविद्यालय नहीं गया । मैं जानबूझकर नहीं गया । मैं यह समाचार फैल देना चाहता था । लोगों को मैं बेवकूफ शायद लगता हूँ, दिखता बेवकूफ हूँ, लोगों को लगता है मेरा मस्तिष्क अस्थिर है, मैं भावावेश में निर्णय लेता हूँ पर ऐसा है नहीं । मैं जितना ज़मीन के ऊपर हूँ उससे कई योजन ज़मीन के अंदर हूँ । मैं कब कौन सी चाल चलूँगा यह किसी को भी पता नहीं होता । मेरा दिमाग़ मेरे हृदय को भी नहीं बताता कि उसके अंदर क्या चल रहा और हृदय मेरी युक्तियों को जानने के बाद धड़कने लगता है, उस बेचारे को पता ही नहीं दिमाग़ की साज़िशों का । मैंने उस दिन सायंकाल समाचार पत्रों में इंटरव्यू भी दे दिया और इंटरव्यू में यूपीएससी के साक्षात्कार और अगली प्रारम्भिक परीक्षा की रणनीति तो बतायी ही और एक सुनियोजित हमला कोचिंग इंस्टीट्यूट्स पर कर दिया यह कहते हुये कि अलीगढ़ का ताला ही उनकी नियति है आने वाले कुछ महीनों में । छात्रों को इनसे हिसाब माँगना चाहिये अपने पैसे का नहीं उनके समय को व्यर्थ करने का । यह व्यर्थता के प्रतिमान है और इनका समापन इस शहर के भविष्य के लिये आवश्यक है । मैं किसी ज़ोर- ज़बरदस्ती का पक्षधर नहीं हूँ । मैं जनतांत्रिक तरीके से इनका समापन करूँगा । मैं आह्वान करता हूँ इनके बहिष्कार का । मेरी रचनात्मक क्रान्ति का अगला पड़ाव है इन शिक्षा के नाम पर चल रहे मिठाई के दुकानों सदृश हर गली में फल - फूल रहे गुणवत्ताविहीन संस्थाओं को नष्ट करने का । इनके समापन से कम कुछ भी मुझे स्वीकार्य नहीं । मैं आह्वान करता हूँ हर उस छात्र से जिसने भी इसमें प्रवेश लिया है वह इन संस्थानों को त्याग दे । मैं और मेरे तईस सफल उम्मीदवार इस क्रान्ति को आगे लेकर जायेंगे । इन संस्थानों को मैं एक चुनौती देता हूँ कि वह होने वाली प्रारम्भिक परीक्षा में मात्र पाँच लोगों को सफल करके दिखायें । मैं सौ से अधिक प्रारम्भिक परीक्षा में सफल कराऊँगा ।

मेरी ताक़त बढ़ चुकी है । मुझसे लड़ना पहले ही आसान न था अब तो असंभव है, यह बिके हुये लोग तो मुझसे संघर्ष करने का साहस भी नहीं कर सकते ।

समाचार पत्रों ने मुझसे मेरे आगामी योजनाओं के बारे में पूछा । मैंने सिविल सेवा के साथ- साथ अगले साल चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी यह कहते हुये मैं जीत कर पुनः त्यागपत्र दूँगा । मैं पंगु कर दूँगा इस अराजक व्यवस्था को । मैंने सरकार से अपील की कि वह इस छात्रसंघ के वर्तमान स्वरूप को समाप्त करे और एक सशक्त अध्ययनशील नेतृत्व को विकसित करने का प्रयास करे । मैं उस नये नेतृत्व को विकसित करने में पूरी सहायता करने को तैयार हूँ । पत्रकार कहाँ मानने वाले वह पूछ बैठे, क्या आप राजनीति में उतरेंगे ? मेरा जवाब भी सधा हुआ था .. “मैं वर्तमान में जीता हूँ भविष्य विधाता के हाथ में है ।”

एक सनसनीखेज समाचार , हर पेपर ने छापा । मेरी तस्वीर भी छापी और मेरा लंबा साक्षात्कार भी । मैं विश्वविद्यालय गया । हिंदी विभाग की कक्षा की । परीक्षा निकट आ रही थी । मैं न केवल ऐसे टॉप करना चाहता था वरन् मैं पिछले कई साल के हर विभाग रिकार्ड भी ध्वस्त करना चाहता था । मेरे टॉप करने में तो अधिक संदेह न था पर दूध नाथ सिंह , सत्य प्रकाश मिश्रा, विद्या निवास मिश्र, आद्या प्रसाद मिश्र, गोविंद चंद्र पांडे , ईश्वरी प्रसाद .. तमाम बड़े नामों के नाम लिखे सनद को ध्वस्त करना आसान न था । पर मेरी एक ही खासियत थी जो मुझे यहाँ तक ले आई थी , कद और हैसियत से बड़े ख्वाब देखना , मेरी भगीरथ बनने की चाहत ।

दूध नाथ सिंह सर की गोदान की क्लॉस थी । उन्होंने मुझे क्लॉस में देखते ही कहा , “ अनुराग तुमने तो इतिहास लिख दिया । तुम्हारे लिये इस क्लॉस की क्या ज़रूरत । यह तो सिविल सेवा में दो साल से लिख रहे । तुम पढ़ाओ यह ज्यादा बेहतर होगा । एक अलग दृष्टिकोण से समीक्षा करो । ” मैंने कहा , “ सर हम लोग कुछ किताबों को पढ़कर परीक्षा में लिखते हैं । हमारे भीतर स्वतन्त्र चिंतन का अभाव है । राजेश्वर गुरु , सत्य प्रकाश सर , शैलेश ज़ैदी , डॉक्टर नागेन्द्र और आपके लेक्चर के सहारे लिख दिया । सवाल भी सर बहुत धूम कर नहीं आये और भाग्य से की गयी याचना की सुनवायी हो गयी नहीं तो सर यह एक ऐसी परीक्षा है कि कब वह ज़मींदोज़ कर दें पता नहीं चलता । ”

क्लॉस के बाद ज्ञान बघारा । यूनियन हॉल पर क्लॉस का समय तय किया और बताया कि क्लॉस में नहीं अब मेरे लोग लेंगे , मैं निर्देशित करूँगा । शाम को मेरी कोचिंग पर ठसाठस भीड़ थी । मैंने अशोक , दिनेश , प्रेम नंदन , श्याम नंदन आदि कुछ लोगों को कोर्स का भाग बॉट दिया और मैं इंटरव्यू की तैयारी पर केन्द्रित हो गया । यूनियन हॉल पर बहुत बड़ी भीड़ आने वाले प्रारम्भिक परीक्षा के लिये और मेरी कोचिंग पर एक भीड़ आने वाले इंटरव्यू के लिये । जो भी मेंस पास किया था उसको एक ही पालनहार दिख रहा था .. मैं और सिफ्ऱ मैं । मेरे साथ वाले सारे लोगों की हॉबी थी हिंदी उपन्यास पढ़ना और पेड़ लगाना । हॉबी एकदम नायाब यूपीएससी के अंगरेज़ी दा मेंबरान के दिमाग़ भी चक्कर खा जायेंगे । न तो उन्होंने हिंदी उपन्यास पढ़ा होगा न आम , बडहल , जामुन , कटहल , आँवला , चकोतरा का पेड़ लगाया होगा । अशोक बोला , “ सर मैं तो कहूँगा मैं बेहया का पेड़ लगाता हूँ । पहले दस मिनट उनको बेहया का मतलब समझायेंगे और वह समझ जायेंगे यह बहुत बेहया है सेलेक्शन लिये बिना नहीं मानेगा । दिन बीत रहे थे और जीवन एक नये रास्ते पर था । जीवन में मज़ा ही मज़ा था । सफलता का अपना एक उन्माद होता है । मैं उस उन्माद में मशगूल था । दो- चार दिन बाद सायंकाल कमिशनर साहब की लाल बत्ती की कार आयी और झराझ्वर ने कहा साहब ने

बुलाया है । डराइवर बहुत बार आया था । वह घर में सबको जानता ही था । माँ ने पूछा ,” का भवा डराइवर साहेब ... काहे साहेब याद केहेन एतना दिना बाद । ”

डराइवर ने कहा , “ प्रतीक्षा मेम साहब आयी हैं । वह भी आईएएस की प्रीक्षा पास की हैं । साहेब ने उसी लिये बुलाया है । ”

माँ -“ तबै तअ हम सोचा बड़ - बड़वार मनई बगैर मतलब के काहे पूछत हयेन । ”

पिताजी - “ डराइवर से इस तरह बात नहीं करते वह कह देगा । ”

माँ - “ हम कहै बरै कहतै होई । सबके टाइम- टाइम पर डोज देब ज़रूरी बा । बड़ी कमिशनरी छाई बा । काल रेवेनू बोर्ड में पोस्ट होई ज़इहिं केऊ न पूछे । हमार का बनाई-बिगाड़ लेइहिं । जौन सच बा तौन सच बा । ”

“जेका जीवन में कौनौं लड़की कभौं देखेऊ न होए ओकरे नसीब में पढ़ी - लिखी अप्सरए- अप्सरा .. धूरौ के दिन लौटत हअ । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 321

“ ऐ बुआआ.... सुना पतोहू आईएएस लै आवत हऊ “

“ कहाँ सुनि लेहअ ? कौनौ समाचार पत्र इहौ लिखि देहेस का ? ”

“ लिखिन दे आज नाहीं तअ काल । अब तोहार तअ हैसियत ज़िला के एमपी से बड़वार बा बुआ । ”

“ उ कैसे ? ”

“ अरे बुआ का पता काल मुन्ना भैया ज़िला के एमपीएन होई जाई “

“ शुभ - शुभ बोलअ । जबसे ओकर कुल लड़िका- लड़की होई गअ हएन मेंस पास ऊ वैसन पगलाई गवा बा अब तू ओका और न पगलवाव । ओकर कान उमेठ के भेजब एह साल नौकरी करय बरे । बहुत होई गअ ओनकर डरामेबाजी । जिव अटका रहत हअ जब तक घरे आवत नाहीं । ”

“ बुआ कुछ काम करवावअ हमार । ”

“ का काम बा? ”

“ कुछ मेंडे के झगड़ा बा ओका सुलटवाई देतू बुआ । ”

“ के सुलझाये ? ”

“ सुलझाये तअ दरोगा पर एसपी साहेब कहि देतेन एक बार तब काम लहि जात । ”

“ ई सुकृति मानस के बात करत हअ ? ”

“ हाँ बुआ । ”

“ जा बोलाई लिवायअ । कहि देहअ हम बोलाये हई । ”

“ बुआ , हमार एतनौ औकात नाहीं होई गै बा कि हम एस पी साहेब से कहीं चलअ तोहार बोलावा आई बा । ”

“ अरे ओ भगतै अझिं जा ओनके पेशकर से कहि देहअ । ”

“ बुआ , मुन्ना से कहि दअ । ”

“ ओ बहुत संकोची हयेन ओनकरे बस के ई काम नाहीं बा । ”

“ कहाँ गअ हयेन ? ”

“ कमिशनर साहेब के गाड़ी आवत हअ आजकल । उहीं से जात हअ इंटरव्यू के ट्रेनिंग दई बरे और पुनि ओनकरे बहिनौं के सिखावत हअ । ”

“ बुआ सिखावतै- सिखावत कतौं कमिशनर साहब मुन्ना के हींच न लै जाई और बियाह होई जाई । ”

“ मुन्ना ऐसन गुड़ नाहीं बा कि ओका चिहुँटा खाई जाई । बहुत मायावी बा । कमिशनर ऐसन के तअ ऊ बाज़ारे में बेचि दे और कमिशनर साहेब के पतौ न चले । कुल नेतन के नाकन चना चबवाई देहे बा , ई प्रतीक्षा और कमिशनर के बस के नाहीं बा ओका बरगलाई दई । ”

“ बुआ कुछ बतावअ हाल । ई सुरुचि - प्रतीक्षा में लड़ाई बा । बुआ लड़ाई तगड़ी बा । दुइनौं एक के टारे एक हई । तोहार कहाँ मन बा ? ”

“ जहाँ मुन्ना कहिं देझिं हम कै देब । हमका का लेई लादई के बा । ”

“ बुआ रूपिया ? ई तअ लेहे पडे ? ”

“ हमका दहेज न चाही पर हम खर्चा न करब बियाहे में । होझिं कमिशनर - अधिकारी दुइनौं के बाप - भाई पर बियाहे के खरचा देहे परे और उहौं शानदार बियाह । लड़िकौं तअ ज़िला टॉप देत हई । ”

“ अरे बुआ ज़िला टॉप नहीं एरिया - परदेश टॉप । आज के बा मुन्ना के टक्कर के । ई तअ आईएस बनावै के फ़ैक्टरी बनि गवा बा । बुआ हमहूँ बनि सकित हअ का ? ”

“ बुआ ... ”

“ हाँ बोलअ “

“ एक दाईं पूछू मुन्ना भैया से न आईएएस सही लेखपालै बनवाई देतेन । लेखपालों में बहुत ताक़त बा । जेकर सजरा जहाँ चाहे केहू पर चढ़ाई दअ ऊ रहि जाय लड़तै ।”

“ तोहार पढ़ै - लिखै में मन लागत नाहीं । परपंच- पंचउरा में दिन भर लपटियान रहत हअ । ई सब साधना के काम हअ तोहरे बस के नाहीं बा ।”

“ बुआ , पूछअ तअ एक दाईं ।”

“ तुहिन पूछ लअ । हमार इहमें कौन सिफारिश चाही । तनिक कुछ हाल बतावअ , का हाल बा बड़े घर के? ”

“ बड़ा घर सदमें में बा बुआ । हर ओर छपि गवा बा कि मुन्ना भैया के कुल मनई आईएएस बनत हअ । चाची कहत रहिन कुल दुनिया के बनाई देझहिं पर घरे में एक भाई बा ओका न बनझहिं ।”

“ बाबा तअ कहत रहेन कि मुन्ना के कुछ नाहीं आवत । पहिले गुरु के क्राबिलियत तअ माना तब सीखबअ ।”

“ अरे बुआ , ओ ठहरे रबर बुद्धि मनई । ओ बाबू साहेब के नाहीं पाला गयेन । अब ओनकर का बात कही ।”

“ तब तअ बारे में चिया के तरह हींग लटकाये धूमत रहेन । अब समय रहते न चेतहिं तब तअ पछताएन पड़े । जे- जे अपने पढ़ाई के समय लापरवाही बरतेस ऊ- ऊ अपने ज़िंदगी में बहुतई पछतान बा ।”

“ ई बात तअ बा बुआ । कब तक अझहिं मुन्ना ? ”

“ अबहिं आपन ज्ञान बघार के आवत होझहिं । ओनकर बगैर खाना के काम चलि जाये पर बगैर ज्ञान बघारे ज़िंदा नाहीं रहि सकेतेन “

“ खुद नाहीं पढ़त हयेन का ? ”

“ बगैर पढ़े कैसे ज्ञान बघिरिहिं । ओहमें तअ जान दै देहे हयेन । पता नाहीं कहाँ से ई विलक्षण पैदा होई गवा “

“ चला अच्छा बा बुआ , बाज़ार बनि

गई बा और हमरे ऐसन छोटौ व्यापारी आपन दुकान लगाई लेहे हई नाहीं तअ हमार - पाँच के पूछवार तअ केऊ रहा नाहीं ।”

“ लअ मुन्ना आई गवा । मुन्ना बहुत देर होई गै आज ।”

मैं “ हाँ हो गयी ।”

माँ - “ एहि बार इंटरव्यू बरे कपड़ा - लत्ता न सियउबौ का ? ”

मैं - “ सिला लूँगा । इतना समझ आ गया है कि इन कपड़ों का कोई खास असर नहीं होता । बस थोड़ा अजीब न लगे । कल जाऊँगा सिलाने । ”

मैं अगले दिन सिविल लाइंस गया । अंधविश्वास के तहत उसी दुकान से कपड़ा खरीदा और उसी दि रोबस टेलर को कपड़ा सिलाने को दिया । इस बार पैंट थोड़ा सेल्फ चेक का लिया और शर्ट व्हाइट पहना । टाई न पहनने का फैसला पिछली बार ही ले लिया था और उस फैसले पर पुनर्विचार का कोई कारण तो था नहीं । कमिश्नर साहेब ने कहा तुम प्रतीक्षा के कपड़े चुनने में भी मदद कर दो । मुझे कुछ समझ महिलाओं के परिधान की थी नहीं पर क्या करता सर ने कहा तो जाना ही था । कमिश्नर साहेब की पत्नी मैं और प्रतीक्षा चले गये उसके लिये साड़ी चुनने । कमिश्नर साहेब की पत्नी शायद एक योजना के तहत दूसरे काउंटर पर चली गयीं । प्रतीक्षा ने मुझसे कहा , “ अनुराग , तुम चुन दो मेरे लिये साड़ी । ”

मैं हतप्रभ और किंकर्तव्यविमूढ़ । जीवन में कभी कपड़ा अपने लिये ही नहीं खरीदा अगर यह इंटरव्यू की बात हटा दी जाये । मेरी माँ साल में दो बार दो - दो धोती लेने जाती थी और मैं गया कई बार हूँ साथ उसके पर कभी मैंने इस पर ध्यान दिया ही नहीं । मुझे क्या पता कि कैसे महिलायें कपड़े पहनती हैं ।

मैंने कहा , “ प्रतीक्षा ईमानदारी की बात यह है कि मैंने कभी कपड़ा खरीदा ही नहीं है , महिलाओं का ही नहीं अपना भी नहीं । मैं क्या राय दूँगा ? ”

प्रतीक्षा - “ नायक के हर फैसले अंतिम होते हैं । नायक पर विश्वास और आस्था महत्वपूर्ण होती है । ”

मैं - “ समझा नहीं मैं । ”

प्रतीक्षा - “ अनुराग , एक बात कहूँ ? ”

मैं - “ हाँ । ”

प्रतीक्षा - “ किसी से कहोगे तो नहीं ? ”

मैं - “ नहीं । ”

प्रतीक्षा - “ अनुराग मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ । ”

मेरे हृदय का धड़कन तीव्र हो गयी । यह क्या संयोग है । जो सुरुचि ने कहा वही प्रतीक्षा ने कहा । दोनों के शब्द भी एक और मुद्रा भी तकरीबन एक । मुझे यक्षीन ही नहीं हो रहा था कि मैं इतनी क्लीमती चीज़ हो चुका हूँ ।

मैंने कहा , “ यह बात तो कहनी पड़ेगी अगर इसको अंतिम पायदान पर ले जाना है । ”

प्रतीक्षा - “ मुझे जिससे कहना है मैंने कह दिया और वह बहुत सक्षम है चीजों को अंतिम परिणति तक ले जाने के लिये ... बताओ कौन सी साड़ी लूँ । ”

मैंने करीम कलर की ब्लू बार्डर की साड़ी उठायी और कहा यह ठीक होगी । प्रतीक्षा ने दुकानदार से कहा आप दे दें । दुकानदार ने कहा , “मैम साहब और दिखाता हूँ आप जल्दबाज़ी न करें । साहब के ऑफिस से फोन आया है आप ठीक से देख लें पर प्रतीक्षा ने कुछ न सुना और उठकर चल दी । मैं भी चल दिया । उसकी भाभी ने पूछा , “ पसंद आ गयी साड़ी ? ”

प्रतीक्षा- “ हाँ । ”

मिसेज़ कमिशनर- “ कैसी है ? ”

प्रतीक्षा- “ नायाब .. जैसे मेरे लिये ही गढ़ी गयी हो । ”

उसकी भाभी समझ गयी । एक प्रतापी चीफ़ इनकम टैक्स कमिशनर की बेटी और जुगाड़ कमिशनर की बीबी के आँखों से कोई राज कहाँ छुप सकता था । उन्होंने मुस्कुरा कर कहा , “ अनुराग की चाइस है ? ”

प्रतीक्षा- “ कुछ *intuition* होता है भाभी । हर चुनाव ईश्वर का चुनाव होता है । जिस पर हाथ पड़ गया वह ले लिया , जो एक बार मैं आँखों में भा जाये वह तो अप्रतिम होता ही है भाभी । ”

मैं घर वापस आया । साहब की कार मुझे छोड़कर जा रही थी । मैं जाती हुई कार का उड़ता धुँआ देख रहा था मुझे जीवन में पहली बार महसूस हुआ विनम्रता और सादगी सबकी चाहत है । वही हर कविता , हर शायरी का शिल्पशास्त्र है । मैं नज़्म गढ़ने लगा । रातिर में सो गया । खबां में मुझे अपना स्वयंबर दिखा । मैं दरौपदी सदृश और सुरुचि - प्रतीक्षा कर्ण और अर्जुन सदृश देख रहीं तेल की कड़ाही में खौलती मछली और मैं डूबा दोनों के साँदर्य में सोचता इस मछली की आँख को कौन बेधे - एक मुश्किल फैसला ... मेरे लिये , मैं किसको चुनूँ । यह दुविधा उनके पास न थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 322

माँ सुबह आयी । मेरी आँखों को देखकर बोली “ का भवा नींद नाहीं आई आज का ? ”

मैं कुछ न बोला । उसके हाथ से चाय का कप ले लिया । वह भी अपनी गंगा वंदना में जाने की जल्दी में थी । मैंने मन में ही कहा “ अनुराग को इश्क़ हो रहा ? ”

पर किससे ? यह नहीं पता । शायद उम्र है जो खींच रही बरबस एक आकर्षण की ओर । मैं चाय पीते - पीते तुलना करने लगा .. प्रतीक्षा बनाम सुरुचि .. एक का कढ़ थोड़ा लंबा , गौर वर्ण, नाक थोड़ा कम तीक्ष्ण , आँख बड़ी.. दूसरी कद में उससे कम , नाक तीक्ष्ण, रंग उसकी तुलना में कम श्वेत पर आँख में एक अलग रौब , बोलचाल में सरस्वती का वरदान ... दोनों का दुपट्टा सँभालने ने का ढंग अपना अलग- अलग ढंग, सुरुचि के बड़े - बड़े कुँडल हवा के साथ हौले - हौले संवाद करते हुये, प्रतीक्षा की नाक की कील ... माथे की बिंदी .. , सुरुचि का हर थोड़ी देर में बालों को हाथ से पीछे करना मैं थोड़ी देर सोचने लगा .. रौशनी मुहाने से चलकर मेरे घराँदे तक आ चुकी थी .. मैं उस रौशनी में सरोबार था ... एक फ़ैसला जीवन का होना चाह रहा था और शायद नियति मुझे उस ओर ले जा रही थी । पर न तो मैं सुरुचि को जानता था और न ही प्रतीक्षा को । वह तो मुझे जो भी जानती थी वह समाचार पत्रों के माध्यम से जानती थी । प्रतीक्षा लाल बत्ती की कार और अर्दली के साथ इंटरव्यू की तैयारी के लिये मेरी कोचिंग में आती थी । उसकी लाल बत्ती की कार कौतूहल का प्रश्न थी और मेरे छात्रों की सफलता के लिये भूख बढ़ा देती थी । वह आपस में इस पर बात भी करते थे ।

दिनेश - “ यह लाल बत्ती कार में क्यों लगायी जाती है ? ”

अशोक - “ डराने के लिये । ”

दिनेश - “ किसको डराया जाता है ? ”

अशोक - “ गरीब मजलूम जनता को । ”

दिनेश - “ क्यों डराया जाता है ? ”

अशोक - “ इस नौकरी का मूल काम है डराना । ”

दिनेश - “ क्या समाज के लिये कार्य करना इस नौकरी का काम नहीं है ? ”

अशोक - “ दो तरह लोग के चयनित होते हैं एक बेवकूफ आपकी तरह समाज .. समाज करते रहो और एक हम लोगों की तरह मौज करो और डराओ । ”

दिनेश - “ तुम डराओगे ? ”

अशोक - “ डराओगे ?? भविष्य काल .. चालू कर दिया है डराना .., नौकरी करते ही पहिला काम गाँव के तपे हुये दुई - चार को वहीं गाँव के पीपल के पेड़ में बांधकर मरवायेंगे और सामने कुर्सी पर बैठकर कहेंगे ज्यादा न मारो दर्द होता है ।”

दिनेश - “ आईएस इसीलिये बन रहे हो ? ”

अशोक - “ और क्या यह तो मूल काम है जीवन का । इतना जान दे रहे क्या समाज सेवा के लिये ? समाज गया तेल लेने , अपना भविष्य बनाओ , समाज में डर की स्थापना करो । डर के बगैर व्यवस्था नहीं चलती । चलो मैडम की लाल बत्ती आ गयी । सर भी बहुत सही पढ़ाते हैं मैडम के आने पर । एक बात बता दें ? ”

दिनेश - “ बताओ । ”

अशोक - “ सर का मैडम प्रतीक्षा पर दिल आ गया है । यह आशिक बन चुके हैं ।”

दिनेश - “ कैसे पता ? ”

अशोक - “ मैं उड़ती चिड़िया के पंख पहचान भी लेता हूँ और गिन भी लेता हूँ । चलो अच्छा है हम सब साथ सेलेक्शन पायेंगे एकेडमी में मन लगा रहेगा । बस यह अंतिम द्वार टूट जाये । सर का इश्क यहीं से चालू हो गया ।”

दिनेश - “ हम तो सुन रहे सुरुचि से विवाह की बात चल रही । ”

अशोक - “ ऐ जेतना भुईं के ऊपर हयेन ओतनै भुईं के नीचे । एनकर माया किसी के बस के बात नहीं । गिरगिटान सात रंग बदलता है एनके पास रंग की कोई कमी नहीं । चलो आ गये , हमको क्या अपना काम निकालो और निकल लो । ”

आज के दिन हॉबी पर विमर्श था । हम 23 की हॉबी तकरीबन एक थी पेड़ लगाना और हिंदी उपन्यास पढ़ना । जो इस कोचिंग के बाहर के थे उनकी हॉबी को लेकर थोड़ी समस्या थी । हमारी समस्या तो थी नहीं । मैंने एक हॉबी और बताया कि एक हॉबी और बताना अगर पूछा गया रामचरितमानस मानस पढ़ना और गीता का मंथन करना । अशोक ने कहा , “ सर मैं कह दूँगा मैं बेहया का पेड़ लगाता हूँ । उनको समझ आयेगा नहीं यह तो तय है , तब बेहया के बारे में बताऊँगा । सर इसमें समय अच्छा कट जायेगा । सर थोड़ा राम पर चर्चा हो जाये मैं रामचरितमानस वाला मसाला पहले ही गिरा देता हूँ । जैसे ही हॉबी पर बात आयेगी कह दूँगा राम वंदना हॉबी है हमारी । ”

मैं - “ हॉबी पर बात करना सबसे ज़रूरी है ... ”

प्रतीक्षा ने बीच में ही कहा , “

मेरी हॉबी पेन्टिंग है उस पर क्या करें “

अशोक - “ सर थोड़ा पेंटिंग का इतिहास समझना ज़रूरी है । उसकी एक क्लॉस हो जाये । ”

मैंने कहा , कुछ विषय को हम लोग एक बार फिर विमर्श कर लेते हैं और आज की क्लॉस आरंभ हो गयी ।

यह बहुत ही सुहावना दौर था । हर दिन मिलते थे । प्रतीक्षा भी आती थी । वह अक्सर जाते समय कुछ देर मुझसे बात करती थी । एकाध बार मैं उसके साथ उसके घर भी गया । एक बार उसने मुझसे साथ में सिविल लाइंस चलने को कहा । उसने मुझसे पूछा , “ दिल्ली में कहाँ रुकाएगे ? ”

मैं - “ मेरी मौसी रहती है मैं वहाँ रुकूँगा । ”

उसने आगे कहा , “ तुमने मुझसे कुछ कहा नहीं । मैं हर दिन इस इंतज़ार में जाती थी कि आज तुम कुछ कहोगे पर निराश हो जाती थी । क्या कोई दुविधा है ? ”

मैं - “ हाँ । ”

प्रतीक्षा - “ क्या ? ”

मैं - “ परिवेश की । ”

प्रतीक्षा - “ कैसा परिवेश ? ”

मैंने जैसे ही इस बात को बताने की कोशिश की उसने कहा यह समस्या मेरी है न कि तुम्हारी । मेरी समस्या पर परेशान न हो । सकारात्मक सोचना ।

मैं - “ घर में पूछा ? घर में बताया यह जो मुझसे कह रही ? ”

प्रतीक्षा - “ घर में क्या बताना । वह तो एक रीति - रिवाजों के तहत प्रस्ताव दे ही आये हैं । मेरे पिताजी को और कोई लड़का पसंद ही नहीं आ रहा जबसे तुमको उन्होंने विमोचन में सुना है । जब तुम चुनाव लड़ रहे थे तब भैया ने कुछ और लड़कों के बारे में बात करनी चाही पर पिताजी ने कहा अनुराग पर ही कोशिश करो वह जहाँ भी जायेगा नायाब ही करेगा । ”

मैं हतप्रभ सुनता रहा । मुझे यक़ीन नहीं आ रहा था जो प्रतीक्षा कह रही थी । मैं उसको ध्यान से देख रहा था एकाएक आँख मिली । मैंने आँखें हटा ली । उसने कहा , “ शर्माओ मत मन भर के देख लो , जाँच लो । मेरा फ़ैसला हो चुका है अब फ़ैसला तुमको करना है । कुछ जानना चाहो तो पूछ लो । ”

फ़ैसला जो दिल कहे वही करना चाहे वह जो भी हो । यह एक बड़ा फ़ैसला है हम दोनों के लिये ।”

मैं क्या पूछता । मुझे कुछ समझ थी नहीं । मैं वैसे भी लड़कियों से बात करने में सहज मैं नहीं था । मैं वापस घर आया । कार जाने लगी और माँ बाहर आ गयी । वह मेरे इंतज़ार में टहलती ही रहती थी घर के अंदर -बाहर । उसने कहा, “ कहाँ से आवत हअ ? ”

मैंने कोई जवाब न दिया ।

“ तू प्रतीक्षा के साथ गअ रहअ ? ”

माँ - “ कैसे पता ? ”

माँ - “ जौन पूछी तौन बतावअ । ”

मैं - “ हाँ । ”

माँ - “ काहे । ”

मैं - “ काहे क्या मतलब ? ”

माँ - “ ई उचित बा ? थोड़ा ज़माना समझि के चलअ । तोहार एक - एक काम घर - परिवार - समाज में नज़ीर बनाये । तोहार एक बहिन बा । ओकरे संगे केऊ ऐसन जाये तब तू का करबअ ? ”

मैं - “ क्या करूँगा मतलब ? ”

माँ - “ मुन्ना हम इहीं शहर और इहीं समाज में हई । हमका पता का नाहीं बा तू का करबअ । तोहका बियाह के मन होई तअ हम कालि कै दई । पर ई सुरुचि - प्रतीक्षा के झूला न झूलअ । एक पर मन - चित्त स्थिर कै कअ फ़ैसला कै लअ । काल कौनौ और आई जाई तू लागअ उहू को तजबीजै । ई कौनौ वस्तु नाहीं बेरावत हअ । ई एक बड़ा फ़ैसला बा । हमका ई नाहीं पसंद बा कि बियाहे के पहिले लड़िका - लड़की टहरै और लड़की कहै हम बियाह करब । ओनकर बाप - भाई ई काम करै न कि ओ इ काम करै । ”

मैं कुछ न बोला । वह बात तो कुछ ग़लत कर नहीं रही थी । उसको बात करना आता था । उसने बहन का प्रश्न उठाकर मुझे संयत कर दिया था । बहन भी उम्र की दहलीज़ पर थी । उसको यह पता चलता ही था और एक ग़लत छवि मेरी बन सकती थी । माँ ने जाते - जाते एक चोट और कर दी ... “ मुन्ना लोगन के कहे से केऊ राम के नाहीं बनि जात नाहीं बहुत तपस्या कहे पड़त हअ राम बनै के इच्छा मात्र के मन में आवै से । ”

वह चली गयी अंदर मैं चला गया ऊपर कमरे में पर उसने मुझे अंदर तक हिला दिया था ।

मेरी कोचिंग तक़रीबन हो चुकी थी । मेरा दिल्ली जाने का दिन नज़दीक आ गया था । आंटी मेरी प्रतीक्षा बेसब्री से कर रही थी । वह शाम आ गयी , वहीं शाम एक साल पहले की शाम जब मैं घर से निकला था पिछले साल और माँ ने कहा था ... मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये । आज फिर भीड़ थी घर के सामने । मेरे मामा - मौसा - मामी - मौसी - मोहिता दीदी - राकेश जीजा जी और मेरा पूरा मुहल्ला था और साथ में मेरे विद्यार्थी और छात्र संघ के सहयोगी लोग । इस बार लोग स्टेशन तक जा रहे थे । कमिशनर साहब ने कार भेज दी थी । मेरा ओहदा और कद बढ़ चुका था । अब लोग मुझ पर दाँव लगाना चाह रहे थे । मैं रेस का मजबूत घोड़ा था । मैंने जैसे ही माँ के पाँव छुये वह रोने लगी और बोली ... “ मुन्ना सारा पुण्य तअ पिछलेन दाईं दै देहे हई अब हमरे पास बा का । एक साल में जौन कुछ पुण्य अर्जित केहे होई ऊ सब तोहसे लगि जाई । तोहार बहुत मन बा तोहार कुल लड़िका - लड़की चयनित होई जाई शहर के नाम रौशन होई , हम भगवान से प्रार्थना करब मुन्ना के इहौ इच्छा पूरी होई जाई । मुन्ना हम तोहे नाहीं जन्मे हई मात्र अपने बरे । ईश्वर तोहका सारी ताक्त देई जौन तू चाहत हआ करा । वह रोने लगी । उसने पूरी भीड़ को भावुक कर दिया । मैं पिछले साल की तरह फफक - फफक कर रोने लगा और यही कह पाया ... बहुत मुश्किल है मेरे लिये तेरी कसी कसौटी पर उतरना

माँ तेरा नाम लिखते ही मेरी क़लम धड़कनें लगती है । माँ समंदर फतह करना चाहता हूँ एक कश्ती के सहारे .. रात की तीरगी को ख़त्म करना चाहता हूँ जुगनू के सहारे ... तेरा मुझ पर इतना विश्वास है उस विश्वास के टूट जाने का भय हरदम सताता है मुझे ... और यही वह ताक्त है जो मुझे आगे ले जा रही ... एक आग अंदर जो जल रही उसका ईंधन तुझ से ही निकलता है जब तू कहती है .. तुझे मैंने अपने लिये नहीं जमाने के लिये जना है वह आग बड़वाग्नि बनकर धधकने लगती है ।

माँ ने मुन्ना कहकर मुझे गले से लगा लिया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 323

रेलवे स्टेशन पर नजारा ही इस साल अलग था । सिविल सेवा मेंस पास करने वालों की तादाद बढ़ चुकी थी । शहर एक अलग रौ में आ चुका था । मेरी रचनात्मक करान्ति अपने पूरे शबाब पर थी । मेरा सुरुर खुमार बनने को तैयार न था । हर ओर स्वघोषित क्लेक्टर ही क्लेक्टर ... बहुत से लोग आज जा रहे थे दिल्ली इंटरव्यू देने । अब इलाहाबाद के लड़के- लड़कियाँ

सलोथर बैकेती न किये तब क्या फ़ायदा इलाहाबादी होने का । आईएस तो कोई भी हो सकता है पर सलोथर बैकेती करके तो इलाहाबाद से ही होगा ..

“ क्रसम से भाई हम पढ़े नहीं थे जो सर ने कक्षा में बाँच दिया वहीं लिख मारे ... थोड़ा ईश्वर की कृपा है याददाश्त सही है जो एक बार सुन लिया वह उपट जाता है ।”

“ अच्छा बेटा तुम पढ़े नहीं .. हमार मुँह न खुलवाओ .. कीर्ति सिंह कह रही हम तो संजय के नोट्स से ही पढ़े । नोट्स बनाकर लड़कियों को दिया हमको हवा भी न दी । चोरी - चोरी पूरी पंचवर्षीय योजना पढ़ मारा और कह रहे हम पढ़े नहीं । हम तुम्हारे घर आये थे और ऊ छीलू इकोनॉमिक सर्वे लेकर घर के अंदर भाग गया था ।”

“ भाई क्रसम से हम तकदीर के धनी हैं बस यही है .. “

“ अच्छा ई बताओ सर का अगला नाटक क्या होगा ? “

“ मतलब ? “

“ सर को करना है नाटक .. यह अगर फ़िल्म में काम करते तब शहर को दूसरा अमिताभ बच्चन मिलता । इनके नाटक का कोई अंत नहीं ।”

अशोक - “ तुम लोग हो बेवकूफ । यह कोई नाटक नहीं है यह रणनीति है । यह इनके जीवन की रणनीति का भाग है । पूरे शहर को नचा रहे , जानते हो क्यों ? ”

“ क्यों? “

“ जाने दो रहने देते हैं । तुम लोग हल्ला कर दोगे । “

“ नहीं करेंगे । “

“ पक्का । “

“ दिनेश तुम बताओ सर की यह रणनीति है या नाटक ? “

“ इसमें नाटक क्या है ? “

“ देखो महत्वपूर्ण यह नहीं है कि सफलता प्राप्त की गयी महत्वपूर्ण यह है कि सफलता प्राप्त कैसे की गयी । अब यह कहना तो वस्तु स्थिति का सरलीकरण है कि हमने पूरे शहर को सफल करा दिया । 23 को पढ़ाया और पूरे शहर को इंटरव्यू समझाया । जो भी सेलेक्शन पायेगा यह रेलेंगे के मैंने चयनित कराया । पर हकीकत यह है कि जो हुआ अपने भाग्य से हुआ ।”

“ यार मेहनत तो की । पढ़ाया तो ।”

“ घंटा पढ़ाया । हमको बहुत कुछ आता था जो यह पढ़ाये ।”

“ तब तुम क्यों कलॉस करने आते थे ? ”

“ शाम को समय पास करना होता है । थोड़ा लड़कियाँ दिख जाती हैं । बस चले आते थे । ”

“ मतलब इनके पढ़ाने का कोई फ़ायदा नहीं हुआ ? ”

“ यह मैंने कब कहा ? मैं यह कह रहा इनके पढ़ाने से कुछ ख़ास न हुआ । हाँ थोड़ा- बहुत सहायता मिल गयी । उनका एक योगदान है जो मैं मानूँगा कि एक पियर ग्रुप बना दिया जो शहर में नहीं था । लेकिन अगर यह बकैती करते हैं सेलेक्शन के बाद कि मैंने पूरे शहर को सफल करा दिया तब यह बात ग़लत है । ”

“मतलब तुम कह रहे हो कि तुम स्वयम् हो रहे हो , इनका योगदान नगण्य है ? ”

“ बड़े बेवकूफ़ आदमी हो यार । कह तो रहा कि कुछ योगदान होगा पर पूरा शरेय अगर यह लेंगे तब ग़लत होगा । ”

“ यह तो कभी कहे नहीं कि मेरा शरेय है । ”

“ इंतज़ार करो परीक्षा के परिणाम का । ई जौन परपंच फैलायेंगे कि हर आदमी उसी परपंच में लुध्धा रहेगा । यह पूर्व जन्म के मारीच हैं यह बात एकदम तय है । कुँडली देख लो इनका नामराशि कुँडली से मारीच ही होगा । ”

“ सर का क्या परिणाम होगा ? ”

“ अरे यार ,इनका परिणाम गया तेल लेने अपना सोचो । यह तो एक नौकरी लिये हैं और दूसरे की नौकरी खा रहे । पता चला इस बार भी हो गये और फिर डरामा कि हम नहीं जायेंगे । दो आदमी की नौकरी खा गये और चेहरे पर शिकन नहीं । काल सवाल पूछेगा इनसे अंतिम दिन दो आदमी की नौकरी क्यों खायी । चलो अनामिका आ गयी है उससे समय पास करते हैं । लड़कियों का साहचर्य जीवन में ज़रूरी है । अब अपनी तक़दीर तो है नहीं कि सुरुचि- प्रतीक्षा पर डोरे डालें जो भाग्य में है उसी से काम चलायें । ”

दिनेश - “ सर तुमको बुला रहे हैं । ”

अशोक - “ मुझको ? ”

दिनेश - “ हाँ । ”

मैं - “ स्कॉने का इंतज़ाम सबका हो गया ? ”

अशोक - “ सर हो गया । चिंतन सर ने कह दिया था यूपी भवन । मैंने भी कमिश्नर साहब से अनुरोध कर दिया था । सर , कमिश्नर साहब आदमी तो

भले हैं ही और क्या पता हम लोग बारात लेकर चलें भाभी को ले आने । रेजिडेंट कमिश्नर ने साहब के साथ काम किया था । सर पूरा एक फ्लोर मिल गया है यूपी भवन में । सर, एक बात बतायें ?”

मैं “ क्या? ”

अशोक - “ सर, आपके नाम का बहुत प्रताप है । मैं इसी नाम का इस्तेमाल करके काम निकाल लेता हूँ । सर, एक काम और कर दें । ”

मैं “ क्या? ”

अशोक - “ चिंतन सर कह रहे कोई मोटा असामी आप के पास है दिल्ली में अहूजा । चिंतन सर कह रहे अनुराग का नाम लेकर चले जाना उसकी कार ले लेना इंटरव्यू के दिन के लिये । चिंतन सर कह रहे कि उसकी बिटिया से अनुराग की बहुत पटती है और उसकी कार खाली खड़ी है । ”

मैं “ करना क्या है मुझको, मैं तो मिला नहीं बहुत दिन से । ”

अशोक - “ आपको कुछ नहीं करना । करना मुझको है बस आपको बता रहा । मैं आपका नाम लेकर काम कर लूँगा, बाकी सारा जुगाड़ चिंतन सर ने समझा दिया है । ”

मैं - “ बहुत फ़राड़ हो तुम अशोक । ”

अशोक - “ नहीं सर बहुत नहीं है । आपकी तरह की माया सर नहीं आती । वह सीखना है । अब हम लोग चयनित हो जायें तब आप सिखाइये .. माया महाठगिनी हम जानी । ”

दरेन चल दी । लोग हवा में हाथ हिलाते रहे । दरेन अपने इंजन से कम लोगों के आत्मविश्वास से अधिक चल रही थी । दिल्ली हम सब पहुँच गये एक नये सवेरे के इंतज़ार में । मुझे पूसा रोड जाना था और बाकी सब यूपी भवन चले गये ।

मैं पूसा इंस्टीट्यूट के भीतर प्रवेश किया । सारी यादें मेरे मस्तिष्क में । एक बीता हुआ वर्ष बरसात की तरह मेरे मस्तिष्क की ज़मीं पर बरसने लगा । लगा कोई मुझे आवाज़ दे रहा, “ अनुराग .. अनुराग .. ” । यह वह अनुराग था जो यहाँ से जाकर भी यहीं रहता था । वह मेरे सामने खड़ा होकर कह रहा ... मैं पिछले साल आया था .. तुम चले गये और मैं यहीं रह गया । तुम बदल गये हो । तुम अब वह न रहे जो मैं हूँ । मेरी मासूमियत तुम्हारे पास अब नहीं है । वह भविष्य के प्रति आग्रह अब बदल गया है । आँखों की शबनम को देखो तुम उसकी सीरत अब वह नहीं है । वाकई अब मैं वह अनुराग नहीं रहा जो पिछले साल था । मैंने आंटी के बँगले का गेट खोला । वह दौड़ती हुई बाहर आई और बोली ” अनुराग... बहुत इंतज़ार कराया तुमने । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 324

आँटी भावुक थी । उसने अपने भीगे नयनों से कहा , “ अनुराग , नयन तो भीगते रहते हैं पर खुशी में भीगने का अवसर कम ही आता है । वह पल बहुत ही दैवीय होता है जब नयन संभाषण करें और प्रसन्नता की अतिरेकता हो जाये । नयनों की भाषा का सम्प्रेषण गले को रोक दे कुछ कहने से और रुँधा हुआ गला कहे मेरी क्या ज़रूरत जब अश्क ही तहरीर लिख रहे हों । अनुराग कई बार मैं तुम्हारा नाम लिखती हूँ काग़ज पर । मुझे तुम्हारी खूबियों से इश्क हो गया है । माँ का बेटे से इश्क नायाब होता है जिसे कम लिखा है प्रेम कथाओं को लिखने वालों ने । तुम लिखना मेरा भी , उर्मिला का भी ।”

मैं - “ आँटी आपके वात्सल्य पर लिखना ज्यादा आसान है माँ पर बहुत मुश्किल है । वह जब देखो मेरे महामानव बनी छवि को गंगा के कछारों में पुराने कपड़ों की तरह सूत देती है ।”

आँटी हँसने लगी । उसने कहा वह बचपन से ही ऐसी थी । गाँव मे अक्सर लड़कियाँ लड़कों से डरती हैं पर उर्मिला से सारे लड़के डरते थे । मजाल है तुम्हारे नाना बाग के पेड़ पर कोई चढ़ जाये वह घर तक दौड़ाकर मारती थी ।

तुम्हारे अध्यापक बनने का एक फायदा मुझकों भी हुआ तुम अपने छात्रों का इंटरव्यू दिलवाने आ गये हो । तुम्हारा इंटरव्यू तो कुछ दिन बाद है पर अपने छात्रों के इंटरव्यू के लिये तुम पहले आ गये हो । तुम्हारे कुल कितने छात्र इंटरव्यू दे रहे ? ”

“आँटी मेंस के लिये पढ़ाया तो मैंने टेईस को था पर अब तो पूरा शहर ही मेरा छात्र है । इंटरव्यू के लिये तो तक़रीबन सबको ही पढ़ाया । आँटी, ऋषभ-शालिनी का क्या हाल है ? ”

आँटी - “ मुझसे क्यों पूछ रहे हो ? मैंने सुना है तुम शालिनी के बहुत नज़दीक हो । भाई आप संपदा के एक तिहाई मालिक हो । आप उन सबके जीवन के साझीदार हो । मुझसे ज्यादा चिट्ठी आप उन लोगों को लिखते हो । मुझे तुमको क्या बताना ? उल्टे तुम मुझे बताओ क्या चल रहा उनके जीवन में । सुना है तुम आजकल सबको राय देते हो । बड़े आदमी हो गये हो , पिछले साल वाले अनुराग तो रहे नहीं । इतने बड़े विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष हो , वह भी कोई ऐसे - वैसे अध्यक्ष तो हो नहीं सत्ता दल की ताक़त को परास्त करके बने हो , पूरा शहर अनुराग - अनुराग कर रहा , अब ऐसे महामानव को हमारे ऐसी गरीब बेसहारा क्या सूचना दे सकती है ? ”

यह आंटी नहीं बोल रही थी उसके अंदर का दर्द छलक रहा था । उसके जीवन का एकाकीपन बाँहें फैलाये कह रहा था तुमने भी मेरे अकेलेपन में साथ न दिया । मैंने पिछले कुछ महीनों की अपनी व्यस्तताओं में आंटी को पत्र कम लिखा । आंटी की शिकायत बहुत मुखर थी और मुझे अंदर तक बेध गयी । मैं उसके चेहरे की ओर देख रहा था जिसमें सौम्यता ही सौम्यता थी ...

गोरा रंग , सूनी माँग , सूना माथा , माथे पर तेज , नाक में एक कील , गले में काले रंग का धागा , श्वेत अधोवस्त्र, होंठ प्राकृतिक लालिमा लिये हुये, बड़ी - बड़ी बोलती आँखे , ऊँचा कद , काले- सफेद बालों की खिचड़ी....

“ अनुराग , क्या देख रहे हो ?”

मैं - “ आंटी आप बहुत सुंदर हो । मैं कल्पित कर रहा आप कितने सुंदर लगे होंगे जब आप दुल्हन बने होंगे ।”

“ अनुराग , वह सब समय बीत गया । तुम्हारी माँ भी कितनी सुंदर लगती है । उसकी आँखों का उभार देखो जैसे बरबस बोलना चाह रही हो । अब यह सौन्दर्य का लेखन - सराहना करना हम लोगों के नसीब में कहा था । कौन कदर करता था इसकी । हम तो बेकदरी में ही रह गये , जीवन की आपाधापी में ही भागते रहे । चलो जो नसीब में था वह मिला । क्या गिला - शिकवा करना जीवन के इस मोड़ पर । चाय उबल रही होगी । मैं बात- चीत में भूल ही गयी । नाश्ता क्या करोगे ? ”

मैं - “ कुछ भी कर लूँगा ।”

आंटी ने चाय पीते - पीते पूछा, “ अनुराग , तुम्हारे विवाह का क्या हो रहा है ? कुछ बात कहीं चल रही है ? ऋषभ का विवाह तो ऐसे ही हो गया । विवाह के संस्कारों का सुख न मिला । तुम्हारे विवाह में मैं वह सब भोगूँगी जो मैं न भोग पायी परिस्थितियों से विवश होकर । तुम्हारा विवाह बहुत धूमधाम से होगा , राम के विवाह की तरह । शालिनी - ऋषभ तो रहेंगे ही आहूजा साहब की पत्नी भी कह रहा थीं अनुराग भैया के विवाह में हम भी चलेंगे । ”

मैं - “ आंटी , अभी तो कुछ हुआ नहीं । माँ भी कहती रहती है । पिताजी देख रहे हैं लोगों को ।”

आंटी - “ उर्मिला बड़ा लिखती थी कमिशनर साहब - कमिशनर साहब .. उनकी बहन भी थी एक प्रत्याशी । उस पर क्या हुआ ? ”

मैं “ आंटी , वह भी इंटरव्यू दे रही है इस बार । मुझसे पढ़ने इलाहाबाद आयी थी । मेरी छात्रा बन चुकी है वह भी ।”

आंटी - “ अनुराग , बहुत जलवे हैं तुम्हारे । जिसको देखो वही तुम्हारा मुरीद । अब तुम्हारे क्लॉस में आ गयी पढ़ने तब तो तुमसे प्रेम कर ही बैठी होगी । ”

मैं - “ वह क्यों आंटी ? ”

आंटी - “ भाषा की जादूगरी तुमने बिखेरी ही होगी । ज्ञान तो है ही । पिता-भाई विवाह का प्रस्ताव लेकर गये ही हैं । कुछ कहा नहीं तुमने या उसने एक-दूसरे से ? ”

मैं सफेद झूठ बोल गया ... “ नहीं ... । कहा तो कुछ नहीं उसने या मैंने .. ”

आंटी ने कुछ न कहा पर अनुभवी आँखें मेरे चेहरे को देख रही थीं ।

आंटी ने नाश्ते के बाद कहा , “ अनुराग , ऋषभ की कार खड़ी है पर तुमको चलानी आती नहीं है । मैं कोई डराइवर कर देती हूँ मिल जायेगा पूसा कैम्पस में । ”

मैं - “ नहीं आंटी । उसकी कोई ज़रूरत नहीं मुझे जाना ही कहाँ है । आटो मिल जाते हैं काम चल जायेगा । ”

नाश्ता किया । सारे छात्रों का इंटरव्यू का दिन देखा जो मैंने चार्ट में बनाया था । सबसे पहले इंटरव्यू प्रतीक्षा का ही था । उसका इंटरव्यू कल था । मैं आज उसके इंटरव्यू के ही कारण आया था नहीं तो एक-दो दिन बाद आता । प्रतीक्षा ने अनुरोध किया था कि इंटरव्यू के पहले की शाम को सेंट स्टीफेन्स आना और अगले दिन इंटरव्यू के समय ज़रूर आना , तुम्हारे आने से मुझे थोड़ा ढाढ़स होगा । उसने यह भी बताया था कि दोनों भाई और भाभी भी इंटरव्यू के दिन आ रहे हैं । मैं शाम को तैयार होने लगा । आंटी ने पूछा कहाँ जा रहे हो । मैंने झूठ बोला कि मैं राजीव सिंह से मिलने दिल्ली विश्वविद्यालय जा रहा । मैंने जैसे ही यह बोला एकाएक मन में ख्याल आ गया कि कहीं आंटी न कह दे मैं भी चलूँगी और वही हुआ । आंटी ने कहा , “ मैं भी चलूँ क्या? क्या करूँगी मैं यहाँ बैठे - बैठे । ”

मैं कुछ देर सोच में पड़ गया और कहा , “ चलो आंटी पर समय लगेगा । वहाँ लोग इंटरव्यू की बात करेंगे , आर बोर तो नहीं हो जाओगे । ”

आंटी - “ हाँ यह बात तो है । कब तक वापस आओगे ? ”

मेरी जान में जान आयी । मैंने कहा , “ जल्दी आने की कशिश करूँगा । ”

मैं घर से बाहर निकल रहा था आंटी की आवाज़ आयी , “ अनुराग , बहुत देर मत करना । फिर कभी चले जाना , आज जल्दी आ जाना । ”

“ ठीक है आंटी मैं जल्दी आ जाऊँगा । ”

यह कहते मैं पूसा के बाहर निकला और आटो पकड़कर सेंट स्टीफेन्स पहुँच गया । सेंट स्टीफेन्स अपने आप में जितना भव्य था उससे ज़्यादा भव्यता

उसके नाम की आभा बिखेर देती है । यह सोचते ही कि देश के सबसे प्रतिभाशाली लोगों का एक वर्ग यहाँ पढ़ता है एक अतिशय सम्मान की वृद्धि हो जाती है । मैंने बाहर सिक्योरिटी पर प्रतीक्षा का नाम बताया और कहा कि बता दो अनुराग शर्मा मिलने आये हैं । वह थोड़ी ही देर में भागती हुई आ गयी । उसने आते ही कहा , “ मैं इंतज़ार कर रही थी तुम्हारा । मैं बार- बार घड़ी देख रही थी । ”

मैं - “ आंटी से मैं बहुत दिन बाद मिला । उससे बात करने में समय निकल गया । बताओ क्या मदद चाहिये ? सब पढ़ तो लिया ही होगा । अब कुछ खास फ़र्क़ नहीं पड़ेगा पढ़ने का । आप एक सप्ताह के समाचार पत्र को फिर से देख लो । आज और कल का विशेष रूप से , इससे सवाल कई बार पूछ लिये जाते हैं । मैंने एक सप्ताह के समाचार पत्रों की पूरी लिस्ट बनाई थी । वह लिस्ट उसको दे दी । वह लिस्ट लेकर वह देखने लगी । उसके देखने से ही लग रहा था उसका मन लिस्ट देखने में नहीं लग रहा था । वह मुझे बगल के केंटीन पर ले गयी । केंटीन वाले जानते ही हैं छात्र- छात्राओं को । वह उनके खाने की रुचि भी जानते हैं । केंटीन वाले ने कहा , “ मैडम अंडा करी बनायें ? ”

जैसे ही केंटीन वाले ने यह कहा पहला ही स्वाल मेरे मस्तिष्क में ... ओहो यह तो अमिषहारी है । मन में भाव उभर आया उर्मिला शर्मा अब क्या होगा तेरे चौके - चूल्हे का ? पूरी ज़िंदगी चौका - चूल्हा शाकाहारी चीजों से लबालब रहा अब चौके के स्वाद बदलने के दिन आ रहे । मन में दूसरा स्वाल आया यह तो रेस हारती दिख रही । बगैर झूठ बोले यह तो उर्मिला शर्मा के सामराज्य में प्रवेश ही नहीं कर सकती ।

प्रतीक्षा- “ अंडा खाते हो ? ”

मैं - “ नहीं । ”

प्रतीक्षा- “ कभी नहीं खाया ? ”

मैं - “ नहीं । तुम कबसे खा रही हो ? मेरा मतलब बचपन से खा रही ? ”

प्रतीक्षा- “ नहीं । यहाँ दिल्ली आकर शुरू किया । हम लोगों के घर में तो कोई खाता नहीं । मैं भी नहीं खाती थी पर दिल्ली आकर मेस के उबाऊ खाने से मुक्ति के नाम पर यही एक विकल्प मिला । तुम क्या खाओगे ? ”

मैं - “ चाय पी लूँगा । आपको जो खाना हो खा लो । ”

प्रतीक्षा- “ कुछ तो खा लो । बंद - मक्खन चलेगा । ”

मैं - “ ठीक है । ”

बंद - मक्खन खाया , चाय पी कुछ देर बाद प्रतीक्षा से कहा मैं चलता हूँ ।

“ अभी रुको थोड़ी देर , क्या करोगे जाकर ?”

मन तो मेरा भी नहीं था जाने का । मैं उसके साथ दिल्ली विश्वविद्यालय के पास की सड़कों पर घूमता रहा । वहाँ एक खुला परिवेश था इलाहाबाद से एकदम अलग , लड़के- लड़कियाँ साथ - साथ घूम रहे थे । लड़कियाँ लड़कों के पीछे मोटरसाइकिल पर बैठी थीं । मैंने ऐसा दृश्य इलाहाबाद में कभी देखा ही न था । साँझ होने लग गयी । कहीं पहाड़ों पर बफ्फ जमने लगी होगी , चीड़ और देवदार के धने जंगलों में पानी की आवाज़ कल- कल करती हुई मट्टिम सा शोर कर रही पर न तो कोई देख रहा पहाड़ों पर जमती बफ्फ को और न ही पानी के फिसलन को । उसी तरह एक शोर था मेरे और प्रतीक्षा की धड़कनों में पिघल रही थी बफ्फ अंदर और कुछ कहने को बेताब , पर हम बेखबर न थे शोर से । प्रतीक्षा नीली जींस - सफेद टी शर्ट कानों में बुंदे नाक खाली माथे पर बिंदी , होंठों पर हल्की लाली लपेटे मेरे बगल में चल रही थी । उसने चलते - चलते पूछा , “ अनुराग एक बात पूछूँ मैं ? ”

“ ज़रूर । ”

“ कभी कोई तुम्हारे नज़दीक आया ? ”

मैं - “ हमारे शहर में एक बन्दिश हैं । धड़कनों को धड़कने की आज़ादी है पर कहने की आज़ादी नहीं है । ”

प्रतीक्षा- “ मेरा सवाल दूसरा है । ”

मैं - “ क्या ? ”

प्रतीक्षा- “ कोई तुम्हारे नज़दीक कभी आया । कभी तुमने किसी के रूप - मेधा को सराहा ”

मैं - “ मेधा को तो बहुत सराहा पर रूप - मेधा को न सराहा । ”

प्रतीक्षा- “ जो तुम लिखते हो इतनी इशिक्याना शायरी उसकी कोई तो परेण्य होगी ? ”

मैं - “ ऐसी कोई परेण्य तो है नहीं जिसे साकार खड़ा कर सकूँ । अब मैं अपने किस ख्वाब का नाम बता दूँ , किसे ज़माने के सामने के सामने खड़ा कर दूँ और कह दूँ यह है हक्कदार मेरे नज़्मों की । ”

प्रतीक्षा- “ खुशक्रिस्मती होगी मेरी अगर किसी ऐसे ही बेनाम ख्वाब पर लिखी नज़्म तुम मुझे सुना दो । ”

“जब मौसम के सफेद बालों में

उसका प्यार पहाड़ों की चोटी की तरह

पुकारे मुझको दूर से
मेरे ख्यालों की खुशबू मुझको आळादित करे
ख्याब मेरी आँखों में चढ़कर बोले
छोड़ आसरा उस बेवफ़ा नींद का
समेट उसको अपनी बाँहों में
आज की रात सुबह की दस्तक से न जायेगी
देख चाँद को उफ़क पर रहकर भी आशियाना किसी झील में ही ढूँढ़ता है
जिस्म से जब रुह कहने लगे
तूने एक नज्म का वादा मुझसे किया था

तब एक नज्म गढ़ना चाहता हूँ
नब्ज़ों के स्पंदन को देखते हुये
उसके लिये एक नज्म गढ़ना चाहता हूँ । ”

“यह कब लिखी ? ”

“ अभी । ”

“ किसके लिये लिखी ? ”

मैं चुप था । मैं कुछ न बोला । प्रतीक्षा ने कहा , “ अनुराग तुमको जानना
एक सज्जा है । तुमको जानने के बाद चाहतें सिमट जाती हैं । वह सिमटी हुई
चारदीवारियों के बाहर जाना नहीं चाहती थीं । एक डर हमेशा रहता है , कहीं
अगर वह न मिला तब ? मुन्तशिर हो जाती हूँ मैं और वह हर नगामा जिसमें दर्द
होता है लगता है यह मेरे लिये ही गाया गया है । यह दर्द ही मुझे मिलेगा कभी
अगर तुम न मिले । ”

मैं आवाक प्रतीक्षा को देखने लगा । मुझे यकीन नहीं आ रहा था इस पल पर
। कहीं यह कोई ख्याब तो नहीं ।

मैं प्रतीक्षा को देख रहा था । उसकी नज़रें ऊपर उठी । मैंने नज़रें हटा लीं । उसने कहा , “ अनुराग तुम कुछ जानना चाहते हो मेरे बारे में ? अगर हाँ तो तो पूछ लो । तुम न तो कभी कुछ कहते हो न कभी कुछ पूछते हो । तुम्हारी शब्दों की बाज़ीगरी कभी हमारे वार्तालाप के दरम्यान आयी नहीं । हो सकता है जो भावनायें मेरे भीतर हिलोरे ले रही हैं वह अभी तुममें तरंगित न हो रही हैं ।

अनुराग , लोगों ने जीवन की सार्थकता के कई मायने बताये हैं । बताओ एक जीवन सार्थक कब होता है ? तुम तो मुझसे से ज्यादा समझदार हो और तुमने मुझसे अधिक दुनिया देखी है । पर भारतीय परिवेश में अभी भी एक स्त्री के लिये एक उचित व्यक्ति का मिलना उसके घर वाले एक सार्थक जीवन की ओर बढ़ता हुआ कदम मानते हैं । इसका कारण यह भी हो सकता है कि अभी भी यह मान्यता है कि एक स्त्री पुरुष पर आश्रित हैं चाहे वह कामकाजी ही क्यों न हो ।

मैं “ यह एक पुरानी अवधारणा है । अब समय बदल रहा है । जीवन में सार्थकता के मायने बदल रहे । मैं कभी सोचता था सिविल सेवा में सफल होकर एक सम्मानजनक नौकरी प्राप्त कर लेना एक जीवन की सार्थकता है पर जब मैं अशोक तिरपाठी सर से पिछले साल मिला तब मुझे पता लगा नौकरियों के भीतर का सच और एहसास हुआ कि जिसके पीछे हम ताउमर भागते रहे वह एक सराब है । इस मृग मरीचिका के पीछे भागने से कोई जीवन की सार्थकता प्राप्त नहीं हो सकती , कुछ और करना होगा एक सार्थक जीवन के लिये और वहीं से वह रचनात्मक क्रान्ति का विचार पनपा जिसने मुझे बदल दिया । एक बात बताओगी प्रतीक्षा ! ”

प्रतीक्षा- “ ज़रूर । ”

मैं - “ यह तुम्हारे भैया एवम् पिता के फ़ैसले से तुम्हारा फ़ैसला कब हो गया ? ”

प्रतीक्षा- “ समय के प्रवाह के साथ । ”

मैं - “ कुछ समझा नहीं । ”

प्रतीक्षा - “ अनुराग एक बात बहुत ही ईमानदारी की है कि सेंट स्टीफ़न्स की लड़की एक हिंदी माध्यम के व्यक्ति से विवाह करेगी यह बहुत ही असंभव सी बात अगर न भी हो तब भी बहुत मुश्किल तो है ही । मेरे घर में तुम्हारे बारे में जब बात चली तब मैं बिल्कुल ही परिदृश्य के बाहर थी । भैया के किताब के विमोचन के समय पिताजी ने यह फ़ैसला किया कि इस प्रस्ताव को गंभीरता से लिया जाये । शायद तुम्हारी प्रतिभा तुम्हारे परिवेश और भाषा की तथाकथित अपंगता पर भारी पड़ी । पर मैं अगर कहूँ कि तुम मेरे ख्वाबों के शहज़ादे बने जब तुमने अपनी रचनात्मक क्रान्ति का आग़ाज़ किया । उस समय समाचार पत्रों ने लिखा और बीबीसी की न्यूज़ ने तुम्हारी ख्याति में काफ़ी अभिवृद्धि की । दिल्ली विश्वविद्यालय में भी तक़रीबन सब तुमको जानते ही हैं । ”

मैं “ प्रतीक्षा, मुझे अंगरेज़ी बिल्कुल नहीं आती । मैं अंगरेज़ी बोल सकता ही नहीं । मैं लिख उतना ही सकता हूँ जितने में मैं सामान्य अंगरेज़ी का पर्चा हल करके पास कर सकूँ । आप सोचो कैसे यह चल सकेगा ? आप नफ़ासत से भरी हो और मैं निरा लौधर । ”

प्रतीक्षा- “ यह लौधर क्या होता है ? ”

मैं “ अभी आप एक लौधर शब्द से ही परेशान हो गयी पर मेरी शब्दावली ऐसी ही है - सलोथर, परपंच, लौधर, लंतरानी, बुडबक .. तुमको मुझे किसी के सामने साथ में उपस्थित करने में दिक्कत होगी । जीवन के वास्तविक प्रश्नों का उत्तर हकीकत से देना चाहिये न कि भावनाओं से । तुम्हारी ऐसी ज़हीन-नेक - संजीदा लड़की को एक आधुनिकता से सरोबार लॉर्ड मैकाले के सिद्धांतों को पीता हुआ व्यक्ति चाहिये । हम लोग तो राष्ट्रभाषा का गौरव गान करते रहते हैं क्योंकि उसी में हमारा स्वार्थ है । उसी के सहारे जीवन में कुछ ख्वाबों से रुबरू हो पाये नहीं तो समाज और व्यवस्था ने हमको ख्वाबों को देखने का हक्क भी नहीं दिया था । तुम यह कहोगी कि यह हीन भावना की ग्रन्थि क्यों आप लेकर ज़िंदा हो । मैं अब क्या करूँ अगर हीन भावना है तो है । मैंने तो नहीं कहा था हीन भावना आ जा मैं तेरा इंतज़ार कर रहा । यह इसी समाज ने दी है और इस समाज में उन लोगों ने ज्यादा दी है जो खुद हीनभावना से ग्रस्त हैं । तुमसे विवाह करके कोई भी धन्यता को प्राप्त करेगा पर मैं जानता हूँ वह धन्यता मेरे लिये चिरस्थायी नहीं होगी । मैं बहुत चाहता हूँ तुमसे वह कहना जो हर लड़का इस उम्र में कहना चाहेगा तुम्हारी ऐसी नायाब लड़की के प्रस्ताव पर । लेकिन जैसे ही मैं हकीकत की अपनी ज़मीन देखता हूँ मैं अपने ख्वाबों को संजीदा कर देता हूँ । मैं यह गुनाहे- अस्ल नहीं कर सकता कि तुम बग़ैर किसी अज़ली- ख़ता के सलीबों पर चढ़ा दी जाओ । एक अनमेल विवाह जीवन में बहुत पीड़ा देता है और क्यों जानबूझकर पीड़ा को आमन्त्रण दिया जाये । प्रतीक्षा ऐसा न हो जाये कि हर कलेंडर की सुबह हम यह कहें कि फ़ैसला ग़लत हो गया । एक हकीकत यह भी है आसान नहीं है किसी का मेरे साथ निभा पाना । मेरे अंदर हीन भावना भी है , अहम भी है । रिश्ता बाँसुरी की धुन से आरंभ हो पर अंगुलियाँ कोई साज निकाल न पायें ऐसा जीवन अगर भवितव्य दिख रहा हो तब सलाबत अपने ही साथ क्यों की जाये । मैं लाख तुम्हारा ख्वाब देखना चाहूँ पर जब तुम ख्वाबों की शहज़ादी से प्रणय- बंधन की ओर बढ़ती हो एक डर समाने लगता है । तुम कह सकती हो यह एक दिमाग़ का फ़ितूर है , हो सकता है हो भी पर जो सच है साथ मेरे मैं वह बयाँ कर रहा । ”

एक सन्नाटा छा गया । प्रतीक्षा को इस जवाब की उम्मीद न थी । वह समझ ही न पा रही थी कि अब वह क्या कहे , थोड़ी देर की नीरवता के बाद वह

बोली ,

“ अनुराग , मेरी समस्याओं को देखकर आप फ़ैसला मत करो । आप अपनी सहूलियत देखकर फ़ैसला करो । मैंने कह दिया जो मुझे कहना था । तुम बहुत ही समझदार हो । तुम जिसको भी मिलोगे वह बहुत ही सौभाग्यशाली होगा , अब हम एक-दूसरे के भाग्य में हैं कि नहीं यह वक्त ही जानता है ।”

उसने पैदल चलते - चलते बात बदल दी , उसने पूछा तुम्हारा इंटरव्यू कब है , पहले पहर में है या दूसरे पहर में , तुम्हारे कितने छात्रों की होने की संभावना दिख रही , मेरा हो जायेगा कि नहीं ?

हम जुबली हॉल - गवायर हॉल से होते हुये पता नहीं कितनी दूर निकल आये थे । प्रतीक्षा ने कहा , “ जाने की जल्दी है क्या ? ”

मैं - “ मुझे तो नहीं है पर तुमको पढ़ना होगा । ”

प्रतीक्षा - “ मैंने सब कुछ भाग्य भरोसे छोड़ दिया है , यह इंटरव्यू भी । अब जो होना होगा वह होगा । तुम्हारे साथ पता नहीं आगे वक्त मिले न मिले चलो कुछ और वक्त गुज़ारते हैं । मैं और प्रतीक्षा वहीं सड़क के किनारे की एक बेंच पर बैठ गये । लोग सड़क पर आ जा रहे थे । मोटरसाइकिलों दौड़ रही थीं । कई मोटरसाइकिलों पर लड़कियाँ पीछे की सीट से आगे चलाने वाले लड़के पर लदी ऐसी थीं , यह सब बहुत ही नया था मेरे लिये । हम दोनों बैठे थे , कोई कुछ बात नहीं कर रहा था । मेरे पास बात करने को कुछ था नहीं । वह समझ नहीं पा रही थी क्या कहे पर दोनों कुछ कहना ज़रूर चाह रहे थे । मेरे बगल की ही बेंच पर एक जोड़ा बैठा था । सिगरेट का धुँआ हवा में उड़ रहा था । वह दोनों एक ही सिगरेट बारी - बारी से पी रहे थे । मैंने कौतूहल से उस ओर देखा । प्रतीक्षा ने पूछा , “ तुमने सिगरेट पीती लड़कियाँ कभी देखी नहीं है क्या ? ”

मैं - “ पिछले साल इंटरव्यू के बाद जेएनयू गया था वहाँ देखी थी । मेरे शहर में तो लड़कियाँ सिगरेट पीती नहीं और जो लड़के पीते हैं वह अवारा करार कर दिये जाते हैं । एक संस्कारों का शहर है इलाहाबाद । वहाँ हर छज्जे से ही संस्कार आवाज़ देते दिख जायेंगे आपकी आत्मा को पकड़कर झकझोरते । माँ नियन्त्रण रखती है बच्चों पर । वह बंदिशों लगाती हैं ताकि जीवन एक बेहतर दिशा में अग्रसरित हो । ”

प्रतीक्षा - “ मैंने तो माँ को जीवन में अनुभव किया नहीं क्या तुम्हारी माँ भी बंदिश लगाती है , नियन्त्रण रखती है ? ”

मैं - “ अगर चाहत पूरी हुई , हमारा - तुम्हारा संयोग बना तब देखना दिन में तारे कैसे नजर आते हैं अगर उसकी बात न सुनी । वह एक तूफान है किसी के बस की नहीं । ”

प्रतीक्षा का चेहरा संयोग की संभावना को सुनकर लाल हो गया उसने कहा
तुमको देख - समझ कर उस तूफान का अंदाज़ा लगाया जा सकता है जिसने
तुमको जना है । कोई आम महिला अनुराग शर्मा को जन्म दे ही नहीं सकती ।
ईश्वर ने चुना होगा माँ और बेटे को एक साथ तब संयोग बनाया होगा ।”

मैं “कहते हैं जोड़ियाँ बनकर आती हैं । अगर माँ - बेटे का संयोग बना होगा
तब और भी संयोग बना ही होगा ।”

प्रतीक्षा ने कुछ न कहा । मैंने असमान की तरफ देखा चाँद उतर रहा था दूर
एक बुर्ज की तरफ । मैंने कहा , “ यह चाँद भी व्यग्र है हमारी - तुम्हारी तरह
और इसकी व्यग्रता का अवलोकन मात्र ही बंजर रातों में भी ख्वाबों की
फ़सल दे जाती है । । एक ख़ामोशी व्याप्त थी हम दोनों के बीच कभी - कभार
कुछ कोई बोल देता था । हम दोनों चाँद की तरफ देख रहे थे । हमारी
ख़ामोशी आपस में बात करने लगी , हम अजनबी तो न थे पर एक
अजनबीपन ज़रूर था हम दोनों के बीच । हम जानते ही कितना थे एक -
दूसरे को ?

मैं घड़ी पहनता नहीं था इसलिये समय का अंदाज़ा न हुआ । मैंने प्रतीक्षा से
समय से पूछा , रात के आठ बज चुके थे । हम लोग चार घंटे साथ रहे पर
वक्त का पता ही न चला ।

“ मैं अब चलता हूँ , आंटी नाराज़ हो रही होगी । उसने मुझसे जल्दी आने को
कहा था ।”

मैं प्रतीक्षा को सेंट स्टीफन्स के गेट पर छोड़कर बाहर निकला ही था कि वह
पीछे से आ गयी , अनुराग - अनुराग पुकारते

“ अनुराग ... कल मेरे जीवन का बहुत बड़ा दिन है । तुम जल्दी आ जाना । “

“ ठीक है ।”

“ सुनो , मुझे इंटरव्यू के लिये दस बजे से बुलाया गया है तुम 9 बजे आ जाना
।”

“ मैं 8:45 पर आ जाऊँगा । मैं समय का बहुत पाबंद हूँ । आ जाऊँगा , चिंता
न करो सब कल ठीक होगा ।”

मैं सड़क पर चलने लगा , मैंने पीछे मुड़कर देखा वह मुझे ओझल होता हुआ
देख रही थी ।

मैंने सड़क के किनारे पर एक ऑटो वाले को आवाज़ दी और वह मेरे नज़दीक आकर रुक गया । ऑटो की ओर मुड़ते हुये मैंने दूर खड़ी प्रतीक्षा की ओर हाथ हिलाया उसने मुझसे रुकने का इशारा करके मेरी ओर चलने लगी । मैं वहीं रुक गया । वह मेरे पास आ गयी और कहा अगर तुम 8:45 पर आओगे तब मैं भी 8:45 पर पहुँच जाऊँगी । भैया की कार सुबह ही आ जायेगी । भैया लोग यूपी भवन से सीधा यूपीएसी आयेंगे । मैंने मुस्कुरा कर कहा , “ मेरे जीवन की उपलब्धियों में मेरे जीवन में अनुशासन का बहुत महत्व है । इतने साल हो गये सुबह चार बजे उठते पर क्या मजाल है कभी 4 से 4:01 हो जाये । अगर कहीं मुझे जाना होता है तब अगर समय 6 बजे का है तब मैं 5:50 पर पहुँच जाता हूँ । मेरी क्लॉस सायंकाल 4 बजे की नियत है पर हमेशा क्लॉस 3:50 -3:52 पर शुरू हो जाती है । इसीलिये मैंने कहा कि मैं 8:45 पर पहुँच जाऊँगा तुम अगर 9 बजे सुबह का समय नियत करोगी ।

प्रतीक्षा- “ अगर सुबह 8:45 का समय नियत करूँगी तब ?”

मैं “ मेरी मुस्कान बढ़ चुकी थी । मैंने कहा तब 8:30 पर .. पर तुम मुझको मरवाओगी । एक बड़े ज़मींदार की बेटी हो दो प्रतापी आईएएस की बहन हो । आप के भाई के एक ससुर महान प्रतापी आईआरएस हैं । मैं गरीब - गुरबा आदमी , तुम्हारे प्रतापी लोग मुझे जीने न देंगे कि मेरी बहन - बेटी के साथ यह धूम रहा ।”

प्रतीक्षा- “ बेटी अपनी इच्छा एकम् स्वेच्छा से जा रही और वह भी उसके साथ जिसे वह सब लोग मिलकर चुन रहे ।”

मैं “ प्रतीक्षा , एक तूफान मेरे यहाँ रहता है उसका नाम है उर्मिला शर्मा । वह परम्पराओं- मान्यताओं- संस्कारों की सबसे बड़ी ठीकेदार है । वह मुझे कच्चा खा जायेगी अगर उसको यह पता चल जाये । आंटी को भी मैं पट्टी पढ़ाकर आया हूँ । आंटी और मेरी माँ साथ ही बचपन से रहे हैं । आंटी से इसलिये नहीं बताया कि वह माँ से बता देती और उसके बाद ... उसका भाषण ही भाषण होता । उनका दोष नहीं है । उन्होंने ऐसी ही दुनिया देखी है और लगता है हर लड़की की प्रतिष्ठा का सम्मान होना चाहिये । विवाह पूर्व के सम्बन्धों में एक गरिमा होनी चाहिये और यह बात ठीक भी है । पर तुमने एक खुला वातावरण देखा है जहाँ लोगों के मेल - मिलाप पर कोई खास मुद्दा नहीं है या कहो कोई भी मुद्दा नहीं है , पर उन लोगों के लिये है । मैं सुबह 8:45 पर आ जाऊँगा आप नौ बजे या उसके पहले जब भी आना चाहो आ जाना पर सुबह 8:45 के पहले मत आना । ”

मैं ऑटो पर बैठ गया और एक ख़बाबों का रथ मेरी आँखों में चलने लगा । जैसे ही रथ कुछ बेअंदाज हुआ एक आवाज आयी .. मुन्ना... वह आवाज माँ की थी । मैं सहम गया और मेरी बेअंदाजी नियन्त्रित हो गयी । यह माँ भी जब देखो ताकीद करने चली आती है ।

मैं पूसा कैम्पस में आंटी के बँगले के सामने उतर कर ऑटो को पैसा देने लगा । आंटी मेरे इंतज़ार में सामने के ही लॉन में टहल रही थी । वह मेरे देर से आने के कारण थोड़ा नाराज़ थी पर आंटी के पास परिपक्वता की पराकाष्ठा है । उसने अपनी नाराज़गी छुपाते हुये कहा , “ कहाँ इतनी देर लग गयी ? ” पर मेरे व्यवहार से उपजी निराशा स्वर में थी और चेहरे पर असंतोष था । मैं झूठ बोलकर पकड़ा जाता इसलिये मैं बाथरूम जाने का बहाना करके उसके नज़रों से अपने आप को बचाने की कोशिश में अंदर चला गया । मैं बाहर कुर्ता- पायजामा पहन कर आया , मेरे आने तक आंटी संयत हो चुकी थी और मैं भी बहानों से लैस हो चुका था पर आंटी ने कुछ न पूछा ।

आंटी - “ चाय पियोगे या सीधे भोजन करोगे ? ”

आंटी को मेरे साथ वक्त बितना अच्छा लगता था । मैंने आंटी को खुश करने के लिये कहा , ” पहले चाय पीते हैं फिर खाना खाते हैं वैसे भी सोना देर से है आपको बहुत कहानी सुनानी है । ”

आंटी बहुत सहज महिला थी । वह इस बात से प्रसन्न हो गयी कि अब बहुत सी कहानी सुनने को मिलेगी । एक व्यक्ति जो परिस्थितियों से विवश होकर एकाकी रहने को बाध्य हो उसे अपना मनचाहा बातूनी व्यक्ति मिल जाये इससे बड़ा सुख और क्या हो सकता है ।

“ ठीक है अनुराग , चाय बनाती हूँ । ”

आंटी किचन के अंदर प्रवेश करने लगी और मैंने आवाज़ दी , “ आंटी , अदरक उबाल देना और गुड़ की ही चाय बनाना । ”

आंटी - “ मुझे अपने बेटे की पसंद - नापसंद की जानकारी है भले ही बेटे को माँ की पसंदगी की कोई फ़िक्र न हो । ”

आंटी ने बहुत ही सहजता से एक गंभीर चोट कर दी । वह चाय लेकर आई तो मैंने कहा ,

“ आंटी , यह करछना की लड़कियाँ नायाब होती हैं । उनको बात कहनी आती है । मैंने थोड़ी आने में देर कर दी आपने कोई नाराज़गी कहकर नहीं दिखायी पर बात बराबर कही । ”

आंटी - “ तुमको पता है मैं तुम्हारे देर आने से नाराज़ हो जाऊँगी और तुम देर से आये , यह बताता है तुमको मेरी कितनी फ़िक्र है । ”

आंटी का यह दूसरा वार था । इस बार वार ज्यादा आकरामक था और सही निशाने पर था । मेरे पास क्षमायाचना के अलावा और कोई रास्ता न था । आंटी समझदार थी , उसने मामले को तूल न दिया और बोली , ” सुनाओ क्या- क्या क्रिस्सा है , एक -एक करके सुनाना और वह भी आराम से । ”

मैंने आंटी को मामा के द्वारा रचे सारे कांड , दाढ़ की जोकरई , मामा का मेरे नाम का इस्तेमाल करके पोस्टिंग हथिया लेना , कैसे मामा ने मेरे विवाह के मामले में अपने साले और कमिशनर साहब के बीच चालबाज़ी की , चुनाव में मुझ पर गोली चलना सारे क्रिस्से सुनाने लगा और रात के दो बज गये ।

आंटी - “ रात बहुत हो गयी उठने का मन तो नहीं हो रहा पर कल सुबह तुमको उठना नहीं है क्या? ”

मैं - “ मुझे सुबह यूपीएसी पहुँचना है साढ़े आठ बजे । ”

आंटी - “ इतने सुबह क्यों? ”

मैं - “ कल से मेरे साथ वाले लोगों का इंटरव्यू है । कल से रोज़ यूपीएससी जाना होगा । ”

आंटी - “ इंटरव्यू तो साढ़े दस बजे शुरू होता है इतने पहले क्यों जा रहे ? ”

मेरी चोरी फिर पकड़ी जा रही थी । मैंने बहाना बनाया कि पहले यूपी भवन जाऊँगा थोड़ा मेरे जाने से ढाढ़स हो जायेगा । पहली बार सब इंटरव्यू दे रहे , डर तो लगता ही है । ”

आंटी - “ यह बात तो है । ”

आंटी - “ तुम्हारा नाश्ता साढ़े सात बजे बन जायेगा । जब तुम्हारा मन करेगा चले जाना । ”

“ ठीक है आंटी । ”

रात थी , अँधेरा था , ख़्वाब इंतज़ार में पर्दे के पीछे पर नींद का कोई भरोसा नहीं । आज नींद बेवफ़ा थी । मैं थोड़ी देर लेटकर सोने का प्रयास करता रहा पर नींद नहीं आ रही थी । मैंने कमरे की बत्ती नहीं जलायी क्योंकि आंटी जान जाती मैं जग रहा और वह चार सवाल करती । मैं बिस्तर से उठा और खिड़की से बाहर देखने लगा । दूर तक फैला हुआ पूसा का जंगल जिसमें रात हर रोज़ आहिस्ता-आहिस्ता चली आती थी । एक ख़ामोश रात , एक अनबोलती रात हर रोज़ आती थी पर आज तो एक शोर करती रात थी मेरे लिये । सामने गिरिजा का सलीब दूर दिख रहा , चाँद पेड़ों की शाख़ों की तरफ़ आता हुआ , चाँदनी में पेड़ नहाया हुआ और पेड़ पर पक्षियों के जोड़े सिकुड़े बैठे हुये उनकी छाया आभासित होती हुई दूर से मुझे , एक एहसान उन लम्हों का जो मैंने आज गुज़ारे थे प्रतीक्षा के साथ ...

प्रतीक्षा का पीछे से तेज़ कदमों से चलकर आना और कहना .. “ अगर कल सुबह तुम 8:45 पर आओगे तब मैं भी आ जाऊँगी उसी समय “ अगर तुम 8:45 पर आने को कहोगी तब मैं 8:30 पर आ जाऊँगा .. ” ..

“ अगर मैं 8:30 कहूँ तब “

“ तुम मरवाओगी मुझको ... मैं गरीब - गुरबा आदमी ”

“ मैं किसी और के साथ नहीं टहल रही .. मैं उसके साथ टहल रही जिसको उन्होंने चुना है मेरे लिये ... ”

मेरे मस्तिष्क में मेरे और प्रतीक्षा के सारे कथोपकथन गूँज रहे थे । बार - बार वही धुमड़ रहा था मस्तिष्क में । .. “ मैं उसके साथ टहल रही हूँ जिसको मेरे लिये चुना गया है ... ”

चुनाव किसका है ? अब तो यह चुनाव उसका हो गया है । वह चाह रही इस संयोग को । क्या मैं भी संयोग का आकांक्षी हो रहा ? मेरी हिचकिचाहट क्या कम हो रही है ? कैसे संयोग गतिमान हो पायेगा जब पारिवारिक परिवेश में इतना अंतर हो ? क्या मैं भी व्यग्र नहीं हो रहा ? मुझमें व्यग्रता दिन बीतने के साथ क्या बढ़ नहीं रही ? मुझे सामने भी चाँद व्यग्र दिख रहा था । यह मेरे मन का भ्रम था या वह वाकई व्यग्र था । पर चाँद व्यग्र क्यों होगा ? मुझे अपनी व्यग्रता चाँद में दिख रही थी और बचपन में चाँद पर लिखी कविता .. “ चाँद का कुर्ता ” याद आ गयी .. यह कविता मुझे पूरी तरह आज तक याद है । मैं वह कविता मन में गुनगुनाने लगा और उस कविता पर धुन बनाने लगा ..

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
“सिलवा दो माँ मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला ।

सनसन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ ।

आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का । ”

बच्चे की सुन बात कहा माता ने, “अरे सलोने !
कुशल करें भगवान, लगें मत तुझको जादू-टोने ।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा ।

घटता-बढ़ता रोज किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है ।

अब तू ही ये बता, नाप तेरा किस रोज़ लिवाएँ
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज बदन में आए?”

एकाएक लगा चाँद घटने लगा, सुबह की लालिमा की ओर रात की कालिमा
बढ़ रही थी । मैंने देखा सुबह के पाँच बजने वाले हैं । रात आँखों में ही कट
गयी । मैं बिस्तर पर लेट गया आँख लग गई । आँटी की आवाज़ आयी “
अनुराग, सात बज गये तुमको जाना नहीं है क्या? ”

मैं हड्डबड़ाकर उठ गया । आँटी चाय लेकर आयी ।

“ मैंने जानबूझकर नहीं जगाया क्योंकि कल रात बहुत हो गयी थी और बिस्तर
पर लेटते तो नींद आती नहीं । इसीलिये सोचा थोड़ा तुम सो लो । ”

मैं कुछ न बोला । मैं तैयार होकर बाहर आया । आँटी ने कहा, “ अनुराग,
तुम बहुत तैयार होकर आज आये हो । एक साल में बदलाव आ गया । ”

मैं “ ऐसा तो कुछ नहीं है आँटी । ”

आँटी - “ कितने करीने से तुमने अपने बाल काढ़े हैं । पिछले साल हर दिन
अपने बाल को तुम हाथ से पीछे ढकेलते आते थे । तुम्हारी अंगुलियाँ ही कंधे
का काम करती थीं । पर आज कितने स्टाइल से तुमने बाल बनाये हैं । इतने
घने बाल हैं तुम्हारे कितने अच्छे लग रहे हैं करीने से बनाने के बाद, कितने
सुंदर लग रहे हो । उर्मिला होती तो कहती बहिन काला टीका लगा दो मुन्ना
को नज़र न लग जाये । ”

आँटी पकड़ ही लेती थी, चाहे जो करो । मैं नाश्ता करके तैयार हुआ । आँटी
मेरे पास आयी ..

“ अनुराग, शालिनी बहुत परफ्यूम ऋषभ के लिये खरीदती थी । पर तुम और
ऋषभ एक ही तरह के हो, कोई ख़ास अपनी कदर करते नहीं । परफ्यूम
लगा लो । ”

आँटी ने परफ्यूम का फुहारा मार दिया, फुहारे से पूरा कमरा महकने लगा ।

“ आंटी , यह कुछ ज्यादा हो गया । बहुत महक रहा , मैंने कभी लगाया ही नहीं ।”

“ रास्ते में कम हो जायेगा । यह थोड़ी देर में कम होने लगता है ।”

“ आप को कैसे पता ?”

“ जैसे तुम कह रहे हो ऐसे ही ऋषभ भी कहता था और शालिनी यही जवाब देती थी ।”

मैंने आंटी से जल्दी आने का वायदा करके घर से निकला और जल्दी- जल्दी ऑटो करके संघ लोक सेवा आयोग , धौलपुर हाउस , शाहजहाँ रोड पहुँच गया । एक इमारत जिसने मेरी तक़दीर बदल दी मैं उस इमारत को सामने से खड़े होकर देखने लगा और सम्मान में मेरे अंदर से आवाज़ निकली .. “ अगर तुम न होते तो आज मैं वह न होता जो आज मैं हूँ । तेरे बगैर मेरा कोई वजूद नहीं । तूने मुझे इस समाज के समुख गर्व से खड़े होने का अवसर दिया । मैं किन लफ़ज़ों में तुम्हारा शुक्रिया अदा करूँ , तुमने सम्मान देने की क़ीमत ज़रूर माँगी पर क़ीमत से ज्यादा फल तुमने दिया । मुझे एक बार फिर तुमसे लड़ना है । मैं लड़कर अपना हक़ लूँगा । बस इंतज़ार है उस दिल का एक बड़ी आजमाइश का दौर अभी बाक़ी है ।”

इतने में एक लाल बत्ती की कार मेरे बगल से गुजरी । उस कार में प्रतीक्षा थी और समय था सुबह के साढ़े आठ बजे । वह मेरी छात्रा रही है और जानती थी मेरी हर क्लॉस समय से पहले आरंभ होती है तब आज समय सुबह 8:45 का है तब मैं 8:45 से पहले ही आऊँगा ।

एक हल्के ब्लू कलर की साड़ी में , कानों में हल्के कुंडल , गले में एक पतली सी चेन , बालों की एक लट बनाये जिसमें थोड़े से बाल हल्के - हल्के आँखों के ऊपर आ रहे थे अपनी साड़ी का पल्लू ठीक करती मेरी ओर प्रतीक्षा चल कर आती हुई । मैं उसे गौर से देख रहा था । मेरे नज़दीक पहुँच कर कहा उसने ... “ ठीक से देख लो मुझे शर्मना मत । तुम्हारा निहारना और किसी को कैसे लगता है मुझे नहीं पता पर मुझे

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 327

प्रतीक्षा मेरे नज़दीक आकर रुक गयी । मेरे और उसके में फासला थोड़ा ही था । मेरे परफ्यूम की खुशबू पूरे वातावरण में व्याप्त हो रही थी । सफ़ेद रंग पर नीली लाइनों वाली धारीदार क़मीज़ मैंने पहनी थी । यह क़मीज़ आंटी ने पिछले साल मुझको इंटरव्यू से इलाहाबाद जाते समय दी थी । मैंने जीवन में

किसी ब्रैड की रेडीमेड क्रमीज़ पहली बार आंटी के सौजन्य से पहनी थी । मुझे जितनी समझ रंग संयोजन की थी उसका मैंने पूरा प्रयोग करने का प्रयास किया था । सफेद रंग पर नीली लाइनों वाली धारीदार क्रमीज़ , नीला पैंट , काले जूते , नीला मोज़ा, सफेद रूमाल , बाल किनारों की तरफ़ करीने से बनाये हुये जो हवा के साथ मेरी आँखों पर आ जाते थे और मैं उसे एकाध बार पीछे भी कर देता था , प्रतीक्षा की ओर देखते हुये मैंने कहा ,

“ तुम बहुत सुंदर लग रही हो ।”

प्रतीक्षा- “ अनुराग ... चलो तुमने कहा तो कुछ । तुम कुछ कभी कहते नहीं । मेरा सारा स्वर्णना - सजना सब सार्थक हुआ ।”

मैं “ सार्थक होगा इंटरव्यू हॉल में । सारी तैयारी वहाँ के लिये तुमने की है ।”

प्रतीक्षा- “ यह कैसे पता तुमको ? हो सकता है किसी और के लिये की हो ।”

“ खुशक्रिस्मती उसकी जिसके लिये आप ने इतना यत्न किया ।”

मैं उसकी तरफ़ देख रहा था । मेरा देखना कुछ अपलक सा हो गया , कुछ क्षणों लिये । प्रतीक्षा ने कहा , “ अनुराग , पहली बार तुमने मुझे देखा और निगाहें मिलने पर पलकों को न हटाया नहीं तो अक्सर तुम हटा लेते थे ।”

मैं - “ तुम यह जान जाती थी कि कब मैं तुमको देख रहा ?”

प्रतीक्षा- “ मैं तुम्हारी तरह विषय या भाषा में पारंगत चाहे न होऊँ पर मैं सेंट स्टीफन्स में पढ़ी एक स्मार्ट लड़की हूँ । मुझे सब पता चल जाता है ।”

मैं - “ यह बात तो है । तुम एक स्मार्ट लड़की हो इसमें तो कोई दो राय है नहीं । कैसा लग रहा इंटरव्यू के पहले । कुछ नर्वस हो ? चिंता - परेशानी - अकुलाहट कुछ हो रही है ? ”

प्रतीक्षा- “ बहुत थी पर तुम्हारे आने से ध्यान बँट गया । तुम एक सहारा हो बहुत से लोगों के , मेरे भी ।”

उसने “ मेरे भी “ को हल्का सा विराम देने के बाद कहा था ।

“ प्रतीक्षा, यह ईश्वर की इनायत है । वह महान है । उसने मुझे चुना जीवन में कुछ करने के लिये । वह किसी को भी चुन सकता था । मैं तो एक निमित्त मात्र हूँ । मैं अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखता हूँ तब मुझे ऐसा कुछ नहीं दिखता जो यह कह सके मैं इस लायक हूँ । ईश्वर ने क्या देखकर मुझे यह कार्य सौंपा यह तो वही जानता होगा ।”

प्रतीक्षा- “ कुछ देखकर ईश्वर ने यह काम नहीं सौंपा है बल्कि तुमको इस काम के लिये गढ़ा गया है । तुमको नायाब उसने बनाया कुछ समाज का भविष्य सोचकर । जो तुम अक्सर कहते हो अपनी कक्षाओं में लोगों को

उत्प्रेरित करने के लिये .. तुम बने हो एक गैर मामूली दास्तान के लिये । यह तुम पर पूरी तरह लागू होती है तुम बने ही हो एक गैर मामूली दास्तान के लिये ।”

इतने में दो कारें जिसमें से एक पॉयलट कार थी जिस पर पुलिस के गनर सवार थे और एक में प्रतीक्षा के दोनों भाई और भाभी थे हम दोनों के बगल में आकर रुक गयीं । प्रतीक्षा के छोटे भाई देवानंद कार से निकल कर नज़दीक आ गये और मुझे गले से लगा लिया .. “ अनुराग , बड़े क्रिस्से सुने मैंने तुम्हारे । बहुत गर्व हुआ तुम्हारे सारे प्रयासों पर । मुझे नहीं पता था तुमसे मुलाक़ात हो जायेगी यहाँ पर , यह एक सुखद संयोग है ।”

कमिश्नर साहब - “ अरे प्रतीक्षा इनकी स्टूडेंट हो चुकी है । यह इंटरव्यू की टरेनिंग के लिये इनके पास गयी थी । अब अपनी छात्रा का ध्यान तो रखना ही चाहिये ।”

भाभी - “ बहुत ठीक से ध्यान रखा । कई बार घर भी आये थे । ईश्वर करे प्रतीक्षा का हो जाये अनुराग तो हो ही गया है । अब यह आईएस में जायें या आईआरएस यही फ़ैसला बाक़ी है ।”

देवानंद - “ अब अनुराग यह तुम्हारा व्यक्तिगत फ़ैसला है , तुम क्या चाहते हो पर मेरे अनुसार आईआरएस भी बहुत अच्छी नौकरी है । मैंने प्रतीक्षा से भी कहा आईआरएस मिल जाये तो सारी समस्याओं का अंत हो जायेगा । इसने भरा भी आईएस, आईआरएस ही पहली दो वरीयता करम में ।”

मैं - “ सर , जहाँ का दाना- पानी बदा होगा वही होगा । अब नसीब पर किसका जोर है जो भवितव्य है वह होगा ।”

देवानंद - “ यह बात भी सही है ।”

वह प्रतीक्षा की तरफ़ मुख्यातिब होकर बोले ,” सब ठीक होगा , निश्चिंत होकर इंटरव्यू देना , जो सवाल नहीं आयेगा उस पर सौंरी बोलकर आगे बढ़ जाना । समय मत ख़राब करना न आ रहे सवालों पर और कोई अनुमान मत लगाना किसी सवाल पर । बाक़ी तो सब तैयारी तुम्हारी है ही ।”

मेरी ओर मुड़कर मुझसे सहमति की आक़ांक्षा से कहा , “ ठीक है न अनुराग ?”

“ यस सर , एकदम ठीक है । यह सेंट स्टीफ़न्स की पढ़ी एक स्मार्ट पढ़ी-लिखी लड़की है , इसको सब आता है । सब ठीक होगा ।”

यह कहते हुये मैंने प्रतीक्षा की ओर देखा और आगे कहा , “ पर सहज और सरल होकर इंटरव्यू देना थोड़ा बेहतर होता है ।”

लोगों का आने का सिलसिला शुरू हो चुका था । बहुत बड़ी संख्या में लोग यूपीएससी के बाहर जमा हो रहे थे । वह सब लोग इंटरव्यू का दरेंड समझने के लिये और पूछे जाने वाले प्रश्नों को सुनने के लिये इकट्ठा हो रहे थे । देखते ही देखते पूरा परिसर भर ऐसा गया । प्रतीक्षा की रिपोर्टिंग टाइम दस बजे की थी । वह अंदर जाने लगी । उसने अपने भाइयों और भाभी के पैर छुये । उसने भाभी का पैर छूकर जैसे ही सिर ऊपर उठाया , भाभी ने कहा गुरु का भी आशीर्वाद ले लो । वह संकोच में थी क्या करे । देवानंद ने कहा भाभी ठीक कह रही हैं गुरु सबसे महत्वपूर्ण होता है कबीर को हम सबने पढ़ा ही है । वह मेरी तरफ बढ़ी और जैसे ही उसने अपना हाथ नीचे किया उसका हाथ नीचे न जाये मैंने उसका हाथ पकड़ कर कहा , “ यह मत करो प्रतीक्षा .. सब ठीक होगा । ईश्वर दयालु है अगर वह दयालु न दिखता हो तब भी । ”

उसके हाथ के स्पर्श ने मेरे पूरे शरीर में करेंट दौड़ा दिया । मेरे जीवन की यह पहली लड़की थी जिसको मैंने स्पर्श करते समय संवेदनाओं का अनुभव किया था । मेरे पूरे रोम- रोम में बिजली कौंधने लगी । मेरे रोम उत्तेजित थे और मेरी धड़कनें बेअंदाज भाग रही थीं । मैं अपनी धक - धक - धक की बढ़ती आवाज़ को साफ़ सुन रहा था । उसने मेरी आँखों में देखा , नयनों की भाषा में बहुत ताक़त होती है । मुझे लग रहा मानो वह कह रही मेरी धड़कनें तुमने बढ़ा दीं । वह बढ़ी हुई धड़कनों के साथ मुड़कर यूपीएससी के हॉल के प्रवेश द्वार में प्रवेश करने लगी । हॉल पर पहुँच कर वह एक बार फिर मुड़ी उसने हाथ हिलाया , हम दोनों की आँखें मिली और वह हॉल के अंदर चली गयी ।

प्रतीक्षा के हाथ के स्पर्श से उपजी आभा मेरे पूरे शरीर में व्याप्त थी । मुझे कुछ पता नहीं लग रहा था क्या हो रहा है । मैं असमान्य हो चुका था । प्रतीक्षा पूरी तरह मुझ पर हॉबी हो चुकी थी । उसकी आँखें जब मेरी आँखों से मिली थीं जब मैंने उसका हाथ पकड़ा था उसके हाथों का कंपन मैं अभी तक महसूस कर रहा था । मेरे मस्तिष्क में हल्के नीले रंग की साड़ी में यूपीएससी हॉल की तरफ़ जाती हुई और हॉल के गेट से मेरी ओर देखकर हाथ हिलाती हुई पुलकित प्रतीक्षा अभी भी व्याप्त थी ।

कमिश्नर साहब ने कहा , “ आओ अनुराग बाहर रेस्टोरेंट में बैठते हैं उसको आने में समय लगेगा । हम लोग यूपीएससी के बाहर की एक चाय - जूस की दुकान पर आ गये । यह वही दुकान थी जहाँ पर हर साल अभ्यार्थी आते हैं जीवन में एक आशा लेकर और कुछ अपने ख्वाबों की ताबीर प्राप्त कर जाते हैं और कुछ जीवन के संघर्ष की ओर लौट जाते हैं । इसी दुकान पर पिछले साल मैं निराश था अपने इंटरव्यू के ख़राब हो जाने के बाद । मैं निराश था हताश था पर लड़ने की ज़िद अंदर ज़ंगल की आग की तरह धधक रही थी । मेरे ख्वाब हमेशा से ही मेरे क्रद और हैसियत से बड़े ही रहे । क्रद और हैसियत से बड़े ख्वाबों की ताबीर कम ही मिलती है पर मैं उर्मिला पुत्र अनुराग शर्मा

गर्भ से ही ज़िद के साथ जन्मा हूँ, गिरकर फिर से उठने की जिजीविषा के साथ। समुद्र की जिन गगनचुंबी लहरों से लोगों को भय होता है मैं उसमें रोमांच तलाशता हूँ, यही फ़र्क है औरों में और मुझमें जो मुझे कदमों की ताक़त से अधिक तेज रफ़तार से दौड़ा रहा। यह सोचते- सोचते मैं यूपीएससी के बुर्ज की तरफ़ देखा और मन में भाव आया.. अपनी आजमाइश का दौर आने वाला है। साहब बड़े आदमी थे। उनका लाव - लश्कर था। डीएम नोएडा ने साहब के साथ कभी काम किया था, वैसे भी सत्यानंद मिश्र एक जुगाड़ अफ़सर हैं सबको पटा कर रखते हैं, इनकी सेवा करने में फ़ायदा ही होगा जूनियर अफ़सरों का। सारी तामीरदारी सर को प्रसन्न करने में लगी थी। पुलिस वालों ने कुर्सियाँ लगा दीं और हम लोग बैठ गये। मैडम ने पूछा, “अनुराग, क्या खाओगे?”

मैं - “कुछ नहीं। नाश्ता करके आया हूँ।”

कमिश्नर साहब - “कहाँ रुके हो?“

मैं - “मेरी मौसी रहती हैं दिल्ली में जो विमोचन कार्यकरम में आयी थीं। उनके ही यहाँ रुका हूँ।“

कमिश्नर साहब - “उनका एक बेटा था जो बहुत प्रतिभाशाली था जिसको शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार मिलना है। वह कहाँ है आजकल?”

मैं - “अमेरिका में है पर आ रहा। सर, पुरस्कार का क्या हुआ सर?“

कमिश्नर साहब - “उसका नाम अपर्स्ल छोड़ा गया है। आजकल में घोषणा हो जायेगी। मैं आज अनीता से पूछ लूँगा वह बता देगी।“

मैं - “यह अनीता कौन है सर?“

कमिश्नर साहब - “मुख्यमन्त्री की प्राइवेट सेकरेटरी है।“

मैं - “आंटी को बता दूँ कि ऋषभ को पुरस्कार मिल रहा है।“

कमिश्नर - “हाँ बता दो। आजकल में प्रेस विज़ाप्ति भी आ जायेगी।“

मेरी बहुत आवभगत की गयी। उनकी आवभगत से यह मुझे अहसास हो गया कि जो कुछ भी प्रतीक्षा मेरे साथ कर रही है उसमें पूरे घर की सहमति है और प्रतीक्षा से शायद कहा गया है कि तुम अनुराग को समझ लो और अगर तुमको ठीक लगे तब मामले को अंतिम परिणामिति पर ले जाते हैं। मेरी कोचिंग में उसका आकर पढ़ना, मुझे उसकी इंटरव्यू की साड़ी के चुनने के लिये ले जाना, उसकी साड़ी को चुनते समय मैडम का उस काउंटर से हट जाना और मैडम का कहना कि गुरु का आशीर्वाद ले लो.. मेरे मस्तिष्क में धूमने लगा। अति सम्मान हमेशा किसी आशा से ही होता है। आज का दिन उसी आशा को समर्पित था। इसमें कोई ख़राबी नहीं। यह अच्छी बात है कि लड़की को अपना वर चुनने की स्वतंत्रता दी जा रही है। यह चुनाव अब घर

वालों का नहीं प्रतीक्षा का हो चुका है .. पर मेरा स्वयम्भर अभी पूरा कहाँ हुआ है । कर्ण और अर्जुन मैदान में हैं । पता नहीं कौन है कर्ण और कौन अर्जुन

.....
अनुराग शर्मा तेरे भी क्या दिन बहुर रहे .. जिस भाषा की अपंगता से उपजी पीड़ा से तू सारे जीवन व्यथित रहा उस भाषा की दो महान ज्ञाता हिंदी सीख - बोल रही तुझे पाने के लिये

यह मेरी नहीं , यह मेरी हिंदी भाषा की विजय है उस अंग्रेजी पर जिसने पूरे शहर को आहत किया है ।

दरौपदी को पाना आसान नहीं है कर्ण और अर्जुन ... देखता हूँ कैसे कड़ाही में खौलते क , ख , ग के बीच देखकर मछली की आँख बेधी जाती है, अ , आ , इ , ई तो और परेशान करेंगे । कब बड़ी ई लगाओ कब छोटी यह तो समझ ही न आयेगा , और यह “इयाँ ... “इसका तो उपयोग करने के लिये मियाँ बोलना पड़ेगा तब भी व न दिखेगा उच्चारित होकर भी ।

कमिश्नर साहब ने कहा .. क्या सोच रहे हो अनुराग .. फिर कुछ दिमाग में चल रहा होगा । यह दिमाग भी सोचता होगा किसके पल्ले पड़ गया एक क्षण की भी चैन नहीं । अगले जन्म में यह दिमाग अरदास करेगा ईश्वर से , मुझे कहीं और लगाओ पर इससे मुक्त करो । “

कमिश्नर साहब की बात पर देवानंद और मैडम मुस्कुराने लगे । मैंने कहा , “ सर कुछ नहीं चल रहा दिमाग । ”

कमिश्नर साहब - “ कुछ तो चल रहा होगा ? ”

मैं - “ सर यह जो “इयाँ ” है हिंदी में यह क्यों बनाया गया , इसका वाक्य प्रयोग भी आसानी से नहीं मिलता । मियाँ में उच्चारण तो है पर शब्द कहाँ ? यह संधि - विच्छेद से ही पराप्त होगा , अगर पराप्त करना है ।

कमिश्नर - “ मैं ठीक ही कह रहा था दिमाग को अगर चैन दे दो तब तो अनुराग शर्मा का बरांड रहा ही नहीं । ”

लोग इंटरव्यू बोर्ड के सामने वाले हॉल से बाहर आने लग गये थे । हम लोग भी गेट की तरफ चलने लगे ... प्रतीक्षा हॉल के मुख्य द्वार से बाहर निकलती दिखी .. हल्की नीली साड़ी , होंठों पर लालिमा , काले केश आँखों पर आते हुये , एक हाथ से साड़ी की चुन्नट को सँभालती प्रसन्नवदन बढ़ती हम सबकी ओर ।

प्रतीक्षा बहुत ही प्रसन्न थी । नज़दीक आकर उसने साड़ी का चुन्नट छोड़ दिया । उसके नज़दीक आते ही उसकी भाभी ने कहा , “ लगता है इंटरव्यू अच्छा हुआ । ”

प्रतीक्षा- “ भाभी बहुत अच्छा हुआ । ”

कमिशनर साहब - “ क्या- क्या पूछा ? ”

प्रतीक्षा अपना इंटरव्यू बताने लगी । उसकी हँड़ी संगीत सुनना और किताबें पढ़ना था । संगीत पर हम लोगों ने बहुत तैयार किया ही था । कलचर की किताब से एक - एक राग और एक- एक धुन समझे थे । शास्त्रीय संगीत तो पूरा तैयार ही किया था ।

प्रतीक्षा - “ सामान्य बातचीत के बाद बात संगीत पर ही आरंभ हो गयी । दिन - रात के राग , ध्रुपद, धमार , राग हिंडोला, राग केदार पर सवाल पूछे गये । देश में चल रही घटनाओं , गाँव की समस्याओं पर सवाल किये गये । ”

प्रतीक्षा अपना इंटरव्यू सुना रही थी मैं उसे खोया देख रहा था । जब उसका इंटरव्यू बताने का क्रम समाप्त हुआ तब भाभी ने कहा .. “ अनुराग कैसा इंटरव्यू हुआ ? ”

मैं तन्द्रा से जगा पर भाभी ने मेरा प्रतीक्षा को अपलक निहारना पकड़ लिया था ।

मैं - “ भाभी , यह एक पहले से लिखी गयी कहानी ही चल रही है । ”

भाभी - “ वह कैसे ? ”

मैंने प्रतीक्षा की ओर देखा ।

प्रतीक्षा- “ भाभी , सारा का सारा सवाल लगभग पहले का तैयार किया हुआ था । जो - जो अनुराग ने अनुमान लगाया उसमें से बहुत कुछ पूछा गया । ”

देवानंद - “ तुम अनुराग कोचिंग ही चलाओ । यह आईएएस- वाईएएस में कुछ नहीं रखा । तुम लोगों के जीवन के लिये कार्य करो । ”

भाभी - “ एक अकेला आदमी क्या- क्या करे ? इनको सारे खुराफ़ात करने हैं । एकाध खुराफ़ात किसी और को करने दो । पहले यह विवाह करें तब कोई और काम करें । ”

भाभी थोड़ा तेज थीं । तेज हों भी क्यों न .. एक प्रतापी आईआरएस जिसके भ्रष्टाचार के क्रिस्सों से लखनऊ सराबोर है की बेटी और एक महान जुगाड़ की पत्नी हैं । अब ऐसी महिला तो थोड़ा बेअंदाज हो ही जायेगी । बेअंदाजी बनती भी है । वह बोल गयीं , “ सुनिये आप अनुराग के पिताजी से बातचीत

करको मामला ख़त्म करिये । अनुराग - प्रतीक्षा का विवाह कर देते हैं जल्दी ही ।”

माहौल पूरा बदल गया । कमिशनर साहब को यह उम्मीद न थी । वह बहुत सुलझे व्यक्ति थे । उन्होंने बात सम्भालते हुये कहा, “ वक्त पर यह हो जायेगा । अभी रिजल्ट आ जाने दो , बात तो चल ही रही है ।”

देवानंद ने बातचीत का रुख मोड़ कर पूछा , “ अनुराग क्या लगता है ?”

मैं “ सर , सेलेक्शन हो जायेगा ।”

थोड़ी देर बातचीत हुई । आज का कार्य हो चुका था । प्रतीक्षा अपने भैया - भाभी के साथ चली गयी और मैं वापस अपने घर की ओर । मैं आज जल्दी पहुँचना चाहता था । आंटी ने हिदायत दी थी जल्दी आना देर मत करना , मैं कढ़ी - चावल बनाऊँगी ।

पूरे रास्ते मेरे कानों में यह गूँजता रहा , “ अनुराग - प्रतीक्षा का विवाह कर देते हैं जल्दी से ।”

मैं घर पहुँचा । मेरे समय से घर पहुँचने के कारण आंटी परस्न्न हो गयी । आंटी को मुझसे बात करने में बहुत सुकून मिलता था । मैं उसका बेटा भी था और मित्र भी । वह मुझपर अधिकार कर चुकी थी । वह मेरे जीवन के निर्णय की भागीदार हो रही थी । वह हर छोटी- छोटी चीज़ पूछती थी । मैं भी उससे सहज था क्योंकि वह मेरी माँ की तरह बुलडोज़ नहीं करती थी । माँ के दिमाग़ मैं जो आ गया वह तो हटाना बहुत मुश्किल है ऐसा आंटी के साथ न था । मेरा ऋषभ- शालिनी का नज़दीक संबंध भी परिवार को बाँध रहा था । शालिनी के मेरे संबंध बहुत ही अच्छे थे । उसने अपने पापा से भी कहा था , “संपत्ति के तीन उत्तराधिकारी होंगे - मैं , ऋषभ और अनुराग ।”उसके पापा ने कहा , “ मैं ऊपर लेकर तो जाऊँगा नहीं तुम जो चाहो सो करो । ”

यह बात आहूजा साहब ने आंटी से भी कही थी । आंटी ने जवाब में कहा था , “वह क्या करेगा संपत्ति का ? वह सब लुटाने वाला लड़का है उसका संचय में कोई यक़ीन ही नहीं है । पर अच्छी बात है शालिनी ऐसा सोच रही है , यह बात यह भी कहती है आपने कितनी अच्छी प्रवरिश शालिनी को दी है ।”

आंटी ने देखते ही कहा , “ कैसा रहा इंटरव्यू ?”

मैं “ किसका ? ”

आंटी - “ जिसका दिलाने गये थे ।”

अब मुझे याद ही नहीं है किसका नाम बताकर मैं गया था । झूठ के साथ एक समस्या यह है कि आप को याद रखना पड़ता है कि क्या बोला था , ऐसा सच के साथ नहीं होता । मैं सोचने लगा किसके इंटरव्यू के बारे में कहा था मैंने ।

आंटी कुछ आगे पूछती मैंने दो नाम गढ़ लिये । एक नाम बताऊँगा दूसरे का अगर वह कहेगी जो मैंने कहा है तब वह भी कह दूँगा । पर आंटी की कोई ख़ास रुचि इसमें न थी । वह तो अलग की सुरक्षा में थी । आंटी ने कहा , ” अनुराग , शालिनी के घर चले जाना । तुमको ही सँभालना है वह घर भी । अनलिखी - मुँहजबानी वसीयत के हिसाब से वह संपत्ति तुम्हारी भी है । आहूजा साहब कह कर गये थे कि अनुराग भैया को आप ज़रूर लेकर आइयेगा । तुम्हारे क्रिस्से तो सबको पता ही होते हैं । अनुराग , एक बात मैं बार- बार सोचती हूँ । ”

मैं “ क्या आंटी ? ”

आंटी - “ अनुराग , अगर तुम आईएएस न होते तब मेरा क्या होता ? ”

मैं “ ऐसा क्यों आप कह रही हैं ? ”

आंटी - “ ऋषभ - शालिनी बाहर चले गये । मेरा मायके - ससुराल से कोई रिश्ता था नहीं , आहूजा साहब एक व्यापारी आदमी उनको मुझसे क्या लेना - देना । विवाह हो गया लड़का उनका हो गया , इस बेसहारा से क्या ताल्लुक रखना । उसी समय ईश्वर ने तुमको भेज दिया । तुम चयनित हो गये , तुम्हारा प्रताप हर ओर फैलने लगा । तुमने शालिनी से कहकर मेरे मायके का मकान बनवा दिया , ससुराल भी मैं हो आयी । तुम ऐसी नौकरी में हो कि आहूजा साहब के काम की नौकरी है । वह गाहे - बेगाहे आते रहते हैं । अब वह सारा त्योहार करते हैं । उनकी पत्नी कहती हैं , बहन जी बगैर आप से मिले मेरा मन नहीं मानता । क्या मैं बेवकूफ़ हूँ यह समझती नहीं हूँ ऐसा क्यों कह रही हैं । ईश्वर बहुत दयालु हैं अनुराग । जब तुम पर गोली चलने की ख़बर सुनी मुझे लगा दुःख मेरे जीवन की नियति है । मेरा बड़ा बेटा गया , मेरे पति गये अब यह मेरा बेटा .. मेरा सबसे क़ाबिल बेटा । अनुराग , मैं कहती थी क़ाबिलियत एक बोझ है । ऋषभ कम क़ाबिल होता तब यहीं देश में रहता और तुम कम क़ाबिल होते तब लोग तुमको क्यों मारना चाहते ? तुम्हारी हत्या का प्रयास सिफ़्र इसलिसे हुआ कि तुम्हारी क़ाबिलियत से लोगों को ख़तरा था इसलिये वह तुम्हें रास्ते से हटाना चाहते थे । अनुराग .. अगर उस दिन कुछ हो गया होता तब ”

आंटी के आँखों से मुक्तादल ही मुक्तादल । उसका चेहरा भीगने लगा , मैं भीगते चेहरे को किंकर्तव्यविमूढ़ होकर देखने लगा ।

आंटी के आँसुओं की धार जब कुछ कम होने लगी तब मैंने कहा , “ आंटी , स्वयम् के लिये जीवन जीना बहुत आसान है पर समाज के लिये जीना बहुत ही मुश्किल है । यह सामाजिक सरोकार बहुधा आप के ही नहीं आपके अपनों के त्याग पर आधारित होता है । आप यह समाचार पढ़ते हो , अनुराग शर्मा की कोचिंग ने यह कर दिया , अनुराग के अभ्यार्थियों ने वह कर दिया । लोग सफल हो रहे हैं । आंटी , इसमें मुझसे ज्यादा त्याग मेरे परिवार का है । मैं तो

पढ़ता हूँ और पढ़ता हूँ । यह मुझे अच्छा लगता है । इसमें मेरा संतोष है पर जो लोग मुझसे जुड़े हैं उनको मेरा समय चाहिये । मैं उनको समय नहीं दे पाता । मेरे पास अपनी बहन से बात करने का समय नहीं है । मेरी माँ को राम पर मुझसे सुनना अच्छा लगता है । वह मेरे कमरे का चक्कर लगाती रहती है पर मेरे पास समय ही नहीं होता । अगर मैं नहीं पढ़ूँगा तब पढ़ाऊँगा कैसे ? मैं कोई वेदव्यास तो हूँ नहीं । मैं एक सामान्य मेधा का महत्वकांक्षा व्यक्ति हूँ या यूँ कहो अति महत्वाकांक्षी । आंटी जब प्रतिभा कम हो और आप अति महत्वाकांक्षी हो जाओ तब जीवन का दर्द बढ़ जाता है । आप मेधा की कमी को अति परिश्रम से संतुलित करने की कोशिश करते हो । यह अति परिश्रम आपके अपनों को किसी न किसी रूप में पीड़ा देता है । आपको भी मुझसे शिकायत है । आप को मैं ज्यादा पत्र नहीं लिख पाता । मेरे पास समय ही नहीं है । मैं ऋषभ की तरह जहीन नहीं हूँ पर ज़िंदगी की रफ्तार में ऋषभ से आगे दौड़ना चाहता हूँ । मैं हर रेस में तेज दौड़ना चाहता हूँ, मैं लहुलुहान कदमों से दौड़ना चाहता हूँ । मुझे नहीं पता मेरी मंज़िल क्या है, मैं एक मंज़िल को पाते ही दूसरी मंज़िल की तलाश करने लगता हूँ । यह न ख़त्म होने वाली तलाश मेरी सारी पीड़ा की जनक है । आंटी आपको नहीं पता होगा ? मैं बचपन में हकलाता था । मैं अभी भी हकलाता हूँ पर लोगों को वह पकड़ने के लिये थोड़ा ध्यान देना पड़ेगा । मैं इस समस्या से बहुत परेशान था । मुझसे कहा गया आप अपनी जिह्वा के नीचे कंकड़ रखकर बोलो फ़र्क आयेगा । मैं कंकड़ रखकर बोलने का अभ्यास करने लगा । मेरी जीभ लहुलुहान होने लगती थी पर मैं अभ्यास करता जाता था । पता नहीं कितना फ़ायदा हुआ या नहीं पर एक दिन मेरी माँ ने पकड़ लिया और वह रोने लगी । उसको मेरी पीड़ा का एहसास हुआ । वह इस समस्या के निदान के लिये पूजा - उपवास करने लगी । आंटी, मेरे पास एक ज़िद है जो तमाम दिव्यास्तरों पर भारी है । मैं अपने आप को अवलोकित करने लगा कि मैं किन - किन शब्दों पर बोलते समय हकलाता हूँ । मैंने पूरी एक सूची बनायी और प्रण किया कि मैं इन शब्दों के बारे बोलूँगा । मैंने नागरिक प्रचारिणी सभा, धीरेन्द्र वर्मा की हिंदी की डिक्षनरी पूरी रट मारी और उन समस्या वाले शब्दों को मैं उनके पर्यायवाची से स्थानांतरित करने लगा । मेरा शब्द कोश बढ़ने लगा, मेरी भाषा में सुधार होने लगा, हकलाहट से निज़ात प्राप्त होने लगी । आंटी ईश्वर अपंगता देता है.. पर क्यों देता है ? अपंगता हकीकत में एक शक्ति होती है अगर ठीक से देखा जाये । यह मेरी हकलाहट मेरी एक शक्ति है जिसने मुझे शब्दकोश से समृद्धिशाली बनाया और आज मेरी भाषा का परचम जो लहरा रहा है उसके मूल में मेरी हकलाहट है । आंटी, मैंने पिछली बार भी कहा था जिस समुद्र की गगनचुंबी लहरों से लोगों को भय होता है उसमें मैं रोमांच की तलाश करता हूँ । जिस शहर में हिंदी को असफलता का कारक माना जाता है, उसी शहर में आंटी मैं हिंदी को स्थापित करूँगा । मेरी माँ कहती है... तू मेरे खून से मेरे हौसलों को पीकर जन्मा है तू.. सिकंदर नहीं

उसके आगे है तू ... मैं ऐसे हार मानने वाला नहीं हूँ । मेरे संघर्ष में मेरा ही नहीं आपका , मेरे घर - परिवार का त्याग समाहित है । यह समाज को नयी दिशा देगा बस वक्त का इंतज़ार करो आंटी ... आँसू आपने आज बहायें हैं दुःखी होकर पर आंटी एक सैलाब निकलेगा आपकी आँखों से .. जिसमें प्रसन्नता ही प्रसन्नता होगी । मेरी माँ ने मुझे सिफ़्र अपने लिये ही नहीं जमा है । उसी ने कहा था कभी .. तुझे मेरा ही नहीं हर माँ का दर्द समझना होगा ।”

“अनुराग .. “

एक सैलाब आंटी के गालों से उत्तरता हुआ और मैं निहारता अपनी माँ का सौंदर्य श्वेत धोती , काला ब्लाउज़, सूनी माँग , मस्तक पर तेज , तीक्ष्ण नसिका , विपर्यस्त केश किनारे से धुंधराले ... उसने हाथों से बालों को पीछे किया एक काव्यात्मक सौंदर्य मिथक कथाओं की तेजस्वी महिलाओं ऐसा ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 329

आंटी थोड़ी देर में सहज हुई । उसको सहज मैं करना भी चाहता था । मैं कुछ दिनों के लिये आया हूँ , थोड़ा माहौल खुशी का रहे यह क्या रोना- धोना हर बात पर । मैंने पूछा “ सब्ज़ी क्या बनायी है ? ”

“ अभी तो बस कढ़ी बनाई है , जो कहोगे बना दूँगी “

मैंने सोचते हुये पूछा , “ क्या - क्या है घर में ? ”

“ सभी कुछ होगा , न होगा तब सामने से आ जायेगा । सामने ही स्टोर है । ”

“ सब्ज़ी शाम को बना लेना , कढ़ी- चावल ही ठीक है । ”

“अनुराग , तुम्हारा दिमाग घनचक्कर है । पता नहीं कब क्या स्वाल आ जाये और कब वह उड़ जाये । ”

“ऐसी बात नहीं आंटी , सब्ज़ी कढ़ी के साथ जाती नहीं । ”

“ मैं बना लूँगी कुछ । मुझे पता है तुम्हारी पसंद का । अनुराग , कब जाओगे शालिनी के यहाँ ? ”

“ जब आप कहो , आप भी चलना । ”

“ मैं चल कर क्या करूँगी ? ”

“ आंटी , अब वह सामराज्य अपना ही है । कमाया कोई हो भोगेंगे तो हम ही । अब जो बच्चा शालिनी - ऋषभ का होगा उसका स्कूल का चाहे जो नाम हो घर का नाम रखना हाफ पंडित । वह हाफ पंडित ही सब भोगेगा ।”

“ आंटी , पता नहीं वह हाफ पंडित कब आयेगा , कहाँ रहेगा , क्या करेगा , अगर यह लोग ही देश नहीं आयेंगे तब वह यहाँ कैसे आयेगा ? ”

“ आंटी , वह आयेंगे आप चिंता न करो । थोड़ा शालिनी - ऋषभ को लड़ लेने दो , लड़ कर थक जायेंगे तब सफेद झंडा उठेगा और शांति वार्ता की मध्यस्थिता करूँगा ।”

“ अनुराग , दोनों अलग - अलग न हो जायें ? ”

“ आंटी , आपकी परवरिश में बहुत दम है । मेरी तरह का बचपना ऋषभ में नहीं है । अंकल के रक्त से प्रवाहित परिपक्वता और आपकी असीम शालीनता से उपजा है वह । ऋषभ ऐसे लोग जमाने में विरले पैदा होते हैं । आंटी , ईमानदारी की बात बताऊँ शालिनी के यह कहने पर हम तीनों हज़ार करोड़ की संपत्ति के वारिस हैं यह सुनकर मेरे अंदर शायद कुछ मोह उत्पन्न भी हो जाये पर ऋषभ में बिल्कुल भी नहीं । मैंने जब उससे कहा यह तब जानती है वह क्या बोला ? ”

“ क्या बोला ? ”

“ वह बोला , अनुराग , जब मैं इनसे शालिनी को माँगने गया तब इन्होंने शर्त रख दी थी व्यापार सँभालने की और अपना मैंनेजर बनने की । मुझे इनका काम करने में कोई आपत्ति न थी , मैं कर भी देता पर मैं शर्तों पर जीवन नहीं जी सकता । मुझे सिवाय मेरे जमीर के कोई और निर्देशित नहीं कर सकता । मैं अपने पिता के प्रति जवाबदेह हूँ और मेरी वह जवाबदेही ही मुझे ज़िंदा रखे हुये हैं । जिस दिन वह ख़त्म हो गयी मैं ख़त्म हो गयी । ”

आंटी फिर भावुक होने लगी । मैंने कहा , ” आंटी अगर आप हर बात पर रोएँगे तब मैं कुछ नहीं बताऊँगा । मेरे पास शालिनी - ऋषभ के बहुत राज हैं । अगर आपको राजदार बनना है तब आपको अपने चेहरे के ढलानों को नियन्त्रित करना होगा । हर बात पर भीग जायें यह ढलान यह किसी भी बेटे को कष्ट देगा । ”

आंटी सामान्य हो गयी । हमने खाना खाया और आंटी से कहा शाम को यूपी भवन चलते हैं । वहाँ पर सारे लोग रुके हैं जो भी मेरे साथ इंटरव्यू दे रहे हैं ।

आंटी - “ इतने लोग यूपी भवन में ? ”

मैं - “ हाँ । ”

आंटी - “ कैसे इंतज़ाम हुआ ? ”

मैं - “ कमिश्नर साहब ने करवाया । वैसे भी आंटी ज्यादातर राज्य सरकारें अपने भवनों में सिविल सेवा के इंटरव्यू देने वालों को रोकने की सुविधा देती हैं । लोग कहते हैं ज्ञानी ज़ैल सिंह जब राष्ट्रपति थे तब वह पंजाब के अभ्यार्थियों को राष्ट्रपति भवन में रुकवा देते थे । कमिश्नर साहब बहुत सीनियर अफसर है , रेजिडेंट कमिश्नर इनका परिचित है । चिंतन सर भी उसको पटाये थे और वह भी लोगों को रुकना देते थे । ”

शाम को मैं और आंटी यूपी भवन पहुँचे । यूपी भवन के बाहर के पोर्टिको में शालिनी की चमचमाती सफेद विदेशी कार खड़ी थी । मैं और आंटी आटो ये उत्तरते ही देख गये उसको । वह कार हम लोग जानते ही थे । आंटी ने पूछा , “ यह कार यहाँ कैसे ? यह तो आहूजा साहब की कार है जो शालिनी के पास रहती थी । ”

मैं समझ गया पूरा माजरा । मैंने कहा , “ आंटी अभी बताता हूँ सब । ”

इतने मैं तिवारी ड्राइवर दौड़ता हुआ आ गया और आंटी का पैर छुआ । मैं आंटी के साथ यूपी भवन के पहले माले पर गया । इसी माले पर सारे लोग रुके थे । यह पता चलते ही कि मैं आ गया हूँ सारे लड़के लड़कियाँ आने लगे । अशोक , दिनेश , परेम नंदन , अनामिका..... सारे लोग आ गये । आंटी ने सबको देखा और वह उनको निहारने लगी । पिछले साल तो मैं अकेला ही आया था पर इस साल तो भीड़ ही भीड़ थी । मैंने अशोक से पूछा , “ यह कार कैसे आयी यहाँ ? ”

अशोक - “ सर , मैंने कहा था न कि ऋषभ भाई के ससुराल जाऊँगा । वहाँ गया आपका , आंटी जी का , ऋषभ भाई का परिचय दिया और इंटरव्यू में जाने के साधन की बात की । मैं भूमिका ही बाँध रहा था कि पापा जी ने कहा , कोई समस्या नहीं है । गाड़ियाँ खाली खड़ी ही रहती हैं । शालिनी की गड़ी तो कभी- कभार ही चलती है यह आप लोग ले जाओ और इंटरव्यू दे लो । बस सर , काम लह गया । ”

मैं - “ कब गये थे ? ”

दिनेश - “ आज ही हम लोग गये थे । ”

मैं - “ कौन - कौन गया था ? ”

दिनेश - “ मैं , अशोक , अनामिका गये थे । ”

आंटी - “ बहुत तेज हो तुम लोग । ”

अशोक - “ आंटी जी , हम लोग चेले किसके हैं । ”

आंटी - “ गुरु संकोची है । ऋषभ की कार खड़ी है पर यह इस्तेमाल करने से परहेज़ कर रहा है । ”

आंटी ने सबसे बात की और मुझसे कहा कि अनुराग सबको एक दिन खाने पर घर पर बुलाओ । कोई तो आता नहीं मेरे यहाँ, यह लोग ही आ जायेंगे थोड़ा घर में रौनक़ बनी रहेगी ।

मैं “ ज़रूर आंटी ।”

कुछ देर हम वहाँ रुके, उन सबका इंटरव्यू का दिन मुझे पता ही था । कई का इंटरव्यू मेरे ही दिन था । देर शाम हम और आंटी घर वापस आ गये ।

लोग इंटरव्यू दे रहे थे, मेरा इंटरव्यू का दिन नजदीक आने लगा । मेरे इंटरव्यू के दिन इलाहाबाद के बहुत लोगों का इंटरव्यू था । इस बार आंटी ने कहा मैं भी चलूँगी इंटरव्यू के दिन । आंटी ने डराइवर बुला लिया था । मैं सुबह तैयार हो गया । मैंने ज़रूरी काग़ज़ात रखे । आंटी ने भी अपने को सौम्यता के साथ सँवारा । यूपीएससी के मेन गेट पर पहुँच गये । इलाहाबाद ही इलाहाबाद था आज । हिंदी माध्यम के लोगों का इंटरव्यू बाद में पड़ता था । यूपीएससी के गेट पर ही प्रतीक्षा मिली । काली सलवार, सफेद कुर्ते, गुलाबी दुपट्टे, माथे पर नीली बिंदी, होंठों पर बहुत हल्की लालिमा, आँखों में काजल, नाक खाली, कानों में चमकते बुंदे लगाये वह मेरा इंतज़ार कर रही थी । उसको देखते ही मैंने कहा, “ बहुत सँवरी हो तुम आज ।”

वह शर्मा गयी । आंटी ने मेरा यह कहना सुन लिया । मैंने आंटी और प्रतीक्षा का परिचय कराया । अंदर से बुलावा आने लगा । मैंने आंटी से कहा, ” आंटी चलता हूँ ।”

आंटी के मैंने पैर छुये, ” आंटी ने मुझे गले से लगा लिया, मेरे माथे को चूमते हुये कहा, ” महाशक्ति का आह्वान मैंने आज पूजा में किया है । आज तुम दिविजयी होगे ।”

प्रतीक्षा ने शुभकामनाएँ दीं । मेरे इंटरव्यू हॉल में पहुँचते ही हंगामा हो गया, आज अनुराग शर्मा का भी इंटरव्यू है । हर एक की निगाहें मेरी ओर । सभी को सात- सात के क्रम में बैठाया गया । मैं फिर इसी दुविधा में कि ऐसे आदमी का बोर्ड मिले जिसे हिंदी आती हो । मैं अपने समूह के साथ बैठा ही था कि एक आदमी आया और बोला .. आपका बोर्ड मेहरा साहब का है । मेरा हृदय बल्लियों उछलने लगा । भारतीय विदेश सेवा के अवकाश प्राप्त वही मेहरा साहब जिनके बोर्ड में मैं पिछले साल था और उनको हिंदी आती भी है और हिंदी लिखते भी हैं । मेरी भाषा की समस्या हल हो चुकी थी । मैंने मन ही मन कहा, ” आज चक्रव्युह भी होगा, कमल व्युह भी होगा और दिविजय भी होगा । कोई नहीं जानता था मेरी रणनीति मेरे सिवाय । मेरे पास आमोघ अस्तर है मैं हजार अक्षवणी सेना का नाश करूँगा चाहे भीष्म ही उसका नेतृत्व क्यों न कर रहे हो ।”

मैं पहला ही था अपने समूह में । मेरा बुलावा आ गया । मैं इंटरव्यू बोर्ड के कमरे के बाहर से अंदर प्रवेश करने लगा और माँ की वह पंक्ति गूँजने लगी ... मेरे खून से मेरे हौसलों को पीकर जन्मा है तू

बाहर मेरे जाने के बाद आंटी और प्रतीक्षा रेस्टोरेंट पर बैठ गये । आंटी ने चाय मँगायी । चाय आते ही आंटी ने प्रतीक्षा से कहा “ तुम अनुराग से कितना प्यार करती हो ... ”

प्रतीक्षा को इस सवाल की उम्मीद न थी । चाय उसके हाथ से गिरते - गिरते बची ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 330

आंटी के प्रश्न पर प्रतीक्षा एकदम चौंक गयी , बगैर किसी भूमिका के सीधा सवाल वह भी इतना कठिन , उसका का मस्तिष्क काम ही नहीं कर रहा था । वह ऐसे प्रश्न को लिये बिल्कुल तैयार न थी । उसने कभी यह सोचा ही न था एक अपरिचित व्यक्ति पहली ही मुलाक़ात में चाय के पहले प्याले की पहली चुस्की के साथ ही इतना बड़ा सवाल कर देगा । वह इस सवाल का जवाब देने में बहुत असहज महसूस कर रही थी । आंटी ने कहा , “तुम जवाब न देना चाहो तब मत दो पर मुझे इस सवाल के जवाब के बगैर अनुराग के जीवन का फैसला नहीं करना है । तुम सोचती होगी यह कौन है जो मुझसे यह सवाल कर रही और किस हक्क से ? वह मेरे गर्भ से नहीं जन्मा है पर मेरे गर्भ से जन्मे पुत्र ऋषभ से वह ज्यादा वह मेरे नज़दीक है । उसने मेरे और ऋषभ के बारे में तुमको अवश्य बताया होगा । ”

प्रतीक्षा - “ हाँ बताया है । ”

आंटी - “ तब तुमको मैं अजनबी नहीं लगूँगी । ”

प्रतीक्षा - “ हाँ , वह आपके बारे में बहुत बात करता है । ”

आंटी - “ मेरा सवाल है .. तुम अनुराग से कितना प्यार करती हो , तुम शब्दों में उलझाकर गोल- मोल उत्तर देने के बजाय “ हाँ ” या “ ना ” में उत्तर देना ।

प्रतीक्षा- “ हाँ । ”

आंटी - “ कितना ? यह इस उम्र का एक शारीरिक आकर्षण मात्र ही है या इसके अलावा भी है ? ”

प्रतीक्षा - “ उसमें क्या शारीरिक आकर्षण है ? वह एक सामान्य सी काया और सामान्य सी संरचना- सूरत का लड़का है , उसकी सीरत नायाब है ।

आकर्षण उसके शरीर में नहीं उसकी सीरत में है ।”

आंटी - “ तुम लोग अपने संबंधों में कहाँ तक पहुँचे हो , आशा है तुम समझ रही हो मैं क्या पूछ रही हूँ ?”

प्रतीक्षा - “ हाँ आंटी मैं सब समझ रही हूँ । हम कहीं तक नहीं पहुँचे हैं । मैंने सिफ़र यह कहा है कि मैं विवाह करना चाहती हूँ और उनका जवाब प्रतीक्षित है ।”

आंटी - “ एक बात कहूँ प्रतीक्षा ? ”

प्रतीक्षा- “ हाँ आंटी ।”

आंटी - “ वह एक बेहतर प्रेमी तो हो सकता है पर एक बेहतर पति नहीं हो सकता ।”

प्रतीक्षा- “ क्यों आंटी ? ”

आंटी - “ वह अति महत्वाकांक्षी है । एक अति महत्वाकांक्षी व्यक्ति सबको पीड़ा देता है , स्वयम् को भी । एक पत्नी तो बहुत ही पीड़ित होगी । एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति में अगर समाज की संदर्भिता का समावेश हो जाये तब वह अपनों को पीड़ा नहीं एक असीम पीड़ा देता है । तुमने उन महानायकों की जीवनी पढ़ी ही होगी जिन्होंने समाज के लिये परिवार को त्याग दिया , वह आज कोई महानायक नहीं है पर एक अति महत्वाकांक्षा से सरोबार व्यक्ति है जिसमें समाज के प्रति एक सोच है । यह सब गुण एक बेहतर पति तो नहीं बनाते । तुमको उसके भीतर जो आज गुण लग रहे हैं एक पत्नी बनते ही अवगुण लगने लगेगा । अगर तुम सारी पीड़ा सहने को तैयार हो तभी तुम उसके जीवन में प्रवेश करो । वह जो भी करता है बहुत ही शिष्ट से करता है और किसी की नहीं सुनता । उसको अपनी सोच से डिगाना बरह्मा के लिये असंभव अगर न हो तो भी आसान न होगा । पर एक बात है प्रतीक्षा,..

प्रतीक्षा-“ क्या आंटी ? ”

आंटी -“वह जब प्रेम करेगा तब वह भी एक पागलपन की हद तक करेगा । उसका प्रेम बहुत ही आळादकारी होगा , पर एक बात का ध्यान रखना वह बहुत ही स्वार्थी है अपनी महत्वाकांक्षा को लेकर । अगर उसकी महत्वाकांक्षा और प्रेम में टकराहट”

आंटी बोलते - बोलते चुप हो गयी । उसकी चुप्पी प्रतीक्षा को बेचैन कर गयी ।

“ क्या होगा आंटी तब ? ”

आंटी - “ जो भवितव्य होगा ।”

प्रतीक्षा - “ क्या भवितव्य होगा ?”

आंटी - “ यह भी बताना पड़ेगा तुम्हारी ऐसी विदुषी को ।”

प्रतीक्षा के चेहरे पर चिंता की लकीरें स्पष्ट होने लगी । उसकी चाय वैसे ही उसके हाथ में थी । उसने चाय का एक भी सिप न लिया था । आंटी ने दूसरी चाय मँगायी । प्रतीक्षा ने चाय का प्याला पकड़कर कहा , “ आंटी मुझे अनुराग चाहिये किसी भी कीमत पर । मैं उसके सिवाय किसी और से परेम नहीं कर सकती ।”

आंटी - “ ऐसा क्या है उस अस्थिर दिमाग के व्यक्ति में ?”

प्रतीक्षा - “ एक पागलपन ।”

आंटी - “ तुमको उसके पागलपन से लगाव है ?”

प्रतीक्षा - “ यह भी कह सकती हैं आप ।”

आंटी - “ अगर पागलपन से ही लगाव है तब तो बात ठीक है । आप उसके जवाब का इंतज़ार करो । मेरा काम था आपको आगाह कर देना । वह मैंने कर दिया ।”

प्रतीक्षा - “ आंटी एक बात पूछूँ ?”

आंटी - “ अवश्य ।”

प्रतीक्षा - “ अनुराग के व्यक्तित्व का वह पक्ष जो एक दृष्टिकोण से कमज़ोर पक्ष कहा जा सकता है वह आप मुझे क्यों बता रही थीं जबकि मैंने साफ़-साफ़ अपने मन की बात आप से कह दी थी । क्या आप चाहती हैं मैं अनुराग के जीवन से हट जाऊँ ?”

आंटी -“ मैं कौन होती हूँ यह कहने वाली कि कोई उसके जीवन में आये या हट जाये , क्यों चाहूँगी तुम उसके जीवन से हट जाओ । अनुराग के जीवन में एक लड़की तो चाहिये ही होगी एक पत्नी के तौर पर । तुममें एक बेहतर पत्नी बनने की सारी अच्छाइयाँ हैं ही । तुम्हारे ऐसी अच्छे घर की पढ़ी- लिखी - संस्कारी और आईएएस लड़की उससे इस हृद तक प्यार करें यह उसके जीवन की एक उपलब्धि है ।”

प्रतीक्षा- “ पर मैं अभी आईएएस नहीं हूँ ।”

आंटी - “ हो जाओगी ।”

प्रतीक्षा -“ आप को कैसे पता आंटी ?”

आंटी - “ अनुराग की छात्रा हो । उसने पूरी ताक़त तुम पर लगायी ही होगी , तुम पर ही नहीं उसने अपने हर छात्रों पर लगायी होगी । वह हार के स्वीकार करने वाला लड़का है नहीं और तुम तो

आंटी बीच - बीच में चुप हो जाती थी । यह आंटी का चुप हो जाना प्रतीक्षा को बेचैन कर जाता था ।

प्रतीक्षा - “ तुम तो” वाली बात आंटी पूरी कर दीजिये ।”

आंटी - “ तुम तो उसकी परेयसी हो । लगाव तो उसका तुमसे है ही , तुम पर तो उसने और ताक़त लगायी होगी ।”

प्रतीक्षा - “ कैसे पता उसका मुझसे लगाव है ?”

आंटी - “वह झूठ कम ही बोलता है .. कम से कम मुझसे पर वह तुमसे मिलने गया पर नाम किसी और का बता कर । वह मुझको छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहता क्योंकि वह जानता है मुझे उसका साथ बहुत अच्छा लगता है पर उस दिन मुझको छोड़कर तुमसे मिलने गया , अगले दिन तुम्हारा इंटरव्यू दिलाने आया । अगर लगाव व होता तो ऐसा क्यों करता ।”

प्रतीक्षा के चेहरे पर खुशी का इन्द्रधनुष बनने लगा । आंटी ने कहा , ”प्रतीक्षा , मैं सिफ़र यह चाहती हूँ जो भी उसके जीवन में प्रवेश करे उसको जान कर करे । एक रुमानी ख़्यालातों से जीवन में प्रवेश बहुत दुख देता है , अगर उसका वास्तविकता की जमीन से कोई ताल्लुक़ न हो । मैं चाहती हूँ वस्तुस्थिति को समझकर फ़ैसला लिया जायें ।”

प्रतीक्षा- “ आंटी , मेरा फ़ैसला तो आपने सुन लिया पर अनुराग का फ़ैसला....”

आंटी - “वह जल्द ही मिलेगा । मैं उससे कहूँगी वह फ़ैसला करे , फ़ैसला क्या करेगा यह नहीं पता पर फ़ैसला ज़रूर करेगा , जल्द ही ।”

प्रतीक्षा- “ आंटी , मुझे फ़ैसला अपने पक्ष में चाहिये , मुझे कोई जल्दी नहीं है । मुझे अपने प्यार की ताक़त को आज़माने दीजिये । मैं अनुराग को प्राप्त करने के लिये किसी के रहमोकरम पर नहीं यहाँ तक अनुराग के भी नहीं मैं अपने प्यार की ताक़त से अनुराग को प्राप्त करना चाहती हूँ । आंटी , आपने अनुराग की ज़िद देखी है , मेरी नहीं । मैं किसी दया के आधार पर नहीं सम्मान के साथ अपनी क़ाबिलियत से उसके जीवन में प्रवेश करना चाहूँगी । मैं अपने भाइयों के प्रताप से नहीं अपने संघर्ष से उसे प्राप्त करूँगी ।”

आंटी -“ प्रतीक्षा अगर मैं शायराना अंदाज में कहूँ तब कहूँगी मुझे तुम्हारा यह अंदाज़ बहुत पसंद आया । मैंने अनुराग के सारे छात्रों को परसों खाने पर बुलाया है । तुम भी उसकी छात्रा ही हो , वैसे वह तुमको बुलायेगा ही पर मैं

अपनी ओर से निमंत्रित कर देती हूँ, अगर वह नहीं भी बुलायेगा तब भी आना । मेरा भी कुछ हक्क है अनुराग के छात्र पर और “

“ और क्या आंटी “

“ अनुराग की प्रेमिका पर ...

तुम अनुराग की पहली प्रेमिका हो ।”

“ मेरे से पहले कोई और नहीं था ..”

“ प्रतीक्षा , उससे कौन प्रेम करेगा उसकी माँ से पूछना कभी इलाहाबाद जाना ... यह सारे उसके महामानव की छवि को एक मिनट में ध्वस्त कर देगी । तुम उर्मिला से एक बार ज़रूर मिलना । ऐसी नेक महिलायें कम होती हैं । अनुराग आज जो कुछ है उसके ही कारण है ।“

यह कहकर आंटी बोली .. “ईश्वर तुमको तमाम खुशियाँ दें और तुम भी आईएएस बनो , देश- समाज के लिये कार्य करो ।”

मैं इंटरव्यू बोर्ड में प्रवेश कर गया । मेरे सामने ही मेरहरा साहब थे । मैं उनको पहचान गया । मैंने दोनों हाथ जोड़कर कहा , “ प्रणाम सर ”, फिर मैं उनके दोनों ओर बैठे लोगों को भी प्रणाम किया । मेरहरा साहब ने चश्में के भीतर से आँखे उठाकर कहा , “ have your seat ”

“ धन्यवाद सर ।”

मेरहरा साहब मेरा DAF पलटने लगे । पलटते - पलटते बोले .. अनुराग शर्मा... आप पिछली बार आईआरएस हुये थे और

मेरी तरफ देखकर कहा , “ आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष भी हैं... वर्तमान अध्यक्ष ।”

मैं “ जी सर ।”

सबकी निगाहें मेरी ओर । एक महिला सदस्या रुक्मणी घोषाल थी । वह बोली , “ Are you same Anurag sharma whose story has been broadcasted by BBC and Allahabad high court has praised your efforts and initiative ”

मैं “ जी महोदया ।”

पूरा बोर्ड मेरी ओर देखने लगा । सबकी याददाश्त में वह सारा घटनाक्रम आ गया ।

रुक्मणी घोषाल - “ Tell your story . It is an interesting story . ” मेरहरा सर ने मेरी ओर देखकर कहा .. बताइये क्या था वह रोमांचक सफर

आपका .. यहीं से हम लोग बात आरंभ करते हैं ।

मेरे सामने एक फुलटॉस गेंद थी । मैंने निश्चय किया भाषा के चमत्कार को बिखेरने का । एक क्रिस्सा जो बदल सकता है समाँ .. मैं शब्दों को गढ़ने लगा एक शिल्पकार की तरह .. यह अवसर हाथ से न जायेगा । हवा में उड़ती फुलटॉस गेंद मेरी ओर आती हुई , मैं पूरी तन्मयता से देखते वह गेंद और.... मेरे शब्द मेरे ज़ेहन में गढ़ रहे थे ... मेरा चक्रव्यूह आरंभ हो गया । मैं बनाने लगा मस्तिष्क में भाषा का तिलस्म..

प्रतिपल परिवर्तित व्यूह कौशल विशेष ..

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 331

“सर , वाक्या छोटा सा ही था जो आगे तक बढ़ता गया । मैं पढ़ाना चाहता था । इसका कारण यह था कि जिस विश्वविद्यालय का प्रचम संघ लोक सेवा आयोग में कभी लहराया करता था वह अब हवाओं से मिन्नतें करता था उर्ध्वमुखी होने के लिये । हवायें भी क्या करतीं ? वह स्वयम् तो बहती नहीं । उनके तीव्रगामी होने के लिये दबाव क्षेत्र बनाना पड़ता है । मैं वह दबाव क्षेत्र बनाने का प्रयास करने लगा । यह मेरा प्रयास अराजकता और स्वार्थ के प्रतिमानों को सुहा नहीं रहा था । मैं अति उत्साह में था और शहर में हर गली , मुहाने पर चल रहे सबसे बड़े व्यापार जो शिक्षा के नाम पर चलाया जा रहा था और जो लक्ष्मी की अनवरत वृद्धि उनके धनकोष में कर रहा था उस पर प्रहार होने लगा । अब यह सही था यह ग़लत यह एक विचारणीय बिंदु अवश्य है पर एक नये उम्र का व्यक्ति थोड़ा अपरिपक्व तो होता ही है , शायद यह मेरी अपरिपक्वता थी जो मुझे उस चुनाव की ओर ले गयी और एक परिवर्तन की लहर बहने सही , बाकी सब इतिहास है सर जिसका मूल्यांकन समय करेगा । ”

मैं प्रश्न उत्तरों में डालने लगा । पहला प्रश्न बखूबी डाल ले गया था ।

मेहरा साहब -“ वह क्या दबाव क्षेत्र था जो आप बना रहे थे और लोग विरोध कर रहे थे । ”

मैं “ सर , मैंने कोचिंग चलाने का फ़ैसला किया । यह आरंभिक कोचिंग मैं विश्वविद्यालय परिसर के बाहर चला रहा था पर मुझे लगा कि यह मेरे लक्ष्यों की पूर्ति नहीं कर रहा । मैं विश्वविद्यालय में पढ़ाने लगा । मैं धीरे -धीरे कक्षायें बढ़ाने लगा । मैं जितना पढ़ाता था उतना ही उपयोगिताविहीन कोचिंगों पर प्रहार करता था । यह हो सकता है उचित न रहा हो , मुझे अपने काम से

काम रखना चाहिये था पर मैं एक व्यापक परिदृश्य देख रहा था और संभवतः उनके शोषणकारी प्रवृत्ति के कारण मेरे मन में आकरोश था और मैं प्रतिक्रिया दे रहा था । कहा जाता है कि विश्वविद्यालय के छात्र नेताओं के द्वारा कोचिंग वालों से पैसा उगाहा जाता है और उन लोगों ने इस मुद्दे पर छात्र- नेताओं को ख़रीद लिया और एक कोई पुराने ऑफिस आदेश का हवाला देकर मेरा पढ़ाना बंद करा दिया । वह ऑफिस आदेश कहता था कि केवल रिसर्च स्कॉलरशिप पढ़ा सकता है और मैं रिसर्च स्कॉलर था नहीं । विश्वविद्यालय प्रशासन ने मुझे पढ़ाने से रोक दिया । मैंने आदेश मानने से इंकार कर दिया पर सत्ता की ताक़त बड़ी होती है । इस सत्ता की ताक़त से लड़ने का एक रास्ता मैंने छात्र- संघ का चुनाव देखा । मैं चुनाव लड़ गया पर इस बीच अराजकता हॉबी होने लगी और मुझ पर क्रातिलाना हमला हो गया पर ईश्वर कृपालु था उस दिन और मैं बच गया । हत्या के प्रयास ने सनसनी फैला दी , उच्च न्यायालय ने मामले का संज्ञान ले लिया मुझे सुरक्षा प्राप्त करा दी गयी । छात्र पढ़ाना चाहते थे उनका समर्थन प्राप्त हो गया और मैं भारी बहुमत से छात्र संघ अध्यक्ष निर्वाचित हुआ , मैं ही नहीं मेरे समर्थन से कई लोग अन्य पदों पर जीत गये । मैंने जिस लक्ष्य के लिये चुनाव लड़ा था वह पूरा हो गया था । मुझे पढ़ाने की आज़ादी मिल गयी और मैंने छात्रसंघ अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और आह्वान किया सभी पदाधिकारी त्यागपत्र दे दें । अधिकांश ने दे भी दिया पर कुलपति ने त्यागपत्र स्वीकार नहीं किया । मेरे और मेरे समर्थकों के त्यागपत्र के कारण छात्रसंघ समाप्त ऐसा हो गया है ।”

मेहरा सर - “ऐसा क्यों किया आपने ?”

मैं - “ सर मैं विश्वविद्यालय से छात्रसंघ का समापन चाहता हूँ । यह छात्रसंघ जिस रूप में कार्य कर रहा वह पूरी तरह प्रतिगामी हो चुका है ।”

मेहरा सर - “ इसका यह तात्पर्य है कि छात्र- राजनीति पूरी तरह विफल हो चुकी है ?”

मैं - “ इलाहाबाद के संदर्भ में पूरी तरह से ।”

मेहरा सर - “ कैसे ?”

मैं - “ छात्र राजनीति की संकल्पना आज़ादी के संग्राम के वक्त हुई थी । सन 1931 में छात्र-संघ का आरंभ हुआ । एक से एक देदीप्यमान लोगों ने छात्र- संघ भवन को सुशोभित किया । कई ऐसे लोग पदाधिकारी हुये जिनकी यूपी बोर्ड में पोज़ीशन थी । पढ़ने वाले लोग छात्र- राजनीति करते थे और देश में एक राजनैतिक नेतृत्व विकसित करने में सहायक हुये । पर कालान्तर में यह राजनीति पहले क्षेत्र और उसके बाद जाति की संकीर्णता की बंधक हो गयी । अराजक तत्वों ने राजनीति में प्रवेश किया और अराजकता एवम् राजनीति पर्यायवाची हो गये ।”

मेहरा सर - “ यह तो आपकी - हमारी - समाज की विफलता है , इसमें राजनीति या छात्र- राजनीति का क्या दोष ? आप रोग का निदान करने के बजाय शरीर का समापन चाह रहे , क्या यह उचित है ? ”

मैं - “ सर , इस राजनीति को समाप्त होना होगा । जिस राजनीति में गर्व इस बात पर हो रहा हो कि हमने अध्यापकों को अपमानित कर दिया उनके मुँह पर कालिख पोत दी । जिस चुनाव में प्रत्याशी नहीं प्रदेश का मुख्यमन्त्री परोक्ष रूप से लड़ रहा हो । जहाँ पर धन- वाहन - संसाधन की बहुलता हो और चुनाव के मुद्दों का छात्रों से कोई सरोकार न हो , ऐसी व्यवस्था को समाप्त होना ही होगा एक नयी व्यवस्था के जन्म के लिये । ”

मेहरा सर - “ मुख्यमन्त्री चुनाव लड़ रहा परोक्ष रूप से ... मैं कुछ समझा नहीं । ”

मेरा प्रश्न का उत्तर में समाहित करना कारगर हो रहा था । मैंने मन ही मन कहा तुम लोग मात्र पढ़कर जीवन में आगे आये हो मैं संघर्ष करके जीवन में आगे आ रहा । आजमाइश राजप्रासाद मे रहकर राज्य प्राप्त करने वाले और रास्ते के छाँव को दुश्मन की साजिश मानकर उसकी सहायता लेने से इंकार करने वाले के बीच है यह सोचते - सोचते मैंने कहा , “ सर इलाहाबाद विश्वविद्यालय का छात्र- संघ छात्र- राजनीति ही नहीं एक समग्र राजनीति में एक बड़ी हैसियत रखता है । उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव दो वर्षों में होने वाला है । ऐसे में कोई भी मुख्यमन्त्री चाहेगा कि उसका आदमी ही छात्र- संघ पर काबिज़ हो । मेरे ऐसा करान्ति धर्मी तो न ही हो ... “ मुझे मेहरा साहब ने बीच में ही रोक लिया .. “ आप करान्ति धर्मी कैसे हैं ? ”

मैं - “ सर करान्ति क्या होती है ? चल रही व्यवस्था से एक सकारात्मक विद्रोह करान्ति होती है । करान्ति समझौता नहीं संघर्ष चाहती है इसीलिये करान्तिधर्मी समझौतों में नहीं संघर्ष में यक़ीन रखता है । वह बनी- बनी मान्यताओं का समूल नाश करना चाहता है , अगर नाश नहीं कर पाता है तब वह पुनः वक्त का इंतज़ार करता है । मैंने संघर्ष में यक़ीन रखा चाहे वह मेरी कक्षा हो या कक्षा के बाहर का परिदृश्य । मुझसे समझौते करने के तमाम प्रयास किये गये पर मुझे वह स्वीकार्य न था । मेरी हत्या का प्रयास भी एक समझौता ही था नियति का समझौता , अगर मैं मृत्यु को प्राप्त कर गया होता । अगर मेरा समापन हो गया होता तब नियति यह कह रही होती तुम अभी करान्ति के लिये उपयुक्त नहीं हो । एक निहत्थे पर हथियारों से लैस लोग प्रहार करें और वह बच जाये यह बात कहती है नियति करान्तिधर्मिता को प्रोत्साहन दे रही है । हम सब निमित्त मात्र हैं जीवन के इस मंच पर , नियति ने मुझे निमित्त बनाया यह सोचकर हत्या के प्रयास के बाद मैं और आकरामक हो चुका था । मैं अधिक से अधिक मतों से जीतना चाहता था । मैंने चुनाव जीतते ही पुनः पढ़ाना आरंभ कर दिया यह कहते हुये चाणक्य-

परशुराम - विश्वामित्र की ज़मीन पर शिक्षा प्रदान करने के लिये राज्याज्ञाओं की कोई आवश्यकता नहीं है ।”

मेहरा साहब ने फिर बीच में रोक लिया .. “ क्रान्ति क्या सदैव सकारात्मक विद्रोह ही होता है ? कई बार तो वह नकारात्मकता की ओर बढ़ जाती है ।”

“

“सर जब क्रान्ति नकारात्मकता की ओर बढ़ती है तब वह अराजकता को जन्म देती है । वह क्रान्ति नहीं अराजकता होती है ।”

“क्रान्ति और अराजकता को आप थोड़ा स्पष्ट कीजिये ?”

“ सर फ्रांसीसी क्रान्ति से हम समझते हैं ।

बास्तील के किले का पतन और महिलाओं का वरसाई की ओर मार्च एक क्रान्ति थी जिसने सामन्तवाद एवम् राजशाही का समापन किया तो डायरेक्टरी का शासन एवम् नेपोलियन का प्रादुर्भाव एक अराजकता थी ।”

“आप कह रहे फ्रांसीसी क्रान्ति से अराजकता का जन्म हो गया ?”

“ सर , क्रान्ति से बहुधा अराजकता का जन्म हो जाता है अगर क्रान्ति को उचित नेतृत्व प्राप्त न हो ।”

“ वह कैसे ?”

“ फ्रांस की क्रान्ति को उचित नेतृत्व न मिला और क्रान्ति से जन्मा नेपोलियन क्रान्ति हन्ता हो गया । स्वतन्त्रता संग्राम भी एक क्रान्ति थी पर इसी क्रान्ति ने अराजकता को जन्म दिया और देश का विभाजन हुआ वह भी एक नृशंसता के साथ । हमारे बीच एक अप्राकृतिक रेखा खींच दी गयी ।”

“आप कहना चाह रहे हैं कि आज़ादी का आंदोलन एक क्रान्ति नहीं अराजकता थी ?”

“ वह एक क्रान्ति थी जो एक अराजकता में समाप्त हुई “

“ कैसे ?”

मेरे हाथ फुलटॉस गेंद फिर आ रही थी । मैं उसको इतना फुलटॉस बनाना चाहता था कि वह सीधे मेरे बल्ले पर आये । मैं चक्रव्यूह से कमल व्यूह की ओर बढ़ने लगा । मैं चाहता था सवाल और गढ़ जाये तब मैं जवाब दूँ । मेरी स्वतन्त्रता संग्राम पर बहुत ही पकड़ थी । मैं इस विषय पर सिद्धहस्त से सिद्धहस्त अध्यापक को चुनौती देने का साहस रखता था । मैं पचास से साठ घंटे अपनी कक्षाओं में सिर्फ़ राष्ट्रीय आंदोलन पढ़ाया करता था । मैं बहेलिये

की तरह जाल बुनने लगा और मेहरा साहब उस जाल में फँसने लगे । वह जैसे - जैसे जाल में आते जा रहे थे मेरा आत्मविश्वास बढ़ता जा रहा था । आंटी ने बहुत ही लगन से महाशक्ति का आह्वान किया था , वाक़ई महाशक्ति आ चुकी थीं । दो प्रतापी साध्वी महिलायें एकटक दूर कहीं बैठी तल्लीन थीं अपनी साधना में कल्पित कर रहीं दूर से यह अतुलनीय संग्राम ।

बाहर रेस्टोरेंट पर आंटी चुप थीं । वह खोयी हुयी थी । प्रतीक्षा ने पूछा , “ क्या हुआ आंटी ?”

आंटी - “ अनुराग का इंटरव्यू चल रहा होगा ।”

प्रतीक्षा- “ हाँ, चल रहा होगा ।”

आंटी - “ कैसा हो रहा होगा ?”

प्रतीक्षा- “ आंटी , आपने उसको कक्षा में नहीं देखा है । आप कभी देखना । वह अविजित है । उसको साम - दाम - दंड - भेद सब आता है । हम लोग आपस में इनका मज़ाक भी बनाते थे कि ईश्वर ने इस साँचे का एक ही बार इस्तेमाल किया फिर न किया । अशोक कहता था कि इतने बड़े फ़राउ को बना कर फिर सृष्टि को चला ले जाना आसान काम नहीं है । ईश्वर दुबारा ऐसा साँचा बना देंगे तब वह सृष्टि चला चुके । वह साँचा परमात्मा ने आग में गला दिया होगा ।”

आंटी - “ऐसा क्यों कहते थे तुम लोग ?”

प्रतीक्षा - “ इनके पास हर समस्या का हल रहता है । पिछले साल किसी की भाषा बदलवा दी थी इंटरव्यू में और बोर्ड को पता ही न चला ।”

“ प्रतीक्षा ... ”

“ हाँ आंटी ..”

“ तुम पर विशेष ध्यान दिया था ?”

प्रतीक्षा- “ हाँ आंटी ।”

आंटी - “ क्या किया था ।”

प्रतीक्षा - “ तीन बार घर आये थे । उन्होंने बहुत लंबे- लंबे माँक मेरे लिये थे । मुझे मेरे इंटरव्यू के दिन पहनने वाले कपड़ों में मुझे तैयार होने को कहा था और इंटरव्यू हॉल में कैसे प्रवेश करो , कैसे अभिवादन करो हर छोटी- छोटी बात का रिहर्सल कराया था ।”

आंटी - “ जब तुम इंटरव्यू के कपड़ों में इंटरव्यू हॉल का रिहर्सल कर रही थी तब वह अकेला था उस समय ?”

प्रतीक्षा - “ नहीं, मेरी भाभी भी रहती थीं ।”

आंटी - “ वह तुमको निहारता था ?”

प्रतीक्षा - “ यह आप क्यों पूछ रही हैं ?”

आंटी शांत हो गयीं थोड़ी देर के बाद बोलीं .. “ प्रतीक्षा एक बात कहूँ ?”
“ हाँ आंटी ।”

“ अनुराग विवाह करेगा ”

“ आंटी बात पूरी करिये आप बीच - बीच में रुक जाती हैं ।”

“ प्रतीक्षा, मुझे बहुत खुशी होगी अगर तुम अनुराग का दिल जीत सको ,
उसकी तुमसे अनुरक्ति हो जाये । तुम्हारा प्यार इतना प्रभावी हो कि उसे
तुमसे आसक्ति हो जाये । मुझे अनुराग के अविवाहित रहने का बहुत डर
सताता है ।”

प्रतीक्षा जैसे आसमान से गिर गयी हो ... इतना ही कह पायी

“ क्यों आंटी ?”

आंटी फिर कहीं खो गयी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 332

मेहरा सर ने अपने बगल बैठे एक कम बालों के व्यक्ति की ओर देखा । उनके देखने से यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह उस व्यक्ति से कह रहे आ़ज़माएँ इसको । वह कौन था यह तो मुझे नहीं पता पर उनके सवाल से ही लग गया वह एक्सपर्ट हैं, विषय - विशेषज्ञ हैं ।

“ आप ने भारत की आज़ादी की लड़ाई को अराजकता कह दिया , बात तो बड़ी कह दी आपने । थोड़ा व्याख्यायित करेंगे ।”

“ सर , मैंने यह नहीं कहा । मैंने यह कहा इसका समापन एक अराजकता में हुआ । हमने इस आज़ादी के लिये संघर्ष नहीं किया था । हमने जिसके लिये संघर्ष किया था वह नहीं मिला हमें ।”

“ हम क्या चाहते थे जो न मिला ।”

“एक समग्र राष्ट्र, एक गौरवशाली परम्परा, एक भाई-चारा ।”

“ क्या यह नहीं मिला ?”

“नहीं ।”

“कौन ज़िम्मेदार है इसका ?”

“कांग्रेस ।”

“वह कैसे ?”

“कांग्रेस के ज़िम्मे दो काम थे । एक , देश को दासता से मुक्त कराना और दूसरा , एक समग्र राष्ट्र का विकास करना । पहले कार्य में कांग्रेस सफल रही और दूसरी में असफल ।”

“क्या मात्र कांग्रेस ही ज़िम्मेदार है इसके लिये ?”

“सर , उम्मीद उससे की जाती है जिसमें सदाशयता होती है , मानवता होती है , त्याग की क्षमता होती है । प्रतिगामी तत्वों से कोई आशा नहीं होती । जब सदाशयता से पूर्ण व्यक्ति निराश करता है तब पीड़ा होती है । कांग्रेस की असफलता पीढ़ियों- आने वाली नस्लों को दर्द देंगी और कांग्रेस को इतिहास को जवाब देना होगा ।”

“कांग्रेस को या गाँधी को ?”

“मात्र गाँधी को दोष देना उचित न होगा ।”

“गाँधी राष्ट्रीय आंदोलन को अपनी जीवनी की तरह इस्तेमाल करने लग गये थे , जब सारा सेहरा गाँधी के सिर पर तब यह क्यों नहीं ?”

गाँधी राष्ट्रीय आंदोलन को अपनी जीवनी की तरह इस्तेमाल करने लग गये थे .. यह वाक्य मुझे चौंका गया । यह वही कह सकता है जिसकी राष्ट्रीय आंदोलन पर बहुत समझ है । यह कोई आम व्यक्ति नहीं है । यह कोई इतिहास का मम्ज़ा है । मैं समझ गया अब साक्षात्कार एक गहरे अतल सागर की गहराइयों में प्रवेश कर रहा है । मेरी आज़माइश का दौर आ चुका है । मुझे याद आया शंकराचार्य- मंडन मिश्र का शास्त्ररार्थ । मैंने एक बड़ा फ़ैसला किया । साक्षात्कार को और उफुक पर ले जाने का । मैंने उत्तर देने के पहले सायास एक बहुत बड़ी बात कह दी ।

“सर वह मात्र जीवनी ही लिखने का प्रयास करते तो भी ठीक था । वह एक अहंकार पूर्ण आत्मकथा लिखने का प्रयास कर रहे थे ।”

बोर्ड में एक कौतूहल आ गया । रुकमणी घोषाल मैडम ने कहा , “Do you want to say Gandhi was arrogant ?”

“मैडम , महात्मा एक ज़िद्दी व्यक्ति थे । ज़िद्दी व्यक्ति अगर अपने पर नियन्त्रण न करें तब वह बहुधा अहंकारी हो जाता है । यह महात्मा के साथ हो गया ।”

विशेषज्ञ - “आप दोनों बातें कह रहे हो , वह महात्मा भी थे , ज़िद्दी भी थे और अहंकारी भी ।”

मैं - “ सर , महात्मा ज़िद्दी होता ही है । वह उसकी ज़िद ही है जो उसको महात्मा बनाती है । एक सामान्य व्यक्ति कहाँ ज़िद्दी होता है । वह तो बस कुछ सुविधाओं का आग्रही होता है और वह सुविधायें भौतिकवादी होती हैं । भौतिकतावाद का आग्रही व्यक्ति ज़िद्दी नहीं कहा जा सकता । ज़िद एक सकारात्मकता है अगर उसमें एक व्यापक उद्देश्य का समावेश हो , वह एक नकारात्मकता है अगर उसमें मात्र स्वयम् के प्रति आग्रह हो ।”

रुक्मणी घोषाल - “ Anurag , your Hindi is too tough to understand .. ”

अब मेरा छलिया बनने का वक्त आ चुका था, मन में भाव आया छल अब तू । सत्य प्रकाश सर ने कहा था मेरा एक फ़र्ज़ी साहित्यकार है । एक फ़र्ज़ी साहित्यकार अनायास भाषा के प्रति लगाव दिखाता ही है क्योंकि उसका अस्तित्व उसके साथ जुड़ा होता है । मेरे सामने एक फुलटॉस गेंद फिर थी । नंबर तो मेरा सर को देना है इस अंग्रेज़ी संस्कार से लबालब महिला को कहाँ देना है । पटाना तो मेरा सर को है बाकी तो सहायक हैं । मैंने मेरा सर पर मेघनाथ के शक्तिबाण सदृश चला डाला ।

“ मैडम , एक छोटा सा वाक्या फ़िराक़ सर का साझा करूँगा जो उन्होंने शायद अपनी किताब मन- आमन में लिखी है जो उनके पत्रों का संकलन है । फ़िराक़ सर ने कहा था कि कक्षा पाँच के बाद मुझे भाषा लिखने में कोई समस्या नहीं होती थी मैं जैसा चाहता था लिख जाता था । वह महान थे । वह ईश्वर की बनायी नायाब संतान थे । वह हिंदी , उर्दू अंग्रेज़ी सब में माहिर थे । मैं एक सामान्य व्यक्ति हूँ पर भाषा के प्रति महत्वाकांक्षी हूँ । मैंने पूरी कोशिश की मेरी हिंदी बेहतर हो जाये , अंग्रेज़ी तो हो नहीं सकती । मैंने भाषा के परिष्कार- संस्कार को समझने का पूरा प्रयास किया । ईश्वर की कृपा थी कुछ सीख गया ।”

रुक्मणी घोषाल - “ why you can't improve English ?”

मैं - मैडम , कक्षा 6 में A,B, C से जीवन आरंभ करने वाले के पास इतना साहस ही कभी नहीं आया कि वह एक उच्च स्तरीय अंग्रेज़ी सीख सके । पर मैडम , इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बहुत से अंग्रेज़ी के अध्यापक हिंदी में बहुत अच्छा लिखते हैं । हरिवंश राय बच्चन , फ़िराक़ साहब भी अंग्रेज़ी के ही अध्यापक थे । वैसे मैडम बहुत से नये लेखक हैं जो बहुत वर्ष विदेश रहकर भी हिंदी में लिखते हैं । हिंदी उनकी भी ऋणी है ।”

मैंने देखा मेहरा सर का चेहरा देखा वह कांतिमय हो गया था । अपनी प्रशंसा किसको अच्छी नहीं लगती , यह मैंने उनकी चापलूसी की थी । फ़र्ज़ी साहित्यकार चापलूसी पसंद होता ही है । मेरे को क्या, मैं तो नंबर लूटने के जुगाड़ में लगा हूँ । मेरा लक्ष्य आज विजय है एक वृहद लक्ष्य को केन्द्रित करके । इतने मैं कॉफी आ गयी । मेहरा सर ने पूछा , ”आप कॉफी लेगें ।”
मैं “ नहीं सर , धन्यवाद ।”

इंटरव्यू लंबा खिंचता जा रहा था । बाहर हॉल में बेचैनी बढ़ रही थी । लोग लगातार अलग - अलग , अपने - अपने इंटरव्यू रूम से अंदर - बाहर आ - जा रहे थे पर मेहरा सर के बोर्ड का पहला व्यक्ति ही बाहर नहीं आया । इलाहाबाद के बहुत से लोगों का आज इंटरव्यू था । वह एक - एक करके आ रहे थे । अनामिका ने बाहर निकल कर अशोक से पूछा, “ क्या हुआ आपका ? ”

“ अभी अनुराग सर का ही नहीं ख़त्म हुआ , लगता है सातों लोगों का इंटरव्यू वह अकेले ही दे देंगे । अभी बाहर निकलेंगे तब ऐलान हो जायेगा , मेहरा सर के बोर्ड का इंटरव्यू ख़त्म , अनुराग शर्मा सबका निपटा आये ।”

अनामिका - “ तब तो ठीक है सबका काम हो गया । वह देंगे तब तो सबका हो ही जायेगा ।”

अशोक - “ अरे मैडम , नंबर का क्या होगा ? पता चला सबका नंबर भी ले गये । उनके फ़राड का आपको नहीं पता । सबका नंबर अपने में लिखा लेंगे आप लेकर घूमते रहो बाबा जी का । अरे भाई इंटरव्यू दो ज्ञान मत बघारो । इनकी एक बीमारी है ज्ञान बघारना । उनके बाद हमारा इंटरव्यू है वह इतना चरस बोकर आयेंगे कि बोर्ड थका होगा और हम सबको बस ऐसे ही निपटा देगा । इनके बाद इंटरव्यू होना ही नहीं चाहिये । कुछ चाय- पानी का भी इंतज़ाम नहीं है यहाँ पर ।”

बाहर आंटी ने फिर चाय मँगायी ।

आंटी - “ प्रतीक्षा... ”

प्रतीक्षा - “ जी आंटी .. ”

आंटी - “ यह अनुराग का इंटरव्यू तब तक चलेगा ? ”

प्रतीक्षा- “ आंटी , वह लंबा चलेगा । ”

आंटी - “ तुमको कैसे पता ? ”

प्रतीक्षा- “ उन्होंने बताया था । ”

आंटी - “ क्या बताया था ? ”

प्रतीक्षा - “ मैं इंटरव्यू को बहुत लंबा चलाऊँगा । ”

आंटी - “ वह ऐसा कर सकता है ? ”

प्रतीक्षा - “ हाँ आंटी । उनके पास जवाब में सवाल डालने की कला है । ”

आंटी - “ तुमको भी यह बताया था ? ”

प्रतीक्षा - “ नहीं आंटी , उसने मुझसे कहा था तुम छोटा इंटरव्यू देना । तुम अपनी अंगरेज़ी, अपनी सुंदरता , अपनी नफ़ासत पर काम करना , तुम ज्ञान पर नहीं लड़ पाओगी पर इस पर काम कर जाओगी । मैंने वही किया और इंटरव्यू ठीक- ठाक निकल गया । ”

आंटी - “ उसने कहा था तुम सुंदर हो , तुममें नफ़ासत है । ”

प्रतीक्षा - “ हाँ आंटी , पर आप यह क्यों पूछ रही हैं ? ”

आंटी - “ मैं जानना चाह रही उसका तुममें कितना लगाव है । ”

प्रतीक्षा - “ आंटी ”

आंटी - “ बोलो । ”

प्रतीक्षा - “ यह आप अनुराग से भी पूछ सकती हैं । ”

आंटी - “ क्या ? ”

प्रतीक्षा - “ उसका मुझसे कितना लगाव है । ”

आंटी ने कुछ न कहा , सकारात्मकता में सिर हिलाया और कहा “ ज़रूर पूछूँगी वक्त आने पर । अभी वह वक्त नहीं आया है । प्रतीक्षा एक बात बताओगी ? ”

“ ज़रूर आंटी ”

“ कभी अनुराग का स्पर्श अनुभव किया है ? ”

“ हाँ , एक बार । ”

“ कब ? ”

“ मैं इंटरव्यू देने जा रही थी । मैंने अपने भाइयों- भाभी के पैर छुये , भाभी ने कहा गुरु के भी पैर छू लो । छोटे भैया ने भी कहा भाभी ठीक कह रहीं । मैंने पैर छूने का क्रम किया उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया । ”

“ उसकी हाथों की लकीरें देखी हैं तुमने ? ”

“ नहीं आंटी । ”

“ अगली बार मिलना तब उसके माथे की रेखायें और हाथों की लकीरें को देखना । ”

“ आपने तो देखा ही होंगी आंटी , क्या है उसमें ।”

“ छोड़ो तुम खुद देख लेना ।”

“ आप बता दो ।”

“ प्रतीक्षा, उसके मस्तक की रेखाओं में अति तेज और यश है और हाथ की रेखाओं में ”

“ क्या है आंटी ?”

“ प्रतीक्षा.... उसका जीवन छोटा है । मैं एक विधवा हूँ मेरा एक बेटा मुझे छोड़कर जा चुका है और यह मेरा अनुराग ”

आंटी आगे न बोल पायी ... बस यही कहा बहुत डर लगता है ।

प्रतीक्षा भी हिल गयी और कहा .. “ नहीं आंटी ऐसा नहीं होगा ।”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 333

विषय विशेषज्ञ ने कॉफी का सिप लेते हुये कहा , “ अनुराग शर्मा आप बतायें गाँधी का अहंकार , यह मैं भी समझना चाहता हूँ ।”

रुक्मणी घोषाल मैडम ने कहा , ” sir , I do want to understand “

रुक्मणी घोषाल के उस व्यक्ति को “ सर ” कहने से मैं समझ गया यह कोई आम व्यक्ति नहीं है । यह कोई बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति है । यह भी हो सकता है इतिहास के प्रोफेसर हो । मुझे जीवन में चुनौतियाँ आकर्षित करती ही रहीं हैं । यह तो एक सकारात्मक चुनौती थी । मैंने कमरे में विस्मय बिखरने का निश्चय कर लिया । मन ही मन कहा अब विस्मय ही विस्मय होगा यहाँ पर , यह कोई भी हों ।

“ सर मैं अगर कुछ उदाहरणों से बात कहना चाहूँ तो शायद बेहतर अपनी बात कह पाऊँगा ।”

विषय विशेषज्ञ - “ यह आज का दिन आपका है , आप जिस तरह चाहें अपनी बात कहे ।”

“ सर सुभाष चन्द्र बोस सन 39 के तिरपुरी अधिवेशन में चुनाव जीत गये । उन्होंने गाँधी जी के समर्थक पट्टाभि सीतारमैया को हराया । सर, गाँधी जी ने सुभाष की जीत के बाद त्यागपत्र दे दिया । जो व्यक्ति लोकतन्त्र का सबसे बड़ा प्रहरी था उसने लोकतन्त्र के विरुद्ध कार्य किया । यह एक बड़े नेता के

क़द के होने का अहंकार था । वह जानते थे उनके बगैर कांग्रेस चल नहीं सकती और कांग्रेस को पंगु कर दिया ।”

विषय विशेषज्ञ-“आशा है आपने इतिहास पढ़ा होगा, गंभीरता से पढ़ा होगा यह आपका विषय है । सुभाष और गाँधी का संघर्ष नीति और रण कौशल के मुद्दे पर था । सुभाष और गाँधी के विचार नहीं मिलते थे । यह कारण था गाँधी के त्यागपत्र का न कि अहंकार । सुभाष चाहते थे कि रणनीति उनकी हो पर नेतृत्व गाँधी करें यह उन्होंने अस्वीकार कर दिया, इसमें अंहंकार कैसा ?”

मैं समझ गया यह इतिहास के बड़े प्रोफेसर हैं । इतना सारागर्भित बात एक आम व्यक्ति नहीं कर सकता था । मुझे एक आशा दिखाई देनी लगी एक गैर मामूली दास्तान की । मैं अगर इनको संतुष्ट कर गया और जिस तरह का इनका क़द है यह मुझे कुछ भी अंक दिलवा सकते हैं । इसके लिये सबसे आवश्यक है इनके अहम का ध्यान रखना उस पर किसी भी तरह छोट नहीं पहुँचानी चाहिये । यह वक्त ज्ञान से ज्यादा इनकी बात से ही बात कहने का है । मैंने उनकी किसी भी बात का विरोध न करने का फ़ैसला किया और तथ्यों-तक़ों को माँजने लगा ।

“ सर, आपने दो महामानवों के वैचारिक संघर्ष का सार कह दिया है । सुभाष जी भी अति उत्साह में थे और वह कांग्रेस नेताओं को समझौतावादी करार कर रहे थे जिससे कांग्रेस के ज्यादातर नेता नाखुश थे । सुभाष जी का अपने विरोधियों पर हमला भी उचित न था पर उन्होंने बहुत प्रयास किया कि गाँधी जी सहयोग करें । कांग्रेस वर्किंग कमेटी बन जाये । अपने ख़राब स्वास्थ्य के बावजूद वह वर्धा तक गये पर गाँधी जी किसी भी तरह के समझौते के लिये तैयार न हुये । सर, सुभाष जी को चुनाव लड़ना पड़ा क्योंकि गाँधी जी उनको हरिपुरा के बाद अगले वर्ष का अध्यक्ष पद देने को तैयार न थे । उन्होंने जिन आधारों पर जवाहर लाल जी को लखनऊ के बाद फैजपुर में अगले वर्ष कांग्रेस अध्यक्ष पद दिया गया था उसी आधार पर सुभाष जी भी माँग रहे थे पर वह उनको सहमति से नहीं चुनाव से प्राप्त हुआ, वह भी महात्मा के पुरज़ोर विरोध के बावजूद । महात्मा गाँधी लोकतन्त्र के समर्थक थे पर लोकतन्त्र का सम्मान न करना एक अहंकार ही है सर । सर, दूसरा वाक़्या मैं दूँगा गाँधी जी का 15 जून 1940 का “हरिजन” में लिखा लेख जिसमें उन्होंने कहा था केवल दो ही दल हैं एक कांग्रेस और दूसरा जो कांग्रेस के साथ नहीं है । इन दोनों के बीच कोई मिलन बिंदु नहीं है । यह अहम से परिपूर्ण कथन है । मैं अगर भारत विभाजन की एक विस्तृत व्याख्या करूँ जिसमें सहयोग और सामर्जस्य का अभाव था तब मैं देश के सबसे बड़े नेता के इस दंभ पूर्ण लेख पर भी अपनी आपत्ति दर्ज करूँगा । महात्मा गाँधी ऐसे महान व्यक्तिव के लिये यह लिखना मेरे अनुसार उचित न था । जब मैंने पहली बार पढ़ा तो मुझे यक़ीन नहीं आया कि यह महात्मा ने कहा होगा । सर, गाँधी जी ने ही कहा था मैं इस देश की रेत से एक आंदोलन खड़ा कर दूँगा

। विभाजन के समय जिस तरह की वह बात कर रहे थे वह अप्राकृतिक थी और जिन्हा को प्रधानमंत्री बनाकर वह विभाजन रोकना चाहते थे । वह इतिहास को अपनी जीवनी बनाने पर तुले थे ।”

विषय विशेषज्ञ समझ गया कि मैं इस पर मजबूत हूँ और इस पर बात आगे करना चाहता हूँ । उसने मेहरा साहब की तरफ देखा और इशारे से कहा मेरा हो गया । रुकमणी घोषाल का मन कुछ कम भरा था । उन्होंने बागडोर अपने हाथों में ले ली और पूछा , “गांधी ने विदेशी वस्त्रों के विरुद्ध चलाये आंदोलन में चरखे का इस्तेमाल किया , क्या था ऐसा उस चरखे में ।”

“ मैडम चरखा एक रहस्यात्मक दर्शन को अपने आप में समावेशित करता है । इसको मात्र विदेशी वस्त्र के बहिष्कार से न देखें । यह एक शारीरिक - आध्यात्मिक अभ्यास है और यह पूँजीवादी शोषण की जकड़ से भारत को आजाद कराने का साधन बन गया ।”

मैडम को इस तरह के उत्तर की शायद उम्मीद न थी । उन्होंने विषय विशेषज्ञ की ओर देखा । उसने सकारात्मकता में सिर हिलाया । मैं चरखा दर्शन पर उत्तर गढ़ने लगा यह सोचकर वह पूछेगी कुछ और पर मैडम ने मेहरा सर के हाथों मुझे सौंप दिया ।

मेहरा सर- “ आपकी बहुत रुचिकर- रुचिकर हॉबियाँ हैं । हिंदी उपन्यास पढ़ना, लिखना और राम कथा पढ़ना समझना । राम कथा पढ़ना और समझना एक बहुत ही अलग क्रिस्म की हॉबी है । यह क्या है , यह कैसे आप के अंदर आयी ?”

मैं-“ सर , परिवार -परिवेश का योगदान है । माँ का असर भी कहा जा सकता है ।”

मेहरा सर -“ वह असर कैसे आया ?”

मैं- “ सर , वह राम कथा पढ़ती थी , प्रवचन सुनती थी , मैं भी साथ जाता था और रुचि आ गयी ।”

मेहरा सर -“ राम कथा सबसे बड़ी शिक्षा क्या देती है ?”

मैं- “ सर त्याग की ।”

मेहरा सर -“ वह कैसे ?”

अब तुरुप के इक्के को चलाने का वक्त आ गया था । मैं फिर शब्द गढ़ने लगा । मेरा मस्तिष्क तीव्र कार्य करने लगा । मैं तुरुप का पत्ता चलाने के पहले सवाल को थोड़ा और सही रास्ते पर लाने की युक्ति बनाने लगा । सवाल सीधा था पर मैं जवाब घुमाकर देना चाहता था । मैंने पहला वाक्य

गढ़ा, “ सर , सामराज्य निर्माण युद्धों- वीरता - पौरुष से होता है पर इतिहास निर्माण मानवता से होता है । ”

मेहरा सर - “ इसका राम कथा से क्या संबंध है ? ”

मैंने तुरुप का इक्का चला दिया ...

“ सर , जिस दौर में नृशंसता की पराकाष्ठा थी । राज्य के लिये अपनों की हत्या एक नियम ऐसा था उस समय राजा दशरथ के चार पुत्र चित्रकूट के जंगलों में राज्य त्याग के लिये संघर्ष कर रहे थे । त्याग महत्वपूर्ण था राज्य गौण था । ”

यह कहकर थोड़ा मैं रुका और सोचा कि इनके अगले प्रश्न का इंतज़ार करते हैं फिर लगा कि अगर प्रश्न कुछ और पूछ लिया गया तब वह रह जायेगा जो मुझे कहना है । इंटरव्यू काफ़ी देर से चल रहा है, मेरे बाद भी कई लोग हैं यह इंटरव्यू कभी भी ख़त्म हो सकता है । व्यक्तित्व परीक्षण काफ़ी हो ही चुका है कोई ज्ञान तो आँका जा नहीं रहा, ज्ञान आँकना तो लक्ष्य इंटरव्यू का होता नहीं । मैंने रणनीति बदली और तुरुप का पत्ता चल दिया ।

“ सर , मुगल शासन का इतिहास रक्तपात का इतिहास था । राज्य के लिये अपनों का रक्त बहाना एक आम घटना थी । अकबर का अपने भाई मिर्ज़ा बेग के साथ अच्छा व्यवहार न था , जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगज़ेब तीनों ने अपने पिता के विरुद्ध राज्य प्राप्ति के लिये विद्रोह किया । जहाँगीर ने अपने पुत्र खुसरू के साथ , औरंगज़ेब का अपने भाई दारा और पिता शाहजहाँ के साथ किया गया व्यवहार नृशंसता की पराकाष्ठा है । ऐसे समय में जन- जन में ऐसी कथा व्याप्त हो रही थी जो प्रेरणा- त्याग- मानवता का संदेश दे रही थी । हम किसी भी धर्म- परम्परा- सम्प्रदाय के अनुयायी हो पर हमारी चाहत होती है कि हमारी परम्परायें राम की हो , राजा दशरथ को पुत्रों की परम्परा हो । हमारी मर्यादा राम की मर्यादा परम्परा की हो । यह राम का विराट व्यक्तित्व है जिसने एक कालजयी इतिहास का निर्माण किया जिसमें युद्ध नहीं मानवता मूल में है । ”

मेहरा सर - “ राम के व्यक्तित्व में सबसे अधिक क्या आकर्षित करती है ? ”

मैं - “राम में न तो हर्ष के क्षणों में अतिरेकता है और न ही विपत्ति में अधीरता । वह न तो राज्य प्राप्ति पर हर्षातिरेक हुये न ही वन गमन आदेश पर अधीर हुये । एक विरला सा संयम राम में है । ”

मेहरा सर - “ यह राम जन्मभूमि विवाद को आप किस तरह देखते हैं? ”

मैं - “ सर , राम का व्यक्तित्व शायद इस तरह के संघर्ष की अनुमति नहीं देता । राम सामंजस्य के नायक हैं । वह किसी को पीड़ित करके कुछ प्राप्त करने के पक्षधर कभी न रहे । यह विवाद सहमति से हल होना चाहिये , यह चाहत हमारे नायक की निश्चित रूप से होगी । ”

मेहरा सर - “ अगर सहमति से न हो पाये तब ?”

मैं - “ सर , राम असंभावनाओं में संभावनाओं के नायक हैं । हमें उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को ध्यान में रखकर प्रयास करना चाहिये , रास्ता अवश्य मिलेगा । ”

मेहरा सर ने एक दूसरे मेंबर की तरफ़ देखा । उनका इशारा था आप लें ।

मेंबर - “ एशियन डेवलपमेंट बैंक का मुख्यालय कहाँ है ?”

मैं - “ चीन । ”

मेंबर - “ Are you sure ?”

मुझे लगा मेरा जवाब गलत है । मैंने अपना जवाब वापस ले लिया और कहा , “ क्षमा करें चीन नहीं है । मुझे पता नहीं है सही जवाब । ”

मेंबर - “ आपने बीएससी किया , फिर लॉ किया और विषय लिया इतिहास और हिंदी ऐसा क्यों ?”

मैं - “ मेरी रुचि थी इन विषयों में । ”

मेंबर - “ जब रुचि थी तब विश्वविद्यालय में क्यों नहीं पढ़ा ?”

मैं - “ तब मुझे अपनी इस रुचि का पता नहीं था । ”

मेंबर - “ आप की एक और हॉबी है , लेखन । आप क्या लिखते हैं ?

मैं - “ कवितायें । ”

मेंबर - किस तरह की ?”

मैं - “ ज्यादातर मैं नयी कविता के तर्ज पर मुक्त कवितायें लिखता हूँ । ”

मेंबर - “ आप लोगों को पढ़ा रहे , यह आप क्यों कर रहे ?”

मैं - “ शिक्षा में सुधार लाने के लिये । ”

मेंबर - “ सिविल सेवा के लिये पढ़ाने से कोई शिक्षा में सुधार तो आने वाला नहीं । वह तो प्राइमरी और सेकेंडरी एजुकेशन से आयेगा । आप उस पर कार्य करिये । ”

मैं - “ जी सर , वह अधिक महत्वपूर्ण है , उस पर कार्य करने का प्रयास अवश्य होना चाहिये , मैं भी करूँगा । ”

मेंबर - “ आप तो आईएएस - आईआरएस कुछ बन जायेंगे , कहाँ आपके पास समय होगा । यह जो नयी उम्र की चाहत है सुधार की क्या यह आपमें जीवित

रहेगी ? मैं भी आईएएस ही हूँ और मैंने बहुत कम देखा है कि बाद के वर्षों में यह जीवित रहती है । आप मैं जीवित रहेगी यह कैसे कहा जा सकता है ?”

मैं - “ सर , इस प्रश्न का उत्तर समय ही दे सकता है , मैं तो मात्र आश्वासन भरे शब्द ही आज कह सकता हूँ । ”

मेंबर - “ शिक्षा में सुधार कैसे हो सकता है ?”

मैं - “ एक जनांदोलन के द्वारा । ”

मेंबर - “ कैसे ?”

मैं - “ सर , हर व्यक्ति अपने दायित्व को समझे । हर व्यक्ति पढ़ाने की ओर उन्मुख हो । जो जहाँ भी है वहाँ पर इस अवसर की तलाश करे कि कैसे वह पढ़ा सकता है । सबसे बड़ी समस्या योग्य अध्यापकों की कमी की है । हर वह व्यक्ति जो समाज के प्रति सजग है उसे अपने आपको एक अध्यापक के तौर पर तराशना होगा और शिक्षा के अभियान में शामिल होना होगा । हम मात्र सरकारों पर निर्भर न रहें बल्कि अपनी ज़िम्मेदारी को समझें । ”

मेंबर - “ हर व्यक्ति समाज के प्रति सजग नहीं होता । ”

मैं - “ जी सर , पर ऐसे लोगों की कमी नहीं है जिनमें सजगता है । जो सजग हैं अगर वह ही कृत संकल्पित हो जायें तब भी एक परिवर्तन की बयार चल पड़ेगी । ”

मेंबर ने मेहरा साहब की तरफ देखा । उनके देखने से स्पष्ट था कि उनका कार्य हो चुका है । मेहरा साहब ने अन्य मेंबर की तरफ देखा और पूछा , “anything more ?”

मेंबरान ने सिर हिलाकर कहा हो गया ।

मेहरा साहब ने मेरी ओर देखकर कहा ,

“ धन्यवाद मिस्टर शर्मा.. Do you want to ask anything from us ?”

मैं - “ नहीं सर । ”

“Best of luck for your future “

मैं अभिवादन करके बाहर आया । बाहर आकर देखा आधे से ज्यादा लोगों का इंटरव्यू हो चुका था । मेरा इंटरव्यू दो घंटे से अधिक चला । अशोक मेरे निकलते ही अंदर जाने लगा । वह रास्ते में मुझसे मिला और कहा सर आशीर्वाद दीजिये । मैंने कहा , ”आज महाशक्ति का आह्वान है , कल्याण ही कल्याण होगा । ”

हॉल में जेएनयू के लड़कों का हंगामा था कि बिपिन चन्द्रा सर आज एक विशेषज्ञ के तौर पर आये हैं। वह कम बालों वाले व्यक्ति आधुनिक इतिहास के महान प्रोफेसर बिपिन चन्द्रा थे। मैं हॉल के बाहर निकलने लगा।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 334

मैं हॉल से बाहर निकल रहा था और हॉल में हल्ला हो रहा था कि किसी का इंटरव्यू दो घंटे चला। अनामिका मेरी छात्रा थी और उसको बात फैलाने में मज़ा आता था। वह यह फैला रही थी कि अनुराग सर का इंटरव्यू दो घंटे चला। जो लोग इंटरव्यू देकर आ रहे थे वह अपने - अपने साक्षात्कार पर बात कर रहे थे,

“यार यह तो बहुत खँडूस बोर्ड है, सुना है नंबर देता ही नहीं।”

“मेरी तकदीर ख़राब था एस के मिश्र या मेहरा का बोर्ड न मिला। वह बोर्ड अच्छा नंबर देता है।”

“यह अनुराग शर्मा कॉन बंदा है उसका इंटरव्यू दो घंटे चला, यह वही है जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ का अध्यक्ष है और बीबीसी पर रिपोर्टिंग हुई थी?”

“हाँ वही है।”

“फिर तो दो घंटे कहानी सुनाया होगा और क्या किया होगा? इसको कौन लेगा यह तो व्यवस्था विरोधी है। सरकार समर्थक लोगों को यूपीएससी रिक्मेंड करती है, ऐसे विरोध के लोगों को नहीं।”

“तुमको यह कैसे पता?”

“आप देख लो इतने सालों से कैसे लोग हो रहे।”

“ऐसा कोई नियम नहीं है, कोई भी जो मेहनत करेगा और अपनी बात लिख - कह सकता है वह हो सकता है।”

“रिज़ल्ट आने दो इसका डिब्बा गोल होगा।”

अनामिका - “बड़े-बड़े का डिब्बा सर गोल कर देंगे। पूरा हॉल इनके पढ़ाये लोगों से भरा है। आने दो रिज़ल्ट यही नहीं इनके लोग भी सेलेक्ट होंगे। दिल्ली का डिब्बा ही यह गोल कर देंगे।”

“इसमें दिल्ली कैसे आ गयी?”

अनामिका - “ यह अंगरेजी का भी डिब्बा गोल कर देंगे । ”

“ पहले दिल्ली - अब अंगरेजी.. यह कौन सी बात है । ”

अनामिका - “ तुम्हारा तो डिब्बा गोल ही होगा । ”

“ तुमको कैसे पता ? ”

अनामिका - “ तुम्हारे चेहरे पर लिखा है । ”

“ क्या लिखा है ? ”

अनामिका - “ शीशे में देखकर पढ़ लो । ”

“ यह कौन सी बात है , don't be parochial ”

अशोक तब तक आ गया । वह तो ऐसे मौकों की तलाश में रहता ही था । बात बढ़े इसके पहले दिनेश ने समझाया जाने दो , इनको नहीं पता सर के बारे में जानते तो ऐसा न कहते । बाहर बहुत भीड़भाड़ थी । यह संघ लोक सेवा आयोग में नियम ऐसा था । हर दिन कोचिंग वाले , दिल्ली विश्वविद्यालय, आईआईटी , जेएनयू के छात्र , आगे के दिनों में इंटरव्यू देने वाले सब आते थे माहौल लेने । मैं तो इलाहाबाद में एक विद्यालय व्यक्ति था । मैं अब सर बन चुका था । सब पूछने लगे , ” सर कैसा रहा ? ”

मैंने शांत भाव से कहा , ” बस निपट गया बाकी का तो नहीं पता । अब यह परीक्षा एक अज़ीब तरह की है , आप कुछ कह नहीं सकते । खराब किया पेपर अच्छा नंबर दे देता है और अच्छा किया खराब , जान छूटी । अब जो होना होगा वह होगा । भाग्य और नियति पर किसका ज़ोर । ”

“ सर , आपकी रैंक ऊँची आयेगी , सुरुचि मिश्रा से भी ऊँची । ”

सुरुचि की नाम आते ही एक वाक्य याद आने लगता है , ” अनुराग , मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ । ”

मैंने कहा , “ वह अंगरेजी माध्यम की थी । हिंदी माध्यम को कौन इतना अंक देगा । वह इंटरव्यू में नंबर लूट लेती थी । उसके पास ज्ञान - भाषा सब कुछ था । मुझे नहीं मिलेगी वह रैंक । ”

मैं यह कह अवश्य गया पर मेरी बहुत चाहत थी सुरुचि से ऊपर के रैंक की चाहे एक ही रैंक ऊपर क्यों न हो पर यह आसान कार्य नहीं है । यह बगैर इंटरव्यू के क्लमतोड़ नंबर के नहीं मिल सकता । उसको इंटरव्यू में बहुत अंक मिले थे , वह सक्षम थी वह योग्य भी थी और उतने अंकों के लायक भी ।

मैंने कहा , ” होइहिं वही जो राम रचि राखा । ”

मैं बाहर निकला । मुझे दूर से प्रतीक्षा दिखाई दी । मुझको देखकर वह तेज़ - तेज़ चलने लगी । उसने आते ही कहा , ” हम और आंटी कई बार आये गेट पर देखने पर तुम न मिले । आंटी थककर बैठ गयी हैं और कहा मुझसे जाओ देखकर आओ क्या हुआ । कैसा हुआ इंटरव्यू? चेहरे से तो लग रहा कि अच्छा हुआ है । तुम्हारा अच्छा नहीं होगा तब किसका होगा ।”

मैं - “ तुम चेहरे की रेखाओं को पढ़ लेती हो ?”

प्रतीक्षा का दिल धक कर गया रेखाओं को सुनकर.. उसका मस्तिष्क हाथ की लकीरों पर अटका हुआ था । वह बोली , “ मैं सारी लकीरों को पढ़ना सीखूँगी । चेहरे की तो सीख ही रही तुम्हारे चेहरे को देखकर । इंटरव्यू कैसा हुआ यह तो बताओ ? ”

मैं - “ अच्छा हुआ , चलो आंटी के पास सुनाता हूँ पूरा ।”

आंटी के पास पहुँचा , मैंने आंटी के पुनः चरण छुये और कहा , “ आंटी वाकई आपने महाशक्ति का आह्वान कर दिया था । इंटरव्यू बोर्ड को जैसे कोई नियन्त्रित कर रहा हो । जैसा - जैसा मैं चाह रहा था वैसा - वैसा हो रहा था । मैंने इंटरव्यू का कुछ भाग सुनाया और कहा पूरा इतिनान से सुनाता हूँ । आप लोग यहीं बैठो मैं थोड़ा पता करके आता हूँ और लोगों का । मैं हॉल के बाहर गया । काफ़ी लोग बाहर आ गये थे । अशोक - दिनेश - प्रेम नंदन अनामिका सब मुझे ढूँढ रहे थे । अशोक ने कहा , “ लगता है सर प्रतीक्षा के साथ निकल लिये ।”

दिनेश- “ नहीं , वह गये नहीं होंगे । अभी यहीं कहीं होंगे ।”

अशोक - “ हम लोग निबंध में पढ़ें हैं ? कुसंग का ज्वर बहुत भयानक होता है । इश्क का ज्वर उससे भी भयानक होता है , जिस किसी को लग जाये वह गया काम से । अब यह इश्क करेंगे । चलो अच्छा है कमिशनर साहेब के यहाँ बारात जायेगी , इंतज़ाम बढ़िया होगा । हम तो बहुत पराठा - सब्ज़ी- दही - नेतराम की मिठाई उड़ाया हूँ । एक बात बतायें वह यहीं कहीं झुरमुट में प्रतीक्षा से गुटटुर - गूँ कर रहे होंगे ।”

दिनेश - “ सर आ रहे हैं , चुप हो जाओ ।”

अशोक - “ देखो हम कह ही रहे थे सर यहीं कहीं होंगे देखो वह आ गये । सर, आपका कैसा रहा इंटरव्यू? मुझे लगा आपने अयोध्याकांड बाँचना आंरेभ कर दिया और इंटरव्यू रूम पूरा अयोध्यावासियों की तरह पगला गया । हम तो बाहर कह रहे थे ऐसा न हो जायें कि जैसे राम के पीछे पूरे अयोध्यावासी चल दिये वनगमन के समय , वैसे ही पूरा बोर्ड कह दे कि अब इस दुनिया में कुछ नहीं रखा हम भी आपके पीछे चलेंगे और हम लोगों का इंटरव्यू रह ही गया । एक नौकरी के चक्कर में कई नौकरी की बलि चढ़ गयी ।”

मैं - “ अशोक , तुम्हारी जोकरई कभी जायेगी नहीं । कैसा हुआ इंटरव्यू?”

अशोक - “ सर , जब मैं कमरे में पहुँचा सब हाँफ रहे थे । अब हाँफता हुआ व्यक्ति क्या करेगा ? कुछ सवाल पूछा । हिंदी उपन्यास पढ़ना, रामचरितमानस मानस हॉबी हमारी भी थी । वह समझ गया कि मदारी के बंदरों से आज हॉल भरा है । मदारी को देख ही लिया था अब बंदरों को क्या देखना । एक सवाल हिंदी उपन्यास पर पूछा उसको सर रेत मारा । वह ज्यादा पूछने के मूड में थे नहीं । सर , मुझे लगता है आपके इंटरव्यू में हम सबका साक्षात्कार शामिल था । अब सर जो हुआ सो हुआ पर ख़राब तो नहीं हुआ किसी का । सर , अनामिका तो उठने को तैयार न थी । इससे कहा thank you तब भी वह बैठी रही । मेरा साहब को हाथ जोड़कर कहना पड़ा, “ नमस्कार, अब आप जा सकती हैं । ”

मैं - “ क्या हुआ अनामिका ? ”

अनामिका - “ सर मैं समझ ही न पाई की इंटरव्यू ख़त्म हो गया । वह बोले thank you मुझे लगा मेरे जवाब पर यह कह रहे । तब मेरा सर ने दोनों हाथ जोड़े और कहा , नमस्कार बहुत - बहुत धन्यवाद अब आप जा सकती हैं । ”

अशोक - “ सर , इसको लगा कि यहीं नियुक्ति पत्र मिल जायेगा ले लेते हैं । किसी अगल - बगल के ज़िले में एसडीएम का पद होगा चलके बंगला - गाड़ी- घोड़ा सँभालते हैं । वह लेकर ही चलते हैं । ”

परेम नंदन - “ सर , अशोक के रहने से समय का पता ही नहीं चलता । यह यूपी भवन में सारा दिन पराठा - पकौड़ा- चाय बनवाते रहते हैं कहते रहते हैं सत्यानंद मिश्र के हम रिश्तेदार हैं और जल्दी ही यहाँ का चार्ज हम लेंगे । ”

अशोक - “ रिश्तेदारी तो है ही , न आज है तो कल होगी । ”

मैंने बात बदली और पूछा , “ इंटरव्यू किसी का ख़राब तो नहीं हुआ ? ”

दिनेश - “ नहीं सर , ख़राब कैसे होगा । इतनी मेहनत की गयी थी । ”

मैं सबके साथ बाहर निकला । शालिनी की सफेद विदेशी कार खड़ी थी । तिवारी ड्राइवर ने दुआ - सलाम किया । मैंने अशोक का तरफ देखा और कहा , ” जलवे हैं आप लोगों के । सबको उपयोग करने देना खुद ही मत रेतने लगना । ”

अशोक - “ सर , कोई आहूजा साहब के पास ट्रांसपोर्ट का व्यापार नहीं है क्या , कोई मिनी बस मिल जाती तब थोड़ा घूमने में आनंद आता इसमें सब लोग नहीं आ पाते । ”

मैं - “ यह साक्षात्कार के लिये माँग कर लाये हो उसी के लिये इस्तेमाल करो , ज्यादा मत दौड़ाओ । ”

अशोक - “ नहीं सर , ज्यादा नहीं दौड़ाते बस दिल्ली में ही घुमाते हैं , दिल्ली के बाहर नहीं जाते । ”

मैं “ ऐसा मत कर देना कि कल आहूजा साहब कार ही न दें किसी और को । ”

यह कहकर मैं आगे बढ़ने लगा । प्रतीक्षा की कार हर बार डीएम नोएडा के यहाँ से आती थी । वह अपनी कार में चली गयी । मैं और आंटी ऋषभ की कार से घर चले गये । ”

आंटी ने मेरा इंटरव्यू पता नहीं कितनी बार पूछा । मैंने कई - कई बार बताया । शाम चार बजे का समय नियत था इलाहाबाद फोन करने का । मुझे अपना पिछले साल का पूरा समय याद आने लगा । मैं कितना निराश था । वह पीसीओ की दुकान , सामने फुदकतीं चिड़िया, माँ से झूठ बोलना , इस बात का भय कि सब कुछ ख़त्म हो जायेगा पर आज ... एक साल में कितना कुछ बदल गया । मैं अब वह अनुराग नहीं रहा जो अनुराग पिछले साल था । मेरा आज का इंटरव्यू तो ऐतिहासिक था । ईश्वर ने जैसे पूरा साक्षात्कार मेरे पक्ष में नियन्त्रित किया हो । मैंने फोन मिलाया , एक घंटी में ही माँ ने फोन उठा लिया । उसकी आवाज में एक अलग खनक है ... “ मुन्ना.... अच्छा इंटरव्यू भ होये । ”

“ तुझे कैसे पता ? यह सवाल है या यह तेरा अपना विश्वास है ? ”

“ मुन्ना... बिश्वास अब तोहरे पर कुल दुनिया के बा । सबै तोहरे नाम पर आगे बढ़त हयेन । अब अगर तोहार अच्छा न होये तब तू कैसे रथ के आगे लै जाबअ । तोहका भगवान इहिं दिना बरे बनाये हयेन । ”

पिताजी - “ काम की बात न करो पूरा प्रवचन कर मारो । पूछो कैसा इंटरव्यू हुआ । का पूछै के बा । बहुत बढ़िया भअ बा । पिछले साल इ झूठ बोले रहा कि अच्छा भअ बा , हम ओकरे आवाजें से समझि गअ रहे पर अब का कै सकत रहे , बस दिन - रात भगवान के पूजा - अर्चना करत रहे इ साल तअ बहुत बढ़िया भअ बा । ”

मैं फोन पर बात सुन रहा था । पिताजी ने फोन लेकर पूछा , ” बेटा कैसा हुआ ? ”

मैं “ तिरकालदर्शी ने बता दिया है । वह सच कह रही है । पिताजी ज़रा उसको फोन देना माँ तुझे पता था कि पिछले साल मेरा इंटरव्यू अच्छा नहीं हुआ है तब भी तूने पूरे साल कुछ न कहा । ”

माँ - “ वैसय तू परेशान रहअ , तू झूठ बोले रहअ कि हमका परेशानी कम होइ । अब तू झूठ जाहे बरे बोले रहअ अगर हम ऊ ख़त्म कै देइत तब तोहका और

चिंता होत / हमका पता रहा हमरे अराधना और तोहरे कर्म में एतनी ताक़त बा कि खाली हाथ न लौटबअ /”

पिताजी - “ इंटरव्यू पूछने दो , तुम जहाँ देखो भाषण चालू ।”

मैंने अपना इंटरव्यू बताया । इंटरव्यू था ही बताने लायक़ । यह इतिहास की किताबों में दर्ज होने लायक़ था । मैं पीसीओ से निकलकर वापस आंटी के पास आया । आंटी ने पूछा , “ कितने लोग होंगे कल ? ”

“ आंटी बीस लोग तो हो ही जायेंगे कम से कम । एक - दो और भी आ जायेंगे , यह सब मेरे बहुत नज़दीकी लोग हैं , इनको कहाँ निमन्त्रण का इंतज़ार होगा ।”

आंटी - “ आने दो । कोई तो आता नहीं यहाँ कभी । पिछले साल तुम अकेले थे और एक साल में कारवाँ ... यह घर भी तर जायेगा , खाना बनाने वाले आयेंगे ही , जैसे बीस वैसे तीस । अनुराग... ”

“ जी आंटी ..”

मैं प्रतीक्षा को बुलाना भूल गयी । उसको कहा नहीं । तुम बताओ क्या करूँ ।”

मैं थोड़ा नाटक करने लगा .. “ बुलाना ज़रूरी है क्या? ”

“जैसा तुम कहो ।”

मेरा मन तो बहुत था पर आंटी कह देती कि बुला लो तो अच्छा होता ।

आंटी ने मेरी ओर देखकर कहा , “ मन हैं तुम्हारा उसको बुलाने का ? पर उर्मिला तुमको खा जायेगी ।”

“ क्यों खा जायेगी ? ”

“ अरे घर की बहू होने की तरफ वह बढ़ रही है , तुम उसके साथ विवाह तय होने के पहले से घूम रहे । उर्मिला के बारे में तुमको बताना पड़ेगा ।”

मैं यह सुनकर सिहर उठा लगा उसने मुझे प्रतीक्षा के साथ घूमता पकड़ लिया और कह रही , “ चलअ घरे तोहार ख़बर लेइत हअ ।”

आंटी ने मेरा चेहरा देखकर कहा तुम उर्मिला से इतना डरते हो ? ”

“ आपको कैसे पता ? ”

“ उसका नाम आते ही चेहरे पर भय

की लकीरें बनने लगीं जो कोई भी देख सकता है ।”

मैं “ आंटी , वह यह पसंद तो नहीं करेगी और जो बात उसे पसंद न हो वह आप कर दो तब तो प्रलय ... रहने दीजिये काहे को पंगा लेना ।”

आंटी - “ जाओ बुला लो । वह भी छात्रा है तुम्हारी । कौन जा रहा उर्मिला से बताने । तुम अपना मुँह बंद रखना । ”

मन तो मेरा था ही । जब आप कुछ कार्य करना चाहते हो तब हर तर्क आपको अपने पक्ष में ही लगता है और नीर - क्षीर - विवेक कार्य नहीं करता । मैं इस बात पर ध्यान दिये बगैर कि पूरा इलाहाबाद कल होगा और नारद मुनि - मंथरा के अवतार अशोक तो यह बात गली - गली में फैलायेंगे । मैं जाने को तैयार हो गया । मैं पूरा सजने का प्रयास किया । आंटी ने जाते बङ्गत मेरे कपड़ों पर ऋषभ का परफ्यूम भी छिड़क दिया । मैं भाग कर सेंट स्टीफेंस पहुँचना चाहता था । ऑटो वाले से कह रहा था तेज चलाओ और तेज ज्यादा पैसा दूँगा । ऑटो वाले ने कहा , “

सुण चौधरी तेरे ज्यादा पैसा देने से ऑटो जहाज न बण जाये , चुपचाप बैठ रह । ” वह हरियाणवी था , कौन उसके मुँह लगे , मैं चुप हो गया । मैं प्रतीक्षा के हॉस्टल के सामने पहुँचा । वॉचमैन ने बताया कि वह कहीं निकली है अभी । मैं निराश हो गया और वहीं गेट के बाहर बैठ गया । थोड़ी देर में वह दो - तीन लड़कियों के साथ आती दिखी । मैं अधीर होकर उधर चलने लगा । मैंने नज़दीक पहुँच कर आवाज़ दी । वह मुड़ी और मैं उसके हवा में उड़ते केश देखने लगा ।

“ अनुराग.. ”

मैं उसकी ओर अपलक देख रहा था । उसने अपनी सहेलियों से बताया... यह अनुराग शर्मा हैं . उसके बताने से लग गया कि वह मेरे बारे में लोगों से बात करती है । मैं उसके साथ वहीं बगल के केंटीन में गया । मैंने बैठते ही कहा , “ कल आना आंटी ने खाने पर बुलाया है । ”

“ वह तो आना ही है , आंटी ने आज दिन में ही कहा था जब तुम्हारा इंटरव्यू था । ”

“ आंटी ने कहा था ? ”

“ हाँ ”

“ तुमको इतना आश्यर्च क्यों हो रहा ? ”

मेरे मुँह से निकला , “ यह करछना की लड़कियाँ बहुत मायावी हैं । ”

मैंने आंटी की बात बतायी ...

प्रतीक्षा -“ अनुराग , आंटी कोई भी काम बगैर सोचें नहीं करती । ”

मैं “ क्या सोचा होगा ? ”

“ वह चाह रहीं तुम मेरे साथ वक्त बिताओ .. अनुराग .. ”

“ बोलो “

“मेरा सरनेम बदलेगा ... ”

मैं प्रतीक्षा की तरफ़ देखने लगा ... उसके काले बाल हवा में उड़ रहे थे ..

“ अनुराग , मन भर के देख लो .. अब हमारे रास्ते एक हो रहे ... ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 335

“ प्रतीक्षा ... तुम सरनेम बदलोगी ? ”

“हाँ निश्चित रूप से बदलूँगी .. मैं पूरा नाम लिखूँगी । ”

“क्या लिखोगी ? ”

“ प्रतीक्षा अनुराग शर्मा... इतना बड़ा बरांड है यह । इतनी मुश्किल से प्राप्त हुआ है , जब भी कोई मुझे पुकारे तब इसी नाम से पुकारे और अनुराग हमेशा मेरे साथ रहे यह मेरी चाहत तो है ही । ”

“अनुराग.... ”

क्या शीतलता है इन कुछ शब्दों में ..

“अनुराग ... । ”

“ऐसा क्या है इस नाम में , बस कुछ वक्त का तमाशा है गुजर जायेगा । मुझसे पहले भी कई आये थे ज़माने में एक जीत का दावा लेकर , मुझसे बाद भी कई आयेंगे ज़माने में बदलाव की आँधी का आश्वासन लेकर पर वक्त के शिलालेख पर तहरीर हर बार मिटती है नई तहरीरों के लिये । ”

“अनुराग , यह सब कहाँ से लाते हो , तुमसे ही नहीं तुम्हारी भाषा से इश्क़ हो जाये । जितनी लड़के -लड़कियाँ पढ़ती हैं सबको तुमसे लगाव है , तुम्हारी लगन और मेहनत देखकर । ”

“प्रतीक्षा, जीवन में व्यक्ति को सिफ़्र एक वस्तु आगे ले जाती है उसकी लगन , उसकी मेहनत , उसकी हार न मानने की जिद । लोग कहते हैं एक दृष्टि, एक विजन होना चाहिये जीवन में वह आपको बदल देता है । यह बात पूरी तरह सही नहीं है । बहुतों के पास यह होता है । मैं अपनी सामान्य सी मेधा के बावजूद जीवन में कुछ करने की ओर उन्मुख हो रहा तो सिफ़्र इसलिये जहाँ लोग भयग्रस्त होते हैं वहाँ मैं रोमांच देख लेता हूँ । मुझे पराजय से भय नहीं लगता । कोई भी आज तक नहीं हारा है कदमों के थक जाने से ,

हाँ जज्बा ही टूट जाये तो बात कुछ और है । मेरा जीवन असफलताओं से भरा हुआ है और आगे भी असफलताएँ मिलेंगी पर एक ज़िद है जो समर्पण को तैयार नहीं । यह वही ज़िद है जो हर कक्षा की टॉपर , गिटपिट अंगरेज़ी में सिद्धहस्त को अपने नाम के आगे एक सरकारी स्कूल अंगरेज़ी न जानने वाले , जीवन में असफलताओं के साथ संघर्ष करने वाले का नाम अपने नाम के साथ लिखने को प्रेरित कर रही । मैं इसको भी हिंदी

के आत्मसम्मान की लड़ाई में इस्तेमाल करूँगा । मेरा हर काम युक्ति से होता है इसीलिये मुझे कुछ परिणाम प्राप्त हो जाता है ।”

“ अनुराग ... ”

“ बोलो ... ”

“तुमको अपनी प्रशंसा बहुत अच्छी लगती है ना ”

“ तुमको नहीं लगती ... ?”

“ लगती सबको है पर तुमको कुछ ज्यादा ही , कोई न मिला करने वाला तो खुद ही कर डाला । यह प्रशंसा की चाहत भी तुम्हारे जीवन का एक ड्राइविंग फोर्स है ।”

“एक बात बताओ अनुराग ।”

“पूछो ।”

“कभी सोचा था , एक सेंट स्टीफेंस की लड़की टॉपर मार्का, अंगरेज़ी बोलने वाली तुमसे अधीर होकर प्रणय निवेदन करेगी , ईमानदारी से बताना ।”

मैंने उसकी तरफ देखा और कहा , “ बात पूरी करो तब जवाब दूँ ।”

“ यह अधूरा है ?”

“हाँ ।”

“तुम पूरा कर दो ।”

“ कभी तुमने सोचा था कि इतनी नफ़ासत से लबरेज़ , मिथक कथाओं ऐसी सुंदर लड़की तुमसे प्रणय निवेदन करेगी ।”

“ अनुराग ... तुम ज़िंदा नहीं रहने दोगे , मेरी अधीरता को प्राकाष्ठा पर पहुँचा दोगे ”

प्रतीक्षा फिर शांत हो गयी कुछ क्षणों लिये और नीरवता को तोड़ते हुये बोली

..

“ अनुराग ।”

“ बोलो .”

“ इसको और अच्छा करो ना ।”

“क्या अच्छा कर्सँ ?”

“ यहीं जो अभी कहाँ है , इसमें अनुराग की चाहत तो मेरे प्रति कुछ दिख रही पर अनुराग का भाषा कौशल नहीं है । काव्यात्मक करो इसको । मैं खो जाना चाहती हूँ तुम्हारे लफ़ज़ों में.. उन लफ़ज़ों में जिसमें सिर्फ़ और सिर्फ़ मैं हूँ ।”

“ प्रतीक्षा.. यह जो भाषा है न .. वह प्रेम को असीमितिता की ओर ले जाती है , तुम मुझसे और मुहब्बत करने लगोगी ... जीवन मुश्किल हो जायेगा । यह प्रेम जीवन को दुर्लह बनाता है , एक व्यग्रता देता है , बेचैनी रक्त में समा जाती है । इसको नियन्त्रित करना चाहिये ।”

अनुराग , मुझे असीमित प्रेम चाहिये चाहे वह दर्द ही क्यों न दे , व्यग्रता चाहिये , बेचैनी चाहिये , दुर्लहता चाहिये । मुझे तुम्हारा असीम प्यार चाहिये । गढ़ो शब्दों को अनुराग .. मेरे लिये .. सिर्फ़ मेरे लिये ।”

“खामोशी से कहा उसने
तल्खियों में खुद से बात करके
कुछ बंद हैं पैगाम मेरी धड़कनों में
उस अजनबी के लिये ... “

मैं कहते - कहते रुक गया .. प्रतीक्षा ने कहा “ रुको मत अनुराग .. अभी मैं कहाँ आयी पूरी तरह इसमें .. अभी मेरा रूप कहाँ आया .. इसमें मेरी नफ़ासत कहाँ है .. इसमें तो मेरी व्यग्रता मात्र ही है । यह कहते - कहते प्रतीक्षा ने अपना सिर मेरे कंधे पर रख दिया । मेरे शरीर में उत्तेजना फैलने लगी .. एक तीव्र उत्तेजना... एक करेंट मेरे लहू में , धड़कने इतनी तीव्र कोई भी सुन सकता था । प्रतीक्षा ने कहा ,”

अनुराग ..”

मैंने साँसों को नियन्त्रित करते हुये कहा “हाँ ।”

“ यह धड़कनों का शोर ... बहुत आळादकारी है । इनके मत रोकना मुझको इसमें खोने दो । यह कुछ कह रही हैं । बताओ क्यों यह इतना शोर कर रही हैं । कभी पहले भी इतना शोर तुमने सुना है ख्वाबों के साथ की तन्हाई में ।”

“प्रतीक्षा ... तुमने वार्तालाप में कितनी बार अनुराग शब्द का इस्तेमाल किया है । “

“ अनुराग .. अनुराग... कई बार .. हर बार मन करता है और कहने का .. प्रतीक्षा अनुराग शर्मा... यह तो बहुत ही नायाब है । जब भी मुझे कहीं अपना हस्ताक्षर करना होगा हर बार यह नाम आयेगा । मेरे कमरे कीं कॉपियों में अनुराग ही अनुराग लिखा है । मैं लिखना कुछ और चाहती हूँ लिख यही जाती हूँ । मैं अगर अगली बार सिविल सेवा परीक्षा में सम्मिलित हुई तब मैं इस नये नाम के साथ सम्मिलित होऊँगी । कुछ अंक तो इस नाम के ही मिल जायेंगे और आत्मविश्वास में असीम अभिवृद्धि होगी । मैं दो प्रतापी भाइयों के बहन के संबोधन से कई बार जानी जाती हूँ पर अब एक अति प्रतापी व्यक्ति की पत्नी रहूँगी ।”

“ क्या तुम्हारा अपना कोई अस्तित्व नहीं रहेगा ? तुम अपने आप में नायाब हो ।”

“ मैं नायाब न होती तब तुम्हारे नज़दीक कैसे आती । तुम हर काम अपनी शर्तों पर करते हो , मैं भी तुम्हारा एक चुनाव हूँ । मेरी पहचान क्या होगी यह वक्त बतायेगा पर तुम्हें मुझ पर गर्व अवश्य होगा । मैं नाम तुम्हारा जरूर लिखूँगी पर कर्म मेरा अपना होगा । अब अपने पिता के दिये नाम के साथ -साथ इस एक बड़े कालजयी नाम के साथ का भी सवाल है , यह उत्तरदायित्व तो हमेशा रहेगा ही । एक ज़िम्मेदारी का भान हर वक्त रहेगा । तुम सेवा में एक अलग झंडे गाड़ोंगे ही ।”

“ प्रतीक्षा , मैं सेवा में रहूँगा, कब तक रहूँगा , सेवा ज्वाइन करूँगा या नहीं करूँगा इसका कोई भरोसा नहीं । मैं एक अस्थिर दिमाग़ का व्यक्ति हूँ, मुझे खुद पता नहीं होता अपने भविष्य के बारे में । अगर तुम्हारे रुमानियत ख्यालात मेरे सेवा के संबंध को लेकर होंगे तब तुमको निराशा भी हो सकती है । मैं अपनी अपरिपक्वता के बारे में तुमको आगाह कर देता हूँ । मेरे फैसले सबको तकलीफ़ देते हैं क्योंकि मैं अपने निर्णयों को लेकर अति स्वार्थी हूँ, मैं किसी दूसरे की सहायित पर कोई ध्यान नहीं देता । मेरे फैसले बहुधा गलत हो जाते हैं और उसका खामियाज़ा मेरे से जुड़े हर व्यक्ति को भोगना पड़ता है । जो अनुराग नाम आज बहुत आळाद दे रहा वह कल बोझ हो सकता है । जो प्रतीक्षा अनुराग शर्मा एक बहुत ही सम्माननीय नाम लग रहा है उससे तुम पीछा भी छुड़ाना चाहोगी , अगर मेरी करान्तिधर्मिता का व्यापक विरोध हुआ । मेरी करान्तिधर्मिता किसी समझौते को स्वीकार नहीं करती । मेरी माँ ने सामदाम - दंड - भेद सब लगाया पर मैंने आईआरएस ज्वाइन नहीं किया और हो सकता

है आईआरएस ज्वाइन न करूँ और करूँ तो जल्द ही छोड़ दूँ, इस साल क्या करूँगा इसका फैसला परिणाम के बाद लूँगा । क्या पता मैं जीवन में कुछ और करना चाहूँ आज ही या आज से कुछ वर्ष बाद और तुमको लगे यह उचित नहीं है और एक टकराव उत्पन्न हो जाये । मैं टकराव पर किसी की नहीं सुनता । मैं मौत के समीप जाकर भी अपनी शर्तों पर क़ायम रहा ।”

“ क्या तुम मेरी परीक्षा ले रहे , क्या तुम मुझे आज़मा रहे , क्या तुमको लगता है यह नाम मैं तुम्हारे आईआरएस होने के कारण चाह रही अनुराग .. मेरा विवाह मेरे प्रतापी भाई किसी भी एक बहुत अच्छी सर्विस के लड़के से कर सकते हैं और करना चाहते भी थे जब तुमने आईआरएस ज्वाइन नहीं किया और चुनाव लड़ने लगे । मेरे पिताजी ने मुझसे पूछा , “ मैंने कहा आप फ़ैसला कर लीजिये पर मुझे जीवन में एक बेहतर व्यक्ति चाहिये । पिताजी ने फ़ैसला कर दिया और भैया से कहा , अनुराग पर कोशीश करो वह जो भी करेगा अच्छा ही करेगा । उसके बाद मैं तुम्हारी छात्रा हो गयी । तुमको नज़दीक से जाना । तुम्हारे और छात्रों से तुम्हारे बारे में पता चला और किया भी और लगा अनुराग ऐसा कोई नहीं”

“ अनुराग “

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 336

“ अनुराग .. “

“बोलो “

“ तुमने वह नहीं कहा ।”

“क्या?”

“काव्यात्मकता .. अभी कहा था न मिथक कथाओं ऐसी सुंदरता और नफासत... इसको शब्दों में गढ़ो .. कुछ नायाब शब्दों में ।”

मैंने प्रतीक्षा के चेहरे की तरफ़ देखा .. बड़ी आँखें, श्वेत वर्ण, काले केश , केश कुछ अटपटे से उलझे हुये बिन सँवरे ... हौँठ गुलाबी , चेहरे के बायें कपोल पर काला तिल ... मैं देख रहा था उसका चेहरा , उसकी भाव भंगिमा /

“ अनुराग , इतना भी न देखो कि तुम .. “

“ काव्यात्मकता अवलोकन की चाहत रखती है । एक लेखक की कल्पनाशीलता अवलोकन के बाहर अधूरी है । मैंने कभी देखा तो है नहीं मिथक कथाओं की सुंदरता बस पढ़ा है इधर -उधर से । अब वह काव्य में उतरे और तुम उसमें दिखो इसके लिये तो ठीक से देखना होगा एक मुसविर की तरह ।”

“ देख लो , मन भर के देख लो पर लिखो मेरे लिये , सिर्फ़ मेरे लिये ।”

“वह हौले - हौले मेरे अंदर

बदन के अंदर रक्स करती हुई
बनाती सत्हे-माइल की सलासिल
अंदर पोरों में पिघलता रक्त
बनता निशान रेशों पर
अमिट निशान

मेरी आँखों से बनती लकीरें उसके चेहरे पर
देखती कहती लकीरों से मिट मत जाना
अहसास उसका होने का
जिसके निस्फ बनने की मेरी ख्वाहिश है
उसकी निशानदेही है मेरे शरीर के रेशों पर रुक- रुक कर कुछ नज़म
करीने से गढ़ता नायाब शब्दों में
यह बगैर रंगों का रंगरेज़ है
यह मुसविर
उतारता मुझको शब्द- चित्रों में

बना रहा चित्र शब्दों से
बन रहा एक शब्द चित्र
बन गयी वह जो बनना चाहती थी
सूरत से नहीं सीरत से

ऐ चित्रकार गढ़ मुझे अंदर से
मैं अपने को जानना चाहती हूँ
और ... और
उतार मेरी सीरत को
कैनवास पर
कुछ वैसे ही
जैसा अक्स आसमान , पेड़, चाँद का

उत्तरता झील में
साया बनता सबका
हौले- हौले डोलते पानी में
पथिक खोता रास्ता
भूला चाँद की नरम रौशनी में
बीतता वक्त
कमल खिलने के इंतज़ार में ।”

“अनुराग अब इसका अनुवाद करो, यह बहुत कठिन हो गया ।”

“ यही समस्या है अलग भाषा की प्रेमिका के होने का । हम लोग संकेतों की भाषा सीख लेते हैं । संकेतों से बात करते हैं । तुम्हारी अंगरेजी मुझे न समझ आयेगी और हमारी हिंदी थोड़ा दुर्लभ है ही आप के ऐसे परिवेश के लिये ।”

“ नहीं ऐसा नहीं है समझ आता है पर तुम सांकेतिक बहुत लिखते हो ।”

“ लेखक संकेत में बहुधा लिखता है । वह सब लिख देगा तब वह कथावाचक हो जायेगा न कि लेखक ।”

“ मेरे भैया भी अच्छा लिखते हैं । उनकी किताब कितनी अच्छी है । पूरी किताब सोल्ड आउट हो गयी ।”

“ प्रतीक्षा, एक देशी कहावत है, नानी के आगे ननिऔरे के हाल न बताओ । अब भैया की किताब की कहानी कल अशोक से पूछना । उस किताब को हर गाँव के हर तालाब ने ख़रीदा है ।”

“ हर तालाब ने ख़रीदा ... मैं समझी नहीं ।”

“ कल अशोक बतायेगा ।”

“ उससे क्या पूछना, उससे आप किसी का नाम लो बस बुराई ही करता है । तुमको भी नहीं बख्शता ।”

“ वह मज़ाकिया है । वह दिल से बहुत अच्छा है । उसके रहने पर समय बहुत अच्छा कटता है । कल देखना समय का पता ही न चलेगा । अब चलूँ मैं, बहुत देर हो रही । आंटी इंतज़ार कर रही होगी ।”

“ आंटी ने तो भेजा ही है मिलने के लिये । उसे सब पता है । थोड़ी देर और रुको ।”

थोड़ी देर बाद मैं चलने लगा तब प्रतीक्षा ने कहा मैं चलूँ पूसा तक तुमको छोड़कर वापस आ जाऊँगी ।”

“ तुम मुझे पूसा तक छोड़ने जाओ और फिर मैं वापस सेंट स्टीफेंस तक । यही करम रात तक चलता रहेगा । मुझे चलने दो कल तो आओगी ही ।”

“ मैं कल जल्दी आ जाऊँगी ।”

“ हाँ, जल्दी आना ।”

मैं चलने लगा प्रतीक्षा ने पूछा, “ एक बात बताओ कल मैं क्या पहनूँ तुमको क्या अच्छा लगेगा ?”

“ मेरा रंग संयोजन बोध बहुत बेकार है , मैं बता दूँगा तब तुम मोर ऐसी बन जाओगी । तुम बहुत ही नफासत की लड़की हो अच्छा ही पहनोगी ।”

मैं वापस आंटी के पास आ गया । आंटी मेरा इंतज़ार ही कर रही थी । मेरे घर में प्रवेश करते ही आंटी बोली , “ आत्मा तृप्त हुई ।”

आंटी का व्यंग्यात्मक लहजा , कुछ मेरा मज़ाक़ उड़ाती उसकी मुस्कान लगा ज़मीन फट जाये और मैं इसमें समा जाऊँ ।

“ आंटी , आपने उसको बुलाया था ही फिर मुझे क्यों भेजा ?”

“ तुम मुझसे झूठ नहीं बोलते पर इश्क में गिरफ्तार व्यक्ति विवेक शून्य होने लगता है । मेरा इतना क़ाबिल बेटा असत्य भाषण करें वह भी विवेक शून्यता की ओर बढ़ता असत्य इसके पहले मुझे अपना कर्तव्य निभाना आवश्यक था । या तो तुम मुझसे झूठ बोलकर जाते या पीड़ा सहते । मेरे एक झूठ ने सारी समस्या हल कर दी ।”

आंटी की बात में एक नायाब दर्शन था , एक अपने बेटे के प्रति उत्तरदायित्व का भान था । वह इस बात को बढ़ाना नहीं चाहती थी , वह बहुत ही परिपक्व महिला थी । उसने कहा , “ बैठो चाय बनाकर लाती हूँ तब बात करते हैं , खाना तो अभी खाओगे नहीं । अभी तो प्रेमिका की बातों से ही पेट भरा होगा . प्रेमिका का सामीप्य क्षुधा हरण भी कर लेता है । वह तो साथ ही होगी इस समय ।”

यह कहकर आंटी हँसने लगी । आंटी चाय लेकर आयी । उसने बैठने का उपकरण करते हुये कहा , ” अगर तुम प्रतीक्षा से मिलकर न आते तब तुम्हारा मन उसी पर लगा रहता और मुझसे भी मन भर के बात नहीं करते । अब तुम्हारा मन भर गया है बात आराम से करोगे । तुम जब तक यहाँ हो प्रतिदिन मिलो उससे । तुम्हारे जीवन में एक सामान्य महिला के लिये स्थान नहीं है । तुम्हें एक अलग क्रिस्म की लड़की चाहिये । तुम देख लो ठीक से , समझ लो , यह जीवन का एक बहुत ही बड़ा फ़ैसला है बिल्कुल जल्दबाज़ी में मत लो । ”

“ आपको कैसी लगी आंटी , आप भी देर तक आज साथ रही हैं ।”

“ अनुराग , वह परैकिटकल लड़की है । वह दिल्ली की पढ़ी है , सेंट स्टीफेंस की है । वह जानती है अपना कार्ड कैसे चला जाये , मैं तो तुम्हारी माँ हूँ मैं तो तुम्हारी तारीफ़ करूँगी ही पर तुम्हारे ऐसा लड़का उसे कहाँ मिलने वाला । मिसेज़ आहूजा मुझसे कह रही थीं , बहन जी एक लड़की मेरे पास और होती तो मैं आपसे अनुराग को माँगती ।”

“ आपने क्या कहा मिसेज़ आहूजा को आंटी ?”

“ छोड़ो बेवकूफ़ों की बातों को । अब अपना लड़का ब्याहा है , उसकी भावनाओं का ख्याल रखना पड़ता है नहीं तो मैं बात न करूँ ऐसे स्वार्थी लोगों से ।”

मैं चुप हो गया । मैं आंटी की नाराज़गी का कारण जानता था । मैंने बात बदल दी ।

“ आंटी , कल कैसे होगा इतने लोगों का इंतज़ाम ?”

“ हो जायेगा । कल पूसा का खानसामा आ जायेगा । वह यहाँ के कार्यक्रमों में खाने का इंतज़ाम करता है । बीस- तीस आदमी का ही तो काम है । क्या बात हुई प्रतीक्षा से , वह विवाह को आतुर है ।”

“ आप को कैसे पता ?”

“ मैंने साफ़- साफ़ पूछा आज जब तुम इंटरव्यू के लिये गये थे ।”

“ क्या कहा उसने ?”

“ वही जो तुमसे अभी कहा कुछ देर पहले ।”

मैं चुप हो गया । आंटी को सब पता था ।

“ अनुराग , घर में सहमति है इस बात पर ?”

“ किस बात पर ?”

“ प्रतीक्षा से विवाह पर ।”

मैं कुछ न बोला , आंटी ने मेरी ओर देखकर कहा , “ विवाह का प्रस्ताव आया था कुछ तो बात हुई होगी , मन बनाने का प्रयास हुआ था ?”

“ आंटी , परिवेश में बहुत अंतर है , यह कहकर विवाह न करने की बात कही गयी थी घर में ।”

“ किसने कहा था ?”

“ सभी कह रहे थे जबकि मामा जी अधीर थे इस विवाह के लिये ।”

“ वह क्यों अधीर थे ?”

“वह इनके मातहत हैं, उनको पोस्टिंग प्राप्त हो गयी थी कमिशनर साहब के सौजन्य से । अब शहर के सबसे बड़े आदमी के यहाँ विवाह प्रतिष्ठा देगा ही ही ।”

“परिवेश में साम्यता नहीं है, यह बात किसने कही थी.. उर्मिला ने ?”

“नहीं... मैंने ।”

“वह तो अब भी है, फिर तुम्हारा विचार कैसे बदला ?”

मैं शांत रहा ।

“अनुराग, कोई भी ऐसा क्रदम मत उठा लेना जिस पर बाद में तुम स्वयम् शर्मसार हो जाओ । यह नयी उम्र है इसमें कदमों के भटकने में वक्त नहीं लगता । कोई ऐसा वायदा भी मत कर देना जो तुम निभा न सको । मुझे तुम्हारी समझदारी पर पूर्ण आस्था है पर तुम्हें एक अधीरता मुझे दिख रही जो पहने मैंने नहीं देखी थी । तुम राम की कथा के जानकार हो, राम के संयम का सदैव स्मरण रखना, किसी अतिरेकता की ओर बढ़ते हुये । तुम्हारी माँ मर्यादा की बहुत आगरही है, उसके आगरह का मान रखना ।”

आंटी ने यह कहकर बात बदल दी । उसका लक्ष्य पूरा हो चुका था । वह मुझे आगाह करना चाहती थी और वह उसने बहुत ही स्पष्ट रूप में कर दिया था ।

“अनुराग, तुम आहूजा साहब के यहाँ कब जाओगे ?”

“जब आप कहें, आप भी चलें ।”

“कल तिवारी आयेगा ही उन लोगों के साथ, तुम संदेश भेज देना या मैं ही कह दूँगी कि हम लोग आयेंगे । तुम्हारा जाना ज़रूरी है । ऋषभ की ससुराल तो है ही, तुम्हारा और शालिनी का भी बहुत अच्छा संबंध है । वह तुम्हारी हर बात मानती है । मुझको लिखती भी है कि अनुराग से सलाह ले लिया करो ।”

रात का खाना खाया । आंटी ने पूछा सुबह जल्दी तो नहीं उठना, मैंने नकारात्मक उत्तर दिया । आंटी ने इतनी सशक्त नैतिक शिक्षा दे दी थी कि ख़बाब भी आदेशित थे । मैं स्वयम् से ही प्रश्न कर रहा, मैंने किसी सीमा का अतिकरमण तो नहीं कर दिया? मैं खिड़की पर खड़ा दूर जुगनुओं को देख रहा । वह हर दिन की तरह दूर वहीं शोर करते हुये, मैं उनके आभासित शोर के साथ देख रहा उनको, मुझे लगा प्रतीक्षा दूर आसमानों से उत्तरती हुई चलकर आती हुई मेरी ओर । ऐसा मुझे हर दिन लगता था । एक मृग मरीचिका रोज़ बनती थी ऐसे ही रात में इन्हीं खिड़कियों के मध्य से और मैं ढूब जाता था सराब में । पर आज आंटी ने मेरी कल्पनाओं पर लगाम लगा दी थी, उसके संस्कार नियन्त्रित कर रहे थे मेरी चाहत को । मैं आज बेअंदाज नहीं था, हर दिन की तरह । आज प्रतीक्षा के सत्त्व का सम्मान कुछ ज्यादा

ही था । मुझे राम का गांभीर्य युक्त मर्यादित प्रेम याद आने लगा जिसमें नायिका का वर्णन प्रतीकों में था , प्रेम की अभिव्यक्ति समाजिक संस्कारों एवम् मान्यताओं का सम्मान करती हुई थी प्रतीक्षा रोज़ की तरह कल्पनाओं में गढ़ी जाने लगी , उससे संवाद करने लगा ... मेरे ख्वाब आज संजीदा थे ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 337

मैं सुबह उठा । आंटी की बात अभी तक मेरे अंदर चोट कर रही थी । एकाएक लगा अगर यह बात माँ को पता लगी तब ..

“ मुन्ना पगलाई गअ हअ तू, तोहार बुद्धि घास चरै चली गै बा । तोहका उचित - अनुचित के कौनौ ख्याल बा कि नाहीं । हमरे घरे ई सब न चले , तू उठावअ आपन छोरी- झंडा निकलअ इहाँ से । ई सब आपन नये जमाने के हवा , ज़माना बदलत बा , ई आईएएसगीरी इहाँ न चले । हमरे इहाँ रहै के बा तअ नियम क़ानून से रहै पड़े ।”

मैं बोलने की कोशिश किया ..

“ हमसे जबान न लड़ावअ मुन्ना, तोहार जबान खींच के हाथे मैं देब हमका तोहार कुल करदरशना के पता चलि गै बा ।”

यह भावी - संभावित संवाद मेरे मस्तिष्क में गूँज रहा था , उसी समय आंटी चाय लेकर आ गयी ।

“ क्या सोच रहे हो अनुराग ?”

“ कुछ नहीं आंटी ।”

“ तैयार हो जाओ तुमको मंदिर ले चलती हूँ ।”

“ जी ।”

मैं तैयार होकर बाहर आया तो देखा ऋषभ की कार एक ड्राइवर पौछ रहा था । मैंने पूछा ,” आंटी यह ड्राइवर कहाँ से आया ?”

आंटी - “ मैंने रख लिया ।”

“ क्यों आंटी ?”

“ अनुराग , इतना पैसा ऋषभ का बैंक में पड़ा है । मेरी इतनी तनख्वाह है । कुछ खर्चा होता नहीं । इसके पास नौकरी नहीं थी । यह यहीं पूसा में काम

करता था , रिटायर हो गया है । इसकी पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ हैं । तुम जबसे आये हो गड़ी की ज़रूरत समझ आने लगी । एक पंथ दो काज हो जायेगा । इसका भी काम हो जायेगा और हमको भी सहलियत ।”

“क्या ऋषभ का पैसा अब भी आता है ?”

“वह तो नियम से हर माह - दो माह आता ही है दो - चार हज़ार डालर । शालिनी की तो पैसा कमाने में महारत है । लक्ष्मी का असीम वरदान है उस पर ।”

“आप क्या करते हो पैसे का ?”

“मैं क्या करूँगी । तुमको बैंक भी चलना होगा । ऋषभ ने कहा है कि अनुराग को नॉमिनी बना देना नहीं तो बाद में समस्या होगी ।”

“आंटी , ऋषभ ने मुझसे कहा था कि आप का पैसा सँभालूँ पर यह मैं नहीं कर पाऊँगा । मुझे कुछ नहीं आता ।”

“तुम हर बात पर अपनी राय मत दिया करो । मैं नॉमिनी बना रही तुमसे पूछ तो रही नहीं कि तुम बनोगे या नहीं । कोई समस्या आयेगी तब उनका पैसा तुम वापस कर देना , वैसे इतने छोटे - मोटे चिल्लर टाइप पैसे की उनको क्या जरूरत ।”

“आंटी , यह चिल्लर है ?”

“ऋषभ - शालिनी ने बहुत पैसा कमाया है अनुराग । ऋषभ की लगन-मेधा और शालिनी की व्यापारिक समझ एक अनूठा संयोग है ।”

मैं आंटी के साथ मंदिर गया । मेरे जीवन से जीविका हेतु परम्परागत अध्ययन का संबंध ख़त्म हो गया था । मैं अब सिविल सर्विसेज़ की परीक्षा दे नहीं सकता था । इस बार के परिणाम के बाद अगर मैं आईएएस में चयनित नहीं हुआ तब आईआरएस में जाना होगा । मैं विदेश सेवा , पुलिस सेवा भरता नहीं था । बीतते वक्त के साथ मुझे एक दबाव का एहसास हो रहा था । मेरा चयन न हुआ और मेरे छात्रों का हो गया , इलाहाबाद से लोगों का हो गया तब मेरी साख का क्या होगा ? मेरे मस्तिष्क में यह विचार जब भी आता था मैं विचलित हो जाता था । मंदिर में मैंने ईश्वर से अराधना की , उनका आशीर्वाद माँगा । मैं मंदिर के बाहर आया । आंटी ने बाहर आकर कहा , “अनुराग तुम जानते हो मैं तुझे मंदिर क्यों लायी ?”

मेरे जवाब देने का इंतज़ार किये बगैर कहा , ”मैंने ऋषभ की हर उपलब्धि के लिये यहीं से दुआएँ माँगी हैं और हर अरदास मेरी कबूल हुई है ।”

“आपने क्या अरदास की आंटी ?”

“ यह मेरे और मेरे आराध्य के बीच की बात है , यह बात बतायी नहीं जाती । परिणाम बतायेगा मैंने क्या माँगा अपने ईश्वर से ।”

ख़ानसामा आ गया , इंतज़ाम होने लगा । आंटी के घर पहली बार इतने लोग आ रहे थे , वह भी उस परीक्षा को अंतिम रूप से पास करने वाले संभावित लोग । आंटी ख़ानसामे को निर्देश दे रही थी । बँगला आंटी का बहुत ही अच्छा था । यह किनारे का बँगला था , आगे - पीछे लॉन , तीन तरफ़ से सड़क, पिछले लॉन में खाना बन रहा था , सामने के लॉन में धूप रोकने के लिये छोटा सा शामियाना और कुर्सियाँ उसके नीचे । आंटी का हॉल भी बड़ा था । मुझे पता ही था सबसे पहले प्रतीक्षा ही आयेगी । उसने कल कहा भी था , मैं जल्दी आऊँगी । आंटी ने ठीक कहा था वह बहुत प्रैविटकल है और अपना कार्ड ठीक से चलना उसे आता है । उसे समझ आ गया था कि आंटी का मुझ पर और मेरी माँ पर काफ़ी नियन्त्रण है और वह इस संयोग को कराने में सक्षम है , इसलिये वह आंटी के साथ बहुत संस्कार के साथ पेश आती थी , वैसे भी वह संस्कारी लड़की थी । उसने आज श्वेत शिफ़ॉन की साड़ी पहनी हुई थी । हॉटें पर बहुत हल्की लालिमा , आँखों में काजल , बाल को क़रीने से बाँधे हुये , कानों में नीले टॉप्स पहने बहुत सुंदर लग रही थी । आंटी ने उसको देखते ही कहा , “ अनुराग देखो मेरी बेटी सबसे पहले आ गयी । ” प्रतीक्षा आंटी के इस संबोधन से गद्गद हो गयी । उसे इतने आत्मीय संबोधन की आशा न थी । प्रतीक्षा ने आंटी से कहा , “ आंटी कहें तो मैं कुछ मदद कर दूँ । ”

“ नहीं कोई मदद नहीं चाहिये । ख़ानसामा आया है वह सब कर देगा । आप लोग आराम से बात करो , अभी बाक़ी लोग भी आते होंगे । ”

मैंने कहा , “ आंटी वह लोग आज शालिनी की कार को टैक्सी बना देंगे । तिवारी फेरी लगायेगा । ”

“ यह ड्राइवर भी ख़ाली ही है अनुराग इसको भेज देते हैं , लोग जल्दी आ जायेंगे । ”

आंटी ने ड्राइवर को यूपी भवन भेज दिया लोगों को लाने के लिये । कुछ ही देर में लोग आ गये । अब इलाहाबाद के लड़के- लड़कियाँ दिल्ली में इंटरव्यू के लिये आये हों और खाने का ऐसा इंतज़ाम , क्या कहने । पीछे जहाँ हलवाई खाना बना रहा था वह भी देख डाला , क्या बन रहा यह भी पता कर लिया , पूरे घर में टहल मारा इन बाईस - चौबीस लोगों ने । साइकिल से शहर की सड़क नापने वालों को पास दो कार थी । शालिनी की विदेशी कार जिसकी क़ीमत का आँकलन लगाना उनका हर दिन का काम था , ऋषभ की नयी कंटेसा कार तो अभी -अभी बाज़ार में आयी ही थी और देश की शायद सबसे मँहगी कार हो । सब सब हो रहा था मेरे ही सौजन्य से । चिंतन सर ने शालिनी

के घर के बारे में बताया ही थी कि वह कितनी रईस है । इसमें से कई चिंतन सर की चेलागीरी भी किये थे । अशोक ने दिनेश से कहा , ” एक बात तो है अनुराग सर है नटवर लाल । ”

“वह कैसे ?”

“देखो सबको पटा मारा । ”

“किसको पटाया ?”

“आंटी को । ”

“यह तो उनकी मौसी हैं । ”

“तुम अनुराग सर को कब से जानते हो ?”

“दो साल से । ”

“मैं इनके एक-एक रिश्तेदार को जानता हूँ, यह दूर से मेरी रिश्तेदारी में आते भी हैं । इनकी एक लौधर सी मौसी है जो इनके घर से दो किमी दूर रहती है और उनके मौसा बिजली के मीटर में हेरा - फेरी करते हैं । इतनी तमीजदार संस्कारी पढ़ी लिखी महिला इनके पुश्तों में कोई नहीं है । ”

“तब यह कौन है?”

“यह इनकी माँ की बचपन की सहेली हैं । इनकी माँ से और इनसे बहुत पटती है, यह पिछले साल इंटरव्यू के समय इनके यहाँ रुके थे और तभी से संबंध बन गया । ”

“एक साल में इतना अच्छा संबंध बन गया ?”

“एक कहावत सुनी है ?”

“कौन सी ?”

“जहाँ न जाये रवि वहाँ जाये कवि .. अब इसमें कवि हटाकर अनुराग लिख दो / माया फैलानी या तो मारीच को आती थी या तो .. .”

“या तो . . . , ”

“हो बड़े बेसहूर यार .. यह मारीचावतार हैं । ”

“चिंतन सर भी इस काम में माहिर हैं । यह उनके साथ रहते थे, उनके साथ ही सीख गये । ”

“चिंतन सर इनके पैर के धोवनउ नहीं है । यह चिंतन सर को लील ले जायें और डकार भी न लें । पर चलो हमारा तो फ़ायदा है उनके साथ रहने से । मुफ्त में पढ़कर आईएएस बनने की राह पर हैं, यूपी भवन क़ब्ज़ाया है, सफेद चमचमाती कार और यह दिव्य भोजन ... यार एक जुगाड़ और करना है । ”

“क्या?”

“आहूजा बनिया के यहाँ भी एक दिन भोजन का जुगाड़ हो जाये।”

“वह कैसे होगा?”

“कुछ जुगाड़ बनाता हूँ। बस तुम आहूजा साहब का ज़िकर आंटी जी के सामने छेड़ देना बाक़ी मैं काम लहाता हूँ।”

“ठीक है।”

इतने में अनामिका आ गयी। “अनामिका ज़रा हलवाई को बोलो चार - छः कप चाय बना दे।”

“मैं क्यों बोलू तुम बोल दो।”

“यह हर समय लाठी लिये रहती है। जब देखो उल्टा ही बोलती है। उसका पति बहुत पीड़ित होगा।”

“क्या बोला?”

“कुछ नहीं।”

“कुछ तो।”

“कुछ नहीं।”

चलो हम ही बोल देते हैं। अशोक जिसको जो मन आये बोल देता था इसलिये लोग उससे कम खुश रहते थे। पर उसकी हिंदी बहुत अच्छी थी और नोट्स वगैरह बनाकर दे देता था इसलिये लोग उसको बदाश्त भी करते थे।

आंटी ने इंतज़ाम बहुत ही अच्छा किया था। लोगों ने खाना खाया। योजना के हिसाब से दिनेश ने आहूजा साहब का ज़िकर छेड़ दिया। अशोक ने कहा, “कार देने मैं जाऊँगा तब बहुत सारा धन्यवाद दूँगा, बहुत सुविधा हो गयी इस कार से। आंटी जी घर तो बहुत बड़ा लगता है शालिनी भाभी का।”

आंटी - “बहुत बड़ा है। शालिनी का कमरा देखना, इस मकान का आधा होगा शायद। एक बाहर कमरा एक अंदर कमरा, बाथरूम पूरे कमरे के बराबर साथ में डरेसिंग रूम।”

अशोक - “सर, आपने देखा है वह कमरा।”

आंटी - “यह शालिनी के सबसे नज़दीक व्यक्ति हैं। ऋषभ - शालिनी की जब लड़ाई हो जाती है तब बीच में मध्यस्थिता करते हैं एक दूसरे के बीच और एक की बात दूसरे तक पहुँचाते हैं। इनको शालिनी बहुत पत्र लिखती है।”

अशोक - “आंटी जी, शालिनी की हिंदी सीखने में रुचि है क्या?”

आंटी - “ यह कैसे पता तुमको ? ”

अशोक - “ आंटी जी , यह होमियोपैथिक के डॉक्टर है । मीठी गोली देने में तेज हैं । जिसको हिंदी सीखने का शौक हो गया उस पर तो क़ब्ज़ा हो गया , उसका घर - दुवार यह लिखवा लेंगे । ”

आंटी हँसने लगी .. “

अशोक तुमको पता है ? ”

“ क्या आंटी .. शालिनी ने हज़ार करोड़ रुपये के साम्राज्य के तीन वारिस घोषित किये हैं.. ऋषभ , शालिनी और तुम्हारे यह मायावी सर । ”

“ आंटी , मतलब 333.33 करोड़ के मालिक हैं यह ? ”

“ कह सकते हो । ”

“आंटी यह 0.33 करोड़ अभी ही मिल जाता तो काम बढ़िया बन जाता , हम लोग कुछ क़मीज़- वमीज ख़रीद लेते और अनामिका कुछ टिकुली , चूड़ी, बिछुआ , पायल ले लेती । ”

अनामिका - “ तुम अपना काम देखो , मेरी टिकुली - चूड़ी के चक्कर में मत पड़ो । ”

अशोक - “ काहे नाराज़ होती हो तुम्हारे दहेज का इंतज़ाम हो रहा । ”

अनामिका - “ हमारा दहेज रहने दो अपनी क़मीज़ का इंतज़ाम देखो । ”

“ एक बात है पेपर में एक बार छपेगा ज़रूर डीएम बहु की सास से नहीं पटती / यह ऐसे ही लड़ेगी सास से । ”

“ अशोक आप अपना काम देखा करो , हर वक्त मज़ाक़ अच्छा नहीं लगता । ”

मैंने बीच - बचाव करके मामला शांत कराया । आंटी ने कहा , “ अनुराग इन सबको लेते जाओ आहूजा साहब के यहाँ । वह भी बहुत परसन्न होंगे ही । ”

“ठीक है आंटी , जब हम लोग चलेंगे तब से चलेंगे पर इतने लोग एक साथ .. ”

“ क्या हुआ ? आजकल में मिसेज़ आहूजा आएँगी ही कह देना तुम । ”

आंटी ने कहा तिवारी को बुलाओ । तिवारी आ गया , आंटी ने कहा , “ साहब से कह देना अनुराग भैया आना चाहते हैं कब आयें । ”

“अरे माता जी आपका घर है जब चाहें तब आयें । अनुराग भैया मानदान हैं । ”

आंटी ने आदेश के स्वर में कहा , “ कह देना यह लोग आयेंगे कल शाम को । ”

“ठीक है माताजी । ”

लोग खाना खाकर जाने लगे । प्रतीक्षा का जाने का मन नहीं था वह रुकना चाहती थी । आंटी समझ गयी थीं । उन्होंने कहा , “ प्रतीक्षा रुकना .. थोड़ी बात करनी है । ”

दिनेश ने अशोक से पूछा , “ आंटी जी क्या बात करेगी प्रतीक्षा से जो उसको रोक लिया । ”

“ यार यह सास- बहू का मामला हो रहा है , हमको इससे क्या लेना देना । एक बात बतायें ... ”

“ बताओ .. ”

“ आज से प्रतीक्षा और तेज चप्पल- जूता उतार कर दौड़ेगी सर के लिये “

“ वह क्यों? ”

“ 333.33 करोड़ रुपये की मालिक बनेंगी । ”

“ वह तो लोग ऐसे ही कह देते हैं, इसका कोई खास मतलब नहीं होता । ”

“ यह सामान्य आदमियों पर लागू होता है , अनुराग शर्मा पर नहीं । यह सब लील ले जायेंगे । यह प्रतीक्षा भी किसी आम आदमी की बहन है नहीं । यह सत्यानंद मिश्रा की बहन है , वह कम फ़राड़ नहीं है । सत्यानंद मिश्र पूरा प्रदेश लूट मारे हैं और ईमानदारी की खँजरी बजा रहे । यह उन्हीं की बहन है , अनुराग सर को ले उड़ी है । अनुराग सर उसके बगैर रह नहीं पाते । रूप का माया फैला चुकी है । एक बात मैं बता दूँ हिंदी माध्यम का विद्यार्थी कितना भी हिंदी - हिंदी कहे पर अंग्रेज़ी माध्यम की लड़की देखते ही पगला जाता है । सर , पगला गये हैं । संतानोत्पत्ति के बाद क्या होगा ? ”

“मतलब । ”

अनुराग सर ऐसे मायावी और प्रतीक्षा ऐसी रूप भेद लक्षिता महाठगिनी का पुत्र कैसा होगा .. ईश्वर इस देश की सुरक्षा करे .. वह घटोत्कच होगा .. ”

“ घटोत्कच क्यों होगा ? ”

“ यार , तुम खोपड़ी खा जाते हो ... ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 338

“बता दो घटोत्कच क्यों होगा ? ”

“ यार , तुम अनुराग सर को तब जाने जब यह सिविल सेवा की तैयारी करने लगे । मैं इनको जानता हूँ जब यह ईसीसी में बीएससी के दूसरे साल में थे ।

तब यह छात्र- राजनीति करते थे और भाँग में धुत्त ग़ज़्दाट के पंडों के साथ रहते थे ।”

“ क्या यह भाँग खाते थे ?”

यह भाँग नहीं खाते थे , गाँजे का धुआँ सोखते थे ।”

क्या यह गाँजा पीते थे ?”

“ यह मैंने कब कहा ?”

“ अभी कहा गाँजा का धुआँ सोखते थे ।”

“ सोखते थे यह कहा , पीते थे यह कब कहा ?”

“ क्या फ़र्क़ है सोखने या पीने में ?”

“ देखो अगर तुम यहाँ सिगरेट सुलगाकर पियो तब मैं सिगरेट तो नहीं पियूँगा पर तुम जो धुआँ छोड़ोगे वह तो मैं सोखूँगा ही । वैसे ही यह ग़ज़ेड़ा लोगों के साथ रहते थे , दिन भर गाँजा सोखते थे ।”

“ मतलब पैसिव स्मोकर थे यह तुम कह रहे हो । यह ग़ज़ेड़ा लोग क्या होते हैं ?”

“यार , तुम एक अलग पहलवान मार्का हो । चित्त नहीं करागे पर थका मारोगे । आदमी को अंगरेज़ी स्कूल में पढ़ाना ही नहीं चाहिये । उसको देश दुनिया का पता ही नहीं होता । देश - दुनिया का पता सरकारी स्कूल में ही होता है । जो गाँजा पिये , जिसको गाँजे की लत लग जाये वह ग़ज़ेड़ी और जो गाँजे के ब़ग़ैर पगला जाये वह ग़ज़ेड़ा ।”

“ इसका घटोत्कच से क्या संबंध ?”

“ मैं अभी कार से उतर जाऊँगा । मैं पैदल चलकर यूपी भवन पहुँच जाऊँगा । आप तो पूरा दिमाग का दही कर दिये । बच्चा उनका अर्जुन पैदा हो , दुर्योधन या बर्बरीक हमस्ते क्या ? तुम खोपड़ी खाये हो ।”

“ यह बर्बरीक कौन था ?”

“ तिवारी जी गाड़ी रोको , मैं पैदल जाऊँगा ।”

तिवारी डराइवर- “ साहेब , बस पहुँच गअ हई सरदार पटेल रोड अब उतरे से का फ़ायदा ।”

अनामिका - “ बता दो बर्बरीक कौन था ?”

“ तुम तो चुप ही रहो । तुम्हारा हमने एडमिशन करवाया था सर के यहाँ जबकि सीट भर गयी थी । आज बोला चाय बोल दो हलवाई को , भाव खा

रही थी । अगले साल तुम्हारा नाम मैं पहले ही कटवा दूँगा क्लास से , अगर अगली बार परीक्षा दी जाए । ”

“ क्या सर अगले साल भी पढ़ायेंगे? वह जायेंगे नहीं मसूरी ?”

“ मैं उनका पीआरओ हूँ क्या ? उनसे ही पूछो । चलो यूपी भवन आ गया नहीं तो आप लोग पगलवा दिये थे । तिवारी आता हूँ एक घंटे में महेन्द्र तिवारी से मिलने चलता हूँ दिल्ली पुलिस में हैं इलाहाबाद के , कुछ दिन ही बचे हैं परसों के बाद तो सझिकिलै रेतना होगा । ”

“ साहेब हमरौ जान - पहिचान कराई देहअ । ”

“ करा देंगे । ”

अशोक ने कमरे में पहुँचते ही चाय का आर्डर दे मारा । परेम नंदन ने पूछा , ” कमरे का बिल कौन देगा ?”

“ सत्यानंद मिश्र के अकाउंट में लिखा देंगे । डेढ़ सौ रुपया प्रतिदिन का कमरा है । अब हम दे देंगे तब पैसा कहाँ बचेगा । ”

“ यह चाय - पानी - खाना ?”

“ सब उसी अकाउंट में लिखा देंगे । ”

परेम नंदन - “ पता करो क्या करना होगा । ”

अशोक - “ चिंतन सर होते तो काम हो जाता । वह जुगाड़ हैं । गाज़ियाबाद के किसी बनिया को काम पर लगा देते । पर यह काम अनुराग सर से नहीं होगा । ”

“ वह क्या करें ?”

“ अरे 333.333 करोड़ रुपया है , आहूजा ससुरा रुपया का दरस्टी है । उसी से लेकर दे दें । ”

अनामिका - “ इतना रुपया सर को मिलेगा ?”

अशोक ने परेम नंदन के कान में कहा । “ यह बेसहूर भी सोच रही होगी हमारा विवाह भी अनुराग सर से होता तब 333.33 करोड़ मिलता । अब झगड़ा अनुराग सर को लेकर नहीं है , सारा झगड़ा 333.333 करोड़ का है । अभी सुरुचि को तो यह पता नहीं है नहीं वह तो सबसे तेज है सबको दौड़ा मारेगी । ”

अनामिका - “ क्या कह रहे हो ?”

अशोक - “ यही कह रहा कि लड़कियों का कमरा तो यूपी भवन में प्रती होना ही चाहिये । महिला सशक्तिकरण का यह भाग होना चाहिये । अच्छा तुम लोग

रुको ज़रा में महेन्द्र तिरपाठी से मिलकर आता हूँ ।”

तीन - चार लोग कार पर लदकर चल दिये दिल्ली की सैर करने ।

प्रतीक्षा आंटी के घर का मुआयना कर रही थी । आरती ने ऋषभ का कमरा दिखावा , मैं उसी कमरे में रुकता हूँ यह भी बताया । ऋषभ की सारी किताबों को आंटी ने बहुत क्रीरने से सजाया हुआ था । प्रतीक्षा ने कहा , ” आंटी आपने ऋषभ भैया की किताब को बहुत सँभाल कर रखा है ।”

आंटी - “ बेटा , यह वक्त की चश्मदीद गवाह है । यह मुझे उन वक्तों की तरफ ले जाती है जब वह छोटा था , मेरी उँगलियाँ पकड़ कर चलता था , घुटनों के बल गिर जाता था .. सूरदास का पद बरबस याद आ जाता है ..

“किलकत कान्ह घुटरुवनि आवत ।
मनिमय कनक नंद कै आँगन, बिंब पकरिबैं धावत ॥
कबहुँ निरखि हरि आपु छाहुँ कौं, कर सौं पकरन चाहत ।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत ॥
कनक-भूमि पद कर-पग-छाया, यह उपमा इक राजति ।
करि-करि प्रतिपद प्रति मनि बसुधा, कमल बैठकी साजति ॥
बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति ।
अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के परभु कौं दूध पियावति ॥”

यह राग धनशरी में गाया गया है । मैं बहुत सुनती हूँ जब भी वह याद आता है । देखो यह उसकी पहली कहानी की किताब , ये उसकी इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष की किताब सब यहाँ है । यह कमरा मैं किसी को नहीं देती , सिवाय अनुराग के । आंटी ने उसी में से एक कॉपी निकाली जिस पर उलटे-सीधे अक्षर कुछ बने हुये थे , कुछ अनगढ़ सा लिखने का प्रयास किया गया था ।”

“ प्रतीक्षा, यह उसका पहला अक्षर बोध है । जब वह पहली बार लिखने का प्रयास कर रहा था । इस कॉपी में मौजूद है वह सारे लम्हे , यह कॉपी उस यात्रा के आरंभिक समय का चश्मदीद गवाह है जो आज के इतिहास का निर्माण कर रही थी । वह दिग्विजयी बना , वह बहुत प्रतापी है , सौम्यता उसके व्यक्तित्व का भाग, वह ईश्वर की एक नायाब संतान है , वह मेरे साथ न होकर भी मेरे साथ है ।”

यह कहते - कहते आंटी भावुक हो गयी ।

“आंटी , वह कितने दिन में आते हैं ?”

“ साल में एक बार आते हैं । बहुत काम है उनके पास । तुम्हारे भैया के किताब के विमोचन में आये थे । अब अनुराग के विवाह में आयेगा । अनुराग का विवाह बहुत धूमधाम से होगा यह शालिनी कहकर गयी है । अनुराग - ऋषभ - शालिनी तीनों में बहुत ही अंतरंग संबंध है ।”

आंटी यह कहकर मुस्कुराने लगी और बोली .. “ अनुराग ही नहीं तुम्हारे विवाह में भी वह लोग रहेंगे ।”

प्रतीक्षा का चेहरा लाल हो गया जिसमें शर्म से ज्यादा प्रसन्नता का पुट था ।

थोड़ी देर प्रतीक्षा रही जब वह जाने लगी तब आंटी ने कहा , ” प्रतीक्षा तुमको डराइवर छोड़ आयेगा सेंट स्टीफेन्स तक । अनुराग तुम भी चले जाओ इसको छोड़ आओ ।”

आंटी ने मनमाँगी मुराद पूरी कर दी । मैं चलने लगा आंटी ने आवाज़ देकर पूछा , ” अनुराग कब तक आओगे , हो सकता है शालिनी की माँ आये । वह तुम्हारा इंतज़ार शायद करेंगी ।”

मैंने गेट पर से ही कहा , ” जल्दी ही आ जाऊँगा ।”

कार दिल्ली की सड़कों पर ख़बाब मेरे मस्तिष्क में । प्रतीक्षा ने मेरी ओर देखकर कहा , ” तुमने कहा नहीं कुछ ।”

“क्या नहीं कहा ?”

“मैं कैसी लग रही “

“बहुत सुंदर “

“ऐसे नहीं ।”

“तब कैसे ?”

“अनुराग शर्मा का एक ब्रांड है , उस ब्रांड की तरह ।”

“ क्या है वह ब्रांड ?”

“काव्यात्मकता ... शब्दों- लफ़ज़ों से वैसे ही खेलना जैसे समुद्र की उफान लेती लहरों से एक नौका ऊपर नीचे होती है और”

“ और ..”

“ सब देखते हैं वह दृश्य यह सोचकर क्या होगा अब , इतने में उतर जाता है पानी और वह नाविक लौटता है किनारे की ओर अपने मछलियों के जाल के

साथ ।”

“ यह तो काव्यात्मक ही हो गया ।”

“ पर उसमें वह बरांड नहीं है , रुको ।”

“ उसने पर्स से लिपस्टिक निकाली , हल्का से लालिमा को होंठों पर बढ़ाया और कहा .. अब गढ़ो शब्द मेरे लिये ।”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 339

“ प्रतीक्षा, मेरे खूबसूरत कह देने से तुम्हारी सुंदरता में हिजाफ़ा तो हो नहीं जायेगा , तुम हो ही अलग ।”

“यह नीरस सी बात न करो । मेरा हक़्क़ है तुम्हारे लफ़ज़ों पर । आंटी ने भी कह दिया आज तो ।”

“ क्या कहा ?”

“ ऋषभ अनुराग के विवाह में आयेगा .. फिर कहा तुम्हारे में भी आयेगा ।”

“ बहुत तेज़ हो तुम ।”

“तेज़ न होती तब एक बड़े बरांड को कैसे पाती । यह कोई छोटा- मोटा बरांड तो है नहीं , एक जीवन में कई जीवन जीने वाला है ।”

“ प्रतीक्षा, एक बात कहूँ ?”

“ कहो ।”

“बहुत मुश्किल है मेरे साथ निभा पाना । एक सूरज का तेज़ होता लाल तेज़ है जो आळादित करता है पर नज़दीक जाने पर वह जला देता है । एक अलग सोच का व्यक्ति पति के रूप में ठीक नहीं होता । बहुत मुश्किल है एक शायर से मुहब्बत करना और बहुत मुश्किल है अगर शायर करान्तिधर्मी है । वैसे में किसी को दोष क्या दूँ , हर शख्स मुझसे निभा नहीं सकता पर अगर तुम आ रही हो यह कहते मैं वह एक शख्स हूँ जिससे निभाना आसान है तब यह मेरी खुशक्रिस्मती है ।”

“ तुम मुझे आज़मा रहे हो या मुझे कुछ इशारा दे रहे हो ?”

“ तुम दोनों ही कह सकती हो , मैं आज़मा रहा हूँ कि कठिन रास्तों पर मेरे साथ तुम चल सकती हो या नहीं और इशारा भी कर रहा हूँ मंज़िल की ख्वाहिश कुछ भी हो पर तुम्हें मेरे साथ रास्ते के नुकीले पत्थरों से दो- चार होना ही पड़ेगा । मैं लोगों में खुशी बाँटने की कोशिश में हूँ क्योंकि मेरे अंदर

एक दर्द है और उस दर्द की ज़िंदगी मैंने देखी है, यह भी हो सकता है मेरा यह प्रयास मेरे अपनों के दर्द को अपने आप में समाहित किये हो । प्रतीक्षा, किसको एतराज़ होता है एक नयी ज़िंदगी से पर कोई मनचाहा नायाब मिलना तो चाहिये । हो सकता है कल तुमको लगे जो मिला वह नायाब तो है पर मनचाहा नहीं है । तुमको आज अपनी बाँहों से ज्यादा मेरी बाँहों पर यक़ीन है, अपने ख़बाबों से ज्यादा मेरे ख़बाबों पर यक़ीन है, मेरी खामोशियाँ तेरे लफ़ज़ों से ज्यादा बोलती हैं, तुझे ख़ूबसूरती नहीं एक सीरत चाहिये, तेरा एतबार ज़माने में सबसे ज्यादा मुझ पर है पर यह याद रखना प्रतीक्षा जिस सीरत पर आज तुम मर मिटी हो वह एक दिन बोझ बन सकती है । आज हमारे रिश्ते का कोई नाम नहीं है । यह बेनाम रिश्ते बहुत सुकून देते हैं क्योंकि इसमें हक़ की कोई बात नहीं होती है पर जब रिश्ते हक़ की बात करते हैं तब रिश्तों की मिठास चली जाती है ।”

“तुम क्या कहना चाह रहे हो अनुराग कुछ समझ न आ रहा ।”

“ ज़रूरी नहीं है हर बात के लिये लबों को तकलीफ़ दी जाये, कुछ बात निगाहें भी कह सकती हैं, लफ़ज़ों में छिपी ख़ामोशी कह जाती है । प्रतीक्षा, तुम आज मेरी ख़ाहिश हो कल मेरी ज़रूरत बन जाओगी और मेरी यह ज़रूरत बंदिश बनायेगी, किसी न किसी रूप में । और तब तुम अगर यह कहो मुझे बंदिश स्वीकार नहीं, याद रखो प्यार में बंदिशों होती हैं किसी न किसी तरह की । बग़ैर बंदिशों के परेम कहाँ कभी हुआ है । परेम एक दूसरे के प्रति संजीदगी की माँग करता है, परेम स्वार्थी नहीं होता । एक शायर से मुहब्बत बिलकुल आसान नहीं है और अगर वह शायर समझौतों से इंकार कर दे तब बहुत ही मुश्किल है ।”

“ अनुराग, मैंने कहा था मुझ पर लिखो पर यह क्या... ”

“ प्रतीक्षा, तुम आगे बढ़ती जा रही हो । तुम एक ऐसे बिंदु पर आ चुकी हो कि अब वापस जाना मुश्किल होगा । आंटी ने जिस तरह आज कहा उससे स्पष्ट हो गया कि हम तुम ससम्मान एक दूसरे के जीवन में प्रवेश करने की ओर तीव्र गति से बढ़ रहे हैं, ऐसे में मेरा फ़र्ज़ है मैं आगाह कर दूँ भविष्य में आने वाले झ़ंझावातों से ।”

“ वह झ़ंझावात क्या होंगे ?”

“कुछ वक्त के सलवटों में बंद रहने दो, वक्त को बताने दो ।”

“ क्या यह विवाह संभावना की ओर बढ़ चुका है, घर वाले आपके मान जायेंगे ?

“आंटी ने कह दिया अब काम बहुत आसान है । आंटी की राय एक दृष्टिकोण बना देगी । आंटी बहुत ही समझदार हैं और वह अगर इस संबंध के पक्ष में हैं तब ज़रूर तुममें कुछ ख़ास देखा होगा ।”

“ अनुराग मेरे पैर जमीं पर नहीं हैं । मुझे तो लगा बहुत पापड़ बेलने पड़ेंगे । भैया कह रहे थे आसान नहीं है अनुराग से विवाह करना । बहुत से दहेज देने वाले खड़े हैं, अगर बात दहेज पर आयी तब विवाह नहीं हो पायेगा, पर यहाँ तो वह मुद्दा ही नहीं । आज तो ख्वाबों में मैं दुल्हन बनूँगी । ”

“ दुल्हन जी अब चलने दो, अशोक जिसका 333.3333 करोड़ रुपया जोड़कर बैठा है वह आयी होंगी । उनको भी थोड़ा सँभालना है । वह शालिनी की माँ है, शालिनी बहुत अच्छी लड़की है । मेरा ताल्लुक पहले आंटी से हुआ फिर ऋषभ से फिर शालिनी से पर मेरी शालिनी से बहुत पटती है । ”

“ ऐसा क्यों? ”

“ हर बात का कारण बताना आसान नहीं होता । वह बहुत ही महत्वाकांक्षी लड़की है । वह न्यूयार्क हिंदी समीति की सेक्रेटरी है । बहुत कुछ हिंदी में मुझसे लिखती रहती है, ट्यूनिंग मिल गयी । ”

“ क्या लिखती है वह ? ”

“ आना इलाहाबाद पढ़ लेना । मैं सारे पत्र सहेज कर रखता हूँ । तुम भी लिखना, वह तो और सहेजूँगा । ”

“ तुम नहीं लिखोगे ? ”

“ ज़रूर लिखूँगा । ”

“ रोज़ एक लिखना । ”

“ दो लिखूँगा । ”

“ मैंने एक शायर से मोहब्बत की है, मेरा हक्क बनता है उसकी शायरी पर । ”

“ पूरा हक्क है । अच्छा अब चलने दो । ”

मैं घर आया आहूजा साहब सपत्नीक बैठे थे । मैंने उन लोगों के पैर छुये । आहूजा साहब गद्गद हो गये । आंटी बता ही चुकी थी सब । मिसेज़ आहूजा ने कहा, ” बेटा धन्यभाग हमारे इतने काबिल पढ़े- लिखे अफ़सरान बनने वाले लोग हमारे घर आयेंगे । बेटा, सबको ले आना किसी को मत छोड़ना । ”

मैं “ ज़रूर ले आऊँगा आंटी जी । बेटा, मैं शालिनी को आज ही फ़ोन करके बता दूँगी और आप लोग जब आओगे उस समय का ट्रंकाल बुक कर दूँगी, तुमसे बात भी करा दूँगी । ”

वह लोग थोड़ी देर रहे और चले गये । उनके चले जाने के बाद खाने की मेज़ पर आंटी ने पूछा, ” अनुराग, प्रतीक्षा तुमको बहुत पसंद है ? ”

“बहुत तो नहीं कह सकता क्योंकि यह शब्द बहुत स्पष्ट कभी नहीं हो पाता यह हमेशा तुलनात्मक ही होता है पर पसंद है यह बात तो है ।”

“ क्या ऐसा उसमें है जो आकर्षित करता हैं तुम्हें ?”

“ यह कठिन सवाल है आंटी ।”

“ मैं जानती हूँ , सवाल कठिन है पर जवाब देने का प्रयास करो ।”

“उसका सलीका “

“ उसकी सुंदरता ?”

“ वह भी है ।”

“सलीका या सुंदरता?”

“ क्या दोनों नहीं हो सकता है ?”

“हो सकता है ।”

“ एक बात कहूँ अनुराग ?”

“ हाँ, आंटी ।”

“सब कुछ ठीक है पर यह है बहुत तेज़ । यह जानती है जीवन में कैसे आगे बढ़ा जाये ।”

“ इसमें कोई ख़राबी है आंटी ?”

“तेज़ तो लोग मुझको भी कहते हैं , मैं भी कुछ लोक - व्यवहार जानता हूँ जीवन में तेज़ रफ्तार से दौड़ने के लिये ।”

“ अनुराग , दो अति महत्वाकांक्षी व्यक्तियों का विवाह बहुत उचित होता नहीं ।”

“ आंटी , कहीं आप ऋषभ - शालिनी के विवाह पर तो नहीं कह रही हैं ।”

“हाँ ।”

“ऐसा क्यों कह रही हैं ?”

“ तुमको अभी पता नहीं है , वह विवाह संबंध टूटने की ओर बढ़ रहा है ।”

“ क्यों आंटी ?”

“अतिशय महत्वाकांक्षा ।”

मैं पूरी तरह विवेक शून्य हो गया । मेरे हाथ का कौर वहीं रुक गया । आंटी ने कहा , “ खाना खा लो .. ”

“आंटी यह क्या हो रहा ?”

“ जो भवितव्य था ।”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 340

मैं शांत हो गया पर अंदर हलचल हो चुकी थी । आंटी ने मेरे और प्रतीक्षा के भविष्य के संबंध पर परोक्ष रूप से कह ही दिया था । मैं खाना खाकर बाहर लॉन में आकर बैठ गया । आंटी भी थोड़ी देर में आ गयी । उसने कहा , ”चिंता हो रही ?”

“ हाँ ।”

“किसके भविष्य पर , अपने या ऋषभ ?”

“ मेरे पर तो अभी कुछ हुआ नहीं ऋषभ पर हो रही ।”

“ तुम्हारे अपने भविष्य पर क्यों नहीं हो रही ?”

“ अभी कुछ मेरे पर निर्णय हुआ नहीं ।”

“ क्यों.. क्या रह गया ?”

मेरी खामोशी के बीच ही आंटी ने पूछा , ” क्या जो निर्णय तुमने लिया है वह बदलोगे ?”

“ कौन सा निर्णय ?”

“उसी निर्णय के बारे में मैं बात कर रही जो तुमने लिया है और मेरी सहमति प्राप्त करने का प्रयास कर रहे । अनुराग , तुम कितने भी होशियार - चालाक - चतुर - स्याने क्यों न हो जाओ पर माँओं के आँखों से कुछ छिपा पाना आसान नहीं है । तुम लगातार यह चाह रहे थे कि प्रतीक्षा के बारे में मेरी सकारात्मक सोच हो जाये , यह सकारात्मकता तुम्हारे और प्रतीक्षा के संयोग बनाने में सहायक होगी । उर्मिला मुझसे विवाह के पूर्व पूछेगी ही , यह तो हम-तुम जानते ही हैं । मुझे समझाना आसान है पर उर्मिला को समझाना तुम्हारे बस की बात है नहीं । यह बात भी सच है , प्रतीक्षा एक बहुत अच्छे घर की लड़की है , पढ़ी- लिखी है , आईएएस होने की प्रबल संभावना है । अब अगर यह एक पत्नी-बहू के तौर पर अच्छी हो तो तब सोने पर सुहागा ।”

“ आपका क्या फ़ैसला है , एक अच्छी पत्नी और बहू होने पर ?”

“ मैं कोई अन्तर्यामी नहीं हूँ अनुराग । मैं कुछ पलों में यह नहीं कह सकती । एक बात ज़रूर कहूँगी वह कुशाग्र बुद्धि की है , एक स्मार्ट लड़की है पर

बहुत ही महत्वाकांक्षी है ।”

“वह महत्वाकांक्षी है, यह कैसे पता लगा ?”

“एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति मात्र महत्वाकांक्षी को ही पसंद करता है । तुमसे बड़ा महत्वाकांक्षी मुझे तो आज तक कोई दिखा नहीं ।”

“क्या व्यक्ति कम महत्वाकांक्षी हो या बिल्कुल ही न हो तब वह महत्वाकांक्षी व्यक्ति को पसंद नहीं करेगा ?”

“बिल्कुल ही महत्वाकांक्षी व्यक्ति न हो, ऐसा तो होता नहीं । हर व्यक्ति चाहता है जीवन में उसका साथ एक आगे बढ़ने वाले व्यक्ति से हो चाहे वह जीवनसाथी का हो या मित्र का । तुम्हारा- ऋषभ - शालिनी का संबंध जो प्रगाढ़ हुआ उसमें अन्य बातों के अलावा यह भी एक बिंदु है । तुम तीनों एक ही तरह के व्यक्ति हो और एक दूसरे के पूरक - संपूरक भी । एक - दूसरे के काम आने वाले व्यक्ति हो । यह जो तुम संपत्ति के तीन मालिक की कहानी सुन रहे हो यह एक छलावा भी है । कौन मिलेगा तुम्हारे ऐसा यहाँ पर उनकी संपत्ति की देखभाल करने वाला । शालिनी का पैसे से ज्यादा रुचि पिता की लिंगेसी को आगे ले जाने में है, पैसा तो वह विदेश में ही बहुत कमा रही और भविष्य बहुत ही उज्जवल है । पर एक बात यह भी है कोई सुकून न है न होगा तुम लोगों के पास । तुम तीनों जीवन की रफ्तार में बहुत तेज भाग रहे हो और साथ ही साथ और तेज़ भागना चाह रहे हो । इस तेज़ रफ्तार की दौड़ की एक बड़ी कीमत भी चुका रहे हो ।”

“ क्या चुका रहे हैं ?”

“ तुम्हारे जीवन में कोई सुकून नहीं । तुम उर्मिला को भी समय नहीं देते । दिन - रात एक ही धुन है कैसे सबको पीछे छोड़ूँ । अनुराग, तुमसे पहले भी बहुत आये और तुम्हारे बाद भी बहुत आयेंगे, यह गलतफ़हमी मत रखना कि तुम्हारे बाद वक्त के निशान सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम्हारी ही तहरीर से स्याह होंगे । एक सामान्य जीवन जियो । यह क्या जीवन की भागभागी है ।”

मैं चुपचाप आंटी को सुन रहा था । मैंने पूछा, “ प्रतीक्षा पर आपका क्या फ़ैसला है !”

“ वह तुमसे भी तेज़ जीवन में दौड़ना चाहती है । तुम्हें अपने कदमों पर भरोसा है । वह जानती है कि उसके कदमों में वह ताक़त नहीं है । उसे कदम उधार लेने आते हैं ।”

“ मैंने फ़ैसला पूछा आंटी ।”

“ वहीं जो शालिनी के बारे में था ।”

“ क्या था ?”

“ वही कहानी मैं फिर दोहराऊँ जो पिछले साल तुमको सुनायी थी ?”
मैं शांत हो गया । मुझे लगा मेरा बनाया एक इन्द्रजाल भरभराकर गिर गया ।
“

मेरी खामोशी के बीच आंटी ने कहा ,” मुझे ऋषभ- शालिनी की कहानी दुहराती दिख रही है । शालिनी के कदमों में कम ताक़त थी उसने ऋषभ को चुना ऊँची छलांग के लिये और यही यहाँ भी”

आंटी ने बात अधूरी छोड़ दी ।

मैं आंटी का आशय समझ गया । मैंने पूछा , “ यह ऋषभ - शालिनी के अलग - अलग राहों पर चलने की बात कब पता चली । ”

“ तुम्हारे दिल्ली आने के एक सप्ताह पहले ।

”कारण , अलग होने का ?”

“ ऋषभ भारत वापस आना चाहते हैं पर शालिनी नहीं । बात इतनी बड़ी तो मुझे नहीं लगती यह सुलझायी जा सकती है पर छोटी - छोटी बातें जब मुझ बन जायें और विवेक कार्य न करे तब ऐसा ही होता है । ”

“ ऋषभ कब वापस आ रहे ?”

“ काम बहुत बढ़ गया है । अमेरिका से बाहर यूरोप में भी विस्तार हो गया है । कई देशों में ऑफिस चल रहे हैं । वह समेट रहे । ”

“ क्या अकेले ही आयेंगे ?”

“ अब जब निर्णय अलग रहने का कर लिया है तब अकेले ही रहेंगे । ”

“ आहूजा साहब को पता है ?”

“ मुझे नहीं पता । मैं अपने काम से काम रखती हूँ । जब वह बात छेड़ेंगी तब बात करूँगी , मैं क्यों बात आरंभ करूँ । ”

मेरा मन खिन्न हो गया था , मेरा कल आहूजा साहब के यहाँ अब जाने का मन नहीं कर रहा था । मैंने आंटी से पूछा ,” क्या आहूजा साहब के यहाँ जाना ज़रूरी है ?”

“ जाने का मन नहीं कर रहा है ?”

“ नहीं । ”

“ मना कर दो । ”

“ अच्छा लगेगा यह ?”

“ तुम मुझसे हर फ़ैसला क्यों कराना चाहते हो ?”

मैं चुप हो गया । आंटी ने कहा , “ जाओ सो जाओ तुम्हारा मूड ऑफ हो गया होगा ।”

“ क्यों ?”

“ नहीं हुआ है ?”

मैं फिर चुप हो गया ।

“ अनुराग”

आंटी कहते - कहते शांत हो गयी फिर कहा

“ जाओ सो जाओ । “

मैं कमरे में आ गया । मेरा सारा उत्साह समाप्त हो चुका था । मेरे ख्वाब आज बंजर थे । मैं सो गया ।

सुबह आंटी ने कहा , ” अनुराग , तुम इतनी जल्दी अधीर क्यों हो जाते हो ? यह क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा की प्रवृत्ति ठीक नहीं है ।”

“आंटी , मैं थोड़ा एक संवेदनशील व्यक्ति हूँ । “

“थोड़ा नहीं बहुत संवेदनशील हो । यह तुम्हारी संवेदनशीलता ही समाज में परिवर्तन लाने के लिये तुमको प्रेरित कर रही है । यह तो होनी ही चाहिये । एक असंवेदनशील व्यक्ति समाज पर बोझ होता है । मुझे तुम्हारी अधीरता चिंतित कर रही है । अभी तुमको एक लंबा दौर देखना है । तुमसे लोगों को बहुत उम्मीद है और तुमसे उम्मीद रखना जायज़ भी है । व्यक्ति उम्मीद उस से नहीं रखता जो क्षमतावान होता है , क्षमतावान तो बहुत लोग होते हैं । व्यक्ति की उम्मीद उससे होती है जो संवेदनशील होता है । यह बुद्ध की संवेदना थी जो राज्य त्याग की ओर उन्मुख कर गयी न कि बुद्ध की क्षमता । एक क्षमतावान व्यक्ति सफल शासक तो हो सकता है पर नायक नहीं । नायक और शासक में फ़र्क होता है । नायक में संवेदना आवश्यक है ।”

“संवेदना तो आंटी में सबमें होनी ही चाहिये ।”

“यह एक आदर्शात्मक अवधारणा है ।

आदर्श विचार में तो सबके होते हैं पर जीवन में बहुत कम ही होते हैं । तुममें और औरों में यही फ़र्क है । तुम्हारे विचार में भी हैं और जीवन में भी हैं ।”

“आंटी एक गुत्थी आपने नहीं सुलझाया ।”

“कौन सी ?”

“ प्रतीक्षा की ।”

“ तुम मुझसे क्या जानना चाहते हो , यहीं न कि प्रतीक्षा अनुराग के लिये उपयुक्त है या नहीं ? अनुराग , प्रतीक्षा सर्वथा उपयुक्त है अगर तुम उसको समझ कर जीवन में आगे चलोगे । वह सर्वथा अनुपयुक्त है अगर तुम उससे अपने लिये त्याग की उम्मीद रखते हो । वह उर्मिला नहीं है जो तुम्हारे हर शर्त को मानेगी । माँ के पास कोई चुनाव नहीं होता बच्चों को त्यागने का । कोई क़ानून न ऐसा बना है और न बन सकता है जो इस संबंध का विच्छेद कर दे पर पति - पत्नी का संबंध एक करार पर आधारित है । यह हिंदू धर्म में विवाह संस्कार है और मुस्लिम धर्म में एक करार है यह तकनीकी बात है । हक़ीकत में दोनों एक करार है । यह सप्तपदी के मन्त्र क्या हैं । यह सब जो बंदिशों उस मन्त्र में लगायी जाती हैं वह क्या है ? यह जीवन में प्रवेश करने के पूर्व की शर्त है । तुमने तो विधि पढ़ी है । एक करार और संविदा के भेद को समझते ही हो । तुम्हारा और प्रतीक्षा का संबंध एक करार पर आधारित संबंध होगा , तुम्हें उसका सम्मान करना होगा ।”

“ क्या करार है इसमें , यह तो जीवन साथ जीने की एक प्रक्रिया है जो समाजिक संस्कारों ने नियत कर दी ।”

“तुमने आईआरएस की नौकरी त्याग दी । उर्मिला चीखती रही , तुमने न सुना । तुम पढ़ न सकोगे वह पत्र जिसमें उसने अपना दर्द बयाँ करके मुझको लिखा था । तुम्हारे गर्भ से लेकर तुम्हारे आईआरएस बनने तक का सफरनामा है वह जो तुमने एक झटके में तोड़ दिया । वह सुबकती रही कुछ न बोली , क्या यही उम्मीद तुम प्रतीक्षा या शालिनी ऐसी लड़कियों से करते हो ? अगर करते हो तब तुमको समाजशास्त्र और पढ़ना चाहिये । तुम्हारा क्या भरोसा कल तुम क्या करोगे । आज सीधे पाँव चल रहे हो कल कहोगे मैं उकता गया हूँ इस नीरस सीधे पाँव चलते - चलते अब मैं उलटे पाँव चलूँगा । लोग कहेंगे उलटे पाँव न चलो पीछे खाई में गिर जाओगे । तुम कहोगे मुझे गिरने में मज़ा आता है वह भी उलटा गिरने में । अब इस उलटा गिरने वाले को प्रतीक्षा - शालिनी ऐसी लड़कियाँ क्यों झेले । यहीं कहानी ऋषभ की है । जब कहा आईएएस दो तब दिया नहीं । अब कह रहे देश में कुछ काम करूँगा , लोगों के लिये काम करूँगा । शालिनी का भी कहना गलत नहीं है , इतना बड़ा सामराज्य बनाया है समेटने में वक्त लगता है और क्यों समेटूँ जब सामराज्य धनवर्षा कर रहा है । पर तुम लोग पुरुष हो जो सोच लिया वह स्त्री को मानना ही है और अगर नहीं मानती है तब वह बेअंदाज हो रही है , तमीज़दार नहीं है , कुलटा है । मैं इस मामले में शालिनी को बिल्कुल दोष नहीं ढूँगी , वह जिस लक्ष्य को लेकर जीवन में चल रही थी उस पर क्रायम है । आप तो बीच रास्ते में ही लक्ष्य बदल रहे । तुम और ऋषभ एक अस्थिर दिमाग के व्यक्ति हो । कब क्या करोगे यह विधाता को भी नहीं पता । तुम्हारे हाथ की लकीरों को विधाता को बदलना पड़ता है नहीं तो हाथ की लकीरों के विज्ञान की

साख चली जायेगी । ईश्वर भी अजीब है वह प्रतिभा पागलों - सिरफिरों को ही देता है ।”

“मैं प्रतीक्षा से विवाह न करूँ ?”

“जीवन तुम्हारा- सोच तुम्हारी .. मैं क्या राय दूँ । तुम आईएएस- आईआरएस जो भी सेवा मिलेगी इस परीक्षा के बाद उसे स्वीकार करके एकेडमी जाओगे ? तुम दो -चार साल बाद नौकरी छोड़ तो नहीं दोगे ? क्या पता एक सुबह अपने डीएम के बैंगले से उठे और जंगलों में नदारद हो गये किसी को पता ही नहीं । तुम्हारी दिमाग़ी अस्थिरता का क्या भरोसा ? तुम उसको साफ- साफ़ बता दो भविष्य की योजना और तब फ़ैसला करो ।”

“मेरी भविष्य की कोई योजना होती ही नहीं । मैं क्या बता दूँ । मैं वही करता हूँ जो मुझे अच्छा लगता है ।”

“ और जो तुम्हें अच्छा नहीं लगता वह तुम नहीं करते पर क्या गायरंटी है तुम्हारी चाहत ही उसकी चाहत हो । अनुराग तुम सब सामंतवादी हो । अपवादों को छोड़ दिया जाये पुरुष प्रकृति से ही सामन्तवादी होता है । सामंतवाद है क्या ? अपनी मनमर्जी चलाना और दूसरों के विचारों को कोई स्थान न देना या प्रतीकात्मक स्थान देना । वह तुम्हारी पत्नी होगी तुम्हारी गुलाम नहीं । यह कोई सिविल सेवा का पाठ्यक्रम नहीं जहाँ अनुराग शर्मा का रिसर्च अंतिम रिसर्च हो गया । यहाँ तक को जीवन में स्थान देना होगा । राम कथा को सुनाकर इंटरव्यू में नंबर लूट लेना एक बात है पर राम की तरह जीवन में स्वार्थ हीन होना एक अलग बात है । यह तुम मुझको मत बताना यह सब मैं समाज के लिये कर रहा हूँ । यह एक स्वार्थ से युक्त कृत्य है जो तुम कर रहे हो । प्रशस्ति का भूखा अनुराग शर्मा हर वह कार्य करेगा जिससे उसका जयकारा हो चाहे उसमें आँसू उर्मिला के गिरें , शांति के या प्रतीक्षा के या कोई और “

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 341

मैं किंकर्तव्यविमूढ़ । मुझे यह आशा ही न थी आंटी ऐसा कह देगी । आंटी का विश्लेषण, उसकी कही गयी एक- एक बात मेरे लिये नयी थी , तथ्य शायद नये न हों पर देखने का नज़रिया नया था । मैं हतप्रभ आंटी की ओर देख रहा था । आंटी के मस्तक पर एक अलग आभा रहती ही है और चेहरे पर तेज । उसने अपने आभायुक्त मस्तक पर बने निशानों से पूछा , ” बताओ क्या गलत कहा मैंने ?”

“आंटी यह प्रश्नस्ति की चाहत नहीं है यह शहर की साख का सवाल है ।”

“ तुमको बहुत गलतफ़हमी है अनुराग दस- बीस - पचास आईएएस के बन जाने से शहर की साख न बन जायेगी और न बनने से शहर इतिहास में विस्मृत हो जायेगा । इस महानता के प्रतिमान शहर की कहानी कब आरंभ हुई है , आईएएस बनाने के दिन से ? यह परीक्षा ही 1853 में आरंभ हुई है , और शहर का इस परीक्षा में इतिहास कुछ साठ - सत्तर सालों का है । यह परीक्षा भारत में होना आरंभ हुई , शायद सन बीस - तीस के दशक के आसपास । क्या सन बीस के दशक के पहले इस शहर का कोई इतिहास नहीं था ? यह शहर इन बाबुओं से प्रतिष्ठित हो रहा , वह भी ज्यादातर ऐसे बाबू जिन्होंने जीवन में ऐसा कुछ नहीं किया जिस पर वह स्वयम् ही नाज़ कर सकें । उनके अपने बच्चे ही उनसे सवाल करेंगे तुमने जीवन में किया क्या ? यह जो लोग तुम्हारे पीछे आज घूम रहे अपने स्वार्थ को लेकर क्या वह तुम्हारे किसी दर्शन , किसी आदर्श को मानने वाले हैं ? अगर तुम्हारी बात मैं मान लूँ कि तुम असीम सदाशयता से युक्त एक आंदोलन चला रहे जिसमें तुम्हारा कोई स्वार्थ नहीं है तब भी यह शहर के महान इतिहास को किसी बड़े पटल पर लाने का प्रयोजन तो मुझे नहीं दिख रहा । यह सब लोग एक ऐसी नौकरी की तलाश में हैं जो इनको जीवन में ऐसे विभिन्न अवसर दे जिससे जीवन में इन्हें सहूलियतें प्राप्त हो जाय और एक आराम का जीवन व्यतीत हो सके । तुम अगर कुछ कर सकते हो इस शहर के लिये , इस समाज के लिये , इस देश के लिये तब पैदा करो त्याग करने वालों को , जन्म दो अपने आंदोलन से एक ऐसी जिजीविषा वालों को शहर में जो शहर की तासीर बदल दें । यह सब जो लोग तुम्हारे इर्द-गिर्द एकत्रित हैं वह सब स्वार्थ से परिपूर्ण सत्तालोलुप लोग हैं । अगर मैं जीवित रही तब मैं आज से पाँच - सात साल बाद पूछूँगी , अनुराग कहाँ हैं तुम्हारे वह लोग जिसके लिये तुमने अपने को दर्द दिया , अपनों को दर्द दिया । शिक्षा का विस्तार बाबू बनाने से नहीं होगा अनुराग । यह विश्वविद्यालय इन बाबुओं के कारण नहीं जाना जाता । यह बाबू उस विश्वविद्यालय के कारण जाने जाते हैं । यह भरष्ट- समाज निरपेक्ष लोग इस शहर पर बोझा हैं । जो कभी शहर की ओर मुड़कर न गया हो वही पीढ़ी तुम फिर तैयार कर रहे हो । तुममें असीम प्रतिभा है उस प्रतिभा को समझो । अगर समाज में कोई बड़ा परिवर्तन करना चाहते हो तो एक व्यापक पटल देखो , यह पटल समाज में कोई परिवर्तन नहीं लायेगा । हाँ तुम्हारा जयकारा होगा , कुछ माता - पिता तुमको अशीष देंगे , एक अहम संतुष्ट होगा जब तुम अंगुलियों पर गिनोगे मेरे पढ़ाये कितने लोग कितने ज़िलों में प्रभावशाली पदों पर कार्यभार सँभाले हुये हैं , पर इससे एक बड़ी उपलब्धि का भ्रम पाल लेना एक आत्म श्लाघा भी होगी और आत्म प्रवंचना भी । कुछ अगर करना चाहते हो तुम तो समाज को कुछ ऐसे लोग दो जो जीवन में कुछ करना चाहते हैं , समाज में कुछ परिवर्तन लाना चाहते हैं । अमृत के रसास्वादन के शहर , संस्कारों के लिये विद्यात सीमायें , शंकर - कुमारिल के शास्त्ररार्थ की

ज़मीन , महामना - नेहरू के दर्शन के आलोक में पनपा नगर , विश्वविद्यालय ही नहीं न्याय के मंदिर इलाहाबाद उच्च न्यायालय से पहचान बनाती अस्मिता एक क्रान्तिधर्मी अस्मिता को साक्षात् जीता वातावरण .. तुम अगर इसके नायक बनना चाहते हो तो कोई बड़ा कदम जीवन में उठाओ । यह मिक्सी में कुछ सब्जियों को डालकर जूस बनाने की तरह किताबों की कुछ लाइनों को जोड़कर सिविल सेवा का एक अच्छा उत्तर बना देने में कोई मौलिकता नहीं है । जीवन में मौलिकता की तलाश करो अनुराग , मौलिक बनो । तुम और ऋषभ दोनों ने ईश्वर की इनायत के साथ अन्याय किया है । उसने धन की लालसा में अपने को समाप्त कर दिया और तुम एक झूठे अहंकार में , एक झूठी प्रतिष्ठा के दंभ में समाप्त हो रहे हो । तुम दोनों का रास्ता एक ही है मंज़िल की चाहत भले ही अलग- अलग क्यों न हो । ईश्वर की इनायत का सम्मान करो , जितने में कई नायक बन सकते थे उसमें से एक ऋषभ और एक अनुराग बनाये गये पर हुआ क्या? एक डॉलर छापने की मशीन बन चुका है और दूसरा

आंटी ने बात अधूरी ही छोड़ दी । वह जो कहना चाहती थी बखूबी कह गयी । वह शांत हो गयी और पूछा “ चाय पियोगे?”

मैंने इशारों से कहा , ” हाँ ।”

आंटी चली गयी और उसकी एक- एक बात हथौड़े की तरह मेरे अंदर चोट कर रही थी और उस चोट से निकली आवाज़ इतनी तीव्र थी कि मैं अगर दोनों हाथों से अपने कान बंद कर लूँ तब भी वह कान के पर्दों को फाड़ डालेगी । आंटी चाय का कप लेकर आयी । उसने आते ही पूछा , ” प्रतीक्षा से मिलने कब जाओगे?”

मैं इस सवाल के लिये बिल्कुल तैयार न था । आज आंटी भीष्म की तरह थी । उसके तुणीरों का कोई जवाब न तो मेरे शस्तरों के पास था और न ही मेरे कवच मेरी सुरक्षा कर पा रहे थे । मेरे जवाब देने के पहले ही आंटी ने कहा , ” चले जाना , मिल आओ । मिलने में कोई ख़राबी नहीं है । एक सुलझा हुआ फ़ैसला होगा भले ही बाद में उलझ ही क्यों न जाये । तुम उलझाओगे तो हई । अब चीज़ सीधे- सीधे हो जाये तब अनुराग शर्मा का मन कहाँ मानेगा । मुझे उर्मिला की परवरिश पर पूरा भरोसा है , तुम मर्यादा का ख्याल रखोगे । उर्मिला पर मुझे फ़ख़र होता है उसने तुमको ऐसे संस्कार दिये कि जयकारा की ध्वनि की चाहत तो है पर साथ में समाज सापेक्षता भी है ।”

“ कितने बजे चलना होगा शालिनी के यहाँ?”

“ भाई आप संपत्ति के एक तिहाई मालिक हो । अशोक ने कुछ जोड़ भी दिया है 333.3333 करोड़ रुपया । एक भी 0.00003 रह न जाये उसका पूरा ध्यान रखा है उसने , आखिर चेला किसका है ? संपत्ति के मालिक जब कहेंगे

तब चल पड़ेंगे, घर भी एक तिहाई आप का ही है। जब तक आपकी कृपा है आप इस गरीबखाने को तार रहे हो नहीं तो आप तीन लोगों का एक बड़ा बँगला है ही पृथ्वीराज रोड पर।”

आंटी को सब आता था। वह हरि शंकर परसाई का तरह व्यंग्य बाण मारने में भी माहिर थी।

“आंटी, यह सब कहने की बातें होती हैं। किसी के कहने से कोई दे नहीं देता, न किसी का हो जाता है।”

“मतलब तुम लेना चाह रहे हो संपत्ति, वह भी कागज़- पत्तर के द्वारा। जरा पूछना प्रतीक्षा से उसके अनुराग प्राप्ति अभियान में मात्र अनुराग की नौकरी और सीरत ही है या वह 333.3333 करोड़ रुपया भी शामिल है।”

आंटी हँसने लगी और बोली, “महानायक जी थोड़ा इलाहाबाद का भी ध्यान रखना। उर्मिला को कैसे बताओगे कि तुम प्रतीक्षा से मिले। यह खबर छिपेगी तो है नहीं। उर्मिला मुझसे भी कहेंगी कि मुन्नवा के मति मारी गैं रही और तू ओका रोकू नाहीं।”

यह सुनकर ही मैं घबड़ा गया। आंटी ने कहा, “कुछ नहीं होगा। बता देना एक बार मिले थे। किसी को क्या पता तुम सेंट स्टीफेन्स का चक्कर ही लगाते रहते थे। जाओ जल्दी आना। शाम को करीब साढ़े 6 बजे चलते हैं उसको भी बोल देना आ जायेगी सात बजे तक।”

मैं ऋषभ की नयी कंटेसा कार से चल पड़ा सेंट स्टीफेन्स की ओर ... कार तेज ही चल रही थी पर मेरे ख्वाबों से तेज़ नहीं।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 342

मैं सेंट स्टीफेन्स के गेट पर पहुँचा, मुझे देखते ही चौकीदार मुस्कुराने लगा। मेरे बगौर पूछे ही उसने कहा प्रतीक्षा मैडम बगल के कैंटीन में हैं। यह होस्टल के चौकीदार भी बड़े तेज़ होते हैं। वह सब समझते हैं। वह लगता है यूपी का ही था। वैसे भी दिल्ली- बंबई में चौकीदारी- टैक्सी के काम में इलाहाबाद - प्रतापगढ़- गाज़ीपुर- जौनपुर - सुल्तानपुर के लोग भरे पड़े हैं। वह भी किसी इसी इलाके का होगा। इतने में एक लड़का और आया वह किसी से मिलना चाहता था। उसने आवाज़ लगायी, “माला से मिलने उसके बो आये हैं।” यह “बो” क्या होता है यह मुझे नहीं पता था। मैं सोचने लगा यह “बो” क्या होता है? मुझे लगा शायद यह संबोधन वह बवाय फ़रेंड के लिये करता होगा। मैं बगल की कैंटीन में गया। मुझे प्रतीक्षा दूर से ही दिख गयी।

प्रतीक्षा अपनी दो सहेलियों के साथ चाय पीने आयी थी । मुझे उसकी सारी सहेलियाँ जान चुकी थीं । उसकी सहेलियों ने कहा , “ enjoy time ” और मेरी ओर देखकर मुस्कुराते हुये चली गयीं । उनके जाते ही प्रतीक्षा ने खुशी का इज़हार किया और कहा , ” आज तो मेरा दिन बन गया । एक सुखद आश्चर्य मुझको हुआ तुमको देखकर । मुझको लगा शाम को मुलाक़ात होगी तुम्हारे पृथ्वीराज रोड के बांगले पर ।” यह कहकर वह मुस्कुराने लगी । मेरे अंदर आंटी की वह पंक्ति गूँज गई , ” कहीं अनुराग प्राप्ति अभियान में वह 333.333 करोड़ रुपये की विरासत भी तो नहीं शामिल है ?”

“ अरे प्रतीक्षा , तुम भी यह सब कहने की बात है । कई बार व्यक्ति स्नेहशील होकर कुछ कह देता है , उसके कहने से उसकी सदाशयता का आँकलन मात्र ही लगाया जा सकता है । शालिनी खुले दिल की लड़की है , उसे पैसा बनाना भी आता है और खर्च करना भी । पैसा बहुत लोग कमा लेते हैं पर उसका सार्थक उपयोग करना कम लोगों को ही आता है ।”

“ऐसा क्या सार्थक उपयोग किया उसने ?”

“ उसने अपने पति के मामा का पूरा मकान बनवा दिया , वह भी ऐसा - वैसा नहीं एक आलीशान मकान । मेरी माँ मुझ पर नाराज़ भी हो गयी कि उसके पिता का मकान कमज़ोर पड़ गया इस नये मकान के सामने । वह ऋषभ के मामा को जानती भी न थी । आंटी अपने मायके गयी , उनके भाइयों के हालात ख़राब थे । आंटी संकोची भी है और

आत्मसम्मानी भी , वह किसी से कुछ कहने वाली नहीं । मैंने अनुरोध किया शालिनी ने तुरंत करा दिया । वह न्यूयार्क की हिंदी समिति चला रही है । वहाँ हिंदी भाषा के प्रतोत्साहन पर कार्य कर रही । अब वह देश में नयी प्रतिभाओं के विकास पर कार्य करना चाह रही । आईआईटी के नये - नये लोगों को बेहतर रोज़गार के अवसर दिलाने का प्रयास कर रही ।”

“ क्या यह सब चैरिटी में कर रही ?”

“ नहीं ।”

“ तब क्यों कर रही ?”

“ प्रतीक्षा , हक्कीकत में कोई चैरिटी नहीं करता , अपवादों को अगर छोड़ दिया जाये । व्यक्ति का बहुधा हर कार्य में एक निहित लक्ष्य होता है । उस लक्ष्य प्राप्ति के लिये जो रास्ता दिखता है वह उसी रास्ते पर चलने लगता है ।”

“ उनका क्या लक्ष्य है ?”

“ सब कहते हैं मैं बहुत महत्वाकांक्षी हूँ पर शालिनी की महत्वकांक्षा के समुख मैं कुछ नहीं हूँ । लोग कहते हैं मैं लोगों का उचित उपयोग कर लेता हूँ अपने

लक्ष्यों के लिये । अगर यह तथ्य सही है तब शालिनी अजेय है । वह किसी का भी इस्तेमाल जैसा चाहे कर सकती है, ऐसी क्षमता है उसके अंदर । इसी इस्तेमाल करने की आकांक्षा से यह संपत्ति के तीन मालिक की बात कही गयी जिसको अशोक रूपये में बदलकर फैला रहा ।”

“ क्या तुम्हारा इस्तेमाल करेंगी वह ?”

“ वह बहुत ही तेज़ है । अमेरिका से व्यापार यूरोप तक फैला ले गयी है । उसको अपने पिता के व्यापार में कोई रुचि नहीं है पर हर बच्चा अपने पिता की धराहर को सुरक्षित रखना चाहता ही है । वह भारत आने से रही, मेरे पास मैंने पॉवर है, मैं चलता पुर्जा हूँ । ऋषभ आंटी का पैसा मुझसे सँभालने को कह रहे थे पर मैंने इंकार कर दिया, मैंने आईआरएस की सेवा त्याग दी उससे एक धारणा बनती ही है व्यक्ति के चरित्र के बारे में । शायद उसको लगता है कि मैं उसकी ज़रूरतों पर काम आ सकता हूँ । उतने दूर से भारत देश में संपत्ति को बचाना आसान नहीं है । ऐसा लगता है उसके मस्तिष्क में मेरी एक लिप्साहीन छवि चाहे वह तथाकथित ही क्यों न हो बन गयी है । प्रतीक्षा, सबसे मुश्किल है जीवन में विश्वासपात्र व्यक्ति को प्राप्त करना । बड़े-बड़े साम्राज्यों का निर्माण इसलिये नहीं हुआ कि साम्राज्य निर्माता युद्ध में प्रवीण था बल्कि इसलिये कि उसके पास विश्वासपात्र सेना नायक थे । राम रावण पर विजय मात्र इसलिये नहीं प्राप्त कर सकें कि वह बहुत वीर थे बल्कि उनके पास निद्रात्यागी लक्षण, प्रमवीर अजेय हनुमान, सर्वस्व समर्पित सुग्रीव, दृढ़ निश्चयी अंगद, प्रबोधवीर जामवन्त थे । और सबसे बड़ी बात सबकी निष्ठा राम के पराक्रम में थी । शालिनी के पास सेनानायक को अपने साथ रखने की क्षमता है । यही कारण मुझे दिखता हैं शालिनी के कथन के पीछे । मैं कुछ और कर्त्ता न कर्त्ता पर एक व्यक्ति तो ऐसा मैं हूँ ही जिस पर वह विश्वास कर सकती है और वक्त-ज़रूरत पड़ने पर काम आ सकता हूँ । उसके माता - पिता की ढलती उम्र अवश्य उसको चिंतित करती ही होगी । यह सब कारण मुझको दिखते हैं उसके इस कथन के पीछे पर यह सब कहने - सुनने की बात है । यह सुनकर अच्छा लगता है कि लोगों का आप पर विश्वास है, बाकी इसका कोई खास अर्थ नहीं है । अगर तुमको लग रहा है कि प्रतीक्षा अनुराग शर्मा में वह सम्पत्ति भी जुड़ेगी तब तुम एक ग़लतफ़हमी में हो ।”

“ यह नाम बहुत है मेरे लिये अनुराग । इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं चाहिये ।”

मेरे पूरे शरीर में बिजली दौड़ने लगी, मैंने महसूस किया वह मेरे क़मीज़ की बाँह पर अंगुलियों से कुछ लिख रही थी । मैंने पूछा, ” क्या लिख रही हो ?”

“ मेरे जीवन में आये एक सबसे बेहतरीन व्यक्ति का नाम - अनुराग .. अनुराग ”

मुझे अब उसकी चलती अँगुलियों से अ .. नु .. रा .. ग .. अक्षरों का भान होने लगा । मैंने अपनी उँगलियों से उसके क्रमीज़ की बाँह पर कुछ लिख दिया ... और पूछा , "यह क्या है ... "

" और लिखो । "

मैंने फिर कुछ और लिखा और पूछा , " यह क्या है ? "

" पूरा लिखो । "

मैंने लिख दिया और उसके चेहरे की तरफ़ देखा । उसने बैंच पर अपना सिर रखकर आकाश की तरफ़ देखा और कहा ...

" प्रतीक्षा अनुराग शर्मा । "

मैंने प्रतीक्षा की तरफ़ देखा और कहा , "आज आंटी ने मुझसे कहा जाओ प्रतीक्षा से मिल आओ । "

" क्यों कहा , कोई कारण ? "

" वह कह रही है ठीक से समझ लो उसको । यह जीवन का एक बड़ा फ़ैसला है परिपक्व फ़ैसला होना चाहिये । "

" समझ लिया या और कुछ समझाना है । तुम कुछ पूछते ही नहीं मेरे बारे में । बताओ क्या जानना चाहते हो । मेरे घर के बारे में सब जानते ही हो । भैया के पास तुम बहुत आते की थे । छोटे भैया से मिले ही हो । पिताजी से भी बात हुई ही है । "

यह कहकर वह खड़ी हो गयी और बोली , " मुझे देख लो चारो तरफ़ से । मेरी ऊँचाई कितनी है तुम जानते ही हो , अगर एकदम सेंटीमीटर में जानना चाहते हो तब वह भी बता देती हों मेडिकल में चेक हुआ ही है । इस मेघाच्छन्न आकाश , प्रकाशहीन कक्ष में भी श्वेत वर्णीय , पवन अचंचल पर चंचला मेरा अदृश्य मन पक्षियों की तरह अधीर हर सायंकाल उससे मिलने को पर एक डर कहीं टूट न जाये पंख कि मैं विवश अपने स्थान पर करती इंतज़ार उसका .. अनुराग इसके आगे का सौन्दर्य वर्णन करने लिये मुझे तुम्हारा इंतज़ार है , मैं नहीं कर पाऊँगी तमाम प्रयासों के बाद भी । बहुत चाहत है तुम्हारे एक नायिका के नख- शिख वर्णन में मैं अपने को पा जाऊँ । "

" तुम आजकल हिंदी पढ़ रही ? "

" हाँ , पर कैसे पता ? "

"तुम्हारी भाषा से लग रहा । यह सेंट स्टीफेन्स के अंग्रेज़ी माहौल से तो उत्पन्न नहीं हो सकती । "

“ अब हिंदी के आगरही का साथ चाहती हूँ तब हिंदी के साथ मेल - जोल करना पड़ेगा । आंटी से मैंने पूछा था कि तुमको सबसे ज्यादा अच्छा क्या लगता है तब आंटी ने बताया बात करना वह भी अच्छी भाषा में । जो तुमको अच्छा लगे वह मैं करने की पूरी कोशिश करूँगी ।”

मैं उसका चेहरा देखने लगा । मैं शांत था । मेरी शांति पर उसने पूछा , ” क्या सोच रहे हो ?”

“ जीवन कितना गतिमान है ।”

“ क्या जीवन में गति आ गयी ?”

“ मेरी माँ कहती थी ...”

“ क्या कहती थी ?”

“ कुछ नहीं छोड़ो जाने दो ..”

“बताओ ना”

“ जब मैं तुमसे पहली बार मिलने जा रहा था तब माँ ने कहा था जिसकी तरफ कोई देखने वाला नहीं उसके लिये विदुषी लड़कियाँ लालायित हैं । घूर का दिन भी लौटता है ।”

मेरे इस कथन से प्रतीक्षा का एंटीना खड़ा हो गया ।

“ लड़कियाँ कौन ? कोई और है क्या ?”

मैंने बात को सँभाल लिया यह कहकर कि उसका आशय तुमसे था पर मेरे अंदर सुरुचि की वह पंकित गूँज गयी , ” अनुराग मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ ।”

“ प्रतीक्षा, माँ को लगता है कि मेरे पास कोई खास नफासत तो है नहीं, तुम सेंट स्टीफेन्स की हो और मुझे अंग्रेजी आती नहीं । यह बेमेल संबंध तो उसको लगता ही है । वह डरती भी है कि कहीं विवाह बेमेल हो गया तब कैसे जीवन चलेगा । मेरी माँ है, उसने मुझे गर्भ से अनुभव किया है वह बहुत ठीक से जानती है मेरी ज़िद, मेरा आगरह और मेरा चीज़ों को टॉलिरेट करना और न करना ।”

“आंटी का भी तुमसे बहुत लगाव है, वह भी काफ़ी जानती हैं तुमको ।”

“ हाँ लगाव बहुत है पर वह ज्यादातर मेरा धनात्मक -सकारात्मक पक्ष जानती हैं । उनसे मेरी मुलाक़ात पिछले वर्ष इंटरव्यू के समय हुई, फिर उनके ही सौजन्य से ऋषभ- शालिनी से हुई । एक बहुत ही आत्मीय संबंध हो बन गया है हम चारों का । मेरे जाने के बाद भी आंटी से मिलती रहना, थोड़ा ध्यान

रखना उनका । उनके जीवन में एक अकेलापन है अब वह तो कोई भर नहीं सकता पर आते - जाते रहने से एक दिलासा रहती है नीरस जीवन में उल्लास न भी मिल पाये तब भी एक उत्साह बना रहता है । हम लोगों के लिये कुछ कर सकें न कर सकें पर समय - समय पर हाल - खबर लेने से यह संदेश तो जाता ही है कि आपके खैरख्बाह हैं इस जमाने में ।”

“अनुराग , तुम बहुत लोगों के लिये सोचते हो , यह शहर , अभ्यार्थियों , आंटी .. यह समाज सापेक्षता कैसे आयी ?”

“संस्कार और अभाव यह दो महत्त्वपूर्ण चीजें हैं जो हमें समाज सापेक्षिक बना देते हैं । मेरा जीवन अभावों में बीता , बहुत अभावों में पर मेरी माँ हमेशा कहती थी ईश्वर ने तुझे कुछ इनायत दी है तो उसने तुझ पर एक उत्तरदायित्व भी सौंपा है कि तुझे अपनी माँ का ही नहीं हर माँ का दर्द समझना होगा । अभाव ने मुझे आगे बढ़ने को प्रेरित किया अपने जीवन को बेहतर बनाने की ओर उन्मुख किया तो माँ के दिये संस्कार ने यह कहा , तुझे समाज सापेक्ष होना होगा । उसके यह संस्कार न होते तब शायद यह मैं नहीं करता जो मैंने किया या करना चाहता हूँ । मेरा कृत्य उसको भी दर्द दे गया । वह इस बात को बर्दाश्त न कर सकी जब मैंने नौकरी करने से इंकार कर दिया पर वह यह भूल गयी यह उसका दिया संस्कार था जो मेरे सिर चढ़कर बोल रहा था । आंटी भी बार- बार कहती हैं कि जितने में कई समाज को प्रेरित करने वाले नायक बन सकते थे उसमें से एक ऋषभ और एक अनुराग बनाये गये ? क्या ईश्वर ने सिफ़ इसलिये बनाया कि तुम मात्र अपना जीवन जियो ?”

“क्या ऋषभ बहुत क्राबिल है ?”

“बहुत ज्यादा , वह क्राबिल ही नहीं बहुत आत्मसम्मानी भी है । तुम जिस संपदा के तीन हिस्सेदार की कहानी सुन रही है उसने उस संपदा को ही नहीं संपदा की मालकिन शालिनी को भी ग्रहण करने से इंकार कर दिया था जब विवाह की शर्त यह रखी गयी कि तुमको मेरा कार्य देखना होगा । वह ईश्वर की बनायी नायाब कृति है , यह मेरा सौभाग्य है मुझ ऐसे अकिञ्चन के जीवन में उसका साथ मिला ।”

“अनुराग यह कौन सी अफ़ीम तुम्हारे पास है सबको सम्मोहित कर लेते हो । हम लोग पढ़ते हैं कि मार्क्सवादी कहा करते हैं , धर्म एक अफ़ीम है । मैं इसको अपने परिप्रेक्ष्य में ठीक करती हूँ , अनुराग एक अफ़ीम है । यह लत जिसको लग जाये वह इसको बगैर नहीं रह सकता । तुम्हारे अभ्यार्थी , आंटी और मैं ।”

“यह अफ़ीम उतर भी सकती है ।”

“ कभी नहीं ।”

“ ईश्वर करे ऐसा ही हो । मेरे तुम नज़दीक आ रही पर दूर जाने के पहले अगर अनुमति माँगोगी तब वह मिलाना मुश्किल है, दर्द होगा उस अनुमति में । मुझे दर्द देकर ही दूर जा सकती हो ।”

“ दर्द अनुराग को .. कभी नहीं ।”

मैं उसका चेहरा देख रहा था । उसने पूछा , ”क्या देख रहे हो ?”

“ तुम ही कहती हो मुझे मन भर के देख लो वही देख रहा । “

“ मैं आँख बंद कर लेती हूँ देख लो जितना देखना चाहो । इस एहसास से बेहतर लम्हा क्या होगा ... तुम मुझे अपलक देख रहे हो ।”

“ किसी ख़ामोश से पल में
ढलतीं शाम की रोशनी में
मुश्तइल समुद्र के किनारे
देखना सूरज को समाते कहीं दूर पानी में
जैसे लफ़्ज़ काग़ज़ों पर गिरकर रौशनाई की ताक़त से कुछ कहते
वैसे ही दूर पानी में समाता धूमिल लाल रंग
उभरती तुम्हारी एक तस्वीर यह कहती
बस अब और इंतज़ार नहीं होता
हर शाम यूँ ही उसका मिलना और फिर बिछुड़ना”

“और कहो अनुराग .. चुप मत हो ... मुझे मदहोश होने दो ..”

“ बस अब चलने दो । आज की शाम हमारी अंतिम मुलाक़ात है इस दौर की । कल मैं इलाहाबाद चला जाऊँगा । ”

“अनुराग , कल के बाद दिन कैसे बीतेगा । मैं हर सुबह की लालिमा का इंतज़ार करती थी ढलते सूरज के सिंदूरी रंग के लिये । कल की लालिमा बिल्कुल आकर्षित नहीं कर पायेगी क्योंकि उसका सिंदूरी रंग मेरे लिये अर्थहीन हो जायेगा । ”

“ यही जीवन है प्रतीक्षा । मैं चलता हूँ, तुम आ जाना सात बजे तक शालिनी के घर । पृथ्वीराज रोड पर बड़ा सा बंगला है । बँगला नंबर तीन उसी का है उस पर शालिनी आहूजा मिश्रा बहुत बड़ा- बड़ा लिखा है । यह उसके पिता ने अपनी बेटी के सम्मान में लिखवाया है । यह भी एक बड़ी बात है पिता ने बेटी का नाम उस दिन लिखवा दिया था जिस दिन बेटी का नामकरण हुआ

और जैसे ही बेटी विवाहित हुई बेटी का नया नाम स्थानान्तरित कर दिया गया
।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 343

मैं पूसा रोड़ पहुँच गया । आंटी ने मेरे गेट खोलने के अंदाज़ से ही पहचान लिया कि मैं आ गया हूँ । मेरे अंदर प्रवेश करते ही आंटी ने कहा , ” अनुराग , तुमको पिछले साल कुछ नामी बरांड की क़मीज़ ख़रीदते समय यह न सोचा था तुम इसका इस्तेमाल इस तरह करोगे । ”

“ किस तरह आंटी ? ”

“ प्रतीक्षा को रिझाने के लिये । तुम रोज़ - रोज नयी क़मीज़ पहनकर जाते हो । ”

मैं कुछ कहता आंटी ने कहा , ” मैं कुछ और क़मीज़ आज ले आयी हूँ । तुम्हारे पास क़मीज़ बदल-बदल कर पहनने की और सुविधा हो जायेगी । ”

आंटी ने क़मीज़ का पूरा थैला पकड़ा दिया । पाँच - सात क़मीज़ आंटी लेकर आयी थी । उसने पूछा , ” चाय पियोगे ? ”

“ पी लेता हूँ । ”

आंटी चाय लेकर आयी और बोली , ” अनुराग , तुम कल चले जाओगे । इस बार काफ़ी दिन रहे । साथ रहने से लगाव और बढ़ जाता है । इस बार मुझे और तकलीफ़ होगी तुम्हारे जाने के बाद । अब कब आओगे ? ”

“ आंटी , आप जब कहोगे मैं आ जाऊँगा । ”

“ अरे वाह अनुराग ऐसा तो पिछली बार नहीं कहा था । भाई अब आपकी प्रेयसी इस शहर में है । वैसे आप आओगे तब उर्मिला पचास सवाल करेगी पर मेरा ख़त दिखाकर चल दोगे । चलो भले ही प्रेयसी के बहाने ही सही आओगे तो , जल्दी आना । ”

आंटी मुस्कुराने लगी , मैं बिल्कुल पानी - पानी हो गया । उसने कहा , ” आज ऋषभ - शालिनी से बात होगी । वह लोग बात करा देंगे । पूछना कब तक आयेंगे । ”

“ ज़रूर आंटी । ऋषभ के शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार की भी संस्तुति हो गयी है । वह भी लेने आना होगा । ”

“ वह हो गया ? ”

“ कमिश्नर साहब कह रहे थे कि वह हो गया है मैं पुनः सुनिश्चित कर लूँगा ।”

“ भाई अब आपके साले बनने के रेस में वह सबसे आगे हैं । एक बात कहूँ अनुराग ?”

“ हाँ आंटी ।”

“ तुमको कोई भी लड़की पोट सकती है ।”

“ यह क्यों कह रही हैं आंटी ।”

“ पहले तुमको शालिनी ने पोटा । वह तुमसे जो चाहे करा ले । अब प्रतीक्षा पोट रही है । इलाहाबाद के लड़कों को गोरी, अंगरेजी बोलने वाली लड़कियाँ बड़ी आसानी से पोट सकती हैं । पर तुम शालिनी - ऋषभ संघर्ष में शालिनी की तरफ मत हो जाना । ऋषभ बहुत सज्जन है वह तुम्हारी तरह कठोर इस्पात का बना नहीं है, उसे सहारे की आवश्यकता है ।”

“ अरे आंटी, ऐसा नहीं कहते । पहली बात तो हम लोग संघर्ष न हो यह पूरी कोशिश करेंगे पर अगर हो ही गया तब मेरा शालिनी से क्या लेना - देना । मैं आपके द्वारा ऋषभ को जाना और फिर शालिनी को । आंटी, ऋषभ ऐसा कोई नहीं है । उसके ऐसा कोई दूसरा हो ही नहीं सकता । मैंने बहुत कुछ सीखा ऋषभ से ।”

“ क्या सीखा ?”

“ अहंकार विहीनता - नम्रता । इतना क्राबिल है, इतना पैसा है पर रंच मात्र भी अहंकार नहीं । यहाँ लोग दो- चार पैसा धूस का कमाकर पागल हो जाते हैं । मेरे मामा ने भरष्टाचार की कमाई से एक बड़ा घर बना लिया, घर में कालीन बिछा ली, दूध के लिये गाय पाल ली, सिल्क का कुर्ता, परमसुख की धोती पहन ली और पूरी तरह पागल हो गये । उत्तर प्रदेश पीसीएस की छोटी - छोटी नौकरियों में लोग चयनित होते हैं, काला धन कमाते हैं, मकान बनाते हैं, गैस एजेंसी - पेट्रोल पंप ले लेते हैं और वह समाज के एक वर्ग की मानसिकता के नायक भी स्वीकृत हो जाते हैं । इस तरह एक कलुषित मानसिकता को प्रभावित करता उपजता स्व - नायकत्व अहंकार तो देगा ही, जब ऐसे परिप्रेक्ष्य में ऋषभ का ख्याल आता है तो वह वंदनीय हो जाते हैं । उनके पास न तो ज्ञान का अहंकार है न धन का, शालिनी के पास धन का अहंकार है पर वह होशियार है एक बढ़िया पश्मीना शाल के लबादे में, चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान बिखरते हुये, शब्दों की चाशनी में उसे ढक ले जाती है । उसे ऋषभ भी चाहिये और अनुराग भी चाहिये । वह दोनों का इस्तेमाल बखूबी करना जानती है । आंटी, अपने पास ताक्त होना ज़रूरी नहीं है ताकतवर का साथ होना ज़रूरी है । स्वयम् शक्तिशाली होना जीत की अनिवार्य शर्त नहीं है, शक्तिशाली लोगों को अपने साथ रखना और

उनका समुचित उपयोग करना जीत की एक प्राथमिक आवश्यकता है । शालिनी की उसमें महारत है । मुझ जैसा दरिद्र किसी भी क्रीमत पर बिक जायेगा यह शालिनी की सोच है और वह सोच ही संपत्ति के तीन दावेदारों का शिगूफ़ा छोड़ रही और उसे लग रहा यह श्लोगन मुझे नियन्त्रित कर लेगा । पर आंटी, शालिनी को यह नहीं पता शांति - उर्मिला के बेटे ख़रीदे नहीं जा सकते ।”

“अनुराग तुम्हारा विश्लेषण अप्रतिम है । ऋषभ पूरा अपने पिता पर गया है । वह भी ऐसे ही थे ।”

“नहीं आंटी, बात आपकी अधूरी है ।”

“पूरी बात क्या है ?”

“वह गया किसी पर हो पर संस्कार रक्त में आपके ही प्रवाहित हो रहे । यह आपका अपने पति के प्रति प्यार और लगाव है कि हर बात पर आप उनको श्रेय देती हो पर बगैर एक सही प्रवरिश के कोई संस्कार नहीं आते । संस्कार रक्त से नहीं प्रवरिश से आते हैं ।”

“अनुराग यह स्व- नायकत्व क्या होता है ?”

“आंटी नायक वह होता है जो समाज को प्रभावित तो करता है पर मात्र नायक बनना उसका लक्ष्य नहीं होता । नायकत्व एक उप उत्पाद है, बाई प्रोडक्ट है । जैसे भक्ति युग के संत कोई साहित्य नहीं रचना चाहते थे । वह तो मात्र ईश्वर की आराधना करना चाहते थे पर साहित्य एक उप उत्पाद के रूप में सामने आ गया । पर यह भ्रष्ट लोग एक प्रशस्ति चाहते हैं, एक सम्मान चाहते हैं, समाज में अपना रसूख चाहते हैं । वह और किसी माध्यम से प्राप्त हो नहीं सकता तो यह काला धन प्रदान करता है और एक बड़ा वर्ग इनकी तारीफ़ करता है और इनके नक्शे कदम पर चलना चाहता है ।”

आंटी शांत हो गयी । वह पिछले वक्त में लौट

गयी और दो मोटे- मोटे अनगढ़ पारदर्शी गोल आकृति जैसे पहाड़ों से लुढ़कते बफ़ के टुकड़े उसके गालों पर लुढ़क गये । यह और मेरे सामने न लुढ़के इसको बचाने के प्रयास में वह उठ गयी और कहा, तैयार होकर आती हूँ ।

हम लोग आहूजा साहब के आलीशान बँगले में पहुँच गये । सारे लोग भी धीरे-धीरे आ गये । आज प्रतीक्षा कुछ ज्यादा ही तैयार होकर आयी थी, शायद शालिनी का सौन्दर्य वर्णन मुझसे सुनकर वह थोड़ा अधिक ही सजग हो गयी थी । अशोक और परेम नंदन के अलावा मेरे अभ्यार्थियों ने यह बंगला पहले नहीं देखा था । वह दोनों कार के चक्कर में आये थे इसलिये पहले से परिचित

थे । अन्य लोगों को तो यक्कीन नहीं हो रहा था कि इसी बँगले में जाना है । वह लोग बँगले के सामने थोड़ी देर हतप्रभ होकर उसे देखते रहे फिर तिवारी डराइवर से पूछा , “ इसी बँगले में चलना है ? ” तिवारी समझ गया कि यह लोग विश्वास नहीं कर पा रहे और उसने कहा , ” हाँ भैया , इहै ऋषभ भैया के ससुरार और शालिनी बिटिया के घर हए । ”

बँगले की आभा ही अलग थी । एक बड़ा सा काला गेट , गेट पर दो दरबान , बँगले के अंदर बड़े- बड़े अशोक के पेड़ बँगले का एक भाग ढँके हुये , अंदर बड़ा सा लॉन जिसमें हरियाली ही हरियाली . बँगले के अंदर प्रवेश करते ही एक और गेट जो बने हुये मकान के अंदर ले जाता था । मकान के अंदर एक बड़ा सा हॉल और हॉल से जुड़े से कुछ कमरे और बगल में एक बहुत बड़ा सा डराइंग रूम , हॉल से लगी एक सीढ़ी मकान के ऊपरी भाग पर ले जाती थी । मकान के पिछले भाग में खाली जगह जहाँ कारों का एक पूरा क्राफ़िला खड़ा था । आहूजा साहब बहुत तेज व्यक्ति थे । उन्होंने इस अवसर का इस्तेमाल अपनी साख बढ़ाने के लिये भी कर लिया था । अपने एक दो नज़दीकी के रिश्तेदारों और परिचितों को भी बुला लिया था । उन लोगों के हाव- भाव से लग रहा था कि उनको हम लोगों के बारे में पूरी तरह बताया गया था । आहूजा साहब की साली भी आयी थी जो बहुत ही तेज़ थी । उसने आंटी के पैर पर सिर रखकर आशीर्वाद माँगा और कहा , ” दीदी जैसे आपने ऋषभ को अनुराग को आशीर्वाद दिया हमको भी दें , हमारे घर भी बरकत हो । ”

आंटी ने कहा , ” ज़रूर होगा क्यों नहीं होगा । ईश्वर सबका ख्याल रखता है । ”

पिछले साल भी मुझे यहाँ बुलाया गया था तब मैं अकेला ही था यहाँ पर । इस साल तो एक पूरी भीड़ थी भविष्य के संभावित आईएएस अधिकारियों की । इसमें कई लड़कियाँ भी थीं । प्रतीक्षा भी ऐसा आलीशान बँगला देखकर आश्चर्यचकित थी । उसने सरकारी बँगले तो देखे थे पर इतना आलीशान बड़ा बँगला वह भी दिल्ली के हृदयस्थल पर पहली बार अंदर से देख रही थी । अशोक बँगले को बारे में किसी कर्मचारी से पूछ रहा था । आहूजा साहब ने यह सुन लिया । उन्होंने एक आदमी को बुलाकर कहा बच्चों को घर दिखा दो सारे लोगों ने बँगले के अंदर बाहर कर डाला । इसी अंदर -बाहर करने में बँगले के मंदिर में चिंतन सर का चचेरा भाई रमाकान्त दिख गया । दिनेश ने अशोक से कहा , ” यह चिंतन सर का भाई यहाँ पर है । ”

अशोक ने कहा , ” गेम चालू हो गया है सर का । ”

दिनेश - “ कौन सा गेम ? ”

“ बताता हूँ । ”

अशोक ने उसको बुलाया और पूछा, “ यहाँ कैसे ?”

“भइया हमको आये यहाँ आठ महीना हो गया । भैया हमको यहाँ रखवा दिये हैं । हम पूजा- पाठ के काम में रहते हैं और भैया जैसा पूजा - पाठ बताते हैं हम कराते रहते हैं ।”

“ कौन भैया ? अनुराग सर ?”

“ नहीं , चिंतन भैया ।”

अशोक ने दिनेश से कहा , ” यह लोग यह संपत्ति हड्डप कर जायेगे और डकार भी नहीं लेंगे । बहुत तगड़ी चाल चल रहे हैं यह लोग । इस बेवकूफ रमाकान्तवा यहाँ बैठा दिये हैं । यह पूरी खबर दे रहा है । यह गेम 333.3333 करोड़ का नहीं है पूरे हज़ार करोड़ का है , तभी तो अनुराग सर का नौकरी - वौकरी में कोई रुचि नहीं है । पूरा गेम क्लीयर हो गया अब ।”

“ क्या क्लीयर हो गया ?”

“ यार , इनका आदमी यहाँ बैठा है । वह पूजा - पाठ की माया फैलाये है । ऋषभ - शालिनी को आना है नहीं , कभी सोते - जागते किसी काश़ज पर दस्तखत करा लेंगे बस काम खत्म ।”

“क्या ऐसा करा सकते हैं ?”

“ तुम चिंतन सर को नहीं जानते । अगर विश्व में कोई धूर्तों की प्रतियोगिता करायी जाये तब वह एक साल में ही दस साल की धूर्तता का खिताब जीत लेंगे । दस साल के विजेता वह एक साल में हो जायेंगे ।”

“ पर यहाँ ताल्लुक अनुराग सर का है , चिंतन सर का इससे क्या मतलब ?”

“ कठपुतली का खेल कभी देखा है ?”

“ हाँ देखा है ।”

“ उसमें कौन नाचता है ?”

“ कठपुतली ।”

“ उस कठपुतली को नचाता कौन है ?”

“ एक बाज़ीगर ।”

“ वह बाज़ीगर दिखता है ?”

“ नहीं ।”

“ अब समझ गये ?”

“ मतलब अनुराग सर बाज़ीगर हैं सबको नचा रहे ?”

“ यार , तुम तो पगलवा देते हो , इतने ज़ोर से बोलो की अनुराग सर की पत्नी भी सुन ले ।”

“अनुराग सर की पत्नी कौन है ?”

“ तुम्हारी कौन मेंस की कॉफी चेक किया है ? तुमको दिख नहीं रहा सामने पूरी साज - सज्जा की प्रतीक्षा , बस माँग में सिंदूर बचा है बाकी सब कुछ हो गया है ।”

“ बाकी सब कुछ क्या हो गया है ?”

“ ऐसा करो आप मुझसे दूर बैठो , नहीं तो आज शाम को हमको खाना भी नहीं उड़ाने दोगे ठीक से .. अनामिका ज़रा पता करो क्या- क्या है खाने में । पहले स्वीट डिश से ही आरंभ करते हैं ।”

“ मैं क्यों पता करूँ , तुम खुद कर लो ।”

“ यह जब पैदा हुई थी तब दो सींग लेकर ही पैदा हुई थी । जब देखो तब लड़ती रहती है । इसका पति साधू बनेगा यह तय है । वह रात में इसके बँगले से भाग जायेगा और माघ मेले के किसी अखाड़े में विलीन हो जायेगा ।”

“ क्या कहा ?”

“ कुछ नहीं ।”

“कुछ तो ?”

“ यही कहा यह डीएम बनेगी तब घर - दुआर - ज़िला सब सुधार देगी ।”

इतने में अशोक ने एक सफेद कपड़े में घूम रहे बैरे को बुलाया और कहा , ”
कुछ लाओ यार ?”

“ सर कॉफी या चाय ?”

अशोक को समझ न आया और फिर बोला , ” कुछ भी लाओ , कॉफी ही लाओ । “

“ ब्लैक , रेगुलर या कैपीचीनो ।”

“ पहली वाली लाओ ।”

वह ब्लैक कॉफी लेकर आ गया । उसका पहला ही सिप बर्दाश्त न हुआ ।
कॉफी देखकर अशोक ने कहा , ” यह बनिया साले खाना क्या खिलायेंगे जब
इतने कंजूस हैं कि कॉफी में दूध नहीं डाल सकते । नाम बड़ा दर्शन छोटा । मैं
आईआरएस अगर बना तो पहली रेड इसी के घर मारँगा । सारा काला धन
रखे हैं पर खर्चा नहीं करना ।”

उसने बैरे को बुलाया और कहा , ” इसमें दूध नहीं है । ”

“ सर , यह ब्लैक कॉफी है । ”

“ वह तो मैं देख रहा इसके काले रंग से पर दूध क्यों नहीं डाला ? ”

“ सर ब्लैक कॉफी में दूध नहीं पड़ता । ”

“ ऐसा है । ”

“ जी सर । ”

“ दूध वाली लाओ । ”

“ सर कौन सी - फ़िल्टर, कैपीचिनो या लाते ? ”

उसने दिनेश से कहा , ” यह तो लात पर उतर आया । यह लाते भी कॉफी का एक रूप है । ”

“ भाई अदरक है ? ”

“ यस सर । ”

“ इलायची है ? ”

“ यस सर । ”

“ दूध है ? ”

“ यस सर । ”

“आप दूध में अदरक इलायची चीनी डालकर बढ़िया चाय ले आओ । सिर्फ़ दूध की नीलू चाय अगर हो सके तो सबसे अच्छा । ”

“ सर ओनली मिल्क नो वाटर ? ”

“ हाँ निखालिस दूध की चाय । पाँच - सात कप बनाकर लाओ । ”

“ सर कप में लाऊँ या कुल्हड़ में ? ”

“ मिट्टी का कुल्हड़ है क्या ? ”

“ सर सब है । ”

“ तब यार कुल्हाड़ में ले आओ , मज़ा आ जायेगा । ”

वह अशोक का चेहरा देखता चला गया । अशोक ने प्रेम नंदन से कहा , ” यार यहाँ सब कुछ है ज़रा पता करो खाने में क्या - क्या है ? अब अकेले अनुराग सर तो यह संपदा नहीं भोग सकते , हमारा भी हँक्र है । ”

आहुजा साहब ने जितना भी भव्य इंतज़ाम संभव हो सकता था , वह सब किया था । मैं अब एक सामर्थ्यवान व्यक्ति था जिसका रसूख़ बढ़ रहा था और साथ ही साथ उनकी बेटी का एक बहुत अच्छा मित्र भी था । मुझसे संबंध की स्थापना एक नफ़े का व्यापार था । उनकी बेटी ने भले प्रतीकात्मक रूप से ही सही यह कहकर कि अनुराग भी संपत्ति का उतना ही दावेदार है जितना मैं और ऋषभ मेरी साख घर में बढ़ा दी थी । आंटी के पास मुझसे चुहल लेने का एक अवसर भी यह शालिनी का डॉयलॉग दे गया था । आंटी मेरे पास ही बैठी थी उसने धीरे से मुझसे कहा , ” मालिक कुछ इस गरीब - गुरबा का भी ध्यान है , कुछ चाय - पानी इधर भी नसीब होगा ? “

“ आंटी . आप भी ! ”

“ भाई , दो मालिक यहाँ हैं नहीं तीसरा मालिक यहाँ बैठा है कुछ गरीब रियाया का भी ध्यान रख लो । अपनी प्रेमिका पर आपका बहुत ध्यान है , उसको कुल्हड़ की चाय पिला रहे हो , कुछ इधर भी इनायत हो जाये । अब आपको कुल्हड़ की चाय पसंद है तो इसका मतलब यह तो नहीं कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी के सामने वाली चाय आप हर जगह ढूँढ़ो और वही पीते - पिलाते रहो । विदेशी मार्का पत्नी चुन रहे हो , कुछ अपनी रुचि बदलो , क्या वही कुल्हड़ की चाय । कॉफी - वाफी पियो । खाने में रोटी - सब्ज़ी पर ही मत टूट पड़ना कि देखा पनीर और लग गये उस पर । कांनटीनेंटल - चायनीज - इटैलियन भी है । उसका स्वाद लो और अपनी ... ”

आंटी पूरी बात कह न पायी थी कि अशोक ने सुन लिया और बोला , ” चायनीज - कांटीनेंटल - इटैलियन भी है ? ”

आंटी - “ साउथ इंडियन भी होगा । देखो डोसा काउंटर लगा होगा । ”

“ कहाँ लगा है सब आंटी जी ? ”

“ बग़ल के कमरे में होगा , वहीं सब खाना लगा होता है । ”

“ मतलब खाने का कमरा अलग है , मुझे लगा यहाँ पर थाली लगायी जायेगी । ”

“ जाओ देखो बग़ल सटा कमरा है । मालिक जी बता दो इन लोगों को । ”

अशोक - “ आंटी जी , मालिक हैं अनुराग सर ? ”

आंटी - “ तुम ही तो 3 को दशमलव के आगे पीछे करके कर रहे हो तीतर के तीन आगे तीतर , तीतर के तीन पीछे तीतर बोलो भाई कितने तीतर । ”

“ यह बात तो है आंटी । यह अनुराग सर का दिविजय है । यह पापा जी दरस्टी हैं, मालिक तो ..”

मैंने आँख दिखायी अशोक को वह प्रेम नंदन से बोला , “ चलो यार खाने का पता करते हैं, शायद बगल के कमरे में है । ”

खाने का बहुत अच्छा इंतज़ाम था । आहूजा साहब बहुत प्रसन्न थे । उनकी धाक भी लोगों में बढ़ गयी थी । आहूजा साहब की बहन ने आंटी से कहा , ” बहन जी मेरी भी एक बेटी है, उसको भी शालिनी ऐसा पढ़े- लिखे लोगों का घर मिल जाता , हमारे भाग्य खुल जाते । आपके बच्चे कितने अच्छे हैं एक ऋषभ और दूसरा अनुराग । ”

आंटी - “ सब ईश्वर की कृपा है । वह जो चाहता है वही होता है । ”

“ बहन जी हमने सारी तस्वीर देखी जो किताब समारोह की थी इलाहाबाद में । कितने बड़े - बड़े लोग आये थे । अगली बार होगा तब मैं भी आऊँगी । शालिनी कह रही थी अनुराग भैया भी लिखते हैं, इनके किताब समारोह में मैं आऊँगी । ”

“ज़रूर आना जब वह करेगा । पहले लिखे तो वह । उसके पास हज़ार काम होते हैं, इसका दिमाग़ कहीं ठहरता ही नहीं । एक साथ कई काम हाथ ले लेता है । ”

“बहन जी , वह सब कर लेंगे । यह सब लोग जो आये हैं यह सब आईएएस हैं ? ”

“ अभी हुये नहीं हैं । अभी इंटरव्यू दिया है , ईश्वर की कृपा होगी तब हो ही जायेंगे । ”

“ इन सबको अनुराग भैया ने पढ़ाया है ? ”

“ हाँ , वह पढ़ाता है । ”

“ बहन जी , हमारी बेटी का भी कुछ हला-भला हो जाता । कुछ उसको भी बता देते , वह पढ़ने में बहुत तेज़ है और गुड़ सेंकेंड क्लॉस से पास होती है । ”

“ज़रूर बता देगा जब अगली बार आयेगा । ”

इतने में आवाज़ आयी कि शालिनी - ऋषभ का दर्काल लग गया है । मैं और आंटी बात करने चले गये ।

ऋषभ ने जल्दी ही देश आने की बात कही पर शालिनी के कहा तुम कुछ खुशखबरी दो , कुछ सरप्राइज़ दो तब मैं आऊँगी ।

“ सरप्राइज़ पर पक्का आओगी ?”

“ सौ प्रतिशत । पर कब तक दोगे ?”

“जल्दी ही ।”

“ क्या सब कुछ फ़ाइनल हो गया ?”

“क्या फ़ाइनल हो गया ?”

“Your marriage .”

“अरे नहीं, वह ही अकेला सरप्राइज़ होता है क्या ?”

“यह बात तो है, तुम कुछ भी सरप्राइज़ दे सकते हो । तुम सरप्राइज़ दो मैं विचार करूँगी । कुछ तुमको चाहिये, बताना मैं भेजती हूँ ।”

“ कैसे भेजोगी ?”

“आप के परम मित्र समाज - सुधारक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जा रहे उनसे भेज दूँगी नहीं तो कुरियर कर दूँगी, आजकल कुरियर सेवा फ़ास्ट हो गयी है । मम्मी- पापा ठीक होंगे, ज़रा ध्यान रखना ।”

“ सब ठीक है, सब ध्यान है ।”

“ चलो जल्दी मिलती हूँ ।”

ऋषभ ने बताया कि वह जून के मध्य में आ रहा और तब वहाँ काम तलाशेगा । आंटी इस बात से प्रसन्न थी कि बेटा आ रहा पर इस बात से आशंकित थी कि बेटे-बहू दो अलग राह पर न चल पड़ें । उसने मुझसे पूछा, “ क्या बात हुई ?”

मैंने बात बता दी और उसकी चिंता भी समझ गया । मैंने कहा, “धैर्य रखो दोनों सुलझे हुये लोग हैं फ़ैसला कोई गलत नहीं लेंगे ।”

आंटी -“ ऋषभ बहुत ज़िद्दी है । वह ज़िद पर आ गया तब किसी की नहीं सुनता, तुमने तो पूरी कहानी सुनी ही है उसकी ।”

“आंटी, धैर्य रखते हैं हम लोग । ईश्वर सब अच्छा करते हैं, इसमें भी करेंगे । पहले आने तो दो उन लोगों को । शालिनी आयेगी ही आगे - पीछे, अब घर-परिवार और इतनी बड़ी संपदा तो छोड़ नहीं देगी ।”

आंटी का मन हल्का हो जाये इसलिये कहा, ” आंटी यह एक तिहाई देगी ? अगर दे देगी तब यहीं कोचिंग सेंटर खोल देंगे । आप चलाना मैं पढ़ाऊँगा, यह सब बाज़ार कोचिंग बंद करा देंगे ।”

“ इस काम में अगर यह घर इस्तेमाल हो जाये तब तो ज़मीन - दीवार - धन सब तर जाये पर यह सब बनिया हैं दमड़ी नहीं खर्च करेंगे बगैर मतलब के ।”

“ यह बात तो है आंटी ।”

प्रतीक्षा इस चक्कर में लगी थी कि कैसे अकेले में कुछ वक्त मिले । उसने जुगाड़ कर लिया और पूछा , ” कल क्या प्लान है ?”

“ कुछ नहीं ।”

“ कल कब आओगे सेंट स्टीफेन्स ?”

“ कल नहीं आ पाऊँगा ।”

“ क्यों ?”

“ कल जाना है , आंटी नाराज़ होगी अगर मैं कल चला जाऊँगा । मैं रोज़ ही तकरीबन चला जाता हूँ और उसके पास कम रहता हूँ । कल भी गया तब दुःखी होगी ।”

“ तुम डरते हो आंटी से ?”

“ डर से ज्यादा अधिक अच्छा शब्द है सम्मान , उसकी भावनाओं का सम्मान ।”

“ अपने घर में भी डरते हो मतलब सम्मान करते हो ?”

“ घर में यह सब सम्मान का चोंचला नहीं है , वहाँ विशुद्ध डर है । माँ काँ बहुत आतंक हैं घर में ।”

“ कैसा आतंक ?”

“ आंटी के मन का अगर कुछ न हुआ तब थोड़ा सा असंतोष ज़ाहिर करेगी पर माँ तो पूरा घर सिर पर उठा लेगी और वही बात सारा दिन चलता रहेगा । आपने जवाब दे दिया तब तो रब भी नहीं बचा सकता । भलाई है शांत रहे उसके अंदर के उद्गार को निपट

जाने दो ।”

“ ऐसा है ?”

“ अभी व्यग्रता है अनुराग नाम की । क़मीज़ की बाँह पर लिख देती हो । यह क़मीज़ की बाँह पर जो नाम लिखती हो यह नाम उसी ने दिया और बनाया है । वह गुस्से में आ जायेगी तब आप अपना नाम भूल जाओगे ।”

प्रतीक्षा बोली , ” यह तो बहुत मुश्किल होगी ।”

“ अभी भी वक्त है सोच लो । बाद में मत कहना आगाह नहीं किया ।”

उसने मेरी बाँह पर धीरे से मुक्का मारा और कहा सोच लिया ।

“ क्या ?”

“ प्रतीक्षा अनुराग शर्मा ” थोड़ी देर रुककर बोली .. “अनुराग यह बताओ कल बगैर मिले चले जाओगे ।”

मैं सोचने लगा , वह बोली , ” मैं अगर आ जाऊँ तब ?”

“ आ जाओ ।”

“ ठीक है , मैं आंटी को ही पटाती हूँ । मैं कल आऊँगी ।”

यह कहकर वह आंटी के पास चली गयी ।

आंटी को साथ लेकर वह खाना खाने चली गयी । उसने आंटी का खूब ध्यान रखा । आंटी को बैठकर खाना सर्व किया और कल आने की बात को उसने बात ही बात में कह दिया , बगैर यह ज़िक्र किये कि वह मुझसे इस मुद्दे पर बात कर चुकी है । आंटी को भी लोगों का घर आना अच्छा लगता था । वह अकेलेपन से ऊब चुकी थी , मेरे दिल्ली से चले जाने के बाद भी प्रतीक्षा ने आंटी के पास आने की बात कहकर आंटी को प्रसन्न कर दिया । आंटी का व्यक्तित्व एक अन्तर्रम्भिकी व्यक्तित्व था । वह लोगों से कम ही मिलती थी और आसानी से लोगों से मेल - जोल नहीं कर पाती थी । मेरे साथ के लड़के-लड़कियों से उसका अच्छा संबंध बन चुका था और प्रतीक्षा ने तो काफ़ी नज़दीकी कर ली थी । प्रतीक्षा का यह कहना कि वह बाद में भी आती - जाती रहेगी इस बात से आंटी को थोड़ा मोह लिया था । प्रतीक्षा के पास एक बैंकग्राउंड था , घर - परिवार - शिक्षा नायाब थी ही जो लोगों को आकर्षण देता ही था । वह अपनी सज्जनता - सलीके - नफ़ासत का एक बढ़िया आवरण बनाकर आंटी के नज़दीक पहुँच चुकी थी । आंटी को भी लगता था कि मेरा विवाह कहीं तो होगा ही और प्रतीक्षा में अगर सबकुछ ठीक है एवम् अनुराग की चाहत भी है तब इस संबंध में क्या ख़राबी है । मेरे पारिवारिक पृष्ठभूमि बहुत सामान्य थी और आंटी की काफ़ी बेहतर थी । जब अंतरंग संबंधों में पृष्ठभूमि का फ़र्क होता है तब एक बेहतर पृष्ठभूमि वाला संबंध कमज़ोर पृष्ठभूमि पर हो जाता है । प्रतीक्षा यह समझ रही थी और जान चुकी थी कि आंटी का मुझ पर ही नहीं मेरे पूरे परिवार पर प्रभाव है । मेरा आंटी एवम् उसके परिवार के साथ का लगाव वह देख ही चुकी थी और वह निष्कर्षित कर गयी थी कि आंटी के हाथ में वह चाभी है जो उसे मेरे जीवन में आसानी से प्रवेश करा सकती है । प्रतीक्षा बहुत स्मार्ट थी और वह अपना कार्ड पूरी सतर्कता से चल रही थी । मैं उसके मोहपाश में था और आंटी को वह लगातार परोक्ष रूप से समझा रही थी कि वह अनुराग ही नहीं परिवार के लिये उपयुक्त कन्या है । प्रतीक्षा ऐसा क्यों कर रही थी ?

यह सहज परश्न अक्सर मेरे मस्तिष्क में आता था, उसको आखिर मुझ में इतनी रुचि क्यों थी, क्या है ऐसा खास मुझमें जो किसी और में नहीं है । मैं एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार का, एक सामान्य सी शिक्षा- दीक्षा, सामान्य सी शक्ल- सूरत का, लोगों की मान्यताओं से एक अस्थिर दिमाग़ का व्यक्ति हूँ जो फैसले भावनाओं से कई बार ले लेता है बगैर हकीकत की ज़मीन समझे । ऐसा व्यक्ति किसी रूपवान, उच्च- वर्गीय, आंगल परिवेशी कन्या के सपनों का नायक कैसे बन गया ? आंटी के साथ प्रतीक्षा के व्यवहार को देखकर यह विचार कर्दै, मैं आंटी और प्रतीक्षा को दूर से देख रहा था और आंटी ने मुझे देखते हुये देख लिया और इशारे से बुलाया, उसी समय प्रतीक्षा बगल के कमरे में चली गयी । मैं आंटी के पास गया । आंटी ने कहा, ” अनुराग तुम एक प्रेम में आ गये हो, यह बहुत अच्छा है अगर तुम दोनों का यह प्रेम बरकरार रहे । पर कई बार अति किसी भी चीज़ का मोहभंग भी कर देती है और मोहभंग होने पर पीड़ा देती है । मैं आशा करती हूँ आप दोनों का एक - दूसरे से मोहभंग न हो । तुम क्या देख रहे थे और क्या सोच रहे थे ? किसको देख रहे थे मुझको, प्रतीक्षा को या प्रतीक्षा का व्यवहार ?”

मैंने आंटी के चेहरे की तरफ़ देखा और कहा, ” आंटी आपका कोई जवाब नहीं ।”

“ क्या हुआ ?”

“ आपने कहा ... किसको देख रहे थे प्रतीक्षा का व्यवहार ?”

“ इसमें क्या खास बात है ?”

“ आंटी, मुझको प्राप्त करने के लिये प्रतीक्षा हर यत्न कर रही है । यह कोई किशोरावस्था की अधीरता और लगाव से उपजा संबंध तो है नहीं । यह एक परिपक्व मानसिकता से बहुत सोच- समझकर लिया गया निर्णय है । लोग लाख कहें मेरे बारे में कुछ पर मैं अपनी हकीकत जानता हूँ । प्रतीक्षा ऐसी लड़कियाँ मेरे रूप- गुण से ही प्रभावित क्या हो जायेंगी जब कि वह कुछ खास है नहीं । मेरे पास क्या है, आप बताओ - ऐसा क्या है जो आकर्षित कर सकता है किसी को ?”

“ तुम ऐसा क्यों कह रहे हो ?”

“ मुझे यह थोड़ा सामान्य कम लग रहा है ।”

“ उससे ही पूछ लो ?”

“ यह सब सेंट स्टीफेन्स की चालू लड़कियाँ हैं । मेरे ऐसे को डकार जायेंगी और मुझे ही पता न चलेगा । यह सच बतायेंगी ?”

“ तुम्हारे मन में ऐसे विचार क्यों आ रहे ?”

“आंटी , अतिशयता उपचेतना को सजग करती है और उपचेतना चेतना को आगाह करती है । वहीं मेरे साथ हो रहा जब से मैं प्रतीक्षा को आप के साथ पिछले कुछ समय से दूर से देख रहा ।”

उसी समय प्रतीक्षा आ गयी और आंटी ने बात बदल दी यह कहकर , ” अनुराग तुम भी खा लो । कुछ देर खाना खाकर भी रुकना पड़ेगा , ऐसा थोड़े होता है कि खाना खाया और चल दिये ।”

प्रतीक्षा ने कहा , ” मैं खाना लाऊँ ?”

आंटी -“ अभी ही सब मत कर दो , कुछ बाद के लिये भी रहने दो । अनुराग ..”

“ हाँ आंटी ।”

“इसको उर्मिला से ज़रूर मिला देना । इसको सिक्के का दोनों पहलू पता होना चाहिये - मेरा भी और उर्मिला का भी ।”

“आंटी , तब फ़ैसला बदल सकता है ?”

“ किसका - इसका या उर्मिला का ?”

“ यह बड़ा सवाल है आंटी किसका बदलेगा - पर बदलने की संभावना है ।”

“ वह बदला हुआ फ़ैसला किसके हङ्क में होगा ?”

मैंने प्रतीक्षा की ओर देखकर कहा , ” आंटी , इस सुंदरी के पक्ष में होने की ज्यादा गुंजाइशा है ।”

“ क्यों ?”

“अजेय योद्धाओं से न लड़ना युद्ध में शरेयस्कर है ।”

आंटी हँसने लगी और बोली , ” यह बात एकदम सही कहा तुमने ।”

प्रतीक्षा बोली , ”आप लोग क्या बात कर रहे मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा ।”

आंटी - “ यह सब ऐसे ही टाइम पास बात है । अनुराग के समय के कई हङ्कदार हैं और उसमें तीन प्रमुख होंगे - मैं , इसकी माँ और अब तुम आने की राह पर हो । समय सबका है तुम अकेले इसकी हङ्कदार हो यह गलतफ़हमी मत पाल लेना । यही बात कर रहे थे ।”

“आंटी , आप मुझे इतना सम्मान दे रही हैं , मेरे बारे में इतनी बड़ी बात आपने कह दी , मैं धन्य हो गयी ।”

आंटी - “ अनुराग , खाना खा लो । बहुत अच्छा बना है । वैसे मालिक आप हो यहाँ के । आप को क्या कहना कि आप खा लो । अनुराग ..”

“ हाँ आंटी ।”

“कहीं यह मलकिन की हैसियत से तो मुझे खाना नहीं खिलाया जा रहा था ?”

“आंटी , आपके सेंस ऑफ ह्यूमर का कोई जवाब नहीं । सुना है अशोक भी कह रहा कि कहीं रेस में तेज़ दौड़ने में यह मालिकाना हँक भी तो शामिल नहीं है ।”

“ कौन बताया यह तुमको ?”

“ आंटी , अशोक और टाइम्स ऑफ इंडिया में कोई ख़ास फ़र्क नहीं है । वह एक ही बात को इतनी बार कहता है कि पूरे कायनात में फैल जाये । मैं खाना खाकर आता हूँ ।”

मैं खाना खाने गया । वहाँ पर आहूजा साहब की साली थी । उसने कहा , भैया बैठ जायें खाना लगवाती हूँ आपका ।”

मैं बैठ गया और अशोक से पूछा , ” कैसा इंतज़ाम था ?”

अशोक - “ सर आपने कितनी भी अभिव्यक्ति हम सबकी सुधारी हो पर आज शाम के इंतज़ाम पर कहने को हिंदी वर्णमाला के शब्द पर्याप्त साथ दे नहीं पा रहे और अंगरेज़ी से तो हम सबका पैदाइशी बैर है । पर सर एक बात बतायें ।”

“क्या ?”

“जब सर आपका पूरा बँगला ख़ाली था , तब नाहक हम लोगों से डेढ़ सौ रुपया रोज़ खाना - खर्च अलग वाले यूपी भवन में रुकने की सलाह क्यों दी । यहीं आकर रुक गये होते ।”

“ यह मेरा बँगला कैसे हो गया ?”

“सर , यह है अपना ही । ईश्वर आहूजा साहब को लंबी उम्र दें और वह और माल कमायें ताकि हम लोग उनके मॉल को भोग सकें । सर , एकाध दिन हम लोग यहाँ भी रुक लेते हैं । बहुत दिव्य है सर । हम - दिनेश - परेम नंदन रुक लेते हैं ।”

“ तुम लोग अगर रुक गये तब अगली बार हमको यह घुसने नहीं देंगे , तुम लोगों की चाल- चलन देखकर ।”

“ सर रमाकान्तवा को भगाइये यहाँ से । यह बेवकूफ़ पूरा इम्प्रेशन ख़राब कर देगा । हमीं सर यहाँ रहते हैं । सुबह घंटी ही तो बजानी है , यह सर सर्टिफ़ाइड बेवकूफ़ है , आईएसआई मार्का । ऐसे लोगों को इतना बड़ा काम नहीं सौंपते ।”

“ क्या काम सौंपा है ?”

“ संपत्ति पर नज़र रखना और यहाँ की हाल - ख़बर रखना ।”

“ यार , मैं इसको जानता भी नहीं । इसको चिंतन सर के कमरे में खाना बनाते ही देखा है । न मैं इसको लाया न मैं आहूजा साहब से आजतक कुछ बात किया । आंटी , आहूजा साहब से बहुत खुश रहती नहीं । वैसे भी अपने यहाँ कि समधिनें अपने समधियाने से नाराज़ रहती ही हैं । आंटी मेरे ऊपर बहुत पजेसिव है । उसकी भवना का ख्याल करके न तो मैं कभी बात करता हूँ इन लोगों से और न ही आता हूँ । मैं दो बार आज तक आया हूँ यहाँ पर । एक बार पिछली बार इंटरव्यू देने और एक बार इस बार । इन दोनों ही बार आंटी साथ थी । आंटी इतनी ज्यादा स्वाभिमानी है कि वह ऋषभ से भी कहेगी तुम किसी का कुछ मत लो अपने पुरुषार्थ पर यक़ीन करो ।”

“ सर , यह काम आप नहीं चिंतन सर करा रहे । सर , चिंतन सर के बाद के कई बैचों में धूर्त नहीं आये , आप जानते हैं क्यों ?”

“ क्यों ?”

“ सर , विधाता के धूर्तता का सारा कोटा उसी साल समाप्त हो गया । वह एमए टॉप नहीं किये थे , पर पूरा फैला मारा “ रियल टॉपर चिंतन उपाध्याय । ” यह रियल टॉपर क्या होता है ? यह रियल टॉपर एक ही साल आया और एक ही विभाग में । और आपको उनकी कहानी सुनाता हूँ । उन्होंने गाँव में अपना एक बाग बेचा । उस बाग में आम छोटे-छोटे पेड़ थे उस समय । उन्होंने रजिस्टरी में लिखा दिया कहीं कोने में अश्वत्थामा मारा गया किंतु हाथी की तरह । “ खेत बगौर पेड़ों के । जब वह पेड़ तैयार हो गया तब एक कुंजडे को बाग का फल बेंच दिया । झागड़ा हो गया , कहा रजिस्टरी पढ़ो । पढ़ा लिया कहीं कोने में घुसेड़ा हुआ , “ ज़मीन का विक्रय बगौर पेड़ के । ”

मुक्कदमा कर दिया , तहसील से स्टे हो गया । तब तक यह पीपीएस हो गये लगे उसको हैरान करने । जितने में ज़मीन बेची थी उतना ही पैसा फिर लिया यह हटाने के लिये ज़मीन विक्रय बगौर पेड़ के । यह कुंडली गुरु नाम एक धोखा है । इलाहाबाद में एक डंडा गुरु था उसी से प्रभावित होकर फैला दिया कुंडली गुरु । यह निहायत चालू और स्वार्थी व्यक्ति हैं , आप ऐसा सज्जन आदमी इनसे दूर रहे सर । इस रमाकान्तवा को भगाइये यहाँ से सर । ”

“ मैं कैसे भगाऊँ ?”

“ आप यह काम मुझ पर छोड़िये । बस आप हमको यह काम करने दीजिये , मैं इसको यहाँ से दो दिन में भगा दूँगा । यह सारी ख़बर चिंतन सर को देता होगा । चिंतन सर पगलाये हैं एमपी बनने के लिये । वह जीवन में वह सारा कार्य करने को तैयार हैं जो उनको एमपी बनाने में सहायक हो । अटक-अटक के बोलते हैं , चार लाइन एक प्रवाह में यह बोल नहीं सकते चले हैं

जन- प्रतिनिधि बनने । राजेश्वर तिरपाठी की चापलूसी करते रहते हैं जब भी इलाहाबाद आते हैं । आप पर राजेश्वर तिरपाठी ने जानलेवा हमला कराया था और यह उससे जब भी आते हैं मिलते हैं ।”

“ कौन बताया यह तुमको ?”

“ हर्ष तिवारी सर ने । आपके सामने मैं पूछवा दूँगा ।”

अशोक अपना काम कर गया । उसने मेरी कमज़ोर नस पर हाथ रख दिया था । मेरे सामने पूरा घटनाक्रम धूम गया जब मुझ पर क़ातिलाना हमला हुआ था , मैं चर्च लेन की सङ्कों पर बदहवास भाग रहा था , मैं चिल्डरन हॉस्पिटल की चारदीवारी फाँद रहा था और मेरी माँ दया की भीख माँग रही थी कमिशनर साहब , ” सब मिलकर एका मार देझहिं । ई चुनाव - उनाव न लड़े । हम गरीब- गुरबा हई हमअ जियई खाई दअ ।”

मेरे चेहरे पर आकरोश की लकीरें बनने लगीं और

मैं विचलित हो चुका था माँ के उस कथन से जो उसने अति निरीहता में कहे थे ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 345

अशोक की बात मेरे मस्तिष्क को पूरी तरह आच्छादित कर चुकी थी । मैं लाख कोशिश कर्त्ता पर मेरे मनःमस्तिष्क से मुझ पर किया गया क़ातिलाना हमला , मेरा चर्च लेन की सङ्कों पर बदहवास भागना , चिल्डरन हॉस्पिटल के पीछे की दीवार पर चढ़ना और गिर कर फिर उस पर चढ़ना, दूसरी तरफ़ कूद कर भागना , पूरे रास्ते यह लगना कोई मेरा पीछा कर रहा । घर पहुँच कर सबका घर से भागना मौसी के यहाँ जाकर शरण पाने की कोशिश और हर पल यह लगना कुछ लोग घर में घुसकर सबकी हत्या कर देंगे । मेरी माँ की वह निरीहता मुझे रात के अँधेरे में झकझोरती है जब उसने कहा था , “हम गरीब - गुरबा मनई हई , हमका जियई - खाई दअ , ई चुनाव - उनाव कुछ न लड़े ।” उसकी असहायता कई बार मेरे अपने अस्तित्व पर सवाल खड़ा करती है और मुझे लगता था मेरे रहते वह इतनी कातर हो गयी और मैं कुछ न कर सका । वह इतनी असहाय नहीं हो सकती , जिसने जीवन में बड़ी - बड़ी विपत्तियों को उसकी हैसियत बतायी हो , जिनमें मुझ ऐसे सामान्य व्यक्ति को लहरों से लड़कर गहराइयों से निकालकर गगनचुंबी लहरों के हवाले किया है वह इतनी कमज़ोर सिर्फ़ इसलिये थी कि पुत्र के जीवन से उसे अतिशय मोह था । मेरे चेहरे पर करोध की रेखायें बनने लगीं । अशोक समझ गया उसका काम हो चुका है । वह चिंतन सर से प्रसन्न नहीं

रहता था । इसका कारण यह था कि चिंतन सर किसी भी अभ्यार्थी को कोई भाव नहीं देते थे और बहुधा कमरे में आने वाले लड़के को कमरे के दरवाज़े से ही भगा देते थे और कई बार अपमान भी कर देते थे । कभी अशोक ने यह अपमान झेला था । चिंतन सर डिप्टी एसपी हो गये, वह कुंडली गुरु का डरामा फैला ले गये, अशोक की हैसियत और पहुँच से बहुत बाहर हो गये । पिछले साल उनके आईआरएस बनते ही सोने पर सुहागा हो गया पर अशोक के अंदर उनको लेकर एक आग जल रही थी । और आज उसे एक अवसर दिख रहा था उस अपमान का हिसाब बराबर करने का । उसने देखा लोहा गर्म है ।

“ सर, क्या करें ? ”

“ कल इसे निकाल कर भगा दो, पर सावधानी से । चिंतन सर को यह नहीं लगना चाहिये कि हम लोगों ने इसको भगाया है । ”

“ सर, आपके नाम का दिया जल रहा हर ओर । जिस छात्र- संघ अध्यक्ष के लिये लोग पूरा जीवन लगा देते हैं आपने उसको प्राप्त करके उसको लात मार दी । रिज़ल्ट आने दीजिए, आप तो होंगे ही जिसने आप के पाँव पखारे वह भी होगा । चिंतन सर ऐसे लोगों की क्या हैसियत आपके सामने । एक नया सूरज उग चुका है जो हज़ारों चिरागों की आँखों को चुंधिया चुका है । सर, इसको भगाते हैं और यह कहकर भगाते हैं कि अनुराग सर ने भगाने का आदेश दिया है क्योंकि वह सर के ऊपर हमला कराने वाले हमलावर से ताल्लुक़ रखते हैं । उनको पता होना चाहिये कि दंड क्यों मिला । ”

“ नहीं अशोक, वह मेरा कार्यकर्ता बनेगा । वह मेरा समर्थक होगा । दुश्मन को हतने में कोई लाभ नहीं है । उसको अपना झंडा उठाने के लिये बाध्य करो । समर्थक का जयकारा कोई बड़ी ध्वनि नहीं देता पर विरोधी के हाथ में उठा आपका ध्वज आपके दिव्विजय की पताका को हर ओर ले जाता है । वह इस बात का संदेश आपके विरोधियों में देता है कि यह मेरा नायक है, यह कृपानिधान है, दयालु है, सदाशयता से परिपूर्ण है । कोई भी विजय अपूर्ण है अगर वह आपके विरोधियों को आपके शरण में लेकर नहीं आती है । पराजित करो पर पराजय पश्चात् उसका दिल भी जीतो । आप घाव दो घातक घाव दो पर मलहम भी वहीं हाथ लगायें । ”

जिन हाथों ने अस्तर चलाये हैं । घाव इस बात को न याद रखें कि इन्हीं हाथों से अस्तर चले थे पर वह यह याद रखें इन्हीं उँगलियों से मलहम का लेप लगा था । युद्ध से अधिक महत्वपूर्ण है विजय के बाद का कृत्य । यह समाज में संदेश जाना चाहिये कि यह विरोधियों का सम्मान करता है । सम्मान करना उतना आवश्यक नहीं है जितना संदेश जाना और यह संदेश एक पराजित व्यक्ति ही विजेता के पक्ष में प्रसारित करता है । मन के अंदर की मलिनता

अगर समाज के सम्मुख आ गयी तब आप जीत कर भी खलनायक होते हो , पर अगर वह मलिनता छिपी रह जाये और दयालुता सम्मुख आ जाये तब एक छोटी जीत भी आपको नायक बना देती है । सिंकंदर का कौन सा क्रिस्सा तुम्हें याद है ?”

अशोक सोचने लगा ...

“सिंकंदर दिग्विजयी था पर जन - जन में उसके दिग्विजय के क्रिस्से नहीं उसकी सदाशयता - दयालुता - विरोधियों के सम्मान के क्रिस्से व्याप्त हैं ।”

“ कौन सा सर ?”

“ पुरु को सिंकंदर ने पराजित किया । वह सिंकंदर के सम्मुख लाया गया । सिंकंदर ने पूछा , तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाये । पुरु ने कहा तुम वही व्यवहार मेरे साथ करो जो एक विजयी राजा पराजित राजा के साथ करता है । सिंकंदर दंड दे सकता था पर उसने सम्मान दिया और सिंकंदर नायक बन गया । हर्ष का न तो राज्य बड़ा था न ही वह बहुत पराक्रमी राजा था । वह पुलकेशियन द्वितीय से पराजित हो गया था पर हम सब क्या जानते हैं वह संगम पर सर्वस्व दान कर देता था , वह दानवीर था । अशोक , राम का राज्य कितना बड़ा था यह कहीं ज़िकर नहीं होता पर राम कर्मों के शासक थे और परजा उनके दर्शन की अभिलाषी थी यही हम सब पढ़ते हैं । दशरथ ने राम से कहा मैं तुम्हें वनगमन का आदेश देता हूँ पर तुम इसे अस्वीकार कर दो और मुझे बंदी बनाकर कारागृह में डालकर राज्य पर अधिकार करो । पूरी परजा भी तुमको राजा के रूप में देखना चाहती है । जानते हो राम ने क्या क्या ? यह विचार जैसे ही आप के मन में आया मुझे पाप लग गया और वन से लौटने के बाद मैं इस पापनाशन के लिये आप से दंड का अनुरोध करूँगा । हम सब सामान्य मानव हैं । हम कोई समाज के नायक बनने की क्षमता नहीं रखते पर बनना चाहते हैं । यह चाहत मुझसे बार - बार कहती हैं तुम उन ऐसे बन नहीं सकते पर यह कहानियाँ कुछ शिक्षा देती हैं , शिक्षा ग्रहण करो । मैं इन कहानियों का मंतव्य समझने की जब भी कोशिश करता हूँ मुझे एक ही मूलमन्त्र की प्राप्ति होती है - नायक बनना है तो सदाशयता अपने व्यक्तित्व में लाओ , त्याग करो , स्व आग्रही कम हो । अगर यह नहीं बन सकते तब ...”

“ सर , यह तो आसान नहीं है । अगर नहीं बन सकते तब”

“ यह बनने का नाटक करो । “

“ सर , समझ गया । हम अब नाटक करेंगे ।”

“ नहीं , पहले बनने का प्रयास करो । अगर नहीं बन सकते तब नाटक करो , अगर समाज में एक विशेष स्थान चाहते हो ।”

“ सर , आप बनने का प्रयास करें , मैं नाटक करता हूँ । सर , मैं दुनियावी आदमी हूँ । मुझे घर - दुआर बनवाना है , बहिन का बियाह करना है , खेत खरीदना है , पेटरोल पंप लेना है । मुझसे यह सब न होगा , पर नाटक करूँगा ।”

“ कैसे करोगे ?”

“ सर , हर नवरात्रि पर शतचंडी पाठ कराऊँगा , पूरे इलाके में लाउडस्पीकर से प्रचार कराऊँगा कि पाठ

में शामिल हों प्रसाद लें , भोजन करें । सौ- सौ रूपया वाली धोती महिलाओं में बाँटूँगा , जाड़े में कंबल बाँटूँगा , चमचों से अपनी दयालुता के क्रिस्से पूरे इलाके में प्रचारित कराऊँगा । यह नाटक सर मुझे प्रशस्ति देगा । यह ससुरी जनता किसी की सगी नहीं है । इनको जो लतियाये भी और पुचकारे भी बस उसी से ठीक रहती हैं । सर , एक बात बताऊँ अगर आप बुरा न मानें ।”

“ बताओ ।”

“ आप जिन लोगों को मुफ्त का पढ़ा रहे वह सब आपको चूतिया समझते हैं ।

“ क्यों ?”

“ ज्यादातर कहते हैं कि यह किसी लक्ष्य को लेकर नाटक फैला रहे हैं । किसी की देह पिरा रही है क्या कि सारा दिन पढ़ो और फिर पढ़ाओ । यह इनका कुछ स्वार्थ है इसमें कोई एहसान थोड़े कर रहे । सर , मुफ्त की कोई कीमत नहीं है । आपके जो पुराने अभ्यार्थी हैं वह नये लोगों को भगाते हैं । वह चाहते हैं कोई नया न आये । यह सब स्वार्थी लोग हैं । आपको बहुत गलतफ़हमी है कि यह अभियान आगे चलेगा , यह और लोगों की मदद करेंगे । यह जिस दिन चयनित होंगे आप इनका रंग- ढंग देख लेना । आप चिंतन सर - बदरी सर को ही देख लो । वह एक दिन नहीं पढ़ाये । कुछ कहो तो कहते हैं मुझसे न होगा । सर , हर्ष - मालवीय जी की कहानियाँ इतिहास की वस्तुयें हैं । यह शहर स्वार्थियों का शहर है । बस अपना काम करो और निकल लो । यह शहर आज इस हालात पर है तो इस शहर के सफल स्वार्थी लोगों के कारण हैं । आप उन्हीं स्वार्थियों की एक और खेप बना रहे हैं । आप दूर क्यों जाते हैं । आप देखिये चिंतन सर को । गाँव की ज़मीन के पेड़ का क्रिस्सा आपको सुनाया ही । आंटी जी का समधियाना है । शालिनी जी से आपकी नातेदारी - दोस्ती है , आप के बारे में वह कह रही कि आप संपदा के मालिक हो पर भोग कौन रहा , धूर्त चिंतन सर । सर , चिंतन सर तो ईश्वर से भी धूर्तता किये ।”

“ वह कैसे ?”

“ सर वह आठ महीने में ही पैदा हो गये । प्रकृति का नियम ही नहीं माने , नौ महीने गर्भ में रहे होते एक महीने की धूर्तता से कायनात बच जाता , पर उनको तो लूटपाट की जल्दी थी । सर , वह कुंडली गुरु - कुंडली गुरु का भ्रम फैला कर गाज़ियाबाद लूट मारे । सर , आप बताओ यह कौन सा पैसा 2200- 4000 के स्केल में प्राप्त हो गया कि इनका मकान गाज़ियाबाद की पोस्टिंग पाते ही बनने लगा और वह हरामी इन्द्र देव , इनका छोटा भाई जो पाँच मन बेवकूफी के साथ जन्म लिया था ठेकेदार बन गया । सर , ई रमाकान्तवा साला किरमनल है । चिंतन सर का पूरा परिवार कहाँ क्या मिले क़ब्ज़िया लो इसी पर लगा रहता है । उनके बाप रामनाथ उपाधिया जजमानों की ज़मीन लिखाने में माहिर हैं । चिंतन सर के पिताजी कुल चार भाई हैं और चारों मिलकर एक झौआ बच्चे पैदा कर दिये , रोज़ सुबह दंड मारते हैं और लाठी चलाते हैं । चिंतन सर अकेले हैं जो पढ़े हैं बाकी सब महान लंठ हैं । ई रमाकान्तवा परसाद में अफ़ीम मिलाकर नशे के हालात में कहीं दस्तख़त करा लेगा , धीरे - धीरे परसाद में अफ़ीम की मात्रा बढ़ाकर मार देगा , फिर क़ब्ज़ा कर लेंगे यह सब । यही पर एक मंदिर बनाकर पूजा - पाठ का नाटक चालू हो जायेगा । शालिनी विदेश में , आंटी जी से कोई मतलब नहीं आप संकोची हो , यह डकैत लोग यहाँ के मालिक होंगे । इसको भगाना ज़रूरी है सर , वह भी शीघ्रातिशीघ्र ।”

मेरे मस्तिष्क में सिवाय इसके कि वह राजेश्वर त्रिपाठी के पास जाते हैं और कुछ नहीं धूम रहा था । मुझ पर किया गया क़ातिलाना हमला और माँ की निरीहता मुझको विचलित किये हुये थी । मैंने कहा ,” कल की साँझ यह यहाँ न देख पाये । कल इसको निकाल देना ।”

“ सर , कल का भोजन नहीं करने दूँगा इसको यहाँ । साँझ के सूरज तक तो यह बस में बैठा अलीगढ़ पहुँच रहा होगा ।”

“ सावधानी से कार्य करना । चिंतन सर को पता नहीं चलना चाहिये । अगला हमला चिंतन सर पर होगा ।”

“ सर आपका चेला हूँ , चिंता न करें । सर चिंतन सर पर हमला कैसे होगा ?”

“ इंतज़ार करो वक्त का .. “

अशोक की प्रसन्नता की कोई सीमा न थी , उसने मन ही मन कहा ,” चिंतन सर आप तो मुझे कमरे से भगाये थे मैं शहर से तुम्हारा नाम मिटा दूँगा ।”

ताज़ी करारी जलेबियाँ छन- छन के आ रही थीं । अशोक उड़ाने लगा और दिनेश से कहा , ” अनुराग सर देवता हैं , मैं अब अपने कमरे में एक भगवान की फ़ोटो हटाकर अनुराग सर की लगाऊँगा ।”

उसने जलेबी वाले को आवाज़ दी और कहा , ” गरमा- गर्म लेते आओ , आज मन बहुत शीतल है यह गर्म जलेबियाँ उसको बर्फ़ बनने से बचायेंगी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 346

बड़ी आवभगत की आहूजा साहब ने । श्रीमती आहूजा और उनकी बहन भी बहुत प्रसन्न थे । उनकी बहन कुछ ज्यादा ही मुझ पर मेहरबान थीं । आहूजा साहब ने चलते समय सबको तोहफ़ा भी दिया । सारे लोग तोहफ़े से अभिभूत हो गये । अब इलाहाबादियों में धैर्य कहाँ किसी ने अपना तोहफ़ा कहीं कोने में खोल मारा और हल्ला हो गया चाँदी का एक सिक्का भी है । अब चाँदी के सिक्के का किया क्या जाये , यह भी कानाफूसी होने लगी । किसी ने कहा इनको ही बेंच देते हैं , हमको कैश की ज़रूरत है । कोई कह रहा इससे अच्छा नक़द दिये होते । अशोक ने कहा अनामिका का तो काम हो गया । इसके बियाह में पायल , बिछुआ बन जायेगा । आहूजा साहब और उनकी पत्नी का आते समय तो पैर न छुये थे इन लोगों ने पर चाँदी का सिक्का , डायरी , कलम उनको चरणों तक ले गया । पैर घिस डाला छू- छूकर । सिक्के के ऊपर शालिनी सीमेंट का छापा लगा था , ऐसा ही डायरी और पेन पर भी था । आहूजा साहब बड़े आदमी थे उनके लिये इस तरह का तोहफ़ा अफसरानों और अपने ग्राहकों को देने का रिवाज था , दीवाली के उपहार के लिये बने सामानों में से बचा हुआ सामान इन दरिदरों को पकड़ा दिया । जाते समय अपनी कार भी दे दी कि सबको छोड़ आओ । कार में अशोक ने दिनेश से कहा , “

इसको सँभाल कर रखना होगा । यह सौ ग्राम चाँदी का सिक्का है । चाँदी का क्या भाव है आजकल ? ”

परेम नंदन - “ रेट का तो ठीक से अंदाज़ा नहीं है । ”

अशोक - “ फिर भी अंदाज़े से बताओ , यह कितने का होगा ? ”

परेम नंदन - “ यह पाँच सौ रुपये का तो होगा । ”

अशोक - “ तुम यह ले लो हमको चार सौ रुपया दे दो । ”

परेम नंदन - “ मैं क्या करूँगा ? ”

अशोक - “ सौ रूपया का फ़ायदा दे रहा । अपनी पत्नी का पायल बनवा लेना नहीं तो बहन के बियाह में दे देना , नहीं तो अनामिका की शादी में उपहार दे देना । ”

परेम नंदन - “ अनामिका इस कार में नहीं है , नहीं तो ...

“ नहीं तो क्या ... उसका उद्घार किया । वह सर की कोचिंग में आने में लेट हो गयी थी , मैंने ही खींच- खांचकर एक कुर्सी - मेज़ लगवा कर कल्याण कराया उनका । आज बहुत बड़ी माधुरी दीक्षित बनी घूम रहीं हैं । इस शहर में जो मेंस पास कर जाता वह ही नहीं उसका पूरा परिवार पगला जाता है । यही हाल इस बेवकूफ के पेड़ का हो गया है । यह पगला गयी है , जब देखो लड़ने पर आमादा हो जाती है । ”

परेम नंदन - “ अगर चयनित हो गयी तब ? ”

“ तब तो कुल शहरै दौड़ाय मारेगी । ”

“ क्या उम्मीद है उसकी ? ”

“ लड़कियाँ अगर इंटरव्यू तक पहुँच गयीं तब उनके होने की उम्मीद लड़कों के तुलना में अधिक होती है । ”

“ ऐसा क्यों ? ”

“ एक अधोषित नीति है कि महिलाओं को आगे बढ़ाओ , इसलिये उनको इंटरव्यू में अंक ज्यादा मिलते हैं । हम और की बात क्या करें अनुराग सर दुई अँखियाँ करते हैं । ”

“ वह कैसे ? ”

“ लड़कियों को ज्यादा भाव देते हैं । जब अनामिका को कलॉस में ले रहे थे तब कुछ लड़के भी थे पर उनको नहीं लिया इसको ले लिया । इंटरव्यू में भी लड़कियों पर विशेष ध्यान दिया । ”

दिनेश - “ऐसा क्यों करते हैं वह ? ”

अशोक - “ तुम्हारे क्यों , कहाँ , कैसे , कब से भगवान बचाये । तुम अभी चालू हो जाओगे तब खोपड़ी भिन्नियाँ दोगे । चलो दिल्ली का काम निपट गया । कल की टरेन है , चलकर प्रारम्भिक परीक्षा पढ़ते हैं । इस साल का पता नहीं क्या होगा , अगले साल का देखते हैं । ”

दूसरी कार में अनामिका अपना पैकेट खोला । उसने पेन खोलकर डायरी पर अपना नाम लिख लिया । वह कलम “ करास ” कंपनी की थी । वह कलम का दाम पूछ रही थी पर सब एक रूपया - दो रूपया वाली कलम और साठ

पैसे की रिफिल से लिखने वाले लोग थे उनको क्या पता कि यह कलम हज़ारों की है । डायरी के ऊपर का शाइनिंग कवर वह हाथ से सहला रही थी डायरी के ऊपर अंग्रेज़ी में लिखा था “ शालिनी सीमेंट एंड इंडस्ट्रीज़ “ वही बार - बार पढ़ रही थी । अनामिका गाँव की लड़की थी । उसके पिताजी की मृत्यु उसके बचपन में ही हो गयी थी । उसकी माँ ने उसको बहुत मेहनत से पढ़ाया था । सोना - चाँदी तो कभी उसने देखा ही न था । सौ ग्राम चाँदी का सिक्का उसके लिये एक बहुत बड़ी बात थी । वह इसी कल्पना में खो गयी कि उसकी माँ यह सिक्का पाकर अभिभूत हो जायेगी । फिर उसको लगा कि यह गाँव के कच्चे घर में चोरी हो जायेगा । उसने पूछा , ” यह सिक्का असली चाँदी का है ? ”

संजय ने कहा , ” हाँ , यह असली चाँदी का है । ”

“ यह क्यों हम लोगों को दिया गया ? ”

“ यह बड़े लोग घर आये लोगों को उपहार देते हैं । ”

“ क्या वह ऐसा उपहार सबको देते हैं ? ”

“ सबको नहीं देते पर खास - खास लोगों को देते हैं । ”

“ हम लोग खास- खास लोग हो गये हैं ? ”

“ हाँ , हम लोग संभावित आईएएस हैं शायद इसलिये । ”

“ नहीं , यह अनुराग सर के कारण दिया गया है । आंटी जी समधिन हैं । अनुराग सर उनके बेटे की तरह है और सर तो महान हैं ही । सर , देवता हैं , वह न होते तो क्या होता हम लोगों का । मैं तो कोई कोचिंग कभी कर ही नहीं सकती थी । यह परीक्षा बाहर गाइडेंस को हो नहीं सकती । सर , अगर दरेनिंग पर चले गये होते तब हमारा तो न होता औरों का नहीं पता । ”

“ किसी का न होता । अनुराग सर ने पढ़ाया वह तो एक बात है पर हम लोग मेहनत भी उनके डर से किये । वह कितना गुस्सा करते थे जब कोई काम हम लोग नहीं करते थे । अनामिका , तुम तो लड़की हो तुमको कम डाँटे होंगे पर हम लोगों का जीना मुहाल कर दिये थे । एक दिन सुबह साढ़े चार बजे हमारे कमरे आ गये । मैं सो रहा था वह वहीं लगे चीखने । मेरा पूरा लॉज जग गया वह इतना डाँटे मुझको । उसके बाद से चार बजे सुबह उनका चीखना कान में गूँजने लगता था और मैं डर के मारे उठ जाता था । ”

“ मुझे भी बहुत डाँटा है । मैं फ़ैक्ट को सही बोल नहीं पाती थी । वह एक - दो बार तो समझाये पर तीसरी बार लगे चीखने कि तुम फ़ैक्ट क्यों बोल रही बेवकूफ तथ्य बोलो । मैंने राम की शक्तिपूजा पर एक सवाल हल किया था मेरी कॉपी ही फेंक दी थी यह कहते हुये यह तुम्हारी हिंदी है और तुम हिंदी

साहित्य ले रही हो । पर उनकी डॉट और गुस्सा बहुत काम आया । हम लोग एक बड़ी दहलीज़ पर पहुँच गये हैं । जानते हो मुझसे बोर्ड ने क्या कहा ।”

“ क्या कहा ?”

“ अनामिका तुम जहाँ पहुँच चुकी हो वह जीवन की एक बहुत बड़ी दहलीज़ है , यहाँ पहुँचने का सौभाग्य विरलों को मिलता है । आप इस क्षण का आनंद लो और बेफ़िकर होकर अपनी बात कहो । शायद वह मेरा बैकग्राउंड देखकर यह बात कह रहे थे । एक बिन बाप के अनपढ़ माँ की लड़की का यहाँ तक पहुँचना एक अचंभा तो है ही ।”

“ अनामिका , लोग तुमसे जब पूछेंगे अगर तुम आईएएस बन गयी कि क्या राज है तुम्हारी सफलता का तब तुम क्या कहोगी ?”

“ वह दिन अभी दूर है पर अगर कभी वह दिन आया तब मैं अपनी माँ को सारा शरेय दूँगी । उसने मज़दूरी की , वह ठाकुरों के खेत में काम करती थी । उसके लिये अपनी इज़ज़त - आबरू बचाना भी आसान न था पर वह एक बात पर पूरी तरह क़ायम थी कि बेटी को पढ़ाना है । हरिजन बच्चों का गाँव में पढ़ा आसान नहीं होता । मैं और क्या कहूँ अनुराग सर के क्लॉस में भी कुछ इस मानसिकता के हैं । अशोक बहुत अच्छा है । मैं लेट हो गयी थी । मुझे पता ही न था इस कोचिंग का । अनुराग सर कह रहे थे कि जगह नहीं है पर उसने सर से सिफारिश की मेरी । सर ने मुझे शरण दे दी , नहीं तो न होता । सर दो लोगों को बहुत मानते हैं - दिनेश और अशोक । क्या कारण हैं ?”

“ और किसी को नहीं मानते क्या ?”

“ तुम प्रतीक्षा की बात कर रहे हो ?”

“ हाँ ।”

“ इसमें कितनी सच्चाई है कि सर और प्रतीक्षा के विवाह की बात चल रही है ?”

“ इसमें पूरी सच्चाई है ।”

“एक बात कहूँ ?”

“ हाँ कहो ।”

“ बहुत मुश्किल होगा सर के साथ किसी का निभाना ।”

“ क्यों ?”

“ उनको गुस्सा बहुत आता है और वह बहुत जल्दी उत्तेजित होते हैं । यह जीवन कोई कोचिंग नहीं है । जीवन एक अलग तरीके से जिया जाता है । सर , बहुत समझदार हैं पर जो मैं देख रही वह कह रही , उनको अपने करोध पर नियन्त्रण रखना चाहिये । कई बातें आसानी से कहीं जा सकी हैं पर वह धैर्य कई बार खो देते हैं ।”

“ वह जीवन में कई रेस एक साथ दौड़ रहे हैं । हम सब की सफलता उनके जीवन के रेस का एक भाग है । वह असफलता को बर्दाशत नहीं कर पाते , उनको किसी भी हालात में सफलता चाहिये ही शायद यही कारण है वह कई बार अधीर हो जाते हैं ।”

“ यह भी हो सकता है ।”

यूपी भवन आ गया । अशोक ने कार से उतरते ही बोला , “ आहूजा साहब ने बीएमडब्लू कार दे दी अनामिका को यूपी भवन तक के लिये । कभी उसने सोचा न होगा जीवन में इसके यह दिन भी आयेगा ।”

“ तुम चायनीज - काटिनेंटल और दो किलो जलेबी खा जाओगे मुफ्त में और वह भी इतने आलीशान बँगले के अंदर , आते समय अपनी बीबी के लिये एक चाँदी का सिक्का भी ले आओगे यह सोचा था कभी ?”

“ अरे यार , यह तो तीन सींग लगा ली है अभी तक तो दो ही थी ।”

मैं और आंटी वापस घर आ गये । आंटी ने कार से उतरते ही पूछा , ” अनुराग ड्राइवर को कब बुलायें कल ?”

“ मुझे कहीं नहीं जाना है । बस शाम की टरेन है , आराम से यह जब मन करे तब आये ।”

“ यह तो पता है कि आपको कल कहीं नहीं जाना है ।”

आंटी ने ड्राइवर से कहा , बारह बजे आना । आंटी ने कहा , “ अनुराग बैठे मैं कपड़े बदल कर आती हूँ । मैं भी कुर्ता - पायजामा पहन कर लॉन में बैठ गया । आंटी थोड़ी ही देर में आ गयी । उसने आते ही पूछा , ” कल कहीं नहीं जाना है ?”

“ नहीं ।”

“ क्यों ?”

“ कल आपसे ही बात करते हैं ।”

“अनुराग ज्यादा शातिर कौन है ?”

“ समझा नहीं आंटी ।”

“ तुम या प्रतीक्षा ?”

“ क्यों ?”

“ यह किसका दिमाग़ था “

“कैसा दिमाग़ ?”

“कल यहाँ प्रतीक्षा के आने का ।”

मैं समझ गया कि आंटी सब समझ गयी है । मैंने कहा , ” प्रतीक्षा का । वह पूछी कल आओगे ? मैंने कहा , मैं नहीं आ पाऊँगा । तब उसने कहा कि मैं आ जाऊँगी और उसने आप से कहा कि मैं घर आऊँगी ।”

“ अनुराग अगर तुम दोनों का विवाह हुआ तब बच्चा बड़े - बड़े को चरा मारेगा । अनुराग , तुम एक अपना बच्चा मुझको दे देना । तुम दो - तीन बच्चे पैदा करना । एक मुझको तुम ज़रूर देना । मेरे जीवन में भी कुछ काम हो जायेगा । इस नीरस जीवन को कुछ सरसता मिलेगी ।”

“ आंटी , उस बच्चे का सौभाग्य होगा जो आपके द्वारा पाला जायेगा । आप के संस्कार , आपका ज्ञान , आपका अनुशासन किसी को भी महान बना सकता है ।”

“अनुशासन तो उर्मिला का चाहिये । मेरे पास क्या अनुशासन है , तुम और प्रतीक्षा मुझको चरा रहे हो । उर्मिला होती तब ..”

“ आंटी , शुभ - शुभ बोलो उसको पता चल गया तब जिंदा मुझे दफ्न कर देगी । विवाह पूर्व लड़का - लड़की मिले यह स्वीकार्य नहीं उसको ।”

आंटी हँसने लगी और बोली , “वह छोटे शहर में रही है , उसने यह नया परिवेश नहीं देखा पर तुम लोग ज्यादा मिल भी रहे हो , इतना नहीं मिलना चाहिये कुछ बाद के लिये भी रहने दो ।”

मैं चुप हो गया , शायद आंटी ठीक ही कह रही थी ।

“अनुराग तुम्हारे बच्चे के साथ एक समस्या होगी ।”

“ क्या आंटी ?”

“ वह पैदा होते ही बोलेगा मुझे ब्लैक - बोर्ड- चॉक - डस्टर दो मैं पढ़ाऊँगा , नहीं तो बोलेगा मैं समाज सुधार करूँगा ।”

आंटी हँसने लगी । मैंने कहा , ” आंटी यह ऋषभ - शालिनी का बच्चा आप पालो पहले । वह सब तो धन वर्षा अभियान में लगे हैं । उनके पास कहाँ समय बच्चे के लिये , आप बहुत अच्छे से पाल देंगे ।”

“उनके पास तो किसी के लिये समय नहीं है । मैं क्या कहूँ , तुम ही कहो । एक चिटठी में लिख दो शालिनी को । तुम तो चिटठी - पत्री करते रहते हो

।”

“ लिखता हूँ आंटी ।”

“ पैकेट में क्या है देखा ?”

“ मैंने नहीं देखा पर लड़कों ने वहीं खोल लिया था । एक चाँदी का सिक्का - डायरी - क़लम है ।”

“ तुम देखो , तुम्हारा कुछ अलग होगा । तुम पर आहूजा साहब की साली की भी निगाह है ।”

“ कैसी निगाह ?”

“ अब शालिनी को ऋषभ मिला तब उनको भी वैसा लड़का चाहिये । सुना नहीं कह रही थीं मेरी बेटी को भी शालिनी ऐसा पढ़ा लिखा घर - परिवार मिल जाता तो हमारे नसीब खुल जाते , इसका मतलब वही है । यह बनिया लोग बराह्मणों का घर तबाह कर देंगे । वह पढ़ने में अच्छी भी है , गुड सेकेंड क्लॉस से पास होती है ।

“अनुराग यह गुड सेकेंड क्लॉस क्या होता है , मैंने तो पहली बार सुना । “

“प्रथम श्रेणी आने में अगर कुछ अंक साथ न दे तब उसे गुड सेकेंड क्लॉस कहते हैं । “

“ यह तो नयी बात पता चली । खोलो क्या है पैकेट में ।”

आंटी की बात सही थी । एक डायरी - पेन और साथ में दस ग्राम का सोने का सिक्का था । आंटी ने खोला उसके पैकेट में भी वही था । आंटी ने अपना सिक्का भी मुझे दे दिया ।

“अनुराग , मैं क्या करूँगी इसका । तुम यह भी उर्मिला को दे देना । वह बेटी के विवाह में इस्तेमाल कर लेगी । हमारे काम की तो यह सब चीज़ें अब हैं नहीं ।”

बीस ग्राम सोने का सिक्का ... माँ की आँख चौंधिया जायेगी । मुझे याद आया माँ का नाना से दस- दस ग्राम के पाँच चाँदी के सिक्के माँगना ताकि वह एक पायल बनवा सके पर वह नाना ने न दिये थे । मेरे हाथ में दो सोने के सिक्के चमक रहे थे और मैं इतिहास में जा चुका था । आंटी ने पूछा , ” अनुराग कहाँ खो गये ?”

“ आंटी कई वाक्ये जीवन में ऐसे होते हैं जो विचलित कर देते हैं । वह विचलित ही नहीं करते , वह ताउमर विचलित करते रहते हैं । मैं कक्षा नौ में था , अलग कमरे के लिये हँगामा करता रहता था । मेरी माँ ने दो कमरे मकान की पहली मंज़िल पर बनाने का विचार किया और काम आरंभ कर दिया । उन दो कमरों में एक कमरा वही है जिस एक कमरे में मैं रहता हूँ और दूसरा कमरा छोटा सा स्टोर रुम टाइप का है । मेरे पिताजी को जीपीएफ एडवांस समय पर मिल न पाया , पैसा तो कभी घर में होता था नहीं । कमरों का ढाँचा बनवाने में ही सारा पैसा खर्च हो गया , प्लास्टर और दरवाजे का काम बचा रह गया । । माँ ने मामा से पैसा माँगा और कहा ब्याज भी दूँगी पर मामा ने न दिया । मैं बगैर प्लास्टर , बगैर दरवाजे के कमरे में 6 महीने रहा, जब पिताजी को जीपीएफ एडवांस मिला तब प्लास्टर हुआ , दरवाज़ा लगा । मैंने बिजली का तार खींचकर लाइट लगायी थी और एक बार मुझे करेंट भी लग गया था , कोई अनहोनी भी हो सकती थी । मेरे नाना के पास चाँदी के हज़ारों सिक्के थे । माँ ने पाँच सिक्के पायल बनाने के लिये माँगे पर नाना न नहीं दिया । यह सिक्के देखकर मैं उस इतिहास के गलियारों में लौट गया जो अभाव की ईटों और विवशता के सीमेंट से बने हैं । वह बहुत मज़बूत गलियारे हैं , उनको तोड़ना आसान नहीं है ।”

“ पर वह तो तुमने तोड़ दिया , अपने संकल्प से ।”

“ हाँ आंटी , हर दिन का सूरज उगे उसके पहले मैं उठता था एक संकल्प के साथ , मुझे इस गलियारे के अस्तित्व को नेस्तनाबूद करना ही है । मेरे सुबह चार बजे उठने का राज यही है , हर दिन उस संकल्प को दुहराना ।”

“ अनुराग , तुम्हारे अंदर अपने मामा - नाना को लेकर कोई ग्रन्थि है , कोई दुर्भावना है ?”

“ बहुत ज्यादा ।”

“ क्या यह उचित है ?”

“ मुझे नहीं पता ।”

“ क्या तुम उनसे बदला लोगे ?”

“ ज़रूर लूँगा और लेना आरंभ कर चुका हूँ ।”

“ क्या आरंभ किया है ?”

“ हरिकेश मामा की शादी मैंने सिर्फ इसलिये इंकार की क्योंकि वह विवाह मामा कराना चाहते थे । वह लड़की गार्गी - मेनका का संयोजन होती तब भी मैं इंकार ही करता ।”

“ क्या यह उस कन्या के साथ अन्याय नहीं होगा ?”

“ मैं किसके साथ न्याय करूँ और किसके साथ का अन्याय देखूँ, माँ का या मामा का ?”

“और नाना का ?”

“ उनके साथ कुछ नहीं किया जा सकता । माँ का अपने पिता से अतिशय लगाव है और वह उनके लिये मुझसे भी संघर्ष कर लेगी । मैं किसी ऐसे संघर्ष की कल्पना भी नहीं कर सकता जिसमें मैं और माँ एक दूसरे के विरुद्ध खड़े हों ।”

“ अगर प्रतीक्षा के मुद्दे पर वह तैयार न हुई तब ?”

“ प्रतीक्षा को मेरे जीवन से जाना होगा ।”

“ प्रतीक्षा के अरमानों का क्या होगा ?”

“आंटी , प्रतीक्षा के अरमान तो बाद में आते हैं, मेरे अरमानों का क्या होगा ?”

“क्या तुमको प्रतीक्षा से बहुत लगाव हो गया है ?”

“ बहुत तो नहीं कह सकता आंटी पर लगाव तो हो ही गया है ।”

“ लगाव की कोई खास वजह ? .. उसका रूप या सीरत या कुछ और ?”

“आंटी , अब कहीं विवाह करना ही है तब इसमें क्या ख़राबी है ? पढ़ी- लिखी है , अच्छे घर की है , रूप- माधुर्य है और वह मेरे साथ जीवन के अगले पायदान के लिये उत्सुक है ।”

“ अनुराग , अगर विवाह करना ही है ... यह क्यों कहा ? क्या विवाह करना एक मजबूरी है ?”

“ हाँ , आंटी ।”

“ क्यों ?”

“ पारिवारिक - सामाजिक दबाव या यूँ कहें ज़रूरत ।”

“ मतलब ।”

“आंटी , मेरी यह मान्यता है कि अगर आपके जीवन में बहुत बड़े लक्ष्य हों , आप बहुआयामी हों , आपके व्यक्तित्व में कई विधायें हो और आप उन विधाओं को आगे ले जाना चाहते हो तब आपको विवाह नहीं करना चाहिये । विवाह एक सामान्य व्यक्ति के लिये होता है । जीवन को विभिन्न तरीकों से देखने वाले एवम् जीवन में अभिप्रयोग करने वाले के लिये विवाह एक बंधन है और सहज विकास में बाधक है ।”

“ ऐसे व्यक्ति को क्या करना चाहिये ?”

“ उसे इस दुनियावी चीजों से दूर रहना चाहिये ।”

“ व्यक्ति की शारीरिक - मानसिक - भावनात्मक आवश्यकताओं का”

“ उसे उसका त्याग करना चाहिये ।”

“ क्या यह संभव है ?”

“ मुश्किल है ।”

“ असंभव है या मुश्किल ?”

मैं थोड़ी देर शांत रहा

“ आंटी , आपकी उम्र क्या थी जब आप विधवा हुई थीं ?”

“ तीस - इकतीस साल ।”

“ आप पर भी यह लागू होता है । यह सारी आवश्यकतायें तो वह उम्र माँगती ही है ।”

“ मेरे पास एक बच्चा था ।”

“ आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया ।”

“ मैंने उन सबका दमन किया ।”

“ क्यों ?”

“उस बच्चे का भविष्य था , उसके पिता के अरमान थे , मेरे भी थे । दमन आवश्यक था उसके भविष्य के लिये ।”

“ आंटी , जो दमन आपने एक व्यक्ति के लिये किया और जिसका कोई खास परिणाम इस समाज को न मिला अगर वही दमन समाज के लिये किया गया होता तब”

आंटी चुप हो गयी ।

“ तुम क्या कहना चाहते हो ।”

मैं चुप हो गया ।

“ तुम क्या करना चाहते हो ?”

मैं शांत था उसकी ओर देख रहा था ।

“ क्या तुम एक समाज - सुधारक का चोगा पहनना चाहते हो ।”

“ नहीं , मैं कोई चोगा नहीं पहनना चाहता । मैं समाज में एक परिवर्तन लाना चाहता हूँ ।”

“ क्या यह सेवायें परिवर्तन ला सकती है ?”

“ नहीं ।”

“ तब ?”

“ मैंने इसीलिये पिछले साल आईआरएस की सेवा अस्वीकार की थी ।”

“ तुमने अस्वीकार नहीं किया था , तुमने सेवा ज्वाइन करने की प्रक्रिया को मुल्तवी किया था । तुम शब्द कुछ भी इस्तेमाल करो पर हक्कीकत यही थी जो मैं कह रही ।”

“ हाँ, तकनीकी तौर पर आप सही हैं ।”

“ अगर यह तकनीकी तौर पर है तब वास्तविकता क्या है ?”

“ मैं आईआरएस की नौकरी नहीं करूँगा ।”

“अगर आईएएस हो गये तब ?”

“ वह भी शायद न करूँ या कुछ समय बाद छोड़ दूँ ।”

“ यह बात तुमने प्रतीक्षा को बताया है ?”

“ नहीं ।”

“ क्यों ?”

मैं शांत हो गया पर अंदर एक तूफान उठने लगा ...

“ अनुराग तुम लोगों का यह लगाव - स्नेह - प्रेम - मुहब्बत शब्द चाहे जो प्रयोग करो , यह कोई सत्यवान - सत्यवती का लगाव - प्यार नहीं है । यह एक भौतिक धरातल पर जीवन की सहूलियतों को ध्यान में रखकर एक सहज जीवन की मंशा से बनाया जा रहा संबंध है । आप जीवन की भावी योजनाओं को उसे बता कर उसको फ़ैसला करने दो । उसको यह नहीं पता है कि आप भविष्य में क्या करने जा रहे हो और वह एक रुमानी ख़्यालात के साथ आपके जीवन में प्रवेश कर रही पर एकाएक उसे लगे कि जो जीवन मैंने कल्पित किया था वह एक मृग मरीचिका है तब जीवन नारकीय हो जायेगा , तुम्हारा भी और उसका भी ।

“ मुझे खुद नहीं पता मैं कल क्या करूँगा ।”

“ तुम अपनी दिमाग़ी अस्थिरता ही बयान कर दो , उसे यह नहीं पता होगा कि तुम कितने अस्थिर चित के व्यक्ति हो , हलाँकि मैंने उसको कुछ आभास

तुम्हारे इंटरव्यू वाले दिन दे दिया था पर मुझे नहीं लगता उस पर उसने कोई तरजीह दी होगी । वह इस समय एक दूसरे विश्व में है और उसे तुम्हारी क्रान्तिधर्मिता भा रही पर इसकी संभावना कम है कि तुम्हारी क्रांतिकारिता भी उसको सुहा जाये , वह भी तब जब फ़ैसला तुम्हारा एकतरफ़ा होगा बगैर किसी और को विश्वास में लिये ।”

“ मैं क्या कहूँ ?”

“ अनुराग , अब इस पर मैं क्या कहूँ ? मैंने कोई नायक - नायिका का प्रेम तो किया नहीं । संस्कारों से पति प्राप्त हुआ वह देवतुल्य था मैं उसमें रम गयी । अब मुझको क्या पता विवाह पूर्व की सौदे बाज़ियाँ कैसी होती हैं । तुम लोग आज के लोग हो , यह काम बेहतर कर सकते हो ।”

मैं सोचने लगा , मुझे लगा , आंटी ठीक ही कह रही है । मैं कल बता देता हूँ उससे । पर क्या बताऊँगा , अभी कुछ निश्चित तो है नहीं आगे क्या करूँगा । अभी रिजल्ट आया नहीं , वह आ जाने के बाद ही सोचूँगा । आईएएस की परीक्षा अब दे नहीं सकता । मेरी रैंक अगर बढ़कर आईएएस की हो गयी तब आईएएस की सेवा में जाने का अवसर होगा नहीं तो आईआरएस । एमए की परीक्षा भी है , वह परीक्षा देनी ही है । हिंदी में आगे काम करना है । एमए टॉप कर जाऊँ , आगे रिसर्च कर लूँ तब जीवन में कुछ और द्वार खुल सकते हैं , एक साहित्यिक तौर पर कार्य करने का अवसर प्राप्त हो सकता है । यूजीसी की जेआरएफ की भी परीक्षा देनी ही है । अगर आईएएस में नहीं गये या कुछ साल बाद छोड़ दिया तब यह डिग्री मदद करेगी । यह सब बता देता हूँ , अगली पूरी योजना बता देता हूँ । एक पारदर्शी जीवन बेहतर होता ही है । एक दूसरी आवाज़ भी अंदर से उठी कि अगर वह अभी से कहने लगी यह नहीं वह करो , वह मेरी बातों पर सवाल - जवाब करने लगी तब ?

मुझे शांत देखकर आंटी ने पूछा , ” क्या सोच रहे हो ?”

“ कुछ नहीं आंटी , आपने कई प्रश्न मस्तिष्क में उत्पन्न कर दिये हैं और जो एक सहज रूमानी कथा थी वह संश्लेषण प्रक्रिया से गुजर रही है । मुझे यह लग रहा है कि बहुत कठिनता है जीवन के आने वाले समय में । “

“ क्या है वह संश्लेषण प्रक्रिया ?”

“ आंटी जब समस्या आयेगी तब देखेंगे , अभी से सब क्या कहना - सुनना जब पता ही नहीं निर्णय क्या होने वाला है । पहले परिणाम आ जाये तब देखेंगे ।”

“ यही बता दो कि आईएएस में नहीं हुआ और आईआरएस में जाना पड़ा तब नहीं जाओगे ।”

“ यह भी अंतिम रूप से निश्चित नहीं हुआ है ।”

“ तब ठीक है , जब सब अनिश्चित है तब इसको भी अनिश्चित रहने दो ।”

आंटी ने बात बदल दी । वह ऋषभ की कहानी सुनाने लगी । वह यहाँ आयेगा तब क्या करेगा ? उसके पास पैसे की तो कोई समस्या है नहीं । वह तो एक जीवन की आवश्यकताओं से अधिक का धन अर्जित कर लिया है पर वह किसी उद्देश्य से वापस आ रहा । कुछ ख़ास वह बताता नहीं । उसके व्यक्तित्व में एक गांभीर्य है , जब तक चीजें एक परिणति की ओर न बढ़ने लगें वहन कुछ नहीं बताता । तुमसे मिलने जायेगा ही अगर तुम न आये । तुम पूछना , तुमको शायद बता दे । ”

“ आंटी वह जो भी करेगा अच्छा ही करेगा । वह मेरी तरह भावावेश में निर्णय लेने वाला व्यक्ति है नहीं । उसके पास बहुत परिपक्वता है । ”

कुछ देर और बात करके आंटी को शुभ रात्रि कहकर मैं अपने कमरे में वापस आ गया । मैं सोचता रहा कि क्या करूँ । अंत में निर्णय किया कि उसको यह बता देता हूँ कि अगर आईएएस में नहीं हुआ तब मैं सिविल सर्विसेज़ ज्वाइन नहीं करूँगा, आईएएस में होगा तब सोचूँगा और मेरे लिये यह सेवा जीवन का एक पड़ाव मात्र है , कोई अंतिम लक्ष्य नहीं । मैं इसको कुछ साल बाद त्याग दूँगा , यह भी एक बड़ी संभावना है । मेरी आँख लग गयी और रात्रि के स्वप्न में प्रतीक्षा आ गयी । प्रतीक्षा और मेरा संवाद आरंभ हो गया । मैं कह रहा हूँ कि मैं आईएएस की नौकरी नहीं करूँगा पर वह समझा रही , यह नौकरी आसानी से नहीं मिलती । बहुत यत्न के बाद प्राप्त होती है इसे मत छोड़ो । मैं कह रहा मैं छोड़ दूँगा । वह कह रही , “मेरा क्या होगा , मेरे अरमानों का क्या होगा , मैं कैसे रहूँगी एक आम जीवन में । मैं तुम्हारी तरह तकलीफ़ सहने की आदी नहीं हूँ । मैं बहुत शानों - शौक़त से रही हूँ , मुझसे गर्मी - सर्दी कुछ बर्दाश्त नहीं होती । ”

“नहीं प्रतीक्षा तुमको मेरी शर्तों पर मेरे साथ रहना होगा ।”

“ तुम मेरी शर्तों पर क्यों नहीं रह सकते । हर बार स्त्री ही क्यों बलिदान दे , पुरुष क्यों नहीं दे सकता । यह सेवा जीवन में कार्य करने का अवसर देती है वह भी सारी सुख- सुविधाओं - मान- सम्मान के साथ । यह बेवजह का त्याग क्यों ? जो तुम करना चाहते हो वह यहाँ रहकर भी किया जा सकता है । मेरे भैया ने कितना कार्य सेवा में रहकर किया है तुम भी कर सकते हो , तुम ज्यादा कर सकते हो अपनी संवेदनशीलता के कारण । तुम्हारी संवेदनशीलता तुम्हारा एक एसेट है , तुम्हारी एक अक्षय निधि है । यह मत करो अनुराग । मैं कहाँ जाऊँगी , मैं कैसे जीवन में रहूँगी ? यह बँगला - गाड़ी - नौकर - चाकर - मान - प्रतिष्ठा बहुत आवश्यक है जीवन के लिये और वह भी जो आसानी से मिल रहा । जो ईश्वर का वरदान प्राप्त हो रहा उसको मत टुकराओ । ”

“प्रतीक्षा , मुझे बाध्य मत करो । मुझे मेरा अपना जीवन जीने दो । जो तुम कह रही जीने के लिये आवश्यक है वह मेरे लक्ष्य में बाधक है । मुझे बांदिश में जीवन जीने के लिये मजबूर मत करो ।”

“ अनुराग , तुम भरत की तरह एक सामान्य जीवन जियो । तुम कोई सुविधा स्वीकार मत करो । तुम समाज के लिये कार्य करो पर मेरा और मेरे बच्चों का हक्क तुम मत मारो । यह मत करो ।”

“ प्रतीक्षा , तुमको एक फ़ैसला करना होगा .. अनुराग एक सड़कों पर संवेदनशीलता के साथ या अनुराग एक अहंकार के आवरण के साथ ।”

“ मैं कहाँ कह रही तुम यह आवरण स्वीकार करो । तुम भरत की तरह एक अलग कमरे में सामान्य जीवन जियो और अपने स्वप्न के लिये कार्य करो । तुमको नहीं पता यह सेवा बेहतर कार्य करने का कितना अवसर देती है । मैंने बचपन से देखा है , मेरा यक़ीन मानो तुमको कोई पछतावा नहीं होगा । तुम्हारा बहुत नाम होगा । तुम्हारी यश- पताका हर ओर लहरायेगी ।”

“ नहीं प्रतीक्षा ”

मैं सड़कों पर चल रहा प्रतीक्षा पीछे से चीख रही .. “ अनुराग यह मत करो तुम ”

एक श्वेत वेशधारी लोगों का समूह जा रहा , उसमें से एक कह रहा वह चीख मत सुनो । यह चीख समाज विरोधी है । उसको त्याग दो अगर जीवन में कुछ करना है । मैं उस समूह में शामिल होकर आगे बढ़ने लगा । वह समूह शांत-चित चल रहा था । कुछ देर बाद उसी समूह में से एक ने कहा वह आवाज़ अब तुमको सुनायी नहीं देगी । वह स्वार्थ था , वह जा चुका है । तुम अपनी राह पकड़ो । श्वेत वस्त्र धारण करो , अहंकार विहीन बनो , जगत कल्याण के लिये सन्दूँद रहे । यह सब लोग तुम्हारी ही तरह आये थे और धीरे - धीरे सब अपनी राह पकड़ेंगे । यह कायनात तमाम समस्याओं के बावजूद भी सुचारू रूप से चल रही है तो इन श्वेत वेश धारी लोगों के समूह के कारण , तुम्हारा इस विश्व में स्वागत है । तुम्हारी राह दुर्गम है । तुम सामने की पहाड़ी पर चढ़ो , वहाँ से तुमको रास्ता दिखेगा । वहाँ पहाड़ी पर तुमको एक वृद्ध मिलेगा वह तुमको दीक्षित करेगा । मैंने उसके दिये श्वेत वस्त्र को अपना अधोवस्त्र बनाया और पहाड़ी पर चढ़ने लगा ।

इतने में आंटी की आवाज़ आयी ,” अनुराग तुम्हारी चाय ।” मैं जग गया । मैं बैठकर सोचने लगा और अपने स्वप्न में खो गया ।

तक़रीबन ग्यारह बजे प्रतीक्षा आ गयी । आज उसने काली सलवार और चिकन का सफेद कुर्ता पहना हुआ था । उसने दुपट्टे को बहुत क़रीने से गर्दन के चारों ओर लपेट कर वक्ष तक गिराया हुआ था । आज उसने आँखों

पर काले चश्मे लगाये हुये थे । मैं अंदर अपनी पैकिंग कर रहा था । पैकिंग के लिये कुछ खास न था किताबें और पेपर की कटिंग्स ही ज्यादा थीं । मैंने सारा सामान अटैची में ट्रूसें ऐसा लिया था, सामान अटैची में ट्रूसेंने के बाद अटैची पर चढ़कर उसको दबाकर बंद कर दिया । आंटी की आवाज़ आयी , ” अनुराग , प्रतीक्षा आ गयी है, आ जाओ । ”

मैं बाहर निकल कर आया और प्रतीक्षा का सौन्दर्य देखने लगा, गौर वर्ण्य, ऊँचा क्रद, काला चश्मा, श्वेत वस्त्र में वह किसी अप्सरा ऐसी दिखी मुझे । उसने चश्मे को चढ़ाकर बालों के ऊपर लगा लिया ।

आंटी ने कहा , ” बैठो पानी लाती हूँ । ”

आंटी अंदर चली गयी और शीघ्र ही पानी का ग्लास लेकर आ गयी । आंटी ने पानी का ग्लास रखते हुये पूछा , ” क्या लोगी ? ”

“ कुछ नहीं आंटी । ”

“छाछ पियोगी ? बनाती हूँ । ”

“ठीक है आंटी । ”

आंटी के जाते हाँ मैंने सोचा कि मैं कह ही देता हूँ बात अपनी । एक मानसिक शांति हो जायेगी नहीं तो उद्वेलन चलता रहेगा

“ प्रतीक्षा , एक बात कहूँ ? ”

“ दो बात कहो , बात ही तो सुनने आयी हूँ । कुछ नज़म गढ़कर कहो तो और अच्छा है । ”

मैं शायद आईआरएस की सेवा न करूँ । ”

“ वह करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी । तुम टॉप पचास में होंगे । ”

“अगर न हुआ तब ? ”

“ यह हो ही नहीं सकता । ”

“ अगर हो गया तब ? ”

“ यह बोरिंग बात न करो अनुराग , इसमें कोई आनंद नहीं । यह नौकरी - वौकरी की बात छोड़ो । यह बताओ कैसी मैं लग रही , मैंने बहुत जतन से अपने को तैयार किया है । ”

मैं उसको देख रहा था ।

“ अनुराग , अपनी तारीफ करवाने के लिये भी अनुरोध करना पड़ रहा वह भी उससे जो लफ़ज़ों का बेताज बादशाह है और जिससे मिलने के लिये मैंने यत्न किया । ”

“ क्रसीदे कहकर गढ़वाये नहीं जाते । परेम उन्मुक्त होता है । परेमी कोई चारण नहीं होता । परेम निश्चल होता है । जानती हो परेम का जन्म कहाँ से हुआ है ?”

“ कहाँ से ?”

“माँ से । पहली बार परेम की अभिव्यक्ति वहीं से हुई है । मानव का जब पदार्पण हुआ शारीरिक आवश्यकताओं ने नर- नारी का संयोग करा दिया । उस संयोग में एक वासना होने की संभावना भी होगी पर जब बच्चे का जन्म हुआ तब निःसंदेह परेम की अभिव्यक्ति हुई होगी । एक गैर इरादतन मोहब्बत माँ - बच्चे के बीच पनपी होगी जिसके पाश में पिता भी आया ही होगा । तब यह सब संस्कार न रहे होंगे , विवाह संस्था का जन्म न हुआ होगा । इस विवाह संस्था का स्थापन क्यों हुआ होगा ?”

मैं शांत होकर उसको देखने लगी , उसने पूछा

“ क्यों हुआ होगा ?”

“ मुझे नहीं पता ।”

“ अब महान विचारक अनुराग शर्मा को ही नहीं पता तब हम सब छुदर प्राणियों का क्या होगा , बताओ । अच्छा यह बताओ यह सब कहाँ से पढ़ते हो ?”

“ हर चीज़ पढ़ी जाये यह तो ज़रूरी नहीं है । मनन करना चाहिये । मनन जीवन का मूल है । जानती हो लेखक कौन होता है ?”

“ हाँ , जो लिखता है । ”

“ नहीं , जो सोचता है , मनन करता है । लिखने वाला तो एक स्टेनो सदृश है । वह काम तो कोई भी कर सकता है जिसको वर्णमाला संयोजन का ज्ञान है । लेखन वर्णमाला का संयोजन मात्र नहीं है । बगैर विचार के लेखन आत्मा विहीन होता है और वह किसी को आकर्षित नहीं कर सकता । लेखन एक प्रवाह है जो बरबस बाँधों को तोड़ देता है । यह आँसू .. बहते आँसू , यह खिलखिलाती हँसी , मंद-मंद मुस्कान , करोध आँखों को लोहितलोचन करता , अपने आवेग में समाती पथभ्रमित करती वासना , लोभ - अहंकार - करोध के वशीभूत वहशत , सायास - अनायास भय , उमड़ता वात्सल्य , आँखों - धड़कनों में इन्द्रधनुष बनाता शरूंगार यह सब एक लेखन है ।”

“ पर यह भावनायें कमोबेश हैं तो सबमें पर लेखक हर कोई नहीं होता । ”

“ हाँ , हर कोई यह भावनायें रखकर भी लेखक नहीं हो पाता क्योंकि वह मनन नहीं करता , इस आवेग के पीछे के मंतव्य को समझ नहीं पाता । यह मनन परक्रिया एक साधना की माँग करती है । ”

“ यह साधना इरादतन होती है या गैर इरादतन । ”

“ यह गैर इरादतन से आरंभ होती है पर धीरे - धीरे इरादतन होने लगती है ”

“ परेम इरादतन होता है या गैर इरादतन ? ”

“ तुम्हारा सवाल कुछ ऐसा है , मुहब्बत का इरादा होता है या इरादतन मुहब्बत होती है ? मुझे स्पष्ट नहीं पता । ”

“ तुम अपने बारे में बताओ । तुम्हें मुझसे मुहब्बत हुई या मैंने तुमसे करा लिया । अब यह मत कहना मुझे तुमसे लगाव है मुहब्बत नहीं । ”

कोई इरादा मुहब्बत का तो कभी किया नहीं बस यूँ हीं ज़िंदगी से मुहब्बत हो गई । ”

“ क्या मैं तुम्हारी ज़िंदगी हो गयी हूँ । ”

मैं चुप हो गया । आंटी छाछ लेकर आ गयी । वह कुछ देर में जानबूझकर आयी थी । उसने छाछ की दरे रखते हुये कहा , “ तुम सब कुछ इस प्रतीक्षा को ही मत सुना देना , कुछ मुझको भी सुनाओ । प्रतीक्षा , यह पिछले साल बहुत कहानियाँ मुझको सुनाता था नज्म की शक्ल में पर इस बार सारी कहानी तुमको ही सुना रहा । ”

प्रतीक्षा का चेहरा कांतिमय हो गया , लालिमा चेहरे पर आ गयी । इसमें प्रसन्नता और लज्जा दोनों के भाव थे ।

“ आंटी , इनको जब मन आता है तभी कुछ बताते कहते हैं । इनका कहना है अच्छी - ख़राब मिलाकर पाँच हज़ार नज्में - शायरियाँ लिखी होंगी पर सुनाने को कहो तब भाव लेने लेते हैं । ”

“ मुझको तो न बताया कि पाँच हज़ार है । प्रतीक्षा , यह सब इलाहाबादी हैं कुछ सच में झूठ मिलाना इनकी आदत है । तुमको इम्प्रेस करने के लिये कुछ सौ में कुछ हज़ार जोड़ दिया होगा । ”

“ आंटी , मुझे क्या इम्प्रेस करना , मैं तो वैसे ही तारीफ़ में क़सीदे गढ़ती रहती हूँ । ”

“ यह अपनी मार्केट बनाते रहते हैं । इनको एक नशा हो चुका है अपनी प्रशस्ति सुनने का । वह नशा एक ही व्यक्ति उतार सकता है । उस व्यक्ति से मुलाक़ात कई दिनों से हुई नहीं है । हम- तुम - इनके छात्र सब इनको भरपूर अफ़ीम दे रहे हैं । आज रात की दरेन है और कल दिन में नशा अगर न उतरा तब भी कम तो हो ही जायेगा । ”

कौन है वह आंटी ? ”

“ परम परतापी उर्मिला शर्मा । अगर तुम लोगों का संयोग बना तब तुम भी तैयार रहना एक नशाविहीन जीवन जीने को लिये ।”

“ आंटी विचार बदल सकता है इनका ।”

“ समय रहते सही फ़ैसला हो जाये तो अच्छा है ।”

इतने में कामवाली बाई आ गयी । आंटी ने पूछा “ क्या खाओगे तुम लोग ?”

मैं - “ कुछ भी ।”

“ तुम्हारा यह कुछ भी मैं हर रोज़ सुनती हूँ । मैं प्रतीक्षा से पूछ रही ।”

उसने भी कहा , ” कुछ भी ।”

“ वाह क्या ट्यूनिंग है , तुम्हारा भी कुछ भी ।”

आंटी ने बाई से कहा फिरज से सब्जियाँ निकालो मैं आती हूँ । आंटी चली गयी किचेन में । प्रतीक्षा ने कहा , “ अनुराग कैसी मैं लग रही तुमने बताया नहीं ।”

“ बहुत शिद्धत से संवृति या”

“ पहले यह बताओ मैं कैसी लग रही .. थोड़ा काव्यात्मक व्याख्या करना पाँच हज़ार नज़्मों से काश़ज़ को स्याह करने वाले एकाध नज़म मेरे भी हक्क में”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 348

“प्रतीक्षा , तुम्हारे लिये नज़में बिखेर ढूँगा पर पता नहीं कब तक तुम मुझे नज़म बिखेरने दोगी ।”

“ऐसा क्यों कह रहे हो , क्या तुम्हें यह लगता है यह मेरा लगाव समय के प्रवाह के साथ कम होगा ?”

“ नहीं , समय का प्रवाह नहीं परिस्थितियाँ ।”

“ वह कैसे ?”

“ जीवन बड़ा अजीबोग़रीब है , कम से कम अस्थिर चित्त के व्यक्ति के लिये । सारा खिलवाड़ जीवन जानते हो किसके साथ करता है ?”

“ किसके साथ ?”

“जो लीक से हटकर चलने की कोशिश करता है । मेरी माँ पानी पी-पीकर एक आदमी को कोसती है ।”

“ किसको ?”

“एक आईआरएस हैं अशोक तिरपाठी ।”

“ क्यों ?”

“ उन्होंने पिछले साल कह दिया था कि यह सब सेवायें लीक से हटकर चलने वाले व्यक्तियों का स्वागत बहुधा नहीं करती । यह एक रुटीन ढर्ऱे के लोगों, तन्त्र के साथ सामंजस्य बनाने वालों के साथ ही सहलियत से पेश आती हैं । अगर एक बेहतर रुटीन का जीवन जीना है, तन्त्र के साथ रहकर तन्त्र का मज़ा लेना है तब तो ठीक है पर अगर नयी राहों पर चलना है, नयी पगड़ंडियों का निर्माण करनी की ख्वाहिश है तब जीवन सहज तो न होगा, मेरी समझ से । उसके बाद मैंने आईआरएस को त्याग दिया । मेरी माँ बहुत दुःखी हुई । तत्पश्चात् मैं आपके महान प्रतापी भाई से मिला और पाया कि अशोक तिरपाठी सर ठीक कह रहे थे । तुम्हारे भाई सारे कवाल टाउन के ज़िलाधिकारी बनें । इलाहाबाद के कमिशनर बने, हल्ला होता रहता है कि वह लखनऊ के कमिशनर बनेंगे या मुख्यमन्त्री के प्रधान सचिव । एक फ़र्ज़ी किताब छाप मारे, कुछ तुकबंदी ऐसी मैंने करके लिख दी और जन्म हो गया महान साहित्यकार सत्यानंद मिश्र का । अब ऐसे माहौल में मुझे कौन पूछेगा जो कबीर की तरह गा रहा हो, चीटी के पग नुपुर बाजे वह भी साहब सुनता है ।”

“ अपने सालों की बुराई करना हर आदमी को बहुत सुहाता है । अभी विवाह की बात चल ही रही और तुम चालू हो गये । छोड़ो यह बताओ मैं कैसी सँवरी हूँ, तुम्हारे लिये ।”

“ मेरे लिये या अपने लिये ?”

“ वह कैसे ?”

“ कहा उसने

क्या छूता है दिल को तेरे

बता न

मैं अपने लिए सँवरना चाहती हूँ

नहीं सँवारा है मैंने अपने को बरसों से ।”

“ यह बात तो है अनुराग । परेम एक जीवन है । मेरे जीवन के मायने बदल गये हैं । मुझे सँवरने का मन करता है, तुम अगर न भी देखो मुझको तब भी मन करता है सँवरने का, यह सोचकर कि वह देखता तो कैसा लगता उसको ।”

“ अगर मैं देख रहा हूँ तब ?”

“ तब तो देवत्व है । मैं तैयार ही नहीं हो सकती आसानी से । मुझे परफेक्शन चाहिये । मैं कितनी बार अपनी सलवार- कमीज़ बदलती हूँ, आँखों का काजल सँभाल कर लगाती हूँ । मैं हौंठों पर लालिमा लगाती नहीं पर जबसे तुमसे मिलने लगी हूँ रुचि बदल गयी है, जब भी तुमसे मिलने आती हूँ तब ज़रूर लगाती हूँ । मैंने हौंठों की लालिमा के लिये कई अलग- अलग शेड्स तुमसे मिलने के बाद ही दराई किये ।”

“ क्या तुमको लगता है इससे फ़र्क़ पड़ता है ? यह आकर्षित करता होगा ?”

“ तुम शृंगार रस्स का पलीता निकाल देते हो एक लाइन में । किसको सौन्दर्य अच्छा नहीं लगता ।”

“ सौन्दर्य एक आवरण है ।”

“ वह कैसे ?”

“ वह छिपा जाता है अंदर छिपी हँकीक़त को, अक्सर भ्रमित करता है वह । रंग भी एक आवरण है नहीं वह एक फ़रेब है ।”

“ रंग कैसे एक फ़रेब है ?”

“ इन्द्रधनुष क्या है ? आसमान का नीला रंग क्या है ?”

“ क्या है ?”

“ बादलों के कंधों पर चढ़कर आता है यह इन्द्रधनुष, यह एक सराब है । दूर दिखती मृग मरीचिका एक धोखा है जो मृग - हत्या की अपराधिन है और यह दिख रहा आसमान का नीला रंग”

“ क्या है ?”

“ यह भी एक धोखा है ।”

“जीवन में सब एक भुलावा ही है ?”

“ हँकीक़त कुछ भी नहीं ?”

“ है पर वह हम स्वीकार नहीं करना चाहते ।”

“ मुझे भुलावा ही चाहिये .. कोई भुलावा ही सुनाओ “

“दूर वह चाँद खड़ा है झील के ऊपर पहाड़ियों के पार
नीचे पानी में हल्की हल्की तरंगे
जैसे कई साँप चल रहे हों पानी में
चाँद पानी में डोलता हुआ
तू उसमें कहीं खोयी हुई इंतजार में
पीछे खड़ा मैं
तेरी उत्कंठा को झील में उतरे चाँद में देखते हुये ।”

“ अनुराग , ऐसा ही भुलावा मुझे और चाहिये । एकाध और दो ना ... “

मैं कुछ कहता आंटी आ गयी ।

“ दीवानों खाने का क्या विचार है कि पेट भर गया है । प्रतीक्षा तुम अनुराग
का पसंदीदा खाना खाओ आज ।”

“ वह क्या है आंटी ?”

“कढ़ी - चावल और सेंवई ।”

“ ज़र्रर आंटी ।”

हमने खाना खाया । शाम को प्रतीक्षा चली गयी ।

उधर सुबह - सुबह अशोक आहूजा साहब के बँगले पहुँचा । उसने पहुँचने ही
आहूजा साहब चरण चाँपें और बोला , ” अंकल जी इस रमाकान्त को कौन
यहाँ लाया ?”

“ चिंतन सर लेकर आये । पूजा - पाठ के लिये एक आदमी चाहिये होता था ।
इसी को रख लिया ।”

“ आपने अनुराग सर से पूछा था ?”

“ नहीं , कुछ खास बात ?”

“ अंकल आप किसी से ज़िकर मत करियेगा , यह पुलिस से भागा हुआ है ।
इसकी पुलिस तलाश कर रही है ।”

“ क्यों भागा है , क्या यह कोई अपराधी है ?”

“ नहीं अंकल जी यह बराह्मण है अब इसको अपराधी कैसे कहें पर गलत संगति में गलती हो जाती है ।”

“ क्या यह गलत संगति में रहता है ?”

“ अंकल जी यह गाँव - देश में ज़मीन - जायदाद के झगड़े होते रहते हैं । इसके यहाँ भी थे । यह आदमी सज्जन टाइप था पर ज़मीन के झगड़े में एक बार गोसाइयों ने इसको बलभर थूर दिया था । तबसे बदले की आग में जल रहा था । कुछ असामाजिक तत्वों के साथ रहने लगा और एक दिन गलती हो गयी ।”

“ क्या गलती हो गयी ?”

“यह उन लोगों के साथ गया । लगता तो नहीं है इसने मारा होगा पर एक आदमी कट्टे की चपेट में आ गया । यह तो शायद न मारा हो पर आदमी तो मर ही गया और इस पर हत्या का मुक़दमा दर्ज हो गया और फ़रार होकर आपके यहाँ छिपा है । अब पुलिस आ गयी यहाँ तब कल शाम को सब लड़के - लड़कियाँ इलाहाबाद के ही थे । वह अनामिका इसी के गाँव की है और बहुत कुटनी है । उसके पेट कोई बात पचती नहीं, वह जंग- अंदोर कर मारेगी ।”

“ यह जग - अंदोर क्या होता है ?”

“ अब अंकल जी मेरा और अंग्रेजी का पैदाइशी बैर है । पर शायद अंग्रेजी में इसको वर्ड- शाउट कहेंगे ।”

आहूजा साहब ने आवाज़ देकर अपनी पत्नी को बुला लिया । शरीमती आहूजा थोड़ा डरपोक थीं । वह तो हत्या- भागा हुआ आदमी - पुलिस आयेगी सुनकर ही परेशान हो गयीं । अशोक छँटा हुआ आदमी था । वह समझ गया कि अब काम हो जायेगा । उसने कहा ,” आंटी जी , घबराइये मत । कोई आपने तो यह कृत्य किया है नहीं । यह किया तो उसने है । आप के ऊपर तो बस एक हत्यारे को छिपाने - शरण देने का ही आरोप है । इस आरोप की सजा कोई हत्या के तरह की आजीवन कारावास की तो होती नहीं । साल - दो साल के दंड वाली सज़ा होती है , वह भी मुक़दमे के जिरह - बहस मे टिकती नहीं । मुक़दमा - उकदमा चलेगा , सब देख लिया जायेगा आंटी जी । यह अनुराग सर हैं न , वह सारे खुराफ़त में माहिर हैं । वह सब सँभाल लेंगे । “

“ बेटा , हमको क्या पता , यह चिंतन सर ने कहा और मैंने रख दिया ।”

“ आंटी जी , चिंतन सर को भी यह शायद पूरी तरह न पता हो । यह सारा वाक़्या चिंतन सर के एकेडमी जाने के बाद हुआ ।”

“अब क्या करें ? इसको हटायेंगे तब अनुराग भैया को अच्छा न लगेगा । तुम तो जानते ही हो अनुराग - ऋषभ - शालिनी कितने नज़दीक हैं । “

“ आंटी जी उनसे अगर आप ने पूछा होता तब वह कभी न कहते इसको रखो । वह जानते हैं कि यह जब पैदा हुआ था तब पाँच मन का था । इस पाँच मन में कुछ किलो इसका वजन था बाकी इसकी बेवकूफ़ी थी । मैंने कल बताया तब उन्होंने ही कहा कि इसको हटवाओ ।”

“ यह कब कहा ? ”

“ कल कहा अंकल जी । आप चाहें तो पूछ लें ।”

श्रीमती आहूजा - “ बेटा अब तुमने कह दिया तो बात ख़त्म । अनुराग भैया ने कहा ही होगा । पर क्या कहें इससे ? ”

“ आंटी जी , कह दीजिये हम तीर्थयात्रा पर निकल रहे और आप जाओ । उसे अभी बस पर चढ़ा दीजिये , काम ख़त्म और देर रात तक इलाहाबाद होगा ।”

“ ठीक है बेटा ।”

शाम को प्लेटफ़ार्म पर बड़ी गहमा - गहमी थी । सब आज की ही दरेन से जा रहे थे । स्टेशन पर दिनेश ने परेम नंदन से कहा , “ सर अभी नहीं आये ? ”

अशोक - “ भाई ऊ वीआईपी हैं , पहले आयेंगे तब भाव कम हो जायेगा । अनामिका टीटी को हड़का रही है । वह आज ही आईआरटीएस हो गयी है ।”

“ क्यों हड़का रही है ? ”

“ मोटाई चढ़ गयी है ।”

“ वह तो पतली है मोटी कहाँ है ? ”

“ तुम दिनेश अखाड़े के ऐसे पहलवान हो जो बगौर कुश्ती लड़े हुत्तु- हुत्तु करके थका दो । कुछ लोकोवित- मुहावरे भी होते हैं ।”

“ यह क्या होता है ? ”

“ तुमको लोकोवित-मुहावरा नहीं पता ? ”

“ वह तो पता है पर इसको मोटाई कैसे चढ़ गयी है ? ”

“ सारी मोटाई का कारक मैं हूँ ? ”

“ यह कारक कहाँ से आ गया ? ”

“ बहुत बड़े बुड़बक हो यार । कारक मैं ऐसे हूँ कि इनका प्रारम्भिक परीक्षा में फेल होने का कीर्तिमान था । मैं सिफारिश किया , सर के यहाँ पढ़ी । अब यह हर विभाग के मातहतों से उस विभाग के अफ़सर की तरह बतियाती है । यह झगड़ रही कि मेरा बर्थ लोअर कर दो । भाई , कम्प्यूटर चार्ट में जो बर्थ हो

गयी वह अब टीटी कैसे ठीक कर दे पर कह रही नीचे वाले को ऊपर करो ,
मैं आईएएस का इंटरव्यू देकर आ रही हूँ । आने दो रिजल्ट सारी मोटाई उत्तर
जायेगी । ”

“ तुम्हारी कौन सी सीट है ?”

“ मेरी तो नीचे वाली है , मैं तो चार्ट के समय ही काम लहा लिया था ।”

“ अब क्या होगा ?”

“ सर आयेंगे अभी । उनकी सीट नीचे है , वह कहेंगे ले लो । यह कहेगी नहीं
सर , फिर ड्रामा होगा थोड़ी देर । एक बात बतायें ?”

“बताओ ।”

“ सर भी लड़कियों को बहुत भाव देते हैं ।”

“ वह क्यों ?”

“ अब क्या - क्यों - कैसे - कब करके पागल मत कर दो ।”

इतने में रमाकान्त वहाँ पर दिख गया ।

अशोक ने उसको देखकर कहा , “ यार , ये ससुरा अभी गया नहीं । ”

दिनेश - “ कौन ?”

“ तुम ऐसा करो यह रेल हम पर चढ़ा दो । एक तो वैसे दिमाग गर्म है अब
तुम्हारा क्या-कब - कैसे - कौन - कब चालू हो गया । ”

उसने रमाकान्त को बुलाया और पूछा , ” यहाँ कैसे ?”

“ भैया क्या बतायें , हमको काम से निकाल दिया । हमको बस पर बैठा दिया ।
बस पर हमका घुमरी आवत हआ और पूर रस्ता उल्टी । हम बस से उतारि के
पराई चले और इहीं दिना भरे से बैठा हई ।

“टिकट लिया ?”

“चालू टिकट लेहे हई । कौनौ तरह चला जाब । ”

“ चिंता न करो , तुमको अपने सीट के नीचे पेपर बिछाकर सुला देंगे । ”

भैया , टीटी मानि जाये ?”

“ पचीसों आईएएस दरेन पर हैं , अनुराग सर है । यहीं टीटी को सस्पेंड करा
देंगे उसकी सारी मस्ती झार जायेगी । ”

“ भैया हमका काहे निकालने काम से ?”

“ इसमें एक गेम है ।”

“ का गेम बा ?”

“ आहूजा है बड़ा जजमान उहो निरबंसी ।”

“ बिटिया - दमाद त बा ।”

“ ऊ सब विदेश से नहीं आयेंगे । चिंतन सर महा हरामी है । वह ले आ रहे अपने सगे भाई को । अब तुम बनाये जजमानी पर तुमको थोड़े देंगे वह । इस पर क़ब्ज़ा खुद करेंगे । उनका भाई आयेगा फिर करेंगे यह लोग क़ब्ज़ा । हक़ तुम्हारा है जजमानी पर ले जायेंगे वह ।”

“ हम का करी ?”

“ लड़ लोगे उनसे ?”

“ अब मजबूरी होये तअ लड़ने पड़े ।”

“ तुम चलो एस- 3 के सीट नंबर 36 पर बैठो मैं आता हूँ ।”

अशोक ने आवाज़ दी ,

“अनामिका मैडम आईआरटीएस ज़रा टीटी को बोलो चाय- पानी का इंतज़ाम कराये ।”

“ मैं क्यों बोलूँ, तुम बोलो । तुम तो आईएस टॉप करोगे ।”

“ तुम्हारे मुँह धी - शक्कर । नक्सुङ्हे लोगों की ज़बान बहुत फलित होती है ।”

“ क्या बोला ?”

“ इसके तो यार सींग ही सींग है । आने वाले समय में माघ मेला में साधुओं की तादाद बढ़ेगी । इसका पूरा ससुराल एक साथ साधू बनेगा , एक अलग सम्प्रदाय बनायेगा ।”

“ क्या बोला ?”

“ देखो अनुराग सर आ गये । चलो थोड़ा तेल - पानी मारते हैं , इनको खुश रखना ज़रूरी है ।”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 349

“ सर , लाइये आप अपनी अटैची दीजिये , हम लोग किस दिन के लिये हैं ।”

“ नहीं अशोक , आदमी को अपना काम खुद करना चाहिये ।”

“ सर , अब आपके पास नौकर- चाकर - अर्दली- मातहत की भरमार होगी ।
अब आपको क्या करना सर ।”

“ अशोक , इन नौकरियों को एक नौकरी की तरह ही समझना चाहिये । जो इन सेवाओं का ग्लोरीफिकेशन है , जो इसमें एक देवत्व का आरोपण है वह व्यक्ति को बलबन की प्रवृत्ति की ओर ले जाता है । यह मात्र एक सेवा है जिसमें परंपरा से समाया गर्व है और साथ ही कुछ जीवन जीने की बेहतर सुविधायें प्राप्त हो जाती है , बस यही सोचकर इस सेवा में प्रवेश करो और लोगों के लिये कार्य करो । पूरे इलाहाबाद शहर में एक पागलपन है जो व्यक्ति को आने वाली सत्ता की आशा से मदांध किये हुये है । हर एक को लगता है खुल जा सिमसिम का एक मन्त्र हैं जो जून के पहले सप्ताह में रिज़ल्ट निकलते ही प्राप्त हो जायेगा और उसके बाद का जीवन इन्द्र की तरह का होगा । यह इंटरव्यू के समय तैयार किया गया मसाला कि हम देश सेवा और समाज के लिये कार्य करेंगे , हम यह सेवा कुछ

उच्च आदर्शों को मनःमस्तिष्क में रखकर करना चाह रहे , सब रिज़ल्ट निकलने के दिन से ही दिन धूल- धूसरित होने लगता है । तुम लोगों को याद होगा मैं कहा करता था , *I want to hand over best hands to the nation ...* ”

“ पूरा सर याद है ।”

“ यह क्या है ? यह मात्र एक श्लोगन ही नहीं है । मैं वस्तुतः चाहता हूँ कि एक बेहतर क्रिस्म के लोग सेवा में जायें जिनमें संवेदनशीलता हो , समाज - सापेक्षिक व्यक्ति इस्पाती दरवाजे में प्रवेश करे । तुम सब कमज़ोर घरों से आते हो और तुम्हारी संवेदनशीलता एक उच्च वर्गीय घरों के व्यक्ति के तुलना में अधिक होने की संभावना है क्योंकि तुम लोगों ने जीवन की कठिनाइयों को नज़दीक से देखा है ।

मैंने अशोक की तरफ मुस्कुरा कर कहा और तुम ..”झूठ बोलने में माहिर हो ।”

“ ऐसा नहीं है सर । थोड़ा बहुत बोल लेते हैं ज्यादा नहीं । थोड़ा झूठ बोलने में सर मन बहल जाता है , हर दम सच बोलने में जीवन नीरस हो जाता है । मेरा झूठ सर बस जीवन को सरस बनाने का प्रयास है ।”

“ तुम्हारे सच - झूठ की लस्सी में झूठ का प्रतिशत कितना होता है ?”

“ सर वह बस मन बहलाने भर का है । मैं बहुत समय तो आपके साथ रहता हूँ । अब गुरु से तो झूठ बोल नहीं सकता सर । सर , आपसे कभी अगर कुछ गलत कह दिया तब बहुत पश्चात्ताप होता है । सबसे मुश्किल है जीवन में पश्चात्ताप के साथ जीना । सर , किसी अपराधी को कोई पीड़ा दंड से नहीं

होती उसे पीड़ा पश्चात्ताप से होती है । यह दुर्दान्त अपराधी पैदाइशी दुर्दान्त नहीं होते बल्कि यह समय के साथ बन जाते हैं क्योंकि यह संवेदनाविहीन होते हैं और एक संवेदनाविहीन व्यक्ति पश्चात्ताप नहीं करता । जो पश्चात्ताप नहीं करेगा वह दुर्दान्त बनेगा ही क्योंकि धीरे- धीरे उसके अंदर का विवेक ख़त्म होने लगता है । सर , मैं एक संवेदनशील गुरु का चेला हूँ जिसकी सबसे बड़ी निधि .. अक्षय निधि संवेदना है । हम सबको आपने पढ़ाया ही नहीं बल्कि एक बेहतर व्यक्ति बनने के लिये भी प्रेरित किया है । मैंने आपके सानिध्य में जो कुछ भी सीखा - पाया उससे मैं एक संवेदनशील प्राणी अवश्य बना हूँ । सर , मैं ही क्यों यह सबके साथ हुआ है ।”

“ और यह अनामिका ?”

“ सर यह तो संवेदना के माउंट एवरेस्ट पर रहती हैं । कुछ भी बोल दो जैसे हजार वोल्ट का करेंट लग गया हो इनको । इनके शरीर के खून में रेड ब्लड सेल्स नहीं संवेदना ही बहती है । इनके खून का रंग लाल हीमोग्लोबिन से नहीं संवेदना की अतिरेकता से हुआ है , लाल - लाल संवेदना ।”

इतना बहुत था अनामिका के लिये । यह कहो दरेन चलने का वक्त हो गया था नहीं तो वाक- संघर्ष हो ही गया था । पर अनामिका ने कहा ,” सर , मैं इलाहाबाद में बताऊँगी इनको , क्या होती है लाल - लाल संवेदना ।”

दरेन की सीटी बजी , बत्ती लाल से हरी हुई दरेन प्लेटफ़ॉर्म नंबर आठ से हौले - हौले आगे बढ़ने लगी । जैसे ही प्लेटफ़ॉर्म से दरेन निकली होगी अशोक ने अपना बिस्तरा लगाया और विष्णु मुद्रा में लेटकर रमाकान्त से कहा कि यहीं नीचे ज़मीन पर पेपर बिछा कर लेट जाओ ।

“भैया टीटी पेनल्टी लगाई दे । हमरे पास रिजर्वेशन बा नाहीं ।”

“ लूट-पाट किया होगा आहजा के यहाँ आरती - वारती का पैसा तो ख़ब मिला होगा । कुछ महिनवारी पार्टी होगे , दे देना पेनल्टी ।”

“ भैया , आरती के तो पैसा मिलत रहा पर महिनवारी के हिसाब भैयाऊ करत होइहिं , हमका तअ कुछ न पता बा और न मिला ।”

“ मतलब तुमको कुछ हर महीना नहीं मिलता था ।”

“ नाहीं भैया ।”

“ क्या मिलता था तुमको ?”

“भैया आराम बहुत रहा । आरती के पैसा मिलत रहा , खाई - पियई - रहई के बहुत सुविधा रही । एक बड़ा सा कमरा भगवान के मंदिर के बगल रहा उहीं में हम रहते रहे । स्टाफ़ के खाना बनत रहा ओहमें हमहूँ खात रहे , जौन चाहअ तौन खा । एक महाराज आवत रहत रहा उहै बनावत रहा भोजन । शालिनी

जी कहे रहिन हमसे कि अमेरिका लै चलब पर सब नसाई गवा । काहे हटायेन हमका ?”

“ इस दुनिया में पापियों की कमी है नहीं । कोई पापी हटवाया होगा ।”

“ भैया उ पापी के नरको में जगह न मिले ।”

अशोक बिस्तर पर से उठ गया और बोला वापस लो यह बात ।”

“ काहे भैया ? ”

“ पहले वापस लो यह बात , तुम सब जजमानी के ब्राह्मण हो तुम्हारा शाप कभी भी किसी को भी लग सकता है ।”

“ भैया जे ऐसन करे होये ओका पाप लागब ज़रूरी बा ।”

“ चिंतन सर तुमको पढ़ाये- सिखाये साथ रखें उनको ऐसा शाप मत दो । पहले शाप वापस लो , तुम सब जजमानी वालों से ईश्वर दूर रखे ।”

“ चलअ भैया बात वापस लेइत है पर इ बतावअ..”

“ क्या बतायें ? ”

“ ई सारा खेल ओनकर बा ? ”

“ और का ? ”

“कैसे पता ? ”

“आहूजा साहब के पास कल चिंतन सर का फोन आया और तुमको उसी दिन निकाल दिया गया , अब यह एक मात्र संयोग भी हो सकता है पर शक की गुंजाइश भी है ।”

“ तोहका कैसे पता ? ”

“हम गये थे आहूजा साहब के पास कार देने के लिये धन्यवाद देने । उसी समय फोन आया था । साथ में दिनेश भी थे , दिनेश बताओ ।”

“ कब आया था ? ”

“ यार दिनेश तुम कब - कहाँ - कयूँ - कैसे करके पगलवा दोगे । जब तुम कब - कहाँ - कयूँ - कैसे सोच रहे थे उसी समय आया , चलो तुम आराम करो । सुनो रमाकान्त अब तुमको चिंतन सर से लड़ना होगा । हम बुद्धि देंगे और तुम लड़ना । बैल की तरह मत लड़ना दिमाग़ से लड़ना ।”

“अनुराग भैया ओनके साथ , ओ खुद आईआरएस , ओनकर कुंडली गुरु की माया .. हम कैसे .. ”

“ तब लात खाओ , लतियाये जाओगे ज़िंदगी भर । वह सब हड्डप जायेगा । वह बहुत बड़ा मायावी है । वह छल करते समय बहुत शक्ति अर्जित कर लेता है । सुनो , किसी से बताना मत ।”

“ हाँ , भैया ।”

“ अनुराग सर”

“ भैया आगे बोलअ ।”

“नहीं तुम कह दोगे ...”

“नाहीं भैया केहू से न कहब ।”

“अनुराग सर लग चुके हैं ।”

“ कहाँ लग चुके हैं ?”

“ चिंतन सर के पीछे ।”

“ मतलब ।”

“ बहुत बेवकूफ़ हो यार , तुम नहीं लड़ पाओगे ।”

“भैया अब लड़े के सिवाय चारा बा का ।”

“ तो सुनो ..”

“ हाँ भैया ।”

“ अनुराग सर चिंतन सर को तबाह कर देंगे ।”

“ कैसे करहिं भैया । दुझनौ लोग आईआरएस हैं ।”

“ एक चाल चली जा रही है ।”

“ का चाल बा ?”

“ चिंतन सर की राजनीति में रुचि है ?”

“ बहुत बा , पगलान हयेन चुनाव लड़े बरे ।”

“ बस .. चिंतन सर से दिलवायेंगे नौकरी से इस्तीफ़ा । चिंतन सर लड़ेंगे चुनाव , उनको चुनाव हरवा देंगे । नौकरी भी गयी और एमपी-एमएलए हुये नहीं । वह हो गये सामान्य आदमी । तुम हो पाँच भाई और तुम सब भाइयों के मज़बूत ससुर भी बलभर लड़का पैदा किये हैं । वह तीन भाई हैं , एक भाई की शादी संपत्ति के लालच में निरबंसी के यहाँ कर दिये और एक ससुरा पागल है , तुम सब भाई और सार मिलकर चढ़कर हुमक देना । गाँव में ज़मीन-जायदाद - घर - दुआर - खेत- खलिहान पर हङ्क काग़ज़ से नहीं क़ब्ज़ा से होता है । लाठी- लाठिन तोड़कर क़ब्ज़िया लो सब और हम सब साथ हैं हूँ ।

पूरी दरेन आईएएस से भरी है , सब तुम्हारे साथ है । पहला काम करो खेत बाँटो ।”

इतने में टीटी आ गया टिकट- टिकट करते । अशोक ने नाम पढ़ा उसका और कहा अरे राजीव मिश्रा आप ...

राजीव मिश्रा - “ आपको पहचाना नहीं मैंने ।”

“ मैं तो पहचान गया , अब आपके पहचानने की क्या ज़रूरत ।”

“ आप कौन हैं ?”

“ मैं अशोक सारस्वत हूँ , पिछले साल यूपीपीसीएस में एसटीओ हुआ था । इस साल आईएएस का इंटरव्यू देने आया था । हमारी मुलाक़ात यूनियन हॉल पर हुई थी ।”

आईएएस इंटरव्यू सुनकर टीटी सजग हो गया ।

“ हो सकता है हुई हो सर ।”

“ यह लो हमारा टिकट । यह मेरा छोटा भाई है । इसका रिजर्वेशन मैं करा नहीं पाया । देवी शुक्ला भैया से कहा था ई. क्यू. के लिये पर चार्ट बन गया था । भैया ने कहा कि टीटी से मेरा नाम बता देना वह एडजस्ट कर देगा ।”

“ आप जानते हो देवी शुक्ला सर को ?”

“ हम किसको नहीं जानते यह पूछो , वह तो हमारे बुआ के लड़के हैं । यह जिस इंजन से दरेन चल रही मैं तो उसको भी जानता हूँ ।”

“ सर , आपने पूरी इलाहाबादी बात कर दी ।”

“ अभी तो शुरू किया है , अभी बात पूरी कहीं कहाँ । यह पूरी दरेन आईएएस से भरी हुई है । आप एक दिन कहोगे मैंने पचीसों आईएएस का टिकट चेक किया था ।”

“ क्या पचीस आईएएस हैं इसमें ।”

एक तो हुये हैं बाक़ी जून के पहले सप्ताह में हो जायेंगे ।”

“आप सब इंटरव्यू देकर आ रहे ?”

“और क्या बाँच रहे हम इतनी देर से ।”

“ कौन हो चुका है ?”

“ जो हो चुका है उसके लिये आईएएस की नौकरी उसके नाम से छोटी है । उसने नौकरी को टुकरा दिया कुछ वैसे ही जैसे बुद्ध ने त्याग दिया था आने वाला साम्राज्य और भरत ने टुकरा दिया था राजमुकुट ।”

“ अनुराग शर्मा की आप बात कर रहे ।”

“ राजीव जी आप आदमी बुद्धिमान हो । सर को जाओ दुआ सलाम कर आओ । अब कोई भी नौकरी हो इनके चेले ही करेंगे और आईआरटीएस तो पूरा बैच का बैच इलाहाबाद से ही होगा ।”

“ सर की कौन सी सीट है ?”

“सर की सीट है एस-2 में 24 पर उस पर बैठा होगी अनामिका । सर होंगे ऊपर वाली सीट पर । आप सर को लोअर बर्थ करा देना । अनामिका से भी कह देना मैंने सिफारिश की थी उसकी सीट की ।”

“ ज़रूर करा दूँगा । सर को सलाम करके आता हूँ और इस आपके भाई को भी बर्थ देता हूँ ।”

“ इनको बर्थ मत दो । इनको इसी ज़मीन पर सोने दो । आज इनका बरेन वाश करना है, इनसे काफिरों को ख़त्म कराना है ।”

“ठीक है, मैं सर से मिलकर आता हूँ ।”

“अब कोई ज़रूरत नहीं आने की, आप अपना काम देखो सुबह मिलते हैं इलाहाबाद स्टेशन पर । मैं देवी शुक्ला भैया से कह दूँगा आप जाकर मिल लेना ।”

टीटी चला गया । अशोक ने कहा, “ सुनो रमाकान्त अब समय आ गया है अपनी अलग पहचान बनाने का, दुश्मन कमज़ोर जैसे ही पड़े वैसे ही वार कर देना चाहिये ।”

दिनेश - “ कौन दुश्मन है, कैसे कमज़ोर होगा ?”

“ अब चालू हो गया तुम्हारा क्यों- कहाँ - कैसे - कब .. चलो अब सोते हैं नहीं तो तुम पगलवा दोगे ।”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 350

भरवारी पर मेरी आँख खुल गयी । भरवारी अंगरेजों के समय एक व्यापार का बड़ा केन्द्र हुआ करता था और यहाँ पर कोई एक विद्यालय व्यापारियों ने स्थापित किया था । मैंने कभी वह विद्यालय देखा तो नहीं पर नाम बहुत सुना था । भरवारी के बाद मनौरी आया । मनौरी के केन्द्रीय विद्यालय में मैं रुड़की इंजीनियरिंग की परवेश परीक्षा देने आया था । मैं ही नहीं तक़रीबन अधिकांश जीआईसी इलाहाबाद के लोगों का परीक्षा केन्द्र यहीं पर था । यहीं पर किसी के यहाँ रुक कर मैंने परवेश परीक्षा दी थी । एक निराशाजनक परिणाम उस

परीक्षा का आया था , जो कि आना ही था जिस तरह से मैं पढ़ाई करता था । दरेन मनौरी पार करके सुलेम सराय में प्रवेश कर गयी और अब रफ्तार धीमी होने लगी । दरेन हौले- हौले चलने लगी । दरेन बिफोर टाईम थी , आउटर पर रोक दी गयी , कुछ समय के लिये । सब लोग जग गये थे । लोग सामान बाँधकर उतरने की जल्दी में थे । कुछ सवारी यार्ड में कूदकर जाने लगे , शायद उसमें कुछ बैटिकट लोग रहे होंगे । दरेन रुकते ही उतरकर जाने वाले लोग अक्सर ही बहुत जल्दी में होते हैं , बेवजह की जल्दी । अब जल्दी उतरकर कुछ मिनट जल्दी घर पहुँचकर कौन सा पहाड़ तोड़ लेंगे । कई लोग अभी उतर ही रहे थे कि दरेन चल पड़ी । सामान आधा ऊपर है आधा नीचे । वह हल्ला कर रहे ऊपर वाले से कि मेरा सामान नीचे कर दो । किसी ने सामान नीचे गिरा दिया , वह सामान लादे पैदल रेलवे लाइन पार कर रहे , कुछ नीचे उतर रहे थे पर दरेन को चलता देख वापस ऊपर चढ़ गये । ऐसी जल्दबाज़ी इलाहाबादी कुछ ज्यादा ही करते हैं । मुझे दूर से दो आरपीएफ वाले इन लोगों की तरफ लपकते हुये दिखे , अब वसूली का काम चालू होगा ।

दरेन प्लेटफ़ॉर्म नंबर एक पर स्थापित हो गयी । मैं दरेन से उतरा , सारे लोग उतर गये और मेरे समीप आ गये । मैंने कहा शाम को कोचिंग पर मिलते हैं , आज से प्रारम्भिक परीक्षा का काम आरंभ करते हैं , इस परीक्षा के रिज़ल्ट का कोई भरोसा नहीं है । आप लोग आज तो मानोगे नहीं , आज तो यूनिवर्सिटी रोड टहलोगे ही अपनी कहानी सुनाने के लिये पर कल से सब बंद ।

दिनेश -“ सर , मुझे आज इतिहास विभाग जाना है । ”

अनामिका - “ सर , मुझे हिंदी विभाग में जाना है । एमए हिंदी की परीक्षा के बारे में पता करना है और यूजीसी की भी परीक्षा देनी है । पता करना है यूजीसी के बारे में , सर जेआरएफ मिल जायेगा तो जीवन आसान हो जायेगा इस परीक्षा में क्या होगा , कुछ पता नहीं । ”

अशोक - “ अरे भरोसा तो जीवन का भी नहीं है इस परीक्षा का क्या कहना । अभी स्टेशन से निकले पता नहीं घर पहुँचेंगे कि नहीं । ”

अनामिका - “ तुमको कुछ न होगा । तुम्हारे जीवन का पूरा भरोसा है । ”

अशोक - “ तब तो परीक्षा का भी है । इस बार हो जाता जान छूटती , यह परीक्षा पूरा निचोड़ लेती है । ”

शाम पाँच बजे मिलने को कहकर मैं चलने लगा । मेरे सामने पूरा पिछले वर्ष का दृश्य धूमने लगा जब मैं इसी प्लेटफ़ॉर्म पर उतरा था एक निराश मनःस्थिति में । मुझे लगा था सब ख़त्म हो गया है । यह सोचते हुये मैं प्लेटफ़ॉर्म नंबर एक से सिविल लाइंस की तरफ वाली सीढ़ियों पर चढ़ने लगा

। सीढ़ियों पर चढ़कर ओवर बिरज पर पहुँच गया । बिरज पर में खड़ा होकर देखने लगा पीले बैकग्राउंड में काले से लिखा प्लेटफ़ॉर्म नंबर नौ पर “इलाहाबाद” । मुझे प्लेटफ़ॉर्म नंबर 6-7 की ओर जाने वाली वह सीढ़ी दिखी जिस पर बैठकर मैंने अपनी रैंक गिनी थी और उस समाचार पत्र के पेज को रिदा की शक्ल में आसमान की ओर करके ईश्वर को धन्यवाद ज्ञापित किया था । वह वक्त पुनः समीप आ रहा है पर इस बार मेरी चाहत कुछ और है । मैंने अपनी चाहत के लिये सारा यत्न किया ही था, समय का प्रवाह भी मेरा साथ दे रहा था । अनामिका की बात याद आने लगी, एम.ए. की परीक्षा देनी है, जेआरएफ मिल जाये तो जीवन आसान हो जायेगा । मुझे भी यह दोनों परीक्षा देनी है । जेआरएफ मिलना भी ज़रूरी है, रिसर्च करना ही है आगे । हिंदी साहित्य में भी कार्य करना है । एम.ए. टॉप करना और जेआरएफ मिलना दोनों ही ज़रूरी है । जीवन को मात्र आईएएस के पदनाम और तमगे में ही तो जीना है नहीं । इस आईएएस के पदनाम और तमगे ने जीवन की सार्थकता न तो आज तक किसी को दिया है और न किसी को दे सकता है । यह बस जीवन की यात्रा में एक लहर है जो कुछ समय के लिये एक ऊपर उछाल देती है । कुछ समय तक लोग उस उछाल में खोये रहते हैं पर अगले साल का परिणाम आते ही लोग दूसरी उछाल में लुब्ध हो जाते हैं । सेवा स्वीकार करके आप अपने कैडर में चले जाते हो और एक नितान्त व्यक्तिगत जीवन जीने लगते हैं जिसमें एक अहंकारयुक्त जीवन होता है मानसिकता सामंती । यह मानसिकता लोगों से दूरी बढ़ाती है और व्यक्ति अपने आप में रम जाता है । यही कहानी कमोबेश सारे अधिकारियों की है । यह अधिकारी जो जनता दरबार लगाते हैं उसमें दिखावा अधिक होता है समस्या के समाधान का प्रयास कम । इसमें गरीब- गुरबा लोगों की अज़्री लेकर किसी को सौंप देना और एक मन रखने के लिये आश्वासन दे देना ही होता है । निरीह जनता भुलावे में आ जाती है और समाचारपत्र छाप देते हैं उदारता- सदाशयता की गाथा, कुछ अपनी चंद उम्मीदों के लिये, सारा दिन उसकी कहानी चलती रहती है और अधिकारी का अहंकार पोषित होता रहता है । मैं इस तरह के जीवन को जीने का पक्षधर कभी रहा नहीं । उसके बाद का जीवन ट्रांसफ़र-पोस्टिंग- जी हज़ूरी करना - जी हज़ूरी कराना इसी में बीतता रहता है । यह बहुत ही नीरस जीवन है, मैं एक सरस जीवन चाहता हूँ । मैं एक उतार-चढ़ाव से युक्त सार्थक जीवन चाहता हूँ, न कुछ होगा तो लिखता रहूँगा । मैं लोगों के साथ कुछ और तरीके से न सही लेखन के माध्यम से ही जुड़ता रहूँगा... यह सोचता - सोचता कब मैं ओवर बिरज से उत्तर कर गेट पर आ गया पता ही न चला । गेट पर टीसी ने मेरी बाँह पकड़ी और कहा “टिकट” । मैंने जेब से टिकट निकाल कर उसे दिखाया उसने टिकट पर एक क्रास मारकर मुझे वापस कर दिया । रिक्शेवाले एक मधुमक्खी के छते की तरह मेरे चारों ओर थे । मैं एक रिक्शे पर बैठ गया और कहा, ”चलो” । उसने मुझसे पूछा, ”कहाँ चलना है भैया ?”

“ सिविल लाइंस हनुमान मंदिर तक चलो आगे बताता हूँ । ”

उसके पाँव रिक्शे के पैंडल पर चलने लगे , रिक्शा तीव्र गति पाने लगा । गिरिजा घर , अंबर कैफ़े , एलचिको रेस्टोरेंट होता हुआ रिक्शा हनुमान मंदिर पहुँच गया । मैं चलते रिक्शे पर उल्टा खड़ा होकर हनुमान मंदिर के तोरण पर बनी भीष्म की प्रतिमा को देखने लगा और मेरे मन में भीष्म प्रतिज्ञा पुनः गूँजने लगी.....

“आजु जौ हरिहि न सस्तर गहाऊँ ।
तौ लाजौ गंगा जननी कौं सांतनु-सुत न कहाऊँ
स्यंदन खंडि महारथि खंडौ कपिधज सहित गिराऊँ ।
पांडव-दल सन्मुख है धाऊँ, सरिता-रुधिर बहाऊँ ।
इती न करौं सपथ तौ हरि की, छतिरथ-गतिहिं न पाऊँ ।
सूरदास रनभूमि बिजय बिनु, जियत न पीठि दिखाऊँ ।”

यह सूरसागर में मैंने पता नहीं कितनी बार पढ़ा था और इसको राग मलार है में गाया भी गया है । पर आज तक वह मैं सुन नहीं पाया किस तरह इसको राग मलार में गाया गया होगा । रिक्शा आगे बढ़ा , पहले एक सड़क दिखी जो मेरे पुराने स्कूल सीपीआई और स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल की ओर जाती थी , अगला चौराहा गोल चौराहा था जिस पर एक ओर मेडिकल कॉलेज था तो बगल की सड़क पर प्रतिष्ठित कॉलेज जीआईसी पड़ता था जहाँ से मैंने इंटर पास किया था , आगे केपी कॉलेज , सीएमपी डिग्री कॉलेज होता हुआ मैं अपनी उस बोसीदा गली में प्रवेश कर गया जहाँ से वह सारे खबाब पनपे थे जो कुछ आज फलीभूत हो रहे हैं और कई समय का इंतज़ार कर रहे । दरवाजे पर रिक्शा रुकते ही आस - पड़ोस में हंगामा हो गया , ” मुन्ना भैया आई गयेन ।” माँ भागकर बाहर आ गयी । वह तो सुबह से ही चबूतरे का चक्कर लगा रही थी । उसकी आँखों में अक्सर भावनायें आ ही जाती थीं जब भी वह मुझको कुछ दिनों के बाद देखती थी । उसने कहा , ” मुन्ना रुकि जा ।”

मैं रुक गया , उसने एक लोटा पानी उड़ेल दिया । अब यह उसकी आस्था है जो तकों से परे है पर मेरे अनुसार यह उसका अंधविश्वास है । आस्था हर व्यक्ति की प्रवरिश और व्यक्तिगत सोच से निर्धारित होती है । इस पर कोई सर्वमान्य नियम बन नहीं सकता पर व्यक्ति की मानसिक प्रगति, आधुनिकतावाद की समझ और एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास ही आस्था रूपी अंधविश्वास के आवरण को स्पष्ट कर सकता है । अब माँ को

तो कोई समझा सकता नहीं, मैं भी बहस नहीं करता था। उसने जिस तरह का जीवन जिया है, जो मान्यतायें उसने देखी हैं अब उससे भिन्न की सोच उसकी कैसे हो सकती है। यह सब कार्य करने में कोई किसी का नुकसान तो है नहीं और उसको एक संतोष की प्राप्ति होती है, इसलिये मैं असहमत होकर भी कोई बहस नहीं करता था।

घर में परवेश किया। मैं फ्रेश होकर जैसे ही आया पिताजी से बात कर रहा था। मैं उनसे अपना इंटरव्यू सुना रहा था। माँ की आवाज़ आयी, “मुन्ना रुकि जा। हमहूँ आवत हई तब सुनावअ।”

पिताजी - “रुक जाओ उसको आने दो। वह पचासों बार पूछ चुकी है तुम्हारा इंटरव्यू।”

माँ चाय लेकर आ गयी और बोली, “हाँ अब सुनावअ।”

मैंने इंटरव्यू सुनाया। इंटरव्यू अच्छा हुआ ही था। माँ - पिताजी पूरी शिद्धत से इंटरव्यू सुन रहे थे इतने में हंगामा हो गया, भैया बहुत बढ़िया-बढ़िया क़मीज़ लाये हैं। मेरे छोटे भाई ने मेरी अटैची खोलकर सारा सामान देख लिया था। मेरे भाई-बहन अटैची के नये - नये कपड़े देख रहे थे। माँ ने पूछा, “ऐतनी क़मीज़ तू ख़रीदअ का मुन्ना?”

“नहीं।”

“तब कहाँ से मिली?”

“आंटी ने दिया।”

“शांति देहेन?”

“हाँ।”

“ऐतनी क़मीज़ काहे देहिन?”

मुझे याद आया आंटी का वह डॉयलॉग, “अनुराग तुम प्रतीक्षा से मिलने जाते हो हर बार बदल-बदल कर क़मीज़ पहन कर। मैंने कुछ और क़मीज़ ख़रीद दी है तुमको चुनाव में सहायत होगी।”

मैं अगर यह बता दिया तब? अगर इसको यह पता लग गया तब? अभी ही मेरा सारा नक़शा बिगड़ जायेगा। माँ मेरा झूठ मेरे चेहरे से पढ़ने में माहिर है, मैंने बात को छिपाते हुये कहा, “माँ वह सब बड़े आदमी है। उनके यहाँ रूपया छापने की मशीन लगी है। उनको पैसा खर्च करने का बहाना चाहिये। आंटी खुद कमाती है, ऋषभ पता नहीं कितना कमाता होगा वह डॉलर पर डॉलर भेजता रहता है। यह पाँच-सात क़मीज़ क्या है उनके लिये। अब आंटी का बहुत लगाव मुझसे हो ही गया है। एक बात तो बताया ही नहीं।”

“ क्या ?”

“आंटी ने बैंक में मुझे अपना नॉमिनी बना दिया है ।”

“ ई का होत हअ ?”

“अगर आंटी को कभी कुछ हो गया तब सारा पैसा मुझे मिलेगा ।”

“ ई काहे करिन ? अपने बेटवा- पतोहू के केहे होतेन , ई सब काग़ज़- पतर के झंझट में तोहका न पड़े चाहि ।”

“ यह ऋषभ के कहने पर ही कहा , उसी ने कहा अनुराग को नॉमिनी कर दो । उसी ने कहा कि हम लोग अमेरिका में हैं , किसी समस्या के लिये आदमी को तैयार रहना चाहिये । आंटी ने कहा उनका पैसा है तुम वापस कर देना ।”

“ केतना पैसा होये ?”

“ पता नहीं कितना होगा पर पचास लाख से कम क्या होगा ? हर महीने - दो महीने पर डॉलर भेजता रहता है , आंटी का कुछ खर्च तो है नहीं । वह बहुत किफ़ायत से रहती है । उसका अपना ही पैसा खर्च नहीं होता । ऋषभ का पैसा तो वह आज तक बैंक से निकाली ही नहीं है ।”

“ पचास लाख !! ऐतना रूपिया .. मुन्ना, तोहरे पर एतना विश्वास बा ओनकर ।”

“माँ, शालिनी कहती हैं अनुराग मेरे पापा की संपत्ति पर मेरे और ऋषभ के साथ- साथ वारिस है , आंटी नॉमिनी बना रही ... सबको मुझ पर विश्वास है सिवाय ..”

“ हाँ - हाँ बात पूरी कै दअ .. हमार तोहरे पर कौनौ विश्वास नाहीं बा । हम तोहार पोर- पोर जानित हअ बचपन से । ओनका सबके तोहार कदरशना के का पता । तोहार हम एक- एक झूठ पकड़े हई । तू बगैर झूठ बोले दिन बिताइए नाहीं सकतअ । पर मुन्ना तू पाई- पाई वापस कै देहअ ओनकर रूपिया । केहू के देहे से केऊ बड़ा मनई आज तक बना बा नाहीं ।”

छोटा भाई शर्ट पर लगा था । वह दो शर्ट माँग रहा था । माँ कह रही थी , ” पहिले पहिनै लायक बनअ , सारा दिन आवारगी करत रहत हअ और पहिनब बड़ी - बड़ी कंपनी के क्रमीज़ । “

पर उसने किसी की न सुनी दो क्रमीज़ लेकर भाग गया । माँ ने मेरे मनमाफ़िक नाश्ता बनाया था । अर्जुन के दुकान से जलेबी भी मँगायी थी । मैंने नाश्ता करके अपनी साइकिल निकाली । इस बार भाई ने साइकिल पूरी ठीक कराया हुई थी । मैं विश्वविद्यालय पहुँच गया , साइकिल स्टैंड पर स्टैंड वाले ने आगे बढ़कर मेरी साइकिल ले ली । वह सबको टोकेन देता था पर मुझे नहीं देता था । उसने लड़के को आवाज़ दी और कहा अध्यक्ष जी की

साइकिल लगा दो । मैं साइकिल स्टैंड से बाहर निकलकर यूनियन हॉल की ओर बढ़ने लगा । कई शोर हर तरफ से आने लगे “ सर आ गये । ” .. “ अनुराग सर दिल्ली से आ गये । ” .. , “ अध्यक्ष जी का पदार्पण हो गया “ .. “ अनुराग सर इंटरव्यू देकर आ गये । ”

सरला जोशी भागते हुये आयी और बोली ...” सर आपके बगैर यह विश्वविद्यालय सूना है ... यह एहसास हुआ आपके जाने के बाद ...”

मैं देखने लगा वह बुज यूनियन हॉल का जहाँ कभी आज़ादी के आंदोलन में तिरंगा फहराने की ज़िद इस परिसर के करान्तिधर्मियों की थी , कुछ वैसी ही ज़िद मेरी भी है बस ज़िद का कलेवर अलग है पर चाहत वही है समूल परिवर्तन... व्यवस्था में .. परिवेश में .. और लोगों के ख्वाब में । मैं लोगों के ख्वाब की तासीर बदलना चाहता हूँ , पर कैसे इसका मुझे अभी कुछ पता नहीं ।

एक विशाल छातरों की भीड़ मेरे ओर आती हुई और एक आवाज़ हर ओर अनुराग सर आ गये

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 351

अब मुझे लोगों की भीड़ आकर्षित करती थी । मुझे जन सैलाब सम्मोहित करता था । मुझे नेतृत्व का नशा हो चुका था । मेरी दो आँखें हज़ार आँखों को ढूँढ़ती थीं , मेरे दो होंठ हज़ार कानों से संवाद करना चाहते थे । जैसे फ़ाख्ता का एक बच्चा खोलता है एक चोंच इस उम्मीद से कि शायद उसकी आवाज़ दूर तक जायेगी वैसी ही एक बच्चे की मोहक मासूमियत थी मेरे हर शब्द में शायद मेरी आवाज़ दूर तलक जायेगी , एक नायाब शब्दवेधी स्वर उन शब्दों से संघर्ष करता हुआ जो रचनात्मक करान्ति के स्वर से सामंजस्य नहीं रखते । कभी - कभी फ़ाख्ता के बच्चे की तरह औंधे पड़े मेरे स्वर मेरी तरफ़ देखते थे यह कहते हुये , कोशिश की है मैंने उड़ने की पर शायद वक्त से पहले मैंने उड़ने की कोशिश की है । मैं अब वह अनुराग शर्मा न रहा जो एक वर्ष पूर्व हुआ करता था - संकोची सा , अपने आप में समाया हुआ , हीन भावना से ग्रसित , हर बात पर सशंकित , जीवन के असुरक्षित भविष्य की आशंका से हाल- परेशान । यह एक नया अनुराग शर्मा था जो जीवन में रोमांच की तलाश कर रहा था । वह चुनौतियों से चीख़कर कह रहा था - आओ और बड़ी चुनौतियों तुम भी आओ , मैं सबका स्वागत करने को तैयार हूँ । नीले आसमान को देखकर कहता था , “ ऐ नीले आसमान कुछ और ऊपर हो जा मेरे हौसलों की उड़ान कुछ ऊँची है शिकायत मत करना मेरे नाखूनों से हत हो जाने के बाद । वह अब तन्हाईयों में अपनी परछाई से ओजस्वी संवाद

करता था , बहती हवाओं के आँचल पर एक क्रान्ति गीत लिख देता था । दो तेजस्वी लड़कियाँ उसके जीवन में आने को लालायित हैं । पूरा शहर ही नहीं आसपास के इलाके के मानिंद लोग अपनी कन्या के लिये एक आशा भरी निगाहों से मेरी ओर ओर देख रहे थे । एक बोसीदा गली के टाल के बगल वाले मकान से आरंभ हुई जिंदगी धन- धान्य - प्रतिष्ठा की ओर उन्मुख हो चुकी है । मैं आत्मविश्वास से लबरेज रहता था । एक साथ इतने लोगों का यूनियन हॉल पर मेरी ओर देखना और आँखों की भाषा से वातावरण में उमड़ता जयकारा मुझे आळादित कर रहा था । सरला जोशी से कहा मैंने , ” क्या हाल हैं परिसर के ?”

“ सर , आपका सब इंतज़ार कर रहे थे । इस बार आप दिल्ली ज्यादा दिन रहे । प्रारम्भिक परीक्षा वाले अभ्यार्थी आपका बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं । सर , आपसे बहुतों को आस है , आपका होना ही हम सबके लिये एक दिलासा है ।”

“धन्यवाद सरला इस विश्वास के लिये । ईश्वर करे मैं आप सबके विश्वास पर खरा उतरूँ । हम सब एक निमित्त मात्र हैं एक निर्धारक नियामक सत्ता के । यह प्रमिता का अपना एक निर्णय है कि वह किसे भगीरथ बना दें और किसे बेपौरूख । एक वर्ष पहले मैं अपने भविष्य के लिये आग्रहपूर्वक संघर्ष कर रहा था पर ईश्वर की नियामक सत्ता ने एक कार्य सौंपा है और एक उम्मीद है जीवन में जिसके सहारे मैं आगे बढ़ना चाह रहा , उससे मेरी इलिज़ा भी है मुझे शक्ति प्रदान करें ताकि मैं उसके आदेश पर चल सकूँ । तुम्हारी तैयारी कैसी है ?”

“ सर , ठीक चल रही है ।”

“ इस बार तुमको चयनित होना है । तुम्हारा नाम इस रचनात्मक क्रान्ति के साथ जुड़ा हुआ है । तुम महिलाओं का एक नया चेहरा हो और रचनात्मक क्रान्ति का प्रतिनिधित्व करती हो । तुम को लेकर मेरी कई योजनायें हैं । तुम्हारी सफलता अति आवश्यक है ।”

“ सर , क्या योजनायें हैं मेरे लिये ?”

“ वक्त का इंतज़ार करो । इतिहास तुम्हारे कदमों की प्रतीक्षा कर रहा है , तुम्हारी माँ ने एक सामान्य कन्या को नहीं एक इतिहास निर्मात्री को जन्म दिया है ।”

“ सर , आपका इतना विश्वास है मुझ पर यह बहुत बड़ी निधि है । पारस साथ है , अब पत्थर को क्या चिंता ।”

“ आज शाम से काम आरंभ करते हैं । कल से यूनियन हॉल पर भी क्लॉस चलाते हैं । आप महिला छात्रावास में कह देना ।”

“ ज़रूर सर , सब इंतज़ार ही कर रहे थे आपका ।”

“ समय कम है सरला , कार्य अधिक है । ”

“ हाँ सर । ”

मैं यूनियन हॉल से हिंदी विभाग चला गया । पता किया एमए की परीक्षा का क्या कार्यक्रम है । जून के तीसरे सप्ताह से एमए की परीक्षा आरंभ हो रही थी और जुलाई के दूसरे सप्ताह में यूजीसी की परीक्षा थी । मैं सत्य प्रकाश सर के पास गया । उनको इंटरव्यू के बारे में बताया । इंटरव्यू ठीक हुआ ही था । वह अपनी भाषा में ही बोले , “ चलो तुम कोई पगलैटी नहीं किये , तुम्हारा क्या भरोसा कहाँ ज्ञान पिलाने लग जाओ । एमए के लिये थोड़ा पढ़ लो , वैसे काफ़ी पढ़ा ही है । थोड़ा भाषा विज्ञान देख लो उसका पाठ्यक्रम आपके सिविल सेवा से अलग है । कामायनी पूरी तरह से देख लो , बाक़ी तुम ज़िम्मेदार हो ही । कोशिश करो टॉप कर जाओ । ”

“ सर , आपके समय में बेहतर लोग हिंदी पढ़ने आते रहे होंगे पर आजकल तो कोई ख़ास प्रतिभा तो हिंदी पढ़ने आती नहीं । सब दर्शन-मनोविज्ञान - प्राचीन इतिहास - अंग्रेज़ी ही पढ़ते हैं । यह कहते हैं लोग कहीं एडमिशन नहीं मिल रहा है तो हिंदी में ले लो अब ऐसे विभाग में कोई ख़ास समस्या नहीं होनी चाहिये , पर सर प्रयास करता हूँ । क्या कोई शंका है इसमें ? ”

“ यार , विवेक श्रीवास्तव एक हैं , वह लगे हैं चापलूसी में सबके । अब यहाँ जानते ही हो टॉप कराने में राजनीति चलती ही है । ज्ञान होना और टॉप करने में संबंध तो है पर एक निश्चित संबंध नहीं है । वह लड़का भी ठीक है , उसको टॉप कराने का फ़ैसला अगर मठाधीशों ने ले लिया तब क्या किया जा सकता है । ”

“ सर , कौन है मठाधीश ? ”

“ तुम कहीं और से आये हो क्या ? इसी शहर के जन्मे , इसी विश्वविद्यालय के पढ़े हो । इतना भी नहीं पता , वह भी तब जब तुम छात्र संघ अध्यक्ष भी हो । मेरा मुँह न खुलवाओ , तुम भी चाहो तो मठाधीशों के आगे-पीछे घूम लो । सारा मुद्दा टॉप करने का ही है , बाक़ी और तो कोई मुद्दा है नहीं । ”

“ सर , कॉपी कुछ बाहर जाती है । ”

“ कुछ यहाँ भी रहती हैं और वाइवा ? ”

“ चलो पढ़ो , कोशिश करो प्रश्न पत्रों में लीड अच्छी हो जाये ताकि वाइवा का रोल कम हो जाये । तुम टॉप न करो इस पर कई ताक़तें काम करेंगी , तुमसे मात्र छात्र खुश रहते हैं बाक़ी सब के सबके पीछे तुम लट्ठ लिये लगे रहते हो । कोचिंग में अध्यापक न पढ़ायें , वीसी नाकाबिल है , राजनीति के

मठाधीशों को ख़त्म करो , हर एक से बयाना तुम लिये ही जूतम- पैजार का ।
देखो वाइवा में एक्स्ट्रनल कौन आता है , यह भी महत्वपूर्ण है ।”

“ ठीक है सर ।”

मैं हिंदी विभाग में घूमा । दूध नाथ सिंह सर से मिला । कुछ और अध्यापकों से मिला । क्लर्कों, छात्रों, चपरासियों से सलामी ठोकवाया शाम की कोचिंग पढ़ाया और देर शाम घर आया । माँ इंतज़ार कर ही रही थी । मेरे मामा - मौसा भी आये , सबने इंटरव्यू सुना । शहर इलाहाबाद में सबको इंटरव्यू सुनना ही है , फिर यह क्यों पीछे रहें । उन सबने घर पर खाना खाया और एक बेहतर रैंक आयेगी इसकी चर्चा होने लगी । मैं ऊपर कमरे में आ गया । मुझे एमए टॉप करने की धुन सवार हो चुकी थी । मैंने यह निश्चय किया किसी भी हालत में एमए टॉप करना है । मैं किताबें ठीक कर रहा था इतने में माँ के कदमों की आवाज़ सीढ़ी पर सुनाई देने लगी । दिल्ली से आने के बाद मुझे माँ के नाम से डर लगने लगा था , मुझे हमेशा लगता था यह प्रतीक्षा का मेरे साथ उपजा संबंध जान जायेगी और मुझे कच्चा खा जायेगी । पर हर बार अपने को सांत्वना देता कैसे जान जायेगी यह । आंटी बतायेगी नहीं और मैं भरमा दूँगा इसको । वह मेरे कमरे आकर बोली ,” मुन्ना ठीक से तू बतायअ नाहीं ।”

“ क्या ?”

“ दिल्ली के हाल .. शांति के हाल .. ऋषभ - शालिनी के का हाल बा , कब देश अइहिं ओ सब । ई तोहार कोचिंग - नेतागीरी तोहार जान खाई ले । सन्न मारि के आराम करअ , घर - परिवार में रहअ अब कुछ महीना के मेहमान हअ इहाँ पर तोहका जौन भूत सवार न होई जाई । शालिनी के इहाँ गअ रहअ ? उहाँ जाब ज़रूरी रहा , ऐतना शालिनी तोहका मानत हअ ।”

“ अरे माँ , एक चीज़ तो भूल ही गया ।”

“ का ।”

“ रुको बताता हूँ ।”

मैंने अपने पैंट के चोर जेब में सोने के दोनों सिक्के रखकर ऊपर से सिलाई मार दी थी ताकि वह किसी भी तरह गिर न जायें । मैंने सिलाई तोड़कर वह दोनों सिक्के उसको दे दिये ।

“ ई कहाँ मिला मुन्ना ?”

“ शालिनी के पापा ने हम सबको खाने पर घर बुलाया था । जाते वक्त बिदाई में यह सिक्के दिये । बाक़ी सबको चाँदी का दिया , मुझको और आंटी को

सोने का । आंटी ने अपना भी मुझको दे दिया कि यह माँ को दे देना गुड़िया के विवाह में काम आ जायेगा । “

“सोने के सिक्का!! और सब अपरिचितन के चाँदी के !!! केतना रूपया बा ओनके पास ? “

“ पता नहीं कितना होगा , पर बहुत ही अमीर हैं , घर तो राजमहल जैसा है । अपनी कार दे दिये थे अशोक- दिनेश को इंटरव्यू में सबको सहूलियत हो जाये । खाने का इंतज़ाम तो ऐसा हमने कभी न देखा न सुना । क्या नहीं था , हर चीज़ थी । मिठाई - आइसकरीम पता नहीं कितने तरह की थी । उनका शौक है लोगों को घर बुलाना और स्वागत- सत्कार करना । शालिनी की मौसी आयी थी वह आंटी से कह रही थी कि मेरी बेटी को भी शालिनी ऐसा पढ़े-लिखे लोगों का घर मिल जाता तो कितना अच्छा होता । आंटी कह रही थी उनकी तुम पर निगाह है ।”

“शांति के दुखी कहे हयेन अबअ मन नाहीं भरा । मुन्ना ई सोने के सिक्का ओ देहेन ? ”

“ और मुझे कहाँ मिलेगा । देखो लिखा भी है सिक्के पर शालिनी सीमेंट एंड स्टील अंगरेज़ी में । इसमें एक चेन बन जायेगी बनवा लेना । ”

“ हाँ , बीस ग्राम में एक चेन बन जाये । चलअ बनवाई लेब जब तोहार दुलहिन देखे जाब तब ओका दै देब । गुड़िया के बियाह में तअ अबअ समय बा । मुन्ना ई बतावअ तू अपने बियाहे के बारे में का सोचत हअ । ”

मेरा दिल हलक पर आ गया । मैं कुछ बोलता वह बोली , ” प्रतीक्षा - सुरुचि दुअयै लड़की तोहरे माफ़िक हई , वैसे आवई के तअ गाड़िन के क़ाफ़िला रोज़ लगै रहत हअ पर तोहरे लायक़ लड़की कम हई । बतावअ तोहार का मन बा । ”

मैं कुछ बोलता वह बोली , “ प्रतीक्षा से मिलअ नाहीं दिल्ली में , इंटरव्यू तअ उहौ देहे रही । तोहसे पढ़े इलाहाबादौ आई रही । ”

मैं घबड़ा गया । माँ जिस बात पर लग जाती है उसको तार- तार कर देती है । अभी प्रतीक्षा की बात शुरू होगी तब दस बात पूछेगी और यह मेरा झूठ पकड़ने में माहिर है । मैं सबको चरा लेता हूँ पर यह मुझे चरा मारती है , मैंने इस मुद्दे को आगे बढ़ने ही नहीं दिया बात बदलने लगा पर मैं हकलाने लगा और मुझे समझ न आ रहा था इस मुद्दे को कैसे सँभालें । मैं एमए परीक्षा की बात करने लगा । ईश्वर ने मदद कर दी पिताजी ने मुझको आवाज़ दी । मैंने कहा , चलो नीचे चलते हैं पिताजी बुला रहे हैं । मैं और माँ नीचे चल दिये । मेरे मन में लगातार यह भय था कि यह अगर सब जान गयी तब बहुत हल्ला करेगी , घर का माहौल कुछ दिन के लिये ख़राब हो जायेगा । पर कुछ तो

बताना पड़ेगा, जान तो जायेगी ही आज नहीं तो कल । सीढ़ियों से उतरते समय विचार किया कि पिताजी को बता देते हैं थोड़ा- बहुत । वह समझदार हैं माँ को समझा लेंगे । माँ कितना भी ज़िद करें पर वह पिताजी की बनायी रेखा का सम्मान करती है । अब विवाह करना है, बात बतानी ही होगी । आज नहीं तो कल सब पता चल ही जायेगा, माँ सारी ज़िंदगी उलाहना देगी कि हमको नहीं बताया कुछ और खुद सब तय कर लिया । यह नालायक अशोक भी एक सिरदर्द है, कहा तो है किसी से कोई ज़िकर नहीं करूँगा पर उसका कोई भरोसा नहीं । पिताजी ने भी विवाह का ही बात छेड़ी और कहा, ”मेरे ऑफिस में नये पीएजी आये हैं वह भी अपनी बेटी के तुमसे विवाह के लिये बात कर रहे थे । आज मुझको बुलवाया था । उनके बुलावे पर ही हल्ला हो गया । मैं गया उनके पास । मैं एक ऑडिटर, अब मेरा इतने बड़े अधिकारी से क्या वास्ता पर वह बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं । परेम से बैठाया और मन की बात कही । तुमसे मिलना चाहते हैं । तुम ही कभी ऑफिस आ जाना ।”

माँ - “ मुन्ना काहे जाये ? ओनकर बिटिया बा , ओनकर गरज बा ओ आवैं । बिटिया के बाप के नाहीं व्यवहार करें, अफ़सरी न देखावैं ।”

पिताजी - “ हर बात पर लाठी लेकर पिल जाओ । अब कह दिया कि मिलना चाहता हूँ कभी बुलाना, कौन सा गुनाह कर दिया । वह कह ही रहे थे मैं तो घर आऊँगा ही पर अगर कभी इधर आये तो ले आना । नहीं जाना है मुन्ना को तो न जाये, वह कोई ज़बरदस्ती तो कर नहीं रहे हैं ।”

माँ शांत हो गयी । उसको बात समझ आ गयी । मैंने कहा, ” कल ही आता हूँ मैं ।”

“ ऐसी कोई जल्दी नहीं, कभी भी आ जाना ।”

माँ सोने के सिक्के की कहानी सुनाने लगी । जो - जो मैंने कहा था वही वह दुहराने लगी । मैं थोड़ी देर बैठा रहा फिर बहन ने बुलाया उसको कुछ पूछना था अपनी पढ़ाई के बारे में, मेरी सफलता ने उसका उत्साह बढ़ा दिया था वह भी आईएएस बनना चाहती थी और प्रयास भी आरंभ कर दिया था हलाँकि अभी उसकी उम्र हुई नहीं थी पर थोड़ा पहले का प्रयास मददगार होता ही है इस परीक्षा को समझने में । मैंने उसको बताया और अपने कमरे में वापस आ गया ।

दिन बीतने लगे । इस बार पढ़ाने वाले लोग कुछ और भी थे । दिनेश - अशोक - परेम नंदन को भी पढ़ाने का शौक जग गया । यह लोग भी पढ़ाने लगे । मेरा भार थोड़ा कम हो गया । मैं एमए टॉप करने के लिये पूरी कोशिश करने लगा, मैं काफ़ी पढ़ता था और पढ़ाता भी था । सत्ताइस मई को इंटरव्यू का अंतिम दिन था । इंटरव्यू खत्म हो गया । अब अंतिम गिनती आरंभ हो गयी । रिजल्ट कभी भी आ सकता था । जून के दूसरे रविवार को प्रारम्भिक परीक्षा

थी । अब मुझे वह परीक्षा देनी न थी । जून माह आरंभ हो गया, पूरे शहर की धड़कनें बढ़ने लग गयीं । मेरी कोचिंग में उत्सुकता और आशंका दोनों ही थी । लोगों के चेहरे पर चिंता की रेखायें साफ़ देखी जा सकती थीं । अनामिका सबसे अधिक चिंतित थी । उसने मुझसे कहा, ”सर, मेरा अगर न हुआ तब मैं अगले साल तक शहर नहीं रह पाऊँगी । मुझे गाँव जाना होगा, मेरे बस का शहर रहना संभव नहीं है ।”

“ गाँव से तैयारी करना ।”

“ वह मैं प्रयास करूँगी पर सर वहाँ का माहौल बिल्कुल भी पढ़ाई का नहीं है, पेपर-मैगज़ीन कुछ नहीं मिलता और आप भी नहीं रहेंगे, बग़ैर आपके मैं कुछ नहीं कर सकती । मैं आशिरत हो चुकी हूँ आपके परिवेश की और जो यहाँ कोचिंग में प्रतिस्पर्धा का माहौल है वह बहुत सहायक होता है आगे बढ़ने के लिये । सर, लगता है मेरा कोई भविष्य नहीं है ।”

“ ऐसा न कहो, होगा आपका.. अभी रिज़ल्ट तो आने दो । रिज़ल्ट के समय यह नैराश्य भाव आता ही है, सबको आता है ।”

मैंने दिलासा के स्वर उसको दिये ज़रूर थे पर इसकी आवश्यकता मुझे भी थी । पर मुझे दिलासा कौन देता ? मैं तो नारायण सदृश बन बैठा था । मुझे अहसास होने लगा बहुत मुश्किल होता है सबसे बड़ा होना । उसकी समस्यायें कोई नहीं सुनता । वह अपनी समस्या किससे कहे ? मुझे अपने पिता जी की याद आई । हम सब लोग उनसे शिकायत करते थे । वह हमारी समस्याओं को गंभीरता से सुनते थे और ज्यादातर का कोई समाधान उनके पास नहीं होता था पर दिलासा देते थे । वह अपनी समस्या किससे कहे ? निरीह होना ही एक रास्ता है उनके पास और एक ऐसी निरीहता जिसका कोई समाधान नहीं । वह खामोशी से खामोशी को सुनता है, वह एकाकीपन में स्वयम् से बात करता है, कई पैगाम लोगों के होते हैं उसके नाम पर उसका पैगाम किसी के पास नहीं जाता है सिवाय ईश्वर के । मेरा भी वही हाल था । मैं अब कोचिंग के बाद बँधवा के हनुमान मंदिर जाने लगा । एक ईश्वर की वाह्य सत्ता में आस्था न रखने वाला आरती - अरदास में आस्थावाम हो रहा था । जून का महीन और इलाहाबाद की गर्मी पर हम सबको गर्मी नहीं एक अनिश्चित भविष्य आतंकित कर रहा था । जून का महीना करवट बदलने लगा, हम लोग दूर शहर में बैठे संघ लोक सेवा आयोग के बाहरी दीवार पर रिज़ल्ट चिपकाये जाने का दृश्य कल्पित करने लगे । हम सब रात के अँधेरों में दुःस्वप्न देखने लगे । मेरी हालात सबसे ख़राब थी । मुझे हरदम लगता है मेरा नहीं होगा । एक रात स्वप्न आया कि रिज़ल्ट की घोषणा हो गयी और मेरा कहीं भी न हुआ । मैं एक झटके में अपना सारा नायकत्व खो गया । मेरा पूरा शरीर पसीने से लथपथ हो गया । माँ ने जगाया, मुन्ना - मुन्ना वह भी घबड़ा गयी इतना पसीना देखकर । यह सुबह के चार बजे का दृश्य था वह गंगा नहाने जा रही थी और रोज़ की तरह चाय देना आयी थी । उसने पूछा, क्या हुआ ? मैंने

चैन की साँस ली कि यह एक स्वप्न था । मैंने गर्मी का बहाना बनाया । वह मेरे बहाने से संतुष्ट न हुई पर गंगा तट पर जाने की जल्दी थी उसे इसलिये उस समय कुछ और न पूछा । सुबह के स्वप्न सच होते हैं यह बचपन से सुनता आ रहा था । मैं चिंताग्रस्त हो गया । फिर याद आया कि अगर सुबह का स्वप्न ख़राब हो तब पुनः सो जाओ उसका असर ख़त्म हो जाता है । मैंने सोने की कोशिश की पर विफल रहा । मन को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सपनों की व्यर्थता समझाता रहा पर एक परम्परा से उपजा विश्वास इतनी आसानी से कहाँ तर्क मानने वाला । दुःस्वप्न ही दुःस्वप्न हर ओर । चिंता के साम्राज्य और निराशा की मनःस्थिति बीच एक आशा भी थी कि इतनी मेहनत की है, पेपर अच्छा लिखा है ईश्वर न्याय करेगा । जून महीना शनै:- शनै: बढ़ने लगा । एक जून बीत गयी परिणाम उस दिन न आया । दो जून आ गयी । हल्ला हर ओर परिणाम आज आ सकता है । सायंकाल की 8:40 के समाचार का सब इंतज़ार करते थे । आज भी सबने पूरी तल्लीनता से समाचार सुना, रिझल्ट न आया । मेरे घर पर टीवी न था । मेरे घर के बगल के घर में मेरा भाई जाता था और मेरे घर में नौ बजने का इंतज़ार नहीं हो पाता था । मैं अपने आप को इससे दूर रखने का प्रयास करता था । मैंने सारा कुछ ईश्वर के हाथों छोड़ दिया था और हनुमान जी की आठ बजे की आरती करके नौ बजे तक घर आता था और घर आते ही गली से ही पता चल जाता था कि परिणाम नहीं आया है । आखिर वह दिन आ ही गया । तीन जून की रात सायंकाल 8:40 दूरदर्शन ने घोषणा कर दी, “ संघ लोक सेवा आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा का अंतिम परिणाम घोषित कर दिया है । ”

मैं बैधुवा के हनुमान मंदिर से साइकिल चलाते हुये अपनी गली में प्रवेश कर रहा था, मेरा भाई बगल के मकान से चिल्ला रहा “ आईएएस का रिझल्ट आ गया । ” हर ओर एक शोर आईएएस का रिझल्ट आ गया । मेरी पूरी गली के टीवी देखने वाले कहने लगे, ” मुन्ना का रिझल्ट आ गया है । ”

मैं बेखबर भविष्य से, खोया सपनों की उड़ान में शंकाओं को निर्मूल करने के लिये ईश्वर का नाम जपता । मेरे अंदर की ईश्वर- वंदना मेरे भीतर की नीरवता को समाप्त कर रही थी तो मेरे साइकिल की चेन की आवाज़ परेड ग्राउंड- परेड से तिनकुनिया चौराहे के नीरव वातावरण में गूँज कर वातावरण की शांति को समाप्त कर रही थी । मैं अपने आप में खोया अपनी गली के मुहाने पर पहुँचा जैसे ही मैंने नाले के पत्थर को पार करने के लिये पैंडल पर ज़ोर मारा मेरे साइकिल की चेन उतर गयी । मैं साइकिल से उतर कर साइकिल की चेन ढाने लगा और दूर मुझे अपने घर के सामने भीड़ ही भीड़ दिख रही थी यह भीड़ क्यों? ... लगता है रिझल्ट आ गया । मैंने चेन ढायी । मेरे हाथ में चेन की कालिख लग गयी थी । मैं पैदल ही साइकिल को धकेलता घर की ओर बढ़ रहा था और लोग मेरे घर के सामने लगातार बढ़ते

जा रहे थे । मैंने पीछे मुड़कर हनुमान मंदिर की ओर देखा और कहा हे ईश्वर

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 352

मैं साइकिल के साथ धीरे - धीरे कदम आगे बढ़ा रहा था , मन में आशंका थी अगर न हुआ तब ? इस बार भी दिल्ली में नाम और रोल नंबर मेडिकल वाले दिन दिया ही था । मैंने सोचा चलकर पीसीओ से फोन करके पता करता हूँ क्या हुआ । अगर न हुआ तब कैसे एक बड़ी जमात का मैं सामना करूँगा ? पिछले साल तो मेरे परिणाम में रुचि मेरे घर - परिवार में ही थी पर इस बार तो पूरी यूनिवर्सिटी को है , समाज के एक बड़े वर्ग को है । मेरा अगर न हुआ तब मैं कोचिंग में , विश्वविद्यालय में कैसे पढ़ाऊँगा? एक असफलता कई विजयों की प्रशस्ति गाथाओं को कमज़ोर कर देती है । ऐसा नहीं है कि मेरे खिलाफ़ लोग नहीं हैं , बल्कि बहुत हैं पर जीत का ऐसा जश्न चल रहा कि सब उसकी करतल ध्वनि में सजग ख़ामोश विरोधी लोग आवाज़ के कमज़ोर पड़ने का इंतज़ार कर रहे , वह सब मौके के इंतज़ार में हैं । यह सोचता मैं अपने घर के नज़दीक पहुँच गया । गली में अँधेरा था , मेरे मकान के सामने मंदिर के ऊपर की स्टरीट लाइट जल रही थी । जब तक मैं उस स्टरीट लाइट की रोशनी के दायरे में न पहुँचा तब तक मैं अँधेरे में ही था और कोई मुझे देख न सका । जैसे ही मैं रोशनी के दायरे में पहुँचा मुझे देखते ही लोगों ने कहा , मुन्ना भैया आ गये । मेरी माँ मेरी ओर दौड़ने लगी उसका बायाँ पाँव उसकी धोती में फ़ंस गया वह अपना संतुलन खो बैठी । मैंने साइकिल को छोड़ दिया और साइकिल ज़मीन पर गिरती किसी ने उस पर हाथ लगा दिया , मेरी माँ मेरी बाँहों के सहारे मैं आ गयी उसका चेहरा लाल था और आँखें खुशी से नम उसने कहा ,” मुन्ना तू आईएएस टॉप कै गअ । अबहिं टीवी में तोहार नाम पुकारा गवा कि अनुराग शर्मा सिविल परीक्षा में टॉप किया है ।” मेरे आँखों के सामने वह ख़बाब आने लगा जब कभी गाहे- बेगाहे यह विचार आता था .. काश ! ... मैंने माँ के चेहरे की तरफ़ देखा और भाषा - भावना - उत्तेजना को संतुलित करने का प्रयास करते हुये कहा , “ नहीं माँ बात अधूरी है उर्मिला शर्मा का बेटा आईएएस टॉप कर गया । अगर तू न होती तब मेरे ऐसा नालायक यहाँ तक नहीं पहुँच सकता था । तूने अपना मोक्ष त्याग था पिछली बार की मेरी परीक्षा के समय । ईश्वर ने तराज़ू पर तेरा त्याग देखा , तेरी पूजा- अर्चना- भक्ति देखी , वह 102 रैंक से बहुत ज्यादा थी । उसने मुझे इस वर्ष टॉप कराया । यह टॉप भी उस मोक्ष त्याग के समुख कुछ नहीं है , अभी कई गैर मामूली दास्तानें और होंगी क्योंकि तेरा वह त्याग बहुत ही बड़ा है । आस्था - भक्ति- विश्वास के बैंक में तेरी कर्मों के करोड़ों - अरबों के

त्याग की अक्षय निधि संचित है , यह सब छोटे - मोटे इंस्टॉलमेंट हैं माँ , तेरा त्याग जमाने के लिये है न कि सिर्फ़ मेरे लिये ।”

मैं इसके आगे बोलना चाह रहा था पर बोल नहीं पा रहा था , एक असीम परमानंद ने मेरे कंठ को रुद्ध कर दिया । मैंने आसमाँ की तरफ़ देखा और मन में कहा , “ शुक्रगुजार हूँ तेरा परमपिता , इतनी इनायत एक अकिंचन पर ... तेरी महिमा अपरंपर है ।”

मेरी पूरी गली मेरे मुहल्ले के लोगों से भरती जा रही थी । टीवी से कुछ लोग जान गये थे और कुछ लोग सुनकर । गली एक मकान में तब्दील हो रही थी । मैंने पिताजी के चेहरे की तरफ़ देखा वह गर्व से आळादित थे । उनका चेहरा ईश्वर परदत्त लाल था , वह सुख्ख ऐसा हो गया था । मेरे सामने के बनिये के दुकान का चबूतरा लोगों से भर गया था , उस पर बहुत लोग खड़े थे । मैंने आगे बढ़कर पिताजी के चरण छुये पिताजी ने मुझे गले से लगा लिया । उन्होंने पिछले वर्ष की ही पंक्ति तकरीबन दुहरा दी ..” बड़े भाग्य से ईश्वर इतना चक्रवर्ती बेटा देता है । यह कई जन्मों के पुण्य का फल है जो तुम मुझे प्राप्त हुये और तुम अपनी उपलब्धियों का शरेय किसी को भी दे दो पर यह उपलब्धि तुम्हारे ज़िद का है , तुम्हारे हारकर भी हार न मानने की है । तुमने कमज़ोरी को अपनी ताक़त बनाया है । यह लंबे दौर तक याद किया जायेगा । “ मैं कुछ बोल न सका । मेरी बहन मेरे गले लग गयी , वह मुझसे काफ़ी छोटी थी और पिछले कुछ समय से मैं उसका भी नायक हो चुका था । मुहल्ले वालों को भी बहुत खुशी थी , एक बोसीदा गली जहाँ पर लोग टाइपिंग सीखकर स्टेनो बनना और रेलवे रिकर्स्टमेंट बोर्ड के क्लर्क की परीक्षा में जुगाड़ - नक़ल के सहारे उपलब्धि पाया करते थे और जहाँ पर कक्षा दस पास करना एक उपलब्धि थी उसी अनजानी गली में एक नया ऐतिहासिक परचम गड़ गया था । हम लोग थोड़ी देर में घर के अंदर आ गये । घर में दीपोत्सव ऐसा माहौल था । माँ अपनी पूजा में लग गयी , इतने में मामा - मौसा - मोहिता दीदी - राकेश जीजा जी - अशोक - दिनेश - परेम नंदन आ गये । धीरे - धीरे मेरे छात्रों का आना आरंभ हो गया । उन सबको मेरे रिज़ल्ट का तो पता था पर किसी को अपना रिज़ल्ट पता न था । होस्टल से भी लोग आने लगे और अभी तक एक ही रिज़ल्ट सबको पता था । अशोक ने कहा , ” सर नाम - रोल नंबर सबका दिया है पता करता हूँ । वह लोग पता करने चले गये । मैंने माँ से कहा मैं यूनिवर्सिटी रोड होकर आता हूँ पर वह मानी नहीं और मेरे कई प्रयास के बाद भी उसने मुझे जाने न दिया । मामा के साथ मामी भी आयी थीं । रात देर हो गयी तो मामा घर की रुक गये । वह मेरे घर में रुकते बहुत ही कम थे क्योंकि मेरा घर उनके अनुसार नहीं था और उनको मेरे घर में असुविधा होती थी । पर उस दिन माँ ने एक बार कहा और वह रुक गये । मेरा कैडर तो अब यूपी ही होगा और बहुत ही जल्दी मैं उनका साहब बन जाऊँगा यह भी उन्होंने

कह दिया । माँ आज संयत थी , वह शांत थी । मैंने तो यह स्वप्न कभी- कभार देखने की कोशिश की हो पर उसने शायद ही कभी यह सोचा हो । मेरा भाई पूरा समाचार ठीक से न सुना था वह आधे समाचार में ही मेरा नाम सुनकर चीखने लगा था । राकेश जीजा जी ने यह बताया कि समाचार में यह भी कहा गया था कि पहली बार हिंदी माध्यम के किसी छात्र ने सिविल सेवा की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है । माँ ने पूछा भी यह कैसे पता चला होगा कि यह काम पहली बार हुआ । मोहिता दीदी ने बताया कि यह संघ लोक सेवा आयोग द्वारा दी हुई सूचना होती है जो टीवी - रेडियो में प्रकाशित - प्रसारित होती है । थोड़ी ही देर में प्रेस का जमावड़ा मेरे घर के सामने आ गया । यह किसी सामान्य अभ्यार्थी का परिणाम न था , यह महान विश्वविद्यालय के छात्र- संघ अध्यक्ष का भी परिणाम था । मैं प्रेस ब्रीफिंग करने लगा । सारे प्रेस वाले समाचार की जल्दी में थे ताकि वह कल के अख्बार में छाप सकें । उन्होंने गली , घर , मेरी , मेरे परिवार की कई तस्वीरें ली । मैंने छात्र- संघ चुनाव के समय बहुत सी प्रेस ब्रीफिंग की थी , अब मैं प्रेस ब्रीफिंग में माहिर हो चुका था । मैंने भी बहुत संयत और नम्र संवाद किया । मैं एक संदेश देना चाहता था , मैं इस सेवा को दंभ से नहीं एक समाजिक उत्तरदायित्व से जोड़कर प्रस्तुत करना चाहता था । देर रात प्रेस वाले चले गये । रात आ चुकी थी और सियाह रात आगे बढ़ रही थी पर नींद आज इस बोसीदा गली में नदारद थी । मैं ही नहीं गली में शायद ही आज कोई सो रहा होगा । आज मैं सोना भी नहीं चाहता था , मैं इस क्षण को जीना चाहता था , पूरी शिद्धत से । माँ आज सबसे ज्यादा शान्त थी , वह एक असीम आनंद में थी , वह एक सुखद आश्यर्चजनक शॉक में थी । वह अपने यादों की फेरहिस्त में थी । पिताजी ने कहा ,” मुन्ना तुमने मुझे बार - बार गलत साबित किया । मैंने कहा पॉलीटोनिक कर लो , कोई छोटी - मोटी नौकरी कर लो तब तुम आईएएस दो , आईआरएस जवाइन कर लो परीक्षा फिर से देने की क्या ज़रूरत , अपनी कोचिंग मत चलाओ ब्राइट कोचिंग में ही पढ़ाओ , चुनाव मत लड़ो पर मेरी एक बात तुमने न मानी और हमारे तुम्हारे बीच शीत युद्ध की स्थिति कई बार बनी रही पर मुझे आज महसूस हो रहा कि तुम ज़माने में किसी ख़ास मक्सद के लिये बने हो । मुझे जमाने की वह समझ नहीं है जो तुमको है । मेरे ख़बाब मेरे परिवेश के कारण हमेशा ही छोटे रहे हैं पर परिवेश की सीमायें तुम्हारे ख़बाब को प्रभावित नहीं कर सकीं । घड़ियों की सुई के साथ तुम्हारी सोच बदलती रही और तुम एक नये मुकाम की तलाश करते रहे , वह भी अपने बल पर । मेरे पास इतने संसाधन न थे कि मैं तुम्हें कोई ख़ास सहायित दे सकूँ । तुमने अपनी मार्कशीट को अप्रासांगिक कर दिया और यह सिद्ध किया कि मैं मार्कशीटें व्यक्ति की प्रतिभा के बारे में कुछ ख़ास नहीं कहती । चल रही शिक्षा व्यवस्था पर एक सवाल तुम्हारी उपलब्धियाँ खड़ा कर रही हैं ।”

माँ - “ मार्कशीट कौन सवाल खड़ा करत हईन ? मार्कशीट हमेशा सचै बोलत हअ । जब पढ़बअ तब नंबर पउबौ न पढ़बअ तअ न पउबअ । बीएससी तक अवारागर्दी करत रहने तब नंबर अवारागर्दिन वाला मिले । जब मेहनत केहेन तब फल पाएन । अब समाचारपत्रन के जौन चाहें तौन कहानी सुनावै , आज एनकर दिन बनि गवा बा पर नानी के आगे ननिऔरे के हाल न सुनावै । एनकर लगन क्राबिले तारीफ बा पर कुल कहानी दुई - तीन साल के बा बस , ओकरे पहिले तअ आवारै रहने एअ । सब कुछ केहे रहे हम एनका सुधारै के बरे इहाँ तक फ़क़ीर से फुँकवाई के मुस्क- जाफ़रान के गंतौ बाँधे रहे , गंगा मैया के कृपा बा एनकर मति फेर देहेस आज हमका सब के इ दिन नसीब भाव । ऐ सब कुछ ठीक केहेन पर ई चुनाव के काम ठीक नाहीं केहे रहने । गोली चलि गै रही उहौ ताबड़तोड़ पर भगवान संगे रहने बचि गयेन अगर लगि गै होत तब आज का होत ... कुल घर - परिवार - कुल - ख़ानदान में एक ई अकेल हयेन आज इहाँ खुशी के जगह ”

माँ भावुक हो गयी । मामा ने कहा ,” ऐसा नहीं है उर्मिला लगन थी इसमें जब हम इसको श्यामा देवी भगवती प्रसाद में पहली बार नाम लिखाने गये थे तभी लगा था कुछ ख़ास है इसमें । शुरू में मन नहीं लगा पर दिमाग़ था , लगन थी । मुन्ना ने जो भी काम किया सब मन से किया , लगन से किया । अब तो कभी मेरे साहब भी होंगे ।”

माँ - “ पर तोहार साहब कैसे होइहिं तू तअ इलाहाबाद में हअ मुन्ना के इलाहाबाद मिले न , ई एनकर ज़िला हअ ।”

मामा - “ भरथना , ऐटा , फ़तेहपुर , बाँदा , परतापगढ़ कई ज़िले में मैं काम कर चुका हूँ । तुम भी शादी के पहले मेरे साथ भरथना में ही रहती थी । पिछले कुछ साल से इलाहाबाद में तैनाती मिल गयी है पर हमेशा तो नहीं रहेगी ।”

“ भैया तोहका आपन शहर मिल जात हअ तब एनका काहे न मिले ।”

“ यह आईएएस हैं इनको नहीं मिलता अपना ज़िला , हम लोग छोटे - अधिकारी - कर्मचारी हैं हमारे पर यह बंदिश नहीं है । ”

मामी - “ चलअ बहुत अच्छा होये अगर मामा - भांजा एक साथै काम करिहिं मामौ के नाक ऊँची रहे । उर्मिलौ आई जाइहिं इलाहाबाद के तरह का माहौल उहाँ बना रहे । ”

मेरा जन्म मेरे ननिहाल में हुआ था और मैं वहाँ बहुत रहा भी हूँ । मेरे जन्म से लेकर मेरे आज तक के सफर के कई क्रिस्से सबने बयाँ किये । सबने अपनी - अपनी याददाश्त साझा की । मोहिता दीदी ने बताया कि कैसे वह मुझे और दादू को गर्मी की छुटियों में पढ़ाया करती थीं । दादू को कुछ समझ न आता

था और मैं बहुत जल्दी समझ जाता था । फिर मेरा सात साल की उम्र में सिगरेट पीना पकड़ा जाना , पैदल ही उसी उम्र में बाबा के यहाँ से रात में नाना के घर भाग जाना आदि तमाम क्रिस्से लोगों ने साझा किये । सुबह के चार बज गये , रात का अंधकार अभी भी था । यह माँ के गंगा नहाने का समय था । मैं , माँ , पिताजी , मामा - मामी गंगा नहाने चले गये । गंगा नहा कर मामा - मामी अपने घर चले गये । हम लोग घर आ गये । मैं घर आकर सो गया । मेरी आँख थोड़ी लगी ही होगी कि मेरे दरवाजे पर बैंड - बाजे की आवाजें आने लगीं । मेरा भाई ऊपर मेरे कमरे में आया । वह आज बिल्कुल होश में न था , वह आह्लाद की असीम ऊँचाइयों पर था । उसने बताया कि यूनिवर्सिटी के लड़के- लड़कियाँ बैंड- बाजे के साथ घर के सामने नाच रहे हैं । मैं ऊपर छत के बारजे से नीचे देखा एक बहुत बड़ी भीड़ घर के सामने और सरला जोशी रक्स कर रही थी । उसके साथ-साथ बहुत से लोग संगत दे रहे थे । मैं नीचे आया , मेरे नीचे आते ही लोगों ने मेरा जयकारा लगाना आरंभ कर दिया । छात्र- संघ के पदाधिकारी थे , बहुत से छात्र थे । मैंने बहुतों को पढ़ाया था और अब तक कई रिजल्ट का पता चल गया था । अशोक - परेम नंदन - अनामिका - शाश्वत का भी चयन हो चुका था । मुझे दूर से अशोक आता दिखा , वह आते ही मेरे सामने लेट गया वह भी भावुक हो चुका था । भावनायें हॉबी थी हर ओर , सफलता का उन्माद शहर पर चढ़ रहा था । एक बड़ी सफलता शायद इस वर्ष शहर को प्राप्त हो आरंभिक रुझानों से यह लगने लगा था । अशोक को कोचिंग के सात लोगों का अभी तक पता चला था जिसमें दिनेश के अलावा सबका हो चुका था । कोचिंग के बाहर के लोगों को भी इंटरव्यू की ट्रेनिंग तकरीबन सबको दी ही थी । उन सबका अभी कुछ पता न था । मैंने अशोक से कहा आप तीन चालीस पर दिल्ली से आने वाली ट्रेन पर चले जाना , वह ट्रेन प्लेटफ़ॉर्म नंबर सात पर आती है । उस पर एसी बोगी में जाकर आज का पेपर ले लेना उसमें रिजल्ट होगा , वैसे मैं भी जाऊँगा ट्रेन पर । इतने में लाल बत्ती की गाड़ी का क्राफ़िला दिखा । कमिश्नर साहब ने गली के मुहाने पर कार छोड़ दी उनके पीछे ज़िलाधिकारी अशोक पिरयदर्शी भी थे । कमिश्नर साहब के साथ उनकी पत्नी भी थीं । वह लोग पैदल आगे बढ़ने लगे , उनके अर्दली भीड़ में उनके लिये जगह बनाने लगे । साहब के पीछे मिठाइयों के डिब्बे ही डिब्बे थे । साहब ने अंदर आकर पिताजी और माँ के पैर छुये और बताया कि प्रतीक्षा का भी हो गया है और उसकी रँक 57 है । आईएएस में इस बार 107 सीट हैं उसको भी आईएएस मिल जायेगा । साहब ने अर्दली से कहा सारे बच्चों में मिठाई बाँटो । सर की पत्नी ने मेरी तरफ देखकर कहा , “ अनुराग , प्रतीक्षा का कल रिजल्ट के बाद फ़ोन आया था । उसने तुम्हारे लिये संदेश दिया है कि गुरु जी को मेरी तरफ से विशेष धन्यवाद देना , उनके बगैर मेरा होना संभव न था । ”

मैं दिल्ली में प्रतीक्षा के साथ बिताये उस क्षण में खोने लगा जब उसने मेरी कमीज़ पर कुछ लिखा था और मैंने पूछा क्या लिख रही हो , उसने कहा ...

“प्रतीक्षा अनुराग शर्मा । “

कमिश्नर साहब अपने लाव - लश्कर के साथ चले गये । छात्रों का हुजूम चला गया । मैं नहा कर करके से बाहर निकला और सोचा कि समाचार पत्र ठीक से पढ़ते हैं , सरस्सरी तौर पर तो देखा ही था । इतने मैं ही अनामिका चीखती हुई आ गयी । वह दरवाजे से ही हल्ला कर रही थी । वह बहुत भावुक थी , मुझको देखते ही उसकी आँखों से पानी बहने लगा ...

“ सर , मेरा आपने उद्घार कर दिया । मेरी माँ की तपस्या सफल हो गयी । उसने मज़दूरी कर करके मुझे पढ़ाया । मेरे पिता नालायक थे वह शराब पीते थे । उसी शराब की लत मैं वह चल बसे । मैं सात साल की थी जब मैं अनाथ हुई । मेरे गाँव में हरिजन बच्चों को ठाकुर लोग पढ़ने नहीं देते थे । मुझे बहुत तकलीफ से पढ़ाया माँ ने । मैं पराइवेट से हाई स्कूल - इंटर पास की । मैं इंटर एक साल फेल भी हो गयी थी क्योंकि मुझे किताब ही नहीं मिलती थी । जब मैं इंटर पास की तब माँ ने कहा तुम शहर जाओ । सर , शहर में रहना कितना मुश्किल है यह मैं ही जानती हूँ । मैं लोगों को ट्रयूशन पढ़ाकर जीवन काटा , पढ़ाई की । कोचिंग करने की मेरी कोई सामर्थ्य थी नहीं और यह परीक्षा बगैर दिशा निर्देश के हो नहीं सकती । सर , आपने सहारा दिया । मैं अशोक की बहुत शुक्ररुज़ार हूँ । आपने मुझे इंकार कर दिया था कि देर हो गयी है और अब कोई जगह नहीं है पर उसने आप से अनुरोध करके मुझे यहाँ तक पहुँचने में मदद की । सर , मेरी माँ की इज्ज़त- आबर्द भी न बची उस गाँव में । एक अकेली औरत को समाज जीने नहीं देता और वह भी एक उपेक्षित वर्ग की औरत के लिये तो और भी मुश्किल है । सर , उसका त्याग था मैं यहाँ तक पहुँची । इसके आगे अनामिका बोल नहीं पा रही थी वह हिचक - हिचक कर रोने लगी । माँ ने उसको गले से लगा लिया और कहा , मेरी बेटी आईएएस हो चुकी है जिससे लोगों को बहुत उम्मीद है , जिससे लोगों को उम्मीद होती है वह रोया नहीं करते । इतने मैं मेरी कोचिंग के सफल लोगों का क़ाफ़िला आ गया । अशोक ने पूछा , “ क्या हुआ इनको , काहे भोंकार छोड़े हैं यह ?”

कोई कुछ कहता अशोक बोला , ” जब सेलेक्शन के बाद ऐतना भोंकरा रही हैं अगर न हुआ होता तब तो आज बढ़ आ जाती । मैडम आप आईएएस हो गयी हो सलूट- वलूट की तैयारी करो यह सब भावना का प्रवाह और गरीबी का खेला न करो । हम सब गरीब हैं । जो अमीर होता है वह दिल्ली चला जाता है , आप इलाहाबाद में पढ़ रहे इसका मतलब आप गरीब हो । यह गरीब - गुरबों का शहर है मैडम जी । यहाँ के गरीबों ने अमृत लूट लिया था । यहीं के निवासियों ने ढेला मारकर इन्दर पुत्र जयंत के घड़े से अमृत गिरा दिया था । हम सब उन्हीं ढेलाबाजो की संतति हैं । हम सब एक विशुद्ध परम्परा के गरीब हैं , सात पुश्तों के गरीब हैं । लोग अपनी अमीरी पर अभिमान करते हैं , हम

सब अपनी गरीबी पर । इस धरती का यह एक नायाब शहर हैं जहाँ पर लोग गरीबी में अभिमान करते हैं । गर्व से कहो हम सब गरीब हैं पर ... “

मैंने कहा .. “पर क्या ?”

“ हम सब गरीब हैं पर ज़हीन हैं और ... “

“ पूरा करो ।”

“ हम सब गरीब हैं पर ज़हीन हैं और इतिहास बदलने की ताक़त रखते हैं । सर , नया इतिहास आज शाम तक लिख जायेगा । शुरुआती रुझान बहुत अच्छा है । मैडम को बलभर मिठाई चपाओ । मिठाई सारा दुःख - दरिदर हर लेती है ।”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 353

अनामिका थोड़ा संयत होने लगी । मैंने कहा , “ अनामिका , यह तुम्हारी सदाशयता है , व्यक्तित्व का कृतज्ञ पक्ष है जो मुझे या अशोक को किसी रूप में इस सफलता का सहभागी बना रही हो , पर हक्कीकत में यह सिर्फ़ तुम्हारे ज़ज्बे की जीत है । कोई नहीं हारता असफलताओं की पुनरावृत्ति से , उनके आततायी आतंक से हाँ ज़ज्बा ही हार मान जाए तो बात कुछ और है । परिवार - परिवेश - सहपाठी - विश्वविद्यालय - गुरु सबका योगदान कहीं न कहीं जीवन के उन्मुख रुझान में होता ही है पर जैसी परिस्थितियाँ तुम्हारी थीं वैसी और बहुतेरे लोगों की थीं पर वह आज वह सब समाचार से नदारद हैं और आगे भी नदारद रहेंगे क्योंकि हर कोई अनामिका नहीं होता और तुम्हारा साँचा ईश्वर हर रोज़ नहीं गढ़ता । मैं बार- बार कहता हूँ कमज़ोरियाँ एक ताक़त होती हैं अगर उनको सही परिप्रेक्ष्य में देखा जाये । आज तक कोई भी बँगैर कमज़ोरियों के जन्मा ही नहीं है पर एक व्यक्ति अपनी अशक्तता को जीवन में एक बोझ के रूप में देखता है तो दूसरा एक चुनौती के रूप में , यही दृष्टिकोण फ़र्क़ ले आता है । यह एक सर्वमान्य सत्य है कि बँगैर चुनौतियों के व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ता नहीं है इस सत्य को तुमने समझा और स्वीकार किया । तुम्हारी जो रैंक है उसमें रिझर्व कैटेगरी में आईएएस निश्चित रूप से मिलेगा । अब एक लंबा दौर जीवन का हमारा साथ बीतेगा ।”

अशोक - “ सर , हमको किस बात का शरेय दे रही हैं कलेक्टर साहिबा ? ”

मैं - “ आपने इनकी सिफारिश की थी ।”

अशोक - “ सर , एक बतायें ? ”

“ हाँ ।”

“सर , हमको आदमी की पहचान है । हम इनको देखकर ही समझा गये थे कि यह जीवन में कुछ अंधेरा टाइप काम करेंगी । अभी आगे और अंधेरा करेंगी ।”

“अंधेरा टाइप काम ?”

“सर , अब ई अंधेरे - अंधेरे करेंगी ।”

“यह आईएएस होना अंधेरा है ?”

“सर , यह अंधेरे काम की शुरुआत है । अब यह गाँव में जो - जो पढ़ने में समस्या किया होगा उसके पीछे लगेंगी । गाँव के तथाकथित मानिंद लोग तो आज दोपहर बाद से सो नहीं पायेंगे । अभी दस-बीस रुपिया का टिकट कटायेंगी और गाँव में हल्ला जुत जायेगा । और कुछ साल बाद माघमेला में साधुओं की बाढ़ आयेगी । पर सर एक बात और कहें ?”

“हाँ कहो ।”

“सर , जाने दीजिये आज नहीं कहते ।”

अनामिका - “कह दो - कह दो नहीं तो तुम्हारा पाचन तन्त्र ख़राब हो जायेगा । तुम अब मसूरी में भी साथ चलोगे , वहाँ भी चैन से जीने नहीं दोगे ।”

अशोक - “सर , आपने कहा था एक बार कि मैं मसूरी को हिंदी माध्यम के छात्रों से पाट दूँगा । सर , पता नहीं लोग पटे कि नहीं । मेरी ज़बान ख़राब है जो मैं कहता हूँ वह होता नहीं पर कहे देता हूँ । अभी बहुतों का रिज़ल्ट पता नहीं है । पर सर मसूरी में इलाहाबाद के लोग होंगे काफ़ी इस बार , यह संभावना दिख रही है । सर , चलता हूँ आज शाम को गाँव चला जाता हूँ । समाचार सुनाकर आता हूँ , कल सबरे ही आ जाऊँगा ।”

अशोक ने मेरे भाई से कहा , “यार दो- तीन डिब्बा मिठाई देना कमिश्नर साहब लाये होंगे । मैं गाँव जा रहा अपना समाचार बताने लेता जाता हूँ । यहाँ तो मिठाई ही मिठाई आ रही होगी । कमिश्नर साहब आज - कल में फिर आयेंगे हीं । विवाह वाले आज से और तोड़ मारेंगे । चुन्नू सुनो , जो मिठाई ठीक से लेकर न आवे उसका रिश्ता तुरंत रिजेक्ट करो , सब काला धन वाले ही आते हैं । काला धन वाला आदमी समाज पर बोझ होता है पर काला धन हो और आदमी कंजूस हो वह महाबोझ होता है और पृथ्वी का संतुलन पूरी तरह बिगाड़ देता है । ऐसे आदमियों का विवाह तुरंत रिजेक्ट करो । सुनो , कमिश्नर साहब वाला डिब्बा लाना , वह नेतराम का होगा ।”

मैं - “कैसे पता वह नेतराम का होगा ?”

“सर , बड़े बाबू से अपना अच्छा ताल्लुक है । सर सब मिठाई फ्री की है ।”

“कैसे पता ?”

“ सर अब कमिश्नर इलाहाबाद मिटाई का पैसा देने लगे तब तो अंधेर हो गया । ”

“ मतलब अब अनामिका मिटाई का पैसा नहीं देगी ? ”

“ सर , यह किसी चीज़ का पैसा नहीं देगी । अब यह ताउमर मुफ्तख़ोरी करेंगी । ”

“ नहीं , ऐसा नहीं होगा ? ”

“ सर , आप बुरा न मानें तो एक बात कहूँ ? ”

“ हाँ कहो , आपका लड़कियों पर विशेष अनुग्रह है । आप थोड़ा दुई अँखियाँव करते हैं । ”

“ ऐसा नहीं है । ”

“ सर , आप किसी से पूछ लो । ”

“ हो सकता है अशोक , लड़कियाँ कम सलेक्ट होती हैं , उनको बढ़ाने के लिये ऐसा अचेतन मन में ख्याल हो । ”

“ सर , आप जो करते हो सचेतन करते हो । आपका अचेत- अवचेतन मन भी सचेत है । ”

इतने में माँ चाय लेकर आ गयी । उसने पूछा , ” केकर मन सचेत बा ? ”

अशोक - “ आंटी जी मैं कह रहा था , सर सारा काम सचेत होकर करते हैं । ”

“ ऐ स्कीमी है । हर काम में ऐनके चाल रहत हअ । जब मुन्ना परेम से बोलैं समझ लअ अब कुछ ठगिहिं ऐ । कबीर के एक दोहा सबके सुनावत हअ न ए .. माया महाठगिनी हम जानी । माया हटाई के इहाँ एनकर नाम लिख दअ । ”

मैं “ माँ , तुझे कोई मौका मिले मेरा तू सब धो देती है । पूरा प्रेस - समाचार मेरे नाम के क़सीदे पढ़ रहा और तुम यहाँ मेरा धोबीघाट चालू कर दी हो । ”

“ ई प्रेस तअ उहै लिखे नअ जौन तू आज कहबअ । ओका का पता तोहार इतिहास । ”

मैं समझ गया कि अब यह अपने रौ पर आ गयी है और सारा कच्चा- चिट्ठा खोल देगी । मैंने बात बदलते हुये कहा , इन लोगों को मिटाई दे दो घर जा रहे अपने ।

माँ- “ हाँ ज़रूर । ऐतना मिटाई का करब । साहब पचासन डिब्बा मिटाई लाये होंगे । ”

अशोक - “ आंटी जी गिनिये कहीं वह 51 तो नहीं है शगुन का होगा ।”

मैं समझ गया कि अब यह प्रतीक्षा की बात छेड़ देगा शगुन की बात से । मैं माँ के सामने प्रतीक्षा की बात बिल्कुल नहीं करना चाहता था । मैंने बात बदलते हुये कहा , अच्छा अब आप जाओ । आप लोग शाम की ट्रेन से आने वाले पेपर में नाम रोल - नंबर देखकर जाना ।”

सब लोग चले गये मैं पेपर पढ़ने लगा ।

पेपर ने काफी लिखा था .. “ छात्रसंघ अध्यक्ष अनुराग शर्मा आईएस टॉपर”
.. “ एक नया इतिहास .. नेतृत्व एक नये कलेवर में “
“ इलाहाबाद वापसी की राह पर .. ”

तस्वीर मेरे गली , मेरे घर , मेरी माँ - पिताजी ... मुहल्ले के भीड़ सबकी थी । कुछ लोकल समाचार पत्रों ने कुछ अधिक लिखा था । गाँव का नाम , शिक्षा , जीआईसी , ईसीसी का भी ज़िकर कर दिया था । मसालेदार खबरों के बगैर इलाहाबाद कहाँ मानने वाला .. “ सूपड़ा साफ़ कर देगा इस बार इलाहाबाद .. ”

“ अनुराग नहीं यह आँधी है .. ”

“ नेहरू और महामना की धरती पर एक नव बौद्धिक नेतृत्व “

“गंगा - यमुना - सरस्वती .. कावेरी - ब्रह्मपुत्रा पर भारी ।”

मैंने समाचार पत्र को कई बार पढ़ा । चुन्नू सारे समाचार पत्र ले आया था । पूरा घर उसको पी सा गया था । सबको शाम की ट्रेन का इंतज़ार था । माँ पिछले साल के पेपर के रिज़ल्ट वाले पेज को मढ़ाकर रखी थी । उसे आज के पेपर के उसी पेज का इंतज़ार था । मैं दस बजे विश्वविद्यालय गया । पूरा विश्वविद्यालय एक अलग सुर्ख़ार में था , एक ऐसा सुर्ख़ार जो खुमार बनने को तैयार न था । आज साइकिल स्टैंड वाला भागकर बाहर आया । उसने मेरी साइकिल पकड़ते ही कहा , ” अध्यक्ष जी आप ने एक बहुत बड़ा परचम गाड़ दिया । ”

मैं यूनियन हॉल पर पहुँचा । वहाँ हमेशा भीड़ रहती ही है । , एक बहुत बड़ी संख्या में लोग मेरी ओर आने लगे , आज लगता है कोई क्लॉस करने को तैयार न था , सब इस क्षण में जीना चाहते थे । मुझे गेट पर ही लाल बहादुर वर्मा सर मिल गये । वह अपनी लम्बरेटा स्कूटर से उतर गये । मैंने उनके पैर छुये । मैं उनसे बहुत मिलता था इतिहास पर विमर्श के लिये । उनकी इतिहासबोध पत्रिका में पढ़ता भी था और कुछ- कुछ सलाह भी देता था । उनकी आधुनिक इतिहास की कार्यशाला में मैंने हिस्सा लिया था और बहुत से लब्ध प्रतिष्ठित लोगों को सुना था । वह भी बहुत ही परिपक्व व्यक्ति थे ,

भावुक कम ही होते थे पर आज वह भी थोड़ा बात कहते हुये संवेदना के आवेग में थे । वह मार्क्सवादी विचारधारा के व्यक्ति थे और ईश्वर की दुनियावी अवधारण में यकीन नहीं रखते थे । मैंने कहा , ” सर , आप सबका आशीर्वाद और ईश्वर की महती कृपा थी आज यह दिन भाग्य में नसीब हुआ । ”

“ अनुराग , ईश्वर की कोई कृपा नहीं होती , यह भाग्य का प्रवचन प्रायः अंधविश्वासी एवम् कर्महीन लोगों का एक आलंबन होता है । तुमने अपने पौरुष से इसे प्राप्त किया है , अपने आप पर गर्व करो । हम सब मात्र प्रतीक रूप में ही सहायक हैं , संग्राम योद्धा का ही होता है किसी सहायक का नहीं । मैं आशा करता हूँ तुम इस परिसर से पहले की परम्परा का पालन नहीं करोगे । इस परिसर से हुये तो बहुत पर कोई भी क्रज्ज उतारने नहीं आया । मुझे उम्मीद है तुम इस परिसर के लिये कार्य करोगे और आने वाली नस्लों को एक नयी दिशा दोगे । ”

“ ज़रूर सर । अवश्य करूँगा । अभी आता हूँ आपके चैंबर में । ”

“ आओ , इंतज़ार करूँगा । ”

सर , चले गये । मैंने एक चेहरे से परिचित लड़की को बुलाया , उसका नाम नहीं पता था । उससे कहा सरला जोशी को देखो वह कहाँ है उससे कहना शाम को मेरे घर पर आयेगी । यह कहकर मैं हिंदी विभाग चला गया । हिंदी विभाग में एक अलग ही उत्साह था । हिंदी माध्यम - हिंदी साहित्य सिविल सर्विसेज़ परीक्षा में एक वैकल्पिक विषय - एम.ए. प्रथम वर्ष का छात्र - अपने परिसर में सारी कक्षा में साँस लेता साथ बैठकर पढ़ता .. अब इससे अधिक और क्या चाहिये अपना आदमी टॉपर है कहने के लिये । मैं कई अध्यापकों से मिला बधाई ली - आशीर्वाद लिया , विश्वविद्यालय में विचरण किया और विश्वविद्यालय से ही सीधे रेलवे स्टेशन चला गया । रेलवे स्टेशन पर पहले से ही सब जमा थे । पिछले साल मैं अकेला ही था पर इस बार बहुत से लोग थे । दरेन रूकते ही सब दरेन की बोगी में घुस गये । मैं बाहर ही खड़ा रहा । जिसके जो पेपर हाथ लगा वह ले लिया , तक़रीबन पेपर की लूट मच गयी । मैंने पिछले साल जहाँ पर बैठकर अपनी रैंक गिनी थी वह जगह मुझे दूर से दिख रही थी । पेपर आते ही मैं वहीं पेपर लेकर चला गया , हम सबने ज़मीन पर बैठकर अपनी - अपनी रैंक गिनी । मेरा नाम तो पहला ही था पर जैसे - जैसे नाम गिनता गया धड़कने बढ़ती गयीं । एक - एक करके लोगों का नाम मिलता गया । तेईस में से एककीस कोचिंग से चयनित हो चुके थे । मैंने जिनको इंटरव्यू की दरेनिंग दे दी थी वह भी चयनित हुये थे । एक खुशी का माहौल स्टेशन पर हर ओर , यह शहर की एक बड़ी सफलता थी । यह लग गया कि शहर वापसी की ओर है । अब रैंक ऊपर - नीचे की गणना आरंभ हो गयी , कौन सी सर्विस मिलेगी इसका डिस्कशन आरंभ हो गया । आईआरएस इलाहाबाद शहर की एक बहुत प्रिय नौकरी थी , वह किसको - किसको मिलेगी इस पर ऑफिलन शुरू हो गया । अशोक की रैंक 325 थी उसने कहा

मेरा आईआरएस लगता है बॉर्डर लाइन होगा । अनामिका की रैंक 399 थी , इसको आईएस मिल जायेगी वह अनुसूचित जाति वर्ग की लड़की थी , परेम नंदन की रैंक 113 थी उसे आईआरएस मिल जायेगी । शाश्वत 93 पर थे वह अपनी गणना में लग गये थे , पर मेरी उस गणना में कोई रुचि न थी , मैं इन सब चीजों ये बहुत ऊपर हो चुका था इस वर्ष के परिणाम में । एक पेपर लेकर बाक़ी के पन्नों को ओवर ब्रिज से उड़ाकर रेलवे लाइन पर फेंकता हुआ रिजल्ट वाले पेज को क्रमीज़ की उपर की बटन खोलकर क्रमीज़ के अंदर एक निधि की तरह बंद करता हुआ रेलवे स्टेशन की सिविल लाइंस वाली साइड की तरफ की सीढ़ियों पर उतरने लगा । साइकिल को स्टैंड में तो कभी खड़ा करता था नहीं , कौन चोरी करेगा यह पुरानी खटारा साइकिल । पर बाहर निकला तो देखा साइकिल है नहीं । मैंने अशोक से कहा , ” साइकिल कौन ले गया ? यह पुरानी साइकिल का कोई क्या करेगा ? ”

“सर , अब वह एक आम साइकिल नहीं है , एक हिंदी माध्यम के आईएस टॉपर की साइकिल है । वह चन्द्रशेखर आज़ाद की पिस्तौल टाइप हो गयी है । अब वह लाखों में नीलाम होगी , लगता है कोई मुख्यबिर है , उसने बता दिया होगा । ”

“ नहीं यार । ”

इतने में साइकिल दिख गयी । प्रसन्नता में मेरा होश ठिकाने ही न था , खड़ी कहीं और किया था और ढूँढ़ कहीं और रहा था । बड़े आराम से साइकिल को स्टैंड से उतारा । धीरे - धीरे पैदल ही चलने लगा । इसमें से कई लोग गाँव जा रहे थे अपना समाचार सुनाने । मैंने कहा जो भी गाँव जा रहा , कल देर रात तक आ जाना , परसों कुछ काम है । वह सब जी सर कहकर चले गये । आज सिविल लाइंस , अंबर कैफ़े , कॉफी हाउस का बाहरी आवरण , सिविल लाइंस सब कुछ अलग ही लग रहा था । मैं हनुमान मंदिर होता प्रसाद लेता घर पहुँच गया । घर पर आने - जाने वालों का ताँता लगा हुआ था । माँ ने थोड़ा नाराज़गी भी ज़ाहिर की कि सुबह से कहाँ ग़ायब थे , मैंने बताया कि विश्वविद्यालय गया था और फिर रेलवे स्टेशन गया था पेपर ले आने । मैंने पेपर का वह पन्ना माँ को दे दिया , सारे लोग पेपर पर ही लग गये । इस बार कुछ खोजने को था ही नहीं , पहला नाम ही था । लोग नाम खोजने लगे और लोगों का । मेरे कोचिंग के लोगों की भीड़ इकट्ठा होने लगी । दो को छोड़कर सब हो गये थे । शहर के और लोगों को भी इंटरव्यू की ट्रेनिंग दी थी उसमें सो भी कुछ हुये थे । किसी ने बताया कि अमित चौधरी का नहीं हुआ । अमित चौधरी ने मुझे पिछले वर्ष बहुत अपमानित किया था । हलाँके वह अपमान में भूल चुका था पर मानस पटल पर कहीं था वह बाक़या अंकित था । उनके न होने का अफ़सोस भी हुआ । उनका अंतिम चांस था शायद । अब उनका आईएस बनने का सपना ध्वस्त हो चुका है । वह अब राज्य सेवा आयोग की परीक्षा में प्रयास करेंगे , और तो कोई चारा है नहीं । वह अब मेरे

अधीन कार्य करेंगे , समय का चक्र बहुत बलवान होता है । थोड़ी देर में सरला जोशी आ गयी । मैंने उससे कहा , ” सरला , यह बहुत बड़ी सफलता है । इस सफलता को भुनाना ज़रूरी है । ”

“ कैसे करेंगे सर ? ”

“ एक आम सभा करते हैं परसों इसी मुद्दे पर । यह बताने का प्रयास करते हैं कि छात्र- संघ का न होना हमारे पठन- पाठन में सहायक रहा और अब इसकी कोई ज़रूरत नहीं है और रात में मशाल जुलूस निकालते हैं । आप किसी को हवा मत होने दो हम क्या करने जा रहे । सिर्फ यह कहो कि पढ़ाने की एक नवीन विधि थी जो शहर को सफलता की ओर उन्मुख कर गया उसी पर संवाद होगा । इतने अधिक सफल लोगों को देखने के लिये लोग पागल हो जायेंगे बाक़ी मुझ पर छोड़ो । दिन में आम सभा करते हैं और रात को मशाल जुलूस निकालते हैं । पहली बार मशाल जुलूस शिक्षा के प्रसार के लिये । इसकी तैयारी करो । राम अशीष मौर्य को भी बता देना बाक़ी कार्य वह कर लेगा । ”

“ ठीक है सर । ”

मैं क्या करना चाहता था यह मैं ही जानता था । अगले दिन सायंकाल तक सभी लोग घर से लौटकर आ गये थे । अगले दिन के पेपर में पूरा रिझल्ट छप गया था । सभी का नाम रैंक फ्रोटो सब था । शरेय कोचिंग को भरपूर मिल ही रहा था , वह मिलना ही था । एक नयी हवा बह चुकी थी । सुबह - सुबह आंटी भी दिल्ली से आ गयी । उसने समाचार सुनते ही चलने का कार्यक्रम बना लिया । उसने आते ही मेरा माथा चूमा । यह आंटी बहुत किया करती थी । आंटी कुछ कहती मैंने पहले ही कह दिया , ” पिछले साल माँ ने अपना मोक्ष त्यागा था , इस बार आपने अपनी सारी भक्ति और उपासना से उपजा संचित धर्म दे दिया । आंटी , इसमें मेरा कोई ख़ास योगदान नहीं है । यह सबका आप लोगों का कर्म फलित हो रहा है । ”

आंटी भावुक हो गयी । उसने भावुक शब्दों में कहा , “ अनुराग जैसे भी हुआ हो पर तुमने एक पूरे समाज - परिवार - परिवेश को गर्व दिया है । ” उसी समय शक्ति डिस्ट्रिब्यूशन वाले आ गये । आहूजा साहब ने उनको फोन करके मेरे घर अपनी तरफ से बधाई देने के लिये भेज दिया था । वह उनका एजेंट था इलाहाबाद में , वह बहुत बड़ी मात्रा में फल - मिठाई - नमकीन लेकर आया था । जहाँ पाँच सौ ग्राम जलेबी में हम सब भाई - बहन लड़ मरते थे खाने के लिये , वहाँ मिठाईयों का ताँता लग चुका था । आंटी आते वक्त आहूजा साहब के यहाँ मिठाई देते हुये आयी थी । उसने बताया कि मेरे सामने ही आहूजा साहब ने टरंकाल करके ऋषभ- शालिनी को बताया था । ऋषभ तेरह जून को आ भी रहा है । आज का पेपर समाचार से रंगा था । सरला जोशी ने

समाचार दे भी दिया था कि एक आम सभा विश्वविद्यालय में सिविल परीक्षा में आयी एक बड़ी सफलता के मुद्दे पर । कच्चेरी में फरगैया ने सुबह दस बजे पहुँचते ही आवाज़ दिया .. ”ऐ छोटे सजीवन देखानेन ? ज़रा देखअ कहाँ हेरान हयेन ओ देखानेन नाहीं कालि से .. एक खौलत चाहि हमका दै दअ तब जा देखअ कहाँ हयेन सजीवन ... ज़रा तबियत से मीठा डालि देहअ आज तअ तनिक अधिकै मीठ चाहि चाही..आज तअ मुँह मीठ करब बहुतै ज़रुरी बा । लअ दस रूपिया हमसे तुहुँ मोह मीठै कै लअ , हमरे भौजी के सगै बहिन के भयने आईएस टॉप केहे बा । बढ़ि जा कलेक्टरेट ओरी उहीं केहू से लपटियान होये सजीवन ।”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 354

“ ई ससुरा छोटे मोहवै जरई देहेस आज , ऐतना खौलत चाहि लै आई देहेस । आवअ सजीवन आवअ कहाँ हेरान हअ कालिन से ? ऐ छोटे एक चाह और लै आ । का पेपर हाथे में बाँधे टहरत हअ सजीवन , लागत बा कुल पेपरै पी लेहे हअ आज ।”

“ पालेगी भैया । ई तअ कमाल होई गवा ।”

“ हम का कहे रहे सजीवन याद बा ?”

“ खूब याद बा भैयऊ , तू कहे रहअ ई बा बड़ा मदारी बा , खेला बड़ा देखाए ई ।”

“ तब ! खेला बड़ा बा कि नाहीं । “

“बा तअ बड़ा पर कैसन खेला खेलत बा ई ?”

“ई बतावअ सजीवन खेला बड़ा बा या बहुतै बड़ा बा ?”

“ अरे भैयऊ अब ऐसे बड़ा खेला का होये ! “

“ नाहीं.. अबअ ई और बड़ा खेला देखाए ।”

“ अब और बड़ा का होये ऐसे ?”

“पेपर लेहे भिंसारे से टहरत हअ पर काम के समाचार देखान नाहीं तोहका ।”

“ कौन समाचार भैयऊ ?”

“देखअ इ करत बा एक आम सभा । कुल आईएस एन के लगाये प्रदर्शनी और हल्ला बोले कोचिंगन पर । का पता लै के तालै सब में बंद कै देर्इ । अब

आज तअ ऐकर बाज़ार बनिन बा । कुल कोचिंग फेल होई गयेन और ई दिल्ली तक दाँई मारे बा ।”

“ दिल्ली तक कैसे ?”

“ अरे , कमिश्नर के बहिन पढ़ति बा दिल्ली पर आई रही इलाहाबाद ओकौ ई सिखाएस - पढ़ाएस . अब इहो गाए ऐ ।”

“ मतलब अब इ प्रचार करे ?”

“बलभर करे पर प्रचार- प्रसार करे , पर करें सँभाल - सँभाल के ।”

“ ऊ कैसे भैया?”

“खुद न कहे , ई लोगन से कहवाये । बस देखत जा एकर माया , ई बहुतै मायावी बा ।”

“ भैया ई बतावा .. कोचिंग के खिलाफ़ बोलै में

ऐकर का फ़ायदा होये ?”

“ एक बात कही ?”

“ कहउ भैया ।”

“भयनवा खुराफ़ती बा मगर ... “

“ मगर का ? “

“ भगवान के शुकर मनवाअ एका खुराफ़ती बनाएन पर बेवकूफ़ नाहीं । अगर मनई खुराफ़ती बा और बेवकूफ़ होई गवा तब समझि लअ ऊ समाज के नाश करे । एका भगवान जीनियस बनाएन और खुराफ़त दै देहेन । अब जीनियस मनई तनिक झक्की होत हअ इ तअ सर्वविदित बा , पर इ भयनवा तअ महाझक्की बा । भगवान कई मन दिमाग़ देहेन एका उहो ऐसन देहे हयेन कि हर ओर उड़िलात बा , कुल जमुनापार के कोटा एकै मनई के देहे हयेन , अब का करबअ । अब देखअ एनकर झक्कीपन के खेला , पर बा खेलाबाज ।”

“ भैया समझावअ एका , हर जगह बयाना न लै लिहा करै । राजनीति में लेहे बा , अब कोचिंग वालन से लेत बा । ओ सब धनपशु हयेन , रूपियै- रूपियै बा । अब रूपिया के माई पहाड़ चढ़ै , एका लै बितहिं । गरीब- गुरबा के बेटवा हई ई । गरीबी के ध्यान दै के आगे बढ़ै चाही पर ई तअ मरकही भैंस के नाहीं नादिन में चोट करत रहत हअ ।”

“ ई एकर झक्कीपन एकरे संगेन जाये सजीवन । चलअ एक चाहि और मँगवअ ।”

“ भैयऊ .. “

“ हाँ बोलअ सजीवन ।”

“ हमका आजतक मिलवायअ नाहीं ।”

“ कालि बोलवाइत हअ झहिं कचहरी में । हमार भौजी ओकर मामी सगगिन बहिन हई । जहाँ कहब झहाँ आए । ददुआ आज- काल में आये , ओकर कुछ कास बा हमसे , बोलवाइत हअ भयनवा के । ”

“ भैया घरे चलअ ओकरे । कुल परिवार देखाए , ओकर महतारी- बापौ से मुलाक़ात होई जाए । जगराम से मीठा मँगाई लेइत हअ चलि के बधाई दै देई , हमरे डेबरा के लडिका हअ ई , हम सबके एक नई पहिचान देहेस “

“ चलअ पुनि .. काल साँझे के तै रहा । पाँच किलो लड्डू मँगाई लेहअ , अब आईएस्ट टॉपर के बधाई देई चलत हई कौनौं क्लर्क के थोड़ौ । ”

“ ठीक बाँ भैया , एक बात और फरियाई दअ ।”

“ का ? ”

“ सर्वेश के का होए अब ? ”

“ जौन रोज़ भयनवा चाहि ले उहीं रोज़ उद्धार होई जाए । अशोक पिरयदर्शी कलेक्टर के हिम्मत बा कि एका ना कहिं देई । ”

“ मतलब भयनवा चाहत नाहीं बा ? ”

“ नाहीं । ”

“ काहे भैया ? ”

“ घरे के राजनीति । ”

“ का राजनीति बा ? ”

“ केहू से न कहअ तब बताई । ”

“ न कहब भैया । ”

“ घरे में दुई धड़ा बा । एक धड़ा बा रामेश्वर मिश्रा , ओनके बड़ा लडिका कामेश्वर और ओनके बेटवन के । दूसर सर्वेश के । भयनवा के महतारी रामेश्वर मिश्रा के संगे हइन । अब सर्वेश के कंटरोल करै बरे ओनकर नसि दबी रहै इ ज़रूरी बा । भयनवा के महतारी बड़ी बैठकबाज बा । ऊ कुल गोटी घरे के घुमावत रहत हअ और ई भयनवा बहुत डेरात हअ ओसे । ”

“ और भैया रामेश्वर मिश्रा के तीसर लडिका कांतेशवा कौन धड़ा में बा ? ”

“ ऊ निरबंसी बा । ऊ थाली के बैंगन हअ । ओका जहाँ आपन फ़ायदा देखाये उहीं जाये पर ओकर सापट कारनर सर्वेश संगे बा । ”

“ भैया ई सापट कारनर का होत हअ ।”

“ यार , मतलब लगाव .. ।”

“ भैया तेहार राजनीति कहति बा कि एह समय घोड़ा के लगाम भयनवा के महतारी के हाथे बा ।”

“अरे ऊ बड़ी बैठकबाज बा । ऊ दूसरे के रथे के घोड़ा खोलि के अपने रथे में जोति लेहे बा । अब दौड़ाउ ओकरे संगे , रथे के धूरि से आँख - आँधियार होई जाए ऐसन रथ दौड़ाये ।”

“ भैया , काल साँझे के पक्का?”

“हाँ पक्का .. पाँच किलो लड्डू बँधवाई लेहअ उहौ जगराम से । “

“जैसन आदेश भैया । “

दाढ़ू पहुँच गया । दरवाजे से ही बोला “ मार भांजे । “ और घर में आते ही बोला , “ बुआ गदर होई गवा । कुल गाँव- डेबरा पेपरै पढ़त बा । उहै पेपर पुनि - पुनि पढ़त हयेन सब । कुल गाँव मुन्ना भैया के बचपने में लुब्धा बा । बुआ .. हर ओर क्रिस्सै- क्रिस्सा बा । तोहार भाई क्रहत हयेन हमार ओरासत मुन्ना के जाए ।”

“ महामाई सकाई गई ओनके ओरासत के । तुहिं लार टपकावत हअ ओनके ओरासत बरे । अगर देई के रहा तब जब पढ़त रहा तब देहे होतेन । दुई पैसा कभौं ओकरे हाथे रखने नाहीं । कंजूस मनई के जे ओरासत ले ऊ कभौं सुखी न रहे । पर ई बतावअ , अबअ घरे के खेत बँटा नाहीं , बाबू जियत हयेन । जेतना संपत्ति में ओनकर हक्क ओतनै हमार । जब बँटि जाये तब ओरासत के बात करै । लिखवाई लअ तू अपने नाम , क्रब्जा पउबअ ? अबअ हमहूँ एक हिस्सेदार हई । हम लै के लाठा बँटवाई लेब जब चाहब । अबअ तक तअ सर्वेश - सर्वेश करत रहने । क्रहत रहने कि उर्मिला साँप बा , खेत - बारी बटै नाहीं देति बा । अब उर्मिला के बेटवा के ओरासत देत हयेन । इही बारे बड़े-बुजुर्ग कहि गअ हयेन .. समय बना तब सब संगे .. समय बिगड़ा तब केऊ नाहीं संगे । बाबू से लड़त रहने एक आखर कहि का दिहा हमार घर छोड़ देहेन । “

“अरे बुआ . अब शक्ति - संतुलन बदलि गवा बा । मुन्ना के चेला अब ज़िला सँगलिहिं । “

“ दाढ़ू , ठीक बा मुन्नवा होई गवा पर हम ई मुन्ना- मुन्नी माथे नाहीं हई । अबअ हमहिं बहुत हई । का हाल बा साहेब के ।”

“अरे बुआ का बताई..

साहेब गिरेन भरहरा खाई ,

महलों वाली रानी बोली

अब तअ नहीं करूँगी रार ।”

“ हमका आल्हा न सुनावअ, समाचार दअ ।”

“ बुआ , एक चाल चलिहिं अब । “

“ कौन चाल ?”

“ मुन्ना दरेनिंग में जाई के पहिले ओनकर इनकवायरी बंद कराई के जाई ।”

“ अरे बंद करवाई देब , केतनऊ बा तअ हयेन हमार भाई ।”

“ मुन्ना भैया कहाँ हयेन बुआ ?”

“ ऊ तअ अलगै धुन में बा । आज एक मीटिंग करत बा यूनिवर्सिटी में । जा देखअ का करत बा । आई के बतावअ , ओकर तो कुछ काम समझै नाहीं आवत । सन्न मारि के घरे- दुवारे रहअ पर ओकरे पोर - पोर में सनीचर बा ।”

यूनिवर्सिटी रोड से सारा क्राफ़िला यूनियन हॉल की तरफ़ , एक विशाल भीड़ मुझे सुनने के इंतज़ार में । इस साल के सफल लोगों का जत्था मंच के आसपास । सरला जोशी माइक पर कहती हुई .. अनुराग सर बस आ ही रहे अपनी बात कहने शहर की इस ऐतिहासिक सफलता पर । मैं यूनियन हॉल पर पहुँच गया । शहर का जयकारा लग रहा था । यह भी मेरी एक रणनीति थी , शहर का जयकारा लगाओ । इलाहाबाद - इलाहाबाद हर और और मैं मंच पर बढ़ता हुआ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज भाग 355

मैंने मंच से एक सिंहावलोकन पूरी एक बड़ी भीड़ का किया , भीड़ एक आळाद दे रही थी । स्टेज के सामने इस साल के सफल लोग थे .. बड़ी मात्रा में थे .. एक जनसैलाब .. इलाहाबाद .. इलाहाबाद के नारे एक स्वर में लगा रहा था । हर और एक ही शोर इलाहाबाद .. इलाहाबाद .. सरला जोशी मेरे पीछे से इलाहाबाद जैसे ही बोलती थी पूरी भीड़ गगनभेदी स्वर में आकाश कंपायमान कर देती थी । सर एनझा , सर पीसी बनर्जी, सर सुंदर लाल , सर गंगा नाथ झा के छात्रावासों के कमरे तकरीबन खाली हो चुके थे , यूनिवर्सिटी रोड से लोगों का सैलाब यूनियन हॉल की ओर बढ़ता जा रहा था । शायद जय प्रकाश नारायण की समग्र करान्ति के आळान के बाद की यह सबसे बड़ी भीड़ इलाहाबाद के यूनियन हॉल पर रही होगी । मुझे याद आया

राम जेठमलानी का इसी यूनियन हॉल पर बोफोर्स के मुद्दे पर किया गया
छात्रों को संबोधन । वह भीड़ आज के जन सैलाब के समुख कुछ न थी ।
मैंने हवा में हाथ उठाया , मेरे हाथ उठते ही भीड़ शांत होने लगी । सब मुझे
सुनना चाहते थे । किसी को न पता था कि मैं क्या कहना चाहता हूँ ।

“ गीत गाये थे कभी
यातनाओं की वेदना से ”

इतना ही मैं कह पाया भीड़ फिर शोर करने लगी ...

इलाहाबाद .. इलाहाबाद ..

मैंने फिर हाथ उठाया भीड़ शांत होने लगी

“ गीत गाये थे कभी
यातनाओं की वेदना से
शब्द बोझिल थे मेरे
संशय की अटखेलियों से
आसमान था दूर कहीं
अंधकार के आवरण में
जल रहा था एक चिराग
लड़ता हवाओं के आतंक से
ऐ हवाओं ,
तुमने शायद सोचा था
एक चिराग ही तो है
बुझ जाएगा कुछ देर में

ऐ हवाओं हारने की आदत डाल लो
हर रोज़ जिद करना ठीक नहीं । ”

“ ऐ इलाहाबाद एहसान तेरा , तूने हमें सहारा दिया । मैं आज वह नहीं होता जो
मैं हूँ अगर मैं इस शहर में पैदा न हुआ होता । कहानी अभी शुरू हुई है , यह
एक अधूरी कहानी है । हम सब गुनहगार हैं इस शहर की बर्बादी के । जब

ज़रूरत थी कौम के लिये खड़े होने की हम सब जीवन की सहूलियतों में मशगूल थे । जब ज़रूरत थी भीड़ से अलग होकर एक आवाज़ भीड़ के खिलाफ़ लगाने की हम तटस्थ थे । जब ज़रूरत थी खून बहाने की हम अपने ही खून को बचाने की क्रवायद करते रहे । जब मर रहे थे लोग ज्ञान के निवालों के लिये हम सब निस्पृह थे उनकी भूख से । हम सब इस बेजुबान शहर के शरीर को कुतरने की प्रक्रिया के चश्मदीद गवाह हैं वह भी तब जब कई अनगिनत रातों से यह शहर मौन होकर कह रहा दीमक की तरह हर रोज़ कोई मुझे चाट रहा ।”

इलाहाबाद .. इलाहाबाद फिर गूँजने लगा । भीड़ पागल हो रही थी । मैं फिर बोलने लगा ।

“इस इमारत ने पिछले दो - तीन दशकों में सिर्फ़ स्वार्थियों को जन्म दिया है । वह सब अपना भविष्य बनाकर भूल गये उस ईंट को जिसकी नींव छत से पूछती है आज क्या कोई अपना आया है । छत नींव से झूठ बोलती है यह कहकर, “वह आने वाला है” । क्या करे यह छत उससे नींव का रुदन बर्दाश्त नहीं होता । ऐ शहर तूने जो संस्कार हम सबमें पिरोया है, बहुत शिद्धत से बनाये हैं तूने यह संस्कार यह कहकर, परे है तेरा यह जीस्त इस दुनियावी वस्ल और हिजर की हड़ों से । ऐ शहर .. अपने ख्वाबों से दुनिया को उजाला देने वाले ... मैंने तेरे लफ़ज़ों को महसूस किया है, मैंने हर रात ख्वाबों में तेरे साँसों के शोर को महसूस किया है जब तू मुझसे बात किया करता है । इस अमृतपान के शहर में आज चाँद डर कर क्यों निकलता है ? सूरज भी जल्दी छिपने की कोशिश में क्यों रहता है ? इतना तुफ़ाँ क्यों मचा है इस अपनी ही मिल्कियत में जहाँ असफलता का भय हर रोज़ सताता है हमें ? अँधेरा चाँद को डरा कर क्यों टहलता है ? जहाँ कहीं ख्वाबों आँखों से निकल कर इसी यूनिवर्सिटी रोड पर टहला करते थे वहीं गुज़र जाती है रात पर कहीं कोई ख्वाब का नामों निशाँ नहीं होता । ऐ परवरदिगार मुझे कुछ हुनर दो, जो मन के अंदर हो वह कहने ही नहीं करने की शक्ति दो, जमाने की रुद्रियों को तोड़ने की ताक़त दो, अपनी शर्तों पर ज़िंदगी को जीने का ज़ज्ज़ा दो, वक्त पर अपनी बात कहने का साहस दो, बुद्ध की तरह राज्य त्याग कर इस शहर के लिये जीने का अरमान हम सबमें है .. वह फलीभूत हो यह आशीर्वाद हम सबको दो । एक खौफ़ मेरे अंदर है हारने का, उस खौफ़ से लड़ने की ताक़त मुझे दो । एक खामोश पल में ढलती शाम की रौशन में मुश्तइल समुद्र के किनारे डूबता धूमिल लाल रंग .. पानी में से मुझे उस रंग को निकालकर इस इमारत पर लगाने की शक्ति दो । जो नाउमीद हो चुके हैं, कहने को तो जिनके आँखों में रौशनी है पर कोई उजाला नहीं । आँखों के पास सिर्फ़ बिखरे हुये मंजर हैं, उनके आँखों को ख्वाबों की तलाश तो है पर बिखरे - बिखरे से ही ख्वाब आते हैं, उनको एक उम्मीद दो । मेरी बात तुम पहुँचाना उन तक जो यहाँ से निकल कर कहीं आगे की मुकाम पर है पर एक जो चीख रात में पीछा

करती है उनकी वह उनके ज़मीर की आवाज़ है वह उन्हें धिक्कारती है हर रोज़ उनके स्वार्थीपन पर । यही चीख अब उनका भी पीछा करेगी जो आज सफल हुये हैं । आज एक बड़ी तादाद इस शहर से सफल हुई है । मुझे उनसे उम्मीद है वह अपने पहले की पीढ़ी के लोगों की तरह अपने जीवन में रम नहीं जायेंगे , वह लौटकर आयेंगे और यहाँ के ध्वज को उर्ध्वमुखी करने के लिये हवाओं को मजबूर करेंगे । तुम तराशों अपनी कलम को मिला जज्बात स्याही में , कर कोशिश कुछ अलग लिखने की मेरी चीख की ताक़त के लिये , मेरी तड़पन के लिये , मेरी भूख के लिये , मेरे ज़मीर के लिये .. ऐ समाचार पत्रों कल लिखना तुम इस शहर की कहानी , एक बदलती कहानी । तुम इस दौर का एक सच लिखना जब बाज़ार के ठेकेदारों ने मजलूमों को लूटने की कोशिश की मजलूमों ने बाज़ार को उड़ा दिया । ऐ शहर के शिक्षा के दुकानदारों अब तुम्हारा वक्त ख़त्म हो चुका है , अब तुम्हारी दुकान पर ताले लगाने का वक्त आ चुका है , या तो तुम लगाओ या.... । जय इलाहाबाद ... अमृतपान का शहर है यह . कुमारिल - शंकराचार्य के शास्त्रार्थ की नगरी है यह , हर्ष के दान का चश्मदीद गवाह है यह , फ़िराक़ के फक्कड़पन की सीरत है तो निराला का उद्घोष है धिक साधन जिसके लिये सदा ही किया शोध धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध । फ़िराक़ की इश्क़ियाना शायरी का शहर ..

खुद को तेरे दर्द का पर्दा समझ बैठे थे हम
कान बजते ही मुहब्बत के सुकृते नाज़ को
दास्ताँ का ख़त्म हो जाना समझ बैठे थे हम
एक दुनिया दर्द की तस्वीर निकली , इश्क़ के
कोहकन और कैस का क्रिस्सा समझ बैठे थे हम
रफ़ता - रफ़ता इश्क़ मानूस- जहाँ होता चला गया
खुद को तेरे हिजर में तनहा समझ बैठे थे हम ।

इस शहर में चल रहा व्यापार - शिक्षा के नाम पर चल रहा व्यापार बंद होना ही है । अगर यह दुकानें बंद न हुईं , मेरे चिरागों में इतनी ताक़त है कि इनको ख़ाक कर देंगी । आज हम सफल हुये तो सिर्फ़ इसलिये हमने अराजकता को परिसर से समाप्त किया है । अराजकता के प्रतीक बन चुके छात्र- संघ का नामों निशान मिटा दिया है हमने । जिस रूप में छात्र- संघ चल रहा है जो जातिवाद और बंदूक की निकली गोलियों की आवाज़ से अपनी जीवन शक्ति प्राप्त कर रहा है , उसको समाप्त होना ही होगा । इस अराजकता ने मेरी हत्या का भी प्रयास किया । मैं इस अराजकता का समूल नाश करूँगा ।

रचनात्मक क्रान्ति छात्र- संघ चुनाव में पुनः भाग लेगी । हम चुनाव जीतेंगे और पद से त्यागपत्र देंगे । जब तक शासन छात्र- राजनीति के स्वरूप में परिवर्तन नहीं लाती है तब तक हम चुनाव लड़ेंगे और पद से इस्तीफ़ा देंगे । रचनात्मक क्रान्ति का अभियान इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सीमा से बाहर जायेगा । हम इस वर्ष सीएमपी , ईसीसी , ईश्वर शरण डिग्री कालेज , इलाहाबाद डिग्री कॉलेज में चुनाव लड़ेंगे । हम शहर के बाहर दिल्ली विश्वविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, जेएनयू में भी चुनाव लड़ेंगे । रचनात्मक क्रान्ति देश- काल - भूगोल की सीमा से परे है । यह एक बदलाव की आँधी है । यह कोई हवाओं से लड़ता टिमटिमाता चिराज़ मात्र नहीं है यह एक सूरज की रौशनी है जो अंधकार का समूल नाश करेगी । हम कल की रात से चार रातों तक पूरे शहर में मशाल जुलूस निकालेंगे । हम लोगों को जागरूक करेंगे । पूरा शहर इसमें शामिल हो । शिक्षा के नाम पर एक क्रान्ति का आगाज़ हो । मैं अकेला लग सकता हूँ, मैं बेसहारा लग सकता हूँ पर यह हज़ारों की आवाज़ रात के सन्नाटे को आज ख़त्म कर देगी । आज यह उठी हुई आवाज़ इतिहास बदल देगी । एक समग्र रचनात्मक क्रान्ति का आगाज़ हो । मेरी ख्वाहिश सिफ़र एक ख्वाहिश , सिफ़र एक .. चीखना तुम तब तक जब तक तेरे और लोगों के रक्त में उबाल न आ जाए ।

इलाहाबाद .. इलाहाबाद ..

यह आवाज़ ही आवाज़ हर ओर यूनियन हॉल से लेकर सारे छात्रावासों .. महिला छात्रावास. डीजे हॉस्टल , ताराचंद हॉस्टल , यूनिवर्सिटी रोड पर एक ही आवाज .. इलाहाबाद .. इलाहाबाद ..

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 356

मैं उस शोर में खो सा गया । मैं अपनी बात ख़त्म करके दोनों हाथ में हवा में उठाकर अभिवादन की मुद्रा बना ही रहा था कि भीड़.. और ... और .. और कहने लगी । लोग मुझे और सुनना चाह रहे थे । सरला ने पीछे से आकर कहा ,” सर लोग सुनना चाह रहे, यह इस शहर के लिये, हिंदी भाषा के लिये और हमारे ऐसे लोगों के परिवेश के लोगों के लिये एक बड़ा दिन है .. एक बहुत बड़ा दिन । सर कुछ और बोलिये , आपको तो सरस्वती का वरदान प्राप्त है । ”

मन मेरा भी अपनी बात और कहने का हो ही रहा था । मैंने हाथ हवा में उठाया ... हवा में उठे हाथ जो कह रहे थे वह बहुत सी जुबानें नहीं कह सकती थीं । हवा में उठे हाथ के साथ .. इलाहाबाद.. इलाहाबाद गूँजने लगा ... मैं रौ में फिर से आ गया ..

“ मैं सर बुलंदी पर चढ़ना चाहता हूँ ..

इतना ही कह पाया था कि शोर और तीव्र होने लगा ..

भीड़ कहने लगी

“ इलाहाबाद सर बुलंदी पर चढ़ना चाहता है ...

....., इलाहाबाद .. इलाहाबाद .. इलाहाबाद .. इलाहाबाद ..

यह शब्द बंद होने का नाम नहीं ले रहा था । मैं शांत खड़ा होकर इस शब्द के आहाद में खो ऐसा गया । जैसे ही शोर कुछ थमा .. मैं फिर अपनी बात कहने लगा

“ मैं सर बुलंदी पर चढ़ना चाहता हूँ

बैसाखियों के हौसलों को जहाँ को दिखना चाहता हूँ

जो कर न सके घोड़ों पर सवार उनसे ही माँगी मैंने अपनी बैसाखियाँ

अब वह ही दिखाते हैं अपने घोड़ों को रास्ता मेरी बैसाखियों का । “

बहुत ताक़त है इन बैसाखियों में । इस शहर को यहाँ से उठाओ जहाँ से दिख रहा यह कुछ हतोत्साहित सा थका- झुका हुआ .. पर हँकीक़त में न तो यह थका है न ही झुका है , यह आने वाली पीढ़ियों का , एक नये वक्त का इंतज़ार कर रहा । यह करता इंतज़ार ... हमारे नवोन्मेष का .. इसे यक़ीन है हमारे जज्बों पर , हमारी जिजीविषा पर ... इसे हमको और उन्नुंग शिखर की ओर ले जाना होगा ..

भीड़ गाने लगी

“हिमादिर तुंग शृंग से परबुद्ध शुद्ध भारती “

“ यह शहर अक्षांश को पारिभाषित करता है , इस शहर की ज़मीं को छूकर इसके नींव को अपनी हथेलियों से महसूस करो और नींव की ऊषा से अपने रक्त में उबाल लाओ अगर तुम्हारे रक्त में तुम्हारे जज्बों से उबाल नहीं आता । मुझे कोई गलतफ़हमी नहीं यह विश्वास है मेरा जो अमृतपान का उत्सव हर वर्ष लगाता है अपने संगम के तट पर वैसा ही उत्सव हर वर्ष मनायेंगे हम जब भी 8:40 के समाचार पत्र में घोषणा होगी , इस वर्ष का सिविल सेवा परीक्षा का परिणाम घोषित हो गया है । हर कोई पूछता है मुझसे तुम क्या करना चाहते हो ? काश मुझे यह पता होता मैं क्या करना चाहता हूँ । यह भी एक सच है जो हर वक्त जानता है वह क्या करना चाहता है वह हमेशा सामान्यतया की ओर जाता है । एक करान्तिधर्मी करान्ति करता है बेपरवाह आने वाले परिणामों - दुष्परिणामों से , वह तलाश करता है वह भविष्य जो

भविष्यवक्ताओं ने कभी बाँचा नहीं। मैं ईश्वर का लिखा जी रहा जो मुझे भी नहीं पता । मैं एक असामान्यता की तलाश कर रहा.. शायद मैं नहीं हम सब एक असामान्यता की तलाश कर रहे । हम एक नये इतिहास के लिये स्याही का इंतज़ाम कर रहे , हम आने वाली नस्लों को प्रेरक गाथायें पढ़ने- लिखने के लिये एक अनवरत संघर्ष कर रहे , यह हमारा संघर्ष है जो बेपरवाह हैं परिणाम से । याद रखना परिणाम नहीं संघर्ष प्रेरणा देते हैं । हर संघर्ष असफलताओं के बाद भी लोगों को प्रेरणा देता है । यक़ीन तुम संघर्ष में करो बेपरवाह नियति के अंजाम से । वक्त यह याद करेगा , वह एक दौर था जब कुछ लोग उठ खड़े हुये अपने लिये नहीं शहर के गौरव के लिये - ज़मीं के गौरव के लिये - भाषा की पहचान के लिये - देश के मान के लिये , शहर के सम्मान के लिये और उस भाषा के लिये जिसकी सुध उस सरकार को भी न थी जो इस भाषा के सम्पर्क से उपजे राष्ट्रीय आंदोलन के परिणाम का सुख भोग रही थी । ऐ गंगा और यमुना के तीव्र प्रवाह से उत्पन्न लहरों से आनंदित होते शहर मुझे तुझसे प्यार है । ऐ संगम , मैं खो जाता हूँ तेरी उफान भरी लहरों में , लहरों में लड़खड़ाती डोलती तेरी कश्तियाँ, किनारों पर ख़त्म होता तेरा आवेग , ऐ यमुना तेरा पानी का नीला- हरा रंग समाता दूधिया गंगा में , नदी के सम्मिलन के बहाव को चीरती नावों की शूँखला बनाती पानी में सफेद दूधिया लकीरें.. उसी तट पर लगता हर वर्ष अमृतपान का उत्सव .. ऐ सम्मोहन के शहर ... ऐ दर्शन की भूमि .. यह करान्ति की रणस्थली .. आज़ाद के शहादत की ज़मीन , हमारे तुम्हारे माँओं के संघर्ष का शहर .. हिंदी के परचम का शहर , हरि को शस्तर गहाने वाले संकल्प योद्धा की मूर्ति के साथ शहर के मध्य में बिखरता ओजस्वी शौर्य प्रवेश करता हर दिन हमारे अंदर और कहता तुझे भी हरि को बाध्य करना होगा भाग्य को अपनी ओर मोड़ने के लिये अपने महान संकल्प से अपने अथक परिश्रम से । “

एक पूरी भीड़ सुनने को बेताब थी । शोर थम चुका था सबके कर्ण मेरी आने वाली आवाज़ का इंतज़ार कर रहे थे । मैंने पूरी भीड़ का एक सिंहावलोकन किया और आसमान की ओर देखकर बोलने लगा

“ राम के चरण को चूमते भरत की यात्रा का चश्मदीद गवाह ... भरत की यात्रा- महान संस्कार यात्रा की गवाही का शहर , संस्कारों को इतिहास में पिरोने वाला शहर , अशोक - समुद्रगुप्त के यशगान को पत्थरों में पिरोने वाले शहर .. ऐ शहर इलाहाबाद जब कभी करान्ति की मशाल को अग्नि की चाहत होगी तब कोई आज़ाद - लाल पद्मधर यहाँ से उठ खड़ा होगा , जब कभी राष्ट्र के लिये संपदा की आवश्यकता होगी कोई हर्ष इसी गंगा तट से जन्म ले जायेगा , शंकराचार्य- कुमारिल का शास्त्रार्थ, नेहरू - महामना का दर्शन एक नया वैचारिक नेतृत्व देश को प्रदान करेगा ।

ऐ इलाहाबाद ...

इलाहाबाद .. इलाहाबाद ., इलाहाबाद ., इलाहाबाद ..

मैं इस उठते शोर के आळाद में था । मैं ही नहीं सब आ चुके थे एक आळाद में , सबका रक्त उबाल ले रहा था , सबकी हृदयगति और सबका रक्तचाप एक नये शिखर को शिखर को छू रहा था । मैं फिर बोलने लगा ...

“ कोई कारण तो बताओ मेरी माँ के साथ ही ज्यादती क्यों हुई ? मैं ही उपेक्षित क्यों रहा ? मेरे खिलाफ ही लोग क्यों हो जाते हैं ? एक सीधी लकीर खींचकर जो न दिखती है किसी को पर महसूस होती है हमें हर रोज़ जो बेधती है मुझको और हमें एहसास देती है हर पल कि हम अपने ही देश में दलित हैं । हमारे अक्षरों पर आरोप है तुम भाव व्यक्त कर पाते नहीं , तुम्हारे पास शब्दकोश कम हैं , तुम्हारे पास किताबें कम हैं । तुम नहीं लड़ सकते उस भाषा से जिसका एक समृद्ध इतिहास है । ऐ मैकाले की संतानों तुम यह यह कहकर , तुम नहीं हो काबिल सहभागिता के हमको लड़ने से तुम रोक नहीं सकते । लड़ना हमारा हक़ है , जीतना चाहे न भी हो । हम लड़ेंगे अपने सुकून के लिये चाहे हर रोज पराजित ही क्यों न हों हम । हम लड़ेंगे अनगिनत रात अपना सुकून छोड़कर अगली पीढ़ी के सुकून के लिये उनके दर्द के लिये । यह हिंदी मात्र मेरी भाषा नहीं है , यह मेरी माँ है इसके बच्चों को उनका हक़ मिलना ही होगा । जिंदा रहने की अब एक शर्त है .. जिंदा रहने की नहीं सम्मान के साथ जिंदा रहने की , हम अपनी शर्तों पर जिंदा रहे । हम अपना हक़ छीन कर लेंगे । इतिहास कहता है , हक़ कभी भीख में नहीं मिलता , उसे छीनना पड़ता है । हम तमाम कुर्बानियों को तैयार हैं अपने हक़ के लिये । हम आसमाँ की ओर हाथ उठाकर फ़रियाद नहीं करेंगे , हम रिदा फैलाकर ईश्वर से भिक्षा नहीं माँगेंगे , हम ईश्वर से अपने पौरुष का प्रतिदेय माँगेंगे । यह सवाल अनुराग का नहीं है , यह लड़ाई किसी एक की नहीं है । यह लड़ाई हम सबकी है । यह विजय किसी व्यक्ति की नहीं इलाहाबाद की होगी । पर एक विजय किसी छोटे- मोटे राज्यों की सीमाओं का कुछ सुनश्चयन तो कुछ समय के लिये कर देती है पर एक साम्राज्य का निर्माण दिविजय नहीं कई दिविजयों का परिणाम होता है । हम चाणक्य की आर्यवर्ती की संकल्पना की तरह संकल्प लेते हैं और यह उद्घोष है शहर इलाहाबाद का ..

तू जानता नहीं मेरी चाहत की इंतिहा को हमने बेवफ़ओं को वफ़ाई का सबक्र सिखाया है । टूटने दो पत्तों को आने दो पतझड़ को बसंत कभी तो आयेगी , वह न भी आना चाहें तो हम उसको लेकर आयेंगे । हम रात के अंधकार में दीपक की लौ बुझाकर जहाँ दूर - दूर तक जुगनुओं का शोर भी न हो संधान करेंगे उस संघ लोक सेवा आयोग की दीवारों की तरफ़ जहाँ से हर वर्ष एक अनुराग निकलेगा इसी तरह आठ चालीस के समाचार पर और उस अनुराग के पीछे एक बड़ी भीड़ होगी यह कहती हुई मैं बस तुमसे कुछ ही पीछे रहा पर साथ तुम्हारे मैं भी चलूँगा । मेरा अभिनंदन है , नमन है इस साल के सफल

उम्मीदवारों का । अभी तक पेंतीस की संख्या का पता चला है पर संख्या अभी और भी है और अगले साल हम शतक पार करेंगे । यह इलाहाबाद है जहाँ के लोगों की जिजीविषा ऐसी है कि हार कर भी विजय का एहसास देती है , क्योंकि जीतने वाले को भी पता है यह साज़िश है जो मुद्दतों से हो रही । कोचिंग संस्थाओं आप हिसाब दो । तुम्हारा यह मायावी चरित्र बेनकाब हो चुका है । हमारा मशाल जुलूस कल से आरंभ होगा , हमारी अपील है पूरा शहर इसमें शिरकत करे । शिक्षा के नाम पर उठा यह आंदोलन अब शहर की सीमाओं को पार करेगा । एक रचनात्मक करान्ति अपना फैलाव चाह रही , आप सब मेरा साथ दो । जय इलाहाबाद.. जय इलाहाबाद ...”

यह शब्द हर ओर । भीड़ इतनी अधिक थी कि यूनियन हॉल से कर्नलगंज चौराहे तक लोग भरे हुये थे । इस तरफ जीएनझा छात्रावास से लक्ष्मी टॉकीज की ओर जाने वाली सड़क पूरी भरी हुई थी ।

मैंने भाषण खत्म किया । भाषण के बाद समाचार पत्रों का समय था । सारे सफल लोगों ने अपनी - अपनी बातें कही । सबकी फ़ोटो खींची गयी । अगले दिन का समाचार पत्र - एक ही समाचार - कल की एक महान ऐतिहासिक आम सभा , एक विशेष सभा और वह भी एक ऐसे मुद्दे पर जो इस शहर के दिल के बहुत क़रीब है । बहुत से सफल उम्मीदवारों का फ़ोटो थी । अनामिका का संघर्ष पढ़कर बहुतेरे लोग भावुक हो चुके थे । आंटी और माँ तो उसके संघर्ष को पढ़कर रोने लगे । उसने अपनी बात परेस को ईमानदारी से बतायी । “ एक संघर्ष -गाथा जो सदियों तक याद की जायेगी ” , इस शीर्षक के साथ अनामिका की कहानी छापी गयी । उसका जीवन बहुत ही प्रेरक था । एक ऐसी लड़की जिसका पिता उनके बाल्यकाल में ईश्वर की शरण में चला गया था , माँ ने मज़दूरी करके उसको पाला - पोसा - पढ़ाया । संसाधनों के अभाव से जूझती लड़की पर एक दृढ़ निश्चय था कुछ करने का । यह भी एक विडंबना है इस देश की , तक़रीबन पचास साल होने जा रहे इस देश को आज़ाद हुये पर आज भी लोगों को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने का पर्याप्त अवसर नहीं । अशोक ने मौके का भरपूर फ़ायदा उठाया फ़ोटो भी छपवायी और अपना कहा प्रमुखता से छपवा भी दिया । मेरे भाषण की कुछ लाइनों को कई समाचार पत्रों ने अक्षरशः छाप दिया था । मशाल जुलूस की चार रातें - एक ऐतिहासिक समय शहर के लिये । मशाल जुलूस की परम्परा इस विश्वविद्यालय के चुनाव में तो बहुत सालों से चली आ रही थी पर शिक्षा के मुद्दे पर मशाल जुलूस यह पहली बार हुआ वह भी इतना बड़ा जुलूस और शिरकत शहर तो बहुत से प्रबुद्ध लोगों ने किया । समाचार पत्र हर दिन इसी समाचार से भरे रहते थे । कमिशनर साहब ने सारे सफल छात्रों को सम्मान में अपने विशाल बँगले में दावत दी । ज़िले के सारे वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे । यह इन छात्रों के लिये अविश्वसनीय पल था । उन्होंने कभी इस जीवन की

कल्पना न की थी । परीक्षा में सफल हो जाने का ख्वाब तो देखा था पर इस तरह का सम्मान प्राप्त होगा यह नया था उनके लिये । मैं हर दिन का इस्तेमाल कर रहा था । मैं क्या करना चाहता हूँ यह किसी को पता न था , मुझे भी नहीं । मैं शहर के लोगों के मस्तिष्क में बना रहना चाहता था । मैंने कोचिंग संस�ाओं के विरुद्ध एक खुला अभियान छेड़ दिया था । अब मुझसे लड़ना किसी के लिये भी आसान न था । मैं शहर का एक नया नायक था । सारी सफलता , सारी कहानियों का शरेय में प्राप्त कर चुका था । यह समाचार स्थानीय समाचार पत्रों से निकल कर राष्ट्रीय समाचार पत्रों तक पहुँच चुके थे । कई अंग्रेजी के अखबारों ने इसे प्रमुखता से छापा । मुख्यमंत्री ने कमिश्नर साहब को फ़ोन करके उनके माध्यम से सबको शुभकामनाएँ और बधाई दी । कमिश्नर साहब सारे खेल के एक चतुर खिलाड़ी थे , उनको हर मौके का फ़ायदा उठाना आता था । एक दिन उन्होंने अपने कार्यालय में मुझको बुलाकर मुख्यमन्त्री से बात करा दी । यह वरिष्ठ अधिकारियों का एक कार्य होता है किस तरह संपर्क बरकरार रखने और अपने आका के नज़दीक जाने का ज़रिया प्राप्त किया जाये । मुख्यमंत्री से वार्ता करने का यह एक ज़रिया बना । मैं छात्र संघ अध्यक्ष था , राजनैतिक इच्छाशक्ति का व्यक्ति था , छात्रों का निर्विवाद नेता बन चुका था और अब तो देश की सबसे कठिन परीक्षा का सर्वोत्तम सफल उम्मीदवार था । मैं हर एक की शतरंज की गणित का एक घोड़ा था । पर लोगों को नहीं पता है , या पता है तो भी यह मानते हैं यह अभी बच्चा है । पर हकीकत कुछ और थी । मैं बिस्मार्क की तरह हवा में पाँच गेंदें उछालता था जिसमें दो हाथ में और तीन हवा में होती थीं । मेरी निगाहें हाथ की गेंदों पर नहीं हवा में वलयाकार चल रही गेंदों पर होता थीं और किस गेंद को कितनी ऊँचाई पर जाना है यह मेरी निगाहें इशारे से गेंद को बता देती थी और हवा में उठती गेंद बहुत ही आज्ञाकारी होती थी । दो दिन बाद बीबीसी की टीम मेरा इंटरव्यू लेने आई और मैंने सारे लोगों की रात की नींद उड़ा दी । यह अनुराग शर्मा की पहली चाल थी । अब गैर मामूली दास्तान बनने की ओर थी ।

मैं अब अपने साथ सलाबत करने जा रहा था एक गैर मामूली दास्तान के लिये । मेरे घोड़ों तैयार हो जाओ अब वक्त आ रहा ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 357

बीबीसी की एक टीम यूनिवर्सिटी पहुँच गयी थी । वह पहले भी मुझ पर एक स्टोरी प्रकाशित कर चुके थे इसलिये उनको मेरे बारे में जानकारी थी । उनकी रिसर्च टीम ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय पर काफ़ी कार्य किया था । वस्तुतः वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय पर एक शृंखला बना रहे थे जिसमें मेरी

उपलब्धि एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गयी थी । उनके कार्यक्रम में इलाहाबाद की शैक्षिक गतिविधि के साथ- साथ छात्र - राजनीति भी थी । बीबीसी की एक बड़ी टीम परिसर में टहल रही थी और वह डॉक्युमेंटरी के हर पहलू पर कार्य कर रहे थे । वह परिसर के भीतर - बाहर के बहुत लोगों का साक्षात्कार ले रहे थे । पूरी कैमरा टीम ने विश्वविद्यालय का परिसर छान मारा , कई प्रोफेसर्स- छात्रों - छात्राओं - छात्र-नेताओं का इंटरव्यू लिया पर बदलाव की आँधी के नायक के बगैर यह डॉक्युमेंटरी पूरी कैसे हो सकती है । मैंने समय दिया आज शाम के चार बजे का । मैंने उस समय सारे सफल लोगों को भी आमंत्रित किया ।

परिसर में जहाँ टीम जीती थी लोग बीबीसी वालों के साथ लग जाते थे । गोरे लोगों को देखने के लिये छात्रों की भीड़ उमड़ी ही थी । अब इलाहाबाद विश्वविद्यालय का छात्र एक अलगै होता है ।

“ यार ई बताओ ई जो गोरे - गोरे लोग आये हैं एनका धर देई का दुई - चार , साले बहुत सताये हैं हमारे पूर्वजों को । बड़ी मुश्किल से आज़ादी देहेन । एकाध के यहीं गिराई देई का ? ”

“ ऐसा करो एनका लै चलो सैदाबाद और हरवाही कराओ , साले इंटरव्यू लेने आये हैं । ”

“ हरवाही एनके बस के बात है ? ”

“ काहे न होई ? सब होई .. पीछे से मारो चार सोंटा सारा दिमाग़ सही होई जाय । ”

“ ई साले पैसा कमाय के चक्कर में आये हैं । ”

“ ऊ कैसे ? ”

“ यहीं फ़ोटो - वीडियो बेंचकर । ”

“ चलो थोड़ा इंटरव्यू लेते हैं इनका । ”

“लिसन मैडम आई बांटेड टू टॉक टू यू “

“ yes please “

“ बहाट यू बांट ? ”

“ I want to see places “

“ मतलब यू बांट टू सी समथिंग ? ”

“ I didn't understand what you are saying? ”

“ आई एम सेइंग यूनिवर्सिटी इज ब्यूटीफुल , आनंद भवन इज हियर , संगम हैज थ्री रीवर एंड यू नो .. इट इज ऑक्सफोर्ड ऑफ इस्ट ।”

“ oh .. oh “

“ यार ई ओह - ओह काहे कर रही । ई तअ कुकुर उलहाई रही है । तुम कुछ बात करो हमार कोटा पूरा होई गवा , मोह पिराई लाग अंगरेज़ी बोल - बोल के .. पता नहीं कैसे ई सब भिंसारे से अंगरेज़ी जोते हए । “

दूसरा कोशिश पर लग गया ..

“ ऐ मैन “

“ yes - yes “

“ यार यह बताओ ई सब एक ही बात को दो बार क्यों बोलते हैं । वह बोली oh - oh .. यह बोल रहा yes - yes . ग्रामर के मार्टिन और न्यू लाइट तो हम सब रट मारे हैं पर ऐसा तो कहीं लिखा नहीं । लगता है एनकर ग्रामर के किताब अलग बा ।”

“ कुछ बात करो पहले ग्रामर बाद में देखअ ।”

“यू नो दिस दरी गिव फ़र्लट .”

“ ya ya “

“ यू कम फराम बेहयर ?”

“ I came from Delhi “

“हाज यू केम? “

“ I didn't understand what you taking “

“ आई एम आसाकिंग हाज यू केम .. मतलब टरेन , हवाई जहाज़ , बस , पैदल /..”

वह अपने शब्दों से कम चेहरे और भाव भंगिमाओं से ज्यादा बोल रहा था । जब उसने प्लेन से आने के लिये हवाई उड़ान हाथ से बनाया तब वह समझ गया और बोला ..

“ yes .. yes we came from plane “

“ यार अनुराग सर कैसे इंटरव्यू देइहिं ओनकरौ अंगरेज़ी हमरेन तरह बा । “

“ सरला जोशी अनुवाद करे । ऊ पढ़े बा अंगरेज़ी और बोलबऊ करत हअ फराटे से ।”

“ चलअ समय होत बा अनुराग सर के माया के , देखी आज कौन चरस बोर्ड
जात हआ ।”

मैं पहुँच गया यूनियन हॉल पर । मैं समय का बहुत ही पाबंद था । मेरे छात्र
भी यह जान चुके थे । मेरी क्लॉस अगर चार बजे की है तब वह 3:55 पर
आरंभ हो जायेगी । यहाँ भी मैं पाँच मिनट पहले पहुँच गया । बीबीसी की टीम
ने पूरा सेट अप किया हुआ था । यूनियन हॉल , यूनियन हॉल का शिखर ,
शहीद लाल पदमधर की प्रतिमा सबका वीडियो बन गया था और मेरे इंटरव्यू
के पृष्ठ भाग में पूरा यूनियन हॉल आ रहा था । टीम का नेतृत्व भारतीय
प्रभार के हिंदी संवाददाता पंकज कुमार और मंजरी जोशी कर रहे थे ।
उन्होंने इंटरव्यू का प्रारूप मुझे समझाया और इंटरव्यू आरंभ हो गया । मंजरी
जोशी ने इंटरव्यू आरंभ किया ।

“ श्री अनुराग शर्मा जी आपको बहुत - बहुत बधाई इस बड़ी ऐतिहासिक
उपलब्धि के लिये । आपने पिछले वर्ष इस परीक्षा में 102 रैंक प्राप्त की
, उसके बाद छात्र संघ चुनाव लड़ा जो कि काफ़ी उतार - चढ़ाव वाला रहा
जिसमें आप की हत्या का प्रयास भी हुआ , आप छात्र - संघ अध्यक्ष बने
तत्पश्चात् त्याग पत्र दिया । आपने मुद्दों की लड़ाई लड़ी । इस वर्ष की आप
की सफलता नायाब है , हम आपके इस वर्ष के मुद्दे पर बाद में आते हैं , हम
पहले यह समझना चाहते हैं कि आपका यह पूरा क्रीब दो वर्ष का सफर कैसा
रहा जबसे आपने सिविल सेवा परीक्षा के लिये प्रयास करना आरंभ किया
और फिर हिंदी माध्यम की सफलता का दौर आरंभ हुआ ।”

“ यह सफर दो साल का नहीं है । यह क्रीब तीन - साढ़े तीन साल का है ।
यह परीक्षा साल - दो साल में होना थोड़ा मुश्किल है ख़ासकर मेरे ऐसे परिवेश
- पृष्ठभूमि के लोगों के लिये जिसकी शिक्षा बहुत अच्छी न हुई हो और एक
सिरे से पूरा पाठ्यक्रम पढ़ना हो । ”

“ आपने इस परीक्षा की तैयारी कैसे की ? ”

“ जैसे सब करते हैं अमूमन वैसे ही किया .. ”

“ सर , आपके वैकल्पिक विषय हिंदी साहित्य और इतिहास थे क्या आपने इन
विषयों में कोई डिग्री ली थी ? ”

“ नहीं , यह दोनों विषय नये थे । इस में कोई डिग्री मेरे पास नहीं है । ”

“ आपने अपना विषय क्यों नहीं लिया ? ”

“ मैंने गणित से बीएससी की तत्पश्चात् विधि स्नातक हुआ । पर मैंने यह दोनों
ही विषय सिविल सेवा में न लेकर इतिहास और हिंदी साहित्य लिया । ऐसा
करने का कारण यह था कि विज्ञान लेने पर अंग्रेज़ी में लिखना होता और

यही बात लोग विधि के लिये कह रहे थे कि अंग्रेज़ी वालों को ही अंक मिलते हैं। इतिहास में हिंदी में काफ़ी किताबें उपलब्ध थीं और हिंदी तो अपनी मातृभाषा ही है।

“क्या भाषा एक बड़ा मुद्दा था आपके विषय के चुनाव में?”

“हाँ भाषा एक मुद्दा था। मैं अंग्रेज़ी पढ़ने में सहज नहीं हूँ, लिखने में कोई प्रवाह नहीं है और बोल तो बिल्कुल नहीं पाता। ऐसी परिस्थिति में अंग्रेज़ी माध्यम से परीक्षा देना तो हाराकीरी ही होती।”

“आप अंग्रेज़ी में इतने असहज क्यों हैं?”

“परिवेश-शिक्षा-स्कूलिंग यह तो ज़िम्मेदार हैं ही साथ ही मैंने प्रयास जो भी किया वह कोई ख़ास परिणाम नहीं दे सके, हो सकता है भाषा सीखने के प्रति मेरी नैसर्गिक क्षमता न हो।”

“आपने बीएससी तो अंग्रेज़ी माध्यम से की होगी?”

“नहीं पूरी तरह नहीं।”

“मतलब?”

“कुछ पर्चे हिंदी में लिख दिये थे। फ़िज़िकल केमिस्ट्री का पर्चा हिंदी में पूरा लिखा था। एक पर्चा फ़िज़िक्स का हिंदी में लिख दिया था, गणित में तो भाषा होती नहीं इसलिये उसमें इस तरह की कोई समस्या नहीं थी।”

“क्या ऐसा किया जा सकता है कि कुछ पर्चा हिंदी में और कुछ अंग्रेज़ी में लिख दिया जाये?”

“मुझे नहीं पता था उस समय कि ऐसा कर सकते हैं या नहीं पर मैंने ऐसा ही किया था।”

“क्या सिविल सेवा में ऐसा कर सकते हैं?”

“नहीं, यहाँ पर एक ही माध्यम चुनना होता है पूरी परीक्षा प्रणाली के लिये।”

“आपके अनुसार हिंदी माध्यम के छात्र समुचित मात्रा में सफल क्यों नहीं हो पा रहे हैं?”

“हिंदी माध्यम में अध्ययन सामग्री अंग्रेज़ी की तुलना में कम उपलब्ध है। कुछ विषय में तो बहुत ही कम, जैसे मनोविज्ञान, नृविज्ञान, समाज शास्त्र में अपेक्षाकृत कम उपलब्धता है यहाँ तक विश्व इतिहास में भी सारी अच्छी पुस्तकें अंग्रेज़ी में ही हैं। समाचार पत्रों में हिंदी के समाचार पत्रों का स्तर अंग्रेज़ी की तुलना में निम्न है और सारे अच्छे संपादकीय लिखने वाले

अंग्रेजी माध्यम में ही हैं, श्री राजेन्द्र माथुर - प्रभाष जोशी ऐसे कुछ अपवादों को छोड़कर ।”

“ इसके अलावा और कोई कारण ?”

“ हीन भावना ।”

“ वह कैसे ?”

“ जबसे आप इस परीक्षा के बारे में सोचना आरंभ करो हर व्यक्ति यही कहता है कि अंग्रेजी माध्यम से आप लिखो, हिंदी वालों का होता ही नहीं। लोगों की यह मान्यता है, हिंदी की कॉपी देखते ही लोग समझने लगते हैं कि यह गँवार टाइप है, इसको नंबर क्या देना। यह सोच एक ऐसी हीन भावना को जन्म दे देती है जिससे पार पाना आसान नहीं ।”

“ यह भावना आपको नहीं आयी ?”

“ आयी ही नहीं यह भावना आज भी है। मेरे लिये सबसे बड़ी चुनौती थी और है, इस भावना को ख़त्म करने की। यह हिंदी माध्यम के छात्रों को लिये सबसे बड़ी चुनौती है ।”

“ इसको कैसे ख़त्म किया जा सकता है ?”

“ अपने ऊपर विश्वास हो, आत्मविश्वास का सृजन हो ।”

“ वह कैसे होगा ?”

“ परिश्रम - कठिन परिश्रम- अति कठिन परिश्रम ।”

“ क्या इससे हो जायेगा ?”

“ यह तक़रीबन चालीस लोगों की इस साल की सफलता क्या मेरे इस कथन को व्याख्यायित- सत्यापित नहीं कर रही है ।”

“ कर रही है, ज़रूर कर रही है सर। एक अंतिम सवाल मेरा ।”

“ ज़रूर पूछें ।”

“ आप सिविल सेवा परीक्षा- प्रणामी में क्या सुधार चाहते हैं ?”

“ जो एक मॉडल उत्तर बनते हैं वह अंग्रेजी में बनते हैं उन्हें उन सारी भाषाओं में बनने चाहिये जिन भाषाओं के माध्यम से लोग परीक्षा देते हैं। जेन्यू-दिल्ली विश्वविद्यालय का परीक्षा में वर्चस्व कम होना चाहिये। सारे क्षेत्रीय विश्वविद्यालय के अध्यापक परीक्षक हो। परीक्षक बनाने के पहले उनके हिंदी के ज्ञान पर ध्यान देना चाहिये। मुख्य परीक्षा और इंटरव्यू की भाषा को अगर अभ्यार्थी अलग- अलग चुनना चाहे तो इसका विकल्प उनको प्राप्त होना चाहिये ।”

“आप मेरे एक और प्रश्न का उत्तर दे दें तब पंकज जी की तरफ़ हम लोग रुख़ करते हैं ।”

“ झ़र्सर ।”

“ इलाहाबाद विश्वविद्यालय से लोग अब सफल क्यों नहीं हो रहे ?”

“ पहले के दौर में सामान्य अध्ययन का महत्व अपेक्षाकृत कम था अब वह बढ़ रहा है और इलाहाबाद के लोगों का वह परम्परा से कमजोर रहा है । पहले की प्रणाली में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम और सिविल सेवा के बीच एक सम्यता थी पर वह सम्यता अब नहीं है । ”

“मेरा एक अंतिम सवाल ..

अनुराग जी एक बात बतायें आप क्यों इलाहाबाद को आईएस- पीसीएस की फ़ैक्टरी बनाना चाहते हैं । आप अच्छे विचारक - अच्छे अध्यापक - अच्छे नेता - अच्छे वैज्ञानिक बनाने का प्रयास क्यों नहीं करते । यह आईएस की नौकरी कौन सा देश का भला कर रही , हमने कोई बहुत बड़ा भला होते तो देखा नहीं । यह आईएस लोग , कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाये तो जो सत्ता में जो आता है उसके अनुसार कार्य करने लगते हैं । आप कौन सी क्रान्ति कर रहे जिसमें मात्र बाबू ही पैदा हो रहे वह भी जो अपने जीवन की सहूलियतों के अलावा और कुछ ख़ास तो सोचते नहीं । मैं एक पूरी जानकारी इस विषय पर होने का दावा तो नहीं करती पर एक पत्रकार के रूप में मैंने ऐसा ही देखा है । ”

“ आपके सवाल को दो भाग हैं । पहला भाग , मैं इस परिसर से विचारक - नेता - वैज्ञानिक पैदा क्यों नहीं करना चाहता और मात्र आईएस की फ़ैक्टरी क्यों बनाना चाहता हूँ । मैंने कब कहा कि वैज्ञानिक - अध्यापक - विचारक न पैदा हों । मेरी सारी उपलब्धियाँ एक अध्यापक की उपलब्धि है । अनुराग शर्मा की मूल पहचान एक अध्यापक की है । वह मात्र अध्यापक है और कुछ नहीं । जैसे भक्ति आंदोलन के संतों ने कोई साहित्य नहीं लिखना चाहा वह तो ईश्वर की आराधना में लीन थे यह साहित्य हमें एक बॉई- प्रोडक्ट, एक उप उत्पाद के रूप में प्राप्त हुआ , वैसे ही एक अध्यापक को सब कुछ एक उप - उत्पाद के रूप में प्राप्त हो रहा है । क्या कबीर - सूर - तुलसी साहित्य लिख रहे थे ।

“चींटी के पग नुपूर बाजे वह भी साहेब सुनता है ,

जा पर दीनानाथ ढरै सोई कुलीन बड़ौ सुन्दर सोई जा पर कृपा करे ।

आपन रूप देहु परभु मोही ।

आन भाँति नहीं पावौं ओही ।

क्या यह कोई साहित्य लिखा जा रहा था ? नहीं, यह भवित है, यह भगवान के प्रति समर्पण है । यह साहित्य तो बन गया अनायास । वैसे ही अनुराग शर्मा की करान्ति एक अध्यापक की करान्ति है, यह आईएएस बनना - बनाना तो महज उस प्रक्रिया की सम्पूर्णता के रास्ते के कुछ पड़ाव है । यह चाणक्य की करान्ति है, यह एक आर्यावर्त के निर्माण के संकल्प सदृश है । आपके सवाल का दूसरा भाग है कि मैं क्यों यहाँ आईएएस- पीसीएस की फ्रेक्टरी बनाना चाह रहा । मैं कोई फ्रेक्टरी नहीं बनाना चाह रहा, यह परीक्षा हमारे जीवन - यापन का एकमात्र सहारा है । हम लोग जिस परिवेश से आते हैं वहाँ पर बहुतेरे लोगों के पास शिक्षा के लिये धन नहीं होता । यह मेडिकल-इंजीनियरिंग- एमबीए की शिक्षा मँहंगी है, यह हमारे बस की नहीं है । यह परीक्षा देना हमारी मजबूरी भी है, हमारे पास विकल्प ही नहीं है । सरकार को चाहिए वह रोज़गार के और अवसर उपलब्ध कराये । शिक्षा सस्ती हो और सर्वसुलभ हो, आप भी इस पर प्रयास करें । साथ ही यह परीक्षा ऐतिहासिक रूप एक गौरव के साथ जुड़ी हुई है और गौरव प्राप्ति का हर व्यक्ति आकांक्षी होता ही है ।”

“ पर चाणक्य ने तो राज्य कभी स्वीकारा नहीं क्या आप भी चन्द्रगुप्तों का निर्माण करना चाहते हैं या ?”

“ यह समय बतायेगा ।”

“ बड़ी करांतियाँ नायक से त्याग माँगती हैं.. क्या अनुराग त्याग के लिये तैयार हैं ?”

“ यह भी समय बतायेगा ।”

“ आज अगर हम जानना चाहें कि अनुराग शर्मा आगे क्या करना चाहते हैं तब ?”

“ ईश्वर के आदेश का इंतज़ार कीजिये, वह जो आदेश देगा करान्ति उसी ओर चलेगी “

पंकज जी आप लें, पंकज जी ने कहा, ” सर अगला भाग सीनेट हॉल के सामने शूट कर लेते हैं । ”

“जैसी इच्छा पंकज जी । ”

एक बड़ी भीड़ पूरी तन्मयता से शांत होकर इंटरव्यू सुन रही थी । बीबीसी की टीम को भी एक ऐसे अनुशासन की उम्मीद न थी । मंजरी जोशी ने सीनेट हॉल की तरफ़ चलते हुये कहा, ” सर कुछ और खुलासा कीजिये अपनी

अगली योजनाओं के बारे , यह कार्यक्रम हम पराइम टाइम पर प्रसारित करना चाह रहे । सर , यह आपकी हिंदी भाषा की उपलब्धि सम्पूर्ण हिंदी पत्रकारिता के लिये भी एक बड़ी बात है । मेरा आपसे अनुरोध है कि इस इंटरव्यू के प्रसारण होने तक आप किसी और को इंटरव्यू न दें तो हमारे लिये भी बेहतर होगा ।”

“ आप क्या खुलासा चाहती हैं? ”

पंकज - “ सर आप चाणक्य बनना चाहते हैं या चन्द्रगुप्त इस सवाल का जवाब दे दीजियेगा, हमारा काम हो जायेगा । ”

अशोक - “ पंकज जी चाणक्य- चन्द्रगुप्त की एक लस्सी बनेगी , आप इंतज़ार कीजिये । ”

मैंने उसकी तरफ धूरा , वह चुप हो गया । मैं जानता था कि अगर इसको न रोका गया तो अभी यह इलाहाबादी अंदाज़ा में लपेट मारेगा । “

“ पंकज जी .. ”

“ जी सर “

“ कौन सा राज्य पर्दफ़ाश कर दूँ , क्या ज़माने के सामने खोलकर मैं रख दूँ , जो आज मुझे सुनने को बेताब हैं उन्हीं ने कभी मुझे हासियों पर भी जगह न दी थी । ”

सीनेट हॉल के सामने कैमरा लग गया , माइक सामने आ गया । अब बारी पंकज जी की थी । वह बीबीसी हिंदी प्रभार के एक वरिष्ठ मँझे हुये पत्रकार थे । उन्होंने पहला ही सवाल किया ...

“ सर क्या आपकी रचनात्मक करान्ति आपके आईएएस की सेवा ज्वाइन करने से मज़बूत होगी या कमज़ोर ? सर मैं स्पष्ट शब्दों में आपसे जानना चाहता हूँ अनुराग शर्मा सितंबर में मसूरी जाकर जीवन की सहलियतों को प्राथमिकता देंगे या एक अध्यापक की रचनात्मक करान्ति की मशाल को और ईंधन देंगे ... ”

मैं सोचने लगा ...

पंकज - “ सर , सवाल सीधा किया है मैंने । इस सवाल के जवाब पर मेरे अगले पूरे इंटरव्यू की अवधि का निर्धारण है । ”

मैं बीबीसी संवाददाता पंकज जी के सवाल पर विचार करने लगा , मैंने कहा , ” अगर आप मेरी प्राथमिकता जानना चाहे रहे हैं तब वह रचनात्मक करान्ति है । ”

“ कैसे होगी वह करान्ति अगर आप मसूरी चले गये और फिर वहाँ का व्यस्त जीवन , ट्रेनिंग और उसके बाद आपकी नौकरी । कैसे यह संभव है ? ”

“ कोई भी अपरिहार्य नहीं होता , नेतृत्व विकसित होगा , एक नया नेतृत्व आयेगा और वह इस मुद्दे को आगे लेकर जायेगा । ”

कौन होगा नया चेहरा ? ”

“ यह वक्त तय कर देगा । ”

“ सर , किसी भी आंदोलन के लिये एक नेतृत्व - एक चेहरा एक महत्वपूर्ण तत्व होता है और उस नेतृत्व के बगैर कोई आंदोलन आगे नहीं बढ़ सकता , मेरा आंदोलनों के इतिहास का सीमित ज्ञान तो यही कहता है । आप अगर चले गये तब कौन यह कक्षायें चलाएगा , कौन नेतृत्व देगा , कैसे शिक्षा को आधार बनाकर उपजा यह आंदोलन छात्र-राजनीति पर कब्जा करेगा और शहर की सीमाओं के बाहर जायेगा , जो आपका नया लक्ष्य है । ”

पंकज जी एक मुझे पत्रकार थे , उनके तीखे सवालों का सामना करना आसान न था । उन्होंने आगे पुनः कहा , “ सर , मुझे कई बार लगता है कि यह आंदोलन एक बस समुद्र की उठती उफान लेती लहर है जो एक आवेग से आगे तो आ गयी पर इसमें ऐसा कोई संवेग नहीं जो इसकी रफ्तार को बरकरार रख सके । ”

“ आपको ऐसा क्यों लगता है ? ”

“आप जा रहे मसूरी , आप के साथ सफल हुये और लोग भी चले जायेंगे । छात्र- संघ चुनाव होगा, फिर मठाधीश हॉबी होंगे , आपकी कोचिंग भी वन मैन शो सरीखी ही है , आपने कोई संस्थागत विकास तो किया नहीं , वह आपके जाते ही समाप्त हो जायेगी और शहर फिर उसी पुराने ढर्र पर वापस चला जायेगा , यह मात्र एक वर्ष की उपलब्धि दिख रही मुझे । यह उपलब्धि आपकी सफलता के साथ समाप्त होती दिख रही । मुझे सर कोई चिरजीवी करान्ति नहीं दिख रही । अगर आप को लगता है यह दिख रही है तब हम समझना चाहेंगे कि यह कैसे दूरगामी परिणाम दे पायेगी । सर , आपके रहते यह कोई परिणाम दे पायेगी इसका भी कोई सुनिश्चयन नहीं है पर आपकी अनुपस्थिति में यह दे पायेगी इस पर एक बड़ी आशंका तो है ही । आपके चले जाने के बाद यह आंदोलन आगे कैसे बढ़ेगा उसकी कोई रूपरेखा है ? ”

पंकज जी के सवालों ने मुझे निरुत्तर ऐसा कर दिया था । वह बात तो कुछ हद सर सही ही कह रहे थे ।

“ आपकी बात सही है कि हर आंदोलन एक नेतृत्व की चाहत रखता है । हम एक व्यक्ति के बजाय एक समूह के नेतृत्व में यक़ीन रखते हैं । हमारे यहाँ सारे फ़ैसले हम मिलकर सहमति से लेते हैं । हमारी अनुपस्थित में यह लोग सक्षम हैं निर्णय लेने के लिये । ”

“सर , आप क्या सेवा ज्वाइन करने के बाद भी इस क्रान्ति के फ़ैसलों में शारीक होंगे ? ”

“ क्यों नहीं । ”

“ सर , क्या यह सिविल सेवा के कंडक्ट नियमों का उल्लंघन नहीं होगा ? ”

मुझे कंडक्ट नियमों का कुछ अता - पता न था । मैंने पूछा , “ यह क्या होता है ? ”

“ एक सिविल सेवा का अधिकारी किसी भी तरह की राजनैतिक गतिविधियों में भाग नहीं ले सकता । यह विश्वविद्यालय का चुनाव कुछ सीमा तक दलगत आधारों पर होता ही है, राजनैतिक दलों से जुड़े छात्र - संगठन शारीक होते हैं और राजनैतिक दलों की चुनाव में गहरी दिलचस्पी होती है । आपकी भागीदारी राजनैतिक करार कर दी जायेगी और सरकार आप पर कार्यवाही कर सकती है । ”

मैं फिर चुप होकर जवाब सोच रहा था कि पंकज जी ने आगे कहा ,

“ सर , आपने मुख्यमंत्री के खिलाफ़ बहुत कुछ कहा है चुनाव में । मैंने आप पर रिसर्च करते समय आपका एक भाषण पढ़ा जिसमें आपने मुख्यमन्त्री को सत्ताविहीन कर देने का संकल्प लिया था । आप ही ने कहा था मेरा संघर्ष इन सामने दिख रहे चेहरों से नहीं मुख्यमन्त्री सद्भावना सिंह से है , मेरी विजय मुख्यमंत्री पर एक विजय होगी । यह भी सच है सर यह सारे नारे चुनाव के समय चलते हैं पर कहा तो आपने था ही वह भी उसके विरुद्ध जिसके नियन्त्रण में अब आपको कार्य करना होगा , अब आपकी भूमिका बदल रही है । आपको उत्तर प्रदेश कैडर मिलने की प्रबल संभावना है । मुख्यमन्त्री के अधीन आपको कार्य करना होगा , क्या आपका अति उत्साह सेवा में समर्स्याएँ उत्पन्न नहीं करेगा ? ”

“ यह सब चुनाव से समय कही गयी बातें हैं । इनका चुनाव के साथ ही समापन हो जाता है । ”

“ क्या यह मात्र चुनावी जुमला था ? ”

“ नहीं यह कोई जुमला नहीं था । यह हक़ीकत है कि मुख्यमन्त्री के लोग चुनाव में शिरकत कर रहे थे । इलाहाबाद विश्वविद्यालय का अध्यक्ष राजनैतिक रूप से बहुत मायने रखता है । मुख्यमन्त्री जी की रुचि चुनाव में

थी ही । वह चुनाव निश्चित रूप से राजनैतिक संरचना को परोक्ष रूप से प्रभावित कर रहा था, चुनाव मुख्यमन्तरी के लोग तो हारे ही थे । “

“ क्या आपका मुख्यमन्तरी के प्रति दृष्टिकोण अब बदल गया है क्या आपकी छात्र- संघ चुनाव में विजय अब सत्ता के विरुद्ध विजय नहीं है, क्या तब के मत के विपरीत एक एक नया मत विकसित हो गया है जो पहले के विपरीत है ?”

“ मेरे दृष्टिकोण में कोई बदलाव नहीं आया है । मैंने पहले भी कहा था कि सरकारों ने शिक्षा पर कोई ख़ास कार्य नहीं किया है और आज भी यही कह रहा । मैंने चुनाव में कहा था मेरी जीत नीतियों की जीत होगी । सरकारों को शिक्षा पर कार्य करना होगा ।”

“ क्या सरकारें शिक्षा पर कार्य नहीं करतीं ?”

“ आप बजट उठाकर देख लें, आप तुलना कर लें रक्षा व्यय और शिक्षा - स्वास्थ्य व्यय का । आप आज़ादी के बाद से आज तक के शिक्षा - स्वास्थ्य व्यय का लेखा- जोखा देख लें, आप को शिक्षा - स्वास्थ्य के साथ किये अन्याय का पता चल जायेगा ।”

“ सर, आपका जुम्मा - जुम्मा कुछ महीने का राजनैतिक जीवन है । इस छोटे से जीवन में आपने बड़े - बड़े सवाल खड़े कर दिये और किसी सवाल का कोई हल तो ढूँढ़ा नहीं । आपका सिविल सेवा परीक्षा के लिये कुछ लोगों को पढ़ा देने से कौन सी शैक्षिक करान्ति हो गयी । मुझे कई बार लगता है आपके सारे ख़्यालात में वास्तविकता कम रुमानीपन ज्यादा है ।”

“यह सच है मैंने कोई ख़ास कार्य नहीं किया है, पर कुछ करने का प्रयास किया है । मेरे कृत्यों में रुमानीपन अगर दिखता भी है तो वह वास्तविकताओं को आकलन को समाहित किये हैं ।”

“ सर, आप एक मुखर आलोचक व्यवस्था के रहे हैं, क्या एक सिविल सेवा के अधिकारी के तौर पर भी रहेंगे ?”

“ मैं एक नागरिक पहले हूँ और अभी मैंने कोई सेवा ज्वाइन नहीं की है । “

“ क्या सेवा ज्वाइन करने के बाद भी यह तेवर बरकरार रहेगा ? “

“ क्यों नहीं ? देश के मूलभूत मुद्दों पर बोलना हर व्यक्ति का एक कानूनी अधिकार भी है और नैतिक दायित्व भी । “

“ चाहे उसमें सरकार की आलोचना ही शामिल क्यों न हो ?”

“ सच एक सच ही होता है वह आलोचनाओं के आरोप से बेपरवाह होता है ।”

“ आपके जीवन की प्राथमिकता क्या है ?”

“ रचनात्मक क्रान्ति ।”

“ अगर उस क्रान्ति के रास्ते में यह सेवा बाधा उत्पन्न कर रही है तब ?”

“ मेरी सिफ़्र एक प्राथमिकता है - रचनात्मक क्रान्ति ।”

“ क्या हम आपके इस कथन से यह निष्कर्षित कर सकते हैं कि आप रचनात्मक क्रान्ति के लिये कोई भी कुर्बानी देने को तैयार हैं ? ”

“ अवश्य । ”

“ इतनी मेहनत से प्राप्त की गयी यह सेवा भी ? ”

“ मैं चुप हो गया । पंकज जी ने कहा , “ सर सोच लें , आप सोचकर जवाब दें । ”

“ मैं कोई भी त्याग करने को तैयार हूँ । ”

“ आप मसूरी नहीं जायेंगे ? ”

“ इसका उत्तर समय देगा । ”

“ सर , हम समय का इंतज़ार करते हैं और आपका साक्षात्कार पुनः समय के प्रवाह को देखकर लेंगे । ”

पंकज ने कुछ सवाल और पूछे जो सामान्य ही थे । वह सब मेरे जीवन , मेरे संघर्ष , आने वाले अभ्यार्थियों के लिये मेरा संदेश आदि - आदि रुटीन सवाल ही थे , पर वह जिन सवालों से आग लगाना चाहते थे वह पूछ चुके थे । मुझे इस बात का इल्म नहीं था कि इससे आग लगने वाली है और मुझे यह भी नहीं पता था कि मुझे यह सब नहीं बोलना चाहिये था । मंजरी जोशी ने कहा , “ सर एक अनुरोध है आप कोई इंटरव्यू न दें अगले तीन- चार दिन तो इस स्टोरी के लिये बेहतर होगा । हमारी स्टोरी छपने में तीन- चार दिन लगेंगे । हमारा संपादकीय मंडल देखेगा , स्टोरी एडिट होगी । हम एक पूरी सीरीज़ कर रहे और पूरी सीरीज़ के तैयार होने में वक्त लगेगा । पर हम कल से ही प्रचार आरंभ कर देंगे अपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सीरीज़ का । ”

मैंने कुछ नहीं कहा सिफ़्र सुन लिया ।

शाम को मेरे घर पर कमिश्नर साहब , उनका छोटा भाई , उनके पिताजी भी आये और वह विवाह को तय करना चाहते थे । वह अब इस मुद्दे को परिणति पर ले जाना चाहते थे । आंटी , पिताजी , माँ और कमिश्नर साहब के पूरे परिवार के मध्य एक लंबी वार्ता हुई । इस बार वार्ता की बागड़ोर आंटी के हाथों थी । कमिश्नर साहब के पिताजी ने बात आरंभ की ...

“ शर्मा जी , हमने प्रस्ताव विवाह का बहुत पहले दिया था । पर तब में और अब में एक बदलाव आ चुका है । अब प्रतीक्षा भी चयनित हो चुकी है । अब संयोग और बेहतर हो चुका है और सहलियतें हमारी- आपकी और अधिक दिख रही इन दोनों के विवाह से । अनुराग ऐसे लड़के का पाँव पूजना एक धन्यता की प्राप्ति होगी , मुझे उस धन्यता तो प्राप्त करने का अवसर प्रदान करें । आपके आशीर्वाद की मुझे आकांक्षा पहले भी थी और आज भी है । अगर आप इजाजत दें तो मैं थोड़ा स्पष्ट रूप से अपनी बात कह दूँ । ”

“ पिताजी ज़रूर कहें । ”

“ शर्मा जी , दहेज एक बड़ा मुद्दा होता है इस शहर इलाहाबाद के प्रतिष्ठित लड़कों के विवाह में , अनुराग तो प्रतिष्ठा के उत्तुंग शिखर पर हैं । मेरे पास ज़मीन काफ़ी है , गाँव में तो बहुत है कुछ शहर में भी है । मेरे तीनों बच्चों का उसमें बराबर हक़ है । प्रतीक्षा के हिस्से की ज़मीन आपकी ही है । अगर आपको पैसा चाहिये तब वह मैं बेचकर आपको दे देता हूँ , वस्तु आपकी ही है । ”

आंटी - “ भाई साहब , लगता है आपको कुछ ग़लतफ़हमी हुई है । शायद आपको लग रहा है कि यह विवाह दहेज के कारण नहीं हो रहा । मेरे और उमिला के दो बेटे हैं - ऋषभ और अनुराग । ऋषभ ने प्रेम विवाह किया और मेरी बहु शालिनी , शालिनी सीमेंट एंड बिल्डिंग मटीरियल वालों की इकलौती बेटी है । इन तीनों के मध्य इतना प्रेम है कि शालिनी ने अपने हज़ार करोड़ के साम्राज्य के तीन वारिस घोषित कर दिये हैं और अनुराग के विवाह के बाद चार हो जायेंगे । ”

बातचीत के बीच ही मेरे मामा - मामी भी आ गये । वह कमिश्नर साहब को देखकर अक्सर घबड़ा जाते थे , वैसा ही आज भी हुआ पर कमिश्नर साहब ने उनको संयंत किया और कहा , ” मामा जी अच्छा हुआ आप भी आ गये । हम लोग अनुराग - प्रतीक्षा का विवाह तय करना चाह रहे , आपका भी आशीर्वाद मिल जाये तब यह मामला अंतिम पायदान पर पहुँचे । ”

मामा जी - “ ज़रूर साहब । ”

आंटी ने अपनी बात फिर कहनी आरंभ की , “ ऋषभ ने बहुत पैसा कमाया । अनुराग को ऋषभ के कहने से मैंने अपना नॉमिनी बनाया हुआ है । हमें पैसों की कोई ज़रूरत नहीं पर हम विवाह का खर्च नहीं करेंगे , वह आपको देखना होगा । हमारी भी बेटी है हम भी विवाह की रिवाजों - परम्पराओं को समझते हैं । विवाह का खर्च तो आपको ही करना होगा । ऋषभ को शीघ्र अमेरिका जाना था इसलिये उसका विवाह मुझे जल्दी में करना पड़ा । विवाह का लुत्फ़ नहीं मिला । अनुराग के विवाह में रिवाजों का आनंद मिले , एक शानदार विवाह हो यह हमारी चाहत है । आखिर किसी आम आदमी का विवाह तो यह है नहीं , यह एक शहर के महानायक का विवाह है । ”

देवानंद - “ आंटी जी बात एकदम सही है कि यह किसी आम आदमी का विवाह नहीं है । यह एक महानायक का विवाह है , यह दो आईएएस अधिकारियों का विवाह है , यह कमिश्नर इलाहाबाद के बहन का विवाह है , यह विवाह ऐसा होगा कि लंबे दौर तक याद किया जायेगा । आप जो भी आदेश करेंगी सब सम्पूर्ण होगा । ”

आंटी - “ आपने अपनी बात कह दी और हमने अपनी । हमें अनुराग से मशविरा कर लेने दीजिये । एकाध दिन में फ़ैसला कर लेते हैं । ”

कमिश्नर साहब का पूरा परिवार गदगद था । माँ भी विवाह की कल्पनाओं में आ गयी थी , वह मन ही मन विवाह के मंगलगीत गाने लगी । कमिश्नर साहब चले गये । मेरे घर में पंचउरा चालू हो गया । उस पंचउरे में सब शामिल हो गये ।

मामी - “ उर्मिला , पतोहू आईएएस लै के आवत हउ , हमअ- पचे इज्जत- मान कुछ दे ? ”

माँ - “ काहे न दें भौजी , आईएएस होये अपने दफ्तरे में घरे में तअ बहू रहे । ”

मामी - “ अरे उर्मिला , ऊ गाड़ी - बँगला - अर्दली वाली होये हमका का सेटे ? ”

माँ - “ नाहीं भौजी , संस्कारी घरे के बा । बहुत तमीज़ से रहे । ”

मामी - “ चलअ उर्मिला अब घरे के चरितर बदलि गवा । तोहार भैया पहिला अफ़सर रहेन पर अब तअ दुई - दुई कलेक्टर घरे में । ”

माँ - “ गंगा माई के सब कृपा बा । ”

मामा - मामी अपने घर चले गये । मामा के यहाँ एक अलग दरबार सज गया ।

मामी - “ तक़दीर होई तअ उर्मिला ऐसन , लड़िका रहा तब खेतई जोतत रही अब बहू पाई गई वैसइ अब तअ सबके मेडँ जोति ले । ”

मामा - “ बहुत दुख सहे बा । ”

मामी - “ भगवान ऐसन दुख सबके देयअ अगर ऐसन फल मिलै के होई । ”

मोहिता दीदी - “ बुआ के बस के बा आईएएस बहू से निभाई लई के ? ”

मामी - “ ई समय बताये , उर्मिला के तअ बगैर लड़े पानी पचत नाहीं । देखअ कैसे निभत हअ आपस में । समधियाना तो बहुतै बढ़िया पाये बा । तोहरे पिताजी के हलाभला आज तक करायेस नाहीं । हम मुँह खोलि के दुई बार कहा कि इंकवायरी बंद कराई दअ तोहरे भैया के रात भर नींद नाहीं आवत , पर समय बिगड़ि जाई तअ केऊ नाहीं सुनत । मोहिता तू मुन्ना से कहअ ,

तोहरा बाति मानि जाये । उमिला तअ पूर डाइन बा , ई करबऊ करें तअ लटिकाय - लटिकाय । समय बनी गवा बा हर केऊ ओनकर धूरि माथे पर लगावत बा । मुन्नवा ऐसन सबके सुधि लेई कृपानिधान , कहाँ से कहाँ पहुँचि गअ ऊ ।”

मोहिता दीदी - “ बात करती हूँ अम्मा, मुन्ना बड़े दिल का लड़का है । वह ज़रूर करा देगा ।”

मामी - “ उमिला के सामने न करूँ नाहीं तअ ऊ कौनौं चक्कर लगाई दे । अकेले में बात करूँ ।”

उसी समय दाढ़ू आ गया ।

मामी ने दाढ़ू को देखकर कहा , “ लअ मिठाई खा । आज मुन्ना के इहाँ बहुत मिठाई आई रही उहीं से मिठाई आई बा ।”

“ का भवा चाची ? ”

“ राजा राम के बियाह होई जात बा ।”

“ मुन्ना के बियाह तै होई गवा ? ”

“ हाँ । ”

“ कहाँ ? ”

“ घरे में एक आईएस और आवत बा ।”

“ कमिशनर साहब के इहाँ तय होई गवा ? ”

“ हाँ । ”

“ कब भवा चाची ? ”

“ आज । ”

“ हमका - पचे के खबरें नाहीं । ”

“ हम - पचे अब के होत हई । अरधेलवा रमदिनवा के बहिन शांति मलकिन बनी बा । सबकेउ बैठा रहेन उहै बियाह तै करत रही । ओकर हिम्मत तअ देखअ , तोहार मामा बैठा रहेन और बियाह ऊ तै करत रही । ”

“ ई त अन्याय हअ चाची । ”

“ अब का करबअ , रिश्ता - नात के कौनौं कीमत नाहीं बा । अब नवा- नवा रिश्ता बनत बा , हम पचे पुरान रिश्ता के होई जात हई । अब का रही गवा , घरे के बड़वार मनई के कोनौं इज्जत नाहीं केहेन । बहुत बेइज्जती भई तोहरे चाचा के आज । एकौ बार नाहीं कहने तोहार का राई बा , मोह धरै बरे ही

सही कहे तअ होतेन । हम तअ बस बियाहे में बस नाम भरै के जाब । मायन - हल्दी में न जाब । बरुआ में तोहार चाचा जाईं, हम न जाब । हमार कौनौं सम्मान नाहीं केहेन । तू पचे जा, तोहार पचन के शायद क़दर करें । “

दादू - “ चाची जहाँ तू उहीं हम । हम तोहका न छोड़ब, हम तोहरेन गोल में रहब । ”

मोहिता दीदी - “ अम्मा, ई सब बात नहीं करते । “

मामी - “ तोहका का पता, अपमान तअ हमार भअ बा नअ । ऊ अरधेलवा रमदिनवा के बहिन रूपिया गिनावत रही । घरे में खाई के नाहीं रहा, आज समय बनी गवा बा तअ हमरेन सामने शेखी झाड़त रही । ऊ के होत हअ बियाह तै करई वाली । बाबू के नाहीं पूछने, मामा के नाहीं पूछने । “

दादू - “ वरीक्षा होई गवा का । “

मामी - “ सब होई गवा । “

दादू - “ चाची ई तअ अन्याय भवा बा, हमरे पचन के संगे । “

मामी - “ पूछअ मुन्नवा से नअ । अगर शांति के मालिकाना रहे तब हम बियाहे में न जाब, हम परमुख साहिब के बिटिया हई, हमसे अपमान बर्दाश्त न होये । तू पचे जा । ”

“ चाची, हम तअ तोहार सिपाही हई । “

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 359

मामी को पूरी रात नींद नहीं आयी । ईर्ष्या ने उनके भीतर प्रवेश कर लिया था । एक बार ईर्ष्या प्रवेश कर जाये तब उसका वास हो जाता है । क्या यह अनायास आती है या सायास ? इसके आने का कारण क्या है ? मामी के अंदर ईर्ष्या का एक कारण बाबा भैया की असफलता भी थी । यह अक्सर परिवारों एवम् पड़ोस में होता ही है एक के बच्चे की दूसरे बच्चे से तुलना, बांग्रे यह देखे यह दो बच्चे अलग - अलग विधा के स्वामी हैं और ईश्वर ने उनको अलग- अलग तरीके से गढ़ा है । बाबा भैया शानोशौकत से पाले गये थे, वह बेहतर अंगरेज़ी स्कूल में पढ़े थे । वह धारीदार टाई पहन कर स्कूल जाते थे । मैं एक सरकारी स्कूल में पढ़ा । कहाँ उनका सेंट जोसेफ और कहाँ मेरा श्यामा देवी भगवती प्रसाद बाल विद्यालय, नवीन महिला सेवा सदन, सीपीआई । मेरे मामा के बाई के बच्चा मेरे साथ पढ़ता था । अब मामी के बाई के बच्चे का सहपाठी कमिश्नर के घर का दामाद हो रहा वह भी ऐसे - वैसे नहीं, कमिश्नर साहब का पूरा परिवार रिरिया रहा मेरी कन्या स्वीकारो ।

मामी के कान में कमिश्नर साहब के पिताजी की यह पंक्ति बार - बार हथौड़े की तरह चोट कर रही थी , “ अनुराग ऐसे लड़के का पाँव पूजना धन्यता की प्राप्ति होगी और हमें इस अवसर प्राप्ति का आशीर्वाद दें ... ”

आंटी की लाइन .. “ यह किसी आम आदमी का विवाह नहीं एक शहर के महानायक का विवाह है .. ”

देवानंद की पंक्ति, “ यह शहर के महानायक का विवाह है , यह दो आईएएस का विवाह है , यह कमिश्नर इलाहाबाद के बहन का विवाह है .. एक ऐसा विवाह संस्कार होगा जो बहुत दिनों तक याद किया जायेगा ... ”

मामी - मामा ने बाबा भैया के विवाह के बाद सारी रिश्तेदारी में हंगामा कर दिया था कि ऐसा शानदार विवाह आज तक हुआ ही नहीं है और न आगे कभी होगा । ऐसा समधियाना अब इस खानदान में नहीं मिलने वाला । वह जंगीगंज के कपड़े के एक व्यापारी थे । वह धन- धान्य से परिपूर्ण थे । पर यहाँ तो समाँ ही कुछ और है । यहाँ लड़ाकू उर्मिला के क्या कहने , आईएएस बहू , मुन्ना के दो - दो आईएएस साले और तो और आईएएस लड़की दहेज भी साथ लेकर आ रही । बहू के नाम विरासत में बहुत ज़मीन - जायदाद है सब बेच कर पैसा दे देने की बात तक हो गयी । मामी के आँखों से प्रतीक्षा के पिता की मुझे दामाद बनाने की अधीरता जा ही नहीं रही थी । वह आँखें फाड़े छत की ओर शून्य में निहार रही थीं । मामा की आँख खुली और मामा ने मामी की तरफ देखकर पूछा , “ का भवा , नींद नहीं आ रही ? ”

मामी - “ का नींद आये , घरे में जवान बेटवा बेरोज़गार पड़ा बा , बहू पेट से होई गै बा । एतना लगन से बढ़िया अंगरेज़ी स्कूल में फ्रीस दै के पढ़ावा पर भवा का ? उहाँ मुन्नवा कलावतिया के बेटवा के साथे पढ़त रहा जहाँ कौनों फ्रीस नाहीं लागत पर देखअ का करत बा , अंटी छाड़ बंटी मारत बा । ”

मामा - “ सबके आपन - आपन तक़दीर बा । ”

मामी - “ हमरै तक़दीर भगवान काहे नसायेन । इहौं दिन देखई के बदा रहा कि रमदिनवा अरधेलवा के बहिन हमरे आगे चौधराइन बनि जाये । एकर बाप एकर बियाह करै के हैसियत में नाहीं रहेन , ऊ उर्मिला के पीछे लगी रहत रही । बाबू दुई लड़िका देखे रहेन , माई कहेस कि दूसरे से एकर बियाह कराई दअ , बाबू कराई देहेन । न कराये होतेन तब ऐकर बाप कतों जवा- सीधी - रीवां में फेंक आई होतेन । पर आज देखअ पूर मलकिन बनी रही जैसे एकरै बेटवा के बियाह होत बा । कुल घरि एकरे हाथे बिक गवा बा । अगर शांति के मालिकाना मे बियाह होते तब तअ हम न जाब । ”

मामा - “ अब जौन जेकरे तक़दीर में बा ओका ऊ मिले । हमार तअ नस दबी बा । हमार हला - भला मुन्ना से होये । कमिश्नर साहेब प्रदेश के बहुत बड़ा

अफ़सर हयेन और मनईउ बढ़िया हये । ओनका कौनों चीज ख़राब न लागे चाही । “

मामी - “ हम बाबू से शिकायत करब । मान सबके मिलै चाही । बाबुओं के कौनों मान नाहीं मिला । नियम तअ इ कहत हअ कि बियाह बाबू के सामने तै होत । अब मुन्नवा के बाबा हयेन नाहीं, बाबू से सबसे वरिष्ठ हयेन । बाबा के बियाहे बरे जे आई ओका तू बाबू के पास भेजे रहअ । बाबा के ससुराल वाले बाबू के आशीर्वाद लै के आएन और सारी बात बाबू तै केहेन पर इहाँ तअ धिंगरा मालिक बना हयेन । बाबू के सम्मान नाहीं भवा बा , कुल घर के बियाह में जाई के न चाही । पहिले बाबू के सम्मान होई , साहेब कमिशनर होइहिं आफ़िस में पर इहाँ लड़की के भाई हअ । ओ जाई गाँव बाबू के आशीर्वाद लेई और बाबू के सहमति के बाद बियाह होई चाही । ”

मामा - “ बाबू के मान तअ रखै चाही पर अब ई कहे के कि बाबू के पास साहब जाई । ”

मामी - “ तू कहअ । ”

मामा - “ हम साहब के मुलाजिम हई , हम तअ ई न कहि पाउब । ”

मामी - “ बड़का भैया कहई । ”

मामा - “ ओनहूँ से न होये , ओवरों पास बात करै के एतना शहूर नाहीं बा । ”

मामी - “ तब उर्मिला कहई साहब से , पर साहिब के गाँव जाब ज़रूरी बा , नाहीं तअ बाबू के कौनौ मान न रहे । एक बात और कहे देत हई , ई रमदिनवा अरधेल के बहिन के चौधराहट हमसे बर्दाश्त न होये । हम ओकर भद्रा उतार देब अगर ऐसन ओकर कदरशना रहे । हमार भयने बा , हमरे भयने के बियाह में हमका ऊ बताये कि बियाह कैसे होई चाही । ”

मामा - मामी ने सोने का परयास किया , पर कहाँ नींद आने वाली बस एक झपकी लगी होगी कि पक्षियों का कलाम चालू हो गया । सुबह की चाय के समय मामी ने अपनी चाल चलनी चालू कर दी ।

“ दादू । ”

“ हाँ चाची । ”

“ अब तअ मुन्ना के बियाह में बराती बनि के जा अगर बोलायेन तब । ”

“ काहे न बोलइहिं चाची ? ”

“ मालिक केउ और बा इ बियाह के । ”

“ के बा ? ”

“ रमदिनवा अरधेलवा के बहिन ।”

“ ऊ कैसे चाची ?”

“ काल बियाह कुल उहै तै केहेस । उर्मिला बड़ी बोलता बनत हआ पर काल मोहे से बोली नाहीं फूटी । बाबू के बहुत अपमान भवा बा । जौन बियाह बाबू के तै करै चाही ऊ अरधेलवा के बहिन तै करेस । हम तअ बाबू के सम्मान बरे मरि- कटि जाब । जब तक बाबू के सम्मान न होये , तब तक हम बियाहे में न जाब । साहेब गाँव जाई और बाबू के आशीर्वाद लै के आवैं ।”

दादू को लगा कि अगर यह हो गया तब तो गाँव में साख बढ़ जायेगी , पूरे इलाके में हल्ला हो जायेगा । मामी की चाल सफल हो गयी । दादू शिकंजे में आ गया ।

“ चाची बात तअ तू ठीक कहत हउ , बाबू के सम्मान ज़रूरी बा । पर इ बात कहे के ?”

“ तू कहअ ।”

“ चाची हम लड़िका - लबारी हई , हमार कहब ठीक नाहीं बा । “

“ तब के कहे ?”

“ चाची , बाबू खुदै कहैं तब ?”

बाबा भैया - “ बाबू काहे कहैं ? बाबू तअ नाराज़ हयेन , ओनकर नाराज़गी केउ बतावै । दादू जाई के बतावैं कि बाबू दुखी हये । हम तअ न जाब बियाहे में । ”

दादू - “ चाची कुल परिवार एक साथ रहै चाही एह मुद्दे पर ।”

बाबा भैया - “ एक कैसे रहे , सबसे पहिले तुहिन भगाबअ मुन्ना के तरफ़ ।”

दादू - “ नाहीं भैया , हम चाचा के सिपाही हई , चाचा फ़ैसला कै देई हम सब चाचा के पीछे रहब । ”

मेहिता दीदी - “ ई सब क्या लगा रखा है , अब मुन्ना के या बुआ के एह सब बात के कौनौ परवाह होये ? ”

दादू - “दीदी , बाबू के सम्मान के बात बा ।”

मेहिता दीदी - “ बात का बतंगड मत बनाओ । बाबू से बुआ राय- मशविरा करेगी ।”

मामी - “ कौन मशविरा करिहिं अब , सब तअ होई गवा । बाबू केतनी मदद केहेन ओकर पर अब सब भूलि गै बा ।”

अंत में सारे विमर्श के बाद छोटे मामा के लिये यह आदेश तैयार हुआ कि वह जाकर उर्मिला से कहेंगे कि बाबू नाराज़ हैं । पर इन लोगों को पंचतंत्र की वह कहानी नहीं याद थी जिसमें शिकार शेर के गुफा की तरफ़ आने के आमंत्रण पर कहता है कि गुफा में जाने वाले पदचिह्न तो दिख रहे पर वापस आने वाले नहीं, अंतः मैं गुफा के भीतर प्रवेश नहीं करूँगा । मेरे छोटे मामा गीता परेस से छपने वाली कल्याण पत्रिका नियमित पढ़ते थे और पंचतंत्र की कहानियों का उस किताब से रिवीज़न हो जाता था । मेरे छोटे मामा एक रूपया में पाँच चर्वन्नी तो भूँजाते ही थे, गाहे- बेगाहे तीन अठन्नी भी लहा लेते थे । उनके पास जैसे ही यह प्रस्ताव गया उन्होंने एक सिरे से अस्वीकार कर दिया यह कहकर, “ दुधारू गाय के चार लात सहे होत हआ , ई तअ पूर अमूल के डेरी हआ ।”

यह कहकर वह अपनी गाय दुहने चले गये । गाय दुहते - दुहते पूछा , “ बियाह कब बा , हम आईएएस के मामा , पतोहु आईएएस, समधियान आईएएस ... अब पता नहीं कौन मान चाहत हयेन । ”

यह कहते - कहते अपनी पत्नी से कहा , “ मलकिन , कोसा के कुर्ता और परमसुख के धोती पहिनै के टाइम आई गै बा । दुबहा वालेन के नेउता जाई चाही ऐकर ध्यान राखू । अब ऐसन बियाह पुनि तअ न होये । कमिश्नर के बँगला में बरात जाये, साहेब के अँगने में बियाह होये । ”

छोटी मामी - “ उर्मिला कथौ करै तो हमरे नैहरे वालेन के हमेशा याद करत रहित । सुनअ अपने जावा में तीन लीटर तेल डलाई लेतअ चलित उर्मिला के इहाँ देखी बियाह तो रंग - ढंग । केउ लड़की के फ़ोटो देखें बा , कैसन बा ? उर्मिला बहुत बेराई के बियाह करे । अब बहुओं कलेक्टर बने ? ”

छोटे मामा - “ हाँ, दुझनौ कलेक्टर बनिहिं । ”

छोटी मामी - “ अब तअ उर्मिला बँगला में रहे अब । ”

छोटे मामा - “ दुई - दुई बँगला । ”

सारा प्लान ख़राब होता दिख रहा था .. पर ई बनकटा मिश्र का परिवार है, आसानी से हार थोड़े मानेगा ।

ऋषभ के आने का दिन नज़दीक आ रहा था । आंटी जाने की जल्दी में थी । उसका ऑफिस भी था । वह रात में मेरे पास आज अकेले आयी । अक्सर माँ और आंटी साथ आते थे । आंटी ने कहा , “ अनुराग अगर आईएएस की

नौकरी ज्वाइन नहीं करना है तब तुम प्रतीक्षा से राय मत लेना , उसको अपना फ़ैसला सुनाना । वह तुम्हारे फ़ैसलों पर जीवन चलने की अभ्यस्त हो , यह कार्य अभी से करो । तुम जीवन के एक बहुत कठिन रास्ते को चुनने जा रहे हो , तुम्हारा जीवन साथी इस बात को पहले ही समझ ले और हक्कीकत स्वीकार कर ले कि वह एक दीवाने से विवाह करने जा रही है जिसकी संवेदना परिवार से अधिक समाज के प्रति है । वह समाज के प्रति आगरही है न कि किसी एक व्यक्ति के प्रति । प्रतीक्षा इस बात को जितनी जल्दी समझ ले उतना ही बेहतर होगा और तुम स्पष्ट शब्दों में बता देना उसको कि तुम एक पागल व्यक्ति से विवाह कर रही हो जो राज्य त्याग सकता है और राज्य त्यागने में बाधा बनने वाला व्यक्ति त्याज्य ही होगा ।”

मैं आवाक रह गया ।

“आंटी , आपको कैसे पता यह मैं करूँगा । “

“तुम यह नौकरी नहीं करोगे , चाहे अभी छोड़ दो या कुछ साल बाद पर इस नौकरी को तुम्हारा साथ नहीं बदा है । ऋषभ भी अमेरिका वापस नहीं जायेगा । वह शालिनी को भी छोड़ देगा । “

“ क्यों आंटी ? “

“शालिनी उसके रास्ते की बाधा बन चुकी है ।”

“ उसने आप से कहा , मेरा मतलब ऋषभ या शालिनी ने ऐसा कुछ कहा ? “

“ नहीं । “

“ तब आपको कैसे पता ? ”

“ मैं एक माँ हूँ नौ महीने जिसको पेट में रखा है और कई साल जिसकी और मेरी साँसे एक रही हैं उसको मैं जानती हूँ । “

“आंटी । “

“ हाँ अनुराग । “

“ आप बतायें मैं क्या करूँ जब आपने इतना जान लिया ।”

“ सिर्फ़ धड़कनों को सुनना बेपरवाह किसी के दर्द से , धड़कनें आदेश उचित देती हैं । “

“आंटी , फ़ैसला बड़ा है । “

“ बड़े फ़ैसले ही समाज में परिवर्तन लाते हैं ।”

“ मैं फ़ैसला नहीं कर पा रहा ।”

“ तब मसूरी चले जाओ , उसके बाद फ़ैसला लेना ।”

“ अगर मैं कहूँ आप यह फ़ैसला कर दो तब ? ”

“ तुम मुझसे वह क्यों कहलवाना चाहते हो जो तुम करना चाहते हो । ”

इतने में माँ आ गयी , हम और आंटी शांत हो गये । माँ ने कहा , “ कौन प्रेम वार्ता होत रही कि हमका देखतई चुप होई गअ । ”

अगले दिन आंटी दिल्ली चली गयी । ऋषभ देश वापस आ गया । एक नयी करान्ति ऋषभ का इंतज़ार कर रही थी , एक और महानायक जन्म लेने जा रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 360

आंटी जाते - जाते पिताजी से कहकर गयी थी कि अनुराग प्रतीक्षा से विवाह करना चाहता है । उर्मिला को यह बताऊँगी तब वह अनुराग के पीछे लग जायेगी । आप अनुराग से बात कर लीजिएगा और विवाह की प्रक्रिया को आगे बढ़ाइये । आप समझदार हैं । आप से क्या कहना । पिताजी ने आंटी की बात सुन ली और वह समझ गये कि बच्चों ने विवाह का फ़ैसला कर लिया है , अब परम्पराओं का ही निर्वाह करना है । अगले दिन माँ के गंगा स्नान के जाते ही वह मेरे पास आये । उन्होंने आंटी की बात को अक्षरशः बताकर पूछा ,

“आपने यह फ़ैसला कब लिया ? ”

मैं शांत था । पिताजी ने कहा , “हम लोग सारी बात स्पष्ट एवम् पारदर्शी रूप से करते हैं । मैं फ़ैसला जो भी लूँगा आपके हक़ में ही लूँगा । मैं बार - बार कहता हूँ ईश्वर इतना चक्रवर्ती पुत्र बहुत जन्मों के कर्मों के संचय होने के बाद देता । व्यक्ति को एक बोधिसत्त्व बनना होगा , अनुराग ऐसे पुत्र की प्राप्ति के लिये । आप साफ- साफ़ सब बता दो , मैं निर्णय ले लेता हूँ और इस बात की घोषणा कर देता हूँ कि तुम्हारा विवाह मैंने तय कर दिया है , यह प्रतिदिन सायंकाल तुम्हारे विवाह के इच्छुक अधीर कन्या के पिताओं का मेला ख़त्म हो । ”

“ पूछे .. क्या जानना चाहते हैं आप ? ”

“ आपने कब प्रतीक्षा से विवाह का फ़ैसला किया ? ”

“ दिल्ली में इंटरव्यू के समय । ”

“ इतने बड़े घर की लड़की है वह , हमेशा बड़े बँगलों में रही है , यहाँ वह निभा पाएगी । ”

इस सवाल का उत्तर बहुत ही कठिन था । यह शंका मेरे भीतर भी थी पर मैं प्रतीक्षा के प्रेम आसक्त हो चुका था , मैं जानता था कि उसका इस घर में रह पाना आसान नहीं होगा पर मैं एक भुलावे में था कि वह मेरे परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेगी ।

“ क्या सोच रहे हो मुन्ना ?”

“ पिताजी यह सवाल कठिन है । इसका जवाब मेरे पास नहीं है पर प्रतीक्षा मुझसे विवाह करने को आतुर हैं और मैंने उसको सबकुछ साफ़- साफ़ बता दिया है ।”

“ वह तुमसे विवाह करना चाहती है , यह मुझे पता है ।”

“आपको कैसे पता ?”

“बताता हूँ, पर पहले यह बताओ आपकी दहेज पर क्या मान्यता है ? “

“ मैं समझा नहीं ।”

“ आपके विवाह में दहेज लिया जाये या न लिया जाये ?”

“ क्या लेना ज़रूरी है ?”

“ जब देने वाले सहर्ष तैयार हैं तब ज़रूरी - गैर ज़रूरी के बीच मात्र सिद्धान्त का प्रश्न ही है । कोई माँग तो रहा नहीं, वह अपनी शरद्धा से देना चाह रहे । यह एक प्रम्परा - रिवाज का भाग है, यह भी तुम कह सकते हो । एक बात यह भी है यह मेरे लिये ज़रूरी तो नहीं है, पर एक मजबूरी है ।”

“ कैसी मजबूरी ? ”

“ आपके शानदार विवाह का खर्च और तुम्हारी बहन के विवाह में मदद हो जायेगी ।”

“ पिताजी , एक सामान्य विवाह क्या नहीं हो सकता ? क्या एक साधारण तरीके से आप अपने बेटे का विवाह करके प्रम्पराओं का निर्वाह नहीं कर सकते , क्या यह ज़रूरी है यह ताम- झाम , एक झूठा आवरण ओढ़कर एक नक्ली प्रतिष्ठा प्राप्त करने का प्रयास करना जो मामा ने बाबा भैया के विवाह में प्राप्त करने का प्रयास किया था । यह विवाह में जो एक होड़ सी मची है अति वैभव प्रदर्शन की इसको अगर मैंने ख़त्म का प्रयास नहीं किया तब कौन करेगा । मुझे आप यह ख़त्म करने का प्रयास दीजिये । यह भी एक नयी शुरुआत विवाह के बाज़ार में मुझे करने दीजिये । एक बात और बताइये पिताजी , क्या इस बात का वायदा कभी प्रतीक्षा के पिता ने किया था कि मैं आपकी कन्या का विवाह करूँगा ? ”

“वह यह मेरी ज़िम्मेदारी है , वह वायदा क्यों करेंगे ? ”

“अगर मैं चयनित न होता तब ? ”

“ तब गुड़िया का विवाह एक सामान्य विवाह होता पर अब इच्छायें सबकी जागरत हो चुकी हैं और एक बेहतर विवाह सब करना चाहते हैं । ”

“ मैं हूँ न उसके लिये । ”

“ तुम कैसे करोगे ? तुम पैसा न कमाते हो न कमाने का कोई ज़रिया दिख रहा । यह सरकारी नौकरी अगर नियम से की जाये तब तो कुछ बच सकता नहीं । तुम कैसे करोगे ? ”

मैं शांत हो गया ।

“ चलो यह बताओ जो तुम्हारे विवाह का खर्च है वह कहाँ से आयेगा ? ”

मैं चुप होकर पिताजी की आँखों में देख रहा था । “

“ मुन्ना , हर व्यक्ति के एक अरमान होते हैं । एक बड़े अरमान और आदर्श में एक छत्तीस का आँकड़ा होता है । एक को दूसरे के लिये रास्ता देना होता है । जिस तरह तुम्हारे विवाह कार्यक्रम की हर ओर चर्चायें चल रही हैं , वह आदर्श का सम्मान रखकर नहीं की जा सकती है । आप अपनी माँ और आंटी का वार्तालाप सुन लो । अपनी रिश्तेदारियों में हो रही बातें सुन लो । मैं अगर सारा पैसा अपना खर्च भी तक दूँ तब भी वैसा विवाह नहीं हो सकता । ”

“ एक सामान्य विवाह में क्या आपत्ति है ? ”

“ मुझे कोई आपत्ति नहीं है पर सबको है । ”

“ सब कौन ? ”

“ तुम जानते हो । ”

“ पर पिताजी दहेज कौन देगा ऐसे विवाह में जिसमें लड़की स्वयम् मेरे समकक्ष है ? ”

“ उसके पिता देना चाहते हैं । ”

“ आपको कैसे पता ? ”

“ मैं कोई जादूगर तो हूँ नहीं , उन्होंने ही बताया । ”

“ क्या बताया ? ”

“ प्रतीक्षा के पिता और देवानंद मेरे ऑफिस आये थे और मुझे एलचिको होटल ले गये । देवानंद के पास पैसा है वह देना चाहते हैं । ”

“ कितना देना चाहते हैं ? ”

“ पचीस लाख ।”

मेरे हाथ से तोते उड़ गये । मैंने कहा , “ पर वह तो ज़मीन में हिस्से की बात कर रहे थे । ”

“ पिताजी ज़मीन का हिस्सा एक अलग मुद्दा है । ”

“ और क्या कहा ? ”

“ देवानंद ने कहा कि उनकी बहन ने उनको पत्र लिखा था और कहा था किसी भी तरह मेरा विवाह अनुराग से कराइये , मुझे अनुराग से बेझिंतिहा प्रेम हो चुका है । देवानंद ने कहा कि मेरी एक ही बहन है , वह बहुत बचपन में अपनी माँ खो चुकी है । उसने बहुत दुख देखे हैं । अनुराग के साथ उसका जीवन बहुत सुखद होगा , अनुराग भी विवाह करना चाहते हैं । मैं नहीं चाहता कोई भी बाधा बीच में आये । मैं समझ सकता हूँ आपकी दुविधा इस विवाह - बाज़ार में । आप शीघ्र फ़ैसला कर दें । ”

मैं चुप था । पिताजी ने कहा , “ तुम एक फ़ैसला कर दो मैं पैसा लूँ या न लूँ , जहाँ तक विवाह का मुद्दा है वह फ़ैसला आप लोगों ने कर लिया है और यह एक अच्छा फ़ैसला है । प्रतीक्षा ऐसी लड़की जिस भी घर में जायेगी वह घर सौभाग्यशाली होगा । तुम आजकल में फ़ैसला कर लेना । अभी किसी से ज़िक्र मत करना । इतना बड़ा पैसा हमारे सबके ख़बाब से भी बाहर है । यह सबकी इच्छायें बढ़ा देगा और फिर पैसा न लेने पर एक अलग क्रिस्म की समस्याएँ आरंभ हो जायेंगीं । अब कितना दिन रह ही गया तुम्हारे जाने में । विवाह हम जाड़े में कर देंगे । ”

पिताजी चले गये । उनके जाने के बाद एक अन्तर्दृष्टि मेरे अंदर चलने लगा । प्रतीक्षा का मुझसे लगाव तो है पर इतना लगाव है यह नहीं पता था । मैंने प्रतीक्षा को एक ख़त लिखा ...

“ प्रतीक्षा .. मिथक कथाओं ऐसी सुंदरी एक सामान्य व्यक्ति से इस तरह मुहब्बत करें यह कपोल कल्पनाओं में ही संभव लगता था , पर आपके भैया ने मेरे पिताजी से जो कहा वह सुनकर मुझे विश्वास नहीं हुआ । अगर ज़ज्बात को जीवन से निकाल दिया जाये तो जीवन शून्यता को प्राप्त होने लगता है , पर ज़ज्बात की जीवन में अतिरेकता हो जाये तो व्यक्ति का विवेक प्रभावित होने लगता है । मेरे जीवन में ज़ज्बातों का तूफ़ान उमड़ चुका है जबसे मैंने यह सुना कि तुमने अपने भाई से ही कहा , मुझे अनुराग का साथ जीवन में किसी भी क्रीमत पर चाहिये । प्रतीक्षा , मुझे लगता है तुमको मुझ पर भरोसा कम है । अगर मुझ पर एक अटूट भरोसा होता तब तुम मुझे पाने के लिये किसी सहारे की तलाश न करती । मैं तुम्हारे ज़ज्बातों की बहुत कदर करता हूँ । तुम वह पहली लड़की हो , जिसने अपनी धड़कनों से कहा देख वह

धड़कन जिसके साथ तुझे जुगलबंदी कहनी है । एक पलों का पुल बनाया था हमने, उस पलों के पुल पर हमने खामोशी से खामोशी को सुना था, हमने तल्खिये में तल्खिये से बातें की थी, हम दो अजनबी थे उस वक्त लफ़्ज़ कम हुआ करते थे पास हमारे पर बंद हैं अजनबियों के पैगाम आने वाले वक्त के लिये । यह पैगाम जो खामोशी के हैं वह महफूज़ रहे पर कई बार

उर लगता है याददाश्त के चले जाने से

बहुत कुछ याद करने को है

पिरो कर रखा है तुझको अपनी यादों में

कुछ हँकीँकत कुछ बनायी हुई यादें तेरी

उर लगता है उनको खोने का ।

प्रतीक्षा कभी - कभी सुबह मैं यमुना के किनारे के मिट्टों पार्क पर शबनम के तङ्गातुर के साथ तुम्हारे कदमों की आवाज़ महसूस करता हूँ और हर ओस में उतरी रौशनाई में तुम्हारे चेहरे की तलाश करता हूँ । ओस में उतरा चाँद और उसमें तुम्हारा चेहरा मैं हर शबनम के तङ्गातुर के साथ महसूस करता हूँ । मैं बहुत भाग्यशाली हूँ तुम मुझे जीवन में प्राप्त हुई । जल्द ही दिल्ली आऊगा । ऋषभ दिल्ली आ गये हैं । आप उनसे ज़रूर मिलना, हालाँकि वह स्वयम् तुमसे मिलने जायेगा । आंटी का हाल - खबर लेते रहना ।

अनुराग । “

घर में पिताजी ने देवानंद की बात सबको बता दी । इतना बड़ा रूपया लोगों की कल्पनाओं से बाहर था । माँ इस बात में ही परेशान थी कि इतना बड़ा पैसा कैसे सँभलेगा । दहेज लेने के मुद्दे पर सब एक थे । कोई पैसा नहीं छोड़ना चाहता था । मेरी रिश्तेदारियों में यह बात फैलने लगी कि मुन्ना का विवाह आईएएस लड़की से हो रहा । कमिश्नर का पद और देवानंद के आईआरएस होने से बड़ी चर्चा यह थी कि करछना तहसील में एक आईएएस लड़की बहु बनकर आ रही । प्रतीक्षा के बारे में रुचियाँ सबकी बढ़ती जा रही थी । प्रतीक्षा ने अपने सामर्थ्य से अपने घर के परिवेश की महत्ता को न्यून कर दिया था । प्रतीक्षा मेरे परिवेश - परिवार की कन्याओं की नायिका बन चुकी थी । सब यही कह रहे थे कि विवाह के बाज़ार में चल रहे दहेज को उसने तोड़ दिया । पर एक वर्ग ऐसा भी था जो कह रहा था यह प्रेम विवाह है और इसमें शर्मा जी और उर्मिला की बिल्कुल नहीं चल रही । मुन्ना प्रेम विवाह कर रहा है । इन लोगों का संबंध बहुत पहले का था और अब मजबूरी है उर्मिला की यह विवाह करना, लड़का मान ही नहीं रहा है । अगर उर्मिला नहीं मानेगी तब वह कोर्ट मैरिज कर लेगा । कोर्ट मैरेज तो करछना के

बराह्मणों के लिये गंधर्व विवाह है । यह भी लोग कहते थे यह गंधर्व विवाह हो रहा है । कोई कहता था लड़की ने लड़के को पहले ही फँसा लिया था । मेरा कमिशनर को विमोचन समारोह में शिरकत करना एक तथ्य एवम् प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा था ।

दादू दिन प्रतिदिन निराश हो रहा था । मामी की चाल में वह पूरी तरह आ चुका था । वह चाह रहा था कि कमिशनर साहब गाँव आयें और बाबू से मिले । इससे गाँव में परिवार की प्रतिष्ठा की अभिवृद्धि होगी । वह लोगों से कह चुका था कि मुन्ना का विवाह बाबू तय

करेंगे और कमिशनर साहब आने वाले हैं बातचीत को अंतिम अंजाम देने के लिये । उसने माँ से कई बार कहा कमिशनर साहब को गाँव भेजने के लिये पर माँ ने उसकी बात को कोई ख़ास तरजीह न दी । अंत में दादू ने निराशा में एक अलग तेवर अखिलयार कर लिया और यह कहने लगा कि मुन्ना का विवाह प्रेम विवाह है । एक दिन वह मामा के यहाँ गया और मामी सो बोला

....

“ चाची , एक पक्की सूचना देई अगर तू केहू से न कहअ तब । ”

“ का बा सूचना ?”

“ पहिले वादा करअ केहू से न कहबू । ”

“ का हलफ़ उठाई लेई ?”

“ अरे नाहीं चाची तोहार ज़बान हलफ़ से बड़ी बा । ”

“ तब बतावअ । ”

“ ई जौन मुन्ना के बियाह बा नअ । ”

“ हाँ । ”

“ ई पक्का प्रेम बियाह बा । फूफा के मन तनिकौ बा नाहीं बियाहे में पर मुन्नवा धन्ने पड़ा बा । ”

“ तोहका कैसे पता चला ई प्रेम बियाह बा ?”

“ प्रतीक्षा के चिट्ठी आवत हअ । ”

“ तोहका कैसे पता ?”

“ हम खुदै देखा । ”

“ कब देखअ ?”

“ चाची ”

“ अरे आगे बोलअ नअ ”

“ का बताई इ..... ”

“ बतावअ नअ बस ऐसन पहेली बुझावअ ”

“ चाची कहबू तअ न केहू से ... अगर पता चला गवा तब बुआ जिंदा गाड़ि देअ । ”

“ उमिला न होई गैअ ऊ बिगवा होई गै बा । ऐतना डेरात हअ तअ न बतावअ । ”

दाढ़ु चुप हो गया , फिर बोला ...

“ चाची रहई दअ , काहे केहू के बहिन - बिटिया के बारे में कुछ कही , सबके घरे में बहिन - बिटिया हई । ”

“ अरे कौन बाज़ारे में क़हत हअ , अपने घरेन में क़हत हअ । अगर कुछ आगा - पीछा होये तब हम पचे के ओका सुधारै चाही । ”

“ चाची , हम खुदै पढ़ा प्रतीक्षा के परेम पतर । ”

“ का रहा ओहमे ? ”

“ अरे , चाची बड़ी शेरो - शायरी रहत हअ ओहमें । ”

“ सब बेराह होई चला हयेन । ”

“ चाची , एक बात और बताई ? ”

“ तू सब संगेन बताई दअ एक बार में , हमसे बर्दाश्त नाहीं होत ई कटबैठी - पहेली । ”

“ शांति बुआ मंथरा हई कुल खेल में । ”

“ कैसे ? ”

“ कुल गोटी ओई बैठाइन । ओनहीं के इहाँ ई परेम कहानी रची गई । ”

“ तबै ऊ मलकिन बनी बा । अरधेलन के बिटिया हई ऊ , बेटवा के बियाह पाकिस्तान में केहेस ... ”

“ चाची पाकिस्तान कैसे ... ”

“ अरे अहूजवा पाकिस्तानिन बा नअ । अब जे पाकिस्तान से भागि के आये ऊ का होये । आज चार पैसा कमाई लेहे बा तअ का कुल पापि कटि गवा । ”

“ चाची केहू से कहू नअ । एह समय बुआ के बाज़ार बँधी बा , देव- किन्नर सब पे ऊ भारी बा । हम तोहार गरीब सिपाही हई , हमार राई - रक्षा होब ज़रूरी बा । ”

“ हमसे का मतलब , हम काहे केहू से कहइ जाब । रामदीन अरधेलवा के बहिन कुल घर डुबोई देहेस । ”

शाम को मामा आये । मामी ने आते ही कहा ..

“ सुनअ कुछ ? ”

“ का ? ”

“ मुन्नवा गंधर्व बियाह करत बा । अगर उर्मिला न मनिहिं तब ऊ मेहरास्त भगाई के लै आये । अब आपन इज्जत बचावै बरे उर्मिला बियाह ओकरे कहे से करत हइ । ”

“ तुम बड़ी बेवकूफ हो मोहिता की अम्मा । साहेब के काने ई बात चली गई तअ हम जेल पहुँच जाब । ”

“ हम तोहसे कहत हइ , चलअ अब न कहब केहू से । ”

किसी से न कहना तब बताई , यह वाक्य इलाहाबाद के हर गली - मुहल्ले - गाँव- देहात में अफ़वाह फैलाने वाला शब्दबेधी शर है । यही बाण चला- चला कर लोगों ने रिश्तेदारी में बात फैला दी । अब इलाहाबाद में कुछ कहाँ छिप सकता है । मौसी ने यह बात मेरी माँ से बतायी । मौसी मेरी बेवकूफ शिरोमणि थी । ईश्वर ने दो - तीन सौ बेवकूफ जिस दिन मरे थे उस दिन उन सबकी बेवकूफ़ी को चाक पर चलाकर मेरी मौसी को बनाकर मेरी नानी के गर्भ में स्थापित कर दिया । बाद में ईश्वर को अपने एक परिवार के प्रति अन्याय का भान हुआ तब मौसी के बाद के संतानों में जहीनियत तो डाला ही काइयाँपन भी डाल दिया , सब एक से बढ़कर एक काइयाँ । मेरी माँ तक आते- आते काइयाँपन का कोटा ख़त्म हो गया था इसलिये वह सहज ज़हीन बनी ।

मौसी ने सहज भाव से पूछ लिया ,

“ उर्मिला सुना हअ ई मुन्ना के बियाह में दहेज न मिले । मुन्ना परेम बियाह करत हयेन । ”

“ दीदी अब आईएस लड़की बा , काबिल बा । ओकरे बियाहे में दहेज काहे ? ऊ कौन माने में मुन्ना से कम बा ? ओकर बाप काहे दहेज देझहिं पर जौन - कुछ रिवाज - संस्कार होत हअ सब करिहिं । पर ई परेम बियाह के बात के कहेस तोहसे ? ”

“ जाई दअ उर्मिला जौन सुना तौन कहा । ”

मौसी ने बहुत कोशिश की बात छिपाने की पर उसकी हैसियत न थी माँ के जिरह - बहस को झेलने की । माँ ने उसके हलक में उँगली डालकर उसने

पूरी बात उगलवा ली । माँ ने पाँच रुपया का रिक्षा पकड़ा और एक हंगामा कर दिया मामा के घर में ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 361

शेर शिकार करता है सीधा गर्दन पकड़कर । वह शिकार को भागने का अवसर नहीं देता , बस वह उसके जबड़े में ठीक से आ जाये । वह तड़पने का अवसर देता है पर भागने का नहीं । मामी माँ के जबड़े में पूरी तरह आ गयीं । माँ रिक्षा से उतरते ही एक तूफान की तरह घर में दाखिल हुई । वह मामी को सामने ही पा गयी और उसने न आव देखा न ताव सीधा ही हमला बोल दिया ।

“ भौजी ई हम का सुनत हई कि तू सबसे कहत हऊ कि मुन्ना प्रेम बियाह करत बा । ओकर साहेब के इहाँ रिश्ता के बात एक साल से चलति बा । साहेब के कुल परिवार केतनी बार दुआर घिसि मारेस । ई बियाह भैयई लै के आई रहेन । हम का जानी एतने बड़े मनई के । भैया इहाँ तक कहि देहेन कि अगर ई बियाह न करबअ तअ हम तोहार घरि छोड़ि देब और अब कहत हऊ कि मुन्ना प्रेम बियाह करत बा । अगर मुन्ना प्रेम बियाह करे तअ हम छाती ठोंक के कहब कि ऊ प्रेम बियाह करत बा । ओहमें ख़राबी का बा । प्रेम करे के बरे जिगरा चाही , क़ाबिलियत चाही , हर ऐरा - गैरा - नत्थूखैरा नाहीं प्रेम के लेत हअ । हमअ एतराज एसे नाहीं बा कि प्रेम बियाह बा या नाहीं बा । हमअ एतराज बा झूठ - फ़रेब - अफ़वाह से । हम सब बर्दाश्त कै लेब पर ई झूठ फ़रेब बर्दाश्त न होये । हम कौन कुजात में बियाह करत हई । अगर कुजातौ बा तअ ओहमें कौन ख़राबी बा , नवा ज़माना - नयी सोच के लड़िका हअ मुन्ना कब तक उहै पुरान मान्यता में जीयत रझिं । हमार घर जेका छोड़े के होई छोड़ि दई , हमका कौनौ फ़र्क नहीं पड़ई जात बा , पर ई अफ़वाह न फैलावत जा तू पचे । अब मुन्ना के बियाह तअ होये ऐसन लड़की से । अब कौनौं धूँधट - पर्दा वाली लड़की तअ प्रतीक्षा बा नाहीं । ओहू के प्रशासन चलाये पड़े । मुन्ना से पढ़े बरे ऊ दिल्ली से इलाहाबाद आई रही , मुन्ना के इंटरव्यू के दिना ऊ आई रही , ओहमें कौन ख़राबी बा बतावअ हमका । मुन्ना के ऊ चिटठी लिखत हअ , और पूछअ का जाना चाहत हऊ हम सब बताइत हअ । अब सब केज मिलि के जौन मन आवत बा तौन अफ़वाह आवई तौन फैलावत जात हअ । ऊ घरे के बहु होई जात बा और तू पचे चला हअ बदनामी करई । अब काल कमिश्नर साहेब सुनहिं कि तू सब ई फैलावत हअ तब का सोचिहिं ओ । हद होई गई बा । ”

मामी का खून सूख गया , उनके होंठ पूरे शुष्क हो गये । माँ की आँखें बड़ी थीं । करोध में उसके नथुने फूल जीते थे और आँख की मछलियाँ वलयाकार हो

जाती थीं । मामी ने बड़ीं हिम्मत करके कहा ,
“ऐतना न नाराज़ हअ उर्मिला । के कहेस ? ”

“ तोहअ भौजी सब पता बा । आज बहिन आई रहिन ओ सब बताइन और कहिन फुरा जमोगी होये तब हम सच कहब । ”

मामी समझ गयी कि बेवकूफ ने अपना खेल कर दिया और वह फुरा जमोगी पर सब कह भी देगी । वह न भी कहना चाहे उर्मिला डराकर सब सच उगलवा देगी । मामी समझ गयी कि अब दाढ़ की बलि दिये बगैर काम नहीं बनेगा , उन्होंने अपनी गोटी चल दी , “उर्मिला तू जनतई हज हम तअ कौनौं बात एहर के ओहर करित नाहीं । तोहरे पचन के खेत - बारी के झगड़ा- पंचायत में हम आज तक कुछ बोला नाहीं । कुल बात एहर के ओहर जे करत हअ ओका तू जनतै हज । ”

माँ का गुस्सा बढ़ता जा रहा था , वह बोली , “आवै दअ हर रात चिराग बुझतै खेमा बदलै वाले सिपाही के । हम ओकर कुल मस्ती निकारि देब । ओका एह लायक़ न छोड़ब कि अब केहू से कहि सके कि हम तोहार सिपाही हई । ”

माँ हल्ला - हंगामा करके वापस घर आ गयी । शाम को पिताजी आये । वह माँ के व्यवहार से संतुष्ट न थे , पर माँ को कहाँ कोई संतुष्टि का चरित्र प्रमाण पत्र चाहिये । पिताजी ने नाराज़गी खुले रूप से ज़ाहिर कर दी और यह हिदायत दी कि अब इस मुद्दे को आगे न बढ़ाया जाये ।

उधर मामा ने शाम को जब यह समाचार ऑफिस से आकर सुना कब उनके हाथ से तोते उड़ गये । वह अपनी इन्वायरी बंद कराने के फ़िराक़ में थे और इसके लिये वह माँ का इस्तेमाल करना चाहते थे । मेरा विवाह प्रतीक्षा से तक़रीबन तय हो ही चुका था और उनको लग रहा था अब माँ के एक बार कहने पर उनकी जाँच भी बंद हो जायेगी और क्रायदे की पोस्टिंग भी प्राप्त हो जायेगी । पर यह नया बखेड़ा खड़ा हो गया । इस मुद्दे को कैसे सुलझाया जाये यह समस्या सबके सामने थी । मामा ने मामी को बहुत डाँटा , मामी भी बहुत डर गयी थी । साक्षात् काल से बैर हो चुका था । अंत में मोहिता दीदी ने सुझाव दिया कि दाढ़ के सिर पर सारा दोष मढ़ दिया जाये । मामा ने कहा , उर्मिला बड़े - बड़े को बेच खाये , वह इतनी आसानी से जो कहानी बनाओ मान जायेगी । देख नहीं रहे हो बगैर किसी बल के वह इतने सालों से पूरे घर को नचाये हैं । अब बेटा - बहू आईएएस , समधियाना आईएएस और ऊपर से उसका तेवर अब यह किसी के बस का नहीं है । मामी ने कहा , “बाबू से कहअ बात सँभालै । ”

मामा -“ तू पचे सब गोंड दअ और बाबू चलि के लीपै । ओ काहे एहमें पड़िहिं । ”

बाबा भैया - “ जब ददुआ फँसे और बलभर लतियाव जाये तब ओनके पास रास्ता का बा । ददुआ के लतियावा जाब ज़रूरी बा । जबसे खेत जोते बा तबसे हमार दिमाग़ ख़राब बा , न केउ लतियाये तब बुआ के तरफ़ से हम लतियाउब । ई परेम बियाह के बात तअ ऊ कहने रहा , हम गवाही देब एह बात पर ।”

मामा - “ और जौन तोहार बेवकूफ़ महतारी सबसे कहेस ओकर का करबअ ? बहिन से तअ ददुआ कहेस नाहीं । ऊ तअ कहेस तोहरे महतारी से । ददुआ कहि दे हमार अपराध एतनै बा कि हम चाची से चर्चा करे रहे बाक़ी तअ चाची फैलाइन । ददुआ के तू जनतअ नाहीं का , ओकरे पास कौनौं रीढ़ तअ बा नाहीं । ऊ कहि दे मारा हमअ जूतै- जूता बस हमार अपराध इहै बा बाक़ि कुछ नाहीं बा । ऊ खुदै जूता उठाई के अपने के मारै लागे । ओकरे पास माया के भरमारि बा । अरे शांत रहत जातअ , ददुआ खुदै फँसि जात पर तोहरे महतारी के बुद्धि में तअ गोबर भरा बा ।”

मामी - “ हमार जान छोड़ावअ एहमें से । ”

मोहिता दीदी - “ हम मुन्ना से बात करब ।”

मामा - “ कुल तअ आरोप मुन्नै पर लगाई देहे हअ , अब ओसे का कहबअ । अरे अगर चिट्ठी- पत्ती आवत बा , मन मिलत बा एक- दूसरे से तअ तोहसे का मतलब बा । जहाँ काम निकालै चाही उहाँ रार बढ़ावत हअ । कमिश्नर के बहिन- बिटिया घरे आवति बा । काल उहौ आगे जाए , ओकरे सहारे चार काम होत । कमिश्नर साहेब के बारे में हल्ला बा कि ओ मुख्यमन्त्री के प्रमुख सचिव होई जात हयेन और तू पाँच पंचौरा से फुरसत नाहीं पावत हअ । अरे कौनौं बेहतर विभाग मिलि जात चार पैसा घरे आवत पर सबके आग अँधियार बा ।”

“चार पैसा घरे आवत” , सुनकर मामी का दिमाग़ तेज काम करने लगा और उनको लगा कि अब फिर समय आ सकता है शाम को रूपया गिनकर सुतली में बाँधने का । उनका दिमाग़ गाँधी छपी नोट की परिकल्पना पर चेतक की तरह कुलाँचे मारने लगता था । वह बोली , ”हम बाबू के पास जाब और ओनसे सब सही- सही बताई देब । दादू जौन कहने उहै हम बहिन से कहा और केहू से तअ कहा नाहीं । अब एहि अपराध के जौन सज़ा होई दै दअ । हम सब ईमानदारी से बताई देब । दादू आपन मुद्दा साफ़ करैं । दादू काहे प्रतीक्षा के चिट्ठी पढ़ने पहिले ई बतावै । केउ बेटवा - पतोहू के चिट्ठी पढ़त हअ का ।”

बाबा भैया- “ दादू तअ बलभर पझहिं अब । ”

मामा को युक्ति ठीक लगी और फ़ैसला हो गया कि बाबू के पास सारा मामला रख देंगे और बाबू की बात उमिला मान जायेगी ।

इन सारी वार्तालापों और आश्वासनों के बाद भी मामी माँ के चौतरफा हमले से अभी तक दहली हुई थीं और वह अपने होश में पूरी तरह वापस नहीं आ पायी थीं । मामा समझ गये कि शिकार ने हिरन पर बहुत झारपेटा मारा है और शिकार सदसे में है । उन्होंने बाद बदलते हुये कहा , “ अब शांत रहो किसी से और कुछ मत कहना , कल बाबू के पास चलेंगे । ”

मैं इन सब बातों से बेख़बर एक अलग जुनून के वशीभूत था । मेरे ऊपर ऊपर एक जुनून सवार था , कैसे इस बार ज्यादा से ज्यादा लोग परीक्षा में सफल हों । प्रारम्भिक परीक्षा पास होने से ही क्या होगा , अंतिम परिणाम तो मुख्य परीक्षा के परदर्शन से आयेगा । मैं एक अलग परिणाम चाह रहा था और उसके लिये आवश्यक था समय का सही सदृप्योग । अगर मेरे छात्र बारह - तेरह घंटे वही पढ़ें जिसकी परीक्षा में आने की संभावना अधिक है तब सफलता की संभावना निश्चित रूप से बढ़ जायेगी । मैं अगर सारी महत्वपूर्ण किताबों - मैगज़ीन का सार एक जगह एकत्र करके मात्र वही उनको पढ़ने को कहूँ तब तो संभावना बढ़ ही जायेगी । मैंने सारी पुस्तकों को एक बार फिर से पढ़ने का फ़ैसला किया और सारे सफल अभ्यार्थियों को सहयोग करने को कहा , वह सब सहर्ष तैयार हो गये । मैंने एक नायाब नोट्स बनाने का फ़ैसला किया । मैंने सारे चयनित लोगों से कहा आप लोग जाने के पहले नोट्स बनाओ । हम लोग पूरे तामझाम से एक बेहतर नोट्स को बाज़ार में उतारेंगे और लोग अपने फ़ोटोकॉपी का मूल्य अदा करके नोट्स प्राप्त कर सकते हैं । हिंदी माध्यम में एक ऐसा बेहतरीन नोट्स बनाते हैं जो एक प्रतिमान की स्थापना करेगा । लोगों का उत्साह एक अलग शिखर पर था । हम लोगों ने देश - दुनिया से नाता तोड़ लिया और प्रतिदिन बारह घंटे नोट्स बनाने लगे । क्ररीब दो महीने की मेहनत के बाद सारगर्भित नोट्स बन गये । उसी समय प्रारम्भिक परीक्षा का परिणाम आ गया और एक बड़ी संख्या में लोग प्रारम्भिक परीक्षा पास कर गये । यह शायद इस शहर के पिछले कुछ सालों का सर्वश्रेष्ठ परिणाम था । हमने मेंस का काफ़ी नोट्स बना लिया था । सामान्य अध्ययन, हिंदी साहित्य , इतिहास , दर्शन शास्त्र के नोट्स पूरी तरह बन गये थे और कुछ विषय के कुछ भाग के बने थे । हमने नोट्स को पूरे ताम -झाम से एक छोटी सी पत्रकार वार्ता करके लाँच कर दिया । पर पत्रकार वार्ता में एक सवाल खड़ा हो गया जिसका जवाब मेरे पास न था अगर मैं मसूरी चला जाता हूँ तब इस रचनात्मक करान्ति का क्या होगा ?

पत्रकार वार्ता में एक पत्रकार द्वारा उठाया सवाल उचित था । एक बड़ा प्रश्न खड़ा किया था उसने -

“ अगर अनुराग जी आप सितंबर में मसूरी चले गये तब नवंबर में होने वाले सिविल सेवा परीक्षा क्या होगा और इस साल के छात्रसंघ चुनाव का क्या होगा ? क्या यह सारी क्रान्ति मात्र एक वर्ष की ही थी ? क्या इस एक वर्ष में वह सब बदलाव आ गये जिसकी परिकल्पना आपने की थी ? यह नोट्स क्या कोई ऐसी औषधि हैं जो अंतिम रूप से उस रोग का निदान कर देंगे जो शहर में व्याप्त है और जिसका आप सम्पूर्ण निदान चाह रहे ? आप या तो स्वयम् किसी भुलावे में हैं या लोगों को भुलावे में रखना चाह रहे ? आपकी व्यक्तिगत उपलब्धि एक अलग वस्तु है और समाज के लिये कुछ करना अलग ।”

उसकी एक-एक बात तीर की तरह मुझे बेध गयी । उसने सारी बातें सही कही थीं । मेरे पास उसके सवालों का कोई जवाब न था । मैं घर वापस आया । मुझे लगने लगा कि यह सब कुछ जो मैं कर रहा वह किसी बड़े परिणाम को प्राप्त नहीं कर सकता । प्रतीक्षा का पत्र आया था । वह सितंबर के प्रथम सप्ताह का इंतज़ार कर रही थी । उसके भैया के परिचित विद्या शंकर डीओपीटी में संयुक्त सचिव थे । उनके माध्यम से उसने मसूरी की ट्रेनिंग का सारा कार्यक्रम पता कर लिया था । उसे सब पता चल गया था कहाँ तक कौन सी सर्विस जा रही और ट्रेनिंग कब से आरंभ हो रही । उसने लिखा था कि पाँच सितंबर को मसूरी में रिपोर्टिंग है और अगस्त के मध्य तक पत्र एकेडमी से आ जायेगा । मेरे घर में भी यह बातें आरंभ हो चुकी थीं कि मुन्ना अब मेहमान हो चुका है । बस कुछ ही दिन में चला जायेगा । मेरी माँ बहुत ही भावुक हो जाती थी जब भी कहती थी अब मुन्ना चला जायेगा । पिछले 23 सालों से जिस बच्चे को उसने आँखों की पलकों के मध्य रखा हो वह एकाएक चला जायेगा तब क्या होगा ? कमिश्नर साहब भी अक्सर आते थे । अब संबंध एक रिश्तेदारी का शक्ल ले रहे थे । उनकी पत्नी भी यदा - कदा आती रहती थीं । उनके घर से फल - मिठाई आना तो एक नियमित कार्य था । कमिश्नर साहब ने यह भी बता दिया था कि एकेडमी से अवकाश कम मिलता है, पर मेरे जानने वाले वहाँ पर निदेशक हैं जो यू पी कैडर के ही है इसलिये समस्या नहीं होगी । माँ यही कहती थी कि बीच- बीच में मुन्ना को छुट्टी दिला देना, मेरा उसके बगौर मन नहीं लगता । कमिश्नर साहब ने हँसते हुये यह भी कहा था, आपके बेटे - बहू दोनों को छुट्टी दिला दूँगा, बेटी का मायका और ससुराल एक ही शहर में होने का फ़ायदा होगा कि वह मायके - ससुराल दोनों में वक्त गुज़ार लेगी । मेरी माँ कमिश्नर साहब से बोली, बहू दिन में चाहे जहाँ जाये रात उसको ससुराल में ही रहना होगा । कमिश्नर

साहब ने कहा , माता जी आपकी बेटी है अब वह हमारे लिये तो परायी हो गयी , जैसा आप चाहो रखो पर बेटी का मायका तो मायका ही होता है । वह वहाँ रहना ही चाहेगी , कुछ वक्त उसे हमारे लिये भी निकालने देना ।

यह सब वार्तालाप मैंने प्रतीक्षा को लिख भी दिया था । प्रतीक्षा ने लिखा था कि मुझे तुम्हारे साथ ही रहना है । मैं तुम्हारे बगैर कहीं नहीं रहूँगी । मेरे और प्रतीक्षा के खतों की संख्या बढ़ने लगी । अब हम लोग तकरीबन रोज ही खत लिखते थे । पहले माँ मेरे खत पढ़ती थी पर अब नहीं पढ़ती । वह डाकिया के आते ही पूछती थी , हमरे बहू के खत होये । डाकिया भी कहता था , “ लै लअ आईएएस बहू के खत आई गवा मलकिन । ”

माँ खत को सँभाल कर रखती थी और जब मैं आता था तब मुझे दे देती थी और पूछती भी थी , ” क्या लिखा है ? “ उसको पता था कि प्रतीक्षा को सब पता है कि कब टरेनिंग पर जाना है और कैसे जाना है । आखिर वह घड़ी आ गयी जिसका सबको इंतजार था । डीओपीटी से सर्विस एलॉट हो गयी और लाल बहादुर शास्त्री एकेडमी ऑफ ऐडमिनिस्ट्रेशन जिसे लोग “लबासना ” कहते हैं , वहाँ से पत्र आ गया । मुझे आईएएस सर्विस के तौर एलाट हो गयी थी और पाँच सितंबर को मसूरी में रिपोर्ट करने का निर्देश पत्र में था । घर में गहमागहमी आरंभ हो गयी । इलाहाबाद में चयनित लोग आपस में संवाद करने लगे , कैसे जाना है , कब जाना है , कब पहुँचना है ? बद्री सर और चिंतन सर ने सलाह दी थी कि चार सितंबर को ही पहुँच जाना । संगम एक्सप्रेस इलाहाबाद से चलती है । वह देहरादून उतार देती है और मसूरी से बस देहरादून आती है प्रशिक्षु को ले जाने के लिये । मेरी रिश्तेदारी में बात फैलने लगी कि मैं जाने वाला हूँ , लोग मिलने आने लगे और माँ की लिस्ट तैयार हो गयी थी , कहाँ - कहाँ रिश्तेदारी - परिचितों से मसूरी जाने के पहले जाकर मिलना है ।

एक दिन देर रात बारह बजे के आसपास मैं अपने कमरे के सामने के बारजे पर खड़ा होकर दूर आसमान में चाँद को निहार रहा था कि लगा एक अकृति उभरी और वह आकृति घर में प्रवेश कर गयी । मैं आसमान की तरफ देख रहा था इसलिये मैं ठीक से न देख सका , वह कौन है । थोड़ी देर में मुझे कदमों की आवाज़ सीढ़ियों पर सुनाई दी और मैंने देखा दाढ़ मेरे सामने खड़ा था । जबसे माँ ने हंगामा किया था तब से मामा के यहाँ से आना - जाना कम हो गया था । मैंने सुना था कि नाना ने भी हस्तक्षेप करने से इंकार कर दिया था । दाढ़ आते ही रोने लगा , “ भैयऊ हम अपराधी हई , पर हमार अपराध ऐतना बड़ा नाहीं बा कि तू दास के त्याग दअ । हम इहै कहे रहे कि प्रतीक्षा जी के चिट्ठी आवत हअ , हम ई कभीं नाहीं कहा कि ई प्रेम बियाह हअ । हम का कुल डेबरा जानत बा कि एक साल से कमिशनर साहेब दुआर दाँवत हएन । ई प्रेम बियाह वाली बात चाची उड़ाइन हअ और तू तअ जनतै हअ

बाबा भैया के रबड़ बुद्धि, ओ कुल जगहा फैलाएन हअ । काल सबरे चलअ गंगा में हम गर्दने तक खड़ा होई के एक हाथें में हलफ़ और एक हाथे में गीता लै के माई क्रसम खाई के सब सचि - सचि कहि देब । हमार ई जन्म तअ नसाई गअ बा , हमार अगला जन्म नसाई जाई अगर हम झूठ बोली तब । “

मैं उसके चेहरे की तरफ़ देख रहा था जैसे मैं शून्य की तरफ़ देख रहा हूँ । मैंने कहा ,” कभी मैंने कुछ कहा क्या ? यह बात तो सच ही है कि मेरी प्रतीक्षा की मुलाकात हुई ही है । वह मुझसे इंटरव्यू के समय पढ़ने आयी थी , मैं दिल्ली गया था तब उससे मिला ही था । उसका ख़त आता है यह बात सब जानते हैं । यह बात मेरी माँ - पिताजी , प्रतीक्षा का परिवार , मेरा मुहल्ला सब जानते हैं । क्या हो गया इसमें ? “

“ भैया , बुआ बहुत नाराज़ बा । हम बाबू से कहा कि बुआ के मनावअ तब बाबू कहने कि हम न जाब उर्मिला के पास इ मामले में फुरा - जमोगी करै । हम एह मुद्दे पर कौनौं बात न करब , जौन कदरशना केहे हअ , ओकर फल तू सब भोगअ । घरे में लक्ष्मी- सरस्वती- दुर्गा के समिलित अवतार आवत बा और तू पाँच बेमतलब के पंचाइत जोते हअ । रबड़ बुद्धि बाबा भैया सबसे कहत हयेन ददुआ बल भर लतियावा जाये ।”

“ तुम आना - जाना क्यों बंद कर दिये ?”

“ भैया हम हदसियाय गअ रहे । हमका नींद नाहीं आवत हअ । हम कौनौं दिना बारी के पेड़े पे लटक के जान दै देब ।”

“ माँ से कह दो साफ़ - साफ़ । वह तुमको मानती भी है । उसका गुस्सा जितनी जल्दी आता है उतनी ही जल्दी चला भी जाता है । मैं तो अब जा रहा , अब मैं नाराज़ रहूँ या न रहूँ इससे किसी को क्या फ़र्क़ पड़ता है ।”

“ भैयऊ भगवान के नाराज़गी के बाद कौनौं भक्त कैसे ज़िंदा रहि सकत हअ ? तू आदेश दअ हम दुई हफ़ता के हत्यारा के जीवन बिताई लेब ।”

“ यह क्या होता है ?”

“ हम मोहें में करिखा पोति के दुई हफ़ता गाँव- गाँव भीख माँगि के आपन पाप के शमन करब ।”

“ ई सब डरामा कहाँ से सीखत हअ दादू ?”

“ भैया हमका उपाई बतावअ , हमका एह बवाल से बाहर निकालअ । अब हम एक नये तरह से जीवन जियब , हम ई छल- परपंच से आजिज़ आई गये । अब हम आपन जीवन अध्यात्म में लगाऊब ।”

“ रात सो जाओ , सुबह देखते हैं । शांत रहना , माँ थोड़ा हल्ला करेगी फिर मैं सँभालता हूँ उसको । वह आजकल मेरी हर बात मानती है , उसको लगता है कि मैं जाने वाला हूँ इसलिये मेरी हर बात को सिर आँखों पर रखती है । रोज़ पूछती है , क्या खाओगे , हर दिन गिनती है कि एक दिन कम हो गया है । हर बात पर कहती है , मुन्ना तोहरे बिना हम कैसे रहब । वह कहती है , क्या हम मसूरी नहीं आ सकते अगर तुम नहीं आ सकते । बहुत ही भावुक हो जाती है वह बात - बात पर । ”

यह कहते - कहते मेरी आँखों में पानी आ गया । दाढ़ू भी रोने लगा । मैंने बहुत कोशिश की , पर वह रात न रुका । वह साइकिल दूर खड़ी करके एक चोर की तरह पैदल आया था । उसने बताया कि वह बहुत देर से मंदिर के पीछे से छिप कर रोह - टोह ले रहा था कि कब मौका मिले और वह मेरे पास आये । वह उसी तरह चुपके से चला गया ।

दाढ़ू को जाने बाद मेरे अंदर वह पत्रकार फिर जग गया , उसका मेरे अंदर पूरी तरह वास हो चुका था उसने कई मौलिक प्रश्न खड़े कर दिये थे । सबसे मौलिक बात उसने यह कही थी , “यह कुछ पल का तमाशा था जो आपने खड़ा किया , प्रशस्ति प्राप्त की आकांक्षा से एक दयावान होने का नाटक किया गया और अपने जीवन की सहृलियतों में मशगूल हो गये । ”

उसने बात कुछ भी गलत न कही थी । यह सोचते - सोचते आँख लग गयी । रात का स्वप्न आ गया , एक श्वेत वेश धारियों का समूह मेरे घर के सामने खड़ा मुझे आवाज़ दे रहा । मैं बारजे पर गया , मैं नीचे उतरने लगा । वह सब कह रहे तुम साथ चलो , मैं उनके साथ चलने लगा । उसमें से एक कहा रहा , “ तुमने अच्छा निर्णय लिया । तुम एक नये रास्ते का चुनाव करो । तुम एक न खत्म होने वाला चक्रवात बना दो , कभी न खत्म होने वाला चक्रवात । यह चक्रवात कई चक्रवातों का निर्माण करेगा । तुम अपनों को पीड़ा दो , असीम पीड़ा दो । उनकी असीम पीड़ा एक बड़े बहुत बड़े चक्रवात , एक निरंतर - नित्य निर्मित चक्रवात का निर्माण करेगी । ”

मुझे लगने लगा मेरी माँ पीछे से चीख रही है है ... इसको मत ले जाओ .. वह कह रहा मत सुनो , कुछ मत सुनो .. यह सब स्वार्थ है जो कई वेषों में आता है । यह स्वार्थ मायावी होता है , बहुत मायावी । यह ईश्वर के वेष में भी आयेगा क्योंकि ईश्वर किसी को कार्य सौंपने के पहले उसकी पूरी तरह परीक्षा लेता है । ईश्वर स्वार्थ को प्रोत्साहित भी करता है , एक परीक्षा हेतु । तुम कमज़ोर मत पड़ो , यह एक कठिन घड़ी है , संयम रखो और मोहहीन रहो । यह रक्त- संबंधों के प्रति अतिशय लगाव उच्च आदर्शों की प्राप्ति में बाधक होते हैं । यह जो चीख है , जो आवाज़ उसकी आ रही जिससे तुम्हारा अतिशय लगाव है वह इस समय समाज विरोधी कृत्य कर रही है । तुम मत सुनो उसे , चीखने दो उसको ।

“ वह मेरी माँ है ।”

“ वह तुम्हारी माँ नहीं है , वह मायावी स्वार्थ है जो मानवता का विरोधी है ।”

“ मैं पहचान रहा हूँ , वह मेरी माँ है ।”

“ नहीं . वह तुम्हारी माँ नहीं उसके अंदर का स्वार्थ है जो उसको परिचालित कर रहा ।”

“ नहीं , वह मेरी जन्मदाता है , वह मेरा ईश्वर है ।”

“ तुम भ्रमित हो रहे हो । तुम्हारी परीक्षा का दौर है । तुम सीधे चलते रहो । तुम पीछे बिल्कुल मत देखो । मैंने पीछे मुड़कर देखा , माँ चीख रही थी । वह कह रही थी , इसे कहाँ ले जा रहे हो । माँ ने दौड़कर मेरी क़मीज़ पकड़ ली , “ मैं इसे नहीं जाने दूँगी ।”

श्वेत वेशधारी बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी था , उसकी आँखों में तेज था । उसने अपने केश एक हाथ से पीछे किये और आँखों से सम्मोहित करते हुये कहा , “ आगे चलो ।”

माँ की मेरी क़मीज़ पर पकड़ मज़बूत होती जा रही थी । श्वेत वेशधारी ने कहा , ” फ़ैसले की धड़ी है , धक्का दो स्वार्थ को वह ज़मीन पर होगा और तुम व्योम की तरफ़ देखकर आगे बढ़ो ।”

मैं चीख पड़ा , ” नहीं यह मेरी माँ है , मैं इसे धक्का नहीं दे सकता ।”

माँ की आवाज़ आयी ... “मुन्ना - मुन्ना का भवा ?”

सुबह के चार बज चुके थे । माँ रोज़ की तरह चाय का कप लिये खड़ी थी और मैं पसीने में तरबतर था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 363

माँ मुझे पसीने से तरबतर देखकर घबड़ा गयी । उनने कहा , “ मुन्ना का भवा ? ”

मैं कैसे बताता जो हुआ प्रातः काल के स्वप्न में । मैंने बात बदलते हुये कहा , “ मेरे सपने में भूत आते हैं । लगता है वह मेरा पीछा कर रहे और मैं भाग रहा , पर स्वप्न में भागा नहीं जाता । ”

माँ बहुत ही कुशाग्र थी । वह समझ गयी कि मैं बात बदल रहा । उसने कहा , “ मुन्ना ईश्वर तोहका तोहरे हौसियत से अधिक देहे हयेन । दुई बार परीक्षा देहअ और दुझनौ बार सफल भये । एह बार तअ जौन भअ ऊ न भूतों और न

उम्मीद बा जल्दी भविष्यतो में होये । प्रतीक्षा ऐसी संस्कारी - सुंदर लड़की बरे तोहका ओनकर कुल परिवार चिरौरी कइके माँगि कै लै गवा । ओकर बाप आपन कुल खेती - बारी तोहका दई के तैयार हयेन , भाई पचीस लाख लेहे खड़ा बा केऊ लेवार नाहीं बा । तोहका कौन चिंता सताए बा , अब का रहि गवा तोहका जिंदगी में पावै के । तोहका नाम -प्रतिष्ठा- शोहरत सब मिली । जहाँ हाथ लगावत हअ उहीं तोहका सफलता मिलत बा । अब कौन चिंता तोहका सताए बा , हमका बतावअ नअ । “

“ कुछ नहीं माँ , पता नहीं क्यों रात में भूत आते हैं सपने में और कहते हैं कि मेरे साथ चलो । ”

“ ओनकर गोड़ देखअ हअ , उल्टा होत हअ कि नाहीं । ”

“यह तो मैंने ध्यान नहीं दिया । ”

अब अझहिं तब ध्यान देहअ । अगर गोड़ उल्टा न होये तब ऊ भूत न होये । “

“हम आजै मुस्क - जाफ़रान के ताबीज़ फ़कीर से बनवाई देब । हनुमान जी के पूजा करअ , हनुमान चालिसा के पाठ करअ और हनुमान जी के फ़ोटो कमरा में लगाई लअ । तोहका कौनौ पत्थर पहिनै पड़े , हम आजै पता करित हअ । ”

मैंने बात बदलने के लिये दादू का ज़िक्र छेड़ दिया ।

“ माँ जानती हो ... ”

“ का ? ”

“ रात में दादू आया था । ”

“ ऊ दहिजरा अब का लेई आई रहा , तू हमका बोलायअ काहे नाहीं , हम ओकर हाथ- पैर तोड़ि देझत । साँप पालत रहे हम एतना दिने से । ”

“ वह कह रहा था मैंने इतना ही कहा कि प्रतीक्षा की चिट्ठी आती हैं बाक़ी बात लोग जोड़ दिये । ”

“ सबके चाल बा । सबके मन रहा कि साहेब गाँव जाई , बाबू से , भैया से सबसे मिलै जब ऊ पूर नाहीं भै तब सबकेउ के लाग कि हमार तअ कुछ इज्जतै नाहीं भई । अब हम ओनके इज्जत के ठेका लेहे हई । कौनौं काम साहेब के पास नाहीं बा , बस जाई के एनकर पचन के बेवकूफ़ी सुनै । भझया लगा हयेन कि जाँच बंद होई , कौनौं ढंग के चार्ज मिलै तब लूट- पाट चालू होई । हमका बेवकूफ़ समझे हयेन । एनके अस- अस के हम रोज़ चराझत हअ । अब आये तब बतायअ हमका , ओकर हम कुल पंचाइत निकारि देब । ढेर इगिड - तिगिड करिहिं तब बियाहे में हम बोलइबै न करब एनका । बहुत मन बढ़ि गवा बा । राकेश तअ मोहिता के बियाहे के पहिले घरे आई रहेन तब

तअ केउ कुछ नाहीं कहेस । इहाँ प्रतीक्षा आपन हाल - खबर लिखत बा तअ क़हत हयेन प्रेम बियाह होत बा । बियाह भैया लै के आएन , अपने फ्रायदा बरे कुल जतन केहेन हमसे लडाईज केहेन , अब बियाहे के मुख्तारी चली गई बा तब तकलीफ होत बा । प्रेम बियाह - प्रेम बियाह के हल्ला केहे हयेन , ई बाबा - दादू के बस के प्रेम बियाह बा ? एनसे जेकर बियाह भअ बा ओसे पूछउ का ऊ एनके संगे रहई चाहत बा । मस्ती छाई बा सबके ।”

यह कहो माँ को गंगा नहाने में देर हो रही थी नहीं तो आज वह अपने मायके को ही धो मारती । जो उसके हत्थे चढ़ न जाये । वह चली गयी । मैं अपनी शाम की क्लॉस के लिये पढ़ने लगा । मैं दिन में विश्वविद्यालय गया । विश्वविद्यालय में हर ओर मसूरी जाने की चर्चा चल रही थी । इस बार हर होस्टल उत्साहित था , लोगों को रेलवे स्टेशन छोड़ने के लिये । अशोक घूमता हुआ मिल गया और पूछा , ” सर क्या प्रोग्राम है जाने का ?”

“ एक ही दरेन है , संगम एक्सप्रेस , उसी से चलते हैं ।”

“ सर टिकट करा लिया ?”

“ अभी नहीं कराया , कल करा लूँगा ।”

“ सर क्या - क्या सामान ले चलना है ?”

“ शाम को आना बद्री सर , चिंतन सर की चिट्ठी में लिस्ट लिखी है , देख लेना ।”

“ सर ई बंगला क्या होता है , यह भी लिखा है कि लेकर आना है ।”

“ वही जो राजीव गाँधी पहनते थे बंद गले का कोट और उसी कपड़े का पैंट होता है । उसी को बंगला सूट कहते हैं । उसको पहनना होता है । पहले दिन की असेंबली में वही पहनना होगा और सारे आधिकारिक कार्यक्रम में वही पहनना होता है ।”

उसी समय अनामिका आ गयी उसने कहा हमारे में साड़ी लिखा है ।

अशोक - “आपकी सलवार कमीज से सीधे साड़ी की यात्रा हो गयी बीच में धोती का स्टेशन आया ही नहीं । आपका सारा काम जल्ला उड़ान है । ऐसा करे आप पहले निकल लो मसूरी । वहाँ पर कमरा - वमरा देख लो ठीक से । सर के आने का समाचार दे देना । बता देना इस बार गच्छा नहीं देंगे , इस बार आ रहे । एकेडमी भी इंतज़ार में होगी इलाहाबाद के जत्थे और शहर के नायक के । आप वहाँ पूरा समाचार दे देना , आप पूरी मंथरा हो । आपका समाचार बवाल काट देगा ।”

अनामिका आग- बबूला हो गयी , “मेरी धोती - साड़ी के जल्ला उड़ान के चक्कर में न पड़ो । आप अपना काम देखो । आपकी गर्दन तो है नहीं ,

बंदगला बंद कहाँ होगा ? आप ऐसा करो आप रस्सी को गले में बाँधकर टाई -बंदगला का अभ्यास करो नहीं तो पहली बार पहनोगे तब तुमको लगेगा कि गले में फाँसी का फंदा लगा हुआ है । मेरे से ज्यादा बेहतर आप हो , आप पहले जाओ । आप जितने नारद हो उतना नारद तो असली नारद भी न होगा ।”

मैंने कहा , “ तुम लोग बहुत लड़ते हो ।”

“ सर , हम तो राय दे रहे थे , पर ई तो मरकही भैंस की तरह लड़ने लगती है ।”

“ मैं भैंस हूँ ? ”

“ अरे अनामिका छोड़ो , यह खुशी का समय है । हम लोग उस इस्पाती दरवाजे को तोड़कर प्रवेश कर रहे हैं जिसमें प्रवेश करने से हमको रोकने की तमाम साज़िशें हुईं । हम सब करान्ति पुत्र- पुत्रियाँ हैं , हमने जमाने को दिखाया है कि जो कर न सके घोड़ों पर सवार वह कर डाला हमारी बैसाखियों ने । अब मसूरी में इलाहाबाद का जलवा बरकरार रहे , यह करना होगा ।”

“ सर , आप सामान्य सी भी बात बोलो तब भी खून में उबाल आ जाता है ।”

अशोक - “ तुम्हारा खून पचास - साठ डिग्री पर तो हमेशा खौलता रहता है , इसलिये सामान्य से सर के ऊँटों पर सौ की ओर चल देता है ।”

अनामिका - “ अशोक , हर बात पर इरिसबाजी करते रहते हो । कुछ पैसा हमको उधार दो , हमारे पास जाने की तैयारी का पैसा नहीं है , तनख्वाह मिलते ही दे दूँगी । ”

“ कितना ब्याज दोगी ? ”

“ मैं मूल भी वापस नहीं दूँगी ।”

“ मैं दे देता हूँ अनामिका , कितना चाहिये ? ”

“ सर , आप क्या - क्या करेंगे हमारे लिये । हम सब इस जन्म में आपका ऐहसान तो उतार नहीं सकते , फिर से जन्म लेना होगा ।”

अशोक - “ अब फिर से जन्म मत लो , बहुत हो गया । एक जन्म में ही धरा आजिज़ आ गयी है तुमसे ।”

“ पहले पैसा दो मुझको , तब बात करो ।”

“ दे दूँगा । कल दे दूँगा , कितना चाहिये ? ”

इतने में सरला जोशी आ गयी । सरला बोली , क्या हुआ सर ? यह फिर लड़ पड़े ।”

“ अरे , इनका रोज़ का काम है । यह दोनों मसूरी को गुलज़ार किये रहेंगे । ”

सरला जोशी - “ सर , इस बार तो आप लोगों को छोड़ने भारी भीड़ जायेगी । हर होस्टल में तैयारी आरंभ हो गयी है । ढोल - नगाड़े - ताशे का इंतज़ाम हो रहा । इस बार तो लोग स्टेशन ही नहीं पूरी सिविल लाइंस पाट देंगे लोग । सर , महिला छात्रावास में भी बहुत उत्साह है । सर , शहर का महानायक जा रहा , हिंदी माध्यम की गौरव गाथा का पहला जत्था जा रहा । ”

अशोक - “ सर , क़ानून - व्यवस्था का मुद्दा आ जायेगा । मैं सीओ सिविल - लाइंस की डियूटी लगा देता हूँ । एक पूरी पुलिस फ़ोर्स लग जायेगी । ”

“ तुम जानते हो सीओ सिविल लाइंस को ? ”

“ सर , वह मुझे जानता है । मेरा किसी को जानना अब महत्वपूर्ण नहीं रहा, लोग मुझे जानते हैं । अब मैं आदेश देता हूँ । सर , कैसे कमिश्नर साहब भी जायेंगे ही आपको छोड़ने । ”

“ वह क्यों जायेंगे ? ”

“ सर , बहनोई जा रहा । वह भी कोई ऐसा - कैसा बहनोई नहीं ”

“ देखो , इस बात का हल्ला आप लोग एकेडमी में मत कर देना । मैं सही समय पर बता दूँगा । पता चला आप लोग एकेडमी पहुँचते ही हल्ला काटना शुरू कर दिये । यह मेरे लिये तो कोई दिक्कत नहीं करेगा, पर प्रतीक्षा को शायद अच्छा न लगे कि कोई इस मुद्दे पर बात करे । लड़कियों के बारे में कोई बात कहना और लड़कों के बारे में कहना दो अलग - अलग बातें हैं । प्रतीक्षा कब बताना चाहती है , कैसे बताना चाहती है यह स्वतन्त्रता तो उसके पास होना चाहिये । अभी विवाह सिर्फ़ निश्चित हुआ है , कोई संस्कार तो हुये नहीं । इसलिये थोड़ा यह उचित नहीं लगता कि आप सब लोग यह बात कहो । यह प्रतीक्षा को ही बताने दो , जैसा भी वह बताना चाहती है । अशोक आप थोड़ा ज्यादा ध्यान रखना , आपसे बात कम पचती है । ”

“ सर , लोग जीन भी गये को क्या होगा ? ”

“ कुछ नहीं होगा । पर हल्ला करने से क्या मिलेगा ? अशोक , हर महिला की एक गरिमा होती है , उसका सम्मान होना चाहिये । उससे जुड़ी बातें किस तरह कहीं जाये यह भी उसकी गरिमा का एक भाग है । हमें एक गरिमामय उपस्थिति मसूरी प्रदर्शित करनी चाहिये । यह शहर की साख का सवाल है । यह संस्कारों का शहर है , हमें अपने पुरखों की बनायी प्रतिष्ठा का ख्याल रखना चाहिये । यह अलग बात है आज हम तक़रीबन ख़त्म हो चुके हैं पर कभी मसूरी में सिर्फ़ और सिर्फ़ इलाहाबाद हुआ करता था और वहाँ के माहौल

में आज भी वह सारे लम्हें जिंदा होंगे जब अंगरेजों की बनायी सेवा पर हमारे शहर का राज था ।”

अशोक चुप हो गया । मैं हिंदी विभाग जाने लगा । अशोक ने कहा कि सर शाम को आऊँगा ।

“ क्लॉस में तुम लोग ज़रूर आया करो । कभी - कभी आप लोग गोल कर देते हो ।”

“ नहीं सर , अब बिल्कुल रेगुलर रहेंगे आज से । मैडम आप भी आना । आपकी बहुत डिमांड रहती है ।”

शाम को मैं घर पहुँचा । मेरे नाना आये हुये थे । माँ - पिताजी उनसे बात कर रहे थे । नाना ने अपनी इच्छा ज़ाहिर की और कहा , “ मुन्ना , हमार दुआर तारि के तब मसूरी जायअ ।”

माँ ने बीच में ही कहा , ” बाबू , मुन्ना सबसे मिलि के जाये । बस आज कालि में आपन ख़रीददारी - दरेन टिकट व़ौरह कराई ले तब जाये रिश्तेदारी में ।”

नाना ने दादू - मामा - मामी के पंचौरे पर बहुत सधे हुये शब्दों में कहा । माँ ने भी उस मुद्दे को कुछ ख़ास न छेड़ा । वह एक अच्छे माहौल को ख़राब नहीं करना चाहती थी । मैं रात में सो गया । मेरे स्वप्न में वह श्वेत वेश धारियों का समूह पुनः आ गया । आकर्षक व्यक्ति के व्यक्तित्व वाले ऊँचे क़द , लंबे बाल , श्वेत वर्णीय , विशाल माथा , ऊर्ध्वकार लोहितलोचित चक्षु वाले श्वेत वेश धारी महात्मा ने आदेश के स्वर में कहा , ” तुमको चलना होगा ।”

“ मैं क्यों चलूँ ?”

“ तुम्हारे पास कोई चुनाव नहीं है ।”

“ क्यों ?”

“ तुमको इतने गुणों से ईश्वर ने नवाज़ा है , क्या मात्र अपने लिये ? नहीं , जितने गुणों में कई व्यक्ति बन सकते थे उसमें एक ही व्यक्ति को क्यों बनाया गया ? क्या इन दुनियावी कार्यों के लिये ?”

“ मैं नहीं जा सकता । मेरे जाने से मेरी माँ को दुःख होगा , मैं उसे दुःख नहीं दे सकता ।”

“ तू एक व्यक्ति की पीड़ा देख रहा है , तू समाज की पीड़ा देख । वह तेरी माँ जो दिख रही उसके भीतर एक पाप प्रवेश कर चुका है । स्वार्थ एक महापाप है । वह महापाप उसके भीतर वास कर चुका है । तू उसको पीड़ा दे , असीम पीड़ा दे । तू माँ को नहीं पाप को पीड़ा देगा । तुझे ईश्वर ने समाज के लिये निर्मित किया है । तुझे मेरे साथ चलना होगा ।”

मेरी बाँह पकड़ कर वह आकर्षक व्यक्ति का स्वामी चलने लगा । मुझे लगा मेरी माँ मेरे पीछे दौड़ रही है । वह चीख रही है, इसे मत ले जाओ । उसने कहा, ”तुम अंबर की तरफ देखो । एक रथ उत्तर रहा है तुम उस पर सवार हो जाओ और दिग्विजय की ओर बढ़ो ।”

मैंने पूछा, “आप कौन हैं?”

“मैं तुम्हारी आत्मा हूँ, मैं तुम्हारा ज़मीर हूँ..... मैं धर्म हूँ ।”

सुबह के चार बज गये थे । मेरी आँख खुली और देखा माँ चाय के कप के साथ कमरे में प्रवेश कर रही थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 364

माँ ने पूछा, ”आज पुनि भूत आई रहेन का ?”

मैंने उसका चेहरा देखा और झूठ बोल दिया यह सोचकर कौन जिरह - बहस करें सुबह - सुबह ।

“नहीं आज वह नहीं आये थे ।”

“चलअ ताबीज़ काम कै गए । हनुमान जी के फ़ोटो से डेरात हएन भूत । हमसे बँधवा वाले पुजारी जी पूछत रहेन कि कलेक्टर साहेब कहाँ हएन, आएन नाहीं बहुत दिना से । चला जाए आज । और मुन्ना कैसे करबअ रिश्तेदारिन में जाई वाला कार्यक्रम ?”

“माँ जाना ज़रूरी है क्या ?”

“कैसन बात करत हअ मुन्ना, जाए पड़े । सबकेऊ तोहार रस्ता देखत हएन । तोहार फूफा आई रहेन, ओ हमसे चिरारी कै के गअ हएन । सुशीला आई रही, उहो धन्ने पड़ी बा । अब और कुछ तअ बेचारे माँगत हयेन नाहीं, गाँव देश में थोड़ि के इज्ज़त - मरजाद तोहरे जाए से बनि जाए । सबके तोहरे पर हक्क बा । अब अपने अपने बाबा के इहाँ और ननिऔरे तअ जाबै करबअ, कुल रिश्तेदारी नजदीकै हईन, चक्कर लगाई लेहअ । सब केउ मोह देखत हएन तोहार । सबसे मिलि लअ, अब तअ तू इलाहाबाद से बाहर चला जाबअ । पता नाहीं कौन कैडर मिले, अगर यूपी न मिला तब तअ बहुत मुश्किल होये ।”

“यू पी मिल जायेगा ।”

“के बताएसा?”

“ प्रतीक्षा ।”

“ ओका कैसे पता चला ?”

“ कमिशनर साहब के बैचमेट विद्या शंकर डीओपीटी के संयुक्त सचिव हैं । वह ही यह काम देखते हैं । प्रतीक्षा उनके पास गयी थी । उन्होंने बताया कि इनसाइडर कोटा में दो सीट हैं । एक मुझे और एक सातवें रैंक वाले को यूपी कैडर मिलेगा ।”

“ प्रतीक्षा के का मिले ?”

“ उसको रोस्टर से मिलेगा , जहाँ तकदीर का चक्कर रुक जाये ।”

“ तब कैसे करबअ तू पचे , एक मीर घाट एक तीर घाट ।”

“ उसका बदल जायेगा । विवाह के बाद कैडर बदल जाता है । पति - पत्नी का कैडर एक हो जाता है । बहुत से लोग तो कैडर बदलवाने के लिये ही विवाह करते हैं जिसको लोग कैडर बेस्ड मैरेज , सीबीएम कहते हैं ।”

“ कैडर बदलई बरे केहू से बियाह कै लअ ?”

“ हाँ माँ , यह हर साल की कहानी है ।”

“ ई तअ बड़ी अजीब बात है मुन्ना , कुछ न देखअ बस कैडर देखअ । न कुल , न परिवार , न समाज बस लै दै के कैडर । “

“ अब क्या करोगी , जो हर साल होता है वह बता रहा । इस साल फिर होगा तुम देखना ।”

“ हमका कुल बताए मुन्ना ।”

“ ज़रूर बताऊँगा । “

“चलअ अपने प्रतीक्षा के संगे अच्छा भवा ॥ एनकर तअ बस माँगे में सिंदूरै पड़ै के रहि गवा बाकि तअ सब होइन गअ । जौन पहिली लगन होए उहीं में बियाह तोहार कै देब । तनिक एकेडमी में मर्यादा से रहत जाए तू पचे , अबअ बियाह तै भवा बा भअ नाहीं बा , संस्कार सब बाकी हयेन ।”

“ बता दो कैसे मर्यादा से रहें ।”

“ तू कुल समझत हअ हम जौन क़हत हई , हम तोहार नसि - नसि जानत हई । एक बात और बतावअ मुन्ना ?”

“ क्या ?”

“ कतौ तोहार कैडर बदल कर ओकर वाला दै देहेन तब ?”

“ ऐसा हो सकता है , पर होगा नहीं शायद ।”

“ काहे न होये ?”

“ यूपी एक बड़ा कैडर है । अक्सर बड़े कैडर में जोड़ा

एडजस्ट करते हैं, वैसे भी प्रतीक्षा के भाई बड़े जुगाड़ हैं । वह कोई न कोई जुगाड़ निकाल देंगे ।”

“ तू यूपी छोड़ि के न जाए, प्रतीक्षा के यूपी लै के आए । इहीं घरे के नजदीक रहअ, चार दुःखी- बेसहारा के मदद करअ । प्रतीक्षाऊ के समझाई देहअ कि गरीब - गुरबा के मदद बरे भगवान ई दिन देखायेन हअ, गुरुर में रहै बरे नाहीं । ”

माँ जैसे कोई डायरी लिख रही हो, वह एक - एक छोटी - छोटी बात पूछती थी । उसके जाते ही मैं प्रतीक्षा का पत्र फिर से पढ़ने लगा ..

“अनुराग , एक नज्म है तुम्हारी जो तुमने मेरे कहने पर मेरे लिये लिखी थी । मैंने कहा था मैं कैसे तुम्हारा इंतज़ार करती हूँ । तुमने कहा था, प्रतीक्षा बात तो सामान्य सी है, हर प्रेमी - प्रेमिका एक दूसरे का इंतज़ार करते हैं, पर कहने का ढंग बदल देता है प्रेम की जिजीविषा को । मैंने कहा था, अनुराग इसी को लिखो तुम मेरी तरफ से मैं देखना चाहती हूँ शब्दों की ताक़त । भावनायें मेरे अंदर उमड़ रही हैं पर मैं कह नहीं पा रही शिव्वत से । ईश्वर ने मुझे शब्दों की ताक़त नहीं दी है । अनुराग , तुमने आँख बंद की और कहने लगे एक नज्म .. मैं देख रही थी तुम्हारे चेहरे की तरफ और जब तुमने आँख खोली तब कहा था मैंने अनुराग , मैं इस नज्म की क़ीमत अदा कभी कर ना पाऊँगी । तुमने कहा था, अभी अदा कर दो । मैंने पूछा, कैसे ? तुम्हें याद होगा ही, क्या कहा था तुमने ? ज़रूर याद होगा वह पहला तुम्हारा शरारतीपन .. शाम का वक्त था, आसमान की लालिमा कम हो रही थी और तुमने कहा था जैसे यह आसमान की लालिमा कम हो रही है वैसे ही मुझे कम करने दो तुम मुझे अपने होंठों की लालिमा । मैं शर्मा गयी थी और तुमने कहा था, प्रतीक्षा मैं तो होंठों की लालिमा कम करने की इजाज़त माँग रहा पर तुम्हारे चेहरे की लालिमा बढ़ गयी । अब तो काम बढ़ा रही हो तुम, मैं कितनी लालिमा कम करूँगा । अनुराग मैंने आँख बंद की और कहा था, अनुराग

.....
तुमने कहा था ... आगे कहो ...

.. प्रतीक्षा अनुराग शर्मा लिखने के बाद अब क्या रह गया इजाज़त माँगने और इजाज़त देने को । उसी समय मनहूस मेरी सहेलियाँ गुजर रही थीं सेंट स्टीफेन्स के सामने के बेंच से और रह गयी वह खाहिश जो तुम्हारी ही नहीं मेरी भी थी ... लालिमा अपना रंग खोने को बेताब थी और मेरे होंठ इंतज़ार करते मेरे नायक के स्पर्श का .. मैंने कमरे में शीशे के सामने वह लालिमा

अपनी उँगलियों से हटायी और कल्पित किया तुम्हारे होंठों को अपनी उन उँगलियों पर । तुम्हारी नज़्म मैंने लिख ली थी और इतनी बार पढ़ी है कि वह मेरे धड़कनों में बस गयी है ।

मुंतज़िर थे तुम ?

मेरे पायलों की दूर से आती आवाज़
हवा में उड़ते मेरे पल्लू
मेरे बालों का हाँथों से क़रीने से पीछे करना
अलाव की आग में दूर तक किसी छाया को पहचानने की कोशिश

मुंतज़िर थे तुम ?

मेरे कपड़ों के मेरे पैरों में लिपटे हुये रंग को देखना
मेरे गले के लाकेट का घुमावदार होकर ठहरना
मेरी मुस्कुराहट का हँसी में बदलना
और फिर यह कहना
बस ऐसे ही खुश रहा करो तुम

मुंतज़िर थे तुम ?

मेरे सुर पकड़ने की कोशिश करके गानों को गाना
ग़ज़लों की लाइन भूलने पर तुमसे कहना , तुम्हें याद है यह
फिर उन्हीं कुछ राग को तलाशते मेरे लफ़ज़ों की तारीफ़ करना

मुंतज़िर थे तुम ?

मेरा धोती पहनना
उसमें कुछ अलग सा पल्लू बनाना
सँवरना और कहना
यह सँवरना है तो किसी जलसे के लिये
पर ह़कीकत में है यह तेरे लिये

मुंतज़िर थे तुम ?

मेरी सीरत, मेरी काया , मेरी छवि पर लिखना
सुनाना मुझको और उम्मीद करना
मैं खो जाऊँ उसी लिखावट में
गुनगुनाऊँ कुछ शब्द तेरी नज़्मों के

सच बताना मुंतज़िर थे न तुम
मेरी आहट के लिये
मेरी आवाज़ के लिये
मेरी तस्वीर के लिये
मेरे लिये

सुनो,
मैं बरसों से मुंतज़िर थी
कोई मेरे लिये मुंतज़िर हो ॥

अनुराग , यह एक नज़्म नहीं है , यह एक जीवन है मेरे लिये । तुमने कभी बताया था कि किसी शायर ने एक किसी दूसरे शायर के किसी के शेर के लिये कहा था कि यह शेर मुझे दे दो , मैं सब कुछ दे दूँगा । पर उस शायर ने वह शेर उसको न दिया । मैं अपना सब कुछ खोकर भी इस एक नज़्म को सुरक्षित रखूँगी । अनुराग , फिर लिखना ऐसी ही नज़्म मेरे लिये , सिफ़र मेरे लिये । अनुराग , तुमने बहुतों पर लिखा होगा , बहुत बार लिखा होगा । शब्द यूँ ही नहीं सँवरते उन्हें सानों पर चढ़ना होता दै । एक अप्रतिम साधना करनी होती है । पर साधना के बाद भी आशीर्वाद सबको नहीं मिलता । हे ईश्वर के मानस पुत्र , मैं बार - बार सोचती हूँ तुम्हारी माँ को बारे में , कैसे जना होगा तुमको ।

एक आबाद लम्हे में
वीरानियों में
मुकम्मल करता तू उसको
जिसने जीवन के एक -एक लम्हे को संजो कर
तुझे रौशन किया है

कई बार लगता है
वह मेरी तँकदीर की सर्जक थी
एक कहानी लिख गई मेरे लिये
एहसास तेरे होने का
किसी हद तक जाकर तुझे पाने का
हरगिज़ न था किसी के बस में
आसानी से तुझे पा जाना
पर जब खुदा ने बनाया है तुझे मेरे लिये
मेरा हक्क बनता है तेरे हर एक लम्हे पर
तड़प उठती हूँ
अपने को झकझोरती हूँ
ये मेरे अंदर कौन रहता है
जो रात के अँधेरे में भी जगता है ।

पत्र लिखना .. आज ही लिखना .. स्पीड पोस्ट करना ..

प्रतीक्षा अनुराग शर्मा ।”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 365

मैं प्रतीक्षा को खत लिखने लगा ..

“ प्रतीक्षा .. तुम्हारे नाम का अर्थ ही परेशान कर देता है “ प्रतीक्षा ” .. यह इंतज़ार नाम किसने रखा ? लगता है नामकरण करने वाले को पता था कभी कोई तेरा इतना इंतज़ार करेगा । यह एक बेचैनी तेरे इंतज़ार की . यह बेचैनी एक मेरा इज़हार ही है जिसे इकरार मिला , बादल के टुकड़ों पर शबनम की छूँदों से इन्द्र धनुष के रंगों से लिखी मैंने एक नज़्म तेरे लिये .. उसी नज़्म को फिर लिखी पर इस बार मिलाया तेरे होंठों की लालिमा और चेहरे पर रक्त के संवेग से उभरते हल्के गुलाबी रंग को इन्द्रधनुष के रंगों में , एक मुकम्मल रंग बन गया और एक मुकम्मल नज़्म भी । मुझसे माँगा इन्द्रधनुष ने वही रंग यह कहकर , मेरे फीके रंगों को भी कुछ सँवरने दो । इन्द्रधनुष को दे दिया

तेरी चूड़ियों, तेरी बिंदी और तेरे दुपट्टे का रंग .. उसी दुपट्टे का रंग जो मैं लेकर चल दिया था और तूने कहा था मैं बगैर दुपट्टे के कैसे होस्टल जाऊँगी ? पर मैंने न सुनी थी बात तेरी , देखना अगला इन्द्रधनुष अब उसके रंग फीके नहीं होंगे । मैं अक्सर कहता था , ऐ बेवकूफ लड़की और तू कहती थी जीवन के एक लंबे दौर में पहली बार किसी ने एक टॉप करने वाली लड़की को बेवकूफ कहा है । तुझे याद होगा मेरा जवाब ... मेरी खाहिशों तू समझती नहीं, तब क्या कहूँ अगर बेवकूफ न कहूँ, तू इतना सुनकर ही लाल हो गयी थी । उस दिन जब मैंने कहा था , मुझे कम करने दे अपने लबों की लालिमा , पता नहीं वह हृदय की धड़कनों का आमन्त्रण था या एक संस्कार था जो रंगों की शक्ल लेकर आया था और कह रहा कर लेना रंगों को कम , पर अरे अभी कैसे ? प्रतीक्षा , खाहिशों से जूझता ख्वाब हर वक्त देखता , घुमड़ती अजब बेचैनियाँ अंदर , बेखौफ हवायें चलकर आती तेरी ओर से उनका इंतजार मुझे रहता था तेरी खुशबूओं के लिये , तेरी खाहिश एक नज्म की , एक नज्म तेरे नाम करता हूँ..

कैसे कहूँ बात अपनी
लफ़्ज़ साथ नहीं दे रहे
खामोशी में ख़बाब खुद लफ़्ज़ बन रहे
वह ढूँढते हैं बात कहने को लब
तेरे आँखों के ख़बाब मेरे ख़बाबों से कह रहे
क्या ज़रूरत है लफ़्ज़ों की
ज़ब ख़बाब दोनों के एक ही हैं ।

प्रतीक्षा , जब तुमने कहा था , “ अनुराग मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ ” , मुझे यक़ीन नहीं आया था । तुम्हारे इज़हार पर खुशी जतायी थी मैंने मन में इकरार करके । मैं एकटक देख रहा था तुम्हारी तरफ़ कहता स्वयम् ये यह स्वप्न है या हक़ीक़त एक प्यार बगैर बांदिशों के नसीब हुआ मुझको ।

प्रतीक्षा , तू सूरज की रौशनी में पिघलती बर्फ़ है जो चिनार के पेड़ों के साये से कतरा- कतरा बह रही रुक- रुक कर , पहाड़ों से टपकती बूँद समा रही दरिया में , मैं समुन्दर की तरह मिन्नतें कर रहा ढलानों से उसको समाने दे मेरे भीतर ।

मेरे वीरान लम्हों की एक मुकम्मल ख़याल
मेरे अपने होने का कोई मतलब न था जब तक तेरे वजूद से मैं रुबरु न था

जुगनुओं की रौशनी में सूरज सा उजाला होता था
 ज्योंहि ख्याल तेरा ज़ेहन में दस्तक देता था
 तू कुछ ऐसी थी जैसे नदी बह रही पहाड़ों में ढलानों पर
 ज़ब भी चाहा तुझ पर लिखना ख्वाबों ख़्यालों में
 जैसे ठंडी धाटियों में पानी बनने को हो बेताब शफ़्राक अबर की तरह
 तुझसे न जाने कितनी नज़्में जन्मी हैं
 हर बार नज़्म खुद ही कहती थी मुझसे
 सँवारों मुझे उसके रसूख की रौशनी में
 तेरे को सोचने में ही धड़कनों में संगीत आता था
 रक्स रग में बह रहे खूनों में होने लगता था
 शाम होते ही सूरज छिपने लगता है
 चाँद फलक के दामन पर थपकी देने लगता है
 इस छिपने और थपकी देने के लम्हों के बीच
 तू फलक से उतरकर मेरे ऊह में समाने लगती है
 यह रात सबकी है नींद भी सबकी है
 ख्वाब आने को बेताब पर नींद तो आनी चाहिये
 मेरे नसीब में तेरी कहानी है
 जो मुकम्मल मेरे ख्वाबों से है
 शुक्रिया अदा करना तुम मेरी नींद का
 जिसने हमें हर रात मिलाया है ।”

मैंने पत्र लिखकर स्पीड पोस्ट करता यूनिवर्सिटी चला गया । यूनिवर्सिटी में एम ए प्रथम वर्ष का परिणाम आ गया । मेरे टॉप करने पर कोई संदेह मेरे आईएएस टॉप करने के बाद रहा नहीं । सत्य प्रकाश सर ने आईएएस के परिणाम के बाद कहा था अब इतनी भी अंधेर करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी कि आईएएस टॉपर वह भी हिंदी साहित्य से हुआ हो उसको दरकिनार करके किसी और को मठाधीश टॉप करा दें । वह जिसको टॉप कराना चाहेंगे वह भी इंकार कर देगा । मैं इंटरव्यू में सिद्धहस्त था ही । वाझवा वाले दिन सबको अभिभूत कर ही दिया था । लड़ाई दूसरे स्थान की चल रही थी , पहला स्थान तो किसी के ख्वाब में था ही नहीं । यूजीसी की परीक्षा दी थी , वह भी

मिल ही जानी चाहिये , हलाँकि मसूरी चले जाने के बाद वह प्रतीकात्मक ही है , उसका कोई काम नहीं होगा । मैं शाम को घर पहुँचा आंटी का पत्र आया था और ऋषभ कल इलाहाबाद मिलने आ रहे । अगले दिन ऋषभ आ गये । वह बड़े आदमी थे , वह होटल में ही रुकते थे । आहूजा साहब के डीलर लोग उनकी तामीरदारी में लगे थे , पर वह किसी को भाव नहीं दे रहे थे और किसी तामीरदारी के वह इच्छुक भी नहीं थे । वह घर आये और कहा रात मेरे साथ ही रुको । माँ ने खाना खाकर जाने को कहा । आंटी ने बहुत अच्छे संस्कार ऋषभ को दिये थे । माँ के एक बार ही कहने पर वह खाना खाने को तैयार हो गये , बस यही कहा , “ कल खाऊँगा । ”

माँ ने भी कहा , ठीक है कल भैया और मोहिता को भी बुला लूँगी । मैंने ऋषभ से कहा , “ चलो शिव की चाट खाकर आते हैं । ”

मैं और ऋषभ शिव तिनकुनिया चौराहे शिव की चाट की दुकान पर चले गये । शिव के यहाँ बहुत भीड़ होती थी । उसने मुझको देखते ही सलाम किया और अपने छोटे भाई से कहा , ” मुन्ना भैया को पहले पानी के बताशे खिलाओ , मैं साहब के लिये बढ़िया चाट बनाता हूँ । ”

चाट खाते - खाते ऋषभ ने बताया कि वह इलाहाबाद में आंटी के लिये मकान ख़रीदना चाहता है । आंटी दिल्ली में क्या करेंगी । यहाँ उनको संगम , माघ स्नान , आराधना की सुविधा मिल जायेगी । आंटी की नौकरी 6-7 साल है पर वह सेवानिवृत्ति ले लेगी । मैंने ऋषभ से कहा , “ मुझे एक सलाह चाहिये । ”

चाट खाते - खाते ऋषभ ने पूछा , ” क्या चाहिये ? ”

“ मैं आईएएस ज्वाइन करूँ या न करूँ ? ”

ऋषभ के हाथ वहीं रुक गये जहाँ तक उसका निवाला आगे बढ़ा था । उसने मेरी तरफ देखते हुये कहा , “ Are you serious ? ”

मैंने सकारात्मक रूप से सिर हिलाया ।

“ Do you want to leave IAS ? ”

मैंने फिर सिर हिलाया ।

“ what you will do , I mean what you want to do ? ”

“ अभी कुछ ख़ास नहीं सोचा है । ”

“ फिर भी ज़िंदगी तो चलानी है । अब एक ऐसी नौकरी वह भी होम कैडर की छोड़ते तो मैंने आज तक न सुना । देवत्व का त्याग है यह , इसका कोई कारण होना चाहिये । ”

“ तुमने क्यों छोड़ी थी ? ”

“ अनुराग, मैंने आईएएस की परीक्षा देने से इंकार किया था न कि आईएएस चयनित होकर त्यागा था । दोनों में बहुत फ़र्क है ।”

“ तुम परीक्षा देते तो होते ही ।”

“ होने की प्रबल संभावना थी पर यह कोई नहीं कह सकता कि मैं देता तो हो ही जाता । प्रबल संभावना और लिस्ट में नाम आ जाने के मध्य बहुत बड़ा अंतर होता है । मेरा निर्णय आसान था, पर तुम्हारा बहुत ही कठिन । होम कैडर आईएएस छोड़कर करोगे क्या ?”

“ यार, इस नौकरी में कुछ नहीं है । यह नौकरी जो कुछ मुझको देना चाहती थी या मैं पाना चाहता था वह मिल चुका है । अब आगे एक रोबोट की तरह इशारों पर काम करना होगा ।”

“ ऐसा नहीं है, कार्य करने के बहुत अवसर हैं । तुम्हारे पास जो जिजीविषा है वह सकारात्मक कार्य करने के लिये तुमको प्रेरित भी करेगी और तुम करोगे भी ।”

“तुम्हारी राय क्या है ?”

“ किस बात पर ?”

“ मेरा नौकरी करने या न करने पर ।”

“ क्या करोगे तुम, अगर आईएएस की सेवा न स्वीकारी तब ?”

“ यूजीसी मिल जायेगी, लेक्चररशिप कहीं न कहीं मिल ही जायेगी और पढ़ा तो रहा ही हूँ ।”

“ तुम आईएएस को त्यागकर अध्यापक बनोगे ?”

“ क्या हुआ, यह तो इस विश्वविद्यालयों की परम्परा रही है ? बहुत से लोग जो सफल हो सकते थे पर परीक्षा नहीं दी ।”

“सफल हो सकते थे और सफल होना दो भिन्न - भिन्न चीजें हैं ।”

हम लोग चाट खाकर गंगा की तरफ चल दिये । ऋषभ ने ड्राइवर से कहा तुम हनुमान मंदिर चलो हम लोग पैदल चलते हुये आते हैं । हम लोग पैदल चलते हुये हनुमान मंदिर वाले बाँध पर पहुँच गये । ऋषभ ने संगम का तरफ चलने को कहा । रात का वक्त संगम पर दो दृश्यमान नदी के साथ तीसरी अदृश्यमान समाती हुई, ऊपर चाँद धीरे - धीरे धूम रहा । मैं और ऋषभ पाँव को पानी में डालकर बैठ गये । मैं चाँद की ओर देख रहा था । ऋषभ ने पूछा, “ प्रतीक्षा याद आ रही ?”

“ कैसे पता ?”

“ अनुराग , तुमने अकेले ही प्रेम नहीं किया , कभी मैंने भी किया था । जब आईआईटी से जेएनयू तक हम लोग पैदल ज़ाया करते थे कुछ वक्त और साथ गुजर जाये पर अब ”

“ अब क्या ?”

“ अब साथ रहना मुश्किल है ।”

“ क्यों ?”

“जीवन की राहें बदल गयी हैं “

“ कैसे ?”

“ मैं भारत आना चाहता हूँ और वह ... “

“ वह नहीं आना चाहती ?”

“ यह कहना शायद पूरी तरह उचित नहीं है कि वह आना नहीं चाहती । उसकी भी मजबूरियाँ हैं , वह मेरे पूरे व्यापार का चेहरा है । उसके अपने कमिटमेंट है । वह आना चाहे मेरे साथ तब व्यापार में नुकसान है । पर मेरे लिये जीवन नफे - नुकसान को सौदा नहीं है पर उसके लिये है ।”

“क्या होगा तब ?”

“ जो मंजूरे खुदा होगा ।”

“ पर तुम्हारे लिये एक खुशखबरी है ।”

“ क्या ?”

“ माँ रिटायरमेंट के बाद इलाहाबाद ही रहेगी , उसके लिये बँगला ख़रीदने आया हूँ । पापा बड़े आदमी थे , उनको बड़ा बँगला मिला था । ईश्वर की कृपा थी वह बँगला उसे मिल गया । रिटायरमेंट के बाद दिल्ली में फ्लैट में जाना पड़ेगा । इलाहाबाद उसकी भवित - पूजा के लिये बेहतर जगह है और तुम एक और इंसेटिव हो ।”

“ माँ भी है । ”

“ हैं तो सब पर उसका मन तुममें ही लगता है । यह बताओ अनुराग कौन सी गोली तुम देते हो कि हर महिला तुम पर मोहित हो जाती है । मेरी माँ , तुम्हारी माँ , सुरुचि - प्रतीक्षा - शालिनी सबके सब तुम्हारे ही चक्कर में रहते हैं । शालिनी के द्वारा मुझे पता चलता हैं इलाहाबाद के बारे में । जब पूछो यह कहेगी कि अनुराग का पत्र आया था या आजकल में आयेगा तो पता चलेगा । कई बार कहती है अनुराग की चिट्ठी पढ़ लो सब लिखा है उसने । माँ कह रही थी कि कोई अशोक है वह कहता रहता है कि सर 333.33333 करोड़

के हळदार हैं । यह एक नयी वसीयत में सुन रहा जिसमें सारे संबंधों को दरकिनार करके हम तीन साझीदार बन गये ।”

“ संपत्ति के साझीदार तो हम नहीं बने हाँ जीवन के साझीदार बन चुके हैं । आंटी ने प्रतीक्षा के पिता - भाई से भी कहा था कि शालिनी ने अपनी संपत्ति के तीन साझीदार बनाये हैं और अनुराग की पत्नी चौथी बनेगी ।”

ऋषभ वहीं बालू पर लेट गया और बोला , “ यार , यह सब ले लो बस जीवन में चैन दे दो । यह संपत्ति बहुत परेशान करती है । पहले कमाओ फिर सँभालो । यह कमाना आसान है पर सँभालना बहुत मुश्किल है । ”

“ इसलिए तो कबीर कहते हैं, माया महाठगिनी हम जानी ।”

“ काश हर कोई कबीर होता , शालिनी में कबीर भरो । हाय पैसा - हाय पैसा / क्या करेंगे इतने पैसे का ?”

“ कितना पैसा होगा ?”

“ ऋषभ ने बालू पर लेटे - लेटे ही कहा , तुम्हारी सोच से बहुत बाहर । हम - सब मिलकर उड़ायें तब भी ख़त्म नहीं होगा .. अनुराग ..,”

“ हाँ । ”

“ कल सुबह चलेंगे बँगला देखने ।”

“ कहाँ ?”

“ दो बँगले हैं , एक यूनिवर्सिटी रोड के पास और एक सिविल लाइंस पर । इसमें से एक ख़रीद लेंगे ।”

“ कितने का है ?”

“ अरे कितने का होगा , इलाहाबाद का बँगला , दो- तीन करोड़ का होगा । बँगला बड़ा हो , लॉन हो यह ज़रूरी है । माँ को पेड़- पौधों का शौक है वह पूरा होना चाहिये और गंगा से नज़दीकी हो । ”

“ ऋषभ .. ”

“ तुमने बताया नहीं ।”

“ क्या ?”

“ मैं क्या करूँ ?”

“ अनुराग , तुमको नौकरी - वौकरी करनी है नहीं । आज छोड़ो या दो- चार साल बाद , फ़ैसला तो पता ही है ।”

“ अच्छा यह बताओ , आज छोड़ूँ या दो- चार साल बाद ?”

“ छोड़ना ही है तब क्यों दो- चार साल ख़राब करना , अभी ही छोड़ दो ।”

“ क्या करूँ , यह बताओ न अंतिम रूप से ।”

“ तुम्हारा ही एक डॉयलाग है जो मुझे शालिनी ने सुनाया है ।”

“ कौन सा ?”

“ मैं जूता - पालिश करूँगा तब भी ऐसा करूँगा कि मुगलसराय का आदमी जूता पालिश कराने मुझसे ही आयेगा ।”

“ ऋषभ तुमने आईएस क्यों नहीं दी ?”

“ यार , क्या मिलता उसमें .. 2200-4000 की स्केल में क्या होता ? मैंने पूरी दुनिया देखी , अंधाधृंध पैसा कमाया । आज मेरे नाम पर पैसा लगाने वालों की भीड़ है । नयी आर्थिक नीति मेरे लिये एक अवसर है । एफडीआई के द्वार खुल चुके हैं । बहुत से लोग मेरे पीछे खड़े हैं । मैं कुछ ऐसा करने की हालत में हूँ कि ज़माना याद रखेगा , गर आईएस बनता तो आज क्या होता ... घंटा होता .. ।”

यह कहते - कहते ऋषभ ने अपनी क़मीज़ खोल दी और सिफ़्र बनियान में आ गया ।

“ अनुराग .. “

“ इन हवाओं का कोई मोल नहीं । यह गंगा का किनारा , यह चाँद , यह लहरें और यह हवा .. ”

“ वह बताओ ?”

“ क्या ?”

“ मैं क्या करूँ ?”

“ अनुराग तुम किसी नौकरी के लिये नहीं बने हो ।”

“ तब .. ”

“ तुम करान्ति के लिये बने हो ।”

“ मैं क्या तर्क़ ?”

“ तुम जो करना चाहते हो वह मुझसे क्यों कहलाना चाहते हो । मैंने सब कह दिया ।”

यह कहते - कहते ऋषभ गंगा जल में मुँह धोने लगा ।”

“ ऋषभ ... बताओ न .. ,”

“ अनुराग , इसी गंगा तट पर भीष्म की प्रतिज्ञा थी । वह प्रतिज्ञा ही है जो हर शहर के चौराहे पर भीष्म की प्रतिमा लगाने को हर एक को प्रेरित करती है । भीष्म राजा होकर एक सामान्य मानव ही होते राज्य चाहे जितना बड़ा होता पर प्रतिज्ञा करके हरि की वंदना के पात्र बने ।”

यह कहते - कहते ऋषभ पानी के भीतर चला गया और वहीं से चिल्लाकर बोला .. क्या तुम मुझसे कहलवाना चाहते हो ? “

“ कुछ नहीं । “

ऋषभ पानी से बाहर निकला उसने अपना जूता वहीं छोड़ दिया । मैंने पूछा , ”क्यों छोड़ दिया ?”

“ किसी के काम आ जायेगा , मेरे पास कौन से जूतों की कमी है ।”

“ इतना मँहगा जूता ?”

“ पर पहनने वाले को पता नहीं चलेगा कि यह इतना मँहगा जूता है । वह तो जूता पाकर ही प्रसन्न हो जायेगा । जीवन की ज़रूरतें बहुत सामान्य होती हैं अनुराग हम बेवजह तृष्णा के वशीभूत हो जाते हैं ।”

हम लोग पैदल चलने लगे । मैंने ऋषभ को यात्रिक होटल पर छोड़ा । ऋषभ ने कहा , ” सुबह डराइवर तुम्हारे घर से तुमको ले लेगा । हम लोग चलकर बँगला फ़ाइनल कर देंगे और परसों रजिस्टरी हो जायेगी । “

मैं घर वापस आया । माँ इंतज़ार कर रही थी । मैंने उसको पूरी कहानी सुनायी । वह एक सुखद आश्चर्य में आ गयी । वह भी बँगला देखना चाहती थी । मैंने कहा , “ बँगले की चाभी तेरे ही पास रहेगी , जब मन करेगा देख लेना । ”

मैंने दबे स्वर में कहा भी , “ अच्छा किया उसने , वह आईएएस न बना नहीं तो यह सब थोड़े कर पाता ।”

“ हमका ई सब भरमावै बरे न बतावअ । आईएएस-आईएएस होत हआ , ई सब बनिया बक्काली के पैसा से कुछ नाहीं होत । सम्मान प्रतिष्ठा रूपिया में नाहीं बा , ऊ ओहदा में बा ।”

मैं रात में सो गया । मेरी आँख लगते ही श्वेत वेश धारियों का समूह आ गया । उसी आकर्षक व्यक्तित्व वाले श्वेत वेशधारी ने कहा , ” चलो तुम ।”

मैंने कहा , ” क्यों ?”

“ तुझे ईश्वर का आदेश मानना होगा ।”

“ ईश्वर का कोई आदेश नहीं है ।”

“तू डर रहा है जीवन की कठिनाइयों से
 डर मत .. तू एक निर्णय से ..
 सुन ,
 मत डर बस ज़िद कर
 सुलग रहा है जो कहीं
 उनको और जलने दो
 आग जो जल रही
 उस पर राख मत पड़ने दो ।”
 “आप कौन हो , क्यों मुझे ले जाना चाहते हो ?

“मैं ईश्वर का दृत हूँ । तुझे जन्म देते समय ही यह फ़ैसला ईश्वर का था , इसे
 त्याग करना होगा । सुन , ऐ लकीर बड़ी खींचने का दावा करने वाले तूने
 अभी तक कोई बड़ी लकीर खींची नहीं है । त्याग दे सबकुछ और खींच दे एक
 बड़ी लकीर । बुद्ध ने राज्य त्याग कर लकीर खींची है राज्य प्राप्त करके नहीं
 । अशोक अगर युद्ध करता हो सकता है तब वह एक बड़ा राज्य प्राप्त करता
 पर वह संहारक ही होता । अशोक इतिहास का पहला और अंतिम शासक था
 जिसने युद्ध जीतकर शांति की बात की । एक नयी सोच एक दास्तान बनाती
 है , तू कुछ नया सोच । हे बड़े - बड़े दावे करने वाला मानव पहले त्याग के
 लिये अपने को तैयार कर .. तू एक ग़ैर मामूली नहीं एक मामूली सी घिसी -
 पिटी कहानी लिख रहा है , जिस पर आज कुछ तमाशा देखने वाले तालियाँ
 बजा रहे हैं । कल कोई बड़ा तमाशा होगा , यह सब तेरे से अलग हटकर उस
 तमाशे में शामिल हो जायेंगे । तू एक ग़ैर मामूली दास्तान लिख ही नहीं सकता
 जब तक अपनों के आंसुओं से नहाये पैर से तू धरा पर निशान नहीं बनाता । ऐ
 अंदर एक बड़ी आग रखने वाले , चल साथ मेरे ।”

मैं उसके साथ चलने लगा । मुझे लगा , मेरी माँ मेरे पीछे आ रही । वह कह
 रही , इसको कहाँ ले जा रहे हो । श्वेत वेशधारी ने कठोर शब्दों में कहा तू
 पीछे मत देख , आगे बढ़ता जा । माँ ने दौड़कर मेरी क़मीज़ पकड़ ली । श्वेत
 वेशधारी ने आगे बढ़कर मेरी क़मीज़ की सारी बटनें तोड़ दीं और कहा तू
 उतार क़मीज़ और आगे बढ़ । मैं आगे बढ़ने लगा मेरा पैर ज़मीन से हवा में
 उठने लगा , मेरे माँ के हाथ में मेरी क़मीज़ रह गयी और मैं और ऊपर उठने
 लगा । श्वेत वेशधारी ने अपना श्वेत अधोवस्त्र हवा में उड़ा दिया वह मेरे गले
 के चारों ओर घूम गया । उसने कहा बस ऊपर देख एक रथ आ रहा , उस
 पथ पर सवार हो जा करान्तिधर्मी.. कायनात तेरे इंतज़ार में है ।

सुबह के चार बज गये थे , माँ चाय का कप लेकर आयी और बोली “ मुन्ना ई कमीज़ के कुल बटन कैसे टूट गई । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 366

मैं अपने कमीज़ के टूटे बटन देखने लगा जिसे स्वप्न में मैंने ही ने तोड़ दिया था । माँ भी टूटे हुये बटन को देखकर आश्चर्य में थी , उसने पूछा , “ मुन्ना के तोड़ेस ई बटन ? ” मेरे पास कोई जवाब न था । मैं बटन की तरफ देख रहा था और माँ मेरी तरफ । “ मुन्ना ई खराब - खराब सपना काहे आवत बा तोहका , कौन समस्या बा ? भगवान तोहका सब कुछ देहेन , तोहरे हैसियत और क्षमता से बढ़कर आशीर्वाद तोहका देहेन । एतनी अच्छी , सहूरदार , पढ़ी- लिखी लड़की तोहरे जीवन में आई गै बा , तू ओका सपना में न देखि के ई भूत - पिशाच देखत हअ । “ मैं कुछ न बोला , मेरे पास बोलने को था ही क्या ? उसने मेरे गले पर हाथ लगाया और कहा , “ ई गंता का कै देहअ ? मुस्क - जाफ़रान तोहका फ़क़ीर से पूछि को पहिनाए रहे और तू उतार देहअ । ”

उसने कमरे में ही वह ताबीज़ ढूँढ़कर मुझे पहना दी । वह सुबह गंगा स्नान को जाने की जल्दी में हमेशा रहती ही थी ताकि वक्त पर वापस घर आ सके । उसे घर का काम भी करना होता था । वह जाने लगी और मैं घर के बाहर के बारजे पर खड़ा हो गया और उसको जाते हुये देखने लगा । वह गली के किनारे पर पहुँचकर मुड़ गयी और मेरी आँखों से ओझल हो गयी । मसूरी जाने में कुछ ही दिन रह गये थे , मैं उहापोह में था । मैं वापस आकर फिर लेट गया पर मुझे नींद नहीं आ रही थी । मैं उठा और पैदल परेड ग्राउंड की तरफ चल दिया । परेड ग्राउंड पर लोग टहलने जा रहे थे । मैं कभी सुबह टहलने नहीं जाता था । मैं मुहल्ले का एक आदर्श था , हर कोई मुझे निहारता था और मुझसे बात करने में गर्व महसूस करता था । एक बोसीदा गली का नाम शहर ही नहीं दूर - दराज तक हो गया था । बीबीसी ने मेरी स्टोरी मेरे मुहल्ले के चित्रों और नाम से ही शुरू की थी ... “ यह एक तंग गली जहाँ ख्वाब पलते हैं , जहाँ पसीने को पंखे की हवा नहीं ज़ज्बे में उबलता रक्त सुहाता है , एक नयी दास्तान की तलाश में हम सब यहाँ तक आ गये जहाँ इतिहास निर्मित हो रहा है । एक बोसीदा गली शहरों को नज़ीर दे रही .. यह कहानी है अनुराग शर्मा की जिनके लिये समाज महत्वपूर्ण हो चुका है पर अभी दास्तान बाक़ी है , कहने और करने में फ़र्क होता है पर शायद यह जो कह रहे वह कर भी रहे .. आइये आपको दिखाते हैं एक सफ़रनामा .. एक ख्वाबों का सफ़रनामा .. मैं

पंकज बीबीसी हिंदी से कैमरामैन अशफ़ाक के साथ एक नायाब प्रेरक कहानी आपके सामने ले आ रहा “

जब से यह कहानी प्रसारित हुई थी तब से बहुत लोगों का दूसरे शहरों से भी चक्कर इस गली में लगने लगा ।”

लोग पूछने लगे , “अरे मुन्ना भैया आज सुबह - सुबह ... कब जात हआ मसूरी भैया । “ मैंने बता दिया कब जा रहा । लोग कहने लगे हम चलेंगे स्टेशन तक छोड़ने । मैं वापस आया , नौ बजे ऋषभ की कार आ गयी । मैं यात्रिक होटल चला गया । ऋषभ के जलवे ही अलग थे । वह आहुजा साहब का दामाद था , दिलदार था , ईश्वर ने अतिशय पैसा दिया था और खर्च करने की इच्छाशक्ति । जिसका बँगला ऋषभ खरीद रहा था , वह आ भी चुका था । ऋषभ ने मेरा परिचय कराया , मुझे पूरा शहर जानता ही था । ऋषभ ने चेक काटकर दे दिया । इतनी बड़ी रकम किसी चेक पर लिखी जाये यह मेरा पहला अनुभव था । वैसे हम लोग सौ - दो सौ रुपया कैश में ही ज़िंदगी काटने वाले लोग थे । हमको चेक - वेक से क्या लेना देना । ऋषभ की बातचीत में एक रुआब भी था । उसने बँगले वाले आदमी और शक्ति डिस्ट्रीब्यूशन वाले से नाश्ते के बारे में औपचारिकता वश पूछा पर जैसे ही उन्होंने “ना “कहा उसने बग़ैर कुछ और कहे उनको बाहर बैठने का निर्देश दिया और मुझको लेकर रेस्टोरेंट में नाश्ते के लिये चला गया । नाश्ते की टेबल पर बैरे को बुलाकर उसने नाश्ता लगाने का निर्देश दिया । मैं पूँडी-पराठे में जुट गया वह पता नहीं कौन सा स्वास्थ्य वर्धक नाश्ता कर रहा था । जब मैं तीन आलू का पराठा चाँप चुका तब पूछा , “पराठा नहीं खाओगे ? ”

“ मैं नहीं खाता ।”

“ मैंने दो कचौड़ी भी ठेल दी हलक के अंदर और फिर पूछा , पूँडी ? ”

“ मैं ऑयली चीजें नहीं खाता ।”

“ क्यों ? ”

“ इससे वजन बढ़ता है ।”

“ यह तो देशी धी की है ।”

“ यह भी आयल ही होता है । ”

मेरा पूरा इलाहाबादी सिद्धांत हिला दिया उसने । इलाहाबाद में तो देशी धी अमृत है । यहाँ तो लाठी भी तेल पीकर मज़बूत होती है । यह कौन सा नया दर्शन समझा रहा । ऋषभ समझ गया कि यह भोजन भट्ट है , पत्थर भी देशी धी में पोतकर खा जायेगा । उसने बैरे को बुलाया और कहा गाजर का हलवा लाना । बैरा थोड़ा सा लेकर आया , उसने कहा और लेकर आओ । ऋषभ ने एक- दो चम्मच खाया पर मैं पूरा उड़ा गया । मुझे वह बँगले पर

लेकर गया । एक बड़ा आलीशान बँगला , सामने लॉन , पीछे बड़ा अहाता , दो मंजिला बँगला । पता चला कोई एक प्राणी जिसका नाम विद्यार्थी है जो आर्किटेक्ट है वह कुछ बँगले की नाप - जोख कर रहा । पता चला यह प्राणी बँगले को ठीक करेगा । हम लोग तो इंटा भटटा से मँगाया रात में पानी से तर किया , सीमेंट का जुगड़ किया और , महादेव - विश्वनाथ मिस्री ने जैसा चाहा वैसा इंटा जोड़ दिया । ऋषभ ने उसको भी चेक काटकर दे दिया और विद्यार्थी से भी मेरा परिचय कराया । दिन में रजिस्टरी होना था । बँगला मालिक थोड़ा हीला - हवाला कर रहा था कि चेक इनकेश हो जाने दो । ऋषभ ने कहा शाम तक हो जायेगा एग्रीमेंट हो ही चुका है , कल कर देना । मुझे वापस जाना है बाकी आज करो या कल क्या फ़र्क़ पड़ता है ।

मैं आईएएस था , एक छात्र नेता था । मकान विश्वविद्यालय के सामने था । इतने देर से ऋषभ का भौकाल चल रहा था , मुझे भौकाल दिखाने की इच्छा सता रही थी । मौका मिल गया , “ बँगले के मालिक साहब आप मुझे नहीं जानते , यह क़ब्ज़ा करा दूँगा ज्यादा बहस किये । ”

ऋषभ ने ही मेरी बत्ती गुल कर दी , मकान मालिक की नौबत ही नहीं आयी ।

“ यह कहाँ बहस कर रहा है । यह बात तो ठीक ही कह रहा , इतनी बड़ी संपत्ति है , पैसा दरांसफ़र हो जाने की बात ठीक ही है । ”

मामला उल्टा पड़ गया । मकान मालिक चाही देकर चला गया । कल पर रजिस्टरी की बात तय हो गयी । ऋषभ ने बँगले का मुआयना किया और आवश्यक निर्देश विद्यार्थी को दिया और एक चाही उसको दे दिया यह कहकर कि काम चालू करो । मैं ऋषभ के साथ सिविल लाइंस के कॉफ़ी शाप पर आ गया । मैंने बैठते ही ऋषभ से कहा ,

“एक सलाह चाहिये ।”

“ क्या ?”

“ मैं मसूरी नहीं जाना चाहता ।”

“ अगर नहीं जाना चाहते , तब मैं क्या सलाह दूँ ? ”

“ मतलब न जाने का फ़ैसला कैसा है ? ”

“ परिवार - परिवेश की दृष्टि से गलत है , तुम्हारे दृष्टि से सही है । ”

“ मैं समझा नहीं ? ”

“ तुम्हारी माँ , मेरी माँ एक ही तरह की हैं । उनको इस नौकरी के सिवाय कुछ दिखता नहीं । मेरा फैसला वह आज भी कहती है गलत था , जबकि मैंने कोई

सेलेक्शन प्राप्त नहीं किया था । मैंने सिर्फ इतिहान नहीं दिया था । तुम्हारा यह फ़ैसला दोनों के लिये घातक ऐसा होगा, पर तुम्हारे लिये ठीक है ।”

“मेरे लिये क्यों ठीक है ?”

“यह नौकरियाँ एक रुटीन ज़िंदगी देती हैं जो तुम्हें चाहिये नहीं । एक लकीर पर चल रही ज़िंदगी के लिये यह जितनी ही बेहतर हैं, एक नवोन्मेषी प्रवृत्ति के व्यक्ति के लिये उतनी ही पीड़ादायक । तुमको यह सेवा पीड़ा ही देगी ।”

“मैं क्या करूँ, बताओ.. बात तुम दोनों ही कह रहे ।”

“यह फ़ैसला तुम स्वयम् करो ।”

“मैं फ़ैसला नहीं कर पा रहा ।”

“तब मसूरी चले जाओ ।”

“मैं नहीं जाना चाहता ।”

“अनुराग, क्रान्ति किसी से सलाह लेकर नहीं होती । क्रान्तिकारी के पीछे कायनात चलती है और वह न केवल अपने पीछे चलाने की तौफ़ीक़ रखता है वरन् अपनी शर्तों पर उसको संचालित करता है । जो अपने परिवार की चिंता करता है वह स्वार्थी होता है क्रान्तिकारी नहीं । तुम यह स्वीकार करो कि तुम इस समय स्वार्थ के वशीभूत हो, जब तक तुम इससे मुक्त नहीं होते तब तक कोई बदलाव की आँधी नहीं ला सकते । तुम यह भी याद रखो तुम्हारा यह सारा त्याग व्यर्थ भी हो सकता है, हो सकता है यह कोई परिणाम न दें पर एक बात सच है तुम हारकर भी जीतने वालों पर भारी पड़ोगे और कई वर्ष बाद जब दूसरा कोई अनुराग बनना चाहेगा तब वह तुमसे ही परेणा प्राप्त करेगा । तुम असफल होकर भी परेणादायक होंगे, पर अगर स्वार्थ विजयी रहा तुम कर्ण की तरह कुंठित जीवन जियोगे । कुंठा कर्ण में भी थी और भीष्म में भी पर एक अनुकरणीय है और दूसरा आज भी इतिहास में मात्र अपनी कुंठा से उपजे विवादों का उत्तर दे रहा । जो आज अनुकरणीय है उसका कारण सिर्फ़ यह है वह राज्य का त्याग करने का साहस ही नहीं रखता था वरन् वह राज्य प्राप्त करके भी त्यागने की इच्छा शक्ति रखता था और इच्छा मृत्यु का वरदान रखकर भी एक व्यापक हित में उसका उपयोग कर सका । निर्णय बहुत आसान है अनुराग, बस एक बार देखो उनकी तरफ़ जो टक्टकी लगाये नयन सुरों से कह रहे, मेरा क्या होगा अगर तूने मुझे त्याग दिया ।”

मैं पूरी तरह से किंकर्तव्यविमूढ़ हो चुका था ऋषभ के इस संवाद के बाद । मुझे शांत देखकर उसने पूछा, “तुम क्या खो दोगे इस नौकरी को त्यागने के बाद.. कुछ नहीं.. तुम क्या प्राप्त करोगे इस नौकरी को खो देने के बाद..

सबकुछ । यह नौकरी एक ब्रांड प्रदान करती है और वह ब्रांड बन चुका है । अनुराग शर्मा अपने आप में एक बड़ा ब्रांड है, एक ऐसा ब्रांड जो आईएएस को पहचान दे सकता है । तुमको जो कुछ भी यह सेवा दे सकती थी दे चुकी है अब यह सेवा तुमसे लेगी न कि तुम । फ़ैसला सोचकर करो, मेरे कहने पर मत लो । मेरी इन सेवाओं के बारे में क्या सोच है यह तुम जान ही चुके हो । मेरी माँ के कुम सबसे नज़दीक हो । वह तुम्हारे साथ रहने के लिये इलाहाबाद आकर रहना चाहती है । उसने मेरी विचारधारा के बारे में बताया ही होगा । । तुम मुझसे सलाह ले लो, पर फ़ैसला मुझसे मत कराओ । अनुराग तुमने कभी शराब नहीं पी है, पर मैं तुमको शराब की प्रकृति के बारे में एक बात बताता हूँ । शराब में एक नशा होता है जिसकी अतिशयता व्यक्ति को सरे आम बेवकूफ प्रदर्शित करती है । जैसे शराब का नशा व्यक्ति को मूढ़ बना देता है और व्यक्ति विवेक खो देता है वैसे ही कोई भी नशा व्यक्ति के विवेक को प्रभावित करता है । एक फ़ैसला कितना भी गलत क्यों न हो पर अगर वह विवेक की तुला पर पूरी तरह कसा हुआ एवम् अन्तरात्मा की आवाज़ से बगैर किसी पूर्वाग्रह से संचालित है तब वह जमाने के लिये एक गलत फ़ैसला हो सकता है पर उस व्यक्ति के लिये गलत नहीं होता जिसने उसको लिया है । पर तुम्हारा फ़ैसला किसी नशे से प्रभावित है या नहीं, उसका फ़ैसला तुम स्वयम् करो ।”

“ कैसा नशा ?”

“ तुमको प्रश्नित की आकांक्षा ने बहुत ही अंतरतम तक प्रभावित किया है । तुमको प्रश्नित सुनने का नशा है । यह एक मेरा अवलोकन है, इस पर भी गौर करना । अब यह बात यहीं बंद करते हैं । तुम बहुत समझदार हो और फैसला उचित ही लोगे ।”

ऋषभ ने काँफी मँगायी, काँफी पिया । अगले दिन ऋषभ के मकान की रजिस्टरी हो गयी । मैं दस्तावेज में एक गवाह था । ऋषभ ने रजिस्टरी होते ही चाभी मुझको दे दी ।

“ अनुराग, तुम्हारे पास बहुत लोग हैं, किसी एक को यहाँ रहने को कह देना / इसकी देखभाल करना । माँ ने कहा था कि अनुराग को मकान सौंप देना । आर्किटेक्ट सारा काम कर देगा ।”

ऋषभ शाम की फ्लाइट से दिल्ली चला गया ।

बँगला एक तीर्थ स्थान हो गया । अगले ही दिन माँ - मौसी - मामा - मामी - चुन्नू - बहन - पिताजी - दादू सब बँगले पर लग गये । मैंने रजिस्टरी के कागज़ पर एक गवाह के रूप में हस्ताक्षर किया था पर बाबा भैया ने फैला दिया, “ मुन्नवा बहुत फ़रेबी है, चुपके से अपनौ नाम बँगला के कागज़ में घुसेड़ देहे बा । चाभी - ताला लै लेहे बा, क़ब्ज़ा कै ले ।”

दाढ़ू ने इसमें और मसाला डाल दिया ,

“ चाची ऊ केयरटेकर बना बा और हर महीना बँगला के रख रखाव के रूपिया आये । और एक बात और बा चाची ... ”

“ का .. ”

“ ऋषभ कहे हयेन कि केहू के उहीं में रखि दअ । चुन्नुवा क्रहत रहा कि हम रहब । ”

“ अरे दाढ़ू ऐ सब मिलि के बँगला लील जइहिं । मुन्नवा के खानदान के बारे में पतै होए । ओकर परबाबा जनेऊ में लाठी बाँधि के नदी पार कै के ज़मीन क़ब्ज़ा केहे हयेन । सेमरहा के कुल ज़मीन ऐसनै क़ब्ज़ा केहे हयेन । छात्रन के नेता बा , मरसेधू- मेहरारू दुझनौ आईएएस , ससुरार आईएएस । ऐ ऋषभ - आहूजा बनिया बककाल के बस के बा ओसे निपट लेझहिं । ”

“ चाची ऐसन बुआ न करे । ”

“ अरे ऊ उर्मिला ... नैहरे के खेत लीले बा । डेबरा में तू बतावअ कौन बिटिया नैहरे के ज़मीन लेहे बा । पर ई खेत लेहे बा । ”

“ पर चाची कभौं गई नाहीं बुआ , एकौ बार गल्ला - पाती नाहीं माँगेंगे , हम ऐसन अनियाय तअ न कहब । ”

“ जब लै ले तब समझि आये । दाढ़ू तू काहे नाहीं रहतअ बँगला में ? ”

“ हम कैसे रही चाची ? ”

“ अरे केउ तअ रहबै करे देखभाल बरे । तुहिन रह जा । ऐतना बड़ा बँगला बा , दस भैंस पाल ला आमदनी होये । ”

“ चाची , भैंस के लागत ? ”

“ हम देब , फ़ायदा में आधा - आधा कै लेब । ”

“ चाची स्कीम तअ ठीक बा , पर मुन्ना मनिहिं । ”

“ मुन्ना के होत हअ , उर्मिला के पैर धोवत हअ तू उहि से कहअ । ”

दाढ़ू मस्तिष्क में चाल चलने लगा ।

मुझे चैन नहीं था । मैं बहुत परेशान था । मैं दुविधा में था । मेरी रात में आँख देर में लगी । आँख लगते ही स्वप्न में श्वेत वेशधारी आ गये ... “ तुझे आज चलना होगा । ”

“ क्यों ? ”

“ हम आदेश देते हैं जवाब नहीं । ”

मैं आदेश क्यों मानूँ ?”

“ तेरे पास कोई चुनाव नहीं है ।”

“ क्यों नहीं है ?”

“ तुम ईश्वर के आदेश पर प्रश्न चिह्न लगा रहे ।”

“ यह ईश्वर का आदेश नहीं है ।”

“ तू अपनी धड़कनों से पूछ , आज्ञाद कर उनको अपने स्वार्थ से वह सच कहेंगी । ईश्वर का आदेश न होता तो हम प्रतिदिन नहीं आते । ईश्वर की चाहत न होती तब यह दुविधा भी न होती । देख ईश्वर आ रहे .. देख ध्यान से ... देख हवा में उछाल रहा मैं अपना अधो वस्त्र .. यह ईश्वर की काया लेगा .. मुझे लगने लगा वह वस्त्र एक दैवीय शक्ल ले रहा ..

तू माँ जो भी माँगना चाहता है पर ध्यान रखना ..

मज़ा संघर्ष में है वरदान मैं नहीं । चला जा वापस अपनी दुनिया में हम सब पुनः नहीं आयेंगे .. वह सब जाने लगे .. मैं चीखने लगा .. रुको .. रुको . वह आकर्षक व्यक्ति मुझा और उसने कहा अपना मसूरी जाने का टिकट फाड़कर फेंक दें और चल मेरे साथ .. मुझे माँ की आवाज़ नीचे सुनायी दी .. मुन्ना गंगा नहाई चला आज मंदिर पर तोहार पाठ बा .. मेरी आँख खुली .. मेरा मसूरी का टिकट फटा हुआ टुकड़ों में बिखरा था । मैं बैठ गया .. फटे हुये टिकट तो देखने लगा .. फैसला हो चुका था .. मैंने आईएएस की नौकरी त्याग दी थी .. बस जमाने को अब बताना शेष था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग - 367

मैं माँ की आवाज़ सुनकर नीचे आ गया । वह गंगा स्नान की जल्दी में थी और मुझे साथ ले जाना चाहती थी । मेरे पास कोई चुनाव तो था नहीं , मैं उसके साथ गया । वह मेरे दुःख्पन से परेशान थी । किसी पंडित से कुछ गंगा किनारे पूजा करवाया उसके बाद हनुमान मंदिर ले गयी । मंदिर का पुजारी मुझे जानता भी था और मेरी उपलब्धियों से अभिभूत भी था । उसने मुझे देखते ही कहा , “ अरे आज साहेब आई गयेन , चलअ हमरौ भाग्य साहेब के साथ कुछ बातचीत होई जाये । मंदिर के बड़े महंत का कमरा एकदम हनुमान मंदिर के बाई ओर था और दाहिनी ओर मिठाई फूल की दुकानें थीं । वह मुझे बड़े महंत के पास ले गया । बड़े महंत का जलवा ही अलग था । शहर के बड़े लोग आते थे और महंत जी उनके साथ अपने ताल्लुक पुरखता करते रहते थे ॥ मेरी माँ को कौन उस कमरे का दर्शन करने देता पर आज पुजारी मुझे लेकर

गया और मेरा परिचय करवाया । मेरे बारे में समाचार पत्र इतना छाप चुके थे कि नाम अनुराग ही बहुत था परिचय के लिये । मेरा नाम एक अलग बरांड था । महंत जी खड़े हो गये और मेरा स्वागत किया । उन्होंने मुझे बैठने को कहा । मेरी माँ साधारण वस्त्रों में थी, मैंने उसको पीछे से हाथ लगाते हुये कहा, “यह मेरी भाग्य विधाता है ।”

महंत जी समझ गये कि वह मेरी माँ है । उन्होंने झुक कर माँ को प्रणाम किया । मेरी माँ ने जीवन में कुछ न देखा था । बड़े महंत जी का एक अपना रसूख था । माँ उस रसूख की आभा में थी उसने भी महंत जी को प्रणाम किया । महंत जी ने चाय का आदेश दिया और कहा, “अरे भाई यह अपने साहब है इनके लिये कचौड़ी लाओ ।” माँ बेचारी अपना दुखड़ा लेकर बैठ गयी, “महंत जी इसको बहुत ख़राब - ख़राब सपने आते हैं । रात में बहुत डरता है, कुछ उपाय कीजिये ।”

महंत जी ने आश्वासन के स्वर में कहा, ”सब कल्याण होगा, हनुमान जी राई - रक्षा करेंगे ।” उसने एक रक्षा - कवच मेरे बाँह पर बाँध दिया और कहा आज से हनुमान जी का रक्षा - कवच साथ रहेगा, कोई भूत - पिशाच निकट नहीं आयेंगे । मैं पैदल चलता हुआ विचार तन्द्रा में था, कैसे माँ को बताऊँ अपना विस्फोटक फ़ैसला । यह समाचार तो ज़मीन पर आँसुओं की नदी बहा देगा । मैं घर आया, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था क्या करूँ । माँ ने कहा, “मुन्ना रिश्तेदारिन के निपटावत चलअ । अब जाई में केतना दिन हइयै बा / आज से शुरू करअ । ऐसा करअ आज भैया के इहाँ निपटाई दअ । कुछ मीठा लेहे जायअ । सुना हअ ऋषभ कुछ रूपिया देहेन तोहका ।”

“तुमको कैसे पता ?”

“तू पूर चुप्पा हअ । काल शांति की चिट्ठी आई रही । उहै लिखे रही कि ऋषभ पूछत रहने कि केतना पैसा अनुराग के दै देई ओका एकेडमी जाई में ज़रूरत पड़े ।”

मैंने लिफ़ाफ़ा दे दिया जो ऋषभ ने दिया था । मैंने बताया कि मैंने यह भी कहा था ऋषभ से कि कोई ज़रूरत नहीं है पर वह नहीं माना । वह खोला, “तुम्हारे पास जो अधिकार नहीं है उसका इस्तेमाल मत करो । माँ ने जो कहा वह मैं कर रहा । तुम्हारे और मेरे पास उसके निर्णय में हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं है ।”

मैं अब इसके बाद क्या कहता और क्या करता ?

माँ ने लिफ़ाफ़ा खोला । लिफ़ाफ़े में पच्चीस हज़ार रूपये थे । माँ ने आश्चर्य से कहा, “ऐतना रूपिया !”

“माँ उनके पास बहुत पैसा है । ऐसे चेक काट रहा था जैसे पैसे का कोई मोल न हो । जब वह बँगला देख रहा था तब मैंने कहा दूसरा बँगला सस्ता है वह से

लो ।”

“ माँ, उसने कहा पाँच - सात लाख से क्या फ़र्क पड़ जायेगा । वह बहुत दिलदार है ।”

“ बा रूपिया बा बुद्धि नाहीं रूपिया नाहीं बुद्धि । अब रूपिया के माई पहाड़ न चढ़े तब केकर माई पहाड़ चढ़े ।”

“ माँ उसने अच्छा किया आईएएस नहीं बना । व्यापार किया कितना पैसा कमाया । आईएएस में क्या मिलता ।”

“ई बनिया - बककाली में कौनौं शान नाहीं बा । इलाहाबाद के डीएम के बँगला ऋषभ के बँगले के कई गुना बा । इज्जत पद - ओहदा में बा, ई रूपिया के गठरी में कुछ नाहीं धरा बा । मुन्ना तोहका बँगला कब मिले कलेक्टर वाला ?”

“ सात- आठ साल बाद । “

“ ओकरे पहिले का मिले ?”

“बँगला उसके पहले भी होता है पर इतनी शानो - शौकृत नहीं होती ।”

“ मुन्ना तू तअ कलेक्टर के जानत हआ न ?”

“ माँ, मेरा जानना महत्वपूर्ण नहीं है, लोग मुझको जानते हैं यह महत्वपूर्ण है ।”

“ तू बकबकी अशोक के डॉयलॉग हमका न सुनावअ । तू हमका कलेक्टर के बँगला देखाई दअ, हमका पता तअ चलई कि मुन्ना कैसन बँगला मे रहे । “

“ एक बात और बतावअ मुन्ना ? “

“ क्या ?”

“तोहका और प्रतीक्षा के दुझनौ के बँगला मिले तब का करबअ दूसरे बँगला के ? तू दुझनौ परानी रहबअ तअ एके बँगला में ।”

“ दूसरा बँगला किराये पर उठा देंगे, किराये के पैसे को बैंक में जमा कर देंगे । उस पर ब्याज मिलेगा और कुछ दिन में कुर्सी के बजाय रूपिया के ढेर पर बैठेंगे ।”

“ हमका बेवकूफ समझे हआ का, ऐसन सरकार कभौं करै दें कि सरकारी संपत्ति के केरावा पे उठाई दअ ।”

“ तब क्या होगा ? “

“ कुछ क्रान्ति सरकार बनायें होये कि अगर मेरारास्ट - मरसेधू दुइनौ आईएस होई तब दूसर बँगला के का करै जाई । ”

“ नहीं पता मुझे , पता करके बताऊँगा । ”

“ पर हमका क्लेक्टर के बँगला देखाई के तब जायअ एकेडमी । ”

“ अरे , अब तुम्हारा समधियाना कमिश्नर के यहाँ है । तुम एक बार कहोगी तब वह भागते हुये आयेंगे । ”

“ हम केहू के एहसान काहे लई जब हमार बेटवा क़ाबिल बा । ”

“ अरे एहसान काहे का , इतना तैयार किया हुआ लड़का दे रही हो । ”

“ तू बड़ा मेहनत से तैयार केहे गवा हअ और ऊ प्रतीक्षा ऐसे तैयार होई गई । ओका काबिल बनावै में कौनौं मेहनत नाहीं लाग ? ओकर घरे वाले कौनौं मेहनत नाहीं केहेन । तू तअ बेसहूर टाइप हअ , ऊ एतनी सहूरदार बा । ऊ बँगैर मेहनत के बनी बा । ऐसन सलीकेदार आसानी से तअ न बनी होये । एक बात बतावअ मुन्ना , सही - सही । ”

“ क्या ? ”

“ कभौं तू सोचे रहअ कि प्रतीक्षा ऐसन मेरारास्ट तोहका मिले । ”

“ माँ , ऐसा करो .. तुम माठा में जूता भिगो लो और तब मारो । वहीं बचा है बाकी तो सब हो गया । ”

“ अच्छा एक बात ई बतावअ , प्रतीक्षा के अंगरेजी के चिट्ठी कुछ तोहका समझि आवत हअ । तू अंगरेजी के डिक्शनरी आजकल बहुत पढ़त हअ । लागत बा ऊ कठिन अंगरेजी आजकल लिखत बा । ”

“ मुझे कुछ बात नहीं करना है अब । ”

“ मुन्ना , अब केतना दिन रहिन गई बा तोहका जाई में । अब तअ हम तरसबै करब तोहसे बतियाई बरे । ”

मैं यूनिवर्सिटी चला गया । रिजल्ट एम ए का आ चुका था । मैंने टॉप ही किया था कई साल का रिकार्ड भी ट्रूट जायेगा ऐसा एम ए प्रथम वर्ष के नंबर से लगने लग गया था । एक और उत्साह छात्रों में । हर ओर एक ही चर्चा कौन - कौन जा रहा तीन सितंबर को छोड़ने रेलवे स्टेशन । मुझे जाना था नहीं , पर यह सिफ़र मैं जानता था । मैं कैसे बताता किसी को अपने अंदर के झँझावत को । जब तक वह मेरे भीतर है वह मुझे सता रहा जब वह बाहर निकलेगा तब जमाने को सतायेगा ।

मैं यूनिवर्सिटी से मामा के यहाँ चला गया । मैं अब एक देवतुल्य था । मेरा कहीं भी होना वहाँ को विशेष बना देता था । भाभी ने मुझको देखते ही कहा , “ मुन्ना भैया तोहार पैर पखारि देई । ”

“ भाभी मुझको आप नरक भेजेंगी । ”

“ मुन्ना भैया तू मान - दान हअ । तोहार पैर के रज कल्याण करे । ”

मामी - “ मुन्ना के सेवा करअ , संतान मुन्ना के तरह चक्रवर्ती होये एकर आशीर्वाद लअ । ”

मैं - “मामी , भाभी मातृत्व की ओर बढ़ रही , इनके भीतर एक प्रकाश है , जो समय को संचालित करेगा । ”

भाभी - “मुन्ना भैया , तू एका अपने छत्र - छाया में लेहअ । तोहार ज़िम्मेदारी होये एका सही राह पकड़ावै के । ”

मामा - “ मुन्ना चाचा बनिहिं । एनहू के ओहदा बढ़े । मुन्ना काहे न ध्यान देझहिं । हम सबके भाग्य से मुन्ना परिवार में जन्मेन हअ , ओहमें इ अजन्मा के भाग्य भी बा । ”

“ ज़रूर मामा । आप सबका आशीर्वाद है । ”

चाय - नाश्ते का दौर चलने लगा । मामा के अंदर ऋषभ का बँगला खटक रहा था । मामा ने बात छेड़ ही दी , “ मुन्ना ऋषभ बँगला क्यों लिये ? ”

“ पैसा भरा पड़ा है ख़रीद लिया । कह रहे थे कि माँ शायद आकर रहे । ”

“ बँगला किसके नाम है ? ”

“ ऋषभ के । ”

“ सुना हअ कि तोहार और ऋषभ दुइनौ के नाम बा । ”

मैं कम बदमाश तो था नहीं । मुझे इन सब की नींद ख़राब करने का मन कर गया । पीड़ा जितनी इनको थी उससे बड़ी और पीड़ा देने का इरादा बना लिया । ”

“ मामा , नाम - वाम किसी का हो न हो , उपभोग तो मुझको ही करना है । कहाँ कौन इलाहाबाद आने वाला अभी । ऋषभ जा रहा अमेरिका , आंटी की अगी कई साल की नौकरी है । अब जब कोई नहीं आयेगा तब कोई न कोई तो भोगेगा ही । ”

मामी - “ मतलब तोहरौ नाम बा बँगला में ? ”

“ मामी मुझे नहीं पता कुछ । ऋषभ बोले हस्ताक्षर कर दो , मैंने कर दिया अब पता नहीं एक गवाह की तरह कराया कि एक मालिक की तरह । मैंने तो पढ़ा

नहीं रजिस्टरी पेपर / चाभी देकर चले गये और कहा देखभाल करना / मैं तो गया नहीं तब से यहीं चुन्नू लगा रहता है बँगले के चक्कर में । “

“ सुना बँगला में काम चलत बा ?”

“ हाँ ऋषभ को पैसा फूँकने में मज़ा आता है / वह किसी विद्यार्थी आर्किटेक्ट को काम पर लगा गये हैं / वहीं ठीक - ठाक कर रहा / मैं तो चला जाऊँगा मसूरी / यहीं चुन्नू और माँ देखभाल करेंगे / आँटी आयेगी जब तब देखा जायेगा ।”

मामी के चेहरे से ही लग गया कि आज की रात अब भारी होगी , नींद कहाँ आने वाली / इर्ष्या मुझसे कह रही , यह तूने क्या कर दिया अब मुझे इनके साथ रहना होगा ।

मुझे घर आते - आते बहुत देर हो गयी / मैं रात सो गया / श्वेत वेशधारियों का समूह स्वप्न में आ गया

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग - 368

श्वेत वेशधारियों ने कहना आरंभ किया / इस बार कई लोग एक ही स्वर में बोल रहे थे ..

“ तुम अपने फ़ैसले पर आड़िग रहना / तुमने समाज के हित में फ़ैसला किया है / तुम वापस मत जाना ।”

“ तुम मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर दो । “

“ पूछो ?”

“ यह सेवा स्वीकार करने में स्वार्थ क्या है ?”

“ तुम अपने व्यक्तिगत हित के बारे में मत सोचो ।”

इतने में किसी ने मुझे झकझोर दिया और मैं जग गया / वह माँ थी / उसने कहा तीन से चार बजे के बीच भूत आई के तोहार क़मीज़ के बटन तोड़ि देत हुअ और तोहार टिकट फाड़ि देत हुअ / अब तोहका हम तीन बजे के बाद सोवै न देब , कुल भूतन के बदमाश निकारि जाये / तू उठि के हनुमान चालीसा पढ़अ सब भूत - पिशाच भगाई ज़इहिं । “

मैं बैठ गया / मैं कुछ बोलूँ , माँ ने चार - पाँच मोटी - मोटी किताब निकाल कर मेरी आलमारी से मुझे दे दी और कहा , ” लअ एका रटअ , पढ़ावै में मदद

करे और ई दहिजरा के नाती भूत - पिशाच नज़दीक न अझिं । अब तू रात जल्दी सोवा करअ और सुबेरे जल्दी उठअ । ऐ भूत - पिशाच भिंसारे खलिहर होत हअ और सबके तंग करत हअ ।”

माँ यह कहकर चली गयी और चार बजे फिर चाय लेकर आयी । मैं सो गया था उसने फिर जगा दिया और कहा, ”मुन्ना सोयअ नअ ।”

मैं दिन में यूनिवर्सिटी गया और फिर घर वापस आया । मैं शाम को कोचिंग पढ़ाकर आया । मैंने निर्णय लिया किया कि मैं बता देता हूँ अपना फ़ैसला । मैंने पिताजी से अपना फ़ैसला बता दिया । पिताजी आग - बबूला हो गये । उनके करोध की कोई सीमा न थी । वह परिपक्व व्यक्ति थे और प्रायः करोध नहीं करते थे, पर आज नियन्त्रण के बाहर थे । वह पूरी तरह से अपने आपे के बाहर हो गये । इतना विकराल रूप उनका मैंने कम ही देखा था । उनकी चीख सुनकर माँ भी दौड़ती हुई आ गयी । उसके आते ही पिताजी कहने लगे, “सुनो इस बेवकूफ की कहानी । हर दिन नया नाटक । अब कह रहा कि मैं एकेडमी नहीं जाऊँगा । यह क्या करेगा, यह तो बतायें? यह जो बेवकूफ लोगों को पढ़ा रहा वह क्या देंगे इसको? वह सब इसको पागल ही समझते होंगे । यह जो आईएएस का बरांड है उसके कारण कुछ लोग इसके पीछे धूम रहे, एक बार बरांड हट गया तो कोई नहीं पूछेगा ।”

यह कहते - कहते उनकी साँस उखड़ने लगी । माँ ने चुप कराया । मैं उठ कर ऊपर अपने कमरे में आ गया । मुझे पिताजी की चिंता भी होने लगी । मैं कर्ल क्या यह समझ नहीं आ रहा था । मैं कमरे में बैठा था कि माँ आ गयी । उसने कहा, “सबके जान लै लअ तब तोहार पेट भरे । तोहका कौन भूत सवार भअ बा । एतनी मुश्किल से नौकरी मिली । भगवान बड़े जन्मन के कर्म के बाद ई दिन देखावत हअ और तू आई तकदीर के लात मारत हअ ।”

पिताजी अगले दिन कमिशनर साहब के घर गये और सारी बात उनको बतायी । दिन में कमिशनर साहब का झराझर आया और उसने कहा कि साहब बुला रहे । मैं उनके पास गया और वह मुझे समझाने लगे । मैं जिद पर अड़ा था । मेरी उनकी बातचीत बिगड़ गयी । मेरे ज़िद को देखकर वह नाराज़ हो गये और कहा तुम जिस तीन शब्द को अस्वीकार कर रहे हो वह आईएएस तुम्हारे जीवन से निकल जायेगा तब तुम किसी काम के न रहोगे । मुझे करोध आ गया और मैं अपना विवेक खो बैठा । मैंने कहा, ”सर, हर कोई एक सीधी साधा जीवन चाहता हैं पर ऐसे व्यक्ति को यह पता ही नहीं होता जीवन जिया कैसे जाता है । एक बने - बनाये रास्तों का जीवन कभी आळादित नहीं करता । सर मज़ा हाँ कहने में नहीं, मज़ा ना कहने में है । मुख्यमन्त्री कोई गलत काम करने को कहे वह कर देने से ज्यादा आनंद इंकार करने में है, एक बार कर के तो देखो । सर, उसूल की जंग होती है बड़ी नेक, एक बार करके तो देखो । आप अपने अंदर झाँक कर देखें, इस झूठी शानों - शौकत और सत्ता के दंभ के लिये कितनी बार बिके हैं आप । सर आपको याद भी

नहीं होगा आप कितनी बाज़ार में बिकने को उतरे हैं और ख़रीदार न मिला तो वापस आ गये । कमिश्नर साहब , सिफ़र अपना जीवन जीने की चाहत रखने वाला व्यक्ति क़ानून की दृष्टि में अपराधी नहीं है पर उसके अंदर की आत्मा हर दिन उसी से पूछती है , तू हर दिन यह अपराध क्यों करता है । अगर आप की आत्मा यह सवाल आपसे नहीं कर रही है तब वह आपसे निराश हो चुकी है । हिंदू धर्म के अनुसार यह आत्मा आपके बाद एक दूसरे शरीर में प्रवेश करेगी और आप एक निराश - हताश आत्मा को दूसरे के शरीर में प्रवेश करा कर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं । आप मुझे यह सेवा स्वीकार करने की सलाह देने के बजाय आप सेवा त्याग कर मेरे पीछे मेरे बनाये रास्ते पर चलें , सर यक़ीन माने अभी तक आप जीवन काट रहे थे अब आप जीवन जियेंगे । सर , आपको लग रहा होगा यह पागल अपना जीवन बर्बाद कर रहा है पर मेरा बर्बाद जीवन भी आपके आबाद जीवन से अधिक अर्थवान होगा ।”

कमिश्नर साहब के चेहरे से क्रोध झलक रहा था । उन्होंने कहा , “ अनुराग तुम मेरे बहन के होने वाले पति हो और बहनोई बहुत सम्माननीय होता है । जो तुमने आज कहा वह आज तक किसी की मेरे बारे में सोचने की भी शायद हिम्मत न पड़ी हो । आप स्वतंत्र हो अपने फ़ैसले लेने के लिये । अब मेरा आपके जीवन के इस विषय से कोई सरोकार नहीं है । ”

मैं कमिश्नर साहब की कार छोड़कर पैदल ही घर की ओर चल पड़ा । डराइवर आवाज़ देता रहा , साहब ... साहब ... “ पर मैंने एक ना सुनी । मैंने शाम की अपनी क्लॉस ली , हालाँकि मेरा पढ़ाने में कोई मन नहीं लगा । क्लॉस के बाद मैं परेड की तरफ़ चला गया और घंटों वहाँ निरुद्धेश्य टहलता रहा । मेरे अंदर एक तूफान था जो मुझे बेचैन किये हुये था । मैं घर आया । मेरे घर की बत्ती बुझा हुई थी । कहीं कोई रौशनी न थी । एक 40 वॉट का बल्ब जल रहा था जिसे अँधेरा हरा रहा था । कहीं किसी के जीवन में कोई उजाला न था । सभी के अंदर एक निराशा थी । मेरी बहन का मुझसे समाना हुआ पर उसने मुझसे कोई बात न की । मैं रात सोने की कोशिश करता रहा पर नींद नदारद थी । आज माँ सुबह चाय लेकर नहीं आई । यह पिछले पता नहीं कितने सालों में यह पहला दिन था जब वह चाय लेकर नहीं आई । सुबह पता चला वह गंगा नहाने भी नहीं गयी थी । यह भी पिछले पता नहीं कितने सालों में यह पहली बार हुआ था ।

पिताजी की तबीयत थोड़ा नासाज है यह भी पता चला । मैं उनके पास गया पर उन्होंने बात करने से इंकार कर दिया । मेरे साथ पूरे घर ने असहयोग कर दिया था । मेरी किसी से बात नहीं हो रही थी । दो दिन दिन सुबह हल्ला हुआ कि माँ अभी तक गंगा नहाकर नहीं आयी है । ऐसा तो कभी हुआ नहीं ।

दिन के दस बज गये पर वह अभी तक नहीं आयी । बहन रोते हुये आयी और बोली कि माँ गंगा नहाने गयी थी पर वह अभी तक नहीं आयी । मुझे भी चिंता होने लगी । मैं गंगा किनारे गया पर वह कहीं मिल ही नहीं रही थी । छोटा भाई यह समाचार मामा के यहाँ लेकर गया । सब लोग उसको दृढ़ने लगे । वह शाम को तीन बजे हनुमान मंदिर में मिली । वह सुबह वहीं चली गयी और फिर वापस ही न आयी । एक राज मेरे सेवा छोड़ने का खुल गया । सबके हाथों से तोते उड़ गये । माँ ने कह दिया अगर मुन्ना तीन तारीख को मसूरी नहीं गया तब मैं फौसी लगा लूँगी । अकेले मुन्ना को ही ज़िद करनी नहीं आती , ज़िद करनी मुझे भी आती है । अब फ़ैसला इसके हाथ में है । मेरी माँ जो कह दे वह बात हवा में नहीं हो सकती । मुझे हर रात डर लगने लगता था कि वह आज गयी । मैं धीरे - धीरे कमजोर पड़ने लगा । मुझसे यह पीड़ा बर्दाश्त नहीं हो रही थी । यह घर का तनाव , पिताजी की चिंता और माँ की धमकी ने मुझ पर असर करना आरंभ कर दिया । दो दिन बाद पिताजी मेरे कमरे में आये । उन्होंने आते ही कहा , “ मुन्ना , तुम्हारी ज़िद और तुम्हारी माँ की ज़िद टकरा चुकी है । तुम अगर नहीं गये तब वह बहुत लंबा जी नहीं सकेगी । इसी पीड़ा और चिंता में वह ख़त्म हो जायेगी । तुम जो भी फ़ैसला करना यह सोचकर करना कि उसका जीवन तुम्हारी उछाले पाँसे में है । ”

मैं चुप था । पिताजी जाने लगे । मैंने रोका , और पूछा , “ क्या आप मेरा फ़ैसला नहीं सुनना चाहेंगे । ”

“ मुझे तुम्हारा फ़ैसला पता है । ”

“ क्या ? ”

“ वह माँ के पक्ष में ही होगा । ”

मेरी आँखों से आँसू गिरने लगे । पिताजी न मुझे गले से लगा लिया और कहा , “ मुन्ना मैं बार - बार कहता हूँ और हर एक से कहता हूँ मेरे बेटे ऐसा चक्रवर्ती बेटा बहुत जन्मों के पुण्य के बाद प्राप्त होता है । तुमको ईश्वर ने मुझे दिया , मैं उसका बहुत एहसान मंद हूँ । तुम अपना फ़ैसला खुद ही माँ को बताना उसे खुशी होगी और तुम पर और अधिक विश्वास होगा । ”

मैंने अगले दिन सुबह चार बजे चाय बनायी और माँ के पास चाय लेकर गया ।

“ माँ आज एक सितंबर है । मेरा - तेरा साथ दो दिन का और है । मैं तीन सितंबर को जा रहा मसूरी । तुम सितंबर में ही मसूरी आना । मैं तेरे बाँौर रह नहीं पाऊँगा । वहाँ छुट्टी नहीं मिलती है । मैं तभी जाऊँगा जब तू कहेगा कि मैं सितंबर में ज़रूर आयेगी । ”

माँ तेज स्वरों में रोने लगी ...

मुन्ना

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग - 369

माँ के चेहरे पर संतोष के भाव थे । जिस दिन से मैंने कहा था कि मैं मसूरी नहीं जाऊँगा यहीं इलाहाबाद में रहकर पढ़ाऊँगा उस दिन से वह एक बहुत बड़ी पीड़ा से गुजर रही थी । वह जानती थी कि मेरा ही खून है यह और मेरी ही तरह की ज़िद इसके भीतर है । उसे नहीं लगा था कि मैं इतनी जल्दी टूट जाऊँगा । शायद मैंने भी पहली बार इतनी तीव्र गति से समर्पण किया था । वह जिस दिन गंगा नहाकर नहीं आयी उस दिन मैं पूरी तरह परास्त हो चुका था । मैंने ईश्वर से सारी मिन्नतें कीं उसको वापस पाने की । जब वह सायंकाल मिली तब मेरे अंदर एक असीम अपराध बोध था । मुझे लगने लगा कि मैं अपनी ज़िद में सबको पीड़ा दे रहा । मेरी महानायकत्व की तलाश एक आत्म श्लाघा है, आत्म प्रवर्चना है । एक नायक अपनों को दुख देकर समाज का नायक होने का भ्रम पाल सकता है पर वास्तव में वह नायक हो ही नहीं सकता । जिसे अपनों का परवाह न हो उसके द्वारा समाज की परवाह की बात करना एक ढोंग है ।

मैंने माँ के चेहरे का संतोष भाव पढ़ा और कहा उससे,

“ माँ प्रेम , शौर्य , शोक , क्रोध , विनय , पश्चात्ताप इन सबकी अभिव्यक्ति एक परिष्कार की आकांक्षा रखते हैं । अगर अभिव्यक्ति में परिष्कार नहीं है तब प्रवर्शन में कुछ कमी है, भाषा की प्रवर्शन में । प्रेम करने से अधिक महत्वपूर्ण है प्रेम की अभिव्यक्ति , क्रोध से अधिक आवश्यक है क्रोध की मर्यादा , शौर्य से अधिक श्रेयस्कर है शौरसेन के द्वारा आहत की गरिमा का ख्याल , पश्चात्ताप का कोई तात्पर्य नहीं है अगर पाप की पुनरावृत्ति से बचने का यत्न न किया जाये , और विनय जीवन का मूल है । विनय अगर जीवन से चला गया तब जीवन अर्थवान हो ही नहीं सकता । माँ मुझे तेरे प्रेम की अभिव्यक्ति से शिकायत है । तूने अपने प्रेम के सहारे मुझे ब्लैकमेल किया है । मुझे तेरे क्रोध से कभी कोई गुरेज़ नहीं रहा पर जो तेरा मेरे प्रति असीम प्रेम है उसने मुझे मजबूर किया । तीन रातों का सफरनामा बहुत दर्दनाक है, जबसे तूने कहा था अगर मुन्ना तीन सितंबर को न गया तब मैं फाँसी लगा लूँगी । मेरे जीवन की तीन सबसे दर्दनाक रातें .. मुझे बुद्ध और राम में एक को नायक के तौर पर चुनना था और मैंने बुद्ध को नहीं राम को चुना । ऐसी कोई भी दास्तान गैर मामूली नहीं हो सकती जिसकी बुनियाद में माँ के आँसू, अनायास आँसू बहे हों । युधिष्ठिर शौर्य की दृष्टि से

इतिहास का एक कमजोर नायक है पर भावना के धरातल पर बहुत मज़बूत है । उसने राज्य और पत्नी के स्वाभिमान पर माँ की ममता को अधिमानता दिया । राज्य प्राप्ति बगैर अर्जुन के नहीं हो सकती थी और दुशासन का लहू बगैर भीम के प्राप्ति नहीं हो सकता था । पर माँ माद्री के लिये उसने यह त्याग दिया । जब रात माँ चढ़ने लगती थी मुझे हर रस्सी एक फाँसी के फंदे में बदलती दिखती थी । मुझे लगता था हर ओर रस्सियाँ ही रस्सियाँ लटक रहीं और मैं पीछा कर रहा और तू रस्सियों की तरफ भाग रही । किसी भी माँ को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने बेटे से यह कहे कि मैं अपना जीवन समाप्त कर लूँगी ।

.....
“मुन्ना तुमने राम को चुना बुद्ध को नहीं एक नायक की तौर पर यह क्या है ?”

“राम में एक सामंजस्य है, पारिवारिक मूल्यों को प्रति आस्था है । राम में सबके प्रति एक सतह पर उभरता लगाव है । वह समाज की पीड़ा को हरने के लिये स्वयम् को पीड़ित करने के पक्षधर हैं । बुद्ध में समाज की पीड़ा है पर राम की तरह अपनों का लगाव नहीं है । राम ने सीता को अवसर दिया और सीता ने राम के साथ जाने की इच्छा ज़ाहिर की । यह अवसर बुद्ध ने यशोधरा को क्यों नहीं दिया ? आखिर क्यों बुद्ध ने यह सोचा स्त्री के प्रति अनुराग जीवन के वृहद लक्ष्य में बाधक होगा । बुद्ध के त्याग में पत्नी की भूमिका गौण हो गयी जबकि वह हो सकती थी राम के त्याग में वह भूमिका मुखर है । बुद्ध ने अपने संघ में भी स्त्रियों का प्रवेश वर्जित किया था । बुद्ध ने समाज में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन अवश्य किया पर उनका स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण सवालों के घेरे में आ सकता है । राम एक समेकित मूल्यों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं । राम ने वह शबरी को यह अधिकार दिया कि वह अपने झूठे बेर खिलायें, सूपरणखा की पाशविकता का संहार किया अहिल्या को मुक्त करके उनके निरपराध चरित्र को जगत के समुख प्रस्तुत किया ।”

“पर जौन सीता के परीक्षा और सीता-त्याग के हेतु ओकर का ? और जौन कहा गवा ढोल गँवार शूदर पशु नारी । ये सब सकल ताड़न के अधिकारी ।

“हाँ माँ, यह किसी भी तरह से रक्षित करना आसान नहीं है ।

रामचरितमानस के कई पात्र स्त्री के बारे में कहते हैं, जैसे

भरत -

“बिधिहु न नारि न हृदयगति जानी

सकल कपट अघ अवगुन खानी “

रावण -

“नारि सुभाव सत्य कलि कहाहिं
अवगुन आठ सदी उर रहिहिं
साहस अमृत चपलता माया
भय अविवेक असौच अदाचा ।”

शबरी -

“अधम तैं अधम अधम अति नारी ।
तिन्ह महँ में मति - मन्द गँवारी । “

राम -

“ जैहउँ अवध कवन मुँह लाई ।
नारि- हेतु पिरय भाइ गँवाई ॥
बर अपजस सहतेउँ जगमाही ।
नारि- हानि विशेष छति नाहीं ॥

“ यह क्या है मुन्ना ? ”

“ रहने दो माँ , यह सब बेकार की बातें हैं , जाओ गंगा नहाकर आ जल्दी
आओ । ”

“ कुछ बेकारै के बात बतावअ , कुल ज़िंदगी तअ अवारापनै केहे हअ जेहमें
बेकार के बात करतै रहअ , हमहूँ तअ सुनी तोहार बेकार के बात । अब तअ
अफ़सर बनि जाबअ और सब के सत्यानंद मिश्रा के तरह उपदेश देबअ ।
सत्यानंद मिश्रा ज्ञान में तोहसे कमजोर हइयै हयेन और तोहका बोलै आवत
हअ , फराड में तू मास्टर हअ , झूठ के तअ ऐसन फेंटबअ कि सच हैरान
होई जाए । मुन्ना बहुत ख़तरनाक कलेक्टर तू बनबअ, सबके चराई मरबअ ।
ख़ानदान में हम भैया के फराड मानत रहे पर ओ तोहरे पैर के धोवनौ नाहीं
हयेन । ”

“ माठा भिगो - भिगो जूता चलाओ , तुम्हारे पड़ोसी कह भी रहे माठा मैं भेज
देती हूँ । मैं कुछ नहीं बताऊँगा , जब देखो सारी इज्जत का पलीता निकाल
देती हो । ”

“ अब हमही रहि गअ हई तोहार इज्जत बनावै बरे । कुल दुनिया के तअ ठगत हआ ।”

“ किसको ठग लिया ?”

“ केका तू छोड़अ आज तक , ई बतावअ ? ज़रा ई बतावअ कौन गोली देत हआ तू सबके साधि लेत हआ ।”

“जाओ गंगा नहाकर जल्दी आओ , समय कम ही है । आज काफ़ी बात करनी है इस घर के भविष्य पर । अब तीन सितंबर के बाद मेरा न होना कुछ तो असर डालेगा ही ।”

“ मुन्ना बहुत असर डालेगा । तोहार रहब बहुत सहारा रहा । ज़रा ई चौपाई समझाई दअ तब जाई ।”

“ माँ , रामचरितमानस के लेखन में थोड़ा स्त्री के प्रति न्याय की कमी है । भरत , रावण यहाँ तक भगवान तक की भी जो भी धारणायें कहीं - कहीं उद्धृत हैं उसमें स्त्रियों के प्रति तत्कालीन समाज में जो मान्यतायें थीं उस पर कई सवाल खड़े होते हैं । वात्सल्य है , सीता का सात्विक प्रेम है , नारी सौन्दर्य है पर स्त्री निंदा भी है । एक बात यह भी है कि निंदा मंथरा - सूपरणखा ऐसी निंदा का है न कि सीता , कौशल्या , सुमित्रा , अनुसूया , मंदोदरी , सुलोचना का । लेकिन अगर ध्यान से पढ़ो तो इसमें भी भगवीन राम के चरित्र का उद्घाटन अधिक है और राम की महिमा मूल में है । मंदोदरी भी राम का चरित्र ही उभार रही हैं । मूल बात यह है कि तुलसी की भक्ति में पुरुष भाव है । पुरुष रूप भगवान की उपासना । दास्य भाव भी पुरुष भाव ही है । मध्य कालीन युग में उपासना के तीन प्रमुख मार्ग थे : नारी भाव से पुरुष रूप भगवान की उपासना , पुरुष भाव से शक्तिरूप की उपासना और पुरुषभाव से पुरुष रूप भगवान की उपासना । पहली दोनों पद्धतियों में नारी या तो आती नहीं और अगर आती है तब एक बाधा के रूप में । शायद इसीलिये भगवती अनुसूया भी कहती हैं , “ सहज अपावन नारी । ” तुलसीदास कह देते हैं , ” जिमि स्वतन्त्र होई बिगरहिं नारी । ” मतलब नारी स्वतन्त्र होकर मार्गभ्रष्ट हो जाती है । अब सब व्याख्या का प्रश्न है , जितना ही पढ़ो मनन करो उतना ही दृष्टिकोण सामने आता है , यह बात भी लेखक की असीम क्षमता के पक्ष में जाती है । अब जग तो सियाराममय ही ही । सीता राम के पहले हैं , राम ने बहुत ख्याल और सम्मान रखा सीता का पर साथ ही जो दो सवाल तूने खड़े किये वह तो आज तक अनुत्तरित हैं ही । पर राम की मर्यादा , राम का जननायक चरित्र , महानतम नायक की प्रजा वत्सलता और जगत कल्याण की आकांक्षा तो अनुकरणीय है ही । जाओ गंगा नहाकर आओ ।”

“ मुन्ना एक बात बा ?”

“ क्या ? ”

“ तू नौकरी करै जात हअ एसे साधु- संतन के राहत बा । ”

“ वह कैसे ? ”

“ तोहार कौन भरोसा , काल तू गेरुआ पहिन के माघमेला में टेंट लगाई लअ और लागअ रामकथा बाँचै । चलअ रामकथा तक तअ ठीक बा । तू इहाँ तक तअ मनबअ नअ । कै देबअ शास्त्ररार्थ के आह्वान और धोषित कै देबअ केहू के कुछ आवत नाहीं । अब आईएएस के बरांड लेहे हअ , ओका भुनावै में तू माहिर हअ । तोहरे पास एक बरांड मिलि गवा बा जेका चाहअ ओका दरेरा मारि दअ । ईश्वर करै तू ठीक- ठाक मसूरी चला जा , अबअ दुङ्ग दिनि बा पता नहीं कौन नाटक फैलाई दअ । लोकिन मुन्ना इ सुनी लअ , अब कौनों नाटक न करअ । ”

“ पक्का जाऊँगा , चिंता न करअ । ”

माँ गंगा नहाने जाने लगी , उसको जाते हुआ पीछे से देखना मेरा बहुत आनंदायक क्षण होता था पर वह अब नसीब नहीं होगा । वह जा रही थी और मैं अपने यादों के तमाम इकट्ठा किये ढेर पर खड़ा हो गया जब वह जाती थी और मैं बारजे पर खड़ा होकर उसकी बनायी चाय पीते और उसको जाते हुये देखता था । उसके जाते ही मैंने सोचा , आज यूनिवर्सिटी में ऐलान करते हैं मसूरी जाने के दिन और समय का , आखिर हंगामा अगर न किया तब मज़ा ही नहीं आयेगा । मैं सुबह ग्यारह बजे ही यूनिवर्सिटी पहुँच गया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 370

मेरे विश्वविद्यालय के प्रांगण में प्रवेश करते ही लोग सम्मान से मेरा स्वागत करते थे । मैं अब मात्र एक व्यक्ति न था एक संस्था बन चुका था , एक प्रतीक बन चुका था , एक सफलता की गायरंटी देने वाला । मेरे परचम के नीचे विजयशरी अगर सुनिश्चित न भी हो तब भी बहुत संभाव्य थी । मैं एक संभाव्य का नायक था । मैं सफेद खादी के कुर्ते , नीली जीन्स और काले रंग का दुपट्टा लपेटे आगे बढ़ा ही था कि पीछे से सत्य प्रकाश सर आ गये । वह बोले , “ का अनुराग , अब तअ इस सब त्याग दअ । ”

“ क्या सर ? ”

“ ई लफंटूसी वाला परिधान , अब कोट - पैंट - टाई - सूट पहन के टहलो यार । ”

यह कहते वह आगे बढ़ गये । पीछे मुड़कर कहा , “ मेरी क्लॉस के बाद आना । एक घंटे में खाली हो जाऊँगा , तब तक अपनी राजनीति चमका लो । उसके बगैर तो मन मानेगा नहीं । मसूरी में कैसे काम चलेगा तुम्हारा, इलाहाबादी कभीं सुधरिहिं नअ , राजनीति के खुराक मिलब बहुत ज़रूरी बा । ”

यह कहकर सर आगे चले गये । यह समाचार सबके बीच फैल ही चुका था कि तीन सितंबर को इलाहाबाद का जत्था मसूरी जा रहा । मैं यूनियन हॉल पर खड़ा हो गया । यूनियन हॉल के छात्रसंघ - अध्यक्ष का कमरा मैंने कभी इस्तेमाल किया ही न था । मैंने सोचा आज यह कमरा ठीक से देख ही लेता हूँ । मैंने यूनियन हॉल में प्रवेश किया । यह वही हॉल था जहाँ पर मैं कक्षायें लिया करता था , मेरा नाम छात्रसंघ अध्यक्ष की पटिटका पर लिखा था । मैंने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दिया था पर वह कुलपति ने स्वीकार नहीं किया था । इस छात्रसंघ अध्यक्ष की पटिटका पर मैं अकेला छात्रसंघ अध्यक्ष था जिसने देश की महत्वपूर्ण परीक्षा पास की वह भी दो बार । मेरे आसपास भीड़ इकट्ठा होने लगी । मेरी सबसे बड़ी समर्थक सरला जोशी आ गयी । उन्होंने आते ही कहा , ” सर क्या देख रहे हैं । ”

“ सरला , तुम मुझसे जूनियर तो हो नहीं, मुझे सर क्यों कहती हो ? ”

“ सर , एक नायक हैं आप इस शहर के । आपसे हम सबने बहुत सीखा है और आगे भी हम आपसे उम्मीद लगाये बैठे हैं । सर , आप चले जाओगे परसों फिर क्या होगा ? यह कक्षायें कौन चलायेगा , कौन आवाज़ देगा हमको यह कहते हुये थके हुये कदमों से दौड़ने का मज़ा एक नायाब अनुभव है पर वह अनुभव प्राप्त करने के लिये पहले थकना पड़ता है । मैं तुमको थकाने की कोशिश करता हूँ पर तुम सब इतने मज़बूत हो कि तुमको थकाने की कोशिश में मैं ही थक जाता हूँ । तुमको मज़ा जीवन का मिलता है कि नहीं यह तो नहीं पता पर तुमको थकाने की कोशिश में हर दिन मुझे थक कर फिर दौड़ने का आनंद आ जाता है । सर , अब यह सब कहाँ नसीब होगा । आपकी भाषा से चुराये हुये शब्द हम सबकी ताक़त थे , वह ताक़त अब कहाँ मिलेगी ? ”

सरला की बात सुनते - सुनते मैं भी भावुक हो गया । मैं शहर छोड़कर जाना नहीं चाहता था , मेरा यहाँ बहुत मन लगता था । मेरा जीवन चल ही जायेगा । अगर लोगों से शरद्धापूर्वक भी पैसा लूँगा जिसमें पचास- सौ - दो सौ - पाँच सौ रुपया हो तब भी मेरी ज़रूरत भर का पैसा मिल जायेगा , यूजीसी मिल ही जायेगी । यूजीसी स्कॉलरशिप भी तीन हज़ार रुपया प्रतिमाह मिल जाती है । क्या बेवजह जाना मसूरी , पर कर्लूँ क्या , अगर नहीं गया तब तो माँ मार ही डालेगी धमकी दे- देकर । वैसे मोह- माया में लिप्त व्यक्ति कहाँ फाँसी लगाता है पर धमकी दे- देकर जीना हराम कर देगी । वैसे भी आत्महत्या कायर

व्यक्ति करते हैं, वह तो बड़े - बड़े शूरवीरों पर भारी है। मेरे ऐसे तथाकथित वीरता का दावा करने वाले का दिमाग़ दो पंक्ति से लाइन पर ला देती है।

सरला ने पूछा, “कहाँ खो गये सर?”

“सरला, जीवन वैविध्यपूर्ण है। इसमें इतने मोड़ आते हैं वह भी भँवरयुक्त मोड़...”

“सर, आप चुप क्यों हो गये?”

“चलो यह सब बात बाद की है। तुम अध्यक्ष का चुनाव लड़ना। यह जो रचनात्मक करान्ति है वह चलती रहनी चाहिये।”

“सर, कौन नेतृत्व देगा? किसमें इतनी ताकत है कि वह राम अशीष मौय ऐसे व्यक्ति से स्थापित उम्मीदवारों को समाप्त कर दे?”

“तुम हो ना?”

“सर, काश आपके विश्वास पर मैं खरी उत्तरती।”

“उत्तरोगी।”

“सर, सब आपको सुनना चाहते ही हैं। आप जाते - जाते एक बार सबको संबोधित कर दीजिये, एक उद्घोषण हो जायेगा आपका।”

“ठीक है, सत्य प्रकाश सर ने बुलाया है। मैं उनसे मिलकर आता हूँ। तब तक इन्तज़ाम करो।”

“सर, राम अशीष को कहती हूँ, वह माइक लगवाकर एनाउंस कराना आरंभ कर दे, तब तक आप अपना काम निपटाकर आ जाइये।”

“यूनियन हॉल का माइक लाल पदमधर की मूर्ति के सामने लगने लगा और थोड़ी ही देर में घोषणा होने लगी, “अनुराग शर्मा सर का मसूरी जाने के पहले का उद्घोषण भाषण दोपहर बाद 2 बजे छात्रसंघ भवन पर होने जा रहा है, आप सब लोग भारी तादाद में इकट्ठा होकर एक यात्रा के एक पड़ाव के गवाह बनें..”

मैं घूम- घामकर दो बजे यूनियन हॉल पहुँचा। एक भारी भीड़ मेरा इंतज़ार कर रही थी। मैं सीधा छात्रसंघ भवन की ऊपरी सीढ़ी पर खड़ा हो गया। एक विशाल भीड़ ने ज़िंदाबाद के नारे से मेरा स्वागत किया, भीड़ सदैव उन्माद देती ही है। मैं बोलने लगा..

“एक मातम है तो एक जश्न भी है। मातम मेरे जाने का है तो जश्न शहर की सफलता का भी है। पर एक जश्न और है, कुछ के अरमानों को पर लग गये, वह जा रहा। जो मातम में हैं वह मुझ पर यक़ीन रखें, जो जश्न में हैं

वह सावधान रहें । मैं चमत्कृत करता हूँ, मात्र कौतूहल के लिये नहीं । मैं किस्से लिखना चाहता हूँ और हर किस्सा रचनात्मक करान्ति की यात्रा से ही उत्पन्न होगा । मेरे बाद भी यह करान्ति चलती रहनी चाहिये । एक कोई नायक करान्ति करता है और फिर करान्ति नायक पर नायक उत्पन्न करती है । मेरे बाद भी यह करान्ति आगाज़ हर रोज़ करती रहेगी । छात्रसंघ चुनाव हम फिर लड़ेंगे । हमने राजनीति के दावानल में प्रवेश किसी मक्कसद से किया है । एक महिला इस बार छात्रसंघ अध्यक्षा होगी और वह इस परिसर में आने लानी किसी भी अराजकता पर प्रहार करेगी, मुझसे भी अधिक सशक्त प्रहार । एक महिला के जज्बे की ऐसी ताक़त मेरे पास हो ही नहीं सकती । एक बड़ी ताक़त सरला जोशी आपका नेतृत्व करेगी । यह आग जो जल रही है वह जलती रहनी चाहिये, हर बार ईंधन के लिये एक नया नायक आना चाहिये । जो आज जश्न में है उनको बता देना चाहता हूँ, कभी मेरी हार का जश्न बहुत देर तक मन न सका । मैं जीत कर जा रहा, मैं रहूँ या न रहूँ पर यह एक ज़िद की मशाल जलती रहनी चाहिये । न बाँध पायेंगी मुझको जमाने की बेड़ियाँ, मैं लौटकर फिर आऊँगा । एक था राजा एक थी रानी ऐसे किस्से लिखने के लिये हमने कलम नहीं उठायी है । हमारी कलम की हुरमत नायाब किस्से लिखेगी .. तपती ज़मीन पर हमारे संघर्ष की शबनम, जलते हुये जंगल में थम-थम कर ही सही बारिश की तरह आती हमारी जिद, गुबार पर टपकती हुई ओस बनाती अपना हस्ताक्षर हमारे जलवे के फूल बिखरेंगे, वक्त भी बेताब हमारे कदमों के निशान के क़द को मापने के लिये । खून को मक्तल में दबाने की खाहिश रखने वालों वह आज कूचा ओ-बाज़ार में सरे आम अपना हक़ माँग रहा । हमारे पंखों में ज़िद है कफ़स को तोड़ने की चाहे लोहा कितना भी गला कर मज़बूत क्यों न गढ़ा हो, हम जुगनुओं के परों से लिखेंगे उजाले की कहानी है जिसको पढ़ने को आफ़ताब भी बेताब होगा । मेरे कदमों को बाँध न पायेंगी जमाने की ज़ंजीरें, मैं लौटकर फिर आऊँगा । इस शहर की कहानी में अभी बहुत जान बाक़ी है । कुछ अधिक आज कहने का वक्त नहीं सिवाय इसके कि मैं तुमको छोड़कर नहीं जा रहा, मैं लौटकर फिर आने का वायदा करके जा रहा । धन्यवाद आपके सहयोग के लिये ।”

मैं चुप ही हुआ था कि एक शोर हर ओर होने लगा ...” सर, और बोलें.. इतने से काम नहीं चलेगा “... हर ओर शोर होने लगा ...

मैं माइक से थोड़ा पीछे हट रहा था सरला ने माइक लिया और कहा, “ सर प्यास इतनी ज्यादा है कि पूरा सागर पीकर भी यह प्यासे ही रह जायेंगे, थोड़ा और बोलिये सर ।”

मैं पुनः बोलने लगा,

“ याद है मुझे वह समय जब मैंने एक संकल्प लिया था इस शहर में शिक्षा की गुणवत्ता पर कार्य करने के लिये । मैं कर सका या न कर सका, यह तो नहीं

पता पर मैंने कोशिश बहुत की अपनी सीमित क्षमताओं के बावजूद । यह आत्मसम्मान का शहर है, इसका सम्मान बरकरार रखना हमारा दायित्व है । यह वह शहर है जहाँ फ़िराक़ नेहरू ऐसे कालजयी प्रधानमन्त्री को निर्देश देने का साहस रखते थे । एकबार कभी राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद इलाहाबाद आये और उन्होंने महाप्राण निराला से मिलने की इच्छा ज़ाहिर की । महादेवी जी को यह काम सौंपा गया कि आप उनको लेकर आइये । महादेवी जी ने निराला से राष्ट्रपति की इच्छा बतायी और कहा वह उनको लेने आयी हैं । महाप्राण ने कहा, वह राष्ट्रपति हैं तो मैं साहित्यपति हूँ । मेरी उनसे मिलने की कोई इच्छा नहीं, उनकी मुझसे मिलने की इच्छा है । अब कुँआ प्यासे के पास जाये यह तो नयी रीति तुम समझा रही । महाप्राण ने मिलने से इंकार कर दिया और राष्ट्रपति साहित्यपति से गुफ्तगू न कर सके । वह व्यक्ति जो जाड़े की सर्दी में अपना कोट सड़क के किनारे पड़े भिखारी को पहना देता था, अपनी सारी तनख्वाह ज़रूरतमंद को बाँट देता था बेपरवाह अपने घर के छूल्हे से ... संशय पर क्या लिखता है वह नायक मेरा ...

है अमानिशा, उगलता गगन धन अन्धकार;
खो रही दिशा का ज्ञान; स्तब्ध हैं पवन- चार;
स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर- फिर संशय,
रह - रह उठती जग जीवन में रावण - जय - भय
जो नहीं हुआ है आज तक हृदय रिपु-दम्य- शरांत ।

मेरे अंदर एक हूँक सी उठती है, एक संशय होता है कि कहीं मेरा मसूरी जाने का फ़ैसला गलत तो नहीं? मेरा नायक - महाप्राण निराला कई बार स्वप्न में मुझसे कहता है

तू अब आयेगा इस शहर में मेहमां बनकर
पता नहीं इस शहर पर क्या गुज़रेगी ।

पर मैं मेहमां बनकर नहीं आऊँगा .. मैं लौटकर फिर आऊँगा .. मुझ पर एतबार रखना .. हम हैं मुहब्बत के मजबूर मुसाफ़िर .. मुहब्बत हमारी ज़िंदगी है .. मुमकिन है कुछ घड़ी के लिये हमारे कदम बहक जायें .. पर संस्कार हमारे मज़बूत हैं.. जो मेरे जाने के जश्न में मशगूल हैं वह यह जान लें कश्ती मेरी किनारों पर सुकून पाती नहीं और मेरी कश्ती को ढुबाने लिये सागर को अभी और उफनना होगा । अरे अगर उफन भी जाये तो यह सागर क्या होगा, यह पल दो पल के तमाशे से मेरी पतवार को लड़ना आता है । मेरी ग़ज़ल खुद कहकर पढ़ने वालों, मेरी ग़ज़ल के सहारे ख़बाब देखने वालों, जब मेरी ग़ज़ल

के लफ्ज़ कभी लड़खड़ायें तब कहना मेरी अशारों से वह लौटकर फिर आयेगा ।”

मैं विश्वविद्यालय से घर आया । तक्रीबन पाँच बजे कमिश्नर साहब आये । पिताजी ने कमिश्नर साहब को मेरे जाने की सूचना दे दी थी । वह बहुत प्रसन्न थे । वह कल की फ्लाइट से दिल्ली जा रहे थे । देवानंद मुम्बई से दिल्ली पहुँच चुके थे । यह लोग प्रतीक्षा को लेकर मसूरी जा रहे थे । कमिश्नर साहब ने कहा, “मैंने कलेक्टर को कह दिया है । वह अनुराग को लेकर जायेंगे स्टेशन छोड़ने । कोई दिक्कत नहीं होगी । शाम को कलेक्टर साहब आ जायेंगे, आप जो भी चाहेंगे वह सब कर देंगे ।”

माँ सब सुन रहा थी, उनके जाने के बाद पूछा, ”लोग मसूरी जात हअ का छोड़ै बरे ?”

“अब यह जीवन का बहुत बड़ा अवसर तो है ही, यह सब बड़े लोग हैं । मामला लड़की का है । अच्छा तो लगता ही है साथ जाना । चलो तुम भी ।”

“हम चलि के का करब ।”

“देख लेना एकेडमी ।”

“हम शांति के संगे अउबै । ओका बातचीत के सहूर बा । हमका एतना सहूर बा नाहीं ।”

“तेरे पास सारा सहूर - ढंग है । आदमी सीखता ही है, तुम भी सीख जाओगी ।”

“मुन्ना उहाँ बेसहूरी से न रहअ, हअ तू थोड़ा बेसहूर मार्का । कुछ सहूर ढंग सिखअ । इ पगलैटी बंद करअ । उहाँ नेतागीरी न झाड़ै लागअ । पता चला उहूँ राजनीति शुरू कै देहे । तोहका चाणक्य बनै के बहुत शौक चर्चान रहत हअ । पता चला उहूँ लोगन के राजनीति सिखावै लागअ । सन्नि मारि के टरेनिंग केहेअ । एक बात और बताई देति हई, तू टरेनिंग छोड़ि के भागै के न सोचअ, हम बेकूफ नाहीं हई तोहार नसि - नसि जानित हअ । गुड़िया के बियाह होई जाई दअ तब तू चाहे जौन करअ । तू आईएस रहबअ ओकर ढंग के बियाह होई जाये । एक बात और ध्यान रखअ ।”

“क्या ?”

“प्रतीक्षा के पीछे - पीछे न घूमत रहअ । थोड़ा लाज - लिहाज़ रखअ । ज़िंदगी में लड़की देखे हअ नाहीं पता चला पगलाई गयअ ।”

मैं चुप रहा, मैं उससे बिल्कुल उलझना नहीं चाहता था । वह एक अलग धरातल पर आजकल जा रही थी । मैं उसका चेहरा देख रहा था कि उसने

कहा , ” मुन्ना ... “

“ हाँ माँ । ”

“ तीन सितंबर के रात कैसे बीते और चार सितंबर के सुबह केका हम चाय देब । ऐतना साल होई गवा , हर दिन सुबह चार बजे तोहका चाय के कप पकड़ाई के हम गंगा नहाई जात रहे .. अब का होये .. ”

उसके आँख से आँसू की धारा बहने लगी । इसी बीच मेरे मामा का पूरा घर आ गया । मामा ने माँ को रोते देखा , मामी भी रोने का नाटक करने लगीं.. अब मुन्ना चला जायेगा । उसी समय दरवाजे पर लाल बत्ती की कार रुकी । एसडीएम राम स्वरूप कार से उतरे । मामा के वह बॉस थे , मामा ने नमस्कार किया । राम स्वरूप ने मुझको सलामी ठोकी और कहा , “मेरी ड्यूटी कलेक्टर साहब ने लगायी है आपके स्टेशन छोड़ने के लिये । साहब देर रात आयेंगे । यह कार यहीं रहेगी । कार में वायरलेस है । आप जब भी कहेंगे , कोई न कोई आ जायेगा । ”

मामा- मामी - मोहिता दीदी किंकर्तव्यविमूढ़ सब देख रहे थे यह सोचते हुये ... मुन्नवा के एतना जलवा । मेरा छोटा भाई लग गया कार का वायरलेस समझने और चलाने ।

तीन सितंबर की शाम , एक बहुत ही कष्टकारी शाम । मैं हमेशा के लिये एक मेहमान बनने जा रहा था । लाल बत्ती की कार खड़ी थी । पीछे एक जीप थी । मेरा पूरा मुहल्ला खड़ा अपने - अपने बारजे पर और लोग सड़कों पर .. मुन्ना जा रहा मसूरी । पहला व्यक्ति इस मुहल्ले से जा रहा मसूरी की ओर और कई पीढ़ी एक साथ सोच रही काश यह दिन हमारे घर में भी नसीब हो । मैं जैसे ही घर से निकला कार की ओर बढ़ा मेरी माँ ने मेरी बुश्ट पकड़ ली और वह रोने लगी .. उसके एक -एक शब्द मेरे पिछले दो दशकों के सफरनामे के थे वह चुप होने का नाम नहीं ले रही थी .. पूरी भीड़ हतपरभ सुन रही थी ... एक आँसुओं का सैलाब हर ओर .. इतनी सशक्त भावनात्मक भाषा मैंने आज तक न सुनी थी । मुझे अपनी भाषा पर गुमान था पर आज तो जैसे उस पर सरस्वती का वास हो .. मेरा गला रुँध गया और हिचकियाँ आने लगीं इतिहास में , मेरे इतिहास में दर्ज हो गया आँसुओं से बहती सरस्वती

माँ ने मेरी क्रमीज़ को मज़बूती से पकड़ा हुआ था । उसकी आँखें से पानी की धारा गिरा रही थी । वह आज अपनी रौ में थी । मुन्ना , पता नहीं तुझे याद है या नहीं मिट्टी का एक घर हुआ करता था , वह खपड़ैल था । एक पुरानी गली थी , एक साइकिल का पुराना टायर था जो तेरे हाथों की जुगलबंदी से भागता था । पता नहीं वह टायर धूमता था या इक फक्त गली धूमती रहती थी । मेरे अंदर आज भी वह टायर ढौड़ता है जब तुझको चलते हुये मैं देखती हूँ । उस मिट्टी के घर की चारदीवारी के भीतर मेरे ख्बाब थे अनगिनत ख्बाब पता नहीं कितने ख्बाब कई बार आये और एक ख्बाब तो बार - बार आया जो तूने पूरा भी किया । इक महल बनाने की ख्बाहिश थी मेरी जो तुझे मुझसे दूर ले जा रही , तू तो इसी पुराने मकान में खुश था । आज तू जा रहा है और मेरे आँसू इस बिलगाव पर रुक ही नहीं रहे हैं । मुन्ना जब तू सोता था मैं तेरी आँखों पर अपने होंठ रख देती थी । मेरे होंठ महसूस करते थे तेरे ख्बाबों को और कई बार लगता था मेरे और तेरे ख्बाब एक ही हैं । मेरे होंठों ने हर बार महसूस किया एक अजब चिराग तेरी पुतलियों में जलता है जो थक कर भी हवा को हराने की ताक़त रखता है । यह हो सकता है एक माँ का भ्रम हो जो बेटे को चक्रवर्ती बनाने की महत्वाकांक्षा से उपजा हो । मेरी महत्वाकांक्षा तुझे मुझसे दूर ले जा रही , मुझे रोने का कोई हक़ नहीं है , तू तो जाना ही नहीं चाहता था , मैं तुझे जबरिया भेज रही हूँ । मैं तो यह भी नहीं कह सकती , मुन्ना तू मत जा । मेरे एक बार कहने पर तू छोड़ देगा वह सामराज्य जिसको पाने के लिये तूने अपने पैर खिड़कियों के सलाखों से बाँधे थे । बुद्ध तो आनुवंशिकता में पाया राज्य त्याग रहे थे पर मुन्ना तू.. तू तो अपने दम से बनाया सामराज्य त्याग रहा था , वह भी उनके लिये जिनकी सुध उनको पैदा करने वालों ने भी न ली हो । । मैंने तुझको बुद्ध बनने से रोका है अपने स्वार्थ के लिये , बेटा मुझे माफ़ करना । मुन्ना , तुझे इतिहास किस तरह याद रखेगा मुझे नहीं पता पर मैं इतना ज़रूर जानती हूँ तू कम से कम इस शहर के इतिहास में गुमनाम नहीं हो सकता । एक बात मैं ईमानदारी से कहती हूँ इतना अपराधबोध मुझे आज तक कभी नहीं हुआ जितना आज तुझको विदा करते समय हो रहा । मेरे स्वप्न में कई चीखें एक साथ आती हैं अनगिनत अपरिचित आत्माओं की चीख , यह कहते हुये हमारे भविष्य के साथ अन्याय हो रहा और उस अन्याय की ज़िम्मेदार तू है । मुन्ना , तू एक इतिहास बनाना चाहता था , एक ऐसा इतिहास जो तेरी असफलताओं के बाद भी प्रेरणादायी होता । राम ने राज्य त्यागा था पिता के आदेश के बाद तूने राज्य को स्वीकार किया है माँ के आदेश के बाद । हर कहानी में एक नायक होता है और नायक के चरित्र को उभारने के लिये खलनायक का होना आवश्यक ही है । अगर तू कभी तू ऐसा कृत्य कर सका जिस पर लोग लिखना चाहें तब खलनायक की तलाश की आवश्यकता नहीं होगी , मैं स्वयम् दिख जाऊँगी लिखने वाले को । माँ एक खलनायक की तरह कम ही दिखती है कैकेयी भी नहीं है । उसने तो चित्रकूट में सारा जतन किया राम राज्य स्वीकार करें । पर मैं

पिछले दो दिन से उधेड़बुन में हूँ पर मैं मोह - माया से इतनी ग्रसित हूँ ति यह कह नहीं पा रही तुम वही करो जो तुम्हारी धड़कनों को सुकून दे सके । तुम अपनी धड़कनों को आज़ाद करना चाहते थे और मैं उसको क़ैद करना चाहती थी । मैंने माँ होने का बेजा फ़ायदा उठाया । माँ होने का नहीं तेरा जो अतिशय प्रेम मेरे परति है उसका मैंने दुर्लपयोग किया । मैं जानती हूँ तू मेरे जिस्म पर आने वाले खरोंच की आशंका से डर जाता है, मेरे फाँसी लगा लेने की धमकी पर तो तू पूरी रात सोया ही नहीं होगा । मुन्ना ईश्वर को तुझे किसी और को देना चाहिये था, मेरी ऐसी स्वार्थी महिला इतने बड़े नायक की माँ बनने लायक नहीं है । मैं तेरे महानायक बनने के रास्ते की बाधक बनी हूँ । मैंने तुझे सत्यानंद मिश्रा बनाना चाहा जो तू बनना नहीं चाहता था । मैंने तुझे सारी तालीम दी पर मेरी तालीम के बाद जो तू बनना चाहता था, उसके बजाय मैंने वह बनाना चाहा जो तुझे नहीं मुझे सुकून दे सके । मैंने तुझसे तेरा जीवन छीना है, बेटा मुझे माफ़ करना ।

मैं आवाक रह गया । मुझे माँ के अंदर चल रहे तूफान का एहसास ही न था । एक अजब गंभीरता थी माँ के भीतर । मैंने उसके आँसुओं को पोंछते हुये कहा, “ माँ अपराध बोध किस बात का ? यह तेरा एक परिपक्व फ़ैसला है मेरे जीवन को लेकर । मैं फ़ैसले अक्सर ग़लत ही करता हूँ, अगर तेरी राय उसमें शामिल न हो । तूने वही किया जो मेरे हित में था मेरे हङ्क में था । मैं आत्म प्रशंसा का भूखा व्यक्ति हूँ । मुझमें बुद्ध ऐसा सोचने की भी क्षमता नहीं बुद्ध तो कोई बन ही नहीं सकता । आज मैं जो भी हूँ तेरे ही कारण हूँ, मेरा कोई अस्तित्व नहीं होता अगर तू न होती । मुझे याद है वह समय जब मेरे ऊपर क़ातिलाना हमला हुआ था । मैं कितना डरा हुआ था और तू कितनी बहादुर थी, तुझे अपने सत्कर्म पर भरोसा था । यह दिन मुझे प्राप्त हो इसके लिये तूने अपने सत्कर्म त्यागे, अपनी मोक्ष की अभिलाषा की कुर्बानी दी । मेरे कानों में आज भी तेरी वह लाइन गूँजती है, मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये । यह अपराध बोध की बात कहकर तूने मुझे अपराधी बना दिया । पता नहीं इस अपराध का शमन कैसे होगा । मैं अपने मन से मसूरी जा रहा । अगर मेरा जाने का नहीं होता तब मैं कभी न जीता चाहे तू कितना भी कहती । हो सकता है यह सब मेरा झरामा ही रहा हो कि मैं नहीं जाऊँगा ताकि लोग मुझसे विनती करें । मैं कोई कम फ़राड़ तो हूँ नहीं, तू तो मेरा नस - नस जानती है । माँ यह हङ्कीक़त है मैं तेरे कहने से नहीं अपने मन से जा रहा । आंटी भी बहुत परेशान थी मेरे न जाने से । उनका भी संदेश ऋषभ लेकर आया था । बस माँ मुझे जाने की इजाज़त दो, गले लगाकर दो । मेरी अब वह सुबह नहीं होगी जब पक्षियों के कलाम से ज्यादा रुहानियत तेरी उस आवाज़ में थी जो रोज सुबह चार बजे कहती थी, ” मुन्ना । ” कल से वह आवाज़ नसीब में न होगी । मैं तुझसे वायदा करता हूँ मैं कोई ऐसा काम नहीं करूँगा जो तेरी परवरिश पर कोई सवालिया निशान लगाये । मेरे लिये तेरा मुझ पर यङ्गीन होना ही मेरे

जीवन की श्वास है जिस दिन यह यक़ीन उठ जायेगा , यह जीवन तमाम अर्थों को समाकर भी अर्थहीन हो जायेगा । सब कहते हैं , मुन्ना बहुत नालायक था उर्मिला ने ठोंक- पीटकर ठीक कर दिया , इससे बड़ा कोई दूसरा सत्य नहीं है आज की मेरी उपलब्धि को व्याख्यायित करने के लिये । बहुत मायूस मत होना मेरे जाने के बाद , मैं लौटकर फिर आऊँगा । एक अजीब शख्सियत हैं माँ तेरी जो तुझे सबसे अलग करती है , तृफ़ानी समंदर में एक लंगर का ठहराव रखती है तू । मुझे आशीर्वाद दे मेरे भीतर भी वह ठहराव आये , मुझे अपनी अपरिपक्वता से निजात मिले । “

यह कहकर मैंने हाथ माँ तो चरणों की तरफ़ बढ़ाये , मुझे एक जन्नत की हक़ीकत का एहसास होने लगा । मैं कार पर बैठ गया , मैं पीछे मुड़कर देखना नहीं चाहता था मैं जानता था आज अश्कों की बरसात का मौसम आया है ।

मेरी कार मेडिकल कालेज वाले गोल चौराहे को पार करके जैसे ही हनुमान मंदिर के चौराहे पर पहुँची मुझे डीजे होस्टल का जुलूस दिख गया । वह सब ढोल - नगाड़े ताशों के साथ थे । जय हो , जय हो हनुमान जी की जय हो । दो डीजे होस्टल के सफल छात्र हनुमान मंदिर से दर्शन करते पैदल चलने लगे थे स्टेशन की ओर । हर छात्रावास के लोग थे , हर ओर एक हंगामा था । सिविल लाइंस में लोग खड़े होकर भीड़ को निहार रहे थे । मैं भी कार से उतर गया । मेरे उतरते ही शोर होने लगा । शोर और तीव्र होने लगा । मेरी कोचिंग के तमाम छात्र साइकिलों से आगे बढ़ रहे थे । मुझको देखते ही वह पैदल चलने लगे । हम सब पैदल स्टेशन की ओर बढ़ने लगे । एक बहुत ही बड़ी ध्वनि हवा में गूँजने लगी .. इलाहाबाद .. इलाहाबाद .. । प्लाज़ा टॉकीज के सामने राजेश्वर तिरपाठी दिखे वह अपने कॉफिले के साथ थे वह भी पैदल चलने लगे । सिविल लाइंस पार कर रहे थे हम लोग । पैलेस थियेटर , अंबर कैफ़े , कॉफी हाउस होते हुये एक लगातार बढ़ता हुआ कॉफिला स्टेशन परिसर की ओर बढ़ने लगा । ढोल - ताशे - मंजीरे बज रहे थे । प्लेटफ़ॉर्म पूरी तरह से छात्रों से भर गया था । वह समय नज़दीक आ गया जब दरेन चलने वाली थी । पिताजी ने मुझे गले लगाया और कहा , “ मुन्ना अपना ख्याल रखना , अब हम तुम अलग हो रहे इतने वर्षों के बाद । ” मैंने कहा , “ आप घर जाइये , माँ या ख्याल रखियेगा वह आज बहुत परेशान होगी । ”

दरेन चलने लगी , इलाहाबाद पीछे छूटने लगा । वह शहर , एक नायाब ख्याबों का शहर , मेरे ख्याबों का शहर , मंतरों से अभिन्निरत शहर पीछे छूट गया । मेरा शहर से एक रिश्ता था , रिश्ता था नहीं रिश्ता है पर वह रिश्ता मैं लाख कहुँ वह मेरी पलकों में बसा शहर है पर अब कमज़ोर हो रहा .. बड़ा बेरहम होता है सफ़र ये वक्त का नये रिश्ते बना देता है पुराने रिश्तों की बुनियाद पर । मैं भी नये रिश्तों की तरफ़ बढ़ रहा था । मैं नये जीवन में प्रवेश कर रहा

था । मैं वहाँ पहुँच गया जिसका स्वप्न देखा था बहुत साल पहले जब पहली बार आईएएस शब्द से रुबरू हुआ था । हर एक की खाहिश में बसा “लबासना” .. लाल बहादुर शास्त्री एकेडमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन .. बहुत इंतज़ार किया था इस दिन का बाहर से देख कर ही आङ्गादित होने लगा .. पहाड़ों की रानी मसूरी पर बसा लबासना .. एक नया जीवन मेरा इंतज़ार कर रहा था । जैसे ही मैं उतरा परिसर के अंदर देखा कई लोग चलकर आते हुये शायद वह पिछले साल के सफल लोग थे .. कोट - पैंट - टाई में चलते हुये लोग .. गर्व उनकी चालों में था और एक अभिजात्यीय संस्कार उनकी भाव - भंगिमा में .. एक यात्रा पूरी हुई .. एक सफर तमाम रातों का सफर ... तमाम अरमानों का सफर .. मुंजमिद ख्वाबों का प्रतिफलन इलाहाबाद से मसूरी का सफर ... पीछे मुड़कर देखता हूँ वक्त के निशाँ ... उसमें ख्वाबों के पैरों के निशाँ हैं आपस में उलझे हुये , मिले हुये .. मेरे परिवेश की चाहत के निशाँ मेरे मन में एकाएक ख्याल आया .. क्या यही है गैर मामूली दास्तान बस इस पहाड़ पर पहुँच जाना यह शाम का वक्त था । एडमिन बिल्डिंग में नाम - पता - ठिकाना एक बड़ी सी शीट पर लिखा था । उस पर टिक लगा और एक कमरा एलॉट किया गया । एलॉटमेंट के कार्य में पिछले साल के आईएएस लोग मदद कर रहे थे । मैं चाभी लेकर बाहर आया और मसूरी को निहार रहा था .. अशोक मेरे पास आया और बोला सर कमिश्नर साहब प्रतीक्षा के साथ अभी - अभी आये हैं.. प्रतीक्षा

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 372

मैं एडमिन ब्लॉक की तरफ गया । वहाँ पर कमिश्नर साहेब थे और देवानंद प्रतीक्षा का सामान रखवा रहे थे । प्रतीक्षा को कमरा एलॉट हो गया । कमरा मुझे भी दे दिया गया । हर कमरे में दो - दो प्रशिक्षु के रहने की व्यवस्था थी । ज्यादातर लोग अंग्रेज़ी की बोल रहे थे । माहौल पूरा अंग्रेज़ीयत का था । फ़ॉर्म भी अंग्रेज़ी में ही भरना था । मैंने फ़ॉर्म हिंदी में भरा । अगले दिन सुबह साढ़े दस बजे ऑडिटोरियम में सबके एकत्र होने का निर्देश दिया गया । केयरटेकर ने बता दिया मेस कहाँ पर है और खाने - नाश्ते का समय क्या है । मैं रात को कमरे में आ गया । आज घर की याद बहुत आ रही थी । कई बार मन में आया , क्या बेवजह घर छोड़कर यहाँ आ गया । वहाँ मेरा नायकत्व था , यहाँ कौन मुझे पूछने वाला है । घर की याद सताने लगी । मेरा रुम पार्टनर दास्त के जुगाड़ में था । उसने मुझसे पूछा , “ पीते हो ? ”

“ नहीं मैं नहीं पीता । ”

“ क्यों ? ”

“ अब इस क्यों का कोई जवाब मेरे पास नहीं है । ”

“ पीना शुरू करो , यह पीने - पिलाने से संबंध प्रगाढ़ होते हैं । ”

“ किससे संबंध प्रगाढ़ होते हैं ? ”

“ जो काम के आदमी होते हैं । ”

“ काम का आदमी कौन है ? ”

“ जो जीवन में आगे ले जाते हैं । ”

“ जीवन में आगे कौन ले जाता है ? ”

“ अब मेरे पास इतना समय नहीं है कि तुमको बताऊँ कि जीवन में आगे कैसे जाना होता है । समय रहते सीख जाओ नहीं तो पछताओगे , बाईं द वे तुम्हारा नाम क्या है ? ”

“ अनुराग शर्मा । ”

नाम सुनकर उसके स्वर बदल गये ।

“ अनुराग शर्मा , हिंदी वाला , आईएएस टॉपर , बीबीसी समाचार जिस पर हुआ था । ”

“ हाँ । ”

“ तू तो फंडू आईटम हो यार । अभी चलता हूँ दारू के जुगाड़ में लौटकर आता हूँ तब तेरी कहानी सुनता हूँ । ”

शाम को मेस में गया । पहली ही टकराहट सिद्धांत शरीवास्तव से हो गयी । मुझे देखते ही बोले , ” ऐ फ्राड कितना डरामा करते हो । यह बताओ यह कहानी - वहानी छपवाने का काम पहले से ही शुरू कर दिया । ”

मैं कुछ न बोला । रितेश सिंह , सिद्धांत शरीवास्तव , संजीव टंडन , राजीव सिंह कई लोग मिल गये जिन्होंने मेडिकल मेरे साथ कराया था । छुरी - काँटे - चम्मच से खाना हम में से किसी को नहीं आता था । सिद्धान्त को आता था । हम लोग उनकी नकल करके खाने का असफल प्रयास कर रहे थे । रात में मैं लौटकर अपने कमरे में आया । रात सो गया और चार बजे नींद टूट गयी । मैं अपने बिस्तर से उठा और कमरे की खिड़की खोलकर बाहर देखने लगा ।

मेरी पहली सुबह इलाहाबाद के बाहर । मेरी आँख खुल गयी , ठीक चार बजे । इतने साल हो गये सुबह के चार बजते , यह पहली सुबह इतने सालों के बाद जब वह आवाज़ न थी । रात के सन्नाटे को चीरते हुये “ मुन्ना ” । मैं मसूरी के अपने होस्टल की खिड़की से बाहर देखने लगा । हर ओर पहाड़ी ही पहाड़ी ।

हवा का एक शीतल झाँका मेरे घने बालों को चीरता हुआ मेरे जिस्म को कँपा ऐसा गया । दूर कहीं व्यग्र चाँद पेड़ की शाखों से संवाद करता हुआ .. वादियों में रात देखती ख्वाब और पेड़ की शाखों से ओझल होता पुनः दिखता चाँद मेरी आँखों से लुकाछिपी करता अपनी ही पगड़ंडी पर आगे चलता , कुहासे में लिपटे हुये कुहसार वादियों में कतरा - कतरा उत्तरती सूरज की रहमत .. मैं अपलक देखता सूरज का आता साम्राज्य दूर कहीं आठ श्वेत घोड़ों के रथ में सवार बेपरवाह इलाहाबाद के बोसीदा मुहल्ले की सुबह से जहाँ माँ चीख रही यह कहते हुये मैंने उसको उसकी इच्छा के खिलाफ भेज दिया , उसका हक्क है अपने जीवन पर , मैं बेवजह आँसू बहा रही उसके जाने पर जो जाना नहीं चाहता था । कितना मुश्किल होता है अपने रक्त को अपने से जुदा करना ... एक असीम पीड़ा का बोध माँ को , था तो औरों को भी पर माँ की पीड़ा में मातृत्व के साथ यह भी शामिल था कि उसने मुझे बाध्य करके भेजा । मुझे दूर दिखी एक लड़की घोड़े पर सवार घोड़े को दौड़ाती हुई , यह कौन है ? मैं कमरे से निकल कर घुड़सवारी के मैदान की तरफ बढ़ा । वह घोड़े के टापों को तेज और तेज कर रही थी । मैं घुड़दौड़ के मैदान में प्रवेश कर गया , वह घोड़े से उतरी और जैसे ही हेलमेट को उतारा उसके कानों के कुंडल दिख गये ... वह सुरुचि मिश्रा थी .. इलाहाबाद में नाम कमायी लड़की ... यहाँ घोड़ों को दौड़ा रही थी । मुझको देखते ही कहा , “ अनुराग तुम आ गये , मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी । तुम्हारा induction programme में ही coordinate कर रही हूँ । यह एक नायाब जगह है , यहाँ आना एक दैवीय अनुभव है ... ”

सुरुचि ने कहा , “ साढ़े सात बजे मेस पर मिलते हैं । तुम मेरा इंतज़ार करना । मैं साढ़े सात बजे मेस में पहुँच गया । प्रतीक्षा भी आ गयी थी । मैं सुरुचि का इंतज़ार कर रहा था । प्रतीक्षा ने पूछा , किसका इंतज़ार कर रहे ? ”

“ सुरुचि मिश्रा का । ”

“ क्यों ? ”

“ वह इलाहाबाद की ही लड़की है और आज का induction कोर्स वही संचालित कर रही है । ”

सुरुचि आ गयी । उसने एकेडमी के तौर - तरीके के बारे में बताया और ज्यादातर राय ऐसी थी जो मुझे अजीब लग रही थी ।

हम लोग induction कार्यक्रम में पहुँचे । वहाँ पहली ही दुर्घटना घट गयी । एक डॉक्टर साहब थे , शायद आन्ध्रप्रदेश - उड़ीसा के थे । वह लेट हो गये । उनको मेमो इशू हो गया । पता चला कि यहाँ हर गलती पर मेमो जारी हो जाता है । एक महान विचारक शिव बाबू सक्सेना थे । वह सिविल लिस्ट रटे थे , वह सौ - पचास अफ़सरों का नाम रटे थे । कितने साल में कौन कहाँ पहुँचेगा यह सब जानते थे । उन्होंने भयाकरान्त कर दिया .. “ डॉक्टर साहब

आपका increment गया । यह सर्विस बुक में रख दिया जायेगा । तीन मेमों पर एक increment आपका गया । आप बैच में पीछे हो जाओगे । आपका भविष्य तो अब गया । डॉक्टर साहब हदसिया गये । सज्जन व्यक्ति थे, कई बार की कोशिश के बाद यहाँ तक पहुँचे थे उनको तो दिन में तारे नज़र आने लगे । कुछ देर से आने की इतनी बड़ी सजा । मैंने पूछा, “कोई निदान है इसका ? ”

शिव बाबू - “हाँ है, माफ़ीनामा लिखो ।”

डॉक्टर साहब - “माफ़ीनामा लिख दिया तब तो गलती पुरख्ता हो गयी ।”

सिद्धांत - “कुछ नहीं होगा । मस्त रहो । यह सब फ़र्ज़ी काग़ज़ है फाड़कर फेंक दो ।”

शिव बाबू - “डॉक्टर साहब, बहुत भारी विपत्ति है । यह काग़ज़ सर्विस बुक में न जाये यह प्रयत्न करें ।”

इतने में अशोक आ गया । वह बोला, “देखो सत्ता एक सांड है जिसने इसकी सींग को ठीक से पकड़ लिया वह विजयी हो जाता है । अपने हाथों में ताकत बढ़ाओ और इस सांड रूपी सत्ता पर चढ़ जाओ तथा जीवन का आनंद लो । यह जीवन आनंद के लिये बना है । अगर हर बात पर भय करेंगे तब आनंद नहीं ले पाओगे । एक कायर व्यक्ति कभी आनंदित नहीं हो पता क्योंकि वह हरदम आने वाली पराजय की आशंका से ग्रसित रहता है । यह हरदम आने वाली आशंका से डरना बंद करो, यह मेमो बगैरह सब सामान्य सी बात है । मैं पहले यूपी में एसटीओ था । मेरे को बहुत मेमो इशु हुये, मैंने बाबू को पटाया और यह फ़ड़वा दिया । थोड़ा बहुत खर्च लगता है पर काम बन जाता है । मैं तो अपना एसीआर भी ठीक करवाया था ।”

डॉक्टर साहब के जान में जान आयी ।

“वह कैसे करवाया ? ”

“मुझे मिला था Good मैंने बाबू से आगे V लगवा दिया और हो गया “V Good ” ।

“इसमें खर्च लगा था ? ”

“देखो डॉक्टर साहब बगैर खर्च के तो कुछ होता नहीं । इस जीवन में हर वस्तु की कीमत है । सबसे बड़ी कीमत शांति की है । अब सारा जीवन इस बात के लिये समर्पित होगा कि जीवन में अस्थिरता एवम् अशांति न हो । यह मेमो बहुत आसान काम है, कम खर्च में काम हो जायेगा । यह काम ज़बानी खर्च में ही हो जायेगा ।”

“एक और सलाह देता हूँ ? ”

“ क्या ? ”

“ आप मेमो - ओमो खाते रहो , एक बार में पूरी सर्विस बुक ही उड़ा देंगे ।”

“ अगर वह उड़ गयी तब मेरे रिकार्डर्स का क्या होगा ? ”

“ होना क्या है , आप कभी रिटायर ही नहीं करेंगे । किसी को पता ही नहीं आप पैदा कब हुये थे । जब पैदा होना ही नहीं पता तब रिटायर कैसे होंगे । मेरे एक जानने वाले थे उमाशंकर लाल । वह इनकम टैक्स में बाबू थे । वह अपनी उम्र सर्विस बुक में कम कर दिये थे ।”

“ क्या किये थे ? ”

“ उनकी जन्मतिथि थी 3-5-51 . वह कर दिये 3-5-59 .

1 को नौ करने में रखा क्या है ? ईश्वर ने भी 3-5 आदमी को 3-5 के दिन ही पैदा किया । पर एक बात समझ लो यह बात हमारे तुम्हारे बीच रहे । यह शिव बाबू सब फैला देगा , यह बहुत ख़तरनाक आदमी है । आज शाम को हीरा चायवाले पर चाय - समोसा पर चर्चा करेंगे । आप की पैदाइश सबकी है ।

“ 67 की । ”

“ आप बताओ , आपको 69 , 87 में क्या चाहिये , दोनों हो जायेगा । ”

“ 87 कैसे होगा ? मेरी उम्र इतनी कम कैसे ? ”

“ चलो 69 करते हैं , दो साल ही सही कुछ तो मिला । ”

“ आप किये हैं यह ? ”

“ यही समस्या है इस देश में वैद्य की डिग्री माँगते हैं लोग । एक राज की बात बतायें अगर न बताओ तब । ”

“ बताओ . शिव बाबू 5-6 साल खाया है । ”

“ कैसे पता ? ”

“ यह मेडिकल वाले दिन मेरे साथ था और बहुत डरा हुआ था कि कोई विधि ऐसी तो नहीं कि उम्र का पता चल जाये । ”

“ एक बात और बतायें । ”

“ हाँ । ”

“ उम्र एक - दो साल सब खाये हैं । ”

“ लड़कियाँ भी खायीं हैं । ”

“ तुम यार लड़कियों के चक्कर में ही लगे हो । पहले अपना काम संभालो । यह मेमो देखो पहले । ”

सिद्धान्त ने आकर भाषा का चमत्कार आरंभ कर दिया । अशोक का सारा ज्ञान वहीं रुक गया । दो दिन बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम था । कैलाश पांडे जी को गाना गाने का मन था पर वह कहें क्रिससे । अशोक के हाथ व ह लग गये । अशोक उनको लेकर राजेश मन्मथनाथ के पास ले गये । राजेश मन्मथनाथ एक अलग पहुँची हुई चीज़ थे, गजबै आइटम थे वह । ज़हीन के साथ- साथ बड़े मज़दार आदमी थे । वह मोटे चश्मे में आँख घुमा- घुमाकर आदमी तलाशते थे टाइम पास करने के लिये । उनके कमरे के ही बगल कैलाश पांडे जी थे और सामने राकेश गोयल थे । वह उनके कमरे में ही पड़े रहते थे । वह चार्टर एकाउंटेंट थे । अशोक ने पूछा, “यह कौन सा जानवर होता है ? ”

राजेश मन्मथनाथ- “ क्या जनावर ? ”

“ मतलब यह एकाउंटेंट वाला । हमारे इलाहाबाद में तो इसकी पढ़ाई होती नहीं । ”

सिद्धान्त - “ यह वेस्ट लैंड में क्या होता है यह बताओ सिवाय बेवकूफ़ी के । ”

“ यार, तुम अपना काम करो । ”

“ हम अपना काम ही कर रहे । ”

अशोक - “ यह लगता है कुछ गिनती - विनती की पढ़ाई होती है । ”

“ छोड़ो पहले कैलाश जी के गाने का इंतज़ाम करते हैं । ”

“ कैसा गाना गाते हो ? ”

“ हम मुहम्मद रफ़ी का गाना गाते हैं । ”

“ कोई गाना याद है ? ”

“ नहीं । ”

“ तब कैसे गाओगे ? ”

अशोक ने कहा चलो मुहम्मद रफ़ी के गाने की किताब ख़रीदते हैं । तीनों चले गये मसूरी मॉल रोड मुहम्मद रफ़ी के गाने की किताब ख़रीदने ।

सुरुचि मिश्रा कार्यक्रम का संचालन कर रही थी , उसके कानों के बड़े - बड़े कुंडल लहराते थे जब वह अपना सिर धूमाती थी । मेरे मस्तिष्क में उसकी वाद-विवाद प्रतियोगिता की ख्याति धूमने लगी । मैंने उसको सुना तो कम ही था पर यह सब लोग कहते थे एसएमसी इलाहाबाद से अपना डिबोटिंग कैरियर आरंभ करके उसने इलाहाबाद के भीतर और बाहर अपनी वाकपटुता के तमाम झंडे गाड़े थे । वह करीम कलर की साड़ी में बहुत आकर्षक दिख रही थी , जब बोलती थी तब तो वह एक अलग विश्व का प्रतिनिधित्व करती थी । मुझे उसकी वह लाइन यह याद आ गयी जब उसने कहा था , “ अनुराग मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ । ” सारे पुरुष प्रशिक्षु बंद गले के काले सूट में थे और लड़कियाँ तक़रीबन सभी साड़ी में । सुरुचि ने कैबिनेट सचिव अरुण बधावन को कार्यक्रम के उद्घाटन के लिये आमंत्रित किया । अरुण बधावन के सर पर बाल आगे से काफ़ी कम हो गये थे पर ऊँचे क़द के एक आकर्षक व्यक्ति थे । उन्होंने शीघ्र ही अपने भाषण के औपचारिक भाग को संपूर्ण किया और फिर अपनी रौ में आ गये , “ एक देश जो विश्व में अपना एक अलग स्थान बनाना चाहता है , एक अप्रतिम स्थान । उसे कुछ न थकने वाले शूरवीरों की आवश्यकता है । उनके चुनाव के लिये एक अति कठिन परीक्षा प्रणाली का चयन किया गया । उस प्रणाली के बनाये मापदंडों को संतुष्ट करके तुम सब यहाँ तक पहुँचे हो । तुम सब विपरीत परिस्थितियों में नज़्म गढ़ने वाले लोग हो जिनकी नज़्मों का आने वाले वक्त के साज इंतज़ार कर रहे । तुम लोग आज के दिन इस देश की सबसे बड़ी अमूल्य निधि हो और देश को तुमसे बहुत उम्मीदें हैं । आप सबने जीवन को तपा कर अपने आप को एक अनुशासित - नियमित जीवन प्रणाली के तहत जीवन जीकर अपने आपको निर्मित किया है । आप सबमें आदर्शवादिता है । बग़ैर आदर्शवादिता के व्यक्ति कभी उत्तुंग शिखरों की ओर अग्रसरित नहीं हो सकता । पर आदर्शवादिता का प्रस्फुटित होना और जीवन में उसको बरकरार रखना दो अलग - अलग वस्तुयें हैं । मैं आशा करता हूँ आपने जिन महान लक्ष्यों को लेकर जीवन आरंभ किया है वह लक्ष्य आपको सदैव याद रहेंगे । ”

एक सम्मोहन था अरुण बधावन साहब के उद्घोषन में । वह बोलते - बोलते रुक से गये , सभागार का सिंहावलोकन किया और पुनः बोलने लगे ..

“ सत्ता एक नशा है अगर जीवन में कुछ करना चाहते हो तो इस नशे से दूर रहने की कोशिश करना । अहंकार एक शतरु है इसका नाशवान होना आवश्यक है । मैं यह बात पुनः कहूँगा और पुरज़ोर तरीके से कहूँगा , तुम सब आज के दिन इस देश के सबसे ज़हीन व्यक्ति होने का प्रमाण पत्र प्राप्त कर चुके हो और इस विकासशील देश की सबसे बड़ी संपदा हो । तुम्हारे पुरखों के संचित कर्मों का प्रतिफलन है आज तुम इस महान विशाल सभागार के हळदार बने हो , अपने पुरखों की आत्माओं को अपने पर गर्व करने देना ,

उन्हें यह अफ्रसोस न हो मेरे रक्त ने मुझे शर्मसार किया है । स्वागत है तुम्हारा एक नये विश्व में जहाँ गर्व है पर साथ ही समाज की एक बड़ी ज़िम्मेदारी भी तुम्हारे कंधों पर है । ईश्वर ने तुम्हें अपने के लिये ही नहीं तमाम लोगों के लिये जन्म दिया है । मुझे आशा है तुम इस देश और समाज की उम्मीदों पर खरे उतराओगे । शतशीलसंवरणशील बनो, आत्मोसर्जित होने का प्रयास करो, अपने आप में नवोन्मेषी प्रवृत्ति लाओ । तुम्हारा एक - एक फ़ैसला एक बड़े वर्ग के भविष्य का निर्धारण करेगा । तुम संविधान के नीति निर्देशक तत्वों के क्रियान्वयन के सबसे बड़े सूतराधार हो । देश को तुमसे उम्मीदें बेवजह नहीं हैं, ईश्वर ने तुम्हें चुना है तमाम योग्य लोगों को दरकिनार करके । यह ईश्वर की चाहत है कि तुम लोगों के लिये कार्य करो । एक इतिहास तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है, तुम महात्मा भी बन सकते हो और करान्तिहंता भी पर एक बात का ख्याल रखना किसी भी रास्ते को चुनते हुये तुम्हारी माँ का रक्त अफ्रसोस न जताये तुम्हारे कृत्यों से । मैं एक उम्मीद के साथ आपका स्वागत करता हूँ और फ़ाउंडेशन कोर्स का शुभारंभ करता हूँ ।”

बहुत ही ऊर्जावान उद्घोषन था बधावन सर का । हर एक को अंदर तक छू गया । हमने अपने फ़ॉर्म भरने की क्रवायद पूरी की । शाम को इलाहाबाद के लोग बाहर की कैंटीन पर मिले । अशोक ने पूछा, ” सर आपने अपने आईपीआर के फ़ॉर्म में क्या भरा ? ”

“ यार, जब कुछ है ही नहीं तब भरेंगे क्या ? लिख दिया शून्य । ”

“ सर मैंने भी निल भरा । ”

“ सर, बहुत लोग फ़ॉर्म में बहुत लंबा - लंबा भरे । एक तो अपने पिताजी के बैंक से दो लाख निकाल कर अपने नाम जमा करा लिये वह भी घोषित कर दिया । ”

“ ऐसा क्यों किया ? ”

“ लोग कह रहे हैं कि संपत्ति घोषित करनी चाहिये । ”

“ ऐसा क्यों ? ”

“ सर, हो सकता है बाद में पैसा कमायेंगे तब वह इसी में दिखा देंगे कि मैं खानदानी रईस हूँ । सारा कुछ पुरखों का है । सर, एक बात समझ नहीं आई । ”

“ क्या ? ”

“ सारी गरीबी इलाहाबाद में ही है । धन का प्रवेश इलाहाबाद में होता नहीं और उत्पादन के साधन का समुचित उपयोग नहीं होता । इसीलिये यहाँ के छात्र सब दरिद्र घर से आते हैं । यहाँ एकेडमी में जितने दरिद्र है ज्यादातर

इलाहाबाद के ही हैं । बाहर के शहरों के तो रईस लोग हैं । हर कोई दावा कर रहा वह सात पुश्तों से धनी है । सबके यहाँ पाँच बिगहा पुदीना झुरा रहा । सर ”

“ क्या हुआ ?”

“ जाने दीजिये ..”

“ बताओ नअ ।”

“ प्रतीक्षा काग़ज में लिखकर आई थीं आईपीआर में भरने के लिये । वह भी काफ़ी भरीं । मुझे लगता है सर ...”

“ क्या लगता है ?”

“ प्रतीक्षा के दोनों भाई इसी के नाम इन्वेस्टमेंट कर दिये हैं अपना और अब डिस्क्लेयर करके पक्का कर देंगे । वैसे सर यह आयेगा तो इलाहाबाद ही सब कुछ । सब है तो अपना ही । ”

“ हो सकता है हो भी , उसके यहाँ पुरानी ज़मींदारी है यह उसके पिता ने मेरे पिताजी को बताया था ।”

अशोक ने अनामिका से कहा तुम अपना आईपीआर रिवाइज कर दो । लिख दो कृषि योग्य भूमि सौ बिगहा ।”

अनामिका - “ एक धूर ज़मीन नहीं है सौ बिगहा कहाँ से लिख दें ।”

“ अरे बाद में सब हो जायेगा । लूट- पाट

करना कुछ ही सालों में हो जायेगा , देखो सब लिख रहे तुम भी लिख दो ।”

“ तुम लिख दो , करना लूट- पाट । हमको अपनी विद्या मत दो ।”

“ चलो मत लिखो , हम तो भविष्य सुधार रहे थे पर आग अँधियार होता है जब तब मति भगवान हर लेता है । ”

“ अपना भविष्य सुधारों हमारा रहने दो ।”

मैं “अशोक , उनके पास होगा तब वह लिख रहे ।”

अशोक - “सर , अगर सब के पास है तब यह भ्रम टूट गया कि यह सेवा गरीब - कमज़ोर लोगों की है । यह सेवा अमीरों की है । हम सब धुप्पल में आ गये । सर , कोई निकाल तो नहीं देगा हम लोगों को ।”

“ अशोक , तुम हर चीज़ में मसाला लगा देते हो , मनोरंजक बनाने के लिये । लोगों के पास होगा , लोग लिख रहे । इसमें क्या गलत है ? अगर रहा और न लिखा तब वह भी गलत है । हर बात पर शक ठीक नहीं । यह सब आदर्शवादिता से सरोबार लोग हैं ।”

उसी समय राजेश मन्मथनाथ कैलाश पांडे को लेकर आ गये । वह लोग गाने का अभ्यास कर के आये थे । कोई फ़ैकल्टी में विवेक सिन्हा सर थे वह गाना सुनेंगे तब अवसर देंगे । कई लोग गाना चाह रहे थे । जेएनयू की इला दर्शी, पटना के राहुल कमल, सीनियर बैच के लोग थे ही । उस प्रतिस्पर्धा में कैलाश पांडे भी प्रवेश कर गये । अशोक ने पूछा कौन सा गाना गाओगे ?”

“ कैलाश पांडे ने बताया , ” छू लेने दो नाजुक होंठों को .. “ फ़िल्म काजल का गाना । वह गाना कैलाश पांडे जी ने गाया । अशोक ने कहा , थोड़ा उठाकर गाओ ।”

कैलाश पांडे जी उठकर गाने लगे । राजेश मन्मथनाथ ने कहा , ” खुद उठकर नहीं सुर उठाकर गाओ ।”

कैलाश - “ यह सुर उठाकर कैसे गाते हैं ?”

अशोक - “ यह नहीं पता ?”

कैलाश - “ नहीं ।”

अशोक - “ कभी गाया है ?”

कैलाश - “ हाँ ।”

अशोक - “ कहाँ ?”

कैलाश - “ गाँव की नौटंकी में ।”

अशोक - “ वहाँ तो बिरहा - कजरी टाइप गाते हैं ।”

कैलाश - “ मैं फ़िल्मी गाता था ।”

अशोक - “ कभी संगीत का सुर वँगैरह सीखा है ?”

कैलाश - “ जीएस में पढ़ा है सारे , गा , मा ..”

अशोक - “ कभी सीखा है ?”

कैलाश- “ नहीं ।”

अशोक - “ छू लेने दो नाजुक होंठों पर राग आधारित गाना है कोई बँगैर राग के गाना गाओ ।”

कैलाश- “ कौन सा गाये ?”

अशोक - “ दिल कहे रुक जा रे जा यहीं पर कहीं जो बात इस जगह वह कहीं पर नहीं ।”

राजेश मन्मथनाथ- “ हमारा जैसा मन होगा हम गायेंगे । तुम बिना मतलब डिस्करेज न करो । कैलाश यहीं गाओ .. छू लेने दो नाजुक होंठों को .. यह

फ़ालतू गाना दिल कहे रुक जा रे रुक जा .. कितना रुके .. कई साल से तो
मुकर्जी नगर में रुके हैं । कैलाश यह इश्कियाना गाना गाओ , लड़कियों पर
इम्प्रेशन अच्छा पड़ेगा । ऐसा गाना गाओ हूक निकल जाये । यह फ़ालतू
गाना है .. दिल कहे रुक जा रे रुक जा ...”

अशोक - “ राग बेस गाना हो तो राग सीखो ।”

कैलाश - “वह कैसे सीखें ?”

अशोक - “ राग की किताब पढ़ें और राग की ट्रेनिंग करो । यहाँ एकेडमी में
संगीत की शिक्षा प्रावधान है वह सीखो ।”

राजेश मन्मथनाथ- “ अंगरेजी , घुड़सवारी में नाम लिखा लिया है अब संगीत
में भी लिखा लो । यही सब करते रहेंगे तब मस्ती कब करेंगे । ”

अशोक - “ गाना सीख लेंगे तब इश्क में आसानी होगी । लड़की पूछेगी क्या
हॉबी है तब क्या कहेंगे , पूरी रात धोंटना । अब ज़रूरत है अलग विधा की ..
जैसे गायन , नृत्य, बोलना ,पेंटिंग.. वैसे सबसे अच्छा है फ़राडगीरी । जो
जितना ही बड़ा फ़राड वह उतना ही बड़ा गोला फेंकेंगे और लड़कियाँ पटायेगा
। देखो कुछ लोग लाइब्रेरी जाते हैं और वहाँ से अंगरेजी की मोटी - मोटी
किताब लाते हैं और इम्प्रैस करते हैं ।”

राजेश - “ यह अंगरेजी की किताब लेकर क्या करेंगे , पढ़ेंगे कैसे ? यह तो
अभी अंगरेजी में नाम लिखाये हैं ।”

अशोक - “ पढ़ने को कौन बोल रहा , इशु कराओ और चार दिन में वापस कर
दो । ”

राजेश - “ गाना का काम करो , बाकी छोड़ें ।”

पूरी रात गाने का अभ्यास चला । कैलाश जी ने पूरी मेहनत की पर विवेक
सिन्हा न माने । सब लोग कहते रह गये कि अच्छा तो गाया पर विवेक सिन्हा
सर न माने बस यही कहा देखते हैं । जब लिस्ट एनाउंस हुई तब कैलाश का
नाम न था । विपदा का पहाड़ टूट गया । हम सबने क्षेत्रवाद का आरोप लगा
दिया । विवेक सिन्हा बिहार के और कैलाश यूपी के । यूपी के साथ अन्याय हो
गया । हम कार्यक्रम का बॉयकॉट करेंगे । हम फिर से अपील करेंगे । कैलाश
जी का गाना होकर रहेगा । हम जुल्म से दबने वाले नहीं हैं । हर ज़ोर - जुल्म
के आतंक से संघर्ष हमारा नारा है । सारा कुछ मामला चल रहा था कि पता
चला कैलाश पांडे जी के भीतर एक धीरे- धीरे प्रेम प्रस्फुटन हो रहा । वह
कौन है सौभाग्यशाली यह चर्चा होने लगी । गलती कैलाश की थी उन्होंने
ज़िकर किया राजेश मन्मथनाथ से । अब हर आदमी का एक बहुत पक्का
दोस्त होता ही है । उस पक्के दोस्त से हर कोई दिल की बात कहता है कि

यह बात किसी को मत बताना । उसी पक्के दोस्त ने अपने पक्के दोस्त को बताया । इस तरह पक्के दोस्तों की शृंखला ने बात फैला दी । बात अशोक के पास पहुँच गयी । अशोक तो टाइम्स ऑफ इंडिया के भी बाप थे, बात धीरे - धीरे फैलने लगी । अब तो गायन ज़रूरी हो चुका था । *first impression is last impression* .. हर हालत में गाना गाया जाना चाहिये । अशोक - राजेश की मंत्रणा हुई और विवेक सिन्हा के विरुद्ध विद्रोह होगा यह फ़ैसला हो गया पर बिल्ली के गले में घंटी बाँधे कौन ?

यह मामला मेरे पास आया ।

“ सर बहुत मज़ेदार मामला है ।”

“ क्या ?”

अशोक ने पूरी कहानी बतायी ।

मैंने पूछा , “ यह कितना लड़ेगा । मतलब करान्ति कितनी दूर तक करेगा । ”

“ सर , इनका गाना हो सकता है ?”

“ हो सकता है पर इसे खड़ा होना होगा ।”

“ सर , यह कर्ण टाइप है हर बात पर ललकारने लगता है ।”

“यह टाइप है या कर्ण है ।”

उसी समय एक छोटे क़द के सत्येन्द्र तिरपाठी आ गये । वह बोले यह गाना तो होकर रहेगा ।”

अशोक - “ बिहार के लोगों को मौका मिल रहा यूपी के लोगों को नहीं । इतना अच्छा कंठ है पर गाना गाने का अवसर नहीं मिल रहा । ”

सत्येन्द्र- “ मैं हूँ बिहार का पर इस मुद्दे में यूपी के साथ हूँ । बस एक बार गाना सुनवा दो , हम लोग करान्ति कर देंगे । ”

कैलाश जी ने गाना गाया । स्वर से अधिक भाव- भंगिमा से । सत्येन्द्र बोले -

“ वाह - वाह , ऐसा गाना रोक कर और लोगों को अवसर दिया जा रहा , राहुल कमल दो गाना गा रहा , वह जेएनयू वाली दर्शी इला अरुण का गाना गा रही और मुहम्मद रफ़ी का गाना रोका जा रहा । इसमें क्षेत्र नहीं धर्म का भी सवाल है । एक मुसलमान के गाने को रोका जा रहा , संविधान के अनुच्छेद

25-28 का उल्लंघन है । कई अन्याय एक साथ हो रहे , क्षेत्रवाद , धर्मनिरपेक्षता की बात तो है पर सबसे बड़ी बात गुणवत्ता की । इतना बेहतरीन कंठ - भंगिमा युक्त गायन का अस्वीकरण । यह विवेक सिन्हा सर ठीक नहीं कर रहे । हम लोग अपने एसीडी से शिकायत करेंगे । वह हम लोगों की बात ज़रूर सुनेगी । ”

यह फ़ैसला हो गया कि यह मामला एसीडी के पास जायेगा । अशोक ने कहा , ” चाहे जो हो गाना तो कैलाश जी का होगा और इतनी ताली बजेगी कि विवेक सिन्हा सर के कान का पर्दा फट जायेगा । हम लोग तप कर यहाँ तक आये हैं । हम अपनी जिजीविषा से आये हैं किसी के एहसान से नहीं । भाई प्रतिभा को आगे बढ़ाओ आदमी सीख जायेगा धीरे - धीरे । ऐसा करो कैलाश भोर में चार बजे अभ्यास किया करो ।

अगले दिन सुबह चार बजे जब सारी मसूरी सो रही थी मैं अपने कमरे की खिड़की से देख रहा मुंकशिफ़्ट चाँद होता नूर पहाड़ी के अँधेरे में मुनब्बर , सूरज अभी इंतज़ार में वक्त के , बर्फ़ पिघलती कहीं दूर पहाड़ों पर , सामने घुड़दौड़ के मैदान में घोड़ों की हलचल , हमसफ़र हवा मेरे बालों को उड़ाती हुई , परस्तीदा पहाड़ों पर मैं चल पड़ा जाती हुई रात के साथ और मेरे अंदर एक तूफ़ान मेरे कदमों से तेज दौड़ता हुआ .. मेरे कान में आवाज़ पड़ी सुबह के रियाज़ की , शायद अशोक ने कोई राग समझा दिया था कैलाश को , एक ऐसा राग जो जीवन में संगीत दे सके ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 374

दुःखद हुआ , कैलाश पांडे जी का गायन नहीं हो सका । विवेक सिन्हा सर ने बिल्कुल न सुना , यही कहा प्रयास करो अगली बार देखेंगे । कैलाश जी निराश थे । अशोक ने कहा , ” कोई बात नहीं अगली बार पूरी ताक़त से कोशिश करेंगे और गायन होगा । राजेश मन्मथनाथ ने परैविट्स सेशन चालू कर दिया । रोज़ कैलाश जी अभ्यास करते थे । क्लचरल प्रोग्राम हुआ । बहुत बेहतरीन हुआ । सीनियर बैच के लोगों ने एक नाटक भी किया । नाटक में एक कोई यूपी के दुबे जी थे जो बहुत मँझे हुये थे । नेतरी में श्वेता महाजन कोई थीं वह सिद्धहस्त ऐसी थीं । पर असली बाज़ी मारी इला दर्शी ने । उन्होंने विद्यापति के गीत गाकर लोगों के अंदर साज जगा दिया । लोग इला दर्शी के मुरीद हो गये । वह मध्य प्रदेश की रहने वाली थीं , जेन्यू में पढ़ीं थीं , एक अच्छे परिवार से आती थीं । उनका गायन लोगों के भीतर के तार को झँकूत कर गया , कुछ ज्यादा ही लोगों के तार टूटने से लगे । अशोक से मैंने पूछा , ” एकेडमी के क्या हाल है ? ”

“ सर हाल सही हैं बहुत मज़ा आ रहा । सर बहुत मजेश जगह है यह । यहाँ न आते तो जीवन पूरी तरह से आनंदविहीन होता । एक छात्र का जीवन यहाँ आये बगैर पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता । आपने सर कोचिंग चलाकर हम सबको पढ़ाकर जीवन की वृहद मज़ेस्थली का भाग बना दिया । ”

“ कैसा मज़ा ? ”

“ सर , यहाँ दो तरह के लोग हैं एक जो मज़ा लेते हैं दूसरे जो मज़ा देते हैं । मज़ा देने वालों की तलाश हर रोज़ होती है । ”

“ ऐसा तो हर जगह है , अपने शहर में भी । ”

“ सर यहाँ विविधता है । ”

“ कैसी ? ”

“ विभिन्न प्रान्तों , समूहों , विचारों के लोग यहाँ आते हैं , एक अलग बात होती है । सर आपका आईआईटी में नहीं हुआ अच्छा हुआ । ”

“ क्यों ? ”

“ सर , जब आना यहीं था तब क्या बेवजह जानमार्स्ट पाँच साल की आईआईटी पढ़ाई पढ़ो । आपने इलाहाबाद में सलोथर बैंकी की , साइकिल से सड़क नापा , राजनीति की और यहाँ पहुँच गये । सब परेशान हैं कि पब्लिक स्पीकिंग का माड्यूल कैसे होगा । आप तो रेत मारेंगे । सर जीवन बना है मज़े को लिये बस मज़ा लो । ”

“ क्या मज़ा विशेष आ रहा “

“ सर , इश्क का बुखार चढ़ रहा , वह आनंद देगा । ”

“ कहीं कोई दीप जला ? ”

“ सर , सूरज फाट पड़ा है आप दीपक की बात कर रहे । सर , आपकी शायरी के यह जुगनू , दीपक , चिराग , बदलियों से उरता चाँद सब असफल और कमजोर प्रेमी की कहानी कहते हैं । यहाँ सब बहुत मज़बूत लोग हैं । ”

“ कौन है मज़बूत ? ”

“ सर , जो गोला मारे समझो वह बहुत तेज है । ”

“ कैसा गोला ? ”

“ सर , जो कहें हम रंजी खेले , हाँकी जूनियर खेले , पिक्चर में काम किये , कार रैली में भाग लिये , मुक्का - मुक्का मारे , डिबेट चैम्पियन रहे , समझ लो वह स्कीम में लग गया । सर , यहाँ पर स्कीमी लोग बहुत हैं । सर , यह स्कीमी लोग ज्यादा सफल होंगे । सर , एक बात और .. ”

“ क्या ? ”

“ भारत में जाति - व्यवस्था की जड़ें बहुत गहरी हैं । ”

“ वह कैसे ? ”

“ सर , यहाँ भी जोड़े बनने में जाति देखकर विचार हो रहा । यह समाजिक व्यवस्था यहाँ भी व्याप्त है । ”

“ मतलब जाति हॉबी रहेगी ।”

“ सर , सौ प्रतिशत ।”

“इला दर्शी के विद्यापति गीत के क्या हाल हैं ।”

“ सर , घायलों की तादाद ठीक - ठाक है , अभी तो शुरुआत है अभी और लोग घायल होंगे ।”

“ डॉक्टर सारंगी इलाज करेंगे ।”

“ सर , वह खुद ही कहीं न कहीं घायल होंगे ।”

“ घायल हो गये या होंगे ?”

“ सर अभी वह माजरा समझ रहे , वह तेज चीज़ हैं । आप उनकी मासूम हँसी पर मत जाओ , वह गहरे पानी के गोताखोर हैं ।”

“ यह कैसे कह रहे तुम ?”

डॉक्टर सारंगी उसी समय आ गये । अशोक ने कहा , ” सर , यह महिला रोग विशेषज्ञ हैं ।”

“ क्या यह गाइनिक हैं ?”

“ नहीं सर , यह लड़कियों का इलाज पूरी शक्ति से करते हैं ।”

“ पूरी शक्ति का क्या मतलब ?”

“ बीमार का हाल-चाल भी समय - बेसमय लेते रहते हैं । कई बार लगता है यह बीमार और बीमारी का इंतज़ार करते हैं

“ और लड़कों का ?”

“ सर , यह परमार्थी व्यक्ति हैं । यह डॉक्टर ही रहते तब समाज का ज्यादा भला होता । यह करते इलाज सब का हैं पर कन्याओं में अनुराग अधिक है ।”

मैंने पूछा , ”डॉक्टर साहब यह ठीक कह रहे ?”

“ देखिये शर्मा साहब मैं तो व्यावसायिक शिक्षा से एक डॉक्टर हूँ , नौकरी से एक अधिकारी । मेरी व्यावसायिक शिक्षा के कुछ उसूल हैं । मेरे पास जो आयेगा उसको सलाह दूँगा , इलाज करूँगा । अब लड़की आये या लड़का मुझसे क्या मतलब ।”

अशोक - “ पर डॉक्टर साहब आप महिलाओं के विंग में ही क्यों घूमते हो ?”

“ वहाँ हमारे दोस्त रहते हैं ।”

“ हम आपके दुश्मन हैं क्या ?”

“ बीमार पड़ो हम आयेंगे ।”

“ जो आप धूमते रहते हैं महिला विंग में क्या वहाँ कोई अस्पताल खुला है कि ज़रूरत है एक चिकित्सक की ।”

डॉक्टर सारंगी बहुत ही नेकदिल हँसमुख व्यक्ति थे । वह ज्यादातर बातों को हँसी में उड़ा देते थे पर यह बात सच थी कि वह लड़कियों का ध्यान रखते थे । वह जब भी मिलते थे बहुत प्रेम वार्ता करते थे, डॉक्टरों को दी जाने वाली शपथ को न केवल लिया था वरन् उस शपथ सिद्धांत को मानते हुये, सम्मान करते हुये जीवन जीना चाहते थे ।

यहाँ सायंकाल का समय बहुत ही रुचिकर हुआ करता था । सारे दिन का बोझिलता का यहाँ समापन होता था । क्लॉस में पढ़ने में किसी की कोई ख़ास रुचि नहीं होती थी । जो पढ़ता था उसे “केटीपी” (keen type probationers) की उपाधि दे देते थे । सबसे बड़ा आश्चर्य यह हुआ कि जिस परीक्षा प्रणाली को पास करने के लिये किसी दैवीय गुणों की आवश्यकता का मानदंड हमारे मस्तिष्क में शहर में भरा था वह धूल धूसरित हो गया । मुझे ज्यादातर हमारे ऐसे सामान्य व्यक्ति ही लगे । कई के बारे में आश्चर्य भी आता था कि इनका चयन कैसे हुआ । क्या ऐसा किया कि यह अंक पा गये जबकि कुछ ख़ास समझ विषय के बारे में दिखती नहीं । यह मेरा भ्रम भी हो सकता है पर बार- बार मन में आता था कि यह परीक्षा किस तरह की है कि इसके बारे में कोई स्थापित मान्यता हो नहीं पा रही । मैं आने वाली पीढ़ी को पढ़ाना चाहता था इसलिये मैं इस परीक्षा पद्धति को और संजीदगी से समझना चाहता था । पर एक बात थी अथक परिश्रम सबने किया था । मेरी मुलाकात सिद्धांत से हुई । वह एक अलग ही अजीब आईटम थे । आलस्य उनके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण तत्व था । वह क्लॉस में पीछे बैठते थे और जूता उतारकर कभी - कभी पलथी मारकर बैठ जाते थे । वह सिगरेट के कश के साथ ही अक्सर पाये जाते थे । लंबे - साँवले क्रद के आँखों में रेबन का चश्मा लगाये बेफ़िकर धुँआ उड़ाते रहते थे । उन्होंने बताया कि डॉक्टर सारंगी बुझी हुई सिगरेट पीते हैं । अजीब शौक बुझी हुई सिगरेट पीने का । मैंने पूछा, यह क्या है बुझी हुई सिगरेट पीना ? सिद्धांत ने बताया कि इसमें शायद नशा ज्यादा होता है । जब सिगरेट ख़त्म हो जाये तब उसको बुझा कर रख दो और फिर पियो ।

मैंने पूछा, ” आप नहीं पीते बुझी हुई सिगरेट ? ”

“ जलती सिगरेट से ही समय नहीं बचता तब बुझी हुई से क्या करें । ”

“ पर यह डॉक्टर सारंगी क्यों पीते हैं बुझी हुई सिगरेट ? ”

“ उनसे ही पूछ लो , हम कोई खुफिया विभाग चलाते हैं कि हर आलतू - फ़ालतू चीज़ का हिसाब रखें ।”

सिद्धांत ने दूर जा रहे डॉक्टर सारंगी को आवाज़ दी और कहा , ” बताओ इनको कि तुम बुझी हुई सिगरेट क्यों पीते हो ?”

“यह सस्ता पड़ता है ।”

“ कैसे ?”

“ सिगरेट पीकर बुझा दो और फिर दुबारा पी लो । एक सिगरेट दो से तीन बार चलती है ।”

“ डॉक्टर सुधर जाओ , इतनी भी कंजूसी ठीक नहीं ।”

अशोक - “ नहीं , यह कंजूस बिल्कुल नहीं हैं । यह दिलदार आदमी हैं । यह उत्पादन के संसाधनों का समुचित उपयोग करते हैं । यहाँ से पैसा बचाकर कहीं और खर्च करते हैं ।”

मैं - “ कहाँ खर्च करते हैं ।”

“ सर , अब यह तो यही बतायेंगे । ”

“ कहाँ खर्च करते हैं डॉक्टर साहब ?”

डॉक्टर साहब बोलते कम थे पर हँसते ज्यादा थे । वह हर बात पर हँसी - मुस्कान मिश्रित अभिव्यक्ति दिया करते थे । ”

इतने में सिद्धांत ने कहा चलता हूँ अशोक ने पूछा कहाँ ।

“ आज फ़्राइडे है । आज फ़्राइडे नाइट है । यहाँ फ़्राइडे नाइट क्लब है , वहीं जा रहे ।”

“ यह क्या होता है ?”

“ आओ देख लो ।”

पता किया कहाँ पर है यह आज का फ़्राइडे नाइट क्लब । यह किसी के कमरे पर होता था , पूरी रात चलता था और मदिरा का प्रमुखता से प्रयोग होता था । धुरंधर लोगों का यहाँ सम्मेलन होता था । थोड़ी देर बाद मैं भी अपने इलाहाबाद के कुछ लोगों के साथ गया । कमरे में प्रवेश करते ही पता चल गया यह महान गोलेबाजों का सम्मेलन है ।

“ कोई चक्कर नहीं , हम तो किसी नहीं डरते । यह ज़िंदा और सुक्खा इनको तो दौड़ा लिया था । वह साले पग छोड़कर भाग गये थे ।”

अशोक - “ यह ज़िंदा और सुक्खा कौन हैं ?”

“ तुम नहीं जानते ?”

“ नहीं ।”

“ कभी नाम नहीं सुना ?”

“ नहीं ।”

“ पेपर नहीं पढ़ते ?”

“ मेरी अंगरेज़ी कमजोर है , इसलिये हम अंगरेज़ी का पेपर नहीं पढ़ते , हिंदी वाले इनका नाम छापे नहीं इसलिये नहीं पता ।”

“ कोई चक्कर नहीं , बताता हूँ । “

यह कहकर कहा , “ फटाफट एक और बनाओ । “

उसी समय कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई । किसी ने कहा कि फ्रैकल्टी तो नहीं आ गयी । लोग दारू छिपाने लगे । दरवाजा खुला तो एक आदमी हाथ में गिलास लिये खड़ा था , “ यार थोड़ी सी मुझे भी ।”

“ कोई चक्कर नहीं आ जा । भाई दो इसको भी ।”

अशोक - “ यार , फ्रैकल्टी से डर गये और जिंदा सुकखा को दौड़ाकर मारा ।”

“ देख पंडित हम किसी से डरते नहीं । यह नौकरी - वौकरी का थोड़ा उसूल है पर हमको नौकरी करनी ही नहीं ।”

“ क्या करेंगे तब आप ।”

“ मेरे पास दस कनाल की कोठी है , कई - कई फॉर्म हैं खेती करेंगे ।”

“ तब क्यों आ गये ?”

“ तू बहुत सवाल पूछता है , ले एक लगा ।”

“ मैं नहीं लेता ।”

“ क्या नहीं लेता ?”

“ मदिरा ।”

“ यह मदिरा क्या है , मैं तो दारू दे रहा ।”

“ दारू को ही मदिरा भी कहते हैं ।”

“ चल कोल्डिरिंक पी लें और पूरा चखना न खा जा अभी रात बाकी है ।”

“ सर ज़रा ज़िंदा और सुकखा वाला क्रिस्सा सुनाओ ।”

“ यह ज़िंदा - सुकखा कौन है ?”

“अभी आपने ही बताया था ।”

“ अरे हाँ.. कोई चक्कर नहीं , ऊ बहुत बड़े हीरो बन रहे थे । मुझसे टकरा गये । मैंने निकाली तलवार वह सब भागे , दौड़ा लिया । सालों की पग गिर गयी , मैंने तलवार की नोक से पग उठाकर कॉलेज के पेड़ पर लटका दी ।”

“ अभी भी लटकी है वहाँ पर ?”

“ क्यों , तू उतार कर उसका लहँगा बनायेगा ,”

“ नहीं , ऐसे ही पूछा । पर यह थे कौन ?”

“ कौन थे , कौन थे कि तू रट लगाये जा रहा । ऐसा कर एक तू लगा ले सब पता चल जायेगा । एक बात बता पंडित ।”

“ हाँ सर जी ।”

“ तू कुछ बनकर मतलब यहाँ आकर क्या करेगा ? “

“ आप आईपीएस बनकर क्या करोगे ?”

“ मैं तो दौड़ा - दौड़ा मारूँगा ।”

“ किसको ?”

“ यह अभी नहीं सोचा है । “

“ सर यह ज़िंदा - सुकखा कौन हैं ?”

“ जनरल वैद्य का नाम सुना है ? “

“ ऑपरेशन ब्लू स्टार वाले ?”

“ हाँ ।”

“ उनको कौन मारा ?”

“ अरे सर , आपने हत्यारे ज़िंदा - सुकखा को दौड़ा मारा था ।”

“ तब हत्यारे नहीं थे , तब राहजनी टाइप काम करते थे ।”

“ आप ने क्यों दौड़ाया था ?”

“ क्यों दौड़ाया था , यह तो याद नहीं आ रहा ।”

“ दौड़ाया था यह तो याद है ?”

“ पंडित मसखरी न कर । पूछ लें पंजाब कॉलेज में बच्चा - बच्चा जानता है बाजवा को । तू बाजवा का नाम बस से ले , बस ले ले । तुझे पता चल जायेगा अपना जलवा ।”

अशोक - “ बाजवा - बाजवा ... सर नाम लेते ही सम्मान भाव आ गया / बहुत दम है नाम में ।

बाजवा - “लोग कहते थे हरजीत बाजवा मतलब ”

यह कहते - कहते एक और हलक में उड़ेल दी ।

अशोक - “ सर आप कह रहे थे कुछ ।”

“ क्या कह रहा था ?”

“ मतलब .. मतलब .. ”

“ मैं बिलकुल मतलबी नहीं हूँ , मैं यारों का यार हूँ , ज़रूरत पड़ी तो जान दे भी दूँगा और अगर दिमाग़ घूम गया तब जान ले भी लूँगा ।”

“ सर , आप बहुत ख़तरनाक आदमी लगते हो ?”

“ डर मत , चिंता न कर । कोई चक्कर नहीं । आराम से ऐश कर , दारू - वारू पीनी शुरू कर । यह गंगाजल वाली ज़िंदगी में कुछ नहीं रखा । ले एक पेग बना ले ।”

“ नहीं सर , हमको सूट नहीं करती यह । यह मतलब बताओ? ”

“ बाजवा मतलब क्या है ?”

“ बाजवा मतलब दिलेरी , जो रास्ते में आये फाड़ देनी है । एक बात समझ ले ।”

“ क्या ?”

“ डरना नहीं है , चढ़कर रहना है । यह सब फ़ैकल्टी व़ौरह की धमकी है , मेमो दे देंगे , सर्विस बुक में लिख देंगे । कुछ नहीं डरना , डट कर रहना । कोई चक्कर नहीं है ।”

“ सर , मैं तो डर जाता हूँ ।”

“ देख एक बात बताता हूँ । दो तरह के लोग हैं इस दुनिया में एक डरता है और एक डराता है । जो डरता है वह इसलिये नहीं डरता कि दूसरा मज़बूत है बल्कि इसलिये डरता है कि दूसरे ने अपने मज़बूत होने का भ्रम फैलाया है । यह भ्रम ख़त्म कर दो । यह सारा डरने - डराने का खेल एक भ्रम पर आधारित है , जो भ्रम फैला ले गया वह डरा ले गया ।”

“ सर आप सवा छः फुटा जवान हो । आपसे लोग डरेंगे ही । हम हैं सवा पाँच फुट के हमसे कौन डरेगा । ”

“ यह सारा डर का भ्रम शरीर से नहीं दिमाग़ से फैलाया जाता है । यह भ्रम फैलाओ । दारु ला ।”

दारु ख़त्म हो गयी । बाजवा साहब ने कहा , “कौन पी गया ? ”

जब बाजवा साहब भाषण दे रहे थे तब कई लोग लील रहे थे । हाथ में गिलास लेकर आये व्यक्ति ने मौके का फ़्लायदा उठाया और बोतल हल्क से उतार दी । बाजवा साहब दिलदार आदमी थे । वह बोले , “ कोई चक्कर नहीं , दूसरी निकालता हूँ । आलमारी खोल फटाफट दूसरी निकाल । इतने में दरवाजे पर दस्तक हुई , सिद्धांत श्रीवास्तव अपने ग़ैंग के साथ खड़े थे । वह पहले से ही पीकर आये थे । गला पहले से ही तर था अब तरावट और करनी थी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 375

सिद्धांत श्रीवास्तव के साथ रितेश सिंह , राजू सिंह , अंगद सिंह थे । रितेश सिंह के जीवन की एक ही समस्या थी जो दिन - रात उनको खाये जा रही थी । उनका सीना चार इंच फूलता ही न था और वह रैंक पाकर भी आईपीएस नहीं पा सके थे । वह हर बात पर कहते थे , ” भइवाआ....बाबूगीरी की नौकरी लगता है करे पड़ी ।”

वह थे तो दुबले - पतले पर बाँह ऐसा सिकोड़ते - मोड़ते थे कि गामा पहलवान को दे मारेंगे । वह एकेडमी के जिम में बैंच प्रेस करते थे ताकि उनका सीना फूल जाये और वर्दी पहनकर गुंडों की पिटाई करें । उनको गुंडों को पीटने का बहुत शौक था , मेहनत फलित भी हुई पर भाग्य पर किसका ज़ोर , सीना ही न फूला वह भी तमाम परयासों के बाद । मन सिद्धांत का भी आईपीएस बनने का था पर उनकी आईपीएस की चाहत का कारण अलग था । वह खुशफ़हमी के शिकार थे । उनको लगता था कि 6 फ़िट 3 इंच ऊँचाई , टॉल , डार्क हैंडसम हैं और रेबन का चश्मा लगाकर वर्दी में बहुत ज़चेंगे । वर्दी तो मिली नहीं पर टॉल , डार्क हैंडसम काया पर पर काला रेबेन चश्मा लगाये होंठों पर सिगरेट लटकाये एक पैर को थोड़ा सा घसीटते वह एकेडमी में टहलते दिख जाते थे । इनको रैंक न मिली और रितेश का सीना न फूला और दोनों का भवितव्य एक ही हो गया , दोनों आकर आईआरएस में अटक गये ।

राजू सिंह.. ओहोहो . क्या कहने ठाकुर साहब के । पुढ़ीना झुरा गया , यह अपने खेत के बगल से ही निकल गये और पता ही न चला यह इन्हीं का खेत है । नामुराद करिंदों ने बताया ही नहीं , बाबू साहब यह आपका ही खेत है । दिलदार बाबू साहब पुढ़ीना न बेचते क्या मिलता बीस - पच्चीस हज़ार उससे क्या फ़र्क पड़ता उनको , जहाँ करोड़ों की मिल्कियत कई शहरों में है उनकी

और उनको पता ही नहीं, गरीब - गुरबों के काम आता पर यह तो झुरा ही गया । बड़बोलापन का और इनका चोली - दामन का साथ था । अगर बाबू साहब कुछ बढ़ा- चढ़ाकर न बोले तब ठाकुर काहे के ।

अंगद सिंह .. ईश्वर ने इनको बनाया और साँचा आग में गला दिया , बस एक ही बहुत है कायनात के लिये । बाप रे बाप ... ऐसा कौन सा काम है जो वह नहीं किये हैं .. हिमालय पर कार चढ़ा ले गये , हिमालय विनती किया तब कार वह उतारे नहीं तो हिमालय का पचीस फुट तो गिरा ही देते , मुक्केबाज़ी में वह मुहम्मद अली को आदर्श मानते थे । मुक्केबाज़ी छोड़ दी यह देश का दुर्भाग्य है , एक एशियन गेम पदक तो मिलता ही वह भी स्वर्ण अगर ओलंपिक न मिलता । अशोक ने पूछा , ” सर , आप यह बताओ आप ने क्या नहीं किया है , आपने सब किया है यह अगर आप बताने लगोगे तब कई रात बीत जायेगी ।”

अंगद सिंह ने कहा , ” मैंने कभी झूठ नहीं बोला । “

अशोक - “ सर , यह काम भी आपने अभी कर दिया , कोई काम ऐसा बताओ जो न किया हो ।”

बाजवा - “ देख छोटे , मसखरी न कर , यह मेरा यार है । यह मेरा जिगर का टुकड़ा है , यह मेरा बड़ी है । इसकी बेझज्जती मेरी बेझज्जती है । याद रखना अंगद , कोई अगर तेरे पर आँख उठायेगा तब उसका तोड़ दूँगा । “

अशोक - “ तोड़ दूँगा नहीं आँख निकाल लूँगा ।”

“ मैं तोड़ूँगा तू बोल तेरे को क्या ऐतराज है ।”

“ सर , हमको कोई ऐतराज नहीं , बस बता रहा कि मुहावरा सही क्या होता है ।”

“ पंडित तू ज्ञान छोड़ , यह मेरा यार है । यह मेरा

“

आवाज़ लड़खड़ाने लगी । सिद्धांत ने दो पैग ठोक दिया तब तक , वह बहुत ही समझदार व्यक्ति थे । उनकी रुचि मूल काम में थी । वह बोले , “ दास ख़त्म हो गयी ।”

बाजवा - “ कोई चक्कर नहीं , बहुत माल पड़ा है । निकाल आलमारी से । जो आ जाये उसको पिलाना ही है ।”

सिद्धांत ने दास की बोतल निकाली और एक बड़ा पैग तुरंत मारा और दूसरा बना लिया । बाजवा ने पूछा , “ यह बता सबसे फ़राड़ कौन है यहाँ पर । मैं फ़राड़ लोगों से दूर रहता हूँ । मुझे सच्चे यार चाहिये जैसे अपना यह अंगद

सिंह है । यह मेरा यार है । हम लोग साथ जियेंगे , साथ मरेंगे .. नहीं साथ जियेंगे .. साथ जियेंगे .. एकसाथ जियेंगे .. क्या बोलता है अंगद ..

“ बिल्कुल सर जी .. यहाँ बहुत से जासूस फ़ैकल्टी के हैं उनसे सावधान रहना ।”

“ कौन है फ़ैकल्टी का जसूस ?”

“ हमको तो गोली पर शक है ।”

“ वह गोली .. लगता तो मासूम है । वह भला आदमी है । वैसे भी आईआईटी वाले सज्जन होते हैं पढ़ने वाले होते हैं ।”

सिद्धांत- “ घंटा पढ़ने वाले होते हैं , अरे ए विंग वाला आईआईटी का ही है क्या नाम है उसका .. ”

बाजवा - “ छड़ दे नाम बता हुआ क्या , वह जसूस है ? चल अभी निपटा देते हैं ।”

सिद्धांत- “ उसको इलेक्ट्रिक सर्किट बनाना नहीं आती , सिखाया उसको । ”

बाजवा - तू इंजीनियरिंग किये है ।”

अशोक - “ यह बीए पास किये हैं इसमें भी संदेह है ।”

बाजवा - “ ऐ छोटे मेरे यार से मसखरी न कर । कोई चक्कर नहीं , बस बता दे जसूस कौन - कौन है , फाड़ देनी है सालों की । मुझे भी एक पर शक है ।”

अशोक- “ किस पर , सूर्यकांत पर ।”

“

बाजवा - “ छड़ यार , कोई चक्कर नहीं । करने दे जसूसी जिस दिन हत्थे लग गया काम तमाम कर दूँगा ।”

सिद्धांत दारू चाँपें , उनकी इन सब बातों में कोई रुचि न थी । सिद्धांत को दारू निपटानी आती थी । ख्वाब भी सँभल कर आता था उनके पास । वह ख्वाब की नंगाजोरी करके उसके पॉकेट से दारू का पौआ निकाल कर पी जायेंहे । आदमी बहुत ही फ़ोकस्ड थे , वह अपने काम से काम रखते थे , बस दारू - सिगरेट और सोना । रात चढ़ती जा रही थी , सुबह के दो बज गये । सारे लोग अभी भी उठने के मूड़ में न थे । मैं उठकर चलने लगा । सिद्धांत ने कहा , “ ऐ फ़राड़ रुक अभी ।”

बाजवा - “ यह फ़राड़ है ?”

सिद्धांत- “ पूरा फ्राड है । फ़र्जी स्टोरी बीबीसी में छपवा दिया , चुनाव लड़ गया , आईएएस टॉप भी कर गया । यह सिविल सेवा को इनकैश करने में मास्टर है । देखना आगे कितना डरामा करेगा । इतना बड़ा डरामेबाज़ कम ही आया होगा यहाँ । ”

एक सरदार जी और थे वह बहुत देर से चुप थे दास्त चढ़ गयी उनको वह बोले , “ अपना बैच .. अपना बैच .. अपना बैच ..

बाजवा - “ तू अपना बैच .. अपना बैच ही मारे जा रहा , आगे बोल ।

“ .. कमाल करेगा .. बैच की बात आयेगी तो हम कुछ भी कर देंगे साहब जी । हम सब साथ रहेंगे और पूरा कब्ज़ा करेंगे । ”

बाजवा - “ अरे रहन दे .. रहन दे .. मैं अकेले ही सबकी फाड़ दूँगा । ”

दूसरे सरदार जी जोक मारकर खुद ही हँसते थे । किसी और को जोक समझने ही नहीं देते थे । बाजवा ने कहा , “ पहले तू हँस ले उसके बाद मार जोक । अपनी ही मारे जा रहा । ” फिर एक जोक सरदार जी ने मारा और हँसने लगे । अशोक ने कहा , सरदार जी एक जोक मेरी तरफ से और हँसने लगा । दूसरे सरदार जी भी हँसने लगे , सब लोग हँसने लगे । मैंने पूछा , किस बात पर हँस रहे । अशोक ने कहा , “ सर पहले हँस लेते हैं फिर पता करते हैं किस बात पर हँस रहे । ”

मैं मौका देखकर उठकर चल दिया । मैं मसूरी की पहाड़ियों को देखते हुये अपने होस्टल के कमरे की तरफ बढ़ने लगा । मैंने कमरे में प्रवेश किया । मुझे नींद नहीं आ रही थी , माँ की याद हर सुबह चार बजे आती थी जब वह चाय लेकर मेरे पास आती थी । मैं एक नज़्म गढ़ने लगा उसको याद करके ,

विस्मय है

उसके अक्स में

जिसमें हर कोई ढूँढता है छवि अपनी
आसमान , पेड़ , पहाड़ और चाँद ।

उधर इलाहाबाद की सुबह एक अलग ही सुबह होती है , मन्त्रों से अभिमन्त्रित सुबह ...

सुबह के चार बज गये । माँ की आँख खुली , वह मेरे कमरे में आयी । वहीं कमरा जिसमें मैं रहता था । उसके दिन की शुरुआत मेरे साथ होती थी । वह मेरे बिस्तर को देखकर रोने लगी , मैं न था उस बिस्तर पर जिसके नज़दीक आकर कहती थी , “ मुन्ना चाय । ”

वह तेज - तेज रोने लगी । पिताजी पीछे से आ गये । उन्होंने पूछा , “ क्या हुआ , बहुत याद आ रही उसकी ?”

माँ और तेज - तेज रोने लगी । मुझको यह घर छोड़े पाँच दिन हो गये थे । इन पाँच दिनों के एक- एक पल को वह बहुत मुश्किल से काट पाती थी । समस्या पिताजी को भी थी पर वह गंभीर थे और जानते थे कि अगर वह टूट गये तब घर में कुहराम मच जायेगा । मेरी माँ बहुत मज़बूत महिला थी पर वह मुझे लेकर बहुत ही कमजोर थी । उसको अंदर ही अंदर एक चीज़ खाये जा रही थी कि मैंने मुन्ना को ज़बरदस्ती एकेडमी भेजा । वह तो जाना ही नहीं चाहता था । मैंने अपने स्वार्थ के लिये उसको वह करने के लिये मजबूर किया जो वह करना नहीं चाहता था । वह बार - बार पिताजी से पूछती थी कि मुन्ना अगर एकेडमी न जाता तब वह क्या करता । मेरे पिताजी का मुझसे कई मुद्दों पर विरोध था पर अंदर दी अंदर एक दूसरे के प्रति सम्मान भाव भी था । मैं उनकी परिपक्वता , सहजता , संतोष का बहुत बड़ा समर्थक था तो वह मेरी नवोन्मेषी प्रवृत्ति , ख़तरे से खेलने से , न डरने और हिमालय सदृश महत्वाकांक्षा के बहुत बड़े मुरीद थे , सबसे बड़े प्रशंसक मेरे अथक परिश्रम करने की क्षमता के थे । माँ के इस सवाल पर पिता जी ने कहा , ” उर्मिला , मुन्ना ऐसे लड़के विरले पैदा होते हैं । उसको ईश्वर ने किसी ख़्यास मक्कसद से बनाया था और तुमको दिया सँवारने के लिये । एक विपरीत परिस्थिति में कुछ प्राप्त करना तो होता ही रहता है । यह कार्य मुन्ना ने अकेले नहीं किया है पहले भी कइयों ने किया है पर सब कुछ प्राप्त करके त्याग देना किसी बड़े लक्ष्य के लिये जिसमें भौतिकवादी प्रवृत्ति न हो , यह विरले ही होते देखा है ।”

“ सब तअ कहत हअ कि मुन्ना के प्रशंसा के भूख बा एका बरे सब करत हअ ।”

“ वह भूख सबमें होती है । यह मानव रेस सम्मान की भूखी है । मानव रेस ही क्यों हर रेस सम्मान चाहती है पर कोई व्यक्ति मात्र सम्मान की आकांक्षा से यह नहीं कर सकता । पढ़ाने का काम कितना कठिन है वह भी तब जब न तो कोई भौतिक लाभ है और न ही परिणाम की कोई निश्चितता । वह आराम से रह सकता था । वह तीन सौ रुपया रोज़ पर पढ़ा रहा था । पैसा लेता तब पैसा कमाता ही । पहली बार कुछ कमाया ही था पर एकेडमी जाते समय उसके पास कोई पैसा नहीं था ।”

“ ऊ त कहेस पैसा बा हमारे पास , ऋषभ के पैसा ऊ हमका दै देहेस । हमसे कहेस कि हमपे पास कोचिंग के समय के पैसा बा ओसे काम होई जाये ।”

“ मुन्ना ने झूठ बोला , उसने बाजपेयी जी से पाँच हज़ार रुपया उधार लिया यह कहकर कि मैं एकेडमी से आकर दूँगा ।”

माँ और ज़ोर - ज़ोर से रोने लगी । पिताजी ने कहा , “ यह गर्व की बात है इसमें रोना क्यों ?”

“ का गर्व बा एहमें ?”

“ एक ज़िम्मेदार , अति ज़िम्मेदार व्यक्ति की माँ हो , एक व्यक्ति नायकत्व की ओर बढ़ रहा । जिस बात पर तुम रो रही उस पर मुझे परसन्नता हुई । ”

“ काहे ?”

“ जो अपनों का दुःख दर्द समझता है वहीं दूसरों का भी समझ सकता है । ”

“ ओका हम एकेडमी ज़ोर - ज़बरदस्ती करके भेजा , यह ठीक नहीं किया । ”

“ बहुत ठीक किया । वह बहुत ही ज़िद्दी है , तुम्हारी तरह ही । जब उसने कहा कि मैं एकेडमी नहीं जाऊँगा तब मैं समझ गया कि अब इसको कोई नहीं भेज सकता । पर तुम उससे टकरा गयी । तुम दोनों लड़ पड़े । मैं यह जानता हूँ कि मुन्ना सिर्फ़ एक ही व्यक्ति से हार सकता है और वह है उर्मिला । वह अपराजेय है पर तुम्हारे सामने नहीं । मैं तुम दोनों का संघर्ष देख रहा था । जब तुम गंगा नहा कर नहीं आयी तब मैं समझ गया कि ब्रह्मास्त्र चल चुका है और अब मुन्ना टूट चुका है । मैं अगले दिन उसके कमरे में गया , उससे मैंने कहा एक फ़ैसला कर लो अपनी माँ को ध्यान में रखकर हम सब उस फ़ैसले पर आगे चलते हैं । तुम्हारा कोई भी फ़ैसला स्वीकार्य होगा । यह कहकर मैं चलने लगा । उसने कहा , मेरा फ़ैसला नहीं सुनेंगे । मैंने कहा , मुझे पता है । उसने पूछा , क्या है वह फ़ैसला । मैंने कहा , माँ के हळ में होगा वह और वह एकेडमी चला गया । उर्मिला वह नौकरी नहीं करेगा यह तुम भी जानती हो पर तुमने एकेडमी भेजकर उसको कुछ और सीखने का अवसर दिया है । यह तुम्हारा एहसान मुन्ना आज नहीं तो कल मानेगा । वह और परिपक्व होकर आयेगा । ”

माँ हतपरभ होकर पिताजी को सुन रही थी । नयन अभिव्यक्ति कर रहे थे , एक ऐसी अभिव्यक्ति जो किसी के भी दिल को हिला दें । यह ख़ामोशी में एक चीखती अभिव्यक्ति थी , मेरी माँ के आँसुओं की अभिव्यक्ति । हर माँ के आँसुओं के पास एक वर्णमाला होती है , उस वर्णमाला की अभिव्यक्ति सारी वर्णमाला की अभिव्यक्ति से सशक्त होती है ।

पिताजी मेरे नाम ख़त लिखने लगे

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 376

“ मुन्ना , तुम्हारा जाना कष्टकारी है , हर उस व्यक्ति के लिये जिसके साथ तुमने संवाद की स्थापना कभी भी की हो । मेरे साथ तो तुमने बोलना सीखा था । जब पहली बार तुम्हारी माँ ने बताया मुन्ना बोलने लगा है , मैं कितनी देर

तक तुम्हारी आवाज़ सुनता रहा । कभी तुम भी पिता बनोगे और यह एहसास करोगे कि तना सुखद होता है बच्चे की ध्वनि को कानों में उत्तरता हुआ महसूस करना , पर तुम मेरे इतने सौभाग्यशाली शायद न हो मुन्ना तो एक ही है दूसरा कहाँ अब आने वाला । तुम्हारा जीवन असफलताओं से भरा रहा पर तुम्हारी जिजीविषा एक अलग धातु से बनी है , असफलताओं का स्वागत तो कोई नहीं करता , पर असफलताओं के प्रति दृष्टिकोण व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण कर देता है । तुमने समाज में अपना स्थान बनाया है वह भी एक लंबे संघर्ष के पश्चात और कम समय में । तुम कहा करते थे मेरी हार का जश्न बहुत देर तक कोई मना नहीं सकता , शायद यह उतना सही नहीं है । सच यह है कि तुम हार कर भी जीतते ही थे , लोगों को शायद पता नहीं होता था तुम्हारी हार में अस्पष्ट ही सही साँस लेने वाली जीत । पराजय एक सापेक्ष वस्तु है , अगर उसको परिणाम से निरपेक्ष होकर देखा जाये । परयास जय-पराजय को निर्धारित करता है , न कि परिणाम । यह तुम्हारा संघर्ष तुम्हारी सबसे बड़ी निधि है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि एकेडमी में भी मुन्ना अलग ही होगा , सबसे अलग , ईश्वर ने इसको गढ़ा ही अलग है । इस तरह के उद्गार तङ्गीबन हर पिता के अपने पुत्र के प्रति होते ही हैं , पर मैं एक मित्र , एक प्रशंसक के तौर पर निरपेक्ष होकर यह बात कह रहा एक पिता की भावनाओं को दूर रखकर । माँ को पत्र लिखते रहा करो , वह बहुत परेशान है तुम्हारे जाने से । तुम हर रोज़ सायंकाल कोई क्रिस्सा - कहानी सुनाते थे उसको वह अब और कोई सुना नहीं सकता । मैं सुनाना भी चाहूँ तो सुना नहीं सकता , तुम्हारे ऐसा क्रिस्सागोई तो मैं कर नहीं सकता । शायद शहर भी अपने क्रिस्सेबाज की कमी महसूस कर रहा । सरला जोशी आयी थी और कह रही थी , सर के जाने बाद विश्वविद्यालय वह नहीं रहा जो हुआ करता था । एक व्यक्ति बदलाव ला सकता है एक छोटे तौर पर ही सही , यह तुमने साबित कर दिया । । एकेडमी की कुछ कहानी लिखना , अपने खान - पान का ध्यान रखना

तुम्हारा सबसे बड़ा प्रशंसक जिससे तुम्हारा कभी - कभार विरोध भी होता था । “

एकेडमी में पत्र सबके नाम पर आबंटित एक बॉक्स में डाला जाता था । कभी - कभी यह पत्र एक दिन बाद आते थे । पर हमारे एक बैचमेट इश्क में गिरफ्तार थे । उनकी होने वाली पत्नी का पत्र आया करता था । वह जाकर डाकिये से पत्र छीन लाते थे । कभी - कभी तो वह मसूरी के पोस्ट ऑफिस पहुँच जाते थे पत्र लेने । अपना पत्र तो वह देहरादून जाकर पोस्ट करते थे ताकि उनकी होने वाली पत्नी को जल्दी से जल्दी पत्र की प्राप्ति हो जाये । वह सारा दिन कार्ड लिखते थे और तरह - तरह के गिफ्ट पैक करते थे ।

ईश्वर करे ऐसा प्रेमी पति हर लड़की के नसीब में हो । उनका यह एहसान , समय पर पत्र ले आकर देने का कभी कोई जीवन में भूल नहीं सकता । कई बार बातें बहुत छोटी लगती हैं पर जीवन के वृहद कलेवर में बहुत महत्वपूर्ण होती हैं । उन्होंने पत्र दिया और पत्र पढ़ते ही मैं रोने लगा । मेरे आँखों से गिरते आँसू देखकर मेरे पास भागकर अर्स जोशी आ गयी । उसने पूछा , “ क्या हुआ ?” मैंने पत्र उसके हाथ में पकड़ा दिया । पत्र पढ़ते ही उसकी आँखों से मुक्तादल कपोलों पर लुढ़क गये , वह अपने पिता की आभा में खो गयी । मेरे पिता इतना बेहतर लिखते हैं , उसका मुझे एहसास ही न था । पत्र मेरे कई मित्रों ने पढ़ा .. अशोक , अनामिका , प्रेम नंदन ... इलाहाबाद वाले ही नहीं कई और लोगों ने । यह एक पिता का पत्र था अपने पुत्र के लिये पर यह कहानी हर एक की थी । सारे लड़के - लड़कियाँ अपने परिवार परिवेश के नायक - नायिका थे । सबने बहुत परिश्रम से यह मुकाम हासिल किया था । सब बहुत ही ज़हीन थे और देश के लिये कुछ करना चाहते थे । हम इलाहाबाद के लोग तो लफंटूस टॉइप थे पर कई ऐसे लोग थे जिनके पास जीवन के विविध अवसर थे और उन अवसरों को त्याग कर एक कम तनख्बाह की सेवा स्वीकार की थी । कुछ तो एक बड़ी - मोटी रक्षम की नौकरी को त्याग कर गर्व की सेवा स्वीकार की थी । एक बात एकदम सच है कि जीवन के उच्च आदर्शों से ज्यादातर लोग ओत- प्रोत थे , कम से कम एकेडमी में निश्चित रूप से ।

दिन बीत रहे थे ,आमोद- प्रमोद जीवन में व्याप्त हो चुका था । अशोक का एकेडमी में रहना एक अलग आनंद देता था । वह हर किसी के बारे में सूचना रखता था और सूचना फैलाता भी था । वह सरे आम कहता था ,” देखो , अगर कोई बात गुप्त रखनी हो तब मुझको मत बताओ । सूचना प्राप्ति का अधिकार एक नैसर्गिक अधिकार है , यह हर व्यक्ति को प्राप्त होना चाहिये । मुझे जो सूचना मिलेगी मैं सब को दूँगा । जोड़ी बनानी हो तो बताओ बनवा दूँगा चाहे जोड़ी तोड़नी ही क्यों न पड़े । ”

प्रतीक्षा के बारे में थोड़ा वह संजीदा था । वह प्रतीक्षा की ओर बढ़ने वाली ललक को पकड़ लेता था यह कहकर कि क़द और हैसियत से बड़े ख्बाब मत देखो । प्रतीक्षा एक परफ़ेक्ट पैकेज थी । आईएएस थी , उनके एक भाई यूपी के रसूखदार आईएएस थे , एक भाई बंबई के आयकर विभाग में पराक्रम दिखा रहा था । आईपीआर भी बढ़िया भरा था , यह बात अशोक ही फैला दिया था । प्रतीक्षा ऊँचे क़द की सुंदर लड़की थी । वह मेरे ऐसे फटीचर की प्रेमिका हो सकती है यह कोई स्वप्न में भी सोच नहीं सकता था । अभी लोगों को क्या पता , सुरुचि मिश्रा ऐसी अति पराक्रमी लड़की भी मेरे लिये स्नेह-प्रेम शील थी । मैं अपने पहनावे , शांत चित्त से सबको फटीचर लगता था

पर इनको क्या पता में लंबी दौड़ दौड़ने में महारत रखता हूँ । अशोक मेरे पास आया और बोला सर प्रतीक्षा, इला दर्शी दो के चाहने वाले बढ़ रहे हैं ।

“ज्यादा किसके हैं?”

“सर, इला दर्शी का जलवा तेज चल रहा ।”

“ऐसा क्यों?”

“सर, सवाल मौजूद हैं, पर जवाब थोड़ा विश्लेषण की माँग रखता है ।”

“क्या उनका गायन एक कारण है?”

“सर, कौन लता मंगेशकर हैं वह । माना गा लेती हैं पर यह नई उम्र गायन पर मर - मिट जाये यह आप ऐसा समाज शात्री तो न कहे ।”

“तब क्या कारण है?”

“सर, जिसको मार्केट बनानी आती है, वह राज करता है ।”

“क्या इनको मार्केट बनानी आती है? मुझे तो ऐसा कुछ नहीं दिख रहा ।”

“सर कुछ तो खास बात है, एक साथ सब फाट पड़े हैं । पता करता हूँ रहस्य ऐसा क्या है इनमें ।”

मैं और अशोक चल दिये चाय की कैंटीन की तरफ । वह बोला सर आप चलिये मैं अनामिका को लेकर आता हूँ । उससे चुहल करने में बहुत लुत्फ़ है ।”

“अशोक, वह गुस्सा हो जाती है । मुझसे शिकायत कर रही थी कि अशोक इलाहाबाद की तरह यहाँ भी जो मन आता है बोल देता है, थोड़ा सँभाल कर बोलो, सबके सामने कम कहा करो ।”

“सर, अब ऊ आईएएस के नशे में पगला गई हैं । हमने पढ़ाया - लिखाया, डॉउनवर्ड फ़िल्टरेशन थ्योरी लगाकर आपका पढ़ाया । आज पूरी इंदिरा गाँधी बन गयी हैं । आप चलिये मैं लेकर आता हूँ ।”

मैं कैंटीन में पहुँच गया, थोड़ी ही देर में अशोक आ गया । अनामिका आज भी मेरा सम्मान गुरु की तरह करती थी । वह मेरा पैर छूती थी । वह हरिजन वर्ग की लड़की थी । उसकी माँ आज भी दिहाड़ी म़ज़दूरी करती थी पर संस्कार से अनामिका सरोबार थी । उसने पहुँचते ही मेरा पैर छुआ । मैंने कहा, “अनामिका, हम तुम समकक्ष हैं । अब यह क़्रवायद ठीक नहीं । मैंने पहले भी कहा था कि यह ठीक नहीं लगता । एक लड़की पैर छुये यह बिल्कुल उचित नहीं ।”

“सर, समकक्षता की सोच आपके साथ वह कभी आ ही नहीं सकती । सर, जब आप कह रहे थे कि मैं आईएएस नहीं बनूँगा और सेवा त्याग दूँगा तब मुझे

लगा मेरी ऐसी तमाम बेसहारा लड़कियों की प्रार्थना ईश्वर ने सुन ली है । “

“ क्या मुझे नहीं आना चाहिये था ?”

“बिल्कुल नहीं आना चाहिये था । सर , आपको यह नौकरी कुछ नहीं देगी । यह नौकरी आप से कुछ प्राप्त कर सकती है । यह नौकरी आप के लिये बनी ही नहीं है ।”

“ अनामिका , तुम एक मात्र व्यक्ति हो जो यह कह रहा । सब कुछ और कह रहे ।”

“ सर , सब स्वार्थ से प्रेरित हैं ।”

“ मेरी माँ भी ?”

“ सर , आप ऐसा समझदार व्यक्ति अगर यह सवाल कर रहा इसका मतलब वह जवाब जानता है ।”

अशोक - “ तुम नौकरी छोड़ दो , दूसरे को राय दे रही हो ।”

“ मेरे पास सर ऐसी क्राबिलियत होती तो मैं नौकरी छोड़कर पढ़ाती ।”

“सर के साथ छोड़ देना तुम भी । इनके साथ काम करना ।”

“ सर आदेश करें मैं अभी त्याग पत्र दे दूँगी । सर के साथ रहूँगी जीवन सफल हो जायेगा । मैं एक सम्मान के लिये संघर्ष कर रही थी वह प्राप्त हो चुका है । अब मुझे जीवन में कुछ नहीं चाहिये । मैं अब एक सार्थक जीवन जीना चाहती हूँ ।”

अनामिका ने मुझे अंदर तक हिला दिया । मैंने कहा , ” अनामिका ... ”

“ जी सर ।”

“ अगर मैं तुम्हारा गुरु हूँ यह बात मान ली जाये तब जितना अभिमान दरोणाचार्य को अर्जुन पर हुआ होगा उससे अधिक मुझे तुम पर है ।”

अशोक - “ सर अर्जुन का साला दरोणाचार्य को ले बीता । इसका पति भी ”

अनामिका - “ सर , यह बहुत तंग करता है ।”

मैंने बात बदलते हुये पूछा अशोक से दूर पहाड़ियों से कौन आ रहा ?

“सर , इनको जानते हैं आप “

“ यह कौन हैं ?”

“ सर सुजाता सिंह । “

“ हाँ.. दूर से पहचान में नहीं आ रही थीं । “

“ इनकी तारीफ़ ! “

“ सर इनके यहाँ भी पुढ़ीना झुराता है । यह घर से अपनी बग्धी लेकर निकली थी रास्ते में ही कहीं घोड़ा बग्धी लेकर भाग गया । बग्धी आयी होती तो कभी - कभार हम भी चढ़ लेते , दिलदार महिला हैं यह । ”

“ बग्धी को खोजा नहीं ? ”

“ अब सर कहाँ खोजे , ले गया होगा कोई गरीब - गुरबा । बग्धी - घोड़ा शादी - विवाह में देकर जीवन काट रहा होगा , घुड़साल में इनके घोड़े ही घोड़े हैं , एकाध भाग भी गया तो क्या हुआ । सुना है यह अपना घोड़ा लेकर आयी हैं घुड़सवारी के लिये । ”

“ तुम अशोक हर बात पर मज़ाक़ बनाते हो । ”

“ सर , सही कहानी यह है कि यह घर से टीवी लेकर चली । रेलवे स्टेशन पर अपने आप में ही खोकर चल रही थीं । पीछे से कुली टीवी लेकर रफूचककर हो गया । जब यह स्टेशन से बाहर निकली तो लाल रंग के कपड़े वाले तो बहुत दिखे पर टीवी सर पर रखा कुली न दिखा । ”

“ कुछ एफआईआर वगैरह नहीं लिखाया , शायद मिल जाती । ”

“ सर , आप भी ... यह एफआईआर वगैरह गरीबों के चोंचले हैं । अमीर लोग कहाँ यह सब काम करते हैं । दिलदार महिला है । गरीब कुली टीवी में गाना सुन रहा होगा , बच्चे उसके खुश होंगे यह सोचकर छोड़ दिया । ”

“ दिलदार हैं यह कैसे पता ? ”

“ सर , मैं इनके अकाउंट में समोसा - चाय लिख देता हूँ । यह सहर्ष मान जाती हैं । ”

“ आराम से मान जाती हैं ? ”

“ सर , आराम से ही कहो । मैंने कहा मैं शादी - शुदा हूँ , दो बच्चों का बाप हूँ घर पर पैसा भेजना होता है बस इतना कहा था । यह हर बार मेरा चाय का पैसा लिखती थीं । फिर समोसा जोड़ दिया । आज सर रसगुल्ला भी खा लूँगा , बस आने दीजिये । ”

“ इनका कोई भविष्य एकेडमी में ? ”

“ सर दिलदार महिला हैं , एक शूरवीर चाहिये इनको । अब अगर किसी को इन्हें प्राप्त करना है तब शूरवीरता दिखाये , ऐसे आसानी से प्राप्ति कहाँ होने वाली । ”

“ क्या शूरवीरता दिखाये ?”

“ सर यह बहुत कठिन सवाल है । सर , अनामिका का ... ”

अनामिका बोली , “ अब एक भी लफ़्ज़ बोला तब मैं पूरी इज़्ज़त उतार दूँगी । “
सुजाता सिंह आ गयीं और पूछा , ” अनुराग , यह दोनों क्यों अक्सर लड़ते
रहते हैं । ”

अशोक-“ मैडम बताता हूँ । ”

अशोक ने केंटीन की तरफ़ आवाज़ दी और रसगुल्ले - समोसे में लग गया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 377

अशोक समोसा खा रहे थे कि अरू जोशी आ गयीं । वह बहुत हँसमुख लड़की
थी । हर बात पर खिलखिलाने लगती थीं । उनकी प्रायः लोगों से पटती थी ।
अशोक से सभी की पटती थी । अशोक शादी - शुदा थे । उनके बच्चे भी थे ।
वह जीवन के हर पक्ष का अनुभव रखते थे । कुँडली देखना और हाथ की
लकड़ीरें पर भी पढ़ लेने का दावा करते थे । वह किसी के भी अकाउंट में
अपना चाय - समोसा सफ़ाई से लिख देते थे । कई लोग यह जानकर भी
कुछ नहीं कहते थे क्योंकि वह थोड़ा जोकर टाइप थे और टाइम पास करने -
कराने में कुशल थे । अरू के पीछे ही लंबे क़द के थोड़ा वज़न लिये महाराष्ट्र
के सुलभ म्हातरे आ गये । वह लंबे क़द के बहुत ही गौर वर्णीय नीली आँख
वाले व्यक्ति थे । वह आये घूमे - टहलें और जाने लगे । अशोक ने कहा , ”
थोड़ा वक्त हमें भी दो । “ पर वह शायद सुन नहीं पाये । अशोक ने कहा , “
क्या स्मार्ट आदमी है । ”

अरणिमा दोषी - “ क्या स्मार्ट है , अंडा छीलो उस पर आँख और नाक बना दो
, हो गया म्हातरे । ”

“ मैडम आप ने तो धो दिया । ”

अरणिमा हँसने लगी । उनकी हँसी थोड़ा तेज़ होती थी । राजेश मन्मथनाथ
और कैलाश पांडे अक्सर साथ रहते थे । राजेश मन्मथनाथ उनको लेकर आ
गये । पता चला वह गाना का अभ्यास ज़ोरदार ढंग से कर रहे हैं । सुर सुधर
रहा है । पर सुर सुधरने से क्या होता है , वह सुधरा सुर विवेक सिन्हा सर के
मापदंडों पर खरा उतरना चाहिये । राजेश मन्मथनाथ ने बताया कि और लोग
गाना गाना चाह रहे हैं । अशोक ने पूछा और कौन लोग हैं । राजेश
मन्मथनाथ ने इशारा किया दूर से आ रहे एक स्मार्ट व्यक्ति की तरफ़ ।
अशोक ने पूछा ,

“यह कौन भाई साहब हैं ?”

“ यह इंजीनियर हैं ।”

“ अरे यार , इंजीनियर तो यहाँ सब्जी मंडी के आलू की तरह हैं । आप एकेडमी में ढेला मारो वह लगेगा इंजीनियर को ही । यहाँ तो सब इंजीनियर ही हैं । यहाँ आकर यह लगता है कि आईआईटी कितनी आसान परीक्षा है । यह भी लगता हैं जो कुछ नहीं बन पाता वह इंजीनियर बनता है ।”

“ यह भाई साहब अलग इंजीनियर हैं ।”

“ यह अलग इंजीनियर क्या होता है ?”

“यह ज़मीन में घुस के इंजीनियरिंग सीखे हैं ।”

“ मतलब यह ज़मीन के जितना ऊपर हैं उससे ज्यादा ज़मीन के भीतर है ।”

“ यह बहुत स्मार्ट भी हैं ।”

“ यह तो देखकर ही लग रहा । करीने से कढ़े बाल , प्रेस की हुई मैचिंग पैंट - क़मीज़ , जूता शीशे की तरह चमकता हुआ । हम तो अपना बाल इनके जूते में देखकर ठीक कर लेते हैं ।”

“ यह गाते भी हैं ।”

“ इला दर्शी जो न कराए दें एकेडमी में । “

“ अब क्या हुआ ?”

“ उनके चक्कर में गायक बढ़ रहे । सुना है यह ड्यूट गाना चाह रहे ।”

“ यह ड्यूट क्या होता है ?”

“ जिसमें लड़का - लड़की एक साथ गाते हैं । मतलब यह साथ - साथ गायेंगे ।”

“ यह तो इनकी चाहत है , बाकी विवेक सिन्हा सर पर है । हो सकता हैं यह बिहारी हैं काम करा लें । कहीं कैलाश पांडे प्रैक्टिस करते ही न रह जायें ।”

“ नहीं ऐसा नहीं होगा । इस बार हम लोग दबाव डालेंगे फ़ैकल्टी पर ।”

“ एक बात बतायें ? “

“यार दो बताओ ।”

“ इला दर्शी की माया का कोई पार नहीं ।”

“ अब क्या हुआ ?”

“ पिछली बार विद्यापति के गीत गायीं । इस बार मीरा के भजन गा रहीं । “

“ एक बात है । “

“ क्या ?”

“ उनका चुनाव अच्छा होता है । ”

“ किसका गाने का ?”

“ अभी तक तो गाने का ही पता चला है । ”

“ यह बताओ किसको चुनेंगी वह जीवनसाथी के रूप में ?”

“ अब स्वयंवर की परम्परा तो रही नहीं । अगर वह परम्परा होती तब क्या पता अनुराग सर ही फाट पड़ते । “

“ यह बताओ किसकी उम्मीद है ? “

“ बीस साल बाद पिक्चर देखी है ? “

“ हाँ देखी है । “

“ उसमें कातिल कौन था ?”

“ जिस पर किसी को कोई शक नहीं था । ओहो .. ओहो .. मतलब यह हिंदी पिक्चर का सस्पेंस ड्रामा है । जिस पर कोई शक नहीं वह कातिल है ?”

“ बस .. कातिल प्रकट होगा ... भय प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या महतारी “

“ मतलब रेस अभी शुरू ही हुई है ?”

“ प्रत्यक्ष तौर पर पूछ रहे या अप्रत्यक्ष तौर पर ?

“ दोनों तौर पर बताओ । ”

“ बस यह समझ लो चौसर बिछ गई है और कोड़ी लोग हाथ में लेकर घुमा रहे हैं । “

“ कौन जीतेगा ?”

“ जो यक्ष के प्रश्न का उत्तर देगा । ”

“ मतलब विद्वत्समाज से कोई आयेगा ? “

“ विद्वान एवम् सहजता परिणाम को प्रभावित करेगी । ”

“ सहज होना आवश्यक है ?”

“ इला दर्शी को सहजता से लगाव है । ”

“ तुमको कैसे पता ?”

“ हम इलाहाबादी लोग एक बड़े समाजशास्त्री होते हैं ।”

“ यक्ष -परश्न कौन करेगा ?”

“ इला स्वयम् यक्ष हैं ।”

“ यक्ष परश्न क्या करेगा ?”

“ तुम मदिरा तो नहीं पीते ... तुम अनैतिक तो नहीं हो .. तुम भृष्टाचार तो नहीं करोगे ... तुम मेरे पिता के पास प्रस्ताव लेकर जाओगे आदि यक्ष परश्न होंगे ।”

“ मतलब साधू बनना पड़ेगा प्राप्ति के लिये ?”

“ साधू क्यों बनना पड़ेगा ?”

“ अब रह क्या गया सिवाय इसके कि गेरुआ वस्तर पहनो । वह भी पहना दो ।”

“ प्रेम एक परीक्षा की माँग करता है । यह परीक्षा पास करनी होगी ।”

“प्रेम परीक्षा से परे है । वह प्रेम नहीं जिसमें परीक्षा है । प्रेम एक समर्पण है , यह कोई कक्षा पास करने की प्रक्रिया नहीं ।”

“यह समर्पण है कैसे अभिव्यक्त होगा ?”

“ एकनिष्ठता से ।”

“ एकनिष्ठता है , यह कौन तय करेगा ?”

“यक्ष ।”

“ यह एकनिष्ठता क्या होती है ?”

“ समर्पण ।”

“ समर्पण किसके प्रति ?”

“ जिसकी चाहत है ।”

“ क्या प्रेम सम्पूर्णता में प्राप्त होता है ?”

“ मानवीय प्रेम शायद नहीं होता ।”

“ क्यों ? “

“आशायें जुड़ी होती हैं।”

“कौन सा प्रेम सम्पूर्ण होता है?”

“ईश्वरीय प्रेम सम्पूर्ण होता है।”

“वह भी नहीं होता।”

“क्यों?”

“कहाँ कोई बेवजह मंदिर जाता है।”

“यह तुम ईश्वरीय प्रेम के वाह्य स्वरूप की बात कर रहे हो। मीरा का प्रेम देखो।”

वाह गुरु, पता चला इला मीरा के भजन गा रहीं तुम मीरा पढ़ मारे। लगे रहो जोड़ियाँ ईश्वर बनाता है, हम सब तो निमित्त मात्र हैं।”

“नहीं यार, बहुत क्रिस्मत से यह परीक्षा पास किये एक भौतिकवादी जीवन हेतु। यह शर्त जीवन से भौतिकता का समापन कर रही। क्या यह किया जाना चाहिये?”

“उदात्त लक्ष्य हेतु परीक्षा के दौर से गुजरना होगा।”

“क्या इला दर्शी को प्राप्त करना एक उदात्त लक्ष्य है?”

“नहीं।”

“तब?”

“प्रेम की प्राप्ति एक उदात्त लक्ष्य है।”

“क्या प्रेम आवश्यक है?”

“निःसंदेह।”

“थोड़ा और समझाओ।”

“चलो मामला अनुराग सर के पास से चलते हैं, वह पूरे प्रेम की व्याख्या की माठा कर देंगे।”

“उनको छोड़ो तुम बताओ।”

“राजेश मन्मथनाथ..”

“बोलो यार..”

“आप भी घायल हो चुके।”

“ऐसा नहीं है।”

“ रात के अंधेरो में दर्पण के सामने आँखों को देखना । आँखों में कोई तस्वीर उभरेगी । ”

“ यह बात छोड़ो , एक बात बताओ ?”

“ पूछो, हमारा तो जन्म ही लोगों का काटने के लिये हुआ है और तुम कटवाना चाह रहे हो तो हमको क्या आपत्ति । ”

“ क्या सारे प्रश्नों का सकारात्मक उत्तर आवश्यक है ?”

“ महाभारत पढ़े हो ?”

“ हम चार्टर एकाउंटेंट हैं । हमको इससे क्या मतलब ?”

“ एक भविष्यवाणी कर देता हूँ । ”

“ कर दो । ”

“ रेस में तुम अंतिम दौर तक लड़ोगे । अपने में सुधार लाओ , खासकर भाषा में । यक्ष प्रश्न पढ़ो , तुमको परीक्षा के दौर से गुजरना होगा । फेंकों कौड़ी फेंको , कौड़ियों को रक्स करने दो , लोगों की धड़कनें बढ़ने दो । किस्मत का पहिया है कहीं भी रुक सकता है । ”

राजेश मन्मथनाथ शाम को लाइब्रेरी में यक्ष प्रश्न खोजते दिखे ।

सायंकाल एकेडमी का बहुत ही मनोहर होता था । एकेडमी की पहाड़ियाँ, दूर से आते दिखते नव नियुक्त भविष्य के प्रति संजीदा लोग, जीवन को एक नये सिरे से समझने का प्रयास सभी कर रहे थे । सायंकाल मेज़ की टेबल पर अशोक और अनामिका साथ खाना खाने पहुँचे ही थे कि वेज बनाम नान वेज का हंगामा हो गया । एक लगता है वेज को संस्कार की थाती मानने वाली कोई विदुषी महिला थीं उन्होंने कह दिया वेज एवम् नान वेज की टेबल अलग करो , मैं नान वेज बर्दाश्त नहीं कर पाती । अशोक ने कहा , मैडम इतना समन्वय का अभाव न हो । यह कैलाश पांडे जी हमारे जीवन के बड़े भाग हैं और यह बगैर नान वेज के जीवित नहीं रह सकते और हम इनके बगैर नहीं रह पाते , हमारा साथ बरकरार रहे इस पर ध्यान रखें । पर संस्कार उनके समक्ष खड़े हो गये और मेज़ बँट गयी । लोग वेज होकर भी नान वेज टेबल पर ही वेज खाना खाये , आखिर कैलाश पांडे जी जीवन की अभिन्नता में थे । टेबल पर ही अशोक ने कहा ,

“ परेम नंदन बहुत विविधता के लोग हैं यहाँ पर । ”

“ यह बात तो है ।”

“ यह देख रहे शांत चित्त, आभायुक्त व्यक्ति ?

“देख रहा, वही जिनके चेहरे पर नूर है ?”

“ तुमको उर्दू झाड़े बगैर सुकून नहीं मिलेगा । अब आभा युक्त कह दिया तब चेहरे पर नूर कहने से क्या फ़र्क़ पड़ेगा ।”

“ थोड़ा फ़र्क़ है ।”

“ फ़र्क़ हटाओ । यह बताओ यह कौन है ।”

“ यह भी इंजीनियर हैं ।”

“ एक बात याद रखो । इंजीनियर नहीं है तब ज़िकर करो । इंजीनियर होना कोई ख़ासियत नहीं रखता, यहाँ पर । सब्ज़ी में प्याज़ पड़नी ही है उसी तरह एकेडमी बगैर इंजीनियर के बनेगी ही नहीं ।”

“ अनुराग सर पर दो लोग भारी पड़ेंगे पक्का ।”

“ कौन दो ?”

“ एक यह और एक छः फुट पाँच इंच वाले संजीव टंडन ।”

“ वह कैसे ?”

“ संजीव टंडन जितना ज़मीन से ऊपर हैं उससे कई योजनों जमीन के भीतर हैं । संजीव टंडन का पैर और शेष नाग का फ़न आपस में टकराता है और उससे उत्पन्न होने वाली ऊर्जा से पृथ्वी का बैलेंस बना हुआ है ।”!

“ इनके बारे में पहले बताओ ?”

“ यह विद्वान् प्रकृति के व्यक्ति हैं ।”

“ यहाँ सबै विद्वान् ही हैं ?”

“ हम - तुम भी ?”

“ हम नहीं भी हैं तो विद्वता का नाटक तो चालू ही है ।”

“ यह बताओ, इनका सुदर्शन चक्र चलेगा ?”

“ चलेगा पर सावधानी से ।”

“ वह कैसे ?”

“यह अर्जुन की तरह चिड़िया की आँख पर अचूक निशाना लगायेंगे, अगर लगायेंगे तब ।”

“ तुम्हारा गणित क्या कहता है ?”

“ अब सोच रहा सबकी कुँडली देखकर जोड़ी बना ही दूँ ।”

“ इनका बताओ । ”

“ यह गंभीर व्यक्ति हैं । शालीनता से काम करके निकल जायेंगे , किसी को ख़बर नहीं होगी । ”

“ तुमको भी नहीं ? ”

“ हमसे कुछ चीज़ कहाँ बच सकती है । मैं तो इनके लक्ष्य के नज़दीक का व्यक्ति हूँ । ”

“ एक बात बतायें ? ”

“ हाँ । ”

“ शादी - शुदा होने के बहुत लाभ हैं । आपसे लोग दिल की बात करते हैं । ”

“ वह देख रहे हो जो मार हँसे जा रहा । ”

“ हाँ । ”

“ उनका हीमोग्लोबिन बहुत तगड़ा है , उसका कारण टमाटर नहीं लड़कियों का साथ है । ”

“ वह इनका साला बन सकता है । ”

“ वह कैसे ? ”

“ वह जिसको देखो बहिन बना लेता है ? ”

“ क्या उसके पास बहन नहीं है ? ”

“ बहन है , पर बनाता रहता है । ”

“ क्या हाथ में एक झौआ राखी बाँधने का शौक है इनको ? ”

“ यह शौक तो नहीं होगा , पर कुछ स्कीम होगी । बगैर स्कीम के यहाँ कोई काम कहाँ करता है । ”

“ उनसे बाद में निपटेंगे पहले इनके बारे में बताओ , क्या यह भी यक्ष के प्रश्न का उत्तर देंगे ? ”

“ नहीं यह उत्तर देने वाले नहीं हैं , यह स्वयम् में एक प्रश्न हैं , अनुत्तरित प्रश्न । ”

“ मतलब पहुँची हुई चीज़ हैं । ”

“ बहुत । ”

“ यहाँ हर कोई तीरंदाज़ है , तरक्ष में तीर कुलबुला रहा लक्ष्य भेद को । ”

“ अनुराग सर शांत हैं ।”

“ वह यहाँ की प्रतिभा देखकर हदसिया गये हैं । “

“ वह कैसे ?”

“इलाहाबाद में वह हीरो थे । यहाँ एक से बढ़कर एक महारथी हैं । अभी वह समझ नहीं पा रहे अपनी भूमिका ।”

“ वह प्रतीक्षा के साथ कम देखे जाते हैं ।”

“ एक बात बता दें ?”

“ बता दो ? ”

“ रहने दो , तुम हल्ला कर दोगे । “

“ नहीं करूँगा । “

“ तुम कर दोगे । “

“ अनुराग सर आ रहे । मैं नहीं बताऊँगा । “

मेरी नींद में वह श्वेत वेश धारियों का समूह अक्सर आता था । वह कौन थे इसके बारे में मुझे कुछ पता न था । वह संभवतः मेरे अन्तर्नमन की चेतना की एक आवाज़ थी जो बार - बार मुझसे कहती थी कि तुम वह नहीं कर रहे जो तुमने करने का वायदा किया था । यह जीवन जो तुम जी रहे इसके द्वारा जीवन की बहुत ही सीमित सार्थकता प्राप्त होगी । तुम एक कामयाब जीवन जीना चाह रहे न कि एक सार्थक जीवन । सार्थक जीवन का जीवन की इस तथाकथित कामयाबी के चौंचलों से कोई सरोकार नहीं होता । तुझे लगता है कि तेरे पास संसाधनों की कमी है और तुम नाकामयाब हो सकते हो । यह नाकामयाबी का भय तुझे यथास्थितिवादी बना रहा । सफलता का एक इतिहास है , आळादकारी इतिहास , रोमांचित करता विश्लेषकों को । पर नाकामयाबी का इतिहास ही बनाता है वह इतिहास जो कालजयी होता है । एक कालजयी इतिहास का सृजन करना है तुझे , नाकामयाबी से डरना तुझे बंद करना होगा अनुराग , चल मेरे साथ एक भविष्य तेरा इंतज़ार कर रहा है । ऐसा नहीं है कि समाज में त्याग की भावना पूर्णतः समाप्त हो चुकी है , व्यक्ति राम और और बुद्ध के रास्ते पर चलना चाहता है । पर राम और बुद्ध की तरह आत्मा की आवाज़ पर फ़ैसले लेने की क्षमता विरलों में ही होती है । तू उस क्षमता को विकसित कर । उठ चल मेरे साथ । इस रात के अँधेरे में त्याग दे इस मसूरी की पहाड़ी पर बनी माया - मोह के परिसर को । मेरी माँ प्रकट हो गयी । वह श्वेत वेशधारियों से शास्त्ररार्थ करने लगी । मैं खो गया श्वेत वेश धारियों के प्रश्नों के लालित्य और माँ के उत्तरों के पांडित्य में ।

“ हर रातिर क्यों आते हो तुम इसे परेशान करने के लिये ? तुम लोग क्या चाहते हो ?”

“ यह समाज के लिये बना है , इसे समाज के लिये कार्य करना होगा ?”

“ एक माँ को तुम बताओगे उसका बेटा क्या करे और कैसे करे ? ”

“ तुम स्वार्थ से ग्रसित हो ?”

“ तुम सब जमाने से भागे हुये हो । तुम सब उत्तरदायित्व विहीन लोग हो । तुम्हारे ऐसे बहुत से लोगों को मैंने माघ मेले में देखा है । एक माँ पर स्वार्थी होने का आरोप इतिहास से ढूँढ़ कर लाओ और तब मुझसे शास्त्ररार्थ करो । यह अभी छोटा बच्चा है । तुम सब कई लोग मिलकर इसको हर रात भ्रमित करते हो । तुममें से जो भी सबसे विद्वान और शक्तिशाली है वह इससे अकेले शास्त्ररार्थ करे , मैं दावा करती हूँ यह तुम्हारे सफेद वस्तर उतार कर तुमको एक आम जीवन जीने के लिये बाध्य कर देगा । मैं जानती हूँ तुम अकेले इसे परास्त नहीं कर सकते इस लिये झुंड में आते हो । आओ तुम सब आओ मैं शास्त्ररार्थ करूँगी । पूछो पूरी विद्वता से और मुझे संतुष्ट करो यह संन्यास क्यों ले ? अगर तुम मुझे संतुष्ट कर ले गये तब मैं स्वयम् श्वेत वेशधारी बनाकर इसे समाज के लिये प्रस्तुत करूँगी । मैंने इसे अपने लिये नहीं समाज के लिये जना है , पर यह अभी अपरिपक्व है । इसे परिपक्वता प्राप्त करने दो । बताओ तुममें से कौन जय-पराजय का फ़ैसला करेगा ? मैं इस बात से शास्त्ररार्थ आरंभ करती हूँ इसका अभी समाज के लिये कार्य करना समाज के हित में न होगा । आरंभ करो शास्त्ररार्थ .. आरंभ करो .. किसी माँ से शास्त्ररार्थ न किया होगा तुमने ... इतिहास महिलाओं को अवसर कम देता है .. एक अवसर समुख आया है इस आरोप के साथ कि “ माँ स्वार्थी है ।

संसार से भागे हुये लोग , अपनी जिम्मेदारियों से विरत लोग एक त्याग के संस्थान पर आरोप लगा रहे । आरंभ करो शास्त्ररार्थ.. ”

माँ की आँखें लाल हो चुकी थीं .. एक तेज .. एक आभामंडल उसके चारों ओर था .. श्वेत वेश धारियों का समूह हतप्रभ था ।

“ मैं बाल संन्यासी हूँ । ”

“ मतलब तुम अशिक्षित हो ? ”

“ मैंने चार वर्ष की उम्र में घर त्याग दिया । मैंने वेद - पुराणों का अध्ययन किया । मैंने पीएचडी की है । तुम मुझे अशिक्षित कह रही हो । ”

“ तुमने चार वर्ष की उम्र में घर त्याग दिया । संन्यास एक साधना की माँग करता है , एक जीवन के सतत अध्ययन का , एक दार्शनिक - आध्यात्मिक पर जीवनोपयोगी विमर्श का । यह संन्यास अर्थहीन है अगर यह समाज के उपेक्षित - पीड़ित वर्ग के लोगों की पीड़ा को हरने का कोई उपाय नहीं करता । तुमको माँ की शिक्षा प्राप्त ही नहीं हुई । हर माँ यह शिक्षा देती है कि तुझे जमाने के लिये जीना होगा । यह पर्वत की कंदराओं में जाकर एकांतवास शायद स्वयम् को संतुष्टि तो दे दे पर यह समाज के किसी कार्य नहीं आयेगा । एक बात याद रख बाल संन्यासी जिसे माँ की शिक्षा को त्याग दिया उसकी शिक्षा अपूर्ण है । तुम्हारे जीवन का क्या लक्ष्य है ? ”

“ मैं समाज में लोगों के आँसू पोंछना चाहता हूँ । ”

“ जो अपनी माँ को रुला कर आया हो , जिसे अपनी माँ के आँसुओं की परवाह व हो वह समाज के आँसू पोंछने का दावा कर रहा । तुम किस भ्रम में ज़िंदा हो । कुछ किताबें पढ़ कर ज्ञानवान का दावा करने वाले तू मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर दे । ”

“ पूछो , मैं तुम्हें संतुष्ट करूँगा । ”

“ संन्यास क्या है ? ”

“ संन्यास अपने हित को त्याग कर जगत हित की बात करता है । ”

“ संन्यास की विचारधारा का आदर्श कौन है ? ”

“ शिव है । ”

“ शिव कौन है ? ”

“ वह शाश्वत है , वह कर्मयोगी है , वह विराट

है , वह सूक्ष्मातिसूक्ष्म है । नैशाधंकार में वह एकमात्र प्रकाश है । वह हताशा एवम् निराशा का नाशक है । वह सत्य है । वह अन्तर्मन से जगत कल्याण की आकांक्षा रखता है , शुचिता का आग्रही है , पापनाशक है , धिक जीवन को वह सार्थकता प्रदान करता है । प्रतिलिप्त उसका वक्ष पर लहराता है जैसे सिंधु में लहरें क्षितिज की ओर बढ़ती हैं । उसका श्याम रंग व्योम को रंगों का आह्वाद देता है । तीसरा नेत्र सजग है सृष्टि की विपत्ति को नियन्त्रित करने के लिये । तिरशूल का तेज ऊर्जा देता है , डमरु की ध्वनि जीवन में संगीत का समावेश करती है ।

वह बहुत ही सहज है , कोई शिव नहीं हो सकता पर हर कोई शिव की तरह हो सकता है । सृष्टि को सहज बनाना उसका परम लक्ष्य है । वह सुंदर है ,

सत्य है एवम् जगत कल्याण को सन्नद्ध है ।”

“ बता तूने जगत में कितने लोगों के आँसू पोंछे हैं ? क्या तू नीलकंठेश्वर की तरह विष को अपने में धारण कर सकता है समाज के लिये ? घर त्यागने के अलावा तूने और कौन सा त्याग किया है , यह बता घर त्याग देने से कौन से जगत का कल्याण हो गया ? शिव और बुद्ध बनने का दावा करने वाले तेरे भीतर एक अहंकार है बाल संन्यासी होने का और कुछ ज्ञान अर्जित करने का । कई बार ज्ञान अहंकार का कारण बनता है । उस समय व्यक्ति को परीक्षा के दौर से गुजरना होता है । शास्त्रार्थ व्यक्ति को अहंकार विहीन करता है , पर कई बार व्यक्ति शास्त्रार्थ में पराजित होकर भी अहंकार विहीन नहीं हो पाता , ऐसा ही कुमारिल के साथ हुआ । कुमारिल को अहंकार था अपने ज्ञान का । वह शंकराचार्य से पराजित हुये पर अहंकार ने इतना आवरणित किये हुआ था कि उन्होंने अपने आप को अग्निमेषित कर लिया । तू कुमारिल के रास्ते की तरफ़ आकर्षित न हो और अपने आप को परमपिता के सम्मुख समर्पण कर दें एवं ज्ञान मार्ग की भक्ति के अहंकार से मुक्त हो , यह मेरी पहली प्राथमिकता है । बता धर्म क्या है ?

“ यज्ञ धर्म है , वेद- पाठ धर्म है , ईश्वर की उपासना धर्म है । धर्म में फल की कामना नहीं करनी चाहिये । धर्म पर शंका अधोगति का कारक बनता है । मोक्ष प्राप्ति के लिये किया गला कृत्य धर्म है तपस्या , ब्रह्मचर्य पालन , स्वाध्याय धर्म है ।”

“ तेरी शिक्षा अपूर्ण है । “

“ बता देवी धर्म क्या है , धर्म का स्वरूप सूक्ष्मातिसूक्ष्म है ।”

“ तेरे भीतर नैशाधंकार है इसलिये लिये तुझे धर्म का स्वरूप सूक्ष्मातिसूक्ष्म लग रहा है । कर्तव्य पालन धर्म है । छात्र , किसान , सैनिक , राजा , माता , पुत्र , पिता , सेवक , नागरिक , शत्रु , मित्र , परेमी , पति , पत्नी , संतान सबका एक कर्तव्य निर्धारित है । उस कर्तव्य का पालन ही धर्म है । जीवन में शुभेच्छा युक्त नवनीत चरण का प्रयास हर एक व्यक्ति का धर्म है । तूने राम कथा पढ़ी है ?”

“ मैं दर्शन के गूढ़ रहस्यों का आगरही हूँ , कथाओं का नहीं । “

“ तू बहुत अहंकारी है । तेरे हर वाक्य में अहंकार है । तुझे ज्ञान नहीं भक्ति की आवश्यकता है ।”

“ भक्ति क्या है ? “

“ईश्वर को जानने का प्रयास भक्ति है । “

“ तू उसको जानने की कोशिश कर रहा जिसका विराट स्वरूप कोई देख ही न पाया । जो सगुण भी है और निर्गुण भी है । जो अद्वैत में भी है, विशिष्टाद्वैत में भी और द्वैताद्वैत में भी । यह ज्ञानमार्गी भक्ति ईश्वर का प्रसाद न दें पायेगी । भक्ति एक समर्पण है, एक आस्था है यह साक्ष्य की माँ नहीं करती । ईश्वर के प्रति आस्था ही भक्ति है ।”

“आत्मा क्या है ?”

“ यह नश्वर है, इसको न आग दहाती है न शीत कँपाती है.. “

“ रुक रुक श्वेत वेशधारी । “

“ क्या हुआ ? ”

“ तुझे तो किताबी शिक्षा के अलावा कुछ आता ही नहीं है । “

“ यह गीता का रटा - रटाया पाठ क्यों सुना रहा है । मेरा प्रश्न से फिर से सुन.. आत्मा क्या है मैंने यह पूछा और तू कह रहा वह नश्वर है, आग दहाती नहीं है... आदि आदि.. तुझे तो प्रश्न ही समझ नहीं आता तू उत्तर क्या देगा ? तू भावशून्य ज्ञान लिये घूम रहा है । तू जगत कल्याण क्या करेगा ? “

“ तुम ही बताओ, आत्मा क्या है ? ”

“ आत्मा सत्य है । वह सत्य का शोधन करती है । वह जब तक जीवित है तेरे भीतर वह तुझे ज़िंदा रखे हुये है । यह जगत् मरी हुई आत्माओं से युक्त स्वार्थी लोगों से भरा हुआ है । आत्मा की आवाज़ सुनने वाला अहंकारविहीन होता है । एक अहंकारी बाल संन्यासी तेरे गालों पर माँ कीं अंगुलियों के निशान नहीं बने । वह निशान बने होते तब तू आज हर बात पर अहंकार पूर्ण ढंग से न कहता मैंने घर - परिवार का त्याग किया है । सुन अज्ञानी एक एक बात गौर से सुन.. ज़मीर के साथ ज़िंदा रहने की एक क़ीमत होती है । यह क़ीमत अदा करने वाला संतोष की असीमता से आनंदित होते हैं । तेरे अहंकार के नाश के लिये मुझे तुझे शास्त्ररार्थ पराजित करना ही होगा । यह मेरा नैतिक दायित्व है जो तेरी माँ ने मुझे हस्तान्तरित किया है । मुझे एक माँ का फ़र्ज़ निभाना ही होगा । ”

“ बता धर्म क्या है ? ”

सुबह के चार बज गये थे । मेरी आँख खुल गयी । मैं शास्त्ररार्थ पूरा न सुन सका । मैं रोज़ की तरह उठा, अपनी पहाड़ियों के तरफ़ की खिड़की को खोला । एक ठंडी हवा का झाँका मेरे चेहरे पर पड़ा । हर सुबह हम लोगों को ग्राउंड पर जाना होता था और वहाँ पर कुछ न कुछ करना होता था । आज कई दिन से ग्राउंड पर राजीव सिंह नहीं आये थे । पता चला कि वह

मेडिकल पर हैं । मैंने कहा कि वह कल तो शाम को टेनिस खेल रहे थे आज क्या हुआ ? मैं सुबह की पीटी के बाद उनके कमरे में गया वह बैठे चाय पी रहे थे और साथ में थे शिव बाबू सक्सेना सेवाओं, सिविल लिस्ट, सेवाओं के जीवन के महान ज्ञानी । शिव बाबू सक्सेना का मस्तिष्क वेयर बहुत तगड़ा था । उनकी याददाश्त इतनी तीव्र थी कि वह पूर्व जन्म की अपनी कथा भी जानते थे । सबकी तरह हिंदू विचारधारा के अनुसार वह चौरासी लाख योनियों के बाद मानव योनि प्राप्त किये थे पर उनको अपने पिछले कुछ योनियों का जीवन याद था । आप उनसे किसी का नाम लो वह उसकी कुंडली निकाल देते थे । वह दवाई बहुत खाते थे और उनको खाँसी अक्सर रहती थी । मैंने उनसे पूछा ,

“ आप सुबह पीटी में नहीं आते । ”

“ मैंने पीटी से छूट प्राप्त कर ली है । ”

“ कैसे ?”

“ डॉक्टर से सर्टिफिकेट ले लिया है । ”

“ किस बात का ?”

“ बदन में बहुत दर्द रहता है । ”

“ फिर शाम को दो घंटा टेनिस कैसे खेलते हैं । ”

“ तब दर्द नहीं रहता । ”

“सुबह दर्द और शाम को नदारद ... ”

“ यह सूर्य की किरणों के प्रभाव से होता है । उदिशा के साथ आरंभ होता है और जैसे - जैसे सूर्य चढ़ता है यह प्रेरणा करता है । जब सूर्य उत्तरने लगता है तब यह सामान्य हो जाता है । ”

“ यह कौन सी व्याधि है, यह आपको कब से है ?”

“ पता नहीं कब से है पर पता अभी चला । ”

“ वह कैसे ?”

“ पहले सोकर उठते ही थे नौ बजे तब पता ही न चला । यहाँ सुबह उठने लगे तब पता चला । ”

“ डॉक्टर ने क्या नाम दिया है इस रोग का ?”

“इस बीमारी का नाम अभी खोजा जाना बाकी है । ”

वार्तालाप में पता चला कि यह लोग सीजीएचएस के कंपाउंडर से लिखवा लेते हैं और सुबह बलभर सोते हैं और शाम को टेनिस खेलते हैं । ”

शिव बाबू ने सलाह दी यह आप भी कर लो , सुबह सोने का आनंद लो । मैंने कहा , मुझे सुबह उठने में कोई दिक्कत नहीं होती । उसी समय कैलाश पांडे और राजेश मन्मथनाथ आ गये । राजेश मन्मथनाथ बहुत मज़ेदार थे । वह मारवाड़ी थे और हर बात को हिसाब - किताब से समझाते थे । कैलाश पांडे एकाउंटेंसी से बहुत परेशान थे वह उनको समझ नहीं आ रही थी । वह बार - बार कह रहे थे कि गोकरन साहब जो समझाते हैं वह समझ नहीं आता । वह इतने परेशान थे कि चाय की चुस्की के बीच भी वही समझना चाहते थे । उन्होंने राजेश से कहा ,

“बिल्कुल समझ नहीं आ रहा यह एकाउंटेंसी , यह डेबिट - करेडिट क्या बला है , बहुत ही कनफ्यूस कर रही । ”

राजेश मन्मथनाथ समझा रहे थे कि राजीव सिंह ने कहा , “मुझको प्रयास करने दो अभी समझा देता हूँ शुद्ध हिंदी में बगैर एक शब्द अंग्रेजी बोले । ”

“ जो बाँये हाथ है वह डेबिट और जो दाँये हाथ वह करेडिट । ”

“ यह दायाँ- बायाँ इधर उधर नहीं हो सकता ? ”

“ गाँव का बरधा देखे हो ? ”

“ हम तो हल जोते हैं । ”

“ क्या बवइयाँ - दवइयाँ बरधा को अलट पलट सकते हो ? ”

“ नहीं । ”

“ क्यों ? ”

“ बायीं तरह वाला बैल बायाँ रहने में ही अभ्यस्त होता है और दायाँ दायीं तरफ़ । ”

अगर पलट दो तब खेत जोत पाओगे ? ”

“ नहीं । ”

“ क्यों ? ”

“ दोनों अपनी निश्चित दिशा के अभ्यस्त होते हैं । ”

“ अगर अलट - पलट दिये तब क्या होगा ? ”

“ बेराह चल देंगे । ”

“ बेराह ही नहीं चलेंगे लतिया देंगे खेत को भी और तुमको भी । बस यही है डेबिट - करेडिट । बायीं बायीं तरफ़ वाला बायीं तरफ़ और दायीं तरफ़ वाला दायीं तरफ़ । ”

“ यह कुछ अज़ीब नहीं है ?”

“क्या?”

“ यह डेबिट - क्रेडिट का सिद्धान्त । ”

“ कुछ उल्टा - पुलटा नहीं है । जो खर्च वह डेबिट जो आमदनी वह क्रेडिट । ”

“ थोड़ा आसान करो । ”

“ रट लोगे ?”

“ मैं रटने मेरे तो मास्टर हूँ । ”

“ राजेश जी डेबिट - क्रेडिट इंटरी लिख दो, यह रट मारेंगे । ”

“ रट लोगे ?”

“ उसमें हमारी महारत है । ”

“ बस काम हो गया । ”

“ लिख दो भाई । ”

कैलाश पांडे जी पूरी रात रटते रहे, सपने में भी / बैल भी सपने में दौड़ रहा था बायीं तरफ़ वाला बायीं तरफ़ पर वह कभी - कभी दायीं तरफ़ भागने लगता था ।

एक कोर्स था पब्लिक स्पीकिंग का । वह कोर्स अगले दिन आरंभ होना था । आज हमारे एडिशनल डायरेक्टर जनरल माधव धर्माधिकारी ने पूरे दिन समझाया कैसे बोलना होगा । उन्होंने बहुत से फ़ंडे दिये मसलन हाथ को कैसे रखो, कैसे आँख से आँख मिलाकर देखो, कैसे बोलो, कैसे अपना भाषण लिखो । इस कोर्स के लिये कुछ स्वयंभू छद्म स्पीच राइटर जन्म ले लिये । उसमें से एक थे अतिशय ऊँचे क़द के बिहार के बस्टल लैंड से आने का दावा करने वाले सुमित परजापति । वह मानो पैदाइशी अंगरेज़ी में रोने वाले थे । वह छींकते भी अंगरेज़ी में थे । सिद्धांत बहुत परेशान थे कि यह कौन सी बला सर आ पड़ी । वह कभी कहीं बोले ही न थे । वह स्कूल के डिबेट वर्गैरह प्रतियोगिता के समय दीवाल कूद कर पीछे से भाग जाते थे । सिद्धांत और सत्येन्द्र एक साथ आये । मैंने उनको देखते ही कहा, “ बंधु याद होगा, हम लोग साहित्य पर विमर्श किये थे मेडिकल के दिन । ”

“ बिल्कुल याद है । ”

“ वैसे आपका साहित्यिक संस्कार किसी को भी प्रभावित कर सकता है । ”

“ यार, बस कुछ लिख लेते हैं काम चलाऊ । ”

“ कुछ लिखा आजकल में ?”

“ हाँ ।”

“ सुनाओ । “

“ एक उम्मीद का चिराग है

जिस मोड़ पर मैं बैठा हूँ उस मोड़ पर वह राहें बनाता है

इक रोज़ तुम भी मुड़ कर आओगी

रुक जाओगी यह कहकर

चल तू हमसफ़र

बता कौन सा रास्ता है

जिस राह पर मुझे चलना है । ”

अशोक - “ यह कब लिखा ? ”

सत्येन्द्र तिरपाठी - “ बस आजकल में ही लिखा है । ”

“ एकाध और सुनाओ । ”

“ तुम मुझे बताते रहे सलीक़ा इबादत का

मैं हर रोज़ करती रही इबादत अंदर अपने

बस फ़र्क़ खुदा का था

तेरा कोई और था

मेरा कोई और था । ”

“ क्या बात है सत्येन्द्र है । ”

अशोक - “ सर , यह तो चोट खाये लग रहे हैं । ”

सत्येन्द्र हँसने लगे , चाय पिया सिगरेट सुलगायी और अशोक से कहा
तुम्हारी चाय लिख देता हूँ । ”

“ यार समोसा भी लिख दो ।

“ लिख देता हूँ । ”

सत्येन्द्र के जाते ही अशोक ने कहा , ”सर आपकी नज़म है न । ”

“ कौन सी ? ”

“ खानाबदोश आँखें ढूँढ़ती हैं ख्वाब पर नामुराद नींद का कोई भरोसा नहीं । ”

“ यह क्यों याद आ रही ।”

“ सर यह भी शिकार हो गये या हो रहे ।”

“ किसके ? ”

“ पता करता हूँ । बहुत मज़ा आ रहा है । सर .. “

“ क्या हुआ ? ”

“ सर इश्क़ का बुख़ार ज़ोरों पर है । “

“ कातिल कौन है ? ”

“ सर , अभी तो आपकी कातिल आ रही हैं ।”

“ कौन ? ”

“ भाभी जी आ रही है ।”

“ मत बोला करो यह , वह तुमसे आजकल नाराज़ है ।”

“ क्यों ? ”

“ कह रही यह लड़कियों के बारे में अफ़वाह फैलाता है ।”

“ सर मैं मार्केट बना रहा सब का । अब इनका नहीं बनाता यह नाराज़ ही होंगी । अब इनका मार्केट क्या बनाना सर , यह महामानव ले उड़ी । क्या पता इला दर्शी , कविता शर्मा , सुचेता फ़क़ीर की तक़दीर में कुछ और लिखा होता । ”

प्रतीक्षा नज़दीक आ रही थी चलते हुये , मैं देख रहा था उसमें खोया हुआ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 379

प्रतीक्षा नहीं चाहती थी कि उसका नाम किसी के साथ जोड़ा जाये । उसके दीवानों की कोई कमी न थी । पर वह पहले ही मेरे प्रति समर्पित हो चुकी थी पर वह सजग रहती कि यह बात भी लोगों को पता न चले । पर लोग दबे मुँह यह बात कहते थे कि प्रतीक्षा और अनुराग के बीच कुछ बात है । इलाहाबाद के लोग मेरे प्रति बहुत सम्मान भाव रखते थे इसलिये वह मेरे बारे में कुछ नहीं कहते थे । अशोक का मेरे प्रति सम्मान भाव भी था और मेरी नाराज़गी का भय भी , इसलिये वह अफ़वाह सम्राट भी प्रतीक्षा के बारे में कोई सूचना नहीं देता था , पर वह आदत से मजबूर थे इसलिये गाहे - बेगाहे कुछ सूतर छोड़ देता था । वह सूतर लोगों को लिये आकलन का कारण बन जाता था ।

मैं एक स्पष्टवादी व्यक्ति था और मुझे इस बात को छिपाने का कोई कारण समझ में नहीं आ रहा था । मैं ढोल पीटकर हर जगह हल्ला नहीं करना चाहता था कि प्रतीक्षा मेरी माशूका या मेरी होने वाली पत्नी है फिर भी मुझे बेवजह का झूठ बोलने में कोई रुचि नहीं थी । राजीव सिंह, राजेश मन्मथनाथ और राजेश प्रकाश ने एकाध बार यह बात छेड़ी तब मैंने इधर-उधर की बात करके यह बात टाल दी थी । मेरी माँ की सख्त हिदायत थी कि एकेडमी में प्रतीक्षा के साथ मर्यादा से रहना और किसी सामाजिक मान्यता पर प्रहार मत कर देना, वह तुम्हारी पत्नी अभी नहीं है जब होगी तब का व्यवहार तब करना, अभी नहीं । माँ की नाराज़गी का मुझे भय भी रहता था एवम् उसकी मान्यताओं का सम्मान में बचपन से करता आ रहा था इसलिये प्रतीक्षा का संबंधों के प्रति संजीदा रहना मुझे भी ठीक लग रहा था । मैं बस यह बेवजह का झूठ नहीं बोलना चाह रहा था ।

उसने आते ही अशोक को रफूचककर करने का काम आरंभ कर दिया । उसने अपने अकाउंट में दो चाय और चार समोसा लिख दिया और कैंटीन वाले लड़के बल्लू से कहा, यह जब माँगे तब दे देना । अशोक प्रसन्न हुआ और कहा बहुत आशीर्वाद मिलेगा आपको एक गरीब की आत्मा को तृप्त करने का । उसी समय अनामिका आ गयी । प्रतीक्षा ने कहा, इसको ले जाओ यहाँ से मुझे अनुराग से कुछ

बात करनी है यह बात नहीं करने देंगे । अनामिका अशोक को लेकर चली गयी । अशोक के जाते ही प्रतीक्षा ने कहा, ”अनुराग मुझे नींद नहीं आती आजकल । “

“ क्यों, क्या हुआ ?”

“ मुझे कैडर का भय खाये जा रहा है ।”

“ क्यों ?”

“ मेरी रैंक नीचे है और लोग कह रहे इस रैंक पर दक्षिण का या पूर्वोत्तर भारत का कैडर मिलेगा । यह रोस्टर सिस्टम का कोई टिकाना नहीं कहाँ पर टिका दें । तुम्हारा तो यूपी कैडर हो जायेगा । इनसाउडर कोटा में तीन सीट है । “

“जो होगा वह देखा जायेगा प्रतीक्षा । “

“ अनुराग ! “

“ हाँ । ”

“ कहते हैं सभी विवाह के बाद कैडर बदल जाता है । ”

“ हाँ कहते तो हैं यह लोग और ऐसा होता भी रहा है । पर अभी हमारा विवाह हुआ कहाँ है । वह बात तो विवाह के बाद होगी । पर एक बात और है । “

“ क्या ? ”

“ कैडर बदल तो जाता है पर इस बात की क्या गायरंटी कि तुम्हें मेरा कैडर मिल जायेगा । मुझे भी तुम्हारा कैडर मिल सकता है । हो सकता है मुझे तुम्हारे कैडर में भेज दें । पति - पत्नी का कैडर एक हो यह प्रयास किया जाता है न कि बेहतर कैडर में दोनों को समायोजित किया जाये । ”

“ यह काम भैया करा देंगे । ”

“ कैसे ? ”

“ कैडर से एनओसी लेनी होती है । वह यूपी सरकार से एनओसी ले लेंगे और मेरा कैडर तुम्हारा वाला हो जायेगा । ”

“ प्रतीक्षा ... ”

“ बोलो । ”

“ रहने दो .. ”

“ बताओ तो । ”

“ अगर मैं नौकरी छोड़कर चला गया तब ... ”

प्रतीक्षा का चेहरा सफेद हो गया । वह मुझे भी जानती थी और मेरी ज़िद को भी । वह समझ गयी कि मेरे दिमाग़ में खुराफ़ात घूम रहा है । वह चिंतिं होकर बोली , ” क्या ऐसा हो सकता है ? ”

“ हो तो कुछ भी सकता है । ”

“ क्या तुम आईएएस त्यागने का विचार बना रहे हो ? ”

“ नहीं , अभी ऐसा कोई विचार नहीं है पर संभावना तो है ही । तुम तो सब जानती ही हो मेरे बारे में । मैं बहुत इच्छुक कभी भी नहीं रहा यहाँ आने के लिये पर संयोग ऐसा बना कि मैं चला आया । ”

प्रतीक्षा के चेहरे पर चिंता की रेखायें साफ़ देखी जा सकती थीं । वह अधीर हो गयी । उसने कातर होकर कहा , “ अनुराग , ऐसा मत करना . प्लीज़ । ”

“ मैं कुछ नहीं करने जा रहा पर यह भी संभव है कि कैडर एलॉटमेंट मेरी रैंक तुम्हारी मदद न कर पाये क्योंकि अगर फ़ैसला कुछ ले लिया तब ... ”

प्रतीक्षा थोड़ा नाराज़ भी हो गयी और मुझे बीच में ही रोक लिया ।

“ अनुराग , यह क्या बात है ? अभी हमारा जीवन आरंभ ही नहीं हुआ और हिचकोले आने लगे । मैं इस भय में नहीं जीना चाहती कि तुम किसी दिन उठकर संन्यास धारण कर लोगे । मैं एक चक्रवर्ती व्यक्ति की पत्नी बनना

चाहती हूँ । मैंने प्रेम एक आदर्श व्यक्ति से किया है, एक ऐसा व्यक्ति जो जीवन के प्रतिमान बनाता है न कि एक संन्यासी जो जीवन त्याग देता है ।”

“ प्रतीक्षा प्रतिमान एक संन्यासी भी बनाता है और उसका प्रतिमान एक प्रेरक प्रतिमान होता है । जीवन त्याग में है भोग में नहीं । महात्मा वह नहीं होता जो जीवन के भौतिकतावादी प्रतिमान बनाता है बल्कि वह होता है जो जीवन को त्याग कर समाज के लिये एक नज़ीर पेश करता है, अपने कृतित्व से । यह आशा करना कि मेरा जीवन मात्र मेरे लिये और मेरी संतति के लिये है यह एक स्वार्थपरक अवधारणा है । क्या तुम्हारा और मेरा लगाव इस सेवा के सदस्य होने से निर्धारित होता है ? एक बात बराऊँ प्रतीक्षा? ”

“ कहो ।”

“ मेरे स्वप्न में कुछ श्वेत वेशधारियों का एक समूह आता है । वह शायद मेरी उपचेतना में मुंजमिद मेरा अपना ही विचार उनके माध्यम से अभिव्यक्त होता है । स्वप्न में मेरी माँ आती है । वह उन श्वेताम्बरियों से शास्त्रार्थ करती है । वह जब शास्त्रार्थ करती है तब मैं खो जाता हूँ उसकी आवाज़ में । उसकी चाहत में तुम्हारी भी चाहत शामिल रहती है । ”

“ क्या शास्त्रार्थ करती है ?”

“ श्वेताम्बरियों की चाहत है मैं जीवन की भौतिकता को त्याग दूँ और माँ उनसे कहती हैं पहले मुझे संतुष्ट करो यह जीवन का भौतिक पक्ष क्यों त्यागे । ”

“ अनुराग, क्या तुम इतना परिश्रम करके प्राप्त की गयी एक देश की सबसे बड़ी नौकरी को त्याग दोगे ?”

“प्रतीक्षा, एक बात तो तय है । यह नौकरी मैं लंबे दौर तक तो नहीं करूँगा । इसको त्यागना ही है । कब मैं इससे मुक्त होऊँगा यह नहीं पता मुझे । ”

प्रतीक्षा के चेहरे पर चिंता की रेखाये साफ़ देखी जा सकती थीं । वह कुछ कहती उसी समय लोगों का जत्था आ गया । अशोक, राजेश मन्मथनाथ, राजीव सिंह, कैलाश पांडे सब आ गये । अगला क्लचर प्रोग्राम होने की सूचना आ चुकी थी । कैलाश जी का गाना कैसे हो, इस पर विमर्श आरंभ हो गया ।

अशोक - “ सर, गाना इस बार कैलाश जी का होना चाहिये । ”

मैं - “ ज़रूर होना चाहिये । ”

राजेश मन्मथनाथ - “ यह विवेक सिन्हा सबसे बड़े गाने के जानकार हो गये हैं । आता- जाता कुछ नहीं पर पूरा नौशाद की तरह संगीत के सुर समझने का नाटक करते हैं । ”

अशोक - “ यार, थोड़ा रियाज़ कर लें । ”

राजेश - “ पूरी रात तो गदहा की तरह रेंगते रहते हैं । अब कितना रियाज़ करें । ”

कैलाश जी राजेश मन्मथनाथ पर नाराज़ हो गये ।

“ तुम पूरे बेवकूफ हो , हर समय बेवकूफी की बात करते रहते हो । यह गदहा की तरह क्या रियाज़ करना होता है ? ”

अशोक - “ यार तुम हर बात पर नाराज़ होते हो । गदहा क्या कोई प्राणी नहीं होता ? वह भी ईश्वर के द्वारा बनाया जाता है । आप ईश्वर का अपमान कर रहे हो , ईश्वर की रचना का सम्मान न करके । आप सेलेक्शन के पहले गदहा थे , आज बड़े काबिल बन गये हो । आप भी कभी न कभी पूर्व जन्म में गदहा रहे होंगे । आप चौरासी लाख योनि के बाद मानव तन पाये हो । पहले की योनि में गदहा रहे ही होंगे , अब जो आप थे कभी उससे क्यों परहेज़ । ”

कैलाश पांडे और बिफर गये , “ मैं कभी गदहा नहीं था । मैं जो सेलेक्शन के पहले था वहीं आज हूँ । मैं भूगोल का गोल्ड मेडलिस्ट हूँ , मैं किसी पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता । ”

“ कालिदास , मतलब तुम आत्मा की अमरता में कोई विश्वास नहीं करते ? ”

कैलाश पांडे कालिदास कहने पर बहुत नाराज़ हो गये और चीखने ऐसे लगे ..

“ आप बहुत वाहियाद आदमी हो । हर समय बेमतलब की बात करते हो । मैं इन सब फ़ालतू चीज़ों पर कोई विश्वास नहीं करता । ”

“ यार , दुर्वासा न बन जाओ ज़रा शांति से बात करते हैं , आपकी भारतीय दर्शन पर कोई आस्था नहीं है ? ”

राजीव सिंह बोल दिये , “ आप गीता का अपमान न करें । थोड़ा पढ़ लें , ज्ञान हो जायेगा । ”

अब तो कैलाश पांडे अनियंत्रित हो गये ।

“ मैंने सब पढ़ा है । मुझे सब आता है । आप लोग अपना ज्ञान अपने पास रखो । मुझे मत समझाओ । आप गधा रहे होंगे पूर्व जन्म में । मैं नहीं था । ”

“ मतलब आप पूर्व जन्म मानते हो ? ”

“ मैं कुछ नहीं मानता । ”

वह उठ कर जाने लगे कि एक धैर्यवान व्यक्ति जनमेजय मिश्रा ने उनको रोक लिया । जनमेजय मिश्रा बिहार के थे । वह संस्कृत के बहुत जानकार थे । शिव बाबू सक्सेना और जनमेजय मिश्रा दो लोग संस्कृत साहित्य से सफल हुये थे । जनमेजय मिश्रा मुस्कुराते भी मंद- मंद थे । वह पूरी हँसी भी मुस्कुरा कर ही पूरी कर देते थे । वह लोगों के प्रणय संबंध की परिणति में

सलाह भी दे देते थे , अगर कोई पूछने आ जाये । वह रिझल्ट आने के कुछ दिन पूर्व ही विवाहित हो चुके थे । विवाहित होने के कारण वह यहाँ की विवाह रेस से बाहर थे पर एक लड़की ने कहा था ,” काश यह अविवाहित होते । “ ऐसा ही वाक्य एक दूसरे अधिकारी के लिये भी किसी ने कहा था । यह लगनशील व्यक्ति थे , प्रशिक्षण पूरी शिद्धत से करना चाहते थे ताकि वह बेहतर अफ़सर बन सकें । अब कौन इनको समझाये प्रशिक्षण से कौन बेहतर अफ़सर बनता है पर इनकी लगनशीलता निःसंदेह प्रशंसनीय थी । उन्होंने सहज भाव से कहा , “ कैलाश जी गधा एक शरम का प्रतीक है , एक निःस्वार्थ सेवा का । उसकी तुलना पर आप नाराज़ न हों । ”

अशोक ने कहा , “ यार इस चकल्लस में समय बर्बाद मत करो । यह बताओ गाना कैसे हो ? ”

मैं - “ गाने का रिहर्सल विवेक सिन्हा करा लें । ”

राजेश मन्मथनाथ-“ कैलाश तैयार हो रिहर्सल के लिये ? ”

कैलाश पांडे - “ हम कहाँ पीछे हटने वाले । ”

यह तय हो गया कि कैलाश पांडे गाने का स्करीन टेस्ट देंगे । बलभर अभ्यास किया गया । सुर - ताल आने लगा । कैलाश जी पत्थर पर ढूब उगा दें अपनी लगनशीलता से । विवेक सिन्हा सर के सामने गाना प्रस्तुत हुआ । जैसे ही एक लाइन कैलाश जी गाते थे लोग कह उठते थे , ” सर क्या बात है ... क्या गाया है .. यह तो ओरिजनल मोहम्मद रफ़ी से भी बेहतर है । ”

वहाँ पर हम लोगों की एसीडी सौमित्र कृष्णा भी मौजूद थी । वह थोड़ा नियम - क्रान्तुन - अनुशासन की पाबंद थी , कुछ ज्यादा ही थीं ऐसा लोग कहते थे । उन्होंने अशोक को रिहर्सल हॉल से बाहर का रास्ता दिखा दिया यह कहते हुये कि गंभीरता से रहो । अशोक लाख कहता रहा , मैडम अब हम शांत रहेंगे पर वह नहीं मानी । विवेक सिन्हा बहुत कनविंस नहीं लग रहे थे । जनमेजय मिश्रा ने मैडम की तरफ़ देखकर कहा , “ मैडम गाया तो ठीक ही है । अभी भी तीन दिन है कार्यक्रम में , अभ्यास कर लेंगे । वैसे भी यह कार्यक्रम तो लोगों में व्यक्तित्व के निखार के लिये होता है न कि कोई गायन की दक्षता के लिये । ”

मैडम को बात अपील कर गयी । उन्होंने कहा , “ विवेक इनको गाने देते हैं । ” अब मैडम ने कह दिया तब विवेक सिन्हा सर क्या करते । कैलाश पांडे का गायन होगा । यह आवाज़ अशोक की गूँजने लगी पहाड़ियों में प्रतिध्वनित होती हुई । हर एक ही शोर कैलाश जी का गायन होगा । रातोंरात रियाज़ चलने लगा । हर कोई सुर का जानकार बन गया था । कोई कह रहा मुरक्की को और ठीक करो , कोई कह रहा थोड़ा और उठकर गाओ । कैलाश जी

कई बार उठकर गाने के निर्देश पर खड़े होकर गाने लगते थे । कोई खुद गाकर बताने लगता था , इस तरह गाओ । इला दर्शी का राजस्थानी डोला रे डोला , कैलाश जी का आज मौसम बड़ा बेईमान है .. पर एक और महान नाटककार थे जो अपना नाटक तैयार कर रहे थे .. वह नायिका ढूँढ़ रहे थे पर कोई सटीक नायिका उनको मिल नहीं रही थी । उनके नाटक का नाम ही अजीब था .. ” झोले .. झोले .. झोले .. ” वह संगीत बना गये थे ..

टन टना टनननन झोले .. झोले .. झोले .. जिसमें कामायनी भी डाल दिये थे पर उनकी नायिका का जुगड़ नहीं बन रहा था ।

अरे रे रे .. कैलाश जी का ड्रेस तो अभी डिसाइड ही नहीं हुआ , आपात बैठक की आवश्यकता है ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 380

मैं किसकी - किसकी कथा लिखूँ? विधाता के बनाये गढ़े , बनाने के बाद साँचे को विधाता से आग में गलवा देने की क्षमता रखने वाले एक से बढ़कर एक सूरमा यहाँ मौजूद हैं । अब इनको ही देखिये अंगरेज़ी में ऐसी बिहारी फेंटते हैं कि अंगरेज़ी भी कहती है वाह क्या तड़का है । यह अंगरेज़ी में बिहारी का ज़बरदस्त प्रयोग करते हैं । यह प्रयोगधर्मी हैं । इनको देखें यह एससीआरए से सीधा चले आये , अपनी पूरी स्मार्टता के साथ । यह ट्रेनिंग इतनी शिद्धत से करते हैं कि एकेडमी को भी गर्व हो जाये । अशोक कहता है , यह शिकारी हैं । हैदराबाद से एक डॉक्टर आये थे । वह यह महान फेंकूँ थे , वह हैदराबाद से फेंकते हुये ही आ गये । सिद्धान्त शरीवास्तव , ज्ञान का सारा पुंज यह बीए में ही प्राप्त कर गये और वह भी बगैर कक्षा में गये । अगर यह कक्षा में चले गये होते तब शायद अध्यापक भी कुछ ज्ञान प्राप्त कर गया होता पर अब अध्यापक की तक़दीर ख़राब थी , क्या किया जा सकता है । यह डॉक्टरों को डॉक्टरी सिखाते हैं आईआईटी कानपुर के इलेक्ट्रिकल इंजिनियरों को इलेक्ट्रिक सर्किट बनाना सिखाते हैं । यह कक्षा में पीछे कुर्सी पर पलथी मारकर बैठते थे और अपने बगल वाले आईआईटी कानपुर के इंजिनियर को इंजीनियरिंग पढ़ाते हैं । बाजवा साहब तो घड़ी ही देखते रहते थे , कब चार बजे वापस हॉस्टल जायें शाम को टेनिस खेलें और रातिर को महफ़िल सजे । रात की महफ़िल कहीं भी सजाओ हमख्याल वाले ढूँढ़ ही लेते हैं । लड़कियों की तारीफ़ न की गयी तो नक्क में भी जगह न मिलेगी । बहुत आवश्यक है उनकी नफ़ासत और सीरत पर लिखना । अरू दोषी सारा दिन

हँसता ही रहेगी । कभी - कभार रो भी देंगी । यह इतनी सरल हृदय हैं कि जो बाहर है वहीं अंदर है । हँसी का सारा ठीका इनके ही पास है । राजस्थानी लड़कियों में बड़ी एका थी , वह साथ ही रहती थीं । संस्कार कुछ ज्यादा ही था , दिखता तो ऐसा ही था । अब हम तो कथावाचक हैं जो दिख रहा वह लिख देते हैं कौन हमको बारात लेकर राजस्थान जाना है जिसको जाना है वह पता करें । जिनको जाना है वह पता कर भी रहे थे । बारात लेकर जाने की इच्छा रखने वावों की तादाद अच्छी खासी थी , बहुत लोग तोड़ मार रहे थे राजस्थान बारात लेकर जाने को , वह रहस्य अभी रहने देते हैं । कथा का स्पैस बरकरार रहे नहीं तो एक लेखक के तौर पर असफल हो जाऊँगा । मैं एक मामूली कथावाचक मैं इनका चरित्र चित्रण बहुत कोशिश करके भी नहीं कर पा रहा , उनके चरित्रांकन के लिये वेद व्यास ऐसी क्षमता होनी चाहिये । अब वह मैं कहाँ से लाऊँ । आप लोग मुझसे ही काम चलाओ , इश्क की दास्तान का अभी इंतज़ार करते हैं चलते हैं कैलाश जी की कथा की तरफ ।

अब कैलाश जी का डरेस कैसा हो यह बहुत महत्वपूर्ण हो गया । राजेश प्रकाश ने कहा , “ यह ग्रीक गॉड की तरह हैं । इनको सँवार दो यह स्टेज पर आग लगा देंगे । ”

अशोक - “ मतलब लड़कियों के दिल से हूक निकल आयेगी । ”

शिव बाबू सक्सेना - “ कतरा - कतरा रक्त बह चलेगा जब कैलाश जी स्टेज पर माइक हाथ मैं पकड़ेंगे । ”

यह तय हो गया कि कैलाश जी नया डरेस पहनेंगे । मसूरी के बाज़ार की तरफ जत्था चल पड़ा । एक इटैलियन स्टाइल का पैंट , आसमानी रंग की कोट , एक नयी सफेद क्रमीज़ की खरीदारी हो गयी । रात- दिन अभ्यास होता रहा । हर कोई अभ्यास में सलाह देता रहा । कैलाश पांडे ने बहुत बेहतर गायन का अभ्यास कर लिया था । आखिर वह क्रयामत की रात आ गयी जिसका सबको इंतज़ार था । शाम से ही लोग उत्साहित थे । कुछ उत्साहित थे तैयार हुई लड़कियों को देखने के लिये और बहुत बड़ी तादाद कैलाश जी के लिये । इला दर्शी , सारिका घोष , राहुल के बाद कैलाश जी का नंबर था । लोगों को करम पहले से ही पता था । दो लड़कियों ने गा लिया , राहुल के गाने में किसी की रुचि न थी । लोग हॉल में कह रहे , “ भगाओ इसको यार .. आने दो कैलाश को । ”

जैसे ही कैलाश का नाम एनाउंस हुआ पूरा हॉल गूँज गया । तालियाँ ही तालियाँ । अशोक ने सीटी मार दी । अशोक के साथ दो - तीन ने और मार दी । मैडम सौमित्र कृष्णा आगे की सीट से उठकर आई और नाराज़गी के लहजे में कहा , “ व्हाट इस दिस नॉनसेंस ? आर यू ऑफिसर आर मवाली

आँफ रोड ? बिहैव योर सेल्फ /” सब लोग शांत हो गये । अशोक ने पूछा , ”
मैडम ने क्या कहा ? तारीफ की या डॉटा ? “

शिव बाबू सक्सेना - “ बहुत नाराज़ हैं मैडम , वह डॉट कर गयी हैं ।”

अशोक -“ अब हमको अंग्रेज़ी आती नहीं । जो भी कहा हो हमको क्या फ़र्क़ पड़ता है । ”

कैलाश जी ने पूरे हॉल का सिंहावलोकन किया , माइक हाथ में लिया । माइक को ऊपर किया और जैसे ही कहा “ हूँ.. हूँ हूँ हूँ हो .. आज मौसम बईमान है बड़ा । ”

तालियाँ ही तालियाँ । अगली लाइन कैलाश जी की ..” आने वाला है कोई तूफान बड़ा .. “

तालियाँ ही तालियाँ , लग रहा की मसूरी की पहाड़ियाँ हिल गईं तालियों से ।

क्या हुआ है हुआ कुछ नहीं है
बात क्या है पता कुछ नहीं है

यह गाते समय कैलाश जी ने माइक को ऊपर करके सिर उठा दिया ।

क्या बात है केपी.. बाजवा साहब चीख पड़े । पूरा हॉल तालियों से गूंज गया ।

मुझसे कोई ख़ता हो गयी है
इसमें मेरी कोई ख़ता नहीं है

यह गाते - गाते वह पूरा स्टेज का चक्कर लगा गये

ख़ूबसूरत है रुत जवान है
आज मौसम ...

यह गाते समय कैलाश जी ने माइक को एक हाथ से दूसरे हाथ में लिया और दाहिना हाथ हवा में ऊपर उठा दिया । पीछे की क़तार के लोग खड़े हो गये और शोर होने लगा केपी केपी केपी ...

काली - काली घटा डर रही है

ठंडी आहें हवा भर रही है ।

यह गाते समय दोनों हाथ हवा में उठा दिया । अशोक बोला अब चाहे नौकरी चली जाये मैं सीटी मारूँगा । उसने बहुत तेज सीटी मारी, साथ में राजेश मन्मथनाथ और राजीव सिंह ने भी सीटी मार दी ।

जैसे ही अगली लाइन आयी,
हर कली हम पर शक कर रही है ।
कैलाश जी ने अपनी जुलफ़े सवार ली । जनमेजय मिश्रा बोले आज तो
कैलाश जी शदर कर गये ।

ऐ मेरे यार ऐ हुस्न वाले
दिल किया मैंने तेरे हवाले
अब तेरी मर्जी पर बात ठहरी
जीने दें या मार डाले
तेरे हाथों में अब मेरी जान है
आज मौसम
हो हो आज मौसम
हो हो आज मौसम

जैसे ही गाया आवाज़ आयी पीछे एक बार और यही गाओ । कैलाश जी ने सुन लिया और इस लाइन को इम्प्रोवाइज करके गाते समय पूरा स्टेज धूम गये । बाजवा बोले, सँभाल के स्टेज से गिर मत जाना ।

आज मौसम
हो हो आज मौसम
कैलाश जी ने अंतिम दो हो आज मौसम कई बार गाया ।
गाना ख़त्म होते ही तालियों की ग़डग़डाहट हर ओर ।
Once more
Once more की आवाज़ गूँजने लगी ।

इतनी तालियाँ मुहम्मद रफ़ी को भी शायद नसीब न हुई हों । बाहर मसूरी में पानी बरस गया । तानसेन से तुलना हो गयी । पानी बरसा दिया स्वर लहरियों से । कैलाश का गायन ख़त्म होते ही लोग उठकर जाने लगे , और किसी में रुचि कम थी लोगों की । मैडम सौमित्र कृष्णा अपनी सीट से खड़ी हो गयीं और अपने बग़ल के एक स्टाफ़ से संदेश भेजा .. अशोक , शिव बाबू सक्सेना , राजीव सिंह , राजेश मन्मथनाथ, अनुराग कल मुझसे मेरे चेंबर में मिले । सबको साँप सूँघ गया । अब कल क्या होगा ?

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 381

कैलाश पांडे आज की शाम के नायक थे । गाना अच्छा इला दर्शी ने भी गाया था । उनके कंठ में एक प्राकृतिक सुमधुरता थी । सारिका धोष के स्वर में तरलता थी । राहुल को किसी ने सुना ही नहीं कैलाश के इंतज़ार में । कैलाश पांडे लोकप्रिय थे , उनकी लोकप्रियता उनके गायन को एक दूसरे स्तर पर ले गयी । अशोक का बस चलता तो वह राहुल को आधे गाने पर ही मॉइक विहीन कर देते । आज की शाम तो एक अलग बयार के साथ थी । आज की शाम और कैलाश पांडे जी ही हर ओर । जहाँ भी जाते लोग कहते क्या गाया आपने । किसी ने कहा लड़कियाँ नाराज़ हैं क्योंकि लड़कों ने हुड़दंग कर दी । अशोक ने कहा वह जरतुही हैं । वह जल रही हैं । उनको नाराज़गी है कि लड़कियों में ताली कम बजी पर कैलाश में ज्यादा बजी । ऐसा नहीं है , राजेश मन्मथनाथ और राजीव सिंह तो इला दर्शी में भी हाथ चोटिल कर लिये थे । हम भी बजाये ही थे । गाना तो ज़बरदस्त इला का भी था सारिका का भी पर कैलाश जी के गाने से ज्यादा इनकी अदा महत्वपूर्ण थी ।

जब गाने के बोल

“ क्या हुआ है हुआ कुछ नहीं है
बात क्या है पता कुछ नहीं है “

इस पर मॉइक को ऊपर करके सिर उठा दिया था लगा कि पिक्चर ही चल रही है ।

“मुझसे कोई ख़ता हो गयी है
इसमें मेरी कोई ख़ता नहीं है “

इस समय जो स्टेज का चक्कर लगाये तो लगा जैसे धर्मेन्द्र पिक्चर में बगीचे में टहल रहा हो ।

सत्येन्द्र तिरपाठी बोले सबसे सही समय तो तब था जब वह गाये

“काली - काली घटा डर रही है

ठंडी आहें हवा भर रही है “

उस समय तो लगा जैसे पांडे जी आह भर दिये ।

राजीव सिंह - “ और वह जो जुल्फ़ हाथ से पीछे से किये वह ?”

सत्येन्द्र तिरपाठी -“ थोड़ा जुल्फ़ और होती तो बात और जमती पर एकिटंग जबरदस्त थी । ”

बाजवा - “ हमको तो एक ही चिंता थी ? ”

अशोक - “ क्या ? ”

“ कहीं गाते - गाते यह स्टेज से नीचे न उतर जाये । ”

अशोक - “ देखो , अब इतने बड़े गायक के लिये तो स्टेज छोटा ही था । अगली बार फुटबॉल मैदान में गँवायेंगे । स्टेज बना देंगे पाँच बिंगहा में , बल भर के स्टेज दावें ये । स्टेज पर फसल रख दो , अनाज भी कुछ निकल जायेगा । ”

राजीव सिंह - “ देखो भाई मज़ाक़ न करो । आज का दिन बहुत सही बीता । क्लचरल परोग्राम जल्दी - जल्दी होना चाहिये । क्लचरल सेक्रेटरी को बोलो अगला जल्दी ही करें । ”

सिद्धांत शरीवास्तव - “ कौन है क्लचरल सेक्रेटरी ? ”

राजेश मन्मथनाथ तपाक से बोले , इला दर्शी ।

सिद्धांत - “ बहुत नाम याद किये हो । उनसे कहो जल्दी करायें । ”

सत्येन्द्र तिरपाठी - “ सबसे सही लाइन जानते हो कौन सी थी ? ”

जनमेजय मिश्रा - “ कौन सी ? ”

सत्येन्द्र तिरपाठी- “ हो हो हो हो हो हो हो हूँ हूँ हूँ हूँ यह तो ख़त्म ही नहीं हो रहा था बाद में । ”

जनमेजय मिश्रा - “ यह तो आलाप था । ”

सत्येन्द्र तिरपाठी- “ मुझे लगा कि वही गाना यह फिर शुरू कर देंगे । ”

अशोक - यार , तब तो मज़ा आ जाता ।

ऐ मेरे यार ऐ हुस्न वाले
दिल किया तेरे हवाले
तेरी मर्जी पर बात ठहरी
जीने दें या मार डाले

मैं फिर सीटी मारता । मज़ा ही आ जाता ।

शिव बाबू सक्सेना बहुत शांत थे । सीटी मारने पर बोले एक बार की सीटी निपटी नहीं एक बार और मारेंगे । यह कहकर वह फिर शांत हो गये । जनमेजय मिश्रा ने कहा , ” सर आप मैडम ने बुलाया इसलिये चिंतित हैं ? “

शिव बाबू - “ बड़ी विपदा आ गयी है ? ”

बाजवा - “ अरे मैडम ने बुलाया है कौन केपीएस गिल ने बुला लिया है । ”

जनमेजय मिश्रा - “ सर आप चिंतित क्यों हैं ? ”

शिव बाबू - “ मेमो मिल जायेगा । ”

जनमेजय मिश्रा - “ उससे क्या होगा डॉक्टर सारंगी तो पा चुके हैं । ”

शिव बाबू - “ डॉक्टर सारंगी का तो भारी नुकसान हो चुका है । ”

डॉक्टर सारंगी के हाथ से चाय का कप गिर गया , वह घबड़ा गये ।

“ क्या होगा सर ? ”

“ मेमो आपके सर्विस बुक में डाल दिया गया है । ”

“ उससे क्या होगा ? ”

“ प्रोबेशन कन्फरम होने में दिक्कत हो सकती है पर आपका तो कोई खास अपराध नहीं था , आप तो लेट ही हुये थे । यहाँ तो बड़ी भारी गलती हुई है । ”

राजीव सिंह - “ सीटी ही तो मारा है कौन गौ हत्या हो गयी है । ”

शिव बाबू - “ *unbecoming govt servant* “ का चार्ज लग जायेगा । ”

राजीव सिंह - “ यह क्या होता है ? ”

शिव बाबू - “ आप अधिकारी होने लायक नहीं हो । ”

राजीव सिंह - “ दो साल पढ़ें , इंटरव्यू दिये , यूपीएससी सेलेक्शन दी । यह सब बेकार है , एक सीटी मार दिये तब अनबिकमिंग हो गये । चलो सर हो गये अनबिकमिंग अब इस पर सजा क्या होगी । ”

शिव बाबू - “ वार्निंग , रिकार्डेट वार्निंग , सेंसर , सस्पेंशन , डिसमिसल कुछ भी हो सकता है । ”

राजीव सिंह - “ एक सीटी मार दिये तब हम डिसमिस हो जायेंगे ? ”

वहीं एक हरियाणा - पंजाब के महान ज्ञानी बैठे थे । वह लोगों से मिलते कम थे । उन्होंने राय दी कि कल माफ़ी माँग लो सब बात ख़त्म हो जायेगी । कुछ ख़ास बात नहीं है । कह देना गलती हो गयी । एक और विद्वान बैठे थे - वह बोले ना ना ना कुछ भी स्वीकार मत करो । अगर स्वीकार कर लिया तब तो यहीं से इन्क्वायरी की शुरुआत होगी । तब तो आप पक्का फ़ॉसेंगे । आप डिनाई करें कि सीटी बजी ही नहीं थी , मैडम को सिद्ध करने दें कि सीटी बजी थी । आप सब लोग कहो कोई सीटी नहीं बजी , मैडम आपका भ्रम था वह ।

जनमेजय मिश्रा - “ यह ठीक नहीं होगा । सीटी बजी है , सुना सबने है । ”

शिव बाबू बोले कोई लीगल एक्सपर्ट है बैच में । पता चला नागपुर के एक मराठी हैं , अति लंबे , गोरे , नीली आँख वाले वह क्रान्तुनी मामलों के जानकार हैं । उनको खोजा गया । वह कहीं शिकार की तलाश में थे । उनको सारा मामला समझाया गया । वह बोले चलो लाइब्रेरी । हम सब लोग लाइब्रेरी गये । वह शेरवई का संविधान , रतन लाल की साक्ष्य विधि और आईपीसी , मुल्ला की सीपीसी लेकर बैठ गये । फिर उठकर गये और कोई क्रान्तुन की विवेचना की किताब लेकर आये और कुछ पन्ना पलटा । किताब लेकर आने में काफ़ी समय लगाया उसमें पता नहीं क्या पढ़ा और पहली ही लाइन बोली , “ case is very complicated you all are in serious trouble .. ”

अशोक - “ हिंदी में बताओ । ”

“ मामला संगीन हैं आप लोग ख़तरे में हो । ”

अशोक - “ यार , ऐसा कह रहे हो जैसे इलाहाबाद में गंगा ख़तरे के निशान के ऊपर आ गयी हैं । प्रशासन करता कुछ नहीं बस सूचना देता है । आपसे हम रोग जानने नहीं आये हैं । रोग भी पता है और रोग का असर भी , आप निदान बताओ । ”

“ you have to engage a lawyer । ”

“ वकील करना पड़ेगा ? ”

“ हाँ । ”

“ वकील की फ़ीस कौन देगा , आप देंगे कि एकेडमी ? ”

“ मैं क्यों दूँगा ? ”

“ जो फ़ालतू राय आप दे रहे हो इसका जुर्माना बनता है । बिना मतलब समय ख़राब कर रहे हो हम सबका । आप कहाँ से क़ानून की डिग्री हासिल किये हो । अच्छा हुआ आप सिविल सेवा में आ गये नहीं तो आप तो ऐसी - ऐसी सलाह देते कि लोग तबाह हो जाते । आप ऐसा करो समोसा - चाय पिलाओ , समय ख़राब करने का हरजाना दो । अरु दोषी ठीक कहीं थी इनके बारे में ।”

शिव बाबू - “ क्या कही थी ?”

“ जाने दो अब । अनुराग सर , क्या किया जाये ।”

मैं - “ मुझे निपटाने दो मामला मैडम सौमित्र कृष्णा से ।”

शिव बाबू - “ आप क्या करेंगे ?”

मैं - “ सीटी बजाना स्वीकार करूँगा ।”

शिव बाबू - “ मरवा देंगे आप ।”

मैं - “ मैंने सीटी बजायी है नहीं , पर मैं आरोप स्वीकार करूँगा । जिसको मेरे विचार से सहमति न हो वह अपना मामला खुद निपटाये । ”

अशोक - “ मैं तो सर का चेला हूँ । सर ने मुझे पढ़ाया है । मैं तो सर कहेंगे कूद जाओ इस पहाड़ी से तब मैं इन विधि विशेषज्ञ को लेकर कूद जाऊँगा । मैं तो इनका भी नाम ले लूँगा , यह भी सीटी बजाये थे । यह भी पीछे ही थे मेरे । इनको तो मैं डिसमिस कराऊँगा ही । मैं अगर डिसमिस हुआ तब मैं पूरी एकेडमी डिसमिस करा दूँगा । सर मैं लड़कियों का भी नाम बता दूँगा , वह भी सीटी बजायी थीं । पूरा मामला ही ख़राब कर दूँगा ।”

मैं - “ अशोक .. आप शांत रहो .. मैं देखता हूँ कल ।”

शिव बाबू - “ मैं सीटी बजाना स्वीकार नहीं करूँगा ।”

मैं - “ आपकी मर्जी , “

देर तक अफ़वाहों का बाज़ार गर्म हो गया कि चार लोग कल गये काम से । प्रतीक्षा मेरे पास आयी , वह बहुत परेशान थी । उसने कहा बेस्ट प्रोबशेनर का मेडल तो नहीं मिलेगा अगर मेमो मिल गया । मेरे बगल ही डॉक्टर सारंगी बैठे थे । वह घबड़ा गये ।

“ मैडम नहीं मिलेगा , वह मेडल नहीं मिलेगा ?”

“ नहीं ।”

प्रतीक्षा के चेहरे के आत्मविश्वास को देखकर वह घबड़ा गये । वह खाना भी न खा पाये । अरु दोषी मेज़ पर से गुजरते हुये बोली , “क्या हुआ डॉक्टर?”

अशोक - “ यह बर्बाद हो गये । ”

अरु - “ कैसे ? ”

अशोक - “ इनका बेस्ट प्रोबेशनर मेडल गया । ”

अरु - “ क्यों ? ”

अशोक - “ मेमो खा गये । ”

अरु - “ डॉक्टर ठीक से खाना खा लो , यह सब चक्कर छोड़ें । ”

खाने के बाद प्रतीक्षा बोली , ” भैया को फोन करूँ क्या ? ”

“ क्यों ? ”

“ वह निदेशक से बात कर लेंगे , बात खत्म करा देंगे । ”

“ प्रतीक्षा , अब भैया की छत्र छाया छोड़ो । तुम्हारे भैया को मैं छत्र - छाया दूँगा , वह हमें क्या देंगे । ”

“ अनुराग यह अहंकार पूर्ण कथन है । ”

“ हाँ , इसमें अहंकार है पर इस कथन के पीछे का मतव्य समझो । ”

प्रतीक्षा चिंतित थी । वह शांत होकर मेरे बगल में चल रही थी । सामने चाँद बदलियों के पीछे टहल रहा था । मैं चाँद की तरफ देख रहा था । मेरे सामने से इला दर्शी गुजरी , न वह कुछ बोली न मैं कुछ बोली । आगे चलते - चलते हम लोग एकेडमी के गेट पर आ गये । वहाँ पर मैडम सौमित्र कृष्णा अपने पति के साथ टहल रही थीं । मैंने मैडम और सर को अभिवादन किया । मैडम ने भी परेम पूर्वक जवाब दिया । जवाब देकर यह भी पूछा , ” कैसे हो अनुराग ? ”

मैंने कहा , “ इनायत है आपकी । ”

वह मुस्कुराते हुये आगे चली गयीं ।

प्रतीक्षा बहुत चिंतित थी । उसने फिर पूछा , “ क्या होगा कल अनुराग ? ”

मैं - “ कल का इंतज़ार करो । मैडम सौमित्र कृष्णा को भी पता चल जायेगा , यह इलाहाबाद की ज़मीन क्या होती है । कल सूरज तो नियमित उगेगा पर छूबेगा एक नया सूरज । ”

“ मैडम आसान नहीं है अनुराग । ”

“ जानता हूँ । ”

“ फिर भी तुम आश्वस्त हो ? ”

मैं शांत हो गया ।

सुबह हम लोग मैडम के चैंबर में पहुँचे । मैडम ने कड़ी निगाह के साथ सिर ऊपर उठाया । शिव बाबू सक्सेना बहुत डरे हुये होने का अभिनय कर रहे थे । यह बहुत मायावी जीव थे । यह जितना ज़मीन के ऊपर थे उससे कई गुना ज़मीन के भीतर । इतने में एक फ़ोन आ गया । मैडम बात करने लगीं । अशोक बोला सर कहे तो यहीं ज़मीन पर लेट जाऊँ । मैंने कहा यह जोकरई का समय नहीं है ।

मैडम ने फ़ोन रखा और पूछा , ” आप में से किसने कल सीटी बाज़ाई थी ? ”

शिव बाबू सक्सेना -“ मैडम ..”

मैडम ने बीच में ही रोक लिया, चेहरा और सख्त हो गया। मैंने जो पूछा सिफर वह बताओ.. किसने सीटी बजाई थी? अगर नहीं बजायी थी तब आप ना कहकर चले जाओ और मुझे अपना काम करने दो।”

मैडम ने एक झटके में ही पूरा रणनीति बदल दी । लोग जो सोचकर आये थे उसके विपरीत की चाल मैडम ने चल दी ।

शिव बाबू सक्सेना ने कहा, मैंने नहीं बजायी थी ।

“ पक्का ? ”

“ जी मैडम ।”

“ एक बार और सोच लो । ”

पूरे कमरे में एक निस्तब्धता

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 382

निस्तब्धता को तोड़ती मैडम की आवाज़ गुंजने लगी ,

“इंटरव्यू में क्या कहा होगा ? अगर कहा नहीं भी होगा तो कहने के लिये तैयार किया होगा ही . सत्य , सत्यनिष्ठा , ईमानदारी , समाज - सापेक्षता ... बड़े - बड़े भाषण तैयार किये होंगे ? मैं समाज के लिये कार्य करूँगा , मैं लोगों के लिये जिऊँगा । और तुम अनुराग ... तुम्हारा मैं बीबीसी को दिया इंटरव्यू निकालूँ ? कितनी बड़ी - बड़ी बातें तुमने की हैं उसमें । मैं समाज बदल दूँगा , मैं लोगों के लिये कार्य करूँगा , मेरा जन्म एक गैर मामूली दास्तान के लिये

हुआ है । यह है तुम्हारी गैर मामूली दास्तान ? पीछे बैठकर सीटी बजा रहे हो , जो गा रहा है उसको गाने नहीं दे रहे हो । तुम में से किसी ने गाना सुना ? सिर्फ़ सीटी बजायी और ताली बजायी । अशोक तुम ... तुम राहुल के लिये क्या कह रहे थे .. इसको भगाओ स्टेज से .. क्यों भगाया जाये ? उसको गाने का हक़ नहीं है ? राजीव तुम बात बड़ी - बड़ी करते हो देशज संस्कार की , ज़मीन की , माता - पिता के नाम को आगे बढ़ाने की ... यही बढ़ा रहे हो तुम । मैं लिख दूँ तुम्हारे पिता को कि आपका बेटा मवालियों की तरह सीटी बजाता है ।”

इतने में शिव बाबू ने कहा मैडम ..

मैडम ने बीच में ही रोक कर कहा ,” हर बात में चार बार मैडम बोलते हो पर जो पूछ रही वह नहीं बता रहे ।”

शिव बाबू शांत हो गये । सबके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं । मैडम ने कहा ,” आप लोग जाइये , मैं उचित कदम उठाऊँगी जो नियम - क्रान्तुन कहेगा ।”

शिव बाबू और राजीव सिंह एक साथ बोले , “ मैडम ।

मैडम ने सङ्क्षिप्त लहजे में कहा , “ मैंने कहा आप लोग जाइये ।”

कोई जाने का तैयार न था । मैडम ने कहा ,” आप लोगों ने सुना नहीं , मैंने क्या कहा , आप लोग जाइये । मेरी क्लॉस का समय हो रहा है । मेरा सीनियर बैच का क्लॉस है । मैडम यह कहकर एक फ़ाइल हाथ में लेकर चली गयी ।

मैडम के जाते ही अशोक बोला ,” सर , लगता है नौकरी गयी । बच्चे छोटे हैं । वह अब एक बेरोज़गार के बच्चे नहीं होंगे , एक नौकरी से निकाले गये व्यक्ति के बच्चे होंगे । बड़ी शर्मनाक हालत होगी शहर में । मैडम कोई काग़ज भूल गयी थीं । वह काग़ज वापस लेने आयीं और बोली अभी तक तुम लोग गये नहीं । यह कहकर वह काग़ज लेकर चली गयीं । वह थोड़ा जल्दी में थीं । हम लोग अपनी - अपनी कक्षाओं में चले गये । दिन किसी तरह बीता । शाम तक यह हल्ला हर ओर कि चार लोगों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही आरंभ होगी । सायंकाल एक बहुत बड़े विद्रोही व्यक्ति ने मोर्चा सँभाल लिया । यह बिहार के थे , दर्शन - वेद - पुराण - अंगरेज़ी सब जानने का दावा करते थे । यह एक अच्छे वक्ता भी थे । वह स्वयम् सलाह देने आ गये । राम प्रकाश सिन्हा था नाम उनका । इन्होंने एक नयी राय दे दी । आप सब एक हो जाओ और विद्रोह कर दो । सारी एकेडमी एक हो जाये । सब लोग यह कहें कि किसी ने सीटी नहीं बजायी है । कह दो मैडम के दिमाग़ का भ्रम है ।”

जनमेजय मिश्रा - “ यह कैसे कहेंगे , सबने सुनी है । आप कह दो नहीं बजी , पर सारी फ़ैकल्टी थी सबने सुना है । यह उचित नहीं लग रहा ।”

अशोक - “ हे भाई विद्रोही , यह बताओ फ़ैसला कौन लेगा ? वह तो मैडम ही लेंगी । आप कहते रहो , वह फ़ैसला कर देंगी जो तथ्य है । आप लड़ते रहो । ”

महान विधि विशेषज्ञ श्रीमान रतनदीप मलकापुरकर एक अलगा अंदाज में थे । वह साक्ष्य विधि , आईपीसी , कंडकट रूल सब बाँचकर बोले , “ onus lies on the person who is making charges , the faculty has to prove it . ”

अशोक - “ आपका ज्ञान कल देख लिया । आपका ज्ञान उस दिन भी देखा जब आप दो घंटे क्लॉस में क्रान्तुन समझाये थे । मैं गरीब आदमी हूँ , मुझे शांति से नौकरी करनी है , मुझे झगड़े - झंझट से मुक्ति दिलाओ । मैं अब कभी ज़िंदगी में सीटी बजाऊँगा ही नहीं । ”

धीरे - धीरे लोग टूटने लगे । सब तनाव में आ चुके थे । बड़ी मुश्किल से रात कटी । अगले दिन क्लॉस चल रही थी कि मैडम का चपरासी आया और उसने मुझसे कहा , ” मैडम आपको बुला रही हैं । ”

सबकी धड़कनें बढ़ गयीं । अशोक मेरे बगल में बैठा था । उसने कहा , “ सर मैं माफी माँग लूँगा मुझे बचाने की कोशिश करना । आपको नौकरी में रुचि नहीं होगी पर मेरी है । ”

मैंने पूछा , “ किसी और ने भी कुछ किया था ? ”

“ सर कुछ लड़कियों को लपेट दीजिये साथ में । ”

“ क्यों ? ”

“ सर , कमिशनर साहब का इस्तेमाल करिये । मैडम को थोड़ा हवा दीजिये उनके नाम की । ”

“ बेकूफ हो तुम पूरे । वह किसी के नाम से नहीं दबने वाली । ”

“ सर हरियाणा की दो लड़कियाँ हैं । उन दोनों ने भी बहुत ताली बजायी थी , उनको भी लपेट मारिये । ”

“ उससे क्या होगा ? ”

“ फाँसी का फंदा छोटा पड़ जाएगा गले इतने ज्यादा हो जायेंगे । ”

मैं उठकर चलने लगा कि शिव बाबू बोले , “ मेरा नाम मत ले लेना । मैंने कुछ नहीं किया है । ”

राजीव सिंह अपनी सीट से ही बोले अब जो होगा वह देखा जाएगा । राजेश मन्मथनाथ बोले , “ मैं तो सीर हूँ , मुझे नौकरी मिल जाएगी । ”

यह सब कह चाहे जो रहे हों पर अंदर ही अंदर सब डरे हुये थे ।

मैं मैडम के कमरे में पहुँचा । मैडम ने बैठने का निर्देश दिया और कहा , ”
अनुराग ईमानदारी से बात करनी हो तब हम लोग बात करते हैं वरना बात को
आरंभ करने से पहले ही समाप्त कर देते हैं ।”

“ मैं ईमानदारी से ही बताऊँगा ।”

“ अनुराग , मेरा यह दायित्व है कि मैं एक बेहतर व्यक्ति को सहेजकर
एकेडमी से फ़्लील्ड में भेजूँ । मुझे इस बात का आभास है कि फ़ैकल्टी और
टरेनी अधिकारियों के बीच थोड़ा खींचतान रहती है । मैं भी कभी तुम्हारी ही
जगह थी । मुझे इस ओर का ज्ञान अभी हुआ पर तुम्हारी ओर का ज्ञान तो
पहले था ही । हर ट्रेनर को एक परीक्षा से गुजरना होता है । वह लोकपिरय
होने का अगर प्रयास करेगा तब वह अपने कर्तव्यों से समझौता करेगा । मुझे
अलोकपिरय होना स्वीकार्य है पर अपने कर्तव्यों से समझौता करना नहीं ।
तुम सब एक शैक्षिक जीवन से यहाँ आये हो और वहाँ का अनुशासन और यहाँ
के अनुशासन में बहुत फ़र्क है , एक अन्तर्विरोध तो मैं नहीं कहूँगी पर एक
भिन्नता है । यह ट्रेनिंग का मॉड्यूल सुधार चाहता है , नये प्रयोग चाहता है
और नवोन्मेषी होना चाहिये यह सब बात सच है पर अनुशासन तो अनुशासन
हैं उससे कोई समझौता संभव नहीं है । तुम सब बहुत जल्द ही एक बड़ी
ज़िम्मेदारी उठाने के लिये भेजे जाओगे और तुम्हारे साथ- साथ इस फ़ैकल्टी
की भी साख साथ जायेगी । तुम्हारे बैच के साथ तुम्हारे कोर्स के सीड़ी और
एसीडी का भी नाम पूरी ज़िंदगी के लिये जुड़ गया है । तुम्हारी उपलब्धि और
विफलता मेरी भी उपलब्धि और विफलता होगी । मैं यह बिल्कुल नहीं चाहूँगी
मेरे अधिकारी अनुशासन का पाठ न पढ़ पायें । तुमको भी एक बड़े वर्ग को
अनुशासित करना होगा । अगर तुम स्वयम् अनुशासित न रहोगे तब कैसे
अपनी एक बड़ी संख्या को अनुशासित कर पाओगे ? तुमने महाभारत पढ़ी है
? ”

“ जी ।”

द्रोणाचार्य कब प्रातः काल उठते थे ?”

“ अपने सारे शिष्यों के पूर्व ।”

“ वह उठकर क्या करते थे ?”

“ सुबह का पूजन ।”

“ उसके बाद ?”

“ शस्त्र- संधान ।”

“ ऐसा क्यों करते थे ?”

“ वह अपने शिष्यों से समुख एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहते थे । वह अपनी दिनचर्या से शिष्यों को प्रेरित करते थे ।”

“ यह क्या है ?”

“ जीवन का अनुशासन ।”

“ आशा है तुम मेरी बात समझ गये हो ?”

“ जी ।”

“ अगर तुम्हारे पास अनुशासन नहीं होगा तब आप अपने मात्रहत को कैसे कहेंगे , आप अनुशासन में रहें ?”

मैं शांत हो गया ।

“ बताओ क्या - क्या हुआ ?”

“ क्या जानना चाहती हैं आप ? ”

“ तुम जानते हो मैं क्या जानना चाहती हूँ ।”

“ सिफ़र पाँच लोगों ने नहीं ज्यादातर एकेडमी ने उस दिन किया जो शायद नहीं होना चाहिये । लड़कियों ने भी किया ।”

मैडम चौंक गयी ।

मैंने हरियाणा की दोनों लड़कियों का भी नाम जोड़ दिया । मैंने जनमेजय मिश्रा , सत्येन्द्र तिरपाठी , रत्नदीप मलकापुरकर , सिद्धांत .. जिनका नाम याद आया सब जोड़ दिया । मैडम ने पूछा “ तुमने भी सीटी बजायी थी ? ”

“ मैंने बजायी थी पर बजी नहीं । लड़कियों ने भी बजायी पर शायद न बजी या धीरे बजी । ताली बजाना भी ठीक नहीं था जब गाना चल रहा था । सबने बीच में ताली बजायी । सबके सब अपराधी हैं , अगर अपराध हुआ है । ”

“ यह तुम लिखकर दे दोगे ? ”

“ लिख दूँगा ।”

मैंने लिख दिया ,” अगर अनुशासन भंग हुआ है तब सबने किया है किसी एक ने नहीं ।”

मैडम ने कहा ,” नाम लिखो ।”

“ मैडम आप लिस्ट निकालकर लिखवा लो क्लर्क से । कोई नाम तो बचेगा नहीं । सभी शामिल थे इस साज़िश में । ”

मैडम थोड़ी देर सोचने लगीं , “तुम सीटी वालों का नाम लिख दो ।”

“ मैडम बजाने की कोशिश तो सभी ने की थी अब कुछ पारंगत थे बजा ले गये , कुछ नहीं बजा पाये पर कोशिश किये बहुत थे । अब अशोक , राजीव , सत्येन्द्र पुराने सीटी बजाने में माहिर लोग थे वह बजा ले गये मैंने कोशिश की पर मुझसे न बजी ।”

“ आप अपना लिख दो ।”

मैंने लिख दिया ,

“ जीवन का उल्लास था , सब उल्लासित थे । सबने प्रयास किया उल्लास व्यक्त करने का मैंने भी किया पर मेरा उल्लास व्यक्त न हुआ औरों का हो गया । अगर उल्लास व्यक्त करना अपराध है तो हम सबने किया ।”

“ यह क्या लिखा आपने ?”

“ जो हुआ मैडम ।”

“ यही हुआ था ?”

“ जी मैडम ।”

“ चलो अनुराग तुमको एक कहानी सुनाती हूँ । मेरे पिता ने मेरा दो नाम चुना .. सौमित्र कृष्णा और गार्गी शंकर । वह बहुत समय तक उहापोह में रहे कि वह कौन सा नाम रखें पर अंत में सौमित्र मतलब लक्ष्मण से त्याग और कृष्ण मतलब कृष्ण के दिमागी चातुर्य को अधिमानता दी गार्गी की विद्वता और शंकर की समाज सापेक्षता पर , मेरा नाम निश्चित करते समय ।”

“ मैडम अगर आप आदेश दें तब मैं इसकी व्याख्या करूँ ?”

“ करो । “

“आपके जनक आपसे बहुत उम्मीद रखते हैं । वह लक्ष्मण का त्याग , कृष्ण की तरह की नवीन व्यवस्था की संरचना का आग्रह , गार्गी की तरह पुरुष प्रधान समाज में नारी के अधिकार का संघर्ष और शंकर की तरह की क्षमाशीलता एवम् जनहित सब चाहते थे । आपका नामकरण चाहे जो किया गया हो पर आपसे उनको उम्मीद बहुत थी और है । यह उम्मीद बेवजह नहीं है , आपकी क्षमताओं के कारण है ।”

मैडम मन्त्रमुग्ध सुन रही थीं । मैंने उनकी मन्त्रमुग्धता को आगे बढ़ाने का प्रयास किया ।

“ मैडम यह शंकर का तीसरा नेत्र न तो अनायास था न ही कृष्ण का विराट स्वरूप । न तो सौमित्र का निद्रा त्याग अकारण था न ही गार्गी का याज्ञवल्क्य को चुनौती देना । उसी तरह आपके दो नामों का चयन भी सायास

था । चुना कोई भी नाम गया हो पर वह एक उद्देश्य को लेकर था और आपके पिता ने आप पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी डाली है ।”

“ अनुराग , मैं यह शंकर , कृष्ण , सौमित्र , गार्गी की व्याख्या तुमसे फिर कभी सुनना चाहूँगी । पर अभी आपने जो लिखा है उसको आप स्पष्ट लिखो ।”

“ मैडम मैं भाषा और साहित्य का विद्यार्थी हूँ । मेरा भाषा के प्रति एक आग्रह है । मैं ऐसा आपके सम्मुख कुछ नहीं लिख सकता जिसमें संस्कार का अभाव है । यह सीटी मारना एक बहुत ही असंस्कृत शब्द है । मैं आप ऐसी विदुषी के सम्मुख मैं लिख नहीं सकता । बात एक ही है , मैं उल्लास व्यक्त कर रहा था और उल्लास व्यक्त करने में मैं संयम खो गया । यह मैं फिर से लिख देता हूँ ।”

यह लिखकर मैंने मैडम से चले का आदेश माँगा और आदेश माँगते हुये कहा , ” आपसे एक क्षमाशीलता के हम सब आग्रही हैं ।”

मैं जैसे ही पहुँचा अशोक ने पूछा , “ क्या हुआ सर ? ”

“ रायता फैल गया । दोनों हरियाणा की लड़की भी आ गयीं शक के दायरे में ।”

“ सर दो नहीं चार ।”

“ वह कैसे ? ”

“ इनके स्नेहशील पैदा हो चुके हैं । अब तनाव चार को होगा ।”

शिव बाबू ने पूछा , ” क्या हुआ ? ”

“ बर्बाद हो गये सर ।”

“ क्या नौकरी जायेगी ? ”

“ चली जाये , हमको क्या करना । मैं इस्तीफा देकर अब कोचिंग चलाऊँगा ।”

“बड़बाद हो गये ।”

अशोक - “ सर , मलकापुरकरवा को नहीं फँसाया ? ”

“ वह भी शक के दायरे में ।”

“ यह सही किया सर ।”

राजीव सिंह - “ हम आम का बाग लगायेंगे , खेती करेंगे । ”

पूरे कैम्पस में हल्ला , अनुराग खलनायक है सबको फँसा गया ।

बेचारी हरियाणा की लड़कियाँ ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 383

बेचारी हरियाणा की लड़कियाँ जैसे विपदा सिर पर गिर गयी हो । वह तो सीटी बजायी ही न थीं । परम सुशील - सौम्य कन्यायें लपेटे में आ गयीं । अपाला वत्स , एक ब्राह्मण कन्या बहुत ही ज़हीन उसको लगा वह कहाँ समस्या में आ फँसी । वह मेरे पास आयी और पूछा , ” तुमने मेरा नाम दिया क्या ? ”

मैं - “ मैंने किसी का नाम नहीं दिया । मैंने कहा सब उल्लासित थे । ”

“ पर मैं कहाँ उल्लासित थी ? ”

“ अगर उल्लासित नहीं थी तब क्यों ताली बजायी । ”

“ वह दो उत्साहवर्धन था । ”

अशोक - “ मैडम दोनों हाथ से पीट रही थीं अपनी ही हाथ की रेखाओं को यह उल्लास नहीं तो क्या था ? ”

“ पर यह सीटी बजाना कहाँ हुआ ? ”

“ उल्लास और सीटी पर्यायवाची हैं मैडम । यह हिंदी के शब्दकोश में हैं । अब आप लोग अंगरेज़ी पढ़ने में लगे रहते हो तब हम क्या करें ? आप चिंता न करें , अनुराग सर हिंदी समझा रहे हैं फ़ैकल्टी को । वह समझा देंगे कोई सीटी नहीं बजाया सब उल्लासित थे । यह उल्लास होली - दशहरा - माघ - जमजोतिया सब में होता है । ”

“ यह माघ - जमजोतिया क्या होता है ? ”

“ मैडम माघ होता है जनवरी और जमजोतिया का एक मेला लगता है जिसमें उल्लास होता है । नागपंचमी पर बीन बजती है वह भी उल्लास का प्रतीक है । आप चिंता न करें यह हिंदी जब फ़ैकल्टी समझ जायेगी तब मामला समाप्त हो जायेगा । ”

मैडम अपाला वत्स का स्नेह एक बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति से हो रहा था । प्रतिभाशाली व्यक्ति की कथा आगे आयेगी पहले मैडम की समस्या का समाधान हो जाये । मैडम ने प्रतिभाशाली व्यक्ति से अपनी बात कही । वह प्रतिभाशाली व्यक्ति अनुराग के नज़दीक के व्यक्ति थे , उन्होंने मैडम वत्स को ढाढ़स दिलाया कि चिंता न करो कुछ नहीं होगा मैं अनुराग से बात करूँगा वह ज़िम्मेदार व्यक्ति हैं ।

दूसरी हरियाणा की बेचारी लड़की .. सुमिरन राना । वह तो हिंदी बहुत कम जानती थीं । वह उल्लास का अर्थ ही नहीं समझ पा रही थीं । वह उल्लास समझने में ही एक दिन लगा गयी । उनका भी स्नेह चल रहा था एक महान परम प्रतापी व्यक्ति से । वह व्यक्ति इतने प्रतापी थे कि खुद ही फेंक कर खुद ही लपेट लेते थे । इसका कारण यह था कि उनका फेंका लपेटना आसान न था । वह कह गये चिंता न करो मैं अजीत सिंह से फोन करा दूँगा यह सुलट जायेगा पर मैडम को सुलटने - पुलटने से ज्यादा रुचि उल्लास समझने में थी पर कोई ठीक से समझा ही नहीं पा रहा था । अशोक समझाता तो था पर वह हिंदी में समझाता था न कि अंग्रेज़ी में ।

रतनदीप मलकापुरकर की हालत सबसे ज्यादा ख़राब थी । वह अपने पिताजी को बुला लाये । उनके पिताजी ने फ्रैकल्टी से बात की । फ्रैकल्टी ने बोला देखेंगे मामले को । पिताजी चले गये पर अशोक उनके पीछे लगा था और बोला सर इनको तो साथ में ले बीतना है । इनकी उम्र कम है उनको रिकार्ड वार्निंग दिलवा दीजिये इनका कैरियर ही चौपट हो जायेगा । सर आपको नौकरी करनी है नहीं आप कह दो यह जेब में सीटी लेकर आये थे और वहीं मार रहे थे । इससे इनके खिलाफ़ केस पक्का हो जायेगा और बाक़ी लोग संदेह के आरोप में बरी हो जायेंगे । सर, इनको निपटा दो ।”

मलकापुरकर साहब बहुत परेशान हो चुके थे, उनका रक्त चाप बढ़ चुका था । उनसे तनाव बर्दाश्त नहीं हो रहा था । शिव बाबू सक्सेना कहते थे, “लगता है अब सिविल लिस्ट रिवाइज होगी। अनुराग और मलकापुरकर साहब ऊपर हैं, यह चले जायेंगे तब रेंक रिवाइज होगी ।

अशोक - “ अनुराग सर तो नहीं जायेंगे पर मलकाकपुकर साहब का वकालत का योग है ।”

मलकापुरकर एकेडमी में जुगाड़ खोज रहे थे पर सटीक जुगाड़ बन नहीं पा रहा था । वह मैडम सौमित्र कृष्णा के आगे पीछे घूमे पर मैडम उस मुद्दे पर बात करने को तैयार ही न होती थीं । वह मीठे स्वर में कह देती थीं, समय आने पर देखेंगे । वह सीड़ी के आगे - पीछे भी घूमने लगे पर सीड़ी ने कोई भाव न दिया और यही कहा मैडम से मिलो । अशोक परेशान था पर वह हँसी - मज़ाक में उसे सँभालने की कोशिश कर रहा था । शिव बाबू जो मिले उसी से पूछे, क्या होगा ? नौकरी बचेगी कि चली जायेगी ? बड़ी ज़िम्मेदारी है घर की कैसे निभेगी । एकेडमी में मेरे खिलाफ़ माहौल बन रहा था और बैच में विभाजन हो रहा था । एक वर्ग मेरे विरुद्ध था, उसे लग रहा था कि मैंने अपने को बचाने के लिये कई लोगों का नाम दे दिया । उनको यह लग रहा था कि मैं फ्रैकल्टी का जासूस हूँ और मैंने कई लोगों का नाम किसी स्वार्थ सिद्धि के लिये दे दिया है । इन सब बातों के बीच अशोक ने नया शिगूफ़ा छोड़ दिया कि सारी समस्या की जड़ कैलाश पांडे हैं । वह स्टेज पर न घूम- घूम कर

गाये होते न सीटी बजती और न यह आज की दुर्दशा होती । वह जब भी शाम को मीटिंग प्लाइंट पर बैठे चालू हो जाये

“सारी समस्या की जड़ यह कैलाश पांडे हैं । आप सीधे - साधे गाना गाते , यह क्या ज़रूरत थी स्टेज पर दाय मारने की ? इतना एकिटंग तो धर्मेन्द्र लोफर फ़िल्म में नहीं किये जितना या स्टेज पर कर गये । जुल्फ़ पीछे ढकेल रहे , हाथ हवा में उठा रहे , माँझक उठा कर कभी एक हाथ उठा रहे और कभी दोनों .. हूँ हूँ हूँ हो हो हो तो कई मिनट गाये । गाना 6 मिनट का पर गाये यह दस मिनट । सारी ख़ता इनकी है ।”

सत्येन्द्र तिरपाठी - “ मतलब यह भी दंडित हो ?”

“ क्यों नहीं ? आप गाये होते सीधे - सीधे तब कोई सीटी न बजाता पर यह तो पूरा धर्मेन्द्र बन गये ।”

“अब यह धर्मेन्द्र के तरह सुंदर हैं तो इसमें इनका क्या दोष ?”

“ महामायी सकाई जाओ ऐसी सुंदरता में । सुंदर हैं ये , गाना गए अच्छा ये , तारीफ़ प्रशंसा मिली इनको , लड़कियाँ मर मिट रहीं इन पर और हम यहाँ नौकरी गँवाने के रास्ते पर । मैं तो सरकारी गवाह टाइप बन जाऊँगा और कैलाश जी को फ़ॅसाऊँगा ।”

“और यह मलकापुरकर ?”

“ इनके खिलाफ़ तो गवाही दूँगा कि यह कह रहे थे वकील करो और मैडम को सिद्ध करने दो आरोप ।”

मलकापुरकर - “ यह मैंने कब कहा था ?”

अशोक - “ सत्येन्द्र कहा था या नहीं इन्होंने ?”

“ कहा तो था । ”

“ अब कोई नहीं बचेगा । पूरी वैकेसी की परीक्षा फिर से होगी । इस साल की पूरी वैकेसी फिर से एनाउंस होगी । अनुराग सर अब चल के पढ़ायें हिंदी माध्यम वालों को । अनुराग सर को एक और नाटक करने को मिल जायेगा कि हिंदी माध्यम के लिये सारे अंगरेज़ी वालों को बर्बाद करके वह वैकेसी इलाहाबाद के लिये ओपन कर दी । मलकापुरकर और कैलाश खिलाफ तो मैं बोलूँगा ही ।”

कैलाश पांडे फ़ायर हो गये ।

“ मैंने कहा था मवालीगीरी करो । मैं स्टेज पर चाहे जो कर्लूँ तुमसे क्या मतलब ? खुद पर नियन्त्रण है नहीं दोष पूरे जमाने को दे रहे हो ।”

“ अब मामला फ़ैकल्टी के हाथ में है , मैं तो यह कहूँगा कि गाना गाने का ढंग ठीक नहीं था इसलिये खता सबसे हो गयी । यह बताओ इला दर्शी , सारिका घोष , राहुल में कुछ नहीं हुआ तुम्हारे में ही क्यों हुआ ? यह सोचो .. आप के गाने में ड्रामा ज्यादा था गाना कम । आप को तो सजा मिलनी चाहिये ।”

“ मैंने बुलाया था कि आओ मेरा गाना सुनो , मैंने कोई निमन्त्रण पत्र दिया था क्या ?”

“पर गाने को गाने की तरह गाते , तुम तो पूरा धर्मन्दर बन गये थे ।”

राजेश मन्मथनाथ - “ देखो है तो यह स्मार्ट , पिक्चर में काम पा जाए तब तो यह गदर कर देंगे । हम तो इनको दोष नहीं देंगे । चलो के पी मसूरी के मॉल रोड घूम कर आते हैं । वहाँ का नजारा देखते हैं ।”

वह दोनों मॉल रोड चले गये । मैं रात को प्रतीक्षा, अनामिका , अशोक , प्रेम नंदन के साथ टहल रहा था । इलाहाबाद वाले साथ ही रहते थे । प्रतीक्षा ने पूछा , ” माँ के क्या हाल हैं ।”

“ वह इंतज़ार कर रही है । “

“ चले जाओ इलाहाबाद ।”

“ सोच रहा ।”

“ यहाँ का मामला तो निपटाओ ।”

“ यह निपट ही जायेगा ।”

अरु दोषी वहीं कैम्पस में घूमती मिल गयी । वह हर बात पर हँस देती थी । उसने कहा , “ रायता और फैला ?”

अशोक - “ अब कैलाश पांडे फँसेंगे ।”

अरु - “ वह क्यों ?”

“ कल पता चलेगा ।”

मलकापुरकर साहब दिख गये । अशोक ने कहा , ” यह तो गये काम से । मैं इनका नाम कल लूँगा । यही बतायें थे कि सरकारी गवाह बच जाता है , मैं सरकारी गवाह बन जाऊँगा ।”

रात में रत्नदीप मलकापुरकर ने कैलाश पांडे से बता दिया कि कल अशोक तुम्हारे बारे में उल्टा - सीधा कुछ कहेगा ।”

रात में ही कैलाश पांडे अशोक के कमरे में पहुँच गये बहस करने । दोनों में बहस हो गयी । अशोक ने कहा अभी तक मैं शायद न कहता पर अब मैं ज़रूर कहूँगा । अगर दरवाज़ा टूटेगा तब सबको हरजाना देना होगा , जिसका दरवाज़ा टूटेगा वह भी देगा । कल का इंतज़ार करो । “

देर रात यह भी अफवाह फैल गयी कि कैलाश पांडे भी संशय के घेरे में आ गये हैं ।

सुबह एडमिन ब्लॉक पहुँचते ही पता चला कि कान्फरेंस रूम में सबको बुलाया गया है, एडीजी संबोधित करेंगे । सबको साँप सूँघ गया ...

कल तो बेचारी हरियाणा की लड़कियाँ थीं आज तो गये बेचारे कैलाश पांडे

....

नित नये समीकरण....

अशोक के कहा, सर क्या होगा अब ?

मैं - “ घोड़ा ढाई घर की चाल चलेगा । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 384

आज क्या होगा ? लगता है कोई कठिन फ़ैसला हो गया ।

सुमिरन राना चिंतित हो गयीं । उनको सांत्वना देने वालों का आज दिन था । सब सांत्वना दे रहे थे । सुमिरन राना बहुतों की चाहत में थी, एक लंबा कद छरहरा बदन, सुराहीदार गर्दन, तीखे नयन - नक्ष- महीन सी आवाज चाल में ठहराव लिये हुये ।

“कुछ नहीं होगा । ”

लखनऊ के सत्य चरण सिंह सबसे आगे थे सांत्वना देने में । वह सेंट स्टीफेन्स की अंग्रेज़ी में सांत्वना दे रहे थे । सुमिरन राना ने पूछ लिया, “ यह उल्लास क्या होता है ? ”

वह उल्लास समझा रहे थे कि सुमिरन ने पूछा, “ यह सीटी और उल्लास में क्या संबंध है ? ”

अशोक सुन रहा था उसने कहा, ” जो तेल, दिये और बाती में है । बताओ पतंगा जी । ”

अशोक ने मेरे कान में कहा, ” सर, अगर अवसर आया तब यह परयत्नशील - स्नेहशील आरोप अपने सिर पर लेकर उनको बरी कर देंगे कुछ वैसे ही जैसे हमारे बचपन की किताब में बाबर ने हुमायूँ के चारपाई का चक्कर लगाकर अपना जीवन हुमायूँ को दे दिया था । ”

मैं - “ ऐसा क्यों करेंगे यह ? ”

अशोक - “ सर , कारण तो नहीं पता पर स्नेह तो ऐसा ही चोकरा रहा इनका । ”

सुमिरन - “ कन्फ्यूजन ही कन्फ्यूजन हो रहा । पर मेरा नाम क्यों दिया गया ? ”

एक सफल अति स्नेहशील व्यक्ति ने सुमिरन को फिर सांचना दिया और कहा , ” अजीत सिंह से बात हो गयी है , देवी लाल को मैसेज चला गया है , चिंता की कोई बात नहीं । ”

अशोक ने पूछा , “ यह लोग कौन हैं ? क्या यह यहाँ पर कोई फ़ैकल्टी हैं जो मामला निपटाने में मदद करेंगे ? ”

“ तुम इनको नहीं जानते यह कौन हैं ? ” पता कर लो यह कौन है । ”

“ अब सर जी आज का मामला निपटने दो , यह व्याधि निपटे तब आगे पता करते हैं । ”

अशोक ने मुझसे कहा , ” सर आप भी यूपी के मुख्यमन्त्री सद्वावना सिंह का नाम गिरा दीजिये , वह तो आपको अपनी पार्टी में शामिल करना चाहते थे पर आपने इंकार कर दिया था । ”

“ यार , यह सब बहुत पहुँची हुई चीज़ हैं । हम आप लौधर हैं इनके सामने । ”

सुमिरन के स्नेहशील कई थे पर यह सफल स्नेहशील थे । यह सफल स्नेहशील लटाई लेकर चलते थे । वह खुद ही छोड़ते और लपेटते थे । एक और बड़े लटाईबाज थे । वह साइकिल से हिमालय गये थे यह एक बार बताया और दूसरी बार बताया कि वह साइकिल से एवरेस्ट पर गये थे और साइकिल के टॉयर के निशान एवरेस्ट पर आज भी मौजूद है । वह कई बार भूल जाते थे जो लंबी - लंबी छोड़ते थे । वह यह भी कह दिये थे , यक़ीन न हो तो जाओ देखकर आओ । अब उनकी बात पर अविश्वास करना है तो पहले जान जोखिम में डालो । अशोक ने पूछा था कभी , ” आप पहले हिमालय पर गये या एवरेस्ट पर ? साइकिल से ही क्यों गये फटफटिया से गये होते थोड़ा ऊर्जा कम लगती । सत्येन्द्र का कहना था इनके पास ऊर्जा प्रचुर मात्रा में है । एवरेस्ट पर चढ़कर यह कोई और ऊँची चोटी खोज रहे थे पर वह मिली ही नहीं । यह नेपाल के रास्ते से भी एवरेस्ट पर गये थे और तिब्बत के रास्ते से भी । यह तिब्बत में कुछ दिन वहाँ के मांक के साथ रहे हैं । अब इन्होंने कुछ साधुओं से सीखा हो या न सीखा हो पर लटाई लेकर तिब्बत के साधू पतंग उड़ाने लग गये थे उनसे मिलने के बाद , वह काटते भी थे चीन की पतंग । इन्होंने अपनी लटाई खोल दी और कहा मैं पहले भी नौकरी कर चुका हूँ , मैं सारा नाटक देख चुका हूँ कुछ न होगा । यह तीनों बहुत ही ज़हीन थे भयंकर अंगरेज़ी बोलते थे । यह ब़गैर पढ़े भी कोई परीक्षा पास कर सकते थे । यह इतिहास का अध्ययन करके राजनीति शास्त्र की परीक्षा दे सकते थे ।

अशोक कहता था इनकी अंगरेज़ी सुनने के लिये देवता भी मसूरी आते हैं । अनामिका ने कहा , “ हिंदी नहीं सुनते देवता ? ”

अशोक - “ रहोगी पूरी बेस्ट्रॉडर की बेस्ट्रॉडर । अब देवता के पास समय है हिंदी सुनने का ? अगर रसगुल्ला परचुर मात्रा में मिल रहा हो वह भी देहाती और लोकनाथ का रसगुल्ला तब गुड़ कौन खायेगा । चलो फ़ैकल्टी की सुनते हैं । आज तो बहुत उपदेश मिलेगा , फ़ैसला चाहे जो हो । ”

कान्फरेंस हॉल में हम लोग पहुँच गये । मलकापुरकर रत्नदीप के चेहरे से लग रहा था कि बस अब यह रो देंगे । अपाला वत्स भी बहुत चिंतित थीं । शिव बाबू सक्सेना हवसियाये हुये थे । राजीव सिंह संजीदा होने का परयास कर रहे थे । इसी बीच मैडम सौमित्र कृष्ण का हॉल में प्रवेश हुआ । उन्होंने सबको बैठने का निर्देश दिया । प्रख्यात गाँधीवादी सीड़ी श्री श्वेत अम्बर का प्रवेश हुआ । इनका पूरा नाम कुछ और था पर अपना उपनाम कभी कहीं बीच में ही इन्होंने गिरा दिया था । अशोक बोला , ” आज सीड़ी का दिन है ज्ञान पिलायेंगे । अनुभवी प्रबोधवीर जामवन्त मेधाधारी जनमेजय मिश्रा ने कहा , ” नहीं , आज एडीजी साहब का दिन है । आज उपदेश की गंगा बहेगी । ”

अशोक - “ यार , चार सीटी क्या बज गयी जान आफ़त में आ गयी । हम तो इलाहाबाद में लक्ष्मी टॉकीज सीटी मारने ही जाते थे । ”

एडीजी साहब आ गये । उनके साथ कई और फ़ैकल्टी मेंबर थे । अशोक बोला , ” सर , अकेले हमको निपटाये होते अब बाज़ार सजाकर बेझ़ज़त क्यों किया जा रहा । ”

मैडम ने मॉइंक सँभाला और अपनी बात कहने लगीं , ” कई बार फ़ैसले लेने पड़ते हैं , वह भी कठिन फ़ैसले क्योंकि ऐसे फ़ैसलों की व्यवस्था को आवश्यकता ही नहीं होती वरन् यह अपरिहार्य हो जाता है । एक दृष्टि से देखा जाये तो जो कुछ भी हुआ वह बहुत ही सामान्य सी बात है पर एक दृष्टि से बात बड़ी है । वह लोग जो आने वाले समय में देश - समाज की ज़िम्मेदारी निभायेंगे और जिनसे समाज को बहुत उम्मीद है क्या उनका ऐसा कृत्य संसदीय है । बात मात्र संसदीय होने या न होने की नहीं है । बात यह है कि इस तरह का व्यवहार किसने किया ? आज से दो महीने पहने जब आप सब छात्र थे तब ऐसा कृत्य कोई ख़ास मायने नहीं रखता था पर अब आपके द्वारा किया गया कोई भी कार्य समाज के द्वारा परीक्षित किया जायेगा । अब हर दिन समाज , मीडिया और अपने मातहतों के द्वारा आप मूल्यांकित किये जाओगे । आप का कृतित्व समाज को निर्देशित करेगा । आप सब समाज के एक नायक हो और नायक के पास एक आदर्श भी होता है और लोगों की उम्मीदों पर खरा उत्तरने का दायित्व भी । आप सब अपने से स्वयम् सवाल करो और उत्तर की तलाश करो इस प्रश्न के साथ , ” क्या उल्लास की ऐसी

अभिव्यक्ति उचित थी ? उल्लास एक संयम की माँग करता है । हम सब राम के आदर्शों के आग्रही हैं जिसमें न तो अधीरता का कोई स्थान है और नहीं अतिरेकता का । यह आपकी नहीं मेरी विफलता है । मैं अपनी विफलता स्वीकार करती हूँ, मैं वह संजीदगी आपमें समावेशित न कर सकी जिसका उत्तरदायित्व मेरे कंधों पर था । मेरे मन में यह भी प्रश्न उठता है क्या मैं इतनी महती जिम्मेदारी के योग्य हूँ? सजा के हळदार आप हैं या नहीं है इस पर फैसला होना बाक़ी है पर मैं अपने आप को एक असफल एसीडी के रूप में देख रही हूँ ।”

मैडम ने पूरे माहौल को भावुक कर दिया अपने उद्घोषन के द्वारा । एडीजी साहब अपनी दाढ़ीं पर हाथ रखकर हम सब की ओर देख रहे थे । मैडम ने उनको बोलने के लिये आमन्त्रित किया । एडीजी साहब ने पहला ही वाक्य बोला, ” क्या जो हुआ वह ठीक हुआ ?”

एक पूर्ण शांति हॉल में । उन्होंने कहा, ” किसको - किसको लगता है यह ठीक नहीं हुआ और वह इसमें शामिल है ?”

मैंने अनामिका की ओर देखा वह खड़ी हो गयी । उनके बाद मैंने परेम नंदन की ओर देखा वह खड़ा हो गया । अनामिका बहुत ही सज्जन लड़की थी । वह अपने काम से काम रखती थी । उसको इलाहाबाद में मैंने पढ़ाया था और वह आज तक मेरे पैर छूती थी । उसका संस्कार सबको भाता था । वह भी इसमें शामिल थी यह अकल्पनीय था । मैडम ने भी चेहरे से आश्चर्य का भाव व्यक्त किया । परेम नंदन ने पीछे देखा इलाहाबाद के लोग खड़े होने लगे । मैं खड़ा हो गया । मेरी और राजीव सिंह की निगाह मिली । राजीव सिंह खड़े हो गये । एक - एक करके लोग खड़े होने लगे । तकरीबन तीन चौथाई हॉल खड़ा हो गया । मैडम सौमित्र कृष्णा भी खड़ी हो गयीं । उनके खड़े होते की सब खड़े हो गये । माहौल बदल गया । एडीजी भी आश्चर्य में आ गये । उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की और मैडम सौमित्र कृष्णा को बधाई दी एक बेहतर दरेनिंग देने की । गलती हो जाना एक सामान्य बात है वह जीवन में होता ही है पर स्वीकारने का साहस कम होता है । यह साहस अर्जित करने में समय समय लगता है । मुझे उम्मीद है कि आप लोग इस घटना को सकारात्मक रूप से लेंगे । इस विषय पर और कोई बात करने का कोई तुक नहीं बनता । आप लोग जायें, आपकी एसीडी आपको यथोचित निर्देश देंगी । “

मीटिंग खत्म हो गयी । हम लोग कक्षा में आ गये । दिन बीता । सायंकाल मैडम ने मुझे, राजीव, शिव बाबू, अशोक को बुलाया और बताया कि मामला खत्म हो गया है । आप लोगों ने बहुत अच्छी तरह से एक परिपक्वता से अपनी बात कही और मामले को हैंडल किया ।

मैं - “ मैडम , आपका आरंभिक उद्बोधन ही सारे मामले का सार था । उसने ही शायद सब में परिवर्तन ला दिया अन्यथा यह न होता । ”

मैडम - “ क्या अनामिका भी शामिल थी ? ”

मैं - “ नहीं मैडम । ”

मैडम - “ तब उसने ऐसा क्यों किया ? ”

मैं - “ मैडम , वह एक नायाब लड़की है । उसके बारे में लोगों को कम पता है । उसकी क्षमता का इस एकेडमी में तो कोई है नहीं और विरले ही कभी इतना संघर्ष करके यहाँ तक आये होंगे । जब सब अपने लिये सोच रहे थे वह सबके लिये सोच रही थी । वह आज के समाज की बड़ी नायिका है । आप कभी उसका जीवन उसी से पूछियेगा । वह मेरी छात्रा रही है इसलिये एक अध्यापक के तौर पर मैं उसके बारे में जो जानता हूँ वह बताना उचित नहीं है । ”

मैडम समझ गयीं । उन्होंने सब को जाने के लिये कहा । शाम तक हल्ला हो गया कि मामला निपट

गया । अशोक के मज़ाक का कभी अंत होता नहीं । उसने मीटिंग प्वाइंट पर कहा , ” सर लगता है मलकापुरकर के पिताजी की तगड़ी पैरवी काम कर गयी । ”

राजीव सिंह - “ अजीत सिंह की भी पैरवी आयी होगी । ”

सत्येंद्र तिरपाठी - “ देवी लाल कहे होंगे , ताऊ देख लो मामला सुलझा लो नहीं तो प्रधानमन्त्री को आना होगा मसूरी । ”

अशोक - “ अच्छा हुआ निपट गया नहीं तो प्रधानमन्त्री देश का काम छोड़कर यहाँ आते । ”

इला दर्शी जाह्नवी के साथ आ गयी । अशोक ने पूछा “अगला क्लचरल परोग्राम कब है ? ”

इला - “ 27 को । ”

अशोक - “ मैडम अब आप भजन - वजन गवाओ । आप विद्यापति के भजन गाएँ । कैलाश जी गाएँ ..

हम कहते डंके की चोट पर हरि है हज़ार हाथ वाला ..

नहीं तो बैजू बावरा का गाना गा दें

“ अँखियाँ हरि दर्शन को प्यासी । ”

राजीव - “ सीधे हनुमान चालीसा ही गाओ । ”

सत्येन्द्र - “ ऋग्वेद से गाओ
पृथ्वी से पहले सत भी नहीं था
असत भी नहीं था
अंधकार भी नहीं था
यही गाओ । अब इश्क - विश्क मत गाओ ।”

राजेश मन्मथनाथ- “ यह प्रेम के गायक हैं । कैलाश यह सब फ़ालतू बात
छोड़ें । अब गाओ

छू लेने दो नाजुक होंठों को ... ”

इला - “यह गाना पास हो जायेगा ।”

राजेश मन्मथनाथ- “ नहीं होगा तब हम बॉयकॉट करेंगे । यह कौन सी बात है
। ”

काफ़ी जदोजहद के बाद गाना फ़ाइनल हुआ

“ न झटकों जूल्फ़ से पानी ... ”

सत्येन्द्र - “ सब लोग जॉनसन टेप ख़रीद लो वहीं लगाकर जाना सांस्कृतिक
संध्या में नहीं तो आदत से मजबूर हो आप लोग और फिर सीटी मार दोगे । ”

किरकेट के महान खिलाड़ी होने का दावा करने वाले सेंट स्टीफ़ेन्सन के
नकुल ज्ञानदेव आ गये । यह अलगे आइटम थे । यह सारा खेल खेल लेते थे
। यह टेनिस, बिलियर्ड, बैडमिंटन, हॉकी, फुटबॉल, जिस खेल का नाम लो
सब आता था इनको । टीम का कैप्टन बनने के फ़िराक़ में धूम रहे थे । वह
आये और बोले कौन - कौन किरकेट खेलता है । अगले रविवार को सीनियर
बैच से मैच है टीम बनानी है । आधी एकेडमी कॉलेज लेवल तक खेलने का
दावा कर गयी और रतनदीप मलकापुरकर बोले मैं तो ओपनर था नागपुर
विश्वविद्यालय में ।

नकुल ने बोला, ”कल दरायल है शाम पाँच बजे ।”

खिलाड़ी ही खिलाड़ी एकेडमी में । कोई हल्ला कर रहा ऐ गुल्लू तू तो
विकेटकीपर है । तेरा तो खेलना तय । एक डॉक्टर साहब थे वह भी
विकेटकीपर का दावा ठोक दिये । अरे यहाँ स्पिनर भी कई हैं । यह तो
मिडिल ऑर्डर के बड़े बैट्समैन हैं । इनकी रीढ़ में तो लोहे का दम है । यह
आउट ही नहीं होंगे । बाजवा साहब तो गेंद पर ऐसा प्रहार करेंगे कि गेंद चार
भाग में टूट कर जायेगी बाउंडरी के बाहर वह भी नभ को छीलती हुई और एक
गेंद पर मिलेंगे चौबीस रन । बेचारा सीनियर बैच क्या खाकर इनसे मैच

खेलेगा । शाम को परैकिट्स स्टार्ट हो गयी । मंदीप पंडित की पहली गेंद और रतनदीप मलकापुरकर के थोबड़े को चूमती चली गयी । रतनदीप ने हेलमेट लगा लिया । मंदीप पंडित की अगली गेंद रतनदीप का हेलमेट हिला गयी । रतनदीप ने पूछा कोई स्पिनर नहीं है क्या?

नकुल - “ओपनर बैट्समैन हो और स्पिनर माँग रहे हो ।”

स्पिनर आ गये । पाँच फुट दो इंच से थोड़ा ही कम अजय गोयल । उनकी गेंद ही नहीं पहुँची स्टंप तक दो टिप्पे में । गेंद सुररी हो गयी और धीरे से लुढ़कती हुई स्टंप को चूम गयी । गेंद इतनी बेसहारा थी कि वह गिल्ली ही न गिरा पायी । मलकापुरकर आउट नहीं हुये । यह तय हुआ, अब रोज़ अभ्यास होगा ताकि एक तगड़ी टीम चुनी जा सके ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग – 385

किरकेट टीम का चयन आसान न था । दावेदार कई थे और कई तगड़े दावेदार थे । बाजवा साहब फ़री हिटर होने का दावा कर रहे थे । गेंद बॉलर के हाथ से छीन कर मसूरी की पहाड़ियों पर सुला देंगे । नकुल ज्ञानदेव तो जैसे पैदा ही खेलने के लिये हुये हैं । आप जो खेल कहो वह सबमें माहिर । मंदीप पंडित ऊँचे क्रद के तीखे नयन- नक्षा के सुंदर खिलाड़ी थे और वह वसीम अकरम की तरह गेंद फेंकने का दावा करते थे । प्राकट्य सिंह तो ग़ज़बै आइटम थे । लंबी – लंबी छोड़ने में माहिर थे । वह सिविल सेवा के आने वाले वर्षों में एक बड़े लटाईबाज बनेंगे इसका लक्षण दिखने लगा था । रातिर को हमख्यालों का सम्मेलन हुआ । सम्मेलन में किरकेट टीम के चयन पर दावेदारी पेश होने लगी । प्राकट्य सिंह रंजी के संभावित खिलाड़ियों के लंबी लिस्ट में थे पर तबियत ख़राब हो जाने के कारण जा नहीं पाये । नकुल ज्ञानदेव सेंट स्टीफेन्स टीम के उप कप्तान थे । बाजवा साहब के बल्ले से जो गेंद लगी उसके कई टुकड़े हो जायेंगे । अशोक ने इनको जरासन्ध ऐसा ताकतवर होने की पुष्टि कर दी । वन डाउन के लिये बड़ा दावा पेश किया आईएसएम धनबाद के खिलाड़ी संजोग केड़िया ने । वह दीवार के नाम से विख्यात थे आईएसएम में । वह जब आते थे करीज़ पर तब जाते ही नहीं थे, दो – चार लोग घसीट कर ले जाते थे । कभी पुलिस में दरोगा रहे अनिकेत सिंह सौम्य- मृदुभाषी अनिकेत सिंह का कहना था कि उनका पराक्रम मैदान में दिखेगा । गुल्लू गंगवार विकेट कीपर के एकलौते दावेदार थे, वह अपना स्थान सुरक्षित मान बैठे थे । अशोक ने कहा कि प्राकट्य सिंह का नाम ठीक

नहीं रखा गया । इनका नाम भब्रबाहु होना चाहिये । बाजवा साहब ने पूछा यह कौन था ?

अशोक – “ अर्जुन ने एक विवाह मणिपुर की राजकुमारी में किया था । उस विवाह से यह उत्पन्न हुआ था । जब हस्तिनापुर का राजा बनने के बाद युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया तब अर्जुन सारे राजाओं को हराते हुये मणिपुर पहुँचे और यह बालक युद्ध पर उत्तर गया और अर्जुन ऐसे महान् वीर का वध कर दिया । यह सबसे पराक्रमी था । ”

बाजवा – “ यह तू कहाँ से लाता है सब ? ”

अशोक – “ महाभारत में लिखा है । अनुराग सर बताइये । ”

मैं – “ हाँ यह सही बात है । महाभारत में विस्तार से लिखा है । ”

प्राकट्य सिंह – “ तब फिर क्या हुआ ? ”

मैं – “ भीष्म की माँ गंगा बहुत परसन्न हुई क्योंकि अर्जुन ने भी भीष्म का धोखे से वध किया था पर कृष्ण के कहने पर गंगा ने अर्जुन के सिर को जोड़कर जीवित करने का रहस्य बता दिया और बचा लिया । ”

बाजवा – “ भब्रबाहु तू दौड़ा – दौड़ा मारना मैच मे । ”

प्राकट्य सिंह – “ तीन – चार गेंद तो मैं मसूरी की पहाड़ियों में गायब कर ही दूँगा । ”

अशोक – “ अब इनको नये नाम से पुकारा जाये... भब्रबाहु सिंह

“

गुल्लू गंगवार बहुत खुश थे कि वह विकेटकीपर पक्के हैं पर अगले दिन सुबह एक चिकित्सक व्यवसाय वाले विकेटकीपर का जोराजामा पहनकर विकेटकीपिंग करने लगे । गुल्लू गंगवार को तगड़ी चुनौती मिली । चिकित्सक ने ओपनिंग बैट्समैन होने का भी दावा पेश कर दिया और पैड – बैट को सीधी लाइन में ले आकर डिफेसिव शॉट खेलने लगे । वह देर शाम हर दिन दो घंटे टेनिस खेलते थे, इसलिये स्थूल शरीर छोटे क़द के गुल्लू को फिजिकल फ़िटनेस में पछाड़ते हुये गुल्लू गंगवार पर वह भारी पड़ गये ।

वह बेहतरीन खिलाड़ी थे पर गुल्लू ने कहा सेंट स्टीफेन्स वाले ने सेंट स्टीफेन्स का साथ न देकर क्षेत्रवाद किया । ओपनिंग बैट्समैन पर दूसरा दावा उड़ीसा के सुब्रत मिश्रा ने पेश किया । वह बहुत बेहतरीन खिलाड़ी थे । चिकित्सक रामनाथ, सुब्रत मिश्रा ओपनर हो गये । पहले डाउन पर स्वयमेव शर्मा, दूसरे पर मंदीप पंडित तीसरे पर नकुल ज्ञानदेव, चौथे पर

भब्रबाहु , पाँचवें पर केडिया , छँटें पर संजय सिंह , सातवें पर अनिकेत , आठवें पर नरोत्तम बंसल , नवें पर नरेश पहाड़ी , दसवें रामराज पुडे , ग्याहरवें खिलाड़ी थे चमन गुलाटी । बारहवें थे जगदीप और तेरहवें रंजन अरविंद , जिनका उपयोग वक्त आने पर किया जायेगा । । बैटिंग के क्रम पर कुछ एतराज़ था । कप्तान नकुल ज्ञानदेव कहा परिस्थिति देखकर अदल- बदल लेंगे । बाजवा साहब ने ट्रॉयल में भाग नहीं लिया । उन्होंने मारामारी देखकर कहा , ” रहन दे मैं टग ऑफ वार में सबको दिन में तारे दिखा दूँगा । ”

मैंने अशोक से पूछा , ”बाजवा साहब क्यों नहीं खेले ?”

अशोक – “ रात में लाल गेंदों का सम्मेलन हुआ । गेंद के नेता ने जाकर अनुनय – विनय किया , रहम की दुहाई की ओर बाजवा साहब बड़े दिल के आदमी है शरणागत की रक्षा करते हैं ।

अगले दिन हमखयालों का सम्मेलन पुनः हुआ , देर रात तक चला । टीम के चयन पर विस्तृत चर्चा हुई । नकुल ज्ञानदेव ने पक्षपात किया इस बात को स्पिनर के तौर पर शामिल न हो पाये गोयल और गुल्लू गंगवार ज़ोरदार लफ़ज़ों में कह रहे थे । अगर मैच हम हार गये तब इसके ज़िम्मेदार नकुल ज्ञानदेव होंगे । नकुल ज्ञानदेव देव और मंदीप पंडित में भी टीम के चयन में मतभेद हो गये । मंदीप पंडित ने अपने गेंग के साथ मैच के बहिष्कार की धमकी दे दी पर चमन गुलाटी और नरोत्तम ने मामला सँभाला और अंततः मैच का बहिष्कार बच गया । मैच के दिन बहुत गहमागहमी थी । दोनों के तरफ़ के खिलाड़ी पूरे गाजेबाजे के साथ मौजूद थे । टॉस जीतकर पहले बल्लेबाज़ी का फ़ैसला नकुल ज्ञानदेव ने किया । मैच आरंभ हुआ ओपनिंग ठीक गयी । तीस रन की साझेदारी के बाद चिकित्सक ओपनर आउट हुये । अशोक कमेंटरी कर रहे थे । सुधरत मिश्रा भी बाइस रन बनाकर आउट हुये । पहले डाउन पर स्वयमेव शर्मा आये उन्होंने दो गेंद हवा में उड़ाकर बाउंडरी के बाहर भेजी । बारह रन दो गेंद पर । तीसरी गेंद उनसे छूट गयी । वह अति उत्साही थे औथी गेंद फिर हवा में उड़ा दिया पर अफ़सोस वह गेंद सीमा के भीतर रह गयी और आउट हो गये । बाजवा ने कहा बभरबाहु तू जा और फाड़ दे गेंद । प्राकट्य सिंह ने पैड बाधा और करीज की तरफ़ जाते हुये ।

अशोक – “ विवियन रिचर्ड्सन की तरह स्वैग करते हुये टीम के प्रतापी खिलाड़ी प्राकट्य सिंह अपना बैट हवा में घुमाते और हेलमेट को ठीक करते हुये पिच पर । ”

प्राकट्य ने पिच का मुआयना किया । दो – तीन जगह बैट से पिच को ठोंका यह समझने के लिये कि गेंद कहाँ पर टिप्पा खाकर उठेगी । ”

अशोक – “ सुनील राजदार की तेज गेंद उठती हुई प्रकाट्य सिंह ने बल्ला ऊपर उठाया । बल्ले पर गेंद का प्रहार पर कोई नफ़ा- नुकसान नहीं ।

अगली गेंद फुलटॉस पर सीधी बल्लेबाज़ के पैड पर । एक ज़ोरदार अपील पगबाधा का पर अंपायर ने नकार दिया । प्रकाट्य सिंह के पास नकुल ज्ञानदेव आये और कुछ समझाया और फ़ाइन लेग की तरफ़ इशारा किया । प्राकट्य सिंह ने फ़ाइन लेग की तरफ़ देखा । अगली गेंद गुडलेंथ तेज रफ्तार की गेंद । प्राकट्य सिंह ने पूरी ताक़त से गेंद पर प्रहार करने के इरादे से बल्ला घुमाया । बल्ला उनके शरीर के चारों तरफ़ घूम गया और बल्ला हवा में उड़ गया । पीछे स्टंप पर गेंद लग गयी । स्टंप और बल्ला दोनों हवा में देखो पहले कौन गिरता है । बल्ले पर ताक़त ज्यादा लगी थी इसलिये वह देर में गिरा स्टंप पहले गिर गया । एक ज़ोरदार अपील क्लीन बोल्ड की और विपक्षी खेमें में खुशी की लहर । प्राकट्य ने गिरे हुये बैट को भारी मन से उठाया और पवेलियन की तरफ़ मुड़ने ही वाले थे कि दौड़कर नकुल ज्ञानदेव रोका । यह नो बॉल थी । प्राकट्य सुरक्षित । गेंदबाज़ अंपायर से बहस कर रहा कि नो बॉल कैसे । अंपायर ने समझाया और पुनः खेल आरंभ । दो – तीन गेंद शरीर पर झेलने के बाद एक गेंद बल्ले पर लगी पर वह सीधा विकेटकीपर के पास । एक शानदार संघर्षमय पारी का अंत हुआ । सारा संघर्ष बल्ले और गेंद के सम्मिलन का ज्यादा था रन बनाने का कम था । प्राकट्य सिंह के बाद मंदीप पंडित और नकुल ज्ञानदेव पारी सँभालने की कोशिश की । नकुल ज्ञानदेव के बाद दीवार के नाम से सेलेक्शन का दावा झाँकने वाले केड़िया आये और वह पहली ही गेंद पर डिफेंस करते हुये आउट हो गये । इनको बाद तो विपक्षी टीम ने ख़ंजरों की फसल तैयार कर दी । अगले ओवर की 6 गेंदों पर पाँच खिलाड़ी आउट हो गये । मात्र 80 रन का लक्ष्य था । बधावन साहब ने फ़ील्डिंग देखकर कहा चार- पाँच चिमटा लाओ । बगैर चिमटे के गेंद उठा नहीं पायेंगे यह सब । हम मैच बगैर कोई ख़ास संघर्ष किये हार गये । रातिर के भोजन पर प्राकट्य सिंह खाना नहीं खा रहे थे । अशोक ने सत्येन्द्र तिरपाठी से कहा ,” यह मैच हार जाने के कारण दुखी हैं इसलिये खाना नहीं खा रहे ।”

सत्येन्द्र तिरपाठी – “ यह मैच हारने से नहीं, मैच इनके कारण हम हार गये इसलिये दुखी होकर खाना नहीं खा रहे ।”

अशोक – “ टीम का चयन ठीक नहीं हुआ ।”

सत्येन्द्र- “ एक हाई पावर कमेटी का गठन होना चाहिये मैच के सारे मुद्दे पर ।”

मंदीप पंडित भी कह रहे मैच हम नकुल ज्ञानदेव के कारण हारे । गुल्लू गंगवार ने नकुल से ताउमर बात न करने की क़सम खा ली । गोयल का कहना था स्पिनर टीम में था नहीं इसलिये हारे । बधावन ने कहा टीम मैनेजमेंट की गलती है । अगर पाँच चिमटे होते तब चिमटों से गेंद उठा सकते थे । पर इस मुद्दे पर कोई ध्यान दिया ही नहीं गया । अगले मैच से पहले दस चिमटे ख़रीदो । सब लोग चिमटे के साथ अभ्यास करें ।

दिन बीत रहे थे , सुखद दिन । मेस कमेटी के चुनाव का एलान हो गया । गहमागहमी मेस कमेटी के चुनाव की । कई चाणक्य जन्म लेने लगे अपने चन्द्रगुप्तों के साथ ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 386

“ हम मैच क्यों हारे ?”

“ टीम का चयन ठीक न था ।”

“ किसको चुनते ?”

“ विकेटकीपर के लिये डॉक्टर रामनाथ का दावा ठीक था । वह ठीक ओपनर थे । कीपिंग भी ठीक किये । ”

“ हम हारे फ्रीलिंग के कारण । ”

“ वह कैसे ? ”

“ हमने कई गेंदें नहीं रोकी , बेवजह रन दे दिया । कैच भी नहीं पकड़े । हमारे गेंदबाज़ ठीक से गेंदबाज़ी नहीं कर पाये । ”

“ गेंदबाज़ का क्या दोष हमने टार्गेट ही इक्यासी रन का दिया था । अगर यह 120/125 का होता तब हम शायद जीत जाते । ”

“ यह 125 का टार्गेट क्यों नहीं हुआ ?”

“ अगर पाँच खिलाड़ी 6 गेंद पर खेल खेलेंगे कि तू चल में आता हूँ चुपड़ी रोटी खाता हूँ हरी डाल पर बैठा हूँ ठंडा पानी पीता हूँ , तब तो यह होना ही था । ”

“ यह पाँच लोग 6 गेंद पर कैसे आउट हो गये ?

संजोग केडिया का दावा तो था कि वह करीज़ से हटेंगे ही नहीं और डिफ़ेंस करते पहली ही गेंद पर आउट पर हो गये । आउट हो गये यह तो ठीक है पर कोशिश तो की होती शॉट मारने की । यह तो गेंद देखते रहे और गेंद उनको ले उड़ी । उनसे अच्छे तो भबरबाहू थे कम से कम कुछ गेंद बैट पर न सही शरीर पर तो लिया । ”

“ यह भबरबाहू कौन है ?”

“ प्रकाटय सिंह । ”

“ यह भबरबाहू क्यों हैं ?”

“ भब्रबाहू कहो , पहले नाम ठीक से सीखो इतने बड़े नायक का । इतिहास का बहुत वीर नायक है । ”

“ क्या यह भी वीर हैं ? ”

“ यह महावीर है । ”

“ एक दिन ख़राब था इनका तो क्या हुआ , यह प्रशस्ति गाथा लिखेंगे , लोग भी लिखेंगे । यह तो एक ही लटाई में सद्वी , मंज्ञा दोनों लपेट मारेंगे । सुना है मेस कमेटी का चुनाव यह भी लड़ेंगे । ”

“ और कौन लड़ेगा ? ”

“ एक महिला उम्मीदवार भी हैं , वह भी प्रेसिडेंट के लिये । ”

“ यह तो बड़ी खबर है । ”

“ बड़ी खबर अभी आनी बाक़ी है , कई बड़ी खबर । ”

“ पहले यह बताओ हम मैच हारे क्यों ? ”

“ यार जैसे हम पाकिस्तान से हार गये । अपने सीनियर बैच से हारे हैं फिर जीत लेंगे । ”

“ हम कप्तानी के कारण हारे । नकुल ज्ञानदेव कप्तानी ठीक नहीं किये ? वह खिलाड़ी तो अच्छे हैं । ”

“ एक अच्छा खिलाड़ी एक अच्छा कप्तान हो यह हमेशा नहीं होता । कप्तान को अच्छा खिलाड़ी होने के साथ-साथ अपने सारे प्लेयर से बेहतर प्रदर्शन करा पाने की क्षमता रखनी चाहिये । नकुल ज्ञानदेव ने कई गलती की । चमन गुलाटी का इस्तेमाल ठीक से नहीं हुआ । वह मध्यम धीमी गति के स्पिन गेंदबाज़ थे । वह अपने टीम के मोहिन्दर अमरनाथ थे । उनको दो ओवर में ही हटा दिया , वह एक और ओवर माँग रहे थे । सुनील राजदान उनको खेल नहीं पा रहे थे । वह चालीस रन बनाये । चमन उनको आउट कर देते । अंतिम ओवर नरोत्तम बंसल को न देकर अनिकेत सिंह को देना चाहिये था । बंसल थक चुके थे और अनिकेत की गेंद तेज आ रही थी । फ़िज़िकल फ़िटनेस के आधार पर टीम का चयन नहीं हुआ । कई गलतियाँ बल्लेबाज़ी क्रम पर भी हुईं । संजोग केड़िया को पहले भेजा जाना चाहिये था । वह रक्षात्मक खिलाड़ी थे । उनको आपने निचले क्रम पर भेजा , उन पर रन बनाने का दबाव आ गया । ”

“ पर वह तो रक्षात्मक खेल खेलते हुये आउट हुये । ”

“ वह दबाव में थे । नकुल ने उनसे तेज रन बनाने को कहा । वह समझ नहीं पाये कि तेज रन बनाये या सुरक्षा करें । उनको अपना नेचुरल गेम खेलना चाहिये था । आप देखो जिस गेंद पर वह आउट

हुये । वह पहले करीज से बाहर आये थे उन्होंने सोचा कि गेंद को मिड ऑन पर निकाल देंगे पर गेंदबाज़ चतुर था उसकी गेंद यॉर्कर हो गयी । यॉर्कर गेंद खेलनी आती थी संजोग को इसमें कोई दो राय नहीं है । उन्होंने रणनीति बदली और डिफ़ेंस पर आ गये पर गेंद पूरी तरह यॉर्क करके आउट स्विंग कर गयी । इस गेंद पर कोई भी आउट हो सकता था । मैं तो संजोग के आउट होने पर उनको दोष नहीं दूँगा । मैं उनको टीम में फिर से चयनित होने की वकालत करूँगा । वह अच्छे खिलाड़ी हैं । ”

“ गुल्लू गंगवार बनाम डॉक्टर रामनाथ ?”

“ डॉक्टर रामनाथ बैट और पैड को एक लाइन में ले आकर खेलते हैं । उनके पास तकनीक है । विकेट कीपिंग पर तो कोई शिकायत है नहीं । ”

“ सुब्रत मिश्रा ?”

“ वह सबसे बेहतरीन बल्लेबाज़ हैं पूरी एकेडमी के । उनके पास हर तरह के शॉट हैं । उनका लेट कट तो देखने लायक़ है । ”

“ जो पाँच लगातार आउट हुये उनका क्या ?”

“ हाँ वह नहीं होना चाहिये था । ”

“ और ये भवरबाहू ?”

“ एकाध लटाईबाज टीम में होना चाहिये था । ”

“ क्यों होना चाहिये था ?”

“ मेरे हिसाब से बाजवा को खेलना चाहिये था । ”

“ क्यों ?”

“ देखो , खेल में मनःस्थिति एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है । बाजवा साहब बोलते फाड़ दूँगा , चीर दूँगा , कोई चक्कर नहीं एकाध विकट गिर गया तो कोई बात नहीं मैं चार पाँच लपेट कर मारूँगा । क्या पता मार ही देते । वह जो स्पिनर के नाम पर विपक्षी टीम में खेला था अगर वह बाजवा साहब के सामने पड़ गया होता तब दो चार शॉट लग सकते थे । बीस - पच्चीस रन और होते तब गेंदबाज़ों के लिये सहूलियत होती । हमारे गेंदबाज़ों ने काम ठीक किया था । ”

“ लटाईबाज टीम में क्यों होना चाहिये ?”

“ यार , थोड़ा माहौल ठीक रहता है । प्रकाट्य सिंह का खेल हम सब लोग डिस्क्स कर रहे । वह न खेलते तब हम क्या डिस्क्स करते । ”

“ एक बात बतायें ? ”

“ बताओ ।”

“ संजोग केड़िया का नुकसान हो गया ।”

“ क्या हुआ ?”

“ उनकी मनमोहक छवि को धक्का लगा । “

“ उससे क्या होगा ?”

“ लड़कियाँ भी मैच डिस्कस कर रहीं और संजोग केड़िया का भाव कम हो गया ।”

“ क्या संजोग प्रेम के जंजाल में आ गये ?”

“ वह गिरफ्त में हैं ।”

“ किसकी गिरफ्त में है ?”

“ यहाँ क्रातिलों की कहाँ कमी है ?”

“ क्रातिल कौन है वह शायर जिसकी आँखों से निकले लफ़्ज़ की रौशनी में घायल लोगों की तादाद बढ़ रही । चाँद की तख्ती बनकर कौन सबको लुभा रहा । कौन ख्वाब बनकर लोगों की आँखों में रिहाइश कर रहा ? “

“ यह कोई झबादत नहीं कि वक्त तय है एक रिवाजों की क्रवायद में । यह इश्क़ है जो नींद में काँधे पर चढ़ता हुआ बाँहों में समेटे उसको चढ़ने लगता है उर्ज की ओर यह कहते हुये तुझे मेरी मंज़िल बनना होगा ।”

“ यह कौन है जो कइयों के ख्वाबों की शहज़ादी बनी है ? “

“ अगर एक हो तो कहुँ मैं, यहाँ नफ़ासत का हर ओर डेरा है । एक नायाब इश्क़ सबकी चाहत है । अगर इश्क़ जिस्म में ही रहा होता तो आज प्रेम कहानियों का कोई ज़िक्र न होता ।”

“ माशूका कौन है ?”

“ यहाँ दरिया ही दरिया है और प्यासे ही प्यासे हैं । पर एक ज़रूरत सात्त्विक प्रेम की है, जिसकी सबको तलाश है । यह प्यास सराबों से बुझ नहीं सकती । अंजुली में पानी को समाकर पूरे चेहरे को तरोताज़ा करना होगा । “

“ क्या मजनू की तरह दीवानगी की चाहत है या फ़रहाद की तरह पहाड़ी को चीरकर दूध की नदी में चलने की आकांक्षा है या वह राम का सात्त्विक प्रेम जो लता के ओट में आज तक हम सबके मनः मस्तिष्क में व्याप्त है ।”

“ सात्त्विकता तो अपरिहार्य है । दीवानगी के बगैर इश्क़ होता कहाँ है और फ़रहाद बनना ही होगा अगर समाज के सामने कहना है तुझे मेरे साथ चलना होगा । “

“ क्या समाज के सामने अभी ही कहना होगा ? ”

“ यह मुहब्बत है जिसका ऐलान सरेआम करना होगा । नज़र से उसके अगर धायल हो और यह धायलपन रास आ रहा तब चुभे हुये तीर से उसका नाम लिखना होगा ।

“ बता वह लफ़्ज़ जो पहाड़ियों में गूँज कर कह सके नहीं देखा है तुमने वह कथानक जो लिखा जाने वाला है । ”

“ बंद दरवाज़ों पर दस्तक को होने दो , भूली बिसरी यादों को नहीं एक नयी कहानी को जन्मने दो । नाव काग़ज़ की बनाने से ही काम न होगा नाव के बहने के लिये पानी को सड़कों पर बहाना होगा । ”

“ कौन है जो रौशन करेगा रास्ते को और नज़म की परछाइयों से संवाद करेगा ? ”

“ नज़म को रेत पर नहीं समुद्र की लहरों पर लिखना होगा । रेत को नज़म के लफ़्ज़ पढ़ने होंगे , रेत पर लिखी तहरीर पानी में समा जाएगी और मछलियाँ बताएगी कोई लहरों पर तेरा नाम लिखता है । ”

“ ऐसा दीवानगी की चाहत किसकी है ? ”

“ इंतज़ार करो ... दीवाने गर न होते तो यह दुनिया रहने लायक नहीं होती । ”

“ दिल की अज़ीज़ गहराइयों में उतर कर एक नज़म लिख तू मेरे लिये , यह चाहत सभी की है । देख कौन लफ़्ज़ जीत कर लाता है वर्णमाला से । ”

“ जिसको मिलना है मिल जा , आगे मोड़ और भी हैं , और सफ़र के मुसाफ़िर मिलेंगे । आज तितलियों ने फूलों के होंठ न चूमे तो क्या हुआ , फूल को इंतज़ार कल का भी है । ”

चलते - चलते यह भी बता देता हूँ .. समुद्र खारा है इसमें दोष समुद्र का तो है नहीं .. “

“ पर उसने हर नदी को खारा क्यों बनाया अपने में समा कर ? ”

“ नदी से पूछो वह समुद्र में क्यों समाना चाहती थी ? ”

“ क्यों । समाना चाहती थी ? ”

“ यहीं तो इश्क है नदी का समुद्र से अपनी पहचान खोकर समुद्र में समाने की । ”

“ बस करते हैं । ”

“ नहीं तुम और बयाँ करो वह इश्क जो सबकी चाहत है । ”

“ कौन है सबकी चाहत में ? ”

“ वक्त आने दो । ”

“ यह समुद्र और नदी का इश्क ही बता दो । ”

“ हर बात आज ही क्यों जानना चाहते हो , कल का इंतज़ार करो ...

“ इंतज़ार नहीं होता , तुम हर रोज़ लिखते नहीं हो .. कहते नहीं हो , नज़म गढ़ते नहीं हो । ”

कल गूँड़गा नज़म .. इश्क की दास्तान की ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 387

नें प्रतीक्षा के साथ शाम को कैंपस में घूमता रहा । प्रतीक्षा को अपने कैडर की ही चिंता खाये जा रही थी । उसको हर रात सपने में कभी उत्तर पूर्व का कैडर आ जाता था तो कभी केरल – तमिलनाडु का । वह अपने बड़े भाई की तरह ही अपने इलाके में शोहरत भरी ज़िंदगी के स्वप्न से आळादित थी । उसको यह लग रहा था कि कैडर अगर ठीक न मिला तब क्या होगा ? मैं एक पालनहार दिख रहा था कि विवाह के बाद यह संभव है कैडर बदल जाए , पर मेरा यह कहना कि हो सकता है कि विवाह के बाद भी यूपी न मिले यह उसको और परेशानी में डाल रहा था । मैं एक अलग दुविधा में था । मेरा मन बहुत एकेडमी में लग नहीं रहा था । मैं वापस इलाहाबाद जाना चाहता था । मुझे इलाहाबाद की याद बहुत आती थी ख़ासकर सुबह चार बजे जब माँ चाय लेकर आती थी और उसके बाद दो यात्रायें एक साथ आरंभ हो जाती थीं । उसकी अपनी परलोक को सुधारने की यात्रा और मेरी अपने स्वप्नों के ताबीर पाने की कोशिश । मैं रात में छत की तरफ देख रहा था । मुझे नींद की समस्या नहीं होती थी । मैं बिस्तर पर जाते ही ख़बाबों के जंगल में खो जाता था । वहीं आज भी हुआ । बहुत दिन बाद श्वेत वेशधारियों का समूह मेरे स्वप्न में आ गये ।

“ तुम स्वार्थ से परेरित हो चुके हो । तुम स्वयम् से की गयी प्रतिज्ञा का कोई सम्मान नहीं कर रहे । तुम चलो मेरे साथ । ”

उनका इतना ही कहना था कि माँ मेरे सपने प्रकट हो गई । उसकी आँखों में तेज था चेहरा उसका प्रायः कांतिमय हुआ करता था । उसने घूर कर

श्वेत वेशधारियों की तरफ़ देखा और पूछा , ” तुम क्या चाहते हो ? “

श्वेत वेश धारियों में से एक आगे बढ़ा और उसने कहा “ मैं इसके द्वारा त्याग चाहता हूँ । यह समाज के लिये कार्य करे । “

माँ – “ तुमने त्याग किया है ? ”

“ मेरा पूरा जीवन त्याग में बीता है । “

“इतना अहंकार त्याग करने पर , पर किसलिये ? तेरे त्याग से समाज का कौन से भला हो गया , यह बता । “

“मैंने समाज में परिवर्तन की कोशिश की है । मैंने परिवार को त्यागा है । सारी सुख सुविधाओं को त्यागा है । मैंने मात्र समाज के बारे में सोचा है । मैंने अपने व्यक्तिगत हित के बारे में और व्यक्तिगत जीवन के बारे में कभी कोई विचार नहीं किया है । “

“इतना अहंकार मात्र इसलिए की तूने घर – परिवार त्याग दिया है । तू अपने कथनों को लिख और उसको पढ़ और तू देख एक ही बात को तो कितनी बार कहने की कोशिश कर रहा है । जब एक ही उपलब्धि को बार बार बखाना जाए तो इसका तात्पर्य होता है व्यक्ति का अहंकार एक सीमा को पार कर चुका है । और वह व्यक्ति स्वयम् की एक नाशवान प्रक्रिया का भाग हो चुका है । मेरी एक सलाह है तू इसको अपने सम्प्रदाय में शामिल करने से पूर्व पहले तू स्वयं अहंकार से मुक्त हो जा अन्यथा यह भी अहंकारी हो जाएगा । मुझे इसके अहंकारी होने का भय सदैव रहता है और अगर यह तेरे साथ गया तब तेरे अहंकार का विकिरण इसको प्रभावित कर देगा । “

“ तू एक मूढ़ महिला है । तुझे समाज की हक्कीकत और समाज की आवश्यकताओं का कोई भान नहीं है । यह आवश्यक हो चुका है इसको तेरे मोह से मुक्त किया जाये । जब तक तेरा इसके प्रति मोह रहेगा या इसका तेरे प्रति तब तक यह समाज में कोई परिवर्तन करने के लिये तैयार नहीं हो सकेगा । तू स्वेच्छा से इसे हम सौंप दे अन्यथा हम इसे बल प्रयोग के द्वारा अपने साथ ले जाना होगा । “

“ बड़ा अहंकार है तेरे को अपने बल पर । अभी तक तो मैंने तेरे ज्ञान का अहंकार ही देखा था और अब तो तू बल का भी अहंकार दिखा रहा । ऐ अहंकारी , एक माँ से उसका बेटा तू किस अधिकार से छीन कर ले जाएगा । इसका पिता भी अगर इसको लेकर जाना चाहेगा तो उसे भी मेरी अनुमति की आवश्यकता होगी । मैं कोई कौशल्या नहीं हूँ जिसे दशरथ वनगमन का आदेश दे दें और राम उनके कहने पर वन चला जाए और मैं चुपचाप तमाशा देखती

रहूँ । यह मेरे खून से मेरे हौसलों को पीकर जन्मा है । मुझे पता है जब कभी इसके हौसलों को प्रेरणा की आवश्यकता होगी तब वह कहाँ से प्राप्त होगी । चल तुझे एक अवसर देती हूँ तू मुझे संतुष्ट कर दे कि जीवन में जो तुमने किया है उससे समाज का भला होने जा रहा है या तू जीवन में इससे जो करवाएगा उससे समाज का भला होगा । मैं तुझे वचन देती हूँ अगर तू मुझे संतुष्ट कर गया तो इसे अभी श्वेत वस्त्र पहनाकर तेरे साथ समाज के कल्याण के लिए भेज दूँगी । मैं एक माँ हूँ, मैं अपना भला भी चाहती हूँ और समाज का भी, परंतु अगर मेरे भले और समाज के भले के बीच में कोई द्वंद्व होगा तो मैं समाज के भले को अधिमानता दूँगी ।”

“ तुम किस तरह मुझ जैसे शास्त्र विज्ञ - वेद पाठी , -अनुसंधानकर्ता,- अनवरत अध्ययनरत प्रबोधयुक्त व्यक्ति से शास्त्रार्थ करेगी । तुमको इतिहास समाज धर्म के बारे में क्या पता होगा । तुम किस बात पर संवाद करना चाहती हो ।”

“ श्वेत वेशधारी तेरे व्यक्तित्व में कुछ और हो न हो पर अहंकार की पराकाष्ठा है । तुझे शास्त्रार्थ की परंपरा का भी ज्ञान नहीं है । शास्त्रार्थ में सदैव अपने समुख उपस्थित होने वाले व्यक्ति का सम्मान किया जाता है । चल तेरे सबसे मज़बूत पक्ष पर शास्त्रार्थ कर लेते हैं ।”

“ क्या है मेरा सबसे मज़बूत पक्ष ?”

“ वही जो हर वाक्य में तू प्रयोग करता है ... त्याग .. त्याग और त्याग ।”

“ त्याग जीवन है । ”

“ त्याग अहंकार को जन्म देता है । ”

“ त्याग अहंकार का नाश करता है । ”

“ त्याग का दर्प और विदवता का प्रदर्शन सदैव व्यक्ति को अविवेकी बनाता है । जब व्यक्ति के पास किसी के विचारों के खंडन का आग्रह अधिक हो और अपनी बात कहने का अति आग्रही हो जाये तब बहुधा उसकी वाणी में नम्रता का अभाव होता है, जो इस समय तेरी वाणी में ही नहीं तेरी शारीरिक अभिव्यक्ति में भी स्पष्ट प्रदर्शित हो रहा है । जब भी वाणी में खंडन करने की उत्तेजना होगी और आत्मनिवेदन का अभाव होगा तब वाणी अहंकार से युक्त होगी । तू अहंकार मुक्त होकर अपनी बात कह ।”

“ व्यक्ति को अपने मत के प्रति आग्रहशील होना चाहिये समझौतावादी नहीं ।”

“ आत्मनिवेदन में नम्रता के साथ- साथ अपने विचारों के प्रति वज्र के तरह की दृढ़ता और अपने सिद्धांतों पर अडिगता हो पर अहंकार बिल्कुल न हो । ”

“ समर्पण और त्याग में ही जीवन है । ”

“ समर्पण में एक अहंकार होता है और बहुधा सत्य के नाम पर अहंकार की पूजा होती है । ”

“ व्यक्ति को हरिश्चन्द्र , दशरथ , भीष्म , युधिष्ठिर के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये । ”

“ यह सब अहंकार से युक्त थे । इनके कृत्य समाज के लिये आदर्श प्रस्तुत नहीं करते । हरिश्चन्द्र जिस नैतिकता के साथ थे उसमें उनको यह पता नहीं था कि इसमें अपनी ही पत्नी का करय – विकरय शामिल हो चुका है । भीष्म को इसका भान नहीं था कि उनके वचन रक्षा के प्रयास के कृत्य से राज्य समापन की ओर बढ़ रहा है या राज्य मज़बूत हो रहा है । दशरथ के वचनों की रक्षा किसी नैतिकता की स्थापना नहीं करते । वह सारा कृत्य माँ के अधिकारों के विरुद्ध हैं । वह जिस वचन की सुरक्षा धर्म मान रहे थे वह अधर्म था । युधिष्ठिर तो इतिहास का भीरु व्यक्ति है । वह इतिहास को अपनी जीवनी बना रहा था । महाभारत का सबसे उच्चतम बिंदु है यक्ष प्रश्न का प्रसंग पर वहाँ पर युधिष्ठिर का ज्ञान दिखता है पर उसका कृत्य कोई प्रेरणा नहीं देता । ”

“ एक तरफ तू कह रही वह उच्चतम बिंदु है और दूसरी तरफ कह रही वह कोई प्रेरणा नहीं देता । तू अपने आप में ही अस्पष्ट है । ”

“जल कुंड पर चार मृत शरीर थे और एक मौन थी पर अंदर से वह सबसे अधिक विचलित थी । दो व्यक्ति संवाद कर रहे थे और दरौपदी खोयी थी यक्ष के प्रश्नों के लालित्य और युधिष्ठिर के उत्तरों के पांडित्य में । जब युधिष्ठिर ने नकुल का जीवन माँगा होगा तब वह अवश्य चीख पड़ी होगी कि अब मेरे आत्मसम्मान का क्या होगा , मेरे केश कैसे बँधेंगे , दुस्सासन का रक्त कौन लाकर देगा । युधिष्ठिर को समाज के उत्थान और पत्नी के सम्मान की चिंता नहीं थी , वह मात्र सत्यवरत बनने के प्रयास में पूरी उम्र लगा रहा । उसकी सत्यता के नाम पर उसके अहंकार की ही पूजा हुई है । किसको मूर्ख बना रहा था वह ? अश्वत्थामा मारा गया किंतु हाथी इसमें किंतु हाथी को थोड़ा धीरे बोल देने से वह झूठ सच हो गया । वह किसी और के निगाह में गिरा होगा या नहीं पर वह अपने निगाह में अवश्य गिरा होगा । ”

“ आपकी व्याख्या के अनुसार तो सारे त्याग में अहंकार है । ”

“ अगर त्याग को तेरी तरह हर बात में रेखांकित किया जाये और वह त्याग समाज कल्याण के बजाय व्यक्तिगत दर्प का विषय बन जाये तब उस त्याग से बेहतर है व्यक्ति भोग करे कम से कम त्याग के अहंकार में स्वयम् का नाश तो नहीं करेगा । ”

“ आपके अनुसार तो हर त्याग में अहंकार होता है ? ”

“ नहीं । “

“ कोई उदाहरण “

“ भरत का त्याग । भरत – वशिष्ठ का संवाद पढ़ो । ”

“ क्या था संवाद ? ”

“ वशिष्ठ ने भरत से कहा यदि भरत सर्वदा के लिये सिंहासन स्वीकार नहीं करना चाहते तो राज्य को राम को वन से वापस आने के बाद सौंप दे ।

सुनहू भरत भावी प्रबल बिलखी कहेउ मुनिनाथ
हानि लाभ जीवन मरनु जस अपजसु विधि हाथ

सौंपेहु राम राज के आएँ
सेवा करेहु सनेह सुहाएँ

भरत का भाषण पढ़ो , वह अद्वितीय है । त्याग का कोई दर्प नहीं है , बुद्धि का विलास नहीं है , प्रेम से ओत -प्रोत है । कई बार धर्म की व्याख्या में अतिरेकता होती है । पर भरत के धर्म की व्याख्या में न तो न तो विद्वता का प्रदर्शन है और न ही त्याग का अहंकार । इसीलिये रघुनाथ भरत की सेना को देखकर लक्ष्मण के उपजे करोध पर कहते हैं ..

दुःख भी है पीड़ा भी है
मस्तक में जलती ज्वाला है
धर्म धुरी चलता है जिससे
उस पर अविश्वास आज हो आया है ।

भरत – वशिष्ठ के संवाद में भरत का खंडन नहीं आत्म निवेदन है और उस आत्म निवेदन में असीम नम्रता है पर अपने मत प्रति वज्र ऐसी कठोरता है । कहीं से भी सिद्धान्तों से विचलन का रंच मात्र स्थान नहीं दिखता ।

भरत कमल कर जबकि धीर धुरंधर धीर धरि
वचन अमिअ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि । “

“धर्म क्या है ? “

“ धर्म एक संतुलन है , हृदय और मस्तिष्क का । केवल हृदय की प्रेरणा से किया कार्य व्यक्ति को उच्छृंखल बनाता है और केवल मस्तिष्क से संचालित

व्यक्ति जड़ यन्त्र की भाँति शुष्क हो जाता है । धर्म पालन विवेक और संतुलन की माँग करता है । यह बताओ दशरथ कौन से धर्म का पालन कर रहे थे ? जो धर्म उनकी मृत्यु का कारक बना , जिस धर्म ने राज्य को अनाथ कर दिया , पत्नियों को विधवा कर दिया , भरत को चौदह वर्ष का कष्ट दिया , राम- जानकी को वन जाना पड़ा , यह कौन सा धर्म है जिसमें समाज का हित हो रहा ? धर्म में सत्य का महत्व सबसे अधिक है । बताओ कौन सा सत्य है इस धर्म में

धर्म न दूसर सत्य समाना

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना

नहि असत्य सम पातक पुंजा

गिरि सम होहि कि कोटिक गुंजा ।

तू जितने उदाहरण दे रहा था सबमें प्रशंसा पाने की इच्छा बलवती थी । प्रशंसा प्राप्त करने की बलवती इच्छा अहंकार के मूल में है । आज्ञा गुरुणाम अविचारणीया का तात्पर्य है अहंकार की टकराहट को रोकना । गुरु का आदेश स्वार्थ को त्याग कर और कष्ट सहकर भी उठाना चाहिये । गुरु का आदेश मानने वाला व्यक्ति बहुधा अहंकार मुक्त होता है । मैं तुझे राम - भरत की कथा में नहीं ले जाती हूँ । वह संवाद इतिहास का एक ऐसा संवाद हैं जहाँ पर संघर्ष त्याग के लिये हो रहा और किसी के भी पास न तो त्याग का दर्प है , न अहंकार है और न ही अपने मतों के प्रति अविवेकी आगरह है । राम स्पष्ट रूप से कह देते हैं , भरत तुम आदेश करो मुझे करना क्या है । तुम्हारे ऐसे धर्म धुरी रक्षक का आदेश सुनना ही आह्लाद की ओर ले जाएगा और तुम्हारे आदेश के पालन करने में व्यक्ति का जीवन ही सफल हो जाएगा , पर मेरे नायक तुम एक बात का ध्यान रखना तुम स्वयम् भी वही करो और मुझसे भी वही कराओ जिससे हमारे सत्यप्रिय पिता की कीर्ति को कोई आँच न आए । इतनी नम्रता शास्त्ररार्थ में , मत के टकराहट में , इतना सम्मान उस पिता के लिये जिसने वन गमन का आदेश दिया हो , इतना मान अपने छोटे भाई के विवेक पर कहीं और दिखता है ? तू देख स्वयम् के भीतर तूने शास्त्ररार्थ का आरंभ ही एक अहंकार से किया था । तू पुराणो - शास्त्रों का ज्ञाता होने का दावा करता है और इस जगत् नायक के संवाद को ही समझ नहीं सका । “

यह कहते हुये माँ को चेहरे पर लालिमा आ चुकी थी । उसके चेहरे पर शंकर के तिरशूल ऐसा तेज प्रायः रहता ही था पर जब वह राम कथा का ज़िकर करती थी तब अक्सर मुझे लगता था जैसे एक आभामंडल उसके चारों ओर विराजमान हो चुका है , वैसा ही आज भी लग रहा था । श्वेत वेश धारियों का पूरा समूह उठा उन्होंने

माँ को प्रणाम किया और कहा , “ आपने आज जो शिक्षा दी वह आज तक किसी ने न दी । अहंकार विहीनता जीवन है , हमें आदेश दें । ”

“ तुम समाज के लिये कार्य करो । समाज के बाहर कंदराओं और पर्वतों के जीवन से समाज में परिवर्तन नहीं होगा । समाज सापेक्ष बनो । उचित समय पर यह बालक भी जाएगा , पहले इसे समाज को समझने दो । मैंने इसको जना तो अपने लिये था पर इसकी परवरिश मैंने समाज के लिये की है । यह बालक भी बहुत अहंकारी है , यह अभी तुम्हारे बस का नहीं है । इसको अभी तराश का आवश्यकता है । ”

सुबह के चार बज गये । मेरी आँख खुल गयी । मैं खिड़की से अपलक पहाड़ियों की ओर देख रहा था । मुझे लग रहा था जैसे माँ की आँखें उसी पहाड़ी पर बन रही हैं । सुह की लालिमा का प्रवेश हो रहा था । मुझे दूर से मैडम सौमित्र कृष्णा सुबह के अपने बॉक और अपने प्रशिक्षुओं की निगरानी दोनों काम ..एक पंथ दो काज करती दूर से दिखीं ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 388

मैं तैयार होकर नीचे नित्य-प्रति के प्रातः काल के व्यायाम क्रिया के लिये उतरा । मैडम सौमित्र कृष्णा अपने दरेनी - अधिकारियों का एक सिंहावलोकन करते हुये आगे बढ़ रही थीं । मेरी और मैडम की निगाह मिली , अभिवादन हुआ और मैडम ने बग़ैर शब्दों का प्रयोग किये मुस्कुराहट से अभिवादन से प्रत्युत्तर दिया । मैं आगे बढ़कर पीटी की प्रक्रिया में शामिल ही हुआ था कि शिव बाबू सक्सेना की आवाज़ आयी , “ बड़बाद हो गये , तबाह हो गये ? ”

मैंने पूछा , “ क्या हुआ सर ? ”

“ ई मार्निंग एक्सरसाइंज़ जानै ले लेगी । पता नहीं अंगरेजों को कौन सा शौक चर्चया था कि यह नाटक डाल दिये दरेनिंग में । इतना कष्ट दरेनिंग में देने की क्या ज़रूरत थी ? ”

“ सर हो जायेगा , इतना भी मुश्किल नहीं है । ”

“ मैं भी कल मेडिकल जुगाड़ुँगा । ”

“ यह क्या होता है ? ”

“ जो फ़राँड़ लोग कर रहे वही । ”

“ क्या कर रहे ? ”

“ यह प्रकाट्य सिंह और राजीव सिंह को देखो , दोनों शाम को टेनिस खेलते हैं पर सुबह का ड्रामा है । ”

“ क्या ड्रामा है ?”

“ मेडिकल बनवा लिये हैं और सुबह की पीटी में आते ही नहीं हैं । ”

“ राजीव सिंह कह रहे कि कोई बीमारी है पुरानी जो सुबह ही परेशान करती है । ”

अर्जुन दोषी – “ कोई बीमारी – बीमारी नहीं है । यह सब पीटी से बचने का नाटक है । तुम सीधे हो समझते नहीं हो । ”

अशोक – “ अब अनुराग सर ही सीधे हो गये तब तो सीधेपन की नयी परिभाषा बनानी होगी । सुदर्शन चक्र शांत है बस यही समझो । ”

अर्जुन दोषी – “ इनके पास सुदर्शन चक्र है ?”

अशोक – “ मैडम यह दिव्यास्त्र युक्त हैं । ”

अर्जुन दोषी – “ वही पुराना वाला दिव्यास्त्र जो हमने महाभारत सीरियल में देखा था । ”

अशोक – “ मैडम महादेव की तरह कीरीत वेशधारी हैं यह , मायावी है । ”

अर्जुन दोषी – “ कीरीत क्या होता है ?”

अशोक – “ शिकारी । ”

अर्जुन दोषी – “ तो क्या यह शिकारी हैं ?”

अशोक – “ सतसैया के दोहरे जो नाविक के तीर देखन में छोटन लगे घाव करें गंभीर । ”

अर्जुन दोषी – “ यह नाविक हैं ? यह नाव चलाते थे ?”

अशोक – “ मैडम , यह डॉलडा से यमुना पार करते थे । मैडम , जैसे कृष्ण भगवान को देखकर उफन रही यमुना शांत हो गयी थी वैसे ही सरस्वती घाट पर सर के डॉलडा के डिब्बे को देखकर यमुना का अतल तल डर जाता था । ”

अर्जुन दोषी – “ क्या यह यमुना में डॉलडा का धी डालते थे ?”

अनामिका – “ अर्जुन , कहाँ सुबह – सुबह समय ख़राब कर रही किसके मुँह लग रही हो । ”

अशोक – “ इस धरती की महान ज्ञानी गार्गी – अपाला – विश्वभर्ता को एक साथ सिल में पीस कर एक व्यक्तित्व निर्मित अनामिका महाज्ञानी के मुँह लगो । चलो यह ज्ञान देंगी अब । ”

अनामिका – “ कोई काम तो है नहीं तुम्हारे पास बस सुबह हुआ चालू । हर किसी का मज़ाक बनाना । ”

अशोक – “ मैडम , आप अपना काम करो , सुबह – सुबह मूँड न ऑफ करे । ”

अर्जुन दोषी – “ यह डॉलडा का डिब्बा यमुना में क्यों ले जाते थे ? ”

अशोक – “ बताओ अपाला की माँ । ”

अनामिका – “ माँ किसको कहा ? ”

अर्जुन दोषी – “ यह बताओ डालडा का .. ”

अशोक – “ उससे तैराकी सीखते हैं । ”

अर्जुन दोषी – “ कैसे ? ”

अशोक – “ एक ताँत की पाँच फ्रीट की रस्सी लो , उसको दो डॉलडा के डिब्बे में बाँधों और झगड़ाझम पानी में कूद जाओ तैरने लगोगे । ”

अर्जुन दोषी – “ पर यहाँ तो कोच कुछ अलग तरीके से सिखाता है । ”

अशोक – “ उसको क्या पता इलाहाबाद के बारे में । वहाँ तो पानी को अँजुरी में उठाकर ऊपर उछाल देते हैं और आसमान में सुराख़ हो जाता है । ”

अर्जुन – “ वह पानी आसमान की तरफ़ कैसे जाता है , क्या गुरुत्वाकर्षण उसको धीमे नहीं करता ? ”

अशोक – “ मैडम वह मन्त्रों से अभिमंत्रित होता है । ”

अर्जुन दोषी – “ कौन सा मन्त्र होता है ? ”

अशोक – “ मैडम आप तो माठा कर दीं । ”

अर्जुन दोषी ने पीटी के लिये एक हाथ की सहायता से दूसरा हाथ ऊपर उठाकर कुछ घुमाया कि टरेनर ने कहा , “ मैडम दोनों हाथ उठाओ एक साथ । एक हाथ के सहारे दूसरा हाथ मत उठाओ । ”

अशोक – “ इनके एक हाथ में बचपन में लकवा मार दिया था इसलिये दूसरे हाथ से यह पहला हाथ उठाती हैं । ”

अर्जुन दोषी – “ यह लकवा क्या होता है ? ”

इतने में कोच आ गया और अशोक से बोला तुम कुछ नहीं कर रहे बस बात बना रहे ।

अशोक – “ सर कुछ तो कर रहे । मुँह की एक्सरसाइज़ बहुत आवश्यक होती है । ”

अनामिका – “ इनका पेट देखो टी – शर्ट फाड़कर सुरसा की तरह बाहर निकल रहा । बस मुँह की ही एक्सरसाइज़ कर रहे बचपन से । इनको सुबह – सुबह दौड़ाओ । ”

अशोक – “ आप अपना देखो मेरे चक्कर में न पड़ें । ”

पीटी के बाद चाय के लिये हम लोग मेस के पास होते हुये जाने लगे । अर्झ ने फिर पूछा

“ यह लकवा क्या होता है ? ”

“ यह डॉलडा के डिब्बे से कैसे तैरते हैं ? ”

“ अनुराग अपना सुदर्शन चक्र कहाँ रखते हैं ? ”

अशोक ने कहा , “ आप चाय भी नहीं पीने दोगे । ”

अशोक जा रहा था , अर्झ ने पीछे से आवाज़ दी .. “ यह को बताते जाओ यह इलाहाबाद वाले इतनी लंबी – लंबी क्यों छोड़ते हैं । ”

फिर कहा , “ अनुराग का सुदर्शन चक्र ज़रा हमको भी दिखाओ । ”

मैंने कहा – “ आज सेर को सवा सेर मिल गया । ”

अर्झ दोषी हँसने लगी और बोली पूरा दिन चरस बोता रहता है । ”

मैं – “ चरस की खेती कहाँ होती है ? ”

अर्झ – “ मेरा ही हथियार मुझ पर .. ”

दिन में क्लॉस के बीच मैसेज आया कि मैडम सौमित्र कृष्णा ने मुझे याद किया है । मैं मैडम के कमरे में पहुँचा । मैडम कुछ लिख रही थीं । मैडम ने सिर ऊपर उठाये बगैर कहा , “ अनुराग बैठ जाओ । । ”

थोड़ी देर बाद मैडम ने कहा . “ यह चुनाव क्यों हो रहा ? ”

“ कौन सा चुनाव ? ”

मैडम ने मेरी ओर देखा .. कुछ देर शांत रहीं और कहा , “ मेस कमेटी का । ”

“ लोग कुछ करना । चाह रहे । ”

“ क्यों कराना चाह रहे ? ”

शायद कुछ करने के लिये अवसर की तलाश में हैं । ”

“ क्या बगैर मेस कमेटी में गये वह अवसर प्राप्त नहीं होगा ? ”

मैं चुप रहा ।

“ अनुराग , मैं अपने एक – एक टरेनी के बारे में जानती हूँ । मेरा काम ही है आपको जानना और आप में सुधार प्रक्रिया करना ताकि देश को बेहतर लोग मिल सकें और राष्ट्र – निर्माण में सहायता हो सके । अगर एक शिक्षक – एक टरेनर अपने काम में असफल हो गया तब राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता । राष्ट्र की सुरक्षा सीमाओं पर होती है पर राष्ट्र का निर्माण विद्यालय – कॉलेज – विश्वविद्यालयों-एकेडमी में होता है । मेरे कंधों पर महती दायित्व है कि मैं उस कार्य को अंजाम दे सकूँ जिस कार्य को लिये मुझे यहाँ नियुक्त किया गया है । एक टरेनर को लोकप्रिय होने के मोह से बचना चाहिये । मुझे आपसे वह सब करवाना है जो आप करना नहीं चाहते पर वह देश के लिये आवश्यक है । मुझे अलोकप्रियता स्वीकार्य है पर कर्तव्य पथ से विचलन नहीं । मेरा अपना ज़मीर मुझे आदेश देता है और मेरी यह चाहत है कि मेरे टरेनी भी ज़मीर की आवाज़ को सुनकर कार्य कर सकें । यह चुनाव क्यों हो रहा ? ”

“ मैडम , मेरी राजनीति में कोई रुचि नहीं । ”

“ अनुराग तुमने झूठ बोलने की टरेनिंग कहाँ से ली है । मैंने अभी ही कहा कि मैं अपने टरेनी के बारे में काफ़ी कुछ जानती हूँ और तुम्हारा यह साहस कि तुम मेरे इस कथन के बाद भी झूठ बोल गये । ”

“ मैडम मैंने क्या झूठ बोला “

“ इलाहबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ का अध्यक्ष । वह भी कोई ऐसा – वैसा अध्यक्ष नहीं बल्कि वह जिसने स्थापित छात्र – राजनीति की चूलें हिला दी वह कह रहा मुझे राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं । अनुराग तुमको क्या लगता है, तुम्हारे अलावा सब बेवकूफ हैं । ”

मैं चुप हो गया ।

“ अनुराग मैं यह जानना चाहती हूँ, यह चुनाव क्यों हो रहा ? ”

“ मैडम यह सवाल मुझसे ही क्यों किया जा रहा ? ”

“ मुझे हर बात तुमको बतानी पड़ेगी कि मैं किससे क्या सवाल करूँ ? मेरा अपना विवेक क्या किसी दूसरे के निर्देश पर कार्य करेगा ? ”

“ यह नहीं कहा मैंने । ”

“ आप जवाब दें । ”

“ मैडम अगर मेरी राजनीति में रुचि होती तब मैं लड़ता । मैं तो चुनाव लड़ नहीं रहा । जो लोग लड़ रहे वह यह बता सकते हैं । ”

“ कौन – कौन लड़ रहा ? ”

“ मैडम कई लोग कई हैं जो लड़ना चाहते रहे । ”

“ कौन – कौन है ? ”

“ बाजवा , प्रकाट्य , सतीश , स्मृति शुक्ला , नकुल ज्ञानदेव , चमन , राम रतन सिंह .. ”

“ आप क्या चाह रहे ? ”

“ मैडम मुझसे क्या मतलब ? मैं चाहता तो मैं भी लड़ता । इलाहाबाद के इतने लोग हैं । वह सब मेरे छात्र रहे हैं । वह मेरे इशारे पर कुछ भी ... , ”

“ अनुराग , अभी तुमने सच बात कही । यह जो ताकत है वह तुम्हारे अहंकार का कारण है और चुनाव करा रही । ”

“ पर मैडम मैं तो चुनाव लड़ नहीं रहा । ”

“ तुम चाणक्य बनना चाह रहे हो । तुम्हारा सारा प्रयास इसी दिशा में है । एक बात बताऊँ अनुराग ? ”

“ जी मैडम । ”

“ तुम इतिहास को अपनी जीवनी बनाना चाहते हो । जो भी इस कार्य में लग जाता है वह अहंकारी हो जाता है । तुम इस अहंकार से बचो । एक सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन जियो , वक्त आयेगा और तुमको अवसर मिलेगा पर तुम सभी कुछ एक साथ और तीव्र गति से करना चाहते हो । किस बात की जल्दी है ? धैर्य रखो , सब समय के साथ आयेगा । महानायकत्व की आकांक्षा ऐसी न हो जाये कि जीवन कृतिरमता की ओर बढ़ जाये । जीवन का सुख सहजता में है न कि कृतिरमता में । ”

मैं मैडम के हितोपदेश में खोया था कि मैडम ने कुछ देर की शांति के बाद पुनः कहा ..

“तुम इस चुनाव को रोको । ”

“ मैडम मुझसे कैसे रुकेगा ? ”

“ अनुराग , यह बताओ एक समझौता करके सर्वसम्मति से चुनाव क्यों नहीं हो सकता ? ”

“ सर्वसम्मति एक लोकतन्त्र विरोधी अवधारणा है , इसमें अधिनायकवादी प्रवृत्ति है । सर्वसम्मति का आग्रही बहुधा अपनी विचारधारा का आरोपण करना चाहता है ”

“ सर्वसम्मति सामंजस्य है , इसमें त्याग है , इसमें व्यक्ति का सम्मान है , उसका भी जिससे आपका मतभेद है । ”

“ सर्वसम्मति बहुमत का अल्पमत पर शासन है । यह अल्पमत को समर्पण के लिये विवश करता है मात्र कुछ आश्वासन देकर या छोटी -मोटी रियासतें- सहूलियतें देकर । ”

“ इसमें अल्पमत का सम्मान है अगर बहुमत अल्पमत के मनोभावों एवं व्यवस्था की आवश्यकताओं को समझे । ”

“भावनाओं को दबाने से विद्रोह जन्म लेता है । अभिव्यक्ति मन को संतोष देती है और हृदय के गुबार को एक आउटलेट देती है । ”

“ लोकतन्त्र के नाम पर समाज के एक वर्ग के अहंकार की पूजा हुई है और तुम उस वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहे हो । आप भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 पुनः पढ़ें और अपने आप को संतुष्ट करें कि किन परिस्थितियों में संघ बनाने की स्वतन्त्रता है और अभिव्यक्ति की क्या सीमायें हैं । मेस कमेटी का कार्य क्या है यह जानो । जो तर्क तुम दे रहे हो वह मेस कमेटी के लिये कहाँ तक संगत हैं यह सोचना और फैसला करना । मेरा काम था आपको वस्तुस्थिति से अवगत कराना , फैसला आप करना । मुझे कोई आपत्ति नहीं चुनाव से । चुनाव न होता तब बेहतर होता पर अगर तुम सब चुनाव चाहते हो तो कोई बात नहीं , पर एक गरिमामय माहौल में कार्य करना । एकेडमी की एक साख है उसका ध्यान रखना ।

मैं लौटा .. अशोक ने पूछा , “क्या हुआ सर ?”

“चुनाव की तैयारी करो ।”

“कौन लड़ेगा ?”

“ कौन लड़ेगा , यह महत्वपूर्ण नहीं । किसको हम लड़ायेंगे यह महत्वपूर्ण है । ”

“ बहुत सही सर । माहौल नीरस हो रहा था । अब मज़ा आयेगा यहाँ । ”

“ सर , बाजवा लड़ने को बेताब हैं । ”

“वह क्यों लड़ना चाह रहे ?”

“ सर , उनको बकेती का शौक है । मेस कमेटी में यह अवसर मिलेगा , उनका भौकाल बनेगा । झूठ बोलकर कब तक भौकाल बनेगा । यह चुनाव उनके पक्ष में माहौल बनायेगा । प्रतिभाशाली तो वह हैं ही । ”

“ नकूल ? ”

“ वह तो नेतृत्व के चक्कर में रहते ही हैं । ”

“ क्यों? ”

“ सेंट स्टीफेन्स में दाल गली नहीं । ”

“ क्यों नहीं गली ? ”

“ वहाँ अंगरेजी वालों का बोलबाला था यह देशी मार्का आदमी थे । ”

“ प्रकाट्य .. “

“ सर .. वह तो विधाता की बनायी एक नायाब कृति हैं । उनको तो खबरों में रहने का शौक है । कुछ नहीं होगा तब अपने हाथ की नस ही काट लेंगे खबरों में बने रहने के लिये । ”

“ स्मृति शुक्ला कौन हैं ? ”

“ यह सर बहुत महीन पराणी हैं । महत्वाकांक्षी है , यह भी प्रशस्ति गाथाओं की नायिका बनना चाह रही हैं । ”

अनामिका – “ सर , आप लड़ेंगे ? ”

अशोक – “ रहोगी बेस्हूरै तुम । अब सर चुनाव लड़ायेंगे कि लड़ेंगे ? सर को इतिहास लिखना नहीं लिखवाना है । सर इमला देंगे । ”

अरु दोषी सुन रही थी और बोली , “ यह इमला क्या होता है ? ”

अशोक – “ मैडम डिक्टेशन । ”

“ मतलब अनुराग डिक्टेशन देंगे और लोग लिखेंगे । मुझे भी लिखना है । यह बहुत अच्छा खेल होता है । हम तीन बहनें बचपन में बहुत खेलते थे । पर अंगरेजी में खेलना । अनुराग की हिंदी बहुत कठिन हैं । ”

अशोक – “ मैडम आज सुबह से आप माठा करने के मूड में हो । ”

“ माठा कहाँ मिलेगा । ”

अनामिका - “ इसका सही इलाज यही है । ”

अशोक – “ सर , इलाहाबाद विश्वविद्यालय का चुनाव कौन लड़ेगा , कुछ खबर है ? ”

“ जाना पड़ेगा इलाहाबाद । ”

“ सर , मैडम से आप इतनी देर बात किये आप उसी में छुट्टी माँग लेते , हम भी जुगाड़ बनाते हैं । चलते हैं इलाहाबाद , वहाँ की हवा देख कर आते हैं । ”

“ कुछ झूठ बोलना होगा मैडम से । पर वह पकड़ लेती हैं । ”

“ सर आपको भी पकड़ लेती हैं ? ”

मैं चुप था ।

“ सर अगर आपको पकड़ लिया तब तो बहुतै महान हैं । आप तो फ्रांडो के प्रांड हो । ”

मैंने उसको धूरा ..

“ मतलब यह सर की आप बहुत ज़हीन हो । ”

अब मैं इलाहाबाद जाने की जुगाड़ में लग गया ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 389

मैं इलाहाबाद जाना चाहता था , पर जाऊँ कैसे ? छुट्टी मिलना आसान न था । कुछ बहाना बनाना चाहिये यह सोचा । यह सोचकर मैं मैडम के पास गया ।

मैडम सौमित्र कृष्णा- “ अनुराग कैसे आना हुआ ? ”

“ मैडम घर जाना चाहता हूँ । ”

“ क्यों ? ”

मैंने सोचा कोई झूठ बोल दूँ , कोई बहाना गढ़ दूँ , कुछ माँ की बीमारी का बहाना बना दूँ । पर जैसे ही मैं बहाना गढ़ रहा था मेरी निगाह मैडम की निगाह से टकरायी और मुझे उनकी आँखों में देखकर लगा कि वह मुझ पर विश्वास करती हैं , अपने दरेनी अधिकारयों के साथ उनका लगाव है , सबको सहेजकर रखती हैं । यह उचित न होगा । मेरे ज़मीर ने अंदर से मुझसे ही कहा , “ जो तू करने की सोच रहा वह बिल्कुल उचित नहीं । तू सच बोल और सत्य के साथ रह । ”

“ क्या हुआ अनुराग , कहाँ खो गये सब ठीक तो है न ? ”

मैं एकाएक अपने विचार प्रवाह से जगा और कहा ,

“ मैडम सब ठीक है , कोई परेशानी नहीं है बस घर जाने का मन कर रहा है । ”

“ अनुराग , एक पॉलिसी है छुट्टी की । वह आप देख लो , मैंने बहुत ही पारदर्शी नीति बनायी है । आप अभी चले जाओगे तब कभी अन्य समय में शायद आप न जा पाओ । आप निर्णय कर लो जैसा कहोगे तुम वैसा कर दूँगी । ”

” ठीक है मैडम । ”

यह कहकर मैं पलट तक चलने लगा मैडम ने आवाज़ दी और कहा , ” अनुराग तुम कोई बहाना बना सकते थे पर तुमने कोई बहाना न बनाकर सच कहा , यह मुझे अति प्रसन्न कर गया कि मेरे अधिकारी सच के साथ रहना सीख रहे हैं । “

“ मैडम , मैं बहाना बनाना चाह रहा था पर जैसे ही आपकी निगाह से मेरी निगाह मिली मेरे पास सच के अलावा और कुछ कहने का साहस ही नहीं था । ”

“ अनुराग यह साहस की कमी व्यक्तित्व का धनात्मक पक्ष है । कई बार जो लोगों को कमी लगती है वह देश – काल – परिस्थिति के अनुसार बेहतर होता है । साहस की कमी मात्र अगर कहा जाए तब शायद यह ऋणात्मकता की बात को संदर्भित करे पर अगर इसको पूरी बात के साथ जोड़कर देखा जाए तब यह एक सार्थकता को व्याख्यायित करता है । ”

मैं मैडम से वार्ता कर के वापस आ गया । मैंने सायंकाल प्रतीक्षा से अपनी और मैडम की पूरी बात साझा की । प्रतीक्षा धीरे – धीरे मेरे जीवन के भीतर प्रवेश कर रही थी । वह मुझसे मेरी सारी बातें पूछती थी और अपनी बातें बताती थी । वह मेरे निर्णय को प्रभावित करने का भी प्रयास करती थी पर वह जानती थी यह सनकी सोल्जर है । एक सीमा से अधिक इसको नियन्त्रित करना आसान नहीं है । उसका मेरे चुनाव में भाग लेने से भी ऐतराज था । वह कह रही थी यह फ़ालतू काम के चक्कर में क्यों पड़े हो । पर मुझे खुराफ़ात में मज़ा आता था । जब तक तकरार न हो मज़ा कहाँ है जीवन में ।

मैं प्रतीक्षा के साथ टहल रहा था तो सामने से अशोक आ गया । प्रतीक्षा अशोक को थोड़ा कम पसंद करती थी उसका कारण यह था उसको लगता था अशोक मुझको बरगलाता है और अशोक सबके बारे में अफ़वाह फैलाता है । बरगलाने की बात तो शायद उतनी सही न हो पर अफ़वाह सम्राट तो वह था ही । वह प्रतीक्षा के सामने तो कुछ न बोला पर रात में रात मेरे कमरे में आया । उसने कमरे में आते ही कहा

“ सर चुनावों का क्या किया जाए । कुछ लोग कह रहे हैं एक सर्व सम्मति का व्यक्तित्व ले आ जाए और इस चुनाव की प्रक्रिया को समाप्त कर दिया जाए । ”

“ अशोक , यह सर्वसम्मति एक लोकतन्त्र विरोधी अवधारणा है । जो लोग सर्वसम्मति की बात कर रहे वह सब स्वार्थ युक्त लोग हैं । वह सर्वसम्मति के नाम पर स्वयम् अपने को या अपने लोगों को पदासीन करना चाहते हैं । चुनाव होना ही चाहिए । किसी भी हालत में चुनाव कराओ । ”

“पर सर चुनाव से क्या फ़ायदा होगा ?”

“ अंग्रेजों का बनाया सिस्टम है । इसमें लोकतंत्र का कोई स्थान नहीं है । ऐसी कार्यवाहियों से लोकतन्त्र की दरेनिंग होती है और लोकतंत्र उत्साहित एवम् मज़बूत होता । इनको क्या पता लोकतंत्र के बारे में, यह सब इंजीनियरिंग – मेडिकल कॉलेज से आये छात्र- छात्राएँ हैं । इनको दरेनिंग हमारे ऐसे अवारा ही दे सकते हैं । यह सब किताब पढ़कर आये हैं और हम जीवन । इनको जीवन समझाना होगा ।

“ सर , किसको लड़ाएँ ?”

“ किसी को भी । व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं है , मुद्दा महत्वपूर्ण है । तुम में से कोई न लड़े । ”

“ सर , अगर हार गया हमारा उम्मीदवार तब ?”

“ अपना उम्मीदवार लड़ाओ और उसको हारने दो , अगर हारता है । लोकतन्त्र हार- जीत से नहीं संघर्ष से मज़बूत होता है । मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय का चुनाव हारकर भी जीतता क्योंकि मैंने एक मुद्दा खड़ा किया था । ”

“ पर सर यहाँ क्या मुद्दा है ?”

“ जो संस्था लोकतन्त्र के प्रति आग्रही न हो उसको लोकतन्त्र से परिचित कराना भी एक मुद्दा है । ”

“ सर , यह तो विचित्र सी बात आप कह रहे, कुछ समझ न आ रही । ”

“ जो बात सीधी लोगों के समझ आ जाए अगर वही बात मैं कहूँ तब क्या रह गया ख़ास मेरी रणनीति में । ”

“ मतलब , हम चुनाव लड़ायें और चुनाव प्रचार न करें । प्रचार करो , पर अपना उम्मीदवार जीते या हारे इससे निरपेक्ष रहो । ”

“ सर , बाजवा को लड़ाएँ ?”

“ नहीं । ”

“ क्यों सर , वह तो आपके नज़दीक होने का दावा करते हैं । ”

“ दावा करना और नज़दीक होने में फ़र्क होता है । वह दावा करते हैं पर उनके दावे से हमारी सोच निर्धारित नहीं होती । ”

“ सर , उनको क्यों नहीं लड़ाना चाहते ?”

“ वह या तो निर्विरोध जीतें नहीं तो किसी भी चुनाव में वह हार जायेंगे । उनके बस का कोई चुनाव नहीं है । ”

“ क्यों सर ?”

“ उनका अहंकार । ”

“ आप कह ही रहे हो आपका उम्मीदवार हारे या जीते कोई फ़र्क नहाँ पड़ता । बाजवा हारे या जीते उनको ही लड़ाते हैं । वह खुँटा तोड़े पड़े हैं चुनाव लड़ने के लिये । ”

“ वह चुनाव हार जायेंगे यह चुनाव लड़ने के पहले ही । ऐसा आदमी मैदान में उतारो जो चुनाव में संघर्ष कर सके । ”

“ सर , आप चुनाव क्यों जीतने के इच्छुक नहीं हैं ? ”

“ चुनाव होना अनिवार्य है हारना या जीतना नहीं । मैं जीतने का इच्छुक हूँ पर जीतने से अधिक चुनाव हो इसका इच्छुक हूँ । यह चुनाव लड़े कोई पर जीत अनुराग शर्मा की ही होगी । ”

“ सर , यह बात खुल गई तब ? ”

“ यह किसी को पता ही नहीं चलेगा । यह सब पढ़ने वाले लोग हैं इनको हमारी तरह खुराफ़ात नहीं आता । यह चुनाव क्षेत्रवाद पर होगा । सारे बिहार के लोग एक तरफ़ होंगे । यू पी का किसी को मत लड़ाओ । ”

“ सर बिहार का ही लड़ा देते हैं हम भी । ”

किसको लड़ाओगे ? ”

“ परकाटय सिंह । ”

“ वह थाली के बैगन से भी गये गुजरे हैं । आज कुछ कहेंगे कल कुछ । वह किसी भी समय बैठ सकते हैं या दूसरे दल से मिल जायेंगे । हम उम्मीदवार विहीन हो जाएंगे । वह वाँक ओवर दे देंगे हैं । ”

“ तब किसको लड़ाएँ सर ? ”

“ कोई हरियाणा का है ? ”

“ है । ”

“ उसको लड़ाओ । ”

“ क्यों सर ? ”

“ हरियाणा का आदमी जहाँ खड़ा हो जाएगा वहाँ से हटेगा नहीं । ”

“ दूसरा कौन ? ”

“ कोई सज्जन छवि का लाओ । उड़ीसा के लोग सज्जन होते हैं उनको लड़ाओ । कोई प्रचार – वचार के चक्कर में मत पड़ो । बस चुनाव का

माहौल बनाओ । किसी से वोट मत माँगो । धरुवीकरण अपने आप होगा । बिहार के लोग एक होंगे और चुनाव का परिणाम निश्चित है । “

“ सर , लोग क्या सोचेंगे अगर पता चलेगा कि हमने प्रचार नहीं किया ?”

“ किसी को कभी पता नहीं चलेगा । हमारी छवि इस एकेडमी के दुच्चे चुनाव से नहीं बनने वाली । यह हमारी छवि हमारे काम से बनेगी । हम भविष्य हैं समाज का और यह सब समाज के मात्र एक अधिकारी हैं । हमें करान्ति करनी है और इनको नौकरी । यह सब लोग अपने जीवन में लिप्त हो जायेंगे और हम करम करेंगे । हमारा करम हमें छवि देगा यह चुनाव सब भूल जायेंगे । ”

“ सर , सारंगी और चौधरी को लड़ाते हैं । वैसे सर लड़ाना क्या है वह खुद ही लड़ रहे बस हमको लुहाना है । ”

“ ठीक है । ”

मैं चल पड़ा इलाहाबाद की ओर । मैं बगैर किसी सूचना के घर पहुँचा था ।

। माँ से सीधा सामना हुआ जैसे ही मैंने घर में प्रवेश किया । मुझे देखते ही भावुक हो गई । उसके मुँह से एक ही आवाज़ निकली “ मुन्ना ” । उसने घर में हंगामा कर दिया जब कि छोटी बहन के अलावा कोई और घर में था नहीं । पिताजी ऑफिस गये थे । छोटा भाई आवारा गर्दी करने गया था । वह रोने लगी .. “ मुन्ना तोहरे जाई के बाद कुल घर सूनि होई गवा । ई घर जैसे काटै के दौड़त बा । सबेरे – सबेरे कई बार हम तोहरे कमरा चाई लै के पहुँच जाति रहे । पर उहाँ तअ पूर सुनसान रहत रहा । जौन कमरा में ज़िंदगी रहत रही मुन्ना ऊ कमरा दारागंज के शमशान घाट से बदतर होई गवा । चुन्नू कहेस हम ऊ कमरा लेब । हम कहा ऊ कमरा लेई बरे बड़ा माद्दा चाही । मुन्ना के तपस्या-पीठ बा ऊ । उहाँ रहै बरे लक्ष्मण के उपासना केहे पड़े । मुन्ना तू हमरे तकदीर में रहअ । तोहरे कारण ई पूर हमार ख़ानदान – समाज तरि गवा । सारा दिन लड़िका लोगन के मेला लागत हअ ई मकान देखै बरे । सब लड़िका लोग बाहिर से मकान निहारि के चला जात हअ । सबके चाहत बा मुन्ना बनै के पर मुन्ना बनब आसान नाहीं बा । मुन्ना विधाता बार – बार नाहीं बनावत हअ । ”

उसके अश्रु प्रवाह रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे ।

“ नहीं माँ मुन्ना में कुछ भी नहीं था । उसकी नाकामयाबियों को याद करो । कितना रोई थी तुम उसकी एक – एक नाकामयाबियों पर । तुझको याद है जब मैंने बालू में चाकू छुपाया था राजू को मारने के लिये । तूने पकड़ लिया था और कितना रोयी थी मेरी उस बेवकूफ़ी पर । जब मैंने पिताजी के जेब से पैसा चुराया था पिताजी तो कुछ नहीं बोले थे तूने भगोने से कितना मारा था

मुझे । यह तेरे शासन का परिणाम है । तूने अपना जीवन त्याग दिया मेरे लिये । तूने आठ साल की उम्र से जो ईश्वर आराधना से जो कुछ भी पुण्य अर्जित किया था वह सब त्याग दिया मेरे भविष्य के लिये । जब मैं पहली बार इंटरव्यू के लिये जा रहा था तब तूने कहा था, मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये । यह मेरी आज़माइश का दौर था ही नहीं यह तेरी तपस्या की परीक्षा थी और तू कहाँ किसी से हार सकती है । “

वह भावातिरेक में थी ।

“ कब तक के छुट्टी बा ?”

“ तीन दिन की बड़ी मुकिल से मिली है ।”

“ तोहरे जाए के बाद कमिश्नर साहेब अक्सर आवत हअ । बहुत ध्यान रखत हअ । कहेन कि एक कार खड़ी कै देत हई आप लोग इस्तेमाल करअ पर हम का करब कार के । हमका कहाँ जाई के बा । प्रतीक्षा के पिता जिउ दुई बार आई रहेन । कैसन बा प्रतीक्षा ?”

“ ठीक है माँ ।”

“ तू पचे लड़ाई तअ नाहीं करत हअ ?”

“ वहाँ समय ही नहीं रहता । साँस लेने की फुरसत नहीं मिलती ।”

“ कौनौं खुराफ़ात तअ नाहीं करत हअ हुआ ? तोहार बँगैर खुराफ़ात के तअ मन लागत नाहीं कतौ ।”

मैं मन ही मन सोचने लगा । इसे सब पता है । इससे कुछ छिप नहीं सकता ।

“ तुझको हमेशा लगता है कि कुछ ऊट- पटाँग काम ही करँगा ।”

“ बांदर केतनौं सुधरि जाए पर गुलाटी मरबै करे । तू बँगैर खुराफ़ात केहे जिंदै नाहीं रहि सकत हअ । तू बँगैर खाए तअ दुई – चार दिन रहि सकत हअ पर बँगैर खुराफ़ात केहे तोहार मन न माने । ”

“ पूरा धो दो । मेरी इतनी यशगाथा है पर जब तू मिलती है सब धुल जाता है ।”

“इहै यशगाथा तअ तोहार दिमाग ख़राब केहे बा । बतावअ का खाबअ । तोहार कढ़ी – चावल बनाई देस हई आज ।”

मैं खाना खाकर विश्वविद्यालय गया । मेरा यूनियन हॉल पर पहुँचना ही हल्ला कर गया । हर ओर एक ही शोर अनुराग सर आये हैं । मैं कुछ देर विश्वविद्यालय घूमा । हिंदी विभाग गया । अपना यशगान सुना । कमिश्नर

साहब के ऑफिस गया उनसे मिलने । उनको मेरे आने का पता था । प्रतीक्षा ने फ़ोन करके बता दिया था ।

“ अनुराग , मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था । सुबह ही घर में कहा कि अनुराग आज आ रहे शाम को चलते हैं महान आत्मा के दर्शन करने । ”

यह कह कर सर हँसने लगे ।

“ सर , आपको कैसे पता मैं आ रहा । ”

“ आपकी होने वाली पत्नी अपने बारे में कम अपने होने वाले पति के बारे में ज्यादा बात करती हैं । उन्होंने ही अपनी भाभी से बताया । मैं भी घर में कहता हूँ प्रेम हो तो प्रतीक्षा – अनुराग की तरह हो । जानते हो इस पर क्या जवाब मिला ?”

“ क्या मिला सर ?”

“ यह प्रेम का नया नशा है विवाह के बाद चले तब यह प्रेम की असली सीरत समझ आयेगी । ”

“ सर , अब यह प्रेम ही तो जीवन है पर यह समझना दुर्लभ है । प्रेमी – प्रेमिका , पति – पत्नी ही नहीं जीवन के सारे संबंधों की व्याख्या यह प्रेम ही करता है । ”

“ अनुराग तुमसे कोई मुद्दा छेड़ दो तुम उसकी दार्शनिक व्याख्या कर देते हो । वहाँ पढ़ते हो, समय मिल जाता है ?”

“ सर , मुझे किसी काम के लिये समय की कोई कमी नहीं पड़ती । सर , समय का मैनेजमेंट करना होता है । बस यही कला सीखनी होती है । मैं एकेडमी में भी पढ़ लेता हूँ । सर , सुबह जल्दी उठना जीवन की सारी समस्याओं का समाधान कर देता है । यह जो ब्रह्म मुहूर्त में सुबह चार बजे उठने की मेरी आदत है वहीं मुझे अपने साथ के तमाम लोगों से आगे लेकर चली जाती है । यह तक्रीबन तीन घंटे का अधिक उपयोग सारी समस्याओं का समाधान कर देता है । ”

“ अनुराग , यह कहना आसान है पर करना बहुत कठिन । एकाध दिन तो हो सकता है पर नियमित रूप से सुबह चार बजे उठना बहुत दुर्लभ है । ”

“ सर नियमित किया कार्य ही कोई परिणाम देता है । ”

“ यह मुझसे तो नहीं होता । ”

“ सर , इसीलिये हर कोई अनुराग नहीं बन सकता । ”

“ नहीं अनुराग , सच यह है हर किसी को विधाता ने अनुराग ऐसी जिजीविषा नहीं दी है । लिखना हो , पढ़ना हो , पढ़ाना हो , चुनाव लड़ना हो .. कोई भी

काम दो सब का सब संपादित । तुम आये हो मेरी दूसरी किताब पूरी करा दो । वह भी छाप देता हूँ अपने इसी कार्यकाल में । अब तो तुम हिंदी साहित्य को स्थापित छात्र हो चुके हो । ”

“ ठीक है सर , कर दूँगा । ”

मैं चलने लगा तो सर ने पूछा कैसे आये हो ? ”

“ सर , साइकिल ही पेरुँगा और कोई गुंजाइश कहाँ है । ”

उन्होंने अपने पीए को बुलाया और कहा सुरेश ड्राइवर कहाँ है , उसको साहब के साथ करो । वह इनके साथ ही रहेगा जब तक साहब इलाहाबाद में हैं । इनकी साइकिल बाहर खड़ी है आप इनके घर भेजवा देना । घर जानते हो कहाँ है इनका ? ”

“ सर , इनका घर कौन नहीं जानता । यह तो शहर के गौरव हैं । ”

मैं कमिशनर साहब से मिलकर पुनः विश्वविद्यालय गया , पर इस बार लाल बत्ती की कार में । छात्रों ने कार देखी और उनके क़्रयास चालू हो गये ।

“ अनुराग सर को सिकेरिटी मिल गयी । ”

“ अभी तो वह टरेनिंग में है सिक्योरिटी अभी ही मिल गयी ? ”

“ आप जब आईएएस बन जाते हो रातों रात सिक्योरिटी मिल जाती है । आप का रिज़ल्ट रात में आया और सुबह घर पर सिकोरटी लग जाती है । भाई आईएएस की सुरक्षा ज़िला प्रशासन की ज़िम्मेदारी है । ”

“ एक बात और बतायें ? ”

“ हाँ । ”

“ जब आप किसी शहर में जाते हो तब सूचना पहले से ही पहुँच जाती है और आप को रेलवे प्लेटफ़ार्म से ही सिक्योरिटी कवर मिल जाता है । एकाध एसडीएम होगा सर के सिकेरिटी में । ”

“ऐसा क्यों करते हैं , कौन ऐसा जान – माल का ख़तरा है । ”

“ भौकाल .. ड्रामा .. नाटक .. ई सब अंग्रेज़न के बनावा नाटक है । बने हो देश सेवा के लिये पर भौकाल बनाकर जनता को डराना है । अब इनको ही देखो सारा उपदेश उड़ेल देते हैं कक्षा में चुनाव में पर लिये लाल बत्ती टहल रहे । ”

“अब भाई इनकी तक़दीर है । ”

“ हमरौ तक़दीर आये । चलअ आज से ज़ोर लगाई के पढ़ी ऐसन भौकाल हमहुँ के नसीब होई जाए । ”

शाम को मेरे घर में अफ्रातफरी । कई लोग मेरा इंतज़ार कर रहे थे । मैं माँ के साथ सिविल लाइंस चला गया था । वहाँ मेरी मुलाक़ात कानपुर के प्रतापी आईआरएस अशोक तिरपाठी सर से हो गयी । वह फिर किसी आधिकारिक कार्य से इलाहाबाद आये थे । मैंने माँ से उनका परिचय कराया । सर ने माँ को पैर छुये । माँ ने पूछा यह वही हैं जो कह रहे थे कि नौकरी में कुछ नहीं रखा है सब माया है नौकरी त्याग दो ।

“ हाँ वही हैं ।”

“बहुत दिन से तलाशत रहे हम एनका आज मिलि गअ हयेन ज़रा देखी तअ केतना त्याग ऐ केहे हयेन गरीब – गुरबा के बच्चन से त्याग करावत हयेन ।”

मैं समझा गया अब ज्ञान की गंगा बहेगी ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ 390

“सर यह मेरी माँ है ।”

अशोक सर – “ माता जी परणाम ।”

“ तिवारी जी कौन बाधन हअ .. सरयूपारीण कि कान्यकुञ्ज ? ”

“सरयूपारीण ।”

“ कहाँ के बसिंदा हअ ? ”

“गोरखपुर ।”

“ तब तअ पूर गोरखपुर समाज सेवा से सराबोर होई गवा होये । ऐतना सामाजिक सुधार केहे होबअ कि गोरखपुर – नेपाल – मगहर – बनारस हर ओर समाज सुधार के हवा बहति होये । ”

“ माता जी मन तो है समाज के लिये कार्य करें , पर यह नौकरी का झंझट करने नहीं देता । ”

छोड़ दअ इ दुई टके के नौकरी । तोहरे जीवन के बड़े लक्ष्य में बाधा पहुँचावत बा । ”

“कैसे छोड़ दें , घर- परिवार है । ”

“अच्छा तअ घर – परिवार चलाउब ज़रुरी बा । तब इ समाज सेवा के करे ? ”

“ माता जी करना तो चाहते हैं पर समय ही नहीं मिलता । ”

“ ई अनुराग के तअ सिखावत हअ कि कुल घर – दुआर में लगाई दअ आगी
। ई अनुराग अपने कमरा में लिखि के टाँगें हयेन

कविरा खड़ा बाज़ार में लिये लुकाठी हाथ

जो घर ज़ारा आपनो वह चले हमारे साथ ।

ई तुहिन लिखे हअ ।”

“ कबीर दास लिखे हैं ।”

“ ओ लिखे हयेन और तू प्रचारित करत हअ । तोहसे मिले के बादै ऐ कमरा
में टाँगें रहेन । भइया पर उपदेश कुशल बहुतेरे । तू राम कथा पढ़ें हअ ? ”

“ थोड़ा बहुत । “

राम भरत से का कहेन ? ”

“ क्या कहे ? ”

“ भरत तू उहै हमसे करवाए जौन तू खुद कै सकअ ।”

“ यह तो नहीं कहे थे । ”

“ तब क्या कहे थे ? ”

“ भरत तुम भी वही करो और हमसे भी वही कराओ जिससे हमारे सत्यापिरय
पिता की छवि को धक्का न लगे । ”

“बहुत ज्ञानी हअ तेवारी जी आप तअ । लअ हम एका सुधार देझत हअ ..
तिवारी जी उहै तुहूँ करअ और उहै अनुराग से करावअ जेसे न तोहरे महतारी
के दुख पहुँचै न अनुराग के महतारी के । ”

“हमसे यह जो पूछे हमने वही बताया । हम कब कहे नौकरी न करो ? यह
जानना चाह रहे थे कि नौकरी में क्या है और क्या भविष्य है । मैंने वही बाँच
दिया । मुझे नहीं पता था कि इसका यह असर पड़ जाएगा नहीं तो हम सब्ज
बाग दिखाते । ”

“ सब्ज बाग न देखावअ पर ऐसन न भरमाई दअ कि मनई के नौकरी से मोह
भंग होई जाई कुछ दिन एनहूँ के नौकरी के मज़ा लै लेई दअ पुनि तू और ऐ
एक साथै नौकरी छोड़ि के बलभर समाज के बरे काम करअ । अबअ एनकर
बियाहौ नाहीं भवा बा । जीवन के कुछ सत्य और समझि लेई तब पगलैटी करे
। भगवान एनकर दिमाग तअ बिचित्र बनायेन हइयै हयेन और एक तू मिल
गअ महाप्रतापी । एनका केउ कहि देई कि कुआँ में कूदे से बहुत नाम होई
जाये तब ऐ दस – बीस कुँआ में एक साथै कूदि पड़िहिं । ज़रा समझावअ कि
घर – परिवार – परिवेश देखि के चलै । ”

“ माता जी समझ गया । अनुराग नौकरी करें और बिल्कुल नौकरी न छोड़ें । ”

“ बस इहै राई दअ । ई तअ वैसै आधा पगलान बा और तू मिल गवा हअ गुरु । एका लागत बा शेषनाग के फ़न के नाहीं एकरे काँधे पर पृथ्वी के बैलेंस बना बा । ईश्वर के दसवाँ अवतार मानि बैठा हयेन अपने के । आवअ काल घरे भैया । तू अपनै हअ । ”

“ आता हूँ माता जी । ”

मैं चलने लगा, सर बोले, “ माता जी गुस्से में हैं । ”

“ सर, आप सस्ते में छूट गये । मैं नौकरी ज्वाइन कर लिया था । पिछले परीक्षा के बाद मिले होते तब तअ तो शराप ही शराप मिलता । ”

“ चलो कल आता हूँ पटाता हूँ माता जी को । ”

“ सर, यह माँ आसान होती हैं । यह ऊपरी गुस्सा चाहे जो दिखाएँ अंदर ये बहुत कोमल होती हैं । ”

“ यह बात तो है । चलो कल सुबह आता हूँ । ”

रास्ते भर माँ मुझसे एकेडमी के बारे में पूछती रही । मैं घर पहुँचा तो देखा दादू घर पर विराजमान मेरा इंतज़ार कर रहा था । माँ ने कहा यह नासपीटे कब आ गया । ”

दादू— “ बुआ, खबर मिली कि कलेक्टर साहेब आई हयेन तब चलि दिहा परिक्रमा करै बरे । पर बुआ खबर तगड़ी बा । ”

“ का खबर बा ? ”

“ तोहरे नाम जौन खेत बा ऐसे सङ्क जाए अब तअ बुआ ...

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ 391

“ बुआ अब तअ मालामाल होई के वक्त आई गवा बा । सुमति वाले खेते से सीधी सङ्क निकरत बा । बड़ा मुआवज़ा मिले । कुछ खेत तअ तोहरेव नाम बा । ”

“हमरे नाम केतना हइयै बा ? ई समाचार कब आई ? ”

“अरे बुआ ... !”

“ बोलअ । ”

“ तोहरे नामे वाला खेत मेन रोड से एकदमै लगई बा । ”

“ सङ्क कहाँ से कहाँ जात बा ?”

“ करछना के साधू के कुटी से घोघापुर से आगे बढ़ि के हथगनी , करमा बजार होत घूरपुर तक जाये ।”

“ ई तअ सरकार के लंबी योजना लागत बा ।”

“ सरकार गाँव के शहर से जोड़त बा । सुनत हई बादे के पुरवा तक नगर महापालिका में आई गवा बा अब ई और आगे बढ़े ।”

“ गाँव अब खत्म होई जाए ।”

“काहे बुआ ?”

“ गाँव शहर में समाई जाये और गाँव रहय लायक न रहि जाए । जहाँ आज कबूतर - तोता - गौरैया रहत हएन हुआँ सीमेंट - पाथर लागि जाए ।

“ पर बुआ आपन तअ फायदा बा ।”

“ का फ़ायदा बा ?”

“ बुआ , रूपियै .. रूपिया मिले । अरे बुआ का बताई .. बस समझि लअ दिन बदलत बा । पहिले मुन्ना आईएस बने और अब खेत के मुआवज़ा । अरे बुआ ऐसन खुसी फ़ैली बा कि का बताई बुआ .. अरे बुआ .. ”

“ ई बुआ . बुआ रटबअ कि कुछ और बतौबअ ।”

“ बुआ छोटका चाचा तअ खुसी में पगलाई गअ हयेन । जहाँ बैठत हअ ज़मीन पर ढेला से गणित बनावै लागत हअ । खेत के मुवाइजा मिले और चार हिस्सा में बँटे ।”

“ चार हिस्सा ?”

“ तीन हिस्सा भाई के और एक बाबू के । अरे बुआ तीन भाई तीन हिस्सा .. ज़मीन तअ तीन भाइन के नाम बा ।”

“ बाबू के जिंदा रहत ए मालिक होई गयेन ?”

“ बुआ ज़मीन तअ तीन भाइन के नाम बा । रूपिया तअ भाइन के अकाउंट में आये । कुछ ज़मीन तोहरेत नाम बा पर चाचा कहत रहेन कि उ तअ नाम बा पर ज़मीन में हक्क तअ लड़िकै के होत हअ बिटिया के कैसे होए ?”

“अच्छा ।”

“ तोहार शहर वाले चाचा का क़हत हएन

“बाबा भैया अब ऊ रूपिया से बिज़नेस करिहिं । ओ कहत रहेन ...

“ का क़हत रहेन ?”

“ जाई दअ बुआ .. ई गरीब बिना मतलब मारा जाए ।”

“ ऐसन का क़हि देहेन कि गरीब मारा जाए अगर बताई दे तब ?”

“ बुआ , हम हई गरीब परानी हमका जे चाहत हअ धुनि देत हअ । अब तोहसे तअ लड़ै के हैसियत बा नाहीं तब हमका तोहार सिपाही सोच के धुनि मारत हअ । अब धोबी से न जीतै तब गदहा के कान उमेरें । पर हम हई तअ तोहार सिपाही ई तअ पूरे डेबरा में फ़ेमस बा ।”

“ जौन बात बा ऊ बतावअ ई भरमावअ नअ ।”

“बाबा भैया त क़हत सुरुवै से हयेन कि बुआ के नाम खेत लिखाई देहा गवा रहा सीलिंग से बचावै बरे पर ज़मीन तअ बेटवै के होत हअ । बिटिया बियाहे के बाद अपने घरे के काम देखें , नैहरे में दख़लंदाज़ी न करें ।

“ ओ आपन बिटिया- दमाद काहे घरे में घुसेड़े हयेन ? ओनकर बिटिया – दमाद सोने के और के माटी के ।“

“ बुआ , अगर एक काम होई जाई तब और रूपिया मिले । बाबू भिंसारे के अझहिं एह पर तोहसे बतियावय बरे ।”

“ का होई जाई ?”

“ बाबू सबरे अझहिं तब ओनहिं से सुनू ।”

सुबह – सुबह नाना आ गये । वह गाँव की ज़मीन सड़क पर जाने से बहुत प्रसन्न थे । हर ओर अफ़वाह थी कि ख़ुब पैसा मिलेगा । नाना अपने मतलब की बात पर आ गये । वह बहुत ही गुरु चीज़ थे ।

“ बिटिया अगर खेत के बीच में पेड़ लिखाई जाई तब मुआवज़ा और बढ़ि जाए ।”

“ बाबू , पेड़ बा ?”

“ हाँ , चार – छः पेड़ तअ बा ।”

“ तब ऊ पेड़ लिखाई जाए ।”

“ ज़मीन बहुत बा । ओहमें सौ – दुई सौ पेड़ लिखाई जात तौ अच्छा होत । “

“ ऊ कैसे लिखाई जाए ?”

“ लेखपाल – पटवारी – अमीन अझहिं मुआयना करें बरे । ओ जौन लिख देइहिं तअ उहै अंतिम होई जाए । “

“ ऊ कैसे लिखि दे ?”

“ कमिश्नर साहेब एक बार कहिं देई .. ”

दाढ़ू – “बाबू , एतना दूर तक काहे जात हअ । जय नारायण एसडीएम करछना से काम होई जाए । एसडीएम मुन्ना भैया के जानत हअ । मुन्ना भैया एक बार कहि काम देई होई जाए । बाकी अमीन – पटवारी के हम सँभाल लेब / खेते के संगे पेड़ौ के मोआवउजा मिल जाये । ”

माँ सुन ही रही थी कि अशोक तिरपाठी सर आ गये । वह बहुत मिठाई – फल लेकर आये थे । माँ से सर का अभिवादन हुआ । माँ ने नाना का परिचय कराया । नाना कमिश्नर पदनाम सुनकर सावधान हो गये । उनके पास डिवीजनल कमिश्नर एवम् आयकर कमिश्नर में विभेद करने की क्षमता न थी । सर बहुत ही नयी उम्र के थे इसलिये कहा भी कि बहुत आगे जायेंगे इनकी अभी उम्र ही क्या है ।

माँ ने मोर्चा सँभाल लिया ।

“ नाहीं बाबू ऐ आगे न जइहिं । ”

“ काहे ? ”

“ ऐ समाज सेवी हयेन । ”

“ इहौ तअ समाज सेवा हअ । ”

“ नाहीं, इ समाज सेवा हअ , ई बात ए नाहीं मानत हअ । जब तक घर दुआर फूँक के ओकरे आगी में आपन हाथ न ताप लअ तब तक समाज सेवा नाहीं होत । ऐ सब बनावा गअ हयेन विधाता के हाथों अलगै तरीके से । मुन्ना बतावअ रहेन कि बड़ा नाम बा एनकर । ”

नाना शिक्षा देने लगे कि नौकरी आसानी से नहीं मिलती और इतनी बड़ी नौकरी तो बहुत तक़दीर से मिलती है । घर – परिवार – समाज का ध्यान देना चाहिये । यह त्याग – धर्म जीवन के तीसरे – चौथे आश्रम का कार्य है । अशोक सर के चेहरे से लग रहा था कहाँ बेवजह यह अनुराग टकरा गया और उस बेवकूफ़ को नौकरी का यथार्थ ही तो बताया था पर यहाँ तो सब को लग रहा कि मैं उसको नौकरी करने से रोक रहा जैसे वह नौकरी नहीं करेगा तब हमको दो सीट मिल जायेगी । उन्होंने बात को बदलते हुये कहा , ” यह नौकरी बहुत अच्छी है । इसको पूरी ताक़त से करना चाहिये और कोशिश करो कि रिटायर होने के बाद भी करते रहे । बस करते रहो । ”

माँ – “ तू तअ गुलाटी मारि लेहअ साहेब । काल तअ क़हत रहअ कि समाज सेवा के मन बा आज तअ समाजै भूलि गअ । ऐसन न करअ समाज के के बहुत उम्मीद बा तोहसे । ”

अशोक सर समझा गये कि अनुराग तो गुरु है पर माँ महागुरु है । चाय पिलाकर दर्शन के नव सिद्धांत का सृजन कर देगी ।

“ माता जी नौकरी भी समाज सेवा है । ”

“ भैया, सबसे मतलब के बात अबहिं कहअ । मुन्ना सुनी लअ । नौकरी समाज सेवा बा । बस नौकरी करअ समाज के सेवा होई गै । अब नौकरी कैसे करै के बा एनसे सीखअ । ए हरदम छापामार विभाग में रहत हअ । ई कला सीखअ कैसे मज़बूत कुर्सी पर रहअ । ”

मैं – कैसे पता ई हमेशा छापामार विभाग मे रहते हैं ?”

“अरे जब देखअ इलाहाबाद घूमत हयेन । हमका जीजा बताए हयेन कि ऐ सब शिकार के तलाश में घूमत रहत हअ । ”

सर ने चाय पिया और मैं बाहर छोड़ने गया । सर ने कहा , “ अनुराग , मैं आज

ही एक ताँबे की पट्टी ख़रीद कर उस पर लिख दूँगा कि अनुराग नौकरी करो । तुमको करना है बवाल बेवजह हमारा नाम ख़राब कर रहे हो । ”

“ सर , मेरा नौकरी में मन लग नहीं रहा है । ”

“ मै इस मुद्दे पर अब कोई बात नहीं करूँगा । ”

यह कहकर सर हँसने लगे और कार मैं बैठ

गये फिर शीशा खोलकर कहा,” माता जी को लेकर आना कानपुर घूम जायेंगी । ”

“सर , इस बार तो नहीं पर अगली बार आता हूँ । ”

रात में माँ मेरे पास आयी और उसने पूछा , “बाबू का कहेन तू सुनअ हअ ? ”

“ हाँ । ”

“ बड़ी दुविधा आ गयी माँ , क्या करोगी ? ”

“ कैसी दुविधा ? ”

“वही जो पेड़ के लिये कहना है । ”

“कोई दुविधा नाहीं बा । बाप हयेन विधाता नाहीं । ओनके लालच बरे हम तोहका न तो जना हई न विधाता तोहका आईएस बनाये हयेन । तू साफ -साफ़ इंकार कै देहेअ । अब तू इ नात – रिश्तेदारन से दूरी बनावै शुरू करअ । ई सीमा पार कै चुका हयेन । इतनी हिम्मत पड़ि गै कि कुल फ़र्जी काम कराई लअ । एह काम में पूर घर शामिल बा । ”

“ कैसे पता ? ”

“ हम उहीं घर के जन्मी हई । ऐ सब लालच के पेड़ सींचै वाले लोग हयेन । सब केउ मंत्रणा केहे होइहिं और बाबू के आगे भेजेन । कुछ खेत हमरे नाम

बा । लागत होये कि पैसा देहे पड़े हमका तअ ऊ पैसा निकाल लअ फ़र्जीगीरी से । महामाई सकाई गै ऐसन पैसा और खेत से, हमका कुछ न चाही । “

मैं उसका चेहरा देखने लगा । इसकी सात्त्विकता की पराकाष्ठा है । जिस पिता से इसको इतना प्यार है उसको भी यह आँख दिखाने का साहस रखती है । इसको “ना” कहने का हुनर आता है काश यह हुनर मेरे पास भी होता ।

मैंने कहा, “ माँ, अगर नाराज़ न हो तो एक बात कहूँ । ”

“ कहआ । ”

“ मेरा नौकरी में मन नहीं लग रहा । ”

माँ शांत होकर मेरा चेहरा देखने लगी । वह कुछ देर शांत रही फिर बोली, “ का चाहत हअ तू मुन्ना ? पहिले तअ हम अकेल रहे बाधा तोहरे ई निर्णय में पर अब तअ प्रतीक्षा के अरमान देखें पड़े । ”

मैं चुप हो गया । वह बोली, ” मुन्ना तू पहिले आपन फ़ैसला लै लअ तब हमका आपन अंतिम फ़ैसला बताई दअ । तोहका आपन जीवन जियै के पूर हङ्क बा , तोहरे साथ जुड़े लोगन के कौनों हक नाहीं बा तोहरे जीवन के दिशा मोड़े के । मुन्ना ... ”

मैं कुछ न बोला । मैं शांत था । मेरी आँख डबडबा रही थी उसका मुझ पर असीम विश्वास देखकर ।

वह बोली, “ मुन्ना विधाता के प्रक्रिया के तू निमित्त मात्र हअ । विधाता के काम में केहु के हस्तक्षेप करै के हङ्क नाहीं बा । तू लै लअ जौन फ़ैसला लेना चाहत हअ । ई बात तअ सचि बा कि तू जन्मा हअ एक गैर मामूली दास्तान के बरे । ई नौकरी तोहका एक मामूली दास्तान अब लागत बा । ”

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ 392

माँ चली गई । उसके जाने के बाद मैं बहुद देर तक अपने विचार प्रवाह में मग्न रहा । एक प्रश्न मुझे अंदर तक परेशान कर रहा था जो ख्वाब मैंने अपने परिवेश को इतने वर्षों के अपने कठिन परिश्रम के द्वारा दिखाए उनका क्या होगा? कुछ ही देर में मेरी आँख लग गयी ।

मेरी आँख लगी ही थी कि श्वेत वेशधारियों का समूह मेरे स्वप्न में आ गया । वह कोई उद्घोष सम्मिलित रूप से करते हुये आ रहे थे । जब तक दूर थे तब तक तो कुछ भी सुनाई न पड़ रहा था सिवाय कुछ आवाज़ों के पर जब वह नज़दीक आए तक तब ध्वनि स्पष्ट होने लगी ..

राम से बुद्ध तक , बुद्ध से कबीर तक एक ही संदेश .. एक ही संदेश .. प्राणि
मात्र का कल्याण , जगत का उत्थान हो , जीवन का सत्य भोग में नहीं
त्याग में है । वह जैसे – जैसे मेरे नज़दीक आ रहे थे ध्वनि तीव्र हो रही थी

..

राम से बुद्ध तक
बुद्ध से कबीर तक
एक ही संदेश
एक ही संदेश
प्राणियों में सद्वावना हो
जगत का कल्याण हो
एक ही संदेश
एक ही संदेश ..

मेरे नज़दीक वह समूह आ गया । एक आकर्षक ऊँचे क्रद के व्यक्ति ने अपनी
बोलती हुई बड़ी आँखों से मुझे संबोधित किया । मैंने प्रणाम किया । मैंने भी
बोलती आँखों से अभिवादन किया । दो बड़ी – बड़ी बोलती आँखों का समूह
आपस में संवाद करते हुये और पीछे एक ध्वनि गूँजती हुई

राम से बुद्ध तक
बुद्ध से कबीर तक
एक ही संदेश
एक ही संदेश
प्राणियों में सद्वावना हो
जगत का कल्याण हो ..

आकर्षक व्यक्तित्व वाले श्वेत वेशधारी ने दायें हाथ को हवा में उठाया और
उसके हाथ के उठने के साथ ही और एक नीरवता शनैः - शनैः व्याप्त होने
लगी ।

उसने तीव्र स्वर में कहा
“ हे नवयुवक समाज को तेरी आवश्यकता है । ”
मैं शांत दोनों हाथ जोड़े उसकी आँखों में देख रहा था ।

“ तू स्वार्थी नहीं हो सकता । तुझे परमात्मा ने स्वार्थी बनाया ही नहीं है । जो स्वार्थी थी उसको भी परमात्मा ने आदेश दे दिया है । वह भी परमार्थ की ओर अग्रसरित हो चुकी है । उसने अपने सारे पुण्य तेरी सफलता के लिये त्याग दिये थे । वह मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहती थी । ईश्वर ने उस महान उपासक की अराधना को सुना और तेरी तमाम कमियों के बाद भी उसने तुझे समुद्र की अतल गहराइयों से रत्नाकर को जीत कर रत्न लेने का आदेश पयोधि को दिया । अब तू ईश्वर का आदेश मान । ईश्वर जगत् का कल्याण भी चाहता है और तेरी माँ का मोक्ष भी । उसी के आदेश पर तेरी माँ ने भी कह दिया तुम जो चाहो वह करने को स्वतन्त्र हो । याद रख तेरा निर्णय तेरी माँ को मोक्ष प्रदान करेगा । मत भोग वह भविष्य जो तेरी माँ को जन्म - मृत्यु के चक्र में वापस ले जा रहा । तू अस्वीकार कर दे प्राप्त हुई सारी उपलब्धियों को और वापस कर दे माँ के सारे अर्जित पुण्य जिनकी आहुति देकर उसने तेरा भविष्य विधाता से वरदान में लिया था । परमपिता उसको मोक्ष प्रदान करेंगे और तुझे यश । यशवीर बन भरत की तरह ।”

यह कहते हुये वह आकाशगामी मार्ग से मुझे ऊर्ध्वमुखी होकर प्रयाग से अयोध्या के पथ पर ले उड़ा ।

“ देख यह पथ यहीं से कभी भरत प्रस्थानित हुये थे धर्म को व्याख्यायित करते हुये , देख यह पथ यहीं से राम गुजरे थे मर्यादा पुरुषोत्तम बनते हुये । देख वह दूर पहाड़ियाँ चित्रकूट की जहाँ हुआ था ऐतिहासिक संघर्ष चार भाइयों में त्याग के लिये । यहीं पर राम ने कहा था लक्ष्मण से

दुःख भी है पीड़ा भी है

मस्तक में जलती ज्वाला है

धर्म जिससे होता मर्यादित

उसी पर अविश्वास आज हो आया है ।

यह देख .. यह त्याग – पौरुष -विश्वास – आस्था की भूमि । यह अपने आप में गौरवमयी इतिहास को समेटे धरा का कालजयी भाग है । यह अद्भुत है । यह देव लोक नहीं है पर उसके सदृश है । यह अजेय भूमि है । यह पिता – पुत्र संबंधों की व्याख्यायित करती है । यह राजतंत्र में लोकतन्त्र का प्रमाण प्रस्तुत करती है । यह वशिष्ठ के ज्ञान और विश्वामित्र के दूरदर्शी संधान और दशरथ के चक्रवर्ती पुंजों से विहित है । सृजनात्मकता इसकी तासीर है । ज्ञान , भक्ति और वैराग्य इसके परिणाम है । नायकों की जन्मस्थली है । आदि मनु स्वायंभुव , मांधाता , सत्यवादी हरिश्चन्द्र , गो सेवक प्रतिष्ठाधारी दिलीप , पौरुष पारिभाषित रघु , गंगा अवतरण के वाहक भगीरथ और हर काल खंड में तपस्या भाषित जहाँ रही हो , जिसने दानवी संस्कृति का विनाश किया हो , जिसका संबंध छः अवतारों से हो जो भविष्य

का संकेत देती हो , जो नया इतिहास रचती हो , विनाश के पीछे लोक कल्याण जिसकी कामना हो ,लीला में कर्म की शिक्षा देने वाला राम ऐसे कर्मयोगी – जननायक जिसकी उपासना करता हो । राष्ट्र एवम् धर्म को प्रतिबिंबित करती यह धरती.. यह अयोध्या है ।

इसके दर्शन मात्र की इच्छा आळाद देती है । प्रणाम कर इस धरा को यह तुझे त्याग के प्रति सन्देश करेगी । असंभाव्य से संभाव्य की यात्रा की चश्मदीद गवाह , भरत के त्याग से उत्सर्जित भूमि , दर्शन और उपदेश को ग्रहण करने वाली धरा , मर्यादा एवम् सामाजिक संबंधों को विश्व में स्थापित करने वाली मिट्टी , मातृभूमि अति प्रिय है यह संदेश देश की सीमाओं के बाहर भी उद्घोषित करने वाली आदर्श राज्य की संकल्पना को अपनी संस्कृति में समाहित करती वसुधा यह जयघोष कर रही वसुधैव कुटुम्बकम ही भविष्य

है विश्व का । तुझे अपने कुटुंब नहीं एक व्यापक कुटुंब के लिये कार्य करना होगा । देख राम की जन्मस्थली नमन कर उस देवता का जिसका दर्शन अभिलाष ही हमारा सौभाग्य है ।

यह नाद ब्रह्म से नादाषणित है । स्वर और ताल की जुगलबंदी से यहाँ धूनी रमती है । महानायकों की जन्मभूमि , संस्कारों की पोषक , धवल परंपराओं को विश्व में अग्रसरित करती जिसके मूल में राग- द्वेष से विरत कल्याण प्राणिमात्र का , कल्याण मात्र ही जिसका निहितार्थ है ।

अनुराग यह शाश्वत सत्य को बखानती मर्यादा पुरुषोत्तम की भूमि अयोध्या है । देखो अनुराग देखो नंदीग्राम देखो वह भरत कुंड देखो और त्याग दो सब कुछ राम की तरह प्राणी मात्र के लिये .. अनुराग त्याग ही जीवन है । एक बार स्मरण करो भरत को और त्याग दो वह राज सिंहासन जिसे तूने छल से प्राप्त किया है ।”

“ मैंने क्या छल किया है ?”

“ यह तू मुझसे बेहतर जानता है । तुझे साक्ष्य चाहिये , वह भी उस प्रमापिता के न्याय- दरबार में जहाँ सत्य बोलना परमात्मा के दर्शन की प्राथमिक शर्त होती है ।”

मैं शांत हो गया ।

“ अनुराग , यहीं जन्मे भगीरथ उतार लाये थे गंगा को आसमानों से पितरों के तर्पण के लिये , उनकी मुक्ति के लिये । देख वह आकाश गंगा का पथ जहाँ से भगीरथ उतरे थे शिव की जटाओं से गंगा को मुक्त करके मात्र पितरो के कल्याण के लिये पर वह गंगा हो गयी जगत की मुक्तिदायिनी । तूने किसी के फलित मोक्ष के तप की प्रक्रियाओं से उपजे पुण्य से यह भौतिक उपलब्धि

प्राप्त की है । चुनाव तेरा है , यह भौतिक जीवन या उसका मोक्ष जिसने तुझे जना है । एक बार उसने कहा था , मुझे मोक्ष नहीं तेरा चयन चाहिये । अब तू कह माँ मुझे तेरा मोक्ष चाहिये, मुझे त्याग करना है तेरे मोक्ष के लिये । अनुराग आगे बढ़ देख अपलक नंदीग्राम के भरतकुंड और राम की जन्म भूमि पर और कर दे एक संकल्प .. माँ मुझे तेरा मोक्ष चाहिये । अनुराग कर निर्णय मेरे पास समय नहीं है । मुझे विधाता ने इसी कार्य हेतु जन्म दिया था । तू यह कार्य पूर्ण कर और मेरे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर । जिस समय तू सकारात्मक निर्णय लेगा मेरी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा और मैं प्रमात्मा में विलीन हो जाऊँगा । तू अपनी माँ की मुक्ति तो साथ मेरा भी मुक्तिदायक है । कर निर्णय ,.. “

मैंने आकाश से अयोध्या एवम् प्रयागराज के मध्य के पथ को देखा । मैंने धर्म के प्रतीक भरत का नंदीग्राम देखा और राम जन्मभूमि को देखते हुये कहा , “ माँ मुझे कुछ नहीं चाहिये मुझे तेरा मोक्ष चाहिये चाहे मेरे इस निर्णय से तुझे पीड़ा ही क्यों न हो । माँ मुझे तेरा मोक्ष चाहिये ।”

आकर्षक श्वेतवेशधारी ने अपनी साँसें छोड़ दीं और वह निढ़ाल होकर आकाश में और ऊपर उठने लगा । मैं उसको आकाश पथ पर जाता देख रहा था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विसेज़ भाग 393

मेरी आँख खुली । माँ सामने खड़ी थी । पिछले कई वर्षों की तरह वहीं चाय का कप , वही मनमोहक चेहरा , बड़ी – बड़ी बोलती आँखें जिसमें हर दम उम्मीद रहती थी जो बेटे के नव उदित पराकरम से मस्तक पर तेज और कंधों पर गर्व को धारण प्रदान किये हुये थी । मैं उठकर बैठ गया । मैं माँ के पैर छुआ करता था जब वह प्रतिदिन प्रातः बेला आया करती थी पर आज मेरे झुके हुये मस्तक ने अन्तर्मन में कहा , “ माँ माफ करना अब मैं तुझे दुख दूँगा । मैं तुझे दुख देना नहीं चाहता पर मेरी मजबूरी है । अब मेरा नव कर्तव्य है तेरा मोक्ष । इसके लिये मैं कुछ भी करूँगा । मैं तुझे दुख देकर भी तेरा हित करूँगा । ”

अब भूमिका बदल चुकी थी । जिस शिशु को उसने तमाम ताड़ना देकर यहाँ तक पहुँचाया है वह शिशु अब परिपक्व हो चुका है । वह अब यह फ़ैसला कर रहा , माँ का भला किस बात में है और वह माँ को दुख देकर भी उसका हित चाह रहा । माँ ने चाय का कप पकड़ाया और कहा कि आज का दिन अंतिम है तुम कल चले जाओगे । कमिशनर साहब और भैया से नहीं मिले हो जाकर

मिल आओ । यह कहकर वह छत से नीचे उतरने लगी । मैं बार्ज पर खड़ा हो गया । थोड़ी देर में दिखा हाथ में एक डोलची लिये जाती हुई गर्व युक्त चाल के साथ गली में तीव्र गति से बढ़ती हुई गंतव्य की ओर । उसकी डोलची में उसकी आस्था थी - पूजा के सामान और नहाने के बाद पहनने वाले कपड़ों के रूप मे । अपनी आस्था समेटे हुये मकान के दरवाजे के बाहर की पतली सी गली पर चलती हुये गली के मुहाने को वह पार कर रही थी । मैं उसे जाते हुये अपलक देख रहा था । मेरा सर्जक मेरे सामने से जा रहा था और मैं उसकी चाल में खोया हुआ उसकी आने वाले पीड़ादायक भविष्य के प्रति चिंतित । पर क्या करता , उसकी पीड़ा में ही उसका ही नहीं समाज का भी भविष्य था और मेरी संतुष्टि । उसके सारे त्याग जिस हेतु थे वह निरर्थक होने की तरफ बढ़ रहे थे और उसकी तारीकियों की रात जिसमें कृष्ण पक्ष ही होगा आरंभ होने वाला था ।

मैं सोना चाहता था ताकि मेरा मन इस मुद्दे से हट जाये पर नींद कहाँ आने वाली । मैं ध्यान हटाने के लिये एक उपन्यास पढ़ने का प्रयास करने लगा । पर मेरा मन उसमें भी नहीं लग रहा था । थोड़ी देर में परिदों का कलाम आरंभ हो गया । मैं नीचे आया पिताजी अख्बार की तलाश में मकान के बाहर टहल रहे थे । अख्बार वाला अभी नहीं आया था । सामने के मकान के प्रभु यादव मंदिर की घंटियाँ को बजा रहे थे और महाजन गंगा नहाने के लिये साइकिल पर सवार हो रहे थे । हरकेश दूध वाला अपनी भैंस दुहने के लिये सामने से जा रहा था और ठाकुर अपनी भैंस को चारा डाल रहे थे । एक बोसीदा गली का गौरव खत्म होने की तरफ बढ़ रहा था और सब अनजान थे उस आने वाले झंझावात से पर मेरे अंदर एक तूफान चल रहा था , एक अनवरत तूफान । बहन चाय बना रही थी । मैंने माँ का आदेश पिताजी को बताया और कहा अभी ही मामा के यहाँ चला जाता हूँ । मामा का घर अपना ही था भले ही आपस मे कभी – कभार तकरार हो जाये पर कभी भी आओ जाओ कोई खास समस्या न थी । पिताजी ने कहा , “ इतने सुबह – सुबह ? सब सो रहे होंगे । ”

मैं चुप था । बहन चाय बना कर लायी । सामने बिजली के तार पर कौए बैठे थे मैं उनको देख रहा था । पिताजी ने कहा , चाय ले लो । मैं कौए देखने में मशगूल था । एक कौआ एकाएक एक और लुढ़क गया कौए के फड़फड़ाते पंख ने शायद तार का सर्किट पूरा कर दिया था और वह अंतिम अवस्था को प्राप्त हो गया । पिताजी ने फिर कहा” चाय “ । मैं तन्द्रा से वापस लौट आया और चाय

का प्याला पकड़ लिया । पिताजी ने कहा , “ कहाँ खो गये थे ? ”

मैं – “ कहीं नहीं । ”

मैं नहा कर मामा के यहाँ पहुँचा । सुबह ज़र्लर थी पर सब जग चुके थे । मामी ने मुझे देखते ही कहा , “ कलेक्टर साहब आ गये । हमारा मानदान हमार भगवान आई गयेन । ”

“ नहीं मामी , अभी नहीं हुआ हूँ कुछ । ”

मुझे अयोध्याकांड याद आया जब राम ने वन गमन का आदेश प्राप्त होने के बाद युवराज पद की सारी सुविधाओं का त्याग कर दिया था । मैं राम के आदर्श के पति आग्रही हो गया और मामी से कहा , ” मामी अभी मैं एक छात्र ही हूँ । मुझे आईएस लिखने का भी अधिकार नहीं है । मैं कलेक्टर नहीं हूँ अभी । मुझे इस घर का वही मुन्ना रहने दीजिये जिस पर आप कभी शासन करती थीं और मैं खलिहान से अनाज चुराता था और आप से और माँ से डरता था । ”

मामी भावुक हो गयीं । मैं कुछ देर रहा मामा के यहाँ और कहा कि कल मुझे जाना है पर शीघ्र ही फिर मिलूँगा । मैं घर आया । मेरे छोटे भाई ने बड़े ही शौक ये “ अनुराग शर्मा , आईएस ” का बोर्ड लगाया था सुनहरे अक्षरों से जड़ित एक प्लेट बनाकर । मैंने वह बोर्ड उतार दिया । मैं सामान्य होने लग गया था । वह बोर्ड उतारते ही मेरे अंदर का दंभ कम होने लगा ।

मैं करीब ग्यारह बजे चल दिया कमिशनर साहब से मिलने ।

कमिशनर साहब के कमरे में फूल ही फूल थे - नायाब फूल बड़ी उम्मीदों के साथ ख़रीदे गये पुष्पों का समूह । लाने वाले ने शिद्धत से बड़ी जतन से शहर की सबसे नायाब फूलों की दुकान से लिये थे वह पुष्प गुच्छ , कहा था दुकानदार से सफेद गुलाब भी डाल दो , कुछ हरी डंडी भी बढ़ा दो । कमरे का माहौल चकाचौंध से भरा था । बधाई देने वालों का ताँता लगा हुआ था । बधाई देने वाले वही थे जो कुछ वक्त पहले सत्यानंद मिश्र के नाम की बीन बजाते थे और उनकी इन्द्र से तुलना करते थे । वह सब पहले भी इसी कमरे में एक उम्मीद से आये थे पर आज वह सब एक नये क्षेत्र - समराट से रहम की उम्मीद चाह रहे थे , उससे संबंध स्थापना के आकांक्षी थे , उसके दर्शन के अति अधीर । कुछ समय पहले यह सब इसी तरह सत्यानंद मिश्र के दरबार में ऐसे ही आये थे और ऐसे ही मुस्कुराये थे उनकी ओर एक याचक भरी मुद्रा में और सत्यानंद की जल रही कमरे की लाल बत्ती की तरफ देख रहे थे हरी होने की उम्मीद से । आज वह पूरी विनम्रतापूर्वक कृपाकांक्षी थे और अरदास कर रहे थे नये शहनशाह से जैसा पहले किया था सत्यानंद से । सत्यानंद अपने इस कमरे से निकल कर एक बगल के कमरे में स्थापित होने की ओर थे । यहाँ लाल बत्ती क्या जलाना अब । हरी बत्ती जल रही थी वहाँ । नये क्षेत्र अभिभावक से सब

मिलने को बेताब थे पर आज सत्यानंद मिश्र बेसहारा । उनके कमरे की बत्ती हरी थी पर मिलने वालों के पास हरी बत्ती के लिये समय न था । सत्ता बहुत मोहक होती है न केवल भोगने वाले के लिये वरन् उसके लिये भी जो सत्ता से आशीर्वाद का आकांक्षी होता है ।

आज सत्यानंद मिश्र के साथ अन्याय हुआ था पर ऐसा ही अन्याय औरों के साथ भी हुआ था कभी पहले भी । जब पहले अन्याय हुआ था औरों के साथ तब सत्यानंद आशीर्वाद प्राप्ति की ओर थे और कह रहे थे न्याय हुआ है और पोस्टिंग क्राबिलियत – गुणवत्ता- निष्पादन क्षमता – दक्षता के आधार पर होती है । पर आज उन्हें अन्याय ही अन्याय दिख रहा था । वह भरे मन से कमरे से निकले । बाहर एक भीड़ जमा थी नव नायक के लिये । इस भीड़ में तमाम चेहरे वह थे जो कुछ दिन पहले कह रहे थे हमारा जन्म आपकी खिदमत के लिये हुआ है पर आज भी खिदमत का संकल्प है बस नायक बदल गया था । आज यह चेहरे नये मसीहा के इंतज़ार में सत्यानंद मिश्र से आँखें बचा रहे थे । जब वह कमरे से निकले उनकी निगाहें ज़मीन पर थीं । वह अपने नये कमरे में प्रवेश किये । कमरे में कुछ भी न था, कमरा भी लावारिस था उसको एक वारिस मिला पर वह हताहत- भंगित - विक्षिप्त था । कमरा और अवसाद में आ गया उसकी भी कुछ उम्मीदें थीं जो पूरी नहीं हुई अपने इस वारिस से । चपरासी ने पूछा चाय लाऊँ । वह कुछ न बोले निढ़ाल होकर सोफ़े पर गिर गये और देखने लगे वह कुर्सी जिस पर कुछ साल पहले बैठे थे जब वह सत्ता के षड्यन्त्रकारी खेल के भागी नहीं थे । पहले वह जहाँ बैठा करते थे वहाँ कुछ नहीं था पर संतुष्टि थी । यह सत्ता बहुत मादक होती है पर इसको एक दिन उतरना ही है ।

सत्यानंद मिश्र का तबादला कमिश्नर इलाहाबाद के पद से बोर्ड ऑफ रेवेन्यू में हो गया था ।

इलाहाबाद और सिविल सर्विस 394

मैं कमिश्नर साहब के ऑफिस पहुँचा । बहुत भीड़ थी ऑफिस के बाहर । लगभग ज़िले के सारे वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे । एक भीड़ ही भीड़ दिख रही थी, बहुतों के हाथों में गुलदस्ते थे । शहर के तमाम बड़े लोग थे । पता चला कमिश्नर सत्यानंद मिश्र का तबादला बोर्ड ऑफ रेवेन्यू में एक सदस्य के तौर पर कर दिया गया है । एक क्षेत्र का मालिक, इलाहाबाद ऐसे शहर का नायक बोर्ड ऑफ रेवेन्यू में.. जहाँ कोई नहीं आता, कोई विवेक के प्रयोग का अवसर नहीं ऐसे अति विवेकी अधिकारी के लिये । विवेक को

कर्ण की तरह कवच- कुंडल धारित जन्मना होने का दावा करने वाला व्यक्ति , जिसका विवेक ही उसकी सबसे बड़ी निधि हो जिसके विवेक से आज तक शहर का जीवन – व्यापार चलता रहा हो उसके विवेकाधीन अधिकार को छीन लेना उसके ही साथ नहीं समाज के साथ अन्याय था । अन्याय को बर्दाश्त करने को बाध्य किया जा रहा था महान प्रतापी अधिकारी सत्यानंद मिश्र को वह भी किसी और के द्वारा नहीं उसी के प्रिय – अति प्रिय शासक सद्गवाना सिंह के द्वारा । सत्यानंद मिश्र से पूछे बगैर कोई पता नहीं हिलता था , हवायें आदेश माँगती थी लोगों को ऑक्सीजन प्रदान करने के लिये इस भ्रम को काग़ज़ के एक टुकड़े ने तार- तार कर दिया । मैं कमिशनर के ऐतिहासिक कमरे के सामने खड़ा होकर वह ऐतिहासिक क्षण अवलोकित करने लगा जो अक्सर घटता है सत्ता के षड्यन्त्रकारी खेल में । अंदर कमिशनर अद्भुत प्रकाश सिंह का साम्राज्य स्थापन हो रहा था और बाहर लगातार भीड़ बढ़ती जा रही थी उनके दर्शनार्थियों की । उनके दर्शनाभिलाषी उनकी एक छवि पाने को आतुर थे । उनकी बेताबी इतनी बलवती हो रही थी कि वह चाह रहे थे किसी तरह अंदर जाने का अवसर मिले और साहब से मिलकर बाहर कह सकें हमारा इनका जन्म – जन्मान्तर का साथ था । अद्भुत प्रकाश सिंह शहर इलाहाबाद में एसडीएम और सीडीओ रह चुके थे इसलिये उस दौर में जो भी उनके परिचित थे वह सब लगे हुये थे किसी भी तरह अंदर जाने के फ़िराफ़ में । इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति की भी कार आ गयी । वह भी मिलना चाहते थे । उनके साथ कुछ यशवीर अध्यापक भी थे । मुझे यह नजारा कष्टप्रद लगा । अद्भुत प्रकाश इसी विश्वविद्यालय के उत्पाद हैं । आप धैर्य रखते यह स्वयम् आप से मिलने जाते । इतनी क्या अधीरता थी कि आप आज ही दौड़े चले आये इनसे मिलने । आप का आदेश शिरोधार्य करने का नैतिक उपदेश विधाता ने सबको दिया है पर आप भी सत्ता के खेल के भागी हो रहे । हमारा पतन इसलिये नहीं हो रहा कि हम नयी मर्यादाओं का स्थापक नहीं कर पा रहे बल्कि हमारा पतन इसलिये हो रहा क्योंकि हम स्थापित मर्यादाओं को सहेज नहीं पा रहे ।

मैं सत्यानंद मिश्र के नव साम्राज्य के कमरे में गया । बाहर कोई चपरासी भी नहीं था । मैं दरवाज़ा खोल कर अंदर प्रवेश कर गया । एक अति प्रतापी नायक आज महमूद गजनवी के सोमनाथ मंदिर के लूटे जाने के बाद दिखने वाले मंदिर की तरह था जिसे लूटे जाने से ज्यादा दुख प्रतिष्ठा पर आघात का था । साहब सोफे पर बैठे थे । मुझे देखकर आज कोई ख़ास प्रसन्नता का भाव नहीं जगा जो पहले मुझे देखते ही चेहरे पर हुआ था । वह मुझसे भी आज बचना चाहते थे । थोड़ी देर कमरे में शांति रही । मैंने बात आरंभ की ।

“ सर , मैं आया था आप सबसे मिलने । कल की मेरी ट्रेन है । आपका आशीर्वाद लेने आया हूँ कल प्रस्थान करूँगा देहरादून के लिये ।”

बुझे हुये हताश से स्वर में सर ने कुछ इधर – उधर की बात की । इतने में कोई एक व्यक्ति आया । वह शायद बोर्ड ऑफ रेवेन्यू का कर्मचारी ही रहा होगा , यह उसके बुझे चेहरे से ही लग रहा था । काम वाली फ़ील्ड के कर्मचारी थोड़ा उचक कर चलते हैं और चेहरे पर आशा की आभा रहती है । जो बेकाम , बगैर आमदनी वाली महीने के पहले दिन के तनख्वाह के इंतज़ार वाले कर्मचारी होते हैं वह प्रायः बहुत मंथर गति से चलते हैं और उनका चेहरा दीप्तिहीन होता है । उनके जीवन के सुबह में कोई उत्साह नहीं होता और दिन के उजाले में कोई आशा का अंश नहीं होती । उनका कार्यालय में आने का कोई खास मन नहीं करता, बस ऑफिस जाना है सो जा रहे बाकी क्या ऑफिस- वॉफिस जाना । उनके लिये क्या रातिर – क्या दिन । यह कर्मचारी भी उनका ही प्रतिनिधि था । सर ने उसको देखते ही कहा ज़रा दो कप चाय भेजना । चाय की चुस्की के साथ सर के अंदर का लावा फूट पड़ा ।

“ अनुराग , जीवन में क्षमता – कार्य निष्पादन दक्षता – ईमानदारी -सत्यनिष्ठा का कोई मोल नहीं है । बस आप आदेश को आँख मूँद कर मानो और वही करो जिसका आदेश होता है , ग़लत या सही इस पर विचार करना आप का कर्तव्य हो तब भी यह आपका कार्य नहीं है । यह विवेकाधीन अधिकार अधिकारियों के गिरवी रखे हुये अधिकार हैं और यह एक भ्रम है कि मेरे पास कुछ करने का अवसर है । इस गरीब रियाया के पक्ष में काम करना चाहो तब रोका जाता है क्योंकि उनकी जागरूकता इनके लक्ष्य में बाधक है । सारी विकास योजनाओं में इनको हिस्सा चाहिये , वह भी मन मुआफ़िक । आप कोई काम मत करो बस केवल काग़ज़ी कार्यवाही करके विकास का ढाँचा काग़ज़ों पर बना दो और सारा पैसा इनके खीसे में चला जाये । चुनाव नज़दीक आ रहा सत्तादल को अकूत धन चाहिये लोकतन्त्र के अपहरण के लिये । जो भी उस हितसाधन का भाग बन सकता है वह उनका प्रिय है । पैसे से पद ख़रीदे जा रहे । यह सत्यानंद जो सच कहने का साहस रखता है वह भी उनकी आँखों में आँखें डालकर वह उनको बर्दाश्त नहीं हो रहा । जातिवादी मानसिकता हाबी है पूरे समाज में । जातिगत समीकरणों में अद्भुत प्रकाश सद्बावना सिंह के साथ सामंजस्य प्राप्त कर रहा है । यह देश रसातल में जा रहा है । ”

यह बात वह व्यक्ति कर रहा था जो सत्ता समीकरण बैठाने में माहिर था और हर पद उसने समीकरणों से ही प्राप्त किये थे । सरकार कोई भी हो पर सत्यानंद पहला चुनाव हुआ करते थे । पर आज वह विक्षिप्त हो चुके थे । उनसे यह बर्दाश्त नहीं हो रहा था कि कोई आकर अपनी शर्तों पर उनसे चार्ज ले ले और वह गौण हो जाये । आज तक जब भी उनका स्थानांतरण हुआ था

वह एक महत्वपूर्ण चार्ज पर गये थे और पिछला चार्ज वह स्वेच्छा से देते थे और लेने वाला कहता था कि सर आपकी दया दृष्टि थी मुझे भी यहाँ कार्य

करने का अवसर मिला और आपका हर आदेश सिर माथे पर । पर आज तो अद्भुत प्रकाश ने आदेश आते ही कमरे में प्रवेश किया और सत्यानंद लंच पर घर गये हुये थे जब आदेश आया और जब वह आये तब वह व्यक्ति बगैर औपचारिक चार्ज लिये कुर्सी पर विराजमान था । यह पहली बार सत्यानंद के साथ हुआ था और वह इसको बर्दाशत नहीं कर पा रहे थे । करोध इतना अधिक था कि उनकी साँसें चलने लगीं । उन्होंने पानी पिया और फिर आगे बोलने लगे ।

“ अनुराग , मैं हमेशा एक टॉपर छात्र रहा । मुझे इंटर पास करने के पश्चात आईआईटी- रुड़की – बिट्स पिलानी ऐसे नामचीन संस्थान में प्रवेश लेने का प्रस्ताव आया , वह भी बगैर कोई आवेदन किये । उस समय हर बोर्ड के टॉपर को यह प्रस्ताव दिया जाता था । मैंने वह प्रस्ताव टुकरा कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया । मैंने बीएस - एमएससी (फ़िज़िक्स) में टॉप किया । न्यूकिलअर फ़िज़िक्स में मेरी विशेषता थी । “इसरो” में काम का अवसर मुझे प्राप्त हुआ पर मैंने वह त्याग कर इस बेहूदी ऐसी सर्विस में आया जहाँ क्षमता का एक ही मापदंड है कितना तुम बिक और गिर सकते हो और कितने किलो तेल लगा सकते हो । मीरांज की रंडियाँ हमसे बेहतर हैं जो ग्राहकों से यह कह तो सकती है कि मुझे तुम्हारे साथ नहीं सोना है या मेरी यह क्रीमत है । यहाँ हम कुछ कह भी नहीं सकते । दोष उनका नहीं हमारा भी है । हम सब एक नहीं होते । हम सब एक हो जायें और बिकने से इंकार कर दें तब वह किसे वह ख़रीदेंगे । पर नहीं हम तो बिकने के लिये बाज़ार की और दौड़ते रहते हैं । हमें ख़रीदो किसी भी शर्त पर । अनुराग मत ज्वाइन करो यह सेवा । यह तुम्हारे ऐसे आत्म सम्मानी एवम् प्रतिभाशाली व्यक्ति को कुछ नहीं दे सकती सिवाय ज़लालत के । अनुराग त्याग दो यह मिथ्या जीवन । यह एक मृगमरीचिका है जो दूर से दिखती तो मोहक है पर बड़ी पीड़ा है इस शीशमहल के प्रांगण में ।”

यह कहकर वह शांत हो गये । वह पूर्ण विक्षिप्त थे और पूरी तरह विवेकहीन । वह अपना मानसिक संतुलन इतना खो चुके थे कि अपने बहन के होने वाले पति के साथ किस मर्यादा से बात करें इसका भी सामान्य ज्ञान वह भाववेश में खो चुके थे । वह प्रायः घर आने का आमंत्रण देते ही थे और कहते थे सुनयना से मिल कर जाना नहीं तो वह बहुत हल्ला करेगा कि घर के दामाद से बगैर घर पवित्र कराये क्यों जाने दिया । पर आज मादक सत्ता के विछोह के कारण उनकी मतिभ्रष्ट हो चुकी थी ।

अगले दिन का अखबार उनके स्थानांतरण के खबरों से भरा था । कोई और अधिकारी होता तो शायद समाचार पत्र इतनी रुचि न दिखाते पर इनके बारे

में तो सबको रुचि थी । कचहरी के लिये तो समय काटने का नया ज़रिया मिल गया । राम सजीवन ने फहगैया या कहा ,

“भैयऊ ई सत्ता पलट एकाएक कैसन भवा ? कुछ खबर केहू के रही नाहीं ।”

फरगैया – “ सब प्लानिंग से भअ बा । कुछौ जगत में एकाएक तअ होत नाहीं । सब कार्य – कारण परम्परा से होत हअ । ई सृष्टि के एक-एक घटना विधाता रचत हअ और मायावी लीलाधारी ईश्वर हर घटना के साथ कार्य – कारण के जोड़ि देत हअ ताकि ईश्वर में आस्था बनी रहई । मनई राह से बेराह न होई जाय और सजदा भजन – कीर्तन – अरदास – पुण्याकांक्षा कायनात में फलत फूलत रहई ।”

“ भइयऊ हमका कुछ नाहीं बुझात बा जौन कटबैठी तू बैठावत हअ । तनिक हमरे लेबिल से फरियावअ ।”

“ ऐ छोटे दुई मीठ खौलत पेशल चाहि ...”





वीरेन्द्र ओझा भारतीय राजस्व सेवा के 1993 बैच के अधिकारी हैं जो वर्तमान में आयकर आयुक्त, अहमदाबाद के पद पर कार्यरत हैं। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से विज्ञान एवं विधि में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। इन्होंने इलाहाबाद के शैक्षिक कलेवर को बहुत बारीकी से देखने और समझने का प्रयास किया है। इनकी एक काव्य पुस्तक 'कुछ शब्द मेरे प्रकाशित हो चुकी हैं। लंबी दौड़ की मैराथन स्पर्धाओं में भी इनकी रुचि है। इन्होंने देश-विदेश की कई मैराथन-अलट्रा मैराथन स्पर्धाओं में हिस्सा लिया है। इनकी महत्वपूर्ण मैराथन दौड़ में—89 किमी की कठिन फहाड़ियों वाली 'कॉमरेड अलट्रा मैराथन' एवं आयकर विभाग के 'स्वच्छ धन अभियान' को ग्रोत्साहित करने के लिए 101 किलोमीटर की गुवाहाटी-शिलांग मैराथन—शामिल हैं। वीरेन्द्र ओझा 'पथ-ज्योति' नामक एक अभियान चलाते हैं जिसमें छात्र-छात्राओं को सिविल सेवा परीक्षा के लिए शिक्षा प्रदान की जाती है। इनका एक यूट्यूब चैनल 'Online IAS Classes by Virendra Ojha' और एक ऐप 'मार्गदर्शन (Margdarshaneducation.com)' के नाम से संचालित होते हैं।

उपन्यास

ह

हिन्द युग्म



97893921820366

sampadak@hindyugm.com